[illegible]

40

॥ॐ श्रीगणेशाय नमः॥ ॥अथ श्रीरामचरित्र श्रीतुलसीदासकृत लिष्यते बा
लकांड प्रथमः॥ ॐ वर्णानामर्थसंघानां रसानां छंदसामपि॥ मंगलानां च कर्त्तारौ वंदे
वाणीविनायकौ॥१॥ भवानीशंकरौ वंदे श्रद्धाविश्वासरूपिणौ॥ याभ्यां विना न पश्यं
ति सिद्धाः स्वांतस्थमीश्वरम्॥२॥ वंदे बोधमयं नित्यं गुरुं शंकररूपिणम्॥ यमाश्रितो
हि वक्रोपि चंद्रः सर्वत्र वंद्यते॥३॥ सीताराम गुणग्राम पुण्यारण्य विहारिणौ॥ वंदे विशु
द्धविज्ञानौ कवीश्वर कपीश्वरौ॥४॥ उद्भवस्थितिसंहारकारिणीं क्लेशहारिणीम्॥ स
र्वश्रेयस्करीं सीतां नतोहं रामवल्लभाम्॥५॥ यन्मायावशवर्ति विश्वमखिलं ब्रह्मादिदे
वासुरा॥ यत्सत्वादमृषैव भाति सकलं रज्जौ यथाहेर्भ्रमः॥ यत्पादप्लवमेकमेव हि भा
वांभोधेस्तितीर्षावतां॥ वंदेहं तमशेषकारणपरं रामाख्यमीशं हरिम्॥६॥ नानापु
राणनिगमागमसम्मतं यद्रामायणे निगदितं क्वचिदन्यतोपि॥ स्वांतःसुखाय तुल
सी रघुनाथगाथा भाषानिबंधमतिमंजुलमातनोति॥७॥ सोरठा॥ जे सुमिरत सि
धि होइ गणनायक करिवर वदन॥ करौ अनुग्रह सोइ बुद्धिराशि शुभ गुण सदन॥१॥
मूक होइ वाचाल पंगु चढै गिरिवर गहन॥ जासु कृपा सु दयाल द्रवौ सकल कलिमल
दहन॥२॥ नील सरोरुह स्याम तरुण अरुण वारिज नयन॥ करौ सु उर मम धाम स
दा छीरसागर सयन॥३॥ कुंद इंदु सम देह उमा रमन करुणा अयन॥ जाहि दीन प
र नेह करौ कृपा मर्दन मयन॥४॥ वंदौ गुरपद कंज कृपासिंधु नररूप हरि॥ महामोह तम
पुंज जासु वचन रविकर निकर॥५॥ चौपाई॥ वंदौ गुरुपद पदुम परागा॥ सुरुचि
सुवास सरस अनुरागा॥ अमिअ मूरिमय चूरन चारू॥ समन सकल भवरुज परिवा
रू॥ सुकृत संभु तन विमल विभूती॥ मंजुल मंगल मोद प्रसूती॥ जन मन मंजु मुक
र मल हरनी॥ किये तिलक गुनगन वस करनी॥ श्रीगुरपद नष मनिगन जोती॥
सुमिरत दिव्य दृष्टि हिय होती॥ दलन मोह तम सो सप्रकासू॥ बडे भाग उर आवै जा
सू॥ उघरहिं विमल विलोचन ही के॥ मिटहिं दोष दुष भव रजनी के॥ सूझहिं राम च
रित मनि मानिक॥ गुपत प्रगट जेहि षानिक॥१॥ दोहा॥ जथा सुअंजन अं
जि दृग साधक सिद्ध सुजान॥ कौतुक देषहिं सैल वन भूतल भूरि निधान॥१॥ चौपाई
॥ गुरपद रज मृदु मंजुल अंजन॥ नयन अमिय दृग दोष विभंजन॥ तेहि करि विम
ल विवेक विलोचन॥ वरनौ रामचरित भवमोचन॥ वंदौ प्रथम महीसुर चरना॥ मो
ह जनित संसय सब हरना॥ सुजन समाज सकल गुन षानी॥ करौं प्रनाम सप्रेम
सुवानी॥ साधु चरित सुभ सरिस कपासू॥ निरस विसद गुनमय फल जासू॥ जो सहि
दुष पर छिद्र दुरावा॥ वंदनीय जेहि जग जस पावा॥ मुद मंगलमय संत समाजू॥
जो जग जंगम तीरथराजू॥ रामभगति जहँ सुरसरि धारा॥ सरसइ ब्रह्म विचार प्रचा
रा॥ विधि निषेधमय कलिमल हरनी॥ करम कथा रविनंदन वरनी॥ हरि हर कथा वि
राजत वेनी॥ सुनत सकल मुद मंगल देनी॥ वटु विस्वास अचल निज धरमा॥ ती
रथराज समाज सुकरमा॥ सवहि सुलभ सव दिन सव देसा॥ सेवत सादर समन क
लेसा॥ अकथ अलौकिक तीरथराऊ॥ देइ सद्य फल प्रगट प्रभाऊ॥२॥ दोहा॥ सुनि स
मुझहिं जन मुदित मन मज्जहिं अति अनुराग॥ लहहिं चारि फल अछत तनु साधु
समाज प्रयाग॥२॥ चौपाई॥ मज्जन फल पेषिअ ततकाला॥ काक होहिं पिक वकउ
मराला॥ सुनि आचरज करै जनि कोई॥ सतसंगति महिमा नहि गोई॥ वालमी
कि नारद घटजोनी॥ निज निज मुषनि कही निज होनी॥ जलचर थलचर नभ
चर नाना॥ जे जड चेतन जीव जहाना॥ मति कीरति गति भूति भलाई॥ जव जेहि

6236

जतन जहाँ जेहि पाई॥ सो जानव सतसंग प्रभाऊ॥ लोकहुँ वेद न आन उपाऊ॥ विनु सतसंग
विवेक न होई॥ रामकृपा विनु सुलभ न सोई॥ सतसंगति मुद मंगल मूला॥ सोइ फल
सिधि सव साधन फूला॥ सठ सुधरहिं सतसंगति पाई॥ पारस परस कुधातु सुहाई॥
विधिवस सुजन कुसंगति परहीं॥ फनि मनि सम निज गुन अनुसरहीं॥ विधि हरि हर
कवि कोविद वानी॥ कहत साधु महिमा सकुचानी॥ सो मो सन कहि जात न कैसें॥ सा
कवनिक मनि गन गुन जैसें॥३॥ दोहा॥ वंदौं संत समान चित हित अनहित नहि को
ई॥ अंजलि गत सुभ सुमन जिमि सम सुगंध कर दोई॥३॥ संत सरल चित जगत हि
त जानि सुभाउ सनेहु॥ वालविनय सुनि करि कृपा रामचरन रति देहु॥४॥ चौपाई॥
वहुरि वंदि षलगन सतिभाये॥ जे विनु काज दाहिनेहु वाये॥ परहित हानि लाभ जिन्ह
के रे॥ उजरे हरष विषाद वसेरे॥ हरिहर जस राकेस राहु से॥ पर अकाज भट सहसवा
हु से॥ जे पर दोष लषहिं सहसाषी॥ परहित घृत जिन्ह के मन माषी॥ तेज कृसानु रोष
महिषेसा॥ अघ अवगुन धन धनी धनेसा॥ उदय केतु सम हित सवही के॥ कुंभकरन
सम सोवत नीके॥ पर अकाज लगि तनु परिहरहीं॥ जिमि हिम उपल कृषी दलि गरहीं॥
वंदौं षल जस सेष सरोषा॥ सहस वदन वरनै पर दोषा॥ पुनि प्रनवउँ पृथुराज समाना॥ प
र अघ सुनै सहस दस काना॥ वहुरि सक्र सम विनवउँ तेही॥ संतत सुरानीक हि
त जेही॥ वचन वज्र जेहि सदा पिआरो॥ सहस नयन परदोष निहारो॥४॥ दोहा॥ उदा
सीन अरि मीत हित सुनत जरहिं षल रीति॥ जानु पानि जुग जोरि जन विनती करै
सप्रीति॥५॥ चौपाई॥ मैं अपनी दिसि कीन्ह निहोरा॥ तिन्ह निज ओर न लाउव भोरा॥
वायस पालिय अति अनुरागा॥ होहिं निरामिष कवहुँ कि कागा॥ वंदौं संत असज्ज
न चरना॥ दुषप्रद उभय वीच कछु वरना॥ विछुरत एक प्रान हरि लेहीं॥ मिलत ए
क दुष दारुण देहीं॥ उपजहिं एक संग जग मांहीं॥ जलज जोंक जिमि गुन विलगाहीं॥
सुधा सुरा सम साधु असाधू॥ जनक एक जग जलधि अगाधू॥ भल अनभल निज नि
ज करतूती॥ लहत सुजस अपलोक विभूती॥ सुधा सुधाकर सुरसरि साधू॥ गर
ल अनल कलिमल सरि व्याधू॥ गुन अवगुन जानत सव कोई॥ जो जेहि भाव नी
क सव सोई॥५॥ दोहा॥ भलो भलाइहि पै लहै लहै निचाइहि नीच॥ सुधा सराहिअ
अमरता गरल सराहिअ मीचु॥६॥ चौपाई॥ षल अघ अगुन साधु गुन गाहा॥ उभय अ
पार उदधि अवगाहा॥ तेहि तें कछु गुन दोष वषाने॥ संग्रह त्याग न विनु पहिचाने॥ भ
लेउ पोच सव विधि उपजाये॥ गनि गुन दोष वेद विलगाये॥ कहहिं वेद इतिहास पु
राना॥ विधि प्रपंच गुन अवगुन साना॥ दुष सुष पाप पुन्य दिन राती॥ साधु असाधु
सुजाति कुजाती॥ दानव देव ऊँच अरु नीचू॥ अमिअ सजीवन माहुर मीचू॥ माया ब्र
ह्म जीव जगदीसा॥ लच्छि अलच्छि रंक अवनीसा॥ कासी मग सुरसरि क्रमनासा॥
मरु मालव महिदेव गवासा॥ सरग नरक अनुराग विरागा॥ निगमागम गुन दो
ष विभागा॥६॥ दोहा॥ जड चेतन गुन दोषमय विस्व कीन्ह करतार॥ संत हंस गुन गहहिं
पय परिहरि वारि विकार॥७॥ चौपाई॥ अस विवेक जव देइ विधाता॥ तव तजि दोष
गुनहिं मन राता॥ काल सुभाव करम वरिआई॥ भलेउ प्रकृति वस चुकइ भलाई॥
सो सुधारि हरिजन जिमि लेहीं॥ दलि दुष दोष विमल जस देहीं॥ षलउ करहिं भल पा
इ सुसंगू॥ मिटइ न मलिन सुभाउ अभंगू॥ लषि सुवेष जग वंचक जेऊ॥ वेष प्रताप पूजि
अहिं तेऊ॥ उघरहिं अंत न होइ निवाहू॥ कालनेमि जिमि रावन राहू॥ किये कुवेष साधु
सनमानू॥ जिमि जग जामवंत हनुमानू॥ हानि कुसंग सुसंगति लाहू॥ लोकहुँ वेद वि
दित सव काहू॥ गगन चढइ रज पवन प्रसंगा॥ कीचहिं मिलइ नीच जल संगा॥ साधु अ

साधुसुदनसकसारी॥सुमिरहिरामदेहिगनिगारी॥धूमकुसंगतिकारिषहोई॥लिषि
अपुरानमंजुमसिसोई॥सोइजलअनलअनिलसंघाता॥होइजलदजगजीवनदाता॥
॥७॥दोहा॥ग्रहभेषजजलपवनपटपाइकुजोगसुजोग॥होहिकुवस्तुसुवस्तु
जगलषहिसुलषनलोग॥८॥चौ॰॥समप्रकासतमपाषदुईनामभेदविधिकीन्ह॥
ससिपोषकसोषकसमुझिजगजसअपजसलीन्ह॥९॥जडचेतनजगजीवसक
लराममयजान॥वंदौंसबकेपदकमलसदाजोरिजुगपानि॥१०॥देवदनुजनर
नागषगप्रेतपितरगंधर्व॥वंदौकिंनररजनिचरकृपाकरहुअबसर्व॥११॥चौपाई
॥आकरचारिलाषचौरासी॥जातिजीवजलथलनभवासी॥सीयराममयसबज
गजानी॥करौंप्रनामजोरिजुगपानी॥जानिकृपाकरिकिंकरमोहू॥सबमिलि
करहुछाडिछलछोहू॥निजबुधिबलभरोसमोहिनाही॥तातेंबिनयकरौंसब
पांही॥करनचहौंरघुपतिगुनगाहा॥लघुमतिमोरचरितअवगाहा॥सूझनए
कौअंगउपाई॥मनमतिरंकमनोरथराई॥मतिअतिनीचऊचरुचिआछी॥च
हिअअमिअजगजुरैनछाछी॥छमिहहिसजनमोरिढिठाई॥सुनिहहिबालब
चनमनलाई॥जोबालककहितोतरिबाता॥सुनहिमुदितमनपितअरुमाता॥
हसिहहिकूरकुटिलकुविचारी॥जेपरदूषनभूषनधारी॥निजकवितकिहिलागनती
की॥सरसहोउअथवाअतिफीका॥जेपरभनितसुनितहरषाही॥तेवरपुरुषवहुतज
गनाही॥जगबहुनरसरसरिसमभाई॥जेनिजवाढिवढहिजलपाई॥सज्जनसुकृतसि
धुसमकोई॥देषिपूरविधुवाढैजोई॥८॥दोहा॥भागछोटअभिलाषवडकरौंएकवि
स्वास॥पैहहिसुषसुनिसजनसवषलकरहहिउपहास॥१२॥चौपाई॥षलपरिहासहो
इहितमोरा॥काककहहिकलकंठकठोरा॥हंसहिवकदादुरचातकही॥हसहिमलिनष
लविमलवतकही॥कवितरसिकनरामपदनेहू॥तिन्हकहसुषदहासरसयेहू॥भा
षाभनितमोरिमतिभोरी॥हसिवेजोगहसेंनहिषोरी॥प्रभुपदप्रीतिनसमुझिनीके
तिनहिकथासुनिलागिहिफीकी॥हरिहरपदरतिमतिनकुतरकी॥तिन्हकहमधुरक
थारघुवरकी॥रामभगतिभूषितजियजोनी॥सुनिहहिसजनसराहिसुबानी॥कविन
होउनहिचतुरप्रवीनू॥सकलकलासवविद्याहीना॥आषरअरथअलंकृतनाना॥छंदप्रबंध
अनेकविधाना॥भावभेदरसभेदअपारा॥कवितदोषगुनविविधिप्रकारा॥कवितविवे
कयेकनहिमोरें॥सत्यकहौंलिषिकागदकोरे॥९॥दोहा॥भनितमोरिसवगुनरहित
विस्वविदितगुनयक॥सोविचारिसुनिहहिसुमतिजिन्हकेविमलविवेक॥१३॥चौपाई॥
येहिमहिरघुवरनामउदारा॥अतिपावनपुनीतश्रुतिसारा॥मंगलभुवनअमंगलहारी
उमासहितजेहिजपतिपुरारी॥भनितविचित्रसुकविकृतजोऊ॥रामनामविनुसोहन
सोऊ॥विधुवदनीसवभांतिसवारी॥सोहनवसनविनावरनारी॥सवगुनरहितकुकवि
कृतवानी॥रामनामजसअंकितजानी॥सादरकहहिसुनहिवुधताही॥मधुकरसंतसम
रसगुनग्राही॥जदपिकवितरसयेकौनाही॥रामप्रतापप्रगटजेहिमाही॥सोइभरोसमो
रेमनआवा॥केहिनसुसंगतवडपनुवा॥धूमौतजैसहजकरवाई॥अगरप्रसंगसुगंधवसा
ई॥भनितिभदेसवस्तुभलिवरनी॥रामकथाजगमंगलकरनी॥१०॥छंद॥मंगलक
रनिकलिमलहरनितुलसीकथारघुनाथकी॥गतिकूरकवितासरितकीज्योंसरितपा
वनपाथकी॥प्रभुसुजससंगतिभनितिभलिहोइहिसुजनमनभावनी॥भवअंगभूतिम
सानकीसुमिरतसुहावनिपावनी॥१॥दोहा॥प्रियलागिहिअतिसवहिममभनि
तरामजससंग॥दारुविचारुकिकरइकोउवंदियमलयप्रसंग॥१४॥दो॰॥स्यामसुरभिप
यविसदअतिगुनदकरहिसवपान॥गिराग्राम्यसियरामजससंगावहिसुनहिसुजान॥१५॥

चौपाई॥मनिमानिकमुकाछविजैसी॥अहिगिरिगजसिरसोहनतेसी॥नृपकिरी
टतरुनीतनपाई॥लहहिसकलसोभाअधिकाई॥तैसेंहिसुकविकविवुधकहही॥उ
पजहिअनतअनतछविलहही॥भगतिहेतुविधिभवनविहाई॥सुमिरतसारदआ
वतिधाई॥रामचरितसरविनुअन्हवाये॥सोश्रमजाइनकोटिउपाये॥कविकोविदअ
सहृदयविचारी॥गावहिहरिजसकलिमलहारी॥कीन्हेंप्राकृतजनगुनगाना॥सिर
धुनिगिरालगतपछताना॥हृदयसिंधुमतिसीपसमाना॥स्वातीसारदकहहिसुजाना॥
जोवरषैवरवारिविचारू॥होहिकवितमुकतामनिचारू॥११॥दोहा॥जुगतिवेधिपु
नपोहिअहिरामचरितवरताग॥पहिरहिसज्जनविमलउरसोभाअतिअनुराग॥१६॥
चौपाई॥जेजनमेकलिकालकराला॥करतवचायसवेषमराला॥चलतकुपंथवेद
मगछाडे॥कपटकलेवरकलिमलभांडे॥वंचकभगतकहाइरामके॥किंकरकंचनकों
हकामके॥तिन्हमंहप्रथमरेषजगमोरी॥धृगधरमध्वजधंधकधोरी॥जोअपनेअवगु
नसवकहहूं॥वाढैकथापारनहिलहहूं॥तातेंमैंअतिअलपवषानें॥थोरेमहुंजानि
हहिसयानें॥समुझिविविधिविधिविनतीमोरी॥कोउनकथासुनिदेइहिषोरी॥येत
हुपरकरिहहिजेअसंका॥मोहितेअधिकतेजडमतिरंका॥कविनहोउनहिचतुरक
हाई॥मतिअनुरूपरामगुनगाई॥कहंरघुपतिकेचरितअपारा॥कहंमतिमोरिनि
रतसंसारा॥जेहिमारुतगिरिमेरुउडाही॥कहहुतूलकेहिलेषेमाही॥वेदकहहिअ
सहहिरघुराई॥वहहिभक्तिरतिनहीचतुराई॥समुझतअमितरामप्रभुताई॥करतक
थामनअतिकदराई॥१२॥दोहा॥सारदसेषमहेसविधिआगमनिगमपुरान॥नेति
नेतिकहिजासुगुनकरहिनिरंतरगान॥१७॥चौपाई॥सवजानतप्रभुप्रभुतासोई॥त
दपिकहेविनुरहानकोई॥तहांवेदअसकारनराषा॥भजनप्रभावभांतिवहुभाषा॥
येकअनीहअरूपअनामा॥अजसच्चिदानंदपरधामा॥व्यापकविश्वरूपभगवाना॥ते
हिंधरिदेहचरितकृतनाना॥सोकेवलभगतनहितलागी॥परमकृपालप्रनतअ
नुरागी॥जेहिजनपरममतासुअरुछोहू॥तेहिकरुनाकरिकीन्हनकोहू॥गईवहोरग
रीवनवाजू॥सरलसवलसाहिवरघुराजू॥वुधवरनहिहरिजसअसजानी॥करहि
पुनीतसुफललनिजवानी॥तेहिवलमैरघुपतिगुनगाथा॥कहिहौंनाइरामपदमा
था॥मुनिन्हप्रथमहरिकीरतिगाई॥तेहिमगचलतसुगममोहिभाई॥१३॥दोहा॥
अतिअपारजेसरितवरजौनृपसेतुकराहि॥चढिपिपीलिकोपरमलघुविनुश्रमपारहिजा
हि॥१८॥चौपाई॥येहिप्रकारवलमनहिदेषाई॥करिहौंरघुपतिकथासुहाई॥व्यासआदि
कविपुंगवनाना॥जिन्हसादरहरिसुजसवषाना॥चरनकमलवंदौंतिन्हकेरे॥पुरवहु
सकलमनोरथमेरे॥कलिकेकविन्हकरौपरनामा॥जिन्हवरनेरघुवरगुनग्रामा॥जे
प्राकृतकविपरमसयानें॥भाषाजिन्हहरिचरितवषानें॥भयेजेअहहिजेहोइहहिआगे
प्रनउंसवहिकपटछलत्यागे॥होउप्रसंन्नदेहुवरदानू॥साधुसमाजभनितिसनमानू
जोप्रबंधवुधनहिआदरही॥सोश्रमवादिवालकविकरही॥कीरतिभनितिभूति
भलिसोई॥सुरसरिसमसवकेहितहोई॥रामसुकीरतिभनितिभदेसा॥असमं
जसअसमोहिअंदेसा॥तुम्हरीकृपासुलभसोउमोरे॥सियनिसुहावनिटाटपटोरे
करहुअनुग्रहअसजियजानी॥विमलजसहिअनुहरैसुवानी॥१४॥दोहा॥सरल
कवितकीरतिविमलसोइआदरहिसुजान॥सहजवयरविसराइरिपुजोसुनिकर
हिंवषान॥१९॥सोनहोइविनुविमलमतिमोहिवुद्धिवलअतिथोर॥करहुकृपाहरि
जसकेहुंउपुनिपुनकरउंनिहोर॥२०॥चौपई॥कविकोविदरघुवरचरितमानसमं
जुमराल॥वालविनयसुनिसुरुचिलषिमोपरहोहुकृपाल॥२१॥सोरठा॥वंदौंमुनिप
दकंजुरामाइनजिहनिरमयउ॥सषरसुकोमलमंजुदोषरहितदूषनसहित॥६॥
वंदौचारिउवेदभववारिधवोहितसरस॥जिन्हहिनसपनेहुषेदवरनतरघुवरविसदज

रा॰ बा॰
३

सः ॥ २ ॥ बंदौविधिपदरेनुभवसागरजिन्हकीन्हयह ॥ संतसुधाससिधेनुप्रगटेषलविषबारुनी ॥
दोहा ॥ बिबुधबिप्रबुधग्रहचरनबंदिकहौंकरजोर ॥ होइप्रसंन्नपुरवहुसकलमंजुमनोर
थमोर ॥ २२ ॥ चौपाई ॥ पुनिबंदौसारदसुरसरिता ॥ जुगलपुनीतमनोहरचरिता ॥ मज्ज
नपांनपापहरएका ॥ कहतसुनतएकहरअविवेका ॥ गुरपितुमातुमहेसभवानी ॥
प्रनवौंदीनबंधुदिनदानी ॥ सेवकस्वामिसषासियपीके ॥ हितनिरुपधिसबविधितु
लसीके ॥ कलिबिलोकिजगहितहरगिरिजा ॥ साबरमंत्रजालजिन्हसिरिजा ॥ अनमिल
आषरअरथनजापू ॥ प्रगटप्रभावमहेसप्रतापू ॥ सोउमहेसमोपरअनुकूला ॥ करिहिंकथामुद
मंगलमूला ॥ सुमिरिसिवासिवपाइपसाऊ ॥ बरनौंरामचरितचितचाऊ ॥ भनितिमोरिसि
वकृपाविभाती ॥ ससिसमाजमिलिमनहुसुराती ॥ जेपहिकथहिसनेहसमेत
मेता ॥ कहिहहिसुनहिहिसमुझिसचेता ॥ होइहहिंरामचरिनअनुरागी ॥ कलिमलरहि
तसुमंगलभागी ॥ १५ ॥ दोहा ॥ सपनेहुंसांचेहुमोहिपरजोहरगौरिपसाउ ॥ तोफुरहोउ
जोकहेउंसबभाषाभनितप्रभाउ ॥ १६ ॥ चौपाई ॥ बंदौअवधपुरीअतिपावनि ॥ सरिजू
सरितकलिकलुषनसावनि ॥ प्रनवौंपुरनरनारिबहोरी ॥ ममतापरप्रभुजिन्हहिनथो
री ॥ सियनिंदकअघओघनसाये ॥ लोकबिसोकबनाइबसाये ॥ बंदौंकौसल्यादिसि
प्राची ॥ कीरतिजासुसकलजगमाची ॥ प्रगटेउजेहेंरघुवरससिचारू ॥ बिस्वसुषदषा
लकमलतुसारू ॥ दसरथराउसहितसबरानी ॥ सुकृतसुमंगलमूरतिमानी ॥ क
रौंप्रनामकरममनबानी ॥ करहुकृपासुतसेवकजानी ॥ जिन्हहिंविरचिवडभयेउविधा
ना ॥ महिमाअवधिराममपितुमाता ॥ १८ ॥ सोरठा ॥ बंदौंअवधभुआलसत्यप्रेमजिहिंरा
मपद ॥ बिछुरतदीनदयालप्रियतनतृनइवपरहरेउ ॥ १९ ॥ चौपाई ॥ प्रनवौंपरिजनसहित
बिदेहू ॥ जाहिरामपदगूढसनेहू ॥ जोगभोगमहेंराषेउंगोये ॥ रामविलोकतप्रगटेउसो
ये ॥ प्रनवौंप्रथमभरतकेचरना ॥ जासुनेमव्रतजाइनवरना ॥ रामचरनपंकजमनजा
सु ॥ लुबधमधुपइवतजेनपास ॥ बंदौलछिमनपदजलजाता ॥ सीतलसुभगभगतसुष
दाता ॥ रघुपतिकीरतिबिमलपताका ॥ दंडसमानभयेउजसजाका ॥ सेससहस्रसीस
जगकारन ॥ जोअवतरेउभूमिभयटारन ॥ सदासोसानकूलरहुमोपर ॥ कृपासिंधु
सौमित्रगुनाकर ॥ रिपुसूदनपदकमलनमामी ॥ सूरसुसीलभरतअनुगामी ॥ महा
वीरविनवौंहनुमांना ॥ रामजासुजसआपवषांना ॥ १७ ॥ सोरठा ॥ प्रनवौंपवनकुमारष
लवनपावकज्ञानघन ॥ जासुहृदयआगारवसहिरामसरचापधर ॥ १० ॥ चौपाई ॥
कपिपतिरीछनिसाचरराजा ॥ अंगदादिजेकीससमाजा ॥ बंदौंसबकेचरनसुहाये ॥ अ
धमसरीरराममजिन्हपाये ॥ रघुपतिचरनउपासिकजेते ॥ षगमृगसुरनरअसुरसमेत
तेबंदौपदसरोजसबकेरे ॥ जेबिनुकामरामकेचेरे ॥ सुकसनकादिकभगतमुनि
नारद ॥ जेमुनिवरविज्ञानविसारद ॥ प्रनवौंसबहिंधरनिधरिसीसा ॥ करहुकृपाजनजानि
मुनीसा ॥ जनकसुताजगजननिजानकी ॥ अतिसयप्रियकरुनानिधानकी ॥ ताके
जुगपदकमलमनाउं ॥ जासुकृपानिर्मलमतिपाउं ॥ पुनिमनवचनकर्मरघुनाइक
चरनकमलबंदौंसबलाइक ॥ राजिवनयनधरेंधनुसाइक ॥ भगतविपतिभंजनसुष
दाइक ॥ १८ ॥ दोहा ॥ गिराअरथजलबीचिसमकहिअतभिन्नअभिन्न ॥ बंदौंसीताराम
पदजिन्हहिंपरमप्रियषिन्न ॥ १८ ॥ चौपाई ॥ बंदौ — नामरघुवरको ॥ हेतुकृसानुभा
नुहिमकरको ॥ बिधिहरिहरमयवेदप्रानसो ॥ अगुनअनूपमगुननिधानसो ॥
महामंत्रजोइजपतमहेस ॥ कासीमुकतिहेतुउपदेस ॥ महिमाजासुजानगनराई ॥
प्रथमपूजिअतनामप्रभाऊ ॥ जानआदिकविनामप्रतापू ॥ भयेउसुद्धकरिउलटाजा
पू ॥ सहसनामसमसुनिसिववानी ॥ जपतिसदाप्रियसंगभवानी ॥ हरषेहेतुहेरि
हरहियकौ ॥ कियभूषनतियभूषनतीको ॥ नामप्रभावजानिसिवनीको ॥ कालकूट
फलदीन्हअमीको ॥ १९ ॥ दोहा ॥ बरषारितुरघुपतिभगतितुलसीसालिसुदास ॥ रामना

मबरवरनजुगसांवनभादौंमास ॥ १५ ॥ चौपाई ॥ आषरमधुरमनोहरदोऊ ॥ बरन
नविलोचनजनजियजोऊ ॥ सुमिरतसुलभसुषदसबकाहू ॥ लोकलाहुपरलो
कनिबाहू ॥ कहतसुनतसुमिरतसुठिनीके ॥ रामलषनसमप्रियतुलसीके ॥
बरनतबरनप्रीतिबिलगाती ॥ ब्रह्मजीवसमसहजसंघाती ॥ नरनारायणसरि
सभ्राता ॥ जगपालकविसेषिजनत्राता ॥ भगतिसुतियकलकरनविभूषन ॥ जगहित
हेतुविमलविधुपूषन ॥ स्वादतोषसमसुगतिसुधाके ॥ कमठसेषसमधरवसुधाके ॥
जनमनमंजुमधुकरसे ॥ जीहजसोमतिहरिहलधरसे ॥ २० ॥ छत्राकारमकाहेमकुटाका
रकार ॥ तुलसीरघुवरनामपोहितहुलोकमेसार ॥ दोहा ॥ एकछत्रइकमुकुटमनिसब
बरननिपरजोउ ॥ तुलसीरघुवरनामकेबरनबिराजतदोउ ॥ २८ ॥ चौपाई ॥ समुझतसरि
सनामअरुनामी ॥ प्रीतिपरसपरप्रभुअनुगामी ॥ नामरूपदुइईसउपाधी ॥ अकथअना
दिसुसामुझिसाधी ॥ कोबडछोटकहतअपराधू ॥ सुनिगुनभेदसमुझिहहिसाधू ॥ दे
षिअहिरूपनामआधीना ॥ रूपज्ञाननहिनामबिहीना ॥ रूपबिसेषनामबिनुजांने
करतलगतनपरहिपहिचाने ॥ सुमिरिअनामरूपबिनुदेषे ॥ आवतहृदयसनेहबि
सेषे ॥ नामरूपगतिअकथकहानी ॥ समुझतसुषदनपरतिबषानी ॥ अगुनसगुनबि
चनामसुसाषी ॥ उभयप्रबोधकचतुरदुभाषी ॥ २१ ॥ दोहा ॥ हीयनिर्गु— नयनसगुन
जिहारामसुनाम ॥ मनहुपुरटसंपुटलसततुलसीललितललाम ॥ ॥ रामनामम
नदीपधरुजीहदेहरीद्वार ॥ तुलसीभीतरबाहिरहुजोचाहसिउजियार ॥ २१ ॥ चौपाई
॥ नामजीहजपिजागहिंजोगी ॥ बिरतिबिरंचिप्रपंचबियोगी ॥ ब्रह्मसुषहिअनुभवहिंअ
नूपा ॥ अकथअनामयनामनिरूपा ॥ जानाचहहिगूढगतिजेऊ ॥ नामजीहजपिजानहि
तेऊ ॥ साधकनामजपहिलयलाये ॥ होहिसिद्धअनिमादिकपाये ॥ जपहिनामजनआ
रतभारी ॥ मिटहिंकुसंकटहोहिंसुषारी ॥ रामभगतजगचारिप्रकारा ॥ सुकृतीचारिउ
अनघउदारा ॥ चहूचतुरकेहेनामअधारा ॥ ज्ञानीप्रभुहिविसेषपिआरा ॥ चहुंजुगचहु
श्रुतिनामप्रभाऊ ॥ कलिबिसेषनहिंआनउपाऊ ॥ २२ ॥ दोहा ॥ सकलकामनाहीन
जेरामभगतिरसलीन ॥ नामसुप्रेमपीयूषहृदतिनहुंकियेमनमीन ॥ २६ ॥ चौपाई ॥ अ
गुनसगुनदुइब्रह्मसरूपा ॥ अकथअगाधअनादिअनूपा ॥ मोरेमतवडनामदुहूंते ॥ कि
येजेहिजुगनिजवसनिजबूते ॥ पौढसुजनजियजांनेजनकी ॥ कहउंप्रतीतिप्रीतिरु
चिमनकी ॥ एकदारुगतदेषियएकू ॥ पावकसमजुगब्रह्मविवेकू ॥ उभयअगमजु
गसुगमनामते ॥ कहेउंनामवडब्रह्मरामते ॥ व्यापकएकब्रह्मअविनासी ॥ सतचेतन
घनआनंदरासी ॥ असप्रभुहृदयअछतअविकारी ॥ सकलजीवजगदीनदुषारी ॥ ना
मनिरूपननामजतनते ॥ सोउप्रगटतजिमिमोलरतनते ॥ २३ ॥ दोहा ॥ निरगुनतेंइहभां
तिवडनामप्रभावअपार ॥ कहेउंनामवडरामतेनिजविचारिअनुसार ॥ २५ ॥ चौपाई ॥ रा
मभगतहितनरतनुधारी ॥ सहिसंकटकियेसाधुसुषारी ॥ नामसप्रेमजपतअनया
सा ॥ भगतहोहिंमुदमंगलवासा ॥ रामयेकतापसतियतारी ॥ नामकोटषलकुम
तिसुधारी ॥ रिषिहितरामसुकेतसुताकी ॥ सहितसेनसुतकीन्हबिवाकी ॥ सहितदो
षदुषदासदुरासा ॥ दलैइनामजिमिरविनिसिनासा ॥ भंजेउरामआपुभवचापू ॥ भव
भयभंजननामप्रतापू ॥ दंडकवनप्रभुकीन्हसुहावन ॥ जनमनअमितनामकिये
पावन ॥ निसिचरनिकरदलेरघुनंदन ॥ नामसकलकलिकलुषनिकंदन ॥ दोहा ॥
सवरीगीधसुसेवकनिसुगतिदीन्हिरघुनाथ ॥ नामउधारेअमितषलवेदविदित
गुनगाथ ॥ २४ ॥ चौपाई ॥ रामसुकंठविभीषनदोऊ ॥ राषेसरनजानसबकोऊ ॥ नाम
गरीबअनेकनिवाजे ॥ लोकवेदवरविरदविराजे ॥ रामभालकपिकटकवटोरा ॥ से
तहेतुश्रमकीन्हनथोरा ॥ नामलेतभवसिंधुसुषाहीं ॥ करहुविचारसुजनमनमाहीं ॥
रामसकुलरनरावनमारा ॥ सियसहिततिजपुरपगुधारा ॥ राजारामअवधरजधानी

रा॰ बा॰
४

गावतगुनसुरमुनिबरबानी॥ सेवकसुमिरतनामसप्रीती॥ बिनुश्रमप्रबलमोहदलु
जीती॥ फिरतसनेहमगनसुषअपने॥ नामप्रसादसोचनहीसपने॥ दोहा॥ ब्रह्मरामतेना
मबडबरदायकबरदानि॥ रामचरितसतकोटिमहलियेमहेसजियजानि॥२५॥ चौपाई॥
नामप्रसादसंभुअविनासी॥ साजअमंगलमंगलरासी॥ सुकसनकादिसिद्धमुनि
जोगी॥ नामप्रसादब्रह्मसुषभोगी॥ नारदजानेउनामप्रतापू॥ जगप्रियहरिहरि
हरप्रियआपू॥ नामजपतप्रभुकीन्हप्रसादू॥ भगतसिरोमनिभेप्रहलादू॥ ध्रुवस
गलानिजपेउहरिनाऊं॥ पायेउअचलअनूपमठाऊं॥ सुमिरपवनसुतपावननामू॥
अपनेवसकरिराषेरामू॥ अपरअजामिलगजगनिकाऊ॥ भयेमुकुतहरिनामप्र
भाऊ॥ कहहुंकहालगिनामबडाई॥ रामनसकहिनामगुनगाई॥ दोहा॥ नामरा
मकोकल्पतरुकलिकल्याननिवास॥ जोसुमिरतभयोभांगतेतुलसीतुलसीदास
॥२६॥ चौपाई॥ चहुंजुगतीनकालतिहुंलोका॥ भयेउनामजपिजीवविसोका॥ वे
दपुरानसंतमतिएहू॥ सकलसुकृतफलरामसनेहू॥ ध्यानप्रथमजुगमषविधि
दूजे॥ द्वापरपरितोषतप्रभुपूजे॥ कलिकेवलमलमूलमलीना॥ पापपयोनिधिज
नमनमीना॥ नामकामतरुकालकराला॥ सुमिरतसमनसकलजगजाला॥ रा
मनामकलिअभिमतदाता॥ हितपरलोकलोकपितुमाता॥ नहिकलिकरमनभग
तिविवेकू॥ रामनामअवलंबनएकू॥ कालनेमिकलिकपटनिधानू॥ नामसुम
तिसमरथहनुमानू॥ दोहा॥ रामनामनरकेहरीकनककसिपुकलिकाल॥ जापक
जनप्रहलादजिमिपालिहिदलिसुरसाल॥२७॥ चौपाई॥ भायकुभायअनषआल
सहूं॥ नामजपतमंगलदिसिदसहूं॥ सुमिरसोनामरामगुनगाथा॥ करौनाइर
घुनाथहिमाथा॥ मोरिसुधारीहिसोसबभांती॥ जासुकृपानहिकृपाअघाती॥ राम
सुस्वामिकुसेवकमोसो॥ निजदिसिदेषिदयानिधिपोसो॥ लोकहुंवेदसुसाहिबरी
ती॥ बिनयसुनतपहिचानतप्रीती॥ गनीगरीबग्रामनरनागर॥ पंडितमू
ढमलीनउजागर॥ सुकविकुकविनिजमतिअनुहारी॥ नृपहिसराहतसबनरना
री॥ साधुसुजानसुसीलनृपाला॥ ईसअंसभवपरमकृपाला॥ सुनिसनमा
नहिसबहीसुबानी॥ भनितभगतिमतिगतिपहिचानी॥ यहप्राकृतमहिपालसु
भाऊ॥ जानसिरोमनिकोशलराऊ॥ रीझतरामसनेहनिसोते॥ कोजगमंदम
लिनमतिमोते॥ दोहा॥ सठसेवककीप्रीतिरुचिराषिहहिरामकृपाल॥ उपलकिये
जलजानजेहिसचिवसुमतिकपिभाल॥ दोहा॥ होहुकहावतसबकहतरामसहत
उपहास॥ साहिबसीतानाथसेसेवकतुलसीदास॥२८॥ चौपाई॥ अतिवडिमो
रिढिठाईषोरी॥ सुनिअघनरकहुनाकसकोरी॥ समुझिसहिममोहिअपडरअ
पने॥ सोसुधिरामकीन्हनहिसपने॥ सुनिअवलोकिसुचितचषचाही॥ भगति
मोरिमतिस्वामिसराही॥ कहतनसाइहोइहिएकनीकी॥ रीझतरामजानिजनजीकी॥
रहतनप्रभुचितचूककियेकी॥ करतसुरतिसयवारहियेकी॥ जेहिअघवधेउव्या
धजिमिवाली॥ फिरिसुकंठसोइकीनकुचाली॥ सोइकरतूतिविभीषनकेरी॥ स
पनेहुंसोनरामहियहेरी॥ तेभरतहिभेंटतसनमाने॥ राजसभारघुवीरवषाने॥ दो॰
प्रभुतरुतरकपिडारपरतेकियेआपसमान॥ तुलसीकहुंनरामसेसाहिबसील
निधान॥ दोहा॥ रामनिकाईरावरीहैसबहीकोनीक॥ जोयहसाचीहैसदातोनी
कोतुलसीक॥ दोहा॥ एहिविधिनिजगुनदोषकहिसबहिबहुरिसिरुनाई॥ बरनहुंर
घुबरबिसदजसुसुनिकलिकलुषनसाइ॥२९॥ चौपाई॥ जागबलिकजोकथासुहा
ई॥ भारद्वाजमुनिबरहिसुनाई॥ कहिहौसोइसंवादवषानी॥ सुनहुसकलसज्ज
नसुषमानी॥ संभुकीनयहचरितसुहावा॥ बहुरिकृपाकरिउमहिसुनावा॥ सो
सिवकागभुसुंडिहीदीन्हा॥ रामभगतअधिकारीचीन्हा॥ सोइसिवकाकभुसुं

डिहिदीन्हा॥ रामभगतअधिकारीचीन्हा॥ तेहिसनजागबलिकपुनिपावा॥ तिन्हपुनि
भरद्वाजप्रतिगावा॥ तेश्रोतावकतासमसीला॥ समदरसीजानहिहरिलीला॥ जानहितिं
नकालनिजज्ञाना॥ करतलगतआमलकसमाना॥ औरोजेहरिभगतसुजाना॥ क
हहिसुनहिसमुझहिविधिनाना॥ दोहा॥ मैपुनिनिजगुरसनसुनिकथासुसूकरषेत॥ स
मुझिनहितसवालपनतबअतिरहेउअचेत॥ दोहा॥ श्रोतावकताज्ञाननिधिकथारा
मकैगूढ॥ किमिसमुझौंयहजीवजडकलिमलग्रसितविमूढ॥३०॥ चौपई॥ तदपिक
हीगुरवारहिवारा॥ समुझिपरीकछुमतिअनुसारा॥ भाषावद्धकरवमैसोई॥ मेरेमन
प्रवोधजेहिहोई॥ जसकछुबुधिविवेकवलमोरे॥ तसकहिहौंहियहरिकेप्रेरे॥ निज
संदेहमोहभ्रमहरनी॥ करौंकथाभवसरितातरनी॥ बुधविश्रामसकलजनरंजनी॥ रा
मकथाकलिकलुषविभंजनि॥ रामकथाकलिपन्नगभरनी॥ पुनिविवेकपावककहुं
अरनी॥ रामकथाकलिकामदगाई॥ सुजनसजीवनिमूरिसुहाई॥ सोइवसुधातल
सुधातरंगिनी॥ भयभंजनभ्रमभेकभुअंगिनी॥ असुरसेनसमनरकनिकंदनी॥ सा
धुविबुधकुलहितगिरिनंदनी॥ संतसमाजपयोधरमासी॥ विस्वभारधरअचलछमा
सी॥ जमगनमुहमसिजगजमुनासी॥ जीवनमुकुतिहेतुजनुकासी॥ रामहिप्रियपाव
नीतुलसीसी॥ तुलसीदासहितहियहुलसीसी॥ सिवप्रियमेकलसैलसुतासी॥ सकल
सिद्धिसुषसंपतिरासी॥ सदगुनसुरगनअंबअदितिसी॥ रघुवरभगतिप्रेमपरमितिसी
॥ दोहा॥ रामकथामंदाकिनीचित्रकूटचितचारु॥ तुलसीसुभगसनेहवनसियरघुवीर
विहारु॥३१॥ चौपाई॥ रामचरितचिंतामनिचारू॥ संतसुमतितियसुभगसिंगारू॥ जगमं
गलगुनग्रामरामके॥ दानीमुकुतिधनधरमधामके॥ सतगुरुज्ञानविरागजोगके॥ वि
वुधवैदभवभीमरोगके॥ जननीजनकसियरामप्रेमके॥ वीजसकलव्रतधरमनेम
के॥ समनपापसंतापसोकके॥ प्रियपालकपरलोकलोकके॥ सचिवसुभटभूपति
विचारके॥ कुंभजलोभउदधिअपारके॥ कामकोहकलिमलकरिगनके॥ केहरिसाव
कजनमनवनके॥ अतिथिपूज्यप्रियतमपुरारीके॥ कामदघनदारिददवारिके॥ मंत्रमहा
मनिविषयव्यालके॥ मेटतकठिनकुअंकभालके॥ हरनमोहतमदिनकरसे॥ सेवकसा
लिपालजलधरसे॥ अभिमतदानीदेवतरुवरसे॥ सेवतसुलभसुषदहरिहरसे॥ सुकवि
सरदनभमनउडगनसे॥ रामभगतजनजीवनधनसे॥ सकलसुकृतफलभूरिभोग
से॥ जगहितनिरुपधिसाधुलोगसे॥ सेवकमनमानसमरालसे॥ पावनगंगतरंगमा
लसे॥ दोहा॥ कुपथकुतरककुचालिकलिकपटदंभपाषंड॥ दहनरामगुनग्रामजिमि
इंधनअनलप्रचंड॥ दोहा॥ रामचरितराकेसकरसरिससुषदसबकाहु॥ सज्जनकुमु
दचकोरचितहितविसेषबडिलाहु॥३२॥ चौपाई॥ कीन्हप्रस्नजेहिभांतिभवानी॥ जेहिवि
धिसंकरकहेउवषानी॥ सोसबहेतुकहवमैगाई॥ कथाप्रबंधविचित्रबनाई॥ जेहिय
हिकथासुनिनहिहोई॥ जनिआचरजकरैसुनिसोई॥ कथाअलौकिकसुनहिजेज्ञानी॥
नहिआचरजकरैहिअसजानी॥ रामकथाकैमितिजगनाही॥ असप्रतीतितिन्हकेम
नमाही॥ नानाभांतिरामअवतारा॥ रामायनसतकोटिअपारा॥ कल्पभेदहरिचरि
तसुहाए॥ भांतिअनेकमुनीसन्हगाए॥ करियनसंसयअसउरआनी॥ सुनियकथा
सादररतिमानी॥ दोहा॥ रामअनंतअनंतगुनअमितकथाविस्तार॥ सुनिआचरजनमा
निहहिजिनकेविमलविचार॥ चौपाई॥ येहीविधिसंसयकरिसबदूरी॥ सिरधरिगुर
पदपंकजधूरी॥ पुनिसबहीविनवौंकरजोरी॥ करतकथाजिहिलागनषोरी॥ साद
रसिवहिनाइअबमाथा॥ बरनौंविसदरामगुनगाथा॥ संवतसोरहसैयकतीसा॥ क
रौंकथाहरिपदधरिसीसा॥ नौमीभौमवारमधुमासा॥ अवधपुरीयहचरितप्रकासा॥
जेहिदिनरामजनमश्रुतिगावही॥ तीरथसकलतहांचलिआवही॥ असुरनागष

गनरमुनिदेवा॥ आईकरहिरघुनायकसेवा॥ जन्ममहोत्सवरचहिसुजाना॥ करहिरा
मकलकीरतिगाना॥ दोहा॥ मज्जहिसज्जनवृंदवहुपावनसरजूनीर॥ जपहिरामधरि
ध्यानउरसुंदरस्यामशरीर॥३४॥ चौपाई॥ दरसपरसमज्जनअरुपाना॥ हरैपापकहवे
दपुराना॥ नदीपुनितमहिमाअमितअन॥ कहिनसकहिशारदाविमलमति॥
रामधामदापुरिसुहावनि॥ लोकसमस्तविदितश्रुतिपावन॥ चारिषानिजगजीवअ
पारा॥ अवधतजेतनुनहिसंसारा॥ सवविधिपुरिमनोहरजानी॥ सकलसिद्धिप्रद
मंगलषानी॥ विमलकथाकरकीन्हअरंभा॥ सुनतनसाहिकामसदंभा॥ रामचरि
तमानसएहिनामा॥ सुनतश्रवणपाईअविश्रामा॥ मनकरविषयअनलवनजर
ई॥ होईसुषीजोयेहिसरपरई॥ रामचरितमानसमुनिभावन॥ रचेउसंभुसुहावनपा
वन॥ त्रिविधदोषदुषदारिददवन॥ कलिकुचालिकुलकलुषनसावन॥ रचिमहेस
निजमानसराषा॥ पाईसुसमउसिवासनभाषा॥ तातेरामचरितमानसवर॥ धरेउ
नामहियहेरिहरषहर॥ कहौकथासोईसुषदसुहाई॥ सादरसुनहुसुजनमनला
ई॥ दोहा॥ जसमानससजेहिविधिभयेउ जगप्रचारजेहिहेत॥ अवसोईकहौप्रसंग
सवसुमिरउमाहृषकेत॥३५॥ चौपाई॥ संभुप्रसादसुमतिहियहुलसी॥ रामचरितमा
नसकवितुलसी॥ करउमनोहरमतिअनुहारी॥ सुजनसुचितसुनिलेहुसुधा
री॥ सुमिरतिभूमिथलहृदयअगाधू॥ वेदपुरानउदधिघनसाधू॥ वरषहिरामसु
जसवरवारी॥ मधुरमनोहरमंगलकारी॥ लीलासगुनजोकहहिवषानी॥ सोइस्व
छताकरैमलहारी॥ प्रेमभगतिजोवरनिनजाई॥ सोईमधुरतासुसीतलताई॥ सोजन
सुकृतसालिहितहोई॥ रामभगतिजनजीवनसोई॥ मेधामहिगतसोजलपावन॥ स
कलश्रवनमगचलेउसुहावन॥ भरेउसुमानससुथलथिराना॥ सुषदसीतरुचि
चारुचिराना॥ दोहा॥ सु‑सुंदरसंवादवरविरचेउबुद्धिविचारि॥ तेईयहिपावनसुभगस
रघाटमनोहरिचारि॥३६॥ चौपाई॥ सप्तप्रबंधसुभगसोपाना॥ ज्ञाननयननिरषतम न
नमाना॥ रघुपतिमहिमाअगुनअवाधा॥ वरनवसोईवरवारिअगाधा॥ रामसुजस
सलिलसुधासम॥ उपमावीचिविलासमनोरम॥ पुरइनसघनचारुचौपाई॥ जुगतिमंजुम
निसीपसुहाई॥ छंदसोरठासुंदरदोहा॥ सोईवहुरंगकमलकुलसोहा॥ अरथअनू
पसुभासुभासा॥ सोईपरागमकरंदसुवासा॥ सुकृतपुंजमंजुलअलिमाला॥ ज्ञान
विरागविचारमराला॥ धुनिअवरेवकवितगुनजाती॥ मीनमनोहरतेवहुभाती॥ अर
थधरमकामादिकचारी॥ करवज्ञानविज्ञानविचारी॥ दोहा॥ शृंगारवीरवीभत्सपुनि
करुनाअद्भुतहास॥ रौद्रभयानकसांतनवहोरिसकीरासि॥३७॥ चौपाई॥ नवरसजप
तपजोगविरागा॥ तेसवजलचरचारुतडागा॥ सुकृतीसाधुनामगुनगाना॥ तेवि
चित्रजलविहंगसमाना॥ संतसभाचहुंदिसिअवराई॥ श्रद्धारितुवसंतसमगाई॥
भगतिनिरूपनविविधविधाना॥ छमादयाद्रुमलतावितांना॥ संजमनेमफूलफलज्ञा
ना॥ हरिपदरतिरसवेदवषाना॥ औरोकथाअनेकप्रसंगा॥ तेसुकपिकवहुवरना
विहंगा॥ दोहा॥ पुलकवाटिकावागवनसुषसुविहंगविहारु॥ मालीसुमनसनेहज
लसिंचनलोचनचारु॥३८॥ चौपाई॥ जेगावहियहचरितसंभारे॥ तेयहितालचतुरर
षवारे॥ सदासुनहिसादरनरनारी॥ तेसुरवरमानसअधिकारी॥ अतिषलजेविषईव
गकागा॥ एहिसरनिकटनजाहिअभागा॥ संवुकभेकसिवारसमाना॥ इहानविष
यकथारसनाना॥ तेहिकारनआवतहियहारे॥ कामीकाकवलाकविचारे॥ आवततेय
हिसरअतिकठिनाई॥ रामकृपाविनआईनजाई॥ कठिनकुसंगकुपथकराला॥ ति
न्हकेवचनव्याघ्रहरिव्याला॥ ग्रहकारजनानाजंजाला॥ तेईअतिदुर्गमसैलविशा
ला॥ वनवहुविषयमोहमदमाना॥ नदीकुतर्कभयंकरनाना॥ दोहा॥ जेनश्रद्धासंव

रचवलरहितनहीसंतनकरसाथ॥ तिन्हकहुमानसअगमअतिजिन्हहिनप्रियरघुनाथ
३९॥ चौपाई॥ जोकरिकष्टजायपुनिकोई॥ जातहिनींदजुडाईहोई॥ जडतालागउविषमउरला
गा॥ गयेउनमज्जनपावअभागा॥ करिनजाईसरमज्जनपाना॥ फिरिआवैसमेतअभि
माना॥ जोवहोरकोउपूछनआवा॥ सरनिंदाकरिताहिवुझावा॥ सकलविघ्नव्यापहि
नहितेही॥ रामसुकृपाविलोकहिजेही॥ सोइसादरसरमज्जनकरई॥ महाघोरत्रयताप
नजरई॥ तेनरयहसरतजहिनकाहू॥ जिनकेरामचरनभलभाऊ॥ जोन्हाईचहएहिस
रभाई॥ सोसतसंगकरौमनलाई॥ असमानसमानसहृदयकेनेत्रचषचाही॥ भईकवि
वुधिविमलअवगाही॥ भयेउहृदयआनंदउछाहू॥ उमगेउप्रेमप्रमोदप्रवाहू॥ चलीसु
भगकवितासरितास॥ रामविमलजसजलभरितोसे॥ सरजूनामसुमंगलमूला॥
लोकवेदमतमंजुलकूला॥ नदीपुनीतसुमानसनंदनी॥ कलिमलत्रिनतरुमूल
निकंदनी॥ दोहा॥ श्रोतात्रिविधसमाजपुरग्रामनगरदुहुकूल॥ संतसभाअनुपम
अवधसकलसुमंगलमूल॥४०॥ चौपाई॥ रामभगतिसुरसरीतहजाई॥ मिलिसुकीर
तिसरजूसुहाई॥ सानुजरामसमरजसपावन॥ मिलेउमहानदसोनसुहावन॥ जुग
विचभगतिदेवधुनिधारा॥ सोहतसहितसुविरतिविचारा॥ त्रिविधतापत्रासकती
मुहानी॥ रामसुरूपसिंधुसमुहानी॥ मानसमूलमिलीसुरसरीही॥ सुनतसुजा
नमनपावनकरिही॥ विचविचकथाविचित्रविभागा॥ जनुसरितीरतीरवनवागा॥
उमामहेसविवाहवराती॥ तेजलचरअगनितवहुभांती॥ रघुवरजन्मअनंदवधाई॥
भवरतरंगमनोहरताई॥ दोहा॥ वालचरितचहुवंधुकेवनजविपुलवहुरंग॥ नृपरा
नीपरिजनसुकृतमधुकरवारिविहंग॥४१॥ चौपाई॥ सीयस्वयंवरकथासुहाई॥ सरितसु
हावनिसोछविछाई॥ नदीनावपटुप्रस्नअनेका॥ केवटकुसलउतरसविवेका॥
सुनिअनुकथनपरसपरहोई॥ पथिकसमाजसोहसरसोई॥ घोरधारभृगुनाथरिसा
नी॥ घाटसुवंधरामवरवानी॥ सानुजरामविवाहउछाहू॥ सोसुभउमगसुषदसव
काहू॥ कहतसुनतहरषहिपुलकाहीं॥ तेसुकृतीमनमुदितनहाहीं॥ रामतिल
कहितमंगलसाजा॥ परवजोगजनुजुरेसमाजा॥ काईकुमतिकेकईकेरी॥ परीजा
सुफलविपतिविनेरी॥४१॥ दोहा॥ समनअमितउतपातसवभरतचरितजपजाग॥
कलिअघषलअवगुनकथनतेजलमलवगकाग॥४२॥ चौपाई॥ कीरतिसरितछ
हूरितुरूरी॥ समयसुहावनपावनभूरी॥ हिमहिमसैलसुतासिवव्याहू॥ सिसिरसु
षदप्रभुजन्मउछाहू॥ वरनवरामविवाहसमाजू॥ सोमुदमंगलमयरितुराजू॥ ग्री
षमदुसहरामवनगवनू॥ पंथकथाषरआतपपवनू॥ वरषाघोरनिसाचररारी॥
सुरकुलसालिसुमंगलकारी॥ रामराजसुषविनयवडाई॥ विसदसुषदसोईसर
दसुहाई॥ सतीसिरोमनिसियगुनगाथा॥ सोईगुनअमलअनूपमपाथा॥
भरतसुभावसुसीतलताई॥ सदाएकरसवरनिनजाई॥ दोहा॥ अवलोकनिवोल
निमिलनिप्रीतिपरसपरहास॥ भायपभलीचहुंवंधुकीजलमाधुरीसुवास॥४३॥
॥ चौपाई॥ आरतिविनयदीनतामोरी॥ लघुताललितसुवारिनथोरी॥ अदभुतस
लिलसुननगुनकारी॥ आसपिआसमनोमलहारी॥ रामसुप्रेमहिपोषतपानी॥
हरतसकलकलिकलुषगलानी॥ भवश्रमसोषकतोषकतोषा॥ समनदुरि
तदुषदारिददोषा॥ कामकोहमदमोहनसावन॥ विमलविवेकविरागवढाव
न॥ सादरमज्जनपानकिएते॥ मिटहिपापपरितापहियेते॥ जिन्हएहिवारिनमा
नसधोए॥ तेकायरकलिकालविगोए॥ तृषितनिरषिरविकरभववारी॥ फिरह
हिमृगजिमिजीवदुषारी॥ दोहा॥ मतिअनुहारिसुवारिगुनगनिमनअन्हवाई॥
सुमिरिभवानीसंकरहिकहकविकथासुहाई॥ दोहा॥ अवरघुपतिपदपंकरुहही

6 रा॰बा॰ ८

पधरिपाईं प्रशाद ॥ कहौं जुगल मुनिवर्ज कर मिलन सुभग संवाद ॥ ४४ ॥ चौपाई ॥ भारद्वाज
मुनि वसहिं प्रयागा ॥ तिन्हहि राम पद अति अनुरागा ॥ तापस सम दम दया निधाना ॥ परमार्थ
पथ परम सुजाना ॥ माघ मकरगत रवि जब होई ॥ तीरथपतिहि आव सब कोई ॥ देव दनुज
किंनर नर श्रेनी ॥ सादर मज्जहि सकल त्रिवेनी ॥ पूजहि माधव पद जलजाता ॥ परसि अ
षय वटु हरषहि गाता ॥ भारद्वाज आश्रम अति पावन ॥ परम रम्य मुनिवर मन भाव
न ॥ तहां होहि मुनि रिषय समाजा ॥ जाहि जे मज्जन तीरथ राजा ॥ मज्जहि प्रात समेत उ
छाहा ॥ कहहि परसपर हरि गुन गाहा ॥ दोहा ॥ ब्रह्म निरूपन धर्म विधि वरनहि तत्व विभा
ग ॥ कहहि भगति भगवंत कै संजुत ज्ञान विराग ॥ ४५ ॥ चौपाई ॥ एहि प्रकार भरि माघ न
हाहीं ॥ पुनि सब निज निज आश्रम जाही ॥ प्रति संवत अति होइ अनंदा ॥ मकर मजि गवनहि
मुनि वृंदा ॥ एक बार भरि मकर नहाये ॥ सब मुनीस आश्रमन्हि सिधाए ॥ जागवलिक मु
नि परम विवेकी ॥ भारद्वाज राषे पद टेकी ॥ सादर चरन सरोज पषारे ॥ अति पुनीत आसन
वैठारे ॥ करि पूजा मुनि सुजस वषानी ॥ बोले अति पुनीत मृदु वानी ॥ नाथ एक संसय व
ड मोरे ॥ करगत वेद तत्व सब तोरे ॥ कहत सो मोहि लागत भय लाजा ॥ जौ न कहौ वड होइ अ
काजा ॥ दोहा ॥ संत कहहि असि नीति प्रभु श्रुति पुरान मुनि गाव ॥ होइ न विमल विवेक उर
गुरु सन किये दुराव ॥ ४६ ॥ चौपाई ॥ अस विचारि प्रगटौ निज मोहू ॥ हरहु नाथ करि जन प
रि छोहू ॥ राम नाम कर अमित प्रभावा ॥ संत पुरान उपनिषद गावा ॥ संतत जपत संभु
अविनासी ॥ सिव भगवान ज्ञान गुन रासी ॥ आकर चारि जीव जग अहही ॥ कासी मरत प
रम पद लहही ॥ सोपि राम महिमा मुनिराया ॥ सिव उपदेस करत करि दाया ॥ राम कव
न प्रभु पूछौ ताही ॥ कहिय बुझाइ कृपानिधि मोही ॥ एक राम अवधेस कुमारा ॥ तिन्ह कर
चरित विदित संसारा ॥ नारि विरह दुष लहेउ अपारा ॥ भयेउ रोष रन रावन मारा ॥ दोहा ॥ प्रभु सो
इ राम कि अपर कोउ जाहि जपत त्रिपुरारि ॥ सत्य धाम सर्वज्ञ तुम्ह कहहु विवेक विचारि ॥
४७ ॥ चौपाई ॥ जैसे मिटै मोर भ्रम भारी ॥ कहहु सो कथा नाथ विस्तारी ॥ जागवलिक वो
ले मुसुकाई ॥ तुम्हहि विदित रघुपति प्रभुताई ॥ राम भगत तुम मन क्रम वानी ॥ चतुरा
ई तुम्हारि मै जानी ॥ चाहहु सुनै राम गुन गूढा ॥ कीन्हीहु प्रस्न मनहु अति मूढा ॥ तात सुनहु
सादर मन लाई ॥ कहौ राम कै कथा सुहाई ॥ महा मोह महिषेस विसाला ॥ राम कथा का
लिका कराला ॥ राम कथा ससि किरन समाना ॥ संत चकोर करहि जेहि पाना ॥ ऐसेइ
संसय कीन्ह भवानी ॥ महादेव तब कहा वषानी ॥ दोहा ॥ कहौ सो मति अनुहारि अब उमा
संभु संवाद ॥ भयेउ समय जेहि हेतु जेहि सुनि मुनि मिटै विषाद ॥ ४८ ॥ चौपाई ॥ एक वार त्रे
ता जुग माही ॥ संभु गये कुंभज रिषि पाही ॥ संग सती जग जननि भवानी ॥ पूजे रिषि
अषिलेस्वर जानी ॥ राम कथा मुनिवर्ज वषानी ॥ सुनी महेस परम सुष मानी ॥ रिषि
पूछी हरि भगति सुहाई ॥ कही संभु अधिकारी पाई ॥ कहत सुनत रघुपति गुन गाथा ॥
कछु दिन तहां रहे गिरिनाथा ॥ मुनि सन विदा मागि त्रिपुरारी ॥ चले भवन संग दच्छ
कुमारी ॥ तेहि अवसर भंजन महि भारा ॥ हरि रघुवंस लीन्ह अवतारा ॥ पिता वचन तजि
राज उदासी ॥ दंडक वन विचरत अविनासी ॥ दोहा ॥ हृदय विचारत जात हर केहि विधि
दरसन होइ ॥ गुप्त रूप अवतरेउ प्रभु गये जान सब कोइ ॥ सोरठा ॥ संकर उर अति छोभु
सती न जानहि मर्मु सोइ ॥ तुलसी दरसन लोभु मन डरु लोचन लालची ॥ ४९ ॥ चौ
पाई ॥ रावन मरन मनुज कर जाचा ॥ प्रभु विधि वचन कीन्ह चह साचा ॥ जौ नहि जाउं
रहै पछितावा ॥ करत विचार न वनत वनावा ॥ एहि विधि भयेउ सोचवस ईसा ॥ तेही सम
य जाइ दससीसा ॥ लीन्ह नीच मारीचहि संगा ॥ भयेउ तुरत सो कपट कुरंगा ॥ करि छ
ल मूढ हरी वैदेही ॥ प्रभु प्रभाउ तस विदित न तेही ॥ मृग वध वंधु सहित हरि आए ॥ आ
श्रम देषि नयन जल छाए ॥ विरह विकल नर इव रघुराई ॥ षोजत विपिन फिरत दोउ

भाई ॥ कबहू जोग वियोग न जाके ॥ देषा प्रगट विरह दुष ताके ॥ दोहा ॥ अति विचित्र रघुपति च
रित जानहि परम सुजान ॥ जे मतिमंद विमोह वस हृदय धरहि कछु आन ॥ ५० ॥ चौपाई ॥ संभु
समय तेहि रामहि देषा ॥ उपजा हिय अति हरष विसेषा ॥ भरि लोचन छवि सिंधु निहारी ॥
कुसमय जानि न कीन्हि चिन्हारी ॥ जय सच्चिदानंद जग पावन ॥ अस कहि चलेउ मनोज
नसावन ॥ चले जात सिव सती समेता ॥ पुनि पुनि पुलकत कृपानिकेता ॥ सती सो द
सा संभु कै देषी ॥ उर उपजा संदेह विसेषी ॥ संकर जगतवंद्य जगदीसा ॥ सुर नर मुनि
सव नावत सीसा ॥ तिन्ह नृपसुतहि कीन्ह प्रनामा ॥ कहि सच्चिदानंद परधामा ॥ भये
उ मगन छवि तासु विलोकी ॥ अजहू प्रीति उर रहति न रोकी ॥ दोहा ॥ ब्रह्म जो व्यापक वि
रज अज अकल अनीह अभेद ॥ सो कि देह धरि होइ नर जाहि न जानत वेद ॥ ५१ ॥ चौपाई
विस्नु जो सुर हित नर तनु धारी ॥ सोउ सर्वज्ञ जथा त्रिपुरारी ॥ षोजै सो कि अज्ञ इव ना
री ॥ ज्ञान धाम श्रीपति असुरारी ॥ संभु गिरा पुनि मृषा न होई ॥ सिव सर्वज्ञ जान सव
कोई ॥ अस संसय मन भयेउ अपारा ॥ होइ न हृदय प्रवोध प्रचारा ॥ जद्यपि प्रगट
न कहेउ भवानी ॥ हर अंतरजामी सब जानी ॥ सुनहि सती तव नारि सुभाऊ ॥ संस
य अस न धरिय उर काऊ ॥ जासु कथा कुंभज रिषि गाई ॥ भगति जासु मै मुनिहि सुना
ई ॥ सोई मम इष्टदेव रघुवीरा ॥ सेवत जाहि सदा मुनि धीरा ॥ छंद ॥ मुनि धीर जोगी सि
द्ध संतत विमल मन जेहि ध्यावही ॥ कहि नेति निगम पुरान आगम जासु कीरति
गावही ॥ सोइ राम व्यापक ब्रह्म भुवन निकाय पति माया धनी ॥ अवतरेउ अ
पने भगत हित निजतंत्र नित रघुकुलमनी ॥ सोरठा ॥ लाग न उर उपदेस जदपि
कहेउ सिव वार वहु ॥ बोले विहसि महेस हरि माया वल जानि जिय ॥ ५२ ॥ चौपाई ॥ जौ तु
म्हरे मन अति संदेहू ॥ तौ किन जाइ परीछा लेहू ॥ तव लगि वैठ अहौ वट छांहीं ॥
जव लगि तुम्ह ऐहहु मोपाही ॥ जैसे जाइ मोह भ्रम भारी ॥ करेहु सो जतन विवेक वि
चारी ॥ चली सती सिव आयसु पाई ॥ करहि विचारु करौ का भाई ॥ इहां संभु अस
मन अनुमाना ॥ दच्छसुता कहु नहि कल्याना ॥ मोरेहु कहे न संसय जाही ॥ विधि
विपरीत भलाई नाही ॥ होइहि सोइ जो राम रचि राषा ॥ को करि तर्क वढावै साषा
॥ अस कहि लगे जपन हरि नामा ॥ गई सती जहां प्रभु सुषधामा ॥ दोहा ॥ पुनि पु
नि हृदय विचार करि धरि सीता कर रूप ॥ आगे होइ चलि पंथ तेहि जेहि आवत नरभू
प ॥ ५३ ॥ चौपाई ॥ लछिमन दीष उमा कृत वेषा ॥ चकित भये भ्रम हृदय विसेषा ॥
कहि न सकत कछु अति गंभीरा ॥ प्रभु प्रभाव जानत मतिधीरा ॥ सती कपट जा
नेउ सुरस्वामी ॥ सबदरसी सब अंतरजामी ॥ सुमिरत जाहि मिटै अज्ञाना ॥ सोइ
सर्वज्ञ राम भगवाना ॥ सती कीन्ह चह तहहू दुराऊ ॥ देषहु नारि सुभाउ प्रभाऊ ॥
निज माया वल हृदय वषानी ॥ बोले विहसि राम मृदु वानी ॥ जोरि पानि प्रभु की
न्ह प्रनामू ॥ पिता समेत लीन्ह निज नामू ॥ कहेउ वहोरि कहां वृषकेतू ॥ वि
पिन अकेलि फिरहु केहि हेतू ॥ दोहा ॥ राम वचन मृदु गूढ सुनि उपजा अति सं
कोचु ॥ सती सभीत महेस पहि चली हृदय वड सोचु ॥ ५४ ॥ चौपाई ॥ मै संकर कर
कहा न माना ॥ निज अज्ञान राम पर आना ॥ जाइ उतरु अव देहउं कहा ॥ उर उपजा अ
ति दारुन दाहा ॥ जाना राम सती दुष पावा ॥ निज प्रभाउ कछु प्रगट जनावा ॥ स
ती दीष कौतुक मग जाता ॥ आगे राम सहित श्री भ्राता ॥ फिरि चितवा पाछे प्रभु
देषा ॥ सहित वंधु सीय सुंदर वेषा ॥ जहं चितवहि तहं प्रभु आसीना ॥ सेवहि सि
द्ध मुनिस प्रवीना ॥ देषे सिव विधि विस्नु अनेका ॥ अमित प्रभाउ एक तें एका ॥ वं
दत चरन करत प्रभु सेवा ॥ विविधि भेष देषे सब देवा ॥ दोहा ॥ सती विधात्री इंदिरा
देषी अमित अनूप ॥ जेहि जेहि भेष अजादि सुर तेहि तेहि तन अनुरूप ॥ ५५ ॥
चौपाई ॥ देषे जहं तहं रघुपति जेते ॥ सक्तिन्ह सहित सकल सुर तेते ॥ जीव चरा
चर जो संसारा ॥ देषे सकल अनेक प्रकारा ॥ पूजहि प्रभुहि देव वहु वेषा ॥ राम रू

पुहुसरन हि देषा ॥ अवलोके रघुपति बहुतेरे ॥ सीता सहित न वेष घनेरे ॥ सोई रघुवर सो
ई लछिमन सीता ॥ देषि सती अति भई सभीता ॥ हृदय कंप तन सुधि कछु नाही ॥ नय
न मूंदि बैठी मग माही ॥ बहुरि बिलोकेउ नयन उघारी ॥ कछु न दीष तहं दछकुमा
री ॥ पुनि पुनि नाइ राम पद सीसा ॥ चली तहां जहां रहे गिरीसा ॥ दोहा ॥ गई समी
प महेस तब हसि पूछी कुसलात ॥ लीन्हि परिछा कवन बिधि कहहु सत्य सब बा
त ॥ ५५ ॥ चौपाई ॥ सती समुझि रघुबीर प्रभाऊ ॥ भय बस सिव सन कीन्ह दुराऊ ॥ क
छु न परिछा लीन्हि गोसाई ॥ कीन्ह प्रनाम तुम्हारिहि नाई ॥ जो तुम्ह कहा सो मृषा न
होई ॥ मोरे मन प्रतीति अस सोई ॥ तब संकर देषेउ धरि ध्याना ॥ सती जो कीन्ह चरि
त सब जाना ॥ बहुरि राम मायाहि सिरु नावा ॥ प्रेरि सतीहि जेहि झूठ कहा
वा ॥ हरि इछा भावी बलवाना ॥ हृदय बिचारत संभु सुजाना ॥ सती कीन्ह सीता
कर वेषा ॥ सिव उर भयउ बिषाद बिसेषा ॥ जो अब करौ सती सन प्रीति ॥ मिटै भगति
पथु होइ अनीती ॥ दोहा ॥ परम पुनीत न जाइ तजि किये प्रेम बड पापु ॥ प्रगटि न कहत
महेस कछु हृदय अधिक संतापु ॥ ५७ ॥ चौपाई ॥ तब संकर प्रभु पद सिरु नावा ॥ सु
मिरत राम हृदय अस आवा ॥ येहि तन सतीहि भेटि मोहि नाही ॥ सिव संकल्प की
न्ह मन माही ॥ अस विचारि संकर मतिधीरा ॥ चले भवन सुमिरत रघुबीरा ॥ चल
त गगन भै गिरा सुहाई ॥ जय महेस भलि भगति दृढाई ॥ अस पन तुम्ह बिनु क
रै को आना ॥ राम भगत समरथ भगवाना ॥ सुनि नभ गिरा सती उर सोचा ॥ पू
छा तासिव हि समेत सकोचा ॥ कीन्ह कवन पन कहहु कृपाला ॥ सत्यधाम प्रभु दी
नदयाला ॥ जद्यपि सती पूछा बहु भांती ॥ तदपि न कहेउ त्रिपुर आराती ॥ दोहा ॥ स
ती हृदय अनुमान कीये सिव जानेउ सर्वज्ञ ॥ कीन्ह कपट मै संभु सन नारि सहज
जड अज्ञ ॥ सोरठा ॥ जल पय सरिस बिकाइ देषहु प्रीति कि रीति भलि ॥ बिलग हो
त रस जाइ कपट षटाई परत हि ॥ ५८ ॥ चौपाई ॥ हृदय सोचु समुझत निज करनी ॥
चिंता अमित जाय नहि बरनी ॥ कृपासिंधु सिव परम अगाधा ॥ प्रगट न कहेउ मोर
अपराधा ॥ संकर रुष अवलोकि भवानी ॥ प्रभु मोहि तजेउ हृदय अकुलानी ॥ नि
ज अघ समुझि न कछु कहि जाई ॥ तपै अवां इव उर अधिकाई ॥ सतीहि ससोच जान
हृषकेतू ॥ कही कथा सुंदर सुषहेतू ॥ बरनत पंथ बिबिध इतिहासा ॥ बिस्वना
थ पहुंचे कैलासा ॥ तहां पुनि संभु समुझि पन आपन ॥ बैठे बट तर करि कमलासन
॥ संकर सहज सरूप संभारा ॥ लागि समाधि अषंड अपारा ॥ दोहा ॥ सती बसहि
कैलास तब अधिक सोच मन माहि ॥ मरम न कोऊ जान कछु जुग सम दिवस सि
राही ॥ ५९ ॥ चौपाई ॥ नित नव सोच सती उर भारा ॥ कब जैहौ दुष सागर पारा ॥ मै जो
कीन्ह रघुपति अपमाना ॥ पुनि पति बचन मृषा करि जाना ॥ सो फल मोहि बिधा
ता दीन्हा ॥ जो कछु उचित रहा सोई कीन्हा ॥ अब बिधि अस बूझीय नही तोही ॥ संक
र बिमुष जिआवसि मोही ॥ कहि न जाइ कछु हृदय गलानी ॥ मन महु रामहि
सुमिर सयानी ॥ जो प्रभु दीनदयाल कहावा ॥ आरतहरन बेद जसु गावा ॥
तो मै बिनय करौ कर जोरी ॥ छूटै वेगि देह यह मोरी ॥ जो मोरे सिव चरन सने
हू ॥ मन क्रम बचन सत्य ब्रत येहू ॥ दोहा ॥ तो समदरसी सुनिय प्रभु करौ सो बेगि
उपाइ ॥ होइ मरन जेहि बिनहि श्रम दुसह बिपति बिहाइ ॥ चौपाई ॥ येहि बिधि दु
षित प्रजेस कुमारी ॥ अकथ्य नीय दारुन दुष भारी ॥ बीते संबत सहस सतासी ॥
तजि समाधि संभु अबिनासी ॥ राम नाम सिव सुमिरन लागे ॥ जानेउ सति
जगत पति जागे ॥ जाइ संभु पद बंदन कीन्हा ॥ सनमुष संकर आसन दीन्हा
लागे कहन हरि कथा रसाला ॥ दछ प्रजेस भये तेहि काला ॥ देषा बिधि बि
चारि सब लायक ॥ दछहि कीन्ह प्रजापति नायक ॥ बड अधिकार दछ जब पा
वा ॥ अति अभिमान हृदय तब आवा ॥ नहि कोउ अस जनमा जग माही ॥ प्र

भुता पाइ जाइ मद नाही ॥ दोहा ॥ दछि लिए मुनि बोलि सब करन लगे बड जाग ॥ नेव
ते सादर सकल सुर जे पावत मष भाग ॥ ६० ॥ चौपाई ॥ किंनर नाग सिद्ध गंधर्वा ॥ बधुन्ह
समेत चले सुर सर्वा ॥ बिस्नु बिरंचि महेस बिहाई ॥ चले सकल सुर जान बनाई ॥ सती बिलोके
व्योम बिमाना ॥ जात चले सुंदर बिधि नाना ॥ सुर सुंदरी करहि कल गाना ॥ सुनत श्र
वन छुटहि मुनि ध्याना ॥ पूछेउ तब सिव कहेउ बषानी ॥ पिता जग्य सुनि कछु हरषा
नी ॥ जो महेस मोहि आयसु देही ॥ कछु दिन जाइ रहौ मिस येही ॥ पति परित्याग हृ
दय दुष भारी ॥ कहै न निज अपराध बिचारी ॥ बोलि सती मनोहर बानी ॥ भय सकोच प्रे
म रस सानी ॥ दोहा ॥ पिता भवन उत्सव परम जौ प्रभु आयसु होइ ॥ तौ मै जाउ कृपा
इतन सादर देषन सोइ ॥ ६२ ॥ चौपाई ॥ कहेहु नीक मोरेहु मन भावा ॥ यह अनुचित नहि
नेवत पठावा ॥ दछ सकल निज सुता बुलाई ॥ हमरे बयर तुम्हौ बिसराई ॥ ब्रह्म सभा हम
सन दुष माना ॥ तेहि ते अजहु करहि अपमाना ॥ जौ बिनु बोले जाहु भवानी ॥ रहै न सी
ल सनेह न कानी ॥ जद्यपि मित्र प्रभु पितु गुर गेहा ॥ जाइ बिनु बोले न संदेहा ॥ तदपि बि
न्हु बोले न संदेहा ॥ तदपि बिरोध मान जहं कोई ॥ तहां गये कल्यान न होई ॥ भांति अने
क संभु समुझावा ॥ भावी बस न ग्यान उर आवा ॥ कह प्रभु जाहु जो बिनहि बुलाए ॥ नहि
भलि बात हमारे भाए ॥ दोहा ॥ कहि देषा हर जतन बहु रहै न दछकुमारि ॥ दिये मुष्य ग
न संग तब बिदा कीन्ह त्रिपुरारि ॥ ६३ ॥ चौपाई ॥ पिता भवन जब गई भवानी ॥ दछ त्रा
स काहु न सनमानी ॥ सादर भलेहि मिली एक माता ॥ भगिनी मिली बहुत मुसुका
ना ॥ दछ न कछु पूछी कुसलाता ॥ सतीहि बिलोकि जरे सब गाता ॥ सती जाइ देषेउ त
ब जागा ॥ कतहु न दीष संभु कर भागा ॥ तब चित चढेउ जो संकर कहेऊ ॥ प्रभु अपमान स
मुझि उर दहेऊ ॥ पाछिल दुष न हृदय अस ब्यापा ॥ जस यह भयेउ महा परितापा ॥ जद्यपि
जग दारुन दुष नाना ॥ सब ते कठिन जाति अपमाना ॥ समुझि सो सतीहि भया अति क्रो
धा ॥ बहु बिधि जननी कीन्ह प्रबोधा ॥ दोहा ॥ सिव अपमान न जाइ सहि हृदय न होइ प्र
बोध ॥ सकल सभहि हठि हटकि तब बोली बचन सक्रोध ॥ ६४ ॥ चौपाई ॥ सुनहु सभा
सद सकल मुनिंदा ॥ कही सुनी जिन्ह संकर निंदा ॥ सो फल तुरत लहब सब काहू ॥ भली
भांति पछिताब पिताहू ॥ संत संभु श्रीपति अपबादा ॥ सुनिय जहां तहां असि मरजा
दा ॥ काटिय तासु जीभ जो बसाई ॥ श्रवन मूदि न त चलिय पराई ॥ जगदातमा महेस त्रि
पुरारी ॥ जगत जनक सब के हितकारी ॥ पिता मंदमति निंदत तेही ॥ दछ सुक्र संभ
व यह देही ॥ तजिहौ तुरत देह तेहि हेतू ॥ उर धरि चंद्रमौलि बृषकेतू ॥ अस कहि जो
ग अगिनि तनु जारा ॥ भयउ सकल मष हाहाकारा ॥ दोहा ॥ सती मरनु सुनि संभु ग
न लगे करन मष षीस ॥ जग्य बिधंस बिलोकि भृगु रछा कीन्ह मुनीस ॥ ६५ ॥ चौपा
ई ॥ समाचार सब संकर पाए ॥ बीरभद्र करि कोप पठाए ॥ जग्य बिधंस जाइ तिन्ह कीन्हा
सकल सुरन बिधिवत फल दीन्हा ॥ भै जग बिदित दछ गति सोई ॥ जसि कछु संभु बिमु
ष कै होई ॥ यह इतिहास सकल जग जानी ॥ ताते मै संछेप बषानी ॥ सती मरत हरि
सन बर मांगा ॥ जनम जनम सिव पद अनुरागा ॥ तेहि कारन हिमगिरि ग्रह जाई ॥ ज
न्मी पारबती तनु पाई ॥ जब ते उमा सैल ग्रह जाई ॥ सकल सिद्धि संपति तहं छाई ॥ ज
हां तहां मुनिन्ह सुआस्रम कीन्हे ॥ उचित बास हिम भूधर दीन्हे ॥ दोहा ॥ सदा सुमन
फल सहित सब द्रुम नव नाना जाति ॥ प्रगटी सुंदर सैल पर मनि आकर बहु भांति ॥
६६ ॥ चौपाई ॥ सरिता सब पुनीत जल बहही ॥ षग मृग मधुप सुषी सब रहही ॥ सह
ज बयर सब जीवन्ह त्यागा ॥ गिरि पर सकल करहि अनुरागा ॥ सोह सैल गिरिजा
ग्रह आए ॥ जिमि जन राम भगति के पाए ॥ नित नूतन मंगल ग्रह तासू ॥ ब्रह्मादिक गा
वहि जसु जासू ॥ नारद समाचार सब पाए ॥ कौतुक ही गिरि गेह सिधाए ॥ सैलराज बड

आदरकीन्हा॥ पदपषारिवरआसनदीन्हा॥ नारिसहितमुनिपदसीरुनावा॥ चरनसलि
लिसबभवनसेचावा॥ निजसोभाग्यबहुतगिरिवरना॥ सुताबोलीमेलिमुनिचरना॥
दोहा॥ त्रिकालग्यसर्वग्यतुम्हगतिसर्वत्रतुम्हारि॥ कहहुसुताकेदोषगुनमुनिवरहृद
यविचारि॥ ६७॥ चौपाई॥ कहमुनिविहसिगूढमृदुवानी॥ सुतातुम्हारिसकलगुन
षानी॥ सुंदरसहजसुसीलसयानी॥ नामउमाअंविकाभवानी॥ सवलछनसंपं
न्नकुमारी॥ होइहिसंततपियहिपियारी॥ सदाअचलएहिकरअहिवाता॥ एहितेंजि
सुपैहहिपितुमाता॥ होइहिपुज्यसकलजगमाही॥ एहिकरनामसुमिरिहिंनारी
त्रियचढहहिपतिव्रतअसिधारी॥ सैलसुलछनसुतातुम्हारी॥ सुनहुजेअवअव
गुनदुइचारी॥ अगुनअमानमातपितुहीना॥ उदासीनसवसंसयछीना॥ दोहा॥ जोगि
जटिलअकाममनगननअमंगलवेष॥ असस्वामीएहिकहमिलिहिपरीहस्तअसि
रेष॥ सुनिमुनिगिरासत्यजियजानी॥ दुषदंपतिउमाहरषानी॥ नारदहूयहभेद
नजाना॥ दसाएकसमुझितविलगाना॥ सकलसषीगिरिजागिरिमैना॥ पुलक
सरीरभरेजलनयना॥ होइनमृषादेवरिषिभाषा॥ उमासोवचनहृदयधरिराषा॥ उ
पजेउसिवपदकमलसनेहू॥ मिलनकठिनमनभासंदेहू॥ जानिकुअवसरप्रीतिदु
राई॥ सषीउछंगवैठीपुनिजाई॥ झूठनहोइदेवरिषिवानी॥ सोचहिंदंपतिसषीस
यानी॥ उरधरिधीरकहइगिरिराऊ॥ कहहुनाथकाकरियउपाऊ॥ दोहा॥ कहमुनि
सहिमवंतसुनुजोविधिलिषालिलार॥ देवदनुजनरनागमुनिकोउनमेटनहार
॥ ६९॥ चौपाई॥ तदपिएकमैकहउँउपाई॥ होइकरैजोदैउसहाई॥ जसवरमैवरनें
उँतुम्हपाही॥ मिलिहिउमहितससंसयनाही॥ जेजेवरकेदोषवषाने॥ तेसबसिव
पहिमैअनुमाने॥ जोविवाहसंकरसनहोई॥ दोषौगुनसमकहसबकोई॥ जोअ
हिसेजसयनहरिकरही॥ बुधकछुतिन्हकरदोषनधरही॥ भानुकृसानुसर्वरसषाही॥
तिन्हकहमंदकहतकोउनाई॥ सुभअरुअसुभसलिलसबवहही॥ सुरसरिकोअप
नीतनकहई॥ समरथकहुनहिदोषगुसांई॥ रविपावकसुरसरिकीन्हाई॥ दोहा॥
जोअससंघ्याकरहिनरजडविवेकअभिमान॥ परहिकलपभरिनरकमहुजीवकिई
ससमान॥ ७०॥ चौपाई॥ सुरसरिजलकृतवारुनीजाना॥ कवहुनसंतकरहिते
हिपाना॥ सुरसरिमिलेसोपावनजैसें॥ ईसअनीसहिअंतरतैसें॥ संभुसहजस
मरथभगवाना॥ एहिविवाहसवविधिकल्याना॥ दुराराध्यपैअहहिमहेसू॥ आ
सुतोषपुनिकियेकलेसू॥ जौतपकरैकुमारितुम्हारी॥ भाविउमेटसकहिंत्रिपुरारी
जद्यपिवरअनेकजगमाही॥ एहिकहसिवतजिदूसरनाही॥ वरदायकप्रनता
रतिभंजन॥ कृपासिंधुसेवकमनरंजन॥ इछितफलविनुसिवअवराधे॥ लहहि
अनकोटिजोगजपसाधे॥ दोहा॥ असकहिनारदसुमिरिहरिगिरिजहिदीन्हअसी
स॥ होइहियहकल्यानअवसंसयतजहुगिरीस॥ ७१॥ चौपाई॥ कहअसब्रह्म
भवनमुनिगयेऊ॥ आगिलचरितसुनहुजसभयेऊ॥ पतिहिएकांतपाइकहमै
ना॥ नाथनमैसमुझेमुनिवैना॥ जौघरवरकुलहोइअनूपा॥ करिअविवाहसु
ताअनुरूपा॥ नतकन्यावरुरहौकुमारी॥ कंतउमाममप्रानपिआरी॥ जोनमि
लिहिवरगिरिजाहिजोगू॥ गिरिजडसहजकहहिसबलोगू॥ सोइविचारपति
करेहुविवाहू॥ जेहिनवहोरिहोइउरदाहू॥ असकहिपरीचरनधरिसीसा॥
वोलेसहितसनेहगिरीसा॥ वरुपावकप्रगटैससिमाही॥ नारदवचनअन्यथा
नाही॥ दोहा॥ प्रियासोचपरिहरहुअवसुमिरहुश्रीभगवान॥ पारवतिहिनि
रमयउजेहिसोइकरहिकल्यान॥ चौपाई॥ अवजोतुम्हहिसुतापरनेहू॥ तौअसजाइ
सिषावनदेहू॥ करैसोतपजिहिमिलहिमहेसू॥ आनउपायनमिटहिकलेसू॥
नारदवचनसगर्भसहेतू॥ सुंदरसवगुननिधिवृषकेतू॥ असविचारतुम्हतजहु

हुअनेका॥ सबहीभांतिसंकरअकलंका॥ सुनिपतिवचनहरषिमनमाही॥ गई
तुरतउठिगिरिजापाही॥ उमहिविलोकिनयननभरिवारी॥ सहितसनेहगोदवैठारी॥
वारहिवारलेतउरलाई॥ गदगदकंठनकछुकहीजाई॥ जगतमातुसर्वग्यभवानी॥
मातुसुषदवोलीमृदुवानी॥ दोहा॥ सुनहुमातुमैदीषअससपनसुनावउतोहि
॥ सुंदरगौरसुविप्रवरअसउपदेसेउमोहि॥ ७३॥ चौपाई॥ करहुजाइतपसैलकु
मारी॥ नारदकहासोसत्यविचारी॥ मातपिताहियहूपुनिमनभावा॥ तपसुषप
दुषदोषनसावा॥ तपवलरचैप्रपंचविधाता॥ तपवलविस्नुसकलजगत्राता
तपवलसंभुकरहिसंघारा॥ तपवलसेषधरैमहिभारा॥ तपअधारसबसृष्टिभवा
नी॥ करहुजाइतपअसजीयजानी॥ सुनतवचनविसमितमहतारी॥ सपनसुनायौ
गिरिहिहंकारी॥ मातपिताहिवहुविधिसमुझाई॥ चलीउमातपहितहरषाई॥ प्रिय
परिवारपिताअरुमाता॥ भयेविकलमुषआवनवाता॥ दोहा॥ वेदसिरामुनिआइ
तवसवहिकहासमुझाई॥ पारवतीमहिमासुनतरहेप्रवोधहिपाइ॥ ७४॥ चौपाई॥
उरधरिउमाप्रानपतिचरना॥ जाइविपिनलागीतपुकरना॥ अतिसुकुमारिन
तनुजोगू॥ पतिपदसुमिरितजेउसबभोगू॥ नितनवचरनउपजअनुरागा॥ वि
सरीदेहतपहिमनलागा॥ संवतसहससमूलफलषाये॥ सागषाइसतवर्षगं
वाये॥ कछुदिनभोजनवारिवतासा॥ कियेकठिनकछुदिनउपवासा॥ वेलप
त्रमहिपरेसुषाई॥ तीनसहससंवतसोइषाई॥ पुनिपरिहरेउसुषानेउपाना॥ उम
हिनामतवभयेउअपरना॥ देषिउमहितपषीनसरीरा॥ ब्रह्मगिरामैगगनगंभीरा॥ दो
हा॥ भयेउमनोरथसुफलतवसुनुगिरिराजकुमारि॥ परिहरुदुसहकलेससवअ
वमिलिहहित्रिपुरारि॥ ७५॥ चौपाई॥ असतपुकाहुनकीन्हभवानी॥ भयेअनेकधीरमु
निग्यानी॥ अवउरधरहुब्रह्मवरवानी॥ सत्यसदासंततसुचिजानी॥ आवैपिताबुला
वनजवही॥ हठपरिहरिघरजायेउतवही॥ मिलहितुम्हहिजवसप्तरिषीसा॥ जानेहु
तवप्रमानवागीसा॥ सुनतगिराविधिगगनवषानी॥ पुलकगातगिरिजाहरषानी॥
उमाचरितसुंदरमैगावा॥ सुनहुसंभुकरचरितसुहावा॥ जववतेसतीजाइतनुत्या
गा॥ तववतेसिवमनभयेउविरागा॥ जपहिसदारघुनायकनामा॥ जहतहसुनहि
रामगुनग्रामा॥ दोहा॥ चिदानंदसुषधामसिवविगतमोहमदकाम॥ विचरहिमहि
धरिहृदयहरिसकललोकअभिराम॥ ७६॥ चौपाई॥ कतहुमुनिन्हउपदेसहिग्याना॥
कतहुरामगुनकरहिवषाना॥ जदपिअकामतदपिभगवाना॥ भगतविरहदुषदुषि
तसुजाना॥ एहिविधिगयेउकालवहुवीती॥ नितनैहोइरामपदप्रीती॥ नेमप्रेमसं
करकरदेषा॥ अविचलहृदयभगतिकैरेषा॥ प्रगटेरामकृतग्यकृपाला॥ रूपसील
निधितेजविसाला॥ वहुप्रकारसंकरहिसराहा॥ तुम्हविनुअसव्रतकोनिरवाहा॥
वहुविधिराममिवहिसमुझावा॥ पारवतीकरजन्मसुनावा॥ अतिपुनीतगिरिजाकै
करनी॥ विस्तारसहितकृपानिधिवरनी॥ दोहा॥ अवविनतीममसुनहुसिवजौमो
परनिजनेहु॥ जाइविवाहुसैलजहियहमोहिमागेदेहु॥ ७७॥ चौपाई॥ कहसिवज
दपिउचितअसनाही॥ नाथवचनपुनिमेटिनजाही॥ सिरधरिआयसुकरियतुम्हारा॥ प
रमधरमयहनाथहमारा॥ मातपितागुरप्रभुकैवानी॥ विनहिविचारकरियसुभ
जानी॥ तुम्हसवभांतिपरमहितकारी॥ अग्यासिरपरनाथतुम्हारी॥ प्रभुतोषेउसुनि
संकरवचना॥ भक्तिविवेकधर्मजुतरचना॥ कहप्रभुहरतुम्हारपनरहेऊ॥ अवउररा
षेजोहमकहेऊ॥ अंतरध्यानभयेअसभाषी॥ संकरसोइमूरतिउरराषी॥ तवहिसप्त
रिषिसिवपहिआए॥ वोलेप्रभुअतिवचनसुहाए॥ दोहा॥ पारवतीपहजाइतुम्हप्रेम

परिछालेहु ॥ गिरिहि प्रेरि पठएहु भवन दूरि करेहु संदेहु ॥ ७८ ॥ चौपाई ॥ तब रिषि तुरत
गौरी पहि गयेऊ ॥ देखि दसा मन बिसमय भयेऊ ॥ रिषिन्ह गौरि देखी तह कैसी ॥ मूरतिवं
त तपस्या जैसी ॥ बोले मुनि सुनु सैलकुमारी ॥ करहु कवन कारन तपु भारी ॥ कहि
अवराधहु का तुम्ह चहहू ॥ हम सन सत्य मरम किन कहहू ॥ सुनत रिषिन्ह के बचन
भवानी ॥ बोली गूढ मनोहर बानी ॥ कहत बचन मन अति सकुचाई ॥ हसिहहु सुन
हमारि जडताई ॥ मन हठ परा न सुनै सिखावा ॥ चहत बारि पर भीत उठावा ॥ नारद कहा
सत्य सोई जानी ॥ बिनु पंखन्ह हम चहहि उडानी ॥ देखहु मुनि अबिबेक हमारा ॥ चाहिय
सदा सिवहि भरतारा ॥ दोहा ॥ सुनत बचन बिहसे रिषय गिरिसंभव तव देहु ॥ नारद कर
उपदेस सुनि कहहु बसेउ किसु गेहु ॥ ७९ ॥ चौपाई ॥ दछसुतन्ह उपदेसेन्हि जाई ॥ तिन्ह
फिरि भवन न देखा आई ॥ चित्रकेतु कर घरु उन्ह घाला ॥ कनककसिपु कर पुनि अस हाला
नारद सिख जे सुनहि नर नारी ॥ अवसि होहि तजि भवन भिखारी ॥ मन कपटी तन सज्जन
चीन्हा ॥ आपु सरिस सबही चह कीन्हा ॥ तेहि के बचन मानि बिस्वासा ॥ तुम्ह चाहहु पति सहज
उदासा ॥ निर्गुन निलज कुबेष कपाली ॥ अकुल अगेह दिगंबर ब्याली ॥ कहहु कवन
सुख अस बरु पाए ॥ भल भूलिहु ठग के बौराए ॥ पंच कहे सिव सती बिबाही ॥ पुनि अवडे
रि मराएन्हि ताही ॥ दोहा ॥ अब सुख सोवत सोचु नहि भीख मागि भव खाहि ॥ सहज एका
कीन्ह के भवन कबहु कि नारि खटाहि ॥ ८० ॥ चौपाई ॥ अजहू मानहु कहा हमारा ॥ हम तु
म्ह कहु बरु नीक बिचारा ॥ अति सुंदर सुचि सुखद सुसीला ॥ गावहि बेद जासु जस ली
ला ॥ दूषन रहित सकल गुन रासी ॥ श्रीपति पुर बैकुंठ निवासी ॥ अस बरु तुम्हहि मि
लाउब आनी ॥ सुनत बिहसि कह बचन भवानी ॥ सत्य कहेहु गिरिभव तनु एहा ॥ ह
ठ न छूट छूटै बरु देहा ॥ कनकउ पुनि पषान ते होई ॥ जारेहु सहजु न परिहर सोई ॥ ना
रद बचन न मै परिहरऊ ॥ बसौ भवनु उजरौ नहि डरऊ ॥ गुर के बचन प्रतीति न जेही ॥ सप
नेहु सुगम न सुख सिधि तेही ॥ दोहा ॥ महादेव अवगुन भवन बिष्नु सकल गुन धाम ॥
जेहि कर मनु रम जाहि सन तेहि तेही सन काम ॥ ८१ ॥ चौपाई ॥ जौ तुम्ह मिलतेहु प्रथ
म मुनीसा ॥ सुनतिउ सिख तुम्हारि धरि सीसा ॥ अब मै जन्मु संभु हित हारा ॥ को गु
न दूषन करै बिचारा ॥ जौ तुम्हरे हठ हृदय बिसेषी ॥ रहि न जाइ बिनु किये बरेषी ॥ तौ
कौतुकिअन्ह आलसु नाही ॥ बर कन्या अनेक जग माही ॥ जन्म कोटि लगि रगर हमा
री ॥ बरौ संभु न त रहौ कुमारी ॥ तजौ न नारद कर उपदेसू ॥ आपु कहहि सत बार म
हेसू ॥ मै पा परौ कहइ जगदंबा ॥ तुम्ह गृह गवनहु भयउ बिलंबा ॥ देखि प्रेमु बोले मु
नि ग्यानी ॥ जय जय जगदंबिके भवानी ॥ दोहा ॥ तुम्ह माया भगवान सिव सकल ज
गत पितु मातु ॥ नाइ चरन सिर मुनि चले पुनि पुनि हरषित गातु ॥ ८२ ॥ चौपाई ॥ जाइ
मुनिन्ह हिमवंत पठाये ॥ करि बिनती गिरिजहि ग्रह ल्याये ॥ बहुरि सप्तरिषि सिव पा
हि जाई ॥ कथा उमा कै सकल सुनाई ॥ भा मगन सिव सुनत सनेहा ॥ हरषि सप्तरिषि गव
ने गेहा ॥ मन थिर करि तब संभु सुजाना ॥ लगे करन रघुनायक ध्याना ॥ तारक
असुर भयेउ तेहि काला ॥ भुज प्रताप बल तेज बिसाला ॥ तेहि सब लोक लोकपति जीते ॥
भये देव सुख संपति रीते ॥ अजर अमर सो जीति न जाई ॥ हारे सुर करि बिबिध लराई ॥
तब बिरंचि सन जाइ पुकारे ॥ देखे बिधि सब देव दुखारे ॥ दोहा ॥ सब सन कहा बुझाइ बि
धि दनुज निधन तब होइ ॥ संभु सुक्र संभूत सुत एहि जीतै रन सोइ ॥ ८३ ॥ चौपाई ॥
मोर कहा सुनि करहु उपाई ॥ होइहि ईस्वर करिहि सहाई ॥ सती जो तजी दच्छ मख देहा ॥
जनमी जाइ हिमाचल गेहा ॥ तेहि तपु कीन्ह संभु पति लागी ॥ सिव समाधि बैठे सबु त्या
गी ॥ जदपि अहै असमंजस भारी ॥ तदपि बात एक सुनहु हमारी ॥ पठवहु कामु जाइ सि

व पाही ॥ करै छोभु संकर मन माही ॥ तब हम जाइ सिवहि सिर नाई ॥ करवाउब बिबाहु
बरिआई ॥ एहि बिधि भलेहि देवहित होई ॥ मत अति नीक कहै सबु कोई ॥ अस्तुति सु
रन्ह कीन्हि अति हेतू ॥ प्रगटेउ बिषमबान झषकेतू ॥ दोहा ॥ सुरन्ह कही निज बिपति
सब सुनि मन कीन्ह बिचार ॥ संभु बिरोध न कुसल मोहि बिहसि कहेउ अस मार ॥
८४ ॥ चौपाई ॥ तदपि करब मै काजु तुम्हारा ॥ श्रुति कह परम धरम उपकारा ॥ पर हित
लागि तजै जो देही ॥ संतत संत प्रसंसहि तेही ॥ अस कहि चलेउ सबहि सिरु नाई ॥
सुमन धनुष कर सहित सहाई ॥ चलत मार अस हृदय बिचारा ॥ सिव बिरोध ध्रुव
मरनु हमारा ॥ तब आपन प्रभाउ बिस्तारा ॥ निज बस कीन्ह सकल संसारा ॥ को
पेउ जबहि बारिचरकेतू ॥ छन महु मिटे सकल श्रुति सेतू ॥ ब्रह्मचर्ज ब्रत संजम ना
ना ॥ धीरज धरम ग्यान बिग्याना ॥ सदाचार जप जोग बिरागा ॥ सभय बिबेक कटकु स
ब भागा ॥ छंद ॥ भागेउ बिबेकु सहाइ सहित सो सुभट संजुग महि मुरे ॥ सदग्रंथ प
र्बत कंदरन्हि महु जाइ तेहि अवसर दुरे ॥ होनिहार का करतार को रखवार जग खरभ
रु परा ॥ दुइ माथ केहि रतिनाथ जेहि कहु कोपि कर धनु सरु धरा ॥ दोहा ॥ जे सजी
व जग अचर चर नारि पुरुष अस नाम ॥ ते निज निज मरजाद तजि भये सकल
बस काम ॥ ८५ ॥ चौपाई ॥ सब के हृदय मदन अभिलाषा ॥ लता निहारि नवहि तरु
साषा ॥ नदी उमगि अंबुधि कहु धाई ॥ संगम करहि तलाव तलाई ॥ जह असि दसा
जडन्ह कै बरनी ॥ को कहि सकै सचेतन करनी ॥ पसु पच्छी नभ जल थल चारी ॥ भ
ये काम बस समय बिसारी ॥ मदन अंध ब्याकुल सब लोका ॥ निसि दिनु नहि अवलो
कहि कोका ॥ देव दनुज नर किंनर ब्याला ॥ प्रेत पिसाच भूत बेताला ॥ इन्ह कै दसा न
कहेउ बषानी ॥ सदा काम के चेरे जानी ॥ सिद्ध बिरक्त महामुनि जोगी ॥ तेपि काम
बस भये बियोगी ॥ छंद ॥ भये काम बस जोगीस तापस पावरन्ह की को कहै ॥ दे
षहि चराचर नारिमय जे ब्रह्ममय देषत रहे ॥ अबला बिलोकहि पुरुषमय जगु
पुरुष सब अबलामयं ॥ दुइ दंड भरि ब्रह्मांड भीतर कामकृत कौतुक अयं ॥ सोरठा ॥
धरी न काहू धीर सब के मन मनसिज हरे ॥ जे राखे रघुबीर ते उबरे तेहि काल महु ॥ ८६
चौपाई ॥ उभय घरी अस कौतुक भयेऊ ॥ जब लगि कामु संभु पहि गयेऊ ॥ सिवहि बि
लोकि ससंकेउ मारू ॥ भयेउ जथाथिति सबु संसारू ॥ भये तुरत जग जीव सुखा
रे ॥ जिमि मद उतरि गये मतवारे ॥ रुद्रहि देखि मदन भय माना ॥ दुराधरष दुर्गम भग
वाना ॥ फिरत लाज कछु करि नहि जाई ॥ मरनु ठानि मन रचेसि उपाई ॥ प्रगटेसि तु
रत रुचिर रितुराजा ॥ कुसुमित नव तरु राजि बिराजा ॥ बन उपबन बापिका तडागा ॥
परम सुभग सब दिसा बिभागा ॥ जह तह जनु उमगत अनुरागा ॥ देखि मुएहु
मन मनसिज जागा ॥ छंद ॥ जागै मनोभव मुएहु मन बन सुभगता न परै कही ॥
सीतल सुगंध सुमंद मारुत मदन अनल सषा सही ॥ बिकसे सरन्हि बहु कंज गुं
जत पुंज मंजुल मधुकरा ॥ कलहंस पिक सुक सरस रव करि गान नाचहि अपछ
रा ॥ दोहा ॥ सकल कला करि कोटि बिधि हारेउ सेन समेत ॥ चली न अचल समाधि
सिव कोपेउ हृदय निकेत ॥ ८७ ॥ चौपाई ॥ देषि रसाल बिटप बर साषा ॥ तेहि पर च
ढेउ मदन मन माषा ॥ सुमन चाप निज सर संधाने ॥ अति रिस ताकि श्रवन लगि
ताने ॥ छाडे बिषम बिसिष उर लागे ॥ छूटि समाधि संभु तब जागे ॥ भयेउ ईस
मन छोभु बिसेषी ॥ नयन उघारि सकल दिसि देषी ॥ सौरभ पल्लव मदन बिलो
का ॥ भयेउ कोपु कंपेउ त्रैलोका ॥ तब सिव तीसर नयन उघारा ॥ चितवत कामु भये
उ जरि छारा ॥ हाहाकार भयेउ जग माही ॥ डरपे सुर भयेउ असुर सुषाही ॥ समुझि

रा॰ बा॰
१०

कामस्रवसोचहिंभोगी॥भयेअकंटकसाधकजोगी॥छंद॥जोगीअकंटकभयपति
गतिसुनतरतिमुरछितभई॥रोदतिबदतिबहुभांति॥करुनाकरतसंकरपहिगई॥
अतिप्रेमकरिबिनतीबिबिधिबिधिजोरिकरसनमुषरही॥प्रभुआसतोषकृपाल॥
सिवअबलानिरषिबोलेसही॥दोहा॥अबतेरतितवनाथकरहोइहिनामअनं
ग॥बिनबपुब्यापिहिसबहिपुनिसुनुनिजमिलनप्रसंग॥८८॥चौपाई॥जब
जदुबंसकृष्नअवतारा॥होइहिहरनमहामहिभारा॥कृष्नतनयहोइहिपतितो
रा॥बचनअन्यथाहोइनमोरा॥रतिगवनीसुनिसंकरबानी॥कथाअपरअबकहौं
बषानी॥देवन्हसमाचारसबपाए॥ब्रह्मादिकबैकुंठसिधाए॥सबसुरबिस्नुबिरंचि
समेता॥गएजहांसिवकृपानिकेता॥पृथकपृथकतिन्हकीन्हप्रसंसा॥भए
प्रसन्नचंद्रअवतंसा॥बोलेकृपासिंधुबृषकेतू॥कहहुअमरआएकेहिहेतू॥क
हबिधितुम्हप्रभुअंतरजामी॥तदपिभगतिबसबिनवौंस्वामी॥दोहा॥सकलसु
रन्हकेहृदयअससंकरपरमउछाहु॥निजनयननदेषाचहहिनाथतुम्हारबि
बाहु॥चौपाई॥यहउतसवदेषियभरिलोचन॥सोइकछुकरहुमदनमदमोच
न॥कामुजारिरतिकहुबरुदीन्हा॥कृपासिंधुयहअतिभलकीन्हा॥सासतिकरि
पुनिकरहिपसाऊ॥नाथप्रभुन्हकरसहजसुभाऊ॥पारबतीतपुकीन्ह
अपारा॥करहुतासुअबअंगीकारा॥सुनिबिधिबिनयसमुझिप्रभुबानी॥ऐसेइ
होउकहासुषमानी॥तबदेवन्हदुंदुभीबजाई॥बरषिसुमनजयजयसुरसाई॥
अवसरजानिसप्तरिषिआए॥तुरतहिबिधिगिरिभवनपठाए॥प्रथमगएजहांर
हीभवानी॥बोलेमधुरबचनछलसानी॥दोहा॥कहाहमारनसुनेहुतबना
रदकेउपदेस॥अबभाझूठतुम्हारपनजारेउकाममहेस॥९०॥चौपाई॥सुनिबो
लीमुसकाइभवानी॥उचितकहेहुमुनिबरबिग्यानी॥तुम्हरेजानकामुअबजारा॥
अबलगिसंभुरहेसबिकारा॥हमरेजानसदासिवजोगी॥अजअनवद्यअकाम
अभोगी॥जोमैसिवसेएअसजानी॥प्रीतिसमेतकर्ममनबानी॥तौहमारपन
सुनहुमुनीसा॥करिहहिसत्यकृपानिधिईसा॥तुम्हजोकहाहरजारेउमारा॥सो
इअतिबडअबिबेकतुम्हारा॥तातअनलकरसहजसुभाऊ॥हिमतेहिनिकटजा
इनहिकाऊ॥गएसमीपसोअवसिनसाई॥असमन्मथमहेसकेनाई॥दोहा॥हियहर
षेमुनिबचनसुनिदेषिप्रीतिबिस्वास॥चलेभवानीनाइसिरगएहिमाचलपास॥
॥९१॥चौपाई॥सबुप्रसंगुगिरिपतिहिसुनावा॥मदनदहनसुनिअतिदुषपावा॥बहु
रिकहेउरतिकरबरदाना॥सुनिहिमवंतबहुतसुषमाना॥हृदयबिचारिसंभुप्रभुता
ई॥सादरमुनिबरलिएबुलाई॥सुदिनसुनषतसुघरीसोधाए॥बेगिबेदबिधिलग
नधराई॥पत्रीसप्तरिषिन्हसोइदीन्ही॥गहिपदबिनयहिमाचलकीन्ही॥जाइबिधिहिति
न्हदीन्हसोपाती॥बाचतप्रीतिनहृदयसमाती॥लगनबाचिअजसबहिसुनाई॥ह
रषेमुनिसबसुरसमुदाई॥सुमनबृष्टिनभबाजनबाजे॥मंगलकलसदसहुदिसिसा
जे॥दोहा॥लगेसवारनसकलसुरबाहनबिबिधबिमान॥होहिसगुनमंगलसुभद
करहिअपछरागान॥९२॥चौपाई॥सिवहिसंभुगनकरहिसिंगारा॥जटामुकुटअ
हिमौरसवारा॥कुंडलकंकनपहिरेब्याला॥तनबिभूतिपटकेहरिछाला॥ससिल
लाटसुंदरसिरगंगा॥नयनतीनिउपबीतभुजंगा॥गरलकंठउरनरसिरमाला॥अ
सुभबेषसिवधामकृपाला॥करत्रिसूलअरुडमरुबिराजा॥चलेबसहचढिबाजहि
बाजा॥देषिसिवहिसुरत्रियमुसकाही॥बरलायकदुलहिनिजगनाही॥बिस्नुबिरं
चिआदिसुरब्राता॥चढिचढिबाहनचलेबराता॥सुरसमाजसबभांतिअनूपा॥ना

हिबरातदूलहअनुरूपा॥दोहा॥बिस्नुकहाअसबिहसितबबोलिसकलदिसिराज॥
बिलगबिलगहोइचलहुसबनिजनिजसहितसमाज॥९३॥चौपाई॥बरअनुहारिब
रातनभाई॥हासिकरैहहुपरपुरजाई॥बिस्नुबचनसुनिसुरमुसुकाने॥निजनिज
सेनसहितबिलगाने॥मनहिमनमहेसमुसुकाही॥हरिकेबिंग्यबचननहिजा
ही॥अतिप्रियबचनसुनतप्रियकेरे॥भृंगिहिप्रेरिसकलगनटेरे॥सिवअनुसास
नसुनिसबआए॥प्रभुपदजलजसीसतिन्हनाए॥नानाबाहननानाबेषा॥बि
हसेसिवसमाजनिजदेषा॥कोउमुषहीनबिपुलबहुमुषकाऊ॥बिनुपदकरकोउबहु
बाहू॥बिपुलनयनकोउनयनबिहीना॥रिष्टपुष्टकोउअतितनषीना॥छंद॥
तनषीनकोउअतिपीनपावनकोउअपावनगतिधरे॥भूषनकरालकपालकर
सबसद्यसोनिततनभरे॥षरस्वानसुअरसृगालमुषगनबेषअगनितकोगनै॥
जिनिसप्रेतपिसाचजोगिजमातबरनतनहिबनै॥सोरठा॥नाचहिगावहिगी
तपरमतरंगीभूतसब॥देषतअतिबिपरीतबोलहिबचनबिचित्रबिधि॥९४॥चौ
पाई॥जसदूलहुतसबनीबराता॥कौतुकबिबिधहोहिमगजाता॥इहांहिमाच
लरचेउबिताना॥अतिबिचित्रनहिजाइबषाना॥सैलसकलजहलगिजगमाही॥
लघुबिसालनहिबरनिसिराही॥बनसागरसबनदीतलावा॥हिमगिरिसब
कहुनेवतपठावा॥कामरूपसुंदरतनधारी॥सहितसमाजसहितबरनारी॥
गएसकलहिमाचलगेहा॥गावहिमंगलसहितसनेहा॥प्रथमहिगिरिबहुगृ
हसवराए॥जथाजोगजहतहसबछाए॥पुरसोभाअवलोकिसुहाई॥लघुला
गिबिधिकीनिपुनाई॥छंद॥लघुलागिबिधिकीनिपुनताअवलोकिपुरसोभा
सही॥बनबागकूपतडागसरितासुभगसबसककोकही॥मंगलबिपुलतोर
नपताकाकेतुगृहगृहसोहही॥बनितापुरुषसुंदरचतुरछबिदेषिमुनिमनमो
हही॥दोहा॥जगदंबाजहअवतरीसोपुरबरनीकिजाइ॥रिद्धिसिद्धिसंपतिसुष
नितनूतनअधिकाइ॥९५॥चौपाई॥नगरनिकटबरातसुनिआई॥पुर
षरभरसोभाअधिकाई॥करिबनावसजिबाहननाना॥चलेलेनसादरअगवा
ना॥हियहरषेसुरसेननिहारी॥हरिहिदेषिअतिभयेसुषारी॥सिवसमाजजब
देषनलागे॥बिडरिचलेबाहनसबभागे॥धरिधीरजतहरहेसयाने॥बालकलै
सबजीवपराने॥गएभवनपूछहिपितुमाता॥कहहिबचनभयकंपितगाता॥
कहियकहाकहिजायनबाता॥जमकरधारकिधौबरिआता॥बरबौराहबस
असवारा॥ब्यालकपालबिभूषनछारा॥छंद॥तनछारब्यालकपालभूषन
नगनजटिलभयंकरा॥संगभूतप्रेतपिसाचजोगिनिबिकटमुषरजनीचरा॥
जोजियतरहिहिबरातदेषतपुन्यबडतेहिकरसही॥देषिहिसोउमाबिबाहुघरघ
रबातअसलरिकनकही॥दोहा॥समुझिमहेससमाजसबजननिजनकमुस
काहि॥बालबुझाएबिबिधबिधिनिडरहोहुडरुनाहि॥९६॥चौपाई॥लैअग
वानबरातहिआए॥दिएसबहिजनवाससुहाए॥मैनासुभआरतीसवारी॥सं
गसुमंगलगावहिनारी॥कंचनथारसोहबरपानी॥परिछनचलीहरहिहर
षानी॥बिकटबेषरुद्रहिजबदेषा॥अबलनउरभयभयोबिसेषा॥भागिभवन
पैठिअतित्रासा॥गएमहेसजहाजनवासा॥मैनाहृदयभयेउदुषभारी॥लीन्ही
बोलिगिरिराजकुमारी॥अधिकसनेहगोदबैठारी॥स्यामसरोजनयनभरि
बारी॥जेहिबिधितुम्हहिरूपअसदीन्हा॥तेहिजडबरबाउरकसकीन्हा॥छंद॥
कसकीन्हबरबौराहबिधिजेहितुम्हहिसुंदरतादई॥जोफलचहियसुरतरुहिसो

वरुवहरहिलागढी॥तुम्हसहितगिरितेगिरौंपावकजरौंजलनिधिमहुंपरौं॥घरुजाउअप
जसुहोउजगजीवतविवाहुनहकरौं॥दोहा॥भईविकलअवलासकलदुषितदेषिगि
रिनारी॥करिविलापुरोदतिवदतिसुतासनेहसंभारि॥९८॥चौपाई॥नारदकरमैका
हविगारा॥भवनुमोरजिन्हवसतउजारा॥असउपदेसुउमहिजिन्हदीन्हा॥वौरेवरहि
लागितपुकीन्हा॥सांचेहुउनकेमोहनमाया॥उदासीनधनुधामनजाया॥परघर
घालकलाजनभीरा॥वांझकिजानिप्रसवकैपीरा॥जननिहिविकलविलोकिभ
वानी॥वोलीजुतविवेकमृदुवानी॥असविचारिसोचहिमतिमाता॥सोनटरैजोरचै
विधाता॥करमलिषाजोवाउरनाहू॥तौकतदोषलगाइअकाहू॥तुम्हसनमिटैहि
किविधिकेअंका॥मातुव्यर्थजिनिलेहुकलंका॥छंद॥जनिलेहुमातुकलंकक
रुनापरिहरहुअवसरनही॥दुषसुषजोलिषालिलारहमरेजावजहपाउवत
ही॥सुनिउमावचनविनीतकोमलसकलअवलासोचही॥वहुभांतिविधिहिल
गाईदुषणनयनवारिविमोचही॥दोहा॥तेहिअवसरनारदसहितअरुरिषिसप्तसमेत
समाचारसुनितुहिनगिरिगवनेतुरतनिकेत॥९९॥चौपाई॥तवनारदसव
हिसमुझावा॥पूरवकथाप्रसंगसुनावा॥मयनासत्यसुनहुममवानी॥जगदंवातव
सुताभवानी॥अजअनादिसक्तिअविनासिनी॥सदासंभुअरधंगनिवासिनी॥जगसंभ
वपालनलयकारिनी॥निजइछालीलावपुधारिनी॥जनमीप्रथमदक्षगृहजाई॥ना
मसतीसुंदरतनुपाई॥तहहिसतीसंदरतनुपाई॥तहहिसतीसंकरहिविवाही॥क
थाप्रसिद्धसकलजगमाही॥एकवारआवतसिवसंगा॥देषेउरघुकुलकमलप
तंगा॥भयेउमोहुसिवकहानमाना॥भ्रमवसभेषुसियाकरलीन्हा॥छंद॥सि
यवेषुसतीजोकीन्हतेहिअपराधसंकरपरिहरी॥हरविरहजाइवहोरिपितु
केजग्यजोगानलजरी॥अवजनमितुम्हारेभवननिजपतिलगिदारुनतपुकि
या॥असजानिसंसयतजहुगिरिजासर्वदासंकरप्रिया॥दोहा॥सुनिनारदके
वचनतवसवकरमिटाविषाद॥छिनमहव्यापेउसकलपुरघरघरयहसंवाद॥
१००॥चौपाई॥तवमैनाहिमवंतअनंदे॥पुनिपुनिपारवतीपदवंदे॥नगरलोग
सवअतिहरषाने॥नारिपुरुषसिसुजुवासयाने॥लगेहोनपुरमंगलगाना॥स
जेसवहिहाटकघटनाना॥भांतिअनेकभईजेवनारा॥सूपसास्त्रजसकछुव्य
वहारा॥सोजिवनारकिजाइवषानी॥वसहिभवनजहिमातुभवानी॥सादरवो
लेसकलवराती॥विस्नुविरंचिदेवसवजाती॥विविधिपांतिवैठीजेवनारा॥लगे
परोसननिपुनसुआरा॥नारिवृंदसुरजेवतजानी॥लागिदेनगारीमृदुवानी॥
छंद॥गारीमधुरस्वरदेहिसुंदरीविंग्यवचनसुनावही॥भोजनकरहिसुरअतिवि
लंवविनोदसुनिसुषपावही॥जेवतजोवढ्योअनंदसोमुषकोटिहूनपरेकह्यो॥
अचवाईदीन्हेपानगवनेवासजहजेहिकोरह्यो॥दोहा॥वहुरिमुनिन्हहिमवं
तकहुलगनजानाइआइ॥समयविलोकिविवाहकरपठएदेववोलाइ॥१०१॥
चौपाई॥वोलीसकलसुरसादरलीन्हे॥सवहिजथाउचितआसनदीन्हे॥वेदीवेद
विधानसंवारी॥सुभगसुमंगलगावहिनारी॥सिंहासनअतिदिव्यसुहावा॥जा
इनवरनीविरंचिवनावा॥वैठेसिवविप्रन्हसिरुनाई॥हृदयसुमिरिनिजप्रभुरघु
राई॥वहुरिमुनिसन्हउमावोलाई॥करिसिंगारसषीलेआई॥देषतरूपसकल
सुरमोहे॥वरनछविअसजगकविकोहे॥जगदंविकाजानिभवभामा॥सुरन्हम
नहिमनकीन्हप्रनामा॥सुंदरतामरजादभवानी॥जाइनकोटिहुवदनवषा
नी॥कहतिश्रुतिसेषसारदमंदमतितुलसीकहा॥छविषानिमातुभवानिगवनी

मध्यमंडपसिवजहां॥अवलोकिसकहिनसकुचिपतिपदकमलमनुमधुकरत
हां॥दोहा॥मुनिअनुसासनगनपतिहिपूजेउसंभुभवानि॥कोउसुनिसंसय
करैजनिसुरअनादिजियजानि॥१०२॥चौपाई॥जसिविवाहकैविधिश्रुतिगाई
॥महामुनिन्हसोसवकरवाई॥गहिगिरीसकुसकन्यापानी॥सिवहिसमरपीज
निभवानी॥पानिग्रहनजवकीन्हमहेसा॥हियहरषेतवसकलसुरेसा॥वेदमं
त्रमुनिवरउचरही॥जयजयजयसंकरसुरकरही॥वाजहिवाजनविविधिवि
धान॥सुमनवृष्टिनभभैविधिनाना॥हरगिरिजाकरभयेउविवाहू॥सक
लभुवनभरिरहाउछाहू॥दासीदासतुरगरथनागा॥धेनुवसनमनिवस्तुवि
भागा॥अन्नकनकभाजनभरिजाना॥दाइजदीन्हनजाइवषाना॥छंद॥दा
इजदियोवहुभांतिपुनिकरजोरिहिमभूधरकह्यो॥कादेउंपूरनकामसंक
रचरनपंकजगहिरह्यो॥सिवकृपासागरससुरकरसंतोषसवभांतिहि
कियो॥पुनिगहेपदपाथोजमयनप्रेमपरिपूरनहियो॥दोहा॥नाथउमामम
प्रानसमग्रहकिंकरीकरेहु॥छमहुसकलअपराधअवहोइप्रसन्नवरदेहु॥
१०३॥चौपाई॥वहुविधिसंभुसासुसमुझाई॥गवनीभवनचरनसिरुनाई॥
जननिउमावोलितवलीन्ही॥लैउछंगसुंदरसिषदीन्ही॥करेहुसदासंकरप
दपूजा॥नारिधर्मपतिदेवनदूजा॥वचनकहतभरिलोचनवारी॥वहुरलाइउर
लीन्हकुमारी॥कतविधिसृजीनारिजगमाही॥पराधीनसपनेहुसुषनाही॥भै
अतिप्रेमविकलमहतारी॥धीरजकीन्हकुसमयविचारी॥पुनिपुनिमिलतप
रतगहिचरना॥प्रेमपरमप्रेमकछुजाइनवरना॥सवनारिन्हमिलभेटभ
वानी॥जाइजननीउरपुनिलपटानी॥छंद॥जननीहिवहुरिमिलिचलीउचि
तअसीससवकाहूदई॥फिरिफिरिविलोकतिमाततनतवसषीलेसिवपहि
गई॥जाचकसकलसंतोषसंकरउमासहितभवनेचले॥सवअमरहरषे
सुमनवरषिनिसाननभवाजेभले॥दोहा॥चलेसंगहिमवंततवपहुचाव
नअतिहेत॥विविधभांतिपरितोषकरिविदाकीन्हवृषकेत॥१०४॥चौपाई॥
तुरतभवनआएगिरिराई॥सकलसैलसरलिएवुलाई॥आदरदानवि
नयवहुमाना॥सवकरविदाकीन्हहिमवाना॥जवहिसंभुकैलासहिआ
ए॥सुरसवनिजनिजलोकसिधाए॥जगमातुपितुसंभुभवानी॥तेहिसिंगा
रुनकहेउवषानी॥करहिविविधिविधिभोगविलासा॥गनन्हसमेतवस
हिकैलासा॥हरगिरिजाविहारनितनयऊ॥एहिविधिविपुलकालचलि
गयऊ॥तवजन्मेउषटवदनकुमारा॥तारकअसुरसमरजेहिमारा॥आग
मनिगमप्रसिद्धपुराना॥षटमुषजन्मसकलजगजाना॥छंद॥जगजा
नषटमुषजन्मकर्मप्रतापुपुरुषारथुमहा॥तेहिहेतुमैवृषकेतुसु
तकरचरितसंछेपहिकहा॥यहउमासंभुविवाहजेनरनारिकरहिजे
गावही॥कल्यानकाजविवाहमंगलसर्वदासुषपावही॥दोहा॥चरित
सिंधुगिरिजारवननवेदनपावहिपार॥वरनेतुलसीदासकिमिअतिमति
मंदगवार॥१०५॥चौपाई॥संभुचरितसुनिसरससुहावा॥भारद्वाजमुनि
अतिसुषपावा॥वहुलालसाकथापरवाढी॥नयननिनीररोमावलिठाढी॥
प्रेमविवसमुषआवनवानी॥दसादेषिहरषेमुनिग्यानी॥अहोधन्यतव
जन्ममुनीसा॥तुम्हहिप्रानसमप्रियगौरीसा॥सिवपदकमलजिन्हहि
रतिनाही॥रामहितेसपनेहुनसोहाही॥विनछलविस्वनाथपदनेहू॥

रामभगतिकरलछनयेह ॥ सिवसमकोरघुपतिव्रतधारी ॥ बिनअघतजीसती
असिनारी ॥ पनकरिरघुपतिभगतिदिषाई ॥ कोसिवसमरामहिप्रियभाई ॥ दोहा ॥
प्रथमहिमैकहिसिवचरितबुझामरमतुह्मार ॥ सुचिसेवकतुह्मरामकेरहितस
मलविकार ॥१०६॥ चौपाई ॥ ॥ मैजानेउंतुह्मारगुनसीला ॥ कहौंसुनहुअबर
घुपतिलीला ॥ सुनिमुनिआजसमागममनोरे ॥ कहिनजाईजससुषमनमोरे
रामचरितअतिअमितमुनीसा ॥ कहिनसकहिसतकोटिअहीसा ॥ तदपिजथा
श्रुतिकहौंबषानी ॥ सुमिरिगिरापतिप्रभुधनुपानी ॥ सारददारुनारिसमस्वा
मी ॥ रामसूत्रधरअंतरजामी ॥ जिहिपरकृपाकरहिजनजानी ॥ कबिउरअजिरन
चावहिबानी ॥ प्रनवौसोईकृपालरघुनाथा ॥ बरनौबिसदरामगुनगाथा ॥ पर
मरम्यगिरिवरकैलास ॥ सदाजहसिवउमानिवास ॥ दोहा ॥ सिद्धतपोधनजो
गीजनसुरकिंनरमुनिवृंद ॥ बसहितहासुकृतीसकलसेवहिसिवसुषकंद ॥१०
७॥ चौपाई ॥ हरिहरबिमुषधर्मरतिनाही ॥ तेनरतहासपनेहुनहिजाही ॥ तिहि
गिरिपरवटविटपविसाला ॥ नितनूतनसुंदरसबकाला ॥ त्रिविधिसमीरसुसीत
लछाया ॥ सिवविश्रामविटपश्रुतिगाया ॥ एकबारतेहितरप्रभुगयेउ ॥ तरुवि
लोकिउरअतिसुषभयेउ ॥ निजकरडासिनागरिपुछाला ॥ बैठेसहजहिसंभुकृपा
ला ॥ कुंदइंदुदरगौरसरीरा ॥ भुजप्रलंबपरिधनमुनिचीरा ॥ तरुनअरुनअंबुज
समचरना ॥ नषदुतिभगतहृदयतमहरना ॥ भुजगभूतिभूषनत्रिपुरारी ॥
आननसरदचंदछविहारी ॥ दोहा ॥ जटामुकुटसुरसरितसिरलोचननलिनविसाला
ल ॥ नीलकंठलावन्यनिधिसोहबालविधुभाल ॥१०८॥ चौपाई ॥ बैठेसोहकामरि
पुकैसे ॥ धरैसरीरसांतरसजैसे ॥ पारवतीभलअवसरजानी ॥ गईसंभुपहिमातभ
वानी ॥ जानिप्रियाआदरअतिकीन्हा ॥ बामभागआसनहरदीन्हा ॥ बैठीसिवसमी
पहरषाई ॥ पूरबजन्मकथाचितआई ॥ पतिहियहेतअधिकअनुमानी ॥ बिहसिउमा
बोलीमृदुवानी ॥ कथाजोसकललोकहितकारी ॥ सोईपूछनचहसैलकुमारी ॥
बिस्वनाथममनाथपुरारी ॥ त्रिभुवनमहिमाबिदिततुह्मारी ॥ चरअरुअचरनागनर
देवा ॥ सकलकरहिपदपंकजसेवा ॥ दोहा ॥ प्रभुसमरथसर्वज्ञसिवसकलकला
गुनधाम ॥ जोगज्ञानवैराग्यनिधिप्रनतकलपतरुनाम ॥१०९॥ चौपाई ॥ जौमोप
रप्रसन्नसुषरासी ॥ जानियसत्यमोहिनिजदासी ॥ तौप्रभुहरहुमोरअज्ञाना ॥
कहिरघुनाथकथाविधिनाना ॥ जासुभवनसुरतरुतरहोई ॥ सोकिदरिद्रज
नितदुषसोई ॥ ससिभूषनअसहृदयविचारी ॥ हरहुनाथममतिभ्रमभारी ॥ प्रभु
जेमुनिपरमारथवादी ॥ कहहिरामकहुंब्रह्मअनादी ॥ सेसशारदाबेदपुराना ॥ स
कलकरहिरघुपतिगुनगाना ॥ तुह्मपुनिरामरामदिनराती ॥ सादरजपहुअनंगआ
राती ॥ रामसोअवधनृपतिसुतसोई ॥ कीअजअगुनअलषगतिकोई ॥ दोहा
जौनृपतनयतौब्रह्मकिमिनारिबिरहमतिभोरि ॥ देषिचरितमहिमासुनतभ्रम
तिबुद्धिअतिमोरि ॥११०॥ चौपाई ॥ जौअनीहव्यापकबिभुकोऊ ॥ कहहुबुझाइनाथम
हिसोऊ ॥ अज्ञजानिरिसउरजनिधरहू ॥ जेहिविधिमोहमिटैसोकरहू ॥ मैवनदेषरा
मप्रभुताई ॥ अतिभयविकलनतुह्महिसुनाई ॥ तदपिमलिनमनबोधनआवा ॥
सोफलभलीभांतिमैपावा ॥ अजहूंकछुसंसयमनमोरे ॥ करहुकृपाबिनवौं
करजोरे ॥ प्रभुतबमोहिबहुभांतिप्रबोधा ॥ नाथसोसमुझिकरहुजनिक्रोधा ॥ तब
करअसविमोहअबनाही ॥ रामकथापररुचिमनमाही ॥ कहहुपुनीतरामगुनगा
था ॥ भुजगराजभूषनसुरनाथा ॥ दोहा ॥ वंदौपदधरधरनिसिरविनयकरौक

रजोरि ॥ बरनहुरघुबरबिसदजसश्रुतिसिद्धांतनिचोरि ॥१११॥ चौपाई ॥ जदपिजोषिता
नहिअधिकारी ॥ दासिमनक्रमबचनतुह्मारी ॥ गूढउतत्वनसाधुदुरावहि ॥ आर
तिअधिकारीजहिपावहि ॥ अतिआरतिपूछौसुरराया ॥ रघुपतिकथाकहहुकरि
दाया ॥ प्रथमसोकारनकहहुविचारी ॥ निर्गुनब्रह्मसगुनवपुधारी ॥ पुनिप्र
भुकहहुरामअवतारा ॥ बालचरितपुनिकहहुउदारा ॥ कहहुजथाजानकीवि
वाही ॥ राजतजासोदूषनकाही ॥ वनवसिकीन्हेचरितअपारा ॥ कहहुनाथजि
मिरावनमारा ॥ राजवैठिकीन्हेबहुलीला ॥ सकलकहहुसंकरसुषसीला ॥ दोहा
॥ बहुरिकहहुकरुनायतन ॥ कीन्हजोअचरजराम ॥ प्रजासहितरघुवंसमनि
किमिगवनेनिजधाम ॥११२॥ चौपाई ॥ पुनिप्रभुकहहुसोतत्वबषानी ॥ जेहिवि
ज्ञानमगनमुनिज्ञानी ॥ भगतिज्ञानविज्ञानविरागा ॥ पुनिसबबरनहुसहित
विभागा ॥ औरौरामरहस्यअनेका ॥ कहहुनाथअतिविमलविवेका ॥ जोप्रभु
मैपूछानहिहोई ॥ सोउदयालराषहुजनिगोई ॥ तुह्मत्रिभुवनगुरवेदबषाना
आनजीवपावरकाजाना ॥ प्रस्नउमाकेसहजसुहाए ॥ छलबिहीनसुनिसिव
मनभाए ॥ हरहियरामचरितसबआए ॥ प्रेमपुलकलोचनजलछाए ॥ श्रीरघु
नाथरूपउरआवा ॥ परमानंदअमितसुषपावा ॥ दोहा ॥ मगनध्यानरसदंडजु
गपुनिमनवाहरकीन्ह ॥ रघुपतिचरितमहेसतबहरषितबरनैलीन्ह ॥११३॥
चौपाई ॥ झूठेउसत्यजाहिविनुजाने ॥ जिमिभुजंगविनुरजुपहिचाने ॥ जेहिजा
नेजगजाइहेराई ॥ जागेजथासपनभ्रमजाई ॥ वंदौवालरूपसोइराम ॥ सवसि
धसुलभजपतजसुनाम ॥ मंगलभवनअमंगलहारी ॥ द्रवौसोदसरथअजिर
बिहारी ॥ करिप्रनामरामहित्रिपुरारी ॥ हरषिसुधासमगिराउचारी ॥ धंन्यध
न्यगिरिराजकुमारी ॥ तुह्मसमाननहिकोउउपकारी ॥ पूछेहुरघुपतिकथा
प्रसंगा ॥ सकललोकजगपावनिगंगा ॥ तुह्मरघुवीरचरनअनुरागी ॥ कीन्हे
हुप्रस्नजगतहितलागी ॥ दोहा ॥ रामकृपातेगिरिजासपनेहुतवमनमाहि
॥ सोकमोहसंदेहभ्रममममविचारकछुनाहि ॥११४॥ चौपाई ॥ तदपिअसंका
कीन्हहुसोई ॥ कहतसुनतसबकरहीतहोई ॥ जिन्हहरिकथासुनीनहि
काना ॥ श्रवनरंध्रअहिभवनसमाना ॥ नयनन्हसंतदरसनहिदेषा ॥ लो
चनमोरपषकरलेषा ॥ तेसिरकटुतुंवरिसमतूला ॥ जेनमतहरिगुरपद
मूला ॥ जिन्हहरिभगतिहृदयनहिआनी ॥ जीन्हहरिभगतिहृदयनहिआनी
जीवतसवसमानतेप्रानी ॥ जोनहिकरैरामगुनगाना ॥ जीहसोदादुरजीह
समाना ॥ कुलिसकठोरनिठुरसोइछाती ॥ सुनतहरिचरितनजोहरषाती ॥ गिरि
जासुनहुरामकैलीला ॥ सुरहितदनुजविमोहनसीला ॥ दोहा ॥ रामक
थासुरधेनुसमसेवतसबसुषदानि ॥ संतसमाजसुरलोकसबकोनसुनै
असजानि ॥११५॥ चौपाई ॥ रामकथासुंदरकरतारी ॥ संसयविहगउडावन
हारी ॥ रामकथाकलिविटपकुठारी ॥ सादरसुनुगिरिराजकुमारी ॥ राम
कथाकलिविटपकुठारी ॥ सादरसुनुगिरिराजकुमारी ॥ रामनामगुन
चरितसुहाए ॥ जनमकर्मअगनितश्रुतिगाए ॥ जथाअनंतरामभगवा
ना ॥ तथाकथाकीरतिगुननाना ॥ तदपिजथाश्रुतिजसिमतिमोरी ॥ कह
हौदेषिप्रीतिअतितोरी ॥ उमाप्रस्नतवसहजसुहाई ॥ सुषदसंतसंमतमोहिभा
ई ॥ एकबातनहिमोहिसुहानी ॥ जदपिमोहवसकहेहुभवानी ॥ तुह्मजोक

हारामकोउआना॥जेश्रुतिगाईकरहिमुनिध्याना॥दोहा॥कहहिसुनहिअसअध
मनरग्रसेजेमोहपिसाच॥पाषंडीहरिपदविमुषजानहिझूठनसाच॥११६॥
चौपाई॥अग्यअकोविदअंधअभागी॥काईविषयमुकुरमनलागी॥लंपट
कपटीकुटिलविशेषी॥सपनेहुसंतसभानहिदेषी॥कहहितेवेदअसंमत
वानी॥जिन्हकेसूझलाभनहिहानी॥मुकुरमलीनअरुनयनविहीना॥
रामरूपदेषहिकिमिदीना॥जिन्हकेअगुननसगुनविवेका॥जल्पहिक
ल्पितवचनअनेका॥हरिमायावसजगतभ्रमाही॥तिन्हहिकहतकछुअघटितना
ही॥वातुलभूतविवसमतवारे॥तेनहिवोलहिवचनविचारे॥जिन्हकृतमहामो
हमदपाना॥तिन्हकरकहाकरियनहिकाना॥दोहा॥असनिजहृदयविचारत
जुसंसयभजरामपद॥सुनिगिरिराजकुमारिभ्रमतमरविकरवचनमम॥११७॥
चौपाई॥सगुनहिअगुनहिनहिकछुभेदा॥गावहिमुनिपुरानबुधवेदा॥अगुनअ
रूपअलषअजसोई॥भगतप्रेमवससगुनसोहोई॥जोगुनरहितसगुनसोईकैसे
जलुहिमउपलविलगनहिजैसे॥जासुनामभ्रमतिमिरपतंगा॥तेहिकिमिक
हियविमोहप्रसंगा॥रामसच्चिदानंददिनेसा॥नहितहमोहनिसालवलेसा॥
सहजप्रकासरूपभगवाना॥नहितहपुनिविज्ञानविहाना॥हरषविषादज्ञान
अज्ञाना॥जीवधर्मअहमितिअभिमाना॥रामब्रह्मव्यापकजगजाना॥परमा
नंदपरेसपुराना॥दोहा॥पुरुषप्रसिद्धप्रकासनिधिप्रगटपरावरनाथ॥रघुकुल
मनिममस्वामिसोईकहसिवनाएउमाथ॥११८॥चौपाई॥निजभ्रमनहिसमुझहिअ
ज्ञानी॥प्रभुपरमोहधरहिजडप्रानी॥जथागगनघनपटलनिहारी॥झंपेउभा
नुकहहिकुविचारी॥चितवजोलोचनअंगुलिलाए॥प्रगटजुगलससितेहिकेभा
ए॥उमारामविषईकअसमोहा॥नभतमधूमधूरिजिमिसोहा॥विषयकरन
सुरजीवसमेता॥सकलएकतेएकसचेता॥सवकरपरमप्रकासकजोई॥राम
अनादिअवधपतिसोई॥जगतप्रकास्यप्रकासकरामू॥मायाधीसज्ञानगुण
धामू॥जासुसत्यतातेजडमाया॥भाससत्यइवमोहसहाया॥दोहा॥रजतसीप
महुभासजिमिजथाभानुकरवारि॥जदपिमृषातिहुकालसोईभ्रमनसकैकोउ
टारि॥११९॥चौपाई॥एहिविधिजगहरिआश्रितरहई॥जदपिअसत्यदेतदुषअह
ई॥जोसपनेसिरकाटैकोई॥विनुजागेनहदूरिदुषहोई॥जासुकृपाअसभ्रममिटि
जाई॥गिरिजासोईकृपालरघुराई॥आदिअंतकोउजासुनपावा॥मतिअनुमा
निनिगमअसगावा॥विनुपगचलैसुनैविनुकाना॥करविनुकरैकरमविधि
नाना॥आननरहितसकलरसभोगी॥विनुवानीवकताबडजोगी॥तनविनु
परसनयनविनुदेषा॥ग्रहैघ्राणविनुवासविसेषा॥असिसवभातिअलौकिक
करनी॥महिमाजासुजाइनहिवरनी॥दोहा॥जेहिइमिगावहिवेदवुधजाहि
धरहिमुनिध्यान॥सोईदसरथसुतभगतहितकोसलपतिभगवान॥१२०॥
चौपाई॥कासीमरतजंतुअवलोकी॥जासुनामबलकरौविसोकी॥सोईप्रभु
मोरचराचरस्वामी॥रघुवरसवउरअंतरजामी॥विवसहुजासुनामनरक
हही॥जन्मअनेकरचितअघदहही॥सादरसुमिरनजेनरकरही॥भववा
रिधिगोपदइवतरही॥रामसोपरमात्माभवानी॥तहभ्रमअतिअविहिततव
वानी॥अससंसयआनतउरमाही॥ज्ञानविरागसकलगुनजाही॥सुनि
सिवकेभ्रमभंजनवचना॥मिटिगैसवकुतरककैरचना॥भईरघुपतिपदप्री

तिप्रतीती॥दारुनअसंभावनावीती॥दोहा॥पुनिपुनिप्रभुपदकमलगहिजोरि
पंकरुहपानि॥वोलीगिरिजावचनवरमनहुप्रेमरससानि॥१२१॥चौपाई॥ससिकर
समसुनिगिरातुम्हारी॥मिटामोहसरदातपभारी॥तुम्हकृपालसवसंसयह
रेउ॥रामस्वरूपजानिमोहिपरेउ॥नाथकृपाअवगयउविषादा॥सुषीभयउप्रभु
चरनप्रसादा॥अवमोहिआपनिकिंकरिजानी॥जदपिसहजजडनारिअयानी॥
प्रथमजोमैपूछासोईकहहू॥जोमोपरप्रसन्नप्रभुअहहू॥रामब्रह्मचिनमयअवि
नासी॥सर्वरहितसवउरपुरवासी॥नाथधरेउनरतनकेहिहेतू॥मोहिसमुझाइक
हहुवृषकेतू॥उमावचनसुनिपरमविनीता॥रामकथापरप्रीतिपुनीता॥दोहा॥
हियहरषेकामारितवसंकरसहजसुजान॥वहुविधिउमहिप्रसंसिपुनिवोले
कृपानिधान॥१२२॥सोरठा॥सुनुसुभकथाभवानीरामचरितमानसविमल॥
कहाभुसुंडिवषानिसुनीविहगनायकगरुड॥सोसंवादउदारजेहिविधिभाआ
गेकहव॥सुनहुरामअवतारचरितपरमसुंदरअनघ॥हरिगुननामअपारक
थारूपअगिनितअमित॥मैनिजमतिअनुसारकहौउमासादरसुनहु॥१२३॥चौ
पाई॥सुनुगिरिजाहरिचरितसुहाए॥विपुलविसदनिगमागमगाए॥हरि
अवतारहेतुजेहिहोई॥इदमित्थंकहिजाईनसोई॥रामअतर्क्यवुधिमनवानी॥
मतहमारअससुनहिसयानी॥तदपिसंतमुनिवेदपुराना॥जसकछुकहहि
स्वमतिअनुमाना॥तसमैसुमुषिसुनावौतोही॥समुझिपरैजसकारनमोही॥
जवजवहोइधर्मकैहानी॥वाढहिअसुरअधमअभिमानी॥करहिअनीतिजाईन
हीवरनी॥सीदहिविप्रधेनुसुरधरनी॥तवतवप्रभुधरिविविधिसरीरा॥हरहि
कृपानिधिसज्जनपीरा॥दोहा॥असुरमारिथापहिसुरन्हराषहिनिजश्रुतिसेतु॥ज
गविस्तारहिविसदजसरामजन्मकरहेतु॥१२४॥चौपाई॥सोईजसगाईभगत
भवतरही॥कृपासिंधुजनहिततनुधरही॥रामजन्मकेहेतुअनेका॥परमविचि
त्रएकतेएका॥जन्मएकदुईकहौवषानी॥सावधानसुनिसुमतिभवानी॥द्वार
पालहरिकेप्रियदोऊ॥जयअरुविजयजानिसवकोऊ॥विप्रश्रापतेदूनौभाई॥ताम
सअसुरदेहतिन्हपाई॥कनककसिपुअरुहाटकलोचन॥जगतविदितसुरपति
मदमोचन॥विजयसमरवीरविष्याता॥धरिवराहवपुएकनिपाता॥होईनरहरि
दूसरपुनिमारा॥जनप्रहलादसुजसविस्तारा॥दोहा॥भएनिसाचरजाईतेमहा
वीरवलवान॥कुंभकरनरावनसुभटसुरविजईजगजान॥१२५॥चौपाई॥मुक
तनभएहतेहितेभगवाना॥तीनजन्मद्विजवचनप्रवाना॥एकवारतिन्हकेहि
तलागी॥धरेउसरीरभगतअनुरागी॥कस्यपअदितितहापितुमाता॥दस
रथकौसल्याविष्याता॥एककल्पएहिविधिअवतारा॥चरितपवित्रकिएसंसा
रा॥एककल्पसुरदेषिदुषारे॥समरजलंधरसनसवहारे॥संभुकीन्हसंग्राम
अपारा॥दनुजमहावलमरैनमारा॥परमसतीअसुराधिपनारी॥तेहिवलता
हिनजितहिपुरारी॥दोहा॥छलकरिटारेउतासुव्रतप्रभुसुरकारजकीन्ह॥ज
वतेहिजानेउमरमतवश्रापकोपकरिदीन्ह॥१२६॥चौपाई॥तासुश्रापहरिकी
न्हप्रवाना॥कौतुकनिधिकृपालभगवाना॥तहाजलंधररावनभयऊ॥रनहति
रामपरमपददयेउ॥एकजन्मकरकारणएहा॥जेहिलगिरामधरीनरदेहा॥प्र
तिअवतारकथाप्रभुकेरी॥सुनिमुनिवरनीकविन्हघनेरी॥नारदश्रापदीन्हए
कवारा॥कल्पएकतेहिलगिअवतारा॥गिरिजाचकितभईसुनिवानी॥नारदविस्नुभ

गतमुनिग्यानी॥ कारनकवनश्रापमुनिदीन्हा॥ काअपराधरमापतिकीन्हा॥ यहप्रसंग।
मोहिकहहुपुरारी॥ मुनिमनमोहआचरजभारी॥ दोहा॥ बोलेबिहसिमहेसतबग्यानी
मूढनकोई॥ जेहिजसरघुपतिकरहिजबसोतसतेहिछिनहोई॥ सोरठा॥ कहौंरामगु
नगाथभरद्वाजसादरसुनहु॥ भवभंजनरघुनाथभजतुलसीतजिमानमद॥१२७॥
॥ चौपाई॥ हिमगिरिगुहाएकअतिपावनि॥ बहसमीपसुरसरीसुहावनि॥ आश्र
मपरमपुनीतसुहावा॥ देखिदेवरिषिमनअतिभावा॥ निरखिसैलसरबिपिनबिभा
गा॥ भयउरमापतिपदअनुरागा॥ सुमिरतहरिहिश्रापगतिबाधी॥ सहजबिमलमन
लागिसमाधी॥ मुनिगतिदेखिसुरेसडेराना॥ कामहिबोलिकीन्हसनमाना॥ सहि
तसहायजाहुममहेतू॥ चलेउहरषिहियजलचरकेतू॥ सुनासीरमनमहअसित्रा
सा॥ चहतदेवरिषिममपुरबासा॥ जेकामीलोलुपजगमाही॥ कुटिलकागइवसब
हिडराही॥ दोहा॥ सूषहाडलेभागसठस्वाननिरषिमृगराज॥ छीनलेइजनिजा
नजडतिमिसुरपतिहिनलाज॥१२८॥ चौपाई॥ तेहिआश्रमहिमदनजबगयऊ॥ निज
मायाबसंतनिरमयऊ॥ कुसुमितबिबिधबिटपबहुरंगा॥ कूजहिकोकिलगुंजहि
भृंगा॥ चलीसुहावनित्रिबिधबयारी॥ कामकृसानुबढावनिहारी॥ रंभादिक
सुरनारिनबीना॥ सकलअसमसरकलाप्रबीना॥ करहिगानबहुतानतरंगा॥
बहुबिधिक्रीडहिपानिपतंगा॥ देखिसहायमदनहरषाना॥ कीन्हेसिपुनिप्रपंचबिधिना
ना॥ कामकलाकछुमुनिहिनब्यापी॥ निजभयडरेउमनोभवपापी॥ सीमकिचा
पिसकैकोउतासु॥ बडरखवाररमापतिजासु॥ दोहा॥ सहितसहायसभीतअतिमान
हारिमनमयन॥ गहेसिजाइमुनिचरनतबकहिसुठिआरतबयन॥१२९॥ चौपाई॥
भयउननारदमनकछुरोषा॥ कहिप्रियबचनकामपरितोषा॥ नाइचरनसिरआयसुपा
ई॥ गयउमदनतबसहितसहाई॥ मुनिसुसीलताआपनिकरनी॥ सुरपतिसभाजा
इसबबरनी॥ सुनिसबकेमनअचरजुआवा॥ मुनिहिप्रसंसिहरिहिसिरनावा॥ तबना
रदगवनेसिवपाही॥ जिताकामअहमितिमनमाही॥ मारचरितसंकरहिसुनाए॥
अतिप्रियजानिमहेससिखाए॥ बारबारमुनिबिनवौंतोही॥ जिमियहकथासुना
येहुमोही॥ तिमिजनिहरिहिसुनावहुकबहू॥ चलेहुप्रसंगदुराएहुतबहू॥ दोहा॥
शंभुदीन्हउपदेसहितनहिनारदहिसुहान॥ भरद्वाजकौतुकसुनहुहरिइछाबलवान
॥१३०॥ चौपाई॥ रामकीन्हचाहहिसोईहोई॥ करैअन्यथाअसनहिकोई॥ शंभुबच
नमुनिमननहिभाए॥ तबबिरंचिकेलोकसिधाए॥ एकबारकरतलबरबीना॥ गा
वतहरिगुनगानप्रबीना॥ छीरसिंधुगवनेमुनिनाथा॥ जहँबसश्रीनिवासश्रु
तिनाथा॥ हरषिमिलेउठिरमानिकेता॥ बैठेआसनरिषिहिसमेता॥ बोलेबिहसि
चराचरराया॥ बहुतेदिनन्हकीन्हमुनिदाया॥ कामचरितनारदसबभाषे॥ जद्य
पिप्रथमबरजिसिवराखे॥ अतिप्रचंडरघुपतिकैमाया॥ जेहिनमोहअसकोज
गजाया॥ दोहा॥ रूषबदनकरिबचनमृदुबोलेश्रीभगवान॥ तुम्हरेसुमिरनते
मिटहिमोहमारमदमान॥१३१॥ चौपाई॥ सुनुमुनिमोहहोइमनताके॥ ग्यानबिरा
गहृदयनहिजाके॥ ब्रह्मचरजब्रतरतमतिधीरा॥ तुम्हहिकिकरैमनोभवपीरा॥ नार
दकहेउसहितअभिमाना॥ कृपातुम्हारसकलभगवाना॥ करुनानिधिमनदीख
बिचारी॥ उरअंकुरेउगरबतरुभारी॥ बेगिसोमैडारिहौंउखारी॥ पनहमारसेवकहि
तकारी॥ मुनिकरहितममकौतुकहोई॥ अवसिउपायकरबमैसोई॥ तबनारदह
रिपदसिरनाई॥ चलेहृदयअहमितिअधिकाई॥ श्रीपतिनिजमायातबप्रेरी॥ सु

नहुकठिनकरनीतेहिकेरी॥ दोहा॥ बिरचेउमगमहुनगरतेहिसतजोजनबिस्ता
र॥ श्रीनिवासपुरतेअधिकरचनाबिबिधप्रकार॥१३२॥ चौपाई॥ बसहिनगरसुंद
रनरनारी॥ जनुबहुमनसिजरतितनुधारी॥ तेहिपुरबसैसीलनिधिराजा॥ अगनि
तहयगयसेनसमाजा॥ सतसुरेससमबिभवबिलासा॥ रूपतेजबलनीति
निवासा॥ बिस्वमोहनीतासुकुमारी॥ श्रीबिमोहजिसुरूपनिहारी॥ सोइहरिमा
यासबगुनखानी॥ सोभातासुकिजाइबखानी॥ करैस्वयंबरसोनृपबाला॥ आ
एतहाअगनितमहिपाला॥ मुनिकौतुकीनगरतेहिगयऊ॥ पुरबासिन्हसब
पूछतभयऊ॥ सुनिसबचरितभूपगृहआए॥ करिपूजानृपमुनिबैठाए॥ दोहा
॥ आनिदिखाईनारदहिभूपतिराजकुमारि॥ कहहुनाथगुनदोषसबयाहिके
हृदयबिचारि॥१३३॥ चौपाई॥ देखिरूपमुनिबिरतिबिसारी॥ बडीबारलगिरहे
निहारी॥ लछनतासुबिलोकिभुलाने॥ हृदयहरषनहिप्रगटबखाने॥ जोएहि
बरैअमरसोईहोई॥ समरभूमितेहिजीतनहिकोई॥ सेवहिसकलचराचरता
ही॥ बरैसीलनिधिकन्याजाही॥ लछनसबबिचारिउरराखे॥ कछुकबनाईभू
पसनभाषे॥ सुतासुलछनकहिनृपपाही॥ नारदचलेसोचमनमाही॥ करौं
जाइसोजतनबिचारी॥ जेहिप्रकारमोहिबरैकुमारी॥ जपतपकछुनहोइतेहि
काला॥ हेबिधिमिलैकवनबिधिबाला॥ हेबिधिमिलैकवनबिधिबाला॥ दोहा
॥ एहिअवसरचाहियपरमसोभारूपबिसाल॥ जोबिलोकिरीझैकुअरितब
मेलैजयमाल॥१३४॥ चौपाई॥ हरिसनमागौंसुंदरताई॥ होइहिजातगहरुअति
भाई॥ मोरेहितहरिसमनहिकोई॥ एहिअवसरसहायसोईहोई॥ बहुबिधिबिन
यकीन्हतेहिकाला॥ प्रगटेउप्रभुकौतुकीकृपाला॥ प्रभुबिलोकिमुनिनयनजु
डाने॥ होइहिकाजुहियहरषाने॥ अतिआरतकहिकथासुनाई॥ करहुकृपा
करिहोउसहाई॥ आपनरूपदेहुप्रभुमोही॥ आनभांतिनहिपावौंओही॥ जेहि
बिधिनाथहोइहितमोरा॥ करहुसोबेगिदासमैतोरा॥ निजमायाबलदेखिबि
साला॥ हियहसिबोलेदीनदयाला॥ दोहा॥ जेहिबिधिहोइहिपरमहितनारदसु
नहुतुम्हार॥ सोईहमकरबनआनकछुबचननमृषाहमार॥१३५॥ चौपाई॥ कु
पथमागरुजब्याकुलरोगी॥ बैदनदेइसुनहुमुनिजोगी॥ एहिबिधिहिततुम्हारमैठ
यऊ॥ कहिअसअंतरहितप्रभुभयऊ॥ मायाबिबसभएमुनिमूढा॥ समुझिनहिहरि
गिरानिगूढा॥ गवनेतुरततहारिषिआई॥ जहस्वयंबरभूमिबनाई॥ निजनिज
आसनबैठेराजा॥ बहुबनावकरिसहितसमाजा॥ मुनिमनहरषरूपअतिमोरे॥ मो
हितजिआनहिबरहिनभोरे॥ मुनिहितकारनकृपानिधाना॥ दीन्हकुरूपनजाइ
बखाना॥ सोचरित्रलखिकाहुनपावा॥ नारदजानिसबहिसिरनावा॥ दोहा॥ रहे
तहादुइरुद्रगनतेजानहिसबभेउ॥ बिप्रबेषदेखतफिरहिपरमकौतुकीतेउ॥१३६॥ चौ
पाई॥ जेहिसमाजबैठेमुनिजाई॥ हृदयरूपअहमितिअधिकाई॥ तहाबैठेमहेसग
नदोऊ॥ बिप्रबेषगतिलखैनकोऊ॥ करहिकूटिनारदहिसुनाई॥ नीकिदीन्हिहरि
सुंदरताई॥ रीझिहिराजकुअरिछबिदेखी॥ इन्हहिबरिहिहरिजानिबिसेषी॥ मु
निहिमोहमनहाथपराए॥ हसहिशंभुगनअतिसचुपाए॥ जदपिसुनहिमु
निअटपटबानी॥ समुझिनपरैबुद्धिभ्रमसानी॥ काहुनलखासोचरितबिसेषा॥

रा॰
बा॰ ड॰
१५

सो सरूप नृपकन्या देषा॥ मरकट बदन भयंकर देही॥ देषत हृदय क्रोध भा तेही॥दोहा॥
सषी संग लै कुँवरि तब चलि जनु राजमराल॥ देषत फिरै मही सब कर सरोज जयमाल
॥१३७॥चौपाई॥ जेहि दिसि बैठे नारद फूली॥ सो दिसि तेहि न बिलोकी भूली॥ पुनि पुनि
मुनि उकसहि अकुलाही॥ देषि दसा हरगन मुसुकाही॥ धरि नृपतनु तहँ गयउ कृ
पाला॥ कुँवरि हरषि मेलेउ जयमाला॥ दुलहिनि लै गे लछिनिवासा॥ नृपसमाज सब
भयउ निरासा॥ मुनि अति बिकल मोह मति नाठी॥ मनि गिरि गई छूटि जनु गाँठी॥ त
ब हरगन बोले मुसुकाई॥ निज मुष मुकुर बिलोकहु जाई॥ अस कहि दोउ भागे भय
भारी॥ बदन दीष मुनि बारि निहारी॥ बेषु बिलोकि क्रोध अति बाढा॥ तिन्हहि सराप दीन
अति गाढा॥दोहा॥ होहु निसाचर जाइ तुम्ह कपटी पापी दोउ॥ हँसेहु हमहि सो लेहु
फल बहुरि हँसेहु मुनि कोउ॥१३८॥चौपाई॥ पुनि जल दीष रूप निज पावा॥ तदपि हृद
य संतोष न आवा॥ फरकत अधर कोप मन माही॥ सपदी चले कमलापति पाही॥ देहौ
श्राप कि मरिहौ जाई॥ जगत मोरि उपहास कराई॥ बीचहि पंथ मिले दनुजारी॥ संग
रमा सोइ राजकुमारी॥ बोले मधुर बचन सुरसाँई॥ मुनि कहँ चले बिकल की नाई
सुनत बचन उपजा अति क्रोधा॥ माया बस न रहा मन बोधा॥ पर संपदा सकहु नहि
देषी॥ तुम्हरे ईरिषा कपट बिसेषी॥ मथत सिंधु रुद्रहि बौराएहु॥ सुरन्ह प्रेरि बिष पा
न कराएहु॥दोहा॥ असुर सुरा बिष संकरहि आपु रमा मनि चारु॥ स्वारथ साधक कु
टिल तुम्ह सदा कपट ब्यवहारु॥१३९॥चौपाई॥ परम स्वतंत्र न सिर पर कोई॥ भावै मन
नहि करहु तुम्ह सोई॥ भलेहि मंद मंदेहि भल करहू॥ बिसमय हरष न हिय कछु धरहू॥ उ
हेकि हेकि परचेहु सब काहू॥ अति असंक मन सदा उछाहू॥ कर्म सुभासुभ तुम्हहि
न बाधा॥ अब लगि तुम्हहि न काहू साधा॥ भले भवन अब बायन दीन्हा॥ पावहुगे फल आ
पन कीन्हा॥ बंचेहु मोहि जवन धरि देहा॥ सोइ तनु धरहु श्राप मम एहा॥ कपि आकृति तु
म्ह कीन्हि हमारी॥ करिहहि कीस सहाय तुम्हारी॥ मम अपकार कीन्ह तुम्ह भारी॥ ना
रि बिरह तुम्ह होब दुषारी॥दोहा॥ श्राप सीस धरि हरषि हिय प्रभु बहु बिधि बिनती की
न्ह॥ निज माया कै प्रबलता करषि कृपानिधि लीन्ह॥चौपाई॥ जब हरि माया दूरि नि
वारी॥ नहि तहँ रमा न राजकुमारी॥ तब मुनि अति सभीत हरि चरना॥ गहे पाहि प्रन
तारति हरना॥ मृषा होउ मम श्राप कृपाला॥ मम इच्छा कह दीनदयाला॥ मै दुर्बचन क
हे बहुतेरे॥ कह मुनि पाप मिटिहि किमि मेरे॥ जपहु जाइ संकर सतनामा॥ होइहि
हृदय तुरत बिश्रामा॥ कोउ नहि सिव समान प्रिय मोरे॥ असि परतीति तजहु जनि भोरे॥ जे
हि पर कृपा न करहि पुरारी॥ सो न पाव मुनि भगति हमारी॥ अस उर धरि महि बिचर
हु जाई॥ अब न तुम्हहि माया निअराई॥दोहा॥ बहु बिधि मुनिहि प्रबोधि प्रभु तब भए
अंतरध्यान॥ सत्यलोक नारद चले करत राम गुनगान॥१४१॥चौपाई॥ हरगन मुनिहि
जात पथ देषी॥ बिगत मोह मन हरष बिसेषी॥ अति सभीत नारद पहि आए॥ गहि
पद आरत बचन सुनाए॥ हरगन हम न बिप्र मुनिराया॥ बड अपराध कीन्ह फल पा
या॥ श्राप अनुग्रह करहु कृपाला॥ बोले नारद दीनदयाला॥ निसिचर जाइ होहु तु
म्ह दोऊ॥ बिभव बिपुल तेज बल होऊ॥ भुजबल बिस्व जितब तुम्ह जहिआ॥ धरिहहि
बिस्नु मनुज तनु तहिआ॥ समर मरन हरि हाथ तुम्हारा॥ होइहहु मुकुत न पुनि संसारा
चले जुगल मुनि पद सिर नाई॥ भए निसाचर कालहि पाई॥दोहा॥ एक कलप तेहि हे

तु प्रभु लीन्ह मनुज अवतार॥ सुररंजन सज्जन सुषद हरि भंजन भुबि भार॥१४२॥
एहि बिधि जनम करम हरि केरे॥ सुंदर सुषद बिचित्र घनेरे॥ कलप कलप प्रति प्र
भु अवतरही॥ चारु चरित नाना बिधि करही॥ तब तब कथा मुनीसन्ह गाई॥ प
रम पुनीत प्रबंध बनाई॥ बिबिध प्रसंग अनूप बषाने॥ करहि न सुनि आचर
ज सयाने॥ हरि अनंत हरि कथा अनंता॥ कहहि सुनहि बहु बिधि सब संता॥
रामचंद्र के चरित सुहाए॥ कलप कोटि लगि जाहि न गाए॥ यह प्रसंग मै कहा भ
वानी॥ हरि माया मोहहि मुनि ग्यानी॥ प्रभु कौतुकी प्रनत हितकारी॥ सेवत सु
लभ सकल दुषहारी॥सोरठा॥ सुर नर मुनि कोउ नाहि जेहि न मोह माया प्रबल॥
अस बिचारि मन माहि भजिय महा माया पतिहि॥१४३॥चौपाई॥ अपर हेतु सु
नु सैलकुमारी॥ कहौ बिचित्र कथा बिस्तारी॥ जेहि कारन अज अगुन अरूपा॥ ब्र
ह्म भयउ कोसलपुर भूपा॥ जो प्रभु बिपिन फिरत तुम्ह देषा॥ बंधु समेत धरे मुनि बेषा
जासु चरित अवलोकि भवानी॥ सती सरीर रहिहु बौरानी॥ अजहु न छाया मि
टति तुम्हारी॥ तासु चरित सुनु भ्रम रुज हारी॥ लीला कीन्ह जो तेहि अवतारा॥
सो सब कहिहौ मति अनुसारा॥ भरद्वाज सुनि संकर बानी॥ सकुच सप्रेम उमा
मुसुकानी॥ लगे बहुरि बरनै बृषकेतू॥ सो अवतार भयउ जेहि हेतू॥दोहा॥ सो मै
तुम्ह सन कहौ सब सुनु मुनीस मन लाई॥ राम कथा कलिमल हरनि करनि
मंगल सुहाई॥१४४॥चौपाई॥ स्वायंभू मनु अरु सतरूपा॥ जिन्ह ते भै नरसृष्टि
अनूपा॥ दंपति धरम आचरन नीका॥ अजहु गाव श्रुति जिन्ह कै लीका॥ नृप उत्तानपा
द सुत तासू॥ ध्रुव हरि भगत भयउ सुत जासू॥ लघु सुत नाम प्रियब्रत ताही॥ बेद
पुरान प्रसंसहि जाही॥ देवहूति पुनि तासु कुमारी॥ जो मुनि कर्दम कै प्रिय नारी॥
आदिदेव प्रभु दीनदयाला॥ जठर धरेउ जेहि कपिल कृपाला॥ सांष्य सास्त्र जि
न्ह प्रगट बषाना॥ तत्व बिचार निपुन भगवाना॥ तेहि मनु राज कीन्ह बहु काला
॥ प्रभु आयसु सब बिधि प्रतिपाला॥सोरठा॥ होइ न बिषय बिराग भवन बसत
भा चौथपन॥ हृदय बहुत दुष लाग जनम गयउ हरि भगति बिनु॥१४५॥चौपाई॥
बरबस राज सुतहि तब दीन्हा॥ नारि समेत गवन बन कीन्हा॥ तीरथ बर नैमिष
बिष्याता॥ अति पुनीत साधक सिधि दाता॥ बसहि तहा मुनि सिद्ध समाजा॥ तह
हिय हरषि चले मनु राजा॥ पंथ जात सोहहि मतिधीरा॥ ग्यान भगति जनु धरे स
रीरा॥ पहुचे जाइ धेनुमति तीरा॥ हरषि नहाने निर्मल नीरा॥ आए मिलन सिद्ध मु
नि ग्यानी॥ धरम धुरंधर नृपरिषि जानी॥ जहँ जहँ तीरथ रहे सुहाए॥ मुनिन्ह
सकल सादर करवाए॥ कृस सरीर मुनिपट परिधाना॥ संत समाज नित सुनहि
पुराना॥दोहा॥ द्वादस अच्छर मंत्र पुनि जपहि सहित अनुराग॥ बासुदेव पद पं
करुह दंपति मन अति लाग॥१४६॥चौपाई॥ करहि अहार साक फल कंदा॥ सु
मिरहि ब्रह्म सच्चिदानंदा॥ पुनि हरि हेतु करन तप लागे॥ बारि अधार मूल फल
त्यागे॥ उर अभिलाष निरंतर होई॥ देषिअ नयन परम प्रभु सोई॥ अगुन अषंड अ
नंत अनादी॥ जेहि चिंतहि परमारथबादी॥ नेति नेति जेहि बेद निरूपा॥ निजा
नंद निरुपाधि अनूपा॥ संभु बिरंचि बिष्नु भगवाना॥ उपजहि जासु अंस ते नाना
ऐसेउ प्रभु सेवक बस अहई॥ भगत हेतु लीला तनु गहई॥ जौ यह बचन सत्य

श्रुति भाषा॥ तौ हमारि पूजिहि अभिलाषा॥ दोहा॥ एहि बिधि बीते बरष षट सहस बारि
आहार॥ संमत सप्त सहस्र पुनि रहे समीर अधार॥१४७॥ चौपाई॥ बरष सहस दस त्यागे
उ सोई॥ ठाढे रहे एक पद दोई॥ बिधि हरि हर तप देषि अपारा॥ मनु समीप आए बहु
बारा॥ मांगहु बर बहु भांति लोभाए॥ परम धीर नहि चलहि चलाए॥ अस्थिमात्र
होइ रही सरीरा॥ तदपि मनाग मनहि नहि पीरा॥ प्रभु सर्वज्ञ दास निज जानी॥ ग
ति अनन्य तापस नृप रानी॥ मांगु मांगु बरु भई नभ बानी॥ परम गंभीर कृपामृत सा
नी॥ मृतक जिआवनि गिरा सुहाई॥ श्रवन रंध्र होइ उर जब आई॥ हृष्ट पुष्ट तन भए
सुहाए॥ मानहु अबहि भवन ते आए॥ दोहा॥ श्रवन सुधा सम बचन सुनि पुलक
प्रफुल्लित गात॥ बोले मनु करि दंडवत प्रेम न हृदय समात॥१४८॥ चौपाई॥ सुनु
सेवक सुरतरु सुरधेनू॥ बिधि हरि हर बंदित पद रेनू॥ सेवत सुलभ सकल सुष
दायक॥ प्रनतपाल सचराचर नायक॥ जौ अनाथ हित हम पर नेहू॥ तौ प्रसन्न हो
इ यह बरु देहू॥ जो स्वरूप बस सिव मन माही॥ जेहि कारन मुनि जतन कराही॥ जो भुसुं
डि मन मानस हंसा॥ सगुन अगुन जेहि निगम प्रसंसा॥ देषहि हम सो रूप भरि लो
चन॥ कृपा करहु प्रनतारति मोचन॥ दंपति बचन परम प्रिय लागे॥ मृदुल बिनी
त प्रेम रस पागे॥ भगत बछल प्रभु कृपानिधाना॥ बिस्वबास प्रगटे भगवाना॥
दोहा॥ नील सरोरुह नील मनि नील नीरधर स्याम॥ लाजहि तन सोभा निरषि
कोटि कोटि सत काम॥१४९॥ चौपाई॥ नील सरोरुह बदन छबि सीवा॥ चारु कपो
ल चिबुक दर ग्रीवा॥ अधर अरुन रद सुंदर नासा॥ बिधु किरनि कर निंदक हासा॥
नव अंबुज अंबक छबि नीकी॥ चितवनि ललित भावती जी की॥ भृकुटी मनोज चाप
छबि हारी॥ तिलक ललाट पटल दुतिकारी॥ कुंडल मकर मुकुट सिर भ्राजा॥ कुटि
लकेस जनु मधुप समाजा॥ उर श्रीबत्स रुचिर बनमाला॥ पदिक हार भूषन म
निजाला॥ केहरि कंधर चारु जनेऊ॥ बाहु बिभूषन सुंदर तेऊ॥ करि कर सरिस सु
भग भुजदंडा॥ कटि निषंग कर सर कोदंडा॥ दोहा॥ तडित बिनिंदक पीत पट उदर
रेष बर तीन॥ नाभि मनोहर लेत जनु जमुन भवर छबि छीन॥१५०॥ चौपाई॥
पद राजीव बरनि नहि जाही॥ मुनि मन मधुप बसहि जिन्ह माही॥ बाम भाग सो
भित अनुकूला॥ आदिसक्ति छबिनिधि जगमूला॥ जासु अंस उपजहि गुनषानी॥
अगनित लछि उमा ब्रह्मानी॥ भृकुटि बिलास जासु जग होई॥ राम बाम दिसि
सीता सोई॥ छबि समुद्र हरि रूप बिलोकी॥ एकटक रहे नयन पट रोकी॥ चितव
हि सादर रूप अनूपा॥ तृप्ति न मानहि मनु सतरूपा॥ हरष बिबस तन दसा भुला
नी॥ परे दंड इव गहि पद पानी॥ सिर परसे प्रभु निज कर कंजा॥ तुरत उठाये करु
नापुंजा॥ दोहा॥ बोले कृपानिधान पुनि अति प्रसन्न मोहि जानि॥ मांगहु बर जो
इ भाव मन महादानि अनुमानि॥१५१॥ चौपाई॥ सुनि प्रभु बचन जोरि जुग पानि॥ धरि
धीरजु बोली मृदु बानी॥ नाथ देषि पद कमल तुम्हारे॥ अब पूरे सब काम हमारे॥ ए
क लालसा बडि उर माही॥ सुगम अगम कहि जात सो नाही॥ तुम्हहि देत अति सु
गम गुसांई॥ अगम लाग मोहि निज कृपनाई॥ जथा दरिद्र बिबुधतरु पाई॥
बहु संपति मांगत सकुचाई॥ तासु प्रभाव न जानत सोई॥ तथा हृदय मम संसय
होई॥ सो तुम्ह जानहु अंतरजामी॥ पुरवहु मोर मनोरथ स्वामी॥ सकुच बिहाइ मां

गु नृप मोही॥ मोरे नहि अदेय कछु तोही॥ दोहा॥ दानि सिरोमनि कृपानिधि नाथ कहौ सति
भाउ॥ चाहौ तुम्हहि समान सुत प्रभु सन कवन दुराउ॥१५२॥ चौपाई॥ देषि प्रीति सुनि
बचन अमोले॥ एवमस्तु करुनानिधि बोले॥ आपु सरिस षोजौ कह जाई॥ नृप तव
तनय होब मै आई॥ सतरूपहि बिलोकि कर जोरे॥ देबि मांगु बर जो रुचि तोरे॥ जो ब
रु नाथ चतुर नृप मांगा॥ सो कृपाल मोहि अति प्रिय लागा॥ प्रभु परंतु सुठि होत ढिठाई॥
जदपि भगत हित तुम्हहि सुहाई॥ तुम्ह ब्रह्मादि जनक जग स्वामी॥ ब्रह्म सकल उर अंत
रजामी॥ अस समुझत मन संसय होई॥ कहा जो प्रभु प्रमान पुनि सोई॥ जे निज नाथ
भगत तव अहही॥ जो सुष पावहि जो गति लहही॥ दोहा॥ सोई सुष सोई गति सोई भग
ति सोई निज चरन सनेहु॥ सोई बिबेक सोई रहनि प्रभु हमहि कृपा करि देहु॥१५३॥ चौपा
ई॥ सुनि मृदु गूढ रुचिर बर रचना॥ कृपासिंधु बोले मृदु बचना॥ जो कछु रुचि तुम्हरे मन मा
ही॥ मै सो दीन्ह सब संसय नाही॥ मातु बिबेक अलौकिक तोरे॥ कबहु न मिटिहि अ
नुग्रह मोरे॥ बंदि चरन मनु कहेउ बहोरी॥ अवर एक बिनती प्रभु मोरी॥ सुत बिषइक तव प
द रति होई॥ मोहि बड मूढ कहै किन कोई॥ मनि बिनु फनि जिमि जल बिनु मीना॥ मम जी
वन तिमि तुम्हहि अधीना॥ अस बरु मांगि चरन गहि रहेऊ॥ एवमस्तु करुनानिधि कहेऊ॥
अब तुम्ह मम अनुसासन मानी॥ बसहु जाइ सुरपति रजधानी॥ दोहा॥ तहं करि भोग
बिसाल तात गए कछु काल पुनि॥ होइहहु अवध भुआल तब मै होब तुम्हार सुत॥१५४॥
चौपाई॥ इछामय नरबेष संवारे॥ होइहौ प्रगट निकेत तुम्हारे॥ अंसन्ह सहित देह ध
रि ताता॥ करिहौ चरित भगत सुषदाता॥ जे सुनि सादर नर बडभागी॥ भव तरिहहि
ममता मद त्यागी॥ आदिसक्ति जेहि जग उपजाया॥ सोई अवतरिहि मोरि यह माया॥ पु
मै रउब अभिलाष तुम्हारा॥ सत्य सत्य पन सत्य हमारा॥ पुनि पुनि अस कहि कृपा
निधाना॥ अंतरधान भए भगवाना॥ दंपति उर धरि भगत कृपाला॥ तेहि आश्रम
निवसे कछु काला॥ समय पाय तनु तजि अनयासा॥ जाइ कीन्ह अमरावति बासा॥
दोहा॥ यह इतिहास पुनीत अति उमहि कही बृषकेतु॥ भरद्वाज सुनु अपर पुनि राम
जन्म कर हेतु॥१५५॥ चौ॥ सुनु मुनि कथा पुनीत पुरानी॥ जो गिरिजा प्रति संभु बषानी॥
बिस्व बिदित एक कैकय देस॥ सत्यकेतु तह बसै नरेस॥ धरम धुरंधर नीति निधाना॥ ते
ज प्रताप सील बलवाना॥ तेहि के भए जुगल सुत बीरा॥ सब गुन धाम महा रनधीरा॥
राजधनी जो जेठ सुत आही॥ नाम प्रतापभानु अस ताही॥ अपर सुतहि अरिमर्दन ना
मा॥ भुजबल अतुल अचल संग्रामा॥ भाइहि भाइहि परम समीती॥ सकल दोष छ
ल बरजित प्रीती॥ जेठे सुतहि राज नृप दीन्हा॥ हरि हित आपु गवन बन कीन्हा॥ ॥
दोहा॥ जब प्रताप रबि भयउ नृप फिरि दुहाई देस॥ प्रजा पाल अति बेद बिधि कतह
नहि अघ लवलेस॥१५६॥ चौपाई॥ नृप हितकारक सचिव सयाना॥ नाम धरमरुचि
सुक्र समाना॥ सचिव सयान बंधु बलबीरा॥ आपु प्रतापपुंज रनधीरा॥ सेन संग
चतुरंग अपारा॥ अमित सुभट सब समर जुझारा॥ सेन बिलोकि राउ हरषाना॥
अरु बाजे गहगहे निसाना॥ बिजय हेतु कटकई बनाई॥ सुदिन साधि नृप चले
उ बजाई॥ जहां तहां परी अनेक लराई॥ जीते सकल भूप बरिआई॥ सप्त दीप भुज
बल बस कीन्हे॥ लै लै दंड छाडि नृप दीन्हे॥ सकल अवनि मंडल तेहि काला॥ एक
प्रतापभानु महिपाला॥ दोहा॥ स्वबस बिस्व करि बाहुबल निज पुर कीन्ह प्रबेसु॥
अरथ धर्म कामादि सुष सेवै समय नरेसु॥१५७॥ चौपाई॥ भूप प्रतापभानु बल पा
ई॥ कामधेनु भै भूमि सुहाई॥ सब दुष बरजित प्रजा सुषारी॥ धरमसील सुंदर
नर नारी॥ सचिव धरमरुचि हरि पद प्रीती॥ नृप हित हेतु सिषावै नीती॥ सुर गुर संत
पितर महिदेवा॥ करै सदा नृप सब कै सेवा॥ भूप धरम जे बेद बषाने॥ सकल करै सा

रा॰ बा॰
९

दरसुषमाने॥ दिनप्रतिदेइबिबिधिबिधिदाना॥ सुनेसास्त्रबरबेदपुराना॥ नानाबापी
कूपतड़ागा॥ सुमनबाटिकासुंदरबागा॥ बिप्रभवनसुरभवनसुहाए॥ सबतीरथ
न्हबिचित्रबनाए॥ दोहा॥ जहँलगिकहेपुरानश्रुतिएकएकसबजाग॥ बारसहस
सहसनृपकिएसहितअनुराग॥ १५८॥ चौपाई॥ हृदयनकछुफलअनुसंधाना॥
भूपबिबेकीपरमसुजाना॥ करैजेधरमकरममनबानी॥ बासुदेवअर्पितनृपग्यानी॥
चढ़िबरबाजिबारएकराजा॥ मृगयाकरसबसाजिसमाजा॥ बिंध्याचलगंभीरबनग
यउ॥ मृगपुनीतबहुमारतभयउ॥ फिरतबिपिननृपदीषबराहू॥ जनुबनदुरेउससिहि
ग्रसिराहू॥ बड़बिधुनहिसमातमुषमाहीं॥ मनहुक्रोधबसउगिलतनाहीं॥ कोलक
रालदसनछबिगाई॥ तनुबिसालपीवरअधिकाई॥ घुरघुरातहयआरोपाए॥ च
कितबिलोकितकानउठाए॥ दोहा॥ नीलमहीधरसिषरसमदेषिबिसालबराहु॥ चपरिच
लेउहयसुटुकिनृपहाँकिनहोइनिबाहु॥ १५९॥ चौपाई॥ आवतदेषिअधिकरवबा
जी॥ चलेउबराहमरुतगतिभाजी॥ तुरतकीन्हनृपसरसंधाना॥ महिमिलिगयउबि
लोकतबाना॥ तकितकितीरमहीपचलावा॥ करिछलसुअरसरीरबचावा॥ प्रगट
तदुरतजाइमृगभागा॥ रिसबसभूपचलेउसंगलागा॥ गयउदूरिघनगहनबराहू॥
जहँनाहिनगजबाजिनिबाहू॥ अतिअकेलबनबिपुलकलेसू॥ तदपिनमृगमगत
जैनरेसू॥ कोलबिलोकिभूपबड़धीरा॥ भागिपैठिगिरिगुहागंभीरा॥ अगमदे
षिनृपअतिपछिताई॥ फिरेउमहाबनपरेउभुलाई॥ दोहा॥ षेदषिन्नछुधिततृषित
राजाबाजिसमेत॥ षोजतब्याकुलसरितसरजलबिनुभयउअचेत॥ १६०॥ चौपाई॥
फिरतबिपिनआश्रमएकदेषा॥ तहाँबसनृपतिकपटमुनिभेषा॥ जासुदेसनृप
लीन्हछुड़ाई॥ समरसेनतजिगयउपराई॥ समयप्रतापभानुकरजानी॥ आप
नअतिअसमयअनुमानी॥ गयउनग्रहमनबहुतगलानी॥ मिलानराजहिनृप
अभिमानी॥ रिसउरमारिरंकजिमिराजा॥ बिपिनबसैतापसकेसाजा॥ तासुसमीप
गवननृपकीन्हा॥ एहिप्रतापरबितेहितबचीन्हा॥ राउतृषितनहिसोपहिचाना॥ देषि
सुबेषमहामुनिजाना॥ उतरितुरगतेकीन्हप्रनामा॥ परमचतुरनकहेउनिजना
मा॥ दोहा॥ भूपतितृषितबिलोकितेहिसरबरुदीन्हदिषाई॥ मज्जनपानसमेतहय
कीन्हनृपतिहरषाई॥ १६१॥ चौपाई॥ गेश्रमसकलसुषीनृपभयउ॥ निजआश्रमता
पसलेगयउ॥ आसनदीन्हअस्तरबिजानी॥ पुनितापसबोलेउमृदुबानी॥ कोतुम
कसबनफिरहुअकेले॥ सुंदरजुबाजीवपरहेले॥ चक्रवर्तिकेलछनतोरे॥ देषतद
यालागिअतिमोरे॥ नामप्रतापभानुअवनीसा॥ तासुसचिवमैंसुनहुमुनीसा॥
फिरतअहेरेपरेउभुलाई॥ बड़ेभागदेषेउपदआई॥ हमकहुदुर्लभदरसतुम्हा
रा॥ जानतहोकछुभलहोनिहारा॥ कहमुनितातभयउअँधियारा॥ जोजनसत्तरनग
रुतुम्हारा॥ दोहा॥ निसाघोरगंभीरबनपंथनसुनहुसुजान॥ बसहुआजुअसजानि
तुम्हजाईहुहोतबिहान॥ तुलसीजैसीभवतब्यतातैसीमिलैसहाय॥ आपुनआवै
ताहिपैताहितहाँलेजाइ॥ १६२॥ चौपाई॥ भलेहिनाथआयसुधरिसीसा॥ बाँधितु
रंगतरुबैठिमहीसा॥ नृपबहुभाँतिप्रसंसेउताही॥ चरनबंदिनिजभागसराही॥ पु
निबोलेउमृदुगिरासुहाई॥ जानिपिताप्रभुकरौढिठाई॥ मोहिमुनीससुतसेवक
जानी॥ नाथनामनिजकहहुबषानी॥ तेहिनजाननृपनृपहिसोजाना॥ भूपसु
हृदयसोकपटसयाना॥ बैरीपुनिछत्रीपुनिराजा॥ छलबलकीन्हचहैनिजकाजा॥
समुझिराजसुषदुषितअराती॥ अवाँअनलइवसुलगैछाती॥ सरलबचननृपकेसु
निकाना॥ बयरसँभारिहृदयहरषाना॥ दोहा॥ कपटबोरिबानीमृदुलबोलेउजु

गतिसमेत॥ नामहमारभिषारिअबनिर्धनरहितनिकेत॥ १६३॥ चौपाई॥ कहनृप
जेबिग्याननिधाना॥ तुम्हसारिषेगलितअभिमाना॥ सदारहहिअपनपौदुराए॥ स
बबिधिकुसलकुबेषबनाए॥ तेहितेकहहिसंतश्रुतिटेरे॥ परमअकिंचनप्रियहरि
केरे॥ तुम्हसमअधनभिषारिअगेहा॥ होतबिरंचिसिवहिसंदेहा॥ जोसिसोसितव
चरननमामी॥ मोपरकृपाकरिअअबस्वामी॥ सहजप्रीतिभूपतिकेदेषी॥ आपु
बिषयबिस्वासबिसेषी॥ सबप्रकारराजहिअपनाई॥ बोलेउअधिकसनेहजनाई॥
सुनुसतिभाउकहौमहिपाला॥ इहाँबसतबीतेबहुकाला॥ दोहा॥ अबलगिमोहि
नमिलेउकोउमैनजनावौकाहु॥ लोकमान्यताअनलसमकरतपकाननदाहु॥
सोरठा॥ तुलसीदेषिसुबेषभूलहिमूढ़नचतुरनर॥ सुंदरकेकहिपेषुबचनसु
धासमअसनअहि॥ १६४॥ चौपाई॥ तातेगुपुतरहौजगमाहीं॥ हरितजिकिमपिप्र
योजननाहीं॥ प्रभुजानतसबबिनहिजनाए॥ कहहुकवनसिधिलोकरिझा
ए॥ तुम्हसुचिसुमतिपरमप्रियमोरे॥ प्रीतिप्रतीतिमोहिपरतोरे॥ अबजौतातदु
रावौतोही॥ दारुनदोषघटैअतिमोही॥ जिमिजिमितापसकथैउदासा॥ ति
मितिमिनृपहिउपजबिस्वासा॥ देषास्वबसकर्ममनबानी॥ तबबोलातापसब
गध्यानी॥ नामहमारएकतनुभाई॥ सुनिनृपबोलेउपुनिसिरनाई॥ कहहु
नामकरअरथबषानी॥ मोहिसेवकआपनअतिजानी॥ दोहा॥ आदिसृष्टिउपजी
जबहितबउतपतिभैमोरि॥ नामएकतनुहेतुतेहिदेहनधरीबहोरि॥ १६५॥ चौपा
ई॥ जनिआचरजकरहुमनमाहीं॥ सुततपतेदुर्लभकछुनाहीं॥ तपबलतेजग
सृजैबिधाता॥ तपबलबिस्नुभएपरित्राता॥ तपबलसंभुकरहिसंघारा॥ तपबल
सेषधरैमहिभारा॥ तपअधारसबसृष्टिभुआरा॥ तपतेअगमनकछुसंसारा॥
भयउनृपहिसुनिअतिअनुरागा॥ कथापुरातनकहैसोलागा॥ कर्मधर्मइति
हासअनेका॥ करैनिरूपनबिरतिबिबेका॥ उदभवपालनप्रलयकहानी॥ कहेसि
अमितआचरजबषानी॥ सुनिमहीपतापसबसभयउ॥ आपननामकहनत
बलयउ॥ कहतापसनृपजानौतोही॥ कीन्हेउकपटलागभलमोही॥ सोरठा॥
सुनुमहीसअसिनीतिजहाँतहाँनामनकहहिनृप॥ मोहितोहिपरअतिप्रीति
सोइचतुरताबिचारितव॥ १६६॥ चौपाई॥ नामतुम्हारप्रतापदिनेसा॥ सत्यकेतत
वपितानरेसा॥ गुरुप्रसादसबजानिअराजा॥ कहियनआपनजानिअकाजा॥ दे
षितातवसहजसुधाई॥ प्रीतिप्रतीतिनीतिनिपुनाई॥ उपजिपरीममतामन
मोरे॥ कहौकथानिजपूछेतोरे॥ अबप्रसन्नमैंसंसयनाहीं॥ मागुजोभूपभा
वमनमाहीं॥ सुनिसुबचनभूपहरषाना॥ गहिपदबिनयकीन्हबिधिनाना॥
कृपासिंधुमुनिदरसनतोरे॥ चारिपदारथकरतलमोरे॥ प्रभुहितथापिप्रसन्नबि
लोकी॥ मागिअगमबरहोउअसोकी॥ दोहा॥ जरामरनदुषरहिततनसमरजी
तैजनिकोउ॥ एकछत्ररिपुहीनमहिराजकल्पसतहोउ॥ १६७॥ चौपाई॥ कहताप
सनृपऐसेइहोई॥ कारनएककठिनसुनुसोई॥ कालौतुअपदनाइहिसीसा
॥ एकबिप्रकुलछाड़िमहीसा॥ तपबलबिप्रसदाबरिआरा॥ तिन्हकेकोपनको
उरषवारा॥ जोबिप्रन्हबसकरहुनरेसा॥ तौतुअबसबिधिबिस्नुमहेसा॥ चलेनब्र
ह्मकुलसनबरिआई॥ सत्यकहौदोउभुजाउठाई॥ बिप्रश्रापबिनुसुनुमहिपाला॥
तोरनासनहिकवनेहुकाला॥ हरषेउराउबचनसुनितासू॥ नाथनहोइमोरअ
बनासू॥ तवप्रसादप्रभुकृपानिधाना॥ मोकहुसर्बकालकल्याना॥ दोहा॥ एवम

रा॰बा॰
१८

स्नुकहिकपटमुनिबोलाकुटिलबहोरि॥मिलबहमारिभुलाबनिजकहहुतहमहिन॰
खोर॥१६८॥चौपाई॥तातेमैतोहिबरजौराजा॥कहेकथातवपरमअकाजा॥छठेश्र
वनएहपरैकहानी॥नासतुम्हारसत्यममबानी॥एहप्रगटेअथवाद्विजश्रापा॥
नासतोरसुनुभानुप्रतापा॥आनउपायनासतवनाही॥जौहरिहरकोपहि
मनमाही॥सत्यनाथपदगहिनृपभाषा॥द्विजगुरुकोपकहहुकोराषा॥राषै
गुरुजौकोपबिधाता॥गुरुबिरोधनहिकोजगत्राता॥जौनचलबहमकहेतुम्हा
रे॥होउनासनहिसोचहमारे॥एकहिडरडरपतमनमोरा॥प्रभुमहिदेवश्राप
अतिघोरा॥दोहा॥होहिबिप्रबसकवनबिधिकहहुकृपाकरिसोउ॥तुम्हतजिदी
नदयालनिजहितूनदेषौकोउ॥१६९॥चौपाई॥सुनुनृपबिबिधजतनजगमाही॥
कष्टसाध्यपुनिहोहिकिनाही॥अहैएकअतिसुगमउपाई॥तहाँपरंतुएककठि
नाई॥ममआधीनजुगतिनृपसोई॥मोरजाबतवनगरनहोई॥आजुलगेअ
रुजबतेभएउ॥काहूकेग्रहग्रामनगयेउ॥जौनजाउतवहोइअकाजु॥बनआ
इअसमंजसआजू॥सुनिमहीसबोलेमृदुबानी॥नाथनिगमअसनीतिबषा
नी॥बडेसनेहलघुनपरकरही॥गिरिनिजसिरनसदातृनधरही॥जलधिअगा
धमौलिबहफेनू॥संततधरनीधरतसिररेनू॥दोहा॥असकहिगहेनरेसप
दस्वामीहोहुकृपाल॥मोहिलागिदुषसहियेप्रभुसज्जनदीनदयाल॥१७०॥
चौपाई॥जानिनृपहीआपुनआधीना॥बोलातापसकपटप्रबीना॥सत्यकहौभूप
तिसुनुतोही॥जगनाहिनदुर्लभकछुमोही॥अवसकाजकरिहौनृपतोरा॥म
नक्रमबचनभगततैमोरा॥जोगजुगतितपमंत्रप्रभाऊ॥फलैतबहिजबकरियदु
राई॥जौनरेसमैकरौरसोई॥तुमपरसहुमोहिजाननकोई॥अन्नसोजोईजोईभो
जनकरही॥सोईसोईतवआयसुअनुसरई॥पुनितिन्हकेघरजेवैसोऊ॥तवबस
होइभूपसुनुसोऊ॥जाईउपायरचहुनृपएहू॥संवतभरिसंकल्पकरेहू॥दोहा॥
नितनूतनद्विजसहससतबरेहुसहितपरिवार॥मैतुम्हरेसंकलपलगिदिनहि
करबजेवनार॥१७१॥चौपाई॥एहिबिधिभूपकष्टअतिथोरे॥होइहहिसकल
बिप्रबसतोरे॥करिहहिबिप्रहोममषसेवा॥तेहिप्रसंगसहजेहिबसदेवा॥औ
रएकतोहीकहौलषाई॥मैएहिबेषनआइबकाऊ॥तुम्हरेउपरोहितकहुँराया
हरिआनबमैकरिनिजमाया॥तपबलतेहिकरिआपुसमाना॥राषिहौइहाबर
षपरमाना॥मैधरितासुबेषसुनुराजा॥सबबिधितोरसवारबकाजा॥गैनिसि
बहुतसयनअबकीजै॥मोहितोहिभूपभेटदिनतीजे॥मैतपबलतोहितुरे
गसमेता॥पहुचैहौसोवततोहिनिकेता॥दोहा॥मैआउबसोईबेषुधरि
पहिचनेहुतबमोही॥जबएकांतबुलाइसबकथासुनावैतोहि॥१७२॥चौपा
ई॥सयनकीन्हनृपआयसुमानी॥आसनजाइबैठेछलग्यानी॥श्रमितभूपनि
द्राअतिआई॥सोकिमिसोवसोचअधिकाई॥कालकेतुनिसिचरतहआवा॥जे
हिसूकरहोइनृपहिभुलावा॥परममित्रतापसनृपकेरा॥जानैसोअतिकप
टघनेरा॥तेहिकेसतसुतअरुदसभाई॥षलअतिअजयदेवदुषदाई॥प्रथ
महिभूपसमरसबमारे॥बिप्रसंतसबदेवदुषारे॥तेहिषलपाछिलबैरसंभा
रा॥तापसनृपमिलिमंत्रबिचारा॥जेहिरिपुछयसोइरचेन्हिउपाई॥भावीब
सनजानकछुराई॥दोहा॥रिपुतेजसीअकेलअपिलघुकरिगनियनताहु॥
अजहूदेतदुषरविससिहिसिरअवसेषितराहु॥१७३॥चौपाई॥तापसनृपनि

जसषहिनिहारी॥हरषिमिलेउउठिभएउसुषारी॥मित्रहिकहिसबकथासुना
ई॥जातुधानबोलासुषपाई॥अबसाधेउरिपुसुनहुनरेसा॥जौतुमकीन्हमो
रउपदेसा॥परिहरिसोचरहोतुमसोई॥बिनुऔषधिव्याधिबिधिषोई॥कु
लसमेतरिपुमूलबहाई॥चौथेदिवसमिलबमैआई॥तापसनृपहिबहुतप
रितोषी॥चलामहाकपटीअतिरोषी॥भानुप्रतापहिबाजिसमेता॥पहुचा
एसिछिनमाझनिकेता॥नृपहिनारिपहिसैनकराई॥हयग्रहबांधेसिबाजि
बनाई॥दोहा॥राजाकेउपरोहितहिहरिलैगएउबहोरि॥लैराषेसिगिरिषोह
मैमायाकरिमतिभोरि॥१७४॥चौपाई॥आपुबिरचिउपरोहितरूपा॥परेउजा
इतेहिसेजअनूपा॥जागेउनृपअनभएउबिहाना॥देषिभवनअतिअचरज
माना॥मुनिमहिमामनमैअनुमानी॥उठेगवहिजेहिजाननरानी॥का
ननगएउबाजिचढितेही॥पुरनरनारिनजानेहुकेही॥गएजामजुगभू
पतिआवा॥घरघरउत्सवबाजबधावा॥उपरोहितहिदेषजबराजा॥चकि
तबिलोकिसुमिरिसोइकाजा॥जुगसमनृपहिगएदिनतीनी॥कपटीमु
निपदरहामतिलीनी॥समयजानिउपरोहितआवा॥नृपहिमतेसबक
हिसमुझावा॥दोहा॥नृपहरषेउपहिचानिगुरुभ्रमबसरहानचेत॥बरेतु
रतसतसहसबरबिप्रकुटंबसमेत॥१७५॥चौपाई॥उपरोहितजेवनारबनाई॥
छरसचारिबिधिजसश्रुतिगाई॥मायामयतेहिकीन्हरसोई॥बिंजनबहुग
निसकैनकोई॥बिबिधमृगनकरआमिषरांधा॥तेहिमहुबिप्रमांसुषलसां
धा॥भोजनकहुसबबिप्रबोलाई॥पदपषारिसादरबैठाए॥परसनजबहि
लागमहिपाला॥भैअकासबानीतेहिकाला॥बिप्रबृंदउठिउठिग्रहजाहू॥
हैबडिहानिअन्नजनिषाहू॥भएउरसोईभूसुरमासू॥सबद्विजउठेमानिबि
स्वासू॥भूपबिकलमतिमोहभुलानी॥भावीबसनआवमुषबानी॥दोहा॥
बोलेबिप्रसकोपतबनहिकछुकीन्हबिचार॥जाइनिसाचरहोउनृपमूढस
हितपरिवार॥१७६॥चौपाई॥छत्रिबंधतैबिप्रबोलाई॥घालैलिहेसहितसमुदा
ई॥ईश्वरराषाधर्महमारा॥जैहहितेसमेतपरिवारा॥संवतमध्यनासतवहोऊ॥
जलदातानरहकुलकोऊ॥नृपसुनिश्रापबिकलअतित्रासा॥भैबहोरिबरगि
राअकासा॥बिप्रहुश्रापबिचारनदीन्हा॥नहिअपराधभूपकछुकीन्हा॥
चकितबिप्रसबसुनिनभबानी॥भूपगएउजहाभोजनषानी॥तहानअस
ननहिबिप्रसुआरा॥फिरेउराउमनसोचअपारा॥सर्वप्रसंगमहिसुरन
सुनाई॥त्रसितपरेउअवनीअकुलाई॥दोहा॥भूपतिभाविमिटैनहिजेन
हिदूषनतोर॥किएअन्यथाहोइनहीबिप्रश्रापअतिघोर॥दो॥कहिबिप्र
न्हसुनहुसबनृपहिदोषनहिकोई॥भक्तिबिमुखजोकर्मतेहोतिन्हकरफ
लअसहोई॥१७८॥चौपाई॥जोकरिकपटछलैजगकाहू॥देइईसअसअघअबि
गतिताहू॥बिप्रबचनसुनिनृपअकुलाना॥उठिपुनिबिनयकीन्हबिधिना
ना॥पुनिपुनिपदगहिकहेउभूवाला॥आपअनुग्रहकहहुकृपाला॥जब
लगहोवनिशाचरजाई॥ब्रह्मवंसतामसतनुपाई॥अजरअमरअतुलितप्रभु
ताई॥जगतबिष्यातबीरदोउभाई॥होइहिजबहिरामअवतारी॥तबतु
म्ह[illegible]देहतप्रारी॥शिवप्रसादबरपाईबहोरी॥होइहिसबजगप्रभुतातोरी

मिलिहि तप्रहित बसे नन जमारा ॥ दोहा ॥ नव सुख
बनि लाग निज सादर सनु हनवेस ॥ सव परिवार ई धारन बहोई हिस्र निई घदेस ॥
॥१७९॥ चौपाई ॥ प्रस कहि सब महिदेव सिधाए ॥ समाचार पुरलोगन पाए ॥ सो
चहि दूषन देवनहि देहीं ॥ बिरचन हंस काग किये जेहीं ॥ उपरोहितहि भवन
पहुचाई ॥ असुर तापसहि षबरि जनाई ॥ तेहि षल जहा तहा पत्र पठाए ॥ सजि
सजि सेन भूप सब धाए ॥ घेरेन्हि नगर निशान बजाए ॥ बिबिध भांति नित होइ
लराई ॥ जूझे सकल सुभट करि करनी ॥ बंधु समेत परेउ नृप धरनी ॥ सत्यकेतु
कुल कोउ नहि बाचा ॥ बिप्रश्राप किमि होइ असाचा ॥ रिपु जीति सब नृप नगर ब
साई ॥ निजपुर गवने जय जस पाई ॥ दोहा ॥ भरद्वाज सुनि जाहि जब होइ बिधा
ता बाम ॥ धूरि मेरुसम जनक जम ताहि ब्यालसम दाम ॥१८०॥ चौपाई ॥ काल
पाइ मुनि सुनु सोई राजा ॥ भएउ निशाचर सहित समाजा ॥ दससिर ताहि बीस
भुजदंडा ॥ रावन नाम बीर बरिबंडा ॥ भूप अनुज अरिमर्दन नामा ॥ भएउ सो कुं
भकरन बलधामा ॥ सचिव जो रहा धरमरुचि जासू ॥ भएउ बिमात्र बंधु लघु ता
सू ॥ नाम बिभीषन जेहि जग जाना ॥ बिस्नुभगत बिज्ञान निधाना ॥ रहे जो सु
त सेवक नृप केरे ॥ भए निशाचर घोर घनेरे ॥ कामरूप षल जिनस अनेका ॥
कुटिल भयंकर बिगत बिबेका ॥ कृपारहित हिंशक सब पापी ॥ बरनि न जाई
बिस्व परितापी ॥ दोहा ॥ उपजे जदपि पुलस्त्य कुल पावन अमल अनूप ॥ तदपि
महीसुर श्रापबस भए सकल अघरूप ॥१८१॥ चौपाई ॥ कीन्ह बिबिध तप तीनो
भाई ॥ परम उग्र नहि बरनी सो जाई ॥ गएउ निकट तप देषि बिधाता ॥ मागहु
बर प्रसन्न मै ताता ॥ करि बिनती पद गहि दससीसा ॥ बोलेउ बचन सुनहु जग
दीसा ॥ नाथ कृपा करि करहु पसाऊ ॥ समरपराभव होइ न काऊ ॥ हम काहू
के मरहि न मारे ॥ बानर मनुज जाति दुइ बारे ॥ एवमस्तु तुम्ह बड तप कीन्हा ॥
मै ब्रह्मा मिलि तेहि बर दीन्हा ॥ पुनि प्रभु कुंभकरन पहि गएउ ॥ तेहि बिलोकि
मन बिसमय भएउ ॥ जो एहि षल नित करब अहारू ॥ होइहि सब उजारि सं
सारू ॥ सारद प्रेरि तासु मति फेरी ॥ मागेसि निद्र मास षट केरी ॥ दोहा ॥ ग
ए बिभीषन पास पुनि कहेउ पुत्र बर मागु ॥ तेहि मागेउ भगवंत पद कमल
अनुराग ॥१८२॥ चौपाई ॥ तिन्हहि देइ बर ब्रह्म सिधाए ॥ हरषित ते अपने ग्रह आ
ए ॥ मय तनुजा मंदोदरि नामा ॥ परम सुंदरि नारि ललामा ॥ सोई मय दीन्ह
रावनहि आनी ॥ होइहि जातुधानपति जानी ॥ हरष भएउ नारि भलि पाई ॥ पुनि
दोउ बंधु बिआहेसि जाई ॥ गिरि त्रिकूट एक सिंधु मझारी ॥ बिधि निर्मित दुर्ग
म अति भारी ॥ सोई मयदानव बहुरि संवारा ॥ कनक रचित मनिभवन अपारा
॥ भोगावति जस अहिकुल बासा ॥ अमरावति जस सक्र निवासा ॥ तिन्ह ते अ
धिक रम्य अति बंका ॥ जग बिख्यात नाम तेहि लंका ॥ दोहा ॥ षाई सिंधु गंभीर
अति चारिहु दिसि फिरि आव ॥ कनक कोट मनि षचित दृढ बरनि न जाइ बना
व ॥ हरिप्रेरित जेहि कल्प जोई जातुधानपति होई ॥ सूर प्रतापी अतुल बल द
ल समेत बस सोई ॥१८३॥ चौपाई ॥ रहे तहा निसिचर भट भारे ॥ ते सब सुरन्ह स
मर संघारे ॥ अब तह रहहि सक्र के प्रेरे ॥ रक्षक कोटि जक्षपति केरे ॥ दसमुख क
तहु षबरि असि पाई ॥ सेन साजि गढ घेरेसि जाई ॥ देषि बिकट भट बड कटका

ई ॥ जक्ष जीव लै गए पराई ॥ फिरि सब नगर दसानन देषा ॥ गएउ सोच सुष भएउ बिसेषा ॥
सुंदर सहज अगम अनुमानी ॥ कीन्ह तहा रावन रजधानी ॥ जेहि जस जोग बांटि ग्रह दी
न्हे ॥ सुषी सकल रजनीचर कीन्हे ॥ एक बार कुबेर पर धावा ॥ पुष्पक जान जीति लै
आवा ॥ दोहा ॥ देव जक्ष गंधर्व नर किंनर नागकुमारि ॥ जीति बरी निज बाहुबल ब
हु सुंदर बर नारि ॥ दोहा ॥ कौतुक ही कैलास पुनि लीन्हेसि जाइ उठाई ॥ मनहु तौ
लि निज बाहुबल चला बहुत सुष पाई ॥१८४॥ चौपाई ॥ सुष संपति सुत सेन सहाई ॥
जय प्रताप बल बुद्धि बडाई ॥ नित नूतन सब बाढत जाई ॥ जिमि प्रतिलाभ लोभ
अधिकाई ॥ अतिबल कुंभकरन अस भ्राता ॥ जेहि कहु नहि प्रतिभट जग जाता ॥
करै मदपान सोवै षट मासा ॥ जागत होइ तिहु पुर त्रासा ॥ जौ दिन प्रति अह
र कर सोई ॥ बिस्व बेगि सब चौपट होई ॥ समर धीर नहि जाइ बषाना ॥ तेहि सम अ
मित बीर बलवाना ॥ बारिदनाद जेठ सुत तासू ॥ भट महु प्रथम लीक जग जासू ॥ जेहि न
होइ रन सनमुष कोई ॥ सुरपुर नितहि परावन होई ॥ दोहा ॥ कुमुष अकंपन कुलि
सरद धूमकेतु अतिकाइ ॥ एक एक जग जीति सक ऐसे सुभट निकाइ ॥१८५॥
चौपाई ॥ कामरूप जानहि सब माया ॥ सपनेहु जिन्ह के धर्म न दाया ॥ दसमुष
बैठ सभा एक बारा ॥ देषि अमित आपन परिवारा ॥ सुत समूह जन परिजन नाती ॥ ग
नै को पार निशाचर जाती ॥ सेन बिलोकि सहज अभिमानी ॥ बोला बचन क्रोध म
द सानी ॥ सुनहु सकल रजनीचर जूथा ॥ हमरे बैरी बिबुध बरूथा ॥ ते सनमुष न
हि करहि लराई ॥ देषि सबल रिपु जाहि पराई ॥ तिन्ह कर मरन एक बिधि होई ॥ क
हउ बुझाइ सुनहु अब सोई ॥ द्विजभोजन मष होम सराधा ॥ सब कै जाइ करहु तुम
बाधा ॥ दोहा ॥ छुधा छीन बलहीन सुर सहजेहि मिलिहहि आई ॥ तब मारिहौ
कि छाडिहौ भली भांति अपनाई ॥१८६॥ चौपाई ॥ मेघनाद कहु पुनि हकरावा ॥
दीन्ही सिष बल बयरु बढावा ॥ जे सुर समर धीर बलवाना ॥ जिन्ह के लरिबे कर अभिमाना ॥ ति
न्हहि जीति रन आनेसु बांधी ॥ उठि सुत पितु अनुसासन कांधी ॥ एहि बिधि सब
ही अज्ञा दीन्ही ॥ आपुन चलेउ गदा कर लीन्ही ॥ चलत दसानन डोलत अवनि
गर्जत गर्भ स्रवहि सुररवनी ॥ रावन आवत सुनेउ सकोहा ॥ देवन्ह तके मेरुगि
रि षोहा ॥ दिगपालन के लोक सुहाए ॥ सूने सकल दसानन पाए ॥ पुनि पु
नि सिंघनाद करि भारी ॥ देइ देवतन्ह गारि प्रचारी ॥ दोहा ॥ जेहि मद बस चल रवन
बोलत बचन बिचार ॥ ते सपबि लशत रजनीचर सोऊ किमि शोक हि शोभारी ॥१८
७ ॥ चौपाई ॥ रनमद मत्त फिरै जग धावा ॥ प्रतिभट षोजत कतहु न पावा ॥ नारद
मिलेउ कहन सुष काई ॥ देवक हाम्ह निदेश दिषाई ॥ सुनत अनूप नारद हिन
भावा ॥ सेन दी पते हि सुवन पठावा ॥ मागएउ तव पार सोई गाएउ ॥ मारी हृद तह
देषत भएउ ॥ तिन्ह सन कहा पतिन्ह पहि जाहू ॥ कहिउ कि आवा निशाचर ना
हू ॥ तब मै तिन्हहि हि जीति संग्रामा ॥ लेजैहौ तुम्ह कहु निज धामा ॥ सुनत बचन
एकजरट बिसानी ॥ धाई चरन गहि रावन इडानी ॥ गई हृदि लै थरिक कोजा
इ बलि सिंधु लष्य अति जावा ॥ दोहा ॥ राएउ पताल अवेन हेत मेरन बिप्र प्रधा
द ॥ सा कथा न ई हि रजा पुनि हिय हरष न बिषाद ॥१८८॥ चौपाई ॥ जीति सना
गन नर सब जारी ॥ गया बहुरि बलिलोक सुरारी ॥ बामन रावन आवन जा
ना ॥ किए देवारि सिमल अभिमाना ॥ षेलत रहे नगर सिसु नाना ॥ निज बल
तिन्हहि दीन्ह भगवाना ॥ धाई धरा तिन्ह पकरि लै आए ॥ नगर नारी नर देषन धा

ए॥ बीसबाहुदसकंधरजाही॥ विधियहमष्ठनकहाकेआए॥ राषिन्हवायपिजाविहिभा
गी॥ नामनकहेसदैवकुमारी॥ वामनदोषवडनसकुचाना॥ तवब्राडिदियेकृपानि
धाना॥ बलानकुनिशाचरनाहा॥ लाजघेककछुनहिमनमाहा॥ दो॰॥ अनिनि
लज॥ दयारहितहिंसापरअतिप्रीति॥ रामविमुषदसकंधरसठतापरवाहननीति
भारद्वाजिसुनजाहिजवहोईविधातावाम॥ कनककेवुहोईजाईजगलहेनकोडीदा
म॥ १८४॥ चौपाई॥ जहकहुफिरनदेवहिजपावै॥ देइलेईवडत्रासदिषावै॥ ईहिआव
रनफिरैदिनराती॥ महाघोरमेघलउँनपाती॥ तवनरनपंपापुरआवा॥ बालिनामक
पिपतिजिहिदावा॥ दीघजाईंगकसरवरसोहा॥ जिहिमनमहरमुनिन्हकरछोभा॥ न
हांकपीसकरैनिजध्याना॥ आदरसहितमेंध्यासनमाना॥ जाईहादभानहादससीसा॥
देकावाहुगहिभुजवीसा॥ तवकपीसचितवामुसुकाई॥ ध्यानकेअसरीसविस
राई॥ तवरावनवोलाकरिकोधा॥ वकध्यानीकपीससुनुवाधा॥ दो॰॥ मोहिजी
तिविनुसमरसुननकरध्यानकपीस॥ अंजलिदेईनपाईहैसमयकरैअजरीस॥ १८५॥
चौपाई॥ तववालीवोलाविहिसाई॥ वलनसाराबसेहोभाई॥ रविसुअंजलिमेदेईसप्रीती
हाथहोईजाईमोहिजीती॥ नवलिखिवरयतिउहारिसाई॥ देहेकपिनहछुडिकदरा
ई॥ तवहिकीसपतिमनहिविचारा॥ सिववलदीन्हसरहिनहिमारा॥ दसकंधरवलुजा
हविचारी॥ अजयनसारीसुनिविधिवारि॥ वहुतभांतिवालिसमुझावा॥ कोनेहुभां
तिवोधिनहिआवा॥ तवसकोपहोईधराकपीसा॥ धरितिहिकांषचापिदससीसा॥
अंजलिदीन्हारवीहिमनवानी॥ अववाधानदुंदधिकरयानी॥ नपाआदिशिकरम
नजानी॥ तिहिषनसंध्यावंदिसिरानी॥ दो॰॥ आवाघ्नरकपीसतवकोषरहालेकेस
ईहिविधिवीतेमासषटयावेवडनकलेस॥ १८६॥ चौपाई॥ तेईकलेसवससकरैउपाई॥
नहानचलेकछुआनरनाई॥ वहुप्रसेदकंधरीमहनामा॥ अतिअवासतराभयामा॥
कलमलाईविसदसनचिकारा॥ कचकोरजीवमनहुभमचारा॥ पकांदिवसरवितिअ
जलीमाना॥ कांघतेनिसरिमहाधुनियाना॥ तालठोकमनस्पषभादाछा॥ दषत
नाहींकोधअतिवाछा॥ तवउविधरिकपिससोवोधा॥ लेआयोअंगदकेपाधा॥
वीसभुजादससीसमुयारा॥ वरनपहारपुनिधाविउरमारा॥ धरिसमेटकमरि
सम्हकीन्हा॥ वाधिसेजपरसोभादीन्हा॥ अंगदषलनलातसिरमारा॥ किलकिल
ईकिलकेकिलकारा॥ दो॰॥ नारावीन्हिउरावनहितिहिषिनदीन्हछुडाई॥ जाइ
नरतलेकमनुहवकुविधरिहिकपिराई॥ १८७॥ चौपाई॥ पुनिरावनआयतिहिदा
ई॥ सहसवाहुजहाससवनाई॥ जलक्रीडाकरसंगसवनारी॥ विविधभांतिसो
भाअतिभारी॥ आईरवामेइलजहरेवा॥ सुरनरनागकैरहिसवसेवा॥ जाईदी
षरावनसुषमाना॥ हरषसमनहृदयसुषमाना॥ तहेतेकेसनाईसिवदेषा
मनहुविरंवरचिउवहुरेषा॥ तलसीकमलपत्रकरिआना॥ विलपयनअरुष
ध्यसमाना॥ जाईवैजलेछाभिउदससीसा॥ थाभिउमत्रसुमिरवावरीसा॥ दो
दो॰॥ तवअवेडजलेछामेउलागयोउरसमाज॥ सहसवाहुअतिसकनसवाल
नीयनडरलाज॥ १८८॥ चौपाई॥ तवराजामनतेवोलदिनारी॥ अतिसदरसवरा
नकुमारी॥ सुनहुनृपतिआवाकोऊगाछा॥ अकस्मादसहानदवाछा॥ सुनि
राजाभाक्रोधअपारा॥ जमननेत्रविपुरकहमारा॥ जाईदीषरावननदहादाछा
तासुमत्रजनुजलनिधिवाछा॥ मायाप्रवलमहावलभारी॥ लेकेसवकरेरथ
रिसिप्रचारी॥ लपुनिवाधगयातीयपासा॥ गारनिदेवसवपरमहुलासा॥ क
विभ्रानषुजागोवीसा॥ हगमालावांधसीदससीसा॥ लतिनरहृनछलोसिरहूई॥

विसउरमारकष्टवहुसहई॥ दो॰॥ सुनुमिरीजापावनपरमअवपहुकथासान॥ जेह
यमालावांधिसिवीसभुजादसभाल॥ १८९॥ चौपाई॥ सकलआयदेषहिनरनारी॥ मार
हिलातहसहिदेतारी॥ नामनकहेरदेसकुचाना॥ वहुविधिएकहिनमानिअमाना॥ नर
त्यकरहिंभादिकनारी॥ दसहमाघदसदोषकवारी॥ कछुकदिवसईहिभांतिगवाव
सोपुलस्तमुनिजाईछुडावा॥ चलानेरतमहाअभिमानी॥ तेलकेआपआयनियरा
नी॥ मारगजातदीषविवुधारी॥ अतिअनूपसुंदरवरनारी॥ तेदनपुष्पधरकरधारी
सुजेचलीजाईविपुरारी॥ देषिउरवसीमनमकुचानी॥ तवरावननेवोलाकहवानी॥ कौन
मकहागवननृपकीन्हा॥ नजावमउनउतरनहीदीन्हा॥ दो॰॥ निकटजाईदसकेधरग
हिअंकमभरिलीन्ह॥ उरवपुकुवेरकेनहिविचारकछुकीन्ह॥ १९०॥ चौपाई॥ चीन्हनृप
हिमनसंकाआई॥ हाटकरमकान्हपछिताई॥ सनपछिताईसोचउरभयेउ॥ तेकेआव
लंकाकहगयउ॥ चलीउरवसीआईतहां॥ नलकापुरीनलकुवरजहां॥ समाचारस
वपतिहिसुनावा॥ सुनिकथामनमहदुषपावा॥ दीन्हआपकरिक्रोधअपारा॥ राव
नवेसहोहुषकारा॥ चलीआपलेकामहआई॥ दसकंधरवेदिउजिहिठाई॥ आगेआईस
हिभयआपा॥ तवलंकेसुरअतिभयकापा॥ सउरसकापचितवतिहिआवा॥ नल
कुवरकेआपअतिघोरा॥ दो॰॥ आपहिअगीकारकेमनमहाकीन्हविचार॥ अपि
न्हदेडनहीदीन्हारोषिउलंकभुवार॥ १९१॥ चौपाई॥ हतवारितिहिसदवभवानी॥ आ
रद्वाजसुनिकथावषानी॥ आएइनअपेन्हकेगेहा॥ देषनसवहिभएउसंदेहा॥ पु
छहिहीषीहिकाहापरगाधा॥ कहुकुसललंकेसभआवा॥ तातकुसलअववम
विपरिला॥ उमसमनसोगिन्हदेउअभीला॥ देकदेउअमकहिरहिरमोई॥ केगिरि
केदरजाऊपराई॥ सुनिअसवचनसवहिदुषपावा॥ तानएकातिन्हपाचमेंगावा॥ म
वमिलकोरिविचारईकहाई॥ भोगदरुधिरकषयलैआई॥ हतन्हकहसोपामनजा
नी॥ होईसकोपवोलेमृदुवानी॥ दो॰॥ घटउघरनतुयहोईहौसहितसकलपरि
वार॥ तेहतनदेआगजहोवहलंकेसभुवार॥ १९२॥ चौपाई॥ जहिदरवारनीतिनहि
भाई॥ घलमेरलीजरीनदेआए॥ आगहृतदेसजवरावन॥ परमहुलासभयोमन
भावन॥ आगेआनघटधराईनारी॥ देषसकललंकापतिभारी॥ बोलिन्हवचनकहे
ईहिभाई॥ सकलकथातिन्हनृपहिसुनाई॥ इहघटतेलंकापतिनासा॥ सवहन
न्हअसवचनप्रकासा॥ यहघटलेउनरहिसिजाहू॥ ततनसमेतयरुलेनाहू॥ सुन
तनृपवचनचलेसोतेसे॥ जनकराईकेदेसहिपैसे॥ करहिविचारकरियेअवसो
ई॥ उनमषलघटराषियेतोई॥ दो॰॥ अतिउनमउरनदिसाजनकराईकरदेसु
हतन्हकोविविचारमनकीन्होसुथलप्रवेस॥ १९३॥ चौपाई॥ छेत्रमांजघटधरयोउता
री॥ सतपुनीतेहतविवुधारी॥ जनकजतनहांकीन्हअरंभा॥ रचेकनककदली
केषंभा॥ कीयोमेषलामनिमयपटरी॥ अमिसुहावनपावनभूरी॥ सतानंदअन
सासनपाई॥ वामीकरहलरचावानाई॥ हाटकलागनलगहिउरधारी॥ नहांप
गटभईअरुपयकुमारी॥ भुमजानामकहिनिकटउलाए॥ देवअदेवसवेनहआ
ए॥ केन्यादेषअनूपभवानी॥ सुनामालिरोजेग्रहआनी॥ नामजानकीपरम
पुनीता॥ नारदआनकहापुनिसीता॥ छंद॥ कहिउनिसीतापरमपुनिताआदि
नोतिकोमातिमही॥ नृपनीतिनिधानाघरमसुजाना आदिमध्यअवसानमही
भवउद्भवकरनीपालनहरनीतेतितेनियहवेदकहे॥ तवकुनपकासीभुजाविला
सोनीनेलोकमहिहपरिरहे॥ दो॰॥ सकलकथानृपजनकसोनारदकहीवषा
न॥ सकलसलदानिलजगतजगदेवाजियजानि॥ १९४॥ चौपाई॥ जनकसुवि

रा॰बा॰
२१

नय करहु मन कर जोरे॥ नाथ मनोरथ हु जे मोरे॥ चरन पषारि सुथल लै बैठारी॥ बिन
य कीन्ह अस्तुति अनुसारी॥ परम हुलास सब बचन सुभ भाषा॥ चरनोदक लै माथे रा
षा॥ धन्य धन्य कहि सुत प्रभाई॥ पुनि मुनि सिष प्रीति कीन्हि नहि काऊ॥ जौ न सह कृपा करी
प्रगाधारे॥ मिटे भ्रम गल दोष हमारे॥ अब मोहि भा भरोस समनि नाथा॥ भयो धन्य
मै गन्यान गाथा॥ साधु बिवेह राज श्री जानकी॥ इमि आश्रम कहे नृप काकी॥ नम
उपमा उपमेय सब॥ जहा प्रगट भई जया आई अब॥ दोहा॥ जोग भोग मे गोराई मन।
कथा न प्रगट प्रभाई॥ भई बिदेह बिदेह सनि बिदा भए मुनिराई॥२००॥ चौपाई॥ क
हि सुनि कथा सषि राउ मिथाता॥ बहु बिहून लेका पुनि आता॥ कहि न्ह जाई आगा हम
राषी॥ सो संकर गिरिजा सन भाषी॥ जागबलक मुनि कथा रसाला॥ साधु साधु म
नि परम कृपाला॥ पुनि मुनि कहिहि कथा उपदेसा॥ जग जिती ई सब लेकु नरेसा॥
बासि दाउ हारि सि भे बासा॥ सकल देव कीन्हे निज दासा॥ रबि ससि पवन बरुन ध
नधारि॥ अगिनि काल जम सब अधिकारी॥ किंनर सिद्ध मनुज सुर नागा॥ हठ सब
ही के पंथहि लागा॥ ब्रह्म सृष्टि जहँ लग तनुधारी॥ दसमुष बसबर्ति नर नारी॥
आयसु करहि सकल भयभीता॥ नवहि आय नित चरन बनीता॥ दोहा॥ भुज ब
ल बिस्व बस्य करि राषेसि कोउ न सुतंत्र॥ मंडलीक मनि रावन राज करै निज मंत्र॥ दे
व दछ गंधर्ब नर किंनर नाग कुमारि॥ जीति बरी निज बाहु बल बहु सुंदर बरना
रि॥२०१॥ चौपाई॥ इंद्रजीत सन जो कछु कहेऊ॥ सो सब जनु पहिले करि रहेऊ॥ प्रथम
हि जिन्ह कहु आयसु दीन्हा॥ तिन्ह कर चरित सुनहु जो कीन्हा॥ देषत भीमरूप सब
पापी॥ निसिचर निकर देव परितापी॥ करहि उपद्रव असुर निकाया॥ नाना रूप धरहि
करि माया॥ जेहि बिधि होई धर्म निर्मूला॥ सो सब करहि देव प्रतिकूला॥ जेहि जेहि
देस धेनु द्विज पावहि॥ नगर गाउ पुर आगि लगावहि॥ सुभ आचरन कतहु नहि हो
ई॥ देव बिप्र गुरु मान न कोई॥ नहि हरि भगति जग्य तप ग्याना॥ सपनेहु सुनिय
न बेद पुराना॥ महा अनीति बरनि नहि जाई॥ मारहि ब्रह्मन देवहि गाई॥ दोहा॥ हा हा
उपद्रव कीन्ह जनपद नभ संसार॥ हाहाकार सुनि देव सभ भला गे करन बिचार॥ छं
द॥ जप जोग बिरागा तप मष भागा श्रवन सुनै दससीसा॥ आपुन उठि धावै रहै न
पावै धरि सब घालै षीसा॥ अस भ्रष्ट अचारा भा संसारा धर्म सुनिय नहि काना॥ ते
हि बहु बिधि त्रासै देस निकासै जो कह बेद पुराना॥ सोरठा॥ बरनि न जाय अनी
ति घोर निसाचर जो करई॥ हिंसा पर अति प्रीति तिन्ह के पापहि कवन मिति॥२०२॥ चौ
पाई॥ बाढे षल बहु चोर जुआरी॥ जे लंपट परधन परदारी॥ मानहि मातु पिता नहि
देवा॥ साधुन्ह सन करवावहि सेवा॥ जिन्ह के यह आचरन भवानी॥ ते जानेहु
निसिचर सब प्रानी॥ अतिसै देषि धर्म कै हानी॥ परम सभीत धरनि अकुलानी॥
गिरि सरि सिंधु भार नहि मोही॥ जस मोहि गरुअ एक परद्रोही॥ सकल धर्म देषै बि
परीता॥ कहि न सकै रावन भय भीता॥ धेनु रूप धरि हृदय बिचारी॥ गई तहा जहा
सुर मुनि झारी॥ निज संताप सुनायसि रोई॥ काहू ते कछु काज न होई॥ छंद॥ सुर
मुनि गंध्रबा मिलि करि सर्बा गे बिरंचि के लोका॥ संग गोतनुधारी भूमि बिचारी
परम बिकल भय सोका॥ ब्रह्मा सब जाना मन अनुमाना मोर कछू न बसाई॥ जा
कर तै दासी सो अबिनासी हमरेउ तोर सहाई॥ सोरठा॥ धरनि धरहि मन धी
र कहि बिरंचि हरिपद सुमिरि॥ जानत जन की पीर प्रभु भंजिहि दारुन बिपति॥२०३॥
चौपाई॥ बैठे सुर सब करहि बिचारा॥ कहा पाइये प्रभु करिये पुकारा॥ पुर बैकुंठ
जान कहि कोई॥ कोउ कह पयनिधि बस प्रभु सोई॥ जाके हृदय भगति जसि

प्रीती॥ प्रभु तहँ प्रगट सदा तिहि रीती॥ तेहि समाज गिरिजा मैं रहेऊँ॥ अवसर पाइ
बचन एक कहेऊँ॥ हरि ब्यापक सरबत्र समाना॥ प्रेम ते प्रगट होहि मैं जाना॥ देस
काल दिसि बिदिसिहु माही॥ कहहु सो कहाँ जहाँ प्रभु नाही॥ अग जग म
य सब रहित बिरागी॥ प्रेम ते प्रभु प्रगटै जिमि आगी॥ मोर बचन सब के मन माना
॥ साधु साधु करि ब्रह्म बषाना॥ दोहा॥ सुनि बिरंचि मन हर्ष तन पुलकि नयन ब
ह नीर॥ अस्तुति करत जोरि कर सावधान मतिधीर॥२०४॥ छंद॥ जय जय
सुरनायक जन सुषदायक प्रनतपाल भगवंता॥ गो द्विज हितकारी जय असु
रारी सिंधुसुता प्रिय कंता॥ पालन सुर धरनी अद्भुत करनी मरम न जानै कोई॥
जो सहज कृपाला दीनदयाला करौ अनुग्रह सोई॥ जय जय अबिनासी सब घट
बासी ब्यापक परमानंद॥ अबिगत गोतीतं चरित पुनीतं मायारहित मुकुंदा॥
जेहि लागि बिरागी अति अनुरागी बिगत मोह मुनिबृंदा॥ निसि बासर ध्यावहि
गुन गन गावहि जयति सच्चिदानंदा॥ जेहि सृष्टि उपाई त्रिबिधि बनाई संग सहाय न
दूजा॥ सो करउ अघारी चिंत हमारी जानिय भगति न पूजा॥ जो भव भय भंजन
मुनि मन रंजन गंजन बिपति बरूथा॥ मन क्रम बानी छाडि सयानी सरन सक
ल सुर जूथा॥ सारद श्रुति सेषा रिषय असेषा जा कहु कोऊ नहि जाना॥ जेहि दीन
पियारे बेद पुकारे द्रवौ सो श्रीभगवाना॥ भव बारिधि मंदर सब बिधि सुंदर गुनमंद
र सुषपुंजा॥ मुनि सिद्ध सकल सुर परम भयातुर नमत नाथ पद कंजा॥ दोहा॥ जा
नि सभय सुर भूमि सुनि बचन समेत सनेह॥ गगनगिरा गंभीर भई हरनि सोक
संदेह॥२०५॥ चौपाई॥ जनि डरपहु मुनि सिद्ध सुरेसा॥ तुम्हहि लागि धरिहौ न
र बेसा॥ अंसन्ह सहित मनुज अवतारा॥ लेहौ दिनकर बंस उदारा॥ कस्यप अदिति
महातप कीन्हा॥ तिन्ह कहु मै पूरब बर दीन्हा॥ ते दसरथ कौसल्या रूपा
॥ कोसलपुरी प्रगट नरभूपा॥ तिन्ह के गृह अवतरिहौ जाई॥ रघुकुल तिलक सो
चारिउ भाई॥ नारद बचन सत्य सब करिहौ॥ परम सक्ति समेत अवतरिहौ॥ हरिहौ स
कल भूमि गरुआई॥ निर्भय होहु देव समुदाई॥ गगन ब्रह्मबानी सुनि काना॥ तु
रत फिरे सुर हृदय जुडाना॥ तब ब्रह्मा धरनिहि समुझावा॥ अभय भई भरोस
जीय आवा॥ दोहा॥ निज लोकहि बिरंचि गे देवन्ह इहै सिषाइ॥ बानर तनु धरि धरि
महि हरिपद सेवहु जाई॥२०६॥ चौपाई॥ गए देव सब निज निज धामा॥ भूमि
सहित मन कछु बिश्रामा॥ जो कछु आयसु ब्रह्मा दीन्हा॥ हरषे देव बिलंब न की
न्हा॥ बनचर देह धरी छिति माही॥ अतुलित बल प्रताप तिन्ह पाही॥ गिरि तरु न
ख आयुध सब बीरा॥ हरि मारग चितवहि मतिधीरा॥ गिरि कानन जहँ तहँ भरि पू
री॥ रहे निज निज अनीक रचि रूरी॥ यह सब रुचिर चरित मैं भाषा॥ अब सो सु
नहु जो बीचहि राषा॥ अवधपुरी रघुकुलमनि राई॥ बेद बिदित तिहि दसरथ
नाई॥ धरम धुरंधर गुननिधि ग्यानी॥ हृदय भगति मति सारंगपानी॥ दोहा॥
कौसल्यादि नारि प्रिय सब आचरन पुनीत॥ पति अनुकूल प्रेम दृढ हरिप
द कमल बिनीति॥२०७॥ चौपाई॥ एक बार भूपति मन माही॥ भै गलानि मोरे ल
सुत नाही॥ गुर गृह गयउ तुरत महिपाला॥ चरन लागि करि बिनय बिसाला॥
निज दुष सुष सब गुरहि सुनाएउ॥ कहि बसिष्ठ बहु बिधि समुझाएउ॥ धरहु धीर हो
इहहि सुत चारी॥ त्रिभुवन बिदित भगत भय हारी॥ सृंगी रिषिहि बसिष्ठ बुला
वा॥ पुत्रकाम सुभ जग्य करावा॥ भगति सहित मुनि आहुति दीन्हे॥ प्रगटे अगिनि
चरु कर लीन्हे॥ बोले अनल प्रेम मन बानी॥ अनप्रसन्न मन धरे न बषानी॥ जो ब

सिष्ट कछु हृदय बिचारा॥ सकल काज भा सिद्ध तुम्हारा॥ यह हवि बांटि दिहु नृप जाई॥
जथा जोग जेहि भाग बनाए॥ दोहा॥ तब अदृस्य भए पावक सकल सभहि समु
झाहि॥ परमानंद मगन नृप हरष न हृदय समाय॥२०८॥ चौपाई॥ तबहि रा
य प्रिय नारि बोलाईं॥ कौसल्यादि तहां चलि आईं॥ अर्ध भाग कौसल्याहि दीन्हा
॥ उभय भाग आधे कर कीन्हा॥ कैकेई कहं नृप सो दयऊ॥ रह्यो सो उभय भाग पु
नि भयऊ॥ कौसल्या कैकेई हाथ धोरि॥ दीन्ह सुमित्रहि मन प्रसंन करी॥ एहि बि
धि गर्भ सहित सब नारी॥ भई हृदय हरषित सुष भारी॥ जा दिन तें हरि गर्भहि
आए॥ सकल लोक सुष संपति छाई॥ मंदिर महं सब राजहि रानी॥ सोभा सील
तेज कि षानी॥ सुष जुत कछुक काल चलि गयऊ॥ जेहि प्रभु प्रगट सो अवस
र भयऊ॥ दोहा॥ जोग लगन ग्रह बार तिथि सकल भए अनुकूल॥ चर अरु अच
र हरष जुत राम जनम सुष मूल॥२०९॥ चौपाई॥ नोमी तिथि मधु मास पुनी
ता॥ सुकल पक्ष अभिजित हरि प्रीता॥ मध्य दिवस अति सीत न घामा॥ पा
वन काल लोक बिश्रामा॥ सीतल मंद सुरभि बह बाऊ॥ हरषित सुर संत
न्ह मन चाऊ॥ बन कुसुमित गिरि गन मनिआरा॥ स्रवहि सकल सरितामृ
त धारा॥ सो अवसर बिरंचि जब जाना॥ चले सकल सुर साजि बिमाना॥ गग
न बिमल संकुल सुर जूथा॥ गावहि गुन गंधर्ब बरूथा॥ बरषहि सुमन सुअं
जलि साजी॥ गहगहि गगन दुंदुभी बाजी॥ अस्तुति करहि नाग मुनि देवा॥
बहु बिधि लावहि निज निज सेवा॥ दोहा॥ सुर समूह बिनती करि पहुंचे नि
ज निज धाम॥ जगनिवास प्रभु प्रगटे अषिल लोक बिश्राम॥२१०॥ छंद॥ भए प्रगट
कृपाला परम दयाला कौसल्या हितकारी॥ हरषित महतारी मुनि मन हारी अद्भुत
रूप बिचारी॥ लोचन अभिरामा तनु घनस्यामा निज आयुध भुज चारी॥ भूषन बनमा
ला नयन बिसाला सोभा सिंधु षरारी॥ कह दुइ कर जोरी अस्तुति तोरी केहि बि
धि करौं अनंता॥ माया गुन ग्यानातीत अमाना बेद पुरान भनंता॥ करुना सु
ष सागर सब गुन आगर जेहि गावहि श्रुति संता॥ सो मम हित लागी जन अनु
रागी प्रगट भए श्रीकंता॥ ब्रह्मांड निकाया निर्मित माया रोम रोम प्रति बेद कहै॥
मम उर सो बासी यह उपहासी सुनत धीर मति थिर न रहै॥ उपजा जब ग्याना
प्रभु मुसकाना चरित बहुत बिधि कीन्ह चहै॥ कहि कथा सुहाई मातु बुझाई जे
हि प्रकार सुत प्रेम लहै॥ माता पुनि बोली सो मति डोली तजहु तात यह रूपा॥
कीजै सिसुलीला अति प्रियसीला यह सुष परम अनूपा॥ सुनि बचन सुजाना रो
दन ठाना होइ बालक सुरभूपा॥ यह चरित जे गावहि हरिपद पावहि ते न पर
हि भवकूपा॥ दोहा॥ बिप्र धेनु सुर संत हित लीन्ह मनुज अवतार॥ निज इच्छा नि
र्मित तनु माया गुन गोपार॥२११॥ चौपाई॥ सुनि सिसु रुदन परम प्रिय बानी॥ संभ्र
म चलि आई सब रानी॥ हरषित जहं तहं धाई दासी॥ आनंद मगन सकल पुरबा
सी॥ दसरथ पुत्र जन्म सुनि काना॥ मानहु ब्रह्मानंद समाना॥ परम प्रेम मन पुल
क सरीरा॥ चाहत उठन करत मति धीरा॥ जाकर नाम सुनत सुभ होई॥ मोरें गृह
आवा प्रभु सोई॥ परमानंद पूरि मन राजा॥ कहा बुलाइ बजावहु बाजा॥ गुरु बसि
ष्ट कहं गयउ हंकारा॥ आए द्विजन सहित नृपद्वारा॥ अनुपम बालक देषिन्ह
जाई॥ रूप रासि गुन कहि न सिराई॥ दोहा॥ नंदीमुष सराध करि जातकरम
सब कीन्ह॥ हाटक धेनु बसन मनि नृप बिप्रन्ह कह दीन्ह॥२१२॥ चौपाई॥ ध्वज
पताक तोरन पुर छावा॥ कहि न जाइ जेहि भांति बनावा॥ सुमन बृष्टि आकास तें

होई॥ ब्रह्मानंद मगन सब लोई॥ बृंद बृंद मिलि चली लुगाई॥ सहज सिंगार कीए उठि
धाई॥ कनक कलस मंगल भरि थारा॥ गावत पैठहि भूप दुआरा॥ करि आरति नेवछा
वरि करहीं॥ बार बार सिसु चरनन्ह परहीं॥ मागध सूत बंदि गन गायक॥ पावन गुन गा
वहि रघुनायक॥ सरबस दान दीन्ह सब काहू॥ जेहि पावा राषा नहि ताहू॥ मृगमद चं
दन कुंकुम कीचा॥ मची सकल बीथिन्ह बिच बीचा॥ दोहा॥ गृह गृह बाज बधाव सु
भ प्रगटे सुषमा कंद॥ हरषवंत सब जहं तहं नगर नारि नर बृंद॥२१३॥ चौपाई॥
कैकयसुता सुमित्रा दोऊ॥ सुंदर सुत जनमत भए ओऊ॥ वह सुष संपति समय समा
जा॥ कहि न सकै सारद अहिराजा॥ अवधपुरी सोहइ एहि भांती॥ प्रभुहि मिलन आ
ई जनु राती॥ देषि भानु जनु मन सकुचानी॥ तदपि बनी संध्या अनुमानी॥ अगर धू
प बहु जनु अंधिआरी॥ उडत अबीर मनहु अरुनारी॥ मंदिर मनि समूह जनु तारा॥ नृ
प गृह कलस सो इंदु उदारा॥ भवन बेद धुनि अति मृदु बानी॥ जनु षग मुषर समय
जनु सानी॥ कौतुक देषि पतंग भुलाना॥ एक मास तेइं जात न जाना॥ दोहा॥ मास दि
वस कर दिवस भा मरम न जानै कोई॥ रथ समेत रबि थाकेउ निसा कवन बिधि होई॥
२१४॥ चौपाई॥ इह रहस्य काहू नही जाना॥ दिनमनि चले करत गुन गाना॥ देषि महो
त्सव सुर मुनि नागा॥ चले भवन बरनत निज भागा॥ औरो एक कहौं निज चोरी॥
सुनु गिरिजा अति दृढ मति तोरी॥ काकभुसुंडि संग हम दोऊ॥ मनुज रूप जानै नही
कोऊ॥ परमानंद प्रेम सुष फूले॥ बीथिन्ह फिरहि मगन मन भूले॥ यह सुभ चरि
त जाने पै सोई॥ कृपा राम कै जापर होई॥ तेहि अवसर जो जेहि बिधि आवा॥ दीन्ह भू
प जो जेहि मन भावा॥ गज रथ तुरग हेम गो हीरा॥ दीन्हे नृप नाना बिधि चीरा॥ दोहा॥
मन संतोष सबन्हि के जहं तहं देहि असीस॥ सकल तनय चिरजीवहु तुलसीदास
२१५॥ चौपाई॥ कछुक दिवस बीते इहि भांती॥ जात न जानीय दिन अरु राती॥ नाम
करन कर अवसर जानी॥ भूप बोलि पठए मुनि ग्यानी॥ करि पूजा भूपति अस भाषा॥
इन के नाम अनेक अनूपा॥ मैं नृप कहब स्वमति अनुरूपा॥ जो आनंद सिंधु सुषरा
सी॥ सीकर तें त्रैलोक सुपासी॥ सो सुषधाम राम अस नामा॥ अषिल लोक दायक
बिश्रामा॥ बिस्व भरन पोषन कर जोई॥ ता कर नाम भरत अस होई॥ जाके सुमिर
न तें रिपु नासा॥ नाम सत्रुहन बेद प्रकासा॥ दोहा॥ लछन धाम राम प्रिय सक
ल जगत आधार॥ गुरु बसिष्ट तिहि राषेयो लछमन नाम उदार॥२१६॥ चौपाई॥
धरे नाम गुरु हृदय बिचारी॥ बेद तत्व नृप तव सुत चारी॥ मुनि धन जन सरबस सिव
प्राना॥ बाल केलि रस तिहि सुष माना॥ बारहि ते निज हित पति जानी॥ लछमन रा
म चरन रति मानी॥ भरत सत्रुहन दूनौ भाई॥ प्रभु सेवक जसि प्रीति बडाई॥ स्याम
गौर सुंदर दोउ जोरी॥ निरषहि छबि जननी तृन तोरी॥ चारीउ सील रूप गुन धामा॥
तदपि अधिक सुष सागर रामा॥ हृदय अनुग्रह इंदु प्रकासा॥ सूचत किरन मनो
हर हासा॥ कबहू उछंग कबहु बर पलना॥ मातु दुलारै कहि प्रिय ललना॥ दो
हा॥ ब्यापक ब्रह्म निरंजन निर्गुन बिगत बिनोद॥ सो अज प्रेम भगति बस कौसल्या
के गोद॥२१७॥ चौपाई॥ काम कोटि छबि स्याम सरीरा॥ नील कंज बारिद गंभीरा॥
अरुन चरन पंकज नष जोती॥ कमल दलन्हि बैठे जनु मोती॥ रेष कुलिस ध्वज अंकु
स सोहे॥ नूपुर धुनि सुनि मुनि मन मोहे॥ कटि किंकिनी उदर त्रय रेषा॥ नाभि गंभी
र जान जेहि देषा॥ भुज बिसाल भूषन जुत भूरी॥ हिय हरि नष अति सोभा रूरी॥ उ
र मनिहार पदक की सोभा॥ बिप्र चरन देषत मन लोभा॥ कंबु कंठ अति चिबुक सुहा
ई॥ आनन अमित मदन छबि छाई॥ दुइ दुइ दसन अधर अरुनारे॥ नासा तिलक को बरनै पा

रा॰ वा॰
२६

रे॥ सुंदरश्रवनसुचारुकपोला॥ अतिप्रियमधुरतोतरेबोला॥ नीलकमलदोउनयन
विसाला॥ विकटभृकुटीलटकनवरमाला॥ चिक्कनकचकुंचितगभुआरे॥ वहुप्र
काररचिमातसवारे॥ पीतझगुलीयातनुपहिराई॥ जानुपानिविचरनिमोहिभाई॥
रूपसकेनहीकहिश्रुतिसेषा॥ सोजानेसपनेहुजेहिदेषा॥ दोहा॥ सुषसंदोहमो
हपरज्ञानगिरागोतीत॥ दंपतिपरमप्रेमवसकरसिसुचरितपुनीत॥२१९॥ चौ
पाई॥ एहिविधिरामजगतपितुमाता॥ कोसलपुरवासिन्हसुषदाता॥ जिन्हर
घुनाथचरनरतिमानी॥ तिन्हकेयहगतिप्रगटभवानी॥ रघुपतिविमुषजत
नकरिकोरी॥ कोवनसकैभववंधनछोरी॥ जीवचराचरवसिकरराषे॥ सोमा
याप्रभुसोभयभाषे॥ भृकुटीविलासनचवैताही॥ असप्रभुछाडिभजियकहु
काही॥ मनक्रमवचनछाडिचतुराई॥ भजतकृपाकरिहहीरघुराई॥ एहिविधि
सिसुविनोदप्रभुकीन्हा॥ सकलनगरवासिन्हसुषदीन्हा॥ लैउछंगकवहुहल
रावै॥ कवहूपालनेघालिझुलावै॥ दोहा॥ प्रेममगनकौशल्यानिसिदिनजा
तनजान॥ सुतसनेहवसमातावालचरितकरगान॥२२०॥ चौपाई॥ एक
वारजननीअन्हवाए॥ करिसिंगारपलनापोढाए॥ निजकुलईष्टदेवभगवाना॥
पूजाहेतकीन्हअस्नाना॥ करिपूजानैवेद्यचढावा॥ आपुगईजहपाकवनावा॥
वहुरिमाततहाआवलिआई॥ भोजनकरतदेषसुतजाई॥ गईजननीसिसुप
हिभयभीता॥ देषावालकतहापुनसूता॥ वहोरिआयदेषासुतसोई॥ हृदयकंप
मनधीरनहोई॥ तहाउहादुईवालकदेषा॥ मतिभ्रममोरकिआनविसेषा॥
देषरामजननीअकुलानी॥ प्रभुहसिदीन्हमधुरमुसकानी॥ दोहा॥ देषरा
वामातहिनिजअद्भुतरूपअषंड॥ रोमरोमप्रतिलागेकोटिकोटिब्रह्मंड॥२२१॥
चौपाई॥ अगनितरविससिसिवचतुरानन॥ वहुगिरिसरितसिंधुमहिका
नन॥ कालकर्मगुनज्ञानसुभाऊ॥ सोउदेषाजोसुनानकाऊ॥ देषीमायास
वविधिगाढी॥ अतिसभीतजोरेकरठाढी॥ देषाजीवनचावैजाही॥ देषीभग
तजोछोरैताही॥ तनपुलकितमुषवचननआवा॥ नयनमूंदिचरननिसिरुनावा॥
विसमयवंतदेषिमहतारी॥ भएवहुरिसिसुरूपषरारी॥ अस्तुतिकरिनजा
इभयमाना॥ जगतपितामैसुतकरजाना॥ हरिजननीवहुविधिसमुझा
ई॥ यहजनिकतहुकहसिसुनमाई॥ दोहा॥ वारवारकौशल्याविनयकरै
करजोर॥ अवजनिकवहूव्यापैप्रभुमोहिमायातोर॥२२२॥ चौपाई॥ वा
लचरितहरिवहुविधिकीन्हा॥ अतिआनंददासन्हकहदीन्हा॥ कछुककाल
वीतेसवभाई॥ वडेभएपरिजनसुषदाई॥ चूडाकरनकीन्हगुरुजाई॥ विप्रन्ह
पुनिदछिणावहुपाई॥ परममनोहरचरितअपारा॥ करतफिरतचारिउसु
कुमारा॥ मनक्रमवचनअगोचरजोई॥ दसरथअजिरविचरप्रभुसोई॥ भो
जनकरतवोलजवराजा॥ नहीआवततजिवालसमाजा॥ कौशल्याजववो
लनजाई॥ ठुमकठुमकप्रभुचलैपराई॥ निगमनेतिसिवअंतनपावा॥ ता
हिधरैजननीहठिधावा॥ धूसरधूरिभरेतनुआए॥ भूपतिविहसिगोदवैठा
ए॥ दोहा॥ भोजनकरतचपलचितइतउतअवसरुपाई॥ भाजिचलेकिलक
तमुषदधिओदनलपटाई॥२२३॥ चौपाई॥ वालचरितअतिसरलसुहाई॥ सा
रदसेषसंभुश्रुतिगाई॥ जिन्हकरमनइन्हसननहिराता॥ तेजनवंचितकी
एविधाता॥ भएकुमारजवसवभ्राता॥ दीन्हजनेऊगुरुपितुमाता॥ गुरुगृहगए
पढनरघुराई॥ अलपकालविद्यासवआई॥ जाकीसहजस्वासश्रुतिचारी॥ सोहरि

पढयहकौतुकभारी॥ विद्याविनयनिपुनगुनसीला॥ षेलहिषेलसकलनृप
लीला॥ करतलवानधनुषअतिसोहा॥ देषतरूपचराचरमोहा॥ जिन्हवीथिन्ह
विहरैसवभाई॥ थकितहोहिसवलोगलुगाई॥ दोहा॥ कौसलपुरवासीनर
नारीवृद्धअरुवाल॥ प्रानहुतेप्रियलागतसवकहुरामकृपाल॥२२४॥ चौपा
ई॥ वंधुसषासंगलेहुवुलाई॥ वनमृगयानितषेलहिजाई॥ पावनमृगमार
हिजीयजानी॥ दिनप्रतिनृपहिदिषावहिआनी॥ जेमृगरामवानकेमारे॥ ते
तनुतजिसुरलोकसिधारे॥ अनुजसषासंगभोजनकरही॥ मातपिताअज्ञा
अनुसरही॥ जेहिविधिसुषीहोहीपुरलोगा॥ करहिकृपानिधिसोईसंजोगा॥
वेदपुरानसुनहिमनलाई॥ आपुकहहिअनुजन्हसमझाई॥ प्रातकालउ
ठिकैरघुनाथा॥ मातपितागुरुनावहीमाथा॥ आयसुमागकरहिपुरकाजा॥ दे
षिचरितहरषैमनराजा॥ दोहा॥ व्यापकअकलअनीहअजनिर्गुननामनरू
प॥ भगतहेतनानाविधिकरतचरित्रअनूप॥२२५॥ चौपाई॥ यहसवचरित
कहामैगाई॥ आगलिकथासुनहिमनलाई॥ विस्वामित्रमहामुनिज्ञानी॥
वसहीविपिनसुभआश्रमजानी॥ जहाजपयज्ञजोगमुनिकरही॥ अतिमारीच
सुवाहुहिडरही॥ देषतजज्ञनिसाचरधावहि॥ करहिउपद्रवमुनिदुषपाव
ही॥ गाधितनयमनचिंताव्यापी॥ हरिविनुमरहिननीसचरपापी॥ तवमु
निवरमनकीन्हविचारा॥ प्रभुअवतरेउहरनमहीभारा॥ एहुमिसिदेषौप्रभुप
दजाई॥ करविनतीआनौदोउभाई॥ ज्ञानविरागसकलगुनअयना॥ सोप्र
भुमैदेषवभरिनयना॥ दोहा॥ वहुविधिकरतमनोरथजातलागनहिवार॥
करिमज्जनसरजूजलगएभूपदरवार॥२२६॥ चौपाई॥ मुनिआगमनसु
नाजवराजा॥ मिलनगएउलैविप्रसमाजा॥ करदंडवतमुनिहिसनमानी॥
निजआसनवैठारेहिआनी॥ चरनपषारिकीन्हअतिपूजा॥ मोसमआजय
न्यनहीदूजा॥ विविधभांतिभोजनकरिवावा॥ मुनिमनहृदयहरषअतिपावा॥ पुनि
चरननमिलेसुतचारी॥ रामदेषिमुनिदेहविसारी॥ भएमगनदेषतमुषसोभा॥
जनुचकोरपूरनससिलोभा॥ तवमनहरषवचनकहराऊ॥ मुनिअसकृपान
कीन्हीकाऊ॥ केहिकारनआगमनतुम्हारा॥ कहहिसोकरतनलावोवारा॥ असुर
समूहसतावहिमोही॥ मैजाचनआएउनृपतोही॥ अनुजसमेतदेहुरघुनाथा॥
निसचरवधमैहोवसनाथा॥ दोहा॥ देहुभूपमनहरषिततजहुमोहअ
ज्ञान॥ धर्मसुजसप्रभुतुम्हकोइन्हकहअतिकल्यान॥२२७॥ चौपाई॥ सुनिरा
जाअतिअप्रियवानी॥ हृदयकंपमुषदुतिकुमुलानी॥ चौथेपनपाएउसुतचा
री॥ विप्रवचननहिकहेहुविचारी॥ मागहुभूमिधेनुधनकोसा॥ सर्वसदेउआ
जुसहरोसा॥ देहप्रानतेप्रियकछुनाही॥ सोमुनिदेईनिमिषएकमाही॥ सवसु
तप्रियप्रानकीनाई॥ रामदेतनहिवनेगुसाई॥ कहानिसाचरअतिघोरकठो
रा॥ कहेसुंदरसुतपरमकिसोरा॥ सुनिनृपगिराप्रेमरससानी॥ हृदयहरष
मानामुनिज्ञानी॥ तववसिष्टवहुविधिसमझावा॥ नृपसंदेहनासकहपावा॥
अतिआदरदोउतनयवुलाए॥ हृदयलायवहुभांतिसिषाए॥ मेरेप्राननाथसुत
दोऊ॥ तुम्हमुनिपिताआननहिकोऊ॥ दोहा॥ सौंपेभूपरिषिहिसुतवहुवि
धिदेईअसीस॥ जननिभवनगएप्रभुचलेनायपदसीस॥ सोरठा॥ पुरुषसिंह
दोउवीरहरषचलेमुनिभयहरन॥ कृपासिंधुमतिधीरअषलविस्वकारनकरन॥
नीलजलजतनुस्यामतमाला॥
२२८॥ चौपाई॥ अरुननयनउरभुजविसाला॥

कटपटपीतकसेवरभाथा॥ रुचिरचापसायकदुहुहाथा॥ स्यामगोरसुंदरदुउ
भाई॥ विस्वामित्रमहानिधिपाई॥ प्रभुब्रह्मन्यदेवमैजानामोहिनितपितात
जेउभगवाना॥ चलेजातमुनिदीन्हिदेषाई॥ सुनिताडकाक्रोधकरधाई॥ एक
हिंबानप्रानहरिलीन्हा॥ दीनजानितेहिनीजपददीन्हा॥ तबरिषिनिजना
थहीचीन्हा॥ विद्यानिधिकहुविद्यादीन्हा॥ जातेलागनछुधापिपासा॥ अतु
लितबलतनुतेजप्रकासा॥ दोहा॥ आयुधसर्बसमर्पिकैप्रभुनिजआश्रमआ
नी॥ कंदमूलफलभोजनदीन्हभगतहितजानी॥२२७॥ चौपाई॥ प्रातकहामु
निसनरघुराई॥ निर्भैजग्यकरहुतुम्हजाई॥ होमकरनलागेमुनिझारी॥ आपुर
हेमषकीरषवारी॥ सुनिमारिचनिसाचरकोही॥ लेसहायधावामुनिद्रोही
॥ बिनुफरबानरामतेहिमारा॥ सतजोजनगासागरपारा॥ पावकसरसुबा
हुपुनिमारा॥ अनुजनिसाचरकटकसंघारा॥ मारिअसुरमुनिनिर्भयकारी॥
अस्तुतिकरहिदेवमुनिझारी॥ तहपुनिकछुकदिवसरघुराया॥ रहेकीन्हवि
प्रनपरदाया॥ भगतहेतुबहुकथापुराना॥ कहेविप्रजद्यपिप्रभुजाना॥
तबमुनिसादरकहासुझाई॥ चरितएकप्रभुदेषिअजाई॥ धनुषजग्यसुनि
रघुकुलनाथा॥ हरषिचलेमुनिवरकेसाथा॥ आश्रमएकदेषमगमाहीं॥ ष
गम्रगजीवजंतुतहानाही॥ पूछामुनिहिसिलाप्रभुदेषी॥ सकलकथा
मुनिकीनविसेषी॥ दोहा॥ गोतमनारिश्रापवसउपलदेहधरिधीर॥ च
रनकमलरजचाहतीक्रपाकरहुरघुवीर॥२२८॥ छंद॥ परसतपदपावन
सोकनसावनप्रगटभईतपपुंजसही॥ देषतरघुनायकजनसुषदायक
सनमुषहोइकरजोरिरही॥ अतिप्रेमअधीरापुलकसरीरामुषनहीआ
वैवचनकही॥ अतिसयबडभागीचरनन्हलागीजुगलनैनजलधारब
ही॥ धीरजुमनकीन्हाप्रभुकहुचीन्हारघुपतिक्रपाभगतिपाई॥ अतिनि
र्मलबानीअस्तुतिठानीग्यानगम्यजयरघुराई॥ मैनारिअपावनिप्रभुज
गपावनिरावनरिपुजनसुषदाई॥ राजीवविलोचनभवभयमोचनपाहि
पाहिसरनहिआई॥ मुनिश्रापजोदीन्हाअतिभलकीन्हापरमअनुग्र
हमैमाना॥ देषेउभरिलोचनहरिभवमोचनइहैलाभसंकरजाना॥ बि
नतीप्रभुमोरीमैमतिभोरीनाथनमागोबरआना॥ पदकमलपरागारस
अनुरागामममनमधुपकरैपाना॥ जेहिपदसुरसरितापरमपुनीता
प्रगटभईसिवसीसधरी॥ सोईपदपंकजजेहिपूजतअजममसिरधरेउक्र
पालहरी॥ एहिभांतिसिधारीगोतमनारीबारबारहरिचरनपरी॥ जोअति
मनभावासोबरपावागैपतिलोकअनंदभरी॥ दोहा॥ असप्रभुदीनबंधु
हरिकारनरहितदयाल॥ तुलसीदाससठताहिभजुछाडिकपटजंजाल
२२९॥ चौपाई॥ चलेरामलछिमनमुनिसंगा॥ गएजहाजगपावनिगंगा
॥ अनुजसहितप्रभुकीन्हाप्रनामा॥ बहुप्रकारफलपाएउरामा॥ मुनि
सुरसरिउतरतरघुराई॥ कोसकुपदपूछासीरुनाई॥ कहइमुनिप्रभुनव
कुलाकराजा॥ नामसनारनिकुलाकविराजा॥ नृपकेनरभामिनिसु
कुमारी॥ नामकेपातिमअतिलघुप्यारी॥ सबप्रकारसंपतिगुनभा
जा॥ सुतविहीनविस्मयमनराजा॥ एकसमैभोगानिदोउसाथा॥ बन
नपहेतगएरघुनाथा॥ सघनसफललतरुसेदरनाना॥ तहअगस्तमुनित
पतेजनिधाना॥ दोहा॥ सोहतनारीनृपमुदितमनननहारबपमनाह

कीन्हातबभलदेषिभएअस्तुतिकीन्हमुनेक॥२३०॥ चौपाई॥ कहिहितेउप्रनाम
तिन्हाकीन्हा॥ देईअसीससबमुनिवरदीन्हा॥ नृपअरुनिसन[illegible]निसुतआभा
कसोवरजोजेहिअभिलाषा॥ सुनिमुनिवचनसीसतिन्हनावा॥ के
निहिसनावा॥ एकएककहिउसुतहोना॥ इससिहिसहससादगुनलोना॥ मनईमाहोत
भईसुभगावकपाई॥ हाथजोरिचरनन्हिसिरनाई॥ सहितभामिनिन्हअरचहिपत
आए॥ हरषसहितकछुदिवसगवाए॥ जानिसुअवसरसुनपनसुहाई॥ तबकेसि
निअसमेतसजाए॥ सुमतिप्रसवतनभरीगतसोई॥ भईसुतप्रगटकेहेसुनिजो
ई॥ निरषेसुनसवहरषितहोई॥ मानकरैकनपारसजोई॥ हरषसहितदियो
दाननरेस॥ पूजेविप्रगुरगौविगतोस॥ छत्रचउरसुंदरविविधकराई॥ तेसवस
तनृपतिन्हमङनाए॥ दोहा॥ एहिविधिभयेसकलसुतपूजेसवमनकाम॥ ता
हिहिदिवसनिसहरषवससुनकरामचनस्याम॥२३१॥ चौपाई॥ पुरिजनसब
सुरसुरविरेस॥ अतिआनंदमनमिटाअंदेस॥ बालकेलिकरिभएकुमारा॥
लीलाकरहिअगमसंसारा॥ दोईसुकाजसकलमनचिने॥ एहिसुषदसतबहु
तदिनबीते॥ सरजुनदीअवधजोअहई॥ विमलसलिलउतरतरवहई॥ प्रजा
लोगकेबालकनाना॥ तिनिउदिनहाकरहिअसनाना॥ असमेजसतहान
रतीआनी॥ तिन्हवछायवोरेगाहिपानी॥ भएप्रजासबपरमदुषारी॥ बालक
वधअवसुनकुपरारी॥ सकलगएजहबैठेनृपाला॥ बोलेवचननाइपदभा
ला॥ तुम्हनृपचहहुप्रजाप्रतिपाला॥ सुनहुआरभासबकरकाला॥ तजा
वहुसबकहसुन्हुनरेस॥ विनातजेनहीमिटहीकालेस॥ दोहा॥ तबसुतकी
न्हेपापबडमारेबालकछेद॥ तम्हकहअबनसमानसुतसकलप्रजन्हका
हमद॥२३२॥ चौपाई॥ प्रजागिरासुनिधीरजदीन्हा॥ सुतहिदेसतेबाहिरकीन्हा॥
तासुतनतथजगविदितप्रभाउ॥ गुननिधिअसुमानतेहिनाउ॥ बसतहृदय
नृपकेसोकेसे॥ फनिमनिमीनसलिलरहजेसे॥ गएप्रजासबनिजनिजधा
मा॥ भानिसोचमनकउविश्रामा॥ बहुरिनृपतिमनकीन्हविचारा॥ आएभ
एउपनवोधहमारा॥ द्विजमंत्रीगुरसुतन्हबोलाए॥ हिमगिरिविंध्यमध्यतव
आए॥ रुचिरवेदिकाएकबनाए॥ देषतवनैवरनिनहीजाए॥ मषआरंभकीन्हे
उतवतरंगा॥ वेगवंतदेषियजिमिउरगा॥ दोहा॥ सुरपतिसुनिमषदारुन
मनमहकरिअनुमान॥ आएतुरंगतवलीन्हेउमरमकोउजान॥२३३॥ चौ
पाई॥ राषेआनिकपलमुनिपाही॥ कोउनजानकाहुगमनाही॥ जोगवेतर
हेसुभटसयाने॥ लेतनुरंगतीन्हनहिजाने॥ तिन्हसबआयकहानृपपाही॥
महाराजहमकहनउराही॥ लीन्हतुरंगजाननहिकोई॥ काहकरिअसआपे
सोहोई॥ सुनतवचननृपविस्मयपाई॥ सकलसुतन्हकहतुरतबोलाई॥
जाहुतुरंगतमहेरहुजाई॥ चलेसकलचरनन्हिसिरनाई॥ बलिपसुजीवभ
ईसवआई॥ तिन्हैचलतधरनीअकुलाई॥ सुरपतिसमदेषियसबवीरा॥ स
कलधनुषधरअतिरणधीरा॥ सुमनवाहिकाउपवनवागा॥ सरितकूपवा
पिकातडागा॥ नगरगाउमुनिआस्थलनाना॥ गिरिकाननकंदरास्थाना॥
दो॥ हा॥ एहिविधिसोधेजाईआएसबमिलिभूपपहि॥ चरनन्हिमाथानाईबो
लेप्रभुकछुअसनाह॥२३४॥ चौपाई॥ षोजेसकलसुतनफोरिपराई॥ चलेसकल
सुरवादिसिआए॥ तिन्हकेकरिजिमिकुलसबमाना॥ जोजनभरिषादहिवल
वाना॥ देषिअतलबलविबुधडराने॥ मारिहोकहिविरंचमननमाने॥ सोधत

महीपनालसबआए॥दिगनागकंदेषसिरनाए॥तेहिछझासबकथासुना
वा॥बहुरसकलइहिगाहिसियावा॥एहिविधिपुनिहसरगजदेषा॥अतिउते
रागुनविमलविसेषा॥ताहुकहप्रनामतिन्हकीन्हा॥चलेसकलपछिम
हितदीन्हा॥तिनसेरहिदेषिप्रदछिनकीन्हा॥पुनउतरदिसिसोयालीन्हा
दिगजस्वेततिरषिसुषपाई॥सकलकपलमुनिपहिपुनआए॥पादन्हिमही।
काउपाकनपावा॥सोपावझांदमजलधसुहावा॥दोहा॥देषातरंगजाईतवंव
धामनिवरपास॥बोलेवचनकोधइभावहसमककरनास॥२३५॥चौपाई॥चो
नामहीहमबाराउओथा॥रेरइधवझननोहिसाथा॥कोऊकहहचोरदिषाव
इकोइ॥एहिसमछलीआरनहीहोई॥सुननवचनमुनिचितवाजबही॥भए
भस्मछिनमहसबनवही॥असमाचनजिहसमकिनबोला॥सथहोइविषनि
हिकमडोला॥पावकजानिधराहिकरप्रानी॥कहेनजरहितेअतिअभिमानी॥
जानिगरलजेसेअकरही॥सुनहूरामतेकाहिनमरही॥क्रोधकीन्हविनकी
एविचारा॥तेहितेभाएसकलजरिछारा॥उहानृपतिअसमानुबोलाउ॥नहि
आएसबनृपतिपराउ॥दोहा॥दीन्हनृपतिअसीसनवअतिहितवारहिवार॥
वेगफिरेहलेउनरेगसुतनमेरेप्रानअधार॥२३६॥चौपाई॥चलानाईपदसी
सअमाथा॥विसुभगवनतिहिष्टउजेआरा॥जहकहइनिरषिमुनिइकर
थामा॥पूछिषबीरकहिहेंउधनामा॥चलेसुनिन्हसनपाईअसीसा॥पानजइपे
केइजाइमहीसा॥एहिविधिसोधनमगमहजाना॥मिलेगरुडसुमतिक
रमाता॥चरनपरतआसिषतिन्हदिहेई॥जेरसकलजेहिविधिसोकहेई॥सु
नतहिवचनसोचभाभारी॥लेपगेसदेषाएउथलवारी॥असमानतहास
उनकीन्हा॥कमकमसबहितिलांजुलिदीन्हा॥बहुरिगरुडबोलेसुनुभा
ना॥मैतोहिकहोंकरेएकवाना॥सोरठा॥करुसुतनसाईउपाउगंगाआहिअ
वनिमहं॥दरसनतेअघजाउमंजनकीन्हेपरमसुष॥२३७॥चौपाई॥साष्टम
हसुसबलोरदेएहिबोध॥गंगापाईपरमपावनिनिध॥सुनिअसबचन
हृदयमनभाए॥सहितगरुडमुनिवरपहिआए॥तवपगेसमुनिवरनान्हि
नामई॥पूर्बकथानृपकेसिमनाई॥आसषिदेउन्तरेगासुनिदीन्हा॥हरषत
हृदयगवननतवकीन्हा॥नगरसमीपगरुडपडंचाई॥गएभवननिजनव
रचुराई॥इहातरंगलेउनृपहिसिरनाई॥षटसदसकरमरनसुनाए॥वि
सेमहरषविवसनृपभाउ॥कीन्हाजगदानवऊदहाउ॥बहुविधिनृपतिराज
पुनिकीन्हा॥प्रजालोगकहुअतिसुषदीन्हा॥दोहा॥मनुकहराजदेउनृपआ
पगउसुरधाम॥सुरसरिविनुआएनहीमनुनलहविश्राम॥२३८॥चौपाई॥
तासुतनयदिलीपनृपभाउ॥मनुतमहेतउनरहिसिगराउ॥अतिहिअराम
नयकीन्हानृपाला॥भएकालवसगएककछुकाला॥काइकाहादिलीपप्र
भूनाए॥सेवाजासबकनृपरहेआए॥जोगवनेजासुनपसुरपतिरहाई॥मा
हिमातासुकविकेहिविधिकहई॥भगीरथअससुतभएउतासु॥पितुसमानी
तिअधिकउरतासु॥तिन्हेबोलनृपदीन्हेउराजू॥आपचलेउहितपकेकाजू॥
मनमहकरतपंथअनमाना॥सुरसरिआनतनौतनप्राना॥सिसिमनुतने
दीन्हेउतिमदेई॥फिरिनिजनगरकानावनलेई॥सोरठा॥एहिविधिकरत
विचारनृपकीन्हातवप्रवलतप॥वीतेकछुएककालदेहतजिकाउप्रगहन।
हि॥२३९॥चौपाई॥सुरनगिलागितनहितनुभषा॥सोतजमृप्छपिअहिज

लकुपा॥इहाभगीरथमनअसभाउ॥पितनआववहदिनवलगाउ॥
नामनतयइकरहेउ॥दीन्हाराजनीतिबुझकहेउ॥काकुसा
दीन्हअसीसचलेउनरनाहा॥निकसतनगरसगुनभलपाहा॥कहीतपअसकथासनमाह
वननतहनृपआए॥देषिभगीरथवनसुषपावा॥अतिहितिकन
वा॥एकचरनहोउभुजाउठाई॥रविसनमुषचितवहिमनलाई॥बरषसहस
वीतेएहिभाती॥जातनजानेदिनअरुराती॥देषिउग्रतपअजचलिआए॥बो
लेनृपसनवचनसुहाए॥वरहिदनृपतिमालेउवरदाना॥वो
हीविधाना॥जोमागोसोजाननअहहू॥मोसनमांगतअभुकिमिकहहू
दोहा॥तदपिकहौप्रभुदेहुवरममसेनाननिकहहि॥हरसमोगंगाजोरकरा
गंगाआवैपरमनिधि॥२४०॥चौपाई॥तवसकलकोहपुनिविधिकहई॥सुरस
रिदेउसाषिकोसकई॥छूटेजाइपुनिसुरनरसातल॥फिरहिनबहुरिनृपति
सुनिअमूनल॥तेहितेकहौएकउपाई॥अतिदयालसंकरमनमाही॥सोई
सकसाषिदेवसरआन॥उन्हहिजपतवहोइहिकाज॥असकहिविधिअ
नरहितभाउ॥बहुरिभगीरथसिवतपठाउ॥विधुयबरषअगुषआधारा॥
वारवारसिवनामउचारा॥सिवदयालप्रगटेतवआए॥हाथजोरतबविनयसु
नाए॥मेरापसुरसरिकोहिईसा॥बहुरिउमापुनिगेकेलासा॥दोहा॥उहादे
वधारिसिववचनमनमहिकीन्हविचार॥जाउरसातलसिवसहितजाननना
लावोवार॥२४१॥चौपाई॥अतगजामीसिवरचउपाई॥निजसिरजटासुआगम
चलाई॥उहोभगिरथअस्तुतिकीन्ही॥सुनसुरगिराछाडिविधिदीन्ही॥छु
टेसोरभएउवडभारी॥चकतदेवअहीगजचारी॥सुरसरिआईसिवजटासु
मानी॥एकवरषतहारहीभुलानी॥कौतुकदेषिसकलसुरहरषे॥कहि
जैजैतिसुमननिन्हवरषे॥बहुरिभगीरथसुमिरनकीन्हा॥छिवनवडाछि
हेदाकदीन्हा॥तेहितेभानीतिनवधारा॥एकगएनभएकपतारा॥वा
ईनभमोध्रुवकीसापिनि॥देवन्हधरानाउमंदाकिनि॥सोरठा॥हमरगएपता
लनामप्रभावतिहरनिदुष॥तीसरभएसोगंगासबसंतन्हकरनीसुष॥२४२॥
चौपाई॥आईभगीरथनवसिरनावा॥बोलिसुरसरिवचनसुहावा॥देगवेतन
परथैगेआन॥तेरेवामकुनकभजिमभाव॥नरथिचढिवलिनृपममआगे
॥चलिहोमेनवपाछेलागे॥सुनिनृपदियनुरंगरथआना॥चढिहृदयसुमिर
नभगवाना॥चलाअग्रकरनृपहिसुरसरी॥देवन्हसुदिनसुमनझरकरी॥च
लेननजककुंबरनजाई॥टूटहितरुगिरसिलासुहाई॥करतिकलोहलजी
वबहुजानी॥कमठमघजघव्यालबहुभांती॥मजनकरहिदेवनहाआई॥मु
निगनसिद्धरहेसबछाई॥सोरठा॥करिहीजानजपजोगहरषहृदयनहिजा
नेकोहि॥नरहिदरसनतेलोगअसमितचमुनिअंबरजसकहहि॥२४३॥चौपाई॥क
विहिजोराजनध्यानलगाइहि॥तेहिकिमहिमाकहिनसिराइहि॥स्यंदन
परनृपसोहहकेसे॥तेजवंतरविदेषअजेसे॥नाचतनसैलसुहावनदेसा
छेत्रसमरिआगेनरेसा॥हरिहारसमीपतवआई॥सुरसरिदेषिगीरथ
मनभाई॥तीरथकुमनभासबभारी॥आईप्रयागबहुचोअगुहारी॥तहंमंजनकी
न्हेउषजाई॥बहुरिदेवसरकाषीआई॥सोसिवपुरिसहजसुषदाई॥वरननजाई
मनोहरजाई॥औरोतीरथविवधविधजानी॥गईनहाकिमिकहोवषानी॥मगा
लोगन्हिकरनमनाथा॥नाहिवलीएहिविधिरत्रुनाथा॥दोहा॥मिलीवहोरि
उदधमहउदयमहउदधिहृदयसुषमान॥लगेउमसाहनिभगीरथहितमस
मथन्तनआन॥२४४॥चौपाई॥कीन्हेउअसजसकरैनकोई॥तपमहिमावल।

कसनहिहोई ॥ सगरतनयनरेततकाला ॥ हरषवेतनवभएउभुआला ॥ ॥ ॥ ॥
ओरौरहेजेकालमहिकोई ॥ तिन्हकेसंगनतेसवसोई ॥ सकलसुरन्हसहितविधाता ॥
न्हषसनआनकहीसववाता ॥ धन्यभगीरथनसजगजेयउ ॥ नृपसमाननृपओरनभ
एउ ॥ अपनीसतप्रनपाकिएउ ॥ संमतवेदजीवनसुषदएउ ॥ गंगासागरसवकोउ
कहहि ॥ सुधुकल्कदेषतरविकुरही ॥ भागीरथीअसनामकहेहहि ॥ तिऊपुरना
रदादिजसगेहहि ॥ असकहिविधिनिजलोकसिधाए ॥ ईहांभगीरथअतिसुषपा
ई ॥ छंद ॥ पाइअमितसुषवऊविहजोसुरसरिमनलाइकै ॥ तवदीन्हआसिषमुदित
गंगानृपभवनगेसुषपाइकै ॥ एहिभांतिसुनिगंगाकथातवरामसुनिचरनन्हिन
नए ॥ कहहासमलनसोरामलषनहिमहामुनिआसिषदए ॥ दोहा ॥ प्रभुसुषपाएक
हामुनिवरवलियमुनिनाथ ॥ कौसिकआसिषअमीयसमपाईहरषरघुनाथ ॥ कौ
सिकआसिषसुधासमपाइहरषरघुराज ॥ प्रभुसंगपायसवअमगएलवानिरषिमिथि
वाज ॥ २४५ ॥ चौपाई ॥ रामनामतेसंशयजाई ॥ देहधरेकेरियेफलभाई ॥ गाधिसुव
नसवकथासुनाए ॥ जेहिप्रकारसुरसरिमहिआए ॥ तवप्रभुरिषिन्हसमेतनहाए ॥ वि
विधदानमहिदेवन्हपाई ॥ हरषिचलेमुनिवृंदसहाया ॥ वेगिविदेहनगरनिअरा
या ॥ पुररम्यतारामजवदेषी ॥ हरषेअनुजसमेतविसेषी ॥ वापीकूपसरितसर
नाना ॥ सलिलसुधासममनिसोपाना ॥ गुंजतमंजुमतरसभृंगा ॥ कूजतकलवहुव
हुवरनविहंगा ॥ वरनवरनविकसेवनजाता ॥ त्रिविधसमीरसदासुषदाता ॥ दोहा ॥
सुमनवाटिकावागवनविपुलविहंगनिवास ॥ फूलतफलतसुपल्लवतसोहतपु
रचहुपास ॥ २४६ ॥ चौपाई ॥ वनैनवरनतनगरनिकाई ॥ जहांजाईमनतेहलोभा
ई ॥ चारुवजारुविचित्रअटारी ॥ मनिमयविधिजनुहाथसवारी ॥ धनिकवनिकवर
धनदसमाना ॥ वैठेसकलवस्तुलेनाना ॥ चौहटसुंदरगलीसुहाई ॥ संततरहहि
सुगंधसिंचाई ॥ मंगलमयमंदिरसवकेरे ॥ चित्रितजनुरतिनाथचितेरे ॥ पुरनरनारी
सुभगसुचिसंता ॥ धर्मसीलज्ञानीगुनवंत ॥ अतिअनूपजहजनककोनिवास ॥ वि
थकहिविवुधविलोकविलास ॥ होतचकितचितकोटविलोकी ॥ सकलभुवनसो
भाजनुरोकी ॥ दोहा ॥ धवलधाममनिपुरटपटसुघटितनानाभांति ॥ सियनिवास
सुंदरसदनसोभाकिमिकहीजाति ॥ २४७ ॥ चौपाई ॥ सुभगद्वारसवकुलसकपा
टा ॥ भूपभीरनटमागधभाटा ॥ वनीविसालवाजगजसाला ॥ हयगजरथसंकु
लसवकाला ॥ सूरसचिवसेनपवहुतेरे ॥ नृपगृहसरिससदनसवकेरे ॥ पुरवाहि
रसरसरितसमीपा ॥ उतरेजहांतहांविपुलमहीपा ॥ देषिअनूपएकअंवराई ॥ सव
सुपाससवभांतिसुहाई ॥ कौसिककहेउमोरमनमाना ॥ इहांरहिअरघुवीरसु
जाना ॥ भलेहिनाथकहिकृपानिकेता ॥ उतरेतहमुनिवृंदसमेता ॥ विस्वामित्रम
हामुनिआए ॥ समाचारमिथिलापतिपाई ॥ दोहा ॥ संगसचिवसुचिभूरिभटभू
सुरवरगुरग्याति ॥ चलेमिलनमुनिनायकहिमुदितराउएहिभांति ॥ २४८ ॥ चौ
पाई ॥ पदवंदनिकरदरसरिसुहेवा ॥ जनमसुफलआपनकरिलेषा ॥ कीन्हपना
मवरितघरिमाथा ॥ दीन्हिअसीससुदितमुनिनाथा ॥ विप्रवृंदसवसादरवंदे
जानिभागवडराउअनंदे ॥ कुसलप्रस्नकहिवारहिवारा ॥ विस्वामित्रनृपहिवैठा
रा ॥ तेहिअवसरआएदोउभाई ॥ गएरहेदेषनफुलवाई ॥ स्यामगोरमृदुवय
सकिसोरा ॥ लोचनसुषदविस्वचितचोरा ॥ उठेसकलजवरघुपतिआई ॥ विस्वा
मित्रनिकटवैठाए ॥ भएसवसुषीदेषिदोउभ्राता ॥ वारिविलोचनपुलककतगाता
मूरतिमधुरमनोहरदेषी ॥ भएउविदेहविदेहविसेषी ॥ दोहा ॥ प्रेममगनमन

नुजानिनृपकरिविवेकुधरिधीर ॥ वोलेउमुनिपदनाइसिरगदगदगिरागंभीर ॥ २४९
चौपाई ॥ कहहुनाथसुंदरदोउवालक ॥ मुनिकुलतिलककिनृपकुलपालक ॥ ब्र
ह्मजोनिगमनेतिकहिगावा ॥ उभयवेषधरिकीसोईआवा ॥ सहजविरागरूप
मनमोरा ॥ थकितहोतजिमिचंदचकोरा ॥ तातेप्रभुपूछउसतिभाऊ ॥ कहहु
नाथजनिकरहुदुराऊ ॥ इन्हहिविलोकतअतिअनुरागा ॥ वरवसब्रह्मसुषहि
मनत्यागा ॥ कहमुनिविहसिकहेहुनृपनीका ॥ वचनतुम्हारनहोइअलीका ॥
येप्रियसवहिजहांलगिप्रानी ॥ मनमुसकाहिरामसुनिवानी ॥ रघुकुलमनिदसर
थकेजाए ॥ ममहितलागिनरेसपठाए ॥ दोहा ॥ रामलषनदोउवंधुवररूपसीलव
लधाम ॥ मषराषेउसवसाषिजगुजीतेअसुरसंग्राम ॥ २५० ॥ चौपाई ॥ मुनितव
चरनदेषिकहराउ ॥ कहिनसकौनिजपुन्यप्रभाउ ॥ सुंदरस्यामगौरदोउभ्रा
ता ॥ आनंदहूकेआनंददाता ॥ इन्हकैप्रीतिपरसपरपावनि ॥ कहिनजाइमन
भावसुहावनि ॥ सुनहुनाथकहमुदितविदेहू ॥ ब्रह्मजीवइवसहजसनेहू ॥ पु
निपुनिप्रभुहिचितवनरनाहू ॥ पुलकगातउरअधिकउछाहू ॥ मुनिहिप्रसंसि
नाइपदसीसू ॥ चलेउलवाइनगरअवनीसू ॥ सुंदर
सदनसुषदसवकाला ॥ तहांवासलेदीन्हभुआला ॥ करिपूजासवविधिसेवका
ई ॥ गएउराउगृहविदाकराई ॥ दोहा ॥ रिषियसंगरघुवंसमनिकरिभोजनविश्रा
मु ॥ वैठेप्रभुभ्रातासहितदिवसरहाभरिजामु ॥ २५१ ॥ चौपाई ॥ लषनहृदयला
लसाविसेषी ॥ जाइजनकपुरआइअदेषी ॥ प्रभुभयवहुरिमुनिहिसकुचाही ॥ प्र
गटनकहहिमनहिमुसुकाही ॥ रामअनुजमनकीगतिजानी ॥ भगतवछलता
हियहुलसानी ॥ परमविनीतसकुचिमुसकाई ॥ वोलेगुरुअनुसासनपाई ॥
नाथलषनपुरुदेषनचहही ॥ प्रभुसकोचडरप्रगटनकहही ॥ जौराउरआएसुमै
पावउ ॥ नगरदेषाईतुरतलेआवउ ॥ सुनिमुनिसकहवचनसप्रीती ॥ कसनरा
ममनुस्यराषहुनीती ॥ धर्मसेतुपालकतुम्हताता ॥ प्रेमविवससेवकसुषदाता ॥
दोहा ॥ जाइदेषिआवहुनगरसुषनिधानदोउभाइ ॥ करहुसुफलसवकेनयन
सुंदरवदनदिषाइ ॥ २५२ ॥ चौपाई ॥ मुनिपदकमलवंदिदोउभ्राता ॥ चलेलोक
लोचनसुषदाता ॥ वालकवृंददेषिअतिसोभा ॥ लगेसंगलोचनमनलोभा ॥ पीत
वसनपरिकरकटिभाथा ॥ चारुचापसरसोहतहाथा ॥ तनअनुहरतसुचंद
नषोरी ॥ स्यामलगौरमनोहरजोरी ॥ केहरिकंदरवाहुविसाला ॥ उरअतिरुचि
रनागमनिमाला ॥ सुभगसोनसरसीरुहलोचन ॥ वदनमयंकतापत्रयमो
चन ॥ काननिकनकफूलछविदेही ॥ चितवतचितहिचोरजनुलेही ॥ चितव
तचितहिचोरजनुलेही ॥ चितवनिचारुभृकुटिवरवांकी ॥ तिलकरेषसोभाज
नुचांकी ॥ दोहा ॥ रुचिरचौतनीसुभगसिरमेचककुंचितकेस ॥ नषसिषसुं
दरवंधुदोउसोभासकलसुदेस ॥ २५३ ॥ चौपाई ॥ देषननगरभूपसुतआए ॥ स
माचारपुरवासिन्हपाए ॥ धाएधामकामसवत्यागी ॥ मनहुरंकनिधिलूटनला
गी ॥ निरषिसहजसुंदरदोउभाई ॥ होहिसुषीलोचनफलपाई ॥ जुवतीभवन
झरोषनलागी ॥ निरषहिरामरूपअनुरागी ॥ कहहिपरसपरवचनसप्रीती
सषीइन्हकोटिकामछविजीती ॥ सुरनरअसुरनागमुनिमाही ॥ सोभाअसक
हुसुनिअतिनाही ॥ विस्नुचारिभुजविधिमुषचारी ॥ विकटवेषमुषपंचपुरा
री ॥ अपरदेवअसकोउनआही ॥ यहछविसषीपटतरिअजाही ॥ दोहा ॥ वयकि
सोरसुषमासदनस्यामगौरसुषधाम ॥ अंगअंगपरवारिअहिकोटिकोटिस
तकाम ॥ २५४ ॥ चौपाई ॥ कहहुसषीअसकोतनुधारी ॥ जोनमोहयहरूपनिहा
री ॥ कोउसप्रेमवोलीमृदुवानी ॥ जोमैसुनासोसुनहुसयानी ॥ एदोउदसरथके

रा॰ बा॰
२७

ढोटा॥ बालमरालन्हिकेकलजोटा॥ मुनिकौसिकमषकेरषवारे॥ जिन्हरनअजिरनि
साचरमारे॥ स्यामलगातकलकंजविलोचन॥ जोमारीचसुभुजमदमोचन॥ कौस
ल्यासुतसोसुषषानी॥ नामरामधनुसायकपानी॥ गौरकिसोरवेषवरकाछें॥ क
रसरचापरामकेपाछें॥ लछमननामरामलघुभ्राता॥ सुनुसषीतासुसुमित्रामाता
॥दोहा॥ विप्रकाजकरिवंधुदोउमगमुनिवधूउधारि॥ आयेदेषनचापमषसुनिहर
षींसवनारि॥२५५॥ चौपाई॥ देषिरामछविकोउएककहई॥ जोगजानकीहिय
हवरुअहई॥ जौसषिइन्हहिदेषिनरनाहू॥ पनपरिहरिहठिकरैविवाहू॥ कोउकहिय
हिभूपतिपहिचाने॥ मुनिसमेतसादरसनमाने॥ सषीपरंतपनराउनतजई॥ विधि
वसहठिअविवेकहिभजई॥ कोउकहजौभलअहइविधाता॥ सवकहसुनिअउचित
फलदाता॥ तौजानकीहीमिलिवरुएहू॥ नाहिनआलीइहांसंदेहू॥ जौविधिवस
असवनैसंजोगू॥ तौकृतकृत्यहोइसवलोगू॥ सषीहमरेंआरतिअतितातें॥ कवहुंक
एआवहियेहिनातें॥ दोहा॥ नाहितहमकहुंसुनहुसषिइन्हकरदरसनदूरि॥ यहसं
घटतवहोइजवपुन्यपुराकृतभूरि॥२५६॥ चौपाई॥ वोलीअपरकहेउसषीनीका॥
एहिविआहअतिहितसवहीका॥ कोउकहसंकरचापकठोरा॥ एस्यामलमृदुगातकि
सोरा॥ सवुअसमंजसअहइसयानी॥ यहसुनिअपरकहैमृदुवानी॥ सषीइन्हकहं
कोउअसकहहीं॥ वडप्रभावदेषतलघुअहहीं॥ परसिजासुपदपंकजधूरी॥ तरीअह
ल्याकृतअघभूरी॥ सोकिरहिहिविनुसिवधनुतोरें॥ यहप्रतीतिपरिहरिअनभोरें॥
जेहिविरंचिरचिसीयसवारी॥ तेहिस्यामलवरुरचेउविचारी॥ तासुवचनसुनिसव
हरषानी॥ ऐसेइहोउकहहिमृदुवानी॥ दोहा॥ हियहरषहिवरषहिसुमनसुमुषि
सुलोचनवृंद॥ जाहिजहांजहंवंधुदोउतहंतहंपरमानंद॥२५७॥ चौपाई॥ पुरपूरव
दिसिगेदोउभाई॥ जहंधनुमषहितभूमिवनाई॥ अतिविस्तारचारुगचढारी॥ विमल
वेदिकारुचिरसंवारी॥ चहुंदिसिकंचनमंचविसाला॥ रचेजहांवैठहिमहिपाला॥
तेहिपाछेंसमीपचहुंपासा॥ अपरमंचमंडलीविलासा॥ कछुकऊंचसवभांतिसुहा
ई॥ वैठहिनगरलोगजहंजाई॥ तिन्हकेनिकटविसालसुहाई॥ धवलधामवहुभांतिव
नाई॥ जहंवैठेंदेषहिंसवनारी॥ जथाजोगनिजकुलअनुहारी॥ पुरवालककहिकहि
मृदुवचना॥ सादरप्रभुहिदिषावहिंरचना॥ दोहा॥ सवसिसुएहिमिसप्रेमवसप
रसिमनोहरगात॥ तनपुलकहिंअतिहरषुहियंदेषिदेषिदोउभ्रात॥२५८॥ चौपाई
सिसुसवरामप्रेमवसजाने॥ प्रीतिसमेतनिकेतवषाने॥ निजनिजरुचिसवलेहिंवो
लाई॥ सहितसनेहजाहिंदोउभाई॥ रामदिषावहिंअनुजहिरचना॥ कहिमृदुमधुर
मनोहरवचना॥ लवनिमेषमहंभुवननिकाया॥ रचैजासुअनुसासनमाया॥ भग
तिहेतुसोइदीनदयाला॥ चितवतचकितधनुषमषसाला॥ कौतुकदेषिचलेगुरुपा
हीं॥ जानिविलंवत्रासमनमाहीं॥ जासुत्रासडरकहुंडरहोई॥ भजनप्रभाउदिषावत
सोई॥ कहिवातेंमृदुमधुरसुहाई॥ कीएविदावालकवरिआई॥ सभयसप्रेमविनीत
अतिसकुचसहितदोउभाई॥ गुरुपदपंकजनाइसिरवैठेआयसुपाई॥२५९॥ चौपाई
निसिप्रवेसमुनिआयसुदीन्हा॥ सवहींसंध्यावंदनुकीन्हा॥ कहतकथाइतिहास
पुरानी॥ रुचिररजनिजुगजामसिरानी॥ मुनिवरसयनकीन्हितवजाई॥ लगेचरन
चापनदोउभाई॥ जिन्हकेचरनसरोरुहलागी॥ करतविविधजपजोगविरागी॥
तेइदोउवंधुप्रेमजनुजीते॥ गुरुपदकमलपलोटतप्रीते॥ वारवारमुनिअग्यादी
न्ही॥ रघुवरजाइसयनतवकीन्ही॥ चापतचरनलषनउरलाएं॥ सभयसप्रेमपर
मसचुपाएं॥ पुनिपुनिप्रभुकहसोवहुताता॥ पौढेधरिउरपदजलजाता॥ दो॥ उठे
लषननिसिविगतसुनिअरुनसिषाधुनिकान॥ गुरुतेंपहिलेहिंजगतपतिजागे
रामसुजान॥२६०॥ चौपाई॥ सकलसौचकरिजाइनहाई॥ नित्यनिवाहिमुनिहि

सिरुनाई॥ समयजानगुरुआयसुपाई॥ लेनप्रसूनचलेदोउभाई॥ भूपवागवरदेषे
उजाई॥ जहंवसंतरितुरहीलोभाई॥ लागेविटपमनोहरनाना॥ वरनवरनवरवे
लिविताना॥ नवपल्लवफलसुमनसुहाए॥ निजसंपतिसुररूषलजाए॥ चात
ककोकिलकीरचकोरा॥ कूजतविहगनटतकलमोरा॥ मध्यवागसरसोहसु
हावा॥ मनिसोपानविचित्रवनावा॥ विमलसलिलसरसिजवहुरंगा॥ जलष
गकूजतगुंजतभृंगा॥ दोहा॥ वागतडागविलोकिप्रभुहरषेवंधुसमेत॥ परम
रम्यआरामयहजोरामहिसुषदेत॥२६१॥ चौपाई॥ चहुंदिसिचितैपूछिमाली
गन॥ लगेलेनदलफूलमुदितमन॥ तेहिअवसरसीतातहांआई॥ गिरिजापू
जनजननिपठाई॥ संगसषीसवसुभगसयानी॥ गावहिंगीतमनोहरवानी॥
सरसमीपगिरिजागृहसोहा॥ वरनिनजाईदेषिमनमोहा॥ मज्जनकरिसरसषि
न्हसमेता॥ गईमुदितमनगौरिनिकेता॥ पूजाकीन्हअधिकअनुरागा॥ निजअ
नुरूपसुभगवरुमांगा॥ एकसषीसियसंगविहाई॥ गईरहीदेषनफुलवाई॥
तेहिदोउवंधुविलोकेजाई॥ प्रेमविवससीतापहिंआई॥ दोहा॥ तासुदसादे
षीसषीन्हपुलकगातजलनयन॥ कहुकारननिजहरषकरपूछहिंसवमृदु
वयन॥२६२॥ चौपाई॥ देषनवागकुअरदोउआए॥ वयकिसोरसवभांतिसुहाए॥
स्यामगौरकिमिकहौवषानी॥ गिराअनयननयनविनुवानी॥ सुनिहरषीं
सवसषीसयानी॥ सियहियअतिउतकंठाजानी॥ एककहइनृपसुततेइआ
ली॥ सुनेजेमुनिसंगआएकाली॥ जिन्हनिजरूपमोहनीडारी॥ कीन्हेस्ववस
नगरनरनारी॥ वरनतछविजहंतहंसवलोगू॥ अवसिदेषिअहिदेषनजोगू॥
॥तासुवचनअतिसियहिसुहाने॥ दरसलागिलोचनअकुलाने॥ चलीअ
ग्रकरिप्रियसषीसोई॥ प्रीतिपुरातनलषैनकोई॥ दोहा॥ सुमिरिसीयनारद
वचनउपजीप्रीतिपुनीति॥ चकितविलोकतिसकलदिसिजनुसिसुमृ
गीसभीत॥२६३॥ चौपाई॥ कंकनकिंकिनिनूपुरधुनिसुनि॥ कहतलषनसन
रामहृदयगुनि॥ मानहुमदनदुंदुभीदीन्ही॥ मनसाविस्वविजयकहंकी
न्ही॥ असकहिफिरिचितएतेहिओरा॥ सियमुषससिभएनयनचकोरा॥ भए
विलोचनचारुअचंचल॥ मनहुसकुचिनिमितजेदृगंचल॥ देषिसीयसोभासु
षपावा॥ हृदयसराहतवचननआवा॥ जनुविरंचिसवनिजनिपुनाई॥ विरि
चिविस्वकहंप्रगटदिषाई॥ सुंदरताकहंसुंदरकरई॥ छविगृहदीपसिषा
जनुवरई॥ सवउपमाकविरहेजुठारी॥ केहिपटतरौंविदेहकुमारी॥ दोहा॥
सियसोभाहियवरनिप्रभुआपनिदसाविचारि॥ वोलेसुचिमनअनुजसन
वचनसमयअनुहारि॥२६४॥ चौपाई॥ तातजनकतनयायेहसोई॥ धनुषज
ग्यजेहिकारनहोई॥ पूजनगौरिसषीलेआई॥ करतप्रकासफिरतिफुलवाई॥ जा
सुविलोकिअलौकिकसोभा॥ सहजपुनीतमोरमनछोभा॥ सोसवकारनजा
नविधाता॥ फरकहिंसुभगअंगसुनुभ्राता॥ रघुवंसिन्हकरसहजसुभाउ॥
मनुकुपंथपगधरैनकाउ॥ मोहिअतिसयप्रतीतिमनकेरी॥ जेहिसपनेहुंप
रनारिनहेरी॥ जिन्हकैलहहिंनरिपुरनपीठी॥ नहिलावहिपरतियमनडी
ठी॥ मंगनलहहिंनजिन्हकैनाहीं॥ तेनरवरथोरेजगमाहीं॥ दोहा॥ करतव
तकहीअनुजसनमनसियरूपलोभान॥ मुषसरोजमकरंदछविकरतमधु
पईवषान॥२६५॥ चौपाई॥ चितवतिचकितचहूंदिसिसीता॥ कहंगएनृपकि
सोरमनचिंता॥ जहंविलोकमृगसावकनयनी॥ जनुतहंवरिसकमलसि

नैनी॥ लता ओट तब सषिन्ह लषाए॥ स्यामल गौर किसोर सुहाए॥ देषि रूप लोचन ल
लचाने॥ हरषे जनु निज निधि पहिचाने॥ थके नयन रघुपति छबि देषे॥ पलकन्हि
हू परिहरी निमेषे॥ अधिक सनेह देह भै भोरी॥ सरद ससिहि जनु चितव चकोरी॥
लोचन मग रामहि उर आनी॥ दीन्हे पलक कपाट सयानी॥ जो छबि बिइ नैन नयन मा
आइ॥ मति षिनि किमि बिजहि आनि न जाई॥ जब सीय सषिन्ह प्रेमबस जानी॥ कहि
न सकहि कछु मन सकुचानी॥ दोहा॥ लताभवन तें प्रगट भे तेहि अवसर दोउ भाई॥
निकसे जनु जुग बिमल बिधु जलद पटल बिलगाई॥२३२॥ चौपाई॥ सोभा सीव
सुभग दोउ बीरा॥ नील पीत जलजाभ सरीरा॥ काकपच्छ सिर सोहत नीके॥ गुच्छा
बीच बीच कुसुम कली के॥ भाल तिलक श्रम बिंदु सुहाई॥ श्रवन सुभग भूषन
छबि छाए॥ बिकट भृकुटि कच घूघरवारे॥ नव सरोज लोचन रतनारे॥ चारु चिबुक ना
सिका कपोला॥ हास बिलास लेत मनु मोला॥ मुषछबि कहि न जाइ मोहि पाही॥
जो बिलोकि बहु काम लजाही॥ उर मनि माल कंबु कल ग्रीवा॥ काम कलभ कर भुज
बलसीवा॥ सुमन समेत बाम कर दोना॥ सावर कुअर सषी सुठि लोना॥ दोहा॥ के
हरि कटि पट पीतधर सुषमा सील निधान॥ देषि भानुकुल भूषनहि बिसरा सषि
न्ह अपान॥२३३॥ चौपाई॥ धरि धीरजु एक आलि सयानी॥ सीता सन बोली गहि पा
नी॥ बहुरि गौरि कर ध्यान करेहू॥ भूपकिसोर देषि किन लेहू॥ सकुचि सीय तब नयन
उघारे॥ सनमुष दोउ रघुसिंघ निहारे॥ नष सिष देषि राम कै सोभा॥ सुमिरि पिता प
नु मनु अति छोभा॥ परबस सषिन्ह लषी जब सीता॥ भयउ गहरु सब कहहि सभीता॥
पुनि आउब एहि बेरिआ काली॥ अस कहि मन बिहसी एक आली॥ गूढ़ गिरा सुनि
सीय सकुचानी॥ भयउ बिलंबु मातु भय मानी॥ धरि बड़ि धीर रामु उर आने॥ फिरी अ
पनपउ पितुबस जाने॥ दोहा॥ देषन मिस मृग बिहग तरु फिरै बहोरि बहोरि॥
निरषि निरषि रघुबीर छबि बाढ़ै प्रीति न थोरि॥२३४॥ चौपाई॥ जानि कठिन सिव
चाप बिसूरति॥ चली राषि उर स्यामल मूरति॥ प्रभु जब जात जानकी जानी॥ सु
ष सनेह सोभा गुन षानी॥ परम प्रेममय मृदु मसि कीन्ही॥ चारु चित्त भीती लिषि
लीन्ही॥ गई भवानी भवन बहोरी॥ बंदि चरन बोली कर जोरी॥ जय जय गिरिब
रराज किसोरी॥ जय महेस मुष चंद चकोरी॥ जय गजबदन षडानन माता॥ जग
त जननि दामिनि दुति गाता॥ नहि तव आदि मध्य अवसाना॥ अमित प्रभाउ बेद
नहि जाना॥ भव भव बिभव पराभव कारिनि॥ बिस्व बिमोहनि स्वबस बिहारिनि॥
दोहा॥ पतिदेवता सुतीय महु मातु प्रथम तव रेष॥ महिमा अमित न सकहि कहि
सहस सारदा सेष॥२३५॥ चौपाई॥ सेवत तोहि सुलभ फल चारी॥ बरदायिनी
त्रिपुरारि पिआरी॥ देबि पूजि पद कमल तुम्हारे॥ सुर नर मुनि सब होहि सुषारे॥
मोर मनोरथ जानहु नीके॥ बसहु सदा उर पुर सबही के॥ कीन्हेउ प्रगट न कारन
तेही॥ अस कहि चरन गहे बैदेही॥ बिनय प्रेम बस भई भवानी॥ षसी माल मू
रति मुसुकानी॥ सादर सीय प्रसादु सिर धरेऊ॥ बोली गौरि हरषु हिय भरेऊ॥ सुनि
सीय सत्य असीस हमारी॥ पूजिहि मन कामना तुम्हारी॥ नारद बचन सदा सुचि सा
चा॥ सो बरु मिलिहि जाहि मनु राचा॥ छंद॥ मनु जाहि राचेउ मिलिहि सो बरु
सहज सुंदर सावरो॥ करुना निधान सुजान सीलु सनेहु जानत रावरो॥ एहि भा
ति गौरि असीस सुनि सिय सहित हिय हरषी अली॥ तुलसी भवानिहि पूजि पु
नि पुनि मुदित मन मंदिर चली॥ सोरठा॥ जानि गौरि अनुकूल सिय हिय हरषु
न जाइ कहि॥ मंजुल मंगल मूल बाम अंग फरकन लगे॥२३६॥ चौपाई॥ हृदय सरा

हत सीय लषु नाई॥ गुरु समीप गवने दोउ भाई॥ राम कहा सबु कौसिक पाही॥ सरल सुभा
उ छुअत छल नाही॥ सुमन पाइ मुनि पूजा कीन्ही॥ पुनि असीस दुहु भाइन्ह दीन्ही॥ सु
फल मनोरथ होहु तुम्हारे॥ रामु लषन सुनि भये सुषारे॥ करि भोजन मुनिबर बिग्यानी॥
लगे कहन कछु कथा पुरानी॥ बिगत दिवसु गुरु आयसु पाई॥ संध्या करन चले दो
उ भाई॥ प्राची दिसि ससि उयेउ सुहावा॥ सिय मुष सरिस देषि सुषु पावा॥ बहुरि बिचा
रु कीन्ह मन माही॥ सीय बदन सम हिमकर नाही॥ दो॰॥ जनमु सिंधु पुनि बंधु बिषु
दिन मलीन सकलंक॥ सीय मुष समता पाव किमि चंदु बापुरो रंक॥२३७॥ चौपाई॥
घटै बढ़ै बिरहिनि दुषदाई॥ ग्रसै राहु निज संधिहि पाई॥ कोक सोकप्रद पंकज द्रोही॥
अवगुन बहुत चंद्रमा तोही॥ बैदेही मुष पटतर दीन्हे॥ होइ दोषु बड़ अनुचित कीन्हे॥ सी
य मुष छबि बिधु ब्याज बषानी॥ गुर पहि चले निसा बड़ि जानी॥ करि मुनि चरन सरोज प्रना
मा॥ आयसु पाइ कीन्ह बिश्रामा॥ बिगत निसा रघुनायक जागे॥ बंधु बिलोकि कहन
अस लागे॥ उ[illegible] अरुन अवलोकहु ताता॥ पंकज कोक लोक सुषदाता॥ बोले
लषनु जोरि जुग पानी॥ प्रभु प्रभाउ सूचक मृदु बानी॥ दो॰॥ अरुनोदय सकुचे कुमुद
उडगन जोति मलीन॥ जिमि तुम्हार आगमन सुनि भये नृपति बलहीन॥२३८॥
चौपाई॥ नृप सब नषत करहि उजिआरी॥ टारि न सकहि चाप तम भारी॥ कमल कोक
मधुकर षग नाना॥ हरषे सकल निसा अवसाना॥ ऐसेहि प्रभु सब भगत तुम्हारे॥
होइहहि टूटे धनुष सुषारे॥ उयेउ भानु बिनु श्रम तम नासा॥ दुरे नषत जग तेज प्रकासा
॥ दुरे नषत जग तेज प्रकासा॥ रबि निज उदय ब्याज रघुराया॥ प्रभु प्रतापु सब नृपन्ह
दिषाया॥ तव भुज बल महिमा उदघाटी॥ प्रगटी धनु बिघटन परिपाटी॥ बंधु
बचन सुनि प्रभु मुसुकाने॥ होइ सुचि सहज पुनीत नहाने॥ नित्यक्रिया करि गुरु
पहि आए॥ चरन सरोज सुभग सिर नाए॥ सतानंद तब जनक बोलाए॥ कौसिक मुनि
पहि तुरत पठाए॥ जनक बिनय तिन्ह आइ सुनाई॥ हरषे बोलि लिए दोउ भाई॥ दो॰॥
सतानंद पद बंदि प्रभु बैठे गुर पहि जाइ॥ चलहु तात मुनि कहेउ तब पठवा जनक
बोलाइ॥२३९॥ चौपाई॥ सीय स्वयंबरु देषिय जाई॥ ईसु काहि धौ देइ बड़ाई॥ लषन क
हा जस भाजनु सोई॥ नाथ कृपा तव जापर होई॥ हरषे मुनि सब सुनि बर बानी॥ दी
न्ह असीस सबहि सुष मानी॥ पुनि मुनिबृंद समेत कृपाला॥ देषन चले धनुषमष
साला॥ रंगभूमि आए दोउ भाई॥ असि सुधि सब पुरबासिन्ह पाई॥ चले सकल गृ
ह काज बिसारी॥ बाल जुबान जरठ नर नारी॥ देषी जनक भीर भै भारी॥ सुचि सेव
क सब लिए हकारी॥ तुरत सकल लोगन्ह पहि जाहू॥ आसन उचित देहु सब काहू॥
दो॰॥ कहि मृदु बचन बिनीत तिन्ह बैठारे नर नारि॥ उत्तम मध्यम नीच लघु नि
ज निज थल अनुहारि॥२४०॥ चौपाई॥ राजकुअर तेहि अवसर आए॥ म
नहु मनोहरता तन छाए॥ गुन सागर नागर बर बीरा॥ सुंदर स्यामल गौर सरीरा॥
राज समाज बिराजत रूरे॥ उडगन महु जनु जुग बिधु पूरे॥ जिन्ह के रही भावना जै
सी॥ प्रभु मूरति तिन्ह देषी तैसी॥ देषहि रूप महा रनधीरा॥ मनहु बीर रसु धरे स
रीरा॥ डरे कुटिल नृप प्रभुहि निहारी॥ मनहु भयानक मूरति भारी॥ रहे असुर छल
छोनिप बेषा॥ तिन्ह प्रभु प्रगट काल सम देषा॥ पुरबासिन्ह देषे दोउ भाई॥ नरभू
षन लोचन सुषदाई॥ दो॰॥ नारि बिलोकहि हरषि हिय निज निज रुचि अनुरू
प॥ जनु सोहत सिंगार धरि मूरति परम अनूप॥२४१॥ चौपाई॥ बिदुषन्ह प्रभु बिरा
टमय दीसा॥ बहु मुष कर पग लोचन सीसा॥ जनक जाति अवलोकहि कैसे॥
सजन सगे प्रिय लागहि जैसे॥ सहित बिदेह बिलोकहि रानी॥ सिसु सम प्रीति न

जानिबषानी॥ जोगिन्हपरमतत्वमयभासा॥ सांतसुद्धमनसहजप्रकासा॥ हरिभगतन्ह
देषेदोउभ्राता॥ इष्टदेवइवसबसुषदाता॥ रामहिचितवभायजेहिसीया॥ सोसनेहसुषन
हिकथनीया॥ उरअनुभवतिनकहिसकसोई॥ कवनप्रकारकहेकबिकोई॥ येहिबिधि
रहाजाहिजसभाई॥ तेहितसदेषेउकोसलराई॥ दोहा॥ राजतराजसमाजमहुकोसल
राजकिसोर॥ सुंदरस्यामगौरतनबिस्वबिलोचनचोर॥ २४६॥ चौपाई॥ सहजमनोहरमूर
तिदोऊ॥ कोटिकामउपमालघुसोऊ॥ सरदचंदनिंदकमुषनीके॥ नीरजनयनभाव
तेजीके॥ चितवनिचारुमारमनहरनी॥ भावतहृदयजातिनहीबरनी॥ कलकपोल
श्रुतिकुंडललोला॥ चिबुकअधरसुंदरमृदुबोला॥ कुमुदबंधुकरनिंदकहासा॥ भृ
कुटीबिकटमनोहरनासा॥ भालबिसालतिलकझलकाही॥ कचबिलोकअलिअव
लिलजाही॥ पीतचौतनीसिरन्हिसुहाई॥ कुसुमकलीबिचबिचबनाई॥ रेषेरुचिर
कंबुकलग्रीवा॥ जनुत्रिभुवनसुषमाकीसीवा॥ दोहा॥ कुंजरमनिकंठाकलितउरन्ह
तुलसीकीमाल॥ बृषभकंधकेहरठवनिबलनिधिबाहुबिसाल॥ २४७॥ चौपाई॥ कटितू
नीरपीतपटबाधे॥ करसरधनुषबामकरकाधे॥ पीतजग्यउपबीतसुहाए॥ नषसिषमं
जुमहाछबिछाए॥ देषलोगसबभएसुषारे॥ एकटकलोचनचलतनटारे॥ हरषे
जनकदेषिदोउभाई॥ मुनिपदकमलगहेतबजाई॥ करबिनतीनिजकथासुनाई
॥ रंगअवनिसबमुनिहिदेषाई॥ जहंजहंजाहिकुअरबरदोई॥ तहंतहंचकितचितव
सबकोई॥ निजनिजरुषरामहिसबदेषा॥ कोउनजानकछुमरमबिसेषा॥ भलि
रचनामुनिनृपसनकहेउ॥ राजामुदितमहासुषलहेउ॥ दोहा॥ सबमंचन्हतेमंचु
एकसुंदरबिसदबिसाला॥ मुनिसमेतदोउबंधुतहबैठारेमहिपाल॥ चौपाई॥ प्र
भुहिदेषिसबनृपहियहारे॥ जनुराकेसउदयभएतारे॥ असिप्रतीतिसबकेमन
माही॥ रामचापतोरबकसनाही॥ बिनभंजेहूभवधनुषबिसाला॥ मेलहिसीय
रामउरमाला॥ असबिचारिगवनहुघरभाई॥ जसप्रतापबलतेजगवाई॥ बिहसे
अपरभूपसुनीबानी॥ जेअबिबेकअंधअभिमानी॥ तोरेहुधनुषब्याहअवगाहा॥
बिनुतोरेकोकुअरिबिआहा॥ एकबारकालउकिनहोई॥ सीयहितसमरजितबहमसो
ई॥ येहिसुनिअवरमहीपमुसकाने॥ धरमसीलहरिभगतसयाने॥ सोरठा॥ सीय
बिआहबिरामगरबदूरकरिनृपन्हकर॥ जीतिकोसकसंग्रामदसरथकेरनबांकुरे
॥ २४९॥ चौपाई॥ ब्यर्थमरहुजनिगालबजाई॥ मनमोदकन्हिकिभूषबुझाई॥ सि
षहमारिसुनपरमपुनीता॥ जगदंबाजानहुजियसीता॥ जगतपितारघुपतिहि
बिचारी॥ भरिलोचनछबिलेहुनिहारी॥ सुंदरसुषदसकलगुनरासी॥ एदोउबंधु
संभुउरबासी॥ सुधासमुद्रसमीपबिहाई॥ मृगजलनिरषिमरहुकतधाई॥ करहु
जाईजाकहुजोभावा॥ हमतोआजुजनमफलुपावा॥ असकहिभलेभूपअनुरागे
॥ रूपअनूपबिलोकनलागे॥ देषहिसुरनभचढेबिमाना॥ बरषहिसुमन
करहिकलगाना॥ दोहा॥ जानिसुअवसरसीयतबपठईजनकबुलाई॥ चतुर
सषीसुंदरसकलसादरचलीलवाई॥ २५०॥ चौपाई॥ सीयसोभानहिजाइबषा
नी॥ जगदंबिकारूपगुनषानी॥ उपमासकलमोहिलघुलागी॥ प्राकृतनारिअं
गअनुरागी॥ सियबरनियतेईउपमादेई॥ कुकबिकहायअजसकोलेई॥ जोपटि
तरियतीयसमसीया॥ जगअसजुवतिकहाकमनीया॥ गिरामुषरतनअरधभ
वानी॥ रतिअतिदुषितअतनुपतिजानी॥ बिषबारुनीबंधुप्रियजेही॥ कहियर
मासमकिमिबैदेही॥ जोछबिसुधापयोनिधिहोई॥ परमरूपमयकछपुसो
ई॥ सोभारजमंदरुसिंगारू॥ मथैपानिपंकजनिजमारू॥ दोहा॥ येहिबिधि

उपजेलछ्छिजबसुंदरतासुषमूल॥ तदपिसकोचसमेतकबिकहहिसीयसमतूल
२५१॥ चौपाई॥ चलीसंगलेसषीसयानी॥ गावतगीतमनोहरबानी॥ सोहनवल
तनुसुंदरसारी॥ जगतजननिअतुलितछबिभारी॥ भूषनसकलसुदेससुहाए॥
अंगअंगरचसषीनहबनाए॥ रंगभूमिजबसीयपगुधारी॥ देषिरूपमोहेनरनारी॥
हरषिसुरन्हदुंदुभीबजाई॥ बरषिप्रसूनअपछरागाई॥ पानिसरोजसोहजयमाला॥
अवचटचितएसकलभुआला॥ सीयचकितचितरामहिचाहा॥ भयेमोहबससबनरना
हा॥ मुनिसमीपदेषेदोउभाई॥ लगेललकिलोचननिधिपाई॥ दोहा॥ गुरजनला
जसमाजबडदेषिसीयसकुचानि॥ लागिबिलोकनसषिन्हतनरघुबीरहिउरआनि
॥ २५२॥ चौपाई॥ रामरूपअरुसीयछबिदेषी॥ नरनारिन्हपरिहरीनिमेषी॥ सो
चहिसकलकहतसकुचाही॥ बिधिसनबिनयकरहिमनमाही॥ हरुबिधिबेगजनक
जडताई॥ मतिहमारिअसिदेहिसुहाई॥ बिनुबिचारपनतजिनरनाहू॥ सीयराम
करकरैबिवाहू॥ जगभलकहिहिभावसबकाहू॥ हठकीन्हेअंतहुउरदाहू॥ येहिला
लसामगनसबलोगू॥ बरसावरोजानकीहिजोगू॥ तबबंदीजनजनकबुलाये॥ बि
रदावलिकहतचलिआये॥ कहनृपजाईकहहुपनमोरा॥ चलेभाटहियहरषनथो
रा॥ दोहा॥ बोलेबंदीबचनबरसुनहुसकलमहीपाल॥ पनबिदेहकरकहहि
हमभुजाउठाइबिसाल॥ २५३॥ चौपाई॥ नृपभुजबलबिधुसिवधनुराहू॥ गरुअक
ठोरबिदितसबकाहू॥ राजसमाजआजुजोतोरा॥ रावनबानमहाभटभारे॥ देषिस
रासनगवहीसधारे॥ सोइपुरारीकोदंडकठोरा॥ त्रिभुवनजयसमेतबैदेही॥ बिन
हिबिचारबरैहठितेही॥ सुनिपनसकलभूपअभिलाषे॥ भटमानीयअतिसयम
नमाषे॥ परिकरबांधिउठेअकुलाई॥ चलेइष्टदेवन्हसिरनाई॥ तमकिताकि
सिवधनुधरही॥ उठइनकोटिभांतिबलुकरही॥ जिन्हकेकछुबिचारुमनमाही॥
चापसमीपमहीपनजाही॥ दोहा॥ तमकिधरहिधनुमूढनृपउठइनचलहिल
जाई॥ मनहुपाईभटबाहुबलअधिकअधिकगरुआई॥ २५४॥ चौपाई॥ भूपसह
सदसएकहिबारा॥ लगेउठावनटरेनटारा॥ डगैनसंभुसरासनकैसे॥ कामीब
चनसतीमनुजैसे॥ सबनृपभयेजोगउपहासे॥ जैसेबिनुबिरागसंन्यासी॥ की
रतिबिजयबीरताभारी॥ चलेचापकरबरबसहारी॥ श्रीहतभयेहारिहियराजा॥
बैठेनिजनिजजाइसमाजा॥ नृपन्हबिलोकिजनकअकुलाने॥ बोलेबचनरोष
जनुसाने॥ दीपदीपकेभूपतिनाना॥ आएसुनिहमजोपनठाना॥ देवदनुजध
रमनुजसरीरा॥ बिपुलबीरआएरनधीरा॥ दोहा॥ कुअरिमनोहरबिजयबडिकी
रतिअतिकमनीय॥ पावनहारबिरंचिजनुरचेउनधनुदमनीय॥ २५५॥ चौपाई॥
कहहुकाहियहुलाभनभावा॥ काहुनसंकरचापचढावा॥ रहौचढाउबतोरब
भाई॥ तिलुभरिभूमिनसकेछुडाई॥ अबजनिकोउमाषैभटमानी॥ बीरबिहीन
महीमैजानी॥ तजहुआसनिजनिजगृहजाहू॥ लिषानबिधिबैदेहिबिबाहू॥ सु
कृतजाइजोपनपरिहरिऊ॥ कुअरिकुआरिरहौकाकरिऊ॥ जोजानतेउबिनुभटभु
बिभाई॥ तौपनकरतेउनहोतहसाई॥ जनकबचनसुनिसबनरनारी॥ देषिजा
नकीहिभयेदुषारी॥ माषेलषनकुटिलभैभौहे॥ रदपटफरकतनयनरिसौहे
दोहा॥ कहिनसकतरघुबीरडरलगेबचनजनुबान॥ नाइरामपदकमलसिर
बोलेगिराप्रमान॥ २५६॥ चौपाई॥ रघुबंसिन्हमहजहकोउहोई॥ तेहिसमा
जअसकहैनकोई॥ कहीजनकजसिअनुचितबानी॥ बिद्यमानरघुकुलमनि
जानी॥ सुनहुभानुकुलपंकजभानू॥ कहौसुभाउनकछुअभिमानू॥ जौतुम्हा

र अनुसासन पावौं॥ कंदुक इव ब्रह्मांड उठावौं॥ काचे घट जिमि डारौं फोरी॥ सकौं मेरु मूल
क जिमि तोरी॥ तव प्रताप महिमा भगवाना॥ को बापुरो पिनाक पुराना॥ नाथ जानि
अस आयसु होई॥ कौतुक करौं बिलोकिअ सोई॥ कमल नाल जिमि चाप चढावौं॥ जो
जन सत प्रमान लै धावौं॥ दोहा॥ तोरौं छत्रक दंड जिमि तव प्रताप बल नाथ॥ जौं
न करौं प्रभु पद सपथ कर न धरौं धनु भाथ॥ २८७॥ चौपाई॥ लषन सकोप बचन
जे बोले॥ डगमगानि महि दिग्गज डोले॥ सकल लोग सब भूप डेराने॥ सिय हिय ह
रषु जनक सकुचाने॥ गुरु रघुपति सब मुनि मन माही॥ मुदित भए पुनि पुनि पुल
काही॥ सयनहि रघुपति लषन नेवारे॥ प्रेम समेत निकट बैठारे॥ बिस्वामित्र सम
य सुभ जानी॥ बोले अति सनेहमय बानी॥ उठहु राम भंजहु भवचापा॥ मेटहु तात
जनक परितापा॥ सुनि गुरु बचन चरन सिर नावा॥ हरष बिषाद न कछु उर आवा॥
ठाढे भये उठि सहज सुभाई॥ ठवनि जुवा मृगराज लजाई॥ दोहा॥ उदित उदय
गिरि मंच पर रघुबर बाल पतंग॥ बिकसे संत सरोज सब हरषे लोचन भृंग॥ २८८॥ चौपाई॥
नृपन्ह केरि आसा निसि नासी॥ बचन नषत अवली न प्रकासी॥ मानि महीप कुमुद स
कुचाने॥ कपटी भूप उलूक लुकाने॥ भये बिसोक कोक मुनि देवा॥ बरषहि सुमन ज
नावहि सेवा॥ गुरु पद बंदि सहित अनुरागा॥ राम मुनिन्ह सन आयसु मागा॥ सहजहि
चले सकल जग स्वामी॥ मत्त मंजु बर कुंजर गामी॥ चलत राम सब पुर नर नारी॥ पुलक
पूरि तन भये सुषारी॥ बंदि पितर सब सुकृत सँभारे॥ जौ कछु पुन्य प्रभाउ हमारे॥ तौ सि
वधनु मृनाल की नाई॥ तोरहु राम गनेस गोसाई॥ दोहा॥ रामहि प्रेम समेत लषि सषीन्ह
समीप बुलाई॥ सीता मातु सनेह बस बचन कहै बिलषाई॥ २८९॥ चौपाई॥ सषि सब कौ
तुक देषनिहारे॥ जेउ कहावत हितू हमारे॥ कोउ न बुझाइ कहै नृप पाही॥ ए बालक असि
हठ भल नाही॥ रावन बान छुआ नहि चापा॥ हारे सकल भूप करि दापा॥ सो धनु राजकु
अर कर देही॥ बाल मराल कि मंदर लेही॥ भूप सयानप सकल सिरानी॥ सषि बिधि ग
ति कछु जात न जानी॥ बोली चतुर सषी मृदु बानी॥ तेजवंत लघु गनिअ न रानी॥ कहँ
कुंभज कहँ सिंधु अपारा॥ सोषेउ सुजस सकल संसारा॥ रबि मंडल देषत लघु लागा॥
उदय तासु त्रिभुवन तम भागा॥ दोहा॥ मंत्र परम लघु जासु बस बिधि हरि हर सुर सर्ब॥
महामत्त गजराज कहु बस कर अंकुस षर्ब॥ २९०॥ चौपाई॥ काम कुसुम धनु सायक ली
न्हे॥ सकल भुवन अपने बस कीन्हे॥ देबि तजिअ संसय अस जानी॥ भंजब धनुष राम
सुनु रानी॥ सषी बचन सुनि भै परतीती॥ मिटा बिषाद बढी अति प्रीती॥ तब राम
हि बिलोकि बैदेही॥ सभय हृदय बिनवति जेहि तेही॥ मनही मन मनाव अकुलानी॥
होहु प्रसन्न महेस भवानी॥ करहु सफल आपनि सेवकाई॥ करि हित हरहु चाप गरु
आई॥ गननायक बरदायक देवा॥ आजु लगे कीन्हिउ तुव सेवा॥ बार बार बिनती सु
नि मोरी॥ करहु चाप गुरुता अति थोरी॥ दोहा॥ देषि देषि रघुबीर तन सुर मनाव धरि धी
र॥ भरे बिलोचन प्रेम जल पुलकावलि सरीर॥ २९१॥ चौपाई॥ नीके निरषि नयन भ
रि सोभा॥ पितु पन सुमिरि बहुरि मन छोभा॥ अहह तात दारुनि हठ ठानी॥ समुझ
त नहि कछु लाभ न हानी॥ सचिव सभय सिष देइ न कोई॥ बुध समाज बड अनुचित हो
ई॥ कहँ धनु कुलिसहु चाहि कठोरा॥ कहँ स्यामल मृदु गात किसोरा॥ बिधि केहि
भाँति धरौ उर धीरा॥ सिरस सुमन कन बेधिअ हीरा॥ सकल सभा कै मति भै भोरी॥ अ
ब मोहि संभु चाप गति तोरी॥ निज जडता लोगन्ह पर डारी॥ होहि हरुअ रघुपतिहि
निहारी॥ अति परिताप सीय मन माही॥ लव निमेष जुग सय सम जाही॥ दोहा॥ प्रभु
हि चितै पुनि चितव महि राजत लोचन लोल॥ षेलत मनसिज मीन जुग जनु बिधु मंडल

डोल॥ २९२॥ चौपाई॥ गिरा अलिनि मुष पंकज रोकी॥ प्रगट न लाज निसा अवलोकी॥
लोचन जल रह लोचन कोना॥ जैसे परम कृपन कर सोना॥ सकुची ब्याकुलता बडि जानी॥
धरि धीरज प्रतीति उर आनी॥ तन मन बचन मोर पन साचा॥ रघुपति पद सरोज चित
राचा॥ तौ भगवान सकल उर बासी॥ करिहहि मोहि रघुबर कै दासी॥ जेहि के जेहि पर
सत्य सनेहू॥ सो तेहि मिलै न कछु संदेहू॥ प्रभु तन चितै प्रेम पन ठाना॥ कृपानिधा
न राम सब जाना॥ सियहि बिलोकि तकेउ धनु कैसे॥ चितव गरुड लघु ब्यालहि जै
से॥ दोहा॥ लषन लषेउ रघुबंसमनि ताकेउ हर कोदंड॥ पुलकि गात बोले बचन
चरन चापि ब्रह्मंड॥ २९३॥ चौपाई॥ दिसि कुंजरहु कमठ अहि कोला॥ धरहु धरनि धरि
धीर न डोला॥ राम चहहि संकर धनु तोरा॥ होहु सजग सुनि आयसु मोरा॥ चाप स
मीप राम जब आए॥ नर नारिन्ह सुर सुकृत मनाए॥ सब कर संसय अरु अग्यानू॥ मं
द महीपन्ह कर अभिमानू॥ भृगुपति केरि गरब गरुआई॥ सुर मुनिबरन्ह केरि क
दराई॥ सीय कर सोच जनक पछितावा॥ रानिन्ह कर दारुन दुष दावा॥ संभु चाप ब
ड बोहित पाई॥ चढे जाइ सब संग बनाई॥ राम बाहुबल सिंधु अपारू॥ चहत पार न
हि कोउ कडहारू॥ दोहा॥ राम बिलोके लोग सब चित्र लिषे से देषि॥ चितई सी
य कृपायतन जानी बिकल बिसेषि॥ २९४॥ चौपाई॥ देषि बिपुल बिकल बैदेही॥ नि
मिष बिहात कलप सम तेही॥ तृषित बारि बिनु जो तन त्यागा॥ मुये करै का सुधा तड
गा॥ का बरषा सब कृषी सुषाने॥ समय चुके पुनि का पछिताने॥ अस जिय जानि जान
की देषी॥ प्रभु पुलके लषि प्रीति बिसेषी॥ गुरुहि प्रनाम मनहि मन कीन्हा
॥ अति लाघव उठाइ धनु लीन्हा॥ दमकेउ दामिनि जिमि जब लयऊ॥ पुनि नभ धनु
मंडल सम भयेऊ॥ लेत चढावत षैंचत गाढे॥ काहु न लषा देष सब ठाढे॥ तेहि छ
न राम मध्य धनु तोरा॥ भरे भुवन धुनि घोर कठोरा॥ छंद॥ भरे भुवन घोर कठोर रव र
बि बाजि तजि मारग चले॥ चिक्करहि दिग्गज डोल महि अहि कोल कूरम कलमले॥ सुर असु
र मुनि कर कान दीन्हे सकल बिकल बिचारही॥ कोदंड षंडेउ राम तुलसी जयति
बचन उचारही॥ सोरठा॥ संकर चाप जहाज सागर रघुबर बाहुबल॥ बूडे सो सकल समा
ज चढा जे प्रथमहि मोह बस॥ २९५॥ चौपाई॥ प्रभु दोउ चापषंड महि डारे॥ देषि लोग
सब भये सुषारे॥ कौसिक रूप पयोनिधि पावन॥ प्रेम बारि अवगाह सुहावन॥ रामरू
प राकेस निहारी॥ बढी बीचि पुलकावलि भारी॥ बाजे नभ गहगहे निसाना॥ देव
बधू नाचहि करि गाना॥ ब्रह्मादिक सुर सिद्ध मुनीसा॥ प्रभुहि प्रसंसहि देहि असीसा॥
बरषहि सुमन रंग बहु माला॥ गावहि किन्नर गीत रसाला॥ रही भुवन भरि जय ज
य बानी॥ धनुष भंग धुनि जात न जानी॥ मुदित कहहि जहँ तहँ नर नारी॥ भंजेउ
राम संभु धनु भारी॥ दोहा॥ बंदि मागध सूतगन बिरुद बदहि मतिधीर॥ करहि नि
छावरि लोग सब हय गय धन मनि चीर॥ २९६॥ चौपाई॥ बाजहि मृदंग संष सह
नाई॥ भेरि ढोल दुंदुभी सुहाई॥ बाजहि बहु बाजने सुहाई॥ जहँ तहँ जुवतिन्ह मंगल
गाई॥ सषिन्ह सहित हरषी अति रानी॥ सूषत धान परा जनु पानी॥ जनक लहेउ सु
ष सोच बिहाई॥ पैरत थके थाह जनु पाई॥ श्रीहत भये भूप धनु टूटे॥ जैसे दिवस
दीप छबि छूटे॥ सीय हिय सुष बरनिय केहि भाँति॥ जनु चातिकी पाई जल स्वाति॥
रामहि लषन बिलोकत कैसे॥ ससिहि चकोर किसोरक जैसे॥ सतानंद तब आय
सु दीन्हा॥ सीता गमन राम पहि कीन्हा॥ दोहा॥ संग सषी सुंदर चतुर गावहि मंग
लचार॥ गवनी बाल मराल गति सुषमा अंग अपार॥ २९७॥ चौपाई॥ सषिन्ह मध्य
सीय सोहति कैसे॥ छबिगन मध्य महाछबि जैसे॥ कर सरोज जयमाल सुहाई॥ बि

रा॰बा॰
२१

स्वविजय सोभा जेहि छाई ॥ तन सकोच मन परम उछाहू ॥ गूढ प्रेम लषि परै न काहू
जाय समीप राम छवि देषी ॥ रहि जनु कुअरि चित्र अवरेषी ॥ चतुर सषि लषि कहा
बुझाई ॥ पहिरावहु जयमाल सुहाई ॥ सुनत जुगल कर माल उठाई ॥ प्रेम विवस प
हिराय न जाई ॥ सोहत जनु जुग जलज सनाला ॥ ससिहि सभीत देत जयमाला ॥
गावहि छवि विलोकि सहेली ॥ सीय जयमाल राम उर मेली ॥ सोरठा ॥ रघुवर
उर जयमाल देषि देव वरषहि सुमन ॥ सकुचे सकल भुआल जनु विलोकि र
वि कुमुदगन ॥ ३९८ ॥ चौपाई ॥ पुर अरु व्योम वाजने वाजे ॥ षल भये मलिन सा
धु सब राजे ॥ सुर किंनर नर नाग मुनीसा ॥ जय जय जय कहि देहि असीसा ॥ ना
चहि गावहि विबुध वधूटी ॥ वार वार कुसमांजलि छूटी ॥ जहं तहं विप्र वेद धुनि क
रही ॥ वंदि विरदावलि उचरहि ॥ मही पाताल नाक जस व्यापा ॥ राम वरी
सिय भंजेउ चापा ॥ करहि आरती पुर नर नारी ॥ देहि निछावरि वित्त विसारी ॥ सो
हत सीय राम कै जोरी ॥ छवि सृंगार मनहु इक ठोरी ॥ सषी कहहि प्रभु पद गहु
सीता ॥ करति न चरन परस अति भीता ॥ दोहा ॥ गौतम तिय गति सुरति करि नहि
परसति पग पानि ॥ मन विहसे रघुवंसमनि प्रीति अलौकिक जानि ॥ ३९९ ॥
चौपाई ॥ तव सीय देषि भूप अभिलाषे ॥ कूर कपूत मूढ मन माषे ॥ उठि उठि पहि
रि सनाह अभागे ॥ जहं तहं गाल वजावन लागे ॥ लेहु छडाइ सीय कह कोऊ ॥ ध
रि वाधहु नृप वालक दोऊ ॥ तोरे धनुष चाड नही सरइ ॥ जीवत हमहि कुअरि को व
रही ॥ जो विदेह कछु करै सहाई ॥ जीतहु समर सहित दोउ भाई ॥ साधु भूप वोले
सुनि वानी ॥ राजसमाजहि लाज लजानी ॥ वल प्रताप वीरता वडाई ॥ नाक पि
नाकहि संग सिधाई ॥ सोई सूरता कि अव कहु पाई ॥ असि वुधि तो विधि मुह म
सि लाई ॥ दोहा ॥ देषहु रामहि नयन भरि तजि इरषा मद कोह ॥ लषन रोष पावक प्र
वल जानि सलभ जनि होहु ॥ ४०० ॥ चौपाई ॥ वैनतेय वलि जिमि चह कागू ॥ जिमि
ससु चहै नाग अरि भागू ॥ जिमि चह कुसल अकारन कोही ॥ सव संपदा चहै सिव
द्रोही ॥ लोभी लोलुप कल कीरति चहई ॥ अकलंकता कि कामी लहई ॥ हरि प
द विमुष परम पद चाहा ॥ तस तुम्हार लालच नरनाहा ॥ कोलाहल सुनि सीय सका
नी ॥ सषी लवाइ गई जहं रानी ॥ राम सुभाइ चले गुरु पाही ॥ सीय सनेह वरनत
मन माही ॥ रानिन्ह सहित सोचवस सीया ॥ अव धौ विधिहि काह करनीया ॥ भूप
वचन सुनि इत उत तकही ॥ लषन राम डर वोलि न सकही ॥ दोहा ॥ अरुन नयन भृ
कुटी कुटिल चितवत नृपन्ह सकोप ॥ मनहु मत्त गजगन निरषि सिंघकिसो
रहि चोप ॥ ४०१ ॥ चौपाई ॥ षरभर देषि विकल पुर नारी ॥ सव मिलि देहि महीपन्ह
गारी ॥ तेहि अवसर सुनि सिवधनु भंगा ॥ आयेउ भृगुकुल कमल पतंगा ॥ देषि म
हीप सकल सकुचाने ॥ वाज झपट जनु लवा लुकाने ॥ गौरि सरीर विभूति भल भ्रा
जा ॥ भाल विसाल त्रिपुंड विराजा ॥ सीस जटा ससि वदन सुहावा ॥ रिसवस कछु
क अरुन होइ आवा ॥ भृकुटि कुटिल नयन रिस राते ॥ सहजहु चितवत मनहु रिसा
ते ॥ वृषभ कंध उर वाहु विसाला ॥ चारु जनेउ माल मृगछाला ॥ कटि मुनि वसन तू
न दुइ वांधे ॥ धनु सर कर कुठार कल कांधे ॥ दोहा ॥ सांत वेष करनी कठिन वरनि न
जाइ सरूप ॥ धरि मुनि तनु जनु वीर रस आयेउ जहं सव भूप ॥ ४०२ ॥ चौपाई ॥ देष
त भृगुपति वेष कराला ॥ उठे सकल भय विकल भुआला ॥ पितु समेत कहि कहि नि
ज नामा ॥ लगे करन सव दंड प्रनामा ॥ जेहि सुभाय चितवहि हित जानी ॥ सो
ई जानै जनु आयु षुटानी ॥ जनक वहोरि आये सिरु नावा ॥ सीय वुलाइ प्रनाम क

रावा ॥ आसिष दीन्हि सषी हरषानी ॥ निज समाज लै गई सयानी ॥ विस्वामित्र मिले पु
नि आई ॥ पद सरोज मेले दोउ भाई ॥ राम लषन दसरथ के ढोटा ॥ दीन्हि असीस देषि भल
जोटा ॥ रामहि चितइ रहे थकि लोचन ॥ रूप अपार मार मद मोचन ॥ दोहा ॥ वहुरि वि
लोकि विदेह सन कहहु काह अति भीर ॥ पूछत जानि अजान जिमि व्यापेउ कोप सरी
र ॥ ४०३ ॥ चौपाई ॥ समाचार कहि जनक सुनाये ॥ जेहि कारन महीप सव आए ॥ सुनि
त वचन फिरि अनत निहारे ॥ देषे चापषंड महि डारे ॥ अति रिस वोले वचन कठोरा ॥
कहु जड जनक धनुष के तोरा ॥ वेगि दिषाउ मूढ न त आजू ॥ उलटौ महि जहं लगि तव रा
ज ॥ अति डरु उतरु देत नृप नाही ॥ कुटिल भूप हरषे मन माही ॥ सुर मुनि नाग नग
र नर नारी ॥ सोचहि सकल त्रास उर भारी ॥ मन पछिताति सीय महतारी ॥ विधि अ
व सवरी वात विगारी ॥ भृगुपति कर सुभाउ सुनि सीता ॥ अरध निमेष कलप सम वीता ॥
दोहा ॥ सभय विलोके लोक सव जानि जानकी भीरु ॥ हृदय न हरष विषाद कछु वोले
श्रीरघुवीर ॥ ४०४ ॥ चौपाई ॥ नाथ संभुधनु भंजनिहारा ॥ होइहि कोउ एक दास तुम्हारा
आयेसु काह कहिअ किन मोही ॥ सुनि रिसाइ वोले मुनि कोही ॥ सेवक सो जो करै से
वकाई ॥ अरि करनी करि करिअ लराई ॥ सुनहु राम जेहि सिवधनु तोरा ॥ सहसवाहु
सम सो रिपु मोरा ॥ सो विलगाउ विहाइ समाजा ॥ न त मारे जैहहि सव राजा ॥ सुनि मुनि
वचन लषन मुसकाने ॥ वोले परसुधरहि अवमाने ॥ वहु धनुही तोरे लरिकाई ॥ क
वहु न असि रिस कीन्हि गुसाई ॥ येहि धनु पर ममता केहि हेतू ॥ सुनि रिसाइ कह भृ
गुकुलकेतू ॥ दोहा ॥ रे नृप वालक कालवस वोलत तोहि न संभार ॥ धनुही सम तिपु
रारि धनु विदित सकल संसार ॥ ४०५ ॥ चौपाई ॥ लषन कहा हसि हमरे जाना ॥ सुनहु
देव सव धनुष समाना ॥ का छति लाभ जून धनु तोरे ॥ देषा राम नए के भोरे ॥ छुअत
टूट रघुपतिहि न दोसू ॥ मुनि विनु काज करिअ कत रोसू ॥ वोले चितै परसु की ओरा ॥ रे स
ठ सुनेहि सुभाउ न मोरा ॥ वालक वोलि वधौ नहि तोही ॥ केवल मुनि जड जानहि मोही ॥
वाल ब्रह्मचारी अति कोही ॥ विस्व विदित छत्रीकुल द्रोही ॥ भुजवल भूमि भूप विनु की
न्ही ॥ विपुल वार महिदेवन्ह दीन्ही ॥ सहसवाहु भुज छेदनिहारा ॥ परसु विलोकु मही
पकुमारा ॥ दोहा ॥ मातु पितहि जनि सोचवस करसि महीपकिसोर ॥ गर्भन्ह के अर्भ
क दलन परसु मोर अति घोर ॥ ४०६ ॥ चौपाई ॥ विहसि लषन वोले मृदु वानी ॥ अहो
मुनीस महाभट मानी ॥ पुनि पुनि मोहि देषाव कुठारू ॥ चहत उडावन फूंकि पहारू ॥
इहां कुम्हडवतिआ कोउ नाही ॥ जे तरजनी देषि मरि जाही ॥ देषि कुठार सरासन वाना ॥
मै कछु कहा सहित अभिमाना ॥ भृगुसुत समुझि जनेउ विलोकी ॥ जो कछु कहौ
सहौ रिस रोकी ॥ सुर महिसुर हरिजन अरु गाई ॥ हमरे कुल इन्ह पर न सुराई ॥
वधे पाप अपकीरति हारे ॥ मारतहू पा परिअ तुम्हारे ॥ कोटि कुलिस सम वचन तु
म्हारा ॥ व्यर्थ धरहु धनु वान कुठारा ॥ दोहा ॥ जो विलोकि अनुचित कहेउ छमहु महा
मुनि धीर ॥ सुनि सरोष भृगुवंसमनि वोले गिरा गंभीर ॥ ४०७ ॥ चौपाई ॥ कौसि
क सुनहु मंद यहि वालक ॥ कुटिल कालवस निज कुल घालक ॥ भानु वंस राके
स कलंकू ॥ निपट निरंकुस अवुध असंकू ॥ काल कवल होइहि छन माही ॥ कहौ पुका
रि षोरि मोहि नाही ॥ तुम्ह हटकहु जो चहहु उवारा ॥ कहि प्रताप वल रोष हमारा ॥ लषन
कहेउ मुनि सुजस तुम्हारा ॥ तुम्हहि अछत को वरनै पारा ॥ अपने मुष तुम्ह आपनी क
रनी ॥ वार अनेक भांति वहु वरनी ॥ नहि संतोष त पुनि कछु कहहू ॥ जनि रिस रो
कि दुसह दुष सहहू ॥ वीरव्रती तुम्ह धीर अछोभा ॥ गारी देत न पावहु सोभा ॥ दोहा ॥
सूर समर करनी करहि कहि न जनावहि आपु ॥ विद्यमान रन पाइ रिपु कायर कथ
हि प्रताप ॥ ४०८ ॥ चौपाई ॥ तुम्ह तौ काल हाक जनु लावा ॥ वार वार मोहि लागि वोला
वा ॥ सुनत लषन के वचन कठोरा ॥ परसु सुधारि धरेउ कर घोरा ॥ अव जनि देइ दोस

मोहिलोगू॥कटवादीवालकुवधजोगू॥वालविलोकवहुतेमैंवाचा॥अवयेहुमरनिहारभा
साचा॥कौसिककहाछमियअपराधू॥वालदोषगुनगनहिनसाधू॥करकुठारमैंअ
करुनकोही॥आगेंअपराधीगुरुद्रोही॥उतरदेतछोडउविनुमारे॥केवलकौसिक
सीलतुम्हारे॥नतयेहिकाटिकुठारकठोरे॥गुरहिउरिनहोतेउश्रमथोरे॥दोहा॥गा
धिसूनकहिहृदयहसिमुनिहिहरियरेसूझ॥अयमयषांडनउषमयअजहुनवू
झअवूझ॥४०९॥चौपाई॥कहिउलषनमुनिसीलतुम्हारा॥कोनहिजानवि
दितसंसारा॥मातपितहिउरिनभयेनीके॥गुरुरिनरहासोचवडजीके॥सोजनुह
मरेहिमाथेकाढा॥दिनचलिगयेव्याजवडवाढा॥अवआनिअव्यवहरिआवोली
तुरतदेउमैंथैलीषोली॥सुनिकटुवचनकुठारसुधारा॥हायहायसवसभापुकारा
भृगुवरपरसुदिषावहुमोही॥विप्रविचारिवचोनृपद्रोही॥मिलेनकवहुसुभटरनगा
ढे॥द्विजदेवताघरहीकेवाढे॥अनुचितकहीसवलोगपुकारे॥रघुपतिसयनहिल
षनुनेवारे॥दोहा॥लषनउतरआहुतिसरिसभृगुवरकोपकृसानु॥वढतदेषिजल
समवचनवोलेरघुकुलभानु॥४१०॥चौपाई॥नाथकरहुवालकपरछोहू॥सू
धदूधमुषकरिअनकोहू॥जोपैप्रभुप्रभाउकछुजाना॥तौकिवरावरिकरेअया
ना॥जौलरिकाकछुअचगरिकरही॥गुरुपितुमातुमोदमनभरही॥करिअकृपा
सिसुसेवकजानी॥तुम्हसमसीलधीरमुनिज्ञानी॥रामवचनसुनिकछुकजुडाने॥क
हिकछुलषनवहुरिमुसकाने॥हसतदेषिनषसिषरिसव्यापी॥रामतोरभ्रातावड
पापी॥गौरसरीरस्याममनमाही॥कालकूटमुषपयमुषनाही॥सहजटेढअ
नुहरैनतोही॥नीचुमीचुसमदेषनमोही॥दोहा॥लषनकहेउहसिसुनहुमुनि
क्रोधपापकरमूल॥जेहिवसजनअनुचितकरहिचरहिविस्वप्रतिकूल॥४११॥चौपा
ई॥मैंतुम्हारअनुचरमुनिराया॥परिहरकोपकरिअअवदाया॥टूटचापनहिजु
रैहिरिसाने॥वैठिअहोइहिपायपिराने॥जौअतिप्रियतौकरिअउपाई॥जोरिअ
कोउवडगुनीवोलाई॥वोलतलषनहिजनकडराही॥मष्टकरहुअनुचितनभ
लनाही॥थरथरकापहिपुरनरनारी॥छोटकुमारषोटवडभारी॥भृगुपतिसुनि
सुनिनिर्भयवानी॥रिसतनजरैहोइवलहानी॥वोलेरामहिदेइनिहोरा॥व
चौविचारिवंधुलघुतोरा॥मनुमलीनतनुसुंदरकैसे॥विषरसभराकनकघटजै
से॥दोहा॥सुनलछमनविहसेवहुरिनयनतरेरेराम॥गुरुसमीपगवनेसकुचि
परिहरिवानीवाम॥४१२॥चौपाई॥अतिविनीतमृदुसीतलवानी॥वोलेरामजोरि
जुगपानी॥सुनहुनाथतुम्हसहजसुजाना॥वालकवचनकरिअनहिकाना॥व
ररैवालकुएकसुभाई॥इन्हहिनसंतविदूषहिकाउ॥तेहिनाहीकछुकाजविगारा॥
अपराधीमैंनाथतुम्हारा॥कृपाकोपुवधुवंधुगुसाई॥मोपरकरिअदासकीनाई॥क
हीअवेगिजेहिविधिरसजाई॥मुनिनायकसोकरौउपाई॥कहमुनिरामजाइरि
सकैसे॥अजहुअनुजतवचितवअनैसे॥येहिकेकंठकुठारनदीन्हा॥तौमैकाह
कोपकरकीन्हा॥दोहा॥गर्भश्रवहिअवनिपरवनिसुनिकुठारगतिघोर॥परसुअ
छितदेषौजिअतवैरीभूपकिसोर॥४१३॥चौपाई॥वहैनहाथुदहैरिसछाती॥भाकुठारु
कुंठितनृपघाती॥भयेउवामविधिफिरेउसुभाउ॥मोरेहृदयकृपाकसिकाउ॥आजुदयादु
षदुसहसहावा॥सुनिसौमित्रिविहसिसिरनावा॥वाउकृपामूरतिअनुकूला॥वोलत
वचनझरतजनुफूला॥जोपैकृपाजरिहिमुनिगाता॥क्रोधभयेतनुराषविधाता॥दे
षुजनकहठिवालकयेहू॥कीन्हचहतजडजमपुरगेहू॥वेगिकरहुकिनआषिन्हओ
टा॥देषतछोटषोटनृपढोटा॥विहसेलषनुकहामनमाही॥मूंदेआषिकतहुकोउना
ही॥दोहा॥परसरामतवरामप्रतिवोलेउरअतिक्रोध॥संभुसरासनतोरिसठ
करसि[illegible]रप्रवोधु॥४१४॥चौपाई॥वंधुकहैकटुसंमततोरे॥तूछलविनयकर

सिकरैजोरे॥करिपरितोषमोरसंग्रामा॥नाहितछाडिकहाउवरामा॥छलत
जिकरहिसमरसिवद्रोही॥वंधुसहितनतमारौतोही॥भृगुपतिवकहिकुठारउठाये॥मन
मुसकाईरामसिरनाई॥गुनाहलषनकरहमपररोषू॥कतहुसुधाईहुतेवडदो
षू॥टेढजानिसववंदैकाहू॥वक्रचंद्रमहिग्रसैनराहू॥रामकहिउरिसतजिअमु
नीसा॥करकुठारआगेयहसीसा॥जेहिरिसजाईकरिअसोइस्वामी॥मोहिजा
निअआपनअनुगामी॥दोहा॥प्रभुहिसेवकहिसमरकसतजहुविप्रवरदोष॥वे
षविलोकेकहसिकछुवालकहूनदोष॥४१५॥चौपाई॥देषकुठारवानधनुधा
री॥भैलरकहिरिसवीरविचारी॥नामजानिपैतुम्हहिनचीन्हा॥वंससुभाउउ
तरुतेहिदीन्हा॥जौतुम्हऔतेहुमुनिकीनाई॥पदरजसिरसिसुधरतगोसाई॥छमु
चूकअनजानतकेरी॥चहिअविप्रउरकृपाघनेरी॥हमहितुमहिसरिवरिकसि
नाथा॥कहहुनकहाचरनकहामाथा॥राममात्रलघुनामहमारा॥परसुसहित
वडनामतुम्हारा॥देवयेकगुनधनुषहमारे॥नवगुनपरमपुनीततुम्हारेतवगुनको
नाम॥रिजुतपस्वीसनहुसमदाना॥दीनदयालजितेंद्रियसमता॥सवप्रकारहमत
मुसनेहारे॥छिमहुविप्रअपराधहमारे॥दोहा॥वारवारमुनिविप्रवरकहारामसन
राम॥वोलेभृगुपतिसरुषिहसितमहूवंधुसमवाम॥४१६॥चौपाई॥निपटहिद्वि
जकरिजानहीमोही॥मैजसविप्रसुनावौतोही॥चापश्रुवासरआहुतिजानू॥कोपमो
रअतिघोरकृसानू॥समिधिसेनचतुरंगसुहाई॥महामहीपभयेपसुआई॥मै
येहिपरसुकाटिवलदीन्हे॥समरजज्ञजपकोटन्हकीन्हे॥मोरप्रभाउविदितनहि
तोरे॥वोलसिनिदरिविप्रकेभोरे॥भंजेउचापुदापुवडवाढा॥अहमितिमनहु
जीतिजगुठाढा॥रामकहामुनिकहहुविचारी॥रिसअतिवडिलघुचूकहमारी॥छुअ
तहिटूटपिनाकपुराना॥मैंकहिहेतुकरौअभिमाना॥दोहा॥जौहमनिदरहिविप्र
वदसत्यसुनहुभृगुनाथ॥कोजगसुभटजेहिभयवसवरसरनावहिमाथ॥४१७॥
चौपाई॥देवदनुजभूपतिभटनाना॥समवलअधिकहैवलवाना॥जौरनहम
हिपचारैकोउ॥लरहिसुषेनकालकिनहोउ॥छत्रियतनुधरिसमरसकाना॥
कुलकलंकुतेहिपावरआना॥कहौसुभाउनकुलहिप्रसंसी॥कालहिडरहिनरन
रघुवंसी॥विप्रवंसकेअसप्रभुताई॥अभयहोइजोतुम्हहिडराई॥सुनिमृदुगूढवच
नरघुपतिके॥उघरेपटलपरसधरमतिके॥रामरमापतिकरधनलेहू॥षैचहुमिटै
मोरसंदेहू॥देतचापुआपुहिचलिगयेउ॥परसुराममनविस्मयभयेउ॥दोहा॥जाना
रामप्रभाउतवपुलकप्रफुलितगात॥जोरिपानिवोलेवचनहृदयनप्रेमसमात
॥४१८॥चौपाई॥जयरघुवंसवनजवनभानू॥गहनदनुजकुलदहनकृसानू॥जय
सुरविप्रधेनुहितकारि॥जयमदमोहकोहभ्रमहारी॥विनयसीलकरुनागुनसाग
र॥जयतिवचनरचनाअतिनागर॥सेवकसुषदसुभगसवअंगा॥जयसरीरछवि
कोटिअनंगा॥करौकाहमुषयेकप्रसंसा॥जयमहेसमनमानसहंसा॥अनुचितव
हुतकहेउअज्ञाता॥छमहुछमामंदिरदोउभ्राता॥कहिजयजयजयरघुकुलकेत
भृगुपतिगयेवनहितपहेतू॥अपभयकुटिलमहीपडराने॥जहतहकायरगवहि
पराने॥दोहा॥देवनदीन्हीदुंदुभिप्रभुपरवरषहिफूल॥हरषेपुरनरनारिसवमि
टीमोहमयसूल॥४१९॥चौपाई॥अतिगहगहेवाजनेवाजे॥सवहिमनोहरमंग
लसाजे॥जूथजूथमिलिसुमुषीसुनयनी॥करहिगानकलकोकिलवयनी॥सु
षविदेहकरवरननजाई॥जनमदरिद्रमनहुनिधिपाई॥विगतत्रासभईसीय
सुषारी॥जनुविधुउदयचकोरकुमारी॥जनककीन्हकौसिकहिप्रनामा॥प्रभुप्रसा
दधनुभंजेउरामा॥मोहिकृतकृतकीन्हदुहुभाई॥अवजोउचितसोकहिअगुसा

ई॥ कहहु सुनि स्रवन लखन लाथ प्रबीना॥ रहा बिबाहु चाप आधीना॥ टूटतहिं धनु भयउ बिबाहु
॥ सुर नर नाग बिदित सब काहू॥ दोहा॥ तदपि जाइ तुम्ह करहु अब जथा बंस ब्यवहारु॥ बू
झि बिप्र कुलबृद्ध गुर बेद बिदित आचारु॥४२०॥ चौपाई॥ दूत अवधपुर पठवहु जाई॥ आन
हिं नृप दसरथहि बुलाई॥ मुदित राउ कहि भलेहिं कृपाला॥ पठए दूत बोलि तेहि का
ला॥ बहुरि महाजन सकल बुलाये॥ आइ सबन्हि सादर सिर नाए॥ हाट बाट मंदिर
सुरबासा॥ नगरु सँवारहु चारिहु पासा॥ हरषि चले निज निज गृह आए॥ पुनि परि
चारिक बोलि पठाई॥ रचहु बिचित्र बितान बनाई॥ सिर धरि बचन चले सचु पाई॥
पठई बोलि गुनी तिन्ह नाना॥ जे बितान बिधि कुसल सुजाना॥ बिधिहि बंदि तिन्ह की
न्ह अरंभा॥ बिरचे कनक कदली के खंभा॥ दोहा॥ हरित मनिन्ह के पत्र फल पदुमराग
के फूल॥ रचना देखि बिचित्र अति मन बिरंचि कर भूल॥४२१॥ चौपाई॥ बेनु हरित म
निमय सब कीन्हे॥ सरल सपरन परहिं नहि चीन्हे॥ कनक कलित अहिबेलि बनाई॥
लखि नहि परै सपरन सुहाई॥ तेहि के रचि पचि बंध बनाई॥ बिच बिच मुकुता दाम सु
हाई॥ मानिक मरकत कुलिस पिरोजा॥ चीरि कोरि पचि रचे सरोजा॥ किये भृंग बहुरं
ग बिहंगा॥ गुंजहिं कूजहिं पवन प्रसंगा॥ सुर प्रतिमा खंभन्ह गढ़ि काढ़ी॥ मंगल द्र
ब्य लिये सब ठाढ़ी॥ चौकें भाँति अनेक पुराई॥ सिंधुर मनिमय सहज सुहाई॥
दोहा॥ सौरभ पल्लव सुभग सुठि किए नीलमनि कोरि॥ हेम बौर मरकत घवरि लसत
पाटमय डोरि॥४२२॥ चौपाई॥ रचे रुचिर बर बंदनिवारे॥ मनहु मनोभव फंद स
वारे॥ मंगल कलस अनेक बनाई॥ ध्वज पताक पट चमर सुहाई॥ दीप मनोहर
मनिमय नाना॥ जाइ न बरनि बिचित्र बिताना॥ जेहि मंडप दुलहिनि बैदेही॥ सो बर
नै असि मति कबि केही॥ दूलहु राम रूप गुन सागर॥ सो बितानु तिहु लोक उजागर॥
जनक भवन कै सोभा जैसी॥ गृह गृह प्रति पुर देखिअ तैसी॥ जेहि तिरहुति तेहि सम
य निहारी॥ तेहि लघु लगहि भुवन दस चारी॥ जो संपदा नीच गृह सोहा॥ सो बिलो
कि सुरनायक मोहा॥ दोहा॥ बसै नगर जेहि लच्छि करि कपट नारि बर बेषु॥ तेहि
पुर कै सोभा कहत सकुचहि सारद सेषु॥४२३॥ चौपाई॥ पहुँचे दूत राम पुर पावन॥
हरषे नगर बिलोकि सुहावन॥ भूप द्वार तिन्ह खबरि जनाई॥ दसरथ नृप सुनि लि
ए बुलाए॥ करि प्रनाम तिन्ह पाती॥ पुलक गात आई भरि छाती॥ राम लखन उर क
र बर चीठी॥ रहि गए कहत न खाटी मीठी॥ पुनि धरि धीर पत्रिका बाची॥ हरषी सभा
बात सुनि साची॥ खेलत रहे तहाँ सुधि पाई॥ आए भरत सहित हित भाई॥ पूछत अ
ति सनेह सकुचाई॥ तात कहाँ ते पाती आई॥ दोहा॥ कुसल प्रानप्रिय बंधु दोउ अह
हि कहहु केहि देस॥ सुनि सनेह साने बचन बाचि बहुरि नरेस॥४२४॥ चौपाई॥ सु
नि पाती पुलके दोउ भ्राता॥ अधिक सनेह समात न गाता॥ प्रीति पुनीत भरत कै दे
खी॥ सकल सभा सुख लहेउ बिसेषी॥ तब नृप दूत निकट बैठारे॥ मधुर मनोहर ब
चन उचारे॥ भैया कहहु कुसल दोउ बारे॥ तुम्ह नीके निज नयन निहारे॥ स्यामल गौ
र धरे धनु भाथा॥ बय किसोर कौसिक मुनि साथा॥ पहिचानहु तुम्ह कहहु सुभाई॥
प्रेम बिबस पुनि पुनि कहि राई॥ जा दिन ते मुनि गये लवाई॥ तब ते आजु साचि सु
धि पाई॥ कहहु बिदेह कवन बिधि जाने॥ सुनि प्रिय बचन दूत मुसुकाने॥ दोहा॥
सुनहु महीपति मुकुट मनि तुम्ह सम धन्य न कोउ॥ राम लखन जिन्ह के तनय बिस्व
बिभूषन दोउ॥४२५॥ चौपाई॥ पूछन जोग न तनय तुम्हारे॥ पुरुषसिंह तिहु पुर
उजिआरे॥ जिन्ह के जस प्रताप के आगे॥ ससि मलीन रबि सीतल लागे॥ तिन्ह कहँ
कहिअ नाथ किमि चीन्हे॥ देखिअ रबि कि दीप कर लीन्हे॥ सीय स्वयंबर भूप अने
का॥ समिटे सुभट एक ते एका॥ संभु सरासन काहु न टारा॥ हारे सकल बीर बरिआ

रा॥ तीनि लोक महँ जे भटमानी॥ सभ कै सकति संभु धनु भानी॥ सकइ उठाइ सरासुर मेरू॥
सोउ हिय हारि गयउ करि फेरू॥ जेहि कौतुक सिवसैल उठावा॥ सोउ तेहि सभा पराभउ पा
वा॥ दोहा॥ तहाँ राम रघुबंस मनि सुनिअ महा महिपाल॥ भंजेउ चाप प्रयास बि
नु जिमि गज पंकज नाल॥४२६॥ चौपाई॥ सुनि सरोष भृगुनायक आए॥ बहुत भाँति
तिन्ह आँखि देखाई॥ देखि राम बल निज धनु दीन्हा॥ करि बहु बिनय गवन बन कीन्हा॥
राजन राम अतुल बल जैसे॥ तेज निधान लखन पुनि तैसे॥ कंपहि भूप बिलोकत
जाके॥ जिमि गज हरि किसोर के ताके॥ देव देखि तव बालक दोऊ॥ अब न आँखि त
र आवत कोऊ॥ दूत बचन रचना प्रिय लागी॥ प्रेम प्रताप बीर रस पागी॥ सभा समे
त राउ अनुरागे॥ दूतन्ह देन निछावरि लागे॥ कहि अनीति ते मूदहि काना॥ धरम
बिचारि सबहि सुख माना॥ दोहा॥ तब उठि भूप बसिष्ठ कहु दीन्हि पत्रिका जाई॥ कथा सु
नाई गुरहि सब सादर दूत बुलाई॥ चौपाई॥ सुनि बोले गुर अति सुख पाई॥ पुन्य पु
रुष कहु महि सुख छाई॥ जिमि सरिता सागर महु जाही॥ जद्यपि ताहि कामना ना
ही॥ तिमि सुख संपति बिनहि बुलाई॥ धर्मसील पहि जाहि सुभाई॥ तुम्ह गुर बि
प्र धेनु सुर सेवी॥ तसि पुनीत कौसल्या देवी॥ सुकृती तुम्ह समान जग माही॥ भ
येउ न है कोउ होनेउ नाही॥ तुम्ह ते अधिक पुन्य बड काके॥ राजन राम सरिस सुत
जाके॥ बीर बिनीत धरम ब्रत धारी॥ गुन सागर बर बालक चारी॥ तुम्ह कहु सर्ब का
ल कल्याना॥ सजहु बरात बजाइ निसाना॥ दोहा॥ चलहु बेगि सुनि गुर बचन भ
लेहि नाथ सिरु नाई॥ भूपति गवने भवन तब दूतन्ह बास दिवाई॥४२७॥ चौपाई॥
राजा सब रनिवास बुलाई॥ जनक पत्रिका बाचि सुनाई॥ सुनि संदेस सकल हरषा
नी॥ अपर कथा सब भूप बखानी॥ प्रेम प्रफुल्लित राजहि रानी॥ मनहु सिखिनि सु
नि बारिद बानी॥ मुदित असीस देहि गुरु नारी॥ अति आनंद मगन महतारी॥
लेहि परस्पर अति प्रिय पाती॥ हृदय लगाइ जुडावहि छाती॥ राम लखन कै
कीरति करनी॥ बारहि बार भूपबर बरनी॥ मुनि प्रसाद कहि द्वार सिधाए॥ रानिन्ह तब म
हिदेव बुलाए॥ दिए दान आनंद समेता॥ चले बिप्रबर आसिष देता॥ सो०॥ जाचक
लीए हँकारि दीन्हि निछावरि कोटि बिधि॥ चिरु जीवहु सुत चारि चक्रबर्ति दसरथ के॥४२८॥
चौपाई॥ कहत चले पहिरे पट नाना॥ हरषि हने गहगहे निसाना॥ समाचार सब लोग
न पाए॥ लागे घर घर होन बधाए॥ भुवन चारि दस भरेउ उछाहू॥ जनकसुता रघुबीर बि
आहू॥ सुनि सुभ कथा लोग अनुरागे॥ मग गृह गली सँवारन लागे॥ जद्यपि अवध
सदैव सुहावनि॥ राम पुरी मंगलमय पावनि॥ तदपि प्रीति कै रीति सुहाई॥ मंगल र
चना रची बनाई॥ ध्वज पताक पट चामर चारू॥ छावा परम बिचित्र बजारू॥ कनक
कलस तोरन मनि जाला॥ हरद दूब दधि अच्छत माला॥ दोहा॥ मंगलमय निज
निज भवन लोगन रचे बनाई॥ बीथी सींची चतुरसम चौकै चारु पुराई॥४३०॥ चौपा
जहँ तहँ जूथ जूथ मिलि भामिनि॥ सजि नव सप्त सकल दुति दामिनि॥ बिधुब
दनी मृग सावक लोचनि॥ निज सरूप रति मान बिमोचनि॥ गावहि मंगल मंजु
ल बानी॥ सुनि कल रव कलकंठि लजानी॥ भूप भवन किमि जाइ बखाना॥ बि
स्वबिमोहन रचेउ बिताना॥ मंगल द्रब्य मनोहर नाना॥ राजत बाजत बिपुल निसा
ना॥ कतहु बिरिद बंदी उच्चरही॥ कतहु बेद धुनि भूसुर करही॥ गावहि सुंदरि
मंगल गीता॥ लै लै नाम राम अरु सीता॥ बहुत उछाह भवन अति थोरा॥ मानहु
उमगि चला चहु ओरा॥ दोहा॥ सोभा दसरथ भवन कै को कबि बरनै पार॥ जहाँ सक
ल सुर सीस मनि राम लीन्ह अवतार॥४३१॥ चौपाई॥ भूप भरत पुनि लीये बुलाई॥

रा॰बा॰
३५

हयगयस्यंदनसाजहु जाई॥ चलहु वेगरघुवीरवराता॥ सुनतपुलकपूरेदोउभ्राता॥
भरतसकलसाहनीबोलाई॥ आएसुदीन्हमुदितउठिधाई॥ रुचिरुचिजीनतुरंग
तिन्हसाजे॥ वरनवरनवरवाजिविराजे॥ सुभगसकलसुठिचंचलकरनी॥ अंगेई
वजरतथरतपगाधरनी॥ नानाजातनजाहिवषाने॥ निदरहिपवनजनुचहत
उड़ाने॥ तिन्हसवछयलभएअसवारा॥ भरतसरिसवयराजकुमारा॥ सवसुंदर
सवभूषनधारी॥ करसरचापतूनकटिभारी॥ दोहा॥ छरेछवीलेछयलसवसूर
सुजाननवीन॥ जुगपदचरअसवारप्रतिजेअसिकलाप्रवीन॥ ४२२॥ चौपाई॥
बांधेविरदवीररनगाढे॥ निकसिभएपुरवाहिरठाढे॥ फेरहिचतुरतुरगगतिना
ना॥ हरषहिसुनिसुनिपनवनिसाना॥ रथसारथिन्हविचित्रवनाए॥ धुजपताकम
निभूषनभूषनलाए॥ चवरचारुकिंकिनिधुनिकरहीं॥ भानुजानसोभाअपहर
हीं॥ सावकरनअगनितहयहोते॥ तेतिन्हरथन्हसारथिन्हजोते॥ सुंदरसकल
अलंकृतसोहे॥ जिन्हहिविलोकतमुनिमनमोहे॥ जेजलचलहिथलहिकीना
ई॥ टापनबुडवेगअधिकाई॥ अस्त्रशस्त्रसवसाजवनाई॥ रथीसारथिन्हलिएवो
लाई॥ दोहा॥ चढिचढिरथवाहिरनगरलागीजुरनवरात॥ होतसगुनसुंदरस
वहिजोजेहिकारजजात॥ ४२३॥ चौपाई॥ कलितकरिवरन्हिपरीअंवारी॥ कहि
नजाइजेहिभांतिसवारी॥ चलेमत्तगजघंटविराजी॥ मनहुसुभगसावनघन
राजी॥ वाहनअपरअनेकविधाना॥ सिवकासुभगसुषासनजाना॥ तिन्हचढि
चलेविप्रवरवृंदा॥ जनुतनुधरेसकलश्रुतिछंदा॥ मागधसूतवंदिगुनगा
यक॥ चलेजानचढिजोजेहिलायक॥ वेसरऊंटवृषभवहुजाती॥ चलेवस्तुभरि
अगनितभांती॥ कोटिन्हकांवरचलेकहारा॥ विविधवस्तुकोवरनैपारा॥
चलेसकलसेवकसमुदाई॥ निजनिजसाजसमाजवनाई॥ दोहा॥ सवकेउरनि
रभरहरषुपूरितपुलकसरीर॥ कवदेषिवेनयनभरिरामलषनदोउवीर॥ ४२४
चौपाई॥ गरजहिगजघंटाधुनिघोरा॥ रथरववाजिहिंसचहुओरा॥ निदरिघ
नहिघुर्म्मरहिनिसाना॥ निजपराइकछुसुनियनकाना॥ महाभीरभूपतिकेद्वा
रे॥ रजहोइजाइपषानपवारे॥ चढीअटारिन्हदेषहिनारी॥ लिएआरतीमंगल
थारी॥ गावहिगीतमनोहरनाना॥ अतिआनंदुनजाइवषाना॥ तवसुमंतदुई
स्यंदनसाजी॥ जोतेरविहयनिंदकवाजी॥ दोउरथरुचिरभूपपहिआने॥ नहि
सारदपहिजाहिवषाने॥ राजसमाजएककरथसाजा॥ दूसरतेजपुंजअतिभ्राजा॥
दोहा॥ तेहिरथरुचिरवसिष्टकहहरषिचढाइनरेस॥ आपुचढेउस्यंदनसुमिरि
हरगुरगौरिगनेस॥ ४२५॥ चौपाई॥ सहितवसिष्टसोहनृपकैसे॥ सुरगुरु
संगपुरंदरजैसे॥ करिकुलरीतिवेदविधिराऊ॥ देषिसवहिसवभांतिवनाऊ॥ सु
मिरिरामगुरआयसुपाई॥ चलेमहीपतिसंषवजाई॥ हरषेविवुधविलोकिवरा
ता॥ वरषहिसुमनसुमंगलदाता॥ भयउकुलाहलहयगयगाजे॥ व्योमवरातवा
जनेवाजे॥ सुरनरनारिसुमंगलगाई॥ सरसरागवाजहिसहनाई॥ घंटघंटिधुनि
वरनिनजाही॥ सरोकरहिपाइकफहराही॥ करहिविदूषककौतुकनाना॥ हासकु
सलकलगानसुजाना॥ दोहा॥ तुरगनचावहिकुअरवरअकनिमृदंगनिसा
न॥ नागरनटचितवहिचकितडगहिनतालवंधान॥ ४२६॥ चौपाई॥ वनैनवर
ननवनीवराता॥ होहिसगुनसुंदरसुभदाता॥ चारचाषुवामदिसिलेई॥ मनहु
सकलमंगलकहिदेई॥ दाहिनकागसुषेतसुहावा॥ नकुलदरसुसवकाहूपा
वा॥ सानुकूलवहत्रिविधिवयारी॥ सघटसवालआववरनारी॥ लोवाफिरिफि
रदरसुदिषावा॥ सुरभीसनमुषसिसुहिपिआवा॥ मृगमालाफिरिदाहिनिआ

ई॥ मंगलगनजनुदीन्हिदिषाई॥ छेमकरीकहछेमविसेषी॥ स्यामावामसुतरुपरदे
षी॥ सनमुषआएउदधिअरुमीना॥ करपुस्तकदुइविप्रप्रवीना॥ दोहा॥ मंगलम
यकल्यानमयअभिमतफलदातार॥ जनुसवसाचेहोनहितभएसगुनएकवार॥ ४२७
चौपाई॥ मंगलसगुनसुगमसवताके॥ सगुनब्रह्मसुंदरसुतजाके॥ रामसरिसव
रुदुलहिनिसीता॥ समधीदसरथुजनकपुनीता॥ सुनिअसव्याहसगुनसवनाचे
॥ अवकीन्हेविरंचिहमसाचे॥ येहिविधिकीन्हवरातपयाना॥ हयगयगाजहि
हनेनिसाना॥ आवतजानिभानुकुलकेतू॥ सरितन्हिजनकवंधाएसेतू॥ वीचवीच
वरवासवनाए॥ सुरपुरसरिससंपदाछाई॥ असनसयनवरवसनसुहाए॥ पावहि
सवनिजनिजमनभाए॥ नितनूतनसुषलषिअनुकूले॥ सकलवरातिन्हमंदिरभूले
दोहा॥ आवतजानिवरातवरसुनिगहगहेनिसान॥ सजिगजरथपदचरतुरगले
नचलेअगवान॥ ४२८॥ चौपाई॥ कनककलसकोपरथारा॥ भोजनललितअनेक
प्रकारा॥ भरेसुधासमसवपकवाने॥ भांतिभांतिनहीजाइवषाने॥ फलअनेकव
रवस्तुसुहाई॥ हरषभेटहितभूपपठाई॥ भूषनवसनमहामनिनाना॥ षगमृग
हयगयवहुविधिजाना॥ मंगलसगुनसुगंधसुहाई॥ वहुतभांतिमहीपालप
ठाए॥ दधिचिउराउपहारअपारा॥ भरिभरिकांवरिचलेकहारा॥ अगवानन्हजव
दीषिवराता॥ उरआनंदपुलकभरगाता॥ देषिवनावसहितअगवाना॥ मुदितव
रातन्हहनेनिसाना॥ दोहा॥ हरषिपरसपरमिलनहितकछुकचलेवगमेल॥ ज
नुआनंदसमुद्रदुइमिलतविहायसुवेल॥ ४३०॥ चौपाई॥ वरषिसुमनसुरसुंदरि
गावहि॥ मुदितदेवदुंदुभीवजावहि॥ वस्तुसकलराषीन्हपआगे॥ विनयकीन्हि
तिन्हअतिअनुरागे॥ प्रेमसमेतरायसवलीन्हा॥ भईवकसीसजाचकन्हिदीन्हा
करिपूजामाननावडाई॥ जनवासेकहचलेलवाई॥ वसनविचित्रपावडेपरही॥ न
पदसरथतापरपगधरही॥ देषिधनदधनमदुपरिहरही॥ वरषसुमनसुरजय
जयकरही॥ अतिसुंदरदीन्हेउजनवासा॥ जहसवकहसवभांतिसुपासा॥ जानि
सीयवरातपुरआई॥ कछुनिजमहिमाप्रगटिजनाई॥ हृदयसुमिरिसवसिद्धिवुला
ई॥ भूपपहुनाईकरनपठाई॥ दोहा॥ सिधिसवसीयआयसुअकनिगईजहाजन
वास॥ लिएसंपदासकलसुषसुरपुरभोगविलास॥ ४४०॥ चौपाई॥ निजनिजवा
स सविलोकिवराती॥ सुरसुषसकलसुलभसवभांती॥ विभवभेदकछुकोउनजाना॥
सकलजनककरकरहिवषाना॥ सियमहिमारघुनायकजानी॥ हरषेहृदयहेतुप
हचानी॥ पितुआगमनसुनिदोउभाई॥ हृदयनअतिआनंदसमाई॥ सकुचनक
हिनसकतगुरुपाही॥ पितुदरसनलालचुमनमाही॥ विस्वामित्रविनयवडिदेषी
॥ उपजाउरसंतोषुविसेषी॥ हरषिवंधुदोउहृदयलगाये॥ पुलकअंगलोचनजल
छाए॥ चलेजहादसरथुजनवासे॥ मनहुसरोवरतकेउपिआसे॥ दोहा॥ भूपविलो
केजवहिमुनिआवतसुतन्हसमेत॥ उठेउहरषिसुषसिंधुमहचलेथाहसीलेत॥
॥ ४४१॥ चौपाई॥ मुनिहिदंडवतकीन्हमहीसा॥ वारवारपदरजधरिसीसा॥ कौसि
काउलियेउरलाई॥ कहिअसीसपूछीकुसलाई॥ पुनिदंडवतकरतदोउभाई॥ दे
षिनृपउरसुषुनसमाई॥ सुतउरलायदुसहदुषमेटे॥ मिरतकसरीरप्रानजनु
भेटे॥ पुनिवसिष्टपदसिरतिननाये॥ प्रेममुदितमुनिवरउरलाए॥ विप्रवृंदवं
देदोउभाई॥ मनभावतीअसीसनिपाई॥ भरतसहानुजकीन्हप्रनामा॥ लियेउ
ठाईलाईउरराम्मा॥ हरषेलषनदेषिदोउभ्राता॥ मिलेप्रेमपरिपूरितगाता॥ दोहा
॥ पुरजनपरिजनजातिजनजाचकमंत्रीमीत॥ मिलेजथाविधिसवहिप्रभुपरम

कृपालविनीत॥४४२॥चौपाई॥ रामहिंदेखिबरातजुड़ानी॥ प्रीतिकिरीतिनजा
ईनबखानी॥ नृपसमीपसोहहिंसुतचारी॥ जनुधनधरमादिकतनुधारी॥ सुतन्ह
समेतदसरथहिंदेखी॥ मुदितनगरनरनारिबिसेषी॥ सुमनबरषिसुरहनहिंनि
साना॥ नाकनटींनाचहिंकरिगाना॥ सतानंदुअरुबिप्रसचिवगन॥ मागध
सूतबिदुषबंदीजन॥ सहितबरातराउसनमाना॥ आयसुमांगिफिरेअगवाना॥
प्रथमबरातलगनतेंआई॥ तातेंपुरप्रमोदअधिकाई॥ ब्रह्मानंदलोगसबलह
हीं॥ बढ़हुदिवसनिसिबिधिसनकहहीं॥दोहा॥ रामसीयासोभाअवधिसुकृतअ
वधिदोउराजु॥ जहँतहँपुरजनकहहिंअसमिलिनरनारिसमाजु॥४४३॥चौपाई
जनकसुकृतमूरतिवैदेही॥ दसरथसुकृतरामधरेदेही॥ इन्हसमकाहुनसिव
अवराधे॥ काहुनइन्हसमानफललाधे॥ इन्हसमकोउनभयेउजगमाहीं॥ हैन
हिकतहूंहोनेउनाहीं॥ हमसबसकलसुकृतकेरासी॥ भयेजगजनमिजनकपु
रवासी॥ जिन्हजानकीरामछबिदेखी॥ कोसुकृतीहमसरिसबिसेषी॥ पुनिदे
षबरघुबीरबिआहू॥ लेबभलीबिधिलोचनलाहू॥ कहहिंपरसपरकोकिलबयनी॥
येहिबिआहबड़लाभसुनयनी॥ बड़ेभागबिधिबातबनाई॥ नयनअतिथिहोइहंदोउ
भाई॥दोहा॥ बारहिंबारसनेहबसजनकबोलाउबसीय॥ लेनआइहहिंबंधुदोउ
कोटिकामकमनीय॥४४४॥चौपाई॥ बिबिधभांतिहोइहिपहुनाई॥ प्रियनकाहि
अससासुरमाई॥ तबतबरामलषनहिनिहारी॥ होइहहिंसबपुरलोगसुषा
री॥ सषिजसरामलषनकरजोटा॥ तैसेइभूपसंगदुइढोटा॥ स्यामगौरसबअंग
सुहाए॥ तेसबकहहिंदेषिजेआए॥ कहाएकमैंआजुनिहारे॥ जनुबिरंचिनिजहा
थसवारे॥ भरथुरामहिकीअनुहारी॥ सहसालषीनसकहिंनरनारी॥ लषनुस
त्रुसूदनएकरूपा॥ नषसिषतेसबअंगअनूपा॥ मनभावहिंमुषबरनिनजाहीं
उपमाकहुंत्रिभुवनकोउनाहीं॥छंद॥ उपमानकोउकहदासतुलसीकतहुक
बिकोबिदकहैं॥ बलबिनयबिद्यासीलसोभासिंधुइन्हसेएइअहैं॥ पुर
नारिसकलपसारिअंचलबिधिहिबचनसुनावहीं॥ ब्याहिअहुचारेउभाइयेहिपु
रहमसुमंगलगावहीं॥सोरठा॥ कहहिंपरसपरनारिबारिबिलोचनपुलकत
न॥ सषिसबकरबपुरारिपुन्यपयोनिधिभूपदोउ॥४४५॥चौपाई॥ येहिबिधि
सकलमनोरथकरहीं॥ आनंदउमगिउमगिउरभरहीं॥ जोनृपसीयस्वयंबर
आए॥ देषिबंधुसबतिन्हसुषपाए॥ कहतरामजसबिसदबिसाला॥ निजनिज
भवनगएमहिपाला॥ गएबीतिकछुदिनयेहिभांती॥ प्रमुदितपुरजनसकलबराती॥ मं
गलमूललगनदिनआवा॥ हिमरितुअगहनमाससुहावा॥ ग्रहतिथिनषतजोगब
रवारू॥ लगनसोधिबिधिकीन्हबिचारू॥ पठैदीन्हिनारदसनसोई॥ गनीजनकके
गुनकन्हजोई॥ सुनीसकललोगन्हयहबाता॥ कहहिंजोतिषीआहिबिधाता॥दोहा॥
धेनुधूरिबेलाबिमलसकलसुमंगलमूल॥ बिप्रन्हकहेउबिदेहसनजानिसगुनअ
नुकूल॥४४६॥चौपाई॥ उपरोहितहिकहेउनरनाहा॥ अबबिलंबकरकारनकारन
काहा॥ सतानंदतबसचिवबुलाए॥ मंगलसकलसाजसबल्याए॥ संषनिसान
पनवबहुबाजे॥ मंगलसकलसगुनसुभसाजे॥ सुभगसुआसिनिगावहिंगीता
करहिंबेदधुनिबिप्रपुनीता॥ लेनचलेसादरयेहिभांती॥ गएजहांजनवासबराती
कोसलपतिकरदेषिसमाजू॥ अतिलघुलागतिन्हहिसुरराजू॥ भयेउसमेउअबधा
रिअपाऊ॥ येहसुनिपरानिसाननेहिघाऊ॥ गुरहिपूछिकरिकुलबिधिराजा॥ चले
संगमुनिसाधुसमाजा॥दोहा॥ भागबिभवअवधेसकरदेषिदेवब्रह्मादि॥ लगेसराह

नसहसमुषजानिजनमनिजबादि॥४४७॥चौपाई॥ सुरन्हसुमंगलअवसरजाना॥
बरषहिंसुमनबजाइनिसाना॥ सिवब्रह्मादिकबिबुधबरूथा॥ चढ़ेबिमाननानाजू
थ्या॥ प्रेमपुलकतनहृदयउछाहू॥ चलेबिलोकनरामबिआहू॥ देषिजनकपु
रसुरअनुरागे॥ निजनिजलोकसबहिंलघुलागे॥ चितवहिंचकितबिचित्रबिताना
रचनासकलअलौकिकनाना॥ तिन्हहिदेषिसबसुरसुरनारी॥ भएनषतजनुबिधु
उजिआरी॥ बिधिहिभयेउआचरजबिसेषी॥ निजकरनीकछुकतहुनदेषी॥दो
हा॥ सिवसमुझाएदेवसबजनिआचरजभुलाहु॥ हृदयबिचारहुधीरधरिसियर
घुबीरबिआहु॥४४८॥चौपाई॥ जिन्हकरनामलेतजगमाहीं॥ सकलअमंगल
मूलनसाहीं॥ करतलहोहिंपदारथचारी॥ तेईसियरामकहेउकामारी॥ येहिबि
धिसंभुसुरन्हसमुझावा॥ पुनिआगेबरबसहचलावा॥ देवन्हदेषेदसरथजाता
महामोदमनपुलकितगाता॥ साधुसमाजसंगमहिदेवा॥ जनुतनुधरेकरहिंसु
षसेवा॥ सोहतसाथसुभगसुतचारी॥ जनुअपबरगसकलतनुधारी॥ मरकतकन
कबरनबरजोरी॥ देषिसुरन्हभैप्रीतिनथोरी॥ पुनिरामहिबिलोकिहियहरषे
नृपहिसराहिसुमनतिन्हबरषे॥दोहा॥ रामरूपनषसिषसुभगबारहिंबारनिहारि॥ पु
लकगातलोचनसजलउमासमेतपुरारि॥४४९॥चौपाई॥ केकिकंठदुतिस्याम
लअंगा॥ तड़ितबिनिंदकबसनसुरंगा॥ ब्याहबिभूषनबिबिधबनाई॥ मंगलम
यसबभांतिसुहाई॥ सरदबिमलबिधुबदनसुहावन॥ नयननवलराजीवलजा
वन॥ सकलअलौकिकसुंदरताई॥ कहिनजाइमनहीमनभाई॥ बंधुमनोहरसो
हहिंसंगा॥ जातनचावतचपलतुरंगा॥ राजकुअंरबरबाजिदिषावहीं॥ बंसप्रसंस
कबिरदसुनावहिं॥ जेहितुरंगपररामबिराजे॥ गतिबिलोकिखगनायकलाजे॥ क
हिनजाइसबभांतिसुहावा॥ बाजिबेषुजनुकामबनावा॥छंद॥ जनुबाजिबेषुबनाय
मनसिजरामहितअतिसोहई॥ आपनेबयबलरूपगुनगतिसकलभुवनबिमोह
ई॥ जगमगतजीनुजरावजोतिसुमोतिमानिकनेहिलगे॥ किंकिनिललामलगाम
ललितबिलोकसुरनरमुनिठगे॥दोहा॥ प्रभुमनसहिलयलीनमनचलतबाजि
छबिपाव॥ भूषनउडुगनतड़ितघनजनुबरबरहिनचाव॥४५०॥चौपाई॥ जेहिबर
बाजिरामअसवारा॥ तेहिसारदउनबरनैपारा॥ संकररामरूपअनुरागे॥ नयनपंचद
सअतिप्रियलागे॥ हरिहितसहितरामजबजोहे॥ रमासमेतरमापतिमोहे॥ निरषरा
मछबिबिधिहरषाने॥ आठनयनजानपछिताने॥ सुरसेनपउरबहुतउछाहू॥ बिधि
तेडेवढलोचनलाहू॥ रामहिचितवसुरेससुजाना॥ गौतमस्रापपरमहितमा
ना॥ देवसकलसुरपतिहिसिहाहीं॥ आजपुरंदरसमकोउनाहीं॥ मुदितदेवगनरा
महिदेषी॥ नृपसमाजदुहुंहरषबिसेषी॥छंद॥ अतिहरषराजसमाजदुहुंदिसिदुं
दुभीबाजहिंघनी॥ बरषहिंसुमनहरषिकहिजयजयतिजयरघुकुलमनी॥ जेहि
भांतिजानिबरातआवतबाजनेबहुबाजहीं॥ रानीसुआसिनिबोलिपरिछनिहेत
मंगलसाजहीं॥दोहा॥ सजिआरतीअनेकबिधिमंगलसकलसवारि॥ चलीमुदि
तपरिछनिकरनगजगामिनिबरनारी॥४५१॥चौपाई॥ बिधुबदनीसबसबमृगलोच
नि॥ सबनिजतनछबिरतिमदमोचनि॥ पहरेबरनबरनबरचीरा॥ सकलबिभू
षनसजेसरीरा॥ सुफलसुमंगलअंगबनाए॥ करहिंगानकलकंठलजाई॥ कंक
नकिंकिनिनूपुरबाजहीं॥ चालबिलोककामगजलाजहीं॥ बाजहिंबाजनबिबिधप्र
कारा॥ नभअरुनगरसुमंगलचारा॥ सचीसारदारमाभवानी॥ जेसुरतीयसु
चिसहजसयानी॥ कपटनारिबरबेषबनाई॥ मिलीसकलरनिवासहिजाई॥ क
रहिंगानकलमंगलबानी॥ हरषबिबससबकाहुनजानी॥छंद॥ कोजानकेहिआ

नेदसवब्रह्मवरपरिछनचली॥ कलगानमधुरनिसानवरषहिसुमनसुरसोभाभली॥
आनंदकंदुविलोकिदूलहुसकलहियदरषतभई॥ अंभोजअंबुकअंबुउमगीसुअंगपु
लकावलिछई॥दोहा॥ जोसुषभासीयमातमनदेषरामवरुवेषु॥ सोनसकहिक
हिकलपसतसहससारदासेषु॥४५२॥चौपाई॥ नयननीरहटिमंगलजानी॥ प
रिछनिकरहिमुदितमनरानी॥ वेदविदतअरुकुलआचारू॥ कीन्हभलीविधिब्य
वहारू॥ पंचसवदधुनिमंगलगाना॥ पटपावडेपरहिविधिनाना॥ करिआर
तीअरघुपतिन्हदीन्हा॥ रामगमनुमंडपतवकीन्हा॥ दसरथुसहितसमाजवि
राजे॥ विभवविलोकलोकपतिलाजे॥ समयसमयसुरवरषहिफूला॥ सांतिप
ढहिमहीसुरअनुकूला॥ नभअरुनगरकोलाहलहोई॥ आपनिपरकछुसुने।
नकोई॥ येहिविधिरामुमंडपहिआए॥ अरघुदेइआसनवैठाए॥छंद॥ वैठारिआसन
आरतीकरिनिरषिवरुसुषपावही॥ ब्रह्मादिसुरवरविप्रवेषवनाएकौतुकदेष
ही॥ अवलोकिरघुकुलकमलरविछविसुफलजीवनलेषही॥दोहा॥ नाउवारीभा
टनटरामनछावरिपाई॥ मुदितअसीसहिनायसिरहरषनहृदयसमाई॥४५३॥
चौपाई॥ मिलेजनकदसरथअतिप्रीती॥ करिवेदलौकिकसवरीती॥ मिलतमहा
दोउराजविराजे॥ उपमाषोजषोजकविलाजे॥ लहीनकतहुहारहीयमानी॥ ई
न्हसमएइउपमाउरआनी॥ समधीदेषिदेवअनुरागे॥ सुमनवरषिगुनगावनलागे।
जगविरंचिउपजावाजवते॥ देषेसुनेव्याहवहुतवते॥ सकलभांतिसमसाजसमाज
समसमधीदेषेहमआजू॥ देवगिरासुनिसुंदरसाची॥ प्रीतिअलौकिकदुहुदिस
माची॥ देतपावडेअरघसुहाई॥ सादरजनकमंडपहिआई॥छंद॥ मंडपविलोकि
विचित्ररचनारुचिरतामुनिमनहरे॥ निजपानिजनकसुजानसवकहुआनिसिं
घासनधरे॥ कुलइष्टसरिसवसिष्टपूजेविनयकरिआसिषलही॥ कौसिकहि
पूजतपरमप्रीतिकिरीतितोनपरेकही॥दोहा॥ वामदेवआदिकरिषयपूजेमु
दितमहीस॥ दियेदिव्यआसनसवहिसवसनलहीअसीस॥४५४॥चौपाई॥ वहु
रिकीन्हिकोसलपतिपूजा॥ जानईससमभाउनदूजा॥ कीन्हिजोरकरविनयवडा
ई॥ कहीनिजभागविभववहुताई॥ पूजेभूपतिसकलवराती॥ समधीसमसाद
रसवभांती॥ आसनउचतदीएसवकाहू॥ कहउकाहमुषएकउछाह॥ सकल
वरातजनकसनमानी॥ दानमानविनतीवरवानी॥ विधिहरिहरदिसिपति
दिनराउ॥ जेजानहिरघुवीरप्रभाउ॥ कपटविप्रवरवेषवनाए॥ कौतुकदेषहिअति
सचुपाई॥ पूजेजनकदेवसमजानी॥ दीएसुआसनविनपहचानी॥छंद॥ पहिचा
निकोकेहिजानसवहिअपानसुधभोरीभई॥ आनंदकंदविलोकिदूलहउभयदि
सिआनंदमई॥ सुरलषेरामसुजानपूजेमानसिकआसनदए॥ अवलोकिसीलसुभा
यप्रभुकोविवुधमनप्रमुदितभए॥दोहा॥ रामचंद्रमुषचंद्रछविलोचनचारुचको
र॥ करतपानसादरसकलप्रेमप्रमोदनथोर॥४५५॥चौपाई॥ समउविलोकिवसि
ष्टवुलाई॥ सादरसतानंदसुनिआए॥ वेगकुअरिअवआनहुजाई॥ चलेमुदितमुनि
आयसुपाई॥ रानीसुनीउपरोहतवानी॥ प्रमुदितसषीन्हसमेतसयानी॥ विप्रवु
धूकुलवधुवुलाई॥ करिकुलरीतसुमंगलगाई॥ नारीभेषजेसुरवरवामा॥ स
कलसुभाईसुंदरीस्यामा॥ तिन्हहिदेषिसुषपावहिनारी॥ विनुपहिचानेप्रानहु
तेप्यारी॥ वारवारसनमानहिरानी॥ उमारमासारदसमजानी॥ सीयसवारिस
माजुवनाई॥ मुदितमंडपहिचलीलवाई॥छंद॥ चलीलवाईसीतहिसषिसादर
सजसुमंगलभामिनी॥ नवसप्तसाजेसुंदरीसवमत्तकुंजरगामिनी॥ कलगानसु
निमुनिध्यानत्यागहिकामकोकललाजहि॥ मंजीरनूपुरकलितकंकनताल

गतिवरवाजही॥दोहा॥ सोहतिवनितावृंदमहुसहजसुहावनिसीय॥ छविल
ललनागनमध्यजनुसुषमातियकवनीय॥४५६॥चौपाई॥ सियसुंद
रतावरनिनजाई॥ लघुमतिवहुतमनोहरताई॥ आवतदीषिवरातन्हसीता॥ रूप
रासिसवभांतिपुनीता॥ सवहिमनहिमनकीएप्रनामा॥ देषिरामभयेपूरन
कामा॥ हरषेदसरथसुतन्हसमेता॥ कहीनजाइउरआनंदजेता॥ सुरप्रनाम
करिवरसहिफूला॥ मुनिअसीसधुनिमंगलमूला॥ गाननिसानकोलाहलभा
री॥ प्रेमप्रमोदमगननरनारी॥ येहिविधिसीयमंडपहिआई॥ प्रमुदि
तसांतिपरहिमुनिराई॥ तेहिअवसरकोविधिव्यवहारू॥ दुहुकुलगुरुस
वकीन्हअचारू॥छंद॥ आचारकरिगुरगौरिगनपतिमुदितविप्रपुजावही॥ सु
रप्रगटपूजालेहिदेहिअसीसअतिसुषपावही॥ मधुपर्कमंगलद्रव्यजोजेहि
समयमुनिमनमहुचहे॥ भरेकनककोपरकलससोतवलियपरिचारकरहे॥
कुलरीतप्रीतिसमेतरविकहिदेतसवसादरकीये॥ येहीभांतिदेवपुजाइसी
तहिसुभगसिंघासनदिये॥ सियरामअवलोकनिपरसपरप्रेमकाहुनल
षिपरे॥ मनवुधिवरवानीअगोचरप्रगटकविकैसेकरे॥दोहा॥ होमसमय
तनुधरिअनलअतिसुषआहुतिलेहि॥ विप्रवेषधरिवेदसवकहिविवाहवि
धिदेहि॥४५७॥चौपाई॥ जनकपाटमहिमाजगजानी॥ सीयमातकिमिजाईवषानी॥
सुजससुकृतसुषसुंदरताई॥ सवसमेटविधिरचीवनाई॥ समउजानिमुनिवरन्हवु
लाई॥ सुनतसुआसनसादरल्याई॥ जनकवामदिसिसोहसुनयना॥ हिमगिरि
संगवनीजनुमैना॥ कनककलसमनिकोपररूरे॥ सुचिसुगंधमंगलजलपूरे॥
निजकरमुदितरायअरुरानी॥ धरेरामकेआगेआनी॥ पढहिवेदमुनिमंगलवा
नी॥ गगनसुमनझरअवसरजानी॥ वरविलोकिदंपतिअनुरागे॥ पाइपुनीतप
षारनलागे॥छंद॥ लागेपषारनपायपंकजप्रेमतनपुलकावली॥ नभनगरगा
ननिसानजयधुनिउमगिजनुचहुदिसिचली॥ जेपदसरोजमनोजअरिउरसरस
दैवविराजही॥ जेसकृतसुमिरतविमलतामनसकलकलिमलभाजही॥ जेपरस
मुनिवनितालहीगतिरहीजोपातकमई॥ मकरंदजिन्हकोसंभुसिरसुचिताअ
वधिसुरवरनई॥ करिमधुपमनमुनिजोगिजनजेसेइअभिमतगतिलहे॥ तेप
दपषारतभाग्यभाजनुजनकजयजयसवकहे॥ वरकुअरिकरतलजोरिसाषा
चारदोउकुलगुरकरे॥ भयोपानिग्रहनविलोकिविधिसुरमनुजमुनिआनंदभरे॥ सुष
मूलदूलहदेषिदंपतिपुलकतनहुलस्योहियो॥ करिलोकवेदविधानकन्यादा
ननृपभूषनकियो॥ हिमवंतजिमिगिरिजामहेसहिहरिहिश्रीसागरदई॥ तिमिज
नकरामहिसीयसमरपीविस्वकलकीरतिनई॥ क्योंकरैविनयविदेहकियोविदेहमू
रतिसांवरी॥ करहोमविधिवतगांठजोरीहोनलागीभांवरी॥दोहा॥ जयधुनिवंदी
वेदधुनिमंगलगाननिसान॥ सुनहरषहिवरषहिविवुधसुरतरुसुमनसुजान
॥४५८॥चौपाई॥ कुअरुकुअरिकलभांवरिदेही॥ नयनलाभुसवसादरलेही॥ जा
इनवरनिमनोहरजोरी॥ जोउपमाकछुकहियसोथोरी॥ रामसीयसुंदरपरिछा
हीं॥ जगमगातमनिषंभनमाही॥ मनहुमदनरतिधरवहुरूपा॥ देषितरामवि
आहुअनूपा॥ दरसलालसासकुचनथोरी॥ प्रगटतदुरतवहोरवहोरी॥ भयमग
नसवदेषनिहारे॥ जनकसमानअपानविसारे॥ प्रमुदितमुनिन्हभावरीफेरी॥
नेगसहितसवरीतिनिवेरी॥ रामसीयसिरसिंदुरदेही॥ सोभाकहिनजातविधि
केही॥ अरुनपरागजलजभरिनीके॥ ससिहिभूषअहिलोभअमीके॥ वहुरि
वसिष्टदीन्हिअनुसासन॥ वरदुलहिनिवैठेएकआसन॥छंद॥ वैठेवरासनराम

रा.बा.
३९

जानकीधरिनिजमनदसरथभये॥तनपुलकपुनिपुनिदेखिअपनेसुकृतसुरतरुफ
लनये॥भरभुवनरहाउछाहुरामविवाहभासवहीकहा॥केहिभांतिवरनिसिरातर
सनाएकयहमंगलमहा॥तवजनकपाइवसिष्ठआयसुव्याहसाजसवारिकै॥मा
डवीश्रुतिकीरतिउरमिलाकुअंरिलैहकारिकै॥कुसकेतकन्याप्रथमजोगुन
सीलसुखसोभामई॥सवरीतिप्रीतिसमेतकरिसोव्याहिनृपभरतहिदई॥जान
कीलघुभगिनीसकलसुंदरिसिरोमनिजानिकै॥सोतनयदीन्हीव्याहिलखनहि
सकलविधिसनमानिकै॥जिहिनामश्रुतिकीरतिसुलोचनिसुमुखिसवगुनआग
री॥सोदईरिपुसूदनहिभूपतिरूपसीलउजागरी॥अनुरूपवरदुलहिनीपर
स्परलखिसकुचहियहरषही॥सवमुदितसुंदरतासराहहिसुमनसुरगनवर
षहि॥सुंदरीसुंदरवरन्हसहसवएकमंडपराजही॥जनुजीवउरचारिउअव
स्थाविभुनसहितविराजही॥दोहा॥मुदितअवधपतिसकलसुतवधुन्हसमेत
निहारि॥जनुपाएमहिपालमनिक्रियन्हसमेतफलचारि॥४५९॥चौपाई॥जसि
रघुवीरव्याहविधिवरनी॥सकलकुअंरव्याहेतेहिकरनी॥कहीनजाइकछुदाय
जभूरी॥रहाकनकमनिमंडपपूरी॥कंवलवसनविचित्रपटोरे॥भांतिभांतिवहुमो
लनथोरे॥गजरथतुरगदाससुअरुदासी॥धेनुअलंकृतकामदुहासी॥वस्तुअनेक
करियकिमिलेषा॥कहिनजाइजानेहिजिन्हदेषा॥लोकपालअवलोकिसिहाने
लीन्हअवधपतिसवुसुषमाने॥दीन्हजाचकन्हिजोजिहिभावा॥उवरासोजन
वासहिआवा॥तवकरजोरिजनकमृदुवानी॥वोलेसववरातसनमानी॥छंद॥
सनमानिसकलवरातआदरदानविनयवडाइकै॥प्रमुदितमहामुनिवृंदवंदेपू
जिप्रेमलडाइकै॥सिरनाइदेवमनाइसवसनकहतकरसंपुटकिए॥सुरसाधु
चाहतभाउसिंधुकितोषजलअंजलिदिए॥करजोरिजनकवहोरिवंधुसमेतकोस
लरायसो॥वोलेमनोहरवयनसानिसनेहसीलसुभायसो॥संवंधराजरावरे
रेहमवडेअवसवविधिभये॥यहिराजसाजसमेतसेवकजानिवेविनुगथले
ये॥येदारिकापरिचारिकाकरिपालवीकरुनामई॥अपराधछमिवोवोलिपठयेवहो
वहुतढीठीकई॥पुनिभानुकुलभूषनसकलसनमाननिधिसमधीकियो॥
कहिजातिनहिविनतीपरस्परप्रेमपरिपूरनहियो॥वृंदारकागनसुमनवरस
हिराउजनवासेहिचले॥दुंदुभीजयधुनिवेदधुनिनभनगरकौतूहलभले॥तव
सखीमंगलगानकरतमुनीसआयसुपाइकै॥दूलहदुलहिनिन्हसहितसुंदरचली
कोहवरल्याइकै॥दोहा॥पुनिपुनिरामहिचितवसीयसकुचितमननसकैन॥हर
तमनोहरमीनछविप्रेमपियासेनयन॥४६०॥चौपाई॥स्यामसरीरसुभाईसुहा
वन॥सोभाकोटिमनोजलजावन॥जावककलितपदकमलसुहाए॥मुनिमनमधु
परहतजिन्हछाए॥पीतपुनीतमनोहरधोती॥हरतिवालरविदामिनिजोती॥कल
किकिनिकटिसूत्रमनोहर॥वाहुविसालविभूषनसुंदर॥पीतजनेउमहाछविदे
ई॥करमुद्रिकाचोरिचितलेई॥सोहतव्याहसाजसवसाजे॥उरआयतउरभूष
नराजे॥पीअरउपरनाकाखासोती॥दुहुआंचरन्हिलगेमनिमोती॥नयनकम
लकलकुंडलकाना॥वदनसकलसौंदर्जनिधाना॥सुंदरभृकुटिमनोहरनासा॥भा
लतिलकरुचिरतानिवासा॥सोहतमौरमनोहरमाथे॥मंगलमयमुकता
मनिगाथे॥छंद॥गाथेमहामनिमौरमंजुलअंगसवचितचोरही॥पुरनारि
सुरसुंदरीवरहिविलोकिसवतृनतोरही॥मनिवसनभूषनवारिआरतिक
रहिमंगलगावही॥सुरसुमनवरसहिसूतमागधवंदिसुजससुनावही॥को
वरहिआनेकुअंरकुअंरिसुआसिनिन्हसुखपाइकै॥अतिप्रीतिलौकिकरीतिला

गीकरनमंगलगायकै॥लहकौरिगौरिसिखावरामहिसीयसनसारदकहै॥र
निवासहासविलासरसवसजन्मकोफलसवलहै॥निजपानिमनिमहदेखिअति
मूरतिसुरूपनिधानकी॥चलतनभुजवल्लीविलोकनिविरहभयवसजान
की॥कौतुकविनोदप्रमोदप्रेमनजाइकहिजानहिअली॥वरकुअंरिसुंदर
सकलसषीलवाइजनवासेहिचली॥तेहिसमयसुनियअसीसजहतहनग
रनभआनंदमहा॥चिरजिवजोरीचारुचारयोमुदितमनसवहीकहा॥जो
गींद्रसिद्धमुनीसदेवविलोकप्रभुदुंदुभिहनी॥चलेहरषिवरषिप्रसूननि
जनिजलोकजयजयजयभनी॥दोहा॥सहितवधूटिन्हकुअंरसवतवआए
पितुपास॥सोभामंगलमोदभरिउमगेउजनुजनवास॥४६१॥चौपाई॥पु
निजेवनारभईवहुभांति॥पठएजनकवुलाइवराती॥परतपांवडेवसनअ
नूपा॥सुतन्हसमेतगवनकियोभूपा॥सादरसवकेपायपषारे॥जथाजोग
पीढन्हवैठारे॥धोएजनकअवधपतिचरना॥सीलसनेहजाइनहिवरना॥व
हुरिरामपदपंकजधोए॥जेहरहृदयकमलमहुगोए॥तीनौभाईरामसम
जानी॥धोएचरनजनकनिजपानी॥आसनउचितसवहिनृपदीन्हे॥वोलिसूपका
रिसवलीन्हे॥सादरलगेपरनपनवारे॥कनककीलमनिपानसवारे॥दोहा॥
सूपोदनसुरभीसरपिसुंदरस्वादपुनीत॥छनमहुसवकेपरुसिगेचतुरसु
आरविनीत॥४६२॥चौपाई॥पंचकवलकरिजेवनलागे॥गारिगानसुनिअ
तिअनुरागे॥भांतिअनेकपरेपकवाने॥सुधासरिसनहिजाहिवषाने॥प
रुसनलगेसुआरसुजाना॥विंजनविविधनामकोजाना॥चारिभांतिभोजन
विधिगाई॥एकएकविधिवरनिनजाई॥छरसरुचिरविंजनवहुजाती॥एक
एकरसअगनितभांती॥जेवंतदेहिमधुरधुनिगारी॥लैलैनामपुरुषअरुना
री॥समयसुहावनिगारिविराजा॥हसतराउसुनिसहितसमाजा॥येहिवि
धिसवहिभोजनकीन्हा॥आदरसहितआचमनदीन्हा॥दोहा॥देइपानपूजेज
नकदसरथसहितसमाज॥जनवासेहिगवनेमुदितसकलभूपसिरताज
॥४६३॥चौपाई॥नितनूतनमंगलपुरमाही॥निमिषसरिसदिनजामिनिजा
ही॥वडेभोरभूपतिमनिजागे॥जाचकगुनगनगावनलागे॥देषिकुअंरवर
वधुन्हसमेता॥किमिकहिजातमोदमनजेता॥प्रातक्रियाकरिगेगुरुपा
ही॥महाप्रमोदप्रेममनमाही॥करिप्रनामपूजाकरजोरी॥वोलेगिराअ
मीअजनुवोरी॥तुम्हरीकृपासुनहुमुनिराजा॥भयेउआजमैपूरनकाजा॥
अवसवविप्रवुलाइगोसाई॥देहुधेनुसवभांतिवनाई॥सुनिगुरुकीन्हमही
पालवडाई॥पुनिपठएमुनिवृंदवुलाई॥दोहा॥वामदेवअरुदेवरिषिवाल
मीकजावालि॥आएमुनिवरनिकरतवकौसिकादितपसालि॥४६४॥चौ
पाई॥दंडप्रनामसवहिनृपकीन्हे॥पूजिसप्रेमवरासनदीन्हे॥चारिलच्छवर
धेनुमगाई॥कामसुरभिसमसीलसुहाई॥सवविधिसकलअलंकृतकी
न्ही॥मुदितमहीपमहीदेवन्हदीन्ही॥करतविनयवहुविधिनरनाहू॥ल
हेउआजुजगजीवनलाहू॥पाइअसीसमहीसअनंदा॥लिएवोलिपुनिजाचक
वृंदा॥कनकवसनमनिहयगयस्यंदन॥दिएवूझिरुचिरविकुलनंदन॥
चलेपढतगावतगुनगाथा॥जयजयजयदिनकरकुलनाथा॥येहिविधि
रामविआहउछाहू॥सकैनवरनिसहससुषजाहू॥दोहा॥वारवारकौसिक

वरबसीसनाईकरराई॥ येहसबसुखनिसजलबहुपाकरातप्रभाई॥४६५॥चौपा
ई॥ जनकसनेहसीलकरतूती॥ न्यपसबभांतिसराहविभूती॥ दिनउठिविदाअवध
पतिमागा॥ राषहिजनकसहितअनुरागा॥ नितनवलनआदरअधिकाई॥ दि
नप्रतीसहससभांतिपहुनाई॥ नितनवनगरअनंदउछाहू॥ दसरथगवनसुहाइ
नकाहू॥ बहुतदिवसबीतेयहिभांती॥ जनुसनेहरजुबंधेबराती॥ कौसिकस
तानंदतबजाई॥ कहीबिदेहन्यपहिसमुझाई॥ अबदसरथकहआयसुदेहू॥ जदपि
छाडिनसकहुसनेहू॥ भलेहनाथकहिसचिवबुलाई॥ कहिजैदेवसीसतिन्हनाए
॥दोहा॥ अवधनाथचाहतचलनभीतरकरहुजनाउ॥ भयेप्रेमवससचिवसुनि
विप्रसभासदराउ॥४६६॥चौपाई॥ पुरवासीसुनिचलिहिबराता॥ बूझतविकल
परसपरबाता॥ सत्यगवनसुनिसबबिलषाने॥ मनहुसांझसरसिजसकुचाने॥ ज
हंजहंआवतबसेबराती॥ तहंतहंसिद्धचलाबहुभांती॥ बिबिधभांतिमेवाप
कवाना॥ भोजनसाजुनजाईबषाना॥ भरिभरिबसहअपारकहारा॥ पठईज
नकअनेकसुहारा॥ तुरंगलाषरथसहससपचीसा॥ सकलसवारेनषअरुसीसा॥
मतसहसदससिंधुरसाजे॥ जिन्हहिदेषिदिसकुंजरलाजे॥ कनकबसनमनिभ
रिभरिजाना॥ महिषीधेनुवस्तुविधिनाना॥दोहा॥ दायजअमितनसकिअकहि
दीन्हिविदेहबहोर॥ जोअवलोकतलोकपतिलोकसंपदाथोरि॥४६७॥चौपाई॥ स
बुसमाजईहिभांतिबनाई॥ जनकअवधपुरदीन्हपठाई॥ चलिहिबरातसुनतस
बरानी॥ विकलमीनगनजनुलघुपानी॥ पुनिपुनिसीयगोदकरिलेहीं॥ देईअ
सीससिषावनदेही॥ होइहुसंततपीअहिप्यारी॥ चिरुअहिवातअसीसहमारी॥
सासुससुरगुरुसेवाकरेहू॥ पतिरुषलषिआयेसुअनुसरेहू॥ अतिसनेहवस
सषीसयानी॥ नारिधरमसिषवहिमृदुबानी॥ सादरसकलकुअंरिसमुझाई॥
रानीन्हबारबारउरलाई॥ बहुरिबहुरिभेटहमहतारी॥ कहहिविरंचिरचीक
तनारी॥दोहा॥ तेहिअवसरभाइन्हसहितरामभानुकुलकेतु॥ चलिजनकमं
दिरमुदितविदाकरावनहेत॥४६८॥चौपाई॥ चारिउभायसुभायसुहाये॥ न
गरनारिनरदेषनधाए॥ कोउकहचलनचहतहहिआजू॥ कीन्हविदेहवि
दाकरसाजू॥ लेहुनयनभरिरूपनिहारी॥ प्रीयपाहुनेभूपसुतचारी॥ कोजा
नेकेहिसुकृतसयानी॥ नयनअतिथकीनेविधिआनी॥ मरनसीलजिमिपाव
पिऊषा॥ सुरतरुलहैजनमकरिभूषा॥ पावरनारकिहरिपदजेसे॥ ईनकरद
रसनहमकहतैसे॥ निरषिरामसोभाउरधरहू॥ निजमनफनिमूरतिम
निकरहू॥ येहिविधिसबहिनयनफलदेता॥ गयेकुअरसबराजनिकेता॥दो॰
रूपसिंधुसबबंधुलषिहरषउठीरनिवासु॥ करहिनिछावरआरतीमहामुदि
तमनसासु॥४६९॥चौपाई॥ देषिरामछविअतिअनुरागी॥ प्रेमविवसपुनिपुनि
पदलागी॥ रहिनलाजप्रीतिउरछाई॥ सहजसनेहबरनिकिमिजाई॥ भाईन्हस
हितउबटिअन्हवाए॥ छरसअसनअतिहेतुजेवाए॥ बोलेरामसुअवसरजा
नी॥ सीलसनेहसकुचमृदुवानी॥ राउअवधपुरचहतसिधाए॥ विदाहोनहम
इहांपठाई॥ मातमुदितमनआयेसुदेहू॥ बालकजानिकरवनितनेहू॥ सुनतब
चनविलषेउरनिवासु॥ बोलिनसकेहिप्रेमवससासु॥ हृदयलगाईकुअरिसब
लीन्ही॥ पतिन्हसौपीविनतीअतिकन्ही॥छंद॥ करिविनयसीयरामहिसमर
पीजोरिकरपुनिपुनिकहै॥ बलिजाउतातसुजानतुमकहुविधितगतिसबकी

अहै॥ परिवारुपुरिजनमोहिराजहिप्रानप्रियसीयजानवी॥ तुलसीसुसीलसनेह
लषिनिजकिंकरीकरिमानवी॥सोरठा॥ तुमपरिपूरनकामजानिसिरोमनिभावप्रि
य॥ जनगुनगाहकरामदोषदलनकरुनायतन॥४७०॥चौपाई॥ असकहिरहि
चरनगहिरानी॥ प्रेमपंकजनुगिरासमानी॥ सुनिसनेहसानीवरवानी॥ बहुवि॰
धिरामसासुसनमानी॥ रामविदामागतकरजोरी॥ कीन्हप्रनामबहोरबहोरी॥ पा
ईअसीसबहुरिसिरुनाई॥ भाईन्हसहितचलेरघुराई॥ मंजुमधुरमूरतउरआनी॥ भ
ईसनेहसिथिलसबरानी॥ पुनीधीरजधरिकुअरिहंकारी॥ बारबारभेटहिमहता
री॥ पहुचावहिफिरमिलहिबहोरी॥ बढीपरस्परप्रीतिनथोरी॥ पुनिपुनिमिलत
सषीन्हबिलगाई॥ बालबछजिमिधेनुलवाई॥दोहा॥ प्रेमविवसनरनारिसबसषि
न्हसहितरनिवास॥ मानहुकीन्हविदेहपुरकरुनाविरहनिवास॥४७१॥चौपाई॥ सु
कसारिकाजानकीज्याए॥ कनकपिंजरन्हराषिपढाई॥ व्याकुलकहहिकहावैदेही॥
सुनिधीरजुपरिहरैनकेही॥ भएविकलषगमृगएहिभांती॥ मनुजदसाकैसेक
हिजाति॥ बंधुसमेतजनकतबआई॥ प्रेमउमगिलोचनजलछाई॥ सीयविलोकधी
रताभागी॥ रहेकहावतपरमविरागी॥ लीन्हरायउरलाईजानकी॥ मिटीमहामरजा
दज्ञानकी॥ समुझावतसबसचिवसयाने॥ कीन्हविचारुनअवसरजाने॥ बारहि
बारसुताउरलाई॥ सजिसुंदरपालकिमगाई॥दोहा॥ प्रेमविवसपरिवारुसबुजानि
सुलगननरेस॥ कुअरिचढाईपालकिन्हसुमिरेसिद्धगनेस॥४७२॥चौपाई॥ ब
हुविधिभूपसुतासमुझाई॥ नारिधरमकुलरीतिसिषाई॥ दासीदासदीएबहुतेरे॥
सुचिसेवकजेप्रियसीयकेरे॥ सीयचलतव्याकुलपुरवासी॥ होहिसगुनसुभमंगल
रासी॥ भूसुरसचिवसमेतसमाजा॥ संगचलेपहुचावनराजा॥ रथगजबाजिवराति
न्हसाजे॥ सुनिगहगहेबाजनेबाजे॥ दसरथविप्रबोलिसबलीन्हे॥ दानमानक
रिपूरनकीन्हे॥ चरनसरोजधूरिधरिसीसा॥ मुदितमहीपतिपाईअसीसा॥ सुमिरि
गजाननुकीन्हपयाना॥ मंगलमूलसगुनभयेनाना॥दोहा॥ सुरप्रसूनबरषहि
हरषिकरहिअपछरागान॥ चलेअवधपतिअवधपुरमुदितबजाईनिसान॥४७३॥
चौपाई॥ भूपकरिविनयमहाजनफेरे॥ सादरसकलमागनेटेरे॥ भूषनबसनबा
जिगजदीन्हे॥ प्रेमपोषिठाढेसबकीन्हे॥ बारबारविरदावलिभाषी॥ फिरेसकलरा
महिउरराषी॥ बहुरिबहुरिकोसलपतिकहहि॥ जनकप्रेमवसफिरैनचहहि॥ पु
निकहिभूपतिबचनसुहाई॥ फिरिअमहीसदूरिबडिआए॥ राउबहोरिउतरिभएठा
ढे॥ प्रेमप्रवाहविलोचनबाढे॥ तबविदेहबोलेकरजोरी॥ बचनसनेहसुधाज
नुबोरी॥ करोकवनविधिविनयबनाई॥ महाराजमोहिदीन्हिबडाई॥दोहा॥ कोस
लपतिसमधीसजनसनमानेसबभांति॥ मिलनपरस्परविनयअतिप्रीतिनहृद
यसमाति॥४७४॥चौपाई॥ मुनिमंडलिहिजनकसिरुनावा॥ आसिरवादसबहिसन
पावा॥ सादरपुनिभेटेजामाता॥ रूपसीलगुननिधिसबभ्राता॥ जोरिपंकरुहपान
सुहाई॥ बोलेबचनप्रेमजनुजाई॥ रामकरोकेहिभांतिप्रसंसा॥ मुनिमहेसमनि
मानसहंसा॥ करहिजोगजोगीजिहिलागी॥ कोहमोहममतामदत्यागी॥ व्याप
कब्रह्मअलषअबिनासी॥ चिदानंदनिरगुनगुनरासी॥ मनसमेतजेहिजाननवानी॥
तरकिनसकेहिसकलअनुमानी॥ महिमानिगमनेतिकहकहई॥ जोतिहुकाल
एकरसरहई॥दोहा॥ नयनविषयमोकहभयउसोसमस्तसुषमूल॥ सबईलाभ
जगजीवकहभयेईसअनुकूल॥४७५॥चौपाई॥ सबहिभांतिमोहिदीन्हिबडाई॥
निजजनजानिलीन्हअपनाई॥ होइसहसदससारदसेषा॥ करहिकलपकोटिकभरि

लिषा॥ मोर भाग्य राउर गुन गाथा॥ कहि न सिराहिं सुनहु रघुनाथा॥ मैं कछु कहौं एक
बल मोरे॥ तुम्ह रीझहु सनेह सुठि थोरे॥ बार बार मांगौं कर जोरे॥ मनु परिहरै चरन ज
नि भोरे॥ सुनि बर बचन प्रेम जनु पोषे॥ पूरनकाम राम परितोषे॥ करि बर बिनय
ससुर सनमाने॥ पितु कौसिक बसिष्ठ सम जाने॥ बिनती बहुरि भरत सन कीन्ही॥
मिलि सप्रेम पुनि आसिष दीन्ही॥ दोहा॥ मिले लषन रिपुसूदनहि दीन्हि असीस म
हीस॥ भये परसपर प्रेमबस फिरि फिरि नावहिं सीस॥ ४२६॥ चौपाई॥ बार बार करि बि
नय बड़ाई॥ रघुपति चले संग सब भाई॥ जनक गहे कौसिक पद जाई॥ चरन रेनु सिर न
यनन्ह लाई॥ सुनु मुनीस बर दरसन तोरे॥ अगम न कछु प्रतीति मन मोरे॥ जो सु
षु सुजसु लोकपति चहहीं॥ करत मनोरथ सकुचत अहहीं॥ सो सुषु सुजसु सुलभ
मोहि स्वामी॥ सब सिधि तव दरसन अनुगामी॥ कीन्हि बिनय पुनि पुनि सिरु नाई॥
फिरे महीसु आसिषा पाई॥ चली बरात निसान बजाई॥ मुदित छोट बड़ सब समुदाई॥
राम हि निरषि ग्राम नर नारी॥ पाइ नयन फल होहिं सुषारी॥ दोहा॥ बीच बीच बर बा
स करि मग लोगन्ह सुष देत॥ अवध समीप पुनीत दिन पहुंची आइ जनेत॥ ४२७॥
चौपाई॥ हने निसान पनव बर बाजे॥ भेरि संष धुनि हय गय गाजे॥ झांझि बीन डि
मडिमी सुहाई॥ सरस राग बाजहिं सहनाई॥ पुरजन आवत अकनि बराता॥ मुदि
त सकल पुलकावलि गाता॥ निज निज सुंदर सदन संवारे॥ हाट बाट चौहट पुर द्वा
रे॥ गली सकल अरगजा सिंचाई॥ जहं तहं चौकें चारु पुराई॥ बने बजार न जाइ बषाना॥
तोरन केतु पताक बिताना॥ सफल पूगफल कदलि रसाला॥ रोपे बकुल कदंब तमा
ला॥ लागे सुभग तरु परसत धरनी॥ मनिमय आलबाल कल करनी॥ दोहा॥ बिबि
धि भांति मंगल कलस गृह गृह रचे संवारि निहारि॥ ४२८॥ चौपाई॥ भूप भवन तेहि अवसर सोहा॥
रचना देषि मदन मन मोहा॥ मंगल सगुन मनोहरताई॥ रिधि सिधि सुष संपदा सु
हाई॥ जनु उछाह सब सहज सुहाए॥ तनु धरि धरि दसरथ गृह आए॥ देषन हेतु राम बै
देही॥ कहहु लालसा होहि न केही॥ जूथ जूथ मिलि चलीं सुआसिनी॥ निज
छबि निदरहिं मदन बिलासिनी॥ सकल सुमंगल सजें आरती॥ गावहिं जनु बहु बेष
भारती॥ भूपति भवन कोलाहल होई॥ जाइ न बरनि समय सुष सोई॥ कौसल्यादि
राम महतारी॥ प्रेम बिबस तन दसा बिसारी॥ दोहा॥ दिए दान बिप्रन्ह बिपुल पूजि
गनेस पुरारि॥ प्रमुदित परम दरिद्र जनु पाइ पदारथ चारि॥ ४२९॥ चौपाई॥ मोद प्र
मोद बिबस सब माता॥ चलहिं न चरन सिथिल भए गाता॥ राम दरस हित अति अ
नुरागी॥ परिछनि साज सजन सब लागी॥ बिबिध बिधान बाजने बाजे॥ मंगल
मुदित सुमित्रा साजे॥ हरद दूब दधि पल्लव फूला॥ पान पूगफल मंगल मूला॥ अ
छत अंकुर रोचन लाजा॥ मंजुल मंजरि तुलसि बिराजा॥ छुहे पुरट घट सहज सु
हाए॥ मदन सकुन जनु नीड़ बनाए॥ सगुन सुगंध न जाहिं बषानी॥ मंगल सक
ल सजहिं सब रानी॥ रची आरती बहुत बिधाना॥ मुदित करहिं कल मंगल गाना॥ दोहा॥
कनक थार भरि मंगलन्हि कमल करन्हि लिए मात॥ चलीं मुदित परिछनि करन पुल
क पल्लवित गात॥ ४३०॥ चौपाई॥ धूप धूम नभ मेचक भयेउ॥ सावन घन घमंड
जनु ठयेउ॥ सुरतरु सुमन माल सुर बरषहिं॥ मनहु बलाक अवलि मनु करषहिं
॥ मंजुल मनिमय बंदनिवारे॥ मनहु पाकरिपु चाप संवारे॥ प्रगटहिं दुरहिं अटन्ह प
र भामिनि॥ चारु चपल जनु दमकति दामिनि॥ दुंदुभि धुनि घन गरजनि घोरा॥ जा
चक चातक दादुर मोरा॥ सुर सुगंध सुचि बरषहिं बारी॥ सुषी सकल ससि पुर
नर नारी॥ समउ जानि गुर आयसु दीन्हा॥ पुर प्रबेस रघुकुलमनि कीन्हा॥ सुमि

रि संभु गिरिजा गनराजा॥ मुदित महीपति सहित समाजा॥ दोहा॥ होहिं सगुन बरषहिं
सुमन सुर दुंदुभि बजाई॥ बिबुध बधू नाचहिं मुदित मंजुल मंगल गाई॥ ४३१॥ चौपाई॥
मागध सूत बंदि नट नागर॥ गावहिं जसु तिहु लोक उजागर॥ जय धुनि बिमल बेद बर बा
नी॥ दस दिसि सुनिअ सुमंगल सानी॥ बिपुल बाजने बाजन लागे॥ नभ सुर नगर लो
ग अनुरागे॥ बने बराती बरनि न जाहीं॥ महा मुदित मन सुष न समाहीं॥ पुरबासिन्ह
तब राय जोहारे॥ देषत रामहि भये सुषारे॥ करहिं निछावरि मनि गन चीरा॥ बारि बि
लोचन पुलक सरीरा॥ आरति करहिं मुदित पुर नारी॥ हरषहिं निरषि कुअंर बर चारी॥ सि
बिका सुभग ओहार उघारी॥ देषि दुलहिनिन्ह होहिं सुषारी॥ दोहा॥ येहि बिधि सब
हि देत सुष आए राजदुआर॥ मुदित मातु परिछनि करहिं बधुन्ह सहित कुमार॥ ४३२॥
चौपाई॥ करहिं आरती बारहिं बारा॥ प्रेम प्रमोद कहै को पारा॥ भूषन मनि पट नाना जाती॥
करहिं निछावरि अगनित भांती॥ बधुन्ह समेत देषि सुत चारी॥ परमानंद मगन महता
री॥ पुनि पुनि सीया राम छबि देषी॥ मुदित सफल जग जीवन लेषी॥ सषी सीय मुष पु
नि पुनि चाही॥ गान करहिं निज सुकृत सराही॥ बरषहिं सुमन छनहिं छन देवा॥ ना
चहिं गावहिं लावहिं सेवा॥ देषि मनोहर चारिउ जोरी॥ सारद उपमा सकल ढंढोरी॥ देत
न बनहिं निपट लघु लागी॥ एकटक रहीं रूप अनुरागी॥ दोहा॥ निगम नीति कुल रीति क
रि अरघ पांवड़े देत॥ बधुन्ह सहित सुत परिछि सब चलीं लवाइ निकेत॥ ४३३॥ चौपाई॥
चारि सिंघासन सहज सुहाए॥ जनु मनोज निज हाथ बनाए॥ तिन्ह पर कुअंरि कुअंर बैठारे॥
सादर पाय पुनीत पषारे॥ धूप दीप नैबेद बेद बिधि॥ पूजे बर दुलहिनि मंगल निधि॥ बार
हिं बार आरती करहीं॥ ब्यजन चारु चामर सिर ढरहीं॥ बस्तु अनेक निछावरि होहीं॥ भरीं
प्रमोद मातु सब सोहीं॥ पावा परम तत्व जनु जोगी॥ अमृत लहेउ जनु संतत रोगी॥ जनम
रंक जनु पारस पावा॥ अंधहि लोचन लाभ सुहावा॥ मूक बदन जनु सारद छाई॥ मानु
समर सूर जय पाई॥ दोहा॥ येहि सुष ते सत कोटि गुन पावहिं मातु अनंद॥ भाइन्ह सहित बि
आहि घर आए रघुकुलचंद॥ लोकरीति जननी करहीं बर दुलहिनि सकुचाहिं॥ मोद बिनो
द बिलोकि बड़ राम मनहिं मुसकाहिं॥ ४३४॥ चौपाई॥ देव पितर पूजे बिधि नीकी॥ पूजीं सक
ल बासना जी की॥ सबहि बंदि मांगहिं बरदाना॥ भाइन्ह सहित राम कल्याना॥ अंतरहित
सुर आसिष देहीं॥ मुदित मातु अंचल भरि लेहीं॥ भूपति बोलि बराती लीन्हे॥ जान बसन
मनि भूषन दीन्हे॥ आयसु पाइ राषि उर रामहि॥ मुदित गये सब निज निज धामहि॥ पुर नर
नारि सकल पहिराई॥ घर घर बाजन लागे बधाई॥ जाचक जन जाचहिं जोई जोई॥ प्रमुदित
राउ देहिं सोई सोई॥ सेवक सकल बजनिआ नाना॥ पूरन कीए दान सनमाना॥ दोहा॥ दे
हिं असीस जोहारि सब गावहिं गुन गन गाथ॥ तब गुर भूसुर सहित गृह गवनु कीन्ह नरना
थ॥ ४३५॥ चौपाई॥ जो बसिष्ठ अनुसासन दीन्ही॥ लोक बेद बिधि सादर कीन्ही॥ भूसुर भी
र देषि सब रानी॥ सादर उठीं भाग्य बड़ जानी॥ पाय पषारि सकल अन्हवाए॥ पूजि भली बि
धि भूप जेवांए॥ आदर दान प्रेम परिपोषे॥ देत असीस चले मन तोषे॥ बहु बिधि कीन्हि
गाधिसुत पूजा॥ नाथ मोहि सम धन्य न दूजा॥ कीन्हि प्रसंसा भूपति भूरी॥ रानिन्ह
सहित लीन्हि पग धूरी॥ भीतर भवन दीन्ह बर बासू॥ मन जोगवत रह नृप रनिवासू॥
पूजे गुर पद कमल बहोरी॥ कीन्हि बिनय उर प्रीति न थोरी॥ दोहा॥ बधुन्ह समेत कुमार
सब रानिन्ह सहित महीस॥ पुनि पुनि बंदत गुर चरन देत असीस मुनीस॥ ४३६॥ चौ
पाई॥ बिनती कीन्हि उमगि अनुरागे॥ सुत संपदा राषि सब आगे॥ नेगु मागि मुनिनायक
लीन्हा॥ आसिरबाद बहुत बिधि दीन्हा॥ उर धरि रामहि सीय समेता॥ हरषि कीन्ह गु
र गमन निकेता॥ बिप्र बधू सब भूप बुलाई॥ चैल चारु भूषन पहिराई॥ बहुरि बोलाय
सुआसिनि लीन्ही॥ रुचि बिचारि पहिरावनि दीन्ही॥ नेगी नेग जोग सब लेहीं॥ रुचि अनु
रूप भूपमनि देहीं॥ प्रिय पाहुने पूज्य जे जाने॥ भूपति भली भांति सनमाने॥ देव देषि रघुबीर

विवाहू॥वरषिप्रसूनप्रसंसउछाहू॥चौपाई॥चलेनिसानवजाईसुरनिजनिजपुरसु
षपाई॥कहतपरसपररामजसप्रेमनहृदयसमाई॥४८७॥चौपाई॥सवविधिसवहि
सोधिनरनाहू॥रहाहृदयभरिपूरिउछाहू॥जहँरनिवासतहाँपगुधारे॥सहितवधूटि
न्हकुअँरनिहारे॥लियेगोदकरिमोदसमेता॥कोकहिसकैभयउसुषजेता॥वधु
सप्रेमगोदवैठारी॥वारवारहीयहरषिदुलारी॥देषिसमाजमुदितरनिवासू॥स
वकेउरअनंदकीयोवासू॥कहेउभूपजिमिभयउविवाहू॥सुनिहियहरषहोत
सवकाहू॥जनकराजगुनसीलवडाई॥प्रीतिरीतिसंपदासुहाई॥वहुविधिभूपभा
टजिमिवरनी॥रानीसवप्रमुदितसुनिकरनी॥दोहा॥सुतन्हसमेतन्हाइनृपवो
लिविप्रगुरुग्याति॥भोजनकीन्हअनेकविधिघरीपंचगईराति॥४८८॥चौपाई॥
मंगलगानकरहिवरभामिनि॥भईसुषमूलमनोहरजामिनि॥अँचैपानसवकाहूपाई॥
स्रगसुगंधभूषनछविछाई॥रामहिदेषिरजायसुपाई॥निजनिजभवनचलेसिरना
ई॥प्रेमप्रमोदविनोदवडाई॥समउसमाजमनोहरताई॥कहिनसकहिसतसारदसेस
वेदविरंचिमहेसगनेसू॥सोमैकहौंकवनविधिवरनी॥भूमिनागसिरधरैकिधरनी
नृपसवभाँतिसवहिसनमानी॥कहिमृदुवचनवुलाईरानी॥वधूलरिकनीपरघर
आई॥राषेहुनयनपलककीनाई॥दोहा॥लरिकाश्रमितउनीदवससयनकरावहु
जाई॥असकहिगेविश्रामगृहरामचरनचितलाई॥४८९॥चौपाई॥भूपवचनसु
निसहजसुहाई॥जरितकनकमनिपलँगडसाई॥सुभगसुरभिपयफेनसमाना॥
कोमलकलितसुपेतीनाना॥उपवरहनवरवरनिनजाही॥स्रगसुगंधमनिमंदि
रमाही॥रतनदीपसुठिचारुचँदोवा॥कहतनवनैजानजेहिजोवा॥सेजरुचिरचि
रामउठाए॥प्रेमसमेतपलँगपौढाए॥अग्यापुनिपुनिभाइन्हदीन्ही॥निजनिज
सेजसयनतिन्हकीन्ही॥देषिस्याममृदुमंजुलगाता॥कहहिसप्रेमवचनसवमा
ता॥मारगजातभयावनिभारी॥केहिविधितातताडकामारी॥दोहा॥घोरनिसाच
रविकटभटसमरगनहिनहिकाहू॥मारेसहितसहायकिमिषलमारीचसुवाहु॥
४९०॥चौपाई॥मुनिप्रसादवलितातनम्हारी॥ईसअनेककरवरैटारी॥मषरषवा
रीकरिदुहुँभाई॥गुरुप्रसादसवविद्यापाई॥मुनितीयतरीलगतपगधूरी॥कीर
तिरहीभुवनभरिपूरी॥कमठपीठपविकूटकठोरा॥नृपसमाजमहुसिवधनुतो
रा॥विस्वविजयजसजानकीपाई॥आएभवनव्याहिसवभाई॥सकलअमानुष
करमतुम्हारे॥केवलकौसिककृपासुधारे॥आजुसुफलजगजनमहमारा॥देषिता
तविधुवदनतुम्हारा॥जेदिनगएतुम्हहिविनुदेषे॥तेविरंचिजनिपारहिलेषे॥दोहा
रामप्रतोषीमातसवकहिविनीतवरवयन॥सुमिरिसंभुगुरुविप्रपदकीयेनीद
वसनयन॥४९१॥चौपाई॥नींदउवदनसोहसुठिलोना॥मनहुसाँझसरसीरुह
सोना॥घरघरकरहिजागरननारी॥देहिपरसपरमंगलगारी॥पुरीविराज
तिराजतिरजनी॥रानीकहहिविलोकहुसजनी॥सुंदरवधुन्हसासुलैसोई॥फनि
कन्हजनुसिरमनिउरगोई॥प्रातपुनीतकालप्रभुजागे॥अरुनचूडवरवोलनलागे
वंदिमागधन्हिगुनगनगाए॥पुरजनद्वारजोहारनआए॥वंदिविप्रसुरगुरुपितु
माता॥पाइअसीससमुदितसवभ्राता॥जननिन्हसादरवदननिहारे॥भूपतिसंगद्वा
रपगुधारे॥दोहा॥कीन्हसौचसवसहजसुचिसरितपुनीतनहाइ॥प्रातक्रियाकरि
तातपहिआएचारिउभाइ॥४९२॥चौपाई॥भूपविलोकिलियेउरलाए॥वैठेहरषि
रजायसुपाई॥देषिरामसवसभाजुडानी॥लोचनलाभअवधिअनुमानी॥पुनि
वसिष्ठमुनिकौसिकआए॥सुभगआसनन्हमुनिवैठाए॥सुतन्हसमेतपूजिपद
लागे॥निरषिरामदोउगुरुअनुरागे॥कहहिवसिष्ठधरमइतिहासा॥सुनहिमही
सहितरनिवासा॥मुनिमनअगमगाधिसुतकरनी॥मुदितवसिष्ठविपुल

विधिवरनी॥वोलेवामदेवसवसाँची॥कीरतिकलितलोकतिहुमाची॥सुनिआनंद
भयेउसवकाहू॥रामलषनउरअधिकउछाहू॥दोहा॥मंगलमोदउछाहनितजाहि
दिवसएहिभाँति॥उमगीअवधअनंदभरिअधिकअधिकअधिकाति॥४९३॥चौपाई॥
सुदिनसोधिकलकंकनछोरे॥मंगलमोदविनोदनथोरे॥नितनवसुषसुरदेषिसि
हाही॥अवधजन्मजाचहिविधिपाही॥विस्वामित्रुचलननितचहही॥रामसप्रेमवि
नयवसरहही॥दिनदिनसयगुनभूपतिभाऊ॥देषिसराहमहामुनिराऊ॥मागतवि
दाराउअनुरागे॥सुतनसमेतनृपठाढेभेआगे॥नाथसकलसंपदातुम्हारी॥मैसेवक
समेतसुतनारी॥करवसदालरिकनपरछोहू॥दरसनदेतरहवमुनिमोहू॥असक
हिराउसहितसुतरानी॥परेउचरनमुषआवतवानी॥दीन्हअसीसविप्रवहुभाँती
॥चलेनप्रीतिरीतिकहिजाती॥रामसप्रेमसंगसवभाई॥आयेसुपाइफिरेपहुचा
ई॥दोहा॥रामरूपभूपतिभगतिव्याहउछाहअनंद॥जातसराहतमनहिमनमु
दितगाधिकुलचंद॥४९४॥चौपाई॥वामदेवरघुकुलगुरग्यानी॥वहुरिगाधिसुतक
थावषानी॥सुनिसुनिसुजसमनहिमनराउ॥वरनतआपनपुन्यप्रभाउ॥वहुरेलो
गरजायसुभयऊ॥सुतन्हसमेतनृपतिगृहगयऊ॥जहँतहँरामव्याहसवगावा॥स
जससुपुनीतलोकतिहुछावा॥आएव्याहिरामघरजवते॥वसैअनंदअवधसवतव
ते॥प्रभुविवाहजसभयेउउछाहू॥सकहिनवरनिगिराअहिनाहू॥कविकुलजी
वनपावनजानी॥रामसीयजसमंगलषानी॥तेहितेमैकछुकहावषानी॥करनपु
नीतहेतुनिजवानी॥छंद॥निजगिरापावनिकरनकारनरामजसतुलसीकह्यो॥
रघुवीरचरितअपारवारिधिपारुकविकौनेलह्यो॥उपवीतव्याहउछाहमंगल
सुनिजेसादरगावही॥वैदेहीरामप्रसादतेजनसर्वदासुषपावही॥सुषगाईक
होहिविसकन्याधन्यअधिकारीसही॥नितप्रीतिन्हतनसुनतहरिगुनभग
तिअनुपमलही॥रघुवीरपदअनुरागजनलोभागिवैगिवुझावही॥यहज्ञानवल
सीदासमनक्रमवचनहरिगुनगावही॥दोहा॥कहनकालकलग्रसितमनसा
थलकछुनहोई॥यहविचारिविस्वासकरिहरिसुमिरइवुधसोई॥सोरठा॥मन
हरिपदअनुरागकरिहत्यागलाकापट॥महामोहनिसिजागुसोवतवीतेकाल
वहु॥सियरघुवीरविवाहजेसप्रेमगावहिसुनहि॥तिन्हकहुसदाउछाहमंगला
यतनरामजसु॥इतिश्रीरामचरितमानसेसकलकलिकलुषविध्वंसनेतुलसी
दासकृतोनामप्रथमसोपानः॥ ॥समाप्तोयंवालकांडः॥१॥ ॥ ॥

ॐश्रीगणेशायनमः॥श्रीसरस्वत्यैनमः॥श्लोक॥यस्यांकेचविभातिभूधरसुतादेवापगा
वाणमस्तके॥भालेबालविधुर्गलेचगरलंयस्योरसिव्यालराट्॥सोयंभूतिविभू
षणःसुरवरःसर्वाधिपःसर्वदा॥शर्वःसर्वगतःशिवःशशिनिभःश्रीशंकरःपातुमां
१॥प्रसन्नतांयानगताभिषेकतस्तथानमम्लेवनवासदुःखतः॥मुखांबुजश्रीर
घुनंदनस्यमेसदास्तुसामंजुलमंगलप्रदा॥२॥नीलांबुजश्यामलकोमलां
गं॥सीतासमारोपितवामभागं॥पाणौमहासायकचारुचापं॥नमामिरामंरघु
वंशनाथं॥दोहा॥श्रीगुरुचरनसरोजरजनिजमनमकुरसुधारि॥बरनौरघुबरवि
मलजसजोदायकफलचारि॥चौपई॥जबतेंरामब्याहिघरआये॥नितनवमंग
लमोदबधाये॥भुवनचारिदसभूधरभारी॥सुकृतमेघबरषहिंसुखबारी॥रिधि
सिधिसंपतिनदीसुहाई॥उमगिअवधअंबुधिकहंआई॥मनिगनपुरनरनारिसु
जाती॥सुचिअमोलसुंदरसबभांती॥कहिनजाइकछुनगरविभूती॥जनुइतनिहि
विरंचिकरतूती॥सबविधिसबपुरलोगसुखारी॥रामचंदमुखचंदनिहारी॥मुदि
तमातसबसखीसहेली॥फलितबिलोकिमनोरथबेली॥रामरूपगुनसीलसुभा
उ॥प्रमुदितहोहिदेखिसुनिराउ॥दोहा॥सबकेउरअभिलाषअसकहहिमनाइमहे
स॥आपअछतजुबराजपदरामहिदेउनरेस॥चौपई॥एकबारजानकीसमेता
बैठेप्रभुनिजरुचिरनिकेता॥भुजमलवउरनयनविसाला॥पीतवसनतनस्या
मलमाला॥कोटिमनोजदेषिछविमोहा॥सीताकरचामरवरसोहा॥तेहिअवसर
रिषिनारदआवा॥सुरहितलागिविरंचिपठाए॥तेजपुंजतनकरतलवीना॥हरि
गुनगानगावततल्लीना॥देषिरामसहसाउठिधाये॥करिदंडवतहृदयमिला
येसादरनिजआसनवैठारे॥जनकसुतातबचरनपषारे॥तेहिचरनोदकभवनसि
रावा॥जगपावनहरिसीसचढावा॥मुनिमुनिविषयनिरतजेप्रानी॥हमसारि
षेदेहिअभिमानी॥तिनकहंतनसमानितवहोई॥करैकृपाजाकहुंप्रभुसोई॥ताकहि
मुनिनाहिसबआवें॥जिहिविनहेतसंतप्रियलागें॥तातेनारदमेबडभागी॥जद्यपि
गृहकुटंबअनुरागी॥दोहा॥सुनिहरिवचनमधुरप्रियकरिविचारमुनिधीर॥प
रमकृपालतोकहिनलागीकहतरघुवीर॥१॥चौपई॥कहिसुनितवमहिमारघुरा
या॥मैजानौकछुनहरीदाया॥बचनकहेउप्राकृतकीनाई॥तातेनहिकछुवेदउग
साई॥प्रभुयहितमहिसदाबनिआई॥निजजनसुताजनकेरिवडाई॥रोहजसुभा
वुअनतअनुरागी॥नरतनधरेहुदासहितलागी॥मायारउनुगोज्ञानअतीता॥
अजितअनमसोरासनजीता॥जेहिप्रभुसमअतिसयकोनाही॥व्यापकअजसमान
सबमाही॥उदरस्वराचरहेलिजोसोवा॥अल्लनपावनलागिसोरोवा॥नामरूपवपुव
रनभेदा॥अविगतअकलनेतिकहवेदा॥निर्मममलिनिरामजोई॥दशरथसुत
कहिगावअसोई॥जपतपजोगजग्यव्रतदाना॥विमलविरागज्ञानविज्ञाना॥के
रहितनतनमुनिपावनकोई॥देषाअरटभक्तिवससोई॥हववसमववमायनवकुकर
ही॥भक्तिहीनभवसिंधुनतरही॥दोहा॥जानिसकहुजेज्ञानडनिर्गुनसगुनसरू
प॥ममहृदपंकजभृंगइववसहुरामनररूप॥४॥चौपई॥ब्रह्मभवनमैरहेउकृपा
ला॥गावतनलवगुनदीनदयाला॥असइछाउपजीमनमाही॥देषेउचरनवहोतहि
ननाही॥जद्यपिप्रभुसर्वव्रसमाना॥सगुनरूपमेरेमनमाना॥अवचलतविरंचिमो
हिजाना॥कीन्हीविनयलागिममकाना॥प्रभुजाननसवअंतरजामी॥भक्तिपदवि
नयहुस्वामी॥जेहिहितलीन्हमनुजअवतारा॥नाथवेगिसोईकरियसम्हारा॥सुन
तवचनरघुपतिमुसकाने॥मुनिअजहुविरंचिभयमाने॥कहेउतातव्रम्हाहिसमुझा

ई॥ कछुदिनबीतेदेखहुआई। बारबारचरननसिरनाई॥ अयानंदहृदयसमाई॥ रामहूपउर
परिनारद॥ बलेकरतगनगानविसारद॥ तवरघुपतिसीतहिसमुझावा॥ बहुतकरन
सोचरितबनावा॥ सुरहितलागिसोकबियेउपाई॥ जासुयवतनपरिहरिगउराई॥ दोहा॥
जगसंभवअस्थीतप्रलयजाकीभृकुटिविलास॥ सोप्रभुजनतनबिचारनकेहिबिधि
निअरनास॥५॥ चौपाई॥ एकसमयसवसहितसमाजा॥ राजसभारघुराजविराजा॥ स
कलसुक्रितमूरतिनरनाहू॥ रामसुजससुनिअतिहिउछाहू॥ नृपसवरहहिंकृपाअभि
लाषे॥ लोकपकरहिंप्रीतिरुषराषे॥ त्रिभुवनतीनिकालजगमाही॥ भूरिभागदशर
थसमनाही॥ मंगलमूलरामसुतजासू॥ जोकछुकहियथोरसवतासू॥ रायसुभाय
मुकरलीन्हा॥ बदनविलोकिमुकटसमकीन्हा॥ श्रवनसमीपभयेसितकेसा॥ मन
हुजरठपनअसउपदेसा॥ नृपजुवराजरामकहूदेहू॥ जेवनजनमलाहुकिनलेहू॥
दोहा॥ यहबिचारउरआनिनृपसुदिनसुअवसरुपाई॥ प्रेमपुलकितनमुदितमनगु
रुहिसुनायउजाई॥६॥ चौपाई॥ कहहिनृपालसुनियमुनिनायक॥ भयेरामसवबि
धिसवलायक॥ सेवकसकलसचिवपुरवासी॥ जेहमारअरिमितउदासी॥ सवहिरामप्रिय
जेहिविधिमोही॥ प्रभुअसीसजनुतनधरिसोही॥ विप्रसहितपरिवारगुसाई॥ करहिंछो
हुसवरोरिहिनाही॥ जेगुरुचरनरेनुसिरधरही॥ तेजनसकलविभववसकरही॥ मोहि
समयहअनुभयेउनदूजे॥ सवपायेउरजपावनपूजे॥ गउनमागरनागरअतिगाये॥ वडेर
भागमोरअहहुअब॥ जेवेरामजगतहितकारी॥ सकलसराहतपुरनरनारी॥ अवअभिला
षेकमनमोरे॥ पूजिहैनाथअनुग्रहतोरे॥ मुनिप्रसनलखिसहजसनेहू॥ कहेउनरेसरजा
यसुदेहू॥ दोहा॥ राजनराउरनामजससवअभिमतदातार॥ फलअनुगामीमहीपम
निमनअभिलाषतुम्हार॥७॥ चौपाई॥ सवविधिगुरुप्रसन्नजियजानी॥ बोलेउराउरहसिमृदु
बानी॥ नाथरामकरअहिजुवराजू॥ कहियकृपाकरिअससमाजू॥ मोहिअछतयहहो
इउछाहू॥ लहहिलोगसवलोचनलाहू॥ प्रभुप्रसादशिवसवहिनिवाही॥ यहलालसा
एकमनमाही॥ पुनिनसोचतनरहउकिजाई॥ जेहिनहोयपाछेपछिताई॥ भरतराम
सनआयसुभागी॥ पछिमगायेमातलहितलागी॥ करहुविचारनलावहुवारा॥ अवधुनि
भापनवुधाहसारा॥ सुनिमुनिदशरथवचनसुहाए॥ मंगलमोदमूलमनभाये॥ सुन
नृपजासुविमुखपछिताही॥ जासुभजनविनुजरनिनजाही॥ भयेउतुम्हारतनयसो
इस्वामी॥ रामपुनीतप्रेमअनुगामी॥ दोहा॥ वेगिविलंबनकरियनृपसाजियसवहिस
माजु॥ सुदिनसुमंगलतवहिजवरामहोयजुवराजु॥८॥ चौपाई॥ मुदितमहीपतिमंदिर
आए॥ सेवकसचिवसुमंत्रबुलाये॥ कहिजयजीवसीसतिन्हनाए॥ भूपसुमंगलवच
नसुनाए॥ प्रमुदितमोहिकहेउगुरुआजू॥ रामहिरायदेहुजुवराजू॥ जोपांचहिमतला
गनतीका॥ करेहरषिहियरामहिटीका॥ मंत्रीमुदितसुनतप्रियवानी॥ अभिमतविर
वउजनुपानी॥ विनतीसचिवकरहिकरजोरी॥ जीवहुजगतपतिवरसकरोरी॥ जगमं
गलभलकाजविचारा॥ वेगिअनाथनलाइयवारा॥ नृपहिमोदसुनिसचिवसुभाषा॥
बढतवेलिजनुलहिसुसाषा॥ दोहा॥ कहेउभूपमुनिराजकरजोइजोआएसुहोय
रामराजअभिषेकहितवेगिकरहुसोइसोइ॥९॥ चौपाई॥ हरषिमुनिसकहेउम्रदुवानी॥
आनहुसकलसुतीरथपानी॥ औसधमूलफूलफलपाना॥ कहेउनामगनिमंगलनाना॥
चामरचमरवसनवहुभाती॥ रोमपाटपटअगनितजाती॥ मनिगनमंगलवस्तुअने
का॥ जोजगजोगभूपअभिषेका॥ वेदविहितकहिसकलविधाना॥ कहेउरचहुपुरविवि
धिविताना॥ सफलरसालपुंगफलकेरा॥ रोपहुवीथिनपुरचहुफेरा॥ रचहुमंजुमनिचौ
करवारु॥ कहहुवनावनवेगिवजारू॥ पूजहुगनपतिगुरुकुलदेवा॥ सवविधिकरहु

भूमिसुरसेवा॥ दोहा॥ धजपताकातोरनकलससजहुतुरगरथनाग॥ सिरधरिमुनि
वरवचनसवनिजनिजकाजहिलाग॥१०॥ चौपाई॥ मुनिसुमनमनअतिउछाहा॥ नि
जजनजनमफलकरिमाना॥ जहातहाधावनकोटिपठावा॥ मंगलद्रव्यसकललेआय॥ क
नककलससजिधरेउदुआरे॥ गजरथतुरगअनेकसुवारे॥ बहुविधिवाजेवंदनवारा॥ धु
जापताकमनिवसनअपारा॥ वनाअनवनिविरचनमिहाई॥ सकललोकसोभाउपजाई॥
जोमुनीसजेहिआयसुदीन्हा॥ सोतिहकाजप्रथमजनुकीन्हा॥ पुनिमुनिसिष्ठाकेरनगरा
सोचमंतपहुलैलेआवा॥ विप्रसाधुसुरपूजनराजा॥ करतरामहितमंगलकाजा॥ सुनत
रामअभिषेकसुहावा॥ वजेगहगहेअवधवधावा॥ रामसीयतनसगुनजनाए॥ फरक
हिमंगलअंगसुहाए॥ पुलकिसप्रेमपरसपरकहही॥ भरतआगमनसूचककहही॥ भये
वहुतदिनअतिअवसेरी॥ सगुनप्रतीतिभेटप्रियकेरी॥ भरतसरसप्रियकोजगमाही॥
इहइसगुनफलदूसरनाही॥ रामहिबंधुसोचदिनराती॥ अंडन्हिकमठहृदयजेहिभा
ती॥ दोहा॥ येहिअवसरमंगलपरमसुनिरहसेउरनिवासु॥ सोभितलखिविधुवढतजनु
वारिधिवीचिविलासु॥११॥ चौपाई॥ प्रथमजायजिनवचनसुनाए॥ भूषनवसनभू
रितिनपाए॥ प्रेमपुलकतनमनअनुरागी॥ मंगलकलससजनसवलागी॥ चौकेचारु
सुमित्रापूरी॥ मनिमयविविधभातीअतिरूरी॥ आनंदमगनराममहतारी॥ दियेदान
वहुविप्रहकारी॥ पूजीग्रामदेविसुरनागा॥ कहेउवहोरिदेनवलिभागा॥ वारवारगनपति
हिनिहोरा॥ केजेउसफलमनोरथमोरा॥ भूपहदयभरुदुजाई॥ मतिदिहदहुनोजिय
महिआई॥ लोककुरकारहीमनमाही॥ सोपतिहोयआनकछुनाही॥ जेहिविधिहोयराम
कल्यान्॥ देहुदयाकरिसोवरदान्॥ गावहिमंगलकोकिलवयनी॥ विधुवदनीमृगसाव
कनयनी॥ दोहा॥ रामराजअभिषेकसुनिहियहरषेनरनारि॥ लगेसुमंगलसजनसव
विधिअनकूलविचारि॥१२॥ चौपाई॥ तवनरनाहुवसिष्टुबुलाए॥ रामधामसिखदेनपठाए॥
गुरुआगमनसुनतरघुनाथा॥ द्वारआयपदनायउमाथा॥ सादरअरघदेइघरआने॥ सोरह
भातिपूजिसनमाने॥ गहेचरनसियसहितवहोरी॥ वोलेरामकमलकरजोरी॥ सेवकसदन
स्वामिआगमनू॥ मंगलमूलअमंगलदमनू॥ तदपिउचितजनवोलिसप्रीती॥ पठइअकाज
नाथअसनीती॥ प्रभुताततजिप्रभुकीन्हसनेहू॥ भयेउपुनीतआजयहगेहू॥ आयसुहोयसोकर
आसोई॥ सेवकलहइस्वामिसेवकाई॥ दोहा॥ सुनीसनेहसानवचनमुनीरघुवरहिप्रसंस॥ रा
मकसनतुमकहहुअसहंसवंसअवतंस॥१३॥ चौपाई॥ वरनीरामगुनसीलसुभाऊ॥ वोलेप्रे
मपुलकिमुनिराऊ॥ भूपसजेउअभिषेकसमाजू॥ चाहतदेनतुम्हहिजुवराजू॥ रामकरहुसवसं
जमआजू॥ जोविधिकुसलनिवाहैकाजू॥ गुरुसिखदेइरायपहगयेउ॥ रामहृदयअसवि
समउभयेउ॥ जनमेएकसंगसवभाई॥ भोजनसयनकेलिलरकाई॥ करनवेधउपवीतवि
वाहा॥ संगसंगसवभयेउउछाहा॥ विमलवंसयहअनुचितएकू॥ वंधुविहायवडेहअभिषे
कू॥ प्रभुसप्रेमपछितानिसुहाई॥ हरउभगतमनकेकुटिलाई॥ दोहा॥ तेहिअवसरआयेलप
नमगनप्रेमआनंद॥ सनमानेप्रियवचनकहिरघुकुलकैरवचंद॥१४॥ चौपाई॥ वाजहिवाजनेवि
विधिविधाना॥ पुरप्रमोदनहिजाइवषाना॥ भरतआगमनसकलमनावहि॥ आवोवेगिन
यनफलपावहि॥ हाटवाटघरगलीअथाई॥ कहहिपरसपरलोगलुगाई॥ कालिलगनभ
लकेतीकवारा॥ पुजवहिविधिअभिलाषहमारा॥ कनकसिंहासनसीयसमेता॥ वैठहिराम
होयचितचेता॥ सकलकहहिकवहोयहेकाली॥ विघ्नमनावहिदेवकुचाली॥ तिनहिसु
हाइनअवधवधावा॥ चोरहिचादिनिरातिनभावा॥ सादरवोलिविनयसुरकरही॥ वा
रहीवारपायलेपरही॥ दोहा॥ विपतिहमारिविलोकिवडिमातुकरियसोइआजु॥ रामजा
हिवनराजतजिहोहिसकलसुरकाजु॥१५॥ चौपाई॥ सुनिसुरविनयठाढिपछितानी॥ भइउ

सरोजविपिनहिमराती। देषिदेवपुनिकहहिनिहोरी। मातनोहिनहिथोरीउषोरी। विसमयहरष
रहितरघुराऊ। तुमजानहुसवरामप्रभाऊ। जीवकरमवससुषदुषभागी। जाइयअवधदेवहि
तलागी। वारवारगहिचरनसकोची। चलीविचारिविवुधमतिपोची। ऊंचनिवासनीच
करतूती। देषिनसकहिपराईविभूती। आगिलिकाजविचारिवहोरी। करिहेचाहकुसलक
विमोरी। हरषिहृदयदसरथपुरआई। जनुग्रहदसादुसहदुषदाई॥दोहा॥नाममथरामंद
मतिचेरिकैकेकेरि। अजसपिटारीताहिकरिगईगिरामतिफेरि॥१६॥चौपाई॥देषिमथरानग
रवनावा। मंजुलमंगलवाजवधावा। पूछेसिलोगनिकाहउछाहू। रामतिलकसुनि
भाउरदाहू। करैविचारकुवुधिकुजाती। होइअकाजकवनिविधिराती। देषिलागिमधुकुटिल
किराती। जिमिगवतकैलेउकिहिभाती। भरतमातुपहगईविलषानी। काअनमनी
हसिकहरानी। उतरदेइनलेइउसासू। नारिचरितकरिढारइआसू। हसिकहरानिगालव
डतोरे। दीन्हलषनसिषअसमनमोरे। तवहुनवोलिचेरिवडिपापिनि। छाडइस्वासका
रिजनुसापिनि॥दोहा॥सभयरानिकहकहसिकिनकुसलरामुमहिपालु। लषनभ
रतरिपुदवनसुनिभाकुवरीउरसालु॥१७॥चौपाई॥कासोवहिसहाराअभिमानी। निक
टमहाभयतनइरानी। कतसिषदेइहमहिकोउमाई। गालुकरवकहिकरवलपाई। राम
हिछाडिकुसलकेहिआजू। जिनहिनरेसदेइजुवराजू। भएउकौसिलहिविधिअतिदाहि
न। देषतगरवरहितउरनाहिन। देषहुकसनजाइसवसोभा। जोअवलोकिमोरमनछोभा
पूतविदेसनसोचतुम्हारे। जानतिहहुवसनाहहमारे। नीदवहुतप्रियसेजतुराई
लषहुनभूपकपटचतुराई। सुनिप्रियवचनमलिनमनजानी। झुकीरानिअवरहुअर
गानी। पुनिअसकवहुकहसिघरफोरी। तवधरिजीभकढावोतोरी॥दोहा॥कानेषोरे
कूवरेकुटिलकुचालीजानि। तियविसेषिपुनिचेरिकहिभरतमातमुसकानि॥१८॥
॥चौपाई॥प्रियवादिनिसिषदीन्हेउतोही। सपनेहुतोपरकोपनमोही। सुदिनसुमंगल
दायकसोई। तोरकहाफुरजेहिदिनहोई। जेठस्वामिसेवकलघुभाई। यहदिनकरकुलरी
तिसुहाई। रामतिलकजोसाचेउकाली। देउमागुमनभावतआली। कौसल्यासमसवम
हतारी। रामहिसहजसुभायपियारी। मोपरकरहिसनेहविसेषी। मैकरिप्रीतिपरीछादे
षी। जोविधिजनमदेइकरिछोहू। होहुरामसियपूतपुतोहू। प्रानतेअधिकरामप्रियमो
रे। तिनकेतिलकछोभुकसतोरे॥अतिप्रियवचनसुनाएमोही। कहुमथरादुउकातोही
॥दोहा॥भरतसपथतोहिसत्यकहुपरहरिकपटदुराउ॥हरषसमयविसमयकरसिका
रनमोहिसुनाउ॥१९॥चौपाई॥सुनतवचनमथरारिसानी। वोलीवचनकपटछलसानी
वोलीवचनकपटछलसानी। एकहीवारआससवपूजी। अवकछुकहवजीभकरिदूजी
फोरैजोगकपारुअभागा। भलेहिकहतदुषरोरेहिलागा। कहहिझूठिफुरिवातवनाई
तेप्रियतुमहिकरुइमैमाई। हमहुकहवअवठकुरसुहाती। नाहितमौनरहवदिनराती
करिकुरूपविधिपरवसकीन्हा। ववासोलुनिअलहिअजोदीन्हा। कोउनृपहोउहमहिकाहा
नी। चेरिछाडिअवहोवकिरानी। जारैजोगसुभाउहमारा। अनभलदेषिनजाइतुम्हा
रा। तातेकछुकवातअनुसारी। छमियदेविवडिचूकहमारी॥दोहा॥गूढकपटप्रियवच
नसुनितीयअधरवुधिरानि। सुरमायावसवैरिनिहिसुहृदजानिपतिआनि॥२०॥चौपाई॥
सादरपुनिपुनिपूछतिओही। सवरीगानमृगीजनमोही। तसमतिफिरीअहइजसभा
वी। रहसीचेरिघातजनुफावी। तुमपूछहुमैकहतडराऊ। धरेउमोरघरफोरीनाऊ। सजिप्र
तीतिवहुविधिगढिछोली। अवधसाढसातीतववोली। प्रियसियरामकहातुमरानी
रामहिप्रियतुमसोफुरवानी। रहाप्रथमअवतेदिनवीते। समौफिरेरिपुहोहिपरीते। भा
नुकमलकुलपोषनहारा। विनजलजारिकरैसोछारा। जरतुम्हारिचहसौतिउषारी। रु

धहुकरिउपाउवरवारी॥दोहा॥तुमहिनसोचसुहागवलनिजवसजानहुराउ। मनमलीनमु
हमीठनृपराउरसरलसुभाउ॥२१॥चौपाई॥चतुरगंभीररामामहतारी। वीचपाइनिजवात
सवारी। पठयेभरतभूपननिओरे। राममातुमतजानवरोरे। सेवहिसकलसवतिमोहिनीके
गरवितभरतमातवलपीके। सालतुम्हारकौसिलहिमाई। कपटचतुरनहिहोइजनाई। राज
हितुमपरप्रेमविसेषी। सवतिसुभाइसकहिनहिदेषी। रचिप्रपंचभूपहिअपनाई। रामतिल
कहितलगनधराई। यहकुलउचितरामकहटीका। सवहिसुहाइमोहिसुठिनीका। आगि
लिवातसमुझिडरमोही। देवदेउफिरिसोफलहोई॥दोहा॥रचिपचिकोटिककुटिलपनकी
न्हसिकपटप्रवोध। कहेसकथासतसवतिकेजिहिविधिवादविरोध॥२२॥चौपाई॥भावीवसप्र
तीतिउरआई। पूछिरानिनिजसपथदिवाई। काइछहुतुमअवहुनजाना। निजहितअनहित
पसुपहिचाना। भयेउपाषादिनसजतसमाजू। तुमपाइसुधिमोहिसनआजू। षाइयपहि
रियराजतुम्हारे। सत्यकहेनहिदोषहमारे। जोअसत्यकछुकहववनाई। तौविधिदेइहि
हमहिसजाई। रामहितिलककालिजोभयेउ। तुमकोविपतिवीजविधिवयेउ। रेषषिचाइकहउव
लभाषी। भामिनिभइउदूधकैमाषी। जोसुतसहितकरहुसेवकाई। तौघररहहुनआनउ
पाई॥दोहा॥कद्रुविनतहीदीन्हदुषतुम्हहिकौसिलादेव। भरतवंदिगृहसेइहहिलषन
रामकेनेव॥२३॥चौपाई॥केकयसुतासुनतकटुवानी। कहिनसकतिकछुसहमिसुषानी
तनपसेउकदलीजिमिकापी। कुवरीदसनजीभजवचापी। कहिकहिकोटिककपटकहानी
धीरजधरहुप्रवोधिसिरानी। कीन्हिसिकठिनपढायकुपाठ। जिमिननवइफिरिउकठकाठ
वचनसुनतअतिरागभयमानी। दुष्टसंगतेमतिवैरानी। धर्मनिरतगुनज्ञानगंभीरा। दुष्टसंग
मतिरहैनधीरा। फिराकरमप्रियलागिकुचाली। वकहिसराहइमानिमराली। सुनुमथुरा
वातफुरतोरी। दाहिनआषिनितफरकतमोरी। दिनप्रतिदेषौरातिकुसपने। कहउनतोहिमो
हवसअपने। कहाकरौसषिसूधसुभाऊ। दाहिनवामनजानउकाऊ॥दोहा॥अपनेचलतन
आजुलगिअनभलकाहुनकीन्ह। केहिअघएकहिवारमोहिदैउदुसहदुषदीन्ह॥२४॥चौपा
ई॥नैहरजनमभरववरुजाइ। जिवतनकरवसवतिसेवकाई। अरिवसदैवजिआवतजाही
मरननीकतेहिजीवनचाही। दीनवचनकहैवहुविधिरानी। सुनीकुवरीतियमायावानी
असकसकहहुमानिमनऊना। सुषसुहागतुमकहुदिनदूना। जेहिराउरअतिअनभलता
का। सोइपाइहिपेहुफलपरियाका। जवतेकुमतसुनामैस्वामिनि। भूषनवासरनीदनजा
मिनि। पूछिहुगुनिनरेषतिनषाची। भरतभुआलहोहियहसाची। भामिनिकरहुत
कहौउपाउ। हैतुम्हरीसेवावसराउ॥दोहा॥परौकूपतुववचनपरिसकौपूतपतित्या
गि। कहसिमोरदुषदेषिवडकसनकरवहितलागि॥२५॥चौपाई॥कुवरीकरिकवुलि
कैकेई। कपटछुरीउरपाहनटेई। लषइनरानिनिकटदुषकैसे। चरइहरिततृनवलिपसुजै
से। सुनतवातमृदुअंतकठोरी। देतमनहुमधुमाहुरघोरी। कहइचेरिसुधिअहइकिनाही
स्वामिनिकहिहुकथामोपाही। दुइवरदानभूपसनथाती। मागहुआजजुडावहुछाती। सु
तहिराजरामहिवनवासू। देहुलेहुसवसवतिहुलासू। भूपतिरामसपथजवकरई। तवमा
गेहुजेहिवचननटरई। होइअकाजआजुनिसिवीते। वचनमोरप्रियमानहुजीते॥दोहा॥
वडकुघातकरिपातकिनिकहेसिकोपग्रहजाहु। काजसवारेहुसजगसवसहसाजनिप
तिआहु॥२६॥चौपाई॥कुवरिहिरानिप्रानप्रियजानी। वारवारवडिवुधिवषानी। तो
हिसमहितनमोरसंसारा। वहेजातकइभइसिअधारा। जोविधिपुरवमनोरथकाली
करौतोहिचषपूतरिआली। वहुविधिचेरिहिआदरदेई। कोपभवनगवनीकैकेई। विपति
वीजवरषारितुचेरी। भुइभइकुमतिकैकेईकेरी। पायकपटजलअंकुरजामा। वरदो
उदलदुषफलपरिनामा। कोपसमाजसाजिसवसोई। राजकरतनिजकुमतिविगोई

ई। गउरनगरकुलाहलहोई। एहकुचालिककुजानतकोई॥दोहा॥प्रमुदितपुरनरनारिसब
सजहिंसुमंगलचारु। एकप्रविसहिंएकनिर्गमहिंभीरभूपदरवार॥२२॥चौपाई॥वालस
खासुनिहियहरखाही। मिलिदसपाचरामपहिंजाही। प्रभुआदरहिंप्रेमपहिचानी। पूछ
हिंकुसलखेममृदुवानी। फिरहिंभवनप्रियआयसुपाई। करतपरसपरिरामवडाई। कोर
घुवीरसरिससंसारा। सीलसनेहनिवाहनहारा। जेहिजेहिजोनिकरमवसभ्रमही। त
हतहईसदेउयहहमही। सेवकहमस्वामीसियनाहू। होउनातयहओरनिवाहू। असअ
भिलाषनगरसवकाहू। केकयसुताहृदयअतिदाहू। कौनकुसंगतिपाइनसाई। रहेननी
चमतेचतुराई। अतिहितसीलकेकइरानी। कुब्जसंगतेमतिवौरानी॥दोहा॥सांझसम
यआनंदनृपगयेकेकईगेह। गवननिठुरतानिकटकियेजनुधरिदेहसनेह॥२४॥चौपा
ई॥कोपभवनसुनिसकुचेराऊ। भयवसअगहुडपरनपाऊ। सुरपतिवसहिवाहुवलजा
के। नृपतिसकलरहहिरुखताके। सोसुनितियरिसगयेउसुखाई। देखहुकामप्रतापवडा
ई। सूलकुलिसअसिअंगवनिहारे। तेरतिनाथसुमनसरमारे। सभयनरेसप्रियापहिंग
येउ। देखिदसादुखदारुनभयेउ। भूमिसयनपटमोटपुराना। दियेडारितनभूषननाना।
कुमतिहिकसिकुवेषताफावी। अनअहिवातसूचजनुभावी। जाइनिकटनृपकहमृ
दुवानी। प्रानप्रियाकिहहेतुरिसानी॥छंद॥किहहेतुरानिरिसानिपरसतपानिपति
हिनिवारई। मानोहुसरोषभुअंगभामिनिविषमभांतिनिहारई। दोउवासनारसना
दसनवरमरमठाहरदेखई। तुलसीनृपतिभवतव्यतावसकामकौतुकलेखई॥
सोरठा॥वारवारकहराउसुमुखिसुलोचनिपिकवचनि। कारनमोहिसुनाउगजगामिनिनिज
कोपकर॥२५॥चौपाई॥अनहितुतोरप्रियाकेइंकीन्हा। केहिदुइसिरकेहिजमचहलीन्हा। क
हुकेहिरंकहिकरौंनरेसू। केहिनृपहिनिकारौंदेसू। सकौंतोरअरिअमरउमारी।
काहाकीटवपुरेनरनारी। जानसिमोरसुभाववरोरू। मनतवआननचंदचकोरू। प्रिया
प्रानसुतसरवसमोरे। परिजनप्रजासकलवसतोरे। जोंकछुकहौंकपटकरितोही।
भामिनिरामसपथसतमोही। विहसिमागुमनभावतिवाता। भूषनसजहुमनो
हरगाता। घरीकुघरीसमुझिजियदेखू। वेगिप्रियापरिहरहुकुवेषू॥दोहा॥यह
सुनिमनगुनिसपथवडिविहसिउठीमतिमंद। भूषनसजतिविलोकिमृगमनहुकि
रातिनिफंद॥२६॥चौपाई॥पुनिकहराउसुहृदजियजानी। प्रेमपुलकिमृदुमंजुलवा
नी। भामिनिभयेउतोरमनभावा। घरघरनगरअनंदवधावा। रामहिदेउंकालिजुवरा
जू। सजहुसुलोचनिमंगलसाजू। दलकिउठेउसुनिहृदयकठोरू। जनुछुइगयेउपा
कवरतोरू। ऐसिउपीरविहसितेहिगोई। चोरनारिजिमिप्रगटनरोई। लखहिनभूपकपटच
तुराई। कोटिकुटिलमनिगुरूपढाई। जद्यपिनीतिनिपुननरनाहू। नारिचरितजलनिधि
अवगाहू। कपटसनेहवढाइवहोरी। वोलीविहसिनयनमुहुमोरी॥दोहा॥मागुमागुपै
कहहुपियकवहुनदेहुनलेहु। देनकहेउवरदानदुइतेउपावतसंदेहु॥२७॥चौपाई॥देइतनजिअ
उतजोननपाना। ववनसुननृपतिमुसकाना। जानेउमरमराउहसिकहई। तुम्हहिकोहा
उपरमप्रियअहई। थातीराखिनमागिहुकाऊ। विसरिगयेउमोहिभोरसुभाऊ। झूठेहु
हमहिदोसजनिदेहू। दुइकेचारिमागिकिनलेहू। रघुकुलरीतिसदाचलिआई। प्रानजाहुव
रुवचननजाई। नहिंअसत्यसमपातकपुंजा। गिरिसमहोहिंकिकोटिकगुंजा। सत्यमू
लसवसुकृतसुहाये। वेदपुरानविदितमनुगाये। तेहिपररामसपथकरिआई। सुकृतस
नेहअवधिरघुराई। वातदृढाइकुमतिहसिवोली। कुमतिकुविहगकुलहजनुखोली॥दोहा॥
भूपमनोरथसुभगवनसुखसुविहंगसमाज। भिल्लिनिजिमिछाडनचहतिवचनभयं
करवाज॥२८॥चौपाई॥सुनहुप्रानप्रियभावतजीका। देहुएकवरभरतहिटीका। मागौं

हुसरवरकरजोरी। पुरवहुनाथमनोरथमोरी। तापसवेषविसेषउदासी। चोदहवरिसरा
मवनवासी। सुनिमृदुवचनभूपहियसोकू। ससिकरछुअतविकलजिमिकोकू। [illegible]
मरकिपरानृपकेसे। काटेउपंखपरेउखगजैसे। गयेउसहमिनहिकछुकहिआवा। जनु
सिचानवनझपटेउलावा। विवरनभयेउनिपटनरपालू। दामिनिहनेउमनहुतरुतालू। अ
तिव्याकुलतनविगतकेसा। करिधीरजपुनिउठेउनरेसा। [illegible]
पुनिपुनिस्वासलेतअतिगाढी। माथेहाथमूदिदोउलोचन। तनुधरिसोकलागजनुसो
चन। मोरमनोरथसुरतरुफूला। फरतकरिनिजिमिहतेउसमूला। अवधउजारिकीन्हि
कैकेई। दीन्हसिअचलविपतिकैनेई॥दोहा॥कवनेअवसरकाभयेउगयेउनारि
विस्वास। जोगसिद्धिफलसमयजिमिजतीहिअविद्यानास॥२९॥चौपाई॥येहिविधि
राउमनहिमनझांखा। देखिकुभांतिकुमतिमनमाखा। भरतकिराउरपूतनहोही। आनेहु
मोलविसाहकिमोही। जोसुनिसरअसलागितुम्हारे। काहेनवोलेहुवचनसम्हारे। देहु
उतरुअनुकरहुकिनाही। सत्यसंधतुमरघुकुलमाही। देनकहेउअवजनिवरदेहू। तज
हुसत्यजगअपजसलेहू। सत्यसराहिकहेउवरदेना। जानेहुलेइहिमागिचवेना। सिवि
दधीचवलिजोकछुभाषा। तनुधनतजेउवचनपनराषा। अतिकटुवचनकहतिकेकेई।
मानोलोनजरेपरदेई॥दोहा॥धरमधुरंधरधीरधरिनयनउघारेराय। सिरधुनिलीन्हि
उसासअसिमारेसिमोहिकुठाय॥३०॥चौपाई॥आगेदेखिजरतिरिसभारी। मनहुरोष
तरवारिउघारी। मूठिकुवुद्धिधारनिठुराई। धरीकूवरीसानवनाई। लखीमहीपक
रालकठोरा। सत्यकिजीवनलेइहिमोरा। वोलेराउकठिनकरिछाती। वानीविनय
जतासुसुहाती। प्रियावचनकसकहसिकुभाती। भीरप्रतीतिप्रीतिकरिहाती।
अवकाकुमतिवसीजियतोरे। भुवलसिकहसिरामप्रियमोरे। मोरेभरतरामदोउ
आंखी। सत्यकहौकरिसंकरसाखी। अवसिदूतमैपठवप्राता। अइहहिवेगिसुनतदो
उभ्राता। सुदिनसोधिसवसाजसजाई। देहुभरतकहराजवजाई। [illegible]
रोसुनरानी। रामसराहहुकेकईअसवानी॥दोहा॥लोभनरामहिराजकरवहुतभ
रतपरप्रीति। मैवडछोटविचारिजियकरतरहेउनृपनीति॥३१॥चौपाई॥विनर
घुपतिसमजीवननही। प्रियाविचारदेखिमनमाही। रामसपथसतकहउसुभाऊ।
राममातुकछुकहेउनकाऊ। मैसवकीनतोहिविनपूछे। तेहितेपरेउमनोरथछूछे।
रिसपरिहरिअवमंगलसाजू। कछुदिनगयेभरतजुवराजू। एकहिवातमोहिदुख
लागी। वरदूसरअसमंजसमागी। अजहुहृदयजरततेहिआंचा। रिसपरिहासकिसा
चेहुसाचा। कहुतजिरोषरामअपराधू। सवकोउकहइरामसुठिसाधू। तुमहुसराह
सिकरसिसनेहू। अवसुनिमोहिभयेउसंदेहू। जासुसुभाउअरिहिअनुकूला। सोकिमि
करहिमातुप्रतिकूला॥दोहा॥प्रियाहासरिसपरिहरहुमागुविचारिविवेक। जिहिदे
खौअवनयनभरिभरतराजअभिषेक॥३२॥चौपाई॥जिवैमीनवरुवारिविहीना। मनि
विनफनिकजिवैदुखदीना। कहउसुभाउनछलमनमाही। जीवनमोररामविननाही।
समुझिदेखिजियप्रियाप्रवीना। जीवनरामदरसआधीना। जद्यपिनृपअतिकीन्हवि
होरा। मानेनहिअतिहृदयकठोरा। सुनिमृदुवचनकुमतिअतिजरई। मनहुअनलआहु
तिघृतपरई। कहइकरहुकिनकोटिउपाया। इहांनलागिहिराउरमाया। देहुकिलेहुअजस
करीनांही। मोहिनवहुतप्रपंचसुहाही। रामसाधुतुमसाधुसयाने। राममातुभलसव
पहिचाने। जसकौसल्यामोरभलताका। तसफलउनहिदेउकरिसाका॥दोहा॥हो
तप्रातमुनिवेषधरिजोनरामवनजाहि। मोरमरनराउरअजसनृपसमुझिअमनमाहि
॥३३॥चौपाई॥असकहिकुटिलभईउठिठाढी। मानहुरोषतरंगिनिवाढी। पापपहारप्र

गटभइसोई॥ भरीक्रोधजलजाइनजोई॥ दोउवरकूलकठिनहठधारा॥ भवरकूवरी
वचनप्रचारा॥ ढहतभूपरूपतरुमूला॥ चलीविपतिवारिधिअनुकूला॥ लषीनरेसवातस
वसांची॥ तियमसमीचुसीसपरिनाची॥ गहिपदविनयहिदेउजोही॥ रामविरहजिनिमार
सिमोही॥ राषुरामकहुजेहिभांती॥ नाहितजरिहिजनमभरिछाती॥ दो॰॥ देषीव्या
धिअसाधिनृपपरेउधरनिधुनिमाथ॥ कहतपरमआरतवचनरामरामरघुनाथ॥३९॥
चौ॰ १॥ व्याकुलराउसिथिलसवगाता॥ करनिकलपतरुमनहुनिपाता॥ कंठसूषमु
षआवनवानी॥ जनुपाठीनदीनविनुपानी॥ पुनिकहकटुकठोरकैकेई॥ मनहुघायम
हुमाहुरदेई॥ जोअंतहुअसकरतवरहेउ॥ मागुमागुतुमकेहिवलकहेउ॥ दुइकिहोइए
कसमयभुआला॥ हसवठठाइफुलाउवगाला॥ दानिकहाउवअरुकृपनाई॥ होइकिषे
मकुसलरौताई॥ छाडहुवचनकिधीरजधरहू॥ जनिअवलाजिमिकरुनाकरहू॥ तन
तीयसुतधामधनधरनी॥ सत्यसंधकहतृनसमवरनी॥ दीन्हदानफिरिमागसिराजा
परहरिलोकवेदकेलाजा॥ होनप्रातसुतवनहिनजाई॥ चौथेपननृपजसनसाई॥
दो॰॥ मरमवचनसुनिराउकहकछुदोसनहितोर॥ लागउतोहिपिसाचजिमकाल
कहावतमोर॥४०॥ चौ॰ १॥ चहतनभरतभूपतिहिभोरे॥ विधिवसकुमतिवसीउरतो
रे॥ सोसवमोरपापपरनामू॥ भयउकुठाहरजेहिविधिवामू॥ सुवसवसहिफिरिअवध
सुहाई॥ सवगुनधामरामप्रभुताई॥ करिहहिभाइसकलसेवकाई॥ होइहितिहुपुर
रामवडाई॥ तोरकलंकमोरपछिताउ॥ मुयेहुनमिटिहिनजाइहिकाउ॥ अवतोहिनीक
लागकरुसोई॥ लोचनओटवैठमुहगोई॥ फिरिपछितैहसिअंतअभागी॥ मारसिगा
ईनिहारूलागी॥ दो॰॥ परेउराउकहिकोटिविधिकाहेकरसिनिदान॥ कपटसयानि
नकहतकछुजागतिमनहुमसान॥४१॥ चौ॰ १॥ रामरामरटविकलभुआल॥ जनु
विनुपंषविहंगविहाल॥ हृदयमनाउभोरजनिहोई॥ रामहिजाइकहइजनिकोई॥ उ
दउकरहुजनिरविरघुकुलगुरु॥ अवधिविलोकिसूलहोइहइउरु॥ भूपप्रीतिकैकेइ
कठिनाई॥ उभयअवधिविधिरचीवनाई॥ विलपतनृपहिभयउभिनुसारा॥ वीनावे
नसंषधुनिद्वारा॥ पढहिभाटगुनगावहिगायक॥ सुनतनृपहिजनुलागहिसाय
क॥ मंगलसकलसुहाहिनकैसे॥ सहगामीनिहिविभूषनजैसे॥ तिहिनिसिनीदपरीन
हिकाहू॥ रामदरसलालसाउछाहू॥ कवहिउगैरविहोयविहाना॥ देषियनयनन्हके
पानियाना॥ राजआरूढअनुजअभिसेषा॥ सोभाननसतकोटिअनंगा॥ करतमनोरथा
निसासिरानी॥ प्रातप्रगटजागमनिसानी॥ दो॰॥ द्वारभीरसेवकसचिवकहहिउदित
रविदेषि॥ जागेनअजहूअवधपतिकारनकवनविसेषि॥४२॥ चौ॰ १॥ तवहिवसिष्ठ
सुमंत्रवुलाये॥ हृदयहरषिआतुरचलिआये॥ पछिलेपहरभूपनितजागा॥ आजहमहि
वडअचरजलागा॥ जाहुसुमंतजगावहुजाई॥ कीजियेकाजरजायसुपाई॥ गयेसुमं
ततवराउरमाही॥ देषिभयावनजातडराही॥ धाइषाइजनुजाइनहेरा॥ मानहुविपतिविषाद
वसेरा॥ पूछेकोउनउतरदेई॥ गयेजेहिभवनभूपकैकेई॥ कहिजयजीववैठिसिरनाई
देषिभूपगतिगयेउसुषाई॥ सोचविकलविवरनमहीपरेउ॥ मानोकमलमूलपरिहरेउ
सचिवसभीतसकैनहिपूछी॥ वोलीअसुभभरीसुभछूछी॥ दो॰॥ परीनराजहिनीदनि
सिहेतजानजगदीस॥ रामरामरटिभोरकियकहिनसकमरममहीस॥४३॥ चौ॰ १॥ आनहु
रामहिवेगिवोलाई॥ समाचारतवपूछेउआई॥ चलेउसुमंतरायरुषजानी॥ लषीउकुचालि
कीन्हकछुरानी॥ सोचविकलमगपरइनपाऊ॥ रामहिवोलिकहहिकाराऊ॥ उरधरिधी
रजगयेउदुआरे॥ पूछहिसकलदेषिमनमारे॥ समाधानकरिसोसवहीका॥ गयेउजहा
दिनकरकुलटीका॥ रामसुमंतहिआवतदेषा॥ आदरकीन्हपितासमलेषा॥ निरषिवदन

कहिभूपरजाई॥ रघुकुलदीपहिचलेलवाई॥ रामकुभांतिसचिवसंगजाही॥ देषिलोगज
हतहविलषाही॥ दो॰॥ जाइदीषरघुवंसमनिनरपतिनिपटकुसाज॥ सहमिपरेउलषिसिं
घिनिहिमनहुवृद्धगजराज॥४४॥ चौ॰ १॥ सूषहिअधरजरइसवअंग॥ मनहुदीनमनि
हीनभुअंग॥ सरुषसमीपदेषिकैकेई॥ मानहुमीचघरीगनिलेई॥ करुनामयमृदुरामसु
भाऊ॥ प्रथमदीषदुषसुनानकाऊ॥ तदपिधीरधरिसमउविचारी॥ पूछीमधुरवचनम
हतारी॥ चरननाइसिरुहैकरजोरी॥ वोलेवचनसुधाजनुवोरी॥ मोहिकहुमाततातदु
षकारन॥ करियजतनजेहिहोइनिवारन॥ सुनहुरामसवकारनयेहू॥ राजहितुमप
रिवहुतसनेहू॥ देनकहेन्हिमोहिदोउवरदाना॥ मांगेउजोकछुमोहिसुहाना॥ सोसुनिभ
येउभूपउरसोच॥ छाडिनसकहितुम्हारसकोच॥ दो॰॥ सुतसनेहइतवचनउतसंकटप
रेउनरेस॥ सकहुतोआयसुधरहुसिरमेटहुकठिनकलेस॥४५॥ चौ॰ १॥ निधरकवैठिकहे
कटुवानी॥ सुनतकठिनताअतिअकुलानी॥ जीभकमानवचनसरनाना॥ मनहुमही
पमृदुलछसमाना॥ जनुकठोरपनधरेउसरीरू॥ सिषइधनुषविद्यावरवीरू॥ सवप्रसंगर
घुपतिहिसुनाई॥ वैठिमनोतनधरिनिठुराई॥ मनमुसुकाहिभानकुलभानू॥ रामसहजआ
नंदनिधानू॥ वोलेवचनविगतसवदूषन॥ मृदुमंजुलजनुवागविभूषन॥ सुनुजननि
सोईसुतवडभागी॥ जोपितुमातुवचनअनुरागी॥ तनयमातुपितुतोषनिहारा॥ दुर्लभज
ननिसकलसंसारा॥ दो॰॥ मुनिगनमिलनविसेषवनसवहिभांतिहितमोर॥ तेहिमहपि
तुआयसुवहुरिसंमतजननीतोर॥४६॥ चौ॰ १॥ भरतप्रानप्रियपावहिराज॥ विधिस
वविधिमोहिसनमुषआज॥ जोनजाउंवनयेसेउकाजा॥ प्रथमगनियमोहिमूढसमाजा
सेवहिअरंडकलपतरुत्यागी॥ परहरिअमृतलेहिविषमागी॥ तेउनपाइअससमउचुका
ही॥ देषुविचारिमातमनमाही॥ अवरएकदुषमोहिविसेषी॥ निपटविकलनरनायकदेषी
थोरीवातपितहिदुषभारी॥ होतिप्रतीतिनमोहिमहतारी॥ राउधीरगुनउदधिअगाधू
भामोहितेकछुवडअपराधू॥ जातेमोहिनकहतकछुराउ॥ मोरिसपथतोहिकहुसतिभा
उ॥ दो॰॥ सहजसरलरघुवरवचनकुमतिकुटिलकरिजान॥ चलइजोकजलवक्रगतिज
द्यपिसलिलसमान॥४७॥ चौ॰ १॥ विहसीरानीरामरुषपाई॥ वोलीकपटसनेहजनाई
सपथतुम्हारभरतकैआना॥ हेतुनदूसरमैकछुजाना॥ तुमअपराधजोगनहीताता
जननीजनकवंधुसुषदाता॥ रामसत्यसवजोकछुकहहू॥ तुमपितुमातुवचनरतअह
हू॥ पितहिवुझाइकहहुवलिसोई॥ चौथेपनजेहिअजसनहोई॥ तुमसमसुअनसुकृ
तजेहिदीन्हे॥ उचितनतासुनिरादरकीन्हे॥ लागहिकुमुषवचनसुभकैसे॥ मगहगयादि
कतीरथजैसे॥ रामहिमातुवचनसवभाए॥ जिमिसुरसरिगतसलिलसुहाए॥ दो॰॥ गइ
मुरुछारामहिसुमिरिनृपफिरिकरवटलीन॥ सचिवरामआगमनकहिविनयसमयस
मकीन्ह॥४८॥ चौ॰ १॥ अवनिपअकनिरामपगुधारे॥ धरिधीरजतवनयनउघारे॥ सचि
वसम्हारिराउवैठारे॥ चरनपरतनृपरामनिहारे॥ लियेसनेहविकलउरलाई॥ गैमनि
मनहुफनिकफिरिपाई॥ रामहिचितइरहेउनरनाहू॥ चलाविलोचनवारिप्रवाहू॥ सो
कविवसकछुकहैनपारा॥ हृदयलगावतवारहीवारा॥ विधिहिमनावराउमनमाही
जेहिरघुनाथनकाननजाही॥ सुमरिमहेसहिकहइनिहोरी॥ विनतीसुनहुसदासिव
मोरी॥ आसुतोषतुमअवढरदानी॥ आरतहरहुदीनजनजानी॥ दो॰॥ तुमप्रेरकस
वकेहृदयसोमतिरामहिदेहु॥ वचनमोरतजिरहहिघरपरहरिसीलसनेहु॥४९॥ चौ
॰ १॥ अजसहोहुजगसुजसनसाऊ॥ नरकपरोवरसुरपुरजाऊ॥ सवदुषदुसहसहावहु
मोही॥ लोचनओटरामजिनहोही॥ अससमनगुनइराउनहिवोला॥ पीपरपातसरिसमन
डोला॥ रघुपतिपितहिप्रेमवसजानी॥ पुनिकछुकहहिमातअनुमानी॥ देसकालअवस

रअनुसारी॥ सो लेवचन विनीत विचारी॥ तात कहौ कछु करौ ढिठाई॥ अनुचित छमव जानि
लरिकाई॥ अति लघु वात लागि दुषु पावा॥ काहु न मोहि कहि प्रथम जनावा॥ देषि गोसाइ
हि पूछेउ माता॥ सुनि प्रसंग भए सीतल गाता॥ दो॥ मंगल समय सनेह वस सोच परिहरि
य तात॥ आयसु देइअ हरषि हिय कहि पुलके प्रभु गात॥ ५५॥ चौ॥ धन्य जनम जगती त
ल तासू॥ पितहि प्रमोद चरित सुनि जासू॥ चारि पदारथ करतल ताकें॥ प्रिय पितु मातु
प्रान सम जाकें॥ आयसु पालि जनम फल पाई॥ ऐहौं वेगिहि होउ रजाई॥ विदा मातु सन
आवौं मांगी॥ चलिहौं वनहि वहुरि पग लागी॥ अस कहि राम गवन तव कीन्हा॥ भूप
सोक वस उतरु न दीन्हा॥ नगर व्यापि गइ वात सुतीछी॥ छुवत चढी जनु सव तन वीछी॥ सु
नि भए विकल सकल नर नारी॥ वेलि विटप जिमि देषि दवारी॥ जो जहं सुनइ धुनइ सिर
सोई॥ वड विषाद नहि धीरज होई॥ दो॥ मुष सुषाहि लोचन स्रवहि सोक न हृदय समाइ॥
मनहु करुन रस कटकई उतरी अवध पिर आइ॥ ५६॥ चौ॥ मिलेहि मांझ विधि वात विगा
री॥ जहं तहं देहि कैकेइहि गारी॥ एहि पापिनिहि वूझि का परेऊ॥ छाइ भवन पर पावक ध
रेऊ॥ निज कर नयन काढि चह देषा॥ डारि सुधा विषु चाहत चाषा॥ कुटिल कठोर कुवुद्धि
अभागी॥ भइ रघुवंस वेनु वन आगी॥ पालव वैठि पेड एहि काटा॥ सुष महुं सोक ठाटु धरि ठाटा॥
सदा राम एहि प्रान समाना॥ कारन कवन कुटिलपनु ठाना॥ सत्य कहहि कवि नारि सुभाऊ॥
सव विधि अगम अगाध दुराऊ॥ निज प्रतिविंव वरुकु गहि जाई॥ जानि न जाइ नारि गति
भाई॥ दो॥ काह न पावकु जारि सक का न समुद्र समाइ॥ का न करइ अवला प्रवल केहि
न कालु न षाइ॥ ५७॥ चौ॥ का सुनाइ विधि काह सुनावा॥ का दिषाइ चह काह दिषावा॥
एक कहहि भल भूप न कीन्हा॥ वरु विचारि नहि कुमतिहि दीन्हा॥ जो हठि भयेउ सकल दुष भा
जनु॥ अवला विवस ग्यानु गुनु गा जनु॥ एक धरम परमिति पहिचांने॥ नृपहि दोस नहि देहि
सयाने॥ सिवि दधीच हरिचंद कहांनी॥ एक एक सन कहहि वषानी॥ एक भरत कर संमत कहही॥
एक उदास भाय सुनि रहही॥ कान मूंदि कर रद गहि जीहा॥ एक कहहि यह वात अलीहा॥ सुकृत
जाहि अस कहत तुम्हारे॥ राम भरत कहु प्रान पिआरे॥ दो॥ चंद चवै वरु अनल कन सुधा हो
य विष तूल॥ सपनेहु कवहु न करहि किछु भरत राम प्रतिकूल॥ ५८॥ चौ॥ एक विधातहि
दूषन देही॥ सुधा दिषाइ दीन्ह विषु जेही॥ षरभरु नगर सोचु सव काहू॥ दुसह दाहु उर मिटा
उछाहू॥ विप्रवधू कुलमान्य जठेरी॥ जे प्रिय परम कैकई केरी॥ लगीं देन सिष सील सराही॥
वचन वांन सम लागत ताही॥ भरत न मोहि प्रिय राम समांनां॥ सदा कहहु यहु सवु जगु
जांनां॥ करहु राम पर सहज सनेहू॥ केहि अपराध आजु वनु देहू॥ कवहु न कियहु सवति
आरेसू॥ प्रीति प्रतीति जानि सवु देसू॥ कौसल्या अव काह विगारी॥ तुम्ह जेहि लागि वज्र पु
र पारी॥ दो॥ सीय कि पिय संग परिहरिहि लषन कि रहिहहि धाम॥ राजु कि भूंजव भरत
पुर नृप कि जिइहि विनु राम॥ ५९॥ चौ॥ अस विचारि उर छाडहु कोहू॥ सोक कलंक को
ठि जनि होहू॥ भरतहि अवसि देहु जुवराजू॥ कानन काह राम कर काजू॥ नाहिन राम रा
ज के भूषे॥ धरम धुरीन विषय रस रूषे॥ गुर गृह वसहु राम तजि गेहू॥ नृप सन अस वरु दूस
र लेहू॥ जौ नहि लगिहहु कहे हमारे॥ नहि लागिहि कछु हाथ तुम्हारे॥ जौ परिहास कीन्ह
कछु होई॥ तौ कहि प्रगट जनावहु सोई॥ राम सरिस सुत कांनन जोगू॥ काह कहिहि सुनि
तुम कहु लोगू॥ उठहु वेगि सोइ करहु उपाई॥ जेहि विधि सोकु कलंकु नसाई॥ छं॥
जेहि भांति सोकु कलंकु जाइ उपाइ करि कुल लही॥ हठि फेरु रामहि जात वन जनि
वात दूसरि चालही॥ जिमि भानु विनु दिनु प्रान विनु तनु चंद विनु जिमि जामिनी॥
तिमि अवध तुलसीदास प्रभु विनु समुझि धौ जिय भामिनी॥ सो॥ सषिन्ह सि
षावन दीन्ह सुनत मधुर परिनाम हित॥ तेहि कछु कान न कीन्ह कुटिल प्रवोधी कूवरी॥

६०॥ चौ॥ उतरु न देइ दुसह रिस रूषी॥ मृगन्हि चितव जनु वाघिनि भूषी॥ व्याधि असाधि
जानि तिन्ह त्यागी॥ चलीं कहत मतिमंद अभागी॥ राजु करत यह दैव विगोई॥ कीन्हेसि अ
स जस करइ न कोई॥ एहि विधि विलपहि पुर नर नारीं॥ देहि कुचालिहि कोटिक गारीं॥
जरहि विषम जर लेहि उसासा॥ कवन राम विनु जीवन आसा॥ विपुल वियोग प्रजा अकु
लांनी॥ जनु जलचर गन सूषत पांनी॥ अति विषाद वस लोग लुगाई॥ गये मातु पहि
राम गुसांई॥ मुष प्रसन्न चित चौगुन चाऊ॥ हृदय सोच जनि राषहु राऊ॥ दो॥ नव गय
दु रघुवीर मनु राज अलान समान॥ छूट जानि वन गवनु सुनि उर आनंदु अधिकान॥
६१॥ चौ॥ रघुकुल तिलक जोरि दोउ हाथा॥ मुदित मातु पद नायउ माथा॥ दीन्हि असी
स लाइ उर लीन्हे॥ भूषन वसन निछावरि कीन्हे॥ वार वार मुष चुंवति माता॥ नयन
नेह जल पुलकित गाता॥ गोद राषि पुनि हृदय लगाये॥ स्रवत प्रेम रस पयद सुहाये॥
प्रेम प्रमोद न कछु कहि जाई॥ रंक धनद पदवी जनु पाई॥ सादर सुंदर वदन निहारी॥
वोली मधुर वचन महतारी॥ कहहु तात जननी वलिहारी॥ कवहि लगन मुद मंगल
कारी॥ सुकृत सील सुष सींव सुहाई॥ जनम लाभ कइ अवधि अघाई॥ दो॥ जेहि चाह
त नर नारि सव अति आरत एहि भांति॥ जिमि चातक चातकि तृषित वृष्टि सरद रितु
स्वांति॥ ६२॥ चौ॥ तात जाउ वलि वेगि नहाहू॥ जो मन भाव मधुर कछु षाहू॥ पितु सम
पि तव जाएहु भैआ॥ भइ वडि वार जाइ वलि मैआ॥ मातु वचन सुनि अति अनुकूला॥ जनु सने
ह सुरतरु के फूला॥ सुष मकरंद भरे श्रिय मूला॥ निरषि राम मन भवरु न भूला॥ धरम धुरीन धरम गति जानी॥ कहेउ मातु सन अति मृदु
वानी॥ पिता दीन्ह मोहि कानन राजू॥ जहं सव भांति मोर वड काजू॥ आयसु देहि मु
दित मन माता॥ जेहि मुद मंगल कानन जाता॥ जनि सनेह वस डरपसि भोरे॥ आनंद अं
वु अनुग्रह तोरे॥ दो॥ वरष चारि दस विपिन वसि करि पितु वचन प्रमान॥ आइ पाय
पुनि देषिहौं मन जनि करसि मलान॥ ६३॥ चौ॥ वचन विनीत मधुर रघुवर के॥ सर सम ल
गे मातु उर करके॥ सहमि सूषि सुनि सीतल वानी॥ जिमि जवास परे पावस पानी॥ कहि
न जाइ कछु हृदय विषादू॥ मनहु मृगी सुनि केहरि नादू॥ नयन सजल तन थर थर
कांपी॥ मांजहि षाइ मीन जनु मापी॥ धरि धीरजु सुत वदन निहारी॥ गदगद वचन कह
ति महतारी॥ तात पितहि तुम्ह प्रान पिआरे॥ देषि मुदित नित चरित तुम्हारे॥ राजु देन
कहु सुभ दिन साधा॥ कहेउ जान वन केहि अपराधा॥ तात सुनावहु मोहि निदानू॥
को दिनकर कुल भयेउ कृसानू॥ दो॥ निरषि राम रुष सचिव सुत कारन कहेउ वु
झाइ॥ सुनि प्रसंग रहि मूक जिमि दसा वरनि नहि जाइ॥ ६४॥ चौ॥ राषि न सकइ न
कहि सक जाहू॥ दुहूं भांति उर दारुन दाहू॥ लिषत सुधाकर गा लिषि राहू॥ विधि गति
वाम सदा सव काहू॥ धरम सनेह उभय मति घेरी॥ भइ गति सांप छछुंदरि केरी॥ राषौ सु
तहि करौ अनुरोधू॥ धरम जाइ अरु वंधु विरोधू॥ कहौं जान वन तौ वडि हानी॥ संकट सो
च विवस भइ रानी॥ वहुरि समुझि तिय धरम सयानी॥ राम भरत दोउ सुत सम जानी॥
सरल सुभाउ राम महतारी॥ वोली वचन धीर धरि भारी॥ तात जाउ वलि कीन्हेहु नीका॥
पितु आयसु सव धरम क टीका॥ दो॥ राजु देन कहि दीन्ह वनु मोहि न सो दुष लेसु॥
तुम्ह विनु भरतहि भूपतिहि प्रजहि प्रचंड कलेसु॥ ६५॥ चौ॥ जौ केवल पितु आयसु ता
ता॥ तौ जनि जाहु जानि वडि माता॥ जौ पितु मातु कहेउ वन जांना॥ तौ कानन सत अ
वध समांना॥ पितु वनदेव मातु वनदेवी॥ षग मृग चरन सरोरुह सेवी॥ अंतहु उचित न
पहि वनवासू॥ वय विलोकि हिय होत हरासू॥ वडभागी वनु अवध अभागी॥ जो रघु
वंस तिलक तुम्ह त्यागी॥ जौ सुत कहौं संग मोहि लेहू॥ तुम्हरे हृदय होइ संदेहू॥ पूत पर
म प्रिय तुम्ह सव ही के॥ प्रान प्रान के जीवन जी के॥ ते तुम्ह कहहु मातु वन जाऊं॥ मै सुनि

वचनवेविपाहितलागि ॥दो॥ यहविचारिनहिंकरौहठझूठसनेहुवढाइ ॥ मानिमातुकर
नातवलिसुरतिविसरिजनिजाइ ॥५६॥ चौपाई ॥ देवपितरसवतुम्हहिगोसांई ॥ राखहुपु
लकनयनकीनांई ॥ अवधिअंवुप्रियपरिजनमीना ॥ तुम्हकरुनाकरधरमधुरीना
॥ असविचारिसोइकरहुउपाई ॥ सवहिजिअतजेहिभेटहुआई ॥ जाहुसुषेनवनहिवलि
जाऊ ॥ करिअनाथजनपरिजनगांऊ ॥ सवकरआजुसुकृतफलवीता ॥ भयेउकरा
लकालविपरीता ॥ वहुविधिविलपिचरनलपटानी ॥ परमअभागिनिआपुहिजानी
॥ दारुनदुसहदाहउरव्यापा ॥ वरनिनजाहिविलापकलापा ॥ रामउठाइमातुउरलाई ॥ क
हिमृदुवचनवहुरिसमुझाई ॥दो॥ समाचारतेहिसमयसुनिसीयउठीअकुलाइ ॥ जा
इसासुपदकमलजुगवंदिवैठिसिरनाइ ॥५७॥ चौपाई ॥ दीन्हअसीससासुमृदुवा
नी ॥ अतिसुकुमारिदेषिअकुलानी ॥ वैठिनमितमुषसोचतिसीता ॥ रूपरासिपतिप्रेम
पुनीता ॥ चलनचहतवनजीवननाथू ॥ केहिसुकृतीसनहोइहिसाथू ॥ कीतनुप्रान
किकेवलप्राना ॥ विधिकरतवकछुजाइनजाना ॥ चारुचरननषलेषतिधरनी ॥ नूपुरमु
षरमधुरकविवरनी ॥ मनहुप्रेमवसविनतीकरही ॥ हमहिसीयपदजनिपरिहरही
मंजुविलोचनमोचतिवारी ॥ वोलीदेषिराममहतारी ॥ तातसुनहुसियअतिसुकुमारी
सासुससुरपरिजनहिपिआरी ॥दो॥ पिताजनकभूपालमनिससुरभानुकुलभा
नु ॥ पतिरविकुलकैरवविपिनविधुगुनरूपनिधान ॥५८॥ चौपाई ॥ मैपुनिपुत्रवधूप्रिय
पाई ॥ रूपरासिगुनसीलसुहाई ॥ नयनपुतरिकरिप्रीतिवढाई ॥ राषेउप्रानजानकी
हिलाई ॥ कलपवेलिजिमिवहुविधिलाली ॥ सीचिसनेहसलिलप्रतिपाली ॥ फूलत
फलतभयेउविधिवांमा ॥ जानिनजाइकहापरिनांमा ॥ पलंगपीठतजिगोदहिंडोरा
सीयनदीन्हपगुअवनिकठोरा ॥ जीवनमूरिजिमिजोगवतरहऊं ॥ दीपवातिनहिटार
नकहऊं ॥ सोइसियचलनचहतिवनसाथा ॥ आयसुकहाहोइरघुनाथा ॥ चंदकिरनरस
रसिकचकोरी ॥ रविरुषनयनसकैकिमिजोरी ॥दो॥ करिकेहरिनिसिचरचरहिदु
ष्टजंतुवनभूरि ॥ विषवाटिकाकिसोहसुतसुभगसजीवनमूरि ॥५९॥ चौपाई ॥ वन
हितकोलकिरातकिसोरी ॥ रचीविरंचिविषयसुषभोरी ॥ पाहनकृमिजिमिकठिन
सुभाऊ ॥ तिनहिकलेसनकाननकाऊ ॥ कैतापसतियकाननजोगू ॥ जिनतपहेत
तजासवभोगू ॥ सियवनवसिहितातकिहभांती ॥ चित्रलिषितकपिदेषिडेराती ॥ सुर
सुरसरसुभगवनजवनचारी ॥ डावरजोगकिहंसकुमारी ॥ असविचारिजसआयसु
होई ॥ मैसिषदेउजानकीहिसोई ॥ जोसीयभवनरहैकहअंवा ॥ मोहिकहहोइवहुतअ
वलंवा ॥ सुनिरघुवीरमातप्रियवानी ॥ सीलसनेहसुधाजनुसांनी ॥दो॥ कहिप्रियव
चनविवेकमयकीन्हमातुपरितोष ॥ लगेप्रवोधनजानकीहिप्रगटविपिनगुनदोष ॥
६०॥ चौपाई ॥ मातुसमीपकहतसकुचांही ॥ वोलेसमउसमुझिमनमांही ॥ राजकुमा
रिसिषावनसुनहू ॥ आनभांतिजियजनिकछुगुनहू ॥ आयसुमोरसासुसेवकाई
सवविधिभामिनिभवनभलाई ॥ येहितेअधिकधरमनहिदूजा ॥ सादरसासुससुरप
दपूजा ॥ जवजवमातुकरहिसुधिमोरी ॥ होइहैप्रेमविकलमतिभोरी ॥ तवतवतुमकहि
कथापुरांनी ॥ सुंदरिसमुझायहुप्रियवानी ॥ कहौसुभायसपथसतमोही ॥ सुमुषिमा
तुहितराषौतोही ॥दो॥ गुरुश्रुतिसंमतधरमफलपाइअविनहिकलेस ॥ हठवससव
संकटसहेगालवनहुषनरेस ॥६१॥ चौपाई ॥ मैपुनिकरिप्रमानपितुवांनी ॥ वेगि
फिरवसुनिसुमुषिसयानी ॥ दिवसजातनहिलागहिवारा ॥ सुंदरिसिषावनुसुनहु
हमारा ॥ जोहठकरहुप्रेमवसवांमा ॥ तौतुमदुषपाउवपरिनांमा ॥ काननकठिनभयं
करभारी ॥ घोरघामहिमवारिवयारी ॥ कुसकंटकमगकांकरनाना ॥ चलवपयादेहि

विनुपदत्रांना ॥ चरनकमलमृदुमंजुतुम्हारे ॥ मारगअगमभूमिधरभारे ॥ कंदरषोहनदी
नदनारे ॥ अगमअगाधनजातनिहारे ॥ भालुवाघवृककेहरिनागा ॥ करहिनादसुनि
धीरजभागा ॥दो॥ भूमिसयनवलकलवसनअसनकंदफलमूल ॥ तेकिसदासवदि
नमिलहिसवसमयअनुकूल ॥६२॥ चौपाई ॥ नरअहाररजनीचरचरही ॥ कपटवेष
विधिकोटिककरही ॥ लागइअतिपहारकरपानी ॥ विपिनविपतिनहिजाइवषानी ॥
व्यालकरालविहगवनघोरा ॥ निसिचरनिकरनारिनरचोरा ॥ डरपहिधीरगहनसु
धिआए ॥ मृगलोचनितुमभीरुसुभाए ॥ हंसगवनितुमनहिवनजोगू ॥ सुनिअपजसमो
हिदेइलोगू ॥ मानससलिलसुधाप्रतिपाली ॥ जिअकिलवनपयोधिमराली ॥ नवर
सालवनविहरनसीला ॥ सोहकिकोकिलविपिनकरीला ॥ रहहुभवनअसहृदय
विचारी ॥ चंदवदनिदुषकाननभारी ॥दो॥ सहजसुहृदगुरस्वामिसिषजोनकरइ
सिरमांनि ॥ सोपछिताइअघाइउरअवसिहोइहितहांनि ॥६३॥ चौपाई ॥ सुनिमृदुवच
नमनोहरपियके ॥ लोचनललितभरेजलसीयके ॥ सीतलसिषदाहकभइकैसे ॥ च
कइहिसरदचंदनिसिजैसे ॥ उतरनआवविकलवैदेही ॥ तजनचहतसुचिस्वामिसने
ही ॥ वरवसरोकिविलोचनवारी ॥ धरिधीरजउरअवनिकुमारी ॥ लागिसासुपगकह
करजोरी ॥ छमवदेविवडिअविनयमोरी ॥ दीन्हिप्रानपतिमोहिसिषसोई ॥ जेहिविधि
मोरपरमहितहोई ॥ मैपुनिसमुझिदीषमनमांही ॥ पियवियोगसमदुषजगनांही
॥दो॥ प्राननाथकरुनायतनसुंदरसुषदसुजान ॥ तुमविनुरघुकुलकुमुदविधु
सुरपुरनरकसमान ॥६४॥ चौपाई ॥ मातुपिताभगिनीप्रियभाई ॥ प्रियपरिवारसु
हृदसमुदाई ॥ सासससुरगुरसजनसहाई ॥ सुतसुंदरसुसीलसुषदाई ॥ जहांल
गिनाथनेहअरुनाते ॥ पियविनुतियहितरनिहुतेताते ॥ तनधनधामधरनिपुररा
जू ॥ पतिविहीनसवसोकसमाजू ॥ भोगरोगसमभूषनभारू ॥ जमजातनासरि
ससंसारू ॥ प्राननाथतुमविनुजगमांही ॥ मोकहसुषदकतहुकछुनांही ॥ जियवि
नुदेहनदीविनुवारी ॥ तैसियनाथपुरुषविनुनारी ॥ नाथसकलसुषसाथतुम्हारे
सरदविमलविधुवदननिहारे ॥दो॥ षगमृगपरिजननगरवनवलकलविम
लदुकूल ॥ नाथसाथसुरसदनसमपरनसालसुषमूल ॥६५॥ चौपाई ॥ वनदेवीवन
देवउदारा ॥ करिहहिसासुससुरसमसारा ॥ कुसकिसलयसाथरीसुहाई ॥ प्रभुसं
गमंजुमनोजतुराई ॥ कंदमूलफलअमियअहारू ॥ अवधसौधसतसरिसपहा
रू ॥ छिनछिनप्रभुपदकमलविलोकी ॥ रहिहौमुदितदिवसजिमिकोकी ॥ वनदुष
नाथकहेवहुतेरे ॥ भयविषादपरितापघनेरे ॥ प्रभुवियोगलवलेससमाना ॥ सव
मिलिहोहिनकृपानिधाना ॥ असजियजानिसुजानसिरोमनि ॥ लेइयसंगमोहिछा
डियजनि ॥ विनतीवहुतकरौकहास्वामी ॥ करुनामयउरअंतरजामी ॥दो॥
राषियअवधजोअवधिलगिरहतनजानियप्रान ॥ दीनवंधुसुंदरसुषदसीलस
नेहनिधान ॥६६॥ चौपाई ॥ मोहिमगचलतनहोइहिहारी ॥ छिनछिनचरनसरोज
निहारी ॥ सवहिभांतिपियसेवाकरिहौ ॥ मारगजनितसकलश्रमहरिहौ ॥ पायप
षारिवैठितरुछांही ॥ करिहौवाउमुदितमनमांही ॥ श्रमकनसहितस्यामतनदेषे
कहदुषसमउप्रानपतिपेषे ॥ सममहितृनतरुपल्लवडासी ॥ पायपलोटिहिसवनि
सिदासी ॥ वारवारमृदुमूरतिजोही ॥ लागिहितातवयारिनमोही ॥ कोप्रभुसंगमो
हिचितवनिहारा ॥ सिंहवधूहिजिमिससकसियारा ॥ मैसुकुमारिनाथवनजोगू
तुमहिउचिततपमोकहभोगू ॥दो॥ ऐसेउवचनकठोरसुनिजौनहृदयविलगा
न ॥ तौप्रभुविषमवियोगदुषसहिहहिपावरप्रान ॥६७॥ चौपाई ॥ असकहिसीयवि

कल्पभरिभारी॥वचनवियोगनसकीसम्हारी॥देषिदसारघुपतिजियजानां॥हठिराषेनहि
राषेहिप्रान॥कहेउकृपालभानुकुलनाथा॥परहरिसोचचलहुवनसाथा॥नहिविषा
दकरअवसरआजू॥वेगिकरहुवनगवनसमाजू॥कहिप्रियवचनप्रियासमुझाई॥ल
गेमातपदआसिषपाई॥वेगिप्रजादुषमेटवआई॥जननीनिठुरविसरिजनिजाई॥फिरिहि
दसाविधिवहुरिकिमोरी॥देषिहोनयनमनोहरजोरी॥सुदिनसुघरीतातकवहो
इहि॥जननीजिअतवदनविधुजोइहि॥दोहा॥वहुरिवछकहिलालकहिरघुपति
रघुवरतात॥कवहिवुलाइलगाइहियहरषिनिरषिहोगात॥७३॥चौपाई॥लषीसने
हकातरिमहतारी॥वचननआवविकलभइभारी॥रामप्रवोधकीन्हविधिनाना॥स
मउसनेहनजाइवषाना॥तवजानकीसासुपदलागी॥सुनिअमायमेपरमअभा
गी॥सेवासमयदेववनदीन्हा॥मोरमनोरथसफलनकीन्हा॥तजवछोभजनिछा
डिअछोहू॥करमकठिनकछुदोसनमोहू॥सुनिसियवचनसासुअकुलानी॥दसाक
वनिविधिकहोवषानी॥वारहीवारलाइउरलीन्ही॥धरिधीरजसिषआसिषदीन्ही॥
अचलहोउअहिवाततुम्हारा॥जवलगिगंगजमुनजलधारा॥दोहा॥सीतहिसा
सुअसीससिषदीन्हिअनेकप्रकार॥चलीनाइपदपदुमसिरअतिहितवारहीवार
॥चौपाई॥समाचारजवलछिमनपाए॥व्याकुलवदनविलषिउठिधाए॥कंपपुल
कतनयनसनीरा॥गहेचरनअतिप्रेमअधीरा॥कहिनसकतकछुचितवतठाढे॥
मीनदीनजनुजलतेकाढे॥सोचहृदयविधिकाहोनिहारा॥सवसुषसुकृतसिरान
हमारा॥मोकहुकाहकहवरघुनाथा॥रषिहहिभवनकिलेहहिसाथा॥रामविलो
केवंधुकरिजोरे॥देहगेहसवसनतृनतोरे॥वोलेवचनरामनयनागर॥सीलसनेह
सरलसुषसागर॥तातप्रेमवसजनिकदराहू॥समुझिहृदयपरिनामउछाहू॥दोहा
॥मातपितागुरस्वामिसिषसिरधरिकरहिसुभाय॥लहेउलाभतिन्हजनमकरनत
रुजनमजगजाय॥७४॥चौपाई॥असजियजानिसुनहुसिषभाई॥करहुमातपितुपद
सेवकाई॥भवनभरतरिपुसूदननाही॥राउवृद्धममदुषमनमाही॥मैवनजाउतुम्हहि
लेसाथा॥होइसवहिविधिअवधअनाथा॥गुरपितुमातप्रजापरिवारू॥सवकहुपर
दुसहदुषभारू॥रहहुकरहुसवकरपरितोषू॥नतरुतातहोइवडदोषू॥जासुराजप्रिय
प्रजादुषारी॥सोनृपअवसिनरकअधिकारी॥रहहुतातअसनीतिविचारी॥सुनत
लषनभयेव्याकुलभारी॥सियरेवचनसूषिगयेकैसे॥परसततुहिनतामरसजैसे॥
दोहा॥उतरनआवतप्रेमवसगहेचरनअकुलाइ॥नाथदासमेस्वामितुम्हतजहुतोका
हवसाय॥७५॥चौपाई॥दीन्हिमोहिसिषनीकिगोसाई॥लागिअगमअपनीकदराई॥नर
वरधीरधरमधुरधारी॥निगमनीतिकहुतेअधिकारी॥मैसिसुप्रभुसनेहप्रतिपा
ला॥मंदिरमेरुकिलेहिमराला॥गुरपितुमातनजानउकाहू॥कहउसुभाउनाथपति
आहू॥जहलगिजगतसनेहसगाई॥प्रीतिप्रतीतिनिगमनिजगाई॥मोरेसवइएकतु
म्हस्वामी॥दीनवंधुउरअंतरजामी॥धरमनीतिउपदेसिअताही॥कीरतिभूतिसुग
तिप्रियजाही॥मनक्रमवचनचरनरतहोई॥कृपासिंधुपरहरिअकिसोई॥दोहा॥
करुणासिंधुसुवंधुकेसुनिमृदुवचनविनीत॥समुझाएउरलाइप्रभुजानिसनेह
सभीत॥७६॥चौपाई॥मागहुविदामातसनजाई॥आवहुवेगिचलहुवनभाई॥मुदि
तभयेसुनिरघुपतिवानी॥भयेउलाभवडगइवडिहानी॥हरषितहृदयमातपह
आये॥मनहुअंधफिरिलोचनपाये॥जाइजननिपदनाउमाथा॥मनुरघुनंदनजा
नकीसाथा॥पूछेमातमलिनमनदेषी॥लषनकहीसवकथाविसेषी॥गइसहमि
सुनिवचनकठोरा॥मृगीदेषिदवजनुचहुओरा॥लषनलषेउभाअनरथआजू॥ए

हसनेहवसकरवअकाजू॥मागतविदासभयसकुचाही॥जाइसंगविधिकहिहिकिनाही॥दो
हा॥समझिसुमित्रारामसियरूपसुसीलसुभाउ॥नृपसनेहलषिधुनेउसिरपापिनिदी
न्हकुदाउ॥७७॥चौपाई॥धीरजधरेउकुअवसरजानी॥सहजसुहृदवोलीमृदुवानी॥ता
ततुम्हारिमातुवैदेही॥पितारामसवभातिसनेही॥अवधतहाजहरामनिवासू॥त
हादिवसजहभानुप्रकासू॥जोपैसीयरामवनजाही॥अवधतुम्हारकाजकछुनाही॥गु
रपितुमातवंधुसुरसाई॥सेइअहिसकलप्रानकीनाई॥रामप्रानप्रियजीवनजीके॥स्वा
रथरहितसषासवहीके॥पूजनीयप्रियपरमजहाते॥सवमानिअहिरामकेनाते॥अ
सजियजानिसंगवनजाहू॥लेहुतातजगजीवनलाहू॥दोहा॥भूरिभागभाजनभ
यहुमोहिसमेतवलिजाउ॥जोतुम्हरेमनछाडिछलकीन्हरामपदठाउ॥७८॥चौपाई॥
पुत्रवतीजुवतीजगसोई॥रघुपतिभगतजासुसुतहोई॥नतरुवांझभलिवादिविआ
नी॥रामविमुषसुततेहितजानी॥तुम्हरेहिभागरामवनजाही॥दूसरहेतुतातकछु
नाही॥सकलसुकृतकरवडफलएहू॥रामसीयपदसहजसनेहू॥रागरोषइरषामद
मोहू॥जनिसपनेहुइन्हकेवसहोहू॥सकलप्रकारविकारविहाई॥मनक्रमवचनक
रेहुसेवकाई॥तुम्हकहवनसवभातिसुपासू॥संगपितुमातुरामसियजासू॥जेहिनराम
वनलहहिकलेसू॥सुतसोइकरेहुइहइउपदेसू॥छंद॥उपदेसयहजेहिताततुम्हरेराम
सीयसुषपावही॥पितुमातप्रियपरिवारपुरसुषसुरतिवनविसरावही॥तुलसी
प्रभुहिसिषदेइआयसदीन्हपुनिआसिषदई॥रतिहोउअविरलअमलसियरघुवीरपदनित
नई॥सोरठा॥मातचरनसिरनाइचलेतुरतसंकितहृदय॥वागुरविषमतोराइमन
हुभागमृगभागवस॥७९॥चौपाई॥गयेलषनजहजानकिनाथा॥भेमनमुदित
पाइप्रियसाथू॥वंदिरामसियचरनसुहाए॥चलेसंगनृपमंदिरआए॥कहहिपरसपर
पुरनरनारी॥भलिवनाइविधिवातविगारी॥तनकृसमनदुषवदनमलीने॥विकलम
नहुमाषीमधुछीने॥करमीजहिसिरधुनिपछिताही॥जनुविनपंषविहगअकुला
ही॥भइवडिभीरभूपदरवारा॥वरनिनजाइविषादअपारा॥सचिवउठाइराउवैठारे॥क
हिप्रियवचनरामपगुधारे॥सियसमेतदोउतनयनिहारी॥व्याकुलभयेउभूमिपति
भारी॥दोहा॥सियसहितसुतसुभगदोउदेषिदेषिअकुलाइ॥वारहीवारसनेहवस
राउलेइउरलाइ॥८०॥चौपाई॥सकैनवोलिविकलनरनाहू॥सोकजनितउरदारुन
दाहू॥नाइसीसपदअतिअनुरागा॥उठिरघुवरविदातवमागा॥पितुअसीसआयस
मोहिदीजे॥हरषसमयविसमयकतकीजे॥तातकियेप्रियप्रेमप्रमादू॥जसजग
जाइहोइअपवादू॥सुनिसनेहवसउठिनरनाहा॥वैठारेरघुपतिगहिवाहा॥सुनहु
तातुम्हकहमुनिकहही॥रामचराचरनायकअहही॥सुभअरुअसुभकरमअनुहा
री॥ईसदेइफलहृदयविचारी॥करइजोकरमपावफलसोई॥निगमनीतिअसकहसवको
ई॥दोहा॥औरकरैअपराधकोउऔरपावफलभोग॥अतिविचित्रभगवंतग
तिकोजगजानैजोग॥८१॥चौपाई॥रायरामराषनहितलागी॥वहुतउपाउकिये
छलत्यागी॥लषीरामरुषरहतनजाने॥धरमधुरंधरधीरसयाने॥तवनृपसीयलाइउ
रलीन्ही॥अतिहितवहुतभातिसिषदीन्ही॥कहिवनकेदुषदुसहसुनाए॥सासुसस
रपितुसुषसमुझाये॥सीयमनरामचरनअनुरागा॥घरनसुगमवनविषमनलागा॥
औरउसवहिसीयसमुझाई॥कहिकहिविपिनविपतिअधिकाई॥सचिवनारिगुरना
रिसयानी॥सहितसनेहकहहिमृदुवानी॥तुम्हकहतौनदीन्हवनवासू॥करहुजोकह
हिससुरगुरसासू॥दोहा॥सिषसीतलहितमधुरमृदुसुनिसीतहिनसोहानि॥सर
दचंदचंदनिलगतजनुचकईअकुलानि॥८२॥चौपाई॥सीयसकुचवसउतरनदेई

रा.अ.
८

सोसुनितमकउठीकैकेई॥मुनिपटभूषनभाजनआनी॥आगेधरीबोलीमृदुवानी॥न
पहिप्रानप्रियतुमरघुवीरा॥सीलसनेहनछाडिहिभीरा॥सुकृतसुजसपरलोकनसाऊ
तुमहिजानवनकहहिनकाऊ॥असविचारसोइकरहुजोभावा॥रामजननिसिषसुनिसु
षपावा॥भूपहिवचनवानसमलागे॥करहिनप्रानपयानअभागे॥लोकविकलमुरछि
तनरनाहू॥काहकरियकछुसूझनकाहू॥रामतुरतमुनिवेषवनाई॥चलेजनकज
ननिसिरुनाई॥दोहा॥सजिवनसाजसमाजसववनितावंधुसमेत॥वंदिविप्रगुर
चरनप्रभुचलेकरिसवहिअचेत॥७९॥चौपाई॥निकसिवसिष्टद्वारभयठाढे॥देषेलो
गविरहदवदाढे॥कहिप्रियवचनसकलसमुझाये॥विप्रवृंदरघुवीरवुलाये॥गुरुसन
कहिवरषासनदीने॥आदरदानविनयवसकीने॥जाचकदानमानसंतोषे॥मीतपु
नीतप्रेमपरितोषे॥दासीदासवुलायवहोरी॥गुरहिसौपिवोलेकरजोरी॥सवकेसारस
भारगोसांई॥करविजनककजननिकीनांई॥वारहीवारजोरिजुगपानी॥कहतरामस
वसनमृदुवानी॥सोईसवभांतिमोरहितकारी॥जेहितेरहहीभुआलसुषारी॥दोहा॥
मातसकलमोरेविरहजेहिनहीहीदुषदीन॥सोइउपायतुमकरेहु॥सवपुरजनपरमप्र
वीन॥८०॥चौपाई॥एहिविधिरामसवहिसमुझावा॥गुरुपदपदमहरषिसिरुनावा॥ग
नपतिगौरिगिरिसमनाई॥चलेअसिसपायरघुराई॥रामचलतअतिभयेउविषादु॥सु
निनजायपुरआरतनादु॥कुसगुनलंकअवधअतिसोकु॥हरषविषादविवससुरलो
कु॥गईमुरछातवभूपतिजागे॥वोलेसुमंत्रकहनअसलागे॥रामचलेवनप्रानन
जाही॥केहिसुषलागिरहततनमाही॥यहितेकवनविथावलवाना॥जोदुषपायत
जहितनप्राना॥पुनिधरिधीरकहैनरनाहू॥लेरथसंगसषातुमजाहू॥दोहा॥
सुठिसुकुमारकुमारदोउजनकसुतासुकुमारि॥रथचढाइदिषराइवनफेरियगयेदिन
चारि॥८१॥चौपाई॥जौनहिफिरहिधीरदोउभाई॥सत्यसंधदृढव्रतरघुराई॥तौतुमवि
नयकरेहुकरजोरी॥फेरियप्रभुमिथिलेसकिसोरी॥जवसियकाननदेषिडराही॥कहेहु
मोरसिषअवसरपाई॥सासससुरअसकहेउसंदेसु॥पुत्रीफिरियवनवहुतकलेसु॥
पितुग्रहकवहुकवहुससुरारी॥रहेउजहांरुचिहोइतुम्हारी॥येहिविधिकरेहुउपायकदं
वा॥फिरइतिहोयप्रानअवलंवा॥नाहितमोरमरनपरनामा॥कछुनवसायभयेविधि
वामा॥असकहिमुरछिपरामहिराऊ॥रामलषनसियआनिदिषाऊ॥दोहा॥पायरजा
इसुनायसिररथअतिवेगवनाइ॥गयेउजहांवाहिरनगरसीयसहितदोउभाइ॥८२॥चौपा
ई॥तवसुमंत्रनृपवचनसुनाये॥करिविनतीरथरामचढाये॥चढिरथसीयसहितदोउभा
ई॥चलेहृदयअवधहिसिरनाई॥चलतरामलषिअवधअनाथा॥विकललोगसवलागे
साथा॥कृपासिंधुवहुविधिसमुझावहि॥फिरहिप्रेमवसपुनिफिरिआवहि॥लागति
अवधिभयानकभारी॥मानहुकालरातिअंधिआरी॥घोरजंतुसमपुरनरनारी॥डरप
हिएकहिएकनिहारी॥घरमसानपरिजनजनुभूता॥सुतहितमीतमनोजमदूता॥
वागनविटपवेलिकुम्हिलाही॥सरितसरोवरदेषिनजाही॥दोहा॥हयगयकोटिक
केलिमृगपुरपसुचातकमोर॥पिकरथांगसुकसारिकासारसहंसचकोर॥८३॥चौ
पाई॥रामवियोगविकलसवठाढे॥जहतहमनोचित्रलिषिकाढे॥नगरसफलवन
गहवरभारी॥षगमृगविपुलसकलनरनारी॥विधिकेकैइकिरातनिकीन्ही॥जेहिद
वदुसहदसोदिसिदीन्ही॥सहिनसकेरघुवरविरहागी॥चलेलोकसवव्याकुलभा
गी॥सवहिविचारकीन्हमनमाही॥रामलषनसियविनसुषनाही॥जहारामतहास
वहिसमाजू॥विनरघुवीरअवधनहिकाजू॥चलेसाथअसमंत्रदृढाई॥सुरदुर्लभसु
षसदनविहाई॥रामचरनपंकजप्रियजिन्हही॥विषयभोगवसकरहिकितिन्हही

दोहा॥वालवृद्धविहायग्रहलगेलोगसवसाथ॥तमसातीरनिवासकियप्रथमदिव
सरघुनाथ॥८४॥चौपाई॥रघुपतिप्रजाप्रेमवसदेषी॥सदयहृदयदुषभयेउविसेषी॥
करुनामयरघुनाथगोसांई॥वेगिपाइअहिपीरपराई॥कहिसप्रेममृदुवचनसुहाए॥
वहुविधिरामलोगसमुझाए॥कियेधर्मउपदेसघनेरे॥लोगप्रेमवसफिरहिनफेरे॥
सीलसनेहछाडिनहिजाई॥असमंजसवसभेरघुराई॥जवहिजामजुगजामिनिवी
ती॥रामसचिवसनकहेउसप्रीती॥षोजमारिरथहांकहुताता॥आनउपायवनि
हिनहिवाता॥दोहा॥रामलषनसियजानचढिसंभुचरनसिरनाइ॥सचिवचलाय
उतुरतरथइतउतषोजदुराइ॥८५॥चौपाई॥जागेसकललोगभयेभोरू॥गयेरघ
नाथभयेउअतिसोरू॥रथकरषोजकतहुनहिपावहि॥रामरामकहिचहुदिसधाव
हि॥मनहुवारिनिधिवूडजहाजू॥भयेउविकलवडवनिकसमाजू॥एकहिएकदेहिउ
पदेसू॥तजेरामहमजानिकलेसू॥निंदहिआपसराहहिमीना॥धिगजीवनरघुवीरवि
ना॥जोपैप्रियवियोगविधिकीना॥तोकसमरननमागेदीन्हा॥एहिविधिकरतप्रलाप
कलापा॥आयेअवधभरेपरितापा॥विषमवियोगनजायवषाना॥अवधिआसव
राषहिप्राना॥दोहा॥रामदरसहितनेमव्रतलगेकरननरनारि॥मनहुकोककोकी
कमलदीनविहीनतमारि॥८६॥चौपाई॥सीतासचिवसहितदोउभाई॥शृंगवेरपुर
पहुचेजाई॥उतरेरामदेवसरिदेषी॥कीनदंडवतहरषविसेषी॥लषनसचिवसियकीन्ह
प्रनामा॥सवहिसहितसुषपायेउरामा॥गंगसकलमुदमंगलमूला॥सवसुषकरनि
हरनिसवसूला॥कहिकहिकोटिककथाप्रसंगा॥रामविलोकहिगंगतरंगा॥सचिवहि
अनुजहिप्रियहिसुनाई॥विवुधनदीमहिमाअधिकाई॥मज्जनकीन्हपंथश्रमगयेउ
तेहिश्रमयहलौकिकव्यवहारू॥दोहा॥सुद्धसच्चिदानंदमयकंदभानुकुलकेतु॥
चरितकरतनरअनुहरतसंसृतिसागरसेतु॥८७॥चौपाई॥यहसुधिगुहनिषादज
वपाई॥मुदितलियेप्रियवंधुवोलाई॥लियेफलमूलभेटभरिभारा॥मिलनचलेउहिय
हरषअपारा॥करिदंडवतभेटधरिआगे॥प्रभुहिविलोकतअतिअनुरागे॥सहजस
नेहविवसरघुराई॥पूछीकुसलनिकटवैठाई॥नाथकुसलपदपंकजदेषे॥भयेउभाग
भाजनजनलेषे॥देवधरनिधनधामतुम्हारा॥मैजननीचसहितपरिवारा॥कृपाक
रियपुरधारियपाऊ॥थापियजनसवलोगसिहाऊ॥कहेउसत्यसवसषासुजाना॥मोहि
दीनपितुआयसुआना॥दोहा॥वरषचारिदसवासवनमुनिव्रतवेषअहार॥ग्रामवास
नहिउचितसुनिगुहहिभयेउदुषभार॥८८॥चौपाई॥रामलषनसियरूपनिहारी॥
कहहीसप्रेमग्रामनरनारी॥तेपितुमातकहहुसषीकैसे॥जिनपठयेवनवालकऐसे॥
एककहहिभलभूपतिकीन्हा॥लोचनलाहुहमहिविधिदीन्हा॥तवनिषादपतिउरअ
नुमाना॥तरुसिंसपामनोहरजाना॥लैरघुनाथहिठाउदिषावा॥कहेउरामसवभा
तिसुहावा॥पुरजनकरिजोहारघरआए॥रघुवरसंध्याकरनसिधाये॥गुहसवारिसाथ
रीडसाई॥कुसकिसलयमयमृदुलसुहाई॥सुचिफलमूलमधुरमृदुजानी॥दोनाभरिभ
रिराषेपानी॥दोहा॥सियसुमित्रभ्रातासहितकंदमूलफलषाई॥सैनकीन्हरघुवंस
मनिपायपलोटतभाई॥८९॥चौपाई॥उठेलषनप्रभुसोवतजानी॥कहिसचिवहि
सोवनमृदुवानी॥कछुकदूरिसजिवानसरासन॥जागनलगेवैठिवीरासन॥गुहवोलि
येपाहरूप्रतीते॥ठावठावराषेअतिप्रीते॥आपलषनपहवैठेउजाई॥कटिभाथीसरचा
पचढाई॥सोवतप्रभुहिनिहारिनिषादू॥भयेउप्रेमवसहृदयविषादू॥तनपुलकितजल
लोचनवहई॥वचनसप्रेमलषनसनकहई॥भूपतिभवनसुभायसुहावा॥सुरपतिसद
ननपटतरपावा॥मनिमयरचितचारुचौवारे॥जनुरतिपतिनिजहाथसवारे॥दो
हा॥सुचिसुविचित्रसुभोगमयसुमनसुगंधसुवास॥पलंगमंजुमनिदीपजहा

रा-अ-
१

सवविधिसकलसवासु ॥८९॥ चौपाई ॥ विविधिवसनउपधानतुराई । छीरफेनमृदुविस
दसुहाई ॥ तहंसीयरामसयननिसिकरही । निजछविरतिमनोजमदहरही ॥ तेसीयरा
मसाथरीसोए ॥ श्रमितवसनविनुजाहिनजोए ॥ मातपितापरिजनपुरवासी ॥ सषासु
सीलदासअरुदासी ॥ जोगवहिजिन्हहिप्रानकीनाई ॥ महिसोवतितेइरामगोसाई ॥
पिताजनकजगविदितप्रभाऊ ॥ ससुरसुरेससषारघुराऊ ॥ रामचंदपतिसोवैदेही
सोवतमहिविधिवामनकेही ॥ सीयरघुवीरकिकाननजोगू ॥ करमप्रधानसतक
हलोगू ॥ दोहा ॥ कैकयनंदनिमंदमतिकठिनकुटिलपनकीन्ह ॥ जेहिरघुनंदनजान
किहिसुषअवसरदुषदीन्ह ॥९०॥ चौपाई ॥ भईदिनकरकुलविटपकुठारी ॥ कुमति
कीन्हसवविस्वदुषारी ॥ भयेउविषादनिषादहिभारी ॥ रामसीयमहिसयननिहारी
वोलेलषनमधुरमृदुवानी ॥ ग्यानविरागभगतिरससानी ॥ काहुनकोउसुषदुषक
रदाता ॥ निजकृतकरमभोगसवभ्राता ॥ जोगवियोगभोगभलमंदा ॥ हितअनहित
मध्यमभ्रमफंदा ॥ जनममरनजहलगिजगजालू ॥ संपतिविपतिकरमअरुकालू ॥ धर
निधामधनपुरपरिवारू ॥ सरगनरकजहलगिव्यवहारू ॥ देषियसुनियगुनियमन
माही ॥ मोहमूलपरमारथनाही ॥ दोहा ॥ सपनेहोइभिषारिनृपरंकनाकपतिहो
इ ॥ जागेलाभनहानिकछुतिमिप्रपंचजियजोइ ॥९१॥ चौपाई ॥ असविचारिनहिकी
जैरोसू ॥ काहुहिवादिनदीजैदोसू ॥ मोहनिसासवसोवनहारा ॥ देषियसपनअने
कप्रकारा ॥ एहिजगजामिनिजागहिजोगी ॥ परमारथीप्रपंचवियोगी ॥ जानिय
तवहिजीवजगजागा ॥ जवसवविषयविलासविरागा ॥ होइविवेकमोहभ्रमभागा
तवरघुनाथचरनअनुरागा ॥ सषापरमपरमारथएहू ॥ मनक्रमवचनरामपदनेहू
रामब्रह्मपरमारथरूपा ॥ अविगतअलषअनादिअनूपा ॥ सकलविकाररहितगतभे
दा ॥ कहिनितिनेतिनिरूपहिवेदा ॥ दोहा ॥ भगतभूमिभूसुरभिसुरहितलागिकृपा
ल ॥ करतचरितधरिमनुजतनसुनतमिटहिजगजाल ॥९२॥ चौपाई ॥ सषासमुझिअ
सपरिहरिमोहू ॥ सीयरघुवीरचरनरतहोहू ॥ कहतरामगुनभाभिनुसारा ॥ जागेजगमंग
लसुषदारा ॥ सकलसौचकरिरामनहावा ॥ सुचिसुजानवटछीरमगावा ॥ अनुजसहि
तसिरजटावनाए ॥ देषिसुमंतनयनजलछाए ॥ हृदयदाहअतिवदनमलीना ॥ कहक
रजोरिवचनअतिदीना ॥ नाथकहेउअसकोसलनाथा ॥ लैरथजाहुरामकेसाथा
वनदिषाइसुरसरिअन्हवाई ॥ आनेहुफेरिवेगिदोउभाई ॥ लषनरामसियआनेहुफेरी
संसयसकलसकोचनिवेरी ॥ दोहा ॥ नृपअसकहेउगोसाइजसकहिअकरौवलिसो
इ ॥ करिविनतीपायनपरेउदीन्हवालजिमिरोइ ॥९३॥ चौपाई ॥ तातकृपाकरिकीजिये
सोई ॥ जातेअवधअनाथनहोई ॥ मंत्रिहिरामउठाइप्रवोधा ॥ तातधरममतसव
सोधा ॥ सिविदधीचहरिचंदनरेसा ॥ सहेधरमहितकोटिकलेसा ॥ रंतिदेववलिभूपसु
जाना ॥ धरमधरेउसहिसंकटनाना ॥ धरमनदूसरसत्यसमाना ॥ आगमनिगमपुरा
नवषाना ॥ मैसोइधरमसुलभकरिपावा ॥ तजेतिहूपुरअपजसछावा ॥ संभावि
तकहुअपजसलाहू ॥ मरनकोटिसमदारुनदाहू ॥ तुमसनतातवहुतकाकहेऊ ॥ दिय
उतरफिरिपातकलहेऊ ॥ दोहा ॥ पितुपदगहिकहिकोटिविधिविनयकरवकरजोरि
चिंताकवनेहुवातकैतातकरियजनिमोरि ॥९४॥ चौपाई ॥ तुमपुनिपितुसमअ
तिहितमोरे ॥ विनतीकरौतातकरजोरे ॥ सवविधिसोइकरतव्यतुम्हारे ॥ दुषनपावपि
तुसोचहमारे ॥ सुनिरघुनाथसचिवसंवादू ॥ भयेउसपरिजनविकलनिषादू ॥ पुनिकछुल
षनकहीकटुवानी ॥ प्रभुवरजेवडअनुचितजानी ॥ सकुचिरामनिजसपथदिवाई ॥ ल
षनसंदेसकहियजनिजाई ॥ कहसुमंतपुनिभूपसंदेसू ॥ सहिनसकहिसियविपिनक
लेसू ॥ जेहिविधिअवधआवफिरिसीया ॥ सोइरघुवरहितुमहिकरनीया ॥ ननरुनिपटअ

वलंवविहीना ॥ मैनजियवजिमिजलविनुमीना ॥ दोहा ॥ मइकेससुरेसकलसुषजवहिजहां
मनमान ॥ तहातवरहिहिसुषेनसियजवलगिविपतिविहान ॥९५॥ चौपाई ॥
विनतीभूपकीन्हजेहि ॥ भांतीआरतप्रीतिनसोकहिजाती ॥ पितुसंदेससुनिकृपानि
धाना ॥ सीयहीदीन्हिसिषकोटिविधाना ॥ सासससुरगुरप्रियपरिवारू ॥ फिरहुतसवक
रमिटैडषभारू ॥ सुनिपतिवचनकहतिवैदेही ॥ सुनहुप्रानपतिपरमसनेही ॥ प्रभुकरु
नामयपरमविवेकी ॥ तनतजिरहतछांहकिमिछेकी ॥ प्रभाजाइकहभानविहाई ॥
कहचंद्रिकाचंदतजिजाई ॥ पतिहिप्रेममयविनयसुनाई ॥ कहतसचिवसनगिरासु
हाई ॥ पितुससुरसरिसहितकारी ॥ उतरदेउफिरिअनुचितभारी ॥ दोहा ॥ आरतवसस
नमुषभईउविलगनमानवतात ॥ आरजसुतपदकमलविनुवादिजहालगिनात
॥९६॥ चौपाई ॥ पितुवैभवविलासमैडीठा ॥ नृपमनिमुकटमिलितपदपीठा ॥ सुषनिधा
नअसपितुग्रहमोरे ॥ पियविहीनमनभावनभोरे ॥ ससुरचक्कवतिकोसलराऊ ॥ भु
वनचारिदसप्रगटप्रभाऊ ॥ आगेहोइजेहिसुरपतिलेई ॥ अरधसिंहासनआसनदेई ॥
ससुरएतादृसअवधनिवासू ॥ प्रियपरिवारमातसमसासू ॥ विनुरघुपतिपदपदुमप
रागा ॥ मोकहसपनेहुसुषदनलागा ॥ अगमपंथवनभूमिपहारा ॥ करीकेहरीस
रसरितअपारा ॥ कोलकिरातकुरंगविहंगा ॥ मोहिसवसुषदप्रानपतिसंगा ॥ दोहा ॥
सासससुरसनमोरहितविनयकरवपरिपाय ॥ मोरसोचजनिकरियकछुमैवनसु
षीसुभाय ॥९७॥ चौपाई ॥ प्राननाथप्रियदेवरसाथा ॥ वीरधुरीनधरेधनुभाथा ॥ नहिमग
श्रमभ्रमदुषमनमोरे ॥ मोहिलगिसोचकरियजनिभोरे ॥ सुनिसुमंतसीयसीतलवा
नी ॥ भयेउविकलजनुफनिमनिहीना ॥ नैननसूझनहिसुनैनकाना ॥ कहिनसकै
कछुअतिअकुलाना ॥ रामप्रवोधकीन्हवहुभांती ॥ तदपिहोतनहिसीतलछाती ॥ ज
तनअनेकसाथहितकीन्हे ॥ उचितउतररघुनंदनदीन्हे ॥ मेटिजाइनहिरामरजाई ॥
कठिनकरमगतिकछुनवसाई ॥ रामलषनसियपदसिरनाइ ॥ फिरेउवनिकजिमिमू
लगवाहि ॥ दोहा ॥ रथहांकेउहयरामतनहेरिहेरिहिहिनाहि ॥ देषिनिषादविषादव
सधुनहिसीसपछिताहि ॥९८॥ चौपाई ॥ जासुवियोगविकलपसुऐसे ॥ प्रजामातुपि
तुजीहहिकैसे ॥ वरवसरामसुमंतपठाए ॥ सुरसरितीरआपतवआए ॥ मागीनावनके
वटआना ॥ कहतुम्हारमरममैजाना ॥ चरनकमलरजकहसवकोहई ॥ मानुषकर
निमूरिकछुअहई ॥ छुअतसिलाभइनारिसुहाई ॥ पाहनतेनकाठकठिनाई ॥ तरनिउमु
निघरनिहोइजाई ॥ वाटपरैमोरनावउडाई ॥ एहिप्रतिपालउसवपरिवारू ॥ नहिजानौ
कछुऔरकवारू ॥ जौप्रभुपारअवसिगाचहहू ॥ मोहिपदपदुमपषारनकहहू ॥ छं
द ॥ पदकमलधोइचढाइनावननाथउतराईचहौ ॥ मोहिरामराउरआनदसरथस
पथसवसाचीकहौ ॥ वरुतीरमारहुलषनपैजवलगिनपाउपषारिहौ ॥ तवल
गिनतुलसीदासनाथकृपालपारउतारिहौ ॥ सोरठा ॥ सुनिकेवटकेवैनप्रेम
लपेटेअटपटे ॥ विहसेकरुनाऐनचितैजानकीलषनतन ॥९९॥ चौपाई ॥ कृपा
सिंधुवोलेमुसकाई ॥ सोइकरुजेहितवनावनजाई ॥ वेगिआनिजलपायपषारू ॥ होत
विलंवउतारहुपारू ॥ जासुनामसुमिरतएकवारा ॥ उतरहिनरभवसिंधुअपारा ॥ सो
इकृपालकेवटहिनिहोरा ॥ जिहिजगकियेतिहुपगहुतेथोरा ॥ पदनषनिरषिदेव
सरिहरषी ॥ सुनिप्रभुवचनमोहमतिकरषी ॥ केवटरामरजायसुपावा ॥ पानिकठव
ताभरिलैआवा ॥ अतिआनंदउमगिअनुरागा ॥ चरनसरोजपषारनलागा ॥ वर
षिसुमनसुरसकलसिहाही ॥ येहिसमपुन्यपुंजकोउनाही ॥ दोहा ॥ पदपषारिज
लपानकरिआपसहितपरिवार ॥ पितरपारकरिप्रभुहिपुनिमुदितगयेउलैपार ॥५

चौपाई॥ उतरठाढभयेसुरसरिरेता॥ सीयरामगुहलषनसमेता॥ केवटउतरिदंडव
तकीन्हा॥ प्रभुहिसकुचयहिनहिकछुदीन्हा॥ पियहियकीसियजाननहारी॥ मनिमु
दरीमनमुदितउतारी॥ कहेउकृपाललेहुउतराई॥ केवटचरनगहेअकुलाई॥ नाथ
आजमैकाहनपावा॥ मिटेदोषदुषदारिददावा॥ बहुतकालमैकीन्हमजूरी॥ आजु
दीनबिधिबनिभलिभूरी॥ अबकछुनाथनचाहिअमोरे॥ दीनदयालअनुग्रहतोरे
फिरतीवरमोहिजोदेवा॥ सोप्रसादमैसिरधरिलेवा॥ दोहा॥ बहुतकीन्हप्र
भुलषनसियनहिकछुकेवटलेइ॥ बिदाकीन्हप्रभुकरुनायतनभक्तिबिमल
वरदेइ॥ ९॥ चौपाई॥ तबमज्जनकरिरघुकुलनाथा॥ पूजिपारथिवनायेउमाथा॥
सीयसुरसरिकहिउकरजोरी॥ मातुमनोरथपुरउबिमोरी॥ पतिदेवरसंगकुसलबहो
री॥ आइकरउजेहिपूजातोरी॥ सुनिसीयबिनयप्रेमरससानी॥ भइतबबिमलबा
रिबरबानी॥ सुनुरघुबीरप्रियाबैदेही॥ तबप्रभाउजगबिदितनकेही॥ लोकपहोहि
बिलोकततोरे॥ तोहिसेवहिसबबिधिकरजोरे॥ तुमजोहमहिबडिबिनयसुनाई॥
कृपाकीन्हमोहिदीन्हबडाई॥ तदपिदेबिमैदेबिअसीसा॥ सफलहोनहितनिजबागी
सा॥ दोहा॥ प्राननाथदेवरसहितकुसलकोसलाआइ॥ पूजहिसबमनकामना
सुजसुरहिजगछाइ॥ १०॥ चौपाई॥ गंगबचनसुनिमंगलमूला॥ मुदितसी
यसुरसरिअनुकूला॥ तबप्रभुगुहहिकहेउघरजाहू॥ सुनतसूषमुषभाउरदाहू॥
दीनबदनगहबोलेकरजोरी॥ बिनयसुनोरघुकुलमनिमोरी॥ नाथसाथरहिपंथदि
षाई॥ करिदिनचारिचरनसेवकाई॥ जेहिबनजाइरहबरघुराई॥ परनकुटिमैकरब
सुहाई॥ तबमोकहजसदेबिरजाई॥ सोकरिहौरघुबीरदुहाई॥ सहजसनेहरामलषीता
सु॥ संगलीनगुहहृदयहुलासु॥ पुनिगुहज्ञातिबोलिसबलीन्हे॥ करिपरितोषबि
दासबकीन्हे॥ दोहा॥ तबगनपतिसिवसुमिरिप्रभुनाइसुरसरिहिमाथ॥ सषाअनु
जसियसहितबनगवनकीनरघुनाथ॥ ११॥ चौपाई॥ तेहिदिनभयेउबिटपतरबा
सु॥ लषनसषासबकीन्हसुपासू॥ प्रातप्रातकृतिकरिरघुराई॥ तीरथराजदीषप्र
भुजाई॥ सचिवसत्यश्रद्धाप्रियनारी॥ माधवसरिसमीतहितकारी॥ चारिपदारथभरा
भंडारु॥ पुन्यप्रदेसदेसअतिचारु॥ छेत्रअगमगढगाढसुहावा॥ सपनेहुनहिप्रतिप
छिन्हपावा॥ सेनसकलतीरथवरबीरा॥ कलुषअनीकदलनरनधीरा॥ संगमसिंहास
नसुठिसोहा॥ छत्रअषयबटमुनिमनमोहा॥ चवरजमुनअरुगंगतरंगा॥ देषिहोहि
दुषदारदभंगा॥ दोहा॥ सेवहिसुकृतीसाधुसुचिपावहिसबमनकाम॥ बंदीबेदपुरा
नगनकहहिबिमलगुनग्राम॥ १२॥ चौपाई॥ कोकहिसकैप्रयागप्रभाउ॥ कलुषपुं
जकुंजरमृगराउ॥ असतीरथपतिदेषिसुहावा॥ सुषसागररघुबरसुषपावा॥ कहिसी
यलषनहिसषहिसुनाई॥ श्रीमुषतीरथराजबडाई॥ करिप्रनामदेषतबनबागा॥ क
हतमहातमअतिअनुरागा॥ येहिबिधिआइबिलोकीबेनी॥ सुमिरतसकलसुमंगल
देनी॥ मुदितनहाइकीन्हसिवसेवा॥ पूजिजथाबिधितीरथदेवा॥ तबप्रभुभारद्वा
जपहिआए॥ करतदंडवतमुनिउरलाए॥ मुनिमनमोदनकछुकहिजाई॥ ब्रह्मानंदरासि
जनुपाई॥ दोहा॥ दीन्हअसीसमुनीसउरअतिअनंदअसजानि॥ लोचनगोचरसु
कृतफलमनहुकियेबिधिआनि॥ १३॥ चौपाई॥ कुसलप्रस्नकरिआसनदीने॥ पूजिप्रेम
परिपूरनकीन्हे॥ कंदमूलफलअंकुरनीके॥ दियेआनिमुनिमनहुअमीके॥ सीयलषन
जनसहितसुहाये॥ अतिरुचिरामसूलफलषाये॥ भयेबिगतश्रमरामसुषारे॥ भर
द्वाजमृदुबचनउचारे॥ आजुसुफलतपतीरथत्यागा॥ आजुसुफलजपजोगबिरागा॥
सफलसकलसुभसाधनसाजू॥ रामतुमहिअवलोकतआजू॥ लाभअवधिसुषअव

धिनदूजी॥ तुमतेदरसआससबपूजी॥ अबकरिकृपादेहुबरयहू॥ निजपदसरसिज
सहजसनेहू॥ दोहा॥ करमबचनमनछाडिछलजबलगिजननतुम्हार॥ तबल
गिसुषसपनेहुनहीकियेकोटिउपचार॥ १४॥ चौपाई॥ सुनिमुनिबचनरामसकु
चाने॥ भावभक्तिआनंदअघाने॥ तबरघुपतिमुनिसुजससुहावा॥ कोटिभांति
कहिसबहिसुनावा॥ सोबडसोसबगुनगनगेहू॥ जेहिमुनिसतुमआदरदेहू॥ मुनि
रघुबीरपरसपरनवही॥ बचनअगोचरसुषअनुभवही॥ येहिसुधिपाइप्रयागनि
वासी॥ बटुतापसमुनिसिद्धउदासी॥ भरद्वाजआश्रमसबआये॥ देषनदसरथ
सुवनसुहाये॥ रामप्रनामकीन्हसबकाहू॥ मुदितभयेलहिलोचनलाहू॥ देहिअ
सीसपरमसुषपाई॥ फिरेसराहतसुंदरताई॥ दोहा॥ रामकीन्हबिश्रामनिसिप्रात
प्रयागनहाइ॥ चलेसहितसियलषनजनमुदितमुनिहिसिरुनाइ॥ १५॥ चौपाई॥
रामसप्रेमकहेउमुनिपाही॥ नाथकहिअहमकेहिमगजाही॥ मुनिमनबिहसि
रामसनकहही॥ सुगमसकलमगतुमकहुअहही॥ साथलागिमुनिसिष्यबोला
ए॥ सुनिमनमुदितपचासकआए॥ सबनरामपरप्रेमअपारा॥ सकलकहहिमग
दीषहमारा॥ मुनिबटुचारिसंगतबदीन्हे॥ जिन्हबहुजनमसुकृतसबकीन्हे॥ करि
प्रनामरिषिआयसुपाई॥ प्रमुदितहृदयचलेरघुराई॥ ग्रामनिकटनिकसहिजबजाइ
देषहिदरसनारिनरधाई॥ होहिसनाथजनमफलपाई॥ फिरहिदुषितमनसंगपठाइ॥
दोहा॥ बिदाकियेबटुबिनयकरिफिरेपाइमनकाम॥ उतरिनहायेजमुनजलजोस
रीरसमस्याम॥ १६॥ चौपाई॥ सुनततीरबासीनरनारी॥ धायेनिजनिजकाजबि
सारी॥ लषनरामसीयसुंदरताई॥ देषिकरहिनिजभाग्यबडाई॥ अतिलालसाबसहि
मनमाही॥ नाउगाउबूझतसकुचाही॥ जेतिन्हमहुबयबिरधसयाने॥ तिनकरिजुगुति
रामपहिचाने॥ सकलकथातिन्हसबहिसुनाई॥ बनहिचलेपितुआयसपाई॥ सुनि
सबिषादसकलपछिताही॥ रानीरायकीन्हभलनाही॥ तहिअवसरयकतापसआ
वा॥ तेजपुंजलघुबयससुहावा॥ कबिअलषितगतिवेषबिरागी॥ मनक्रमबचनरा
मअनुरागी॥ दोहा॥ सजलनयनतनपुलकिनिजइष्टदेवपहिचानि॥ परेउदंडजि
मिधरनितलदसानजाइबषानि॥ १७॥ चौपाई॥ रामसप्रेमपुलकिउरलावा॥ परमरं
कजनुपारसपावा॥ मनहुप्रेमपरमारथदोऊ॥ मिलतधरेतनकहसबकोऊ॥ बहुरिलषन
पायनसोइलागा॥ लीन्हउठाइउमगिअनुरागा॥ पुनिसीयचरनधूरिधरिसीस॥ जन
निजानिसिसुदीन्हअसीसा॥ कीन्हनिषाददंडवततेही॥ मिलेमुदितलषिरामसनेही॥
पिअततनयनपुटरूपपियूषा॥ मुदितसुअसनपाइजिमिभूषा॥ भक्तिदानबरमागि
सोलीन्हाधरिउररूपगवनतबकीन्हा॥ तेपितुमातुकहहुसषिकैसे॥ जिन्हपठयेब
नबालकअैसे॥ रामलषनसीयरूपनिहारी॥ सोचसनेहबिकलनरनारी॥ दोहा॥
तबरघुबीरअनेकबिधिसषहिसिषावनदीन्ह॥ रामरजायसुसीसधरिभवनगवन
तेहिकीन्ह॥ १८॥ चौपाई॥ पुनिसियरामलषनकरजोरी॥ जमुनहिकीन्हप्रनामब
होरी॥ चलेसियसहितमुदितदोउभाई॥ रबितनुजहिसराहहिसबपुरबासी॥ जेमरि
तेनबिलोकहिरामहि॥ सीतलषनसहितघनस्यामहि॥ जससरसरितरामअवगाह
हि॥ तिनहिदेवसरसरितसराहहि॥ जेहितरतरप्रभुबैठहिजाई॥ काहिकल्पतरुता
सुबडाई॥ परसिरामपदपदुमपरागा॥ मानतभूमिभूरिनिजभागा॥ दोहा॥ छाहकर
हिघनबिबुधगनबरषहिसुमनसिहाहि॥ देषतगिरिबनबिहगमृगरामचलेमग
जाहि॥ १९॥ चौपाई॥ सीतालषनसहितरघुराई॥ गावनिकटजबनिकसहिजाई॥

सुनि सब बाल बृद्ध नर नारि। चलहिं तुरत गृहकाज बिसारी॥ राम लषन सिय रूप निहारी। पाय नयन फल होहिं सुषारी॥ सजल बिलोचन पुलक सरीरा। सब भये मगन देषि दोउ बीरा॥ बरनि न जाइ दसा तिन केरी। लहि जनु रंकन सुरमनि ढेरी॥ एकन एक बोलि सिष देही। लोचन लाहु लेहु छिन एही॥ रामहि देषि एक अनुरागे। चितवत चले जाहि संग लागे॥ एक नयन मग छबि उर आनी। होहि सिथिल तन मन बर बानी॥ दोहा॥ एक देषि बट छांह भलि डासि म्रदुल त्रन पात। कहहि गवाइय छिनक श्रम गमन अबहि कि प्रात॥ २८॥ चौपाई॥ एक कलस भरि आनहि पानी। अचइय नाथ कहहि म्रदु बानी॥ सुनि प्रिय बचन प्रीति अति देषी। राम क्रपाल सुसील बिसेषी॥ जानी श्रमित सीय मन माही। घरिक बिलंब कीन बट छांही॥ मुदित नारि नर देषहि सोभा। रूप अनूप नयन मन लोभा॥ एकटक सब सोहहि चहु ओरा। रामचंद्र मुष चंद चकोरा॥ तरुन तमाल बरन तन सोहा। देषत कोटि मदन मन मोहा॥ दामिनि बरन लषन सुठि नीके। नष सिष सुभग भावते जी के॥ मुनि पट कटिन कसे तूनीरा। सोहहि कर कमलनि धनु तीरा॥ दोहा॥ जटा मुकुट सीसन सुभग उर भुज नयन बिसाल। सरद परब बिधु बदन बर लसत स्वेद कन जाल॥ २९॥ चौपाई॥ बरनि न जाइ मनोहर जोरी। सोभा बहुत थोरि मति मोरी॥ राम लषन सिय सुंदरताई। सब चितवहि चित मन मति लाई॥ थके नारि नर प्रेम पिआसे। मनो म्रगी म्रग देषि दिवा से॥ सीय समीप ग्रामतिय जाही। पूछत अति सनेह सकुचाही॥ बार बार सब लागहि पाये। कहहि बचन म्रदु सरल सुहाये॥ राजकुमारि बिनय हम करही। तिय सुभाय कछु पूछत डरही॥ स्वामिनि अबिनय छमब हमारी। बिलग न मानब जानि गवारी॥ राजकुअर दोउ सहज सलोने। इन ते लही दुति मरकत सोने॥ दोहा॥ स्यामल गौर किसोर बर सुंदर सुषमा ऐन। सरद सर्बरीनाथ मुष सरद सरोरुह नैन॥ ३०॥ चौपाई॥ कोटि मनोज लजावनहारे। सुमुषि कहो को आहि तुमारे॥ सुनि सनेहमय मंजुल बानी। सकुचि सीय मन महु मुसकानी॥ तिनहि बिलोकि बिलोकति धरनी। दुहु सकोच सकुचति बरबरनी॥ सकुचि सप्रेम बाल म्रगनयनी। बोली मधुर बचन पिकबयनी॥ सहज सुभाय सुभग तन गोरे। नाम लषन लघु देवर मोरे॥ बहुरि बदन बिधु अंचल ढांकी। पिय तन चितय भौह करि बांकी॥ षंजन मंजु तिरीछे नयना। निज पति कहेउ तिनहि सिय सयना॥ भई मुदित सब ग्रामबधूटी। रंकन राय रासि जनु लूटी॥ दोहा॥ अति सप्रेम सिय पाय परि बहुबिधि देहि असीस। सदा सुहागिनि होहु तुम जब लग महि अहि सीस॥ ३१॥ चौपाई॥ पारबती सम पतिप्रिय होहू। देबि न हम पर छाडब छोहू॥ पुनि पुनि बिनय करिय कर जोरी। जो एहि मारग फिरिय बहोरी॥ दरसन देब जानि निज दासी। लषी सीय सब प्रेम पिआसी॥ मधुर बचन कहि कहि परितोषी। जनु कुमुदनी कौमुदी पोषी॥ तबहि लषन रघुबर रुष जानी। पूछेउ मग लोगन म्रदु बानी॥ सुनत नारि नर भये दुषारी। पुलकित गात बिलोचन बारी॥ मिटा मोद मन भये मलीने। बिधि निधि दीन लेत जनु छीने॥ समुझि करम गति धीरज कीन्हा। सोधि सुगम मग तिन कहि दीन्हा॥ दोहा॥ लषन जानकी सहित तब गवन कीन रघुनाथ। फेरे सब प्रिय बचन कहि लिये लाइ मन साथ॥ ३२॥ चौपाई॥ फिरत नारि नर अति पछिताही। दैवहि दोष देहि मन माही॥ सहित बिषाद परसपर कहही। बिधि करतब उलटे सब अहही॥ निपट निरंकुस निठुर निसंकू। जेहि ससि कीन सरुज सकलंकू॥ रूष क-

लपतरु सागर षारा। तेहि पठये बन राजकुमारा॥ जो पै इनहि दीन बनबासू। कीन बादि बिधि भोग बिलासू॥ ये बिचरहि मग बिनु पदत्राना। रचे बादि बिधि बाहन नाना॥ ए महि परहि डासि कुस पाता। सुभग सेज कत स्रजत बिधाता॥ तरुबर बास इनहि बिधि दीन्हा। धवल धाम रचि रचि श्रम कीन्हा॥ दोहा॥ जो ए मुनि पट धर जटिल सुंदर सुठि सुकुमार। बिबिध भांति भूषन बसन बादि किये करतार॥ ३३॥ चौपाई॥ जो ए कंद मूल फल षाही। बादि सुधादि असन जग माही॥ एक कहहि ए सहज सुहाए। आपु प्रगट भये बिधि न बनाए॥ जहा लगि बेद कही बिधि करनी। श्रवन नयन मन गोचर बरनी॥ देषहु षोजि भुवन दस चारी। कहु अस पुरुष कहा असि नारी॥ इनहि देषि बिधि मन अनुरागा। पटतर जोग बनावन लागा॥ कीन बहुत श्रम ऐक न आए। तेहि इरषा बन आनि दुराए॥ एक कहहि हम बहुत न जानहि। आपहि परम धन्य करि मानहि॥ ते पुनि पुन्यपुंज हम लेषे। जे देषहि देषिहहि जिन देषे॥ दोहा॥ एहि बिधि कहि कहि बचन प्रिय लेहि नयन भरि नीर। किमि चलिहै मारग अगम सुठि सुकुमार सरीर॥ ३४॥ चौपाई॥ नारि सनेह बिकल बस होही। चकई सांझ समय जनु सोही॥ म्रदु पद कमल कठिन मग जानी। गहबरि ह्रदय बोलि बर बानी॥ परसत म्रदुल चरन अरुनारे। सकुचति महि जिमि ह्रदय हमारे॥ जो जगदीस इनहि बन दीन्हा। कस न सुमनमय मारग कीन्हा॥ जो मागा पाइय बिधि पाही। ए राषिय सषि आंषिन माही॥ जे नर नारि न अवसर आए। तिन सिय राम न देषन पाए॥ सुनि सरूप बूझहि अकुलाई। अब लगि गये कहा लगि भाई॥ समरथ धाइ बिलोकहि जाई। प्रमुदित फिरहि जनम फल पाई॥ दोहा॥ अबला बालक ब्रद्ध जन कर मीजहि पछिताहि। होहि प्रेमबस लोक इमि राम जहा जहा जाहि॥ ३५॥ चौपाई॥ गाव गाव अस होइ अनंदू। देषि भानुकुल कैरव चंदू॥ जे कछु समाचार सुनि पावही। ते न्रप रानिहि दोष लगावही॥ कहहि एक अति भल नरनाहू। दीन हमहि जिनि लोचन लाहू॥ कहहि परसपर लोग लोगाई। बाते सरल सनेह सुहाई॥ ते पितु मातु धन्य जिन जाये। धन्य सो नगर जहा ते आए॥ धन्य सो देस सैल बन गाऊ। जहा जहा जाहि धन्य सोइ ठाऊ॥ सुष पायउ बिरंचि रचि तेही। ए जिनके सब भांति सनेही॥ राम लषन पथि कथा सुहाई। रही सकल मग कानन छाई॥ दोहा॥ एहि बिधि रघुकुल कमल रबि मग लोगन सुष देत। जाहि चले देषत बिपिन सीय सौमित्र समेत॥ ३६॥ चौपाई॥ आगे राम लषन पुनि पाछे। तापस बेष बिराजत काछे॥ उभय बीच सीय सोभत कैसे। ब्रह्म जीव बिच माया जैसे॥ बहुरि कहौ छबि जस मन बसई। जनु मधु मदन बीच रति लसई॥ उपमा बहुरि कहौ जिय जोही। जनु बुध बिधु बिच रोहनी सोही॥ प्रभु पद रेष बीच बिच सीता। धरति चरन मग चलति सभीता॥ सीय राम पद अंक बराए। लषन चलहि मग दाहिन लाए॥ राम लषन सिय प्रीति सुहाई। बचन अगोचर किमि कहि जाई॥ षग म्रग मगन देषि छबि होही। लिये चोरि चित राम बटोही॥ दोहा॥ जिन जिन देषे पथिक प्रिय सीय समेत दोउ भाइ। भव मग अगम अनंद तेइ बिन श्रम रहे सिराइ॥ ३७॥ चौपाई॥ अजहु जासु उर सपनेहु काऊ। बसहि लषन सिय राम बटाऊ॥ राम धाम पथ पाइहै सोई। जो पथ पाव कबहु मुनि कोई॥ तब रघुबीर श्रमित सीय जानी। देषि निकट बट सीतल पानी॥ तहा बसि कंद मूल फल षाई। प्रात नहाइ चले रघुराई॥ देषत बन सर सैल सुहाए। बालमीक आश्रम प्रभु आए॥ राम दीष मुनि बास सुहावन। सुंदर गिरि कानन जल पावन॥ सरन सरोज बिटप बन फूले। गुंजत मंजु मधुप रस भूले॥ षग म्रग बिपुल कोलाहल करही। बिरहित बैर मुदित मन चरही॥ दोहा॥ सुचि सुंदर आश्रम निरषि हरषे राजिवनैन। सुनि रघुबर आगमन मुनि आगे आए लेन॥ चौपाई॥ मुनि कहि राम दंडवत कीन्हा। आसिरबाद बिप्रबर

दीन्हा॥ देषिराममुनिनयनजुडाने॥ करिसनमानआस्रमआने॥ मुनिवरअतिथिप्रानप्रियपाए॥
कंदमूलफलमधुरमंगाए॥ सीयसौमित्रिरामफलखाए॥ तवमुनिआसनदियेसुहाए॥
वालमीकमनआनंदभारी॥ मंगलमूरतिनयननिहारी॥ मातुपितान्हप्रानपियारे॥ ता
त्रवनहितवन्नहियगायारो॥ तवकरकवलजोरिरघुराई॥ वोलेवचनश्रवनसुषदाई॥
तुम्हत्रिकालदरसीमुनिनाथा॥ विश्वबदरजिमितुम्हारेहाथा॥ असकहिप्रभुसवकथा
वषानी॥ जेहिजेहिभातिदीन्हवनरानी॥ दोहा॥ तातवचनपुनिमातहितभाइभरत
भरतअसराउ॥ मोकहूदरसतुम्हारप्रभुसवममपुन्यप्रभाउ॥१२५॥ चौपाई॥ देषिपायमुनि
रायतुम्हारे॥ सफलभएसवसुकृतहमारे॥ अवजहराउरआयसुहोइ॥ मुनिउदवेगनपा
वैकोइ॥ मुनितापसजिनतेंदुषलहही॥ तेनरेसविनुपावकदहही॥ मंगलमूलविप्रपरितो
ष॥ दहइकोटिकुलभूसुररोष॥ असजियजानिकहियसोठाउ॥ सीयसौमित्रिसहितजहँ
जाजाउ॥ तहाँरचिरुचिरपरनतृनसाला॥ वासकरौकछुकालकृपाला॥ सहजसर
लसुनिरघुवरवानि॥ साधुसाधुवोलेमुनिग्यानी॥ कसनकहहुअसरघुकुलकेतू॥ तु
म्हपालकसंततश्रुतिसेतू॥ छंद॥ श्रुतिसेतुपालकरामतुम्हजगदीसमायाजान
की॥ जोसृजतिजगपालतिहरतिरूषपायकृपानिधानकी॥ जोसहससीसअहीसमु
हिधरलषनसचराचरधनी॥ सुरकाजधरिनरराजतनुचलेदलनषलनिसिचरअनी॥
सो॰ रा॥ रामसरूपतुम्हारवचनअगोचरवुधिपर॥ अविगतअकथअपारनेतिनेति
नितिनिगमकह॥१२६॥ चौपाई॥ जगपेषनतुम्हदेषनहारे॥ विधिहरिसंभुनचावनिहारे॥
तेउनजानेहिमरमतुम्हारे॥ औरतुम्हहिकोजाननहारा॥ सोइजानेजेहिदेहुजनाई॥
जानततुम्हहितुम्हहिहोइजाई॥ तुम्हरिकृपातुम्हहिरघुनंदन॥ जानहिभगतभगतिउरचंद
न॥ चिदानंदमयदेहतुम्हारी॥ विगतविकारजानिअधिकारी॥ नरतनुधरेहुसंततसुरका
जा॥ कहहुकरहुजसप्राकृतराजा॥ रामदेषिसुनिचरिततुम्हारे॥ जडमोहहिवुधहोत
सुषारे॥ तुम्हजोकहहुकरहुसवसाचा॥ जसकाछियतसचाहिअनाचा॥ दोहा॥ पूछि
हुमोहिकिरहोकहामेपूछतसकुचाउ॥ जहँनहोहुतहादेहुकहितुम्हहिदिषाउठाउ॥१२७॥
चौपाई॥ सुनिमुनिवचनप्रेमरससाने॥ सकुचिराममनमहुमुसुकाने॥ वालमीकहसिकहहि
वहोरी॥ वानिमधुरअमीरससोरी॥ सुनहुरामअवकहउनिकेता॥ जहाँवसहुसीयलष
नसमेता॥ जिनकेश्रवनसमुद्रसमाना॥ कथातुम्हारिसुभगसरिनाना॥ भरहिनिरं
तरहोहीनपूरे॥ तिनकेहियतुम्हकहुग्रहरूरे॥ लोचनचातकजिनकरिराषे॥ रहहिदर
सजलधरअभिलाषे॥ निदरहिसरितसिंधुसरभारी॥ रूपविंदुजलहोहिसुषारी॥ तिन
केहृदयसदनसुषदायक॥ वसहुवंधुसीयसहरघुनायक॥ दोहा॥ जसतुम्हारमानस
विमलहंसनिजीहाजासु॥ मुकताहलगुनगनचुनइरामवसहुमनतासु॥१२८॥ चौपा
ई॥ प्रभुप्रसादसुचिसुभगसुवासा॥ सादरजासुलहैनितनासा॥ तुम्हहिनिवेदितभो
जनकरहीं॥ प्रभुप्रसादपटभूषनधरहीं॥ सीसनवहिसुरगुरुद्विजदेषी॥ प्रीतिसहितक
रिविनयविसेषी॥ करनितकरहिरामपदपूजा॥ रामभरोसहृदयनहिदूजा॥ चरनरामती
रथचलिजाहीं॥ रामवसहुतिनकेमनमाहीं॥ मंत्रराजनितिजपहितुम्हारा॥ पूजहितु
म्हहिसहितपरिवारा॥ तरपनहोमकरहिविधिनाना॥ विप्रजिवाइदेहिवहुदाना॥ तुम्हते
अधिकगुरहिजीयजानी॥ सकलभायसेवहिसनमानी॥ दोहा॥ सवकरिमागहि
एकफलरामचरनरतिहोउ॥ तिनकेमनमंदिरवसहुसीयरघुनंदनदोउ॥१२९॥ चौ
पाई॥ कामकोहमदमाननमोहा॥ लोभनछोभनरागनद्रोहा॥ जिनकेकपटदंभन
हिमाया॥ तिनकेहृदयवसहुरघुराया॥ सवकेप्रियसवकेहितकारी॥ दुषसुषसरिस
प्रसंसागारी॥ कहहिसत्यप्रियवचनविचारी॥ जागतसोवतसरनतुम्हारी॥ तुम्हहि

छाडिगतिदूसरीनाहीं॥ रामवसहुतिनकेमनमाहीं॥ जननीसमजानहिपरनारी॥
धनपरायविषतेविषभारी॥ जेहरषहिपरसंपतिदेषी॥ दुषितहोहिपरविपतिविसे
षी॥ जिनहिरामतुम्हप्रानपियारे॥ तिनकेमनसुभसदनतिहारे॥ दोहा॥ स्वामिसषा
पितुमातुगुरुजिनकेसवतुम्हतात॥ मनमंदिरतिनकेवसहुसीयसहितदोउभ्रा
त॥१३०॥ चौपाई॥ अवगुनतजिसवकेगुनगहहीं॥ विप्रधेनुहितसंकटसहहीं॥ नी
तिनिपुनजिनकैजगलीका॥ घरतुम्हारतिनकरमननीका॥ गुनतुम्हारसमुझहिनि
जदोसा॥ जेहिसवभातितुम्हारभरोसा॥ रामभगतप्रियलागहिजेही॥ तेहिउरवसहु
सहितवैदेही॥ जातिपातिधनधरमवडाई॥ प्रियपरिवारसदनसुषदाई॥ सवतजित
म्हहिरहैलवलाई॥ तेहिकेहृदयवसहुरघुराई॥ सरगनरकअपवरगसमाना॥ जहाँत
हादेषधरेधनुवाना॥ करमवचनमनराउरचेरा॥ रामकरहुतिनकेउरडेरा॥ दोहा॥ जा
हिनचाहियकवहुकछुतुम्हसनसहजसनेह॥ वसहुनिरंतरतासुहियसोराउरनिज
गेह॥१३१॥ चौपाई॥ येहिविधिमुनिवरभवनदेषाए॥ वचनसप्रेमराममनभाए॥ कहमुनि
सुनहुभानुकुलनायक॥ आश्रमकहौसमयसुषदायक॥ चित्रकूटगिरिकरहुनिवासु॥
तहातुम्हारसवभातिसुपासु॥ सैलसुहावनकाननचारु॥ करिकेहरिमृगविहंगविहारु॥
नदीपुनीतपुरानवषानी॥ अत्रिप्रियानिजतपवलआनी॥ सुरसरिधारनाममंदाक
नि॥ जोसवपातकपोतकडाकिनि॥ अत्रिआदिमुनिवरवहुवसहीं॥ करहिजोगजप
तपतनकसहीं॥ चलहुसफलश्रमसवकरकरहू॥ रामदेहुगौरवगिरिवरहू॥
दोहा॥ चित्रकूटमहिमाअमितकहीमहामुनिगाइ॥ आइनहायेसरितवरसीयस
मेतदोउभाइ॥१३२॥ चौपाई॥ रघुवरकहेउलषनवरघाटू॥ करहुकतहुअवठाहरठा
टू॥ लषनदेषिपयउतरकरारा॥ चहुदिसिफिरेउधनुषजिमिनारा॥ नदीपनचसर
समदमदाना॥ सकलकलुषकलिसावजनाना॥ चित्रकूटजनुअचलअहेरी॥ चुक
इनघातमारमुठभेरी॥ असकहिलषनठाउदिषरावा॥ थलविलोकिरघुवरसुषपावा॥
रमेउराममनदेवनजाना॥ चलेसहितसुरथपतिप्रधाना॥ कोलकिरातवेषसवआ
ए॥ रचेपरनतृनसदनसुहाए॥ वरनिनजाहिमंजुदुइसाला॥ एकललितलघु
एकविसाला॥ दोहा॥ लषनजानकीसहितप्रभुराजतरुचिरनिकेत॥ सोहमदन
मुनिवेषजनुरतिरितुराजसमेत॥१३३॥ चौपाई॥ अमरनागकिंनरदिसिपाला॥ चि
त्रकूटआएतेहिकाला॥ रामप्रनामकीन्हसवकाहू॥ मुदितदेवलहिलोचनलाहू॥
वरषिसुमनकहदेवसमाजू॥ नाथसनाथभयेहमआजू॥ करिविनतीदुषदुसहसु
नाए॥ हरषितनिजनिजसदनसिधाये॥ चित्रकूटरघुनंदनछाये॥ समाचारसुनि
सुनिमुनिआए॥ आवतदेषिमुदितमुनिवृंदा॥ कीनदंडवतरघुकुलचंदा॥ मुनिर
घुवरहिलाइउरलेही॥ सुफलहोनहितआसिषदेहीं॥ सीयसौमित्रिरा
मछविदेषहि॥ साधनसकलसफलकरलेषहि॥ दोहा॥ जथाजोगसनमानप्रभुविद
कियेमुनिवृंद॥ करहिजोगजपजागतपनिजआश्रमनिसुछंद॥ चौपाई॥ यह
सुधकोलकिरातनपाई॥ हरषेजनुनवनिधिघरआई॥ कंदमूलफलभरिभरिदोना॥
चलेरंकजनुलूटनसोना॥ तिन्हमेजिनदेषेदोउभ्राता॥ अपरतिन्हहिपूछहिमगजाता॥ कह
तसुनतरघुवीरनिकाई॥ आइसवहिदेषेरघुराई॥ करहिजुहारभेटधरिआगे॥ प्रभुहिवि
लोकहिअतिअनुरागे॥ चित्रलिषेजनुजहँतहँठाढे॥ पुलकसरीरनयनजलवाढे॥
राममनेहमनसवजानि॥ कहिप्रियवचनसकलसनमानी॥ प्रभुहिजुहारीवहोरि
वहोरि॥ वचनविनीतकहहिकरजोरी॥ दोहा॥ अवहमनाथसनाथसवभयेदेषिप्रभुन
वपाये॥ भागहमारेआगमनुराउरकोसलराये॥१३५॥ चौपाई॥ धन्यभूमिवनपंथपहारा॥

रा म॰ ६३

जहांजहांनाथपाउतुमधारा॥ धन्यविहंगम्रगकाननचारी॥ सफलजनमभयेतुम्ह
हिनिहारी॥ हमसवधन्यसहितपरिवारा॥ देषदरसभरिनयनतुम्हारा॥ कीन्हवासभ
लठाउविचारी॥ इहांसकलरितुरहवसुषारी॥ हमसवभांतिकरवसेवकाई॥ करी
केहरिअहिवाघवराई॥ वनवेहडगिरिकंदरषोहा॥ सवहमारप्रभुपगपगजोहा॥ तहं
तहांतुम्हहिअहेरषिलाउव॥ सरनिरझरजलठाउदिषाउव॥ हमसेवकपरिवारस
मेता॥ नाथनसकुचवआयसुदेता॥ दोहा॥ वेदवचनमुनिमनअगमतेप्रभुक
रुनाअयन॥ वचनकिरातनकेसुनतजिमिपितुवालकवयन॥ ४७॥ चौपाई॥ रामहि
केवलप्रेमपियारा॥ जानलेउजोजाननहारा॥ रामसकलवनचरतवतोषे॥ कहिमृ
दुवचनप्रेमपरिपोषे॥ विदाकियेसिरनाइसिधाये॥ प्रभुगुनकहतसुनतघरआये॥
यहिविधिसीयसमेतदोउभाई॥ वसहिविपिनसुरमुनिसुषदाई॥ जवतेआयेरहेरघुना
यक॥ तवतेभयेउवनमंगलदायक॥ फूलहिफलहिविटपविधिनाना॥ मंजुलव
लितवरवेलिविताना॥ सुरतरुसरससुभायसुहाए॥ मनहुविवुधवनपरिहरिआ
ए॥ गुंजतमंजुतरमधुकरश्रेनी॥ त्रिविधिवयारिवहैसुषदेनी॥ दोहा॥ नीलकंठकल
कंठसुकचातकचक्कचकोर॥ भांतिभांतिवोलहिविहगश्रवणसुषदचितचो
र॥ ४८॥ चौपाई॥ करिकेहरिकपिकोलकुरंगा॥ विगतवैरविचरहिसवसंगा॥ फि
रतअहेररामछविदेषी॥ होहिमुदितमृगवृंदविसेषी॥ विवुधविपिनजहांलगिजगमा
हीं॥ देषिरामवनसकलसिहाहीं॥ सुरसरिसरसुतिदिनकरकन्या॥ मेकलसुतागो
दावरिधन्या॥ सवसरसिंधुनदीनदनाना॥ मंदाकिनिकरकरहिवषाना॥ उदयअस्त
गिरिअरुकैलासू॥ मंदिरमेरुसकलसुरवासू॥ सैलहिमाचलआदिकजेते॥ चित्रकूट
जसगावहितेते॥ विंधमुदितमनसुषनसमाउ॥ श्रमविनुविपुलवडाईपाउ॥ दोहा॥
चित्रकूटकेविहंगमृगवेलिविटपतृणजाति॥ पुन्यपुंजसवधन्यअसकहहिदेवदि
नराति॥ ४९॥ चौपाई॥ नयनवंतरघुवरहिविलोकी॥ पाइजनमफलहोहिविसो
की॥ परसिचरनरजअचरसुषारी॥ भयेपरमपदकेअधिकारी॥ सोवनसैलसुभा
यसुहावन॥ मंगलमयअतिपावनपावन॥ महिमाकहियकौनविधितासू॥ सुषसाग
रजहांकीन्हनिवासू॥ पयपयोधितजिअवधविहाई॥ जहांसियलषनरामरहेआई॥
कहिनसकहिसुषमाजसकानन॥ जोसतसहसहोहिसहसानन॥ सोमैवरनकहौविधि
केही॥ डावरकमठकिमंदिरलेही॥ सेवहिलषनकरममनवानी॥ जाइनसीलसनेहव
षानी॥ दोहा॥ छिनछिनलषिसियरामपदजानिआपपरनेहु॥ करतनसपनेहुलषन
चितवंधुमातुपितुगेहु॥ ५०॥ चौपाई॥ रामसंगसियरहतिसुषारी॥ पुरपरिजनगृहसु
रतिविसारी॥ छिनछिनपियविधुवदननिहारी॥ प्रमुदितमनहुचकोरकुमारी॥ नाहु
नेहुनितवढतविलोकी॥ हरषितरहतदिवसजिमिकोकी॥ सीयमनरामचरनअनु
रागा॥ पियपरिवारकुरंगविहंगा॥ सासससुरसमुनितियमुनिऊरा॥ असनअमीयसमकंद
फलफूला॥ नाथसाथसाथरीसुहाई॥ मयनसयनसयसमसुषदाई॥ लोकपहोहि
विलोकतजासू॥ तेहिकिमोहिसकविषयविलासू॥ दोहा॥ सुमिरतरामहितजहिजन
तृनसमविषयविलास॥ रामप्रियाजगजननिसीयाकछुनअचरिजतासु॥ ५१॥
चौपाई॥ सीयलषनजेहिविधिसुषलहहीं॥ सोइरघुनाथकरहिसोइकहहीं॥ कहे
पुरातनकथाकहानी॥ सुनहिलषनसियअतिसुषमानी॥ जवजवरामअवधसुधि
करहीं॥ तवतववारिविलोचनभरहीं॥ सुमिरिमातुपितुपरिजनभाई॥ भरतसनेहसी
लसेवकाई॥ कृपासिंधुप्रभुहोहिदुषारी॥ धीरजधरहिकुसमउविचारी॥ लषिसिय
लषनविकलहोइजाहीं॥ जिमिपुरुषहिअनुसरपरछाहीं॥ प्रियवंधुगतिलषिर

घुनंदन॥ धीरकृपालभगतउरचंदन॥ लगेकहनकछुकथापुनीता॥ सुनिसुषलह
हीलषनअरुसीता॥ दोहा॥ रामलषनसीतासहितसोहतपरननिकेत॥ जिमि
वासववसअमरपुरसचीजयंतसमेत॥ ५२॥ चौपाई॥ जोगवहिप्रभुसियलषनहि
कैसे॥ पलकविलोचनगोलकजैसे॥ सेवहिलषनसीयरघुवीरहि॥ जिमिअविवेकी
पुरुषसरीरहि॥ यहिविधिप्रभुवनवसहिसुषारी॥ षगमृगसुरतापसहितकारी॥ कहे
उराममवनगवनसुहावा॥ सुनहुसुमंतअवधजिमिआवा॥ फिरेउनिषादप्रभुहिपहुचा
ई॥ सचिवसहितरथदेषिसिआई॥ मंत्रीविकलविलोकिनिषादू॥ कहिनजाइजसभयेउ
विषादू॥ रामरामसीयलषनपुकारी॥ परेउधरनितलव्याकुलभारी॥ देषिदषिनदिसि
हयहिहिनाहीं॥ जनुविनुपंषविहगअकुलाहीं॥ दोहा॥ नहितृणचरहिपिअहिजल
मोचहिलोचनवारि॥ व्याकुलभयेउनिषादतवरघुवरवाजिनिहारि॥ ५३॥ चौपाई॥
धरिधीरजतवकहइनिषादू॥ अवसुमंतपरिहरहुविषादू॥ तुमपंडितपरमारथग्याता॥
धरहुधीरलषिविमुषविधाता॥ विविधिकथाकहिकहिमृदुवानी॥ रथवैठारेउवरवस
आनी॥ सोकसिथिलरथसकइनहांकी॥ रघुवरविरहपीरउरवांकी॥ चरफराहिमगचल
हिनघोरे॥ वनमृगमनहुआनिरथजोरे॥ अढुकिपरहिफिरिहेरहिपीछे॥ रामवियोगवि
कलदुषतीछे॥ जोकहरामलषनवैदेही॥ हिंकरिहिंकरिहितहेरहितेही॥ वाजिविरहगति
कहिकिमिजाही॥ विनुमनिफनिकविकलजेहिभांती॥ दोहा॥ भयेउनिषादविषादवस
देषतसचिवतुरंग॥ वोलिसुसेवकचारितवदियेसारथीसंग॥ ५४॥ चौपाई॥ गुहसार
थिहिफिरेउपहुचाई॥ विरहविषादवरनिनहीजाई॥ चलेअवधलेरथहिनिषादा॥ होहि
छिनछिनमगनविषादा॥ सोचसुमंतविकलदुषदीना॥ धिगजीवनरघुवीरविहीना॥
रहहिनअंतहुअधमसरीरू॥ जसनलहेउविछुरतरघुवीरू॥ भयेअजसअघभाजनप्राना॥
कवनहेतुनहीकरतपयाना॥ अहहुमदमनअवसरचूका॥ अजहुनहृदयहोतदुइटूका॥
मीजिहाथसिरधुनिपछिताई॥ मनहुकृपनधनरासिगमाई॥ विरदवांधिवरवीरकहा
इ॥ चलेउसमरजनसुभटपराई॥ करहिविलापमनहिमनमाहीं॥ उतरकहादेइहिनृप
पाहीं॥ दोहा॥ विप्रविवेकीवेदविदसंमतसाधुसुजाति॥ जिमिधोषेमदपानकरसचिव
सोचतिमिभांति॥ ५५॥ चौपाई॥ जिमिकुलीनतियसाधुसयानी॥ पतिदेवताकरममनवानी॥
रहैकरमवसपरिहरिनाहू॥ सचिवहृदयतिमिदारुणदाहू॥ लोचनसजलडीठिभइथोरी॥
सुनइनश्रवनविकलमतिभोरी॥ सूषहिअधरलागिमुहलाटी॥ जीवनजाइउरअवधि
कपाटी॥ विवरनभयेउनजाइनिहारी॥ मारेसिमनहुपितामहतारी॥ हानिगलानि
विपुलमनव्यापी॥ जमपुरपंथसोचजिमिपापी॥ वचननआवहृदयपछिताई॥ अवधि
कहामैदेषवजाई॥ रामरहितरथदेषहिजोई॥ सकुचिहिमोहिविलोकतसोई॥ दोहा॥
धाइपूछिहहिमोहिजवविकलनगरनरनारि॥ उतरदेवमैसवहितवहृदयवज्रवैठारि॥
५६॥ चौपाई॥ पूछिहहिदीनदुषितसवमाता॥ कहवकहामैतिनहिविधाता॥ पूछिहि
जवहिलषनमहतारी॥ कहिहौकौनसंदेससुषारी॥ रामजननिजवआइहिधाई॥ सुमि
रिवछजिमिधेनुलवाई॥ पूछतउतरदेवमैतेही॥ गयेवनरामलषनवैदेही॥ जोइपू
छिहितेहिउतरदेवा॥ जाइअवधिअवयहिसुषलेवा॥ पूछिहिजवहिराउदुषदीना॥ जी
वनजासुरघुनाथअधीना॥ देहौंउतरकवनमुहुलाई॥ आयेउंकुसलकुअरपहुंचाई॥ सुन
तलषनसियरामसंदेसू॥ तृनजिमितनपरिहरिहिनरेसू॥ दोहा॥ हृदयनविदरेउपं
कजिमिविछुरतप्रीतमनीरु॥ जानतहौमोहिदीनविधियेहजातनासरीरु॥ ५७॥
चौपाई॥ यहिविधिकरतपंथपछितावा॥ तमसातीरतुरतरथआवा॥ विदाकियेकरि
विनयनिषादा॥ फिरेपायपरिविकलविषादा॥ पैठतनगरसचिवसकुचाई॥ जनुमार
सिगुरुवांभनगाई॥ वैठिविटपतरदिवसगवावा॥ सांझसमयतवअवसरपावा॥ अ
वधिप्रवेसकीन्हअंधियारे॥ पैठभवनरथराषिदुआरे॥ जिनजिनसमाचारसुनिपाये॥ भूप

द्वाररथदेषनआए॥ रथपहचानिविकललषिघोरे॥ गरहिंगातजिमिआतपओरे॥ नगरनारि
नरव्याकुलकैसे॥ निघटतनीरमीनगनजैसे॥ दोहा॥ सचिवआगमनसुनतसव
विकलभयेउरनिवास॥ भवनभयंकरलागतेहिमानहुप्रेतनिवास॥१४२॥ चौपाई॥
अतिआरतसवपूछहिरानी॥ उतरनआवविकलभईवानी॥ सुनइनश्रवननयन
नहिसूझा॥ कहहुकहांनृपजेहितेहिवूझा॥ दासिनदीषसचिवविकलाई॥ कौस
ल्यागृहगईलवाई॥ जाइसुमंतदेषकसराजा॥ अमियरहितजनुचंदुविराजा॥ आस
नसयनविभूषनहीना॥ परेउभूमितलनिपटमलीना॥ लेइउसाससोचयेहिभांती॥
जनुजरिपंषपरेउसंपाती॥ रामरामकहरामसनेही॥ पुनिकहरा
मलषनवैदेही॥ दो॥ देषिसचिवजयजीवकहिकीन्हेउदंडप्रनामु॥ सुनतउठेव्याकुल
नृपतिकहुसुमंतकहारामु॥१४३॥ चौपाई॥ भूपसुमंतलीनउरलाई॥ वूडतकछुअधारज
नुपाई॥ सहितसनेहनिकटवैठारी॥ पूछतराउनयनभरिवारी॥ रामकुसलकहुसषा
सनेही॥ कहारघुनाथलषनवैदेही॥ आनेफेरिकिवनहिसिधाए॥ सुनतसचिवलो
चनजलछाए॥ सोकविकलपुनिपूछनरेसू॥ कहुसीयरामलषनसंदेसू॥ रामरूपगु
नसीलसुभाऊ॥ सुमिरिसुमिरिउरसोचतराऊ॥ राउसुनायदीनवनवासू॥ सुनिमन
भयेउनहरषहरासू॥ सोसुतविछुरतगयेनप्राना॥ कोपापीवडमोहिसमाना॥ दो
हा॥ सषारामसीयलषनजहांतहांमोहिपहुचाउ॥ नाहितचाहतचलनअवप्रानकहौ
सतभाउ॥१४४॥ चौपाई॥ पुनिपुनिपूछतमंत्रिहिराऊ॥ प्रीतमसुअनसंदेससुनाऊ॥ कर
हुसषासोइवेगिउपाऊ॥ रामलषनसीयनैनदेषाऊ॥ सचिवधीरधरिकहमृदुवानी॥
महाराजतुमपंडितज्ञानी॥ वीरसुधीरधुरंधरदेवा॥ साधुसमाजसदातुमसेवा॥ ज
नममरनसवदुषसुषभोगा॥ हानिलाभप्रियमिलनवियोगा॥ कालकरमवसहोहि
गोसाई॥ वरवसरातिदिवसकीनाई॥ सुषहरषहिजडदुषविलषाही॥ दोउसमधी
रधरहिमनमाही॥ धीरजधरहुविवेकविचारी॥ छाडिअसोचसकलहितकारी॥ दो
हा॥ प्रथमवासतमसाभयेउदूसरसुरसरितीर॥ न्हाइरहेजलपानकरिसीयसमेतदोउ
वीर॥१४५॥ चौपाई॥ केवटकीनवहुतसेवकाई॥ सोजामिनिसिंगरौरगवाई॥ होतप्रातवट
छीरमगावा॥ जटामुकुटनिजसीसवनावा॥ रामसषातवनावमगाई॥ प्रियाचढाइचढे
रघुराई॥ लषनवानधनुधरेवनाई॥ आपुचढेप्रभुआयसुपाई॥ विकलविलोकिमोहिर
घुवीरा॥ वोलेमधुरवचनधरिधीरा॥ तातप्रनामतातसनकहेउ॥ वारवारपदपंकजग
हेउ॥ करवपायपरिविनयवहोरी॥ तातकरिअजिनचिंतामोरी॥ वनमगमंगलकु
सलहमारे॥ कृपाअनुग्रहपुन्यतुम्हारे॥ छंद॥ तुम्हरेअनुग्रहतातकाननजातस
वसुषपाइहौ॥ प्रतिपालिआयसुकुसलदेषनपायपुनिफिरिआइहौ॥ जननीसकल
परितोषिपरिपायनकरिविनतीघनी॥ तुलसीकरेहुसोइजतनजेहिकुसलरहहि
कौसलधनी॥ सोरठा॥ गुरसनकहवसंदेसवारवारपदपदमगहि॥ करवसोइउ
पदेसजेहिनसोचमोहिअवधपति॥१४६॥ चौपाई॥ पुरजनपरिजनसकलनिहोरी॥ तातसु
नायहुविनतीमोरी॥ सोइसवभांतिमोरहितकारी॥ जातेरहैनरनाहसुषारी॥ कह
वसंदेसभरतकेआए॥ नीतिनतजिअराजपदपाए॥ पालेहुप्रजहिकरममनवानी॥
सेएहुमातसकलसमजानी॥ ओरनिवाहेहुभायपभाई॥ करिपितुमातसुजनसेव
काई॥ तातभांतितेहिराषवराऊ॥ सोचमोरजेहिकरैनकाऊ॥ लषनकहेकछुव
चनकठोरा॥ वरजिरामपुनिमोहिनिहोरा॥ वारवारनिजसपथदेवाई॥ कहविनतात
लषनलरिकाई॥ दोहा॥ कहिप्रनामकछुकहनलियसीयभइसिथिलसनेह॥ थकि
तवचनलोचनसजलपुलकपल्लवितदेह॥ चौपाई॥ तेहिअवसररघुवररुषपाई॥ केव
टपारहिनावचलाई॥ रघुकुलतिलकचलेयेहिभांती॥ देषउठाढकुलिसधरिछाती॥
मैआपनकिमिकहौकलेसू॥ जियतफिरेउलेइरामसंदेसू॥ असकहिसचिववचनरहि

गयउ॥ हानिगलानिसोचवसभयउ॥ सूतवचनसुनतहिनरनाहू॥ परेउधरनिउ
रदारुनदाहू॥ तलफतविषममोहमनमापा॥ माजामनहुमीनकहुव्यापा॥ करि
विलापरोवहिसवरानी॥ महाविपतिकिमिजायवषानी॥ सुनिविलापदुषहूदु
षलागा॥ धीरजहूकरधीरजभागा॥ दोहा॥ भयेउकोलाहलअवधअतिसुनिनृ
पराउरसोरु॥ विपुलविहंगवनपरेउनिसिमानहुकुलिसकठोरु॥१४८॥ चौपाई॥
प्रानकंठगतभयेउभुआलू॥ मनिविहीनजनुव्याकुलव्यालू॥ इंद्रीसकलविकल
भइभारी॥ जनुसरसरसिजवनविनुवारी॥ कौसल्यानृपदेषमलीना॥ रविकु
लरविअथयेउजियजाना॥ उरधरिधीरराममहतारी॥ वोलीवचनसमयअनुसा
री॥ नाथसमुझिमनकरिअविचारू॥ रामवियोगपयोधिअपारू॥ करनधारतु
मअवधजिहाजू॥ चढेउसकलप्रियपथिकसमाजू॥ धीरजधरियतपाइअपा
रू॥ नाहितवूडिहिसवपरिवारू॥ जोजियधरिअविनयपियमोरी॥ रामलषनसीय
मिलहिवहोरी॥ दो॥ प्रियावचनमृदुसुनतनृपचितयेउआंषिउघारि॥ तलफ
तमीनमलीनजनुसीचेउसीतलवारि॥१४९॥ चौपाई॥ धरिधीरजउठिवैठभुआ
लू॥ कहुसुमंतकहारामकृपालू॥ कहालषनकहारामसनेही॥ कहाप्रियपुत्रव
धूवैदेही॥ विलपतराउविकलवहुभांती॥ भइजुगसरिससिरातनराती॥ तापसअं
धसापसुधिआई॥ कौसल्याहिसवकथासुनाई॥ भयेउविकलवरनतइतिहासा॥ रा
मरहितधिगजीवनआसा॥ सोतनराषिकरवमैकाहा॥ जेहिनप्रेमपनमोरनिवा
हा॥ हारघुनंदनप्रानपरीते॥ तुमविनजिवतवहुतदिनवीते॥ हाजानकीलष
न हारघुवर॥ हापितुहितचितचातकजलधर॥ दो॥ रामरामकहिरामकहिरा
म तनुपरिहरिरघुवरविरहराउगयेउसुरधाम॥१५०॥ चौपाई॥ जिअनमरनफलद
सरथपावा॥ अंडअनेकअमलजसछावा॥ जियतरामविधुवदननिहारी॥
रामविरहमरिमरनसवारी॥ सोकविकलसवरोवहिरानी॥ रूपसीलवलतेज
वषानी॥ करहिविलापअनेकप्रकारा॥ परहिभूमितलवारहिवारा॥ विलपहिवि
कलदासअरुदासी॥ घरघररुदनकरहिपुरवासी॥ अथयेउआजुभानुकुलभानु॥
धरमअवधिगुनरूपनिधानु॥ गारीसकलकैकइहिदेही॥ नयनविहीनकीनजगजे
हि॥ येहिविधिविलपतरैनिविहानी॥ आयेसकलमहामुनिज्ञानी॥ दो॥ तववसि
ष्टमुनिसमयसमकहिअनेकइतिहास॥ सोकनिवारेउसवहिकरनिजविज्ञान
प्रकास॥१५१॥ चौपाई॥ तेलनावभरिनृपतनराषा॥ दूतवोलायवहुरिअसभाषा॥
धावहुवेगभरतपहिजाहू॥ नृपसुधिकतहुकहहुजनिकाहू॥ एतनेइकहेउभरत
सनजाई॥ गुरवोलायपठयेदोउभाई॥ सुनिमुनिआयसुधावनधाये॥ चलेवे
गवरवाजिलजाये॥ अनरथअवधअरंभेउजवते॥ कुसगुनहोहिभरतकहतवते॥
देषहिरातिभयानकसपना॥ जागिकरहिकटुकोटिकलपना॥ विप्रजिवाइदेहि
दिनदाना॥ सिवअभिषेककरहिविधिनाना॥ मागहिहृदयमहेसमनाई॥ कुसल
मातपितुपरिजनभाई॥ दो॥ येहिविधिसोचतभरतमनधावनपहुचेआइ॥ गुर
अनुसासनश्रवनसुनिचलेगनेसमनाइ॥१५२॥ चौपाई॥ चलेसमीरवेगहयहा
के॥ नाघतसरितसैलवनवाके॥ हृदयसोचवडकछुनसुहाई॥ असजानहिजिय
जाउउडाई॥ एकनिमेषवरषसमजाई॥ येहिविधिभरतनिअरायेआई॥ असगुनहोहि
नगरपैठारा॥ रटहिकुभांतिकुषेतकरारा॥ षरसिआरवोलहिप्रतिकूला॥ सुनिसु
निहोहिभरतमनसूला॥ श्रीहतसरसरितावनवागा॥ नगरविसेषिभयावनला
गा॥ षगमृगहयगयजाहिनजोये॥ रामवियोगकुरोगविगोये॥ नगरनारिनरनि

परदुषारी मनहुसवववमवसंपतिहारी ॥दोहा॥ पुरजनमिलहिनकहहिकछुगवहिजो
हारहिजाहि भरतकुसलपुछनसकहिभयविषादमनमाहि ५२ ॥चौपाई॥ हाट
वाटननिजाइनिहारी मनुपुरदहदिसिलागिदवारी आवतसुतसुनिकैकयनंदनि
हरषिरविकुलजलरुहचंदनी सजिआरतीमुदितउठिधाई द्वारहिभेटिभवनलेआ
ई भरतदुषितपरिवारनिहारा मानौतुहिनवनजवनमारा कैकईहरषितय
हिभाती मनहुमुदितदवलाइकिराती सुतहिससोचदेषिमनमारे पूछति
नैहरकुसलहमारे सकलकुसलकहिभरतसुनाई पूछीनिजकुलकुस
लभलाई कहुकहातातकहासवमाता कहासीयरामलषनप्रियभ्राता
॥दोहा॥ सुनिसुतवचनसनेहमयकपटनीरभरिनयन भरतश्रवनमनसूलस
मपापिनिबोलीवयन ५३ ॥चौपाई॥ तातवातमैसकलसवारी भैमंथरासहा
यविचारी कछुककाजविधिबीचविगारेउ भूपतिसुरपतिपुरपगुधारेउ सुनत
भरतभयेविवसविषादा जनुसहमेउकरिकेहरिनादा तात तात हा तात पुकारी
परेउभूमितलव्याकुलभारी चलतनदेषनपायउतोही तातनरामहिसौपेहु
मोही बहुरिधीरधरिउठेसंभारी कहुपितुहेतमरनमहतारी सुनिसुतवचन
कहतकैकेई मरमपाछिजनुमाहुरदेई आदिहुतेसबआपनिकरनी कुटिलक
ठोरमुदितमनवरनी कवनहेतसुतसोचअपारा जोलततवअग्रगुनसकमारा
तिन्हकहुभयपरजापसरीन्हा भैतुमलागिसजतनउकीन्हा ॥दोहा॥ भरतविसरेउ
पितुमरनसुनतरामवनगौन हेतुअपनपौजानिजियथकितरहेधरिमौन ५४
॥चौपाई॥ विकलविलोकिसुतहिसमुझावति मनहुजरेपरिलोनलगावति तातरा
उनहिसोचनजोगू विढइसुकृतजसकीन्हेउभोगू जीवतसकलजनमफल
पाए अंतअमरपतिसदनसिधाए असअनुमानसोचपरिहरहू सहितसमाज
राजपुरकरहू सुनिसुठिसहमेउराजकुमारू पाकेछतजनुलागिअंगारू धी
रजधरिभरिलेहिउसासा पापिनिसवहिभांतिकुलनासा जौपैकुरुचिरहीअति
तोही जनमतकाहेनमारेहुमोही पेडकाटितैपालउसीचा मीनजिवन
हितवारिउलीचा ॥दोहा॥ हंसवसदसरथजनकरामलषनसेभाइ जननीतूज
ननीभईविधिसनकछुनवसाइ ॥५५॥ ॥चौपाई॥ जवतैकुमतिकुमतजियठयऊ षंड
षंडहोइहृदयनगयऊ वरमांगतमनभइनहिपीरा गरिनजीहमुहपरेउनकीरा
भूपप्रतीतितोरिकिमिकीन्ही मरनकालविधिमतिहरिलीन्ही विधिहुनहिनारिहृद
यगतिजानी सकलकपटअघअवगुनषानी सरलसुसीलधरमरतराउ सोकि
मिजानहितीयसुभाउ असकोजीवजंतुजगमाही जेहिरघुनाथप्रानप्रियनाही
भयेअतिअहितरामतेउतोही कोतूअहिसतकहुमोही जोहसिसोहसिमुहम
सिलाई आंषिओटउठिवैठहुजाई ॥दोहा॥ रामविरोधीहृदयतेप्रगटकीन्हविधिमो
ही मोसमानकोपातकीवादिकहउकछुतोहि ५६ ॥चौपाई॥ सुनीशत्रुहनमा
तुकुटिलाई जरहिगातरिसकछुनवसाई तेहिअवसरकुवरीतहांआई वसन
विभूषनविविधिवनाई लषिरिसभरेउलषनलघुभाई वरतअनलघृतआहुति
पाई उमगिलाततकिकूवरमारा परिमुहभरिमहिकरतपुकारा कूवरटूटेउफू
टकपारू दलितदसनमुषरुधिरप्रचारू आयदैवमैकाहनसावा करतनीकफ
लअनइसपावा सुनिरिपुहनलषिनषसिषषोटी लगेघसीटनधरिधरिझोटी
भरतदयानिधिदीन्हिछोडाई कौसल्यापहिगेदोउभाई ॥दोहा॥ मलिनवसनवि
वरनविकलकृससरीरदुषभारु कनककलपवरवेलिवनमानहुहनीतुसारु
५७ ॥चौपाई॥ भरतहिदेषिमातुउठिधाई मुरछितअवनिपरीझइआई देषतभर

तविकलभयेभारी परेचरननतनदसाविसारी मातुतातकहदेहिदेषाई कहसि
यरामलषनदोउभाई कैकइकतजनमीजगमाझा जौजनमितभइकाहेनवाझा
कुलकलंकजेहिजनमेउमोही अपजसभाजनप्रियजनद्रोही कोतिभुवनमो
हिसरिसअभागी गतिअसितोरिमातुजेहिलागी पितुसुरपुरवनरघुवरकेतू मैके
वलसवअनरथहेतू धिगमोहिभयेउवेनुवनआगी दुसहदाहदुषदूषनभागी
॥दोहा॥ मातुभरतकेवचनमृदुसुनिपुनिउठीसंभारि लियेउठाइलगाइ
उरलोचनमोचतिवारि ५८ ॥चौपाई॥ सरलसुभायमाइहियलाए अतिहित
मनहुरामफिरिआए भेटेउवहुरिलषनलघुभाई सोकसनेहनहृदयसमाई दे
षिसुभाउकहतसबकोई राममातुअसकाहेनहोई मातांभरतगोदवैठारे आं
सुपोछिमृदुवचनउचारे अजहुवछवलधीरजधरहू कुसमउसमुझिसोक
परिहरहू जनिमानहुहियहानिगलानी कालकरमगतिअघटितजानी काहु
हिदोसदेहुजनितात भामोहिसववविधिवामविधाता जोयेतेहुदुषमोहिजि
आवा अजहुकोजानैकातेहिभावा ॥दोहा॥ पितुआयसुभूषनवसनतातत
जेरघुवीर विसमयहरषनहृदयकछुपहिरेवलकलचीर ५९ ॥चौपाई॥ मुष
प्रसंनमननरंगनरोषू सवकरसवविधिकरिपरितोषू चलेविपिनसुनिसिय
संगलागी रहइनरामचरनअनुरागी सुनतहिलषनचलेउठिसाथा रहहिन
जतनकियेरघुनाथा तवरघुपतिसवहीसिरनाई चलेसंगसियअरुलघुभा
ई रामलषनसियवनहिसिधाए गइउनसंगनप्रानपठाए यहुसवभाइनआं
षिनआगे तउनतजातनजीवअभागे मोहिनलाजनिजनेहुनिहारी रामस
रिससुतमैमहतारी जियइमरइभलभूपतिजाना मोरहृदयसतकुलिससमा
ना ॥दोहा॥ कौसल्याकेवचनसुनिभरतसहितरनिवास व्याकुलविलपतरा
जगृहमानहुसोकनिवास ६० ॥चौपाई॥ विलपहिविकलभरतदोउभाई कौ
सल्यालियेहृदयलगाई भांतिअनेकभरतसमुझाए कहिविवेकमयवचनसु
नाए भरतहुमातुसकलसमुझाई कहिपुरानश्रुतिकथासुहाई छलविही
नसुचिसरलसुवानी वोलेभरतजोरिजुगपानी जेअघमातुपितासुतमारे गाइ
गोठमहिसुरपुरजारे जेअघतियवालकवधकीन्हे मीतमहीपतिमाहुरदीन्हे
जेपातकउपपातकअहहि करमवचनमनभवकविकहहि तेपातकमोहिहो
हुविधाता जोयहहोइमोरमतमाता ॥दोहा॥ जेपरिहरिहरिहरचरनभजहिभू
तगनघोर तिन्हकइगतिमोहिदेउविधिजोजननीमतमोर ६१ ॥चौपाई॥ वेच
हिवेदधरमदुहिलेही पिसुनपरायपापकहिदेही कपटीकुटिलकलहप्रियक्रो
धी वेदविदूषकविस्वविरोधी लोभीलंपटलोलुपचारा जेताकहिपरधनपरदा
रा पावउमैतिन्हकैगतिघोरा ॥चौ॥ जौजननियहुसंमतमोरा जेनहिसाधुसंग
अनुरागे परमारथपथविमुषअभागे जेनभजहिहरिनरतनुपाइ जिन्हहि
नहरिहरसुजससुहाई तजिश्रुतिपंथवामपथचलही वंचकविरचिवेषज
गछलही तिन्हकैगतिमोहिसंकरदेऊ जननीजोयहुजानउंभेऊ जननि
मानिमोरविस्वासा मनकरवचनरामकरदासा ॥छंद॥ मनकरमवचनच
यापतनकरदासमैसुविमानवरी अवसतरामसुजानजाननप्रीतिअरुछल
चातरी असकहततलोचनश्रवतजलतनपुलकनषसेषतमहीहियलाइ
वलीन्हवहोरिजननीजानिप्रभुपदरतिसही ॥दोहा॥ मातुभरतकेवचनसु
निसांचेसरलसुभाय कहतरामप्रियतातत्तुमसदावचनमनकाय ६२॥

चौपाई॥रामप्रानहुतेप्रानतुम्हारे तुम्हरघुपतिहिप्रानतेप्यारे विधुविषचवइश्रवइ
हिमुआगी होइवारिचरवारिविरागी भयेज्ञानवरुमिटइनमोहू तुम्हरामहिप्रति
कूलनहोऊ मततुम्हारयेहुजोजगकहइ सोसपनेसुखसुगतिनलहइ अससकहिमा
तुभरतहियलाए थनपयश्रवहिनयनजलछाए करतविलापविपुलबहुभाती
वैठेहिवीतिगइसवराती वामदेववसिष्ठतवआए सचिवमहाजनसकलवुलाए
मुनिवहुभातिभरतउपदेसे कहिपरमारथवचनसुदेसे॥दोहा॥तातहृदयधी
रजधरहुकरहुजोअवसरआजु उठेभरतगुरुवचनसुनि करनकहेउसवसाजु॥
७३॥चौपाई॥नृपतनवेदविहितअन्हवावा परमविचित्रविमानवनावा गहि
पदभरतमातुसवराखी रहीरामदरसनअभिलाषी चंदनअगरुभारवहुआए अ
मितअनेकसुगंधसुहाए सरजुतीररचिचितावनाई जनुसुरपुरसोपानसुहा
ई येहिविधिदाहक्रियासवकीन्ही विधिवतन्हाइतिलांजलिदीन्ही सोधिसमृ
तिसववेदपुराना कीन्हभरतदसगातविधाना जहंजसमुनिवरआयसुदी
न्हा तहंतससहसभातिसवकीन्हा भयेविसुद्धदियेसवदाना धेनुवाजि
गजवाहननाना॥दोहा॥सिंहासनभूषनवसनअन्नधरनिधनधाम दिये
भरतलहिभूमिसुरभयेपरिपूरनकाम ७४॥चौपाई॥पितहितभरतकीन्हज
सकरनी सोमुखलाखजायनहिवरनी सुदिनसोधिमुनिवरतहाआए सचि
वमहाजनसकलवोलाए वैठेराजसभासवजाई पठयेवोलिभरतदोउभाई
भरतवसिष्ठनिकटवैठारी नीतिधरममयवचनउचारी प्रथमकथासवमुनिव
रवरनी कैकेइकुटिलकीन्हजसकरनी भूपधरमव्रतसत्यसराहा जेहितनपरिह
रिप्रेमनिवाहा कहतरामगुनसीलसुभाऊ सजलनयनपुलकेमुनिराऊ वहुरि
लषनसीयप्रीतिवषानी सोकसनेहमगनमुनिज्ञानी॥दोहा॥सुनहुभरतभावि
प्रवलविलषिकहेउमुनिनाथ हानिलाभजीवनमरनजसअपजसविधिहाथ ७५
चौपाई॥असविचारिकेहिदेइयदोसू व्यरथकाहिपरकीजियरोसू तातविचा
रकरहुमनमाही सोचजोगदसरथनृपनाही सोचियविप्रजोवेदविहीना त
जिनिजधरमविषयलयलीना सोचियनृपतिजोनीतिनजाना जेहिनप्रजाप्रिय
प्रानसमाना सोचियवैस्यकृपनधनवानू जोनअतिथिसिवभगतिसुजानू सोचि
यपुनिपतिवंचकनारी कुटिलकलहप्रियइछाचारी सोचियवटुनिजव्रतपरिहरई
जोनहिगुरुआयसुअनुसरई॥दोहा॥सोचियगृहीजोमोहवसकरइकरमपथत्या
गि सोचियजतीप्रपंचरतविगतविवेकविराग॥७६॥चौपाई॥वैषानससोइसो
चैजोगू तपविहाइजेहिभावइभोगू सोचियपिसुनअकारनक्रोधी जननीज
नकगुरवंधुविरोधी सवविधिसोचियपरअपकारी निजतनपोषकनिरदयभा
री सोचनीयसवहीविधिसोई जोनछाडिछलिहरिजनहोई सोचनीयनहिको
सलराऊ भवनचारिदसप्रगटप्रभाऊ भयेउनहेहैनहोनेउहारा भूपभरत
जसपितातुम्हारा विधिहरिहरसुरपतिदिसिनाथा वरनहिसवदसरथगुनगा
था॥दोहा॥कहहुतातकेहिभातिकोउकरहिवडाईतासु रामलषनतुम्हसत्रु
हनसरसिसुअनसुचिजासु ७७॥चौपाई॥सवप्रकारभूपतिवडभागी वादि
विषादकरियेतेहिलागी यहसुनिसमुझिसोचपरहरहू सिरधरिराजरजायसु
करहू रायराजपदतुमकहुदीन्हा पितावचनफुरचाहियकीन्हा तजेरामु
जेहिवचनहिलागी तनपरिहरेउरामविरहागी नृपहिवचनप्रियनहिप्रियप्रा
ना करहुतातपितुवचनप्रमाना करहुसीसधरिभूपरजाई हैतुम्हकहसु

वभातिभलाई॥परसरामपितुआज्ञाराषी मारीमातलोकसवसाषी तनयजजातिहि
जोवनदयेउ पितुआज्ञाअघअजसनभयेउ॥दोहा॥अनुचितउचितविचारतजिजे
पालहिपितुवैनतेभाजनसुषसुजसकेवसहिअमरपतिऐन ७८॥चौपाई॥अवसिन
रेसवचनफुरकरहू पालहुप्रजासोकपरहरहू सुरपुरनृपपाइहिपरितोषू तुम्हक
हसुकृतसुजसनहिदोषू वेदविहितसंमतसवहीका जेहिपितुदेइसोपावइटीका
करहुराजपरिहरहुगलानी मानहुमोरवचनहितमानी सुनिसुषलहवरामवै
देही अनुचितकहवनपंडितकेही कौसल्यादिसकलमहतारी तेउप्रजासुषहो
हिसुषारी परमतुम्हाररामकरजानहि सोसवविधितुम्हसनभलमानहि सौपेहुरा
जरामकेआये सेवाकरेहुसनेहसुहाये॥दोहा॥कीजिअगुरुआयसुअवसिकहहि
सचिवकरजोरि रघुपतिआयेउचितजसतसतुम्हकरवबहोरि ७९॥चौपाई॥कौस
ल्याधरिधीरजकहई पूतपथ्यगुरुआयसुअहई सोआदरियकरियहितमानी त
जियविषादकालगतिजानी वनरघुपतिसुरपुरनरनाहू तुमयहिभातितात
कदराहू परिजनप्रजासचिवसवअंवा तुमहीसुतसवकहअवलंवा लषिविधिवाम
कालकठिनाई धीरजधरहुमातवलिजाई सिरधरिगुरआयसुअनुसरहू प्रजा
पालिपुरजनदुषहरहू गुरकेवचनसचिवअभिनंदन सुनेभरतहियहितजनुचं
दनु सुनीवहोरिमातुमृदुवानी सीलसनेहसरलरससानी॥छंद॥सानीस
रलरसमातुवानीसुनिभरतव्याकुलभये लोचनसरोरुहश्रवतसीचतविरह
उरअंकुरनये सोदसादेषतसमयतेहिविसरीसवैसुधिदेहकी तुलसीसराहत
सकलसादरसीवासहजसनेहकी॥सोरठा॥भरतकमलकरजोरिधरमधुरंधरधीरध
री वचनअमीअनुवोरिदेतउतरउचितसवहि ८०॥चौपाई॥मोहिउपदेसदीन्हगुरनी
का प्रजासचिवसंमतसवहीका मातउचितधरिआयसुदीन्हा अवसिसीसधरिचाहौंकी
न्हा गुरुपितुमातस्वामिहितवानी सुनिमनमुदितकरियभलजानी उचितकिअनु
चितकियेविचारू धरमजाइसिरपातकभारू तुमतौदेहुसरलसिषसोई जोआचर
नमोरभलहोई जदपियेहसमुझतहउनीके तदपिहोतपरितोषनजीके अवतुम
विनयमोरसुनिलेहू मोहिअनुहरतसिषावनदेहू उतरदेउँछमहुअपराधू दुषितदो
षगुननगनहिसाधु दो॥पितुसुरपुरसियरामवनकरनकहहुमोहिराज येहितेजान
हुमोरहितकेआपनवडकाज ८१॥चौपाई॥हितहमारसियपतिसेवकाई सोहरिली
न्हमातकुटिलाई मैअनुमानिदेषमनमाही आनउपाइमोरहितनाही सोकसमा
जराजकेहिलेषे लषनरामसियपदविनुदेषे वादिवसनविनुभूषनभारू वादि
विरतिविनुब्रह्मविचारू सरुजसरीरवादिवहुभोगा विनुहरिभगतिवादिजपजोगा
वादिजीवविनुदेहसुहाई वादिमोरसवविनुरघुराई जाउरामपहिआयसुदेहू ए
कहिआकमोरहितयेहू मोहिनृपकरिभलआपनचहहू सोउसनेहजडतावसक
हहू॥दोहा॥कैकैसुअनकुटिलमतिरामविमुषगतलाज तुमचाहतसुषमोह
वसमोसेअधमकेराज ८२॥चौपाई॥कहौसाचसवसुनिपतिआऊ चाहियध
रमसीलनरनाहू मोहिराजहठिदेइहहुजवही रसारसातलजाइहितवही मोहिस
मानकोपापनिवासू जेहिलगिसीयरामवनवासू रायरामकहकाननदीन्हा
विछुरतगवनअमरपुरकीन्हा मैसठसवअनरथकरहेतू वैठवातसवसुनउसचेत
विनरघुविरविलोकिअवासू रहेप्रानसहिजगउपहासू रामपुनीतविषयरसरूषे
लोलुपभूपभोगकेभूषे कहालगिकहौहृदयकठिनाई निदरिकुलिसजेहिलही
वडाई॥दोहा॥कारनतेकारिजकठिनहोइदोसनहिमोर कुलिसअस्थितेउपलतेलो

हूकरालकठोर ॥ ६३ ॥ चौपई ॥ केकरस मवनतनअनुरागे ॥ पाउरप्रानअघारअभागे
जोप्रियविरहप्रानप्रियलागे ॥ देषवसनवनवहुतअवअगो ॥ लषनरामसीयकोवन
दीन्हा ॥ पाउरअमरपुरपतिहितकीन्हा ॥ लीन्हविधवपनअपजसआपू ॥ दीन्हउप्रजहिसो
कसंतापु ॥ मोहिदीन्हसुषसुजससुराजू ॥ कीन्हकेकईसवकरकाजू ॥ एहितेमोर
काहअवनीका ॥ तेपरदेनकहहुतुमटीका ॥ केकइजठरजनमजगमाही ॥ यहमोहि
कहकछुअनुचितनाही ॥ मोरवातसवविधिहिवनाइ ॥ प्रजापाचकतकरहुसहा
इ ॥ दोहा ॥ ग्रहग्रहीतपुनिवातवसतेहिपुनिवीछीमार ॥ तेहिपिआइयवारुणी
कहहुकवनउपचार ८४ ॥ चौपाई ॥ केकइसुअनजोगुजगजोइ ॥ चतुरविरंचिदीन्ह
मोहिसोइ ॥ दसरथतनयरामलघुभाइ ॥ दीनमोहिविधिवादिवडाइ ॥ तुमसवकहहुकढा
वनटीका ॥ रायरजायसवहीकहनीका ॥ उतरदेउकेहिविधिकेहि [illegible] कहोसुषेनय
थारुचिजेही ॥ मोहिकुमातुसमेतविहाइ ॥ कहहुकहहिकेकीन्हभलाइ ॥ मोविनुकोस
चराचरमाही ॥ जेहिसीयरामप्रानप्रियनाही ॥ परमहानिसवकहवडलाहू ॥ अदिन
मोरनहिदूषनकाहू ॥ ससयसीलप्रेमवसअहहू ॥ सवहिउचितसवजोकछुकहहू ॥ दो
हा ॥ राममातसुठिसरलचितमोपरप्रेमविसेषि ॥ कहइसुभायसनेहवसमोरदीनता
देषि ॥ ८५ ॥ गुरुविवेकसागरजगजाना ॥ जिनहिविस्वआवलकसमाना ॥ मोकहति
लकसाजसजसोउ ॥ भयेविधिविमुषविमुषसवकोउ ॥ परहरिरामसीयजगमाही ॥ को
उनकहहिमोरमतनाही ॥ सोमैसुनवसहवसुषमानी ॥ अततहुकीचतहाजहापानी ॥ ड
रनमोहिजगकहहिकिपोचु ॥ परलोकहुकरनाहिनसोचु ॥ एकइउरवसदुसहदवारी ॥ मोहि
लगिभयेसीयरामदुषारी ॥ जीवनलाभलषनभलपावा ॥ सवतजिरामचरनमन
लावा ॥ मोरजनमरघुवरवनलागी ॥ झूठकाहपछिताउअभागी ॥ दोहा ॥ आपनि
दारुनदीनताकहहुसवहिसिरुनाइ ॥ देषेविनुरघुनाथपदजीयकैजरनिनजाइ ॥ ८६
चौपाई ॥ आनउपाउमोहिनहिसुझा ॥ कोजिअकैरघुवरविनुवुझा ॥ एकहिआंकइहैम
नमाही ॥ प्रातकालचलिहौप्रभुपाही ॥ जद्यपिमैअनभलअपराधी ॥ भैमोहिकारन
सकलउपाधी ॥ तदपिसरनसनमुषमोहिदेषी ॥ छमिहैसवकरिकृपाविसेषी ॥ सील
सकुचसुठिसरलसुभाऊ ॥ कृपासनेहसदनरघुराऊ ॥ अरिकहुअनभलकीन्हनरामा ॥
मैसिसुसेवकजद्यपिवामा ॥ तुम्हपैपाचमोरभलमानी ॥ आयसुआसिषदेहुसवानी ॥ जेहि
सुनिविनयमोहिजनजानी ॥ आवहिवहुरिरामरजधानी ॥ जोहिसुनिविनयमोहि
जनजानी ॥ अवहिवहुरिराम ॥ दोहा ॥ जदपिजनमकुमातुतेमैसठसदासदोस ॥ आप
नजानितत्यागिहहिमोहिरघुवीरभरोस ८७ ॥ चौपाई ॥ भरतवचनसवकहप्रियलागे ॥
राममनेहसुधानजनुपागे ॥ लोगवियोगविषमविषदागे ॥ मंत्रसजीवनसुनेजनु
जागे ॥ मातुसचिवगुरुपुरनरनारी ॥ सकलसनेहविकलभयेभारी ॥ भरतहिकहहि
सराहिसराही ॥ रामप्रेममूरतितनआही ॥ तातभरतअसकाहेनकहहू ॥ प्रानसमान
रामप्रियअहहू ॥ जोपावरअपनीजडताइ ॥ तुम्हहिसुगाइमातुकुटिलाइ ॥ सोसठकोटि
कपुरुषसमेता ॥ वसहिकलपसतनरकनिकेता ॥ अहिअघअवगुननहिमनिगहइ ॥ ह
रइगरलदुषदारिदहई ॥ दोहा ॥ अवसिचलिअवनरामजहाभरतमत्रभलकीन्ह ॥ सो
कसिंधुवुडतसवहितुमअवलवनदीन्ह ॥ ८८ ॥ चौपाई ॥ भासवकेमनमोदनथोरा
जनुघनधुनिसुनिचातकमोरा ॥ चलतप्रातलषिनिरनेउनीके ॥ भरतप्रानप्रियभयेसव
हीके ॥ मुनिहिवदिभरतहिसिरुनाइ ॥ चलेसकलघरविदाकराइ ॥ धन्यभरतजीवनजग
माही ॥ सीलसनेहसराहतजाती ॥ कहहिपरसपरभावडकाजू ॥ सकलचलनकरसा
जहिसाजू ॥ जेहिराषहिरहुघररषवारी ॥ सोजानैजनुगरदनमारी ॥ कोउकहरहनकहिअ

नुहिकाहू ॥ कोनचहैजगजीवनलाहू ॥ केहिनभावसीयलषनरामु ॥ [illegible]
दासकाम ॥ दोहा ॥ जरउसोसंपतिसदनसुषसुहृदमातुपितभाइ ॥ सनमुषहोतजोराम
पदकरइनसहजसहाइ ॥ ८९ ॥ चौपाई ॥ घरघरसाजहिवाहननाना ॥ हरषहृदयपरभा
तपयाना ॥ भरतजाइघरकीन्हविचारु ॥ नगरवाजिगजभवनभडारु ॥ संपतिसवरघुप
तिकैआही ॥ जोविनुजतनचलउतजिताही ॥ तोपरिनामनमोरिभलाइ ॥ पापसिरोमनि
साइदोहाइ ॥ करइस्वामिहितसेवकसोइ ॥ दूषनकोटिदेइकिनकोइ ॥ असविचारिसु
चिसेवकवोले ॥ जेसपनेहुनिजधरमनडोले ॥ कहिसवमरमधरमभलभाषा ॥ जोजे
हिलायकसोतेहिराषा ॥ करिसवजतनराषिरषवारे ॥ राममातुपहभरतसिधारे ॥
दोहा ॥ आरतजननीजानिसवभरतसनेहसुजान ॥ कहेउवनावनपालकीसजनसु
षासनजान ९० ॥ चौपाई ॥ चकचकइजिमिपुरनरनारी ॥ चहतप्रातउरआरतभारी ॥
जागतसवनिसिभयेउविहाना ॥ भरतवोलाएसचिवसुजाना ॥ कहेउलेहुसवति
लकसमाजू ॥ वनहिदेवमुनिरामहिराजू ॥ वेगिचलहुसुनिसचिवजोहारे ॥ तुरततु
रंगरथनागसवारे ॥ अरुधतीअरुअगनिसमाऊ ॥ रथचढिचलेप्रथममुनिराऊ ॥ विप्र
वृंदचढिवाहननाना ॥ चलेसकलतपतेजनिधाना ॥ नगरलोगसवसजिसजिजा
ना ॥ चित्रकूटकहकीन्हपयाना ॥ सिविकासुभगनजाहिवषानी ॥ चढिचढिचलतभ
इसवरानी ॥ दोहा ॥ सौपिनगरसुचिसेवकनिसादरसवहिचलाइ ॥ सुमिरिरामसीय
चरनतवचलेभरतदोउभाइ ॥ ९१ ॥ चौपाई ॥ रामदरसवसवनरनारी ॥ जनुकरिकर
निचलेतकिवारी ॥ वनसीयरामसमुझिमनमाही ॥ सानुजभरतपयादेहीजाही ॥
देषिसनेहलोगअनुरागे ॥ उतरिचलेहयगयरथत्यागे ॥ जायसमीपराषिनिजडोली
राममातुमृदुवानीवोली ॥ तातचढहुरथवलिमहतारी ॥ होइहैप्रियपरिवारदुषा
री ॥ तुमरेचलतचलहिसवलोगु ॥ सकलसोककृसनहिमगजोगु ॥ सिरधरिवचन
चरनसिरनाइ ॥ रथचढिचलतभयेदोउभाइ ॥ तमसाप्रथमदिवसकरिवासु ॥ दूस
रगोमतितीरनिवासु ॥ दोहा ॥ पयअहारफलअसनएकनिसिभोजनकरिलोग ॥ करत
रामहितनेमव्रतपरहरिभूषनभोग ॥ चौपाई ॥ सईतीरवसिचलेविहाने ॥ सृंगवेरपु
रसवनिअराने ॥ समाचारसवसुनेनिषादा ॥ हृदयविचारकरैसविषादा ॥ कारनकव
नभरतवनजाही ॥ हैकछुकपटभाउमनमाही ॥ जोपैजीयनहोतकुटिलाइ ॥ तोकत
लीन्हसंगकटकाइ ॥ जानहिसानुजरामहिमारी ॥ करौअकंटकराजसुषारी ॥ भरतन
राजनितिउरआनी ॥ तवकलंकअवजीवनहानी ॥ सकलसुरासुरजुरहिजुझारा ॥ रामहि
समरनजीतनहारा ॥ काआचरजभरतअसकरही ॥ नहिविषवेलिअमरफलफरही ॥ दोहा ॥
असविचारगुहज्ञातिसनकहेउसजगसवहोहु ॥ हथवासोवोरहुतरनिकीजिअघाट
रोहु ॥ ९३ ॥ चौपाई ॥ होहुसजोइलरोकहुघाटा ॥ ठाटहुसकलमरइकेठाटा ॥ सनमुषलो
हभरतसनलेऊ ॥ जियतनसुरसरिउतरनदेऊ ॥ समरमरनपुनिसुरसरितीरा ॥ रामकाज
छिनभंगसरीरा ॥ भरतभाइनृपमैजनुनीचु ॥ वडेभागअसपाइअमीचु ॥ स्वामिकाजक
रिहौरनरारी ॥ जसधवलिहौभुवनदसचारी ॥ तजौप्रानरघुनाथनिहोरे ॥ दुहूहाथमुदमो
दकमोरे ॥ साधुसमाजनजाकरलेषा ॥ रामभक्तिमैजासुनरेषा ॥ जायजीयतजगसो
महीभारु ॥ जननीजोवनविटपकुठारु ॥ दोहा ॥ विगतविषादनिषादपतिसवहिव
ढाइउछाहु ॥ सुमरिराममागेउतरततरकसधनुषसनाहु ॥ ९४ ॥ चौपाई ॥ वेगहुभा
इहुसजहुसंजोऊ ॥ सुनिरजायकदराइनकोऊ ॥ भलेहिनाथसवकहहिसहरषा ॥
एकहिएकवढावहिकरषा ॥ चलेनिषादजोहारजुहारी ॥ सूरसकलरनरुचैरारी ॥ सु
मिरिरामपदपंकजपनही ॥ भाथावाधिचढाइन्हिधनही ॥ अंगरीपहिरिकूडिसिर

रही।फरसावांससेलेसमकरही।एककुसलअतिओडनषांडे।कूदहिगगनमनहुंछिति
छांडे।निजनिजसाजसमाजवनताइ।गुहराउतहिजोहारेजाइ।देषिसुभटसवला
यकजाने।लेलेनामसकलसनमाने॥दोहा॥भाइहुलावहुधोषजनिआजका
जवडमोहि।सुनिसरोषवोलेसुभटवीरअधीरनहोहि ९५॥चौपाई॥रामप्रता
पनाथवलतोरे।करहिकटकविनभटविनघोरे।जीवतपाउनपाछेपरही।रुंडमुंड
मयमेदनिकरही।देषिनिषादनाथभलटोलू।कहेउवजाउजुझाउढोलू।एतना
कहतछींकभइवाए।कहेउसगुनिअन्हषेतसुहाए।वूढएककहेसगुनविचारी।भ
रतहिमिलिअनहोइहिरारी।रामहिभरतमनावनजाही।सगुनकहैअसविग्रहना
ही।सुनिगुहकहइनीककहवूढा।सहसाकरिपछिताहिविमूढा।भरतसुभावसील
विनवुझे।वडिहितहानिजानिविनजुझे॥दोहा॥गहहुघाटभटसमिटिसवलेउंम
रममिलिजाइ।वुझिमित्रअरिमध्यगतितसतवकरिहउंआइ ९६॥चौपाई॥लषव
सनेहसुभायसुहाए।वैरप्रीतिनहिदुरइदुराए।असकहिभेटसंजोवनलागे।कंद
मूलफलषगमृगमागे।मीपीनपीनपाठीनपुराने।भरिभरिभारकहारन्हआने
मिलनसाजसजिमिलनसिधाये।मंगलमूलसगुनसुभपाए।देषिदूरितेकहिनिज
नामु।कीन्हमुनिसहिदंडप्रनामु।जानिरामप्रियदीन्हअसीसा।भरतहिकहेउवुझा
इमुनिसा।रामसषासुनिस्यंदनत्यागा।चलेउतरिउमगतअनुरागा।गाउंजाति
गुहनांउसुनाइ।कीन्हजुहारमाथमहिलाइ॥दोहा॥करतदंडवतदेषितेहिभरत
लीन्हउरलाइ।मनहुंलषनसनभेटभइप्रेमनहृदयसमाइ॥चौपाई॥भेटभरतता
हिअतिप्रीती।लोकसिहाहिप्रेमकैरीती।धन्यधन्यधुनिमंगलमूला।सुरसराहिते
हिवरषहिफूला।लोकवेदसवभांतिहिनीचा।जासुछांहछुइलेइअसींचा।तेहिभरि
अंकरामलघुभ्राता।मिलतपुलकपरिपूरितगाता।रामरामकहिजेजमुहाहीतिन
हिनपापपुंजसमुहाही।यहतोरामलाइउरलीन्हा।कुलसमेतजगपावनकीन्हा।क
रमनासजलसुरसरिपरई।तेहकोकहहुसीसनहिधरई।उलटानामजपतजगु
जाना।वालमीकिभयेब्रह्मसमाना॥दोहा॥स्वपचसवरषसजमनजडपावरकोलकि
रात।रामकहतपावनपरमहोतभुवनविष्यात ९७॥चौपाई॥नहिअचरजजुगजुगच
लिआइ।केहिनदीन्हरघुवीरवडाइ।रामनाममहिमासुरकहही।सुनिसुनिअवधि
लोगसुषलहही।रामसषहिमिलिभरतसप्रेमा।पुछीकुसलसुमंगलषेमा।देषिभरतक
रसीलसनेहू।भानिषादतेहिसमयविदेहू।सकुचसनेहमोदमनवाढा।भरतहिचि
तवतएकटकठाढा।धरिधीरजपदवंदिवहोरी।विनयसप्रेमकरतकरजोरी।कुस
लमूलपदपंकजपेषी।मैतिहुंकालकुसलनिजदेषी।अवप्रभुपरमअनुग्रहतोरे।स
हितकोटिकुलमंगलमोरे॥दोहा॥समुझिमोरकरतूतिकुलप्रभुमहिमाजियजोइ।जो
नभजैरघुवीरपदजगविधिवंचितसोइ ९८॥चौपाई॥कपटिकायरकुमतिकुजाती।लो
कवेदवाहरसवभांती।रामकीन्हआपनजवहीते।भयेउंभुवनभूषनतवहीते।देषिप्री
तिसुनिविनयसुहाई।मिलेउवहोरिभरतलघुभाइ।कहिनिषादनिजनामसुवानि
सादरसकलजुहारीरानी।जानिलषनसमदेहिअसीसा।जीअहुसुषीसयकोरिव
रीसा।निरषिनिषादनगरनरनारी।भयेसुषीजनुलषननिहारी।कहहिलहेउएहि
जीवनलाहू।भेटेउरामभद्रभरिवाहू।सुनिनिषादनिजभागवडाइ।प्रमुदितमनल
इचलेउलेवाइ॥दोहा॥सनकारेसेवकसकलचलेस्वामिरुषपाइ।घरतरुतरसर
वागवनवासवनाएजाइ २००॥चौपाई॥सृंगवेरपुरभरतदीषजव।भयेसनेहसव
अंगसिथिलतव।सोहतदियेनिषादहिलागु।जनुतनुधरविनयअनुरागु।एहिवि

धिभरतसयनसवसंगा।देषजाइजगपावनिगंगा।रामघाटकहकीन्हप्रनामु।भामनमग
नमिलेजनुरामु।करहिप्रनामनगरनरनारी।मुदितब्रह्ममयवारिनिहारी।करिमज्जनमा
गहिकरजोरी।रामचंद्रपदप्रीतिनथोरी।भरतकहेउसुरसरितवरेनू।सकलसुषदसेवक
सुरधेनू।जोरिपानिवरमागोएहू।सीयरामपदसहजसनेहू॥दोहा॥एहिविधिमज्जन
भरतकरिगुरुअनुसासनपाइ।मातनहानीजानिसवडेराचलेलवाइ २०१॥चौपाई॥
जहतहलोगनडेराकीन्हा।भरतसोधसवहीकरलीन्हा।सुरसेवाकरिआयसुपाइ।रा
ममातुपहिगेदोउभाइ।चरनचांपिकहिकहिमृदुवानी।जननीसकलभरतसनमानी
भाइहिसोपिमातसेवकाइ।आपुनिषादहिलीन्हवुलाइ।चलेसषाकरसोकरजोरे।सि
थिलसरीरसनेहनथोरे।पूछतसषहिसोठाउदिषाऊ।नेकुनयननमनजरनिजुडाऊ
जहसीयरामलषननिसिसोए।कहतभरेजललोचनकोए।भरतवचनसुनिभयेउ
विषादु।तुरततहांलेगयेउनिषादु॥दोहा॥जहांसिसुपाउपुनीततरुरघुवरकि
यविश्राम।अतिसनेहसादरभरतकीनेउदंडप्रनाम २०२॥चौपाई॥कुससाथरीनिहारिसु
हाइ।राषेसीससीयसमलेषी।कनकविंदुदुइचारिकदेषी।सजलविलोचनहृदयग
लानी।कहतसषासनवचनसुवानी।श्रीहतसीयविरहदुतिहीना।जथाअवध
नरनारिमलिना।पिताजनकदेउपटतरकेही।करतलभोगजोगजगजेही।सस
रभानुकुलभानुभुआलू।जेहिसिहातअमरपतिपालु।प्राननाथरघुनाथगोसाई
जोवडहोतसोरामवडाइ॥दोहा॥पतिदेवतासुतीयमनिसीयसाथरीदेषि।विहरत
हृदयनहहरिहरपविकठिनविसेषि २०३॥चौपाई॥लालनजोगलषनलघुलोने।भ
येनभाइअसअहहिनहोने।पुरजनप्रियपितुमातुदुलारे।सीयरघुवीरहिप्रानपिआरे
मृदुमूरतिसुकुमारसुभाऊ।तातवाउतनलागनकाऊ।तेवनसहहिविपतिसवभां
ती।निदरेकोटिकुलिसतेहिछाती।रामजनमिजगकीन्हउजागर।रूपसीलगुनसव
सुषसागर।पुरजनपरिजनगुरुपितुमाता।रामसुभावसवहिसुषदाता।वैरिउराम
वडाइकरही।वोलनिमिलनिविनयमनहरही।सारदकोटिकोटिसतसेषा।करि
नसकैंप्रभुगुनगनलेषा॥दोहा॥सुषस्वरूपरघुवंसमनिमंगलमोदनिधान
तेसोवतकुससासिमहिविधिगतिअतिवलवान २०५॥चौपाई॥रामसुनादुषका
नकाऊ।जीवनतरुजिमिजुगवनराऊ।पलकनयनफनिमनिजेहिभांती।जोगवहि
जननिसकलदिनराती।तेअवफिरतविपिनपदचारी।कंदमूलफलफूलअहारी।
धिगकैकेइअमंगलमूला।भइसिप्रानप्रियतमप्रतिकूला।मैधिगधिगअघउदधि
अभागी।सवउतपातभयेजेहिलागी।कुलकलंककरिसृजेउविधाता।साइंदो
हमोहिकीन्हकुमाता।सुनिसप्रेमसमुझावनिषादु।रामतुम्हहिप्रियतुम्हप्रियरामहि।य
हनिरदोसुदोसविधिवामहि॥छंद॥विधिवामकीकरनीकठिनजेहिमातुकीन्हीवाव
री।तेहिरातिपुनिपुनिकरहिप्रभुसादरसराहनरावरी।तुलसीनतुमसोरामप्रीतमक
हतहोसोहेकिये।परिनाममंगलजानिअपनेआनिएधीरजहिये॥सोरठा॥अंतरजा
मीरामसकुचसप्रेमकृपायतन।चलियकरियविश्रामयहविचारिदृढआनिमन २०६
॥चौपाई॥सषावचनसुनिउरधरिधीरा।वासचलेसुमिरतरघुवीरा।यहसुधिपायनगरन
रनारी।चलेविलोकनआरतभारी।परदछिनाकरिकरहिप्रनामा।देहिकैकइहिषोरिनिका
मा।भरिभरिवारिविलोचनलेही।वामविधातहिदूषनदेही।एकसराहहिभरतसने
हू।कोउकहेनृपतिनिवाहेउनेहू।निंदहिआपुसराहिनिषादहि।कोकहिसकहिविमो
हविषादहि।एहिविधिरातिलोगसवजागा।भाभिनसारगुदारालागा।गुरहिसु
नावचढाइसुहाई।नईनावसवमातचढाई।दंडचारिमहआसवपारा।उतरिभरत
तवसवहिसंभारा॥दोहा॥प्रातक्रियाकरिमातपदवंदिगुरहिसिरुनाइ।आगेकि

देनिषादगनदीन्हेउकटकवलाइ ॥२०२॥ चौपाई॥ कियेउनिषादनाथअगुआई । मातपाल
कीसकलचलाइ । साथवोलाइभाइलघुदीन्हा । विप्रनसहितगवनगुरुकीन्हा । आपसु
रसरिहिकीन्हप्रनामु । सुमिरेलषनसहितसियरामु । गवनेउभरतपयादेहिपाये । को
तलसंगजाहिडोरीआये । कहहिसुसेवकवारहिवारा । होइअनाथअस्वअसवारा । रामप
यादेहिपायसिधाए । हमकहरथगजवाजिवनाए । सिरभरिजाउउचितअसमोरा । स
वतेसेवगधरमकठोरा । देषिभरतगतिसुनिमृदुवानी । सवसेवकगनगरहिगलानी
दोहा॥ कहतरामसीयरामसियउमगिउमगिअनुराग । भरततीसरेपहरकहकी
न्हप्रवेसप्रयाग ॥२०३॥ चौपाई॥ झलकाझलकतपायनकैसे । पंकजकोसओसक
नजैसे । भरतपयादेहिआयेआजु । भयेउदुषितसुनिसकलसमाजु । षवरिलीन्हसवलो
गनहाये । कीन्हप्रनामत्रिवेनीहिआए । सविधिसितासितनीरनहाने । दियेदानमहिसुरसन
माने । देषतस्यामलधवलहिलोरे । पुलकसरीरभरतकरजोरे । सकलकामप्रदतीरथ
राउ । वेदविदितजगप्रगटप्रभाउ । मागौभीषत्यागिनिजधरमु । आरतकाहनकरहिकु
करमु । असजियजानिसुजानसुदानी । सफलकरहिजगजाचकवानी ॥ दोहा॥ अर्थ
नधरमनकामरुचिगतिनचहउनिरवान । जनमजनमरतिरामपदयेहवरदाननआ
न ॥२०४॥ चौपाई॥ जानहुरामुकुटिलकरिमोही । लोगकहउगुरुसाहिवद्रोही । सीता
रामचरनरतिमोरे । अनुदिनवढउअनुग्रहतोरे । जलदजनमभरिसुरतिविसारेउ
जाचतजलुपविपाहनडारेउ । चातकरटनिघटेघटिजाई । वढेप्रेमसवभातिभलाई
कनकहिवानचढइजिमिदाहे । तिमिप्रियतमपदनेमनिवाहे । भरतवचनसुनिमाझत्रिवेनी
भइमृदुवानीसुमंगलदेनी । तातभरततुमसवविधिसाधु । रामचरनअनुरागअगाध
वादिगलानिकरहुमनमाही । तुमसमरामहिकोउप्रियनाही ॥ दोहा॥ तनपुलके
उहियहरषसुनिवेनीवचनअनुकूल । भरतधन्यकहिधन्यसुरहरषितवरषहिफूल ॥२०५॥
चौपाई॥ प्रमुदिततीरथराजनिवासी । वैषानसवटुगृहीउदासी । कहहिपरसपरमि
लिदससपांचा । भरतसनेहसीलुसुचिसाचा । सुनतरामगुनग्रामसुहाए । भरद्वाजमु
निवरपहिआए । दंडप्रनामकरतमुनिदेषे । मूरतिवंतभागनिजलेषे । धाइउठाइलाइ
उरलीन्हे । दीन्हअसीसकृतारथकीन्हे । आसनदीन्हनाइसिरवैठे । चहतसकुचगृहजनुभजि
पैठे । मुनिपूछवकछुयहवडसोचु । वोलेरिषिलषिसीलुसकोचु । सुनहुभरतहमसवसु
धिपाई । विधिकरतवपरकछुनवसाई ॥ दोहा॥ तुम्हगलानिजियजनिकरहुसमुझिमा
तुकरतूति । तातकैकइहिदोसनहिगईगिरामतिधूति ॥२०६॥ चौपाई॥ यहउकहतभलकहहि
नकोउ । लोकवेदवुधसंमतदोउ । ताततुम्हारविमलजसगाई । पाइहिलोकउवेदवडाई
लोकवेदसंमतसवकहही । जेहिपितुदेइराजसोलहही । राउसत्यव्रततुम्हहिवोलाई
देतराजसुषधरमवडाई । रामगवनवनअनरथमूला । जोसुनिसकलविस्वभइसूला
सोभावीवसरानिअयानी । करिकुचालीअंतहुपछितानी । तहाउतुम्हरअलपअपराधु
कहहिसोअधमअयानअसाधु । करतेहुराजतुम्हहिनहिदोसु । रामहिहोतसुनतसं
तोसु ॥ दोहा॥ अवअतिकीन्हेउभरतभलतुम्हहिउचितमतएहु । सकलसुमंगल
मूलजगरघुवरचरनसनेहु ॥२०७॥ चौपाई॥ सोतुम्हारधनजीवनप्राना । भूरिभागको
तुम्हहिसमाना । यहतुम्हारआचरजनताता । दसरथसुअनरामप्रियभ्राता । सुनहुभ
रतरघुपतिमनमाही । प्रेमपात्रतुमसमकोउनाही । लषनरामसीतहिअतिप्रीती
निसिसवतुम्हहिसराहतवीती । जानेहुमरमनहातप्रयागा । मगनहोहितुम्हरेअनु
रागा । तुमपरअसिसनेहरघुवरके । सुषजीवनजगजसजडनरके । यहनअधिकरघुवी
रवडाई । प्रनतकुटुंवपालरघुराई । तुमतभरतमोरमतएहु । धरेदेहजनुरामसनेहु ॥ दोहा॥
तुम्हकहभरतकलंकयहहमसवकहउपदेस । रामभगतिरससिद्धिहितभायहुसमउग

नेसु ॥२०८॥ चौपाई॥ नवविधुविमलतातजसतोरा । रघुवरकिंकरकुमुदचकोरा । उदि
तसदाअथइहिकवहूना । घटहिनजगनभदिनदिनदूना । कोकतिलोकप्रीतिअतिक
रहीप्रभुप्रतापरविछविहिनहरही । निसिदिनसुषदसदासवकाहु । ग्रसहिनकैक
ईकरतववराहू । पूरनरामसुप्रेमपियूषा । गुरुअपमानदोषनहिदूषा । रामभगतअव
अमीअघाहू । कीन्हीहुसुलभसुधावसुधाहू । भूपभगीरथसुरसरिआनी । सुम
रतसकलमंगलषानी । दसरथगुनगनवरनिनजाही । अधिककहाजेहिसम
जगनाही ॥ दोहा॥ जासुसनेहसकोचवसरामप्रगटभयेआइ । जेहरहियनेनिक
वहुनिरषेनहिनअघाइ ॥२०९॥ चौपाई॥ कीरतिविधुतुम्हकीन्हअनूपा । जहवसराम
प्रेममृगरूपा । तातगलानिकरहुजियजाए । डरहुदरिद्रहिपारसपाए । सुनहुभर
तहमझूठनकहही । उदासीनतापसवनरहही । सवसाधनकरसुफलसुहावा । ल
षनरामसीयदरसनपावा । तेहीफलकरफलदरसतुम्हारा । सहितप्रयागसुभाग
हमारा । भरतधन्यतुम्हजसजगजयेउ । कहिअसप्रेममगनमुनिभयेउ । सुनिमुनि
वचनसभासदहरषे । साधुसराहिसुमनसुरवरषे । धन्यधन्यधुनिगगनप्रयागा
सुनिसुनिभरतमगनअनुरागा ॥ दोहा॥ पुलकगातहियरामसीयसजलसरो
रुहनयन । करिप्रनाममुनिमंडलीहिवोलेगदगदवयन ॥२१०॥ चौपाई॥ मुनिसमा
जअरुतीरथराजु । साचेहुसपथअघाइअकाजु । एहिथलजोकछुकहियवनाइ
एहिसमअधिकनअघअधमाइ । तुम्हसरवज्ञकहउसतिभाउ । उरअंतरजामीरघुरा
उ । मोहिनमातुकरतवकरसोचु । नहिदुषजियजगजानिहिपोचु । नाहिनडरविग
रहिपरलोकु । पितहिमरनकरमोहिनसोकु । सुकृतसुजसभरिभुवनसुहाए । ल
छिनरामसरिससुतपाए । रामविरहतजितनुछिनभंगु । भूपसोचकरकवनप्रसंगु
रामलषनसीयविनपगपनही । करिमुनिवेषफिरहिवनवनही ॥ दोहा॥ अजिन
वसनफलअसनमहिसयनडासिकुसपात । वसितरुतरनितसहतहिमआतपव
रषावात ॥२११॥ चौपाई॥ एहिदुषदाहदहइदिनछाती । भूषनवासरनीदनराती । एहिकु
रोगकरअउषधनाही । सोधेउसकलविस्वमनमाही । मातुकुमतवढईअघमूला । तेहि
हमारहितकीन्हवसूला । कलिकुकाठकरकीन्हकुजंत्रु । गाडिअवधिपढिकठिनकुमं
त्रु । मोहिलगियेहुकुठाटतेहिठाटा । घालेसिसवजगवारहवाटा । मिटइकुयोगराम
फिरिआए । वसइअवधनहिआनउपाए । भरतवचनसुनिमुनिसुषपाई । सवहि
कीन्हिवहुभांतिवडाई । तातकरहुजनिसोचविसेषी । सवदुषमिटहिरामपदपेषी
॥ दोहा॥ करिप्रवोधमुनिवरकहेउअतिथिप्रेमप्रियहोहु । कंदमूलफलफूलहम
देहिलेहुकरिछोहु ॥२१२॥ चौपाई॥ सुनिमुनिवचनभरतहियसोचु । भयेउकुअवसरक
ठिनसकोचु । जानिगरुइगुरुगिरावहोरी । चरनवंदिवोलेकरजोरी । सिरधरिआय
सुतुम्हारा । परमधरमयहुनाथहमारा । भरतवचनसुनिमुनिमन
भाए । सुचिसेवकसिषनिकटवोलाए । चाहियकीन्हभरतपहुनाई । कंदमूल
फलआनहुजाई । भलेहिनाथकहितिनसिरनाए । प्रमुदितनिजनिजकाजसिधा
ए । मुनिहिसोचपाहुनवडनेवता । तसिपूजाचाहियजसदेवता । सुनिरिधिसिधि
अनिमादिकआई । आयसुहोयसोकरहिगोसाई ॥ दोहा॥ रामविरहव्याकुल
भरतसानुजसहितसमाज । पहुनाईकरिहरहुश्रमकहामुदितमुनिराज ॥२१३॥
चौपाई॥ रिधिसिधिसिरधरिमुनिवरवानी । वडभागिनिआपुहिअनुमानी । क
हहिपरसपरसिधिसमुदाई । अतुलितअतिथिरामलघुभाई । मुनिपदवंदिकरिअसोइ
आजु । होइसुषीसवराजसमाजु । असकहिरचेउरुचिरगृहनाना । जेहिविलोकि

कि बिलषाहि बिमाना ॥ भोग बिभूति भूरि भरि राखे ॥ देषत जिन्हहि अमर अभिलाषे ॥
दासि दास साज सब लीन्हे ॥ जोगवत रहहि मनहि मन दीन्हे ॥ सब समाज सजि सिधि पल
माही ॥ जे सुष सुरपुर सपनेहु नाही ॥ प्रथमहि बास दिये सब केही ॥ सुंदर सुषद यथा
रुचि जेही ॥ दोहा ॥ बहुरि सपरिजन भरत कहु रिषि अस आयसु दीन्ह ॥ बिधि बिसम
य दायक बिभव मुनिबर तपबल कीन्ह ॥२१९॥ चौपाई ॥ मुनि प्रभाव जब भरत बिलो
का ॥ सब लघु लगे लोकपति लोका ॥ सुष समाज नहि जाइ बषानि ॥ देषत बि
रति बिसारहि ग्यानी ॥ आसन सयन सुबसन बिताना ॥ बन बाटिका बिहग मृग
नाना ॥ सुरभी फूल फल अमिय समाना ॥ बिमल जलासय बिबिध बिधाना ॥ अ
सन पान सुचि अमिय अमी से ॥ देषि लोग सकुचात जमी से ॥ सुर सुरभी सुरतरु सबही
के ॥ लषि अभिलाष सुरेस सची के ॥ रितु बसंत बह त्रिबिध बयारी ॥ सब कह सुलभ
पदारथ चारी ॥ स्रक चंदन बनितादिक भोगा ॥ देषि हरष बिसमय बस लोगा ॥
दोहा ॥ संपति चकई भरत चक मुनि आयस षेलवार ॥ तेहि निसि आश्रम पिंजरा
राषे भा भिनुसार ॥२२०॥ चौपाई ॥ कीन्ह निमज्जन तीरथराजा ॥ नाइ मुनिहि सिर सहित
समाजा ॥ रिषि आयस असीस सिर राषी ॥ करि दंडवत बिनय बहु भाषी ॥ पथ गति कु
सल साथ सब लीन्हे ॥ चले चित्रकूटहि चित दीन्हे ॥ रामसषा कर दीन्हे लागू ॥ चल
त देह धरि जनु अनुरागू ॥ नहि पदत्रान सीस नहि छाया ॥ प्रेम नेम ब्रत धरम अमाया ॥
लषन राम सीय पंथ कहानी ॥ पूछत सषहि कहत मृदु बानी ॥ राम बास थल बिटप
बिलोके ॥ उर अनुराग रहत नहि रोके ॥ देषि दसा सुर बरषहि फूला ॥ भई मृदु महि मग
मंगल मूला ॥ दोहा ॥ किये जाहि छाया जलद सुषद बहइ बर बात ॥ तस मग भयउ न
राम कह जस भा भरतहि जात ॥२२१॥ चौपाई ॥ जड चेतन मग जीव घनेरे ॥ जे चितये प्रभु जि
न्ह प्रभु हेरे ॥ ते सब भये परम पद जोगू ॥ भरत दरस मेटा भव रोगू ॥ यह बडि बात भरत क
ह नाही ॥ सुमिरत जिनहि राम मन माही ॥ बारक राम कहत जग जेऊ ॥ होत तरन तारन
नर तेऊ ॥ भरत राम प्रिय पुनि लघु भ्राता ॥ कस न होइ मग मंगल दाता ॥ सिद्ध साधु
मुनिबर अस कहही ॥ भरतही निरषि हरष हिय लहही ॥ देषि प्रभाउ सुरेसहि सोचु ॥ जग
भल भलेहि पोच कहु पोचु ॥ गुर सन कहेउ करिय प्रभु सोई ॥ रामहि भरतहि भेट न
होई ॥ दोहा ॥ राम सकोची प्रेम बस भरत सप्रेम पयोधि ॥ बनी बात बिगरन चहत करि
य जतन छल सोधि ॥२२२॥ चौपाई ॥ बचन सुनत सुरगुरु मुसुकाने ॥ सहसनयन बि
नु लोचन जाने ॥ कह गुरु बादि छोभ छल छाडू ॥ इहा कपट करि होइहि भाडू ॥ मायाप
ति सेवक सन माया ॥ करइ त उलटि परे सुरराया ॥ तब कछु कीन्ह राम रुष जानी ॥
अब कुचालि करि होइहि हानी ॥ सुनि सुरेस रघुबीर सुभाऊ ॥ निज अपराध रिसा
हि न काऊ ॥ जो अपराध भक्त कर करई ॥ राम रोष पावक सो जरई ॥ लोकहु बेद बि
दित इतिहासा ॥ यह महिमा जानहि दुरबासा ॥ भरत सरिस को राम सनेही ॥ जग जप
राम राम जप जेही ॥ दोहा ॥ मनहु न आनिअ अमरपति रघुबर भक्त अकाज ॥ अजस
लोक परलोक दुष दिन दिन सोक समाज ॥२२३॥ चौपाई ॥ सुनु सुरेस उपदेस हमारा ॥
रामहि सेवक परम पियारा ॥ मानत सुष सेवक सेवकाई ॥ सेवक बैर बैर अधिकाई ॥
जदपि सम नहि राग न रोषु ॥ गहहि न पाप पुन्य गुन दोषु ॥ करम प्रधान बिस्व क
रि राषा ॥ जो जस करइ सो तस फल चाषा ॥ तदपि करहि सम बिषम बिहारा ॥ भक्त
अभक्त हृदय अनुसारा ॥ अगुन अलेप अमान एकरस ॥ राम सगुन भये भक्त प्रेम
बस ॥ राम सदा सेवक रुचि राषी ॥ बेद पुरान साधु सुर साषी ॥ अस जिय जानि तजो
कुटिलाई ॥ करहु भरत पद प्रीति सुहाई ॥ दोहा ॥ राम भक्त परहित निरत पर दुष दुषि

दयाल ॥ भक्तसिरोमनि भरत ते जनि डरपहु सुरपाल ॥२२४॥ चौपाई ॥ सत्यसिंधु प्रभु
सुरहितकारी ॥ भरत राम आयस अनुसारी ॥ स्वारथ बिबस बिकल तुम होहू ॥ भरत
दोस नहि राउर मोहू ॥ सुनि सुरबर सुरगुर बर बानी ॥ भा प्रमोद मन मिटी गलानी ॥
बरषि प्रसून हरषि सुरराऊ ॥ लगे सराहन भरत सुभाऊ ॥ एहि बिधि भरत चले मग जा
ही ॥ दसा देषि मुनि सिद्ध सिहाही ॥ जबहि राम कहि लेहि उसासा ॥ उमगत प्रेम म
नहु चहु पासा ॥ द्रवहि बचन सुनि कुलिस पषाना ॥ पुरजन प्रेम न जाइ बषाना ॥
बीच बास करि जमुनहि आये ॥ निरषि नीर लोचन जल छाये ॥ दोहा ॥ रघुबर बरन
बिलोकि बर बारि समेत समाज ॥ होत मगन बारिधि बिरह चढे बिबेक जहाज ॥
२२५ ॥ चौपाई ॥ जमुन तीर तेहि दिन करि बासू ॥ भयउ समय सम सबहि सुपासू ॥
रातिहि घाट घाट की तरनी ॥ आई अगनित जाहि न बरनी ॥ प्रात पार भये एकहि
षेवा ॥ तोषे रामसषा की सेवा ॥ चले नहाइ नदिहि सिर नाई ॥ साथ निषादनाथ
दोउ भाई ॥ आगे मुनिबर बाहन आछे ॥ राजसमाज जाइ सब पाछे ॥ तेहि पाछे दो
उ बंधु पयादे ॥ भूषन बसन बेष सुठि सादे ॥ सेवक सुहृद सचिवसुत साथा ॥ सु
मिरत लषन सीय रघुनाथा ॥ जहा जहा राम बास बिस्रामा ॥ तहा तहा करहि स
प्रेम प्रनामा ॥ दोहा ॥ मगबासी नर नारि सुनि धाम काम तजि धाइ ॥ देषि सरूप
सनेह सब मुदित जनम फल पाइ ॥२२६॥ चौपाई ॥ कहहि सप्रेम एक एक पाही ॥
राम लषन सषि होहि कि नाही ॥ बय बपु बरन रूप सोइ आली ॥ सील सनेह सरि
स सम चाली ॥ बेष न सो सषि सीय न संगा ॥ आगे अनी चली चतुरंगा ॥ नहि प्रसन्न मु
ष मानस षेदा ॥ सषी संदेह होइ यहि भेदा ॥ तासु तरक तियगन मन मानी ॥ कह
हि सकल तेहि सम न सयानी ॥ तेहि सराहि बानी फुरि पूजी ॥ बोली बचन मधुर ति
य दूजी ॥ कहि सप्रेम सब कथाप्रसंगू ॥ जेहि बिधि राम राज रस भंगू ॥ भरतहि बहु
रि सराहन लागी ॥ सील सनेह सुभाय सुभागी ॥ दोहा ॥ चलत पयादे षात फ
ल पिता दीन्ह तजि राज ॥ जात मनावन रघुबरहि भरत सरिस को आज ॥२२७॥ चौ
पाई ॥ भायप भक्ति भरत आचरनू ॥ कहत सुनत दुष दूषन हरनू ॥ जो कछु कहब थो
र सषी सोई ॥ राम बंधु अस काहे न होई ॥ हम सब सानुज भरतहि देषे ॥ भइन ध
न्य जुबती जन लेषे ॥ सुनि गुन देषि दसा पछिताही ॥ कैकइ जननि जोग सुत नाही ॥
कोउ कहइ दूषन रानिहि नाहिन ॥ बिधि बस कीन्ह हमहि जो दाहिन ॥ कहा हम लो
क बेद बिधि हीनी ॥ लघु तिय कुल करतूति मलीनी ॥ बसहि कुदेस कुगाव कुबा
मा ॥ कहा यह दरस पुन्य परनामा ॥ अस आनंद अचरज प्रति ग्रामा ॥ जनु मरुभूमि
कलपतरु जामा ॥ दोहा ॥ भरत दरस देषत षुलेउ मग लोगन कर भाग ॥ जनु सिंघ
लबासिन भयेउ बिधि बस सुलभ प्रयाग ॥२२८॥ चौपाई ॥ निज गुन सहित राम गु
न गाथा ॥ सुनत जाहि सुमिरत रघुनाथा ॥ तीरथ मुनि आश्रम सुरधामा ॥ निरष
हि मज्जहि करहि प्रनामा ॥ मनही मन मागहि बर एहू ॥ सीय राम पद पदुम सनेहू ॥
मिलहि किरात कोल बनबासी ॥ बैषानस बटु जती उदासी ॥ करि प्रनाम पूछहि
जेहि तेही ॥ केहि बन लषन राम बैदेही ॥ ते प्रभु समाचार सब कहही ॥ भरतहि
देषि जनम फल लहही ॥ जे जन कहहि कुसल हम देषे ॥ ते प्रिय राम लषन सम
लेषे ॥ यहि बिधि बूझत सबहि सुबानी ॥ सुनत राम बनबास कहानी ॥ दोहा ॥
तेहि बासर बसि प्रातही चले सुमिरि रघुनाथ ॥ राम दरस की लालसा भरत सरि
स सब साथ ॥२२९॥ चौपाई ॥ मंगल सगुन होहि सब काहू ॥ फरकहि सुषद बिलोचन बाहू

रा॰अ
२१

भरतहिसहितसमाजउछाहू। मिलहहीरामुमिटिहिदुषदाहू। करतमनोरथजसजि
यजाके। जाहिसनेहसुरासबछाके। सिथलअंगपगमगडोलहि। बिहवलबच
नप्रेमबसबोलहि। रामसषातेहिसमयदिषावा। सैलसिरोमनिसहजसुहावा।
जासुसमीपसरितपयतीरा। सीयसमेतबसहिदोउवीरा। देषिकरहिसबदंडप्र
नामा। कहिजयजानकीजीवनरामा। प्रेममगनअसराजसमाजू। जनुफिरिअ
वधिचलेरघुराजू ॥दोहा॥ भरतप्रेमतेहिसमयजसतसकहिसकतनसेषु
कविहिअगमजिमिब्रह्मसुष अहममलिनजनेसु २४० ॥चौपाई॥ सकल
सनेहसिथलरघुबरके। गयेकोसदोइदिनकरढरके। जलथलदेषिबसेनिसिबी
ते। कीन्हगवनरघुनाथपरीते। उहारामरजनीअवसेषा। जागेसीयसपनअ
सदेषा। सहितसमाजभरतजनुआए। नाथवियोगतापतनताए। सकलम
लिनमनदीनदुषारी। देषीसासुआनअनुहारी। सुनिसियसपनभरे
जललोचन। भयेसोचबससोचबिमोचन। लषनसपनयहनीकनहोई। कठि
नकुचाहसुनाइहैकोई। असकहिबंधुसमेतनहाने। पूजिपुरारिसाधुसनमा
ने ॥छंद॥ सनमानिसुरमुनिबंदिबैठेउतरदिसिदेषतभये। नभधुरिषगमृगभूरि
भागेविकलप्रभुआश्रमगये। तुलसीउठेअवलोकिकारनकाहचितसचकितर
हे। सबसमाचारकिरातकोलनआइतेहिअवसरकहे ॥सोरठा॥ सुनतसुमंगल
बैनमनप्रमोदतनपुलकभर। सरदसरोरुहनैनतुलसीभरेसनेहजल २४१ ॥चौ
पाई॥ बहुरिसोचबसभेसियरमनु। कारनकवनभरतआगमनु। एकआइअ
सकहाबहोरी। सेनसंगचतुरंगनथोरी। सोसुनिरामहिभाअतिसोचू। इतपि
तुबचइतबंधुसकोचू। भरतसुभाउसमुझिमनमाही। प्रभुचितहितथिति
पावतनाही। समाधानतबभायहजाने। भरतकहेमहुसाधुसयाने। लषन
लषेउप्रभुहृदयषभारू। कहतसमयसमनीतिबिचारू। बिनपूछेकछुकहउंगो
साईं। सेवकसमयनढीठढिठाई। तुमसरबग्यसिरोमनिस्वामी। आपनिसमु
झिकहौअनुगामी ॥दोहा॥ नाथसुहृदसुठिसरलचितसीलसनेहनिधान
सबपरप्रीतिप्रतीतिजियजानियआपुसमान २४२ ॥चौपाई॥ बिषईजीवपा
इप्रभुताई। मूढमोहबसहोहिजनाई। भरत---रतसाधुसुजाना। प्रभुपदप्रे
मसकलजगजाना। तेऊआजुराजपदपाई। चलेधरममरजादमिटाई। कुटिलकु
बंधुकुअवसरताकी। जानिरामबनबासएकाकी। करिकुमंत्रमनसाजिस
माजू। आयेकरनअकंटकराजू। कोटिप्रकारकलपिकुटिलाई। आयेदलब
टोरिदोउभाई। जोजियहोतिनकपटकुचाली। केहिसोहातरथबाजिगजाली
भरतहिदोसदेइकोजाए। जगबौराइराजपदपाए ॥दोहा॥ ससिगुरुतियगा
मीनघुषचढेउभूमिसुरजान। लोकबेदतेविमुषभाअधमनबेनसमान २४३
॥चौपाई॥ सहसबाहुसुरनाथत्रिसंकू। केहिनराजमददीन्हकलंकू। भरतकीन्हय
हउचितउपाऊ। रिपुरनरंचनराषबकाऊ। एककीन्हनहिभरतभलाई। निदरेरा
मजानिअसहाई। समझिपरीसोइआजुबिसेषी। समरसरोषराममुषपेषी। ए
तनाकहतनीतिरसभूला। रनरसबिटपपुलकमिसफूला। प्रभुपदबंदिसीसरजरा
षी। बोलेसत्यसहजबलभाषी। अनुचितनाथनमानबमोरा। भरतहमहिउप
चारनथोरा। कहालगिसहियरहियमनमारे। नाथसाथधनुहाथहमारे ॥दो
हा॥ क्षत्रीजातिरघुकुलजनमरामअनुजजगजान। लातहुमारेचढतसिरनी

चकोधूरिसमान २४४ ॥चौपाई॥ उठिकरजोरिरजायसुमागा। मानहुबीररससोवतजा
गा। बांधिजटासिरकसिकटिभाथा। साजिसरासनसायकहाथा। आजुरामसेवकज
सलेऊ। भरतहिसमरसिषावनदेऊ। रामनिरादरकरफलपाई। सोवहुसमरसेजदोउ
भाई। आयबनाभलसकलसमाजू। प्रगटकरौरिसपाछिलआजू। जिमिकरिनिकर
दलैमृगराजू। लेइलपेटिलवाजिमिबाजू। तैसेहिभरतहिसेनसमेता। सानुजनि
दरिनिपातउषेता। जोसहायकरसंकरआई। तोमारौरनरामदोहाई ॥दोहा॥ अतिस
रोषमाषेलषनलषिसुनिसपथप्रवान। सभयलोकसबलोकपतिचाहतभभरि
भगान २४५ ॥चौपाई॥ जगभयमगनगगनभइबानी। लषनबाहुबलबिपुलबषानी।
तातप्रतापप्रभाउतुम्हारा। कोकहिसकैकोजाननहारा। अनुचितउचितकाजकछु
होऊ। समझिकरियभलकहसबकोऊ। सहसाकरिपाछेपछिताही। कहहिबेदबु
धतेबुधनाही। सुनिसुरबचनलषनसकुचाने। रामसीयसादरसनमाने। कहीता
तनमनीतिसुहाई। सबतेकठिनराजमदभाई। जोअचवतनृपमातहितेई। ना
हिनसाधुसभाजेहिसेई। सुनहुलषनभलभरतसरीसा। बिधिप्रपंचमहसुनानदी
सा ॥दोहा॥ भरतहिहोयनराजमदबिधिहरिहरपदपाइ। कबहुककाजीसीकरनि
छीरसिंधुबिनसाइ २४६ ॥चौपाई॥ तिमिरुतरुनतरनीहिकमिलिई। गगनमगन
मकुमेघहिमिलई। गोपदजलबूडहिघटजोनी। सहजछमाबरुछाडैछोनी।
मसकफूकमकुमेरुउडाई। होइनृपमदभरतहिभाई। लषनतुम्हारसपथपितुआ
ना। सुचिसुबंधुनहिभरतसमाना। सगुनषीरअवगुनजलताता। मिलइरच
परपंचबिधाता। भरतहंसरबिबंसतडागा। जनमिकीन्हगुनदोषबिभागा। गहि
गुनपयतजिअवगुनवारी। निजजसजगतकीन्हउजियारी। कहतभरतगुन
सीलसुभाऊ। प्रेमपयोधिमगनरघुराऊ ॥दोहा॥ सुनिरघुबरबानीबिबुधदेषि
भरतप्रतिहेत। सकलसराहतरामसोप्रभुकोकृपानिकेत २४७ ॥चौपाई॥ जौ
नहोतजगजनमभरतको। सकलधरमधुरधरनिधरतको। कविकुलअगमभ
रतगुनगाथा। कोजानैतुमबिनरघुनाथा। लषनरामसीयसुनिसुरबानी
अतिसुषलहेउनजातबषानी। इहाभरतसबसहितसहाए। मंदाकिनीपुनीत
नहाए। सरितसमीपराषिसबलोगा। मागिमातगुरुसचिवनियोगा। चलेभरत
जहासीयरघुराई। साथनिषादनाथलघुभाई। समुझिमातकरतबसकुचाही
करतकुतरककोटिमनमाही। रामलषनसीयसुनिममनाऊ। उठिजनिअन
ताहितजिठाऊ ॥दोहा॥ मातमतेमहुमानिमोहिजोकछुकरहिसोथोरअघअ
वगनछमिआदरहिसमुझिआपनिओर २४८ ॥चौपाई॥ जोपरहरहिमलिनम
नजानी। जोसनमानहिसेवकमानी। मेरेसरनरामहीकीपनही। रामसुस्वामि
दोससबजनही। जगजसभाजनचातकमीना। नेमप्रेमनिजनिपुननबीना। असम
नगुनतचलेमगजाता। सकुचसनेहसिथिलसबगाता। फेरतमनहुमातकृतषो
री। चलतभगतिबलधीरजधारी। जबसमुझतरघुनाथसुभाऊ। तबपथपरत
उताइलपाऊ। भरतदसातेहिअवसरकैसी। जलप्रवाहजलअलिगतिजैसी। दे
षिभरतकरसोचसनेहू। भानिषादतेहिसमयबिदेहू ॥दोहा॥ लगेहोनमंगलस
गुनसुनिगुनिकहतनिषाद। मिटिहिसोचुहोइहिहरषपुनिपरिनामबिषाद
२४९ ॥चौपाई॥ सेवकबचनसत्यसबजाने। आश्रमनिकटजाइनिअराने। भरत
दीषबनसैलसमाजू। मुदितछुधितजनुपाइसुनाजू। ईतिभीतिजनुप्रजा
दुषारी। त्रिविधितापपीडितग्रहमारी। जाइसुराजसुदेससुषारी। होहिभरतग

लिनेहि मनहारी॥ राम बास बन संपति भ्राजा॥ सुषी प्रजा जनु पाइ सुराजा॥ सचिव बि
राग विवेक नरेसु॥ विपन सुहावन पावन देसु॥ भट जम नियम सैल रजधानी॥ सांति
सुमति सुचि सुंदर रानी॥ सकल अंग संपन्न सुराऊ॥ राम चरन आश्रित चित चाऊ॥
दोहा॥ जीति मोह महिपाल दल सहित विवेक भुआल॥ करत अकंटक राज पुर सु
ष संपदा सुकाल॥ २५०॥ चौपाई॥ बन प्रदेस मुनि बास घनेरे॥ जनु पुर नगर गाउं ग
न षेरे॥ विपुल विचित्र विहग मृग नाना॥ प्रजा समाज न जाय बषाना॥ षगहा करि
हरि बाघ बराहा॥ देषि महिष वृष साज सराहा॥ बयर विहाय चरहिं एक संगा॥ जहं तहं
मनहुं सेन चतुरंगा॥ झरना झरहिं मत्त गज गाजहिं॥ मनहुं निसान विविधि विधि
बाजहिं॥ चक चकोर चातक सुक पिक गन॥ कूजत मंजु मराल मुदित मन॥ अलिगन
गावत नाचत मोरा॥ जनु सुराज मंगल चहु ओरा॥ बेलि विटप तृन सफल सफूला॥
सब समाज मुद मंगल मूला॥ दोहा॥ राम सैल सोभा निरषि भरत हृदय अति प्रेम॥
तापस तप फल पाइ जिमि सुषी सिराने नेमु॥ २५१॥ चौपाई॥ तब केवट ऊंचे चढि धाई॥
कहेउ भरत सन भुजा उठाई॥ नाथ देषिअहिं विटप विसाला॥ पाकर जंबु रसाल तमा
ला॥ जिन्ह तरुवरन्ह मध्य वट सोहा॥ मंजु विसाल देषि मनु मोहा॥ नील सघन पल्लव फल
लाला॥ अविरल छांह सुषद सब काला॥ मानहुं तिमिर अरुनमय रासी॥ विरची वि
धि संकेलि सुषमासी॥ ए तरु सरित समीप गोसांई॥ रघुवर परनकुटी जहं छाई॥ तुल
सी तरुवर विविध सोहाए॥ कहुं कहुं सीय कहुं लषन लगाए॥ वट छाया वेदिका
वनाई॥ सीय निज पानि सरोज सुहाई॥ दोहा॥ जहां वैठि मुनिगन सहित नित सी
य राम सुजान॥ सुनहिं कथा इतिहास सब आगम निगम पुरान॥ २५२॥ चौपाई॥
सषा वचन सुनि विटप निहारी॥ उमगे भरत विलोचन वारी॥ करत प्रनाम चले
दोउ भाई॥ कहत प्रीति सारद सकुचाई॥ हरषहिं निरषि राम पद अंका॥ मानहुं पारस
पायउ रंका॥ रज सिर धरि हिय नयनन्हि लावहिं॥ रघुवर मिलन सरिस सुष पावहिं॥ देषि भर
त गति अकथ अतीवा॥ प्रेम मगन मृग षग जड जीवा॥ सषहि सनेह विवस मग भू
ला॥ कहि सुपंथ सुर वरषहिं फूला॥ निरषि सिद्ध साधक अनुरागे॥ सहज सनेह सराहन ला
गे॥ होत न भूतल भाउ भरत को॥ अचर सचर चर अचर करत को॥ दोहा॥ प्रेम अमी अमंद
र विरह भरत पयोधि गंभीर॥ मथि प्रगटेउ सुर साधु हित कृपासिंधु रघुवीर॥ २५३॥
चौपाई॥ सषा समेत मनोहर जोटा॥ लषेउ न लषन सघन वन ओटा॥ भरत दीष प्रभ
आश्रम पावन॥ सकल सुमंगल सदन सुहावन॥ करत प्रवेस मिटे दुष दावा॥ जनु
जोगी परमारथ पावा॥ देषे भरत लषन प्रभु आगे॥ पूछे वचन कहत अनुरागे॥ सीस जटा कटि मुनि पट वांधे॥
तून कसे कर सर धनु कांधे॥ वेदी पर मुनि साधु समाज॥ सीय सहित राजत रघुराज॥
वलकल वसन जटिल तनु स्यामा॥ जनु मुनि वेष कीन रति कामा॥ कर कमलन
धनु सायक फेरत॥ जिय की जरनि हरत हसि हेरत॥ दोहा॥ लसत मंजु मुनि मंड
ली मध्य सीय रघुचंद॥ ग्यान सभा जनु तनु धरे भक्ति सच्चिदानंद॥ २५४॥ चौपाई॥
सानुज सषा समेत मगन मन॥ विसरे हरष सोक सुष दुष गन॥ पाहि नाथ कहि
पाहि गोसाई॥ भूतल परे लकुट की नाई॥ वचन सप्रेम लषन पहिचाने॥ करत
प्रनाम भरत जिय जाने॥ बंधु सनेह सरस यहि ओरा॥ उत साहिव सेवा वस जोरा॥
मिलि न जाइ नहिं गुदरत वनई॥ सुकवि लषन मन की गति भनई॥ रहे राषि सेवा प
र भारू॥ चढी चंग जनु षैंच षेलारू॥ कहत सप्रेम नाइ महि माथा॥ भरत प्रनाम क
रत रघुनाथा॥ उठे राम सुनि प्रेम अधीरा॥ कहुं पट कहुं निषंग धनु तीरा॥ दोहा॥ वर
वस लिए उठाइ उर लाए कृपानिधान॥ भरत राम की मिलनि लषि विसरे सवहि अपान॥ २५५

चौपाई॥ मिलनि प्रीति किमि जाइ बषानी॥ कविकुल अगम करम मन वानी॥ पर
म प्रेम पूरन दोउ भाई॥ मन बुधि चित अहमिति विसराई॥ कहहु सुप्रेम प्रगट को कर
ई॥ केहि छाया कवि मति अनुसरई॥ कविहि अरथ आषर बल सांचा॥ अनुहरि ता
ल गतिहि नट नाचा॥ अगम सनेह भरत रघुवर को॥ जहं न जाइ मन विधि हरि हर को॥
सो मैं कुमति कहौं केहि भांती॥ बाज सुराग कि गांडर तांती॥ मिलनि विलोकि
भरत रघुवर की॥ सुरगन सभय धकधकी धरकी॥ समुझाए सुरगुर जड जागे॥
बरषि प्रसून प्रसंसन लागे॥ दोहा॥ मिलि सप्रेम रिपुसूदनहि केवट भेटेउ राम॥
भूरि भाव भेटे भरत लछिमन करत प्रनाम॥ २५६॥ चौपाई॥ भेटेउ लषन ललकि लघु भा
ई॥ बहुरि निषाद लीन्ह उर लाई॥ पुनि मुनिगन दुहु भाइन बंदे॥ अभिमत आसिष पा
इ अनंदे॥ सानुज भरत उमगि अनुरागा॥ धरि सिर सिय पद पदुम परागा॥ पुनि पु
नि करत प्रनाम उठाए॥ सिर कर कमल परसि बैठाए॥ सीय असीस दीन्ह मन मा
हीं॥ मगन सनेह देह सुधि नाहीं॥ सब विधि सानुकूल लषि सीता॥ भे निसो
च उर अपडर बीता॥ कोउ कछु कहइ न कोउ कछु पूछा॥ प्रेम भरा मन निज गति
छूछा॥ तेहि अवसर केवट धीरज धरि॥ जोरि पानि विनवत प्रनाम करि॥ दोहा॥
नाथ साथ मुनिनाथ के मातु सकल पुर लोग॥ सेवक सेनप सचिव सब आए वि
कल वियोग॥ चौपाई॥ २५७ सील सिंधु सुनि गुर आगवन॥ सीय समीप राषे रिपु
दमन॥ चले सवेग राम तेहि काला॥ धीर धरम धुर दीनदयाला॥ गुरहि देषि सानु
ज अनुरागे॥ दंड प्रनाम करन प्रभु लागे॥ मुनिवर धाइ लिये उर लाई॥ प्रेम उमगि भे
टे दोउ भाई॥ प्रेम पुलकि केवट कहि नामु॥ कीन्ह दूरि तें दंड प्रनामु॥ रामसषा रि
षि वरवस भेटा॥ जनु महि लुठत सनेह समेटा॥ रघुपति भक्ति सुमंगल मूला॥ न
भ सराहि सुर वरषहि फूला॥ राहि सम निपट नीच कोउ नाहीं॥ वड वसिष्ठ सम को
जग माहीं॥ दोहा॥ जेहि लषि लषनहु ते अधिक मिले मुदित मुनिराइ॥ सो सीतापति
भजन को प्रगट प्रताप प्रभाउ॥ २५८॥ चौपाई॥ आरत लोग राम सब जाना॥ करु
नाकर सुजान भगवाना॥ जो जेहि भाय रहा अभिलाषी॥ तेहि तेहि कै तसि तसि
रुष राषी॥ सानुज मिलि पल महु सब काहू॥ कीन्ह दूरि दुष दारुन दाहू॥ यह वडि वात
राम कै नाहीं॥ जिमि घट कोटि एक रवि छाहीं॥ मिलि केवटहि उमगि अनुरा
गा॥ पुरजन सकल सराहहिं भागा॥ देषि राम दुषित महतारी॥ जनु सुवेलि अव
ली हिम मारी॥ प्रथम राम भेटी कैकेई॥ सरल सुभाव भक्ति मति भेई॥ पग प
रि कीन्ह प्रवोध वहोरी॥ काल करम विधि सिर धरि षोरी॥ दोहा॥ भेटी रघुवर मातु
सब करि प्रवोध परितोष॥ अंब ईस आधीन जग काहु न देइअ दोष॥ २५९॥ चौपाई॥
गुरतिय पद वंदे दोउ भाई॥ सहित विप्रतिय जे संग आई॥ गंग गौरि सम सब सनमानी॥
देहि असीस मुदित मृदु वानी॥ गहि पद लगे सुमित्रा अंका॥ जनु भेटी संपति अति रं
का॥ पुनि जननी चरननि दोउ भ्राता॥ परे प्रेम व्याकुल सब गाता॥ अति अनुराग अंब
उर लाए॥ नयन सनेह सलिल अन्हवाए॥ तेहि अवसर कर हरष विषाद॥ किमि क
वि कहै मूक जिमि स्वाद॥ मिलि जननिहि सानुज रघुराइ॥ गुर सन कहेउ कि
धारिय पाउ॥ पुरजन पाय मुनीस नियोग॥ जल थल तकि तकि उतरे लोग॥ दो
हा॥ महिसुर मंत्री मातु गुर गने लोग लिए साथ॥ पावन आश्रम गवन किय भ
रत लषन रघुनाथ॥ २६०॥ चौपाई॥ सीय आइ मुनिवर पद लागी॥ उचित असीस
लही मन मागी॥ गुरपतिनिहि मुनितियन समेता॥ मिली प्रेम कहि जाइ न जेता॥
वंदि वंदि पद सिय सवही के॥ आसिरवचन लहे प्रिय जी के॥ सासु सकल
जव सीय निहारी॥ मूदे नयन सहमि सुकुमारी॥ परी वधिक वस मनहु मराली॥

रा॰श्र॰
२२

कहांकरहिकरतारकुचाली। जिनसीयनिरषिनिपटदुषपावा। सोसबसहियेजोदै
उसहावा। जनकसुतासमेतरघुबीरा। नीलनलिनलोचनभरिनीरा। मिलीस
कलसासुनसीयजाइ। तेहिअवसरकरुनामहीछाइ॥दोहा॥ लागिलागि
पगसबनसियभेटतिअतिअनुराग। हृदयअसीसहिंप्रेमबसरहिअहुभरीसुहाग
॥२४१॥चौपाई॥ बिकलसनेहसीयसबरानी। बैठनसबहिकहेउगुरग्यानी। कहि
जगगतिमायिकमुनिनाथा। कहेउकछुकपरमारथगाथा। नृपकरसुरपु
रगवनसुनावा। सुनिरघुनाथदुसहदुषपावा। मरनहेतनिजनेहबिचारी। भ
येअतिबिकलधीरधुरधारी। कुलिसकठोरसुनतकटुबानी। बिलपतलषनसी
यसबरानी। सोकबिकलअतिसकलसमाजू। मानहुँराजअकाजेउआजू। मु
निबरबहुरिरामसमुझाए। सहितसमाजसुसरितनहाए। ब्रतनिरंबुतेहिदि
नप्रभुकीन्हा। मुनिहुकहेजलकाहुनलीन्हा॥दोहा॥ भोरभयेरघुनंदनहिजो
मुनिआयसदीन्ह। सरधाभगतिसमेतप्रभुसोसबसादरकीन्ह॥२४२॥चौपाई॥
करिपितुक्रियाबेदजसबरनी। भेपुनीतपातकतमतरनी। जासुनामपावक
अघतूला। सुमिरतसकलसुमंगलमूला। सुधसोभयेउसाधुसंमतअस। तीरथआवा
हनसुरसरिजस। सुधभयेदुइबासरबीते। बोलेगुरसनरामपिरीते। नाथलोग
सबनिपटदुषारी। कंदमूलफलअंबुअहारी। सानुजभरतसचिवसबमाता
देषिमोहिपलसमजुगजाता। सबसमेतपुरधारिअपाऊ। आपइहाँअमराव
तिराऊ। बहुतकहेउँसबकियउँढिठाई। उचितहोइतसकरियगोसाई॥दोहा॥
धरमसेतुकरुनायतनकसनकहहुअसराम। लोगदुषितदिनदुइदरसदेषि
लहेउबिश्राम॥२४३॥चौपाई॥ रामबचनसुनिसभयसमाजू। जनुजलनिधिमहि
बिकलजहाजू। सुनिगुरगिरासुमंगलमूला। भयेउमनहुँमारुतअनुकूला। पा
वनपयतिहुँकालनहाहीं। जोबिलोकिअघओघनसाहीं। मंगलमूरतिलोचन
भरिभरि। निरषहिंहरषिदंडवतकरिकरि। रामसैलबनदेषनजाहीं। जहाँसुषस
कलसकलदुषनाहीं। झरनाझरहिंसुधासमबारी। त्रिबिधितापहरत्रिबिधिबयारी। बिट
पबेलितृनअगनितजाती। फलप्रसूनपल्लवबहुभाँती। सुंदरसिलासुषदतरु
छाहीं। जाइबरनिबनछबिकिहिपाहीं॥दोहा॥ सरनिसरोरुहजलबिहग
कूजतगुंजतभृंग। बैरबिगतबिहरतबिपिनमृगबिहंगबहुरंग॥२४४॥चौपाई॥
कोलकिरातभिल्लबनबासी। मधुरसुचिसुंदरस्वादसुधासी। भरिभरिपरनपु
टीरचिरूरी। कंदमूलफलअंकुरजूरी। सबहिदेहिंकरिबिनयप्रनामा। कहि
कहिस्वादभेदगुननामा। देहिंलोगबहुमोलनलेहीं। फेरतरामदोहाईदेहीं। कह
हिंसनेहमगनमृदुबानी। मानतसाधुप्रेमपहिचानी। तुमसुकृतीहमनीच
निषादा। पावादरसनरामप्रसादा। हमहिंअगमअतिदरसतुम्हारा। जसमरु
धरनिदेवधुनिधारा। रामकृपालनिषादनिवाजा। परिजनप्रजउचितहिंजस
राजा॥दोहा॥ यहजियजानिसंकोचतजिकरियछोहलषिनेह। हमहिंकृता
रथकरनलगिफलतृनअंकुरलेहु॥२४५॥चौपाई॥ तुमप्रियपाहुनेबनपगुधा
रे। सेवाजोगनभागहमारे। देवकाहहमतुम्हहिंगोसाईं। ईंधनपातकिरातमि
ताईं। यहहमारिअतिबड़िसेवकाई। लेहिंनबासनबसनचुराई। हमजड़जी
वजीवघनघाती। कुटिलकुचालीकुमतिकुजाती। पापकरतनिसिबासरजा
हीं। नहिंकटिपटनहिंपेटअघाहीं। सपनेहुँधरमबुद्धिकसकाऊ। यहर

गुनेहनदरसप्रभाऊ। जबतेंप्रभुपदपदुमनिहारे। मिटेदुसहदुषदोषहमारे। बचन
सुनतपुरजनअनुरागे। तिन्हकेभागसराहनलागे॥छंद॥ लागेसराहनभागसबअनु
रागबचनसुनावहीं। बोलनिमिलनिसियरामचरनसनेहलषिसुषपावहीं। नरना
रिनिदरहिंनेहुनिजसुनिकोल। भिल्लनकीगिरा। तुलसीकृपारघुबंसमनिकीलो
हलेनौकातिरा॥२४६॥चौपाई॥ पुरनरनारिमगनअतिप्रीती। बासरजाहिंपलक
समबीती। सीयसासुप्रतिबेषबनाई। सादरकरइसरिससेवकाई। लषानमरम
रामबिनुकाहू। मायासबसियमायामाहू। सीयसासुसेवाबसकीन्ही। तिन्हलहि
सुषसिषआसिषदीन्ही। लषिसीयसहितसरलदोउभाई। कुटिलरानिपछितानिअघा
ई। अवनिजमहिजाँचतिकैकेई। महिनबीचुबिधिमीचुनदेई। लोकहुँबेदबिदितक
बिकहहीं। रामबिमुषथलुनरककनलहहीं। यहसंसयसबकेमनमाहीं। रामगव
नबिधिअवधकिनाहीं॥दोहा॥ निसिननीदनहिंभूषदिनभरतबिकलसुचिसो
च। नीचकीचबिचमगनजसमीनहिंसलिलसकोच॥२४७॥चौपाई॥ कीन्हमातु
मिसिकालकुचाली। ईतिभीतिजसपाकतसाली। केहिबिधिहोइरामअभिषेकू।
मोहिअवकलतउपावनएकू। अवसिफिरहिंगुरआयसमानी। मुनिपुनिकहबरा
मरुचिजानी। मातुकहेहुँबहुरहिंरघुराऊ। रामजननिहठकरबिकिकाऊ। मोहिअ
नुचरकरकेतिकबाता। तेहिमहँकुसमउबामबिधाता। जौंहठकरउँतौनिपटकु
करमू। हरगिरितेंगुरुसेवकधरमू। एकउजुगुतिनमनठहरानी। सोचतभरत
हिरैनबिहानी। प्रातनहाइप्रभुहिसिरुनाई। बैठतपठयेरिषयबोलाई॥दोहा॥
गुरुपदकमलप्रनामकरिबैठेआयसुपाइ। बिप्रमहाजनसचिवसबजुरेसभास
दआइ॥२४८॥चौपाई॥ बोलेमुनिबरसमयसमाना। सुनहुसभासदभरतसुजाना।
धरमधुरीनभानुकुलभानू। राजारामस्वबसभगवानू। सत्यसंधपालकश्रुति
सेतू। रामजनमजगमंगलहेतू। गुरुपितुमातुबचनअनुसारी। षलदलदलनदे
वहितकारी। नीतिप्रीतिपरमारथस्वारथ। कोउनरामसमजानजथारथ। बि
धिहरिहरससिरबिदिसिपाला। मायाजीवकरमकलिकाला। अहिपमहिपज
हँलगिप्रभुताई। जोगसिद्धिनिगमागमगाई। करिबिचारजियदेषहुनीके। रामरजाइ
सीससबहीके॥दोहा॥ राषेरामरजाइरुषहमसबकरहितहोइ। समुझिसया
नेकरहुअबसबमिलिसम्मतसोइ॥२४९॥चौपाई॥ सबकहँसुषदरामअभिषेकू।
मंगलमोदमूलमगएकू। केहिबिधिअवधचलहिंरघुराऊ। कहहुसमुझिसोइकरिय
उपाऊ। सबसादरसुनिमुनिबरबानी। नयपरमारथस्वारथसानी। उतरुन
आवलोगभयेभोरे। तबसिरुनाइभरतकरजोरे। भानुबंसभयेभूपघनेरे। अधि
कएकतेंएकबड़ेरे। जनमहेतुसबकहँपितुमाता। करमसुभासुभदेइबिधाता।
दलिदुषसजइसकलकल्याना। असिअसीसराउरिजगजाना। सोगोसाइंबिधिग
तिजेहिंछेंकी। सकइकोटारिटेकजोटेकी॥दोहा॥ बूझियमोहिउपायअबसो
सबमोरअभागु। सुनिसनेहमयबचनगुरउरउमगाअनुरागु॥२५०॥चौपाई॥ ता
तबातफुरिरामकृपाहीं। रामबिमुषसिधिसपनेहुँनाहीं। सकुचउँतातकहतए
कबाता। अरधतजहिंबुधसरबसजाता। तुम्हकाननगवनहुदोउभाई। फेरियल
षनसीयरघुराई। सुनिबचनहरषेदोउभ्राता। भयेप्रमोदपरिपूरनगाता। मनप्र
सन्नतनतेजबिराजा। जनुजियराउरामभयेराजा। बहुतलाभलोगनलघुहानी।
समदुषसुषसबरोवहिंरानी। कहहिंभरतमुनिकहासोकीन्हे। फलजगजीवनअभि

राम्र·
२५

मनदीन्हे॥ काननकरउजननमभरिवास॥ रहिहैअपिकजमोरसपास॥दोहा॥ अंतरजामी
रामसीयजसमलरवरपलजान॥ जोफुरकहुजोनाथनिजकीजिअवचनप्रवान॥२२१॥
चौपाई॥ भरतवचनसुनिदेषिसनेहू॥ सभासहितमुनिभयेविदेहू॥ भरतमहाम
हिमाजलरासी॥ मुनिमतिठाढितीरअबलासी॥ गावहपारजतननहिघेरा॥ पाव
तनावनवोहितवेरा॥ औरकरहिकोभरतवडाई॥ सरसीसीपकिसिंधुसमाई॥ भरत
मुनिहिमनभीतरभाए॥ सहितसमाजरामपहिंआए॥ प्रभुप्रनामकरिदीन्हसुआसन
वैठेसवसुनिमुनिअनुसासन॥ वोलेमुनिवरवचनविचारी॥ देसकालअवसरअ
नुसारी॥ ननुसासन॥ वोलेमुनिवरवचनविचारी॥ देसकालअवसरअनुसारी॥ सुन
हुरामसरवग्यसुजाना॥ परमनीतिगुनग्यानविधाना॥दोहा॥ सवकेउरअंतरवस
हुजानहुभावकुभाउ॥ पुरजनजननीभरतहितहोइसोकहिअउपाउ॥२२२॥चौपा
॥आरतकहहिविचारनकाऊ॥ सूझजुआरिहिआपनदाऊ॥ सुनिमुनिवचनकहत
रघुराऊ॥ नाथतुम्हारेहिहाथउपाऊ॥ सवकरहितरुषराउररावे॥ आयसुकियेमुदितफु
रमावे॥ प्रथमजोआयसुमोकहहोई॥ माथमानिकरौसिषसोई॥ पुनिजेहिकहजस
कहवगोसाई॥ सोसवभातिघटेसेवकाई॥ कहमुनिरामसत्यतुमभाषा॥ भरतस
नेहविचारनराषी॥ तेहितेकहउवहोरिवहोरी॥ भरतभगतिवसभइमतिमोरी॥ मोरे
जानभरतरुचिराषी॥ जोकीजेसोसुभसिवसाषी॥दोहा॥ भरतविनय
सादरसुनिअकरियविचारवहोरि॥ करवसाधुमतलोकमतनृपनयनिगमनि
चोरि॥२२३॥चौपाई॥ गुरुअनुरागभरतपरदेषी॥ रामहृदयआनंदविसेषी॥ भर
तहियरमधुरंधरजानी॥ निजसेवकतनमानसवानी॥ वोलेगुरुआयसुअनु
कूला॥ वचनमंजुमृदुमंगलमूला॥ नाथसपथपितुचरनदोहाई॥ भयेउनभुव
भरतसमभाई॥ जेगुरुपदअंबुजअनुरागी॥ तेलोकहुवेदहुवडभागी॥ राउरजो
परअतिअनुरागा॥ कोकहिसकेउभरतकरभागू॥ लषिलघुवंधुवुद्धिसकुचा
ई॥ करतवदनपरभरतवडाई॥ भरतकहहिसोइकियेभलाई॥ असकहिरामरहे
अरगाई॥दोहा॥ तवमुनिवोलेभरतसन सवसकोचतजितात॥ कृपासिंधुपि
यवंधुसनकहहुहृदयकीवात॥२२४॥चौपाई॥ सुनिमुनिवचनरामरुषपाइ॥
गरुसाहिवअनुकूलअघाइ॥ लषिअपनेसिरसवछरभारू॥ कहिनसकहिकहिक
छुकरहिविचारु॥ पुलकसरीरसभाभयवाढे॥ नीरजनयननेहजलवाढे॥ क
हवमोरमुनिनाथनिवाहा॥ येहतेअधिककहवमेकाहा॥ मेजानौनिजनाथसुभा
ऊ॥ अपराधिहुपरकोपनकाऊ॥ मोपरकृपालनेहविसेषी॥ षेलतषुनसनकव
हुमेदेषी॥ सिसुपनतेपरहरेउनसंगू॥ कवहुनकीन्हमोरमनभंगू॥ मैप्रभुकृपारी
तिजियजोहारेहुषेलजितावहिमोही॥दोहा॥ महूसनेहसकोचवसमनमु
षकहेउनवयन॥ दरसनतृपतनआजलगिप्रेमपिआसेनयन॥२२५॥चौपाई॥
विधिनसकेउसहिमोरदुलारा॥ नीचवीचजननीमिसपारा॥ येहुकहतमोहिआ
जनसोभा॥ अपनसमुझिसाधुसुचिकोभा॥ मातुमंदमेसाधुसुचाली॥ उरअसआ
नतकोटिकुचाली॥ फरइकिकोदवलालिसाली॥ मुकताप्रसवकिसंवुककाली॥
सपनेहुदोसकलेसनकाहू॥ मोरअभागउदधिअवगाहू॥ विनुसमुझेनिजअघप
रिपाकू॥ जारिउजायजननिकहिकाकू॥ हृदयहेरिहारेउसवओरा॥ एकहिभातिभ
लेहिभलमोरा॥ गुरुगोसाइसाहिवसियरामू॥ लागतमोहिनीकपरिनामू॥॥
दोहा॥ साधुसभागुरुप्रभुनिकटकहउसुथलसतिभाउ॥ प्रेमप्रपंचकिझूठफुर

रजानहिमुनिरघुराऊ॥२२६॥चौपाई॥ भूपतिमरनप्रेमपनराषी॥ जननीकुमतिज
गतसवसाषी॥ देषिनजाहिविकलमहतारी॥ जरहिदुसहजरपुरनरनारी॥ मेहीस
कलअनरथकरमूला॥ सोसुनिसमुझिसहेउसवसूला॥ सुनिवनगवनकीन्ह
रघुनाथा॥ करिमुनिवेषलषनसियसाथा॥ विनुपदत्रानहिपयादेहिपाए॥ संक
रसाषिरहेउयेहिघाये॥ वहुरिनिहारिनिषादसनेहू॥ कुलिसकठिनउरभयेउनवे
हू॥ अवसवआषिनदेषेउआई॥ जीअतजीवजडसवहिसहाई॥ जिन्हहिनिरषि
मगसापिनिविछी॥ तजहिविषमविषतापसतीछी॥दोहा॥ तेइरघुनंदनलषन
सीयअनहितलागेजाहि॥ तासुतनयतजिदुसहदुषदेवसहावैकाहि॥२२७॥
चौपाई॥ सुनिअतिविकलभरतवरवानी॥ आरतप्रीतिविनयनयसानी॥
सोकमगनसवसभाषभारू॥ मनहुकमलवनपरेउतुसारू॥ कहिअनेकविधि
कथापुरानी॥ भरतप्रवोधकीन्हमुनिग्यानी॥ वोलेउचितवचनरघुनंदू॥ दिनकर
कुलकैरववनचंदू॥ तातजनिजियकरहुगलानी॥ ईसअधिनजीवगतिजानी॥
तीनकालत्रभुवनमतमोरे॥ पुन्यसिलोकताततरतोरे॥ उरआनततुम्हपरकु
टिलाई॥ जाइलोकपरलोकनसाई॥ दोसदेहिजननिजडतेई॥ जिनगुरसाधु
सभानहिसेई॥ दो॥ मिटिहहिपापप्रपंचसवअषिलअमंगलभार॥ लोकसु
जसपरलोकसुषसुमिरतनामतुम्हार॥२२८॥चौ॥ कहउसुभावसत्यसिवसा
षी॥ भरतभूमिरहराउरराषी॥ तातकुतरककरहुजनिजाए॥ वैरप्रेमनहिदुरइदु
राए॥ मुनिगनानिकटविहगम्रगजाही॥ वाधकवधिकविलोकिपराही॥ हि
तअनहितपसुपछीउजाना॥ मानुषतनुगुनग्याननिधाना॥ ताततुम्हहिमेजा
नउनीके॥ करउकहाअसमंजसजीके॥ राषेउरायसत्यमोहित्यागी॥ तनपरहे
उप्रेमपनलागी॥ तासुवचनमेटतमनसोचू॥ तेहितेअधिकतुम्हारसकोचू॥
तापरगुरुमोहिआयसुदीन्हा॥ अवसिजोकहहुचहउसोकीन्हा॥दो॥ मनप्र
सन्नकरिसकुचतजिकहहुकरउसोइआजु॥ सत्यसिंधुरघुवरवचनसुनिभा
सुषीसमाजु॥२२९॥चौपाई॥ सुरगनसहितसभयसुरराजू॥ सोचहिचाहतहोन
अकाजू॥ वनतउपाउकरतकछुनाही॥ रामसरनिसवगयेमनमाही॥ वहुरि
विचारिपरसपरकहही॥ रघुपतिभक्तभक्तिवसअहही॥ सुधिकरिअंवरीषदुरवा
सा॥ भयेसुरसुरपतिनिपटनिरासा॥ सहेसुरनवहुकालविषादा॥ नरहरिकि
येप्रगटप्रहलादा॥ लगिलगिकानकहहिधुनिमाथा॥ अवसुरकाजभरतकेहा
था॥ आनउपाउनदेषिअदेवा॥ मानतरामसुसेवकसेवा॥ हियसप्रेमसुमिरहुसव
भरतहि॥ निजगुनसीलरामवसकरतहि॥दो॥ सुनिसुरमतसुरगुरकहेउभल
तुम्हारवडभाग॥ सकलसुमंगलमूलजगभरतचरनअनुराग॥२३०॥चौपाई॥ सी
तापतिसेवकसेवकाई॥ कामधेनुसमसरससुहाई॥ भरतभक्तितुम्हरेमनआई॥
तजहुसोचविधिवातवनाई॥ देषदेवपतिभरतप्रभाऊ॥ सहजसुभावविवसर
घुराऊ॥ मनथिरकरहुदेवडरनाही॥ भरतहिजानिरामपरछाही॥ सुनिसुरगुरु
सुरसंमतसोचू॥ अंतरजामीप्रभुहिसकोचू॥ निजसिरभारभरतजियजानी॥ क
रतकोटिविधिउरअनुमानी॥ करिविचारमनदीन्हीठीका॥ रामरजायसुआपन
नीका॥ निजपनतजिराषेउपनमोरा॥ छोहसनेहकीन्हनहिथोरा॥दो॥ कीनअनु
ग्रहअमितअतिसवविधिसीतानाथ॥ करिप्रनामवोलेभरतजोरिजलजजुगहा
थ॥२३१॥चौपाई॥ कहउकहावउकाअवस्वामी॥ कृपाअंवुनिधिअंतरजामी॥ गु
रुप्रसन्नसाहिवअनुकूला॥ मिटीमलिनमनकलपितसूला॥ अपडरडरेउनर
सोचसमूले॥ रविहिनदोसदेवदिसिभूले॥ मोरअभागमातकुटिलाई॥ विधि
गतिविषमकालकठिनाई॥ पावरोपिसवमिलिमोहिघाला॥ प्रनतपालपनआ

पनपाला॥ पहुनाई तिन राउर होई॥ लोकहुँ बेद बिदित नहिं गोई॥ जगाधन भलभा
लसक गोसाईं॥ कहिअ होइ भल कासु भलाई॥ देव देवतरु सरिस सुभाऊ॥ सनमुख
बिमुख न काहुहि काऊ॥ दो॥ जाइ निकट पहिचानि तरु छाहँ समनि सब सोच॥ मा
गत अभिमत पाउ जग राउ रंक भल पोच॥ २९२॥ चौपाई॥ लखि सब बिधि गुर स्वामि स
नेहू॥ मिटेउ छोभु नहिं मन संदेहू॥ अब करुनाकर कीजिअ सोई॥ जन हित प्रभु चि
त छोभु न होई॥ जो सेवकु साहिबहि सँकोची॥ निज हित चहइ तासु मति पोची॥ से
वक हित साहिब सेवकाई॥ करइ सकल सुख लोभ बिहाई॥ स्वारथु नाथ फिरें सब
ही का॥ किएँ रजाइ कोटि बिधि नीका॥ यह स्वारथ परमारथ सारू॥ सकल सुकृत फ
ल सुगति सिंगारू॥ देव एक बिनती सुनि मोरी॥ उचित होइ तस करब बहोरी॥ तिल
क समाजु साजि सबु आना॥ करिअ सुफल प्रभु जौं मनु माना॥ दो॥ सानुज पठइअ
मोहि बन कीजिअ सबहि सनाथ॥ नतरु फेरिअहिं बंधु दोउ नाथ चलौं मैं साथ॥
२९३॥ चौपाई॥ नतरु जाहिं बन तीनिउ भाई॥ बहुरिअ सीय सहित रघुराई॥ जेहि बिधि
प्रभु प्रसन्न मन होई॥ करुना सागर कीजिअ सोई॥ देवँ दीन्ह सबु मोहि अभारू॥ मो
रें नीति न धरम बिचारू॥ कहउँ बचन सब स्वारथ हेतू॥ रहत न आरत कें चित चेतू॥
उतरु देइ सुनि स्वामि रजाई॥ सो सेवकु लखि लाज लजाई॥ अस मैं अवगुन उदधि
अगाधू॥ स्वामि सनेहँ सराहत साधू॥ अब कृपाल मोहि सो मत भावा॥ सकुच स्वा
मि मन जाहिं न पावा॥ प्रभु पद सपथ कहउँ सति भाऊ॥ जग मंगल हित एक उपा
ऊ॥ दो॥ प्रभु प्रसन्न मन सकुच तजि जो जेहि आयसु देब॥ सो सिर धरि धरि करि
हि सबु मिटिहि अनट अवरेब॥ २९४॥ चौपाई॥ भरत बचन सुचि सुनि सुर हरषे॥ सा
धु सराहि सुमन सुर बरषे॥ असमंजस बस अवध निवासी॥ प्रमुदित मन तापस ब
नवासी॥ चुपहिं रहे रघुनाथ सकोची॥ जनक दूत तेहि अवसर आए॥ मुनि बसिष्ठ सु
नि बेगि बोलाए॥ करि प्रनाम तिन रामु निहारे॥ बेषु देखि भए निपट दुखारे॥ दूतन्ह मु
निबर बूझी बाता॥ कहहु बिदेह भूप कुसलाता॥ सुनि सकुचाइ नाइ महि माथा॥ बो
ले चरबर जोरें हाथा॥ बूझब राउर सादर साईं॥ कुसल हेतु सो भयउ गोसाईं॥ दो॥ ना
हि त कोसल नाथ के साथ कुसल गइ नाथ॥ २९५॥ चौपाई॥ कोसलपति गति सुनि ज
नकौरा॥ भे सब लोक सोक बस बौरा॥ जेहिं देखे तेहि समय बिदेहू॥ नामु सत्य अ
स लाग न केहू॥ रानि कुचालि सुनत नरपालहि॥ सूझ न कछु जस मनि बिनु
ब्यालहि॥ भरत राज रघुबर बनबासू॥ भा मिथिलेसहि हृदयँ हराँसू॥ नृप बूझे बुध
सचिव समाजू॥ कहहु बिचारि उचित का आजू॥ समुझि अवध असमंजस दोऊ॥
चलिअ कि रहिअ न कह कछु कोऊ॥ नृपहिं धीर धरि हृदयँ बिचारी॥ पठए अव
ध चतुर चर चारी॥ बूझि भरत सति भाउ कुभाऊ॥ आएहु बेगि न होइ लखाऊ॥ दो॥
गए अवध चर भरत गति बूझि देखि करतूति॥ चले चित्रकूटहि भरतु चार चले ति
रहूति॥ २९६॥ चौपाई॥ दूतन्ह आइ भरत कइ करनी॥ जनक समाज जथामति ब
रनी॥ सुनि गुर परिजन सचिव महीपति॥ भे सब सोच सनेहँ बिकल अति॥ धरि
धीरजु करि भरत बड़ाई॥ लिए सुभट साहनी बोलाई॥ घर पुर देस राखि रखवारे॥
हय गय रथ बहु जान सँवारे॥ दुघरी साधि चले ततकाला॥ किए बिश्रामु न
मग महिपाला॥ भोरहिं आजु नहाइ प्रयागा॥ चले जमुन उतरन सबु लागा॥ खबरि
लेन हम पठए नाथा॥ तिन्ह कहि अस महि नायउ माथा॥ साथ किरातन्ह छ सा
तक दीन्हे॥ मुनिबर तुरत बिदा चर कीन्हे॥ दो॥ सुनत जनक आगमनु सबु हरषे
उ अवध समाजु॥ रघुनंदनहि सकोचु बड़ सोच बिबस सुरराजु॥ २९७॥ चौपाई॥ गर
इ गलानि कुटिल कैकेई॥ काहि कहै केहि दूषनु देई॥ अस मन आनि मुदित नर
नारी॥ भयउ बहोरि रहब दिन चारी॥ एहि प्रकार गत बासर सोऊ॥ प्रात नहान ला

ग सबु कोऊ॥ करि मज्जनु पूजहिं नर नारी॥ गनप गौरि तिपुरारि तमारी॥ रमा रवन प
द बंदि बहोरी॥ बिनवहिं अंजुलि अंचल जोरी॥ राजा रामु जानकी रानी॥ आनँद अव
धि अवध रजधानी॥ सुबस बसउ फिरि सहित समाजा॥ भरतहि रामु करहुँ जुबराजा॥
एहि सुख सुधाँ सींचि सब काहू॥ देव देहु जग जीवन लाहू॥ दो॥ गुर समाज भाइन्ह
सहित राम राजु पुर होउ॥ अछत राम राजा अवध मरिअ माग सबु कोउ॥ २९८॥ चौ
पाई॥ सुनि सनेहमय पुरजन बानी॥ निंदहिं जोग बिरति मुनि ग्यानी॥ एहि बिधि नि
त्यकरम करि पुरजन॥ रामहि करहिं प्रनाम पुलकि तन॥ ऊँच नीच मध्यम नर नारि
न्ह॥ लहहिं दरसु निज निज अनुहारी॥ सावधान सबही सनमानहिं॥ सकल सराहत क
पानिधानहिं॥ लरिकाइहि तें रघुबर बानी॥ पालत नीति प्रीति पहिचानी॥
सील सकोच सिंधु रघुराऊ॥ सुमुख सुलोचन सरल सुभाऊ॥ कहत राम गुन गन
अनुरागे॥ सब निज भाग सराहन लागे॥ हम सम पुन्य पुंज जग थोरे॥ जिन्हहि रा
मु जानत करि मोरे॥ दो॥ प्रेम मगन तेहि समय सब सुनि आवत मिथिलेसु॥ सहित
सभा संभ्रम उठेउ रबिकुल कमल दिनेसु॥ २९९॥ चौपाई॥ भाइ सचिव गुर पुरजन
साथा॥ आगें गवनु कीन्ह रघुनाथा॥ गिरिबरु दीख जनकपति जबहीं॥ करि प्रना
म रथ त्यागेउ तबहीं॥ राम दरस लालसा उछाहू॥ पथ श्रम लेसु कलेसु न काहू॥ मन
तहँ जहँ रघुबर बैदेही॥ बिनु मन तन दुख सुख सुधि केही॥ आवत जनकु चले एहि भाँ
ती॥ सहित समाज प्रेम मति माती॥ आए निकट देखि अनुरागे॥ सादर मिलन परसप
र लागे॥ लगे जनक मुनिजन पद बंदन॥ रिषिन्ह प्रनामु कीन्ह रघुनंदन॥ भाइन्ह सहित
रामु मिलि राजहि॥ चले लिवाइ समेत समाजहि॥ दो॥ आश्रम सागर सांत रस पू
रन पावन पाथु॥ सेन मनहुँ करुना सरित लिएँ जाहिं रघुनाथु॥ ३००॥ चौपाई॥ बोरति ग्या
न बिराग करारे॥ बचन ससोक मिलत नद नारे॥ सोच उसास समीर तरंगा॥ धीरज तट त
रुबर कर भंगा॥ बिषम बिषाद तोरावति धारा॥ भय भ्रम भवँर अबर्त अपारा॥ केवट बुध
बिद्या बड़ि नावा॥ सकहिं न खेइ ऐक नहिं आवा॥ बनचर कोल किरात बिचारे॥ थके बि
लोकि पथिक हियँ हारे॥ आश्रम उदधि मिली जब जाई॥ मनहुँ उठेउ अंबुधि अकुला
ई॥ सोक बिकल दोउ राज समाजा॥ रहा न ग्यानु न धीरजु लाजा॥ भूप रूप गुन सील स
राही॥ रोवहिं सोक सिंधु अवगाही॥ छं॥ अवगाहि सोक समुद्र सोचहिं नारि नर ब्या
कुल महा॥ दै दोष सकल सरोष बोलहिं बाम बिधि कीन्हो कहा॥ सुर सिद्ध तापस जो
गिजन मुनि देखि दसा बिदेह की॥ तुलसी न समरथु कोउ जो तरि सकै सरित सनेह की॥
सो॥ ठा॥ किए अमित उपदेस जहँ तहँ लोगन्ह मुनिबरन्ह॥ धीरजु धरिअ नरेस कहेउ ब
सिष्ठ बिदेह सन॥ ३०१॥ चौपाई॥ जासु ग्यान रबि भव निसि नासा॥ बचन किरन मुनि कमल
बिकासा॥ तेहि कि मोह ममता निअराई॥ यह सिय राम सनेह बड़ाई॥ बिषई साधक सिद्ध
सयाने॥ त्रिबिधि जीव जग बेद बखाने॥ राम सनेह सरस मन जासू॥ साधु सभाँ बड़ आ
दर तासू॥ सोह न राम पेम बिनु ग्यानू॥ करनधार बिनु जिमि जलजानू॥ मुनि बहुबिधि
बिदेहु समुझाए॥ रामघाट सब लोग नहाए॥ सकल सोक संकुल नर नारी॥ सो बास
रु बीतेउ बिनु बारी॥ पसु खग मृगन्ह न कीन्ह अहारू॥ प्रिय परिजन कर कौन बिचारू॥ दो॥
दोउ समाज निमिराजु रघुराजु नहाने प्रात॥ बैठे सब बट बिटप तर मन मलीन
कृस गात॥ ३०२॥ चौपाई॥ जे महिसुर दसरथ पुर बासी॥ जे मिथिलापति नगर निवासी॥
हंस बंस गुर जनक पुरोधा॥ जिन्ह जग मगु परमारथु सोधा॥ लगे कहन उपदेस अनेका॥
सहित धरम नय बिरति बिबेका॥ कौसिक कहि कहि कथा पुरानी॥ समुझाई सब स
भा सुबानी॥ तब रघुनाथ कौसिकहि कहेऊ॥ नाथ कालि जल बिनु सबु रहेऊ॥ म

निरखि उतरि न कहत नरबर राइ।। गये उबीति दिन पहर अढाइ।। रिषि रघुबर सिव कहे तिरहुतिरा
नु इहा उचित नहि भूखन अनाज।। कहा भूप भल सबही सुहाना।। पाइ रजायसु चले
नहाना।। दो०।। तेही अवसर फल फूल दल मूल अनेक प्रकार।। लेआये बनचर बिप
ल भरि भरि कांवरि भार।। २४५।। चौ०।। कामद भये गिरि राम प्रसादा।। अवलोकत अ
पहरत बिषादा।। सर सरिता बन भूमि बिभागा।। जनु उमगत आनंद अनुरागा।। बे
लि बिटप सब सफल सफूला।। बोलत खग मृग अलि अनुकूला।। तेहि अवसर ब
न अधिक उछाहू।। त्रिबिधि समीर सुखद सब काहू।। जाइ न बरनि मनोहरताइ।।
जनु महि करत जनक पहुनाई।। देखि देखि तरुबर अनुरागे।। जहं तहं पुरजन उतरन ला
गे।। तब सब लोग नहाइ नहाई।। राम जनक मुनि आयसु पाई।। दल फल फूल कं
द बिधि नाना।। पावन सुंदर सुधा समाना।। दो०।। सादर सब कह राम गुर पठय भ
रि भरि भार।। पूजि पितर सुर अतिथि गुर लगे करन फलहार।। २४६।। चौ०।। एहि
बिधि बासर बीते चारी।। राम निरखि नर नारि सुखारी।। दुहु समाज असि रुचि मन माही।।
बिन सीय राम फिरब भल नाही।। सीता राम संग बनबासू।। कोटि अमरपुर सरिस
सुपासू।। परिहरि लखन राम बैदेही।। जेहि घर भाव बाम बिधि तेही।। दाहिन दइ होइ जो स
बही।। राम समीप बसिय बन तबही।। मंदाकिनि मज्जन तिहु काला।। राम दरस मुद मं
गल माला।। अटन राम गिरि बन तापस थल।। असन अमी सम कंद मूल फल।। सु
ख समेत समबत दुइ साता।। पल सम हुइ न जानिय जाता।। दो०।। एहि सुख जोग न
लोग सब कहहि कहा अस भाग।। सहज सुभाव समाज दुहु राम चरन अनुरा
ग।। २४७।। चौ०।। एहि बिधि सकल मनोरथ करही।। बचन सप्रेम सुनत मन हरही।।
सीय मातु तेहि समय पठाइ।। दासी देखि सुअवसर आइ।। सावकास सुनि सब सि
य सासु।। आएउ जनकराज रनवासु।। कौसल्या सादर सनमानी।। आसन दिये
समय सम आनी।। सील सनेह सकल दुहु ओरा।। द्रवहि देखि सुनि कुलिस कठो
रा।। पुलक सिथिल तन बारि बिलोचन।। महि नख लिखन लगी सब सोचन।। सब सी
य राम प्रीति की मूरति।। जनु करुना बहु भांति बिसूरति।। सीय मातु कहि बिधि बुधि
बांकी।। जो पय फेन फोर पबि टांकी।। दो०।। सुनिअ सुधा देखिय गरल सब करतूति
कराल।। जहं तहं काक उलूक बक मानस सकृत मराल।। २४८।। चौ०।। सुनि ससोच
कहै देबि सुमित्रा।। बिधि गति बडि बिपरीत बिचित्रा।। जो सृजि पालै हरै बहोरी।। बाल
केलि सम बिधि मति भोरी।। कौसल्या कह दोस न काहू।। करम बिबस दुख सुख छति
लाहू।। कठिन करम गति जान बिधाता।। जो सुभ असुभ सकल फल दाता।। ईस र
जाइ सीस सबही के।। उतपति थिति लय बिषहु अमी के।। देबि मोह बस सोचिअ बा
दी।। बिधि प्रपंच अस अचल अनादी।। भूपति जिअब मरब उर आनी।। सोचिअ सखि
लखि निज हित हानी।। सीय मातु कह सत्य सुबानी।। सुकृती अवधि अवधपति रानी।।
दो०।। लखन राम सिय जाहु बन भल परिनाम न पोच।। गहबरि हिय कह कौसल्या मो
हि भरत कर सोच।। २४९।। चौ०।। ईस प्रसाद असीस तिहारी।। सुत सुतबधु सुरसरि स
म बारी।। राम सपथ मै कीन्ह न काऊ।। सो करि कहौ सखी सति भाऊ।। भरत सील गुन
बिनय बडाई।। भायप भगति भरोस भलाई।। कहत सारदहु कर मति हीचे।। सागर सीप कि
जाहि उलीचे।। जानउ सदा भरत कुलदीपा।। बार बार मोहि कहेउ महीपा।। कसे कन
क मनि पारिखि पाए।। पुरुष परिखिअहि समय सुभाए।। अनुचित आज कहब अ
स मोरा।। सोक सनेह सयानप थोरा।। सुनि सुरसरि सम पावन बानी।। भई सनेह बि
कल सब रानी।। दो०।। कौसल्या कह धीर धरि सुनहु देबि मिथिलेसी।। को बिबेक नि

धि बल्लभहि तुम्हहि सकइ उपदेसि।। २५०।। चौ०।। रानि राय सन अवसर पाइ।। अपनि
भांति कहब समुझाइ।। रखिअहि लखन भरत गवनहि बन।। जो यह मत मानै महीप
मन।। तौ भल जतन करब सुबिचारी।। मोरे सोच भरत कर भारी।। गूढ सनेह भरत
मन माही।। रहे नीक मोहि लागत नाही।। लखि सुभाउ सुनि सरल सुबानी।। सब भइ
मगन करुन रस रानी।। नभ प्रसून झरि धन्य धन्य धुनि।। सिथिल सनेह सिद्ध जोगी
मुनि।। सब रनवास बिथकि लखि रहेउ।। तब धरि धीर सुमित्रा कहेउ।। देबि दंड जुग
जामिनि बीती।। राम मातु सुनि उठी सप्रीती।। दो०।। बेगि पाउ धारिय थलहि कह सने
ह सभाय।। हमरे तौ अब ईस गति के मिथिलेस सहाय।। २५१।। चौ०।। लखि सनेह सु
नि बचन बिनीता।। जनकप्रिया गहे पाय पुनीता।। देबि उचित असि बिनय तुम्हारी।।
दसरथ घरनि राम महतारी।। प्रभु अपने नीचहु आदरही।। अगिनि धूम गिरि सिर
तिन धरही।। सेवक राम करम मन बानी।। सदा सहाय महेस भवानी।। रौरे अंग जो
ग जग को है।। दीप सहाय कि दिनकर सोहै।। राम जाइ बन करि सुर काजू।। अचल अ
बधपुर करिहहि राजू।। अमर नाग नर राम बाहु बल।। सुख बसिहहि अपने अपने थ
ल।। यह सब जागबलिक कहि राखा।। देबि न होइ मुधा मुनि भाषा।। दो०।। अस कहि प
ग परि प्रेम अति सिय हित बिनय सुनाइ।। सिय समेत सिय मातु तब चली सुआयसु
पाइ।। २५२।। चौ०।। प्रिय परिजनहि मिली बैदेही।। जो जेहि जोग भांति तेहि तेहि।।
तापस बेष जानकी देखी।। भा सब बिकल बिषाद बिसेषी।। जनक राम गुर आयसु
पाइ।। चले थलहि सिय देखी आइ।। लीन्हि लाइ उर जनक जानकी।। पाहुन पाव
न प्रेम प्रान की।। उर उमगेउ अंबुधि अनुरागू।। भयेउ भूप मन मनहु पयागू।। सीय सनेह
बट बाढत जोहा।। ता पर राम प्रेम सिसु सोहा।। चिरजीवी मुनि ग्यान बिकल जनु बूडत ले
उ बाल अवलंबनु।। मोह मगन मति नहि बिदेह की।। महिमा सिय रघुबीर सनेह
की।। दो०।। सिय पितु मातु सनेह बस बिकल न सकी सम्हारि।। धरनि सुता धीर
ज धरेउ समउ सुधरम बिचारि।। २५३।। चौ०।। तापस बेष जनक सिय देखी।। भयेउ प्रेम
परितोष बिसेषी।। पुत्रि पबित्र किये कुल दोऊ।। सुजस धवल जग कह सब कोऊ।। ज
िति सुरसरि कीरति सरि तोरी।। गवन कीन्ह बिधि अंड करोरी।। गंग अवनि थल तीनि बडे
रे।। एहि किये साधु समाज घनेरे।। पितु कह सत्य सनेह सुबानी।। सीय सकुच मह
मनहु समानी।। पुनि पितु मातु लीन्ह उर लाई।। सिख आसिष हित दीन्हि सुहाई।। क
हत न सीय सकुचि मन माही।। इहां बसब रजनी भल नाही।। लखि रुख रानि जना
यउ राऊ।। हृदय सराहत सील सुभाऊ।। दो०।। बार बार मिलि भेटि सिय बिदा कीन्हि सन
मानि।। कही समय सिर भरत गति रानि सुबानि सयानि।। २५४।। चौ०।। सुनि भू
पाल भरत ब्यवहारू।। सोन सुगंध सुधा ससि सारू।। मूदे सजल नयन पुलके त
न।। सुजस सराहन लागे मुदित मन।। सावधान सुनु सुमुखि सुलोचनि।। भरत
कथा भव बंध बिमोचनि।। धरम राजनय ब्रह्मबिचारू।। इहां जथामति मोर प्रचा
सो मति मोरि भरत महिमाही।। कहिय काह छलि कि छुअति न छाही।। बिधि गन
पति अहिपति सिव सारद।। कबि कोबिद बुध बुद्धि बिसारद।। भरत चरित कीरति
करतूती।। धरम सील गुन बिमल बिभूती।। समुझत सुनत सुखद सब काहू।। सु
चि सुरसरि रुचि निदर सुधाहू।। दो०।। निरवधि गुन निरुपम पुरुष भरत भरत सम
जानि।। कहिअ सुमेरु कि सेर सम कबि कुल मति सकुचानि।। २५५।। चौ०।। अगम
सबहि बरनत बरबरनी।। जिमि जलहीन मीन गमु धरनी।। भरत अमित महि
मा सुनु रानी।। जानहि राम न सकहि बखानी।। बरनि सप्रेम भरत अनुभाऊ।।

निषजीयकीन्हविलषिकहराऊ। वहुरहिलषनभरतवनजाहीं। सवकरभलसवकेम
नमाही। देवीपरनभरतरघुवरकीप्रीतिप्रतीतिजाइनहिवरनी। भरतअवधिसनेहम
मताकी। जद्यपिरामसीमसमताकी। परमारथस्वारथसुषसारे। भरतनसपनेहुम
नहुनिहारे। साधनसिद्धिरामपगनेहू। मोहिलषिपरतभरतमतयेहू। दो। भोरेहुभ
रतनपेलिहहिमनहुरामरजाइ। करियनसोचसनेहवसकहेउभूपविलषाइ। २८५
चौ। रामभरतगुनगनतसप्रीती। निसिदंपतिहियलकुसमवीती। राजसमाजप्र
तजुगजागे। न्हाइन्हाइसुरपुजनलागे। गयेनहाइगुरुपहिरघुराई। वंदिचरनवोलेरु
षपाई। नाथभरतपुरजनमहतारी। सोकविकलवनवासदुषारी। सहितसमाजराउ
मथलेसू। वहुतदिवसभयेसहतकलेसू। उचितहोयसोकीजिअनाथा। हितसवही
करहाथा। असकहिअतिसकुचेरघुराऊ। मुनिपुलकेलषिसीलसुभाऊ। तुम्ह
विनुसकलरामसुषसाजा। नरकसरिसदुहुराजसमाजा। दो। प्रानप्रानकेजी
वजीवकेसुषकेसुषनमराम। तुमतजितातसुहातग्रहजिन्हहितिन्हहिविधाता
वाम। २८६। चौ। सोसुषकरमधरमजरिजाऊ। जहानरामपदपंकजभाऊ। जोगकु
जोगग्यानअग्यानू। जहानहिरामप्रेमपरधानू। तुमविनुदुषीसुषीतुम्हहीते। आपआ
श्रमहिधारिअपाऊ। भयेउसनेहसिथिलमुनिराऊ। करिप्रनामतवरामसिधाए। रि
षिधरिधीरजनकपहिआए। रामवचनगुरुनृपहिसुनाए। सीलसनेहसुभायसु
हाए। महाराजअवकीजिअसोई। सवकरधरमसहितहितहोई। दो। ग्याननिधान
सुजानसुचिधरमधीरनरपाल। तुम्हविनुअसमंजससमनकोसमरथएहिका
ल। २८७। चौ। सुनिमुनिवचनजनकअनुरागे। लषिगतिग्यानविरागविरागे।
सिथिलसनेहगुनतमनमाही। आयेइहाकीन्हभलनाही। रामहिरायकहेउवन
जाना। कीन्हआपुप्रियप्रेमप्रवाना। हमअववनतेवनहिपठाई। प्रमुदितफिरवि
वेकवडाई। तापसमुनिमहिसुरसुनिदेषी। भयेप्रेमवसविकलविसेषी। समउस
मुझिधरिधीरजराजा। चलेभरतपहसहितसमाजा। भरतआइआगेभइलीन्हे
अवसरसरिससुआसनदीन्हे। तातभरतकहतिरहुतिराऊ। तुमहिविदितरघु
वीरसुभाऊ। दो। रामसत्यव्रतधरमरतसवकरसीलसनेहु। संकटसहतसके
चवसकहियजोआयसुदेहु। २८८। चौ। सुनितनपुलकिनयनभरिवा
री। वोलेभरतधीरधरिभारी। प्रभुप्रियपूज्यपितासमआपू। कुलगुरुसमहितमा
यनवापू। कौसिकादिमुनिसचिवसमाजू। ग्यानअंवुनिधिआपनआजू। सिसुसे
वकआयसुअनुगामी। जानिमोहिसिषदेइअसामी। एहिसमाजथलवुझवराउ
र। मौनमलीनमैवोलववाउर। छोटेवदनकहौवडवाता। छमवतातलषिवाम
विधाता। आगमनिगमप्रसिधपुराना। सेवकधरमकठिनजगजाना। स्वामिधर
मस्वारथहिविरोधू। वैरअंधप्रेमहिनप्रवोधू। दो। राषिरामरुषधरमव्रतपराधीन
मोहिजानि। सवकेसंमतसर्वहितकरिअप्रेमपहिचानि। २८९। चौ। भरतवचनसु
निदेषिसुभाऊ। सहितसमाजसराहतराऊ। सुगमअगममृदुमंजुकठोरे। अर
थअमितअतिआषरथोरे। ज्योमुषमुकुरमुकुरनिजपानी। गहिनजायअसअदभु
तवानी। भूपभरतमुनिसाधुसमाजू। गयेजहाविवुधकुमुदद्विजराजू। सुनिसु
धिसोचविकलसवलोगा। मनहुमीनगनविनजलजोगा। देवप्रथमकुलगुरु
गतिदेषी। निरषिविदेहसनेहविसेषी। रामभगतिमयभरतनिहारे। सुरस्वारथीह
हरिहियहारे। सवकोउरामप्रेममयपेषा। भयेअलेषसोचवसलेषा। दो। राम
सनेहसकोचवसकहससोचसुरराज। रचहुप्रपंचहिपंचमिलिनाहितभयेउअका
ज। २९०। चौ। सुरनसुमिरिसारदासराही। देविदेवसरनागतपाही। फेरिभर

तमतिकरिनिजमाया। पालुविवुधकुलकरिछलछाया। विवुधविनयसुनि
देविसयानी। वोलीसुरस्वारथजडजानी। मोसनकहहुभरतमतिफेरू। लोचन
सहसनसूझसुमेरू। विधिहरिहरमायावडिभारी। सोउनभरतमतिसकइनि
हारी। सोमतिमोहिकहतकरुभोरी। चंदनिकरकिचंडकरचोरी। भरतहृदय
सियरामनिवासू। तहकितिमिरजहतरनिप्रकासू। असकहिसारदगइविधि
लोका। विवुधविकलनिसिमानहुकोका। दो। सुरस्वारथीमलीनमनकीन्ह
कुमंत्रकुठाउ। रचिप्रपंचमायाप्रवलभयभ्रमअरतिउचाटु। २९१। चौ। करिकु
चालिसोचतसुरराजू। भरतहाथसवकाजअकाजू। गयेजनकरघुनाथस
मीपा। सनमानेसवरविकुलदीपा। समयसमाजधरमअविरोधा। वोलेतवर
घुवंसपुरोधा। जनकभरतसंवादसुनाई। भरतकहीवतिकहिसुहाई। तात
रामजसआयसुदेहू। सोसवकरैमोरमतएहू। सुनिरघुनाथजोरिजुगपा
नी। वोलेसत्यसरलमृदुवानी। विद्यमानआपुनमिथिलेसू। मोरकहवसवभां
तिभदेसू। राउररायरजायसुहोई। राउरसपथसहीसिरसोई। दो। रामसपथसु
निमुनिजनकसकुचेसभासमेत। सकलविलोकतभरतमुषवनइनउतरदे
त। २९२। चौ। सभासकुचवसभरतनिहारी। रामवंधुधरिधीरजभारी।
कुसमउदेषिसनेहसंभारा। वढतविंधजिमिघटजनिवारा। सोककनकलो
चनमतिछोनी। हरीविमलगुनगनजगजोनी। भरतविवेकवराहविसाला
अनायासउधरीतेहिकाला। करिप्रनामसवकहकरजोरी। रामराउगुरसा
धुनिहोरी। छमवअआजुअतिअनुचितमोरा। कहउवदनमृदुवचनकठोरा। ही
यसुमिरिसारदासुहाई। मानससेमुषपंकजआई। विमलविवेकधरमनयसाली। भ
रतभारतीमंजुमराली। दोहा। निरषिविवेकविलोचननिसिथिलसनेहसमाजु
करिप्रनामवोलेभरतसुमिरिसीयरघुराज। २९३। चौ। प्रभुपितुमातसुहृदगु
रुस्वामी। पूज्यपरमहितअंतरजामी। सरलसुसाहिवसीलनिधानू। प्रनतपा
लसर्वग्यसुजानू। समरथसरनागतहितकारी। गुनगाहकअवगुनअघहारी
स्वामिगोसाइसरिसगोसाई। मोहिसमानमैसाइदोहाई। प्रभुपितुवचनमोहव
सपेली। आएउइहासमाजसकेली। जगभलपोचउचअरुनीचू। अमियअमरप
दमाहुरमीचू। रामरजायमेटिमनमाही। देषासुनाकतहुकोउनाही। सोमैस
वविधिकीन्हिढिठाई। प्रभुमानासनेहसेवकाई। दो। कृपाभलाईआपनीनाथ
कीन्हभलमोर। दूषनभेभूषनसरिससुजसुचारुचहुओर। २९४। चौ। रा
उरीतिसुवानिवडाई। जगतविदितनिगमागमगाई। कूरकुटिलषलकुमतिकल
की। नीचनिसीलनिरीसनिसंकी। तेउसुनिसरनसामुहेआए। सकृतप्रनामु
कियेअपनाए। देषिदोषकवहुनउरआने। सुनिगुनसाधुसमाजवषाने। कोसा
हेवसेवकहिनिवाजी। आपुसमाजसाजसवसाजी। निजकरतूतिसमुझिजिय
सपने। सेवकसकुचसोचउरअपने। सोगोसाइनहिदूसरकोपी। भुजाउठाइकहउ
पनरोपी। पसुनाचतसुकपाठप्रवीना। गुनगतिनटपाठकआधीना। दो।
योंसुधारिसनमानिजनकियेसाधुसिरमोर। कोकृपालविनपालिहैविरदा
वलिवरजोर। २९५। चौ। सोकसनेहकिवालसुभाए। आयेउलाइरजायसुवाए
तवहुकृपालहेरिनिजओरा। सवहिभातिभलमानेउमोरा। देषेउपायसुमंग
लमूला। जानेउस्वामिसहजअनुकूला। वडेसमाजविलोकेउभागू। वडीचुकसा
हेवअनुरागू। कृपाअनुग्रहअंगअघाई। कीन्हकृपानिधिसवअधिकाई। राषेउमो

रहलारगोसाइ॥ अपनेसीलसभायभलाइ॥ नाथनिपटमैकीन्हिढिठाई॥ स्वामि
समाजसकोचविहाइ॥ अविनयविनयजथारुचिवानी॥ छमिहिदेवअतिआरत
जानी॥ दो॰॥ सुहृदसुजानसुसाहिवहिवहुतकहववडिषोरि॥ आइसुदेइयदेवअव
सवहिसुधारीमोरि॥ २१७॥ चौ॰॥ प्रभुपदपदुमपरागदोहाइ॥ सतसुकृतसुषसीव
सुहाइ॥ सोकरिकहौहियेअपनेकी॥ रुचिजागतसोवतसपनेकी॥ सहजसनेह
स्वामिसेवकाइ॥ स्वारथछलफलचारिविहाइ॥ अग्यासमनसुसाहिवसेवा॥ सो
प्रसादजनपावइदेवा॥ असकहिप्रेमविवससभयेभारी॥ पुलकसरीरविलोचनवा
री॥ प्रभुपदकमलगहेअकुलाइ॥ समयसनेहुनसोकहिजाइ॥ कृपासिंधुसनमानि
सुवानी॥ वैठारसमीपगहिपानी॥ भरतविनयसुनिदेषिसुभाऊ॥ सिथिलसनेह
सभारघुराऊ॥ छं॰॥ रघुराउसिथिलसनेहसाधुसमाजमुनिमिथिलाधनी॥ मनम
हुसराहतभरतभायपभक्तिकीमहिमाघनी॥ भरतहिप्रसंसतविवुधवरषतसु
मनमानसमलिनसे॥ तुलसीविकलसवलोगसुनिसकुचेनिसागमनलिन
से॥ सो॰॥ देषिदुषारीदीनदुहुसमाजनरनारिसव॥ मघवामहामलीनमु
येमारिमंगलचहत॥ २१८॥ चौ॰॥ कपटकुचालीसवसुरराज॥ परअकाजप्रियआ
पनकाज॥ काकसमानपाकरिपरीती॥ छलीमलीनकतहुनप्रतीती॥ प्रथम
कुमतकरिकपटसकेला॥ सोउचाटसवकेसिरमेला॥ सुरमायासवलोगविमो
ही॥ रामप्रेमअतिसयनविछोहे॥ भयेउचाटवसमनथिरनाही॥ छिनवनरुचिछि
नसदनसुहाही॥ दुविधमनोगतिप्रजाडुषारी॥ सिरसिंधुसंगमजनुवारी॥ दुचि
तकहुपरितोषनलहही॥ एकएकसनमरमनकहही॥ लषिहियहसिकहकृपानि
धाना॥ सरिसस्वानमघवाजिंयजाना॥ दो॰॥ भरतजनकमुनिगननिसचिवसा
धुसचेतविहाइ॥ लागिदेवमायासवहिजथाजोगजनुपाइ॥ २१९॥ चौ॰॥ कृपा
सिंधुलषिलोगदुषारे॥ निजसनेहसुरपतिछलभारे॥ सभाराउगुरमहीसुरम
त्री॥ भरतभगतिसवकैमतिजंत्री॥ रामहिचितवतचित्रलिषेसे॥ सकुचतवोलतव
चनसिषेसे॥ भरतप्रीतिनतिविनयवडाइ॥ सुनतसुषदवरननकठिनाइ॥ जा
सुविलोकिभगतिलवलेसू॥ प्रेममगनमुनिगनमिथिलेसू॥ महिमातासुकहैकि
मितुलसी॥ भगतिसुभायसुमतिहियहुलसी॥ आपछोटमहिमावडजानी॥ कविकुल
कानिमानिसकुचानी॥ कहिनसकतिगुनरुचिअधिकाइ॥ मतिगतिवालवचन
कीनाइ॥ दो॰॥ भरतविमलजसविमलविधुसुमतिचकोरिकुमारि॥ उदतिविमल
जनहृदयनभएकटकरहीनिहारि॥ २२०॥ चौ॰॥ भरतसुभाउनसुगमअगमहु॥
लघुमतिचापलताकविछमहु॥ कहतसुनतसतिभाउभरतको॥ सीयरामपदहो
यनरतको॥ सुमरतभरतहिप्रेमरामको॥ जेहिनसुलभतेहिसरिसवामको॥ दे
षिदयालदसासवहीकी॥ रामसुजाननजानिजनजीकी॥ धरमधुरीनधीरनयना
गर॥ सत्यसनेहसीलसुषसागर॥ देसकाललषिसमयसमाजू॥ नीतिप्रीतिपाल
करघुराजू॥ वोलेवचनवानिसरवससे॥ हितपरिनामसुनतससिरससे॥ तातभर
तनमधरमधुरीना॥ लोकवेदविदप्रेमप्रवीना॥ दो॰॥ करमवचनमानसविमल
तुमसमानतुमतात॥ गुरुसमाजलघुवंधुगनकुसमयकिमिकहिजात॥ २२१॥
चौ॰॥ जानहुतातनरनकुलरीती॥ सत्यसंधपितकीरतिप्रीती॥ समउसमाजला
जगुरुजनकी॥ उदासीनहितअनहितमनकी॥ तुमहिविदितसवहीकरकरमु॥ आ
पनमोरपरमहितधरमु॥ मोहिसवभातिभरोसतुम्हारा॥ तदपिकहउअवसरअनु
सारा॥ तातताततविनुवातहमारी॥ केवलगुरुकुलकृपासभारी॥ नतरुप्रजापरि

जनपरिवारू॥ हमहिसहितसवहोतषुआरू॥ जोविनुअवसरअथवदिनेसू॥ जगकेहकहु
नहोयकलेसू॥ तसउतपातलातविधिकीन्हा॥ मुनिमिथिलेसराषिसवलीन्हा॥ दो॰॥
राजकाजसवलाजपतिधरमधरनिधनधाम॥ गुरुप्रभावपालिहिसवहिभलहो
इहपरनाम॥ २२२॥ चौ॰॥ हितसमाजतुम्हारहमारा॥ घरवनगुरुप्रसादरषवारा॥ मा
तपितागुरुस्वामिनिदेसू॥ सकलधरमधरनीधरसेसू॥ सोतुमकरहुकरावहुमो
हू॥ ताततरनिकुलपालकहोहू॥ साधकएकसकलसिधिदेनी॥ कीरतिसुगतिभू
तिमयवेनी॥ सोविचारिसहिसंकटभारी॥ करहुप्रजापरिवारसुषारी॥ वाटीविप
तिसवहिमोहिभाइ॥ तुमहिअवधिभरिवडिकठिनाइ॥ जानितुम्हहिमृदुकहौक
ठोरा॥ कुसमयतातनअनुचितमोरा॥ होहिकुठायसुवंधुसहाय॥ ओडिअहिहाथ
असनिहुकेघाय॥ दो॰॥ सेवककरपदनयनसेमुषसोसाहिवहोइ॥ तुलसीप्रीति
कीरीतिसुनिसुकविसराहहिसोइ॥ २२३॥ चौ॰॥ सभासकलसुनिरघुवरवानी॥ प्रेम
पयोधिअमीयजनुसानी॥ सिथिलसमाजसनेहसमाधी॥ देषिदसासुषसारदसाधी॥
भरतहिभयेउपरमसंतोषू॥ सनमुषस्वामिविमुषदुषदोषू॥ मुषप्रसन्नमनमिटा
विषादू॥ भाजनुगंगेहिगिराप्रसादू॥ कीन्हसप्रेमप्रनामवहोरी॥ वोलेपानिपंक
जजोरी॥ नाथभयेउसुषसाथगयेको॥ लहेउलाहुजगजनमभयेको॥ अवक
पालजसआयसहोई॥ करउसीसधरिसादरसोई॥ सोअवलंवदेवमोहिदेई॥
अवधिपारपावउजेहिसेई॥ दो॰॥ देवदेवअभिषेकहितगुरुअनुसासनपाइ॥
आनेउसवतीरथसलिलतेहिकहकाहरजाइ॥ २२४॥ चौ॰॥ एकमनोरथवडम
नमाही॥ सभयसकोचजातकहिनाही॥ कहहुतातप्रभुआयसुपाई॥ वोलेवा
निसनेहसुहाई॥ चित्रकूटमुनिथलतीरथवन॥ षगमृगसरिसरनिर्झरगिरि
गन॥ प्रभुपदअंकितअवनिविसेषी॥ आयसुहोइतोआवउदेषी॥ अवसिअत्रिआ
यसुसिरधरहू॥ तातविगतभयकाननचरहू॥ मुनिप्रसादवनमंगलदाता॥
पावनपरमसुहावनभ्राता॥ रिषिनायकजहआयसुदेही॥ राषहुतीरथजल
थलतेही॥ सुनिप्रभुवचनभरतसुषपावा॥ मुनिपदकमलमुदितसिरुनावा॥
दो॰॥ भरतरामसंवादसुनिसकलसुमंगलमूल॥ सुरस्वारथीसराहिकुलवर
षतसुरतरुफूल॥ २२५॥ चौ॰॥ धन्यभरतजयरामगोसाई॥ कहतदेवहरषत
वरिआई॥ मुनिमिथिलेससभासवकाहू॥ भरतवचनसुनिभयेउउछाहू॥ भरतराम
गुनग्रामसनेहू॥ पुलकिप्रसंसतराउविदेहू॥ सेवकस्वामिसुभाउसुहावन॥ नेम
प्रेमअतिपावनपावन॥ मतिअनुसारसराहनलागे॥ सचिवसभासदसवअनुरागे॥
सुनिसुनिरामभरतसंवादू॥ दुहुसमाजहियहरषविषादू॥ राममातदुषसुषसमजा
नी॥ कहिगुनदोषप्रवोधीरानी॥ एककहहिरघुवीरवडाइ॥ एकसराहतभरतभलाई॥
दो॰॥ अत्रिकहेउतवभरतसनसैलसमीपसुकूप॥ राषियतीरथतोयतहापावन
अमलअनूप॥ २२६॥ चौ॰॥ भरतअत्रिअनुसासनपाई॥ जलभाजनसवदियेचला
ई॥ सानुजआपअत्रिमुनिसाधु॥ सहितगयेजहाकूपअगाधु॥ पावनपाथपुन्यथल
राषा॥ प्रमुदितप्रेमअत्रिअसभाषा॥ तातअनादिसिद्धथलएहू॥ लोपेउकालविदि
तनहिकेहू॥ तवसेवकनसरसथलदेषा॥ कीन्हसुजलहितकूपविसेषा॥ विधिवस
भयेउविस्वउपकारू॥ सुगमअगमअतिधरमविचारू॥ भरतकूपअवकहिहहिलो
गा॥ अतिपावनतीरथजलजोगा॥ प्रेमसनेमनिमज्जतप्रानी॥ होइहहिविमल
करममनवानी॥ दो॰॥ कहतकूपमहिमासकलगयेजहारघुराउ॥ अत्रिसुनायउ
रघुवरहितीरथपुन्यप्रभाउ॥ २२७॥ चौ॰॥ कहतधरमइतिहाससप्रीती॥ भयेउभो

रनिसिसोसबबीती ॥ नितनिबाहिभरतदोउभाइ ॥ रामश्रत्रिगुरुश्रायसुपाइ ॥ सहित
समाजसाजसबसादे ॥ चलेरामबनश्रटनपयादे ॥ कोमलचरनचलतबिनपनही ॥ भ
इम्रदुभूमिसकुचिमनमनही ॥ कुसकंटककाकरीकुराइ ॥ कटुककठोरकुबस्तुदुरा
इ ॥ महिमंजुलम्रदुमारगकीन्हे ॥ बहतसमीरत्रिबिधिसुषलीन्हे ॥ सुमनबरषिसुरघ
नकरछाही ॥ बिटपफूलिफलितनमदुनाही ॥ म्रगबिलोकिषगबोलिसुबानी ॥ से
वहिसकलरामप्रियजानी ॥ दो॰ ॥ सुलभसिद्धिसबप्राकृतहुरामकहतजमुहात
रामप्रानप्रियभरतकहुयहनहोइबडिबात ॥ २२८ ॥ चौ॰ ॥ एहिबिधिभरतफिरतबनमा
ही ॥ नेमप्रेमलषिमुनिसकुचाही ॥ पुन्यजलाश्रयभूमिबिभागा ॥ षगम्रगतरुत्रनगिरि
बनबागा ॥ चारुबिचित्रपबित्रबिसेषी ॥ बूझतभरतदिब्यसबदेषी ॥ सुनिमनमुदितक
हतरिषिराऊ ॥ हेतुनामगुनपुन्यप्रभाऊ ॥ कतहुनिमज्जहिकतहुप्रनामा ॥ कतहुबि
लोकतमनश्रभिरामा ॥ कतहुबैठिमुनिश्रायसुपाइ ॥ सुमिरतसीयसहितदोउभाइ ॥
देषिसुभावसनेहसुसेवा ॥ देहिश्रसीसमुदितबनदेवा ॥ फिरतिगयादिनपहरश्रढ
ई ॥ प्रभुपदकमलबिलोकहिश्राई ॥ दो॰ ॥ देषेथलतीरथसकलभरतपाचदिनमाझ
कहतसुनतहरिहरसुजसुगयउदिवसभइसाझ ॥ २२९ ॥ चौ॰ ॥ भोरन्हाइसबजु
रासमाजू ॥ भरतभूमिसुरतिरहुतराजू ॥ भलदिनश्राजुजानिमनमाही ॥ रामकृपाल
कहतसकुचाही ॥ गुरनृपभरतसभाश्रवलोकी ॥ सकुचिरामफिरिश्रवनिबिलोकी ॥
सीलसराहिसभासबसोची ॥ कहुनरामसमस्वामिसकोची ॥ भरतसुजानरामरु
षदेषी ॥ उठिसप्रेमधरिधीरबिसेषी ॥ करिदंडवतकहतकरजोरी ॥ राषीनाथसकलरुचि
मोरी ॥ मोहिलागिसबसहेउसंतापू ॥ बहुतभांतिदुषपावाश्रापू ॥ श्रबगोसाइमोहिदेउ
रजाई ॥ सेउश्रवधिश्रवधिभरिजाई ॥ दो॰ ॥ जेहिउपायपुनिपायजनदेषउदीनदयाल ॥
सोसिषदेइश्रश्रवधिलगिकोसलपालकृपाल ॥ २३० ॥ चौ॰ ॥ पुरजनपरिजनप्रजागो
साइ ॥ सबसुचिसरससनेहसगाई ॥ राउरबदिभलभवदुषदाहू ॥ प्रभुबिनबादिपरमप
दलाहू ॥ स्वामिसुजानजानिसबहीकी ॥ रुचिलालसारहनिजनजीकी ॥ प्रनतपा
लपालिहिसबकाहू ॥ देउदुहूदिसिश्रोरनिबाहू ॥ श्रसमोहिसबबिधिभूरिभरोसो ॥ कि
येबिचारनसोचषरोसो ॥ श्रारतमोरनाथकरछोहू ॥ दुहुमिलिकीन्हढीठहठिमोहू ॥
यहबडदोषदूरिकरस्वामी ॥ तजिसंकोचसिषइश्रनुगामी ॥ भरतबिनयसुनिसब
हिप्रसंसी ॥ षीरनीरबिबरनगतिहंसी ॥ दो॰ ॥ दीनबंधुसुनिबंधकेबचनदीनछलही
न ॥ देसकालश्रवसरसरिसबोलेरामप्रबीन ॥ २३१ ॥ चौ॰ ॥ तातनुम्हारिमोरिपरिजन
की ॥ चिंतागुरहिनृपहिघरबनकी ॥ माथेपरगुरमुनिमिथिलेसू ॥ हमहिसपनेहु
नकिलेसू ॥ मोरतुम्हारपरमपुरुषारथु ॥ स्वारथुसुजसुधरमुपरमारथु ॥ पितुश्राय
सुपालिश्रदोउभाई ॥ लोकबेदभलभूपभलाई ॥ गुरुपितुमातुस्वामिसिषपाले ॥ चले
हुकुमगपगपरतनषाले ॥ श्रसबिचारिसबसोचबिहाई ॥ पालहुश्रवधिश्रवधिलगिजा
ई ॥ देसकोसपुरजनपरिवारू ॥ गुरपदरजहिलागछरभारू ॥ तुमसुनिमातुसचिवसि
षमानी ॥ पालहुपुहुमिप्रजारजधानी ॥ दो॰ ॥ मुषियामुषसोचाहियेषानपानकह
एक ॥ पालइपोषइसकलश्रंगतुलसीसहितबिबेक ॥ २३२ ॥ चौ॰ ॥ राजधरमसर
बसइतनोई ॥ जिमिमनमाहमनोरथगोई ॥ बंधुप्रबोधकीन्हबहुभांती ॥ बिनश्रधार
मनतोषनसांती ॥ भरतसीलगुरसचिवसमाजू ॥ सकुचिसनेहबिबसरघुराजू ॥ प्रभु
करिकृपापावरीदीन्ही ॥ सादरभरतसीसधरिलीन्ही ॥ चरनपीठकरुनानिधानके ॥ जनु
जुगजामिकप्रजाप्रानके ॥ संपुटभरतसनेहरतनके ॥ श्राषरजुगजनजीवजतनके ॥
कुलकपाटकरकुसलकरमके ॥ बिमलनयनसेवासुधरमके ॥ भरतमुदितश्रवलंबलहे

ते ॥ श्रसमसपजससियरामरहैते ॥ दो॰ ॥ भरोविदाप्रनामकरिरामलियउरलाइ ॥ लोग
उचाटेश्रमरपतिकुटिलकुश्रवसरपाइ ॥ २३३ ॥ चौ॰ ॥ सोकुचालिसबकहभइनीकी ॥
श्रवधिश्रासससजीवनिजीकी ॥ नतरुलषनसियरामबियोगा ॥ हहरिमरतसबलो
गकुरोगा ॥ रामकृपाश्रवरेबसुधारी ॥ बिबुधधारिभइगुनदगोहारी ॥ भेटतभुजभ
रिभाउभरतसो ॥ रामप्रेमरसकहिनपरतसो ॥ तनमनबचनउमगश्रनुरागा ॥ धी
रधुरंधरधीरजत्यागा ॥ बारिजलोचनमोचतबारी ॥ देषिदसासुरसभादुषारी ॥ मुनि
गनगुरधुरधीरजनकसे ॥ ग्यानश्रनलमनकसेकनकसे ॥ जेबिरंचिनिरलेपउपाए ॥ प
दुमपत्रजिमिजगजलजाए ॥ दो॰ ॥ तेउबिलोकिरघुबरभरतप्रीतिश्रनूपश्रपार ॥ भये
मगनमनतनबचनसहितबिरागबिचार ॥ २३४ ॥ चौ॰ ॥ जहाजनकगुरगतिमति
भोरी ॥ प्राकृतप्रीतिकहतबडिषोरी ॥ बरनतरघुबरभरतबियोगू ॥ सुनिकठोरकबि
जानिहिलोगू ॥ सोसकोचरसश्रकथसुबानी ॥ समउसनेहसुमिरिसकुचानी ॥ भे
टिभरतरघुबरसमुझाए ॥ पुनिरिपुदवनहरषिहियलाए ॥ सेवकसचिवभरतरुष
पाइ ॥ निजनिजकाजलगेसबजाइ ॥ सुनिदारुनदुषदुहुसमाजा ॥ लगेचलनके
साजनसाजा ॥ प्रभुपदपदुमबंदिदोउभाई ॥ चलेसीसधरिरामरजाई ॥ मुनितापु
सबनदेवनिहोरी ॥ सबसनमानिबहोरिबहोरी ॥ दो॰ ॥ लषनहिभेटिप्रनामकरि
सिरधरिसियपदधूरि ॥ चलेसप्रेमश्रसीससुनिसकलसुमंगलमूरि ॥ २३५ ॥ चौ॰ ॥
सानुजरामनृपहिसिरनाई ॥ कीन्हिबहुतबिधिबिनयबडाई ॥ देवदयावसबडदु
षपायउ ॥ सहितसमाजकाननहिश्रायउ ॥ पुरपगधारिश्रदेउश्रसीसा ॥ कीन्हधीरधरि
गवनमहीसा ॥ मुनिमहिदेवसाधुसनमाने ॥ बिदाकियेहरिहरसमजाने ॥ सासु
समीपगयेदोउभाई ॥ फिरेबंदिपगश्रासिषपाई ॥ कौसिकबामदेवजाबाली ॥ पुर
जनपरिजनसचिवसुचाली ॥ जथाजोगकरिबिनयप्रनामा ॥ बिदाकियेसबसानु
जरामा ॥ नारिपुरुषलघुमध्यबडेरे ॥ सबसनमानिकृपानिधिफेरे ॥ दो॰ ॥ भरतमातु
पदबंदिप्रभुसुचिसनेहमिलिभेटि ॥ बिदाकीन्हसजिपालकीसकुचसोचसब
मेटि ॥ २३६ ॥ चौ॰ ॥ परिजनमातपितहिमिलिसीता ॥ फिरिप्रानप्रियप्रेमपुनीता ॥
करिप्रनामभेटीसबसासू ॥ प्रीतिकहतकबिहियनहुलासू ॥ सुनिसिषश्रभिमत
श्रासिषपाई ॥ रहीसीयदुहुप्रीतिसमाई ॥ रघुपतिपटुपालकीमगाई ॥ करिप्रबोध
सबमातुचढाई ॥ बारबारहिलिमिलिदोउभाई ॥ समसनेहजननीपहुचाई ॥ सा
जिबाजिगजबाहननाना ॥ भरतभूपदलकीन्हपयाना ॥ हृदयरामसीयलषन
समेता ॥ चलेजाहिसबलोगश्रचेता ॥ बसहबाजिगजपसुहियहारे ॥ चलेजाहिपरब
समनमारे ॥ दो॰ ॥ गुरगुरतियपदबंदिप्रभुसीतालषनसमेत ॥ फिरेहरषबिस
मयसहितश्राएपरननिकेत ॥ २३७ ॥ चौ॰ ॥ बिदाकीन्हसनमाननिषादू ॥ चलेउहृ
दयबडबिरहबिषादू ॥ कोलकिरातभिल्लबनचारी ॥ फेरफिरेजोहारजोहारी ॥ प्र
भुसियलषनबैठिबटछाही ॥ प्रियपरिजनबियोगबिलषाही ॥ भरतसनेहसु
भाउसुबानी ॥ प्रियाश्रनुजसनकहतबषानी ॥ प्रीतिप्रतीतिबचनमनकरनी ॥ श्री
मुषरामप्रेमबसबरनी ॥ तेहिश्रवसरषगम्रगजलमीना ॥ चित्रकूटचरश्रचरमली
ना ॥ बिबुधबिलोकिदसारघुबरकी ॥ बरषिसुमनकहिगतिघरघरकी ॥ प्रभुप्रनामक
रिदीन्हभरोसो ॥ चलेमुदितमनडरनषरोसो ॥ दो॰ ॥ सानुजसीयसमेतप्रभुजन
परनकुटीर ॥ भगतिग्यानबैरागजनुसोहतधरेसरीर ॥ २३८ ॥ चौ॰ ॥ मुनिमहिसुरगुर
भरतभुश्रालू ॥ रामबिरहसबसाजबिहालू ॥ प्रभुगुनग्रामगनतमनमाही ॥ सब
चुपचापचलेमगजाही ॥ जमुनाउतरिपारिसबभयऊ ॥ सोबासरबिनुभोजनगयऊ ॥ ३

नदिगोमतीनहाए। चौथेदिवसअवधिपुरआए। जनकरहेपुरवासरचारी। राजकाज
सवसाजसंभारी। सौंपिसचिवगुरभरतहिराजु। तिरहुतिचलेसाजिसवसाजु।
नगरनारिनरगुरसिखमानी। वसेसुखेनरामरजधानी। दो॰ रामदरसलगिलोग
सवकरतनेमउपवास। तजितजिभूषनभोगसुखजिअतअवधिकीआस। ३२२ चौ॰
॥ सचिवसुसेवकभरतप्रवोधे। निजनिजकाजपाइसिखओधे। पुनिसिखदीन्हवो
लिलघुभाई। सौंपीसकलमातसेवकाई। भूसुरवोलिभरतकरजोरे। करिप्रनामव
यविनयनिहोरे। ऊंचनीचकारजभलपोचु। आयसुदेवनकरवसंकोचु। परिजन
पुरजनप्रजावोलाए। समाधानकरिसुवसवसाए। सानुजगयेगुरगेहवहो
री। करिदंडवतकहतकरजोरी। आयसुहोयतरहउसनेमा। वोलेमुनितनपुलकि
सप्रेमा। समझवकहवकरवतुमजोई। धरमसारुजगहोइहिसोई। दोहा। सुनि
सिषपाइअसीसवडिगनकवोलिदिनसाधि। सिंहासनप्रभुपादकावैठारेनिरुपा
धि ३२३· चौ॰ ॥रामुमातगुरपदसिरनाइ। प्रभुपदपीठरजायसुपाइ। नंदिग्राम
करिपरनकुटीरा। कीन्हनिवासधरमधुरधीरा। जटाजूटसिरमुनिपटधारी
महिखनिकुससाथरीसवारी। असनवसनवासनव्रतनेमा। करतकठिनरिषि
धरमसप्रेमा। भूषनवसनभोगसुखभूरी। मनतनवचनतजेतिनतोरी। अवध
राजसुरराजसिहाइ। दसरथधनसुनिधनदलजाई। तेहिपुरवसतभरतविनरागा
चंचरीकजिमिचंपकवागा। रमाविलासरामअनुरागी। तजतवमनजिमिजन
वडभागी। दोहा। रामप्रेमभाजनभरतवडेनयेहकरतूति। चातकहंससराहि। अ
तटेकविवेकविभूति। ३२४ चौपाई। देहदिनहिदिनदुवरहोइ। घटततेजवलमु
खछविसोई। नितनवरामप्रेमपनपीना। वढतधरमदलमनननलीना। जिमि
जलनिघटतसरदप्रकासे। विलसतवेससवनजविकासे। समदमसंजमनियमउ
पवासा। नषतभरतहियविमलअकासा। ध्रुवविस्वासअवधिराकासी। स्वामि
सुरतिसुरवीथिविकासी। रामप्रेमविधुअचलअदोषा। सहतसमाजसोहनि
तचोषा। भरतरहनिसमुझनिकरतूती। भगतिविरतिगुनविमलविभूती। वरनत
सकलसुकविसकुचाही। सेसगनेसगिरागमनाही। दोहा। नितपूजतप्रभु
पावरीप्रीतिनहृदयसमाति। मांगिमांगिआयसुकरतराजकाजवहुभांति। ३२५
चौपाई। पुलकगातहियसीयरघुवीरु। जीहनामजपिलोचननीरु। लषनरामसिय
काननवसही। भरतभवनवसितपतनकसही। दोऊदिसिसमुझिकहतसवलोगु
सवविधिभरतसराहनजोगु। सुनिव्रतनेमसाधुसकुचाही। देखिदसामुनिराजल
जाही। परमपुनीतभरतआचरनु। मधुरमंजुमुदमंगलकरनु। हरनकठिनकलिक
लुषकलेसु। महामोहनिसिदलनदिनेसु। पापपुंजकुंजरमृगराजु। समनसकलसं
तापसमाजु। जनरंजनभंजनभवभारु। रामसनेहसुधाकरसारु। छंद। सियरा
मप्रेमपियूषपूरनहोतजनमनभरतको। मुनिमनअगमजमनियमसंजमविषम
व्रतआचरतको। दुषदाहदारिददंभदूषनसुजसमिसअपहरतको। कलिकालतुलसी
सेसठहिहठिरामसनमुषकरतको। सोरठा। भरतचरितकरिनेमतुलसीजो
सादरसुनहि। सीयरामपदप्रेमअवसिहोयभवरसविरति ३२६ ॥इतिश्रीरा
मचरितमानसेसकलकलिकलुषविध्वंसनेवैराग्यसंपादिनीनाम
द्वितियस्सोपानः॥ श्रीमतेरामानुजायनमः॥ ॐरामचंद्रायनमः॥ ॥

रा. आ.
२

ॐ श्री गणेशाय नमः ॥ श्री रामाय नमः ॥ अथ अरन्यकांड लिष्यते ॥ मूलं धर्मतरो
र्विवेकजलधेः पूर्णेंदुमानंददं ॥ वैराग्यांबुजभास्करं ह्यघघनध्वांतापहं तापहं ॥ मोहां
भोधरपूगपाटनविधौ स्वःसंभवं शंकरं ॥ वंदे ब्रह्मकुलं कलंकशमनं श्रीरामभूपप्रि
यं ॥ १ ॥ सांद्रानंदपयोदसौभगतनुं पीतांबरं सुंदरं ॥ पाणौ बाणशरासनं कटिलस
त्तूणीरभारं वरं ॥ राजीवायतलोचनं धृतजटाजूटेन संशोभितं ॥ सीतालक्ष्म
णसंयुतं पथिगतं रामाभिरामं भजे ॥ २ ॥ सोरठा ॥ उमा राम गुन गूढ पंडित मुनि पाव
हिं बिरति ॥ पावहिं मोह बिमूढ जे हरि बिमुख न धर्म रति ॥ १ ॥ चौपाई ॥ पुर नर भरत प्रीति मैं
गाई ॥ मति अनुरूप अनूप सुहाई ॥ अब प्रभु चरित सुनहु अति पावन ॥ करत जे बन सुर नर
मुनि भावन ॥ एक बार चुनि कुसुम सुहाये ॥ निज कर भूषन राम बनाये ॥ सीतहि पहि
राये ॥ प्रभु सादर बैठे फटक सिला पर सुंदर ॥ सुरपति सुत धरि बायस बेषा ॥ स
ठ चाहत रघुपति बल देषा ॥ जिमि पिपीलिका सागर थाहा ॥ महा मंद मति पा
वन चाहा ॥ सीता चरन चोंच हति भागा ॥ मूढ मंद मति कारन कागा ॥ चला रुधिर
रघुनायक जाना ॥ सींक धनुष सायक संधाना ॥ दोहा ॥ अति कृपाल रघुनायक स
दा दीन पर नेह ॥ ता सन आय कीन्ह छल मूरष अवगुन गेह ॥ ३ ॥ चौपाई ॥ विनय प
राय प्रभु हते न काहू ॥ अवल रघरे ग्रसे पाधिराहू ॥ तव प्रभु लीन्ह सीय न कवाना ॥ को
ध जान भा अनल समाना ॥ प्रेरित मंत्र ब्रह्मसर धावा ॥ चला भाज वायस भय पावा
धरि निज रूप गयो पितु पाही ॥ राम विमुष राषा तिह नाही ॥ भा निरास उपजी मन त्रा
सा ॥ जथा चक्र भय रिषि दुरवासा ॥ ब्रह्मधाम सिवपुर सव लोका ॥ फिरत स्रमित ब्या
कुल भय सोका ॥ काहु वैठवक हान योही ॥ राष को सके राम कर द्रोही ॥ मात मृत्यु पित
समन समाना ॥ सुधा होइ विष सुनु हरि जाना ॥ मित्र करहि सत रिपु कै करनी ॥ ताक
हु विबुध नदी वैतरनी ॥ सव जग ताहि अनलहु ते ताता ॥ जो रघुवीर विमुष सुनु भ्राता
॥ दोहा ॥ जिमि जिमि भाजन सक सत ब्याकुल अति दुष दीन ॥ तिमि तिमि धावत रा
म सर पाछे परम प्रवीन ॥ ५ ॥ चौपाई ॥ वचहि उभाव रुप्रसे षुगोसा ॥ रघुपति सर कुटिल व
व संदेसा ॥ नारद देषा विकल जयंता ॥ लागि दया कोमल चित संता ॥ इरहि ते कही प्रभु
प्रभु नाई ॥ भनिह जान वहु विधि समुझाई ॥ पववा तुरत राम पह नाही ॥ कहस सुकार प्र
नत हित पाही ॥ आतुर सभय गहेसि पद जाही ॥ त्राहि त्राहि दयाल रघुराई ॥ अतुलित
वल अतुलित प्रभुताई ॥ मैं मति मंद जान नहि पाई ॥ निज कृत कर्म जनित फल पा
यऊं अव प्रभु पाहि सरन तकि आयऊं ॥ सुनि कृपाल अति आरत वानी ॥ एक नैन क
रि तजा भवानी ॥ सोरठा ॥ कीन्ह मोह वस द्रोह जद्यपि तिहि कर वध उचित ॥ प्रभु छा
डेउ करि छोह को कृपाल रघुवीर सम ॥ चौपाई ॥ रघुपति चित्रकूट वसि नाना ॥ चरित
कीये श्रुति सुधा समाना ॥ वहुरि राम अस मन अनुमाना ॥ होइहि भीर सवहि मो
हि जाना ॥ सकल मुनिन्ह सन विदा कराई ॥ सीता सहित चले दोउ भाई ॥ अत्रि के आ
श्रम जव प्रभु गयेऊ ॥ सुनत महामुनि हरषित भयेऊ ॥ पुलकित गात अत्रि उठि धा
ये ॥ देषि राम आतुर चलि आये ॥ करत दंडवत मुनि उर लाये ॥ प्रेम वारि दोउ जन अन्हवा
ये ॥ देषि राम छवि नैन जुडाने ॥ सादर निज आश्रम तव आने ॥ करि पूजा कहि वचन सु
हाये ॥ दीये मूल फल प्रभु मन भाए ॥ सोरठा ॥ प्रभु आसन आसीन भरि लोचन सो
भा निरषि ॥ मुनिवर परम प्रवीन जोरि पानि स्तुति करत ॥ छंद ॥ अत्रिरुवाच ॥ नमा
मि भक्तवत्सलं ॥ कृपालसीलकोमलं ॥ भजामि ते पदांबुजं ॥ अकामिनां स्वधामदं ॥ निः
कामस्यामसुंदरं ॥ भवांबुनाथमंदरं ॥ प्रफुल्लकंजलोचनं ॥ मदादिदोषमोचनं ॥ प्रलंब
वाहुविक्रमं ॥ प्रभोऽप्रमेयवैभवं ॥ निषंगचापसायकं ॥ धरं त्रिलोकनायकं ॥ दिनेसवं
समंडनं ॥ महेसचापखंडनं ॥ मुनींद्रसंतरंजनं ॥ सुरारिवृंदभंजनं ॥ मनोजवैरिवंदितं
अजादिदेवसेवितं ॥ विसुद्धवोधविग्रहं ॥ समस्तदूषणापहं ॥ नमामि इंदिरापतिं ॥ सुषाक

रं सतां गतिं ॥ भजे ससक्तिसानुजं ॥ सचीपतिप्रियानुजं ॥ त्वदंघ्रिमूल ये नराः ॥ भजंति हीन
मत्सरा ॥ पतंति नो भवार्णवे ॥ वितर्कवीचिसंकुले ॥ विविक्तवासिनः सदा ॥ भजंति मुक्त
ये मुदा ॥ निरस्य इंद्रियादिकं ॥ प्रयांति ते गतिं स्वकं ॥ तमेकमद्भुतं प्रभुं ॥ निरीहमीश्व
रं विभुं ॥ जगद्गुरुं च साश्वतं ॥ तुरीयमेव केवलं ॥ भजामि भाववल्लभं ॥ कुयोगिनां
सुदुर्लभं ॥ स्वभक्तकल्पपादपं ॥ समं सुसेव्यमन्वहं ॥ अनूपरूपभूपतिं ॥ नतोहमु
र्विजापतिं ॥ प्रसीद मे नमामि ते ॥ पदाब्जभक्ति देहि मे ॥ पठंति ये स्तवं इदं ॥ नरादरे
न ते पदं ॥ व्रजंति नात्र संशयं ॥ त्वदीयभक्तिसंयुते ॥ १ ॥ दोहा ॥ विनती करि मुनि ना
इ सिर कहे कर जोरि वहोरि ॥ चरन सरोरुह नाथ जनि कवहु तजै मति मोरि ॥ १० ॥ चौपा
ई ॥ जन्म जन्म प्रभु पद मकरंद ॥ वातो प्रीति चकार जिमि वेदा ॥ देषि राम अनुविनिविन
यशनामा ॥ विविधि भांति पायो विश्रामा ॥ अनुसूया के पद गहि सीता ॥ मिली व
होरि सुसील विनीता ॥ जो सिय सकल लोक सुषदाता ॥ रिषिपतिनी दिअसीसु की
माता ॥ नेउ आस मुनिवर भामिनि ॥ सवी नइ कुसुमदि निजिमि जामिनि ॥ रिषिपति
नी मनु सुष अपि काई ॥ आसिष देइ निकट वैठाई ॥ दिव्य वसन भूषन पहराये ॥ जेनि
त नूतन अमल सुहाये ॥ जाहि निरषि दुष दूरि पराही ॥ गरुड जानि जिमि पन्नग
जाही ॥ १२ ॥ दोहा ॥ ऐसे वसन विचित्र सव दिये सीय कहु आनि ॥ नव मानी प्रिय व
वन कहि ॥ पीनन जाइ वषानि ॥ १२ ॥ चौपाई ॥ कहे रिषिवधू सरस मृदु वानी ॥ नारि ध
र्म कछु व्याज वषानी ॥ मात पिता भ्राता हितकारी ॥ मित प्रद सव सुनु राजकुमा
री ॥ अमित दान भरता वैदेही ॥ अधम सो नारि जो सेव न तेही ॥ धीरज धर्म मित्र अ
रु नारी ॥ आपद काल परषिअहि चारी ॥ वृध रोगवस जड धनहीना ॥ अंध वधिर क्रो
धी अति दीना ॥ ऐसेहु पति कर कीये अपमाना ॥ नारि पाव जमपुर दुष नाना ॥ एकै
धर्म एक व्रत नेमा ॥ काय वचन मन पति पद प्रेमा ॥ जग पतिव्रता चारि विधि अहही
वेद पुरान संत सव कहही ॥ १३ ॥ दोहा ॥ उत्तम के अस वस मन मांही ॥ सपनेहु आन पुरुष जग नाही ॥ मध्यम पर पति देषै कैसे ॥ भ्रा
नीच लघु सकल कहीं सम फा
इ ॥ आगे सुनहि जे भव तरहि सुन इ उसी ना चित लाइ ॥ १४ ॥ चौपाई ॥ उत्तम के अ
स वस मन माही ॥ सपनेहु आन पुरुष जग नाही ॥ मध्यम पर पति देषै कैसे ॥ भ्रा
ता पिता पुत्र निज जैसे ॥ धर्म विचारि समुझि कुल रहई ॥ सो निकृष्ट त्रिय श्रुति अस
कहई ॥ विनु अवसर भय ते रह जोई ॥ जानहु अधम नारि जग सोई ॥ पति वंचक पर
पति रति करई ॥ रौरव नरक कलप सत परई ॥ छन सुष लागि जनम सत कोटी ॥ दुष
न समुझ तिहि सम को षोटी ॥ विनु श्रम नारि परम गति लहई ॥ पतिव्रत धर्म छाडि
छल गहई ॥ पति प्रतिकूल जनम जहि जाई ॥ विधवा होइ पा
इ तरुनाई ॥ १५ ॥ सोरठा ॥ सहज अपावन नारि पति सेवत सुभ गति लहइ ॥ जस
गावत श्रुति चारि अजहु तुलसिका हरिहि प्रिया ॥ १६ ॥ सोरठा ॥ सुनु सीता तव नाम
सुमिरि नारि पतिव्रत करहि ॥ तोही प्रान प्रिय राम कहि वकथा संसार हित ॥ १७ ॥ चौ
पाई ॥ सुनि जानकी परम सुष पावा ॥ सादर तासु चरन सिर नावा ॥ तव मुनि सन
कह कृपानिधाना ॥ आइसु होइ जाउं वन आना ॥ संतत मो पर कृपा करेहु ॥ सेव
क जानि तजेहु जनि नेहु ॥ धर्मधुरंधर प्रभु की वानी ॥ सुनि सप्रेम वोले मुनि ग्यानी
जासु कृपा अज सिव सनकादी ॥ चहत सकल परमारथवादी ॥ ते तुम राम सक
ल सुषदाता ॥ मम गरव लहु समहि न सीय भ्राता ॥ तेन मरा मन अकाम पियारे ॥
दीनवंधु मृदु वचन उचारे ॥ अव जानी मैं श्री चतुराई ॥ भजी यतु महि सव देव वि
हाई ॥ जिहि समान अतिसै नहि कोई ॥ ता कर सील कस न अस होई ॥ किहि निधि
कहो जाहु अव स्वामी ॥ कहहु नाथ तुम अंतरजामी ॥ अस कहि प्रभु विलोकि मु

रा॰ आ॰
२

मुनिधीरा लोचनजलवहपुलिकसरीरा ॥छं॰॥ तनपुलिकनिर्भरप्रेमपूर्निनैनमुषपंक
जदीये ॥ मनग्यानगुनगोतीतप्रभमैदीषजपतपकाकीये ॥ जपजोगधर्मसमूहतेनर
भक्तिअनुपमपावही ॥ रघुवीरचरितपुनीतनिसदिनदासतुलसीगावही ॥दोहा॥
मुनिहिकीयस्तुतिकीन्हप्रभुदीनस्वभगवरदान ॥ समनवपिनमसकलनयननृप
कृपानिधान ॥ कलिमलसमनदमनमनरामसुजससुषमूल ॥ सादरसुनहि
जेतिन्हपररामरहहिअनुकूल ॥ चौ॰ ६ ॥ मुनिपदकमलनायकरिसीसा ॥ चलेव
नहिसरन्ननिनरईसा ॥ आगेरामअनुजपुनिपाछे ॥ मुनिवरवेषवनेअतिकाछे ॥
उभयवीचसियसोहैकेसे ॥ ब्रह्मजीवविचमायाजैसे ॥ सरितावनगिरिअवघटघा
टा ॥ पतिपहिचानिदेहिवरवाटा ॥ जहजहजायदेवरघुराया ॥ करहिमेघतहतहनभ
छाया ॥ आश्रमविपुलदीषमगमाहीदेषसदनतिहिपरतरनाही ॥ वहुतवृरागदे
दरसवराई ॥ भांतिभांतिसवमुनिहुलगाई ॥ दिव्यविटपफलचहुदिससोहई ॥ देषु
नकहुतसकलमुनिमोहई ॥ तिहिदिनप्रभुतहांकीन्हनिवासा ॥ सकलमुनिन्हमि
लिकीन्हसुपासा ॥दो॰॥ निजनिजआश्रमवरकातिहिपरिनलसीविराज ॥ अनु
जज्ञानकीसहितनहारानतभयेरघुराज ॥सो॰ ॥ कठिनकालमलकोस
परमनग्यानजोगजपरहर ॥ सकलभरोसरामहिमजहितेचतुरनर ॥ आनि
सश्रासनमुदिनमनप्रजियहुनईकीन्ह ॥ कंदमूलफलअमीयसमआनिरामको
दीन्ह ॥ चौ॰ ६ ॥ अनजसीयसहभोजनकीन्हा ॥ जोजिहिभावसुभगवरदीन्हा ॥ होत
प्रातमुनिन्हसिरनावा ॥ असिरवादसवहिसनपावा ॥ सुमिरिउमाशिवसिधगाए
साथुनिप्रभुचलेसनकुउरोसा ॥ वनअनेकसुंदरगिरनाना ॥ लाघतचलेजाहि
भगवाना ॥ मिलाअसुरविराधमगजाता ॥ गर्जतवोरकुवोरविसाता ॥ रूपभयं
करमानकुकाला ॥ वेगावनथापोजिमिब्याला ॥ गगनदेवमुनिकिंनरनाना ॥ ति
हिछनहृदयहारकछुमाना ॥ नुरतहीलोसीनहिलेगयो ॥ रामहृदयकछुविस
मभयो ॥ समुकीहृदयकैकईकरवीकहाअनुजसनवहुविधिवरनी ॥ वहुरिलष
नरघुवरदिशवोधा ॥ पावकवानछाडेकरिक्रोधा ॥छं॰॥ भयाकुपलषनसधानथ
नुसरमारिविनिहिप्याकुलकीयो ॥ पुनिउठोनिसिचरराषिमीनहिसललेको
उतभयो ॥ जनुकालदंड करालधावाविकसवषगामराभये ॥ धनतानगीवहुवं
ममनिपुनिकाटितिहिरजसमकीये ॥दो॰॥ वहुरिराकसरमारघुरावरनिधुनि
माघा ॥ उठिउप्रवलपुनिगर्जेकरचलेउजहारघुनाथ ॥२॥ चौ॰ ६ ॥ असेकहतनि
सावरधावा ॥ अवनहीवविहीतमहिमैषावा ॥ आवाप्रवलधहिविधिजनभुपर
होइहैकहाकहहिआकुलसव ॥ तासतेजसतमहतसमाना ॥ हटदहिनउदुगहिप
षाना ॥ जीवजंतजहलगरहेजेते ॥ व्याकुलभाजिचलेतहतेते ॥ उरगसमानजो
रिसरसाता ॥ आवतहीरघुवीरनिपाता ॥ तुरहीरुचिरनृपतिहियावा ॥ देषउषीनिज
धामपठावा ॥ तातअनुजगारेप्रभुधरनी ॥ देवनमृदितदुंदभीहनी ॥ सीताआउ
वरनलपठानी ॥ अनुजसहितनवचलेभवानी ॥ हाससजहमुनिसरभंगा ॥ आ
येसकलदेवदिजसंगा ॥ गयेकहनप्रभुदेनसिधावन ॥ दिसववलमेदवसतजह
रावन ॥दो॰॥ सुरपतिसंलयनसमसरिसरघुपतितेजदिनेस ॥ रावनजीवननिसि
समवीतलुटहिकलेस ॥२१॥ चौ॰ ६ ॥ सुनाधीरप्रभुनिहिछनदेषा ॥ तेजनिधान
लषअतिवेषा ॥ नैराचारिचलमहतसमाना ॥ रषरविसमनहिजाइवषाना ॥
छिननपरमसोमुतररहिरै ॥ श्वेतछत्रचामरसिरढरई ॥ अनुजसहितप्रियपहिकहासम
काई ॥ सुरपतिमहिमागनप्रभुताई ॥ जिहिकारनवासवतहाआये ॥ साकछुकह

नकहैनहीपाये ॥ वीतहिमनिआइप्रभुकेरा ॥ कहिसारथि[illegible]घफेरा
हृदहितेकरिप्रभुहिप्रनामा ॥ सादरचलेवगगनउनिजधामा ॥ पुनि[illegible]
सरभंगा ॥ सुंदरअनुजजानकीसंगा ॥दो॰॥ देषरामसुषपंकजमुनिवरलोच
नभंग ॥ सादरपानकरतअतिधन्यजन्मसरभंग ॥२१॥ चौ॰ ६ ॥ कहमुनिसुनुरघु
वीरकृपाला ॥ संकरमानसराजमराला ॥ जातरह्योविरंचकेधामा ॥ सुनेउश्रवन
वनआयेरामा ॥ चितवतपंथरह्योदिनराती ॥ अवप्रभुदेषजुडानीछाती ॥ नाथ
सकलसाधनमैहीना ॥ कीनकृपाजानिजनदीना ॥ सोकछुदेवनमोहिनिहोरा
निजपनराष्योजनमनचोरा ॥ तवलगिरहहुदीनहितलागी ॥ जवलगिमिलौतुम्हहि
मिलौतनत्यागी ॥ जोगजग्यजपतपव्रतकीना ॥ प्रभुकहदेइभगतिवरलीना
इहिविधिसररचिमुनिसरभंगा ॥ वैठेहृदयछांडिसवसंगा ॥दो॰॥ सीताअनु
जसमेतप्रभुनीलजलदतनस्याम ॥ ममहियवसनहुरंतरहिसगनरूपश्रीराम
॥२२॥ चौ॰ ६ ॥ असकहिजोगअगनितनुजारा ॥ रामकृपावैकुंठसिधारा ॥ तातेमु
निहरिलीननभयउ ॥ प्रथमहिमेदभगतिवरलयउ ॥ रिषिनिकायमुनिवरगति
देषी ॥ सुषीभयेनिजहृदयेविसषी ॥ अस्तुतिकरहिसकलमुनिवृंदा ॥ जयतिप्रनत
हितकरुणाकंदा ॥ पुनिरघुनाथचलेवनआगे ॥ मुनिवरवृंदविपुलसगलागे ॥ अ
स्थिसमूहदेषिरघुराया ॥ पूछामुनिनलागिअतिदाया ॥ जानतहीपूछेयकसस्वा
मी ॥ सभदरसीतुमअंतरजामी ॥ निसिचरनिकरसकलमुनिषाये ॥ सुनिरघुवीरनै
नजलछाये ॥दो॰॥ निसचरहीनकरौमहिभुजउठायपनकीन ॥ सकलमुनिनकेआ
श्रमनजायजायसुषदीन ॥२३॥ चौ॰ ६ ॥ मुनिअगस्तिकरसिष्यसुजाना ॥ नामसु
तीछनरतिभगवाना ॥ मनक्रमवचनरामपदसेवक ॥ सपनेहुआनभरोसन
देवक ॥ प्रभुआगमनश्रवनसुनिपावा ॥ करतमनोरथआतुरपावा ॥ हेविधिदी
नवंधुरघुराया ॥ मोसेसवषरकमिहहिदया ॥ सहितअनुजमोहिरामगुसाई ॥ मि
लिहिनिजसेवककीन्याई ॥ मोरेजीयभरोसदृढनाही ॥ भगतिविरतिनग्यानमन
माही ॥ नहिसतसंगयोगजपजागा ॥ नहिदृढचरनकमलअनुरागा ॥ एकवानिक
रुणानिधानकी ॥ सोप्रियजाकेगतिनआनकी ॥छं॰॥ सोइपरमप्रियमुनिपात
कीजिनकवहुप्रभुसुमिरनकरयो ॥ तेआजुमैनिजनैनदेषिहुपरिपुलिकितिहि
यभरयो ॥ जेपदसरोजअनेकमुनिकरिध्यानकवहुकपावहीनेरामश्रीर
घुवंसमनिप्रभुप्रेमतेसुषपावही ॥दो॰॥ प्रेममगनमुनिप्रेमसमभजनइसव
आन ॥ यहविचारमुनिपुनिपुनिकरतरामगुनगान ॥२४॥ चौ॰ ६ ॥ होइहैसुफ
लआजुममलोचन देषवदनपंकजभवमोचन ॥ निर्भरप्रेममगनमुनिग्या
नी कहिनजाइसोदसाभवानी दिसिअरुविदिसिपंथनहिसूका ॥ कोमैचले
उकहानहीवूका कवहुकेफिरियाछेपुनिजाई ॥ कवहुकनृत्यकरतगुनगाई ॥ अवि
रलप्रेमभगतिमुनिपाई ॥ प्रभुदेषैतरुवोटिलोकाई ॥ अतिसयप्रीतिदेषिरघुवी
रा ॥ प्रगटेहृदयहरनभवभीरा ॥ मुनिमगमाहिअचलहोइवैसा ॥ पुलकसरीरपन
सफलजैसा ॥ तवरघुनाथनिकटचलिआये ॥ देषिदसानिजजनमनभाये ॥ सो
हा ॥ रामससाहावसंतसेवकउपदारिदृदवन ॥ मुनिसनप्रभुकहजाइउ
वउहिनमनप्रानसम ॥२४॥ चौ॰ ६ ॥ मुनिहिरामवहुभांतिजगावा ॥ जागेनध्या
नजनितसुषपावा ॥ भूपरूपतवरामदुरावा ॥ हृदयचतुरभुजरूपदिषावा ॥ मुनि
अकुलाइउठातववैसे ॥ विकलहीनमनिफनिवरजैसे ॥ आगेदेषिरामतनस्या
मा ॥ सीताअनुजसहितसुषधामा ॥ परेउलकुटिवचरननिहितलागी ॥ प्रेममगनमुनि

उरवड़भागी। भुजविसालगहिलीयेउठाई। परमप्रीतिराखेउरलाई। मुनिहिमिलतअ
ससोहकृपाला। कनकतरुहिजनुभेटितमाला। रामवदनविलोकिमुनिठाढा।
मानहुचित्रमांझलिषिकाढा। दो। तवमुनिहृदयधीरधरिगहिपदवारहिवार। नि
जआश्रमप्रभुआनिकरिपूजेविविधिप्रकार। १०। चौ। कहमुनिप्रभुसुनि
विनतीमोरी। अस्तुतिकरौकवनविधितोरी। महिमाअमितमोरमतिथोरी। रवि
सनमुषषद्योतअंजोरी। स्यामतामरसदामसरीरं। जटामुकटपरिधनमुनिचीरं।
पानिचापसरकटितूनीरं। नौमिनिरंतरश्रीरघुवीरं। मोहविपिनघनदहन
कृसानं। संतसरोरुहकाननभानं। निसिचरकरिवरूथमृगराजं। त्रातसदानोभ
वषगवाजं। अरुणनैनराजीवसवेसं। सीतानैनचकोरनिसेसं। हरहृदयामा
नसवालमरालं। नौमिरामउरवाहुविसालं। संसयसर्पग्रसनउरगादं। समन
सुकरकसतर्कविषादं। भवभंजनरंजनसुरजूथं। त्रातसदानोकृपावरूथं।
निर्गुनसगुनविषमसमरूपं। ज्ञानगिरागोतीतमनूपं। अमलमषिलमन
वद्यपारं। नौमिरामभंजनमहिभारं। भगतकल्पपादपआरामं। तर्जनक्रोध
लोभमदकामं। अतिनागरभवसागरसेतं। त्रातसदादिनकरकुलकेतं। अतु
लितभुजप्रतापवलधामं। कलिमलविपुलविभंजननामं। धर्मवर्मनिर्मदगु
नग्रामं। संततसंतनोतुममरामं। जदपिविरजव्यापकअविनासी। सवकेहृद
यनिरंतरवासी। तदपिअनुजश्रीसहितषरारी। वसहुमनसिममकाननचारी।
जेजानहितेजानहुस्वामी। सगुनअगुनउरअंतरजामी। जोकोसल
पतिराजीवनैना। करौसोरामहृदयममअयना। सो। बा। मायावसजगजानी
वरहुहिविविसमंततमगान। तिमिलागहुप्रियरामकरुणाकरसुंदरसुषद।
११। चौ। असअभिमानजाइजनिभोरे। मैसेवकरघुपतिपतिमोरे। रामभ
गतिनिजवहकल्याना। सोनरअधमग्रामालसमाना। सुनिमुनिवचनराममनभा
ये। वहुरिहरषिमुनिवरउरलाये। परमप्रसन्नजानिमुनिमोही। जोवरमाग
हुदेउसोतोही। मुनिकहमैवरकवहुनजाचा। समुझिनपरैझूठकासाचा। तु
महिनीकलागैरघुराई। सोमोदेहुदाससुषदाई। अविरलभगतिविरतिविज्ञा
ना। होहुसकलगुनज्ञाननिधाना। प्रभुजोदीनसोवरमैपावा। अवसोदेहुमो
हिजोभावा। दो। अनुजजानकीसहितप्रभुचापवानधरराम। ममहियग
गनइंदुइववसहुसदाइहकाम। १२। चौ। एवमस्तुकहिरमानिवासा। ह
रषचलेकुंभजरिषिपासा। मुनिप्रनामकरिजुगकरजोरी। सुनहुनाथक
छुविनतीमोरी। वहुतदिवसगुरदरसनपाये। भयेमोहिएहिआश्रमआये। अवप्रभु
संगजाउगुरपाही। तुमकोनाथनिहोरानाही। चलेहुजानमगानवपदकेजा
देषिकृपानिधिमुनिचतुराई। लियेसंगविहसे
दोउभाई। पंथकहतनिजभगतिअनूपा। मुनिआश्रमपहुचेसुरभूपा। आश्र
मदेषिमहाछविसुंदर। सरितसरोवरहरषितभूपर। वनचरजलचरजीव
महीते। वैरनकरहिप्रीतिसवहीते। दो। नहवहुविविधिविहंगमय। वोलत
विविधप्रकार। वसहिसिद्धमुनितपकरहिमहिमागुनआगार। १३। चौ। त
रतस्वीतनमुनिपहिगयेऊ। करिदंडवतकहतअसभयेऊ। नाथकौशल्याधी
सकुमारा। आयेमिलनजगतआधारा। रामअनुजसमेतवैदेही। निसिदिनदेव
जपतहौजेही। सुनतअगस्तितुरतउठिधाये। हरिविलोकिलोचनजलछाये।
मुनिपदकमलपरेदोउभाई। रिषिअतिप्रीतिलीयेउरलाई। सादरकुसलपूछिमु

निआनी। आसनवरवैठारेआनी। पुनिकरवहुप्रकारप्रभुपूजा। मोहिसमभाग्यवंतन
हीदूजा। जहंलगिरहेअपरमुनिवृंदा। हरषेसवविलोकिसुषकंदा। मुनिस
मूहमहुवैठेप्रभुसनमुषसवकीओर। सरदइंदुतनचितवतेमानहुनिकरच
कोर। १४। चौपाई। पाइस्वातिजलहरषितमीना। पारसपायमनोनिधिही
ना। प्रभुहिनिरषिसवभाग्यहिमाती। चातककिमिपाइजलस्वाती। तवरघु
वीरकहामुनिपाही। तुमसनप्रभुदुराउकछुनाही। तुमजानहुजिहिकारन
आये। तातेतातनकहिसमुझाये। अवप्रभुमंत्रदेहुसोमोही। जिहिप्रकारमारौं
मुनिद्रोही। द्विजद्रोहीनवचेमुनिराई। जिमिपंकजवनहिमरितुपाई। मुनिमु
सकानेसुनिप्रभुवानी। पूछेहुनाथमोहिकाजानी। तुह्मरेइभजनप्रभावअ
धारी। जानौमहिमाकछुकतुह्मारी। सो। बा। भ्रकुटीनिरषतनाथनवरहत
सदापदकमलतर। जिनढावेनिजहाथविविधिविधातासरसिद्धहर।
अतिकरालसवपरजगजाना। अवरौकहौसुनियमरावाना। चौपाई। ऊमरतरुविसा
लतवमाया। फलब्रह्मांडअनेकनिकाया। जीवचराचरजंतुसमाना। भीतर
वसहिनजानेआना। तेफलभक्षककठिनकराला। तवभयडरतसदासोउका
ला। तेतुमसकललोकपतिसाई। पूछहुमोहिमनुजकीनाई। यहवरमागौकृ
पानिकेता। वसहुहृदयसियअनुजसमेता। अविरलभक्तिविरतिसतसंगा।
चरनसरोरुहप्रीतिअभंगा। जद्यपिब्रह्मअषंडअनंता। अनुभवगम्यभजहिजे
हिसंता। असतवरूपवषानौजानौ। फिरिफिरिसगुनब्रह्मरतिमानौ। दो।
जाहिजीवपरतवकृपासंततनरहतकुलास। तिन्हकीमहिमाकोकहैजेअनन्य
प्रियदास। चौ। संततदासनदेहुवडाई। तातेमोहिपूछहुरघुराई। हैप्रभुपर
ममनोहरठाऊ। पावनपंचवटीएकनाऊ। गोदावरीनदीतहावहई। वास्योजगु
पसिहमोअहह। दंडकवनपुनीतप्रभुकरहू। उग्रश्रापमुनिवरकेहरहू। वासकर
हुतहरघुकुलराया। कीजेसकलमुनिनपरदाया। चलेरामसुनिआयसुपाई।
तुरतहीपंचवटीनियराई। दिव्यलताद्रुमप्रभुमनभाये। निरषिरामनेअसजेसुहा
लषनराममसीयचरननिहारी। काननअवगोभासषभारी। दो। गीधराजसे
भेटभईवहुविधिप्रीतिवढाइ। गोदावरीकेनिकटप्रभुरहेपरनगृहछाइ। १६। चौ। ज
वतेरामकीन्हतहवासा। सुषीभयेमुनिवीतीत्रासा। गिरिवननदीतालछविछा
ये। दिनदिनप्रतिअतिहोहिसुहाये। षगमृगवृंदअनंदितरहही। मधुपमधुरगुंज
तछविलहही। सोवनवरनिनसकअहिराजा। जहाप्रगटरघुवीरविराजा। एकवा
रप्रभुसुषआसीना। लछमनवचनकहेछलहीना। सुरनरमुनिसचराचरसा
ई। मैपूछौनिजप्रभुकीनाई। मोहिसमुझाइकहोसोईदेवा। सवतजिकरौचरनर
जसेवा। कहहुज्ञानविरागअरुमाया। कहहुसोभगतिकरहुजिहिदाया। दो। ई
स्वरजीवभेदप्रभुसकलकहहुसमुझाइ। जातेहोइचरनरतिसोकमोहभ्रमजा
इ। १७। चौ। थोरेहिमहुसवकहौवुझाई। सुनहुतातमतिमनचितलाई। मैअरु
मोरतोरतैमाया। जिहिवसकीयेजीवनिकाया। गोगोचरजहलगिमनजाई। सोस
वमायाजानोभाई। तिहिकरभेदसुनहुतुमसोऊ। विद्याअपरअविद्यादोऊ। एक
दुष्टअतिसयदुषरूपा। जावसजीवपरोभवकूपा। एकरचैजगगुनवसजाके। प्र
भुप्रेरितनहिनिजवलताके। ज्ञानमानजहएकौनाही। देषब्रह्मसमानसवमा
हीकहियतातसोपरमविरागी। तृनसमसिद्धितीनगुणत्यागी। दो। मायईसन
आपकहुजानकहियसोजीव। वंधमोक्षप्रदसर्वपरमायाप्रेरकसीव। १८। चौ। धर्म

आ॰ रा॰
४
५

तेविरतिजोगतेग्याना॥ ग्यानमोछप्रदवेदवषाना॥ जातेंवेगिद्रवउंमैंभाई॥ सोममभ
गतिभगतिसुषदाई॥ सोसुतंत्रअवलंवनआना॥ तेहिआधीनग्यानविग्याना॥ भगति
तातअनुपमसुषमूला॥ मिलइजोसंतहोइअनुकूला॥ भगतिकेसाधनकहौंव
षानी॥ सुगमपंथमोहिपावहिंप्रानी॥ प्रथमहिंविप्रचरनअतिप्रीती॥ निजनि
जधर्मनिरतश्रुतिरीती॥ एहिकरफलपुनिविषयविरागा॥ तवममधर्मउपज
अनुरागा॥ श्रवनादिकनवभगतिदृढाहीं॥ ममलीलारतिअतिमनमाहीं॥ संतचरन
पंकजअतिप्रेमा॥ मनक्रमवचनभजनदृढनेमा॥ गुरुपितुमातुवंधुपतिदेवा॥
सवमोहिकहंजानैदृढसेवा॥ ममगुनगावतपुलकसरीरा॥ गदगदगिरानयन
वहनीरा॥ कामआदिमददंभनजाकें॥ तातनिरंतरवसमैंताकें॥ दो॰॥ वचनक
र्ममनमोरिगतिभजनकरहिंनिहकाम॥ तिनकेहृदयकमलमहुंकरउं
सदाविश्राम॥ १५॥ चौ॰॥ भगतिजोगसुनिअतिसुषपावा॥ लछिमनरामचरनि
सिरनावा॥ नाथसुनेउंगतममसंदेहा॥ भयेउग्यानउपजेउनवनेहा॥ अनुजवचन
सुनिप्रभुमनभाये॥ हरषरामनिजहृदयलगाये॥ एहिविधिगयेकछुकदिनवीती॥
कहतविरागग्याननयनीती॥ सूपनषारावनकैवहिनी॥ दुष्टहृदयदारुणजस
अहिनी॥ पंचवटीसोगईएकवारा॥ देषिविकलभईजुगलकुमारा॥ भ्रातापिता
पुत्रउरगारी॥ पुरुषमनोहरनिरषतनारी॥ होयविकलसकमनहिंनरोकी॥ जिमि
रविमनिद्रवैरविविलोकी॥ दो॰॥ अधमनिसाचरिकुटिलअतिचलीकरनउप
हास॥ रुचिररूपधरिसोगई॥ [illegible]॥ १६॥ चौ॰॥ रुचिररूपध
रिप्रभुपहिंजाई॥ वोलीवचनवहुतमुसकाई॥ तुमसमपुरुषनमोसमनारी॥ य
हसंजोगविधिरचोविचारी॥ ममअनुरूपपुरुषजगमाहीं॥ देषेउंषोजिलोकहुंना
हीं॥ तातेअवलगिरहीकुमारी॥ मनमानाकछुतुमहिंनिहारी॥ सीतहिंचितयक
हीप्रभुवाता॥ अहेकुमारमोरलघुभ्राता॥ गईलछिमनरिपुभगिनीजानी॥ प्रभुवि
लोकिवोलेमृदुवानी॥ सुंदरिसुनिमैंउनकरदासा॥ पराधीननहींतोरसुपासा॥
प्रभुसमर्थकोसलपुरराजा॥ जोकछुकरहिंउनहिंसवछाजा॥ दो॰॥ केहरिसम
नहिंकरिवरत॥ वाकेवाजसमान॥ प्रभुसेवककरमिनानहुमानहुवचनप्रमान॥ ॥
चौ॰॥ सेवकसुषचहमानभिषारी॥ व्यसनीधनसुभगतिविभचारी॥ लोभीजस
चहचारगुमानी॥ नभदुहिदूधचहतयेप्रानी॥ पुनिफिरिरामनिकटसोआई॥ प्रभुल
छिमनपहिंफेरिपठाई॥ लछमनकहातोहिसोवरई॥ जोतृनतोरिलाजपरिहरई॥
तवषिसिआनिरामपहिंगई॥ रूपभयंकरप्रगटतभई॥ विधुरेकेसदसनविकराला॥
भृकुटीकुटिलकरनलगीगाला॥ सीतहिंसभयदेषिरघुराई॥ कहाअनुजसनसैन
वुझाई॥ अनुजरामसनकीगतिजानी॥ उठेरिसाइनवचनहुंभवानी॥ दो॰॥ लछि
मनअतिलाघवसोनाककानविनकीन्ह॥ ताकेकररावनकहंमनौंचनौतीदी
न्ह॥ चौ॰॥ नाककानविनभैविकरारा॥ जनुस्रवसैलगेरुकीधारा॥ स्यामघटादेषत
घनकेरी॥ तहांवासवचनमनोउनरी॥ षरदूषनपहंगईविलषाता॥ धिगधिगतव
वलपौरषभ्राता॥ तिहिंपूछासवकहिसिवुझाई॥ जातुधानसुनिसेनवनाई॥ धाए
निसिचरनिकरवरूथा॥ जनुसपछकज्जलगिरिजूथा॥ नानावाहननानाकारा॥ नानायुधधरघोरअपारा॥
सूपनषाआगेकरलीनी॥ असुभरूपश्रुतिनासाहीनी॥ दो॰॥ निजनिजवल
सवमिलिकहिंहिसकहिरावनसनाइ॥ वाजननलगेजनकाउहू॥ रषनहृदयसमाइ॥
१७॥ चौपाई॥ असगुनअमितहोहिंभयकारी॥ गनहिंनमृत्युविवससभयकारी॥

गर्जहिंतर्जहिंगगनउडाहीं॥ देषिकटकभटअतिहरषाहीं॥ कोउकहैजीयतधरौदोउभाई॥
धरिमारहुतियलेहुछडाई॥ कोउकहैसुनिरसतनहमकहहीं॥ [illegible]
महही॥ एकहिंकहामएभयरहहू॥ दलकेआगेअसजिनकरहू॥ वहुविधि[illegible]
नरनधीरा॥ आयेसकलजहांरघुवीरा॥ धूरिपूरिनभमंडलरहा॥ रामवुलाइअनुजसन
कहा॥ लैजानकिहिंजाहुगिरिकंदर॥ आवानिसिचरकटकभयंकर॥ रहेहुसज
गसुनिप्रभुकैवानी॥ चलेसहितसियसरधनुपानी॥ देषिरामरिपुदलचलिआवा॥ वि
हसिकठिनकोदंडचढावा॥ छंद॥ कोदंडकठिनचढाइसिरजटजूटवांधतसोह
क्यौं॥ मरकतसैलपरलरतदामिनिकोटिसोंजुगभुजंगज्यौं॥ कटिकसिनिषंगविसा
लभुजगहिचापविसिषसुधारिकै॥ चितवतमनोंमृगराजप्रभुगजराजघटानिहा
रिकै॥ सो॰॥ आइगयेवगमेलधरधरधावतसुभट॥ जथाविलोकिअकेलवाल
रविहिंघेरतदनुज॥ ४॥ चौ॰॥ घेरतहैनिसिचरसमुदाई॥ दें[illegible]वलेषराई॥ प्र
भुविलोकिसरसकहिंनडारी॥ थकितभईरजनीचरधारी॥ सचिवबोलिबोलेषरदूषन॥
यहकोउनृपवालकनरभूषन॥ नागअसुरसुरनरमुनिजेते॥ देषेजितेहतेहमकेते॥
हमभरिजनमसुनहुसवभाई॥ देषीनहींअसिसुंदरताई॥ जद्यपिभगिनीकीनीकुरूपा॥
वधलायकनहिंपुरुषअनूपा॥ देहुतुरतनिजनारिदुराई॥ जीवतभवनजाहुदोउभाई॥
मोरकहातुमताहिसुनावहु॥ तासुवचनसुनिआतुरआवहु॥ दो॰॥ ५॥ भएकालवससठ
सवजानततनहिंरघुवीर॥ मसकफूंकिमेरुउडतनहु[illegible]मतिधीर॥ चौ॰॥ दू
तनकहारामसनजाई॥ सुनतरामवोलेमुसकाई॥ हमछत्रीमृगयावनकरहीं॥ तुमसेषलमृगषोजत
फिरहीं॥ रिपुवलवंतदेषनहिंडरहीं॥ एकवारकालहुसनलरहीं॥ जद्यपिमनुजदनुज
कुलघालक॥ मुनिपालकषलसालकवालक॥ जौनहोइवलघरफिरिजाहू॥
समरविमुषमैंहतौंनकाहू॥ रनचढिकरियकपटचतुराई॥ रिपुपरकृपापरमकद
राई॥ दूतनजाइतुरतसवकहेऊ॥ सुनिषरदूषनउरअतिदहेऊ॥ छं॰॥ उरदहेउकहे
उकिधरहुधायेविकटभटरजनीचरा॥ सरचापतोमरसक्तिसूलकृपानपरिघपर
सुधरा॥ प्रभुकीन्हिधनुषटंकारप्रथमकठोरघोरभयावहा॥ भयेवधिरव्याकुलजा
तुधाननग्यानतिहिंअवसररहा॥ दो॰॥ सावधानहोइधायेतवजानिसवलआराति॥
लागेवरषनरामपरअस्त्रसस्त्रवहुभांति॥ ४२॥ दो॰॥ तिनकेआयुधतिलसमकरिका
टेरघुवीर॥ तानिसरासनश्रवनलगिपुनिछाडेनिजतीर॥ छं॥ तवचलेवानक
राल॥ फुंकरतजनुवहुव्याल॥ कोप्योसमरश्रीराम॥ चलेविसिषनिसितनिकाम॥
अवलोकिषरतरतीर॥ मुरिचलेनिसिचरवीर॥ एकएककोनसम्भार॥ करेतानभ्रात
पुकार॥ कोउकहैषरकहाकीन॥ सोपुधरनसनलीन्ह॥ जाकेवानअतिहिकराल॥
प्रसआइमानोकाल॥ भयेक्रुधतीनिउभाय॥ जोभाजिरनतेजाय॥ तिहिवधवहमनि
जपानि॥ फिरेमरनमनमहुंठानि॥ आयुधअनेकप्रकार॥ सनमुषतेकरहिंप्रहार॥
रिपुपरमकोपेजानि॥ प्रभुधनुषसरसंधानि॥ छाडेविपुलनाराच॥ लगेक
टनविकटपिसाच॥ उरसीसभुजकरचरन॥ जहंतहंलगेमहिपरन॥ चिकरतलाग
तवान॥ धरपरतकुधरसमान॥ भटकटततनसतषंड॥ पुनिउठतकरिपाषंड॥ नभ
उडतवहुभुजमुंड॥ विनमौलिधावतरुंड॥ षगकंककाकस्रिगाल॥ कटकटहिक
ठिनकराल॥ छं॥ कटकटहिंजंवुकभूतप्रेतपिसाचषपरसंचहीं॥ वेतालवीरकपा
लतालवजायजोगिनिनंचहीं॥ रघुवीरवानप्रचंडषंडहिंभटनकेउरभुजसिरा

रा॰ श्रा॰
५

जहानहापरहिंउविलखहिंधरुधरुहरहिंभयंकरगिरा ॥ दो० ॥ उमाराकनिजप्रभुहिवसपुनि
उनरुरवइभारा ॥ नरनवहहिप्रभुसरलगेविनायोगजपत्राग ॥ छं० ॥ अंतावरीगहिउडत
गीधपिसाचकरगहिधावही ॥ संग्रामपुरवासीमनहुबहुवालगुडीउडावही ॥ मारे
पछारेउरविदारेविपुलभटकहरतपरे ॥ अवलोकनिजदलविकलभटतिसरादिखर
दूषनफिरे ॥ सरसक्तितोमरपरसुसूलकृपानएकहीवारही ॥ करिकोपश्रीरघुवीर
परअगनितनिसाचरडारही ॥ प्रभुनिमिषमहुरिपुसरनिवारिपचारिडारेसायका
दसदसविसिषउरमाझमारेसकलनिसचरनाइका ॥ महिपरतउठिभटभिरतमरत
नकरतमाया ॥ अतिघनी ॥ सुरडरतचौदहसहसप्रेतविलोकि ॥ एककौसलपतीसुर
मुनिसभयप्रभुदेषिमायानाथअतिकौतुककसो ॥ देषहिपरसपररामकरिसंग्राममरि
पुदललरिमस्यो ॥ दो० ॥ रामरामकहितनतजहिपावहिपदनिरवान ॥ करिउपायरिपु
मारेछिनमहुकृपानिधान ॥ दो० ॥ हरषितवरषहिसुमनसुरवाजहिगगननिसान ॥ अस्तु
तिकरिकरिसवचलेसोभितविवुधविमान ॥ ४४ ॥ चौ० ॥ जवरघुनाथसमररिपुजीते
सुरनरमुनिसवकेभयवीते ॥ तवलछिमनसीतहिलैआये ॥ प्रभुपदपरतहरषिउरला
ये ॥ सीताचितवस्याममृदुगाता ॥ परमप्रेमलोचननअघाता ॥ पंचवटीवसिश्रीरघुना
यक ॥ करतचरितसुरमुनिसुषदायक ॥ धुवादेषिषरदूषनकेरा ॥ जायसुपनषाराव
नप्रेरा ॥ वोलीवचनक्रोधकरिभारी ॥ देसकोसकेसुरतिविसारी ॥ करसिपानसोवसि
दिनराती ॥ सुधिनहितवसिरपरआराती ॥ राजनीतिविनुधनविनुधर्मा ॥ हरिहिसम
र्पेविनुसतकरमा ॥ विद्याविनुविवेकउपजाये ॥ श्रमफलपढेकियेअरुपाये ॥ संगते
जतीकुमंत्रतेराजा ॥ मानतेग्यानपानतेलाजा ॥ प्रीतिप्रनयविनुमदतेगुनी ॥ नासहिवे
गिनीतिअसुनी ॥ ४५ ॥ सो० ॥ रिपुरुजपावकपापप्रभुअहिगनियनयेनछोटकरि ॥
असकहिविविधविलापकरिलागीरोदनकरन ॥ दो० ॥ सभामाझव्याकुलपरीव
हुप्रकारकहिरोइ ॥ तोहिजियतदसकंधरमोरिकिअसगतिहोइ ॥ चौ० ॥ सुनतसभास
दउठेअकुलाई ॥ समुझाईगहिवाहउठाई ॥ कहलंकेसकहसिनिजवाता ॥ किहितवना
साकाननिपाता ॥ अवधिनृपतिदसरथकेजाये ॥ पुरषसिंहवनषेलनआये ॥ समु
झिपरीमोहिउनकीकरनी ॥ रहितनिसाचरकरिहैधरनी ॥ जिनकरभुजवलपायदसा
नन ॥ अभयभयेविचरतमुनिकानन ॥ देषतवालककालसमाना ॥ परमधीरधन्वी
गुननाना ॥ अतुलितवलप्रतापदोउभ्राता ॥ षलवधरतसुरमुनिसुषदाता ॥ सो
भाधामरामअसनामा ॥ तिनकेसंगनारिएकस्यामा ॥ सो० ॥ अतिसुकुमारपिया
रपटतरजोगनआहिकोउ ॥ मैननदीवविचारिजहारहैनहासमनकोऊ ॥ चौ० ॥
अजहूजाइदेषतनमनवही ॥ होइहहूविकलतासवसजवही ॥ जीवनमुक्तिलोक
वसताके ॥ दसमुषसुनिसंदरिअसजाके ॥ रूपरासिविधिवामसवारी ॥ रतिसतको
टितासुवलिहारी ॥ तासुअनुजकाटेश्रुतिनासा ॥ सुनितवभगिनिकरहिपरहासा ॥
विनअपराधअसहालहमारी ॥ अपराधीकिमिवचहिसरारी ॥ षरदूषनसुनिलगेपु
कारा ॥ छिनमहुसकलकटकउनमारा ॥ षरदूषनतिसराकरघाता ॥ सुनिदससी
सजरेसवगाता ॥ भयोसोचमननहिविश्रामा ॥ वीतहियलमानहुसतजामा ॥ दो० ॥
सूपनषहिसमझायकरिवलवोलसिवहुभांति ॥ गयोभवनअतिसोचवसनी
दपरीनहीराति ॥ ४६ ॥ चौ० ॥ सुरनरअसुरनागषगमाही ॥ मोरेअनुचरकहकउन
ही ॥ षरदूषनमोहिसमवलवंता ॥ तिनहिकोमारेविनभगवंता ॥ सुररंजनभंज
नमहिभारा ॥ जोभगवंतलीनअवतारा ॥ तौमैजाइवैरहठीकरऊ ॥ प्रभुसरप्रा

नतजेभवतरऊ ॥ होइहिभजनतामसदेहा ॥ मनक्रमवचनमंत्रदृढएहा ॥ जौनररूपभूपसुतको
ऊ ॥ हरिहौनारिजीतिरनदोऊ ॥ चलाअकेलजानचढितहई ॥ वसमारीचसिंधुतटज
हई ॥ रथअनूपजोरेषरचारी ॥ वेगवनतषगजिमिउरगारी ॥ ४७ ॥ छं० ॥ उतारसमसुति
वेगवचनतजाइनही ॥ उपमाकहीसिरषसोभनस्यामवनजनचमरलेतकिरा
ही ॥ अहिभातिलाचनसरितसेलअनेकवधीसोहही ॥ वनवागउपवनवाटिकास
विनगारमनिमनमोहही ॥ दो० ॥ वहुतडागनविविहंगनवोलतविविधिप्रकार
रहिविषआयउसिंधुतटदिषतजोजनविस्तार ॥ ४८ ॥ चौ० ॥ ई ॥ सेदरजीवविविधिविधि
जाती ॥ करहिकलाहलदिनअरुराती ॥ कदहितेगजीहिवनताई ॥ महावलीवलवानि
नजाई ॥ कनककवालसुंदरसुषदाई ॥ वैदेसकलजंतनहिआई ॥ जिहियरश्रियलताव
हलागे ॥ जिहिदेषतमुनिमनअनुरागे ॥ गुहाविविधिविधिविधिरहहिवनाई ॥ वरनन
सारदमतिसकुचाई ॥ ताहीपेजहांतिषिहकरवासा ॥ तहानिसाचरकरहिनिवासा
दसमुषदेषिसकलसकुचाने ॥ जेजरजीवसजीवपराने ॥ देहारामजनसजनगनि
वनाई ॥ सुनहुउमासोकथासुहाई ॥ दो० ॥ लछिमनगयेवनहिजवलेनमूल
फलकंद ॥ जनकसुतासनवोलीउविहसिकृपासुषवृंद ॥ ४९ ॥ चौ० ॥ सुनहुप्रिया
व्रतरुचिरसुसीला ॥ मैकछुकरवललितनरलीला ॥ तुमपावकमहुकरहुनिवासा
जोलगिकरौनिसाचरनासा ॥ जवहिरामसवकथावषानी ॥ प्रभुपदधरिहियअ
नलसमानी ॥ निजप्रतिविंवराषितहसीता ॥ तैसेइसीलरूपसुविनीता ॥ ल
छिमनहूयहमरमनजाना ॥ जोकछुचरितरचाभगवाना ॥ दसमुषगयेजहामा
रीचा ॥ नायमाथस्वारथरतनीचा ॥ नवनिनीचकैअतिदुषदाई ॥ जिमिअंकुसधनु
उरगविलाई ॥ भयदायकषलकेप्रियवानी ॥ जिमिअकालकेकुसुमभवानी ॥ दो० ॥
करिपूजामारीचतवसादरपूछीवात ॥ कवनहेतुमनविग्रहअनसकलआयेहुतात
५० ॥ चौ० ॥ दसमुषसकलकथातिहिआगे ॥ कहीसहितअभिमानअभागे ॥ होहुक
पटमृगतुमछलकारी ॥ जिहिविधिहरिआनौनृपनारी ॥ तिहिपुनिकहासुनहु
दससीसा ॥ तेनररूपचराचरईसा ॥ तासैतातवयरनहिकीजे ॥ मारेमरियजिवा
येजीजे ॥ मुनिमषराषनगयेकुमारा ॥ विनफरसररघुपतिमोहिमारा ॥ सतजोजन
आयोछिनमाही ॥ तिनसनवैरकियेभलनाही ॥ भैममकीटभृंगकीनाई ॥ जहतहमै
देषौदोऊभाई ॥ जोनरतातनदपिअतिसूरा ॥ तिनहिविरोधिनआइहिपूरा ॥ दो० ॥
जिहिताडकासुवाहुहतिषंडेउहरकोदंड ॥ षरदूषनतिसरावधेमनुजकिअसव
लवंड ॥ ५१ ॥ चौ० ॥ जाहुभवनकुलकुसलविचारी ॥ सुनतजरादीनसिवहुगारी ॥ गुरजिमिमूढकरसिम
वोधा ॥ कहुजगमोहिसमानकोजोधा ॥ तवमारीचहृदयअनुमाना ॥ नवहिविरोधेन
हिकल्याना ॥ सस्त्रीमरमीप्रभुसठधनी ॥ वैदवंदिकविमानसगुनी ॥ उभयभांतिदे
षानिजमरना ॥ तवताकिसिरघुनायकसरना ॥ उतरदेतमोहिवधवअभागे ॥ कस
नमरौरघुपतिसरलागे ॥ असजियजानिदसाननसंगा ॥ चलोरामपदप्रेमअभंगा ॥
मनअतिहरषजनावनतेही ॥ आजदेषिहौंपरमसनेही ॥ छं० ॥ निजपरमप्रीत
मदेषिलोचनसुफलकरिसुषपाइहौ ॥ सियसहितअनुजसमेतकृपानिकेतपदम
नलाइहौ ॥ निर्वानदायककोपजाकरभगतिअवसहिवसकरी ॥ निजपानिसर
संधानिसोमोहिवधिहिसुषसागरहरी ॥ दो० ॥ ममपाछेधरधावतधरेसरासनवा
न ॥ फिरिफिरिप्रभुहिविलोकिहौंधन्यनमोसमआन ॥ चौ० ॥ सीतालषनसहितर
घुराई ॥ जिहिवनवसहिमुनिनसुषदाई ॥ तिहिवननिकटदसाननगयऊ ॥ तवमारी

रा॰अ॰
८

चकपटम्रगमयऊ। अतिविचित्रकछुवरनिनजाई। कनकदेहमनिरचितवनाई। सीतापर
मरुचिरम्रगदेषा। अंगअंगसमनोहरवेषा। सुनहुदेवरघुवीरकृपाला। एहिम्रगकरअ
तिसुंदरछाला। सत्यसंधप्रभुवधिकरिएही। आनहुचरमकहतवैदेही। तवरघुपति
जानतसवकारन। उठेहरषिसुरकाजसवारन। म्रगविलोककटिपरिकरवांधा। क
रतलचापरुचिरसरसांधा। प्रभुलछिमनहिकहासमझाई। फिरतविपिननिसिचरव
हुभाई। सीताकेरिकरहुरषवारी। वुधिविवेकवलसमयविचारी। दो। असकहि
चलेतहाप्रभुजहाकपटम्रगनीच। हरषविसमयविवुधजिमिवानककवरषावीच
चौ।१। प्रभुविलोकिचलाम्रगभाजी। धायेरामसरासनसाजी। निगमनेतिसिवध्यान
नपावा। मायाम्रगपाछेसोधावा। कवहुनिकटपुनिदूरिपराई। कवहुकप्रगटैकव
हुछपाई। प्रगटतदुरतकरतछलभूरी। यहविधिप्रभुहिगयोलैदूरी। तवतकिरामक
ठिनसरमारा। धरनिपरेउकरिघोरपुकारा। लछिमनकरप्रथमहिलेनामा। पाछेसु
मिरिसिमनहीमहुरामा। प्रानतजतप्रगटेसिनिजदेही। सुमिरिसिरामसमेतविदेही
अंतरप्रेमतासुपहिचाना। मुनिदुर्लभगतिदीनसुजाना।५१। दो। विपुलसुमनसुर
वरषहिगावहिप्रभुगुनगाथ। निजपददीनअसुरकहुदीनवंधुरघुनाथ। चौ।१।
खलवधितुरतफिरेरघुवीरा। सोहचापकरकटितूनीरा। आरतिगिरासुनीजवसीता। कहि
लछिमनसनपरमसभीता। जाहुवेगिसंकटअतिभ्राता। लछिमनविहसिकहासुन
माता। भ्रकुटिविलासस्रष्टिलयहोई। सपनेहुसंकटपरैकिसोई। सोपिगयेमोहिरघुपति
थाती। जौंनजाउतोषनहीछाती। इहिविधिजाविसुनहुममाता। एछनकहव
कवनमेवाता। मरमवचनजवसीतावोला। हरिप्रेरितलछिमनमनडोला। वहुदिसि
देषविचारअहासावारवारनाउपदसीसा। वनदिसिदेवसौंपिसवकाहू। चलेजहारा
वनससिराहू। चितवहिलषनसियहिफिरिकैसे। तजतवछनिजमातहिजैसे।४४।
दो। एकरवतउररामकेहुसरसीयपरकेलि। लषनतेजहुहनभयोजिमिडाहीदववे
लि। चौ।१। सूनवीचदसकंधरदेषा। आवानिकटजतीकेवेषा। जाकेडरसुरअसुरअ
डराही। निसिननीददिनअन्ननषाही। सोदससीसस्वानकीनाई। इतउतचितैच
लाभंडहाई। इमकुपंथपगदेतषगेसा। रहनतेजतनवुधिवललेसा। करिअनेकविधिछ
लचतुराई। आगेभीषदसाननजाई। अतिथजानसियकंदमूलफल। देनलगीतिहि
कीनवहुविछल। कहदनुपसुनिसुंदरिवानी। वांधीभीषनलेउसयानी। विधिगनवा
मकालकदिनाई। रेषिनांघेसियवाहरिआई।४५। दो। विश्वभरनिअवदलदलनिक
रनिसकलसुरकाज। जानानहितिहिसमैमहिदससीसकपटकेसाज। चौ।१। नाना
विधिकहिकथासुहाई। राजनीतिभयप्रीतिदेषाई। कसीतासुनजननीगुसाई। वेलेहु
वचनदुष्टकीनाई। तवरावननिजरूपदिषावा। भईसभैजवनामसुनावा। कहसीता
धरिधीरजगाढा। आयगयेप्रभुषलरहुठाढा। जिमिहरिवधूहिछुद्रससचाहा।
भयसिकालवसनिसिचरनाहा। वायसकरवरषगयतिसमता। सिंधुसमानहोइकि
मिलसरिता। षरकिहोइसुरधेनुसमाना। जाहुभवननिजसुनिअज्ञाना। सुनतव
चनदससीसलजाना। मनमहुचरनवंदिसुषमाना। दो। क्रोधवंततवरावन
लीन्हसिरथवैठाइ। चलागगनपथआतुरभयरथहाकिनजाइ। चौ।१। हाजगएकवी
ररघुराया। किहिअपराधविसारउदाया। आरतहरनसरनसुषदायक। हारघुकु
लसरोजदिननायक। हालछिमनतुम्हारनहीदोसा। सोफलपायेउकीन्होरोसा
केकेईमनजोकछुरहेऊ। सोविधिआजमोहिदुषदयऊ। पंचवटीकेषगम्रगजा
ती। दुषीभयेजलचरवहुभांती। विविधिविलापकरतवैदेही। भूरिकृपाप्रभुदूर

रसनेही। विपतिमोरिकोप्रभुहिसुनावा। पुरोडासचहरासभषावा। सीताकेविला
पसुनभारी। भयेचराचरजीवदुषारी। दो। वहुविधिकरतविलापजातगगनसियदेषि
तदससीस। डरतनषलपरपायमनमोदीनोमनदूल। चौ।१। गीधराजसुनिआर
तवानी। रघुकुलतिलकनारिपहिचानी। अधमनिसाचरलीनेजाई। जिमिमले
छवसकपिलागाई। अहहप्रथममनतनममवलनाही। तदपिजाइदेषौवलना
ही। सीतेपुत्रिकरहिजिनित्रासा। करिहौंजातुधानकरनासा। धावाक्रोधवं
तषगकैसै। छोटैपविपर्वतकहुजैसे। रेरेदुष्टठाढकिनहोई। निरभयचलेसि
नजानेमोही। आवतदेषिक्रितांतसमाना। फिरिदसकंधरकरअनुमाना। हैमै
नाककैषगपतिहोई। ममवलजानसहितपतिसोई। जानाजरठजटाउयेहा
ममकरतीरथछांडिहिदेहा। दो। ममभुजवलनहिजानतआवततपनसहाय
समरचढेतोइहिहतोजीयतननिजघरजाय। चौ।१। सुनतगीधक्रोधातुरधावा
कहसुनुरावनमोरसिषावा। तजिजानकिहिकुसलघरजाहू। नाहितअसहो
यहीवहुवाहू। रामक्रोधपावकअतिघोरा। होइहिसलभसकलकुलतोरा। उ
तरुनदेतदसाननजोधा। तवहिगीधधावाकरिक्रोधा। धरिकचविरथकीन्हम
हिगिरा। सीतहिराखिगीधपुनिफिरा। दसमुषउरविहतसरसंधाना। गीधघाय
काटेउधनुवाना। चोचनमारिविदारिसिदेही। दंडएकभईमूर्छातेही।४८। दो।
जिहवाहनतिजिवलकीयेसनिगननिहिसकरेस। तिहिरावनसनसमरव्रति
धीरवीरगीधेस। चौ।१। सचेतभयेउपुनिसोइविधावा। मारेगीधसनमुषनहिआ
वा। कीन्हसिवहुजवजुधषगेसा। थकितभयोतवजरठषगेसा। तवसक्रोधनि
सिचरषिसियाना। काढेसिपरमकरालक्रिपाना। काटेसिपंषपराषगधरनी। सु
मिररामकरिअदभुतकरनी। मनहुगीधपरमसुषमाना। रामकाजममलागउ
प्राना। सीतहिजानचढाववहोरी। चलाउताइलत्रासनथोरी। करतविलापजा
ततनभसीता। व्याधविवसजनुम्रगीसभीता। गिरिपरवैठेकपिननिहारी। कहिहरि
नामदीनपटडारी। एहिविधिसीतहिसोलैगयेऊ। वनअसोकमेराषतभयेऊ। दो
हारिपराषलवहुविधिभयअरुप्रीतिदिषाइ। तवअसोकपादपतरराषिसिज
तनकराई। चौ।१। इहाविधातामनुअनुमाना। सुरपतिवोलमंत्रअसठाना। ता
तमनुकतनयाहिजाहू। सुधिनपावजिमिनिसिचरनाहू। असकहिविधिसुंदरहवि
आनी। सोपिवहुरिवोलेमृदुवानी। इहिभछनकरतकुधानपाना। वरषसहसलह
संसयनासा। सोप्रसादलेआयसपाई। चल्योहृदयसुमिरनरघुराई। कछुवासव
मायानिजमोई। अछकरदेगएलहसोई। तदपिउरजसीतापहिआयउ। करिप्रना
मतेहिनामसुनायउ। निजजानसुरेससुजाना। पिताजेनकदशरथसममाना
करिपरितोषहरिकरसोका। हविषषाइगयउनिजलोका। दो। जिहिविधि
कपटकुरंगसंगधायचलेश्रीराम। सोकुविसीताराषिउररटतरहतहरिनाम
चौ।१। रघुपतिअनुजहिआवतदेषी। वाहिजचिंताकीन्हिविसेषी। जनकसुता
परिहरिहिअकेली। आयहुतातवचनममपेली। निसिचरनिकरफिरतवनमाही
मनममसीताआश्रमनाही। अहहतातभलकीनहुनाही। सीयविनाममजी
वननाही। इहतेकवनविपतवडभाई। षोयउसीयकाननहिआई। गहिपदक
मलअनुजकरिजोरी। कहेउनाथकछुमोहिनषोरी। अनुजसमेतगयेप्रभुता
ही। गोदावरीतटआश्रमजाही। आश्रमदेषिजानकीहीना। भयेविकलजसप्रा
कृतदीना।५१। दो। कोलनदहेउसागरवचककछकसीताम। रावननिसिविक्ररतम
येउडुववीनेवारेनाम। चौ।१। परदुषहरनसोकदुषनाही। भाविषादति

नहमनमाही ॥ हागुनषानिजानकीसीता ॥ रूपसीलव्रतनेमपुनीता ॥ लछमनसमुझाये
बहुभाती ॥ पूछतचलेलतातरुपाती ॥ हेषगमृगहेमधुकरश्रेनी ॥ तुमदेषीसीतामृगनै
नी ॥ षंजनसुककपोतमृगमीना ॥ मधुपनिकरकोकिलाप्रवीना ॥ कुंदकलीदाडिम
दामिनी ॥ कमलसरदससिअहिभामिनी ॥ वरनपाससमनोजधनुहंसा ॥ गजकेहरि
निजसुनतप्रसंसा ॥ श्रीफलकनककदलिहरषाही ॥ नेकुनसंकसकुचमनमाही
सुनजानकीतोहिविनआजू ॥ हरषेसकलपाइजनुराजू ॥ किमिसहिजातअनषतो
हिपाही ॥ प्रियावेगिप्रगटसिकनाई ॥ २७ ॥ दो ॥ फनिमनिहीनदीनजिमिमीनसीननजि
मिवारि ॥ तिमिव्याकुलभयेलषमनरघुवरदसानिहारि ॥ चौ ॥ धरिउरधीररघुराव
हिरामहि ॥ नजहिनसोकअधिकसबथामहि ॥ एहिविधिषोजतविलपतस्वामी ॥ मनोम
हाविरहीअतिकामी ॥ पूरनकामरामसुषरासी ॥ मनुजचरितकरअजअविनासी ॥ स
रवरश्रमितनदीगिरिषोहा ॥ वहुविधिलषनरामतहजोहा ॥ सोचहृदयकछुकहि
नहिआवा ॥ हृदयधनुषसरआगेपावा ॥ कहुकहुसेनितदेषीयकैसे ॥ सावनजलवा
उववरजैसे ॥ कहतरामलछमनहितुकाई ॥ काहुकीन्हअपयशहिवाई ॥ आगेपरा
गीधपतिदेषा ॥ सुमिरतरामचरनमनरेषा ॥ २८ ॥ दो ॥ करसरोजसिरपरसिउकृपासि
धुरघुवीर ॥ निरषिरामछविधाममुषविगतभईसबपीर ॥ चौ ॥ तबकहिगीधव
चनधरधीरा ॥ सुनहुरामभंजनभवभीरा ॥ नाथदसाननयहगतिकीनी ॥ तिहि
षलजनकसुताहरिलीनी ॥ लेदछनदिसिगयेउगुसाई ॥ विलपतअतिकुररीकी
नाई ॥ दरसलागिप्रभुराषेउप्राना ॥ चलनचहतअवकृपानिधाना ॥ रामकहातनुरा
षहुताता ॥ मुषमुसकायकहीतिहिवाता ॥ जाकरनाममरतमुषआवा ॥ अधमउ
मुकुतहोइश्रुतिगावा ॥ सोममलोचनगोचरआगे ॥ राषोदेहनाथकिहिलागे ॥ जलभरिनै
नकहहिरघुराई ॥ तातकर्मनिजतेगतिपाई ॥ परहितवसैजिनकेमनमाही ॥ तिनको
जगदुर्लभकछुनाही ॥ तनुतजितातजाहुममधामा ॥ देहुकहातुमपूरनकामा ॥ २९ ॥
दो ॥ सीताहरनतातजनिकहहुपितासनजाइ ॥ जोमेरामतोकुलसहितकहि
हैदसाननआइ ॥ चौ ॥ गीधदेहतजिधरिहरिरूपा ॥ भूषनवहुपटपीतअनूपा ॥ स्याम
गातविसालभुजचारी ॥ अस्तुतिकरतनयनभरिवारी ॥ ३० ॥ छं ॥ जयरामरूपअनूप
निरगुनसगुनगुनप्रेरकसही ॥ दससीसबाहुप्रचंडषंडनचंडसरमंडनमही ॥ पाथो
दगातसरोजमुषराजीवआयतलोचनं ॥ नितनोमिरामकृपालवाहुविसाल
भवभयमोचनं ॥ वलमप्रमेयमनादिमजमव्यक्तमेकमगोचरं ॥ गोविंदगोपरद्वंदु
हरविग्यानघनधरनीधरं ॥ जेराममंत्रजपंतसंतअनंतजनमनरंजनं ॥ नितनोमि
रामअकामप्रियकामादिषलदलगंजनं ॥ जिहिश्रुतिनिरंजनब्रह्मव्यापकविर
जअजकहिगावहीगावही ॥ करिध्यानग्यानविरागजोगअनेकमुनिजिहिपाव
ही ॥ सोप्रगटकरुनाकंदसोभावृंदअगजगमोहई ॥ ममहृदयपंकजभृंगअंगअन
गवहुछविसोहई ॥ जोअगमसुगमसुभावनिर्मलअसमसमसीतलसदा ॥ पस्य
तिजोगीजतनकरिकरतमनगोवससदा ॥ सोरामरमानिवाससंततदासवसत्रि
भवनधनी ॥ ममउरवसहुसोसमनसंसृतिजासुकीरतिपावनही ॥ ३१ ॥ दो ॥ अ
विरलभगतिजोमागिवरगीधगयोहरिधाम ॥ तिहिकीक्रियाजथोचितनिज
करकीनीराम ॥ चौ ॥ कोमलचितअतिदीनदयाला ॥ कारनविनुरघुनाथकृ
पाला ॥ गीधअधमषगआमिषभोगी ॥ गतिदीनोजोजाचतजोगी ॥ सुनहुउमाते
लोगअभागी ॥ हरितजहोहिविषैअनरागी ॥ पुनसीतहिषोजतदोउभाई ॥ चलेवि
लोकितवनवहुताई ॥ संकुललताविटपघनकानन ॥ वहुषगमृगतहगजपंचा
नन ॥ आवतपंथकवंधनिपाता ॥ तिहिसवकहीश्रापकेवाता ॥ दुरवासामोहिदी

नीश्रापा ॥ प्रभुपदपेषिमिटासोपापा ॥ सुनुगंधर्वकहोमैतोही ॥ मोहिनसोहाइब्र
ह्मकुलद्रोही ॥ ३२ ॥ दो ॥ मनवचक्रमकपटतजिजोकरभूसुरसेव ॥ मोहिसमेत
विरंचिसिववसताकेसवदेव ॥ चौ ॥ १ ॥ सापतताडतपरुषकहंता ॥ विप्रपूजियअ
सगावहिसंता ॥ पूजियविप्रसीलगुनहीना ॥ सूद्रनगुनगनग्यानप्रवीना ॥ तुहें
येनइहीयसनिभाई ॥ साधुरामभीतुहनभाई ॥ वचनलोचनरतिलहइकपाली ॥ मह
हिंतनासववचनमतिलाली ॥ जोजहवारहस्वानविकानागतिहियपरिवुधनकर
हिअनुरागा ॥ कहिनिजधर्मताहिसमझावा ॥ निजपदप्रीतिदेषिमनभावा ॥ र
घुपतिचरनकमलसिरनाई ॥ गयोगगनआपनिगतिपाई ॥ ताहिदेइगतिरामउ
दारा ॥ सिवरीकेआश्रमपगुधारा ॥ सिवरीदेषिरामग्रहआये ॥ मुनिकेवचनसमु
झिजियेभाये ॥ सरसिजलोचनवाहुविसाला ॥ जटामुकटसिरउरवनमाला ॥ स्यामगौ
रसुंदरदोउभाई ॥ सवरीपरीचरनलपटाई ॥ प्रेममगनमुषवचननआवा ॥ पुनिपुनि
पदसरोजसिरनावा ॥ सादरजललेचरनपषारे ॥ पुनिसुंदरआसनवैठारे ॥ ३३ ॥
दो ॥ कंदमूलफलसुरसअतिदियेरामकहुआनि ॥ प्रेमसहितप्रभुषायेहिवारं
वारववानि ॥ चौ ॥ पानिजोरिआगेभईठाढी ॥ प्रभुहिविलोकिप्रीतिअतिवा
ढी ॥ किहिविधिअस्तुतिकरोतुम्हारी ॥ अधमजातिमैजडमतिभारी ॥ अधमतेअधम
अधमअतिनारी ॥ तिनमहमैमतिमंदअघारी ॥ कहरघुपतिसुनिभामिनिवाता ॥ मनों
एकभगतिकरनाता ॥ जातिपांतिकुलधर्मवडाई ॥ धनवलपरिजनगुनचतुराई ॥
भगतिहीननरसोहेकैसा ॥ विनजलवारिददेषियजैसा ॥ नवधाभगतिकहोंतो
हिपाही ॥ सावधानसुनुधरुमनमाही ॥ प्रथमभगतिसंतनकरसंगा ॥ दूसरिरति
ममकथाप्रसंगा ॥ ३४ ॥ दो ॥ गुरपदपंकजसेवातीसरिभगतिअमान ॥ चौथिभग
तिममगुनगनकरैकपटतजिगान ॥ चौ ॥ मंत्रजापममद्रढविस्वासा ॥ पंचम
भजनसोवेदप्रकासा ॥ छठिदमसीलविरतिवहुकर्मा ॥ निरतनिरंतरसज्जन
धर्मा ॥ सातवसममोहिमयजगदेषा ॥ मोतेसंतअधिककरिलेषा ॥ आठवजथाला
भसंतोषा ॥ सपनेहुनहिदेषेपरदोषा ॥ नवमीसरलसवसनछलहीना ॥ म
मभरोसहियहरषदीना ॥ नवमहएकोजिनकेहोई ॥ नारिपुरषसचराचरकोई ॥
सोइअतिसयप्रियभामिनिमोरे ॥ सकलप्रकारभगतिदृढतोरे ॥ जोगिवृंददुर्ल
भगतिजोई ॥ तोकहुआजुसुलभभईसोई ॥ ममदरसनफलपरमअनूपा ॥ जीव
पावनिजसहजसरूपा ॥ दो ॥ सवप्रकारनवभागवड ॥ ममचरननिअनुरागउ
नवमहिमानिहिउरवसहिनासुपरमजगभाग ॥ चौ ॥ वचनसुनसवरीहरषानी
श्रुतिअनुरागगहेपदपानी ॥ तनमनवचनहरषककुपाई ॥ पुनिवोलेप्रभुगिरासु
हाई ॥ जनकसुताकिसुधिभावनी ॥ जानहिकहुकरिवरगावनी ॥ पंपासरहिजा
हुरघुराई ॥ मुनिवरविपुलरहेजहाकाई ॥ रिषिमनरामहिमागनभारी ॥ जीवच
राचररहेसुषारी ॥ वैरनकरकहूसनकोऊ ॥ जासनवैरप्रीतिकरिसोऊ ॥ सिषरसु
हावनकानन ॥ फूलेषगमृगजीवजंतुअनुकूले ॥ करकुसुमफलाश्रमसवकरजाई
तहाहोइहिसुग्रीवमिताई ॥ सोसवकहहिदेवरघुवीरा ॥ जाननहोपरवहुमतिधी
रा ॥ वारवारप्रभुपदसिरनाई ॥ प्रेमसहितसवकथासुनाई ॥ ३५ ॥ छं ॥ कहिकथा
सकलविलोकिहरिमुषहृदयपदपंकजधरे ॥ तजिजोगपावकदेहहरिपदलीन
भईजहनहिफिरे ॥ नरविविधकर्मअधर्मवहुमतिसोकप्रदसवत्यागहू ॥ विस्वा
सकरकहदासतुलसीरामपदअनुरागहू ॥ दो ॥ जातिहीनअघजनममहिमुक्ति
कीन्हअसिनारि ॥ महामंदमनसुषचहसिऐसेप्रभुहिविसारि ॥ चौ ॥ चलेरामत्या

गावनसोऊ॥ अतलितवलनरकेहरिदोऊ॥ विरहीइवप्रभुकरतविषादा॥ कहतकथा
अनेकसंवादा॥ लछिमनदेषुविपिनकीसोभा॥ देषतकेहिकरमननहिछोभा॥
नारिसहितसवषगम्रगवृंदा॥ मानहुमोरिकरतहहिनिंदाहमहिदेषिम्रगनिकर
पराही॥ म्रगीकहैतुमकहुभयनाही॥ तुमअनंदकरहुम्रगजाये॥ कंचनम्रगषो
जनयेआये॥ संगलाइकरिनीकरिलेही॥ मानहुमोहिसिषावनदेही॥ सास्त्रसुचिं
तितपुनिपुनिदेषिय॥ भूपसुसेवितवसनहिलेषिय॥ राषियनारिजदपिउर
माही॥ जुवतीसास्त्रन्रपतिवसिनाही॥ देषोतातवसंतसुहावा॥ प्रियाहीनमोहि
भयउपजावा॥ २२ दो॥ विरहविकलवलहीनमोहिजानसिनिपटअकेल॥ सहि
तविपिनमधुकरषगमदनकीन्हवगमेल॥ दो॥ देषिगयोभ्रातासहिततासु
दूतसुनिवात॥ डेराकीन्हामनहुतवकटकहटकिमनजात॥ चौ॥ ॥ विटपविसा
ललताअरुझानी॥ विविधवितानदियेजनुतानी॥ कदलीतालवरधुजापताका
देषिनमोहधीरमनजाका॥ विविधभातिफूलेतरुनाना॥ जनुवानैतवनेवहु
वाना कहुकहुसुंदरविटपसुहाये॥ जनुभटविलगविलगहोइछाये॥ कूजतपिक
मानहुगजमाते॥ ढेकमहोषऊटविसराते॥ मोरचकोरकीरवरवाजी॥ पाराव
तमरालसवताजी॥ तीतरलावकपदचरजूथा॥ वरननजाइमनोजवरूथा॥
रथगिरिसिलादुंदुभीझरना॥ चातकवंदीगुनगनवरना॥ मधुकरमुषरभेरि
सहनाई॥ त्रिविधिवयारिवसीठीआई॥ चतुरंगनीसेनसंगलीन्हे॥ विचरतसव
हिचुनौतीदीन्हे॥ लछमनदेषतकामअनीका॥ रहहिधीरतिनकेजगलीका॥
इहिकेएकपरमवलनारी॥ तिहितेउवरसुभटसोइभारी॥ २३ दोहा॥ ताततीन
अतिप्रवलषलकामक्रोधअरुलोभ॥ मुनिविज्ञानधाममनकरहिनिमि
षमहिछोभ॥ दो॥ लोभकेइछादंभवलकामकेकेवलनारि॥ क्रोधकेपरु
षवचनवलमुनिवरकहहिविचारि॥ चौ॥ ॥ गुनातीतसचराचरस्वामी॥ रा
मउमासवअंतरजामी॥ कामिनिकैदीनतादिषाई॥ धीरनकेमनविरतिव
ढाई॥ क्रोधमनोजलोभमदमाया॥ छूटहिसकलरामकीदाया॥ सोनरइंद्र
जालनहीभूला॥ जापरहैसोनटअनुकूला॥ उमाकहोमैअनुभवअपना॥ सत
हरिभजनजगतसवसपना॥ पुनिप्रभुगयेसरोवरतीरा॥ पंपानामसुभगगं
भीरा॥ संतहृदयजसनिर्मलवारी॥ वांधेघाटमनोहरचारी॥ तहतहपिवहिविवि
धिम्रगनीरा॥ जनुउदारग्रहजाचकभीरा॥ २४ दो॥ पुरइनिसघनओटजल
वेगिनपाइयमरम॥ मायाछन्ननदेषियजैसेनिर्गुनब्रह्म॥ दो॥ सुषीमीन
सवएकरसअतिअगाधजलमाहि॥ जथाधर्मसीलन्हकेदिनसुषसंजुत
जाहि॥ चौ॥ ॥ विकसेसरसिजनानारंगा॥ मधुरमुषरगुंजतवहुभृंगा॥ वोल
तजलकुकटकलहंसा॥ प्रभुविलोकिजनुकरतप्रसंसा॥ चक्रवाकवगषग
समुदाई॥ देषतवनैवरनिनहिजाई॥ सुंदरषगगनगिरासुहाई॥ जातपथिकज
नुलेतवुलाई॥ तालसमीपमुनिनग्रहछाये॥ चहुदिसिकाननविटपसुहाये॥
चंपकवकुलकदंवतमाला॥ पाटलपनसपलासरसाला॥ नवपल्लवकुसुमि
ततरुनाना॥ चंचरीकपटलीकरिगाना॥ सीतलमंदसुगंधसुभाउ॥ संततवहै
मनोहरवाऊ॥ कहूकहूकोकिलाधुनिकरही॥ सुनिरवसरसध्यानमुनिटरही॥
२५ दो॥ फलभारननयरहेविटपसवरहेभूमिनियराइ॥ उपगारीपुरषजिमिन
वहिसुसंपतिपाइ॥ चौ॥ ॥ देषिरामअतिरुचिरतलावा॥ मंजनकीन्हपरमसुष
पावा॥ देषीसुंदरतरुवरछाया॥ वैठेअनुजसहितरघुराया॥ तहपुनिसकलदेव

मुनिआये॥ स्तुतिकरिनिजधामसिधाये॥ वैठेपरमप्रसंनकृपाला॥ कहतअनुजस
नकथारसाला॥ विरहवंतभगवंतहिदेषी॥ नारदमनभासोचविसेषी॥ मोरसा
पकरिअंगीकारा॥ सहितराममनानादुषभारा॥ ऐसेप्रभुहिविलोकोजाई॥ पुनिन
वनेअसअवसरआई॥ यहविचारनारदकरवीना॥ गयेजहाप्रभुसुषआसी
ना॥ गावतरामचरितम्रदवानी॥ प्रेमसहितवहुभांतिवषानी॥ करतदंडवत
लियेउठाई॥ राषेवहुतवारउरलाई॥ स्वागतपूछिनिकटवैठारे॥ लछिमनसा
दरचरनपषारे॥ २६ दो॥ नानाविधिविनतीकरिप्रभुप्रसंनजियजानि॥ नार
दवोलेवचनतवजोरिसरोरुहपानि॥ चौ॥ ॥ सुनहुपरमउदाररघुनायक॥
सुंदरअगमसुगमवरदायक॥ देहुएकवरमागोस्वामी॥ जदपिजानतअंतर
जामी॥ जानहुमुनितुममोरसुभाऊ॥ जनसनकवहुकिकरोदुराऊ॥ कवनव
स्तुअसिप्रियमोहिलागी॥ जोमुनिवरनसकहुतुममागी॥ जनकोकछुअदे
यनहिमोरे॥ असविस्वासतजहुजिनिभोरे॥ तवनारदवोलेहरषाई॥ असवर
मागोकरोढिठाई॥ जदपिप्रभुकेनामअनेका॥ श्रुतिकहिअधिकएकतेएका॥
रामसकलनामनितेअधिका॥ होहिनाथअघषगगनवधिका॥ २७ दो॥
राकारजनीभगतितवरामनामसोइसोम॥ अपरनामउडगनविमलवसहु
भगतिउरव्योम॥ दो॥ एवमस्तुमुनिसनकह्योकृपासिंधुरघुनाथ॥ तवनारद
मनहरषअतिप्रभुपदनायोमाथ॥ चौ॥ ॥ अतिप्रसंनरघुनाथहिजानी॥ पुनि
नारदवोलेम्रदुवानी॥ रामजवहिप्रेरिहुनिजमाया॥ मोहेहुमोहिसुनहुरघु
राया॥ तवविवाहमैचाहोकीन्हा॥ प्रभुकिहिकारनकरननदीन्हा॥ सुनिमु
नितोहिकहौसहरोसा॥ भजहिमोहितजिआनभरोसा॥ करौसदातिनकी
रषवारी॥ जिमिवालकहिराषमहतारी॥ गहहिसिसुवछअनलअहिधाई॥ त
हाराषजननीअरुगाई॥ प्रोढभयेतिहिसुतपरमाता॥ प्रीतिकरहिनहिपाछि
लवाता॥ मोरेप्रोढतनयसमज्ञानी॥ वालकसुतसमदासअमानी॥ जनहि
मोरवलनिजवलताही॥ दुहुकहुकामक्रोधरिपुआही॥ यहविचारिपंडितमो
हिभजही॥ पायेहुज्ञानभगतिनहीतजही॥ २८ दो॥ कामक्रोधलोभादिमदप्र
वलमोहकेधारि॥ तिनमहअतिदारुणदुषदमायारूपीनारि॥ चौ॥ ॥ सु
निमुनिकहपुरानश्रुतिसंता॥ मोहविपिनिकहुनारिवसंता॥ जपतपनेम
जलाश्रयकारी॥ होयग्रीषमसोकैसवनारी॥ कामक्रोधमदमत्सरभेका॥ इ
नहिहरषप्रदवरषाएका॥ दुर्वासनाकुमदसमुदाई॥ तिनकहुसदासरदसुषदा
ई॥ धर्मसकलसरसीरुहवृंदा॥ होइहिमतिनहिदैतउषमंदा॥ पुनिममताज
वासवहुताई॥ पुलहइनारिसिसिररितुपाई॥ पापउलूकनिकरसुषकारी॥
नारिनिविडरजनीअंधियारी॥ वुधिवलसीलसत्यसवमीना॥ वनसीसम
त्रियकहहिप्रवीना॥ २९ दो॥ अवगुनमूलसूलप्रदप्रमदासवदुषषानि॥
तातेकीननिवारनमुनिमैयहजीयजानि॥ चौ॥ ॥ सुनिरघुपतिकेवचनसु
हाये॥ मुनितनपुलकिनैनभरिआये॥ कहहुकवनप्रभकैअसिरीती॥ से
वकपरिममताअरुप्रीती॥ जेनभजहिअसप्रभुभ्रमत्यागी॥ ग्यानरंकनरमंद
अभागी॥ पुनिसादरवोलेमुनिनारद॥ सुनहुरामविज्ञानविसारद॥ संतनके
लछिनरघुवीरा॥ कहहुनाथभवभंजनभीरा॥ सुनमुनिसंतनकेगुनकहहू॥
जातेमैउनकेवसरहहू॥ षटविकारजितअनघअकामा॥ अचलअकिंचन
सुचिसुषधामा॥ अमितवोधअनीहमितिभोगी॥ सत्यसारकविकोविदजोगी

आ॰रा॰
५५

गी॥सावधानमानमदहीना॥धीरभगतिपथपरमप्रवीना॥८॥दो॰॥गुनआगा
रसंसारदुषरहितविगतसंदेह॥तजिममचरनसरोजप्रियतिनकहिंदेहनगेह॥दो॥
दृ॥निजगुनश्रवनसुनतसकुचाहीं॥परगुनसुनतअधिकहरषाहीं॥समसीतलन
हित्यागहिंनीती॥सरलसुभावसबहिसनप्रीती॥जपतपव्रतदमसंजमनेमा॥गु
रुगोविंदविप्रपदप्रेमा॥श्रधाछिमामैत्रीदाया॥मुदितामपदप्रीतिअमाया॥
विरतिविवेकविनयविज्ञाना॥बोधजथारथवेदपुराना॥दंभमानमदकरहिंनका
ऊ॥भूलिनदेहिंकुमारगपाऊ॥गावहिंसुनहिंसदाममलीला॥हेतुरहितपरहितरतसीला
मुनिसुनुसाधुनकेगुनजेते॥कहिनसकहिंसारदश्रुतितेते॥२॥छं॥कहिसक
नसारदसेषनारदसुनतपदपंकजगहे॥असदीनबंधुकृपालअपनेभगतगु
नविजमुषकहे॥सिरनायवारहिंवारचरननिब्रह्मपुरनारदगये॥तेधन्यतुलसी
दासआसविहायजेहरिरंगरये॥१॥दो॰॥रावनारिजसुपावनगावहिंसुनहिंजे
लोग॥रामभगतिदृढपावहिंविनविरागजपजोग॥दो॥२॥दीपसिषासमजोव
तीतनमनजनिहोहिपतंग॥भजहिंरामतजिकाममदकरहिंसदासतसंग
सो॰॥४॥कारीनागिनिनारिग्रस्योसकलसंसारजिनि॥सोपोसोचविचारिह
विसरनेकोऊकवखो॥४॥इतिश्रीरामचरितमानसेसकलकलिकलुषविध्वंस
नेविमलवैराग्यसंपादनोनामतृतीयःसोपानः॥३॥ [illegible]
शुभम॥ ॥ [illegible]॥ राम राम राम राम राम राम राम॥ ॥
श्रीगणेशायनमः॥ कुंदेंदीवरसुंदरावतिबलौविज्ञानधामावुभौ॥सोभा
ढ्यौवरधन्विनौश्रुतिनुतौगोविप्रवृंदप्रियौ॥मायामानुषरूपिणौरघुवरौसद्धर्म
वर्मौहितौ सीतान्वेषणतत्परौपथिगतौभक्तिप्रदौतौहिनः॥१॥ब्रह्मांभोधिसमु
द्भवंकलिमलप्रध्वंसनंचाव्ययं॥श्रीमच्छंभुमुखेंदुसुंदरवरेसंसोभितंसर्वदा॥सं
सारामयभेषजंसुखकरंश्रीजानकीजीवनं॥धन्यास्तेकृतिनःपिवंतिसततंश्री
रामनामामृतं॥२॥सो॰॥मुकतिजनममहिजानि॥ग्यानखानिअघहानिक
र॥जहँवससंभुभवानिसोकासीसेइयकसन॥१॥जरतसकलसुरवृंद॥वि
षमगरलजेहिपानकिय॥तिहिनभजसिमतिमंद॥कोकृपालसंकरसरिस॥२॥
चौ॰॥१॥आगेचलेबहुरिरघुराया॥रिष्यमूकपरवतनियराया॥तहँरहसचिवसहि
तसुग्रीवा॥आवतदेषिअतुलबलसींवा॥अतिसभीतकहसुनुहनुमाना॥पुरुषु
जुगलबलरूपनिधाना॥धरिवटुरूपदेषितेंजाई॥कहुसुजानजियसैनबुझाई
पठएवालिहोहिंमनमैला॥भागोंतुरततजोंयहसैला॥विप्ररूपधरिकपि
तहाँगयऊ॥माथनायपूछतअसभयऊ॥कोतुमस्यामलगौरसरीरा॥क्षत्रीरूप
फिरहुवनवीरा॥कठिनभूमिकोमलपदगामी॥कवनहेतुवनविचरहुस्वामी
मृदुलमनोहरसुंदरगाता॥सहतदुसहवनआतपवाता॥कीतुम्हतीनदेवमहँ
कोऊ॥नरनारायनकीतुम्हदोऊ॥दो॰॥जगकारनतारनभवभंजनधरनीभार
कीतुम्हअषिलभुवनपतिलीन्हमनुजअवतार॥१॥चौ॰॥२॥हसिबोलेरघुवंसकु
मारा॥विधिकेअंककोमेटनहारा॥कोसलेसदसरथकेजाये॥हमपितुवचन
मानिवनआये॥रामनामलछिमनदोउभाई॥संगनारिसुकुमारिसुहाई॥इहाँ
हरीनिसिचरवैदेही॥विप्रफिरहिंहमषोजततेही॥आपनचरितकहाहमगाई
कहहुविप्रनिजकथावुझाई॥प्रभुपहिचानिपरेउगहिचरना॥सोसुषउमाजा
यनहिंवरना॥पुलकिततनमुषआवनवचना॥देषतरुचिरवेषकैरचना॥पुनि
धीरजधरिअस्तुतिकीन्ही॥हरषहृदयनिजनाथहिचीन्ही॥मोरन्यावमैंपूछा

साई॥तुमपूछहुकसनरकीनाई॥तवमायावसफिरौंभुलाना॥तातेमैंनहिंप्रभुपहि
चाना॥दो॥१॥एकमैंमंदमोहवस॥कुटिलहृदयअग्यान॥पुनिप्रभुमोहिविसारेउदीनवं
धुभगवान॥२॥चौ॥१॥जदपिनाथवहुअवगुनमोरे॥सेवकप्रभुहिपरैजनिभोरे॥
नाथजीवतवमायामोहा॥सोनिस्तरैतुम्हारेहिंछोहा॥तापरमैंरघुवीरदुहाई॥जा
नौंनहिंकछुभजनउपाई॥सेवकसुतपतिमातभरोसे॥रहैअसोचवनैप्रभुपोसे॥अस
कहिपरेउचरनलपटाई॥निजतनुप्रगटप्रीतिउरछाई॥तवरघुपतिउठाइउरला
वा॥निजलोचनजलसिंचिजुडावा॥सुनुकपिजियमानसिजनिऊना॥तैंममप्रि
यलछिमनतेंदूना॥समदरसीमोहिकहसबकोई॥सेवकप्रियअनन्यगतिसोई॥दो
हा॥सोअनन्यजाकेअसमति॥नितहिरहैहनुमंत॥मैंसेवकसचराचररूपस्वामि
भगवंत॥३॥चौ॥२॥देषिपवनसुतपतिअनुकूला॥हृदयहरषवीतीसबसूला॥ना
थसैलपरकपिपतिरहई॥सोसुग्रीवदासतवअहई॥तेहिसननाथमैत्रीकीजे॥दी
नजानितेहिअभैकरीजे॥सोसीताकरषोजकराई॥जहँतहँमरकटकोटिपठाई
एहिविधिसकलकथासमुझाई॥लीयदोउजनपीठिचढाई॥जवसुग्रीवरामक
हुदेषा॥अतिसैजनमधन्यकरिलेषा॥सादरमिलेउनाइपदमाथा॥भेंटेउअनुजस
हितरघुनाथा॥कपिकरमनविचारएहिरीती॥करिहहिंविधिमोसनएप्रीती॥दो॰॥त
वहनुमंतउभैदिसि॥कीसवकथासुनाइ॥पावकसाषीदेइकरि॥जोरीप्रीतिदृढाइ
॥४॥चौ॥३॥कीनप्रीतिकछुवीचनराषा॥लछिमनरामचरितसभभाषा॥कहसुग्री
वनैनभरिवारी॥मिलहहिनाथमिथुलसकुमारी॥मंत्रिनसहितइहाँएकवारा॥वै
ठिरहेउँमैंकरतविचारा॥गगनपंथदेषीमैंजाता॥परवसपरीवहुतविलपाता॥राम
रामहारामपुकारी॥हमहिदेषिदीनेउपटडारी॥मागारामतुरततिहिदीना॥पटउर
लाइसोचअतिकीना॥कहसुग्रीवसुनहुरघुवीरा॥तजहुसोचमनआनहुधीरा॥स
भप्रकारकरिहौंसेवकाई॥जिहिविधिमिलहिजानकीआई॥दो॥सषावचनसुनि
हरषेउकृपासिंधुवलसींव॥कारनकवनवसहुवनमोहिकहहुसुग्रीव॥५॥चौ॥४॥ना
थवालिअरुमैंदोउभाई॥प्रीतिरहीकछुवरनिनजाई॥मयसुतमायावितेहिनाऊ॥आवा
सोप्रभुहमरेगाऊ॥अर्धरातिपुरद्वारपुकारा॥वालीरिपुवलसहैनपारा॥धावावा
लिदेषिसोभागा॥मैंपुनिगयउवंधुसँगलागा॥गिरिवरगुहापैठिसोजाई॥तववालिमो
हिकहावुझाई॥परषेहुमोहिएकपषवारा॥नहिंआवौंतवजानेहुमारा॥मासकहिभी
नरिपवैजाई॥विविधिभाँतितहाभईलराई॥मासदिवसतहाँरहेउँषरारी॥निसरीरुधिर
धारतहाँभारी॥मैंतवनिजमनकिनविचारा॥वलवलदनजवालिकहुमारा॥वालिह
त्योमोहिमारहिआई॥सिलादेयतवचलेउपराई॥मंत्रिनपुरदेषाविनसाई॥दीन्हेमो
हिराजवरिआई॥वालीताहिमारिग्रहआवा॥मोहिदेषिजियभेदवढावा॥रिपुसममो
हिमारसिअतिभारी॥हरिलीनसीसरवसअरुनारी॥ताकेभयरघुवीरकृपाला॥सक
लभुवनमैंफिरेउविहाला॥इहाँश्रापवसआवतनाही॥तदपिसभीतरहौंमनमाही
अवप्रभुभयपवइआगहमारे॥देषचरनसरोजतुम्हारे॥सुनिसेवकदुषदीनदयाला
फरकिउठीदोउभुजाविसाला॥दो॥सुनिसुग्रीवमैमारिहौंवालिएकहिवान॥ब्रह्मरु
द्रसरनागतगएनउवरहिंप्रान॥६॥चौ॥५॥जेनमित्रदुषहोहिंदुषारी॥तिनहिविलो
कतपातकभारी॥निजदुषगिरिसमरजकरिजाना॥मित्रकदुषरजमेरुसमाना॥
जिनकेअसमतिसहजनआई॥तेसठहठिकितकरहिंमिताई॥कुपथनिवारिसुपं
थचलावा॥गुनप्रगटेअवगुननहिंदुरावा॥देतलेतमनसंकनधरही॥वलअनुमान
सदाहितकरही॥विपतिकालकरसतगुननेहा॥श्रुतिकहसंतमित्रगुनएहा॥आगे

रा॰किं॰
१०

करहमृदुवचनवनाई॥ पाछेंअनहितमनकुटिलाई॥ जाकरचितअहिगतिसमभाई॥ अस
कुमित्रपरिहरिहियभलाई॥ दो॰॥ मित्रमित्रसप्रीतिकरिहियआनमुषआन॥ जाकेमनव
चप्रेमहियदुर्वेनइरायजाने॥ ७॥ चौ॰॥ १॥ सेवकसठनृपकृपनकुनारी॥ कपटीमित्रसू
लसमचारी॥ सषासोचत्यागहुवलमोरे॥ सवविधिकरवकाजमेतोरे॥ कहेसुग्रीव
सुनहुरघुवीरा॥ वालिमहावलअतिरनधीरा॥ दुंदुभिअस्थितालदिषराए॥ विनुप्रया
सरघुवीरढहाये॥ देषिअमितवलवाढीप्रीती॥ वालिवधनकीभइपरतीती॥ वार
वारनावइपदसीसा॥ प्रभुहिजानिमनहरषकपीसा॥ उपजाज्ञानवचनतववोला॥
नाथकृपामनभएउअडोला॥ सुषसंपतिपरिवारवडाई॥ सभपरिहरिकरिहौ
सेवकाई॥ एसवरामभक्तिकेवाधक॥ कहहिसंततवपदअवराधक॥ सत्रुमि
त्रसुषदुषजगमाही॥ मायाकृतपरमारथनाही॥ वालिपरमहितजासुप्रसादा॥
मिलेहुरामतुम्हसमनविषादा॥ सुपनेजिहसनहोइलराई॥ जागेसमुझतमनसकुचा
ई॥ अवप्रभुकृपाकरहुयहिभाती॥ सभतजिभजनकरौदिनराती॥ दो॰॥ भक्तिदेहुअ
नपायनीकृपासिंधुरघुनाथ॥ अवनहिचाहिराजपदअसकहिनाएउमाथ॥ ८॥ चौ
पाई॥ सुनिविरागसंजुतकपिवानी॥ वोलेविहसिरामधनुपानी॥ जोकछुकहेउस
त्यसवसोई॥ सषावचनममम्रषानहोई॥ नटमरकटइवसभहिनचावत॥ रामष
गेसवेदअसगावत॥ लैसुग्रीवसंगरघुनाथा॥ चलेचापसायकधरिहाथा॥ तव
रघुपतिसुग्रीवपठावा॥ गरजेसिजाइनिकटवलपावा॥ सुनतवालिक्रोधातुरधावा॥
गहिकरचरननारिसमुझावा॥ सुनिपतिजिनहिमिलेउसुग्रीवा॥ तेदोउवंधुतेजवल
सींवा॥ कोसलेससुतलछिमनरामा॥ कालहुजीतिनसकसंग्रामा॥ सोरघुवीरस
टैमहिआनो॥ ममताछाडिकहाममानो॥ दो॰॥ कहावालिसुनिभीरुप्रिया॥ समद
रसीरघुनाथ॥ जौकदाचिमोहिमारिहे तोउनिहोउसनाथ॥ ९॥ चौ॰॥ १॥ असकहि
चलामहाअभिमानी॥ त्रिनसमानिसुग्रीवहिजानी॥ वालिदेषिसुग्रीवहिधावा॥
रदेकोपपुनिवहुविधिवादा॥ भीरेउभैवालीअतितरजा॥ मुष्टिकामारिमहाधुनिग
रजा॥ तवसुग्रीवविकलहोइभागा॥ मुष्टिप्रहारवज्रसमलागा॥ मैजोकहारघुवी
रकृपाला॥ वंधुनहोइमोरयहकाला॥ एकरूपतुम्हभ्रातादोऊ॥ तेहिभ्रमतेंनहिमारेउ
सोऊ॥ करपरसासुग्रीवसरीरा॥ तनभाकुलिसगैसभपीरा॥ मेलीकंठसुमनकी
माला॥ पठवापुनिवलदेइविसाला॥ पुनिनानाविधिभईलराई॥ विटपओटदेषहि
रघुराई॥ दो॰॥ वहुछलवलसुग्रीवकरिहियहाराभयमानि॥ मारावालीरामतवहृदे
माहिसरतानि॥ १०॥ चौ॰॥ १॥ पराविकलमहीसरकेलागे॥ पुनिउठवैठदेषिप्रभुआगे॥
स्यामगातसिरजटावनाई॥ अरुननयनसरचापचढाई॥ पुनिपुनिचितवचरनचितदी
ना॥ सुफलजनममानाप्रभुचीना॥ हृदेप्रीतिमुषवचनकठोरा॥ वोलेउचितेरामकी
ओरा॥ धरमहेतुअवतरेउगुसांई॥ मारेहुमोहिव्याधकीनाई॥ मैवैरीसुग्रीवपियारा॥
अवगुनकवननाथमोहिमारा॥ सुनिअवकहतेकीनकुकरमा॥ परिहरिलोकवेद
करपरमा॥ अनुजवधूभगिनीसुतनारी॥ सुनिसठकन्यासमएचारी॥ इन्हहिकुदृष्टि
विलोकहिजोई॥ ताहिवधेकछुपापनहोई॥ मूढतोहिअतिसैअभिमाना॥ नारिसिषा
वनिकरसिनकाना॥ ममभुजवलआश्रिततिहिजानी॥ माराचहसिअधमअभि
मानी॥ दो॰॥ सुनहुरामस्वामीसनचलनचातुरीमोर॥ प्रभुअजहूमैपापकीअंत
कालगतितोर॥ ११॥ चौ॰॥ १॥ सुनतरामअतिकोमलवानी॥ वालिसीसपरसेउनिजपा
नी॥ अचलकरौतनुराषहुप्राना॥ वालिकहासुनिकृपानिधाना॥ जनमजनममु
निजतनकराही॥ अंतरामकहिआवतनाही॥ जासुनामवलसंकरकासी॥ देतसभ

हिसमगतिअविनासी॥ ममलोचनगोचरसोइआवा॥ वहुरिकिप्रभुअसवनिहिवनावा॥ सु
नहुनाथविनतीएकमोरी॥ अस्तुतिकरौकवनविधितोरी॥ छं॰॥ १॥ सोनयनगोचरजासुगु
ननितनेतिकहिश्रुतिगावही॥ जितपवनमनगोनिरसकेमुनिध्यानकवहुकपा
वही॥ मोहिजानिअतिअभिमानवसिप्रभुकहेउराषिसरीरही॥ असकवनसठहठि
काटिसुरतरुवारिकरहिववूरही॥ अवनाथकरिकरुनाविलोकहुदेहुवरमा
गहौ॥ जेहिजोनिजनमोकरमवसितहरामपदअनुरागहौ॥ यहतनयममस
मविनयवलकल्यानप्रदप्रभुलीजिये॥ गहिवाहसुरनरनाहआपनदासअंगदकी
जिये॥ दो॰॥ रामचरनदृढप्रीतिकरि॥ वालिकीनतनत्याग॥ सुमनमालजिमिकंठते
गिरतनजानहिनाग॥ ११॥ चौ॰॥ १॥ रामवालिनिजधामपठावा॥ नगरलोगसवव्या
कुलधावा॥ नानाविधिविलापकरतारा॥ छूटेकेसनदेहसंभारा॥ पुनिपुनितासुसीस
उरधरही॥ वदनविलोकिदुदैमहुरही॥ मैपतिनमहिवहुतसमुझावा॥ कालविव
सिकछुमनहिनआवा॥ अंगदकंकछुकेहरनपावा॥ वीचहिसरउरप्रानपठावा॥ तारा
विकलदेषिरघुराया॥ दीन्हज्ञानहरिलीनीमाया॥ छितिजलपावकगगनसमीरा॥ पं
चरचितअतिअधमसरीरा॥ प्रगटसोतनतवआगेसोवा॥ जीवनित्यकिहिकारनरोवा॥
उपजाज्ञानचरनतवलागी॥ लीनसीपरमभगतिवरमागी॥ उमादारुजोषितकीनाई॥
सवहीनचावतरामगुसांई॥ तवसुग्रीवहिआयसुदीना॥ मृतककरमविधिवतसभकी
ना॥ रामकहाअनुजहिसमुझाई॥ राजुदेहुसुग्रीवहिजाई॥ रघुवरचरननाइकरिमाथा॥ च
लेअनुजसुकंठहिसाथा॥ दो॰॥ लछिमनतुरतवुलायेउपुरजनविप्रसमाज॥ राज
दीनसुग्रीवकहुअंगदकोंजुवराज॥ १२॥ चौ॰॥ १॥ उमारामसमहितजगमाही॥ गुरुपि
तुमातुमातवंधुसुतनाही॥ सुरनरमुनिसभकैयहरीती॥ स्वारथलागिकरहिसभ
प्रीती॥ वालित्रासव्याकुलदिनराती॥ तनवहुव्रनचिंताजरछाती॥ सोईसुग्रीवकीन
कपिराऊ॥ अतिकृपालरघुवीरसुभाऊ॥ जानतहोअसप्रभुपरिहरही॥ काहेनवि
पतिजालनरपरही॥ पुनिसुग्रीवहिलीनवुलाई॥ वहुप्रकारनृपनीतिसिषाई॥ कह
प्रभुसुनिसुग्रीवहरीसा॥ पुरनजाउदसचारिवरीसा॥ गतग्रीषमवरषारितुआई॥
रहिहोनिकटसैलपरछाई॥ अंगदसहितकरहुतुमराजू॥ संततहृदैधरहुममका
जू॥ जवसुग्रीवभवनफिरिआये॥ रामप्रवरषणगिरिपछाये॥ दो॰॥ प्रथमहिदेवनगि
रगुहाराषीरुचिरवनाई॥ रामकृपानिधिकछुकदिनवासकरिहेआइ॥ १३॥ चौ
पाई॥ सुंदरवनकुसुमितअतिसोभा॥ गुंजतमधुपनिकरमधुलोभा॥ कंदमूलफ
लपत्रसुहाये॥ भएवहुतजवतेप्रभुआये॥ देषिमनोहरसैलअनूपा॥ रहेतहांअनुज
सहितसुरभूपा॥ मधुकरषगमृगतनुधरिदेवा॥ करहिसिधमुनिप्रभुकीसेवा॥ मं
गलरूपभयोवनजवते॥ कीननिवासरमापतिजवते॥ फटकसिलाअतिसुभ्रसु
हाई॥ तहआसीनतहादेउभाई॥ कहतअनुजसनकथाअनेका॥ भगतिविर
तिनृपनीतिविवेका॥ वरषाकालमेघनभछाये॥ गरजतलागतपरमसुहा
ये॥ दो॰॥ लछिमनदेषहुमोरगननाचतवारिदपेषि॥ ग्रहिविरतिरतहरषजसवि
ष्णुभगतकहुदेषि॥ १४॥ चौ॰॥ १॥ घनघमंडनभगरजतघोरा॥ प्रियाहीनडरपतमनमो
रा॥ दामनिदमकिरहतघनमाही॥ षलकीप्रीतिजथाथिरनाही॥ वरषहिजलदभू
मिनियराये॥ जथानवहिवुधविद्यापाये॥ वूंदअघातसहेगिरकैसे॥ षलकेवचनस
तसहेजैसे॥ छुद्रनदीभरिचलीतुराई॥ जसथोरेधनषलइतराई॥ भूमिपरतभाढा
वरपानी॥ जनुजीवहिमायालपटानी॥ सिमिटसिमिटजलभरेतलावा॥ जिमिस
दगुनसजनपहिआई॥ दो॰॥ हरितभूमित्रिणसंकुलसमुझिपरेनहिपंथ॥ जिमि
पाषंडविवादतेगुपतभयसद्ग्रंथ॥ १५॥ चौ॰॥ १॥ दादुरधुनिचहुदिसासुहाई॥ वेदप

दहिजनुवटुसमुदाई। नवपल्लवभैविटपअनेका। साधकमनजसमिलेविवेका। अर्कजवासु
पातविनुभयऊ। जससुराजखलउद्यमगयऊ। षोजतकतहुमिलैनहिधूरी। करैक्रोधजि
मिधरमहिदूरी। ससिसंपन्नसोहमहिकैसी। उपकारीकीसंपतिजैसी। निसितमघनषद्यो
तविराजा। जनुदंभिनकरमिलासमाजा। महावृष्टिचलीफूटिकियारी। जिमिसुतंत्रभ
येविगरहिनारी। कृषीनिरावहिचतुरकिसाना। जिमिबुधतजहिमोहमदमाना। दे
षीयतचक्रवाकषगनाही। कलहिपाइजिमिधरमपराही। ऊसरवरषैतृननहिजा
मा। जिमिहरिजनहियउपजनकामा। विविधजंतुसंकुलमहिभ्राजा। प्रजावाढजि
मिपाइसुराजा। जहतहरहेपथिकथकिनाना। जिमिइंद्रीगनउपजेग्याना। दो०। क
वहुप्रवलमारुतवहे जहतहमेघविलाइ। जिमिकपूतकेउपजे कुलसद्धरमनसाहि। १
कवहुदिवसमहनिविडतम कवहुकप्रगटपतंग। उपजैविनसैग्यानजिमि पायकुसंग
सुसंग। १५। चो०। वरषाविगतसरदरितुआई। लछिमनदेषहुपरमसुहाई। फूलेकासु
सकलमहिछाई। जनुवरषाकृतप्रगटवुढाई। उदितअगस्तिपंथजलसोषा। जिमिलो
भहिसोषहिसंतोषा। सरितासरनिरमलजलसोहा। संतहृदैजसगतमदमोहा। रसि
रसिसूषसरितसरपानी। ममतात्यागकरहिजिमिग्यानी। जानिसरदरितुषंजनआ
ये। पाइसमैजिमिसुकृतसुहाये। पंकनरेनसोहअसधरनी। नीतिनिपुननृपकेजसि
करनी। जलसंकोचविकलभइमीना। अवुधकुटंविजिमिधनहीना। विनुघननिरमल
सोहअकासा। हरिजनइवपरिहरिसभआसा। कहुकहुवृष्टिसारदीथोरी। कोउक
पावभगतिजिमिमोरी। दो०। चलेहरषितजिनगरनृप तापसवनिकभिषारि। जिमि
हरिभगतिपाइश्रम तजहिआश्रमचारि। १६। चो०। सुषीमीनजेनीरअगाधा
जिमिहरिसरणनएकोवाधा। फूलेकमलसोहसरकैसे। निरगुनब्रह्मसगुनभा
येजैसे। गुंजतमधुकरमुषरअनूपा। सुंदरषगरवनानारूपा। चक्रवाकमनदुषनिसि
पेषी। जिमिदुरजनपरसंपतिदेषी। चातिकरटततृषाअतिओही। जिमिसुषलहै
नसंकरद्रोही। सरदातपनिसिससिअपहरही। संतदरसजिमिपातकटरही। दे
षनइंदुचकोरसमुदाई। चितवहिजिमिहरिजनहरिपाई। मसकदंसवीतेहिमत्रा
सा। जिमिद्विजद्रोहकीयेकुलनासा। दो०। भूमिजीवसंकुलरहेगयेसरदरितुपाइ।
सतगुरमिलेजाहिजिमिसंसयभ्रमसमुदाइ। १७। चो०। वरषागतनिरमलरितुआ
ई। सुधिनलीनतातसीताकीपाई। एकवारकैसेहुसुधिजानौ। कालहुजीतिनिमषम
हुआनौ। कतहुरहौजोजीवतहोई। तातजतनकरिआनौसोई। सुग्रीवहुसुधिमो
रिविसारी। पावाराजकोसपुरनारी। जिहिसायकमारामैवाली। तिहिसरहतौ
मूढकहुकाली। जासुकृपाछूटहिमदमोहा। ताकहुउमाकिसपनेकोहा। जानहि
यहचरितमुनिग्यानी। जिनरघुवीरचरनरतिमानी। लछिमनक्रोधवंतप्रभुजा
ना। धनुषचढाइगहेकरवाना। दो०। तवअनुजहिसमुझावारघुपतिकरुणा
सीव। भयदिषाइलेआवहुतातसषासुग्रीव। १८। चो०। इहापवनसुतहृदैविचा
रा। रामकाजसुग्रीवविसारा। निकटजाइचरननसिरनावा। चारिहुविधितिहि
कहसमुझावा। सुनिसुग्रीवपरमभयमाना। विषैमोरहरिलीनेउग्याना। अवमारु
तसुतदूतसमूहा। पठवहुजहतहवानरजूहा। कहहुपाषमहआवनजोई। मो
रेकरताकरवधहोई। तवहनुमंतवुलायेदूता। सवकरकरिसनमानवहु
ता। भयअरुप्रीतिनीतिदिषराई। चलेसकलचरननसिरनाई। अरुप्रसंगसुनिस
वलसमदउ। गिरकंदरावोलेइसववदर। सुनिप्रतिवचनवोलेनजवराजा। वि
नहनुमंतहोदिनहिकाजा। जानतहैहिगिरिकेरसागार। चतुरविविधवुधिव
लआगर। केसरीपुत्रपवनकोअंसा। पक्षवड्नाथनकेरइप्रसंसा। तवसुग्रीवसा

रुतहेकारा। रामकाजजनितलावहुवारा। पतिअनुजायरिसीससलाया। मारुतसुत
तिपूरवदिसिआये। सुनिहनुमंतमिलनसवआवही। नाथनाथअवचलनसुनावै
ही। कारजकवनकीनअसभारी। तसुकिसकेधावतिअधिकारी। सुमनाथकर
कारजहोई। नाथसीसपरिमानिहैसोई। सुनिकपिकहाजनलावहुवारा। रामहि
वालिलछुअनजहेकारा। भ्रातरजाहुविलेवनलावहु। परउकाजभारीमनुभाव
हु। सुनतवचनसभचलेतुरंता। जयेसुग्रीवकहिरामानिपहुंता। दो०। असीला
षअहसानलयकपिदलपवरवंद। नभमारगकरदेनचले। नामरावलकुंवर। २।
चौ०। ई। पवपनाहितरहेउहनुमाना। रोहतपरवतजायनिराना। दुवपरसनमस
ववानजनाइ। चलावीरकदलीवनआई। गजसनकहासुनहोराजा। पासद
विनसुग्रीवहिकाजा। निजदलसंगलाइसमलेहु। धीरजतारापतिकहुदेहु। अ
लेहिनाथकहिसभउविचलेउ। वसुधाहलीसेसकलिमलेउ। यमसानदलआ
सीकरोरा। चलेउउरपसजगामयउअघोरा। हनुमतवहुविहविसापरभावा। या
वरसनवलवीरवुलावा। नीलनलाषदससाविहजारा। पवनपुत्रकहकीन्हजहा
रा। कारजहोइसुआयसदीजे। इननाथअवकिहितागिकरिजे। आयसहोइसो
वनमकाजा। कुसलआहिकिसकेदाराजा। कपिपतिरघुपतिकथासुनाई।
चलेउपवनसुतविदाकराई। इथमाल्यपरवतनियाराता। कहतसिषईकीन
पयाना। ऋषभकोटिवनचरलेसाथा। करियरिनामचलेकपिनाथा। हनुमत
अंजनीपरवतआवा। कुमुदनामकपिसवुलावा। पंचसातअरुलाषसन्यासी
धायउवीरमहावलरासी। गगनपंथजैरामकहंता। आयउनीलगिरीहनुम
ता। नहासुनीलरासिकपिभारी। भानिपुत्रवुधिवलअधिकारी। मारुतसुत
कपिसवनहकावा। मेघनादगरजतकपिधावा। अरवुदचारिवारसतकारा
समरसवीरसभसुभटजकारा। गहेविरक्षआयुधवनचारी। वलतमयजेराम
प्रकारी। पवनपुत्रउतरदिसिराषेउ। वटकेआश्रमपरसितभरोउ। भ्रातुरगंधमा
दनपरचलेउ। जलजतताराहेषिसवचलेउ। दो०। गदकटाछकहिमिलेउपुनि
वहुप्रकारसमकाई। माघनाथअनतिकरनचलेवीरहरखाइ। १९। चौ०। हनुमत
अस्तरनगिरपरआवा। तारवीररहितातेहिगावा। नामसुषेनमहावलवं
ता। वुधिवलतेजसमरथवंता। समाचारसुनितिहिसुनावा। चलिहनुमंतसमेर
हिआवा। कनककवरनदीपनसमकाया। नेत्रलालवड्सोनसुहाया। पवनप्रसं
गगगनपरसितजे। एकसेंरोककालसमगरजेउ। वेलगरसीलपरल्याये। मान
हुमत्तवायनऋषसुहाये। एकएकसनवचनसुनावा। हनुमतचरनसीसतिननना
वा। कायाकष्टकीनकिहिकाहा। अहैकुसलपंपापुरराजा। कपितिहिसमाचा
रसभभाषा। चलेदरसकारनअभिलाषा। दो०। दसकरोरिनवलाषवरवीसस
हससनसेक। चलेउकेसरीसंगलेकरतचरितअनेक। २०। चौ०। ताकहविदाकी
नहनुमाना। महारुद्रकैलासहिआवना। कपिवलसीषलिदतेहिनाऊ। रष
वारअलकाफुरीगाऊ। महातेजवलरुद्रगमकाया। परमवतरजानतवहुमा
या। सुनिसुतनाहिमारुतसुतआवा। लेसंगसेनसीसुनिहिनावा। एकाकवन
काजअहेनाथा। दीनहुचरसमेभयउसनाथा। नृपसुग्रीवकेनअसपरधाना। अस
देववेगिहनुमाना। कहपवनसुतविलमनलावहु। लेनिजसेनपंपापुरजाव
हु। जेनवविजेवंधुअतिवली। सजिदलचलेभेदनीहली। सीहिसवदकरिलेगरू
इवाये। दरसआइहसकलउविधाये। रहेउनकोउपवनसुतप्रेरे। मेनागिरहेमा

राकिं
२२

वचन हेरे ॥ प्रेम सहित कपि सकल बुलाए ॥ आसपाल नाकर तन पगाए ॥ अंगद नाम महावल की
सा ॥ चलेउ राम लछिमन जहाँ ईसा ॥ नाहि विदा करि पवनकुमारा ॥ विंध्याचल पर सव
दल वारा ॥ नाम वसंत महावलवाना ॥ ले निज दस कपि निकट वुलाना ॥ जोरे हाथ
हकीगति पाई ॥ चला लै सेन धरा अकुलाई ॥ वारह कोटि तीन से वानर ॥ चले सकुल
नागे गिरि कंदर ॥ अनुमन विरज गिरल षघाना ॥ रन सषवानर आइ तुलाना ॥ इद
की लके वनन रघ जेते ॥ हनुमत चरन गहे सम तेते ॥ आव पयोद सम दह सथहा
सी ॥ चले सकल जहाँ हरि अविनासी ॥ रामकाज हनुमत हिय धारी ॥ कस्यप पय
रवन जाय पुकारी ॥ नाम मयंद महावल वीरा ॥ तेजपुंज अति दुरगम सरीरा ॥ एक सवि
कोविद नवर लेला था पवनकुमार हि नाएउ माथा ॥ कवन काज प्रभु मोहि क
हे जै ॥ काया कूप आइ कस कीजै ॥ कहा पवनसुत जानहु तोही ॥ पन्यभार दीद
रघन भामो ही ॥ कर हनुमान हरम महावलसीवा ॥ वोलेउ वेगि तुम्हे सुग्रीवा ॥ दो० ॥
सुनत नमयंद अतिगरजे उफलंगि सउ अकास ॥ अट्टहास गंभीर करि सेन वुलाइ
उपासि ॥ २४ ॥ चौ० ॥ तीजी सम सेना उरलानी ॥ थाकि तम यु दिगपाल भवानी
अतरच ले रागानि करि क्वाहीं ॥ उठेउ ले गरपतंग रवि षाहीं ॥ एक नील दल तीस
करोरा ॥ धावत ऐ करउ कवर जोरा ॥ जै जै सुवद करत वल रुदाया ॥ देवन हाघ पेट
महि चापा ॥ रामसरूप हिय महं भुना ॥ करि दल विदा चले हनुमाना ॥ रसनाज
पन राम को नामा ॥ पवलसुत गिरहि कीन परिनामा ॥ इत्थ नाम वानर व उजोधा
ताहि वुलाइ दीन्ह वहु वोधा ॥ आवलाय सन वार गनाई ॥ संग सैन पथ पुर जाई
हनुमत उदयागिरि पर आवा ॥ कपष कुमर वानर जेहि वावा ॥ परवस सेन संग ले
धाये ॥ पद्म कोटि वानर ले आये ॥ विरछ सैल वन भूमि सुहाई ॥ जहाँ तहाँ रहे वनि
चरस मभाई ॥ सवद किलक अकास पर तरकहीं ॥ वन सर सैल थरहि हहि रहरष
ही ॥ दो० ॥ रामकाज कपि पवनसुत आएउ जहाँ सुग्रीव ॥ मिलेउ हरषि अस्तुति
करी पन्यवलसीव ॥ स्याम लाल भूमर पवल हरि नपीत सवुवरन हाथ जोरि
सम वाव भय सीस नाइ सव चरन ॥ चौ० ॥ तेहि अवसर लछिमन उर आए
कोप देखि जहाँ तहाँ कपि धाए ॥ दो० ॥ पनष चढा कहा नव जारि करो पुर छार ॥ व्याकुल
देषि नगर नव आएउ वालि कुमार ॥ २५ ॥ चौ० ॥ चरन नाइ सिर विनती कीन्ही ॥ लछिम
न अभै वाँह तिहि दीन्ही ॥ कोपवंत लछिमन सुनि काना ॥ कहि कपिस अतिभय अकुला
ना ॥ सुनि हनुमंत संग ले तारा ॥ करि विनती समुझाव कुमारा ॥ ताराम हित जाइ हनु
माना ॥ चरज विंद प्रभु सुजस वषाना ॥ करि विनती मंदिर ले आये ॥ चरन पषारि पलं
ग वैठाये ॥ तव कपीस चरनन सिर नावा ॥ गहि भुज लछिमन कंठ लगावा ॥ नाथ विषै
सम मद कछु नाहीं ॥ मुनि मन मोह करे छिन माहीं ॥ सुनत विनीत वचन सुष पा
वा ॥ लछिमन तेहि वहु विधि समुझावा ॥ पवन तै सव कथा सुनाई ॥ जिहि विधि गए
दूत समुदाई ॥ दो० ॥ हरषि चले सुग्रीव तव अंगदादि कपि साथ ॥ रामानुज आगे
किय आये जहाँ रघुनाथ ॥ २६ ॥ चौ० ॥ नाइ चरन सिर कह कर जोरी ॥ नाथ न कछु मोहि
नहि षोरी ॥ अतिसै प्रवल देव तव माया ॥ छूटहि राम करो जो दाया ॥ विषय वस्य सुर
नर मुनि स्वामी ॥ मैं पावर पसु कपि अतिकामी ॥ नारि नैन सर जाहि न लागा ॥ घोर
मोह तम निसि सो जागा ॥ लोभ पासि जेहि गर नवधावा ॥ सो नर तम समान रघु
राया ॥ यह गुन साधन ते नहि होई ॥ तुम्हरी कृपा पाव कोइ कोई ॥ तव रघुपति वोले
मुसकाई ॥ तुम्ह प्रिय मोहि भरत जिमि भाई ॥ अव सोइ जतन करो मन लाई ॥
जिहि विधि सीता की सुधि पाई ॥ दो० ॥ एहि विधि होत वतकहि आये वानर जूथ ॥ ना

नावरन सकल दिसि देषिय कीस वरूथ ॥ २७ ॥ चौ० ॥ वानर कटक उमा मैं देषा ॥ सो
मूरष जो करन चह लेषा ॥ आइ राम पद नावहि माथा ॥ निरषि वदन सव होहि सना
था ॥ अस कपि एक न सेना माहीं ॥ राम कुसल जेहि पूछी नाहीं ॥ यह कछु नहि
प्रभु कै अधिकाई ॥ विस्वरूप व्यापक जग माहीं ॥ ठाढे जहँ तहँ आयसु पाई ॥ कह सु
ग्रीव सवहि समुझाई ॥ राम काज अरु मोर निहोरा ॥ वानर जूथ जाहु च
हुँ ओरा ॥ जनकसुता कहुँ षोजहु जाई ॥ मास दिवस महँ आवहु भाई ॥ अवधि मे
टि जो विनु सुधि पाये ॥ आवहि सो नहि मोहि सुहाये ॥ दो० ॥ वचन सुनत सव वा
नर जहँ तहँ चले तुरंत ॥ तव सुग्रीव वुलायउ अंगद नल हनुमंत ॥ २८ ॥ चौ० ॥
सुनहु नील अंगद हनुमाना ॥ जामवंत मतिधीर सुजाना ॥ सकल सुभट मि
लि दछिन जाहू ॥ सीता सुधि पूछेहु सव काहू ॥ मन क्रम वचन सो जतन विचा
रहु ॥ श्रीरामचंद के काज सवारहु ॥ भानु पीठि सेइय उर आगी ॥ स्वामिहि सर्व
भाव छल त्यागी ॥ तजि माया सेइय परलोका ॥ मिटहि सकल भव संभव सोका
देह धरे कर यह फल भाई ॥ भजिय राम सव काम विहाई ॥ सोइ गुनग्य सोइ वड
भागी ॥ जो रघुवीर चरन अनुरागी ॥ आयसु मागि चरन सिर नाई ॥ चले हरषि
सुमिरत रघुराई ॥ पाछे पवन तनय सिर नावा ॥ जानि काज प्रभु निकट वुलावा ॥ प
रसा सीस सरोरुह पानी ॥ करमुद्रिका दीन्ह जन जानी ॥ वहु प्रकार सीतहि सम
झायहु ॥ कहेउ वीर वेगि तुम आयहु ॥ हनुमत जन्म सुफल करि जाना ॥ चलेउ हृ
दै धरि कृपानिधाना ॥ जद्यपि प्रभु जानत सव वाता ॥ राजनीति राषत सुरत्राता
दो० ॥ चले सकल वन षोजत सरिता सर वन षोह ॥ रामकाज लैलीन मन वि
सरा तन कर छोह ॥ २९ ॥ चौ० ॥ कतहु होइ निसिचर सन भेटा ॥ प्रान लेहि एक ए
क चपेटा ॥ वज्रदंड सम एक सभ आवा ॥ देषत कपिन महाभय पावा ॥ गगन लीस
पुनि पाव पताला ॥ रक्त नैन धावत जनु काला ॥ देषत ताहि कोपेउ जुवराजा ॥ स
नमुष जाइ ताहि सन वाजा ॥ मच्यो जुद्ध वड होत अपारा ॥ सव वानर मिलि करहि
विचारा ॥ प्रथम पयान काल चलि आवा ॥ सिय की षवरि न प्रभुहि जनावा ॥ परव
न लागत धरनि होइ राई ॥ व्याकुल वन महा रन भई ॥ वालि सवन तव हृदै विचारा
मुष्टिका एक तासु सिर मारा ॥ रामरूप हृदय महि आनी ॥ अरध उरध परि चीरभवा
नी ॥ जै जै सवद भयो तेहि ठाई ॥ पवनसुवन लिपटे लगाई ॥ वहु प्रकार गिरि कान
न हेरही ॥ कोउ मुनि मिलहि ताहि सव घेरही ॥ लागी तृषा अतिसय अकुलाने ॥ मि
लेहि न जल वन गहन भुलाने ॥ तव हनुमंत कीन अनुमाना ॥ मरन चहत सव
विनु जल पाना ॥ चढि गिरि सिषर चहूँ दिसि देषा ॥ भूमि विवर एक कौतुक पेषा ॥ चक्र
वाक वक हंस उडाही ॥ वहुतक षग प्रविसहि तिह माही ॥ गिरि ते उतरि पवनसुत
आवा ॥ सव को लै सो विवर दिषावा ॥ आगे कै हनुमंतहि लीन्हा ॥ पैठे विवर वि
लंवु न कीन्हा ॥ दो० ॥ देषि जाइ उपवन वर सर विगसित वहु कंज ॥ मंदिर एक रु
चिर तहँ वैठि नारि तप पुंज ॥ ३० ॥ चौ० ॥ दूरि ते ताहि सवन सिर नावा ॥ पूछे निज व्र
त्तांत सुनावा ॥ तेहि तव कहा करहु जल पाना ॥ षावहु सुरस सुंदर फल नाना ॥ मज
न कीन्ह मधुर फल षाये ॥ तासु निकट पुनि सव चलि
आये ॥ मधुर मनोहर वचन सुनाये ॥ तिहि सव आपन कथा सुनाई ॥ मैं अव जाव
जहाँ रघुराई ॥ स्वयंप्रभा नाम मये हि वाउ ॥ हेमप्रभा लघु नाम सुनाउ ॥ विस्वलोक
लोचन मसि धाउ ॥ रामदूत तेहि मोहि सुनाई ॥ मूदहु नयन विवर तजि जाहू ॥ पैहहु
सीता जनि पछिताहू ॥ नैन मूदि पुनि देषहि वीरा ॥ ठाढे सकल सिंधु के तीरा ॥ सो
पुनि गइ जहाँ रघुनाथा ॥ जाइ कमल पद नायउ माथा ॥ नाना भाँति विनय व

कीन्ही। अनपाइनिभगतिप्रभुदीन्ही। दो॰। बदरीवनकहुसोगइप्रभुअग्याधरिसीस। उ
रपरिरामचरनजुगजोवंदितअजईस। २२। चौ॰। ३। इहाविचारहिकपिमनमाही।
बीतीअवधिकाजकछुनाही। सबमिलिकहहिपरसपरवाता। विनसुधिलियेकर
वकहाभ्राता। छिनएकसोकमगनहोइरहेऊ। पुनिअसवचनकहतसबभएऊ।
हमसीताकरसुधिबिनलीना। नहिजैहैजुवराजप्रवीना। कहअंगदलोचनभरि
वारी। दुहप्रकारभईम्रित्युहमारी। यहानसुधिसीताकीपाई। उहागएमारहिकपिरा
ई। पितावधेपरमारतमोही। राषारामनिहोरनओही। पुनिपुनिअंगदकह
सभपाही। मरनभउकछुसंसनाही। अंगदवचनसुनतकपिवीरा। वोलिनसकहिनैन
वनीरा। असकहिलवनसिंधुतटजाई। वैठेकपिसभकुसाडसाई। जामवंतअंगदद
षदेषी। कहेउकथाउपदेसविसेषी। तातरामकहुनरजनिमानहु। निरगुनब्रह्म
अजितअजजानहु। हमसेवकसभअतिवडभागी। संततसगुनब्रह्मअनुरागी। दो॰
२। निजइछाअवतारप्रभुसुरमहिगोद्विजलागि। सगुनउपासकसंगतहारहहि
मोछिसभत्यागि। २३। चौ॰। १। एहिविधिकथाकहीवहुभाती। गिरकंदरासुना
संपाती। वाहिरहोइदेषेवहुकीसा। मोहिअहारदीनजगदीसा। आजुसभनकर
भछनकरहो। दिनवहुगयअहारविनमरहो। कवहुनमिलेउभरिउदरअहारा
आजदीनविधिएकहिवारा। डरपेकीसवचनसुनिकाना। अवभामरनसत्यहमजा
ना। कपिसभउठेगीधकहुदेषी। जामवंतमनसोकविसेषी। कहअंगदविचारि
मनमाही। धन्यजटायुसमकोउनाही। रामकाजकारनतनत्यागी। हरिपुरगए
उपरमवडभागी। जोरघुपतिवचननचितलावे। तिहिसमआननधन्यकहावे।
सुनिखगहरषसोकजुतवानी। आवानिकटकपिनभयमानी। ताहिदेषिसभभव
लेपलाई। वाढकोनतिहिसपथदिवाई। तिनहिअभैकरिपूछेसिजाई। कथा
सकलतिनताहिसुनाई। सुनिसंपातिवंधुकीकरनी। रघुपतिमहिमावहुविधि
वरनी। दो॰। २। मोहिलेजावहुसिंधुतटदेउतिलांजलिताहि। वचनसहायकरव
मैंपेहहुषोजहुजाहि। २४। चौ॰। १। अनुजक्रियाकरिसागरतीरा। कहिनिजकथा
सुनहुकपिवीरा। हमदोउवंधुप्रथमतरुनाई। गगननिगएरविनिकटउडाई।
तेजनसहिसकसोफिरिआवा। मेअभिमानीरविनियरावा। जिमिजिमिमैरवि
निकटउडाई। तिमितिमिकष्टव्याकुलहोईजाई। जरेपंषअतितेजअपारा। परेउ
भूमिकरिघोरचिकारा। मुनिएकनामचंद्रमाओही। लागीदयादेषिकरिमो
ही। वहुप्रकारतिहिग्यानसुनावा। देहिजनितअभिमानछुडावा। त्रेताव्रह्म
नुजतनुधरही। तासनारिनिसचरपतिहरही। तासुषोजपठवहिप्रभुदूता।
तिनहिमिलवतैंहोहुपुनीता। जामहिपंषकालजनिचिंता। तिनहिदेषाइदेहु
तेंसीता। रहकहिमुनिनिजआश्रमगएऊ। तिहिछिनहृदयग्यानकछुभयऊ
सदारामकरसुमिरनकरिऊ। रहिविधिमगजोवतमैरएऊ। मुनिकीगिरासत्यभई
आजु। सुनिममवचनकरहुप्रभुकाजु। वहुरिसरोषतवचनउचारी। सुनहुवा
नरमहोहितकारी। पुत्रमोरसुपरसनितिहिनाऊ। सेवतमोहिसदायहिठाऊ। दो॰। ३।
कुपावनएकदिनभएऊकहेउअसुनिवान। वेगिमतलेआवहुनतोआनममता
न। २५। चौ॰। १। लेअवतासुनसीपावा। मोहिपीरजदेवहुसमकावा। गगननिसाचरगहो
इमहावनगएऊ। गजमगारोऊमारनवहुभएऊ। अस्तपतंगवहुरिविआवा। कुपा
केवसमेकोपवढावा। तानुरकमैअधमअभागा। सुतकहुआपदेनलवलागा
सुतनकहुचरनकहसमुझाई। सुनहुतातममवचनसुहाई। नवमैगएउअरनमह
ताना। तहाजोएकमएउउतपाता। वीसभुजादसमस्तकजाही। आनरवसोजा

लइगमाही। रागनारिएकदिव्याअनूपा। वरननकोपटनैसवरूपा। कोटिसुधाक
नपवलिहारी। रम्भारतिसमविछुविहारी। नाचडीनसिषानहिलीना। अस
चनअसमोहिवोला। जेनजानातिनहिधरापचारी। दीनउछाकिनिरहिमानाकी
करिमोहिविनयदछिनदिसगयऊ। एहिकारनविलंवमोहिभएऊ। सुनतव
चनमोहिलागिअग्यारा। आपविमानलीवाहिरहिहारा। मोहितनपंषहीनका
करउ। आनरजाइरहाहिअवधरउ। दो॰। पंषहीनअवसमएउवनवलकीन
पिकार। गहमोहिनिकटनआनेउ। हतिरामकीनारि। २५। चौ॰। १। मुनिमनुवच
नसुरतिमेकीना। वहुविधिपीरमोहिएकदीना। एहिमिरामजोइतपकही। ति
घसपितेनभुवनमहिआवही। देषतदसमहाइवडभागी। नमममनरघुपतपू
अनरागी। मेसहारामकरसमिरनकरहू। पायउदरसवेगिनिसनरिहू। ति
रविछूटउपरवसलंका। तहारहरावनसहजअसंका। तहाअसोकउपवनज
हारहई। सीतावैठीसोचनअई। दो॰। ३। मेदेषोतुमनाहिनगीधहिदृष्टिअपार। वू
टभएउतकरतेइकछुकसहाइनम्हार। २६। चौ॰। १। तिहिसमीपउतनएकवागा
मध्यनीरअतिपूरितनागा। वंधाघाटमनोहरचारी। कनकसोहिमनिनहितसवा
री। हीरासिलिमयघमसिसदेषी। परवालनकीथालविसेषी। नीलमनिनपरि
रचीकिनारी। सोहेनिरषिदेवतानारी। लहरतवलिभमिचहुपासा। एहिविलो
किनलकेयकासा। हरिसोकवहुवागअसोका। सोविलचीपतिसदासंजोगा
तिहितनगकेनिकटसुहाई। हरितविटपसीतलसुषदाई। जोलाघेसतजोज
नसागर। करेसोरामकाजमतिआगर। जोकुछकरेरामकरकाज। निछिसमधम
अवरनहीआन्तु। मोहिविलोकिधरहुमनधीरा। रामकृपाकसभयउसरीरा। पा
पीहुजाकारसुमिरनकरही। अतिअपारभवसागरतरही। तासुदूतनुम्हतजि
कदराई। रामहृदैधरिकरहुउपाई। असकहिगरुडगीधजवगएऊ। तिनकेमनअ
तिसंसैभयउ। कपिदलवैठसकलएकठाऊ। निजनिजवलसवकरहिपसाऊ
निजनिजवलसवकरहिपसाऊ। देषिसमुद्रकीवाहअपारा। नृपपतीमिलिक
रहिविचारा। कोअसवीरजोलांघपयोधी। आपनिजमतिआयहमसोधी। उस
सिसमुद्रहगगनिलगिलाका। जिहिविधिफिरउमारकरषाका। जाइपतालसराग
लगिवाखाजालसमुद्रभयमनुडाढा। तीरतरगसवदकरकेसे। प्रलयकालका
नलपरमेसे। इतरामगाहिरनदेषतरनी। उभगीवहोविजोजनलगिसेनी। मक
कछभरिजीवअपारा। सैलसमाननदिषनकरारा। हलितहिकेसधावतपानी
निरषहिनयनमूंदसुवानी। जनविनग्यानचित्रकीभूतवी। जिहिविधिथकित
रहेसभउतरी। दो॰। ४। वोरिअंगदहंसभकहे अवकछुकरहुउपाइ। देकोसमुद्रमटयमा
नअतिसमुद्रइउलंघेपार। २७। चौ॰। १। वोलेउविकटसननदुजुवराज। जोजनवीसउ
लेहोआज। नीलकहेचालीसहोजाऊ। आगनहमरेपरेनपाऊ। नीलकेवचनसु
निरूपमकहे। जोजनपचासमोरवलअहै। वोलोउनलदोउभुजाउठाई। जो
जनसाछिमोरगतनिभाई। दधिमुषकहेअसीउपरंता। जोजनसातजाउवलव
ना। सवहुवचनसमसुभटप्रवीना। आगेहोइमोरवलहीना। सुनिसभवचन
वोलेउजुवराना। एहिवलहोइनप्रभुकोकाजा। वृद्धरिछकुपतवअंगददेषी। जा
मवंतनवकहउविसेषी। निरषिनकलसुषकहरीछेसा। नाहिरहेउवलसुधन
लवलेसा। विरधभयोवलगयेउसिराई। लोचनपलमहिजलनिधिभाई। निज

बलम बहिक हौं अनमानी। मन हु सत्य कर मम न बानी। जबहि त्रिबिक्रम भय षरारी
तबमैं तरुन रहेउ बलु भारी। एक दिन बदके आश्रम गयऊ। अब निबिलोकि महा सुषम
एऊ। फल सुभ तनक रिषि अयु पानी। बैठे एक सिला सम मानी। बिस्नु नाम एक बिप्र
सज्ञाना। बैठे उतपराध न सयावाना। नाहि बपि बएक दानव आवा। देषि नेत्र क्रोध भो
हिबावा। न निमय देषि गएउ तेहि पासा। बृहद तरकी नेउ कल कासा। नील तोजन
हिबावा न निसय देषि गएउ तेहि पासा। ... भएउ को
एक अक्रूरु उठाई। मार लिसो रगोद मह आई। लागत गिरत न सु हिम्र हारा। भएउ को
पते हिअ बनि पक्वारा। चीरेउ दोउ बदन को रिरीसा। सब पाएउ हिज दीन असीसा।
सोन हि बल अब तनम हिठवानो। सुनत न बान समुझि चरत्रमानो। दो॰। बलि बांधत
नव अभु बाडि यउ सो तन बरनन जाय। उभै घरी मुहि दीने उसात प्रदछिना धाइ ॥२१
ह्वौ। ३॥ सुनत रीछपति मृछ की बानी। भयउ सो काज राम को जानी। एहि सम ना
हिन कोउ समरथा। कुज हिआत सम न कोअ रघा। बानर जूथ अनंदित भारी। बहुरि
रीछपति गिराउ चारी। अंगद कहेउ जाउ मै पारा। जियसंसै कछु फिरत नि वारा। जाम
बंत कहे तुम सम लायक। पठिए करि सम हिके नायक। कहि रीछपति सुनु हिनुमाना।
माना। का चुप साधि रहेउ बलवाना। पवन तनै बल पवन समाना। बुधि बिबेक बि
ज्ञान निधाना। कवन सो काज कठिन जग माही। सो नहि होय तात तोहि पाही।
राम काज लगि तव अवतारा। सुनत हि भयो परबताकारा। कनक बरन तन
तेज बिराजा। मानहु अपर गीरन कर राजा। हरष सो कहि तक बनस्तु बानी। बोल
उह समान सुषमानी। राम काज मम जीय परकएउ। जनक सुतन यसु धि दैषम
लेउ। निज उत्पति अब कहौ सहेना। तनहु सकल बैबेएहि रैना। देमा बृत तपरबत
कैपिता। कस्यप रिषि तपतेज प्रकासा। रीतज पक असुरा पत हिसम। आएउ रिषिमन सुष
दुर बर लगा। निरषहि रिषि तेहि सकल सकाने। बेलेवन सिघ लबरन भयमाने। ता
तमोर तेहि बन कोराजा। केसरी नाम तेज बल साजा। सुनि गज देषित केउ तेहि
भोरा। हे कपि सकल सरन हम तोरा। गिषइ बृदे पिदया सनमाही। या एक नुरति
नातब लबाही। भिरेउ ता हि मुष्टिका मारा। दोउ दसन परिम बिप छारा। राजु र द
यान तहि राज हि मारा। यद उभूमि कबि चारचि कारा। दो॰। पिता बल बेषि बिसष
भनि। मुनि वर दीन असीस। मांगसो सुवर भावसन। होहि जपाल बनीस ॥ २१ ॥ चौ॰
१। सान ऊल कस्यप कहिं नानी। बोले उतात जोरिकरि पानी। जो असन मोप
रभुग वाना। पुत्र देहु बल पवन समाना। एवमस्तु कहि रिषि तब गएउ। अगिला
चरित्र सुनहु जस भएउ। माता मोर अंजनी सती। रूप अपार हरे हिय रती। नव
सनमनेसिंगार बनाई। वेठी सैल सिषर पर जाई। त्रिबिधि समीर बहत सुषदाई।
निरषत बन सोभा अधिकाई। धीरउ जान पवन सषसरसा। भुज तीर छपरि चा
हत परसा। निषत मात क्रोध करि देहीं। तमी आपदे नपुनि तेही माह तमधुर बच
न नव कहेउ। आप न देहु बचन सुनि लेहु। नव पनि रिषिन सभग वरसा गा। ता
तें सरन अंग ना तोहि लागा। निज काया थरि मिलौ न तोही। काह आप देन ते मो
ही। एह कहि बचन गयन हो इंगएउ। माता आनि पितासन कहिउ। सुनि बरता
न हरं दो अयउ। पुनि मित धप्यान सन बएउ। अवनिज ननमु कहौ हितता ही।
तनो सकल बनही पवि तो ही। सुभ निउत्र लगन हरी सुहाई। जनमत भएउ सु
हरबर पाई। मुनिवर दीन पवन को परसा। बीरज सोहि पिता कर परसा। उदति भ
ए उदय पति हरषाने। कबि हिन केवल मैसमतें। एक दिवस माता के गोद ाकर नरदे

उदेपात न बिनोदा। देषेउ प्रकुन तेपुत्र बिलाला। ते उपि अकास गएउ [illegible] काला। मन
नगा हन जब हा यपसारा। क्रोध तेउ इंद्र बज्र सो हि मारा। दो॰। ... हनु कोपन
रिधाय पतेग गाहि लीन। बाल अवस्था उरात लस असदियो सर अंजोबि [illegible] ६।
वो। ६। अंधकार त्रयादि उदिसि भएऊ। नपत पदान घरम रहि गएऊ। पारब तीपति
वहि सम गएऊ। निज सेना पक हनपुनि भएऊ। अस्तुति मुनकी न निज देह। ला
लेउ सिब गन ज्ञान निकेत। घर कु धीरन होहु उदासी। सब मिलि चेलाके सरी पा
सी। सिब बिरंचि सुर इंद्र समेता। आयउ सब केसरी निकेता। कहि सुत तोर सरोज
गहि लीन्हा। त्रास समेत राकि उघदीन्हा। तज हु भान रह प्रान भलाई। तम्हूका ह
सुज सही उजग माई। जो मन भावते हु बरदाना। तज हु भानर हप्रान भलाई। तम्हूक
हु सन सही उजग माई। जो मन भाव लेहु बरदाना। तज हु भान हो उकल्याना। देवनि
रासुनि सुन्दर बानी। बोले उतात जोरि जुग पानी। अमर अजित सकल गुन आगर
तहि देहु बर देव कृपाकर। राम भगत अरु निकट निवासी। यह बरदान देहु बल रा
सी। एवमस्तु सब देवन कीन्हा। सुरजि समीर त्याडित बदीना। देव दान देव सभा प
ऊ। बिचरे बन हि महा सुभ एऊ। मातु तात केर प्रान समाना। सके जो हतन ना सह
नुमाना। तज हु सोक मन अनुहु धीरा। मैं सेवक नि हचैं रघुबीरा। सिंहनाद करि बा
रहि बारा। लीलहि लांघउ जलनिधि षारा। सहित सहाय रावन ही मारी। आनहु यहा
त्रिकूट उपारी। जामवंत मैं पूछौ तोही। उचित सिषावन दिजिय मोही। रतना कर ह
तात तुम जाई। सीतहि देषि कहहु सुधि आई। एहि ते अधिक सिषावन नाही। बेगि क
रहु तुम धरि मन माही। तब निज भुज बल राजी बनेना। कौतुक लागि संग कपि से
ना। छं॰। कपि सेन संग संघारि निसिचर राम सीतहि आनि है। त्रिलोक पावन सुजसु
सुर मुनि नारदादि बषानि है। जो सुनत गावत कहत समुझत परम पद नर पावही।
रघुबीर पद पाथोज मधुकर दास तुलसी गावही। दो॰। भव भेषज रघुनाथ जस सु
नहि जो नर अरु नारि। तिन के सकल मनोरथ सीथ करहि त्रिसुरारि। सो॰। ३०। नी
लोत्पल तन स्याम काम कोटि सोभा अधिक। सुनिय तासु गुन ग्राम जासु नाम अघ
षग बधिक। ४१। इतिश्री रामचरितमानसे सकल [illegible] विध्वंसने [illegible]
[illegible] नाम चतुर्थ सोपानः समाप्तः। [illegible] ॥ ॥
[illegible] ॥ शांतं शाश्वतमप्रमेयमनघं निर्वा
णशांतिप्रदं। ब्रह्मा शंभु फणीन्द्र सेव्यमनिशं वेदान्तवेद्यं विभुं। रामाख्यं जगदी
श्वरं सुरगुरुं मायामनुष्यं हरिं। वंदेहं करुनाकरं रघुवरं भूपालचूडामणिं ॥ १ ॥
नान्या स्पृहा रघुपते हृदयेऽस्मदीये। सत्यं वदामि च भवानखिलान्तरात्मा। भक्ति
प्रयच्छ रघुपुंगव निर्भरां मे। कामादि दोषरहितं कुरु मानसं च ॥ २ ॥ अतुलितबलधा
मं स्वर्णशैलाभदेहं। दनुजवन कृशानुं ज्ञानिनामग्रगण्यं। सकलगुणनिधा
नं वानराणामधीशं। रघुपतिवरदूतं वातजातं नमामि ॥ ३ ॥ चौ॰। १। जामवंत के बच
न सुहाय। सुनि हनुमंत हृदै अति भाए। तब लगि मोहि परिषेहु तुम्ह भाई। सहि
दुष कंद मूल फल षाई। जब लगि आवहु सीतहि देषी। होइ काज मोहि हरष बिसे
षी। अस कहि नाइ सबन्हि कहु माथा। चलेउ हरषि हिय धरि रघुनाथा। सिंधु ती
र एक भूधर सुंदर। कौतुक कूदि चढेउ ताऊ ऊपर। बार बार रघुबीर संभारी।
तरकेउ पवनतनय बल भारी। जिहि गिरि चरन देइ हनुमंता। चलि सो गा
पाताल तुरंता। जिमि अमोघ रघुपति कर बाना। एही भांति चलेउ हनुमाना।
जलनिधि रघुपति दूत बिचारी। तैं मैनाक होहि श्रमहारी। सो॰। दो॰। सिंधु बचन उर

आनितरतउठेउभयनायकतव। कपिकहुकीन्हप्रनामपुलककततनकरजोरिकरि। दो। ह
नूमानतेहिपरसकरितेनेहिपुनिकीन्हप्रनाम। रामकाजकीन्हेविनुमोहिकहाविश्रा
म। १। चौ। १। पवनकरकृपाकरिकितिविश्रामा। जानेसफलहोयेममधामा। जानसफल
होयेममधामा। जातपवनसुतदेवनदेषा। जानेकहुसोवुधिविसेषा। सुर
सानामअहिन्हकैमाना। पठइआइकहितेहिवाता। आजुसुरन्हमोहिदीन्हअहारा। सुन
तवचनकहापवनकुमारा। रामकाजकरिफिरिमेआउव। सीताकेसुधिप्रभुहिसुना
उव। तवतवबदनपैठिहोंआई। सत्यकहोमोहिजानदेमाई। कवनेहुजतनदेइनहिजा
ना। ग्रससिनमोहिकहेउहनुमाना। जोजनभरितिहिवदनपसारा। कपितनकीन्हदु
गुणविस्तारा। सोरहजोजनमुषतेहठएउ। तुरतपवनसुतवतिसभएउ। जसजससुरसा
वदनवढावा। तासुदुगुनकपिरूपदिषावा। सतजोजनतेहिआननकीन्हा। अतिलघु
रूपपवनसुतलीन्हा। वदनपैठिपुनिवाहेरआवा। मागीविदाताहिसिरनावा। मोहि
सुरन्हजिहिलागिपठावा। वुधिवलमरमतोरमैपावा। दो। रामकाजसवकरिवन्ह
न्हवुधिवलरूपनिधान। आसिषदेइगइसोहरषिचलेउहनुमान। २। चौ। १। निसिचरिए
कसिंधुमहरहई। करिमायानभकेषगगहई। जीवजंतजेगगनउडाही। जलविलो
कितिन्हकेपरिछाही। गहैछाहसकसोनउडाई। एहिविधिसदागगनचरषाई। सोइ
छलहनुमानकेहकीन्हा। तासुकपटकपितुरतहिचीन्हा। ताहिमारिमारुतसु
तवीरा। वारिधिपारगएउमतिधीरा। तहाजाइदेषीवनसोभा। गुंजतचंचरीकमधु
लोभा। नानातरुफलफूलसोभाए। षगमृगवृंददेषिमनभाए। सैलविसालदे
षिएकआगे। तापरधाइचढेउभयत्यागे। उमानकछुकपिकेअधिकाई। प्रभुप्रताप
जोकालहिषाई। गिरिपरचढिलंकातिहिदेषी। कहिनजाइअतिदुर्गविसेषी। अति
उतंगजलनिधिचहुपासा। कनककोटकरपरमप्रकासा। छं। कनककोटविचि
त्रमनिकृतसुंदरायतनअतिघना। चौहटहाटसुवाटवीथीचारुपुरवहुविधिवना
गजवाजिषचरनिकरपदचररथवरूथन्हकोगनै। वहुरूपनिसिचरजूथअतिव
लसेनवरनतनहिवनै। वनवागउपवनवाटिकासरकूपवापीसोहही। नरनाग
सुरगंधर्वकन्यारूपमुनिमनमोहही। कहुमलदेहविसालसैलसमानअतिव
लगर्जही। नानाअषारेन्हभिरहिवहुविधिएकएकन्हतर्जही। करिजतनभटको
टिन्हविकटतननगरचहुदिसिरक्षही। कहुमहिषमानुषधेनुषरअजषलनिसा
चरभक्षही। एहिलागितुलसीदासइन्हकीकथाकछुएकहेकही। रघुवीरसरती
रथसरीरहित्यागिगतिपैहहसही। दो। पुररषवारेदेषिवहुकपिमनकीन्हविचा
र। अतिलघुरूपधरौनिसिनगरकरौपैसार। ३। चौ। १। मसकसमानरूपकपिध
री। लंकहिचलेउसुमिरिनरहरी। नामलंकिनीएकनिसिचरी। सोकहचलेसिमो
हिनिंदरी। जानेनहिमरमसठमोरा। मोरअहारजहालगिचोरा। मुठिकाए
कमहाकपिहनी। रुधिरवमतधरनीढनमनी। पुनिसंभारिउठिसोलंका
जोरिपानिकरविनयससंका। जवरावनहिब्रह्मावरदीन्हा। चलतविरंचिकहा
मोहिचीन्हा। जेतारामलछमनअवतारही। भगतहेतमानुसतनुधरही।
ताकीतीयारावनहरल्यावै। सोआयनरककहतनुपावै। विकलहोसितेकपि
केमारे। तवजानेसुनिसिचरसंघारे। तातमोरअतिपुन्यवहूता। देषेउनयन
रामकरदूता। दो। तातस्वर्गअपवर्गसुषधरिअतुलाएकअंग। तूलैनताहि
सकलमिलिजोसुषलवसतसंग। ४। चौ। १। प्रविसिनगरकीजेसवकाजा। हृ
दयराषिकोसलपुरराजा। गरलसुधारिपुकरैमिताई। गोपदसिंधुअनलसितल

ताई। गरुडसुमेरुरेनुसमताई। रामकृपाकरिचितवहिजाही। अतिलघुरूपधरेउहनुमा
ना। पैठेउनगरसुमिरिभगवाना। मंदिरमंदिरप्रतिकरिसोधा। देषेजहतहअगनि
तजोधा। गएउदसाननमंदिरमाही। अतिविचित्रकहिजातसोनाही। सयनकि
येदेषाकपितेही। मंदिरमहुनदीषिवैदेही। भवनएकपुनिदेषिसुहावा। हरिमंदि
रतहभिन्नवनावा। दो। रामायुधअंकितग्रहसोभावरनिनजाइ। नवतुलसीका
वृंदतहदेषिहरषकपिराइ। ५। चौ। १। लंकानिसिचरनिकरनिवासा। इहाकहासज्ज
नकरवासा। मनमहतरककरैकपिलागा। तेहीसमयविभीषनजागा। रामराम
तेइसुमिरनकीन्हा। हृदयहरषकपिसज्जनचीन्हा। एहिसनहठिकरिहौपहिचा
नी। साधुतेहोइनकाहूकारजहानी। विप्ररूपधरिवचनसुनाए। सुनतविभी
षनउठितहआए। करिप्रनामपूछीकुशलाई। विप्रकहहुनिजकथावुझाई। की
तुम्हहरिदासनमहकोई। मोरहृदयप्रीतिअतिहोई। कीतुम्हरामदीनअनुरागी
आएहुमोहिकरनवडभागी। दो। तवहनुमंतकहिसवरामकथानिजनाम
सुनतजुगलतनपुलकमनमगनसुमिरगुनग्राम। ६। चौ। १। सुनहुपवनसु
तरहनिहमारी। जिमिदसनन्हमहजीभविचारी। तातकवहुमोहिजानिअनाथा
करिहहिकृपाभानुकुलनाथा। तामसतनुकछुसाधननाही। प्रीतिनपदस
रोजमनमाही। अवमोहिभाभरोसहनुमंता। विनुहरिकृपामिलहिनहीसं
ता। जौरघुवीरअनुग्रहकीन्हा। तौतुम्हमोहिदरसहठदीन्हा। सुनहुविभीषनप्रभु
केरीती। करहिसदासेवकपरप्रीती। कहहुकवनमैपरमकुलीना। कपिचंचल
सवहीविधिहीना। प्रातलेइजोनामहमारा। ताहिदिनताहिनमिलैअहा
रा। दो। असमैअधमसषासुनमोहूपररघुवीरकीन्हीकृपासुमिरिगुनभरे
विलोचननीर। ७। चौ। १। जानतहूअसस्वामिविसारी। फिरहितेकाहेनहोहि
दुषारी। एहिविधिकहतरामगुनग्रामा। पावाअनिरवाचविश्रामा। पुनिसवक
थाविभीषनकही। जिहिविधिजनकसुतातहरही। तवहनुमंतकहासुनभ्रा
ता। देषीचहोजानकीमाता। जुगतिविभीषनसकलसुनाई। चलेउपवनसुतवि
दाकराई। करिसोइरूपगएउपुनितहवा। वनअसोकसियारहजहवा। देषिमन
हिमनकीन्हप्रनामा। वैठेवीतिजाइनिसिजामा। कृसतनसीसजटाएकवेनी
जपतिहृदयरघुपतिगुनश्रेनी। दो। निजपदनयनदिएमनरामपदकमलल
यलीनपरमदुषीभयेपवनसुतदेषिजानकीदीन। ८। चौ। १। तरुपल्लवमहर
हलुकाई। करैविचारकरौकहाभाई। तेहिअवसररावनतहआवा। संगना
रिवहुकिएवनावा। वहुविधिषलसीतहिसमुझावा। सामदामभयभेददिषा
कहरावनसुनसुमुषिसयानी। मंदोदरीआदिसवरानी। तवअनुचरीकरौ
प्रनमोरा। एकवारविलोकिममओरा। तृनधरिओटकहतिवैदेही। सुमि
रिअवधपतिपरमसनेही। सुनदसमुषषद्योतप्रकासा। कवहुकिनलिनिक
रैप्रकासा। असमनसमुझकहतिजानकी। षलसुधनहिरघुवीरवान
की। सठसूनेहरिआनेसिमोही। अधमनिलज्जलाजनहितोही। दो। आपुहि
सुनिषद्योतसमरामहिभानुसमान। परुषवचनसुनिकाढिअसिवोलाअ
तिषिसिआन। ९। चौ। १। सीतातैममकृतअपमाना। काटिहोतवसिरकठिनकृ
पाना। नाहितसपदिमानममवानी। सुमुषिहोइनतजीवनहानी। स्याम
सरोजदामसमसुंदर। प्रभुभुजकरिकरसमदसकंधर। सोभुजकंठकितव
असिघोरा। सुनसठअसप्रमानपनमोरा। चंद्रहासहरममपरितापं। रघुपति

विरहअनलसंतापं। सीतलनिसितबहसिबरधारा। कहसीताहरुममदुषभारा॥
सुनतबचनपुनिमारनधावा। मयतनयाकहिनीतिबुझावा। कहेसिसकल
निसिचरन्हिबोलाई। सीतहिबहुबिधित्रासहुजाई। मासदिवसमहुकहानमाना।
तौमैमारबकाढिकृपाना॥दो०॥भवनगयउदसकंधरइहांपिसाचिनिबृंद। सीतहि
त्रासदेषावहिधरहिरूपबहुमंद॥१०॥चौ०॥त्रिजटानामराछसीएका। रामचरन
रतिनिपुनबिबेका। सभन्हौबोलिसुनाएसिसपना। सीतहिसेइकरहुहितअ
पना। सपनेबानरलंकाजारी। जातुधानसेनासबमारी। षरआरूढनगनदससीसा।
मुंडितसिरषंडितभुजबीसा। एहिबिधिसोदछिनदिसिजाई। लंकामनहुबिभीषन
पाई। नगरफिरीरघुबीरदोहाई। तबप्रभुसीताबोलिपठाई। यहसपनामैकहौ
पुकारी। होइहिसत्यगएदिनचारी। तासुबचनसुनितेसबडरी। जनकसुताकेपा
इन्हपरी॥दो०॥जहांतहांगईसकलतबसीताकेमनसोच। मासदिवसबीतेमोहि
मारिहिनिसिचरपोच॥११॥चौ०॥त्रिजटासनबोलीकरजोरी। मातुबिपतिसंगिनि
तैमोरी। तजौदेहकरबेगिउपाई। दुसहबिरहअबनहिसहिजाई। आनिकाठरचुचि
ताबनाई। मातुअनलपुनिदेहुलगाई। सत्यकरहिममप्रीतिसयानी। सुनैकोश्र
वनसूलसमबानी। सुनतबचनपदगहिसमुझाएसि। प्रभुप्रतापबलसुजसु
नाएसि। निसिनअनलमिलसुनुसुकुमारी। असकहिसोनिजभवनसिधारी।
कहसीताबिधिभाप्रतिकूला। मिलहिनपावकमिटहिनसूला। देषिअतप्रगट
गगनअंगारा। अवनिनआवतएकौतारा। पावकमयससिस्रवतनआगी। मा
नहुमोहिजानिहतभागी। सुनहिबिनयममबिटपअसोका। सत्यनामकरु
हरुममसोका। नूतनकिसलयअनलसमाना। देहिअगिनिजनिकरहिनि
दाना। देषिपरमबिरहाकुलसीता। सोछनकपिहिकलपसमबीता॥सो०॥
कपिकरिहृदयबिचारिदीन्हमुद्रिकाडारितब। जनुअसोकअंगारदीन्हहरषि
उठिकरगहेउ॥१२॥चौ०॥तबदेषीमुद्रिकामनोहर। रामनामअंकितअतिसुंद
र। चकितचितवमुदरीपहिचानी। हरषबिषादहृदयअकुलानी। जीतिकोसकैअ
जयरघुराई। मायातेअसिरचिनहिजाई। सीतामनबिचारकरनाना। मधुरबचन
बोलेउहनुमाना। रामचंद्रगुनबरनैलागा। सुनतहिसीताकरदुषभागा। लागी
सुनैश्रवनमनलाई। आदिहुतेसबकथासुनाई। श्रवनामृतजेहिकथासुहाई।
कहीसोप्रगटहोतिकिनभाई। तबहनुमंतनिकटचलिगयऊ। फिरिबैठीमनबिस
मयभयेऊ। रामदूतमैमातुजानकी। सत्यसपथकरुनानिधानकी। यहमुद्रि
कामातुमैआनी। दीन्हरामतुम्हकहसहिदानी। नरबानरहिसंगकहुकैसे।
कहिकथाभइसंगतिजैसे॥दो०॥कपिकेबचनसप्रेमसुनिउपजामनबिस्वास।
जानामनक्रमबचनयहकृपासिंधुकरदास॥१३॥चौ०॥हरिजनजानिप्रीति
अतिगाढी। सजलनयनपुलकावलिबाढी। बूडतबिरहजलधिहनुमाना।
भएहुतातमोकहुजलजाना। अबकहुकुसलजाउबलिहारी। अनुजसहित
सुषभवनषरारी। कोमलचितकृपालरघुराई। कपिकेहिहेतुधरीनिठुराई। सह
जबानिसेवकसुषदायक। कबहुकसुरतिकरतरघुनायक। कबहुनयनमम
सीतलताता। होइहहिनिरषिस्याममृदुगाता। बचननआवनयनभरिबारी। अ
हहनाथहौनिपटबिसारी। देषीपरमबिरहाकुलसीता। बोलेउकपिमृदुब
चनबिनीता। मातुकुसलप्रभुअनुजसमेता। तवदुषदुषीसोकृपानिकेता। जि
निजननीमानहुजिऊना। तुम्हतेप्रेमरामकेदूना॥दो०॥रघुपतिकरसंदेसअ

वसुनुजननीधरिधीर॥असकहिकपिगदगदभएउभरेबिलोचननीर॥१४॥चौ०॥
कहेउरामबियोगतवसीता। मोकहुसकलभएबिपरीता। नवतरुकिसलयमन
हुकृसानू। कालनिसासमनिसिससिभानू। कुबलयबिपिनकुंतबनसरिसा।
बारिदतपततेलजनुबरिसा। जेहितरहेकरततेइपीरा। उरगस्वाससमत्रिबि
धसमीरा। कहेहूतेकछुदुषघटिहोई। काहिकहौयहजाननकोई। तत्वप्रेम
करममअरुतोरा। जानतप्रियाएकुमनुमोरा। सोमनुसदारहततोहिपाही।
जानुप्रीतिरसएतनेहिमाही। प्रभुसंदेससुनतबैदेही। मगनप्रेमतनसुधि
नहितेही। कहकपिहृदयधीरधरुमाता। सुमिरुरामसेवकसुषदाता। उरआ
नहुरघुपतिप्रभुताई। सुनिममबचनतजहुकदराई॥दो०॥निसिचरनिकरपतं
गसमरघुपतिबानकृसानु। जननीहृदयधीरधरुजरेनिसाचरजानु॥१५॥
चौ०॥जौरघुबीरहोतिसुधिपाई। करतेनहिबिलंबरघुराई। रामबानरबिउएजा
नकी। तमबरूथकहजातुधानकी। अबहिमातुमैजाउलवाई। प्रभुआयसु
नहिरामदुहाई। कछुकदिवसजननीधरुधीरा। कपिन्हसहितअइहहिरघुबी
रा। निसिचरमारितोहिलैजैहहि। तिहुपुरनारदादिजसगैहहि। अहहि
सुतसकपिसबतुम्हहिसमाना। जातुधानअतिभटबलवाना। मोरेहृदयपरम
संदेहा। सुनिकपिप्रगटकीन्हनिजदेहा। कनकभूधराकारसरीरा। समरभयं
करअतिबलबीरा। सीतामनभरोसतबभयऊ। पुनिलघुरूपपवनसुतलयऊ॥
दो०॥सुनुमातासाषामृगनहिबलबुधिबिसाल। प्रभुप्रतापतेगरुडहिषाइ
परमलघुब्याल॥१६॥चौ०॥मनसंतोषसुनतकपिबानी। भगतिप्रतापतेजबलसा
नी। आसिषदीन्हरामप्रियजानी। होहुतातबलसीलनिधानी। अजरअमरगुन
निधिसुतहोहू। करहुबहुतरघुनायकछोहू। करहिकृपाप्रभुअससुनिकाना॥
निर्भरप्रेममगनहनुमाना। बारबारनाएसिपदसीसा। बोलाबचनजोरिकर
कीसा। अबकृतकृत्यभएउमैमाता। आसिषतवअमोघबिष्याता। सुनहुमात
मैअतिसयभूषा। लागिदेषिसुंदरफलरूषा। सुनुसुतकरहिबिपिनरषवारी। प
रमसुभटरजनीचरभारी। तिन्हकरभयमातामोहिनाही। जौतुम्हसुषमानहु
मनमाही॥दो०॥देषिबुधिबलनिपुनकपिकहेउजानकीजाहु। रघुपतिचरनहृद
यधरितातमधुरफलषाहु॥१७॥चौ०॥चलेउनाइसिरपैठेउबागा। फलषाएसित
रुतोरनलागा। रहेतहांबहुभटरषवारे। कछुमारेकछुजाइपुकारे। नाथए
कआवाकपिभारी। तेहिअसोकबाटिकाउजारी। षाएसिफलअरुबिटपउपारे।
रछकमर्दिमर्दिमहिडारेसि। सुनिरावनपठएभटनाना। तिन्हहिदेषिगर्जेउहनु
माना। सबरजनीचरकपिसंघारे। गएपुकारतकछुअधमारे। पुनिपठवउतेहि
अछयकुमारा। चलासंगलैसुभटअपारा। आवतदेषिबिटपगहितर्जा। ताहिपछि
मारिमहाधुनिगर्जा॥दो०॥कछुमारेसिकछुमर्देसिकछुमिलएसिधरिधूरि। क
छुपुनिजाइपुकारेप्रभुमर्कटबलभूरि॥१८॥चौ०॥सुनिसुतबधलंकेसरि
साना। पठएसिमेघनादबलवाना। मारसिजनिसुतबांधेसुताही। देषिअ
कपिहिकहाकरआही। चलाइंद्रजितअतुलितजोधा। बंधुनिधनसुनिउपजाक्रोधा।
कपिदेषादारुनभटआवा। कटकटाइगर्जाअरुधावा। अतिबिसालतरुए
कउपारा। बिरथकीन्हलंकेसकुमारा। रहेमहाभटताकेसंगा। गहिगहिकपि
मर्दैनिजअंगा। तिन्हहिनिपातिताहिसनबाजा। भिरेजुगलमानहुगजराजा

सु.स
८

मुठिकामारिचढ़ातरुजाई॥ताहिएकछनमूर्छाआई॥उठिवहोरिकीन्हेसिवहुमाया॥जीतिनजाइप्रभंजनजाया॥दो॰॥ब्रह्मअस्त्रतेहिसांधाकपिमनकीन्हविचार॥जौनब्रह्मसरमानौमहिमामिटैअपार॥ब्रह्मवचननहिमानेनाई॥रामचरनतेविमुखहोई॥१९॥चौ॰॥ब्रह्मवानकपिकहुतेहिमारा॥परतिहुवारकटकसंघारा॥तेहिदेषाकपिमूर्छितभयऊ॥नागपासवांधेसिलेगयऊ॥जासुनामजपिसुनहुभवानी॥भवबंधनकाटहिनरज्ञानी॥तासुदूतकिबंधतरुआवा॥प्रभुकारजलगिकपिहिबंधावा॥कपिबंधनसुनिनिसिचरधाए॥कौतुकलागिसभासबआए॥दसमुषसभादीषिकपिजाई॥कहिनजाइकछुअतिप्रभुताई॥करजोरेसुरदिसिपविनीता॥भृकुटीविलोकतसकलसभीता॥देषिप्रतापनकपिमनसंका॥जिमिअहिगनमहुगरुडअसंका॥दो॰॥कपिहिविलोकिदसाननविहसाकहिदुर्वाद॥सुतवधसुरतिकीन्हिपुनिउपजाहृदयविषाद॥२०॥चौ॰॥कहलंकेससकवनतेंकीसा॥केहिकेवलघालेहुवनषीसा॥कीधौश्रवनसुनेहनहिमोही॥देषौअतिअसंकसठतोही॥मारेनिसिचरकेहिअपराधा॥कहुसठतोहिनप्रानकैवाधा॥सुनुरावनब्रह्मांडनिकाया॥पाइजासुवलविरचतिमाया॥जाकेवलविरंचिहरिईसा॥पालतसृजतहरतदससीसा॥जावलसीसधरतसहसानन॥अंडकोससमेतगिरिकानन॥धरैजोविविधदेहसुरत्राता॥तुम्हसेसठन्हसिषावनदाता॥हरकोदंडकठिनजेहिभंजा॥तेहिसमेतनृपदलमदगंजा॥खरदूषनत्रिसिराअरुवाली॥वधेसकलअतुलितवलसाली॥दो॰॥जाकेवललवलेसतेंजितेहुचराचरझारि॥तासुदूतमैंजाकरिहरिआनेहुप्रियनारि॥२१॥चौ॰॥जानौमैतुम्हारिप्रभुताई॥सहसवाहुसनपरीलराई॥समरवालिसनकरिजसुपावा॥सुनिकपिवचनविहसिविहरावा॥षाएउफलप्रभुलागीभूषा॥कपिसुभाउतेतोरेउरूषा॥सवकेदेहपरमप्रियस्वामी॥मारहिमोहिकुमारगगामी॥जिन्हमोहिमारातेमैमारे॥तेहिपरवांधेउतनयतुम्हारे॥मोहिनकछुवांधेकैलाजा॥कीन्हचहौनिजप्रभुकरकाजा॥विनतीकरौजोरिकररावन॥सुनहुमानतजिमोरसिषावन॥देषहुतुम्हनिजकुलहिविचारी॥भ्रमतजिभजहुभगतभयहारी॥जाकेडरअतिकालडेराई॥जोसुरअसुरचराचरषाई॥तासौवयरकवहुनहिकीजे॥मोरेकहेजानकीदीजे॥दो॰॥प्रनतपालरघुनायककरुनासिंधुषरारि॥गएसरनप्रभुराषिहैतवअपराधविसारि॥२२॥चौ॰॥रामचरनपंकजउरधरहू॥लंकाअचलराजतुम्हकरहू॥रिषिपुलस्तिजसविमलमयंका॥तेहिससिमहुजनिहोहुकलंका॥रामनामविनुगिरानसोहा॥देषुविचारित्यागिमदमोहा॥वसनहीननहिसोहसुरारी॥सवभूषनभूषितवरनारी॥रामविमुषसंपतिप्रभुताई॥जाइरहेपाईविनुपाई॥सजलमूलजिन्हसरितन्हनाही॥वरषिगएपुनितवहिसुषाही॥सुनुदसकंठकहौंपनरोपी॥विमुषरामत्रातानहिकोपी॥संकरसहसविष्नुअजतोही॥सकहिनराषिरामकरद्रोही॥दो॰॥मोहमूलवहुसूलप्रदत्यागहुतमअभिमान॥भजहुरामरघुनायककृपासिंधुभगवान॥२३॥चौ॰॥जदपिकहीकपिअतिहितवानी॥भगतिविवेकविरतिनयसानी॥वोलाविहसिअधमअभिमानी॥मिलाहमहिकपिगुरवडज्ञानी॥मृत्युनिकटआईषलतोही॥लागेसिअधमसिषावनमोही॥उलटाहोइहिकहहनुमाना॥मतिभ्रमतोरिप्रगटमैजाना॥सुनिकपिवचनवहुतषिसिआना॥वेगिनहरहुमूढकरप्राना॥सुन

तनिसाचरमारनधाए॥सचिवनसहितविभीषनआए॥नाइसीसकरिविनयवहूता॥नीतिविरोधनमारियदूता॥आनदंडकछुकरियगोसाई॥सवहीकहामंत्रभलभाई॥सुनतविहसिवोलादसकंधर॥अंगभंगकरिपठइयवंदर॥दो॰॥कपिकैममतापूंछपरसवहिकहौसमुझाइ॥तेलवोरिपटवांधिपुनिपावकदेहुलगाइ॥२४॥चौ॰॥पूंछहीनवानरतहजाइहि॥तवसठनिजनाथहिलैआइहि॥जिन्हकेकीन्हेसिवहुतवडाई॥देषौमैतिन्हकैप्रभुताई॥वचनसुनतकपिमनमुसकाना॥भईसहाइसारदमैजाना॥जातुधानसुनिरावनवचना॥लागेरचनमूढसोरचना॥रहानगरवसनघृततेला॥वाढीपूंछकीन्हकपिषेला॥कौतुककहआएपुरवासी॥मारहिचरनकरहिवहुहासी॥वाजहिढोलदेहिसवतारी॥नगरफेरिपुनिपूंछप्रजारी॥पावकजरतदेषिहनुमंता॥भयउपरमलघुरूपतुरंता॥निवुकिचढेउपुनिकनकअटारी॥भईसभीतनिसाचरनारी॥दो॰॥हरिप्रेरिततेहिअवसरचलेमरुतउनचास॥अट्टहासकरिगर्जाकपिवढिलागअकास॥२५॥चौ॰॥देहविसालपरमहरुआई॥मंदिरतेमंदिरचढिधाई॥जरैनगरभालोगविहाला॥झपटलपटवहुकोटिकराला॥तातमातुहासुनियपुकारा॥यहिअवसरकोहमहिउवारा॥हमजोकहायहकपिनहिहोई॥वानररूपधरेसुरकोई॥साधुअवज्ञाकरफलऐसा॥जरैनगरअनाथकरजैसा॥जारानगरनिमिषएकमाही॥एकविभीषनकरगृहनाही॥ताकरदूतअनलजेहिसिरजा॥जरानसोतेहिकारनगिरिजा॥उलटिपलटिलंकासवजारी॥कूदिपरेउपुनिसिंधुमझारी॥दो॰॥पूंछवुझाइषोइस्रमधरिलघुरूपवहोरि॥जनकसुताकेआगेठाढभएउकरजोरि॥२६॥चौ॰॥मातुमोहिदीजेकछुचीन्हा॥जैसेरघुनायकमोहिदीन्हा॥चूडामनिउतारितवदएऊ॥हरषसमेतपवनसुतलएऊ॥कहेहुतातअसमोरप्रनामा॥सवप्रकारप्रभुपूरनकामा॥दीनदयालविरदुसंभारी॥हरहुनाथममसंकटभारी॥तातसक्रसुतकथासुनायहु॥वानप्रतापप्रभुहिसमुझायहु॥मासदिवसमहुनाथनआवा॥तौपुनिमोहिजिअतनहिपावा॥कहुकपिकेहिविधिराषौप्राना॥तुम्हहूतातकहतअवजाना॥तोहिदेषिसीतलभइछाती॥पुनिमोकहसोइदिनसोराती॥दो॰॥जनकसुतहिसमुझाइकरिवहुविधिधीरजदीन्ह॥चरनकमलसिरनाइकरिगवनरामपहिकीन्ह॥२७॥चौ॰॥चलतमहाधुनिगर्जेसिभारी॥गर्भस्रवहिसुनिनिसिचरनारी॥नाघिसिंधुयहिपारहिआवा॥सवदकिलिकिलाकपिन्हसुनावा॥हरषेसवविलोकिहनुमाना॥नूतनजन्मकपिन्हतवजाना॥मुषप्रसन्नतनतेजविराजा॥कीन्हेसिरामचंद्रकरकाजा॥मिलेसकलअतिभएसुषारी॥तलफतमीनपावजनुवारी॥चलेहरषिरघुनायकपासा॥पूछतकहतनवलइतिहासा॥तवमधुवनभीतरसवआए॥अंगदसम्मतमधुफलषाए॥रषवारेजववरजेलागे॥मुष्टिप्रहारहनतकपिभागे॥दो॰॥जाइपुकारेतेसववनउजारजुवराज॥सुनिसुग्रीवहरषकपिकरिआएप्रभुकाज॥२८॥चौ॰॥जौनहोतिसीतासुधिपाई॥मधुवनकेफलसकहिनषाई॥यहिविधिमनविचारकरराजा॥आइगएकपिसहितसमाजा॥आइसवन्हिनावापदसीसा॥मिलेउसवन्हिअतिप्रेमकपीसा॥पूंछीकुसलकुसलपददेषी॥रामकृपाभाकाजविसेषी॥नाथकाजकीन्हेउहनुमाना॥राषेसकलकपिन्हकेप्राना॥सुनिसुग्रीवव

कृदिनेहिमिलेउ॥ कपिन्हसहितरघुपतिपहिंचलेउ॥ रामकपिन्हजवआवतदेषा॥ की
एउकाजमनहरषविसेषा॥ फटिकसिलावैठेदोउभाई॥ परेसकलकपिचरनन्ह
जाई॥ दो॥ प्रीतिसहितसवभेटेरघुपतिकरुनापुंज॥ पूछीकुसलनाथअवकुसल
देषिपदकंज॥ २९॥ चौ॥ जामवंतकहसुनुरघुराया॥ जापरनाथकरहुतुम्ह
दाया॥ ताहिसदासुभकुसलनिरंतर॥ सुरनरमुनिप्रसंन्नताऊपर॥ सोविजईवि
नईगुनसागर॥ तासुसुजसत्रैलोकउजागर॥ प्रभुकीकृपाभएउसवकाजू॥ ज
न्महमारसुफलभएउआजू॥ नाथपवनसुतकीन्हिजोकरनी॥ सहसहुमुषसो
जाइनवरनी॥ पवनतनयकेचरितसुहाए॥ जामवंतरघुपतिहिसुनाए॥ सुनत
कृपानिधिमनअतिभाए॥ पुनिहनुमानहरषिहियलाए॥ कहहुतातकेहिभां
तिजानकीरहतिरछासोप्रानकी॥ दो॥ वारवाररघुवीरकेउनरवारगंभीर॥
जनकवारीहिगवारकेपारनाचरघुवीर॥ दो॥ नामपाहरूदिवसनिसिध्या
नतुम्हारकपाट॥ लोचननिजपदजंत्रितजाहिंप्रानकेहिंवाट॥ ३०॥ चौ॥ च
लतमोहिचूडामनिदीन्हा॥ रघुपतिहृदयलाइसोइलीन्हा॥ नाथजुगललोच
नभरिवारी॥ वचनकहेकछुजनककुमारी॥ अनुजसमेतगहेहुप्रभुचरना॥ दी
नभरिवारी॥ वचनकहेकछुजनककुमारी॥ अनुजसमेतगहेहुप्रभुचरना
दीनवंधुप्रनतारतिहरना॥ मनक्रमवचनचरनअनुरागी॥ केहिंअपराधना
थमोहित्यागी॥ अवगुनएकमोरमैंमाना॥ विछुरतप्राननकीन्हपियाना॥
नाथसोनैनन्हिकरअपराधा॥ निसरतप्रानकरहिंहठिवाधा॥ विरहअगिनित
नुतूलसमीरा॥ स्वासजरैछनमाहसरीरा॥ नयनस्रवहिंजलनिजहितला
गी॥ जरैनपावदेहविरहागी॥ सीताकेअतिविपतिविसाला॥ विनहिंक
हेंभलिदीनदयाला॥ वलनीवारकेहुमोहिटेरी॥ सपकुरारहुसकुसनकेरी
दै॥ निमिषनिमिषकरुनानिधिजाहिकलपसमवीति॥ वेगिचलियप्रभुआ
निभुजवलषलदलजीति॥ ३१॥ चौ॥ सुनसीतादुषप्रभुसुषअैना॥ भरिआ
एजलराजिवनयना॥ वचनकायमनममगतिजाही॥ सपनेहुवूझियविपतिकिता
ही॥ कहहनुमानविपतिप्रभुसोई॥ जवतवसुमिरनभजननहोई॥ केतिकवा
तप्रभुजातुधानकी॥ रिपुहिजीतिआनवजानकी॥ सुनुकपितोहिसमानउप
कारी॥ नहिकोउसुरनरमुनितनुधारी॥ प्रतिउपकारकरौंकातोरा॥ सनमुषहो
इनसकतमनमोरा॥ सुनिकपितोहिउरिनमैनाही॥ देषेउकरिविचारमनमा
हीं॥ पुनिपुनिकपिहिचितवतसुरत्राता॥ लोचननीरपुलकतनअतिगाता॥ दो॥
सुनिप्रभुवचनविलोकिमुषगातहरषहनुमंत॥ चरनपरेउप्रेमाकुलत्राहित्रा
हिभगवंत॥ ३२॥ चौ॥ वारवारप्रभुचाहइउठावा॥ प्रेममगनतेहिउठवनभा
वा॥ प्रभुकरपंकजकपिकेसीसा॥ सुमिरिसोदसामगनगौरीसा॥ सावधानम
नकरिपुनिसंकर॥ लागेकहनकथाअतिसुंदर॥ कपिउठाइप्रभुहृदयलगावा॥
करगहिपरमनिकटवैठावा॥ कहुकपिरावनपालितलंका॥ केहिविधिदहेउदुर्ग
अतिवंका॥ प्रभुप्रसंन्नजानेउहनुमाना॥ वोलावचनविगतअभिमाना॥ साषामृ
गकैवडिमनुसाई॥ साषातेसाषापरजाई॥ नघिसिंधुहाटकपुरजारा॥ निसिचरग
नवधिविपिनउजारा॥ सोसवतवप्रतापरघुराई॥ नाथनकछुमोरिप्रभुताई॥
दो॥ ताकहप्रभुकछुअगमनहि॥ जापरतुम्हअनुकूल॥ तवप्रभाववडवानल
हिजारिसकैषलतूल॥ ३३॥ चौ॥ सुनतवचनप्रभुवहुसुषमाना॥ मनक्रम
वचनदासनिजजाना॥ सोरघुपवनसुतवरअनुकूला॥ देवआसुतोषकहहुसुषमू
ला॥ नाथभगतिअतिसैसुषदायनी॥ देहुकृपाकरिआनंददायनी॥ सुनिप्रभुपर

मसरलकपिवानी॥ एवमस्तुतवकहेउभवानी॥ उमारामसुभाउजेहिजाना॥ ताहिभजनु
तजिभावनआना॥ यहसंवादजासुउरआवा॥ रघुपतिचरनभगतिसोइपावा॥ सुनिप्रभुव
चनकहहिकपिवृंदा॥ जयजयजयकृपालसुषकंदा॥ तवरघुपतिकपिपतिहिवोलावा॥
कहाचलैकरकरहुवनावा॥ अवविलंवकेहिकारनकीजै॥ तुरतकपिन्हकहुआयसु
दीजै॥ कौतुकदेषिसुमनवहुवरषहि॥ नभतेभवनचलेसुरहरषहि॥ दो॥ कपि
पतिवेगिवोलाए॥ आएजूथपजूथ॥ नानावरनअतुलवलवानरभालुवरूथ॥ ३४॥
चौ॥ प्रभुपदपंकजनावहिसीसा॥ गरजहिभालुमहावलकीसा॥ देषीरामसकल
कपिसेना॥ चितैकृपाकरिराजिवनयना॥ रामकृपावलपाइकपिंदा॥ भएपछजुतमन
हुगिरिंदा॥ हरषिरामतवकीन्हपयाना॥ सगुनभएसुंदरसुभनाना॥ जासुसक
लमंगलमयकीती॥ तासुपयानसगुनयहनीती॥ प्रभुपयानजानावैदेही॥ फरकिवा
मअंगजनुकहिदेही॥ जोजोसगुनजानकीहिहोई॥ असगुनभएउरावनहिसोई॥ च
लाकटककोवरनैपारा॥ गरजहिवानरभालुअपारा॥ नषआयुधगिरिपादपधा
री॥ चलेगगनमहिइछाचारी॥ केहरिनादभालुकपिकरही॥ डगमगाहिदिग्गज
चिकरही॥ छं॥ चिकरहिदिग्गजडोलमहिगिरिलोलसागरषरभरे॥ मनहरष
दिनकरसोमसुरमुनिनागकिंनरदुषटरे॥ कटकटहिमरकटविकटभटवहुको
टिकोटिन्हधावही॥ जयरामप्रवलप्रतापकोसलनाथगुनगनगावही॥ सहिसक
नभारउदारअहिपतिवारवारहिमोहई॥ गहदसनपुनिपुनिकमठपृष्ठकठोर
सोकिमिसोहई॥ रघुवीररुचिरपियानप्रस्थितिजानिपरमसुहावनी॥ जनुकम
ठषर्परसर्पराजसोलिषतअविचलपावनी॥ दो॥ एहिविधिजाइकृपानिधिउतरेसागर
तीर॥ जहतहलागेषानफलभालुविपुलकपिवीर॥ ३५॥ चौ॥ उहांनिसाचररहहि
ससंका॥ जवतेजारिगएउकपिलंका॥ निजनिजग्रहसवकरहिविचारा॥ नहिनिसि
चरकुलकेरउवारा॥ जासुदूतवलवरनिनजाई॥ तेहिआएपुरकवनभलाई॥ दू
तन्हसनसुनिपुरजनवानी॥ मंदोदरीअधिकअकुलानी॥ रहसिजोरिकरपतिपग
लागी॥ वोलीवचननीतिरसपागी॥ कंतकरषहरिसनपरिहरहू॥ मोरकहाअति
हितहियधरहू॥ समुझतजासुदूतकइकरनी॥ स्रवहिगर्भरजनीचरघरनी॥ तासु
नारिनिजसचिववुलाई॥ पठवहुकंतजोचहहुभलाई॥ तवकुलकमलविपिनदुष
दाई॥ सीतासीतनिसासमआई॥ सुनहुनाथसीताविनदीन्हे॥ हितनतुम्हारसंभुअ
जकीन्हे॥ दो॥ रामवानअहिगनसरिसनिकरनिसाचरभेक॥ जवलगिग्रसतनतव
लगिजतनकरहुतजिटेक॥ ३६॥ चौ॥ श्रवनसुनीसठताकरवानी॥ विहसाजग
तविदितअभिमानी॥ सभयसुभाउनारिकरसाचा॥ मंगलमहुभयमनअतिका
चा॥ जोआवैमरकटकटकाई॥ जियहिविचारेनिसिचरषाई॥ कंपहिलोकप
जाकीत्रासा॥ तासुनारिसभयवडिहासा॥ असकहिविहसिताहिउरलाई॥ च
लेउसभाममताअधिकाई॥ मंदोदरीहृदयकरचिंता॥ भएउकंतपरविधिविपरी
ता॥ वैठेउसभाषवरिअसिपाई॥ सिंधुपारसेनासवआई॥ वूझेसिसचिवउचि
तमतकहहू॥ तेसवहसेमष्टकरिरहहू॥ जितेहुसुरासुरतवश्रमनाही॥
नरवानरकेहिलेषेमाही॥ दो॥ सचिववैदगुरतीनजौप्रियवोलहिभयआस॥
राजधर्मतनतीनकरहोइवेगिहीनास॥ ३७॥ चौ॥ सोइरावनकहुवनीस
हाई॥ अस्तुतिकरहिसुनाइसुनाई॥ अवसरजानिविभीषनआवा॥ भ्रातचरनसीसतेहिनावा॥ पुनिसिरना
इवैठनिजआसन॥ वोलावचनपाइअनुसासन॥ जोकृपालपूछहुमोहिताता॥
मतिअनुरूपकहौहितताता॥ जोआपनचाहैकल्याना॥ सुजससुमतिसुभ

गतिसुषुनाना।सोपरनारिलिलारगोसाईं।तजौचउथचंदकीनाईं।चउदहभुवनए
कपतिहोई।रामद्रोहतिष्टैनहिसोई।गुनसागरनागरनरजोई।अलपलोभभलक
हैनकोई।दो०।कामक्रोधमदलोभसबनाथनरककेपंथ।सबपरिहरिरघुवी
रहिभजहुभजहिजेहिसंत।३८।चौ०।तातरामनहिनरभूपाला।भुवनेस्वरकाल
हुकरकाला।ब्रह्मअनामयअजभगवंता।व्यापकअजितअनादिअनंता।गोद्वि
जदेवधेनुहितकारी।कृपासिंधुमानुषतनधारी।जनरंजनभंजनखलव्राता।
वेदधरमरक्षकसुनुभ्राता।ताहिवैरतजिनाइयमाथा।प्रनतारतभंजनरघु
नाथा।देहुनाथप्रभुकहुँवैदेही।भजहुरामविनुहेतसनेही।सरनगएप्रभुता
हुनत्यागा।विस्वद्रोहकृतअघजेहिलागा।जासुनामत्रैतापनसावन।सो
इप्रभुप्रगटसमझुजियरावन।दो०।वारवारपदलागौविनकरौदससीस।परिहर
मानमोहमदभजहुकोसलाधीस।३९।मुनिपुलस्तिनिजसिष्यसनकहिपठइ
एकवाततुरतहिमैप्रभुसनकहिपाइसुअवसरतात।४०।चौ०।मालवंतअति
सचिवसिआना।तासुवचनसुनिअतिसुषमाना।तातअनुजतवनीतिविभूषन
सोउरधरहुजोकहतविभीषन।रिपुउतकरषकहतसठदोऊ।दूरकरहुइहाँहै
कोऊ।मालवंतगृहगयउवहोरी।कहइविभीषनपुनिकरजोरी।सुमतिकुम
तिसवकेउररहहीं।नाथपुराननिगमअसकहहीं।जहाँसुमतितहाँसंपतिनाना
जहाँकुमतितहँविपतिनिदाना।तवउरकुमतिवसीविपरीती।हितअनहितजा
नहुरिपुप्रीती।कालरातिनिसचरकुलकेरी।तेहिसीतापरप्रीतिघनेरी।दो०।ता
तचरनगहिमागौंराषहुमोरदुलार।सीतादेहुरघुनाथकहुँअहितनहोइतुम्
हार।४१।चौ०।वुधपुरानश्रुतिसंमतवानी।कहहिविभीषननीतिवषानी।
सुनतदसाननउठारिसाई।षलतोहिनिकटम्रितुअवआई।जिअसिसदासठ
मोरजिआवा।रिपुकरपक्षमूढतोहिभावा।कहसिनषलअसकोजगमाहीं।
भुजवलिजाहिजितामैनाहीं।ममपुरवसितपसिन्हपरप्रीती।सठमिलुजाइ
तिन्हहिकहुनीती।असकहिकीन्हसिचरनप्रहारा।अनुजगहेपदवारहिंवारा।उमा
संतकेइहैवडाई।मंदकरतजोकरैभलाई।तुम्हपितुसरिसभलेमोहिमारा।रामभजे
हितनाथतुम्हारा।सचिवसंगलैनभपथगएउ।सवहिसुनाइकहतअसभए
उ।दो०।रामसत्यसंकलपप्रभुसभाकालवसतोरि।मैरघुवीरसरनअवजाउँदे
हुजनिषोरि।४२।चौ०।असकहिचलाविभीषनजवहीं।आउहीनभएनि
सिचरतवहीं।साधुअवज्ञातुरतभवानी।करकल्यानअषिलकैहानी।रावन
जवहिंविभीषनत्यागा।भएउविभवविनुतवहींअभागा।चलेउहरषरघुनाय
कपाहीं।करतमनोरथवहुमनमाहीं।देषिहुँजाइचरनजलजाता।अरुनमृदु
लसेवकसुषदाता।जेपदपरसितरीरिषिनारी।दंडककाननपावनकारी।जेपद
जनकसुताउरलाए।कपटकुरंगसंगधरिधाए।हरउरसरसरोजपदजेई।अ
होभाग्यमैंदेषिहौंतेई।दो०।जिन्हपाइन्हकेपादुकेन्हभरतरहेमनलाइ।तेप
दआजुविलोकिहौंइन्हनयननअवजाइ।४३।चौ०।एहिविधिकरतसप्रेमवि
चारा।आएउसपदिसिंधुकेपारा।कपिन्हविभीषनआवतदेषा।जानाकोउरिपु
दूतविसेषा।ताहिराषिकपिपतिपहिआए।समाचारसवताहिसुनाए।कहसुग्री
वसुनहुरघुराई।आवामिलनदसाननभाई।कहप्रभुसषावूझियेकाहा।कहइ
कपीससुनहुनरनाहा।जानिनजाइनिसाचरमाया।कामरूपकेहिकारनआ
वा।भेदलेनहमारसठआवा।राषियवाँधिमोहिअसभावा।सषानीतितुम्हनी

किविचारी।ममपनसरनागतभयहारी।सुनिप्रभुवचनहरषहनुमाना।सरनागत
वक्षलभगवाना।दो०।सरनागतकहँजेतजहिनिजअनहितअनुमानि।तेनरपावँर
पापमयतिन्हहिविलोकतहानि।४४।चौ०।कोटिविप्रवधलागहिजेही।आएसरनतजौ
नहींतेही।सनमुषहोइजीवमोहिजवहीं।जनमकोटिअघनासहिंतवहीं।पापवंतक
रसहजसुभाऊ।भजनमोरतिहिभावनकाऊ।जोपैदुष्टहृदयसठहोई।मोरेसनमु
षआविकसोई।निरमलमनजनसोमोहिपावा।मोहिकपटछलछिद्रनभावा।
भेदलेनपठवादससीसा।तवहुनकछुभयहानिकपीसा।जगमहुँसषानिसचरजेते।
लक्षमनहनहिनिमिषमहुँतेते।जोसभीतआवासरनाई।राषिहौंताहिप्रान
कीनाईं।दो०।उभयभाँतितेहिआनहुहँसिबोलेकृपानिकेत।जयकृपालकहि
कपिचलेअंगदहनूसमेत।४५।चौ०।सादरआगेकरितेहिवंदर।चलेतहाँरघुप
तिकरुनाकर।दूरिहितेदेषेदोउभ्राता।नयनानंददानकेदाता।वहुरिरामछवि
धामविलोकी।रहेउठुकिएकटकरोकी।भुजाप्रलंवकंजारुनलोचन।स्यामल
गातप्रनतभयमोचन।सिंघकंधआयतउरसोहा।आननअमितमदनमनमो
हा।नयननीरपुलकितअतिगाता।निसिचरवंसजनमसुरत्राता।मनधरिधी
रकहीमृदुवाता।नाथदसाननकामैभ्राता।सहजपापप्रियतामसदेहा।जथाउलू
कहितमपरनेहा।दो०।श्रवनसुजससुनिआयउँप्रभुभंजनभवभीर।त्राहित्राहि
आरतहरनसरनसुषदरघुवीर।४६।चौ०।असकहिकरतदंडवतदेषा।तुरत
उठेप्रभुहरषविसेषा।दीनवचनसुनिप्रभुमनभावा।भुजविसालगहिहृदयलगा
वा।अनुजसहितमिलिढिगवैठानी।वोलेवचनभगतभयहारी।कहुलंकेससहि
तपरिवारा।कुसलकुठाहरवासतुम्हारा।षलमंडलीवसहुदिनराती।सषाधरमनि
वहैकिहिभाँती।मैजानौतुम्हारिसवरीती।अतिनयनिपुननभावअनीती।वरुभल
वासनरककरताता।दुष्टसंगजनिदेइविधाता।अवपददेषिकुसलरघुराया।जो
तुम्हकीन्हीजानिजनदाया।दो०।तवलगिकुसलनजीवकहँसपनेहुमनविश्रा
म।जवलगिभजतनरामकहँसोकधामतजिकाम।४७।चौ०।तवलगिवसतहृ
दयषलनाना।लोभमोहमक्षरमदमाना।जवलगिउरनवसतरघुनाथा।धरेचा
पसायककटिभाथा।ममतातरुनतमीअँधियारी।रागद्वेषउलूकसुष
कारी।तवलगिवसतजीवमनमाहीं।जवलगिप्रभुप्रतापरविनाहीं।अवमैकु
सलमिटेभयभारे।देषिरामपदकमलतुम्हारे।तुम्हकृपालजापरअनुकूला।ता
हिनव्यापैत्रिविधभवसूला।मैनिसिचरअतिअधमसुभाऊ।सुभआचरनकी
न्हनहिकाऊ।जासुरूपमुनिध्याननआवा।तेप्रभुहरषिहृदयमोहिलावा।दो०।
अहोभाग्यममअमितअतिरामकृपासुषपुंज।देषेउनयनविरंचिसिवसेव्यजुग
लपदकंज।४७।चौ०।सुनहुसषानिजकहहुसुभाऊ।जानिभुसंभुगिरिजा
ऊ।जोनरहोइचराचरद्रोही।आवैसभयसरनतकिमोही।तजिमदमोहकपट
छलनाना।करौसद्यतेहिसाधुसमाना।जननीजनकवंधुसुतदारा।तनुधनुभ
वनसुहृदपरिवारा।सवकैममतातागवटोरी।ममपदमनहिवाँधवटिडोरी।
समदरसीइक्षाकछुनाहीं।हरषसोकभयनहिमनमाहीं।असरसज्जनममउ
रवसकैसे।लोभीहृदयवसैधनुजैसे।तुम्हसरीषेसंतप्रियमोरे।धरउँदेहन
हिआननिहोरे।दो०।सगुनउपासकपरमहितनिरतनीतिदृढनेम।तेनरप्रान
समानममजिन्हकेद्विजपदप्रेम।४८।चौ०।सुनुलंकेससकलगुनतोरे।तातेतु
म्हअतिसैप्रियमोरे।रामवचनसुनिवानरजूथा।सकलकहहिजयकृपावरूथा।

रा.सु.
२

सुनतबिभीषनप्रभुकैबानी॥नहिंअघातस्रवनामृतजानी॥पदअंबुजगहिबारहिंबा
रा॥हृदयसमातनप्रेमअपारा॥सुनहुदेवसचराचरस्वामी॥प्रनतपालउरअंतरजा
मी॥उरकछुप्रथमबासनारही॥प्रभुपदप्रीतिसरितसोबही॥अबकृपालनिजभ
गतिपावनी॥देहुसदासिवजोमनभावनी॥एवमस्तुप्रभुकहिरनधीरा॥मागातुरत
सिंधुकरनीरा॥जदपिसखातवइछानाहीं॥मोरदरसअमोघजगमाहीं॥असकहिराम
तिलकतेहिसारा॥सुमनबृष्टिनभभईअपारा॥दो॰॥रावनक्रोधअनलनिजस्वा
ससमीरप्रचंड॥जरतबिभीषनराखिउदीन्हेउराजअखंड॥जोसंपतिसिवरावनहिंदी
न्हिदिएदसमाथ॥सोइसंपदाबिभीषनहिसकुचिदीन्हिरघुनाथ॥४९॥चौ॰॥असप्र
भुछाडिभजहिजेआना॥तेनरपसुबिनुपूंछबिषाना॥निजजनजानिताहिअपना
वा॥प्रभुसुभाउकपिकुलमनभावा॥पुनिसर्बग्यसर्बउरबासी॥सर्बरूपसबरहितउदा
सी॥बोलेबचननीतिप्रतिपालक॥कारनमनुजदनुजकुलघालक॥सुनुकपीस
लंकापतिबीरा॥केहिबिधितरियजलधिगंभीरा॥संकुलमकरउरगकुलजाती॥
अतिअगाधदुस्तरसबभांती॥कहलंकेससुनहुरघुनायक॥कोटिसिंधुसोषकत
वसायक॥जद्यपितदपिनीतिअसिगाई॥बिनयकरियसागरपहिजाई॥दो॰॥प्रभु
तुम्हारकुलगुरजलधिकहिहिउपायबिचारि॥बिनुप्रयाससागरतरिहिसकल
भालुकपिधारि॥५०॥चौ॰॥सखाकहीतुम्हनीकिउपाई॥करियदैवजौंहोइसहाई॥मं
त्रनयहलछिमनमनभावा॥रामबचनसुनिअतिदुखपावा॥नाथदैवकरकौनभ
रोसा॥सोषियसिंधुकरियमनरोसा॥कादरमनकहएकअधारा॥दैवदैवआलसी
पुकारा॥सुनतबिहसिबोलेरघुबीरा॥ऐसेहिकरबधरहुमनधीरा॥असकहिप्रभुअनु
जहिसमुझाई॥सिंधुसमीपगएरघुराई॥प्रथमप्रनामकीन्हसिरनाई॥बैठेपुनि
तटदर्भडसाई॥जबहिबिभीषनप्रभुपहिआए॥पाछेरावनदूतपठाए॥दो॰॥सकलच
रिततिन्हदेखेधरेकपटकपिदेह॥प्रभुगुनहृदयसराहहिसरनागतपरनेह॥५१॥
चौ॰॥प्रगटबखानहिरामसुभाऊ॥अतिसप्रेमगाबिसरिदुराऊ॥रिपुकेदूतकपिन्ह
तबजाने॥सकलबांधिकपीसपहिआने॥कहसुग्रीवसुनहुसबबानर॥अंगभं
गकरिपठवहुनिसिचर॥सुनिसुग्रीवबचनकपिधाए॥बांधिकटकचहुपासफिरा
ए॥बहुप्रकारमारनकपिलागे॥दीनपुकारततदपिनत्यागे॥जोहमारहरनासाका
ना॥तेहिकोसलाधीसकैआना॥सुनिलछिमनसबनिकटबोलाए॥दयालागि
हसितुरतछोडाए॥रावनकरदीजहुयहपाती॥लछिमनबचनबाचुकुलघाती॥दो॰
कहेहुमुखागरमूढसनममसंदेसउदार॥सीतादेइमिलहुनतआवाकालतुम्हार
५२॥चौ॰॥तुरतनाइलछिमनपदमाथा॥चलेदूतबरनतगुनगाथा॥कहतरामज
सलंकाआए॥रावनचरनसीसतिन्हनाए॥बिहसिदसाननपूंछीबाता॥कहसिन
सुकआपनिकुसलाता॥पुनिकहुखबरिबिभीषनकेरी॥जाहिमृत्युआईअतिने
री॥करतराजलंकासठत्यागी॥होइहिजवकरकीटअभागी॥पुनिकहुभालुकी
सकटकाई॥कठिनकालप्रेरितचलिआई॥जिन्हकेजीवनकररखवारा॥भयउमृदु
लचितसिंधुबिचारा॥कहुतपसिन्हकैबातबहोरी॥जिन्हकेहृदयत्रासअतिमोरी॥
दो॰॥कीभइभेंटकिफिरिगएश्रवनसुजससुनिमोर॥कहसिनरिपुदलतेजबल
बहुतचकितचिततोर॥५३॥चौ॰॥नाथकृपाकरिपूंछेहुजैसे॥मानहुबचन
क्रोधतजितैसे॥मिलाजाइजबअनुजतुम्हारा॥जातहिरामतिलकतेहिसारा॥
रावनदूतहमहिसुनिकाना॥कपिन्हबांधिदीन्हेदुखनाना॥श्रवननासिकाकाटन
लागे॥रामसपथदीन्हेहमत्यागे॥पूंछेहुनाथरामकटकाई॥बदनकोटिसतबरनिनजा

इ॥नानाबरनभालुकपिधारी॥बिकटाननबिसालभयकारी॥जेहिपुरदहेउहतेउसु
ततोरा॥सकलकपिन्हमहतेहिबलथोरा॥अमितनामभटकठिनकराला॥अ
मितनागबलबिपुलबिसाला॥छं॰॥बहुरूपबनचरन्हअतिबलसेनबरनतन
हिबनै॥स्यामादिन्हघगोरादिनेषअरुनादबरननकोगनै॥अतिकायआदिकबि
उष्टकानघटनवाकरधरभयधरा॥यहिभांतिप्रबलप्रमत्तनाथरघुपतिदलबहुबी
रा॥दो॰॥द्विबिदमयंदनीलनलअंगदगदबिकटासि॥दधिमुखकेसरीकुमुदग
वजामवंतबलरासि॥५४॥चौ॰॥एकपिसबसुग्रीवसमाना॥इन्हसमकोटि
गनैकोनाना॥रामकृपाअतुलितबलतिन्हहीं॥तृनसमानत्रैलोकहिगनहीं॥अस
मैंश्रवनसुनादसकंधर॥पदुमअठारहजूथपबंदर॥नाथकटकमहसोकपि
नाहीं॥जोनतुम्हहिजीतैरनमाहीं॥परमक्रोधमीजहिसबहाथा॥आयसु
पैनदेहिरघुनाथा॥सोषहिसिंधुसहितझषब्याला॥पूरहिनतभरिकुधरबिसाला॥
मर्दिगर्दमिलवहिदससीसा॥ऐसेइबचनकहहिसबकीसा॥गर्जहितर्जहिसहजअ
संका॥मानहुग्रसनचहतहहिलंका॥दो॰॥सहजसूरकपिभालुसबपुनिसिर
परप्रभुराम॥रावनकालकोटिकहुजीतिसकहिसंग्राम॥५५॥चौ॰॥रामतेजब
लबुधिबिपुलाई॥सेषसहससतसकहिनगाई॥सकसरएकसोषिसतसाग
र॥तवभ्रातहिपूछेउनयनागर॥तासुबचनसुनिसागरपाहीं॥मागतपंथकृपामन
माहीं॥सुनतबचनबिहसादससीसा॥जौअसिमतिसहायकृतकीसा॥सहजभी
रुकरबचनदिढाई॥सागरसनठानीमचलाई॥मूढमृषाकाकरसिबडाई॥सागर
सनठानीमचलाई॥मूढमृषाकाकरसिबडाई॥रिपुबलबुद्धिथाहमैपाई॥सचिवस
भीतबिभीषनजाके॥बिजयबिभूतिकहांजगताके॥सुनिखलबचनदूतरिसबाढी॥
समयबिचारिपत्रिकाकाढी॥रामअनुजदीन्हीयहपाती॥नाथबचाइजुडावहु
छाती॥बिहसिबामकरलीन्हीरावन॥सचिवबोलिसठलागबचावन॥दो॰॥
बातन्हमनहिरिझाइसठजनिघालसिकुलखीस॥रामबिरोधनउबरसिसरनबि
ष्नुअजईस॥५६॥दो॰॥कीतजिमानअनुजइवप्रभुपदपंकजभृंग॥होहिकिरामस
रानलखलकुलसहितपतंग॥चौ॰॥सुनतबचनमनमहमुसकाई॥कहत
दसाननसबहिसुनाई॥भूमिपराकरगहतअकासा॥लघुतापसकरबागबिला
सा॥कहसुकनाथसत्यसबबानी॥समुझहुछाडिप्रकृतिअभिमानी॥सुनहुबच
नममपरिहरिक्रोधा॥नाथरामसनतजहुबिरोधा॥अतिकोमलरघुबीरसुभा
उ॥जद्यपिअखिललोककेराउ॥मिलतकृपातुम्हपरप्रभुकरिहहि॥उरअपराधन
एकोधरिहहि॥जनकसुतारघुनाथहिदीजै॥एतनकहामोरप्रभुकीजै॥जबतें
तेहिदेनकहेउबैदेही॥चरनप्रहारकीन्हसठतेही॥चरननाइसिरचलासोतहवा॥
कृपासिंधुरघुनायकजहावा॥करिप्रनामनिजकथासुनाई॥रामकृपाआपन
गतिपाई॥रिषिअगस्तिकिस्रापभवानी॥राछसभयउरहामुनिग्यानी॥बंदिराम
पदबारहिंबारा॥मुनिनिजआश्रमकहपगुधारा॥दो॰॥बिनयनमानतजलधि
जडगएतीनिदिनबीति॥बोलेरामसकोपतबभयबिनहोइनप्रीति॥५७॥चौ॰॥
लछिमनबानसरासनआनु॥सोषौंबारिधिबिसिखकृसानु॥सठसनबिनयकु
टिलसनप्रीती॥सहजकृपनसनसुंदरनीती॥ममतारतसनग्यानकहानी॥
अतिलोभीसनबिरतिबखानी॥क्रोधिहिसमकामिहिहरिकथा॥ऊसरबीजबए
फलजथा॥असकहिरघुपतिचापचढावा॥यहमतलछिमनकेमनभावा॥संधाने
उप्रभुबिसिषकराला॥उठीउदधिउरअंतरज्वाला॥मकरउरगझषगनअकुलाने॥

जरतजंतजलनिधिजबजाने॥कनकथारभरिमनिगननाना॥बिप्ररूपआएउतजिमा
ना॥दो॰॥काटेहिपैकदलीफरैकोटिजतनकोउसींच॥बिनयनमानषगेससुनिडाटेहि
पैनवनीच॥चौ॰॥सभयसिंधुगहिपदप्रभुकेरे॥छमहुनाथसबअवगुनमेरे॥
गगनसमीरअनलजलधरनी॥इन्हकेनाथसहजजडकरनी॥तवप्रेरतमायाउप
जाये॥स्रिष्टिहेतसबग्रंथनगाए॥प्रभुआयसुजेहिकहजसअहही॥सोतिहिभां
तितिरहेसुषलहही॥प्रभुभलकीन्हमोहिसिषदीन्ही॥मरजादापुनितुम्हरी
कीन्ही॥ढोलगवारनीचपसुनारी॥सकलताडनाकेअधिकारी॥प्रभुप्रतापमै
जावसुषाई॥उतरिहिकटकनमोरिबडाई॥प्रभुअग्याअपेलश्रुतिगाई॥करोसोवे
गिजोतुम्हहिसुहाई॥दो॰॥सुनतविनीतवचनअतिकहकृपालमुसकाइ॥
जिहिबिधिउतरैकपिकटकतातसोकहहुउपाय॥५९॥चौ॰॥नाथनीलनलकपि
दोउभाई॥लरिकाईरिषिआसिषपाई॥तिन्हकेपरसकिएगिरिभारे॥तरिहहिजल
धिप्रतापतुम्हारे॥मैपुनिउरधरिप्रभुप्रभुताई॥करिहोबलअनुमानसहाई॥येहि
बिधिनाथपयोधिबंधाई॥जिहिंयहसुजसलोकतिहुगाई॥येहसरममउत्तरतट
बासी॥हतहुनाथषलनरअघरासी॥सुनिकृपालसागरमनपीरा॥तुरतहि
हरीरामरनधीरा॥देषिरामबलपौरुषभारी॥हरषिपयोनिधिभएउसुषा
री॥सकलचरितकहिप्रभुहिसुनावा॥चरनबंदिपाथोधिसिधावा॥छं॰॥नि
जभवनगवनेउसिंधुश्रीरघुपतिहियहमतभायऊ॥यहचरितकलिमलहर
जथामतिदासतुलसीगायऊ॥सुषभवनसंसयसमनदवनविषादरघुप
तिगुनगना॥तजिआससकलभरोसगावहिसुनहिसंततसठमना॥दो॰॥
सकलसुमंगलदायकरघुनायकगुनगान॥सादरसुनहितेतरहिभवसिंधुवि
नाजलजान॥६०॥इतिश्रीरामचरितमानसेसकलकलिकलुषविध्वंसने
ज्ञानसंपादनोनामपंचमःसोपानः॥ ॥ ॥ ॥ ॥

श्रीसीतारामाभ्यां नमः॥ ॥रामं कामारिसेव्यं भवभयहरणं कालमत्तेभसिं
हं॥ योगींद्रं ज्ञानगम्यं गुणनिधिमजितं निर्गुणं निर्विकारं॥ मायातीतं सुरेशं ख
लवधनिरतं वेदैकदेवं वंदे कंदावदातं सरसिजनयनं देवमुर्वीशरूपं॥१॥
संखेंद्वाभमतीवसुंदरतनुं सार्दूलचर्मांबरं॥ कालव्यालकरालभूषणधरं
गंगासशांकप्रियं॥ काशीशं कलिकल्मषौघशमनं कल्याणकल्पद्रुमं॥ नौमीड्यं गि
रिजापतिं गुणनिधिं संकरं मन्मथारी॥२॥ यो ददाति सतां शंभुः कैवल्यमपि दुर्ल
भं॥ खलानां दंडकृद्योऽसौ शंकरः शं तनोतु मे॥३॥ दोहा॥ लव निमेष परमानु जुग
बरष कल्प सर चंड॥ भजसि न मन तेहि राम कहं काल जासु कोदंड॥१॥ सोरठा॥
सिंधु बचन सुनि राम सचिव बोलि प्रभु अस कहेउ॥ अब बिलंब केहि काम करहु सेतु
उतरै कटक॥ सुनहु भानुकुल केतु जामवंत कर जोरि कहै॥ नाथ नाम तव सेतु नर
चढ़ि भवसागर तरहि॥ चौपाई॥ यह लघु जलधि तरत कति बारा॥ अस सुनि पुनि कहै
पवनकुमारा॥ प्रभु प्रताप बड़वानल भारी॥ सोषेउ प्रथम पयोनिधि बारी॥ तव रिपु
नारि रुदन जल धारा॥ भरेउ बहोरि भयउ तेहि षारा॥ सुनि अति उकुति पवनसुत केरी॥
हरषे कपि रघुपति तन हेरी॥ जामवंत बोले दोउ भाई॥ नल नीलहि सब कथा सुना
ई॥ राम प्रताप सुमिरि मन माही॥ करहु सेतु प्रयास कछु नाही॥ बोलि लीए क
पि निकर बहोरी॥ सकल सुनहु बिनती कछु मोरी॥ राम चरन पंकज उर धरहू॥ कौ
तुक एक भालु कपि करहू॥ धावहु मर्कट बिकट बरूथा॥ आनहु सकल गिरिन
के जूथा॥ सुनि कपि भालु चले करि हूहा॥ जय रघुबीर प्रताप समूहा॥ दोहा॥
अति उतंग गिरि पादप लीलहि लेहि उठाइ॥ आनि देहि नल नीलहि रचहि ते सेतु
बनाइ॥ चौपाई॥ सैल बिसाल आनि कपि देही॥ कंदुक इव नल नील ते लेही॥ दे
षि सेतु अति सुंदर रचना॥ परम रम्य उत्तम यह धरनी॥ महिमा अमित जाइ नहि बर
नी॥ करिहौं इहां संभु थापना॥ मोरे हृदय परम कलपना॥ सुनि कपीस बहु दूत
पठाये॥ मुनिबर निकर बोलि ले आये॥ लिंग थापि बिधिवत करि पूजा॥ शिव स
मान प्रिय मोहि न दूजा॥ सिवद्रोही मम भगत कहावै॥ सो नर सपनेहु मोहि
न भावै॥ संकर बिमुख भक्ति चह मोरी॥ सो नर मूढ़ मंद मति थोरी॥ दोहा॥
संकर प्रिय मम द्रोह॥ सिवद्रोही मम दास॥ ते नर करहि कलप भरि घोर नरक
महु बास॥ चौपाई॥ जो रामेस्वर दरसन करही॥ ते तनु तजि मम लोक सिधारही॥
जो गंगाजल आनि चढ़ावही॥ सो साजोज्य मुक्ति नर पावही॥ होइ अकाम जो छल
तजि सेवही॥ भक्ति मोर तेहि संकर देवही॥ मम कृत सेतु जो दरसन करही॥ सो
बिनु श्रम भवसागर तरिही॥ राम बचन सब के जीय भाये॥ मुनिबर निज निज
आश्रम आये॥ गिरिजा रघुपति कै यह रीती॥ संतत करहि प्रनत पर प्रीती॥ बांधे से
तु नील नल नागर॥ राम कृपा जसु भयउ उजागर॥ बुड़हि आनहि बोरहि जेही॥ भये
उपल बोहित सम तेही॥ महिमा यह न जलधि कै बरनी॥ पाहन गुन न कपिन्ह कै क
रनी॥ दोहा॥ श्रीरघुबीर प्रताप ते सिंधु तरे पाषान॥ ते मतिमंद जो राम तजि भजहि
जाइ प्रभु आन॥ चौपाई॥ बांधि सेतु अति दृढ़ बनावा॥ देषि कृपानिधि के मन भावा॥ च
ली सेन कछु बरनि न जाई॥ गरजहि मर्कट भट समुदाई॥ सेतुबंध ढिग चढ़ि रघु
राई॥ चितव कृपाल सिंधु बहुताई॥ देषन कहु प्रभु करुनाकंदा॥ प्रगट भये सब ज
लचर बृंदा॥ मकर नक्र झष नाना ब्याला॥ सत जोजन तन परम बिसाला॥ ऐसेउ ए
क तिन्हहि जे षाही॥ एकन्ह के डर ते पि डराही॥ प्रभुहि बिलोकहि टरहि न टारे॥ म
न हरषित सब भये सुषारे॥ तिन्ह की ओट न देषिय बारी॥ मगन भये हरि रूप निहा
री॥ चला कटक प्रभु आयसु पाई॥ को कहि सकै कपिदल बिपुलाई॥ दोहा॥ सेतु बं
ध भइ भीर अति॥ कपि नभ पंथ उड़ाहि॥ अपर जलचरन्हि ऊपर चढ़ि चढ़ि पारहि जा
हि॥४॥ चौपाई॥ अस कौतुक बिलोकि दोउ भाई॥ बिहसि चले कृपाल रघुराई॥ सेन सहि

तउतेरघुवीरा॥ कहिनजाइकपिजूथपभीरा॥ सिंधुपारप्रभुडेराकीना॥ सकलकपिनक
हेआयसुदीन्हा॥ खाहुजाइफलमधुरसुहाये॥ सुनतभालकपिजहंतहंधाये॥ सवतरुफ
रेरामहितलागी॥ रितुअनरितुहिकालगतित्यागी॥ खाहिमधुरफलविटपहलावहीं॥
॥ लंकासनमुखसिखरचलावहीं॥ जहंकहुंफिरतनिसाचरपावहीं॥ घेरिसकलवहु
नाचनचावहीं॥ दसनन्हकाटिनासिकाकाना॥ कहिप्रभुसुजसदेहितवजाना॥ जिन्ह
करनासाकाननिपाता॥ तेरावनकहिसभवाता॥ सुनतश्रवनवारिधवंधाना॥
दसमुषवोलिउठाअकुलाना॥ दोहा॥ वांधेवननिधिनीरनिधिजलनिधिसिंधुवारी
स॥ सत्यतोयनिधिकंपतिउदधिपयोधिनदीस॥ ६॥ चौपाई॥ वाकुलताबि
चारिवहोरी॥ विहसिचलाग्रहकरिमतिभोरी॥ मंदोदरीसुन्योप्रभुआयो॥ कौतुक
हीवारीसवंधायो॥ करगहिपतिहिभवननिजआनी॥ वोलीपरममनोहरवानी॥ चर
ननाइसिरअंचलरोपा॥ सुनहुवचनपियपरिहरिकोपा॥ नाथवैरकीजेताहीसों॥ बु
धिवलसकैजीतिजाहीसों॥ तुमरघुपतिकहंअंतरकैसा॥ षलषद्योतदीवाकरजैसा॥
अतिवलमधुकैटभजिहिमारा॥ महावीरदितिसुतसंहारा॥ जेवलिवांधिसहसभुज
मारा॥ सोईअवतरेउहरनमहिभारा॥ तासुवैरनहीकिजियनाथा॥ कालकरमजिवजा
केहाथ॥ दोहा॥ रामहिसौंपोजानकीनायकमलपदमाथ॥ सुतकहिराजसमरपि
वनजायभजियरघुनाथ॥ ७॥ चौपाई॥ नाथदीनदयालरघुराई॥ वाघौसनमुषग
येनषाई॥ चाहियकरनसोसवकरिवीते॥ तुमसुरअसुरचराचरजीते॥ संतकहहि
अस्तिनीतिदसानन॥ चौथेपनजाइहिनृपकानन॥ तासुभजनकीजेतहभरता॥ जो
पालककरतासंहरता॥ सोईरघुवीरप्रनतअनुरागी॥ भजहुनाथममतासभत्या
गी॥ मुनिवरजतनकरहिजिहिलागी॥ भूपराजतजिहोहिविरागी॥ सोईकोसला
धिसरघुराया॥ आयेकरनतोहिपरदाया॥ जोपियमानहुमोरसिषावन॥ सुजसहो
इतिहुंपुरअतिपावन॥ दोहा॥ असकहिलोचनवारिभरिगहिपदकंपतगात॥
भजहुरघुनाथपदअचलहोयअहिवात॥ ८॥ चौपाई॥ तवरावनमयसुताउठाई॥
कहनलागषलनिजप्रभुताई॥ सुनितैंप्रियावृथाभयमाना॥ जगजोधाकोमोहि
समाना॥ वरुनकुबेरपवनजमकाला॥ भुजवलजीतेदसोदिगपाला॥ देवदनुज
नरसवबसमोरे॥ कवनहेतउपजाभयतोरे॥ नानाविधितेहिकहिसमुझाई॥ स
भावहोरिवैठिसोजाई॥ मंदोदरीहृदैयअसजाना॥ कालविवसउपजाअभिमाना॥
सभाआयमंत्रिनसनवूझा॥ करवकवनविधिरिपुसनजूझा॥ कहहिसचिवसुनि
निसिचरनाहा॥ वारवारप्रभुपूछहुकाहा॥ कहहुकवनभयकरियविचारा॥ नरक
पिभालअहारहमारा॥ दोहा॥ सभकेवचनश्रवनसुनिकहप्रहस्तकरजोरि॥ नीति
विरोधनकरियप्रभुमंत्रिनमतिअतिथोरि॥ ९॥ चौपाई॥ कहहिसचिवसठठकु
रसुहाती॥ नाथनपूरआयहिएहिभांती॥ वारिधिनाघिएककपिआवा॥ तासुचरित
मनमहुंसवगावा॥ छुधानरहितुमहितवकाहू॥ जारतनगरकसनधरिषाहू॥
सुनतनीकआगेदुषपावा॥ सचिवनअसमतिप्रभुहिसुनावा॥ जेहिवारीसवधा
यहहेला॥ उतरेसैनसमेतसुवेला॥ सोईभवमनुजषावहमभाई॥ वचनकहहि
सभगालफुलाई॥ तातवचनममसुनिअतिआदर॥ जिनमनगुनहुमोहिकविका
दर॥ प्रीयवानिजेकहहिजेसुनहीं॥ ऐसेनरनिकायजगअहहीं॥ वचनपरमहि
तसुनतकठोरा॥ सुनहिजेकहहितेनरजगथोरा॥ प्रथमवसीठपठवहुनीती॥
सीतादेयकरहुपुनिप्रीती॥ दोहा॥ नारिपाइफिरजायजौ॥ तौनवढाईयरारि॥
नाहितौसनमुषसमरमहि॥ तातकरियहठिमारि॥ १०॥ चौपाई॥ यहमतमानहुजो
प्रभुमोरा॥ उभैप्रकारसुजसजगतोरा॥ सुतसनकहदसकंधरिसाई॥ असमत
सठतोहिकवनसिषाई॥ अवहीतेउरसंसैहोई॥ वेनवैससुतभयउघमोई॥ सुनि
पितुवचनकठोरअतिघोरा॥ चलाभवनकहिवचनकठोरा॥ हितमततोहिनलागत

कैसे॥ कालविवसकहंभेषजजैसे॥ संध्यासमयजानिदससीसा॥ भवनचलेनिरषत
भुजवीसा॥ लंकउपरएकसिषरआगारा॥ तहांदसकंधरकेरअषारा॥ वैठजाइतेहिमं
दिररावन॥ लागेकिंनरगंधवगावन॥ वाजैतालपषावजवीना॥ नित्यकरहिअपछरप्र
वीना॥ दोहा॥ सुनासिरसतसरिसेकोसंततकरतविलास॥ परमप्रवलरिपु
सीसपरतदपिनसोचकछुत्रास॥ ११॥ चौपाई॥ इहांसुवेलसैलरघुवीरा॥ उतरेसैन
सहितअतिभीरा॥ सैलसृंगएकसुंदरदेषी॥ अतिउतंगसमसुभ्रविसेषी॥ तहंत
रुकिसलैसुमनसुहाये॥ लछिमनरचिनिजहाथडसाये॥ तेहिपरुरुचि
रमृदुलमृगछाला॥ तेहिआसनआसीनकृपाला॥ प्रभुकृतसीसकपीसउछंगा॥ वाम
दाहिनदिसिचापनिषंगा॥ दुहुंकरकमलसुधारतवाना॥ कहलंकेसमंत्रलगिका
ना॥ वडभागीअंगदहनुमाना॥ चरनकमलचापतविधिनाना॥ प्रभुपाछेल
छिमनवीरासन॥ कटिनिषंगकरवानसरासन॥ दोहा॥ एहिविधिकरुणासील
गुनधामरामआसीन॥ तेनरधन्यजेरामपदरहतसदालैलीन॥ प्राचिदिसाविलो
किप्रभुदेषाउदितमयंक॥ कहतसवहिदेषहुससिहिमृगपतिसरिसअसंक॥
॥ १२॥ चौपाई॥ पूरवदिसिगिरिगुहानिवासी॥ परमप्रतापतेजवलरासी॥ मत्तनाग
तमकुंभविदारी॥ ससिकेसरीगगनवनचारी॥ विथुरेनभमुक्ताहलतारा॥ निस
सुंदरीकेरसिंगारा॥ कहप्रभुससिमहुमेचकताई॥ कहहुकहानिजनिजमति
भाई॥ कहसुग्रीवसुनहुरघुराई॥ ससिमहप्रगटभूमिकीछाई॥ मारेउराहुससि
कहकोई॥ उरमहपरीस्यामतासोई॥ कोउकहजवविधिरतिमुषकीना॥ सारभा
गससिकरहरिलीना॥ छिद्रसोप्रगटइंदुउरमाहीं॥ तेहिमगदेषियनभपरछा
हीं॥ प्रभुकहगरलवंधुससिकेरा॥ अतिप्रियनिजउरदीनवसेरा॥ विषसंजुतकर
निकरपसारी॥ जारतविरहवंतनरनारी॥ दोहा॥ कहहनुमंतसुनहुप्रभुससितु
म्हारप्रियदास॥ तवमूरतिविधुउरवसी॥ सोईस्यामताभास॥ पवनतनैकेवच
नसुनिविहसेरामसुजान॥ दछिनदिसाविलोकिप्रभुवोलाकृपानिधान॥ १३॥
चौपाई॥ देषिवभीषनदछिनआसा॥ घनघमंडदामिनीविलासा॥ मधुरमधु
रगरजघनघोरा॥ होयवृष्टिजनुउपलकठोरा॥ कहतवभीषनसुनहुकृपाला॥
होइनतडितनवारिदमाला॥ लंकासिषरउपरआगारा॥ तहांदसकंधरकेरअ
षारा॥ छत्रमेघडंवरसिरधारी॥ सोइजनुजलदघटाअतिकारी॥ मंदोदरीश्रवन
ताटंका॥ सोइप्रभुजनुदामिनीदमंका॥ वाजहितालमृदंगअनूपा॥ सोइरवमधुर
सुनहुसुरभूपा॥ प्रभुमुसकानसमुझिअभिमाना॥ चापचढायवानसंधाना॥ दो॥
छत्रमुकुटताटंकतवहतेएकहीवान॥ सवकेदेषतमहिपरेमरमनकोउजान॥ १४॥
असकौतुककरिरामसरप्रविसेआइनिषंग॥ रावनसभासकसवदेषिमहारस
भंग॥ १४॥ चौपाई॥ कंपनभूमिनमरुतविसेषा॥ अस्त्रसस्त्रकछुनैननदेषा॥
सोचहिसवनिजहृदैविचारी॥ असगुनभयोभयंकरभारी॥ दसमुषदेषिसभ
भयपाई॥ विहसिवचनकहजुगतिवनाई॥ सिरौगिरेसंततसुभजाही॥ मुकु
टपरेकसअसगुनताही॥ सैनकरहुनिजनिजग्रहजाई॥ चलेसकलघरनव
सिरनाई॥ मंदोदरीसोचउरवसेऊ॥ जवतेश्रवणपूलमहिषसेऊ॥ सजलन
यनकहजुगकरजोरी॥ सुनहुप्रानपतिविनतीमोरी॥ कंतरामविरोधपरि
हरहू॥ जानिमनुजजनिहठमनधरहू॥ दोहा॥ विस्वरूपरघुवंसमनिकरहु
वचनविस्वास॥ लोककल्पनावेदकहअंगअंगप्रतिजास॥ १५॥ चौपाई॥ पदपा
तालसीसअजधामा॥ अपरलोकअंगअंगविस्रामा॥ भृकुटीविलासभयंक
रकाला॥ नयनदिवाकरकचघनमाला॥ जासुघ्रानअस्विनीकुमारा॥ निसअरु

दिवसनिमेषअपारा॥ श्रवनदसौदिसवेदवखानी॥ मारुतस्वासनिगमनिजवानी॥ अ
धरलोभजमदसनकराला॥ मायाहासबाहुदिगपाला॥ आननअनलअंबुपति
जीहा॥ उतपतिपालनप्रलैसमीहा॥ रोमावलीअष्टादसभारा॥ अस्थिसैल
सरितानसजाला॥ उदरउदधिअधगोजातना॥ जगमयप्रभुकोंअसकल्पना॥
॥दोहा॥ अहंकारशिवबुधिअजमनससिब्रह्मिमहान॥ मनुजवाससचराचर
रूपराममगवान॥ असविचारसुनिप्रानपतिप्रभुसनवैरविहाइ॥ प्रीतिक
रहुरघुवीरपदममअहीवातनजाइ॥१८॥ ॥चौपाई॥ विहसानारिवचनसुनिका
ना॥ अहोमोहमहिमावलवाना॥ नारिसुभावसत्यकविकहहीं॥ अवगुनअ
ठसदाउररहहीं॥ साहसअनृतचपलतामाया॥ भयअविवेकअसौचअदाया॥
रिपुकेरूपसकलतैंगावा॥ अतिविसालभयमोहिसुनावा॥ सोसवप्रियासहजव
समोरे॥ समझिपराप्रसादअवतोरे॥ जानेउप्रियातोरिचतुराई॥ एहिविधिक
हउमोरिप्रभुताई॥ तववतकहिगूढमृगलोचनी॥ समुझतसुखदसुनतभयमो
चनी॥ मंदोदरीमनमहअसठयउ॥ पतिहिकालवसमतिभ्रमभयउ॥ ॥दोहा॥
एहिविधिकरतविनोदवहुप्रातप्रगटदसकंध॥ सहजअसंकलेकपतीसभा
गयोमतिमंद॥ ॥सोरठा॥ मंत्रिनसहितसुलेकपतिवैठेउधोरहजाई॥ सकलआरनक
हराजसोदेखइदलसमुदाई॥ चौपाई॥ एहजोसिंहनादकिलकाई॥ नरुच
रसत्यसमानउताई॥ सहसकोटिसवसंकसमाना॥ एहिकेसवबानरपरिमा
ना॥ रनअजीतअरुअतिनिसंका॥ नादसुनतकंपतहैलंका॥ नागअकासकेहरले
गुरा॥ जनुमहिपावसधनकअंकुरा॥ विसकरमाकेसुतअभिमानी॥ रनसागरवाधा
उनमानी॥ वसहिनाउगिरकंदरमाहीं॥ गोदावरीविमलजलपोहीं॥ अतिवल
आगेधावहिवीरा॥ महाविरदौअवलगंभीरा॥ समरभूमिजानहिसवलीला॥ ए
होसेनापतिनलनीला॥ ॥दोहा॥ पदमअठारहकपिदलचलेइनकीभुजछाह॥
अवनेहाथउठालेरघुपतिपूजेवाह॥ ॥चौपा॥ एहजोआवनअवलसमाना॥ चौर
हतरूवरउचपरमाना॥ वासधुलिदाकेनटकरई॥ अरवुदउपरएहसंचरई॥ तासुकु
मलकेमरिअसदेहा॥ जनुअकासमेध्याकरमेहा॥ मेदनीहतहिलेगुरभवाई॥ लं
कासोहविलेजनुपाई॥ नागलवनवालिकोजायो॥ अतिकुमाररघुपतिमनभा
यो॥ मनमहजनपैरामकरनाउ॥ निसदिनएहकराएहसुभाउ॥ कैवकवासवकर
भंगा॥ अदधानलजेहिउदेपतंगा॥ सेनउपतिएहसवकेआगे॥ रघुपतिकृपाक
रनवडभागे॥ ॥दोहा॥ धावमिनोवौपेपतगहोइअकाज॥ पोवपदमेवानरसेना
एहअमदअवराज॥ ॥चौपा॥ एहजोसितसेलअनुरेषा॥ जनुइपेकरअगविसेषा॥
दीर्घकेससकलभजदेडा॥ पायचपलपलवेगप्रचंडा॥ वासकरेजलनिधिकेती
रा॥ पानकरेगोपतीकरनीरा॥ राजासुग्रीवकरअधिकारी॥ सवलवुद्धएहसवै
मवारी॥ वलआरवुहिनएहिसमाना॥ एलकरघुरधारनजगजाना॥ जिहिहि
नजनमेउवलअधिकाई॥ वैठउहुरगोमनकेजाई॥ वेधेहधरनगगनउठुयउ
सनविजोजनतेफिरिगिरेउ॥ ॥दोहा॥ वानरपवासकोदिमेगससवदिनयाकेसाथ
॥ कालकुसोरनलजेकुमदआहिकपिनाथ॥ चौपाई॥ एहदेखइजोछटासहा
इ॥ जसभविभावेकरवडनाई॥ नीलवरनसवेलहोइगाएउ॥ अवनिअकास
एकहोउरहिउ॥ आगेपाछेदसदिसथावहिं॥ सीलाअगनकतोगिनआवहिं
सहसनागवलकुसमाना॥ सप्तपदमहनकरपरमाना॥ एविकृपतिका
सीकेवासे॥ अजरअजीतअचलअभिनासी॥ तोपवदेतनपादपथावी॥ नाव
हिगजयगदंतउपारी॥ इनरीछनकरूजसथअपारा॥ धूमकेतुरापालनहारा॥

इनकरजेहवेधुजामवेता॥ तिनकेवलकरअदिनचेता॥ [illegible]॥
संकटपरेसवेलउपारे॥ वासकरैनमेदाकेतीरा॥ वनसमान[illegible]॥
राजाकरएहमंत्रीरघुपतिकरविजदास॥ कालरूपरनमहजेहिकेत्रैलोकवसभारा॥
पाई॥ अवदेखहुएहजुथअपारा॥ पीतवरनहोइगयेउपहारा॥ वालअरुनसम
किरनसीरूटी॥ जेकसमातदिसानभुटी॥ चोविसअरवुदनकासमूहा॥ सह
सहदसेकोटिसमूहा॥ सिलअगनिमआवोपवई॥ पावनसीजिनिकरकाई॥ के
वनगिरकंदरकेवासी॥ इनकरजुथनाथअविनासी॥ अतिवलवासवकाहिनकासे
॥ सुग्रीवसवासमकुभटभारी॥ पानकरहिगंगाकरनीरा॥ पवनअगमममा
रीवा॥ छिनछिनसिंहनादजोहोई॥ एहगरजतआवनहैसोई॥ ॥दोहा॥ मसमिद्ध
गइअलिनगवलकरनाहिनअंत॥ एहकपिराजसुकेसरीजेहिकरसुतहनुमंत॥
॥चौपाई॥ वराएकआवनहैछुटी॥ जनुमधुलिधुवलेउमिलिकूटी॥ भूमिअकासअ
वलअवसाने॥ उनरतेजनुसेलभउगाने॥ एहिमहजुथनाथजोअहही॥ अतिवल
राजाकेसंगरहहीं॥ कपिकेरुपअचलअविनासी॥ एदोपारपथकेवासी॥ अतिहिस
वअरुतनरविपक्ष॥ महावीरएगवागवक्षपीवदीन्हगभउकरनीरा॥ एमदनेग
धमादउवीरा॥ हस्तीसाविसमसवलजाहीं॥ एहिमहएकजेहामेलाहीं॥ भौतार
सिंहकवहाना॥ विक्रमसारहलहनुमाना॥ ॥दोहा॥ देवनमहजलसुरपतिनेतनमह
जसभान॥ पनसनामआहवानुरअतिभटलीतिनिधान॥ ॥चौपाई॥ एहजोकामलथ
असदेहा॥ जनुकेलासअगकेरेहा॥ लोचनमधुपिंगलअतिलोने॥ कामचारिवि
नवहिवरुकोने॥ लंकासोहलगुरभवाई॥ गरजतआवतुमकोनाई॥ सुरपतिकेस
जुथकोगयउ॥ नवतेकामरुपयहमयउ॥ एहिनेवासवकोजसिनाई॥ नेहिनेगहदेव
नकरभाई॥ सहसकोटिकपिइनकेसंगा॥ रातपीनसेलवहुरंगा॥ ॥दोहा॥ विरवरख
वलआवेउउतोअवरेन॥ तरनीतेजएहकेथेनारानलयसुचेन॥ ॥चौपाई॥ एहकपि
करदेखहुतनुफेरा॥ जनुसपथिभेउचलेसुमेरा॥ एकवारलंकाईनजारी॥ पुलिग
वजलआवनएहिधारी॥ जेहिदिनरावनअंजनीजाएउ॥ वालअरुनलीलेकहथा
एउ॥ तीनसहसजोजनउछारेउ॥ उदयावलउपरमेगोरेउ॥ मुसकीवोटजेवज्रस
माना॥ मारुतनामधरेउहनुमाना॥ कामरूपकोटिनवलएही॥ कालकदंडकु
लिससमदेही॥ वेगवंतजसगरुडउडाहीं॥ हुहिवनहसरअसनाहीं॥ विद्यापढे
दिवाकरपाहीं॥ उलटागतिरविसंगउडाहीं॥ नाकेवागनरघुरमतिकारी॥ महाअवध
नपतेजपुरारी॥ वारयिलाछेउगोपदजैसे॥ एहिकरकसमेजुरुवकैसे॥ दो॥ ने
तनकलइवपावकपावनतेवेगअपार॥ कंधलीयेप्रभुग्रीवपतिश्रीरघुवंसकुमार॥
चौपाई॥ अनसीवरतकसमतनुरेषा॥ धुरधरवानतधरेनरभेषा॥ मतनगयंदसु
दरभुजदंडा॥ धनुषवानअसिधेरअचंडा॥ उरवीसालअतिउचतनकेथर॥ कंवुकंठ
वक्षाअसेननतर॥ मुखछविकोउपमाकविजाहुई॥ ससिसरोजसमकहतनसो
हई॥ दसननपोतिकीकांतिकहहैको॥ ललकामतिपटनरहिलहैको॥ देखनअव
वनकीअरुनाई॥ विंवाफलकेधुकलजाई॥ सुकनेइहिनासिकालजाई॥ अवके
सुकविनहियपटतरपाई॥ सीसजटाकेमुकुटवनाए॥ भालविसालतिलकअ
तिभाए॥ दहिनदिसिलछिमनवरवीरा॥ रामवाहुओप्रानसमीरा॥ दो॥ रामभ
गभीवनसिरअभिषेककवीराज॥ वीजपकेवसवजानईअवकमसकरेअकाज॥ चौपा॥
अवदेखहुसन्यासन्यायहुआई॥ जसभरभादौमेघुकुराई॥ रातपीतअरुसितसा
आहा॥ सीलाअगनरुवरकेआहा॥ कन्याएकअसुउमजाई॥ नयनभरिओकरु

पलेगाई॥ बालभाषदीनकरबलदीना॥ तिनजानेवासबवरकीना॥ जातकनवरवीरइ
इजाए॥ देवअंससवानरहोइआई॥ किसकेरावनकरअसथाना॥ देवसरिसमधुवनइ।
याना॥ रिपुनकरनकरविश्रामा॥ वारिमासबसेजहारामा॥ बालिजेष्ठवानरनमाया
एहिसिरसोपेउराजकेभारा॥ ताराताम्हयाटकेरानी॥ जेहिकरसुतनअंगदसुभिमा
नी॥ सातैलषकपिकोटसमाना॥ ईकतेएकवीरबलवाना॥ कहहदसमुखबुजुड
सकासारन॥ कहोमहिपदमकेरविसतावन॥ कहहुसकसारनकेरावधाना॥ सात
लाषकरकोटिसुजाना॥ सबालाषकपिकोटिकनाना॥ सहसकोटिकरसेकुसमा।
ला॥ सहससमेककरमअंबुदएका॥ अरबुधसहसकरविंदविसेषा॥ सहससविंदजे।
होउप्रमाना॥ महापदमतेतिकरयरमाना॥ ऐसेपदमअवाहराना॥ एहविग्रहवछेउ
रामकेकाजा॥ वीरवरनअरुनयनविसाला॥ केबुकेदसोतिनकीमाला॥ दो॥
हसेतीसादिसदेसबलसदायमेकोसीव॥ अनरुद्रलिरसोभितएहराजासुग्रीव॥ ए
हिविधिसकलदेषायउसुकसारकपिनह॥ रानयनरावनकालवससहागरभसंम
ह॥ सो॥ अलेफलेनवेनजोपिसुधावरषेजलधि॥ मरषहदेनवेतजोगुरमिले
विरेचिसम॥ ७॥ चौपा॥ इहाप्रातजागेरघुराई॥ पूछामतसवसचिवबुलाई॥ कहहु
वेगिकाकरियउपाई॥ जामवंतकहेपदसिरुनाई॥ सुनुसरबग्यसकलउरवासी॥ बु
धिवलतेजधरमगुणरासी॥ मंत्रकहउनिजमतिअनुसारा॥ दूतपठाइयवालिकुमा।
रा॥ नीकमंत्रसभकेमनमाना॥ अंगदसनकहेकृपानिधाना॥ बालितनेबुधिव
लगुणधामा॥ लंकाजाहुतातममकामा॥ बहुतवुझायतुमहेकाकहउ॥ परमच
तुरमैजानतअहऊ॥ काजहमारतासुहितहोई॥ रिपुसनकरहुवतकहिसोई॥ सो॥
प्रभुआज्ञाधरिसीसचरणवंदिअंगदउठेउ॥ सोइगुणसागरईसरामकृपाजा
परकरहु॥ स्वयंसिद्धिसबकाजनाथमोहिआदरदयउ॥ असविचारिजुवराजत।
नपुलकितहरषितभयेउ॥ १८॥ चौपाई॥ वंदिचरणउरधरिप्रभुताई॥ अंगदचलेउस
बहिसिरनाइ॥ प्रभुप्रतापउरसहजअसंका॥ रनवाकुरावालिसुतवंका॥ पुरपेठतर
रावनकरवेटा॥ षेलतरहासोहोयगइभेटा॥ वातहिवातकरषवढिआई॥ जुगलअ
तुलवलपुनितरुनाई॥ तेहिअंगदकहलातउठाई॥ गहिपदपटकेउभूमिभवाई॥
निसिचरदेषिनिकरभटभारी॥ जहतहचलेनकरहिपुकारी॥ एकएकसनमर
मनकहही॥ समझितासबधचुपकरिरहही॥ भयोकुलाहलनगरमझारी॥ आ
वाकपिलंकाजेहिजारी॥ अवधौकाकरिहिकरतारा॥ अतिसभीतसभकरहिवि
चारा॥ विनपूछेमगदेहिदिषाई॥ जेहिविलोकिसोजायसुषाई॥ दो॥ गयोस
भादरवारतहसुमिरिरामपदकंज॥ सिंहठवनिईतउतचितेवीरधीरवलपुंज॥ १८॥ चौ
पा॥ तुरतनिसाचरएकपठावा॥ समाचाररावनहिजनावा॥ सुनतविहसिबोला
दससीसा॥ आनोवोलिकहाकरकीसा॥ आयसुपायदूतवहुधाए॥ कपिकुंजरहि
वोलिलेआए॥ अंगददेषिदसाननवेसा॥ सहितप्रानकजलगिरिजेसा॥ भुजावि
टपसिरश्रृंगसमाना॥ रोमावलीलताजनुनाना॥ मुषनासिकानेनअरुकाना॥
गिरिकंदराषोहअनुमाना॥ गयउसभामननेकनमुरा॥ वालितनयवलवुधिवा
कुरा॥ उठेसभासदकपिकहदेषी॥ रावनउरभाक्रोधविसेषी॥ दो॥ जथामत
गजजूथमहुपंचाननचलिजाई॥ रामप्रतापसुमिरिरवैठिसभासिरनाई॥ २०॥
चौपाई॥ कहदसकंधकवनतेवंदर॥ मैरघुवीरदूतदसकंधर॥ ममजनकहितोहि
रहीमिताई॥ तवहितकारनआयउभाई॥ उत्तमकुलपुलस्तिकरनाती॥ सिवविरं
चिपूजेवहुभांती॥ वरपायेउकीनेसभकाजा॥ जीतेहलोकपालसवराजा॥ नृप।

अभिमानमोहवसकिंवा॥ हरिआनीसीताजगदंबा॥ अवसुभक[illegible]मनमोरा
॥ सभअपराधछमहिप्रभुतोरा॥ दसनगहहुतृनकंठकुठारी॥ परिजनसहित
संगसवनारी॥ सादरजनकसुताकरआगे॥ एहिविधिचलोसकलभेत्यागे॥ दो॥
प्रनतपालरघुवंसमनीत्राहित्राहिअवमोहि॥ सुनतहिआरतवचनप्रभुअभै
करैगोतोहि॥ २१॥ चौपा॥ रेकपिपोतवोलिसंभारी॥ मूढनजानहिमोहिसुरा
री॥ कहुनिजनामजनककरभाई॥ केहिनातेमानियमिताई॥ अंगदनामवा
लिकरवेटा॥ तासोकवहिभईहेभेटा॥ अंगदवचनसुनतसकुचाना॥ रहावा
लिवानरहमजाना॥ अंगदतहिवालिकपीवालक॥ उपजेउवंसअनलकु
लघालक॥ गर्भनगयउवृथातुम्हजायउ॥ निजमुषतापसदूतकहायउ॥ अ
वकहुकुसलवालिकहअहई॥ विहसिवचनतवअंगदकहई॥ दिनदसगये
वालिपहजाई॥ बूझेउकुसलछेमउरलाई॥ रामविरोधकुसलजससोई॥ सोसभत
म्हहिसुनाइहिसोई॥ सुनसठभेदहोइमनजाके॥ श्रीरघुवीरहृदैनहिजाके॥
दो॥ हमकुलघालकसत्यतुमकुलपालकदससीस॥ अंधोवधिरनअसकह
हीनेनकाननववीस॥ २२॥ चौपा॥ सिवविरंचिसुरमुनिसमुदाई॥ चाहतजासुच
रनसेवकाई॥ तासुदूतहोयहमकुलवोरा॥ असिहुमतिउरविहरनतोरा॥ सुन
तकठोरवानीकपिकेरी॥ कहतदसाननवयनतरेरी॥ षलतवकठिनवचनसभस
हउ॥ नीतिधरममैजानतअहऊ॥ कहकपिधरमसीलतातोरी॥ हमहुसुनीकृ
तपरत्रियचोरी॥ देषीनेनदूतरषवारी॥ वुडिनमरहुधरमव्रतधारी॥ काननाकवि
नुभगनीनिहारी॥ छिमाकीनतुमधरमविचारी॥ धर्मसीलतातवजगजागी॥
पावादरसहमहूवडभागी॥ दो॥ जनिजल्पसिजडजंतुकपिसठविलोकिम
मवाहु॥ लोकपालवलविपुलससिग्रसनहेतुसबराहु॥ पुनिनभसरममकरनि
करकमलनपरवास॥ सोभितभयोमरालइवसंभुसहितकैलास॥ २३॥ चौ
पाई॥ तुमरेकटकमांझसुनअंगद॥ मोसनभिरहिकवनजोधावद॥ तवप्रभु
नारीविरहवलहीना॥ अनुजतासुदुषदुषितमलीना॥ तुमसुग्रीवकूलद्रुम
दोऊ॥ वंधुहमारभीरअतिसोऊ॥ जामवंतमंत्रीअतिवूढा॥ किमिहोयेसमरआ
रूढा॥ सिलपिकरमजानहिनलनीला॥ हैकपिएकमहावलसीला॥ आवा
प्रथमनगरजिहजारा॥ सुनतहिवोलेवालिकुमारा॥ सत्यवचनकहुनिसचर
नाहा॥ साचेहुकीनकिसपुरदाहा॥ रावननगरअलपकपिदहई॥ कोअसकहस
हैकोसुनई॥ जोअतिसुभटसराहेहुरावन॥ सोसुग्रीवकेरलघुधावन॥ चलेव
हुतसोवीरनहोई॥ पठवाषवरिलेनहमसोई॥ दो॥ सत्यनगरकपिजारेउवि
नप्रभुआयसुपाय॥ फिरिनगयउनिजनाथपहितिहिभयरहेउलुकाय॥ सत्य
कहेहुदसकंठसभमोहिनसुनिकछुकोह॥ कोउनहमारेकटकअसतोसन
लरतजोसोह॥ प्रीतिविरोधसमानसनकरहीनितिअसआहि॥ जोमृगपतिव
धमेडुकनभलनकहेकोउताहि॥ जदपिलघुतारामकहतोहिवधेवडदोष॥ तदपि
कठिनदसकंठसुनिछत्रजातिकररोष॥ हसिवोलेदसमौलितवकपिकरव
डगुणएक॥ जोप्रतिपालेतासुहितकरेउपाययनेक॥ २४॥ चौपाई॥ धन्यकीस
जोनिजप्रभुकाजा॥ जहतहनाचेपरिहरिलाजा॥ नाचिकूदिकरिलोगरिझा
ई॥ पतिहितकरेधरमनिपुनाई॥ अंगदस्वामिभगतितवजाती॥ प्रभुगुण
कसनकहसिएहिभाती॥ मैगुणगाहकपरमसुजाना॥ तवकटुरटनिक

रा॰ लं॰
४

रौनहिकाना॥ कहुकपितवगुनगाहकताई॥ सत्यपवनसुतमोहिसुनाई॥ सोइविचारि
तवप्रकृतिसुहाई॥ दसकंधरमैकीनढिठाई॥ वनविधंसिसुतवधिपुरजारा॥ तदपि
नतेहिकछुकृतअपकारा॥ देषेउआइजोकपिकछुभाषा॥ तुमरेलाजनरोष
नमाषा॥ जोअसिमतिपितुषायउकीसा॥ कहअसवचनहसादससीसा॥ पि
तहिषाईषातेउपुनितोही॥ अवहीसमुझपराकछुमोही॥ दो॰ ॥ वक्रउक्तिधनु
वचनसरहृदयदहेउरिपुकीस॥ प्रतिउत्तरसडसिन्हमनहुकाढतभटदससीस॥
चौ॰ पा॰ ॥ वालिविमलजसभाजनजानी॥ हतौनतोहिअधमअभिमानी॥ कहु
रावनरावनजगकेते॥ मैनिजश्रवनसुनासुनुतेते॥ रावनएकमहावलगर
वा॥ जीतनवलेउसुरासुरसरवा॥ सागरउतरिपारसोगएउ॥ नारीहेतनहादे
षतभाएउ॥ तिनसनकहहसिपतिनयहिनाहू॥ कहेहुकिआएउनिसिचरना
रू॥ नवमैतिनहिजीतिसंग्रामा॥ लेजेउनवहकहुनिजधामा॥ सुनतनवचा
नएकजनवरिमानी॥ धाइचरनधरिगगनउडानी॥ गाइडरिपरिधरिरूक
कोरा॥ डारिसिसिंधुमाकअतिजोरा॥ दो॰ ॥ गएउपतालअचेतहोइमरे
नविप्रप्रसाद॥ सावधानउठिगरजिधुनि॥ हृदयनहरषविसाद॥ चौ॰ पा॰ ॥ ए
करावनकरकहौकहानी॥ जीतनवलेउसोतिहिअभिमानी॥ गएउनिकट
अतिसीतलभाएउ॥ कंपितगातविकलहोइफिरेउ॥ वलिजीतनएकवारगएउप
ताला॥ राषेउवांधिसिसुन्हहेसाला॥ षेलहिवालकमारहिजाई॥ दयाला
गिवलिदीनछुडाई॥ एकवहोरिसहसभुजदेषा॥ धाइधराजिमिजंतुविसेषा
कौतुकलागिभवनलेआयउ॥ सोपुलस्तिमुनिजाइछुडायउ॥ वहुसका
तिस्तनिनाहिसिषावा॥ गएउसोपिपुनिलाजनआवा॥ दो॰ ॥ एककहतमो
हिसकुचिअतिरहावालिकीकांष॥ तिनमैरावनकवनतैसत्यवदसितजिमाष॥
॥२५॥ चौ॰ पा॰ ॥ सुनुसठसोइरावनवलसीला॥ हरिगिरिजानजासुभुजली
ला॥ जानउमापतिजासुसुराई॥ जिहिपूजेउसिरसुमनचढाई॥ सिरसरो
जनिजकरनिउतारी॥ पूजेउअमितवारत्रिपुरारी॥ भुजविक्रमजानहिदिग
पाला॥ सठअजहुजिनकेउरसाला॥ जानहिदिग्गजउरकठिनाई॥ जवजव
जायभिरौवरिआई॥ जिनकेदसनकरालनफूटे॥ उरलागतमूलकइव
टूटे॥ जासुवलतडोलतइमिधरनी॥ चढतमत्तगजजिमिलघुतरनी॥ सो
इरावनजगविदितप्रतापी॥ सुनेनश्रवनअलीकप्रलापी॥ दो॰ ॥ तिहिरा
वनकहुलघुकहसिनरकरकरसिवषान॥ रेकपिवर्वरषर्वषलअवजानातवज्ञा
न॥ २६॥ चौ॰ पा॰ ॥ सुनिअंगदसकोपिकहवानी॥ वोलसंभारिअधमअभिमा
नी॥ सहसवाहुभुजगहनअपारा॥ दहनअनलसमजासुकुठारा॥ जासुप
रसुसागरषरधारा॥ वूडेनृपअगनितवहुवारा॥ जासुगर्वजिहिदेषतभा
गा॥ सोनरकौंदसकंधअभागा॥ रामसमनुजकससठवंगा॥ धन्वीकाम
नदीपुनिगंगा॥ पसुसुरधेनुकलपतरूषा॥ अन्नदानअरुरसपीयू
षा॥ वैनतेयषगअहिसहसानन॥ चिंतामनिपुनिउपलदसानन॥ सुनि
मतिमंदलोकवैकुंठा॥ लाभकिरघुपतिभगतिअकुंठा॥ दो॰ ॥ सेनसहित
तवमानमथिवनउजारिपुरजारि॥ कैसेरसठहनुमानकपिगएउजोतवसु
तमारि॥ २७॥ चौ॰ पा॰ ॥ सुनुरावनपरिहरिचतुराई॥ भजहिनकृपासिंधुरघु
राई॥ जौषलभयसिरामकरद्रोही॥ ब्रह्मरुद्रसकराषिनतोही॥ मूढ।

मृषाजनिमारसिगाला॥ रामवैरहोयहिअसहाला॥ तवसिरनिकरकपिन्हकेआगे
परिहियधरनिरामसरलागे॥ तेतवसिरकंदुकइवनाना॥ षेलहिंभालुकीसचौगाना
जवहिसमरकोपहिरघुनायक॥ छुटहिअतिकरालवहुसायक॥ तवकिचलहि
असगालतुम्हारा॥ असविचारिभजुरामउदारा॥ सुनतवचनरावनपरजारा॥ जरतमहा
नलजनुघृतपरा॥ दो॰ ॥ कुंभकरनअसवंधुममसुतप्रसिधसक्रारि॥ मोर
पराक्रमनहिसुनेहजितेउचराचरझारि॥ २८॥ चौ॰ पा॰ ॥ सठसाषामृगजोरिसहाई॥ वां
धासिंधुयहेमनुसाई॥ नांघहिषगअनेकवारीसा॥ सूरनहोहितेसुनुसवकीसा॥ मम
भुजवलसागरजलपूरा॥ जहांबुडेवहुसुरनरसूरा॥ वीसपयोधिअगाधअपारा
कोअसवीरजोपावयपारा॥ दिगपालनमैनीरभरावा॥ भूपसुजसषलमोहिसुना
वा॥ जोपैसमरसुभटतवनाथा॥ पुनिपुनिकहसिजासुगुनगाथा॥ तोवसीठ
पठवतकेहिकाजा॥ रिपुसनप्रीतिकरतनहिलाजा॥ हरगिरिमथननिरषनिरष
ममवाहू॥ पुनिकपिसठनिजप्रभुहिसराहू॥ दो॰ ॥ सूरकवनरावनसरिसनिजक
रकाटेसिसीस॥ हुनेअनलमहुवारवहुहरषितसाषिगिरीस॥ २९॥ चौ॰ पा॰ ॥ जरत
विलोकेउंजवहिकपाला॥ विधिकेअंकलिषेनिजभाला॥ नरकेकरआपनवधवा
ची॥ हसेउजानिविधिगिराअसाची॥ सोमनसमुझित्रासनहिमोरे॥ लिषाविरंचि
जरठमतिभोरे॥ आनवीरवलसठममआगे॥ पुनिपुनिकहसिलाजपतित्यागे॥ कहअं
गदसलज्जजगमाही॥ रावनतोहिसमानकोउनाही॥ लाजवंतकरसहजसुभाऊ
निजमुषनिजगुनकहसिनकाऊ॥ सिरअरुसैलकथाचितरही॥ तातेवारवीसतैक
ही॥ सोभुजवलराषेहुउरघाली॥ जिहिसहसवाहुवलिवाली॥ सुनुमतिमंददेह
अववपूरा॥ काटेसीसकिहोइहिसूरा॥ वाजीगरकहकहियनवीरा॥ निजकरकाटइ
हिसकलसरीरा॥ दो॰ ॥ जरहिपतंगविमोहवसभारवहहिषरवृंद॥ तेनहिसूरक
हाहियेसमझिदेषमतिमंद॥ ३०॥ चौ॰ पा॰ ॥ अवजनिवतवढावषलकरही॥ सुनिममव
चनमानपरिहरही॥ दसमुषमैनवसीठिआएउं॥ असविचारिरघुवीरपठाएउ॥ वा
रवाररघुपतिकहेउकृपाला॥ नहिगजारिजसवधेसृकाला॥ मनमहसमुझिवचनप्रभुके
रे॥ सहेउंकठोरवचनसठतेरे॥ नाहितकरिमुषभंजनतोरा॥ लेजातेउंसीतहिवर
जोरा॥ जानेउंतवबलअधमसुरारी॥ सूनेहरिआनेहुपरनारी॥ तेंनिसिचरपतिगर
भवहूता॥ मैरघुपतिसेवककरदूता॥ जौनरामअपमानहिडरऊं॥ तोहिदेषत
असकौतुककरऊं॥ दो॰ ॥ तोहिपटकिमहिसेनहति॥ चौपटकरितववगाव॥ मंदोद
रीसमेतिसठजनकसुतहिलेजाव॥ ३१॥ चौ॰ पा॰ ॥ जौअसकरौंतदपिनवडाई॥ म
एहिवधेनहिकछुमनुसाई॥ कौलकामवसकृपनविमूढा॥ अतिदरिद्रअजसीअति
वूढा॥ सदारोगवसिसंततक्रोधी॥ विष्णुविमुषश्रुतिसंतविरोधी॥ तनपोषकनिंदक
अघषानी॥ जीवतसवसमचौदहप्रानी॥ असविचारिषलवधौनतोही॥ अवजनि
रिसउपजावसिमोही॥ सुनिसकोपकहनिसचरनाथा॥ अधरदसनदसिमीजत
हाथा॥ रेकपिपोचमरनअववहसी॥ छोटेवदनवातवडिकहसी॥ कटुजल्पसि
जडकपिवलजाके॥ वुधिवलतेजप्रतापनजाके॥ दो॰ ॥ अगुनअमानविचारि
तिहिदीनपितावनवास॥ सोदुषअरुजुवतीविरहपुनिनिसिदिनममत्रास॥ जिनके
वलकरगर्वतोहि॥ अैसेमनुजअनेक॥ षाहिनिसाचरदिवसनिसिमूढसम
झितजिटेक॥ ३२॥ चौ॰ पा॰ ॥ जवतेहिकीनरामकैनिंदा॥ क्रोधवंततवभयेउकपिं
दा॥ हरिहरनिंदासुनैजोकाना॥ होइपापगोघातसमाना॥ कटकटानकपि
कुंजरभारी॥ दुहुंभुजदंडतमकिमहिमारी॥ डोलतधरनिसभासदषसे॥ चले
भाजिभैमारुतग्रसे॥ गिरतदसाननउठासंभारी॥ भूतलपरेमुकुटअतिचारी॥ कै

कुतेहिलैतिन्हसिरनिसभारे॥ कछुअंगदप्रभुपासपवारे॥ आवतमुकुटदेषिकपि
भागे॥ दीनहिउलकपरनविधिलागे॥ केरावनकरिकोपचलाए॥ कुलिससचारिआ
वतहेधाए॥ कहेप्रभुहसिजनिहृदयडराहू॥ लूकनअसनकेतनराहू॥ ऐकीरी
टदसकंधरकेरे॥ आवतवालितनकेप्रेरे॥ दोहा॥ कुदिधरेकरपवनसुतआनिध
रेप्रभुपास॥ कौतकदेषहिभालकपिदिनकरससिप्रकास॥ ३३॥ चौ॥ उ
हाकहनदसकंधरिसाई॥ धरिमारहुकपिभागिनजाई॥ एहिविधिसुभटसकलदिसि
धावहु॥ षावहुभालकीसजहंपावहु॥ मर्कटहीनकरहुमहिजाई॥ जीवतध
रहुतापसद्वैभाई॥ पुनिसकोपवोलेउजुवराजा॥ गालवजावततोहिनलाजा
मरुगरकाटिनिलजकुलघाती॥ वलविलोकिविहरीनहिछाती॥ रेतीयचो
रकुमारगगामी॥ षलमलरासिमंदमतिकामी॥ सन्यपातजल्पसीदुरवा
भयसिकालवसिषलमनुजादा॥ जाकोफलपावहिगेआगे॥ वांदरभालचे
पेटनलागे॥ राममनुजवोलेसिअसिवानी॥ गिरहिनरसनातेअभिमानी
गिरिहैरसनासंसयनाही॥ सिरसमेतिसमरमहिमांही॥ सो॥ ठा॥ सोनरक्यों
दसकंदरवालिवध्योजेहियकसर॥ वीसहुलोचनअंध॥ धृगतवजन्मकुजा
तिजड॥ तवछोनितकीप्यास॥ त्रसितराममायककनिकर॥ तजोतोहितेहित्रा
स॥ कटुजल्पसीनिसचरअधम॥ ३४॥ चौ॥ ई॥ मैतवदसनतोरवेलायक॥ आ
यसमोहिनदिनरघुनायक॥ असरिसहोतदसोमुषतोरों॥ लंकागहिसमु
द्रमहेवोरों॥ गूलरफलसमानतवलंका॥ वसहुमध्यतुमजंतुअसंका॥
मैवांदरफलषातनवारा॥ आज्ञादीननरामउदारा॥ जुगतिसुनतरावनमुस
काई॥ मूढसिषसिकहावहुतझुठाई॥ वालिकवहुनगालिअसमारा॥ मि
लितपसिनतैभयसिलवारा॥ साचेमैलवारभुजवाहा॥ जोनपारेतवदस
जीहा॥ समुझिरामप्रतापकपिकोपा॥ सभामांझपनकरिपदरोपा॥ जोम
मचरणसकसिसठटारी॥ फिरहिरामसीतामैहारी॥ सुनहुसुभटसभ
कहूदससीसा॥ पदगहिआवनिपछारहुकीसा॥ इंद्रजीतआदिकवल
वाना॥ हरषिउठेजहंतहंभटनाना॥ झपटहिकरिवलविपुलउपाई॥
पदनटरेवैठेसिरनाई॥ पुनिउठिझपटहिसुरआराती॥ टरहिनकपीचरनएहिभां
ती॥ पुरुषकुजोगीजिमिउरगारी॥ मोहविटपनहिसकेउपारी॥ दोहा॥ भूमिन
छाडतकपिचरनदेषतरिपुमदभागा॥ कोटिविघ्नतेसंतकर॥ मनजिमिनी
तिनत्यागि॥ कोटिनमेघनादसम॥ सुभटउठेहरषाई॥ झपटहिटरैनकपिचर
न॥ पुनिवैठहिसिरनाई॥ ३५॥ चौपाई॥ कपिवलदेषीसकलहियहारे॥ उठाआपजु
वराजप्रचारे॥ गहतचरनकहवालिकुमारा॥ ममपदगहतनतोरउवारा॥ गहसिनरा
मचरनसठजाई॥ सुनतफिरामनमहसकुचाई॥ भयेउतेजहतश्रीसवगई॥ मध्य
दिवसजिमिससिसोहई॥ सिंहासनवैठासिरनाई॥ मानहुसंपतिसकलगवा
ई॥ जगदाम्माप्रनतपतिरामा॥ तासुविमुषकिमिलहिविश्रामा॥ उमारामकीभृ
कुटिविलासा॥ होइविस्वपुनियावैनासा॥ त्रणतेकुलिसकुलिसत्रणकरई॥ ता
सहलपदकहुकिमिटरई॥ पुनिकपिकहीनीतिविधिनाना॥ माननाहिकालनि
अराना॥ रिपुवलमथिप्रभुसुजससुनायो॥ असकहिचल्योवालिकोजायो॥
हतोनतोहिषिलाइषिलाई॥ अवहिनाकहाकरोंवडाई॥ प्रथमहितासुतनयकपि
मारा॥ सुनिरावनउरभयोषभारा॥ जातधानअंगदवलदेषी॥ भयव्याकुलस
वभयविसेषी॥ दोहा॥ रिपुवलधरषिहरषिकपिवालितनयवलपुंजि॥ सज
लविलोचनपुलकितनअतिगहेरामपदकंज॥ ३६॥ सांझजानिदसमौलिनवभव

नगयउविलषाई॥ मंदोदरीरिसावहरि॥ वहुविकहहसमुझाई॥ चौ॥ ई॥ कंतसमु
झिपरहरहुकुमतही॥ सोहनसमरतुमहिरघुपतिही॥ रामानुजलघुरेषषचाई॥ सो
नहिलांघेउअसिमनुसाई॥ पियतुमतेहिजितवसंग्रामा॥ जाकेदूतकेरयहकामा॥
कौतुकलांघिसिंधुतवलंका॥ आयेउकपिकेसरीअसंका॥ रषवारेहतिविपिनउजा
रा॥ देषततोहिअक्षजिनमारा॥ जारिसकलपुरकीनसिछारा॥ कहांरहाबलगा
रवतुमारा॥ अवपतिमृषागालजिमारहु॥ मोरकहाकछुहृदयविचारहु॥ अगजग
नाथअतुलवलजानहु॥ पतिरघुपतिहिनृपतिमतिमानेहु॥ वानप्रतापजानमारी
चा॥ तासुकहानहिमानेहुनीचा॥ जनकसभाअगनितमहिपाला॥ रहेतुम्ह
हिवलअतुलविसाला॥ भंजिधनुषजानकीविवाही॥ तवसंग्रामजितेहुकिनताही॥
सुरपतिसुतजानहिवलथोरा॥ राखाजीयतआषिगहिफोरा॥ सूपनषाकैगति
तुम्हदेषी॥ तदपिहृदयनहिलाजविसेषी॥ दो॥ ३॥ वधिविराधषरदूषनहिलीला
हनेउकबंध॥ वालिएकसरमारेउतेहिजानउदसकंध॥ ३७॥ चौ॥ ई॥ जेहिजल
नाथवंधायउहेला॥ उतरेप्रभुदलसहितसुवेला॥ कारुनीकदिनकरकुलके
तु॥ दूतपठायउतवहितहेतु॥ सभामांझजेहितववलमथा॥ करिवरूथमहिमृ
गपतिजथा॥ अंगदहनुमंतअनुचरजाके॥ रनवाकुरावीरअतिवांके॥ ताकहंपि
यापुनिपुनिनरकहहू॥ मुधामानममतामदवहहू॥ अहहकंतकृतरामविरोधा
कालविवसमनउपजनवोधा॥ कालदंडगहिकाहुनमारा॥ हरैधरमवलवुधिवि
चारा॥ निकटकालजेहिआवतसाई॥ तेहिभ्रमहोयतुम्हारीनाई॥ दो॥ ३॥ दोउसुत
मारेदहेउपुरअजहुंपुरपियदेहु॥ कृपासिंधुरघुनाथभजिनाथविमलजसलेहु
॥ ३८॥ चौ॥ ई॥ नारिवचनसुनिविसषसमाना॥ सभागयउउठिहोतविहाना॥ वै
ठाजाइसिंघासनफूली॥ अतिअभिमानत्रासससभमूली॥ इहारामअंगदहिवुला
वा॥ आइचरनपंकजसिरनावा॥ अतिआदरसमीपवैठारी॥ वोलेविहसिकृपा
लषरारी॥ वालितनयअतिकौतकमोहीं॥ तातसत्यकहुपूछौतोहीं॥ रावनजातु
धानकुलटीका॥ भुजवलअतुलजासुजगलीका॥ तासुमकुटतुमचारिचलाये॥ क
हहुतातकवनविधिपाये॥ सुनुसरवज्ञप्रनतहितकारी॥ मुकुटनहोहिभूप
गुनचारी॥ सामदामअरुदंडविभेदा॥ नृपउरवसहिनाथकहवेदा॥ नीतिधर्म
केचरनसुहाये॥ असजियजानिनाथपहआये॥ दो॥ ३॥ धरमहीनप्रभुपदविमुषका
लविवसदससीस॥ तेहिपरिहरिगुनआयेउसुनहुकोसलाधीस॥ परमचतुरता
श्रवनसुनिविहसेरामउदार॥ समाचारपुनिसवकहेगढकेवालिकुमार॥ ३९॥ चौ
पाई॥ रिपुकेसमाचारजवपाये॥ रामसचिवसवनिकटवुलाये॥ लंकावांके
चारेउद्वारा॥ किहिविधिलागियेकरहुविचारा॥ तवकपीसरीछेसविभीषन॥ नाइव
रघुवंशविभूषन॥ करिविचारतिनमंत्रदृढावा॥ चारिअनीकपिकटकवनावा॥
जथाजोगसेनापतिकीने॥ जूथपसकलवोलितवलीने॥ प्रभुप्रतापकहिसवसम
झाये॥ सुनिकपिसिंहनादकरिधाये॥ हरषितरामचरनसिरनाये॥ गहिगिरि
सिषरवीरसवधाये॥ गरजहितरजहिभालकपीसा॥ जयरघुवीरकोसलाधीसा
जानतपरमदुरगअतिलंका॥ प्रभुप्रतापकपीचलेअसंका॥ घटाटोपकरिचहुदि
सिघेरी॥ मुषहिनिसानवजावहिभेरी॥ दो॥ ३॥ जयतिरामजयलछिमनजयक
पीससुग्रीव॥ गरजहिकेहरिनादकपिभालमहावलसींव॥ ४०॥ चौपाई॥ लंका
भयोकोलाहलभारी॥ सुनेउदसाननअतिअहंकारी॥ देषहुवंदरनकेरढीढाई॥
विहसिदसाननसेनवुलाई॥ आयेकीसकालकेप्रेरे॥ छुधावंतरजनिचरमेरे॥ अ

सकृति अटहास सठ कीन्हा ॥ ग्रहवैठें अहार विधि दीन्हा ॥ सुभट सकल चारिहु दिसि धावहु
धरि धरि भाल कीस सव षावहु ॥ उमा रावनहि अस अभिमाना ॥ जिमि टीटिभ षग सूत उता-
ना ॥ चले निसाचर आयस मांगी ॥ गहि कर भिंडिपाल वर सांगी ॥ तोमर मुद्गर परसु प्र-
चंडा ॥ सूल कृपान परघ गिरि षंडा ॥ जिमि अरुनोपल निकर निहारी ॥ धावहिं सठ
षग मांस अहारी ॥ चोंच भंग दुष तिनहि न सूझा ॥ तिमि धाए मनुजाद अबूझा ॥ दो०
नाना आयुध चाप सर जातुधान वलवीर ॥ कोट कंगूरन चढि गये कोटि कोटि रन-
धीर ॥ ४१ ॥ चौपा ॥ कोट कंगूरन सोहहि कैसे ॥ मेरु के स्रंगन जनु घन वैसे ॥ वाजहि
ढोलन साव जुझाऊ ॥ सुनि सुनि होहि सुभट मन चाऊ ॥ वाजहि भेरि नफीरि अपा-
रा ॥ सुनि कादर उर जाहि दराए ॥ देषीन जाइ कपिन्ह के ठटा ॥ अति विसाल तनु भाल
सुभटा ॥ धावहि गनहि न अवघट घाटा ॥ परवत फोरि करहि गहि वाटा ॥ कटकटा-
हि कोटिन भट तरजहि ॥ दसन ओठ काटहि अति गरजहि ॥ उत रावन इत राम दोहाई
जयति जयति जय परी लराई ॥ निसिचर सिषर समूह ढहावहि ॥ कूदि धरहि कपि फे-
रि चलावहि ॥ छंद ॥ धरि कुधर षंड प्रचंड मरकट भाल गढपर डारही ॥ झपटहि चर-
न गहि पटकि महि भजि चलत बहुरि पचारही ॥ अति तरल तरुन प्रताप तरज-
हि तमकि गढ चढि चढि गए ॥ कपि भालु चढि मंदिरन जहां तहां राम जसु गावत भ-
ए ॥ दोहा ॥ एक एक निसिचर गहि पुनि कपि चले पराइ ॥ ऊपर आप हेठ भट गिर-
हि धरनि पर आइ ॥ ४२ ॥ चौपा ॥ राम प्रताप प्रवल कपिजूथा ॥ मरदहि निसिचर
सुभट वरूथा ॥ चढे दुरग पुनि जहां तहां वंदर ॥ जै रघुवीर प्रताप दिवाकर ॥ चले नि-
साचर निकर पराई ॥ प्रवल पवन जिमि घन समुदाई ॥ हाहाकार भयउ पुर भारी ॥ रो-
वहि वालक आतुर नारी ॥ सव मिलि देहि रावनहि गारी ॥ राज करत यहि मरन हंकारी
निज दल विचल सुनी तव काना ॥ फेरि सुभट लंकेस रिसाना ॥ जो रन विमुष फिरा मैं जा-
नो ॥ तिहि मारिहौ कराल कृपानो ॥ सरवस षाइ भोग करि नाना ॥ समर विमुष भये
हूलभे प्राना ॥ उग्र वचन सुनि सकल संकाने ॥ फिरे क्रोध करि सुभट लजाने ॥ सन-
मुष मरन वीर कर सोभा ॥ तव तिन तजा प्रान कर लोभा ॥ दो० ॥ वहु आयुध धरि
सुभट सव भिरहि पचारि पचारि ॥ व्याकुल कीने भालु कपि परिघ त्रिसूलन मारि ॥
४३ ॥ चौपाई ॥ भय आतुर कपि भागन लागे ॥ जदपि उमा जीतिहैं आगे ॥ कोउ कह
कहां अंगद हनुमंता ॥ कहां नल नील दुविद वलवंता ॥ निज दल विचल सुना
हनुमाना ॥ पछिम द्वार रहा वलवाना ॥ मेघनाद तहं करै लराई ॥ टूट न द्वार परम
कठिनाई ॥ पवनतनै मन भा अति क्रोधा ॥ गरजा प्रवल काल सम जोधा ॥ कूदि
लंक गढ ऊपर आवा ॥ गहि गिरि मेघनाद पर धावा ॥ भंजो रथ सारथी निपाता ॥
ताहि हृदय महं मारेसि लाता ॥ दुसरे सूत विकल तिहि जाना ॥ स्यंदन घालि तुरत
ग्रह आना ॥ दोहा ॥ अंगद सुनेउ कि पवनसुत गढपर गयउ अकेल ॥ रनवांकु-
रा वालिसुत तरकि चढेउ कपि षेल ॥ ४४ ॥ चौपा ॥ जुद्ध विरुध क्रोध द्वौ वंदर ॥ रा-
म प्रताप सुमिरि उर अंतर ॥ रावन भवन चढे पुनि धाई ॥ करहि कोसलाधीस दु-
हाई ॥ कलस सहित गहि भवन ढहावा ॥ देषि निसाचरपति भय पावा ॥ नारि वृंद
कर पीटहि छाती ॥ अव दोउ कपि आय उतपाती ॥ कपिलीला करि तिनहि डरा-
वही ॥ रामचंद्र के सुजस सुनावही ॥ पुनि कर गहि कंचन के षंभा ॥ कहेनि-
कि करिउ उतपात अरंभा ॥ कूदि परे रिपु कटक मझारी ॥ लागे मरदन भुजवल
भारी ॥ काहू लात चपेटन केहू ॥ भजेहु न रामहि सो फल लेहू ॥ दोहा ॥ एक एक सन
मरदि कीरि तोरि चलावहि मुंड ॥ रावन आगे परहि ते जनु फूटहि दधि कुंड ॥ ४५

चौपाई ॥ महा महा मुषिया जो पावहीं ॥ ते पद गहि प्रभु पास चलावहीं ॥ कहै विभीषन
तिन के नामा ॥ देहि राम तिन कहं निज धामा ॥ षल मनुजाद द्विजामिष भोगी ॥ गति
पावहि जो जाचत जोगी ॥ उमा राम मृदुचित करुनाकर ॥ वैरभाव सुमिरत मोहि निसि-
चर ॥ देहि परम गति अस जीय जानी ॥ अस कृपाल को कहहु भवानी ॥ अस प्रभु
सुनि न भजहि भ्रम त्यागी ॥ ते नर परम मतिमंद अभागी ॥ अंगद अरु हनुमंत
प्रवेसा ॥ कीन्ह दुर्ग अस कहि अवधेसा ॥ लंका दोउ कपि सोहहि कैसे ॥ मथ-
हि सिंधु दोउ मंदर जैसे ॥ दो० ॥ रिपु दल भुजवल दलमलेउ देषि दिवस क-
र अंत ॥ कूदे जुगल प्रयास विन आये जहां भगवंत ॥ ४६ ॥ चौपाई ॥ प्रभु प-
द कमल सीस तिन नाए ॥ देषि सुभट रघुपति मन भाए ॥ राम कृपा करि जु-
गल निहारे ॥ भये विगत श्रम परम सुषारे ॥ गए जानि अंगद हनुमाना ॥ फिरे
भालु मर्कट भट नाना ॥ जातुधान प्रदोष वल पाई ॥ धाए करि दससीस दुहा-
ई ॥ निसचर अनि देषि कपि फिरे ॥ जहां तहां कटकटाइ भट भिरे ॥ दोउ दल प्र-
वल पचारि पचारी ॥ लरहि सुभट नहि मानहि हारी ॥ महावली निसचर स-
व कारे ॥ नाना वरन वलीमुष भारे ॥ सवल जुगल दल समवल जोधा ॥ जहां
तहां लरत करत अति क्रोधा ॥ प्राविट सरद पयोधि घनेरे ॥ लरत मनहु मारु-
त के प्रेरे ॥ अनी प अकंपन अरु अतिकाया ॥ विचलत सेन कीन तिन माया ॥
भयो निमिष महि अति अंधियारा ॥ सूझ न आपन हाथ पसारा ॥ मारु मारु कर-
व करहि पुकारा ॥ होइ वृष्टि रुधिरोपल छारा ॥ दो० ॥ देषि निविड तम दसहुं दिसि
कपिदल भयउ षभार ॥ एकहि एक न देषई जहां तहां करहि पुकार ॥ ४७ ॥ चौपा-
ई ॥ सकल मरम रघुनायक जाना ॥ लीय वोलि अंगद हनुमाना ॥ समाचार सव
कहि समुझाये ॥ सुनत कोपि कपिकुंजर धाए ॥ पुनि कृपाल हसि चाप चढावा
पावक सायक सपदि चलावा ॥ भयउ प्रकास कतहुं तम नाहीं ॥ ज्ञान उदै जि-
मि संसय जाहीं ॥ भालु वलीमुष पाइ प्रकासा ॥ धाए हरषि विगत श्रम त्रासा ॥ ह-
नूमान अंगद रन गाजे ॥ हाक सुनत रजनीचर भागे ॥ भागत भट पटकहि
धरि धरनी ॥ करहि भालु कपि अद्भुत करनी ॥ गहि पद डारहि सागर माही ॥
मकर उरग झष धरि धरि षाही ॥ दो० ॥ कछु मारे कछु घायल कछु गढ चढे पराई
गरजहि भालु वलीमुष रिपुदल वल विचलाइ ॥ ४८ ॥ चौ० ॥ निसा जानि कपि
चारेउ अनी ॥ आये जहां कोसलाधनी ॥ राम कृपा करि चितवा सवही ॥ भये वि-
गत श्रम वानर तवहीं ॥ उहां दसानन सुभट हंकारे ॥ सव सन कहेसि सुभट जे मारे
आधा कटक कपिन संघारा ॥ कहहु वेगि का करिय विचारा ॥ माल्यवंत अति ज-
रठ निसाचर ॥ रावन मात पिता मंत्री वर ॥ वोला वचन नीति अति पावन ॥ सुनहु ता-
त कछु मोर सिषावन ॥ जव ते तुम सीता हरि आनी ॥ असगुन होहि न जाहि वषा-
नी ॥ वेद पुरान जासु गुन गावा ॥ राम विमुष काहू न सुष पावा ॥ दो० ॥ हिरन्या-
छ भ्राता सहित मधु कैटभ वलवान ॥ जिहि मारे सो अवतरे कृपासिंधु भगवान
काल रूप षल वन दहन गुनागार घनवोध ॥ सिव विरंचि जिहि सेवही तासो कवन वि-
रोध ॥ ४९ ॥ चौपाई ॥ परिहरि वैर देहु वैदेही ॥ भजहु कृपानिधि परम सनेही ॥ ता-
के वचन वान सम लागे ॥ करिआ मुष करि जाहि अभागे ॥ वूढ भयसि न तो मारउं तो-
ही ॥ अव जनि नयन दिषावसि मोहि ॥ तेहि आपन मन अस अनुमाना ॥ वध्यो चह

तोरहि हृपानि पियोनो॥ सो उठि गयउ कहत दुरबादा॥ तब सकोपि बोलेउ घननादा॥ कौ
तुक प्रात देषिहौ मोरा॥ करिहौं बहुत कहत हौं थोरा॥ सुनि सुत बचन भरोसा आवा॥ प्री
ति समेत निकट बैठावा॥ करत बिचार भयउ भिनुसारा॥ लगे भालु कपि चारिहु द्वारा॥
कोपि कपिन्ह दुर्गम गढ घेरा॥ नगर कुलाहल भयउ घनेरा॥ बिबिधायुध धरि निसिचर
धाये॥ गढ तें पर्बत सिषर ढहाये॥ छंद॥ ढाहे महीधर सिषर कोटिन बिबिध बिधि
गोला चले॥ घहरात जिमि पबिपात गरजत जिमि प्रलै के बादले॥ मरकट बि
कट भट जुटत न मन मुष कटत न लटत तन जरजर भये॥ गहि सैल तेहि गढ पर चलावहि जहां
सो तहां निसिचर हये॥ दोहा॥ मेघनाद सुनि श्रवन अस गढ पुनि छेंका आइ॥ उत
रि गढ तें बीर बर सनमुष चल्यो बजाय॥ ५०॥ कहां कोसलाधीस दोउ भ्राता॥ धन
वी सकल लोक बिष्याता॥ कहां नल नील दुबिद सुग्रीवा॥ कहां अंगद हनुमंत ब
ल सींवा॥ कहां बिभीषन भ्राता द्रोही॥ आजु सबहि हठि मारौं ओही॥ अस कहि कठिन
बान संधाने॥ अतिसै क्रोध श्रवन लगि ताने॥ सर समूह सो छाडै लागा॥ जानु सप
छ धावहिं बहु नागा॥ जहां तहां परत देषियहि बंदर॥ सनमुष होय न सकहि ति
हि अवसर॥ जहं तहं भागि चले कपि रीछा॥ बिसरी सबहि जुद्ध की इछा॥ सो कपि
भालु न रन महं देषा॥ कीन्हेसि जेहि न प्रान अवसेषा॥ दोहा॥ दस दस सर सब मारेउ
परे भूमि कपि बीर॥ सिंहनाद करि गरजा मेघनाद रनधीर॥ ५१॥ चौपाई॥
देषि पवनसुत कटक बिहाला॥ क्रोधवंत जनु धायउ काला॥ महासैल एक तुरत
उपारा॥ अति रिस मेघनाद पर डारा॥ आवत देषि गयउ नभ सोई॥ रथ सारथी
तुरग सब षोई॥ बार बार पचार हनुमाना॥ निकट न आव मरम सो जाना॥ रघुप
ति निकट गयउ घननादा॥ नाना भांति करेसि दुरबादा॥ अस्त्र सस्त्र आयुध सब डा
रे॥ कौतुकहि प्रभु काटि निवारे॥ देषि प्रभाव मूढ षिसियाना॥ करै लाग मा
या बिधि नाना॥ जिमि कोउ करै गरुड सन षेला॥ डरपावै गहि स्वल्प सपेला॥
दोहा॥ जासु प्रबल माया बस सिव बिरंचि बड छोट॥ ताहि देषावत रजनीचर
निज माया मति षोट॥ ५२॥ चौपाई॥ नभ चढि बरषत बिपुल अंगारा॥ महि ते प्र
गट होय जलधारा॥ नाना भांति पिसाच पिसाची॥ मारु काटु धुनि बोलहि नाची॥
बिष्टा पूय रुधिर कच हाडा॥ बरषै कबहुं उपल बहु छाडा॥ बरषि धूरि कीन्हेसि
अंधियारी॥ सूझ न आपन हाथ पसारी॥ कपि अकुलाने माया देषी॥ सब कर
मरन बना यहि लेषी॥ कौतुक देषि राम मुसुकाने॥ भये सभीत सकल कपि जा
ने॥ एक बान काटी सब माया॥ जिमि दिनकर हर तम निकाया॥ कृपा दृष्टि
कपि भालु बिलोके॥ भये प्रबल रन रहत न रोके॥ दोहा॥ आयसु मागि राम प
हि अंगदादि कपि साथ॥ लछिमन चले सकोप अति बान सरासन हाथ॥ ५३॥
चौपाई॥ छतज नयन उर बाहु बिसाला॥ हिमगिरि निभ तन कछु एक लाला॥ इहां
दसानन सुभट पठाये॥ नाना अस्त्र सस्त्र गहि धाये॥ भूधर नष बिटपायुध धा
री॥ धाये कपि जै राम पुकारी॥ भिरे सकल जोरिहि सन जोरी॥ इत उत जै इछा नहि
थोरी॥ मुठिकन लातन दांतन काटहि॥ कपि जैसील मारि पुनि डाटहि॥ मारु
मारु धरु धरु धरु मारू॥ सीस तोरि गहि भुजा उपारू॥ अस रव पूरि रही न
वषंडा॥ धावहि जहं तहं रुंड प्रचंडा॥ देषहि कौतुक नभ सुरबृंदा॥ कबहुं
क बिसमै कबहुं अनंदा॥ दोहा॥ रुधिर गाढ भरि भरि जम्यो ऊपर धूरि उडाहि॥

जनु अंगार रासिन पर मृतक धूम रह्यो छाइ॥ ५४॥ चौपाई॥ घायल बीर बिराजहि कैसे॥
कुसुमित किंसुक के तरु जैसे॥ लछिमन मेघनाद दोउ जोधा॥ भिरत परसपर करि अति क्रोधा॥
एक न एक सकै नहि जीती॥ निसिचर छल बल करै अनीती॥ क्रोधवंत तब भयउ अ
नंता॥ भंजेउ रथ सारथी तुरंता॥ नाना बिधि प्रहार कर सेषा॥ राछस भयउ प्रान
अवसेषा॥ रावन सुत निज मन अनुमाना॥ संकट भयउ हरहि मम प्राना॥ बीर
घातिनी छाडिसि सांगी॥ तेजपुंज लछिमन उर लागी॥ मुरछा भयउ सक्ति के
लागे॥ तब चलि गयउ निकट भै त्यागे॥ दोहा॥ मेघनाद सम कोटि सत जोधा रहे उ
ठाइ॥ जगदाधार सेष किमि उठै चले षिसियाइ॥ ५५॥ चौपाई॥ सुनु गिरि
जा क्रोधानल जासू॥ जारै भुवन चारिदस आसू॥ सक संग्राम जीति को ताही॥ से
वहि सुर नर अग जग जाही॥ यह कौतूहल जानै सोई॥ जापर कृपा राम की होई॥
संध्या भई फिरी दोउ अनी॥ लगे संभारन निज निज सेनी॥ ब्यापक ब्रह्म अजित भुव
नेस्वर॥ लछिमन कहां बूझि करुनाकर॥ तब लगि ले आयउ हनुमाना॥ अनु
ज देषि प्रभु बहु दुष माना॥ कहै रीछपति बैद सुषेना॥ लंका रहै को उपठइ लेना॥
धरि लघु रूप गयउ हनुमंता॥ आनेउ भवन समेत तुरंता॥ दोहा॥ रघुपति चरन स
रोज सिर नायउ आनि सुषेन॥ कहा नाम गिरि औषधी जाहु पवनसुत लेन॥ ५६॥
चौपाई॥ राम चरन सरसिज उर राषी॥ चलेउ प्रभंजन सुत बल भाषी॥ उहां दूत एक मर
म जनावा॥ रावन कालनेमि गृह आवा॥ दसमुष कहा मरम तेहि सुनेउ॥ पुनि पुनि
कालनेमि सिर धुनेउ॥ देषत तुमहि नगर जिहि जारा॥ तासु पंथ को रोकनिहारा॥
भजि रघुपति हित करहु आपना॥ छाडहु नाथ मृषा जलपना॥ नील कंज तन
सुंदर स्यामा॥ हृदै राषि लोचन अभिरामा॥ मैं तैं मोर ममता मद त्यागहु॥ महा
मोह निसि सोवत जागहु॥ काल ब्याल कर भछक जोई॥ सपनेहु समर कि जीतिय
सोई॥ दोहा॥ सुनि दसकंधर रिसान अति तिहि मन कीन बिचार॥ राम दूत कर
मरौं बरु यह षल रत मल भार॥ ५७॥ चौपाई॥ अस कहि चलेउ रचेसि मग माया॥ सर मंदि
र बाग बनाया॥ मारुतसुत देषा सुभ आश्रम॥ मुनिहि बूझि जल पीऊं जाइ श्रम॥
राछस कपट भेष तहं सोहा॥ मायापति दूतहि चह मोहा॥ जाय पवनसुत नाय
उ माथा॥ लाग कहै राम गुन गाथा॥ होत महा रन रावन रामहि॥ जितिहहि राम
न संसय यहि मही॥ इहां भये मैं देषउ भाई॥ ग्यान दृष्टि बल मोहि अधिकाई॥ मागा ज
ल तेहि दीन कमंडल॥ कह कपि नहि अघाउं थोरे जल॥ सर मज्जन करि आतुर
आवहु॥ दिछा देउ ग्यान जेहि पावहु॥ दोहा॥ सर पैठत कपि पद गहेउ मकरी अति
अकुलान॥ मारी सो कपि धरि दिव्य तनु चली गगन चढि जान॥ ५८॥ चौपाई॥ क
पि तव दरस भई निहपापा॥ मिटा तात मुनिबर कर सापा॥ मुनि न होय यह
निसिचर घोरा॥ मानहु सत्य बचन प्रभु मोरा॥ अस कहि गई अपछरा जबही॥ रा
छस निकट गयउ कपि तबही॥ कह कपि मुनि गुरदछिना लेहू॥ पाछे हमहि
मंत्र तुम देहू॥ सिर लंगूर लपेटि पछारा॥ निज तन प्रगटेसि मरती बारा॥ रा
म राम कहि छाडिसि प्राना॥ सुनि मन हरषि चलेउ हनुमाना॥ इहां गिरि बिलो
की अनुमाना॥ देषि प्रकास बहुत मन माना॥ जहं तहं देषि बहुत उजियारा॥ सं
सै जीय बढेउ अधिकारा॥ तब कपि मन महं करै बिचारा॥ मिला असुर जिन क
पट पसारा॥ धूमकेतु निसिचर तेहि नाउ॥ परयो दीन रावन तेहि दाउ॥ देषि पव
नसुत हनुमा प्रचारी॥ सीटा सकल गिरि कउ जियारी॥ तब हनुमंत अस्त्र
रकुल जाना॥ ताहि मारि गरजेउ बलवाना॥ देषा सैल न औषध चीन्हा॥ सहसा

कौतु पारि कपि ल्लीना॥ गहि गिरि निसि नभ धावत भयऊ॥ अवधपुरी उपर कपि
गयऊ॥ दो॰ ॥ देखा भरत बिसाल अति निसिचर मन अनुमानि॥ बिनु फर सायक
मारेउ चाप श्रवन लगि तानि॥ ५८॥ चौ॰ ॥ परेउ मुरछि महि लागत सा
यक॥ सुमिरत राम राम रघुनायक॥ सुनि प्रिय बचन भरत उठि धाए॥ का
पि समीप अति आतुर आए॥ बिकल बिलोकि कीस उर लावा॥ जागत नहि बहु
भांति जगावा॥ मुख मलीन मन भए दुखारी॥ कहत बचन लोचन भरि बारी॥
जेहि बिधि राम बिमुख मोहि कीन्हा॥ तेहि पुनि यह दारुन दुख दीन्हा॥ जौ मोरे म
न बच अरु काया॥ प्रीति राम पद कमल अमाया॥ तौ कपि बिगत सकल श्रम सू
ला॥ जौ मो पर रघुपति अनुकूला॥ सुनत बचन उठि बैठ कपीसा॥ कहि जै जै
ति कोसलाधीसा॥ सो॰ ॥ लीन कपिहि उर लाइ पुलकित तन लोचन सजल
॥ प्रीति न हृदय समाय सुमिरि राम रघुकुल तिलक॥ ५९॥ चौ॰ ॥ तात
कुसल कहु सुख निधान की॥ सहित अनुज अरु मातु जानकी॥ कपि सब चरि
त समास बखाने॥ भयउ दुखित मन बहु पछिताने॥ अहह दैव मैं कत जग जा
यउ॥ प्रभु के एको काम न आयउ॥ जानि कुअवसर मन धरि धीरा॥ पुनि का
पि सन बोले बलबीरा॥ तात गहरु होयहि तव जाता॥ काज नसाहि होहि प्रभा
ता॥ चढु मम सायक सैल समेता॥ पठउं तोहि जहां कृपानिकेता॥ सुनि
कपि मन उपजा अभिमाना॥ मोरे भार चलहि किमि बाना॥ [illegible]
न हनुमाना॥ रघुबर कृपा भरत तब जाना॥ राम प्रताप बिचारि बहोरी॥ बंदि च
रन कपी कह कर जोरी॥ तव प्रताप उर राखि गुसाईं॥ जैहौं नाथ बान की नाईं॥ भ
रथ हरषि आयसु तब देऊ॥ पद सिर नाइ चलेउ कपि भेऊ॥ दो॰ ॥ तव प्रताप
उर राखि प्रभु जैहौं नाथ तुरंत॥ अस कहि आयसु पाइ कपि पद बंदि चलेउ हनुम
त॥ भरत बाहु बल सील गुन प्रभु पद प्रीति अपार॥ जात सराहत मनहि मन पुनि पु
नि पवनकुमार॥ ६०॥ चौ॰ ॥ उहां राम लछमनहि निहारी॥ बोलेउ बचन मनु
ज अनुसारी॥ अर्ध राति गइ कपि नहि आयउ॥ राम उठाइ अनुज उर लायउ॥ सकहु
न देखि दुखित मोहि काहू॥ बंधु सदा तव मृदुल सुभाऊ॥ मम हित लागि तजेउ पि
तु माता॥ सहेउ बिपिन हिम आतप बाता॥ सो अनुराग कहां अब भाई॥ उठहु न
सुनि मम बचन बिकलाई॥ जौ जानत बन बंधु बिछोहू॥ पिता बचन मनतेउं न
हि ओहू॥ सुत बित नारि भवन परिवारा॥ होहि जाहि जग बारहि बारा॥ अस बिचारि जिय जा
गहु ताता॥ मिलै न जगत सहोदर भ्राता॥ जथा पंख बिनु खग अति दीना॥ मनि
बिनु फनी करि बर कर दीना॥ अस मम जिवन बंधु बिनु तोही॥ जौ जड दैव जिआ
वै मोही॥ जैहौं अवध कवन मुख लाई॥ नारि हेतु प्रिय भाइ गवाई॥ बरु अपजस
सहतेउं जग माही॥ नारि हानि बिसेष छति नाही॥ अब अपलोक सोक सुत तोरा
सहहि निठुर कठोर मन मोरा॥ निज जननी के एक कुमारा॥ तात तासु तुम प्रान
अधारा॥ सौंपेसि मोहि तुमहि गहि पानी॥ सब बिधि सुखद परम हित जानी॥ उ
तरु काह दैहौं तेहि जाई॥ उठि किन मोहि सिखावहु भाई॥ बहु बिधि सोचत सोच
बिमोचन॥ स्रवत नयन राजीव बिलोचन॥ उमा एक अखंड रघुराई॥ नर गति भ
गति कृपाल दिखाई॥ सो॰ ॥ प्रभु बिलाप सुनि कान बिकल भए बानर निकर॥ आ
इ गयउ हनुमान जिमि करुना मह बीर रस॥ ६१॥ चौ॰ ॥ हरषि राम भेटेउ हनु
माना॥ अति कृतग्य प्रभु परम सुजाना॥ तुरत बैद तब कीन्ह उपाई॥ उठि बैठे ल
छिमन हरषाई॥ हृदय लगाय भेटेउ प्रभु भ्राता॥ हरषे सकल भालु कपि ब्राता

कपि पुनि बैद तहां पहुंचावा॥ जेहि बिधि तबहि ताहि लै आवा॥ यह बृत्तांत दसानन [illegible]
अति बिषाद पुनि पुनि सिर धुनेऊ॥ ब्याकुल कुंभकरन पहि आवा॥ बिबिध [illegible]
गावा॥ लिय निसाचर कोटि बोलाई॥ जतन करहि बहु नाद उठाई॥ [illegible]
बही॥ दुंदुभी भेरि मृदंग बजावही॥ गोमुख पनव ढोल सुनावही॥ [illegible]
रही॥ गिरि अनेक गहि सिर भट लावही॥ [illegible] पावही॥ दो॰ ॥ [illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible] पाये॥ जागा निसिचर देखिअ कैसा॥ मान
हु कालु देह धरि बैसा॥ कुंभकरन बूझा कहु भाई॥ काहे तव मुख रहा सुखाई॥ कथा
कही सब तेहि अभिमानी॥ जेहि प्रकार सीता हरि आनी॥ तात कपिन सब निसिचर
मारे॥ महा महा जोधा संघारे॥ दुरमुख सुररिपु मनुज अहारी॥ भट अतिकाय अ
कंपन भारी॥ अपर महोदर आदिक बीरा॥ परे समर महि सब रनधीरा॥ दो॰ ॥ सुनि द
सकंधर बचन तब कुंभकरन बिलखान॥ जगदंबा हरि आनि अब सठ चाहत क
ल्यान॥ ६२॥ चौ॰ ॥ भल न कीन तै निसिचर नाह॥ अब मोहि आनि जगायउ का
हा॥ अजहु तात त्यागहु अभिमाना॥ भजहु राम होइहि कल्याना॥ हैं दससीस म
नुज रघुनायक॥ जाके हनूमान से पायक॥ अहह बंधु तै कीन खुटाई॥ प्रथमहि मो
हि मोहि न जगायउ आई॥ कीन प्रभु बिरोध तेहि देवक॥ सिव बिरंचि सुर जाके सेवक
नारद मुनि मोहि ग्यान जो कहेउ॥ कहतेउ तोहि समय निरबहेउ॥ अब भरि अंक भेटि
मोहि भाई॥ लोचन सुफल करौ मै जाई॥ स्याम गात सरसीरुह लोचन॥ देखौं जा
य ताप त्रय मोचन॥ दो॰ ॥ राम रूप गुन सुमिरत मगन भयउ छन एक॥ रा
वन मागेउ कोटि घट मद अरु महिष अनेक॥ ६३॥ चौ॰ ॥ महिष खाइ करि मदिरा पा
ना॥ गर्जेउ बज्राघात समाना॥ कुंभकरन दुरमद रन रंगा॥ चला दुर्ग तजि सेन
न संगा॥ देखि बिभीषन आगे आये॥ परेउ चरन निज नाम सुनाये॥ अनुज उठाय हृदय ते
हि लाये॥ रघुपति भगत जानि मन भाये॥ तात लात मोहि रावन मारा॥ कहत परम
हित मंत्र बिचारा॥ तेहि गलानि रघुपति पहि आया॥ देखि दीन प्रभु के मन भाया॥
सुनि सुत भयो कालबस रावन॥ सो कि मान अब परम सिखावन॥ धन्य धन्य तै ध
न्य बिभीषन॥ भयहु तात निसिचर कुल भूषन॥ बंधु बंस तै कीन्ह उजागर॥ भजहु
राम सोभा सुख सागर॥ दो॰ ॥ बचन करम मन कपट तजि भजहु राम रनधीर
जाहु न निज पर सूझि मोहि भयउ काल बस बीर॥ ६४॥ चौ॰ ॥ बंधु बचन सुनि
फिरा बिभीषन॥ आयो जहां त्रैलोक बिभूषन॥ नाथ भूधराकार सरीरा॥ कुं
भकरन आवत रनधीरा॥ [illegible]
[illegible]
[illegible] यतना कपिन सुना जब काना॥ कि
लकिलाय धाये भट लीना॥ लिये उठाय बिटप अरु भूधर॥ किलकिलाय डार
ही ता उपर॥ कोटि कोटि गिरि सिखर प्रहारा॥ करै भालु कपि एकहि बारा॥ मुरै न
मन तन टरै न टारा॥ जिमि गज अर्क फलनि कर मारा॥ तब मारुतसुत मुष्टि
का हनेऊ॥ परो धरनि ब्याकुल सिर धुनेऊ॥ पुनि उठि तेहि मारेउ हनुमंता॥
घुरमित भूतल परेउ तुरंता॥ पुनि नल नीलहि अवनि पछारसि॥ जहं तहं प
टकि पटकि भट डारसि॥ चली बलीमुख सेन पराई॥ अति भय त्रसित न कोउ समु
हाई॥ दो॰ ॥ अंगदादि कपी मुरछित करि समेत सुग्रीव॥ कांख दाबि कपिराज क
है चला अमित बल सींव॥ ६५॥ चौ॰ ॥ उमा करत रघुपति नरलीला॥ खेलत ग

ग. लं

उजिमिग्रुहवानमिला ॥ भृकुटिभंगजेहिकालहिषाई ॥ ताहिकिसोहेइऐसीलराई ॥ जगपा
वनकीरतिविसतरिहै ॥ गाइगाइसवसागरतरिहै ॥ मुरछागईमारुतसुतजागा ॥ सुग्री
वहितवषोजनलागा ॥ सुग्रीवहिकीमुरछावीती ॥ निवुकिगयउतिहिमृतकप्र
तीती ॥ काटेसिदसननासिकाकाना ॥ गर्जिअकासचलेउतेहिजाना ॥ गहेउचरन
धरिधरनिपछारा ॥ अतिलाघवउठिपुनितिहिमारा ॥ पुनिआयउप्रभुपहवलवा
ना ॥ जैतिजैतिजैकृपानिधाना ॥ नाककानकाटेजियजानी ॥ फिराक्रोधक
रिभईगलानी ॥ सहजभीमपुनिविनश्रुतिनासा ॥ देषतकपिदलउपजीत्रासा ॥ दो ॥
जैजैजैरघुवंसमनिधाएकपिदेहूह ॥ एकहिवारतासुपरछाडेगिरितरुजूह ॥ ६७ ॥
चौपाई ॥ कुंभकरनरनरंगविरुध्या ॥ सनमुषचलाकालजनुक्रुध्या ॥ कोटिकोटिक
पिधरिधरिषाई ॥ जनुटिडीगिरिगुहासमाई ॥ कोटिनगहिसरीरसनमरदा ॥ कोटिन
मीजिमिलावहिगर्दा ॥ मुषनासिकाश्रवनकीवाटा ॥ निसरपराहिभालकपिठा
टा ॥ रनमदमत्तनिसाचरदरपा ॥ विस्वग्रसहिजनुएहिविधिअरपा ॥ मुरेसुभटस
वफिरहिनफेरे ॥ सूझनेननसुनैनहिटेरे ॥ कुंभकरनकपिफौजविडारी ॥ सुनि
धाईरजनीचरधारी ॥ देषीरामविकटकटकाई ॥ रिपुअनीकनानाविधिआई ॥
दो ॥ सुनसुग्रीवविभीषनसकलसंभारेहुसेन ॥ मैदेषोंषलदलवलहि ॥ वो
लेराजीवनेन ॥ चौपाई ॥ करसारंगसाजिकटिभाथा ॥ रिपुदलदलनचलेर
घुनाथा ॥ प्रथमकीनप्रभुधनुषटंकोरा ॥ रिपुदलवधिरभयउसुनिसोरा ॥ स
त्यसिंधुछाडेउसरलछा ॥ कालसरपजनुचलेसपछा ॥ जहतहचलेविपुलना
राचा ॥ लगेकटनभटविकटपिसाचा ॥ कटहिचरनउरसिरभुजदंडा ॥ वहोतकवी
रहोहिसतषंडा ॥ घुरमिघुरमिघायलमहिपरही ॥ उठसंभारिसुभटपुनिल
रही ॥ लागतवानजलदजिमिगाजही ॥ वहुतकदेषिकठिनसरभाजही ॥ रुंड
प्रचंडमुंडविनधावही ॥ वीरविडरहीमेघजिमिगाजही ॥ धरुधरुमारमारुधु
निकरही ॥ दो ॥ छिनमहप्रभुकेसायकनकाटेविकटपिसाच ॥ पुनिरघुपति
केवानमहप्रविसेसवनाराच ॥ चौपाई ॥ कुंभकरनमनदीषविचारी ॥ हतेछ
निमषमहनिसचरधारी ॥ भाअतिक्रोधमहावलवीरा ॥ कीयेमृगनायकनाद
गंभीरा ॥ कोपिमहीधरलीनउपारी ॥ डारिसिजहमरकटभटभारी ॥ आवतदेषिसे
लप्रभुभारे ॥ सरनकाटिरजसमकरिडारे ॥ पुनिधनुतानिकोपिरघुनायक ॥
छाडेअतिकरालवहुसायक ॥ तनमहप्रविसनिकरिसरजाही ॥ जनुदामनिघन
मांहिसमाही ॥ श्रोनितश्रवतसोहतनकारे ॥ जनुकजलगिरिगेरुपनारे ॥ आ
कुलविलोकिभालकपिधाए ॥ विहसाजवहीनिकटचलिआए ॥ दो ॥ महानाद
करिगरजेउकोटिकोटिगहकीस ॥ महीपटकेगजराजइवसपथकरेदससीस ॥
चौपाई ॥ भागेभालवलीमुषजूथा ॥ वृषविलोकिजिमिमेषवरूथा ॥ चलेभागि
कपिभालभवानी ॥ विकलपुकारतआरतवानी ॥ एहनिसचरदुकालसमअहई ॥
कपिकुलदेसपरनअवचहई ॥ कृपावारिधररामषरारी ॥ पाहिपाहिप्रनतआ
रतहारी ॥ करुणावचनसुनतभगवाना ॥ चलेसुधारिसरासनवाना ॥ रामसेन
निजपाछेघाली ॥ चलेउकोपिमहावलसाली ॥ पैंचिधनुषसतसरसंधाने ॥ लागे
तीरसरीरसमाने ॥ लागतसरधावारिसभरा ॥ कुधरडगमगतडोलतधरा ॥ लीन
एकतेहिसैलउपाटी ॥ रघुकुलतिलकभुजासोकाटी ॥ धावावामवाहगिरिधारी ॥ प्र
भुसोउभुजाकाटिमहिपारी ॥ काटेभुजासोहषलकेसे ॥ पंषहीनमंदरगिरिजैसे ॥
उग्रविलोकनिप्रभुहिविलोका ॥ ग्रसनचहतमानहुत्रैलोका ॥ दो ॥ करिचिक्
कारअतिघोरवधावावदनपसारि ॥ गगनसिद्धसुरत्रासितअतिहाहाकारत ॥

पुकारि ॥ ७१ ॥ चौपाई ॥ सभैदेवकरुणानिधिजाना ॥ श्रवनप्रजंतसरासनताना ॥ विसष
निकरनिसचरमुषभरेउ ॥ तदपिमहावलभूमिनगिरेउ ॥ सरनभरामुषसनमुषधा
वा ॥ कालत्रोणसजीवजनुआवा ॥ तवप्रभुकोपितीब्रसरलीना ॥ धरतेभिन्नतासुसि
रकीना ॥ सोसिरपरोदसाननआगे ॥ विकलभयोजिमिफनमनित्यागे ॥ धरनिध
सेधरधावप्रचंडा ॥ तवप्रभुकाटिकियेदोइषंडा ॥ परेभूमिजिमिनभतेभू
धर ॥ हेठदावेकपिभालनिसाचर ॥ तासुतेजप्रभुवदनसमाना ॥ सुरमु
निसवहिअचंभोमाना ॥ सुरदुंदभिवजावहिहरषही ॥ अस्तुतिकरहिसुमनव
हुवरषही ॥ करविनतीसुरसिद्धसिधाए ॥ तिहिसमैदेवरिषिआए ॥ गगनोपरि
हरिगुणगनगाए ॥ रुचिरवीररसप्रभुमनभाए ॥ वेगहतहुषलउरपतिलंका ॥ उस
रोश्रवसवसुरसंका ॥ वेगिहतहुषलकहिमुनिगोउ ॥ रामसमरमहसोभितभए
उ ॥ छं ॥ २ ॥ वेगादिहतोषलवलदलहिकहिविमलजसमुनिवरगए ॥ लिनेसदा
सनरामकरकरवाहिसमरसोभितभए ॥ संग्रामभूमिविराजरघुपतिअतुलवल
कोसलधनी ॥ श्रमविंदुमुषराजीवलोचनरुचिरतनसोभितवनी ॥ भुजजुगलसर
फेरतसरासनभालकपिचहुदिसवने ॥ कहदासतुलसीकहिनसकतछविसे
सजेहिआननघने ॥ दो ॥ निसचरअधममलायतन ॥ ताहिदीनोनिजधाम ॥ गि
रजातेनरमंदमतिजेनभजहिश्रीराम ॥ ७२ ॥ चौपाई ॥ दिनकेअंतफिरीदोउअनी ॥
समरभईसुभटनश्रमघनी ॥ रामकृपाकपिदलवलवाढा ॥ जिमित्रणपाइलागअ
तिदाढा ॥ छीजहिनिसचरदिनअरुराती ॥ निजमुषकहेसुकृतजेहिभांती ॥ वहु
विलापदसकंधरकरही ॥ वंधुसीसपुनिपुनिउरधरही ॥ रोवहिनारिहृदैहतिपानी ॥
तासुतेजवलविपुलवषानी ॥ मेघनादतेहिअवसरआवा ॥ कहिवहुकथापि
ताहिसमुझावा ॥ देषहुकालिमोरमनुसाई ॥ अवहिवहुतकाकरोवडाई ॥ इष्टदेव
सनवलरथपाएउ ॥ सोवलतातनतोहिदिषाएउ ॥ एहिविधिजलपतभयोविहा
ना ॥ चहुदुआरलागेभटनाना ॥ तेकपिभालकालसमवीरा ॥ उतरजनिसचरअ
तिरणधीरा ॥ लरहिसुभटनिजनिजजैहेतु ॥ वरननजाइसमरषगकेतु ॥ दो ॥
॥ मेघनादमायारचितरथचढिगयउअकास ॥ वज्रघातसमगरजेउ ॥ भइ
कपिदलअतित्रास ॥ ७३ ॥ चौपाई ॥ सक्तिसूलतरवारिकृपाना ॥ अस्त्रसस्त्रकुलि
सादिकनाना ॥ डारहिपरसपरिघपाषाना ॥ लागाव्रष्टिकरेवहुवाना ॥ दसदि
सिरहेवाननभछाई ॥ मानहुमेघमघाझरिलाई ॥ धरुधरुमारुमारुधुनिकाना ॥
जोमारेतेहिकोउनजाना ॥ गहगिरितरुअकासकपिधावे ॥ देषनतहादुषितफि
रिआवे ॥ अवघटघाटवाटगिरिकंदर ॥ मायावलकीनेसीसरपंजर ॥ कहाजा
हिव्याकुलभयेवंदर ॥ सुरपतिवंदिपरेजनुमंदर ॥ मारुतसुतअंगद ॥ नलनी
ला ॥ कीनेसिविकलसकलवलसीला ॥ पुनिलषमनसुग्रीवविभीषन ॥ सरन
मारिकीनेसिजरजरतन ॥ पुनिरघुपतिसमजूझनलागा ॥ सरछाडेहोइलागहि
नागा ॥ व्यालफांसिवसभयेउषरारी ॥ स्ववसअनंतएकअविकारी ॥ नटज्योंक
पटचरितकरनाना ॥ सदास्वतंत्रएकभगवाना ॥ रनसोभालगिप्रभुहिवंधावा ॥
देषिदसादेवनभैपावा ॥ दो ॥ गिरिजाजासुनामजपिमुनिकाटहिभव
फासि ॥ सोप्रभुआवेकिवंधतरव्यापकविस्वनिवास ॥ ७४ ॥ चौपाई ॥ चरितराम
केसगुनभवानी ॥ तरकिनजाहिबुधिमनवानी ॥ असविचारिजेतग्यविरा
गी ॥ रामहिभजहितरकसभत्यागी ॥ व्याकुलकटककीनघननादा ॥ पुनिभा
प्रगटकहतदुरवादा ॥ जामवंतकहषलरहुठाढा ॥ सुनिअसिताहिक्रोध
अतिवाढा ॥ वूढजानिसठछाडेउतोही ॥ लागासिअधमपचारनमोही ॥ अ
सकहितीव्रत्रसूलचलावा ॥ जामवंतकरगहिसोइधावा ॥ मारेसिमेघनाद
करछाती ॥ पराभूमिघुरमितसुरघाती ॥ पुनिरिसानगहिचरनफिरावा ॥

रा॰ ले॰
१०

महि पछारि निज बल देषरावा॥ बरषकाद सोमेरैन मारा॥ तब पवन पहिले का परे शरा॥ असदे
वीरिषि गरु इपहाय उ॥ राम समिप सपदि सो आय उ॥ दोहा॥ मु गहि गिरि विपाद यउ पवना न।
पथा रो कीस विसाष॥ चले नभि वर विकल नव गढ परचे ठे मराथी॥ सोरठा॥ पवन गावि पा
पेस कल छिन महि याल वरूथ॥ माया विगत भये नव हर षे वानर ज्ञथ॥ ७५॥ चौपाई॥
मेघनाद कर मुरछा जागी॥ पितहि विलोकि लाज अति लागी॥ तुरत गयउ गिरि वर।
वर कदर॥ करौ अजै मष अस मिमन अंदर॥ इहा विभीषन सब सुधि पाई॥ सपदि जाइ रघु
पतिहि सुनाई॥ मेघनाद मष करै अपावन॥ षल माया वी देव सतावन॥ जौ प्रभु सिधि होन
सो पावही॥ नाथ वेगि पुनि जीति न जावही॥ सुनि रघुपति अतिसै सुष माना॥ बोलि लीय
अंगदहनु माना॥ लछिमन संग जाहु सब भाई॥ करहु विधंस जग्य करजाई॥ तुम लछि
मन मारहु औही॥ देषि सभै सुर दुष अति मोही॥ मारेहु तेहि वल बुधि उपाई॥ जिहि
छीजहि निसचर सुनु राई॥ जामवंत सुग्रीव विभीषन॥ सेन समेत रहहु तीनउ जन॥ जब
रघुवीर दीन्ह अनुसासन॥ कटि निषंग कसि साजि बान सरासन॥ प्रभु प्रताप उर धरि रण।
धीरा॥ बोले घन इव गिरा गंभीरा॥ जौ तेहि आजु वधे विनु आवौ॥ तौ रघुपति सेवक न क
हावौ॥ जौ सत संकर करै सहाई॥ तदपि हतौ रण राम दुहाई॥ दोहा॥ रघुपति चरण ना
इ सिर चलेउ तुरत अनंत॥ अंगद नील मयंद नल संग सुभट हनुमंत॥ ७६॥ चौपाई॥
जाइ कपिन देषा सो बैसा॥ आहुति देत रुधिर अरु भैसा॥ कीन कपिन सब जग्य विधंसा॥
जब न उठै तब करहि प्रसंसा॥ तदपि न उठै धरेहि कच जाई॥ लातन्ह हति हति चले पराई॥
लै त्रिसूल धावा कपि भागे॥ आए जहा राम अनुज के आगे॥ आवा परम क्रोध कर मा
रा॥ गरज घोर रव वारहि वारा॥ कोपि मारुतसुत अंगद धाये॥ हति त्रिसूल उर धरनि
२ गिराये॥ प्रभु कह छाडेसि सूल प्रचंडा॥ सर हति कृत अनंत जुग षंडा॥ उठि वहोरि मारु
त जुवराजा॥ हतहि कोपि तेहि घाव न बाजा॥ फिरे वीर रिपु मरै न मारा॥ तब धावा करि
घोर चिकारा॥ आवत देषि क्रोध जनु काला॥ लछिमन छाडे विसष कराला॥ देषेसि
आवत पवि सम वाना॥ तुरत भयउ षल अंतरध्याना॥ विविध भेष धरि करै लराई॥ क
वहुक प्रगट कवहु दुरि जाई॥ तव विसूल डार मिल लछिमन पर॥ कालि कीन्ह सत षंड यर
निधर॥ सिष सेष सुनि लै सो धावा॥ राम अनुज सो उकटि छिपावा॥ दोहा॥ आयुध विवि
धि छाडत भय ओर तज समकर न फासि सु॥ हरष विवस कपि रीछ सभ विहसथ सहित सुरइ
स॥ ७७॥ चौपाई॥ विवुधा प्रथ सो छाडेन लागा रण काननहु देजिमि नाग॥ राम अनु
ज सरसिंह समाना॥ उमा असन छुटे अभि पाना॥ देषि अजौ विमुह रूप रे कीसा॥ परम कोप
तव भय उ अहीसा॥ लछिमन अस मन वमे वादि छावा॥ एहि पापी से बहुत षिलावा॥ सुमि
माया मद एहि डर छावा॥ अब वध उचित कपिन भे धावा॥ सुमिरि कोसलाधीस प्रतापा॥
सर संधान कीन्ह करदापा॥ देषि अजित सिर विने जस माना॥ क्रूजर तन मनइ ब्याल समा
ना॥ छाडा वान मताल उर लागा॥ सीस भुजा कटि रुप न ताग॥ सीस परेउ धर नि घर जव
ही॥ भज्जा दाहिनि गाई न भन वही॥ घन समानि सो गर जिअभा गा॥ मरती वार कपट
सव त्यागा॥ दोहा॥ रामानुज कहि राम कहि राम कहि अस कहि छाडेसि प्रान॥ धन्य
धन्य सक्र जीत मातन व कहि अंगद हनुमान॥ ७८॥ चौपाई॥ जो जग काहि देइ कज भ
देग॥ हरि छाडे हिस तन समर प्रचंडा॥ महि मा अनुज समहाव ल सीवा जासु प्रताप अभे
दस ग्रीवा॥ भुज वल सुर नाथ कवस कीने॥ चौदह भवन जीति जस लीने॥ रिपु त
कल घन सूल घालि गेजेउ॥ जिमि गज कमल नालि गहि भंजेउ॥ जिमि वासव ग
हि कुलिस कराला॥ कीन विघट गिरि पछि विसाला॥ रन सागर महि परेउ सरीरा॥
ते रदा रुजिमि करि धिर सलीरा॥ देत विकट मष परम भयावन॥ विकट कुटिल वष
ग्रस्त भयावन॥ रसना लाल रंग जनु जावक॥ दव कीसिषा सोह जनु पावक॥ पा
य सु आंगे सुरषषक पीसा॥ कहगहि लीनद नुज कर सीसा॥ दोहा॥ कपिन्ह समाने
उमहा विपुरा मन जरागा धीर॥ निडसु मन सुर व रषही कहि जैमि राघोभी र॥ ७९॥ सोरठा॥

पा॥ तासु मरन सुनि सुरगंधरवा॥ चढि विमान आए सरसरवा॥ वरषि [illegible] भीजा
वही॥ श्री रामानुज विमल जस गावही॥ जेअनंत जे जगदाधारा॥ [illegible]
सनारा॥ अस कनि कनि सुर सकल सिधाए॥ लछिमन कृपासिंधु पहि आए॥ [illegible]
सो किसी सपइ लावा॥ उरे प्रभु हरषित अनुज उर लावा॥ कृपा दृष्टि प्रभु [illegible]
विगत नसा व कीने करषो रे॥ वान वेध देषियत नजे के सा॥ कन कन अंजन सव [illegible]
मुष प्रसन्न लादे षिलषी सव॥ रिपु वध कहे उ व भीषन इनव॥ धरे उसरे स प्रति प्र
भु आगे॥ वानर भालु विलोकन लागे॥ प्रभु कौनन कीनिरषि से सी सा॥ रावन के सव
कोसलाधीसा॥ दो॥ प्रभु आय सु सुनि कीस पलिया षेड अनन के ताइ॥ कर कर
हि रघुवंस मनि सोभित दोन्यो भाइ॥ ८०॥ चौपाई॥ कृपा दृष्टि सभ का वि लारे॥
भे अस रहित राम वदारे॥ सुनइ उमा एहि विधि रिपु मारे॥ सुरन सुमनि सव अभय सु
घारे॥ अब सोसन इ वाह निहि कोरी॥ पग जौ न कगाई सर पूरी॥ मेघनाद अगनत
उ पुरी॥ वान वेध आनि न सो भरी॥ रथि निलद सुलोचना वरी॥ रतिन कचि स रूप गु
न जे सी॥ ना गसु नादस कंधु सुनेहा॥ वासव विपुन्निय ज्ञा विमे जाइ॥ हेमसिंहा
सन सोहनि वाला॥ सेवहि विद्याधर तीय माला॥ पुजे हि विविधि विनकरिता
ही॥ सुष प्रमोद कोस के सराही॥ तहा पति भुजा परी ग हिंआ तो॥ सन कुसकल
सु घडन की पाती॥ दो॥ तिहि दिस दासी देषि करि आन अवल भुज देउ॥ अपुस
मर आव रन जम यमन इ अषंडन षंड॥ ८१॥ चौपाई॥ सुनि कौ सकल सषी सुष वेना
न जिनि हासन उ हिसने ना॥ प्रेम सुभाव वच कथ कीय थ की॥ सु वक अग्र सु सदा हि
न भज फर की॥ होन महा रण रावन नामहो॥ विरपुरी न मोर श्वलित न महो॥ सकल
सु रासुर सक हि न जु झी॥ विधि वा मना पेन नहि हूझी॥ एक कहि व ली ग अत सो आ
पनि भजन लाषि कोरि कोटिकला षु॥ केकन मनिग न भूषन सो ही॥ महा विटप सम भु
न न मोही॥ देषन मन नहीन आवन नेही॥ तासु प्रभाव सुनेउ पहले हो॥ नौद नारी भो
न न पवि हरइ॥ बार वार समता सु कर मरई॥ दो॥ कोवि दिवार मन दीक दे भयानि
दे व त नारि॥ भुज कोह मैदे दिहु विनइ सुनि करदी न प सारि॥ ८२॥ चौपाई॥ ल।
षि कुपला सु सषी उ हिथाई॥ नर तनहि बोजि बरी लय आई॥ दीन्ह हाथ पर मानि अवनाई॥
लिषत लषन कीरति कछि राई॥ नीद ना विभो जस तकोटी॥ नजन तासु अमिरामाअति धो
टी॥ अकृत अजय विगत अविनासी॥ अनल अमित वल हरषट केवासी॥ अगार
हि पाल हि पुनि जगहरही॥ विविध रूप धेम रति करही॥ जो काल हू कर काल भय क
र॥ वर न न सेस सारदा संकर॥ लीला तन सर सेवक हेत॥ जासु नाम भव सागर से
त॥ मुनि मन हे उ रीक जा के घर॥ वचन विवेक विचार उ पियर॥ दो॥ कोटि कु
ल पवरन न निगम आगम जासु गुन गाय॥ तम सरीर ज ढ जीवा वन कि मि वर न
लिषि हाथ॥ ८३॥ चौपाई॥ मम मनि रग योद स सर सु राई॥ तव व ब तन लागि भुजाय
राई॥ एहा विधि लषो सकल भुज वाना॥ परी भूमि भल भई विकलाना॥ वाचि म
कल भुज लषि न जयार थ॥ लछिमन राम जानि पर माथ॥ तिय सुभाव नद पि
वहु भाती॥ विलपहि मिलि सव सषि न की पाती॥ गुन गन सा ह ससोल नाह के॥
को हि रो वहि व ल विजल यवाहु के॥ जिहि भुज वल सुर नाह विगारो॥ सो प्रभु अ
न्हु सम रमहि सो त॥ मेघनाद भुव न व सन विसारही॥ महि लोटहि क र न ल सिर
मारही॥ सम न सुपति सरी र सुधि नाही॥ दारुन विपति कहिय के हि पाही॥ छ
न क प्रवोध सषि क उक रई॥ वहोरि मा करि वान लज रई॥ छिन छिन उठत पत
धरनी नल॥ अन गुनि गुन सराहि पति को वल॥ दो॥ तिन मह सषी सयानि

रा॰ ले॰ ११

ाककहिसमझायसिवेन ॥ सोकछाडिपतिदेवनासरीतकरियमनचैन ॥ ८४ ॥ चौ॰ पा॰ ॥ स
लिकहूसहसाननननुजाता ॥ सम्मकहोतमसबोस्तमाना ॥ विधिनिर्मितउपमोकहूल
हू ॥ रूपपरिपुरम्भवनसनकाक ॥ विजेरामलछिमनकरिग्राथा ॥ सजनसमकलसर
कूटकूलपाया ॥ ऊलकंलेकवडुलहेउवभीषन ॥ ऊलऊटारग्रसम्नेउनहीषन ॥ कू
दीवेदिग्रवस्वरवानकेरी ॥ निजनिजपुरनदोहाउफेरी ॥ सुनिपुलकिकरमाकुलना
सा ॥ ग्रवरविसमीरूपकरविहप्रकासा ॥ तेजवंतपावकपरिहरिकुष ॥ वहहिसमी
रथ्राजग्रपनेसष ॥ सलिलगगनसवनिरमलग्रानसवसवसहितरनायकराज
॥ दोहा ॥ जमकऊमेरदुगपालसभग्रसुरिनसुरनरनाग ॥ षायग्रघायविहायउषयाइ
सजनविभाग ॥ ८५ ॥ चौ॰ पा॰ ॥ एतनाकहिमंदिरमेहग्राई ॥ देषसिमनिगनयुनव
कृताई ॥ सुरपतिभवननपटनरनाही ॥ जहांसिधिसिधिनितिकरहिकमाही ॥ देषत
भवननमनग्रनुरागे ॥ पतिपदनेहतिमुनमनलागे ॥ दियदानमनिभूषनचीरा ॥ पे
नुधरनिगजहाटकहीरा ॥ मनिमयसिवकाकविरवनाई ॥ भजवदाउपहरायवना
ई ॥ ग्रापनचछनभईपुनिग्राई ॥ सुरइरलभसषसदनविहाई ॥ वीतरागजिमित
जैविषेगन ॥ सहेसमोनिवतिपदलागेउभन ॥ सुकसारिकासलोचनाजाए ॥ का
नकपीजरनरापिषछाए ॥ ग्राकुलकहहिकहांसनेना ॥ सुनिधीरजपरिहरेसवेना
भयविकलषगमृगएहीभांती ॥ ग्रपरदसाकेसेकहिजाती ॥ प्रजालोगग्राकुलसं
गलागे ॥ प्रेमउसमिगिलेघनजनलपागे ॥ दोहा ॥ वाजनलगेनिसानघनढोलंइंद
भिभेरि ॥ पोरजनपुरजनसंगसभचलेपालकोघोर ॥ ८६ ॥ चौपाई ॥ देषिभरिदस
कंधरदुग्रावे ॥ सजगभयेसभवीरप्रचारे ॥ जानेकटककपिनकेग्राई ॥ ग्रसमसमुक
रथरेवनाई ॥ यनघघछाइकोदिनरकसवांध ॥ गहिग्रमिवरमसेलवरकाथे ॥
तोमरपरसुप्रचंडगदागहि ॥ संषनवाषनमूलगदागहि ॥ मारुमारुधकधुकु
कहियवहो ॥ प्रगटदसाननविजयसुनावहो ॥ गरजहितरजहिगिरागभीरा ॥
समरग्रभयकरनिसचरवीर ॥ नियटहिनिकटयालकोग्राई ॥ वीन्हसकलभटरहे
लजाई ॥ दषिजाहांविनागपतिकन्या ॥ सतीसिरोमनित्रिभुवनधन्या ॥ दो॰ ॥ द्वा
रपालदसकंधरहीसमयसुनायउजाई ॥ अइसजायसवेगहीलीन्हितहिवोला
ई ॥ नमतिसलोचनवेदिनवकहेउवचनविलषाई ॥ गषिभजाछिननादकेकर
नाववुनसनाइ ॥ ८७ ॥ चौपाई ॥ तमहिसुछनेग्रसहालहमारी ॥ सुषनजिभइउसोकग्रा
धिकरी ॥ नभपथभजासोममग्रहधरी ॥ संमेमनालिटीनकरधरी ॥ लछीरामलछिमनमहि
मारन ॥ कमकमसोमभकथाकहीउन ॥ दग्गीसीरहिवाविगुणगाथा ॥ जेहीसंगजोपावक
माथा ॥ रणकवेधभजममग्रहग्राई ॥ सिरजहांनहांनेरसदेभाइ ॥ करोमोजतनमिले
मोहिसीसा ॥ तमससमरथघराकसा सननकुलिसमममीरावहुकी ॥ जीवनग्राम
दसाननमकी ॥ नदपिधीरधरकरनप्रवोधा ॥ कुकहांम्हिसमानिजगजोधा ॥ दो॰ ॥
रामलषनसुग्रीवनलनीलहवंदहनमंत ॥ मायवभीषनगिरमकेग्रानीमारनरंत ॥
८८ ॥ चौपाई ॥ ग्रवतेरहेउभरोसामारी ॥ कुंभकरनसुनननादसवारी ॥ हमहुंग्राजुलविकी
ननुरूफा ॥ इनसमकरउरधारथवूफा ॥ ग्रानेनरवदिरकेमारे ॥ वालसुननतउडिलाजा
हमारे ॥ गननीकवनवीरमहरनकी ॥ ग्रिसिडरदसाकीनकपिजिनकी ॥ ननउसोककुल
वधूपतोह ॥ इनसमाननजीयजानसिमोह ॥ पुत्रीविलवकरसुचरीचारी ॥ देषहुसोमरग्रथकरा
भारी ॥ ग्रानिसीससवसमुनकेरा ॥ विनुप्रयासनलगरिहदेरा ॥ ग्रागवदिभोगपुराकुतभो
गा ॥ ननकिननिसचरघनवरजोगा ॥ दोहा ॥ मेरुग्रघारनहारजेयरावरहिकरवीच ॥ तेभव
धागसमकसिसकालकरदिननानीव ॥ ८९ ॥ चौपाई ॥ काथविवसमममगटसोवोलेह

देसोकनकग्रचलनेडोले ॥ समाधाननहिमाननिमोई ॥ सुनिप्रलाप[illegible]
रवानरघुरघारथदेषन ॥ वेइरिपुप्रवलह्योहकोविलेषन ॥ कहिविधुकपि[illegible] ॥ न
सुकविमानननाहिसराही ॥ कुंभकरनग्रतिकायमहोदर ॥ ममपतिसिर[illegible]
दर ॥ तेरिपुवहनदसाननतीती ॥ देषहुमहामोहकीरीती ॥ उतरदेउनोपामकदेई ॥ क
रिविवादग्रवसरवसपोई ॥ फिरेराजनोमोहिनकाज ॥ विनुप्रियसकलनरककेसम
न ॥ दो॰ ॥ नरतिहिउटीसलोचनागइमंदोदरीपास ॥ पहुगहिरोवतिसकलनरपैदि
प्रगटसोकउपहास ॥ ९० ॥ चौ॰ पा॰ ॥ ग्रादिहितैसवकथावषानी ॥ सुनिकुलतियरोवहिसव
हिरावनरानी ॥ कहिसोपतिभुजलिषितवहोरी ॥ रामलषनमहिमानहिथोरी ॥ कहहि
वहोरिदसकंधरमाथा ॥ सुरगिवइंविनकोनसनाथा ॥ सुनिसोइरवधूकीवानी ॥ सो
लोइषितमंदोदरीरानी ॥ कहोसोमाननहुसत्यसियानी ॥ सुनोजोनारदसुवाकिय
नी ॥ पाछलिवातभइसवसांची ॥ ग्रवभवकोन्हनाकोवाची ॥ देवनेहोइसुघारिकिग्रा
षित ॥ ग्रापनमहामोहितेमाषित ॥ ग्रागलिकथासमासममेना ॥ सोनपुत्रोविविव
नेउजेना ॥ वेरभावदसकंधरजुरही ॥ ग्रानंदमयनीतिनहिदूजही ॥ सोयसोकसेते
नेछूटही ॥ वादरभालराजग्रहलूटही ॥ सरवसभषनवसनोषमाना ॥ भोगकरहिंव
नचरजलनाना ॥ दो॰ ॥ राजविभीषनपाइहेग्रमरकलपनिरवाहि ॥ भाविवसिसुष
उपजयनउघदेषियकहुकाहि ॥ ९१ ॥ चौ॰ पा॰ ॥ सुनीवचनकरसोहिपतिजो ॥ ग्र
नुभवसदाहारेग्रतजोनी ॥ तमहूंजोघवपरिहरिसोका ॥ पतिसंगजानुरनलोपिय
लोका ॥ जाहरामपहिपुनिसिरलागी ॥ लाजत्यागिकिनग्रानहिमांगी ॥ होइन
सकुचिग्रानकरमषन ॥ तेमहोनगुनगनहीनहषन ॥ तेकनारिवनरघुपतिकेरा ॥ ल
षनसुजससनेहचनेरा ॥ हेप्रसिसुनवविभीषनमोरा ॥ वालिसुवनहेवालकमोरा
जामवंतमंत्रीसुग्रीवा ॥ इविदमयंदमहावलसीवा ॥ ग्रयवरजजानियहनुमंता
सिवसरूपहरम्भयेभगवंत ॥ सदानीतिरतरामनरेसा ॥ नहोमोनकहूकवनकलेस
दो॰ ॥ विदितनोहिपतिभुजवलषितलछिमनरामप्रभाव ॥ पुनिमेरिसिभाषत
कहेउग्रवविलंवजनीलाव ॥ ९२ ॥ चौ॰ पा॰ ॥ सुनतसासुसुषकोप्रियवानी ॥ सोइरा
मपहिग्रसमनग्रानी ॥ वारवारचरननसिरनाई ॥ वलीजदोलछिमनरघुराई ॥ दे
षीवारकभालकपिकेरी ॥ सिहूसवेवलनदीयरजेरी ॥ उमगेउमनऊनहोदीयउसर
हरतप्रिगकपिपूमलपूसर ॥ लेमलालमसकलग्रनहेरी ॥ मनऊलषपरवइवा
नरकेरी ॥ गिरनरुधिरभुजसमसमथेकर ॥ जहांतहांप्रगटहोतजनुजलधर
॥ लछिमनसेससमग्रकसीसधरी ॥ करकाजलधिसोग्रनिराछवहरी ॥ ग्रछेवदन
होरहेउवभीषन ॥ ग्रससुजानीकहुसनेउनदीषन ॥ दो॰ ॥ देषतउरतसलोचना
धीरजधरनवहोरी ॥ महाराजरघुवरहिकोविनेसुनावहिमोरी ॥ ९३ ॥ चौ॰ पा॰ ॥
वानरकटकउदेसभवोली ॥ ग्ररेउरतेग्रावलाकवोली ॥ जानिपरतसावनजियद
जा ॥ भइमनिमेघनादनवजूजा ॥ हठनजिसीतादीनपठाई ॥ तजहुंलोचग्रवमिटी
लराई ॥ जेहिहितप्रगटकीनपुरग्रामी ॥ सोयामेतकेलहेंराजिहिलागी ॥ सोसी
नाजीविनुश्रमपाई ॥ जानवविधिग्रनकूलग्रघाई ॥ विजेरामसुग्रीवहिग्राएक
जसमसकलमवकटकोलपाए ॥ विरहिरामलछिमनकरछुटेउ ॥ विनकोल
सलकाराछछूटेउ ॥ जुगजुगकीरतिरहिहमारी ॥ किनरजनोचरकतवनचारी ॥
दो॰ ॥ एहिविधिवालविलापकरिदईशोकमनमाहि ॥ भयउकाजरघुराजकरवा
नरहसरीनाहि ॥ ९४ ॥ चौ॰ पा॰ ॥ पेहतकटकग्रमिहसजवाई ॥ ग्रनविन्हरावजीसि
षरघुरजाई ॥ ग्रागेजाइदेषिरघुवीरही ॥ कविसेस्यामसलोरसरीरहि ॥ मरकतम

रा॰ लं ५

नकछुविहिजनुनिरत॥ यत्वसोजनमहिमाजोवेदिन॥ मनगयंदसमगमभजदेउ॥ यन्व
षवानकरयरेप्रवेश॥ उरविसालग्रीवउन्नतकंधर॥ केहुकेहरेषासन्ननरमध॥ सुभुब
विकीउपमाकविजोहे॥ ससिसरोजसमकोहेननसोहे॥ दसनपांतिकीकांतिकहेको
ललकतसमनपटतरहिलहैको॥ देषतग्रधरनकीग्ररुनाई॥ विवाफलवंधूकललजाई
सकतेउविनासिकाललनावै॥ युकेसुकविनहिपटतरपावै॥ दोहा॥ छविमेंगुन
मैंतेजमें॥ रामउदधिग्रवगाह॥ जहांनपावेपारसव॥ कोवरनेकविग्राह॥९५॥ चौपाई
भृकुटीकुटिलकपोलसुहाये॥ सीसजटाकेमुकटवनाये॥ भालविसालतिलकजगन
मोहे॥ ध्यानसमेमतिमानसमोहे॥ वलकलवसननकटिवांधे॥ करसरसम
गस्त्रस्त्रनकांधे॥ वीरासनग्रासनम्रगछाला॥ नवपल्लवप्रसूनकेमाला॥ वरन
सरोजवरनिनहिजाई॥ मुनिमनमधुकरसदालुभाई॥ प्रगटभईजेहिथलतेगंगा
श्रुतिपुरानकहिकथाप्रसंगा॥ नवहिमहेसविरंचिमाहिकहूं॥ लोचनगोचरहोहि।
काहिकेह॥ ग्रभ्यारतभंजनकरजोहिन॥ भवसागरतारनकहैवाहिन॥ दोहा॥
प्रानतपालविरदावलीजिनवरननकीवानि॥ सोकहरनसंसेदलनकरनसमे।
ग्लधानि॥९६॥ चौपाई॥ करजोरेंग्रगदहनुमाना॥ इविहसमयंदजामदवलवा
ना॥ जामवंतकपिपतिवलसीला॥ विषमसुषेनसहितनलनीलामहावीर
वानरसमराजाहि॥ लषनविभीषनदुइदिसिभ्राजहि॥ मितभाषितसरवज्ञसुसे
वक॥ चितवहिरुषरघुनंदनदेवक॥ सोभितमध्यप्रानभवमोचन॥ किनेमिस
कलनिरषिनिजलोचन॥ कारनदेउवतसिरधारिधरनी॥ तासुचरितविभीषणव
रनी॥ सुतवधूदसकंधरकीहे॥ पतिदेवतासुलोचननीहे॥ मेघनादकीनारिक
सीला॥ युदगतिनवविरोधकीलीला॥ दोहा॥ मयेजानपतिभुजहिभालिषिसमु
भायसिसोहि॥ मधराजरघुवंसमनीजावनग्राउतोहि॥९७॥ चौपाई॥ करतप्रना
मग्रारतिनहियारी॥ करुनावचनकहतिकरजोरी॥ छंद॥ परसतपदपावन।
सोकनसावनप्रगटभईतपपुंजसही॥ देषतरघुनायकजनसुषदायकसनमु
षहोयकरजोरिरही॥ ग्रतिप्रेमग्रधीराजुलकसरीरामुषनहीग्रावेवचनक
ही॥ ग्रतिसेवउभागीवरननलागीजुगलनेनजलधारवही॥ धीरजमनकी
नाप्रभुकोचीनारघुपतिकृपाभगतिपाई॥ ग्रतिनिरमलवानीग्रस्तुतिठानीग्या
नगम्यजेजेरघुराई॥ मेनारिग्रपावनप्रभजगपावनरावनरिपुजनसुषदाई॥ रा
जीवविलोचनभवभयमोचनपाहिपाहिसरनहिग्राई॥ मुनिसापजीदीनाग्र
तिभलकीनापरमग्रनुग्रहमेमाना॥ देषउभरिलोचनहरिभवमोचनइहैलाभ
संकरजाना॥ वीनतीप्रभुमोरीमेमतिभोरीनाथनवरमागौग्राना॥ पदपदम
परागारसग्रनुरागामममनमधुपकरैपाना॥ जेहिभातिसुरनैनाग्रस्तुतिवेना:
वारवारहरिवरवपरी॥ जोग्रतिमनभावासोवरपावागवनेनाउभुइसीसथ
री॥ दोहा॥ ग्रसप्रभुदीनवंधुहरिकारनरहितकृपाल॥ तुलसीदाससटनाहि
भजहुछाडिकपटजंजाल॥९८॥ चौपाई॥ तबमग्रतरजामीभगवाना॥ प्रभुतव
ग्रादिमध्यग्रवसाना॥ करुनावचनसुनतरघुवीरा॥ पुलककरोममयसिथलस
रीरा॥ देहजिवाथनोरयतिग्राजू॥ भूजहिलंकापलपसनराजू॥ ग्राहिसोवग्रव
मनहरषाही॥ तरतभवनग्रापनेचलिजाही॥ मुनिग्रसमतसिधकीवानी॥ म
नमहवनचवनवडुउपमानी॥ कहिनसकहिकछुप्रभुरुषदेषी॥ कहाकहोहक
रतारग्रलेषी॥ सोचसोककरपललनहिहोही॥ जोकरिकृपाग्रसगहिजाही॥ दो
हा॥ राजविभीषनलंककरकोरहेकेदिविविधजाउ॥ सम्मुकिदेरघुननादनवग

हहिसरामनथाई॥९९॥ चौपाई॥ मघकपुलषिकपीसनवजाना॥ प्रगटयाग्रनुग
जनवाना॥ देषिवऊनरघुपतिकरजोइ॥ विनैकरतदसकंधगुनोइ॥ नाकउदानदेव
वलाएक॥ करुनामेदेषोरघुनायक॥ मैविचारकीनामनमाही॥ जीवनतेनवहम
रनसराही॥ जीवनसकललोकवसिकीने॥ वीराभुवनभोगसविलीने॥ वरनतीं
जावकमलवीनसी॥ प्रानदानलषिमनकहुदीनसी॥ ग्रवनमोचनप्रभुरेग्र
हारा॥ नापरग्रपिकजोदरसनह्यारा॥ जानियेमजहमरवसलसाथी॥ भिलवनमु
हिजसमिलहिसमाथी॥ दोहा॥ निरमलगतिग्रवसरभइसनिसुनिसतरघुवी
र॥ तमहिमिलभवहोइनोहिजथासिधुगतनीर॥१००॥ चौपाई॥ मनकीजानन
हारसुदेवा॥ भवसागरतोचेगाहिषेवा॥ लोलोविषमकपीसतुनाई॥ मेघनादमि
रदीनमेगाई॥ मेघनादसिरदीनमेगाई॥ पाउकृलासथमानेसिग्राय॥ सिरहेविरह
सप्तवपुविनाह॥ ग्रंचलपोछतिमषकीधूरी॥ कहिममप्रानसजीवनमूरी॥ देषि
कहतसंसेमग्रोवा॥ भजजोलिषामोहिनहीसोवा॥ इसेवदनतोलीयपहसोवी
॥ नाहितोनिसचरसायालाची॥ केहिविधिजानतकभजगावे॥ जोमुनिवरइ
ध्याननहिपावे॥ प्रभुग्रसकहेउकसहियहसीसा॥ कीगजनरकेग्रचितकपीसा॥
दोहा॥ सिरसोकहतिमलोचनाहमसहवेविसमनाथ॥ ततोप्रलीननमानिहहि
धोजानसरेहाथ॥१॥ चौपाई॥ छिनकविलवकीननहिवोला॥ सनकासोमुषन
दिनहिवोला॥ पुनिपुनिकहतिसानागकुमारी॥ ग्रसमनभयउवनमहकोरभा
री॥ लषउलषनसरकोभवताता॥ प्रभुसनमोपककसेमोहिलजावा॥ सोमनव
चनकरमगहरेहो॥ पतिदेवतानग्रानसनेही॥ सोप्रभुसभामाकिसिरवोले॥
जोजानतिकपुसगतिनवसाई॥ वोलिपरवनीकपितीहससाई॥ सुनितियवचनह
सानवसीसा॥ वीलिउदेवभालकपीसा॥ हसेउरदासवदनसभदेषत॥ विसमैभ
यउसकलजनपेषत॥ कोलसमरिसमुनिसुनिलजाई॥ रहेउसोवदनवहु
रिग्रवगाई॥ सकुचिकपीसहितोपेउलारी॥ वुइग्रावरजभयोवनचारी॥ पुछ
उकपीपतिपदसिरनाई॥ कारनकवनहसोसिरसाई॥ तवसोनिवदसिकत
रघुराई॥ सोनिसप्रीवकुलरकविहाई॥ पतिवलनारिजाहिग्ररसमाही॥ एहवरि
वालतिनाहिकछुनाही॥ पुनिनवसमयभउकपीसा॥ तेहिकारनहसोहसी
सा॥ दोहा॥ सीससपाउप्रभुवरनगहिवहुविधिग्रायसपाई॥ ग्राजकदिनरन
परहहउमममाहिनकोसलराइ॥२॥ चौपाई॥ वहेविवभीषनपददहिनवतिस
रघुपतिगुनगनहदेजपतिसो॥ नमपितसमदसकंधरभाई॥ पाहिकुलकीनी
हिलाजवडाई॥ मुनिपुलस्तिपरिवारकदीपक॥ पाइफलरघुवीरसमीपक॥
मेरुमोहवमग्रनभलमाना॥ जानभयउनवग्रनपहिचाना॥ जगजुगकरे
हुग्रकटकराज॥ सहितसकीरतिसुकृतसमाज॥ सुमरतसुमतिसुजसजग
गावहि॥ रघुपतिवरतसंगकविगावहि॥ सनतविभीषनमनकरुनाभरी॥ प्रगटन
करतसमेग्रसकरकरि॥ कालकरमगतिकहिसमुभाई॥ वलीनरवतिगरग्रायसपाई॥
दोहा॥ वाहिरकरीकपिकटकतेफिरेविभीषनग्राप॥ विसरेउदसकंधरवैरछिनहि
नेकरतकलाप॥३॥ चौपाई॥ सिरवछाग्रालकीवधीसा॥ रघुपतिवरनसनेहवती
सा॥ हृदेरापिमुरतिवनस्यामही॥ रसनारटतनरंजनरामही॥ सतिनासिधुसंगमजा
लपावन॥ तहसचियारग्रायगयेरावन॥ सवसंदोहसवरनवास॥ मनहुसोकरवि
कीनप्रकास॥ पापरजायसेवकपाए॥ वेदनग्रगारभारवहुल्याये॥ रचीइछदारु।

नचिता बनाई ॥ तनसुर लोक निसेनी आई ॥ कपिमुनि मासब प्रज्ञा प्रतोष ॥ धीरज धवि
न मिरत निसन घोष ॥ सिरभुज धरि बैरी कौ आसन ॥ अजहु न जोग सिधि कर बासन ॥
दो॰ ॥ दीन सुयानि त्रलाल वधी लपठ गगन लगि धाइ ॥ लखी न काहू जाल ने हिम
रधरधर पंवी जाइ ॥ ४ ॥ चौपाई ॥ सुनगति देषि दसानन जबही ॥ मचिन भय भय बेरउ
मोहित बही ॥ उपित निसो हृदै पत ने न भौ रिआवा ॥ जन्तु निज मनि प्रहि राज गमावा ॥ हा
सुनकंत न आत्तौ कारी ॥ करि बिलाप दसकंधर भारी ॥ सक आदि जीते उस भदेवा
सुर मुनि नाग करहि सभ सेवा ॥ उसर रहेउ नभ जबल दापा ॥ सुरगामि जिन लग
पेउ अनाथा ॥ तहि विधि करै बिलाप लेकंसा ॥ भयो तेज हत सुन उरगेसा ॥ मंदोदरी
कदन कर भारी ॥ उर ताडन बहु भांति प्रकारी ॥ करनि केस निज हाथ उपारही ॥ म
हि लोटहि करन लसिर मारही ॥ नगर लोग सभ व्याकुल सोचा ॥ सकल कहहि
दसकंधर पोचा ॥ दोहा ॥ तब लंके सभ्र नेक विधि समझाइ सब नारि ॥ नसुर रूप श्रमंच
न देषअ हृदे विचारि ॥ ५ ॥ चौपाई ॥ तिनहि ज्ञान उपदेस नरावन ॥ आपुन मंद कथा क
हपावन ॥ पर उपदेस कुसल बहुतेरे ॥ जे आचरहि ते नर न घनेरे ॥ देषि चरित प्रनि नभ
सरगावही ॥ बरषी सुमन दुंदभी बजावही ॥ तासु क्रिया करि निसिचर नाहा ॥ भयो
सो बव समस्रुति उरदाहा ॥ सचिव आइ सभ लगे मनावन ॥ वादि विषाद करिय किन रा
वन ॥ सुन विभि नारि विविधि सथ कैसे ॥ उपजै टरजाहि नभ जैसे ॥ तिमि दासनि देषि
य सुन माही ॥ रहहि न थिर ते बहु रिछ पाही ॥ राज तिय जानि सम कि दसभाला ॥ तव हि
न कोउ जग आए काला ॥ अब सभ जनन विचारहु सोई ॥ रिपु करनास कवन विधि होई
ववन सुनत कछु नेहि सषमाना ॥ काल विवस जिमि मीरथ जाना ॥ दोहा ॥ लागउ क
रन विचार पुनि बहु प्रकार दससीस ॥ समझि हृदै अहि रावनहि आयउ जहां सगई स
६ ॥ चौपाई ॥ रेउ चारि निसिचर तनवीनी ॥ सधावंदन कीन्ह स प्रीती ॥ लागे करन
ध्यान दससीसा ॥ बहु विह रषि करजोर वीसा ॥ सिव सेवा ते अति गुन रागी ॥ सुन षवी
सने हित बड़भागी ॥ मंत्र अकर धन जयौं रसभाला ॥ महिरावन चिन उ जल पताला ॥ त
गे उकरन सो अस घ्रनमाला ॥ किमकारन दसमुष अकुलाना ॥ निसचर नाह भवन
वस जाके ॥ जीनन कहे नषोर कौ ताके ॥ मन क्रम वचन आन निसिसेवी ॥ धर्सो ध्यान उर
कामद देवी ॥ चल्यो बड़ति आयो सोत हेवा ॥ सिव सेउ फगवन रहज हेवा ॥ निसचर पति
कहे ते ही सिर नावा ॥ कर गहि तिहि आसन बैठावा ॥ दोहा ॥ अहिरावन तब रावनहि
र कुशल प्रतीत ॥ प्रथम कही सो सब कथा भगनी कीन अनीति ॥ ७ ॥ चौपाई ॥ बंध
घरहरन जिमि सुधि पाई ॥ मारी बक पद मलक थासु नाई ॥ कहे उ बहोरि सीता कर ह
रना ॥ पवन तन ने लंका कर दहना ॥ सेत बांधि जिमि प्रभु चलि आये ॥ बालितनै सब आद
सनाये ॥ अनीप अकंपन अरु अनिकाया ॥ पे सम बर मदन अहिरावा ॥ नाग कुंभ
ल अवसवे मिरानी ॥ करक निसाचर सकल विलानी ॥ कुंभकरन घन नाद हि मारे
रा मल छमन लने मन जवितारे ॥ अन्यो बोलि तो हि निज पासा ॥ कर सोजतन न हो उ रिपु
नासा ॥ सुनत बवन कहत के ति कहा ना ॥ हरि लै जहो दो जो भ्राता ॥ लै पताल देवी हि
बलि देहु ॥ जिस भ्रहूरग निसचर कुल लेहु ॥ लै जब जावो जो न उ तबही ॥ रवि सम
तेज होउ निस जबही ॥ दोहा ॥ तहि अस बचन प्रबोध कर सीस नाइ बल भाषि ॥ आ
येउ अहि पति कटकमव नि सदे वी उर राषि ॥ ८ ॥ चौपाई ॥ सरुन कर निसिअनि सोधि
यारी ॥ मरकट भट जागहि न हं भारी ॥ कहहि जेति जेतेति कृपाला ॥ अतिहि अगम
गमन हि ते हि काला ॥ तहां मारुत सुत रहे उपाई ॥ निजलंगुर की कोट बनाई ॥ सो

सोआ कछु बरनि न जाई ॥ जनमु जोग पति रहे तहं आई ॥ अकनि जिमि देषि पसनवमाता ॥ द
रवाजे कन मुयहनमाना ॥ देषि हृदे अहिरावन सराज कि सिरनेउ दे न लम्भ ममाना ॥ पर्वे न
क्तिन मनह हरानी ॥ कपट भेष नव कि यो भवानी ॥ भेष बभीषन सब प्रभु जागी ॥ अनव
तने प्रहृगा छल कागी ॥ दोहा ॥ महजत्र कापीयवन सुनन अरपति पति को दास ॥ नाति
निदरी तब लेया राम षवल सु छहु है ने हिया स ॥ ९ ॥ चौपाई ॥ मरमन जाने न बकछु सुन प
वना ॥ कपट बभीषन कारि नव गवना ॥ राछ भयो बोले उस्रुनि भ्राता ॥ बोले उसे तो अम
लज न ज्ञाता ॥ देषि स हृपक समौ विज्ञानी ॥ बोले उपवन तनै बलभारी ॥ अब लौ कि
कहां रहित सभाई ॥ अब सब नहि कहो किमि जाई ॥ मेर सुपति सन आय सपाई ॥ ते
अपाकर नरा गेउ सुन भाई ॥ तिहि ते न रति बले उप्रभ्र योहूं ॥ भो विलंब जनि नास मनि
सांही ॥ सुन्य वचन कपि निज मन जाना ॥ सुनि षगेस भावी बलवाना ॥ कपट चतुर
गति जानि न जाई ॥ परम न हरेह ते ध नभाई ॥ आय तहा रगय उसो तहेवा ॥ फनिप
ति प्रभु दोन्यो रह महेवा ॥ कपि पति जामवंत नल नीला ॥ बालितनै संपन व वनसी
ला ॥ दोहा ॥ दुविद मयंद कपीस गज गवय गवाछ कपि बीर ॥ सहित बभीषन प्रभु
समट सो सब रनधीर ॥ १० ॥ चौपाई ॥ तहा समय रावन सुत सिनाह ॥ एक सेनासा
गेफ निसनि लाहू ॥ दाहीन दिसि सो यत रघुनाथा ॥ अनुज वाम दिसि ने हि पर छ्या
या ॥ प्रभु कर कर धर राजन कैसे ॥ जात कपय पर फरि गपति जैसे ॥ कपि सब भयजि
मि साग र ज्ञानी ॥ तहां सो यसो मिनि दोउ बीर ॥ सभ भगवान लषन युथ रवनाई ॥ दास
सहित सम्मोपर सु राई ॥ अहि रावन मन कीन अनामा ॥ देषि रामषुम ने संदर स्यामा
॥ ब्रह्मादिक जेहि ध्यान न आवन ॥ मनिम हँस गुनाम नलावत ॥ करहि विविधि विधि
जोग विरागी ॥ रहहि निरंतर निसदिन जागी ॥ सो प्रभु मे देषा भौ बिलोचन ॥ कमासि
यु सेवक भव मोचन ॥ वहुरि हृदै अस कीन विचारा ॥ रावन काज करौ अब लारा ॥ कहु
निज माया कुनगुन आई ॥ कवनि भाँति जा थाहि दोउ भाई ॥ दोहा ॥ मोह निसो सोहे सवै
हि मेत्र ने मे कथषम दि ॥ भयो अगुप्ट उराये कारि प्रभु दिव लेउ ले कदि ॥ ११ ॥ चौपाई ॥ ए
हि विधि प्रभु हि गयो ले सोई ॥ नभ मारग प्रकास अति होई ॥ सोप्रकास सराबुन जब देषा
लाम्र वचन प्रमान करि लेषा ॥ मन मह हरष करे अति भारी ॥ अहिरावन लै गा असुरा
री ॥ लै निज लोक गये तन माही ॥ सोसभ ये नव कपि दल माही ॥ जागे बानर भ्रा
स नफ़ारी ॥ देषि य जिमि सनि ला विन वारी ॥ अक देषिये जिमि निलविन बेद ॥ तेन ही
न वासर वि नरेह ॥ राव विन दिवस जो वि विन देहा ॥ जिमि दीपक विन देषिय गेहा ॥
एक हि एक लगन व सन ॥ कहा गयो त्रिय लोक विभूषन ॥ दोहा ॥ सोधे सव कपि
करक तन वनहि पाव न दोउ बीर ॥ भय व्याकुल सब भालु कपि जौ जल चर बिन नीर
१२ ॥ चौपाई ॥ सकल कहहि विधि का यह कीना ॥ रघुपति विनाश न वहली ना ॥
सोक अग्नि न धरि सकहि न धीरा ॥ कहहि राम लछिमन रघुबीरा ॥ करुना कर हित
दीन सुपारा ॥ व नी वानु विधि का हविगारा ॥ कर का निसा चर सकल संघारी ॥ रहा
न कोउ रिपु रावन भारी ॥ तेन रहन रघुपति सरलागे ॥ भाउ हरष सभ पर म अभागे ॥
कवहु क जो दस सी स हि जीत हि ॥ ते र क वलदे वह म सीत हि ॥ गह काहे विकल म
रछिन महि परेउ ॥ लसे वन मेल जनु गिरेउ ॥ गति न बभीषन की कहि जाई ॥ उ कर
व हुजि मिथन ल बाई ॥ दोहा ॥ सहित पवन सुत रीछ पति इ ष मा ला व ज भांति ॥ घा
पति सरुन कुत है कछु न मन अपार बहु भांति ॥ १३ ॥ चौपाई ॥ पवन तनै पुनि कह सव
पाहीं ॥ विसमै हानि अकै मन माही ॥ कौ एक आयो वभीषन भेषा ॥ प्रभु को निकट जान

रा॰ ले
५

मेदपा॥ सुनतबचनकहेसिनवनीका॥ कपटनजानौनिसचरजीका॥ बचनसुनतनतबोले
उलेकेसा॥ सुहिसबबलेगाप्रबधेसा॥ पनवालेकवमनहेमोई॥ ममननभेवपुबर।
नहिकोई॥ महाबलीजानेबङमाया॥ निश्चैनाहिदससीसपराया॥ जेहिबलहोइउ
हासेजाई॥ नाहिजितिआनेरोउभा॥ कहेमालयपतिसुनहनुमाना॥ नबबलनान
सकलजगजाना॥ देगासुजननविवारङलाना॥ कृपासिंधुआनङदोउआना॥ दोहा
॥ बिलषिकहेउकपिपतिबङरिमारुनसुनसुनिलान॥ बिनरघुपतिपूरानीवन
पलजगमनसमजात॥ ७॥ चौपाई॥ बिषतमीनबिनबारिदुपारी॥ तेसेहमस
बबिनाषराशी॥ रबिबिनुपंकजजथामलाना॥ तेसेसबदसाहेहनुमाना॥ सीतासु
धिजिमिआषदिआनी॥ तिहिप्रकारआनङगुनषानी॥ एहसुनिवङरिपवनसु
तबोला॥ बिनथिरकरऊमैननहिडोला॥ भवनवादिदसनीनऊलोका॥ आनोप्र
भुहिनजानमसोका॥ नवनेमजगरहङसमभाई॥ लेरङकालजौरनबढिआ
ई॥ असकहिगरजिचलेउहनुमाना॥ प्रलैकालकेमेघसमाना॥ बलेजानाक
नकनस्मायतु॥ गीधनिगीधहकहनयुसमेतु॥ दोहा॥ गीधनीऊनीसुगरभनी
बोलीपीयसुवेन॥ आनऊग्रामषमलजकरषाउहोपुसुपवेन॥ १५॥ चौपाई॥
तासुबचनसुनिषगमुखकहेउ॥ मुहिसावनगरबुबलेगयेउ॥ देबिहिबलिदेवहिसे
जाई॥ बडेभागआमषसोपाई॥ कबनेकुजलनदेबुमैआनी॥ असकहिगीधनामै
सनमानी॥ नवहिपवनसुतपरसुधिपाई॥ चल्योहृदेसमिरनरघुराई॥ नरनिधमाल
हिनेहिछिनगयेउ॥ मुहिसावनपुरप्रविसतभयेउ॥ द्वारपालमकरध्वजकीसा॥ कपिस
नहारिकहनअतिरीसा॥ निदरिसिमैमोहिनाहिडरनाही॥ लिमदीपकनमनेराइगादी
मैमारुतसुतकरहौंबालक॥ सामिभगतमैजनसुपकालक॥ सोरठा॥ सुनतबचनह
नुमानविसमैवसबोलनभयेउ॥ अरेसठअलनमोरेसुनतसुपनेकतनही॥ १६॥ चौपाई॥
कहतबचनसरतोहिनेधोरी॥ कामबेबसकबमनिभइमोरी॥ ममसुतनसुठहोहिके।
हिकाजा॥ मिथ्याकहतनेतोहिनलाजा॥ किहिप्रकारतेमसमसुतभयसी॥ तिजउनयतिस्मा
सनकिनकहसी॥ सुनतकहेमकरध्वजबचना॥ किधानानतुबलेकादहना॥ नवआगऊ
बालिजलतिधितीरा॥ भयउअमेदनसहिबलबीरा॥ भयउअमेदनमहिबलबीरा॥ सोप्र
सेदमागरमहपरेउ॥ सोऊपिपियानहोमेमभयेउ॥ एहिप्रकारमैनवसुतताता॥ सोउनहि
नपितातमाता॥ मुहिरावनमैवामैकरहो॥ प्रभआसाहिदारेरहहो॥ दोहा॥ सनुबच
नहनुमानकहिसनिनैरिवान॥ रामलषनकहआनिकरिकहाकरतहेतात॥ १७॥ चौ॥
॥ कहहुतातनेहिप्रसुलनाऊ॥ जानबहोमैनिजप्रभुठाऊ॥ गेहतुतातजानौमेताता॥ ज
सकछुसनाकहोसोबाता॥ सौनाघतिप्रभुफणीपतिमाया॥ हरिलेआयोनिसवरना।
था॥ करनसोअहेंहामइदेआज॥ देबिहिबलिदेहहिसोराजु॥ जोकछुनिजअबननसुना।
निधापा॥ तानसकलसबनाहिसबाया॥ निजप्रभुकाजलाविडिपमहेउ॥ तासनसम
बबुनमैकरेऊ॥ जानकहऊपूजालनेऊ॥ प्रभुआनानिजगुपजसलेऊ॥ सुनिअसपेलि
बलेउहनुमाना॥ मकरध्वजकोषाबलबाना॥ दोहा॥ कपिकेहदनेसिमुष्टिकाकपि।
पुनिमोउनारि॥ गेकहिगेकहनेनबबलसुगसमबोरलाहि॥ १८॥ चौपाई॥ गेकहिगे
कसकेनाहिपारी॥ मारुतसुतदोउभटभारी॥ सुतकीहसुनतबवाधिभवानी॥ बलावहो
तिबिलबबङजानी॥ पकलसुअसवहासअहदेषा॥ निकरबलसप्रमप्रीनहपेषा॥ देवीक
समइफलहाथ्रहरई॥ आनितकेघरकोजगासकई॥ बाढतभीतिमेवापकवाना॥ यपेउ।
आनिहेबीप्रस्थाना॥ मालतीनहाममललेआई॥ समनतमप्यैवेसिकपिजाई॥

समनदइनेअनिकनहल्लकाई॥ सोलसमनलभेउपहीलगाई॥ ममनानामनेदोमिरहरि
उ॥ बिकटरूपतरँबाकपिधरेउ॥ दोहा॥ कुबनबरनदेबीनबहिपवनीगनि
सातिनबराहभयोकपिसुविबरविनलोई॥ १९॥ चौपाई॥ कपदेहि॥ बरषन
सतबिबारतनिसाबसमारी॥ कहहिकिदेविप्रधरसुजान॥ बङआबीसऔननिसबम्बान॥ क
कपिसुनामपुनिहुजाकुरही॥ जोकछुआवसोकपिसबषभरही॥ रहीसामग्रीलबननन
मुराई॥ तबीनाहकोसबैकपिषाई॥ कोपिबेलारनहाअभअसुनारी॥ भावहैनिसवरम
लसेहारी॥ अहिरावनउरस्तपभाकेसे॥ बङेकायपरबलिपसुजेसे॥ सबहिनसाम
सिंधिजबजाना॥ लछिमनरामनरोनिनहोआना॥ दाछाकेनप्रभुकहनलाआने॥
लिमबरगाहिबङआयुधपानी॥ धरेगदाकोअरुधनुबाना॥ सतिसबलनरवालिक
ना॥ दोहा॥ लोमरनदयारपरसुअसिनाराकासिअरुचेन॥ तोउनषाउनयनुधसरदे
पनबहैनवेन॥ २०॥ चौपाई॥ मायाबलसोसकलबिचलन॥ आनिबिकरालका
लजनुलबुन॥ एहिविधिसकलबीरमहारहहीं॥ अहिरावनमेबाअनुसरहीं॥ आयसुपा
एबउगनिनकाटे॥ मारनकहप्रभुपरभयलाठे॥ कौकहरावनीतिअनुसरहू॥ नीति
देहुबिलबअवकबहू॥ पुनिअसमुछलरीइमिकहई॥ समरहुजोजोरेकोअहई॥ ना
हिनोकालपरऊबाआई॥ असकहिसदसबहसेदहाई॥ कहहिहिसुठप्रभुकहेअसब
नी॥ कहतससङबमोहिहेतनभवानी॥ दोहा॥ फनिपतिचितबरिहासकछसाबनिरधि।
अहिराज॥ प्रभुकरकौनकऊहियकिमिसुनजगरुऊरघुराज॥ २१॥ चौपाई॥ इहवेधु
नमनकोमविवान॥ जपेसकलजगनामहमारा॥ तहिअवसरहिकोहहनुमाना।
॥ निकरलअहइबीरबलबाना॥ असबिबाबिकहिसमरलकरही॥ सोपरिहोइजोबिरि
कछुकरही॥ हसिसबहिनतबमारनलयेउ॥ छनसमानिकपिगरजतभयेउ॥ निसब
रसेकलबिसनभयभारी॥ कहहिसुबबनिजहृदेबिचारी॥ अहिरावनमलकीनमक
ज॥ आनेउदहामनुजसुरराज॥ नोहिनेदेविकोपभइआज॥ अवभासबकरदपमयुक
ज॥ भयेतेजहतनिसाचरझारी॥ हूसरकपिगरजेउअतिभारी॥ दोहा॥ प्रगटसमभ
उपवसुतअअतुरासबोभीर॥ अनिभेइसिननिसाचनसुनऊउलामनिधीर॥ २२॥
चौपाई॥ इगामयानसभइमिअभिमानी॥ मारुतबदतिमिसागरपानी॥ तिहिछिनक
पिलोनेदोउभाई॥ हतनलगेनिसचरसमुदाई॥ घउगाछिलाउलीनहनुमाना॥ लग
कटनभुजसिरमुरुजाना॥ काहूहिलातकुअवनतिनकीने॥ धरिपदहोमिमुनलमह
दीने॥ निजलगुरकीकोरबनाई॥ जोहिलेकाउआविनहिपाई॥ एहिविधिसभनि
सवरसंहारे॥ अहिरावननवबलनउबारे॥ रेकपिफोदगासनोहिनाही॥ अहिरावन
नहिजानसिमोही॥ जेतुकमालिनसेसोसिमारा॥ आरगावनसनतहतेऊविचारा॥
दो॥ हा॥ कालनेमसमसैनहोसुनऊसबचनहनुमान॥ असकहिपउगअहारसीक
पिननवजसमान॥ २३॥ चौपाई॥ तेअसिलाहिपवनसुतसारा॥ काटेउसोसअन
लसेडारा॥ झगाइनिकोतलाकोसीसा॥ प्रभुकहललबलासेकोसा॥ मकरधजत
बबिनतीन्हा॥ बधनतोसुराजतिहिहीदीन्हा॥ गहाकेराजकरउनमनाना॥ सेबहुम
मप्रभुहेनोभाना॥ असकहिकपिनिजदलमहआवा॥ हरषेकहकपरेमसुषपा।
वा॥ सनककपीरबङहोरिपिआवा॥ गङकनिकनिकवङरीनिमिषावा॥ बिहगनि
लेवङगिरिसिआई॥ इमीसुप्रभयउनिरषिहोउभाई॥ मिलेकपिसचरनधरिमोदम
अनिपहुनगहेनिसाचरनाथा॥ दो॥ हा॥ तामवतअगदसहितमिलेआलअरुकौस
लनलानेप्रियवचन॥ कहिलषनकोमलायीस॥ २४॥ चौपाई॥ बङरिसभनभेदहन
मीना॥ कहहितातनुमरापेआना॥ देवनसुमननअहिबङकीना॥ गमदिनहदेउद
भीदीना॥ अनुजसहितनृदरघरनुवीरा॥ बोलनलवदनेसनऊकपिबीरा॥ तोहिसा
मानिनहिकोउहितकारी॥ सुरनरनिसिथजोकोउतनधारी॥ जसतनमाराजिभवन

रा. ले
१५

महमयेउ॥ सुनि प्रभु सब बचन चरन कपि गहेउ॥ नाथ करहु तम मैं केहि लेषे॥ तरनी चले सुग्रीव स
न्ल लदेषे॥ तैसैं नव प्रताप सब नाथा॥ सुनि प्रभु सब बचन मिले रघुनाथा॥ कटक सहित ह
रषे सेभाई॥ तिहि अवसर सुष कहि किमि जाइ॥ उहां दसानन सब सुधि पाई॥ हमन कहा
षवनि सब जाई॥ अहिरावन को बध सुनि काना॥ भयो तेजहत अति अकुलाना॥ बचन बि
सिष सम लागे नाही॥ संभ्रम सरसु विष सो महि नाही॥ मुष सूषे लोचन जल बहही॥
बचन बिलषि पुनि भुनि डपकरही॥ दोहा॥ मैं तनया तव आइ करि बहु प्रकारि समुझाइ
मानन मूढ कालबसि परम क्रोध कइ पाई॥ २५॥ चौपाई॥ रावन उर अवरे कछु भये
उ॥ मेरि को सकै जो बिधि निरमयेउ॥ प्रभु बिरोध करि चहे कल्याना॥ मूढ मोह बस मु
नि अग्याना॥ कृपासिंधु सेवक भयहारा॥ ताहि बिरोध सुष चहत सरारी॥ निसाचरानि
भाभिउ मनसारा॥ लगी भाल कपि बानि हुहारा॥ सुभट बोलाइ दसानन बोला॥ रन सनमुष
षज्ञ करमन डाला॥ सो अब हि बकु जाइ पराई॥ सेन गविमष भये न भलाई॥ बीस भुजा
मैं बैर बढावा॥ देहाउ न सो बिग्रु बढि आवा॥ अस कहि मरुत बेग रथ साजा॥ बाजे सक
ल जुझाउ बाजा॥ चले बीर सब अतुलित बली॥ जनु कज्जल की आंधी चली॥ असगन अमित
होहि तिहि काला॥ गनहि न भुजबल गरब बीसाला॥ छंद॥ अति गरब गनहि न सगुन असगु
न स्रवहि आयुध हाथते॥ भट गिरत रथते बाजि गज चिकरत भाजन साथते॥ गोमाय गीध क
राल षर रव स्वान बोलहि अति घने॥ जनु कालदूत उलूक बोलहि बचन परम भयावने॥ दो
हा॥ ताहि कि संपति सगुन सुभ सपनेहु मन बिसराम॥ भूतद्रोह रत मोह बस राम बिमुष
रत काम॥ २६॥ चौपाई॥ चलेउ निसाचर कटक अपारा॥ चतुरंगनी अनी बहु धारा॥ बिबि
धि भांति बाहन रथ जाना॥ बिपुल बरन पताक ध्वज नाना॥ चले मत्त गज जूथ घनेरे॥ प्राबि
ट जलद मरुत जनु प्रेरे॥ बरन बरन बरदैत निकाया॥ समर सूर जानहि बहु माया॥ अति बि
चित्र बाहनी बिराजी॥ बीर बसंत सेन जनु साजी॥ चलत कटक दिग्गज डिगहही॥ छुभित
पयोधि कुधर डगमगही॥ लैलै निसचर कटक अपारा॥ चतुरंगनी अनी बहु धारा॥ उठी
रेनु रबि गयउ छपाई॥ पवन थकित बसुधा अकुलाई॥ पनव निसान घोर रव बाजही॥ म
हा प्रलै के जनु जलद गाजही॥ भेरि नफीरी बाज सहनाई॥ मारू राग सुभट सुषदाई॥ के
हरि नाद बीर सब करही॥ निज निज बल पौरुष उच्चरही॥ कहहि दसानन सुनहु सुभट
मरदहु भालु कपिन के ठट्टा॥ हो मारिहों बीर दोउ भाई॥ अस कहि सनमुष फौज रेंगाई॥ य
ह सुधि सकल कपिन जब पाई॥ धाए करि रघुबीर दुहाई॥ छंद॥ धाए बिसाल कराल म
र्कट भालु काल समान ते॥ मानहु सपछ उडाहि भूधर बृंद नाना बान ते॥ नष दसन
सैल महाद्रुमायुध सबल संक न मानही॥ जै राम रावन मत्त गज मृगराज सुजस बषा
नही॥ दो॥ हा॥ दुहु दिसि जै जैकार करि निज निज जोरी जानि॥ भिरे बीर इत रामहि उत
रावनहि बषानि॥ २७॥ चौ॥ पा॥ ई॥ रावन रथी बिरथ रघुबीरा॥ देषि बिभीषन भयउ अधीरा॥ अ
धिक प्रीति मन भा संदेहा॥ बंदि चरन कह सहित सनेहा॥ नाथ न रथ नहि तन पद त्राना॥ के
हि बिधि जीतब बीर बलवाना॥ सुनहु सषा कह कृपानिधाना॥ जेहि जै होइ सो स्यंदन आ
ना॥ सौरज धीरज तेहि रथ चाका॥ सत्य सील दृढ धुजा पताका॥ बल बिबेक दम परहित
घोरे॥ छिमा कृपा समता रजु जोरे॥ ईस भजन सारथी सुजाना॥ बिरति चरम संतोष कृपाना॥
दान परसु बुधि सक्ति प्रचंडा॥ बर बिग्यान कठिन कोदंडा॥ अमल अचल मन त्रोन समा
ना॥ सम जम नेम सिलीमुष नाना॥ कवच अभेद बिप्र गुरु पूजा॥ यहि सम बिजे उपाय न
दूजा॥ सषा धरममय अस रथ जाके॥ जीतन कहु न कतहु रिपु ताके॥ दो॥ हा॥ महा अजे
य संसार रिपु जीति सकै सो बीर॥ जाके अस रथ होइ दृढ सुनहु सषा मतिधीर॥ १॥ सुनि बि
भीषन प्रभु बचन हरषि गहे पदकंज॥ येहि मिसि मोहि उपदेसहु राम कृपा सुषपुंज॥ २॥
उत पचार दसकंध भट इत अंगद हनुमान॥ लरत निसाचर भालु कपि करि के नि
जि प्रभु आन॥ २८॥ चौ॥ पा॥ ई॥ सुर ब्रह्मादि सिद्ध मुनि नाना॥ देषत रन नभ चढे बिमाना॥

हमहू उमा रहे तेहि संगा॥ देषत राम चरित रनरंगा॥ सुभट समर रस दुहु दिसि माते॥ कपि जै
सील राम बल ताते॥ एक एक सन भिरहि पचारहि॥ एकन्ह एक मरदि महि पारहि॥ मारहि का
टहि धरहि पछारहि॥ सीस तोरि सीसन सन मारहि॥ उदर बिदारहि भुजा उपारहि॥ गहि पद
अवनि पटकि भट डारहि॥ निसिचर भट महि गाडहि भालू॥ ऊपर ढारि देहि बहु बालू॥ बी
र बलीमुष जुद्ध बिरुद्धे॥ देषित बिपुल काल जनु क्रुद्धे॥ छंद॥ क्रुद्धे कृतांत समान क
पि तन स्रवत सोनित राजही॥ मर्दहि निसाचर कटक भट बलवंत घन जिमि गाजही॥ मारहि चपे
टन्हि डाटि दातन काटि लातन मीजही॥ चिक्करहि मर्कट भालु छल बल करहि जेहि षल
छीजही॥ धरि गाल फारहि उर बिदारहि गल अंतावरि मेलही॥ प्रह्लादपति जनु बिबि
ध तनु धरि समर अंगन षेलही॥ धरु मारु काटु पछारु घोर गिरा गगन म
हि भरि रही॥ जै राम जो त्रिन ते कुलिस कर कुलिस ते कर त्रिन सही॥ दो॥ हा॥ निज दल बि
चलत देषिसि बीस भुजा दस चाप॥ चलेउ दसानन कोपि तब फिरहु फिरहु करि दाप॥
२९॥ चौ॥ पा॥ ई॥ धायउ परम क्रोध दसकंधर॥ सनमुष चले हूह दै बंदर॥ गहि कर पा
दप उपल पहारा॥ डारहि ता पर एकहि बारा॥ लागहि सैल बज्र तन तासू॥ षंड षंड हो
इ फूटहि आसू॥ चलै न अचल रहा रथ रोपी॥ रन दुर्मद रावन अति कोपी॥ इत उत झप
टि दपटि कपि जोधा॥ मरदै लाग भयो अति क्रोधा॥ चले पराइ भालु कपि नाना॥ त्रा
हि त्राहि अंगद हनुमाना॥ पाहि पाहि रघुबीर गुसाई॥ यह षल षाइ काल की नाई॥ तिहि
देषे कपि सकल पराने॥ दसहू चाप सायक संधाने॥ छं॥ द॥ संधानि धनु सर निक
र छाडेसि उरग जिमि उडि लागही॥ रहे पूरि सर धरनी गगन दिसि बिदिसि कह कपि
भागही॥ भयो अति कोलाहल बिकल कपि दल भालु बोलहि आतुरे॥ रघुबीर करुना
सिंधु आरत बंधु जन रच्छक हरे॥ दो॥ हा॥ निज दल बिकल बिलोकि तब कटि निषंग
धनु हाथ॥ लछिमन चलेउ सकोपि अति नाइ राम पद माथ॥ ३०॥ चौ॥ ई॥ रे षल का मार
सि कपि भालू॥ मोहि बिलोकि तोर मैं कालू॥ षोजत रहेउ तोहि सुतघाती॥ आजु निपाति
जुडाउ छाती॥ अस कहि छाडिसि बान प्रचंडा॥ लछिमन कीए सकल सत षंडा॥ कोटि
न आयुध रावन डारे॥ तिल समान करि काटि निवारे॥ पुनि निज बानन कीन प्रहारा॥
स्यंदन भंजि सारथी मारा॥ सत सत सर मारे दस भाला॥ गिरि सृंगन जनु प्रबिसे ब्याला॥
पुनि सत सर मारेउ उर माही॥ परेउ धरनि तल सुधि कछु नाही॥ उठा प्रबल पुनि मुरुछा
जागी॥ छाडेसि ब्रह्म दत्त जो सांगी॥ छं॥ द॥ सो ब्रह्म दत्त प्रचंड सक्ति अनंत उर लागी स
ही॥ परेउ बीर बिकल उठाव दसमुष अतुल बल महिमा रही॥ ब्रह्मांड भवन बिराज
जाके एक सिर जिमि रज कनी॥ तेहि चह उठावन मूढ रावन जान नहि त्रिभुवन धनी॥ दो
हा॥ देषत धायउ पवनसुत बोलत बचन कठोर॥ आवत तेहि उर मे हन्यो मुष्टि प्रहार प्र
घोर॥ ३१॥ चौ॥ पा॥ ई॥ जानु टेकि कपि भूमि न गीरा॥ उठा संभारि बहुत रिस भरा॥ मुष्टिका
एक ताहि कपि मारा॥ परेउ मनहु सैल बज्र प्रहारा॥ मुरछा गई बहुरि सो जागा॥ कपि
बल बिपुल सराहन लागा॥ धिग धिग मम बल षोरष धिग मोही॥ जो तै जियत उठेउ सुरद्रो
ही॥ अस कहि कपि लछिमन कह ल्यायो॥ देषि दसानन बिसमै पायो॥ कह रघुबीर
समुझि जिय भ्राता॥ तुम कृतांत भछक सुरत्राता॥ सुनत बचन उठि बैठ कृपाला॥ ग
ई गगन सो सक्ति कराला॥ पुनि कोदंड बान गहि धाए॥ रिपु समीप अति आतुर आए॥ छं
॥ आतुर बहोरि बिभंजि स्यंदन सूत हति ब्याकुल कीयो॥ गिरेउ धरनि दसकंधर
बिकल तर बान सत बेध्यो हीयो॥ सारथी दूसर घालि रथ तेहि तुरत लंका लै गयो॥
रघुबीर बंधु प्रताप पुंज बहोरि प्रभु चरनन नयो॥ दो॥ हा॥ उहां दसानन जागि करि
करै लाग कछु जग्य॥ राम बिरोध बिजय चह सठ हठ बस अति अग्य॥ ३२॥ चौ॥ पा॥ ई॥ इहां बिभीषन सब सुधि पाई॥ सपदि जाइ रघुपतिहि सुनाई॥ ना
थ करै रावन एक जागा॥ सिद्धि भये नहि मरहि अभागा॥ पठवहु नाथ बेगि भट बंदर॥ क

रा॰ले॰
९६

रहिबिधुंसआवदसकंधर॥ प्रातहोतप्रभुसुभटपठाये॥ हनुमदादिअंगदसबधाये॥ कौ
तुककूदिचढेसबलंका॥ पैठेरावनभवनअसंका॥ जग्यकरतजबहिसोदेषा॥ सकलक
पिनभाक्रोधबिसेषा॥ रनतेनिलजभाजिग्रहआवा॥ इहांआइबकध्यानलगावा॥ असक
हिअंगदमारेउलाता॥ चितवनसठस्वारथमनराता॥ छंद॥ नहिचितवजबकपिकोपि
करगहिदसनलातनमारही॥ धरिकेसनारिनिकारिबाहरतेअतिदीनपुकारही॥ इहिबी
चकपिनबिधुंसिकृतमषदेषिमनमेहारही॥ तबउठेउकोपिकृतांतसमगहिचरनबा
नरडारही॥ दो॥ जग्यबिधुंसिकपिकुसलसबआयेरघुपतिपासि॥ चलेउलंकपतिको
पहोइत्यागिजिवनकीआस॥ ८५॥ चौपाई॥ चलतहोहिअतिअसुभभयंकर॥ बैठहि
गीधउडाइसिरनपर॥ भयउकालबसकाहुनमाना॥ कहेसिबजावहुजुद्धनिसाना॥
चलीनिसाचरअनीअपारा॥ बहुगजरथपैदलअसवारा॥ प्रभुसनमुषधायेषलकैसे
सलभसमूहअनलमहजैसे॥ इहांदेवतनबिनतीकीनी॥ दारुनबिपतिहमहिइन
दीनी॥ अबजनिरामषिलावहुएही॥ अतिसैदुषितहोतबैदेही॥ देवबचनसुनिप्रभु
मुसकाना॥ उठेरघुबीरसुधारेबाना॥ जटाजूटदृढबांधेमाथे॥ सोहहिसुमनबी
चबिचगाथे॥ अरुननैनबारिदतनस्यामा॥ अषिललोकलोचनअभिरामा॥ कोटि
तटपरिकरकसेनिषंगा॥ करकोदंडकठिनसारंगा॥ छंद॥ सारंगकरसुंदरनिषंगा
सिलिमुषाकरकटिकसे॥ भुजदंडपीनमनोहरायतउरधरासुरपदलसे॥ कह
दासतुलसीजबहिप्रभुकरचापसरफेरनलगे॥ ब्रह्मांडदिग्गजकमठअहिमहिसिं
धुभूधरडगमगे॥ दोहा॥ हरषेदेवबिलोकिछबिबरषहिसुमनअपार॥ जयजयज
यकरुणानिधिछबिबलगुणआगार॥ ८६॥ चौपाई॥ एहिबीचनिसाचरअनी
कसमसातआईअतिघनी॥ देषिचलेसनमुषकपिभट्टा॥ प्रलयकालकेजनुघन
घट्टा॥ बहुकृपानतरवारिचमंकहि॥ जनुदहुंदिसिदामनीदमंकहि॥ गजरथतु
रंगचीकारकठोरा॥ गरजहिमनहुबलाहकघोरा॥ कपिलंगूरबिपुलनभछाये॥
मनहुइंद्रधनुउयेसुहाये॥ उठेधूरिमानहुजलधारा॥ बानबुंदभइवृष्टिअपारा॥ दु
हुंदिसिपरबतकरहिप्रहारा॥ बज्रपातजनुबारहिबारा॥ रघुपतिकोपिबानझरलाई
घायलभयेनिसचरसमुदाई॥ लागतबानबीरचिकरही॥ घुमिघुमिजायतहमहिपर
ही॥ स्रवहिसैलजनुनिरझरभारी॥ श्रोनितसरकादरभयकारी॥ छंद॥ कादरभयंक
ररुधिरसरिताचलीपरमअपावनी॥ दोउकूलदलरथरेतचक्रअबर्तबहतिभयावनी॥ ज
लजंतुगजपदचरतुरगषरबिबिधबाहनकोगने॥ सरसक्तितोमरसर्पचापत
रंगचरमकमठघने॥ दोहा॥ बीरपरहिजनुतीरतरमज्जाबहुबहफेन॥ कादरदे
षिडरहितहसुभटनकेमनचेन॥ ८७॥ चौपाई॥ मज्जहिभूतपिसाचबेताला॥ प्र
मथमहाझोटिंगकराला॥ काककंकलेभुजाउडावही॥ एकतेएकछीनिलेषाव
ही॥ एककहहिअसीमहंगाई॥ सठहुतुम्हारदरिद्रनजाई॥ कहरतभटघाय
लतटगीरे॥ जहांतहांमनहुअर्धजलपरे॥ षेचहिआंतगीधतटभये॥ जनुबंसीषे
लतचितदये॥ बहुभटबहहिचढेषगजाही॥ जनुनावरिषेलहिसरिमाही॥ जोगि
निभरिभरिषप्परसंचही॥ भूतपिसाचबधुनभनाचही॥ भटकपालकरतालबजाव
ही॥ चामुंडानानाबिधिगावही॥ जंबुकनिकरकटकटकरही॥ षाहिहुआहिअघाय
दपटही॥ कोटिनरुंडमुंडबिनुडोलही॥ सीसपरेमहिजैजैबोलही॥ छंद॥ बोल
हिजोजैजैमुंडरुंडप्रचंडसिरबिनधावही॥ षप्परनिषगअलुझिजुझहिसुभट
भटनढहावही॥ निसचरबरूथबिमर्दिगरजेहिभालुकपिदर्पितभये॥ संग्रामअंगनसु
भटसोवहिरामसरनिकरनिहये॥ दोहा॥ रावनहृदैबिचारियाभानिसचरसंघार॥ मै
अकेलकपिभालुबहुमायाकरोंअपार॥ ८८॥ चौपाई॥ देवनप्रभुहिपयादेदेषा॥ उ
पजाउरअतिछोभबिसेषा॥ सुरपतिनिजरथतुरतपठावा॥ हरषसहितमातलिले

आवा॥ तेजपुंजरथदिब्यअनूपा॥ हरषिचढेकोसलपुरभूपा॥ चंचलतुरगमनोहरचा
री॥ अजरअमरमनसमगतिकारी॥ रथआरूढरघुनाथहिदेषी॥ धायेकपिबलपाइ
बिसेषी॥ सहीनजाइकपिनकीमारी॥ तबरावनमायाबिस्तारी॥ सोमायारघुबीर
हिबांची॥ लछिमनकपिनसोमानीसांची॥ देषीकपिननिसाचरअनी॥ अनुजसहितबहुकोस
लधनी॥ छंद॥ बहुबालिसनलछिमनकपीसबिलोकिमरकटअपडरे
॥ जनुचित्रलिषितसमेतलछिमनजहंसोतहंचितवहिखरे॥ निजसेनचकितबिलो
किहंसिसरचापसजिकोसलधनी॥ मायाहरीहरिनिमषमेहरषीसकलमरक
टअनी॥ दोहा॥ बहुरिरामसबतनचितैबोलेबचनगंभीर॥ द्वंदजुद्धदेषहुस
कलश्रमितभयेकपिबीर॥ ८९॥ चौपाई॥ असकहिरथरघुनाथचलावा॥ बिप्रच
रनपंकजसिरनावा॥ तबलंकेसक्रोधउरछावा॥ गर्जततर्जतसनमुषधावा॥ जीते
हुजेभटसंजुगमाही॥ सुनुतापसमैतिनसमनाही॥ रावननामजगतजसजाना॥
लोकपजाकेबंदीषाना॥ षरदूषनबिराधतुममारा॥ बधेउब्याधइवबालिबि
चारा॥ निसचरनिकरसुभटसंघारे॥ कुंभकरनघननादहिमारे॥ आजुबैरसबलेउ
निबाही॥ जोरनभूपभाजिनहिजाही॥ आजुकरोषलकालहवाले॥ परेहुकठि
नरावनकेपाले॥ सुनिदुरबचनकालबसजाना॥ बिहसिबचनकहकृपानिधाना
॥ सत्यसत्यसबतवप्रभुताई॥ जल्पसिजनिदिषाउमनुसाई॥ छंद॥ जनिजल्प
नाकरिसुजसनासहिनीतिसुनहिकरहिछमा॥ संसारमहपुरुषत्रिबिधपाट
लरसालपनससमा॥ एकसुमनप्रदएकसुमनफलएककफलकेवललागही॥ ए
ककहहिकरहिनकहहिकरहिएककरहिकहतनबागही॥ दोहा॥ रामबचनसुनि
बिहसिकहमोहिसिषावतग्यान॥ बैरकरतनहितबडरेअबलागेप्रियप्रान॥ ९०॥
चौपाई॥ कहिदुरबचनक्रुद्धदसकंधर॥ कुलिससमानलागछांडेसर॥ नानाका
रसिलीमुषधाये॥ दिसिअरुबिदिसिगगनमहिछाये॥ पावकसरछांडेउरघुबीरा॥
छनमहजरेनिसाचरतीरा॥ छाडिसितीव्रसक्तिषिसिआई॥ बानसंगप्रभुफेरिच
लाई॥ कोटिनचक्रत्रिसूलपबारे॥ बिनुप्रयासप्रभुकाटिनिबारे॥ निफलहोहिरा
वनसरकैसे॥ षलकेसकलमनोरथजैसे॥ तबसतबानसारथीमारे॥ परेउभूमि
जैरामपुकारे॥ रामकृपाकरिसूतउठावा॥ तबप्रभुपरमक्रोधकहपावा॥ छंद॥
भयेक्रुद्धजुद्धबिरुद्धरघुपतित्रोनसायककसमसे॥ कोदंडधुनिअतिचंडसुनिम
नुजादसबमारुतग्रसे॥ मंदोदरीउरकंपकंपतिकमठभूभूधरत्रसे॥ चिक्करहिदि
ग्गजदसनगहिमहिदेषिकौतुकसुरहसे॥ दोहा॥ तानेउचापश्रवनलगि॥ छांडेबि
सिषकराल॥ रामबानअनगनचले॥ लहलहातजनुब्याल॥ ९१॥ चौपाई॥ चले
बानसपछजनुउरगा॥ प्रथमहिहतेसारथीतुरगा॥ रथबिभंजिहतिकेतुपताका॥
गरजाअतिअंतरबलथाका॥ तुरतआनरथचढिषिसियाना॥ अस्त्रसस्त्रछांडेसि
बिधिनाना॥ निहफलहोहिसबउद्यमताके॥ जिमिपरद्रोहनिरतमनसाके॥ तबरा
वनदससूलचलावा॥ बाजिचारिमहिमारिगिरावा॥ तुरगउठाइकोपिरघुनायक॥ षैचि
सरासनछांडेसायक॥ रावनसिरसरोजबनचारी॥ चलेरघुबीरसिलीमुषधारी॥
दसदसबानभालदसमारे॥ निसरिगयेचलेरुधिरपनारे॥ स्रवतरुधिरधायउबलवा
ना॥ प्रभुपुनिकृतधनसरसंधाना॥ तीसतीररघुबीरपबारे॥ भुजनसमेतसीसम
हिपारे॥ काटतहीपुनिभयेनबीने॥ रामबहोरिभुजासिरछीने॥ प्रभुबहुबार
बाहुसिरहये॥ कटतझटितिपुनिनूतनभये॥ पुनिपुनिप्रभुकाटतभुजसीसा॥ अ

रा॰ लं॰ ८

तिकौतुकीकोसलनाथीसा॥ रहेछाइनभसिरअरुबाहू॥ मानहुंअमितकेतुअरुराहू॥ छंद॥
जनुराहुकेतुअनेकनभपथस्रवतसोनितधावही॥ रघुबीरतीरप्रचंडलागहिभूमिगि
रननपावही॥ एकएकसरसिरनिकरछेदेउडतनभपथसोहही॥ जनुकोपिदिनकरनि
करजहीतहीबिधुंतुदपोहही॥ दोहा॥ जिमिजिमिप्रभुहरतासुसिरतिमिहो
हिंअपार॥ सेवतबिषयबिबर्धजिमिनितनितनूतनमार॥४०॥ चौपाई॥ दसमुखदेखिसि
रनकैबाढी॥ बिसरामरनभईरिसगाढी॥ गर्जेउमूढमहाअभिमानी॥ धायउदस
हुसरासनतानी॥ समरभूमिदसकंधरकोपेउ॥ बरषिबानरघुपतिरथतोपेउ॥ दंड
एकरथदेखनपरेउ॥ जनुनिहारमहुदिनकरदुरेउ॥ हाहाकारसुरन्हजबकीना॥ तब
प्रभुकोपिकारमुकलीना॥ सरनिवारिरिपुकेसिरकाटे॥ तेदिसबिदिसिगगनमहि
पाटे॥ काटेसिरनभमारगधावही॥ जैजैधुनिकरिभयउपजावही॥ कहांलछिम
नहनुमानकपीसा॥ कहारघुबीरकोसलाधीसा॥ छंद॥ कहारामुकहिसिरनिक
रधाएदेखिमरकटभजिचले॥ संधानिधनुरघुबंसमनिहंसिसरनिसिरबेधे
भले॥ सिरमालिकागहिकालिकाकरबृंदबृंदन्हबहुमिली॥ करिरुधिरसरिमज
नमनहुसंग्रामबटपूजनचली॥ दोहा॥ पुनिरावनकरिकोपकरिछांडेसिसक्ति
प्रचंड॥ सनमुखचलीबिभीषनहिमनहुकालकोदंड॥४१॥ चौपाई॥ आवतदेखिस
क्तिअतिघोरा॥ प्रनतपालहरिबिरदसंभारा॥ तुरतबिभीषनपाछेमेला॥ सनमुख
रामसहेउसोसेला॥ लागिसक्तिमुरछाकछुभई॥ प्रभुकृतखेलसुरनबिकलाई॥ दे
खिबिभीषनप्रभुस्रमपायेउ॥ गहिकरगदाक्रोधकरिधायउ॥ रेकुभाग्यसठमंदकुबु
द्धे॥ तैसुरनरमुनिनागबिरुद्धे॥ सादरसिवकहुसीसचढाए॥ एकएककेकोटिन
पाये॥ तेहिकारनखलअबलगिबाच्यो॥ अबतवकालसीसपरनाच्यो॥ रामबिमुख
सठचहसिसंपदा॥ असकहिहनेसिमांझउरगदा॥ छंद॥ उरमांझगदाप्रहारघोर
कठोरलागतमहिपरयो॥ दसबदनसोनितस्रवतपुनिसंभारिधायोरिसभरयो॥
दोउभिरेअतिबलमल्लजुधबिरुधएकएकहिहने॥ रघुबीरबलगर्जितबिभीष
नघालनहिताकेगने॥ दोहा॥ उमाबिभीषनरावनहिसनमुखचितवकिकाउ॥ सोअब
भिरतकालज्योंश्रीरघुबीरप्रभाउ॥४२॥ चौपाई॥ देखाश्रमितबिभीषनभारी॥
धायउहनूमानगिरिधारी॥ रथतुरंगसारथीनिपाता॥ हृदयमांझतेहिमारेउला
ता॥ ठाढरहाअतिकंपितगाता॥ गयाबिभीषनजहंजनत्राता॥ पुनिरावनकपिह
त्योपचारी॥ चलागगनकपिपूंछपसारी॥ गहेसिपूंछकपिसहितउडाना॥ पुनिफि
रिभिरेउप्रबलहनुमाना॥ लरतअकासजुगलसमजोधा॥ एकहिएकहनतकरिक्रो
धा॥ सोहहिनभछलबलबहुकरही॥ कज्जलगिरिसुमेरजनुलरही॥ बुधिबल
निसचरपरहिनपारा॥ तबमारुतसुतप्रभुसंभारा॥ छंद॥ संभारिश्रीरघुबी
रधीरपचारिकपिरावनहन्यो॥ महिपरतपुनिउठिलरतदेवनजुगलकहुजैजैभ
न्यो॥ हनुमंतसंकटदेखिमरकटभालुक्रोधातुरचले॥ रनमत्तरावनसकलसुभटप्र
चंडभुजबलदलमले॥ दोहा॥ रामपचारेबीरनबधायेकीसप्रचंड॥ कपिदलप्रबलबि
लोकितेहकीनप्रगटपाखंड॥४३॥ चौपाई॥ अंतरधानभयोछिनएका॥ पुनिप्रगटे
खलरूपअनेका॥ रघुपतिकटकभालुकपिजेते॥ जहंतहंप्रगटदसाननतेते॥ दे
खेकपिनअमितदससीसा॥ जहंतहंभजेभालुअरुकीसा॥ भागेबानरधरहिनधी
र॥ त्राहित्राहिलछिमनरघुबीरा॥ दहदिसिधावहिकोटिनरावन॥ ग
र्जहिघोरकठोरभयावन॥ डरेसकलसुरचलेपराई॥ जैकीआसतजहुअबभाई॥ सबसु

रजितेएकदसकंधर॥ अबबहुभयेतकहुगिरिकंदर॥ रहेबिरंचिसंभुमुनिग्यानी॥
जिनजिनप्रभुमहिमाकछुजानी॥ छंद॥ जानाप्रतापतेरहेनिर्भयकपिनरिपुमा
नेफुरे॥ चलेबिचलिमरकटभालुसकलकृपालपाहिभयातुरे॥ हनुमंतअंगद
नीलनलअतिबललरतरनबांकुरे॥ मर्दहिंदसाननकोटिकोटिन्हकपटभूभटअं
कुरे॥ दोहा॥ सुरबानरदेखेबिकलहसेउकोसलाधीस॥ साजिसारंगएकसर
हतेसकलदससीस॥४४॥ चौपाई॥ प्रभुछनमहुमायासबकाटी॥ जि
मिरबिउदेजातितमफाटी॥ रावनएकदेखिसुरहरषे॥ फिरेसुमनबहुप्रभुपर
बरषे॥ भुजउठाइरघुपतिकपिफेरे॥ फिरेएकएकन्हतबटेरे॥ प्रभुबलपाइभालुक
पिधाये॥ तरलतमकिसंजुगमहिआये॥ अस्तुतिकरतदेवतन्हदेखें॥ भयउंएक
मैंइनकेलेखे॥ सठहुसदातुम्हमोरमरायल॥ असकहिकोपिगगनपरधायल॥
हाहाकारकरतसुरभागे॥ खलहुजाहुकहमोरेआगे॥ देखिबिकलसुरअंगदधा
यल॥ हाहाकारकरतसुरभागे॥ खलहुजाहुकहमोरेआगे॥ देखिबिकलसुरअंग
दधावा॥ कूदिचरनगहिभूमिगिरावा॥ छंद॥ गहिभूमिपारयोलातमारेउबा
लिसुतप्रभुपैगयो॥ संभारिउठिदसकंधघोरकठोररवगर्जतभयो॥ करिदाप
चापचढाइदसधनुबानसरबहुबरषही॥ कियसकलभटघायलभयाकुलदेखि
निजबलहरषही॥ दोहा॥ तबरघुपतिरावनकेसीसभुजासरचाप॥ काटेभय
बहुरिजिमितीरथकरलकेपाप॥४५॥ चौपाई॥ सिरभुजबाढिदेखिरिपुकेरी॥ भा
लुकपिन्हरिसभईघनेरी॥ मरतनखलठकाटेभुजसीसा॥ धायेकोपिभालुभटकी
सा॥ बालितनयमारुतनलनीला॥ द्विबिदमयंदपनसबलसीला॥ बिटपमहि
धरकरहिप्रहारा॥ सोइगिरितरुगहिकपिन्हसोमारा॥ एकनखनरिपुबपुबिदा
री॥ भागिचलहिएकलातनमारी॥ तबनलनीलसिरनचढिगये॥ नखन
लिलारबिदारतभये॥ रुधिरबिलोकिसकोपसुरारी॥ तिनहिधरनकोंभु
जापसारी॥ गहेनजाहिकरनपरफिरही॥ जनुजुगमधुपकमलबनचिर
ही॥ कोपिकूदिद्वौधरेसिबहोरी॥ महिपटकतभजेभुजामरोरी॥ पुनिसको
पदसधनुकरलीने॥ सरनमारिघायलकपिकीने॥ हनुमदादिमुरछितकरि
बंदर॥ पाइप्रदोषहरषदसकंधर॥ मुरछादेखिसकलकपिबीरा॥ जामवंत
धायउरनधीरा॥ संगभालुभूधरतरुधारी॥ मारनलगेपचारिपचारी॥
भयउक्रोधरावनबलवाना॥ गहिपदमहिपटकैभटनाना॥ देखिभालुपति
निजदलघाता॥ कोपिमाझउरमारेउलाता॥ छंद॥ उरलातघातप्रचंडलाग
तबिकलरथतेमहिपरा॥ गहेभालुबीसहुकरमनहुकमलनिबसेनिसमधु
करा॥ मुरछितबिलोकिबहोरिपदहतिभालुपतिप्रभुपहिगयो॥ निसजानि
स्यंदनघालितेहितबसूतजतनकरतभयो॥ दोहा॥ मुरछाबिगतभालुकपिसब
आयेप्रभुपास॥ निसचरसकलरावनहिघेरेरहेबहुत्रास॥४६॥ चौपाई॥
तेहिनिससीतापहसोजाई॥ त्रिजटाकहीसबकथासु
नाई॥ सिरभुजबाढिसुनतरिपुकेरी॥ सीताउरभइत्रासघनेरी॥ मुखमलीनउ
पजीचिंता॥ त्रिजटासनबोलीतबसीता॥ होइहीकहाकहसिकिनमाता॥
केहिबिधमरइबिस्वदुखदाता॥ रघुपतिसरसिरकटेनमरई॥ बिधिबिपरीतचरितसबक
रई॥ मोरअभाग्यजिवावतओही॥ जेहिहोहरिपदकमलबिछोही॥ जेहिकृत
कपटकनकमृगझूठा॥ अजहुसोदैवमोहिपररूठा॥ जेहिबिधिमोहिदुखदुसहस
हाए॥ लछिमनकोंकटुबचनकहाए॥ रघुपतिबिरहबिषमसरभारी॥ तकि

तबकिमिमोहिमारबकुमारी॥ ऐसेहुजुगजौरावनसमआवा॥ सोउविधिताहिजिवाव
नआवा॥ बहुविधिकरतविलापजानकी॥ करिकरिसुरतिकृपानिधानकी॥ कह
त्रिजटासुनिराजकुमारी॥ उरसरलागतमरैसुरारी॥ तातेंप्रभुउरहतैनतेही
एहिकेहृदैवसतवैदेही॥ छंद॥ एहिकेहृदैवसजानकीजानकीउरममवासहै
ममउदरभुवनअनेकलागतवानसवकरनासहै॥ सुनिवचनहरषविषाद
मनअतिदेषिपुनित्रिजटाकहा॥ अबमरिहिरिपुएहिभांतिसुनुसुंदरितजहिसंस
यमहा॥ दोहा॥ काटतसिरहोइहिविकलछुटिजाहितवध्यान॥ तबराव
नकेहृदैमहमारहिकृपानिधान॥ ४७॥ चौपाई॥ असकहिबहुतभांतिसमुझाई॥ पु
नित्रिजटानिजभवनसिधाई॥ रामसुभावसुमिरिवैदेही॥ उपजीविरहवेथाअतिते
ही॥ निसिहिससिहिनिंदतिबहुभांती॥ जुगसमभईसिरातिनराती॥ करतिविला
पमनहिमनभारी॥ रामविरहजानकीदुषारी॥ जबअतिभयउविरहउरदाहू॥ फ
रकेउबामनैनअरुबाहू॥ सगुनविचारिधरीमनधीरा॥ अबमिलिहहिकृपालरघुवी
रा॥ इहांअर्धनिसिरावनजागा॥ निजसारथीसनषीजनलागा॥ सठरनभूमि
छड़ाइसिमोही॥ धिगधिगअधममंदमतितोही॥ तेहिपदगहिबहुविधिसमुझा
वा॥ भोरभयेंरथचढ़िपुनिधावा॥ सुनिआगमनदसाननकेरा॥ कपिदलषरभ
रभयउघनेरा॥ जहांतहांभूधरविटपउपारी॥ धाएकटकटाइभटभारी॥ छंद॥
धाएजुमरकटविकटभालुकरालकरभूधरधरा॥ अतिकोपिकरहिप्रहारमार
तभजिचलेरजनीचरा॥ विचलाइदलबलवंतकीसनघेरिपुनिरावनलीयो॥
चहूंदिसिचपेटनमारिनषनविदारितनव्याकुलकीयो॥ दोहा॥ देषिमहामरकट
प्रवलरावनकीनविचार॥ अंतरहितहोइनिमषमहमायाकृतविस्तार॥ ४८॥ छंद॥
जबकीनतेहिपाषंड॥ भएप्रगटजंतुप्रचंड॥ बेतालभूतपिसाच॥ करधरेंधनुना
राच॥ जोगिनिगहेंकरवाल॥ एकहाथमनुजकपाल॥ करसद्यश्रोनितपान॥
नाचहिकरहिबहुगान॥ धरुमारुबोलहिघोर॥ रहीपूरिधुनिचहुंओर॥ मुषबा
यधावहिषान॥ तबलगेकीसपरान॥ जहांजाहिमरकटभागि॥ तहांबरतदेषहिआ
गि॥ भएविकलवानरभालु॥ पुनिलागवरषनबालु॥ जहांतहांथकितकरि
कीस॥ गर्जेउबहुरिदससीस॥ लछिमनकपीससमेत॥ भयेसकलवीरअ
चेत॥ हारामहारघुनाथ॥ कहिसुभटमीजहिहाथ॥ एहिविधिसकलबलतोरि॥ ते
हिकीनकपटबहोरि॥ प्रगटेसिविपुलहनुमान॥ धाएगहेकरपाषान॥ तिनराम
घेरेआइ॥ चहुंदिसिवरूथबनाइ॥ मारहुधरहुजनिजाई॥ कटकटहिपूंछउठाइ॥
चहुंदिसिलंगूरविराज॥ तेहिमध्यकोसलराज॥ छंद॥ तेहिमध्यकोसलराजसुं
दरस्यामतनसोभालही॥ जनुइंद्रधनुषअनेककीवरवारितुंगतमालही॥ प्र
भुदेषिहरषविषादउरसुरवदतजैजैजैकरी॥ रघुवीरएकहितीरकोपिनिमेषम
हमायाहरी॥ मायाविगतकपिभालुहरषेविटपगिरिगहिसभफिरे॥ सरनि
करछाड़ेरामरावनबाहुसिरपुनिमहिगिरे॥ श्रीरामरावनसमरचरितअनेककल
पजोगावहे॥ सतसेससारदनिगमकवितेउतदपिपारनपावहे॥ दोहा॥ ताके
गुणगणकछुकहेजड़मतितुलसीदास॥ निजपौरषअनुसारजिमिमसकउ
ड़ाहिअकास॥ काटेसिरभुजबारबहुमरतनभटलंकेस॥ प्रभुक्रीडतसुरसिद्धमुनि
व्याकुलदेषिविसेष॥ ४९॥ चौपाई॥ काटतबढ़हिसीससमुदाई॥ जिमिप्रतिलाभलो
भअधिकाई॥ मरैनरिपुश्रमभयउविसेषी॥ रामविभीषनतनतबदेषी॥ उमाकाल
मरजाकीईछा॥ सोप्रभुजनकरप्रीतिपरीछा॥ सुनिसरवज्ञचराचरनायक॥ प्र

नतपालसुरमुनीसुषदायक॥ नाभिकुंडसुधाबसयाकें॥ नाथजीअतरावनबलता
के॥ सुनतविभीषनवचनकृपाला॥ हरषिगहेकरवानकराला॥ असुभहोनलागेतब
नाना॥ रोवहिषरसृकालबहुस्वाना॥ बोलहिषगजगआरतिहेत॥ प्रगटभए
नभजहांतहांकेतु॥ दसदिसिदाहहोनअतिलागा॥ भयउपरबविनरविउपरा
गा॥ मेंदोदरीउरकंपतभारी॥ प्रतिमास्रवहिनैनमगबारी॥ छंद॥ प्रतिमारुदहि
पविपातनभअतिबातबहडोलतमही॥ वरषहिवलाहकरुधिरकचरजअसुभअ
तिसककोकही॥ उतपातअमितविलोकिनभसुरविकलबोलहि॥ जयजयेसुर
सभयजानिकृपालरघुपतिचापसरजोरतभये॥ दोहा॥ षेचिसरासनश्रवनलगिछा
डेसरएकतीसरघुनायकसायकचलेमानहुकालफनीस॥ ५०॥ चौपाई॥ साय
कएकनाभिसरसोषा॥ अपरलगेसिरभुजकरिरोषा॥ लैसिरबाहुचलेनाराचा॥
सिरभुजहीनरुंडमहिनाचा॥ धरनिधसैधरधावप्रचंडा॥ तबप्रभुसरहतिकृतजु
गषंडा॥ गरजामरतघोररवभारी॥ कहांरामरनहतौंपचारी॥ डोलतभूमिगि
रतदसकंधर॥ छुभितसिंधुसरिदिगजभूधर॥ धरनिपरेउद्वौषंडबढाई॥ चापि
भालुमरकटसमुदाई॥ मंदोदरीआगेभुजसीसा॥ धरिसरचलेजहांजगदीसा
॥ प्रविसेसबनिषंगमहेआई॥ देषिसुरनदुंदुभीबजाई॥ तासुतेजसमानप्रभुआन
न॥ हरषेदेषिसंभुचतुरानन॥ जैधुनिपूरीरहिब्रह्मंडा॥ जैरघुवीरप्रबलभुजदंडा॥
बरषेसुमनदेवमुनिबृंदा॥ जैकृपालजयजयतिमुकंदा॥ छंद॥ जैकृपाकंदमुकं
ददंदहरनसरनसुषदप्रभो॥ षलदलविदारनपरमकारनकारुनीकसदाविभो॥
सुरसुमनबरषहिहरषिसंकुलबाजदुंदुभिगहगही॥ संग्रामअंगनरामअंगअ
नंगबहुसोभालही॥ सिरजटामुकटप्रसूनविचविचअतिमनोहरराजही॥ ज
नुनीलगिरिपरतडितपटलसमेतउडुगनभ्राजही॥ भुजदंडसरकोदंडफेरतरुधि
रकनतनअतिबने॥ जनरायमुनितमालपरबैठेविपुलसुषआपने॥ दोहा॥
कृपादृष्टिकरिवृष्टिप्रभुअभयकीयसुरबृंद॥ भालुकपीसबहरषेजैसुषधाम
मुकुंद॥ ५१॥ चौपाई॥ पतिसिरदेषतमेंदोदरी॥ मुरछितविकलधरनिषसि
परी॥ जुवतिबृंदरोवतउठिधाई॥ तेहिउठायरावनपहआई॥ पतिगतिदेषितेकरहिपुका
रा॥ छूटेकचनहिदेहसंभारा॥ उरताडनाकरहिविधिनाना॥ रोवतकरहिप्रतापबषाना॥
तवबलनाथडोलतितधरनी॥ तेजहीनपावकससितरनी॥ सेसकमठसहिसकहिन
भारा॥ सोतनभूमिपरेउभरिछारा॥ वरुनकुबेरसुरेससमीरा॥ रनसनमुषधरिका
हुनधीरा॥ भुजबलजीतेहुकालजमसाई॥ आजुपरेहुअनाथकीनाई॥ जगतविदि
ततुम्हारिप्रभुताई॥ सुतपरिजनबलबरनिनजाई॥ रामविमुषअसहालतुम्हारा॥
रहानकुलकोउरोवनिहारा॥ तवबसविधिप्रपंचसबनाथा॥ सभयदिसिपनितनाव
हिमाथ॥ अबतवभुजसिरजंबुकषाही॥ रामविमुषयहअनुचितनाही॥ कालविवस
पतिकहानमाना॥ अगजगनाथमनुजकरिजाना॥ छंद॥ जान्योमनुजकरिदनुज
काननदहनपावकहरिस्वयं॥ जेहिनमतसिवब्रह्मादिसुरपियभजेहुनहिकरुना
मयं॥ आजन्मतेपरद्रोहरतपापौघमयतवतनअयं॥ तुमहुदियोनिजधामराम
नमामिब्रह्मनिरामयं॥ दोहा॥ अहहनाथरघुनाथसमकृपासिंधुकोआन॥ जोगिवृंददुर्ल
भगतितोहिदीनभगवान॥ ५२॥ चौपाई॥ मंदोदरीबचनसुनिकाना॥ सुर
मुनिसिद्धसबनिसुषमाना॥ अजमहेसनारदसनकादी॥ जेमुनिवरपरमारथवा
दी॥ भरिलोचनरघुपतिहिनिहारी॥ प्रेममगनसबभयेसुषारी॥ रुदनकरतदेषी
सबनारी॥ गयउविभीषनमनदुषभारी॥ बंधुदसाविलोकिदुषकीना॥ तबप्रभुअनु
जहिआयसुदीना॥ लछिमनबहुतभांतिसमुझावा॥ बहुरिविभीषनप्रभुपहिआवा॥

वा॥ कृपादृष्टिप्रभुताहिविलोका॥ करहुक्रियापरिहरिसवसोका॥ कीनक्रियाप्रभुआ
यसुमानी॥ विधिवतदेसकालगतिजानी॥ दोहा॥ मेदोदरीआदिसवदेहितिलांजुलि
ताहि॥ भवनगइरघुवीरगुनगनवरनतमनमांहि॥ ५३॥ चौपाई॥ आइविभीषनपुनिसि
रुनावा॥ कृपासिंधुतवअनुजवुलावा॥ तुमकपीसअंगदनलनीला॥ जामवंतमारु
तनयसीला॥ सवमिलिजाहुविभीषनसाथा॥ सारेहुतिलककहेरघुनाथा॥ पि
तावचनमैनगरनजावौ॥ आपसरिसकपिअनुजपठावौ॥ तुरतचलेकपिसुनिप्र
भुवचना॥ कीनीजाइतिलककैरचना॥ सादरसिंहासनवैठारी॥ तिलककीनअस्तु
तिअनुसारी॥ जोरिपानिसवहिनसिरनाये॥ सहितविभीषनप्रभुपहआये॥ त
वरघुवीरवोलिकपिलीने॥ कहिप्रियवचनसुषीसवकीने॥ छंद॥ कियसुषीकहि
वानीसुधासमवलतुमारेरिपुहयो॥ पायोविभीषनराजतिहुपुरजसतुमारोनिति
नयो॥ मोहिसहितसुभकीरतितुमारीपरमप्रीतजोगाइहे॥ संसारसिंधुआपार
पारप्रियासविनतरिजाइहे॥ दोहा॥ स्रवनतरामकेवचनमृदुनहिअघातकपि
पुंज॥ वारहिवारविलोकिमुषगहेसिसकलपदकंज॥ ५४॥ चौपाई॥ पुनिप्रभुवो
लिलीयहनुमाना॥ लंकाजाहुकहेउभगवाना॥ समाचारजानकीसुनायहु॥ ता
सुकुसललैतमचलिआयहु॥ तवहनुमंतनगरमेंहआये॥ सुनिनिसचरीनि
साचरधाये॥ पूजावहुप्रकारतिनकीना॥ जनकसुतादेषाइतवदीना॥ दूरहितें
प्रनामकपिकीना॥ रघुपतिदूतजानकीचीना॥ कहहुतातप्रभुकृपानिके
ता॥ कुसलअनुजकपिसेनसमेता॥ सवविधिकुसलकोसलाधीसा॥ मातुसमर
जीत्योदससीसा॥ अवचलराजविभीषनपावा॥ सुनिकपिवचनहरषउरछावा॥ छं
द॥ अतिहरषमनतनपुलकलोचनसजलकहिपुनिपुनिरमा॥ कादेउतोहिंत्रै
लोकमहकपिकिमपिनहिवानीसमा॥ सुनिमातमैपायोअषिलजगराजआज
नसंसयं॥ रनजीतिरिपुदलवंधुजुतपस्यामिराममनामयं॥ दोहा॥ सुनुसुतस
दगुनसकलतवहृदैवसहिहनुमंत॥ सानुकूलरघुवंसमनिरहहुसमेतअनंत॥ ५५
चौपाई॥ अवसोइजतनकरहुतुमताता॥ देषौनैनस्याममृदुगाता॥ तवहनुमंतरा
मपहजाई॥ जनकसुताकीकुसलसुनाई॥ सुनिवानीपतंगकुलभूषन॥ वोलि
लीयजुवराजविभीषन॥ मारुतसुतकेसंगसिधावहु॥ सादरजनकसुतालेआव
हु॥ तुरतहिसकलगयजहसीता॥ सेवहिसवनिसचरिविनीता॥ वोलिविभी
षनतिनहिसिषावा॥ सादरतेहिसीतहिअनुलावा॥ दिव्यवसनभूषनपहराये
सिविकारुचिरसाजिपुनिल्याये॥ तापरहरषिचढीवैदेही॥ सुमरिरामसुषधाम
सनेही॥ वेतपानिरछकचहुपासा॥ चलेसकलमनपरमहुलासा॥ देषनभालुकी
ससवआये॥ रछककोपिनिवारनधाये॥ कहरघुवीरकहाममम्मानहु॥ सीतहिस
षापयादहिआनहु॥ देषहिकपिजननीकीनाई॥ विहसिकहारघुवीरगुसाई॥
सुनिप्रभुवचनभालुकपिहरषे॥ नभतेसुरनसुमनवहुवरषे॥ सीताप्रथमअन
लमहराषी॥ प्रगटकीनचहअंतरसाषी॥ दोहा॥ तेहिकारनकरुनायतनकहे।
कछुकदुरवाद॥ सुनतजातुधानीसकललागीकरनविषाद॥ ५६॥ चौपाई॥ प्र
भुकेवचनसीसधरिसीता॥ वोलीमनक्रमवचनपुनीता॥ लछिमनहोहुधरम
केनेगी॥ पावकप्रगटकरहुतमवेगी॥ सुनिलछिमनसीताकरवानी॥ विरह
विवेकधरमनयसानी॥ लोचनसजलजोरिकरदोऊ॥ प्रभुसनकछुकहिसकत
नओऊ॥ देषिरामरुषलछिमनधाये॥ पावकप्रगटिकाठवहुल्याये॥ प्रवलअ
नलविलोकिवैदेही॥ हृदैहरषकछुभयनहितेही॥ जोमनवचनक्रमउर

माही॥ तजिरघुवीरआनगतिनाही॥ तोकृसानसवकीगतिजाना॥ मोकहहोउश्रीषं
डसमाना॥ छंद॥ श्रीषंडसमपावकप्रवेसकियासुमिरिप्रभुमैथिली॥ जैकोसलेस
महेसवंदितचरनरतिअतिनिरमली॥ प्रतिविंवअरुलौकिककलंकप्रचंडपावक
कमहजरे॥ प्रभुचरितकाहुनलषिपरेसुरसिद्धमुनिदेषहिषरे॥ धरिरूपपावक
रूपकरिगहिसत्यश्रीश्रुतिविदितिजो॥ जिमिछीरसागरइंदिरारामहिसमर्पीआ
निसो॥ सोइरामवामविभागराजतरुचिरअतिसोभाभली॥ नवनीलनीरजनिक
टमानकनकपंकजकीकली॥ दोहा॥ हरषितसुमनवरषहिविवुधवाजहिगगननि
सान॥ गावहिकिंनरअपछरानाचहिचढीविमान॥ श्रीजानकीसमेतप्रभुसो
भाअमितअपार॥ देषतहरषेभालुकपिजैरघुपतिसुषसार॥ ५७॥ चौपाई॥ तवरघु
पतिअनुसासनपाई॥ मातलचलेउसवहिसिरनाई॥ आयेदेवसदास्वारथी॥ वचन
कहहिजनुपरमारथी॥ दीनवंधुदयालरघुराया॥ देवकीनदेवनपरदाया॥ विस्वद्रो
हरतियहषलकामी॥ निजअघगयउकुमारगगामी॥ तुमसमरूपब्रह्मअविनासी
सदाएकरससहजउदासी॥ अकलअगुनअजअनघअनामय॥ अजितअमोघस
क्तिकरुनामय॥ मीनकमठसूकरनरहरी॥ वावनपरसरामवपुधारी॥ जवजवना
थसुरनदुषपावा॥ नानातनुधरितमहिनसावा॥ रावनपापमूलसुरद्रोही॥ काम
लोभमदरतिअतिकोही॥ सोउकृपालतवधामसिधावा॥ यहहमरेमनविसमैआ
वा॥ हमदेवतापरमअधिकारी॥ स्वारथरततवभक्तिविसारी॥ भवप्रवाहसंतत
हमपरे॥ अवप्रभुपाहिसरनअनुसरे॥ दोहा॥ करिविनतीसुरसिधसवनिरहेजहंत
हेकरजोरि॥ अतिसप्रेमसरोजभवअस्तुतिकरतवहोरि॥ छंद॥ जैरामसदासु
षधामहरे॥ रघुनायकसायकचापधरे॥ भववारनदारनसिंहप्रभो॥ गुनसागर
नाथविभोतनकामअनेकअनूपछवि॥ गुनगावतसिद्धमुनिंद्रकवी॥ जसपा
वनरावननागमहा॥ षगनाथजथाकरिकोपगहा॥ जनरंजनभंजनसोकभ
यं॥ गतक्रोधसदाप्रभुवोधमयं॥ अवतारउदारअपारगुनं॥ महिभारविभंजनग्यान
घनं॥ अजव्यापकमेकमनादिसदा॥ करुनाकररामनमामिमुदा॥ रघुवंसविभू
षनदूषनहा॥ कृतभूपविभीषनदीनरहा॥ गुनग्याननिधानअमानअजं॥ नि
तरामनमामिविभुंविरजं॥ भुजदंडप्रचंडप्रतापवलं॥ षलवृंदनिकंदमहाकुस
लं॥ विनकारनदीनदयालहितं॥ छविधामनमामिरमासहितं॥ भवतारनका
रकाजपरं॥ मनसंभवदारुनदोषहरं॥ सरचापमनोहरत्रोनधरं॥ जलजारुन
लोचनभूपवरं॥ सुषमंदिरसुंदरश्रीरमनं॥ मदमारमुधाममतासमनं॥ अनव
द्यअषंडनगोचरगो॥ सवरूपसदासवहोइनगो॥ इतिवेदवदंतिनदंतकथा॥ रवि
आतपभिन्नमभिन्नजथा॥ कृतकृत्यविभोसववानरए॥ निरषंतितवाननसादरए॥
धिगजीवनदेवसरीरधरे॥ तवभक्तिविनाभवभूलिपरे॥ अवदीनदयालदयाकरि
ये॥ मतिमोरिविभेदकरीहरिये॥ जेहितेविपरीतिक्रियाकरिये॥ दुषसोसुषमानि
सुषीचरिये॥ षलषंडनमंडनरम्यछमा॥ पदपंकजसेवितसंभुउमा॥ नृपनायक
देवरदानमिदं॥ चरनांवुजप्रेमसदासुभदं॥ दोहा॥ विनयकीनविधिवारवहुप्रे
मपुलकिअतिगात॥ वदनविलोकतरामकरलोचननहिअघात॥ ५८॥ चौपाई॥
तेहिअवसरदसरथतहआये॥ तनयविलोकिनैनजलछाये॥ सहितअनुज
प्रनामप्रभुकीना॥ आसिरवादपितातवदीना॥ तातसकलतवपुन्यप्रभाउ॥
जीत्योअजैनिसाचरराउ॥ सुनिसुतवचनप्रीतिअतिवाढी॥ नयनसरोरुहरोमा
वलिठाढी॥ रघुपतिपितहिप्रेमअनुमाना॥ चितैपितहिदीनेउदृढग्याना॥ तातेउ

मामोहतनहिभयऊ॥ दसरथभेदभक्तिवरलयऊ॥ सगुनउपासिकमोक्षनलेही॥ तिन
कहुरामभक्तिनिजदेही॥ वारवारकरिप्रभुहिप्रनामा॥ दसरथहरषिगयउसुरधामा
दोहा॥ अनुजजानकीसहितप्रभुकुसलकौसलाधीस॥ सोभाविलोकिमनहरष
अति॥ अस्तुतिकरसुरईस॥ छंद॥ जयेरामसोभाधाम॥ दायकप्रनतविश्राम॥ धृत
त्रोनवरसरचाप॥ भुजदंडप्रवलप्रताप॥ जयेदूखनारिषरारी॥ मर्दननिसाचरधा
रि॥ एहदुष्टिमारेउनाथ॥ भयेदेवसकलसनाथ॥ जयहरनधरनीभार॥ महि
माउदारअपार॥ जयरावनारिकृपाल॥ कीयजातुधानविहाल॥ लंकेसअतिव
लगर्व॥ कीयेवस्यसुरगंधर्व॥ मुनिसिद्धखगनरनाग॥ हठिपंथसवकेलाग॥
परद्रोहरतिअतिदुष्टि॥ पायोसोफलपापिष्टि॥ अववसुनउदीनदयाल॥ राजीव
नैनविसाल॥ मोहिरहाअतिअभिमान॥ नहिकोउमोहिसमान॥ अवदेषिप्र
भुपदकंज॥ गतमानदुषप्रदपुंज॥ कोउब्रह्मनिरगुनध्याव॥ अव्यक्तजेहिश्रुति
गाव॥ मोहिभावकोसलभूप॥ श्रीरामसगुनसरूप॥ वैदेहिअनुजसमेत॥ ममहृ
दैकरहुनिकेत॥ मोहिजानियेनिजदास॥ देहभक्तिरमानिवास॥ छंद॥ देहुभ
क्तिरमानिवासत्रासहरनसरनसुषदायकं॥ सुषधामराममनामिकामअनेक
छविरघुनायकं॥ सुरवृंदरंजनद्वंदभंजनमनुजतनुअतुलितवलं॥ ब्रह्मादि
संकरसेव्यराममनामिकरुनाकोमलं॥ दोहा॥ अवकरिकृपाविलोकिमोहिआ
यसुदेहुकृपाल॥ कहासुनिसुनिप्रियेवचनवोलेदीनदयाल॥ ५९॥ चौपाई॥
सुनिसुरेसकपिभालुहमारे॥ परेभूमिनिसचरनजेमारे॥ ममहितलागितजेउन
प्राना॥ सकलजिआउसुरेसुसजाना॥ सुनिषगपतिप्रभुकीयहवानी॥ अतिअ
गाधजानहिमुनिज्ञानी॥ प्रभुसकत्रिभुवनमारिजीआई॥ केवलसक्रहिदीन
वडाई॥ सुधावरषिकपिभालुजिआये॥ हरषिउठेसवप्रभुपहआये॥ सुधाह
रिभईदुहुदलऊपर॥ जीयेभालुकपिनहिरजनिचर॥ रामाकाररभयेतिनकेम
न॥ गएब्रह्मपदतजिसरीरन॥ सुरअंसिकसवकपिअरुरीछा॥ जीयेसकलर
घुपतिकीईछा॥ रामसरिसकोदीनहितकारी॥ कीन्हेमुक्तिनिसाचरझारी॥
षलमलधामकामरतरावन॥ गतिपाईजोमुनिवरपावन॥ दोहा॥ सुम
नवरषिसवसुरचले॥ चढिचढिरुचिरविमान॥ देषिसुअवसररामपहआ
येसंभुसुजान॥ ६०॥ चौपाई॥ नंदीवढेमहागनसंगा॥ सोभितनमालगोरीअर
धंगा॥ झलकगंगासिरचंद्रललारा॥ नीलकंठछविगरलकीछारा॥ करध
परसिरनरउरमाला॥ अहिकुलपतिअंगिगरेविसाला॥ तीननैनसिरजटावि
राजे॥ सेनविभूतिदेहिपछाजे॥ डिमकडिमकडमरूकरूवाजै॥ भ्रिंगिगरेमृग
छालविराजे॥ तरुनअरुनजलजसमचरना॥ नषदुतिभक्तिहृदेतमहरना॥ मलिमथ
त्रिभुनिभुवनत्रिपुरारी॥ आनलसरदवेदछविहारी॥ शंभुविश्वमोहकामा
रिपुकैसैं॥ धरेसरीरसातरसजैसे॥ दोहा॥ नासलेकपतिमनसवदेकोमला
धीस॥ सतलायमंगवंगनगणनहोगोरीस॥ परमप्रीतिकरजोरिजुगनलि
ननैनभरिवारि॥ पुलकिततनगदगदगिराविनयकरतत्रिपुरारि॥ ६१॥ चौपाई
॥ मामभिरक्षयरघुकुलनायक॥ धृतवरचापरुचिरकरसायक॥ मोहम
हाघनपटलप्रभंजन॥ संसैविपिनअनलसुररंजन॥ सगुनअगुनगुनमंदिर
सुंदर॥ भ्रमतमप्रवलप्रतापदिवाकर॥ कामक्रोधमदगजपंचानन॥ वसहु
निरंतरजनमनकानन॥ विषयमनोरथपुंजकंजवन॥ प्रवलतसारअपारपा
रषारसमनभववारिधिमंदिरपरमंदर॥ वारयतारयसंसृतदुस्तर॥ स्यामगातराजी

वविलोचन॥ दीनवंधुप्रनतारतमोचन॥ अनुजजानकीसहितनिरंतर॥ वसहु
रामनृपममउरअंतर॥ मुनिरंजनमहिमंडनमंडन॥ तुलसीदासप्रभुत्रास
निषंडन॥ दोहा॥ नाथजवहिकोसलपुरहोइहितिलकतुम्हार॥ तवहिआउ
वोसुनहुप्रभुदेषनवारनउदार॥ ६२॥ चौपाई॥ करिविनतीजवसंभुसिधाए॥
तवप्रभुनिकटविभीषनआए॥ नाइचरनसिरकहमृदुवानी॥ विनयसुनहु
प्रभुसारंगपानी॥ सकुलसदलप्रभुरावनमारा॥ पावनजसत्रिभुवनवि
सतारा॥ दीनमलीनहीनमतिजाती॥ मोपरकृपाकीनवहुभांती॥ अवजनग्रह
पुनीतप्रभुकीजे॥ मंजनकरयसकलश्रमछीजे॥ देषकोसमंदिरसवसंपद॥ देहुक
कृपालकपिनकहुमुदा॥ सवविधिनाथमोहिअपनाई॥ पुनिमोहिसहितअवधि
पुरजाई॥ सुनतवचनप्रभुदीनदियाला॥ सजलभयेदोउनेनविसाला॥ दोहा॥ तोर
कोसग्रहमोरसवसत्यवचनसुनुभ्रात॥ दसाभरतकीसमरिमोहिनिमषकल्पसमजा
त॥ तापसवेषसरीरकृसजपतनिरंतरमोहि॥ देषोंवेगिसोजतनुकरुसषानिहोरोते
हि॥ २॥ जौजैहौंविनेअवधिजीयतनपावौवीर॥ प्रीतिभरतकेसमुझिप्रभुपुनिपुल
कसरीर॥ ३॥ करेउकलपभरिराजतममोहिसुमरेहुमनमाहि॥ पुनिममधा
मसिधाइहउजहांसंतसभजाहि॥ ६३॥ चौपाई॥ सुनतविभीषनवचनरामके॥ ह
रषिगहेपदकृपाधामके॥ वानरभालुसकलहरषाने॥ गहिप्रभुपदगुनवि
मलवषाने॥ वहुरिविभीषनभवनसिधावा॥ मनिगनवसनविमानभरावा॥
लैपुष्पकप्रभुआगेराषा॥ हसिकरिकृपासिंधुतवभाषा॥ चढिविमानसुनुस
षाविभीषन॥ गगनजाइवरषहुपटभूषन॥ नभपरजाइविभीषनतवही॥ वरषि
दीयपटभूषनजवही॥ जोइजोइमनभावैसोइलेही॥ मनिमुषमेलिडारिकपि
देही॥ हसेरामश्रियअनुजसमेता॥ परमकौतकीकृपानिकेता॥ दोहा॥ ध्या
नतपावहिजाहिमुनिनेतिनेतिकहैवेद॥ कृपासिंधुसोइकपिनसनकरत
अनेकविनोद॥ १॥ उमाजोगजपदानतपनानाव्रतमषनेम॥ रामकृपानहिकर
हितससजसनिहकेवलप्रेम॥ ६४॥ चौपाई॥ भालुकपिनपटभूषनपाये॥ पहरिपह
रिरघुपतिपहआये॥ नानाजिनसिदेषिप्रभुकीसा॥ पुनिपुनिहसतकोसलाधी
सा॥ चितैसवनपरकीनीदाया॥ वोलेमृदुलवचनरघुराया॥ तुमरेवलमैरावन
मारा॥ तिलकविभीषनकहुपुनिसारा॥ निजनिजग्रहतुमसवअवजाहू॥ सु
मिरहुमोहिडरपहुजनिकाहू॥ वचनसुनतप्रेमाकुलवानर॥ पानिजोरिवोले
सवसादर॥ प्रभुजोकरहुतुमहिनहिसोहा॥ हमरेहोतवचनसुनिमोहा॥ दीन
जानीकपिकीयेसनाथा॥ तुमत्रैलोकईसरघुनाथा॥ सुनिप्रभुवचनलाजहम
मरही॥ मसकहुहुषगपतिहितकरही॥ देषिरामरुषवानररीछा॥ प्रेममग
नहिगृहकीईछा॥ दोहा॥ प्रभुप्रेरनकपिभालुसवरामरूपउरराषि॥ हरष
विषादसमेतनवचलेविनयवहुभाषि॥ १॥ जामवंतकपिराजनलअंगदादिह
नुमान॥ सहितविभीषनअपरजेजूथपकपिवलवान॥ २॥ कहिनसकहि
कछुप्रेमवसभरिभरिलोचनवारि॥ सनमुषचितवहिरामकेतननिमेषनि
वारि॥ ६५॥ चौपाई॥ अतिसैप्रेमदेषिरघुराई॥ लीयोसकलविमानचढाई॥ मनम
हुविप्रचरनसिरनावा॥ उतरदिसाविमानचलावा॥ चलतविमानकोलाहलहो
ई॥ जयरघुवीरकहैसभकोई॥ सिंहासनअतिउचमनोहर॥ सियसमेतवैठेप्रभुता
पर॥ राजतरामसहितसभाभिनी॥ मेरुकेसिंगजनुघनदामिनी॥ रुचिरवि

मानवलोउप्रतिपालतर॥ कीन्हीमनहुहिहरषेसर॥ परमसुषदचलितिविविधवयारी॥
सागरसरसरिनिर्मलवारी॥ सगुनहोहिसुंदरचहुपासा॥ मनप्रसंन्यनिर्मलनभआ
सा॥ कहरघुवीरदेषुरनसीता॥ लछिमनइहाहत्योइंद्रजीता॥ हनुमानअंगदकेमा
रे॥ रनमहिपरेनिसाचरभारे॥ कुंभकरनरावनदोउभाई॥ इहाहतेसुरमुनिदुषदाई॥
दोहा॥ इहासेतुवांध्योअरुथापेउसिवसुषधाम॥ सीतासहितकृपायतनसं
भुहिकीनप्रनाम॥१॥ जहाजहाकरुनासिंधुवनकीनवासविश्राम॥ सकलदि
षायजानकीहिकहेसवनकेनाम॥ ६८॥ चौपाई॥ तुरतविमानतहाचलिआ
वा॥ दंडकवनजहापरमसुहावा॥ कुंभजादिमुनिनायकनाना॥ गयरामसवके
अस्थाना॥ सकलरिषिनसनपाइअसीसा॥ चित्रकोटआयेजगदीसा॥ तहाक
रिमुनिनकेरसंतोषा॥ चलाविमानतहातेचोषा॥ वहोरिरामजानकिहिदिषा
ई॥ जमुनाकलिमलहरनिसुहाई॥ पुनिदेषीसुरसरीपुनीता॥ रामकहाप्र
नामकरुसीता॥ तीरथपतिपुनिदेषुप्रयागा॥ देषतजनमकोटिअघभागा॥ दे
षुपरमपावनिपुनिवेनी॥ हरनसोकहरिलोकनिसेनी॥ पुनिदेषुअवधपुरीअ
तिपावनी॥ त्रिविधितापभवरोगनसावनी॥ दोहा॥ तवरघुनाथकसियसहितअ
वधहिकीनप्रनाम॥ सजलविलोचनपुलकितनपुनिपुनिहरषतराम॥१॥ वहु
रित्रिवेनीहिआयप्रभुहरषितमज्जनकीन॥ कपिनसमेतमहीसुरनकहदानविवि
धिविधिदीनी॥ ६९॥ चौपाई॥ प्रभुहनुमंतहिकहाबुझाई॥ धरिवटरूपअवधपुर
जाई॥ भरतहिकुसलहमारिसुनायहु॥ समाचारलैतुमचलिआयहु॥ तुरतपव
नसुतगमनतभयऊ॥ तवप्रभुभारद्वाजपहगयऊ॥ नानाविधिमुनिपूजाकी
नी॥ अस्तुतिकरिपुनिआसिषदीनी॥ पुनिपदवंदिजुगलकरजोरी॥ चढिवि
मानप्रभुचलेवहोरी॥ इहानिषादसुनाप्रभुआये॥ नावनावकहिलोगवुला
ये॥ सुरसरीलांघिजानतवआवा॥ उतरेउतटप्रभुआयसुपावा॥ तवसीताप
जीसुरसरी॥ वहुप्रकारपुनिचरननपरी॥ दीनअसीसहरषिमनगंगा॥ सुंद
रितवअहिवातअभंगा॥ सुनतगुहाधायउप्रेमाकुल॥ आयोनिकटपरमसुष
संकुल॥ प्रभुहिसहितविलोकिवैदेही॥ परेउअवनितनसुधिनहितेही॥ प्रीतिप
रमविलोकिरघुराई॥ हरषिउठाइलीयउउरलाई॥ छंद॥ लीयोहृदैलाइकृपानि
धानसुजानरामरमापती॥ वैठारिपरमसमीपवूझीकुसलसोकरवीनती॥ अ
वकुसलपदपंकजविलोकेनविरंचिसंकरसेयते॥ सुषधामपूरनकामराममन
मामिराममनमामिते॥ सवभातिअधमनिषादसोहरिभरतज्योउरलाइयो॥
मतिमंदतुलसीदाससोप्रभुमोहवसविसराइयो॥ यहरावनारिचरित्रपा
वनरामपदरतिप्रदसदा॥ कामादिहरविग्यानकरसुरसिद्धमुनिगावहिमु
दा॥ दोहा॥ समरविजैरघुपतिचरितसुनहिजेसदासुजान॥ विजैविवेकविभू
तितिनहिदेहिभगवान॥१॥ यहकलिकालमलायतनमनकरिदेषिविचा
र॥ श्रीरघुनायकनाममनतजिनहिकछुआनअधार॥ ७०॥ इतिश्रीरामचरित्रमा
नसेसकलकलिकलुषविध्वंसनेविमलविग्यानसंपादनोनामषष्टमसोपान
लंकाकांडसमाप्त॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

॥ श्रीमतेरामानुजायनमः॥ श्रीकेकीकंठाभनीलंसुरवरविलसद्विप्रपा
दाब्जचिन्हं॥ शोभाढ्यंपीतवस्त्रंसरसिजनयनंसर्वदासुप्रसन्नं॥ पाणौनाराच
चापंकपिनिकरयुतंवंधुनासेव्यमानं॥ नौमीड्यंजानकीसंरघुवरमनिसं
पुष्पकारूढरामं॥१॥ कोसलेंद्रपदकंजमंजुलौकोमलावजमहेसवंदितौ॥
जानकीकरसरोजलालितौचिंतकस्यमनभृंगसंगिनौ॥२॥ कुंदइंदुदरगौ
रसुंदरंअंविकापतिमभीष्टसिद्धिदं॥ कारुणीककलकंजलोचनंनौमिसं
करमनंगमोचनं॥३॥ दोहा॥ रहाएकदिनअवधिकरअतिआरतपुरलो
ग॥ जहंतहंसोचहिनारिनरकृसतनरामवियोग॥ सगुनहोहिसुंदरस
कलमनप्रसंन्यसवकेर॥ प्रभुआगवनजनावजनुनगररम्यचहुफेर॥ कौ
सल्यादिमातुसवमनआनंदअसहोइ॥ आयउप्रभुश्रीअनुजजुतक
हनचहतअवकोइ॥ भरतनयनभुजदछिनफरकतवारहिवार॥ जानिस
गुनमनहरषअतिलागेकरनविचार॥१॥ चौपाई॥ रहेउएकदिनअवधिअ
धारा॥ समुझतमनदुषभयउअपारा॥ कारनकवननाथनहिआयउ॥ जानि
कुटिलकिधौमोहिविसराउ॥ अहहधन्यलछिमनवडभागी॥ रामपदारवि
दअनुरागी॥ कपटीकुटिलमोहिप्रभुचीन्हा॥ तातेनाथसंगनहिलीन्हा॥
जोकरनीसमुझैप्रभुमोरी॥ नहिनिस्तारकलपसतकोरी॥ जनअवगुन
प्रभुमाननकाउ॥ दीनवंधुअतिमृदुलसुभाउ॥ मोरेजीयभरोसदृढसो
ई॥ मिलिहहिरामसगुनसुभहोई॥ वीतेंअवधिरहहिजोप्राना॥ अधमकवन
जगमोहिसमाना॥ दोहा॥ रामविरहसागरमहभरतमगनमनहोत॥ वि
प्ररूपधरपवनसुतआइगयउजनुपोत॥ वैठेदेषिकुसासनजटामुकुटकृस
गात॥ रामरामरघुपतिजपतस्रवतनयनजलजात॥२॥ चौपाई॥ देषत
हनुमानअतिहरषेउ॥ पुलकगातलोचनजलवरषेउ॥ मनमहुवहुतभाति
सुषमानी॥ वोल्यश्रवनसुधासमवानी॥ जासुविरहसोचहुदिनराति॥ रट
हुनिरंतरगुनगनपाती॥ रघुकुलतिलकसुजनसुषदाता॥ आएउकुसलदेवमु
नित्राता॥ रिपुरनजीतिसुजससुरगावत॥ सीतासहितअनुजप्रभुआवत॥
सुनतवचनविसरेसवदुषा॥ तृषावंतजनुपाइपियूषा॥ कोतुमतातकहातेआ
ये॥ मोहिपरमप्रियवचनसुनाये॥ मारुतसुतमेंकपिहनुमाना॥ नाममो
रसुनुकृपानिधाना॥ दीनवंधुरघुपतिकरकिंकर॥ सुनतभरतभेटेउउठि
सादर॥ मिलतप्रेमनहिहृदयसमाता॥ नयनस्रवतजलपुलकितगाता॥
कपितवदरससकलदुषवीते॥ मिलेआजुमोहिरामपिरीते॥ वारवारवू
झीकुसलाता॥ तोकहुदेउकाहसुनभ्राता॥ यहसंदेससरिसजगमाही॥ क
रिविचारदेषेउकछुनाही॥ नाहीनतातउरिनमैतोही॥ अवप्रभुचरितसुना
वहुमोहि॥ कहुकपिकवहुकृपालगुसाई॥ सुमिरहिमोहिदासकीनाई॥ त
वहनुमंतनाइपदमाथा॥ कहेसकलरघुवरगुनगाथा॥ छंद॥ निजदा
सज्योंरघुवंसभूषनकवहुममसुमिरनकर्यो॥ सुनिभरतवचनविनीत
अतिकपिपुलकतनचरननिपर्यो॥ रघुवीरनिजमुषजासुगुनगनकह
तअगजगनाथजो॥ काहेनहोइविनीतपरमपुनीतसद्गुनसिंधुसो॥ दो
हा॥ रामप्रानप्रियनाथतुमसत्यवचनममतात॥ पुनिपुनिमिलतभरतसु

निरखबदनहृदयसमान॥ सो॥ रा॥ भरतचरनसिरनाइतुरितगएउकपि
रामपहि॥ कहीकुसलसबजाईहरषिचलेप्रभुजानचढि॥१॥ चौ॥ ई॥ हर
षिभरतकोसलपुरआए॥ समाचारसबगुरहिसुनाए॥ सुनतवसिष्ठमु
खकरलीन्हा॥ जयजयरघुवरसुचिरवकीन्हा॥ सुनिगुरुसाहसंखगभी
रा॥ आयेअवधवरखवेमतीधीरा॥ पुनिमंदिरमहवातजनाई॥ आवतनग
रकुसलरघुराई॥ सुनतसकलजननीउठिधाई॥ कहीप्रभुकुसलभरत
समुझाई॥ समाचारपुरवासिन्हपाए॥ नरअरुनारिहरषिउठिधाए॥ दधि
दुर्वारोचनफलफूला॥ नवतुलसीदलमंगलमूला॥ भरिभरिथारहेमसम
भामिनी॥ गावतचलीसिंधुरगामिनी॥ जोजैसेतैसेहिउठिधाई॥ बाल
बूढकोईसंगनलाई॥ एकएकनसनबूझतधाई॥ तुम्हदेखेदयालरघुराई॥
अवधपुरीप्रभुआवतजानी॥ भईसकलसोभाकेखानी॥ भईसरजूअति
निर्मलनीरा॥ वहैसोहावनत्रिविधिसमीरा॥ दो॥ हरषितगुरपरिजनअ
नुजभूसुरवृंदसमेत॥ चलेभरतअतिप्रेममन॥ सनमुखकृपानिकेत॥ ब
हुतकचढीअटारीन्ह॥ निरखहिगगनविमान॥ देखिमधुरस्वरहरषितकर
हीसुमंगलगान॥३॥ दो॥ राकाससिरघुपतिपुरसिंधुदेखिहरषान
बढ्योकोलाहलकरतजनुनारितरंगसमान॥४॥ चौ॥ ई॥ इहांभानुकु
लकमलदिवाकर॥ कपिन्हदेखावतनगरमनोहर॥ सुनुकपीसअंगद
लंकेसा॥ पावनपुरीरुचिरयहदेसा॥ जद्यपिसववैकुंठवखाना॥ वेदपुरा
नविदितजगसवजाना॥ अवधसरिसप्रियमोहिनसोऊ॥ यहप्रसंगजानैकोउ
कोऊ॥ जन्मभूमिममपुरीसोहावनि॥ उत्तरदिसिवहसरजूपावनि॥ जा
मंजनतैंविनहिंप्रयासा॥ ममसमीपनरपावहिवासा॥ अतिप्रियमोहि
इहांकेवासी॥ ममधामदापुरीसुखरासी॥ हरषेकपिसवसुनिप्रभुवा
नी॥ धन्यअवधजोरामवषानी॥ दो॥ आवतदेषिलोगसवकृपासिं
धुभगवान॥ नगरनिकटप्रभुप्रेरीउतरेउभूमिविमान॥५॥ दो॥ उत
रकहेउप्रभुपुष्पकहितुम्हकुवेरपहिंजाहु॥ प्रेरितरामचलेउसोहर
षविरहुअतिताहु॥६॥ चौ॥ ई॥ आएभरतसंगसवलोगा॥ कृसतनश्रीरघुवीरवि
योगा॥ वामदेववसिष्ठमुनिनायक॥ देषेप्रभुमहीधरिधनुसायक॥ धाइधरेगुरच
रनसरोरुह॥ अनुजसहितअतिपुलकतनोरुह॥ भेटिकुसलपूछीमुनिराया॥ हम
रेकुसलतुम्हारीदाया॥ सकलद्विजन्हमिलिनायोमाथा॥ धर्मधुरंधररघुकुल
नाथा॥ गहेभरतपुनिप्रभुपदपंकज॥ नमतजिन्हहिसुरमुनिसंकरअज॥ परेभूमिन
हिंउठतउठाए॥ वरकरिकृपासिंधुउरलाए॥ स्यामलगातरोमभएठाढे॥ नवराजी
वनैनजलवाढे॥७॥ छं॥ राजीवलोचनश्रवतजलतनललितपुलकावलीवनी
अतिप्रेमहृदयलगाइ॥ अनुजहिमिलेप्रभुत्रिभुवनधनी॥ प्रभुमिलतअनुज
हिसोहमोपहिंजातिनहिंउपमाकही॥ जनुप्रेमअरुसिंगारतनुधरिमिलेव
रसुखमानही॥ बूझतकृपानिधिकुसलभरतहिवचनवेगनआवई॥ सुनुसिवा
सोसुखवचनमनतेंभिन्नजानसोपावई॥ अवकुसलकोसलनाथआरतिजानि
जनदरसनदियो॥ बूडतविरहवारीसकृपानिधानमोहिकरगहिलियो॥ दो॥
पुनिप्रभुहरषिसत्रुहनभेटेहृदयलगाइ॥ लछिमनभरतमिलेतवपरम
प्रेमदोउभाई॥ सधनचोरमगमहितमनधनीगहिज्योफेर॥ त्योसुग्रीवविभी

धनहिमनुभवतसोभेट॥५॥ चौ॥ ई॥ भरतानुजलछिमनपुनिभेटे॥ दुसहविरह
संभवदुषमेटे॥ सीताचरनभरतसिरनावा॥ अनुजसमेतपरमसुषपावा॥ प्रभुवि
लोकिहरषेपुरवासी॥ जनितविजोगविपतिसवनासी॥ प्रेमातुरसवलोगनिहारी॥
कौतुककीनकृपालषरारी॥ अमितरूपप्रगटेतेहिकाला॥ जथाजोगमिलेसव
हिकृपाला॥ कोईकोईमिलेवारउरचारि॥ पुनिपुनिपूछेकुसलखरारि॥ कृपा
दृष्टिरघुवीरविलोकी॥ कियेसकलनरनारिविसोकी॥ छनमहसवहिमिलेभ
गवाना॥ उमामरमयहकाहुनजाना॥ एहनहीकछुप्रभुकिप्रभुताई॥ विस्वरूप
व्यापकरघुराई॥ एहिविधिसवहिसुषीकरिरामा॥ आगेंचलेसीलगुनधामा॥ कौ
सल्यादिमातुसवधाई॥ निरषिवच्छजनुधेनलवाई॥ छं॥ जनुधेनुवालकवछ
तजिगृहचरनवनपरवसगई॥ दिनअंतपुररुषस्रवतथनहुंकाररकिधावति
भई॥ अतिप्रेमप्रभुसवमातभेटी वचनमृदुवहुविधिकहे॥ गइविषमविपतिवि
योगभवतिन्हहरषसुषअगनितलहे॥ दो॥ भेटेउतनयसुमित्रारामचरनरति
जानि॥ रामहिमिलतकेकईहृदयवहुतसकुचानि॥ लछिमनसवमातन्हमि
लिहरषेआसिषपाइ॥ कैकेईकहपुनिपुनिमिलेमनकरछोभनजाइ॥६॥ चौ॥
ई॥ सासुन्हसवनिमिलीवैदेही॥ चरननलागिहरषअतितेही॥ देहिअसीस
वूझिकुसलाता॥ होउअचलतुम्हारअहिवाता॥ सवरघुपतिमुषकमलविलो
कहिं॥ मंगलजानिनयनजलरोकहिं॥ कनकथारआरतिउतारहिं॥ वारवारप्रभु
गातनिहारहिं॥ नानाभांतिनिछावरिकरहीं॥ परमानंदहरषउरभरहीं॥ कौ
सल्यापुनिपुनिरघुवीरहि॥ चितवतकृपासिंधुरनधीरहि॥ हृदयविचारतिवा
रहिंवारा॥ कवनभांतिलंकापतिमारा॥ अतिसुकुमारजुगलमेरेवारे॥ निसच
रसुभटमहावलभारे॥ दो॥ लछिमनअरुसीतासहितप्रभुहिविलोकतिमा
तु॥ परमानंदमगनमनपुनिपुनिपुलकितगातु॥७॥ चौ॥ ई॥ लंकापतिकपि
सनलनीला॥ जामवंतअंगदसुभसीला॥ हनुमदादिसववानरवीरा॥ धरेम
नोहरमनुजसरीरा॥ भरतसनेहसीलव्रतनेमा॥ सादरसववरनहिंअतिप्रेमा॥
देखीनगरवासिन्हकैरीती॥ सकलसराहहिंप्रभुपदप्रीती॥ पुनिरघुपतिसवस
खावोलाये॥ मुनिपदलागहुसकलसिखाये॥ गुरवसिष्टकुलपूज्यहमारे॥ इन्ह
कीकृपादनुजरनमारे॥ एसवसखासुनहुमुनिमेरे॥ भएसमरसागरकहंवे
रे॥ ममहितलागिजन्मइनहारे॥ भरतहुतेंमोहिअधिकपिआरे॥ सुनिप्रभुव
चनमगनसवभये॥ निमिषनिमिषउपजतसुषनये॥ दो॥ कौसल्याकेच
रनन्हिपुनितिन्हनायउमाथ॥ आसिषदीन्हेउहरषितुम्हममजिमिप्रियर
घुनाथ॥ सुमनवृष्टिनभसंकुलभवनचलेसुषकंद॥ चढीअटारिन्हदेष
हिंनगरनारिनरवृंद॥ चौ॥ ई॥ कंचनकलसविचित्रसवारे॥ सवहिंधरेसजि
निजनिजद्वारे॥ वंदनिवारपताकाकेतू॥ सवनिवनायमंगलहेतू॥ वीथि
सकलसुगंधसिंचाई॥ गजमनिरचिवहुचौकपुराई॥ नानाभांतिसुमंग
लसाजे॥ हरषितनगरनिसानवहुवाजे॥ जहंतहंनारिनिछावरिकरहीं॥ देहिं
असीसहरषिउरभरहीं॥ कंचनथारआरतीनाना॥ जुवतिन्हसजैकरहिंसु
भगाना॥ करहिंआरतीआरतहरकी॥ रघुकुलकमलविपिनदिनकरकी॥
पुरसोभासंपतिकल्याना॥ निगमसेषसारदावषाना॥ तेउयहचरितदेषिठ
गिरहहीं॥ उमातासुगुननरकिमिकहहीं॥ दो॥ नारिकुमुदिनीअवधस
ररघुपतिविरहदिनेस॥ अस्तभएविगसतभईनिरषिरामराकेस॥ होहिं

सगुनसभविविधिविधिबाजहिंगगननिसान ॥ पुरनरनारिसनाथकरिभव
नचलेभगवान ॥ दो० ११ ॥ प्रभुजानीकैकेइलजानी ॥ प्रथमतासुगृहगएभवानी
ताहिप्रबोधिबहुतसुखदीना ॥ पुनिनिजभवनगवनहरिकीन्हा ॥ कृपासिंधु
तबमंदिरगए ॥ पुरनरनारिसुषीसबभए ॥ गुरबसिष्टद्विजलीयेबोलाई ॥ आ
जसुघरीसुदिनसुषदाई ॥ सबद्विजदेहुहरषिअनुसासन ॥ रामचंद्रबैठे
सिंहासन ॥ मुनिबसिष्टकेबचनसुहाये ॥ सुनतसकलबिप्रन्हअतिभाये ॥ क
हहिंबचनमृदुबिप्रअनेका ॥ जगअभिरामरामअभिषेका ॥ अबमुनिबरबिलंब
नहिंकीजै ॥ महाराजकहुतिलककरीजै ॥ दो० ॥ तबमुनिकहेउसुमंतसनसु
नतचलेउहरषाइ ॥ रथअनेकबहुबाजिगजतुरतसवारेजाइ ॥ जहँतहँधा
वनपठइपुनिमंगलद्रब्यमगाइ ॥ हरषसमेतबसिष्टपदपुनिसिरुनाएउ
आई ॥ १ ॥ चौपाई ॥ अवधपुरीअतिरुचिरबनाई ॥ देवन्हसुमनबृष्टिझरिलाई
रामकहासेवकन्हबोलाई ॥ प्रथमसषान्हअन्हवावहुजाई ॥ सुनतबचनजहँ
तहँजनधाये ॥ सुग्रीवादितुरतअन्हवाये ॥ पुनिकरुनानिधिभरतहँकारे ॥ नि
जकररामजटानिरुवारे ॥ अन्हवायेप्रभुतीनिउंभाई ॥ भगतबछलकृपालर
घुराई ॥ भरतभाग्यप्रभुकोमलताई ॥ सेषकोटिसतसकहिंनगाई ॥ पुनिनिज
जटारामबिबराये ॥ गुरअनुसासनमागिनहाये ॥ करिमज्जनप्रभुभूषनसाजे ॥
अंगअनंगदेषिसतलाजे ॥ दो० ॥ सासुन्हसादरजानकिहिमज्जनतुरतकरा
इ ॥ दिब्यबसनबरभूषनअंगअंगसजेबनाइ ॥ रामबामदिसिसोभितरमारूप
गुनषानि ॥ देषिमातुसबहरषींजन्मसुफलनिजजानि ॥ सुनुषगेसतेहिअ
बसरब्रह्मासिवमुनिबृंद ॥ चढिबिमानआएसबसुरदेषनसुषकंद ॥ ११ ॥
चौ० ॥ प्रभुबिलोकिमुनिमनअनुरागा ॥ तुरतदिब्यसिंहासनमागा ॥ र
बिसमतेजसोबरनिनजाई ॥ बैठेरामद्विजन्हसिरुनाई ॥ जनकसुतासमेतर
घुराई ॥ देषिप्रहरषेमुनिसमुदाई ॥ वेदमंत्रतबद्विजन्हउचारे ॥ नभसुरमुनि
जयजयतिपुकारे ॥ प्रथमतिलकबसिष्टमुनिकीन्हा ॥ पुनिसबबिप्रन्हआय
सुदीन्हा ॥ सुतबिलोकिहरषींमहतारी ॥ बारबारआरतीउतारी ॥ बिप्रन्हदा
नबिबिधिबिधिदीन्हे ॥ जाचकसकलअजाचककीन्हे ॥ सिंहासनपरत्रि
भुवनसाईं ॥ देषीसुरन्हदुंदभीबजाई ॥ छं० १ ॥ नभदुंदभीबाजहिंबिपुलगंधर्व
किंनरगावहीं ॥ नाचहिंअपछरावृंदपरमानंदसुरमुनिपावहीं ॥ भरतादिअ
नुजबिभीषनांगदहनुमानादिसमेतते ॥ गहेछत्रचामरब्यजनधनुअसि
चर्मसक्तिबिराजते ॥ श्रीसहितदिनकरबंसभूषनकामबहुछबिसोहई ॥
नवअंबुधरबरगातअंबरपीतसुरमनमोहई ॥ मुकुटांगदादिबिचित्रभूषन
अंगअंगन्हिप्रतिसजे ॥ अंभोजनयनबिसालउरभुजधन्यनरनिरषंतजे ॥
तिन्हकेपरागहजनउभयउदयसदासुषप्रभुकाजहीं ॥ कहदासतुलसीप्रभुउ
रजहारामराजबिराजहीं ॥ दो० १२ ॥ वहसोभासमाजसुषकहतनबनैषगे
स ॥ बरनैंसारदसेषश्रुतिसोरसजानमहेस ॥ भिन्नभिन्नअस्तुतिकरिगयेसु
रनिजनिजधाम ॥ बंदीबेषधरेबेदतबआएजहँश्रीराम ॥ प्रभुसर्वज्ञकी
न्हअतिआदरकृपानिधान ॥ लषेउनकाहुमरमकछुलगेकरनगुनगान ॥ छं
१ ॥ जयसगुननिर्गुनरूपरूपअनूपभूपसिरोमने ॥ दसकंधरादिप्रचंडनि
सिचरप्रबलषलभुजबलहने ॥ अवतारनरसंसारभारबिभंजिदारुनदु
षदहे ॥ जयप्रनतपालदयालप्रभुसंजुक्तसक्तिनमामहे ॥ जयबिषममाया

बससुरासुरनागनरअगजगहरे ॥ भवपंथभ्रमतअमितदिवसनिसिकालक
र्मगुननिभरे ॥ जेनाथकरिकरुनाबिलोकेत्रिबिधदुषतेनिर्बहे ॥ भवषेदछेदनद
च्छहमकहुंरच्छरामनमामहे ॥ जेग्यानमानबिमत्ततवभवहरनिभक्तिनआद
री ॥ तेपाइसुरदुर्लभपदादपिपरतहमदेषतहरी ॥ बिस्वासकरिसबआसपरिह
रिदासतवजेहोइरहे ॥ जपिनामतवबिनुस्रमतरहिंभवनाथसोसमरामहे ॥ जेच
रनसिवअजपूज्यरजसुभपरसिमुनिपतिनीतरी ॥ नषनिर्गतामुनिबंदितात्रै
लोकपावनिसुरसरी ॥ ध्वजकुलिसअंकुसकंजजुतबनफिरतकंटककिनलहे ॥
पदकंजद्वंदमुकुंदरामरमेसनित्यभजामहे ॥ अब्यक्तमूलमनादितरुत्वचचारि
निगमागमभने ॥ षटकंधसाषापंचबीसअनेकपर्नसुमनघने ॥ फलजुगलबि
धिकटुमधुरबेलिअकेलिजेहिआश्रितरहे ॥ पल्लवतफूलतनवलनितसंसारबि
टपनमामहे ॥ जेब्रह्मअजमद्वैतमनुभवगम्यमनपरध्यावहीं ॥ तेकहहुंजान
हुनाथहमतवसगुनजसनितगावहीं ॥ करुनायतनप्रभुसदगुनाकरदेवयह
बरमांगहीं ॥ मनबचनकर्मबिकारतजितवचरनहमअनुरागहीं ॥ दो० ॥ स
बकेदेषतबेदन्हबिनतीकीन्हिउदार ॥ अंतरध्यानभयेपुनिगएब्रह्मआगार ॥
बैनतेयसुनुसंभुतबआएजहँरघुबीर ॥ बिनयकरतगदगदगिरापूरितपुल
कसरीर ॥ १३ ॥ छं० १ ॥ जयरामरमारमनंसमनं ॥ भवतापभयाकुलपाहिजनं ॥
अवधेससुरेसरमेसबिभो ॥ सरनागतमांगतपाहिप्रभो ॥ दससीसबिनासनबी
सभुजा ॥ कृतदूरिमहामहिभूरिरुजा ॥ रजनीचरबृंदपतंगरहे ॥ सरपावकतेजप्रचं
डदहे ॥ महिमंडलमंडनचारुतरं ॥ धृतसायकचापनिषंगबरं ॥ मदमोहमहाममता
रजनी ॥ तमपुंजदिवाकरतेजअनी ॥ मनजातकिरातनिपातकिए ॥ मृगलोगकु
भोगसरेनहिए ॥ हतिनाथअनाथनिपाहिहरे ॥ बिषयाबनपावरभूलिपरे ॥ ब
हुरोगबियोगन्हिलोगहए ॥ भवदंघ्रिनिरादरकेफलये ॥ भवसिंधुअगाधपरेन
रते ॥ पदपंकजप्रेमनजेकरते ॥ अतिदीनमलीनदुषीनितहीं ॥ जिन्हकेपदपंकजप्री
तिनहीं ॥ अवलंबभवंतकथाजिन्हके ॥ प्रियसंतअनंतसदातिन्हके ॥ नहिंरागन
लोभनमाननमदा ॥ तिन्हकेसमबैभवबाबिपदा ॥ एहितेतवसेवकहोतमुदा ॥ मु
नित्यागतजोगभरोससदा ॥ करिप्रेमनिरंतरनेमलिए ॥ पदपंकजसेवतसु
द्धहिए ॥ सममानिनिरादरआदरहीं ॥ सबसंतसुषीबिचरंतमही ॥ मुनिमानसपं
कजभृंगभजे ॥ रघुबीरमहारनधीरअजे ॥ तवनामजपामिनमामिहरी ॥ भव
रोगमहागदमानअरी ॥ गुनसीलकृपापरमायतनं ॥ प्रनमामिनिरंतरश्रीर
मनं ॥ रघुनंदनिकंदयद्वंदघनं ॥ महिपालबिलोकयदीनजनं ॥ दो० ॥ बारबारब
रमांगौंहोंहरषिदेहुश्रीरंग ॥ पदसरोजअनपायनीभगतिसदासतसंग ॥ बरनि
उमापतिरामगुनहरषिगएकैलास ॥ तबप्रभुकपिन्हदिवाएसबबिधिसुषप्र
दबास ॥ १४ ॥ चौ० १ ॥ सुनुषगपतियहकथापावनी ॥ त्रिबिधितापभवदापनसा
वनी ॥ महाराजकरसुभअभिषेका ॥ सुनतलहहिंनरबिरतिबिबेका ॥ जेसका
मनरसुनहिंजेगावहीं ॥ सुषसंपतिनानाबिधिपावहीं ॥ सुरदुर्लभसुषकरिजग
माहीं ॥ अंतकालरघुपतिपुरजाहीं ॥ सुनहिंबिमुक्तबिरतअरुबिषई ॥ लहहिंभ
गतिगतिसंपतिनई ॥ षगपतिरामकथामैंबरनी ॥ स्वमतिबिलासत्रासदुषहरनी
बिरतिबिबेकभगतिदृढकरनी ॥ मोहनदीकहसुंदरतरनी ॥ नितनवमंगलको
सलपुरी ॥ हरषितरहहिंलोगसबकुरी ॥ नितनइप्रीतिरामपदपंकज ॥ सबकें
जिन्हहिनमतसिवमुनिअज ॥ मांगनबहुप्रकारपहिराए ॥ द्विजनदाननानाबि
धिपाए ॥ दो० ॥ ब्रह्मानंदमगनकपिसबकेप्रभुपदप्रीति ॥ जातनजानेदिवसति
न्हगएमासषटबीति ॥ १५ ॥ चौ० १ ॥ बिसरेगृहसपनेहुंसुधिनाहीं ॥ जिमिपरद्रो

रा॰उ॰
३

संतमनमोही॥ तवरघुपतिसवसषावोलाए॥ आएसवन्हिसादरसिरनाए॥ प
रमप्रीतिसमीपवैठारे॥ भगतसुषदम्रदुवचनउचारे॥ तुम्हअतिकीन्हिमो
रिसेवकाई॥ मुषपरकेहिविधिकरौंवडाई॥ तातेमोहितुम्हअतिप्रियलागे॥ म
महितलागिभवनसुषत्यागे॥ अनुजराजसंपतिवैदेही॥ देहगेहपरिवारसने
ही॥ सवममप्रियनहिंतुम्हहिसमाना॥ म्रषानकहौंमोरयहवाना॥ सवकेंप्रि
यसेवकयहनीती॥ मोरेंअधिकदासपरप्रीती॥ दो॰॥ अवग्रहजाहुसषासव
भजेहुमोहिद्रढनेम॥ सदासर्वगतसर्वहितजानिकरेहुअतिप्रेम॥ १६॥ चौ॰
ई॥ सुनिप्रभुवचनमगनसवभए॥ कोहमकहांविसरितनगए॥ एकटकर
हेजोरिकरआगे॥ सकहिंनकछुकहिअतिअनुरागे॥ परमप्रेमतिनकरप्रभु
देषा॥ कहाविविधिविधिज्ञानविसेषा॥ प्रभुसन्मुषकछुकहनपारहिं
पुनिपुनिचरनसरोजनिहारहीं॥ तवप्रभुभूषनवसनमगाए॥ नानारंग
अनूपसुहाए॥ सुग्रीवहिप्रथमहिंपहिराए॥ वसनभरतनिजहाथवनाए॥
प्रभुप्रेरितलछिमनपहिराए॥ लंकापतिरघुपतिमनभाए॥ अंगदवैठरहान
हिंडोला॥ प्रीतिदेषिप्रभुताहिनवोला॥ दो॰॥ जामवंतनीलादिसवपहिराए
रघुनाथ॥ हियधरिरामरूपसवचलेनाइपदमाथ॥ तवअंगदउठिनाइसिरुस
जलनयनकरजोरि॥ अतिविनीतवोलेउवचनमनहुप्रेमरसवोरि॥ १७॥ चौ॰
ई॥ सुनुसर्वज्ञक्रपासुषसिंधो॥ दीनदयालकरआरतवंधो॥ मरतिवेरना
थमोहिवाली॥ गएउतुम्हारेकोंछेघाली॥ असरनसरनविरदुसंभारी॥ मो
हितजनितजहुभगतहितकारी॥ मोरेंतुम्हप्रभुगुरपितुमाता॥ जाउंकहांतजि
पदजलजाता॥ तुम्हहिविचारिकहहुनरनाहा॥ प्रभुतजिभवनकाजममका
हा॥ वालकज्ञानवुद्धिवलहीना॥ राषहुसरननाथजनदीना॥ नीचिटहलग्र
हकैसवकरिहौं॥ पदपंकजविलोकिभवतरिहौं॥ असकहिचरनपरेउप्र
भुपाही॥ अवजनिनाथकहहुग्रहजाही॥ दो॰॥ अंगदवचनविनीतसुनिर
घुपतिकरुनासींव॥ प्रभुउठाइउरलाएउसजलनयनराजीव॥ निजउरमाल
वसनमनिवालितनयपहिराइ॥ विदाकीन्हभगवानतववहुप्रकारसमु
झाइ॥ १८॥ चौ॰ई॥ भरतअनुजसौमित्रिसमेता॥ पठवनचलेभगतक्रतचेता॥
अंगदह्रदयप्रेमनहिंथोरा॥ फिरिफिरिचितवरामकीओरा॥ वारवारकर
दंडप्रनामा॥ मनअसरहनकहहिंमोहिरामा॥ रामविलोकनिवोलनिच
लनी॥ सुमिरिसुमिरिसोचतहंसिमिलनी॥ प्रभुरुषदेषिविनयवहुभाषी॥ च
लेउह्रदयपदपंकजराषी॥ अतिआदरसवकपिपहुचाए॥ भाइन्हसहि
तभरतपुनिआए॥ तवसुग्रीवचरनगहिनाना॥ भांतिविनयकीन्हीहनुमा
ना॥ दिनदसकरिरघुपतिपदसेवा॥ पुनितवचरनदेषिहौंदेवा॥ पुन्यपुंजतु
म्हपवनकुमारा॥ सेवहुजाइक्रपालआगारा॥ असकहिकपिसवचलेतुरं
ता॥ अंगदकहेसुनहुहनुमंता॥ दो॰॥ कहेहुदंडवतप्रभुसनतुम्हहिकहौं
करजोरि॥ वारवाररघुनायकहिसुरतिकराएहुमोरि॥ असकहिचलेउवा
लिसुतफिरिआएउहनुमंत॥ तासुप्रीतिप्रभुसनकहीमगनभएभगवं
त॥ कुलिसहुचाहिकठोरअतिकोमलकुसुमहुचाहि॥ चितषगेसरामकर
समुझिपरैकहुकाहि॥ १९॥ चौ॰ई॥ पुनिक्रपाललियोवोलिनिषादा॥ दीन्हे
भूषनवसनप्रसादा॥ जाहुभवनममसुमिरनकरेहू॥ मनक्रमवचनधर्मअ
नुसरेहू॥ तुम्हममसषाभरतसमभ्राता॥ सदारहेहुपुरआवतजाता॥ वच
नसुनतउपजासुषभारी॥ परेउचरनभरिलोचनवारी॥ चरननलिनउरध
रिग्रहआवा॥ प्रभुसुभावपरिजनन्हिसुनावा॥ रघुपतिचरितदेषिपुरवासी॥

पुनिपुनिकहहिंधन्यसुषरासी॥ रामराजवैठेत्रैलोका॥ हरषितभएगएसवसोका॥
वैरनकरैकाहूसनकोई॥ रामप्रतापविषमताषोई॥ दो॰॥ वरनाश्रमनिजनिजध
र्मनिरतवेदपथलोग॥ चलहिंसदापावहिंसुषहिनहिंभयसोकनरोग॥ २०॥
चौ॰ई॥ दैहिकदैविकभौतिकतापा॥ रामराजनहिंकाहुहिव्यापा॥ सवनरकरहिं
परस्परप्रीती॥ चलहिंस्वधर्मनिरतश्रुतिनीती॥ चारिउचरनधर्मजगमाहीं॥ पू
रिरहासपनेहुअघनाहीं॥ रामभगतिरतनरअरुनारी॥ सकलपरमगतिके
अधिकारी॥ अल्पम्रत्युनहिंकवनिउपीरा॥ सवसुंदरसवविरुजसरीरा॥ नहिंद
रिद्रकोउदुषीनदीना॥ नहिंकोउअवुधनलछनहीना॥ सवनिर्दंभधर्मरतपुनी॥
नरअरुनारिचतुरसवगुनी॥ सवगुनज्ञपंडितसवज्ञानी॥ सवक्रतज्ञनहिंकपट
सयानी॥ दो॰॥ रामराजषगेसमुनसचराचरजगमाहिं॥ कालकर्मसुभावगु
नक्रतदुषकाहुहिनाहिं॥ २१॥ चौ॰ई॥ भूमिसप्तसागरमेषला॥ एकभूपरघुपति
कोसला॥ भुवनअनेकरोमप्रतिजासू॥ यहप्रभुताकछुवहुतनतासू॥ सोमहि
मासमुझतप्रभुकेरी॥ यहवरनतहीनताघनेरी॥ सोउमहिमाषगेसजिन्हजा
नी॥ फिरियहचरिततिन्हहुरतिमानी॥ सोउजानेकरफलयहलीला॥ कहहिं
महामुनिवरदमसीला॥ रामराजकरसुषसंपदा॥ वरनिनसकैफनीससारदा॥
सवउदारसवपरउपकारी॥ विप्रचरनसेवकनरनारी॥ एकनारिव्रतरतसव
झारी॥ तेमनवचक्रमपतिहितकारी॥ दो॰॥ दंडजतिन्हकरभेदजहंनर्तकन्र
त्यसमाज॥ जीतहुमनहिसुनियअसरामचंद्रकेराज॥ २२॥ चौ॰ई॥ फूलहिं
फलहिंसदातरुकानन॥ रहहिंएकसंगगजपंचानन॥ षगम्रगसहजवयरु
विसराई॥ सवनिपरस्परप्रीतिवढाई॥ कूजहिंषगम्रगनानाव्रंदा॥ अभयच
रहिंवनकरहिंअनंदा॥ सीतलसुरभिपवनवहमंदा॥ गुंजतअलिलैचलिमक
रंदा॥ लताविटपमागेमधुचवहीं॥ मनभावतोधेनुपयश्रवहीं॥ ससिसंपन्न
सदारहधरनी॥ त्रेताभईक्रतजुगकीकरनी॥ प्रगटींगिरिन्हविविधमनि
षानी॥ जगदातमाभूपजगजानी॥ सरितासकलवहहिंवरवारी॥ सीतल
अमलस्वादसुषकारी॥ सागरनिजमरजादारहहीं॥ डारहिंरतनतटन्हिनरल
हहीं॥ सरसिजसंकुलसकलतडागा॥ अतिप्रसन्नदसदिसाविभागा॥ दो॰॥
विधुमहिपूरमयूषन्हिरवितपजेतनेहिकाज॥ मागेवारिददेहिंजलरामचंद्रकेराज॥
चौ॰ई॥ कोटिन्हवाजिमेधप्रभुकीन्हे॥ दानअनेकद्विजन्हकहंदीन्हे॥ श्रुतिपथपा
लकधर्मधुरंधर॥ गुनातीतअरुभोगपुरंदर॥ पतिअनुकूलसदारहसीता॥ सोभा
षानिसुसीलविनीता॥ जानतिक्रपासिंधुप्रभुताई॥ सेवतिचरनकमलमनलाई॥
जद्यपिग्रहसेवकसेवकिनी॥ विपुलसकलसेवाविधिगुनी॥ निजकरग्रहपरिच
रजाकरहीं॥ रामचंद्रआयसुअनुसरई॥ जेहिविधिक्रपासिंधुसुषमानई॥ सोइकरश्री
सेवाविधिजानई॥ कौसल्यादिसासुग्रहमाहीं॥ सेवइसवन्हिमानमदनाहीं॥ उमा
रमाव्रह्मादिवंदिता॥ जगदंवासंततमनिंदिता॥ दो॰॥ जासुक्रपाकटाछसुरचा
हतचितवनसोई॥ रामपदारविंदरतिकरतिसुभावहिषोई॥ २४॥ चौ॰ई॥ सेवहिंसा
नुकूलसवभाई॥ रामचरनरतिअतिअधिकाई॥ प्रभुमुषकमलविलोकतरहहीं॥
कवहुक्रपालहमहिंकछुकहहीं॥ रामकरहिंभ्रातन्हपरप्रीती॥ नानाभांतिसिषावहिं
नीती॥ हरषितरहहिंनगरकेलोगा॥ करहिंसकलसुरदुर्लभभोगा॥ अहनिसिविधि
हिमनावतरहहीं॥ श्रीरघुवीरचरनरतिचहहीं॥ दुइसुतसुंदरसीताजाए॥ लवकुसवे
दपुरानन्हगाए॥ दोउविजईविनईगुनमंदिर॥ हरिप्रतिविंवमनहुअतिसुंदर॥ दुइ॰

रा॰उ॰
४

सतसवश्रातन्हकेरे॥भयरूपगुनसीलघनेरे॥श्रंगदचित्रकेतलक्ष्मनसुत॥तक्षपु
ष्कलभरतविपनसुत॥सवाहुश्रुतिसेनकेदोय॥रिपुसूदनसुतजा॥दो॥ज्ञा
नगिरागोतीतश्रजमायामनगुनपार॥सोइसच्चिदानंदघनकरनरचरितउदार॥२५
चौ॥ प्रातकालसरजूकरिमज्जन॥वैठहिंसभासंगद्विजसज्जन॥वेदपुरानवसिष्ट
वखानहिं॥सुनहिंरामजद्यपिसवजानहिं॥श्रनुजनसंजुतभोजनकरहीं॥देखिसक
लजननीसुखभरहीं॥भरतसत्रुहनदोनोंभाई॥सहितपवनसुतउपवनजाई॥वू
झहिंवैठिरामगुनगाहा॥कहहनुमानसुमतिश्रवगाहा॥सुनतविमलगुनश्रतिसु
खपावहीं॥वहुरिवहुरिविनयकहावहीं॥सवकेंगृहगृहहोइपुराना॥रामचरितपा
वनविधिनाना॥नरश्ररुनारिरामगुनगावहिं॥करहिंदिवसनिसिजातनजानहिं॥
दो॥श्रवधपुरीवासिन्हकरसुखसंपदासमाज॥सहससेषनहिंकहिंसकहिंजहँ
नृपरामविराज॥२६॥चौ॥नारदादिसनकादिमुनीसा॥दरसनलागिकोसलाधी
सा॥दिनप्रतिसकलश्रजोध्याश्रावहिं॥देषिनगरविरागविसरावहिं॥जातरूपमनि
रचितश्रटारी॥नानारंगरुचिरगचढारी॥पुरचहुँपासकोटश्रतिसुंदर॥रचेकँगूरा
रंगरंगवर॥नवग्रहनिकरश्रनेकवनाई॥जनुघेरीश्रमरावतिश्राई॥महिवहुरंगरचि
तगचकांची॥जोविलोकिमुनिवरमननाची॥धवलधामऊपरनभचुंवत॥कलसम
नहुँरविससिदुतिनिंदत॥वहुमनिरचितझरोषाभ्राजहिं॥गृहगृहप्रतिमनिदी
पविराजहिं॥छं॥मनिदीपराजहिंभवनभ्राजहिंदेहरीविद्रुमरची॥मनिषंभभी
तिविरंचिविरचीकनकमनिमरकतषची॥सुंदरमनोहरमंदिरायतश्रजिररुचि
रफटिकरचे॥प्रतिद्वारद्वारकपाटपुरटवनाइ॥वहुवज्रन्हिषचे॥दो॥चारुचि
त्रसालागृहगृहप्रतिलिषेकरुचिरवनाइ॥रामचरितजेनिरषमुनितेमनलेहिंचो
राइ॥२७॥चौ॥सुमनवाटिकासवन्हिलगाईं॥विविधभांतिकरिजतनवनाईं॥ल
तालेलितवहुजातिसुहाईं॥फूलहिंसदावसंतकिनाईं॥गुंजतमधुकरमुषरमनो
हर॥मारुतत्रिविधसदावहसुंदर॥नानाषगवालकन्हजिश्राए॥वोलतमधुरउड़ा
तसुहाए॥मोरहंससारसपारावत॥भवननिपरसोभाश्रतिपावत॥जहँतहँदेषहिं
निजपरिछांहीं॥वहुविधिकूजहिंनृत्यकराहीं॥सुकसारिकापढ़ावहिंवालक॥क
हहुरामरघुपतिजनपालक॥राजदुश्रारसकलविधिचारू॥वीथींचौहटरुचिरव
जारू॥छं॥वाजाररुचिरनवनइवरनतवस्तुविनुगथपाइए॥जहँभूपरमा
निवासतहँकीसंपदाकिमिगाईए॥वैठेवजाजसराफवनिकश्रनेकमनहुँकुवेर
ते॥सवसुषीसवसच्चरितसुंदरनारिनरसिसुजरठजे॥दो॥उत्तरदिसिसरजूवहनि
र्मलजलगंभीर॥वांधेघाटमनोहरस्वल्पपंकनहिंतीर॥२८॥चौ॥वांधेघाट
मनोहरनाना॥तहँसवपुरुषकरहिंश्रस्नाना॥दूरिफराकरुचिरसोघाटा॥जहँजल
पिवहिंवाजिगजठाटा॥पनघटपरममनोहरनाना॥तहांनपुरुषकरहिंश्रस्नाना॥
राजघाटसवविधिसुंदरवर॥मज्जहिंतहांवरनचारिउनर॥तीरतीरदेवन्हकेमं
दिर॥चहुंदिसितिन्हकेउपवनसुंदर॥कहुंकहुंसरितातीरउदासी॥वसहिंज्ञानरत
मुनिसंन्यासी॥तीरतीरतुलसिकासुहाई॥वृंदवृंदवहुमुनिन्हलगाई॥पुरसोभा
कछुवरनिनजाई॥वाहेरनगरपरमरुचिराई॥देषतपुरीश्रषिलश्रघभागा॥वनउप
वनवापिकातड़ागा॥छं॥वापीतड़ागश्रनूपकूपमनोहरायतसोहहीं॥सोपानसुं
दरनीरनिर्मलदेषिसुरमुनिमोहहीं॥वहुरंगकंजश्रनेकषगकूजहिंमधुपगुंजा
रहीं॥श्रारामरम्यपिकादिषगरवजनुपथिककंकारहीं॥दो॥रमानाथजहँराजा
सोपुरवरनिकिजाई॥श्रनिमादिकसुषसंपदारहींश्रवधसवछाई॥२९॥चौ॥१॥

जहँतहँनररघुपतिगुनगावहिं॥वैठिपरसपरइहैसिषावहिं॥भजहुप्रनतप्रतिपाल
करामहिं॥सोभासीलरूपगुनधामहिं॥जलजविलोचनस्यामलगातहिं॥पलक
नयनइवसेवकत्रातहिं॥धृतसररुचिरचापतूनीरहिं॥संतकंजवनरविरनधी
रहिं॥कालकरालव्यालषगराजहिं॥नमतरामश्रकाममममताजहिं॥लोभमोह
मृगजूथकिरातहिं॥मनसिजकरिहरिजनसुषदातहिं॥संसयसोकनिविड़त
मभानुहिं॥दनुजगहनघनदहनकृसानुहिं॥जनकसुतासमेतरघुवीरहिं॥क
सनभजहुभंजनभवभीरहिं॥वहुवासनामसकहिमरासिहिं॥सदाएकरस
श्रजश्रविनासिहिं॥मुनिरंजनभंजनमहिभारहिं॥तुलसिदासकेप्रभुहिंउदारहिं
दो॥एहिविधिनगरनारिनरकरहिंरामगुनगान॥सानुकूलसवपररहहिं
संततकृपानिधान॥३०॥चौ॥जवतेरामप्रतापषगेसा॥उदितभयउश्रतिप्रवलदि
नेसा॥पूरिप्रकासरहेउतिहुँलोका॥वहुतेन्हसुषवहुतनमनसोका॥जिन्हहिंसो
कतेकहउंवषानी॥प्रथमश्रविद्यानिसानसानी॥श्रघउलूकजहँतहांलुकाने॥
कामक्रोधकैरवसकुचाने॥विविधकर्मगुनकालसुभाऊ॥एचकोरसुषलहहिं
नकाऊ॥मत्सरमानमोहमदचोरा॥इन्हकरहुनरनकवनिहुंश्रोरा॥धर्मतड़ाग
ज्ञानविज्ञाना॥एपंकजविकसेविधिनाना॥सुषसंतोषविरागविवेका॥विगतसो
कएकोकश्रनेका॥दो॥यहप्रतापरविजाकेंउरजवकरइप्रकास॥पछिलेवाढ़हिं
प्रथमजेकहेतेपावहिंनास॥३१॥चौ॥भ्रातन्हसहितरामएकवारा॥संगपरम
प्रियपवनकुमारा॥सुंदरउपवनदेषनगए॥सवतरुकुसुमितपल्लवनए॥जा
निसमयसनकादिकश्राए॥तेजपुंजगुनसीलसुहाए॥ब्रह्मानंदसदालयली
ना॥देषतवालकवहुकालीना॥रूपधरेंजनुचारिउवेदा॥समदरसीमुनिविगत
विभेदा॥श्रासावसनव्यसनयहतिन्हहीं॥रघुपतिचरितहोइतहँसुनहीं॥तहां
रहेसनकादिभवानी॥जहँघटसंभवमुनिवरज्ञानी॥रामकथामुनिवरवहुवर
नी॥ज्ञानजोनिपावकजिमिश्ररनी॥दो॥देषिराममुनिश्रावतहरषिदंडवतकी
न्ह॥स्वागतपूँछिपीतपटप्रभुवैठनकहँदीन्ह॥३२॥चौ॥कीन्हदंडवततीनिउँभा
ई॥सहितपवनसुतसुषश्रधिकाई॥मुनिरघुपतिछविश्रतुलविलोकी॥भएमग
नमनसकेनरोकी॥स्यामलगातसरोरुहलोचन॥सुंदरतामंदिरभवमोचन॥एक
टकरहेनिमेषनलावहिं॥प्रभुकरजोरेंसीसनवावहिं॥तिन्हकैदसादेषिरघुवीरा॥
स्रवतनयनजलपुलकसरीरा॥करगहिप्रभुमुनिवरवैठारे॥परममनोहरव
चनउचारे॥श्राजुधन्यमैंसुनहुमुनीसा॥तुम्हरेंदरसजाहिंश्रघषीसा॥वड़ेभागपा
इवसतसंगा॥विनहिंप्रयासहोहिंभवभंगा॥दो॥संतसंगश्रपवर्गकरकामीभव
करपंथ॥कहहिंसंतकविकोविदश्रुतिपुरानसदग्रंथ॥३३॥चौ॥सुनिप्रभुव
चनहरषिमुनिचारी॥पुलकिततनश्रस्तुतिश्रनुसारी॥जयभगवंतश्रनंतश्रनामय॥श्र
नघश्रनेकएककरुनामय॥जयनिर्गुनजयजयगुनसागर॥सुषमंदिरसुंदरश्र
तिनागर॥जयइंदिरारमनजयभूधर॥श्रनुपमश्रजश्रनादिसोभाकर॥ज्ञाननिधान
श्रमानमानप्रद॥पावनसुजसपुरानवेदवद॥तज्ञकृतज्ञश्रज्ञताभंजन॥नामश्रनेक
श्रनामनिरंजन॥सर्वसर्वगतसर्वउरालय॥वससिसदाहमकहुँपरिपालय॥द्वंदवि
पतिभवफंदविभंजय॥हृदिवसिरामकाममदगंजय॥दो॥परमानंदकृपाय
तनमनपरिपूरनकाम॥प्रेमभगतिश्रनपायनिदेहुहमहिंश्रीराम॥३४॥चौ॥दे
हुभगतिरघुपतिश्रतिपावनि॥त्रिविधितापभवदापनसावनि॥प्रनतकामसु
रधेनुकलपतरु॥होइप्रसन्नदीजैप्रभुयहवरु॥भववारिधिकुंभजरघुनायक॥से
वतसुलभसकलसुषदायक॥मनसंभवदारुनदुषदारय॥दीनवंधुसमताविस्ता

य॥ ग्रास त्रास इरषादि निवारक॥ बिनै बिबेक बिरति बिस्तारक॥ भूप मौलि मनि मंडन धर
नी॥ देहु भगति संसृति सरि तरनी॥ मुनि मन मानस हंस निरंतर॥ चरन कमल बंदि
त अज संकर॥ रघुकुल केतु सेतु स्रुति रछक॥ काल करम सुभाव गुन भछक॥ ता
रन तरन हरन सब दूषन॥ तुलसीदास प्रभु त्रिभुवन भूषन॥ दो०॥ बार बार अ
स्तुति करि प्रेम सहित सिरु नाय॥ ब्रह्म भवन सनकादि गे अति अभिष्ट बर पा
ई॥ ३५॥ सनकादिक बिधि लोक सिधाए॥ भ्रातन्ह राम चरन सिरु नाए॥ पूछत प्र
भुहि सकल सकुचाहीं॥ चितवहिं सब मारुतसुत पाहीं॥ सुने चहहिं प्रभु मुख
कै बानी॥ जो सुनि होहि सकल भ्रम हानी॥ अंतरजामि प्रभु सब जाना॥ बूझत कह
हु काह हनुमाना॥ जोरि पानि कह तब हनुमंता॥ जोरि पानि कह तब हनुमंता
सुनहु दीनदयाल भगवंता॥ नाथ भरत कछु पूछन चहहीं॥ प्रस्न करत मन सकु
चत अहहीं॥ तुम्ह जानहु कपि मोर सुभाऊ॥ भरतहि मोहि कछु अंतर काऊ॥ सु
नि प्रभु बचन भरत गहे चरना॥ सुनहु नाथ प्रनतारति हरना॥ दो०॥ नाथ न मोहि
संदेह कछु सपनेहु सोक न मोह॥ केवल कृपा तुम्हारिहि चिदानंद संदोह॥ ३
६॥ करौं कृपानिधि एक ढिठाई॥ मैं सेवक तुम्ह जन सुखदाई॥ संतन्ह कै महि
मा रघुराई॥ बहु बिधि बेद पुरानन्ह गाई॥ श्रीमुख तुम्ह पुनि कीन्हि बडाई॥ तिन्ह
पर प्रभुहि प्रीति अधिकाई॥ सुना चहौं प्रभु तिन्ह कर लछन॥ कृपासिंधु गुन ग्या
न बिचछन॥ संत असंत भेद बिलगाई॥ प्रनतपाल मोहि कहहु बुझाई॥ संतन्ह
के लछन सुनु भ्राता॥ अगनित स्रुति पुरान बिख्याता॥ संत असंतन्हि कै असि
करनी॥ जिमि कुठार चंदन आचरनी॥ काटै परसु मलय सुनु भाई॥ निज गु
न देइ सुगंध बसाई॥ दो०॥ ताते सुर सीसन्ह चढत जग बल्लभ श्रीखंड॥ अन
ल दाहि पीटत घनन्ह परसु बदन यह दंड॥ ३७॥ चौ०॥ बिषय अलंपट सील
गुनाकर॥ पर दुख दुख सुख सुख देखे पर॥ सम अभूत रिपु बिमद बिरागी॥ लोभामरष
हरष भय त्यागी॥ कोमल चित दीनन्ह पर दाया॥ मन बच क्रम मम भगति अमाया॥ सब
हि मान प्रद आपु अमानी॥ भरत प्रान सम मम ते प्रानी॥ बिगत काम मम नाम परायन॥
सांति बिरति बिनती मुदितायन॥ सीतलता सरलता मैत्री॥ द्विज पद प्रीति धरम जनमै
त्री॥ ए सब लछन बसहिं जासु उर॥ जानहु तात संत संतत फुर॥ सम दम नेम नीति नहिं
डोलहिं॥ परुष बचन कबहु नहिं बोलहिं॥ दो०॥ निंदा अस्तुति उभय सम ममता
मम पद कंज॥ ते सज्जन मम प्रान प्रिय गुन मंदिर सुख पुंज॥ ३८॥ सुनहु असंतन्ह के
र सुभाऊ॥ भूलेहु संगति करिय न काऊ॥ तिन्ह कर संग सदा दुखदाई॥ जिमि कपिलहि घा
लइ हरहाई॥ खलन्ह हृदय अति ताप बिसेषी॥ जरहिं सदा पर संपति देषी॥ जहँ कहुँ निं
दा सुनहिं पराई॥ हरषहिं मनहुँ परी निधि पाई॥ काम क्रोध मद लोभ परायन॥ निर्द
य कपटी कुटिल मलायन॥ बयरु अकारन सब काहू सौं॥ जो कर हित अनहित ताहू
सौं॥ झूठइ लेना झूठइ देना॥ झूठइ भोजन झूठ चबेना॥ बोलहिं मधुर बचन जिमि मो
रा॥ षाहिं महा अहि हृदय कठोरा॥ दो०॥ परद्रोही परदार रत पर धन पर अपबाद॥ ते
नर पावर पापमय देह धरे मनुजाद॥ चौ०॥ लोभै ओढन लोभै डासन॥ सिस्नोदर प
र जमपुर त्रास न॥ काहू की जो सुनहि बडाई॥ स्वास लेहिं जनु जूडी आई॥ जब काहू कै दे
षहिं बिपती॥ सुषी भए मानहु जग नृपती॥ स्वारथ रत परिवार बिरोधी॥ लंपट काम
लोभ अति क्रोधी॥ मात पिता गुर बिप्र न मानहिं॥ आपु गए अरु घालहिं आनहि॥ करहिं
मोह बस द्रोह परावा॥ संत संग हरि कथा न भावा॥ अवगुन सिंधु मंदमति कामी॥ बे
द बिदूषक परधन स्वामी॥ बिप्रद्रोह परद्रोह बिसेषा॥ दंभ कपट जिय धरे सुबेषा॥ दो०
॥ ऐसे अधम मनुज खल कृतजुग त्रेता नाहिं॥ द्वापर कछुक बृंद बहु होइहहिं कलि

जुग माहिं॥ चौ०॥ पर हित सरिस धर्म नहिं भाई॥ पर पीडा सम नहिं अधमाई॥
निर्नय सकल पुरान बेद कर॥ कहेउ तात जानहिं कोबिद नर॥ नर सरीर धरि जे पर पी
रा॥ करहिं ते सहहिं महा भव भीरा॥ करहिं मोह बस नर अघ नाना॥ स्वारथ रत पर
लोक नसाना॥ कालरूप तिन्ह कहँ मैं भ्राता॥ सुभ अरु असुभ कर्म फल दाता॥ अ
स बिचारि जे परम सयाने॥ भजहिं मोहि संसृत दुष जाने॥ त्यागहिं कर्म सुभासुभ दा
यक॥ भजहिं मोहि सुर नर मुनि नायक॥ संत असंतन्ह के गुन भाषे॥ ते न परहिं भ
व जिन्ह लषि राषे॥ दो०॥ सुनहु तात माया कृत गुन अरु दोष अनेक॥ गुन यह
उभय न देषिअहिं देषिअ सो अबिबेक॥ ४१॥ चौ०॥ श्रीमुष बचन सुनत सब भा
ई॥ हरषे प्रेम न हृदय समाई॥ करहिं बिनय अति बारहिं बारा॥ हनूमान हिय हर
ष अपारा॥ पुनि रघुपति निज मंदिर आए॥ एहि बिधि चरित करत नित नए॥ बार
बार नारद मुनि आवहिं॥ चरित पुनीत राम के गावहिं॥ नित नव चरित देषि मुनि
जाहीं॥ ब्रह्मलोक सब कथा कहाहीं॥ सुनि बिरंचि अतिसय सुष मानहिं॥ पुनि पु
नि तात करहु गुन गानहिं॥ सनकादिक नारदहि सराहहीं॥ जद्यपि ब्रह्म निरत मुनि
आहहीं॥ सुनि गुन गान समाधि बिसारी॥ सादर सुनहिं परम अधिकारी॥ दो०॥
जीवनमुक्त ब्रह्मपर चरित सुनहिं तजि ध्यान॥ जे हरि कथा न करहिं रति तिन्ह के
हिय पाषान॥ ४२॥ चौ०॥ एक बार रघुनाथ बोलाए॥ गुर द्विज पुरबासी सब आ
ए॥ बैठे गुर मुनि अरु द्विज सज्जन॥ बोले बचन भगत भय भंजन॥ सुनहु सकल पु
रजन मम बानी॥ कहौं न कछु ममता उर आनी॥ नहिं अनीति नहिं कछु प्रभुताई॥
सुनहु करहु जो तुम्हहि सोहाई॥ सोइ सेवक प्रियतम मम सोई॥ मम अनुसासन
मानै जोई॥ जौ अनीति कछु भाषौं भाई॥ तौ मोहि बरजहु भय बिसराई॥ बडे भाग मा
नुष तनु पावा॥ सुर दुर्लभ सब ग्रंथनि गावा॥ साधन धाम मोछ कर द्वारा॥ पाइ न जे
हि परलोक सवारा॥ दो०॥ सो परत्र दुष पावै सिर धुनि धुनि पछिताइ॥ कालहि कर्महि
ईस्वरहि मिथ्या दोस लगाई॥ ४३॥ चौ०॥ एहि तन कर फल बिषय न भाई॥ स्वर्गौ
स्वल्प अंत दुषदाई॥ नर तनु पाइ बिषय मन देहीं॥ पलटि सुधा ते सठ बिष लेहीं॥ ता
हि कबहू भल कहै न कोई॥ गुंजा ग्रहै परस मनि षोई॥ आकर चारि लछ चौरासी॥
जोनि भ्रमत यह जीव अबिनासी॥ फिरत सदा माया कर प्रेरा॥ काल कर्म सुभाव गु
न घेरा॥ कबहुक करि करुना नर देही॥ देत ईस बिनु हेतु सनेही॥ नर तनु भव बारि
धि कहु बेरो॥ सनमुष मरुत अनुग्रह मेरो॥ करनधार सदगुर दृढ नावा॥ दुर्लभ सा
ज सुलभ करि पावा॥ दो०॥ जौ न तरै भव सागर नर समाज अस पाई॥ सो कृत निंदक
मंदमति आत्माहन गति जाई॥ ४४॥ चौ०॥ जौ परलोक इहां सुष चहहू॥ सुनि मम बचन हृ
दय दृढ गहहू॥ सुलभ सुषद मारग यह भाई॥ भगति मोरि पुरान स्रुति गाई॥ ग्यान
अगम प्रत्यूह अनेका॥ साधन कठिन न मन कहु टेका॥ करत कष्ट बहु पावै कोऊ॥ भ
क्ति हीन मोहि प्रिय नहिं सोऊ॥ भक्ति सुतंत्र सकल सुष षानी॥ बिनु सतसंग न पा
वहिं प्रानी॥ पुन्य पुंज बिनु मिलहिं न संता॥ सतसंगति संसृति कर अंता॥ पुन्य एक
जग महु नहिं दूजा॥ मन क्रम बचन बिप्र पद पूजा॥ सानुकूल तेहि पर मुनि देवा॥ जो
तजि कपट करै द्विज सेवा॥ दो०॥ औरौ एक गुपुत मत सबहि कहौं कर जोरि॥ संक
र भजन बिना नर भगति न पावै मोरि॥ ४५॥ चौ०॥ कहहु भगति पथ कवन प्रयासा॥
जोग न मष जप तप उपवासा॥ सरल सुभाव न मन कुटिलाई॥ जथा लाभ संतोष सदा
ई॥ मोर दास कहाइ नर आसा॥ करै तौ कहहु कहा बिस्वासा॥ बहुत कहौं का कथा बढा
ई॥ एहि आचरन बस्य मैं भाई॥ बैर न बिग्रह आस न त्रासा॥ सुषमय ताहि सदा सब आ
सा॥ अनारंभ अनिकेत अमानी॥ अनघ अरोष दछ बिग्यानी॥ प्रीति सदा सज्जन संस
र्गा॥ त्रिन सम बिषय स्वर्ग अपबर्गा॥ भगति पछ हठ नहिं सठताई॥ दुष्ट तर्क सब दू

रा.उ.
६

रिवदाई ॥ दो० ॥ ममगुनग्रामनामरतगतममतामदमोह ॥ ताकरसुषसो·
ईजानैपरानंदसंदोह ॥४६॥ चौ० ॥ सुनतसुधासमबचनरामके ॥ गहेसबनिप
दकृपाधामके ॥ जननीजनकगुरबंधुहमारे ॥ कृपानिधानप्रानतेप्यारे ॥ तनुध
नुधामरामहितकारी ॥ सबबिधितुम्हप्रनतारतिहारी ॥ असिसिषतुम्हबिनु
देइनकोऊ ॥ मातपितास्वारथरतओऊ ॥ हेतुरहितजगजुगउपकारी ॥ तुम्हतु
म्हारसेवकअसुरारी ॥ स्वारथमीतसकलजगमाहीं ॥ सपनेहुप्रभुपरमारथना
हीं ॥ सबकेबचनप्रेमरससाने ॥ सुनिरघुनाथहृदयहरषाने ॥ निजनिजगृह
गएआयसुपाई ॥ बरनतप्रभुबतकहीसुहाई ॥ दो० ॥ उमाअवधवासीनरना
रिकृतारथरूप ॥ ब्रह्मसच्चिदानंदघनरघुनायकजहंभूप ॥४७॥ चौ० ॥ एक
बारबसिष्टमुनिआए ॥ जहांरामसुषधामसुहाए ॥ अतिआदररघुनायककी
न्हा ॥ पदपषारिपादोदकलीन्हा ॥ रामसुनहुमुनिकहकरजोरी ॥ कृपासिं
धुबिनतीकछुमोरी ॥ देषिदेषिआचरनतुम्हारा ॥ होतमोहममहृदयअपा
रा ॥ महिमाअमितबेदनहिंजाना ॥ मैंकेहिभांतिकहौंभगवाना ॥ उपरोहित
कर्मअतिमंदा ॥ बेदपुरानसम्रतिकरनिंदा ॥ जबनलेउमैंतबबिधिमोही ॥ क
हालाभआगेंसुततोही ॥ परमात्माब्रह्मनररूपा ॥ होइहिरघुकुलभूषनभूपा ॥ दो·
॥ तबमैंहृदयबिचारकरजोगजग्यब्रतदान ॥ जाकहंकरिअसोपैहौंधर्मन
एहिसमआन ॥४८॥ चौ० ॥ जपतपनियमजोगनिजधर्मा ॥ श्रुतिसंभवनाना
सुभकर्मा ॥ ग्यानदयादमतीरथमज्जन ॥ जहंलगिधर्मकहतश्रुतिसज्जन ॥ आ
गमनिगमपुरानअनेका ॥ पढेसुनेकरफलप्रभुएका ॥ तुम्हपदपंकजप्रीति
निरंतर ॥ सर्वसाधनकरयहफलसुंदर ॥ छूटहिमलकिमलहिकेधोए ॥ घृत
किपावकोईबारिबिलोए ॥ प्रेमभगतिजलबिनरघुराई ॥ अभिअंतरमलकब
हुनजाई ॥ सोइसर्बग्यतग्यसोइपंडित ॥ सोइगुनगृहबिग्यानअषंडित ॥ दच्छसक·
ललच्छनजुतसोई ॥ जाकेपदसरोजरतिहोई ॥ दो० ॥ नाथएकबरमागौंरामकृ
पाकरिदेहु ॥ जन्मजन्मप्रभुपदकमलकबहुघटैजनिनेहु ॥४९॥ चौ० ॥ असकहि
मुनिबसिष्टगृहआए ॥ कृपासिंधुकेमनअतिभाए ॥ हनूमानभरतादिकभ्राता
संगलिएसेवकसुषदाता ॥ पुनिकृपालपुरबाहेरगए ॥ गजरथतुरगमगाव
तभए ॥ देषिकृपाकरिसकलसराहे ॥ दिएउचितजिन्हजिन्हतेइचाहे ॥ हरनसक
लश्रमप्रभुश्रमपाई ॥ गएजहांसीतलअवंराई ॥ भरतदीन्हनिजबसनडसाई ॥ बै
ठेप्रभुसेवहिंसबभाई ॥ मारुतसुततबमारुतकरई ॥ पुलकबपुषलोचनजल
भरई ॥ हनूमानसमनहिंबडभागी ॥ नहिंकोउरामचरनअनुरागी ॥ गिरिजाजासु
प्रीतिसेवकाई ॥ बारबारप्रभुनिजमुषगाई ॥ दो० ॥ तेहिंअवसरमुनिनारदआए
करतलबीन ॥ गावनलगेरामकलकीरतिसदानबीन ॥५०॥ चौ० ॥ मामविलो
कयपंकजलोचन ॥ कृपाबिलोकनिसोचबिमोचन ॥ नीलतामरसस्यामकाम
अरि ॥ हृदयकंजमकरंदमधुपहरि ॥ जातुधानबरूथबलभंजन ॥ मुनिसज्ज
नरंजनअघगंजन ॥ भूसुरससिनवबृंदबलाहक ॥ असरनसरनदीनजनगा·
हक ॥ भुजबलबिपुलभारमहिषंडित ॥ षरदूषनबिराधबधपंडित ॥ रावना
रिसुषरूपभूपबर ॥ जयदसरथकुलकुमुदसुधाकर ॥ सुजसपुरानबिदितनि
गमागम ॥ गावतसुरमुनिसंतसमागम ॥ कारुनीकब्यलीकमदषंडन ॥ सबबि
धिकुसलकोसलामंडन ॥ कलिमलमथननाममममताहन ॥ तुलसिदासप्रभु
पाहिप्रनतजन ॥ दो० ॥ प्रेमसहितमुनिनारदबरनिरामगुनग्राम ॥ सोभासिंधुहृ
दयधरिगएजहांबिधिधाम ॥५१॥ चौ० ॥ गिरिजासुनहुबिसदयहकथा ॥ मैंस·
बकहिमोरिमतिजथा ॥ रामचरितसतकोटिअपारा ॥ श्रुतिसारदानबरनै·

पारा ॥ रामअनंतअनंतगुनानी ॥ जन्मकर्मअनंतनामानी ॥ जलसीकरमहि
रजगनिजाहीं ॥ रघुपतिचरितनबरनिसिराहीं ॥ बिमलकथाहरिपददाय
नी ॥ भगतिहोइसुनिअनपायनी ॥ उमाकहेउंसबकथासुहाई ॥ जोभुसुंडिष
गपतिहिसुनाई ॥ कछुकरामगुनकहेउंबषानी ॥ अबकाकहौंसोकहहुभवानी
सुनिसुभकथाउमाहरषानी ॥ बोलीअतिबिनीतमृदुबानी ॥ धन्यधन्यमैंधन्य
पुरारी ॥ सुनेउंरामगुनभवभयहारी ॥ दो० ॥ तुम्हरीकृपाकृपायतनअब
कृतकृत्यनमोह ॥ जानेउंरामप्रतापप्रभुचिदानंदसंदोह ॥ नाथतवाननस
सिस्रवतकथासुधारघुबीर ॥ श्रवनपुटन्हिमनपानकरिनहिंअघातमति
धीर ॥५२॥ चौ० ॥ रामचरितजेसुनतअघाहीं ॥ रसबिसेषजानातिन्हनाहीं ॥ जीव
नमुक्तमहामुनिजेऊ ॥ हरिगुनसुनहिंनिरंतरतेऊ ॥ भवसागरचहपारजोपावा
रामकथाताकहंदृढनावा ॥ बिषइन्हकहंपुनिहरिगुनग्रामा ॥ श्रवनसुषदअरुम
नअभिरामा ॥ श्रवनवंतअसकोजगमाहीं ॥ जाहिनरघुपतिचरितसुहाहीं·
तेजडजीवनिजात्मकघाती ॥ जिन्हहिंनरघुपतिकथासुहाती ॥ हरिचरि·
त्रमानसतुम्हगावा ॥ सुनिमैंनाथअमितिसुषपावा ॥ तुम्हजोकहीयहक·
थासुहाई ॥ कागभसुंडिगरुडप्रतिगाई ॥ दो० ॥ बिरतिग्यानबिग्यानदृढरा
मचरनअतिनेह ॥ बायसतनरघुपतिभगतिमोहिपरमसंदेह ॥५३॥ चौ० ॥
नरसहस्रमहंसुनहुपुरारी ॥ कोउएकहोइधर्मब्रतधारी ॥ धर्मसीलको
टिन्हमहंकोई ॥ बिषयबिमुषबिरागरतहोई ॥ कोटिबिरक्तमध्यश्रुतिकहई
सम्यकग्यानसकृतकोउलहई ॥ ग्यानवंतकोटिकमहंकोई ॥ जीवनमुक्तसकृ
तजगसोई ॥ तिन्हसहस्रमहंसबसुषषानी ॥ दुर्लभब्रह्मलीनबिग्यानी ॥ धर्म·
सीलबिरक्तअरुग्यानी ॥ जीवनमुक्तब्रह्मपरप्रानी ॥ सबतेसोदुर्लभसुरराया ॥ रा
मभगतिरतगतमदमाया ॥ सोहरिभगतिकागकिमिपाई ॥ बिस्वनाथमोहिक
हहुबुझाई ॥ दो० ॥ रामपरायनग्यानरतगुनागारमतिधीर ॥ नाथकहहुकेहि
कारनपायउकागसरीर ॥५४॥ चौ० ॥ येप्रभुचरितपवित्रसुहावा ॥ कहहुकृपा
लकागकहंपावा ॥ तुम्हकेहिभांतिसुनामदनारी ॥ कहहुमोहिअतिकौतुक·
भारी ॥ गरुडमहाग्यानीगुनरासी ॥ हरिसेवकअतिनिकटनिवासी ॥ तेहिकेहि
हेतुकागसनजाई ॥ सुनिकथामुनिनिकरबिहाई ॥ कहहुकवनबिधिभासंबा
दा ॥ दोउहरिभगतकागउरगादा ॥ गौरिगिरासुनिसरलसुहाई ॥ बोलेसिव·
सादरसुषपाई ॥ धन्यसतीपावनिमतितोरी ॥ रघुपतिचरनप्रीतिनहिंथोरी
सुनहुपरमपुनीतइतिहासा ॥ जोसुनिसकललोकभ्रमनासा ॥ उपजैरामचर
नबिस्वासा ॥ भवनिधितरनरबिनहिंप्रयासा ॥ दो० ॥ ऐसेइप्रस्नबिहंगपति·
कीन्हकागसनजाई ॥ सोसबसादरकहिहौंसुनहुउमामनलाई ॥५५॥
चौ० ॥ मैंजिमिकथासुनीभवमोचनि ॥ सोप्रसंगसुनुसुमुषिसुलोचनि ॥ प्रथ
मदच्छगृहतवअवतारा ॥ सतीनामतबरहातुम्हारा ॥ दच्छजग्यतबभाअपमाना
तुम्हअतिक्रोधतजेतबप्राना ॥ ममअनुचरन्हकीन्हमषभंगा ॥ जानहुतुम्हसोस· तुम
कलप्रसंगा ॥ तबअतिसोचभयउमनमोरे ॥ दुषीभयउंबियोगप्रियतोरे ॥ सुंदर·
बनगिरिसरितडागा ॥ कौतुकदेषतफिरौंबिरागा ॥ गिरिसुमेरउत्तरदिसिदूरी
नीलसैलएकसुंदरभूरी ॥ तासुकनकमयसिषरसुहाए ॥ चारिचारुमोरेमन
भाए ॥ तिन्हपरएकएकबिटपबिसाला ॥ बटपीपरपाकरीरसाला ॥ सैलपर·
सरसुंदरसोहा ॥ मनिसोपानदेषिमनमोहा ॥ दो० ॥ सीतलअमलमधुर
जलजलजबिपुलबहुरंग ॥ कूजतकलरवहंसगनगुंजतमंजुलभृंग ॥५६॥

चौ० तेहि गिरि निकट बिरव बसै प्रभु सोई। तासु नास कल्पांत न होई॥ माया कृत गुन दोष अनेका। मोह मनोज आदि अबिबेका॥ रहे ब्यापि समस्त जग माही। तेहि गिरि निकट कबहु नहिं जाही॥ तह बसि हरिहि भजै जिमि कागा। सो सुनु उमा सहित अनुरागा॥ पीपर तरु तर ध्यान सो धरई। जाप जग्य पाकरि तर करई॥ आंब छांह कर मानस पूजा। तजि हरि भजन काज नहि दूजा॥ बर तर कह हरि कथा प्रसंगा। आवहि सुनहि अनेक बिहंगा॥ राम चरित बिचित्र बिधि नाना। प्रेम सहित कर सादर गाना॥ सुनहिं सकल मति बिमल मराला। बसहि निरंतर जे तेहि ताला॥ जब मैं जाइ सो कौतुक देखा। उपजा उर आनंद बिसेषा॥ दो० तब कछु काल मराल तनु धरि तह कीन्ह निवास। सादर सुनि रघुपति गुन पुनि आयउ कैलास॥ ५७॥ चौ० गिरिजा कहेउ सो सब इतिहासा। मैं जेहि समय गयउ खग पासा॥ अब सो कथा सुनहु जेहि हेतू। गयउ काग पहि खग कुल केतू॥ जब रघुनाथ कीन्ह रन क्रीड़ा। समुझत चरित होत मोहि ब्रीड़ा॥ इंद्रजीत कर आपु बंधावा। तब नारद मुनि गरुड़ पठावा॥ बंधन काटि गयउ उरगादा। उपजा हृदय प्रचंड बिषादा॥ प्रभु बंधन समुझत बहु भांती। करत बिचार उरग आराती॥ ब्यापक ब्रह्म बिरज बागीसा। माया मोह पार परमीसा॥ सो अवतार सुनेउ जग माही। देखेउ सो प्रभाव कछु नाही॥ दो० भव बंधन ते छूटहि नर जपि जा कर नाम। खर्ब निसाचर बांधेउ नाग पास सो राम॥ ५८॥ चौ० नाना भांति मनहि समुझावा। प्रगट न ग्यान हृदय भ्रम छावा॥ खेद खिन्न मन तर्क बढ़ाई। भयउ मोह बस तुम्हरिहि नाई॥ ब्याकुल गयउ देवरिषि पाही। कहेसि जो संसय निज मन माही॥ सुनि नारदहि लागि अति दाया। सुनु खग प्रबल राम कै माया॥ जो ग्यानिन्ह कर चित अपहरई। बरिआई बिमोह मन करई॥ जेहि बहु बार नचावा मोही। सोइ ब्यापी बिहंगपति तोही॥ महामोह उपजा उर तोरे। मिटिहि न बेगि कहे खग मोरे॥ चतुरानन पहि जाहु खगेसा। सोइ करेहु जेहि होइ निदेसा॥ दो० अस कहि चलेउ देवरिषि करत राम गुन गान। हरि माया बल बरनत पुनि पुनि परम सुजान॥ ५९॥ चौ० तब खगपति बिरंचि पहि गयऊ। निज संदेह सुनावत भयऊ॥ सुनि बिरंचि रामहि सिर नावा। समुझि प्रताप प्रेम अति छावा॥ मन महु करै बिचार बिधाता। माया बस कबि कोबिद ग्याता॥ हरि माया कर अमिति प्रभावा। बिपुल बार जेहि मोहि नचावा॥ अग जग मय जग मम उपराजा। नहि आचरज मोह खगराजा॥ तब बोले बिधि गिरा सुहाई। जान महेस राम प्रभुताई॥ बैनतेय संकर पहि जाहू। तात अनत पूछहु जनि काहू॥ तह होइहि तव संसय हानी। चलेउ बिहंग सुनत बिधि बानी॥ दो० परमातुर बिहंगपति आयउ तब मो पास। जात रहेउ कुबेर गृह रहिहु उमा कैलास॥ ६०॥ चौ० तेहि मम पद सादर सिर नावा। पुनि आपन संदेह सुनावा॥ सुनि ता करि बिनती मृदु बानी। प्रेम सहित मैं कहेउ भवानी॥ मिलेहु गरुड़ मारग मह मोही। कवन भांति समुझावौ तोही॥ तबहि होइ सब संसय भंगा। जब बहु काल करिय सतसंगा॥ सुनिय तहा हरि कथा सुहाई। नाना भांति मुनिन्ह जो गाई॥ जेहि महु आदि मध्य अवसाना। प्रभु प्रतिपाद्य राम भगवाना॥ नित हरि कथा होत जह भाई। पठवौ तहा सुनहु तुम्ह जाई॥ जाइहि सुनत सकल संदेहा। राम चरन होइहि अति नेहा॥ दो० बिनु सतसंग न हरि कथा तेहि बिनु मोह न भाग। मोह गए बिनु राम पद होइ न दृढ़ अनुराग॥

सो० मिलहि न रघुपति बिनु अनुरागा। किए जोग तप ग्यान बिरागा॥ उत्तर दिसि सुंदर गिरि नीला। तह रह काकभुसुंडि सुसीला॥ राम भगति पथ परम प्रबीना। ग्यानी गुन गृह बहु कालीना॥ राम कथा सो कहै निरंतर। सादर सुनहि बिबिध बिहंगबर॥ जाइ सुनहु तह हरि गुन भूरी। होइहि मोह जनित दुख दूरी॥ मैं जब तेहि सब कहा बुझाई। चलेउ हरषि मम पद सिर नाई॥ ताते उमा न मैं समुझावा। रघुपति कृपा मरम मैं पावा॥ होइहि कीन्ह कबहु अभिमाना। सो खोवै चह कृपानिधाना॥ कछु तेहि ते पुनि मैं नहि राखा। समुझै खग खगही कै भाषा॥ प्रभु माया बलवंत भवानी। जाहि न मोह कवन अस ग्यानी॥ दो० ग्यानी भगत सिरोमनि त्रिभुवनपति कर जान। ताहि मोह माया नर पावर करहि गुमान॥ सिव बिरंचि कहु मोहै को है बपुरा आन। अस जिय जानि भजहि मुनि माया पति भगवान॥ ६२॥ चौ० गयउ गरुड़ जह बसै भुसुंडी। मति अकुंठ हरि भगति अखंडी॥ देखि सैल प्रसन्न मन भयऊ। माया मोह सोच सब गयऊ॥ करि तड़ाग मज्जन जलपाना। बट तर गयउ हृदय हरषाना॥ बृद्ध बृद्ध बिहंग तह आए। सुनै राम के चरित सुहाए॥ कथा अरंभ करै सो चाहा। तेही समय गयउ खगनाहा॥ आवत देखि सकल खगराजा। हरषेउ बायस सहित समाजा॥ अति आदर खगपति कर कीन्हा। स्वागत पूछि सुआसन दीन्हा॥ करि पूजा समेत अनुरागा। मधुर बचन तब बोलेउ कागा॥ दो० नाथ कृतारथ भयउ मैं तव दरसन खगराज। आयसु देहु सो करौ अब प्रभु आयहु केहि काज॥ सदा कृतारथ रूप तुम्ह कह मृदु बचन खगेस। जेहि कै अस्तुति सादर निज मुख कीन्हि महेस॥ ६३॥ चौ० सुनहु तात जेहि कारन आयउ। सो सब भयउ दरस तव पायउ॥ देखि परम पावन तव आश्रम। गयउ मोह संसय नाना भ्रम॥ अब श्रीराम कथा अति पावनि। सदा सुखद दुख पुंज नसावनि॥ सादर तात सुनावहु मोही। बार बार बिनवौ प्रभु तोही॥ सुनत गरुड़ कै गिरा बिनीता। सरल सुप्रेम सुखद सुपुनीता॥ भयउ तासु मन परम उछाहा। लाग कहै रघुपति गुन गाहा॥ प्रथमहि अति अनुराग भवानी। रामचरित सर कहेसि बखानी॥ पुनि नारद कर मोह अपारा। कहेसि बहुरि रावन अवतारा॥ प्रभु अवतार कथा पुनि गाई। तब सिसु चरित कहेसि मन लाई॥ दो० बाल चरित कहि बिबिध बिधि मन मह परम उछाह। रिषि आगमन कहेसि पुनि श्री रघुबीर बिवाह॥ ६४॥ चौ० बहुरि राम अभिषेक प्रसंगा। पुनि नृप बचन राज रस भंगा॥ पुरबासिन्ह कर बिरह बिषादा। कहेसि राम लछिमन संबादा॥ बिपिन गवन केवट अनुरागा। सुरसरि उतरि निवास प्रयागा॥ बालमीक प्रभु मिलन बखाना। चित्रकूट जिमि बसे भगवाना॥ सचिवागमन नगर नृप मरना। भरतागमन प्रेम बहु बरना॥ करि नृप क्रिया संग पुरबासी। भरत गए जह प्रभु सुख रासी॥ पुनि रघुपति बहु बिधि समुझाए। लै पादुका अवधपुर आए॥ भरत रहनि सुरपति सुत करनी। प्रभु अरु अत्रि भेंट पुनि बरनी॥ दो० कहि बिराध बध जेहि बिधि देह तजी सरभंग। बरनि सुतीछन प्रीति पुनि प्रभु अगस्ति सतसंग॥ ६५॥ चौ० कहि दंडक बन पावनताई। गीध मइत्री पुनि तेहि गाई॥ पुनि प्रभु पंचबटी कृत बासा। भंजी सकल मुनिन्ह की त्रासा॥ पुनि लछिमन उपदेस अनूपा। सूपनखा जिमि कीन्हि कुरूपा॥ खर दूषन बध बहुरि बखाना। जिमि सब मरम दसानन जाना॥ दसकंधर मारीच बतकही। जेहि बिधि भई सो सब तेहि कही॥ पुनि माया सीता कर हरना। श्री रघुबीर बिरह कछु बरना॥

पुनिप्रभुगीधक्रियाजिमिकीन्ही।बधिकबंधसबरिहिगतिदीन्ही॥बहुरिबिरहब
रनतरघुबीरा।जेहिबिधिगएसरोबरतीरा॥दो०॥प्रभुनारदसंबादकहिमारुतमि
लनप्रसंग।पुनिसुग्रीवमिताईबालिप्रानकरभंग॥कपिहितिलककरिप्रभुकृत
सैलप्रबरषनबास।बरनेउबरषासरदरितुरामरोषकपित्रास॥६६॥चौ०॥जेहि
बिधिकपिपतिकीसपठाए।सीताषोजसकलदिसिधाए॥बिबरप्रबेसकीन्हजेहि
भांती।कपिन्हबहोरिमिलासंपाती॥सुनिसबकथासमीरकुमारा।नाघतभयउ
पयोधिअपारा॥लंकाकपिप्रबेसजिमिकीन्हा।पुनिसीतहिधीरजुजिमिदीन्हा॥
बनउजारिरावनहिप्रबोधी।पुरदहिनाघेउबहुरिपयोधी॥आएकपिसबजहँर
घुराई।बैदेहीकीकुसलसुनाई॥सेनसमेतजथारघुबीरा।उतरेजाइबारिनिधि
तीरा॥मिलाबिभीषनजेहिबिधिआई।सागरनिग्रहकथासुनाई॥दो०॥सेतु
बांधिकपिसेनजिमिउतरीसागरपार।गयउबसीठीबीरबरजेहिबिधिबालिकु
मार॥निसिचरकीसलराईबरनिसिबिबिधिप्रकार।कुंभकरनघननादकरबल
पौरुषसंघार॥६७॥चौ०॥निसिचरनिकरमरनबिधिनाना।रघुपतिरावनसमरब
षाना॥रावनबधमंदोदरिसोका।राजबिभीषनदेवअसोका॥सीतारघुपतिमि
लनबहोरी।सुरन्हकीन्हिअस्तुतिकरजोरी॥पुनिपुष्पकचढिकपिन्हसमेता।अ
वधचलेप्रभुकृपानिकेता॥जेहिबिधिरामनगरनिजआए।बायसबिसदचरितस
बगाए॥कहेसिबहोरिरामअभिषेका।पुरबरननृपनीतिअनेका॥कथासम
स्तभुसुंडिबषानी।जोमैंतुम्हसनकहीभवानी॥सुनिसबरामकथाषगनाहा।
कहतबचनमनपरमउछाहा॥सो०॥गयउमोरसंदेहसुनेउँसकलरघुपतिचरि
त॥भयउरामपदनेहतवप्रसादबायसतिलक॥मोहिभयउअतिमोहप्रभुबंधन
रनमहँनिरषि॥चिदानंदसंदोहरामबिकलकारनकवन॥६८॥चौ०॥देषीचरि
तअतिनरअनुसारी।भयउहृदयममसंसयभारी॥सोइभ्रमअबहितकरिमैंमा
ना।कीन्हअनुग्रहकृपानिधाना॥जोअतिआतपब्याकुलहोई।तरुछायासुषजा
नैसोई॥जौनहिंहोतमोहअतिमोही।मिलतेउँतातकवनबिधितोही॥सुनतेउँकि
मिहरिकथासुहाई।अतिबिचित्रबहुबिधिन्हगाई॥निगमागमपुरानमतए
हा।कहहिंसिद्धमुनिनहिंसंदेहा॥संतबिसुद्धमिलहिंपरितेही।चितवहिंरामकृ
पाकरिजेही॥रामकृपातवदरसनभयऊ।तवप्रसादसबसंसयगयऊ॥दो०॥सु
निबिहंगपतिबानीसहितबिनयअनुराग।पुलकगातलोचनसजलम
नहरषेउअतिकाग॥श्रोतासुमतिसुसीलसुचिकथारसिकहरिदास।पाइउ
माअतिगोप्यमपिसज्जनकरहिंप्रकास॥६९॥चौ०॥बोलेउकागभुसुंडिबहो
री।नभगनाथपरप्रीतिनथोरी॥सबबिधिनाथपूज्यतुम्हमेरे।कृपापात्ररघुना
यककेरे॥तुम्हहिनसंसयमोहनमाया।मोपरनाथकीन्हितुम्हदाया॥पठैमो
हमिसषगपतितोही।रघुपतिदीन्हबडाइमोही॥तुम्हनिजमोहकहीषगसा
ई।सोनहिंकछुआचरजगोसाई॥नारदभवबिरंचिसनकादी।जेमुनिनायक
आतमबादी॥मोहनअंधकीन्हकेहिकेही।कोजगकामनचावनजेही॥त्रिस्ना
केहिनकीन्हबौराहा।केहिकरहृदयक्रोधनहिंदाहा॥दो०॥ग्यानीतापससू
रकबिकोबिदगुनआगार।केहिकैलोभबिडंबनाकीन्हनएहिंसंसार॥श्रीमद
बक्रनकीन्हकेहिप्रभुतावधिरनकाहि।मृगलोचनिकेनयनसरकोअसला
गनजाहि॥७०॥चौ०॥गुनकृतसन्यपातनहिंकेही।कोउनमानमदतजेउनिबे
ही।जोबनजोरकेहिनहिंबलकावा।ममताकेहिकरजसनसावा॥म

मछरकाहिकलंकनलावा।केहीनसोकसमीरडोलावा।चिंतासांपिनिकहिनषा
या।कोजगजाहिनब्यापीमाया॥कीटमनोरथदारुसरीरा।जेहिनलागघुनकोअ
सधीरा॥सुतबितलोकईषनातीनी।केहिकैमतिइन्हकृतनमलीनी॥यहसबमा
याकरपरिवारा।प्रबलअमितकोबरनैपारा॥सिवचतुराननजाहिडराहीं।अपर
जीवकेहिलेषेमाहीं॥दो०॥ब्यापिरहेउसंसारमहंमायाकटकप्रचंड।सेनापति
कामादिभटदंभकपटपाषंड॥सोदासीरघुबीरकैसमुझेमिथ्यासोपि।छूटन
रामकृपाबिनुनाथकहौंपदरोपि॥७१॥चौ०॥जेहिमायासबजगहिनचावा।
जासुचरितलषिकाहुनपावा॥सोइप्रभुभ्रूबिलासषगराजा।नाचनटीइव
सहितसमाजा॥सोइसच्चिदानंदघनरामा।अजबिग्यानरूपबलधामा॥ब्याप
कब्याप्यअषंडअनंता।अषिलअमोघसक्तिभगवंता॥अगुनअदभ्रगिरागो
तीता।सबदरसीअनवद्यअजीता॥निर्मलनिराकारनिर्मोहा।नित्यनिरंज
नसुषसंदोहा॥प्रकृतिपारप्रभुसबउरबासी।ब्रह्मनिरीहबिरजअबिनासी॥
इहांमोहकरकारननाहीं।रबिसन्मुषतमकबहुंकिजाहीं॥दो०॥भगतहे
तुभगवानप्रभुरामधरेउतनुभूप।किएचरितपावनपरमप्राकृतनरअनुरूप॥
जथाअनेकबेषधरिनृत्यकरइनटकोइ।सोइसोइभावदेषावैआपुनहोइनसोइ॥७२॥
चौ०॥असिरघुपतिलीलाउरगारी।दनुजबिमोहनिजनसुषकारी॥जेमति
मलिनबिषयबसकामी।प्रभुपरमोहधरहिंइमिस्वामी॥नयनदोषजाकहंजब
होई।पीतबरनससिकहुंकहसोई॥जबजेहिदिसिभ्रमहोइषगेसा।सोकहपछिम
उयउदिनेसा॥नौकारूढचलतजगदेषा।अचलमोहबसआपुहिलेषा॥बालक
भ्रमहिंनभ्रमहिंगृहादी।कहहिंपरस्परमिथ्याबादी॥हरिबिषइकअसमोहबिहं
गा॥सपनेहुनहिंअग्यानप्रसंगा॥मायाबसमतिमंदअभागी।हृदयजमनि
काबहुबिधिलागी॥तेसठहठबससंसयकरहीं।निजअग्यानरामपरधरहीं॥दो
०॥कामक्रोधमदलोभरतग्रहासक्तदुषरूप।तेकिमिजानहिंरघुपतिहि
मूढपरेतमकूप॥निर्गुनरूपसुलभअतिसगुनजाननहिंकोइ।सुगमअगमना
नाचरितसुनिमुनिमनभ्रमहोइ॥७३॥चौ०॥सुनुषगेसरघुपतिप्रभुताई।कहौं
जथामतिकथासुहाई॥जेहिबिधिमोहभयउप्रभुमोही।सोउसबकथासुनावौं
तोही॥रामकृपाभाजनतुम्हताता।हरिगुनप्रीतिमोहिसुषदाता॥तातेनहिंक
छुतुम्हहिंदुरावौं।परमरहस्यमनोहरगावौं॥सुनहुरामकरसहजसुभाउ।जन
अभिमाननराषहिंकाउ॥संसृतिमूलसूलप्रदनाना।सकलसोकदायकअभि
माना॥तातेंकरहिंकृपानिधिदूरी।सेवकपरममताअतिभूरी॥जिमिसिसुतन
ब्रनहोइगोसांई।मातुचिरावकठिनकीनांई॥दो०॥जदपिप्रथमदुषपावैरोवै
बालअधीर।ब्याधिनासहितजननीगनतिनसोसिसुपीर॥तिमिरघुपतिनिजदा
सकरहरहिंमानहितलागि।तुलसिदासऐसेप्रभुहिकसनभजहुभ्रमत्यागि॥७४॥
चौ०॥रामकृपाआपनिजडताई।कहौंषगेससुनहुमनलाई॥जबजबराममनुज
तनधरहीं।भक्तहितलीलाबहुकरहीं॥तबतबअवधपुरीमैंजाउं।बालचरितबि
लोकिहरषाउं॥जन्ममहोत्सवदेषौंजाई।बरषपांचतहंरहौंलोभाई॥इष्टदेवम
मबालकरामा।सोभाबपुषकोटिसतकामा॥निजप्रभुबदननिहारिनिहारी।लो
चनसुफलकरौंउरगारी॥लघुबायसबपुधरिहरिसंगा।देषौंबालचरितबहु
रंगा॥दो०॥लरिकाईजहंजहंफिरहिंतहंतहंसंगउडाउं।जूठनिपरइअजिर
महंसोउठाइकरिषाउं॥एकबारअतिसैसबचरितकिएरघुबीर।सुमिरतप्रभु

लीला सोइ प्रगट कीन्ह मनुज सरीर ॥७५॥ चौ० ॥ कहै भसुंडि सुनहु षगनायक । राम चरित सेवक सुषदायक ॥ नृप मंदिर सुंदर सब भांती । षचित कनक मनि नाना जाती ॥ बरनि न जाइ रुचिर अंगनाई । जहं षेलहिं नित चारिउ भाई ॥ बाल बिनोद करत रघुराई । बिचरत अजिर जननि सुषदाई ॥ मरकत मृदुल कलेवर स्यामा । अंग अंग प्रति छबि बहु कामा ॥ नव राजीव अरुन मृदु चरना । पदज रुचिर नष ससि दुति हरना ॥ ललित अंक कुलिसादिक चारी । नूपुर चारु मधुर रवकारी ॥ चारु पुरट मनि रचित बनाई । कटि किंकिनि कल मुषर सुहाई ॥ दो० ॥ रेषा त्रय सुंदर उदर नाभी रुचिर गंभीर । उर आयत भ्राजत बिबिधि बाल बिभूषन चीर ॥७६॥ चौ० ॥ अरुन पानि नष करज मनोहर । बाहु बिसाल बिभूषन सुंदर ॥ कंध बाल केहरि दर ग्रीवा । चारु चिबुक आनन छबि सींवा ॥ कलबल बचन अधर अरुनारे । दुइ दुइ दसन बिसद बर बारे ॥ ललित कपोल मनोहर नासा । सकल सुषद ससि कर सम हासा ॥ नील कंज लोचन भव मोचन । भ्राजत भाल तिलक गोरोचन ॥ बिकट भृकुटि सम श्रवन सुहाए । कुंचित कच मेचक छबि छाए ॥ पीत झीनि झगुली तन सोही । किलकनि चितवनि भावति मोही ॥ रूप रासि नृप अजिर बिहारी । नाचहिं निज प्रतिबिंब निहारी ॥ मोहि सन करहिं बिबिधि बिधि क्रीडा । बरनत मोहि होत अति ब्रीडा ॥ किलकत मोहि धरन जब धावहिं । चलौं भागि तब पूप देषावहिं ॥ दो० ॥ आवत निकट हंसहिं प्रभु भाजत रुदन कराहिं । जाउं समीप गहन पद फिरि फिरि चितइ पराहिं ॥ प्राकृत सिसु इव लीला देषि भयउ मोहि मोह । कवन चरित्र करत प्रभु चिदानंद संदोह ॥७७॥ चौ० ॥ इतना मन आनत षगराया । रघुपति प्रेरित ब्यापी माया ॥ सो माया न दुषद मोहि काहीं । आन जीव इव संसृत नाहीं ॥ नाथ इहां कछु कारन आना । सुनहु सो सावधान हरिजाना ॥ ग्यान अषंड एक सीताबर । माया बस्य जीव सचराचर ॥ जौं सब केइ रह ग्यान एकरस । ईस्वर जीवहि भेद कहहु कस ॥ माया बस्य जीव अभिमानी । ईस बस्य माया गुन षानी ॥ परबस जीव स्वबस भगवंता । जीव अनेक एक श्रीकंता ॥ मुधा भेद जद्यपि कृत माया । बिनु हरि जाइ न कोटि उपाया ॥ दो० ॥ रामचंद्र के भजन बिनु जो चह पद निरबान । ग्यानवंत अपि सो नर पसु बिनु पूंछ बिषान ॥ राकापति षोडस उअहिं तारागन समुदाइ । सकल गिरिन्ह दव लाइ अ बिनु रबि राति न जाइ ॥७८॥ चौ० ॥ ऐसेहिं बिनु हरि भजन षगेसा । मिटइ न जीवन्ह केर कलेसा ॥ हरि सेवकहि न ब्याप अबिद्या । प्रभु प्रेरित ब्यापै तेहि बिद्या ॥ ताते नास न होइ दास कर । भेद भगति बाढै बिहंगबर ॥ भ्रम ते चकित राम मोहि देषा । बिहंसे सो सुनु चरित बिसेषा ॥ तेहि कौतुक कर मरम न काहू । जाना अनुज न मातु पिताहू ॥ जानु पानि धाए मोहि धरना । स्यामल गात अरुन कर चरना ॥ तब मैं भागि चलेउं उरगारी । राम गहन कहं भुजा पसारी ॥ जिमि जिमि दूरि उडाउं अकासा । तहं हरि भुज देषौं निज पासा ॥ दो० ॥ ब्रह्मलोक लगि गयउं मैं चितयउं पाछ उडात । जुग अंगुल कर बीच सब राम भुजहि मोहि तात ॥ सप्तावरन भेद करि जहां लगि गति मोरि । गयउं तहां प्रभु भुज निरषि ब्याकुल भयउं बहोरि ॥७९॥ चौ० ॥ मूंदेउं नयन त्रसित जब भयऊ । पुनि चितवत कोसलपुर गयऊ ॥ मोहि बिलोकि राम मुसुकाहीं । बिहंसत तुरत गयउं मुष माहीं ॥ उदर माझ सुनु अंडजराया । देषेउं बहु ब्रह्मांड निकाया ॥ अति बिचित्र तहं लोक अनेका । रचना अधिक एक तें एका ॥ कोटिन्ह चतुरानन गौरीसा । अगनित उडगन रबि रजनीसा ॥ अगनित लोकपाल जम काला । अगनित भूधर भूमि बिसाला ॥ सागर सरि सर बिपिन अपारा । नाना भांति सृष्टि बिस्तारा ॥ सुर मुनि सिद्ध नाग नर किंनर । चारि प्रकार जीव सचराचर ॥ दो० ॥ जो नहि देषा नहि सुना जो मनहू न समाइ । सो सब अद्भुत देषेउं बरनि कवनि बिधि जाइ ॥ एक एक ब्रह्मांड महुं रहउं बरष सत एक । एहि बिधि देषत फिरौं मैं अंडकटाह अनेक ॥८०॥ चौ० ॥ लोक लोक प्रति भिन्न बिधाता । भिन्न बिस्नु सिव मनु दिसित्राता ॥ नर गंधर्ब भूत बेताला । किंनर निसिचर पसु षग ब्याला ॥ देव दनुज गन नाना जाती । सकल जीव तहं आनहि भांती ॥ महि सरि सागर सर गिरि नाना । सब प्रपंच तहं आनै आना ॥ अंडकोस प्रति प्रति निज रूपा । देषेउं जिनस अनेक अनूपा ॥ अवधपुरी प्रति भुवन निनारी । सरजू भिन्न भिन्न नर नारी ॥ दसरथ कौसल्या सुनु ताता । बिबिध रूप भरतादिक भ्राता ॥ प्रति ब्रह्मांड राम अवतारा । देषौं बाल बिनोद उदारा ॥ दो० ॥ भिन्न भिन्न सब देषेउं अति बिचित्र हरिजान । अगनित भुवन फिरेउं प्रभु राम न देषेउं आन ॥ सोइ सिसुपन सोइ सोभा सोइ कृपाल रघुबीर । भुवन भुवन देषत फिरौं प्रेरित मोह समीर ॥८१॥ चौ० ॥ भ्रमत मोहि ब्रह्मांड अनेका । बीते मनहु कल्प सत एका ॥ फिरत फिरत निज आश्रम आयउं । तहां पुनि रहि कछु काल गवांयउं ॥ निज प्रभु जन्म अवध सुनि पायउं । निर्भर प्रेम हरषि उठि धायउं ॥ देषेउं जन्म महोत्सव जाई । जेहि बिधि प्रथम कहा मैं गाई ॥ राम उदर महुं देषेउं जग नाना । देषत बनै न जाइ बषाना ॥ तहां पुनि देषेउं राम सुजाना । मायापति कृपाल भगवाना ॥ करौं बिचार बहोरि बहोरी । मोह कलिल ब्यापित मति मोरी ॥ उभय घरी महं मैं सब देषा । भयउं भ्रमित मन मोह बिसेषा ॥ दो० ॥ देषि कृपाल बिकल मोहि बिहंसे तब रघुबीर । बिहंसत ही मुष बाहेर आयउं सुनु मतिधीर ॥ सोइ लरिकाई मो सन करन लगे पुनि राम । कोटि भांति समुझाइ मन न लहै बिश्राम ॥८२॥ चौ० ॥ देषि चरित यह सो प्रभुताई । समुझत देह दसा बिसराई ॥ धरनि परेउं मुष आव न बाता । त्राहि त्राहि आरत जन त्राता ॥ प्रेमाकुल प्रभु मोहि बिलोकी । निज माया प्रभुता तब रोकी ॥ कर सरोज प्रभु मम सिर धरेऊ । दीनदयाल सकल दुष हरेऊ ॥ कीन्ह राम मोहि बिगत बिमोहा । सेवक सुषद कृपा संदोहा ॥ प्रभुता प्रथम बिचारि बिचारी । मन महं होइ हरष अति भारी ॥ भगत बछलता प्रभु कै देषी । उपजी मम उर प्रीति बिसेषी ॥ सजल नयन पुलकित कर जोरी । कीन्हेउं बहु बिधि बिनय बहोरी ॥ दो० ॥ सुनि सप्रेम मम बानी देषि दीन निज दास । बचन सुषद गंभीर मृदु बोले रमानिवास ॥ काकभसुंडि मागु बर अति प्रसंन मोहि जानि । अनिमादिक सिधि अपर रिधि मोच्छ सकल सुष षानि ॥८३॥ चौ० ॥ ग्यान बिबेक बिरति बिग्याना । मुनि दुर्लभ गुन जे जग नाना ॥ आजु देउं सब संसय नाहीं । मागु जो तोहि भाव मन माहीं ॥ सुनि प्रभु बचन अधिक अनुरागेउं । मन अनुमान करन तब लागेउं ॥ प्रभु कह देन सकल सुष सही । भगति आपनी देन न कही ॥ भगति हीन गुन सब सुष ऐसे । लवन बिना बहु ब्यंजन जैसे ॥ भजन हीन सुष कवने काजा । अस बिचारि बोलेउं षगराजा ॥ जौं प्रभु होइ प्रसंन बर देहू । मो पर करहु कृपा अरु नेहू ॥ मन भावत बर मागौं स्वामी । तुम्ह उदार उर अंतरजामी ॥ दो० ॥ अबिरल भगति बिसुद्ध तव श्रुति पुरान जो गावैं । जेहि षोजत जोगीस मुनि प्रभु प्रसाद कोउ पावैं ॥ भगत कल्पतरु प्रनत हित कृपासिंधु सुषधाम । सोइ निज भगति मोहि प्रभु देहु दया करि राम ॥८४॥ चौ० ॥ एवमस्तु कहि रघुकुलनायक । बोले बचन परम सुष

बा·उ· १०

दायक॥ सुनु बायस तैं सहज सयाना॥ काहे न मागसि अस बरदाना॥ सब सुख खानि भगति तैं मागी॥ नहिं जग कोउ तोहि सम बड़भागी॥ जो मुनि कोटि जतन नहिं लहहीं॥ जे जप जोग अनल तन दहहीं॥ रीझेउँ देखि तोरि चतुराई॥ मागेहु भगति मोहि अति भाई॥ सुनु बिहंग प्रसाद अब मोरें॥ सब सुभ गुन बसिहहिं उर तोरें॥ भगति ग्यान बिग्यान बिरागा॥ जोग चरित्र रहस्य बिभागा॥ जानब तैं सबही कर भेदा॥ मम प्रसाद नहिं साधन खेदा॥ दो०॥ माया संभव भ्रम सब अब न ब्यापिहहिं तोहि॥ जानेसु ब्रह्म अनादि अज अगुन गुनाकर मोहि॥ मोहि भगत प्रिय संतत अस बिचारि सुनु काग॥ कायँ बचन मन मम पद करेसु अचल अनुराग॥ ८५॥ चौ०॥ अब सुनु परम बिमल मम बानी॥ सत्य सुगम निगमादि बखानी॥ निज सिद्धांत सुनावौं तोही॥ सुनु मन धरु सब तजि भजु मोही॥ मम माया संभव संसारा॥ जीव चराचर बिबिधि प्रकारा॥ सब मम प्रिय सब मम उपजाये॥ सब ते अधिक मनुज मोहि भाये॥ तिन्ह महँ द्विज द्विज महँ श्रुतिधारी॥ तिन्ह महुँ निगम धरम अनुसारी॥ तिन्ह महँ प्रिय बिरक्त पुनि ग्यानी॥ ग्यानिहु ते अति प्रिय बिग्यानी॥ तिन्ह ते पुनि मोहि प्रिय निज दासा॥ जेहि गति मोरि न दूसरि आसा॥ पुनि पुनि सत्य कहउँ तोहि पाहीं॥ मोहि सेवक सम प्रिय कोउ नाहीं॥ भगति हीन बिरंचि किन होई॥ सब जीवहु सम प्रिय मोहि सोई॥ भगतिवंत अति नीचउ प्रानी॥ मोहि प्रानप्रिय असि मम बानी॥ दो०॥ सुचि सुसील सेवक सुमति प्रिय कहु काहि न लाग॥ श्रुति पुरान कह नीति असि सावधान सुनु काग॥ ८६॥ चौ०॥ एक पिता के बिपुल कुमारा॥ होहिं पृथक गुन सील अचारा॥ कोउ पंडित कोउ तापस ग्याता॥ कोउ धनवंत सूर कोउ दाता॥ कोउ सर्बग्य धर्मरत कोई॥ सब पर पितहि प्रीति सम होई॥ कोउ पितु भगत बचन मन कर्मा॥ सपनेहुँ जान न दूसर धर्मा॥ सो सुत प्रिय पितु प्रान समाना॥ जद्यपि सो सब भाँति अयाना॥ एहि बिधि जीव चराचर जेते॥ त्रिजग देव नर असुर समेते॥ अखिल बिस्व यह मोर उपाया॥ सब पर मोहि बराबरि दाया॥ तिन्ह महँ जो परिहरि मद माया॥ भजै मोहि मन बच अरु काया॥ दो०॥ पुरुष नपुंसक नारि नर जीव चराचर कोइ॥ सर्ब भाव भज कपट तजि मोहि परम प्रिय सोइ॥ सो०॥ सत्य कहउँ खग तोहि सुचि सेवक मम प्रानप्रिय॥ अस बिचारि भजु मोहि परिहरि आस भरोस सब॥ ८७॥ चौ०॥ कबहूँ काल न ब्यापिहि तोही॥ सुमिरेसु भजेसु निरंतर मोही॥ प्रभु बचनामृत सुनि न अघाऊँ॥ तनु पुलकित मन अति हरषाऊँ॥ सो सुख जानइ मन अरु काना॥ नहिं रसना पहिं जाइ बखाना॥ प्रभु सोभा सुख जानहिं नयना॥ कहि किमि सकहिं तिन्हहि नहिं बयना॥ बहु बिधि मोहि प्रबोधि सुख देई॥ लगे करन सिसु कौतुक तेई॥ सजल नयन कछु मुख करि रूखा॥ चितइ मातु लागी अति भूखा॥ देखि मातु आतुर उठि धाई॥ कहि मृदु बचन लिए उर लाई॥ गोद राखि कराव पय पाना॥ रघुपति चरित ललित कर गाना॥ सो०॥ जेहि सुख लागि पुरारि असुभ बेष कृत सिव सुखद॥ अवधपुरी नर नारि तेहि सुख महुँ संतत मगन॥ ८८॥ चौ०॥ मैं पुनि अवध रहेउँ कछु काला॥ देखेउँ बालबिनोद रसाला॥ राम प्रसाद भगति बर पायउँ॥ प्रभु पद बंदि निजाश्रम आयउँ॥ तब ते मोहि न ब्यापी माया॥ जब ते रघुनायक अपनाया॥ यह सब गुप्त चरित मैं गावा॥ हरि मायाँ जिमि मोहि नचावा॥ निज अनुभव अब कहउँ खगेसा॥ बिनु हरि भजन न जाहिं कलेसा॥ राम कृपा बिनु सुनु खगराई॥ जानि न जाइ राम प्रभुताई॥ जानें बिनु न होइ परतीती॥ बिनु परतीति होइ नहिं प्रीती॥ प्रीति बिना नहिं भगति दृढ़ाई॥ जिमि खगपति जल कै चिकनाई॥ सो०॥ बिनु गुर होइ कि ग्यान ग्या

न कि होइ बिराग बिनु॥ गावहिं बेद पुरान सुख कि लहिअ हरि भगति बिनु॥ कोउ बिश्राम कि पाव तात सहज संतोष बिनु॥ चलै कि जल बिनु नाव कोटि जतन पचि पचि मरिय॥ ८९॥ चौ०॥ बिनु संतोष न काम नसाहीं॥ काम अछत सुख सपनेहुँ नाहीं॥ राम भजन बिनु मिटहिं कि कामा॥ थल बिहीन तरु कबहुँ कि जामा॥ बिनु बिग्यान कि समता आवै॥ कोउ अवकास कि नभ बिनु पावै॥ श्रद्धा बिना धर्म नहिं होई॥ बिनु महि गंध कि पावै कोई॥ बिनु तप तेज कि कर बिस्तारा॥ जल बिनु रस कि होइ संसारा॥ सील कि मिल बिनु बुध सेवकाई॥ जिमि बिनु तेज न रूप गोसाँई॥ निज सुख बिनु मन होइ कि थीरा॥ परस कि होइ बिहीन समीरा॥ कवनिउ सिद्धि कि बिनु बिस्वासा॥ बिनु हरि भजन न भव भय नासा॥ दो०॥ बिनु बिस्वास भगति नहिं तेहि बिनु द्रवहिं न रामु॥ राम कृपा बिनु सपनेहुँ जीव न लह बिश्रामु॥ सो०॥ अस बिचारि मतिधीर तजि कुतर्क संसय सकल॥ भजहु राम रघुबीर करुनाकर सुंदर सुखद॥ ९०॥ चौ०॥ निज मति सरिस नाथ मैं गाई॥ प्रभु प्रताप महिमा खगराई॥ कहेउँ न कछु करि जुगुति बिसेषी॥ यह सब मैं निज नयनन्हि देखी॥ महिमा नाम रूप गुन गाथा॥ सकल अमित अनंत रघुनाथा॥ निज निज मति मुनि हरि गुन गावहिं॥ निगम सेष सिव पार न पावहिं॥ तुम्हहि आदि खग मसक प्रजंता॥ नभ उड़ाहिं नहिं पावहिं अंता॥ तिमि रघुपति महिमा अवगाहा॥ तात कबहुँ कोउ पाव कि थाहा॥ रामु काम सत कोटि सुभग तन॥ दुर्गा कोटि अमित अरि मर्दन॥ सक्र कोटि सत सरिस बिलासा॥ नभ सत कोटि अमित अवकासा॥ दो०॥ मरुत कोटि सत बिपुल बल रबि सत कोटि प्रकास॥ ससि सत कोटि सुसीतल समन सकल भव त्रास॥ काल कोटि सत सरिस अति दुस्तर दुर्ग दुरंत॥ धूमकेतु सत कोटि सम दुराधरष भगवंत॥ ९१॥ चौ०॥ प्रभु अगाध सत कोटि पताला॥ समन कोटि सत सरिस कराला॥ तीरथ अमित कोटि सम पावन॥ नाम अखिल अघ पूग नसावन॥ हिमगिरि कोटि अचल रघुबीरा॥ सिंधु कोटि सत सम गंभीरा॥ कामधेनु सत कोटि समाना॥ सकल काम दायक भगवाना॥ सारद कोटि अमित चतुराई॥ बिधि सत कोटि सृष्टि निपुनाई॥ बिष्नु कोटि सम पालन कर्ता॥ रुद्र कोटि सत सम संहर्ता॥ धनद कोटि सत सम धनवाना॥ माया कोटि प्रपंच निधाना॥ भार धरन सत कोटि अहीसा॥ निरवधि निरुपम प्रभु जगदीसा॥ छं०॥ निरुपम न उपमा आन राम समान रामु निगम कहै॥ जिमि कोटि सत खद्योत सम रबि कहत अति लघुता लहै॥ एहि भाँति निज निज मति बिलास मुनीस हरिहि बखानहीं॥ प्रभु भाव गाहक अति कृपाल सप्रेम सुनि सुख मानहीं॥ दो०॥ रामु अमित गुन सागर थाह कि पावै कोइ॥ संतन्ह सन जस किछु सुनेउँ तुम्हहि सुनायउँ सोइ॥ सो०॥ भाव बस्य भगवान सुख निधान करुना भवन॥ तजि ममता मद मान भजिअ सदा सीता रवन॥ ९२॥ चौ०॥ सुनि भुसुंडि के बचन सुहाये॥ हरषित खगपति पंख फुलाये॥ नयन नीर मन अति हरषाना॥ श्रीरघुपति प्रताप उर आना॥ पाछिल मोह समुझि पछिताना॥ ब्रह्म अनादि मनुज करि माना॥ पुनि पुनि काग चरन सिरु नावा॥ जानि राम सम प्रेम बढ़ावा॥ गुर बिनु भव निधि तरइ न कोई॥ जौं बिरंचि संकर सम होई॥ संसय सर्प ग्रसेउ मोहि ताता॥ दुखद लहरि कुतर्क बहु ब्राता॥ तव सरूप गारुड़ि रघुनायक॥ मोहि जिआयउ जन सुखदायक॥ तव प्रसाद मम

मोहनमाना॥ रामरहस्यअनूपजाना॥दोहा॥ ताहिप्रसंसिविविधिविधिसीसनायकरजोरि॥ वचन
विनीतसप्रेममृदुवोलेउगरुडवहोरि॥ प्रभुअपनेअविवेककेवूझौंस्वामीतोहि॥ कृपासिंधु
सादरकहहुजानिदासनिजमोहि॥चौपाई॥ तुम्हसर्वज्ञतज्ञतमपारा॥ सुमतिसुसीलसर
लआचारा॥ ज्ञानविरतिविज्ञाननिवासा॥ रघुनायककेतुम्हप्रियदासा॥ कारनकवनदे
हयहपाई॥ तातसकलमोहिकहहुवुझाई॥ रामचरितसरसुंदरस्वामी॥ पायहुकहँक
हहुनभगामी॥ नाथसुनामैंअससिवपाहीं॥ महाप्रलयहुनासतवनाहीं॥ मृषावचन
नहिंईस्वरकहई॥ सोउमोरेंमनसंसयअहई॥ अगजगजीवनागनरदेवा॥ नाथसक
लजगकाल कलेवा॥ अंडकटाहअमितलयकारी॥ कालसदादुरतिक्रमभा
री॥सो॥ तुम्हहिनव्यापतकालअतिकरालकारनकवन॥ मोहिसोकहहुकृपा
लज्ञानप्रभावकिजोगवल॥दो॥ प्रभुतवआश्रमआयउमोरमोहभ्रमभाग॥ का
रनकवनसोनाथसवकहहुसहितअनुराग॥चौपाई॥ गरुडगिरासुनिहरषेउकागा॥
वोलेउउमापरमअनुरागा॥ धन्यधन्यतवमतिउरगारी॥ प्रस्नतुम्हारिमोहिअतिप्यारी॥
सुनितवप्रस्नसप्रेमसुहाई॥ वहुतजन्मकीसुधिमोहिआई॥ सवनिजकथाकहौंमैं
गाई॥ तातसुनहुसादरमनलाई॥ जपतपमखसमदमव्रतदाना॥ विरतिविवेकजोगवि
ज्ञाना॥ सवकरफलरघुपतिपदप्रेमा॥ तेहिविनुकोउनपावइछेमा॥ एहितन
रामभक्तिमैंपाई॥ तातेमोहिममताअधिकाई॥ जिहितेंकछुनिजस्वारथहोई॥ तिहिप
रममताकरसवकोई॥सो॥रा॥ पन्नगारिअसिनीतिश्रुतिसंमतसज्जनकहहिं॥ नीच
हुसनप्रीतिकरियजानिनिजपरमहित॥ पाटकीटतेंहोइतिहितेंपाटंवररुचिर॥
कृमिपालैसवकोइपरमअपावनप्रानसम॥चौपाई॥ स्वारथसांचजीवकहुएहा॥ मन
क्रमवचनरामपदनेहा॥ सोइपावनसोइसुभगसरीरा॥ जोतनुपायभजियरघुवी
रा॥ रामविमुखलहिविधिसमदेही॥ कविकोविदनप्रसंसहितेही॥ रामभक्तिएहितन
उरजामी॥ तातेमोहिपरमप्रियस्वामी॥ तजौंनतननिजइच्छामरणा॥ तनुविनुवे
दभजननहिवरणा॥ प्रथममोहमोहिवहुतविगोवा॥ रामविमुखसुखकवहुनसोवा॥
नानाजन्मकर्मपुनिनाना॥ कियेजोगजपतपमखदाना॥ कवनजोनिजन्मेउजि
हिनाहीं॥ मैंखगेसभ्रमिभ्रमिजगमाहीं॥ देखेउसवकरिकर्मगुसाईं॥ सुखीन
भयउअवहिकीनाईं॥ सुधिमोहिनाथजन्मवहुकेरी॥ सिवप्रसादमतिमोहनघे
री॥दो॥ प्रथमजन्मकेचरितअवकहौंसुनहुविहगेस॥ सुनिप्रभुपदरतिउपज
जातेंमिटहिंकलेस॥ पूर्वकल्पएकप्रभुजुगकलिजुगमलमूल॥ नरअरुना
रिअधर्मरतसकलनिगमप्रतिकूल॥चौपाई॥ तेहिकलिजुगकोसलपुरजाई॥
जन्मतभयउसूद्रतनुपाई॥ सिवसेवकमनक्रमअरुवानी॥ आनदेवनिंदकअभिमा
नी॥ धनमदमत्तपरमवाचाला॥ उग्रवुद्धिउरदंभविसाला॥ जद्यपिरहेउरघुपतिर
जधानी॥ तदपिनकछुमहिमातवजानी॥ अवजानामैंअवधप्रभावा॥ निगमाग
मपुराणअसगावा॥ कवनेहुजन्मअवधवसजोई॥ रामपरायणसोपरिहोई॥ अ
वधप्रभावजानतवप्रानी॥ जवउरवसहिंरामधनुपानी॥ सोकलिकालकठि
नउरगारी॥ पापपरायणसवनरनारी॥दो॥ कलिमलग्रसेधर्मसवलुप्तभ
एसदग्रंथ॥ दंभिननिजमतिकल्पिकरिप्रगटकियेवहुपंथ॥ भयेलोकसवमो
हवसलोभग्रसेसुभकर्म॥ सुनुहरियानज्ञाननिधिकहौंकछुककलिधर्म॥
चौपाई॥ वर्णधर्मनहिंआश्रमचारी॥ श्रुतिविरोधरतनरअरुनारी॥ द्विजश्रु

तिवेचकभूपप्रजासन॥ कोउनहिंमाननिगमअनुसासन॥ मारगसोइजाकहँजोइभा
वा॥ पंडितसोइजोगालवजावा॥ मिथ्यारंभदंभरतजोई॥ ताकहुसंतकहैसवकोई॥
सोइसयानजोपरधनहारी॥ जोकरदंभसोवडआचारी॥ जोकहझूठमसखरीजाना॥
कलिजुगसोइगुणवंतवखाना॥ निराचारजोश्रुतिपथत्यागी॥ ज्ञानवंतसोइपरमवि
रागी॥ जाकेनखअरुजटाविसाला॥ सोइतापसप्रसिद्धकलिकाला॥दो॥ अ
सुभवेषभूषणधरेंभक्ष्याभक्ष्यजेखाहिं॥ तेइजोगीतेइसिद्धनरपूज्यतेकलिजुगमा
हिं॥सो॥रा॥ जेअपकारीचारतिन्हकरगौरवमान्यतेइ॥ मनक्रमवचनलवारते
इवकाकलिकालमहुँ॥चौ॥ई॥ नारिविवसनरसकलगुसाईं॥ नाचहिंनटमर्कट
कीनाईं॥ सूद्रद्विजनउपदेसहिंज्ञाना॥ मेलिजनेउलेहिंकुदाना॥ सवनरकामलो
भरतक्रोधी॥ देवविप्रश्रुतिसंतविरोधी॥ गुणमंदिरसुंदरपतित्यागी॥ भजहिंना
रिपरपुरुषअभागी॥ सौभागिनीविभूषणहीना॥ विधवनकेसृंगारनवीना॥
गुरुसिष्यअंधवधिरकरलेखा॥ एकनसुनइएकनहिंदेखा॥ हरिसिष्यधनसो
कनहरई॥ सोगुरुघोरनरकमहिपरई॥ मातपितावालकनिवुलावहिं॥ उदरभ
रैसोइधर्मसिखावहिं॥दो॥ ब्रह्मज्ञानविनुनारिनरकहहिंनदूसरिवात॥ कौ
डीलागिलोभवसकरहिंविप्रगुरुघात॥ वादहिंसूद्रद्विजनसनहमतुमतेंकछु
घाटि॥ जानैब्रह्मसोविप्रवरआंखिदिखावहिंडाटि॥चौपाई॥ परत्रियलंपटकपट
सयाने॥ मोहद्रोहममतालपटाने॥ तेइअभेदवादीज्ञानीनर॥ देखामैंचरित्रक
लिजुगकर॥ आपुगयेअरुतिनहूघालहिं॥ जेकहुसतमारगप्रतिपालहिं॥ कल्प
कल्पभरिएकएकनरका॥ परहिंजेदूषहिंश्रुतिकरितरका॥ जेवर्णाधमतेलि
कुम्हारा॥ स्वपचकिरातकोलकलवारा॥ नारिमुईगृहसंपतिनासी॥ मूड
मुडायहोहिंसंन्यासी॥ तेविप्रनसनआपुपुजावैं॥ उभयलोकनिजहाथनसा
वैं॥ विप्रनिरक्षरलोलुपकामी॥ निराचारसठवृषलीस्वामी॥ सूद्रकरहिंजपतपव्र
तदाना॥ वैठिवरासनकहहिंपुराना॥ सवनरकल्पितकरहिंअचारा॥ जाय
नवरनिअनीतिअपारा॥दो॥ भयेवर्णसंकरकलीभिन्नसेतुसवलोग॥ क
रहिंपापपावहिंदुखभयरुजसोकवियोग॥ श्रुतिसंमतहरिभक्तिपथसं
युतविरतिविवेक॥ तेहिनचलहिंनरमोहवसकल्पहिंपंथअनेक॥चौ॥
ई॥ वहुदामसंवारहिंधामजती॥ विषयाहरिलीन्हनरहीविरती॥ तपसीधनवं
तदरिद्रगृही॥ कलिकौतुकतातनजातकही॥ कुलवंतिनिकारहिंनारिसती॥ गृह
आनहिंचेरिनिवेरिगती॥ सुतमानहिंमातपितातवलौं॥ अवलाननदीखनहीं
जवलौं॥ ससुरारिपियारिलगीजवतें॥ रिपुरूपकुटुंवभयेतवतें॥ नृपपाप
परायणधर्मनहीं॥ करिदंडविडंवप्रजानितहीं॥ धनवंतकुलीनमलीनअपी॥
द्विजचिन्हजनेउउघारतपी॥ नहिमानपुराणनवेदहिजो॥ हरिसेवकसंतसही
कलिसो॥ कविवृंदउदारदुनीनसुनी॥ गुणदूषकव्रातनकोपिगुनी॥ कलि
वारहिंवारदुकालपरै॥ विनुअन्नदुखीसवलोकमरै॥दो॥ सुनुखगेससकलि
कपटहठदंभद्वेषपाखंड॥ मानमोहमारादिमदव्यापिरहेउव्रह्मंड॥ तामस
धर्मकरहिंनरजपतपव्रतमखदान॥ देवनवर्षहिंधरणिपरवोयेनजामहिं
धान॥चौ॥ई॥ अवलाकचभूषणभूरिछुधा॥ धनहीनदुखीममतावहुधा॥
सुखचाहहिंमूढनधर्मरता॥ मतिथोरिकठोरिनकोमलता॥ नरपीडितरोगन
भोगकहीं॥ अभिमानविरोधअकारणहीं॥ लघुजीवनसंवतपंचदसा॥ क

उ.३.
१२

लपांतनतनासगुमानुअसा॥ कलिकालबिहालकिएमनुजा॥ नहिंमानतकौअनुजा
तनुजा॥ नहिंतोषबिचारनसीतलता॥ सबजातिकुजातिभएमंगता॥ इरषापरुषाछरलो
लुपता॥ भरिपूरिरहीसमताबिगता॥ सबलोगबियोगबिसोकहये॥ बर्नाश्रमधर्म
अचारगये॥ दमदानदयानहिंजानपनी॥ जडतापरबंचनतातिघनी॥ तनपोष
कनारिनरासगरे॥ परनिंदकजेजगमेंबगरे॥ सुनुब्यालारीकालकलिमलअ
वगुनआगार॥ गुनहुंबहुतकलिजुगकरबिनुप्रयासनिस्तार॥ कृतजुगत्रेताद्वा
परपूजामषअरुजोग॥ जोगतिहोइसोकलिहरिनामतेंपावहिंलोग॥ चो
पा॥ कृतजुगसबजोगीबिग्यानी॥ करिहरिध्यानतरहिंभवप्रानी॥ त्रेताबिबि
धजग्यनरकरहीं॥ प्रभुहिसमर्पिकर्मभवतरहीं॥ द्वापरकरिरघुपतिपदपूजा॥
नरभवतरहिंउपायनदूजा॥ कलिजुगकेवलहरिगुनगाहा॥ गावतनरपावहिंभ
वथाहा॥ कलिजुगजोगनजग्यनग्याना॥ एकअधाररामगुनगाना॥ सबभरोसत
जिभजजोरामहिं॥ प्रेमसमेतगावगुनग्रामहिं॥ सोइभवतरकछुसंसयनाहिं॥
नामप्रतापप्रगटकलिमाहीं॥ कलिकरएकपुनीतप्रतापा॥ मानसपुन्यहोहिंन
हिंपापा॥ दोहा॥ कलिजुगसमजुगआननहिंजौंनरकरविस्वास॥ गायरा
मगुनगनबिमलभवतरबिनहिंप्रयास॥ प्रगटचारिपदधर्मकेकलिमहिंए
कप्रधान॥ जेनकेनबिधिदीन्हेंदानकरइकल्यान॥ चौपाई॥ कृतजुगधर्महोहिं
सबकेरे॥ हृदयराममायाकेप्रेरे॥ सुद्धसत्वसमताबिग्याना॥ कृतप्रभावप्र
सन्नमनजाना॥ सत्वबहुतरजकछुरतिकर्मा॥ सबबिधिसुखत्रेताकरधर्मा॥
बहुरजस्वल्पसत्वकछुतामस॥ द्वापरधर्महर्षभयमानस॥ तामसबहुतरजोगुन
थोरा॥ कलिप्रभावबिरोधचहुंओरा॥ बुधजुगधर्मजानिमनमाहीं॥ तजिअधर्म
रतिधर्मकराहीं॥ कालधर्मनहिंब्यापहिंताहीं॥ रघुपतिचरनप्रीतिअतिजाही॥
नटकृतबिकटकपटखगराया॥ नटसेवकहिनब्यापैमाया॥ दोहा॥ हरिमाया
कृतदोषगुनबिनुहरिभजननजांहि॥ भजियरामसबकामतजिअसबिचारि
मनमांहि॥ तेहिंकलिकालबरषबहुबसेउंअवधबिहंगेस॥ परेउदुकालबिप
तिबसतबमैंगयेउंबिदेस॥ चौपाई॥ गयेउंउजेनीसुनुउरगारी॥ दीनमलीनदरिद्रदुष
री॥ गयेउकालकछुसंपतिपाई॥ तहंपुनिकरौंसंभुसेवकाई॥ बिप्रएकबैदिक
सिवपूजा॥ करहिंसदातिहिंकाजनदूजा॥ परमसाधुपरमारथबंदक॥ संभुउपा
सकनहिंहरिनिंदक॥ तेहिसेउंमैंकपटसमेता॥ द्विजदयालअतिनीतिनिकेता॥
बाहिजनम्रदेषिमोहिंसाईं॥ बिप्रपढावपुत्रकीनाईं॥ संभुमंत्रमोहिंद्विजवर
दीन्हा॥ सुभउपदेसबिबिधबिधिकीन्हा॥ जपौंमंत्रसिवमंदिरजाई॥ हृदयदंभ
अहमितिअधिकाई॥ दोहा॥ मैंखलमलसंकुलमतिनीचजातिबसमोह॥ हरिज
नद्विजदेषेंजरौंकरौंबिस्नकरद्रोह॥ सोरठा॥ गुरुनितमोहिप्रबोधदुषितदेषिआ
चरनमम॥ मोहिउपजइअतिक्रोधदंभिहिनीतिकिभावही॥ चौपाई॥ एकबारगुरु
लीन्हबोलाई॥ मोहिनीतिबहुभांतिसिषाई॥ सिवसेवाकरफलसुतसोई॥ अबिर
लभगतिरामपदहोई॥ रामहिंभजहिंतातसिवधाता॥ नरपामरकीकेतिकबाता॥
जासुचरनअजसिवअनुरागी॥ तासुद्रोहसुषचहसिअभागी॥ हरकहुंहरि
सेवकगुरुकहेऊ॥ सुनिषगनाथहृदयममदहेऊ॥ अधमजातिमैंबिद्यापाई॥
भयेउंजथाअहिदूधपिआई॥ मानीकुटिलकुभाग्यकुजाती॥ गुरुकरद्रोहकरौं
दिनराती॥ अतिदयालगुरुस्वल्पनक्रोधा॥ पुनिपुनिमोहिसिषावसुबोधा॥ जि

हितेंनीचबडाईपावा॥ सोप्रथमहिंहतिताहिनसावा॥ धूमअनलसंभवसुनुभा
ई॥ तेहिंबुझावघनपदवीपाई॥ रजमगपरीनिरादररहई॥ सबकेपदप्रहारनितसह
ई॥ मरुतउडावप्रथमतेहिंभरई॥ पुनिनृपनयनकिरीटन्हपरई॥ सुनुषगपति
असससमुझिप्रसंगा॥ बुधनहिंकरहिंअधमकरसंगा॥ कबिकोबिदगावहिंअसि
नीती॥ षलसनकलहनभलाइनप्रीती॥ उदासीननितरहियगुसांई॥ षलपरिहरि
यस्वानकीनाई॥ मैंषलहृदयकपटकुटिलाई॥ गुरुहितकहैनमोहिसोहाई॥ दो
हा॥ एकबारहरमंदिरजपतरहेउंसिवनाम॥ गुरुआयेउअभिमानतेंउठिन
हिंकीन्हप्रनाम॥ सोदयालनहिंकहेउकछुउरनरोषलवलेस॥ अतिअघगुरअ
पमानतासहिनहिंसकेमहेस॥ चौपाई॥ मंदिरमाझभईनभबानी॥ रेहतभाग्य
अग्यअभिमानी॥ जद्यपितवगुरुकेनहिंक्रोधा॥ अतिकृपालचितसम्यकबोधा॥
तदपिसापसठदेहौंतोही॥ नीतिबिरोधसोहाइनमोही॥ जौंनहिंदंडकरौंषल
तोरा॥ भ्रष्टहोइश्रुतिमारगमोरा॥ जेसठगुरुसनइरषाकरहीं॥ रौरवनरककोटि
जुगपरहीं॥ त्रिजगजोनिपुनिधरहिंसरीरा॥ अयुतजन्मभरिपावहिंपीरा॥ बैठि
रहेसिअजगरइवपापी॥ सर्पहोहुषलमलमतिब्यापी॥ महाबिटपकोटरमहुं
जाई॥ रहुअधमाधमअधगतिपाई॥ दोहा॥ हाहाकारकीन्हगुरुदारुनसुनिसि
वसाप॥ कंपितमोहिबिलोकिअतिउरउपजापरिताप॥ करिदंडवतसप्रेमद्वि
जसिवसन्मुखकरजोरि॥ बिनयकरतगदगदस्वरसमुझिघोरगतिमोरि॥
रुद्राष्टक॥ ॥ नमामीसमीसाननिर्वानरूपं॥ बिभुंब्यापकंब्रह्मवेदस्वरू
पं॥ निजंनिर्गुणंनिर्विकल्पंनिरीहं॥ चिदाकासमाकासवासंभजेहं॥ निराका
रमोंकारमूलंतुरीयं॥ गिराग्यानगोतीतमीसंगिरीसं॥ करालंमहाकालका
लंकृपालं॥ गुणागारसंसारपारंनतोहं॥ तुषाराद्रिसंकासगौरंगभीरं॥ मनोभू
तकोटिप्रभाश्रीसरीरं॥ स्फुरन्मौलिकल्लोलिनीचारुगंगा॥ लसद्भालबालेंदु
कंठेभुजंगा॥ चलत्कुंडलंभ्रूसुनेत्रंबिसालं॥ प्रसन्नाननंनीलकंठंदयालं॥ मृगा
धीसचर्मांबरंमुंडमालं॥ प्रियंसंकरंसर्वनाथंभजामि॥ प्रचंडंप्रकृष्टंप्रगल्भंप
रेसं॥ अखंडंअजंभानुकोटिप्रकासं॥ त्रयःसूलनिर्मूलनंसूलपाणिं॥ भजेहंभ
वानीपतिंभावगम्यं॥ कलातीतकल्यानकल्पांतकारी॥ सदासज्जनानंददा
तापुरारी॥ चिदानंदसंदोहमोहापहारी॥ प्रसीदप्रसीदप्रभोमन्मथारी॥ नया
वदुमानाथपादारविंदं॥ भजंतीहलोकेपरेवानराणां॥ नतावत्सुखंसांतिसंता
पनासं॥ प्रसीदप्रभोसर्वभूताधिवासं॥ नजानामियोगंजपंनैवपूजां॥ नतोहं
सदासर्वदासंभुतुभ्यं॥ जराजन्मदुःखौघतातप्यमानं॥ प्रभोपाहिआपन्नमा
मीसंभो॥ रुद्राष्टकमिदंप्रोक्तंविप्रेणहरतुष्टये॥ येपठंतिनराभक्त्यातेषांसंभुप्रसी
दति॥ दोहा॥ सुनिबिनतीसर्बग्यसिवदेषिबिप्रअनुराग॥ पुनिमंदिरनभबानीभइ
द्विजवरवरमांग॥ जौंप्रसन्नप्रभुमोपरनाथदीनपरनेह॥ निजपदभक्तिदे
हुप्रभुपुनिदूसरवरदेहु॥ तवमायाबसजीवजडसंततफिरहिभुलान॥ तेहि
परकोपनकरियप्रभुकृपासिंधुभगवान॥ संकरदीनदयालअबएहिपरहो
हुकृपाल॥ सापअनुग्रहहोइजिमिनाथथोरेहिकाल॥ चौपाई॥ एहिकरपरम
होइकल्याना॥ सोइकरहुअबकृपानिधाना॥ बिप्रगिरासुनिपरहितसानी॥
एवमस्तुइतिभइनभबानी॥ जदपिकीन्हएहिंदारुनपापा॥ मैंपुनिदीन्हको
पकरिसापा॥ तदपितुम्हारिसाधुतादेषी॥ करिहौंएहिपरकृपाबिसेषी॥ छमा
सीलजेपरउपकारी॥ तेद्विजमोहिप्रियजथाखरारी॥ मोरस्रापद्विजब्यर्थ

तजाइहि ॥ जन्म सहस्र अवस्य यह पायहि ॥ जन्मत मरत दुसह दुष होई ॥ इहस्वल्पउं ना
हि व्यापिहि सोई ॥ कवनेउ जन्म मिटहि नहि ग्याना ॥ सुनहु सूद्र मम वचन प्रमाना ॥ रघु
पति पुरी जन्म तव भयेऊ ॥ पुनि तैं मम सेवा मन दयेऊ ॥ पुरी प्रभाव अनुग्रह मोरें ॥ रा
म भगति उपजहि उर तोरें ॥ सुनु मम वचन सत्य अति भाई ॥ हरितोषन व्रत द्विज सेवकाई ॥
अव जिनि करहि विप्र अपमाना ॥ जानिसु संत अनंत समाना ॥ इंद्र कुलिस मम सूल वि
साला ॥ कालदंड हरिचक्र कराला ॥ जो इन्ह कर मारा नहि मरई ॥ विप्रद्रोह पावक सो ज
रई ॥ अस विवेक राषेउ मन माही ॥ तुम्ह कहुं जग दुर्लभ कछु नाही ॥ अवरो एक आ
सिषा मोरी ॥ अप्रतिहत गति होइहि तोरी ॥ दो० ॥ सुनि सिव वचन हरषि गुरु एवम
स्तु इति भाषि ॥ मोहि प्रवोधि गयउ ग्रह संभु भवन उर राषि ॥ प्रेरित काल विंधि गिरि
जाइ भयेउं मैं व्याल ॥ पुनि प्रयास विनु सो तनु तजेउं गयें कछु काल ॥ चौपाई ॥ जीव जं
न कछु कवहुं न पाऊं ॥ आगे जु आए आवहि उवाऊ ॥ क्षुधा विषाद न धरम दुषारी ॥ नि
नउ रमों गहेउ उरगारी ॥ सम विसम विषाद्धिल तिज केरेनी ॥ हृदय हूल श्रुति आइत
वरनी ॥ त्रिजग जोनि गत इष नति नहीं ॥ नाथ न सर्व स्वामि रने जिनहीं ॥ दोहा ॥ जो
इ तन धरउं तजउं सोई अनायास हरियान ॥ जिमि नूतन पट पहिरय नर परिहरय पु
रान ॥ सिव राषी श्रुति नीति अरु मैं नहि पायउ क्लेस ॥ इहि विधि धरेउं विविध तनु ग्यान
न गयेउ षगेस ॥ चौपाई ॥ त्रिजग देव नर जो इतन धरेऊं ॥ तहां तहां राम भजन अनुसरे
ऊं ॥ एक सूल मोहि विसरे न काऊ ॥ गुरु कर कोमल सील सुभाऊ ॥ चरम देह द्विज कै मैं
पाई ॥ सुर दुर्लभ पुरान श्रुति गाई ॥ षेलौं तहां वालकन मीला ॥ करउं सकल रघुना
यक लीला ॥ प्रौढ भयेउं मोहि पिता पढावा ॥ समझौं सुनौं गुनौं नहि भावा ॥ मन ते सक
ल वासना भागी ॥ केवल राम चरन लय लागी ॥ कहु षगेस अस कवन अभागी ॥ षरी
सेव सुरधेनुहि त्यागी ॥ प्रेम मगन मोहि कछु न सुहाई ॥ हारेउ पिता पढाय पढा
ई ॥ भये काल वस जव पितु माता ॥ मैं वन गयेउं भजन जन त्राता ॥ जहां जहां वि
पिन मुनीस्वर पाऊं ॥ आश्रम जाइ जाइ सिर नाऊं ॥ वूझौं तिनहि राम गुन गाहा ॥ कहहि
सुनौं हरषित षगनाहा ॥ सुनत फिरौं हरिगुन अनुवादा ॥ अव्याहत गति संभु प्र
सादा ॥ छूटी त्रिविधि ईषना गाढी ॥ एक लालसा उर अति वाढी ॥ राम चरन वारिज
जव देषौं ॥ तव निज जन्म सफल करि लेषौं ॥ जिहि पूछौं सो मुनि अस कहई ॥ ईस्वर स
र्व भूतमय अहई ॥ निर्गुन मत नहि मोहि सुहाई ॥ सगुन व्रह्म रति उर अधिकाई ॥ दोहा ॥
गुरु के वचन सुरति करि राम चरन मन लाग ॥ रघुपति जस गावत फिरौं छिन छिन नव
अनुराग ॥ मेरु सिषर वट छाया मुनि लोमस आसीन ॥ देषि चरन सि
र नायेउं वचन कहेउं अति दीन ॥ सुनि मम वचन विनीत मृदु मुनि कृपाल षग
राज ॥ मोहि सादर पूछत भयेउ द्विज आयेउ किहि काज ॥ तव मैं कही कृपानि
धि तुम्ह सर्वग्य सुजान ॥ सगुन व्रह्म आराधन मोहि कहहु भगवान ॥ चौपाई ॥ त
व मुनीस रघुपति गुन गाथा ॥ कहे कछुक सादर षगनाथा ॥ व्रह्मग्यान रत मुनि
विग्यानी ॥ मोहि परम अधिकारी जानी ॥ लागे करन व्रह्म उपदेसा ॥ अज अद्वैत अ
गुन हृदयेसा ॥ अकल अनीह अनाम अरूपा ॥ अनुभव गम्य अषंड अनूपा ॥ मन
गोतीत अमल अविनासी ॥ निर्विकार निरवधि सुषरासी ॥ सो तैं ताहि तोहि नहि
भेदा ॥ वारि वीचि इव गावहि वेदा ॥ विविधि भांति मुनि मोहि समुझावा ॥ निर्गु
न मत मम हृदय न भावा ॥ पुनि मैं कहेउं नाय पद सीसा ॥ सगुन उपासन क
हहु मुनीसा ॥ राम भक्ति जल मम मन मीना ॥ किमि विलगाइ मुनीस प्रवीना ॥

सोइ उपदेस कहहु करि दाया ॥ निज नयनन देषौं रघुराया ॥ भरि लोचन विलोकि अवधेसा ॥
तव सुनिहौं निर्गुन उपदेसा ॥ मुनि पुनि कहि हरिकथा अनूपा ॥ षंडि सगुन मत अगुन नि
रूपा ॥ तव मैं निर्गुन मत कर दूरी ॥ सगुन निरूपौं करि हठ भूरी ॥ उत्तर प्रतिउत्तर मैं की
न्हा ॥ मुनि तन भये क्रोध के चीन्हा ॥ सुनु प्रभु वहुत अवग्या कीये ॥ उपजै क्रोध ग्यानिन्ह
हीये ॥ अति संघर्षन जो कर कोई ॥ अनल प्रगट चंदन ते होई ॥ दो० ॥ वारवार सकोप मुनि
करै निरूपन ग्यान ॥ मैं अपने मन वैठि कर विविधि अनुमान ॥ दोहा ॥ क्रोध कि द्वैत
वुद्धि विनु द्वैत कि विनु अग्यान ॥ मायावस परिछिन्न जड जीव कि ईस समान ॥ चौपाई ॥ कवहुं कि
दुष सव कर हित ताके ॥ तिहि कि दरिद्र पारस मनि जाके ॥ परद्रोही कि होहि निसंका ॥ कामी
पुनि कि रहहिं अकलंका ॥ वंस कि रह द्विज अनहित कीन्हे ॥ कर्म कि होहि निज रूपहि ची
न्हे ॥ काहू सुमति कि षल संग जामी ॥ सुभगति पाव कि परत्रीय गामी ॥ भव कि परहि
परमात्मा विंदक ॥ सुषी कि होहि कवहुं हरिनिंदक ॥ राज कि रहै नीति विनु जाने ॥ अघ कि
रहै हरि चरित वषाने ॥ पावन जस कि पुन्य विनु होई ॥ विनु अघ अजस कि पावइ कोई ॥
लाभ कि कछु हरि भक्ति समाना ॥ जो गावहिं श्रुति संत पुराना ॥ हानि कि जग इहि सम
कछु भाई ॥ भजिय न रामहि नरतन पाई ॥ अघ कि पिसुनता सम कछु आना ॥ धर्म कि
दया सरिस हरि याना ॥ इहि विधि अमित जुगति मन गुनऊं ॥ मुनि उपदेस न सादर सुन
ऊं ॥ पुनि पुनि सगुन पक्ष मैं रोपा ॥ तव मुनि वर उर भयेउ सकोपा ॥ मूढ परम सि
षेउं न मानसि ॥ उत्तर प्रतिउत्तर वहु आनसि ॥ सत्य वचन विस्वास न करही ॥ वायस इ
व सवहि ते डरही ॥ सठ स्वपक्ष तव हृदय विसाला ॥ सपदि होहि पक्षी चंडाला ॥ ली
न्ह स्राप मैं सीस चढाऊं ॥ नहि कछु भय न दीनता आऊं ॥ दोहा ॥ तुरत भयेउं मैं का
ग तव पुनि मुनि पद सिर नाय ॥ सुमिरि राम रघुवंस मनि हरषित चलेउं उडाइ ॥ उमा जे राम चर
न रत विगत काम मद क्रोध ॥ निज प्रभुमय देषहि जगत किहि सन करहि विरो
ध ॥ चौपाई ॥ सुनु षगेस नहि कछु रिषि दूषन ॥ उर प्रेरक रघुवंस विभूषन ॥ कृपा
सिंधु मुनि मति करि भोरी ॥ लीन्ही प्रेम परिक्षा मोरी ॥ मन क्रम वचन मोहि निज जन
जाना ॥ मुनि मति पुनि फेरी भगवाना ॥ रिषि मम महत सीलता देषी ॥ राम च
रन विस्वास विसेषी ॥ अति विस्मय पुनि पुनि पछिताई ॥ सादर मुनि मोहि लीन्ह वु
लाई ॥ मम परितोष विविधि विधि कीन्हा ॥ हरषित राममंत्र तव दीन्हा ॥ वालक
रूप राम कर ध्याना ॥ कहेउ मोहि मुनि कृपानिधाना ॥ सुंदर सुषद मोहि अति भा
वा ॥ सो प्रथमहि मैं तुम्हहि सुनावा ॥ मुनि मोहि कछुक काल तहां राषा ॥ राम
चरित सो मानस तव भाषा ॥ सादर यह मोहि कथा सुनाई ॥ पुनि वोले मुनि गि
रा सुहाई ॥ रामचरित सर गुप्त सुहावा ॥ संभु प्रसाद तात मैं पावा ॥ तोहि निज भ
गत राम कर जानी ॥ ताते मैं सव कहेउं वषानी ॥ राम भक्ति जिन्ह के उर नाही ॥ कव
हू न तात कहिय तिन्ह पाही ॥ मुनि मोहि विविधि भांति समुझावा ॥ मैं सप्रेम मु
निपद सिर नावा ॥ निज कर कमल परसि मम सीसा ॥ हरषित आसिष दीन्ह मुनी
सा ॥ राम भक्ति अविरल उर तोरे ॥ वसहि सदा प्रसाद अव मोरे ॥ दो० ॥ सदा राम
प्रिय होहु ॥ तुम्ह सुभ गुन भवन अमान ॥ कामरूप इच्छा मरन ग्यान विराग निधा
न ॥ येहि आश्रम तुम्ह वसहु पुनि सुमिरत श्री भगवंत ॥ तहां न अविद्या व्यापहि जो
जन एक पर्यंत ॥ चौ० ॥ काल कर्म गुन दोष स्वभाउ ॥ कछु दुष तुम्हहि न व्यापि
हि काऊ ॥ राम रहस्य ललित विधि नाना ॥ गुप्त प्रगट इतिहास पुराना ॥ विनु श्रम स

रा.उ.
१४

वतनमजोनउसबसोइ॥ नितनवनेहुसमपदहोउ॥ जोइच्छाकरिहहुमनमाही॥ हरिप्रसाद
कछुदुर्लभनाही॥ सुनिशुभआसीषमुनिमतिधीरा॥ ब्रह्मगिराभइगगनगंभीरा॥ ए
वमस्तुतवबचनमुनिज्ञानी॥ यहममभक्तकर्ममनवानी॥ सुनिनभगिराहर्षमो
हिभयउ॥ प्रेममगनममसंसयगयउ॥ करिविनतीमुनिआयसुपाई॥ पदसरोज
पुनिपुनिसिरनाई॥ हर्षसहितएहिआश्रमआयउ॥ प्रभुप्रसाददुर्लभवरपायउ॥ इहांब
सतमोहिसुनुखगेसा॥ बीतेउकलपसातअरुबीसा॥ करउसदारघुपतिगुन
गाना॥ सादरसुनहिविहंगसुजाना॥ जबजबअवधपुरीरघुबीरा॥ धरहिभ
क्तिहितमनुजसरीरा॥ तबतबजाइअवधपुरीरहउ॥ सिसुलीलाविलोकि
सुखलहउ॥ पुनिउरराखिरामसिसुरूपा॥ निजआश्रमआवउखगभूपा॥ कथा
सकलमैतुम्हहिसुनाई॥ कागदेहजेहिकारनपाई॥ कहेउतातसबप्रस्नतुम्हारी
रामभक्तिमहिमाअतिभारी॥ दोहा॥ तातेयहतनुमोहिप्रियभयउरामपदने
ह॥ निजप्रभुदर्शनपायउगयेसकलसंदेह॥ भक्तिपक्षहठिमैकरीदीन्हमहा
रिषिसाप॥ मुनिदुर्लभवरपायेउदेषउभजनप्रताप॥ चौपाई॥ येअसिभक्तिजानि
परिहरहि॥ केवलज्ञानहेतुश्रमकरहि॥ तेजडकामधेनुग्रहत्यागी॥ षोजतआक
फिरतपयलागी॥ सुनुषगेसहरिभक्तिविहाई॥ येसुषचाहहिआनउपाई॥ तेस
ठमहासिंधुविनतरनी॥ पैरपारचाहहिजडकरनी॥ सुनिभसुंडिकेवचनभवा
नी॥ बोलेउगरुडहर्षिमृदुवानी॥ तवप्रसादप्रभुममउरमाही॥ संसयसोकमो
हभ्रमनाही॥ सुनेउपुनितरामगुनग्रामा॥ तुम्हरीकृपालहेउविश्रामा॥ एक
वातप्रभुपूछउतोही॥ कहहुबुझाइकृपानिधिमोही॥ कहहिवेदमुनिसंत
पुराना॥ नहिकछुदुर्लभज्ञानसमाना॥ सोइमुनितुम्हसनकहेउगोसाई॥ न
हिआदरेउभक्तिकीनाई॥ ज्ञानहिभक्तिहिअंतरकेता॥ सकलकहहुप्रभुकृ
पानिकेता॥ सुनिउरगारिवचनसुषमाना॥ सादरवोलेउकाकसुजाना॥ भक्ति
हिज्ञानहिनहिकछुभेदा॥ उभयहरहिभवसंभवषेदा॥ नाथमुनिसकहहिकछुअंतर
सावधानसोसुनहुविहंगवर॥ ज्ञानविरागयोगविज्ञाना॥ एसबपुरुषसुनहुहरिजाना
पुरुषप्रतापप्रबलसबभाती॥ अबलाअबलसहजजडजाती॥ दोहा॥ पुरुषत्यागिस
कनारिहिजोविरक्तमतिधीर॥ ननुकामीविषयावसविमुषजोपदरघुवीर॥ सोरठा॥
सोमुनिज्ञाननिधानमृग॥ नयनीविधुमुषनिरषि॥ विकलहोइहरियाननारिविस्नु
मायाप्रगट॥ चौपाई॥ इहांनपक्षपातकछुराषौ॥ वेदपुराणसंतमतभाषौ॥ मोहन
नारिकररूपा॥ पन्नगारियहनीतिअनूपा॥ मायाभक्तिसुनहुप्रभुदोउ॥ नारिवर्गजा
नेसबकोउ॥ पुनिरघुवीरहिभक्तिपियारी॥ मयाखलुनितकीविवचारी॥ भक्तिहिसा
नुकूलरघुराया॥ तातेजियडरपतिअतिमाया॥ रामभक्तिनिरुपमनिरुपाधी॥ व
सयजासुउरसदाअबाधी॥ तेहिविलोकिमायासकुचाइ॥ करिनसकहिकछुनिज
प्रभुताई॥ असविचारिजामुनिविज्ञानी॥ जाचहिभक्तिसकलगुनषानी॥ दोहा॥
यहरस्यरघुनाथकरवेगिनजानेकोइ॥ जोजानेरघुपतिकृपासपनेहुमोहनहोइ॥
औरौज्ञानभगतिकरभेदसुनहुप्रवीन॥ जोसुनिहोइरामपदप्रीतिसदाअविछिन्न॥
चौपाई॥ सुनहुतातयहअकथकहानी॥ समुझतवनेनजाइवषानि॥ इस्वरअं
सजीवअविनासि॥ चेतनअमलसहजसुषरासि॥ सोमायावसभयउगुसाई॥
वंध्योकीरमरकटकीनाई॥ जडचेतनहिग्रंथिपरिगई॥ जद्यपिमृषाछूटनकठिन

ई॥ तवतेजीवभयउसंसारी॥ छूटनग्रंथिनहोइसुषारी॥ श्रुतिपुरानबहुकहेउउपाइ॥ छूटन
अधिकअधिकअरुझाई॥ जीवहृदयतमोमोहविसेषि॥ ग्रंथिछूटकिमिपरइनदेषि॥ अससं
जोगइसजबकरई॥ तबहुकदाचितसोनिरुअरई॥ सात्विकश्रद्धाधेनुसुहाई॥ जोहरि
कृपाहृदयबसआई॥ जपतपव्रतजमनियमअपारा॥ जेश्रुतिकहसुभधर्मअचारा॥ तेतृ
नहरितचरैजवगाई॥ भावबछसिसुपायपन्हाई॥ नोइनिवृत्तिपात्रविस्वासा॥ निर्म
लमनअहीरनिजदासा॥ परमधर्ममयपयदुहिभाइ॥ अवटैअनलअकामवनाइ॥ तो
षमरुततवछमाजुडावे॥ धृतिसमजावनदेइजमावे॥ मुदितामथैविचारमथा
नि॥ दमअधाररजुसत्यसुवानि॥ तबमथिकाढिलेइनवनीता॥ विमलविराग
सुभगसुपुनीता॥ दोहा॥ जोगअग्निकरिप्रगटतबकरमसुभासुभलाई॥ बुद्धिसिरा
वैज्ञानघृतममतामलजरिजाई॥ तवविज्ञाननिरुपिनीबुद्धिविसदघृतपाइ॥ चित
दियाभरिधरैदृढसमतादियटिवनाइ॥ तीनिअवस्थातीनिगुनतेहिकपासतेकाढि
तूलतुरीयसवारिपुनिवातीकरैसुगाढि॥ सोरठा॥ एहिविधिलेसेदीपतेजरासि
विज्ञानमय॥ जातहितासुसमीपजरहिमदादिसलभसब॥ चौपाई॥ सोहम
स्मिइतिवृत्तिअषंडा॥ दीपसिषासोइपरमप्रचंडा॥ आतमअनुभवसुषसुप्रका
सा॥ तबभवमूलभेदभ्रमनासा॥ प्रबलअविद्याकरपरिवारा॥ मोहआदितममि
टैअपारा॥ तवसोइबुद्धिपाइउजिआरा॥ उरगृहवैठिग्रंथिनिरुवारा॥ छोरनग्रं
थिपावजोसोई॥ तबयहजीवकृतारथहोई॥ छोरतग्रंथिजानिषगराया॥ विघ्नअ
नेककरैतवमाया॥ रिधिसिधिप्रेरैवहुभाई॥ बुद्धिहिलोभदिषावैआई॥ कल
बलछलकरिजाइसमीपा॥ अंचलवाततुझावैदीपा॥ होइबुद्धिजोपरमसया
नि॥ तिन्हतनचितवनअनहितजानि॥ जोतेहिविघ्नबुद्धिनहिवाधी॥ तौवहोरि
सुरकरहिउपाधि॥ इंद्रिद्वारझरोषानाना॥ तहातहासुरवैठेकरिथाना॥ आव
तदेषहिविषयवयारि॥ तेहठिदेहिकपाटउघारि॥ जवसोप्रभंजनउरग्रहजा
ई॥ तवहिदीपविज्ञानवुझाई॥ ग्रंथिनछुटिमिटासोप्रकासा॥ बुधिविकलभई
विषयवतासा॥ इंद्रिन्हसुरन्हनज्ञानसुहाई॥ विषयभोगपरप्रीतिसदाई॥ विष
यसमीरबुधिकृतभोरि॥ तेहिविधिदीपकवारवहोरि॥ दोहा॥ तवफिरिजीवविवि
धिविधिपावैसंसृतकलेस॥ हरिमायाअतिदुस्तरतरीनजाइविहगेस॥ कहत
कठिनसमुझतकठिनसाधनकठिनविवेक॥ होइघुनाक्षरन्यायजोपुनिप्रत्यूह
अनेक॥ चौपाई॥ ज्ञानपंथकृपानकैधारा॥ परतषगेसहोइनहिवारा॥ जोन
रविघ्नपंथनिरवहई॥ सोकैवल्यपरमपदलहई॥ अतिदुर्लभकैवल्यपरमप
द॥ संतपुराननिगमआगमवद॥ रामभजनसोमुक्तिगुसाई॥ अनइछात
आवैवरिआई॥ जिमिथलविनुजलरहिनसकाई॥ कोटिभांतिकोउकरैउ
पाई॥ तथामोक्षसुषसुनुषगराई॥ रहिनसकैहरिभगतिविहाई॥ असविचा
रिहरिभगतसयाने॥ मुक्तिनिरादरभगतिलोभाने॥ भगतिकरतविनुज
तनप्रयासा॥ संसृतमूलअविद्यानासा॥ भोजनकरियतृपितहितलागी
जिमिसोअसनपचवैजठरागी॥ असिहरिभगतिसुगमसुषदाई॥ कोअसमू
ढनजेहिसोहाई॥ दोहा॥ सेवकसेव्यभावविनुभवनतरियउरगारि॥ भजहुरा
मपदपंकजअससिद्धांतविचारि॥ जोचेतनकहजडकरैजडहिकरैचैतन्य॥
असमर्थरघुनायकहिभजहिजीवतेधन्य॥ चौपाई॥ कहेउज्ञानसिद्धांत
वुझाई॥ सुनहुभगतिमनिकिप्रभुताई॥ रामभगतिचिंतामनिसुंदर॥ वसैग
रुडजाकेउरअंतर॥ परमप्रकासरूपदिनराती॥ नहिकछुचहियदियाघृतवाती

मोह दरिद्र निकट नहिं आवा॥ लोभ बात नहिं ताहि बुझावा॥ प्रबल अविद्या तम मिटि जाई॥ हा
रहिं सकल सलभ समुदाई॥ खल कामादि निकट नहिं जाहिं॥ बसै भगति जाके उर माहिं॥
गरल सुधासम अरि हित होई॥ तेहि मनि बिनु सुख पाव न कोई॥ ब्यापहिं मानस रोग न
भारी॥ जिन के बस सब जीव दुषारि॥ राम भगति मनि उर बस जाके॥ दुख लव लेस न सप
नेऊं ताके॥ चतुर सिरोमनि तेई जग माहिं॥ जे मनि लागि सुजतन कराहिं॥ सो मनि जदपि
प्रगट जग अहई॥ राम कृपा बिनु नहिं कोउ लहई॥ सुगम उपाय पाइबे केरे॥ नर हतभाग
देहिं भटभेरे॥ पावन परबत बेद पुराना॥ राम कथा रुचिराकर नाना॥ मरमी सज्जन
सुमति कुदारि॥ ज्ञान बिराग नयन उरगारि॥ भाव सहित षोजै जो प्रानी॥ पाव भगति
मनि सब सुष षानि॥ मोरे मन प्रभु अस बिस्वासा॥ राम ते अधिक राम कर दासा॥ राम
सिंधु घन सज्जन धीरा॥ चंदन तरु हरि संत समीरा॥ सब कर फल हरि भगति सुहाई॥
सो बिनु संत न काऊं पाई॥ अस बिचारि जो कर सतसंगा॥ राम भगति तेहि सुलभ बिहं
गा॥ दोहा॥ ब्रह्म पयोनिधि मंदर ज्ञान संत सुर आहि॥ कथा सुधा मथि काढहिं भग
ति मधुरता जाहि॥ बिरति चरम असि ज्ञान मद लोभ मोह रिपु मारि॥ जय पाइय सो हरि भ
गति देषु षगेस बिचारि॥ चौपाई॥ पुनि सप्रेम बोलेउ षगराउ॥ जौ कृपाल मोहि ऊपर भा
उ॥ नाथ मोहि निज सेवक जानि॥ सप्त प्रस्न मम कहहु बषानि॥ प्रथमहि कहहु नाथ
मतिधीरा॥ सब ते दुरलभ कवन सरीरा॥ बड दुष कवन कवन सुष भारी॥ सोउ संछे
पहि कहहु बिचारि॥ संत असंत मरम तुम्ह जानहु॥ तिन्ह कर सहज सुभाव बषानहु॥ क
वन पुन्य स्रुति बिदित बिसाला॥ कहहु कवन अघ परम कराला॥ मानस रोग कहहु स
मुझाई॥ तुम्ह सर्बज्ञ कृपा अधिकाई॥ तात सुनहु सादर अति प्रीति॥ मैं संछेप कहौं यह नी
ति॥ नर तन सम नहिं कवनेउ देही॥ जीव चराचर जाचत तेही॥ नरक स्वर्ग अपवर्ग नि
सेनि॥ ज्ञान बिराग भगति सुभ देनी॥ सो तनु धरि हरि भजहिं न जे नर॥ होहिं बिष
य रत मंद मंद तर॥ कांच किरच बदले ते लेही॥ कर ते डारि परस मनि देही॥ नहिं दरि
द्र सम दुष जग माहिं॥ संत मिलन सम सुष कछु नाहिं॥ पर उपकार बचन मन काया॥
॥ संत सहज सुभाय षगराया॥ संत सहहिं दुष पर हित लागि॥ पर दुष हेतु असंत
अभागि॥ सुर तरु सुभ सम संत कृपाला॥ फरहिं बचन सम अमिय रसाला॥ भूर
ज तरु सम संत कृपाला॥ पर हित निति सह बिपति बिसाला॥ सन इव षल पर बंध
न करई॥ षाल कढाइ बिपति सहि मरई॥ षल बिनु स्वारथ पर अपकारि॥ अहि मूषक
इव सुनु उरगारि॥ पर संपदा बिनासि नसाहिं॥ जिमि ससि हति हिम उपल बिलाहिं॥
षल उदय जग आरत हेतू॥ जथा प्रसिद्ध अधम ग्रह केतू॥ संत उदय संतत सुषका
रि॥ बिस्व सुषद जिमि इंदु तमारि॥ परम धरम स्रुति बिदित अहींसा॥ पर निंदा स
म अघ न गरिसा॥ हरि गुरु निंदक दादुर होई॥ जन्म सहस्र पाव तन सोई॥ द्विज नि
ंदक बहु नरक भोग करि॥ जग जनमै बायस सरीर धरि॥ सुर स्रुति निंदक जे अभि
मानि॥ रौरव नरक परहिं ते प्रानि॥ होहिं उलूक संत निंदा रत॥ मोह निसा प्रिय ज्ञा
न भानु गत॥ सब कर निंदा जे जड करहिं॥ ते चमगादुर होइ अवतरहिं॥ दोहा॥ ज्ञा
न रहित अति मूढ नर राम भक्ति रस हीन॥ सक्रोध सोक मलिन मन माया बस मति
हीन॥ सुनहु तात अब मानस रोगा॥ जिन्ह ते दुष पावहिं सब लोगा॥ मोह सकल ब्या
धिन्ह कर मूला॥ तिन्ह ते पुनि उपजहिं बहु सूला॥ काम बात कफ लोभ अपारा॥ क्रो
ध पित्त नित छाती जारा॥ प्रीति करहिं जो तीनिउ भाई॥ उपजै सन्यपात दुषदाई॥
बिषय मनोरथ दुरगम नाना॥ ते सब सूल नाम को जाना॥ ममता दादर कंडु इरषा
ई हरष बिषाद गरु बहुताई॥ पर सुष देषि जरनि सो छाई॥ कुष्ट दुष्टता मन कुटिलाई॥

अहंकार अति दुषद डमरुआ॥ दंभ कपट मद मान नेहरुआ॥ त्रिस्ना उदर बृद्धि अति भारी॥ त्रिबि
धि ईषना तरुन तिजारि॥ जुग बिधि ज्वर मत्सर अबिबेका॥ कहं लगि कहौं कुरोग अ
नेका॥ दोहा॥ एक ब्याधि बस नर मरहिं ए असाधि बहु ब्याधि॥ पीडहिं संतत जीव कहुं
सो किमि लहइ समाधि॥ नेम धरम आचार तप ज्ञान जग्य जप दान॥ भेषज पुनि कोटिन्ह
नहिं रोग जाहिं हरिजान॥ चौपाई॥ एहि बिधि सकल जीव जग रोगी॥ सोक हरष भय प्री
ति बियोगी॥ मानस रोग कछुक मैं गाए॥ हैं सब के लषि बिरलेन्ह पाए॥ जाने ते छी
जहिं कछु पापी॥ नास न पावहिं जन परितापी॥ बिषय कुपथ्य पाइ अंकुरे॥ मुनिहु
हृदय का नर बापुरे॥ राम कृपा नासहिं सब रोगा॥ जौ एहि भांति बनै संजोगा॥ सदगु
रु बैद बचन बिस्वासा॥ संजम यह न बिषय कै आसा॥ रघुपति भगति सजीवन मू
रि॥ अनूपान श्रद्धा मति पूरि॥ एहि बिधि भलेहिं रोग नसाहिं॥ नाहिं त जतन कोटि
नहिं जाहिं॥ जानिय तब मन बिरुज गोसांई॥ जब उर बल बिराग अधिकाई॥ सुमति
छुधा बाढै नित नई॥ बिषय आस दुरबलता गई॥ बिमल ज्ञान जल जब सो नहाई॥
तब रह राम भगति उर छाई॥ सिव अज सुक सनकादिक नारद॥ जे मुनि ब्रह्म बिचा
र बिसारद॥ सब कर मत षगनायक एहा॥ करिय राम पद पंकज नेहा॥ स्रुति पु
रान सब ग्रंथ कहाहिं॥ रघुपति भगति बिना सुष नाहिं॥ कमठ पीठ जामहिं बरु
बारा॥ बंध्या सुत बरु काहुहि मारा॥ फूलहिं नभ बरु बहु बिधि फूला॥ जीव न ल
ह सुष हरि प्रतिकूला॥ तृषा जाइ बरु मृग जल पाना॥ बरु जामहिं सस सीस बिषाना॥ अं
धकार बरु रबिहि नसावै॥ राम बिमुष न जीव सुष पावै॥ हिम ते अनल प्रगट बरु
होई॥ बिमुष राम सुष पाव न कोई॥ दोहा॥ बारि मथे घृत होइ बरु सिकता ते बरु ते
ल॥ बिनु हरि भजन न भव तरिय यह सिद्धांत अपेल॥ मसक करै बिरंचि प्रभु
अजहि मसक ते हीन॥ अस बिचारि तजि संसय रामहि भजहिं प्रबीन॥ बिनिस्चि
तं वदामि ते न अन्यथा वचांसि मे॥ हरिं नरा भजंति येतिदुस्तरं तरंति ते॥ चौपाई॥
कहेउं नाथ हरि चरित अनूपा॥ ब्यास समास स्वमति अनुरूपा॥ स्रुति सिद्धांत इहै
उरगारि॥ राम भजिय सब काज बिसारि॥ प्रभु रघुपति तजि सेइय काही॥ मो से सठ
पर ममता जाहि॥ तुम्ह बिज्ञान रूप नहिं मोहा॥ नाथ कीन्ह मो पर अति छोहा॥ पू
छेहु राम कथा अति पावनि॥ सुक सनकादि संभु मन भावनि॥ सतसंगति दुरलभ सं
सारा॥ निमिष दंड भरि एकौ बारा॥ देषु गरुड निज हृदय बिचारि॥ मैं रघुबीर भजन
अधिकारि॥ सकुनाधम सब भांति अपावन॥ प्रभु मोहि कीन्ह बिदित जग पाव
न॥ दोहा॥ आजु धन्य मैं धन्य अति जद्यपि सब बिधि हीन॥ निज जन जानि राम
मोहि संत समागम दीन॥ नाथ जथामति भाषेउं राषेउं नहिं कछु गोइ॥ चरित
सिंधु रघुनाथ कर थाह कि पावै कोई॥ चौपाई॥ सुमिरि राम के गुन गन नाना॥
पुनि पुनि हरष भुसुंडि सुजाना॥ महिमा निगम नेति करि गाई॥ अतुलित बल प्र
ताप प्रभुताई॥ सिव अज पूज्य चरन रघुराई॥ मो पर कृपा परम मृदुलाई॥ अस सु
भाउ कहुं सुनेउं न देषौं॥ केहि षगेस रघुपति सम लेषौं॥ साधक सिद्ध बिमुक्त उदा
सि॥ कबि कोबिद कृतज्ञ संन्यासि॥ जोगी सूर सुतापस ज्ञानि॥ धर्म निरत
पंडित बिज्ञानि॥ तरहिं न बिनु सेयें मम स्वामि॥ राम नमामि नमामि नमामि॥
सरन गएं मो से अघ रासि॥ होहिं सुद्ध नमामि अबिनासि॥ दोहा॥ जासु नाम भव भे
षज हरन घोर त्रय सूल॥ सो कृपाल मोहि तो पर सदा रहौ अनुकूल॥ सुनि भु
सुंडि के बचन सुभ देषि राम पद नेह॥ बोलेउ प्रेम सहित गिरा गरुड बिगत संदेह॥

हिम

चौपाई॥ मैंकृतकृतभयउँतवबानि॥ सुनिरघुबीरभगतिरससानि॥ रामचरननूतनरति
भई॥ मायाजनितबिपतिसबगई॥ मोहजलधिबोहितनुम्हभए॥ मोकहनाथबिबिधि
सुषदए॥ मोपहिंहोइनप्रतिउपकारा॥ बंदौंतवपदबारहिंबारा॥ पूरनकामरामअनुरागी
तुम्हसमतातनकोउबडभागी॥ संतबिटपसरितागिरिधरनी॥ परहितहेतुसबनकैक
रनी॥ संतहृदयनवनीतसमाना॥ कहाकबिन्हपरिकहैनजाना॥ निजपरितापद्र
वैनवनीता॥ परदुषद्रवहिंसुसंतपुनीता॥ जीवनजनमसुफलममभएउ॥ तवप्रसा
दसंसयसबगएउ॥ जानेहुसदामोहिनिजकिंकर॥ पुनिपुनिउमाकहइबिहगबर॥ दो
हा॥ तासुचरनसिरनाइकरिप्रेमसहितमतिधीर॥ गएउगरुडबैकुंठतबहृदयराषिर
घुबीर॥ गिरिजासंतसमागमसमनलाभकछुआन॥ बिनुहरिकृपानहोइसोगाव
हिंबेदपुरान॥ चौपाई॥ कहेउँपरमपुनितइतिहासा॥ सुनतश्रवनछुटहिंभवफासा॥
प्रनतकल्पतरुकरुनापुंजा॥ उपजैप्रीतिरामपदकंजा॥ मनक्रमबचनजनितअघजा
हि॥ सुनहिंजेकथाश्रवनमनलाई॥ तीरथअटनसाधनसमुदाई॥ जोगबिरागज्ञाननि
पुनाई॥ नानाकरमधरमब्रतदाना॥ संजमदमजपतपमषनाना॥ भूतदयाद्विज
गुरुसेवकाई॥ बिद्याबिनयबिबेकबडाई॥ जहँलगिसाधनबेदबषानि॥ सबकरफ
लहरिभगतिभवानि॥ सोरघुनाथभगतिश्रुतिगाई॥ रामकृपाकाहूएकपाई॥ दो
हा॥ मुनिदुर्लभहरिभगतिनरपावहिंबिनहिंप्रयास॥ जोयहकथानिरंतरसुनहिंमानिबिस्वा
स॥ चौपाई॥ सोइसर्बज्ञगुनिसोइज्ञाता॥ सोइमहिमंडितपंडितदाता॥ धरमपरा
यणसोइकुलत्राता॥ रामचरनजाकरमनराता॥ नीतिनिपुनसोइपरमसयाना॥ श्रु
तिसिद्धांतनीकतेहिंजाना॥ सोइकबिकोबिदसोइरनधीरा॥ जोछलछाडिभजैरघुबी
रा॥ धन्यदेससोजहँसुरसरि॥ धन्यनारिपतिब्रतअनुसरि॥ धन्यसोभूपनीतिजोक
रई॥ धन्यसोद्विजनिजधरमनटरई॥ सोधनधन्यप्रथमगतिजाकि॥ धन्यपुन्यरतम
तिसोइपाकी॥ धन्यघरीसोइजबसतसंगा॥ धन्यजन्मद्विजभगतिअभंगा॥ दोहा॥ सो
कुलधन्यउमासुनुजगतपूज्यसुपुनीत॥ श्रीरघुबीरपरायनजेहिंनरउपजेबिनी
त॥ चौपाई॥ मतिअनुरूपकथामैंभाषि॥ जद्यपिप्रथमगुप्तकरिराषि॥ तवमनप्रीतिदेषि
अधिकाई॥ तौमैंरघुपतिकथासुनाई॥ यहनकहियसठहिहठसीलहि॥ जोमनलाइनसु
नेहरिलीलहि॥ कहियेनलोभहिक्रोधिहिकामिहि॥ जोनभजइसचराचरस्वामिहि॥
द्विजद्रोहिहिनसुनाइयेकबहूँ॥ सुरपतिसरिसहोइनृपजबहूँ॥ रामकथाकेतेइअधिका
री॥ जिन्हकेसतसंगतिअतिप्यारी॥ गुरपदप्रीतिनीतिरतजेई॥ द्विजसेवकअधिकारि
तेई॥ ताकहँयहबिसेषसुषदाई॥ जेहिप्रानप्रियश्रीरघुराई॥ दोहा॥ रामचरनरतिजो
चहअथवापदनिरबान॥ भावसहितसोयहकथाकरौश्रवनपुटपान॥ चौपाई॥ रा
मकथागिरिजामैंबरनि॥ कलिमलसमनिमनोमलहरनि॥ संसृतिरोगसजीवनमू
रि॥ रामकथागावहिंश्रुतिसूरि॥ एहिमहँरुचिरसप्तसोपाना॥ रघुपतिभगतिकेरपंथा
ना॥ अतिहरिकृपाजेहिपरहोई॥ पाउँदेइएहिमारगसोई॥ मनकामनासिद्धिनरपा
वा॥ जोयहकथाकपटतजिगावा॥ कहहिंसुनहिंअनुमोदनकरहीं॥ तेगोपदइवभव
निधितरहीं॥ सुनिसबकथाहृदयअतिभाई॥ गिरिजाबोलिगिरासुहाई॥ नाथ
कृपाँममगतसंदेहा॥ रामचरनउपजेउनवनेहा॥ दोहा॥ मैंकृतकृत्यभइउँअबत
वप्रसादबिस्वेस॥ उपजीरामभगतिदृढबीतेसकलकलेस॥ चौपाई॥ यहसुभसंभु
उमासंबादा॥ सुषसंपादनसमनबिषादा॥ भवभंजनगंजनसंदेहा॥ जनरंजनस
ज्जनप्रियएहा॥ रामउपासकजेजगमाहीं॥ एहिसमप्रियतिन्हकेकछुनाहीं॥ रघुप

कृपाजथामतिगावा॥ मैंयहपावनचरितसुहावा॥ एहिकलिकालनसाधनदूजा॥
जोगजग्यजपतपब्रतपूजा॥ रामहिसुमिरियगाइयरामहि॥ संततसुनियरामगुन
ग्रामहि॥ जासुपतितपावनबडबाना॥ गावहिंकबिश्रुतिसंतपुराना॥ ताहिभजहि
मनतजिकुटिलाई॥ रामभजेंगतिकेहिनपाई॥ छंद॥ पाइनकेहिगतिपतित
पावनरामभजिसुनुसठमना॥ गनिकाअजामिलब्याधिगीधगजादिषलता
रेघना॥ आभीरजवनकिरातषलस्वपचादिअतिअघरूपजे॥ कहिनामबार
कतेपिपावनहोहिंरामनमामिते॥ रघुबंसभूषनचरितयहनरकहहिंसुन
हिंजेगावहीं॥ कलिमलमनोमलधोइबिनुश्रमरामधामसिधावहीं॥ सतपंचचौ
पाईमनोहरजानिजोनरउरधरै॥ दारुनअबिद्यापंचजनितबिकारश्रीरघु
बरहरै॥ सुंदरसुजानकृपानिधानअनाथपरकरप्रीतिजो॥ सोएकरामअकाम
हितनिरबानप्रदसमआनको॥ जाकीकृपालवलेसतेंमतिमंदतुलसीदास
हूँ॥ पायोपरमबिश्रामरामसमानप्रभुनाहींकहूँ॥ दोहा॥ मोसमदीननदी
नहिततुम्हसमानरघुबीर॥ असबिचारिरघुबंसमनिहरहुबिषमभवभीर॥ का
मिहिनारिपियारिजिमिलोभिहिप्रियजिमिदाम॥ तिमिरघुनाथनिरंतरप्रि
यलागहुमोहिराम॥ श्लोक॥ यत्पूर्वंप्रभुनाकृतंसुकविनाश्रीसंभुनादुर्गमं
श्रीमद्रामपदाब्जभक्तिमनिसंप्राप्त्यैतुरामायणं॥ मत्वातद्रघुनाथनामनि
रतंस्वांतस्तमःसांतये॥ भाषानिबंधमिदंचकारतुलसीदासःतथामानसं॥
पुण्यंपापहरंसदासिवकरंविज्ञानभक्तिप्रदं॥ मायामोहमलापहंसुविम
लंप्रेमांबुपूरंसुभं॥ श्रीमद्रामचरित्रमानसमिदंभक्त्यावगाहंतिये॥ तेसंसार
पतंगघोरकिरणैर्दह्यंतिनोमानवाः॥ ॥ इतिश्रीरामचरितमानसेसकल
कलिमलविध्वंसनेसप्तमःसोपानःसंपूर्णः॥ ॥ ॥ ॥

रा०७
१०

ॐ स्वस्ति श्रीगणेशाय नमः ॥ श्री[illegible] नमः ॥ श्री[illegible] नमः ॥ ॐ नमो
ॐ यस्यांगावलिः कंठे दानं भोगाजिनाजने ॥ भाति कृत्स्नमासेवसनः पायाद्भू[illegible] ॥१॥ अथ प्र[illegible]
यातीतनिर्मलज्ञानमूर्तये ॥ मनोगिरां विदूराय दक्षिणामूर्तये नमः ॥२॥ ब्र[illegible] ॥ कदाचिन्ना
रदो योगी परानुग्रहवांछया ॥ पर्यटन्सकलांल्लोकान्सत्यलोकमुपागमत ॥३॥ तत्र दृष्ट्वा मूर्तिमद्भि
श्छंदोभिः परिवेष्टितं ॥ बालार्कप्रभया सम्यग्भासयंतं सभागृहं ॥४॥ मार्कंडेयादिमुनिभिः स्तूयमा
नं[illegible] ॥ सर्वार्थगोचरज्ञानं सरस्वत्या समन्वितं ॥५॥ चतुर्मुखं जगन्नाथं भक्ताभीष्टफलप्रदं
प्रणम्य दंडवद्भक्त्या तुष्टाव मुनिपुंगवः ॥६॥ संतुष्टस्तं मुनिं प्राह स्वयंभूर्वैष्णवोत्तमं ॥ किं प्रष्टुकामः
स्त्वमसि तद्वदिष्यामि ते मुने ॥७॥ इत्याकर्ण्य वचस्तस्य मुनिर्ब्रह्माणमब्रवीत ॥ त्वत्तः श्रुतं मया
सर्वं पूर्वमेव शुभाशुभं ॥८॥ प्राप्ते कलियुगे घोरे नराः पुण्यविवर्जिताः ॥ दुराचाररताः सर्वे सत्यवार्ता
पराङ्मुखाः ॥९॥ इदानीमेकमेवास्ति श्रोतव्यं सुरसत्तम ॥ तद्रहस्यमपि ब्रूहि यदि तेऽनुग्रहो मयि ॥१०॥
परापवादनिरताः परद्रव्याभिलाषिणः ॥ परस्त्रीसक्तमनसः परहिंसापरायणाः ॥११॥ देहात्मदृष्ट
यो मूढा नास्तिकाः पशुबुद्धयः ॥ मातापितृकृतद्वेषाः स्त्रीदेवाः कामकिंकराः ॥१२॥ विप्रा लोभग्रह
ग्रस्ता वेदविक्रयजीविनः ॥ धनार्जनार्थमभ्यस्तविद्यामदविमोहिताः ॥१३॥ त्यक्तस्वजातिकर्माणः
प्रायशः परवंचकाः ॥ क्षत्रियाश्च तथा वैश्याः स्वधर्मत्यागशीलिनः ॥१४॥ तद्वच्छूद्राश्च ये केचिद्ब्राह्मणाचा
रतत्पराः ॥ स्त्रियश्च प्रायशो भ्रष्टा भर्त्रवज्ञाननिर्भयाः ॥१५॥ श्वशुरद्रोहकारिण्यो भविष्यन्ति न संशयः
एतेषां नष्टबुद्धीनां परलोकः कथं भवेत ॥१६॥ इति चिंताकुलं चित्तं जायते मम सन्ततं ॥ लघूपायेन येनै
षां परलोकगतिर्भवेत ॥१७॥ तमुपायमुपाख्याहि सर्वं वेत्सि यतो भवान ॥ इत्यृषिवाक्यमाकर्ण्य
प्रत्युवाचांबुजासनः ॥१८॥ साधु पृष्टं त्वया साधो वक्ष्ये ते शृणु सादरात ॥ पुरा त्रिपुरहंतारं पार्वती
भक्तवत्सलं ॥१९॥ श्रीरामतत्त्वं जिज्ञासुः पप्रच्छ विनयान्विता ॥ प्रियायै गिरिशस्तस्यै गूढं व्याख्या
तवान्स्वयं ॥२०॥ पुराणोत्तममध्यात्मरामायणमिति स्मृतं ॥ तत्पार्वती जगद्धात्री पूजयित्वा दिवानि
शं ॥२१॥ आलोचयंती स्वानंदमग्ना तिष्ठति सांप्रतं ॥ प्रचरिष्यति तल्लोके प्राप्य द्वापरतस्तदा ॥२२॥
यावज्जगति नाध्यात्मरामायणमुदेष्यति ॥ तावत्कलिमदोन्मत्ता निःशंकं संप्रवर्तते ॥२३॥ याव
ज्जगति नाध्यात्मरामायणमुदेष्यति ॥ तावद्यमभटाः शूराः संचरिष्यंति निर्भयाः ॥२४॥ तावत्स
र्वाणि शास्त्राणि विवदंते परस्परं ॥ यावज्जगति नाध्यात्मरामायणमुदेष्यति ॥२५॥ तावत्स्वरूपं
रामस्य दुर्बोधं महतामपि ॥ यावज्जगति नाध्यात्मरामायणमुदेष्यति ॥२६॥ अध्यात्मरामायण
संकीर्तनाच्छ्रवणादपि ॥ फलं वक्तुं न शक्नोति कश्चनेति मुनिसत्तम ॥२७॥ तथापि तस्य माहात्म्यं व
क्ष्ये किंचित्तवानघ ॥ शृणु चित्तं समाधाय शिवेनोक्तं पुरा मम ॥२८॥ अध्यात्मरामायणतः श्लोकं
श्लोकार्धपदं वा ॥ यः पठेद्भक्तिसंयुक्तः स पापान्मुच्यते क्षणात ॥२९॥ यस्तु प्रत्यहमध्यात्मरामाय
णमनन्यधीः ॥ यथाशक्ति वदेद्भक्त्या स जीवन्मुक्त उच्यते ॥३०॥ यो भक्त्यार्चयतेऽध्यात्मरामायणमतं
द्रितः ॥ दिने दिनेऽश्वमेधस्य फलं तस्य भवेन्मुने ॥३१॥ यदृच्छयापि योऽध्यात्मरामायणमनादरात
अन्यतः शृणुयान्मर्त्यः सोऽपि मुच्येत पातकैः ॥३२॥ नमस्करोति योऽध्यात्मरामायणमहरहः ॥ सर्व
देवार्चनफलं संप्राप्नोति न संशयः ॥३३॥ लिखित्वा पुस्तकेऽध्यात्मरामायणमकोपतः ॥ यो दद्या
द्रामभक्तेभ्यस्तस्य पुण्यफलं शृणु ॥३४॥ अधीते सर्ववेदेषु शास्त्रेष्वध्याकृतेषु च ॥ यत्फलं दुर्लभं लो
के तत्फलं तस्य संभवेत ॥३५॥ एकादशीदिनेऽध्यात्मरामायणमुपोषितः ॥ यो रामभक्तसदसि व्याक
रोति नरोत्तमः ॥३६॥ तस्य पुण्यफलं वक्ष्ये शृणु त्वं मुनिसत्तम ॥ प्रत्यक्षरं तु गायत्रीपुरश्चर्याफलं लभे
त ॥३७॥ उपवासव्रतं कृत्वा श्रीरामनवमीदिने ॥ रात्रौ जागरितोऽध्यात्मरामायणमनन्यधीः ॥३८॥
यः पठेच्छृणुयाद्वापि तस्य पुण्यं वदाम्यहं ॥ कुरुक्षेत्रादिनिखिलपुण्यतीर्थेष्वनेकशः ॥३९॥ आत्म
तुल्यधनं स्वर्णं ग्रहणे सर्वतो मुने ॥ विप्रेभ्योऽध्यायसत्तमेभ्यो दत्वा यत्फलमाप्नुयात ॥४०॥ तत्फलं
संभवेत्तस्य सत्यं सत्यं न संशयः ॥ यो गायते सदाध्यात्मरामायणमहर्निशि ॥४१॥ आज्ञां तस्य प्रतीक्षं
ते देवा इंद्रपुरोगमाः ॥ पठन्नध्यात्मरामायणमनुव्रतः ॥४२॥ यद्यत्करोति तत्कर्म ततः कोटि
गुणं भवेत ॥ तत्र श्रीरामहृदयं यः पठेत्सुसमाहितः ॥४३॥ स ब्रह्मघ्नोऽपि पूतात्मा त्रिभिरेव दिनैर्भवे
त ॥ श्रीरामहृदयं यस्तु हनुमत्प्रतिमांतिके ॥४४॥ त्रिःपठेत्प्रत्यहं मौनी स सर्वेप्सितभाग्भवेत ॥ ५

त्न श्रीरामहृदयं यत्नात्स्वस्थस्वस्थयोर्यदि ॥ ४५ ॥ प्रत्यक्षं प्रजुवीत ब्रह्महत्यादि वर्तयेत् ॥ श्रीरामगीतामाहात्म्यं कृत्स्नं जानाति शंकरः ॥ ४६ ॥ तदर्धं गिरिजा वेत्ति तदर्धं विघ्नहृन्मते ॥ तन्नैकिंचित्त्वव त्वामि हृत्स्नं वक्तुं न शक्यते ॥ ४७ ॥ यज्ज्ञात्वा तत्क्षणाल्लोकश्चित्तशुद्धिमवाप्नुयात् ॥ श्रीरामगीतायत्पापं न नाशयति नारद ॥ ४८ ॥ तन्न नश्यति तीर्थादौ लोके क्वापि कदाचन ॥ तत्रपश्याम्यहं लोके मार्गमाणोपि सर्वदा ॥ ४९ ॥ रामेणोपनिषत्सिंधुमुन्मथ्योत्पादितामृता ॥ लक्ष्मणायार्पितां गीतां स्वधीत्वा मरो भवेत् ॥ ५० ॥ जमदग्निसुतः पूर्वं कार्तवीर्यवधेच्छया ॥ धनुर्विद्यामभ्यसितुं महेशान्तिकेवसत् ॥ ५१ ॥ पृथीयमाने पार्वत्या रामगीतां प्रयत्नतः ॥ श्रुत्वा गृहीत्वा सुपठन्ना रामणाकलामगात् ॥ ५२ ॥ ब्रह्महत्यादिपापानां निष्कृतिं यदि वांछति ॥ रामगीतां मासमात्रं पठित्वा मुच्यते नरः ॥ ५३ ॥ दुःप्रतिग्रहदुर्भोज्यदुरालापादिसंभवं ॥ पापं सकृत्कीर्तनेन रामगीता विनाशयेत् ॥ ५४ ॥ शालिग्रामशिलाग्रे च तुलस्याश्वत्थसन्निधौ ॥ यतीनां पुरतस्तद्वद्रामगीतां पठेत्तु यः ॥ ५५ ॥ सतत्फलमवाप्नोति यद्वाचो पि न गोचरं ॥ रामगीतां पठेद्भक्त्या यः श्राद्धे भोजने द्विजान् ॥ ५६ ॥ तस्य ते पितरः सर्वे यांति विष्णोः परं पदं ॥ एकादश्यां निराहारो नियतो द्वादशी दिने ॥ ५७ ॥ स्थित्वागस्त्यतरोर्मूले रामगीतां पठेत्तु यः ॥ स एव राघवः साक्षात्सर्वदेवैश्च पूज्यते ॥ ५८ ॥ विनास्नाने विनाध्याने विना तीर्थावगाहने ॥ रामगीतां नरोधीत्य तदनंतफलं लभेत् ॥ ५९ ॥ बहुनात्र किमिहोक्तेन शृणु नारद तत्त्वतः ॥ श्रुतिस्मृतिपुराणेतिहासागमशतानि च ॥ ६० ॥ अर्हंति नाल्पामध्यात्मरामायणकलामपि ॥ अध्यात्मरामचरितस्य मुनीश्वराय माहात्म्यमेतदुदितं कमलासनेन ॥ यः श्रद्धया पठति वा शृणुयात्स मर्त्यः प्राप्नोति विष्णुपदवीं सुरपूज्यमानः ॥ ६१ ॥ इति श्री ब्रह्माण्डपुराणे उमामहेश्वरसंवादे अध्यात्मरामायणमाहात्म्ये [illegible] पंचमोऽध्यायः ॥ ५ ॥

ॐ यः पृथ्वीभरवारणाय दिविजैः संप्रार्थितश्चिन्मयः संजातः पृथिवीतले रविकुले मायामनुष्योव्ययः ॥ निश्चक्रं हतराक्षसः पुनरगाद्ब्रह्मत्वमाद्यं स्थिरां कीर्तिं पापहरां विधाय जगतां तं जानकीशं भजे ॥ १ ॥ विश्वोद्भवस्थितिलयादिषु हेतुमेकं मायाश्रयं विगतमायमचिंत्यमूर्तिं ॥ आनंदसांद्रममलं निजबोधरूपं सीतापतिं विदिततत्त्वमहं नमामि ॥ २ ॥ पठंति ये नित्यमनन्यचेतसः शृण्वंति चाध्यात्मिकसंज्ञितं शुभं ॥ नारायणं सर्वपुराणसम्मतं निर्धूतपापा हरिमेव यांति ते ॥ ३ ॥ अध्यात्मरामायणमेव नित्यं पठेद्यदीच्छेद्भवबंधमुक्तिं ॥ गवां सहस्रायुतकोटिदानात्फलं लभेद्यः शृणुयात्स नित्यं ॥ ४ ॥ पुरारिगिरिसंभूता श्रीरामार्णवसंगता ॥ अध्यात्मरामगंगेयं पुनाति भुवनत्रयं ॥ ५ ॥ कैलासाग्रे कदाचिद्रविशतविमले मंदिरे रत्नपीठे संविष्टं ध्याननिष्ठं त्रिनयनमभयं सेवितं सिद्धसंघैः ॥ ६ ॥ देवी वामांकसंस्था गिरिवरतनया पार्वती भक्तिनम्रा प्राहेदं देवमीशं सकलमलहरं वाक्यमानंदकं ॥ ७ ॥ नमोस्तु ते देव जगन्निवास सर्वात्मदृक्त्वं परमेश्वरोसि ॥ पृच्छामि तत्त्वं पुरुषोत्तमस्य सनातनं त्वं च सनातनोसि ॥ गोप्यं यदत्यंतमनन्यवाच्यं वदंति भक्तेषु महानुभावाः ॥ तदप्यहो हं तव देवभक्ता प्रियोसि मे त्वं वद यत्तु पृष्टं ॥ ८ ॥ ज्ञानं सविज्ञानमथानुभक्तिवैराग्ययुक्तं च मितं विभास्वत् ॥ जानाम्यहं योषिदपि त्वदुक्तं यथा तथा ब्रूहि तरंति येन ॥ ९ ॥ पृच्छामि चान्यच्च परं रहस्यं तदेव चाग्रे वद वारिजाक्ष ॥ श्रीरामचंद्रेखिलतत्त्वसारे भक्तिर्दृढा नौर्भवति प्रसिद्धा ॥ १० ॥ भक्तिः प्रसिद्धा भवमोक्षणाय नान्यत्ततः साधनमस्ति किंचित् ॥ तथापि हृत्संशयबंधनं मे विभेत्तुमर्हस्यमलोक्तिभिस्त्वं ॥ वदंति रामं परमेकमाद्यं निरस्तमायागुणसंप्रवाहं ॥ भजंति चाहर्निशमप्रमत्ताः परं पदं यांति तथैव सिद्धाः ॥ ११ ॥ वदंति केचित्परमोपि रामः स्वाविद्यया संवृतमात्मसंज्ञं ॥ जानाति नात्मानमतः परेण संबोधितो वेद परात्मतत्त्वं ॥ १२ ॥ यदि स्म जानाति कुतो विलापः सीताकृतेनेन कृतः परेण ॥ जानाति नैवं यदि केन सेव्यः समो हि सर्वैरपि जीवजातैः ॥ १३ ॥ अत्रोत्तरं किं विदितं भवद्भिस्तद्ब्रूहि मे संशयभेदवाक्यं ॥ श्री म हा दे व उवाच ॥ धन्यासि भक्तासि परात्मनस्त्वं यज्ज्ञातुमिच्छा तव रामतत्त्वं ॥ पुरा न केनाप्यभिचोदितोहं वक्तुं रहस्यं परमं निगूढं ॥ १४ ॥ त्वयाद्य भक्त्या परिनोदितोहं वक्ष्ये नमस्कृत्य रघूत्तमं ते ॥ रामः परात्मा प्रकृतेरनादिरानंद एकः पुरुषोत्तमो हि ॥ स्वमायया कृत्स्नमिदं हि सृष्ट्वा नभोवदंतर्बहिरास्थितो यः ॥ १५ ॥ सर्वांतरस्थोपि निगूढ आत्मा स्वमायया सृष्टमिदं विचष्टे ॥ जगंति नित्यं परितो भ्रमंति यत्सन्निधौ चुंबकलोहवद्धि ॥ १६ ॥ एतन्न जानंति विमूढचित्ताः स्वाविद्यया संवृतमान

सा ये ॥ स्वाज्ञानमप्यात्मनि शुद्धबोधे स्वारोपयंतीह निरस्तमाये ॥ १७ ॥ संसारमेवानुसरंति ते वै पुत्रादिसक्ताः पुरुकर्मयुक्ताः ॥ जानंति नैवं हृदये स्थितं वै चामीकरं कंठगतं यथाज्ञाः ॥ १८ ॥ यथा प्रकाशो न तु विद्यतेर्के ज्योतिःस्वभावे परमेश्वरे तथा ॥ विशुद्धविज्ञानघने रघूत्तमेविद्या कथं स्यात्परतः परात्मनि ॥ यथा हि चाक्ष्णा भ्रमता गृहादिकं विनष्टदृष्टेर्भ्रमतीव दृश्यते ॥ तथैव देहेंद्रियकर्तुरात्मनः कृतं परेध्यस्य जनो विमुह्यति ॥ २१ ॥ नाहो न रात्रिः सवितुर्यथा भवेत्प्रकाशरूपाव्यभिचारितः क्वचित् ॥ ज्ञानं तथाज्ञानमिदं द्वयं हरौ रामे कथं स्थास्यति शुद्धचिद्घने ॥ २२ ॥ तस्मात्परानंदमये रघूत्तमे विज्ञानरूपे हि न विद्यते तमः ॥ अज्ञानसाक्षिण्यरविंदलोचने मायाश्रयत्वान्न हि मोहकारणं ॥ २४ ॥ अत्र ते कथयिष्यामि रहस्यमपि दुर्लभं ॥ सीताराममरुत्सूनुसंवादं मोक्षसाधनं ॥ २५ ॥ पुरा रामायणे रामो रावणं देवकंटकं ॥ हत्वा रणे रणश्लाघी सपुत्रबलवाहनं ॥ २६ ॥ सीतया सह सुग्रीवलक्ष्मणाभ्यां समन्वितः ॥ अयोध्यामगमद्रामो हनूमत्प्रमुखैर्वृतः ॥ २७ ॥ अभिषिक्तः परिवृतो वसिष्ठाद्यैर्महात्मभिः ॥ सिंहासने समासीनः कोटिसूर्यसमप्रभः ॥ २८ ॥ दृष्ट्वा तदा हनूमंतं प्रांजलिं पुरतः स्थितं ॥ कृतकार्यं निराकांक्षं ज्ञानापेक्षं महामतिः ॥ २९ ॥ रामः सीतामुवाचेदं ब्रूहि तत्त्वं हनूमते ॥ निष्कल्मषोयं ज्ञानस्य पात्रं नो नित्यभक्तिमान् ॥ ३० ॥ तथेति जानकी प्राह तत्त्वं रामस्य निश्चितं ॥ हनूमते प्रपन्नाय सीता लोकविमोहिनी ॥ ३१ ॥ सी ता उवाच ॥ रामं विद्धि परं ब्रह्म सच्चिदानंदमद्वयं ॥ सर्वोपाधिविनिर्मुक्तं सत्तामात्रमगोचरं ॥ ३२ ॥ आनंदं निर्मलं शांतं निर्विकारं निरंजनं ॥ सर्वव्यापिनमात्मानं स्वप्रकाशमकल्मषं ॥ ३३ ॥ मां विद्धि मूलप्रकृतिं सर्गस्थित्यंतकारिणीं ॥ तस्य सन्निधिमात्रेण सृजामीदमतंद्रिता ॥ ३४ ॥ तत्सान्निध्यान्मया सृष्टं तस्मिन्नारोप्यते बुधैः ॥ अयोध्यानगरे जन्म रघुवंशेतिनिर्मले ॥ ३५ ॥ विश्वामित्रसहायत्वं मखसंरक्षणं ततः ॥ अहल्याशापशमनं चापभंगो महेशितुः ॥ ३६ ॥ मत्पाणिग्रहणं पश्चाद्भार्गवस्य मदक्षयः ॥ अयोध्यानगरे वासो मया द्वादशवार्षिकः ॥ ३७ ॥ दंडकारण्यगमनं विराधवध एव च ॥ मायामारीचमरणं मायासीताहृतिस्तथा ॥ ३८ ॥ जटायुषो मोक्षलाभः कबंधस्य तथैव च ॥ शबर्याः पूजनं पश्चात्सुग्रीवेण समागमः ॥ ३९ ॥ वालिनश्च वधः पश्चात्सीतान्वेषणमेव च ॥ सेतुबंधश्च जलधौ लंकायाश्च निरोधनं ॥ ४० ॥ रावणस्य वधो युद्धे सपुत्रस्य दुरात्मनः ॥ विभीषणे राज्यदानं पुष्पकेण मया सह ॥ ४१ ॥ अयोध्यागमनं पश्चाद्राज्ये रामाभिषेचनं ॥ एवमादीनि कर्माणि मयैवाचरितान्यपि ॥ ४२ ॥ आरोपयंति रामेस्मिन्निर्विकारेखिलात्मनि ॥ रामो न गच्छति न तिष्ठति नानुशोचत्याकांक्षते त्यजति नो न करोति किंचित् ॥ आनंदमूर्तिरचलः परिणामहीनो मायागुणाननुगतो हि तथा विभाति ॥ ४४ ॥ म हा दे व उवाच ॥ ततो रामः स्वयं प्राह हनूमंतमुपस्थितं ॥ शृणु तत्त्वं प्रवक्ष्यामि ह्यात्मानात्मपरात्मनां ॥ ४५ ॥ आकाशस्य यथा भेदस्त्रिविधो दृश्यते महान् ॥ जलाशये महाकाशस्तदवच्छिन्नमेव हि ॥ ४६ ॥ प्रतिबिंबाख्यमपरं दृश्यते त्रिविधं नभः ॥ बुद्ध्यवच्छिन्नचैतन्यमेकं पूर्णमथापरं ॥ ४७ ॥ आभासस्त्वपरं बिंबभूतमेवं त्रिधा चितिः ॥ साभासबुद्धेः कर्तृत्वमविच्छिन्नेविकारिणि ॥ ४८ ॥ साक्षिण्यारोपितं भ्रांत्या जीवत्वं च तथाबुधैः ॥ आभासस्तु मृषाबुद्धिरविद्याकार्यमुच्यते ॥ ४९ ॥ अविच्छिन्नं तु तद्ब्रह्म विच्छेदस्तु विकल्पतः ॥ अविच्छिन्नस्य पूर्णेन एकत्वं प्रतिपद्यते ॥ ५० ॥ तत्त्वमस्यादिवाक्यैश्च साभासस्याहमस्तथा ॥ एकज्ञानं यदोत्पन्नं महावाक्येन चात्मनोः ॥ ५१ ॥ तदाविद्या स्वकार्यैश्च नश्यत्येव न संशयः ॥ एतद्विज्ञाय मद्भक्तो मद्भावायोपपद्यते ॥ ५२ ॥ मद्भक्तिविमुखानां हि शास्त्रगर्तेषु मुह्यतां ॥ न ज्ञानं न च मोक्षः स्यात्तेषां जन्मशतैरपि ॥ ५३ ॥ इदं रहस्यं हृदयं ममात्मनो मयैव साक्षात्कथितं तवानघ ॥ मद्भक्तिहीनाय शठाय न त्वया दातव्यमैंद्रादपि राज्यतोधिकं ॥ ५४ ॥ म हा दे व उवाच ॥ एतत्ते कथितं देवि श्रीरामहृदयं मया ॥ अतिगुह्यतमं हृद्यं पवित्रं पापशोधनं ॥ ५५ ॥ साक्षाद्रामेण क

ष्ठितं सर्वदेवैः संसेवितं सदा ॥ यः पठेत्सततं भक्त्या मम भक्तो नात्र संशयः ॥ ५९ ॥ ब्रह्महत्यादिपापानि
बहुजन्मार्जितान्यपि ॥ नश्यंत्येव न संदेहो रामस्य वचनं यथा ॥ ६० ॥ जातिभ्रष्टोतिपापी परध
नपरदारेषु नित्यो दिग्धोति वा स्तेयी ब्रह्महा मातापितृवधनिरतो योगिवृंदापकारी ॥ यः संपूज्याभि
रामं पठति च हृदयं रामवेद्यं भक्त्या योगींद्रैरप्यलभ्यं पदमपि लभते सर्वदेवैः सपूज्यः ॥ ६१ ॥
इति श्रीअध्यात्मरामायणे बालकांडे प्रथमोध्यायः ॥
श्रीपार्वत्युवाच ॥ धन्यास्म्यनुगृहीतास्मि कृतार्थास्मि जगत्प्रभो ॥ विच्छिन्नो मेतिसंदेहग्रंथि
र्भवदनुग्रहात् ॥ त्वन्मुखाद्गलितं रामतत्त्वामृतरसायनं ॥ पिबंत्याहि मनो देव न तृप्यति भवा
पह ॥ श्रीरामस्य कथा तत्त्वं श्रुतं संक्षेपतो मया ॥ इदानीं श्रोतुमिच्छामि विस्तरेण स्फुटाक्षरं
श्रीमहादेव उवाच ॥ शृणु देवि प्रवक्ष्यामि गुह्याद्गुह्यतरं महत् ॥ अध्यात्मरामचरितं रा
मेणोक्तं पुरा मम ॥ तदद्य कथयिष्यामि शृणु पापनिवारणं ॥ यत् श्रुत्वा मुच्यते जंतुरज्ञा
नोत्थमहाभयात् ॥ प्राप्नोति परमामृद्धिं दीर्घायुः पुत्रसंततिं ॥ भूमिर्भारेण मग्ना दशवदनमुखा
शेषरक्षोगणानां धृत्वा गोरूपमादौ दिविजमुनिजनैः साकमब्जासनस्य ॥ गत्वा लोकं रुदं
ती व्यसनमुपगता ब्रह्मणे प्राह सर्वं ब्रह्मा ध्यात्वा मुहूर्तं सकलमपि हृदावेदशेषात्मकत्वात् ॥
तस्मात्क्षीरसमुद्रतीरमगमद्ब्रह्माथ देवैर्वृतो देव्या चाखिललोककृत्स्यमजरं सर्वज्ञमेशं हरिं ॥
अस्तौषीच्छ्रुतिसिद्धनिर्मलपदैः स्तोत्रैः पुराणोद्भवैः ॥ भक्त्या गद्गदया गिरातिविमले चानंदबा
ष्पैर्हृतः ॥ ततः स्फुरत्सहस्रांशुसहस्रसदृशप्रभः ॥ आविरासीद्धरिः प्राच्यां दिशि व्यपनयन्तमः
कथंचिदृष्टवान्ब्रह्मा दुर्दर्शमकृतात्मनां ॥ इंद्रनीलप्रतीकाशं स्मितास्यं पद्मलोचनं ॥ किरी
टहारकेयूरकुंडलैः कटकादिभिः ॥ विभ्राजमानं श्रीवत्सकौस्तुभप्रभयान्वितं ॥ स्तुवद्भिः स
नकाद्यैश्च पार्षदैः परिवेष्टितं ॥ शंखचक्रगदापद्मवनमालाविराजितं ॥ स्वर्णयज्ञोपवी
तेन सह शुक्लांबरेण च ॥ श्रिया भूम्या च सहितं गरुडोपरि संस्थितं ॥ हर्षगद्गदया वाचा स्तोतुं स
मुपचक्रमे ॥ ब्रह्मोवाच ॥ नतोस्मि ते पदं देव प्राणबुद्धींद्रियात्मभिः ॥ यच्चिंत्यते कर्मपाशाद्धृ
दि नित्यं मुमुक्षुभिः ॥ मायया गुणमय्या त्वं सृजस्यवसि लुंपसि ॥ जगत्तेन न ते लेपः स्वानंदा
नुभवात्मनः ॥ तथा शुद्धिर्न दुष्टानां दानाध्ययनकर्मभिः ॥ शुद्धात्मनां ते यशसि सदा भक्तिमतां
यथा ॥ अतस्त्वत्पादयुगलं चित्तदोषापनुत्तये ॥ सद्योनहृदये नित्यं मुनिभिः सात्वतैर्धृतं ॥ ब्र
ह्माद्यैः स्वर्गसिद्ध्यर्थमस्माभिः पूर्वसेवितं ॥ अपरोक्षानुभूत्यर्थं ज्ञानिभिर्हृदि भावितं ॥ तवां
घ्रिरजनिर्माल्यतुलसीमालया विभो ॥ स्पर्धते वक्षसि पदं लब्ध्वापि श्रीः सपत्नीवत् ॥ अतस्त्व
त्पादकमले भक्तिरेव सदास्तु मे ॥ संसारामयतप्तानां भेषजं भक्तिरेव ते ॥ इति ब्रुवंतं ब्रह्माणं
बभाषे भगवान्हरिः ॥ किं करोमीति तं वेधाः प्रत्युवाचातिहर्षितः ॥ भगवन् रावणो नाम पौल
स्त्यतनयो महान् ॥ राक्षसानामधिपतिर्मद्दत्तवरदर्पितः ॥ त्रिलोकीं लोकपालांश्च बाधते
विश्वबाधकः ॥ मनुष्येण मृत्युस्तस्य प्रयाकल्याणकल्पिता ॥ अतस्त्वं मानुषो भूत्वा जहि दे
वरिपुं प्रभो ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ कश्यपस्य वरो दत्तस्तपसा तोषितेन मे ॥ याचितः पुत्रभावा
य तथेत्यंगीकृतं मया ॥ स इदानीं दशरथो भूत्वा तिष्ठति भूतले ॥ तस्याहं पुत्रतामेत्य कौसल्या
यां शुभे दिने ॥ चतुर्धात्मानमेवाहं सृजामीतरयोः पृथक् ॥ योगमायापि सीतेति जनकस्य गृ
हे तदा ॥ उत्पत्स्यते तया सार्धं सर्वं संपादयाम्यहं ॥ इत्युक्त्वांतर्दधे विष्णुर्ब्रह्मा देवानथाब्रवीत् ॥ वि
ष्णुर्मानुषरूपेण भविष्यति रघोः कुले ॥ यूयं सृजध्वं सर्वेपि वानरेष्वंशसंभवान् ॥ विष्णोः स
हायं कुरुत यावत्स्थास्यति भूतले ॥ इति देवाः समादिश्य समाश्वास्य च मेदिनीं ॥ ययौ ब्रह्मा स्व
भवनं विज्वरः सुखमास्थितः ॥ देवाश्च सर्वे हरिरूपधारिणः स्थिताः सहायार्थमितस्ततो हरेः ॥
महाबलाः पर्वतवृक्षयोधिनः प्रतीक्षमाणा भगवंतमीश्वरं ॥ इति श्रीअध्यात्मरामायणे बा
लकांडे द्वितीयोध्यायः ॥ ॥ ॥

श्रीमहादेव उवाच ॥ अथ राजा दशरथः श्रीमान्सत्यपराक्रमः ॥ अयोध्याधिपतिर्वीरः स
र्वलोकेषु विश्रुतः ॥ अनपत्यत्वदुःखेन पीडितो गुरुमेकदा ॥ वसिष्ठं स्वकुलाचार्यमभिवाद्ये
दमब्रवीत् ॥ स्वामिन्पुत्राः कथं मे स्युः सर्वलक्षणलक्षिताः ॥ पुत्रहीनस्य मे राज्यं सर्वं दुःखा
य कल्पते ॥ ततोब्रवीद्वसिष्ठस्तं भविष्यंति सुतास्तव ॥ चत्वारः सत्वसंपन्ना लोकपाला इ
वापरे ॥ शांताभर्तारमानीय ऋष्यशृंगं तपोधनं ॥
अस्माभिः सहितः पुत्रकामेष्टिं शीघ्रमाचर ॥ तथेति मुनिमानीय मंत्रिभिः सहितः शुचिः ॥ य
ज्ञकर्म समारेभे मुनिभिर्वीतकल्मषैः ॥ श्रद्धया हूयमानेग्नौ तप्तजांबूनदप्रभः ॥ पायसं स्वर्ण
पात्रस्थं गृहीत्वोवाच हव्यवाट् ॥ गृहाण पायसं दिव्यं पुत्रीयं देवनिर्मितं ॥ लप्स्यसे परमात्मा
नं पुत्रत्वेन न संशयः ॥ इत्युक्त्वा पायसं दत्त्वा राज्ञे सोंतर्दधेनलः ॥ ववंदे मुनिशार्दूलौ राजा लब्धम
नोरथः ॥ वसिष्ठऋष्यशृंगाभ्यामनुज्ञातो ददौ हविः ॥ कौसल्यायै च कैकेय्यै अर्धमर्धं प्रयत्नतः ॥
ततः सुमित्रा संप्राप्ता जगृध्नुः पौत्रिकं चरुं ॥ कौसल्या तु स्वभागार्धं ददौ प्रीतिसमन्विता ॥ कैकेयी
च स्वभागार्धं ददौ प्रीतिसमन्विता ॥ उपभुज्य चरुं सर्वाः स्त्रियो गर्भसमन्विताः ॥ देवता इव रेजुः
स्वभासा राजमंदिरे ॥ दशमे मासि कौसल्या सुषुवे पुत्रमद्भुतं ॥ मधुमासे सिते पक्षे नवम्यां कर्क
टे शुभे ॥ पुनर्वस्वृक्षसहिते उच्चस्थे ग्रहपंचके ॥ मेषं पूषणि संप्राप्ते पुष्पवृष्टिसमाकुले ॥ आवि
रासीज्जगन्नाथः परमात्मा सनातनः ॥ नीलोत्पलदलश्यामः पीतवासाश्चतुर्भुजः ॥ जलजारुण
नेत्रांतः स्फुरत्कुंडलमंडितः ॥ सहस्रार्कप्रतीकाशः किरीटी कुंचितालकः ॥ शंखचक्रगदापद्म
वनमालाविराजितः ॥ अनुग्रहाख्यहृत्स्थेंदुसूचकस्मितचंद्रिकः ॥ करुणारससंपूर्णविशालो
त्पललोचनः ॥ श्रीवत्सहारकेयूरनूपुरादिविभूषितः ॥ दृष्ट्वा तं परमात्मानं कौसल्या विस्मयाकु
ला ॥ हर्षाश्रुपूर्णनयना नत्वा प्रांजलिरब्रवीत् ॥ कौसल्योवाच ॥ देवदेव नमस्तेस्तु शंखचक्र
गदाधर ॥ परमात्माच्युतोनंतः पूर्णस्त्वं पुरुषोत्तमः ॥ वदंत्यगोचरं वाचां बुद्ध्यादीनामतींद्रियं ॥
त्वां वेदवादिनः सत्तामात्रं ज्ञानैकविग्रहं ॥ त्वमेव मायया विश्वं सृजस्यवसि हंसि च ॥ सत्वादि
गुणसंयुक्तः स्वतएवामलः सदा ॥ करोषीव न कर्ता त्वं गच्छसीव न गच्छसि ॥ शृणोषि न शृणोषीव
पश्यसीव न पश्यसि ॥ अप्राणो ह्यमनाः शुद्ध इत्यादि श्रुतिरब्रवीत् ॥ समः सर्वेषु भूतेषु
तिष्ठन्नपि न लक्ष्यसे ॥ अज्ञानध्वांतचित्तानां व्यक्त एव सुमेधसां ॥ जठरे तव दृश्यंते ब्रह्मांडाः परमा
णवः ॥ त्वं ममोदरसंभूत इति लोकान्विडंबसे ॥ भक्तेषु पारवश्यं ते दृष्टं मेद्य रघूद्वह ॥ संसारसागरे
मग्ना पतिपुत्रधनादिषु ॥ भ्रमामि मायया तेद्य पादमूलमुपागता ॥ देव त्वद्रूपमेतन्मे सदा
तिष्ठतु मानसे ॥ आवृणोतु न मां माया तव विश्वविमोहिनी ॥ उपसंहर विश्वात्मन्नदो रूपमलौकिकं ॥ दर्शयस्व महानंदबालभावं सुकोमलं ॥
ललितालिंगनालापैस्तरिष्याम्युत्कटं तमः ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ यद्यदिष्टं तवास्त्यंब तत्तद्भवतु
नान्यथा ॥ अहं ब्रह्मणा पूर्वं भूमिभारापनुत्तये ॥ प्रार्थितो रावणं हंतुं मानुषत्वमुपागतः ॥ त्व
या दशरथेनाहं तपसाराधितः पुरा ॥ मत्पुत्रत्वाभिकांक्षिण्या तथा कृतमनिंदिते ॥ रूपमेतत्त्वया
दृष्टं प्राक्तनं तपसः फलं ॥ मद्दर्शनं विमोक्षाय कल्पते ह्यन्यदुर्लभं ॥ संवादमावयोर्यस्तु पठेद्वा शृ
णुयादपि ॥ स याति मम सारूप्यं मरणे मत्स्मृतिं लभेत् ॥ इत्युक्त्वा मातरं रामो बालो भूत्वा रुरोद ह ॥
बालत्वेपींद्रनीलाभो विशालाक्षोतिसुंदरः ॥ बालारुणप्रतीकाशो लालिताखिललोकपः ॥ अ
थ राजा दशरथः श्रुत्वा पुत्रोद्भवोत्सवं ॥ आनंदार्णवमग्नोसावाययौ गुरुणा सह ॥ रामं राजीवप
त्राक्षं दृष्ट्वा हर्षाश्रुसंप्लुतः ॥ गुरुणा जातकर्माणि कर्तव्यानि चकार सः ॥ कैकेयी चाथ भरतमसू
त कमलेक्षणा ॥ सुमित्रायां यमौ जातौ पूर्णेंदुसदृशाननौ ॥ तदा ग्रामसहस्राणि ब्राह्मणेभ्यो द
दौ मुदा ॥ सुवर्णानि च रत्नानि वासांसि सुरभीः शुभाः ॥ यस्मिन्रमंते मुनयो विद्यया ज्ञानविप्लवे ॥
तं गुरुः प्राह रामेति रमणाद्राम इत्यपि ॥ भरणाद्भरतो नाम लक्ष्मणं लक्षणान्वितं ॥ शत्रुघ्नं श
त्रुहंतारमेवं गुरुरभाषत ॥ लक्ष्मणो रामचंद्रेण शत्रुघ्नो भरतेन च ॥ द्वंद्वीभूय चरंतौ तौ पायसांशानु
सारतः ॥ रामस्तु लक्ष्मणेनाथ विचरन्बाललीलया ॥ रमयामास पितरौ चेष्टितैर्मुग्धभाषितैः ॥ भा
ले स्वर्णमयाश्वत्थपर्णमुक्ताफलप्रभं ॥ कंठे रत्नमणिव्रातमध्यद्वीपनखांचितं ॥ कर्णयोः स्वर्ण
संपन्नरत्नार्जुनसटालकं ॥ शिंजानमणिमंजीरकटिसूत्रांगदैर्युतं ॥ स्मितवक्त्राल्पदशनमिं
द्रनीलमणिप्रभं ॥ अंगणे रिंगमाणं तं तर्णकाननु सर्वतः ॥ दृष्ट्वा दशरथो राजा कौसल्या मुमुदे

तदा ॥ भोक्ष्यमाणो दशरथो राममेहीति चासकृत् ॥ आह्वयत्यति हार्देन प्रेम्णा नायाति ली
लया ॥ आनयेति च कौशल्यां प्रियां सामस्मितास्य तं ॥ धावत्यपि न शक्नोति स ग्रहीतुं योगमनेगति
प्रहसन्नग्रमायाति हृत्यं मां किं न पाणिना ॥ किंचिद्गृहीत्वा कवलं पुनरेव पलायते ॥ एवमा
नंदसंदोहो जगदानंदकारकः ॥ मायाबालवपुर्धृत्वा रमयामास दंपती ॥ अथ कालेन ते सर्वे
कौमारं प्रतिपेदिरे ॥ उपनीता वसिष्ठेन सर्वविद्याविशारदाः ॥ धनुर्वेदे च निरताः सर्वशास्त्रा
र्थवेदिनः ॥ बभूवुर्जगतां नाथा लीलया नररूपिणः ॥ लक्ष्मणस्तु सदा राममनुगच्छति सादरं ॥
सेव्यसेवकभावेन शत्रुघ्नो भरतं तथा ॥ रामश्चापधरो नित्यं तूणीबाणान्वितः प्रभुः ॥ अश्वा
रूढो वनं याति मृगयां सहलक्ष्मणः ॥ हत्वा दुष्टमृगान्सर्वान्पित्रे सर्वं न्यवेदयत् ॥ प्रातरुत्था
य सुस्नातः पितरावभिवाद्य च ॥ पौरकार्याणि सर्वाणि करोति विनयान्वितः ॥ बंधुभिः स
हितो नित्यं भुक्त्वा मुनिभिरन्वहं ॥ धर्मशास्त्ररहस्यादि शृणोति व्याकरोति च ॥ एवं परात्मा
मनुजावतारो मनुष्यलोकाननुसृत्य सर्वं ॥ चक्रे विकारीव गुणाभिहीनो विचार्यमाणो न
करोति किंचित् ॥ इति श्रीमदानंदरामायणे [illegible] ॥
श्री महादेव उवाच ॥ कदाचित्कौशिकोभ्यागादयोध्यां ज्वलनप्रभः ॥ द्रष्टुं रामं परात्मानं
जातं ज्ञात्वा स्वमायया ॥ दृष्ट्वा दशरथो राजा प्रत्युत्थायाचिरेण तु ॥ वसिष्ठेन समागम्य पूज
यित्वा यथाविधि ॥ प्रत्युत्थाय ननामाथ प्रांजलिर्भक्तिनम्रधीः ॥ कृतार्थोस्मि मुनींद्राहं त्वदा
गमनकारणात् ॥ त्वद्विधा यद्गृहं यांति तत्रैवायांति संपदः ॥ यदर्थमागतोसि त्वं ब्रूहि सत्यं
करोमि तत् ॥ विश्वामित्रोपि तं प्रीतः प्रत्युवाच महामतिः ॥ अहं पर्वणि संप्राप्ते दृष्टुं यष्टुं
सुरान्पितॄन् ॥ यदारभे तदा दैत्या विघ्नं कुर्वंति नित्यशः ॥ मारीचश्च सुबाहुश्चापरे चानुचरा
स्तयोः ॥ अतस्तयोर्वधार्थाय ज्येष्ठं रामं प्रयच्छ मे ॥ लक्ष्मणेन सह भ्रात्रा तव श्रेयो भविष्यति
वसिष्ठेन सहामंत्र्य दीयतां यदि रोचते ॥ पप्रच्छ गुरुमेकांते राजा चिंतापरायणः ॥ किं करोमि
गुरो रामं त्यक्तुं नोत्सहते मनः ॥ बहुवर्षसहस्रांते कष्टेनोत्पादिताः सुताः ॥ चत्वारो मरतुल्या
स्तेषां रामोतिवल्लभः ॥ रामो यदि गच्छति वनं जीवामि कथं च न ॥ प्रत्याख्यातो यदि मुनिः शा
पं दास्यत्यसंशयं ॥ कथं श्रेयो भवेन्मह्यं मम त्वं वक्तुमर्हसि ॥ वसिष्ठ उवाच ॥ शृणु राजन्दे
वगुह्यं गोपनीयं प्रयत्नतः ॥ रामो न मानुषो जातः परमात्मा सनातनः ॥ भूमेर्भारावताराय
ब्रह्मणा प्रार्थितः पुरा ॥ स एव जातो भगवान्कौशल्यायां तवानघ ॥ त्वं तु प्रजापतिः पूर्वं कश्य
पो ब्रह्मणः सुतः ॥ कौशल्या चादितिर्देवमाता पूर्वं यशस्विनी ॥ भवंतौ तप उग्रं वै तेपाते बहु
वत्सरं ॥ भक्त्या च विष्णौ विष्णुपूजानेकमनसौ ॥ तदा प्रसन्नो भगवान्वरदो भक्तवत्सलः ॥ वरि
वरमित्युक्ते त्वं मे पुत्रो भवामल ॥ इति त्वया याचितोसौ भगवान्भूतभावनः ॥ तथेत्युक्त्वा
पुत्र आस्ते जातो रामः स एव सः ॥ शेषस्तु लक्ष्मणो राजन्राममेवानुपद्यते ॥ जातौ भरतशत्रुघ्नौ
शंखचक्रे गदाधरौ ॥ [illegible] राममनुव्रतौ ॥ योगमायापि सीतेति जाता ज
नकनंदिनी ॥ विश्वामित्रोपि रामाय संयोजयितुमागतः ॥ एतद्गुह्यतमं राजन्न वक्तव्यं कदाच
न ॥ अतः प्रीतेन मनसा पूजयित्वाथ कौशिकं ॥ प्रेषयस्व महाराज रामं च सहलक्ष्मणं ॥ वसि
ष्ठेनैवमुक्तस्तु राजा दशरथस्तथा ॥ कृतकृत्यमिवात्मानं मेने प्रमुदिताननः ॥ आहूय राम रामे
ति लक्ष्मणेति च सादरं ॥ आलिंग्य मूर्ध्न्यवघ्राय कौशिकाय समर्पयत् ॥ ततोतिहृष्टो भग
वान्विश्वामित्रः प्रतापवान् ॥ आशीर्भिरभिनंद्याथ राजानं रामलक्ष्मणौ ॥ गृहीत्वा चापतूणी
रबाणखड्गधरौ च तौ ॥ कंचिद्देशमतिक्रम्य राममाहूय भक्तितः ॥ ददौ बलां चातिबलां वि
द्ये द्वे देवनिर्मिते ॥ ययोर्ग्रहणमात्रेण क्षुत्क्षामादि न जायते ॥ ततो ह्युत्तीर्य गंगां ते ताटका
वनमागताः ॥ विश्वामित्रस्तदा प्राह रामं सत्यपराक्रमं ॥ अत्रास्ति ताटका नाम राक्षसी कामरू
पिणी ॥ बाधते लोकमखिलं जहि तामविचारयन् ॥ तथेति धनुरादाय सगुणं रघुनंदनः ॥
टंकारमकरोत्तेन शब्देनापूरयन्वनं ॥ ततः श्रुत्वा सहसा नादं ताटका घोररूपिणी ॥ क्रोधसं

मूर्छिता राममभ्येती रुधिरं बहु ॥ ततोतिसुंदरी यक्षी सर्वाभरणभूषिता ॥ [illegible]
तां प्राप्य मुक्ता रामप्रसादतः ॥ नत्वा रामं परिक्रम्य गत्वा रामाज्ञया दिवं ॥ [illegible]
रामं महर्षिर्नमाघ्राय विचिंत्य किंचित् ॥ सर्वास्त्रजालं बहुमंत्रयुक्तं प्रीत्या ददौ रामाय महाप्रभावः ॥
इति श्रीमदानंदरामायणे [illegible] अध्यायः ॥
महादेव उवाच ॥ ततः कामाश्रमे रम्ये कानने मुनिसंकुले ॥ उषित्वा रजनीमेकां प्रभाते प्र
स्थितः शनैः ॥ सिद्धाश्रमे गताः सर्वे सिद्धचारणसेविते ॥ विश्वामित्रेण संदिष्टास्तत्रस्था मुनयस्त
त्रिवासिनः ॥ पूजां च महतीं चक्रू रामलक्ष्मणयोर्द्रुतं ॥ श्रीरामः कौशिकं प्राह मुने दीक्षां प्रवि
श्यतां ॥ दर्शयस्व महाभाग क्व तौ राक्षसाधमौ ॥ तथेत्युक्त्वा मुनिर्यष्टुमारेभे मुनिभिः सह ॥
मध्याह्ने ददृशाते तौ राक्षसौ कामरूपिणौ ॥ मारीचश्च सुबाहुश्च वर्षंतौ रुधिरं बहु ॥ रामोपि ध
नुरादाय तौ बाणौ संदधे सुधीः ॥ आकर्णांतं समाकृष्य विससर्ज तयोः पृथक् ॥ तयोरेकं च मा
रीचं भ्रामयन्शतयोजनं ॥ पातयामास जलधौ तदद्भुतमिवाभवत् ॥ द्वितीयोग्निमयो बाणः
सुबाहुमनयत्क्षणात् ॥ अपरे लक्ष्मणेनाशु हतास्तदनुयायिनः ॥ पुष्पैरवाकिरन्देवा राघवं
सहलक्ष्मणं ॥ देवदुंदुभयो नेदुस्तुष्टुवुः सिद्धचारणाः ॥ विश्वामित्रस्तु संपूज्य पूजार्हौ रघुनंदनौ
अंके निवेश्य चालिंग्य भक्त्या बाष्पाकुलेक्षणः ॥ भोजयित्वा सह भ्रात्रा रामं पक्वफलादिभिः ॥
पुराणवाक्यैर्मधुरैर्निनाय दिवसत्रयं ॥ चतुर्थेहनि संप्राप्ते कौशिको राममब्रवीत् ॥ राम
राम महायज्ञं द्रष्टुं गच्छामहे वयं ॥ विदेहराजनगरे जनकस्य महात्मनः ॥ तत्र माहेश्वरं चाप
मस्ति न्यस्तं पिनाकिना ॥ द्रक्ष्यसि त्वं महासत्त्व पूज्यसे जनकेन च ॥ इत्युक्त्वा मुनिभिस्ताभ्यां
ययौ गंगासमीपतः ॥ गौतमस्याश्रमे पुण्ये यत्राहल्या स्थिता तपः ॥ दिव्यपुष्पफलोपेतपादपैः
परिवेष्टिते ॥ मृगपक्षिगणैर्हीने नानाजंतुविवर्जिते ॥ दृष्ट्वोवाच मुनिं श्रीमान्रामो राजीवलो
चनः ॥ कस्यैतदाश्रमपदं भाति भास्वन्मुने महत् ॥ पत्रपुष्पफलैर्युक्तं जंतुभिः परिवर्जितं
आह्लादयति मे चेतो भगवन्ब्रूहि तत्त्वतः ॥ विश्वामित्र उवाच ॥ शृणु राम पुरा वृत्तं गौतमो लोक
विश्रुतः ॥ सर्वधर्मभृतां श्रेष्ठस्तपसाराधयद्धरिं ॥ तस्मै ब्रह्मा ददौ कन्यामहल्यां लोकसुंद
रीं ॥ ब्रह्मचर्येण संतुष्टः शुश्रूषणपरायणां ॥ तया सार्द्धमिहावात्सीद्गौतमस्तपतां वरः ॥ श
क्रस्तु तां धर्षयितुमंतरप्रेप्सुरन्वहं ॥ कदाचिन्मुनिवेषेण निर्गतो गौतमो गृहात् ॥ ध
र्षयित्वा निरगाच्च त्वरितो मुनिरप्यगात् ॥ दृष्ट्वा यांतं स्वरूपेण मुनिः परमकोपनः ॥ तो दर्शी
दुष्टात्मन्मुनिरूपधरोधम ॥ सत्यं ब्रूहि न चेद्भस्म करिष्यामि न संशयः ॥ सोब्रवीद्देवराजोहं
पाहि मां कामकिंकरं ॥ कृतं जुगुप्सितं कर्म मया कलुषितचेतसा ॥ गौतमः कोपताम्राक्षः
शशाप दिविजाधिपं ॥ योनिलंपट दुष्टात्मन्सहस्रभगवान्भव ॥ शप्त्वा तं देवराजानं प्र
विश्य स्वाश्रमं द्रुतं ॥ दृष्ट्वाहल्यां वेपमानां प्रांजलिं गौतमोब्रवीत् ॥ दुष्टे त्वं तिष्ठ दुर्वृत्ते शिला
यामाश्रमे मम ॥ निराहारा दिवारात्रं तपः परममास्थिता ॥ आतपानिलवर्षादिसहिष्णुः पर
मेश्वरं ॥ ध्यायंती राममेकाग्रमनसा हृदि संस्थितं ॥ नानाजंतुविहीनोयमाश्रमो मे भविष्यति ॥ न
देवधृतपापा त्वं रामं संस्पृश्य भक्तितः ॥ परिक्रम्य नमस्कारं कृत्वा शापाद्विमोक्ष्यसि ॥ न
शुश्रूषां करिष्यसि यथा पुरा ॥ इत्युक्त्वा गौतमः प्रागाद्धिमवंतं नगेश्वरं ॥ पूर्ववन्मास
नाम तदाप्रभृत्यहल्या भूता शिलाश्रमे शुभे ॥ तव पादरजःस्पर्शं कांक्षंती पवनाशने ॥ तदाप्रभृत्यहल्याभूता
पोऽद्यापि रघुश्रेष्ठ तिष्ठत्यद्यापि दुष्करं ॥ पावय स्वमुनेर्भार्यामहल्यां ब्रह्मणः सुतां ॥ आस्ते द्यापि रघुश्रेष्ठ ता
पावय स्वमुनेर्भार्यां ॥ इत्युक्त्वा कौशिकः स्नेहाद्रा
संदर्शयामास चाहल्यामुग्रे तपसि संस्थितां ॥ तपोधनां ॥ ततो राम राघवोहल्यां रामो हृष्टमिति चाब्रवीत् ॥ शिलारामपदस्पृष्टा तां चाप
सर्वं ॥ पतिव्रता धर्मे रामेण लक्ष्मणेन समन्विते ॥ ततो दृष्ट्वा रघुश्रेष्ठं पीतकौशेयवा
ससं ॥ स्मितवक्त्रं पद्मनेत्रं श्रीवत्सांकितवक्षसं ॥ नी
लोत्पलदलश्यामं ॥ हृष्ट्वा रामं रमानाथं दर्भविस्फारितेक्षणं ॥ गौतम
स्य वचः स्मृत्वा ज्ञात्वा नारायणं परं ॥ संपूज्य विधिवद्राममर्घ्यादिभिरनिंदिता ॥ हर्षाश्रुजल
नेत्रांता दंडवत्प्रणिपत्य सा ॥ अहल्या पुनरुत्थाय रामं राजीवलोचनं ॥ पुलकांकितसर्वांगा
गिरा गद्गदयैरत ॥ अहल्योवाच ॥ अहो कृतार्थास्मि जगन्निवास ते पादाब्जलग्नरजः

कालनदं ॥ स्पृष्ट्वामिमंपादरजःप्रभोकराहिभिः विमुक्तस्तेरपितमानसेःमदा ॥ अहोविचित्रंत
वरामचेष्टितंमनुष्यभावेनविमोहयन्जगत् ॥ चलस्यजस्रंचरणादिवर्जितःसंपूर्णआनं
दमयोतिमायिकः ॥ यत्पादपंकजपरागपवित्रगात्राभागीरथीभवविरिंचिमुखान्पुना
ति ॥ साक्षात्सएवममदृग्विषयोयदास्तेकिंवर्ण्यतेममपुराकृतभागधेयं ॥ मर्त्यावतारे
मनुजाकृतिंहरिंरामाभिधेयंरमणीयदेहिनं ॥ धनुर्धरंपद्मविशाललोचनंभजामिनित्यं
नपरान्भजिष्ये ॥ यत्पादपंकजरजःश्रुतिभिर्विमृग्यंयन्नाभिपंकजभवःकमलासनश्च
यन्नामसाररसिकोभगवान्पुरारिस्तंरामचंद्रमनिशंपरिभावयामि ॥ यस्यावतारचरि
तानिविरिंचिलोकेगायंतिनारदमुखाभवपद्मजाद्याः ॥ आनंदजाश्रुपरिषिक्तकुचाग्र
सीमावागीश्वरीचतमहंशरणंप्रपद्ये ॥ सोयंपरात्मापुरुषःपुराणएषःस्वयंज्योतिरनं
तआद्यः ॥ मायातनुंलोकविमोहिनींयोधत्तेपरानुग्रहएषरामः ॥ अयंहिविश्वोद्भवसंय
मानामेकःस्वयंज्योतिरनंतआद्यः ॥ विरिंचिविष्ण्वीश्वरनामभेदान्धत्तेस्वतंत्रःपरिपूर्णआ
त्मा ॥ नमोस्तुतेरामतवांघ्रिपंकजंश्रियाधृतंवक्षसिलालितंप्रियैः ॥ आक्रांतमेकेनजग
त्त्रयंपुराध्येयंमुनींद्रैरभिमानवर्जितैः ॥ जगतामादिभूतस्त्वंजगत्त्वंजगदाश्रयः ॥ सर्वभूतेष्वसं
युक्तएकोभातिभवान्परः ॥ ओंकारवाच्यस्त्वंरामवाचामविषयःपुमान् ॥ वाच्यवाचकभेदे
नभवानेवजगन्मयः ॥ कार्यकारणकर्तृत्वफलसाधनभेदतः ॥ एकोविभासिरामत्वंमायया
बहुरूपया ॥ त्वन्मायामोहितधियस्त्वांनजानंतितत्त्वतः ॥ मानुषंत्वाभिमन्यंतेमायिनंपर
मेश्वरं ॥ आकाशवत्त्वंसर्वत्रबहिरंतर्गतोमलः ॥ असंगोह्यचलोनित्यःशुद्धोबुद्धःसदव्ययः ॥
योषिन्मूढाहमज्ञातेतत्त्वंजानेकथंविभो ॥ तस्मात्तेशतशोरामनमस्कुर्यामनन्यधीः ॥ दे
वमेयत्रकुत्रापिस्थितायाअपिसर्वदा ॥ त्वत्पादकमलेसक्ताभक्तिरेवसदास्तुमे ॥ नमस्ते
पुरुषाध्यक्षनमस्तेभक्तवत्सल ॥ नमस्तेस्तुहृषीकेशनारायणनमोस्तुते ॥ भवभयहरमे
कंभानुकोटिप्रकाशंकरधृतशरचापंकालमेघावभासं ॥ कनकरुचिरवस्त्रंरत्नवत्कुंडला
ढ्यंकमलविशदनेत्रंसानुजंराममीडे ॥ स्तुत्वैवंपुरुषंसाक्षाद्राघवंपुरतःस्थितं ॥ परिक्रम्य
प्रणम्याशुसानुज्ञाताययौपतिं ॥ अहल्ययाकृतंस्तोत्रंयःपठेद्भक्तिसंयुतः ॥ समुच्यतेखिलैः
पापैःपरंब्रह्माधिगच्छति ॥ पुत्राद्यर्थीयःपठेद्भक्त्यारामंहृदिनिधायच ॥ संवत्सरेणलभतेवं
ध्यापिसुपुत्रकं ॥ सर्वान्कामानवाप्नोतिरामचंद्रप्रसादतः ॥ ब्रह्मघ्नोगुरुतल्पगोपिपुरुषः
स्तेयीसुरापोपिवामातृभ्रातृविहिंसकोपिसततंभोगैकबद्धातुरः ॥ नित्यंस्तोत्रमिदंजपन्रघु
पतिंभक्त्याहृदिस्थंस्मरन्ध्यायन्मुक्तिमुपैतिकिंपुनरसौस्वाचारयुक्तोनरः ॥ इति श्रीअध्या
त्मरामायणेबालकांडेपंचमोध्यायः ॥ ॥ ॥
श्रीमहादेवउवाच ॥ विश्वामित्रोथतंप्राहराघवंसहलक्ष्मणं ॥ गच्छामोवत्समिथिलांजनके
नाभिपालितां ॥ दृष्ट्वाक्रतुवरंपश्चादयोध्यांगंतुमर्हसि ॥ इत्युक्त्वाप्रययौगंगांमुनिभिःसहराघ
वः ॥ विदेहस्यपुरंप्राप्यजनयज्ञवाटंसमाविशत् ॥ प्राप्तंकौशिकमाकर्ण्यजनकोतिमुदान्वितः
जनाहृत्याणिसंगृह्यसोपाध्यायःसमाययौ ॥ दंडवत्प्रणिपत्याग्र्यपूजयामासकौशिकं ॥ प
प्रच्छराघवौदृष्ट्वासर्वलक्षणलक्षितौ ॥ द्योतयंतौदिशःसर्वाश्चंद्रसूर्याविवोदितौ ॥ कस्यैतौन
रशार्दूलौसुतौदेवसुतोपमौ ॥ मनःप्रीतिकरौमेद्यनरनारायणाविव ॥ प्रत्युवाचमुनिःप्री
तोहर्षयंजनकंतथा ॥ पुत्रौदशरथस्यैतौभ्रातरौरामलक्ष्मणौ ॥ मखसंरक्षणार्थायमयानी
तौपितुःपुरात् ॥ आगच्छन्राघवोमार्गेताटकांविश्वघातिनीं ॥ शरेणैकेनहतवान्रोदिता
मितविक्रमः ॥ ततोममाश्रमंगत्वाममयज्ञविहिंसकान् ॥ सुबाहुप्रमुखान्हत्वामारीचंसा
गरेक्षिपत् ॥ ततोगंगातटेपुण्येगौतमस्याश्रमेशुभे ॥ दृष्ट्वाहल्यांनमस्कृत्यतयासम्यक्प्र
पूजितः ॥ पादांबुजरजःसंगात्साविशापाद्विमोचिता ॥ इदानींद्रष्टुकामस्तेगृहेमाहेश्वरंधनुः
रक्षितंराजभिःसर्वैर्दृष्टमित्यनुशुश्रुवे ॥ अतोदर्शयराजेंद्रशैवंचापमनुत्तमं ॥ दृष्ट्वायोध्यांनि
गमिष्यःपितरंद्रष्टुमिच्छति ॥ इत्युक्तोमुनिनाराजापूजार्हावतिशंसया ॥ पूजयामासधर्मज्ञोवि

धिदृष्टेनकर्मणा ॥ ततःसंप्रेषयामाससमंत्रिणंबुद्धिमत्तरं ॥ शीघ्रमानयविश्वेशचापंरामा
यदर्शय ॥ ततोगतेमंत्रिवरेराजाकौशिकमब्रवीत् ॥ यदिरामोधनुर्धृत्वाआरोपयेद्गुणं
तदास्वकन्यांसीतांराघवायददीयते ॥ तथेतिकौशिकोप्याहसरामंकौशिकस्थिते ॥
पश्चाद्दर्शयचापाग्रंरामायामिततेजसे ॥ एवंमुनौब्रुवत्यागताश्चापवाहकाः ॥
गृहीत्वाबलिनःपंचसाहस्रसंख्यकाः ॥ वेदाघातसमाक्रम्यमणिवस्त्रविभूषिते ॥ चापं
सरामायमंत्रीमंत्रवतांवरः ॥ दृष्ट्वारामःप्रहृष्टात्मावद्धपरिकरोदृढं ॥ दर्शयामा
सलीलयेदृढं ॥ आरोपयामासगुणंपश्यत्स्वखिलराजसु ॥ गृहीत्वावामहस्तेनलील
यैवततः ॥ बभंजाखिलहृत्सारोदिशःशब्देनपूरयन् ॥ ईषदाकर्षयामासपाणिनाद
तले ॥ तदद्भुतमभूत्तत्रदेवानांदिविपश्यतां ॥ दिशश्चविदिशश्चैवस्वर्गमर्त्यरसा
तलेभयोनेदुःननृतुश्चाप्सरोगणाः ॥ हृष्टाभग्नंधनुर्दृष्ट्वाराजालिंग्यरघूद्वहं ॥ आकाशेदेवतास्तत्रनिमिरीदिरे ॥ देव
रीसीतामातरोनःपुराजिरे ॥ सीतास्वर्णमयीमालांगृहीत्वादक्षिणेकरे ॥ विस्मयंतेमि
र्णासर्वाभरणभूषिता ॥ मुक्ताहारकर्णपत्रैःकर्णचलितकुंडला ॥ स्मितवक्त्रास्वर्णव
तंर्क्यजितलक्ष्मी ॥ रामस्योपरिनिक्षिप्यस्मयमानामुदंययौ ॥ दुकूलपरिसंवीतावस्त्रां
लंकृताः ॥ गतासत्वालस्तंप्रेक्ष्यदृष्ट्वालोकविमोहनं ॥ ततोमुमुदिरेसर्वेराजदारास्त
राजाद्याराघवःशीघ्रमागच्छतुसपुत्रकः ॥ विवाहार्थंकुमाराणांसदाराःसहमंत्रिभिः ॥ तथेति
प्रेषयामासदूतांस्त्वरितविक्रमान् ॥ तेगत्वाराजशार्दूलंरामश्रेयोन्यवेदयन् ॥ श्रुत्वारामकृ
तंराजाहर्षेणमहतान्वितः ॥ मिथिलागमनार्थायत्वरयामाससमंत्रिणः ॥ गच्छंतुमिथिलां
सर्वेराजाश्चरथपत्तयः ॥ रथमानीयमेशीघ्रंगच्छामाद्यैवमाचिरं ॥ वसिष्ठस्त्वग्रतोयातुसदारःस
हितोग्निभिः ॥ राममातरमादायमुनिर्मेभगवान्गुरुः ॥ एवंप्रस्थाप्यसकालेराजर्षिर्विपुलैरथैः
महत्यासेनयासार्धमारुह्यत्वरितोययौ ॥ आगतंराघवंश्रुत्वाराजाहर्षसमाकुलः ॥ प्रत्यु
ज्जगामजनकःशतानंदपुरोधसा ॥ यथोक्तपूजयाशस्यंपूजयामाससत्कृतं ॥ प्रत्यु
द्गम्याशुवंदेवरोपितः ॥ ततोहृष्टोदशरथोराममेवचनमब्रवीत् ॥ रामःसलक्ष्मण
स्तेजसा नलोचने ॥ मुनेरनुग्रहात्सर्वंसंपन्नंममशोभनं ॥ इत्युक्तालिंग्यमूर्धानमालिंग्यचपु
नःपुनः ॥ हर्षेणमहताविष्टोब्रह्मानंदंगतोयथा ॥ ततोजनकराजेनमंदिरेसन्निवेशितः ॥ शो
भनेसर्वशोभाढ्येसदारःसंस्थितःसुखं ॥ ततःशुभेदिनेलग्नेसुमुहूर्तेरघूत्तमं ॥ आनयामा
सधर्मज्ञःसभ्रातृपितृकंतथा ॥ रत्नस्तंभसहस्रैस्तुवितानैस्तुतोरणैः ॥ मंडपेसर्वशोभाढ्ये
मुक्तापुष्पफलान्विते ॥ वेदविद्भिःसमंताच्चब्राह्मणैःस्वर्णभूषितैः ॥ सुवासिनीभिःपरितो
रुद्रकंठीभिरावृते ॥ भेरीदुंदुभिनिर्घोषगीतनृत्यसमाकुले ॥ दिव्यरत्नांचितेस्वर्णपीठेराममवे
शयत् ॥ वसिष्ठंकौशिकंचैवशतानंदपुरोहितः ॥ यथाक्रमेणपूजयित्वारामस्योभयपार्श्वतः ॥
स्थापयित्वासमेत्याग्निंज्वालयित्वायथाविधि ॥ सीतामानीयशोभाढ्यांनानारत्नविभूषितां ॥
सभार्यांजनकःप्राचीमरावतीवलोचने ॥ पादौप्रक्षाल्यविधिवत्तदपोमूर्ध्न्यधारयत् ॥ याधृ
तामूर्ध्निशर्वेणब्रह्मणामुनिभिःसदा ॥ ततःसीतांकरेधृत्वासाक्षतोदकपूर्वकं ॥ रामायप्रद
दौप्रीतोभवस्तुहृदं ॥ इतिप्रीतेनमनसासीतांरामकरेर्पयन् ॥ मुमोदजनकोलक्ष्मीक्षीराब्धिरि
वविष्णवे ॥ उर्मिलांचौरसींकन्यांलक्ष्मणायददौनृपः ॥ तथैवश्रुतकीर्तिंचमांडवींभ्रातृकन्य
के ॥ भरतायददौचैवशत्रुघ्नायापरांतथा ॥ चत्वारोदारसंपन्नाभ्रातरःशुभलक्षणाः ॥ विरेजुः
प्रभयासर्वेलोकपालाइवापरे ॥ ततोब्रवीद्वसिष्ठायविश्वामित्रायमैथिलः ॥ जनकःस्वसुतो
दंतंनारदेनाभिभाषितं ॥ यज्ञभूमिविशुद्ध्यर्थंकर्षतोलांगलेनमे ॥ सीतामुखात्समुत्पन्नाकन्यकाशुभ
लक्षणा ॥ तामहंमहाप्रीत्यापुत्रिकाभावभावितः ॥ अर्पिताप्रियभार्यायैशरच्चंद्रसमान
नना ॥ एकदानारदोभ्यागाद्विविक्तेमयिसंस्थिते ॥ वर्णयन्महतीवीणांगायन्नारायणंवि

भुं ॥ प्रजितः सुखमासीनो मामुवाच मुदान्वितः ॥ शृणुष्व वचनं गुह्यं तवाभ्युदयकारणं ॥
परमात्मा हृषीकेशो भक्तानुग्रहकाम्यया ॥ देवकार्यार्थसिद्ध्यर्थं रावणस्य वधाय च ॥ जातो
रामइति ख्यातो मायामानुषवेषधृत् ॥ आस्ते दाशरथिर्भूत्वा चतुर्धा परमेश्वरः ॥ योगमा
यापि सीतेति जाता वै तव वेश्मनि ॥ अतस्त्वं राघवायैव देहि सीतां प्रयत्नतः ॥ नान्येभ्यः पू
र्वभार्येषा रामस्य परमात्मनः ॥ इत्युक्त्वा प्रययौ देवगतिं देवमुनिस्तदा ॥ तदारभ्य मया सी
ता विष्णोर्लक्ष्मीर्विभाव्यते ॥ कथं मया राघवाय जानकी दीयते शुभा ॥ इति चिंतासमाविष्टः
कार्यमेतदचिंतयं ॥ मत्पितामहगेहे तु न्यासभूतमिदं धनुः ॥ ईश्वरेण पुरा क्षिप्तं पुरदाहाद
नंतरं ॥ धनुरेतत्पणं कार्यमिति चिंत्य यथाकृतं ॥ सीतापाणिग्रहार्थाय सर्वेषां माननाशनं ॥
त्वत्प्रसादान्मुनिश्रेष्ठ रामो राजीवलोचनः ॥ आनीतोऽत्र धनुर्द्रष्टुं फलितो मे मनोरथः ॥ अद्य
मे सफलं जन्म राम त्वां सह सीतया ॥ एकासनस्थं पश्यामि भ्राजमानं रविं यथा ॥ त्वत्पादां
बुधरो ब्रह्मा सृष्टिचक्रप्रवर्तकः ॥ बलिस्त्वत्पादसलिलं धृत्वाभूद्दिविजाधिपः ॥ त्वत्पादपां
सुसंस्पर्शादहल्या भर्तृशापतः ॥ सद्य एव विनिर्मुक्ता कोन्यस्त्वत्तोधिकः शुचिः ॥ यत्पादपं
कजपरागसरागयोगिवृंदैर्जितं भवभयं जितकालचक्रैः ॥ यन्नामकीर्तनपराजितदुःखशो
का देवास्तमेव शरणं सततं प्रपद्ये ॥ इति स्तुत्वा नृपः प्राह राघवाय महात्मने ॥ दिव्यांबराणि
दीनां कोटिशतं रथानामयुतं तथा ॥ पत्नीनां च शतमेकं दासीनां त्रिशतं ददौ ॥ वसिष्ठादीन्
हाराश्च मुक्तारत्नमयोज्ज्वलान् ॥ सीतायै जनकः प्रादात्प्रीत्या दुहितृवत्सलः ॥ एवं श्वशु
सुसंपूज्य भरतेलक्ष्मणौ तथा ॥ सीतामालिंग्य रुदती मातरः साश्रुलोचनाः ॥
परा नित्यं राममनुव्रता ॥ पतिव्रत्यमुपालभ्य तिष्ठ वत्से यथासुखं ॥ प्रयाणकाले रघुनंदन
स्य भेरीमृदंगानकतूर्यघोषाः ॥ स्वर्गेपि भेरीजनतूर्यशब्दः समूर्छितोभूद्भयंकरोभूत् ॥ इ
ति श्रीअध्यात्मरामायणे बालकांडे षष्ठमोऽध्यायः ॥ ६ ॥
श्रीमहादेव उवाच ॥ अथ गच्छति श्रीरामे मैथिलाद्योजनत्रयं ॥ निमित्तान्यतिघोराणि दद
र्श नृपसत्तमः ॥ नत्वा वसिष्ठं पप्रच्छ किमिदं मुनिपुंगव ॥ निमित्तानीह दृश्यंते विपरीतानि स
र्वशः ॥ वसिष्ठस्तमथोवाच भयमागामि सूचितं ॥ पुनरप्यभयं तेऽद्य शीघ्रमेव भविष्यति ॥
मृगाः प्रदक्षिणं यांति पश्य त्वं शुभसूचकाः ॥ इत्येवं वदतस्तस्य ववौ घोरतरोऽनिलः ॥ मुष्णंश्च
क्षूंषि सर्वेषां पांसुवृष्टिभिरर्दयन् ॥ ददृशे तत्र ततो देवो जमदग्न्यः प्रतापवान् ॥ नीलमेघनि
भः प्रांशुर्जटामंडलमंडितः ॥ धनुः परशुपाणिश्च साक्षात्काल इवांतकः ॥ कार्तवीर्यांतको रा
मो दृप्तक्षत्रियमर्दनः ॥ प्राप्तो दशरथस्याग्रे कालमृत्युरिवापरः ॥ तं दृष्ट्वा भयसंत्रस्तो राजा दशरथ
स्तदा ॥ अर्घ्यादिपूजां विस्मृत्य त्राहि त्राहीति चाब्रवीत् ॥ दंडवत्प्रणिपत्याह पुत्रप्राणं प्रय
च्छ मे ॥ इति ब्रुवंतं राजानमनादृत्य रघूत्तमं ॥ उवाच निष्ठुरं वाक्यं क्रोधात्प्रचलितेंद्रियः ॥ त्वं राम
इति नाम्ना मे चरसि क्षत्रियाधम ॥ द्वंद्वयुद्धं प्रयच्छाशु यदि त्वं क्षत्रियोऽसि मे ॥ पुराणं जर्जरं चा
पं भग्नात्वं कत्थसे मुधा ॥ इदं तु वैष्णवं चापमारोपय यदि चेद्बलं ॥ तदा युद्धं त्वया सार्धं करोमि रघु
वंशज ॥ नोचेत्सर्वान्हनिष्यामि क्षत्रियांतकरो ह्यहं ॥ इति ब्रुवति वै तस्मिन् चचाल वसुधा भय
यं ॥ अंधकारो बभूवाथ सर्वेषामेव चक्षुषां ॥ रामो दाशरथिर्वीरो वीक्ष्य तं भार्गवं रुषा ॥ धनुरा
च्छिद्य तद्धस्तादारोप्य गुणमंजसा ॥ तूणीराद्बाणमादाय संधायाकृष्य वीर्यवान् ॥ उवाच भार्गवं
रामः शृणु ब्रह्मन्वचो मम ॥ लक्ष्यं दर्शय बाणस्य ह्यमोघो राम सायकः ॥ लोकान्पदाननमो वापि
वद शीघ्रं ममाज्ञया ॥ एवं वदति श्रीरामे भार्गवो हतलांछनः ॥ संस्मरन्पूर्ववृत्तांतमिदं वचनमब्रवी
त् ॥ परशुराम उवाच ॥ राम राम महाबाहो जाने त्वां परमेश्वरं ॥ पुराणपुरुषं विष्णुं जगत्सर्गल
योद्भवं ॥ बाल्येऽहं तपसा विष्णुमाराधयितुमंजसा ॥ चक्रतीर्थं शुभं गत्वा तपसा विष्णुमन्वहं ॥ अ
तोषयं महात्मानं नारायणमनन्यधीः ॥ ततः प्रसन्नो देवेशः शंखचक्रगदाधरः ॥ उवाच मां र
घुश्रेष्ठ प्रसन्नमुखपंकजः ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ उत्तिष्ठ तपसो ब्रह्मन्फलितं ते तपो महत् ॥ मत्

च्चिदंशेन युक्तस्त्वं तदिह द्विजपुंगव ॥ कार्तवीर्यं पितृहंतारं यदर्थेन मम श्रमः ॥ ततस्त्रिःसप्त
कृत्वस्त्वं हत्वा क्षत्रियमंडलं ॥ कृत्स्नां भूमिं कश्यपाय दत्त्वा शांतिमवाप्स्यसि ॥ त्रेतामुखे दाशरथि
र्भूत्वा रामोऽहमव्ययः ॥ उत्पत्स्ये परया शक्त्या तदा द्रक्ष्यसि मां ततः ॥ मत्तेजः पुनरादास्ये त्वयि
दत्तं मया पुरा ॥ तदा तपश्चरँल्लोके तिष्ठ त्वं ब्रह्मणो दिनं ॥ इत्युक्त्वांतर्दधे देवस्तथा सर्वं कृतं मया ॥
स एव विष्णुस्त्वं रामो जातोऽसि ब्रह्मणार्थितः ॥ मयि स्थितं तु त्वत्तेजस्त्वयैव पुनराहृतं ॥ अद्य
मे सफलं जन्म प्रतीतोऽसि मम प्रभो ॥ ब्रह्मादिभिरलभ्यस्त्वं प्रकृतेः पारगो मतः ॥ त्वयि जन्मा
दिषड्भावा न संत्यज्ञानसंभवाः ॥ निराकारोऽसि निर्वैरो गमनादिविवर्जितः ॥ यथा जलेषु
लेन लेपकोऽज्ञानपा त्वयि ॥ त्वदाधारा त्वदीया माया कार्यं सृजत्यहो ॥ यावन्मायावृता
कास्तावत्त्वं न विजानते ॥ अविचारितसिद्धेषा विद्याविद्याविरोधिनी ॥ अविद्याकृतदेहादिसं
ते प्रतिबिंबिता ॥ चिच्छक्तिर्जीवलोकेऽस्मिन्जीव इत्यभिधीयते ॥ यावद्देहादिसंघा
घातेऽभिमानवान् ॥ तावत्कर्तृत्वभोक्तृत्वसुखदुःखादिभुग्भवेत् ॥ आत्मनः संसृतिर्नास्ति
अविवेकः हृदयं भुक्ते संसारीति प्रवर्तते ॥ जनस्य चित्तसंयोगाच्चित्तं भयचिंतितस्तथा ॥ जनसंगाज
नत्वेदि जलाश्रयो मीलने यथा ॥ यावत्त्वत्पादभक्तानां संगसौख्यं न विंदति ॥ तावत्संसारदुः
खौघान्न निवर्तेन्नरः सदा ॥ तत्संगलब्धया भक्त्या यदा त्वां समुपासते ॥ तदा माया शनैर्याति
तानवं प्रतिपद्यते ॥ ततस्त्वज्ज्ञानसंपन्नः सद्गुरुस्तेन लभ्यते ॥ वाक्यज्ञानं गुरोर्लब्ध्वा त्वत्प्रसा
दाद्विमुच्यते ॥ तस्मात्त्वद्भक्तिहीनानां कल्पकोटिशतैरपि ॥ न मुक्तिशंका विज्ञानशंका नैव
सुखं तथा ॥ अतस्त्वत्पादयुगले भक्तिर्मे जन्मजन्मनि ॥ स्यात्त्वद्भक्तिमतां संगोऽविद्या याव
न्नोपतिष्ठति ॥ लोके त्वद्भक्तिनिरतास्त्वन्नामपरवर्णिणः ॥ पुनंति लोकमखिलं किं पुनः स्व
कुलोद्भवान् ॥ नमोऽस्तु जगतां नाथ नमस्ते भक्तिभावन ॥ नमः कारुणिकानंत रामचंद्र नमो
स्तु ते ॥ देव यद्यत्कृतं पुण्यं मया लोकजिगीषया ॥ तत्सर्वं तव बाणाय भूयाद्राम नमोऽस्तु
ते ॥ ततः प्रसन्नो भगवान् श्रीरामः करुणामयः ॥ उवाच प्रहसन्प्रीतो जामदग्न्यं महाबलं ॥ प्र
सन्नोऽस्मि तव ब्रह्मन्यत्ते मनसि वर्तते ॥ दास्ये तदखिलं कामं माकुरुष्वात्र संशयः ॥ ततः प्रीतेन
मनसा भार्गवो राममब्रवीत् ॥ यदि मेऽनुग्रहो राम तवास्ति मधुसूदन ॥ त्वद्भक्तसंगस्त्वत्पादे दृ
ढा भक्तिः सदास्तु मे ॥ स्तोत्रमेतत्पठेद्यस्तु भक्तिहीनोऽपि सर्वदा ॥ त्वद्भक्तिस्तस्य विज्ञानं भूयादंते
तेऽमविस्तव ॥ तथेति राघवेणोक्तः परिक्रम्य प्रणम्य तं ॥ पूजितस्तदनुज्ञातो महेंद्राचलमन्व
गात् ॥ राजा दशरथो दृष्ट्वा रामं मृतमिवागतं ॥ आलिंग्यालिंग्य हर्षेण नेत्राभ्यां जलमुत्सृजन् ॥
ततः प्रीतेन मनसा स्वस्थचित्तः पुरं ययौ ॥ रामलक्ष्मणशत्रुघ्नभरता देवसंमताः ॥ स्वां स्वां
भार्यामुपादाय रेमिरे स्वस्वमंदिरे ॥ मातापितृभ्यां संहृष्टो रामः सीतासमन्वितः ॥ रेमे वैकुं
ठभवने श्रिया सह हरिः ॥ युधाजिन्नाम कैकेयी भ्राता भरतमातुलः ॥ भरतं नेतुमागच्छत्स्वराष्ट्रं
प्रीतिसंयुतः ॥ प्रेषयामास भरतं राजा स्नेहसमन्वितः ॥ शत्रुघ्नं चापि संप्रेष्य युधाजितमरिं
दमः ॥ कौसल्या मुमुदे देवी रामेण सह सीतया ॥ देवमातेव पौलोम्या शच्या शक्रेण शोभिता ॥
अयोध्यायां वसन्रामो गेहे स्वे लोकनाथः प्रथितगुणगणो लोकसंगीतकीर्तिः ॥ श्रीरामः सीतयास्ते सकलसुरनि
केतनेदसंदोहमूर्तिः ॥ नित्यश्रीर्निर्विकारो निरवधिविभवो नित्यमायानिरासो मायाका
र्यानुसारी मनुज इव सदा भाति देवोऽखिलेशः ॥ इति श्रीब्रह्मांडपुराणे उत्तरखंडे उमामहेश्व
रसंवादे अध्यात्मरामायणे बालकांडः समाप्तः ॥ ॥ समाप्तोयं बालकांडः ॥ ॥ ॥

श्री महादेव उवाच ॥ एकदा सुखमासीनं रामं स्वांतःपुराजिरे ॥ सर्वाभरणसंपन्नं रत्नसिं
हासने स्थितं ॥ नीलोत्पलदलश्यामं कौस्तुभामुक्तकंधरं ॥ सीतया रत्नदंडेन चामरेणाथ
वीजितं ॥ विनोदयंतं तांबूलचर्वणादिभिरादरात् ॥ नारदोवातरद्द्रष्टुमंबराद्यत्र राघव ॥ शु
द्धस्फटिकसंकाशः शरच्चंद्र इवामलः ॥ अतर्कितमुपायातो नारदो दिव्यदर्शनः ॥ तं दृष्ट्वा
सहसोत्थाय रामः प्रीत्या कृतांजलिः ॥ ननाम शिरसा भूमौ सीतया सह भक्तिमान् ॥ उवा
च नारदं रामः प्रीत्या परमया युतः ॥ संसारिणां मुनिश्रेष्ठ दुर्लभं तव दर्शनं ॥ अस्माकं विष
यासक्तचेतसां नितरां मुने ॥ अवाप्तं मे पूर्वजन्मकृतपुण्यमहोदयैः ॥ किं कार्यं ते मया का
र्यं ब्रूहि तत्करवाणि भो ॥ अथ तं नारदोप्याह राघवं भक्तवत्सलं ॥ किं मोहयसि मां राम वाक्यै
र्लोकानुसारिभिः ॥ संसार्यहमिति प्रोक्तं सत्यमेव त्वयोचितं ॥ जगतामादिभूता या सा मा
या गृहिणी तव ॥ त्वत्सन्निकर्षाज्जायंते तस्यां ब्रह्मादयः प्रजाः ॥ त्वदाश्रया संभवति मा
येयं त्रिगुणात्मिका ॥ सूतेजस्रं शुक्लकृष्णलोहिताः सर्वदा प्रजाः ॥ लोकत्रयमहागेहे गृह
स्थस्त्वमुदाहृतः ॥ त्वं विष्णुर्जानकी लक्ष्मीः शिवस्त्वं जानकी शिवा ॥ ब्रह्मा त्वं जानकी वाणी
सूर्यस्त्वं जानकी प्रभा ॥ भवान् शशांकः सीता तु रोहिणी शुभलक्षणा ॥ शक्रस्त्वमेव पौ
लोमी सीता त्वं जानकी शिवा ॥ यमस्त्वं कामरूपश्च सीता संयमनी प्रभो ॥ नैर्ऋतस्त्वं ज
गन्नाथ तामसी जानकी शुभा ॥ रामस्त्वमेव वरुणो भार्गवी जानकी शुभा ॥ वायुस्त्वं राम सी
ता सदागतिरीरिता ॥ कुबेरस्त्वं राम सीता सर्वसंपत्प्रकीर्तिता ॥ रुद्राणी जानकी प्रोक्ता
रुद्रस्त्वं लोकनाशकृत् ॥ लोके स्त्रीवाचकं यावत्तत्सर्वं जानकी शुभा ॥ पुंनामवाचकं याव
त्तत्सर्वं त्वं हि राघव ॥ तस्माल्लोकत्रये देव युवाभ्यां नास्ति किंचन ॥ त्वदाभासोदिता ज्ञानम
व्याकृतमितीर्यते ॥ तस्मान्महांस्ततः सूत्रं लिंगं सर्वात्मकं तथा ॥ अहंकारश्च बुद्धिश्च
पंच प्राणेंद्रियाणि च ॥ लिंगमित्युच्यते प्राज्ञैर्जन्ममृत्युसुखादिमत् ॥ स एव जीवसंज्ञश्च
लोके भाति जगन्मयः ॥ अवाच्यानाद्यविद्यैव कारणोपाधिरुच्यते ॥ स्थूलं सूक्ष्मं कार
णाख्यमुपाधित्रितयं तथा ॥ एतैर्विशिष्टो जीवः स्याद्वियुक्तः परमेश्वरः ॥ जाग्रत्स्वप्नसुषु
प्त्याख्या संसृतिर्या प्रवर्तते ॥ तस्या विलक्षणः साक्षी चिन्मात्रस्त्वं रघूत्तम ॥ त्वत्त एव जग
ज्जातं त्वयि सर्वं प्रतिष्ठितं ॥ त्वय्येव लीयते कृत्स्नं तस्मात्त्वं सर्वकारणं ॥ रज्जावहिमिवा
त्मानं जीवं ज्ञात्वा भयं वदेत् ॥ परमात्माहमिति ज्ञात्वा भयदुःखैर्विमुच्यते ॥ चिन्मात्रज्योति
षः सर्वाः सर्वदेहेषु बुद्धयः ॥ त्वया यस्मात्प्रकाश्यंते सर्वस्यात्मा ततो भवान् ॥ अज्ञानान्न्य
स्यते सर्वं त्वयि रज्जौ भुजंगवत् ॥ त्वज्ज्ञानाल्लीयते सर्वं तस्माज्ज्ञानं सदाभ्यसेत् ॥ त्वत्पाद
भक्तियुक्तानां विज्ञानं भवति क्रमात् ॥ तस्मात्त्वद्भक्तियुक्ता ये मुक्तिभाजस्त एव हि ॥ अहं
त्वद्भक्तियुक्तानां भक्तानामस्मि किंकरः ॥ अतो मामनुगृह्णीष्व मोहयस्व न मां प्रभो ॥ त्व
न्नाभिकमलोत्पन्नो ब्रह्मा मे जनकः प्रभो ॥ अतस्तवाहं पौत्रोस्मि भक्तं मां पाहि राघव ॥
इत्युक्त्वा बहुशो नत्वा स्वानंदाश्रुपरिप्लुतः ॥ प्रवक्ष्ये वचनं राम ब्रह्मणा चोदितोस्म्यहं ॥
रावणस्य वधार्थाय जातोसि रघुसत्तम ॥ इदानीं राज्यरक्षार्थं पिता त्वामभिषेक्ष्यति
यदि राज्याभिसंसक्तो रावणं न हनिष्यसि ॥ प्रतिज्ञा ते कृता राम भूभारहरणाय वै ॥ त
त्सत्यं कुरु राजेंद्र सत्यसंधस्त्वमेव हि ॥ श्रुत्वैतद्गदितं रामो नारदं प्राह सस्मितं ॥ शृणु
नारद मे किंचिद्विद्यतेविदितं क्वचित् ॥ प्रतिज्ञातं च यत्पूर्वं करिष्ये तन्न संशयः ॥ किं
तु कालानुरोधेन तत्तत्प्रारब्धसंक्षयात् ॥ हरिष्ये सर्वभूतानां क्रमेणासुरमंडलं ॥ राव
णस्य विनाशार्थं श्वो गंता दंडकावने ॥ चतुर्दशसमास्तत्र ह्युषित्वा मुनिवेषधृक् ॥
सीतामिषेण तं दुष्टं सकुलं नाशयाम्यहं ॥ एवं रामे प्रतिज्ञाते नारदः प्रमुमोद ह ॥ प्र
दक्षिणत्रयं कृत्वा दंडवत्प्रणिपत्य तं ॥ अनुज्ञातश्च रामेण ययौ देवगतिं मुनिः ॥ संवा

दं पठति यः शृणोति संस्मरेद्वा योनित्यं मुनिवररामयोः सुभक्त्या ॥ संप्राप्नोत्यमरदु
र्लभं विमोक्षं कैवल्यं विरतिपरंपरां क्रमेण ॥ इति श्री[illegible]
[illegible] ॥
श्री महादेव उवाच ॥ अथ राजा दशरथः कदाचिद्रहसि स्थितः ॥ वसिष्ठं स्वकुला
चार्यमाहूयेदमभाषत ॥ भगवन् राममखिलाः प्रशंसंति मुहुर्मुहुः ॥ पौराश्च नै
गमा वृद्धा मंत्रिणश्च विशेषतः ॥ ततः सर्वगुणोपेतं रामं राजीवलोचनं ॥ ज्येष्ठं रा
ज्येभिषेक्ष्यामि वृद्धोहं मुनिपुंगव ॥ भरतो मातुलं द्रष्टुं गतः शत्रुघ्नसंयुतः ॥ अभि
षेकाय च वाशु भवांस्तानुमोदतां ॥ संभाराः संभ्रियंतां च गच्छामंत्रय राघवं ॥ उच्छ्रायं
तां पताकाश्च नानावर्णाः समंततः ॥ तोरणानि विचित्राणि स्वर्णमुक्तामयानि
व ॥ आहूय मंत्रिणं राजा सुमंत्रं मंत्रिसत्तमं ॥ आज्ञापयति यद्यन्मां मुनिस्तत्तत्समा
नय ॥ यौवराज्येभिषेक्ष्यामि देव श्वोभूते रघूत्तमं ॥ तथेति हर्षात्स मुनिं किं करोमीति भा
षत ॥ तमुवाच महातेजा वसिष्ठो ज्ञानिनां वरः ॥ श्वः प्रभाते मध्यकक्षे कन्यकाः स्व
र्णभूषिताः ॥ तिष्ठंतु षोडश गजाः स्वर्णरत्नादिभूषिताः ॥ चतुर्दंतः समायातु ऐराव
तकुलोद्भवः ॥ नानातीर्थोदकैः पूर्णाः स्वर्णकुंभाः सहस्रशः ॥ स्थाप्यंतां नव वैया
घ्रचर्माणि त्रीणि चानय ॥ श्वेतच्छत्रं रत्नदंडं मुक्तामणिविराजितं ॥ दिव्यमाल्यानि वस्त्रा
णि दिव्यान्याभरणानि च ॥ मुनयः सत्कृतास्तत्र तिष्ठंतु कुशपाणयः ॥ नर्तक्यो वारमु
ख्याश्च गायका वैणिकास्तथा ॥ नानावादित्रकुशला वादयंतु नृपांगणे ॥ हस्त्यश्वरथपादा
ता बहिस्तिष्ठंतु सायुधाः ॥ नगरे यानि तिष्ठंति देवतायतनानि च ॥ तेषु प्रवर्ततां पूजा ना
नाबलिभिरादृता ॥ राजानः शीघ्रमायांतु नानोपायनपाणयः ॥ इत्यादिश्य मुनिः श्रीमान् सु
मंत्रं नृपमंत्रिणं ॥ स्वयं जगाम भवनं राघवस्यातिशोभनं ॥ रथमारुह्य भगवान् वसिष्ठो मु
निसत्तमः ॥ त्रीणि कक्षाण्यतिक्रम्य रथात्क्षितिमवातरत् ॥ अंतः प्रविश्य भगवानाचा
र्यत्वादवारितः ॥ गुरुमागतमाज्ञाय रामस्तूर्णं कृतांजलिः ॥ प्रत्युद्गम्य नमस्कृत्य दंडवद्भक्ति
संयुतः ॥ स्वर्णपात्रेण पानीयमानिनायाशु जानकी ॥ रत्नासने समावेश्य पादौ प्रक्षाल्य भ
क्तितः ॥ तदपः शिरसा धृत्वा सीतया सह राघवः ॥ धन्योस्मीत्यब्रवीद्रामस्तवपादांबुधा
रणात् ॥ श्रीरामेणैवमुक्तस्तु प्रहसन्मुनिरब्रवीत् ॥ त्वत्पादसलिलं धृत्वा धन्योभूद्गिरिजा
पतिः ॥ ब्रह्मापि मत्पिता ते हि पादतीर्थहताशुभः ॥ इदानीं भाषसे यत्त्वं लोकानामुपदेशक
त् ॥ जानामि त्वां परात्मानं लक्ष्म्या संजानमीश्वरं ॥ देवकार्यार्थसिद्ध्यर्थं भक्तानां भक्ति
सिद्धये ॥ रावणस्य वधार्थाय जातं जानामि राघवं ॥ तथापि देवकार्यार्थं गुह्यं नोद्घाटयाम्य
हं ॥ यथा त्वं मायया सर्वं करोषि रघुनंदन ॥ तथैवानुविधास्येहं शिष्यस्त्वं गुरुरप्यहं ॥ गु
रुर्गुरूणां त्वं देव पितॄणां त्वं पितामहः ॥ अंतर्यामी जगद्यात्रावाहकस्त्वमगोचरः ॥ शुद्धसत्त्व
मयं देहं धृत्वा स्वाधीनसंभवः ॥ मनुष्य इव लोकेस्मिन्भासि त्वं योगमायया ॥ पौरोहित्यम
हं जाने विगर्ह्यं दूष्यजीवनं ॥ इक्ष्वाकूणां कुले रामः परमात्मा जनिष्यति ॥ इति ज्ञातं मया पूर्वं
ब्रह्मणा कथितं पुरा ॥ ततोहमाशया राम तव संबंधकांक्षया ॥ अकार्षं गर्हितमपि
तवाचार्यत्वसिद्धये ॥ ततो मनोरथो मेद्य फलितो रघुनंदन ॥ त्वदधीना महामाया सर्वलोकै
कमोहिनी ॥ मां यथा मोहयेन्नैव तथा कुरु रघूद्वह ॥ गुरुनिष्कृतिकामस्त्वं यदि देहि तदेव मे
प्रसंगात्सर्वमप्युक्तं न वाच्यं कुत्रचिन्मया ॥ राजा दशरथेनाहं प्रेषितोस्मि रघूद्वह ॥ त्वामामंत्र
यितुं राज्ये श्वोभिषेक्ष्यति राघव ॥ अद्य त्वं सीतया सार्धमुपवासं यथाविधि ॥ कृत्वा शुचिर्भूमि
शायी भव राम जितेंद्रियः ॥ गच्छामि राजसान्निध्यं त्वं तु प्रातर्गमिष्यसि ॥ इत्युक्त्वा रथमारुह्य
ययौ राजगुरुर्द्रुतं ॥ रामोपि लक्ष्मणं दृष्ट्वा प्रहसन्निदमब्रवीत् ॥ सौमित्रे यौवराज्ये मे श्वोभिषेको
भविष्यति ॥ निमित्तमात्रमेवाहं कर्ता भोक्ता त्वमेव हि ॥ मम त्वं हि बहिःप्राणो नात्र कार्या वि

अ॰ रा॰
७

चारणात् ॥ ततो वसिष्ठेन यथा भाषितं तन्नृपोऽकरोत् ॥ वसिष्ठोऽपि नृपं गत्वा कृतं सर्वं न्यवेद
यत् ॥ वसिष्ठस्य गुरोर्वाचा नागराः रामाभिषेचनं ॥ यदा तदैव नगरे श्रुत्वा काश्चित्सुमंजसो ॥
कौशल्यायै राममात्रे सुमित्रायै तथैव च ॥ श्रुत्वा ते हर्षसंपूर्णे ददतुर्हारमुत्तमं ॥ तस्मै ततः
प्रीतमनाः कौशल्या पुत्रवत्सला ॥ लक्ष्मीं पर्यचरद्देवी रामस्यार्थप्रसिद्धये ॥ सत्यवादी दश
रथः करोत्येवं प्रतिश्रुतं ॥ कैकेयीवशगः किं तु कामुकः किं करिष्यति ॥ इति व्याकुलि
तात्मा सा दुर्गां देवीमपूजयत् ॥ एतस्मिन्नन्तरे देवो देवीं वाणीमवोचत ॥ गच्छ देवि भुवं च
लोकमयोध्यायां प्रयत्नतः ॥ रामाभिषेकविघ्नार्थं यतस्व ब्रह्मवाक्यतः ॥ मंथरां प्रविश्या
द्याशु कैकेयीं च ततः परं ॥ ततो विघ्ने समुत्पन्ने पुनरेहि दिवं शुभे ॥ तथेत्युक्त्वा तथा च
क्रे प्रविवेशाथ मंथरां ॥ सापि कुब्जा त्रिवक्रा तु प्रासादाग्रमथारुहत् ॥ नगरं परितो दृ
ष्ट्वा सर्वतः समलंकृतं ॥ नानातोरणसंबद्धपताकाभिरलंकृतं ॥ सर्वोत्सवसमायुक्त
विस्मिता पुनरागमत् ॥ धात्रीं पप्रच्छ मातः किं नगरं समलंकृतं ॥ नानोत्सवसमायुक्ता कौ
शल्या चातिहर्षिता ॥ ददाति विप्रमुख्येभ्यो वस्त्राणि विविधानि च ॥ तमुवाच तदा धात्री
रामस्येहाभिषेचनं ॥ श्वो भविष्यति तेनाद्य सर्वतोऽलंकृतं पुरं ॥ तच्छ्रुत्वा त्वरितागत्य कै
केयीं वाक्यमब्रवीत् ॥ पर्यंकस्थां विशालाक्षीमेकान्ते पर्यवस्थितां ॥ किं शेषे दुर्भगे मू
ढे महद्भयमुपस्थितं ॥ न जानीषेऽतिसौन्दर्यमानिनी मत्तगामिनी ॥ रामस्यानुग्रहा
त्तस्याभिषेको भविष्यति ॥ तच्छ्रुत्वा सहसोत्थाय कैकेयी प्रियवादिनी ॥ तस्यै दिव्यं
ददौ स्वर्णनूपुरं रत्नभूषितं ॥ हर्षस्थाने किमिति मे कथ्यते भयमागतं ॥ भरतादधिको
रामः प्रियकृन्मे प्रियंवदः ॥ कौशल्यां च समां पश्यन् सदा शुश्रूषते हि मां ॥ तस्माद्भयं किं
मा पत्त्रेऽतव मूढे वक्तुमे ॥ तच्छ्रुत्वा निश्वस्याथ कुब्जाऽकारणवैरिणी ॥ शृणु मद्वचनं दे
वि यथार्थं ते महद्भयं ॥ त्वां तु वयं न्यस्य राजा प्रियवाक्यानि भाषसे ॥ कामुकः स्वार्थपरा
ीचत्वां वाचापरितोषयन् ॥ कार्यं करोति तस्यास्ते राममातुः सुपुष्कलं ॥ मनस्येन त्वि
धायैव प्रेषयामास ते सुतं ॥ भरतं मातुलकुलं त्वया मास सानुजं ॥ सुमित्रायाः समी
चीनं भविष्यति न संशयः ॥ लक्ष्मणो राममन्वेति राज्यं सोऽनुभविष्यति ॥ भरतो राघव
स्याग्रे किंकरो वा भविष्यति ॥ विवास्यते वा नगरात् वैर्वा हास्यते कश्चित ॥ त्वं तदा सीव कौ
शल्यां नित्यं परिचरिष्यसि ॥ ततोऽपि मरणं श्रेयो यत्सपत्न्याः पराभवः ॥ अतः शीघ्रं यतः
स्वाद्य भरतस्याभिषेचने ॥ रामस्य वनवासार्थं वर्षाणि नव पंच च ॥ ततो रूढोऽभवत्सुतस्त
व राज्ये चिरोषितः ॥ उपायं ते प्रवक्ष्यामि पूर्वमेव विनिश्चितं ॥ पुरा देवासुरे युद्धे राजा दशर
थः स्वयं ॥ इंद्रेण याचितो धन्वी सहायार्थं महारथः ॥ जगाम सैन्यया सार्धं त्वया सह शुभा
नने ॥ युद्धं प्रकुर्वतस्तस्य राक्षसैः सह धन्विनः ॥ तदा तत्कीलोऽन्यपतच्छिन्नस्तस्य नवे रथः ॥
त्वं तु हस्तं समाविश्य कीलरंध्रेऽतिधैर्यतः ॥ स्थितवत्यसितापांगे पतिप्राणपरेप्सया ॥ ततो
हत्वासुरान्सर्वान्स्ददर्शैतां मतिं द्रुमः ॥ आश्चर्यं परमं लेभे त्वामालिंग्य मुदान्वितः ॥ वृणीष्व
यद्यन्मनसि कांक्षितं वरदोऽस्म्यहं ॥ वरद्वयं वृणीष्व त्वमेवं राजाब्रवीत्स्वयं ॥ त्वयोक्तो वरदो रा
जन्यदा दद्यां वरद्वयं ॥ त्वय्येव तिष्ठतु चिरं न्यास भूतं ममानघ ॥ यदा मे वरयोर्भूयात्तदा देहि
वरद्वयं ॥ तथेत्युक्त्वा ययौ राजा मंदिरं तव सुव्रते ॥ त्वत्तः श्रुतं मया पूर्वमिदानीं स्मृतिमागतं ॥
अतः शीघ्रं प्रविश्य त्वं क्रोधागारं रुषान्विता ॥ विमुच्य सर्वाभरणं सर्वतो विनिकीर्य च ॥
भूमावेव शयानाऽऽत्वं तूष्णीमातिष्ठ भामिनि ॥ यावत्सत्यं प्रतिज्ञाय राजाभीष्टं करोति ॥
श्रुत्वा त्रिवक्रयोक्तं तु तदा कैकेयिनंदिनी ॥ तथ्यमेवाखिलं मेने दुःसंगाद्भिन्नविभ्रमः ॥
तामाह कैकेयी हृष्टा कुतस्ते बुद्धिरीदृशी ॥ एवं त्वां बुद्धिसंपन्नां न जाने वक्रसुंदरि ॥ भरतो
यदि राजा मे भविष्यति सुतः प्रियः ॥ ग्रामान्शतं प्रदास्यामि मम त्वं प्राणवल्लभः ॥ इत्युक्त्वा
कोपभवनं प्रविश्य सहसा रुषा ॥ विमुच्य सर्वाभरणं विनिकीर्य समंततः ॥ भूमौ शयाना

सह सा मलिनांबरधारिणी ॥ प्रोवाच शृणु मे कुब्जे यावद्रामो वनं व्रजेत् ॥ प्राणांस्त्यक्ष्ये वा वक्त्रे
शयिष्यतादेवहि ॥ निश्चयं अरुकस्यापि कस्याणं लेभविष्यति ॥ इत्युक्ता गतनामाकुब्ज स्वगृहे
सापि तथाकरोत् ॥ धीरोऽत्यंतमुदान्वितो बहुगुणाचारान्वितो वाप्यधा ॥ नीतिज्ञो विधिवाद
दोषिकपरो विवेकोऽथवा ॥ दुःसंगानामतिमोहभावितधियां संगः सदा चेद्भवेत् तद्बुद्ध्यापदि
भावितो व्रजति तत्साम्यं क्रमेणस्फुटं ॥ इति श्रीअध्यात्मरामायणे उमामहेश्वरसंवादे अयोध्याकांडे द्वि॰
॥ अध्यायः ॥

श्रीमहादेव उवाच ॥ ततो राजा दशरथो रामाभ्युदयकारणात् ॥ आदिश्य मंत्रप्रकृतीः सा
नंदो गृहमाविशत् ॥ तत्रादृष्ट्वा प्रियां राजा किमेतदिति विह्वलः ॥ या पुरा मंदिरं तस्याः प्रवि
ष्टमपि मां भवनात् ॥ हसंती मामुपायाति सा किं नैवाद्य दृश्यते ॥ इत्यात्मन्येव संचिंत्य मनसा
दुःखितो नृपः ॥ पप्रच्छ दासीनिकरं कुतो वास्त्यामितिप्रभा ॥ नोयाति मां यथा पूर्वं मत्प्रिया प्रि
यदर्शना ॥ ताऽऊचुः क्रोधभवनं प्रविष्टा नैव विद्महे ॥ कारणं तत्र देव त्वं गत्वा निश्चेतुमर्हसि
इत्युक्तो भयसंत्रस्तो राजा तस्याः समीपगः ॥ उपविश्य शनैर्देहं स्पृशन्वै पाणिनाब्रवीत् ॥
किं शेषे वसुधापृष्ठे पर्यंकादीन्विहाय च ॥ मां त्वं खेदयसे भीरु यतो मां नाभिभाषसे ॥ अ
लंकारं परित्यज्य भूमौ मलिनवाससी ॥ किमर्थं ब्रूहि सकलं विदधामि तवेप्सितं ॥ को वा त
वाहितं कर्ता नारी वा पुरुषोऽपि वा ॥ स मे दंड्यश्च वध्यश्च भविष्यति न संशयः ॥ ब्रूहि देवि
यथा प्रीतिस्तव वा याममाग्रतः ॥ तदिदानीं साधयिष्ये सुदुर्लभमपि क्षणात् ॥ जानासि
त्वं च मां रे मे सारं मम हृदि स्थितं ॥ तथापि मां खेदयसे वृथा तव परिश्रमः ॥ ब्रूहि त्वं धनिनं कु
र्वेदीनं इति स्थिरे करं ॥ धनिनं तृणमात्रेण निर्धनं तव वा हितं ॥ ब्रूहि कं वा वधिष्यामि वधा
र्हः को विमुच्यते ॥ किमत्र बहुनोक्तेन प्राणान्दास्यामि ते प्रिये ॥ मम प्राणप्रियतरो रामः
मन्यपराक्रमः ॥ तस्योपरि शपे ब्रूहि त्वद्धितं तत्करोम्यहं ॥ इति ब्रुवाणं राजानं शपंतं राघ
वेण तैः ॥ विमृज्य नेत्रे सा शीघ्रं राजानं प्रत्यभाषत ॥ यदि सत्यप्रतिज्ञो मे शपथं कुरुषे य
ना ॥ याच्ञां मे सफलां कर्तुं शीघ्रं त्वं कर्तुमर्हसि ॥ पूर्वं देवासुरे युद्धे मया त्वं परिरक्षितः ॥
तदा वरद्वयं दत्तं त्वया मे तद्वृणोम्यहं ॥ तत्र त्वेकवरं नाम भरतं मे सुतं तव प्रजेन ॥ तत्रैकेन
वरेणाद्य भरतं मे प्रियं सुतं ॥ एभिः संभृतसंभारैर्यौवराज्येऽभिषेचय ॥ अपरेण वरेण
त्वं रामो गच्छतु दंडकान् ॥ मुनिवेषधरः श्रीमान् जटावल्कलभूषणः ॥ चतुर्दश समा
मास्तत्र कंदमूलफलाशनः ॥ पुनरायातु तस्यांते वने वा तिष्ठतु स्वयं ॥ प्रभाते गच्छतु व
नं रामो राजीवलोचनः ॥ यदि किंचिद्विलंबः स्यात्प्राणांस्त्यक्ष्ये तवाग्रतः ॥ भव सत्यप्रति
ज्ञस्त्वमेतदेव मम प्रियं ॥ श्रुत्वैवं दारुणं वाक्यं कैकेय्या रोमहर्षणं ॥ निपपात महीपा
लो वज्राहत इव द्रुमः ॥ शनैरुन्मील्य नयनौ विमृश्य स्वप्नसादृश्या ॥ दुःस्वप्नो वा मया दृष्टो
ह्यथवा चित्तविभ्रमः ॥ इत्यालोक्य पुरः पत्नीं व्याघ्रीमिव पुरः स्थितां ॥ किमिदं भाषसे
भद्रे मम प्राणहरं वचः ॥ रामः किमपराधं ते कृतवान्कमलेक्षणः ॥ ममाग्रे राघवगुणान्
वर्णयंत्यनिशं शुभे ॥ कौशल्यां मां समा मान्य शुश्रूषां कुरुते सदा ॥ इत्युक्त्वा सुपरीता
ह्युः पादयोर्निपपात ह ॥ कैकेय्याः प्रत्युवाचेदं सापि रक्तांतलोचना ॥ तथापि किं त्वं
भ्रांतोऽसि राजंस्त्वं भाषसे वृथा ॥ मिथ्यावक्तापि वै राजंस्त्वं नरके भवेत् ॥ वनं न ग
च्छेद्यदि रामचंद्रः प्रभातकाले जिनचीरयुक्तः ॥ तदंधनं वा विषभक्षणं वा कृत्वा मरिष्ये पु
रतस्तवाहं ॥ सत्यप्रतिज्ञोऽहमितीह लोके विडंबसे सर्वसभांतरेषु ॥ रामो यदि त्वा पचं कृ
त्वा मिथ्याप्रतिज्ञो नरकं प्रयाहि ॥ इत्युक्ता प्रियया दीनो मग्नो दुःखार्णवे नृपः ॥ मूर्छि
तः पतितो भूमौ विसंज्ञो मृतको यथा ॥ एवं रात्रिर्गता तस्य दुःखात्संवत्सरोपमा ॥ अरु
णोदयकाले तु वंदिनो गायका जगुः ॥ निवारयित्वा तान्सर्वान्कैकेयी रोषमास्थिता ॥
ततः प्रभातसमये मध्यकक्ष्यामुपस्थिताः ॥ ब्राह्मणाः क्षत्रिया वैश्या ऋषयः कन्यकाश्च

या ॥ छत्रं च चामरं दिव्यं गजो वाजी तथैव च ॥ अन्ये च वारमुख्याश्च पौरजानपदास्तथा ॥ वसि
ष्ठेन यथाज्ञप्तं तत्सर्वं तत्र संस्थितं ॥ स्त्रियो बालाश्च वृद्धाश्च रात्रौ निद्रां न लेभिरे ॥ कदा द्रक्ष्यामहे
रामं पीतकौशेयवाससं ॥ सर्वाभरणसंपन्नं किरीटकटकोज्वलं ॥ कौस्तुभाभरणं श्यामं कं
दर्पशतसुंदरं ॥ अभिषिक्तं समायातं गजारूढं स्मिताननं ॥ श्वेतछत्रधरं तत्र लक्ष्मणं लक्ष्म
णान्वितं ॥ रामं कदा वा द्रक्ष्यामः प्रभातं वा कदा भवेत् ॥ इत्युत्सुकधियः सर्वे बभूवुः पुरवासि
नः ॥ नेदानीमुत्थितो राजा किमर्थं व विचिंतयन् ॥ सुमंत्रः शनकैः प्रायाद्यत्र राजावतिष्ठति
वर्धयन् जयशब्देन प्रणामः शिरसासकृत् ॥ अतिखिन्नं नृपं दृष्ट्वा कैकेयीं समपृच्छत ॥ देवि कैकेयि
वर्धस्व किं राजा दृश्यतेन्यथा ॥ तमाह कैकेयी राजा रात्रौ निद्रां न लब्धवान् ॥ राममानय शीघ्रं
त्वं राजा द्रष्टुमिहेच्छति ॥ रा ॥ ३ ॥ व ॥ अश्रुत्वा राजवचनं कथं गच्छामि भामिनि ॥ तत्श्रु
त्वा मंत्रिणो वाक्यं राजा मंत्रिणमब्रवीत् ॥ सुमंत्र रामं द्रक्ष्यामि शीघ्रमानय सुंदरं ॥ इत्युक्तः
त्वरितं गत्वा सुमंत्रो राममंदिरं ॥ अवारितः प्रविष्टोयं रामं त्वरितमब्रवीत् ॥ शीघ्रमागछ भद्रं
ते राम राजीवलोचन ॥ पितृगेहं मया सार्धं राजा त्वां द्रष्टुमिच्छति ॥ इत्युक्तो रथमारुह्य संभ्र
मात्त्वरितं ययौ ॥ रामः सारथिना सार्धं लक्ष्मणेन समन्वितः ॥ मध्यकक्षे वसिष्ठादीनपश्यन्नि
व त्वरान्वितः ॥ पितुः समीपं संगम्य ननाम चरणौ पितुः ॥ राममालिंग्य तं राजा समुत्थाय स
संभ्रमः ॥ बाहू प्रसार्य रामेति दुःखान्मध्ये पपात ह ॥ हाहेति रामं ते शीघ्रमालिंग्यांके निवेश्य
यत् ॥ राजानं मूर्छितं दृष्ट्वा चुक्रुशुः सर्वयोषितः ॥ किमर्थं रोदनमिति वसिष्ठोपि समाययौ ॥
रामः पप्रच्छ किमिदं राज्ञो दुःखस्य कारणं ॥ एवं पृच्छति रामे सा कैकेयी राममब्रवीत् ॥ त्वमेव
कारणं ह्यत्र राज्ञो दुःखोपशांतये ॥ किंचित्कार्यं त्वया राम कर्तव्यं नृपतेर्हितं ॥ कुरु सत्य
प्रतिज्ञस्त्वं राजानं सत्यवादिनं ॥ राज्ञा वरद्वयं दत्तं मम संतुष्टचेतसा ॥ त्वदधीनं तु तत्सर्वं व
क्तुं त्वां लज्जते नृपः ॥ सत्यपाशेन संबद्धं पितरं त्रातुमर्हसि ॥ पुत्रशब्देन चैतद्धि नरकात्त्रा
यते पिता ॥ रामस्तयोदितं श्रुत्वा शूलेनाभिहतो यथा ॥ व्यथितः कैकेयीं प्राह किं मामे
वं प्रभाषसे ॥ पित्रर्थे जीवितं दास्ये पिबेयं विषमुल्वणं ॥ सीतां त्यक्ष्ये च कौसल्यां राज्यं चा
पि त्यजाम्यहं ॥ अनाज्ञप्तोपि कुरुते पितुः कार्यं स उत्तमः ॥ उक्तः करोति यः पुत्रः स मध्यम
उदाहृतः ॥ उक्तोपि कुरुते नैव स पुत्रो मल उच्यते ॥ अतः करोमि तत्सर्वं यन्मामाह पिता मम
म ॥ सत्यं सत्यं करोम्येव रामो द्विर्नाभिभाषते ॥ इति रामप्रतिज्ञां सा श्रुत्वा वक्तुं प्रचक्र
मे ॥ राम त्वदभिषेकार्थं संभाराः संभृताश्च ये ॥ तैरेव भरतोवश्यमभिषेच्यः प्रियो मम ॥
अपरेण वरेणाशु चीरवासा जटाधरः ॥ वनं प्रयाहि शीघ्रं त्वमद्यैव पितुराज्ञया ॥ चतुर्द
श समास्तत्र वस त्वं मुनिभोजनः ॥ एतदेव पितुस्तेद्य कार्यं त्वं कर्तुमर्हसि ॥ राजा तु लज्ज
ते त्वां वक्तुमेवं रघुनंदन ॥ श्री ॥ म ॥ वाच ॥ भरतस्यैव राज्यं स्यादहं गच्छामि दंडकान्
किं तु राजा न वदतीह मां न जाने तु कारणं ॥ श्रुत्वैतद्रामवचनं दृष्ट्वा रामं पुरः स्थितं ॥ प्राह रा
जा दशरथो दुःखितो दुःखितं वचः ॥ स्त्रीजितं भ्रांतहृदयमुन्मार्गपरिवर्तिनं ॥ निगृह्य मां गृ
हाणेदं राज्यं पापं न तद्भवेत् ॥ एवं चेदनृतं नैव मां स्पृशेद्रघुनंदन ॥ इत्युक्त्वा दुःखसंतप्तो वि
ललाप नृपस्तदा ॥ हा राम हा जगन्नाथ हा मम प्राणवल्लभ ॥ मां विसृज्य कथं घोरं विपिनं
गंतुमर्हसि ॥ इति रामं समालिंग्य मुक्तकंठो रुरोद ह ॥ विसृज्य नयने रामः पितुः सजलपाणि
ना ॥ आश्वासयामास नृपं शनकैर्नयकोविदः ॥ किमत्र दुःखेन विभो राज्यं शास्तु मेनु
जः ॥ अहं प्रतिज्ञां निस्तीर्य पुनर्यास्यामि ते पुरं ॥ राज्यात्कोटिगुणं सौख्यं मम राजन्व
ने सतः ॥ त्वत्सत्यपालनं देवकार्यं चापि भविष्यति ॥ कैकेय्याश्च प्रियो राजन्वनवासो महा
गुणः ॥ इदानीं गंतुमिच्छामि हृष्टेमा लक्ष्मणः स्वयं ॥ संभाराश्चापनीयंतामभिषेकार्थमाग
ताः ॥ मातरं च समाश्वास्य अनुनीय च जानकीं ॥ आगत्य पादौ वंदित्वा तव यास्ये सुखं वनं
इत्युक्त्वा तु परिक्रम्य मातरं द्रष्टुमाययौ ॥ कौसल्यापि हरेः पूजां कुरुते रामकारणात् ॥ होमं

चकारयामास ब्राह्मणेभ्यो ददौ धनं ॥ ध्यायेत विष्णुमेकाग्रमनसा मौनमास्थिता ॥ अंत
स्थमेवाद्वयमचिंत्यकार्यं निरस्तसर्वातिशयस्वरूपं ॥ विज्ञं सदानंदमयं हृदब्जे ध्यायंत्य
ददर्श रामं ॥ इति श्रीअध्यात्मरामायणे उमामहेश्वरसंवादे अयोध्याकांडे तृतीयः सर्गः ॥ ३ ॥
ततः सुमित्रा हृदयेन रामं राज्ञी ससंभ्रमा ॥ कौसल्यां बोधयामास रामोयं समुपस्थितः ॥ अ
त्येव राममनसा बहिर्दृष्टिप्रवाहिता ॥ रामं दृष्ट्वा विशालाक्षमालिंग्यांके न्यवेशयत् ॥ मू
र्ध्न्यवघ्राय पस्पर्श गात्राणि नीलोत्पलछवि ॥ भुंक्ष्व पुत्रेति सा प्राह मिष्टमन्नं क्षुधार्दितः ॥ रामः
प्राह न मे मातर्भोजनावसरः कृतः ॥ दंडकागमने शीघ्रं मम कालोद्य निश्चितः ॥ कैकेयीवर
दानेन सत्यसंधः पिता मम ॥ भरताय ददौ राज्यं ममाप्यारण्यमुत्तमं ॥ चतुर्दश समास्त
त्र ह्युषित्वा मुनिवेषधृक् ॥ आगमिष्ये पुनः शीघ्रं न चिंतां कर्तुमर्हसि ॥ तच्छ्रुत्वा सहसो
द्विग्ना मूर्छिता पुनरुत्थिता ॥ आह रामं सुदुःखार्ता दुःखसागरसंप्लुता ॥ यदि राम वनं स
त्यं यासि चेन्नय मामपि ॥ त्वद्विहीना क्षणार्धं वा जीवितं धारये कथं ॥ यथा गौर्बालकं
वत्सं त्यक्त्वा तिष्ठेन्न कुत्रचित् ॥ तथैव त्वां न शक्नोमि त्यक्तुं प्राणात्प्रियं सुत ॥ भरताय
प्रसन्नश्चेद्राज्यं राजा प्रयच्छतु ॥ त्वया किमपराधं हि कैकेय्यां वा न पश्यता ॥ पितुर्गुरुत
या रामं त्वां वाहमधिका ततः ॥ पित्राज्ञप्तो वनं गंतुं वारयेयमहं सुतं ॥ यदि गच्छसि मद्वा
क्यमुल्लंघ्य नृपवाक्यतः ॥ तदा प्राणान्परित्यज्य गच्छामि यमसादनं ॥ लक्ष्मणोपि ततः
श्रुत्वा कौसल्यावचनं रुषा ॥ उवाच राघवं दीप्तो दहन्निव जगत्त्रयं ॥ उन्मत्तं भ्रांतमनसं कैके
यीवशवर्तिनं ॥ बद्ध्वा निहन्मि भरतं तद्बंधून्मातुलानपि ॥ अद्य पश्यंतु मे शौर्यं लोकान्द
हतः पुरा ॥ राम त्वमभिषेकाय क्रियतां यत्नमरिंदम ॥ धनुःपाणिरहं तत्र निहन्यां विघ्नकारि
णः ॥ इति ब्रुवंतं सौमित्रिमालिंग्य रघुनंदनः ॥ शूरोसि रघुशार्दूल ममात्यंतहिते रतः ॥ जानामि
सर्वं ते सत्यं किं तु तन्मम रोचते ॥ यदिदं दृश्यते सर्वं राज्यं देहादिकं च यत् ॥ यदि सत्यं भवेत्तत्र
आयासः सफलश्च ते ॥ भोगा मेघवितानस्थविद्युल्लेखेव चंचलाः ॥ आयुरप्यग्निसंतप्तलो
हस्थजलबिंदुवत् ॥ यथा व्यालगलस्थोपि भेको दंशानपेक्षते ॥ तथा कालाहिना ग्रस्तो लो
को भोगानशाश्वतान् ॥ करोति दुःखेन हि कर्मतंत्रं शरीरभोगार्थमहर्निशं नरः ॥ देहस्तु भिन्नः पु
रुषात्समीक्ष्यते को वात्र भोगः पुरुषेण भुज्यते ॥ पितृमातृसुतभ्रातृदारबंध्वादिसंगमः ॥ प्रपा
यामिव जंतूनां नद्यां काष्ठौघवच्चलः ॥ छायेव लक्ष्मीश्चपला प्रतीता तारुण्यमंबूर्मिवदध्रुवं
च ॥ स्वप्नोपमं स्त्रीसुखमायुरल्पं तथापि जंतोरभिमान एषः ॥ संसृतिः स्वप्नसदृशी सदा रोगा
दिसंकुला ॥ गंधर्वनगरप्रख्या मूढस्तामनुवर्तते ॥ आयुष्यं क्षीयते यस्मादादित्यस्य गतागता
तैः ॥ दृष्ट्वान्येषां जरामृत्यू कथंचिन्नैव बुध्यते ॥ स एव दिवसः सैव रात्रिरित्येव मूढधीः ॥ भो
गाननुपतत्येव कालवेगं न पश्यति ॥ प्रतिक्षणं क्षरत्येतदायुरामघटांबुवत् ॥ सपत्ना इव
रोगौघाः शरीरं प्रहरंत्यहो ॥ जरा व्याघ्रीव पुरतस्तर्जयंत्यवतिष्ठते ॥ मृत्युः सहैव यात्येष
समयं संप्रतीक्षते ॥ देहेहंभावमापन्नो राजाहं लोकविश्रुतः ॥ इत्यस्मिन्मन्यते जंतुः कृमिविड्भस्म
संज्ञिते ॥ त्वगस्थिमांसविण्मूत्ररेतोरक्ताद्यसंयुतः ॥ विकारी परिणामी च देह आत्मा कथं वद
यमस्थाय भवांल्लोकं दग्धुमिच्छसि लक्ष्मण ॥ देहाभिमानिनः सर्वे दोषाः प्रादुर्भवंति हि ॥ देहो
हमिति या बुद्धिरविद्या सा प्रकीर्तिता ॥ नाहं देहश्चिदात्मेति बुद्धिर्विद्येति भण्यते ॥ अविद्या
संसृतेर्हेतुर्विद्या तस्या निवर्तिका ॥ तस्माद्यत्नः सदा कार्यो विद्याभ्यासे मुमुक्षुभिः ॥ कामा
क्रोधादयस्तत्र शत्रवः शत्रुसूदन ॥ तत्रापि क्रोध एवालं मोक्षविघ्नाय सर्वदा ॥ येनाविष्टः पु
मान्हंति पितृभ्रातृसुहृत्सखीन् ॥ क्रोधमूलो मनस्तापः क्रोधः संसारबंधनं ॥ धर्मक्षयकरः
क्रोधस्तस्मात्क्रोधं परित्यजेत् ॥ क्रोध एष महान्शत्रुस्तृष्णा वैतरणी नदी ॥ संतोषो नंदनव
नं शांतिरेव हि कामधुक् ॥ तस्माच्छांतिं भजस्वाद्य शत्रुरेवं भवेन्न ते ॥ देहेंद्रियमनःप्राणबु

अ०रा०
४

देहादिभ्यो विलक्षणः ॥ आत्मा शुद्धः स्वयंज्योतिरविकारी निराकृतिः ॥ यावद्देहेंद्रियप्राणैर्भि
न्नत्वं नात्मनो विदुः ॥ तावत्संसारदुःखौघैः पीड्यंते मृत्युसंयुताः ॥ तस्मात्त्वं सर्वदा भिन्नमात्मानं
हृदि भावय ॥ बुद्ध्यादिभ्यो वहिः सर्वमनुवर्तस्व माखिदः ॥ भुंजन्प्रारब्धमखिलं सुखं वा दुःख
मेव वा ॥ प्रवाहपतितं कार्यं कुर्वन्नपि न लिप्यते ॥ वाह्ये सर्वत्र कर्तृत्वमावहन्नपि राघव ॥ अंतः
अरक्तवत्र वितनन्य पापपुण्याभ्यां न लिप्यते ॥ अंतः शुद्धः स्वभावस्त्वं लिप्यसे न च कर्मभिः
एतन्मयोदितं सर्वं हृदि भावय सर्वदा ॥ संसारदुःखैरखिलैर्बाध्यसे नैव कदाचन ॥ त्वमप्य
वामयादिष्टं हृदि भावय नित्यदा ॥ समागमं प्रतीक्षस्व न दुःखैः पीड्यसे चिरं ॥ न सदैकत्र
संवासः कर्ममार्गानुवर्तिनां ॥ यथा प्रवाहपतितानां प्लवानां सरितां तथा ॥ चतुर्दश समाः
ख्याः ते क्षणार्धमिव जायते ॥ इत्युक्त्वा दंडवत्पादयोरपतच्चिरं ॥ उत्थाप्यांके समाश्लिष्य आ
शीर्भिरभिनंद्य च ॥ सर्वे देवाः सगंधर्वा ब्रह्मविष्णुशिवादयः ॥ रक्षंतु त्वां सदा यांतं तिष्ठंतं नि
द्रयायुतं ॥ इति प्रस्थापयामास समालिंग्य पुनः पुनः ॥ लक्ष्मणोपि तदा रामं नत्वा हृष्टा
श्रुगद्गदः ॥ आह रामं समासेन संपायोयं त्वया कृतः ॥ यास्यामि एतो रामसेवां कर्तुं न वादि
श ॥ अनुगच्छस्व मां रामभवने चेत्प्राणांस्त्यजाम्यहं ॥ तथेति राघवेणाह लक्ष्मणं याहि मा
चिरं ॥ यतस्थितं समाधातुं गतः सीतां पतिर्विभुः ॥ आगतं पतिमालोक्य सीता सुस्मितभावि
णी ॥ स्वर्णपात्रस्थसलिलैः पादैः प्रक्षाल्य भक्तितः ॥ पप्रच्छ पतिमालोक्य देव किं सेनया
विना ॥ आगतोसि गतेऽनेन छत्रं च तेऽनतः ॥ वादित्राणि न वाद्यंते किरीटादि विवर्जितः
सामंतराजसहितः संभ्रमात्रागतोसि किं ॥ इति सीतया पृष्टो रामः सस्मितमब्रवीत् ॥ सा
राम मे दंडकारण्ये राज्यं दत्तं शुभे स्थिते ॥ अतस्तत्पालनार्थाय यास्याम्याशु च भामिनी ॥ अ
द्यैव यास्यामि वनं त्वं तु श्वश्रूसमीपगा ॥ शुश्रूषणं कुरुष्व मातर्न मिथ्यावादिनो वयं ॥ इति ब्रुवं
तं श्रीरामं सीता भीता ब्रवीद्वचः ॥ किमर्थं वनराज्यं ते पित्रा दत्तं महात्मना ॥ तामाह रामः
कैकेय्या राजा प्रीतो वरं ददौ ॥ भरताय ददौ राज्यं वनवासं समा ममदात् ॥ चतुर्दश समास्तत्र वा
सो मे किल याचितः ॥ तया देव्या ददौ राजा सत्यवादी दयापरः ॥ अतः शीघ्रं गमिष्यामि मा वि
घ्नं कुरु भामिनि ॥ श्रुत्वा तद्रामवचनं जानकी प्रीतिसंयुता ॥ अहमग्रे प्रविष्यामि वनं प
श्चात्त्वमेष्यसि ॥ इत्याह मां विना गंतुं तव राघव नोचितं ॥ तामाह राघवः प्रीतः स्वप्रिया
प्रियवादिनीं ॥ कथं वने त्वां नेष्येहं व्याघ्रमृगाकुलं ॥ राक्षसा घोररूपाश्च संति मानु
षभोजनाः ॥ सिंहव्याघ्रवराहाश्च संचरंति समंततः ॥ कटूनि फलमूलानि भोजनार्थं वनमध्य
मे ॥ अपूपानि च व्यंजनानि विद्यंते न कदाचन ॥ काले काले फलं वापि विद्यते कुत्र सुंदरि ॥ मा
र्गो न दृश्यते क्वापि शर्कराकंटकान्वितः ॥ गुहागह्वरसंबाधं झिल्लीदंशादिभिर्युतं ॥ एवं वहु
विधं दोषं वनं दंडकसंज्ञितं ॥ पादचारेण गंतव्यं शीतवातातपादिमत् ॥ राक्षसादीन्वने दृ
ष्ट्वा जीवितं हास्यसे चिरात् ॥ तस्माद्गेहे तिष्ठ शीघ्रं द्रक्ष्यामि मां पुनः ॥ रामस्य वचनं श्रु
त्वा सीता दुःखसमन्विता ॥ प्रत्युवाच स्फुरद्वक्त्रा किंचित्कोपसमन्विता ॥ कथं मामिच्छ
से त्यक्तुं धर्मपत्नीं पतिव्रतां ॥ त्वदनन्यामदोषं मां धर्मज्ञोसि दयापरः ॥ त्वत्समीपे स्थिता
राम को वा मां धर्षयेद्वने ॥ त्वया सह चरंत्या मे शर्करा कंटकाः ॥ पुष्पास्तरणतुल्या
मे भविष्यंति न संशयः ॥ अहं त्वांके शये नैव भवेयं कार्यसाधिनी ॥ वाल्ये मां वीक्ष्य कश्चि
द्दैवज्योतिःशास्त्रविशारदः ॥ प्राह मे विपिने वासः पत्या सह भविष्यति ॥ सत्यवादी द्विजो भू
यात् पश्यामि त्वया सह ॥ अन्यच्च किंचित्कथयामि श्रुत्वा मा न यथा कानने ॥ रामायणानि
बहुशः श्रुत्वा निर्बहुभिर्द्विजैः ॥ सीतां विना वनं रामो गतः किं कुत्रचिद्वद ॥ अतस्त्वया ग
मिष्यामि सर्वथा त्वत्सहायिनी ॥ यदि गच्छसि मां त्यक्त्वा प्राणांस्त्यक्ष्यामि तेऽग्रतः ॥ इति तं
निश्चयं ज्ञात्वा सीतायां रघुनंदनः ॥ अब्रवीद्देवि गच्छ त्वं वनं शीघ्रं मया सह ॥ अरुंधत्यै प्रय

च्छाशु दाराणां भरणानि च ॥ ब्राह्मणेभ्यो धनं सर्वं दत्वा गच्छामहे वनं ॥ इत्युक्त्वा लक्ष्मणेनाशु ह्
मानाहूय भक्तितः ॥ ददौ गवां वृंदशतानि धनानि वस्त्राणि दिव्यानि विभूषणानि ॥ कुंडले च
कुलीनत्वं श्रीमद्द्विजेभ्यो रघुवंशकेतुः ॥ अंतःपुरे यो सीता भुक्तोत्था भरणानि च ॥ कंचुकं वंक्रो
मातः सेवकेभ्यो ददौ धनमनेकधा ॥ स्वकांतःपुरवासिभ्यः सेवकेभ्यस्तथैव च ॥ रामो
पदेभ्यश्च ब्राह्मणेभ्यः सहस्रशः ॥ लक्ष्मणोपि सुमित्रां तां कौशल्यायै समर्पयत् ॥ पौरजान
समागत्य रामस्याग्रे व्यवस्थितः ॥ रामः सीता लक्ष्मणश्च जग्मुः सर्वे नृपालयं ॥ पुनः पादि
सीतया लक्ष्मणपृष्ठे गच्छन् शनैः शनैः ॥ पौरान् जानपदान् जनान् दृगाः सानंदमुद्वीक्षयन् ॥ श्रीरामः स्व
दृष्ट्वा सुः कामसहस्रसुंदरवपुः कांत्या दिशो भासयन् ॥ पादन्यासपवित्रिताखिलजगत्पाथाल
येतन्वितः ॥ इति श्रीअध्यात्मरामायणे अयोध्याकांडे चतुर्थोऽध्यायः ॥ ४ ॥
आयांते नागरे दृष्ट्वा मार्गे रामं सजानकीं ॥ लक्ष्मणेन समं वीक्ष्य ऊचुः सर्वे परस्परं ॥ कैकेय्या वर
तस्य सत्यव्रताजतः ॥ कैकेय्या वाक्यं श्रुत्वा रामः सत्यप्रियंकरं ॥ स्त्रीहेतोरत्यजत्कामी
तिमूढधीः ॥ हे जनाना नात्र वस्तव्यं गच्छामो द्यैव काननं ॥ यत्र रामः सभार्यश्च सानुजो गंतुमिच्छ
ति ॥ पश्यंत जानकीं सर्वे पादचारेण गच्छति ॥ भूमिः कदाचिद्दृष्टा वा जानकी लोकसुंदरी
इत्यपश्यविभुं सर्वलोकैकसुंदरं ॥ राक्षसी कैकेयी नाम्नी जाता सर्वविनाशिनी ॥ रामस्यापि भवेद्दुः
निर्गुणवः ॥ अब्रवीद्वामदेवो यत्साधुनो मध्यमध्यगः ॥ सानुजो वध्रु रामं वा सीतां वा व्यक्ति स्वतः
एव रामः परो विष्णुरादिनारायणः स्मृतः ॥ एषा साजानकी लक्ष्मीर्योगमायेति विश्रुता ॥ (
एव रजोगुणं केन व्यासाभ हिस्वभावतः ॥ सत्वात्तिष्ठलगा विष्णुस्त्रिजगत्यतिपालकः ॥ एष
स्तामसो नेजगत्प्रलयकारणं ॥ एवमन्यगुरामं त्वा भक्तो देवस्तुते मनुं ॥ नायो गोपलयस्त्वां
रघोत्तमः ॥ महीरसातलं याता प्रलयेसत्करेभवेत् ॥ नोलयामास रंगुप्ते नां तोणीं रघुनंदनः
नारसिंहं वपुः कृत्वा प्रह्लादवरदः पुरा ॥ त्रिलोककालकं रतः पानयामास तत्र ते पुरा
स्पृहनेह हृदिन्यायाचितः पुरा ॥ वामनत्वमनुप्राप्य याचयामास हरस्तुनः ॥ दुष्टक्षत्रिय
क्षिको दिष्टोनिहनिष्यति ॥ मानवेष्यो गोवमरणं तस्माद्दुष्टं दुरात्मनः ॥ रावणादीन् रक्षो
पितो हरिः ॥ पुत्रत्वाकांक्षया पितुः सदा पुत्रो भवद्धरिः ॥ सएव विष्णुः श्रीरामो रावणादिवधाय हि
कैकेयी वापि नात्र कारणमेव हि ॥ सर्वैर्देवैर्नारदः प्राह भूभारहरणाय च ॥ रामो प्याह स्वयं साक्षा
तृतीया भुवि ॥ तेषामस्तु भयादीनि न भवेति कदाचन ॥ कालेन तस्य रामस्य दुःखं कामदात्मनः ॥ रा
मनोथैव मुक्तिस्या लकालेना नान्येन केन वित् ॥ मायामानुषरूपेण विडंबयति लोककृत् ॥ भक्तानां भ
देवमहामुनिः ॥ श्रुत्वा ते पि द्विजाः सर्वे रामं ज्ञात्वा हरिं विभुं ॥ जहुर्हृत्संशयग्रंथिं रामे वान चिंतयेत्
यदेरावव प्रियाः ॥ इत्युक्त्वा प्रययौ विप्रस्तेपि रामं परं विदुः ॥ ततो रामः समाविश्य पितुर्गेहमवारितः
सानुजः सीतया गत्वा कैकेयीमिदमब्रवीत् ॥ आगतास्मो वयं मातस्तूष्णीं समम्मतं वनं ॥ गंतं कृतधी
यः पीडामाज्ञापयतुनः पिता ॥ इत्युक्त्वा सह सोध्याय चीराणि प्रददौ स्वयं ॥ रामाय लक्ष्मणायाथ सीता

येवहृष्यहृष्यहृ॥ रामस्तवस्त्राण्युत्सृज्यवल्कलानिपर्यधात्॥ लक्ष्मणोपितथाचक्रे सीतानच
विजानती॥ हस्तेगृहीत्वारामस्यलज्जयासखमैक्षत॥ रामोगृहीत्वातच्चीरंमंजुकेपर्यवेष्टयत्॥ त
दृष्ट्वारुरुदुःसर्वेराजदारासमंततः॥ वसिष्ठस्तुतदाकर्ण्यहृदितेभर्त्सयन्रुषा॥ कैकेयींप्राहदुष्टेत्वं
रामएवत्वयावृतः॥ वनवासायदुष्टेत्वंसीतायैकिंप्रयच्छसि॥ यदिरामेणसमन्वेतिसीताभक्त्यापति
व्रता॥ दिव्यांबरधरानित्यंसर्वाभरणभूषिता॥ रमयत्वनिशंरामंवनेदुःखनिवारिणी॥ राजादश
रथोप्याहसुमंत्रंरथमानय॥ रथमारुह्यगच्छंतुवनेवनचरप्रिया॥ इत्युक्त्वाराममालोक्यसी
तांचैवसलक्ष्मणं॥ दुःखान्निपतितोभूमौरुरोदाश्रुपरिप्लुतः॥ आरुरोहरथंसीताशीघ्रंरामस्य
पश्यतः॥ रामःप्रदक्षिणंकृत्वापितरंरथमारुहत्॥ लक्ष्मणःखड्गयुगलंधनुस्तूणीयुगंतथा॥
गृहीत्वारथमारुह्यनोदयामाससारथिं॥ तिष्ठतिष्ठसुमंत्रेतिराजादशरथोब्रवीत्॥ गच्छगच्छे
तिरामेणनोदितोचोदयद्रथं॥ रामेदूरगतेराजामूर्छितःप्रपतद्भुवि॥ पौरास्तुबालवृद्धाश्चवृद्धा
ब्राह्मणसत्तमाः॥ तिष्ठतिष्ठेतिरामेतिक्रोशंतोरथमन्वयुः॥ राजारुदित्वासुचिरंमांनयंतुगृहं
प्रति॥ कौशल्यायाराममातुरित्याहपरिचारकान्॥ किंचित्कालंभवेत्तत्रजीवनेदुःखितस्यमे
अतऊर्ध्वंनजीवामिचिरंरामंविनाकृतः॥ ततोगृहंप्रविश्यैवकौशल्यायाःपपातह॥ मूर्छितश्च
चिराद्बुद्ध्वातूष्णीमेवावतस्थिवान्॥ रामस्तुतमसातीरंगत्वातत्रावसत्सुखी॥ जलमात्रंनिरा
हारोवृक्षमूलेस्वपत्प्रभुः॥ सीतयासहधर्मात्मापाणिस्तुलक्ष्मणः॥ पालयामासधर्मज्ञः
सुमंत्रेणसमन्वितः॥ पौराःसर्वेसमागत्यस्थितास्तस्याविदूरतः॥ प्राक्रामेउत्थितेनेतेनोचेद्गच्छा
महेवनं॥ इतिनिश्चयमाज्ञायनेवारामोतिविस्मितः॥ नाहंगच्छामिनगरंमेतेवैक्लेशभागिनः
भविष्यंतीतिनिश्चित्यसुमंत्रमिदमब्रवीत्॥ इदानीमेवगच्छामसुमंत्ररथमानय॥ इत्याज्ञप्तःसु
मंत्रोपिरथंवाहैरयोजयत्॥ आरुह्यरामःसीताचलक्ष्मणोपिययुर्द्रुतं॥ अयोध्याभिमुखंगत्वाकिं
चिद्दूरंततोययुः॥ तेपिराममदृष्ट्वैवप्रातरुत्थायदुःखिताः॥ रथनेमिगतंमार्गंपश्यंतस्तेपुरंययुः॥
हृदिरामंससीतंतेध्यायंतस्तस्थुरन्वहं॥ सुमंत्रोपिरथंशीघ्रंनोदयामाससादरं॥ स्फीतान्जन
पदान्पश्यन्रामःसीतासमन्वितः॥ गंगातीरंसमागच्छच्छृंगवेरविदूरतः॥ गंगांदृष्ट्वानमस्कृत्यस्ना
त्वासानंदमानसः॥ शिंशपावृक्षमूलेसन्निषसादरघूत्तमः॥ ततोगुहजनैःश्रुत्वारामागमनमहो
त्सवं॥ सखायंस्वामिनंद्रष्टुंहर्षात्तूर्णंसमापतत्॥ फलानिमधुपुष्पादिगृहीत्वाभक्तिसंयुतः॥
रामस्याग्रेविनिक्षिप्यदंडवत्प्रापतद्भुवि॥ गुहमुत्थाप्यतंतूर्णंराघवःपरिषस्वजे॥ संपृष्टकुशलो
रामंगुहःप्रांजलिरब्रवीत्॥ धन्योहमद्यमेजन्मनैषादंलोकपावन॥ बभूवपरमानंदःस्पृष्ट्वातेंगं
रघूत्तम॥ नैषादंराज्यमेतत्तेकिंकरस्यरघूत्तम॥ त्वदधीनंवसन्नत्रपालयास्मान्रघूद्वह॥ आगा
च्छयामोनगरंपावनंकुरुमेगृहं॥ गृहाणफलमूलानित्वदर्थंसंचितानिमे॥ अनुगृह्णीष्वभ
गवन्दासस्तेहंसुरोत्तम॥ रामस्तमाहसुप्रीतोवचनंशृणुमेसखे॥ नवेक्ष्यामिगृहंग्रामंवर्षा
णीहनवपंचच॥ दत्तमन्येननोभुंजेफलमूलादिकंचन॥ राज्यंममैतत्तेसर्वंत्वंसखामेतिव
ल्लभः॥ वटक्षीरंसमानाय्यजटामुकुटमादरात्॥ बबंधलक्ष्मणेनाथसहितोरघुनंदनः॥ जलमात्रं
तुसंप्राश्यसीतयासहराघवः॥ आस्तृतंकुशपर्णाद्यैःशयनेलक्ष्मणेनहि॥ उवाससतत्रनगरप्रा
सादाग्रेयथापुरा॥ सुष्वापतत्रवैदेह्यापर्यंकइवसंस्कृते॥ ततोविदूरेपरिगृह्यचापंसबाणतू
णीरधनुःसलक्ष्मणः॥ ररक्षरामंपरितोविपश्यन्गुहेनसार्धंसशरासनेन॥ इति श्रीमदध्यात्मरा
मायणेअयोध्याकांडेपंचमोध्यायः॥ ५ ॥
सुप्तंरामंसमालोक्यगुहःसाश्रुपरिप्लुतः॥ लक्ष्मणंप्राहविनयाद्भ्रातःपश्यसिराघवं॥ प्रासादा
ग्रेपुराशेतेपर्यंकेस्वास्तरेसीतयासह॥ यःशेतेस्वर्णपर्यंकेस्वास्तीर्णेभवनोत्तमे॥ कैकेयीरामदुःख
स्यकारणंविधिनाकृता॥ मंथराबुद्धिमास्थायकैकेयीपापमाचरेत्॥ तच्छ्रुत्वालक्ष्मणःप्राह
सखेशृणुवचोमम॥ कःकस्यहेतुःदुःखस्यकश्चहेतुःसुखस्यवा॥ स्वपूर्वार्जितकर्मैवकारणंसु
खदुःखयोः॥ सुखस्यदुःखस्यनकोपिदातापरोददातीतिकुबुद्धिरेषा॥ अहंकरोमीतिवृथाभि

मानोस्वकर्मसूत्रेग्रथितोहिलोकः॥ सुहृन्मित्रार्युदासीनद्वेष्यमध्यस्थबांधवाः॥ स्वयमेवा
चरत्कर्मभाग्यंतत्रतत्रचान्यथा॥ नमेभोगागमेवांछानमेभोगविवर्जने॥ आगच्छत्वथवा
गच्छेन्नभोगवशगोभवत्॥ यस्मिन्देशेचकालेचयस्माद्वायेनकेनवा॥ कृतंशुभाशुभंक
र्मभोज्यंतत्रैवनान्यथा॥ अलंहर्षविषादाभ्यांशुभाशुभफलोदये॥ विधात्राविहितंयद्य
त्तदलंघ्यंसुरासुरैः॥ सर्वदासुखदुःखाभ्यांनरःप्रत्यवरुध्यते॥ शरीरंपुण्यपापाभ्यामु
त्पन्नंसुखदुःखवत्॥ सुखस्यानंतरंदुःखंदुःखस्यानंतरंसुखं॥ द्वयमेतद्धिजंतूनामलंघ्यं
दिनरात्रिवत्॥ सुखमध्येस्थितंदुःखंदुःखमध्येस्थितंसुखं॥ द्वयमन्योन्यसंयुक्तंप्रोच्यते
जलपंकवत्॥ तस्माद्धैर्येणविद्वांसइष्टानिष्टोपपत्तिषु॥ नहृष्यंतिनमुह्यंतिसर्वंमायेति
भावनात्॥ गुहलक्ष्मणयोरेवंभाषितोविमलंनभः॥ बभूवरामःसलिलंस्पृष्ट्वाप्रातःसमा
हितः॥ उवाचशीघ्रंसुहृदंनावमानयमेसखे॥ श्रुत्वारामस्यवचनंनिषादाधिपतिर्गुहः॥
स्वयमेवदृढांनावमानिनायशुभलक्षणां॥ स्वामिन्नारुह्यतांनौकासीतयालक्ष्मणेनच॥
वाहयेज्ञातिभिःसार्धमहमेवसमाहितः॥ तथेतिराघवःसीतामारोप्यशुभलक्षणां॥ गुह
स्यहस्तावालंब्यस्वयंचारुरुहेप्रभुः॥ आयुधादीन्समारोप्यलक्ष्मणोप्यारुरोहच॥ गुहस्ता
न्वाहयामासज्ञातिभिःसहितःस्वयं॥ गंगामध्येगतागंगांप्रार्थयामासजानकी॥ देविगंगे
नमस्तुभ्यंनिवृत्तावनवासतः॥ रामेणसहिताहंत्वांलक्ष्मणेनचपूजये॥ सुरामांसोपहारै
श्चनानाबलिभिरादृता॥ इत्युक्त्वापारकूलेतेप्राप्तेहृष्टीयजन्मनः॥ उद्दिश्यराघवंप्राहरामि
ध्यामित्वयासह॥ अनुज्ञांदेहिराजेंद्रनोचेत्प्राणांस्त्यजाम्यहं॥ श्रुत्वानिषादवचनंश्रीराम
स्तमथाब्रवीत्॥ वर्षाणिपंचदशचसमाश्रित्यवाद्ंडके पुनरप्यहं॥ आयास्याम्युदितेसर्वेनासत्यंरा
मभाषिते॥ इत्युक्त्वालिंग्यतंभक्तंसमाश्वास्यपुनःपुनः॥ निवर्तयामासगुहंसोपिकृच्छ्रा
घवोगृहं॥ तत्रामेध्यंमृगंहत्वापक्वाकृत्वाबलिंत्रयः॥ भुक्त्वाहत्वातलेसुखमासततोनिश्यां
ततोरामस्तुवैदेह्यालक्ष्मणेनसमन्वितः॥ भरद्वाजाश्रमपदंगत्वाबहिरुपस्थितः॥ त
त्रैकंवटुकंदृष्ट्वारामःप्राहवदेर्वटो॥ रामोदाशरथिःसीतालक्ष्मणाभ्यांसमर्पितः॥ आसे
बहिर्वनस्येतिह्युच्यतांमुनिसन्निधौ॥ तच्छ्रुत्वासहसागत्वापादयोःपतितोमुनेः॥ स्वामि
न्रामःसमागत्यवनाद्बहिरुपस्थितः॥ सभार्यःसानुजःश्रीमानाहमांदेवसन्निभः॥ भरद्वा
जायमुनयेज्ञापयस्वयथोचितं॥ तच्छ्रुत्वासहसोत्थायभरद्वाजोमुनीश्वरः॥ गृहीत्वार्घ्यं
चपाद्यंचरामसामीप्यमाययौ॥ दृष्ट्वारामंयथान्यायंपूजयित्वासलक्ष्मणं॥ आहमेपर्ण
शालाभोरामराजीवलोचन॥ आगम्यपादरजसापुनीहिरघुनंदन॥ इत्युक्त्वागृहमानी
यसीतयासहराघवौ॥ भक्त्यापुनःपूजयित्वाचकारातिथ्यमुत्तमं॥ अद्याहंतपसःपारंग
तोस्मिनवसंगमात्॥ ज्ञातंरामतवोदंतंभूतंचागामिकंचयत्॥ जानामित्वांपरात्मानं
मायायाःकार्यमानुषं॥ यदर्थमवतीर्णोसिप्रार्थितोब्रह्मणापुरा॥ यदर्थंवनवासस्तेय
त्करिष्यसिवैपुनः॥ जानामिज्ञानदृष्ट्याहंजातंस्वत्वदुपासनात्॥ इतःपरंत्वांकिंवक्ष्येकृता
र्थोहंरघूत्तम॥ यत्त्वांपश्यामिकाकुत्स्थःपुरुषंप्रकृतेःपरं॥ रामस्तमभिवाद्याहसीताल
क्ष्मणसंयुतः॥ अनुग्राह्यास्त्वयाब्रह्मन्वयंक्षत्रियबांधवाः॥ इतिसंभाष्यतेन्योन्यमुषित्वामु
निसन्निधौ॥ प्रातरुत्थाययमुनामुत्तीर्यमुनिदारकैः॥ कृताप्लवेनमुनिनादृष्टमार्गेणरा
घवः॥ प्रययौचित्रकूटाद्रिंवाल्मीकेर्यत्रचाश्रमः॥ रम्यारामोपवाल्मीकेराश्रमम्
ले॥ नानाद्विजसमाकीर्णंनित्यपुष्पफलाकुले॥ तत्रदृष्ट्वासमासीनंवाल्मीकिंमुनिस
त्तमं॥ ननामशिरसारामोलक्ष्मणेनचसीतया॥ दृष्ट्वारामंरमानाथंवाल्मीकिर्लोकसुंद
रं॥ जानकीलक्ष्मणोपेतंजटामुकुटमंडितं॥ कंदर्पसदृशाकारंकमनीयांबुजेक्षणं॥ दृष्ट्वै
वसहसोत्थायविस्मयानिमिषेक्षणः॥ आलिंग्यपरमानंदंरामंहर्षास्रुलोचनः॥ पूजयि
त्वाजगत्पूज्यंभक्त्यार्घ्यादिभिरादृतः॥ फलमूलैःसमधुरैर्भोजयित्वाचलालितः॥ राघवःप्रा

जलिः प्राह वाल्मीकिं विनयान्वितः ॥ पितृराज्ञां पुरस्कृत्य दंडकानागता वयं ॥ भवंतो य
दि जानंति किं वक्ष्यामोत्र कारणं ॥ यत्र मे सुखवासाय भवेत्स्थानं वदस्व तत् ॥ सीतया स
हितः कालं किंचित्तत्र नयाम्यहं ॥ इत्युक्तो राघवेणासौ मुनिः सस्मितमब्रवीत् ॥ त्वमेव स
र्वलोकानां निवासस्थानमुत्तमं ॥ तवापि सर्वभूतानि निवाससदनानि च ॥ एवं सा
धारणं स्थानमुक्तं ते रघुनंदन ॥ सीतया सहितस्येति विशेषं पृच्छतस्तव ॥ तद्वक्ष्यामि
रघुश्रेष्ठ यत्ते नियतमंदिरं ॥ शांतानां समदृष्टीनामद्वेष्टॄणां च जंतुषु ॥ त्वामेव भजतां
नित्यं हृदयं तेधिमंदिरं ॥ धर्माधर्मान्परित्यज्य त्वामेव भजतो निशं ॥ सीतया सह ते राम
तस्य हृत्सुखमंदिरं ॥ त्वन्मंत्रजापको यस्तु त्वामेव शरणं गतः ॥ निर्द्वंद्वो निःस्पृहस्तस्य
हृदयं ते सुमंदिरं ॥ निरहंकारिणः शांता ये रागद्वेषवर्जिताः ॥ समलोष्टाश्मकनकास्ते
षां ते हृदयं गृहं ॥ त्वयि दत्तमनोबुद्धिर्यः संतुष्टः सदा भवेत् ॥ त्वयि संन्यस्तकर्मा यस्तन्म
नस्ते शुभं गृहं ॥ यो न द्वेष्ट्यप्रियं प्राप्य प्रियं प्राप्य न हृष्यति ॥ सर्वं मायेति निश्चित्य त्वां भ
जेत्तन्मनो गृहं ॥ षड्भावादिविकारान्यो देहे पश्यति नात्मनि ॥ तृट्क्षुत्सुखं भयं दुःखं प्राण
बुद्ध्योर्निरीक्ष्यते ॥ संसारधर्मैर्निर्मुक्तस्तस्य ते मानसं गृहं ॥ पश्यंति ये सर्वगुहाशयस्थं
त्वां चिद्घनं सत्यमनंतमेकं ॥ अलेपकं सर्वगतं वरेण्यं तेषां हृदब्जे सह सीतया वस ॥ निरं
तराभ्यासदृढीकृतात्मनां त्वत्पादसेवापरिनिष्ठितानां ॥ त्वन्नामकीर्त्या हतकल्मषाणां
सीतासमेतस्य गृहं हृदब्जे ॥ राम त्वन्नाममहिमा वर्ण्यते केन वा कथं ॥ यत्प्रभावादहं राम
ब्रह्मर्षित्वमवाप्तवान् ॥ अहं पुरा किरातेषु किरातैः सह वर्द्धितः ॥ जन्ममात्रद्विजत्वं मे
शूद्राचाररतः सदा ॥ शूद्रायां बहवः पुत्रा उत्पन्ना मेजितात्मनः ॥ ततश्चोरैश्च संगम्य चौरो
हमभवं पुरा ॥ धनुर्बाणधरो नित्यं जीवानामंतकोपमः ॥ एकदा मुनयः सप्त दृष्टा महति
कानने ॥ साक्षान्मया प्रकाशंते ज्वलनार्कसमप्रभाः ॥ तानन्वधावं लोभेन तेषां सर्वपरि
च्छदान् ॥ गृहीतुकामस्तत्राहं तिष्ठ तिष्ठेति चाब्रुवं ॥ दृष्ट्वा मां मुनयोपृच्छन्किमायासि
द्विजाधम ॥ अहं तानब्रुवं किंचिदादातुं मुनिसत्तमाः ॥ पुत्रदारादयः संति बहवो मे बुभुक्षि
ताः ॥ तेषां संरक्षणार्थाय चरामि गिरिकानने ॥ ततो मामूचुरव्यग्राः पृच्छ गत्वा कुटुंबकं
यो यो मया प्रतिदिनं क्रियते पापसंचयः ॥ यूयं तद्भागिनः किं वा नेति वेति पृथक्पृथक् ॥
वयं स्थास्यामहे तावदागमिष्यसि निश्चयः ॥ तथेत्युक्त्वा गृहं गत्वा मुनिभिर्यदुदीरितं ॥
अपृच्छं पुत्रदारादींस्तैरुक्तोहं रघूत्तम ॥ पापं तवैव तत्सर्वं वयं तु फलभागिनः ॥ तच्छ्रुत्वा
जातनिर्वेदो विचार्य पुनरागमं ॥ मुनयो यत्र तिष्ठंति करुणापूर्णमानसाः ॥ मुनीनां द
र्शनादेव शुद्धांतःकरणोभवं ॥ धनुरादीन्परित्यज्य दंडवत्पतितोस्म्यहं ॥ रक्षध्वं मां मु
निश्रेष्ठा गच्छंतं निरयार्णवं ॥ इत्यग्रे पतितं दृष्ट्वा मामूचुर्मुनिसत्तमाः ॥ उत्तिष्ठोत्तिष्ठ भद्रं ते
सफलः सत्समागमः ॥ उपदेक्ष्यामहे तुभ्यं किंचित्तेनैव मोक्ष्यसे ॥ परस्परं समालोच्य
दुर्वृत्तोयं द्विजाधमः ॥ उपेक्ष्य एव सद्वृत्तैस्तथापि शरणं गतः ॥ रक्षणीयः प्रयत्नेन मो
क्षमार्गोपदेशतः ॥ इत्युक्त्वा राम ते नाम व्यत्यस्ताक्षरपूर्वकं ॥ एकाग्रमनसात्रैव मरे
ति जप सर्वदा ॥ आगच्छामः पुनर्यावत्तावदुक्तं सदा जप ॥ इत्युक्त्वा प्रययुः सर्वे मुनयो दि
व्यदर्शनाः ॥ अहं यथोपदिष्टं तैस्तथाकरवमंजसा ॥ जपन्नेकाग्रमनसा बाह्यं विस्मृत
वानहं ॥ एवं बहुतिथे काले गते निश्चलरूपिणः ॥ सर्वसंगविहीनस्य वाल्मीको
भून्ममोपरि ॥ ततो युगसहस्रांते ऋषयः पुनरागमन् ॥ मामूचुर्निष्क्रमस्वेति तच्छ्रु
त्वा तूर्णमुत्थितः ॥ वल्मीकान्निर्गतश्चाहं नीहारादिव भास्करः ॥ मामप्याहुर्मुनिगणा
वाल्मीकिस्त्वं मुनीश्वरः ॥ वल्मीकात्संभवो यस्माद्द्वितीयं जन्म तेभवत् ॥ इत्युक्त्वा ते य
युर्दिव्यगतिं रघुकुलोत्तम ॥ अहं ते राम नाम्नश्च प्रभावादीदृशोभवं ॥ अद्य साक्षात्प्रपश्या
मि ससीतं लक्ष्मणेन च ॥ रामं राजीवपत्राक्षं त्वां मुक्तो नात्र संशयः ॥ आगच्छ राम भद्रं

ते स्थलं वै दर्शयाम्यहं ॥ एवमुक्त्वा मुनिः श्रीमान् लक्ष्मणेन समन्वितः ॥
तो गत्वा मध्ये पर्वतगंगयोः ॥ तत्र शालां सुविस्तीर्णां कारयामास वै शुभां ॥ शिष्यैः परिवृ
श्चिमं दलितोरकुशाभ्यां मंदिरे द्वये ॥ जानकीसहितो रामो लक्ष्मणेन समन्वितः ॥ श्राक्य
नत्र ते देवसदृशास्तत्र मन्यवनोश्रमे ॥ वाल्मीकिना तत्र सुपूजितोयं रामः ससीतः
सह लक्ष्मणेन ॥ देवैर्मुनींद्रैः सहितो मुदास्ते स्वर्गे यथा देवपतिः सशच्या ॥ इति श्रीम
दध्यात्मरामायणे उमामहेश्वरसंवादे अयोध्याकांडे षष्ठोध्यायः ६ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
श्रीमहादेव उवाच ॥ सुमंत्रोपि तदायोध्यां दिनांते प्रविवेश ह ॥ वस्त्रेण मुखमा
च्छाद्य बाष्पाकुलितलोचनः ॥ बहिरेव रथं स्थाप्य राजानं द्रष्टुमाययौ ॥ जयशब्दे
न राजानं स्तुत्वा तं प्रणनाम ह ॥ ततो राजा नमस्यंतं सुमंत्रं विह्वलोब्रवीत् ॥ सुमंत्र रा
मः क्वास्ते सीतया लक्ष्मणेन च ॥ कुत्र त्यक्तस्त्वया रामः किं मां पापिनमब्रवीत् ॥
सीता वा लक्ष्मणो वापि निर्दयं मां किमब्रवीत् ॥ हा राम सद्गुणनिधे हा सीते प्रियवा
दिनि ॥ दुःखार्णवे निमग्नं मां म्रियमाणं न पश्यसि ॥ विलप्यैवं चिरं राजा निमग्नो दुः
खसागरे ॥ एवं मंत्री रुदंतं तं प्रांजलिर्वाक्यमब्रवीत् ॥ रामः सीता च सौमित्रिर्मया
नीता रथेन ते ॥ शृंगवेरपुराभ्याशे गंगाकूले व्यवस्थिताः ॥ गुहेन किंचिदानीतं फल
मूलादिकं च यत् ॥ स्पृष्ट्वा हस्तेन संप्रीत्या नाग्रहीद्विससर्ज तत् ॥ वटक्षीरं समानाय्य
गुहेन रघुनंदन ॥ जटामुकुटमाबध्य मामाह रघुनंदनः ॥ सुमंत्र ब्रूहि राजानं शोक
स्ते स्तु न मत्कृते ॥ साकेतादधिकं सौख्यं विपिने नो भविष्यति ॥ मातुर्मे वंदनं ब्रू
हि शोकं त्यजतु मत्कृते ॥ आश्वासयतु राजानं वृद्धं शोकपरिप्लुतं ॥ सीता चाश्रुप
रीताक्षी मामाह नयसत्तम ॥ दुःखगद्गदया वाचा रामं किंचिदवेक्षती ॥ सीता चाश्रुप
रिपातेन मे बुद्धिर्गुरूपदं शुभे ॥ इति ब्रुवंती सीता गता किंचिदवाङ्मुखी ॥ ततः सा
श्रुपरीताक्षी नाथ मामाह रुदती तदा ॥ यावद्गंगामुत्तीर्य गतास्तावदहं स्थितः ॥ ततः सा
चिन्मयस्ता पुनरेवाहमागतः ॥ ततो रुदंती कौसल्या राजानमिदमब्रवीत् ॥ ततो दुः
खप्रियभार्यायै प्रसन्नो दत्तवान्वरं ॥ त्वं राज्यं देहि तस्यैव मत्पुत्रः किं विवासितः ॥
कृत्वा त्वमेव तत्सर्वमिदानीं किं नु रोदिषि ॥ कौशल्यावचनं श्रुत्वा क्षते क्षारमिवार्पि
ता ॥ पुनः शोकाश्रुपूर्णाक्षः कौशल्यामिदमब्रवीत् ॥ दुःखेन म्रियमाणं मां किं पु
नर्दुःखयस्यलं ॥ इदानीमेव मे प्राणा उत्क्रमिष्यंति निश्चयात् ॥ शप्तोहं बालभा
वेन केनचिन्मुनिना पुरा ॥ पुराहं यौवने दृप्तश्चापबाणधरो निशि ॥ अचरं मृगयास
क्तो नद्यास्तीरे महावने ॥ तत्रार्धरात्रसमये मुनिः कश्चित्तृषार्दितः ॥ पिपासार्दितयोः
पित्रोर्जलमानेतुमुद्यतः ॥ आशयन्जलैः कुंभं तदा शब्दोमहानभूत् ॥ गजः पिब
तिपानीयमिति मत्वा महानिशि ॥ बाणं धनुषि संधाय शब्दवेधिनमत्यजं ॥ हाह
तोस्मीति तत्राभूच्छब्दो मानुषसूचकः ॥ कस्यापि न कृतो दोषो मया केन हतो विधे
पतीक्षेते मां माता च पिता च जलकांक्षया ॥ तच्छ्रुत्वा भयसंत्रस्तस्ततोहं पौरुषो वच
यावद्गत्वाथ तत्पार्श्वे स्वामिन्नराधिपोस्म्यहं ॥ अजानता मया विद्धस्त्वात्तम(?) मर्हसि मां मु
ने ॥ इत्युक्त्वा पादयोस्तस्य पतितो गद्गदाक्षरः ॥ तदा मामाह स मुनिर्मा भैषीर्नृपसत्तम
ब्रह्महत्या स्पृशेन्न त्वां वैश्योहं तपसि स्थितः ॥ पितरौ मां प्रतीक्षेते तृषार्तौ द्यां वरिष्ठौ हि
तौ ॥ तयोस्त्वमुदकं देहि शीघ्रमेवाविचारयन् ॥ नो चेत्त्वां भस्मसात्कुर्यात्पिता मे यदि
कुप्यति ॥ जलं दत्त्वा ततो नत्वा कृतं सर्वं निवेदय ॥ शल्यमुद्धर मे देहात्प्राणांस्त्यक्ता
मि पीडितः ॥ मा भैषीरिति मां प्राह ब्रह्महत्याभयं न ते ॥ सत्पितरौ सलिलं दत्त्वा नत्वा
प्राञ्जलिं नीवितं(?) ॥ इत्युक्तो मुनिना शीघ्रं बाणमुत्पाट्य देहतः ॥ सजलं कलशं धृत्वा गतो
हं यत्र दंपती ॥ अतिवृद्धावंधदृशौ क्षुत्पिपासार्दितौ निशि ॥ नायाति सलिलं गृह्य पु

त्रःकिंवात्रकारणं ॥ अनन्यगतिकोवृद्धौशोकोत्सवपीडितौ ॥ आवामुपेत्यतेकिं
वामकिमातावयोस्तमः ॥ इतिचिंताव्याकुलौतौमत्वाहत्वाप्रजेध्वनिं ॥ श्रुत्वाप्राह
पिताश्रुत्रकिंविलंबःकृतस्त्वया ॥ देह्यावयोःस्वपानीयंपिवत्समपिश्रवण ॥ इत्येवंस
पतोभीत्यासकाशमगमंघनैः ॥ पादयोःप्रणिपत्याहमब्रुवंविनयान्विता ॥ नाहं
पुत्रस्तवयोध्यायाराजादशरथोस्म्यहं ॥ पापाहंमृगयासक्तोराज्ञोमृगविहिंसकः ॥
जलावताराहरोदेस्थित्वाजलगतंध्वनिं ॥ श्रुत्वाहंप्राक्षिपंत्वेपित्वामेकंबाणमयान्यमेन
हतोस्मीतिध्वनिंश्रुत्वाभयात्तत्राहमागतः ॥ जटाविकीर्यपतितंदृष्टुंहंमुनिदारकं ॥
भीतोगृहीत्वातन्त्वादौरक्षरक्षेतिवाब्रुवन् ॥ माभैषीरितिमांप्राहब्रह्महत्याभ
येनते ॥ मत्पित्रोःसलिलंदत्वानत्वासार्धयजीवितं ॥ इत्युक्तोऽभ्युनिनातेनप्रागतोस्
निहिंसक ॥ रक्षतांमांदयायुक्तौयुवांहिशरणागतं ॥ इतिश्रुत्वातुदुःखार्तौविलप्य
दुहिणोचितं ॥ पतितौतौस्नुतोयत्रनयतत्राविलंबयन् ॥ ततोनीतौमयातंयत्रमयाहतो
हृदुरंपती ॥ स्पृष्ट्वास्तुतंतौहस्ताभ्यांवहुशोथविलेपतुः ॥ हाहेतिक्रंदमानौतौपुत्रपु
त्रेतिवोचतौ ॥ जलंदेहीतिपुत्रेतिकिमर्थंनददास्यलं ॥ ततोमामवदवृद्धःपीत्रुंचितिरं
वयभूपते ॥ मयातदेवरक्षिताचितिस्तत्रनिवेशिताः ॥ त्रयस्तत्राग्निरुत्सृष्टोदग्धस्ते
त्रिदिवंगताः ॥ तत्रहृष्टुपिताप्राहत्वमप्येवंभविष्यसि ॥ पुत्रशोकेनमरणंप्राप्स्यसे
वचनान्मम ॥ सरूतस्तेममशापःशापकालोऽभिवाधितः ॥ इत्युक्ताविललापाथरा
जाशोकसमाकुलः ॥ हारामपुत्रहासीतेहालक्ष्मणगुणाकर ॥ त्वद्वियोगादहंशा
मोमृत्युंकैकेयीसंभवं ॥ वदन्नेवंदशरथःप्राणांस्त्यक्त्वादिवंगतः ॥ कौशल्याचसु
मित्राचतथान्याराजयोषितः ॥ चक्रुश्चुक्रुशुर्विलेपुश्चतरस्ताडनपूर्वकं ॥ वसिष्ठःप्र
ययौतत्रप्रातर्मंत्रिभिस्सहितः ॥ तैलद्रोण्यांदशरथंक्षिप्त्वादूतानथाब्रवीत् ॥ गच्छत
त्वरितंयूयंयुधाजिन्नगरंप्रति ॥ तत्रास्तेभरतःश्रीमान्शत्रुघ्नसहितःप्रभुः ॥ उ
च्यतांभरतःशीघ्रमागच्छेतिममाज्ञया ॥ अयोध्यांप्रतिराजानंकैकेयीचापिपश्यतु ॥
इत्युक्तास्तेवितंहत्वागताभरतमातुलं ॥ युधाजितंप्रणम्याथऊचुर्भरतंप्राह्नजंप्रति ॥
वसिष्ठस्त्वाब्रवीद्राजन्भरतःसानुजःप्रभुः ॥ शीघ्रमागच्छतुपुरीमयोध्याममविचारय
न् ॥ इत्याज्ञप्तोथभरतस्त्वरितंभयविह्वलः ॥ आययौगुरुणादिष्टःसहदूतैस्तमान्व
जः ॥ राज्ञोवारावसत्पापिडःखंकिंचिदुपस्थितं ॥ इतिचिंतापरोमार्गेचिंतयन्नगरंय
यौ ॥ नगरंभ्रष्टलक्ष्मीकंजनसंबंधवर्जितं ॥ उत्सवैश्चपरित्यक्तंदृष्ट्वाचिंतापरोभवत्
प्रविश्यराजभवनंराजलक्ष्मीविवर्जितं ॥ अपश्यत्कैकयींतत्रएकामेवासनेस्थितां
ननामशिरसापादौमातुर्भक्तिसमन्वितः ॥ आगतंभरतंदृष्ट्वाकैकेयीप्रेमसंभ्रमात्
उत्थायालिंग्यरभसात्स्वांकमारोप्यसंस्थिता ॥ मूर्ध्न्यवघ्रायपप्रच्छकुशलंस्वकुलस्य
च ॥ पितामेकुशलीभ्राताभाताचशुभलक्षणा ॥ दिष्ट्यात्वमद्यकुशलेनमयादृष्टो
सिपुत्रक ॥ इतिपृष्टःसभरतोमातरंचिंताकुलेंद्रियः ॥ दुःखमानेनमनसामातरंसमप्र
च्छत ॥ मातापितामेक्वगतस्त्वमेकाकिन्यसीहसंस्थिता ॥ त्वयाविनानमेतातःकदा
चिद्दृहसिस्थितः ॥ अदृष्ट्वापितरंमेद्यभयंदुःखंचजायते ॥ अथाहकैकयीपुत्रंकिंदुः
खेनतवानघ ॥ यागतिर्धर्मशीलानामश्वमेधादियाजिनां ॥ तांगतिंगतवानद्य
पितातेपितृवत्सल ॥ तच्छ्रुत्वानिपपातोर्व्यांभरतःशोकविह्वलः ॥ हातातक्वग
तोसित्वंत्यक्त्वामेव्यसनार्णवे ॥ असमर्प्यैवरामायराज्यंमांक्वगतोसिभो ॥ इति
विलपन्तंपतितंमुक्तमूर्धजं ॥ उत्थाप्यमृज्यनयनेकैकेयीपुत्रमब्रवीत् ॥ समा
श्वसिहिभद्रंतेसर्वंसंपादितंमया ॥ तामाहभरतस्तातोम्रियमाणःकिमब्रवीत् ॥
तमाहकैकयीदेवीभरतंभयवर्जिता ॥ हारामरामसीतेतिलक्ष्मणेतिपुनःपुनः ॥

विलपन्नेवबहुधाचिरंदेहंत्यक्त्वादिवंययौ ॥ तामाहभरतोहेम्बरामःसन्निहितोनकिं ॥ तदा
नींलक्ष्मणोवापिसीतावाकुत्रतेगताः ॥ कै ॥ शृ ॥ च ॥ रामस्ययौवराज्यार्थंपित्रातेसंभ्र
मःकृतः ॥ तवराज्यप्रदानायतदाहंविघ्नमाचरं ॥ राज्ञादत्तेहिमेपूर्वंवरदेवरद्वये ॥ या
चितंतदिदानींमेतयोरेकेनतेहितं ॥ राज्यंरामस्यचैकेनवनवासोमुनिव्रतं ॥ ततः
सत्यपरोराजाराज्यंदत्वातवैवहि ॥ राज्येसंप्रेषयामासवनमेवपितातव ॥ सीताप्यनु
गतारामंपातिव्रत्यमुपाश्रिता ॥ सोभ्रात्रंदर्शयन्राममनुयातोपिलक्ष्मणः ॥ वनेग
तेषुसर्वेषुराजातानेवचिंतयन् ॥ प्रलपन्रामरामेतिममारनृपसत्तमः ॥ इतिमातु
र्वचःश्रुत्वावज्राहतइवद्रुमः ॥ पपातभूमौसंत्रस्तोहहादुःखितोनदन् ॥ कैकेयीपुनर
प्याहवत्सशोकेनकिंतव ॥ राज्येमहतिसंप्राप्तेदुःखस्यावसरःकुतः ॥ इतिश्रुत्वेतीमा
लोक्यमातरंप्रदहन्निव ॥ असंभाष्यासिपापेमेघोरेत्वंभर्तृघातिनी ॥ पापेत्वद्गर्भजातो
हंपापवानस्मिसांप्रतं ॥ अहमग्निंप्रवेक्ष्यामिविषंवाभक्षयाम्यहं ॥ खड्गेनवाथवात्मा
नंहत्वायास्यामियमसादनं ॥ भर्तृघातिनिदुष्टेत्वंकुंभीपाकंगमिष्यसि ॥ इतिनिर्भर्त्स्यकैके
यींकौशल्याभवनंययौ ॥ सापितंभरतंदृष्ट्वामुक्तकंठारुरोदह ॥ पादयोःपतितस्तस्या
भरतोपितदारुदत् ॥ आलिंग्यभरतंसाध्वीराममातायशस्विनी ॥ कृशातिदीनवदना
सास्रनेत्रेदमब्रवीत् ॥ पुत्रत्वयिगतेदूरमेवंसर्वमभूदिदं ॥ उक्तंमात्राकृतंसर्वंतया
वैमातृदोषितेन ॥ पुत्रःसभार्योवनमेवयातःसलक्ष्मणोमेरघुरामचंद्रः ॥ चीरांबरोबद्धज
टाकलापःसंत्यज्यमांदुःखसमुद्रमग्नां ॥ हेरामहारामरघूत्तमाहंनाथाजानासिमेत्वंज
तःपरात्मा ॥ तथातिदुःखेनजहातिमांवैविधिर्बलीयानितिमेमनीषा ॥ सएवंभरतो
वीक्ष्यविलपंतींमहाशुचा ॥ पादौगृहीत्वाप्राहेदंशृणुमातर्वचोमम ॥ कैकेय्यायत्कृतंत
न्मेरामराज्याभिषेचने ॥ अन्यद्वायदिजानामिसामयानोदितायदि ॥ पापंमेस्तुतदा
मातर्ब्रह्महत्याशतोद्भवं ॥ हत्वावसिष्ठंखड्गेनअरुंधत्यासमन्वितं ॥ भूयात्तत्पापम
खिलंममजानामियद्यहं ॥ इत्येवंशपथंकृत्वारुरोदभरतस्तदा ॥ कौशल्यातमथालिं
ग्यपुत्रजानामिमाशुचः ॥ श्री ॥ रा ॥ दे ॥ व ॥ वाच ॥ एतस्मिन्नंतरेश्रुत्वाभरतस्यसमाग
मं ॥ वसिष्ठोमंत्रिभिःसार्धमाययौराममंदिरं ॥ रुदंतंभरतंदृष्ट्वावसिष्ठःप्राहसादरं ॥
वृद्धोराजादशरथोज्ञानीसत्यपराक्रमः ॥ भुक्त्वामर्त्यसुखंसर्वमिष्ट्वाविपुलदक्षिणैः
अश्वमेधादिभिर्यज्ञैर्हर्षात्संस्तुतेहरिं ॥ अंतेजगामत्रिदिवंदेवेंद्रार्धासनंप्रभुः ॥ तं
शोचसिवृथैवत्वमशोच्यंमोक्षभाजनं ॥ आत्मानित्योव्ययःशुद्धोजन्मनाशादिव
र्जितः ॥ शरीरंजडमत्यर्थमपवित्रंविनश्वरं ॥ विचार्यमाणेशोकस्यनावकाशःक
थंचन ॥ पितावायदितनयोवापियदिसंस्तुवर्णगतः ॥ मूढास्तमनुशोचंतिस्वात्मना
डनपूर्वकं ॥ निःसारेखलुसंसारेवियोगोज्ञानिनांयदा ॥ भवेद्वैराग्यहेतुःसशांति
सौख्यंतनोतिच ॥ जन्मवान्यदिलोकेस्मिन्तर्हितंमृत्युरन्वगात् ॥ तस्मादपरिहार्योयं
मृत्युर्जन्मवतांसदा ॥ स्वकर्मवशतःसर्वेजंतवोप्रभवाप्ययौ ॥ विजानन्नप्यविद्वा
न्यःकथंशोचतिबांधवान् ॥ ब्रह्मांडकोटयोनष्टाःसृष्टयोबहवोगताः ॥ शुष्यंतिसाग
राःसर्वेकैवास्थाक्षणजीविते ॥ चलपत्रांतलग्नांबुबिंदुवत्क्षणभंगुरं ॥ आयुस्त्यजत्य
वेलायांकस्तत्रप्रत्ययस्तव ॥ देहीप्राक्तनदेहोत्थकर्मणादेहवान्पुनः ॥ तद्देहोत्थेनच
पुनरेवंदेहःसदात्मनः ॥ यथात्यजतिवैजीर्णंवासोगृह्णातिनूतनं ॥ तथाजीर्णंप
रित्यज्यदेहीदेहंपुनर्नवं ॥ भजत्येवसदातत्रशोकस्यावसरःकुतः ॥ आत्मानम्रियते
नैवजायतेवर्धतेनच ॥ षड्भावरहितोनंतःसत्यप्रज्ञानविग्रहः ॥ आनंदरूपोबुद्ध्या
दिसाक्षीलयविवर्जितः ॥ एकएवपरोह्यात्माह्यद्वितीयःसमःस्थितः ॥ इत्यात्मानंदृढं
ज्ञात्वात्यक्त्वाशोकंकुरुक्रियां ॥ तैलद्रोण्याःपितुर्देहमुद्धृत्यसचिवैःसह ॥ कृत्यंकु

हृयथान्यायमस्माभिः कृतनंदन ॥ इति संबोधितः सान्त्वात्कृतात्मा भरतस्तदा ॥ विसृज्या तानतं शोकं त्यक्त्वा स विधिवत्क्रियां ॥ गुरुलोकप्रकारेण आहिताग्नेर्यथाविधि ॥ संस्कृत्य स पितरं हं विधिदृष्टेन कर्मणा ॥ एकादशेऽह्नि प्राप्ते ब्राह्मणानन्वपारयन ॥ भोजयामास विधिवद्भुक्त्वा शोच्य महस्वनः ॥ उद्दिश्य पितरं तत्र ब्राह्मणेभ्योऽपनेवरु ॥ गवां ददौ महस्राणां ग्रामान्रत्नांवराणि च ॥ अवसत्स्वगृहे तत्र राममेवानुचिंतयन ॥ वसिष्ठेन सह भ्रात्रा मंत्रिभिः परिवारितः ॥ रामेरण्यं प्रयाते सहजनकसुतालक्ष्मणाभ्यां सुघोरं ॥ माता मे राक्षसीव प्रदहति हृदयं दर्शनादेव सद्यः ॥ गच्छाम्यारण्यमद्य स्थिरमतिरखिलं दूरतो यास्य राज्यं ॥ रामं सीतासमेतं स्मितरुचिरमुखं नित्यमेवानुसेवे ॥ इति श्री

अध्यात्मरामायणे अयोध्याकांडे सप्तमोध्यायः ॥ ७ ॥

श्रीमहादेव उवाच ॥ वसिष्ठो मुनिभिः सार्धं मंत्रिभिः परिवारितः ॥ राज्ञः सभां देवसभां मंत्रिभिः समविशद्विजैः ॥ न्यासमनेसमासीनः शक्रस्य च बृहस्पतिः ॥ आनीय भरतं तत्र उपवेश्य महानुजं ॥ अब्रवीद्वचनं देशकालोचितमरिंदमं ॥ तात राज्यं मिषित्वा मल्लमद्य पितरमनातन ॥ कैकेय्याथाचितं राज्यं त्वदर्थे पुरुषर्षभ ॥ सत्यसंधो दशरथः प्रतिज्ञाय ददौ किल ॥ अभिषेको भवेत्तस्य मुनिभिर्मंत्रपूर्वकं ॥ तच्छ्रुत्वा भरतो प्याह मम राज्येन किं मुने ॥ रामो राज्याधिराजश्च वयं तस्यैव किंकराः ॥ श्वः प्रभाते गमिष्यामो राममानेतुमंजसा ॥ अहं पूर्वं मातरस्ताः कैकेयी राक्षसी विना ॥ इतिष्याम्यपुनैताहं कैकेयीं मातृगेधिनीं ॥ किंतु मां नो रघुश्रेष्ठः स्त्रीहंतारं हनिष्यति ॥ तस्मौभनेतगमिष्यामि पादचारेण दंडकान ॥ पादुकासहितस्तत्र यथा पूर्वं तथा वनवा ॥ रामो यथा वनं यातस्तथाहं वल्कलांवरः ॥ फलमूलकृताहारः पादुकासहितो मुने ॥ भूमिशायी जटाधारी यावद्रामो निवर्तते ॥ इति निश्चित्य भरतस्तूष्णीमेवावतस्थिवान ॥ साधु साध्विति तं सर्वे प्रशशंसुर्द्विजान्विताः ॥ ततः प्रभाते भरते गच्छंते सर्वसैनिकाः ॥ अनुजग्मुः सुमंत्रेण नोदिताः सायुधं जनाः ॥ कौशल्याद्यास्तदा सर्वे वसिष्ठप्रमुखा द्विजाः ॥ यास्यंते पृष्ठे सर्वे हृष्टाः पार्श्वतोऽग्रतः ॥ शृंगवेरपुरं गत्वा गंगाकूले समंततः ॥ उवास महती सेना शत्रुघ्नपरिचोदिता ॥ आगतं भरतं श्रुत्वा गुहः शंकितमानसः ॥ महत्या सेनया सार्धमागतो भरतः किल ॥ पापं कर्तुं न वायाति रामस्याविदितात्मनः ॥ गत्वा तद्हृदयं ज्ञेयं यदि दुष्टं भविष्यति ॥ तन्नानेचेत्समाहन्तु नावस्तिष्ठंतु साधवः ॥ ज्ञातयो मे समायातः पप्येतः सर्वतो दिशं ॥ इति सर्वान्समादिश्य गुहो भरतमागतः ॥ उपायनानि संगृह्य विविधानि बहून्यपि ॥ प्रययौ ज्ञातिभिः सार्धं वहुभिर्विविधायुधैः ॥ निवेदयामास तदाग्रे भरतस्य समंततः ॥ दृष्ट्वा भरतमासीनं सानुजं सह मंत्रिभिः ॥ चीरांबरं घनश्यामं जटामुकुटधारिणं ॥ राममेवानुशोचंतं रामरामेति वादिनं ॥ ननाम शिरसा भूमौ गुहोहमिति चाब्रवीत ॥ शीघ्रमुत्थाप्य भरतो गाढमालिंग्य सादरं ॥ दृष्ट्वा नामयमव्यग्रः सखायमिदमब्रवीत ॥ भ्रातस्त्वं राघवेनात्र समेतः समवस्थितः ॥ रामेणालिंगितः सार्धं नयनेनामलात्मना ॥ धन्योसि कृतकृत्योसि यत्त्वया परिभाषितः ॥ रामो रात्रौ व यत्रासौ लक्ष्मणेन च सीतया ॥ यत्र रामस्त्वया दृष्टस्तत्र मां नय सत्वरं ॥ सीतया सहितो यत्र सुप्तस्तद्दर्शयस्व मे ॥ त्वं रामस्य प्रियतमो भक्तिमानसि भाग्यवान ॥ इति सस्नेहसंहृष्ट्य रामं साश्रुविलोचनः ॥ गुहेन सहितस्तत्र यत्र रामः स्थितो निशि ॥ ययौ ददर्श शयनं कुशं जटासमास्तृतं ॥ सीताभरणसंलग्नं स्वर्णविंदुभिरंचितं ॥ दुःखसंतप्तहृदयो भरतः पर्यदेवयत ॥ अहो सुखकुमारी या सीता जनकनंदिनी ॥ प्रासादे रत्नपर्यंके कोमलास्तरणे शुभे ॥ रामेण सहिता शेते सा कथं कुशसंविष्टरे ॥ सीता रामेण सहिता दुःखेन मम दोषतः ॥ धिङ्मां जातोस्मि कैकेय्यां पा

पत्तापिसमन्वितः ॥ मत्त्रिमित्तमिदं कृतं रामस्य परमात्मनः ॥ अहोति सुकृतेन लक्ष्मणस्य महात्मनः ॥ राममेव सदान्वेति वनस्थमपि हृष्टधीः ॥ अहं रामस्य दासा ये तेषां दासस्य किंकरः ॥ यदि स्यां सफलं जन्म मम भूयान्न संशयः ॥ भ्रातर्जानासि यदि तत्कथयस्व ममाति ते ॥ यत्र निद्रितवान्रामो गुहेनाभ्यानेतुमेनसा ॥ उदस्ते गुरुहृदये ताम्यामग्रेहमब्रवीत ॥ देव त्वमेव धन्योसि यस्य ते भक्तिरीदृशी ॥ रात्रौ व यत्रासौ सीतया लक्ष्मणेन तथा ॥ चित्रकूटाद्रिनिकटे मंदाकिन्या विदूरत ॥ रामो लनामाश्रमपदे रामस्तिष्ठति सानुजः ॥ जानक्या सहितो नेदानीं सुखमास्ते किल प्रभुः ॥ मुनीन तत्र गच्छामहे शीघ्रं गंगामुत्तीर्य हार्दमि ॥ इत्युक्त्वा च विनेगत्वा नावः पंचशतानि स समानयत्सैन्यस्य तर्तुं गंगां महानदीं ॥ स्वयमेवानिनायैकां राजनावं गुहस्तदा ॥ आरोप्य भरतं तत्र शत्रुघ्नं रामसोदरं ॥ वसिष्ठं च तथान्याश्च कैकेय्याद्याश्च योषितः ॥ तीर्त्वा गंगां ययौ शीघ्रं भरद्वाजाश्रमं प्रति ॥ दूरे स्थाप्य महासैन्यं भरतः सानुजो ययौ ॥ आश्रमे मुनिमासीनं ज्वलंतमिव पावकं ॥ दृष्ट्वा ननाम भरतः साष्टांगमतिभक्तितः ॥ ज्ञात्वा दाशरथिं प्रीत्या पूजयामास मौनिराट ॥ पप्रच्छ कुशलं दृष्ट्वा जटावल्कलधारिणं ॥ राज्ये प्रशासति सत्यस्य किमिति त्वं वल्कलादिकं ॥ आगतोसि किमर्थं त्वं विपिने मुनिसेविते ॥ भरद्वाजवचः श्रुत्वा भरतः साश्रुलोचनः ॥ सर्वं जानासि भगवन्सर्वभूताशयस्थितः ॥ तथापि पृच्छसि किंचिदनुग्रहपदं मे ॥ कैकेय्या यत्कृतं कर्म रामराज्यविघातनं ॥ वनवासादिकं वापि न हि जानामि किंचन ॥ भवत्पादयुगे मेद्य प्रमाणं मुनिसत्तम ॥ इत्युक्त्वा पादयुगलं मुनेः स्पृष्ट्वार्तमानसः ॥ ज्ञातुमर्हसि मां देव शुद्धो वाशुद्ध एव वा ॥ मम राज्येन किं स्वामिन्रामे तिष्ठति राजनि ॥ किंकरोहं मुनिश्रेष्ठ रामचंद्रस्य शाश्वतः ॥ अतो गत्वा मुनिश्रेष्ठ रामस्य चरणांतिके ॥ पतित्वा राज्यसंभारान्समर्प्यात्रैव राघवं ॥ अभिषेक्ष्ये वसिष्ठाद्यैः पौरजानपदैः सह ॥ नेष्ये योध्यां रमानाथं दासः सेवेति नीचवत ॥ इत्युदीरितमाकर्ण्य भरतस्य वचो मुनिः ॥ आलिंग्य मूर्ध्न्यवघ्राय प्रशंसेष विस्मयः ॥ वत्स ज्ञातं पुरैवैतद्भविष्यं ज्ञानचक्षुषा ॥ मा शुच स्त्वं परो भक्तः श्रीरामे लक्ष्मणादपि ॥ आतिथ्यं कर्तुमिच्छामि ससैन्यस्य तवानघ ॥ अद्य भुक्त्वा ससैन्यस्त्वं श्वो गंता रामसन्निधिं ॥ यथाज्ञापयति भगवांस्तथेति भरतोऽब्रवीत ॥ भरद्वाजस्तपः स्पृष्ट्वा मौनी होमगृहे स्थितः ॥ दध्यौ कामदुघां कामवर्षिणीं कामदोग्धुनिः ॥ असृजत्कामधुक्सर्वं यथाकाममलौकिकं ॥ भरतस्य ससैन्यस्य यथेष्टं च मनोरथं ॥ वसिष्ठं पूजयित्वाग्रे शास्त्रदृष्टेन कर्मणा ॥ पश्चात्ससैन्यं भरतं तर्पयामास योगिराट ॥ उषित्वा दिनमेकं ते आश्रमे स्वर्गसन्निभे ॥ अभिवाद्य पुनः प्रातर्भरद्वाजं महामुनें ॥ भरतस्तु कृतानुज्ञः प्रययौ भरतः स्वयं ॥ शत्रुघ्नेन समं प्रेम्णा गुहेन च परंतपः ॥ तपस्विमंडलं सर्वं विचिन्वानोन्ववर्तत ॥ आपृच्छद्रामभवनमपश्यदृषिमंडले ॥ कुत्रास्ते सीतया सार्धं लक्ष्मणेन रघूत्तम ॥ ऊचुरग्रे गिरेः पश्चाद्गंगायाश्चोत्तरे तटे ॥ विविक्ताश्रमसदनं रम्यं काननमंडितं ॥ सफलैराम्रपनसैः कदलीखंडसंकुलैः ॥ चंपकैः कोविदारैश्च पुन्नागैर्बकुलैस्तथा ॥ एवं दर्शितमार्गोथ मुनिभिर्भरतोग्रतः ॥ ददर्शाश्रमो रघुश्रेष्ठभवनं मंडितं सम ॥ ददर्श दूरादतिभास्वरं शुभं रामस्य गेहं मुनिवृंदसेवितं ॥ वृक्षाग्रसंलग्नसुवल्कलाजिनं रामाभिरामं भरतः सहानुजः ॥ इति श्रीमदध्यात्मरामायणे अयोध्याकांडे अष्टमोध्यायः ॥ ८ ॥

श्रीमहादेव उवाच ॥ अथ गत्वाश्रमपदं समीपं भरतो मुदा ॥ सीतारामपदैर्युक्तं पवित्रमति शोभनं ॥ स तत्र वज्रांकुशवारिजांचितध्वजादिचिह्नानि पदानि सर्वतः ॥ ददर्श रामस्य भुवोतिमंगलान्यचेष्टयत्पादरजःसु सानुजः ॥ अहो सुधन्योहमिमानि

अ॰ रा॰
४

प्रपादारभ्यतो कितनभूतलानि ॥ प्रणम्यापि च सादरं ज्ञो विमत्यां प्रस्तादिदेवैः क्षिति
भिक्षु नित्यं ॥ हत्य कृतप्रेमवसामुना प्रायो विमृह चैता रघुनाथभावनः ॥ आनंदजास्र
स्रपितस्तनांतरं पुनरेव प्राप्नुमसन्निधिं हृदे ॥ मनस्यदृष्टा रघुनाथमाश्रितं दूर्वादलश्या
मलमायतेक्षणं ॥ जटाकिरीटं नववल्कलांबरं प्रसन्नवक्त्रं तरुणारुणद्युतिं ॥ विनोद
यंतं जनकात्मजां तदा सौमित्रिणा सेवितपादपंकजं ॥ तदाभिदुद्राव रघूत्तमो मुदा द
र्षाद्भुतः पादयुगं तदा ग्रहीत ॥ रामस्तमाकृष्य सुदीर्घदोर्भ्यां कंठेयदि ख्यम्यसिषिं
च नेत्रजैः ॥ नेत्रैरथो कोपरि मन्यवैपद्भुतः पुनः पुनः संवियमवत्रैवि सुः ॥ अथ ता मा
तरः सर्वाः समाजग्मुस्त्वरान्विताः ॥ राघवं द्रष्टुकामास्ता वत्सं गौर्यथा जले ॥ रामः
रामः समातरं वीक्ष्य तूर्णमुत्थाय पादयोः ॥ ववंदे साश्रु सा उत्रमालिंग्यातीवदुःखिता
तरावप्रसूतत्याजनमीरघुनंदनः ॥ ततः समागतं दृष्ट्वा वसिष्ठं मुनिपुंगव ॥ साष्टां
गं प्रणिपत्याह धन्योस्मीति पुनः पुनः ॥ यथार्हमुपवेश्याह सर्वानेव रघूद्वह ॥ पि
ता मे कुशली किं वा मां किमाहाति दुःखितः ॥ वसिष्ठस्तमुवाचेदं पिता ते रघुनंदन ॥
त्वद्वियोगाभितप्तात्मा त्वामेव परिचिंतयन ॥ राम रामेति सीतेति लक्ष्मणेति ममार
ह ॥ श्रुत्वा तत्कर्णशूलाभं गुरोर्वचनमंजसा ॥ हाहतोस्मि पतितोरुदन रामः सलक्ष्मणः
ततो रुरुदुः सर्वा मातरश्च तथापरे ॥ हा तात मां परित्यज्य क्व गतोसि घृणाकरः ॥ अना
थोस्मि महाबाहो मां को वा लालयेदितः ॥ सीता च लक्ष्मणः शोकेविलेपतुरथो भृशं ॥ व
सिष्ठः शांतवचनैः शमयामास तांछुचं ॥ ततो मंदाकिनीं गत्वा स्नात्वा ते वीतकल्मषाः ॥
राजेदुर्जलं तत्र सर्वे ते जलकांक्षिणे ॥ पिंडं निर्वापयामास रामो लक्ष्मणसंयुतः ॥
इंगुदीफलपिण्याकरचितान्मधुसंप्लुतान ॥ वयं यदन्नाः पितरस्तदन्नाः स्मृतिनोदिताः
इति दुःखाश्रुपूर्णाक्षाः पुनः स्नात्वा गृहं ययौ ॥ सर्वे रुदित्वा रुचिरं स्नात्वा जग्मुस्तदाश्र
मं ॥ तस्मिन्दिने सर्वे उपवासं प्रचक्रिरे ॥ ततः परेद्युर्विमले स्नात्वा मंदाकिनीज
ले ॥ उपविष्टं समागम्य भरतो राममब्रवीत ॥ राम राम महाभाग स्वात्मानमभिषेचय
राज्यं पालय पित्र्यं ते ज्येष्ठस्त्वं मे पिता तथा ॥ क्षत्रियाणामयं धर्मो यत्प्रजापरिपालनं
इष्ट्वा यज्ञैर्बहुविधैः पुत्रानुत्पाद्य तंतव ॥ राज्ये पुत्रं समारोप्य गमिष्यसि ततो वने ॥
इदानीं वनवासस्य कालो नैव प्रसीद मे ॥ मातुर्मे दुष्कृतं किंचित्स्मर्तुं नार्हसि पाहि नः ॥
इत्युक्त्वा चरणौ भ्रातुः शिरस्याधाय भक्तितः ॥ रामस्य पुरतः साक्षाद्दंडवत्पतितो भुवि ॥
उत्थाप्य राघवः शीघ्रमारोप्यांके तिभक्तितः ॥ उवाच भरतं रामः स्नेहार्द्रनयनः शनैः
शृणु वत्स प्रवक्ष्यामि त्वयोक्तं यत्तथैव तत ॥ किंतु मामब्रवीत्तातो नव वर्षाणि पंच च ॥
उषित्वा दंडकारण्ये पुरं पश्चात्समाविश ॥ इदानीं भरतायेदं राज्यं दत्तं मयाखिलं ॥
ततः पित्रैव सुव्यक्तं राज्यं दत्तं तवैव हि ॥ दंडकारण्यराज्यं मे दत्तं पित्रा तथैव च ॥ अतः
पितुर्वचः कार्यमावाभ्यामतियत्नतः ॥ पितुर्वचनमुल्लंघ्य स्वतंत्रो यस्तु वर्तते ॥ सजीव
न्नेव मृतको देहांते निरयं व्रजेत ॥ तस्माद्राज्यं प्रशाधि त्वं वयं दंडकपालकाः ॥ भरतस्त्व
ब्रवीद्रामं कामुको मूढधीः पिता ॥ स्त्रीजितो भ्रांतहृदय उन्मत्तो यदि वक्ष्यति ॥ तत्सत्यमि
ति न ग्राह्यं भ्रांतवाक्यं यथा सुधीः ॥ रा॰ उ॰ च ॥ न स्त्रीजितः पिता ब्रूयान्न कामी नैव मू
ढधीः ॥ पूर्वं प्रतिश्रुतं तस्य सत्यवादी ददौ भयात ॥ असत्याद्भीतिरधिका महतां नरकाद
पि ॥ करोमीत्यहमप्येतत्सत्यं तस्य प्रतिश्रुते ॥ कथं वाक्यमहं कुर्यामसत्यं राघवोदि
तम ॥ इत्युदीरितमाकर्ण्य रामस्य भरतोब्रवीत ॥ तथैव चीरवसनो वने वत्स्यामि सुव्रत
चतुर्दश समास्त्वं तु राज्यं कुरु यथासुखं ॥ रा॰ उ॰ च ॥ पित्रा दत्तं तवैवैतद्राज्यं मह्यं
वनं ददौ ॥ व्यत्ययं यद्यहं कुर्यामसत्यं पूर्ववत्स्थितं ॥ भ॰ उ॰ वा ॥ अहमप्यागमिष्या
मि सेवां कुर्वां लक्ष्मणो यथा ॥ नो चेत्प्रायोपवेशेन त्यजाम्येतत्कलेवरं ॥ इत्येवं नि

श्चयं कृत्वा दर्भानास्तीर्य चातपे ॥ मनसापि विनिश्चित्य प्राङ्मुखोपविवेश सः ॥
भरतस्यातिनिर्बंधं दृष्ट्वा रामोतिविस्मितः ॥ नेत्रांतसंज्ञां गुरवे चकार रघुनंदनः ॥ एका
ते भरतं प्राह वसिष्ठो ज्ञानिनां वरः ॥ वत्स गुह्यं शृणुष्वेदं मम वाक्यान्निश्चितं ॥ रामो
नारायणः साक्षाद्ब्रह्मणा याचितः पुरा ॥ रावणस्य वधार्थाय जातो दशरथात्मजः ॥
योगमायापि सीतेति जाता जनकनंदिनी ॥ शेषोपि लक्ष्मणो जातो राममन्वेति सर्वदा
रावणं हंतुकामास्ते गमिष्यंति न संशयः ॥ कैकेय्या वरदानादि यद्यन्निष्ठुरभाषणं
सर्वं देवकृतं नोचेदेवं सा भाषयेत्कथं ॥ तस्मात्यजाग्रहं तात रामस्य विनिवर्तने ॥ नि
वर्तस्व महासैन्यो मातृभिः सहितः पुरं ॥ रावणं सकुलं हत्वा शीघ्रमेवागमिष्यति
इति श्रुत्वा गुरोर्वाक्यं भरतो विस्मयान्वितः ॥ गत्वा समीपं रामस्य विस्मयोत्फुल्ललो
चनः ॥ पादुके देहि राजेंद्र राज्याय तव शासने ॥ तयोः सेवां करोम्येव यावदागमनं
तव ॥ इत्युक्त्वा पादुके दिव्ये योजयामास पादयोः ॥ रामस्य ते ददौ रामो भरतायाति
भक्तितः ॥ गृहीत्वा पादुके दिव्ये भरतो रत्नभूषिते ॥ रामं पुनः परिक्रम्य प्रणनाम
पुनः पुनः ॥ भरतः पुनराहेदं भक्त्या गद्गदया गिरा ॥ नवपंचसमान्तेते प्रथमे दिवसे य
दि ॥ नागमिष्यसि चेद्राम प्रविशामि महानलं ॥ बाढमित्येव तं रामो भरतं सम्यवर्त
यत ॥ ससैन्यश्च वसिष्ठश्च शत्रुघ्नसहितः सुधीः ॥ मातृभिर्मंत्रिभिः सार्धं गमनायो
पचक्रमे ॥ कैकेयी राममेकांते सस्रवन्नेत्रतांजला ॥ प्रांजलिः प्राह हे राम तव राज्य
विघातनं ॥ कृतं मया दुष्टधिया मायामोहितचेतसा ॥ क्षमस्व मम दौरात्म्यं क्षमासा
रा हि साधवः ॥ त्वं साक्षाद्विष्णुरव्यक्तः परमात्मा सनातनः ॥ मायामानुषरूपेण
मोहयस्यखिलं जगत ॥ त्वयैव प्रेरितो लोकः कुरुते साध्वसाधु वा ॥ त्वदधीनमिदं
विश्वमस्वतंत्रः करोति किं ॥ यथा कृत्रिमनर्तक्यो नृत्यंति कुहकेच्छया ॥ त्वदधीना
तथा माया नर्तकी बहुरूपिणी ॥ त्वयैव प्रेरिताहं च देवकार्यं करिष्यता ॥ पापि
ष्ठा पापमनसा कर्माचरमरिंदम ॥ अद्य प्रतीतोसि मम देवानामप्यगोचरः ॥ पाहि
विश्वेश्वरानंत जगन्नाथ नमोस्तु ते ॥ छिंधि स्नेहमयं पाशं पुत्रवित्तादिगोचरं ॥ त्वज्ज्ञा
नामलखड्गेन त्वामहं शरणं गता ॥ कैकेय्यावचनं श्रुत्वा रामः सस्मितमब्रवीत ॥ य
दाह मां महाभागे नानृतं सत्यमेव तत ॥ मयैव प्रेरिता वाणी तव वक्त्राद्विनिर्ग
ता ॥ देवकार्यार्थसिद्ध्यर्थमत्र दोषः कुतस्तव ॥ गच्छ त्वं हृदि मां नित्यं भावयंती दि
वानिशं ॥ सर्वत्र विगतस्नेहा मद्भक्त्या मोक्ष्यसेचिरात ॥ अहं सर्वत्र समदृग्द्वेष्यो वा
प्रियएव वा ॥ नास्ति मे कल्पकस्येव भजतोनुभजाम्यहं ॥ मन्मायामोहितधियो मा
मेव मनुजाकृतिं ॥ सुखदुःखाद्यनुगतं जानंति न तु तत्वतः ॥ दिष्ट्या मद्गोचरं
ज्ञानं उत्पन्नं ते भवापहं ॥ स्मरंती तिष्ठ भवने लिप्यसे न च कर्मभिः ॥ इत्युक्त्वा सा प
रिक्रम्य रामं सानंदविस्मया ॥ प्रणम्य शतशो भूमौ ययौ गेहं मुदान्विता ॥ भरत
स्तु महासैन्यैर्मातृभिर्गुरुणा सह ॥ अयोध्यामगमत्तूर्णं राममेवानुचिंतयन ॥
पौरजानपदान्सर्वानयोध्यायां मुदारधीः ॥ स्थापयित्वा यथान्यायं नंदिग्रामं य
यौ स्वयं ॥ तत्र सिंहासने नित्यं पादुके स्थाप्य भक्तितः ॥ पूजयित्वा यथारामं गंधपु
ष्पाक्षतादिभिः ॥ राजोपचारैरखिलैः प्रत्यहं नियतव्रत ॥ फलमूलाशनो दांतो ज
टावल्कलधारकः ॥ अधःशायी ब्रह्मचारी शत्रुघ्नसहितस्तदा ॥ राज्यकार्याणि सर्वा
णि यावंति पृथिवीतले ॥ तानि पादुकयोः सम्यङ्निवेदयति राघवः ॥ गणयन्दि
वसानेव रामागमनकांक्षया ॥ स्थितो रामार्पितमनाः साक्षाद्ब्रह्म निरीषणा ॥ रामो
पि चित्रकूटे च वसन्मुनिभिरावृतः ॥ सीतया लक्ष्मणेनापि किंचित्कालमुपावसत ॥
नागरास्तु समायांति रामदर्शनलालसाः ॥ चित्रकूटे स्थितं ज्ञात्वा सीतया लक्ष्मणेन

अ॰ रा॰
७५

दृष्ट्वा तत्र नमस्कार्यं रामलक्ष्मणानतिरिं ॥ दंडकारण्यगमने कार्यमप्यनुचिंतयन् ॥ अ
न्वगात्सीतया भ्रात्रा ह्यत्रेराश्रममुत्तमं ॥ सर्वज्ञमखिलसंज्ञासंजनसंगापवर्जितं ॥ ज्ञात्वा
मुनिं सुखासीनं भास्वंतं तेजसोपमं ॥ दंडवत्प्रणिपत्याह रामोऽहमभिवादये ॥ पितुरा
ज्ञां पुरस्कृत्य दंडकानहमागतः ॥ वनवासमिषेणापि धन्योऽहं दर्शनात्तव ॥ श्रुत्वा रा
मस्य वचनं रामं ज्ञात्वा हरिं परं ॥ पूजयामास विधिवद्भक्त्या परमया मुनिः ॥ वन्यैः फलैः
कृतातिथ्यमुपविष्टं रघूत्तमं ॥ सीतां च लक्ष्मणं चैव संतोषो वाक्यमब्रवीत् ॥ भार्या मे
लीवसंहृष्टा ह्यनसूयेति विश्रुता ॥ तपश्चरंती सुचिरं धर्मज्ञा धर्मवत्सला ॥ अंतर्गृह
स्थितां सीता पश्यत्विति निहसन् ॥ तथेति जानकीं प्राह रामो राजीवलोचनः ॥ गत्वा देवी
नमस्कृत्य शीघ्रमेहि पुनः शुभे ॥ तथेति रामवचनं सीता चापि तथाकरोत् ॥ दंडवत्प
तितामग्रे सीतां दृष्ट्वा प्रहृष्टधीः ॥ अनसूया समालिंग्य वत्से सीतेति सस्नेहं ॥ दिव्ये दे
कुंडले निर्मिते विश्वकर्मणा ॥ दुकूले द्वे ददौ तस्यै निर्मले भक्तिसंयुता ॥ अंगरागं
च सीतायै ददौ दिव्यं शुभानना ॥ न त्यजत्यंगरागेण शोभा त्वां वामसानने ॥ पाति
व्रत्येन रक्षत्व रामं त्वं हि जानकि ॥ अनसूयाब्रवीद्यातु त्वया सह कुतः गृहं ॥ भो
जयित्वा यथान्यायं रामं सीतासमन्वितं ॥ लक्ष्मणं च तदा रामं पुनः प्राह कृतांजलिः
राम त्वमेव भुवनानि विधाय तेषां संरक्षणाय सुरमानुषतिर्यगादीन् ॥ देहान्बि
भर्षि न च देहगुणैर्विलिप्तस्त्वत्तो बिभेत्यखिलमोहकरी च माया ॥ इति श्रीमदध्या
त्मरामायणे उमामहेश्वरसंवादे अयोध्याकांडे नवमोऽध्यायः ॥९॥ ॥ ॥
॥ ॥ ॥ ॥ समाप्तोयमयोध्याकांडः ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

ओम् ॥ अथ तत्र दिनं स्थित्वा प्रभाते रघुनंदनः ॥ स्नात्वा मुनिं समामंत्र्य प्रस्थानायोप
चक्रमे ॥ मुने गच्छामहे सर्वे मुनिमंडलमंडिते ॥ विपिने दंडके यत्र त्वमाज्ञातुमिहार्हसि
मार्गप्रदर्शनार्थाय शिष्यानाज्ञप्तुमर्हसि ॥ श्रुत्वा रामस्य वचनं सहस्यात्रिर्महायशाः
सर्वस्य मार्गद्रष्टा त्वं तव को मार्गदर्शकः ॥ तथापि दर्शयिष्यंति तव लोकानुसारिणः
इति शिष्यान्समादिश्य स्वयं किंचिदनुव्रजन् ॥ रामेण वारितः प्रीत्या अत्रिः स्वभ
वनं ययौ ॥ क्रोशमात्रं ततो गत्वा ददर्श महतीं नदीं ॥ अत्रेः शिष्याननुवाचेदं रामो
राजीवलोचनः ॥ नद्याः संतरणे कश्चिदुपायो विद्यते न वा ॥ ऊचुस्ते विद्यते नौका सुदृढा
रघुनंदन ॥ तारयिष्यामहे युष्मान्वयमेव क्षणादिह ॥ ततो नावं समारोप्य सीतां रा
घवलक्ष्मणौ ॥ तारयामासुरव्यग्रा नदीं मुनिकुमारकाः ॥ रामाभिनंदिताः सर्वे ज
ग्मुरत्रेर्यथाश्रमं ॥ तावपि विपिनं घोरं झिल्लीझंकारनादितं ॥ नानामृगगणाकीर्
णं सिंहव्याघ्रादिभीषणं ॥ राक्षसैर्घोररूपैश्च सेवितं रोमहर्षणं ॥ प्रविश्य विपि
नं घोरं रामो लक्ष्मणमब्रवीत् ॥ इतः परं प्रयत्नेन गंतव्यं सहितेन मे ॥ धनुर्गुणेन संयो
ज्य शरानपि करे दधत् ॥ अग्रे याहि अहं पश्चात्त्वमन्वेहि धनुर्धरः ॥ आवयोर्मध्यगा
सीता मायेवात्मपरात्मनोः ॥ चक्षुश्चारय सर्वत्र दृष्टं रक्षोभयं महत् ॥ विद्यते दंडकार
ण्ये कुत एवमरिंदम ॥ इत्येवं भाषमाणौ तौ जग्मतुः सार्धयोजनं ॥ तत्रैकां पुष्करि
णीं सितां कल्हारकुमुदोत्पलैः ॥ अंबुजैः शोभितां तोयैः शोभमानामदृश्यत ॥ तत्स
मीपमथो गत्वा पीत्वा तत्सलिलं शिवं ॥ ऊषुस्ते सलिलाभ्याशे छायामाश्रित्य पादपि
तः ॥ ततो ददृशुरायांतं महासत्त्वं भयानकं ॥ करालदंष्ट्रवदनं भीषयंतं स्वगर्जितैः ॥
वामांसन्यस्तशूलाग्रग्रथितानेकमानुषं ॥ भक्षयंतं गजव्याघ्रमहिषं वनगोचरं ॥
व्याघ्रोशितं यतं दृष्ट्वा रामो लक्ष्मणमब्रवीत् ॥ पश्य भ्रातर्महाकायो राक्षसोऽयमुपाग
तः ॥ आयात्यभिमुखेनोऽस्मान्भीरूणां भयमावहन् ॥ सज्जीकृत्य धनुस्तिष्ठ मा भैर्जनक
नंदिनि ॥ इत्युक्त्वा बाणमादाय स्थितो रामश्चापभृत् ॥ सत्त्वं दृष्ट्वा रमानाथं लक्ष्मणं
जानकीं तदा ॥ अट्टहासं ततः कृत्वा भीषयन्निदमब्रवीत् ॥ कौ युवां बाणतूणीरज
टावल्कलधारिणौ ॥ मुनिवेषधरौ बालौ स्त्रीसहायौ सुदुर्मदौ ॥ सुंदरौ वनमेव कुम
विहरकवनोपमौ ॥ किमर्थमागतौ घोरं वनं व्यालनिषेवितं ॥ श्रुत्वा रक्षोवचो राम
स्स्मयमान उवाच तं ॥ अहं रामस्त्वयं भ्राता लक्ष्मणो मम सम्मतः ॥ एषा सीता मम प्रा
णेष्टा भार्या वयमागताः ॥ पितृवाक्यं पुरस्कृत्य शिक्षणार्थं भवादृशां ॥ श्रुत्वा तद्राम
वचनं महत्तासमथाकरोत् ॥ व्यादाय वक्त्रं बाहुभ्यां शूलमादाय सत्वरः ॥ मां न जाना
सि राम त्वं विराधं लोकविश्रुतं ॥ मद्भयान्मुनयः सर्वे त्यक्त्वा वनमितो गताः ॥ यदि
जीवितुमिच्छास्ति त्यक्त्वा सीतां निरायुधौ ॥ पलायतं न चेच्छीघ्रं भक्षयामि युवामहं
इत्युक्त्वा राक्षसः सीतामादातुमभिदुद्रुवे ॥ रामश्चिच्छेद तद्बाहू शरेण प्रहसन्निव
ततः क्रोधपरीतात्मा व्यादाय विकटं मुखं ॥ राममभ्यद्रवद्रामश्छिच्छेद परिधावतः
पदद्वयं विराधस्य तदद्भुतमिवाभवत् ॥ ततः सर्पश्वास्येन ग्रसितुं राममापतत्
ततोर्धचंद्राकारेण बाणेनास्य महच्छिरः ॥ चिच्छेद रुधिरौघेन पपात धरणीतले
ततः सीतां समालिंग्य प्रशशंस रघूत्तमं ॥ ततो दुंदुभयो नेदुर्दिवि देवगणेरिताः
ननृतुश्चाप्सरसो हृष्टा जगुर्गंधर्वकिंनराः ॥ विराधकायादतिसुंदराकृतिर्विभ्राज
मानो विमलांबरावृतः ॥ प्रतप्तचामीकरचारुभूषणो व्यदृश्यताग्रे गगने रविर्य
था ॥ प्रणम्य रामं प्रणतार्तिहारिणं भवप्रवाहोपरमं घृणाकरं ॥ प्रणम्य भूयः प्र
णनाम देहवत्स्वपचनसर्वालिंकृतं प्रसन्नधीः ॥ विराध उवाच ॥ श्रीराम राजीवदला
यताक्ष विद्याधरोहं विमलप्रकाशः ॥ दुर्वाससाकारणकोपमूर्तिना शप्तः पुरा सो

अ॰रा॰
१९

यतिभिश्चिंतितस्त्वया ॥ अतः परं त्वच्चरणारविंदयोः स्मृतिः सदा मेस्तु भवोपशांत
ये ॥ त्वन्नामसंकीर्तनमेव वाणी करोतु मे कर्णपुटं त्वदीयं ॥ कथामृतं पातु करद्व
यं ते पादारविंदार्चनमेव कुर्यात ॥ शिरश्च ते पादयुगप्रणामं करोतु नित्यं भवदीय
मेव ॥ नमस्तुभ्यं भगवते विशुद्धज्ञानमूर्तये ॥ आत्मारामाय रामाय सीतारामाय
वेधसे ॥ प्रपन्नं पाहि मां राम यास्यामि त्वदनुज्ञया ॥ देवलोकं रघुश्रेष्ठ माया मां मा वृ
णोतु ते ॥ इति विज्ञापितस्तेन प्रसन्नो रघुनंदनः ॥ ददौ वरं तदा प्रीतो विराधाय महामतिः
गच्छ विद्याधराशेषमायादोषगुणान्विताः ॥ मत्संदर्शनात्सद्यो मुक्तो ज्ञानवतां वरः
मद्भक्तिर्दुर्लभा लोके जाता चेन्मुक्तिदायतः ॥ अतस्त्वं भक्तिसंपन्नः परं याहि ममाक्ष
या ॥ रामेण [illegible] मुक्तिर्वदसानमेवं ॥ विद्याधरस्त्वं [illegible]
यं रामं [illegible] ॥ इति श्रीमदध्यात्मरामायणे उमामहेश्वरसंवादे अरण्यकांडे प्रथ
मोऽध्यायः ॥ १ ॥ ॥ ॥ श्रीमहादेव उवाच ॥
विराधे स्वर्गते रामो लक्ष्मणेन च सीतया ॥ जगाम शरभंगस्य वनं सर्वसुखावहं
शरभंगस्ततो दृष्ट्वा रामं सौमित्रिणा सह ॥ आयांतं सीतया सार्धं संभ्रमादुत्थितः सु
धीः ॥ अभिगम्य सुसंपूज्य विष्टरे समुपावेशयत ॥ आतिथ्यमकरोत्तेषां कंदमूलफला
दिभिः ॥ प्रत्याह शरभंगोपि रामं भक्तपरायणं ॥ बहुकालमिहैवासं तपसे कृतनि
श्चयः ॥ तव संदर्शनाकांक्षी राम त्वं परमेश्वरः ॥ अद्य मत्तपसा सिद्धं यत्पुण्यं बहु
विद्यते ॥ तत्सर्वं तव दास्यामि ततो मुक्तिं व्रजाम्यहं ॥ समर्प्य रामस्य महत्सुपुण्यफ
लं विरक्तः शरभंगयोगी ॥ चितिं समारोहयदप्रमेयं रामं ससीतं सहसा प्रणम्य
ध्यायेच्चिरं राममशेषहृत्स्थं दूर्वादलश्याममलंबुजाक्षं ॥ चीरांबरं स्निग्धजटाकला
पं सीतासहायं सहलक्ष्मणं तं ॥ कोदंडपाणिं स्मितकामधेनुं त्र्यो जगत्स्वामिरघुना
यकं हृदि ॥ स्मृतो मया नित्यमनन्यभाजा ज्ञात्वा स्मृतिं मे स्वयमेव यातः ॥ पश्यत्वि
दानीं देवेशो रामो दाशरथिः प्रभुः ॥ दग्ध्वा स्वदेहं गच्छामि ब्रह्मलोकमकल्मषः
अयोध्याधिपतिर्मेस्तु हृदये राघवः सदा ॥ यद्वामांके स्थिता सीता मेघस्येव तडि
ल्लता ॥ इति रामं चिरं ध्यात्वा दृष्ट्वा च पुरतः स्थितं ॥ प्रज्वाल्य सहसा वह्निं दग्ध्वा पंचा
त्मकं वपुः ॥ दिव्यदेहधरः साक्षाद्ययौ लोकाधिपतेः पदं ॥ ततो मुनिगणाः सर्वे दंडकार
ण्यवासिनः ॥ आजग्मू राघवं द्रष्टुं शरभंगनिवेशनं ॥ दृष्ट्वा मुनिसमूहं तं जानकीरा
मलक्ष्मणाः ॥ प्रणेमुः सहसा भूमौ मायामानुषरूपिणः ॥ आशीर्भिरभिनंद्याथ
रामं सर्वहृदिस्थितं ॥ ऊचुः प्रांजलयः सर्वे धनुर्बाणधरं हरिं ॥ भूमेर्भारावताराय
जातोसि ब्रह्मणार्थितः ॥ आनेमुस्त्वां हरिं लक्ष्मीं जानकीं लक्ष्मणेन तथा ॥ योसौ शे
षं च चक्रेण भरतं शत्रुघ्नेन तथा ॥ अतस्त्वां देव ऋषीणां त्वं दुःखमोक्तुमिहार्हसि
आगच्छ यामो मुनिसेवितानि वनानि सर्वाणि रघूत्तम क्रमात ॥ दृष्टुं मुनिश्रमान
जानकीभ्यां तदा स्यान्मानसूद्रं भविष्यति ॥ इति विज्ञापितो रामः कृतांजलिपुटै
र्विभुः ॥ ततो जगाम मुनिभिः सार्धं मुनिवनानि सः ॥ ददर्श तत्र पतितान्यनेकानि
शिरांसि सः ॥ अस्थिभूतानि सर्वत्र रामो वचनमब्रवीत ॥ अस्थीनि केषामेतानि
किमर्थं पतितानि वै ॥ तमूचुर्मुनयो राम ऋषीणां मस्तकानि हि ॥ राक्षसैर्भक्षिता
नीश प्रमत्तानां समाधितः ॥ अंतरायं मुनीनां ते पश्यंतोनुचरंति हि ॥ श्रुत्वा वाक्यं
मुनीनां स भयदैन्यसमन्वितं ॥ प्रतिज्ञामकरोद्रामो वधायाशेषरक्षसां ॥ पूज्यमा
नः सदा तत्र मुनिभिर्वनवासिभिः ॥ जानकीसहितो रामो लक्ष्मणेन समन्वितः ॥ उवा
स कतिचित्तत्र वर्षाणि रघुनंदनः ॥ एवं क्रमेण संपश्यन् ऋषीणामाश्रमान्विभुः ॥
सुतीक्ष्णस्याश्रमं प्रागात्प्रख्यातमपि संकुलं ॥ सर्वर्तुगुणसंपन्नं सर्वकालसु

खावहं ॥ राममागतमाकर्ण्य सुतीक्ष्णः स्वयमागतः ॥ अगस्त्यशिष्यो रामस्य
मंत्रोपासनतत्परः ॥ विधिवत्पूजयामास भक्त्युत्कंठितलोचनः ॥ सुतीक्ष्ण उवाच ॥
त्वन्मंत्रजाप्यहमनंतगुणाप्रमेय सीतापते शिवविरिंचिसमाश्रितांघ्रे ॥ संसा
रसिंधुतरणामलपोतपाद रामाभिराम सततं तव दासदासः ॥ मामद्य सर्वजगता
मविगोचरस्त्वं त्वन्मायया सुतकलत्रगृहांधकूपे ॥ मग्नं निरीक्ष्य मलपुद्गलपिंड
मोहपाशानुबद्धहृदयं स्वयमागतोसि ॥ त्वं सर्वभूतहृदयेषु कृतालयोपि त्वन्मं
त्रजाप्यविमुखेषु तनोषि मायां ॥ त्वन्मंत्रसाधनपरेष्वपयाति माया सेवानुरू
पफलदोसि यथा महीपः ॥ विश्वस्य सृष्टिलयसंस्थितिहेतुरेकस्त्वं मायया त्रिगु
णया विधिरीशविष्णुः ॥ भासीश मोहितधियां विविधाकृतिस्त्वं यद्वद्रविः सलिल
पात्रगतो ह्यनेकः ॥ प्रत्यक्षतोद्य भवतश्चरणारविंदं पश्यामि राम तमसः परतः स्थित
स्य ॥ दृग्रूपतस्त्वमसतामविगोचरोपि त्वन्मंत्रपूतहृदयेषु सदा प्रसन्नः ॥ पश्यामि राम
तव रूपमरूपिणोपि मायाविडंबनकृतं सुमनुष्यवेषं ॥ कंदर्पकोटिसुभगं कमनीयचा
पबाणं दयार्द्रहृदयं स्मितचारुवक्त्रं ॥ सीतासमेतमजिनांबरमप्रधृष्यं सौमित्रिणा नि
यतसेवितपादपद्मं ॥ नीलोत्पलद्युतिमनंतगुणं प्रशांतं मद्भागधेयमनिशं प्रणमा
मि रामं ॥ जानंतु राम तव रूपमशेषदेशकालाद्युपाधिरहितं घनचित्प्रकाशं ॥ प्रत्यक्ष
तोद्य मम गोचरमेतदेव रूपं विभातु हृदये न परं विकांक्षे ॥ इत्येवं स्तुवतस्तस्य रामः
सस्मितमब्रवीत ॥ मुने जानामि ते चित्तं निर्मलं मदुपासनात ॥ अतोहमागतो द्रष्टुम
दृते नान्यसाधनं ॥ मन्मंत्रोपासका लोके मामेव शरणं गताः ॥ निरपेक्षा नान्यगता
स्तेषां दृश्योहमन्वहं ॥ स्तोत्रमेतत्पठेद्यस्तु त्वत्कृतं मत्प्रियं सदा ॥ सद्भक्तिर्मे भवेत्तस्य
ज्ञानं च विमलं भवेत ॥ त्वं मन्मंत्रोपासनतो विमुक्तोसीह सर्वतः ॥ देहांते मम सायुज्यं
लप्स्यसे नात्र संशयः ॥ गुरुं ते द्रष्टुमिच्छामि ह्यगस्त्यं मुनिनायकं ॥ किंचित्कालं तत्र वस्तुं
मनो मे त्वरयत्यलं ॥ सुतीक्ष्णोपि तथेत्याह श्वो गमिष्यसि राघव ॥ अहमप्यागमिष्या
मि चिराद्दृष्टो महामुनिः ॥ अथ प्रभाते मुनिना समेतो रामः ससीतः सह लक्ष्मणेन ॥ अ
गस्त्यसंभाषणलोलमानसः शनैरगस्त्यानुजमंदिरं ययौ ॥ इति श्रीमदध्यात्मरामायणे
आरण्यकांडे द्वितीयोऽध्यायः ॥ २ ॥ ॥ श्रीमहादेव उवाच ॥
अथ रामः सुतीक्ष्णेन जानक्या लक्ष्मणेन च ॥ अगस्त्यस्यानुजस्थानं मध्याह्ने समपद्य
त ॥ तेन संपूजितः सम्यग्भुक्त्वा मूलफलादिकं ॥ परेद्युः प्रातरुत्थाय जग्मुस्तेगस्त्यमं
डलं ॥ सर्वर्तुफलपुष्पाढ्यं नानामृगगणैर्युतं ॥ पद्मसंघैश्च विविधैर्नादितं नंदनो
पमं ॥ ब्रह्मर्षिभिर्देवर्षिभिः सेवितं मुनिमंदिरैः ॥ सर्वतोलंकृतं साक्षाद्ब्रह्मलोकमि
वापरं ॥ बहिरेवाश्रमस्याथ स्थित्वा रामोब्रवीन्मुनिं ॥ सुतीक्ष्ण गच्छ त्वं शीघ्रमागतं मां
निवेदय ॥ आश्रमे त्वरया तत्र ऋषिपुंगवमाहृते ॥ उपविष्टं रामभक्तैर्विशेषैः समावृ
तं ॥ व्याख्यांतं राममंत्रार्थं शिष्येभ्यश्चातिभक्तितः ॥ दृष्ट्वागस्त्यं मुनिश्रेष्ठं सुतीक्ष्णः प्र
णयोन्मुनेः ॥ दंडवत्प्रणिपत्याह विनयावनतः सुधीः ॥ रामो दाशरथिर्ब्रह्मन्सीतया लक्ष्
मणेन च ॥ आगत्य द्वारि ॥ धीमान्मानय भद्रं ते रामं मम हृदि स्थितं ॥ तमेव ध्यायमा
नोहं कांक्षमाणोत्र संस्थितः ॥ इत्युक्त्वा स्वयमुत्थाय मुनिभिः सहितो द्रुतं ॥ अभ्यया
त्पुरतो भक्त्या गत्वा रामं समथाब्रवीत ॥ आगच्छ राम भद्रं ते दिष्ट्या तेद्य समागमः ॥ प्रि
यातिथिर्मम प्राप्तो ह्यद्य मे सफलं दिनं ॥ रामोपि मुनिमायांतं दृष्ट्वा हर्षसमाकुलः
सीतया लक्ष्मणेनापि दंडवत्पतितो भुवि ॥ द्रुतमुत्थाप्य मुनिराट् रामं आलिंग्य भक्ति
तः ॥ तद्गात्रस्पर्शजाह्लादस्रवन्नेत्रजलाकुलः ॥ गृहीत्वा करमेकेन करेण रघुनंदनं ॥ ज
गाम स्वाश्रमं हृष्टो मनसा मुनिपुंगवः ॥ सुखोपविष्टं संपूज्य पूजया बहुविस्तरं ॥ भो
जयित्वा यथान्यायं भोज्यैर्वन्यैरनेकधा ॥ सुखोपविष्टमेकांते रामं शशिनिभाननं

अ॰ रा॰
१७

कृतांजलिरुवाचेदमगस्त्यो भगवानृषिः ॥ तवागमनमेवाहं प्रतीक्षन्समवस्थितः ॥ य
दा क्षीरसमुद्रांते ब्रह्मणा प्रार्थितः पुरा ॥ भूमेर्भारापनुत्यर्थं रावणस्य वधाय च ॥ तदादि
दर्शनाकांक्षी तव राम तपश्चरन् ॥ वसामि मुनिभिः सार्धं त्वामेव परिचिंतयन् ॥ सृष्टेः प्रा
गेक एवासीन्निर्विकल्पोनुपाधिकः ॥ त्वदाश्रया त्वद्विषया माया ते शक्तिरुच्यते ॥ त्वमे
व निर्गुणं शक्तिमावृणोति यदा तदा ॥ अव्याकृतमिति प्राहुर्वेदांतपरिनिष्ठिताः ॥ मूलप्र
कृतिरित्येके प्राहुर्मायेति केचन ॥ अविद्या संसृतिर्बंध इत्यादि बहुधोच्यते ॥ त्वया संक्षो
भ्यमाणा सा महत्तत्त्वं प्रसूयते ॥ महत्तत्त्वादहंकारस्त्वया संचोदितादभूत् ॥ अहंकारो म
हत्तत्त्वसंवृतस्त्रिविधोभवत् ॥ सात्त्विको राजसश्चैव तामसश्चेति भण्यते ॥ तामसात्सू
क्ष्मतन्मात्राण्यासन्भूतान्यतः परं ॥ स्थूलानि क्रमशो राम क्रमोत्तरगुणानि ह ॥ राजसा
नींद्रियाण्येवं सात्त्विका देवता मनः ॥ तेभ्योभवत्सूत्ररूपं लिंगं सर्वगतं महत् ॥ ततो विरा
ट् समुत्पन्नः स्थूलाद्भूतकदंबकात् ॥ विराजः पुरुषात्सर्वं जगत्स्थावरजंगमं ॥ देवति
र्यङ्मनुष्याश्च कालकर्मक्रमेण तु ॥ त्वं रजोगुणतो ब्रह्मा जगतः सर्वकारणं ॥ सत्त्वाद्वि
ष्णुस्त्वमेवास्य पालकः सद्भिरुच्यते ॥ लये रुद्रस्त्वमेवास्य त्वन्मायागुणभेदतः ॥ जाग्रत्
स्वप्नसुषुप्त्याख्या वृत्तयो बुद्धिजैर्गुणैः ॥ तासां विलक्षणो राम त्वं साक्षी चिन्मयोव्ययः ॥ स
ष्टिलीलां यदा कर्तुमीहसे रघुनंदन ॥ अंगीकरोषि मायां त्वं तदा वै गुणवानिव ॥ राम माया
द्विधा भाति विद्याविद्येति ते सदा ॥ प्रवृत्तिमार्गनिरता अविद्यावशवर्तिनः ॥ निवृत्तिमार्ग
निरता वेदांतार्थविचारकाः ॥ त्वद्भक्तिनिरता ये च ते विद्यामयाः स्मृताः ॥ अविद्यावश
गा ये तु नित्यं संसारिणश्च ते ॥ विद्याभ्यासरता ये तु नित्यमुक्तास्त एव हि ॥ लोके त्वद्भक्ति
निरतास्त्वन्मंत्रोपासकाश्च ये ॥ विद्या प्रादुर्भवेत्तेषां नेतरेषां कथंचन ॥ अतस्त्वद्भक्तिसं
पन्ना मुक्ता एव न संशयः ॥ त्वद्भक्त्यमृतहीनानां मोक्षः स्वप्नेपि नो भवेत् ॥ किं राम बहु
नोक्तेन सारं किंचिद्ब्रवीमि ते ॥ साधुसंगतिरेवात्र मोक्षहेतुरुदाहृता ॥ साधवः समचि
त्ता ये निस्पृहा विगतैषिणः ॥ दांताः प्रशांतास्त्वद्भक्ता निवृत्ताखिलकामनाः ॥ इष्टप्राप्तिवि
पत्त्योश्च समाः संगविवर्जिताः ॥ संन्यस्ताखिलकर्माणः सर्वदा ब्रह्मतत्पराः ॥ यमादि
गुणसंपन्नाः संतुष्टा येन केनचित् ॥ सत्संगमो भवेद्यर्हि त्वत्कथाश्रवणे रतिः ॥ समुदेति
ततो भक्तिस्त्वयि राम सनातने ॥ त्वद्भक्तावुपपन्नायां विज्ञानं विपुलं स्फुटं ॥ उदेति मु
क्तिमार्गोयमाद्यश्चतुरसेवितः ॥ तस्माद्राघव मे भक्तिस्त्वयि मे प्रेमलक्षणा ॥ सदा भूया
द्धरे संगस्त्वद्भक्तेषु विशेषतः ॥ अद्य मे सफलं जन्म भवत्संदर्शनादभूत् ॥ अद्य मे क्रतवः स
र्वे बभूवुः सफलाः प्रभो ॥ दीर्घकालं मया तप्तमनन्यमतिना तपः ॥ तस्येह तपसो राम फलं
तव यदर्चनं ॥ सदा मे सीतया सार्धं हृदये वस राघव ॥ गच्छतस्तिष्ठतो वापि स्मृतिः स्यान्मे
सदा त्वयि ॥ इति स्तुत्वा रमानाथमगस्त्यो मुनिसत्तमः ॥ ददौ चापं महेंद्रेण रामार्थे स्था
पितं पुरा ॥ अक्षय्यौ बाणतूणीरौ खड्गं रत्नविभूषितं ॥ जहि राघव भूभारभूतं राक्षसमंड
लं ॥ यदर्थमवतीर्णोसि मायया मनुजाकृतिः ॥ इतो योजनयुग्मे तु पुण्यकाननमं
डितः ॥ अस्ति पंचवटी नाम्ना आश्रमो गौतमीतटे ॥ नेतव्यस्तत्र ते कालो शेषो रघुकुलोद्व
ह ॥ तत्रैव बहुकार्याणि देवानां कुरु सन्मते ॥ श्रुत्वा तदागस्त्यसुभाषितं वचः स्तुतश्च तेनाथ
समस्तविन्मयः ॥ मुनिं समाभाष्य मुदान्वितो ययौ प्रदर्शितं मार्गमथो विभुर्हरिः ॥ इति
श्रीमदध्यात्मरामायणे उमामहेश्वरसंवादे अरण्यकांडे तृतीयोध्यायः ॥ ॥ ३ ॥ ॥

॥ = ॥ श्रीमहादेव उवाच ॥ = ॥

मार्गे व्रजन्ददर्शाथ शैलशृंगमिव स्थितं ॥ वृद्धं जटायुषं राम किमेतदिति विस्मितः ॥ ध
नुरादाय सौमित्रे राक्षसोयं पुरः स्थितः ॥ इत्याह लक्ष्मणं रामो हनिष्याम्यृषिभक्षकं ॥ त
च्छ्रुत्वा रामवचनं गृध्रराड्भयपीडितः ॥ वधार्होहं न ते राम पितुस्तेहं प्रियः सखा ॥ जटायु
र्नाम भद्रं ते गृध्रोहं प्रियकृत्तव ॥ पंचवट्यामहं वत्स्ये तवैव प्रियकाम्यया ॥ मृगयायां

कदाचिन्मृगयाते लक्ष्मणेपि च ॥ सीता जनककन्या मे रक्षितव्या प्रयत्नतः ॥ श्रुत्वा तद्र
घुनेरामः सस्नेहमब्रवीत् ॥ साधु गृध्र महाभाग तथैव कुरु मे प्रियं ॥ अत्रैव मे समीपस्थो नाति
दूरे वने वसन् ॥ इत्यामंत्रितमालिंग्य ययौ पंचवटीं प्रभुः ॥ लक्ष्मणेन सह भ्रात्रा सीतया रघु
नंदनः ॥ गत्वा ते गौतमीतीरं पंचवट्यां सविस्तरं ॥ मंदिरं कारयामास लक्ष्मणेन सुबुद्धिना
तत्र तेन्यवसन्सौख्यं गंगाया उत्तरे तटे ॥ कदंबपनसाम्रादिफलपुष्पसमाकुले ॥ विविक्ते जन
संवादवर्जिते निरुजस्थले ॥ विनोदयञ्जनकजां लक्ष्मणेन विपश्चिता ॥ अध्युवास
सुखं रामो देवलोक इवापरे ॥ कंदमूलफलादीनि लक्ष्मणोनुदिनं तयोः ॥ आनीय प्रददौ
रामसेवातत्परमानसः ॥ धनुर्बाणधरो नित्यं रात्रौ जागर्ति सर्वतः ॥ स्नानं कुर्वन्ननुदिनं त्र
यस्ते गौतमीजले ॥ उभयोर्मध्यगा सीता कुरुते गमनागमौ ॥ आनीय सलिलं नित्यं लक्ष्म
णः प्रीतमानसः ॥ सेवते रघुवरं प्रीत्या एवमासन्सुखं त्रयः ॥ एकदा लक्ष्मणो राममेकांते
समुपस्थिते ॥ विनयावनतो भूत्वा पप्रच्छ परमेश्वरं ॥ भगवन्श्रोतुमिच्छामि मोक्षस्यै
कांतिकीं गतिं ॥ त्वत्तः कमलपत्राक्ष संक्षेपाद्वक्तुमर्हसि ॥ ज्ञानं विज्ञानसहितं भक्तिवै
राग्यबृंहितं ॥ आचक्ष्व मे रघुश्रेष्ठ वक्ता नान्योस्ति भूतले ॥ श्रीराम उवाच ॥ शृणु वक्ष्यामि ते व
त्स गुह्याद्गुह्यतरं परं ॥ यद्विज्ञानान्नरो जह्यात्सद्यो वैकल्पिकं भ्रमं ॥ आदौ मायास्वरूपं ते
वक्ष्यामि तदनंतरं ॥ ज्ञानस्य साधनं पश्चाज्ज्ञानं विज्ञानसंयुतं ॥ ज्ञेयं च परमात्मानं
यज्ज्ञात्वा मुच्यते भयात् ॥ अनात्मनि शरीरादावात्मबुद्धिस्तु या भवेत् ॥ सैव माया
तयैवासौ संसारः परिकल्प्यते ॥ रूपे द्वे निश्चिते पूर्वं मायायाः कुलनंदन ॥ विक्षेपावर
णे तत्र प्रथमं कल्पयेज्जगत् ॥ लिंगाद्यब्रह्मपर्यंतं स्थूलसूक्ष्मविभेदतः ॥ अपरं त्व
खिलं ज्ञानरूपमावृत्य तिष्ठति ॥ मायया कल्पितं विश्वं परमात्मनि केवले ॥ रज्जौ भु
जंगवद्भ्रांत्या विचारे नास्ति किंचन ॥ श्रूयते दृश्यते यद्यत्स्मर्यते वा नरैः सदा ॥ असदे
व हि तत्सर्वं यथा स्वप्नमनोरथौ ॥ देह एव हि संसारवृक्षमूलं दृढं स्मृतं ॥ तन्मूलः पुत्र
दारादिबंधः किं तेन्यथात्मनः ॥ देहस्तु स्थूलभूतानां पंचतन्मात्रपंचकं ॥ अहंकारश्च
बुद्धिश्च इंद्रियाणि तथा दश ॥ चिदाभासो मनश्चैव मूलप्रकृतिरेव च ॥ एतत्क्षेत्रमिति
ज्ञेयं देह इत्यभिधीयते ॥ एतैर्विलक्षणो जीवः परमात्मा निरामयः ॥ तस्य जीवस्य विज्ञा
नसाधनान्यपि मे शृणु ॥ जीवश्च परमात्मा च पर्यायो नात्र भेदधीः ॥ मानाभावस्तथा दंभ
हिंसादिपरिवर्जनं ॥ पराक्षेपादिसहनं सर्वत्रावक्रता तथा ॥ मनोवाक्कायसद्भक्त्या स
द्गुरोः परिसेवनं ॥ बाह्याभ्यंतरसंशुद्धिः स्थिरता सत्क्रियादिषु ॥ मनोवाक्कायदंडश्च विष
येषु निरीहता ॥ निरहंकारता जन्मजराद्यालोचनं तथा ॥ असक्तिः स्नेहशून्यत्वं पुत्र
दारधनादिषु ॥ इष्टानिष्टागमे नित्यं चित्तस्य समता तथा ॥ मयि सर्वात्मके रामे ह्यन
न्यविषया मतिः ॥ जनसंबाधरहिते शुद्धदेशनिषेवणं ॥ प्राकृतैर्जनसंघैश्च ह्यरतिः स
र्वदा भवेत् ॥ आत्मज्ञाने सदोद्योगो वेदांतार्थावलोकनं ॥ उक्तैरेतैर्भवेज्ज्ञानं विपरीतैर्वि
पर्ययं ॥ बुद्धिप्राणमनोदेहाहंकृतिभ्यो विलक्षणः ॥ चिदात्माहं नित्यशुद्धो बुद्ध एवेति
निश्चयं ॥ येन ज्ञानेन संवित्ते तज्ज्ञानं निश्चितं च मे ॥ विज्ञानं च तदैवैतत्साक्षादनुभवे
द्यदा ॥ आत्मा सर्वत्र पूर्णः स्याच्चिदानंदात्मकोव्ययः ॥ बुद्ध्याद्युपाधिरहितः परिणा
मादिवर्जितः ॥ स्वप्रकाशेन देहादीन्भासयन्ननपावृतः ॥ एक एवाद्वितीयश्च सत्यज्ञा
नादिलक्षणः ॥ असंगः स्वप्रभो द्रष्टा विज्ञानेनावगम्यते ॥ आचार्यशास्त्रोपदेशादै
क्यज्ञानं यदा भवेत् ॥ आत्मनो जीवपरयोर्मूलाविद्या तदैव हि ॥ लीयते कार्यकरणैः
सहैव परमात्मनि ॥ सावस्था मुक्तिरित्युक्ता ह्युपचारोयमात्मनि ॥ इदं मोक्षस्वरूपं
ते कथितं रघुनंदन ॥ ज्ञानं विज्ञानवैराग्यसहितं मे परात्मनः ॥ किंत्वेतद्दुर्लभं मन्ये
मद्भक्तिविमुखात्मनां ॥ चक्षुष्मतामपि यथा रात्रौ सम्यङ्न दृश्यते ॥ पदं दीपसमे

अ॰रा॰
१८

18

तानांहृदयेसम्यगोवदि ॥ एवंमद्भक्तियुक्तानामात्मासम्यक्प्रकाशते ॥ मद्भक्तेःकारणं
किंचिदस्तामिथ्याब्रह्मलक्ष्मणः ॥ मद्भक्तसंगमेसेवामद्भक्तानांनिरंतरं ॥ एकादश्युपवासा
दिममपर्वानुमोदनं ॥ मत्कथाश्रवणेपाठेव्याख्यानेसर्वदारतिः ॥ मत्पूजापरिनिष्ठा च
ममनामानुकीर्तनं ॥ एवंसततयुक्तानांभक्तिरव्यभिचारिणी ॥ मयिसंजायतेनित्यंत
तःकिमवशिष्यते ॥ अतोमद्भक्तियुक्तस्यज्ञानंविज्ञानमेव च ॥ वैराग्यंचभवेच्छीघ्रं
ततोमुक्तिमवाप्नुयात् ॥ कथितंसर्वमेतत्तेतवप्रश्नानुसारतः ॥ अस्मिन्मनःसमाधा
ययुक्तिहेतुस्तलमुक्तिभाक् ॥ नवक्तव्यमिदंयत्नान्मद्भक्तिविमुखायहि ॥ मद्भक्तायप्रदा
तव्यमाहूयापिप्रयत्नतः ॥ यइदंनपठेन्नित्यंश्रद्धाभक्तिसमन्वितः ॥ अज्ञानपटलध्वांत
विधूयपरिशुध्यते ॥ भक्तानांममयोगिनांसुविमलस्वांतातिशांतात्मनां ॥ मत्सेवाभि
रतात्मनांचविमलज्ञानात्मनांसर्वदा ॥ संगंयःकुरुतेसदोदितमतिःसत्सेवनानन्यधी
मौंतत्समकरेस्थितोहमनिशंदृश्योभवेन्नान्यथा ॥ इतिश्रीमदध्यात्मरामायणेआर
ण्यकांडेचतुर्थःसर्गः ॥ ४ ॥ ॥ श्रीमहादेवउवाच ॥
तस्मिन्कालेमहारण्येराक्षसीकामरूपिणी ॥ विचचारमहासत्त्वाजनस्थाननिवासि
नी ॥ एकदागौतमीतीरेपंचवट्यांसमीपतः ॥ पद्मवज्रांकुशांकानिपदानिजगतीपतेः
दृष्ट्वाकामपरीतात्मापादसौंदर्यमोहिता ॥ पश्यंतीसाशनैरायाद्राघवस्यनिवेशने ॥
तत्रापश्यद्रमानाथंसीतयासहसंस्थितं ॥ कंदर्पसदृशंरामंदृष्ट्वाकामविमोहिता ॥ राक्ष
सीराघवंप्राहकस्यत्वंकःकिमाश्रमे ॥ युक्तोजटावल्कलाद्यैःसाध्यंकिंतेवदमेवद ॥ अ
हंशूर्पणखानामराक्षसीकामरूपिणी ॥ भगिनीराक्षसेंद्रस्यरावणस्यमहात्मनः ॥
खरेणसहितासात्राभ्रात्रावसाम्यत्रैवकानने ॥ राज्ञादत्तंचमेसर्वंमुनिभक्ष्यावसाम्यहं ॥ त्वां
तुवेदितुमिच्छामिवदमेवदतांवर ॥ तामाहरामनामाहमयोध्याधिपतेःसुतः ॥ एषामे
सुंदरीभार्यासीताजनकनंदिनी ॥ सचभ्राताकनीयान्मेलक्ष्मणोऽतीवसुंदरः ॥ किंते
ऽत्रमयासाध्यंकार्यंभुवनसुंदरि ॥ इतिरामवचःश्रुत्वाकामार्तासाब्रवीदिदं ॥ एहिरा
ममयासार्धंरमस्वगिरिकानने ॥ कामार्ताहंनशक्नोमित्यक्तुंत्वांकमलेक्षणं ॥ रामः
सीतांकटाक्षेणपश्यन्सस्मितमब्रवीत् ॥ भार्यामेमेवाकल्याणीविद्यतेह्यनपायिनी
त्वंतुसापत्न्यदुःखेनकथंस्थास्यसिसुंदरि ॥ बहिरास्तेममभ्रातालक्ष्मणोऽतीवसुंदरः ॥
तवानुरूपोभवितापतिस्तेनैवसुंदरः ॥ इत्युक्तालक्ष्मणंप्राहपतिर्मेभवसुंदर ॥ भ्रातुरा
ज्ञांपुरस्कृत्यसंगच्छावोऽद्यमाचिरं ॥ इत्याहराक्षसीघोरालक्ष्मणंकाममोहिता ॥ तामा
हलक्ष्मणःसाध्वि दासोऽहंतस्यधीमतः ॥ दासीभविष्यसित्वंतुततोदुःखतरंनुकिं ॥ तमे
वगच्छभद्रंतेसतुराजाखिलेश्वरः ॥ तच्छ्रुत्वापुनरप्यागाद्राघवंदुष्टमानसा ॥ क्रोधाद्रा
मकिमर्थंमांभ्रामयस्यनवस्थितः ॥ इदानीमेवतांसीतांभक्षयामितवाग्रतः ॥ इत्युक्त्वा
विकरालास्याजानकीमनुधावती ॥ ततोरामाज्ञयाखड्गमादायपरिगृह्यतां ॥ चिच्छेद
कर्णौनासांचलक्ष्मणोलघुविक्रमः ॥ ततोघोरध्वनिंकृत्वारुधिराक्तवपुर्द्रुतं ॥ क्रंदमा
नापपाताग्रेखरस्यपुरुषाक्षरा ॥ किमेतदितितामाहखरःखरतरस्वरः ॥ केनैवंकारि
तासित्वंमृत्योर्वक्त्रानुवर्तिना ॥ वदमेतंवधिष्यामिकालकल्पमपिक्षणात् ॥ तमाह
राक्षसीरामःसीतालक्ष्मणसंयुतः ॥ दंडकेनिर्भयंदूर्वाश्रमेगोदावरीतटे ॥ मामेवंकृत
वांस्तस्यभ्रातातेनैवचोदितः ॥ यदित्वंकुलजातोसिवीरोसिजहितोरिपून् ॥ तयोस्तुरुधि
रंपास्येभक्षयेनोमृत्युर्मेदं ॥ नोचेत्प्राणान्परित्यज्यपास्यामियमसादने ॥ तच्छ्रुत्वात्व
रितंप्रागात्खरःक्रोधेनमूर्छितः ॥ चतुर्दशसहस्राणिरक्षसांभीमकर्मणां ॥ चोदयामा
सरामस्यसमीपंवधकांक्षया ॥ खरश्चत्रिशिराश्चैवदूषणश्चैवराक्षसः ॥ सर्वेरामंययुः
शीघ्रंनानाप्रहरणोद्यताः ॥ श्रुत्वाकोलाहलंतेषांरामःसौमित्रिमब्रवीत् ॥ श्रूयतेविपु

लःशब्दोवनमायातिराक्षसाः ॥ भविष्यतिमहद्युद्धंनूनमद्यभयावहं ॥ सीतांनीत्वागुहां
गत्वातत्रतिष्ठमहाबल ॥ हंतुमिच्छाम्यहंसर्वान्राक्षसान्घोररूपिणः ॥ नात्रकिंचित्त्वयावक्तव्यं
शापितोसिममोपरि ॥ तथेतिसीतामादायलक्ष्मणोगह्वरंययौ ॥ रामःपरिकरंबद्ध्वा
धनुरादायनिष्ठुरं ॥ तूणीराक्षयबाणौचबद्ध्वायोद्धुमभूद्विभुः ॥ ततआगत्यरक्षांसिराम
स्योपरिचिक्षिपुः ॥ आयुधानिविचित्राणिपाषाणान्पादपानपि ॥ तानिचिच्छेदरामोपि
लीलयातिलशःक्षणात् ॥ ततोबाणसहस्रेणहत्वातान्सर्वराक्षसान् ॥ खरंत्रिशि
रसंचैवदूषणंचैवराक्षसं ॥ जघानप्रहरार्धेनसर्वानेवरघूत्तमः ॥ लक्ष्मणोपिगुहामध्या
त्सीतामादायराघवे ॥ समर्प्यराक्षसान्दृष्ट्वाहतान्विस्मयमाययौ ॥ सीतारामंसमालिंग्य
प्रसन्नमुखपंकजं ॥ शस्त्रव्रणानिगात्रेषुममार्जजनकात्मजा ॥ सापिदुद्रावदृष्ट्वाता
न्हत्वाराक्षसपुंगवान् ॥ लंकांगत्वासभामध्येक्रोशंतीपादसन्निधौ ॥ रावणस्यपपातोर्व्यां
भगिनीतस्यरक्षसः ॥ दृष्ट्वातांरावणःप्राहभगिनींभयविह्वलां ॥ उत्तिष्ठोत्तिष्ठवत्सेत्वंवि
रूपंकारणंवद ॥ केनैवंकारितासित्वंभद्रेयमेनवरुणेनवा ॥ कुबेरेणाथवाब्रूहिभस्मीकु
र्वेक्षणेनतं ॥ राक्षसीतमुवाचेदंत्वंप्रमत्तोविमूढधीः ॥ पानासक्तःस्त्रीविजितःषंढःस
र्वत्रलक्ष्यसे ॥ चारचक्षुर्विहीनस्त्वंकथंराजाभविष्यसि ॥ खरश्चनिहतःसंख्येदूषणस्त्रि
शिरास्तथा ॥ चतुर्दशसहस्राणिराक्षसानांमहात्मनां ॥ निहतानिक्षणेनैवरामे
णैकेनधीमता ॥ जनस्थानमशेषेणमुनीनामभयंकृतं ॥ नजानासिविमूढस्त्वमतस्त्वम
शत्रुवमद्योध्यते ॥ रावणउवाच ॥ कोवारामःकिमर्थंवाकथंतेनासुराहताः ॥ सम्य
कथयमेतेनमूलघातंकरोम्यहं ॥ शूर्पणखोवाच ॥ जनस्थानादहंयाताकदाचिद्गौत
मीतटे ॥ तत्रपंचवटीनामपुरामुनिजनाश्रया ॥ तत्राश्रमेमयादृष्टोरामोराजीवलोचनः
धनुर्बाणधरःश्रीमान्जटावल्कलमंडितः ॥ कनीयाननुजस्तस्यलक्ष्मणोपितथावि
धः ॥ तस्यभार्याविशालाक्षीरूपिणीश्रीरिवापरा ॥ देवगंधर्वनागानांमनुष्याणांतथाऽ
विधा ॥ नदृष्टानश्रुताराजन्द्योतयंतीवनंशुभा ॥ आनेतुमहमुद्युक्तातांभार्यार्थंतवान
घ ॥ लक्ष्मणोनामतद्भ्राताचिच्छेदममनासिकां ॥ कर्णौचच्छेदितौतेनरामेणसमहाबलः
ततोहमतिदुःखेनरुदंतीखरमन्वगां ॥ सोपिरामंसमासाद्ययुद्धंराक्षसयूथपैः ॥ ततः
क्षणेनरामेणतेनैवबलशालिना ॥ सर्वेतेननिहताघोराराक्षसाभीमविक्रमाः ॥ यदिरामो
मनःकुर्यात्त्रैलोक्यंनिमिषार्धतः ॥ भस्मीकुर्यान्नसंदेहइतिभातिममप्रभो ॥ यदिरामे
वभार्यास्यात्सफलंतवजीवितं ॥ अतोयतस्वराजेंद्रयथातेवल्लभाभवेत् ॥ यदिसात
वपत्नीस्यात्सर्वलोकैकसुंदरी ॥ तस्याग्रेसकलंत्रस्तंस्यात्तवनतमःप्रभो ॥ सीताराजी
दृष्ट्वातुयास्यतेत्वीरस्तेनम ॥ श्रुत्वातत्सकलंवाक्यंदानमानादिभिस्तथा ॥ मायया मो
गिनीराजाप्रविवेशास्वकंगृहं ॥ तत्रचिंतापरोभूत्वानिद्रांराजानलब्धवान् ॥ आश्वस्यभ
कथंमनुष्यमात्रेणनष्टःसबलःखरोमे ॥ भ्राताकथंमेबलदर्पवीर्ययुतोविनष्टोवतराघ
वेण ॥ यद्वानरामोमनुजःपरेशोमांहंतुकामःस्वबलंबलोघैः ॥ मत्प्रार्थितोयंदुहिणेन
पूर्वंमनुष्यरूपोद्यरघोःकुलेभूत् ॥ वध्योयदिस्यांपरमात्मनाहंवैकुंठराज्यंपरिपालये
हं ॥ नोचेदिदंराक्षसराज्यमेवभोक्ष्येचिरंराममतोव्रजामि ॥ इत्थंविचिंत्याखिलराक्ष
सेंद्रोरामंविदित्वापरमेश्वरंहरिं ॥ विरोधबुद्ध्यैवहरिंप्रयामिद्रुतंनभक्त्याभगवान्प्रसीदे
त् ॥ इतिश्रीमदध्यात्मरामायणेआरण्यकांडेपंचमोध्यायः ॥ ५ ॥
॥ श्रीमहादेवउवाच ॥
विचिंत्यैवंनिशायांसप्रभातेरथमास्थितः ॥ रावणोमनसाकार्यमेकंनिश्चित्यबुद्धिमा
न् ॥ ययौमारीचसदनंपारेतीरंसमुद्रतः ॥ मारीचस्तत्रमुनिवज्जटावल्कलधारकः ॥
ध्यायन्हृदिपरात्मानंनिर्गुणंगुणभासकं ॥ समाधिविरमेपश्यद्रावणंगृहमागतं ॥

द्रुतमुत्थाय चालिङ्ग्य पूजयित्वा यथाविधि ॥ कृत्वातिथ्यं सुखासीनं मारीचो वाक्यम
ब्रवीत् ॥ समागमनमेतत्ते रथेनैकेन रावण ॥ चिन्तापर इवाभासि हृदि कार्यं विचिन्तय
न् ॥ ब्रूहि मे न हि गोप्यं चेत्करवाणि तव प्रियं ॥ न्याय्यं चेद्ब्रूहि राजेन्द्र हीनं मां स्पृशेन्न हि
रा॰ उ॰ वाच ॥ अस्ति राजा दशरथः साकेताधिपतिः किल ॥ रामनामा सुतस्तस्य
ज्येष्ठः सत्यपराक्रमः ॥ विवासयामास सुतं वने जनकजाप्रियं ॥ भार्यया सहितो भ्रात्रा
लक्ष्मणेन समन्वितं ॥ स आस्ते विपिने घोरे पञ्चवट्याश्रमे शुभे ॥ तस्य भार्या विशाला
क्षी सीता लोकविमोहिनी ॥ रामो निरपराधान्मे राक्षसान्भीमविक्रमान् ॥ खरं च विरा
ने हत्वा सुखमास्ते निर्भयः ॥ भगिन्या मे शूर्पणखा निर्दोषाया ह्यनासिके ॥ कर्णौ च
चिच्छेद दुष्टात्मा वने तिष्ठति निर्भयः ॥ अतस्त्वया सहायेन गत्वा तत्प्राणवल्लभां ॥ आ
नयिष्यामि विपिने रहितो राघवेण तां ॥ त्वं तु मायामृगो भूत्वा ह्याश्रमादपनेष्यसि
रामं च लक्ष्मणं चैव तदा सीतां हराम्यहं ॥ त्वं तावत्सहायं मे कृत्वा स्थास्यसि पूर्ववत्
इत्येवं भाषमाणं तं रावणं वीक्ष्य विस्मितः ॥ केनेदमुपदिष्टं ते मूलघातकरं वचः ॥ स प
व पुत्रबन्धुश्च यस्त्वां नाशं प्रतीच्छति ॥ रामस्य पौरुषं स्मृत्वा चित्तमद्यापि रावण ॥ बा
ल्येपि कौशिकस्याहं यज्ञसंरक्षणाय सः ॥ आगतः शिशुरेकेन बाणेनाहं महासागरे
योजनानां शते रामस्तदापि भयविह्वलः ॥ स्मृत्वा स्मृत्वा तदेवाहं रामं पश्यामि सर्वतः
दण्डकेपि पुनरप्यहं वने पूर्ववैरमनुचिन्तयन्हृदि ॥ तीक्ष्णशृङ्गमृगरूपमेकदा मादृशैर्व
हुभिरावृतो भयात् ॥ राघवं जनककन्यया समन्वितं लक्ष्मणेन सहितं त्वरान्वितः ॥ आग
तोहमथ हन्तुमुद्यतो मां विलोक्य शरमेकमक्षिपत् ॥ तेन विद्धहृदयोहमुद्भ्रान्त
स्त्वं द्रुतमितोस्मि सागरे ॥ तत्प्रभृत्यहमिदं समाश्रितः स्थानमर्जितमिदं भयार्दितः
राममेव सततं विभावये भीतभीत इव भोगराशितः ॥ राजरत्नरमणीरथादिकं श्रोत्र
योरपि गते भयं भवेत् ॥ राम आगत इहेति शंकया बाह्यकार्यमपि सर्वमत्यजं ॥ निद्र
या परिवृतो यदा स्वपे राममेव मनसानुचिन्तयन् ॥ स्वप्नदृष्टिगतराघवं तदा बोधितो
विगतनिद्र आस्थितः ॥ तद्भवानपि विमुच्य चाग्रहं राघवं प्रति गृहं प्रयाहि भो ॥ रक्षरा
क्षसकुलं चिरागतं त्वत्सुतैः सकलमेव नश्यति ॥ न वहितं वदतो मम भाषितं यदि गृहा
ण यतन्निरामये ॥ अजविरोधमतिर्भजभक्तितः परमकारुणिको रघुनन्दनः ॥ अहं
मद्दोषमिदं मुनिवाक्यतो हृतवानादिगुरोः परमेश्वरः ॥ मखगणार्चित उवाच नेह हरिः किं
न वेत्सि न मे हि करवाणि तत् ॥ ब्रह्मणोक्तमरविन्दलोचनं त्वं प्रयाहि भुवि मानुषं वपुः
दशरथात्मजभावमेत्य नः साजहि रिपुं दशकन्धरं हरे ॥ अतो न मानुषो रामः साक्षान्ना
रायणोऽव्ययः ॥ मायामानुषवेषेण वनं यातोति निर्भयः ॥ भूभारहरणार्थाय गच्छ
तात गृहं सुखं ॥ श्रुत्वा मारीचवचनं रावणः प्रत्यभाषत ॥ परमात्मा यदा रामः प्रा
र्थितो ब्रह्मणा किल ॥ मां हन्तुं मानुषो भूत्वा यत्नादिह समागतः ॥ करिष्यत्यचिराद्दे
व सत्यसङ्कल्प ईश्वरः ॥ अतोहं यत्नतः सीतामानेष्यामि वराननां ॥ वधे प्राप्ते रणे वी
र प्राप्स्यामि परमं पदं ॥ यद्वा रामं रणे हत्वा सीतां प्राप्स्यामि निर्भयः ॥ अतो त्तिष्ठ महा
भाग विचित्रमृगरूपधृक् ॥ रामं सलक्ष्मणं शीघ्रमाश्रमाद्दूरतो नय ॥ आक्रम्य राघ
वं शीघ्रं स्मृतं तिष्ठ यथासुखं ॥ इतः परं चेत्त्वं किंचिद्दूषयसे मद्विभीषणं ॥ हनिष्या
म्यसिनानेन त्वामद्यैव न संशयः ॥ मारीचस्तद्वचः श्रुत्वा स्वात्मन्येवानुचिन्तयन् ॥
यदि मां राघवो हन्यात्तदा मुक्तो भवार्णवात् ॥ मां हन्याद्यदि चेद्दुष्टस्तदा मे निरयो ध्रुवं
इति निश्चित्य मरणं रामादभ्यायवेगतः ॥ अब्रवीद्रावणं राजन्करोम्याज्ञां तव प्रभो ॥ र
त्नशृङ्गो मणिखुरो नीलरत्नविलोचनः ॥ विद्युत्प्रभो विचित्राङ्गो विचचार वनान्तरे ॥
रामाश्रमपदस्यान्ते सीतादृष्टिपथे चरन् ॥ क्षणं वधावत्यवतिष्ठते क्षणं समीपमाग

त्य पुनर्भयावृतः ॥ एवं स मायामृगवेशरूपधृक् चचार सीतां परिमोहयन्खलः ॥ इति श्री
मदध्या[illegible] आरण्यकाण्डे षष्ठोऽध्यायः ॥ ६ ॥
॥ श्रीमहादेव उवाच ॥
अथ रामोपि तत्सर्वं ज्ञात्वा रावणचेष्टितं ॥ उवाच सीतामेकान्ते शृणु जानकि मद्वचः
रावणो भिक्षुरूपेण आगमिष्यति तेन्तिकं ॥ त्वं तु छायां त्वदाकारां स्थापयित्वोटजे वि
श ॥ अग्नावदृश्यरूपेण वर्षं तिष्ठ ममाज्ञया ॥ रावणस्य वधान्ते मां पूर्ववत्प्राप्स्यसे शुभे
श्रुत्वा रामोदितं वाक्यं सापि तत्र तथाकरोत् ॥ मायासीतां बहिः स्थाप्य स्वयं विवेश अ
नले ॥ मायासीता तदापश्यन्मृगं मायाविनिर्मितं ॥ हसन्ती राममभ्येत्य प्रोवाच विन
यान्विता ॥ पश्य राम मृगं चित्रं कानकं रत्नभूषितं ॥ विचित्रबिन्दुभिर्युक्तं चरन्तमकुतो
भयं ॥ बद्ध्वा देहि मम क्रीडामृगो भवतु सुन्दरः ॥ तथेति धनुरादाय गच्छल्लक्ष्मणमब्रवीत्
रक्ष त्वमपि यत्नेन सीतां मत्प्राणवल्लभां ॥ मायाविनः सन्ति विपिने राक्षसा घोरदर्शनाः ॥
अतोत्रावहितः साध्वीं रक्ष सीतामनिन्दितां ॥ लक्ष्मणो राममाहेदं देवायं मृगरूपधृक्
मारीचोत्र न सन्देहः एवंभूतो मृगः कुतः ॥ श्रीराम उवाच ॥ यदि मारीच एवायं तदा हन्मि
न संशयः ॥ मृगश्चेदानयिष्यामि सीताविश्रामहेतवे ॥ गमिष्यामि मृगं बद्धुमानयि
ष्यामि सत्वरः ॥ त्वं प्रयत्नेन संतिष्ठ सीतासंरक्षणोद्यतः ॥ इत्युक्त्वा प्रययौ रामो मायाम
गमनुद्रुतः ॥ मायाया यदाश्रयाल्लोको मोहितो जगदाकृतिः ॥ निर्विकारश्चिदात्मापि पूर्णोपि
मृगमन्वगात् ॥ भक्तानुकम्पी भगवानिति सत्यं वचो हरिः ॥ कर्तुं सीताप्रियार्थाय जान
न्नपि मृगं ययौ ॥ अन्यथा पूर्णकामस्य रामस्य विदितात्मनः ॥ मृगेण वा स्त्रिया वापि
किं कार्यं परमात्मनः ॥ कदाचिद्दृश्यतेभ्याशे क्षणं धावति लीयते ॥ मृगेण वा स्त्रिया वापि
राममपाहरत् ॥ ततो रामोपि विज्ञाय राक्षसोयमिति स्फुटं ॥ दृश्यते वनतो दूरादेवं
मृगरूपिणं ॥ पपात रुधिरक्ताङ्गो मारीचः पूर्वरूपधृक् ॥ विव्याध परमास्त्रेण राक्षसं
मां लक्ष्मणाहुते ॥ इत्युक्त्वा रामवद्वाचः पपात रुधिराननः ॥ हा हतोस्मीति महावाचो ह्याहि
त्वा तत्त्वामस्मानुयात् ॥ किमुत तद्धरिं पुण्यं स्मृत्वैव निहतो स्वरः ॥ तद्देहादुत्थितं तेजः
सर्वलोकस्य पश्यतः ॥ राममेवाविशद्देवा विस्मयं परमं ययुः ॥ किं कर्म कृत्वा किं प्राप्तः पा
तकी मुनिहिंसकः ॥ अथवा राघवस्यायं महिमा नात्र संशयः ॥ रामबाणेन संविद्धः प्र
निर्दग्धपापकल्मषाः ॥ अन्ते रामेण निहताः पश्यन्नाम मलापहः ॥ हरिर्नामसदा ध्यात्वा
पिशाचो वा यथा भिक्षो पिवा ॥ त्यजन्कलेवरं रामं स्मृत्वा याति परं पदं ॥ इति तेऽन्योन्य भा
षन्तो देवा दिवं ययुः ॥ रामस्तु चिन्तयामास म्रियमाणो ह्यरायमः ॥ हा लक्ष्मणेति म
द्वाक्यमनुकुर्वन्ममार किं ॥ श्रुत्वा मद्वाक्यसदृशं वाक्यं सीतापि किं भवेत् ॥ इति चिन्ता
परीतात्मा रामोऽशान्त्ववर्तत ॥ सीता तद्भाषितं श्रुत्वा मारीचस्य दुरात्मनः ॥ भीता तिदुः
खेन विह्वला लक्ष्मणं त्विदमब्रवीत् ॥ गच्छ लक्ष्मण वेगेन भ्राता तेऽसुरपीडितः ॥ हा लक्ष्मणेति
वचनं भ्रातुस्ते न शृणोषि किं ॥ तामाह लक्ष्मणो देवि रामवाक्यं न तत्तु भवेत् ॥ यः कश्चिद्रात
सोरे वि म्रियमाणोऽब्रवीद्वचः ॥ रामस्तु सर्वलोकस्य भयदः क्रुद्धो नाशयति त्रिलोकान् ॥ स कथं दीन
वचनं भाषितेऽमरहर्जितः ॥ क्रुद्धा लक्ष्मणमालोक्य सीता बाष्पविलोचना ॥ प्राह लक्ष्मण
दुर्बुद्धे भ्रातुर्मृत्युमभीप्ससि ॥ प्रेषितो भरतेनैव रामनाशाभिकाङ्क्षिणा ॥ मां नेतुमागतो
सि त्वं रामनाशे उपस्थिते ॥ न प्राप्स्यसि त्वं मामद्य पश्य प्राणांस्त्यजाम्यहं ॥ न जानाति ह
ठाद्रामस्त्वां भार्याहरणोद्यतं ॥ रामादन्यं न स्पृशामि त्वां वा भरतमेव वा ॥ इत्युक्त्वा बध्यमा
ना सा स्ववाक्ष्यंस्तवोदरं ॥ तच्छ्रुत्वा लक्ष्मणः कर्णौ पिधायातीव दुःखितः ॥ मा मैवं भाष
से चण्डि धिक्त्वां नाशमुपैष्यसि ॥ इत्युक्त्वा वनदेवेभ्यः समर्प्य जनकात्मजां ॥ ययौ दुःखा

अ·रा
२०

तिसंविग्नो राममेव शनैः शनैः ॥ ततोऽन्तरं समालोक्य रावणो भिक्षुरूपधृक् ॥ सीताम
भीयमागत्य स्फुरद्दंडकमंडलुः ॥ सीतां तमवलोक्याशु नत्वा संपूज्य भक्तितः ॥ कंदमू
लफलादीनि दत्त्वा स्वागतमब्रवीत् ॥ मुने भुंक्ष्व फलादीनि विश्रमस्व यथासुखं ॥ इ
दानीमेव भर्ता मे आगमिष्यति ते प्रियं ॥ करिष्यति विशेषेण तिष्ठ त्वं यदि रोचते ॥ भि
क्षुरुवाच ॥ का त्वं कमलपत्राक्षी को वा भर्ता तवानघे ॥ किमर्थमत्र ते वासो वने रा
क्षससेविते ॥ ब्रूहि भद्रे मतः सार्धं स्वकुलं ते निवेदये ॥ सीतोवाच ॥ अयोध्याधिपतिः श्
रीमान्राजा दशरथो महान् ॥ तस्य ज्येष्ठः सुतो रामः सर्वलक्षणलक्षितः ॥ तस्याहं ध
र्मतः पत्नी सीता जनकनंदिनी ॥ तस्य भ्राता कनीयांश्च लक्ष्मणो भ्रातृवत्सलः ॥ पि
तराज्ञां पुरस्कृत्य दंडके वस्तुमागतः ॥ वस्तुं ईशं समाज्ञातं त्वामिमे वद ॥ भिक्षुरु
वाच ॥ पौलस्त्यतनयोऽहं ते रावणो राक्षसाधिपः ॥ त्वत्कामपरितोऽहं त्वां नेतुं पुरमा
गतः ॥ मुनिवेषेण रामेण किं करिष्यसि मां भज ॥ भुंक्ष्व भोगान्मया सार्धं त्यज दुःखं
वनोद्भवं ॥ श्रुत्वा तद्वचनं सीता भीता किंचिदुवाच तं ॥ यद्येवं भाषसे मां त्वं नाशमेष्य
सि राघवात् ॥ आगमिष्यति रामो पि क्षणं तिष्ठ सहानुजः ॥ सो को पि विपिनं शून्यं
हरेर्भार्यां शशो यथा ॥ रामबाणैर्विभिन्नस्त्वं पतिष्यसि महीतले ॥ इति सीतावचः
श्रुत्वा रावणः क्रोधमूर्च्छितः ॥ स्वरूपं दर्शयामास महापर्वतसन्निभं ॥ दशास्यं विंश
तिभुजं कालमेघसमद्युतिः ॥ तद्दृष्ट्वा वनदेव्यश्च भूतानि च वितत्रसुः ॥ ततो विदार्य
धरणीं नखैरुद्धृत्य बाहुभिः ॥ तोलयित्वा रथे क्षिप्त्वा ययौ क्षिप्रं विहायसा ॥ हा राम
हा लक्ष्मणेति विक्रोशंती जनकात्मजा ॥ भयोद्विग्नमना दीना पश्यंती भुवि मे वसा ॥ श्रु
त्वा तत्क्रंदितं दीनं सीतायाः पतत्रां मसः ॥ जटायुरुत्थितः शीघ्रं नगाग्रात्तीक्ष्णतुंडकः
तिष्ठ तिष्ठेति तं प्राह को गच्छसि ममाग्रतः ॥ मुषित्वा लोकनाथस्य भार्यां शून्यवनात्मयान्
शुनको मंत्रपूतं त्वं पुरोडाशमिवाध्वरे ॥ इत्युक्त्वातीत्य तुंडेन चूर्णयामास तद्रथं ॥ बाहू
न्विभेद पादाभ्यां चूर्णयामास तं हरीन् ॥ ततः सीतां परित्यज्य रावणः खड्गमाददे ॥ चि
च्छेद पक्षौ सामर्षः पक्षिराजस्य धीमतः ॥ पपात किंचिच्छेषेण प्राणेन भुवि पक्षिराट् ॥
पुनरन्यं रथं स्थाप्य सीतामादाय रावणः ॥ क्रोशंतीं राम रामेति त्रातारं नाधिगच्छतीं ॥
हा राम हा जगन्नाथ मां न पश्यसि दुःखितां ॥ रक्ष रक्षस्व नीयमानां स्वां भार्यां मोचय प्रभो ॥
हा लक्ष्मण महाभाग त्राहि मामपराधिनीं ॥ वाक्शरेण हतस्त्वं मे क्षंतुमर्हसि देवर ॥ इ
त्येवं क्रोशमानां तां रामागमनकांक्षया ॥ जगाम वायुवेगेन सीतामादाय सत्वरः ॥ वि
हायसा नीयमाना सीता पश्यंत्यधोमुखी ॥ पर्वताग्रे स्थितान्पंच वानरान्वायुविक्रमान् ॥
तदुत्तरीयार्धखंडेन विबध्याभरणादिकं ॥ बध्वा चिक्षेप रामाय कथयंत्विति पर्वते ॥ त
तः समुद्रमुल्लंघ्य लंकां गत्वा स रावणः ॥ स्वांतःपुरे रहस्येऽतामशोकविपिनेऽक्षिपत् ॥
राक्षसीभिः परिवृतां मातृबुद्ध्यानुपालयन् ॥ कृशातिदीना परिकर्मवर्जिता दुःखेन शु
ष्यद्वदनातिविह्वला ॥ हा राम रामेति विलाप्यमाना सीता स्थिता राक्षसवृंदमध्ये ॥
इति श्रीमदध्यात्मरामायणे आरण्यकांडे सप्तमोऽध्यायः ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ॥

॥ श्रीमहादेव उवाच ॥

रामो मायाविनं हत्वा राक्षसं कामरूपिणं ॥ प्रतस्थे स्वाश्रमं गंतुं ततो दृष्ट्वा दूरगतं ॥
आयांतं लक्ष्मणं दीनं मुखेन परिशुष्यता ॥ राघवश्चिंतयामास स्वात्मन्येव महामति
र्लक्ष्मणस्तु न जानाति मायासीतां मयाकृतां ॥ ज्ञात्वाप्येनं वंचयित्वा शोचाम्यप्राकृतो
यथा ॥ यद्यहं विरतो भूत्वा तूष्णीं स्थास्यामि मंदिरे ॥ तदा राक्षसकोटीनां वधोपायः क
थं भवेत् ॥ यदि शोचामि तद्दुःखं संतप्तः कामुको यथा ॥ तदा क्रमेणानुचिन्वन्सीतां
यास्ये सुरालयं ॥ रावणं सगणं हत्वा सीतामग्नौ स्थितां पुनः ॥ मयैव स्थापितां नीत्वा

यातायोध्यामतंद्रितः ॥ अहं मनुष्यभावेन जातोऽस्मि ब्रह्मणार्थितः ॥ मानुष्यभावमापन्नो किंचि
त्कालं वसामि कौ ॥ ततो मायामनुष्यस्य चरितं मेऽनुशृण्वतां ॥ मुक्तिः स्यादप्रयासेन भक्ति
मार्गानुवर्तिनां ॥ निश्चित्यैवं तदा दृष्ट्वा लक्ष्मणं वाक्यमब्रवीत् ॥ किमर्थमागतोऽसि त्वं सीतां त्य
क्त्वा मम प्रियां ॥ नीता वा भक्षिता वापि राक्षसैर्जनकात्मजा ॥ लक्ष्मणः प्रांजलिः प्राह सीताया
दुर्वचो रुदन् ॥ हा लक्ष्मणेति वचनं राक्षसोक्तं श्रुतं मया ॥ तदाकर्ण्य सहसा क्रुद्धा मामब्र
वीत् ॥ हंतीसा मया प्रोक्ता देवि राक्षसभाषितं ॥ नेदं रामस्य वचनं स्वस्था भव शुचिस्मिते ॥ इ
त्येवं सान्त्विता साध्वी माया प्रोवाच मां ततः ॥ यदुक्तं दुर्वचो राम न वाच्यं पुरतस्तव ॥ कर्णौ पि
धाय निर्गत्य यातोऽहं त्वां समीक्षितुं ॥ रामस्तु लक्ष्मणं प्राह तथाप्यनुचितं कृतं ॥ त्वया स्त्रीभाषि
तेनैवं त्यक्त्वा त्वं यच्छुभाननां ॥ नीता वा भक्षिता वापि नाशो मेऽत्र न संशयः ॥ इति चिंतापरो राम
स्वाश्रमं त्वरितं ययौ ॥ तत्रादृष्ट्वा जनकजां विमलोऽप्यतिदुःखितः ॥ हा प्रिये क्व गतासि त्वं नासि
सर्वत्राश्रमे ॥ अथ रामो हि सीतार्थं लीलया कवितीयसे ॥ इत्याचिन्वन्वनं सर्वं नापश्यज्जा
नवीतरा ॥ वनदेव्यः कुतः सीता ब्रुवंतु मम वल्लभां ॥ मृगाश्च पक्षिणो वृक्षा दर्शयंतु मम प्रि
यां ॥ इत्येवं विलपन्नेव रामः सीतामदृष्टवान् ॥ सर्वज्ञः सर्वगः कापि नापश्यद्रघुनंदनः ॥ आ
नंदोऽप्यनुशोचन्वा आत्मलोप्यनुधावति ॥ निर्ममो निरहंकारोऽप्यखंडानंदरूपवान् ॥ मम
सीतेति विललापातिदुःखितः ॥ एवं मायामनुष्यस्य सोऽपि रघुत्तमः ॥ ममेमायेति
तत्त्वविदो नराः ॥ एवं विचिन्वन्सकले वने रामः सलक्ष्मणः ॥ भग्नं रथं पृष्ठतो भाति
वि ॥ दृष्ट्वा लक्ष्मणमाहेदं पश्य लक्ष्मण केनचित् ॥ भग्नं रथं चापं कूबरं पतितं भु
वि ॥ किंचिद्वोभागं गत्वा पूर्वतसन्निभं ॥ नीयमानां जनकजां जित्वान्यो जहार तां ॥ त
स्मिन्वालोक्य जानकीं शुभदर्शनां ॥ रामो वाक्यमथाब्रवीत् ॥ एष वै भ
क्षयेद्बाणैः रघुनंदन ॥ ततो विविधकीलालः पश्य हन्मि निशाचरं ॥ चापमानय शी
घ्रं बाणं स्वकर्मणा ॥ अहं जटायुस्ते भार्याहारिणं समनुद्रुतः ॥ मामनुमारय भद्रं ते प्रिय
र्हने ॥ तस्य बाहत्रयं चापं छित्वाहं तेन ताडितः ॥ रावणेन तु खड्गेन मे पक्षौ छेदितौ वि
भो ॥ तच्छ्रुत्वा राघवो दीनं कंठप्राणं ददर्श ह ॥ पतितोऽस्मि जगन्नाथ प्राणांस्त्यक्ष्यामि
ते ॥ जटायो ब्रूहि मे भार्यां केन नीता शुभानना ॥ हस्ताभ्यां सा ... दुःखातुरेण तो ब
जटायुः स्वल्पया वाचा वक्त्राद्रक्तं समुद्वमन् ॥ उवाच रावणो राम राक्षसो भीमकर्मणः ॥ आदाय
मैथिलीं सीतां दक्षिणाभिमुखो ययौ ॥ इतो वक्तुं न मे शक्तिः प्राणांस्त्यक्ष्यामि तेऽग्रतः ॥ दिष्ट्या दृ
ष्टोऽसि रामं त्वं म्रियमाणेन मेऽनघ ॥ परमात्मासि विष्णुस्त्वं मायया मनुजरूपधृक् ॥ अंतकालेऽपि
दृष्टोऽसि कोऽहं रघुनंदन ॥ हस्ताभ्यां स्पृश मां राम पुनर्यास्यामि ते पदं ॥ तथेति रामः संस्पृश्य त
दंगं पाणिना स्मयन् ॥ ततः प्राणान्परित्यज्य जटायुः पतितो भुवि ॥ रामस्तमनु शोकेन बहु
धुवन्साश्रुलोचनः ॥ लक्ष्मणेन समानाय्य काष्ठानि प्रददाह तं ॥ स्नात्वा दुःखेन रामोऽपि लक्ष्म
णेन समन्वितः ॥ हत्वा वने मृगं तत्र मांसखंडान्समंततः ॥ शाद्वले प्रक्षिपद्रामो भुंजंतु खगा
इति ॥ भक्षंतु पक्षिणः सर्वे तृप्तो भवतु पक्षिराट् ॥ इत्युक्त्वा राघवः प्राह जटायो गच्छ मत्पदं ॥
मत्सारूप्यं भजस्वाद्य सर्वलोकस्य पश्यतः ॥ ततोऽनंतरमेवासौ दिव्यरूपधरः शुभः ॥ विमान
वरमारुह्य भास्वद्भानुसमप्रभं ॥ शंखचक्रगदापद्मकिरीटवरभूषणैः ॥ द्योतयन्स्वप्रका
शेन पीतांबरधरोऽमलः ॥ चतुर्भिः पार्षदैर्विष्णोस्तादृशैरभिपूजितः ॥ स्तूयमानो योगिगणै
राममाभाष्य सत्वरः ॥ कृतांजलिपुटो भूत्वा तुष्टाव रघुनंदनं ॥ ज ॥ टा ॥ यु ॥ र ॥ व ॥ अगणितगु
णमप्रमेयमाद्यं सकलजगत्स्थितिसंयमादिहेतुं ॥ उपरमपरमं परात्मभूतं सततमहं
प्रणतोऽस्मि रामचंद्रं ॥ निरवधिसुखमिंदिराकटाक्षं क्षपितसुरेंद्रचतुर्मुखादिदुःखं ॥ नरव
रमनिशं नतोऽस्मि रामं वरदमहं वरचापबाणहस्तं ॥ त्रिभुवनकमनीयरूपमीड्यं रविशतभा
सुरमीहितप्रदानं ॥ शरणदमनिशं सुरागमूले कृतनिलयं रघुनंदनं प्रपद्ये ॥ भवविपि

अ॰रा॰
२२

नरकाग्निनाशधेयं भवबन्धदेवदेवतं स्याले ॥ रघुपतिसहस्रकोटिनाशोर्यमितनया सह
तं हृदि प्रपद्ये ॥ अविरतभवभावनातिदूरं भवविमुखैर्मुनिभिः सदैव दृश्यं ॥ भवजलधिसु
तारणांघ्रिपोतं शरणमहं रघुनंदनं प्रपद्ये ॥ गिरिशगिरिसुतामनोनिवासं गिरिवरधारि
णमीहिताभिरामं ॥ सुरवरदनुजेंद्रसेवितांघ्रिं सुरवरदं रघुनायकं प्रपद्ये ॥ परधनपरदारव
र्जिताना परगुणभूतिषु तुष्टमानसानां ॥ परहितनिरतात्मनां सुसेव्यं रघुवरमंबुजलोचनं प्रप
द्ये ॥ स्मितरुचिरविकासिताननाब्जमतिसुलभं सुरराजनीलनीलं ॥ सितजलरुहचारुनेत्रशो
भं रघुपतिमीशगुरोर्गुरुं प्रपद्ये ॥ हरिकमलजशंभुरूपभेदात्त्वमिह विभासि गुणत्रयानुवृत्तः
रविरिव जलपूरितोदपात्रेष्वमरपतिस्तुतिपात्रमीशमीडे ॥ रतिपतिशतकोटिसुंदरांगं
नवपथगोचरभावनातिदूरं ॥ यमिमुनिहृदये सदा विभातं रघुपतिमार्तिहरं प्रभुं प्रपद्ये ॥ इत्येवं
स्तुवतस्तस्य प्रसन्नोभूद्रघूत्तमः ॥ उवाच गच्छ भद्रं ते मम विष्णोः परं पदं ॥ शृणोति य इदं स्तोत्रं
लिखेद्वा नियतः पठेत् ॥ स याति मम सारूप्यं मरणे मत्स्मृतिं लभेत् ॥ इति राघवभाषितं तदा
श्रुतवान्हर्षसमाकुलो द्विजः ॥ रघुनंदनसाम्यमास्थितः प्रययौ ब्रह्मसुपूजितं पदं ॥ इति श्री
मदध्यात्मरामायणे उमामहेश्वरसंवादे अरण्यकांडे अष्टमोध्यायः ॥ ८ ॥

॥ श्रीमहादेव उवाच ॥

ततो रामो लक्ष्मणेन जगाम विपिनांतरं ॥ पुनर्दुःखं समाश्रित्य सीतान्वेषणतत्परः ॥ तत्राद्भु
तसमाकारो राक्षसः प्रत्यदृश्यत ॥ वक्षस्येव महावक्त्रश्चक्षुरादिविवर्जितः ॥ बाहू योजनमा
त्रेण व्याप्तौ तेन स्थितः सः ॥ कबंधनामा दैत्येंद्रः सर्वसत्वविहिंसकः ॥ तद्बाह्वोर्मध्यदेशे तौ चरं
तौ रामलक्ष्मणौ ॥ ददर्श तं महासत्वं तद्बाहुपरिवेष्टितौ ॥ रामः प्रोवाच विहसन्पश्य लक्ष्मण
राक्षसं ॥ शिरःपादविहीनोयं यस्य वक्षसि चाननं ॥ बाहुभ्यां लभ्यते यद्यत्तत्तद्भक्षितुमिच्छ
ति ॥ आवामपि तथोर्बाह्वोर्मध्ये संकलितावुभौ ॥ गंतुमन्यत्र मार्गो न दृश्यते रघुनंदन ॥ किं क
र्तव्यमितो स्माभिरिति तूष्णीं स्थितावुभौ ॥ लक्ष्मणस्तमुवाचेदं किं विचारेण राघव ॥ आवामे
तेन पापेन बाह्वोर्मध्ये सुसंकलितावुभौ ॥ नेकस्य बाहुच्छेदेन प्राप्नोतु राक्षसोधुना ॥ रघुपतिरामः खड्गेन भुजं
दक्षिणमच्छिनत् ॥ तथैव लक्ष्मणो वामं चिच्छेद भुजमंजसा ॥ ततो तिविस्मितो दैत्यः को युवामि
त्युवाच तौ ॥ महाकृष्टाविति लोके दिवि देवैश्च कातरः ॥ ततोब्रवीत्सत्यवचा रामो राजीवलोचनः ॥
अयोध्याधिपतिः श्रीमान्राजा दशरथो महान् ॥ रामोहं तस्य पुत्रोसौ भ्राता मे लक्ष्मणः सुधीः ॥
मम भार्या जनकजा सीता त्रैलोक्यसुंदरी ॥ आवां मृगयावाप्यानीता राक्षसेनापि यातुधाना ॥ नीता सी
तां विचिन्वंतौ वनात्तो घोरकानने ॥ बाहुभ्यां वेष्टितावत्र त्वत्प्राणगिरिस्तथा ॥ छिन्नौ तव भु
जौ त्वं च को वा विकटरूपधृक् ॥ कबंध उवाच ॥ धन्योहं यदि रामस्त्वमागतोसि ममांतिकं ॥ पुरा
गंधर्वराजोहं रूपयौवनदर्पितः ॥ विचरं लोकमखिलं वरनारीमनोहरः ॥ न तस्माद्ब्रह्मलोकं तपः
सर्वव्यवस्थितम ॥ अष्टावक्रं मुनिं दृष्ट्वा कदाचिद्दहसं पुरा ॥ क्रुद्धोसावाह दुष्टात्मा मा तरुष्ठमे
नं ॥ अष्टावक्रः पुनः प्राह स्वं दिनोसे ह्यपरः ॥ शापस्यांतं च मे प्राह नवस्याग्यानितप्रभः ॥ त्रेता
युगे दाशरथिर्भूत्वा नारायणः स्वयं ॥ आगमिष्यति ते बाहू छिन्नते योजनायतौ ॥ तेन शा
पाद्विनिर्मुक्तो भविष्यसि यथा पुरा ॥ इति शप्तोहमद्यांते रात्रिसीतनुमात्मनः ॥ कदाचिद्देवरा
जानमभ्यद्रवमहं रुषा ॥ सोपि वज्रेण मां रामशिरोदेशेभ्यताडयत् ॥ तदा शिरो गतं कुक्षौ
पादौ च रघुनंदन ॥ ब्रह्मदत्तवरान्मृत्युर्नाभून्मे वज्रताडनात् ॥ मुखाभावे कथं जीवेत्वामिति
मतो वचः ॥ ऊचुः सर्वे रथा विहगमो विलोक्य च मर्जितं ॥ ततो मां प्राह मघवा जठरे ते मुखं भवे
त ॥ बाहू ते योजनायासौ भविष्यतः स्तोत्रेण ॥ इत्युक्त्वा गतवासत्रिस्य बाहुभ्यां वनगोचरान् ॥ भक्ष
यामस्य पतो बाहुविदितो मे त्वयानघ ॥ इतः परं मां श्वभ्रेस्मिन्निक्षिप्याग्नेस्थापनात् ॥ अग्निना दह्यम
नोहं त्वया रघुकुलोत्तम ॥ सर्वदर्पमनुष्याप्यभार्यामार्गं वदामि ते ॥ इत्युक्तो लक्ष्मणेनाशु श्व
भ्रं निर्माय तत्र ते ॥ निक्षिप्य प्रादहत्काष्ठैस्ततो देहात्समुत्थितः ॥ कंदर्पसदृशाकारः सर्वाभ

रणभूषितः ॥ रामं प्रदक्षिणं कृत्वा साष्टांगं प्रणिपत्य च ॥ कृतांजलिरुवाचेदं भक्तिगद्गदया
गिरा ॥ गंधर्व उवाच ॥ नोत्सहते मे वक्तुं मनो रामातिसंभ्रमात् ॥ न त्वामुपमनसा ध्याने मनो
वाचामगोचरं ॥ सत्स्वं ते रूपमव्यक्तं देहद्वयविलक्षणं ॥ दृग्रूपमितरत्सर्वं दृश्यं जडमनात्मकं
तत्कथं त्वां विजानीयाद्व्यतिरिक्तं मनः प्रभो ॥ बुद्ध्यात्माभासयोरैक्यं जीव इत्यभिधीयते ॥ बु
द्ध्यादिसाक्षी ब्रह्मैव तस्मिन्निर्विषये विभौ ॥ आरोप्यतेज्ञानवशान्निर्विकारेखिलात्मनि ॥ हि
रण्यगर्भस्तेस्थूले देहः स्थूलो विराट् स्मृतः ॥ भावनाविषयो राम सर्वमेव नमंगल ॥ भूतं भ
व्यं भविष्यच्च यत्रेदं दृश्यते जगत् ॥ स्थूलेंडकोशे देहे महदादिभिरावृते ॥ सप्तभिरुत्तरैर्गुणैः
वैराजो धारणाश्रयः ॥ त्वमेव सर्वकैवल्यं लोकास्तेवयवाः स्मृताः ॥ पातालं ते पादमूलं पार्ष्णि
वमहातलं ॥ रसातलं ते गुल्फौ तु तलातलमितीर्यते ॥ जानुनी सुतलं राम ऊरू ते वितलं तथा
अतलं च महीराम जघने नाभिगं नभः ॥ उरःस्थलं ते ज्योतींषि ग्रीवा ते महरुच्यते ॥ वदनं जनलो
कस्ते पाप्रेदेशाणो ॥ सत्यलोको रघुश्रेष्ठ शीर्षाण्यास्ते सदा प्रभो ॥ इंद्रादयो लोकपाला बाहवस्ते
दिशः श्रुती ॥ अश्विनौ नासिके राम वक्त्रं तेग्निरुदाहृतः ॥ चक्षुस्ते सविता राम मनश्चंद्र उदाहृतः
भ्रूभंग एव कालस्ते बुद्धिस्ते वाक्पतिर्भवेत् ॥ रुद्रोहंकाररूपस्ते वाचश्छंदांसि तेव्ययः ॥ यमस्ते
दंष्ट्रादेशस्थो नक्षत्राणि द्विजालयः ॥ हासो मोहकरी माया सृष्टिस्तेपांगमोक्षणं ॥ धर्मः पुर
स्तेधर्मश्च पृष्ठभाग उदीरितः ॥ निमिषोन्मेषणे रात्रिर्दिवा चैव रघूत्तम ॥ समुद्राः सप्त ते कुक्षिर्ना
ड्यो नद्यस्तव प्रभो ॥ रोमाणि वृक्षौषधयो रेतो वृष्टिस्तव प्रभो ॥ महिमा ज्ञानशक्तिस्ते एवं
स्थूलं वपुस्तव ॥ यदस्मिन्स्थूलरूपे ते मनः संधार्यते नरैः ॥ अनायासेन मुक्तिः स्यादतोन्यन्न
हि किंचन ॥ अतोहं राम रूपं ते स्थूलमेवानुभावये ॥ यस्मिन्ध्याते प्रेमरसः सरोमपुलको
भवेत् ॥ तदेव मुक्तिः स्याद्राम सदा ते स्थूलभावकः ॥ तदप्यास्तां तवैवाहमेतद्रूपं विचिंतये
धनुर्बाणधरं श्यामं जटावल्कलभूषितं ॥ अपीच्यवयसं सीतां विचिन्वंतं सलक्ष्मणं ॥ इद
मेव सदा मे स्यान्मानसे रघुनंदन ॥ सर्वज्ञः शंकरः साक्षात्पार्वत्या सहितः सदा ॥ त्वद्रूपमे
व सततं ध्यायत्रास्ते रघूत्तम ॥ मुमूर्षूणां सदा काश्यां तारकं ब्रह्मवाचकं ॥ रामरामेत्युपदि
शन्नास्ते शिवमानसः ॥ अतस्त्वं जानकीनाथ परमात्मा सुनिश्चितः ॥ सर्वे ते मायया मूढास्त्वां
न जानंति तत्त्वतः ॥ नमस्ते राम भद्राय वेधसे परमात्मने ॥ अयोध्याधिपते तुभ्यं नमः सौ
मित्रिसेविते ॥ त्राहि त्राहि जगन्नाथ मां माया नावृणोतु मे ॥ श्रीराम उवाच ॥ तुष्टोहं देव
गंधर्व भक्त्या स्तुत्या च तेनघ ॥ याहि मे परमं स्थानं योगिगम्यं सनातनं ॥ जपंति ये नित्य
मनन्यबुद्ध्या भक्त्या त्वदुक्तं स्तवमागमोक्तं ॥ तेज्ञानसंभूतभवं विहाय मां यांति नित्याच्युत
धामभेवं ॥ इति श्रीमदध्यात्मरामायणे उमामहेश्वरसंवादे अरण्यकांडे नवमोध्यायः ॥ ९ ॥

॥ श्रीमहादेव उवाच ॥

लब्ध्वा वरं स गंधर्वः प्रयातस्त्रामम्ब्रवीत् ॥ शबर्यास्तेश्रमे भागे गत्वा धर्मे रघुनंदने ॥ भक्ता
त्वामेकमसेभक्तिर्मार्गं विशारद ॥ तां प्रयाहि महाभाग सर्वं ते कथयिष्यति ॥ इत्युक्त्वा
तद्दिव्यं विमानेनार्कवर्चसा ॥ विष्णोः परं रामनाम स्मरणात्फलमीदृशं ॥ त्यक्त्वा
लोकं लक्ष्मणेन समन्वितः ॥ शबर्याः परमं पुण्यमाश्रमं सर्वदा रघुनंदनः ॥ शबरी राममा
लोक्य लक्ष्मणेन समन्वितं ॥ आयांतमाराद्धर्षेण प्रत्युत्थायाचिरेण सा ॥ पतित्वा पादयो
रग्रे हर्षपूर्णाश्रुलोचना ॥ स्वागतेनाभिनंद्याथ स्वासने संन्यवेशयत् ॥ रामलक्ष्मणयोः
सम्यक्पादौ प्रक्षाल्य भक्तितः ॥ तज्जलेनाभिषिच्यांगमथार्घ्यादिभिरादृता ॥ संपूज्य विधि
वद्रामं ससौमित्रिं सपर्यया ॥ संगृहीतानि दिव्यानि रामार्थं शबरी मुदा ॥ फलान्यमृतक
ल्पानि ददौ रामाय भक्तितः ॥ पादौ संपूज्य कुसुमैः सुगंधैः सानुलेपनैः ॥ कृत्वातिथ्यं रघु
श्रेष्ठ उपविष्टं सहानुजं ॥ शबरी भक्तिसंपन्ना प्रांजलिर्वाक्यमब्रवीत् ॥ अत्राश्रमे रघुश्रेष्ठ
गुरवो मे महर्षयः ॥ स्थिता शुश्रूषणं तेषां कुर्वती समुपस्थिता ॥ बहुवर्षसहस्राणि गत

अ॰ रा॰
२२

नि ब्रह्मणः परं ॥ गमिष्यामो गुरवस्त्वं वसात्रैव समाहिता ॥ रामो दृष्टपरधिर्जोता परमात्मास्र
नातनः ॥ रात्मानं बधार्थाय वञ्चकीणां रक्षणाय च ॥ आगमिष्यति वैकाग्र्यध्याननिष्ठा स्थिरा भ
व ॥ इदानीं चित्रकूटाद्राश्रमे वसति प्रभो ॥ यावदागमनं तस्य तावद्रक्ष कलेवरं ॥ दृष्टैव रा
घवं देहं यास्यसि तत्परं ॥ तथैव कृतवती राम त्वद्ध्यानैकपरायणा ॥ प्रतीक्ष्यागमनं ते
ऽद्य सफलं गुरुभाषितं ॥ तव संदर्शनं राम गुरूणामपि मे न हि ॥ योषिन्मूढा प्रमेयात्मा हीन
जातिसमुद्भवा ॥ तव दासस्य दासानां शतसंख्योत्तरस्य वा ॥ दासीत्वे नाधिकारोऽस्ति कुतः
साक्षात्तवैव हि ॥ कथं रामाद्य मे दृष्टस्त्वं मनोवागगोचरः ॥ स्तोतुं न जाने देवेश किं करोमि
प्रसीद मे ॥ श्री ॥ रा ॥ वाच ॥ पुंस्त्वे स्त्रीत्वे विशेषो वा जातिनामाश्रमादयः ॥ न कारणं मद्भज
ने भक्तिरेव हि कारणं ॥ यज्ञदानतपोभिर्वा वेदाध्ययनकर्मभिः ॥ नैव द्रष्टुमहं शक्यो मद्भक्ति
विमुखैः सदा ॥ तस्माद्भामिनि संक्षेपाद्वक्ष्येऽहं भक्तिसाधनं ॥ सतां संगतिरेवात्र साधनं प्रथमं
स्मृतं ॥ द्वितीयं मत्कथालापस्तृतीयं मद्गुणेरणं ॥ व्याख्यातृत्वं मद्वचसां चतुर्थं साधनं भ
वेत् ॥ आचार्योपासनं भद्रे मद्बुद्ध्यामायया सदा ॥ पंचमं पुण्यशीलत्वं यमादिनियमादि च
निष्ठा मत्पूजने नित्यं षष्ठं साधनमीरितं ॥ मम मंत्रोपासकत्वं सांगं सप्तममुच्यते ॥ मद्भक्तेष्व
धिका पूजा सर्वभूतेषु मन्मतिः ॥ बाह्यार्थेषु विरागित्वं शमादिसहितं तथा ॥ अष्टमं नवमं त
त्त्वविचारो मम भामिनि ॥ एवं नवविधं भक्तिसाधनं यस्य कस्य वा ॥ स्त्रियो वा पुरुषस्यापि तिर्य
ग्योनिगतस्य वा ॥ भक्तिः संजायते प्रेमलक्षणा शुभलक्षणे ॥ भक्तौ संजातमात्रायां मत्तत्त्वानु
भवस्तदा ॥ ममानुभवसिद्धस्य मुक्तिस्तत्रैव जन्मनि ॥ स्यात्तस्मात्कारणं भक्तिर्मोक्षस्येति सु
निश्चितं ॥ प्रथमं साधनं यस्य भवेत्तस्य क्रमेण तु ॥ भवेत्सर्वं ततो मुक्तिर्भक्तिरेव सुनिश्चितं
यस्मान्मद्भक्तियुक्ता त्वं ततोऽहं त्वामुपस्थितः ॥ इतो मद्दर्शनान्मुक्तिस्तव नास्त्यत्र संशयः ॥ यदि जा
नासि मे ब्रूहि सीतां कमललोचनां ॥ कुत्रास्ते केन वा नीता प्रिया मे प्रियदर्शना ॥ श ॥ र्यु ॥
वा
च ॥ देव जानासि सर्वं त्वं विश्वभावन ॥ तथापि पृच्छसे यन्मां लोकाननुसृतः प्रभो ॥ त
तोऽहं कथयिष्यामि सीता यत्राधुना स्थिता ॥ रावणेन हृता सीता लंकायां वर्ततेऽधुना ॥ इतः
समीपे रामास्ते पंपानाम सरोवरं ॥ ऋष्यमूकगिरिर्नाम तत्समीपे महानगः ॥ चतुर्भिर्मंत्रि
भिः सार्धं सुग्रीवो वानराधिपः ॥ भीतभीतः सदा तत्र तिष्ठत्यतुलविक्रमः ॥ वालिनस्तु भयाद्
भ्रातुस्तत्रागम्यमृषेर्भयात् ॥ वालिनस्तत्र गच्छ त्वं तेन सख्यं कुरु प्रभो ॥ सुग्रीवेण समस्तं ते
कार्यं संपादयिष्यति ॥ अहमग्निं प्रवेक्ष्यामि तवाग्रे रघुनंदन ॥ मुहूर्तं तिष्ठ राजेंद्र यावद्दग्ध्वा क
लेवरं ॥ यास्यामि भगवन् राम तव विष्णोः परं पदं ॥ इत्यग्निं समसा संप्रविवेश हुताशनं ॥ स
णान्निर्धूय सकलं अविद्याकृतबंधनं ॥ रामप्रसादाच्छबरी मोक्षं प्राप्यतिदुर्लभं ॥ किं दुर्लभं ज
गन्नाथे श्रीरामे भक्तवत्सले ॥ प्रसन्नेऽधमजन्मापि शबरी मुक्तिमाप सा ॥ किं पुनर्ब्राह्मणा
मुख्याः पुण्याः श्रीरामचिंतकाः ॥ मुक्तिं यांतीति तद्ब्रूमः किं भक्तिरेव संशयः ॥ भक्तिर्मुक्तिविधायि
नी भगवतः श्रीरामचंद्रस्य हे लोकाः कामदुघांघ्रिपद्मयुगलं सेवध्वमत्युत्सुकाः ॥ नानाज्ञा
नविशेषमंत्रविततिं त्यक्त्वा सुदूरे भृशं रामं श्यामतनुं स्मरारिहृदये भांतं भजध्वं बुधाः
इति श्रीमदध्यात्मरामायणे उमामहेश्वरसंवादे अरण्यकांडे दशमोऽध्यायः ॥ ॥१०॥

॥ समाप्तोऽयमारण्यकांडः ॥

श्रीमहादेव उवाच ॥ ततः सलक्ष्मणो रामः शनैः पंपासरस्तटं ॥ आगत्य सरसां श्रेष्ठं दृष्ट्वा वि
स्मयमाययौ ॥ क्रोशमात्रं सुविस्तीर्णमगाधामलशंबरं ॥ उत्फुल्लांबुजकह्लारकुमुदोत्पलमंडि
तं ॥ हंसकारंडवाकीर्णं चक्रवाकादिशोभितं ॥ जलकुक्कुटकोयष्टिक्रौंचनादोपनादि
ते ॥ नानापुष्पलताकीर्णं नानाफलसमावृतं ॥ सतां मनः स्वच्छजलं पद्मकिंजल्कवासितं
ततोपस्पृश्य सलिलं पीत्वा श्रममहं विभुः ॥ सानुजः सरसस्तीरे शीतलेन पथा ययौ ॥ ऋ
ष्यमूकगिरेः पार्श्वे गच्छंतौ रामलक्ष्मणौ ॥ धनुर्बाणकरौ दांतौ जटावल्कलमंडितौ ॥ पश्यं
तौ विविधान्वृक्षान्गिरेः शोभां सुविस्मितौ ॥ सुग्रीवस्तु गिरेर्मूर्ध्नि चतुर्भिः सह वानरैः ॥ स्थि
त्वा ददर्श तौ यांतावारुरोह गिरेः शिरः ॥ भयादाह हनूमंतं कौ तौ वीरवरौ सखे ॥ गच्छ जानी
हि भद्रं ते वटुर्भूत्वा द्विजाकृतिः ॥ वालिना प्रेषितौ किं वा मां हंतुं समुपागतौ ॥ ताभ्यां संभा
षणं कृत्वा जानीहि हृदयं तयोः ॥ यदि तौ दुष्टहृदयौ संज्ञां कुरु कराग्रतः ॥
शूरैवं नातिनिश्चितं ॥ तथेति वटुरूपेण हनूमान्समुपागतः ॥ विनयावनतो भूत्वा
रामं नत्वेदमब्रवीत् ॥ को युवां पुरुषव्याघ्रौ युवानौ वीरसंमतौ ॥ द्योतयंतौ दिशः सर्वाः
प्रभया भास्कराविव ॥ युवां त्रैलोक्यकर्तारावितिभाति मनो मम ॥ युवां प्रधानपुरुषौ
जगद्धेतू जगन्मयौ ॥ मायया मनुष्याकारौ चरंतौ तनयाकृती ॥
लीलया कर्तुमुद्यतौ ॥ स्वतंत्रौ प्रेरकौ सर्वहृदयस्थाविहेश्वरौ ॥ नरनारायणौ लोके च
रंताविति मे मतिः ॥ श्रीरामो लक्ष्मणं प्राह पश्यैनं वटुरूपिणं ॥ शब्दशास्त्रमशेषेण श्रुतं नू
नमनेकधा ॥ अनेन भाषितं कृत्स्नं न किंचिदपशब्दितं ॥ ततः प्राह हनूमंतं राघवो ज्ञा
नविग्रहः ॥ अहं दाशरथी रामस्त्वयं मे लक्ष्मणोऽनुजः ॥ सीतया भार्यया सार्धं पितुर्वच
नगौरवात् ॥ आगतस्तत्र विपिने स्थितोऽहं दंडके द्विज ॥ तत्र भार्या हृता सीता रक्षसा केन
चिन्मम ॥ तामन्वेष्टुमिहायातौ त्वं को वा कस्य वा वद ॥ वटुरुवाच ॥ सुग्रीवो नाम राजा यो वा
नराणां महामतिः ॥ चतुर्भिर्मंत्रिभिः सार्धं गिरिमूर्धनि तिष्ठति ॥ भ्राता कनीयान्सुग्रीवो
वालिनो पापचेतसः ॥ तेन निष्कासितो भार्या हृता तस्यापि वालिना ॥ तद्भयादृष्यमूकं तं गि
रिमाश्रित्य संस्थितः ॥ अहं सुग्रीवसचिवो वायुपुत्रो महामते ॥ हनुमान्नाम विख्यातो ह्यंजनी
गर्भसंभवः ॥ तेन सख्यं त्वया युक्तं सुग्रीवेण रघूत्तम ॥ भार्यापहारिणं हंतुं सहायस्ते भवि
ष्यति ॥ इदानीमेव गच्छामः आगच्छ यदि रोचते ॥ श्रीराम उवाच ॥ अहमप्यागतस्तेन सख्यं क
र्तुं कपीश्वर ॥ सख्युस्तस्यापि यत्कार्यं तत्करिष्याम्यसंशयः ॥ हनूमान्स्वस्वरूपेण स्थि
तो राममथाब्रवीत् ॥ आरोहतां मम स्कंधौ गच्छामः पर्वतोपरि ॥ यत्र तिष्ठति सुग्रीवो मं
त्रिभिर्वालिनो भयात् ॥ तथेति तस्यारुरोह स्कंधं रामोऽथ लक्ष्मणः ॥ उत्पपात गिरेर्मूर्ध्नि क्ष
णादेव महाकपिः ॥ वृक्षच्छायां समाश्रित्य स्थितौ तौ रामलक्ष्मणौ ॥ हनूमानपि सुग्रीव
मुपगम्य कृतांजलिः ॥ व्येतु ते भयमायातौ राजन् श्रीरामलक्ष्मणौ ॥ शीघ्रमुत्तिष्ठ सुग्री
मेलनं सख्यं ते योजितं मया ॥ अग्निं साक्षिणमारोप्य तेन सख्यं कुरु द्रुतं ॥ ततोऽतिहर्षात्सु
ग्रीवः समागम्य रघूत्तमं ॥ वृक्षशाखां स्वयं छित्त्वा विष्टराय ददौ मुदा ॥ [illegible]
दात्सुग्रीवाय च लक्ष्मणः ॥ हर्षेण महताविष्टाः सर्वे प्लावत स्थिरे ॥ हनूमाँल्लक्ष्मणाया
रामवृत्तांतमादितः ॥ वनवासाभिगमनं सीताहरणमेव च ॥ लक्ष्मणोक्तं वचः श्रुत्वा सु
ग्रीवो राममब्रवीत् ॥ अहं करिष्ये राजेंद्र सीतायाः परिमार्गणं ॥ सहायमपि ते राम करि
ष्ये शत्रु वालिनः ॥ शृणु राम मया दृष्टं किंचित्ते कथयाम्यहं ॥ एकदा मंत्रिभिः सार्धं स्थि
तोऽहं गिरिमूर्धनि ॥ विहायसा नीयमानां केनचित्प्रमदोत्तमां ॥ क्रोशंतीं राम रामेति दृ
ष्ट्वास्मान्पर्वतोपरि ॥ विसृज्याभरणान्याशु स्वोत्तरीयेण भामिनी ॥ निरीक्ष्याधः पतित्वाथ
क्रोशंती तेन रक्षसा ॥ नीता तान्यहमादाय गुहायामस्ति ते प्रभो ॥ इदानीमपि पश्य त्वं
जानीहि तव वा न वा ॥ इत्युक्त्वानीय रामाय दर्शयामास वानरः ॥ विमुच्य रामस्तं दृष्ट्वा

सीतेति स्फुहर्षकः॥ हृष्टिनितिप्य तत्सर्वं हरोस्याकृतो यथा॥ आश्वास्य राघवं भ्राता लक्ष्म
णो वाक्यमब्रवीत्॥ अचिरेणैव ते राम प्राप्यते जानकी शुभा॥ वानरेंद्रसहायेन हत्वा रावण
माहवे॥ सुग्रीवोप्याह हे राम प्रत्यज्ञां करवाणि ते॥ समरे रावणं हत्वा तव दास्यामि जानकीं
ततो हनूमान् प्रज्वाल्य तत्र वह्निं समीपतः॥ तावुभौ राम सुग्रीवावग्नौ साक्षिणि तिष्ठति॥
बाहू प्रसार्य चालिंग्य परस्परमकल्मषौ॥ समीपे रघुनाथस्य सुग्रीवः समुपाविशत्॥
स्वोदंतं कथयामास प्रणयाद्रघुनायकः॥ स ते शृणु ममोदंतं वालिना यत्कृतं पुरा॥ म
यपुत्रोथ मायावी नाम्ना परमदुर्मदः॥ किष्किंधां समुपागत्य वालिनं समुपाह्वयत्॥ सिं
हनादेन महता वाली न तदमर्षणः॥ निर्ययौ क्रोधताम्राक्षो [illegible]॥ दुद्राव ते
न संविग्नो जगाम स गुहां प्रति॥ अनुद्रुतस्ततो वाली मायाविनमहं तथा॥ ततः प्रविष्टुमा
लोक्य तद्गुहां मायाविनं रुषा॥ वाली मामाह तिष्ठ त्वं बहिर्गच्छाम्यहं गुहां॥ इत्युक्त्वा विश्य सु
हां मासमेकं न निर्ययौ॥ मासादूर्ध्वं गुहाद्वारान्निर्गतं रुधिरं बहु॥ तद्दृष्ट्वा परितप्तांगो मत्वा
वालीति दुःखितः॥ गुहाद्वारि शिलामेकां निधाय गृहमागतः॥ ततोऽभवं मृतो वाली गुहा
यां रक्षसा हतः॥ तच्छ्रुत्वा दुःखिताः सर्वे मामेकं [illegible]॥ राज्येऽभिषेचनं चक्रे सर्वे वान
रमंत्रिणः॥ पिहितं मया यातं किंचित्कालमरिंदम॥ ततः समागतो वाली मामाह दुष्टबु
द्धा॥ बहुधा भर्त्सयित्वा मां निजघान च मुष्टिभिः॥ ततो निर्गत्य नगरात् [illegible]
लोकान्सर्वान्परिक्रम्य ऋष्यमूकमुपाश्रितः॥ मद्भार्यापि तदा तेन हृता दुष्टेन राघव॥ ऋष्यमूकं न याति स शापात् [illegible]
भो॥ तदादि मम भार्यां स भुंक्ते [illegible]॥ अतो दुःखेन संतप्तो हृतदारो हृताश्रयः॥ व
साम्यद्य भवत्पादसंस्पर्शात्सुखितोऽस्म्यहं॥ मित्रदुःखेन संतप्तो रामो राजीवलोचनः॥ ह
निष्यामि तव द्वेष्यं शीघ्रं भार्यापहारिणं॥ इति प्रतिज्ञामकरोत्सुग्रीवस्य पुरस्तदा॥ सुग्रीवो
प्याह राजेंद्र वाली बलवतां बली॥ कथं हनिष्यति भवान्देवैरपि दुरासदं॥ शृणु तेऽस्य कथयिष्या
मि तद्बलं बलिनां वर॥ कदाचिद्दुंदुभिर्नाम महाकायो महाबलः॥ किष्किंधामगमद्राम महा
महिषरूपधृक्॥ युद्धाय वालिना राज्ञा समाह्वयत भीषणः॥ तच्छ्रुत्वा महमानो सो [illegible]
रमकोपनः॥ इति निष्कामितवद्देष्यं शीघ्रं भार्यापहारिणं॥ महिषं शृंगयोर्धृत्वा पातयामास भू
तले॥ पादेनैकेन तत्कायमाक्रम्यास्य शिरो महत्॥ हस्ताभ्यां भ्रामयित्वा तोलयित्वा दिव
दुवि॥ पपात तच्छिरो राम मातंगाश्रमसन्निधौ॥ योजनात्परितो तेन समाकुलितराघव॥ र
क्तवृष्टिं पपातेन दृष्ट्वा तं क्रोधमूर्च्छितः॥ मातंगो वालिनं प्राह यद्यत्रागमिष्यसि॥ इतः परं
भग्नशिरा मरिष्यसि न संशयः॥ एवं शापमसौ राम [illegible]॥ एतज्ज्ञात्वाहमप्य
त्र वसामि भयवर्जितः॥ राम पश्य शिरोऽस्य दुंदुभेः पर्वतोपमं॥ तत्क्षेपणे यदा शक्तः शक्तस्त्वं
वालिनो वधे॥ इत्युक्त्वा दर्शयामास शिरस्तद्गिरिसंनिभं॥ दृष्ट्वा रामः स्मितं कृत्वा पादांगुष्ठेन चादि
पत्॥ दशयोजनपर्यंतं तदद्भुतमिवाभवत्॥ साधु साध्विति संप्राह सुग्रीवो मंत्रिभिः सह॥ पु
नरप्याह सुग्रीवो रामं भक्तपरायणं॥ एते ताला महासाराः सप्त पश्य रघूत्तम॥ एकैकं चाल
यित्वासौ निष्पत्राः कुरुते जवात्॥ यदि त्वमेकबाणेन विध्वा छिद्रं करोषि चेत्॥ हतस्त्वया तदा
वाली विश्वासो मे प्रजायते॥ तथेति धनुरादाय सायकं तत्र संदधे॥ विभेद च तदा राम सप्त ता
लान्महाबलः॥ तालान्सप्त विनिर्भिद्य गिरिं भूमिं च सायकः॥ पुनरागत्य रामस्य तूणीरे पूर्ववत्
स्थितः॥ ततोऽतिहर्षात्सुग्रीवो राममाहातिविस्मितः॥ देव त्वं जगतां नाथः परमात्मा न संश
यः॥ मत्पूर्वकृतपुण्यौघैः संगतोऽद्य मया सह॥ त्वां भजंति महात्मानः संसारविनिवृत्तये॥ त्वां
प्राप्य मोक्षसचिवं प्रार्थयेऽहं कथं भवं॥ दारा पुत्रा धनं राज्यं सर्वं त्वन्मायया कृतं॥ अतोऽहं देव
देवेश नाकांक्षेऽन्यत्प्रसीद मे॥ आनंदानुभवं त्वाद्य प्राप्तोऽहं भाग्यगौरवात्॥ मृदर्थं यतमानेन
निधानमिव सन्नते॥ अनाद्यविद्यासंसिद्धं बंधनं छिन्नमद्य नः॥ यज्ञदानतपःकर्मपूर्तेष्टादि
भिरप्यसौ॥ न क्षीयते तु संसारो भजते मे सम त्वे प्रभो॥ त्वत्पादपद्मार्पितचित्तवृत्ति

तृणमर्धमपि यच्चित्ते त्वयि निहत्य चंचलं॥ तस्माज्ज्ञानमनर्थानां मूले नश्यति तत्क्षणात्
त्तनिष्ठत्वमनो राम त्वयि लग्नत्वमेव मे सदा॥ रामरामेति यद्वाणी मधुरं गायति क्षणं॥ स ब्रह्महा सु
रापो वा मुच्यते सर्वपातकैः॥ नकांक्षे विजयं राम न च दारसुखादिकं॥ भक्तिमेव सदाकांक्षे त्व
यि बंधविमोचिनीं॥ त्वन्मायाकृतसंसारस्त्वदंशोहं रघूत्तम॥ स्वपादभक्तिमादिश्य त्राहि मां
भवसंकटात्॥ पूर्वं मित्रार्युदासीनास्त्वन्मायावृतचेतसः॥ आसन्मेऽद्य भवत्पाददर्शनादेव रा
घव॥ सर्वं ब्रह्मैव मे भाति क्व मित्रं क्व च मे रिपुः॥ यावत्त्वन्मायया बद्धस्तावद्गुणविशेषता॥
मायावद्भिन्ना नानात्वं तावद्भवति नान्यथा॥ यावन्नानात्वमज्ञानात्तावत्कालकृतं भयं
अतोऽविद्यामुपास्ते यः सोंऽधे तमसि मज्जते॥ मायामूलमिदं सर्वं पुत्रदारादिबंधनं॥ तदुत्सा
रय मायां त्वं दासीं तव रघूत्तम॥ त्वत्पादपद्मार्पितचित्तवृत्तिस्त्वन्नामसंगीतकथासु वाणी॥
त्वद्भक्तसेवानिरतौ करौ मे त्वदंगसंगं लभतां मदंगं॥ त्वन्मूर्तिभक्तान्स्वगुरुं च चक्षुः पश्यत्वजस्रं
स्म मनः परेशः॥ त्वज्जन्मकर्माणि च पादयुग्मं व्रजत्वजस्रं तव मंदिराणि॥ अंगानि ते
पादरजोविमिश्रतीर्थानि बिभ्रत्वहिशत्रुकेतो॥ शिरस्त्वदीयं भवपद्मजाद्यैर्जुष्टं पदं राम न
मत्वजस्रं॥ इति श्रीमदध्यात्मरामायणे उमामहेश्वरसंवादे किष्किंधाकांडे प्रथमोऽध्यायः
॥ ॥ श्रीमहादेव उवाच ॥ ॥
इत्थं स्वात्मपरिष्वंगनिर्धूताशेषकल्मषं॥ रामः सुग्रीवमालोक्य सस्मितं वाक्यमब्रवीत्॥
मायामोहकरीं तस्मिन्वितन्वन्कार्यसिद्धये॥ सखे त्वदुक्तं यत्तन्मां सत्यमेव न संशयः॥ किंतु
लोका वदिष्यंति मामेवं रघुनंदनः॥ कृतवान्किं कपींद्राय सख्यं कृत्वाग्निसाक्षिकं॥ इति लो
कापवादो मे भविष्यति न संशयः॥ तस्मादाह्वय भद्रं ते गत्वा युद्धाय वालिनं॥ बाणेनैकेन
तं हत्वा राज्ये त्वामभिषेचये॥ तथेति गत्वा सुग्रीवः किष्किंधोपवने धृतः॥ हत्वा नादं महा
वीरो प्रव्रा नरः॥ तच्छ्रुत्वा भ्रातृनिनदं क्रोधताम्रविलोचनः॥ निर्जगाम गृहात्तूर्णं
पर्यमूर्च्छितः॥ वाली तमपि सुग्रीवः प्रतीघ्नं तस्य ताड्यत॥ सुग्रीवमपि मुष्टिभ्यां जघान क्रो
धमूर्च्छितः॥ वाली तमपि सुग्रीव एवं युद्धे परस्परं॥ आयुद्धेतामेकरूपौ दृष्ट्वा रामोऽतिविस्मितः
नैव तयोः सुग्रीवो राममब्रवीत्॥ किं मां घातयसे राम शत्रुणा भ्रातृरूपिणा॥ यदि मद्धनने वांछा
तवास्ति तदा किमर्थं सख्यं कृत्वा॥ एवमेव मया ज्ञातं सत्यवादिन् रघूत्तम॥ उपेक्षसे किमर्थं मां शरणागत
वत्सल॥ श्रुत्वा सुग्रीववचनं रामः साश्रुविलोचनः॥ आलिंग्य मा स्म भैषीस्त्वं दृष्ट्वा यामे कदृ
शौ युवां॥ मित्रघातित्वमाशंक्य मुक्तवान्सायकं न हि॥ इदानीमेव ते चिह्नं करिष्ये भ्रमशांतये
गत्वाह्वय पुनः शत्रुं हतं पश्यसि वालिनं॥ रामो दत्वा हनूमन्तं निध्यामि विष्टिं राम॥ इत्य
युक्त्वा स सुग्रीवं रामो लक्ष्मणमब्रवीत्॥ सुग्रीवस्य गले पुष्पमालामासज्य पुष्पितां॥ प्रेष
यस्व महाभाग सुग्रीवं वालिनं प्रति॥ लक्ष्मणस्तु तदा राम सुग्रीवं गजपुष्पकं मालितमालां॥ प्रेषयामास
सुग्रीवं सोपि गत्वा तत्क्षणात्॥ पुनरप्याह्वयद्भ्रातरं नादं कृत्वा वालिनमाह्वयत्॥ तच्छ्रुत्वा वि
स्मितो वाली क्रोधेन महताऽवृतः॥ बद्ध्वा परिकरं सम्यग्गमनायोपचक्रमे॥ गच्छंतं वालि
नं तारा गृहीत्वा निषिषेध तं॥ न गंतव्यं त्वयेदानीं कामं नीतिर्न जायते॥ इदानीमेव ते भग्नः
पुनरायाति सत्वरः॥ सहायो बलवांस्तस्य कश्चिन्नूनं समागतः॥ वाली तामाह हे सुभ्रु
कालेऽस्मिन्नु रहता॥ प्रियेऽकरं ततस्त्वं गच्छ गृहं मा प्रतिरोधय॥ हत्वा शीघ्रं ममायास्ये सहाय
स्तस्य कोऽभवेत्॥ सहायो यदि सुग्रीवस्ततो हन्यां भयं न हि॥ आयास्ये मा शुचः सुभ्रु
कथं तिष्ठेत्विदं रिपुं॥ तारा त्वाप्याह्वयमानं दृष्ट्वा दुःखमनीश्वरी॥ तारा उवाच॥ मत्तो
नः शृणु राजेंद्र श्रुत्वा कुरु यथोचितं॥ आहमामंगदः पुत्रो मृगयायां च यद्वचः॥ अयो
ध्याधिपतिः श्रीमान्रामो दाशरथिः किल॥ लक्ष्मणेन सहभ्रात्रा सीतया भार्यया सह॥ आ
गतो दंडकारण्ये तत्र सीता हृता किल॥ लक्ष्मणेन सहभ्रात्रा मार्गमाणो न जानकीं॥ आगतो

ऋषिमूकाद्रिसुग्रीवेण समागतः ॥ चकार तेन सुग्रीवः सख्यं चानलसाक्षिकं ॥ प्रतिज्ञातं तत
त्रामः सुग्रीवाय सलक्ष्मणः ॥ वालिनं समरे हत्वा राजानं त्वां करोम्यहं ॥ इति निश्चित्य तौ यातौ नो
निश्चित्य च महद्वचः ॥ इदानीमेव तेन प्रकंप्य भुवनं नादतः ॥ अतस्त्वं सर्वथा वैरं त्यक्त्वा सुग्रीव
मानय ॥ यौवराज्येऽभिषिच्याशु रामं तं शरणं व्रज ॥ पाहि मामंगदं राज्यं कुलं च हरिपुंगव ॥ इ
त्युक्त्वा सा सुमुखी तारा पादयोः प्रणिपत्य तं ॥ हस्ताभ्यां चरणौ धृत्वा रुरोद भयविह्वला ॥ ता
मालिंग्य तदा वाली सस्नेहमिदमब्रवीत् ॥ स्त्रीस्वभावाद्बिभेषि त्वं प्रिये नास्ति भयं मम ॥ रा
मो यदि समायातो लक्ष्मणेन समं प्रभुः ॥ तदा रामेण मे स्नेहो भविष्यति न संशयः ॥ रामो ना
रायणः साक्षादवतीर्णोऽखिलप्रभुः ॥ भूभारहरणार्थाय श्रूयते एवं मयानघे ॥ स्वपरः पक्षपा
तो वा नास्ति तस्य परात्मनः ॥ आनेष्यामि गृहे रामं नत्वा तच्चरणांबुजे ॥ भजतो भजत्ये
ष भक्तिगम्यः सुरेश्वरः ॥ यदि स्वयं समायाति सुग्रीवोऽहं निहनिष्ये तत्क्षणात् ॥ यदुक्तं यत्त्वया त्वायसु
ग्रीवस्याभिषेचने ॥ कथमाहूयमानोऽहं युद्धाय रिपुणा प्रिये ॥ शूरोऽहं सर्वलोकानां संमतः शु
भसत्तले ॥ भीतभीतमिदं वाक्यं कथं वाली वदेत् प्रिये ॥ तस्माच्छोकं परित्यज्य तिष्ठ सुंदरि वेश्म
नि ॥ एवमाश्वास्य तारां तां क्रोधेन महता ततः ॥ गतो वाली समद्युक्तः सुग्रीवस्य वधाय सः ॥
दृष्ट्वा वालिनमायांतं सुग्रीवो भीमविक्रमः ॥ अभ्यपातयते वद्धः मुष्टिमात्रः पतंगवत् ॥ मुष्टि
भ्यां ताडयामास वालिनं सोऽपि तं तथा ॥ अहन् वाली च सुग्रीवं सुग्रीवो वालिनं तथा ॥ रामो वि
लोकयन्नेव सुग्रीवो युयुधे युधि ॥ इत्येवं युध्यमानौ तौ दृष्ट्वा रामः प्रतापवान् ॥ बाणमादा
य तूणीरादैंद्रं धनुषि संदधे ॥ आकृष्य कर्णपर्यंतमदृश्यो वृक्षखंडगः ॥ निरीक्ष्य वालिनं
सम्यग्लक्ष्यं तदा हरिः ॥ असृजत्तं निशितं महावेगं महाबलः ॥ विभेद स शरो वक्षो वालिनः
कंपयन्महीं ॥ अपपात महाशब्दं मुंचन्नद्रिः पपात ह ॥ तदा मुहूर्तं निःसंज्ञो भूत्वा चेतनमाप
सः ॥ ततो वाली ददर्शाग्रे रामं राजीवलोचनं ॥ धनुरालंब्य वामेन हस्तेनान्येन सायकं ॥ विभ्रा
णं चीरवसनं जटामुकुटधारिणं ॥ विशालवक्षसं भ्राजद्वनमालाविभूषितं ॥ पीनचार्वाय
तभुजं नवदूर्वादलच्छविं ॥ सुग्रीवलक्ष्मणाभ्यां च पार्श्वयोः परिसेवितं ॥ विलोक्य शनकैः
प्राह वाली रामं विगर्हयन् ॥ किं मयापकृतं राम तव येन हतोऽस्म्यहं ॥ राजधर्ममविज्ञाय गर्हि
तं कर्म ते कृतं ॥ वृक्षखंडे तिरोभूत्वा त्यजता मयि सायकं ॥ यशः किं लप्स्यसे राम चोरवत्कृतकर्म
संगरः ॥ यदि स्त्रीविरहाद्रामो मनो वेषात्समुद्भवः ॥ युद्धं कृत्वा समक्षं मे प्राप्स्यसे तत्फलं तदा ॥ सु
ग्रीवेण कृतं किं ते मया वा न कृतं किमु ॥ रावणेन हृता सीता तव राम महावने ॥ सुग्रीवं चरणौ
पातं त्वं सर्वथा विक्रमः ॥ वत राम न जानीषे महल्लोकविकृतं ॥ रावणं सकलं बद्ध्वा ससीतं
लंकया सह ॥ आनयामि मुहूर्तेन यदि वेत्स्यसि राघव ॥ धर्मिष्ठ इति लोकेऽस्मिन् कथ्यसे रघुनंदन
वानरं व्याधवद्धत्वा धर्मं कं लप्स्यसे वद ॥ अभक्ष्यं वानरं मांसं हत्वा मां किं करिष्यसि ॥ इत्येवं व
हुभाषंतं वालिनं राघवोऽब्रवीत् ॥ धर्मस्य गोप्ता लोकेऽस्मिन् चरामि सशरासनः ॥ अधर्मकारिणं ह
त्वा सद्धर्मं पालयाम्यहं ॥ दुहिता भगिनी भ्रातुर्भार्या चैव तथा स्नुषा ॥ समा यो रमते तासामेक
मपि विमूढधीः ॥ पातकी स तु विज्ञेयः स वध्यो राजभिः सदा ॥ त्वं तु भ्रातुः कनिष्ठस्य भार्यायां
रमसे व्रतात् ॥ अतो मया धर्मविदा हतोऽसि वनगोचर ॥ त्वं कपित्वान्न जानीषे महांतो विचरंति
यत् ॥ लोकं पुनाना संचारैः तस्त्वां नाभिभाषयेत् ॥ तच्छ्रुत्वा भयसंत्रस्तो ज्ञात्वा रामं रमाप
तिं ॥ वाली प्रणम्य रभसा राममेवं वचनमब्रवीत् ॥ राम राम महाभाग जाने त्वां परमेश्वरं ॥ अजा
नता मया किंचिदुक्तं तत्क्षंतुमर्हसि ॥ साक्षात्त्वच्छरघातेन विशेषेण तवाग्रतः ॥ त्यजाम्यसू
न्महायोगिदुर्लभं तव दर्शनं ॥ यन्नाम विवशो गृह्णन् म्रियमाणः परं पदं ॥ याति साक्षात्स एवाद्य
मुमूर्षोर्मे पुरः स्थितः ॥ देव जानामि पुरुषं त्वां श्रियं जानकीं शुभां ॥ रावणस्य वधार्थाय जातं त्वां
ब्रह्मणार्थितं ॥ अनुजानीहि मां राम यास्ये त्वत्पदमुत्तमं ॥ मम तुल्यबलो वाली अंगदं त्वं रघो
त्तम ॥ विषयस्यं दरहस्य तं हृदयं पालितात्मवान् ॥ तथेति वालिनं प्राह रामः पक्षपाति

ना ॥ त्यक्त्वा तद्वानरं देहं समरे दोषवत्क्षणात् ॥ वाली रघूत्तमशराभिहतो विमृष्टो रामेण शी
तलकरेण सुखाकरेण ॥ सद्यो विमुच्य कपिदेहमनन्यलभ्यं प्राप्तः पदं परमहंसगणैर्दुरापं ॥
इति श्रीमदध्यात्मरामायणे किष्किंधाकांडे द्वितीयोऽध्यायः ॥ ॥ २ ॥

॥ श्रीमहादेव उवाच ॥

निहते वालिनि रणे रामेण परमात्मना ॥ दुद्रुवुर्वानराः सर्वे किष्किंधां भयविह्वलाः ॥ तारा
मूचुर्महाभागे हतो वाली रणाजिरे ॥ अंगदं परिरक्षाद्य मंत्रिणः परिनोदय ॥ चतुर्द्वारकपाटा
दीन्बद्ध्वा रक्षामहे पुरीं ॥ वानराणां तु राजानमंगदं कुरु भामिनि ॥ निहतं वालिनं श्रुत्वा तारा शो
कविमूर्छिता ॥ अताडयत्स्वपाणिभ्यां शिरो वक्षश्च भूरिशः ॥ किमंगदेन राज्येन नगरेण धनेन
वा ॥ इदानीमेव निधनं यास्यामि पतिना सह ॥ इत्युक्त्वा त्वरिता त्रस्ता रुदंती मुक्तमूर्धजा ॥ ययौ ता
रातिशोकार्ता यत्र भर्ता कलेवरं ॥ पतितं वालिनं दृष्ट्वा रक्तैः पांसुभिरावृतं ॥ रुदंती नाथ नाथे
ति पतिता तस्य पादयोः ॥ करुणं विलपंती सा ददर्श रघुनंदनं ॥ राम मां जहि बाणेन येन वा
ली हतस्त्वया ॥ गच्छामि पतिसालोक्यं पतिर्मामभिकांक्षते ॥ स्वर्गेऽपि न सुखं तस्य मां विना र
घुनंदन ॥ पत्नीवियोगजं दुःखमनुभूतं त्वयानघ ॥ वालिने मां प्रयच्छाशु पत्नीदानफलं भ
वेत् ॥ सुग्रीवस्त्वं सुखं राज्ये साधितं वालिना विना ॥ रामेण रमया सार्धं भुंक्ष्व सापत्न्यवर्जितं
स्यैवं विलपंतीं तां तारां रामो महामनाः ॥ सांत्वयामास दयया तत्त्वज्ञानोपदेशतः ॥ किं भी
रु शोचसि व्यर्थं शोकस्याविषयं पतिं ॥ पतिस्तवायं देहो वा जीवो वा वद तत्त्वतः ॥ पंचात्म
को जडो देहस्त्वङ्मांसरुधिरास्थिमान् ॥ कालकर्मगुणोत्पन्नः सोऽप्यास्तेऽद्यापि ते पुरः ॥ म
न्यसे जीवमात्मानं जीवस्तर्हि निरामयः ॥ न जायते न म्रियते न तिष्ठति न गच्छति ॥ न स्त्री पु
मान्वा षंडो वा जीवः सर्वगतोऽव्ययः ॥ एक एवाद्वितीयोऽयमाकाशवदलेपकः ॥ नित्यो ज्ञानम
यः शुद्धः स कथं शोकमर्हति ॥ तारोवाच ॥ देहोऽचित्काष्ठवद्राम जीवो नित्यश्चिदात्मकः ॥ सु
खदुःखादिसंबंधः कस्य स्याद्राम मे वद ॥ राम उवाच ॥ अहंकारादिसंबंधो यावद्देहेंद्रियैः सह
संसारस्तावदेव स्यादात्मनस्त्वविवेकिनः ॥ मिथ्यारोपितसंसारो बंधश्चैव मनः शुभे ॥ स
रिविद्यासंवेधात्कार्याद्दहनेस्तथा ॥ संसारोपाधिकोऽपि स्याद्रागद्वेषादिसंकुलः ॥ मन
एव हि संसारो बंधश्चैव मनः शुभे ॥ आत्मा मनः समानत्वमेत्य तद्गतबंधभाक् ॥ यथा विशुद्ध
स्फटिकोऽलक्तकादिसमीपगः ॥ तत्तद्वर्णयुतो भाति वस्तुतो नास्ति रंजना ॥ बुद्धींद्रियादिसामी
प्यात्मनः संसृतिर्बलात् ॥ आत्मा स्वलिंगं तु मनः परिगृह्य तदुद्भवान् ॥ कामान्जुषन्गु
णैर्बद्धः संसारे वर्तते वशः ॥ आदौ मनोगुणान्सृष्ट्वा ततः कर्माण्यनेकधा ॥ शुक्ललोहितकृष्णा
नि गतयस्तत्समानतः ॥ एवं कर्मवशाज्जीवो भ्रमत्याभूतसंप्लवं ॥ सर्वोपसंहृतौ जीवो वास
नाभिः स्वकर्मभिः ॥ अनाद्यविद्यावशगस्तिष्ठत्यभिनिवेशतः ॥ सृष्टिकाले पुनः पूर्ववासना
मानसैः सह ॥ जायते पुनरप्येवं घटीयंत्रमिवावशः ॥ यदा पुण्यविशेषेण लभते संगतिं स
तां ॥ मद्भक्तानां सुशांतानां तदा मद्विषया मतिः ॥ मत्कथाश्रवणे श्रद्धा दुर्लभा जायते ततः
ततः स्वरूपविज्ञानमनायासेन जायते ॥ तदाचार्यप्रसादेन वाक्यार्थज्ञानतः क्षणात् ॥ देहें
द्रियमनःप्राणाहंकृतिभ्यः पृथक् स्थितं ॥ स्वात्मानमनुभवतः सत्यमानंदरूपिणः ॥ सा
द्यो भवन्मुक्तः सत्यमेव मयोदितं ॥ एवं मयोदितं सम्यगालोचयति यो निशं ॥ तस्य संसार
दुःखानि न स्पृशंति कदाचन ॥ त्वमप्येतन्मया प्रोक्तमालोचय विशुद्धधीः ॥ न स्पृश्यसे दुःख
मोलैः कर्मबंधाद्विमोक्ष्यसे ॥ पूर्वजन्मनि ते सुभ्रूः कृता मद्भक्तिरुत्तमा ॥ अतस्तव विमोक्षाय
रूपं मे दर्शितं शुभे ॥ ध्यात्वा मद्रूपमनिशमालोचय मयोदितं ॥ प्रवाहपतितं कार्यं कुर्वंत्य
पि न लिप्यसे ॥ श्रीरामेणोदितं सर्वं श्रुत्वा तारातिविस्मिता ॥ देहाभिमानजं शोकं त्यक्त्वा
नत्वा रघूत्तमं ॥ आत्मानुभवसंतुष्टा जीवन्मुक्ता बभूव ह ॥ तत्क्षणं संगमात्रेण रामेण पर
मात्मना ॥ अनादिबंधं निर्धूय मुक्ता सापि विकल्मषा ॥ सुग्रीवोऽपि च तच्छ्रुत्वा रामवक्त्रात्स

अ॰ रा॰
२५

मीरितं॥ जहावज्ञानमखिलं तस्य चित्तोऽभवत्तदा॥ ततः सुग्रीवमाहेदं रामो वानरपुंगवं॥
भ्रातुर्ज्येष्ठस्य पुत्रेण यद्युक्तं सांपरायिकं॥ कुरु सर्वं यथान्यायं संस्कारादि ममाज्ञया॥ तथे
ति बहुभिर्भृत्यैर्वानरैः परिणीय तं॥ वालिनं पुष्पके क्षिप्त्वा सर्वराजोपचारकैः॥ भेरीदुं
दुभिनिर्घोषैर्ब्राह्मणैर्मंत्रिभिः सह॥ यूथपैर्वानरैः पौरैस्तारया चांगदेन च॥ गत्वा चकार त
त्सर्वं यथाशास्त्रं प्रयत्नतः॥ स्नात्वा जगाम रामस्य समीपं मंत्रिभिः सह॥ नत्वा रामस्य चर
णौ सुग्रीवः प्राह हृष्टधीः॥ राज्यं प्रशाधि राजेंद्र वानराणां समृद्धिमत्॥ दासोऽहं ते पादपद्मं
सेवे लक्ष्मणवच्चिरं॥ इत्युक्तो राघवः प्राह सुग्रीवं सस्मितं वचः॥ त्वमेवाहं न संदेहः शीघ्रं
गच्छ ममाज्ञया॥ पुरराज्याधिपत्ये त्वं स्वात्मानमभिषेचय॥ नगरं न प्रवेक्ष्यामि चतुर्दश
समाः सखे॥ आगमिष्यति मे भ्राता लक्ष्मणः पत्तनं तव॥ अंगदं यौवराज्ये त्वमभिषेचय
सादरं॥ अहं समीपे शिखरे पर्वतस्य सहानुजः॥ वत्स्यामि वर्षदिवसांस्ततस्त्वं यत्नवान्भ
व॥ किंचित्कालं पुरे स्थित्वा सीतायाः परिमार्गणे॥ साष्टांगं प्रणिपत्याह सुग्रीवो रामपादयोः
यदाज्ञापयसे देव तत्तथैव करोम्यहं॥ अनुज्ञातस्तु रामेण सुग्रीवस्तु सलक्ष्मणः॥ गत्वा पुरीं त
थाचक्रे यथा रामेण चोदितः॥ सुग्रीवेण यथान्यायं पूजितो लक्ष्मणस्तदा॥ आगत्य राघवं
शीघ्रं प्रणिपत्योपतस्थिवान्॥ ततो रामो जगामाशु लक्ष्मणेन समन्वितः॥ प्रवर्षणगिरेरू
र्ध्वं शिखरं भूरिविस्तरं॥ तत्रैकं गह्वरं दृष्ट्वा स्फाटिकं दीप्तिमच्छुभं॥ वर्षवातातपसहं फलमूलस
मीपगं॥ वासाय रोचयामास तत्र रामः सलक्ष्मणः॥ दिव्यमूलफलपुष्पसंयुते मौक्तिकोपम
जलौघपल्वले॥ चित्रवर्णमृगपक्षिशोभिते पर्वते रघुकुलोत्तमोऽवसत्॥ इति श्रीमदध्यात्म
रामायणे किष्किंधाकांडे तृतीयोऽध्यायः॥ ३॥

तत्रवार्षिकदिनानि।

॥ श्रीमहादेव उवाच॥

तत्र वार्षिकदिनानि राघवो लीलया मणिगुहासु संचरन्॥ पक्वमूलफलभोगतोषितो लक्ष्म
णेन सहितोऽवसत्सुखं॥ वातनुन्नजलपूरितमेघानंतरस्तनितवेणुनगर्जनैः॥ वीक्ष्य वि
स्मयमगाद्गजयूथान्यद्रवाद्दिनमुकांचनकलान्॥ नववासंसमास्वादयद्दयुष्पमहादिमाः
धावंतः पूरितो रामं वीक्ष्य विस्मापितेक्षणाः॥ नवलं तिस्तदा ध्याननिष्ठाश्च मुनीश्वराः॥ रामे
मानुषरूपेण गिरिकाननभूमिषु॥ चरंतं परमात्मानं ज्ञात्वा सिद्धगणा भुवि॥ मृगपक्षि
गणा भूत्वा राममेवानुसेविरे॥ सौमित्रिरेकदा राममेकांते ध्यानतत्परं॥ समाधिविरमे भक्त्या प्र
णिपत्य विनयान्वितः॥ अब्रवीद्देव ते वाक्यात्सर्वाज्ञा विगता मम॥ अनादिविद्यासंभूतः संश
यो हृदि संस्थितः॥ इदानीं श्रोतुमिच्छामि क्रियामार्गेण राघव॥ भवदाराधनं लोके यथा कुर्व
न्नियोगिनः॥ इदमेव सदा प्राहुर्योगिनो मुक्तिसाधनं॥ नारदोऽपि तथा व्यासो ब्रह्मा कमलसंभ
वः॥ ब्रह्मक्षत्रादिवर्णानामाश्रमाणां च मोक्षदं॥ स्त्रीशूद्राणां च राजेंद्र सुलभं मुक्तिसाधनं॥
तव भक्ताय मे भ्रात्रे ब्रूहि लोकोपकारकं॥ श्रीराम उवाच॥ मम पूजाविधानस्य नांतोऽस्ति रघुनंद
न॥ तथापि वक्ष्ये संक्षेपाद्यथावदनुपूर्वशः॥ स्वगृह्योक्तप्रकारेण द्विजत्वं प्राप्य मानवः॥
सकाशात्सद्गुरोर्मंत्रं लब्ध्वा मद्भक्तिसंयुतः॥ तेन संदर्शितविधिर्मामेवाराधयेत्सुधीः॥ हृदये
वानलेऽर्चायां प्रतिमादौ विभावसौ॥ शालिग्रामशिलायां वा पूजयेन्मामतंद्रितः॥ प्रातः स्ना
नं प्रकुर्वीत प्रथमं देहशुद्धये॥ वेदतंत्रोदितैर्मंत्रैर्मृल्लेपनविधानतः॥ संध्यादिकर्म यन्नित्यं
तत्कुर्याद्विधिना बुधः॥ संकल्पमादौ कुर्वीत सिद्ध्यर्थं कर्मणां सुधीः॥ स्वगुरुं पूजयेद्भक्त्या मद्बु
द्धिको मम॥ शिलायां स्नापनं कुर्यात्प्रतिमासु प्रमार्जनं॥ प्रसिद्धैर्गंधपुष्पाद्यैर्मत्पूजा सि
द्धिदायिका॥ अमायिकोऽनुवृत्त्या मां पूजयेन्नियतव्रतः॥ प्रतिमादिष्वलंकारः प्रियो मे कुलनं
दन॥ अग्नौ यजेत हविषा भास्करे स्थंडिले यजेत्॥ भक्तेनोपहृतं प्रीत्यै श्रद्धया मम वार्यपि॥
किं पुनर्भक्ष्यभोज्यादि गंधपुष्पाक्षतादिकं॥ पूजाद्रव्याणि सर्वाणि संपाद्यैवं समारभेत्॥ चै
लाजिनकुशैः सम्यगासनं परिकल्पयेत्॥ तत्रोपविश्य देवस्य सम्मुखे शुद्धमानसः॥ ततो

न्यासं प्रकुर्वीत मातृकाबहिरांतरं॥ केशवादि ततः कुर्यात्तत्त्वन्यासं ततः परं॥
मंत्रन्यासं ततो न्यसेत्॥ प्रतिमादावपि तथा कुर्यान्नित्यमतंद्रितः॥ कलशं तु पुरो वामे क्षि
पेत्पुष्पाणि दक्षिणे॥ अर्घ्यपाद्यप्रदानार्थं मधुपर्कार्थमेव च॥ तथैवाचमनार्थं तु न्यसेत्पात्र
चतुष्टयं॥ हृत्पद्मे भानुविमले मत्कलां जीवसंज्ञितां॥ ध्यायेत्स्वदेहमखिलं तया व्याप्तमरिंद
म॥ तामेवावाहयेन्नित्यं प्रतिमादिषु मत्कलां॥ पाद्यार्घ्याचमनीयाद्यैः स्नानवस्त्रविभूष
णैः॥ यावच्छक्योपचारैर्वा त्वर्चयेन्माममायया॥ विभवे सति कर्पूरकुंकुमागुरुचंदनैः॥
अर्चयेन्मंत्रवन्नित्यं सुगंधकुसुमैः शुभैः॥ दशावरणपूजां वै आगमोक्तां प्रकारयेत्॥ नीराज
नैर्धूपदीपैर्नैवेद्यैर्बहुविस्तरैः॥ प्रह्वोऽपहरेन्नित्यं प्रदद्यात्प्रभुरीश्वरः॥ होमं कुर्यात्प्रयत्नेन
विधिना मंत्रकोविदः॥ आगमोक्तेन मार्गेण कुंडे नागमवित्तमः॥ जुहुयान्मूलमंत्रेण त्रयस्त्रिं
शेन॥ धायेद्रत्नसमध्यस्थं होमकाले सदा बुधः॥ पार्षदेभ्यो बलिं दत्त्वा होमशेषं समापये
त्॥ ततो जपं प्रकुर्वीत ध्यायन्मां यतवाक्स्मरन्॥ मुखवासं च तांबूलं दत्त्वा प्रीतिसमन्वि
तः॥ मदर्थे नृत्यगीतादि स्तुतिपाठादि कारयेत्॥ प्रणमेद्दंडवद्भूमौ हृदये मां निधाय च॥
शिरस्याधाय मद्दत्तं प्रसादं भावनामयः॥ पाणिभ्यां मत्पदे स्पृष्ट्वा मद्दीनाय क्षिसंयुतः॥ रक्ष
मां घोरसंसाराद्दित्यु(?)क्त्वा प्रणमेत्सुधीः॥ तदा मूर्ध्नि विन्यस्य ज्योतिषि संस्मरन्॥ एवमु
मा सेवयेत्सो वै दिने दिने॥ करोति मम सारूप्यं प्राप्नोत्येव न संशयः॥ मद्भक्तो यदि
मामेवं पूजां चैव दिने दिने॥ पठेन्नित्यं स्तुतिं वा यदि वा मद्गुणोत्तिथः सर्वसिद्धाफलभाक् संशयः
एवं परात्मा श्रीरामः क्रियायोगमनुत्तमं॥ पृष्टः प्राह स्वभक्ताय शेषांशाय महात्मने॥ अतः प्रा
कृतवद्रामो मायामाश्रित्य दुःखितः॥ हा सीतेति वदन्नेव निद्रां लेभे कथंचन॥ एतस्मिन्नंतरे तत्र
किष्किंधायां सुबुद्धिमान्॥ हनूमान्प्राह सुग्रीवमेकांते कपिनायकं॥ शृणु राजन्प्रवक्ष्यामि
वचनं तव हितं शुभं॥ रामेण ते कृतः पूर्वमुपकारो ह्यनुत्तमः॥ कृतघ्नवत्त्वया नूनं विस्मृतः प्रति
भाति मे॥ त्वत्कृते निहतो वाली वीरस्त्रैलोक्यसंमतः॥ राज्ये प्रतिष्ठितोऽसि त्वं तारां प्राप्तोऽसि दुर्
लभां॥ स रामः पर्वतस्याग्रे भ्रात्रा सह वसन्सुधीः॥ त्वदागमनमेकाग्रमीक्षते कार्यगौरवात्
त्वं तु वानरभावेन स्त्रीसक्तो नावबुध्यसे॥ करोमीति प्रतिज्ञाय सीतायाः परिमार्गणं॥ न
करोषि कृतघ्नस्त्वं हन्यसे वालिवद्ध्रुवं॥ हनूमद्वचनं श्रुत्वा सुग्रीवो भयविह्वलः॥ हनूमंत
हनूमंतं सत्यमेव त्वयोदितं॥ शीघ्रं कुरु मदाज्ञां त्वं वानराणां तरस्विनां॥ सहस्राणि दश
दश प्रेषय याहि दिशो दश॥ सप्तद्वीपगतान्सर्वान्वानरानानयंतु ते॥ पक्षमध्ये समायांतु
सर्वे वानरपुंगवाः॥ ये पक्षमतिवर्तंते ते वध्या मे न संशयः॥ इत्याज्ञाप्य हनूमंतं सुग्रीवो गृह
माविशत्॥ सुग्रीवाज्ञां पुरस्कृत्य हनूमान्मंत्रिसत्तमः॥ तत्क्षणे प्रेषयामास हरीन्दशदिशः
सुधीः॥ अगणितगुणसत्वानुग्रवेगप्रवानान्वनचरगणमुख्यान्पर्वताकाररूपान्॥ पव
नहितकुमारः प्रेषयामास दूतानतिरभसतरात्मा दानमानादितृप्तान्॥ इति श्रीमदध्यात्म
रामायणे किष्किंधाकांडे चतुर्थोऽध्यायः॥ ४॥

॥ श्रीमहादेव उवाच॥

रामस्तु पर्वतस्याग्रे मणिसानौ निशामुखे॥ सीताविरहजं शोकमसहन्निदमब्रवीत्॥ प
श्य लक्ष्मण मे सीता राक्षसेन हृता बलात्॥ मृतामृता वा निश्चत्वं न जाने याऽपि भामिनी॥
जीवतीति मम ब्रूयात्कश्चिद्वा प्रियकृत्स मे॥ यदि जानामि तां साध्वीं जीवंतीं यत्र कुत्र वा॥ ह
ठादेवाहरिष्यामि सुधामिव पयोनिधेः॥ प्रतिज्ञां शृणु मे भ्रातर्येन मे जनकात्मजा॥ नीता
तं भस्मसात्कुर्यां सपुत्रबलवाहनं॥ हा सीते चंद्रवदने वसंती राक्षसालये॥ दुःखार्ता मम प
श्यंती कथं प्राणान्हरिष्यसि॥ चंद्रोऽपि भानुवद्भाति मम चंद्राननां विना॥ चंद्र त्वं जानकीस्प

कि०का०
२९

ष्ठाकारेमोस्त्रयुवतीनतैः ॥ सुग्रीवोपि रयादीनो दुःस्थितं मार्गं न पश्यति ॥ राज्यं निष्कंटकं प्राप्य
स्त्रीभिः परिवृतोऽरहः ॥ हनुमांस्तु ततो व्यक्तं कालं संज्ञाति कामुकः ॥ नयानिशारदं पश्यन्नपिब
मेपि लंप्रिया ॥ सर्वोपकारिणं दुष्टः कृतघ्नो विस्मृतो हि मां ॥ इत्थं सुग्रीवमध्येव स भुरे सम
सांप्रतं ॥ वाली यथा हतो मेद्य सुग्रीवोपि तथा भवेत् ॥ इति रुष्टं समालोक्य राघवं लक्ष्मणो
ब्रवीत् ॥ इदानीमेव गत्वाहं सुग्रीवं दुष्टमानसं ॥ मामाज्ञापय हत्वा तमायास्ये राम तेंतिकं
इत्युक्त्वा धनुरादाय खड्गं तूणीरमेव च ॥ गंतुमभ्युद्यतं वीक्ष्य रामो लक्ष्मणमब्रवीत् ॥
न हंतव्यस्त्वया वत्स सुग्रीवो मे प्रियः सखा ॥ किंतु भीषय सुग्रीवं वालीवत्र हनिष्यसे
इत्युक्त्वा शीघ्रमादाय सुग्रीवप्रतिभाषितं ॥ आगत्य पश्चाद्यत्कार्यं तत्करिष्याम्यसंशयं
तथेति लक्ष्मणो गच्छन्त्वरितो भीमविक्रमः ॥ किष्किंधां प्रति कोपेन निर्दहन्निव वानरान् ॥
सर्वज्ञो नित्यलक्ष्मीको विज्ञानात्मापि राघवः ॥ सीतामनुशुशोचार्तः प्राकृतः प्रकृतामिव
बुद्ध्यादिसाक्षिणस्तस्य मायाकार्यातिवर्तिनः ॥ रागादिरहितस्यास्य तत्कार्यं कथमुद्भवेत्
ब्रह्मणोक्रमतं कार्यं राज्ञो रक्षत्स्यहि ॥ तपसः फलदानाय जातो मानुषरूपधृक् ॥ माय
यामोहिताः सर्वे जना अज्ञानसंवृताः ॥ कथमेषां भवेन्मोक्ष इति विष्णुर्विचिंतयन् ॥ कथां
प्रथयितुं लोके सर्वलोकमलापहां ॥ रामायणमितिख्यातां भूत्वा मानुषचेष्टकः ॥ क्रोधं मो
हं च कामं च व्यवहारार्थसिद्धये ॥ तत्तत्कालोचितं गृह्णन्मोहयत्यवशाः प्रजाः ॥ अनुरक्त इव
प्रेयगुणे गुणवर्जितः ॥ विज्ञानमूर्तिर्विज्ञानशक्तिः साक्ष्यगुणान्वितः ॥ अतः कामादिभि
र्नित्यं नवलिप्तो यथा नभः ॥ विदंति मुनयः केचिज्जानंति सनकादयः ॥ तद्भक्ता निर्मला
त्मानः सम्यग्जानंति नित्यदा ॥ भक्तचित्तानुसारेण जायते भगवानजः ॥ लक्ष्मणोपि त
दा गत्वा किष्किंधानगरांतिकं ॥ ज्याघोषमकरोत्तीव्रं भीषयन्सर्ववानरान् ॥ तं दृष्ट्वा प्राकृ
तास्तत्र वानरा वप्रमूर्धनि ॥ चक्रुः किलकिलाशब्दं धृतपाषाणपादपाः ॥ तान्दृष्ट्वा क्रोध
ताम्राक्षो वानरांल्लक्ष्मणस्तदा ॥ निर्मूलान्कर्तुमुद्युक्तो धनुरानम्य वीर्यवान् ॥ ततः शीघ्रं
समाप्लुत्य ज्ञात्वा लक्ष्मणमागतं ॥ निवार्य वानरान्सर्वानंगदो मंत्रिसत्तमः ॥ गत्वा लक्ष्म
णसामीप्यं प्रणनाम स दंडवत् ॥ ततोंगदं परिष्वज्य लक्ष्मणः प्रियवर्धनः ॥ उवाच वत्स गच्छ
त्वं पितृव्याय निवेदय ॥ समागतं राघवेण चोदितं रोषमूर्तिना ॥ तथेति त्वरितं गत्वा सुग्री
वाय न्यवेदयत् ॥ लक्ष्मणः क्रोधताम्राक्षः पुरद्वारि बहिःस्थितः ॥ तच्छ्रुत्वातीव संत्रस्तः सुग्री
वो वानरेश्वरः ॥ आहूय मंत्रिणां श्रेष्ठं हनूमंतमथाब्रवीत् ॥ गच्छ त्वमंगदेनाशु लक्ष्मणं विनया
न्वितः ॥ सांत्वयन्कोपितं वीरं शनैरानय मंदिरं ॥ प्रेष्य ॥ पित्वा हनूमंतं तारामाह कपीश्वरः ॥ त्वं
गच्छ सांत्वयंतीतं लक्ष्मणं मृदुभाषितैः ॥ शांतमंतःपुरं नीत्वा पश्चाद्दर्शय मेऽनघे ॥ भवत्विति
ततस्तारा मध्यकक्षं समाविशत् ॥ हनूमानंगदेनैव सहितो लक्ष्मणांतिकं ॥ गत्वा ननाम
शिरसा भक्त्या स्वागतमब्रवीत् ॥ एहि वीर महाभाग भवद्गृहमशंकितं ॥ प्रविश्य राजदारा
दीन्दृष्ट्वा सुग्रीवमेव च ॥ यदाज्ञापयसे पश्चात्तत्सर्वं करवाणि भो ॥ इत्युक्त्वा लक्ष्मणं भक्त्या
करे गृह्य स मारुतिः ॥ आनयामास नगरमध्याद्राजगृहं प्रति ॥ पश्यंस्तत्र महासौधान्यूथ
पानां समंततः ॥ जगाम भवनं राज्ञः सुरेंद्रभवनोपमं ॥ मध्यकक्षे गतास्तत्र तारा ताराधिपान
ना ॥ सर्वाभरणसंपन्ना मदरक्तांतलोचना ॥ उवाच लक्ष्मणं नत्वा स्मितपूर्वाभिभाषिणी ॥ या
हि देवर भद्रं ते साधुस्त्वं भक्तवत्सलः ॥ किमर्थं कोपमाकार्षीर्भक्ते भृत्ये कपीश्वरे ॥ बहुकालम
नाश्वासे दुःखमेवानुभूतवान् ॥ इदानीं बहुदुःखौघाद्भवद्भिरभिरक्षितः ॥ भवत्प्रसादात्सु
ग्रीवः प्राप्तसौख्यो महामतिः ॥ कामासक्तो रघुपतेः सेवार्थं नागतो हरिः ॥ आगमिष्यंति हर
यो नानादेशगताः प्रभो ॥ प्रेषिता दश साहस्राः हरयो रघुसत्तमः ॥ आनेतुं वानरान्दिव्यान्म
हापर्वतसन्निभान् ॥ सुग्रीवः स्वयमागत्य सर्ववानरयूथपैः ॥ वधिष्यति रिपून्सैन्यो रावणं
हनिष्यति ॥ त्वयैव सहितोऽद्यैव गंता वानरपुंगवः ॥ पश्यांतर्भवने तत्र रुमया सह दृश्यते

दृष्ट्वा सुग्रीवमभयं दत्त्वानय सहैव ते ॥ तारया वचनं श्रुत्वा त्यक्त्वा कोपोथ लक्ष्मणः ॥ आगा
मांतःपुरं यत्र सुग्रीवो वानरेश्वरः ॥ तारमालिंग्य सुग्रीवः पर्यंके पर्यवस्थितः ॥ दृष्ट्वा लक्ष्म
णमत्यर्थमुत्पपातातिभीतवत् ॥ तं दृष्ट्वा लक्ष्मणः क्रुद्धो मदविह्वललोचनं ॥ सुग्रीवं प्राह दु
र्वृत्त विस्मृतोसि रघूत्तमं ॥ वाली येन हतो वीरः स बाणोद्य प्रतीक्षते ॥ त्वमेव वालिनो मार्गं
गमिष्यसि मया हतः ॥ एवमत्यंतपरुषं वदंतं लक्ष्मणं तदा ॥ उवाच हनुमान्वीरः कथमेवं प्र
भाषसे ॥ त्वत्तोधिकतरो रामे भक्तोयं वानराधिपः ॥ रामकार्यार्थमनिशं जागर्ति न तु विस्म
तः ॥ आगताः परितः पश्य वानराः कोटिशः प्रभो ॥ प्रेषिता दशसाहस्रा हरयो रघुसत्तम ॥ आ
नेतुं वानरान्दिक्ष्यो महापर्वतसन्निभान् ॥ गमिष्यत्यचिरेणैव सीतायाः परिमार्गणे ॥
साधयिष्यति सुग्रीवो रामकार्यमशेषतः ॥ श्रुत्वा हनूमतो वाक्यं सौमित्रिर्लज्जितोभवत् ॥
सुग्रीवोप्यर्घ्यपाद्याद्यैर्लक्ष्मणं समपूजयत् ॥ आलिंग्य प्राह रामस्य दासोहं तेन रक्षितः ॥
रामः स्वतेजसा लोकान्क्षणार्धेनैव जेष्यति ॥ सहायमात्रमेवाहं वानरैः सहितः प्रभो ॥
सौमित्रिरपि सुग्रीवं रामस्तिष्ठति कानने ॥ एक एवातिदुःखार्तो जानकीविरहात्प्रभो ॥
तथेति रथमारुह्य लक्ष्मणेन समन्वितः ॥ वानरैः सहितो राजा राममेवानुपद्यते ॥ भेरीमृदं
गैर्बहुभिः श्वेतातपत्रव्यजनैश्च शोभितः ॥ नीलांगदाद्यैर्हनुमत्प्रधानैः समावृतो
राघवमभ्यगाद्धरिः ॥ इति श्रीमदध्यात्मरामायणे किष्किंधाकांडे पंचमोध्यायः ॥ ५ ॥

॥ श्रीमहादेव उवाच ॥

दृष्ट्वा रामं समासीनं गुहाद्वारि शिलातले ॥ चैलाजिनधरं श्यामं जटामौलिविराजितं ॥ वि
शालनयनं शांतं स्मितचारुमुखांबुजं ॥ सीताविरहसंतप्तं पश्यंतं मृगपक्षिणः ॥ रथाद्दू
रात्समुत्प्लुत्य वेगात्सुग्रीवलक्ष्मणौ ॥ रामस्य पादयोरग्रे पेततुर्भक्तिसंयुतौ ॥ रामः सुग्री
वमालिंग्य पृष्ट्वानामयमंतिके ॥ स्थापयित्वा यथान्यायं पूजयामास धर्मवित् ॥ ततो ब्र
वीद्रघुश्रेष्ठं सुग्रीवो भक्तिनम्रधीः ॥ देव पश्य समायांतीं वानराणां महाचमूं ॥ कुलाचल
दिसंभूता मेरुमंदरसन्निभाः ॥ नानाद्वीपसरिच्छैलवासिनः पर्वतोपमाः ॥ असंख्याताश्च
मायांति हरयः कामरूपिणः ॥ सर्वे देवांशसंभूताः सर्वे युद्धविशारदाः ॥ अत्र केचिद्गजब
लाः केचिद्दशगजोपमाः ॥ गजायुतबलाः केचिदपरेऽमितविक्रमाः ॥ केचिदंजनकूटा
भाः केचित्कनकसन्निभाः ॥ केचिद्रक्तांतवदना दीर्घवालास्तथापरे ॥ शुद्धस्फटिकसंका
शाः केचिद्राक्षससन्निभाः ॥ गर्जंतः परितो यांति वानरा युद्धकांक्षिणः ॥ त्वदाज्ञाकारिणः स
र्वे फलमूलाशिनः प्रभो ॥ ऋक्षाणामधिपो वीरो जांबवानाम बुद्धिमान् ॥ एष मे मंत्रिणां श्रे
ष्ठः कोटिभल्लूकयूथपः ॥ हनूमानेष विख्यातो महासत्वपराक्रमः ॥ वायुपुत्रोतितेजस्वी मंत्री
बुद्धिमतां वरः ॥ नीलो नीलश्च गवयो गवाक्षो गंधमादनः ॥ शरभो मैंदश्चैव गजः पनस एव
च ॥ वलीमुखो दधिमुखः सुषेणस्तार एव च ॥ केसरी च महासत्वः पिता हनुमतो बली ॥ एते
यूथपा राम प्राधान्येन मयोदिताः ॥ महात्मानो महावीर्याः शक्रतुल्यपराक्रमाः ॥ एते
प्रत्येकतः कोटिकोटिवानरयूथपाः ॥ तवाज्ञाकारिणः सर्वे सर्वे देवांशसंभवाः ॥ एष वा
लिसुतः श्रीमान् अंगदो नाम विश्रुतः ॥ वालितुल्यबलो वीरो राक्षसानां बलांतकः ॥ एते चा
न्ये च बहवस्त्वदर्थे त्यक्तजीविताः ॥ योद्धारः पर्वताग्रैश्च निपुणाः शत्रुघातने ॥ आज्ञापय रघु
श्रेष्ठ सर्वे ते वशवर्तिनः ॥ रामः सुग्रीवमालिंग्य हर्षपूर्णाश्रुलोचनः ॥ प्राह सुग्रीव जानासि
सर्वं त्वं कार्यगौरवं ॥ मार्गणार्थं हि जानक्या नियुंक्ष्व यदि रोचते ॥ श्रुत्वा रामस्य वचनं सुग्री
वः प्रीतमानसः ॥ प्रेषयामास बलिनो वानरान्वानरर्षभः ॥ दिक्षु सर्वासु विविधान्वानरान्प्रे
ष्य सत्वरं ॥ दक्षिणां दिशमत्यर्थं प्रयत्नेन महाबलान् ॥ युवराजं जांबवंतं हनूमंतं महाबलं
नलं सुषेणं शरभं मैंदं द्विविदमेव च ॥ प्रेषयामास सुग्रीवो वचनं चेदमब्रवीत् ॥ विचिन्वं
तु प्रयत्नेन भवंतो जानकीं शुभां ॥ मासाद्र्वाङ्निवर्तध्वं सर्वे सेनाग्रसराः ॥ सीतामदृष्ट्वा

कि॰ का॰
२८

यदि सीता मया दृष्टा दिनं भवेत् ॥ न सा प्राणान्निकृन्तेत मत्तः प्राप्स्यथ वानराः ॥ इति प्रस्थाप्य सुग्रीवो वा
नरान्भीमविक्रमान् ॥ रामस्य पार्श्वे सुग्रीवः प्रणम्य समुपाविशत् ॥ गच्छन्तं मारुतिं दृष्ट्वा रामो व
चनमब्रवीत् ॥ अभिज्ञानार्थमेतन्मे ह्यङ्गुलीयकमुत्तमम् ॥ मन्नामाक्षरसंयुक्तं सीतायै दीय
ताम्रहः ॥ अस्मिन्कार्ये प्रमाणं हि त्वमेव कपिसत्तम ॥ जानामि सत्त्वं ते सर्वं गच्छ पन्थाः शुभस्त
ते ॥ एवं कपीनां राजा तेन विसृष्टाः परिमार्गणे ॥ सीतायास्त्वङ्गदमुखा बभ्रमुस्तत्र तत्र ह ॥ अ
टन्ति वानराः सर्वे गिरिशृङ्गाणि काननम् ॥ रावणो राक्षसो दृष्टः
विन्ध्यारण्ये दृढः पर्वतोपमः ॥ राक्षसं भीषणाकारं भक्षयन्तं मृगान्गजान् ॥ रावणोऽयमिति
ज्ञात्वा केचिद्वानरपुङ्गवाः ॥ जघ्नुः किलकिलाशब्दं कुर्वन्तो मुष्टिभिः क्षणात् ॥ नायं स रावण इ
त्युक्त्वा ययुरन्यन्महद्वनम् ॥ तृषार्ताः सलिलं तत्र नाविन्दन्हरिपुङ्गवाः ॥ विभ्रमन्तो महारण्ये शुष्क
कण्ठोष्ठतालुकाः ॥ ददृशुर्गह्वरं तत्र तृणगुल्मावृतं महत् ॥ आर्द्रपक्षान्क्रौञ्चहंसान्निःसृतान्ददृशु
स्ततः ॥ अत्रास्ते सलिलं नूनं प्रविशामो महागुहाम् ॥ इत्युक्त्वा हनुमानग्रे प्रविवेश तमन्वयुः स
र्वे ॥ अन्धकारे महद्दुर्गे गत्वा प्रपुन्नकपीश्वराः ॥ जलाशया
न्वैपरस्यं धृत्वा बाहून्बाहुभिरुत्सुकाः ॥ अथ कारे महद्दूरं गत्वापश्यन्कपीश्वराः ॥ जलाशया
न्मणिनिभान्तोयान्कल्पद्रुमोपमान् ॥ वृक्षान्पक्वफलैर्नम्रान्मधुद्रोणसमन्वितान् ॥ गृहा
न्सर्वगुणोपेतान्मणिवस्त्रादिपूरितान् ॥ दिव्यभक्ष्यान्नसहितान्मानुषैः परिवर्जितान् ॥ विस्मि
तास्तत्र भवने दिव्ये कनकविष्टरे ॥ प्रभया दीप्यमानां तु ददृशुः स्त्रियमेकलाम् ॥ ध्यायन्तीं चीरव
सनां योगिनीं योगमास्थिताम् ॥ प्रणेमुस्तां महाभागां भक्त्या भीत्या च वानराः ॥ दृष्ट्वा तान्वा
नरान्देवी प्राह यूयं किमागताः ॥ कुतो वा कस्य दूता वा मत्स्थानं किं प्रधर्षथ ॥ तच्छ्रुत्वा हनु
मानाह शृणु वक्ष्यामि देवि ते ॥ अयोध्याधिपतिः श्रीमान्राजा दशरथः प्रभुः ॥ तस्य पुत्रो म
हाभागो ज्येष्ठो रामाभिधानः ॥ पितुराज्ञां पुरस्कृत्य सभार्यः सानुजो वने ॥ गतस्तत्र हृता भा
र्या तस्य साध्वी दुरात्मना ॥ रावणेन ततो रामः सुग्रीवं सानुजो ययौ ॥ सुग्रीवो मित्रभावेन रा
मस्य प्रियवल्लभः ॥ सुग्रीवप्रेषिता ह्यत्र वयं समुपागताः ॥ ततो वयं विचिन्वन्तो जानकीम
न्वकांक्षिणः ॥ प्रविष्टा गह्वरं घोरं दैवादत्र समागताः ॥ त्वं वा किमर्थमत्रासि का वा त्वं वद नः
शुभे ॥ योगिनी च तथा दृष्ट्वा वानरान्प्राह हृष्टधीः ॥ यथेष्टं फलमूलानि जग्ध्वा पीत्वामृतो
पमः ॥ आगच्छत ततो वक्ष्ये मम वृत्तान्तमादितः ॥ तथेति भुक्त्वा पीत्वा च हृष्टास्ते सर्ववानराः ॥ दे
व्याः समीपं गत्वा ते बद्धाञ्जलयः स्थिताः ॥ ततः प्राह हनूमन्तं योगिनी दिव्यदर्शना ॥ हेमा
नाम पुरा दिव्यरूपिणी विश्वकर्मणः ॥ पुत्री महेशं नृत्येन तोषयामास भामिनी ॥ तुष्टो महे
शः प्रददाविदं दिव्यपुरं महत् ॥ अत्र स्थिता सा सुदती वर्षाणामयुतायुतम् ॥ तस्या अहं सखी
विष्णुतत्परा मोक्षकांक्षिणी ॥ नाम्ना स्वयंप्रभा दिव्यगन्धर्वतनयानघ ॥ गच्छन्ती ब्रह्मलोकं सा
मामाह त्वं तपश्चर ॥ अत्रैव निवसन्नित्यं सर्वप्राणिविवर्जिते ॥ त्रेतायुगे दाशरथिर्भूत्वा नारा
यणोऽव्ययः ॥ भूभारहरणार्थाय विचरिष्यति कानने ॥ मार्गन्तो वानरास्तस्य भार्यां मायां
तिने गुहाम् ॥ पूजयित्वा च तान्नत्वा रामं स्तुत्वा प्रयत्नतः ॥ यास्यसि भवनं विष्णोर्योगिगम्यं
सनातनम् ॥ इतोऽहं गन्तुमिच्छामि रामं द्रष्टुं त्वरान्विता ॥ यूयं पिदध्वं नेत्राणि गमिष्यथ बहि
र्गुहात् ॥ तथैव चक्रुस्ते वेगात्तदा पूर्वस्थितं वनम् ॥ सापि त्यक्त्वा गुहां शीघ्रं ययौ राघवसन्निधिं
तत्र रामं ससुग्रीवं लक्ष्मणं च ददर्श ह ॥ कृत्वा प्रदक्षिणं रामं प्रणम्य बहुशः सुधीः ॥ प्राह गद्ग
दया वाचा रोमाञ्चिततनूरुहा ॥ दासी तवाहं राजेन्द्र दर्शनार्थमिहागता ॥ बहुवर्षसहस्राणि
तप्तं मे दुष्करं तपः ॥ गुहायां दर्शनार्थं ते फलितं मेऽद्य तत्तपः ॥ अद्याहं त्वां नमस्यामि मायायाः पु
रतः स्थितम् ॥ सर्वभूतेषु चालक्ष्यं बहिरन्तरवस्थितम् ॥ योगमायाजवनिकाच्छन्नो मानुषविग्रहः
न लक्ष्यसे ज्ञानदृशां शैलूषो वरुपधृक् ॥ महाभागवतानां त्वं भक्तियोगविधित्सया ॥ अव
तीर्णोऽसि भगवान्कथं जानामि तामसी ॥ लोके जानातु यः कश्चित्तव तत्त्वं रघूत्तम ॥ ममैत
देव रूपं ते सदा भातु हृदालये ॥ रामते पादयुगले दर्शितं मोक्षदर्शने ॥ अदर्शनं भवार्णवे
न्मार्गपरिवर्जिने ॥ धनपुत्रकलत्रादिविभूतिपरिवर्धितः ॥ अकिंचनधनं त्वां नाभि

धातुं जनाईति ॥ निवृत्तगुणमार्गाय निष्किंचनधनाय ते ॥ नमः स्वात्माभिरामाय निर्गुणा
य गुणात्मने ॥ कालरूपिणमीशानमादिमध्यान्तवर्जितम् ॥ समं चरन्तं सर्वत्र मन्ये त्वां पुरुषं
परम् ॥ देव ते चेष्टितं कश्चिन्न वेद नविडम्बनम् ॥ न तेऽस्ति वाच्यद्वेष्यो वा प्रियो वा पापकर्म
णामिव हिताय न सर्वं ह्यथ भ्रमति न ज्ञायते ॥ अजस्याकर्तुरीशस्य देवतिर्यङ्नरादिषु ॥ जन्म
कर्मादिकं यद्यत्तदेतद्विडम्बनम् ॥ त्वां भजन्ति महात्मानो संसारविनिवृत्तये ॥ के चित्कोशल
राजस्य तपसः फलसिद्धये ॥ कौशल्यायाः प्रार्थमानं जातमाहुः परे जनाः ॥ दुष्टराक्ष
सभारहरणार्थं प्रार्थितो विभुः ॥ ब्रह्मणा नरूपेण जातोऽयमिति केचन ॥ शृण्वन्ति गायन्ति गृण
न्त्यभीक्ष्णशः कथास्तवे रघुनन्दन ॥ पश्यन्ति तव पादाब्जं भवार्णवसन्तारणम् ॥ त्वं मायागुणबद्धाहं वाचिति
के गुणमये ॥ कथं त्वां देव जानीयां स्तोतुं वा विषयप्रियः ॥ न मस्याभिरतु पदं ह्यात्मानं
प्रमाणिते ॥ लक्ष्मणेन समस्त्रीभ्राता सुग्रीवादिभिरन्विते ॥ एवं स्तुतो रघुश्रेष्ठः प्रसन्नः प्रणतार्ति
हृत ॥ उवाच योगिनीं भक्त्या किं ते मनसि कांक्षितम् ॥ सा प्राह राघवं भक्त्या भक्तिं ते भक्तवत्स
ला ॥ यत्र कुत्रापि जाताया निश्चलां देहि मे प्रभो ॥ त्वद्भक्तेषु सदा सङ्गो भूयान्मे प्राकृतेषु न
निश्चला ते राम रामेति भक्त्या वक्तुः सदा सदा ॥ जनस्ते स्यात्ममेतद्रूपं सीतालक्ष्मणसंयुतम् ॥ य
र्वीणधरं पीतवाससं मुकुटोज्ज्वलम् ॥ अङ्गदैर्नूपुरैर्मुक्ताहारैः कौस्तुभकुण्डलैः ॥ भान्तं
स्मरन्तु मे राम नान्यद्याचे प्रभो ॥ श्रीराम उवाच ॥ भवत्वेवं महाभागे गच्छ त्वं बदरीव
ने ॥ तत्रैव मां स्मरन्ती त्वं त्यक्त्वेदं भूतपञ्चकम् ॥ मामेव परमात्मानं अचिरात्प्रतिपद्यसे ॥
श्रुत्वा रघूत्तमवचोऽमृतसारकल्पं गत्वा तदैव बदरीतरुखण्डजुष्टम् ॥ तीर्थं तदा रघुपतिं मन
सा स्मरन्ती त्यक्त्वा कलेवरमवाप परं पदं सा ॥ इति श्रीमदध्यात्मरामायणे किष्किंधाकांडे
षष्ठोऽध्यायः ॥ ६ ॥

॥ श्रीमहादेव उवाच ॥

अथ तत्र समासीना गह्वरे ते तु वानराः ॥ चिन्तयन्तो विमूढान्तः सीतामार्गणकर्षिताः ॥ त
तो बाङ्गदः वाक्यं द्वानरान्वानरर्षभः ॥ भ्रमतो गह्वरे स्माकं मासो नूनं गतोऽभवत् ॥ सीता
नाधिगता स्माभिर्न कृतं राजशासनम् ॥ यदि गच्छामि किष्किन्धां सुग्रीवोऽस्मान्हनिष्यति ॥ सीता
दोषतः पाकं सत्त्वं ममाप्रियाणां हनिष्यति ॥ मयि तस्य कुतो प्रीतिरहं रामेण रक्षितः ॥ इदानीं
राम कार्यमेतत्तेन निमित्तं भवेत् ॥ तस्य मद्धनने नूनं सुग्रीवस्य दुरात्मनः ॥ मातृकल्पां भ्रा
तृजायां यः पापात्मानुभवत्यसौ ॥ न गच्छेयमतः पार्श्वं तस्य वानरपुङ्गवः ॥ त्यक्ष्यामि जीवन
मत्रैव राजमनाह्यब्रवीत् ॥ विमर्षेति वचो कोऽत्र वदते प्राणरक्षकाः ॥ व्यथितास्त्वन्ययन
द्योऽभयवर्जिताः ॥ सर्वसौभाग्यसहितं पुरं देवपुरोपमम् ॥ यानैः परस्परं वाक्यं वदतो महता
त्मनः ॥ श्रुत्वाङ्गदं समालिङ्ग्य प्रोवाच नयकोविदः ॥ विचार्यते किमर्थं ते दुर्विचारो न युज्य
ते ॥ राज्ञोऽत्यन्तप्रियस्त्वं हि तारापुत्रोऽतिवल्लभः ॥ रामस्य लक्ष्मणान्प्रीतिस्त्वयि नित्यं
प्रवर्धते ॥ अतो न राघवान्भीतिस्तव राज्ञो विशेषतः ॥ अहं तव हिते सक्तो वत्स नान्यं वि
दे ॥ ये त्वां दुर्बोधयन्त्येते वानरा वानरर्षभ ॥ पुत्रदारादिकं त्यक्त्वा कथं स्थास्यन्ति तेऽन्व
या ॥ अन्यद्गुह्यतमं वक्ष्ये रहस्यं शृणु मे सुत ॥ रामो न मानुषो देवः साक्षान्नारायणोऽ
व्ययः ॥ सीता भगवती माया जनसंमोहकारिणी ॥ लक्ष्मणो भुवनाधारः साक्षाच्छेषः
फणीश्वरः ॥ ब्रह्मणा प्रार्थिताः सर्वे रक्षोगणविनाशने ॥ मायामानुषभावेन जाता लो
कैकरक्षकाः ॥ वयं च पार्षदाः सर्वे विष्णोर्वैकुण्ठवासिनः ॥ मानुष्यभावमापन्ने स्वेच्छया प
रमात्मनि ॥ वयं वानररूपेण जातास्तस्यैव मायया ॥ वयं तु तपसा सर्वे माराध्य जगतां
पतिं ॥ तेनैवानुगृहीताः स्म पार्षदत्वमुपागताः ॥ इदानीमपि तस्यैव सेवां कृत्वा वि

मायया ॥ पुनर्वैकुंठमासाद्य सुखं स्थास्यामहे वयं ॥ इत्यंगदमथाश्वास्य गता विंध्यमहाचले ॥ विचिन्वंतोऽथ जानकीं नगरीं दक्षिणां दिशं ॥ तीरे महेंद्रस्य गिरेः पवित्रे पादपायुते ॥ दृष्ट्वा समुद्रं दुष्पारमगाधं भयवर्धनं ॥ वानरा भयसंत्रस्ताः किं कुर्म इति वादिनः ॥ निषेदुरुदधेस्तीरे सर्वे चिंतासमन्विताः ॥ मंत्रयामासुरन्योन्यमंगदाद्या महाबलाः ॥ भ्रमतां मे वने मासो गतो नैव दृष्टा जानकी ॥ न दृष्टो रावणो वापि सीता वा जनकात्मजा ॥ सुग्रीवस्तीक्ष्णदंडोऽस्मान्निहंत्येव न संशयः ॥ सुग्रीववधतोऽस्माकं श्रेयः प्रायोपवेशनं ॥ इति निश्चित्य तत्रैव दर्भानास्तीर्य सर्वतः ॥ उपाविविशुस्ते सर्वे मरणे कृतनिश्चयाः ॥ एतस्मिन्नंतरे तत्र महेंद्राद्रिगुहांतरे ॥ निर्गत्य शनकै राजा गृध्रः पर्वतसंनिभः ॥ दृष्ट्वा प्रायोपवेशेन स्थितान्वानरपुंगवान् ॥ उवाच शनकैर्गृध्रः प्राप्तो भक्ष्योऽद्य मे बहुः ॥ एकैकशः क्रमात्सर्वान्भक्षयामि दिने दिने ॥ श्रुत्वा तद्गृध्रवचनं वानरा भीतमानसाः ॥ भक्षयिष्यति नः सर्वानसौ गृध्रो न संशयः ॥ रामकार्यं च नास्माभिः कृतं किंचिद्धरीश्वराः ॥ सुग्रीवस्यापि च हितं न कृतं स्वात्मनोऽपि हि ॥ वृथानेन वधं प्राप्ता गच्छामो यमसादनं ॥ अहो जटायुर्धर्मात्मा रामस्यार्थे मृतः सुधीः ॥ मोक्षं प्राप दुरावापं योगिनामप्यरिंदम ॥ संपातिस्तु तदा वाक्यं श्रुत्वा वानरभाषितं ॥ के वा यूयं मम भ्रातुः कर्णपीयूषसंनिभं ॥ जटायुरिति नामाद्य व्याहरंतः परस्परं ॥ उच्यतां वो भयं मा भून्मत्तः प्लवगसत्तमाः ॥ तमुवाचांगदः श्रीमानुत्थितो गृध्रसंनिधौ ॥ रामो दाशरथिः श्रीमाँल्लक्ष्मणेन समन्वितः ॥ सीतया भार्यया सार्धं विचचार वनांतरे ॥ तस्य सीता हृता साध्वी रावणेन दुरात्मना ॥ मृगयां निर्गते रामे लक्ष्मणे च तदा बलात् ॥ रामरामेति क्रोशंतीं श्रुत्वा गृध्रः प्रतापवान् ॥ जटायुर्नाम पक्षींद्रो युद्धं कृत्वा सुदारुणं ॥ रावणेन हतो वीरो राघवार्थे महाबलः ॥ रामेणाथ स दग्धो रामसायुज्यमागमत् ॥ रामः सुग्रीवमासाद्य सख्यं कृत्वाग्निसाक्षिकं ॥ सुग्रीवचोदितो हत्वा वालिनं सुदुरासदं ॥ राज्यं ददौ वानराणां सुग्रीवाय महाबलः ॥ सुग्रीवः प्रेषयामास सीतायाः परिमार्गणे ॥ अस्मान्वानरमुख्यान्वै महासत्त्वान्महाबलान् ॥ मासादर्वाक्त्रिवर्तध्वं नो चेत्प्राणान्हरामि वः ॥ इत्याज्ञया भ्रमंतोऽस्मिन्वने गह्वरमध्यगाः ॥ गतो मासो न जानीमः सीतां वा रावणं च वा ॥ मर्तुं प्रायोपविष्टाः स्मस्तीरे लवणवारिधेः ॥ यदि जानासि हे पक्षिन्सीतां कथय नः शुभां ॥ अंगदस्य वचः श्रुत्वा संपातिर्हृष्टमानसः ॥ उवाच मत्प्रियो भ्राता जटायुः प्लवगेश्वराः ॥ बहुवर्षसहस्रांते भ्रातृवार्ता श्रुता मया ॥ वाक्साहाय्यं करिष्येऽहं भवतां प्लवगेश्वराः ॥ भ्रातुः सलिलदानाय नयध्वं मां जलांतिकं ॥ पश्चात्सर्वं शुभं वक्ष्ये भवतां कार्यसिद्धये ॥ तथेति निन्युस्ते तीरं समुद्रस्य विहंगमं ॥ सोऽपि तत्सलिले स्नात्वा भ्रातुर्दत्वा जलांजलिं ॥ पुनः स्वस्थानमासाद्य स्थितो नीतो हरीश्वरैः ॥ संपातिः कथयामास वानरान्परिहर्षयन् ॥ लंका नाम नगर्यस्ति त्रिकूटगिरिमूर्धनि ॥ तत्राशोकवने सीता राक्षसीभिः सुरक्षिता ॥ समुद्रमध्ये सा लंका शतयोजनदूरतः ॥ दृश्यते मे न संदेहः सीता च परिदृश्यते ॥ गृध्रत्वाद्दूरदृष्टिर्मे नात्र संशयितुं क्षमाः ॥ शतयोजनविस्तीर्णं समुद्रं यस्तु लंघयेत् ॥ स एव जानकीं दृष्ट्वा पुनरायास्यति ध्रुवं ॥ अहमेव दुरात्मानं रावणं हंतुमुत्सहे ॥ भ्रातृहंतारमेकाकी किंतु पक्षविवर्जितः ॥ यतध्वमतियत्नेन लंघितुं सरितांपतिं ॥ ततो हंता रघुश्रेष्ठो रावणं राक्षसाधिपं ॥ उल्लंघ्य सिंधुं शतयोजनायतं लंकां प्रविश्याथ विदेहकन्यकां ॥ दृष्ट्वा समाभाष्य च वारिधिं पुनस्तर्तुं समर्थः कतमो विचार्यतां ॥ इति श्रीमदध्यात्मरामायणे किष्किंधाकांडे अष्टमोध्या

॥ ॥ यः ॥ ८ ॥ ॥

॥ ॥ ॥ ॥ श्रीमहादेव उवाच ॥ ॥ ॥

संपातिः कथयामास स्ववृत्तांतं पुराकृतं ॥ अहं पुरा जटायुश्च भ्रातरौ रूढयौवनौ ॥ बलेन दर्पितौ वायुं बलजिज्ञासया खगौ ॥ सूर्यमंडलपर्यंतं गंतुमुत्पतितौ मुदा ॥ बहुयोजन

सहस्रं गतौ तत्र प्रतापितः ॥ जटायुषं परित्रातुं पक्षौ संछाद्य मोहतः ॥ [illegible] दग्धपक्षोऽस्मि विंध्यमूर्धनि ॥ पतितोऽहं [illegible] सद्धितो दग्धपक्षकः ॥ देशं वा गिरिकाननं न जाने भ्रांतमानसः ॥ शनैः शनैः समीपं गतवानहं ॥ मुनिः स्मितोऽवदत् ॥ संपाते किमिदं तेऽद्य विरूपं केन वा कृतं ॥ जानामि त्वामहं पूर्वं दृष्ट्वा त्वं बलवानसि ॥ दग्धौ किमर्थं ते पक्षौ कथ्यतां यदि मन्यसे ॥ ततः स्वचेष्टितं सर्वं कथयित्वातिदुःखितः ॥ अब्रुवं मुनिशार्दूलं दग्धोऽहं दाववह्निना ॥ कथं धारयितुं शक्तो विपक्षो जीवितं प्रभो ॥ इत्युक्तो मुनिर्वीक्ष्य मां दयार्द्रविलोचनः ॥ शृणु वत्स वचो मेऽद्य श्रुत्वा कुरु यथेप्सितं ॥ देहमूलमिदं दुःखं देहः कर्मसमुद्भवः ॥ कर्म प्रवर्तते देहेऽहंबुद्ध्या पुरुषस्य हि ॥ अहंकारस्त्वनादिः स्यादविद्यासंभवो जडः ॥ चिच्छायया सदा युक्तस्तप्तायःपिंडवत्सदा ॥ तेन देहस्य तादात्म्याद्देहश्चेतनवान्भवेत् ॥ देहोऽहमिति बुद्धिः स्यादात्मनोऽहंकृतेर्बलात् ॥ तन्मूल एष संसारः सुखदुःखादिसाधकः ॥ आत्मनो निर्विकारस्य मिथ्यातादात्म्यतः सदा ॥ देहोऽहं कर्मकर्ताहमिति संकल्प्य सर्वदा ॥ जीवः करोति कर्माणि तत्फलैर्बध्यते बुधः ॥ ऊर्ध्वाधो भ्रमते नित्यं पापपुण्यात्मकः स्वयं ॥ कृतं मयाधिकं पुण्यं यज्ञदानादि निश्चितं ॥ स्वर्गं गत्वा सुखं भोक्ष्य इति संकल्पवान्भवेत् ॥ तथैवाध्यासतस्तत्र चिरं भुक्त्वा सुखं महत् ॥ क्षीणपुण्यः पतत्यर्वागनिच्छन्कर्मचोदितः ॥ पतित्वा मंडले चेंदोस्ततो नीहारसंयुतः ॥ भूमौ पतित्वा व्रीह्यादौ तत्र स्थित्वा चिरं ततः ॥ भूत्वा चतुर्विधं भोज्यं पुरुषैर्भुज्यते ततः ॥ रेतो भूत्वा पुनस्तेन ऋतौ स्त्रीयोनिसिंचितः ॥ योनिरक्तेन संयुक्तं जरायुपरिवेष्टितं ॥ दिनेनैकेन कललं भूत्वा रूढत्वमाप्नुयात् ॥ तत्तु पंचरात्रेण बुद्बुदाकारतामियात् ॥ सप्तरात्रेण तदपि मांसपेशित्वमाप्नुयात् ॥ पक्षमात्रेण सा पेशी रुधिरेण परिप्लुता ॥ तस्या एवांकुरोत्पत्तिः पंचविंशतिरात्रिषु ॥ ग्रीवा शिरश्च स्कंधश्च पृष्ठवंशस्तथोदरं ॥ पंचधांगानि चैकैकं जायंते मासतः क्रमात् ॥ पाणिपादौ तथा पार्श्वः कटिर्जानु तथैव च ॥ मासद्वयात्प्रजायंते क्रमेणैव न चान्यथा ॥ त्रिभिर्मासैः प्रजायंते अंगानां संधयः क्रमात् ॥ सर्वांगुल्यः प्रजायंते क्रमान्मासचतुष्टये ॥ नासा कर्णौ च नेत्रे च जायंते पंचमासतः ॥ दंतपंक्तिर्नखा गुह्यं पंचमे जायते तथा ॥ अर्वाक्तु षण्मासतश्छिद्रं कर्णयोर्भवति स्फुटं ॥ पायुर्मेढ्रमुपस्थं च नाभिश्चापि भवेन्नृणां ॥ सप्तमे मासि रोमाणि शिरः केशास्तथैव च ॥ विभक्तावयवत्वं च सर्वं संपद्यतेऽष्टमे ॥ जठरे वर्धते गर्भः स्त्रिया एवं विहंगम ॥ नवमे मासि चैतन्यं जीवः प्राप्नोति सर्वशः ॥ नाभिसूत्राल्परंध्रेण मातृभुक्तान्नसारतः ॥ वर्धते गर्भगः पिंडो न म्रियेत स्वकर्मतः ॥ स्मृत्वा सर्वाणि जन्मानि पूर्वकर्माणि सर्वशः ॥ जठरानलतप्तोऽयमिदं वचनमब्रवीत् ॥ नानायोनिसहस्रेषु जायमानोऽनुभूतवान् ॥ पुत्रदारादिसंबंधं कोटिशः पशुबांधवान् ॥ कुटुंबभरणासक्त्या न्यायान्यायैर्धनार्जनं ॥ कृतं नाकारि विष्णुचिंता स्वप्नेऽपि दुर्भगः ॥ इदानीं तत्फलं भुंजे गर्भदुःखं महत्तरं ॥ अशाश्वते शाश्वतवद्देहे तृष्णासमन्वितः ॥ अकार्याण्येव कृतवान्न कृतं हितमात्मनः ॥ इत्येवं बहुधा दुःखमनुभूय स्वकर्मणः ॥ कदा निष्क्रमणं मे स्याद्गर्भान्निरयसंनिभात् ॥ इत ऊर्ध्वं नित्यमहं विष्णुमेवानुपूजये ॥ इत्यादि चिंतयन्जीवो योनियंत्रप्रपीडितः ॥ जायमानोऽतिदुःखेन नरकात्पातकी यथा ॥ पूतव्रणान्निपतितः कृमिरेष इवापरः ॥ ततो बाल्यादिदुःखानि सर्व एव विभुंजते ॥ त्वया चैवानुभूतानि सर्वत्र विदितानि च ॥ न वर्णितानि मे दुःखान्यात्मनादिषु सर्वतः ॥ एवं देहोऽहमित्यस्मादभ्यासान्निरयादिकं ॥ गर्भवासादि दुःखानि भवंत्यभिनिवेशतः ॥ तस्माद्देहद्वयादन्यमात्मानं प्रकृतेः परं ॥ ज्ञात्वा देहादिममतां त्यक्त्वात्मज्ञानवान्भवेत् ॥ जाग्रदादिविनिर्मुक्तं सत्यज्ञानादिलक्षणं ॥ शुद्धं बुद्धं सदा शांतमात्मानमवधारयेत् ॥ चिदात्मनि परिज्ञाते नष्टे मोहेऽज्ञसंभवे ॥ देहः पतत्वारब्धकर्मवेगेन तिष्ठतु ॥ योगिनो न हि दुः

त्वेमामृत्वं वा ज्ञानसंभवं ॥ तस्माद्देहेन सहितो यावत्प्रारब्धसंक्षयः ॥ तावत्तिष्ठ सुखेन त्वं
धृतकंचुकसर्पवत् ॥ अन्यद्वक्ष्यामि ते पक्षिन् शृणु मे परमं हितं ॥ त्रेतायुगे दाशरथिर्भूत्वा
नारायणोव्ययः ॥ रावणस्य वधार्थाय दंडकानागमिष्यति ॥ सीतया भार्यया सार्धं लक्ष्म
णेन समन्वितः ॥ तत्राश्रमे जनकजां भ्रातृभ्यां रहिते वने ॥ रावणश्चोरवन्नीत्वा लंकायां
स्थापयिष्यति ॥ तस्याः सुग्रीवनिर्दिष्टा वानराः परिमार्गणे ॥ आगमिष्यंति जलधेस्तीरं त
त्र समागमः ॥ त्वया तेषां कारणवशाद्भविष्यति न संशयः ॥ तदा सीतां स्थितां तेभ्यः कथयस्व
यथार्थतः ॥ तदैव तव पक्षौ द्वावुत्पत्स्येते पुनर्नवौ ॥ संपातिरुवाच ॥ बोधयामास मां चंद्र
नामा मुनिकुलेश्वरः ॥ पश्यंतु पक्षौ मे जातौ नूतनावतिकोमलौ ॥ स्वस्ति वोस्तु गमिष्या
मि सीतां द्रक्ष्यथ निश्चयं ॥ यत्नं कुरुध्वं दुर्लंघ्यसमुद्रस्य विलंघने ॥ यन्नाम स्मृतिमात्रेणाप
रिमितं संसारवारिधिं ॥ तीर्त्वा गच्छति दुर्जनोपि परमं विष्णोः पदं प्राप्नुते ॥ तस्यैव स्थिति
कारणं त्रिजगतां रामस्य भक्ताः प्रियाः ॥ यूयं किं न समुद्रमात्रतरणे शक्ताः कथं वानराः ॥
इति श्रीमदध्यात्मरामायणे किष्किंधाकांडे अष्टमोध्यायः ॥ ॥ ८ ॥ ॥

श्रीमहादेव उवाच

गते विहायसा गृध्रराजे वानरपुंगवाः ॥ हर्षेण महता विष्टाः सीतादर्शनलालसाः ॥ ऊचुः
समुद्रं पश्यंतो नक्रचक्रभयंकरं ॥ तरंगादिभिरुन्नद्धमाकाशमिव दुर्गमं ॥ परस्परमवोच
न्कथमेनं तरामहे ॥ उवाच चांगदस्तत्र शृणुध्वं वानरोत्तमाः ॥ भवंतोत्यंतबलिनः शूराश्च कृ
तविक्रमाः ॥ को वात्र वारिधिं तीर्त्वा राजकार्यं करिष्यति ॥ एतेषां वानराणां स प्राणदाता
न संशयः ॥ तदुत्तिष्ठतु मे शीघ्रं पुरतो यो महाबलः ॥ वानराणां च सर्वेषां रामसुग्रीवयोरपि
स एव पालको भूयान्नात्र कार्या विचारणा ॥ इत्युक्ते युवराजेन तूष्णीं वानरसैनिकाः ॥ आसन्नो
चुः किंचिदपि परस्परविलोकिनः ॥ अंगद उवाच ॥ उच्यतां वो बलं सर्वैः प्रत्येकं कार्यसिद्धये ॥
केन वा साध्यते कार्यं जानीमस्तदनंतरं ॥ अंगदस्य वचः श्रुत्वा प्रोचुर्वीरा बलं पृथक् ॥ योज
नानां दशारभ्य दशोत्तरगुणं जगुः ॥ शतादर्वाग्जांबवांस्तु प्राह मध्ये वनौकसां ॥ पुरा त्रिविक्रमे
देवे पादं भूमानलक्षणं ॥ त्रिः सप्तकृत्वोहमगां प्रदक्षिणविधानतः ॥ इदानीं वार्धकग्रस्तो न श
क्तोस्मि विलंघितुं ॥ अंगदोप्याह मे गंतुं शक्यं पारं महोदधेः ॥ पुनर्लंघनसामर्थ्यं न जानाम्यु
त्तिवानराः ॥ तमाह जांबवान्वीर त्वं राजा नो नियामकः ॥ नियुक्तं त्वां नियुक्तं मे त्वं समर्थो
सि यद्यपि ॥ एवं चेत्सर्वथा सर्वे स्वस्थामो दर्भविष्टरे ॥ केनापि न कृतं कार्यं जीवितेन च प्राप्य
ते ॥ तमाह जांबवान्वीरो दर्शयिष्यामि ते सुतं ॥ येनास्माकं कार्यसिद्धिर्भविष्यत्यचिरेण च
इत्युक्त्वा जांबवान्प्राह हनुमंतमवस्थितं ॥ हनुमन्किं रहस्तूष्णीं स्थीयते कार्यगौरवे ॥ प्राप्तेज्ञा
नेव सामर्थ्यं दर्शयाद्य महाबलं ॥ त्वं साक्षाद्वायुतनयो वायुतुल्यपराक्रमः ॥ रामकार्यार्थ
मेव त्वं जनितोसि महात्मना ॥ जातमात्रेण ते पूर्वं दृष्ट्वोद्यंतं विभावसुं ॥ पक्वं फलं जिघृक्षुस्त्वं
त्प्लुत्य तावच्चेष्टया ॥ योजनानां पंचशतं पतितोसि ततो भुवि ॥ अतस्त्वद्बलमाहात्म्यं
को वा शक्तोभिवर्णितुं ॥ उत्तिष्ठ कुरु रामस्य कार्यं नः पाहि सुव्रत ॥ श्रुत्वा जांबवतो वाक्यं ह
नूमानतिहर्षितः ॥ चकार नादं सिंहस्य ब्रह्मांडं स्फोटयन्निव ॥ बभूव पर्वताकारस्त्रिविक्रम
इवापरः ॥ लंघयित्वा जलनिधिं कृत्वा लंकां च भस्मसात् ॥ रावणं सकुलं हत्वा नेष्ये जनक
नंदिनीं ॥ यद्वा बद्ध्वा गले रज्ज्वा रावणं वामपाणिना ॥ लंकां सपर्वतां धृत्वा रामस्याग्रे क्षिपा
म्यहं ॥ यद्वा दृष्ट्वैव यास्यामि जानकीं शुभलक्षणां ॥ श्रुत्वा हनुमतो वाक्यं जांबवानिदमब्रवी
त् ॥ दृष्ट्वैवागच्छ भद्रं ते जीवंतीं जानकीं शुभां ॥ पश्चाद्रामेण सहितो दर्शयिष्यसि पौरुषं ॥
कल्याणं भवताद्भद्र गच्छतस्ते विहायसा ॥ गच्छंतं रामकार्यार्थं वायुस्त्वामनुगच्छतु ॥ इत्या
शीर्भिः समामंत्र्य विसृष्टः प्लवगाधिपैः ॥ महेंद्राद्रिशिरो गत्वा बभूवाद्भुतदर्शनः ॥ महा
नगेंद्रप्रतिमो महात्मा सुवर्णवर्णोरुणचारुवक्त्रः ॥ महाफणीन्द्राभसुदीर्घबाहुर्वातात्मजो

त्मजोदृश्यत सर्वभूतैः ॥ इति श्रीमदध्यात्मरामायणे उमामहेश्वरसंवादे किष्किंधाकांडे न
॥ ॥ वमोध्यायः ॥ ॥ ९ ॥
॥ समाप्तश्चायं किष्किंधाकांडः ॥ ॥

श्रीमहादेव उवाच ॥ शतयोजनविस्तीर्णं समुद्रं मकरालयं ॥ लिलंघयिषुरानंदसंदोहो
मारुतात्मजः ॥ ध्यात्वा रामं परात्मानमिदं वचनमब्रवीत् ॥ पश्यंतु वानराः सर्वे गच्छंतं
मां विहायसा ॥ अमोघं रामनिर्मुक्तं महाबाणमिवाखिलाः ॥ पश्याम्यद्यैव रामस्य पत्नीं
जनकनंदिनीं ॥ कृतार्थोहं कृतार्थोहं पुनः पश्यामि राघवं ॥ प्राणप्रयाणसमये यस्य नाम
सकृत्स्मरन् ॥ नरस्तीर्त्वा भवांभोधिमपारं याति तत्पदं ॥ किं पुनस्तस्य दूतोहं तदंगांगुलि
मुद्रिकः ॥ तमेव हृदये ध्यात्वा लंघयाम्यल्पवारिधिं ॥ इत्युक्त्वा हनुमान्बाहू प्रसार्यायतवा
लधिः ॥ ऋजुग्रीवोर्ध्वदृष्टिः सन्नाकुंचितपदद्वयः ॥ दक्षिणाभिमुखस्तूर्णं पुप्लुवेनिलवि
क्रमः ॥ आकाशात्त्वरितं देवैर्वीक्ष्यमाणो जगाम सः ॥ दृष्ट्वानिलसुतं देवा गच्छंतं वायुवेगतः
परीक्षणार्थं सत्वस्य वानरस्येदमब्रुवन् ॥ गच्छत्येष महासत्वो वानरो वायुविक्रमः ॥ लंकाप्र
वेशयोग्यो वा न वेति ज्ञायतां बलं ॥ एवं विचार्य नागानां मातरं सुरसाभिधां ॥ अब्रवीद्देवता
हेः कौतूहलसमन्विताः ॥ गच्छ त्वं वानरेंद्रस्य किंचिद्विघ्नं समाचर ॥ ज्ञात्वा तस्य बलं बुद्धिं पुनरे
हि त्वरान्विता ॥ इत्युक्ता सा ययौ शीघ्रं हनुमद्विघ्नकारणात् ॥ आवृत्य मार्गं पुरतः स्थित्वा वान
रमब्रवीत् ॥ एहि मे वदनं शीघ्रं प्रविशस्व महामते ॥ देवैस्त्वं कल्पितो भक्ष्यः क्षुधासंपीडिता
त्मनः ॥ तामाह हनुमान्मातरहं रामस्य शासनात् ॥ गच्छामि जानकीं द्रष्टुं पुनरागम्य सत्वरः
रामाय कुशलं तस्याः कथयित्वा त्वदाननं ॥ निवेक्ष्ये देहि मे मार्गं सुरसायै नमोस्तु ते ॥ इत्युक्ता
पुनरेवाह सुरसा क्षुधितास्म्यहं ॥ प्रविश्य गच्छ मे वक्त्रं नो चेत्त्वां भक्षयाम्यहं ॥ इत्युक्तो हनुमाना
ह मुखं शीघ्रं विदारय ॥ प्रविश्य वदनं तेद्य गच्छाम्यत्वरयान्वितः ॥ इत्युक्त्वा योजनायामदेहो भू
त्वा पुरः स्थितः ॥ दृष्ट्वा हनूमतो रूपं सुरसा पंचयोजनं ॥ मुखं चकार हनुमान्द्विगुणं रूपमादध
त् ॥ ततश्चकार सुरसा योजनानां च विंशतिं ॥ वक्त्रं चकार हनुमांस्त्रिंशद्योजनसंमितं ॥ तत
श्चकार सुरसा वक्त्रं पंचाशद्योजनायतं ॥ वक्त्रं तदा हनूमांस्तु बभूवांगुष्ठसन्निभः ॥ प्रविश्य वदनं त
स्याः पुनरेत्य पुरः स्थितः ॥ प्रविष्टो निर्गतोहं ते वदनं देवि ते नमः ॥ एवं वदंतं दृष्ट्वा सा हनूमंतम
थाब्रवीत् ॥ गच्छ साधय रामस्य कार्यं बुद्धिमतां वर ॥ देवैः संप्रेषिताहं ते बलं जिज्ञासुभिः कपे
दृष्ट्वा सीतां पुनर्गत्वा रामं द्रक्ष्यसि गच्छ भोः ॥ इत्युक्त्वा सा ययौ देवलोकं वायुसुतः पुनः ॥ जगाम वा
युमार्गेण गरुत्मानिव पक्षिराट् ॥ समुद्रोप्याह मैनाकं मणिकांचनपर्वतं ॥ गच्छत्येष महा
सत्वो हनूमान्मारुतात्मजः ॥ रामस्य कार्यसिद्ध्यर्थं तस्य त्वं सचिवो भव ॥ सगरैर्वर्धितो यस्मा
त्पुराहं सागरोभवं ॥ तस्यान्वये बभूवासौ रामो दाशरथिः प्रभुः ॥ तस्य कार्यार्थसिद्ध्यर्थं ग
च्छत्येष महाकपिः ॥ त्वमुत्तिष्ठ जलात्तूर्णं त्वयि विश्रम्य गच्छतु ॥ स तथेति प्रादुरभूज्जलमध्या
न्महोन्नतः ॥ नानामणिमयैः शृंगैस्तस्योपरि नराकृतिः ॥ प्राह यांतं हनूमंतं मैनाकोहं महा
मते ॥ समुद्रेण समादिष्टस्त्वद्विश्रामाय मारुते ॥ आगच्छामृतकल्पानि जग्ध्वा पक्वफलानि
मे ॥ विश्रम्यात्र क्षणं पश्चाद्गमिष्यसि यथासुखं ॥ एवमुक्तोथ तं प्राह हनूमान्मारुतात्मजः

अ॰ रा॰
३॰

गच्छतो रामकार्यार्थं भक्षणं मे कथं भवेत्॥ विश्रमो वा कथं मे स्याद्गन्तव्ये त्वरिते मया॥ इत्युक्त्वा स्पृष्टशिखरः कराग्रेण ययौ कपिः॥ किंचिद्दूरं गतस्यास्य छायां छायाग्रहो ग्रहीत्॥ सिंहिका नाम सा घोरा जलमध्ये स्थिता सदा॥ आकाशगामिनां छायामाक्रम्याकृष्य भक्षयेत्॥ तया गृहीतो हनुमांश्चिन्तयामास वीर्यवान्॥ केनेदं मे कृतं वेगरोधनं विघ्नकारिणा॥ दृश्यते नैव कोऽप्यत्र विस्मयो मे प्रजायते॥ एवं विचिन्त्य हनुमानधो दृष्टिं प्रसारयन्॥ तत्र दृष्ट्वा महाकायां सिंहिकां घोररूपिणीं॥ पपात सलिले तूर्णं पद्भ्यामेवाहनद्रुषा॥ पुनरुत्प्लुत्य हनुमान्दक्षिणाभिमुखो ययौ॥ ततो दक्षिणमासाद्य कूलं नानाफलद्रुमं॥ नानापक्षिमृगाकीर्णं नानापुष्पलताकुलं॥ ततो ददर्श नगरं त्रिकूटाचलमूर्धनि॥ प्राकारैर्बहुभिर्युक्तं परिखाभिश्च सर्वतः॥ प्रवेक्ष्यामि कथं लंकामिति चिन्तापरोऽभवत्॥ रात्रौ वेक्ष्यामि सूक्ष्मोऽहं लंकां रावणपालितां॥ एवं विचिन्त्य तत्रैव स्थित्वा लंकां जगाम सः॥ धृत्वा सूक्ष्मं वपुर्द्वारं प्रविवेश प्रतापवान्॥ तत्र लंकापुरी साक्षाद्राक्षसीवेषधारिणी॥ प्रविशन्तं हनूमन्तं दृष्ट्वा लंका व्यतर्जयत्॥ कस्त्वं वानररूपेण मामनादृत्य लंकिनीं॥ प्रविशस्यथ चौरवद्रात्रौ किं भवान्कर्तुमिच्छति॥ इत्युक्त्वा रोषताम्राक्षी पादेनाभिजघान तं॥ हनूमानपि तां वाममुष्टिनावज्ञयाहनत्॥ तदैव पतिता भूमौ रक्तमुद्वमती भृशं॥ उत्थाय प्राह सा लंका हनूमन्तं महाबलं॥ हनूमन्गच्छ भद्रं ते जिता लंका त्वयानघ॥ पुराहं ब्रह्मणा प्रोक्ता ह्यष्टाविंशतिपर्यये॥ त्रेतायुगे दाशरथी रामो नारायणोऽव्ययः॥ जनिष्यते योगमाया सीता जनकवेश्मनि॥ भूभारहरणार्थाय प्रार्थितोऽग्रे मया कचित्॥ सभार्यो राघवो भ्राता गमिष्यति महावनं॥ तत्र सीतां महामायां सीतां जनकवेश्मनि॥ पश्चाद्रामेण साचिव्यं सुग्रीवस्य भविष्यति॥ सुग्रीवो जानकीं द्रष्टुं वानरान्प्रेषयिष्यति॥ तत्रैको वानरो रात्रावागमिष्यति तेऽन्तिकं॥ त्वया च भर्त्सितः सोऽपि त्वां हनिष्यति मुष्टिना॥ तेनाहता त्वं व्यथिता भविष्यसि यदानघे॥ तदैव रावणस्यान्तो भविष्यति न संशयः॥ तस्मात्त्वया जिता लंका जितं सर्वं त्वयानघ॥ रावणान्तःपुरवरे क्रीडाकाननमुत्तमं॥ तन्मध्येऽशोकवनिका दिव्यपादपसंकुला॥ अस्ति तस्यां महावृक्षः शिंशपानाम मध्यगः॥ तत्रास्ते जानकी घोरराक्षसीभिः सुरक्षिता॥ दृष्ट्वैव गच्छ त्वरितं राघवाय निवेदय॥ धन्याहमप्यद्य चिराय राघवस्मृतिर्ममासीद्भवपाशमोचनी॥ तद्भक्तसंगोऽप्यतिदुर्लभो मम प्रसीदतां दाशरथिः सदा हृदि॥ उक्त्वेति [illegible]॥ इति श्रीमदध्यात्मरामायणे सुंदरकांडे प्रथमोऽध्यायः॥ १॥

॥ श्रीमहादेव उवाच ॥

ततो जगाम हनुमान्लंकां परमशोभनां॥ रात्रौ सूक्ष्मतनुर्भूत्वा बभ्राम परितः पुरीं॥ सीतान्वेषणकार्यार्थी प्रविवेश नृपालयं॥ तत्र सर्वप्रदेशेषु विविच्य हनुमान्कपिः॥ नापश्यज्जानकीं स्मृत्वा लंकाभिभाषितं॥ जगाम हनुमान्शीघ्रमशोकवनिकां शुभां॥ सुरपादपसंबाधां रत्नसोपानवापिकां॥ नानापक्षिमृगाकीर्णां स्वर्णप्रासादशोभितां॥ फलैरानम्रशाखाग्रपादपैः परिवारितां॥ विचिन्वञ्जानकीं तत्र प्रतिवृक्षं मरुत्सुतः॥ ददर्शाभ्रलिहं तत्र चैत्यप्रासादमुत्तमं॥ दृष्ट्वा विस्मयमापन्नो मणिस्तम्भशतान्वितं॥ समतीत्य पुनर्गत्वा किंचिद्दूरं समारुतिः॥ ददर्श शिंशपावृक्षमत्यन्तनिबिडच्छदं॥ अदृष्टातपमाकीर्णं स्वर्णवर्णविहंगमं॥ तन्मूले राक्षसीमध्ये स्थितां जनकनंदिनीं॥ ददर्श हनुमान्वीरो देवतामिव भूतले॥ एकवेणीं कृशां दीनां मलिनांबरधारिणीं॥ भूमौ शयानां शोचन्तीं रामरामेति भाषिणीं॥ त्रातारं नाधिगच्छन्तीमुपवासकृशां शुभां॥ शाखान्तरस्थितो वृक्षे ददर्श कपिकुंजरः॥ कृतार्थोऽहं कृतार्थोऽहं दृष्ट्वा जनकनंदिनीं॥ मयैव साधितं कार्यं रामस्य परमात्मनः॥ ततः किलकिलाशब्दो बभूवान्तःपुरे हरिः॥ किमेतदिति संलीनो वृक्षपत्रेषु मारुतिः॥ आयान्तं रावणं तत्र स्त्रीजनैः परिवारितं॥ दशास्यं विंशतिभुजं नीलांजनचयोपमं॥ दृष्ट्वा विस्मयमापन्नः पत्रखंडेष्वलीयत॥ रावणो राघवेणाशु मरणं मे कथं भवेत्॥ सीतार्थमपि नायाति रामः किं कारणं भवेत्॥ इत्येवं चिन्तयन्नित्यं राममेव सदा हृदि॥ तस्मिन्दिनेऽपररात्रे रावणो दृष्टवान्स्वप्नं॥ स्वप्ने रामेण संदिष्टः कश्चिदागाद्धि वानरः॥ कामरूपधरः सूक्ष्मो वृक्षाग्रस्थोऽनुपश्यति॥ इति दृष्ट्वाद्भुतं स्वप्नं स्वात्मन्येवानुचिन्त्य सः॥ स्वप्नः कदाचित्सत्यः स्यादेवं तत्र करोम्यहं॥ जानकीं वाक्यबाणैर्हि दुःखितां नितरामहं॥ करोमि दृष्ट्वा रामाय निवेदयतु वानरः॥ इत्येवं चिन्तयन्सीतासमीपमगमद्द्रुतं॥ नूपुराणां किंकिणीनां श्रुत्वा शिंजितमंगना॥ सीता भीता लीयमाना स्वात्मन्येव सुमध्यमा॥ अधोमुख्यश्रुनयना स्थिता रामार्पितान्तरा॥ सीताभिपिनद्धा सीता मा लोकय हंसमध्यमे॥ मां दृष्ट्वा किं वृथा सुभ्रु स्वात्मन्येव विलीयसे॥ रामो वनचराणां हि मध्ये तिष्ठति सानुजः॥ कदाचिद्दृश्यते कैश्चित्कदाचिन्नैव दृश्यते॥ मया तु बहुधा लोकाः प्रेषितास्तस्य दर्शने॥ न पश्यन्ति प्रयत्नेन वीक्षमाणाः समन्ततः॥ किं करिष्यसि रामेण निःस्पृहेण सदा त्वयि॥ त्वया सदालिंगितोऽपि समीपस्थोऽपि सर्वदा॥ हृदयस्थोऽपि रामस्य जायते॥ त्वत्कृतान्सर्वभोगांश्च त्वद्गुणानपि राघवः॥ भुंजानोऽपि न जानाति कृतघ्नो निर्गुणोऽधमः॥ त्वमानीता मया साध्वी दुःखशोकसमाकुला॥ इदानीमपि नायाति भक्तिहीनः कथं व्रजेत्॥ निःसत्त्वो निर्ममो मानी मूढः पंडितमानवान्॥ नराधमं त्वद्विमुखं किं करिष्यसि भामिनि॥ त्वय्यतीव समासक्तं मां भजस्व वरोत्तमम्॥ देवगंधर्वनागानां यक्षकिन्नरयोषितां॥ भविष्यसि नियोक्त्री त्वं यदि मां प्रतिपद्यसे॥ रावणस्य वचः श्रुत्वा सीता मर्षसमन्विता॥ उवाचाधोमुखी भूत्वा निधाय तृणमन्तरे॥ राघवाद्बिभ्यता नूनं भिक्षुरूपं धृतं त्वया॥ रहितो राघवाभ्यां त्वं शुनीव हविरध्वरे॥ हृतवानसि मां नीच तत्फलं प्राप्स्यसे चिरात्॥ यदा रामशराघातविदारितवपुर्भवान्॥ ज्ञास्यसे मानुषं रामं गमिष्यसि यमान्तिके॥ समुद्रं शोषयित्वा वा बद्ध्वा वा वारिधिं॥ हन्तुं मां समरे रामो लक्ष्मणेन समन्वितः॥ आगमिष्यत्यसंदेहो द्रक्ष्यसि त्वं राक्षसाधम॥ त्वां ससुतं सबलं हत्वा नेष्यति मां स्वकं पुरं॥ श्रुत्वा रक्षःपतिः क्रुद्धो जानक्याः परुषाक्षरं॥ वाक्यं क्रोधसमाविष्टः खड्गमुद्यम्य सत्वरः॥ हन्तुं जनकराजस्य तनयां ताम्रलोचनः॥ मन्दोदरी निवार्याथ पतिं पतिहिते रता॥ त्यजैनां मानुषीं दीनां दुःखितां कृपणां कृशां॥ देवगंधर्वनागानां बह्व्यः सन्ति वरांगनाः॥ त्वामेव वरयन्त्युच्चैर्मदमत्तविलोचनाः॥ ततोऽब्रवीद्दशग्रीवो राक्षसीर्विकृताननाः॥ यथा मे वशगा सीता भविष्यति सकानना॥ तथा यतध्वं त्वरितं तर्जनाताडनादिभिः॥ द्विमासाभ्यन्तरे सीता यदि मे वशगा भवेत्॥ तदा सर्वसुखोपेता राज्यं भोक्ष्यति सा मया॥ यदि मासद्वयादूर्ध्वं मच्छय्यां नाभिनन्दति॥ तदा मे प्रातराशाय हत्वा कुरुत मानुषीं॥ इत्युक्त्वा प्रययौ स्त्रीभी रावणोऽन्तःपुरालयम्॥ राक्षस्यो जानकीमेत्य भीषयन्त्यः स्वतर्जनैः॥ तत्रैका जानकीमाह यौवनं ते वृथा गतं॥ रावणेन समासाद्य सफलं तद्भविष्यति॥ अपरा चाह कोपेन किं विलंबेन जानकि॥ इदानीं छेदयाम्यंगं विभज्य च पृथक्पृथक्॥ अन्या करालवदना विवृतास्या भयंकरा॥ एवं तां भीषयन्तीस्ता राक्षसीर्विकृताननाः॥ निवार्य त्रिजटा वृद्धा राक्षसी वाक्यमब्रवीत्॥ शृणुध्वं दुष्टराक्षस्यो मद्वाक्यं वो हितं भवेत्॥ न भीषयत दुःखार्तां नमस्कुरुत जानकीं॥ इदानीमेव मे स्वप्ने रामः कमललोचनः॥ आरुह्यैरावतं शुभ्रं लक्ष्मणेन समागतः॥ दग्ध्वा लंकापुरीं सर्वां हत्वा रावणमाहवे॥ आरोप्य जानकीं स्वांके स्थितो दृष्टो नगमूर्धनि॥ रावणो गोमये ह्रदे तैलाभ्यक्तो दिगंबरः॥ अगाद्दक्षिणदिक्क्रोधात्कृत्वा वदनमालिकां॥ विभीषणस्तु रामस्य सन्निधौ हृष्टमानसः॥ सेवां करोति रामस्य पादयोर्भक्तिसंयुतः॥ सर्वथा रावणं रामो हत्वा सकुलमंजसा॥ विभीषणायाधिपत्यं दत्त्वा सीतां शुभाननां॥ अंके निधाय स्वपुरीं गमिष्यति न संशयः॥ त्रिजटाया वचः श्रुत्वा भीतास्ता राक्षसस्त्रियः॥ तूष्णीमासंस्तत्र तत्र निद्रावशमुपागताः

अ॰ रा॰
३१

यागता: ॥ तर्जिता राक्षसीभिः सा सीता विविह्वला ॥ आलम्बनाय शिंशपां दुःखेन परिशुष्य
ता ॥ अस्माभिः पुरा न यया चिंतयंतीदमब्रवीत् ॥ प्रभाते भक्षयिष्यंति राक्षस्यो मानसं तथा
इत्युक्ता मेव पाशाले को तो यावेन मे भवेत् ॥ एवं सुदुःखेन परिश्रुता सा विश्रमकं कोशरुदंतीवि
वाय ॥ आलंब्य शाखां हातन निश्चयामतीन जानकी किंचिदुपायमगमत ॥ इति श्रीमदध्या
त्मरामायणे उमामहेश्वरसंवादे सुंदरकांडे द्वितीयोऽध्यायः ॥ ॥ २ ॥ ॥ ॥

॥ ॥ श्रीमहादेव उवाच ॥ ॥

अहं धृतेन वा मोत्स्येऽशरीरं राघवं विना ॥ जीवितेन फलं किं स्यान्मम रक्षोऽधिमध्यतः ॥ दीर्घं
वेणीसमाख्यं गृह्य पाशमविध्यति ॥ एवं निश्चित्य बुद्धीनां मरणायाथ जानकी ॥ विलोक्य
हनुमान्किंचिद्विचार्येतदभाषत ॥ शनैः शनैः सूक्ष्मरूपो जानक्याः श्रोत्रगं वचः ॥ इक्ष्वाकु
वंशसंभूतो राजा दशरथो महान् ॥ अयोध्याधिपतिस्तस्य चत्वारो लोकविश्रुताः ॥ पुत्रा
देवसमाः सर्वे लक्षणैरुपलक्षिताः ॥ रामश्च लक्ष्मणश्चैव भरतश्चैव शत्रुघ्नः ॥ ज्येष्ठो रामः पितु
र्वाक्याद्दंडकारण्यमागतः ॥ लक्ष्मणेन सह भ्रात्रा सीतया भार्यया सह ॥ उवास गौतमीती
रे पंचवट्यां महामनाः ॥ तत्र सीता महाभागा सीता जनकनंदिनी ॥ रहिता रामचंद्रेण रावणे
न दुरात्मना ॥ ततो रामोऽतिदुःखार्तो मार्गमाणोऽथ जानकीं ॥ जटायुषं पक्षिराजमपश्यत्पति
तं भुवि ॥ तस्मै दत्वा दिवं शीघ्रमृष्यमूकमुपागतः ॥ सुग्रीवेण कृता मैत्री रामस्य विदितात्मनः
तद्भार्याहारिणं हत्वा वालिनं रघुनंदनः ॥ राज्येऽभिषिच्य सुग्रीवं मित्रकार्यं चकार सः ॥ सुग्रीव
स्तु समानीय वानरान्वानरप्रभुः ॥ प्रेषयामास परितो वानरान्परिमार्गणे ॥ सीतायास्तत्र
चैकोऽहं सुग्रीवसचिवो हरिः ॥ संपातिवचनाच्छीघ्रमुल्लंघ्य शतयोजनं ॥ समुद्रं नगरीं लंका
विचिन्वन्जानकीं शुभां ॥ शनैरशोकवनिकां विचिन्वन्शिंशपातरुं ॥ अद्राक्षं जानकी
मत्र शोचंतीं दुःखसंप्लुतां ॥ रामस्य महिषीं देवीं कृतकृत्योऽहमागतः ॥ इत्युक्तोपरराम सा
हनुमद्धिमान्वरः ॥ सीता क्रमेण तत्सर्वं श्रुत्वा विस्मयमाययौ ॥ किमिदं मे श्रुतं व्योम्नि वा
युना समुदीरितं ॥ स्वप्नो वा मे मनोभ्रांतिर्यदि वा सत्यमेव तत् ॥ निद्रा मे नास्ति दुःखेन जान
म्येतत्कुतो भ्रमः ॥ येन मे कर्णपीयूषं वचनं समुदीरितं ॥ स दृश्यतां महाभागः प्रियवादी ममाग्र
तः ॥ श्रुत्वा तज्जानकीवाक्यं हनुमान्पत्रखंडतः ॥ अवतीर्य शनैः सीतापुरतः समवस्थितः ॥ कल
विंकप्रमाणोऽसौ रक्तास्यः पीतवानरः ॥ ननाम शनकैः सीतां प्रांजलिः पुरतः स्थितः ॥ दृष्ट्वा तं जा
नकी भीता रावणोऽयमुपागतः ॥ मां मोहयितुमायातो मायया वानराकृतिः ॥ इत्येवं चिंत
यित्वा सा तूष्णीमासीदधोमुखी ॥ पुनरप्याह तां सीतां देवि यत्त्वं विशंकसे ॥ नाहं तथाविधो
मातस्त्यज शंकां मयि स्थितां ॥ दासोऽहं कोसलेंद्रस्य रामस्य परमात्मनः ॥ सचिवोऽहं हरीं द्र
स्य सुग्रीवस्य शुभप्रदे ॥ वायोः पुत्रोऽहमखिलप्राणभूतस्य शोभने ॥ तच्छ्रुत्वा जानकी प्राह ह
नुमंतं कृतांजलिं ॥ वानराणां मनुष्याणां संगतिर्घटते कथं ॥ यथा त्वं रामचंद्रस्य दासोऽह
मिति भाषसे ॥ तामाह मारुतिः प्रीतो जानकीं पुरतः स्थितः ॥ ऋष्यमूकमगाद्रामः शबर्यो
नोदितः सुधीः ॥ सुग्रीवऋष्यमूकस्थो दृष्टवान्रामलक्ष्मणौ ॥ भीतो मां प्रेषयामास ज्ञातुं
रामस्य हृद्गतं ॥ ब्रह्मचारिवपुर्धृत्वा गतोऽहं रामसन्निधिं ॥ ज्ञात्वा रामस्य सद्भावं स्कंधोपरि
निधाय तौ ॥ नीत्वा सुग्रीवसामीप्यं सख्यं चाकरवं तयोः ॥ सुग्रीवस्य हृता भार्या वालिना त
द्धृतमः ॥ अघातैकेन वाणेन ततो राज्येऽभ्यषेचयत् ॥ सुग्रीवं वानराणां स प्रेषयामास वान
रान् ॥ दिग्भ्यो महाबलान्वीरान्भवत्याः परिमार्गणे ॥ गच्छंतं राघवो दृष्ट्वा मामभाषत
सादरं ॥ त्वयि कार्यमशेषं मे स्थितं मारुतनंदन ॥ ब्रूहि मे कुशलं सर्वं सीतायै लक्ष्मणस्य च
अंगुलीयकमेतन्मे परिज्ञानार्थमुत्तमं ॥ सीतायै दीयतां साधु मन्नामाक्षरमुद्रितं ॥ इत्यु
क्त्वा प्रददौ मह्यं मुद्रिकां मारुतात्मजः ॥ नमस्कृत्वा स्थितो दूराद्दृष्ट्वानंदितहृदः ॥ दृष्ट्वा सी
ता प्रमुदिता रामनामांकितां तदा ॥ मुद्रिकां शिरसा धृत्वा स्रवदानंदनेत्रजा ॥ कपे मे प्राण

रक्षा त्वं तुष्टिं मानसि राघवे ॥ अतोऽसि प्रियकारी त्वं विश्वासोऽस्ति तवेति हि ॥ नोचेन्मत्सन्निधिं
चान्यपुरुषं प्रेषयेत्कथं ॥ हनुमान्दृष्टमखिलं मम दुःखादिकं त्वया ॥ सर्वं कथय रामाय यथा
मे जायते दया ॥ मासद्वयावधि प्राणाः स्थास्यंति मम सत्तम ॥ नागमिष्यति चेद्रामो भक्षयिष्य
ति मां खलः ॥ अतः शीघ्रं कपींद्रेण सुग्रीवेण समन्वितः ॥ वानरानीकपैः सार्धं हत्वा रावणमाह
वे ॥ सपुत्रं सबलं रामो यदि मां मोचयेत्प्रभुः ॥ तत्तस्य सदृशं वीर्यं वीर वर्णय वर्णितं ॥ यथा मां
तारयेद्रामो हत्वा शीघ्रं दशाननं ॥ तथा यतस्व हनुमान्वाचा धर्ममवाप्नुहि ॥ हनुमानपि
सैन्येन हत्वा दशमुखं बलात् ॥ समानेष्यति देवि त्वां अयोध्यां नात्र संशयः ॥ सुग्रीवेण म
रामकार्यं वा रिपिमानते ॥ निर्देहिष्यति रक्षो वा त्वत्कृते नात्र संशयः ॥ तामाह जानकी
ज्ञा मित्वरयान्वितः ॥ दृष्ट्वा रामे समुद्रं नात्वरयाभिनवोति कं ॥ देवि किं चिदभिज्ञानं देहि मे
येन राघवः ॥ विश्वसेन्मां प्रयत्नेन ततो गंता समुत्सुकः ॥ ततः किंचिद्विचार्याथ सीता कम
लक्षणा ॥ विमुच्य केशपाशांते स्थितं चूडामणिं ददौ ॥ अनेन विश्वसेद्रामस्त्वां कपीं द्र स
त्तम ॥ अभिज्ञानार्थमन्यच्च वदामि तव सुव्रत ॥ चित्रकूटगिरौ पूर्वमेकदा रहसि स्थितः
रामोत्संगे शिरः कृत्वा निद्रातिरघुनंदन ॥ ऐंद्रः काकस्तदागत्य नखैस्तुंडेन चासकृत् ॥ मत्पा
दांगुष्ठमारक्तं विददाराभिषाशया ॥ ततो रामः प्रबुध्याथ दृष्ट्वा पादं कृतव्रणं ॥ केन भद्रे कृतं
चैतद्विप्रियं मे दुरात्मना ॥ इत्युक्त्वा पुरतोऽपश्यद्वायसं मां पुनः पुनः ॥ अभिद्रवंतं रक्तास्य
नखं तुंडं च कोपतः ॥ तृणमेकमुपादाय दिव्यास्त्रेणाभियोजयेत् ॥ चिक्षेप लीलया रामो वायसो
परि तज्ज्वलत् ॥ अभ्यद्रवद्वायसः स भीतो लोकान्भ्रमन्पुनः ॥ इंद्रब्रह्मादिभिश्चापि न शक्यो रक्षि
तुं तदा ॥ रामस्य पादयोरग्रे पपात भयविह्वलः ॥ शरणागतमालोक्य रामस्तमिदमब्रवीत्
अमोघमेतदस्त्रं मे दत्त्वैकाक्षि चिरं व्रज ॥ सव्यं दत्वा ततः काकः एकमक्षि ययौ वने
त्येवं प्रभावो रामस्य तथा कामं मां हि दुःख ॥ इत्युक्त्वा सा तदा सीता दुःखं व्यांकथय
तर्मे ॥ ददर्श मारुतिं शनैर्मत्वैवमब्रवीन्मे ॥ हनूमानपि तामाह श्रुत्वा सीतानुभाषितं ॥ देवि त्वां पुरतो
कार्यं त्वं तां स्यामे मुदे: ॥ अतिशीघ्रं वद: सर्वे वानरा रामभवाटना: ॥ आगत्य लंकां रावणं हत्वा नेष्यंति ॥ जानकी प्राह तं वत्स
कथं यास्यंति वानराः ॥ अल्पकायाः महाकायं रावणं नाशयिष्यति ॥ कृत्वा न दहनं देहे पूर्वं प्रम
कामरूपधरो वीरो विप्राप्राहं तं कपिकुंजरं ॥ दृष्ट्वा सीता हनूमंतं महापर्वतसन्निभं ॥ हर्ष
भः पत्राकाश हनुमांतिकं दूतं ॥ उवाच: कपिः प्राह दर्शनात्प्राणमानम ॥ भविष्यति कलेः सर्वं
लवं दृष्ट्वा स्थितास्मि मे ॥ नयेत्साक्षाज्जानकी भावयित्वा कथं कपिः ॥ ततः प्रणम्य पितामहं
जानकीं प्रणिपत्य सः ॥ किंचित्सूक्ष्म गत्वा स्वात्मन्येवान्वचिंतयेत् ॥ कार्यार्थमागतो दूतः स्वा
मिकार्याविरोधतः ॥ अन्यत्किंचिदसंपाद्य गच्छत्यधम एव सः ॥ अतोऽहं किंचिदन्यच्च कृत्वा
दृष्ट्वाथ रावणं ॥ संभाष्य च ततो रामदर्शनार्थं व्रजाम्यहं ॥ इति निश्चित्य मनसा वृक्षखंडा
न्महाबलः ॥ उत्पाट्याशोकवनिकां निर्वृक्षामकरोत्क्षणात् ॥ सीताश्रयनगं त्यक्त्वा वनं
शून्यं चकार सः ॥ उत्पाटयंतं विपिनं दृष्ट्वा राक्षसयोषितः ॥ अपृच्छन्जानकीं कोऽसौ वानरा
कृतिरुद्भटः ॥ जानक्युवाच ॥ भवत्य एव जानंति मायां राक्षसनिर्मितां ॥ नाहमेनं विजा
नामि दुःखशोकसमाकुला ॥ इत्युक्तास्त्वरितं गत्वा राक्षस्यो भयपीडिताः ॥ हनूमता कृतं स
र्वं रावणाय न्यवेदयन् ॥ देव कश्चिन्महासत्वो वानरो रूपधारकः ॥ सीतया सह संभाष्य
ह्यशोकवनिकां क्षणात् ॥ उत्पाट्य चैत्यप्रासादं बभंजामितविक्रमः ॥ प्रासादरक्षणः स
र्वान्हत्वा तत्रैव संस्थितवान् ॥ तच्छ्रुत्वा तूर्णमुत्थाय वनभंगं महाप्रियं ॥ किंकरान्प्रेषयामा
स नियुक्तान्राक्षसाधिपः ॥ निर्भर्त्सितेत्य प्रासादमग्र्यं मारुतिः संस्थितः ॥ हनूमान्पर्वताकारो लो
हस्तंभकृतायुधः ॥ किंचिल्लांगूलचलनो रक्तास्यो भीषणाकृतिः ॥ आपतंतं महासंग रा
क्षसानाददर्श सः ॥ चकार सिंहनादं च श्रुत्वा ते मुमुहुर्भृशं ॥ दृष्ट्वा मंतं महाघोरं दृष्ट्वा राक्षसा भी

अ॰ रा॰
५२

भीषणाकृतिं ॥ निर्जघ्नुर्विविधास्त्रौघैः सर्वराक्षसघातिनं ॥ ततउत्थाय हनुमान्मुद्गरेण समंत
तः ॥ निष्पिपेष क्षणादेव मशकानिव यूथपः ॥ निहतान्किंकरान्श्रुत्वा रावणः क्रोधमूर्छितः
पंचसेनापतींस्तत्र प्रेषयामास दुर्मदान् ॥ हनूमानपि तान्सर्वान् लोहस्तंभेन चाहनत् ॥ ततः
क्रुद्धो मंत्रिसुतान्प्रेषयामास सप्त सः ॥ आगतानपि तान्सर्वान्पूर्ववद्वानरेश्वरः ॥ क्षणान्नि
न्ये यमसदनं हत्वा लोहस्तंभेन मारुतिः ॥ पूर्वस्थानमुपाश्रित्य प्रतीक्षन्राक्षसान्स्थितः ॥ ततो जगा
म बलवान्कुमारोऽक्षः प्रतापवान् ॥ तमुत्पपात हनुमान्दृष्ट्वाकाशे समुद्गरः ॥ गगनात्त्वरितो
मूर्ध्नि मुद्गरेणाभ्यताडयत् ॥ हत्वा रक्षः कुमारं तं चक्रे सर्वं च कारणं ॥ ततः श्रुत्वा कुमारस्य
वधं राक्षसपुंगवः ॥ कोपेन महताविष्ट इंद्रजितमथाब्रवीत् ॥ पुत्र गच्छाम्यहं तत्र यत्रास्ते पुत्रहा
रिपुः ॥ हत्वा तमथवा बद्ध्वा आनयिष्यामि तेंतिकं ॥ इंद्रजित्पितरं प्राह त्यज शोकं महामते ॥
मयि स्थिते किमर्थं त्वं भाषसे दुःखितं वचः ॥ बद्ध्वानेष्ये द्रुतं तात वानरं ब्रह्मपाशतः ॥ इत्युक्त्वा र
थमारुह्य राक्षसैर्बहुभिर्वृतः ॥ जगाम वायुपुत्रस्य समीपं वीरविक्रमः ॥ ततोऽतिगर्जितं श्रुत्वा
स्तंभमुद्यम्य वीर्यवान् ॥ उत्पपात नभोदेशे गरुत्मानिव मारुतिः ॥ ततोऽभ्रमंतं नभसि हनूम
तं शिलीमुखैः ॥ विद्ध्वा तस्य शिरोभागमिषुभिश्चाष्टभिः पुनः ॥ हृदयं पादयुगलं षड्भिरेकेन वा
लधिं ॥ भेदयित्वा ततो घोरं सिंहनादमथाकरोत् ॥ ततोऽतिहर्षाद्धनुमान्स्तंभमुद्यम्य वीर्यवा
न् ॥ जघान सारथिं साश्वं रथं चाचूर्णयत्क्षणात् ॥ ततोन्यं रथमादाय मेघनादो महाबलः ॥
शीघ्रं ब्रह्मास्त्रमादाय बद्ध्वा वानरपुंगवं ॥ निनाय निकटं राज्ञो रावणस्य महाबलं ॥ यस्य नाम
सततं जपंति येऽज्ञानकर्मकृतबंधनं क्षणात् ॥ सद्य एव परिमुच्य तत्पदं यांति कोटिरविभासुरं
शिवं ॥ तस्यैव रामस्य पदांबुजं सदा हृत्पद्ममध्ये सुनिधाय मारुतिः ॥ सदैव निर्मुक्तसमस्तबंध
नः किं तस्य पाशैरितरैश्च बंधनैः ॥ इति श्रीमदध्यात्मरामायणे सुंदरकांडे तृतीयोऽध्यायः
॥ ३ ॥ श्रीमहादेव उवाच ॥
यांतं कपींद्रं धृतपाशबंधनं विलोकयंतं नगरं विभीतवत् ॥ अताडयन्मुष्टितलैः सुकोप
नैः पौराः समंतादनुयांत ईक्षितुं ॥ ब्रह्मास्त्रमेनं क्षणमात्रसंगमं कृत्वा गतं ब्रह्मवरेण सत्व
रं ॥ ज्ञात्वा हनूमानपि फल्गुरज्जुभिर्धृतो ययौ कार्यविशेषगौरवात् ॥ सभांतरस्थस्य च रावण
स्य तं पुरो निधायाह बलारिजिद्बली ॥ बद्धो मयायं तव वैरिवानरः समागतो नेन हता महा
सुराः ॥ यदुक्तमत्रार्थ विचार्य मंत्रिभिर्विधीयतां मे पतनाशिको हरिः ॥ ततो विलोक्याह स
रावणो ग्रतः प्रहस्तमन्त्रे स्थितमंजनाभं ॥ प्रहस्त पृच्छैनमसौ किमागतः किमत्र कार्यं कुत
एव वानरः ॥ वनं किमर्थं सकलं विनाशितं हताः किमर्थं मम राक्षसा बलात् ॥ ततः प्रहस्तो ह
नुमंतमादरात्पप्रच्छ केन प्रहितोसि वानर ॥ भयं च ते मास्तु विमोक्ष्यसे मया सत्यं वदस्व प्र
तिरावणसन्निधौ ॥ ततोऽतिहर्षात्पवनात्मजो रिपुं निरीक्ष्य लोकत्रयकंटकासुरं ॥ वक्तुं प्र
चक्रे रघुनाथसत्कथां क्रमेण रामं मनसा स्मरन्मुहुः ॥ शृणु स्फुटं देवगणाद्यमित्र हे राम
हं हि दूतोहमागतोऽस्मि ते ॥ यस्याखिलेशस्य हृताधुना त्वया भार्या स्वनाशाय शुनेव सद्धविः ॥
स राघवोऽभ्येत्य मतंगपर्वतं सुग्रीवमैत्रीमनलस्य सन्निधौ ॥ कृत्वैकबाणेन निहत्य वालिनं सु
ग्रीवमेवाधिपतिं चकार तं ॥ स वानराणामधिपो महाबली महाबलैर्वानरयूथकोटिभिः ॥
रामेण सार्धं सह लक्ष्मणेन भोः प्रवर्षणोपर्यमितैरतिष्ठते ॥ संचोदितास्तेन महाहरीश्वरा ध
रासुतां मार्गयितुं दिशो दश ॥ तत्राहमेकः पवनात्मजः कपिः सीतां विचिन्वन्शनकैः समा
गतः ॥ दृष्टा मयात्र पद्मपलाशलोचना सीता कपित्वाद्विपिनं विनाशितं ॥ दृष्ट्वा ततो हं बहवः सम
मागतान् रक्षांसि हंतुं प्रहितान्वधाय मां ॥ मया हतास्ते परिरक्षितं वपुः प्रियो हि देहोखिल
देहिनां प्रभो ब्रह्मास्त्रपाशेन निबद्ध्य मां ततः समागमन्मेघनिनादनामकः ॥ स्पृष्टैव मां ब्रह्म
वरप्रभावतस्त्यक्त्वा गतं सर्वमवेहि तावत् ॥ तथाप्यहं बद्ध इवागतो हितं प्रवक्तुकामः कर
णाद्रदीयः ॥ विचार्य लोकस्य विवेकतो गतिं न राक्षसीं बुद्धिमुपैहि रावण ॥ दैवी गतिं

संसृतिमोक्षहेतुकीं समाश्रयात्यंतहिताय देहिनः ॥ त्वं ब्रह्मणो ह्युत्तमवंशसंभवः पौलस्त्यपु
त्रोसि कुबेरबांधवः ॥ देहात्मबुद्ध्यापि च पश्य राक्षसो नास्यात्मबुद्ध्या किमु राक्षसो ह्यसि ॥ शरीर
बुद्धींद्रियदुःखसंततिर्न ते न च त्वं तव निर्विकारतः ॥ अज्ञानहेतोश्च तथैव संततेरसत्त्वम
स्याः स्वपतो हि दृश्यवत् ॥ इदं तु सत्यं तव नास्ति विक्रिया विकारहेतोर्न च ते द्वयत्वतः ॥ यथा
नभः सर्वगतं न लिप्यते तथा भवान्देहगतोपि सूक्ष्मकः ॥ देहेंद्रियप्राणशरीरसंगतस्त्वात्मे
ति बुद्ध्वाखिलबंधभाग्भवेत् ॥ चिन्मात्रमेवाहमजोहमक्षरो ह्यानंदभावोहमिति प्रमुच्यते
देहोप्यनात्मा पृथिवीविकारजो न प्राण आत्मानिल एष एव सः ॥ मनोप्यहंकारविकार ए
व नो न चापि बुद्धिः प्रकृतेर्विकारजा ॥ आत्मा चिदानंदमयोविकारवान्देहादिसंघाद्व्यति
रिक्त ईश्वरः ॥ निरंजनो मुक्त उपाधितः सदा ज्ञात्वैवमात्मानमितो विमुच्यते ॥ अतोहमात्यं
तिकमोक्षसाधनं वक्ष्ये शृणुष्वावहितो महामते ॥ विष्णोर्हि भक्तिः सुविशोधनं धियस्ततो भ
वेज्ज्ञानमतीव निर्मलं ॥ विशुद्धतत्त्वानुभवो भवेत्ततः सम्यग्विदित्वा परमं पदं व्रजेत् ॥ अतो
भजस्वाद्य हरिं रमापतिं रामं पुराणं प्रकृतेः परं विभुं ॥ विसृज्य मौर्ख्यं हृदि शत्रुभावनां भज
स्व रामं शरणागतप्रियं ॥ सीतां पुरस्कृत्य सपुत्रबांधवो रामं नमस्कृत्य विमुच्यसे भयात् ॥ रामं
परात्मानमभावयंजनो भक्त्या हृदिस्थं सुखरूपमद्वयं ॥ कथं परं तीरमवाप्नुयाज्जनो भवांबु
धेर्दुःखतरंगमालिनः ॥ नो चेत्त्वमज्ञानमयेन वह्निना ज्वलंतमात्मानमरक्षितारिवत् ॥ नयस्य
धोधः स्वकृतैश्च पातकैर्विमोक्षशंका न च ते भविष्यति ॥ श्रुत्वामृतस्वादसमानभाषितं त
द्वायुसूनोर्दशकंधरोऽसुरः ॥ अमृष्यमाणोऽतिरुषा कपीश्वरं जगाद रक्तांतविलोचनो ज्वलन् ॥ क
थं ममाग्रे विलपस्यभीतवत् प्लवंगमानामधमोसि दुष्टधीः ॥ क एष रामः कतमो वनेचरो
निहन्मि सुग्रीवयुतं नराधमं ॥ श्रुत्वा दशग्रीववचः समारुतिर्विवृद्धकोपेन दहन्निवासुरं ॥
न मे समा रावणकोटयोऽधमा रामस्य दासोहमपारविक्रमः ॥ श्रुत्वातिकोपेन हनूमतो व
चो दशाननो राक्षसमेवमब्रवीत् ॥ पार्श्वे स्थितं मारय खंड्गपाणे कपिं प्रपश्यत्सु सुहृत्सु मित्र
चोधवाः ॥ निवारयामास ततो विभीषणो महासुरं साधु परस्य च तेवधे ॥ राजन्वधार्हो न भवे
त्कथंचन प्रतापयुक्तैः परराजवानरैः ॥ हते स्मिन्वानरे दूते वार्ता को वा निवेदयेत् ॥ रामाय
त्वं समुद्दिश्य वधाय समुपस्थितः ॥ अतो वधसमं किंचिदन्यच्चिंतय वानरे ॥ सचिह्नो गच्छतु
हरिर्यं दृष्ट्वायास्यति द्रुतं ॥ रामः सुग्रीवसहितस्ततो युद्धं भवेत्तव ॥ विभीषणवचः श्रुत्वा
रावणोऽप्यब्रवीत्ततः ॥ वानराणां हि लांगूले महामानो भवेत्किल ॥ अतो वस्त्रादिभिः पु
च्छं वेष्टयित्वा प्रयत्नतः ॥ वह्निना योजयित्वैनं भ्रामयित्वा पुरेऽभितः ॥ विसर्जयत पश्यंतु
सर्ववानरयूथपाः ॥ तथेति शणपट्टैश्च वस्त्रैरन्यैरनेकशः ॥ तैलाक्तैर्वेष्टयामासुर्लांगूलं मा
रुतेर्दृढं ॥ पुच्छाग्रे किंचिदनलं दीपयित्वाथ राक्षसाः ॥ रज्जुभिः सुदृढं बद्ध्वा धृत्वा तं बलिनो ह
रिं ॥ समंताद्भ्रामयामासुश्चौरोयमिति वादिनः ॥ तूर्यघोषैर्घोषयंतस्ताडयंतो मुहुर्मुहुः ॥
हनूमतापि तत्सर्वं सोढुं किंचिच्चिकीर्षुणा ॥ गत्वा तु पश्चिमद्वारसमीपं तत्र मारुतिः ॥ सूक्ष्मो
बभूव बंधेभ्यो निःसृतः पुनरप्यसौ ॥ बभूव पर्वताकारस्ततउत्प्लुत्य गोपुरं ॥ तत्रैकस्तंभमा
दाय हत्वा तान्रक्षिणस्ततः ॥ विचार्य कार्यशेषं स प्रासादाग्रेषु सत्वरः ॥ उत्प्लुत्योत्प्लुत्य संदी
पयामास महता कपिः ॥ ... गृहाद्गृहं ... प्रासादानाम्... ॥ हा तात पुत्र नाथेति
क्रंदमानाः समंततः ॥ व्याप्ताः प्रासादशिखरेऽप्यारूढा दैत्ययोषितः ॥ देवतास्त्विव पतंत्यः
पावके खिलाः ॥ विभीषणगृहं त्यक्त्वा सर्वं भस्मीकृतं पुरं ॥ ततउत्प्लुत्य जलधौ हनूमान्मारु
तात्मजः ॥ लांगूलं मज्जयित्वांतः स्वस्थचित्तो बभूव ह ॥ वायोः प्रियसखित्वाच्च सीतया
प्रार्थितोऽनलः ॥ न ददाह हरेः पुच्छं बभूवात्यंतशीतलः ॥ यन्नामसंस्मरणधूतसमस्तपा
पास्तापत्रयानलमपीह तरंति सद्यः ॥ तस्यैव किं रघुवरस्य विशिष्टदूतः संतप्यते कथ
मसौ प्रकृतानलेन ॥ इति श्रीमदध्यात्मरामायणे सुंदरकांडे चतुर्थोऽध्यायः ॥ ॥ ४ ॥

श्री·रा
३३

श्रीम॥दे॥उ॥व॥ ततः सीतां नमस्कृत्य हनूमानब्रवीद्वचः॥ आज्ञापय महादेवि भवती राम
सन्निधौ॥ गच्छामि राम स्त्वां द्रष्टुमागमिष्यति सानुजः॥ इत्युक्त्वा त्रिः परिक्रम्य जानकीं मरु
दात्मजः॥ प्रणम्य प्रस्थितो गन्तुमिदं वचनमब्रवीत्॥ देवि गच्छामि भद्रं ते तूर्णं द्रक्ष्यसि राघवं
लक्ष्मणं च ससुग्रीवं वानरायुतकोटिभिः॥ ततः प्राह हनूमन्तं जानकी दुःखकर्षिता॥ त्वां
दृष्ट्वा विस्मृतदुःखाहमिदानीं त्वं गमिष्यसि॥ इतः परं कथं वर्ते रामवार्ताश्रुतिं विना॥ मारु
तिरुवाच॥ यद्येवं देवि मे स्कंधमारोह क्षणमात्रतः॥ रामेण योजयिष्यामि मन्यसे यदि
जानकि॥ सीतोवाच॥ रामः सागरमाशोष्य बद्ध्वा वा शरपंजरैः॥ आगत्य वानरैः
सार्धं हत्वा रावणमाहवे॥ मां नयेद्यदि रामस्य कीर्तिर्भवति शाश्वती॥ अतो गच्छ कथं वा
पि प्राणान्संधारयाम्यहं॥ इति प्रस्थापितो वीरः सीतया प्रणिपत्य तां॥ जगाम पर्वतस्या
ग्रे गन्तुं पारं महोदधेः॥ तत्र गत्वा महासत्त्वः पादाभ्यां पीडयन्गिरिं॥ जगाम वायुवेगेन पर्वत
श्च महीतले॥ ततो महीसमानत्वं त्रिंशद्योजनमुच्छ्रिताः॥ मारुतिर्गगनांतस्थो महानादं
चकार सः॥ तं श्रुत्वा वानराः सर्वे ज्ञात्वा मारुतिमागतं॥ हर्षेण महताविष्टाः शब्दं चक्रुर्महा
स्वनं॥ शब्देनैव विजानीमः कृतकार्यः समागतः॥ हनूमानेव पश्यध्वं वानरा वानरर्षभं
पर्वं ब्रुवीत्स्वरैरेभुर्वानरेषु समारुतिः॥ अवतीर्य गिरेर्मूर्ध्नि वानरानिदमब्रवीत्॥ दृष्टा सी
ता मया लंका धर्षिता च सकानना॥ संभाषितो दशग्रीवस्ततो दग्ध्वा पुरं ततः॥ इदानीमेव ग
च्छामो रामसुग्रीवसन्निधिं॥ इत्युक्ता वानराः सर्वे हर्षेणालिंग्य मारुतिं॥ केचिच्चुचुंबुर्लां
गूलं ननृतुः केचिदुत्सुकाः॥ हनूमता समेतास्ते जग्मुः प्रस्रवणं गिरिं॥ गच्छंतस्ते सुग्री
वपालितं सुग्रीवरक्षितं॥ मधुसंज्ञं तदा प्राप्य दं वानरर्षभाः॥ युवराजोऽब्रवीद्वीरं ह
नूमंतं महामते॥ भक्षयामः फलान्यत्र पिबामो मधु वन्यकं॥ मतहाराद्य वे दृष्टु गतो
द्येव सानुजं॥ अंगद उवाच॥ हनुमान्कृतकार्योऽयं पिबंत्वेते यथासुखं॥ जटाधरं फल
मूलानि त्वरितं हरिसत्तमाः॥ ततः प्रविश्य हरयः पातुमारेभिरे मधु॥ रक्षणस्थाननादृ
त्य दधिवक्त्रेण नोदितान्॥ पिबतस्ताडयामासुर्वानरान्वानरर्षभाः॥ ततस्तान्मुष्टिभिः
पादैश्चूर्णयित्वा पपुर्मधु॥ ततो दधिमुखः क्रुद्धः सुग्रीवस्य स मातुलः॥ जगाम रक्षि
भिः सार्धं यत्र राजा कपीश्वरः॥ गत्वा तमब्रवीद्देव चिरकालाभिरक्षितं॥ नष्टं मधुवनं
तेऽद्य कुमारेण हनूमता॥ श्रुत्वा दधिमुखेनोक्तं सुग्रीवो हृष्टमानसः॥ दृष्ट्वागतो न सं
देहः सीतां पवननंदनः॥ नोचेन्मधुवनं द्रष्टुं समर्थः को भवेन्मम॥ तत्रापि वायुपुत्रे
ण कृतं कार्यं न संशयः॥ श्रुत्वा सुग्रीववचनं हृष्टो रामस्तमब्रवीत्॥ किमुच्यते त्वया रा
जन्वचः सीताकथान्वितं॥ सुग्रीवस्त्वब्रवीद्वाक्यं देव दृष्टा वनीसुता॥ हनुमत्प्रमुखाः
सर्वे प्रविश्य मधुकाननं॥ भक्षयंति स्म सकला ताडयंति स्म रक्षिणः॥ अकृत्वा देवकार्यं
ते द्रष्टुं मधुवनं मम॥ न समर्थास्ततो देवी दृष्टा सीतेति निश्चितं॥ रक्षिणो वो भयं मा स्त गच्छ
त मम आज्ञया॥ वानरानंगदमुखानानयध्वं ममांतिकं॥ श्रुत्वा सुग्रीववचनं गत्वा
ते वायुवेगतः॥ हनूमत्प्रमुखान्दृष्ट्वा गच्छध्वं प्राह सत्वरं॥ दृष्टुमिच्छति सुग्रीवः सरामो
लक्ष्मणान्वितः॥ पुष्पानन्नानि वहृष्टास्ते त्वरयंति महाबलाः॥ तथेत्यस्य समासाद्य पुप्लुवा
नरोत्तमाः॥ हनूमंतं पुरस्कृत्य युवराजेन यान्मदं॥ राम सुग्रीवयोरग्रे निपेतुर्भुवि सत्व
रं॥ हनूमानाह देवं प्रहृष्टस्तुष्टा सीता नितमया॥ सा हागं प्रणिपत्याग्रे रामं पश्चाद्धरीश्वरं
कपालेऽप्रा रामेंद्रज्ञात्वाश्रीत्वा श्रुत्वान्वितः॥ अशोकवनिकामध्ये शिंशपामूलमाश्रि
ता॥ राक्षसीभिः परिवृता निराहारा कृशा प्रभो॥ हा राम राम रामेति शोचंती मलिनांब
रा॥ एकवेणी मया दृष्टा ततो रामस्मिता शुभा॥ वृक्षशाखांतरे स्थित्वा सूक्ष्मरूपेण नैः
कथां॥ जन्मारभ्य तवात्यर्थं दंडकागमनं तथा॥ दशाननेन हरणं जानक्याश्च हितेन त्वयि
सुग्रीवेण यथा मैत्री कृत्वा वालिनिबर्हणं॥ मार्गणार्थं च वैदेह्याः सुग्रीवेण विसर्जिताः

महाबलाः परमा हि सा महावीर्यां रोदिताः सौ तां विलोक्य विस्मिताः॥ महाबलाः प्रेषिताः वेदेह्यामार्गेषु संतत्र क्रमेणोदितो विहारं करवो॥ सुदूरं ग
ष्प्रीवस्त्वचिरो दासो रघुवंशस्य रघुवरस्यार्हं॥ इत्युक्ता जानकी भाग्यात्स्नापयः सकृतार्थो हृष्टः सुतस्ते
नमाकर्ण्य सीता विस्फारितेक्षणा॥ के नवा कर्णपीयूषं श्रावितं मे शुभाक्षरं॥ यदि सत्यं
नदायातु मद्दर्शनपथं तु सः॥ ततोऽहं वानराकारः सूक्ष्मरूपेण जानकीं॥ प्रणम्य प्रांजलि
र्भूत्वा दूरादेव स्थितः प्रभो॥ पृष्टोऽहं सीतया कस्त्वमित्यादि विस्तरं॥ मया सर्वं क्रमेणो
क्तं वृत्तांतं तव विस्तरं॥ पश्चान्मयार्पितं तस्यै भवद्दत्तांगुलीयकं॥ तेन मामतिविश्वस्ता
वचनं चेदमब्रवीत्॥ यथा दृष्टास्मि हनुमन्नाशयामास तदा निशं॥ राक्षसीभिः कथं
देवपृच्छारात्सेवे॥ मया कार्यं दीर्घलावण्यविहीनां भवति रुदितं॥ वदसि त्वं गेहं रत्नं
नाधिगच्छसि॥ इदानीमेव गत्वा हं स्थितिं रामाय तेऽवदं॥ पतिः शोक स्वद्रोणं त्वर्हं लक्ष्मो
तलरक्षिणः॥ वानरानीकपैः सार्धं आगमिष्यति तेंतिकं॥ रामः प्रवणसौमित्रिः सुग्रीवेण
कपुरं॥ अभिज्ञां देहि मे देवि यथा मां विश्वसेत्प्रभुः॥ इत्युक्ता सा शिरोरत्नं चूडापाशे स्थितं
प्रियं॥ दत्वा काकेन यद्वृत्तं चित्रकूटगिरौ पुरा॥ तदप्याहाश्रुपूर्णाक्षी कुशलं ब्रूहि राघवं
लक्ष्मणं ब्रूहि मे किंचिदुरुक्तं भाषितं पुरा॥ तत्क्षमस्वाज्ञभावेन भाषितं कुलनंदन॥ तार
यस्व मां शीघ्रं रामं ब्रूहि कृपान्वितः॥ इत्युक्त्वा रुदती सीता दुःखेन महता वृता॥ मया
प्याश्वासिता राम वदता सर्वमेव ते॥ ततः प्रस्थापितो राम त्वत्समीपमिहागतः॥ तदागम
न वेलायामशोकवनिकां प्रियां॥ उत्पाट्य राक्षसांस्तत्र बहून्हत्वाक्षमारकं॥ रावणस्य सुतं
हत्वा रावणेनाभिभाषितः॥ लंकामदहमशेषां दग्ध्वा पुनरागतः॥ श्रुत्वा हनूमतो
वाक्यं रामो त्यंतप्रहृष्टधीः॥ हनूमंस्तेकृतं कार्यं देवैरपि सुदुष्करं॥ उपकारं न पश्यामि तव
प्रत्युपकारिणः॥ इदानीं ते प्रयच्छामि सर्वस्वं मम मारुते॥ इत्यालिंग्य समाकृष्य गाढं
वानरपुंगवं॥ सार्द्रनेत्रो रघुश्रेष्ठः परां प्रीतिमवाप सः॥ हनुमंतमुवाचेदं राघवो भक्त
वत्सलः॥ परिरंभो हि मे लोके दुर्लभः परमात्मनः॥ अतस्त्वं मम भक्तोऽसि प्रियोऽसि हरि
पुंगव॥ यत्पादपद्मयुगलं तुलसीदलाद्यैः संपूज्य विष्णुपदवीमतुलां प्रयाति॥ तेनैव
किं पुनरसौ परिरब्धमूर्ती रामेण वायुतनयः कृतपुण्यपुंजः॥ इति श्रीमदध्यात्मरामा
यणे॥ उमामहेश्वरसंवादे सुंदरकांडे पंचमोऽध्यायः॥ ५॥ समाप्तमिदं सुंदरकांडं
॥ ६॥

अ॰ रा॰
३४

34

श्री ॥ महादेव उवाच ॥ यथावद्भाषितं वाक्यं श्रुत्वा रामो हनूमतः ॥ उवाचानंतरं वाक्यं हर्षे
ण महतावृतः ॥ कार्यं कृतं हनूमता देवैरपि सुदुःकरं ॥ मनसापि यदन्येन न शक्यं धर
णीतले ॥ शतयोजनविस्तीर्णं लंघयेत्कः पयोनिधिं ॥ लंकां च राक्षसैर्गुप्तां को वा धर्षयितुं क्षमः
॥ भृत्यकार्यं हनूमता कृतं सर्वमशेषतः ॥ सुग्रीवस्येदृशो लोके न भूतो न भविष्यति ॥ अहं च रघु
वंशश्च लक्ष्मणश्च कपीश्वरः ॥ जानक्या दर्शनेनाद्य रक्षिताः स्म हनूमता ॥ सर्वथा सुकृतं का
र्यं जानक्याः परिमार्गणं ॥ समुद्रमनसा स्मृत्वा सीदतीव मनो मम ॥ कथं नक्रझषाकीर्णं
समुद्रं शतयोजनं ॥ लंघयित्वा रिपुं हत्वा कथं द्रक्ष्यामि जानकीं ॥ श्रुत्वा तु रामवचनं सुग्रीवः
प्राह राघवं ॥ समुद्रं लंघयिष्यामो महानक्रझषाकुलं ॥ लंकां च विधमिष्यामो हनिष्यामोऽद्य
रावणं ॥ चिंतां त्यज रघुश्रेष्ठ चिंता कार्यविनाशिनी ॥ एतान्पश्य महासत्त्वाञ्छूरान्वानरपुंग
वान् ॥ त्वत्प्रियार्थं समुद्युक्तान्प्रवेष्टुमपि पावकं ॥ समुद्रतरणे बुद्धिं कुरुष्व प्रथमं ततः ॥ दृ
ष्ट्वा लंकां दशग्रीवो हत इत्येव मन्यतां ॥ न हि पश्याम्यहं कंचित्त्रिषु लोकेषु राघव ॥ गृहीतध
नुषो यस्ते तिष्ठेदभिमुखो रणे ॥ सर्वथा नो जयो राम भविष्यति न संशयः ॥ निमित्तानि च पश्या
मि तथा भूतानि सर्वशः ॥ सुग्रीववचनं श्रुत्वा भक्तिवीर्यसमन्वितं ॥ अंगीकृत्याब्रवीद्रामो
हनूमंतं पुरःस्थितं ॥ येन केन प्रकारेण लंघयामो महार्णवं ॥ लंकास्वरूपं मे ब्रूहि दुःसाध्यां देव
दानवैः ॥ ज्ञात्वा तस्य प्रतीकारं करिष्यामि कपीश्वर ॥ श्रुत्वा रामस्य वचनं हनूमान्विनयान्वि
तः ॥ उवाच प्रांजलिर्देवं यथादृष्टं ब्रवीमि ते ॥ लंका दिव्यपुरी देव त्रिकूटशिखरे स्थिता ॥
स्वर्णप्राकारसहिता स्वर्णाट्टालकसंयुता ॥ परिखाभिः परिवृता पूर्णाभिर्निर्मलोदकैः ॥ ना
नोपवनशोभाढ्या दिव्यवापीभिरावृता ॥ गृहैर्विचित्रशोभाढ्यैर्मणिस्तंभमयैः शुभैः ॥
पश्चिमद्वारमासाद्य गजवाजिसमाकुलाः ॥ उत्तरद्वारि तिष्ठंति साश्ववाहाः सपत्तयः ॥ तिष्ठंत्यर्बु
दसंख्याकाः प्राच्यामपि तथैव च ॥ रक्षितारो राक्षसा वीरा द्वारे दक्षिणमाश्रिताः ॥ मध्यकक्षे
ऽप्यसंख्याता गजाश्वरथपत्तयः ॥ रक्षंति सदा लंकां नानास्त्रकुशलाः प्रभो ॥ संक्रमैर्विविधै
र्लंका शतघ्नीभिश्च संवृता ॥ एवं स्थितेऽपि देवेश शृणु मे तत्र चेष्टितं ॥ दशाननबलौघस्य
चतुर्थांशो मया हतः ॥ दग्ध्वा लंकापुरी स्वर्णप्राकारो धर्षितो मया ॥ शतघ्न्यः संक्रमाश्चैव ना
शिता मे रघूत्तम ॥ देव त्वद्दर्शनादेव लंका भस्मीकृता भवेत् ॥ प्रस्थानं कुरु देवेश गच्छामो लव
णांबुधेः ॥ तीरं सह महावीरैर्वानरौघैः समंततः ॥ श्रुत्वा हनूमतो वाक्यं राघवो रघुनंदनः ॥
सुग्रीव सैनिकान्सर्वान्प्रस्थानायाभिनोदय ॥ इदानीमेव विजयो मुहूर्तः परिवर्तते ॥ अस्मि
न्मुहूर्ते गत्वाहं हत्वा राक्षससंकुलं ॥ सप्राकारं सदुर्धर्षं नाशयिष्यामि रावणं ॥ आनेष्यामि
च सीतां मे दक्षिणांगं स्फुरत्युरः ॥ सर्वा प्रयातु वाहिनी वानराणां तरस्विनां ॥ रक्षंतु यूथपाः से
नामग्रे पृष्ठे च पार्श्वयोः ॥ हनूमंतमथारुह्य गच्छाम्यग्रेंऽगदं ततः ॥ आरुह्य लक्ष्मणो यातु सु
ग्रीव त्वं मया सह ॥ गजो गवाक्षो गवयो मैंदो द्विविद एव च ॥ नलो नीलः सुषेणश्च जांबवां
श्च महाबले ॥ सर्वे गच्छंतु सर्वत्र सेनायाः शत्रुघातिनः ॥ इत्याज्ञाप्य हरीन्सर्वान्प्रस्थितः सहल
क्ष्मणः ॥ सुग्रीवसहितो हृष्टः सेनामध्यगतो विभुः ॥ वारणेंद्रनिभाः सर्वे वानराः काम
रूपिणः ॥ क्ष्वेलंतः परिगर्जंतो जग्मुस्ते दक्षिणां दिशं ॥ भक्षयंतो ययुः सर्वे फलानि च म
धूनि च ॥ ब्रुवंतो राघवस्याग्रे हनिष्यामोऽद्य रावणं ॥ एवं ते वानराः श्रेष्ठा गच्छंत्यतुलविक्रमाः
हरिभ्यामुह्यमानौ तौ शुशुभाते रघूत्तमौ ॥ नक्षत्रैः सेवितौ यद्वच्चंद्रसूर्याविवांबरे ॥ आवृत्य
पृथिवीं कृत्स्नां जगाम महती चमूः ॥ प्रस्फोटयंतः पुच्छाग्रानुद्वहंतश्च पादपान् ॥ शैलानारो
हयंतस्ते जग्मुर्मारुतवेगतः ॥ असंख्याताश्च सर्वत्र वानराः परितश्चरः ॥ हृष्टास्ते जग्मुरत्य
र्थं रामेणाभिपालिताः ॥ गताश्च सर्वे दिवारात्रौ कचिद्विश्रामसंज्ञतत्क्षणं ॥ काननानि विचित्रा
णि पश्यंतस्तत्र सह्ययोः ॥ ते सह्यं समतिक्रम्य मलयं च तथा गिरिं ॥ आययुश्चानुपूर्व्येण सम
द्रं भीमनिःस्वनं ॥ अवतीर्य हनूमंतं रामः सुग्रीवसंयुतः ॥ सलिलाभ्याशमासाद्य रामो
वचनमब्रवीत् ॥ आगताः स्मो वयं सर्वे समुद्रं मकरालयं ॥ इतो गंतुमशक्यं नो निरुपायेन
वानराः ॥ अत्र सेनानिवेशोऽस्तु मंत्रयामोऽत्र तारणे ॥ श्रुत्वा रामस्य वचनं सुग्रीवः सागरां

तिके ॥ सेनान्यवेशयच्छीघ्रं रक्षितां कपिकुंजरैः ॥ ते पश्यंतो निविष्टास्ते गंभीरं भीमदर्शनं ॥ ते
त्रमनदं गाद्रोभीमनक्रभयंकरं ॥ अगाधं गगनाकारं सागरं वीक्ष्य दुःखिताः ॥ अहो
मः कथं घोरं सागरं वरुणालयं ॥ हंतव्योऽस्माभिरद्यैव रावणो राक्षसाधमः ॥ इति चिंता
सर्वे रामपार्श्वे व्यवस्थिताः ॥ रामः सीतामनुस्मृत्य दुःखेन महतावृतः ॥ अतिचिंताकुलाः
लीलां च कृपाकार्यमानुषः ॥ गृहीतवपुषि रात्मैकः परमात्मा सनातनः ॥ विलपन्मानवी
स्थमस्व रूपेण त्वतो जनाः ॥ तेन स्मृत्वा तिदुःखाद्विकिमुतानेदमव्ययं ॥ यत्तु ज्ञानाति राम
मोहमदास्पदः ॥ अज्ञानलिंगान्येतानि ऊतः कल्पितानि दात्मनि ॥ दुःखदर्पभयक्रोधलोभ
परात्मनः ॥ संप्रसादे हृदयाभावात्स्वात्मना श्रुतिहृपते ॥ देहाभिमानिनो दुःखं नो देहस्य
पपते ॥ अतो दुःखादिकं सर्वं बुद्धेरेव न संशयः ॥ रामः परात्मा पुरुषः पुराणो नित्योदितो नि
त्यसुखो निरीहः ॥ तथापि मायागुणसंगतोऽसौ सुखीव दुःखीव विभाव्यतेऽबुधैः ॥ इति श्रीअ
ध्या ॥ रामा ॥ युद्ध ॥ कांडे ॥ प्रथमोऽध्यायः ॥ १ ॥

॥ श्री ॥ महादेव उवाच ॥

लंकायां रावणो दृष्ट्वा कृतं कार्यं हनूमता ॥ दुष्करं देववृंदैर्वापि ह्रिया किंचिदवाङ्मुखः ॥
आहूय मंत्रिणः सर्वानिदं वचनमब्रवीत् ॥ हनूमता कृतं कर्म भवद्भिर्दृष्टमेव तत् ॥ प्रवि
श्य लंकां दुर्धर्षां दृष्ट्वा सीतां दुरासदां ॥ हत्वा च राक्षसान्वीरानक्षं मंदोदरीसुतं ॥ दग्ध्वा लंका
मशेषेण लंघयित्वा च सागरं ॥ युष्मान्सर्वानतिक्रम्य स्वस्थो यातो वनेचरः ॥ किं कर्तव्य
मतोऽस्माभिर्यूयं मंत्रविशारदाः ॥ मंत्रयध्वं प्रयत्नेन यत्क्षेमं मे हितं भवेत् ॥ रावणस्य वचः
श्रुत्वा राक्षसास्तमथाब्रुवन् ॥ देवशंका कुतो राम मानवेनोक जितेन ते ॥ इंद्रस्तव हि नि
प्रः पुत्रेण तव पत्तने ॥ जित्वा कुबेरमानीय पुष्पकं भुज्यते त्वया ॥ यमो जितः कालदंडाद्
घनाभ्र वायुना ॥ वरुणो हुंकृतेनैव जिताः सर्वे विशारदाः ॥ मयो मायाविराभीत्या कन्यां
दत्वा त्वय्येव ॥ त्वद्दृष्ट्या वर्तते यापि किमुतान्ये महासुराः ॥ हनूमद्धर्षणं यत्तु तदवज्ञाकृतं तव
नः ॥ वानरोऽयं किमस्माकमस्मिन्पौरुषदर्शने ॥ इत्युपेक्षितमस्माभिर्धर्षणं तेन किं भवेत्
वयं प्रमत्ताः किं तेन वंचिताः स्मो हनूमता ॥ जानीमो यदि तं सर्वे कथं जीवन्गमिष्यति ॥ आ
ज्ञापय जगत्कृत्स्नमवानरममानुषं ॥ कृत्वा यास्यामहे सर्वे प्रत्येकं वा नियोजय ॥ कुंभकर्ण
स्तदा प्राह रावणं राक्षसेश्वरं ॥ आरब्धं यत्त्वया कर्म स्वात्मनाशाय केवलं ॥ न दृष्टोऽसि तदा भा
ग्याद्रामेण महात्मना ॥ यदि पश्यति रामस्त्वां जीवन्नायासि रावण ॥ रामो न मानुषो देवः
साक्षान्नारायणः स्वयं ॥ सीता भगवती लक्ष्मी रामपत्नी यशस्विनी ॥ राक्षसानां विनाशाय त
यानीता त्वयाधम ॥ विषपिंडमिवागीर्य महामीनो यथा तथा ॥ आनीता जानकी यच्च त
था किं वा भविष्यति ॥ यद्यप्यनुचितं कर्म त्वया कृतमजानता ॥ सर्वं सामं करिष्यामि स्वस्थ
चित्तो भव प्रभो ॥ कुंभकर्णवचः श्रुत्वा वाक्यमिंद्रजिदब्रवीत् ॥ देहि देव ममानुज्ञां हत्वा रामं
सलक्ष्मणं ॥ सुग्रीवं वानरांश्चैव पुनरायामि तत्क्षणात् ॥ तत्रागतो भागवतप्रधानो विभी
षणो धर्मभृतां वरिष्ठः ॥ श्रीरामपादद्वयमेकतानः प्रणम्य देवारिमथोपविष्टः ॥ विलोक्य
कुंभश्रवणादिदैत्यान्मत्तप्रमत्तानतिविस्मयेन ॥ विलोक्य कामातुरमप्रमत्तो दशाननं प्रा
ह विशुद्धबुद्धिः ॥ न कुंभकर्णेंद्रजितौ च राजंस्तथा महापार्श्वमहोदरौ तौ ॥ निकुंभकुंभौ च
तथातिकायः स्थातुं न शक्ता युधि राघवस्य ॥ सीताभिधानेन महाग्रहेण ग्रस्तोऽसि राजन्न हि ते
विमोक्षः ॥ तामेव सत्कृत्य महाधनेन दत्त्वाभिरामाय सुखी भव त्वं ॥ यावन्न रामस्य शिताः
शिलीमुखा लंकामभिव्याप्य शिरांसि राक्षसां ॥ छिंदंति तावद्रघुनायकस्य भो जानकीं
त्वं प्रदिशाशु मर्हसि ॥ यावन्न यांति कपयो महाबला हरींद्रतुल्या नगदंतयोधिनः ॥ लंकां
समाक्रम्य विनाशयंति तावद्द्रुतं देहि रघूत्तमाय तां ॥ जीवन्न रामेण विमोक्ष्यसे त्वं गुप्तः सुरेंद्रै
रपि शंकरेण ॥ न देवराजांकगतो न मृत्योः पाताललोकानपि संप्रविष्टः ॥ शुभं हितं पवित्रं च
विभीषणवचः खलः ॥ प्रतिजग्राह नैवासौ म्रियमाण इवौषधं ॥ कालेन नोदितो दैत्यो वि

यु॰ रा॰
३७

35

भीषणमथाब्रवीत् ॥ मदनभोगैःप्रसंगोमत्स्यमीवेवसन्नपि ॥ प्रतीयमानस्येवमेवदि
नकारिणः ॥ मित्रभावेनशत्रुर्मेजातोनास्त्यत्रसंशयः ॥ अनार्येणकृतंतेनसंगतिर्मेनयुज्यते
विनाशमभिकांक्षंतेज्ञातीनांज्ञातयःसदा ॥ योन्यस्त्वेवंविधंब्रूयाद्वाक्यमेतन्निशाचर ॥ ह
न्यामस्मिन्क्षणेनैवधिक्त्वांतुकुलपांसन ॥ रावणेनैवमुक्तःसन्परुषंसविभीषणः ॥ उत्प
पातसभामध्याद्गदापाणिर्महाबलः ॥ चतुर्भिर्मंत्रिभिःसार्धंगगनस्थोब्रवीद्वचः ॥ क्रोधेनम
हताविष्टोरावणंदशकंधरं ॥ मांविनाशमुपेहित्वंप्रियवादिनमेवमां ॥ धिक्करोषितथापित्वं
ज्येष्ठोभ्रातापितुःसमः ॥ कालोरामस्वरूपेणजातोदशरथालये ॥ कालीसीताभिधानेनजा
ताजनकमंदिरे ॥ तावुभौआगतौतत्रभूमेर्भारापनुत्तये ॥ तेनैवप्रेरितस्त्वंतुनस्यणोविहितो
मम ॥ श्रीरामःप्रकृतेःसाक्षात्परस्तात्सर्वदास्थिताः ॥ बहिरंतश्चभूतानांसमःसर्वत्रसंस्थितः
नामरूपादिभेदेनतत्तन्मयइवानलः ॥ यथानानाप्रकारेषुकाष्ठेष्वेकोमहानलः ॥ तन्नदाकृति
भेदेनभिद्यतेज्ञानचक्षुषां ॥ यथैकोभास्करोभेदेनतत्रदृश्योबभौ ॥ नीलपीतादियोगेननिर्म
लःस्फटिकोयथा ॥ सएवनित्यमुक्तोपिस्वमायागुणबिंबितः ॥ कालःप्रधानपुरुषावव्यक्तंचे
तिचतुर्विधः ॥ प्रधानपुरुषाभ्यांसजगत्कृत्स्नंसृजत्यजः ॥ कालरूपेणकलनंजगतःकुरुते
ऽव्ययः ॥ कालरूपीसभगवान्रामरूपेणमायया ॥ ब्रह्मणाप्रार्थितोदेवस्त्वद्वधार्थमिहागतः
तस्याज्ञयाकथंकुर्यान्ममंकस्त्वंवृथानयः ॥ हनिष्यतित्वांरामस्तुससुतबलवाहनं ॥ हन्यमानेन
प्राक्रोमिहष्टेरामेणरावणं ॥ तोरावलनकुलंकृत्स्नंततोराक्षसमिरावृतं ॥ माधियांतस्वावी
भूत्वारमस्वभवनेचिरं ॥ विभीषणोरावणवाक्यतःतात्रादिसत्त्वमवैमपरिहृदंरदं
जगामरामस्यपदारविंदयोःसीताभिकांक्षीपरिपूर्णमानसः ॥ इतिश्रीमदध्यात्मरामायणे
युद्धकांडेद्वितीयोध्यायः ॥ २ ॥ श्रीमहादेवउवाच ॥
विभीषणोमहाभागश्चतुर्भिर्मंत्रिभिःसह ॥ आगत्यगगनेरामसंमुखेसमुपस्थितः ॥ उच्चैरुवा
चभोःस्वामिन्रामराजीवलोचन ॥ रावणस्यानुजोहंतेदासोहंमेविभीषणः ॥ भ्रात्रानिरस्तोहं
त्वामेवशरणंगतः ॥ हितमुक्तंमयादेवतस्यचाविहितात्मने ॥ सीतांरामायवैदेहींप्रेषयेतिपुनः
पुनः ॥ उक्तोपिनशृणोत्येवकालपाशवशंगतः ॥ हंतुंमामसिमादायआद्रवद्राक्षसाधमः ॥ ततोचि
रात्सचिवैश्चतुर्भिःसहितोभयात् ॥ त्वामेवभवमोचनमुमुक्षुःशरणंगतः ॥ विभीषणवचः
श्रुत्वासुग्रीवोवाक्यमब्रवीत् ॥ विश्वासार्होनतेराममायावीराक्षसाधमः ॥ सीताहर्तुर्विशेषे
रावणस्यानुजोबली ॥ मंत्रिभिःसायुधैःसार्धंविहृत्यनिहनिष्यति ॥ तदाज्ञापयमेदेवा
नरैःहन्यतामयं ॥ ममैवंभातिश्रीरामबुद्ध्याकिंनिश्चितंवद ॥ श्रुत्वासुग्रीववचनंरामःस्मित
मब्रवीत् ॥ यदीच्छामिकपिश्रेष्ठलोकान्सर्वान्सहेश्वरान् ॥ निमिषार्धेनसंहन्यांसृजामिचनिमे
षतः ॥ अतोमयाभयंदत्तंप्रपन्नायमानवराक्षसं ॥ सकृदेवप्रपन्नायतवास्मीतिचयाचते ॥ अभयं
सर्वभूतेभ्योददाम्येतद्व्रतंमम ॥ रामस्यवचनंश्रुत्वासुग्रीवोहृष्टमानसः ॥ विभीषणमथानीय
दर्शयामासराघवं ॥ विभीषणस्तुसाष्टांगंप्रणिपत्यरघूत्तमं ॥ हर्षगद्गदयावाचाभक्त्याचपरया
न्वितः ॥ रामंश्यामंविशालाक्षंप्रसन्नमुखपंकजं ॥ धनुर्बाणधरंशांतंलक्ष्मणेनसमन्वितं ॥ कृ
तांजलिपुटोभूत्वास्तोतुंसमुपचक्रमे ॥ नमस्तेरामराजेंद्रनमःसीतामनोरम ॥ नमस्तेचंडकोदं
डनमस्तेभक्तवत्सल ॥ नमोनंतायशांतायमायायापितनेजसे ॥ नमःसुग्रीवमित्रायरघूणाम
न्वयेनमः ॥ जगदुत्पत्तिनाशानांकारणायमहात्मने ॥ त्रैलोक्यगुरवेनादिगृहस्थायनमोनमः
त्वमादिर्जगतांरामत्वमेवस्थितिकारणं ॥ त्वमंतेनिधनस्थानंस्वेच्छाचारस्त्वमेवहि ॥ चरा
चराणांभूतानांबहिरंतश्चराघव ॥ व्याप्यव्यापकरूपेणभवान्भातिजगन्मयः ॥ त्वन्मायया
हृतज्ञानानष्टात्मानोविचेतसः ॥ गतागतंप्रपद्यंतेपापपुण्यवशात्सदा ॥ तावत्सत्यंजगद्भा
तिशुक्तिकारजतंयथा ॥ यावन्नज्ञायतेज्ञानंचेतसानन्यगामिना ॥ त्वदज्ञानात्सदायुक्ताःपुत्र
दारगृहादिषु ॥ रमंतेविषयान्सर्वानंतेदुःखप्रदान्विभो ॥ त्वमिंद्रोग्निर्यमोरक्षोवरुणश्चत
थानिलः ॥ कुबेरश्चतथारुद्रस्त्वमेवपुरुषोत्तमः ॥ त्वमणोरप्यणीयांश्चस्थूलात्स्थूलतरः

प्रभुः ॥ त्वंपितासर्वलोकानांमाताधातात्वमेवहि ॥ आदिमध्यांतरहितःपरिपूर्णोच्युतोव्ययः
त्वंपाणिपादरहितश्चक्षुःश्रोत्रविवर्जितः ॥ श्रोताद्रष्टाग्रहीताचजवनस्त्वंखरांतक ॥ कोशेभ्योव्य
तिरिक्तस्त्वंनिर्गुणोनिरुपाश्रयः ॥ निर्विकल्पोनिराधारोनिर्विकारोनिरामयः ॥ षड्भावरहितो
नादिपुरुषःप्रकृतेःपरः ॥ माययागृह्यमाणस्त्वंमनुष्यइवभाव्यसे ॥ ज्ञात्वात्वांनिर्गुणमजंवै
ष्णवामोक्षगामिनः ॥ अहंत्वत्पादसद्भक्तिनिःश्रेणींप्राप्यराघव ॥ इच्छामिज्ञानयोगाख्यंसौध
मारोढुमीश्वर ॥ नमःसीतापतेरामनमःकारुणिकोत्तम ॥ रावणारेनमस्तेस्तुत्राहिमांभवसा
गरात् ॥ ततःप्रसन्नःप्रोवाचश्रीरामोभक्तवत्सलः ॥ वरंवृणीष्वभद्रंतेवांछितंवरदोस्म्यहं ॥
विभीषणउवाच ॥ धन्योस्मिकृतकृत्योस्मिकृतकार्योस्मिराघव ॥ त्वत्पाददर्शनादेवविमुक्तोस्मि
नसंशयः ॥ नास्तिमत्सदृशोधन्योनास्तिमत्सदृशःशुचिः ॥ नास्तिमत्सदृशोलोकेरामत्वन्मूर्ति
दर्शनात् ॥ कर्मबंधविनाशायत्वत्पादकमलसक्ताभक्तिरेवसदास्तुमे ॥ जेमिस्तुकाणुनःश्रोतो
रामःप्रोवाचराक्षसं ॥ शृणुवक्ष्यामितेभद्ररहस्यंममनिश्चितं ॥ मद्भक्तानांप्रशांतानांयोगि
नांवीतरागिणां ॥ हृदयेसीतयानित्यंवसाम्यत्रनसंशयः ॥ तस्मात्त्वंसर्वदाशांतःसर्वकल्मषव
र्जितः ॥ मद्ध्यात्वामांसदानित्यंघोरसंसारसागरात् ॥ स्तोत्रमेतत्पठेद्यस्तुलिखेद्वाशृणुया
दपि ॥ मत्प्रीतयेसमाभीष्टंसारूप्यमवाप्नुयात् ॥ इत्युक्त्वालक्ष्मणंप्राहश्रीरामोभक्तमभिमा
नं ॥ पश्यत्विदानीमेवैषमत्तोदर्शनजंफलं ॥ लंकाराज्येभिषेक्ष्यामिजलमानयसागरात् ॥ या
वच्चंद्रश्चसूर्यश्चयावत्तिष्ठतिमेदिनी ॥ यावन्ममकथालोकेतावद्राज्यंकरोत्वसौ ॥ इत्युक्त्वा
लक्ष्मणेनाजलमानीयकलशेनतं ॥ लंकाराज्याधिपत्यार्थमभिषेकंरमापतिः ॥ कारयामास
सचिवैर्लक्ष्मणेनविशेषतः ॥ साधुसाध्वितितेसर्वेवानरास्तुष्टुवुर्भृशं ॥ सुग्रीवोपिपरिष्वज्य
विभीषणमथाब्रवीत् ॥ विभीषणवयंसर्वेरामस्यपरमात्मनः ॥ किंकरास्तस्य[illegible]
रामपरिग्रहात् ॥ रावणस्यविनाशेत्वंसहायंकर्तुमर्हसि ॥ विभीषणउवाच ॥ अहंकियान्स
हायत्वेरामस्यजगतीपतेः ॥ किंनुदास्यंकरिष्येहंभक्त्यायथापावनं ॥ एवंसुग्रीवेणसेदि
हःशुकोनाममहासुरः ॥ संप्रेषितोरावणेनवाक्यंसुग्रीवमिदमब्रवीत् ॥ त्वामाहरावणोराजा
भ्रातरंराजसाधिः ॥ महाकुलप्रसूतस्त्वंराज्ञःसिद्धवनचारिणः ॥ ममभ्रातृसमानस्तेनवना
स्पर्धेविसृजवः ॥ अहंयद्यहरंभार्यांराजपुत्रस्यकिंतव ॥ किष्किंधांयाहिहरिभिर्लंकाम्प्राप्यानरै
वतैः ॥ प्राप्तैःकिंमानवैःसाक्षाद्देवानामपिदुर्जयैः ॥ तंप्राप्यैनंवचनंतर्णात्पुप्लुवुर्वानराः ॥ आप
घततदाहितंनिहंतुमुष्टिभिः ॥ वानरैर्हन्यमानस्तुशुकोराममथाब्रवीत् ॥ नदूतंघ्नंति
राजेंद्रवानरान्वारयप्रभो ॥ रामःश्रुत्वानदाबालर्वंशुकस्यपरिदेवितं ॥ मावधिष्टेतिरामस्ता
न्वारयामासवानरान् ॥ पुनर्वचनमासाद्यशुकःसुग्रीवमब्रवीत् ॥ ब्रूहिराजन्दशग्रीवंकिंवक्ता
मितवनाम्यहं ॥ सुग्रीवउवाच ॥ यथावालीममभ्रातातथात्वंरावणाधम ॥ हंतव्यस्त्वंमयापा
पसपुत्रबलवाहनः ॥ दृष्टिमेरामचंद्रस्यभार्याहर्ताकथासि ॥ ततोराममुपासाद्य
शुकंबध्वास्वरक्षत ॥ पुराहंसोपितनतःहर्षेदृष्टापिबलंमहत् ॥ यथावत्कथयामास
रावणायससारणः ॥ सीतेर्दृष्टिंनापरोभूतानिःश्वसन्वायुमंदिरे ॥ ततःसमुद्रमावेद्यरामोरक्तां
तलोचनः ॥ पश्यल्लवणाझंघोसौवारिधिमार्गमाचनं ॥ नाभिनंदतिदुष्टात्मादर्शनार्थंस
मानव ॥ जानातिमानुषंमांसौकिंकरिष्यतिवानरैः ॥ अद्यपश्यमहाबाहोशोषयिष्यामिवा
रिधिं ॥ पादेनैवगमिष्यंतिवानराविगतज्वराः ॥ इत्युक्त्वाकोपताम्राक्षःचापारोपितधनुर्धरः ॥ तू
णीरादुद्धृत्यबाणंकालाग्निसदृशप्रभं ॥ संधायबाणमाकृष्यरामोवाक्यमथाब्रवीत् ॥
पश्यंतुसर्वभूतानिरामस्यशरविक्रमं ॥ इदानीभस्मसात्कुर्यांसमुद्रंसरितांपतिं ॥ एवंब्रुव
तिरामेतुसशैलवनकाननं ॥ चचालवसुधाद्यौश्चदिशश्चतमसावृताः ॥ चक्षुभेसागरोवे
लांभयाद्योजनमत्यगात् ॥ तिमिनक्रझषामीनाःप्रतप्ताःपरितस्रवुः ॥ एतस्मिन्नंतरेसाक्षा
त्सागरोदिव्यरूपधृक् ॥ दिव्याभरणसंपन्नःस्वभासाभासयन्दिशः ॥ स्वांतस्थदिव्यरत्नानि

यु·रा
१९

कराभ्यां परिगृह्यासः ॥ पादयोः पुरतः क्षिप्त्वा रामस्यायामनंतरं ॥ दंडवत्प्रणिपत्याह रामं रक्तो
तलोचनं ॥ आदिसृष्टिर्जगन्नाथ मम सृष्टा जडात्मिका ॥ जडोऽहं राम ते ह्यः सृजतो निखिलं जगत् ॥
स्वभावमन्यथा कर्तुं कः शक्तो देवनिर्मितं ॥ स्थूलानि पंचभूतानि जडान्येव स्वभावतः ॥ निर्गुणात्
निराकारात्परमात्मा गुणान्स्वभो ॥ लीलया मायया सृष्टिं तदा वैराजमानवान् ॥ गुणात्मनो वि
राजश्च सत्त्वाद्देवा बभूविरे ॥ रजोगुणात्प्रजेशाद्या मन्योर्भूतपतिस्तव ॥ भूत्वा मदं मायया त्वं
लीलया मानुषाकृतिं ॥ जडबुद्धिर्जगेशस्य कथं जानामि निर्गुणं ॥ दंड एव हि मूर्खाणां सन्मा
र्गप्रापकः प्रभो ॥ प्रभूणां ममरक्षेपथप्रणतोऽस्मि जगत्पते ॥ शरणं ते व्रजामीश शरण्यं भक्तवत्स
ल ॥ अभयं देहि मे राम लंकामार्गं ददामि ते ॥ श्री रामोवाच ॥ अमोघोऽयं महाबाणः कस्मिन्दे
शे निपात्यतां ॥ लक्ष्यं दर्शय मे शीघ्रं बाणस्यामोघपातिनः ॥ रामस्य वचनं श्रुत्वा करे धृत्वाम
हाशरं ॥ महोदधिर्महातेजा राघवं वाक्यमब्रवीत् ॥ रामोत्तरप्रदेशेऽस्ति द्रुमकुल्येति विश्रुतः ॥ प्र
देशस्तत्र बहवः पापात्मानो दिवानिशं ॥ बाधंते मां रघुश्रेष्ठ तत्र ते पात्यतां शरः ॥ रामेण सृ
ष्टो बाणस्तु क्षणादाभीरमंडले ॥ हत्वा पुनः समागत्य तूणीरे पूर्ववत्स्थितः ॥ ततोऽब्रवीत्समुद्र
स्तु रामं विनयान्वितः ॥ नलः सेतुं करोत्वस्मिन् जले मे विश्वकर्मणः ॥ सुतो धीमान्समर्थोऽस्मि
न्कार्ये त्वद्वरतो हरिः ॥ कीर्तिं जानंतु ते लोकाः सर्वलोकमलापहां ॥ इत्युक्त्वा वचनं नत्वा ययौ
सिंधुरदृश्यतां ॥ ततो रामस्तु सुग्रीवलक्ष्मणाभ्यां समन्वितः ॥ नलमाज्ञापयच्छीघ्रं वानरैः से
तुबंधने ॥ ततोऽतिहृष्टः प्लवगेंद्रमुख्यैः महानगेंद्रप्रतिमैर्युतो नलः ॥ बबंध सेतुं शतयोज
नायतं सुविस्तृतं पर्वतपादपैर्दृढं ॥ इति श्रीमदध्यात्मरामायणे युद्धकांडे तृतीयोऽध्यायः ॥ ३ ॥

॥ श्री महादेव उवाच ॥

सेतुमारभमाणस्तु तत्र रामेश्वरं शिवं ॥ संस्थाप्य पूजयित्वाह रामो लोकहिताय च ॥ प्रणमे
त्सेतुबंधं यो दृष्ट्वा रामेश्वरं शिवं ॥ संकल्पनियतो भूत्वा गत्वा वाराणसीं नरः ॥ आनीय गंगासलि
लं रामेशमभिषिच्य च ॥ समुद्रे क्षिप्ततद्भारो ब्रह्म प्राप्नोत्यसंशयं ॥ कृतानि प्रथमेनाह्ना योज
नानि चतुर्दश ॥ द्वितीयेन तथा चाह्ना योजनानि तु विंशतिः ॥ तृतीयेन तथा चाह्ना योजनान्येकविं
शतिः ॥ चतुर्थे त्वह्ना योजनान्येकविंशतिः ॥ पंचमेन त्रयोविंशद्योजनानि समेततः ॥
बबंध सागरे सेतुं नलो वानरसत्तमः ॥ तेनैव जग्मुः कपयो योजनानां शतं द्रुतं ॥ असंख्याताश्च
वेलातिक्रमः प्लवगोत्तमाः ॥ आरुह्य मारुतिं रामो लक्ष्मणोंऽगदं तथा ॥ दिदृक्षुरग्रतो लंकां
मारुरोहाचलं महत् ॥ ददर्श लंकां सुविस्तीर्णां नानाचित्रध्वजाकुलां ॥ चित्रप्रासादसंबा
धां स्वर्णप्राकारतोरणां ॥ परिखाभिः शतघ्नीभिः संक्रमैश्च विराजितां ॥ प्रासादोपरि विस्ती
र्णां शृंगे दशकंधरः ॥ मंत्रिभिः सहितो वीरैः किरीटदशकोज्ज्वलः ॥ नीलाद्रिशिखराकारः
कालमेघसमप्रभः ॥ रत्नदंडैः सितच्छत्रैश्चामरैरुपशोभितः ॥ तत्र स्थितं तं दृष्ट्वा प्रभुः रामो
लावेणुकः ॥ बाणं चैकं समादाय समस्तछत्राणि न्यपातयत् ॥ अर्द्धसंज्ञा बलः प्राह दीप्तिनः किमु
रैः शुकैः ॥ ततः प्राह शुको राजन्नत्र ये वानरागतास्त्विदं ॥ सागरस्यापरे तीरे ब्रुवंते वचनं त
था ॥ ततः उत्प्लुत्य कपयो गृहीत्वा मां तदा क्रमाः ॥ मुष्टिभिर्निर्दयं दुष्टं दंतैर्लीलुं प्रचक्रमुः ॥
ततो मां राम रक्षेति क्रोशंतं रघुपुंगवः ॥ विसृज्यतामिति प्राह विसृष्टोऽहं कपीश्वरैः ॥ ततोऽहमा
गतो भीत्या दृष्ट्वा तद्वानरं बलं ॥ राक्षसानां बलौघस्य वानरेंद्रबलस्य च ॥ नैतयोर्विद्यते संधिर्दे
वदानवयोरिव ॥ पुरद्वाराणि सर्वाणि रुद्ध्वा तिष्ठंति वानराः ॥ सीतां वा देहि रामाय सुग्रीवं वा दीय
तां प्रभो ॥ मां मा दह राम त्वं दृष्टिपातेन मद्वचः शुक ॥ यदुक्तं च समागत्य सीता मे दत्ता वानरा
तर्ष्यामि कार्यं ससैन्यैः सहबांधवैः ॥ पुनः काले नगरीं लंकां प्रकाराशंसतोरणां ॥ राक्षसं च
लेपयन्द्वारे विध्वंसितो मया ॥ घोरं रोषमहं मोक्ष्ये बलं धारय रावण ॥ उत्तिष्ठोपरि मा च रामः
वामलोचनः ॥ एकस्थानगता यत्र चत्वारः सागरोपमाः ॥ श्रीरामो लक्ष्मणश्चैव सुग्रीवश्च वि
भीषणः ॥ एते च समर्थाः लंकां नाशयितुं प्रभो ॥ अपास्य सर्वान् वानरान् सर्वे तिष्ठंतु वानराः ॥

नल्लयायावसंयूथे शतसहस्रान्नित ॥ वसिष्ठानि सुरः सर्वे यक तिष्ठंति ते पुरः ॥ [illegible]
श्वेतो नाम्नेतः प्रविष्टो ॥ गर्जन्निव वानरस्तेन च पश्य पर्वतसन्निभाः ॥ [illegible]
मलीमिते ॥ पश्य यो भिन्दता पान्निलें कामर्दनतिष्ठति ॥ पृष्ठपानां सहस्रैः पुष्पदेनद्विदालिनः
सुग्रीवमनापिपतिं ॥ नेनोनामाग्निदेवतः ॥ पश्य पर्वतस्तेनाभः पश्चात् किंनवत्सन्निभः ॥
व्याभिमंत्रबोधं गतेन चशनः शनः ॥ पुत्रगर्जेनिर्यनामकासीपुत्रो नरस्थितः ॥ [illegible]
पुत्रो तिवीर्यवान् ॥ येन रक्षा जनका जामाता नीतनस्मभा ॥ हनूमानेष विख्यातो येन तवा
मेदतः ॥ श्वेतो रजतसंकाशो महाबुद्धिः पराक्रमः ॥ [illegible] सुग्रीवमागत्य पुनर्गच्छति वानरः ॥
यस्तेव सिंहसंकाशः पश्यपत्यत्न विक्रमः ॥ रंभो नाम महादैत्यो लंकेको नाश विलेकमः ॥ पश्य
पश्यति वे लंकां दिस्त त्निविवानरः ॥ शरभो नाम राजेंद्र कोटियूथपनायकः ॥ पनसश्च महाबी
र्यो मे शोहिविदस्तथा ॥ नलश्च सेतुकर्ता च विश्वकर्मसुतो बली ॥ पश्य कश्यमहादीर्घः [illegible]
वसमप्रभः ॥ जांबवान्मधिपो वीरजांबुवान्नाम नामतः ॥ वानराणां बले नेवासंख्या लेवा
कर्मस्थरः ॥ सराः सर्वे महाकायाः सर्वे युद्धाभिकांक्षिणः ॥ शूराः सर्वे कृतांतेन संकाशा लोकेता
सहः ॥ एतेषां बलसंख्यानं प्रत्येकं वक्तुमेव च ॥ येषां कोटिसहस्राणि नवपंचैव समन्व ॥ न
त्वं बलेन ते शक्तः प्राप्तुं रावण ॥ रामो न मानुषः साक्षादादिनारायणः परः ॥ सीता सा
क्षात्सीता च जगतस्तस्य शुभशक्तितो ॥ पितरं वीरपिता वानरयोर्दैत्यकांचे भवेत् ॥ तस्मान्नाम
नीतां जगन्मनेव जानकी ॥ सर्वान्मापि निसमा वैश्वानरं सर्वलोकमुद्रे ॥ अज्ञानात्पराणां
चविंशतितत्त्वके ॥ मनो मे त्वागुदुर्गंधभूविपिहितकृतांसये ॥ पंचभूतात्मके राजन्स्वे
वजरात्मके ॥ तत्कृते ब्रह्महत्यादिपातकानि कृतानि ते ॥ केवा स्यावनितिकस्यकाये न
तिष्ठति ॥ पुण्यपापे समाजाते तेनैव च सुखदुःखयोः ॥ कारणं देहयोगादिनात्मनः कुरु
संभवः ॥ तस्मात्त्वं जन्मदेहास्तवभिमानेसहामते ॥ आत्मानि निर्मलः शुद्धो विज्ञानात्मावलो
कयः ॥ ज्ञानाज्ञानवजातो वंधं प्रतिपद्य विमश्यति ॥ तस्मात्त्वं शुद्धभावेन ज्ञात्वात्मानं सदा स्मर ॥
विचरंति मनाः सर्वे शत्रव गृहादिषु ॥ निरये चापि भोगाः स्याज्ज्ञानशुभकर्मतावति ॥ देहं तथा
विवेकोऽयं हि जन्मत्वं च विमोचनः ॥ तथापि भारते वर्षे कर्मभूमौ सुदुर्लभे ॥ को विधाता समात्मा
देहं भोगानुगो भवेत् ॥ अतस्त्वं ज्ञानमेको भूत्वा योऽलक्ष्मनतयोपिसन् ॥ अज्ञानेव स्मरा भोगान
सर्वदा ॥ सीतां समर्प्य रामाय तत्पादानुव्रतो भव ॥ विमुक्तः सर्वपापेभ्यो विष्णुलोकं प्रयास्यसि
नो चेत्क्रमिष्यसे घोर ॥ पुनराहुर्भवजिनः ॥ अंतीऽरुपमहात्म्यं हितमेव वदामि ते ॥ सत्संगति
जरुभजस्वहरिं शरण्यं श्रीरामचंद्रमरकतोपलकांतिकांतं ॥ सीतासमेतमनिशं धृतचापबाणं
सुग्रीवलक्ष्मणविभीषणसेवितांघ्रिं ॥ इति श्रीमदध्यात्मरामायणे युद्धकांडे चतुर्थोऽध्यायः ॥

॥ श्री महादेव उवाच ॥

श्रुत्वा शुकमुखोद्गीतं वाक्यमज्ञाननाशनं ॥ रावणः क्रोधताम्राक्षो दहन्निव तमब्रवीत् ॥
अनुजीवन्सिद्धः गुरुवद्यमसे कथं ॥ शास्तासि नाहं त्रिजगतां त्वमाशिक्षत्त्वज्जमे ॥ इदानी
मेव हन्मि त्वां किंतु पूर्वकृतो तव ॥ स्मरामि तेन रक्षामि त्वां यच्च पितृवधोचितं ॥ इतो गच्छ दिक्
हत्व मे वंशोऽनंतमेदमं ॥ महाप्रसाद इत्युक्त्वा वेपमानो ययौ गृहं ॥ शुको पि ब्राह्मणः पूर्वं ब्र
सिद्धोऽस्य वित्रमः ॥ वानप्रस्थविधानेन वने निष्ठत्सर्वात्मज्ञात ॥ देवानामपि हृद्यं वि
नाशाय सुरद्विषां ॥ चकार यज्ञविततिं मतिश्रीमहामतिः ॥ राक्षसानां विरोधं तत्र शुकोऽप
कर्तृणाश्चतः ॥ कदाचिदागतो गस्त्यस्तस्याश्रमपदं मुने ॥ तेन संपूजितोऽगस्त्यो भोजनार्थं नि
मंत्रितः ॥ गतो स्नाने मुनौ कुंभसंभवे प्राप्य तोऽनरं ॥ अगस्त्यरूपधृक्सोपि राक्षसं शुकम

अ॰ रा
४७

अब्रवीत्॥ यदि दास्यसि भो ब्रह्मन्भोजनं देहि मामिह॥ बहुकालं न भोक्ष्यामि मांसं छागादिकं शुभं
तथेति कारयामास मांसभोज्यं सविस्तरं॥ उपविष्टे मुनौ भोक्तुं राक्षसोऽतीव दुष्टधीः॥ शुकभार्या-
वपुर्धृत्वा तां बां नभीं हृदयं वलः॥ नरमांसं ददौ तस्मै सूपकं च सविस्तरं॥ दत्वैवान्तर्दधे रक्षस्ततो
दृष्ट्वा शुकोपमः॥ अमेध्यं मानुषं मांसं स मत्वा क्रुद्ध अब्रवीत्॥ अभक्ष्यं मानुषं मांसं दत्तवानसि
दुर्मते॥ मद्यं त्वं राक्षसो भूत्वा तिष्ठ त्वं मानुषाशनः॥ इति शप्तः शुकोऽभूत्वा प्राह गस्त्यं मुने त्वया
इदानीं भाषितं मेद्य मांसं देहीति विस्तरं॥ तथेति वदन्मेदेव किं मया यद्वदस्यपि॥ श्रुत्वा शुक-
स्य वचनं मुहूर्तं ध्यानमास्थितः॥ ज्ञात्वा रक्षःकृतं कर्म ततः प्राह शुकं सुधीः॥ तवापकारि-
णा सर्वं राक्षसेन कृतं त्विदं॥ अविचार्यैव मे दत्तः शापस्ते मुनिसत्तम॥ तथापि मे वचो मोघं
नैव मे भवितुमर्हति॥ राक्षसं वपुरास्थाय रावणस्य सहायकृत्॥ तिष्ठ तावद्यदा रामो दूतान्
न वधार्थं हि॥ आगमिष्यति लंकायाः समीपं वानरैः सह॥ प्रेषितो रावणेन त्वं चारो भूत्वा
रघूत्तमं॥ दृष्ट्वा शापाद्विनिर्मुक्तो बोधयित्वा च रावणं॥ तत्वज्ञानं ततो मुक्तः परं पदमवाप्स्यसि
इत्युक्तोऽगस्त्यमुनिना शुको ब्राह्मणसत्तमः॥ बभूव राक्षसः सद्यो रावणं प्राप्य संस्थितः॥ इदा-
नीं चाररूपेण दृष्ट्वा रामं सहानुजं॥ रावणं तत्वविज्ञाने बोधयित्वाऽगमद्दिवं॥ सर्ववृत्तान्तमे-
तत्त्वा स्थितो वै वानरैः सह॥ ततः समागमं दृष्ट्वा रामस्यावानुजस्योपमहान्॥ उवाच वाक्यं नि-
र्गुणो रावणो मातुः पिता पिता॥ प्राह ते राक्षसं वीर्यं प्रयाते नानरात्मना॥ शृणु राजन्वचो मे
यथाक्त्वा कुरुयथोचितं॥ यदा प्रविष्टा नगरी जानकी राममन्त्रभा॥ तदादि पुर्यां दृश्यन्ते निमि-
त्तानि दशानन॥ घोराण्यनिष्टदान्येव नियमेव वदतः शृणु॥ स्तनन्ति मेघनिर्घोषा मेघाः प्रतिभ-
यंकराः॥ शोणितेनाभिवर्षन्ति लंकामस्यां न सर्वदा॥ रुदन्ति देवलिंगानि स्विद्यन्ति प्रचलन्ति
च॥ कालिकाः पांडुरैर्दन्तैः प्रहसन्त्यग्रतः स्थिताः॥ खरा गोषु प्रजायन्ते मूषका नकुलैः सह॥
मार्जारेण तु युद्ध्यन्ति पन्नगा राक्षसैर्न च॥ करालो विकटो मुंडः पुरुषः कृष्णपिंगलः॥ का-
लो गृहाणि सर्वेषां काले काले न्ववीक्षते॥ एतान्यन्यानि दृष्टानि निमित्तान्युद्भवन्ति च॥
अतः कुलस्य रक्षार्थं शान्तिं कुरु दशानन॥ सीतां सत्कृत्य सधनां रामायाशु प्रयच्छ भो॥ रा-
मं नारायणं विद्धि विदेहीं जानकीं रमां॥ मत्वा द्वयोः समाश्रित्य गतो भवति सर्वदा॥ तं इति भ-
क्तिसत्तानं स तो रामो न भावनुदः॥ भजस्व भक्तिभावेन रामं सर्वहृदालयं॥ यद्यपि त्वं दुराचारो
भक्त्या पूतो भविष्यसि॥ महावाक्यं कुरु राजेन्द्र कुलको पालदेहते वै॥ तत्श्रुत्वा स्ववलो वाक्यं हित
मतो दशाननः॥ न मर्षयति दुष्टात्मा कालस्य वशमागतः॥ मातामहं कृपयेणं राममेकं धराध-
रणाग्रपं॥ सामर्थ्यमन्ययेके नहीनं विग्रामनिप्रियं॥ रामेणप्रेषितो नूनं भाषसे त्वमनर्थ-
कं॥ गच्छ वृद्धोसि वंधुस्त्वं सोदुं सर्वं त्वयोदितं॥ इतो मस्कर्णपरंवो दद्द न्वेत्व द्वव स्तव॥ इत्युक्त्वा स-
र्वसचिवैः सहितः प्रस्थितस्तदा॥ प्रासादाग्रे समासीनः पश्यन्वानरसैनिकान्॥ युद्धाय योज-
यन्सर्वान्राक्षसान्समुपस्थितान्॥ रामोपि धनुरादाय लक्ष्मणेन समाहृतः॥ दृष्ट्वा रावणमा-
सीनं कोपेन कलुषीकृतः॥ किरीटिनं समासीनं मंत्रिभिः परिवेष्टितं॥ दशाग्रं कार्मुके नैव
वाणेनैकेन राघवः॥ श्वेतछत्रसहस्राणि किरीटदशकं तथा॥ चिच्छेद निमिषार्धेन तदद्भुत-
मिवाभवत्॥ लज्जितो रावणस्तूर्णं विवेश भवनं स्वकं॥ आहूय राक्षसान्सर्वान्प्रहस्तप्रमुखा-
न्वदः॥ वानरैः सह युद्धाय चोदयामास सत्वरः॥ ततो भेरीमृदंगाद्यैः पणवानकगोमुखैः॥
महिषोष्ट्रैः खरैः सिंहैर्द्वीपिभिः छागवाहनैः॥ खड्गशूलधनुःपाशयष्टितोमरशक्तिभिः॥ रक्ष-
ते सर्वतो लंकां प्रतिहारमुपागतः॥ ततः सर्वे भवतामेण चोदिता वानरर्षभाः॥ उद्यम्य गिरि-
शृंगाणि शिखराणि महांति च॥ तरूंश्चोत्पाट्य विविधान्युद्धाय परिसृष्टपा॥ प्रेक्षमाण
रावणस्य तान्यनीकानि भागशः॥ राघवप्रियकामार्थं लंकामारुरुहुस्तदा॥ ते द्रुमैः पर्वता-
ग्रैश्च मुष्टिभिश्च प्लवंगमाः॥ ततः सहस्रप्रयात्रकोटियूथाश्च यूथपा॥ कोटिशतास्तत्ता न्ये
वरुरुपुर्नगरं भृशं॥ आप्लवन्तः प्लवन्तश्च गर्जन्तः प्लवगा भृशं॥ रामोजयत्यतिबलो लक्ष्मणश्च महाबलः॥
राजा जयति सुग्रीवो राघवेणाभिपालितः॥ इत्येवं घोषयन्तो वसमं युयुधिरे विधिः॥ हनूमा-

नंगदश्चैव कुमुदो नील एव च॥ नलश्च शरभश्चैव मैन्दो द्विविद एव च॥ जांबवान्दधिवक्त्रश्च केस-
री तार एव च॥ अन्ये च बलिनः सर्वे यूथपाश्च प्लवंगमाः॥ हाराण्याह्वयमाना वाः राक्षसान्संततं
रुपुर्भृशं॥ तदा वृक्षैर्महाकायाः पर्वताग्रैश्च वानराः॥ निजघ्नुस्तानि रक्षांसि नखैर्दन्तैश्च वेग-
तः॥ राक्षसाश्च तदा भीमा द्वारेभ्यः सर्वतो रुषा॥ निर्गत्य भिंदिपालैश्च खड्गैः शूलैः परश्वधैः
निजघ्नुर्वानरानीकं महाकाया महाबलाः॥ राक्षसांश्च तदा जघ्नुर्वानरा जितकाशिनः॥ त-
था वभूव समरे मांसशोणितकर्दमः॥ रक्षसां वानराणां च संभवाद्भुतोपमः॥ ते हयैश्च
गजैश्चैव रथैः कांचनसन्निभैः॥ रक्षोव्याघ्रा युयुधिरे नादयन्तो दिशो दश॥ राक्षसाश्च कपी-
न्द्राश्च परस्परजयैषिणः॥ राक्षसान्वानरा जघ्नुर्वानरांश्चैव राक्षसाः॥ रामेणाभिहतो रक्षो
दिवि जोधनाः॥ बभूव बलिनां हृष्टा न पापीनाम सत्तव॥ सीताभिमर्शपापेन रावणेनाभिपालि-
ताः॥ दृष्ट्वा सीतावनं तन्वरा नाक्षसान्त्र जुरोऽग्रजाः॥ बलैर्धाश्च गतभेषेण निहतं राक्षसं वले॥ स्व-
सैन्यं निहतं दृष्ट्वा मेघनादो निदुःखधीः॥ ब्रह्मदत्तवरः श्रीमानन्तर्धानं गतोऽम्बरः॥ सर्वास्त्रज्ञश्च
बाणैश्च अस्त्रसौलनसमे तत्तः॥ नानाविधानि शस्त्राणि वानरानीकमर्दयन्॥ ववर्ष शरजालानि
तं बलं॥ वानराणां वपुश्चास्त्रश्च शोषाणि लसन्निभा॥ चापमानयमोमितिं शंखाच्छादितान्
लक्ष्मणं च॥ अर्दीकरोमि मेघपत्नं मध्यरं स्वनम॥ मेघनादो पितृत्वा राम वाक्यं मनोधिकः॥
सर्वं जगाम नगरं मायया मायकोविदः॥ पतितं वानरानीकं दृष्ट्वा रामोतिदुःखितः॥ उवाच
मारुतिं शीघ्रं गत्वा क्षीरमहोदधिं॥ तत्र द्रोणगिरिर्नाम दिव्यौषधिसमुद्भवः॥ तमानयाशु
वेगात्वा संजीवयमहामते॥ वानरौघान्मृतान्सर्वान्कीर्तिस्ते सुस्थिरा भवेत्॥ आज्ञाप्रमाणमि-
त्युक्त्वा जगाम मारुतनंदनः॥ आनीय च गिरिं सर्वान्वानरान्वानरर्षभः॥ जीवयित्वा पुनस्तत्र
स्थापयित्वाययौ द्रुतं॥ सर्वतः डेरवं नादं वानराणां वलोयतः॥ श्रुत्वा विस्मयमापन्नो रावण-
स्तो वाक्यमब्रवीत्॥ राघवो मे महान्शत्रुः प्राप्तो देवविनिर्मितः॥ तदहं समरे योद्धुं ग-
न्तमर्हामि त्वरासुराः॥ मंत्रिणो बांधवाः शूरा ये मम प्रियकांक्षिणः॥ सर्वे गच्छन्तु युद्धाय त्वरितं
समयात्सनात्॥ येन गच्छन्ति युद्धाय भीरवः प्राणविप्लवात्॥ तान्हनिष्यामि सर्वान्स खड्ग-
न्यवानग्रजान्॥ तत्श्रुत्वा भयसंत्रस्ता निर्जग्मू रणकोविदाः॥ अतिकायः प्रहस्तश्च महानादश्च
हाः यो॥ देवशत्रुर्निकुंभश्च देवान्तकनरान्तकौ॥ अपरे बलिनः सर्वे ययुर्युद्धाय वानरैः॥ ततो वा-
न्येब वहवः शूरा प्रान सहलक्षणाः॥ प्रविश्य वानरं सैन्यं सम दुर्बलकर्षिताः॥ त्रिशूलैः भिंदिपा-
लैश्च बाणैः खड्गैः परश्वधैः॥ अन्यैश्च विविधैरस्त्रैर्निजघ्नुर्हरियूथपैः॥ तेषां दर्पैः पर्वताग्रैर्न-
खैर्दन्तैश्च मुष्टिभिः॥ प्राणैर्विमोचयामासुः सर्वराक्षसयूथपान्॥ रामेण निहता केचित्
धरे रक्षसाः॥ हनूमता चांगदेन लक्ष्मणेन महात्मना॥ यूथपैः वानराणां ते निहताः स-
र्वराक्षसाः॥ रामतेजः समाविश्य वानरा बलिनोभवन्॥ रामशक्तिविहीनानामेवं शक्ति-
क्षतोभवेत्॥ सर्वेश्वरः सर्वमयो विधाता मायामनुष्यत्वविडंबनेन॥ सदा चिदानंदमयो-
हिरण्योऽप्युद्धादिलीलां वितनोति मायाम्॥ २५॥ इति श्रीमदध्यात्मरामायणे उमामहेश्वरसंवादे
सर्गोऽध्यायः॥ ॥ ५ ॥
॥ श्रीमहादेव उवाच ॥
श्रुत्वा युद्धे बलं नष्टं मतिकायमुखं महत्॥ रावणो दुःखसंतप्तः क्रोधेन महतावृतः॥
निधार्य दृष्टिजितं लंकां रक्षणार्थं महाद्युतिः॥ स्वयं जगाम युद्धाय रामेण सह राक्षसैः॥ दि-
व्यं स्यन्दनमारुह्य सर्वशस्त्रास्त्रसंयुतः॥ रामसेनामभिद्रुत्य रावणस्तेन महाबलः॥ वानरान्व-
ध्येन हत्वा वाणैर्गत्वा विक्षेपमैः॥ वानरा मासमुग्रीवप्रमुखान्यूथनायकान्॥ गदापा-
णिं महासत्वं तत्र दृष्ट्वा विभीषणं॥ उवाच रावणस्तत्र विभीषणे॥ तामापतन्ती
मायोक्षा विभीषणविज्ञानन्नीः॥ दत्ताभयोऽयं रामेण वध्याहो नायमासुरः॥ इत्युक्त्वा लक्ष्म-
णोभी मे वा पमाशस्य वीर्यवान्॥ विभीषणस्य पुरतः स्थितो कंपइवाचलः॥ साशक्तिर्

अ॰रा॰
५८

स्मरणं तनु विवेकात्मा व्यवस्थितः यावंतः राज्ञो लोके मायया संभवंति हि ॥ तास्मा मायाधारभूतस्य तत्त्वमणस्य महात्मनः मयप्रज्ञा भवेत्किं वा मे धांशस्य हरेस्तनोः ॥ मयापि मानुषं भावमापन्नस्य तु प्रभुः मूर्छितः पतितो भूमौ न माता न स्पृशाननः ॥ दृष्ट्वा लोकः पितेव प्रबोधनव भूवानीव विस्मितः ॥ सर्वस्य जगतः सारं विराजं परमेश्वरं ॥ कथं लोकाः प्रयं विस्तुं लोकाये तु पादमः गृहीत्वा कामे सौमित्रिं रावणं वीर्यमारुतिः ॥ धामसत्वालोकमिकृष्टो वज्रकल्पेन मुष्टिना ॥ तेन मुष्टिप्रहारेण जानुभ्यामपतद्भुवि ॥ आस्ये श्वनेत्रश्रवणैरुद्वमन् रुधिरं बहु ॥ विघूर्णमानयनो रथोपस्थ उपाविशत् ॥ अथ लक्ष्मणमादाय हनूमानागतो बलाद् हि तं ॥ आनयद्रामसामीप्यं बाहुभ्यां परिगृह्य तं ॥ हनूमतः सुहृत्त्वेन भक्त्या च परमेश्वरः ॥ लघुत्वमगमद्देवो गुरुणां गुरुरव्ययः ॥ सा शक्तिरपि तं त्यक्त्वा ज्ञात्वा नारायणांशजं ॥ रावणस्य रथं प्रागाद्रावणोपि चैतनः ॥ संग्रामवाव धनुराद्वाणान् मनमयो रुषा ॥ रामं वेत्राभिद्रुद्राव दृष्ट्वा रामोपि तं क्रुधा ॥ आरुह्य जगतां नाथो हनूमंतं महाबलं ॥ स्यंदनस्थं रावणं दृष्ट्वा अभिदुद्राव राघवः ॥ ज्याशब्दमकरोत्तीव्रं वज्रनिष्पेषनिस्वनं ॥ रामो गंभीरया वाचा राक्षसेंद्रमुवाच ह ॥ राक्षसाधम तिष्ठाग्र क्व गमिष्यसि मे पुरः ॥ हत्वा वनचरान्मे मे सर्वं त्वमसमर्थान् ॥ येन बाणेन निहिता राक्षसेंद्र मयालये ॥ गताः सर्वे महाकाया अनेक सैन्यं स्थापुना ॥ तेनैव त्वं हनिष्यामि तिष्ठाग्र मम गोचरे ॥ श्रीराम स्ववचः श्रुत्वा रावणो मारुतात्मजं ॥ वक्षं तं राघवं सम्यक् घोरैः शरैः शीघ्रमताडयत् ॥ हतस्यापि हरेस्तीव्रैः तेजो वीर्यप्रभूते: सत्तेजसा ॥ अवर्धत पुनस्तेजो मनं दवमहाकपि ततो दृष्ट्वा हनूमंतं सव्रणं रघुसत्तम ॥ क्रोधमाहारयामास कालरुद्र इवापरः ॥ साश्वं रथं ध्वजं सूतं शस्त्रं चैव पुनरोजसा ॥ छत्रं पताकां तरसा चिच्छेद शितसायकैः ॥ ततो महासुरेणाशु रावणं रघुसत्तमः ॥ विव्याध वज्रकल्पेन पाकारिरिव पर्वतं ॥ रामबाणहतो वीरो चचाल च मुमोच ह हस्तान्निपतितं चापं समरे दुर्बलोत्तम ॥ अर्धचंद्रेण चिच्छेद तत्किरीटं रविप्रभं ॥ अनुजानामि गच्छत्वमिदानीं बाणपीडितः ॥ प्रविश्य लंकां मा विश्रम्य स्वः पश्यसि बलं मम ॥ रामबाणेन संविद्धो हतदर्पो दशाननः ॥ महत्या लज्जया युक्तो लंकां प्राविशदातुरः ॥ रामोपि लक्ष्मणं दृष्ट्वा मूर्छितं पतितं भुवि ॥ मानुषत्वमुपाश्रित्य शोचयानुजमादरात् ॥ ततः प्राह हनूमंतं तत्त्व जीवय लक्ष्मणं ॥ महौषधिं समानीय पूर्ववद्वानरानपि ॥ तथेति राघवेनोक्तो जगाम स महाकपिः ॥ हनूमान्वायुवेगेन क्षणात्तीर्त्वा महोदधिं ॥ एतस्मिन्नंतरे चारा रावणाय निवेदयन् ॥ रामेण प्रेषितो राजन् हनूमान्क्षीरसागरे ॥ ततो नीत्वा लक्ष्मणस्य जीवनार्थं महौषधीः ॥ श्रुत्वा तच्चारवचने राजा चिंतापरोऽभवत् ॥ जगाम रात्रावेकाकी कालनेमिमंदिरं त्वरन् ॥ महागतं समालोक्य रावणं विस्मयान्वितः ॥ कालनेमिरुवाचेदं प्रांजलिर्भयविह्वलः ॥ अर्घ्यादिकं ततः कृत्वा रावणं स्वागत स्थित ॥ किं ते करोमि राजेंद्र किमागमनकारणं ॥ कालनेमिमुवाचेदं रावणो दुःखपीडितः ॥ ममापि कालवशतो कष्टमेतदुपस्थितं ॥ मया शक्त्या हतो वीरो लक्ष्मणः पतितो भुवि ॥ तं जीवयितुमानीतुमौषधीर्हनुमान्गतः ॥ यथा तस्य भवेद्विघ्नं तथा कुरु महामते मायया मुनिवेषेण मोहयस्व यथा कपिं ॥ कालात्ययो यथा भूयात्तथा कुरु विधे हि मे ॥ रावणस्य वचः श्रुत्वा कालनेमिरुवाच तं ॥ रावणं प्रति वाक्यमेतदुपपादयत्ततः ॥ प्रियं ते करवाण्येव न प्राणान्धारयाम्यहं ॥ मारीचस्य यथा रामादभूत्मरणं पुरा ॥ तथैव मे संदेहो भविष्यति दशानन ॥ हताः पुत्राश्च पौत्राश्च बांधवा राक्षसास्तव ॥ ज्ञात्वा त्वं स्वरक्षसे जीवितेनापि किं तव ॥ राज्येन वा सीतया वा किं देहेन जडात्मना ॥ सीतां प्रयच्छ रामाय राज्यं देहि विभीषणे ॥ वनं याहि महाबाहो रम्यं मुनिगणाश्रयं ॥ स्नात्वा प्रातः शुभजले कृत्वा संध्यादिकक्रियाः ॥ ततः एकांत आश्रित्य सुखासनपरिग्रहः ॥ विसृज्य सर्वतः संगमितरान्विषयान्बहिः बहिः प्रवृत्ताक्षगणं शनैः प्रत्यक्प्रवाहय ॥ प्रकृतेर्भिन्नमात्मानं विचारय सदानघ ॥ चराचरं जगत्कृत्स्नं देहबुद्धींद्रियादिकं ॥ आब्रह्मस्तंभपर्यंतं दृश्यते श्रूयते जगत् ॥ सैषा प्रकृति

रित्युक्ता सैव मायेति कीर्तिता ॥ सर्गस्थितिविनाशानां जगद्वृक्षस्य कारणं ॥ लोहितश्वेतकृष्णादिप्रजाः सृजति सर्वदा ॥ कामक्रोधादिपुत्राद्या हिंसातृष्णादिकन्यकाः ॥ मोहयत्यनिशं देवमात्मानं स्वगुणैर्विभुं ॥ कर्तृत्वभोक्तृत्वमुखान्स्वगुणानात्मनीश्वरे ॥ आरोप्य स्ववशं कृत्वा तेन क्रीडति सर्वदा ॥ शुद्धोऽप्यात्मा यया युक्तः पश्यतीव बहिः सदा ॥ विस्मृत्य च स्वमात्मानं मायागुणविमोहितः ॥ यदा सद्गुरुणा युक्तो बोध्यते बोधरूपिणा ॥ निवृत्तदृष्टिरात्मानं पश्यत्येव सदा स्फुटं ॥ जीवन्मुक्तः सदा देही मुच्यते प्रकृतेर्गुणैः ॥ त्वमप्येवं सदात्मानं विचार्य नियतेन्द्रियः ॥ प्रकृतेरन्यमात्मानं ज्ञात्वा मुक्तो भविष्यसि ॥ ध्यातुं यदि समर्थोसि सगुणं देवमाश्रयं ॥ हृत्पद्मकर्णिकामध्ये पीठे मणिगणान्विते ॥ मृदुश्लक्ष्णतरे तत्र जानक्या सह संस्थितं वीरासने विशालाक्षं विद्युत्पुंजनिभांबरं ॥ किरीटहारकेयूरकौस्तुभादिभिरन्वितं कटकैर्भूषितं चैव वनमालया ॥ लक्ष्मणेन धनुर्दंडकरेण परिसेवितं ॥ नूपुरैः रामं सर्वहृदिस्थितं ॥ भक्त्या परमया युक्तो मुच्यते नात्र संशयः ॥ एवं ध्यात्वा सदात्मानमनन्यधीः ॥ एवं चेत्कृतहत्यादि पापानि च महांत्यपि ॥ शुद्धेवं सुरितेन स्थाभवैः नित्यम भमस्वरामे परिहृत्य मेकं विहाय वैरं निजभक्तियुक्तः ॥ हृदा सदा भावितभावरूपं अनामरूपं पुरुषं पुराणं ॥ ५४ ॥ इति श्रीमदध्यात्मरामायणे युद्धकांडे षष्ठोऽध्यायः ॥ ६ ॥

॥ श्रीमहादेव उवाच ॥

कालनेमिवचः श्रुत्वा रावणोऽनलसन्निभः ॥ जज्वाल क्रोधताम्राक्षः सर्पिषेद्ध इवाग्निमान् ॥ हन्मि त्वां दुरात्मानं मच्छासनपराङ्मुखं ॥ परैः किंचिद्गृहीत्वा त्वं भाषसे रामकिंकर ॥ कालनेमिरुवाचेदं रावणं देव किं क्रुधा ॥ न रोचते मे वचनं यदि गत्वा करोमि तत् ॥ कालनेमिर्महासुरः ॥ चोदितो रावणेनैव हनूमद्विघ्नकारिणा ॥ मायया मुनिवेषोऽसौ आश्रमं समकल्पयत् ॥ तत्र शिष्यैः परिवृतो मुनिवेषधरः खलः ॥ समागत्य हिमवतः पार्श्वे धूर्तो महात्मनः ॥ ततो गत्वा ददर्शाथ हनूमानाश्रमं शुभं ॥ गच्छतो मार्गमासाद्य वायुसूनोः पुरा न दृष्टमेतन्मे मुनिमंडलमद्भुतं ॥ चिंतयामास मनसा श्रीमान्पवननंदनः ॥ मार्गो विभ्रंशितो मे वा भ्रमो वा चित्तसंभवः ॥ यद्वा विश्रम्य गत्वाहं पीत्वा जलमनुत्तमं ॥ इत्युक्त्वा प्रविवेशाश्रमपदं ॥ शैलाभावविनिर्मुक्तः शुद्धं निर्मलमुत्तमं ॥ तस्मिन्नाश्रमे कालनेमिः स राक्षसः ॥ हनूमानभिवाद्याह गौरवेण महामुने ॥ रामकार्येण महता क्षीराब्धिं गंतुमुद्यतः ॥ भगवन् त्वन्निकटे तु वसाम्यहं ॥ यथेष्टं पानमिच्छामि कमंडलुजलं मम ॥ तच्छ्रुत्वा कालनेमिः प्राह ॥ कमंडलुगतं तोयं पीत्वा यातु महामते ॥ निवसस्व सुखेनात्र निद्रां मे हि तवाश्रमे ॥ भूतं भव्यं भविष्यं च जानामि तपसा स्वयम् ॥ उत्थितो लक्ष्मणः सर्वे वानरास्तामवीक्षिताः ॥ तच्छ्रुत्वा हनुमानाह कमंडलुजलं न मे ॥ तृप्तिकारकं तस्मात् सरोवरं मे ॥ तथेत्याश्रमपदानामस्वच्छमायाविकल्पितं ॥ वटो दर्शयावि तीर्थं वायुसूनोः ॥ निमील्य चाक्षिणी तोयं पीत्वा गच्छ ममांतिकं ॥ उपदेक्ष्यामि ते मंत्रं तथेत्युक्त्वा स वानरः ॥ प्रविश्य हनुमांस्तोयं मपिबन्मीलितेक्षणः ॥ तत्र चागत्य मकरी महाकाया महाकपिं ॥ अग्रसीत्सा महावेगा मारुतिं घोररूपिणी ॥ ततो ददर्श हनुमान् ग्रसंतीं मकरीं रुषा ॥ दारयामास हस्ताभ्यां वदनं सा ममार ह ॥ ततोंतरिक्षे दिव्यरूपधरांगना ॥ धान्यमालीति विख्याता हनूमंतमथाब्रवीत् ॥ त्वत्प्रसादादहं शापाद्विमुक्तास्मि कपीश्वर ॥ समाहं मुनिना शप्ता पुरा कारणांतरे ॥ आश्रमे यस्तु ते दुष्टः कालनेमिर्महासुरः ॥ रावणप्रहितो मार्गे विघ्नं कर्तुं तवानघ ॥ मुनिवेषधरो नाम्ना मुनिर्विप्रविहिंसकः ॥ याहि द्रोणगिरिं वीर द्रोणाचलमनुत्तमं ॥ गच्छामि ब्रह्मलोकं नान्यथा तु त्वमस्मि ५८

अ॰ रा॰
यु॰

इत्युक्ता मायया सो निर्मितं स्वमानस्याश्रमे ॥ आगतं तं समालोक्य कालनेमिरभाषत ॥ किं विलंबे
न मद्वाक्यं वानरसत्तम ॥ गृहाण मंत्रं मे वत्स देहि मे गुरुदक्षिणां ॥ इत्युक्तो हनुमान्मुष्टिं दृढं बद्ध्वार्
दितं ॥ गृहाण मेव तस्मिन्निर्युक्त्वा निजघान तं ॥ तिरस्य मुनिवेषं सः कालनेमिर्महासुरः ॥ यु
युधे वायुपुत्रेण नानामायाविधानतः ॥ मुष्टिमात्रेण निहतो सो हनुमानमापितो विभुः ॥ जगाम सु
पिनाशीलोभमग्रं मारुतः ॥ ततः क्षीरनिधिं गत्वा दृष्ट्वा द्रोणं महागिरिं ॥ अदृष्ट्वौषधीस्त
त्र गिरिमुत्पाट्य सत्वरं ॥ गृहीत्वा वायुवेगेन गत्वा रामस्य सन्निधौ ॥ उवाच हनुमान्राममानीतोऽयं
महागिरिः ॥ यथेष्टं कुरु देवेश विलंबो नात्र युज्यते ॥ श्रुत्वा हनुमतो वाक्यं रामः संहृष्टमानसः
गृहीत्वौषधीः शीघ्रं सुषेणेन महामतिः ॥ चिकित्सां कारयामास लक्ष्मणाय महात्मने ॥ त
तः समुत्थितस्तूर्णं प्रोवाच लक्ष्मणः ॥ तिष्ठ तिष्ठ क्व यातोऽसि हन्मीदानीं दशानन ॥ इति ब्रुवं
तमालिंग्य मूर्ध्न्यवघ्राय राघवः ॥ मारुतिं प्राह त्वत्प्रसादान्महाकपे ॥ निरामयं प्रप
श्यामि लक्ष्मणं भ्रातरं मम ॥ इत्युक्त्वा वानरैः सार्धं सुग्रीवेण समन्वितः ॥ विभीषणमतेनैव
युद्धाय समवस्थिताः ॥ पाषाणैः पादपैश्चैव पर्वताग्रैश्च वानराः ॥ युद्धाय मिलितो भूत्वा युयु
धुः सर्वेऽत्युत्सवः ॥ रावणो विस्मये रामबाणैर्विद्धो महासुरः ॥ मातंग इव सिंहेन गरुडेनेव पन्नगः
अभिभूतोऽभवद्राजा राघवेण महात्मना ॥ सिंहासने समाविश्य राक्षसांश्चेदमब्रवीत् ॥ मानुषे
णैव मे मृत्युमाह पूर्वं पितामहः ॥ मानुषो हि न मां हंतुं शक्तो लिंगुलिकस्थुन ॥ ततो नारायणः
साक्षान्मानुषो भूत्वसंशयः ॥ रामो दाशरथी भूत्वा मां हंतुं समुपस्थितः ॥ अनरण्येन यत्पु
र्वं शप्तोऽहं राजमूर्त्तिना ॥ उत्पत्स्यते च मद्वंशे परमात्मा सनातनः ॥ तेन त्वां पुत्रपौत्रैश्च बांधवै
श्च समन्वितं ॥ हनिष्यति न संदेह इत्युक्त्वा मां दिवं गतः ॥ स एव रामः संजातो मदर्थे मां हनि
ष्यति ॥ कुंभकर्णस्तु मूढात्मा सदा निद्रावशं गतः ॥ तं निबोध्य महासत्वं मानयेत्तु ममां
तिकं ॥ इत्युक्तास्ते महामायास्तूर्णं गत्वा नृपालतः ॥ निबोध्य कुंभकर्णं ते निन्यू रावणसन्नि
धिं ॥ नमस्कृत्य सदा चानमासनोपरि संस्थितः ॥ तमाह रावणो राजा भ्रातरं दीनया गिरा ॥ कुं
भकर्ण निबोध त्वं महत्कष्टमुपस्थितं ॥ रामेण निहताः शूराः पुत्राः पौत्राश्च बांधवाः ॥ किं कर्तव्य
मिदानीं मे मृत्युकालः समागतः ॥ एष दाशरथी रामः सुग्रीवसहितो बली ॥ समुद्रं सबलस्ती
र्त्वा लंकानः परिहंतति ॥ ये राक्षसा मुख्यतमास्ते हता वानरैर्युधि ॥ वानराणां क्षयं युद्धे न पश्या
मि कदाचन ॥ नाथायस्व महाबाहो युद्धं दर्पविवोधितः ॥ भ्रातुरर्थे महासत्वं कुंभकर्णः सुदुःखि
श्रुत्वा तद्रावणोक्तं स्म वचनं परिदेवितं ॥ कुंभकर्णो महाबाहो रावणं वेदमब्रवीत् ॥ शृणु मे व
विरोधेन न हितं यत्तु राजन ॥ नरं पश्यस्व मामुपगतं फलं पापस्य कर्मणः ॥ पूर्वमेव मया प्रोक्तो
रामो नारायणः परः ॥ सीता वशोगमायेति मायी नोपि न बुध्यसे ॥ एकदाहं वने सानो विशाला
यां स्थितो निशि ॥ दृष्टो मया मुनिः साक्षान्नारदो दिव्यदर्शनः ॥ तमहं पृष्टवान्ब्रह्मन्कुतो गंतासि
मे वद ॥ इत्युक्तो नारदः प्राह देवानां मंत्रिणे स्थितः ॥ तत्रोत्पन्नमहं तेभ्यो वक्ष्यामि शृणु तत्वतः
युवाभ्यां पीडिताः सर्वे देवा विष्णुमुपागताः ॥ जहि रावणमित्यो भ्यं देवदैत्याश्च कंटकं ॥ मानु
षेणैव मे तस्य कल्पितं ब्रह्मणा पुरा ॥ अतस्त्वं मानुषो भूत्वा जहि दैत्याश्च कंटकं ॥ तथेत्याह
महाविष्णुः सत्यसंकल्प ईश्वरः ॥ जातो रघुकुले देवो राम इत्युपतिष्ठतः ॥ स हनिष्यति वः
सर्वानित्युक्त्वा प्रययौ मुनिः ॥ अतो जानीहि रामं त्वं परंब्रह्म सनातनं ॥ त्यक्त्वा वैरं भजस्वा
द्य मायामानुषरूपिणं ॥ भजतो भक्तिभावेन प्रसीदति रघूत्तमः ॥ भक्तिर्जनित्री ज्ञानस्य
भक्तिर्मोक्षप्रदायिनी ॥ भक्तिहीनेन यत्किंचित्कृतं सर्वमसत्समं ॥ अवताराः सुरेंद्रको
विस्तोली सामायानुजातिताः ॥ तेषां मध्ये तथा रामो ज्ञानमयः शिवः ॥ रामेण जानेति
निगुणान नसावद्मा निश्चं ॥ आनीयाज्ञेन संसारं तीर्त्वा यांति हरेः पदं ॥ ये रामस्यैव सततं
भुक्तिमुक्तिप्राप्तितस्य चरितानि पठंति मेनः ॥ युद्धोत्पन्नभयं तेषां न दहति पापोऽशीः
तापैः परमं तेन सुखेन याति ॥ ९९ ॥ इति श्रीम॰ ध्यात्म॰ माय॰ युद्ध॰ ॰ सप्तमोध्यायः ७

श्री महादेव उवाच ॥ कुंभकर्णवचः श्रुत्वा भ्रुकुटीकुटिलाननः ॥ दशग्रीवोमकादृष्टमासम
हसन्निव ॥ त्वमानीतोऽत्र मे ज्ञानबोधनाय सुबुद्धिमान् ॥ मया कृतं समीचीनं कालगृहाय यदि ते
वने ॥ नो चेत्कृत्वा स्वमार्गं निद्रां वा याहि पुनः ॥ रावणस्य वचः श्रुत्वा कुंभकर्णो महाबलः
युद्धाय मिलितविसायन लंघ्य युद्धाय निर्ययौ ॥ स लंघयित्वा प्राकारं महापर्वतसन्निभः ॥ निर्ययौ
नगराच्छ्रीभीषयन्सर्वदिक्कान ॥ सन्नादं महानादं समुद्रमभिनादयन् ॥ वानरान्कालव
यासास बाहुभ्यां समत्यनुरुहा ॥ कुंभकर्णं परं दृष्ट्वा सबद्धमिव पर्वतं ॥ दुद्रुवुर्वानराः सर्वे
कालांतकमिवोत्थितः ॥ भ्रमंतं दृष्ट्वा वाहिन्यां मुकुरेण महाबले ॥ कालयंतं हरीन्वेगान्मर्दयंत
समंततः ॥ चूर्णयंतं सुदृढेन पाणिना दर्शनेकपा ॥ कुंभकर्णं तदा दृष्ट्वा गदापाणिर्विभीषणः
ननाम सर्वशो तस्य भ्रातृस्नेहसुबुद्धिमान् ॥ विभीषणोहं भ्रातस्ते स्थाउहमहात्मने ॥ रावणं
त्वमया श्रावितं कृपापरिबोधितः ॥ सीतां देहीति रामाय रामः साक्षाज्जनार्दनः ॥ तच्छ्रोणांति
च संहंतुं व्रजेत्कुमुदस्य वोक्तवान् ॥ धिक्त्वां गच्छेति मां हत्वा गदापाणिर्मिताहतः ॥ चतुर्भि
र्मंत्रिभिः साकं रामं संशरणमागतः ॥ तच्छ्रुत्वा कुंभकर्णोऽपि ज्ञात्वा भ्रातरमागतं ॥ समालिं
गय वत्स त्वं जीव रामपरायणः ॥ कुलसंवर्धनार्थाय राक्षसानां हिताय च ॥ महाभागवतो
सि त्वं पुरा मे नारदात्श्रुतं ॥ गच्छ त्वान मयेदानीं द्रष्टव्येन च किंचन ॥ मदीयो वा परो वापि मदम
त्रितोचनः ॥ इत्युक्तो स्कंधमालिंग्य भ्रातुश्चरणावभिवादयन् ॥ रामपार्श्वमुपागम्य चिंतापरउप
स्थितः ॥ कुंभकर्णोऽपि हस्ताभ्यां पादाभ्यां पीडयन्कपीन् ॥ वचार वानरीसेनां कालयन्निव
हस्तिवत् ॥ दृष्ट्वा तं राघवः क्रुद्धो वायव्यं शस्त्रमादधात् ॥ चिक्षेप कुंभकर्णाय तेन चिच्छेद रा
तमः ॥ सपुष्करं दक्षहस्तं तेन छिन्नं ननाद सः ॥ स हस्तो पतितो भूमौ भ्रनेकान्भेदयन्कपीन्
पर्यंतमास्थिताः सर्वे वानरा भयवेपिताः ॥ रामस्य दक्षयोर्युद्धे पश्यंतः पर्यवस्थिताः ॥ कुंभ
कर्णो छिन्नहस्तः सालमुद्यम्य वेगतः ॥ समभ्येत्य राघवं हंतुं द्रुमवत्तमधाछिनत् ॥ सालेन सहि
तं वामहस्तमैंद्रेण राघवः ॥ छिन्नबाहुर्महाघोरं तेन ते तेवीर्य वायवः ॥ द्रावय चंद्रेण निशि
तं वामहस्तचापचरह्यं ॥ चिच्छेद पतितौ पादौ लंकाद्वारिमहास्वनौ ॥ निहत्य पाणि पादौ पि
कुंभकर्णो निभीषणः ॥ वदवामुखवद्वक्त्रं व्यादाय रघुनंदनं ॥ अभिदुद्राव निनदं राहुश्चंद्र
मसं यथा ॥ अपूरयत्तिक्ष्णाग्रैश्च सायकैस्तं रघूत्तमः ॥ शरपूरितवक्त्रोऽसौ चुक्रोशातिभयंक
रः ॥ अथ सूर्यप्रतीकाशमैंद्रं शरमनुत्तमं ॥ वज्राशनिसमं रामश्चिक्षेपासुरमृत्यवे ॥ स तेन
पर्वतसंकाशं स्फुरत्कुंडलमंडितं ॥ चकर्त रक्षोधिपतेः शिरो वृत्रमिवाशनिः ॥ तच्छिरः
पतितं लंकाद्वारि कायो महोदधौ ॥ शिरोषिशिरोधयद्वारं कायो नक्रान्पचूर्णयत् ॥ ततो देवाः
सऋषयो गंधर्वाः पन्नगाः खगाः ॥ सिद्धा यक्षा गुह्यकाश्च अप्सरोभिस्तु राघवं ॥ ईडिरे कुसु
मासारैर्वर्षंत स्वाभिनंदिताः ॥ आजगाम ततो रामं द्रष्टुं देवमुनीश्वरः ॥ नारदो गगनात्तू
र्णं स्वभासाभासयंदिशः ॥ राममिंदीवरश्यामं मुक्तहारांगदधरं ॥ ईषत्ताम्रविशालाक्षमै
श्वर्योचितवाञ्छितं ॥ स्थाईहस्या पर्यंते दानवान्वशरवीक्षितान् ॥ दृष्ट्वा गद्गदया वाचा भ
क्त्या स्तोतुं प्रचक्रमे ॥ नारद उवाच ॥ देवदेव जगन्नाथ परमात्मन्सनातन ॥ नारायण
खिलाधार विश्वसाक्षिन्नमोस्तु ते ॥ विशुद्धज्ञानरूपोसि त्वं लोकानेककारक ॥ मायया
मनुजाकारस्तुल्यः सोऽमानिव ॥ त्वं मायया गुह्यमानः सर्वेषां हृदि संस्थितः ॥ स्वयं
ज्योतिः स्वभावस्त्वं व्यक्तरूपाभसात्मनां ॥ उन्मीलयन्स्वजस्येनन्नेत्रे राम जगत्त्रयं ॥ उपसं
हृते सर्वं त्वयाद्य दुर्निमीलनात् ॥ यस्मिन्सर्वमिदं भाति यत्प्रतश्चेन नश्वरावरं ॥ यस्मान्न किं
चिल्लोके स्मिंस्तस्मै ते सत्यात्मने नमः ॥ प्रकृतिं पुरुषं कालं व्यक्ताव्यक्तस्वरूपिणं ॥ येन्जानेति
मुनिश्रेष्ठास्तस्मै रामाय ते नमः ॥ विकारहितं शुद्धं ज्ञानरूपं श्रुतिर्जगौ ॥ त्वं सर्वजगदाका
रे मूर्तिर्व्याप्य सर्वाकृतिः ॥ विरोधो दृश्यते देव वैदिको वेदवादिनां ॥ निष्प्रपंचनाधिगच्छंति
तन्मयाः सर्वे विना बुधाः ॥ मायया मोहिते देवत विरोधश्च नानागपि ॥ रश्मिमनालेरवेर्यद्वद्वत्

अ० रा०
५०

नेजलवद्भ्रमात् ॥ भोन्यज्ञानानाद्याराम त्वयि सर्वं प्रकल्पते ॥ मनसो विषयं देवरूपं ते निर्गुणं
परं ॥ कथं दृश्यं भवेद्देव दृश्याभावे भजे कथं ॥ अतस्त्वावतारेषु रूपाणि निगुणान्भजे ॥
भजेनित्तु हृदि संपन्नानन्दैव भवार्णवं ॥ कामक्रोधाद्यपत्रवद्वः पारिपंथिनः ॥ भीषयं
ती सदा लोको मार्जो राममूषकं यथा ॥ त्वन्नामस्मरतो नित्यं त्वद्रूपमपि मानसे ॥ त्वत्कथाति
रतानां ते कथामृतपरात्मनां ॥ त्वद्भक्तिसंगिनां राम संसारो गोष्पदायते ॥ अनन्ते सद्गुणं
रूपं ध्यात्वाहं सर्वदा हरि ॥ मुक्तस्मरामि लोकेषु मत्तोहं सर्वदेवतैः ॥ रामस्त्वयामहत्कार्यं कृ
तं देवहिते छया ॥ कुंभकर्णवधेनाद्य भूभारो पगतिः प्रभो ॥ श्वोहनिष्यति सौमित्रिरिंद्रजि
तारमाहवे ॥ हनिष्यसे च राम त्वं परश्वो दशकंधरं ॥ पश्यामि सर्वं देवेश सिद्धैः सह नभो
गतः ॥ अनुगृह्णीष्व मां देव गमिष्यामि सुरालयं ॥ इत्युक्त्वा राममामंत्र्य नारदो भगवानृषिः
ययौ देवैः पूज्यमानो ब्रह्मलोकमकल्मषं ॥ आनंतं निहतं श्रुत्वा कुंभकर्णं महाबलं ॥ रावणः
शोकसंतप्तो रामेणाक्लिष्टकर्मणा ॥ मूर्छितः पतितो भूमौ उत्थाय विललाप ह ॥ पितृव्यं
निहतं श्रुत्वा पितरं समभिविक्लवं ॥ इंद्रजिद्रावणं प्रोवाच शोकं त्यज महामते ॥ मयि जीवति
राजेंद्र मेघनादे महाबले ॥ दुःखस्यावसरः कुत्र देवांतकमहामते ॥ विसृजेदं दुःखमद्य विलंब
स्वा भवमहीपते ॥ सर्वं समीकरिष्यामि हनिष्यामि च वैरिणः ॥ गत्वा निकुंभिलां सद्य स
र्पयित्वा हुताशनं ॥ लब्ध्वा रथादिकं तस्माज्जेयोहं स्यामवाप्नुयः ॥ इत्युक्त्वा त्वरितं गत्वा निकुंभि
लाह्वले स्थाने ॥ रक्तमाल्यांबरधरो रक्तगंधानुलेपनः ॥ निकुंभिलास्थले मौनी हवनायोप
चक्रमे ॥ विभीषणोपि तच्छ्रुत्वा मेघनादस्य चेष्टितं ॥ प्राह रामाय सकलं होमारंभं दुरात्म
नः ॥ समाप्यते चेद्धोमो यं मेघनादस्य दुर्मतेः ॥ तदाजेयो भवेद्राम मेघनादः सुरासुरैः ॥ अतः
शीघ्रं लक्ष्मणेन घातयिष्यामि रावणिं ॥ प्रस्थापय मया सार्धं लक्ष्मणं बलिनां वरं ॥ इति
श्रुति नस्ते देहे मेघनादं नवानुजः ॥ श्री राम उवाच ॥ अहमेवागमिष्यामि देहं तमिंद्रजितं
रिपुं ॥ आग्नेयेन महास्त्रेण सर्वराक्षसघातिना ॥ विभीषणोपि तं प्राह नासावन्यैर्निह
न्यते ॥ यस्तु द्वादशवर्षाणि निद्राहारविवर्जितः ॥ तेनैव मृत्युर्निर्दिष्टो ब्रह्मणास्य दुरात्मनः
लक्ष्मणस्त्वयदायोध्यानिर्गमात्त्वया सह ॥ तदादि निद्राहारादीन्न जानाति रघूत्तम ॥
सेवार्थं तव राजेंद्र ज्ञातं सर्वमिदं मया ॥ तदाज्ञापय राजेंद्र लक्ष्मणं त्वरया मया ॥ हनिष्य
ति नसंदेहः शेषः साक्षाद्धराधरः ॥ त्वमेव साक्षाज्जगतामधीशो नारायणो लक्ष्मण एव
शेषः ॥ युवां धराभारनिवारणार्थं जातौ जगन्नाटकसूत्रधारौ ॥ ८८ ॥ इति श्रीमदध्या
त्मरामायणे युद्धकांडे सप्तमोध्यायः ॥ ॥ ७ ॥
विभीषणवचः ॥ श्रीमहादेव उवाच ॥
विभीषणवचः श्रुत्वा रामो वाक्यमथाब्रवीत् ॥ जानामि तस्य रौद्रस्य मायां कृत्स्नां विभीषण
स हि ब्रह्मास्त्रविद्विद्वान्मायावी च महाबलः ॥ जानामि लक्ष्मणं चापि स्वरूपं मम सेवनं ॥ जा
ने व सम्यक् हंतेमं नीमदिष्यत्कार्यगौरवात् ॥ इत्युक्त्वा लक्ष्मणं प्राह रामो ज्ञानवतां वरः ॥ गच्छ
लक्ष्मण सैन्येन महता जहि रावणिं ॥ हनुमत्प्रमुखैः सर्वैर्यूथपैः सह लक्ष्मणः ॥ जांबवान्
नृपतिना सह सैन्येन संवृतः ॥ विभीषणश्च सचिवैः सहत्वा समियाद्भवति ॥ श्रुतिस्तस्य देव
स्य जानाति विविरासि सः ॥ रामस्य वचनं श्रुत्वा लक्ष्मणः सविभीषणः ॥ जग्राह कार्मुकं श्रे
ष्ठमन्यद्भीमपराक्रमः ॥ रामपादांबुजं स्पृष्ट्वा हृष्टः सौमित्रिरब्रवीत् ॥ अद्य मत्कार्मुकान्मुक्ताः
बाणा निर्भिद्य रावणिं ॥ गमिष्यंति हि पातालं स्नातुं भोगवतीजले ॥ एवमुक्त्वा स सौमित्रिः प्र
दक्षिण्य प्रणम्य तं ॥ इंद्रजिन्निधनाकांक्षी ययौ त्वरितविक्रमः ॥ वानरैर्बहुसाहस्रैर्हनुमान्पृष्ठ
तोन्वगात् ॥ विभीषणश्च सहितो मंत्रिभिस्त्वरितं ययौ ॥ जांबवत्प्रमुखा ऋक्षाः सौमित्रिं त्वर
यान्वगुः ॥ गत्वा निकुंभिलादेशं लक्ष्मणो वानरैः सह ॥ अपश्यद्बलसंघातं राक्षसानां समंडले
यद्राहशस्त्रैः सौमित्रिर्यातो भूद्दिविक्रमः ॥ अंगदेन च वीरेण जांबवान्नरराजाधिपैः ॥ नदाति

भीषणप्राह सौमित्रिं पश्य राक्षसान् ॥ यदेतद्राक्षसानीकं मेघश्यामं विलोक्यते ॥ सुघानी
कस्यमहतो मेघं नेयत्नेनान्यथा ॥ राक्षसेंद्रसुतोऽपश्चात्किंचिद्दर्शयाभविष्यति ॥ अथ वानी
वद्धे मेलनमेषमाप्यते ॥ नहि वीरं दुरात्मानं हिंसा परमयास्मि कं ॥ अथ निःशस्त्रास्त्र
सनः ॥ ववर्ष शरवर्षाणि राक्षसेषु समंततः ॥ विभीषणवचः श्रुत्वा लक्ष्मणो वा
नरैः सह ॥ सर्वलोकेश्वरान्सर्वान्वानरयूथपान् ॥ पाषाणैः पर्वताग्रैश्च वृक्षैः सुदृढैः सुधैः ॥ नि
जघ्नुरनीकं तद्राक्षसानां महानभूत् ॥ सशब्दमहारस्तत्र मत्तो मंत्रमुहूर्तविरात्तस्मात् ॥ इंद्रजित्तस्य सर्वमि
र्धमानं विलोक्य सः ॥ निकुंभिलां च होमं च त्यक्त्वा क्रोधाद्विनिर्गतः ॥ रथमारुह्य सधनुः क्रोधेन
महता वृते ॥ समारुह्य पित्रा समरे शुद्धाय रणमूर्धनि ॥ सौमित्रे मेघनादोहं मया जीवन्न मोक्ष्यसे
तत्र दृष्ट्वा पितृव्यं सः प्राह निष्ठुरभाषणं ॥ इहैव जातः संवृद्धः साक्षाद्भ्राता पितुर्मम ॥ त्यक्त्वा स्व
जनं स्वजातिं च परभृत्यत्वमागतः ॥ कथं द्रुह्यसि पुत्राय पापीयानसि दुर्मते ॥ इत्युक्त्वा लक्ष्मणं प्रा
ह दृश्यमानस्व एव स्थिते ॥ उपसृत्य निस्त्रिंशो रथे महति संस्थितः ॥ महाप्राणं दमयुग्मयो
दे विस्फारयन्धनुः ॥ अथ कार्मुकको बाणान्प्राणान्व्याप्य तिवानराः ॥ ततः शरैः सहस्रशः सं
छादयन्कर्षणैः ॥ अस्त्रैर्नराक्षसेंद्रस्य कुद्धः सर्पं रुधस्यमन् ॥ इंद्रजिद्दक्षनयनो लक्ष्मणं प्र
तुदेति तः ॥ प्राक्शांति समधयौ लक्ष्मणोनाहतः शरैः ॥ अभूत्तेषु भवस्व पुनः प्रत्याहतोऽह
यः ॥ रक्तशीव स्थिते वीरं वीरौ रक्षारयात्मजे ॥ सोभिवक्राम सौमित्रिं क्रोधात्संरक्तलोचनः ॥
पावान्यनुविसंधाय लक्ष्मणं वेदमब्रवीत् ॥ यदि ते प्रथमे युद्धे न दृष्टो मे पराक्रमः ॥ अथ त्वां द्र
दीपिष्यामि तिष्ठेदानीं व्यवस्थितः ॥ इत्युक्त्वा सप्तभिर्बाणैरभिविव्याध लक्ष्मणं ॥ लक्ष्मणोपि
स्थितिलक्षाः पतिते भुवि ॥ ततः शरसहस्त्राणि संक्रुद्धो रावणात्मजः ॥ विभेदसमरे वीरं ल
क्ष्मणं भीमविक्रमं ॥ अप्रीर्णतयतो दिव्यावावेलक्ष्मणस्य च ॥ कृतप्रतिकृतान्योन्यं बभूवतु
र्भिद्रुतौ ॥ अभीतयो निःश्वसंतौ तौ युद्धे तामनसं युधि ॥ शरसंकृत सर्वांगौ सर्वतो रुधिरो
क्षितौ ॥ सुदीर्घकालं तौ वीरौ अन्योन्यं निशितैः शरैः ॥ अयुध्येतां महासत्वौ जयाजयविवर्जि
तौ ॥ एतस्मिन्नंतरे वीरो लक्ष्मणः पंचभिः शरैः ॥ रावणेः सारथिं साश्वं रथं च समचूर्णयत् ॥
चिच्छेद कार्मुकं वेगात्पराक्रम्य लाघवं ॥ सोन्यत्तु कार्मुकं भद्रं सज्यं च कृत्वा त्वितः ॥ तदप्य
स्य शिवेदस्य लक्ष्मणस्त्रिभिराशुगैः ॥ तमेव त्रिक्षयं कृत्वाने विव्याधानेकसायकैः ॥ पुनरन्यत्स
मादाय कार्मुकं भीमविक्रमः ॥ इंद्रजिल्लक्ष्मणं बाणैः शरैराहित्यसन्निभैः ॥ विभेद वानरान्
सर्वान्वानरैः शरवर्षिते ॥ ततस्तं समाधाय लक्ष्मणो रावणिं प्रति ॥ संधाय धनुष्यकार्णं
ते कार्मुकं दृढनिष्ठुरं ॥ उवाच लक्ष्मणो वीरः स्मरन्रामपदांबुजं ॥ धर्मात्मा सत्यसंधश्च रामो
दाशरथिर्यदि ॥ त्रिलोक्यामप्रतिद्वंद्वस्तदेनं जहि रावणिं ॥ इत्युक्त्वा बाणमाकर्णं हि निकृ
त्तमतिरिष्यते ॥ लक्ष्मणः समरे वीरः सममैंद्रजितं प्रति ॥ स बाणः सशिरस्त्राणं श्रीमज्ज्वलि
तकुंडलं ॥ प्रमथ्येंद्रजितः कायात्पातयामास भूतले ॥ ततः प्रमुदिता देवाः कीर्तयंतो रघू
त्तमं ॥ ववृषुः पुष्पवर्षाणि तत्र लक्ष्मणमूर्धनि ॥ ततो हर्षं शक्रो भगवान्सह देवैर्महर्षिभिः ॥ आका
शे चापि देवानां शुश्रुवे दुंदुभिः स्वनः ॥ विमले गगने चासीत्स्थिरा भू हि प्रयापिनी ॥ निहतं रा
वणिं दृष्ट्वा जय लक्ष्मण संस्थितः ॥ गता भ्रमः समौ मित्रिः पांचजन्यमिवाक्षरं ॥ सिंहनादं ततः
कृत्वा ज्यानादमकरोद्विभुः ॥ तेन नादेन संहृष्टा वानरास्त्वरितक्रमाः ॥ वानरेंद्रैः समहितो व
ह्निभिर्दृश्यमानसैः ॥ लक्ष्मणः पतितं दृष्ट्वा राक्षसं वानरा रवैः ॥ हनुमज्जांबवद्भ्यां च सहितो
विनयान्वितः ॥ ववंदे भ्रातरं रामं स्मृत्वा नारायणं विभुं ॥ लक्ष्मणं दक्षिणे हस्ते रामो राघवनंद
नः ॥ कृत्वा ते लक्ष्मणं भक्त्या तमालिंग्य रघूत्तमः ॥ मूर्ध्न्यवघ्राय मुदितः सस्नेहमिदमब्रवीत् ॥
साधु लक्ष्मण तुष्टोस्मि कर्मणे दुष्करं कृते ॥ मेघनादस्य निधने जितं सर्वमिति दम ॥ अहोरात्रै
स्त्रिभिर्वीरः कथंचिद्धि निपातितः ॥ निःसपत्नः कृतोस्म्यद्य निर्यास्यति हि रावणः ॥ उग्रशोको

यु॰ रा॰
५१

मयायोद्धुं नहनिष्यामि रावणं ॥ मेघनादं हतं श्रुत्वा लक्ष्मणेन महाबलं ॥ रावणः पतितो
भूमौ मूर्छितः पुनरुत्थितः ॥ विललापातिदीनात्मा पुत्रशोकेन रावणः ॥ पुत्रस्य गुणकर्माणि
संस्मरन्पर्यदेवयत् ॥ अद्य देवगणाः सर्वे लोकपाला महर्षयः ॥ हतमिंद्रजितं ज्ञात्वा सुखं
स्वप्स्यंति निर्भयाः ॥ इत्यादि बहुशः पुत्रलालसो विललाप ह ॥ ततः परमसंक्रुद्धो रावणो रा
क्षसाधिपः ॥ उवाच राक्षसान्सर्वान्विनाशापिशुरादये ॥ सपुत्रवधसंतप्तः परः क्रोधवशंग
तः ॥ संवीक्ष्य रावणो दुष्टो हंतुं सीतां प्रदुद्रुवे ॥ खड्गपाणिं महाक्रोधं दृष्ट्वा दशाननं ॥ राक्षसे
मध्यगा सीता भयशोकाकुलाभवत् ॥ एतस्मिन्नंतरे तस्य सचिवो बुद्धिमाञ्छुचिः ॥ सुपा
र्श्वो नाम मेधावी रावणं वाक्यमब्रवीत् ॥ कथं नाम दशग्रीवः साक्षाद्वैश्रवणानुजः ॥ वेदवि
द्याव्रतस्नातः स्वकर्मपरिनिष्ठितः ॥ अनेकगुणसंपन्नः कथं स्त्रीवधमिच्छसि ॥ अस्माभिः
सहितो युद्धे हत्वा रामं च लक्ष्मणं ॥ प्राप्स्यसे जानकीं शीघ्रमित्युक्त्वा संन्यवर्तत ॥ ततो दु
रात्मा गृह्य निवेदितं वचः सुपार्श्वप्रतिगृह्य रावणः ॥ गृहं जगाम सक्षुब्धो बाधितमूढधीः पु
नः सभां च प्रययौ सुहृद्गतः ॥ ६० ॥ इति श्रीमदध्यात्मरामायणे युद्धकांडे नवमोध्यायः ॥
॥ ९ ॥ श्रीमहादेव उवाच ॥
स विचार्य सभामध्ये राक्षसैः सह मंत्रिभिः ॥ निर्ययौ युद्धे विष्णस्ते राक्षसैः सह राघवं ॥ श्रा
लभः शुक्रमेश्रुक्त्वः प्रस्वसेन शिक्षानलं ॥ ततो रामेण निहिताः सर्वे ते राक्षसा युधि ॥ स्वयं
रामेण निहितस्तीक्ष्णधारेण बत्सनि ॥ अथ निःस्तरितेनैव प्रविवेश दशाननः ॥ दृष्ट्वा रा
मस्य बलं पौरुषं चाप्यमानुषं ॥ रावणो मानवोद्विग्नो बलशुक्रमापन्नकं ययौ ॥ नमस्कृ
त्य दशग्रीवः शुक्रं प्रांजलिरब्रवीत् ॥ भगवन्राघवेणैव लंका राक्षसयूथपैः ॥ विनाशि
ता महादैत्या निहताः पुत्रबांधवाः ॥ कथं मे दुःखसंदोहस्त्वपि त्विष्टिमहुर्षी ॥ इति विज्ञा
पितो दैत्यगुरुः प्राह दशाननं ॥ होमं कुरु प्रयत्नेन रहसि त्वं दशानन ॥ यदि विघ्नो न चेद्धो
मे तर्हि होमानलोत्थिताः ॥ मनोरथाश्च बाहाश्च चापतूणीरसायकाः ॥ संभविष्यंति तैर्यु
क्तस्त्वमजेयो भविष्यसि ॥ गृहाण मंत्रानस्मत्तो गत्वा होमं कुरु द्रुतं ॥ इत्युक्तस्त्वरितं गत्वा
रावणो राक्षसाधिपः ॥ गृहं पातालसदृशं मंदिरे स्वे चकार ह ॥ लंकाद्वारकपाटादि बद्ध्वा
सर्वत्र यत्नतः ॥ होमद्रव्याणि संपाद्य यान्युक्तान्यभिचारिके ॥ गुहां प्रविश्य चैकांते मौनी होमं
प्रचक्रमे ॥ उत्थितं परमं धूमं महांतं रावणानुजः ॥ रामाय दर्शयामास होमधूमं भयाकुला
पश्य राम दशग्रीवो होमं कर्तुं समारभत् ॥ यदि होमः समाप्तः स्यात्तदाजेयो भविष्यति ॥ अ
तो विघ्नाय होमस्य प्रेषयाशु हरीश्वरान् ॥ तथेति रामः सुग्रीवं समंत्रेनांगदं कपिं ॥ हनुमत्प्र
मुखान्वीरानादिदेश महाबलान् ॥ तथेति रामः सुग्रीवं संभ ॥ प्राकारं लंघयित्वा ते गत्वा राव
णमंदिरं ॥ दशकोटिप्लवंगानां गत्वा मंदिररक्षकान् ॥ चूर्णयामासुरश्वांश्च गजांश्चान्यद्धनं त
दा ॥ ततः स्वसरमा नाम प्रभृतिः हस्तसंज्ञया ॥ विभीषणस्य भार्या सा होमस्थानमसूच
यत् ॥ गुहापिधानपाषाणमंगदः पादघट्टनैः ॥ चूर्णयित्वा महासत्त्वो प्रविवेश महागुहां ॥
दृष्ट्वा दशाननं तत्र मीलिताक्षं दशाननं ॥ ततो गत्वा च्यामर्वे वानरा विविशुर्द्रुतं ॥ ततः कोला
हलं चक्रुस्ताडयंतश्च सेवकान् ॥ संभारांश्चिक्षिपुस्तत्र होमकुंडे समंततः ॥ स्रुवमाछिद्य ह
स्ताच्च रावणस्य बलाद्रुषा ॥ तेनैवसमेन्यानाग्र हनुमान्प्लवगाग्रणीः ॥ अग्निदं ते जुक्वाथेष्ठ
वानरास्ते मिनस्ततः ॥ न जहौ रावणो ध्यानं हतोपि विजिगीषया ॥ प्रविश्यांतःपुरे वेगादं
गदो वेगवत्तरः ॥ समानयत्केशपाशे धृत्वा मंदोदरीं शुभां ॥ रुदतीं चैव पुरतो विलपंतीमना
थवत् ॥ विददारांगदस्तस्याः कंचुकं रत्नभूषितं ॥ मुक्ता विमुक्ता पतिताः समंतात्स्तनयोः ॥
श्रोणिसूत्रे निपतितं त्रुटितं रत्नचित्रिते ॥ कटिप्रदेशाद्धस्तेनानीवीं तस्यैव पयुक्तवत् ॥ भूषणानि
च सर्वाणि पतितानि समंततः ॥ देवगंधर्वकन्याश्च नीता दृष्टैः प्लवंगमैः ॥ मंदोदरी तदा प्राप्य रा
वणस्याग्रतो भृशं ॥ आक्रोशंती करुणं दीना जगाद दशकंधरं ॥ निर्लज्जोसि परैरेवं केशपाशे वि

कृष्यते ॥ भार्या नते व पुरतः किं जहासि न लज्जसे ॥ हन्यते पश्यतो यस्य भार्या पापैश्च शत्रुभिः ॥ त
स्यैवैतन्न जीविता मरणं वरं ॥ रामेव नादने माता लेपलेवन वानरैः ॥ अपि जीवसि निर्लज्जः
मीदृशं कथय मद्भवेत् ॥ भार्यालज्जा च सेन्यका भर्ता मे जीवितायया ॥ श्रुत्वा तद्देवने वचनं
र्याद्दशाननः ॥ उत्तस्थौ खड्गमादाय त्यज देवीमिति ब्रवीत् ॥ जगामांगदमत्युग्रः कटिदेशे दश
ननः ॥ तदोत्सृज्य ययुः सर्वे विध्वंस्य सहवनं महत् ॥ रामपार्श्वमुपागम्य तस्थुः सर्वे प्रहर्षिताः ॥ रावण
स्तु ततो भार्यामुवाच परिसांत्वयन् ॥ दैवाधीनमिदं भद्रे जीवितं किं न रक्षसे ॥ त्यज शोकं विशा
लाक्षि ज्ञानमालंब्य निश्चितं ॥ अज्ञानप्रभवं शोकं शोको ज्ञानविनाशकृत् ॥ अज्ञानप्रभवा
देही शरीरादिष्वनात्मसु ॥ तन्मूलः पुत्रदारादिसंबंधः संसृतिस्तथा ॥ हर्षशोकभयक्रोध
लोभमोहमदादयः ॥ अज्ञानप्रभवा ह्येते जन्ममृत्युजरादयः ॥ आत्मा तु केवलः शुद्धो व्यतिरिक्तो
ह्यलेपकः ॥ आनंदरूपो ज्ञानात्मा भावाभावविवर्जितः ॥ न संयोगो वियोगो वा विद्यते केन
चित्सतः ॥ एवं ज्ञात्वा स्वमात्मानं त्यज शोकमनिंदिते ॥ इदानीमेव गच्छामि हत्वा रामं सलक्ष्म
णं ॥ आगमिष्यामि नो चेन्मां दारयिष्यति सायकैः ॥ श्रीरामो वज्रकल्पैश्च ततो गच्छामि तत्प
दं ॥ तदा त्वया मे कर्तव्या क्रिया मत्पुत्रलालिते ॥ सीतां हत्वा मया सार्धं त्वं प्रवेक्ष्यसि पावकं ॥ एवं
श्रुत्वा वचस्तस्य रावणस्यातिदुःखिता ॥ उवाच नाथ मे वाक्यं शृणु सत्यं तथा कुरु ॥ शक्यो न
वै जेतुं त्वया वान्यैः कदाचन ॥ रामो देववरः साक्षात्प्रधानपुरुषेश्वरः ॥ मत्स्यो भूत्वा पुरा कल्पे
मनुं वैवस्वतं प्रभुः ॥ ररक्ष सकलापद्भ्यो राघवो भक्तवत्सलः ॥ रामः कूर्मोऽभवत्पूर्वं लक्षयोजन
विस्तृतः ॥ समुद्रमथने पृष्ठे दधार कनकाचलं ॥ हिरण्याक्षोतिदुर्वृत्तो हतोनेन महात्मना ॥ क्रो
डरूपेण वपुषा क्षोणीमुद्धरता क्वचित् ॥ त्रिलोककंटकं दैत्यं हिरण्यकशिपुं पुरा ॥ हतवान्ना
रसिंहेन वपुषा रघुनंदनः ॥ विक्रमैस्त्रिभिरेवास्य बलिं बद्ध्वा जगत्त्रयं ॥ आक्रम्यादात्सुरेंद्राय भृ
त्याय रघुसत्तमः ॥ राक्षसाः क्षत्रियाकारा जाता भूमेर्भरावहाः ॥ तान्हत्वा बहुशो रामो भुवं जि
त्वाददान्मुनेः ॥ स एव सांप्रतं जातो रघुवंशे परात्परः ॥ भवदर्थे रघुश्रेष्ठो मानुषत्वमुपागतः ॥
तस्य भार्या किमर्थं वा हृता सीता वनाद्बलात् ॥ मम पुत्रविनाशार्थं स्वनाशाय च राक्षस ॥ इतः
परं वा वैदेहीं प्रेषयस्व रघूत्तमे ॥ विभीषणाय राज्यं तु दत्त्वा गच्छामहे वने ॥ मंदोदरीवचः श्रुत्वा
रावणो वाक्यमब्रवीत् ॥ कथं भद्रे रणे पुत्रान्भ्रातॄन्राक्षसमंडलं ॥ घातयित्वा राघवेण जीवा
मि वनगोचरः ॥ रामेण सह योत्स्यामि रामबाणैः सुशीघ्रगैः ॥ विदार्यमाणो यास्यामि तद्विष्णोः
परमं पदं ॥ जानामि राघवं विष्णुं लक्ष्मीं जानामि जानकीं ॥ ज्ञात्वैव जानकीं सीतां मयानीता व
नाद्बलात् ॥ रामेण निधनं प्राप्य यास्यामीति परं पदं ॥ विमुच्य त्वां तु संसाराद्गमिष्यामि सह
त्वया ॥ परानंदमयी शुद्धा सेव्यते या मुमुक्षुभिः ॥ तां गतिं तु गमिष्यामि हतो रामेण संयुगे ॥ प्र
क्षाल्य कल्मषाणीह मुक्तिं यास्यामि दुर्लभां ॥ क्लेशादिपंचकतरंगयुतं भ्रमाढ्यं दारात्मजाप्तधन
बंधुझषाभियुक्तं ॥ अग्नौ विनश्वरमिवेन्द्रियनक्रजालं संसारसागरमतीत्य हरिं व्रजामि ॥ ९० ॥
इति श्रीमदध्यात्मरामायणे युद्धकांडे दशमोध्यायः ॥ १० ॥
॥ श्रीमहादेव उवाच ॥
इत्युक्त्वा वचनं प्रेम्णा राज्ञीं मंदोदरीं तदा ॥ रावणः प्रययौ योद्धुं रामेण सह संयुगे ॥ दशस्यंदनमा
स्थाय वृतो घोरैर्निशाचरैः ॥ चक्रैः षोडशभिर्युक्तं सवरूथं सकूबरं ॥ पिशाचवदनैर्घोरैः खरैर्यु
क्तं भयावहं ॥ सर्वास्त्रशस्त्रसहितं सर्वोपस्करसंयुतं ॥ निर्ययौ मायया सर्वे? रावणोभीषणाकृ
तिः ॥ आपतंतं रावणं दृष्ट्वा भीषणं रणकर्कशं ॥ संत्रस्ता ह्यभवत्सेना वानरी रामपालिता ॥ ह
नूमानथ चोत्प्लुत्य रावणं युद्धमाययौ ॥ आगत्य हनुमान्रुद्रो वदत्यतुलविक्रमः ॥ मुष्टिं व
द्ध्वा दृढं वक्षो ताडयामास वेगतः ॥ तेन मुष्टिप्रहारेण जानुभ्यामपतद्भुवि ॥ मूर्छितोथ मुहूर्तेन
रावणः पुनरुत्थितः ॥ उवाच च हनूमंतं शूरोसि मम संमतः ॥ हनूमानाह तं धिङ्मां यस्त्वं जी
वसि रावण ॥ त्वं तावन्मुष्टिना वक्षो मम ताडय रावण ॥ पश्चान्मया हतो याता प्राणान्स्वांस्तेनात्र

अ॰रा
५२

५३

सेनया: ॥ तथेति मातलिना चोदितो रावणो नापि ताडितः ॥ विघूर्णमाननयन किंचित्कुपितलक्ष्मणे
संतानमवाप्य कपिराट् रावणं हंतुमभ्ययात: ॥ ततोऽन्तकसमो भीत्वा रावणोऽगात् सापिप: ॥ हनुमा
नेवामरैवनचोमीलं सखीवेच ॥ ततः समवेता प्रहृष्टास्ते सर्वं गताना ॥ भग्निवर्णं तथास्
वैरेमानो रवरूपोमकं ॥ तथा हस्तिशीर्षमालं निजमुः कमशोस्तरान् ॥ ततो रघुनंदनो हत्वा रा
क्षसान्मीमविक्रमान् ॥ सिंहनादं च महत्कृत्वा रामपार्श्वमुपागमत् ॥ ततः क्रुद्धो दशग्रीवः सं
ह्रस्यानवत: ॥ विह्वलनयने ह्यासौ राममेवानुधावतः ॥ दशग्रीवो रथस्थस्तु रामं वज्रोपमैः श
रैः ॥ आजघान महाघोरैर्धाराभिरिव तोयदः ॥ रामस्य पुरतः सर्वान्वानरान्पिविविधस्थे ॥ ततः
पावकसंकाशैः शरैः कांचनभूषितैः ॥ अभ्यावर्षद्रणे रामो दशग्रीवं समाहितः ॥ रथस्थं रा
वणं दृष्ट्वा भूमिस्थं रघुनंदनं ॥ आहूय मातलिं शक्रो वचनं चेदमब्रवीत ॥ रथेन मम भूमिस्थं
शीघ्रं याहि रघूत्तमं ॥ त्वरितं भव तं गत्वा कुरु कार्यं ममानघ ॥ एवमुक्तोऽथ तेनत्वा मातलि
र्देवसारथिः ॥ ततो हयैश्च संयोज्य हरितैः स्यंदनोत्तमं ॥ स्वर्गाद्भूमिं गतस्तत्र रामस्य पुरतः
स्थितः ॥ अब्रवीच्च ततो रामममरेंद्ररथे स्थितः ॥ प्रांजलिर्देवराजेन प्रेषितोऽस्मि रघूत्त
म ॥ रथोऽयं देवराजस्य विजयाय तव प्रभो ॥ प्रेषितो महाराज यत्नेनेंद्रेण भूषितः ॥ इमं धनुः
कवचं खड्गं दिव्यशक्तीः शतं तथा ॥ आरुह्य च रथं रामो रावणं जहि राक्षसं ॥ मया सारथिना दे
वदेव पतिर्यथा ॥ इत्युक्तः स परिक्रम्य नमस्कृत्य रथोत्तमं ॥ आरुरोह रथं रामो लोकान्
लक्ष्म्याविराजयन् ॥ ततो भवन्महाश्चर्यं द्वैरथं रोमहर्षणं ॥ महात्मनो राघवस्य रावणस्य च
धीमतः ॥ आग्नेयेन च आग्नेयं दैवं दैवेन राघवः ॥ अस्त्रं राक्षसराजस्य जघान परमास्त्रवित् ॥
ततस्तु ससृजे घोरं राक्षसं चास्त्रमर्थवित् ॥ क्रोधेन महता विष्टो रामस्योपरि रावणः ॥ रावण
स्य धनुर्मुक्ताः सर्पा भूत्वा महाविषाः ॥ शराः कांचनपुंखाभा राघवस्योपरि पतन् ॥ तैः शरैः
सर्पवक्त्रैस्तु दीप्तास्यैर्विषोल्बणैः ॥ दिशश्च विदिशश्चैव व्याप्तास्तत्र तदाभवन् ॥ रामः सर्पांस्ततो
दृष्ट्वा समंतात्पतितान्रणे ॥ सौपर्णमस्त्रं तद्घोरं पुनः प्रावर्तयद्रणे ॥ रामस्य मुक्ताः स्ते बाणा
भूत्वा गरुडरूपिणः ॥ चिच्छिदुः सर्पबाणांस्तान्समंतात्सर्पशात्रवः ॥ अस्त्रे प्रतिहते युद्धे रामे
ण दशकंधरः ॥ अभ्यवर्षत्ततो रामं घोराभिः शरवृष्टिभिः ॥ ततः पुनः शरानीकैः राममक्लिष्ट
कारिणं ॥ अर्दयित्वा ततो घोरं मातलिं प्रति विव्यधे ॥ पातयित्वा रथोपस्थे रथकेतुं च कांच
नं ॥ ऐन्द्रानश्वानभ्यहनद्रावणः क्रोधमूर्छितः ॥ विषेदुर्देवगंधर्वाश्चारणाः पितरस्तथा ॥ आर्तिं च
क्रे हनुमांश्च सुग्रीवश्च सलक्ष्मणः ॥ व्यथिता वानरेंद्राश्च बभूवुः सविभीषणाः ॥ दशास्यो विंशति
भुजः प्रगृहीतशरासनः ॥ ददृशे रावणस्तत्र मैनाक इव पर्वतः ॥ रामस्तु भृकुटीं बद्ध्वा क्रोधसं
रक्तलोचनः ॥ कोपं चकार सदृशो निर्दहन्निव राक्षसं ॥ धनुरादाय देवेन्द्रधनुराकारमद्भुतं ॥ गृ
हीत्वा पाणिना बाणं कालानलसमप्रभं ॥ निर्दहन्निव चक्षुर्भ्यां ददर्श रिपुमंतिके ॥ पराक्रमं
दर्शयितुं तेजसा प्रज्वलन्निव ॥ प्रचक्रमे कालरूपी सर्वलोकस्य पश्यतः ॥ विकृष्य चापं रामस्
तु रावणं प्रतिविध्य च ॥ हर्षयित्वा परानीकं कालांतकवपुर्बभौ ॥ क्रुद्धो रामस्य वदनं प्र
माणं ॥ त्रस्तानि सर्वभूतानि रावणं चापि विव्यधुः ॥ विमानस्थाः सुरगणाः सिद्धगंधर्वकिन्न
राः ॥ ददृशुस्ते महाघोरं लोके संवर्तकोपमं ॥ ऐंद्रमस्त्रं समाधाय रावणस्य शिरोऽच्छिनत् ॥ मू
र्धानो रावणस्याथ बहवो रुधिरोक्षिताः ॥ गगनात्प्रपतंति स्म ताला द्विपकलानिव ॥ नदिनं
नैव रात्रिर्न संध्या न दिशो विदिशा ॥ प्रकाशं ते ततः दृष्टं दृश्यते तत्र संगरे ॥ ततो रामो बभूवा
थ विस्मयाविष्टमानसः ॥ शतमेकोत्तरं छिन्नं शिरसां चैव वर्चसां ॥ न चैव रावणः शांतो दृश्य
ते जीवितक्षये ॥ ततः सर्वास्त्रविद्वीरः कौसल्यानंदवर्धनः ॥ अस्त्रैश्च बहुभिर्युक्तश्चिंतयामा
स राघवः ॥ येयें शरैर्निहता दैत्या महासत्त्वपराक्रमाः ॥ तएव निष्फलाजाता रावणस्य विघा
तने ॥ इति चिंताकुले रामे समीपस्थो विभीषणः ॥ उवाच राघवं वाक्यं ब्रह्मदत्तवरो ह्यसौ ॥ वि

च्छिन्ना बाहवोऽप्यस्य विच्छिन्नानि शिरांसि च ॥ उत्पत्स्यंति पुनः शीघ्रमित्याह भगवानजः ॥ ना
भिदेशेऽमृतं तस्य कुंडलाकारसंस्थितं ॥ तच्छोषयानलास्त्रेण तस्य मृत्युस्ततो भवेत् ॥ वि
भीषणवचः श्रुत्वा रामः शीघ्रपराक्रमः ॥ पावकास्त्रेण संयोज्य नाभिं विव्याध राक्षसं ॥ वि
ष्ठनेन च विच्छेद शिरांसि च महाबलः ॥ बाहूनपि च संरब्धो रावणस्य रघूत्तमः ॥ ततो घोरमा
हाराक्षिमा दायदशकंधरः ॥ विभीषणवधार्थाय युद्धे भीमो पविट्टसः ॥ चिच्छेद राघवो बा
णैः शितैर्हेमविभूषितैः ॥ दशग्रीवशिरश्छेदं तदा तेजोऽतिनिर्गतः ॥ म्लानरोगो बभूवाथ छि
न्नास्त्रैः शरैस्तिभिः ॥ चकर्ष रामो बाणं तं यथा वाली चचर्ष च ॥ मयोर्ध्वं हनुमतो हारं तमनुमेनेऽमहेर्षतो
छिन्नधाकाशः प्रविलाय: च्छेदैः सोऽवहने ॥ उरमांगं तच्चेतस्य च्छेत्तव्यं राघवेनयः ॥ ए
षा प्रभो वध्यो वध्यवधादि मर्मणि ॥ ततः संस्मारितो रामस्तदा तद्वचनमानतः ॥ ब्रह्म
दत्तं वरं शीघ्रं नवभिर्मुक्तवारणं ॥ यस्य पार्श्वे तु पवनः फले भास्करपावकौ ॥ शरीरमाकाशम
ये गौरवं मेरुमंदिरौ ॥ पर्वमपि चविन्यस्ता लोकपालामहौजसः ॥ जाज्वल्यमानं वपुषाभं
ते भास्करवर्चसा ॥ तमुग्रमस्त्रं लोकानां भयनाशनमद्भुतं ॥ अभिमंत्र्य ततो रामस्तमस्त्रं धनु
सर्वभूतानि वित्रेसुश्चचाल च वसुंधरा ॥ तस्मिन्संधीयमाने तु राघवेन महात्मना ॥ अ
भितवणवसंकुद्धो भृशमानम्य कार्मुके ॥ स वज्रमिव दुर्धर्षं वज्रपाणिविसर्जितः ॥ चि
रस्थोऽन्यपतत्त्वालोऽशनि ॥ स निमग्नो महाघोरः शरीरांतकरः परः ॥ बिभेद हृदयं तस्य रावण
स्य महात्मनः ॥ रावणस्य हरन्प्राणान्विवेश धरणीतले ॥ स शरो रावणं हत्वा रामतूणीरमा
विशत् ॥ तद्दृष्ट्वा पतितं भूमौ हतशेषाः सुरारयः ॥ गतासुर्भीमवेगेन राक्षसेंद्रः पपात भुवि ॥
स्वनिधनं विजयं राघवस्य च ॥ हतनाथा भयत्रस्ता दुद्रुवुः सर्वतो दिशः ॥ दशग्रीव
वधे रामस्य च तदृष्ट्वा ॥ अथांतरिक्षे व्यनदत्सौम्यस्त्रिदशदुंदुभिः ॥ ववृषुः पुष्पवृष्टिं च समं
ताद्गगनोपरि ॥ तदुत्तुष्टनयः सिद्धाश्चारणाश्च दिवौकसः ॥ अथांतरिक्षेऽनन्तः सर्वं प्रप
श्चेन्द्रा ॥ रावणस्य च देहोत्थं ज्योतिरादित्यवत्स्फुरत् ॥ प्रविवेश रघुश्रेष्ठं देवानां पश्यतां सतां ॥
देवा ऊचुरहो भाग्यं रावणस्य महात्मनः ॥ यं देवमानवि कारे वाविज्ञो: कारणं भाजनाः ॥ अ
यं दुः लोहितिश्लिष्टः संसारपरिवर्तिनाः ॥ अयं तु राक्षसः क्रूरो ब्रह्मघ्नो विनाशी वनाम सः ॥ परस
रतो विष्णुर्देवी तापसहिंसकः ॥ पश्यत्सु सर्वभूतेषु राममेव प्रविष्टवान् ॥ एवं ब्रुवत्सु देवे
षु नारदः प्राह सस्मितः ॥ शृणुत त्रिदशाः पूर्वं धर्मतत्त्वविवर्जिताः ॥ रावणो राघवद्वेषाद्विनि
श्चितं ॥ अनेनः सहस्रदा रामश्चिंतितं हृदि संयुतः ॥ अज्ञानात्मा स्वनिधनं भयात्सर्वत्र
वदं ॥ पश्यत्रनुदिनं स्वप्ने राममेवानुधावति ॥ क्रोधोऽपि रावणस्याशु गुरुबोधायि कोऽभवत्
रामे ततोऽतिहतो यातिनि पं मा प्रोक्षकस्मयः ॥ रामस्य पुण्यमेवाश्रितं विरावणो मुक्तबंधनः
पापिष्ठो वा दुरात्मा वा परधनपरदारे शुसक्तो यदि स्यान्नित्यं स्नेहाद्भयाद्वा रघुवरचरितं कं भा
वयन्सं वरेन: ॥ भूत्वा शुद्धांतरंगो भव शतजनितानेक दोषैर्विमुक्तः ॥ सद्यो रामस्य विष्णोः
सुरवरविनुतं याति वैकुंठमाद्यं ॥ हत्वा युद्धे दशास्यं त्रिभुवनविषमं वामहस्तेन चापं ॥ भू
मौ विष्टभ्य तिष्ठन्नितरकरधृतं भ्रामयन्बाणमेव ॥ आरक्तोपांतनेत्रः शरदलितवपुः
सूर्यकोटिप्रकाशो वीरश्रीबंधुरांगस्त्रिदशपतिनुतः ॥ पातु मां वीररामः ॥ ९४ ॥ इति श्रीमद
ध्यात्मरामायणे युद्धकांडे एकादशोऽध्यायः ॥ ॥ ११ ॥ श्रीमहादेव उवाच
रामो विभीषणं दृष्ट्वा हनुमंतं तथांगदं ॥ लक्ष्मणं कपिराजं च जांबवंतं तथापरान् ॥ परि
तुष्टेन मनसा सर्वानेवाब्रवीद्वचः ॥ भवतां बाहुवीर्येण रावणोऽनिहतो मया ॥ कीर्तिः स्था

अ॰ रा॰
६६

स्थितिः ॥ एषा या बाल्यं हृदिवान्नरो ॥ कीर्तिं विच्छंति भवतां कथं त्रैलोक्यपावनीं ॥ मयोपेनो
कलिहतो याम्बे नित्यरम्यां गतिं ॥ एतस्मिन्नंतरे दृष्ट्वा रावणं पतितं भुवि ॥ मंदोदरीमुखाः सर्वाः
स्त्रियो रावणपालिताः ॥ पतित्वा रावणस्याग्रे शोचंत्यः पर्यदेवयन् ॥ विभीषणः पुत्रशोका
र्तो शोकेन महतावृतः ॥ पतितो रावणस्याग्रे बहुधा पर्यदेवयत् ॥ रामस्तु लक्ष्मणं प्राह बो
धयस्व विभीषणं ॥ करोतु भ्रातृसंस्कारं किं विलंबेन मानद ॥ स्त्रियो मंदोदरीमुख्याः पति
तो विलपंति च ॥ निवारयितुमासर्वां सहसीतावरप्रिया ॥ एवमुक्तो ऽथ रामेण लक्ष्मणो गा
द्विभीषणं ॥ उवाच मतकोपांतं पतितं मृतकोपमं ॥ शोकेन महताविष्टं शोचिन्निदमब्रवी
त् ॥ येनोच्छ्वसितं दुःखेन कोपं नव विभीषणं ॥ त्वं तावत्स्य कनमः सखो ऽप्येदानीमतः परं ॥ य
द्ध्येयो बयतिताः क्षिकाला यांतिलदृष्टा ॥ संबुध्यते विधुत्पंते न तथा कालेन देहिनः ॥ यथा धा
नास्वै धाना भवंति न भवंति च ॥ एवं भूतेषु भूतानि प्रेरितानीशमायया ॥ त्वं वयं च य
न्ये तत्र कालवशा ध्रुवा ॥ जन्ममृत्यु यदा यस्मात्तदा तस्मात्तु विध्यतः ॥ ईश्वरः सर्वभू
तानां भूतैः सृजति हंत्यजः ॥ आत्मसृष्टैरस्वतंत्रैरनपेक्षो ऽपि बालवत् ॥ देहेन देहिनो जीवो
देहाद्देहो ऽभिजायते ॥ बीजादेव यथा बीजं देहस्य इव शाश्वतः ॥ देहि देहविभागो ऽयं अविवेक
कृतः पुरा ॥ नानात्वजन्मनाशश्च स्वप्नो यथा हि क्रियाफले ॥ पूरयात्यन्तहमी यथा स्वेदादवि
क्रियाः ॥ तद्वन्मे देहसंयोगादात्मभ्रांत्यसकृद्वान् ॥ प्रदायपथा नवामय ~ यतो सत्स्वद
प्रदात ॥ यत्न मस्या न दृष्टमानात्तदा भाति न संसृतिः ॥ जीवितो ऽपि यथानदृष्टि मनः स्याद्दृहं
कृते ॥ तस्मात्त्वमायामनो मात्रं जहि हं ममताभ्रमं ॥ रामभद्रे भगवति मनो देहात्मनीश्वरे ॥
सर्वभूतात्मनि परे माया मानुषरूपिणि ॥ वाह्येंद्रियार्थसंबंधात्त्याजयित्वा मनः शनैः ॥
तत्र दोषान्दर्शयित्वा रामानंदे नियोजय ॥ देहबुद्ध्या भवेद्भ्राता पिता माता सुहृत्प्रियः ॥ विलक्षणं
यदा देहाज्जानात्यात्मानमात्मना ॥ तदा कः कस्य वा बंधुर्भ्राता माता पिता सुहृत् ॥ मि
थ्याज्ञानवशाज्जाता दारागारादयः सताः ॥ शब्दादयश्च विषया विविधाश्चैव संपदः ॥ बलं
कोशो ऽभ्युदयश्च गौरवं राज्यं भूमिः सुतादयः ॥ अज्ञानमात्रात्सर्वे ते देहात्मनि रामभद्रः ॥ अ
तो विहृदयदारा संभावय मनिभाविनं ॥ स्वप्नवन्मायया ज्ञान्यादिभ्यं जन्माश्रयध मन्वहं ॥ भ्रात भ
विष्यदभवन्वत्समानमथ्यावरत् ॥ विहरस्वयथान्यायं भवदोषेर्न लिप्यसे ॥ आतापय
ति रामस्त्वां यत्नात् सांपरायिकं ॥ तत्कुरुष्व यथा न्यायं हृदयेन प्रियोपितः ॥ निवारय
सहुकुहे लंकांतःकं सथाचिरं ॥ श्रुत्वा यथा वद्वचनं लक्ष्मणस्य विभीषणः ॥ त्यक्त्वा शो
कं च मोहं च रामपार्श्वमुपागमत् ॥ विमृष्य बुद्ध्या धर्मज्ञो धर्मार्थसहितं वचः ॥ रामस्यैवा
नुवृत्यर्थमुत्तरं पर्यभाषत ॥ नृशंसमनृतं क्रूरं त्यक्तधर्मव्रतं प्रभो ॥ नार्हो ऽस्मि देवसंस्कर्तुं व
धरारामिमर्षणं ॥ श्रुत्वा तद्वचनं प्रीतो रामो वचनमब्रवीत् ॥ मरणांतानि वैराणि निवृत्तं
न प्रयोजनं ॥ क्रियतामस्य संस्कारो ममाप्येष यथा विधिः ॥ रामाज्ञां शिरसा धृत्वा शीघ्र
मेव विभीषणः ॥ सांत्वयामास दुःखार्तां रात्रीं मंदोदरीं तथा ॥ सांत्वयामास धर्मात्मा ध
र्मयुक्तैर्विभीषणः ॥ त्वरयामास धर्मेणः संस्कारार्थं स्वबांधवान् ॥ चित्यां निवेश्य विधिव
त्पितृमेधविधानतः ॥ आहिताग्नेर्यथा कार्यं रावणस्य विभीषणः ॥ तथैव सर्वमकरोद्बंधु
भिः सह मंत्रिभिः ॥ ददौ च पावकं तस्य विधियुक्तं विभीषणः ॥ स्नात्वा चैवार्द्रवस्त्रेण तिलां
दर्भाभिमिश्रितान् ॥ उदकेन च संमिश्रान्प्रदाय विधिपूर्वकं ॥ प्रदाय चोदकं तस्मै मूर्ध्ना चै
नं प्रणम्य च ॥ ताः स्त्रियो ऽनुनयामास सांत्वमुक्त्वा पुनः पुनः ॥ गम्यतामिति ताः सर्वा
विविशुर्नगरं तदा ॥ प्रविष्टासु च सर्वासु रात्रसीषु विभीषणः ॥ रामपार्श्वमुपागम्य त
दातिष्ठद्विनीतवान् ॥ रामो ऽपि सह सैन्येन ससुग्रीवः सलक्ष्मणः ॥ हर्षं लेभे रिपुं हत्वा यथा
वाहं वृत्रघातकृतः ॥ मातलिश्च तदा रामं परिक्रम्याभिनंद्य च ॥ अनुज्ञातश्च रामेण स्वर्गं विहा
यसा ॥ ततो हृष्टमना रामो लक्ष्मणं चेदमब्रवीत् ॥ विभीषणाय मे लंकाराज्यं दत्तं पुरैव हि

इदानीमपि गत्वा त्वं लंकायामभिषेचय विभीषणं ॥ अभिषेचय विभीषणमेवमुक्तो हि राघवात् ॥ लक्ष्मणस्तु
लक्ष्मणस्तर्ज्जगाम सह वानरैः ॥ लंकां सुवर्णकलशैः समुद्रजलसंयुतैः ॥ अभिषेकं शुभं चक्रे रा
क्षसेंद्रस्य धीमतः ॥ ततः पौरजनैः सार्धं नानोपायनपाणिभिः ॥ विभीषणः ससौमित्रिरुपाय
ग्रन्थ्युपस्कृतः ॥ दृष्ट्वा प्रणामं सम्यक्करोद्रामस्याक्लिष्टकर्मणः ॥ रामो विभीषणं दृष्ट्वा प्राप्तराज्यं मु
दान्वितं ॥ कृतकृत्यमिवात्मानं मेने सह सलक्ष्मणः ॥ सुग्रीवं च समालिंग्य रामो वाक्यमथा
ब्रवीत् ॥ सहायेन त्वया वीर जितो मे रावणो महान् ॥ विभीषणो ऽपि लंकाया मभिषिक्तो मया
यानघ ॥ ततः प्राह हनूमंतं पार्श्वस्थं विनयान्वितं ॥ विभीषणस्यानुमतो गत्वा त्वं रावणालयं
जानकीं सर्वमाख्याहि रावणस्य वधादिकं ॥ जानक्याः प्रतिवाक्यं मे शीघ्रमेव निवेदय ॥ एव
मादिष्टो मारुतिर्मेध्या रामेण पवनात्मजः ॥ प्रविवेश पुरीं लंकां पूज्यमानो निशाचरैः ॥ प्रविश्य रा
वणगृहं शिंशपामूलमाश्रितां ॥ ददर्श जानकीं तत्र कृशां दीनामनिंदितां ॥ राक्षसीभिः परिवृतां
ध्यायंतीं राममेव हि ॥ विनयावनतो भूत्वा प्रणम्य पवनात्मजः ॥ कृतांजलिपुटो भूत्वा वदे
भक्ताग्रतः स्थितः ॥ तं दृष्ट्वा जानकी तूष्णीं स्थित्वा पूर्वस्मृतिं ययौ ॥ ज्ञात्वा तं रामदूतं सा ह
र्षाश्रुपूर्णा च वत्तां सीता ॥ सौम्य मां तीर्दृष्ट्वा तस्याः पवननंदनः ॥ रामस्य भाषितं सर्वमाख्या
तुमुपचक्रमे ॥ देवि रामः ससुग्रीवो विभीषणसहायवान् ॥ कुशली वानराणां च सैन्येन
सहलक्ष्मणः ॥ रावणं ससुतं हत्वा बलेन सह मंत्रिभिः ॥ त्वामाह कुशलं रामो राज्ये कृत्वा वि
भीषणं ॥ श्रुत्वा भर्तुः प्रियं वाक्यं हर्षगद्गदया गिरा ॥ किं ते प्रियं करोम्यद्य न पश्यामि जग
त्त्रये ॥ समं ते प्रियवाक्यस्य रत्नान्याभरणानि च ॥ एवमुक्तस्तु वैदेह्या प्रत्युवाच प्लवंगमः ॥
रत्नौघाद्विविधाद्वापि देवराज्याद्विशिष्यते ॥ हतशत्रुं विजयिनं रामं पश्यामि सुस्थितं ॥ त
स्य तद्वचनं श्रुत्वा मैथिली प्राह मारुतिं ॥ सर्वे सौम्या गुणाः सौम्य त्वय्येव परिनिष्ठिताः ॥ रामं
द्रष्टुमिच्छामि शीघ्रं मां नायय नृपराघवः ॥ तथेति तां नमस्कृत्य ययौ द्रष्टुं रघूत्तमं ॥ जानक्या भा
षितं सर्वं रामस्याग्रे न्यवेदयत् ॥ यन्निमित्तो ऽयमारंभः कर्मणां च फलोदयः ॥ तां देवीं शोक
संतप्तां द्रष्टुमर्हसि मैथिलीं ॥ एवमुक्तो हनुमता रामो ज्ञानवतां वरः ॥ मायासीतां परित्यज्य
जानकीमनलेस्थितां ॥ आदातुमनसा ध्यात्वा रामः प्राह विभीषणं ॥ गच्छ राजन् जनकजा
मानय प्रशमार्तिकं ॥ स्नातां विरजवस्त्राढ्यां सर्वाभरणभूषितां ॥ विभीषणो ऽपि तच्छ्रुत्वा ज
गाम सह मारुतिः ॥ राक्षसीभिः सुवृद्धाभिः स्नापयित्वाथ मैथिलीं ॥ सर्वाभरणसंपन्नां यानमा
रोप्य शिबिकां तमे ॥ यष्टिवेत्रकराभिरामां केयूरकोटिभिः शुभां ॥ तां द्रष्टुमागताः सर्वे वानरा
जनकात्मजां ॥ तान्वारयंतो बहवः सर्वतो वेत्रपाणयः ॥ कोलाहलं प्रकुर्वंतो रामपार्श्वमुपा
ययुः ॥ दृष्ट्वा तां शिबिकारूढां दूरादेव रघूत्तमः ॥ विभीषण किमर्थं ते वानरान्वारयंति हि पश्यं
तु वानराः सर्वे मैथिलीं मातरं यथा ॥ पादचारेण सायातु जानकी मम सन्निधिं ॥ श्रुत्वा तन्
मायासीतां कार्यार्थं च निर्मितां ॥ अवातरत्ततः प्राह नारायणनंदनः ॥ राम तामथ पश्य
मायावचनं रावणो दितं ॥ लक्ष्मणं प्राह मे शीघ्रं मन्ये लंघयतां च ज्वाने ॥ राघपार्श्वमुपागम्य
तस्थो ऽत्र सीमरिंदमः ॥ ततः सीता परिक्रम्य राघवं भक्तिसंयुता ॥ पश्यतां सर्वदेवानां देव
तस्या विनीता ॥ प्रणम्य देवताभ्यश्च ब्राह्मणेभ्यश्च मैथिली ॥ बद्धांजलिपुटा चेदमुवाचाग्नि
समीपतः ॥ यथा मे हृदयं नित्यं नापसर्पति राघवात् ॥ तथा लोकस्य साक्षी मां सर्वतः पातु
पावकः ॥ एवमुक्त्वा तदा सीता परिक्रम्य हुताशनं ॥ विवेश ज्वलनं दीप्तं निर्भयेन मनसा
ती ॥ दृष्ट्वा ततो भूतगणाः ससिद्धाः सीतां महावह्निगतां भ्रांतां ताः ॥ परस्परं प्राहुरहो स सी
तां रामः श्रियं स्वां कथमत्यजत्प्रा ॥ ८२ ॥ इति श्रीमदध्यात्मरामायणे उमामहेश्वरसंवादे युद्धकांडे
॥ ध्यायः ॥ १२ ॥ श्री ॥ राम ॥ ॥
ततः शक्रः सहस्राक्षो यमश्च वरुणस्तथा ॥ कुबेरश्च महातेजाः पिनाकी वृषवाहनः ॥ ब्र

द्याश्रयवितं श्रेष्ठो मुनिभिः सिद्धचारणैः ॥ पितरा ऋषयः साध्या गंधर्वाप्सरसोरगाः ॥ पतैश्चान्ये विमानाग्र्यैराजग्मुर्यत्र राघवः ॥ अब्रुवन्परमात्मानं रामं प्रांजलयस्तु ते ॥ कर्त्ता त्वं सर्वलोकानां साक्षी विज्ञानविग्रहः ॥ वसूनामष्टमोसि त्वं रुद्राणां शंकरो भवान् ॥ आदिकर्तासि लोकानां ब्रह्मा त्वं चतुराननः ॥ अश्विनौ कर्णभूतौ ते चक्षुषी चंद्रभास्करौ ॥ लोकानामादिरंतोसि नित्य एकः सदोदितः ॥ सदा शुद्धः सदा बुद्धः सदा मुक्तोऽगुणोऽद्वयः ॥ त्वन्मायासंवृतानां त्वं भासि मानुषविग्रहः ॥ त्वन्नामस्मरतां राम सदा भासि चिदात्मकः ॥ रावणेन हृतास्थानमस्माकं तेजसा सह ॥ त्वयाद्य निहतो दुष्टः पुनः प्राप्तं पदं स्वकं ॥ एवं स्तुवत्सु देवेषु ब्रह्मा साक्षात्पितामहः ॥ अब्रवीत्प्रणतो भूत्वा रामं सत्यपथे स्थितं ॥ ब्रह्मोवाच ॥ ॥ वन्दे देवं विष्णुमशेषस्थितिहेतुं त्वामध्यात्मज्ञानिभिरंतर्हृदि भाव्यं ॥ हेयाहेयद्वंद्वविहीनं परमेकं सत्तामात्रं सर्वहृदिस्थं दृशिरूपं ॥ १ ॥ प्राणापानौ निश्चयबुद्ध्या हृदि रुद्ध्वा छित्वा सर्वं संशयबंधं विषयौघं ॥ पश्यंतीशं यं गतमोहा यतयस्तं वन्दे रामं रत्नकिरीटं रविभासं ॥ २ ॥ मायातीतं माधवमाद्यं जगदादिं मानातीतं मोहविनाशं मुनिवंद्यं ॥ योगिध्येयं योगविधानं परिपूर्णं वंदे रामं रंजितलोकं रमणीयं ॥ ३ ॥ भावाभावप्रत्ययहीनं भवमुख्यैर्भोगासक्तैरर्चितपादांबुजयुग्मं ॥ नित्यं शुद्धं बुद्धमनंतं प्रणवाख्यं वंदे रामं वीरमशेषासुरदावं ॥ ४ ॥ त्वं मे नाथो नाथितकार्याखिलकारी मानातीतो माधवरूपोऽखिलधारी ॥ भक्त्या गम्यो भावितरूपो भवहारी योगाभ्यासैर्भावितचेतःसहचारी ॥ ५ ॥ त्वामाद्यंतं लोकपतीनां परमीशं लोकानां नो लौकिकमानैरधिगम्यं ॥ भक्तिश्रद्धाभावसमेतैर्भजनीयं वंदे रामं सुंदरमिंदीवरनीलं ॥ ६ ॥ को वा ज्ञातुं त्वामतिमानं गतमानं मायासक्तो माधव शक्तो मुनिमान्यं ॥ वृंदारण्ये वंदितवृंदारकवृंदं वंदे रामं भवमुखवंद्यं सुखकंदं ॥ ७ ॥ नानाशास्त्रैर्वेदकदंबैः प्रतिपाद्यं नित्यानंदं निर्विषयज्ञानमनाद्यं ॥ मत्सेवार्थं मानुषभावं प्रतिपन्नं वंदे रामं मरकतवर्णं मथुरेशं ॥ ८ ॥ श्रद्धायुक्तो यः पठनीयं स्तवमाद्यं ब्राह्मं ज्ञानं ज्ञानविधानं भुवि मर्त्यः ॥ रामं श्यामं कामितकामप्रदमीशं ध्यात्वा ध्याता पातकजालैर्विगतः स्यात् ॥ ९ ॥ श्रुत्वा स्तुतिं लोकगुरोर्विभावसुः स्वांके समाधाय विदेहपुत्रिकां ॥ विभ्राजमानो विमलारुणद्युतिर्रक्तांबरो दिव्यविभूषणान्वितः ॥ प्रोवाच साक्षी जगतां रघूत्तमं प्रपन्नसर्वार्तिहरं हुताशनः ॥ गृहाण देवीं रघुनाथ जानकीं पुरा त्वया मय्यवरोपितां वने ॥ १० ॥ विधाय मायाजनकात्मजां हरे दशाननप्राणविनाशनाय वै ॥ हतो दशास्यः सहपुत्रबांधवैर्निराकृतोनेनेरा भुवः प्रभो ॥ तिरोहिता सा प्रतिबिंबरूपिणी कृता यदर्थं कृतकृत्यतां गता ॥ ततोतिहृष्टः प्रतिगृह्य जानकीं रामः प्रहृष्टः प्रतिपूज्य पावकं ॥ स्वांके समावेश्य सदानपायिनीं श्रियं त्रिलोकीजननीं श्रियः पतिः ॥ दृष्ट्वाथ रामं जनकात्मजान्वितं श्रिया स्फुरंतं सुरनायको मुदा ॥ भक्त्या गिरा गद्गदया समन्वितः कृतांजलिः स्तोतुमथोपचक्रमे ॥ इंद्र उवाच ॥ भजेहं सदा राममिंदीवराभं भवारण्यदावानलाभाभिधानं ॥ भवानीहृदा भावितानंदरूपं भवाभावहेतुं भवादिप्रपन्नं ॥ १ ॥ सुरानीकदुःखौघनाशैकहेतुं नराकारदेहं निराकारमीड्यं ॥ परेशं परानंदरूपं वरेण्यं हरिं राममीशं भजे भारनाशं ॥ प्रपन्नाखिलानंददोहं प्रपन्नं प्रपन्नार्तिनिःशेषनाशाभिधेयं ॥ तपोयोगयोगीशभावाभिभाव्यं कपीशादिमित्रं भजे राममित्रं ॥ सदा भोगभाजां सुदूरे विभांतं चिदानंदकंदं सदा राघवेशं ॥ महानंदरूपं स्वभक्तानुकूलं प्रपन्नार्तिनाशं भजेहं प्रपद्ये ॥ महायोगमायाविशेषानुयुक्तो विभासीश लीलानराकारवृत्तिः ॥ त्वदानंदलीलाकथापूर्णकर्णाः सदानंदरूपा भवंतीह लोके ॥ अहं मानपानाभिमत्तः प्रमत्तो न वेदाखिलेशाभिमानाभिमानः ॥ इदानीं भवत्पादपद्मप्रसादात्त्रिलोकाधिपत्याभिमानो विनष्टः ॥ स्फुरद्रत्नकेयूरहाराभिरामं धराभारभूतासुरानीकदावं ॥ शरच्चंद्रवक्त्रं लसत्पद्मनेत्रं दुरावारपारं भजे राघवेशं ॥ सुराधीशनीलाभ्रनीलांगकांतिं विराधादिरक्षोवधाल्लोकशांतिं ॥ कि

रीटादिशोभं पुरारातिलाभं भजे रामचंद्रं रघूणामधीशं ॥ लसच्चंद्रकोटिप्रकाशादिपीठे समासीनमंके समाधाय सीतां ॥ स्फुरद्धेमवर्णां तडित्पुंजभासां भजे रामचंद्रं निवृत्तार्तितंद्रं ॥ ततः प्रोवाच भगवान्भवान्या सहितो भवः ॥ रामं कमलपत्राक्षं विमानस्थो नभस्तले ॥ आगमिष्याम्ययोध्यायां द्रष्टुं त्वां राज्यसत्कृतं ॥ इदानीं पश्य पितरमस्य देहस्य राघव ॥ ततोपश्यद्विमानस्थं रामो दशरथं पुरः ॥ ननाम शिरसा पादौ मुदा भ्रात्रा सह प्रभुः ॥ आलिंग्य मूर्ध्न्यवघ्राय रामं दशरथोऽब्रवीत् ॥ तारितोस्मि त्वया वत्स संसाराद्दुःखसागरात् ॥ इत्युक्त्वा पुनरालिंग्य ययौ रामेण पूजितः ॥ रामोपि देवराजेन दृष्ट्वा प्राह कृतांजलिः ॥ मत्कृते निहतान्संख्ये वानरान्निहतान्भुवि ॥ जीवयाशु सुधावृष्ट्या सहस्राक्ष ममाज्ञया ॥ तथेत्यमृतवृष्ट्या तान् जीवयामास वानरान् ॥ ये ये मृता मृधे पूर्वं ते ते सुप्तोत्थिता इव ॥ सर्वे वृंदशो हृष्टाः रामपार्श्वमुपाययुः ॥ विभीषणस्तु सांगं प्रणिपत्याब्रवीद्वचः ॥ देव मामनुगृह्णीष्व यदि प्रीतिर्यदा तव ॥ मंगलस्नानमद्यत्वं जानकीलक्ष्मणान्वितः ॥ अलंकृत्य सह भ्रात्रा श्वो गमिष्यसि देवयं ॥ विभीषणवचः श्रुत्वा रामस्तु वायुनंदनः ॥ भरतो मामनुध्याय जटावल्कलधारधृक् ॥ बहुलाङ्गुलसहितः पुरे ॥ कथं तेन विना स्नानमलंकारादिकं मम ॥ अतः सुग्रीवमुख्यांस्त्वं सर्वान्पूजय यत्नतः ॥ पूजितेषु कपींद्रेषु पूजितोहं न संशयः ॥ ततो विभीषणो रामाज्ञया पूजयामास वानरान् ॥ ववर्ष रत्नसंघांश्च विसर्जनं हरीश्वरान् ॥ विभीषणः समानीतं पुष्पकं सूर्यवर्चसं ॥ आरुरोह ततो रामः सीतां शोभामनिंदिनीं ॥ लक्ष्मणेन सह भ्रात्रा विक्रांतेन धनुष्मता ॥ अब्रवीच्च विमानस्थः श्रीरामः सर्ववानरान् ॥ सुग्रीव प्रत्ययं याहि किष्किंधां सर्ववानराः ॥ नवारण्ये वितथेशाः सेन्द्राश्चापि दिवौकसः ॥ अयोध्यां गंतुमिच्छामि राजधानीं पितुर्मम ॥ एवमुक्तास्तु रामेण वानरास्ते महाबलाः ॥ ऊचुः प्रांजलयः सर्वे राक्षसश्च विभीषणः ॥ अयोध्यां गंतुमिच्छामः सर्वे वयं सह त्वया ॥ दृष्ट्वा त्वामभिषिक्तं च कौसल्यामभिवाद्य च ॥ पश्चाद्यास्यामहे सर्वे स्वस्वगेहमहं प्रभो ॥ इत्युक्तो राघवस्तैस्तु सुग्रीवः सह सीनया ॥ विभीषणश्च सामात्यः सर्वे वानरपुंगवाः ॥ तथारुरोह सर्वे ते पुष्पकं राघवाज्ञया ॥ राघवेणाभ्यनुज्ञाताः पुष्पकं विहायसा ॥ तेनाथ विमानेन हंसयुक्तेन भास्वता ॥ प्रहृष्टश्च तदा रामः चतुर्मुख इवापरः ॥ ततो बभौ भास्करबिंबतुल्यं कुबेरयानं तपसा च लब्धं ॥ रामेण तेनाभिनिवेशितेन सीतासमेतेन सहानुजेन ॥ ९० ॥ इति श्रीमदध्यात्मरामायणे युद्धकांडे त्रयोदशोध्यायः ॥ १३ ॥ ॥ ॥ श्रीमहादेव उवाच ॥

पानं चित्वा ततस्तुष्टः सर्वतो रघुनंदनः ॥ अब्रवीन्मैथिलीं सीतां रामः शशिनिभाननां ॥ त्रिकूटशिखराग्रस्थां पश्य लंकां महाप्रभां ॥ एतां रणभुवं पश्य मांसकर्दमपंकिलां ॥ असुराणां प्लवंगानामत्र वैशसमं महत् ॥ अत्र मे निहतः शेते रावणो राक्षसेश्वरः ॥ कुंभकर्णेंद्रजिन्मुख्याः सर्वे चात्र निपातिताः ॥ एष सेतुर्मया बद्धः सागरे सलिलार्णवे ॥ एतच्च दृश्यते तीर्थं सागरस्य महात्मनः ॥ सेतुबंध इति ख्यातं त्रैलोक्येन च पूजितं ॥ एतत्पवित्रं परमं दर्शनात्पातकापहं ॥ अत्र रामेश्वरो देवो मया शंभुः प्रतिष्ठितः ॥ अत्र मां शरणं प्राप्तो मंत्रिभिश्च विभीषणः ॥ एषा सुग्रीवनगरी किष्किंधा चित्रकानना ॥ तत्र रामाज्ञया तारा प्रमुखा हरियोषितः ॥ आनयामास सुग्रीवः सीतायाः प्रियकाम्यया ॥ ताभिः सहोत्थितं शीघ्रं विमानं प्रेक्ष्य राघवः ॥ प्राह चाद्रिं ऋष्यमूकं पश्यात्र मे हतः ॥ एषा पंचवटी नाम राक्षसा यत्र मे हताः ॥ अगस्त्यस्य सुतीक्ष्णस्य पश्याश्रमं पदे शुभे ॥ एते ते तापसाः सर्वे दृश्यंते वरवर्णिनि ॥ असौ शैलवरो देवि चित्रकूटः प्रकाशते ॥ अत्र मां केकयीपुत्रः प्रसादयितुमागतः ॥ भरद्वाजाश्रमं पश्य दृश्यते यमुनातटे

अ॰ रा
५५

एषा भागीरथी गंगा दृश्यते लोकपावनी ॥ एषा सा दृश्यते योध्या प्रणामं कुरु भामिनि ॥ ए
वं क्रमेण संप्राप्तो भरद्वाजाश्रमं हरिः ॥ पूर्णे चतुर्दशे वर्षे पंचम्यां रघुनंदनः ॥ भरद्वाजमुनिं
दृष्ट्वा ववंदे सानुजः प्रभुः ॥ पप्रच्छ मुनिमासीनं विनयेन रघूत्तमः ॥ शृणोषि कच्चिद्भरतः कु
शल्यास्ते सहानुजः ॥ सुभिक्षा वर्तते योध्यां जीवंति किं च मातरः ॥ श्रुत्वा रामस्य वचनं भरद्वा
जः प्रहृष्टधीः ॥ प्राह सर्वे कुशलिनो भरतस्तु महामनाः ॥ फलमूलकृताहारो जटावल्कलधा
रकः ॥ पादुके त्वद्गते न्यस्य राज्यं त्वां संप्रतीक्षते ॥ यत्कृतं त्वया कर्म दंडके रघुनंदन ॥ राक्ष
सानां विनाशोपि च सीताहरणादिकं ॥ सर्वं ज्ञातं मया राम तपसा त्वत्प्रसादतः ॥ त्वं ब्रह्म परमं
साक्षादादिमध्यांतवर्जितः ॥ त्वमग्रे सलिलं सृष्ट्वा तत्र सुप्तोसि भूतकृत् ॥ नारायणोसि
विश्वात्मन्नराणामंतरात्मकः ॥ त्वन्नाभिकमलोत्पन्नो ब्रह्मा लोकपितामहः ॥ अतस्त्वं ज
गतामीशः सर्वलोकनमस्कृतः ॥ त्वं विष्णुर्जानकी लक्ष्मीः शेषोयं लक्ष्मणाभिधः ॥ आ
त्मनात्मसृजसीदं त्वमात्मन्येवात्ममायया ॥ न सज्जसे नभोवत्त्वं चिच्छक्त्या सर्वसाक्षिकः ॥
जगत्त्वं जगदाधारस्त्वमेव परिपालकः ॥ त्वमेव सर्वभूतानां भोक्ता भोज्यं जगत्पते ॥ दृश्यते
श्रूयते यद्यत्स्मर्यते वा रघूत्तम ॥ त्वमेव सर्वमखिलं त्वद्विनान्यन्न किंचन ॥ माया सृजति
लोकांश्च स्वगुणैरहमादिभिः ॥ त्वच्छक्तिप्रेरिता राम तस्मात्त्वय्युपचर्यते ॥ यथा चुंबक
सान्निध्याच्चलंत्येवायसादयः ॥ जडं त्वया तथा दृष्टा माया सृजति वै जगत् ॥ देहद्वयमदेह
स्य तव विश्वस्थितिप्रदौ ॥ विराट् स्थूलं शरीरं ते सूक्ष्मं सूत्रमुदाहृतं ॥ विराजः संभवंत्येतेऽ
वताराः सहस्रशः ॥ कार्यांते प्रविशंत्येव विराजे रघुनंदन ॥ अवतारकथां लोके ये गायंति
गृणंति च ॥ अनन्यमनसो मुक्तिस्तेषामेव रघूत्तम ॥ त्वं ब्रह्मणा पुरा भूमेर्भारहाराय राघ
व ॥ प्रार्थितस्तपसा तुष्टस्त्वं जातोसि रघोः कुले ॥ देवकार्यमशेषेण कृतं ते राम दुष्करं ॥
बहुवर्षसहस्राणि मानुषं देहमाश्रितः ॥ कुर्वन्दुष्करकर्माणि लोकद्वयहिताय च ॥ पा
पहारीणि भुवने यशांसि प्रथयिष्यसि ॥ प्रार्थयामि जगन्नाथं पवित्रं कुरु मे गृहं ॥ स्थित्वा
भुक्त्वा सबलः श्वो गमिष्यसि पत्तनं ॥ तथेति राघवोतिष्ठत्तस्मिन्नाश्रमउत्तमे ॥ ससै
न्यः पूजितस्तेन सीतया लक्ष्मणेन च ॥ ततो रामश्चिंतयित्वा मुहूर्तं प्राह मारुतिं ॥ इतो ग
च्छ हनूमंस्त्वमयोध्यां प्रति सत्वरं ॥ सुहिते कुशली कच्चिज्जनो नृपतिमंदिरे ॥ शृंगवेरपुरं
गत्वा सुहृदं मित्रं गुहं मम ॥ जानकीलक्ष्मणोपेतमागतं मां निवेदय ॥ नंदिग्रामं ततो गत्वा भ्रा
तरं भरतं मम ॥ दृष्ट्वा ब्रूहि सभार्यस्य भ्रातुः कुशलमेव मम ॥ सीतापहरणादीनि रावणस्य व
धादिकं ॥ ब्रूहि क्रमेण मे भ्रातुः सर्वं तत्र निवेदितं ॥ जित्वा शत्रुगणान्सर्वान्सभार्यः सहल
क्ष्मणः ॥ उपयाति समृद्धार्थः सह दिव्यैः कपीश्वरैः ॥ इत्युक्त्वा तत्र वृत्तांतं भरतस्य विचेष्टितं ॥ सर्वं
ज्ञात्वा पुनः शीघ्रमागच्छ मम संनिधिं ॥ तथेति हनुमांस्तत्र मानुषं वपुरास्थितः ॥ नंदिग्रामं य
यौ तूर्णं वायुवेगेन मारुतिः ॥ उवाच मधुरं वाक्यं प्रहृष्टेनांतरात्मना ॥ रामो दाशरथिः श्रीमा
न्सायातो ते सह सीतया ॥ स तं समालिंग्य धर्मात्मा तेन कुशलमब्रवीत् ॥ अनुज्ञातो मुनि
ना भरद्वाजेन राघवः ॥ आगमिष्यति तेद्यैव द्रक्ष्यसि त्वं रघूत्तमं ॥ एवमुक्त्वा महातेजाः संप्रहृष्ट
तनूरुहः ॥ उत्पपात महावेगो वायुवेगेन मारुतिः ॥ सोपश्यद्रामतीर्थं च सरयूं च महानदीं ॥
तामतिक्रम्य हनुमान्नंदिग्रामं ययौ मुदा ॥ क्रोशमात्रे त्वयोध्यायाश्चीरकृष्णाजिनांबरं ॥
ददर्श भरतं दीनं कृशमाश्रमवासिनं ॥ मलपंकदिग्धांगं जटिलं वल्कलांबरं ॥ फलमूलकृ
ताहारं रामचिंतापरायणं ॥ पादुके ते पुरस्कृत्य शासयंतं वसुंधरां ॥ मंत्रिभिः पौरमुख्यैश्च
काषायांबरधारिभिः ॥ प्रतीक्षमाणं मूर्तिमंतं साक्षाद्धर्ममिव स्थितं ॥ उवाच प्रांजलिर्वाक्यं हनुमा
न्मारुतात्मजः ॥ यं त्वं चिंतयसे राममतापसं दंडके स्थितं ॥ अनुशोचसि काकुत्स्थं स त्वां कुश
लमब्रवीत् ॥ प्रियमाख्यामि ते देव शोकं त्यज सुदारुणं ॥ अस्मिन्मुहूर्ते भ्राता त्वं रामेण
सह संगतः ॥ समरे रावणं हत्वा रामः सीतामवाप्य च ॥ उपयाति समृद्धार्थः ससीतः सहल
क्ष्मणः ॥ एवमुक्त्वा महातेजा भरतो हर्षमूर्छितः ॥ पपात भुवि चाश्वस्तः कैकेयीप्रियनंदनः ॥

आलिंग्य भरतः शीघ्रं मारुतिं प्रियवादिनं ॥ आनंदजैरश्रुजलैः सिषेच भरतः कपिं ॥
देवो वा मानुषो वा त्वमनुक्रोशादिहागतः ॥ प्रियाख्यानस्य ते सौम्य ददामि ब्रुवतः प्रियं ॥
गवां शतसहस्रं च ग्रामाणां च शतं वरं ॥ सर्वाभरणसंपन्ना मुग्धाः कन्यास्तु षोडश ॥ एव
मुक्त्वा पुनः प्राह भरतो मारुतात्मजं ॥ बहूनि नाम वर्षाणि गतस्य सुमहद्वनं ॥ शृणोम्य
हं प्रीतिकरं मम नाथस्य कीर्तनं ॥ एति जीवंतमानंदो नरं वर्षशतादपि ॥ राघवस्य हरी
णां च कथमासीत्समागमः ॥ तन्ममाख्याहि भद्रं ते विश्वसेयं वचस्तव ॥ एवमुक्तोथ हनु
मान्भरतेन महात्मना ॥ आचचक्षेथ रामस्य चरितं कृत्स्नशः क्रमात् ॥ श्रुत्वा तु परमानं
दं भरतो मारुतात्मजात् ॥ आज्ञापयच्छत्रुहणं मुदा युक्तो मुदान्वितः ॥ दैवतानि च यावं
ति नगरे रघुनंदन ॥ नानोपहारबलिभिः पूजयंतु महाधियः ॥ सूता वैतालिकाश्चैव बंदि
नः स्तुतिपाठकाः ॥ वारमुख्याश्च गणिका निर्यांत्वद्यैव संघशः ॥ राजदारास्तथामात्याः सै
ना हस्त्यश्वपत्तयः ॥ ब्राह्मणाश्च तथा पौरा राजानो ये समागताः ॥ पत्तेवकुलनगरीमु
ख्या रत्नोपशोभितैः ॥ तोरणैश्च पताकाभिर्विचित्राभिरनेकधा ॥ अलंकुर्वंतु वेश्मानि
नानाबलिविचक्षणाः ॥ निर्यांतु हृष्टाः सर्वे राम दर्शनलालसाः ॥ इत्याज्ञापितमात्रेण
गान्नामधुरं तथा ॥ रथानां च सहस्राणि स्वर्णरत्नविभूषिते ॥ परमेष्ठी स्तुपादाय इव्या
न्तु यावकानिव ॥ ततस्त्वितिविकाद्दानिर्ययुराज्ञयाधिताः ॥ भरतः पादुके न्यस्य शिरस्ये
व कृतांजलिः ॥ शत्रुघ्नसहितो रामं पादचारेण निर्ययौ ॥ तथैव दृश्यते दूराद्विमानं चंद्र
सन्निभं ॥ पुष्पकं सूर्यसंकाशं मनसा ब्रह्मनिर्मितं ॥ तस्मिन्भ्राता भ्रातरौ वीरौ वैदेह्या राघव
णो ॥ सुग्रीवश्च कपिश्रेष्ठो मंत्रिभिश्च विभीषणः ॥ दृश्यते पश्यत जना इत्याह पवनात्म
जः ॥ ततो हर्षसमुद्भूतो निःस्वनो दिवमस्पृशत् ॥ स्त्रीबालयुववृद्धानां रामोयमिति की
र्तिते ॥ रथकुंजरवाजिस्था अवतीर्य महीतलाः ॥ ददृशुस्ते विमानस्थं जनाः सोममिवांबरे
प्रांजलिर्भरतो भूत्वा प्रहृष्टो राघवोन्मुखः ॥ ततो विमानाग्रगतं भरतो राघवं मुदा ॥ ववं
दे प्रणतो रामं मेरुस्थमिव भास्करं ॥ ततो रामाभ्यनुज्ञातं विमानमपतद्भुवि ॥ आरोपि
तो विमानं तं भरतः सानुजस्तदा ॥ राममासाद्य मुदितः पुनरेवाभ्यवादयत् ॥ समुत्थाप्य
चिराद्दृष्टं भरतं रघुनंदनः ॥ भ्रातरं स्वांकमारोप्य मुदा तं परिषस्वजे ॥ ततो लक्ष्मणमासाद्य
वैदेहीं नामकीर्तयन् ॥ अभ्यवादयत प्रीतो भरतः प्रेमविह्वलः ॥ सुग्रीवं जांबवंतं च युव
राजं तथांगदं ॥ मैंदद्विविदनीलांश्च ऋषभं चैव सस्वजे ॥ सुषेणं च नलं चैव गवाक्षं गंधमा
दनं ॥ शरभं पनसं चैव भरतः परिषस्वजे ॥ सर्वे ते मानुषं रूपं कृत्वा भरतमादृताः ॥ पप्रच्छुः
कुशलं सौम्याः प्रहृष्टाः प्लवगास्तदा ॥ ततः सुग्रीवमालिंग्य भरतः प्राह भक्तितः ॥ त्वत्सहायेन
रामस्य जयोभूद्रावणो हतः ॥ त्वमस्माकं चतुर्णां तु भ्राता सुग्रीव पंचमः ॥ शत्रुघ्नश्च तथा राम
मभिवाद्य सलक्ष्मणं ॥ सीतायाश्चरणौ पश्चाद्ववंदे विनयान्वितः ॥ रामो मातरमासाद्य विव
र्णां शोककर्शितां ॥ जग्राह प्रणतः पादौ मनो मातुः प्रसादयन् ॥ कैकेयीं च सुमित्रां च नना
मेतरमातरौ ॥ भरतः पादुके ते तु राघवस्य सुपूजिते ॥ योजयामास रामस्य पादयोर्भक्तिवत्स
लः ॥ राज्यमेतन्न्यासभूतं मया निर्यातितं तव ॥ अद्य मे सफलं जन्म फलितो मे मनोरथः ॥ य
त्पश्यामि समायांतमयोध्यां त्वामहं प्रभो ॥ कोष्ठागारं बलं कोशं कृतं दशगुणं मया ॥ त्वत्ते
जसा जगन्नाथ पालयस्व स्वकं पुरं ॥ इति ब्रुवाणं भरतं दृष्ट्वा सर्वे कपीश्वराः ॥ मुमुचुर्नेत्रजं तोयं
प्रशशंसुर्मुदान्विताः ॥ ततो रामः प्रहृष्टात्मा भरतं स्वांकगं मुदा ॥ ययौ तेन विमानेन भरत
स्याश्रमं मुदा ॥ अवरुह्य तदा रामो विमानाग्रान्महीतले ॥ अब्रवीत्पुष्पकं देवो गच्छ वैश्रवणं
वह ॥ अन्वगच्छ विमानेन कुबेरं धनपालकं ॥ रामोथ वसिष्ठस्य गुरोः पदांबुजं नत्वा यथा देवा
गुरोः शतक्रतुः ॥ दत्वा महार्हासनमुत्तमे गुरो रुपाविवेशाग्रगुरोः समीपतः ॥ ८९ ॥
इति श्रीमदध्यात्मरामायणे युद्धकांडे चतुर्दशोध्यायः ॥ १४ ॥ श्रीमहादेवाय ॥

ततस्तु कैकेयीपुत्रो भरतो मन्त्रिभिः सह॥ शिरस्यञ्जलिमादाय ज्येष्ठं भ्रातरमब्रवीत्॥ मा
तामे सत्कृता राम दत्तं राज्यं त्वया मम॥ ददामि तत्ते त्वं तु यथा त्वमददा मम॥ श्रुत्वा
वाक्यं भरतस्याशु रामो गृहीतवान् ततः॥ वक्तुं या प्रार्थयामास कैकेय्याश्च हृतारसद॥ तथेति
प्रतिजग्राह भरतात्राज्यमीश्वरः॥ मायामाश्रित्य सकलां नरवेषानुयायिनः॥ स्वात्मा
नुभवो यस्य स्वतेजसा नैकरूपिणः॥ निरस्ताखिलमायाय नन्दरूपिणः परमात्मनः॥ मानुषेण
तदात्येन किंतस्य जगदीशिनः॥ यस्य भूभंगमात्रेण त्रिलोकीनाशमेति ताम्॥ यस्यानु
ग्रहमात्रेण भवेत्त्यायं विश्वितश्रियः॥ लीलास्य हमहासरेः किंफरे नश्यमावनेः॥ तथापि भ
जतां नित्यं कामरूपविधित्सया॥ लीलामानुषदेहेन सर्वमप्यनुवर्तते॥ ततः शत्रुघ्नवच
नान्निपुणाः श्मश्रुवर्धनकाः॥ संभाराश्चाभिषेकार्थमानीता राघवस्य हि॥ पूर्वं तु भरते स्ना
ते लक्ष्मणे च महात्मनि॥ सुग्रीवे वानरेन्द्रे च राक्षसेन्द्रे विभीषणे॥ विशोधितजटाः स्नात
श्चित्रमाल्यानुलेपनः॥ महार्हवसनोपेतस्तस्थौ तत्र श्रिया ज्वलन्॥ प्रतिकर्म च रामस्य
लक्ष्मणस्य महामतिः॥ कारयामास भरतः सीतायाराजयोषितः॥ महार्हवस्त्राभरणौ रत्नं
वै शुभमध्यमाः॥ ततो वानरपत्नीनां सर्वासामेव शोभना॥ अकारयत कौशल्या प्रहृष्टा पु
त्रवत्सला॥ ततः स्यन्दनमादाय शत्रुघ्नवचनात्सुधीः॥ सुमन्त्रः सूर्यसंकाशं योजयित्वाग्रतः
स्थितः॥ आरुरोह रथं रामः सत्यधर्मपरायणः॥ सुग्रीवोऽङ्गदराजश्च हनूमांश्च विभीषणः॥
स्नात्वा दिव्याम्बरधरो दिव्याभरणभूषितः॥ महार्हवसनोपेतास्तस्थौ तत्र श्रिया ज्वलन्॥ प्र
तिकर्म च रामस्य लक्ष्मणस्य महामतिः॥ कारयामास भरतः सीतयाराजयोषितः॥ रामस्य
पश्चाद्रथाश्च गजवाहनाः॥ सुग्रीवप्रमुखाः सीता च पौरा नैः शुभं महत्॥ वज्रपाणिर्य
थादेवैर्दिव्याश्वरथे स्थितः॥ प्रययौ रथमास्थाय तथा रामो महत्पुरे॥ सारथ्यं भरतश्चक्रे
रत्नदण्डं महद्युतिः॥ श्वेतातपत्रं शत्रुघ्नो लक्ष्मणो व्यजनं दधे॥ चामरं च समीपस्थो न्यवीज
यद्विभीषणः॥ ऋषिसंघैराकाशे देवैश्च समरुद्गणैः॥ स्तूयमानस्य रामस्य शुश्रुवे मधुरध्वनिः॥ मानुषं रूपमास्थाय वानरा ग
जवाहनाः॥ भेरीशंखनिनादैश्च मृदंगपणवानकैः॥ प्रययौ राघवः श्रीमान्पुरीं तां समलंकृ
तां॥ ददृशुस्ते समायान्तं राघवं पुरवासिनः॥ दूर्वादलश्यामतनुं महार्हकिरीटरत्नाभरणं
विनीतं॥ आरक्तकंजायतलोचनान्तं दृष्ट्वा पुमोरम्यमतीव पुण्याः॥ विचित्रवस्त्राञ्चितयज्ञसूत्रन
रूपीतांबरं पीनभुजांतरालं॥ अनर्घ्यरत्नाकलितप्रकारैर्विभासमानं रघुनंदनं प्रजाः॥
सुग्रीवमुख्यैर्हरिभिः प्रशान्तैर्निषेव्यमानं रविवत्स्वभासं॥ कालाङ्गिकाचंदनलिप्तगात्रैर्नि
वीतकस्तूरिमधुप्रमाले॥ श्रुत्वा स्थितो राममुपागतं मुदा प्रहृष्टवेगोत्कलितानना स्त्रियः
स्वगामकार्यं गृहसर्वमादितः हर्म्याणि चैवारुरुहुः स्वलंकृताः॥ दृष्ट्वा हरिं सर्वहृदुत्सवाकृ
तिं शुभैः किरीटैः स्मितशोभिताननाः॥ दृग्भिः पपुर्नेत्रमनोरसायनं स्थाने दस्त्रिमनस्सा
नेगा माधुरीत्स्वर्णं न गृहं स्वर्गदस्त्वयमस्मि महतोः॥ प्रविश्य वेश्मानन्तरं स्थितो मुदा
रामो वसिष्ठं वरलोत्समानृ॥ क्रमेण सर्वाः पितरौ पिता प्रभुः॥ ननाम भक्त्या रघुवंशकेतुः॥ ततो भरतमाहेदं रामः सत्यपराक्रमः॥ सर्वसंपत्समायुक्तं मम मंदिरमुत्तमम्॥ मि
त्राय वानरेन्द्राय सुग्रीवाय प्रदीयताम्॥ सर्वेभ्यः सुखवासार्थं मंदिराणि प्रकल्पय॥ रामे
णैवं समादिष्टो भरतश्च तथाकरोत्॥ उवाचाथ महातेजाः सुग्रीवं राघवानुजः॥ राघव
स्याभिषेकार्थं चतुःसिंधुजलं शुभं॥ आनीतं प्रेषय क्षिप्रं दूतान्हरीन्विक्रमान्॥ प्रेष
यामास सुग्रीवो जांबवन्तं महत्तमं॥ अंगदं च सुषेणं च तेगत्वा वायुवेगतः॥ जलपूर्णान
घटानानीय भाव्याः समुद्रमानयन्॥ आनीतं तीर्थसलिलं शत्रुघ्नो मंत्रिभिः सह॥ राघवस्या
भिषेकार्थं वसिष्ठाय न्यवेदयत्॥ ततस्तु प्रयतो वृद्धो वसिष्ठो ब्राह्मणैः सह॥ रामं रत्नमये

पीठे ससीतं संन्यवेशयत्॥ वसिष्ठो वामदेवश्च जाबालिर्गौतमस्तथा॥ वाल्मीकिस्तु तथा
चक्रुः सर्वे रामाभिषेचनं॥ कुशाग्रतुलसीयुक्तपुण्यगंधजलैः शुभैः॥ अभ्यषिंचन्रघुश्रेष्ठं
सर्वे वासवं यथा॥ ऋत्विग्भिर्ब्राह्मणैः श्रेष्ठैः कन्याभिः सह मंत्रिभिः॥ सर्वौषधिरसैश्चैव
दैवतैर्नभसि स्थितैः॥ चतुर्भिर्लोकपालैश्च स्तुवद्भिः सगणैस्तथा॥ भरतेनात्तचित्रेण छत्रं
तस्य सलिलेन हि॥ शीतलेनाम्बुजालेन शिप्रीभूतेन सादरं॥ ततो ब्रह्मदेववरणो यादौ कमलवा
दितो॥ महासोनाश्च नक्षीग्रं भरतो वस्तमिश्रितं॥ छत्रं च तस्य जग्राह शत्रुघ्नः पांडुरं शुभं॥
सुग्रीवराक्षसेन्द्रौ तौ दधतुः श्वेतचामरे॥ मालां च कांचनीं वायुर्ददौ वासवचोदितः॥ सर्वरत्न
समायुक्तं मणिकांचनभूषितं॥ ददौ हारं नरेन्द्राय स्वयं शक्रस्तु भक्तितः॥ प्रजगुर्देवगंधर्वा
ननृतुश्चाप्सरोगणाः॥ देवदुंदुभयो नेदुः पुष्पवृष्टिः पपात खात्॥ नवदूर्वादलश्यामं पद्म
पत्रायतेक्षणं॥ रविकोटिप्रभायुक्तं किरीटेन विराजितं॥ कोटिकंदर्पलावण्यं पीतांबर
समावृतं॥ दिव्याभरणसंपन्नं दिव्यचंदनलेपनं॥ अयुतादित्यसंकाशं द्विभुजं रघुनंदनं
वामभागे समासीनां सीतां कांचनसन्निभां॥ सर्वाभरणसंपन्नां वामांके समुपस्थितां
रक्तोत्पलकरांभोजां वामेनालिंग्य संस्थितां॥ सर्वातिशयशोभाढ्यां दृष्ट्वा भक्तिसमन्वि
तः॥ उमया सहितो देवः शंकरो रघुनंदनं॥ सर्वदेवगणोपेतः स्तोतुं समुपचक्रमे॥ श्री
महादेव उवाच॥ नमोस्तु रामाय सशक्तिकाय नीलोत्पलश्यामलकोमलाय॥ किरीट
हाराङ्गदभूषणाय सिंहासनस्थाय महाप्रभाय॥ त्वमादिमध्यान्तविहीन एकः सृजस्य
वस्यत्सि च लोकजातं॥ स्वमायया तेन न लिप्यसे त्वं यः स्वे सुखेऽजस्ररतोऽनवद्यः॥ लीलां विध
त्से गुणसंवृतस्त्वं प्रपन्नभक्तानुविधानहेतोः॥ नानावतारैः सुरमानुषाद्यैः प्रतीयसे ज्ञा
निभिरेव नित्यं॥ स्वांशेन लोकं सकलं विधाय तं बिभर्षि च त्वं तदधः फणीन्द्रः॥ उपर्यधो
भान्वनिलोडुपौषधी प्रवर्षरूपोऽवसि नैकधा जगत्॥ त्वमिह देहभृतां शिखिरूपः
पचसि भुक्तमशेषमजस्रं॥ पवनपंचकरूपसहायो जगदखंडमनेन बिभर्षि॥ चंद्रसूर्यशि
खिमध्यगतं यत्तेज ईश चिदशेषतनूनां॥ प्राभवत्तनुभृतामिह धैर्यं शौर्यमायुरखिलं
तव सत्त्वं॥ त्वं विरिंचिशिवविष्णुविभेदात्कालकर्मशशिसूर्यविभागात्॥ वादिनां पृथ
गिवेश विभासि ब्रह्म निश्चितमनन्यदिहैकं॥ मत्स्यादिरूपेण यथा त्वमेकः श्रुतौ पुरा
णेषु च लोकसिद्धः॥ तथैव सर्वं सदसद्विभागस्त्वमेव नान्यद्भवतो विभाति॥ यद्यत्समु
त्पन्नमनन्तसृष्टावुत्पत्स्यते यच्च भवच्च यच्च॥ न दृश्यते स्थावरजंगमादौ त्वया विनातः
परतः परस्त्वं॥ तत्त्वं न जानंति परात्मनस्ते जनाः समस्तास्तव मायया ते॥ त्वद्भक्तसेवा
मलमानसानां विभाति तत्त्वं परमेकमीशं॥ ब्रह्मादयस्ते न विदुः स्वरूपं चिदात्मतत्त्वं बहि
रर्थभावाः॥ ततो बुधस्त्वामिदमेव रूपं भक्त्या भजन्मुक्तिमुपैत्यदुःखः॥ अहं भवन्नाम गृ
णन्कृतार्थो वसामि काश्यामनिशं भवान्या॥ मुमूर्षमाणस्य विमुक्तयेऽहं दिशामि मंत्रं
तव राम नाम॥ इमं स्तवं नित्यमनन्यभक्त्या शृण्वन्ति गायन्ति लिखन्ति ये वै॥ ते सर्वसौख्यं
परमं च लब्ध्वा भवत्पदं यान्तु भवत्प्रसादात्॥ इन्द्र उवाच॥ रक्षोऽधिपेनाखिलदेवसौख्यं हृतं च मे ब्रह्मपदोत्त
माद्य॥ त्वत्पादभक्त्या पुनरेव लब्धं हतो रावणः॥ देवा ऊचुः॥ हत्वायज्ञभागाय
ति भुक्तं च यत्साधनं॥ पितर ऊचुः॥ हतो दुरात्मा यो लोके पितृभागाः ऋषिभिर्विनि
र्मिताः॥ ... हत्वा गृहीतानि दानीं पुनर्लब्धस्मदाभवाम॥ यक्षा ऊचुः॥ स
र्वे देवाश्च यतो भवंतः खचराः ऋषिमुक्ताः॥ दुरात्मा हतो रावणो रा
क्षसाधमः॥ गन्धर्वा ऊचुः॥ वयं संगीतनिपुणा गायंतः
विद्रुताः॥ ... तमेवं गायमाना नाश्रुतदारायणनतनयाः॥ शिखा ... हतो यं रावण

अ॰रा॰
५८

47

सः ॥ एवं महात्मनः सिद्धाः किन्नरा सहरस्तथा ॥ वसवो मुनयो गावो गुह्यकाश्च पतत्रिणः ॥
सप्रजापतयश्चैते तथा चाप्सरसां गणाः ॥ सर्वे रामं समासाद्य दृष्ट्वा नेत्रमहोत्सवं ॥ स्तुत्वा
पृथक्पृथक्सर्वे राघवेणाभिवंदिताः ॥ ययुः स्वं स्वं पदं सर्वे ब्रह्मरुद्रादयस्तथा ॥ प्रशासंते
महारामं गायंतस्तत्र चेष्टितं ॥ ध्यायंतस्त्वभिषेकार्द्रं सीतालक्ष्मणसंयुतं ॥ सिंहासनस्थं
राजेंद्रं ययुः सर्वे हृदि स्थितं ॥ वितानैभुअनत्त्वप्रसादितदृश्यैर्वहुदैस्तवद्भिः ॥ वर्णद्भिः
पुष्पवृष्टिं दिवि मुनिनिकरैरीड्यमानं समेतात् ॥ रामः श्यामः प्रसन्नः स्मितमुखविधुरप्य
सूर्यकोटिप्रकाशः ॥ सीताश्लोभितवामांगः मुनिहरिभिः सेव्यमानो विभाति ॥ ८० ॥
इति श्रीमदध्यात्मरामायणे युद्धकांडे पंचदशोऽध्यायः ॥ ॥ १५ ॥

॥ श्रीमहादेव उवाच ॥

रामेऽभिषिक्ते राजेंद्रे सर्वलोकसुखावहे ॥ वसुधा सस्यसंपन्ना फलवंतो महीरुहाः ॥ गंध
हीनानि पुष्पाणि गंधवंति चकाशिरे ॥ दशावृषान सहस्राणि धेनूनां च गवां तथा ॥ ददौ
शतवृषान्पूर्वं द्विजेभ्यो रघुनंदनः ॥ त्रिंशत्कोटिसुवर्णस्य ब्राह्मणेभ्यो ददौ पुनः ॥ ३ ॥
वस्त्राभरणरत्नानि ब्राह्मणेभ्यो ददौ तदा ॥ सूर्यकोटिसमप्रख्यां सर्वरत्नमयीं स्रजं ॥ सुग्री
वाय ददौ प्रीत्या राघवो भक्तवत्सलः ॥ अंगदाय ददौ दिव्ये अंगदे रघुनंदनः ॥ चंद्रकोटिप्रतीकाशं
मणिरत्नविभूषितं ॥ सीतायै प्रददौ हारं प्रीतो रघुकुलोत्तमः ॥ अवमुच्यात्मनः कंठाद्धारं जन
कनंदिनी ॥ अवैक्षत हरीन्सर्वान्भर्तारं च मुहुर्मुहुः ॥ रामस्तामाह वैदेहीमिंगितज्ञो वि
लोकयन् ॥ वैदेहि यस्य तुष्टासि देहि तस्मै वरानने ॥ हनूमते ददौ हारं पश्यतो राघवस्य च ॥
तेन हारेण शुशुभे मारुतिर्गौरवेण च ॥ रामोऽपि मारुतिं दृष्ट्वा कृतांजलिमुपस्थितं ॥ भक्त्या प
रमया तुष्ट इदं वचनमब्रवीत् ॥ हनूमंस्ते प्रसन्नोऽस्मि वरं वरय कांक्षितं ॥ दास्यामि देवैरपि य
द्दुर्लभं भुवनत्रये ॥ हनूमानपि तं प्राह नत्वा रामं प्रहृष्टधीः ॥ त्वन्नाम स्मरतो राम न तृप्यति मनो
मम ॥ अतस्त्वन्नाम सततं स्मरन्स्थास्यामि भूतले ॥ यावत्स्थास्यति ते लोके नाम तावत्कले
वरं ॥ मम तिष्ठतु राजेंद्र वरोऽयमभिकांक्षितः ॥ रामस्तथेति तं प्राह मुक्तस्तिष्ठ यथासुखं ॥
कल्पांते मम सायुज्यं प्राप्स्यसे नात्र संशयः ॥ तमाह जानकी प्रीता यत्र कुत्रापि मारुते ॥ स्थि
तं त्वामनुयास्यंति भोगाः सर्वे ममाज्ञया ॥ इत्युक्तो मारुतिस्ताभ्यामीश्वराभ्यां प्रहृष्टधीः ॥ आ
नंदाश्रुपरीतांगो भूयो भूयः प्रणम्य तौ ॥ हृष्टो ययौ तपस्तप्तुं हिमवंतं महामतिः ॥ ततो गु
हं समासाद्य रामः प्रांजलिरब्रवीत् ॥ सखे गच्छ पुरं रम्यं शृंगवेरमनुत्तमं ॥ ममैव चिंतय
न्नित्यं भुंक्ष्व भोगाञ्जितान्स्वकान् ॥ अंते ममैव सारूप्यं प्राप्स्यसे त्वं न संशयः ॥ इत्युक्त्वा प्रददौ त
स्मै दिव्यान्याभरणानि च ॥ राज्यं च विपुलं दत्वा विज्ञानं च ददौ विभुः ॥ रामेणालिंगितो हृष्टो
ययौ स्वभवनं गुहः ॥ ये चान्ये वानरश्रेष्ठा अयोध्यां समुपागताः ॥ अमूल्याभरणैर्वस्त्रैः स
मयामास राघवः ॥ सुग्रीवप्रमुखाः सर्वे वानराः सविभीषणाः ॥ यथार्हं पूजितास्तेन रामेण
परमात्मना ॥ प्रहृष्टमनसा सर्वे जग्मुरेव यथागतं ॥ सुग्रीवप्रमुखाः सर्वे किष्किंधां प्रय
युर्मुदा ॥ विभीषणस्तु संप्राप्य राज्यं निहतकंटकं ॥ रामेणाराधितः प्रीत्या ययौ लंकाम
निंदितां ॥ राघवो राज्यमखिलं शशासाखिलवत्सलः ॥ अनिच्छन्नपि रामेण यौवराज्येऽभिषि
क्तवान् ॥ लक्ष्मणः परया भक्त्या रामसेवापरोऽभवत् ॥ रामः स्वपरमात्मापि कर्मकांडप्रवर्ति
तः ॥ कर्म कांडविहीनोऽपि निर्लिप्तोऽपि सदा हरिः ॥ अश्वमेधादिभिर्यज्ञैः सर्वैर्लोकानुग्रहे
च्छया ॥ यज्ञैर्यजन्स राजेंद्रो लोकान्विप्रान्सतोषयत् ॥ न पर्यदेवन्विधवा न च व्यालकृतं भयं ॥ नव्याधिजं भयं चासीद्रामे राज्यं प्रशासति ॥ लोका
दस्युभयं नासीदनर्थो नापि कश्चन ॥ वृद्धेषु सत्सु बालानां नासीन्मृत्युभयं तथा ॥ रामपूजा
परा सर्वे सर्वे राघवचिंतकाः ॥ ववर्ष जलदास्तोयं यथाकालं यथारुचि ॥ प्रजाः स्वधर्मनिरताः
वर्णाश्रमगुणान्विताः ॥ औरसानिव रामोऽपि गुप्तोपपितॄन्व प्रजाः ॥ सर्वलक्षणसंयुक्तः स

वैधर्मपरायणः ॥ दशवर्षसहस्राणि रामो राज्यमुपास्त सः ॥ इदं रहस्यं धनधान्यसमृद्धिदं वी
पुत्ररोग्यकरं सुखप्रदं ॥ पवित्रमध्यात्मिकसंज्ञितं पुरा रामायणं भाषितमादिशंभुना ॥ शृ
णोति भक्त्या मनुजः समाहितो भक्त्या पठेद्वा परितुष्टमानसः ॥ सर्वाः समाप्नोति मनोगताशि
षो विमुच्यते पातककोटिभिः क्षणात् ॥ रामाभिषेकं प्रयतः शृणोति यो धनाभिलाषी लभ
ते महद्धनं ॥ पुत्राभिलाषी सुतमार्यसंमतं प्राप्नोति रामायणमादितः पठेत् ॥ शृणोति यो
ध्यात्मिकरामसंहितां प्राप्नोति सर्वं भुवि यद्यदिष्टं ॥ राजाप्ययं विजित्यारीन्प्रधर्षितोऽपीनरः
वैरिविजयी भवेन्नृपः ॥ स्त्रियोऽपि शृण्वंत्यपि रामसंहितां भवंति ताः जीवसुता प्रशंसिताः ॥ वंध्या
पिपुत्रं लभते सुरूपिणं कथामिमां भक्तियुतः शृणोति या ॥ शृणुयात्मिमां यः शृणुयात्कथां चेन्मति
नित्यकोपं वनतापविमत्सरः ॥ दुर्गाणि सर्वाणि विजित्य निर्भयो भवेन्नरः राघवभक्तिसं
युतः ॥ सुराः समस्ताः श्रिययां तिलपूतां विघ्नाः समस्ताः प्रविशंति शृण्वतो ॥ अध्यात्मरामा
यणमादितो नरः शृणोति सर्वेऽपि संपदः परः ॥ रजस्वला वापि हि रामतत्परा शृणोति
पित्वा तु ये भक्त्या नमस्कुर्वंति नित्यशः ॥ सर्वैः पापैर्विनिर्मुक्ता विष्णुसायुज्यमाप्नुयुः ॥ ऋत
रामचरितं कृत्स्नं शृण्वंति भक्तितः ॥ पठंति वा स्वयं वक्तुं ते पां रामः प्रसीदति ॥ अध्यात्म
रामायणमेतदद्भुतं ॥ वैराग्यविज्ञानयुतं पुरातनं ॥ पठन्नरोऽसौ भवसिंधुपारगो भवेत् ॥
नेतह्रामायणमध्येषितं ॥ नित्यं रामायणं कृत्वा त्रिकाले समवाप्नुयात् ॥ श्रोत्रं तस्य दे
व्यकर्णंऽस्पकोऽस्य श्रवणोऽपानं ॥ देवाश्च सर्वे तुष्यंति ग्रहाः सर्वे महर्षयः ॥ रामायणस्य श्रव
णेतुष्यंति पितरस्तथा ॥ अध्यात्मरामायणमेतदद्भुतं वैराग्यविज्ञानयुतं पुरातनं ॥ प
ठंति शृण्वंति लिखंति ये नरास्तेषां भवेऽस्मिन्न पुनर्भवो भवेत् ॥ आलोड्याखिलवेदराशि
ममकृद्यन्त्रारकं ब्रह्मणस्तद्रामो विष्णुरहस्यमूर्तिरिति यो विज्ञानभूतेश्वरः ॥ तदुत्याखिलसार
संग्रहमिदं संक्षेपतः प्रस्फुटं श्रीरामस्य निगूढतत्वमखिलं प्राह प्रियायै भवः ॥ ५० ॥ ॥
इति श्रीमदध्यात्मरामायणे उमामहेश्वरसंवादे युद्धकांडे षोडशोऽध्यायः ॥ ॥ १६ ॥

॥ समाप्तोऽयं युद्धकांडः ॥

गें

जयति रघुवंशतिलकः कौशल्याहृदयनंदनो रामः ॥ दशवदननिधनकारी दाशरथिः
पुंडरीकाक्षः ॥ श्रीपार्वत्युवाच ॥ अथ रामः किमकरोत्कौशल्यानंदवर्धनः ॥ हत्वा मृधे रा
वणादीन्राक्षसान्भीमविक्रमः ॥ १ ॥ अभिषिक्तस्त्वयोध्यायां सीतया सह राघवः ॥ मायाम
मानुषतां प्राप्य कतिवर्षाणि भूतले ॥ स्थितवांल्लीलया दीनं परमात्मा सनातनः ॥ आत्मा
नं मानुषं लोके कथमंते विरह्यहत् ॥ एतदाख्याहि भगवञ्छ्रुश्रूषोस्त्वमम प्रभो ॥ कथापीयू
षसास्वादेन तृष्णा हि प्रवर्धते ॥ रामचंद्रस्य भगवन्नुहि विस्तरशः कथां ॥ श्रीमहादेव उवा
च ॥ राक्षसानां वधं कृत्वा राज्ये रामउपस्थिते ॥ आययुर्मुनयः सर्वे श्रीराममभिवंदितुं ॥
विश्वामित्रोऽसितः कण्वो दुर्वासा भृगुरंगिराः ॥ कश्यपो वामदेवोऽत्रिस्तथा सप्तर्षयो मलाः ॥
अगस्त्यः सह शिष्यैश्च मुनिभिः सहितोऽभ्यगात् ॥ द्वारमासाद्य रामस्य द्वारपालमथाब्र
वीत् ॥ ब्रूहि रामाय मुनयः समागत्य वहिःस्थिताः ॥ अगस्त्यप्रमुखाः सर्वे आशीर्भिर्नंदित

अ॰ रा॰
४८

प्रभोः ॥ प्रतीहारोऽब्रवीद्धृष्टं राघवाय महात्मने ॥ अगस्त्यो मुनिभिः सार्धं तव दर्शनलालसः ॥
प्राप्तो नाथ महाप्राज्ञ स धीर्द्वारि ह्युपस्थितः ॥ तमुवाच द्वारपालं प्रवेशय यथासुखं ॥ पूजिता
विविशुर्वेश्म नानारत्नविभूषितं ॥ दृष्ट्वा रामो मुनीन्शीघ्रं प्रत्युत्थाय कृतांजलिः ॥ पाद्यार्घ्यादि
भिरापूज्य गां निवेद्य यथाविधिः ॥ नत्वा तेभ्यो ददौ दिव्यान्यासनानि यथार्हतः ॥ उपविष्टाः
प्रविष्टाश्च मुनयो रामपूजिताः ॥ संपृष्टकुशलाः सर्वे रामं कुशलमब्रुवन् ॥ कुशलं ते महाबा
हो सर्वत्र रघुनंदनः ॥ दिष्ट्येदानीं प्रपश्यामो हतशत्रुमरिंदम ॥ नहि भारोऽस्ति ते राम रावणो
राक्षसेश्वरः ॥ धनुस्त्वं हि लोकांस्त्रीन्जेतुमर्हसि राघव ॥ दिष्ट्या त्वया हताः सर्वे राक्षसा रा
वणादयः ॥ सत्यमेतन्महाबाहो रावणस्य निवर्हणं ॥ असत्यमेतत्संग्रामे रावणेर्यन्निसू
दनं ॥ अंतकः प्रतिमाः सर्वे कुंभकर्णादयो मृधे ॥ अंतकः प्रतिमो वीरो इंद्रजिद्रघुनंदन
दत्ता चेयं त्वयास्माकं पुरा ह्यभयदक्षिणा ॥ हत्वा रक्षोगणाः संख्ये कृतकृत्योपजीवसि
श्रुत्वैव भाषितं तेषां मुनीनां भावितात्मनां ॥ विस्मयं परमं गत्वा रामः प्रांजलिरब्र
वीत् ॥ रावणादीनतिक्रम्य कुंभकर्णादिराक्षसान् ॥ त्रिलोकजयिनं त्वा मेघनादं वद
वृत्तं ॥ ततस्तद्वचनं श्रुत्वा राघवस्य महात्मनः ॥ कुंभयोनिर्महातेजो रामं प्रीत्या वचोऽब्र
वीत् ॥ शृणु राजन्यथावृत्तं रावणो रावणस्य च ॥ जन्म कर्म वरादानं च संक्षेपाद्वदतो मम ॥ पु
रा कृतयुगे राम पुलस्त्यो ब्रह्मणः सुतः ॥ तपस्तप्तुं गतो विद्वान्मेरोः पार्श्वे महामतिः ॥ तृण
बिंदोराश्रमे सोऽन्ववसन्मुनिपुंगवः ॥ तपस्तेपे महातेजाः स्वाध्यायनिरतः सदा ॥ तत्राश्र
मे महारम्ये देवगंधर्वकन्यकाः ॥ गायंत्यो नृत्यमानाश्च हसंत्यो वादनैर्निज ॥ पुलस्त्यस्य
तपोविघ्नं चक्रुः सर्वा अनिंदिताः ॥ ततः क्रुद्धो महातेजा व्याजहार वचो महत् ॥ या मे दृष्टिप
थं गच्छेत्सा गर्भं धारयिष्यति ॥ ताः सर्वाः शापसंविग्ना न तं देशं प्रचक्रमुः ॥ तृणबिंदोस्तु
राजर्षेः कन्या तन्नाशृणोद्वचः ॥ विचचार मुनेरग्रे निर्भया तं प्रपश्यति ॥ बभूव पांडुरत
न्वंगी निजितांतःशरीरगा ॥ दृष्ट्वा सा देहवैवर्ण्यं भीता पितरमन्वगात् ॥ तृणबिंदुस्तु तां दृष्ट्वा
राजर्षिरमितद्युतिः ॥ ध्यात्वा मुनिकृतं सर्वं विवेदित्वा नैव तत्तदा ॥ तां कन्यां मुनिवर्याय पु
लस्त्याय ददौ पिता ॥ तां प्रगृह्याब्रवीत्कन्यां वाङ्मिलेश्वस द्विजः ॥ शुश्रूषणपरां दृष्ट्वा मुनिः
प्रीतोऽब्रवीद्वचः ॥ दास्यामि पुत्रमव्येकं मम योग्यं वंशवर्धनं ॥ ततो लेभे सुतं कन्या पुलस्त्या
ल्लोकविश्रुतं ॥ विश्रवा इति विख्यातः सोऽतस्पात्ब्रह्मवित्मुनिः ॥ तस्य प्रीत्या ददौ कन्यां भा
रद्वाजो महामुनिः ॥ भार्यार्थं स्वां दुहितरं देवी विश्रवसे मुदा ॥ तस्यां तु पुत्रः संजज्ञे पौलस्
त्यो लोकसंमतं ॥ पितृतुल्यो वैश्रवणो ब्रह्मणा चानुमोदितः ॥ इंद्रोऽतपसा तुष्टो ब्रह्मा लो
केश्वरं शुभं ॥ मनोभिलषितं तस्य पातालमलंकृते ॥ ततो लब्धवरः सोऽपि पितरं द्रष्टुमा
गतः ॥ पुष्पकेन धनाध्यक्षो ब्रह्मदत्तेन भास्वता ॥ नमस्कृत्वाथ पितरं निवेद्य तपसः फ
लं ॥ प्राह मे भगवान्ब्रह्मा दत्वा वरमनिंदितं ॥ निवासाय न मे स्थानं दत्तवान्वरमेश्वरः
ब्रूहि मे नियतं स्थानं हिंसा यत्र न कस्यचित् ॥ विश्रवा अपि तं प्राह लंका नाम पुरी शुभा
राक्षसानां निवासाय निर्मिता विश्वकर्मणा ॥ त्यक्त्वा विष्णुभयाद्दैत्या विविशुस्ते रसातलं
सा पुरी दुष्प्रधर्षान्यैर्मध्ये सागरसंस्थिता ॥ तत्र वासाय गच्छ त्वं नान्यैः साधिष्ठिता पुरी
पित्रादिष्टस्तु सो गत्वा तां पुरीं धनदो वसत् ॥ स तत्र सुचिरं कालमुवास पितृसंमतः ॥ क
दाचित्स्वयकालस्य सुमाली नाम राक्षसः ॥ रसातलान्मर्त्यलोकं चचार विपिनानानेः
गृहीत्वा तनयां कन्यां साक्षाद्देवीमिव श्रियं ॥ अपश्यद्धनदं देवं चरंतं पुष्पकेन सः ॥ हि
ताय चिंतयामास राक्षसानां महात्मनः ॥ उवाच तनयां तत्र कैकसीं नाम राक्षसीं ॥ वत्से वि
वाहकालस्ते यौवनं चातिवर्तते ॥ प्रत्याख्यानाच्च भीतैस्त्वं न वरैर्गृह्यसे शुभे ॥ सा त्वं वर
य भद्रं ते मुनिं ब्रह्मकुलोद्भवं ॥ इयमेव ततः पुत्राः भविष्यंति महाबलाः ॥ ईदृशाः सर्वशो
भाढ्या धनदेन समाः शुभे ॥ तथेति सा आश्रमं गत्वा मुनेरग्रे व्यवस्थिता ॥ विलिखंती भुवम

ग्रेण पादेनाधोमुखी स्थिता ॥ तामवदन्मुनिः का त्वं कन्या पितृवर्णिनी ॥ सा ब्रवी
न्मां नत्वेत्थं ध्यानेन ज्ञातुमर्हसि ॥ ततो ध्यात्वा मुनिः सर्वं ज्ञात्वा तामप्रभाषत ॥ ज्ञातं
तवाभिलषितं मत्तः पुत्रानभीप्ससि ॥ दारुणायां तु वेलायामागतासि सुमध्यमे ॥ अतस्
ते दारुणौ पुत्रौ राक्षसौ संभविष्यतः ॥ साब्रवीन्मुनिशार्दूल त्वत्तोऽप्येवंविधौ सुतौ ॥ अत
ह्यं पश्चिमो यस्ते भविष्यति महामतिः ॥ महाभागवतः श्रीमान्रामभक्तोऽकल्मषः ॥ तामा
त्मा सा तथा काले सुषुवे दशकंधरं ॥ रावणं विंशतिभुजं दशशीर्षं सुदारुणं ॥ तदनु
तस्मात्रेलवचान्तव वहुपरा ॥ बभूवनाखदेर्तृविनिर्मित्राण्यानि तान्यपि ॥ तदनुजो
नाम महापर्वतसन्निभः ॥ ततः शूर्पणखा नाम जाता रावणसोदरी ॥ ततो विभीषणो जातः
शांतात्मा सोऽप्यदर्शनः ॥ स्वाध्यायी नियताहारो नित्यकर्मपरायणः ॥ कुंभकर्णस्त्वदुष्ट
त्मा द्विजान्से नृषवेनमः ॥ भक्षयन्नपि संध्यासु विचचारातिदारुणः ॥ रावणोऽपि महासत्वा
शोकात्तं भयदायकः ॥ वरयेलोकनाथस्य मवोदेहिनामिव ॥ रामस्त्वं सकलांतरस्थमः
मितो जानासि विज्ञानदृश्लालीसर्वहृद्विस्थितो ह्यपरोऽनित्यो हितोऽतिधीमतः ॥ त्वं श्रीरामस्त्व
जातिः स्वमहिमामाया गुणैर्नीयते सौ लार्थपदितो हितौ भवता ॥ मिर शक्ते ॥ मा
ताभिकेवलसन्मतमचिन्त्यशक्तिर्चिन्मात्रमक्षरममतिहितात्मतत्त्वं ॥ नत्वा निरूपम
नग्रहमोक्षदोषं भवदनुग्रहतस्तरामि ॥ एवं वरं तिमन्तु वेदपवित्रकीर्तिं कुंभोद्भवः स्तुव
तिः प्रहृतन्तभावं ॥ यायात्मिते सकलामेतदनन्यहंत्वा मत्कीर्तनेन भवति पापहरं विवोधः
६६ ॥ इति श्री म॰ अध्यात्म॰ माह॰ उ॰ कांडे प्रथमोऽध्यायः ॥ ॥ १ ॥
॥ श्रीमहादेव उवाच ॥
अथ विश्रवसो देवस्तत्र कालेन केनचित् ॥ आययौ पुष्पकारूढो पितरं द्रष्टुमोजसा ॥ दृष्ट्वा
तं कैकसी तत्र भ्राजमानं महौजसं ॥ राक्षसी पुत्रसामीप्यं गत्वा रावणमब्रवीत् ॥ पुत्र पश्य
धनाध्यक्षं तेजसेन तेजसा ॥ त्वमप्येवं यथा भूयस्तथा यत्नं कुरु प्रभो ॥ तच्छ्रुत्वा रावणो
रोषात्प्रतिज्ञामकरोद्ध्रुवं ॥ धनदेन समो वापि ह्यधिको वा विशेषतः ॥ भविष्यामि पुनातव
तेनाथ गमन्तवते ॥ स्तुत्वा दुःकरं कर्तुं तपः सद्याकंधरः ॥ आगम्य फलसिद्ध्यर्थं गोकर्णाश्रम
वने ॥ सत्वां विप्रमवाप्याय भ्रातरस्तेन तेपिरे ॥ आस्थिता दुःकरं घोरं सर्वलोकैक
वने ॥ दशवर्षसहस्राणि कुंभकर्णो करोत्तपः ॥ विभीषणोऽपि धर्मात्मा सत्यधर्मपरायणः ॥ पं
चवर्षसहस्राणि पादेनैकेन तस्थिवान् ॥ दिव्यं वर्षसहस्रं तु निराहारो दशाननः ॥ पूर्णे वर्ष
सहस्रे तु शिरोऽग्नौ जुहाव सः ॥ एवं वर्षसहस्राणि नव तस्याति चक्रमुः ॥ अथ वर्षसहस्रे तु दश
मे दशमे शिरः ॥ छेत्तुकाम स्यधर्मात्मा प्रादुरासीत्प्रजापतिः ॥ वत्स वत्स दशग्रीव प्रीतोऽस्मीत्य
ब्रवीत्ततः ॥ वरं वरय यद्युक्तं मनसि कोहिते ॥ दशग्रीवोऽपि तच्छ्रुत्वा प्रहृष्टो नातरात्मना
अमरत्वं वृणोमीश वरदो मे भवान्यदि ॥ सुपर्णनागयक्षाणां दैवतानां च तथासुरैः ॥ अवध्यत्वं तु
मे देहि तृणभूता हि मानुषाः ॥ तथास्त्विति प्रजाध्यक्षः पुनराह दशाननं ॥ अस्तोऽन्यानि शी
र्षाणि यानि नष्टानि पुत्रक ॥ भविष्यंति यथापूर्वमक्षयाणि च संततम ॥ एवमुक्त्वा ततो रामदशा
ग्रीवं प्रजापतिः ॥ विभीषणमुवाचेदं प्रसन्नो भक्तवत्सलः ॥ विभीषण त्वया वत्स कृतो धर्मार्थमु
त्तमं ॥ तपस्ततो वरं वत्स वृणीष्वाभिहितं हितं ॥ विभीषणोऽपि तं नत्वा प्रांजलिर्वाक्यमब्रवी
त् ॥ देव मे सर्वदा बुद्धिर्धर्मे तिष्ठतु शाश्वती ॥ मा रोचयतु अधर्मे बुद्धिः सर्वत्र सर्वदा ॥ ततः
प्रजापतिः प्रीतो विभीषणमथाब्रवीत् ॥ वत्स त्वं धर्मशीलोऽसि तथैव च भविष्यसि ॥ अया
चितो पि ते राम्यं ह्यमरत्वं विभीषण ॥ कुंभकर्णमथोवाच वरं वरय सुव्रत ॥ वाणी व्यामोहय
ते प्राह कुंभकर्णः पितामहं ॥ स्वप्स्यामि देव षण्मासान्दिनमेकं तु भोजनं ॥ एवमस्त्विति तं ब्रह्मा
दशग्रीवादयो मे सरस्वती च गता ॥ त्रिर्गता प्रययौ दिवं ॥ कुंभकर्णस्तु दुष्टात्मा चिंत
यामास दुःखितः ॥ अनभिप्रेतमेवास्यात्किं निर्गतमहो विधिः ॥ सुमाली वरलब्धांस्तान्ज्ञात्वा

भ॰रा
४८

पोऽग्निप्राचरान् ॥ पातालात्तिर्यग्नामाप्रापत्स्वदलादिभिरन्वितः ॥ सुग्रीवं प्रति दूतस्य वचने
वैदेममब्रवीत् ॥ दिव्यानेकशस्त्रसंहारावाप्तिर्मे मनोरथः ॥ यद्वा पातालवैरीणां लंकायां पातालस
तले ॥ नूनं ते लोमहावाहो मद्विज्ञप्तिं नयं ॥ अस्माभिः पूर्वमुक्ता ताते कैर्यथने देन ते
भ्राता ज्ञाता मिदानीं त्वं प्रत्यानीतुं मिहार्हसि ॥ सम्याज्ञाता वचनेनाभिप्रायं तं वं ॥ कृतः स्मृ
त ॥ इत्युक्तो रावणः प्राह नाहं सोढुं प्रभाषितं ॥ विद्वेषो गुरुरस्माकमेवं स्वानानमब्रवीत् ॥
प्रहस्तः प्रश्रितं वाक्यं रावणं रत्नकंधरं ॥ स्मरणेनापि हि सोऽभ्रातृत्वमेव दतः प्रभो ॥ कस्यापि
पप्रस्तुनादेवायासं सा सुमहावलाः ॥ परस्परं मपृष्ट्वं नन्वक्रमो दूरमायुधैः ॥ नैवेदानीं नरेश
जे देवलोकाभिनन्दिते ॥ प्रहस्तस्य वचः श्रुत्वा रत्नश्रवोज्ञतात्मनः ॥ जघेनिकोप नाम्नाद्य
त्रिकूटाचलमन्वगात् ॥ दुर्लप्रहस्तं संभेद्य निष्कास्य पनदेश्वरं ॥ लंकानाक्रम्य सचिवैरा
नमेस्थवमाश्रितः ॥ धनदः पितृवाक्येन तत्क्का लंकां महायशाः ॥ गत्वा केतां शापिरिक्तं त
वसातेघयत्पुर्वं ॥ तेनसत्व मनुप्राप्य ते नैवयागं वंदितः ॥ स्वसुका नगरीं तत्र निर्ममे वि
श्वकर्मणा ॥ दिव्यालंतत्व कारात्र पितवेन परिपालितः ॥ रावणो नेतसैः सार्धम भिषिक्तः
महानुजैः ॥ राज्यं लंकारामत्र रावणो चिरमों बांधव नवलः ॥ भगिनीं कालतुल्यां परदेशाद्विकट
रूपिणीं ॥ विद्युज्जिह्वाय नामा सोमसंज्ञा प्रादान्निशाचरः ॥ ततोऽमयाविश्वकर्मा राजस्थानो दिति
सुतः ॥ सुतां मंदोदरीं नाम्ना ददौ दशाननाय सुंदरीं ॥ रावणत्वाय पुत्रः पालितमेमो यो श्रीति मानसः
वैरोचनस्य दौहित्रीं वृत्रज्वालेति विश्रुतां ॥ स्वयं दत्वा सुतात्वाद कुंभकर्णाय रावणः ॥ गो
पर्वतात्मस्य सुतां गालवस्य महात्मनः ॥ विभीषणस्य भार्यार्थं धर्मज्ञां समदापयत् ॥ सरमा
नाम सुभगां सर्वलक्षणसंयुतां ॥ ततो मंदोदरी पुत्रं मेघनादमजीजनत् ॥ जातमात्रस्तु यो
नादं मेघवन्मुमोच ह ॥ ततः सर्वे तु तं मेघनादेति विनिनाम हत ॥ कुंभकर्णस्तु नमाद
निद्रामावाधते प्रभो ॥ तत्र सुतारयामास ब्रह्मादीनां च विस्तरं ॥ ततस्तु व्यापसदात्मा कुंभ
कर्णो निवृत्तितः ॥ निद्रितं कुंभकर्णं तु रावणो लोकरावणः ॥ ग्रामलानृषिमुख्यांश्च देव
दानव किन्नरान् ॥ देवां स्त्रियो मनुष्यांश्च निजघ्ने स महोरगान् ॥ धनदो पितृतः श्रुत्वा रावण
स्याक्रमं प्रभुः ॥ स्वधर्म माकुरुध्वेति दूतं वाचे न्यवारयत् ॥ ततः क्रुद्धो दशग्रीवो नगामधं
नदालयं ॥ विनिर्जित्य धनाध्यक्षं महारोषसमद्भुतकं ॥ ततो यम सवरुणं निर्जित्य समरे स्वयं
स्वर्गलोकमगात्तत्र देवराजं निजग्राह सः ॥ ततो भवन्महायुद्धं जित्वा त्रिदशपुंगवान् ॥ इंद्रेण
सहनिर्जरैः ॥ ततो रावणमभ्येत्य ववंध त्रिदशेश्वरः ॥ तच्छ्रुत्वा सहसागत्य मेघनादः प्रतापवा
न् ॥ हत्वा घोरं महद्युद्धं जित्वा त्रिदशपुंगवान् ॥ इंद्रं गृहीत्वा बद्ध्वा सो मेघनादो महाबलः ॥ मो
चयित्वा तु पितरं गृहीत्वेंद्रं ययौ पुरं ॥ ब्रह्मा तं मोचयामास देवेंद्रं मेघनादतः ॥ दत्वा वरान्बहूंस्त
स्मै ब्रह्मा स्वभवनं ययौ ॥ रावणो विजयी लोकान्सर्वान्जित्वा क्रमेण तु ॥ दत्वा वरान्बहूंस्तु
ऋभिः परिशोभने ॥ तत्र नंदीश्वरेणैव शप्तो यो रावणस्तु ॥ कैलासोत्तोलया मा सत्वा
पन ॥ शापो मामनत्रयायं यद्वानरैश्च पर्वते ॥ वानरैर्मानुषैश्चैव नाशं गच्छेति को
ततो वालिनमासाद्य जित्वा मूर्धानि युगलं ॥ तेन बद्धो दशग्रीवः पुलस्त्येन विमोचितः ॥
त्वा तवलः समुद्रान् रावणं हरिः ॥ विसर्जयामास ततस्तं सख्यं चकार सः ॥ आमपि
प्रीतपर्वतलोकान्महाबलः ॥ एवं रावणवृत्तांत मनुजज्ञे स्वयमेव तत् ॥ राघवः परमः
वः सर्वं दर्शितं ॥ तथापि निहतः संख्ये रावणो लोकरावणः ॥ एवं प्रभावो रामेण दशग्री
व महात्मना ॥ कुंभकर्णश्च निहतस्तथा पर्वतसन्निभः ॥ मेघनादश्च निहतो लक्ष्मणेन
हरिभिः ॥ त्वमत्त्वरूपमिदं सर्वं जगत्स्थावरजंगमं ॥ त्वत्तो भिन्नमतो नान्यद् जगतामादि
मह ॥ प्रणितेत्तु ते नानावालासद्दरसूनम ॥ वाहुभ्यां लोकपालानां ब्रह्मा लोकपिता
रो ॥ दिशाश्चविदिशश्चैव कर्णौ व्योमसमुपस्थितः ॥ आनन्त्याणसमुत्पन्न बहु भास्क
नेवाना भवन्मिना हृदयोदारयोऽभवत् ॥ देवसत्तमो
जाति ॥ हस्ता

म्याविंद्वरहणो वालविज्ञयैनस ॥ मेरुप्रमेतत्राश्रुसैन्यो हुश्यतु नोदनः ॥ भूमि
भ्यः पर्वताजाताः वोलो भ्योमेष संनितिः ॥ वसोमेभ्यो नानेभ्यस्तु वसाद्वः ॥ नेवि
भ्रमवः पुरुषोमायाधाक्रिसमन्वितः ॥ नानारूपधराश्चापि शुराश्चापि वरे सति ॥ त्वाभि
भ्रिमे वजीव स्ते सर्वे स्थावरजंगमाः ॥ त्वं प्रभुः सर्वलोकस्य त्वयाप्रोतमिदं जगत् ॥ हीरमघेन
ने सर्पिर्यथा व्याप्यतिलेषु च ॥ त्वं ज्ञानमात्मनेके त्वं ॥ सर्वगं नित्य
मेकं त्वां ज्ञात्वा बुधा विमोक्षयेत् ॥ त्वमादित्यैव च बुधा पितरं ॥ त्वयाप्रभि
दं सर्वं विश्वं स्थावरजंगमं ॥ नाज्ञानवशस्तत्त्व भास्करं यथा ॥ योगिनस्त्वावि
चिन्वंति निश्चदेहे परमेश्वरं ॥ ध्यानं निरासनं मुक्तेः सर्वगं ॥ त्वत्पादभक्तिमे
न गृहीत्वा यदि योगिनः ॥ विचिन्वंति हृदयं चिन्मात्रं त्वां न वा न्यथा ॥ प्रथा प्र
ल पतित किंचित्सर्व नवानतः ॥ देव भारहं ॥ हिरिंद्रकाल
परिहीन ममन्यसेक चिन्मात्रं मनतं ममे ॥ सर्वस्त्वमीश्वर सन्नेन गुणाव
नसंसोऽहं भजे रघुपतिं भजतां मयि ॥ ७७ ॥ इतिश्रीमदध्यात्मरामायणे उमामहेश्वरसंवादे उत्तरकांडे द्वितीयोऽध्यायः ॥ २ ॥ ॥
॥ श्रीराम उवाच ॥
वालिसुग्रीवयोर्जन्म श्रोतुमिच्छामि तत्त्वतः ॥ रवेरिंद्राद्वानराकारौ जातौ इति नः श्रुतं ॥
अगस्त्य उवाच ॥ मेरोः स्वर्णमयस्याग्रे मध्यशृंगे मणिप्रभे ॥ तस्मिन्सभास्ति विस्तीर्णा
ब्रह्मणः शतयोजना ॥ तस्यां चतुर्मुखः साक्षात्कदाचिद्योगमास्थितः ॥ नेत्राभ्यां पति
तं दिव्यमानंदसलिलं बहु ॥ तद्गृहीत्वा करे ब्रह्मा ध्यात्वा किंचित्तदत्यजत् ॥ भूमौ पति
तमात्रेण तस्माज्जातो महाकपिः ॥ तमाह द्रुहिणो वत्स किंचित्कालं वसात्र मे ॥ सामीप्ये
सर्वशोभाढ्ये ततः श्रेयो भविष्यति ॥ इत्युक्तो निवसंस्तत्र ब्रह्मणा वानरोत्तमः ॥ एवं बहुति
थे काले गते ब्रह्माधिपः सुधीः ॥ कदाचित्स्वर्णशृंगेषु फलमूलार्थमुद्यतः ॥ अपश्यद्दि
व्यसलिलां वापीं मणिशिलाचितां ॥ पानीयं पातुमागत्य तत्र छायामयं कपिः ॥ दृष्ट्वा
प्रतिकपिं मत्वा निपपात जलांतरे ॥ तत्रादृष्ट्वा हरिं शीघ्रमुत्पत्य पुनरागतः ॥ अपश्य
न्ने ददर्श नारीमात्मानं विस्मयोगतः ॥ ततः सुरेशो देवेशः ॥ गच्छन्म
ध्याह्नसमये दृष्ट्वा नारीं मनोरमां ॥ कंदर्पवाणविद्धांगस्तस्यां वीर्यमुत्सृजत् ॥ नामप्रा
प्तानुः स्वर्णमालां दिवं गतः ॥ भानुरप्यागमत्तत्र तदा तामेव भामिनीं ॥ दृष्ट्वा कामवशो भू
त्वा ग्रीवादेशे समुत्सृजत् ॥ वीजं तस्यास्ततः सद्यो महाकायो भवद्धरिः ॥ तस्य दत्वा स्वमंशं
महावीर्यो गतो हरिः ॥ उवाच वचनं मा गत्वा सा निशिता वा निलं ॥ प्रभाते पुनरागत्य
ते दृष्ट्वा वानरं हरिं ॥ कृतस्नानादिभिः सार्धं शक्राभ्यां सहितः कपिः ॥ नत्वा ब्रह्मणः
पुरः स्थित ब्रह्माधिपः सुधीः ॥ ततो ब्रवीत्समाश्वास्य बहुशः कपिकुंजरं ॥ तत्रैकं देवतादूतं
आहूयामरसन्निभं ॥ गच्छ त्वं मया दिष्टो गृहीत्वा वानरोत्तमं ॥ किष्किंधां दिव्यनगरीं नि
र्मितां विश्वकर्मणा ॥ सर्वसौभाग्यसंयुक्तां देवैरपि दुरासदां ॥ तस्यां सिंहासने विराजमा
नमभिषेचय ॥ सप्तद्वीपगता ये ये वानराः संति दुर्जयाः ॥ ते सर्वे तत्र राजस्य भविष्यंति व
शानुगाः ॥ यदा नारायणः साक्षाद्रामो भूत्वा सनातनः ॥ भूभारहरणार्थाय संभविष्यति
भूतले ॥ तदा सर्वे सहायार्थं तस्य गच्छंतु वानराः ॥ इत्युक्तो ब्रह्मणा दूतो देवानां समगा
न् ॥ तदा हित्वा नगरीं सा किष्किंधा भव्यरूपा या ॥ सर्वैश्वर्यसमेता श्रीरता नीलमणि
तः ॥ भ मे भो गोहृता तत्स्नुया लीलान्वेहिना ॥ सर्वभूतानां रम्या स्वनित्यसुखविराज
नः ॥ अवेशानेरूपस्वाभिषेचनं स्ववनाक्रमः ॥ क्रियते सर्वतो नैव हि गीतामानुषरूपिताः ॥
यदा स्तेऽसर्वलोकानां पापहंत्ये स्तुतायच ॥ यद्दक्षीर्णे येन्न श्रीवालिसुग्रीवयोर्महत् ॥ ७८

अ॰रा॰
५०

जन्मन्वदाग्रयत्वाच्च मृत्युतेमर्द्दमानकेः ॥ अथाहं संप्रवक्ष्यामि कृष्णांशमत्त्वदाख्यां ॥ सी
ताहृता यदर्थं सा रावणेन दुरात्मना ॥ पुरा कृतयुगे राम प्रजापतिसुतं विभुं ॥ सनत्कुमा
रमेकांते समासीनं दशाननः ॥ विनयावनतो भूत्वा ह्यभिवाद्येदमब्रवीत् ॥ कोन्यस्मिन्
वरो लोके देवानां बलवत्तरः ॥ देवा यमाश्रित्य युद्धे शत्रून् जयंति हि ॥ कं यजंति हि
जा नित्यं किं ध्यायंति च योगिनः ॥ एतन्मे शंस भगवन्प्रभो ब्रूहि वदां वर ॥ कर्ता यो जगतो
नित्यं ज्ञात्वा तं न स्थ हरिः स्थितः ॥ रावणस्य वचः श्रुत्वा तं दशग्रीव हृदयोपि दृक् ॥ दशाननममुवा
चेदं शृणु वत्स्यामि पुत्रक ॥ कर्ता यो जगतां नित्यं यस्य जन्मादिकं न हि ॥ सुरासुरैर्नुतो
नित्यं हरिर्नारायणोव्ययः ॥ यन्नाभिपंकजाज्जातो ब्रह्मा लोकपितामहः ॥ सृष्टं येनैव सं
चालेजगत्स्थावरजंगमं ॥ तं समाश्रित्य विबुधा जयंति समरे रिपून् ॥ योगिनो ध्यान
योगेन तमेवानुजपंति हि ॥ महर्षेर्वचनं श्रुत्वा प्रत्युवाच दशाननः ॥ दैत्यदानवरक्षांसि
विष्णुना निहितानि च ॥ का वा गतिं प्रपद्यंते प्रेत्य ते मुनिपुंगव ॥ तमुवाच मुनिश्रेष्ठो रा
वणं राक्षसाधिपं ॥ देवतानिहिता नित्यं गच्छंति स्वर्गमुत्तमं ॥ विष्णुना ये हतास्ते तु प्राप्नुवंति
हरेर्गतिं ॥ भोगं स्वर्गे ततस्तस्माद्भ्रष्टा भूमौ भवंति ते ॥ स्वर्जितैः पुण्यपापैश्च ये लोके
वंति च ॥ विष्णुना ये हताः क्रुद्धेनारावणोऽहं मानसः ॥ योन्ये ह हरिणा सर्वमिति चिंतयते
भवान् ॥ मनः स्थिरं परिज्ञात्वा रावणस्य महामतिः ॥ उवाच वत्स ते भीष्टं भविष्यति न संश
यः ॥ किंचित्कालं प्रतीक्षस्व सुखी भव दशानन ॥ एवमुक्त्वा महाबाहो मुनिः पुनरुवाच
तं ॥ तस्य स्वरूपं वक्ष्यामि ह्यनुरूपस्य मायिनः ॥ स्थावरेषु च सर्वेषु नदीषु च वनेषु च
मेवाम्बुषु वसत्यसः सावित्री पृथिवी वसः ॥ समस्तजगदाधारः शेषरूपधरो हि सः ॥ सर्वे
देवाः समुद्राश्च कालः सूर्यश्च चंद्रमाः ॥ सूर्योदयो दिवारात्रिर्यमश्चैव तथानलः ॥ अग्नि
रिंद्रस्तथा मृत्युः पर्जन्यो वरुणस्तथा ॥ अप्सरो दानवा यक्षा ये चान्ये देवदानवाः ॥ विद्यो
तंति ज्वलंत्येव यथा लिख्यातीति विष्णुना ॥ क्रीडते कोन्यथा ह्यात्मा सोयं विष्णुः सनात
नः ॥ तेन सर्वमिदं व्याप्तं त्रैलोक्यं सचराचरं ॥ नीलोत्पलदलश्यामो विद्युद्वर्णाम्बरावृ
तः ॥ शुद्धजांबूनदप्रख्यः श्रियं वामांगसंस्थितां ॥ सदानपायिनी देवी यस्य वक्षसि तिष्ठ
ति हि ॥ द्रष्टुं न शक्यते कैश्चिद्देवदानवपन्नगैः ॥ यस्य प्रसादं कुरुते स चैनं द्रष्टुमर्हति
न यज्ञैर्न तपोभिर्वा न दानाध्ययनादिभिः ॥ यस्य प्रसादं कुरुते भगवान्द्रष्टुमुपा
येरितरैरपि ॥ न द्रष्टुमर्हतः प्राणी तच्चित्ते वीतकल्मषैः ॥ यावत्ते भगवान्विष्णुर्दे
वामनसा विभिः ॥ यथा तद्दृष्टुमिच्छेतिपुत्तेध्येय परमेश्वरं ॥ नेत्राम्बुवि सदैव यो भविताम्
पवित्रहः ॥ हितार्थं देवमर्त्यानामिक्ष्वाकूणां कुले हरिः ॥ रामो दाशरथिर्भूत्वा महासत्व
पराक्रमः ॥ पितुर्नियोगात्सभ्रात्रा भार्यया दंडके वने ॥ विचरिष्यति धर्मात्मा जगत्ता
नाम्बुनायथा ॥ एवं चेत्सर्वमाख्यातं मया रावण विस्तरात् ॥ भजस्व भक्तिभावेन सदा
रामं श्रियान्वितं ॥ एवं श्रुत्वा सुरारातिर्ध्यात्वा किंचिद्विचार्य च ॥ त्वया सह विरोधेच्छु
र्मुमुदे रावणो महान् ॥ पृथ्व्यां सर्वतो लोकान्पर्यटन्समवस्थितः ॥ एतदर्थं महाराज रा
वणो नीतवान् बुद्धिमान् ॥ इत्यादि जानकी देवी तयात्मवधकांक्षया ॥ इमं कथायः पठेत्
यात्पठेद्वा संध्यावेद्यूपवल्लगर्थमेव ॥ आयुष्यमारोग्यमनंतमेव प्राप्नोति लाभं
धनमक्षयं च ॥ ५२ ॥ इति श्रीमदध्यात्मरामायणे उत्तरकाण्डे तृतीयोध्यायः ॥ ३ ॥
॥ श्रीमहादेव उवाच ॥
एकदा ब्रह्मणो लोकादागतो नारदो मुनिः ॥ पर्यटन्रावणो लोकान्दृष्ट्वा नत्वाब्रवीद्वचः ॥ भगव
वन्नत्र हि मे योद्धुं ब्रूहि संति महाबलाः ॥ योद्धुमिच्छामि बलिभिस्त्वं ज्ञातासि जगत्त्रये ॥ मुनिः
ध्यात्वा सुचिरं प्रोवाच नारदो मुनिः ॥ महाबला महाकाया श्वेतद्वीपे महामते ॥ विष्णुं
नारायणेन विष्णुना निहता ये ॥ तत्र तत्र समरे सुरासुरैः ॥ श्रुत्वा तद्रावणो

वैमानमत्विभिः पुष्पकेन तत ॥ योद्धुकामः समागत्य श्वेतद्वीपसमन्वितः ॥ तत्र माह
तने तस्के पुष्पकं नावनतनमः ॥ तत्का विमाने प्रययौ श्वेतद्वीपं दशाननः ॥ प्रविष्टमात्रे
वनहोपि हतो हस्तेन कोधितः ॥ हृष्टो वक्रतः को मे प्रेषितः केन वा वद ॥ इत्युक्तो स्त्रीज
या स्त्रीभिर्हसंतीभिः पुनः पुनः ॥ कृपया हस्ताद्धि निर्मुक्तः सलामो स्त्रीणां दशाननः ॥ या
सुवर्णमतले सभे चिंतयामास दुर्मतिः ॥ विष्णुना निहतो याभि वैकुंठ इति निश्चयः ॥ स
मे विरुत्वं यथा कृष्णेन सह कार्यं करोम्यहं ॥ इति निश्चित्य वैदेही महारविपिने सुरः ॥ आ
नचैव परमात्मानं महाराजवनीकृता ॥ मारवत्पालया मासतनः कोदेवदं मुनिं ॥ राम
न्मितः ॥ भक्तानामनुवर्तनाय सकलो कुर्वन्क्रियां संस्तुतः ॥ यः पृष्टवन्मनुजाकृतिर्वि
निवद्यो भोमी सलोकार्चितः ॥ कृतार्थं वशान्नेव हृजितः कंपसंभवः ॥ त्वामम्प्रमेतुनि
भिः सार्धं प्रयतो हृष्टमानसाः ॥ रामस्तु सीतया सार्धं भ्रातृभिः सह मंत्रिभिः ॥ समा
देवरमानाघोरम्यमानो वसन्तरे ॥ भवनास्कोपि विवधान्नुभुजे प्रियया सह ॥ हरे
मत्स्यम्भृवैः सद्भिर्वानरैः परिवेष्टितः ॥ पुष्पके नागमश्वाम्प्रेकपर्वतमास्थितः ॥ प्राहहे
वजवेरेण प्रेषितेन्नामिः शान्ततः ॥ जितस्तेन रावणो नारी पश्चाद्रमेण निर्जितः ॥ प्राहरेद
वनित्यं वहून्यावत्स्म्भृवि ॥ यावत्केतु श्रेणीवकुंठपादि नत्वानतः ॥ तत्कृत्वानरावः
प्राह पुष्पकं सर्वसन्निभं ॥ यदा स्मरामि मद्दत्तेन दा गाढम मोतिके ॥ तिष्ठतनहारिसर्वयोग
यान्याभ्यं चकारसः ॥ राघवेणामतिर्भुवे लोकनाथेरमापतौ ॥ वसुधा सस्यसंपन्नाः फ
लवंतश्च भूरुहाः ॥ धनाधर्मवतः सर्वे स्त्रियः पतिपरायणाः ॥ नापश्यत्पुत्रमरणं क
श्चिद्राजनि राघवे ॥ समारुह्य विमानं तं राघवः सह सीतया ॥ वानरैर्भ्रातृभिः सार्धं सद्य
वारचनिंश्रभुः ॥ अमात्युषाणि कार्याणि च कार चकप्रोभुवि ॥ प्राप्तेत्त्येतत् दृष्टाम्नत
वान्त्वकालनः ॥ योर्वतं प्राप्तदेवतां नापिज्ञात्वाराममो महामतिः ॥ तपस्येलेवनं पुत्रं हत्वा
ब्राह्मणबालकं ॥ जीवयामास पुत्रस्य दृष्टे स्वर्गमनुत्तमं ॥ लोकानामुपदेशार्थं परमा
त्मासनातनः ॥ कोटिशः स्थापयामास शिवलिंगानि सर्वतः ॥ सीतावरमयामास स
र्वभोगैरमानुषैः ॥ शशास रामो धर्मेण राज्यं परमधर्मवित् ॥ नाना संस्थाप्य यामास स
र्वलोकमलापहा ॥ दशवर्षसहस्राणि मायामानुषविग्रहः ॥ चकार राज्यं विधिवल्लो
कवंद्यपदाम्बुजः ॥ एकपत्नीव्रतो रामो राजर्षिः सर्वदा शुचिः ॥ गृहमेधीयमखिलमाच
रन्शिक्षयन्जनान् ॥ सीताप्रेम्णानुवृत्त्या च प्रश्रयेणादमेन च ॥ भर्तुर्मनोहरा साध्वी भ
वस्यासीदृशाभिया ॥ एकदा क्रीडविपिने सर्वभोगसमन्विते ॥ एकांते दिव्यभवने ह्य
दासीनं रघूत्तमं ॥ सीता माणिक्यसंकाशं श्यामं मरकतप्रभं ॥ प्रसन्नवदनं शांतं विद्यु
त्पुंजनिभाम्बरं ॥ सीता कमलपत्राक्षी सर्वाभरणभूषिता ॥ राममाह वरारोहा सा साम्म
पतीपदांबुजं ॥ देवदेव जगन्नाथ परमात्मन्सनातन ॥ चिदानंदादिमध्यान्तरहितासेष
राघवाणि ॥ देवदेवः समागम्य मामेकांते भुवं वदः ॥ यत्रैव वसन्ति ते वैकुंठगमनं प्रति
त्वया समं ततो वदाया मस्ति हृदि भूतले ॥ विरहस्यात्मानं स्वयंधाम वैकुंठं वसनं नाने
प्रागमिष्यति वैकुंठं मनाथानः कारिष्यति ॥ इति चिंतापितादनेर्मयाचितापितो भव
न ॥ यद्युक्तं तत् कुरुष्वाद्य नाहमाज्ञापये प्रभो ॥ सीताया वचः श्रुत्वा रामो ध्यात्वा व्र
वीत्स्मितं ॥ देवि जानामि सकलं तत्रोपायं ब्रवीमि ते ॥ कल्पयित्वा मिषं देवि लोकवादं न
दाश्रयो ॥ त्वमाग्निर्वा वने त्यक्ष्ये लोकवादाद्भीत इवापरः ॥ भविष्यतः कुमारौ द्वौ वाल्मीकेराश्र
मांतिके ॥ इदानीं दृश्यते गर्भः पुनरागत्य मेंतिकं ॥ लोकानां प्रत्ययार्थं त्वं कृत्वा शपथमा

दरः ॥ भूमेर्विवरमार्गेण वैकुंठं प्राप्स्यति ध्रुवं ॥ पश्चादहं गमिष्यामि ह्येवमेव सुनिश्चयः ॥
इत्युक्त्वा तां विसृज्याथ रामो ज्ञानैकलक्षणः ॥ मंत्रिभिर्मंत्रतत्त्वज्ञैर्मंत्रयामास संवृतः ॥ त
त्रोपविष्टे श्रीरामे सुहृदः पर्युपासत ॥ हास्यप्रौढकथालापे तासामप्यंततः स्थितः इति ॥ क
थाप्रसंगात्पप्रच्छ रामो विजयनामकं ॥ पौरजानपदा वान्ये किं वदंति शुभाशुभं ॥ सी
तां वा मां भरतं वा मे भ्रातॄन्वा केकयीमथ ॥ न भीतिर्भवता ब्रूहि शापितोसि ममोपरि ॥
इत्युक्तः प्राह विजयो देवाः सर्वे वदंति ते ॥ कृतं सुदुष्करं सर्वं रामेण विदितात्मना ॥ किं
तु हत्वा दशग्रीवं सीतामाहृत्य राघवः ॥ अमर्षं दूरतः कृत्वा स्ववेश्म प्रत्यपादयत् ॥ की
दृशो हृदये तस्य तस्याः संभोगजं सुखं ॥ या हृता विजने रम्ये रावणेन दुरात्मना ॥ अस्मा
कमपि दुष्कर्मयोषितां मर्षणं भवेत् ॥ यादृग्भवति वै राजा तादृश्यो नियताः प्रजाः ॥ श्रुत्वा
तद्वचनं रामः स्वजनान्परिपृष्टवान् ॥ तेपि नत्वाब्रुवन् राममेवमेतन्न संशयः ॥ ततो वि
सृज्य सचिवान्विजयं सुहृदस्तथा ॥ आहूय लक्ष्मणं रामो वचनं चेदमब्रवीत् ॥ लोक
वादस्तु महान्सीतायाः प्रियस्य मे भवेत् ॥ सीतां प्रातः समानीय वाल्मीकेराश्रमां
तिके ॥ त्यक्त्वा शीघ्रं रथेन त्वं पुनरायाहि लक्ष्मण ॥ वदस्यत्र यदि त्वं किंचिदतो मां हत
वानसि ॥ इत्युक्तो लक्ष्मणो भीत्या प्रातस्तथ्यमजानकीं ॥ सुमंत्रेण रथे कृत्वा जगाम
सह सा वनं ॥ वाल्मीकेराश्रमस्थाने त्यक्त्वा सीतामुवाच सः ॥ लोकापवादभीत्या त्वां त्य
क्तवान्राघवो वने ॥ सीता तु दुःखसंतप्ता विललापातिदुःखिता ॥ शिष्यैः श्रुत्वाथ वा
ल्मीकिः सीतां ज्ञात्वा समरिंदमं ॥ अर्घ्यादिभिः पूजयित्वा तैः समाश्वास्य जानकीं
मातामिव विश्वसकलसर्वयत्नान्मुनिस्त्रियः ॥ पालयंति स्म सीतां भक्त्या दिने दिने
ज्ञात्वा परात्मनो भार्यां मुनिनावेदिताः स्त्रियः ॥ रामोपि सीतारहितः परात्मा विज्ञानदृ
क्केवल आदिदेवः ॥ संत्यक्तभोगानखिलान्विरक्तो मुनिव्रतोभून्मुनिसेवितांघ्रिः ॥ ६२ ॥
इति श्रीमदध्यात्मरामायणे उत्तरकांडे चतुर्थोध्यायः ॥ ४ ॥

॥ श्रीमहादेव उवाच ॥

ततो जगन्मंगलमंगलात्मना विधाय रामायणकीर्तिमुत्तमां ॥ चचार पूर्वाचरितं रघू
त्तमो राजर्षिवर्यैरभिसेवितं यथा ॥ सौमित्रिणा पृष्ट उदारबुद्धिना रामः कथाः प्राह पु
रातनीः शुभाः ॥ राज्ञः प्रमत्तस्य नृगस्य शापतो द्विजस्य तिर्यक्त्वमथाह राघवः ॥ कदाचिदे
कांत उपस्थितं प्रभुं रामं रमालालितपादपंकजं ॥ सौमित्रिरासादितशुद्धभावनः प्र
णम्य भक्त्या विनयान्वितोब्रवीत् ॥ त्वं शुद्धबोधोसि हि सर्वदेहिनामात्मास्यधीशोसि नि
राकृतिः स्वयं ॥ प्रतीयसे ज्ञानदृशां महामते पादाब्जभृंगाहितसंगसंगिनां ॥ अहं प्रपन्नो
स्मि पदांबुजं प्रभो भवापवर्गं तव योगिभावितं ॥ यथांजसाज्ञानमपारवारिधिं सुखं
तरिष्यामि तथानुशाधि मां ॥ श्रुत्वाथ सौमित्रिवचोखिलं तदा प्राह प्रपन्नार्तिहरः
प्रसन्नधीः ॥ विज्ञानमज्ञानतमोपशांतये श्रुतिप्रपन्नं क्षितिपालभूषणः ॥ आदौ स्व
वर्णाश्रमवर्णिताः क्रियाः कृत्वा समासादितशुद्धमानसः ॥ समाप्य तत्पूर्वमुपात्त
साधनः समाश्रयेत्सद्गुरुमात्मलब्धये ॥ क्रिया शरीरोद्भवहेतुरादृता प्रियाप्रियौ
तौ भवतः सुरागिणः ॥ धर्मेतरौ तत्र पुनः शरीरकं पुनः क्रिया चक्रवदीर्यते भवः ॥ अ
ज्ञानमेवास्य हि मूलकारणं तद्धानमेवात्र विधौ विधीयते ॥ विद्यैव तन्नाशविधौ प
टीयसी न कर्म तज्जं सविरोधमीरितं ॥ नाज्ञानहानिर्न च रागसंक्षयो भवेत्ततः कर्म स
दोषमुद्भवेत् ॥ ततः पुनः संसृतिरप्यवारिता तस्माद्बुधो ज्ञानविचारवान्भवेत् ॥ न
नु क्रिया वेदमुखेन चोदिता तथैव विद्या पुरुषार्थसाधनं ॥ कर्तव्यता प्राणभृतः प्र
चोदिता विद्यासहायत्वमुपैति सा पुनः ॥ कर्माकृतौ दोषमपि श्रुतिर्जगौ तस्मात्स
दा कार्यमिदं मुमुक्षुणा ॥ ननु स्वतंत्रा ध्रुवकार्यकारिणी विद्या न किंचिन्मनसा

प्यपेक्षते ॥ न सत्यकार्योपि हि यद्वदध्वरः प्रकांक्षतेन्यानपि कारकादिकान् ॥ तथैव
विद्या विधितः प्रकाशितैर्विशिष्यते कर्मभिरेव मुक्तये ॥ केचिद्वदंतीति वितर्कवादिन
स्तदप्यसद्दृष्टविरोधकारणात् ॥ देहाभिमानादभिवर्धते क्रिया विद्या गताहंकृतितः प्रसिध्य
ति ॥ विशुद्धविज्ञानविरोचनांचिता विद्यात्मवृत्तिश्चरमेति भण्यते ॥ उदेति कर्माखिलका
रकादिभिर्निहंति विद्याखिलकारकादिकं ॥ तस्मात्त्यजेत्कार्यमशेषतः सुधीर्विद्याविरो
धान्न समुच्चयो भवेत् ॥ आत्मानुसंधानपरायणः सदा निवृत्तसर्वेंद्रियवृत्तिगोचरः ॥
यावच्छरीरादिषु माययात्मधीस्तावद्विधेयो विधिवादकर्मणां ॥ नेतीति वाक्यैरखिलं निषि
ध्य तज्ज्ञात्वा परात्मानमथ त्यजेत्क्रियाः ॥ यदा परात्मात्मविभेदभेदकं विज्ञानमात्म
न्यवभाति भास्वरं ॥ तदैव माया प्रविलीयतेंजसा सकारका कारणमात्मसंसृतेः ॥ श्रुतिप्रमा
णाभिविनाशिता च सा कथं भविष्यत्यपि कार्यकारिणी ॥ विज्ञानमात्रादमलाद्वितीयतस्त
स्मादविद्या न पुनर्भविष्यति ॥ यदि स्म नष्टा न पुनः प्रसूयते कर्ताहमस्येति मतिः कथं भवे
त् ॥ तस्मात्स्वतंत्रा न किमप्यपेक्षते विद्या विमोक्षाय विभाति केवला ॥ सा तैत्तिरीयश्रुति
राह सादरं न्यासं प्रशस्ताखिलकर्मणां स्फुटं ॥ एतावदित्याह च वाजिनां श्रुतिर्ज्ञानं विमोक्षाय
न कर्म साधनं ॥ विद्यासमत्वेन तु दर्शितस्त्वया क्रतुर्न दृष्टांत उदाहृतः समः ॥ फलैः पृथ
क्त्वाद्बहुकारकैः क्रतुः संसाध्यते ज्ञानमतो विपर्ययं ॥ सप्रत्यवायो ह्यहमित्यनात्मधीर
ज्ञप्रसिद्धा न तु तत्त्वदर्शिनः ॥ तस्माद्बुधैस्त्याज्यमविक्रियात्मभिर्विधानतः कर्म विधिप्र
काशितं ॥ श्रद्धान्वितस्तत्त्वमसीति वाक्यतो गुरोः प्रसादादपि शुद्धमानसः ॥ विज्ञाय चैका
त्म्यमथात्मजीवयोः सुखी भवेन्मेरुरिवाप्रकंपनः ॥ आदौ पदार्थावगतिर्हि कारणं वाक्यार्थ
विज्ञानविधौ विधानतः ॥ तत्त्वंपदार्थौ परमात्मजीवकावसीति चैकात्म्यमथानयोर्भवेत् ॥
प्रत्यक्परोक्षादिविरोधमात्मनोर्विहाय संगृह्य तयोश्चिदात्मतां ॥ संशोधितां लक्षणया च
लक्षितां ज्ञात्वा स्वमात्मानमथाद्वयो भवेत् ॥ एकात्मकत्वाज्जहती न संभवेत्तथाजहल्लक्षण
ता विरोधतः ॥ सोयंपदार्थाविव भागलक्षणा युज्येत तत्त्वंपदयोरदोषतः ॥ रसादिपंचीकृतभू
तसंभवं भोगालयं दुःखसुखादिकर्मणां ॥ शरीरमाद्यंतवदादिकर्मजं मायामयं स्थूलमु
पाधिमात्मनः ॥ सूक्ष्मं मनोबुद्धिदशेंद्रियैर्युतं प्राणैरपंचीकृतभूतसंभवं ॥ भोक्तुः सुखादे
रनुसाधनं भवेच्छरीरमन्यद्विदुरात्मनो बुधाः ॥ अनाद्यनिर्वाच्यमपीह कारणं मायाप्र
धानं तु परं शरीरकं ॥ उपाधिभेदात्तु यतः पृथक्स्थितं स्वात्मानमात्मन्यवधारयेत्क्रमा
त् ॥ कोशेष्वयं तेषु तु तत्तदाकृतिर्विभाति संगात्स्फटिकोपलो यथा ॥ असंगरूपोयम
जो यतोद्वयो विज्ञायतेस्मिन्परितो विचारिते ॥ बुद्धेस्त्रिधा वृत्तिरपीह दृश्यते स्वप्नादिभे
देन गुणत्रयात्मनः ॥ अन्योन्यतोस्मिन्व्यभिचारतो मृषा नित्ये परे ब्रह्मणि केवले शिवे ॥ देहेंद्रि
यप्राणमनश्चिदात्मनां संघादजस्रं परिवर्तते धियः ॥ वृत्तिस्तमोमूलतयाज्ञलक्षणा यावद्भ
वेत्तावदसौ भवोद्भवः ॥ नेतिप्रमाणेन निराकृताखिलो हृदा समास्वादितचिद्घनामृतः ॥ त्यजेद
शेषं जगदात्तसद्रसं पीत्वा यथांभः प्रजहाति तत्फलं ॥ कदाचिदात्मा न मृतो न जायते न क्षीयते
नापि विवर्धतेनवः ॥ निरस्तसर्वातिशयः सुखात्मकः स्वयंप्रभः सर्वगतोयमद्वयः ॥ एवं
विधे ज्ञानमये सुखात्मके कथं भवो दुःखमयः प्रतीयते ॥ अज्ञानतोध्यासवशात्प्रकाशते ज्ञा
ने विलीयेत विरोधतः क्षणात् ॥ यदन्यदन्यत्र विभाव्यते भ्रमादध्यासमित्याहुरमुं विपश्चि
तः ॥ असर्पभूतेहिविभावनं यथा रज्ज्वादिके तद्वदपीश्वरे जगत् ॥ विकल्पमायारहिते चिदा
त्मकेहंकार एष प्रथमः प्रकल्पितः ॥ अध्यास एवात्मनि सर्वकारणे निरामये ब्रह्मणि केव
ले परे ॥ इच्छादिरागादिसुखादिधर्मकाः सदा धियः संसृतिहेतवः परे ॥ यस्मात्प्रसुप्तौ तदभा
वतः परः सुखस्वरूपेण विभाव्यते हि नः ॥ अनादिविद्योद्भवबुद्धिबिंबितो जीवः प्रकाशोय
मितीर्यते चितः ॥ आत्मा धियः साक्षितया पृथक्स्थितो बुद्ध्यापरिच्छिन्नपरः स एव ॥ चिद्बिं

बसात्स्यात्स्वधियांप्रसंगतस्तेकेवलात्मानमज्ञानलोकसोवहन्॥ अन्योन्यमाधारवशात्प्रलीय
तेअज्ञानजंतत्त्वविचिदात्मवेनसो:॥ गुरोःसकाशादपिवेदवाक्यतःसंजातविद्यानुभवोनि
रीक्ष्यतं॥ स्वात्मानमात्मस्थमुपाधिवर्जितंत्यजेदशेषंजडमात्मगोचरं॥ प्रकाशरूपोह
मजोहमद्वयःसकृद्विभातोहमतीवनिर्मलः॥ विशुद्धविज्ञानमयोनिरामयःसंपूर्णआ
नंदमयोहमक्रियः॥ सदैवमुक्तोहमचिंत्यशक्तिमानतींद्रियज्ञानमविक्रियात्मकः॥ अ
नंतपारोहमहर्निशंबुधैर्विभावितोहंहृदिवेदवादिभिः॥ एवंसदात्मानमखंडितात्मनाविचा
रमाणस्यविशुद्धभावना॥ हन्यादविद्यामचिरेणकारकैरसायनंयद्वदुपासितंरु
जः॥ विविक्तआसीनउपारतेंद्रियोविनिर्जितात्माविमलांतराशयः॥ विभावयेदेकमन
न्यसाधनेविज्ञानदृक्केवलमात्मसंस्थितः॥ विश्वंयदेतत्परमात्मदर्शनंविलापयेदात्म
निसर्वकारणे॥ पूर्णश्चिदानंदमयोवतिष्ठतेनवेदबाह्यंनचकिंचिदांतरं॥ पूर्वंसमाधे
रखिलंविचिंतयेदोंकारमात्रंसचराचरंजगत्॥ तदेववाच्यंप्रणवोहिवाचकोविभाव्यते
ज्ञानवशान्नबोधतः॥ अकारसंज्ञःपुरुषोहिविश्वकोह्युकारकस्तैजसईर्यतेक्रमात्॥ प्रा
ज्ञोमकारःपरिपठ्यतेखिलैःसमाधिपूर्वंनतुतत्त्वतोभवेत्॥ विश्वंत्वकारंपुरुषंविलाप
येदुकारमध्येबहुधाव्यवस्थितं॥ ततोमकारेप्रविलाप्यतैजसंद्वितीयवर्णंप्रणवस्यचां
तिमे॥ मकारमप्यात्मनिचिद्घनेपरेविलापयेत्प्राज्ञमपीहकारणं॥ सोहंपरंब्रह्मसदा
विमुक्तिमद्विज्ञानदृङ्मुक्तउपाधितोमलः॥ एवंपरिज्ञातपरात्मभावनःस्वानंदतुष्टः
परिविस्मृताखिलः॥ आस्तेसनित्यात्मसुखप्रकाशितःसाक्षाद्विमुक्तोचलवारिसिंधुव
त्॥ एवंसदाभ्यस्तसमाधियोगिनोनिवृत्तसर्वेंद्रियगोचरस्यहि॥ विनिर्जिताशेषरि
पोरहंसदादृश्योभवेयंजितषड्गुणात्मनः॥ ध्यात्वैवमात्मानमहर्निशंमुनिस्तिष्ठेत्सदामुक्त
समस्तबंधनः॥ प्रारब्धमश्नन्नभिमानवर्जितोमय्येवसाक्षात्प्रविलीयतेततः॥ आदौच
मध्येचतथैवचांततोभवंविदित्वाभयशोककारणं॥ हित्वासमस्तंविधिवादचोदितंभ
जेत्स्वमात्मानमथाखिलात्मनां॥ आत्मन्यभेदेनविभावयन्निदंजगन्न्यभेदेनम
यात्मनःसदा॥ यथाजलंवारिनिधौयथापयःक्षीरेवियद्व्योम्न्यनिलेयथानिलः॥ इ
त्थंयदीदंतुहिलोकसंस्थितोजगत्स्वदेहेत्तिविभावयन्मुनिः॥ मिथ्याजगत्केवलमात्मभाति
मानतोयथैवमेदादिविभ्रमास्पदं॥ यावन्नपश्येदखिलंचिदात्मकंतावन्मदाराधनत
त्परोभवेत्॥ श्रद्धालुरत्यूर्जितभक्तिलक्षणोयस्तस्यदृश्योहमहर्निशंहृदि॥ रहस्यमेतं
श्रुतिसारसंग्रहंमयाविनिश्चित्यतवोदितंप्रिय॥ यस्त्वेतदालोचयतीहबुद्धिमान्स
मुच्यतेपातकराशिभिःक्षणात्॥ भ्रातर्यदीदंपरिदृश्यतेजगन्मायैवसर्वंपरिहृत्य
चेतसा॥ मद्भावनाभावितशुद्धमानसःसुखीभवानंदमयोनिरामयः॥ यःसेवतेमामगु
णंगुणात्परंहृदाकदावायदिवागुणात्मकं॥ सोहंस्वपादांचितरेणुभिःस्पृशन्पुनाति
लोकत्रयमेवयथारविः॥ विज्ञानमेतदखिलंश्रुतिसारमेकंवेदांतवेद्यचरणेनमयैवगीतं॥ यः
श्रद्धयापरिपठेद्गुरुभक्तियुक्तोमय्येवसोमलमनःप्रविलीयतेते॥ ६२॥ इतिश्रीमदध्या
त्मरामायणेउत्तरकांडेश्रीरामगीतानामपंचमोध्यायः॥ ५॥

श्रीमहादेवउवाच

एकदामुनयःसर्वेयमुनातीरवासिनः॥ आजग्मूराघवंद्रष्टुंभयाल्लवणरक्षसः॥ कृत्वाग्र
तुमुनिश्रेष्ठंभार्गवंच्यवनंद्विजाः॥ असंख्याताःसमाजग्मूरामंद्रष्टुंसुकोविदाः॥ तान्पूज
यित्वापरयाभक्त्यारघुकुलोत्तमः॥ उवाचमधुरंवाक्यंहर्षयन्मुनिमंडलं॥ करवाणिमुनि
श्रेष्ठाःकिमागमनकारणं॥ धन्योस्मियद्यहंयूयंमांप्रीत्याद्रष्टुमागताः॥ दुष्करंवापि
कार्यंभवतांनकरोम्यहं॥ आज्ञापयंतुमांभृत्यंब्राह्मणादैवतंहिमे॥ तच्छ्रुत्वासहसाहृष्टः
च्यवनोवाक्यमब्रवीत्॥ मधुनामामहादैत्यःपुराकृतयुगेविभो॥ आसीदतीवधर्मात्मा

देवब्राह्मणपूजकः॥ तस्मैतुष्टोमहादेवोददौशूलमनुत्तमं॥ प्राहचानेनयंहंसिसतुभ
स्मीभविष्यति॥ रावणस्यानुजाभार्यातस्यकुंभीनसीश्रुता॥ तस्यांतस्यलवणोनामरा
क्षसोभीमविक्रमः॥ आसीद्दुरात्मादुर्धर्षोदेवब्राह्मणहिंसकः॥ पीडितास्तेनराजेंद्रवयं
त्वांशरणंगताः॥ तच्छ्रुत्वाराघवोप्याहमाभैष्टमुनिपुंगवाः॥ लवणंनाशयिष्यामिगं
गच्छंतुविगतज्वराः॥ इत्युक्त्वाप्राहरामोपिभ्रातॄन्कोवाहनिष्यति॥ लवणंराक्षसंहत्वा
सुरेभ्योभयंमहत्॥ तच्छ्रुत्वाप्रांजलिःप्राहभरतोराघवायवै॥ अहमेवहनिष्यामिरे
वाजाप्रघम्नाविभो॥ ततोरामंनमस्कृत्यशत्रुघ्नोवाक्यमब्रवीत्॥ अहमेवहनिष्यामिरे
वणेराघवसंयुगे॥ त्वंहितिष्ठमहाबुद्धेभरतोदुःखमन्वभूत्॥ अहमेवगमिष्यामिलव
णस्यवधायच॥ तत्प्रसादाद्रघुश्रेष्ठहन्यांतंराक्षसंयुधि॥ तच्छ्रुत्वाशत्रुघ्नवाक्यं
मुक्तिर्तनःप्राहयेताभिषेक्ष्यामिमधुरराज्यकारणात्॥ आनीयसर्वसंभारांस्तस्मैतो
न्यवीवनेः॥ अनेनतुकिलाराज्यंलोककंटकं॥ सत्वासमेत्यदिव्यंरामःशत्रुघ्न
मब्रवीत्॥ अनेनजहिशूलेनलवणंलोककंटकं॥ हत्वातस्मैपुरंदिव्यंरामःशत्रुघ्नं
भरणायैतजंनतांनानाप्राणिवधायच॥ सत्वायानिमहद्यावद्गेहंगच्छतिकानने
वनेवन्यजनहाविप्रतिप्रवेशनकामुका॥ योन्यतेसन्वयाक्षुद्रःसदावध्योभविष्यति॥ तं
हत्वालवणंक्रूरंतद्वनेमधुसंज्ञिते॥ निवेश्यपुनगरंतत्रतिष्ठत्वंमेनुशासनात्॥ अ
श्वानांपंचसाहस्रंरथानांचतदर्धकं॥ गजानांषट्सहस्राणिपत्तीनामयुतत्रयं॥ आरामि
पंचापातुंमुक्त्वायायततः॥ पुष्पकमूर्ध्नाभिषिच्याथनिवेदयामासराघवः॥ शत्रुघ्नेमुनिभिःसा
र्धमधीराजीभिस्तथा॥ शत्रुघ्नोपितदायुक्तोययावामेनचोदितः॥ हत्वामधुसुतंयुद्धेमधुरा
ख्यांपुरेसमचेमसूरादानमाततः॥ सीतापिलब्धवतीपुत्रौसुकुमारौवाल्मीके
राश्रमेशुभे॥ मुनिस्तयोर्नामचक्रेकुशोज्येष्ठोनुजोलवः॥ क्रमेणविद्यासंपन्नौसीतापुत्रौब
भूवतुः॥ उपनीतौचमुनिनावेदाध्ययनतत्परौ॥ कृत्स्नंरामायणंप्राहकाव्यंबालककौमुनिः॥
संपाठ्यकरोजपुत्रौपार्श्वेस्थुवरकाविमौ॥ वेदोपवृंहणार्थायतावग्राहयतप्रभुः॥ कुमारौ
तौसमानेषुस्वरसंपन्नौगायंतौचेरतुर्वने॥ तत्रतत्रमुनीनां
तौसमानेषुस्वरशपितौ॥ गायंतावतितौदृष्ट्वाविस्मितामुनयोभवन्॥ गंधर्वाविवकिन्नरेषु
मुनिवारेदेवदेवालयेपातालेषुचवाचनम्॥ नरहेलोकेषुसर्वेषुवा॥ अस्माभिश्चिरजीवि
भिश्चिरनरेष्टदृष्टाःसर्वतोनानायास्त्यागीतवाद्यविधानाद्दृष्टिनाश्राविता॥ एवंस्तुव
द्भिःशतितेमुनिभिःप्रतिपाल्यं॥ आसातेसुतमेकोतेवाल्मीकेराश्रमेचिरं॥ अथरामोमु
मेधादीन्क्रतूनबहुदक्षिणान्॥ यज्ञान्नलर्लसाक्षीसीतांविधायविरुद्धंश्रुति॥ तस्मिन्त्रतौ
ऋषयःसर्वेराजर्षयस्तथा॥ ब्राह्मणाःक्षत्रियावैश्याःसमाजग्मुर्विरुमुनिं॥ वाल्मीकिर
विसंगच्छगायंतौलोकुशलवौ॥ जगामयत्रवाटस्थःसमस्तीवेमुनिपुंगवः॥ तत्रैकांतेस्थितेलो
मिशाक्षिसंतेपाइवंतोतिले॥ देहिनःसंसृतेर्वंधःकथमुत्पद्यतेहरः॥ कथंविमुच्यतेदेही
वंदयामितेसर्वसंतेपाहंधमोक्षयोः॥ भगवन्श्रोतु
मिच्छामिसंतेपाद्भ्वतोतिले॥ देहिनःसंसृतेर्बंधःकथमुत्पद्यतेहर॥ कथंविमुच्यतेदेही
वदयामितेसर्वसंतेपाहंधमोक्षयोः॥ वाल्मीकिरुवाच॥ शृणु
वरमंद्वक्ष्येजीवन्मुक्तोभविष्यसि॥ देहएवमहागेहमदेहस्यचिदात्मनः॥ तस्येवा
स्मिन्संताननेवकास्थितः॥ देहोतोहममिमानेस्वंसमारोप्यविहरत्यति॥ तेनवात्मायत्रः
स्वदेहिनमहोषनः॥ विरहतिविदानेदेनत्रास्तिवडुःस्वपं॥ तेनसेकल्पितोदेहीसंकल्प
निगडावृतः॥ पुत्रदारगृहादीनिसंकल्पयतिवानिपां॥ संकल्पयान्स्वयंदेहीपरिशोच
तिसर्वदा॥ अयमन्याहमेदेहास्थधमोममधनाः॥ तमःसत्त्वरजःस्वेजागतःकारणं
क्षिपते॥ तमोगुणादिसंकल्पान्नित्यंनाममसंचयथा॥ अत्यंतनामसोभूत्वाक्रिमिकीटत्वं

सामाप्नुयात् ॥ मनरूपोहिसंकल्पो धर्मज्ञानपरायणः ॥ अहङ्कारोमहत्स्मात्ज्योभावद्रूपोवति
ष्ठति ॥ रजोरूपोहिसंकल्पोलोकेसंव्यवहारवान् ॥ परितिष्ठतिसंसारैःपुत्रदारानुरञ्जितः
त्रिविधंतुपरित्यज्यरूपमेतन्महामते ॥ संकल्पःपरमाप्नोतिपदमात्मपरिक्षये ॥ दृष्टीः
सर्वाःपरित्यज्यनियम्यमनसामनः ॥ सबाह्याभ्यंतरांतस्यसंकल्पस्यलयंकुरु ॥ यदि
वर्षसहस्राणितपश्चरसिदारुणं ॥ पातालस्थस्यभूस्थस्यस्वर्गस्थस्यापितेनच ॥ नान्यः
कश्चिदुपायोस्तिसंकल्पोपशमादृते ॥ अनंतादिविकारेस्वेस्वतेपरमपावने ॥ संकल्पो
पशमेयत्नंपौरुषेणपरंकुरु ॥ संकल्पतंतावद्दलिताभावाःप्रोताःकिलानव ॥ छिन्नेते
तेनजानीतेकुत्रयांतिविभवःपरा ॥ निःसंकल्पोयथाप्राप्तव्यवहारपरोभव ॥ क्षयेसंक
ल्पजालस्यजीवोब्रह्मत्वमाप्नुयात् ॥ अधिगतपरमार्थतामुपेत्यप्रसभमपास्यविकल्प
जालमुच्चैः ॥ अधिगममयपदंतदाहिलीयंविगलतिलोयमनादरविह्वलितिः ॥ ५५ ॥ इतिश्रीम
दध्यात्मरामायणेउत्तरकांडेषष्ठोध्यायः ॥ ॥ ६ ॥

॥ श्रीमहादेवउवाच ॥

वाल्मीकिनाबोधितोसौकुशःसद्योगतभ्रमः ॥ अंतर्मुखोबहिःसर्वमनुकुर्वंश्चचारसः ॥
वाल्मीकिरपितौप्राहसीतापुत्रौमहाधियौ ॥ तत्रतत्रचगायंतौचरतौचिपुरंततः ॥
रामस्याग्रेप्रगायेतांशुश्रूषुर्यदिराघवः ॥ नग्राह्यंवैतुवाभ्यांतयदिकिंचित्प्रदास्यति ॥ इ
तिनौबोधितौतत्रगायमानौविचेरतुः ॥ यथोक्तंमुनिनापूर्वंतत्रतत्राप्यगायतां ॥ ता
सुश्राववकाकुत्स्थःपूर्वचर्यांततस्ततः ॥ अपूर्वपाठजातिंचगेयेन ॥ अपूर्वपादहृत्मादि
योगेनसमभिप्लुतं ॥ बालयोराघवःश्रुत्वाकौतूहलमुपेयिवान् ॥ अथकर्मांतरेराजा
समाहूयमहामुनीन् ॥ राज्ञश्चैवनरव्याघ्रःपंडितान्नैगमांस्तथा ॥ पौराणिकान्शब्दवि
दोयेचवृद्धाद्विजातयः ॥ एतान्सर्वान्समाहूयगायकौसमवेशयत् ॥ तेसर्वेहृष्टमनसोराज
नोब्राह्मणादयः ॥ राममेवोदारकौदृष्ट्वाविस्मिताह्यनिमिषेक्षणाः ॥ जटिलौयदिनस्यातां
नवल्कलधराविमौ ॥ विशेषंनाधिगच्छामोराघवस्यानयोस्तदा ॥ एवंसंवदतांतेषांविस्मि
तानांपरस्परं ॥ उपचक्रमतुर्गातुंतावुभौमुनिदारकौ ॥ ततःप्रवृत्तंमधुरंगांधर्वमतिमा
नुषं ॥ श्रुत्वातन्मधुरंगीतमपराह्णेरघूद्वहः ॥ उवाचभरतंवाभ्यांदीयतांमद्युतंवसु ॥ दीय
मानंसुवर्णंतुनतज्जगृहतुस्तदा ॥ किमनेनसुवर्णेनराजन्नौवन्यभोजनैः ॥ इतिसंस्मयत
ह्रतेजग्मतुर्मुनिसन्निधिं ॥ एवंश्रुत्वातुचरितंरामःसुविस्मितः ॥ ज्ञात्वासीताकुमा
रौतौमातुश्चेदमब्रवीत् ॥ दूतान्मेतेनसुषेणतुविश्वेषणमर्थागारे ॥ भगवंतंमहात्मानंवाल्मी
किंमुनिसत्तमं ॥ आनयध्वंमुनिवरंससीतंदेवसम्मितं ॥ अस्मात्तपार्षदामध्येप्रत्ययंजनकात्म
जा ॥ करोतुशपथंसर्वेजानंतुगतकल्मषां ॥ सीतांतद्वचनंश्रुत्वागतासर्वेतिविस्मिताः ॥
उक्तवंतोथरामेणवाल्मीकिंप्रमथार्थदाः ॥ रामस्यहृद्गतंसर्वंज्ञात्वावाल्मीकिरब्रवीत् ॥ श्वः
करिष्यतिवैसीताशपथंजनसंसदि ॥ योषितांपरमंदैवंपतिरेवनसंशयः ॥ तच्छ्रुत्वासहसा
गत्वासर्वेप्रोचुर्मुनेर्वचः ॥ राघवस्त्वथसंतोपितुश्रुत्वामुनिवचस्तथा ॥ राजानोमुनयःसर्वे
श्रृण्वंत्वितिवाब्रवीत् ॥ सीतायाःशपथंलोकाविजानंतुशुभाशुभं ॥ इत्युक्तोराघवेणाथ
सर्वलोकाःसर्वदिदृक्षवः ॥ आजग्मुःक्षत्रियावैश्याःशूद्राश्चैवमहर्षयः ॥ वानराश्चसमाज
ग्मुःकौतूहलसमन्विताः ॥ ततोमुनिवरस्तूर्णंससीतःसमुपागतः ॥ अग्रतस्तमृषिंकृ
त्वायांतीकिंचिदवाङ्मुखी ॥ कृतांजलिर्बाष्पकंठीसीतायज्ञेविवेशतां ॥ दृष्ट्वाश्रीमि
वायांतींब्रह्माणमनुयायिनीं ॥ वाल्मीकिःपृष्ठतःसीतांसाधुवादोमहानभूत् ॥ तदा
मध्येजनौघस्यप्रविश्यमुनिपुंगवः ॥ सीतासहायोवाल्मीकिरितिप्राहचराघवं ॥ इयंदा
शरथेःसीतासुव्रताधर्मचारिणी ॥ अपापातेपुरात्यक्तामसमाश्रमसमीपतः ॥ लोकाप
वादभीतेनत्वयाराममहावने ॥ प्रत्ययंदास्यतेसीतातदनुज्ञातुमर्हसि ॥ इमौतौसीताज

नयौइमौयमलजातकौ ॥ सुतौतवैवदुर्धर्षौतथ्यमेतद्ब्रवीमिते ॥ प्रचेतसोहंदशमः
पुत्रोरघुकुलोद्वह ॥ अनृतंनस्मराम्युक्तंयथेमौतवपुत्रकौ ॥ बहून्वर्षगणान्सम्यक्त
पश्चर्यामयाकृता ॥ नोपाश्नीयांफलंतस्यादुष्टेयंयदिमैथिली ॥ वाल्मीकिनैवमुक्तस्तु
राघवःप्रत्यभाषत ॥ एवमेतन्महाभागयथावदसिसुव्रत ॥ प्रत्ययोजनितोमह्यं
तववाक्यैरकिल्बिषैः ॥ लोकानामपिदृष्ट्वाभिवैदेह्याःप्रत्ययोमहान् ॥ देवानांपुरतोमे
नमंदिरेसंप्रवेशिता ॥ सोयंलोकभयाद्ब्रह्मन्नपापाप्यभिशंकिता ॥ देवानांपुरतोत्य
क्ताभवांस्तत्क्षंतुमर्हसि ॥ स्वमेवजातोजानामिपुत्रावेतौकुशीलवौ ॥ सीतामयापरित्य
तीमध्येसीतायाश्रीनिरस्तमे ॥ देवाःसर्वेविज्ञायरामाभिप्रायमुत्सुकाः ॥ ब्रह्माणमग्र
तःकृत्वासमाजग्मुःसहस्रशः ॥ प्रजाःसमागमाहृष्टाःसीताकौपेयवासिनी ॥ अधोमुख
त्वोसाह्यधोदृष्टिःप्रांजलिर्वाक्यमब्रवीत् ॥ रामादन्यंयथाहंवैमनसापिनचिंतये ॥ उत्क
स्थामेधवलीदेवीविवरंदातुमर्हसि ॥ तथापापमाःसीतायाःप्रादुरासीन्महद्भुतं ॥ भूत
लाद्दिव्यमत्यर्थंसिंहासनमनुत्तमं ॥ नागैरुह्यमानेनदिव्यदेहेनविभ्रमे ॥ भोदेवीमा
नकीदोर्भ्यांगृहीत्वासीतांस्वेरसंयुता ॥ स्वागतेनाभ्युवाचेनामासनेसन्यवेशयत् ॥ सिंहास
नस्थांवैदेहींप्रविशंतींरसातले ॥ निरंतरापुष्पवृष्टिर्दिव्यासीतामवाकिरत् ॥ साधुका
रश्चसुमहान्देवानांपरमाद्भुतः ॥ ऊचुश्चविविधावाचोह्यंतरिक्षगताःसुराः ॥ साधुसा
धुइतिसर्वेपातालविरजेगमाः ॥ वानराश्चमहाकायाःसीतायापापकारणं ॥ केचिच्चिं
तापराःकेचिद्ध्यानपरायणाः ॥ केचिद्रामंनिरीक्षंतःकेचित्सीतामचेतनाः ॥ सुमु
दृष्ट्वातत्सर्वंसीताभूतलमचेतनं ॥ सीताप्रवेशनंदृष्ट्वासर्वंसंमोहितंजगत् ॥
सर्वज्ञात्वेवभविष्यत्कार्यगौरवं ॥ अज्ञानान्निवृत्तःतेनशुशोचजनकात्मजां ॥ रामस्तु
ऋषिभिःसार्धंतोषितोरघुनंदनः ॥ प्रतिवृद्धःस्वमायाकारानंतरक्रियाः ॥ ब्राह्मणा
जेश्चक्षत्रियाःशात्विजौयेसमागताः ॥ तान्सर्वान्प्रेषयन्रामोयथाकालमभिवृद्धिः ॥ विसृज्य
पादायकुमारौतावयोध्यामगमत्प्रभुः ॥ ततःप्रभृतिनिःस्पृहोरामःसर्वभोगेषुसर्वदा ॥ ३
आत्मचिंतापरोनित्यमेकांतेसमुपस्थितः ॥ एकांतेध्याननिरतएकदाराघवेमति
मातानारायणेमातात्वोकाम्याप्रियवादिनी ॥ भक्त्यागत्यप्रसन्नात्मप्रणताहप्रहृ
ष्टधीः ॥ रामत्वंजगतामादिरादिमध्यांतवर्जितः ॥ परमात्मापरानंदःपूर्णःपुरुषईश्व
रः ॥ जातोसिमेगर्भवशेममपुण्यातिरेकतः ॥ अवसानेममाद्यप्रसन्नोभवरघूद्वह ॥ मम
नष्टःप्रबोधनःकृत्स्नोभवबंधोनिवर्तते ॥ इदानीमपिमेतातभवबंधनिवर्तकं ॥ क
थंसंक्षेपतोभद्रयाथार्थ्येनवदप्रभो ॥ निर्वेदवादिनीमेवंमातरंमातृवत्सलः ॥ दया
लुःप्राहपर्मात्माजरामरणवर्जितोशुभो ॥ मार्गास्त्रयोमयाप्रोक्ताःपुरामोक्षाभिसाधकाः
कर्मयोगोज्ञानयोगोभक्तियोगश्चशाश्वतः ॥ तेषांतुसकलोमार्गोभक्तियोगःसदृ
भिद्यते ॥ भक्तिर्विभिद्यतेमातस्त्रिधैवगुणभेदतः ॥ स्वभावोयस्यतेनैवतस्यभक्तिर्वि
भिद्यते ॥ यस्तुहिंसांसमुद्दिश्यदंभंमात्सर्यमेववा ॥ भेददृष्टिस्तुसंरंभीभक्तोमेतामस
ःस्मृतः ॥ फलाभिसंधिर्भोगार्थीधनकामोयशस्तथा ॥ अर्चादौभेदबुद्ध्यायःसत्व
वेस्तुराजसः ॥ परस्मिन्नर्पितंयस्तुकर्मनिर्हरणायवा ॥ कर्तव्यमितिवाकुर्याद्भे
दबुद्ध्यासमात्विकः ॥ मद्गुणश्रवणादेवमय्यनंतगुणालये ॥ अविच्छिन्नामनोवृत्ति
र्यथागंगांभसोंबुधौ ॥ तदेवभक्तियोगस्यलक्षणंनिर्गुणस्यहि ॥ अहैतुक्यप्रति
हतायाभक्तिर्मयिजायते ॥ सामेसालोक्यसामीप्यसार्ष्टिसायुज्यमेववा ॥ ददात्यपि
नगृह्णातिभक्तामत्सेवनंविना ॥ सएवात्यंतिकोयोगोभक्तिमार्गस्यभामिनि
मद्भावंप्राप्नुयात्तेनत्वतिक्रम्यगुणत्रयं ॥ श्रद्धयाकामहीनेनस्वधर्माचरणेनच ॥
कर्मयोगेनशास्त्रेणवर्जितेनातिहिंसया ॥ मद्दर्शनमदाचारपूजाभिर्नुतिवंदनैः ॥ ५

अ॰ रा
७४

54

भूतेषु मां तथात्मानं संयोगेन मत्यवर्जितैः॥ बहुमानेन महता दुःखितानामनुकंपया॥ स्व
समानेषु च मैत्र्या च यमादीनां निषेवया॥ वेदांतवाक्यश्रवणान्मम नामानुकीर्तनात्॥
सत्संगेनार्जवेनैव ह्यहंमत्याविवर्जनात्॥ कांक्षया मम धर्मस्य परिशुद्धांतरो मनः॥ म
द्गुणश्रवणादेव याति मामंजसा जनः॥ यथा वायुवशाद्गंधः स्वाश्रयाद्घ्राणमाविशे
त्॥ सर्वेषु प्राणिजातेषु ह्यहमात्मा व्यवस्थितः॥ तमज्ञात्वा विमूढात्मा कुरुते केव
लं बहिः॥ क्रियोत्पन्नैर्नैकभेदैर्द्रव्यैर्मे नास्ति तोषणं॥ भूतावमानिनार्चायामर्चितो
हं न पूजितः॥ तावन्मामर्चयेद्देवं प्रतिमादौ स्वकर्मभिः॥ यावत्सर्वेषु भूतेषु स्थितं त्वा
त्मनि न स्मरेत्॥ यस्तु भेदं प्रकुरुते स्वात्मनश्च परस्य च॥ भिन्नदृष्टेर्भयं मृत्युस्तस्य कु
र्यान्न संशयः॥ मामतः सर्वभूतेषु परिच्छिन्नेषु संस्थितं॥ एकं ज्ञानेन मानेन चार्चये
दभिन्नधीः॥ चेतसैवानिशं सर्वभूतानि प्रणमेत्सुधीः॥ ज्ञात्वा मां चेतनं सर्वजीवरूपे
ण संस्थितं॥ तस्मात्कदाचिन्नेक्षेत भेदमीश्वरजीवयोः॥ भक्तियोगो ज्ञानयोगो मया
मातरुदाहृतः॥ आलंब्यैकतरं वापि पुरुषः शुभमृच्छति॥ ततो मां भक्तियोगेन मातः
सर्वहृदि स्थितं॥ पुत्रभावेन वा नित्यं स्मृत्वा शांतिं गमिष्यसि॥ श्रुत्वा रामस्य वचनं
कौसल्यानंदसंयुता॥ रामं सदा हृदि ध्यात्वा छित्त्वा संसारबंधनं॥ अतिक्रम्य गती
स्तिस्रोप्यवाप परमां गतिं॥ कैकेयी चापि योगेन रघुपतिना दिवं सर्वमेवाधिगम्य॥
श्रद्धाभक्तिप्रसन्नात्मा हरिं रघुपतिं भावयंती गतासुः॥ गत्वा स्वर्गं स्फुरंती दशरथ
सहिता मोदमाना वनस्थ॥ सा सा श्रीसत्त्वमगस्त्यापि विमलमतिः प्राप भर्तुः स
मीपम्॥ ८५॥ इति श्रीमदध्यात्मरामायणे उत्तरकांडे सप्तमोऽध्यायः॥ ७॥

॥ श्रीमहादेव उवाच॥

अथ काले गते तस्मिन्भरतो भीमविक्रमः॥ युधाजिता मातुलेन प्रागतोभूत्स सैनि
कः॥ रामाज्ञया गतस्तत्र हत्वा गंधर्वनायकान्॥ तिस्रः कोटीर्दुरे हत्वा विषये रघु
नंदनः॥ पुष्करं पुष्कलावत्यां तक्षं तक्षशिलाह्वये॥ अभिषिच्य सुतौ तत्र धनधान्य
समृद्धिमौ॥ पुनरागत्य भरतो रामसेवापरोभवत्॥ ततः प्रीतो रघुश्रेष्ठो लक्ष्मणं प्रा
ह सादरं॥ उभौ कुमारौ सौमित्रे गृहीत्वा पश्चिमां दिशि॥ तत्र म्लेच्छान्विनिर्जित्य दु
ष्टान्सर्वापकारिणः॥ अंगदं चंद्रकेतुं च महासत्त्वपराक्रमौ॥ कृत्वा द्वे नगरे कृत्वा
राजानौ धनवत्तरौ॥ अभिषिच्य सुतौ तत्र सौमित्रिर्मामकाज्ञया पुनः॥ रामाज्ञां मूर्ध्नि
कृत्वा गजाश्वबलवाहनैः॥ गत्वा हत्वा रिपून्सर्वान्स्थापयित्वा कुमारकौ॥ सौमि
त्रिः पुनरागत्य रामसेवापरोभवत्॥ ततः स्वकाले महति प्रयाते रामे सदा धर्मप
थे स्थिते हरौ॥ द्रष्टुमभ्यागाद्विवेकाधारि कालस्तापसलक्ष्मणमित्युवाच॥ निवेद
यस्व रामाय दूतं मां कार्यगौरवात्॥ रामाय विज्ञापयन्नस्ति तस्य मह
र्षिमुख्यस्य हिताय धीमान्॥ तस्य तद्वचनं श्रुत्वा सौमित्रिस्त्वरयान्वितः॥ आच
चक्षे रामाय संप्राप्तं तपोधनं॥ एवमुक्तं तं प्रोवाच लक्ष्मणं राघवोऽनुजं॥ शीघ्रं
प्रवेशयातात मुनिं सत्कारपूर्वकं॥ लक्ष्मणस्तु तथेत्युक्त्वा प्रवेशयत तापसं॥
स्वतेजसा ज्वलंतं तेजसा हुतशिखं यथानलं॥ सोभिगम्य रघुश्रेष्ठं दीप्यमानः स्वतेज
सा॥ मुनिर्मधुरवाक्येन वर्धस्वेत्याह राघवं॥ तस्मै स्वमुनये रामः पूजां कृत्वा य
थाविधि॥ पप्रच्छानामयं चास्य रामः पृष्टोथ तेन सः॥ दिव्यासने समासीनो रामः
प्रोवाच तापसं॥ यदर्थमागतोसि त्वमिह तत्प्रापय स्व मे॥ वाक्येन चोदितस्तेन
रामेणाथ मुनिर्वचः॥ इदमेव प्रयोक्तव्यं मन्त्रं तत्त्वं तत्तद्वचः॥ नान्येन चेतः श्रोतव्यं
नाख्यातव्यं च कस्यचित्॥ शृणुयाद्वा निरीक्षेद्वा यः स वध्यस्त्वया प्रभो॥ तथेति च
प्रतिज्ञाय रामो लक्ष्मणमब्रवीत्॥ तिष्ठ त्वं द्वारि सौमित्रे नायात्वत्र जनो रहः॥ य

दागच्छति कोवापि स वध्यो मे न संशयः॥ ततः प्राह मुनिं रामो येनैतत्त्वं विसर्जितः॥
यद्वै मनीषितं वाक्यं तद्वदस्व ममाग्रतः॥ ततः प्राह मुनिर्वाक्यं शृणु राम यथार्थ
तः॥ ब्रह्मणा प्रेषितोस्मीश कार्यार्थं तेतिकं प्रभो॥ अहं हि पूर्वजो देव तव पुत्रः परंतप
मायासंगमजो वीर कालः सर्वहरः स्मृतः॥ ब्रह्मा त्वामाह भगवान्सर्वदेवपतिः प्रभुः
नः॥ रक्षितुं स्वर्गलोकस्य समयस्ते महामते॥ पुरा त्वमेक एवासीर्लोकान्संहृत्य
मायया॥ भार्यया सहितस्त्वं मामादौ पुत्रमजीजनत्॥ तथा भोगवतं नागमन
तं समुदके शयं॥ मायया जनयित्वा त्वं द्वौ समुत्पन्नौ महाबलौ॥ मधुकैटभकौ दैत्यौ
हत्वा मेदोस्थिसंचयं॥ इमां पर्वतसंबद्धां मेदिनीं पुरुषर्षभ॥ पद्मे दिव्यार्कसंकाशे
नाभ्यामुत्पाद्य मामपि॥ मां विधाय प्रजाध्यक्षं मयि सर्वं निवेशयः॥ सोहं सं
न्यस्तभारस्त्वामवोचं जगत्पते॥ रक्षां विधत्स्व भूतेभ्यो यो नो वीर्यापहारिणः॥ ततः
त्वं कश्यपाज्जातो विष्णुर्वामनरूपधृत्॥ हत्वा दितिभवान्दैत्यान्पापान्देवगणस्य च
सर्वान्सत्त्वान्हमाला प्रजासु पृथिवीधरः॥ रावणस्य वधाकांक्षी मर्त्यलोकमुपागत
दशवर्षसहस्राणि दशवर्षशतानि च॥ स्थित्वा वासाय समये त्रिदशेषु गतः पुरा
मनो मनोरथः पूर्णः पूर्णो वा बुद्धिमान्प्रभु॥ कालस्तापसरूपेण त्वत्समीपमुपागत
तेनोपयुक्तं हृदि यदि राज्यमुपासितुं॥ तत्र यथाभव भद्रं ते एवमाह पितामहः॥
यदि ते गमनं बुद्धिर्देवलोके जितेंद्रियः॥ सनाथा विष्णुना देवा भवंतु विगतज्वराः॥
श्रुत्वा स्वयं तदा तच्छ्रुत्वा कालेन भाषितं॥ इस राम स्मितं वाक्यं कृत्वा सर्वांतकं ब्रवीत्॥
मत्स्यैव कालो देवानां सर्वकार्यं त्वया मया॥ श्रुत्वा तत्र सर्वथा परमात्मा त्वदागमनकारणा॥
एवं तयोः कथयतोर्दुर्वासा मुनिरभ्यगात्॥ राजद्वारं राघवस्य दर्शनस्पृहया द्रुतं॥ मु
निर्लक्ष्मणमासाद्य दुर्वासा वाक्यमब्रवीत्॥ शीघ्रं दर्शय रामं च कार्यं मेत्य समाहि
त्य हे॥ राजा कार्यांतरे व्यग्रो मुहूर्तं संप्रतीक्ष्यतां॥ तच्छ्रुत्वा क्रोधसंरब्धो मुनिः सौमि
त्रिमब्रवीत्॥ अस्मिन्क्षणे न सौमित्रे न दर्शयसि चेद्धि मां॥ रामं सविषयं वंशं भस्मी
करोमि न संशयः॥ श्रुत्वा तद्वचने घोरं दुर्वाससोभयं॥ स्वरूपं तस्य वाक्यस्य चिंत
यित्वा स लक्ष्मणः॥ सर्वनाशाद्वरं मे मम नाशो ह्येकस्य कारणात्॥ निश्चित्यैवातनो
गत्वा रामाय प्राह लक्ष्मणः॥ सौमित्रेर्वचनं श्रुत्वा रामः कालं व्यसर्जयत्॥ शीघ्रं नि
र्गम्य रामोपि ददर्शात्रेः सुतं मुनिं॥ रामोभिवाद्य संप्रीतो मुनिं पप्रच्छ सादरं॥ किं का
र्यं ते करोमीति मुनिं प्राह वचः स मः॥ तच्छ्रुत्वा रामवचनं दुर्वासा राममब्रवीत्॥ अ
द्य वर्षसहस्राणि उपवासमुपागते॥ अतो भोजनमिच्छामि सिद्धं यदेव राघव॥ रा
मो मुनिवचः श्रुत्वा मेने तो मुनिसत्तमः॥ संसिद्धमन्नं मुनये यथावत्समुपाह
रत्॥ मुनिर्भुक्त्वान्नमस्तं ते संतोषः पुनरभ्यगात्॥ स्वमाश्रमं गते तस्मिन्रामः सं
स्मारभाषितं॥ कालेन शोकदुःखार्तो विमना स्थानि विक्लवः॥ अवाङ्मुखो दीनमना
व्याघातं कृपा भाषितं॥ मनसा लक्ष्मणं ज्ञात्वा हंतव्यमेव सुदुःखितः॥ अवाङ्मुखो दीनमनाः
वाङ्न शशाक किंचन॥ ततो रामं विलोक्याह सौमित्रिर्दुःखसंयुतं॥ तस्मान्मां
चिंतयंते कहीनं स्नेहबंधनं॥ मत्कृते त्यज मां नाथ मा हि मा विधुनेरत॥ गतिः कालस्य
कलिना सर्वमेवेदृशी प्रभो॥ सौमित्रिणोक्तं तच्छ्रुत्वा रामश्चलितमानसः॥ आहूय
मंत्रिणः सर्वान्वसिष्ठं चेदमब्रवीत्॥ मुने राममनेन यत्नं कालस्यापि इहाभाषितं॥ प्र
तिज्ञामात्मनश्चैव सर्वमावेदयत्प्रभुः॥ श्रुत्वा रामस्य वचनं मंत्रिणः सपुरोहिताः
ऊचुः प्रांजलयः सर्वे राममक्लिष्टकारिणं॥ पूर्वमेव हि निर्दिष्टं तव भूभारहारिणः॥

लक्ष्मणेन नियोगस्ते ज्ञातो विज्ञानचक्षुषा ॥ त्यजाशु लक्ष्मणं राम मा प्रतिज्ञां त्यज प्रभो
प्रतिज्ञाते परित्यक्ते धर्मो भवति निष्फलः ॥ धर्मे नष्टेखिलं राम त्रैलोक्यं ज्ञातुमर्हसि
रामो धर्मार्थसहितं वाक्यं तेनाभिनिर्दितं ॥ सभामध्ये समाहूय प्राह सौमित्रिमंजसा
प्रत्येहं गच्छ सौमित्रे मा भूद्धर्मस्य संक्षयः ॥ परित्यागो वधो वापि सतामेवोभयं समं ॥
एवमुक्तो रघुश्रेष्ठेन दुःखव्याकुलितेक्षणः ॥ रामं प्रणम्य सौमित्रिः शीघ्रं गृहमगात्स्व
यं ॥ ततो गत्वा सरयूतीरमाचम्य सुकृतांजलिः ॥ नवद्वाराणि संयम्य मूर्ध्नि प्राणमधा
रयत् ॥ यत्तत्परं ब्रह्म वासुदेवाख्यमव्ययं ॥ परं तत्परमं धाम चेतसा सोभ्यचिंतयत् ॥ अ
वाप्य योगेन संपृक्तं सर्वे देवाः सहर्षयः ॥ साग्नयो लक्ष्मणं पुष्पवृष्ट्या समाकिरन् ॥ अ
दृश्यं विबुधैः कैश्चित्सशरीरं सवासवाः ॥ गृहीत्वा लक्ष्मणं शक्रः स्वर्गलोकमथागमत्
ततो विष्णोश्चतुर्भागमागतं देवसत्तमाः ॥ सर्वे देवर्षयो दृष्ट्वा लक्ष्मणं समपूजयन् ॥ ल
क्ष्मणो विविशे मागते देवो मिहलोकगतयोगिनस्तदा ॥ ब्रह्मणा सह संमागमन्मुदा
[illegible] ॥ इति श्रीमदध्यात्मरामायणे उत्तरकांडे अष्टमोध्यायः ॥ ८

श्रीमहादेव उवाच

लक्ष्मणं परित्यज्य रामो दुःखसमन्वितः ॥ मंत्रिणो नैगमांश्चैव वसिष्ठं चेदमब्रवी
त् ॥ अभिषेक्ष्यामि भरतमद्य राज्ये महामतिं ॥ अद्यैवाहं गमिष्यामि लक्ष्मणस्य पदानुगः
एवमुक्ते रघुश्रेष्ठे पौरजानपदास्तथा ॥ दुःखेन महताविष्टाः पतिता भुवि ॥ भू
मिता भरतोपि श्रुत्वा रामाभिभाषितं ॥ गर्हयामास राज्यं स प्राहेदं राममन्त्रिधौ ॥ सत्ये
नाहं शपे नाहं राज्यं विना हि विभुं विभो ॥ कोसलेंद्र रघुश्रेष्ठ पुत्रौ त्वत्तनयौ प्रभो ॥ कुशो
लवो राजन्नभिषेक्ष्यस्व राघव ॥ कोसलेषु कुशं वीरं उत्तरेषु लवं तथा ॥ गच्छंतु दू
तास्त्वरिता शत्रुघ्नाय निवेदितुं ॥ अस्माकं गमनं शीघ्रं सर्वं तत्रापि शृण्वंतु च ॥ भरतेना
भिहितं श्रुत्वा पतितांश्च समीक्ष्य तः ॥ प्रजाश्च भयसंविग्ना राम विश्लेषकातराः ॥ व
सिष्ठो भगवान् राममब्रवीत्स्वयं वचः ॥ पश्य ताताः प्रजाः सर्वाः पतिता भूतले प्रजाः ॥
तासां भावानुगं राम प्रसादं कर्तुमर्हसि ॥ श्रुत्वा वसिष्ठवचनं ताः समुत्थाप्य सत्कृत्य
सस्नेहं रघुनाथस्ताः किं करोमीति चाब्रवीत् ॥ ततः प्रांजलयः प्रोचुः प्रजा भक्त्या
सुसंभ्रमं ॥ गच्छंतमनुगच्छामो यत्र त्वं गंतुमर्हसि ॥ अस्माकमेषा परमा प्रीतिर्धर्मो
ह्ययमक्षयः ॥ तवानुगमने राम दृढा नो हि मतिः ॥ पुत्रदारादिभिः सार्धमनुयामो
वयं सर्वथा ॥ तपोवनं वा स्वर्गं वा पुरं वा रघुनंदन ॥ ज्ञात्वा तेषां मनो दीर्घकालं रघुनं
दना ॥ भक्तिं पौरजने चैव वाढमित्याह राघवः ॥ कृत्वैवं निश्चयं रामस्तस्मिन्नेवाहनि
प्रभुः ॥ प्रस्थापयामास ततो रामभद्रः कुशं लवं ॥ अभिषिच्य महत्राणि सहस्राणि सहस्रे वैव रं
जिताः ॥ पर्यतामस्य सहस्राणामेवोत्तमौ रथौ तस्य ॥ वज्रं रत्नैश्च भूयो दृष्ट्वा पुत्रजनाधुतो
प्रभितः प्रगतो रामं तावुभौ तु कुशो लवः ॥ प्रातः स्नेहवनेरतां प्रेषयामास राघवः
दृढत्वाच्चरितं गत्वा शत्रुघ्नाय निवेदितः ॥ कालस्यायामनं पश्चात्स्वित्रुघ्नस्य चोदितं ॥ ल
क्ष्मणस्य च निर्याणं प्रतिज्ञां राघवस्य च ॥ पुत्राभिषेचनं चैव सर्वं राम चिकीर्षितं ॥
श्रुत्वा तद्वचनं शत्रुघ्नः कुलनाशनं ॥ अभितोपि धृतिं लब्ध्वा पुत्रौ रूपसमप्रभः ॥
अभिषिच्य सुबाहुं वै मथुरायां महाबलः ॥ यूपकेतुं च विदिशानगरे शत्रुसूदनः ॥ अ
योध्यां त्वरितं प्रागात्स्वयं रामदिदृक्षया ॥ ददर्श रामं महात्मानं तेजसा ज्वलनप्रभं ॥
दुकूलयुगलं वीतं ऋषिभिः शांतयेद्धृतं ॥ अभिवाद्य रमानाथं प्राह शत्रुघ्नो रघुपुंगवं ॥
प्रांजलिर्धर्मसहितं वाक्यं प्राह महामतिः ॥ अभिषिच्य सुतौ तत्र राज्ये राजीवलोच
नः ॥ तवानुगमने राम विद्धि मां कृतनिश्चयं ॥ त्यक्तुं नार्हसि मां वीर भक्तं न च वि
शेषतः ॥ शत्रुघ्नस्य दृढां बुद्धिं विज्ञाय रघुनंदनः ॥ सज्जीभवन्मध्याह्ने भक्तांस्त्वय

वीरव ॥ प्रयत्नात्समनुत्येन् यः वानराः कामरूपिणः ॥ ऋक्षाश्च राक्षसा धीमान् गोपुच्छाश्च
सहस्रशः ॥ सुग्रीवो देवतानां च सर्वा रामेण निर्गमे ॥ श्रुत्वा प्रोचुश्च रघुश्रेष्ठं सर्वे वानरास
नः ॥ यथा वयमिवाग्यामं राघवे भक्तवत्सलः ॥ अभिषिच्यांगदं राज्ये स्वान्सुग्रीवोपि महाब
लवानुगमने राम विद्धि मां कृतनिश्चयं ॥ श्रुत्वा तेषां दृढं वाक्यं राघवो विभीषणम्
ब्रवीत् ॥ यावल्लोकाः ॥ धरिष्यंति प्रजा यावत्तावज्जीवति मे ॥ विभी
षणांतरेष्वेष सुखो वर्त स्थिरा च मे ॥ नकिंचिद्वक्तुमर्हसि वचनं त्वया मम प्रियकारणात् ॥ एवं विभी
षणं प्रोक्त्वा हनुमंतमथाब्रवीत् ॥ मारुते त्वं चिरंजीव मम माज्ञां मा कृथाः न्यथा ॥ जांबवंतम
प्राह रामः स्वस्थोसि वानर ॥ सर्वैः सह मया सार्धं द्वापरांते भविष्यति ॥ ततस्तान्राघवः
प्राह चिरं च लोके मित्र कंज नेत्र ॥ सुग्रीवसहिताः सर्वे समायाते मयानुगाः ॥ ततः प्रभाते रघुवंश
गुरो मे ॥ ततो वसिष्ठोपि प्रकारं सर्वं प्रस्थानिकं कर्म महाविधानात् ॥ ततोभावरो ईशपवि
प्रवातिर्महाप्रयाणाय गृहीतबुद्धिः ॥ निष्क्रम्य हस्ताग्रागता पत्र विशालं ॥ रामोनत
गति ताम्राः प्राचीव यातः पाणिको हिकांतिः ॥ रामस्य सव्ये सितपद्महस्ता पद्मागता च
श्रीविशालनेत्रा ॥ पार्श्वे च दक्षे करुणा कंजहस्ता वाचा सा च योषिद्रपि दीप्यमाना ॥ अस्त्राणि
सर्वाणि धनुश्च बाणानम्य सुजुष्टा हृतविग्रहास्ते यशु अरुपेमुतयश्च दिव्याः ॥ माता
च वेदा अनुगामिनो रामं अनुजनानां सह पुत्राः ॥ वेदाः सहस्रशः ॥ गच्छंत मेवानुगता जनास्ते सपु
त्रदाराः सह गृह्यवर्गाः ॥ यत्रानु ततो हरिं भिवाच वर्गे रामेण संतेधपुराच कामाः ॥ प्रातःपुर
जनाः समस्ताः ॥ सत्त्वानुगृह्य पुत्रहितार्थाः ॥ सामान्यवर्गा च समं दिशोपि ॥ स
देवगणा तत्र मुदाः प्रहृष्टा सत्यानुगयाप्य तत्परे च ॥ सुग्रीवमुख्यो हरिपुंगवा सुस्ना
ताः ॥ स्नानेद्रयानुगता विरक्ता रामेय पुत्रले पशु मूत्रवर्गाः ॥ भल्लान्यदृष्टानि चयानि
मत्स्यो प्राणिनः स्थावरजंगमाश्च ॥ साक्षात्सरात्मानमनेन तत्रानुमयविरक्ताः पर
मेव न त्रयुगरंगते राज निरामदेहे ॥ ततो विदूरं नगरात्स गत्वा दृष्टा नदीं तां हरिने त्रजी
तां ॥ ततः सरामः स्वतपावनत्वाद् दर्शनीयो महादिव्यो तोबिभुः ॥ प्रयागतस्तत्रवि
तामहो महान्देवाश्च सर्वे त्रयधर्मसिद्धाः ॥ विमानकोटीभिरपारपारे समावृतं तं स्तुरदेव
दृष्टिः समायतं तु लपकतावरिष्ठे ॥ वगुश्चवानाः सद्गंधर्वनीवववृष्टिः कुसुमावली
न्हुषपारिकामदनतज्जरिः ॥ उपस्थितैर्देवमहंगनाद्गैगायन्हविद्याधरकिन्नरेंद्रैः ॥ रामस्त्वयो ध्यामहदप्रजले महं
महानंदमयो सिद्धसर्वतो जानामितत्वं निजमेवमेकं ॥ तथापि राम मममापि लोका हतसवधो
भक्तिप्रयोपि विदुः ॥ नैवान्तभिर्विलगुबेकमापप्रविश्य देहं परिपाहिदेवान् ॥ यद्वापरं वा
विना मां ॥ सहस्रशत्रुनमो नमस्ते समीदहे वेधा पुनर्नमस्ते ॥ पितामहप्रार्थनयानु
भुजः ॥ तो वो वयवस्त्वरक्तमधृतिः सौमित्रिरंपकुशभामधारी ॥ बभूव तत्रास्य पतेर्वदि
यो के वेधीसन्त्वगणां नकस्य ॥ सीताचलल्मीरभवत्पुरेव रामोदि विष्णुः पुरुषः पुरा
णः ॥ सहानुजैः सर्वजनैरकेन वभूव तेजोमयस्थिरमूर्तिः ॥ विष्णुं समासाद्य सुरेंद्रमुख्या

अ॰ रा॰
५९

देवाश्च सिद्धा मुनयश्च यक्षाः ॥ पितामहाद्याः पितरः परेशास्त्वमेव देवाः पतिरजयंतः ॥ आनं
दरसेन्द्राविनश्वरीचिन्नायमाविरे श्रीरामभूमेरथास्ते ॥ तथाह विसृष्टं हि त्वं महात्माद्यैस्तैर्भ
क्तामपि चानुरक्ताः ॥ याते दिवं साम्प्रतमेयानि सर्वैस्तिर्यक्समीना अपि पुण्यपुंजाः ॥ वैकुंठमापे
परं प्रयातः समं विशालस्तामुममानयाने ॥ कृत्वाह देवौकसमथाब्रवीत्कः सीतां निकामं तान्वि
चार भोगात ॥ लोकान्महीयो परिदीप्यमानांस्त्वद्भावयुक्ताः कृतपुण्यपुंजाः ॥ येवापि ते राम
पवित्रनाम गृहंति मर्त्यालयकाल एव ॥ अज्ञानतो वापि भजंत लोकास्तेनैव यो वै रघुपि
वाधिगम्यान् ॥ ततो विरिंचो हरिमात्तमायाः सुहृज्जनं त्यक्तकलेवरास्ते ॥ प्रयेदिरे व्याकुल
मेव ब्रह्मपदं परं मायाकृतं तं हरी मुदासे ॥ प्रभाकरप्राप्तहरिप्रवीरः सुग्रीव आदित्यवपुर्विवेश
त्वात् ॥ ततो निमग्नाः सरयूजलेषु नः सुरः परित्यज्य मनुष्यदेहान् ॥ आरुह्य दिव्याभरणा
विमानयमृक्षसौरकान्निबलान्नसौकान् ॥ तिर्यक्प्रजाता अपि रामसद्दृष्ट्वा नसं प्रविष्टा
स्वमेव याताः ॥ दिरत्नसोजानपराणि लोकारामं समालिंग्य विमुक्तसंगाः ॥ सृत्वा ह दिव्या
क्तुतं ब्रवेशं स्वहृतां तं स्वर्गमवाप्तुरंजसा ॥ एतावदेवोत्तरमाह शंभुः श्रीरामचंद्रस्य कथा
वशेषम् ॥ यः पारमप्यत्र पठेन्नरः पापादि मुच्यते जन्मसहस्रपापात् ॥ दिने दिने वापव
र्यमजवन्नरः पठेच्छ्लोकमपीह भक्त्या ॥ विमुक्तसर्वापदयः प्रयाति रामस्य सालोक्यम
नन्यलभ्यं ॥ आख्यानमेतद्रघुनायकस्य कृतं पुरा ब्रह्मवरो दिनेन ॥ महेश्वरेणापि भवि
ष्यदर्थं श्रुत्वा तु रामः परितोषमेति ॥ रामायणं काव्यमनेन तुल्यं श्रीशंकरेणापि हि
तेन भवान्ये ॥ भक्त्या पठेद्यः श्रृणुयाच्च पापैर्विमुच्यते जन्मशतानिरेव सुः ॥ अध्यात्मरामच
रितस्य नित्यं श्रोतव्यमेव भक्त्या लिखितमत्र रामं ॥ अतिप्रसन्नः सुमरामसमीपे सीतासमेतः प्रि
यमातनोति ॥ रामायणं जनमनोहरमादिकाव्यं ब्रह्मादिभिः सुरवरैरपि संस्तुतं च ॥ श्र
द्धान्वितः पठति यः शृणुयात्तु नित्यं विष्णोः प्रयाति सदनं स विशुद्धदेहः ॥ ८१ ॥ इति
श्रीब्रह्मांडपुराणे उत्तरखंडे उमामहेश्वरसंवादे श्रीमदध्यात्मरामायणे उमामहेश्वरसंवादे
उत्तरकांडे नवमोध्यायः ॥ ॥ ९ ॥ ॥ संपूर्णमिदं रामायणं ॥ ॥

॥ श्रीरामाय नमः ॥ अथ ... [illegible] ... वचनिका
आनंदरूप जो आत्मा है तिसकौ नमस्कार है ॥ कैसा है सतचित आनंद आत्मा सो क
कहतु हैं ॥ जिसने यह सर्व भासते हैं ॥ अरु जिसविषे सर्व लीन होते हैं ॥ अरु जि
सविषे सर्व रस्थत हैं ॥ तिस सत आत्मा कौ नमस्कार है ॥ नानातानरोय है आदर सैन
रसकर्ता करण क्रिया जिसकर सिद्ध होते हैं ॥ ऐसा जो ज्ञानरूप आत्मा है तिसकौ
नमस्कार है ॥ जिस आनंद के समुद्र के कण कर सपूर्ने विल आनंदवान है ॥ अरु जिस
आनंदकर सर्व जीव जीवते हैं ॥ तिस आनंद आत्मा कउ नमस्कार है ॥ कोई एक
स्तुतीषण ब्राह्मण अगस्त का सिष होत भया ॥ तिसके मन विषे एक संशय उत्पन्न
या ॥ तिसके निवर्तने कारणे अर्थ अगस्त मुनि के आश्रम कउ गमन कीया ॥ जाय करि वि
पर्वक प्रणाम कर रस्थत भया ॥ अरु नम्र भाव सो प्रश्न करते भया ॥ सुतीषण उ
वाच ॥ हे भगवन सर्व तत्त्व के शास्त्र वेत्ता ॥ ताते एक संशय कौ है ॥ क्रिया कर वै
मन नाविते कर जो मोक्ष का कारण है ॥ जो मोक्ष का साधन है सो कहु ॥ अथवा ज्ञान है ॥ अथवा दोनो हैं ॥
गीन ही ॥ अगस्त उवाच ॥ हे ब्राह्मण केवल कर्म सो मोक्ष का का
ता है ॥ मोक्ष नही होती ॥ अरु अंतःकरण शुध बिना केवल ज्ञान ते भी मुक्त नही होती
अर्थ यह जो साधन कहु का तातपर्य ज्ञान निष्ठा ॥ अंतःकरण शुध हो बिना स्थित नही
होती ॥ ताते दोनो कर मोक्ष की प्राप्त होती है ॥ कर्म कर प्रथम अंतःकरण शुध होता
है ॥ बहुर ज्ञान उपजता है ॥ तब मोक्ष सिध होती है ॥ जैसे दोनो पंषहु कर पंषी आकास मा
गकौ उडता है ॥ एक पंष नही ॥ तैसे कर्म अरु ज्ञान दोनो कर मोक्ष की सिध ता होती है ॥ हे ब्रा
ह्मण अगनवेस का पुत्र था ॥ सो नाम रह के निवर्त्तायक कर बेद चार षट अंग हस
होकर त स्थित भया ॥ आधे न कर कर बहुर उग्र है मो आवत भया ॥ अरु कर्मी ते रहत
था जो रह कर्म है ते विवर्जित न हो कर स्थित हूया है ॥ ऐसे देख कर इस प्रकार कहते
भया ॥ अगनवेस उवाच ॥ हे पुत्र कर्म है की पालना किउ नही करता ॥ तब कहु के ब्राह्मण कर्म
कर सिध ता कउ कैसे पावेगा ॥ तिस कर न कर्म है ते रहत हूया है सो कारण कहु ॥ कारु
णो उवाच ॥ हे पिता ती लव कर संसमृत कउ उत्पन्न हूया है ॥ तिस कर मै कर्म है तें रहत होय
हो ॥ सो श्रवण कर एक टउ विषवेद कहूया है ॥ जब लग जीवता रहे तब लग कर्म
कहोता है तब कर्म इ कर मोक्ष होता है ॥ केवल त्याग ते मुक्त होता है ॥ इन दोनो विषे
मुक्त कौ क्या कर्तव है ॥ अगस्त उवाच ॥ ऐसे तीष्णः सो जब कारुणी पिता कौ कहा ॥ तब
कतेश्रवण करतु ॥ जो पूर्व होई है तिसकौ श्रवण कर रिदे धार ॥ आगे जो एक अप
सरा रहत ति विषे उत्तम थी ॥ सो एक काल मो हिमालय पर्वत के सिषर पर बैठी थी ॥ सो
हिमालय पर्वत कैसा है जो कामना कर के संतपत जिनके रिदे है ॥ ऐसे देवता अर
किंनर है के राग तहा अपछरहु साथ क्रीडा करते हैं ॥ बहुर कैसा है ॥ जो गंगाजी का
प्रवाह तहरीदे ताचलया आवता है तिसमो कैसी गंगाजी है पाप हू की नासकरती
है ॥ ऐसे सिषर मर चीअपछरा बैठी थी ॥ तिसने रिंद्र का दूत अंतरिष ते चलिया आ
वता देषा ॥ जब निकट आया तब तिसकौ महा हे सभागा देवदूत राण हू विषे श्रेष्ठ
कहा ते आया है ॥ अरु अब कहा चला है ॥ तो कृपा कर के कह ॥ देवदूत उवाच ॥ हे सुभे ते
ह प्रश्न कीया है सो श्रवण कर ॥ अरष्टनेमी ड्रिका राजरिषया ॥ जिस ने अपणे पुत्र कउ राज दे कर वै

रागद्वेषीया। संहरणिविषयकीभ्रमलाषत्यागकरगंधमादनपर्वतविषेजायकरतप
करतेलागा। अरथमीत्माघातिसकेसाथएकुमेराकाजेष्या। सोकानैकरके अथमेरि
इयासचल्याजाताहो तिसकामेंहनहासपरणीत्रितानतेवेदनकरीकोवलाहो। अपछ
रोवाच। हेभगवनउहत्रितातकेवनहेमेरेनारीकहु। मैतपकेप्रयत्नाणकरशुक्रनी
हो। अरजोमहापुरुषहहितिनतोजोकोऊप्रसन्नकतीहे। तोउहरानेरहनदापवेरउ
तरकहतेरेहु। ताते तं कहु। देवदूतोउवाच। हेभद्रेजेसवृत्तांतहुसोत्याण विस्तार
करकेमेतनककोकहताहो। उहजोराजागंधमादनपर्वतविषेतपकरणेला
गा। अववउग्रतपकीया। तवइंद्रतोकाराजाजोहिंद्रहेहिंद्रहेतिसमुझकोआज्ञा
करीबुलायकरकिहेहतनतगंधमादनपर्वतविषेजाय। विवानकोअरअपछ
रावोंअरअवरनानाप्रकारकीसमग्रीकोगंधर्वजषसिधकिनरहहै। अरता
लमृदंगआदकवजत्रहुकोसाथलेजायगंधमादनपर्वतविषेसोवैसाहेगंध
मादनतोनानाप्रकारकीवलीविर्छहुकरपूर्नहे। तहाजायकेराजाकोविवान
परचढायकरलेआउ। हेसुहीजवदेवइंद्रअैसेकहा। तवमेविवानसहतअरस
वसमिग्रीसहतनहाआयाजहाराजाथा। अरकहामेहेराजनतेरेकानेविवान
लेआयाहो। तिसपरआरूढहोइकरतस्वर्गकोचलाहु। अरदिवसुखहुकोभोग
भोग। तवअैसेकहाँतवमेरेवचनसुणकरराजावोलतभया। राजोवाच।
हेदेवदूतमुझस्वर्गकावृतांतमुझकोकहु। जोतेरेस्वर्गविषेगुणकाहे अरदो
षक्याहे। तिनकेसुणकरमेरिदेविषेधारउ। पाछेमेरीइछाहोवेगीतवजावोगा।
देवदूतोवाच॥ हेराजनस्वर्गविषेवडेदिवभोगहे जोस्वर्गवडेपुनकर्मकरपाईं
ताहे। जववडेउग्रतपकरहोतेहे। तोउत्तमसुखस्वर्गप्राप्तहोतेहे। अरजोमध्यमपुनकर्म
होतेहहितोमध्यमसुखस्वर्गप्राप्तहोतेहे। अरनिकृष्टपुनकर्मकरकनिकृष्टस्वर्गसुख
प्राप्तहोतेहह। यहतोस्वर्गविषेगुणतुझकोकहेहहि। अवस्वर्गविषेजोदोषहहह
सोसुण। हेराजनजोआपतेऊचवैठेदिष्टआवतेहे। अरउत्तमसुखभोगतेहहि तिन
कोदेषकरनीचनउत्पनहोतीहे। जोउनकीउचताहीनहीजाती। अरतोका
शी अपनेसमानहोतेहह। तिनकीवरावरीहोतीहे। जोमेरेसमकिउवैठेहे अरजोआ
पतेनीचेवैठेहहकनिकृष्टपुनहुवालेतिनकउदेषकरआपकोअभिमानउपजताहे
जोमेंइनतेश्रेष्ठहो। अरएकअवरभीदोषहेजोजवइनकेपुनक्षीणहोतेहे तवति
सकालमोइसकोमृतलोकविषेगिरायदेतेहे। एकछिनभीरहनेनहीदेतेहे। हे
राजनयहजोदोषहहिस्वर्गविषेहहह। जोतेनेप्रश्नकीयाथासोमेंतुझकोगुणअरदोष
कहेहहि। हेभद्रेजवइसप्रकारराजनकोमेंकहातवउसराजेकहाहेदेवदूतऐसास्वर्ग
केहमनोगनही अरहमकोइछाभीनही। हमउग्रतपकरहगे। तपकरकेइसशरीर
कोभीत्यागदेवहगे। जैसेसर्पअपनीतुचाकोपुरातनजाणकरत्यागकरतीहे। तैसे
हमभीत्यागदेवहगे। हेदेवदूतविवानकोतहालेजायजहातेआयाहे। इमारीनमस्का
रहेतमको। हेदेवीजवइसप्रकारराजेमुझकोकहातवविवानअपछराआदिकसभ
कोलेकरमेंस्वर्गविषेगया। अरसवसमाचारइंद्रकेविदमानकहा। तवइंद्रअमृतनेमु
झा। असंदवाणीकरकेमुझकोकहतभया। हेदूतवहउहाजायजहाराजाहे जो
संसारतेउपरामहुयाहेइसकोअवआत्मपदकीइछाहोरहीहे। तिसकोसाथलेकर
वालमीकपासजायकेसावालमीकहेजिसनेआत्मतत्वकोआत्मकरजाणाया
हे। तिसकेपासलेजाउअरवालमीककोमेरासंदेहु। जोहेमहारिषवालमीकउस
राजाकोवोधकाउपदेसकरहु। जोयहवोधकाअधिकारीहे। कहतेजोइसकोस्वर्गकी
भीइछानहीअरअवरभीवांछाकछूनही। तातेतमइसकोतत्ववोधकाउपदेस

करहु। जोतत्ववोधकोपाइकरसंसारदुषतेमुक्तहोवे। हेसभेजवइसप्रकारदेवराज
इंद्रमुझकोकहा। तवमैचल्याजहाराजाथाजायकरकहाकिहेराजनतेरेसाथमें
इतेमोक्षहोलेकेतमितवालमीकपासचलवालमीकतुमकोउपदेसकरेगा। तव
तिसकोसाथलेकरमेवालमीककेआश्रमआपहुचावतभया। तिसस्थानविषेराजा
करवेठाया। अरइसकासंदेसदीया। जोउहात्रितातहुयासोतअश्रवणकरु। तवउवा
गमअरप्रणामकरकेवेठे। तववालमीकतेजीपूछीयाहेराजाकुसलहेकुसलहेकि
राजोवाच॥ हेभगवनधर्मतत्ववितादरजाननवातिमहुविषेश्रेष्ठसेअवकितापूछ
याहो। तमावेदसनकरसुषकउअवकुसलहुया। अरकुसलहकताहोकृपाकरके
तिसकाउतरकहहु। वाल्मीकउवाच॥ हेराजनमहारामायणअपरंतनकोकहता
होश्रवणकर। श्रवणकरकरतिसकानातनपरजेतनरिदेविषेधारेगा। तवतीवनमुक्त
उपायवीहहे। तिसकोसुणकरजैसेरामजीअपणेस्वभावविषेइस्थतहुएजीवनमु
क्तहोइकरविचरेहहइ। तैसेतंभीविचरेगा। राजोवाच। हेभगवनरामजीकवनथाअ
पकेवसतेहहहिविसनतिनहनेकलधारकरअहेतताणकरसपनभीकलकुसु
ताणकउअगीकारकरकेमानुषकासरीरधारयाथा। राजोवाच। हेभगवानविदाने
दसरूपजोहहिहरतिनकउआपकाकारणकेसेहुया। अरकिसनेदीयासोकहहु। वा
ल्मीकोवाच॥ हेराजनएककालमेंसनतकुमारजोहहिनिहकामसोव्रह्मपुरीविष
वेठेथे। अरत्रिलोकीकेपतजोहहिविसुभगवानसोवैकुंठतेउतरे। व्रह्मपुरीविषेआए
या। तवतिसकोदेषकरविसुभगवानवोलतभए। हेसनतकुमारतकुझजनकी
काअभिमानहे। तातेतकामकरआतरहोवेगा। अरस्वामकारतकेतेरानामहोवेगा। जब
यविसुभगवानेऐसेकहा। तवसनतकुमारवोलेहेविसनतुझकोसर्वगताकाअभिमा
नहे। तेरीसर्वगताकोऊकालनिवर्तहोवेगी। अरअज्ञानीहोवेगा। हेराजनएकतउसा
पहुया। अवरभीसुणएककालमोभ्रिगकीभार्जातोतारहीथी। तिसकेवियोगकरउह
तपाषमानथा। तिसकोदेषकरविसनभगवानमेरेनारीदेषकरमहाहासीकरीहे। मेरीस्त्री
तुभीस्त्रीकेवियोगकरआतरहोवेगा। अरएकदेवसमोप्रागरानेआपदीयाथा
जोएककालमोनरसिंघभगवानयगावेतीरपरगएथे। तहादेवसर्मोकीइस्त्री
गईथीतिसकोदेषकरसिंघजीभयानकरूपदेषाइकरहसे। तिसहासीकादेषक
रभैपाया। अरभैकरप्राणनिकसगए। तवदेवसर्मोनेआपदीयाजोतमनेमुझकोइस
स्त्रीकावियोगदीयाहे। तातेतमभीइसस्त्रीकावियोगपावहगे। हेराजनसनतकुमार
अरभ्रिगअरदेवसर्मोकेआपकरविसुभगवानतेमानुषसरीरधारया। दसरथकेगृह
विषेउतपनहुए। हेराजनअैसेतोसरीरधारया। अवआगेजोवृतांतहुयासोसाकथा
नहोइकरश्रवणकरु। दिवजोहेदेवलोकअरमृतजोअवीलोकअरआकासलो
कीकउप्रकासताहे। अरअंतरवाह्यआत्मतत्वकरकेपूरनहेअैसाअनुभवरुपआत्मा
हेतिसअवात्माकोनमस्कारहे। हेराजनइहसास्त्रजोअरंभकीयाहे। तिसकाविष
क्याहे। अरप्रोजनक्याहे। अरसंवंधक्याहे। अरअधिकारीकवनहे। सोश्रवणकर
सतचितआनंदरूपअवेतचिनआत्माकोजणावताहे। इहविषेहे। अरप
मानेइआत्माकीप्रापतअरअनात्मअभिमानदुषकीनिव्रितइहप्रोजनहे। इसविषे
अरसासविहातोकाइपावकरआत्मप्रतपादनइहसंवंधहे। अरजिसकोइहीनिश्च
हेजोमेहेतवधमअनात्मदेहसोवधयाहयाहोकिसीप्रकारछूटउ। तिस्रतजाने

वानहैनअवस्थै है ॥ असाजो विरक्त आत्मा है तिसको अधिकार है इस शास्त्र का सो इस मो
क्ष उपाय शास्त्र के माहि परमानंद कउ प्राप्त करणे हारा है ॥ जो पुरुष इसको विचारै ते ज्ञानवा
न होवै ॥ अरु बहुर जन्म मृत्यु संसार मो न आवै ॥ हे राजन यह महारामायण जो है सो पाव
न है ॥ वडे पाप दूर करने हारी है श्रवन मात्र ते ॥ जिस विषे राम कथा है सो प्रिय समझा
रद्वाज अपने शिष्य कउ श्रवण कराया है ॥ एक समै भारद्वाज चित कउ एकाग्र करके मेरे
पास आया था ॥ तिसको मैं उपदेश कीया था ॥ तिस श्रवण कर के वचन रूपी समुद्र ते
सार तत सो ॥ श्रवण करके हिरदे विषे धार करके एक समै सुमेर पर्वत पर गया था ॥ तहा
पिता मा जो है ब्रह्मा जी सो देखा था ॥ अरु भारद्वाज जाय कर प्रणाम कीया अरु जाय बै
ठा ॥ अरु ब्रह्मा जी को यह कथा सुनाई ॥ तब ब्रह्मा जी प्रसन्न होय कर भारद्वाज कउ
कहा है पुत्र कछु वर मांग ॥ मैं तुझ पर प्रसन्न हो ॥ हे राजन जब इस प्रकार ब्रह्मा जी कहा त
ब पुत्र उदार जिसका आशय है ॥ ऐसा भारद्वाज कहन लगा हे भूत भव के ईश्वर जउ तुम
प्रसन्न हुए हो ॥ तउ यह वर देवहु जिस कर सब ही जीव संसार के दुःख ते मुक्त होवहु ॥ ब
ह्म पद को प्राप्त होवहि सो उपाय कहहु ॥ ब्रह्मोवाच ॥ हे पुत्र तूं अपने गुरु वालमीक पास
गमन कर वहु जो तिसने आत्मबोध महारामायण आनंद शास्त्र का आरंभ की
या है तिस कउ श्रवण कर जीव महामोह रूपी संसार समुद्र ते तर जाहि ॥ कैसा शा
स्त्र है महारामायण जो संसार समुद्र के तरणे कउ पुल अरु परम पावन है ॥ वालमीकोवाच
हे राजन जब इस प्रकार कहा तब आप परमेष्ठी ब्रह्मा जी भारद्वाज साथ मेरे आश्रम
आए तब मैं भली प्रकार तिस का पूजन कीया ॥ कैसा ब्रह्मा जी जो सब भूतन के हित वि
षे प्रीति जिसकी सो मुझ कउ कहन लगा ॥ हे मुनि यह विशेष वालमीक कहु जो रा
म के सुभाव कथन का आरंभ तुम कीया ॥ तिस के उद्यम का त्याग नहीं करना इस
कउ सार रूपी समुद्र के पार करणे कउ जहाज है ॥ इस कर सब का र ब्रह्मा जी मुझ को
कह कर अंतर्ध्यान होत भए ॥ एक समुद्र ते उठा आन जैसे समुद्र आवले बड़क पकम हुत प्रयं
नउर कर रहते हैं वहु उत्ती नहीं जानते हैं तैसे ब्रह्मा जी अंतर्ध्यान होगए तब मैं भा
रद्वाज को कहा हे पुत्र ब्रह्मा जी ने क्या कहा ॥ भारद्वाजोवाच ॥ हे भगवन जी तुम कउ उन
ने ऐसे कहा है मुनि ने आरंभ कीना राम के सुभाव कथन का उद्यम कीया है तिस
का त्याग नहीं करणा अंत पर्यंत समाप्त करणा काहे ते जो यह संसार समुद्र पार कर
ने कउ जहाज है इस कर जीव कृतार्थ होवहिंगे संसार संकट ते मुक्त होवहिंगे ॥ वाल
मीकोवाच ॥ हे राजन इस प्रकार जब मुझ कउ कहा तब ब्रह्मा की आज्ञा अनुसार मैं ग्रं
थ कीया अरु भारद्वाज कउ कहा है शिष्य जिस प्रकार रामजी निःसंग हो कर विचरे हैं
वसिष्ठ जी के उपदेश कउ पाय कर तैसे तुम भी विचरु ॥ तब उस प्रश्न कीया ॥ भारद्वाजोवाच ॥
हे भगवन जिस प्रकार जीवन मुक्त होकर विचरे हैं ॥ रामजी ते आदि लेकर सब के स्वरूप को
कहहु ॥ वालमीकोवाच ॥ हे भारद्वाज राम लक्ष्मण भरत शत्रुघ्न सीता कौशल्या सु
मित्रा दशरथ ए आठ जीवन मुक्त हुए हहि ॥ अरु अष्ट मंत्री अरु अष्ट गण अरु वसिष्ठ वाम
देव ते आदि लेकर अष्ट विशत जीवन मुक्त हुए विचरे हहि ॥ अवति नके नाम सुण ॥ राम ते
लेकर दशरथ पर्यंत अष्ट तउ कहे हैं नाथा अरु अवरोध धर्मबोधवा सिद्धार्थ विकंत भा
सुमंत्र सवरथन सुपथा अस विभीषण इंद्रजीत हनुमान वसिष्ठ वामदेव अष्ट मंत्री
ए हहि इस कहाकर चेष्टा करते भए हहि ॥ अरु सदा अद्वैत निष्ठ हुए हहि कदाचित सम
पने अद्वैत भाव नहीं फुरया ॥ अनामय पद विषे स्थित तिन तिमिर रहे हैं जो केवल चिन्
मात्र पद परम पावन कउ प्राप्त हुए हैं ॥ इति श्री वैराग्य प्रकरणे कथा आरंभ वर्णनं
नाम सर्गः ॥ भारद्वाजोवाच ॥ हे भगवन जीवन मुक्त की स्थिति जैसी है अरु रामजी
कैसे जीवन मुक्त हुए है सो आदि ते लेकर अंत पर्यंत सम कहहु ॥ वालमीकोवाच ॥ हे पु

त्र इह जगत जो भासता है सो वास्तव कछु उपजा नहीं मिथ्या अविचार कर के भासता है
अरु विचार कीए ते निवृत्त हो जाता है ॥ जैसे आकाश विषे नीलता भासती है अरु जब कर के
तब विचार करिए तउ नीलता प्रतीत न हो रहो जाती है ॥ तैसे अविचार कर के जगत
भासता है अरु विचार ते लीन हो जाता है ॥ हे शिष्य जब लग दृश्य का अत्यंत अभाव नहीं
होता तब लग परम पद की प्राप्ति नहीं होती ॥ तब दृश्य का अत्यंत अभाव होवे तब पाके
स्वच्छ चिदाकाश आत्मसत्ता भासैगी कोऊ इस दृश्य कउ महा प्रलय विषे कदाचित अ
भाव कहते हहि ॥ अरु तुम कउ त्रैकाल अभाव कहता हो ॥ इस शास्त्र के जो इस शास्त्र
को निर्धार प्रमाण ते आदि ते लेकर अंत पर्यंत श्रवण करे ॥ अरु तिस को धारे तब चित्त की
भ्रांति निवृत्त हो जावेगी अरु अचिंत्य पद को प्राप्त होवेगा ॥ साधु इह संसार भ्रम मात्र सिद्ध
है ॥ इसको भ्रम मात्र जाण कर विस्मरण करना इही मुक्ति है ॥ अरु इस बंधन का का
रन वासना ही है वासना कर के भटकता फिरता है ॥ जब वासना क्षय हो जावे है तब प
रम पद को प्राप्त होवे ॥ एक वासना का उत्पन्न होता है ॥ तिस का नाम मन है जैसे जल होता है
अरु हिम उसरदी करके बरफ हो जाता है ॥ अरु तिसके अनेक प्रकार हुए तब वह उगल कर
जल हो जाता है ॥ तब केवल तत्त्व पाने रहता है ॥ तैसे वासना रूपी मन है ॥ तिस विषे सं
सार की सत्ता रूपी उदासीन लता है ॥ तिस कर के मन रूपी बरफ का उत्पन्न हूया ॥ ज
ब ज्ञान रूपी सूर्य उदय होवेगा तब संसार की सत्ता रूपी उदासीन लता निवृत्त
हो जावेगी ॥ जब संसार की सत्ता वासना निवृत्त हुई ॥ तब मन नष्ट हो जावेगा ॥
जब मन नष्ट हूया तब परम कल्याण हूया ॥ ताते इस के बंधन का कारण वासना है ॥ अर
वासना के क्षय हुए ते मुक्त है ॥ सो वासना दो प्रकार की है ॥ एक मलिन है एक शुद्ध है ॥ अशु
द्ध है जो अपने वास्तव स्वरूप के अज्ञान ते अनात्म तत्त्व जो है देहादिक तिन विषे अ
हंकार ॥ जब इस कउ अनात्म विषे आत्म अभिमान हूया तब नाना प्रकार की वासना
उपजती या हहि ॥ तिन कर के घटीयंत्र की न्याई भ्रमता है ॥ हे साधु इह जो पंचभूत
के शरीर देखता है ॥ सो सब वासना रूप है वासना करके भए हैं ॥ तैसे ज्ञानवान के सा
क्षात्कार होने हहि ॥ तब तागा तूटा शतखंड के भी भिन्न भिन्न होए पड़े हहि ॥ नहीं द
रने ते सेवा सनाके छे हुए पंच भूत के शरीर नहीं रहते ॥ ताते संसार अनर्थ रूप का कारण
वासना है ॥ अरु जो शुद्ध वासना है तिस विषे जगत का अत्यंत अभाव निश्चय होता
है हे शिष्य ज्ञानी की जो निश्चय है सो वासना कर के बहुर जन्म का कारण है ॥ अरु ज्ञा
नी की वासना कर बहुर जन्म का कारण नहीं होती ॥ जैसे एक कच्चा बीज होता है अरु
इस गाद दग्ध बीज होता है ॥ जो कच्चा है सो बहुर उपजता है ॥ अरु जो दग्ध हुआ है सो ब
हुर नहीं उपजता ॥ तैसे अज्ञानी की वासना रस सहित है सो जन्म का कारण है ॥ अ
रु ज्ञानी की वासना रस रहित है ॥ सो जन्म का कारण नहीं ॥ ज्ञानी की चेष्टा सुभा
व कर गुण इकार परी होती है ॥ इह संसार गण साथ मिल कर अपने विषे चेष्टा नहीं र
चता ॥ खाता है पीता है लेता है देता है बोलता है चलता है व्यवहार करता है ॥ अरु अं
तर सदा अद्वैत निश्चय को पाता है ॥ कदाचित द्वैत भावना तिस कउ नहीं फुरती अपने
स्वभाव ही विषे स्थित है ॥ ताते निर्गुण अक्रिय रूप है तिस की चेष्टा भी जन्म का कारण न
ही ॥ जैसे कुम्हार का चक्र होता है तब लग उसको चरण लागता है ॥ तब लग चल कर
ते रहे हैं ॥ अरु जब वेग का अभाव होता है तब ठहर जाते हहि ॥ तैसे जब अहंकार सहित वा
सना होती है ॥ तब लग जन्म पावता है ॥ तब लग जन्म पावता है ॥ जब अहंकार ते
रहित हूया तब बहुर जन्म नहीं पावता है साधु इह जो अज्ञान रूप वासना है ॥ तिस के
नाश करणे का उपाय इही है ॥ अरु जो ब्रह्म विद्या मोक्ष उपाय शास्त्र है ॥ अरु राम ने इसा

सुरूपीसनमोगिरेराजवकुत्सप्रजंनभीअकनमपदकोनपावेगा। अरजोअप्रविद
याकोप्राप्तिकेराजालोलसेनहीआत्मपदकोप्राप्तहोवेगा। हेभारद्वाज इहजो मोक्षउपा
यरामजीअरवसिष्टकासंवादहे सोविचारनेकोजोगहे। वाणाकपराकागीहे ताके
आदतेलेकरअंतपर्यंतसोषउपाइसुवणकर। जैसेरामजीजीवनमुक्तहोइकरवि
चरयाहेसोलषएकदिनरामजीविदयापढकरअध्ययनसालातेअपनेगृहमोआया
अरसहस्राणिदिनविलासमहतवीतकेतेभया। वहुरमनविपतीरथअरदाकरदा
हकामकल्पधारकरपितादसरथपासआया। पितादसराथाजोमंडपराअज्ञा
कोलषमाअरापतायथा। अरसमप्रजातिनकीसंकटतेरहतेसुपषकपातिसदसरथ
केचरणअरिखुनाथग्रहनकीए। जैसलइकुमलकउदेसग्रहनकरेजैसेसिलफल
केविषेकोमलतलरीयाहोतीहेइ। तिनतरीअरइसहलतकमलकोहंसपकडताहे
तैसेअगरीलहनचरणकररामजीग्रहणकीया। अरसवपतेरदसच्छकहाहेपिताम
राचिततीर्थकअरदाउरहारयोकेदसनकउरहुयाहे। तातेतमआज्ञाकरउइजोमे
देषआवउसेतुम्हारापुत्रहो। तमहूकरकेपालनाकरनीजोगहे। अरआगेमेकहूया
भीकछुनही। यहीप्रारथनाअक्करीहे। तातेतुमआज्ञादेवोजोमजावउ। इहवव
नसेराणेरनानहीकाहेतेजोअसाविलाकीविषकोऊनहीं जिसकामानेपारस
यहतेसिधनहुयाहोवे। सभकामनतोसिंहहुयाहे। तातेतुमकोकथाकरकेआ
ज्ञादेवो। ॥वालमीकउवाच॥ हेभारद्वाजइसप्रकारजवरामजीकहातववसिष्टजीवे
उपोतिनइभीदसरथकेउकहाहेराजनरामजीकउआज्ञादेवहूइहतीरथकरआ
वे जोइनकाचिनउदियाहे। अरराजकुमारहहे। सेनाइनकेसाथदीजे अरधनभी
दीजे मंत्रीदीजहे। ब्राह्मणदीनहाइहदसीनकरआवे। हेभारद्वाजअैसेविचारकीयातव
वसभगहूनेदेषकेरामजीकउआज्ञादीनी। तवचलनेलागेतवपिताअरमातावव
नेलागे। अरसभकेउकेवलगायाअरहदनकरनेलागेतिनकउमिलकरआगेच
ले। जैसेचलनेजोलछमणजेआदलेकरजोभाईहेतिनकउसाथलेकरअरअवर
जोमंत्रीअरुणएथेतिनेकोसाथलेकर। अरवसिष्टजीब्राह्मणसाथदीए जोविधके
जाणनेवालेथेअरसेनावहुतअरदनवडतसाथलेचलेदानपुनकरते। यहतवा
हरनवनिकसेतवकहाकेलोकथेअरइमजीयायीतिनहइरामजीऊपरफूलअर
फुलीयाकीवरषाकरी। जैसेवरफकीवरषाहोतीहे। अररामजीकीसरनइसोरिद
विषेधारतीमी इसप्रकाररामजीऊहानेचलेब्राह्मणकउअरनिधिनहुकोदान
देते तवतीर्थजोहहइंगाजमनातरसतीसेआदलेकरतिनकेइसनानकीए। अ
रतातग्रामवहीकिदारआदिककेदरसनकीए। इसनानदाननपषियानविधसेजु
गतताजाकरतभए। जेतीमेसीजहाविषेपर्थीतेसीतेतीलहातहेकरतभएस
पूर्नजाजाकरकेएकवर्षमोरामजीवहुइआपणेनगरविषेआए॥इतिश्रीतीर्थ
जात्रावर्ननोनामसर्गो॥ ॥वालमीकोवाच॥ हेभारद्वाजजवरामजीआपणेघरविषे
आवणेलागे। तवनगरकेजोवासीलोकथेसभीयाअरपुरवासीअरवि
शेषकीवरषाकरतभए। अरजैजैसवदउवाममुषनेकरणेलागे। अरफूली
कउग्रामभएरामजीशहविषेआए। जैसेइंद्रकाउत्रअपणेस्वर्गलोकविषेआवता
हे तैसेशहरविषेआए। प्रथमराजादसरथकोप्रणामकरी। बहुरजेतेसभाविषेलो
कवैठेथेतिनकोयथायोगमिले। वहुरअंतहपुरविषेआवतभए। कौसल्याआदिक
जोमाताग्रहविषेथीतिनकउयथायोगमिले। अरजोवाधवभाईजनकुटंवीथे
तिनकउमिले। हेभारद्वाजइसप्रकाररामजीकेआवणेकासमदिनअनंतउतनाह

इहोतारहेनारदा। कोअमिलतेगोआवहूकोअवाकेलोगेआवहू। सोवसुनेअरवामेवा
नह। वहुरउनमाहहूइहुयाभरठोदिकउसलनलकरहू। तिसतेअवंतरामजीकामह
षजारहूयाजोप्रातहूकालेनेउठकरसनानसंध्याआदिसनानकरतेहूवे
हुअभोजनकरहवहुअभारीजनकुकउमिलहूतिनसाथपुराणनीतिहूकीव
याकरहू। टाकुरद्वारउदेसहूकीतनीकरहू। इसप्रकारवेउतनलाइकरीदेनेरान
कउवीतावहू। एकदिनप्रातहूकालकोजोइदेइटकरकेराजादसरथकोउदेषुले
भया। वडेनेनकरसपन। जैसेइहकानेनुहोनाहेतैसेनेजवानदेषाअरवसिष्टजीते
आदलेकरसभावहूतवेदीहे। अरवसिष्टजीसाथकथावाचनारामजीकरहू। तवएकदि
नरानादसरथकहूतसभयाहेरामजीतसभसिकारषेलनेजायाकरहू। अररामजीवरस
वोउयाकाककुकमानकलाराजकमारथाअरइलकेसमानमहतभारीअरइसाथ
थे। अरसभीजानकेराथाथातिनहूसाथपर्वातुनलानकरहूइसनामसंध्यादिकभो
जनकरकेसिकारषेलनेजावहूजोजीवहूकउदुषदेणवालेजीवरथहूतिनकउमार
हू। अरअवरलोकहूकउअसेनकरहूइसप्रकारदिनकोसिकारषेलनेजावहू। रातक
उअपनेगृहविषेआएरस्यतहोवहू॥ जवकेतेकदिनअैसेवीतेतवरामजीवाहेजर
तेअपनेअनहूपुरविषेआरइस्यतहूए। सोकमरहन। हेभारद्वाजजेतीकजाजउसा
रहूकीचेष्टाथीतिससभकोत्यागकरकेएकांतविषेचितासजागनवरहूअरजेतनव
छरसलंजगाहिरीथइकेविषेहूतिनकउत्यागतभए। अरसरीरविषेसजैसाहोतया
अरसुषकीकांतजातीरहीपीतवर्नहोगाई। जैसेकमलफलपीतवर्नहोताहे
अरतिसपरभवरआइवैटतेहेइ। तेसेमुषरूपजोकमलहेपीतवरनतिसऊपरने
त्ररूपीभवरस्यामसणलागेतिसकरभीसोभापावणेलागे। अरइछानेविरक्तहोग
ए। जैसेसीतकालविषेतालनिर्मलहोताहे। तैसेइछारूपीमलतेरहतचितरूपी
तालनिर्मलहोरहा। अरसरीरदिनदिनविषेनिर्मलहोताजावे। अरजहावैटतेह
वितासहतवेटारहजावेउटेनहीअरवैठेनवविवककोइसनकेअधाररायकरवे
हे। तवटहूलएसेजीवहूतकहहजोहेप्रभोइसनानअरसध्याकेकरणेकासमाइया
हे। उठकरतवउठकरकेकरहूपरसिदेविषेतधारहूजेतीकक्रुषाणोगीलेवोलागेचलणे
वीजेजाहेसोसभविषमहोगई। तवलछमणअरसत्रुघनदेषकरजैसेरामजीसमसन
गतहोवेवेसे। तिसीप्रकारहोवेठेचिंताकोधारकर। तवदसरथइहवारताणक
ररामजीपासआया। आयकरदेषाजोमहाकिसजैसाहोगयाहे। इसचिंताकरभी
तरहूया। अरशोककरणेलागाकरणेजोहायहायरनकीक्याअवस्थाहूईहे। इससोकक
रलीएहूएरामजीकोगोदविषेवैठाया। अरकहणेलागाकोमलसदइसबदकरके
हेपुत्रतमकिरवपाउपमामहूयाहे। जिसकरतममसोकवानहूएहोतवरामजीनेक
हाहेपिताजीहमकउतउरषकोऊनही। अैसेकहकरतूसनीहोरहे। तवकेतेकदि
नइसप्रकारवतीतभएतवराजाभीशोकवानहूया अरसभइस्त्रीयाभीसोकवान
भईया। अरराजामंत्रीअहूसाथविचारकरणेलागा। जोपुत्रहूकाकिसीठौरविवाह
करउ। अरइहूभीविचारकीयाजोइहूकाइयाहेजोमेरेपुत्रसोकवानरहतेहे। तवव
सिष्टजीतेपूछयाहेमुनीसरमेरेपुत्रसोकवानक्युरहतेहे। तववसिष्टजीकहा
हेराजनमहापुरषहूकउजोक्रोधहोताहेसोकिसीसूल्पकारणकरनहीहोता
अरमोहभीसूलएकारनकरनहीहोता अरशोकभीअल्पकारणकरनहीहो
ता। जैसेप्रथवीअरजलतेजवायअकासजोमहाभूतहहे सोअलपकारनविषे
विकारवाननहीहोतेजवजगतकोअंतप्रलेहोतीहे तवविकारवानहोते
हे। तैसेमहापुरषअल्पकारजविषेसोकवाननहीहोते तातेहेराजनइहसोकवार

वे॰ य॰
५

लोकउपयोगनहीं अरु रामजी जो विनावान हूया है सो भी किसी वे हे अर्थ के नमित न होवे
गा॥ पाछे इसका त्तुषनिकसेगा कलु का लर हता है ते सोक मत कर॥ २॥ वा॥ मी॥ वा
च॥ हे भारद्वाज ऐसी वसिष्ठ जी अरु राजा दसरथ विचार करते थे तिसी काल विषे विश्वा
मित्र अपणे नगर के अर्थ आवते भए॥ राजा दसरथ के यह आय कर कहत भए जोहीकउ
जो राजा दसरथ कौ कहूहु विश्वामित्र वाहर खडे हैं गाधके पुत्र॥ तव अनुह्यापते वे रे
अवर हूके उ जाय कर कहा है स्वामी लोकव ह्रात पी सरवा हर आय खडा है तिस हम कउ
कहा है जो राजा दसरथ पास जाव हू॥ तव तिन के वचन सुण कर उह राजा दसरथ पा
स गए॥ अरु कहा जो विश्वामित्र गाधका पुत्र वाहर आय खडा है॥ आगे राजा दसरथ केसा
है॥ जो संपूर्ण मंडलेस्वर हू कर पूजत है॥ अरु सभ लू सहत अपने सिंघासन पर वैठा॥ हे अर
वरे ते जवन्त लपेन है॥ तिस कउ कहा जो विश्वामित्र हम कउ कहा है॥ हे भारद्वाज जव इस
प्रकार जे छी रके हा तव राजा जो मंडलेस्वर हे कनक अवला था वैठा था अरु सभ ते सवा
न था॥ सुण कर स्वामी के सिंघासन ते उठ षडा हूया॥ अरु चरनहु कर चलया सक उर
राजा के वसिष्ठ जी अरु दूसरी ओर वामदेव जी अरु भाट हू की न्याई मंडलेस्वर मंडले
स्वर उस्तत करते चले॥ इस प्रकार चलहि चाल कर राजा चल्ला जव जहां विश्वामित्र ठह
आया॥ तव तहां ते इस नाम करणे लागा जहां प्रथवी पर सीस राजा का लागा तहां प्रथवी
भी हीरा मोती कर सेहुई हो जावे इस प्रकार मसतक टेकता टेकता राजा चलया॥ वि
श्वामित्र के आगे सो विश्वामित्र के से थे वडी जटा सिर पर विराजत है का ये पर षडी
हुई अरु अगन की न्याई प्रकासती है अरु सरीर स्वर्ण की न्याई प्रकाशता है अरु रि
दे विषे शांत द्रिष्टी आवे॥ अरु कोमल जैसा स्वभाव द्रिष्टी आवे अरु महा तेजवान अ
स्तं इह क्रयासां तन रूप अरु हसन विवेकटी वास की अरु महा धीमे वान ऐसे विश्वामि
त्र कउ प्रणाम करता राजा दसरथ चरणहु पर जा गिरा॥ जैसे सतत सदाशिव के चरणहु प
र गीरे॥ तैसे मसतक टेक कर कहा है अभी मेरे वडे भाग हूए हैं जो तुमारे दरसन
हूया है॥ हमारे पर तुम वडा अनुग्रह कीया है हम कउ वडा अनुग्रह कीया है हम कउ व
ड्या नंद प्राप्त हूया है जो अनंद अनंत है॥ आस्त्रंत मथते रहत है॥ अरु अविनासी है ऐसा
जो अकेश्न आनंद है हे भगवन आज मेरे वडे भाग हूए जो धर्मात्मा जिन न विषे आवह
राति न हू विषे मे भी वानी अङ्गुरा॥ काहते जो तुम मेरे कोल क्ष करके आए हो॥ हे भगवन
तुमारा आवणा हमारे लषण विषे नही परन्तुम हू वडा अनुग्रह कीया है॥ अरु तुम ऐसे
सभ कउ द्रिष्ट आवते हो जैसे सूर्य किसी कामी को अपघावी परस्या वे अरु सभ ते उत क्रिष्ट तम
द्रिष्ट आवते हो काहे ते जो उगण हो॥ एक तउ पर जी का स्वभाव तुमारे विषे है अरु हमारा
ब्राह्मण का स्वभाव भी तुमारे विषे भासता है॥ अरु सभ गुण कर संपन द्रिष्ट आवते हो हे म
नीस्वर क्षत्री ते ब्राह्मण तुम ही हूया है॥ अवर की समर्थ लान ही देषती अरु तेरा धारी रव ऊ प्रका
स कर संपन द्रिष्ट आवता है॥ अरु जिस मार्ग ल्याया है तिस मार्ग नहा ते अमृत की वर्षा करता
आया है ऐसे द्रिष्ट आवता है॥ हे मुनीस्वर एसे तुम हो तुमारे दर्सन कउ मुक्कउ वडा लाभ
हूया है॥ हे भारद्वाज इस प्रकार राजा दसरथ विश्वामित्र कउ मिल्या॥ अवर वसिष्ठ जी आए
आय कर विश्वामित्र कउ वहुत के हलाया मिले॥ अरु अवर जो मंडलेस्वर मिले तिन हू ने वडु
त प्रणाम कीए॥ इस प्रकार सभ मिले तव विश्वामित्र कउ राजा दसरथ अंतर ले गया ज
हां वैटणे का स्थान था तहां आइ कर वैठे सिंघासन पर विश्वामित्र कउ वैठाया॥ अरु व
सिष्ट वामदेव कउ वैठाया॥ वैठाय कर राजा दसरथ विश्वामित्र का पूजन कीया॥ अरु पा
द अर्घ अरु परदषणा दीनी तव विश्वामित्र भी राजा की मान करी॥ वहुड वसिष्ठ वि
श्वामित्र का पूजन कीया॥ अरु विश्वामित्र का पूजन कीया॥ अरु विश्वामित्र वसिष्ठ का पू
जन कीया ऐसे तिन पूजन कीया॥ इस प्रकार पूजन करके अपणे अपणे स्थान विषे

तिन हूं सहूत मै ते सारे साथ चलना हूं॥ जाय कर उन कौ मार वहवे॥ वा समकार की सेना
हे हसती घोडा रथ पैदा लो साथ ले जाव हू अरु जो तेरे मन के षउ नहारे हैं तिन कौ तुम
कवहू पवर कसाथ हम तुपन करहरी तो कराचित जराषस नहारा रहे हैं तिन कौ तुम
विलस वाकाउ रहोवे तो हम उस साथ ज्ञथ करणे कउ समर्थ नही हे मुनीस्वर अ
समरे विषे वडा भाग भया ऐसा त्रिलोकी मो कोऊ नही जो मेरे निकट आवे मार न
कौ अवसेरी विप अवस्था हूई है अर देह जरू जरी भाव को प्राप्त हूया हूया हे रक्षका
लीलम रे विषे रावण के साथ ज्ञथ करणे की समर्थता नही हे मुनीस्वर मेरे को अ
वडे अभाग हैं जो तुम अव आए हो अव मेरा इह अकमन नही रहा मैरावण सो कापता हो
अवे वो वलमैं नही कापत इंद्रादिक देवता भरावण ते कापते हैं वे पावने हैं अर
देन हका जो राजा है सभ उस के वशवरत ते हैं अवर किस की समर्थ है जो उस साथ ज्ञथ
करे इस काल विषे इहु वडा सूरवीर है हे मुनीस्वर जो मेरी समर्थता भी तिस साथ ज्ञ
थ करणे की नही जो राजा कुमार रामजी के समर्थ होवेगा अरु जिस राम जी के ले
वणे कौ तुम आए हो सो तो रोगी पडा हो इस को ऐसी आप चिंता लागी है जिस कर
हा के समने लहो गया है अरु भर्ता इस विषे का न देता रहता है षावणा पीवणा स
कल जो राजकुमार की चेष्टा है सो सभ इस का विसर हो गई हैं अरु मैं नही जानता
जो इस कौ का उह प्राप्त भया है जैसे पीत वरन कमल होता है तैसा इस का मुष
होगया है इस कौ ज्ञथ की समर्थता कहा है अरु अवण अस्थान ते चाय इस भ्रष्ट
वी भीन ही देषी ज्ञथ कै सक रेगा हे मुनीस्वर इह ज्ञथ करणे का समर्थ नही अरु
मारे आनइ ही है जो उस का वियोग होवे तव हमारा जीवणा न ही होता जैसे जल ते रहत
तन मछली जीवती नही तैसे हमारा जीवणा रामजी विना नही होता अरु जो दे
खो के जहे न मिल कहो तो हम तुमारे साथ चलते हैं अरु रामजी जइ कर ने कोजो गन
ही॥ इति श्री इसकर थ अकाति नाम सर्गः॥ वाल्मीकि उवाच॥ हे भारद्वाज इस प्रकार
वेद सरथ कहा तव महा दीन जैसे मोह सहत अरु अधीरज वान वचनो कौ सुन कर
कोलीए विश्वामित्र कहत भया॥ विश्वामित्र उवाच॥ हे राजा तू अपणे धरम को समरन
करू इह अर्थत त्याग कर रीह जो तेरा धर्म है होवे गा सोस्ंव सन करे गा अरु तैसे न हूया जा
न ऐसे तू कहा है अव अपणे धरम को त्याग करता है अरु जो ते सिंह हूया हूया भि
गा की न्याई भागता है तो भाग पर आगेर घव सी की कुल विषे ऐसा को ऊ नही हूया जे
सव इमा को मंगल विषे सीत लता होती है अरु तू ऐसे निकसती नही तैसे तमारी
कुल विषे ऐसे कराचित नही हूया अरु जो तू करना हे तो कर इस अइ जावेगो कोर ते जो
स्नेके ग्रह हते सुन जारी ता है पर इहू तुम कौ जोगन था अरु तुम वस ते रहहु राज करते रहो
जो कब हू होवे गी सो हे सुसमर कुल वह दोन सम अपणे धरम कौ त्यागता है त्यारा॥ वाल
मीको वाच॥ हे भारद्वाज न वर इस प्रकार विश्वामित्र कहा कोप सा घर न हो रक र तव
तिस के कोध कर केप वाम कोट जो जन प्रथ्वी कापणे लागी अरु इंद्रादिक देवते भी भै
को प्राप्त हूए जो क्या हूया तव वसिष्ठ जी वोले हे राजा इक्ष्वाक की कुल पर मान माहूरी
है तू दसरथ अपणे धरम कौ क्यूं त्यागता है मेरे विहुस्मा तू ऊ के कहा है जो जो तमारा
अरथ होवेगा सो मैं पूरन करोगा अव क्यूं भागता है रामजी को तू इस के साथ देर अरु
इह ने वड्डे की रष्या करेगा जैसे सर्पहु ते अमृत की गरउ रष्या करता है तैसे ते रे पुत्र की रष्या
करेगा इह कैसा अर्थ है अवन कार इस के समान वल किसी का नही साध्यातु वल की
मूरत है अरु धर्मात्मा ऐसा है जो सरवात धर्म की मूरत है अरु जो बुधवान कहीए तो ऐसा को
ऊ नही तप की रिद्ध्या महा है अरु बुधवान कहीए तो इस समान बुधवान को ऊ नही अर

वै.प्र.
५

सर्गकहीगीतोइसकेसमानसर्गभीकोउनही सगतअरसबविषयाइस जैसीकोउनही
जानताकाहेतेजोदक्षप्रजापतकीरोधरीपार्थी एकजेअररएकसुभगाउसनेरिषको
दीयाजोनेघातिसकेपांचसौपुत्रहएरहे देतडकेमारनेमथेपिसगढकीएश्रपरसुभगाके
भीपचसौपुत्रभएरहे तिनभीदेतहुकेनाशानमित्रउत्पनकीएरहे सोइसजीयाइसकेविह
मानमूतेयारकरश्रानहस्यतहोतीहहे तातेइसकेजीतनेकोसमर्थकोनहोवेजि
सकेसाथउहहोवेइहतो त्रैलोकीकाश्रीसेहे तातेइसकेसाथतेअपणाइुवदेयश्र
रसनेभीमतकरकिसीकीसमर्थतातनहीजोइसकेहातेकोऊकछुतेरेपुत्रकउकेहस
के इसकीइष्टदेवणीसाथउष्टहूकाअभावहोवेगा जैसेसूर्जकेउदेहएअंधकारकाश्र
भावहोजाताहे हेराजनइसकेसाथतेरेपुत्रकोषेदकहाहोवेतेरिषवाककीऊलका
हे अरदसरथतेरानामहे तसमारथभीअपणेधर्मविषभीइस्थरतरहहे तोइतसजी
वहुतेधरमकीपालनाकेसेहोतीहे जोकछुअष्टपुरषचेष्टाकरतेहहे तिनकेअनु
सारअवरजीवभीकरतेहहे जोतसमसारवेअपणेवचनकीपालनानकरहेतोअ
रकिसीकाकरणीहे अरतमारीकुलविषयेसेकबहूनहीहुया तातेअपणेधर्म
कोत्यागणेजोगनहीते अपणेपुत्रकोदेह अरजोतुउनकेभेकरसोकवानहोवेतोभी
नेककु राषसकाहेमितजोहेकालसोमनेधारकरइस्थतश्रानहोवेतोभीवि
सवामित्रकेविहमानतेरेपुत्रकोकछुकहतसके तपोकमतकरु अपणपुत्रके
तुसकेसाथदेहु अरजोतुनदेवेगातवेदोप्रकारकातेराधुननष्टहोवेगा एकधन
सहहेरूपवावलीतालकहाएहोवहतिनकाजोधनहोवेसोनष्टहोइजावेगा अरजे
कुतनपदानइस्नानआदिकजोपुनकीयाहे इससातिनक्रियाकाफलसभनष्टहो
जावेगा जोतेरेयहतेनिरारथकजावेगा तातेमोहअरशोककोत्यागि अरसुप
तोधर्मकोसमर्णकरकेरामजीकउइसकेसाथदेहु तवसभकाजसफलहोवहगा
हेराजनइसप्रकारसुकश्रीयातवप्रथमेविचारकरकेकहता विचारविनाकहणोका
प्रताबडवहोताहे तातेइनकेसाथदेहु वा लमीकीवाच॥ हेभारद्वाजइसप्रकारजववसि
ष्टजीकहा तवदसरथधीरजवानहोकरश्रतहविषेजोश्रष्टअनथ्यातिसकोबुलाइक
रकहतभया हेमहाबाहरामजीकोलेश्राउकेसाथाउहश्रतजोअतरवाहनश्रावणे
वाला अरलछमनेरहतभया सोराजाकीश्राज्ञाकोलेकररामजीकेनिकटगया महं
लिकुआनतबहुतश्रामया अरकहतभयाहेदेवरामजीतोवडीचिंताविषवेठाहे सेराम
जीकोवारवारकहाजोचलहुतवकहतभयाचलतेहहे एसेकहकरबहुतुक्लीहोग
या हेभारद्वाजइसप्रकारजवराजेश्रवणकीयातवकहाजोरामजीकेमंत्रीअरसभही
टहलपएवुलावहु तवसभहीबुलाएनिकटश्राएइस्थतहुए तवराजाकोमलअरस
दरवचनश्रादरसजुगतकहतभया हेरामजीकेप्रीतमहुरामजीकीश्रादिसाहे अरवि
उकरहुरीहे सभहीक्रमकरकेकहहु॥ मंत्री वाच॥ हेदेवहमक्याकहहे जेतेकछुहमत
मकोदिष्टश्रावतेहहेसोप्रकारश्रमाणदेषतेसावहमारेसाथहहु अरसभहमकतकि
हहे काहेतेजोहमारासश्रामीरामजीवडीचिंताकोप्रापभयाहे हेराजाजीजिसदि
नकेरचनाथजीतीर्थकुनश्राएहेवासएकहुसहतनितीदिनकेचिंताकोप्रापहुएहहु
निरउतसभोजनहसलेजानेहहे अथवापानकरणेकोअथवापहरणेकोलेजातेहहे
अथवादेषणेश्रादलेकरकछुलेजातेहहसुपदाभीपदाअरसफहतहमलेजातेहु
हु जोकिसीप्रकारप्रसंनतहोवेतोभला परउहतोसीकिसीविनाविषतोनहदेषताभीन
ही अरजोदेषताभीहतोभीकोधकतीहे अरउसपदार्थकानिरादरकतीहे अरमुनउस
तेमाताउनकोनानाप्रकारकेहीश्रमणकेभूषनदेतीहहतोउनकोभीडारदेताहे अप

नापषेदेअरजथायोगतवराजेदसरथकहा हेभगवनहमारेवडभागहएहे जोतसमा
रदर्शनहूयाहेजेतेकिसीकउअमृतप्रामहोवे अरजनमकेअंधकोनेत्रप्रामहोवेकुस
नंदकोप्रामहोवेअरजेताकिसीकावापवहुयाहुयाविचानहुयसवरथाश्राकासमेश्रा
वे अरउसेश्रानदप्रामहोवे अरजेतेनिर्धनकोचिंतामणप्रामहोवे अरवडश्रानंदको
प्रामहोवेतेसेतमारेदर्सनकरमेश्रानंदकोप्रामहोवेतेसेतमारेदर्सनकरमेश्रान
दकोप्रामहुयाहेहेमुनीश्वरतमाराश्रावणानिसअर्थहुयाहेसोकृपाकरकहहु
रजोतसमारात्रप्रथाहेसोपूर्णहुयाजाणहुकाहेतेजोपेक्षापदार्थकोऊनहीजोतसमको
देणाकरनहे सभकछुमेरेविदमानहे जोतसमाराअर्थहेतिसकोनिश्चकरजाणहु
जोहोरहाहेजोकछुतसमश्राज्ञाकरहुगेसोमेदेवहुगा॥ इतिश्रीविश्वामित्रश्रागम
नवर्ननंनामसर्गः॥ वाल्मीकीउवाच॥ हेभारद्वाजजवइसप्रकारराजेदसरथ
कहा तवसुनोविश्वामित्रहजो है विश्वामित्रसोवहुतप्रसंनभए अरपैसेकहेहो
श्रापजैसेहसनेमालीकेचंद्रमाकोदेषकरवीरसमुद्रप्रसंनहोताहे तेसेप्रसंनहो
करकहतभए हेराजासारहुतपनहेनअैसावानहोवे एकतोरघुवंसीहेत
असावानहोवे एकतोरघुवंसीहेतहूसरावसिष्टजीतसमारागुरहेतिसकीश्राज्ञा
विषेचलनेवालाहेतहेराजनजोकछुमुकेप्रोजनहेसोतसमारेविदमानप्रगट
कतीहोश्रवणकरहु दसराजनमेयज्ञकाश्रारंभकीयाहेतेतेमवजनकोकरणेलाग
ताहोनवनिशाचरजोहेपरश्रवरहुषनराषससोविरोधश्रायकरतेहहेनहामेनाशक
रणेलागताहोनहोनहाजाइकरश्रवधनतरस्थानकरनेहहि अथवायहतोश्रपवि
करजातेहहसोहधश्ररमासश्ररश्रमनडारजातेहेवहइस्थानकर्मकरनेकोजोग
नहीरहतावहूइमेश्रवरटवरकरणेलागताहोनहाभीइसीप्रकारश्रपवित्रकरजा
तेहहि तिनकेनासकरणेनमितमेतसमारेपासश्रावतभयाहोकसाचितश्रमकहोजो
तेभीतोसमर्थहेहेराजनजोमेजगतकाश्रारंभकीयाहेतिसकाश्रंगविघ्नाहे॥
जोमेइनकोश्रापदेवोतउहभसमहोजावेपरश्रापकोधविनाहोतानही अरजोर
कोधकरीएतउसगालिहफलहोताहे अरजोनवुपकररहोतोश्रपवित्रविरूपक
रजातेहे तातेमेतसमारीसरणश्रायाहोमेराकाजेकवड्उदेराजनतेराज्येष्ठपुत्र
रामजीकमलनेनश्ररकाकपक्षसजगतश्ररयहजोवालकसिषाहूसरीसहत
हेतिसकोमेरेसाथदेवहु जोराषसहूकोमारेतवमेराजगतसफलहोवे अररहुशोक
तसमनकरहुजोमेराउत्रवालकहे इहमहाहिंदकेसमानस्रवीरहेइसकेसनसुषउ
हेवहरनसकेहगजेसेसिंहकेसनमुखमिर्गकाठहिरनाहीटहरसकतातेसेतेरेपुत्र
केसनमुषराषसनटहरहरहेगेतातेमेरेसाथदेवहुजोनेरायभीरहेअरजसभीर
हेअरमेराकार्यभीहोवे इसविषेसंदेहनहीकरनाहेराजनएसापदार्थत्रैलोकी
विषेकोऊवहीजोरामजीकोकरनाकठनहोवे इसीतेसतेरेपुत्रकोलेजानेहोश्र
रइहसुनाकरहाप्माजावेगा अरइसकोकोउविघनहमनहोवनेदेवहगे अरजोक
छवसतहेइहसोभीमेजाणताहो अपवाविसिष्टजीइसकोजाणतेहैश्रपवाअव
रकोउज्ञानवानत्रिकालदरसीहोवे सोभीइसकोजाणतहोवेगाअवरकिसीकी
समर्थतानहीजोकउजाणे तातेइसकोमेरेसाथदेहुजोमेराकार्जसिधहोवेहेराज
नजोसमेकरकाजहोताहेसोपाछेकरभीवहुतसिधहोताहेजेसेहनीयाकेचेहुम
कउएकतनदीनीवहुनहेश्ररपीछेवसत्रदीएकार्जनही तेसेसमेवारप्योइकाजेव
हुतसिदहोताहे अवसमेविनावहुतकरकेभीथोडाहोतानाहेतातेतेअवमेरेसाथ
रामजीकउदेश्रवरश्ररहपनद्ववरदेतहहश्रानकरमेराजगतधंडनकरतेहहेजवराम

जीजावहूगेतवउहमागजावहूगे रामजीकेश्रागेघडेनहोसकैभोगसकेतेजकरउहमभ
मूलपहोजावहूगे जैसेसूर्यकेतेजकरतारागणकाप्रकासमलपनहोजाताहै तेसेराम
जीकेदरसनकरउहम्पलनहोवहूगे जैसेगरडकेश्रागेसर्पनहीठहरसकताते सेराम
जीकेश्रागेदैतनठहरसकेगेदेषकरभागजावेगे तातेमेरेसाथदेहुजोकार्यहोवेश्ररते
राधर्मभीरहीहैश्ररामजीकेनमितसंदेहमतकरकिसीकीसमर्थानहीजोराम
जीकेनिकटश्रावेश्ररहमभीवलकरहह ॥वालमीकोवाच॥ हेभारद्वाजजबविस्वामित्र
ऐसेकहाजबश्राज्ञादसरथसुणकरतूस्नीहैगया श्ररविसृघडीएकमहूर्तपर्यंतप
श्ररदा ॥श्रीश्रीविस्वामित्रविचाररघिप्रानन्नामसर्गः॥ ॥वालमीकोवाच॥ हेभा
रद्वाजजबएकमहूर्तपर्यंतराजाउदासपरमहादीनजैसेगहोगया श्ररमहामोहकौ
प्राप्तहूपापीरजतेरहतहोकरकहतभया ॥राजोवाच॥ हेमुनीश्वरतमहूकयाकहूं
रामजीश्रवताउम्रारहसत्रसत्रविद्याभीसीषीनहीश्ररश्रसत्रविद्याभीसीषीनही
श्रवीतोफूलहुकीसिहजापरसेनकरणेवालाहै उहजुधकोक्याजाणे श्रतःपुरविषे
रसत्रीश्रदूकेपासवेठणेवालाहै श्ररराजकुमारवालकहूसाथषेलणेवालाहै क
दाचितरणभूमकादेषीभीनही श्ररमिकरीकउवडाडेकरकदाचितयुद्धनहीकीया
श्ररकमलकीन्याईजिसकेहाथहह श्ररकोमलजिसकासरीरहै श्ररदैतडूवडा
घष्टहकैसेकरहहगा केहुथश्ररकमलहूकाभीजुधहूयाहै रामजीकावयमहूं
कोमलकमलवतहै श्ररवडेमहावजूरथश्रहूकीन्याईहहउनहूसाथजुधकैसेहो
वेगा हेमुनीश्वरमेनवलहजारवर्षकाहूयाहां श्ररदसवामहजारलागाहेश्ररविरध
हूयाहो विरधश्रवस्यामोमेरेश्रहविषेप्रहूएहै तिनचारोकेमधविषेभीकमल
नैनरामजीकछुऊनषोडसवरषकेहूएहै श्ररमुककोवहुतप्रीतउनमधश्रहसेमा
णहैरामजीविनामेराक्षिनभीनहीरहसकता ज्रुतुमउसकोलेजावहूगेतब
मेरेप्राणनिकसजावहूगेभेसिंतहोजावहूगा हेमुनीश्वरकेवलमेराहीश्ररतन
हनहीउसविषेउसकेमाताजोहहलक्ष्मणभरथसत्रुघनश्रमानाजोहहसमुन
हूकेप्राणहहरामजी जोतेरामजीकोलेजावहूगातवहमसभहीमरजावहूगे
श्रागवरकैजउहमकोप्रासनश्रायाहैतवलेजाय हेमुनीश्वरमेरेतोचितविषेराम
जीप्राणहोरहाहै तिसकोमतेरेलायकेलेदेवउ मेउसकोदेषदेषप्रसन्नहोताहां
जैसेपूर्णमासीकेचंद्रमाकोदेषकरषीरसमुद्रप्रसन्नहोताहे श्ररचंद्रमाकोदेषकर
चकोरप्रसन्नहोताहै श्ररमेघकीवूंदहूकउदेषकरपपीहाप्रसन्नहोताहै तेसेराम
जीकोदेषकरमेप्रसन्नहोताहो तोरामजीकेवियोगकरमेराजीवणाकैसेहोवे हेमुनी
श्वरऐसीप्रीतश्रसतीनहीमुझकोश्ररधनभीऐसाप्यानहीश्ररराजभीऐसाप्याराम
हीश्ररश्रीपदार्थभीतामुझकोकोऊप्यारानहीजैसारामजीप्याराहै हेमुनीश्वर
तेरेवचनकोसुणकरमेवडेसोककोप्राप्तहूयाहो मेरवडेश्रभागश्राएहहिजोतेराश्रा
वणाऐसानिमित्तहूयाहै तमारेवचनसुणकरमेरेऐसाहूयाहैजैसेकमलऊलेहूएपरगाढे
कीवरषाहोवे श्ररकमलतनष्टताकोप्राप्तहोवहै तैसेतेरेवचनकोसुणकरमेनष्ट
ताकोप्राप्तहूयाहों जैसेवडासेषगंभीरहोवे श्ररवडापवनचलेश्ररमेषकीगंभीरता
कोश्रभावकरदेताहै तैसेतेरेवचनहूमेरेरीदेकीप्रसंनताकाश्रभावकरदीयाहै जै
सेवसिंतरितकीमंजरीजेहश्राषाढमासकूजातीहै तैसेतेरेवचनहूकरमेरेचितकी
प्रसंनताजलगई हेमुनीश्वररामजीकेदेणकामेनासमर्थनहीहाभकामालकैदे
तोएकप्रहलीसेनामेरीहेसोकैसीसेनाहैवडीसूरवीरताकरसंपनहै तिनकोसंग
लेविद्याश्ररश्रसत्रविद्याजाहमंत्रविद्यातोदोनाश्रावतीहैहि सभहीजहविषवनूही

वीकिसीनिवधनकोदेताहहि। श्रतेनकिसीपदार्थपरहोतेनही। नेहरामजीघावितह
मानपडीहोतीहहि नानापकारकेभूषनहूसहना। श्ररमहामोहकरोतहीश्रगनि
कटहोकरलीलाकरतीहहकटाघहूसहहन। प्रसनकरणेकेनमित। नाभीविषवनार
जाणताहेउनकीभेवरेषनाभीनही। जैसेपपीहाश्ररचकोरजलहूकोनहीदेषता
श्ररजोश्रनरकूनहूविषेनिकसताहैतोदेषकरउनकोकोधवानहोताहै। हेराम
नश्रवरकछुउसकोभसतानहीलागता। किसीवडीचिंताविषेमगनहै। श्ररतिप
नहोकरभोजननहीकरता। श्रप्यावेनरहताहै। नकोऊपहूसणेविषेउलाघवताहै।
नकछुयहूरणेविषेउकाराघुताहै। नथावणेविषेवूम्लहेनराजवीउछ्याहै। नकि
लीरहेदीश्रहूकेसूषवीउछ्याहै। नतोगनमनहूकीनिश्राशीवंगरहताहै। श्ररजो
कोऊसूषदाईपदार्थहूलादिकलेजाताहैतोभीक्रोधकरताहै। रहहमनहीता
नताक्याचिताउसकोश्रायप्राप्तभईहै। एककोहूरीविषेपदमश्रासनधारक
रवेठारहताहै। श्ररजोकोऊवडाभंत्रीकछुहूछताहैतोकहताहै। श्ररजिसकोन
मसंपदज्ञानतेहोसोश्रपदाहैश्ररजिसकोतेमश्रपदाज्ञानतेहोसोश्रपदानही
नानाप्रकारसंसारकेपदार्थहैरमणीकजाणतेहोसोसभभ्रमहहि। ऐसीविषम
इवेहहसोमिराश्रसाकेजलवतहै। तिनकउसतजाणकेमूर्षदोरतेहहश्ररदुष
पावतेहहि। हेरामजनकदाचितवोलतेहहतोऐसेवोलतेहहि। श्रवरकछुउनको
रसदायकनहीभासता। श्ररजोहासीकीवारताहमकरतेहहतोभीहसना
नहीं। जिनपदार्थहूकोप्रीतसंजुगतलेतेथे। तिनकउश्रवश्रादरदेतेहहश्ररदिन
दिनविषेदुर्वलजैसाहोताजाताहै। श्ररजवश्रतःपुरविषेइसत्रीश्रहूकेसमी
पवेठताहै। श्ररउहनानाप्रकारकीचेष्टादिषावतीहैरामजीकेप्रसंनकरकेन
मितउनकोदेषकरभीप्रसंननहीहोता। श्ररवलाश्मानतनहीहोता। जैसेसव
कोश्रंदहकरकेपर्वतवलाश्मानतनहीहोता। श्ररजवबोलताहैतोऐसेकहताहै
जोराजसतहैनभोगसतहैनश्हजगतसतहै। सभभ्रांतमात्रहैमिथ्यापदार्थ
हूकेनमितमूर्षयदेजतनकरतेहहि। जिनकोसतताजानतेहहश्ररसुषदाईजानते
हहसोवंधनकाकारनहैश्ररवपाकहीराजोकोऊराजाश्रथवापंडितजावति
नदेषकरकहताहेयहूपसहहि। श्रासानूपीफासीकरवांधेहूएहै। हेराजनतेकछु
भोपदार्थहहतिनकोदेषकरउसकाविनप्रसंननहीहोतादेषकरषेदवान
होताहै। जैसेपपीहामारूथलविषेश्रावश्ररसवकीयाचनाविनाषेदवानहोता
है। तैसेवहविषहूकरकेषेदवानहोताहै। हेराजनरतनकरकेहर्षवाननहीहोता
नातेहमजाणतेहहजोउसकोपदपावणेकीइछाहै। परमुषनेकदाचितसुणा
यानही। श्ररत्यागकाश्रभिमानभीकदाचितनहीसुणायापरकवहगावताहै
श्रथवावोलताहैतोऐसेकहताहै। हाहाऊमेश्रनाथश्रायाणगयाहोश्ररेलष
ऊजमवसंसारसमुद्रविषेहूवतेहो। इहसंसारपमेश्रनर्थकाकारणहै। इसविषे
सुषकिसीनहीपाया। इसतेछूटणेकाउपायकरहु। हेराजनऐसेभीकदाचित
सुणीताहै। श्रवरनकिसीसाथवोलताहैनहसताहैनहमसंत्रीश्रहूसाथश्ररन
श्रपणेश्रंतःपुरकीइसत्रीश्रहूसाथनानासाथकिसीवर्षचिंताविषेमगनहै
श्ररकिसीपदार्थकरश्राश्चर्यवाननहीहोता। जउकोऊकहेश्रकासविषेवनलग
गाहै। श्ररतिसविषेफूलफूलेहहि। तिसकोमेलियायाहो। तिसकोदेषकरश्राश्च
र्यवाननहीहोतासभभ्रांतमात्रदेषताहै। नकोऊपदार्थउसकोहर्षदेताहै। न
कोऊसोकदेताहै। किसीवडीचिंताविषेमगनहैतिसकीचिंतानिवारनेकोकोऊ

वै.प्र.

समर्थ नहीं इसते हम उहचिंता वोसमुद्र विषे मगन हैं। हे राजन हम कउ यही चिंता र
हीहै ताते जो रामजी को न आवणे की इछा रही है न पीवणे की न पहरने की न वो
लने की न देवणे की इछा रही है। अरु ना को अ करता है तो चक्रवर्ती राजा होवै
अरु ते री वशी आवैला होवै तो सुख भोगे। तब तिस के वचन सुण कर कठोर वचन
कहता है। हे राजन केवल रामजी को ऐसी चिंता न हो। लछमण अरु सत्रुघन को ऐ
सी चिंता लग रही है। रामजी को देख कर जो को इन चिंता को दूर करणे हारा हो
वे तो करे नहीं तो वडी चिंता विषे डूब रहे हैं। कुसी पदार्थ की इछा इस कउ न
हीं रही है राजन जी अब रक्षा क होणा है ते रा पुत्र अब अतीत होर हा है एक वस्त्र ऊपर
हु रवे दाहै ताते सो उपाय कर हु जि सु करउ स का दुष निवरत होवे॥ विश्वामित्रोवाच॥
हे साध जो रामजी ऐसा तो हमा र विद्यमान ले आउ हम उस का दुष निवृत करहिगे
हे राजा दसरथ तूं व धाया जिस का पुत्र विवेक अरु वैराग कउ प्राप्त भया है। हे राजन
हम जो वे दे हहै सो ते रे पुत्र को परम पद की प्राप्त करहगे। अव ही जिस कर सम महौ
दु उस के मिट जावहु हम जो वे दे हहै वसिष्ट जी आदिक सो एक जगत उपदेस कर ह
गे तिस कर के उस को आतम पद की प्राप्त होवैगी। तव ईहा दिसा ते रे पुत्र की होवैगी
जो लोष्ट पाषर अरु स्वर्ण को एक समान ही जाणेगा। अरु जो अकंटक राज प्राप्त होवे अ
वा र है तिस को भी करेगा अरु रिदे विषे परम उदासीन होवैगा। ताते हे राजन उस
का रन भारी कलंक तेरे कन होवैगी। ताते शीघ्र ही वुलावहु रामजी को॥ वाल्मीकि
वाच॥ हे भारद्वाज ऐसे वचन मुनि इं के सुन कर राजा दसरथ प्रसंन अरु मंत्री को क
हत भया। जो रामजी को लछमण सत्रुघन सहत ले आवहु शीघ्र ले आवहु शी
घ्र ले आवहु। जैसे हरनी को हरन ले आवता है। तव ऐसे दसरथ का कहा तव मंत्री भी जरा
मजी को जाइ कहा तव रामजी आए। आवते आवते राजा दसरथ को देषत भए। व
हुर वसिष्ट जी विश्वामित्र को देषत भए। राजा दसरथ अरु वसिष्ट विश्वामित्र के सिर
पर चमर होता देष्या। अरु वडे मंडलेस्वर विद्यमान वैठे हहैं। तिन को देष्या आवते आव
ते राजा दसरथ भी रामजी कउ देष्या। जो सरीर कृस होगया है जैसे साम कार्तक को
आवता सिव देषे। ते से रामजी को आवता राजा दसरथ देषता भया। तव रामजी
आर करराजा दसरथ के चरन हू पर मस्तक टेक्या वहुर वसिष्ट जी के चरन हूपर वहु
र जो वाहू न घे अरु आए के वडे थे तिन को नमस्कार कीया। अरु सभा विषे जो मंडले
स्वर वैठे थे तिन हू ने उठ कर रामजी को प्रणाम कीया। तव राजा दसरथ रामजी
को गोद विषे वैठाया। अरु देष कर मस्तक चुमन कीया। अरु वहु त प्रेम वान हुया
तव रामजी को वाहन भया। हे पुत्र केवल इसते विरक्त न ताकर परम पद को प्राप्त न
हीं होवी ता। वसिष्ट जी गुरु है। तिन के उपदेस अरु जगत हु कवर होवी ता है॥ वसिष्
ठ वाच॥ हे रामजी तूं धंन है वडा सूरमा है तूं जो विषे रूप सवने ने जीते हैं। जो विषम
री अजीत हहै। अरु दुष्ट हहै तिन को तुं जीत्या है ताते धंन है धंन है॥ विश्वामित्रो
वाच॥ हे कमल नैन जो आपणे अंतर की जो चपलता है तिस को त्याग कर जो कछु
ते रा आसे है सो प्रगट कर कहहु। हे रामजी इह जो तुझ को मोह प्राप्त हुया है सो
के से हुया है। अरु किस कारन ते हुया है। अरु केता कु है सो कहु। अरु स्रवन तुझ को वां
का है सो कहु। अरु हम तिसी पद विषे प्राप्त करहगे। तू कहउ। अरु तिस पद को
प्राप्त करहगे तुझ को जिस विषे आधि दुष कदाचित न होवेगा। जैसे आकास
को वहाका टन नहीं सकता तैसे आधि पीड़ा कदाचित न होवेगी। हे रामजी स
र्व दुष तेरे हम नास करहगे। ते सें से मन न कर। जो कछु अपणा चित न है सो हमा

रे विद्यमान प्रगट कर कहु॥ वाल्मीकि उवाच॥ हे भारद्वाज तव ऐसे विश्वामित्र के वचन
व रामजी वहु त प्रसंन हूया अरु शोक को त्यागत भया। जैसे मेघ के शब्द कर मोर प्र
संन होता है तैसे विश्वामित्र के वचन सुण कर रामजी प्रसंन भया। अरु अपणे रिदे
विषे जानत भया जो अब इस पद की मुझ को प्राप्त होवेगी॥ इति श्री वासिष्ठ महारामायण
ना शास्त्र वैराग्य नाम सर्गः॥ वाल्मीकि उवाच॥ हे भारद्वाज ऐसे मुनीश्वर के वचन सु
ण कर रामजी प्रसंन ता सों बोलत भया॥ राम उवाच॥ हे भगवन जिस प्रकार विरती
त है सो तुम्हारे विद्यमान कथन करणे कउ हता हो। मै इहु जो राजा दसरथ ता के ग्रह विषे
उत्पन्न भया हूं। वहु र उप्रसन कर के वडा हूया। अरु ते जनेऊ पवीत पाया है। वहुर वेद विद्या प
ढने लागा। चारो वेद पढे अरु ब्रह्मचर्य साध्या। तव एक दिन पर कर सहज विषे आ
या। मेरे रिदे विषे उह आय उपजी जो तीरथ हू का रटन करो। अरु ठाकुर हारहू को दे
षु। तव मै पिता की आज्ञा ले कर तीरथ हू पर आया। अरु गंगादिक सम्पूर्ण तीरथ हू का स्ना
न कीया। सालग्राम अरु केदार आदिक ठाकुर द्वार हू की विधि संजुगत जात्रा कर घरी
हो आया। अरु आवने का रीहा उत साहू हूया। तव वहु मेरी आचार हूया। तव अरु मेरा
आचार हूया। जो प्रातःकाल को उठ कर स्नान संध्यादिक करम करो। वहु रस्मो
तन करु। के तेक दिन इस प्रकार वतीत भए तव मेरे रिदे विषे विचार उत्पन्न भया
सो विचार मेरे चित को षेंच ले गया। जैसे नदी के तट पर वली दोनो हू तिस को न
दी का प्रवाह षेंच ले जाता है। तैसे मेरी चित विषे जो कछु शांति की आस्था न
पीवली थी सो विचार रूपी प्रवाह ले गया। तव मै जाना राज अरु जगत कर के क्या है अरु
भोग क्या है। अरु जगत क्या है सभ भ्रम मात्र है। इस की वासना करते है सो मू
र्ख है। इस स्थावर जंगम रूप जे ता कछु जगत है सो सभ मिथ्या ही है। हे मुनीश्व
र जे ते कछु पदार्थ हहै सो मन विषे रहै है सो मन भी भ्रांत रूप है। अरु मन होता स
दु षदायी हूया है। जिन पदार्थ हु को सत जाण कर दौरता है। अरु सव दाई जात
ता है सो त्रिगा तिस्ना के जल वत हहै। जैसे मृग तृस्ना को जल होता है। अरु जल
जान कर त्रिगा दौरता है। अरु है नहीं। सो रूप जल विषे दौड़ता दौड़ता थक परता है प
र जल तिस को प्राप्त नहीं होता ताते ऐसे सभ जीव पदार्थ हु कउ सभ रागी ता न कर
पावणे का जतन करते है। अरु ता न को नहीं प्राप्त होते है मुनीश्वर इह भोग भो
ग सर्प वत हहै। जिन को मार्या हूया जनम को पावता है। जनम ते जन्मांतर कउ पा
वता है भोग अरु जगत सत भान मात्र है। इन हू विषे जो आस्था करते है सो मह मूष
र्ख है। इन हू पदार्थ हु को मै विचार करता न भया हूं। जो सभ आगम पाई है हि
अर्थ यह है जो इस्थर नहीं आवते भी है अरु जाते भी है ताते जिस पदार्थ का
नास न होवे सो पावणे को जोगा है। इसी कारण ते भोग हू का त्याग कीया है। हे
मुनीश्वर जे ते पदार्थ तिन का रूप भासते है सो सभ अपदा है इन हू विषे रंच क
भी सुष नहीं। जब इनका वियोग होता है तब कर टक की न्याई चुभते है जो
इही भोग हू के भोग प्राप्त होते है तब राग द्वेष कर जलावते है। अरु जो न ही प्रा
प्त होते तव इछा कर जलावते है। ताते भोग रूप दुष है जैसे पाषर की शिला
विषे छिद्र नहीं होता। तैसे भोग रूप दुष हू की शिला विषे रंचक भी सुष रूपी
छिद्र नहीं होता। हे मुनीश्वर विषयों की चिंता विषे मै वहुत काल जलाना रहा हो
जैसे हरया वन वृछ के छिद्र विषे रंचक अगन पाई है अरु धुष धुष जलता रहता
है। तैसे भोग रूपी अगन कर मे जलता रहा हो। इन विषे सुष कछु नहीं अरु दुष
हु तहहै। इन की इछा करणी मूरख ता है जैसे वारी होती है अरु त्रिण हु के कुत कर

अछादनकरतेहहि। मूर्षहनंतिनकोदेषकरदउरतेहहजवउसकेनिकटजातेहहतव
पासीविषेगिरपरतेहहअरदुषपावतेहहै। तेसेमूर्षभोगहकउसुषरूपजानकेरभो
गनेकीइछाकरतेहहि। जवभोगतेहहतवजन्ममरनेजनमात्रउपपासीविषेजाय
परतेहह। दुषपावतेहहै। हेमुनीस्वरभोगरूपीचोरहह। अरग्यानरूपीरात्रविषेपुर
षेलभातेहह। इसकाजोआत्मारूपीधनहैतिसकोलेजातेहहतिसकेवियोगतेइह
दीनरहहताहै। अरजिनइभोगहुकेनमित्तइहजतनकरतीहैसोइहपदारथहह। स्वानक
उनहीप्राप्तकरने। जिससरीरकाअभिमानकरकेउइहजतनकरताहैजोभोगउसो
सरीरछिनभिंगरहै। अरसारहैजिसकोंसदाभोगहुकीइछारहतीहै। तीहैसोसवकेजड
है। इसकावोलणानचलणाभीऐसाहैजेसेस्तकेवास। वोछिदविषपवनजा
ताहै। अरपवनकेवेगकरसथिरहोकतीहै। तेसेमानषहइइहजेसेहारयाहुयापे
ओरीमारूसलकेमारणकीइछानहीकरता। तेसेइछरूपमेंजागकरभोगहु
कीइछानहीकरता। अरइहजोलषमीहैसोपर्मअनर्थकोदेवणहारीहै। जव
लगइहप्राप्तनहीहोतीतोइसकेपावणकाजतनकरतीहै। सीतलअरसंतोष
अरधर्मउदारीकोमलतानाविचारवेरागदयाआदिकगुणहकानासकरती
है। तवइहगुणनासहुएतवदुषकहाहै। पर्मअपदाकोप्राप्तहोताहै। पर्मदुषका
कारणजानकरमेंइसकात्यागकीयाहै। हेमुनीस्वरइसविषेगुणतवलगहहजव
लगलषमीनहीप्राप्तभई। जवलषमीप्राप्तभईतवसभगुणनासहोजाते
हहि। जेसेवसंतरितकीमंजरीतवलगहरयावलहोतीहैतवलगजेष्टअषाड
हीआया। जवआषाडआयातवइसकीरसजलजातीहै। तेसेजवलषमीप्राप्तभ
ईतवसभगुनजलजातेहह। अरमधरवचनतवलगवोलताहैजवलगइहनही
प्राप्तभई। जवइसकीप्राप्तभईतवकोमलताकाअभावहोजाताहै। कठोररूप
होजाताहै। जेसेजलतवलगकोमलहैजवसीतलताकासंजोगनहीहोया
तवहोताहैतवगडारूपहोकरदुषदाईकठोरहोजाताहै। तेसेजीवलषमीकरहो
तेहहि। हेमुनीस्वरजोकछुसंपदाहैसोआपदाकामूलहै। काहेतेजोजवलषमी
कीप्राप्तहोतीहैतवइहविषसुषकोभोगताहै। अरजवतिसकाअभावहोताहै
तवचिंतनाकरजलताहै। अरजनममरनसंत्रकोपावताहै। इसकीजोइछाहैसो
मूर्षताहै। इहछिनभिंगरहै। इहभोगउपजतेभीहहस्थिरविनसतेभीहहि। जेसेज
लतेतरंगउपजतेहहअरमिटजातेहहि। तेसेविजलीइस्थिरनहीहोती। अरइस
विषसुभगुणभीतवलगहहजवलगत्रिसनास्पर्षीनहीकीया। जवत्रिसना
उपजीतवसभगुणकाअभावहोजाताहै। जेसेदूधविषमधुरतातवलगहै
जवलगइसकोसर्पनेनहीकीया। जवसर्पस्पर्सकरताहैतवदूधविषरूपहोजा
ताहै। ॥इतिश्रीवैराग्यप्रकरणेरामवैराग्यवरननेनामसपतमसर्गः॥ रामोवाच॥ हेमुनी
स्वरलषमीदेषणेमात्रसुंदरहोतीहै। परसपर्सकीएतेचिंतककरतीहै। तेसेलषमी
केप्राप्तहुएआत्मपदतेचिंतकहोताहै। अरमहादीनहोजाताहै। जेसेकिसीकेघरवि
षचिंतामणदवीहुईहोवे। अरवादकरलेवेनहीतवदारिद्रीहीरहताहै। तेसेअग्या
नकरमहादीनजेसाहोगयाहै। आत्मानंदकउनहीपावता। तिसकेपावणेका
जोमार्गहैतिसकेनासकरनेहारीलषमीहै। इसकेप्राप्तहोएतेमहाअंधहोर
जाताहै। हेमुनीस्वरजवदीपकपरजलतहोताहैतवउसकाउज्वलप्रकासदृष्टआ
वताहै। अरएवपदार्थभासतापउपजतहोतीहै। जवदीपककेनिर्वाणहोताहैतवप्रका
सकाअभावहोजाताहै। काजरकीसमष्टतारहजातीहै। सोमनेसनेउपजतीथी

सोरहतीहै। तेसेजवइहलषमीप्राप्तहुईहै। तववरभोगहकउभोगावतीहै। अरजिस्था
पकाजरइसतेउपजतारहताहै। तवलषमीकाअभावहोताहैतववासनाजोइसकोजो
समष्टहैतिसकोंकारइजातीहैजिसवासनात्रिसनाकरकेअनेकजन्ममात्रइकोधा
रताजन्ममरनेकोपावताहै। सांतकइकदाचितप्राप्तनहीहोता। हेमुनीस्वरजवइस
कोलषमीकीप्राप्तहोतीहै। तवमानकेउपजावणहारेगुणहकानासकरती
है। तेसेमेघतवहोताहैजवलगपवननहीचलताजवपवनचलातवमेघकाअ
भावकरताहै। तेसेलषमीप्राप्तहुएगुणहुकाअभावहोताहै। अरगर्वउत्पनहोता
है। हेमुनीस्वरजोसूरमाहोवेअरअपनेमनतेनकरेसोदुर्लभहै। अरजोसमर्थहोय
तिसकीकोउअविनाकेवनतिसविषेसमेंसुथरहै। सोभीदुर्लभहै। अरजोसमर्थहोय
वानहोकरसभगुणहकारसनागनहोवे। सोभीदुर्लभहै। तेसेजोलषमी
जोसर्पहहतिनकेरहणेकाइस्थानलषमीरूपीसुत्रहै। हेमुनीस्वरभोगरूपी
नेअवावतेकदाचितनही। अरमहामोहरूपीजोउन्मतहस्तीहैतिनकेरहणे
कोइस्थानपर्वतकीअटवीहैलषमी। अरगुणरूपीसूर्जमुषीजोकमलहैतिन
कीइहरात्रहै। अरभोगरूपीजोचंद्रमुषीकमलहैतिनकाचंद्रमाहै। अरवेराग
पीजोकमलनीहैतिसकेनासकरणेकोगराहै। अरग्यानरूपीजोचंद्रमाहैति
सकउआछादनहारराहहै। अरमहामोहरूपजोउन्मतहैतिनकीइहरात्रहै। अरइ
हपीजोवीजहहतिनकाइहपृथ्वीहै। अरत्रिसनारूपीजोवलीहैतिसकोवधावणेहा
रामेघहै। अरवासनारूपीजोतरंगहहतिनकाइहसमुद्रहै। अरभोगरूपीपिसा
चहुकीइहरात्रहै। अरत्रिस्नारूपीभवरहुकीइहकमलनीहै। जनमहकेइषल
पीजलहुकाइहतलाहै। हेमुनीस्वरदेषणमात्रसुंदरलागतीहै। अरइसकाकाल
है। जेसेघरगकीधारादेषणेमात्रसुंदरहोतीहै। अरस्पर्सकीएतेनासकरतीहैतेसे
लषमीहै। अरअवगुनरूपीजोविजलीहैतिसकाइहमेघहै। अरविचाररूपीम
चकेनासकरणेहाराइहपवनहै। अरविचाररूपीदीपककेनासकरनेहारी
इहवायहै। हेमुनीस्वरइहमेंविचारदेष्याहैजोइसविषसुषकोइछी। अरसंतोष
रूपीमेघकेनासकरनेहाराइहसंकालहै। अरइसविषजोगुणतवलगहहजवआ
वतेहहजवलगलषमीनहीप्राप्तभई। जवलषमीकीप्राप्तभईतवसभगुणनासहो
जातेहह। हेमुनीस्वरमेंदुषदायकजानकरइसकीइछात्यागीहै। इहभोगमिथ्या
रूपहहजेसेविजलीप्रगटहोतीहै। अरलोपजातीहैतेसेइहलषमीहै। जेसेइहज
उजोजलहैतिसकेआश्रेहै। तेसेइहलषमीकीभीजोसनताहैसोमूर्षजडकेआ
श्रेहै। कलरूपजानकरमेंइसकात्यागकीयाहै। ॥इतिश्रीवैराग्यप्रकरणेलषमी
निरासवरननेनामअष्टमःसर्गः॥ रामोवाच॥ हेमुनीस्वरजवाकोदेषदेषजोप्रसंनहोतेहह
सोजवाऐसेहैजेसेपत्रकेऊपरजलकीबूंदरहतीहै। सोछिनभिंगरहै। जेसेजलतेतर
गउपजताहैअरनष्टहोजाताहै। तेसेआवलानष्टहोजातीहै। हेमुनीस्वरपवनका
रोकणाअतकठननहीहैऐसेभीकोऊहोवेजोरोके। अरआकासकाभीचूर्णकरनाअतक
ठनहैऐसाभीकोऊहोवेजोचूर्णकरे। अरविजलीकारोकनाभीकठनहैऐसाभीहो
जोरोकलावे। परआवलाकरकेकोऊकहेजोइस्थिरहोवेसोतनहोवेगा। जेसेसहक
लिवुइसापकोकोऊनहीमारा। अरजेसेआरसीपरमोतीनहीटहरता। अरजेसेतरंग
इकीनहीठहरतीथा। तेसेआवलाइस्थिरनहीहोती। आवलाविजलीचमतकारवत
है। सोहोताहैअरमिटजाताहै। अरसीआवलाकोपाइकरआपकोजोअमररहपावा
हतेहहसोमहामूर्षहह। अरआरबलकोपाइकरभोगहुकीवांछाकरतेहैसोम

हाअपदकेपावेहै॥ तिनकोजीवणोतेमरणाश्रेष्ठहे॥ जीवणेकीइछामृष्युंवरतेहहिसो
अपनेनाशकाकारणिहैइछा जैसेअसत्रीजोअपनेगर्भकीइछाकरतीहैसोअपनेना
शकेनिमितकरतीहै॥ अरजोतानवानुउरषहहै॥ जिनकोपरमपदविषेइस्थितहहोतीहै
अरतिसकरिअिसह्रपरहहैतिनकाजीवणमुषकेनमितहे॥ इनकेजीवणेकरअव
रहरकेकाजेसिधहोतेहैचिंतामणकीन्याईजीवणातिनहीकाश्रेष्टहहै॥ अरतिन
कोसदाभोगाकीइछाहैअरआत्मपदतेवृत्तहहैतिनकाजीवणाकिसीतप
केनमितनही॥ उहमानषनहीगर्धबहहै॥ जैसेत्रिकपविक्षपसपंपीअकाजी
वणाहहैतैसेतिनकाजीवणाहै॥ हेमुनीश्वरजोउरुषआसवपुरुषाहै॥ अरपावणयो
गपदनहीपायातोसाराउसकोभारहै॥ जैसेअवरकेरऊभारहैतैसेइहभीभारहै॥ अ
रविचारवचीपहृकनीहै अरतिसकसारकोनहीशहृनकेनानाउइ॥ विचारवरवा
भीतिसकोभारहै॥ हेमुनीश्वरमनजोहैसोआकासरूपहैजउमनविषेसांतनहीउ
पजतीतोइकमनभीउसकोभारहै॥ अरजोमानपकरीवयापाहै अरउसविषेअभि
माननहीस्यागातोउहसरीरभीउसकोभारहै॥ जीवणातवहीश्रेष्टहैजेउआत्मप
दकीप्राप्तहोवे॥ अनथाजीवणाइनकाविषहै सोआत्मपदकीप्राप्तअभ्यासकरहो
तीहै॥ जैसेजलप्रथवीनेतवहहैतिकसतहैनवपोदनकरीए तैसेअभ्यासक
रआत्मपदकीप्राप्तहोतीहै॥ अरजोआत्मपदतेविमुषहहै अरसंसारहपीदामीवि
षफसेहैसंसारविषभटकतेरहतेहहै॥ हेमुनीश्वरसंसाररुपीतरगअनेकवारउ
त्पतहहैअरनष्टहोगएहहै॥ इहआवेलाछिनभिगरहहैइसकोपाइकरजोआमिया
नीहोतेहहैतेमूर्षहहैतेमूर्षहहै॥ जैसेबिलीचूहेकोपडीदेषतीहै॥ ग्रासकरणे
केनमिततेसेकालकोछिनेपडीदेषतीहै॥ जैसेअंजुलीविषेजलनहीवुहरतातेसेआ
रवलाचलीजातीहै॥ तिसछिनभंगरसरीकोपाइकरजोभोगाकीत्रिसनाकरते
हहतेमहामूर्षहै॥ अरुतोस्त्रितकेमषपरेहहैरहेजीवणेकीआसाकुकरतेहहै
जैसेसर्पकेमुषविषेडउपडाहोताहे॥ अरमछरहूकेषावणेकीइछाकरताहैउमहा
मूर्षहै॥ तैसेइहपरषस्त्रितकेमुषविषुपडाहुआहे॥ भोगाइकीइछाकेजोहैसोमहा
मूर्षहै॥ इहजवाअवस्थाएसेनासहोजातीहैजैसेनदीकाप्रवाहचलाजाताहै॥
वहउद्दअवस्थाआइप्राप्तहोतीहैतिसविषेमहादुषप्राप्तहोतेहहै॥ अरसरीरजरज
रीभावहोजाताहैवहइमरजाताहै एकछिणभीत्रिनइसकाविश्वासनहीकरती
सदाउषतीरहतीहैजैसेमहाकामीपुरुषकोसंदरसत्रीमिलतीहै॥ तवउसकेदष
णेकात्यागनहीकरतायकछिनभी॥ तैसेत्रिनइसकादेषणेकात्यागनहीकरती॥
हेमुनीश्वरमषेमानुषवदहतजीवणाइषकेनमितहै॥ जैसेत्रिधमानुषकोनजीवणा
इषकाकारणहै॥ उसकोवहतजीवणेनेप्रतश्रेष्ठहै॥ जिनहुउरषहमनत्रपशरीरको
पायकरआत्मपदपावणेकाजतननहीकीयातिनहुआपहीआपणानासकीया
ताहै॥ तेसेअंधककअंतरनेचणापाइजाताहैअरवाहजदेषणेमात्रनैहदिष्टआवता
है॥ तेसेइहुपुरुषवाहजतेसहदिष्टआवतेहैं॥ अरअंतरतेत्रिस्नाइसकोषातीजातीहै
जिनहूपदार्थहूकोसतजाणकरअरनसपरुपजानकरदुषकेनमितआसमैकरता
हैसोसपनही॥ जैसेनदीविषेफेनकोआसैकरकरपारउत्रयाचाहेतोउत्रनही
सक्ता॥ इहसर्पतनाकरकेडूवेगातैसेसंसारकेपदार्थहूकोसत्यरूपजानकरआश्र
करताहैसोसुषनहीपावता॥ संसारसमुंद्रविषडूवाजाताहै॥ हेमुनीश्वरइहसंसा
रहिंदपनषकीन्याईहै जैसहिंदपनषनानावरनेहूसारतदृष्टआवताहैपरस्पर

यनिसतेसिधककुनहीहोना॥ तैसेइहसंसारभ्रममात्रहैइसविषेइछासुषदेनेकरणी
व्यर्थहै॥ इसप्रकारजगतकउअसत्यजानकरमैनिर्वासहोनेकीइछाकरीहै॥
**इतिश्रीवैराग्यप्रकरणेवनतेनामसर्गः॥ सप्तमोध्याय॥** हेमुनीश्वरइहजोअहंकारहैइहअ
ज्ञानतेसोमहाउष्टहहैइहीसत्रुहै॥ इसमेरेनाशकेकोशास्त्रकीयाहै अरमिथ्या
रूपहै॥ जेतेकछुदुषहैतिनकाकारणअहंकारहै॥ तवलगअहंकारहोताहैतवलगदु
षपीराउत्पतहोतीहै॥ अभावकदाचितनहीहोताहेमुनीश्वरजोकछुअहंकारसहि
तमैभोजनकीयाअरजोपुनकीयाहै॥ अरजोकछुदीयाहैअरजोकछुलीयाहै॥
स्नानादिकजोकछुक्रियाकरीहैसोसभअर्थकरीहै॥ इसकरअसारघसिधकछुन
हीकेतेअज्ञानकारणविषेअहंतापाशीप्राप्तहोतीहै॥ अरजोतेकछुदुषहैतिन
काबीजअहंकारहै॥ इसकानाशहोवेतवकल्याणहै॥ तातेसोतिपावस्मकुको
कहहुजिसकरकेअहंकारकीनिवृतिहोवे॥ हेमुनीश्वरजोवसंतसमनहोतीहै
तिसकेत्यागकरणेविषेदुषहोताहै॥ अरजोवसंतनहोयअरअभुकरकेमाल
तिसकेत्यागकीपनपमसंपदाहोतीहै॥ अरशांतरूपजोचंद्रमाहैतिसकेअ
छादनकरनेकउअहंकाररहाहै॥ जैसेदेनरूपीराहुचंद्रमाकउग्रासताहै तिसकेअ
उसकीसीतलताअरप्रकाशअछादयाजाताहै॥ तव
तवसमताअछादीजातीहै॥ जैसेजवअहंकारउपजताहै
करताहै॥ तवत्रिस्नारूपीमेघआनगर्जताहै॥ अरवर्षा
तीनही॥ अरजवअहंकारनष्टहोवेतवत्रिस्नाकानाशहोताहै॥ जैसेजवलगमे
घहैतवलगविजलीहै॥ जवविवेकरूपीपवनकरअहंकाररूपीमेघकानाशहो
ताहै॥ तवत्रिस्नारूपीविजलीकाअभावहोजाताहै॥ जैसेजवलगतेलअरवाती
हैतवलगदीपककाप्रकाशहै॥ जवतेलवातीकानाशहोताहैतवदीपककेप्रका
शकाभीअभावहोजाताहै॥ तैसेजवअहंकारकानाशहोताहैतवत्रिस्नाका
भीनाशहोजाताहै॥ हेमुनीश्वरपरमेश्वरकावाणिअहंकारहै॥ तवअहंकारनाश
होवेतवइषभीनिवृतहोजावेगा॥ हेमुनीश्वरइहजोमेरामहात्मसोनही॥ अरइकाभी
कछुनहीकाहेतेजोमेहीनहीतोइछाकिसकीहोवे॥ अरजवइछाहैतोमैहुं
है॥ जोअहंकारतेरहतपरकीप्राप्तहोवे॥ जहांअहंकारकाउतपाहोवेतैसीहि
नहिंइहहयाहैतैसाप्रेमहोवे॥ अहोमनकौइछाहै हेमुनीश्वरतैसेकमलकोअ
ज्ञानासकुरनाहैतैसेअहंकारज्ञानकोनाशकरताहै॥ जैसेजीवरजालकरप
क्षीअहूकोवृपनकरताहै॥ तिसकरउहदीनहोजातेहहै॥ तैसेअहंकाररूपीजीव
रनेत्रिस्नारूपीजालसाथजीवहूकउवंधनकीयाहै॥ तिसकरमहादीनहोग
एहहै॥ जैसेपषीदाणाकोमुषरूपजानकरउसकाभोजनकरनेआवतेहहै
तवजालगलेलागतेहहैतवजालसाथवाधेजातेहहै॥ तिसवंधनकरदीनते
होजातेहहै॥ तैसेइहपुरुषविषयहुकेभोगणेकीइछाकरतेहहै॥ तवत्रिस्ना
रूपीजालसाथवाधेजातेहहैतिसकरमहादीनताकोप्राप्तहोतेहहै॥ ताते
हेमुनीश्वरमुझकोसोईउपायकहोजिसकरकेअहंकारकानाशहोवे॥ जव
अहंकारकानाशहोवेगा॥ तवमैपरमसुषीहोवउगा॥ जैसेवंधयाचलपर्वतकेआ
श्रवेइउतमनहरसतीरहतेहहै॥ अरसहृकरतेहहै॥ तैसेअहंकाररूपीजोवंध्याच
लपर्वतहैतिसकेआश्रमनरूपीजोगजमततहैसतीहै॥ सेनानाप्रकारकेसंकल
विकल्पकरतीअरसहृकरतीहै॥ तातेसोईउपायकहहुजिसकरकेअहंकारनाश
होवे॥ तैतेकलपनाकामूलअहंकारहीहै जैसेवृक्षकोनाशकेनाशकरनकाल

वैरा॰
१०

10

होताहै जैसेवैराग्यकानाशकर्ताअहंकारहैमोहादिकविकाररूपजोसर्पहैतिनकू
केरहणेकास्थानअहंकाररूपगुफाहै अरअहंकारकामीठरूपकीन्याईहै जैसे
कामीठरूपकामकोवर्त्तीहैअरफुलडुकीमालाआगलेविषेशरताहै अरप्रसन्नहो
ताहै अरप्रसन्नहोताहै जैसेत्रिसनारूपीलतागाहै अरजन्मरूपीफुलहुवेमाण
केहहै तिसत्रिसनारूपीलतागेलायपाएहहै अहंकाररूपीकामीठरूपगालेवि
षेडारतीहैअरप्रसन्नहोताहै हेमुनीश्वरआत्मरूपीसूर्यहैतिसकेआवरणकरणे
हारामेघरूपीअहंकारहै जबज्ञानरूपीसरतकालआवेतबअहंकाररूपीमेघ
कानाशहोवे अरत्रिसनारूपीकुहीडकाभीनाशहोजावे हेमुनीश्वरहमनिश्च
करदेख्याहैजोमहाअहंकारहैमहाअभअपदाओनप्राप्तहोतीहैजैसेसमुद्र
विषसर्वेनदीआनाप्रवेसकरतीहैहै तैसेसर्वेअपदाअहंकारविषेप्रवेसकर
तीहैहै तातेसीघ्रयाकूकहहूजिसकरअहंकारकानाशहोवे ॥ इतिश्रीअहंकार
दुराशाववैराग्यनामप्रसंगः ॥ इतिवासिष्ठ ॥ हेमुनीश्वरइहुमेराचित्तहैसोकामक्रोध
लोभमोहत्रिसनादिकडबहुकरजरजरीभावहोगयाहै परमहात्मरूपहूकेजा
गुणहै वैराग्यअरविचारअरधीरजअरसंतोषतिनकीओरनहीजाता सर्वदा
विषयहूकीओरदौड़ताहै जैसेमोरकापंखपवनकेलागेतेदड़तानहीं तैसेइहचि
तसर्वदाभटकताफिरताहैपरलाभकछुनहीइसकोप्राप्तहोता जैसेसुआ
नस्थानहूरभटकताफिरताहै तैसेइहचितपदार्थकेपावणेनमितकल्पना
पजावृताहै परप्रापतकछुनहीहोताअरजोकछुप्रापतहोताहैतोइसकरत्रिप
तनहीहोता अरत्रिसनारहतीहै जैसेपिटारविषैजलपाईएतोउहूहरनेन
हीहोता किहूकेमारणतेजलनिकसजाताहै पिटारसनेकानहीरहता
है तैसेचित्तकोभोगपदार्थप्राप्तभीहोतेहैंतोभीतृप्तनहीहोता सदात्रिस
नाहीरहतीहै हेमुनीश्वरइहुचितरूपीमहामोहकासमुद्रहै तिसविषेत्रिस
नारूपीतरंगपड़रहतेहैं कदाचितस्थिरनहीहोता जैसेसमुद्रविषेतीक्षणवे
गकरतरंगउपजतेहैंहै अरतटकेब्रिक्षतिसकरगिड़तेहैंहै अरजलविषेवह
जातेहैंहै तैसेचितरूपीसमुद्रविषेमैवहयाजाताहो वासनारूपीतरंगहूकेवेग
करमेराजोसबलस्वभावथासोबृहताश्मानहूयाहै अरइसचितकरमैमहादीन
हाहीनहूयाहूजैसेजलविषेपड़ावकड़ीदीनहोजाताहै तैसेचितरूपीकीवरकू
वासनारूपीजालविषेवांध्याहूयामैदीनहोगयाहो जैसेमरगहूकेसमूहते
भ्रत्यामित्रगणकूनाथेदवानहोताहै तैसेआत्मपदतेभूलाहूआचितवासेस्वा
नहूयाहो हेमुनीश्वरयहुचितसदाधामवानरहताहै स्थिरकदाचितनहीहोता
जैसेषीरसमुद्रमंदराचलकरकेषोभवानहूयाथा तैसेइहुमेराचितसंकलपवि
कलपकरकेषोभवानहूयाहै जैसेपिंजरेविषेआयापंछीफिरतारहताहै इ
स्थिरकदाचितनहीहोताहै हेमुनीश्वरयहचितमेरेताईंदूरतेहरलेजाताहै
जैसेतीषनकेवलणेकरसककेजिलाहरजाइपड़ताहै तैसेचितरूपीपवनमुक
कोआत्मानंदतेदूरपायाहै जैसेसकेमिरणकउआगनजलावतीहैतैसेमुकको
चितजलायाहै जैसेअगनतेधूमनिकसताहै तैसेचितरूपीअगनतेत्रिसना
रूपीधूमनिकसताहै तिसकरमैपरमदुखपावताहो यहुचितमेरेवसनहीहोता
जैसेहंसजोहैसोदूधअरजलमिलेहूएकोभिन्नकरताहै तिसकीन्याईमैजोआत्मा
नात्मविचारणकरकेएकसाहूयाहो तिसकूभिन्नभिन्ननहीकरसकता जदपिआत्म
पदपावणेकाजतनभीकरताहो तउभीप्राप्तनहीकरनेदेता जैसेनदीकाप्रवा

हसमुद्रकोजाताहै तिसकोवनअरवरउरकोवहाइदेतेहै समुद्रकीओरल्यावतेहोवेता
तैसेचितमुककोआत्मकीओरतेरोकताहैपरमशत्रुहै तातेहेमुनीश्वरमोहीउपाउकहु
हजिसकरकेशत्रुनाशहोवे यहुअपराधीअसचीताथामिलकरमुककोभोजनकर्ता
रहताहै जैसेमरतकाशरीरकउआअरस्वानअरसुआनीभोजनकरतेहै एसेआत्मज्ञा
नतेरहतमैचितकसमानहो तिसकरमुककोभोजनकरतेहैंहै जैसेबालकअप
णापछानेकउवेतालमानकरभैकउपावताहै जविचारकोसमर्थहोतहैतव
वेतालकाअभावहोजाताहै तैसेचितरूपीवेतालमुककोमिथ्यासर्पकीयाहै
तिसकरभैकोपत्रापावताहो तातेतमसाईविचारकहहूजिसविचारकरचित
रूपीवेतालनष्टहोजावे हेमुनीश्वरअज्ञानकरकेमिथ्यारूपीवेतालमोहचितसो
दिढहोरहाहै तिसकेनाशकरनेकोमैसमर्थनहीहोता आगविषेबेठनाइहुभी
मैसुगमसमानताहो अरउडेपर्वतपरचलाजावणाभीसुगमसमानताहो परचि
तकाजीतनामहाकठनचितसदाचलाइमानसभावहै जैसेइसनेवकेसाधनवले
कोवाधीएअरइस्थिरकदाचितनहीहोवेटना तैसेवासनासहीचितकदाचितइसथि
रनहीहोता हेमुनीश्वरवडेसमुद्रकोपानकरनाएभीसुगमहै अरअगनकउभष
णकरनाभीसुगमहैअरसुमेरपर्वतकोभीलघुजाणणासुगमहै परचितकाजीतना
महाकठनहैसदाचलरूपहै जैसेसमुद्रअपणीद्रवतासुभावकउत्यागतानहीसदा
द्रवीभूतरहताहै तिसकरनानाप्रकारकेतरंगउपजतेहैंहै तैसेइहुचितअपणेच
लणसभावकउत्यागताकदाचितनही नानाप्रकारकीवासनाइसविषेउपजतीर
हतीहै अरबालककीन्याईचपलहैसरवदाविषयहूकीओरधावताहै कोऊपदार्थप्राप्तहो
ताहैकोजतनहीप्राप्तहोता अरअंतरतेसदाचलतारहताहै जैसेसूर्यकेउदेहूएदिन
होताहै अरअस्तहोएलीनहोताहै तैसेचितकेउदेहूएत्रिलोकीउपजतीहै अरचित
केलीनहोएलीनहोजातीहै हेमुनीश्वरलोकसमुद्रहैतिसविषेगंभीरजलहै अरव
डेमगरतिसविषेरहतेहैंहै जबतिससमुद्रविषेइहप्रवेसकरताहै तबउहमगरइसकउ
डसतेहैंहै तिसकीविषइसकउचड़जातीहै तिसकरवडादुखपावताहै सोकवनहै
चितरूपीतउसमुद्रहै अरवासनारूपीतिसविषेजलहै तिसविषेभोगरूपीसर्पहै
जबइहुइनकेनिकटजाताहैतबभोगरूपीसर्पइसकोस्पर्शकरतेहैंहै तबत्रिस
नारूपीविषइसकउचढजातीहै तिसकरमृतवतहोताहै हेमुनीश्वरजिनहूभो
गहूकोसुखरूपजानकरइहदौड़ताहै जैसेत्रिणहूकेछलकरषाईअलादीजातीहै
तिसदेषकरमृगत्रिणषावणेकउदौड़तेहैंहै अरदुखपावतेहैंहै तैसेचितरूपीमृग
भोगहूकउसुखरूपजानकरभोगणेलागताहै तबत्रिसनारूपीषाईविषेगिर
ताहै अरजनममरणमावकेदुखहूकउभोगताहै हेमुनीश्वरइहुचितकवहूवरागभी
रहोवेदताहै जउभोगहूकउविहमानदेषताहै तोउनकीओरइसकीन्याईगिर
ताहै जैसेइलघोंकउरथकउचढजातीहै अकासविषेउड़तीफिरतीहैजबपृथ
वीपरआयपड़तीहैमासकोलेतीहै तैसेइहुचितजबलगउदासरहैजबलगभोगहू
कोनहीदेषता भोगहूकउदेषताहैजबतबउनहूविषेआसक्तहोजाताहै अरइहु
चितवासनारूपीसेजापरसोयापड़ाहै आत्मपदकीओरजागतानही सचितवं
जालविषेमैफसयाहूयाहूउ पंछीकीन्याईसोकेलाजातहैजोवासनारूपीसूत्र
है अरतसारकीसननारूपीतिसविषेगंठीहैंहै अरतिसविषेभोगरूपीदाणाहैति
सकोदेषकरमैफस्याहूयाहो कवहूपातालविषेकवहूमध्यविषेकवहूऊर्धकेलेजाता

हे॥ वासनारूपीजेवरीकरबंदीजंत्रकीफांसीहेमुनीश्वरसोईउपावतसम्यककोकहहु॥
जिसकरचितरूपीराजकोजीतउ॥ अरुसम्यककोकिसीभोगकीइछानही॥ अरुनगन
कीलक्ष्मीमस्तककोविरसजेसेभासतीहे॥ जेसेचंद्रमावादरकीइछानहीकरता
तवजेसेश्रावतेहेतवचंद्रमाकोंश्रछादतेतेहेह॥ तातेइछानहीकरनी॥ जेसेनगनकी
लक्ष्मीकउनहींवाहता॥ मनकाषमेसत्रुहेसोचितहे॥ अरुहेमुनीश्वरमहाउरूपजो
नेकाननकरनेहेसोजेसेहीचितकोजीतनाहे॥ जिसकेजीतेपरमपदकोप्रापत
ननकरनेहेसोजेसेहीचितकाजीतनाहे॥ जिसकेजीतेपरमपदकोप्राप्तहोवेता
तेमस्तकोउहीउपाइकरकेजिसकरमनकउजीतउ॥ समस्तदुषसहीकेश्राश्र
यरहतेहैं॥ इतिश्रीवसिष्ठमहारामायणेवैराग्यप्रकरणेचितउरात्मावतानामसर्गः॥ रामउ
वाच॥ हेब्राह्मणचेतनश्राकाशविषेजोत्रिष्णारूपीरात्रिश्राईहे॥ तिसरात्रिविषेकामक्रो
धलोभमोहादिकभूतविचरतेहें॥ जवज्ञानरूपीसूर्यउदेहोवे॥ तवत्रिष्णारूपीरात्रिका॥
श्रभावहोजावे॥ तवरात्रिनष्टहोवेतवमोहादिकउनभीनष्टहोगावे॥ जेसेसूर्यउदेहोता
हा॥ तवनलकेविकेउकोनकावताहे॥ जेसेसंतोपरूपरसकोत्रिष्णारूपीउस्नातास्का
वतीहे॥ वहुरकैसीहेत्रिष्णा॥ जेसेसंतवनविषेपिसाचनी श्रपणेपरवारसहितविचरत॥
करतीहे॥ अरुप्रसंनहोतीहै सोवनकौणहे अरुपिसाचनीकौणहे॥ अरुप्रसनहो
तीहे॥ सोवनकोणहे अरुपिसाचनीकोणहे॥ श्रात्मपदतेमनजोहैचितसोईभयासु
नवन॥ अरुतिसविषेत्रिष्णारूपीपिशाचनीहे॥ अरुमोहादिकउसकापरवारहे॥ इन्हो
कोंसाथलेकरिनिरतकरतीहे॥ अरुप्रसनहोतीहे॥ हेमुनीश्वरचितरूपीपर्वतहे॥ ति
सकेआश्रयऊपरत्रिष्णारूपीनदीकाप्रवाहचलताहे॥ अरुनानाप्रकारकेतरंगउप
रतेहें॥ अरुजेसेमोरमेघकोदेषकरिप्रसंनहोताहे॥ जेसेत्रिष्णारूपीमोरणीभोग
रूपीमेघकोदेषकरिप्रसनहोतीहे॥ तातेपरमदुषकामूलत्रिष्णाहे॥ तवसंतोषसंत
तोषश्रादिगुणकाश्राश्रयकरताहों॥ तवतिसकोंत्रिष्णानाशकरिदेतीहे॥ जेसेसु
दरतृणीकोचूहातोड़जावे॥ तेसेगुणोंकोत्रिष्णानाशकरिदेतीहे॥ हेमुनीश्वर
त्रिष्णातेउत्कृष्टपदविषेविराजणेकायतननकरताहों॥ तोभीत्रिष्णाविराजणेनही
देती॥ जेसेजालविषेफस्याप्षीश्राकाशविषेउडनेकायतनकरताहे॥ तोभीउडन
हीसकता॥ तेसेमेंश्रात्मपदकोनहीप्रापतहोसकता॥ अरुसतजीउत्रक्रूरवसनेवा
गविछाशीहे॥ इनोविषेजोफस्याहेसोनिकसनहीसकता॥ तिसश्राशारूपीफासीसाथ
मेंवांध्याहुश्राकवहूंऊरधजाताहों॥ कवहूश्रधःकोजाताहोजेटीजंत्रकीफांसी॥ हेमुनी
श्वरमेंत्रिष्णाइन्द्रकेधनषवतहे॥ जेसेइन्द्रकाधनषमलनमेघविषेहोताहे॥ अरुश्र
होताहे॥ अरुचित्ततेरहितहोताहे॥ अरुनानाप्रकारकेरंगोसहितहोताहे॥ अरुमथ
नहोतहे॥ तेसेत्रिष्णामलनअंतहकरणविषेउपजतीहे॥ अरुवंसीहे॥ अरुगुणरूपीचित
तेरहितहे॥ अरुदेषणेमात्रसुंदरहे॥ परंतुसविषेअर्थकछुसिधनहीदेता॥ हेमुनीश्वर
त्रिष्णारूपीसेवहे॥ तिसतेउपरूपीदंदानिकसतीयांहें॥ अरुत्रिष्णारूपीकृष्णसर्पणीहे॥ तिस
कास्पर्शतोकोमलहेपरुविषकरिपूर्णहे॥ तिसकेउसणेकारसनहोतीहे॥ अरुत्रिष्णा
रूपीयकवलहे॥ सोश्रात्मारूपीसूर्यकेश्रागेश्रवणकरताहे॥ जवज्ञानरूपीपवनश्र
गटेतवत्रिष्णारूपीवदलकानाशहोवे॥ अरुश्रात्मपदकासाक्षात्कारहोवे॥ अरुगु
णरूपीकमलोंकानाशकरतात्रिष्णारूपीगजहे॥ अरुत्रिष्णारूपीमहाभयानककाा
लीरात्रिहे॥ जिसकरिवडेधीरजेवानभीभयभीतहोतेहें॥ अरुसचक्षुकोभीश्रंधकरि
डारितीहे॥ जवरहश्रावतीहेतववेरागश्ररुश्रभ्यासरूपीनेत्रोकोंश्रंधकरतीहे॥ श्र

श्रर्थयहजोसतश्ररुश्रसतपदार्थकोविचारणेनहीदेती॥ हेमुनीश्वरत्रिष्णारूपी
राकनीहे॥ श्ररुगुणजोहैसंतोषश्रादिकतिसकेसंतेकोंकेटलेजातीहै॥ श्ररुत्रिष्णा
रूपीकंदराहे॥ तिसकेश्राश्रयमोहरूपीउनमत्तहस्तीश्रारगजेताहे॥ श्ररुत्रिष्णारूपी
समुद्रहे॥ तिसविषेश्रापदारूपीनदीश्रापवेसाश्रानकरतीयांहें॥ तातेसोईउपाव
करकेकहो॥ जिसकरिकेमेत्रिष्णारूपीदुषतेछटो॥ हेमुनीश्वरश्रेसाश्रगनिकरिकेउ
पनहीपारीता॥ श्ररुषडगकेप्रहारकरिभीश्रेसादुषनहीदेता॥ श्रंदकेवत्नकरिभी
श्रेसादुषनहीहोता॥ जेसादुषत्रिष्णाकरिहोताहे॥ त्रिष्णाकेपरहारसाषवाडलहश्र
वडेरषकोंपावताहे॥ श्ररुत्रिष्णारूपीदीपकप्रजवलताहे॥ श्ररुजन्मपरंपरारूपतिस
तेकालकाउतपतहोतीहे॥ श्ररुजेसेजविषमकीहोतीहे॥ जोउतकृष्टजेसेपाप्री
होकेकरीवज्रश्रादिकतिसकोंमांसत्तानकरिदहणकरतीहे॥ परंतुसकाश्रर्थ
सिद्धकछुनहीहोता॥ तेसेत्रिष्णाभीजोकछुपदार्थदषतीहेतिसकीश्रोरदोडतीहे
परत्रिपतकिसीकरिनहीहोती॥ अरुत्रिष्णारूपीपतणीहे॥ कवहूकवहूउडजा
तीहे॥ कवहूकवहूउडजातीहे॥ कवहूकवहूउडजातीहे॥ श्रस्थिरकहेनहीहोती
तेसेत्रिष्णाकवहूकिसीपदार्थकोग्रहणकरतीहै॥ कवहूकिसीपदार्थकोग्रह
णकरतीहे॥ श्रस्थिरकदाचितनहीहोती॥ अरुत्रिष्णारूपीवानरहे॥ कवहूकिसी
वृक्षपरजाताहे॥ कवहूकिसीवृक्षपरजाताहे॥ श्रस्थिरकवहूनहीहोवताजो
पदार्थनहीप्रापतहोता॥ तिसकेनिमित्तयतनकरताहे॥ तेसेत्रिष्णानानाप्रका
रकेपदार्थोकोंजातीहे॥ कवहूकिसीपदार्थकीश्रोरजातीहे॥ कवहूकिसीश्रोर
जातीहे॥ श्रस्थिरकहेनहीहोती॥ अरुभोगोंकरिकदाचितत्रिपतनहीहोती॥ जे
सेघ्रतकीश्राहुतकरिश्रगनित्रिपतनहीहोती॥ अरुजोपदार्थनहीप्रापतहोवताजोत
तिसकीश्रोरभीदोडतीहे॥ शांतकदाचितनहीहोती॥ हेमुनीश्वरत्रिष्णारूपीनट
णीघरमेंश्रारूढहो॥ अरुजहांकहांसूक्ष्मकोलेपेफिरतीहे॥ कवहूनरककीश्रोर
कहूदिसाकीश्रोर॥ श्रेसीप्रकारसवश्रोरकोंलीयेफिरतीहे॥ अरुत्रिष्णारूपीनदीहे
तिसविषेवासनारूपश्रनेकतरंगउठतेहे॥ कदाचितमिटतेनहीं॥ अरुत्रिष्णारूपी
नटनीहे॥ अरुजगतरंगउठतेहें॥ कदाचितमिटतेनही॥ अरुत्रिष्णारूपीनटनीहे॥ श्र
रुजगतरूपतिसनेश्रषाडालगायाहे॥ तिसकोंमिरजावाकरिकेदेषतीहे॥ अरुश्राप
प्रसनहोतेहें॥ जेसेसूरजकेउदेहोएसूर्यमुषीकमलषिरतेहें॥ अरुऊंचेहोश्राव
तेहें॥ तेसेपुरुषचासकोंदेषकरिप्रसनहोतेहें॥ अरुऊंचेहोश्रावतेहें॥ तेसेसूर्यऊसका
त्यागकरताहे॥ तोभीउहपाकीलागीफिरतीहे॥ कवहूउसकात्यागनहीकरती
अरुत्रिष्णारूपीसमुद्रहे॥ तिसकेलायननिरूपीवावरापेहूएहे॥ तिसकरिभ्रमतेफिरते
हें॥ अरुत्रिष्णारूपीउहूनीहे॥ जवलगगुणकेउश्रानप्रापतहोताहे॥ तिसकोनाश
करतीहे॥ तिनकेवियोगकरिकेमेंदीनहोजाताहों॥ जेसेपापीहासमेघकोंदेषकरि
प्रसनहोताहे॥ अरुवेदकोग्रहणकरणेलागताहे॥ अरुपवनमेघकोलेजावे
अरुपपीहादीनहोजाताहे॥ तेसेजववगुणोकोनाशकरतीहे॥ तवमेंदीनहोजा
ताहों॥ हेमुनीश्वरत्रिष्णानेऊकेहूरनेहरराषाहे॥ जेसेसूकेतृणकोपवनदूरते
दूरलेउडाताहे॥ तेसेत्रिष्णारूपीपवनमुझकोदूरतेदूरलेउडावेयाहे॥ श्रात्मपदते
हेमुनीश्वरजेसेभौराकमलकेउपरजाताहे॥ कवहूनीचवेठताहे॥ कवहूश्रास
पासवोफेराफिरताहे॥ इस्थिरनहीहोता॥ तेसेत्रिष्णारूपीभौरसंसाररूपीकमलके
कवहूऊरधलोक॥ कवहूश्रधःलोकपराफिरताहे॥ ठहरताकदाचितनहीश्ररुते
सेमोतीयोंकाठामहोताहे॥ जिसतेवहुतमोतीनिकसतेहें॥ तेसेत्रिष्णारूपीवास

वै रा·
१२

तेजनमरूपीमोतीनिकसतेहैं। अरुतिनकसतेंतेंकदाचितनहीहोते। अरुउपद्रूपीरत्न
नोंकात्रिस्नारूपीरवाहै। तिसविषेअनेकउपद्रहतेहैं। तातेसोईउपायकहो। जिसकरि
केत्रिस्नानिवर्तहोवे। हेमुनीश्वरयहत्रिस्नावेरागकरिकेनिवर्तहोतीहै। औरकिसी
उपायकरनिवर्तनहीहोती। जैसेअंधकारकानाशप्रकाशकेविनाहोताहै। औरकिसीउपा
यकरिनहीहोता। जैसेत्रिस्नाकानाशवेरागविनाऔरउपायोंकरिनहीहोता। अरुत्रि
स्नारूपीहलहै। अरुगुणरूपीपृथ्वीकोंजोदनहाराहै। अरुत्रिस्नारूपीवल्लीहै। अ
रुगुणरूपजोरसहैतिसतेरहितहै। अरुत्रिस्नारूपीवल्लीहै। अरुगुणरूपजोरसहै
तिसतेरहितहै अरुत्रिस्नारूपीधूडहै। अरुमनहूकरणरूपीजलकोंमलनकरतीहै
अरुतकरि। हेमुनीश्वरत्रिस्नारूपीनदीहैवर्षाकालकी। जोकबहूबढतीहै। कबहूघ
टतीहै। जबइष्टविषयरूपीजलनहीप्रापतहोताहै। तबहर्षवानहोतीहै। अरुघट
तीहै। अरुजबभोगरूपीजलनहीप्रापतहोतातबक्षीणहोजातीहै। अरुयहजो
शोकवानहोतीहै। नहीकछुओरधीरहोती। हेमुनीश्वरइसत्रिस्नासर्पकों
वहुतदीनकीयाहै। जैसेलूकेपौनअरुत्रिणकोंपवनछेदवानकरताहै। तैसेमनु
कोंत्रिस्नादीनकीयाहै। तातेसोईउपायकहो। जिसकरिकेत्रिस्नाकानाशहोवे
अरुआत्मपदकीप्रापतहोवे। अरुदुषनष्टहोजावें। आनंदकीप्राप्तहोवे॥ इतिश्री
वासिष्ठशास्त्रेवैराग्यप्रकरणेत्रिस्नागरुडीवर्णनंनामसर्गः॥ रामउवाच॥ हेमुनी
श्वरयहजोअमंगलरूपशरीरजगतविषेउतपनिहुआहै। सोवडाअभागरूपहै
अरुसदाविकारवानहै। अरुमासमज्जाकरिकेपूरणहै अरुसदाअपवित्ररूपहै।
इसकरिकेमअर्थसिधहोताकछुनहीदेषता तातेअनित्यविकाररूपीशरीरकीमुक
कोइच्छानही। यहशरीरकेमोहनेअतहैनअतनहै। अर्थयहजोनजडहैनचेतनयह
नरइसकेकारणजेनहीजोइसतेकारजभीहोताहै। अरुचेतनयइसवास्तेनहीतोइ
सकोंआपनेतानननही। तातेमधभावहै काहेतेजोचेतनआत्माइसविषव्यापहै
लोहेविषअगनिकीन्याई। अरुआपतेअपवित्ररूपविकारवानहै। अस्थिमासरुधि
रकरिविष्टाकरिपूरणहै। ऐसीजोदेहहैसोदुषोंकाअस्पदहै। अरुइष्टकेपाएतेह
र्षवानभासतीहै। अरुअनिष्टकेप्राप्तहुएशोकवानभासतीहै। ऐसेशरीरकीमुक
कोइच्छानही। यहअज्ञानकरिकेउपजाहै। हेमुनीश्वरऐसेशरीरअमंगलरूपदेह
विषेजोअहंकारकरतीहै सोदुषोंकाकारणहै। संसारविषेअस्थितहोकरिनाना
प्रकारकेशब्दपडीकरतीहै। जैसेढोलविषेविलाईवेठाहूआशब्दपडाकरताहै
नानाप्रकारके। अरुतिसकोंकबहूनहीहोता। तैसेअहंकाररूपीविलाईदेहविषेअ
हंकारकरताहै। सोतकदाचितनहीहोता। अरुशरीररूपीजोकाभागरूपीवेरे
तीविषेपडीहै। तिसकोपारहोवणाकठनहै। जबवेरागरूपीतरलवरप्रवाहहोवे।
अरुअभ्यासरूपीचपेकाबलभीहोवे। तबसंसाररूपीसमुद्रकेकनारेकोपावहैवेप्र
रुष। तबवडूइशरीररूपीवेडाहै। अरुसंसाररूपीसमुद्रविषेपडाहै। तिससमुद्र
विषेत्रिस्नारूपीजलहै। अरुवडाप्रवाहहै। अरुभोगरूपीतिसविषेमछहै। सोश
रीररूपीवेडेकापारनहीलगाताहै। जबशरीररूपीवेडेउलाघवेरागरूपीप्रीबा
लागे अरुअभ्यासरूपीचपेकाबललागे। तबशरीररूपीवेडापारकोंप्रापत
होवे। हेमुनीश्वरजिहोंपुरुषोंऐसेवेडीकोंपारकरिआपकोंसंसारसमुद्रते
पारकीयाहैसोपरमपदकोंप्राप्तहोवेंगेतनुषेनही। अरुतिन्होंनहीकीयातनपर
मअपदकोंप्रापतहोवेंगे। यहइसवेडेकरिउतटेरहोहिंगे। जेसेवडेगीविषेछिद्रहो
वेंअरुइसविषेजलप्रवेशकरिजाताहै। तवजसकेरिडूवजातीहै। अरुतिसविष

जोमकरहतेहैं। सोतिसकोंभोजनकरतेहैं। सोदीहांकाछिद्रहै। शरीररूपीवेडीहै अरु
त्रिस्नारूपीछिद्रहै। तिसकरिकेसंसारसमुद्रविषेवहइडूवजाताहै। अरुभोगरूपीमछ
इसकोभोजनकरतेहैं। अरुइहरूपीलाहैजोआपकोंवडीमानताहै। अरुतिसके
विडषपावताहै। त्रिस्नारूपीछिद्रोंकरिकेहेमुनीश्वरशरीररूपीब्रिछहै। अरुहस्तन
रूपीइसकीशाषाहै। अरुअंगुलीइसकेपत्रहैं। अरुनखइसकेफलहैं। अरुमास
रूपीइसकीत्वचाहै। अरुवासनाइसविषेघुणहै। अरुमास
है। अरुचालनाइसविषेचुणहै। जोशरीररूपीवृक्षकोंछावनेरहितहै। तबइस
रूषइसकोंषाइतेहैं। तवनाशकासमाआवताहै। अर्थयहजोवलेतकेसहोवे
हैं। तवइसनकेनिकटवरतीहोताहै। अरुवडरशरीररूपीवृक्षकेसाहै। जोमृगा
रूपीइसकेवासहैं। अरुनेत्रारूपीलवहैं। अरुकर्मरूपीजलकरिवढताजाताहै॥
जैसेहूतनेजलनिकसतारहताहै जोचिकताहै। जैसेजलशरीरकेद्वारोंविषेनि
कसतारहताहै। अरुशरीररूपीविरक्षविषेविषेविषकरिसर्पसर्पणीरहितीहै
अरुजोकामनाकरिभरेहुएहैं। तेषउरोइसविरक्षकाआश्रयलेतेहैं। तवत्रिस्ना
रूपीसर्पणीतिनकोंडसतीहै। तिसकीविषसाध्यहैदुष्टपुरुषमरजातेहैं। हेमुनीश्वर
सेवालाअमंगलरूपशरीरहतेहैं। तिसकीइकामनकोनही। यहपरमइष्टका
कारणहै। तवलगइहपुरुषअपनेपरवारविषेवांध्याहुआहै। तवलगमुक्तनही
होता। अरुजवपरवारकात्यागकरै। तवमुक्तहोवे। सोपरवारकोनहैदेहइंद्री
यांप्राणमनवुधइसकापरवारहैइनविषेजोअहंभावहै। जवइसकात्यागकरै
तवमुक्तहोवे। अन्यथामुक्तहीहोता। हेमुनीश्वरअपूजपुरुषहै। तेपवित्रइस्था
नविषेरहतेहैं। अपवित्रविषेनहीरहते। सोअपवित्रइस्थानदेहहै। तिसविषेरह
णवालभीअपवित्रहै। अस्थिरूपीइसरहविषेइदालगीयाहै। अरुरुधिरइसमू
त्रइरीछ्यइसकोंविकारलागाहै। अरुमासकीकहगलकरीहै। अरुअहंकाररूपी
लषचाइसविषेरहताहै। अरुत्रिस्नारूपीसुपचीइसकीइस्त्रीहै। अरुकामक्रोधलो
भमोह। इसकापरवारहै। अरुआदाककरीकरिपूर्णभरेयाहुआहै। हेमुनीश्वरऐ
सेजोअपवित्रइस्थानहै। इसअमंगलरूपशरीरकोंमेअंगीकारनहीकरता। इ
हरहोअपवित्रतावो। मेरइसकेसाथप्रयोजनकछुनही। हेमुनीश्वरएकव
डाक्लहहै। तिसविषेवरेहीयस्तरहतेहैं। अरुधूउकोंउठावतेहैं। जोइसगृहविषेको
उजाताहै। तवइसकोंरोगोलाघमारतेहैं। अरुपुरभीइसकेउपरउडतीहै। सोशरी
ररूपतोवडागरहहै। तिसविषेइंद्रीयारूपीपसूहैं। जवइसगृहविषेवेठताहै अप
यहजोइसविषेअहंभावकरताहै। तवइंद्रीयांरूपीपसूइसकोंविषयरूपीसुगा
करिमारतीयांहै। अरुत्रिस्नारूपीधूरकरिइसकोंमतनकरतीयांहै। हेमुनीश्वरऐ
सेदुषदाइकशरीरकोंमेअंगीकारनहीकरता। जिसगृहविषेसदाकालहपलीहो
तीहै। तिसविषेसंपदानहीपरवेशकरती। ऐसाजोशरीररूपीगृहहै। तिसविषेत्रि
स्नारूपीचंडीइसजीरहतीहै। अरुइंद्रीयांरूपीद्वारोंकरिदेषतीरहतीहैवाहजको
सदाकलपनाकरतीरहतीहै। तिसकरिशांतमनरूपीसंपदानही। परवेशकरती।
हेमुनीश्वरतिसगृहविषेएकशत्रुभीहै। जवइसपरविश्रामकरताहै। तवकछुसु
षकोंपावताहै। परतिसकाजोपरवारहै। सोविश्रामकरणेनहीदेता। सोकोनसि
त्राहै। सुषुप्तरूपीतिज्ञाहै। जवइसविषेविश्रामकरताहैतवकामक्रोधादिक
उठतवकरुतेहैं। अरुतिसचंडीइसजीकापरवारजोकामक्रोधलोभइच्छावासनातेष
ड़ावतेरहैं। विश्रामकरणेनहीदेतेहेमुनीश्वरऐसाउपाकामेतशरीररूपीगृहहै।

तिसकी इछा मैं त्यागी है यह स्वरूप परम दुःखों का देवणे हारा है ॥ इसकी इछा मुझ कों नही
हे मुनीश्वर शरीर रूपी गृह है ॥ तिस विषे बिलाव रूपी कों आनंद स्थित भया है ॥ जैसे कों
आमलन पदार्थों की ओर दौडता है ॥ तैसे बिलाव रूपी कों तृष्णा भोग रूपी मलन पदार्थों
की ओर दौडता है ॥ तैसे बिलाव रूपी कों तृष्णा भोग रूपी मलन पदार्थों की ओर दौडती है
वह ऐसी है बिलाव ॥ जो वानरी की न्याई शरीर रूपी वृक्ष विषे निवास कीया है ॥ पर शरीर
रूपी वृक्ष कों स्थिर होणे नही देती ॥ पड़ हिलावती है ॥ अरु जैसे वन मस्त हस्ती विक
ट विषे जाइ फसता है ॥ अरु निकस नही सकता ॥ तब वध होता है ॥ तैसे अज्ञानी
रूपी मस्त करिके उनमत है ॥ अज्ञानी व शरीर रूपी हस्ती विकार विषे फस्या है अरु निकस नही
सकता ॥ परम दुःख पावता है ॥ ऐसा जो दुःख के देवणे हारा शरीर है ॥ तिस कों मैं अंगीकार
नही करता ॥ हे मुनीश्वर यह शरीर रूपी गृह है ॥ अस्थि अरु मास रुधिर कर पूरण है अरु अप
वित्र है ॥ कोऊ काल इसके मध है ॥ सत इस कों ग्रासले वेगी ॥ ताते मैं अंगीकार नही क
रता ॥ अरु यह शरीर कृतघन है जो इसदा पोष करीता है ॥ अरु भोग भुगतावे है ॥ अ
रु वडे ऐश्वर्य कों प्रापत कीरता है ॥ पर यह साथ एक कछु नही करता जी जब इस का
कोई कर पर लोक जाता है ॥ तब एकला ही जाता है ॥ अरु शरीर जीव के साथ नही जा
ता ॥ ऐसा जो कृतघन शरीर है सें अब इसका त्याग कीया ॥ जीव इस के सुख निमि
त अनेक जतन करता है ॥ अरु यह संग नही जाता ॥ यह दुःख के देवणे हारा है ॥ हे मुनी
श्वर और आश्चर्य देखो जो वायु अभ्यास करती है ॥ तब वेग साथ चलती है ॥ अरु धूर के सा
थ मार गगर ही जाता है ॥ भासता नही ॥ तैसे यह जीव जब वृत्ति लागता है ॥ तब बोध
होता है शरीर साथ ॥ अरु वासना रूपी धूर संग गगन चलता है ॥ पर जाणीता नाही
जो कहां गया ॥ जब पर लोक जाता है ॥ तब बड़ा कष्ट होता है ॥ काहे ते जो शरीर सा
थ स्पर्श कीया था ॥ हे मुनीश्वर यह शरीर छिन भंगर है ॥ जैसे जल की बूंद पत्र के ऊपर
पर होती है ॥ सो छिन मात्र है ॥ तैसे शरीर भी छिण भंगर है ॥ ऐसे शरीर विषे जो आ
स्था करणी सो मूर्खता है ॥ ऐसे शरीर पर उपकार करणा भी दुःख के निमित है ॥ स
व कछु नही ॥ जो धनाढ शरीर है ॥ उह वडे भोग भोगते है ॥ अरु जो निरधन है तैसे भो
ग थोडे भोगते है ॥ पर जरा अवस्था दोनों कों होती है ॥ अरु मृत भी दोनों कों हो
ती है ॥ इन विषे विशेषता कछु नही ॥ शरीर साथ उपकार करणा भोग भुगावणा दुःखदाई
एक कारण है विलास करि के जैसे जो लपाणी रह हि लते होण ॥ अरु इस पर उपका
र करेगा ॥ अरु दूध पिवावेगा ॥ तो भी अंत सर्पणी तिसकों मारेगी तैसे जिस ग्रह
ण ने शरीर रूपी सर्पणी लाय सप पालि करी है सो मर ही गया ॥ हे मुनीश्वर यह तो ना
पावते है ॥ इसके निमित जो भोगों कों भुगावणे का जतन करते है ॥ तो भी मरते
है ॥ जैसे पवन का वेग आवता है अरु जाता है ॥ तैसे यह शरीर नाशवंत है ॥ इसकी
प्रीत करीनी दुःखों का कारण है ॥ सब जीव इसकी आस्था विषे बांधे हुए है ॥ कोऊ
विरला है ॥ जिसने इसकी आस्था त्यागी है ॥ जैसे कोऊ विरला सूरमा होता है ॥ जो मा
रूथला विषे जल की आस्था त्यागता है ॥ और सब भ्रमते है ॥ हे मुनीश्वर बिज
ली अरु दीपक का प्रकाश भी आवता जाता भासता है ॥ पर इस शरीर का आदि
अंत नही भासता ॥ जो कहां ते आवता है ॥ अरु कहां जाता है ॥ जैसे समुद्र विषे बुद
बुदे उपजते है ॥ अरु मिट जाते है ॥ तिनकी आस्था करणी कछु नही ॥ तैसे इस शरी
र की आस्था करणी जोग नही ॥ यह अपने नाश रूप है ॥ स्थिर कदाचित नही
होता ॥ जैसे बिजली स्थिर नही होती ॥ ऐसा जो नाश रूप शरीर है ॥ इस विषे मैं
आस्था नही करता ॥ इसका अभिमान मैं त्यागा है ॥ जैसे कोऊ सर्प के विष कों त्याग

देता है ॥ तैसे मैं इस विषे अहं मन त्यागी है ॥ हे मुनीश्वर ऐसे शरीर कों अंगीकार करणा है ॥ सो दुःखों
के निमित है ॥ यह शरीर और किसी अर्थ जोग नही ॥ जालावणे कों जोग है ॥ जैसे लकडी औ
और किसी काम नही आवतीयां ॥ जलावणे अपणा काज करि लेवती है ॥ तैसे यह श
रीर रूपी काष्ट कों ज्ञान अग्नि करि जलावता है ॥ तिनके तो परम अर्थ सिध होता है
अरु जिन्होंने नही जलाया ॥ तिनकों परम दुःख के निमित है ॥ हे मुनीश्वर नर्क रूप शरीर है ॥
न इसका मैं हों न यह मेरा है ॥ अब सुख कों इसका कामना कोऊ नही ॥ मैं
निर्वासी पुरुष हों ॥ अरु शरीर साथ सुख कों प्रयोजन कछु नही ॥ अब तुम मो सों ही कहो
जिस करि मैं परमानंद कों प्रापत होवो ॥ हे मुनीश्वर जिस पुरुष ने शरीर अभिमान त्यागा है
सो परमानंद रूप है ॥ अरु जिसकों देह विषे अभिमान है ॥ सो परम दुःखी है ॥ जेता कछु
दुःख होता है ॥ सो देह के संजोग करि होता है ॥ मान अपमान जरा मृत्यु हर्ष ध्यान सो
शोक आदिक सर्व विकार देह अभिमान करि होते है ॥ जिसकों देह विषे अभिमान है ति
सकों अधिकार है ॥ वडे उवडे दुःख विकार है ॥ अरु सम अपदा भी तिसकों प्रापत होती पाहे
तैसे समुद्र विषे सर्व नदीयां आइ प्रवेश करतीयां है ॥ तैसे देह अभिमान विषे सर्व अप
दा आइ प्रवेश करतीयां है ॥ अरु जिसकों इसका अभिमान नही ॥ सो पुरुष आपदा विषे उतम
है ॥ अरु देह नाशवंत कों जाणता है ॥ तिसकों आपदा नही आवती ॥ अरु सर्व संपदा तिसकों प्राप
त होती है ॥ जैसे मानसरोवर विषे सर्व हंस आइ प्रापत होते है ॥ तैसे जहां देह अभिमा
न नही रहा ॥ तहां सर्व संपदा है ॥ हे मुनीश्वर जैसे अपणे परछावे विषे बालक पिशाच
कों कलपता है ॥ तिसकरि के दुःख पावता है ॥ जब उसकों विचार की प्रापत होती है तब
पिशाच की कलपना का अभाव हो जाता है ॥ अरु भय भी निवर्त हो जाता है ॥ तैसे अज्ञान
करिके मुझकों अहंकार रूपी पिशाच ने शरीर विषे आस्था दृढ कर दिखाई है ॥ तातें
मेरी उपाय मुझकों कहो ॥ जिसकरि के अहंकार रूपी पिशाच नाश होवे ॥ अरु शरीर
की आस्था रूपी फांसी टूटे ॥ हे मुनीश्वर प्रथम जो मुझकों अज्ञान करि स्त्री ग्रह सो
अहंकार रूपी पिशाच का है तिसते अनंतर शरीर विषे आस्था उपजी है ॥ जैसे प्रथम
बीज ते अंकुर होता है ॥ अरु अंकुर ते पाछे वृक्ष होता है ॥ जैसे अहंकार ते शरीर की आ
स्था होती है ॥ हे मुनीश्वर इस अहंकार रूपी पिशाच ने सब जीवों कों दीकीया है ॥
अरु अहंकार के नाश होते है ॥ जो अविचार ते सिध है ॥ अरु विचार कीये ते अभाव हो
जाता है ॥ जैसे प्रकाश करि के अंधकार नाश हो जाता है ॥ तैसे विचार कीये ते अहंका
र नाश हो जाता है ॥ हे मुनीश्वर जिस शरीर विषे इस आस्था करी है ॥ सो शरीर ऐसा
है ॥ जैसे जल का प्रवाह होता है ॥ अरु स्थिर नही रहता तैसे शरीर भी चल रूप है ॥
जैसे बिजली का चमतकार होकर स्थिर नही रहता ॥ अरु गंधर्व नगर की आस्था
मानणी वृथा है ॥ अरु सब काल के मेघ की आस्था मानणी वृथा है ॥ तैसे शरीर की आ
स्था मानणी अयुक्त है ॥ हे मुनीश्वर ऐसे शरीर की आस्था करि के तिस विषे अहं प्रत्यय
करता है ॥ अरु जगत के पदार्थों के निमित यतन करते है ॥ तैसे हास्यरूप है ॥ जैसे स्वपन
भ्रम मिथ्या है ॥ तैसे यह जगत मिथ्या है ॥ इसकों सत्य जान करि जो इसके निमित जतन
करते है ॥ सो अपने बंधन के निमित करते है ॥ जैसे कुराइण जो उपजावणा वती है सो
अपणे बंधन के निमित होती है ॥ अरु जैसे पतंग जो दीपक की इछा करता है ॥ सो अपणे
नाश के निमित करता है ॥ तैसे अज्ञानी जो देह विषे अभिमान करता है ॥ अरु भोगों की
इछा करता है सो अपणे नाश के निमित करता है ॥ हे मुनीश्वर मैं ना अब इस शरीर का

रका अभिमान अंगीकार नहीं करता। इह शरीर अभिमान दुखों के देवणहारा है। तिसको देहरू
अभिमान न रहे या तब भोगों की इच्छा भी न रहेगी। तातें मैं निर्वाणी हों। एक परम पद की इच्छा
मुझको है। जिसके पाएतें संसार समुद्र को बहुरि न प्राप्त होवों। इति श्री सिद्धश्ला दे
हजगप्सा व ने म गी: रा ना वा। हे मुनीश्वर इस संसार समुद्र विषे जो देह उपजता
है। अरु तिस विषे वाल अवस्था इसको प्राप्त होती है। सो भी अपरम दुखों का मूल है। तिस वि
षे परम दीन होता है। अरु परतंत्र अवगुण इस विषे आन प्रवेश करते हैं। अशक्तता अरु म
घता। अरु इच्छा अरु चपलता। अरु भ्रांति। अरु दीनता। अरु जलनता इत्यादिक विकार हैं सो
सब ऐसे विकार इसको आन प्राप्त होते हैं। इह वाल अवस्था महा विकारवान है। अरु स
नमदा पदार्थों की ओर धावता रहता है। एक वस्तु को ग्रहण करता है। दूसरी को बहुर चा
हता है। स्थिर नहीं रहता। इसरी विषे लाग जाता है। जैसे वानर वृक्ष पर टिक कर नहीं बैठता
तैसे वालक टिक कर नहीं बैठता। जो को ऊ इस पर क्रोध करता है। तो अंतर ते पश्चाताप करता है।
अरु वड़ी वड़ी इच्छा करता है। तिनकी प्राप्त नहीं होती। तव दुख कर विलाप करि जलता र
हता है। अरु छिण छिण विषे भय भी तिस को होता है। शांत को कदाचित नहीं प्राप्त हो
ता। अरु महा दीन हो जाता है। शांत को कदाचित नहीं प्राप्त होता। अरु महा दीन
हो जाता है। जैसे कर्दली वन का हस्ती संगल साथ वांधा हुआ दीन हो जाता है। ते
से इह चेतन परस्पर वालक अवस्था करि के दीन हो जाता है। अरु जो कछु इह करता
है सो विचार विना करता है। तिस करि के दुखों को पावता है। अरु इह वाल अवस्था है
जो पुरुषार्थ इस विषे सिद्ध कछु नहीं होता। जो कोऊ पदार्थ प्राप्त होता है। तिस विषे
एक छिण सुखवान होता है। बहुर तत्पर लागता है। जैसे तपत पृथ्वी ऊपर जल पाइये
तो एक छिण सीतल होती है। बहुर वैसी प्रकार तपती है। तैसे इह भी तपता रहता है। अ
रु जैसे राहु विनी नाह्य पतेंस जेठ होत हैं। तिस करि जल आदिक कष्टवान होते हैं। तैसे इ
स जीव को स्वरूप ज्ञान के अभाव करि वालक अवस्था विषे कष्ट होता है। हे मुनीश्वर जो
वाल अवस्था की स्तुति करते हैं। ते भी मूर्ख हैं। काहे ते जो विवेक ते रहित इह अवस्था
है। अरु सदा अपवित्र रहता है। अरु अस्थिर कदाचित नहीं होता। सदा पदार्थों की ओ
र धावता है। ऐसी तुच्छ अरु दीन अवस्था की मैं कछु इच्छा नहीं। जो जिस पदार्थ को
देखता है। तिसही की ओर धावता है। अरु तिस विषे अपमान को पावता है। जैसे
कुकर छिण छिण विषे द्वारों की ओर धावता है। अरु अपमान को प्राप्त होता है।
तैसे वालक अपमान को प्राप्त होता है। अरु वालक को सदा माता का भय रहता है। अरु
पिता का भी भय रहता है। अरु बांधवों का भय रहता है। अपने से वड़े वालकों का भय रह
ता है। अरु पशु पक्षियों का सदा भय रहता है। हे मुनीश्वर ऐसी दुख रूपी अवस्था की मु
झको इच्छा नहीं। जैसे पीपल के पत्र भी चंचल हैं। अरु जल का प्रवाह भी चंचल है।
अरु बिजली भी चंचल है। तिस ते भी मन अरु वालक चंचल हैं। ऐसे जानीता है। जो सभ ना च
चलता वालक सो सभ ही है। वालक मन ते चंचल है। जैसा चंचल मन है। तैसा चंचल वालक है।
मन का रूपी ही वालक है। हे मुनीश्वर जैसे वेश्या का चित्त एक पुरुष विषे नहीं ठहरता।
जैसे काम भोगी मन ते वारी अस्त्री को एक स्थान चित्त नहीं ठहरता। तैसे वालक का चि
त्त एक पदार्थ विषे नहीं ठहरता। इह विचार भी तिसको नहीं। जो इस पदार्थ करि के मे
रा नाश होवेगा। अरु इस पदार्थ करि के मेरा सुख होवेगा। विचार ते रहित ते व छायाकार
ता है। अरु सदा दीन रहता है। अरु सब दुखों का एक पुकारिके तव दीन पाइ मान चित्त र

हता है। जैसे ते इह अपराध वियोग ते वियोग न होती है। तैसे वालक अंतर ते तपता रह
ता है। शांत को कदाचित नहीं प्राप्त होती। अरु जे व विद्या पढ़णे सा जाता है। तव गुरु का
अत्यंत भय मान होता है। जैसे जम के देखकर किस यक्ष को भय पावे। अरु जैसे गरुड़ को देख
करि सर्प भय पावता है। तैसे भय भीत होता है। अरु जब वृद्ध रोग को काऊ होता है आन प्रा
पत होता है। तव वड़े दुख को प्राप्त होता है। दुख के निवारणे को समर्थ नहीं होता। अन
अरु संतवलों को भी समर्थ नहीं होता। अंतर ते परजलता है। अरु मन के कछु कहि न
हीं सकता। जैसे वृत्त कछु नहीं सकता। अरु जैसे अग्नि तिस के जीव दुख पावते हैं। अरु
कहि नहीं सकते। तब निवारण करि सकते हैं। न सहार सकते हैं। न कहि सकते हैं। अं
तर विषे परजलते हैं। तैसे वालक गरुड़ा सकव ग्राहु दुख पावता है। हे मुनीश्वर ऐसी वाल
अवस्था की उपमा करते हैं। ते मूर्ख हैं। इह तो परम दुख रूप अवस्था है। इस विषे वि
वेक विचार कछु नहीं। एक भावना की ओर धावता है। अपवाद रुदन करता है। ऐसे
भोग ऐन रूप अवस्था सुख को नहीं पावती। जैसे विजुली चंचल ता होती है। अरु
जल के बुदबुदे स्थिर नहीं होते। तैसे वालक का चित्त स्थिर नहीं होता। हे मुनीश्वर
इस महा मूर्ख अवस्था है। कवहूं कहता है हे पिता मुझको वरफ का टुकड़ा भुन दे हु
कवहूं कहता है मुझको चंद्रमा उतार दे। इह मूर्ख ता के वचन कहता है। ताते ऐसी
मूर्ख अवस्था को मैं अंगीकार नहीं करता। जैसे दुखों का अनुभव वालक को होता
है। सो हमारे लेखणे विषे भी नहीं आया। अथवा इह जो वड़ा दुख वालक अवस्था वि
षे है। इह वाल अवस्था आगे ऐसो कासंठन है। जो अवगुणों करि सोभती है। ऐसी नी
च अवस्था को मैं अंगीकार नहीं करता। इसकी उत्पत्ति करि ही मूर्ख ता है इस अव
स्था विषे गुणों को ऊ नहीं। इति श्री लि शासे लग मुस्सावने ने नाम गः॥
रा वाच। हे मुनीश्वर दुखरूप वाल अवस्था के अनंतर जो वा अवस्था आवती है
सो अधः ते ऊपर पड़ी चढ़ता है। सो ऊपर भी ऊतम नहीं। गिरने के निमित्त ऊपर चढ़
पड़ा रकहै। तव जोवन अवस्था आती तव काम रूपी पिशाच आन लागता है। सो
काम रूपी पिशाच जोवन अवस्था रूपी गर्त विषे आन स्थित होता है। अरु चित्त
विहुला करता है। अरु इसका कोऊ पमारता है। जैसे तुणे के उदे हुए तत्त्व वनस्पती कमल वि
गसावते हैं। अरु पेकऊ भी को कोऊ पमारते हैं। तैसे जोवा अवस्था के उदे हुए चित्त रूपी
कमल इच्छा रूपी पकड़ी यों को पसारते हैं। तव नाना प्रकार की याइरका करती या
है। अरु काम रूपी पिशाच इसको अस्त्रीयों विषे डार देता है। नहीं पड़ा इस अत्य दुख
को प्राप्त होता है। जैसे कोऊ किसी को अग्नि के ऊपर विषे डार दे अरु दुख पा
वता है। तैसे काम के वस हुआ दुख पावता है। हे मुनीश्वर जो ऊपर विकार है सो सभ
जोवा अवस्था विषे आन स्थित होते हैं। जैसे सम्पत्ती को देखकर निरधन आन प्राप्त
करते हैं। तैसे जोवा अवस्था को देखकर विसम दोष आन एकत्र हुए होते हैं। अरु जिन्हां भा
गों को सुख रूप जाण करि तिन की इच्छा करता है। सो परम दुखों के कारण हैं। जैसे सम
दक का चढ़ भरी पेती देखणे मात्र तो सुंदर होता है। पर जब उसको पान करता है तव
दुख मन हो जाता है। तिस उनमत्तता करि के दीन हो जाता है। अरु निरादर को पावता
है। तैसे इह भोग देखणे मात्र सुंदर भासते हैं। पर जब इनको भोगीता है तव तिसी
करि के उनमत्त हो जाता है। अरु पराधीन दीन जैसा हो जाता है। हे मुनीश्वर काम क्रो
ध लोभ मोह अहंकार जो है चोर। सो जोवन रूपी रात्रि को देखकर लूटणे लागते हैं।
अरु आत्मानंद रूपी धन को हर लेजाते हैं। तिसकरि इह दीन हो जाता है। जैसे मेघ के विया
ग करि मोर दीन हो जाता है। तैसे इह पुरुष आत्मानंद के वियोग करि दीन होता है।

हेमुनीश्वरऐसीजोइंद्रीयांकेरवणेहारीजुवाअवस्थाहै।तिसकोमेंअंगीकारनहीकरता
शांतजोहोणीहैसोचितकेअस्थिरहुएहोणीहै।सोचितजोवनअवस्थाविषेमदाविष
योंकीओरधावताहै।जैसेबाणतत्तकीओरधावताहैतैसेचितविषयोंकीओरधाव
ताहै।जैसेबाणलक्षकीओरधावताहैतैसेचितविषयोंएजवइसकोविषयोंका
संजोगहोताहै।तबभीतृष्णानिवर्तनहीहोती।तिसतृष्णाकरिकेबंधमानहु
आजनमतेजनमांतरोंकोधावताहै।अरुदुःखभोगताहै।तातेंहेमुनीश्वरऐसी
दुःखदाईजोबनअवस्थाकीमकरूंइच्छानहीं।जेतेकदुःखहैंसोजोबनअव
स्थाविषेआनस्थितहोतेहैं।कामक्रोधलोभमोहअहंकारअभिमानचपलता
त्यादिकजोदोषहैं।सोआनस्थितहोतेहैं।जैसेप्रलयकालविषेसभउपद्रवआ
नउदेहोतेहैं।हेमुनीश्वरइहजुवाअवस्थाकिनभंगरकेसीहै।जैसेबिजलीकाचम
त्कारहोताहै।अरुमिटिजाताहै।तैसेजोबनअवस्थाआवतीहै।अरुमिटिजा
तीहै।जैसेसमुद्रविषेतरंगउपजाहैअरुमिटिजाताहै।तैसेजोबनअवस्थाउप
जतीहैअरुमिटिजातीहै।अरुजैसेस्वपनविषेविकारकोढलआवताहै।इसको
नष्टहोताहै।जैसेअज्ञानताकरिकेजोबनअवस्थाइसकोछलजातीहै।हे
मुनीश्वरजोबनअवस्थाइसकापरमशत्रुहै।जोपुरुषइसशत्रुकेत्रासतेंबच
याहै।इसकेशस्त्रकौनहैं।कामक्रोधादिकइसकेशस्त्रहैं।जाइनोंनेलूटाहै
सोवनकेपरहारकरिभीछूटानजावेगा।अरुजोइन्होंनेकरिबांध्याहै।सोहूतोपस
हे।हेमुनीश्वरदेषणेमाजोजोबनअवस्थासुंदरहै।परअंतरतेंतृष्णाकरिकेजरज
रीभूतहै।जैसेस्थूलदेषणेकोसुंदरहोवे।अरुअंतरतेंमृगतृष्णाकरिभायाहोवे।तैसेजु
वाअवस्थाहै।अरुतिन्होंभोगोंकेनिमित्तयत्नकरीताहै।सोभोगभीअपात
रमणीयहै।अर्थियहजोजबइंद्रियांअरुविषयोंकासंजोगहैतबलगभले
लागतेहैं।विचारविनासुंदरहैं।जबवियोगहुआतबदुःखदेतेहैं।तृष्णाकरिके
रहोभागोंतेमृगवसस्तनहोतेहैं।हेमुनीश्वरजोपुरुषजुवाअवस्थाकरिकेउ
नमतहुआहै।तिसकोशांतनहीहोती।अंतरविषेसदाचिंतनाकरहतीहै।अरुउ
सकीयांविषेचिंतआगाकरहता।तबइष्टबनताकावियोगहोताहै।तबतिसके
अनेकतिपदाजलताहै।जैसेबनकावृक्षअग्निकरिकेपदाजलै।तैसेजुवाअवस्था
विषेइष्टवियोगकरिकेजलताहै।अरुजैसेउन्मत्तहस्तीहोताहै।अरुसंगलोंसाथ
बांधीताहै।तबस्थिरहोताहैनाअन्यहोसकता।तैसेकामरूपहस्तीतिसकोस्वे
तजुवाअवस्थाहोतीहै।तिसकरिकेचितरूपीअस्थानविषमदारहताहै।अरुजुवा
रूपीनदीहै।तिसविषेइच्छारूपीअनेकतरंगउठतेहैं।शांतनहीहोतेकदाचितभी
हो।हेमुनीश्वरइहजुवाअवस्थावरीदुष्टहै।जपुपिकोऊवड़ावुधवानहोवेअरुस
दानिर्मलहोवेबुधतिसकी।अरुसदाप्रसन्नहोवे।एतेगुणोंकरिसंपन्नहोवे।अरुजो
बनअवस्थातिसकोआवे।तौबुधभीतिसकीमलिनहोजातीहै।जैसेवर्षानदीहो
वे।अरुनिर्मलतोतिसकाजलहोवे।परजोवर्षाकालआवे।तबउहभीमलिनहोजा
ताहै।तैसेजुवाअवस्थाविषेबुधमलिनहोजातीहै।हेमुनीश्वरशरीररूपीवृक्षहै।
तिसविषेजुवाअवस्थारूपीवल्लीअगरहहोतीहै।तबउहवल्लीपुष्टहोतीहै।तबति
सकेऊपरचितरूपीभौराआनबैठताहै।अरुतृष्णारूपीतिसकीसुगंधकरिकेउन
मत्तहोजाताहै।अरुतिसकोविचारसभभूलजाताहै।जैसेजवपवनचलताहै।
तबसूकेपत्रोंकोउडायलेजाताहै।रहणेनहीदेता।
तैसेजवजुवाअवस्थाआवतीहै।तबवैराग्यउपरतसंतोषदयाआदिकगुणोंकाअ

भावकरतीहै।अरुइहरूपीकमलोंकाम्लानजुवाअवस्थाहै।तबउसकेप्रफुल
फुलतहोआवते।तातेंसभइंद्रियोंकामलजुवाअवस्थाहै।तबइसकेअर्थउपाय
चेष्टाकमलेखिडआवतेहैं।तैसेचितरूपीकमलसंसाररूपीपंकमें
अरुसंसाररूपीसुगंधलालहित।अरुतृष्णारूपीभौरेतिसकेऊपरफिरतेहैं
कोलेतेतिन्होंसहित।जवाररूपीसलिलकेउदहरूपविष्टिआवतेहैं।अरुसंसाररूपी
रात्रहै।तिसविषेजुवाअवस्थाप्रकाशतीहै।अर्थियहजोशरीरजुवाअवस्था
करिशोभताहै।परजुवाशरीरकेजरजरीभावकरनेकोअवलतीतहै।जैसेधा
नकावृक्षजबलगहरयाहोताहै।तबलगइसकोफलनहीपडा।जबफलपडा
वस्तुकजाताहै।अबफलपरपकहोताहै।तबउतारलेताहै।अरुजबजराअ
वहोजाताहै।हरयावलइसकीनहीरहती।तैसेजबतगजुवानहीआईतबत
गशरीरसुंदरकोमलहोताहै।तबजुवाआईतबशरीरजरजरहोजाताहै।व
पतहोताहै।तातेंहेमुनीश्वरऐसीजोइंद्रियोंकामलजुवाअवस्थाहै।तिसकोअंगी
मकरूंकोनहीं।जद्यपिसमुद्रवरजलकरिपूर्णहै।अरुतरंगोंकोपसारताहै।तौभी
नमीदाकोत्यागतानहीं।ईश्वरकीआज्ञाकरिमर्यादाविषेरहताहै।अरुजु
वाअवस्थाऐसीहैजोशास्त्रकीमर्यादा।अरुलोककीमर्यादा।अरुअपणा
विचारतीनोंकाविचारनहीरहते।धर्मअधर्मकाविचारनहीरहता।जैसेअंधका
रविषेपदार्थोंकाज्ञाननहीहोता।तैसेजुवाअवस्थाविषेशुभअशुभकाज्ञा
ननहीरहता।जिसकोविचारहीनरहा।तिसकोशांतकहांतेहोवे।सदाआ
पिअरुव्याधितापकरिजलतारहताहै।जैसेजलविनामछकोशांतनहोहै
नी।तैसेविचारविनाउरुषजलतारहताहै।जबजुवाअवस्थारूपीरात्रआवतीहै।
तबकामरूपीउरुषआवताहै।तबतिनकेसाथभीएहीचरचाकरताहै।हेमिउ
हइसत्रीकेसाथरस्थी।अरुकैसेउसकेकटाक्षथे।किसीप्रकाररइहहमकोप्राप्त
होवे।हेमुनीश्वरऐसी।इच्छासोउहसदाजलतारहताहै।जैसेआगीपत्नकीन
दीकोदेखकरिमगदोडताहै।अरुजलकीअप्राप्तकरिकेजलताहै।जैसेकामी
पुरुषविषयोंकीवांछाकरिकेजलताहै।शांतकोनहीपावता।हेमुनीश्वरम
नुष्यशरीरउत्तमहै।परजिनकेअभागहैं।तिनकोइसविषेभीआत्मपदकीप्राप्त
नहीहोती।जैसेचिंतामणिकिसीकोप्राप्तहोवे।अरुउहअभागीउसकानिराद
रकरे।जोजानेनहीउसकोअरुडारदेवे।तैसेतिन्होंपुरुषोंमानुषशरीरपाइ
करिआत्मपदकोनहीपाया।तबवेअभागीहैं।मरपचताकरिकेअपणेजीवणे
कोव्यर्थखोवतेहैं।बालकअवस्थाविषेमहादुःखसूरषहोतेहैं।अरुजुवाअवस्था
विषेपरमदुःखकावेअपणेनिमित्तखोवतेहैं।एतेविषकारजुवाअवस्थाविषे
इसकोआनप्राप्तहोतेहैंमानअरुमोहअरुमदइत्यादिकविकारोंकरिकेपुरुषाथ
नाशकरतेहैं।हेमुनीश्वरजुवाअवस्थाबडेविकारोंकोप्राप्तकरतीहै।जैसेनदी
तरंगोंकोकरतीहै।तैसेजुवाअवस्थाजबआवतीहै।तबचितअनेककामनाकोउ
ठावताहै।जैसेपक्षीपषोंकरिनीवपावताहै।अरुजैसेसिंहमजाकेबलकरिके
पशुयोंकेमारणेकोधावताहै।अरुतैसेचितजुवाअवस्थाकरिविषयोंकीओर
धावताहै।हेमुनीश्वरसमुद्रकारणभीकठनहै।कोहतेजाजतलभीअगाहहै।अरु
विस्तारभीवडाहैअनेकयोजनतलगवस्याजाताहै।अरुतिसविषमच्छकछवडे
देहधारीरहतेहैं।ऐसेदुस्तरसमुद्रकातरणाभीसुगममानताहूं।परजुवाअवस्था

कातरपणा करनेमानतहो ॥ अथयह जो जराअवस्था निर्दोषभोगपणी करनेहे ॥ अरुसं
कटोंसंयुक्तजो जराअवस्थाहे जो पाछेवरहेहे ॥ तिसविषे जो बलाइमानन हीं होते
ते पुरुषधन्यहें ॥ अरु वंदनेयोग हे ॥ हेमुनीश्वर जराअवस्थामें लनकरि इराती
है ॥ जैसे अनलकी वावलीहोतीहे ॥ अरु तिषनपवनके चरणतें राषसमाधि वावलीम
लनहोजातीहे ॥ तैसे पवनरूपजरा करि द्वारूपधरके विविनरूपी वावलीम
लनहोजातीहे ॥ अरु त्रुपरूपी तलावडीको जरावरूपीहस्ती मलन करडारताहे
हेमुनीश्वर अवगुणोंकरि दृष्टिजाहे जराअवस्था ॥ तिसकी इछा मूरखकों नहीं
हे जराअवस्थापरइही कृपा करणी जो अपणादरसन नहीं देवणा ॥ तेरा आवणा मेंदु
षकाकारण जानताहों ॥ जैसे पुत्रका मरणा अकष्टहे ॥ सो पितादेषन होसक
ता ॥ अरु सुषके निमित नहींदेषता ॥ तैसे तेरा आवणा में सुषके निमित नहींदे
षतातातें इही मुझपरदयाकरणी जो अपणादर्शन नहीं देवणा ॥ हेमुनीश्वर
जराअवस्थातरणी महाकठनहे ॥ जो काऊ पौवनवान होवे ॥ अरु शास्त्रके गुण
होहूं वैराग विचार संतोष शांततिइंहो करसंपन्नहोवे ॥ सदुर्लभहे ॥ जैसे आका
शविषे वनहोवणा आश्चर्यहे ॥ तैसे जरावस्थाविषे विचार वैराग्य शांत संतोष
शांततिइंहो करसंपन्नहोवे सदुर्लभहे ॥ जैसे आकाशविषे वनहोवणा आश्चर्य
हे तैसे मुझको गोरी उपारकहा ॥ जिसकरिमे जरावस्थाके दुःषोंतें मुक्त होवों
अरु आत्मपदको प्राप्त होवों ॥ ॥ इ श्री सि शा पुवागउरीयनं नाम गः
श्री मो च ॥ हेमुनीश्वर जिसकामविलासके निमित इह इस्त्रीकी वांछाकर
ताहे ॥ सो इस्त्री अस्थिमांसरुधिर विष्टामूत्रकरि पूरणहे ॥ इनकी पुतली वणीह
रीहे ॥ जैसे जंत्रकी पुतली होतीहे ॥ अरु नागे करि पड़ी चेष्टा करतीहे ॥ तैसे इह अ
स्थिमांस आदिककी पुतली वणी हूरी प्राणपवनरूपी नागाकरि पड़ी चेष्टा करती
है ॥ तिसकी वांछा मूरष करतेहैं ॥ जो विचारकरिके देषें ॥ तो अस्थिमांसादिकतें इ
नकछु नहीं निकसता ॥ जो विचारकरिके नहीं देषते ॥ तिसकों रितन कारमणी
यपड़ी भासतीहे ॥ जैसे पर्वतके शिषर दूरतें सुंदर अरु रंगनाम लालसहित भासतेहें
अरु निकट जाकरि देषीये तो सार कछु नहीं निकसता ॥ पथर वटपरे दीषतेहे
तैसे इस्त्री विषे अरु भूषणों करि सुंदर भासतीहे ॥ अरु जो अंगोंकों भिन्नभिन्न करि
विचार देषीये तो सार कछु नहीं ॥ अरु जैसे सर्पणीके अंग बहुत कोमल होतेहें ॥ प
रु इसकों स्पर्श करये ॥ तौ विषकरि नाश करतीहे ॥ तैसे जो इस्त्रीका स्पर्श कर
तेहें ॥ तिनकों नाश करिछोडतीहे ॥ अथ यह जो मानन नष्ट करतीहे ॥ तैसे इस्त्री देषणे
मात्र सुंदरहे ॥ अरु स्पर्श कीयेतें नाश करतीहे ॥ जैसे हस्तीकों जंजीर पकलतेहें ॥ तब
जिसहारे परहोताहे ॥ तहां ही इस्थित होइरहताहे ॥ तैसे अज्ञानीका चित्तरूपी जो
हस्तीहे ॥ सो कामरूपी जंजीरोंकरि बाधा हूआ इस्त्रीरूपी इस्थान विषे इस्थित हो
रहाहे ॥ कहांतें जाता कहूं नहीं ॥ अरु हस्तीको महावत अंकसका प्रहार करताहे
तब बंधनोंकों तोड़करि निकस भी जाताहे ॥ पर चित्त अमेला मूरषहे ॥ जो महावत
रूपी गुरु संसकों उपदेसकों उपदेसरूपी अंकसका प्रहार भी करतेहें ॥ तो भी नि
रवंध नहीं होइसकता ॥ हेमुनीश्वर कामी जो इस्त्रीकी इछा करताहे ॥ तो भी नि
रवंध नहीं इसकता ॥ हेमुनीश्वर कामी जो इस्त्रीकी इछा करताहे ॥ सो अनेकार
नाशके निमित करताहे ॥ जैसे करटीवनका हस्ती कामतकी हस्तनीके कलकरि
वधनिविषे आवताहे ॥ जैसे अज्ञानी इस्त्रीकी इछा करिके बंधन विषे आवताहे ॥ ता
तें परम दुःषका बीज इस्त्रीका संगहे ॥ हेमुनीश्वर सभतें अधिक दाहक अगनि नर

कीहे जो सभजीवोंकों जलावतीहे ॥ अरु इस्त्रीरूप अगनि तिसतें भी अधिकहे ॥ काहेतें जो
उस अगनिके स्पर्शकीयेतें तपहोतीहे ॥ अरु इस्त्रीरूपी अगनि तिसतें देषणेमात्रतें भी जलावती
हे ॥ अरु तिसमूरषकों इहरमणीक जानतेहे ॥ सो अपतरमणीयहे ॥ जब इसमें सुषका
वियोग होताहे ॥ तब शोककों प्राप्त होताताहे ॥ तिसकाल विषे भी शांत दुःख होते
हें ॥ पर ज्ञानतें नहीं अज्ञानीके ॥ हेमुनीश्वर इह अस्थिमांसके पिंजरहें ॥ अगनि
विषे भस्म होवेगा ॥ अथवा पक्षीस्वानका कुआहार होवेगा ॥ तिनकों देषकरि इहअसं
नहोतेहें ॥ सो अंते होवेगा ॥ अरु प्राण आकाशविषे लीन होजावेंगे ॥ तातें इनकी इछाकर
णी मूर्षताहे ॥ अरु जैसे अग्निकी ज्वाला परशाम ताहोतीहे ॥ तैसे इस्त्रीके सीसपशा
मके शोभतेहें ॥ जैसे अग्निके स्पर्शकीयेतें जलताहे ॥ तैसे इस्त्रीके स्पर्शकीयेतें जल
ताहे ॥ तातें जलावणे दोनों विषे तुल्यहे ॥ हेमुनीश्वर इसके नाश करणहारी इस्त्रीरूप
अगनिहे ॥ जे इसकी इछा करतेहें ते महामूर्ष अज्ञानीहें ॥ तैसे पतंग जो दीपककी इछा
करताहे ॥ सो अपणे नाशके निमितहे ॥ तैसे कामीपुरुष अपणे नाशके निमित इस्त्र
रीकी इछा करतेहें ॥ हेमुनीश्वर इस्त्रीरूपी विषकी वल्लीहे ॥ अरु हस्तपाद तिसके पत्रहें
अरु भुजारूपी डंडीहे ॥ अरु अस्तनरूपी तिसके गुछेहें ॥ अरु
नेत्रआदिक इंद्रीयां उसके फूलहें ॥ अरु कामीपुरुष तिसउपभौरे आनवेटतेहें ॥ ता
अपणे नाशके निमित्त आइवेटतेहें ॥ अरु कामरूपी जीवरहे ॥ अरु इस्त्रीजालरूपी तिसने
जालपसारयाहे ॥ तिसविषे कामीपुरुषरूपी कीवरहे ॥ अरु इस्त्रीरूपी तिसने
तेहें ॥ कामरूपी जीवर तिनकों फलाइकरि कष्टकों प्रापत करताहे ॥ अरु इस्त्री पंछी आइफस
णहारी इस्त्रीकों ताकाजो करतेहें ॥ ते महामूरषहें ॥ हेमुनीश्वर इस्त्रीरूपी सर्पणी
हे ॥ जब उसका फुंकार निकसताहे ॥ तब तिसके निकट कमलफूल जलजातेहें ॥ तैसे इ
स्त्रीरूप सर्पणीहे ॥ जब इसकी इछारूपी फुंकार निकसताहे ॥ तब वैरागरूप कम
ल जलजातेहें ॥ अरु ओर सर्पणी होतीहे ॥ सो उह आप डसतीहे ॥ अरु इस्त्रीरूपी
सर्पणीकों चितवना करि अनरअपणी ही विषचढजातीहे ॥ हेमुनीश्वर जैसे वधक
कलकरिके मछीकों फसावताहे कुंडीलायके ॥ तैसे कामीपुरुष मछीवनहे ॥ अरु मद
नरूप मासके साथ आछादी हूई इस्त्री कुंडीहे ॥ अरु उससाथमें इहरूपी तागाहे ॥ तिसक
रि कामीरूप मछीकों अहंरूपी नागोसाथ परमाथ इस्त्रीरूपी वधक षेंचलेताहे ॥ अरु वि
षारूपी छुरीसाथ इसकों मारताहे ॥ हेमुनीश्वर ऐसे दुःषोंके देवणहारी इस्त्रीकी मू
रषकों इछा नहीं ॥ अरु कामरूप जो व्याधहे तिसने तृष्णारूपी इस्त्रीकरिके मनकों अ
शाक्त करिछोड्याहे ॥ अरु इस्त्रीका अंगरूपी नारसरीहे ॥ तिसकरि कामीरूपी वलवा
ध्याहे ॥ अरु इस्त्रीका मुषरूपी जो चंद्रमाहे ॥ तिसकों कामीपुरुषरूपी कमल देषकरि
षिडआवतेहें ॥ हेमुनीश्वर चंद्रमुषी कमल चंद्रमाकों देषकरि प्रसन्न होतेहें ॥ नहीं ता
नयान प्रसन्न होते ॥ जैसे हस्ती सर्पकों पुरुसोंनिकास करि मर्दन करताहे ॥ तैसे कामीकों
इस्त्री मर्दन करतीहे ॥ तब इसगीके निकट जाताहे ॥ तब उह इसकों भस्म करडारतीहे
जैसे तृणकों अरु पतंगकों अगनि भस्म करतीहे ॥ तैसे कामीपुरुषोंकों इस्त्रीका स्पर्श
भस्म करताहे ॥ हेमुनीश्वर इस्त्रीरूप नगरहे ॥ तिसकउचेहरूप जोतमाताहे ॥ तिसक
उचेहरूप जोतेमाताहे ॥ तिसविषे कामक्रोधादिक उलूपिशाचादिकहे ॥ सो आन
इस्थित होतेहें ॥ हेमुनीश्वर जो पुरुष इस्त्रीरूप षड्गके प्रहारतें वचयाहे जवाइसं
संग्रामविषे सो महापुरुषहे ॥ तिसकों हमारा नमस्कारहे ॥ इह इस्त्री कालनाजा परम
दुःषका कारणहे ॥ तातें मुझकों इसकी इछा नहीं ॥ हेमुनीश्वर जो रोग होताहे ॥ अरु ति
सके अनुसार औषध करीताहे ॥ तब रोग निवृत्त होताहे ॥ अरु जो अपथ्यकों सेवीताहे
तब विषरसे होताहे ॥ रोग वधजाताहे ॥ तातें मेरे रोगके अनुसार औषध करो सोरा

गमेरामणो जरा अरु मरन मृतक कों बडा रोग है तिस के नास का औषध मुक्त कों देवो अरु सत्त्वी आत्मिक जो भोग है सो इस रोग कों विरोध करते हैं जैसे अग्नि विषे घृत पायते तो अग्नि वर्धती है तैसे भोगों करि जरा मरन मृत्यु आदिक रोग वधते हैं तातें इस रोग के निवृत्ति का औषध करो नहीं तो सर्व त्याग करि के वन विषे जाइ स्थित होता है हे मुनीश्वर जिस की इस त्री है तिस कों भोगों की इच्छा भी होवेगी अरु जिस की इस त्री ही न हो तिस कों भोगों की इच्छा भी नहीं जिसने इस त्री ही है तातें मुक्त कों इस त्री की इच्छा नहीं जिसने इस त्री का त्याग कीया है तिसने संसार का भी त्याग कीया है अरु जगत कों त्याग करि सुखी होता है संसार का बीज इस त्री ही है तातें मुक्त कों इस त्री का त्याग कीया है तिसने संसार का भी त्याग कीया है अरु जगत कों त्याग करि सुखी होता है संसार का बीज इस त्री ही है तातें मुक्त कों इस त्री की इच्छा नहीं मुक्त कों सो औषध देवो जिस करि के जरा मरन रोग निवृत्त होवे ॥ २१ ॥ श्री सि घा स्त्री राम वचनंना ॥ २ ॥ रा ॥ ३ ॥ च हे मुनीश्वर बालक अवस्था तो महा जड अरु आशक्त अवस्था है अरु जुवा अवस्था आवती है तब कुमार अवस्था कों ग्रास लेती है अरु भोगों करि उन्मत्त करती है अरु विचार कछु नहीं रहता अरु जब वृद्ध अवस्था आवती है तब जुवा कों ग्रास लेती है अरु शरीर जर्जरी भूत हो जाता है अरु बुध भी क्षीण हो जाती है वह उन्मत्त कों प्राप्त होता है हे मुनीश्वर इस प्रकार अस्ताली को जीव क्षीण व्यर्थ ही हो जाता है कछु अर्थ सिध नहीं होता अरु जैसे नदी के तट पर वृक्ष होता है अरु पवन वाह करि के जरजरी भूत होता है तैसे वृध अवस्था विषे शरीर जरजरी भूत होता है अरु जैसे पवन करि के पत्र जरजर भूत होता है अरु पवन करि के भूव जरजरी भाव हो जाता है तैसे जरा अवस्था विषे शरीर जरजरी भूत होता है जैसे बडा कुरोग है सो अन्न पान त्यागते हैं अरु शरीर कृश हो जाता है अरु रस शीत आदिक सभ इस का त्याग करते हैं ॥ जैसे पके फल कों वृक्ष त्याग देता है तैसे इस का त्याग करते हैं अरु देख देख कर हसते हैं जैसे उन्मत्त कों देख करि हास करते हैं अरु कहते हैं इस की बुध अब कछु नहीं वह ऊचे सी अवस्था है जैसे कमल ऊपर बरफ पडता है अरु कमल जरजरी भाव हो जाता है तैसे जरा अवस्था विषे पुरुष जरजरी भाव हो जाता है हे मुनीश्वर शरीर लवा हो जाता है केश श्वेत हो जाते हैं अरु शान कछु नहीं रहती जैसे चिरकाल का वृद्ध हल होता है अरु तिस कों मध विषे घुण खाइ जाता है अरु तिस विषे शान नहीं रहती तैसे जरा अवस्था विषे शान कछु नहीं रहती हे मुनीश्वर और सभ शक्ती क्षीण हो जातीयां हैं पर एक शांक आन रहती है जैसे वडे ऊचे वृक्ष विषे उल्लू आइ स्थित होता है तैसे इस विषे एक कोप रा आन स्थित होती है और सभ शक्ती क्षीण हो जातीयां हैं पर एक शांक आन रहती है हे मुनीश्वर अवस्था दुखों का घर है जहां जरा अवस्था होती है तहां सभ दुख एकठे आन होते हैं तिस करि महा दीन हो जाता है अरु जुवा अवस्था विषे जो काम का बल था सो जरा विषे क्षीण हो जाता है अरु इंद्रीयां भी दीन जैसी यारती नीयां हैं तिन कों विषे चपलता का अभाव हो जाता है जैसे पिता के निरधन हूए ते पुत्र भी दीन हो जाते हैं तैसे शरीर के निर्बल हूए ते इंद्रीयां भी निर्बल हो जातीयां हैं पर एक तृष्णा दीन वते नहीं हो जाती है हे मुनीश्वर जब जरा रूपी रात्र आवती है तब खांसी रूपी गिदडी आन शब्द करती है अरु आधि व्याधि रूपी उल्लू भी आन निवास करते हैं हे मुनीश्वर ऐसी जो नीच अवस्था है तिस की मुक्त कों इच्छा नहीं इह देह जरा के आए ते ऊंचा नहीं हो जाती है जैसे पके फल करि के वृक्ष झुक जाता है तैसे जरा के आए ते देह ऊचा नहीं हो जाती है अरु जो इस त्री पुत्र कलत्र यौवन अवस्था विषे इस कों चाहते थे अरु टहल करते थे तैसे मत्याग देते हैं जैसे ब्रुढे बैल कों बेलवान त्याग देता है तैसे इस कों त्याग देते हैं बांधव अरु हसते हैं इस कों देख करि अरु अनमान करते हैं तिन कों ऊठ की न्याई भासता है हे मुनीश्वर ऐसी जो नीच अवस्था है तिस की इच्छा मुक्त कों नहीं अब जो कछु कहते हैं मुक्त कों तैसे कहो सो करों इह शरीर की अवस्था तो सपदाओं की ऊठ नहीं बालक अवस्था महा मूढ है अरु जुवा अवस्था महा विकारवान है अरु जरा अवस्था भी दुखों का पात्र है बालक अवस्था कों जुवा ग्रास लेती है अरु जुवा कों जरा ग्रास लेती अरु जरा कों मृत ग्रास लेती है अरु जुवा कों जरा ग्रास लेती अरु जरा कों मृत ग्रास लेती है इह अवस्था तो आप ही अलप है इन कों आश्रय करि के मैं क्या सुखी होवंगा तातें तीनों उपाय करि मुक्त कों कहो जिस करि के इन्हों दुखों ते मुक्त होवों हे मुनीश्वर जब जरा अवस्था आवती है तब मरण भी निकट आवता है जैसे संध्या आई तब तत्काल कालरात्रि भी आवती है जैसे संध्या के आए ते भी दिन की आस्था करे तो मूरख बनता है तैसे जरा के आए ते जीवने की आस्था करणी महा मूरखता है हे मुनीश्वर जैसे बिल्ली चितवती है जो चूहा आवे तो मैं ग्रास लेवों तैसे मृत चितवती है जो जरा अवस्था आवे तब मैं इस कों ग्रास लेवों अरु जरा अवस्था मानों काल की साथी है इह अनेक रोग रूपी मसाले करि के शरीर रूपी मांस कों परपक करती है तब परपक करि रहती है तब काल जो इस का स्वामी है आइ करि भोजन करि लेता है हे मुनीश्वर शरीर रूपी गृह है तिस का स्वामी काल है तब काल गृह विषे आवण लागता है तब तिस के आगे तीन पटराणीयां आवतीयां हैं प्रथम आशक्तता अरु दूसरी अरोग विपीडा अरु तीसरी खांसी अरु खांसी ग्लान सों कानि कसपणा अरु स्वेत जो केस होते हैं सो चमर झूलते हैं ऐसीयां जो काल की दासी लीयां हैं तो प्रथम मे आन प्रवेश करतीयां है अरु जरा रूपी कहगल करि शरीर रूपी रथ कों टीक करि छोडतीयां हैं तब काल जो स्वामी है गृह कों सो आन प्रवेश करता है हे मुनीश्वर परम नीच अवस्था है सो जरा है जब इह आवती है तब शरीर जरजरी रूप हो जाता है अरु कंपण लागता है जैसे शीत करि के कंपता है अरु शरीर पर बल पड जाते हैं अरु कंपण लागता है जैसे शीत करि के कंपता है अरु शरीर पर बल पड जाते हैं अरु कूर हो जाता है जो सकाम लोप राग की वृषा होती है तब जरजरी भूत हो जाते हैं तैसे शरीर जरजरी भाव हो जाता है अरु जैसे वन विषे वियाघ्री आन गर्जती है अरु मृगों का नाश करती है तैसे जहां जरा अवस्था होती है तहां खांसी रूपी वियाघ्री आन शब्द करती है अरु बल रूपी मृगों का नाश करती है हे मुनीश्वर जब जरा अवस्था आवती है तब सप्रसन्न नहीं होती है जैसे चंद्रमा के उदे हूए ते कमल विखिड आवते हैं तैसे जरा रूपी चंद्रमा के उदे हूए ते मस्तक रूपी कमल खिडते हैं हे मुनीश्वर इह जरा अवस्था बडी दुष्ट है बडे बडे जो हूए हैं तिन कों भी इस ने दीन कीया है जद्यपि ऐसे सूरमे हूए हैं जो संग्राम विषे युध की ए है तिन्हों ने अरु शत्रों को जीत लिया है अरु उन कों किन हू नहीं जीता अरु पर्वतों का चूरन करता भए है तो भी जरा रूपी पिशाचनी के संग करि महा दीन जैसे हो गए हैं हे मुनीश्वर इह जरा शरीर कों अग्नि की न्याई लागती है जैसे अग्नि तृण कों लागती है अरु भस्म निकसता है तैसे जब शरीर रूपी वृक्ष कों जरा रूपी अग्नि लागती है तब विशाल रूपी धूम्र निकसता है अरु जैसे रवे विषे अनेक रतन होते हैं तैसे जरा रूपी रवे विषे दुख रूपी अनेक रतन रहते हैं अरु जरा रूपी बसंत की रितु है तिस करि के शरीर रूपी हृत दुख रूपी सम करि श्वेत होता है अरु जैसे हस्ती जंजीर करि के बांध्या हूआ दीन हो जाता है तैसे जरा करि के इह पुरुष दीन हो जाता है अरु अंग सभ शिथल हो जाते हैं अरु बल क्षीण हो जाता है

अरु इंद्रीयां निर्बल हो जातीयां है। शरीर जर जरी भाव हो जाता है। पर एक त्रिस्ना नहीं घट
ती। ग्लरी वधती जाती है। जैसे ज्वरा आवती है तब सभ सुख जैसे ष्वीके मलन होइ जा
ते है। तैसे जुरा रूपी राजे के आवते सभ ग्यानी इंद्रीके मलन होइ जाते है। हे मुनीस्वर जैसे
गंगा नदी के तट पर वृक्ष होता है। अरु तिसके बेग करिके जर जरी भूत होइ जाता है। ते
से जरा करि के शरीर जरजरी भूत होइ जाता है। जो आयुरूपी प्रवाह चलता है। तिस क
रि शरीर जरजरी होता है। अरु जैसे मास के बकरे कों देषकरि बिलाव दुष्ट ओका सत
ली मार करि ले जाते है। तैसे जरा अवस्था रूपी मास कों शूलरूपी काल देषता है
तब शीघ्रही ले जाता है शरीर कों। हे मुनीस्वर यह तो काल ग्रास वर्णन है ग्या है। जैसे सु
दर स्त्री कों देषकरि कामी भी गमन करि जाता है। तैसे जरा अवस्था शरीर कों देषके
रिकाल भक्षण करि जाता है॥ इ॰ श्री॰ व॰ सि॰ शा॰ जरा जुगुप्सा वर्णनं ना॰ म सर्गः॥
रा॰ उ॰ वा॰॥ हे मुनीस्वर संसार रूपी गर्त है। अरु तिस विषे अज्ञानी गिरियां है। संसार रू
पी गर्त अस लघ है। पर अग्यानी कों बग्रहो गया है। संकल्प विकल्प की अधकता ते॥
अरु जो ज्ञानवान पुरुष है। ते संसार कों मिथ्या जाणते है। अरु मिथ्या जाणि करि संसा
र रूपी जाल विषे फसते नही। अरु जो मूरष है। ते संसार कों सत जाणि करि संसार कौ
आस्था रूपी जाल विषे फसते है। अरु संसार के भोगों की वांछा करते रहते है।
अरु संसार के भोगों की वांछा करते रहते है। जैसे दर्पण विषे प्रतिबिंब कों देषकरि मूर
ष बालक फल के पावणे की इछा करता है। तैसे अग्यानी संसार कों सत जाणि करि
जगत के पदार्थों की वांछा करता है इह सभ मुझ कों होवे इह सभ मुझ कों होवे हे मुनीस्व
र इह जो सुष है सो चपल है। अरु यह जो आवते भी है अरु जाते भी है। अस्थिर नही
रहते इनकों काल ग्रास लेता है। जैसे पके अन कों चूहा षाइ जाता है। तैसे सभ पदार्थों
कों काल ग्रास लेता है। हे मुनीस्वर जेते कछु पदार्थ है सो काल ग्रास लेवेगा है॥
बडे बडे बली हूए है। जो सुमेर ते भी गंभीर थे। अरु तिनके बल सति तिनकों भी काल ग्रास ली
या है। जैसे सर्प कों गरुड अथवा नाल भक्षण करि जाता है। तैसे बडे बलीयों कों भी का
ल ग्रास लीया है। अरु जगत रूपी एक गुलर का फल है। तिस विषे जो मच्छर है सो
ब्रह्मादिक है। अरु इन्द्र लोक के जो देवते है। अरु तिनका जो वन है। सो ब्रह्म स्वरूप
है। तिस ब्रह्म स्वरूप वन विषे जेते कछु वृक्ष है। सो सभ मास का आहार है। तो स
भ कों काल भक्षण करि करि जावेगा है। हे मुनीस्वर यह बडा बली है। जो कछु दे
षणे विषे आवता है सो सभ ही इस ग्रास लेवेगा है। जैसे मृग कों सिंह ग्रास लेता
है। अरु काल किसी करि जाण्या नहीं जाता। प्रहर प्रहर दिन अरु मास वर्ष क
रिके जाणीये सो जाणीये। और कोई मूरत प्रत्यक्ष काल की नहीं भासती। अरु सा
प्रगट हूए है। अरु अस्थिर रहे तो किसी को नहीं देता। अरु एक देवी अस लेपसारी है
जाल जा तिसकी राते है। अरु फल इस का दिन है। अरु जीव हे भारे तिस पर बी
नबैठते है। अरु हे मुनीस्वर जगत रूपी गूलर फल है। तिस विषे जीव रूपी मछर
रहते है। तिस फल कों काल भक्षण करि जाता है। जैसे अनार कों नाना भोजन
करि जाता है। तैसे जगत रूपी गूलर कों काल भोजन करि जाता है। अरु जगत
रूपी वृक्ष है। अरु जीव रूप पंक्ति सके पात है। अरु काल रूप महिषासुर भस्म
कर्म रूपी सरग को करि तिसकौ छेद करदेता है। हे मुनीस्वर यह काल महा क्रूर
है जो किसी पर दया नहीं करता। सभ कों भोजन करे जाता है। जैसे मृग कमलों
कों भोजन करि जाता है। और तो सभ नैं रहनाकों नहीं [illegible] एक ही है। मल्ल फल है
दह इस ते बच्या है। सो काल के माहे है। ग्यान अरु मेरी दस के सेरु रहे है। अरु चेतनता
मात्र प्रकाश है। इस कारण ते रह बच्या है। जो काल उसकों पहुचता ही सक
ता। उस विषे प्राण हूआ कालभी लीन हो जाता है। अरु और जे ताक ज प्रपंच है।

सो काल के नष विषे है। जो अमृत है। तिनकों भी षाइ लेता है। अस्या तिस अन र हद करि मरजा
दिक सभ भर ता उली थाली यां है। अरु वह इस ब्रनु कों अंतर ध्यान करि लेता है। हे मुनीश्व
र उतपति अरु स्थिति अरु प्रलय सभ काल ते होती है। अनेक वामहा के कल्प कौं ग्र
स कीया है। अरु अनेक वार करेगा। अरु तिनके भोजन करणे ते त्रिपत कदाचित
नही भया। अरु अब कदे त्रिपत होवणा भी नही। जैसे अगनि ईंधन की आहुत करि त्रिप
त नहीं होती। तैसे जगत ब्रह्मांडों कों भोजन करणे ते काल त्रिपत नहीं होता
अरु इस का ऐसा स्वभाव है जो इंद्र कों दरिद्री वाइ करता है। अरु दरिद्री कों इंद्र
इंद्र वाइ करता है। सुमेरा कों राई चाटी चारी करता है। अरु समुद्र कों ह्रद वाइ
करता है। ह्रद कों समुद्र वाइ करता है। ऐसी शक्ति भी [illegible] जो भी काल विषे है अरु जी
अरु जीव रूप जो सूक्ष्म है। तिनकों शुभ अशुभ रूप वासना के कुरसा थके देता रह
ता है। वह ऐसा है काल। जो जीव रूप बकरो कों रात अरु दिन रूपी आरे करि के पकड
छेदता है। हे मुनीस्वर जेता कछु जगत विलास भासता है। सो सभ कौ काल ग्रास
लेवेगा। अरु जीव रूपी रत्नों कौं काल रूपी देवा अपने उदर विषे डारता है। अरु क्री
डा करता है। जो चंद्रमा अरु सूर्य जैसे गेंद कौं कबहु उर्ध उछलता है। अरु कबहु अध: कौं
डारता है। अरु जगत की उतपति अरु स्थिति प्रलय इसही विषे होती है। परंतु किसी
साधन नहीं करता। जैसे महापुरुष किसी विषे नही करते। तैसे इह भी मोक्षा
रुद्र जी पावते है गल विषे। तैसे इह भी भोजन कर करनी वों कौं गले विष माला
रता है। हे मुनीस्वर जो बडे बडे बली है। तिन कौं भी ग्रास लेता है। जैसे समुद्र वाड
भी रे पर वर वा अगनि तिस कौ पान करि लेती है। अरु जैसे पवन भोजन पवन को उ
वता है। तैसे काल सुमेर आदि पर्वतों कौं उडावता है। इस का बल ऐसा है। जो किसी
कौ समाधान नहीं। जो इस के आगे वह हर स्थित होवे। हे मुनीस्वर स्नान करणा अ
धान ज्ञो देवता है। अरु रज गुण प्रधान तो राजा है वरे। अरु तम गुण प्रधान जो दैत
राक्षस है। तिन सभ विषे सम पदों कों ऊन ही जो स्थित होवे। जैसे होका गौ विष अ
पारीता है। अरु जल त्यागी ता है। अरु जल पारीता है। अरु अग्नि पर च्युत करि दे
रवी फिरती है। तब अग्नि के दालेक बहु कर धरता है। अरु कदे हे अध: कौं ज्ञाते है
तैसे जीव रूप अनेक करता है। अरु जगत रूपी कर ह्री कुसरिक बहुकर प्याकों जा
नते है:॥ हे मुनीस्वर इस काल अस्थिर होवणा किसी कों न देता। महाकवाई है। द
या किसी पर नहीं करता। इस कालस्य क कौं भी भय प्रापत हूआ है। तातैं सो उप
अम्हु के कौ कहो। जिस करि के मैं निरभय होवों॥ इति श्री वसिष्ठे [illegible] वैराग्य प्र॰ काल नि
गरुणा नाम सर्गः॥ रा॰ उ॰ वा॰॥ हे मुनीस्वर इह काल वडा बली है। जैसे राजे
का पुत्र शिकार षेलता है। तब बन के पशु पंषीयों बेदको पावते है। तैसे इह सं
सार रूपी बन है। तिस विषे जीव प्राणी पशु पंषी है। जब काल रूपी राजपुत्र शिका
र षेलण आवता है। तब सभ जीव भय कौं पावते है। हे मुनीस्वर इह काल महा भ
रवे है। सो सभ कौं ग्रास लेता है। प्रलय विषे सभ कौं पेलवव करता है। अरु सभ कौ
बैरकाना है। तिसका बरा इह रहे है। अरु काली है। सो सभ कौ ग्रास करिके पाछे नि
रत करती है। जैसे बन के मृगों कौं सिंह अरु सिंहनी भोजन करि के निरत करते है। तै
से जगत रूपी वन विषे जीव रूपी मृग है तिनकौं भोजन करिके निरत करते है।
अरु बहुरि इन दोनो तै जगत का आविर्भाव होता है। नाना प्रकार के पदार्थ रचते
है। पृथ्वी पर्वत बेल ताली यां आदिक सभ पदार्थ तिन दोनो ते उतपति होते है। अरु स
भ जीवों कौं रचते है। पर एक क्षण मात्र उनकों रहणे नहीं देते। सुंदर स्त्री का रव

वे ग्रं०
२५

वकरिवइवाआगानिलगाइदेतेहै । अरुसुंदरवागीचकमलोंकोरवकरिगुंजेकीविर्धा
तिलपरकरतेहै । इत्यादिकनानापदार्थोकोरचकरिवहुरनाशकरतेहै । नहावस
तेरह्यावतेहै तिनविषेउत्पाद्वाइवाकरतेहै । अरुवहुरउत्पात्तिविषेवस्तीचाइवारतेहै
इसप्रकारपदार्थोकोआरमायारीकरतेहै । अथयहजोउपजावतेभीहै । अरुनाश
भीकरतेहै । इस्थिररहणेकिसीकोनहीदेते । जैसेवांतरवाराविषेअवेशकरतेहै । अ
रुदेलोकोइस्थिररहणेनहीदेता । सदाभावतारहताहै । जैसेकालरूपीवानरवि
सीपदार्थकोइस्थिररहणेनहीदेता । हेमुनीश्वरइसप्रकारजोपरार्धकालकरि
केजरजरीभूतकीयेहै तिनविषेमैकिसकाआश्रयकरों । मुककोतोनाशरूपीभा
सतेहै । तातेअवमुझकोकिसीजगतकेपदार्थकीइच्छानही । इति श्री० सि० ख० का
लविलास० ने० ना० सर्गः । २३ ॥ राम उवाच ॥ हेमुनीश्वरइसकालकामहावडाआका
रहैजोतिसकेतेजकेसनमुखटहरणेकोसमर्थकोऊनही । तिणविषेऊचकोती
चवाइकरताहै । तिसकोनिवारणेकोऊनहीकरसकता । समस्तीकेवरिकेपडे
कंपतेहै । इहमहाभैरवहै । सभविश्वकोग्रासकरिलेताहै । अरुइसकीतोच
ऊकाघातोहै । सोवलवानहै । अरुउहीनेतनरूपहै । जिसतेउलंघनकोकोऊनहीहोइ
सकता । महाकालरूपकालाहै । अरुवडाजिसकाभयानकआकारहै । अरुका
लरूपनोहुइहै । तिसतेअभिन्नरूपहै । तवसभकोपानकरिलेतेहै । तवपाछेभै
रवअरुभैरवीनिरतकरतेहै । सोकैसीकालरूपभैरवीशालहै । जोवडाजिस
काआकारहै । अरुसीसजिसकामहाआकाशहै । अरुचरनजिसकेपातालहै
अरुदसोदिसकीयाभुजाहै । अरुसमसमुद्रजिसकेहृदयोविषेककनहै । अरु
सीसजिसकामहाआकाशहै । अरुचरनजिसकेपातालहै । अरुदसोदिसकीया
भुजाहै । अरुसमसमुद्रजिसकेहृदयोविषेककनहै । अरुसमस्तद्वीपसकेहा
थोविषयाद्रहै । अरुहिमाचलपर्वतदोनोकानोविषेतवोरहै । अरुचंद्रमास
र्यजिसकेतवकेहै । अरुतारागणमस्तकऊपरविंदीयांहैलागीयाहरीयां
अरुहथोविषेत्रिसूलमूसलनेआदिलेकरिशस्त्रहै । अरुजीवोकामारणानदी
फासीतिसकेहाथोविषेहै । तिसकरिजीवोकोअंतकरतीहै । ऐसीजोकाली
देवीहै । सोसर्वजीवोकोग्रासकरिके । महाभैरवजोहैरुद्रजी तिनकेआगेनिर
तकरतीहै । अरुअट्टअट्टशब्दकरतीहै । अरुजीवोकोभोजनकरिकेउनकेरुंड
कीमालागलेविषेधारतीहै । ऐसीजोकालीहैसोभैरवकेआगेनिरतकर
तीहै । अरुभैरवजीकैसेहै । जिनकेवलतेसनमुखटहरणेकोसामर्थकिसीकोन
ही । अरुजहाउत्पत्तिहोवे तहाविणविषेवसतीवाइकरे । अरुजहावसतीहो
वेतहाविणविषेउजाडचाइकरे । इसतेतिसकानामदेवभीकहीताहै । अरुकृ
तातभीकहतेहै । कृतातअर्थयहजोवडेवडेपदार्थभीजोउपजेहै । तिनकोअं
तचाइकरतेहै । अंतकर्तायेनाशवाचकरतेहै । इस्थिरकिसीकोरहणेनहीदे
तेसवपदार्थोकानाशकरतेहै । तोकैसेनाशकरतेहै । जोअभावरूपीधनषका
हस्तविषेधारतेहै । तिसकरिरागअरुद्वेषरूपीवाणचलावतेहै । तिन्होवाणों
करिनरनरीरूपकोरिकेनाशकरतेहै । अरुउत्पत्तिभीइहीकरतेहै । अरुउत्प
त्तिनाशविषेइनकोयतनभीकछुनही । खेलजेसीहै । जैसेवालकसेनकाकी
सेनावणावताहै । अरुनाशभीचाइकरताहै । ऐसेयातवकोयतनभीकछुन
ही । तैसेकालकोउपजावणेअरुलीनकरणेकायतनकछुनही । हेमुनीश्वर
कालरूपीजोवरहोतिसनेरूपाचरूपीनाटकपसारयाहै । तिसविषेजीवरूपीपं

जीवपेइकमनेदेरूपेहणोनकौनहीआपनहोने । काहेतेजोइस्थिरकिसीकोरहणे
नहीदेता । हेमुनीश्वरइहतोसभनाशीपदार्थहै । इसविषेमेकाआश्रयकरों । इस्थावर
जंगमजगतसभकालकेमुखविषेहै । मेकिसकोआश्रेकरिसुखीहोवों ।
कोनाशरूपदृष्टआवतेहै । जोनिरभयपदहैसोईमुझकोकहो । हेतातक
तेका० उ० गु० प्रा० ने० ने० सर्गः । रा० उ० च० । इ० श्री० वी० सि० खा०
तेहै । सोसभनाशरूपहै । तातेकिसकीइच्छाकरों । हेमुनीश्वरजेतेकछुपदार्थभास
अरुतेतीकछुचेष्टाअज्ञानीकरतेहै । सोइच्छाकेनिमित्तकरतेहै । अरुइच्छाकरणीभीवृथाहै
नहीहोताजीवणेविषे । काहेतेजोवालकअवस्थाहोतीहै । अर्थकछुसिध
है । विचारकछुनहीहोता । अरुजववजुवाअवस्थाआवतीहै । तवजरमरणरूपहुते
योकोसेवतेहै । अरुमानमोहादिकविकारोंकरिमोहेजातेहै । तवमूरखताकरिविष
कछुनहीहोता । अरुइस्थिरभीनहीरहती । तहाभीविचार
वृषोकीइच्छाकरतेरहतेहै । वहुरदीनकेदीनहोजातेहै । अरुवि
है । सोरोगसमानहै । शालकोनदीमामहोते । हेमुनीश्वरजेतेकछुभोग
कोसतजाणतेहै । सोसभअसतरूपहै । अरुचित्तकोसंपदाजाणतेहै सोअपदारूपहै । अरुजिन
उजाणतेहै । सोसभइसकोवंधनकाकारणहै । अरुमरातस्त्रीकेउत्तहै । जे
नेकछुपदार्थइसकोसंपदाइकभासतेहै । सोसभदुखकेदेवणेहारहै । तिन्होके
रिइसकोशांतकदाचितनहीहोती । तातेमुझकोइनकीइच्छानहीकाळु । जय
विदेषणमात्रसुदरभासतेहै । तोभीसुखकछुनही । इन्होपदार्थोइस्थिरनहीरह
णाजेसेसमुद्रविषेनानाप्रकारकेतरंगभासतेहै । सोसभवडवाअग्निकेवि
नाशहोतेहै । तैसेइहपदार्थभीसभनाशकोप्रापतहोवेगे । मैंअपणीआपवि
षेकेसेआस्थाकरों । हेमुनीश्वरवेसमुद्रजोदृष्टआवतेहै । अरुसुमेरआदिकवडे
पदार्थहै । सोसभनाशहोजावेगा । तोहमसारखोंकीक्यावारताहै । अरुवडेवडे
दैत्यअरुराक्षसहुएहै तेभीनाशहोगएहै तोहमसारखोंकीक्यावार्ताहै । अरु
नोदेवताहुएहै । अरुवडेवडेसिधहुएहै । अरुवडेवडेसिधहुएहै । अरुगंधर्वहुएहै
तेसभनष्टहोगएहै । इनकीनामसत्ताभीनहीरहती । तोहमसारखोंकीक्यावार
ताहै । अरुपृथ्वीजलअरुअग्नितेजोदादशसूर्यकोधारणहारीहै । अरुपवनजोवडे
वीर्यसहितहै । तेसभनाशहोजावेगे । कछुइनकोगमनानरहेगी । तोहमसारखों
कीक्यावारताहै । अरुजवऊवेरवरुणइंद्रजोवडेतेजवानहै । सोनाशहोजावेगे
तोहमसारखोंकीक्यावारताहै । अरुतारामंडलजोदृष्टआवतेहै । तेभीगिरप
डेंगे । जैसेवृक्षकापानहुतेगिरपडताहैवायुकरिकेसोतारेगिरपडेंगे । तोहमसा
रखोंकीक्यावारताहै । हेमुनीश्वरध्रुवजोइस्थिररहताहै । सोभीअस्थिरहो
जावेगा । अरुचंद्रमाजोदृष्टआवताहै । अरुसूर्यजोवडेप्रकाशवानदृष्टआवताहै
इनकेनामभीनरहेंगे । सभनाशहोजावेगे । तोहमसारखोंकीक्यावारताहै । हे
मुनीश्वरओरोंकीक्यावारताहै । इहजोईश्वरजगतकेअधिष्ठाताहै तिनकाभी
अभावहोनाहुआहै । परमेष्टीजोब्रह्माहै तिसकाअभावहोजावेगा । अरुहरिजो
विष्णुहै । तिसविषेजोहरिनेविष्णु सोहरीजावेगी । अरुमहाभैरवरूपजोरुद्रहै सोभी
नेतहोजावेगा । तोहमसारखोंकीक्यावारताकरणीहै । अरुकालजोसभको
भक्षणकरणेहाराहै । सोभीइककहूकदाइजावेगा । अरुकालकीसत्ताजानतेहै
सोभीअनंतताकोप्राप्तहोजावेगा । अरुसभकाआधारजोआकाशहै । सोभीनाश
होजावेगा । तोहमसारखोंकीक्यावारताहै । हेमुनीश्वरजेताकछुजगतहैशवद

वै॰ प्र॰
२०

अरुअर्थकरिजोस्थिरहोताहेसोसभनाशहोजावेगा। किसीअस्थिररहणानहीतोमें
किसकीइछाकरों। अरुकिसकाआश्रयकरों। अरुइहजगतभ्रांतमात्रहे। अज्ञानीकों
इसविषेआस्थाहोतीहे। इसनहीजाणतेजोजगतभ्रमकेलेउतपनहुआहे। परंतुतामें
जाणताहोजोइसकोंसंसारीअरुडषीकीयाहे। सोअहंकारनेकीयाहे। हेमुनीश्व
रइसकाजोपरमशत्रुहे। सोअहंकारहे। अहंकारकरिहीभटकताफिरताहे। जैसेजैव
डेमाछवाथीहडीहिंजेंकवहूअपःकोंजातीयाहे। अरुकवहुंउरधकोंजातीयाहे
अस्थिरकवहूनहीहोतीया। तेसेइहजीवअहंकारकरिकेकवहुंअधःकोंजाताहे
कवहूंअपःकोंजाताहे। अस्थिरनहीहोता। अरुजेसेअश्वावेरघाघपरआरुडजोहेआ
काशमार्गविषेभ्रमताहे। तेसेइहजीवभ्रमताहे। अस्थिरनहीहोता। हेमुनीश्वरइ
हजीवपरमात्मस्वरूपतेंभूलाहुआपडभटताहे। अरुअज्ञानकरिकेइसप्र
विषेआस्थाकरताहे। अरुभोगोंकोंसुषरूपजाणकरितिनकेविषेइछाकर
ताहे। अरुजिन्होंकोंभोगदुषजाणताहे। सोरागरूपहे। अरुजिनकोंसुषरूपजा
णताहे। सोविषरूपहे। अरुविषकरिकेमरणरूपहे। काहेतेंजोइसवानाशकरण
हारेहे। तिनकोंसुषरूपजाणताहेसोडुषकेदेणहारहे। अरुजिनकोंसतरूप
जाणताहे। सोसभअसतरूपहे। सभकालकेमुषविषेप्रेहूएहें। हेमुनीश्वरविचार
कीयेविनाअपणानाशआपहीइहकरताहे। काहेतेंजोइसकाकल्याणकरनावो
पहे। जोसतविचारसहितवोधकीसरणीपरेतवइसकाकल्याणहोवे। अरुजेते
कछुपदार्थहेंसोअस्थिरकोउनहीइनकोंसतजानणाइथाकुंनिमितहे। हेमुनी
श्वरतवत्रिस्नाउपजतीहे। तवमुदताअरुधीरजकोंनाशकरिडारतीहे। जेसेवा
युमेघोंकाविनाशकरडारतीहे। तातेसोसीउपाइमुझकोंकहो। जिसकरिजगत
भ्रमनिवृतहोजावे। अरुमेंअविनाशीपदकोंप्रापहोवों। इहभ्रांतरूपजगतकी
आस्थामैंनहीदेषता। तातेंइछाकिसकीकरों इ थ्री ति श्री काल विला
सवने ता सर्गः रा उ च। हेमुनीश्वरइहजोनानाप्रकारकेपदार्थइंद्रसभा
सतेहे सोसभनासरूपहे। इनकीआस्थामतकरतेहे। इहतोमनकीकल्पना
करिरचेहूएहें। इसविषेमैंकिसकीआस्थाकरों। हेमुनीश्वरअज्ञानीजीवोंकाजी
वणाव्यर्थहे। काहेतेंजोजीवणेविषेइनकाअर्थसिधकछुनहीहोता। जवकों
मारअवस्थाहोतीहे। तवमूढवुधहोतेहें। तिसविषेकछुविचारनहीहोता। अ
रुजवजुवाअवस्थाहोतीहे। तवकामक्रोधादिकविकारउपजतेहें। तिसकरिमद
करिसदाआवरेहूएरहतेहें। जैसेजालविषेपंछीआवर्याहोताहे। अरुआकाशमा
र्गकोंउडकरिदेषनहीसकता। तेसेकामक्रोधादिककरिकेआवरेयाहुआवि
चारनारगकोंदेषनहीसकता। अरुजवबृधअवस्थाआवतीहे। तवशरीरजरजरी
भावकोंप्राप्तहोताहे। अरुमहारोगनहोजाताहे। वहुडशरीरकाभीत्यागजाताहे
जेसेकमलफूलपरपालापडताहे। तवतिसकोंभवरत्यागजाताहे। तेसेशरीररूपीक
मलकोंजवजराकास्पर्शहोताहे। तवशरीररूपीकमलकोंजीवत्यागजाताहे। हे
मुनीश्वरइहशरीरतवलगसुंदरहे। तवलगजराअवस्थानहीप्राप्तभई। जेसेचंद्र
माकाप्रकाशतवलगभासताहे। जवलगराहुग्रासनहीकीया। जवराहुदेतआ
वर्णकरताहे। तवप्रकाशनहीभासता। तेसेजराअवस्थाकेआएतेंजुवाअवस्था
कीसुंदरताजातीरहतीहे। हेमुनीश्वरजराकेआएतेंशरीरकृशजेसाहोजाता
हे। परत्रिस्नावधतीजातीहे। जेसेवर्षाकालविषेनदीवधतीजातीहे। तेसेजराअ
वस्थाविषेत्रिस्नावधतीजातीहे। अरुजिन्हपदार्थोंकीइहत्रिस्नाकरताहे। सोपदा

योंभीदुषरूपहें। त्रिस्नाकरिकेआपहीदुषपावताहे। हेमुनीश्वरत्रिस्नारूपीसमुद्रहे।
जिसविषेवितरूपीवेशवडीहे। अरुरागद्वेषरूपीमछोंकाकरिकेवहेंअधःकोंजातीहे
कवहूंउरधकोंजातीहे। अस्थिरकदाचितनहीहोती। हेमुनीश्वरकामरूपीवृक्षहे
कामकहीयेकामनाकामंकूर। तिसकामरूपीवृक्षतेंत्रिस्नारूपीवेलीउपजीहे
तिसकेसाथविषेरूपीफूलहे। तवजीवरूपीभ्रमरतिसकेउपरवैठतेहें। तवविष
लाथ्यस्तहोजातेहें। हेमुनीश्वरत्रिस्नारूपीएकवडीनदीहे। तिसविषेरागद्वे
षादिकमछोंकरिपरेहूएजीवडुषपावतेहें। अरुतिससंसारकीइछाइहकर
तेहें। सोसभनाशरूपहे। मूरषताकरिइसकीइछाकरतेहें। हेमुनीश्वरउनम
तहस्तीअरुतुरंगोंकेसमूहहेंजिसविषे। ऐसाजोरणरूपीसमुद्रहे। तिसकोंतरजा
तेहें। तिनकोंभीसूरानहीमानता। जोतिसकोंसूरमानतहो। जोइंद्रीयांरूपीसमुद्र
विषमनकीयांवृतीरूपीलहराउठतेहें। अरुतिससमुद्रकोंतरजातेसोसूराहे। हेमुनी
श्वरअज्ञानीतिसक्रियाकाआरंभकरतेहें। जिसकेपरणाममविषेडुषहोताहे। जिस
केपरणाममविषेसुषहे। तिसकाआरंभनहीकरते। अरुजोकुकर्मकरतेहें। सो
कामअर्थकोंधारकरिकेकरतेहें। तातेंशरीरकेत्यागतेंभीशांतकोंनहीप्राप्तहो
ते। इहतोवासनाकरिकेसर्वेदाजलतेरहतेहें। शांतकेसेप्राप्तहोवे। अरुनाशरूप
दार्थोंकीत्रिस्नाकरतेहें। हेमुनीश्वरइहत्रिस्नाकेसीहे। जोनदीहवेही। अरुतिनविषेवग
तीपणप्रवाहहे। अरुतिसकेऊपरवेगअरुसतनापरूपीदोनोंछूतहें। तिसके
प्रवाहइसरीहोनेकानाशहोताहे। हेमुनीश्वरत्रिस्नावडीचंचलहे। अस्थिरकिसीकों
रहणानहीदेती। अरुमोहरूपीएकवृक्षहे। तिसकेचारोंसभीयांरूपीवेलीहे। सो
विषकरिकेमरणाहे। अरुचिंतरूपीभ्रमरआनइस्थितहोताहे। तिसकेस्पर्शक
रणकरिनाशताकोंप्राप्तहोताहे। जैसेमोरकाप्रकपवनकरिहलतारहता
हे। तेसेअज्ञानीकाचितचंचलरूपहे। जेसानुषभीपखवाकेसमानहे। जेसेपक्ष
दिनकोंनिकसजातेहें। आहारकरतेहें। चलतेफिरतेहें। अरुरातकोंगृहविषेआन
इस्थितहोतेहें। तेसेमूरषजीवसभअषभीदिनकोंनिकसजातेहें। व्यवहारादिकर
हतेहें। अरुरातकोंअपणेगृहविषेआनइस्थितहोते। परमार्थकछुसिधनहीहो
ताजीवणकोंअर्थहीगवावतेहें। वालकअवस्थाविषेमूर्षरहतेहें। अरुजवानअवस्था
विषेकामकरिकेउनमतहोजातेहें। तिसकामकरिकेचितरूपीउनमतहस्तीइस
त्रीयांरूपीकेदराविषेनाशकरिइस्थितहोताहे। सोभीछिनभगुररूपहे। वृध
अवस्थाहोतीहे। तिसकरिकेकृशशरीरजाताहे। जेसेरोगकरिकेकमलजरजरी
भावकोंप्राप्तहोतेहें। तेसेजराकरिकेशरीरजरजरीभावकोंप्राप्तहोताहे। अ
रुसभअपाणीणहोजातेहें। अरुत्रिस्नावधतीजातीहे। हेमुनीश्वरइहपुरुषरूप
महामूरषपसुहे। अरुआकाशकेफूलोंकीइछाकरताहे। जेसेपसुमृगवरपर्व
तउपरचढकरिआकाशकेफूलोंकोंग्रहणकरणेकीइछाकरताहे। अरुउलटा
होइकरिगिरजाताहे। अरुवडेकष्टकोंकष्टोंविषेगिरजाताहे। तेसेइहमनुषशरी
ररूपीपर्वतपरआवआरूढहूआहे। अरुआकाशकेफूलरूपीजगतकेपदार्थों
कीइछाकरताहे। सोअधःकोंगिरपडेगा। रागअरुद्वेषरूपीजोकंटकोंवृतहें॥
तिनविषेजायपडेगा। हेमुनीश्वरजेतेकुछपदार्थभासतेहें। सोसभनाशवंतहें। अ
रुआकाशकेफूलोंकीन्याईअसतहें। इन्होंविषेआस्थाकरणीमिथ्याहे। इहतोश
ब्दमात्रहें। अर्थसिधकछुनहीहोता। अरुजोज्ञानवानपुरुषहें। तिनकोंविषयांके
भोगोंकीइछानहीरहती। काहेतेंजोआत्मप्रकाशकरिइनकोंमिथ्याजानतेहें
हेमुनीश्वरऐसाज्ञानवानपुरुषपुन्यवंतहे। इसकोंनाशरूपनविषेभीकदाचित
नहीभासता। उहविरकतआत्माउतेभहे। अरुसदाअसतइस्थितकरिकेसाभताहे

वै प्र.
२९

ऐसे पुरुष कों संसार विषै कछु नहीं रहती काहे ते जो इह पदार्थ सभ असार रूप हैं
हे मुनीश्वर पर्वतन कों निसंगरते देखे ते नहा [illegible] के वट यों करि पूर्ण दृष्ट आवता है
अरु पृथ्वी स्तनका करिके हैं नहे अरु शरीर सभ अस्थि मांस करि पूर्ण है इत्यादि
क सर्व पदार्थ पांचो तत्वों तत्वों करि पूर्ण है अरु नाशरूप है अरु नाशरूप है बहुर
इह पुरुष किसकी इच्छा करे हे मुनीश्वर इह जगत सभ नाशरूप है देखते देखते नष्ट
हो जाता है तिस विषै किसका आश्रय करो अरु सुखी होवों जब सम इह सभ [illegible]
ऐसे गुणों की प्राप्ति नहीं होती है जब ब्रह्मा का एक दिन होता है तिस दिन के अंत एक
सभ जगत की प्रलय होती है बहुर ब्रह्मा भी काल करि नाश होइ जाता है अरु ब्रह्मा भी
एते नाशरूप है जिनकी संख्या नहीं करी जाती असंख्य ही इस नाश हो गए हैं तो
हम सारखे कीआ वारता कहणी है हम के से आयु को भोगे अरु ऐसे भी एते ना
शरूप हैं जिनकी संख्या नहीं करी जाती असंख्य नरों व इस नाश हो गए हैं तो हम सा
रखे की क्या वारता कहणी है हम के से आयु कों भोगें अरु किसकी सेवना क
रे इह तो सभ नाशरूप हैं इस्थिर किसी रहणा नहीं इसकी आस्था पूरण करते हैं
तिनके साथ हम को कछु प्रयोजन नहीं जैसे मृगतृष्णा रूप जल को देखकरि जल
पान के निमित्त दौरता है परन्तु जल कों नहीं पावता तैसे मूरख जीव पदार्थों कों सत
जाणकरि इच्छा करते हैं परन्तु शान्तवान नहीं होते काहे ते जो सभ असार रूप हैं
अरु इह जो हम ब्रह्मा कह धरे तत्त्व भासते हैं सो तत्त्व भासते हैं तब लग शरीर न
ष्ट नहीं भया जब शरीर नष्ट हो जाता है तब नहीं जाणीयता जो कहां गए अरु कहां सा
मान्य जैसे तेल अरु बाती करि दीपक प्रकाशता है तब वह प्रकाशवान
दृष्ट आवता है तब वह प्रकाशवान दृष्ट आवता है अरु जब दीपक निर्वाण हो जा
ता है तब नहीं जाणीता जो कहां गया तैसे बालक रूपी जो वायु वह है अरु तिन वि
षै इह रूपी जो वायु वह है अरु तिन विषै इह रूपी जो है तेल तिस करि शरीर जो भा
सता है सो एक दीपक है जब शरीर रूपी दीपक निर्वाण होता है तब जाणीता नहीं जा
ता जो कहां गया हे मुनीश्वर इन वायुओं का जो मिलाप है सो ऐसा है जैसे तीर
थयात्रा कों जगत चला जाता है तिन का संग इस पिता पुत्र की काया के तीर्थ पे
र जाता है बहुरि भिन्न भिन्न उठ जाते हैं तैसे ही वायु का मिलाप है जैसे नदी का जल ज
ल ही विषै इक हो जाता है हे मुनीश्वर जो अरु हम सभ कों जे वृक्ष ऐसा पाव
पहुए हैं सो एक दीन जे तिन की न्याईं भटकते फिरते हैं तिन कों शान्तकदा चित नहीं प्रा
प्त होती इन्द्रियां भावती वेद न दृष्ट आवते हैं परन्तु जो ते ए अरु सिलाभी प्रा
प्त हैं तिन कों विचार इह होती यों प्राण मन ता सब वाधी हुई है अरु तप आदि मान होती है उ
हम सभ नाश रूप हैं उन को आत्मपद की प्राप्ति होवणी कठिन है जैसे एक वनक विषे हस्ती
पान करते हैं अरु उड़ते जाते हैं तिन कों इह तत्त्व सार अस्थल आगणा कठन है हे मुनीश्वर जब
आत्मपद ते विमुख होता है तब जगत भ्रम कों प्राप्त होता है अरु जब आत्मा की
ओर आवता है तब संसार के कों विसरण हो जाता है अरु ऐसा पदार्थ जगत विषै
को ऊ नहीं जो इस्थिर रहै जो कछु पदार्थ है सो सभ नाश कों प्राप्त होवणे है
ताते मैं किसकी आस्था बांधों अरु किसका आश्रय करों सभ नाशी पदार्थ भासते
हैं ऐसी पदार्थ पुरुष कों कहो जिस का नाश न होवे ॥ इति श्री सि ग सव
प रा भा ष पाटनं समाप्तं ॥ २९ ॥ ३ व हे मुनीश्वर जेता कछु स्थावर जं
गम जगत देखीता है सो सभ नाश रूप है किसी इस्थिर नहीं रहणा अरु जो पाती
इस्थान थे ते देखते देखते जल नाश पूर्ण हो गए हैं अरु बड़े जल के समुद्र दृष्ट आ
वते थे सो पातालरूपी हो गए हैं अरु जो बड़े सुन्दर वगीचे थे सो आकाश की न्या
ई तुच्छ हो गए हैं अरु जो स्थान वस्ती थे सो बड़े मन्दिर वन हो करिके उजाड़ दृष्ट आवते

हैं जहां वस्ती थी तहां उजाड़ हो गए हैं अरु जहां उजाड़ थे तहां वस्ती हो ग
ई है अरु जहां बड़े पर्वत थे तहां सम स्थान पृथ्वी हो गई है अरु जहां बड़े गर्त थे
तहां पर्वत हो गए हैं हे मुनीश्वर इस प्रकार देखते देखते पदार्थ विपर्जय हो जाते हैं इस्थि
र भ्रम तन नहीं रहते हैं मैं किसका आश्रय करों अरु तिन के पावने का यत्न करों
इह जो पदार्थ सभ नाशरूप हैं जो बड़े बड़े शूरवीर जिन के विवेक संपन्न हुए हैं अरु बड़े करत
ब तिन की यह है अरु बड़े धैर्यवान हुए हैं अरु बड़े तेजवान हुए हैं इत्यादिक विभूत
करिके संपन्न बड़े बड़े हुए हैं सो भी सभ नाम मात्र हो गए हैं तो हम सारखों की क्या वार
ता है हे मुनीश्वर इह पदार्थ बड़े चंचल रूप हैं एक रस कदाचित नहीं रहते एक क्ष
ण विषै कछु हो जाते हैं इस रीत क्षण विषै कछु हो रहा जाते हैं जो एक क्षण विषै संप
दा वान हो जाते हैं अरु इस रीत क्षण विषै दरिद्री हो जाते हैं एक क्षण विषै दरिद्री हो
ते हैं इस रीत क्षण विषै संपदावान हो जाते हैं एक क्षण विषै जीवते दृष्ट आते हैं अरु
एक क्षण विषै मर जाते हैं अरु एक क्षण विषै मूए भी जीवते दीखते हैं इस जगत की अव
स्था करि इह होती नहीं ज्ञानवान किसी की आस्था नहीं करते एक क्षण विषै समुद्र के
प्रवाह मारूथल हो जाते हैं अरु मारूथल के इस्थान विषै जल के प्रवाह हो जाते हैं
अरु एक क्षण विषै रोगी के अरोगी होते दृष्ट आवते हैं अरु अरोगी रोगी होते जाते हैं
हे मुनीश्वर इस जगत की आभा इस्थिर नहीं रहती जैसे बालक का चित्त कछु इस्थि
र नहीं होता तैसे जगत के पदार्थ भाव विषै कछु नहीं इस्थिर होते केतक ऐसा
वृक्ष एक ही ताग विषै नहीं नहीं रहता जैसे जगत के पदार्थ लक्ष्मी एक रस न
हीं रहती कब हु उत्पत्ति इसकी होती जाता है अरु स्त्री पुरुष हो जाती है मनुष्य पशु होता है
अरु पशु मनुष्य हो जाता है जंगम स्थावर होता है अरु स्थावर जंगम हो जाता है मन
ष्य देवता हो जाता है देवता मनुष्य हो जाते हैं इस प्रकार चकरी जंत्र की न्याईं जगत ल
क्ष्मी इस्थिर कबहू नहीं होती कबहू अधः को जाते हैं कबहू ऊर्ध्व को जाते हैं इस्थि
र कबहू नहीं होते सदा भटकते रहते हैं ऐसी जगत लक्ष्मी है हे मुनीश्वर जेते पदा
र्थ दृष्ट आवते हैं सो सभ नाश हो जावेंगे किसी इस्थिर रहणा नहीं जैसे जीती न
दीयां हैं सो भव ज्यों समुद्र विषै जाइ लीन होवेंगी यां सो सभ अभाव रूप वस्त
आगति को प्राप्त होवेंगे अरु बड़े बड़े लोभी हमारे देखते देखते दीन हो गए हैं अरु
जो बड़े सुन्दर स्थान थे सो स्थान हो गए हैं अरु बड़े सुन्दर ताल अरु वगीचे मनुष्यों क
रिके संपन्न थे स्थान सो शून्य हो गए हैं अरु जो सुन्दर मालू अल्की मन काषी सो सु
न्दरता को प्राप्त न भए हैं अरु चर पद होते दृष्ट आए हैं अरु पद चर होते दृष्ट आए हैं इसी
भांति विपर्जय जगत को प्राप्त होते दृष्ट आवते हैं कबहू संपदा कबहू आपदा दृष्ट
आवती है अरु महा वृत्त ताट दृष्ट आवती है हे मुनीश्वर ऐसे जो अस्थिर रूप पदार्थ
हैं तिन कों विचारवान कैसे आश्रय करे अरु किसकी इच्छा करे सभ नाश रूप हैं अरु
इह सूर्य जो बड़े प्रकाशवान दृष्ट आवता है सो जड़ रूप हो जावेगा अरु अग्नि त
थि पूर्ण जो चन्द्रमा दृष्ट आवता है सो शून्य हो जावेगा अरु सुमेरु आदिक पर्वत जो
दृष्ट आवते हैं सो सभ नाश हो जावेंगे अरु सप्त लोक भी नाश हो जावेंगे अरु मनु
ष्य देवता यक्ष गन्धर्व आदिक सभ नाश हो जावेंगे अरु इन्द्र अरु जो फिरता है सो भी
नष्ट हो जावेगा हे मुनीश्वर और किसी की क्या कहणी है ब्रह्मा विष्णु रुद्र जो जगत के
ईश्वर हैं सो भी नष्ट हो जावेंगे तो हम सारखों की क्या वारता कहणी है जो नाना रूप
जगत दृष्ट आवता है इस जीव ब्रह्मा प्रभव अरु शिष्य ने वीजने न करि वे जो नाना प्रकार
जीव लोभते हैं सो सभ नाश रूप हैं बड़े उनमे किस पदार्थ का आश्रय करों अरु किस
की इच्छा करों हे मुनीश्वर जो इह पदार्थ दीखते हैं तिन कों सभ पदार्थ विरस हो गए हैं

वै० प्र०
२२

किसीपदार्थकीइच्छानहीकरते काहेतेजोसभपदार्थनाशरूपभासतेहैं अरुआवे
नाअपणीकोविजलीकेचमतकारवतजानतेहैं जैसेविजलीकाचमतकारहोता
है अरुमिटजाताहै तैसेशरीरकीआरबलाहै जिनकोऐसेअपणीआरबलाकीप्रतीत
तहोतीहै तेकिसकीइच्छाकरें जैसेकिसीकोबलकेनिमितपालीताहै तोइसको
राषसकाबलदेवणाहै तबइहखावणपीवणाभोगणकीइच्छानहीकरता तैसेजिस
कोअपणामरणाइस्वनेहोताहै तिसकोकिसीपदार्थकीइच्छानहीरहती हेमुनीश्व
रऐसीकारणातेहमकोभीकिसीपदार्थकीइच्छानहीरही अहसभपदार्थआपही
नाशरूपहैंतोहमकैसेउनकाआश्रयकरें अरुसुषीहोवें जैसेकोऊपुरुषसमुद्रवि
षेकागकोदेषकरिआश्रयकरे अरुकहेजोमैंसुषीहोवेगासोमूरषहै उसकोआ
श्रयकरेगा तबडूबहीजावेगा तैसेजिसपुरुषनेइनपदार्थोंकाआश्रयलीयाहै
अरुअपणेसुषकेनिमितजाणेहै सोनाशनाकोप्रापतहोवेगा हेमुनीश्वरजोपुरु
षविचारतेरहितहैं तिनकोइहजगतरमणीकभासताहै अरुरमणीकजानकेवि
नानाप्रकारकेकर्मकरतेहैं अरुनानासंकलपकोधारकरिजगतविषेपड़ेभटक
तेहैं कबहूउरधकोजातेहैं कबहूअधःकोजातेहैं जैसेपवनकरिकेपत्रकबहूउरध
कोजातीहै कबहूअधःकोजातेहैं इस्थिरनहीहोती तैसेइहजीवभटकतेफिरतेहैं
इस्थिरकदाचितनहीहोते अरुजिनपदार्थोंकीइच्छाकरतेहैं सोसभपदार्थकाल
केग्रासवलेहुएहैं जैसेवनकोअगनिलागतीहै अरुतिसवनकुईधनादिकहै ति
नकोग्रासकरिलेतीहै ऐसेहीजेतेकछुपदार्थहैं सोसभईधनरूपहैं अरुजगत
रूपीवनहै तिसवनकोकालरूपीअगनिलागीहै तिसनेसभकोहीग्रासलेवणा
है वहुइजोइनपदार्थोंकीइच्छाकरतेहैं तेमहामूरषहैं अरुजिनकोविचारकीप्रा
पतहै तिनकोइहजगतअसत्यरूपभासताहै अरुजिनकोविचारकीप्रापतनही
तिनकोजगतरमणीकरूपभासताहै अरुजगतदेषतेदेषतेनाशहोजाताहै ग
धवपुरकीन्याई इनकीमैंकैसेइच्छाकरूं इनकाभोगणाडुषकेनिमितहै जैसे
मिष्टानविषेविषघालादीयाहोवे तोउसकेभोजनकरणेहारामरनकोप्रापत
तेहोताहै तैसेविषयोंकेभोगणेहारानाशकोप्रापतहोताहै ॥ इतिश्रीवासिष्ठा
… सर्गः ॥ रामउवाच हेमुनीश्वरइससंसारकोभोगरूपीअ
गनिलागाहै तिसकरिकेपरजलतेहैं अरुभोगोंकरिदीनहोरहेहैं जैसेकमलोंको
हस्तीमर्दनकरताहै तबदीनहोजातेहैं तैसेभोगोंकरिपुरुषदीनहोजातेहैं अरुजै
सेवायुकरिमेघनाशहोजातेहैं तैसेकामक्रोधादिकदुराचारोंकरिसभगुणा
नाशहोजातेहैं जैसेकेउिश्रारीकोकोइअरुकटकफलबधतेजातेहैं तैसेकामक्रो
धादिकविकारबधतेजातेहैं हेमुनीश्वरइहजगतसभनाशरूपहै कोऊपदार्थइ
स्थिरनहीरहणा तातेमैंकिसकीइच्छाकरों अरुकिसकाआश्रयकरों जोपुरुषवासना
रूपीजालअरुहंडीयारूपीमेंही ऐसेजालविषेफस्याहै सोवडेदुषकोप्रापतहोवेगा
हेमुनीश्वरवासनारूपीतंतविषेजीवरूपीमोतीपरोएहूएहैं अरुमनरूपीनटआ
पणाइहकरिकेतुम्यआत्माकेगलेविषेडारताहै तबवासनारूपीतागाअबभीनिवृत्त
होजावे हेमुनीश्वरइसकोवधनेकाकारणजोहै सोभोगोंकीइच्छाहै भोगोंकीइ
च्छाकरिपुरुषभटकताहै अरुशांतकोप्रापतनहीहोता तातेमुझकोकिसीपदा
र्थभोगोंकीइच्छानहीनराजकीइच्छाहै नाभोगोंकीइच्छाहै नगरहूकीइच्छाहै नजी
वनकीइच्छाहै नमरणकरिसुषजाणताहूं नजीवणकरिकेसुषमानताहूं
किसीपदार्थकरिसुषनही सुषजोहोवणाहै सोआत्मज्ञानकरिकेहोवणाहै अ
न्यथाकिसीप्रकारसुषनहीहोवणा जैसेसूर्यकेउदयविनाअंधकारअभावन

हीहोता तातेसोईउपायमुझकोकहो जिसकरिकेइनकानाशहोवे अरुमैंसुषी
होवों हेमुनीश्वरभोगोंकेभोगणेहाराजोहै सोअहंकारहै सोअहंकारकामैंत्याग
कीयाहै बहुड़भोगोंकीइच्छाकैसेहोवे हेमुनीश्वरइहविषयरूपीसर्पहैं तिस
कोलपटीकरतेहैं तिनकोनाशकरतेहैं अरुसर्पकाडसयाभीएकवारमरता
ताहै परइहविषयरूपीसर्पहैं जोअनेकजन्मोंपर्यंतमारतेचलेजातेहैं तातेप
रमडुषकाकारणविषयभोगहैं हेमुनीश्वरआरेकेसाथअंगोंकाकाटणाभीस
हारताहों अरुवज्रकरिकेशरीरकाचूरणकरणाभीसहोंगा परविषयोंकाभो
गणामुझकोकहीये तोनहीसहाराजाता इहमुझकोवडेदुषदाईहैं
तातेसोईउपायमुझकोकहो जिसकरिमेरेअंतरते आत्मज्ञानरूपीसुषकाअनु
भवहोवे अरुजोतुमकहोगेतोमैंअपणीइच्छातेधीरजरूपीसिलाऊपरबैठ
रहोंगा परभोगोंकीइच्छामैंनकरोंगा हेमुनीश्वरइहजेतेकछुपदार्थहैं सोस
भनाशरूपहैं जैसेविजलीकाचमतकारहोताहै अरुलुपतहोजाताहै अरुजैसेफूटी
गगरीविषेजलनहीठहरता तैसेविषयभोगनाशरूपहैं अरुजैसेऊंटकंटकोंकरिके
दुषपावताहै तैसेभोगोंकीतृष्णाकरिकेजीवदुषपावतेहैं तातेमुझको
किसीसंसारकेपदार्थोंकीइच्छानही जैसेकिसीपुरुषमरीचकाकाजलको
असत्यजाणा तोइहजलपानकीइच्छाकरिदौडतानही तातेमैंकिसीपदार्थकी
इच्छानहीकरता ॥ इतिश्रीयोगवासिष्ठवैराग्यप्रकरणे …
… सर्गः ॥ ९ ॥ श्रीरामउवाच हेमुनीश्वरसंसाररूपीकूपके
मननरूपीकीचविषेमूरषमगनहोइयाहै तिसकरिकेबडाडुषपावताहै शांतवानकब
हूंनहीहोता तबजराअवस्थाआवतीहै तबअंगसभजर्जरीभूतहोकरिकेकंपायमानहोनेला
गतेहैं जैसेपुरातनवृक्षकेपत्रपवनकरिहलतेहैं तैसेअंगहलतेहैं जैसेपुरातनवृ
केपत्रपवनकरिहलतेहैं तैसेअंगहलतेहैं हेमुनीश्वरजिनपुरुषोंनेदेहइंद्रीआदिकों
वोंकाआश्रयलीयाहै अपणेसुषकेनिमित तेपुरुषसंसाररूपीअंधकूपविषेगिरेहैं
अरुनिकसनहीसकते अज्ञानीकाचितभोगोंकात्यागकदाचितनहीकरता जैसे
देवतेविद्वानोंकात्यागकदाचितनहीकरते हेमुनीश्वरजगतकेपदार्थोंसाथमे
रीबुधमत्तहोगईहै जैसेवर्षाकालकीनदीमत्तहोतीहै अरुजैसेमध्यमासवि
षेमंजरीसंयुक्तजातीहै तैसेजगतकीशोभादेषकरिबलहोजातीहै इहजगतकेपदा
र्थमूरषोंकोरमणीकभासतेहैं अरुजैसेइंद्रधनुषत्रिगुणोंकरिशोभादीहोतीहै अरुबालका
बालककेतिसविषेरमणीकजाणकरिगुणनेकोउठपडताहै तैसेमूरषभोगोंकोरम
णीकजाणकरिभोगतेहैं अरुदुषपावतेहैं हेमुनीश्वरजगतकेपदार्थोंकरिमेरी
बुधवेचलहोगईहै तातेसोईउपायकहो जिसकरिमेरीबुधपर्वतकीन्याईअचल
होवे अरुसोपदकौनहै जोपरमानंदहै अरुजनममरणतेरहितहै अरुनिर्विकारहै जिसके
पायतेशंकाकाकोऊनहीरहती अरुबहुड़उपावणाकछुनहीरहता अरुजिसकेजानते
बहुड़जानणाकछुनहीरहता अरुसंपूर्णजगतनानाप्रकारब्रह्माकीरचनाभस्मरूप
होजातीहै तिसपदपावणेकाउपायमुझकोकहो हेमुनीश्वरअैसेपदतेजोमेरीबु
धकंपतहै तातेमैंशांतवाननहीहोता इहसंसारअरुसंसारकेकर्ममोहरूपहैं इनवि
षेपड़ाहूं आत्मज्ञानकोकदाचितनहीप्रापतहोता अरुजनकादिकजोविदेहविषेल
गेहैं अरुकमलकीन्याईअलेपरहेहैं जैसेजलविषेकमलअलेपरहताहै तैसेशांत
वानकैसेरहेहैं जैसेकोऊकीचसाथस्पर्शनहो अरुकहेमुझकोकीचकास्पर्शक
छुनहीहूआ तैसेराजविक्षेपरूपीकीचविषेशांतवानअलेपकैसेरहेहैं उनकीस

मरूप्या है सो कृपा करके कहो अरु इस संसार के जो लंपट जन हैं सो विषयों को भोगते हुए आवते
हैं अरु इस जगत की चेष्टा करते हैं तिस विषे निरलेप कैसे रहते हैं सो भी पुरुष कहो जिस क
रि इस जल विषे कमलवत रहते हो इह वपु तो मोह करि मोहि हो जाती है जैसे ताल विषे
हस्ती प्रवेश करता है तब ताल निर्मल नहीं रहता तैसे मोह करि बुध मलीन हो जाती है
ताते सोई उपाय कहो जिस करि बुध निर्मल होवे हे मुनीश्वर इह जो संतोष करि के व
हू इस्थिर नहीं होती जैसे आरे का काटया माद्रिक का मन इह इस्थिर नहीं होता ते
से बुध इस्थिर नहीं होती हे मुनीश्वर संसार रूपी विष चक्र मन को लागा है उहाँ मे
त्रन कको कहो जिस करि इसका नाश होवे इसने मनको बड़ा दुख दीया है अरु इह क
वन प्रकाश है जिसके उदे हुए ते मोह रूपी अंधकार नाश होवे हे मुनीश्वर जैसे बादल
करि चंद्रमा आछादया जाता है तैसे बुध की मलीनता करि मैं आछादया हो ताते उहाँ उपा
उ कहो जिस करि आवरन नाश होवे अरु जो अनंत मन्त्र पसरणीता है जिसते उनमे और
सुख को अनहीं सो कैसे प्राप्त होता है अरु जिसके पावते ह्रणि होजाता है वड उपाव
णा कछु नहीं रहता अरु संसार दुख नष्ट होजाते हैं अरु नह करण प्रीतिल होजाता है
ऐसा जो पद है तिसकी प्रापत का उपाय तुमको कहो हे मुनीश्वर तिस चंद्रमा को मुक
को इच्छा है जिसके प्रकाश करि बुध रूपी कमलनी खिड आवती है अरु वन विषे रहणे की
इच्छा भी नहीं तिस पद की इच्छा है तुमको जिसके पावने ते अनंत शांति होवे ॥ इति श्री व
सिष्ठ ... वैराग्य प्र ... नाम सर्गः ॥ राम उवाच ॥ हे मुनीश्वर आवेला की जो भा
सा करते हैं सो अनर्थ है जैसे पत्र उपर जल की बूंद होती है तैसे आयु वल क्षिन भंग
है जैसे वर्षा काल विषे बादल याँ विषे दुवीलते हैं अरु कंद उनका चलता है आवता
है जो पकता है तैसे आयु बल छिण छिण विषे चलता है अरु जैसे सदा शिव के मस्तक
पर चंद्रमा की रेखा को मलते है तैसे इह शरीर है हे मुनीश्वर इस विषे जिसको आस्था है सो मूरख
है इह तो काल का ग्रास है जैसे चूहे को बिल्ली भोजन करि लेती है तैसे इसको काल ग्रास ले
ता है अरु जैसे बिल्ली चूहे को सँभालन नहीं करणे देती तैसे काल इसको अचानक ग्रास ले
ता है परु भासना किसी को नहीं हे मुनीश्वर जब अज्ञान रूपी मेघ आवरण करता है त
ब लोभ रूपी मोर प्रसन्न होता है अरु नृत्य करता है अरु जब अज्ञान रूपी मेघ वर्षा करता
है तब दुख रूपी कदंब री वृध होने लागती है अरु वासना रूपी जाल विषे फसे हुए जीव रू
पी पक्षी पड़े दुख पावते हैं शांति को नहीं प्राप्त होते हे मुनीश्वर इह जगत रूपी बड़ा रोग ला
गा है तिसके निवारणे को कौन ब्यवसा है अरु पावणे जोग क्या है जिस करि भ्रम रोग नि
वृत होवे सो कहो अरु इह जगत लक्षमी को रमणीक भासता है ऐसा पदार्थ इह पृथ्वी वि
षे कोऊ नहीं अरु आकाश विषे भी नहीं अरु देवलोक विषे भी नहीं जो ज्ञानवानो को रमणी
क भासे ज्ञानवान को सभ ब्रह्म स्वरूप भासता है अरु अज्ञानी जगत विषे आस्था करते हैं
हे मुनीश्वर चंद्रमा विषे जो कलंक है तिस करि शोभा सुंदर नहीं लागती अरु जब कलंक
हर होवे तब सुंदर लागती है तैसे मेरे चित्त रूपी चंद्रमा विषे काम रूपी कलंक है तिसकी
उजलता नहीं होती ताते सोई उपाय कहो जिस करि कलंक दूर होवे हे मुनीश्वर इह चित्त
बहुत चंचल है इस्थिर कदाचित नहीं होता जैसे अग्नि विषे पारा गरया इस्थिर नहीं होता
तैसे चित्त भी स्थिर नहीं होता विषयों की ओर धावता है ताते सोई उपाय कहो जिस करि के
चित्त इस्थिर होवे अरु संसार रूपी वन विषे भोग रूपी सर्प हैं सो जीव को डसते हैं तिनसे
बचणे का उपाय कहो हे मुनीश्वर जैसी कछु कृपा है सो राग द्वेष नाश मिली हुई है सोई
कहो जिस करि राग द्वेष स्पर्श न करे जैसे अग्नि विषे होवे अरु अग्नि स्पर्श न करे अरु जैसे
समुद्र विषे जो प्रवेश करे अरु जल स्पर्श न करे तैसे संसार समुद्र विषे रहु जीवपत्र है ३

सकोन उपाय है जिस करि इस मन को राग द्वेष स्पर्श न करे हे मुनीश्वर मन विषे जो मनन रूपी स
ता है सो मुक्त करि दूर होती है अन्यथा दूर नहीं होती सो मुक्त को मोह निवृत के मनन रूपी म
गे तिनकी निवृत नहुई है अरु जिस प्रकार हुई है सो कहो अरु जिस करि मन राग भेदन मका होआ
न लहुआ है अरु जिस प्रकार उनका हूआ है सो कहो अरु जिस करि मन राग अंतःकरणा ही
अरु मोह सावे विदखान इह मुक्त नहीं पावेगी तो सो कहो हे मुनीश्वर जे बतन मजाण मे हो सो कहो
के निरहंकार होरहोंगा तब लग इह मुक्त मुझको प्रापत न होवेगी तो अरु मैं तो नहीं जाणता तो मोह सर्व त्याग करि
देगा अरु जलपान भी न करोंगा अरु वस्त्र भी न पहिरोंगा तब लग मैं भोजन न क
रोंगा अरु स्नान दान आदिक क्रिया भी न करोंगा अरु व्यवहार भी न करोंगा अ
रु संपदा का कार्य न करोंगा अरु आपदा का कार्य भी न करोंगा निरहंकार होवोंगा जो न मैं देह हों न मेरी देह है सर्व त्याग करि के बैठ
रहोंगा जैसे कागज उपर पुतली लिखी होती है तैसे होरहोंगा सास भी आवते जाते
क्षीण हो जावेंगे जैसे तेल विना दीपक निर्वाण हो जाता है तैसे अनर्थ रूपी देह नि
वृत होवेगी तब महाशांत पद को प्राप्त होवोगा वाल्मीकि उवाच हे साध ऐसे क
हि करि राम जी तूष्णी होरहे जैसे वड़े मेघ को देखकर मोर शांत होकर तूष्णी होजाता
है तैसे राम जी तूष्णी होरहे ॥ इति श्री वसिष्ठ महारामायणे वैराग्य प्रकरणे रामप्रश्नसमाप्ति
नाम सर्गः ॥ वाल्मीकि उवाच ॥ हे पुत्र इस प्रकार जब रघुवंसीयों की कुल रूपी आका
श के चंद्रमा राम जी ने कहा तब सभा विस्मय हो गए अरु सभा के रोम खड़े हो आए मा
नो रोम भी उठ खड़े होकरि राम जी के वचन श्रवन करने हैं अरु जनक कुसुम भा विषे बैठे तिन
काल मोह मद मिटा मन रूपी अमृत के सम्रत मो मगन होगए वसिष्ठ वामदेव विश्वा
मित्र आदिक जे ते मुनीश्वर थे अरु नयन सुन आदिक जो मंत्री थे अरु राजा दशरथ आ
दि लेकरि जो मंडलेश्वर थे अरु अन्य वहु ने थे अरु माता कौशल्या आदिक सभ ही सुणके
विस्मान हो गए अर्थ पट जो अवल है रे अरु पिंजरों विषे जो तोते थे तेभी मौन होग
ए अरु वगीचे विषे जो मृग पक्षी थे सो भी तृण खावणे ते रहित होगए अरु अश्व भी खान
पान ते रहित होगए अरु पक्षी जो आलयों विषे बैठे थे निकट तेभी सुणकरि मौन होग
ए अरु आकाश के जो सिध लोक थे अरु देवता गंधर्व विद्याधर किंनर थे सो भी इस्थिर होग
ए सुनणे लागे अरु व्यास नारद आदिक मुनीश्वर ध्यान करि सुनणे लागे अरु सभा पुन
धन धाव ह करणे लागे अरु फूलों की वर्षा करणे लागे मनो वरफ के मेघ वर्षा करते हैं अ
रु पीरु सम्मुद्र के तरंग उछले आवते हैं अरु मानो मोतीयों की माला आकाश ते चलीयां
आवती हैं मानो आकाश के पिंडो है राम जी के आगे निवेदन करते हैं इस प्रकार अर्थ वही
प्रसंन वर्षा करते रहे अरु वगीचों सुगंध वान पवन अरु फूलों उपर भौरे विचरने लागे वड़ा
विलास तिस काल मो होरहा अरु धावह करणे लागे सिध्यावाच हे कमल नैन अरु रघु
वंसीयों की कमल आकाश के चंद्रमा राम जी तें धन्य है हमों ने वहुत स्थान इस प्रकार सुने
थे है अरु वहुत प्रकार के वचन सुने हैं परु जो कछु राम जी वचन कहे हैं तैसे कहे न
ही सुणे इन्हीं वचनों को सुण करि हमारे विषे जो कछु सिध ताका अभिमान था सो
अब निवृत्त हुआ है ऐसे अमृत रूपी वचनों को सुण करि हमारी बुध शीतल होगई है जैसे
वचन राम जी कहे हैं तैसे वचन वृहस्पति भी कहणे को समर्थ नहीं परमानंद को प्रा
पत करणे हारे वचन हैं हे राम जी धन्य हैं ॥ इति श्री वसिष्ठ सिद्ध समागमो नाम स
र्गः ॥ वाल्मीकि उवाच ॥ हे भारद्वाज सिध ऐसे वचन कहि करि विचारत भए जो रघुवंसी
यों की कुल की धुजा जो है राम जी तिसने वड़े उदार वचन कहे हैं अरु महा वैराग के वचन मु
नीश्वरों के विस्मादक कहे हैं तिनका उत्तर जो मुनीश्वर देवोंगे सो भी श्रवण कीया चाहीये
जैसे फूलों उपर भ्रमर स्थान इस्थित होवे तैसे व्यास नारद अरु पुलह पुलस्त आदिक सभा वि

वै.प्र.
२२

वे आसन अस्थित हूए ॥ तव वसिष्ठ विश्वामित्रादिक मुनीश्वर सभ उठ खडे हूए ॥ अरु राजा दसरथ आ
दिक सभ ले ग्राम भी उठ खडे हूए ॥ अरु तिनकी पूजा कीती ॥ अथ राजे दसरथ पूजा करी वहूर व
सिष्ठ विश्वामित्र ने अर्घ पाद करि पूजा करी ॥ इसी प्रकार अरु कौन कौन आए ॥ अरु कैसे हे ॥ वसिष्ठ
विश्वामित्र नारद वहूर सुंदर सूरन को धरे हूए ॥ अरु हाथो विषे वीणा को लीये ॥ अरु महात्मा
मनस्यास जी आए ॥ माना तारव के विषे महात्मा मनसु की चुटा आती हे ॥ अरु उदास्यास जी
आए वामदेव आए पुलस्त्य पुलह अंगिरा जो ब्रहस्पत जी का पिता हे ॥ अरु वाल्मीक भी
तहा था ॥ इत्यादिक जो ब्रह्मर्षि अरु राजर्षि सिद्ध देवता अरु देवर्षी के वडे वडे नायक मुनी
श्वर सभ आन अस्थित हूए ॥ सो कैसे हे ॥ वडी योजटा को धारे ॥ अरु मूज कटा को धरे ॥ किसी के
कंठ मो रुद्राक्ष की माला पडी हूई ॥ किसी के कर विषे मोती यों की माला ॥ किसी के रतनन म
णीकीया ॥ अरु हाथो विषे कमंडल ॥ अरु मृगछाला को धरे हूए ॥ किसी के मस्तक सुंदर पव
केवसन ॥ किसी के तेड मंजन की तडागी ॥ अरु किसी के तेड सुवर्ण की जंजरी लाघ सुंदर करी हू
ई ॥ ऐसे वडे तपस्वी आए ॥ को उराजसी स्वभाव को उसात्विकी स्वभाव थे ॥ अरु सभ विदत वे
द परम विश्राम को प्रापत हूए ॥ यथा योग आसन पर अस्थित हूए ॥ जहां रामजी वैठे थे के
से रामजी हे ॥ जो नाद नीसरतन अरु दीनत्व भाव हां था जो इस भाव विषे वैठे हे ॥ तिसकी स
भए पूजा करते भए ॥ क्या पूजा करी ॥ हे रामजी धन्य हे धन्य हे ॥ यही पूजा करी ॥ अरु कहते भए
तैने वडे विवेक वैराग के वचन कहे हैं ॥ सो सभ को प्यारे हे ॥ अरु सभ के कल्याण करता हे
अरु परम बोध के कारण हे ॥ हे रामजी तुम वडे बुधवान उदार आत्मा हो ॥ ऐ आवन हो ॥ अ
रु महावाक्यों का अर्थ तुम्हारे विषे प्रगट होता हे ॥ ऐसा वचन हे ॥ ऐसो उज्जल्य असाधारण
तपसी यों विषे एक होता हे ॥ अरु जेते जीव मनुष्य देह आवते हे सो पशु हे ॥ जिसको संसा
र समुद्र के पार होवणे की इच्छा हूई हे ॥ अरु पुरुष प्रयतन करता हे ॥ सोई मनुष्य हे ॥ हे सा
धो वृक्ष तो वहूते होते हे ॥ परु चंदन वृक्ष कोऊ होता हे ॥ तैसे शरीर धारी जीव वहूते हे ॥ परु ऐ
सो पुरुष कोऊ होता हे ॥ और अरु सभ अरु आसमान धरीके वृतन ले साथ मिले हूए भटकते
फिरते हे ॥ जैसे मनुष्य को पाप जलीयां होती यां हे ॥ तैसे आत्मा नी जीव हे ॥ जैसे हस्तीनी
वहूते हे ॥ अरु जिसके मस्तक सो मोती निकसता हे ॥ सो विरला होता हे ॥ तैसे मनुष्य तो व
हूते हे ॥ परु पुरुष प्रयतनवान कोऊ होता हे ॥ जैसे वृक्ष तो वहूते हे ॥ परु लवंग का वृक्ष कोऊ
होता हे ॥ तैसे मनुष्य तो वहूते हे ॥ अरु तैसा रामजी हे ॥ ऐसा कोऊ विरला होता हे ॥ ऐसे पात्र को
महावाक्यों का अर्थ कहे या थोडा भी वहूत हो जाता हे ॥ जैसे तैल की बूंद थोडी भी जल वि
षे वहूत हो वेगा ॥ इसकी बुध वहूत विशाल हे ॥ अरु दीपक वत प्रकाशवान हे ॥ अरु बोध
का परम पात्र हे ॥ कहणे मात्र ही तिसी घडी इसको ज्ञान होवेगा ॥ अरु हम जो सभ वैठे
हे ॥ हमारे विदमान जो इसको ज्ञान न होवेगा ॥ अरु हम जो सभ ही वैठे हे ॥ हमारे विदमान जो
इसको ज्ञान न होवेगा ॥ तव जाणीये जो हम सभ ही हतबुद्ध हे ॥ इति श्री [illegible] वैराग्य प्रकरणे [illegible] नाम सर्गः २८ ॥



ॐ [illegible] नमः ॥ ॐ [illegible] नमः ॥ वाल्मीकि [illegible]
रहु जो वचन हे सो परम पावन हे ॥ अरु कल्याण के कर्ता हे ॥ इह विध प्रीत श्रवण की
तव उपजती हे ॥ जव वडे भाग्य वहूते जन्मों के एकठे आन होते हे ॥ जैसे कल्पतरु वृक्ष
को वडे फल पडते हे ॥ तैसे जिसके पुण्य कर्म एकठे आन होते हे ॥ तिनकी प्रीत श्रवण
विषे होती हे ॥ अरु तिसको प्रापत होता हे ॥ अन्य ज्ञान ही प्रापत होता ॥ इह वचन पर
म बोध के कारण हे ॥ एक सहस्र पंच सौ श्लोक हे वैराग प्रकरण ॥ हे भारद्वाज इस प्रकार
नारद जी कहा ॥ तव विश्वामित्र जी बोले ॥ विश्वामित्र उवाच ॥ हे तातवानो विशेष रा
मचंद्र जो कछु जाणना जोग था ॥ सो तुमने जाणया हे ॥ और इससे जाणना नहीं रहा ॥ प
रु तिस विषे विश्राम पावणे के निमित कछु मार्जन करणा हे ॥ जैसे शुध आदर्श वि
षे कछुक मलिनता होवे ॥ अरु उसको दूर करीये ॥ तो शुध स्पष्ट भासता हे ॥ तैसे कछु
कछु का उपदेश कीता तुमको अपेक्षा हे ॥ हे रामचंद्र तुम कैसे साइ सव्यासदेव का पुत्र शुक
नभया हे ॥ उह भी वडा बुधवान था ॥ जो कछु जाणने जोग हे ॥ सो तिसने जाणया था ॥ पर
विश्राम के निमित उसको भी अपेक्षा थी ॥ उह विश्राम को पाइ कर ज्ञानवान हूया ॥ रा
मउवाच ॥ हे भगवन शुकजी के साउ बुधवान अरु ज्ञानवान थ्या ॥ अरु कैसे विश्राम की अ
पेक्षा उसको थी ॥ अरु कैसे विश्राम को पावत भया हे ॥ सो कृपा कर कहो ॥ विश्वामित्र उ
वाच ॥ हे रामचंद्र अंजन के पर्वत की न्याई जिसका आकार हे ॥ ऐसा जो भगवान व्यासदे
व सुवर्ण के सिंहासन ऊपर राजा दशरथ के पास वैठा हे ॥ अरु सूर्य की न्याई प्रकाशवा
न जिसकी कांति हे ॥ तिसका पुत्र शुकजी था ॥ अरु सर्व शास्त्रों का वेत्ता था ॥ अरु सत
को सत्त जाणया था ॥ असत को असत जाणया था ॥ जो आत्मा शांत रूप हे ॥ परमानंद
रूप हे ॥ पर विश्राम को न पावत भया ॥ तव उसको विकल्प उठया ॥ जो जिसको मे
जाणया हे ॥ सो न होवेगा ॥ काहे ते जो मुझ को आनंद नहीं भासता ॥ हे रामचंद्र इस सं
शय को धार कर ॥ एक काल मो व्यास जी सुमेर पर्वत की कंदरा मो वैठे थे ॥ तिनके निक
ट आया ॥ अरु कहत भया ॥ हे भगवन इह संसार आडंबर कहां सो उठया हे ॥ अरु निवर्त
कैसे होवेगा ॥ अरु आगे किनका निवर्त हूया हे ॥ अरु कैसे निवर्त होया हे ॥ सो कहो ॥ हे
रामचंद्र जव इस प्रकार शुकजी कहा ॥ तव विदित वेद जो व्यासदेव हे ॥ सो तत्व का उ
पदेश करत भये ॥ तव शुकजी कहा हे भगवन जो कछु तुम मो कहा हे ॥ सो तो मे आगे
हे जानता हो ॥ इस कर मुझ को शांत नहीं प्रापत होती ॥ हे रामचंद्र जव इस प्रकार
शुकजी कहा ॥ तव सर्वज्ञ जो व्यासदेव हे ॥ सो विचारता भया ॥ जो मेरे वचनो कर इस
को शांत न प्रापत होवेगी ॥ काहे ते जो इसको पिता अरु पुत्र का संबंध भासता हे ॥
ऐसे विचार करके कहत भया ॥ हे पुत्र मे अत्यंत तत्वज्ञ नहीं ॥ तो ते राजे जनक के तू
निकट गमन कर ॥ उह सर्व तत्वज्ञ हे ॥ अरु शांत आत्मा हे ॥ उससो तेरा मोह निवर्त होज
वेगा ॥ हे रामचंद्र जव इस प्रकार व्यासदेव कहा ॥ तव शुकजी उहां सो चलया ॥ तव विदेह
नामा जो मिथलानगर था राजा जनक का तिस विषे आया ॥ आइ कर राजा के द्वार पर अ
नर स्थित हूया ॥ तव जाष्टीक ने जाइ कर कहा ॥ जो व्यासदेव का पुत्र शुकजी आइ खडा हे ॥
तव राजा जो नन भया जो जगया सा हे इसको ॥ तव कहा खडा हे तो खडा रहे ॥ इस प्रकार जा
ष्टीको कहा ॥ तव सप्त दिन खडे ही वितीत भए ॥ वहुड राजे पूछया जो शुकजी वा
डा हे ॥ अथवा गया ॥ तव जाष्टीक ने कहा खडा हे ॥ तव राजा कहा आंगन ले आवो ॥ तव
आंगन ले आए ॥ उस ठौर भी सप्त दिन वितीत भये ॥ तव राजे पूछया शुकजी था
जाष्टीको कहा खडा हे ॥ तव राजे कहा अंतःपुर विषे ले जाए ॥ अरु अंतःपुर की यां इस्त्रीयां
विषे सप्त दिन रहा ॥ तव राजे पूछा ॥ अव उसकी क्या दसा हे ॥ अरु आगे क्या दसा थी ॥ उ
नो कहा न आगे निरादर कर शोकवान हूया था ॥ अरु न भोगों कर के प्रसन्न हूया हे ॥ इ

इष्ट अनिष्ट विषे एक समान है॥ जैसे मंद पवन कर के सुमेर पर्वत चलाइमान नहीं होता॥
तैसे उह बडे भोगों कर अरु निरादर कर चलाइमान नहीं होता॥ जैसे पपीहा को समुद्र के ज
ल ते भिन्न नदीयों के जल की इछ्या नहीं होती॥ तैसे उस को किसी और पदार्थ की इछ्या नहीं
तब राजे कहा ईहां ले आवो॥ जब शुकजी आया॥ तब राजा जनक उठ खडा हूया॥ अरु प्र
णाम कीया॥ अरु दोनो बैठ गये॥ तब राजे कहा हे मुनीश्वर तुम किस निमित्त आए हो॥ तु
म को क्या वांछा है॥ जो कछु वांछा है सो कहो॥ अरु तिस की प्रापत जाणो॥ शुक उवाच॥
हे गुरो इह संसार अडंबर कैसे उतपन हूया है॥ अरु कैसे शांत होता है॥ सो तुम कहो॥ वि
श्वामित्र उवाच॥ हे रामचंद्र जब इस प्रकार शुकजी कहा॥ तब राजे जनक उपदेश कीया
बहुड शुकजी कहा॥ हे भगवन जो कछु तुम को कहा है॥ सोई पिताजी कहा था॥ अरु सोई शा
स्त्र कहते है॥ अरु विचार कर मैं भी ऐसे जानता हों॥ जो इह संसार अपणे चित्त के स्फुरणे कर
के उतपन होता है॥ अरु चित्त के अफुर हूए ते भ्रम निवर्त हो जाता है॥ पर विश्राम मुझ को न
ही प्रापत होता॥ जनक उवाच॥ हे मुनीश्वर जो कछु इह मो कहा है॥ अरु जो कछु तूं जाणता है
इस ते उपरांत और जानणा कछु नही॥ अरु कहणा भी और कछु नही॥ इह जगत चित्त के सं
वेदन कर के हूया है॥ जब चित्त फुरणे ते रहत होवे॥ तब भ्रम निवर्त हो जाता है॥ अरु आ
त्मतत्व नित्य शुद्ध है॥ अरु परमानंद स्वरूप है॥ केवल चैतन्य है॥ तिस का अभ्यास कर॥ त
बं तूं विश्राम को पावेगा॥ अरु तूं मुक्त रूप है॥ काहे ते जो तेरा जतन आत्मा की ओर है॥ दृश्य
की ओर नही॥ तां ते तूं वडा उदार आत्मा है॥ हे मुनीश्वर व्यास ते अधिक जाण कर तूं मेरे पास
आया है॥ अरु तूं मेरे ते भी अधिक है॥ काहे ते जो इह मारी चेष्टा वाहज ते है इष्ट आवती॥ अरु
अंतर ते इछ्या हमारी भी नही॥ तुमारी भी नही॥ हे रामचंद्र जब इस प्रकार राजे जनक कहा
तब शुकजी निःशंक अरु निरभय होकर चले॥ सुमेर पर्वत की कंदरा विषे निर्विकल्प
समाधि लगाई॥ दश सहस्र वर्ष निर्विकल्प समाधि इस्थित रहे॥ बहुड निर्वाण हो गए
जैसे समुद्र विषे बूंद लीन हो जाती है॥ तैसे लीन हो गए॥ जैसे सूर्य का प्रकाश संध्या का
ल में सूर्य विषे लीन होता है॥ तैसे कलना रूपी कलंक को त्याग कर के ब्रह्म पद को प्रा
पत हूए॥ इति श्री मन्मुक्तप्रकरणे शुकनिर्वाणवर्णनंनाम सर्गः॥ ॥ ॥

सम मिलिहे॥ श्री विश्वामित्र उवाच॥ हे राम दाशरथ तिस प्रकार शुकजी सहजरूप
थे तैसे रामचंद्र है॥ जैसे उस को शांत के निमित्त कछु कर्तव्य था॥ तैसे रामचंद्र को विश्रा
म के निमित्त कछु मार्जन कर्तव्य है॥ काहे ते जो आवरण करणे हारे भोग है॥ सो तिनो
ते इछ्या इस की निवर्त भई है॥ अरु जो कछु जाणने जोग था॥ सो जाणा है॥ अब इस को कर क
छु कर्तव्य कहणा है॥ तिस कर के इस को विश्राम होवेगा॥ जैसे शुकजी को थोडे मार्जन क
र के शांत की प्रापत भये है॥ तैसे इस को भी प्रापत होवेगी॥ हे राजन अब रामजी को भोगों
की इछ्या स्पर्श नही करती॥ जैसे ज्ञानवान को अध्यात्मक आदि दुःख नही स्पर्श करते॥ तै
से राम को भोगों की इछ्या नही स्पर्श करती॥ भोगों की इछ्या सभ को दीन करती है॥ भोगों की
इछ्या करणी इसी का नाम बंध है॥ अरु भोगों की वासना का लय करणा॥ इसी का नाम मो

क्ष है॥ ज्यों ज्यों भोगों की वासना करता है॥ त्यों त्यों लघु होता है॥ अरु ज्यों ज्यों भोगों की वासना
लय होती है॥ त्यों त्यों गरिष्ट होता है॥ जब लग इस को आत्मानंद प्रकाश नहीं होता॥ तब लग
विषयों की वासना दूर नही होती॥ जब आत्मानंद प्रापत होता है॥ तब विषय वासना दू
र नही रहती॥ जैसे मारु थल विषे वल्ली नही उतपन्न होती॥ तैसे ज्ञानवान को विषय वा
सना नही उतपन होती है॥ हे साधो ज्ञानवान जो विषय भोगों का त्याग करता है॥ सो कि
सी फल को धार कर नही करता॥ स्वभाव कर ही ज्ञानवान की विषय वासना चलती रहती
है॥ जैसे सूर्य के उदे हूए अंधकार का स्वभाव कर अभाव हो जाता है॥ सो रामजी को किसी भो
ग पदार्थ की वांछा नही॥ अब विदतवेद हूया है॥ पर विश्राम की अपेक्षा रहता है॥ तां ते
मैं कहता हों॥ जो सोई करो जिस कर इह विश्रामवान होवे॥ हे राजन इह भगवान वसिष्ट है
इन की युक्ति कर के शांतवान होवेगा॥ अरु आगे भी रघुवंश कुल के गुरु है॥ इन के उपदेश
द्वारा आगे भी रघुवंशी ज्ञान हूए है॥ कैसे है भगवान वसिष्ट जो सर्वज्ञ है॥ अरु साक्षी रूप है
अरु त्रिकालज्ञ है॥ अरु ज्ञान का सूर्य है॥ इन की उपदेश कर के रामजी आत्मपद को प्रापत
होवेगा॥ हे वसिष्टजी उह ब्रह्माजी का उपदेश तुमारे स्मरन विषे है॥ कैसा जो जब तुम सा
राइ मारा विरुध था॥ निषध पर्वत विषे॥ कैसा निषधाचल॥ जो सर्व विधी श्वरों अरु छो
सो शरण था॥ अरु ब्रह्माजी आय कर॥ संसार वासना के नाश निमित्त उपदेश कीया था॥ अ
रन सारा इह मारा विरुध दूर कीया था॥ अरु और जीवों के कल्याण निमित्त उपदेश कीया
था॥ अब उही उपदेश तुम रामजी को करो॥ इह भी अब निर्मल ज्ञान का पात्र है॥ अरु ज्ञान
भी वही है॥ विज्ञान भी वही है॥ अरु निर्मल पुत्र भी वही है॥ तो अथ पात्र विषे अर्पणा हो
वे॥ अरु पात्र विना नही शोभती॥ जिस विषे शिष्यभाव न होवे॥ अरु विरक्तता न होवे ऐ
ऐसा जो अपात्र पुरुष है॥ तिस को उपदेश करणा व्यर्थ होता है॥ अर्थ यह जो उपदेश भी
अपवित्र होता है॥ जैसे दूध बहुत पवित्र है॥ पर स्वान की त्वचा विषे डारीये॥ तब उह भी अ
पवित्र हो जाता है॥ तैसे अपात्र विषे उपदेश करणा॥ अपवित्र हो जाता है॥ हे मुनीश्वर
जो शिष्यता अरु वैराग्य कर के संपन्न है॥ अरु उदार आत्मा है॥ सो तुमारि उपदेश को यो
ग्य है॥ अरु तुम कैसे हो॥ जो वीतराग हो॥ अरु भय अरु क्रोध ते रहित हो॥ परम शांत रू
प हो॥ सो तुमारि उपदेश का इह पात्र है॥ वाल्मीकिरुवाच॥ इस प्रकार जब विश्वामित्र
कहा॥ तब नारद अरु व्यास आदिकों कहा जो साधु॥ अर्थ यह जो भला कहा॥ ऐसे ही यथा
र्थ है॥ तब राजा दशरथ के पास बडे प्रकाश को धारे जो बैठे थे॥ ब्रह्मा के पुत्र वसिष्टजी तिनों
ने कहा॥ हे मुनीश्वर जो कछु तुम आज्ञा करी सो हम मानी॥ ऐसा समर्थ कोऊ नही॥ जो
संतों की आज्ञा निरादरण करे॥ हे साधो जैसे राजा दशरथ के पुत्र है॥ तिन सभनों के हिदे का
तम रूपी अज्ञान॥ सो मैं ज्ञान रूपी सूर्य कर निवर्त करोंगा॥ जैसे सूर्य के प्रकाश कर अंधका
र दूर हो जाता है॥ हे मुनीश्वर जो कछु ब्रह्माजी उपदेश कीया था॥ सो मुझ को अखंड स्म
रणे है॥ सोई उपदेश करोंगा॥ तिस कर रामचंद निहसंसय पद को प्रापत होवेगा॥ वा
ल्मीकिरुवाच॥ इस प्रकार वसिष्टजी विश्वामित्र को जब कहा॥ तिस के अनंतर व
क्ष्यमाण मोक्ष उपाय से हता कहणे को रामजी के सन्मुख होत भया॥ इति श्री मुमुक्षु
प्रकरणे विश्वामित्र वचननाम सर्गः॥ ॥ ॥ ॥

ॐ श्री रामायन नमः॥ वसिष्ट उवाच॥ हे रामचंद्र जो कछु कमल जा ब्रह्माजी मुझ को
सृष्टि के आदि विषे उपदेश कीया है॥ जीवों की कल्याण निमित्त सो सवले प्रकार कार से

रस्मरणविषेआवताहै॥ अवतुमकोंकहताहों॥ रामउवाच॥ हेभगवनकछुप्रश्नकर
णेकाअवसरपायाहै॥ तिससेसंशयकोंदूरकरो॥ मोहउपायजोसंशयताहै॥ सोतोतुम
समझीकहोगे॥ परइहजोतुमनेकहा॥ शुकजीविदेहमुक्तहूए॥ जोशुकजीविदेहमु
क्तहूए॥ तोभगवानव्यासदेवसर्वज्ञहै॥ सोविदेहमुक्तक्योंनहूया॥ वसिष्ठउवाच॥
हेरामचंद्रजैसेसूर्यकीयांकिरणविषेत्रिसरेणहोतीयांहै॥ अरुतिनकीसंख्याकछु
नहींहोती॥ तैसेपरसूर्यकीसंवेदनरूपकिरणोंविषेजोत्रिलोकीरूपत्रिसरेणहै॥ सो
असंख्यहै॥ तिनकीसंख्याभीकछुनहीं॥ रामउवाच॥ हेभगवनजोआगेवितीतहूइयां
है॥ अरुतोआगेहोवेगीयां तिनकीसंख्याकेतीहै॥ अरुवर्तमानकोंतोजाणतेहै॥ वसि
ष्ठउवाच॥ हेरामचंद्रअनंतकोटित्रिलोकीयांकोगणउपजेहै॥ अरुमिटगएहै॥ अरु
कईहोवणगीयां॥ कईहूयाइयांहै॥ गणनेकीसंख्याकछुनही॥ काहेतेंजोजीवअसंख्य
है अरुजीवजीवप्रतिअपणीअपणीसृष्टिहै॥ तवइहजीवमृतकहोताहै॥ तवउसीठौर
नविषेअपणेआति॥ वाहकसंकल्परूपीशरीरविषेइसकोंवोधवभासआवतेहै॥ अ
रुउसीस्थानविषेपरलोकभासआवताहै॥ अरुपृथिवीआपतेजवायुअकाशयांचो
तत्वभासआवतेहै॥ अरुनानाप्रकारकीअपणीअपणीसृष्टिवासनाकेअनुसारभासआ
वतीहै॥ वहुडउहांतेमृतकहोताहै॥ तवउहीसृष्टिवहुडभासआवतीयांहै॥ तामइस
संजोगतउहीजाग्रतसत्यहोइकरपड़ीभासतीहै॥ वहुडजवउहांतेमरताहै॥ तवउ
सपंचभूतककसृष्टिकाअभावहोजाताहै॥ अरुभासआवतीहै॥ अरुतहांकेजोजीवहो
तेहै॥ तिनकोंभीइसप्रकारअनुभवहोताहै॥ इसप्रकारएकएकजीवकीसृष्टिहोतीहै
अरुमिटजातीहै॥ तिनकीसंख्याकछुनही॥ तोब्रह्मविषेसृष्टिकीसंख्याकछुनहीं॥ तो
ब्रह्मविषेसृष्टिकीसंख्याकैसेहोवे॥ जैसेचक्रफेरीदेताहै॥ अरुतिसकोंसर्वपदार्थ
भ्रमतेदृष्टिआवतेहै॥ अरुनौकाविषेवैठेहूए॥ नदीतटकेवृक्षचलतेदृष्टिआवतेहै॥ जै
सेनेत्रोंकेदोषकरकेआकाशविषेमोतीयांकीयांमालादृष्टिआवतीयांहै॥ अरुजैसे
स्वप्नविषेसृष्टिभासतीयांहै॥ तैसेंजीवांकोंपरलोकअरुइहलोकभ्रमकरकेभास
ताहै॥ वास्तवतेंजगतकछुउपजानही॥ एकअद्वैतपरमात्मतत्वअपणेआपहीवि
षेस्थितहै॥ तिसविषेद्वैतभ्रमअविद्याकरकेभासताहै॥ जैसेवालककोंअपणीपर्छा
वेविषेवैतालभासताहै॥ अरुभयकोंपावताहै॥ तैसेअज्ञानीकोंअपणीकल्पनाही
जगतरूपहोकरभासतीहै॥ हेरामचंद्रइहव्यासदेववतीसवारतोमैंनेदेषणेविषे
आयाहै॥ तिनविषेदसतोएकहीप्रकाररूपहूयाहै॥ अरुएकहीजैसीक्रया॥ एकही
जैसानिश्चेहूयाहै॥ अरुगेरदससमानसमझहूएहै अरुवारहविलक्षणआकारअ
रुविलक्षणक्रयाचेष्टाहूएहै॥ जैसेसमुद्रविषेतरंगहोतेहै॥ केसमसउपजतेहै॥ क
ईविलक्षणउपजतेहै॥ तैसेव्यासहूएहै॥ अरुसमजोटसहूएहै॥ तिनोंविषेदशमाव्यास
एहीहै॥ अरुआगेभीहोवेगा॥ अष्टवारएही॥ अरुवहुडसत्ताभावनकरेगा॥ वहुडनवसवा
रब्रह्माहोकरविदेहमुक्तहोवेगा॥ अरुहमभीहोवेगे॥ अरुवाल्मीकिभीहोवेगा॥ अरुभृ
गुभीहोवेगा॥ अरुइहस्पातिकापिताअंगिराभीहोवेगा॥ इत्यादिकओरभीहोवेगे॥ हेराम
चंद्रएकसमहीहोतेहै॥ एकविलक्षणहोतेहै॥ अरुमनुष्यदेवतातिर्यक्आदिकजीव
कईवारसमानहोतेहै॥ कईवारविलक्षणहोतेहै॥ कईजीवसमानप्रकारआगेजैसेहोत
है॥ कुलक्रयासहित॥ अरुकईविलक्षणहोतेहै॥ कईसंकल्पकरिउडतेफिरतेहै॥ आव
णजावणासमरणास्वप्नभ्रमकीन्याईपड़ेदेषतेहै॥ अरुवास्तवतेंतोकोऊआवताहै॥ नजा
वतहै॥ नजन्मतेहै॥ इहभ्रमअज्ञानकरकेपड़ाभासताहै॥ विचारकीएतेंतिकसत्ताकछु
नही॥ जैसेकदलीकाथंभहोताहै॥ सोदषणेमात्रतोवड़ापुष्टहोताहै॥ अरुफोलीये
तोसारकछुनहीनिकता॥ तैसेजगतभ्रमअविचारसिधहै॥ विचारकीयेतेनिकसताक
छुनही॥ हेरामचंद्रजोपुरुषआत्मसत्ताविषेजागयाहै॥ तिसकोंद्वैतभ्रमनहीभासता
उहआत्मदर्शी॥ सदाशांतआत्मापरमानंदस्वरूपहै॥ अरुसर्वकलनातेंरहितहै॥ ऐ
साजोजीवनमुक्तपुरुषहै॥ तिसकोंचलाइकोऊनहींसकता॥ ऐसाजोव्यासजीहै॥ ति

सकोंसदेहमुक्तअरुविदेहमुक्तकीकलपनाकोऊनहीं॥ सदाअद्वैतरूपहै॥ हेराम
चंद्रजीवनमुक्तकोंसर्वआत्मासर्वठौरतेंपूर्णभासताहै॥ अरुस्वच्छरूपहै॥ स्वरूपस
रमयशांतरूपअस्तनकरिपूर्णहै॥ अरुनिरावर्णहोइस्थितहै॥ इतिश्रीयोगवासिष्ठेप्र
तिपादननामसर्गः ३

ॐश्रीरामानुजायनमः॥ वसिष्ठउवाच॥ हेरामचंद्रजीवन्मुक्तअरुविदेहमुक्तविषेभे
दकछुनहीं॥ जैसेसोमजलहै॥ तोभीजलहै॥ अरुद्रवताकरकेतरंगहोइभासताहै॥ तो
भीजलहै॥ तैसेजीवन्मुक्तअरुविदेहमुक्तविषेकछुभेदनही॥ हेरामचंद्रजीवन्मुक्तअ
रुविदेहमुक्तकाअनुभवतमकोंप्रत्यक्षनहीभासता॥ काहेतेंजोस्वसंवेदहै॥ अरुतिन
काभेदजोभासताहै॥ सोअसम्यकदरसीकोंभासताहै॥ ज्ञानीकोंभेदनहीभासता॥ हेम
ननहाथोविषेअष्टजैसेवायुस्पंदरूपहोतीहै॥ तोभीवायुहै॥ अरुअस्पंदरूपहोतीहै
तोभीवायुहै॥ उसकीवायुत्वनिश्चेविषेभेदकछुनही॥ परअज्ञजीवांकोस्पंदहोतीहै तो
भासतीहै॥ अरुनिस्पंदहै॥ तोनहीभासती॥ तैसेज्ञानवानपुरुषकोंजीवन्मुक्तअरुवि
देहमुक्तविषेभेदकछुनही॥ उहसदाअद्वैतहै॥ द्वैतकल्पनातेरहितहै॥ परअज्ञजीवांक
कोंउसकाशरीरभासताहै॥ तवजीवनमुक्तकहतेहै॥ जवशरीरअदृष्टहोताहै॥ तवविदे
हकहतेहै॥ उसकोदोनोंतुल्यहै॥ हेरामजीअववअकृतप्रसंगकोंसुण॥ जोअववर्णोंका
भूषणहै॥ जोकछुसिद्धहोताहै॥ सोइसकोंअपणेपुरुषार्थकरसिद्धहोताहै॥ पुरुषार्थ
विनासिद्धकछुनहीहोता॥ अरुजोकहतेहै॥ दैवकरेगासोहोवेगा॥ तेमूर्षहै॥ इहजोचं
द्रमेंहृदयकोंशीतलअरुउल्लासकताहै॥ सोइसविषेशीतलतापुरुषार्थकरकेहूईहै॥
हेरामचंद्रजिसअर्थकोंइहप्रार्थनाकरे॥ अरुयत्नकरे॥ अरुथककरफिरेनही॥ तोअवस
श्यहोताहै॥ अरुप्रयत्नकिसकानामहै॥ सोश्रवणकरु॥ संतजनअरुसत्शास्त्रोंके
उपदेशकोंधारकरतिनकेअनुसारचित्तकाविचरणाहोवे॥ सोपुरुषप्रयत्नहै॥ इसतेंउ
परजोचेष्टाकरताहै॥ तिसकानामउनमत्तचेष्टाहै॥ अरुजिसनिमित्तप्रयत्नकतीहै
सोपावताहै॥ एकजीवथाजोतिसनेअपनेपुरुषप्रयत्नकरइंद्रकीपदवीपाईहै॥ जो
त्रिलोकीकापतिहै॥ तिससिंहासनपरिआरूढहोतभया॥ हेरामचंद्रआत्मतत्वविषे
चेतनसंवितस्पंदरूपहोकरफुरीहै॥ उहअपणेपुरुषार्थकरब्रह्मपदकोप्रापतहूई
है॥ तोतेंदेषजिसकोंकछुसिद्धताप्रापतहूईहै॥ सोअपणेपुरुषार्थकरहूईहै॥ केवल
चैतन्यजोआत्मतत्वहै॥ तिसविषेचैतन्यसंवेदनस्पंदरूपहूईहै॥ उहीचेतनसंवित
अपणेपुरुषार्थकरकेगरुडऊपरिआरूढविष्णुरूपहूईहै॥ अरुपुरुषार्थसकहतीहै
अरुउहीचेतन्यसंवितअपणेपुरुषार्थकरकेरुद्ररूपहूईहै॥ अरुअर्धअंगपार्वतीं
कोंधारहाहै॥ अरुमस्तकविषेचंद्रमाकोंधाराहै॥ अरुनीलकंठपरमशांतरूपहै॥ तो
तेंजोकछुसिद्धहोताहै॥ सोपुरुषार्थकरहोताहै॥ हेरामचंद्रपुरुषप्रयत्नद्वाराजोसु
मेरुकोंभोजनकीयाचाहे॥ तोभीहोजाताहै॥ अरुजोपूर्वदिनदुःकृतकीयाहोवे॥ अ
गलेदिनसुकृतकरीये॥ तवदुःकृतदूरजाताहै॥ जोअपणेहाथकरचरणास्तंभोन
हीलेसकता॥ अरुपुरुषार्थकरेतोउहीपृथिवीकेखंडखंडकरणेकोंसमर्थहोताहै॥ इति

श्री मुमुक्षुप्रकरणे पुरुषार्थउपक्रमवर्णनंनाम चतुर्थः सर्गः ॥४॥ ॥ ॥ ॥

ॐ श्री गुरुभ्यो नमः ॥ वसिष्ठ उवाच ॥ हे रामचंद्र जो चित कछु वांछा करता है ॥ अरु शा
स्त्रोंके अनुसार पुरुषार्थ नहीं करता ॥ सो सुखकों नहीं पावेगा ॥ उसकी उन्मत्त चेष्टा है
अरु पुरुषार्थ भी दो प्रकारका है ॥ एक शास्त्र अनुसार है ॥ एक शास्त्र विरुद्ध है ॥ जो शा
स्त्रविधकों त्यागकर अपणी इच्छाके अनुसार विचरता है ॥ सो सिद्धताकों प्रापत नहीं हो
वेगा ॥ अरु सुखभी नहीं होवेगा ॥ अरु परमगतकों न पावेगा ॥ अरु जो शास्त्रके अनुसार पु
रुषार्थ है ॥ तिसकरके सिद्धताकों प्रापत होवेगा ॥ अरु दुःखभी न होवेगा ॥ जो अनुभव
ते स्मरन होती है ॥ अरु स्मरनते अनुभव होती है सो दोनो इसकर होते है ॥ दैव तो कछु नहीं हो
या ॥ हे रामचंद्र और दैव कोऊ नहीं ॥ इसका कीया इसकों प्रापत होता है ॥ पर जो बलिष्ट हो
ता है ॥ तिसके अनुसार विचरता है ॥ जो पूर्वला संस्कार बली होता है ॥ तो उसी की जय
होती है अरु जो विद्यमान पुरुषार्थ बली होता है ॥ तब उसकों जीत लेता है ॥ जैसे एक
पुरुषकी दो भुजे होते है ॥ अरु तिनकों लडावता है ॥ तो दोनो विषे जो बली होता है ॥ तिस
की जय होती है ॥ तो दोनो उसी के है ॥ तैसे दोनो कर्म इसके है ॥ जो पूर्वला संस्कार बली
होता है ॥ तो उसी की जय होती है ॥ अरु इह प्रयत्न बली होता है ॥ तो इसी की जय होती है ॥ हे
रामचंद्र इहु जो सन्तसंग करता है ॥ अरु सतशास्त्र विचारता है ॥ बहुर विषयों की और दौड
ता है तो पूर्वला संस्कार बली होता है ॥ तिसकर स्थिर नहीं हो सकता ॥ ऐसे जाणकर
तिसके पुरुषप्रयत्न का त्याग नहीं करणा ॥ तो पूर्वले संस्कार तें अन्यथा नहीं होता ॥ जब पू
र्वला संस्कार बली होवे ॥ अरु संतसंग करे ॥ अरु सतशास्त्रों का दृढ अभ्यास करे ॥ तो पूर्व
ले संस्कारकों इह पुरुषप्रयत्न जीत ले ॥ जैसे पूर्वले दिन विषे दुःकृत कीया ॥ अरु अगले
दिन सुकृत कीया ॥ तो उसका अभाव हो जाता है ॥ तैसे पुरुषप्रयत्न तें होता है ॥ सो पुरु
षार्थ क्या ॥ अरु तिसकर सिद्ध क्या होता है ॥ श्रवण कर ॥ ज्ञानवान जो संत है ॥ अरु सत
शास्त्र जो ब्रह्मविद्या है ॥ तिसके अर्थ अनुसार प्रयत्न करणा ॥ इसका नाम पुरुषार्थ है
अरु पुरुषार्थ कर पावणे जोग आत्मा है ॥ जिसकर संसारसमुद्र के पार को प्रापत हो
वे ॥ हे रामचंद्र जो कछु सिद्ध होवणा है ॥ इसकों सो अपणे पुरुषप्रकार प्रयत्नकर होव
णा ॥ और दैव कोऊ नहीं ॥ अरु जो शास्त्र अनुसार पुरुषार्थ कों त्याग कर कहते है ॥ जो क
छु करणा है सो दैव करेगा ॥ सो मूर्खता विषे गर्थ भए है ॥ तिनका संग भी न करीये ॥ उनकी
संगत करणी दुःखोंका कारण है ॥ इस पुरुषकों प्रथम तो इह कर्तव्य है ॥ जो अपणे वर्ण
आश्रमका शुभ आचारकों ग्रहण करणा ॥ अरु अशुभका त्याग करणा ॥ बहुर संतो
का संग अरु सतशास्त्रोंका विचार करणा ॥ तिनकों विचारकर अपणे गुणदोषोंको
विचारणा ॥ जो दिन अरु रात्रि विषे मैं शुभ क्या करता हौं ॥ अरु अशुभ क्या करता हौं ॥ ऐसे
गुणदोषोंका साक्षीभूत होकर गुणोंका जो संतोष धीरज वैराग विचार अभ्यास है ॥ ति
नका धारणा ॥ अरु दोष जो इनोंते उपजे है ॥ तिनका त्याग करणा ॥ जब ऐसे पुरुषार्थ
कों अंगीकार करेगा ॥ तब परमानंदरूप आत्मतत्वकों प्रापत होवेगा ॥ तातें हे राम
देह वनके चाइलहु एक कीटकी न्याई नहीं होवणा ॥ जो खासत गणके पानकों रसीला जा
णाकर पराभूगता है ॥ तैसे इस्त्री पुत्र धनादिकों विषे मगन हो रहणा नहीं ॥ इनते वि
रक्त होवणा ॥ अरु दंतों साथ दंतोंकों चबाइकर संसारसमुद्रते पार होवणे का यत्नक

रणा ॥ अरु बलकर बंधनकों तोडकर निकस जावणा ॥ जैसे केसरी सिंह बल
करके पिंजरेसों निकस जाता है ॥ तैसे निकस जाणा पुरुषार्थ है ॥ हे रामचंद्र जि
सकों कछु सिद्धता प्रापत किसी को हूई है ॥ सो अपणे पुरुषार्थ कर हूई है ॥ पुरुषा
र्थ विना नहीं होती ॥ जैसे प्रकाश विना पदार्थोंका ज्ञान नहीं होता ॥ जिनों पुरुषों अ
पणा पुरुषार्थ त्यागया है ॥ अरु दैवके आश्रय हूए है ॥ जो हमारा कल्याण दैव करेगा
सो नहीं होवेगा ॥ जैसे पथरोंते तेल निकस्या चाहै ॥ तो नहीं निकसता ॥ तैसे उनका क
ल्याण न होवेगा ॥ हे रामचंद्र तुम तो दैवका आश्रय त्यागकर अपणे पुरुषार्थकों आ
श्रय करो ॥ जिनों अपणा पुरुषार्थ त्यागया है ॥ तिनकों सुंदरकांन लखमी त्यागकर जा
ती है ॥ उनकी कांन लच्छ होजाती है जैसे बसन्त ऋतुकी मंजरी बसन्त ऋतुके गए ते वि
रस होजाती है ॥ तैसे उनकी कांन होजाती है ॥ जिनों पुरुषोंने ऐसे निश्चे कीया है ॥ जो
हमारा पालनेहारा दैव है ॥ ते पुरुष ऐसे है ॥ जैसे कोऊ अपणी भुजाकों सर्प जाणकर
दौडे अरु भय पावे ॥ जाणे ते नहीं जो मेरी ही भुजा है ॥ तैसे अपणे पुरुषार्थकों त्याग
कर दैवका आश्रय लेते है ॥ अरु भयकों पावते है ॥ इसी का नाम पुरुषार्थ है ॥ जो संत
अरु शास्त्रोंकों विचारकर तिनके अनुसार विचारणा ॥ अरु जो तिनकों त्यागकर अप
णी इच्छाके अनुसार वर्तते है ॥ ते न इहां सुख पावैगे ॥ न आगे सुख पावैगे ॥ न सिद्धता
कों पावैगे ॥ अरु जो सतशास्त्रोंके अनुसार विचारते है ॥ ते इहां भी सुख पावैगे ॥ अरु
सिद्धताकों भी पावैगे ॥ तातें संसाररूपी टोए विषे गिरना नहीं ॥ अरु चाहीये जो है संत
जनोंका संग अरु सतशास्त्रोंका अर्थ हिरदेरूपी पटके पर लिखना ॥ बोधरूपी कानीकर
णी अरु विचाररूपी स्याही करणी ॥ तब ऐसे पुरुषार्थ कर लिखेगा ॥ तब संसाररू
पी टोए विषे न गिरैगा ॥ हे रामचंद्र जैसे इहु आदि नीत हूई है ॥ जो पट है सो पट ही है ॥ चरन
हीं होता ॥ अरु छद है सो पट नहीं होता ॥ तैसे इह अनित हूई है ॥ तो पुरुषार्थ अपणे विना
परमपदकी प्रापत नहीं होती ॥ हे रामचंद्र जो संतोंकी संगत भी करता है ॥ अरु सतशास्त्र
भी विचारता है ॥ अरु उनके अर्थ विषे पुरुषार्थ नहीं करता ॥ अर्थ इह जो अभ्यास नहीं करता
तिसकों सिद्धता नहीं प्रापत होती ॥ जैसे अमृतके निकट भी बैठा होवे ॥ पर पानकीये
विना अमर नहीं होता ॥ तैसे अभ्यासकीये विना सिद्धता प्रापत नहीं होती ॥ हे रामचं
द्र अज्ञानी जीव अपणा जीवणा व्यर्थ खोवते है ॥ जब बालक होते है ॥ तब खेल
विषे लीन होते है ॥ अरु जवा अवस्था विषे विकारोंकों सेवते है ॥ तब वृद्ध अवस्था
न होकर स्मनक होजाता है ॥ इस प्रकार जीवणा व्यर्थ खोवते है ॥ अरु जरा विषे जरजरीभू
त्यागकर दैवका आश्रय लेते है ॥ सो अपणा हनता होते है ॥ अरु जो अपणा पुरुषार्थ
छेद जो पुरुष व्यवहार विषे अरु परमार्थ विषे आलसी हूए है ॥ ते सुखकों नहीं पावैगे ॥ हे राम
र आलसी होरहे है ॥ ते दीन हूए है ॥ मानो पशु है ॥ अरु दुःखकों प्रापत हूए है ॥ इहमैं वि
चारकर देख्या है ॥ तातें तुम पुरुषार्थकों आश्रय करो ॥ संतसंगत अरु सतशास्त्ररूपी आ
दर्शकरके अपणे गुण अरु दोषोंको देखकर दोषोंका त्याग करो ॥ अरु शास्त्रका सिद्धांत
जो है तिसका अभ्यास करो ॥ तब दृढ अभ्यास करोगे ॥ तब शीघ्र ही आनंदवान होवोगे ॥
वाल्मीकि उवाच ॥ जब इस प्रकार वसिष्ठजी कहा ॥ तब सायंकालका समा हूया ॥ सभ
भाइ सनानके निमित्त उठ खडे हूए ॥ परस्पर नमस्कार करके अपणे अपणे घरोंको
गए ॥ बहुर सूर्यकीया किरणों सहित आन स्थित हूए ॥ इति श्री मुमुक्षु प्रकरणे पुरुषा
र्थ वर्णनंनाम पंचम सर्गः ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

ॐ श्री परमात्मने नमः ॥ वसिष्ठ उवाच ॥ हे रामचंद्र ॥ सकल जो कोऊ पूर्वला कीया पुरुषार्थ
है तिसका नाम दैव है ॥ और दैव कोऊ नहीं ॥ जब इह संगत अरु सतशास्त्र विचारद्वारा पु
रुषार्थ करै ॥ तब पूर्वले संस्कारकों जीत लेता है ॥ जिस शास्त्रद्वारा जिस इष्टके पावणेका
यत्न करेगा ॥ तैसा अवश्यमेव पावेगा ॥ अपणे पुरुषार्थ ते अन्यथा सिद्ध कछु नहीं
होता ॥ न हूआ है ॥ न होवेगा ॥ पूर्व जो कोऊ पाप कीया होता है ॥ तिसको प्रापत हूए ॥ तैज

योग॰
वा॰
५

वमारयातादै॥ नवस्वर्गकहतादै॥ हादेवहादेव॥ कोऊहतादै हाकष्ट हाकष्ट॥ हेराम
चंद्रइसकाजोपूर्वलापुरुषार्थहै॥ तिसकानामदेवहै॥ औरदेवकोऊनहीं॥ औरकोऊ
देवजोकल्पतेहैं तेमूर्षहैं॥ जोपूर्वलेजन्मसुकृतकरआयाहोताहै॥ उहीसुकृतसुष
होकरदिषाईदेताहै॥ जोपूर्वलासंस्कारवलीहोताहै॥ तोउसहीकीजयहोतीहै॥ अ
रुजोइहपुरुषार्थवलीहोताहै॥ तोइसहीकीजैहोतीहै॥ जोपूर्वदुःकृतवलीहोता
है॥ अरुईहाशुभकापुरुषार्थकरतीहै॥ सतसंगतअरुसतशास्त्रोंकाश्रवणविचारक
रताहै॥ तोपूर्वलेसंस्कारकोंजीतलेताहै॥ जैसेप्रथमदिनपापकीयाहोवे॥ अरुदूस
रेदिनवडापुंनकरे॥ तोपूर्वलापापनिवर्तहोजाता॥ तैसेईहाद्रिढपुरुषार्थकरे॥ तोपू
र्वलेकोंजीतलेताहै॥ तातेजोकछुसिद्धहोताहै॥ सोइसीकेपुरुषार्थकरसिद्धहोताहै
जोएकत्रभावहोकरकेयत्नकरणा॥ इसकानामपुरुषार्थ॥ जिसकायत्नएकत्रभावहो
करकरेगा॥ तिसकोंअवश्यमेवपावेगा॥ जोपुरुषऔरदेवकोंजाणकरअपणापुरु
षार्थत्यागवैठेहैं॥ तेदुषतेंदुषकोंपावेंगे॥ शांतवानकदाचितनहोवेंगे॥ हेरामचंद्रमि
थ्यादेवकेअर्थकोंत्यागकरतुमअपणेपुरुषार्थकोंआश्रयकरो॥ जोसंतजनअरुशा
स्त्रोंकेवचनोंकरअरुयुक्तीसाथयत्नकरकेआत्मपदकोंअभ्यासकरप्रापतहोणा॥ इसी
कानामपुरुषार्थहै॥ जैसेप्रकाशकरकेपदार्थोंकाज्ञानहोताहै॥ तैसेपुरुषार्थकरकेआ
त्मपदकीप्रापतहोतीहै॥ जोवडापापहोताहैपूर्वलाकीया॥ अरुईहाद्रिढपुरुषार्थ
करपुण्यकरतीहै॥ तोउसकोंजीतलेताहै॥ जैसेवडामेघहोताहै॥ अरुतिसकोंपवन
नाशकरदेताहै॥ अरुजैसेवर्षदिनकापकाषेत्रहोताहै॥ अरुगडातिसकोंनाशकरछो
डताहै॥ तैसेपूर्वलासंस्कारपुरुषप्रयत्नकरिनाशकरीताहै॥ हेरामचंद्रश्रेष्टपुरुष
तेईहै॥ जिनोसंतसंगअरुशास्त्रविचारद्वाराबुधकोंतीषणकरकेसंसारसमुद्रतेंत
रणेकापुरुषार्थकीयाहै॥ अरुजिनोंसंतसंगअरुशास्त्रद्वाराबुधतीषणनहींकरी
अरुपुरुषार्थकोंत्यागवैठेहैं॥ तेपुरुषनीचतेंनीचगतकोंप्रापतहोवेंगे॥ अरुजोश्रे
ष्टपुरुषहै॥ तेअपणेपुरुषार्थकरकेपरमानंदअनंतपदकोंपावतेहैं॥ जिसकोंपाइ
करवहुडदुषीनहोवना॥ अरुदेषणेकरदीनहोतेथे॥ अरुसत्संगअरुशास्त्रकेअनु
सारपुरुषार्थकीयाहै॥ तेउत्तमपदकोंप्रापतहोतेहैंपाएहैं॥ हेरामचंद्रजिनोंपु
रुषोंपुरुषप्रयत्नकीयाहै॥ तिनकोंसमसंपदाआनप्रापतहोतीहै॥ अरुपरमानंदक
रपूर्णहोरहतेहैं जैसेरत्नोंकरकेसमुद्रपूर्णहै॥ तैसेउहपरमानंदकरपूर्णहोतेहैं
तातेजोश्रेष्टपुरुषहैं॥ तेअपणेपुरुषार्थद्वारासंसारकेवंधनोंतेनिकसजातेहैं॥
जैसेकेसरीसिंहअपणेअपणेवलकरपिंजरेसोंनिकसजाताहै॥ तैसेउहअपणे
पुरुषार्थकरसंसारवंधनतेनिकसजाताहै॥ हेरामचंद्रजोइहपुरुषऔरकछुन
करेतोइहकरे॥ जोअपणेवर्णअरुआश्रमकेअनुसारविचारे॥ अरुयत्नइहीकरे॥
जोसंतोंअरुशास्त्रोंकाआशयहोवे॥ तिसकेअनुसारपुरुषार्थकरे॥ जवऐसेकरेगा
तवसर्ववंधनोंतेमुक्तहोवेगा॥ अरुजिसपुरुषअपणेपुरुषार्थकात्यागकीयाहै॥ अ
रुकिसीऔरदेवकोंमानकरकहताहै॥ इहमेराकल्याणकरेगा॥ सोजन्मअरुमरण
कोंप्रापतहोवेगा॥ अरुशांतवाननहोगा॥ हेरामचंद्रइसजीवकोंसंसाररूपीविसूचका
रोगाहै॥ तिसकेदूरकरणेकाउपाइसेकहताहूं॥ संतजनअरुसतशास्त्रोंकेअर्थवि
षेद्रिढभावणाकरणी॥ जोकछुतिनोंनेसुनयाहै॥ तिसकावारंवारअभ्यासकरे॥ अरु
असभकल्याणकात्यागकरे॥ इकत्रहोइकरचितवनाकरे॥ तवइसकोंपरमपदकी
प्रापतहोवे॥ अरुद्वैतभ्रमनिवर्तहोजावे॥ अरुअद्वैतरूपपदआभासे॥ इसकानामपु
रुषार्थहै॥ इतिश्रीमत्प्रकरणेपरमपुरुषार्थवर्णनेनामषष्ठोसर्गः॥ ६ ॥

ॐ श्रीरामायनमः॥ वसिष्ठउवाच॥ हेरामचंद्र पुरुषार्थकरकेइसकोंअध्यात्मकआदि
रोगाआनप्रापतहोतेहैं॥ तिसकरकेदुहशांतकोंनहींपावता॥ तमनेरोगीनहींहोवा॥

णा॥ अपणेपुरुषार्थद्वाराजन्मअरुमरणकेवंधनतेंमुक्तहोवणा॥ अरुऔरकि
सीदेवमुक्तनहींकरणा॥ अपणेपुरुषार्थकरिसंसारवंधनतेंमुक्तहोवणाहै॥
जिनोंपुरुषोंअपणापुरुषार्थत्यागकीयाहै॥ अरुऔरकिसीदेवकोंमानकरतिस
परायणहूयेहैं॥ तिनकाधर्मअर्थकामनष्टहोजाताहै॥ अधःतेअधःगतकोंप्राप
तहोतेहैं॥ हेरामचंद्रशुधचेतन्यजोइसकाअपणाआपहै॥ अरुवास्तवरूपहै॥ ति
सकेआश्रयजोआदिचित्तसंवेदनजोफुरतीहै॥ तवइहफुरणासंतअरुशास्त्रोंके
अनुसारहोवे॥ तवपुरुषपरमशुधताकोंप्रापतहोताहै॥ अरुजोसंतशास्त्रोंकेअनुसा
रनहोवे॥ तववासनाकेअनुसारभावअभावजोभ्रमजालहै॥ तिसविषेघटाभटका
ताहै॥ घटीयंत्रकीन्याई॥ शांतवानकवहूंनहोवेगा॥ हेरामचंद्रजिसकिसीकोंसिधता
प्रापतहूईहै॥ सोअपणेपुरुषार्थकरहूईहै॥ पुरुषार्थविनासिधताकोंप्रापतनहो
वेगा॥ जोकिसीपदार्थकोंग्रहणकरणाहोताहै॥ तवभुजापसारीयेतवग्रहणहो
ताहै॥ अरुजोदेशकोंप्रापतहोवणाहै॥ तवचलकरजाईयेतोपहूचीये॥ अन्यथान
हींहोता॥ तोपुरुषार्थविनाकछुनाहीहोता॥ जोकोऊकहताहैदेवकरेगासोहोवेगा
सोमूर्षहै॥ हेरामचंद्रऔरदेवकोऊनहीं॥ इसकेपुरुषार्थकानामदेवहै॥ इहदेवपाइ
न्होंकापरचावाहै॥ जोकिसीकष्टसाथदुःषपाया॥ तिसकोंकहीएदेवकाकीयाहै
औरदेवकोऊनहीं॥ हेरामचंद्रजोपुरुषअपणापुरुषार्थत्यागकरदेवकेआश्रयहोर
हेगा॥ तोसुधताकोंनपावेगा॥ काहेतेजोअपणेपुरुषार्थविनासिधताकिसीको
प्रापतनहींहूई॥ अरुदेषहुस्पतिजीजोहैतिनोंद्रिढपुरुषार्थकीयाहै॥ तवसर्वदेवतोंकी
राजाईइंद्रकागुरूहूयाहै॥ अरुशुक्रजीअपणेपुरुषार्थद्वारासर्वदैत्योंकागुरूहूयाहै॥
अरुऔरजोसमानजीवहै॥ जिसपुरुषप्रयत्नकीयाहै॥ सोपुरुषउत्तमहूयाहै॥ ताते
जिसकोंसिधताविभूतिप्रापतभयेहै॥ सोअपणेपुरुषार्थकरकेप्रापतहूईहै॥ अरु
पुरुषोंनेसंतोंअरुशास्त्रोंकेअनुसारपुरुषार्थत्यागयाहै॥ तेसंवेदपतेदुषतेवडेराज
अरुधनअरुप्रजातेंअरुविभूततेंषीणहोगएहैं॥ अरुनरकोंविषेइजलतेहैं॥ जिस
करकेकछुअर्थसिधहोवे॥ तिसकानामपुरुषार्थहै॥ हेरामचंद्रइसपुरुषकोंकर
अपहीहै॥ जोसतशास्त्रअरुसंतोंकासंगकरबुधकोंतीषणकरे॥ अरुसमगुणकों
वृधिकरेदयाअरुधीरजअरुसंतोषअरुवैराग्यकेअभ्यासकरकेबुधकोंतीषणक
रे॥ अरुतीषणबुधकरकेइनकोंपुष्टकरे॥ जैसेवडेतालतेंसेवपुष्टहोतेहैं॥ वहुडव
धाककेउसकोंपुष्टकरतेहैं॥ तैसेसमगुणोंकरबुधपुष्टहोतीहै॥ पुष्टबुधकरसमगुण
पुष्टहोतेहैं॥ हेरामचंद्रजोवालकअवस्थातेलेकरअभ्यासकीयाहोता॥ तवइसकोंसद
तापापहोतीहै॥ अर्थइहजोद्रिढअभ्यासकरकेसद्रताप्रापतहोतीहै॥ अन्यथानहींहोती
जोकिसीदेशअथवातीर्थइसजावणाहोवे॥ तवमार्गकरकेनिरआलसहोइकरचल्याजा
वे॥ तोजाइपहूचेगा॥ अन्यथानपहूचेगा॥ अरुक्षुधानवानिवर्तहोवेगी॥ तोभोजनकरेगा
अन्यथानिवर्तनहोवेगी॥ अरुपाठनवस्थहोवेगा॥ तोमुषविषेजिह्वासथहोवेगी॥ गूं
गेसोंपाठनहींहोता॥ ताँतेजोकछुकार्यसिद्धहोताहै॥ सोपुरुषार्थअपणाहीकरसिद्धहोता
है॥ तूलीहोरहैतेकार्यकोऊसिद्धनहींहोता॥ अरुसमगुरुहीवेदहै॥ इनोंतेरहदेष॥ अ
राजोतेरीइछाहैसोकर॥ अरुजोमुक्तसोंपूछेतोसर्वशास्त्रोंकासिद्धांतकहताहूं॥ जिस
करकेसिद्धताकोंप्रापतहोवे॥ हेरामचंद्रसंतजोहैज्ञानवानपुरुष॥ अरुसतशास्त्रजोहैव
ह्मविद्यातिसकेअनुसारसंवेदनअरुमन॥ अरुइंद्रियोंकाविचारनाहोवे॥ अरुइनतेंवि
रुधहोवे॥ तिसतेंवर्जितहोवणा॥ तिसकरकेतुमकोंसंसारकारागअरुद्वेषस्पर्शनक
रेगा॥ सभतेनिर्लेपहोरहैगा॥ जैसेजलतेंकमलनिर्लेपरहताहै॥ तैसेतूंनिर्लेपरहे
गा॥ हेरामचंद्रजिनोंमहापुरुषोंनेंशांतप्रापतहोवे॥ तिनकीभलीप्रकारसेवनाकी
ये॥ काहेतेजोउनकावडाउपकारकारहै॥ जोसंसारसमुद्रतेंनिकासलेतेहैं॥ अरुसभ

कल्पनाकोत्यागकरअपणेपुरुषार्थकोअंगीकारकरो॥तवजन्मअरुमरणकाभयनि
वर्त्तहोजावै॥हेरामचंद्रजिसजिसकीइहवांछाकरताहै॥अरुतिसकेनिमित्तदृढपुरु
षार्थकरताहै॥तवअवश्यमेवतिसकोपावताहै॥अरुजोवडेतेजअरुविभूतिकरके
संपन्नलककोदृष्टआवतेहैं॥अरुसुणीतेहैं॥सोअपणेपुरुषार्थकरहूएहैं॥अरुजो
महानिकृष्टसर्पकीटआदिकलककोदृष्टआवतेहैं॥तिनअपणेपुरुषार्थकात्याग
कीयाहै॥तवऐसेहूएहैं॥हेरामचंद्रअपणेपुरुषार्थकोआश्रयकरो॥नहींतसर्पअरु
कीटादिकनीचजूनीकोप्रापतहोवैगे॥जिनोंपुरुषोंअपणापुरुषार्थत्यागकीयाहै॥
अरुकिसीओरदैवकाआश्रयथागाहै॥तेमहामूर्षहैं॥काहेतेंजोइहवारताव्यवहारविषे
भीप्रसिद्धहै॥अपणेउद्यमकीयेविनाकिसीपदार्थकोप्रापतकैसेहोवै॥तातेंदैवकों
त्यागकरकै॥संतजनअरुसतशास्त्रोंकेअनुसारयत्नकरो॥परमपदपावणेका॥जोदुः
षोंतेंमुक्तहोवै॥हेरामचंद्रजनार्दनजोविस्नुजीहै॥सोअवतारधारकरदैत्योंकोमार
ताहै॥अरुओरचेष्टाभीकरताहै॥परपापकास्पर्शतिसकोनहींहोता॥काहेतेंजोअपणे
पुरुषार्थकरकैअक्षयपदकोप्रापतहूयाहै॥तेसभीपुरुषार्थकाआश्रयकरो॥अरुसंसा
रसमुद्रतेंतरजावो॥इति श्री मुमुक्षुप्रकरणे पुरुषार्थउपमावर्णनंनामसप्तमसर्गः॥७॥

ॐचित्सदितिपरमात्मनेनमः॥वसिष्ठउवाच॥हेरामचंद्रइहजोदैवशब्दहै॥सो
मूर्खोंनेंकल्प्याहै॥जोदैवइहसारीरछ्याकरताहै॥इसकोंतोदैवकाआकारदृष्टनहींआवै
ता॥नकोऊदैवकाकालहीहै॥नदैवकछुकरताहीहै॥मूर्षलोगदैवदैवपडेकहतेहैं॥ओरदै
वकोऊनहीं॥इसकापूर्वलाकर्महीदैवहै॥हेरामचंद्रजिनोंपुरुषोंअपणापुरुषार्थत्या
गकीयाहै॥अरुदैवपरायणहोएहैं॥जोदैवहमाराकल्याणकरेगा॥तेमूर्षहैं॥काहेतें
जोअग्निविषेइहजाइपडे॥अरुदैवआइकरइसकोंनिकासलेवै॥तवजाणीयेकोऊदैव
भीहै॥सोतोनहीं॥अरुदैवकरताहै॥तौइहस्नानदानभोजनादिककोंत्यागकररहस्तीहो
वैदे॥आपेंदैवकरजावैगा॥सोभीनहींहोताइसकेकीयेविना॥तातेंओरदैवकोऊनहीं
अपणापुरुषार्थहीकल्याणकरताहै॥हेरामचंद्रजोइसकाकीयाकछुनहींहोता॥तव
दैवहीकरणेवालाहोता॥तौशास्त्रअरुगुरोंकाउपदेशभीनहोता॥अरुसंतशास्त्रकेउ
पदेशकरकै॥अरुअपणेपुरुषार्थद्वाराइसकोंवांछितपदकीप्रापतहोती॥तातेंओरजो
कोऊदैवशब्दहै॥सोव्यर्थहै॥इसभ्रमकोंत्यागकरकै॥अरुसंतअरुशास्त्रोंकेअनुसार
अपणापुरुषार्थकरै॥तवहीदुःखोंतेंमुक्तहोवेगा॥हेरामचंद्रओरदैवकोऊनहीं॥इस
कापुरुषार्थजोहैस्पंदसोइनामदैवहै॥हेरामचंद्रजोओरकोऊदैवकरणेहाराहोता
तौइहजवशरीरकोंत्यागताहै॥अरुशरीरशवहोजाताहै॥कयाशरीरसोंकछुहोतान
हीं॥काहेतेंजोचेष्टाकरणेहारात्यागजाताहै॥तौशवशरीरसोंभीचेष्टाकरावता॥सो
चेष्टाकछुनहींहोती॥तातेंजाणीताहैजोदैवशब्दव्यर्थहै॥हेरामचंद्रपुरुषार्थकीवा
र्तातौअज्ञानीजीवोंकोभीप्रत्यक्षहै॥जोअपणापुरुषार्थविनाहोताकछुनहीं॥सोपा
लभीजाणताहै॥मैंगावोंकोचरावोंनहींतोभुखीयारहैं॥तातेंओरदैवकेआश्रयतौवे
ठनहींरहता॥आपहीचरायलेआवताहै॥हेरामचंद्रओरदैवकेकल्पनाभ्रमकरकेकोते
हैं॥अरुदैवतोंइहकोदृष्टकोऊनहींआवता॥हस्तपादशरीरदैवकाकोऊदृष्टनहींआव
ता॥अपणेपुरुषार्थकरसिद्धहोतासभदृष्टआवताहै॥अरुजोकोऊआकारतेंरहित
हैदैवशब्दकल्पीये॥तौनहींबनता॥काहेतेंजोनिराकारअरुसाकारकासंयोगकैसे
होवै॥हेरामचंद्रअरुदैवकोऊनहीं॥अपणापुरुषार्थहीदैवरूपहै॥जोराजेभासते
हैं॥अरुसिद्धजोसिद्धीसंसंयुक्तभासतेहैं॥सोभीअपणेपुरुषार्थकरकैहूएहैं॥अरुका
लकरचिरपर्यंतरहतेहैं॥सोभीअपणेपुरुषार्थकरहूएहैं॥हेरामचंद्रइहविश्वामि
त्रहै॥इनोंदैवशब्दकोदूरतेंत्यागकीयाहै॥पुरुषार्थकरकेतब्रीतेंब्राह्मणहूयाहै॥अ

रुओरभीऋषीश्वरमुनीश्वरतेजवानहूएहैं॥सोअपणेहीपुरुषार्थकरहूएहैं॥अरु
ओरवडेवडेविभूतवानहूएहैं॥सोअपणेपुरुषार्थकरदृष्टआवतेहैं॥हेरामचंद्रजो
दैवकिसीकोंपाढविनापंडितकरे॥तौभीजाणीयेदैवकीया॥सोपाढविनापंडित
कोऊहोतानहीं॥अरुजोअज्ञानीज्ञानवानहोता॥सोभीअपणेपुरुषार्थकरहोतेहैं
ओरकरनहींहोते॥तातेंओरदैवकोऊनहीं॥मिथ्याभ्रमकोंत्यागकर॥संतजनअरु
सतशास्त्रोंकेअनुसारसंसारसमुद्रतेंतरणेकाप्रयत्नकरु॥तेरेपुरुषार्थविनाओरदैव
कोऊनहीं॥जोओरदैवहोता॥तौव्यवहारक्रियात्यागकरसोइरहते॥आपेदैवहीपा
डाकती॥सोऐसेतोकोऊनहींकरता॥तातेंअपणेपुरुषार्थविनासिद्धकछुनहींहो
ता॥अरुजोइसकाकीयाकछुनहोता॥तौपापकरणेवालानरकनजाता॥अरुपु
ण्यकरणेवालास्वर्गनजाता॥सोपापकरणेवालेनरककोजातेहैं॥अरुपुण्यकरणे
हारेस्वर्गकोंजातेहैं॥तातेंजोकछुप्रापतहोताहै॥सोअपणेपुरुषार्थकरहोताहै॥हे
रामचंद्रजोकोऊओरदैवकरताहोवै॥तौइसकासिरकाटीये॥अरुदैवकेआश्रयजीव
ताहै॥सोतोजीवताकोऊनहीं॥तातेंदैवशब्दमिथ्याभ्रमकोंत्यागकरसंतजनअरु
सतशास्त्रोंकेअनुसारअपणापुरुषार्थकरआत्मपदविषेस्थितहोवो॥इति श्री मु
मुक्षुप्रकरणेपरमपुरुषार्थवर्णनंनामअष्टमसर्गः॥८॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

ॐनमःसिद्ध॥वसिष्ठउवाच॥हेभगवनसर्वधर्मोंकेवेत्ता॥तुमकहतेहोओरदैवकोऊ
नहीं॥ओरदैवजोहै॥सोब्राह्मणभीकहतेहैं॥जोदैवकाकीयासभकछुहोता॥अरुसु
वड्यकादैवनहारादैवनहै॥इहलोकविषेप्रसिद्धहै॥वसिष्ठउवाच॥हेरामचंद्रमैं
तुझकोंऐसेकहताहौं॥जोतेराभ्रमनिवर्तहोजावे॥इसहीकाजोशुभअथवाअशु
भकर्मकीयाहूयाहै॥तिसकाफलअवश्यमेवभोगणाहै॥सोदैवकहीयेपुरुषार्थक
हीये॥ओरदैवकोऊनहीं॥अरुकर्ताक्रियाकर्मआदिकोंविषेतौदैवकोऊनहीं॥अरु
कोऊदैवकास्थाननहीं॥रूपनहीं॥तौओरदैवक्याकहीये॥हेरामचंद्रमूर्षोंकेपरचा
वणेनिमित्तदैवशब्दकहाहै॥जैसेआकाशशून्यहै॥तैसेदैवभीशून्यहै॥रामउवाच
हेभगवनसर्वधर्मोंकेवेत्तातुमकहतेहोजोदैवकोऊनहीं॥आकाशकीन्याईंशून्यहै
सोतुमओरकहणेकरभीदैवसिद्धहोताहै॥जोतुमकहतेहोइसकेपुरुषार्थकानामदैवहै
अरुजगतविषेभीदैवशब्दप्रसिद्धहै॥वसिष्ठउवाच॥हेरामचंद्रमैंऐसेतुमकोंकहताहौं
जिसकरदैवशब्दतेरेहृदेसोउठजावे॥तौअर्थस्पष्टहोजावेगा॥दैवनामअपणेपुरुषार्थ
काहै॥अरुपुरुषार्थनामकर्मकाहै॥अरुकर्मनामवासनाकाहै॥अरुवासनामनतेंहोती
याहै॥अरुमनरूपपुरुषहै॥जैसीवासनाकरताहै॥सोईइसकोंप्रापतहोताहै॥जोगिरांउ
कोंप्रापतहोवणेकीवासनाकरताहै॥तौगिरांउकोंप्रापतहोताहै॥अरुजोपत्तनकीवा
सनाकरताहै॥तौपत्तनकोंप्रापतहोताहै॥तातेंओरदैवकोऊनहीं॥पूर्वलाजोकोऊदृढपु
रुषार्थकीयाहै॥शुभअथवाअशुभतिसकापरिणामसुखअरुदुःखजोअपणेपुरुषार्थ
कर्मोंतेंभिन्न॥तौसुखदुःखदेवणेहाराअरुअपणेपेलनेहारादैवतोकोऊनहूयाक्यों॥अरु
जोपापकीवासनाकरताहै॥अरुशास्त्रविरुद्धकर्मकरताहै॥सोकिसकरकरताहै॥पूर्वजोइ
सकाइष्टपापकर्महै॥तिसकरइहपापकरताहै॥अरुजोपूर्वलापुन्यकर्मकीयाहोता
तौइहशुभमार्गविषेविचरताहै॥रामउवाच॥हेमुनीश्वरजोपूर्वलीदृढवासनाकर्मके
अनुसारइहविचरताहै॥तौअवमैंक्याकरों॥मुझकोंपूर्वलीयोंवासनोंनेदीनकीयाहै॥
अवमुझकोंक्याकर्त्तव्यहै॥वसिष्ठउवाच॥हेरामचंद्रकछुइसकीपूर्वलीवासनादृढहोरही
है॥तिसकेअनुसारइहविचरताहै॥परजोश्रेष्ठमनुष्यहै॥सोअपणेपुरुषार्थकरकेपूर्वले
मलीनसंस्कारोंकोंदूरकरतेहैं॥तिसकीमैलदूरहोजातीहै॥सतशास्त्रअरुज्ञानवानोंकेव
चनोंअनुसारदृढपुरुषार्थकरो॥तवमलीनवासनादूरहोजावेगीयां॥हेरामचंद्रपूर्व

लेमलीनपापकर्मकेसेजाणीये॥ अरुसुद्धकेसेजाणीये॥ सोश्रवणकरु॥ जोचित्तविष
योंकीओरधावे॥ अरुशास्त्रविरुद्धमार्गकीओरधावे॥ अरुसुभकीओरुनधावे॥ तवजाणीये
जोकोऊइहवेलामलीनहै॥ अरुजोसंतजनोंअरुसतशास्त्रोंकेअनुसारचेष्टाकरे॥ अरुसं
सारमार्गतेंविरक्तहोवे॥ तवजाणीयेजोइहवेकर्मसुद्धहै॥ तातेंहेरामचंद्रतुझकोंदोनों
करकेंसिद्धताहै॥ जोइहवेलासंस्कारसुद्धहोवे॥ तोंतेराचित्तशीघ्रहीसतसंगअरुसत
शास्त्रोंकेवचनोंकोग्रहणकरलेवेगा॥ अरुशीघ्रहीतुझकोंआत्मपदकीप्राप्तहोवे
गी॥ अरुजोतेराचित्तअसुभमार्गविषेस्थितनहींहोसकता॥ तोंतेंदृढपुरुषार्थकरु
जोसंसारसमुद्रतेंपारहोवे॥ हेरामचंद्रतूंचेतन्यहै॥ जडतोनहीं॥ अपणेपुरुषार्थका
आश्रयकरो॥ मेराभीएहीआशीर्वादहै॥ जोतुमाराचित्तशीघ्रहीसुभमार्गविषेस्थितहो
वे॥ हेरामचंद्रश्रेष्ठपुरुषभीउहीहै॥ अरुब्रह्मविद्याकाजोसिद्धांतसारहै॥ तिसविषे
स्थितहोवे॥ हेरामचंद्रपुरुषउहीहै॥ जिनकाइहवेलासंस्कारकर्मयद्यपिमलीनभी
था॥ परसंतजनअरुसतशास्त्रोंकेअनुसारदृढपुरुषार्थकाआश्रयकीयाहै॥ अरुसिद्धं
कोंप्राप्तहूयेहै॥ अरुजोमूर्षहै॥ तिनोंनेअपणापुरुषार्थत्यागकीयाहै॥ तातेंसंसा
रतेंमुक्तनहींहोते॥ इहवेलाजोकोऊपापकर्महोताहै॥ तिसमलीनताकेंपापकोंधा
वतेहै॥ अरुपुरुषार्थकेत्यागणेतेंविशेषकरधावतेहै॥ जोश्रेष्ठपुरुषहै॥ तिनकोंइह
कर्तव्यहै॥ प्रथमेतोअपणीयोंपांचोंइंद्रियांवशकरणीयां॥ शास्त्रकेअनुसारतिनकों
वर्तावणा॥ जोसुभवासनाइहढकरणी॥ अरुविरुद्धकात्यागकरणा॥ यद्यपित्यागणी
दोनोंवासनाहै॥ परप्रथमसुभवासनाकोंएकत्रकरणा॥ अरुअसुभत्यागकरणा॥ ज
वसुभवासनाकरकेंकषायपकहोवेगा॥ तवइहदेविषेसंतोंअरुसतशास्त्रोंकाजोहै
सिद्धांततिसकाविचारउत्पन्नहोवेगा॥ तिसविचारद्वारातुझकोंआत्मज्ञानकीप्राप्त
होवेगी॥ तिसज्ञानद्वाराआत्मपदकीप्राप्तहोवेगी॥ वहुरइहतिज्ञानकाभीत्यागहो
जावेगा॥ केवलसुद्धअद्वैतरूपअपणाअवबोधभासेगा॥ तातेंहेरामचंद्रगोरसभकल्प
नाकोंत्यागकरसंतजनअरुसतशास्त्रोंकेअनुसारपुरुषार्थकरो॥ इतिश्रीमुमुक्षुप्रक
रणेपरमपुरुषार्थवर्णनंनामनवमसर्गः॥९॥
॥वसिष्ठउवाच॥ हेरामचंद्रमेरेवचनोंकोग्रहणकरु॥ कैसेवचनहै॥ जोबांधवहै॥ बां
धवकहीयेजोतेरेपरममित्रहोवेंगे॥ अरुदुःखोंतेंपररक्षाकरेंगे॥ हेरामचंद्रइहजो
मोक्षउपायतुझकोंकहताहो॥ तिसकेअनुसारतूंपुरुषार्थकरु॥ तवपरमअर्थतेरासि
द्धहोवेगा॥ इहचित्तजोसंसारकेभोगोंओरधावताहै॥ तिनोंभोगोंरूपीगर्तविषेचित्तकों
डिगणेनदेइ॥ भोगोंकोविरसजाणकरत्याग॥ इहत्यागतेरापरममित्रहोवेगा॥ अरुत्या
गभीऐसाकरु॥ जोवहुरइहभोगोंकाग्रहणनहोइ॥ हेरामचंद्रइहमोक्षउपायकैसाहै॥ संहि
ताहै॥ चित्तएकाग्रकरकेइसकोंश्रवणकरु॥ तिसकरपरमानंदकीप्राप्तहोवेगी॥ प्र
थमेशमअरुदमकोंधार॥ शमअर्थयहजोसंपूर्णसंसारकीवासनाकात्यागकरु॥ अरु
उदारताकरकेंतृप्तरहणा॥ अरुदमअर्थयहजोबाह्यइंद्रियोंकोवशकरणा॥ जवइन
कोंप्रथमधारेगा॥ तवपरमतत्वकाविचारआनउत्पन्नहोवेगा॥ तिसविचारविवेकद्वा
रापरमपदकीप्राप्तहोवेगी॥ जिसपदकोंपाइकरवहुरदुःखीकदाचितनहोवेगा॥
अविनाशीसुखतुझकोंआनप्राप्तहोवेगा॥ तातेंजोकछुइहमोक्षउपायसंहिताहै
तिसकेअनुसारपुरुषार्थकरु॥ अरुसंसारकेवासनाकात्यागकरु॥ तवआत्मपदकों
प्राप्तहोवेगा॥ इहवेजोकछुमुझकोंब्रह्माजीउपदेशकीयाहै॥ सोमेंतुझकोंउपदेशक
हताहों॥ रामउवाच॥ हेमुनीश्वरतुमकोंब्रह्माजीउपदेशकीयाथा॥ सोकिसकारण
करकीयाथा॥ अरुकैसेतुमोंधारासोमुझकोंकहो॥ वसिष्ठउवाच॥ हेरामचंद्रसच्चिदा
काशएकहै॥ अरुअनंतहै॥ अविनाशीहै॥ परमानंदस्वरूपहै॥ चिदानंदस्वरूपहै॥ ब्रह्म
है॥ तिसविषेजोसंवेदनस्पंदरूपहूईहै॥ सोविस्नुरूपहोइकरस्थितभई॥ सोविस्नुजी

केसेहै॥ जोस्पंदअस्पंदविषेएकरसहै॥ कदाचित॥ अन्यथाभावकोंनहींप्राप्तहूया॥ जै
सेंसमुद्रतेंतरंगउपजताहै॥ तैसेंसच्चिदाकाशतेंस्पंदकरकेंविस्नुउत्पन्नहोया॥ तिस
विस्नुजीकेस्वर्णवनकरणीकानाभकमलतेंब्रह्माजीप्रगटभया॥ तिसब्रह्माजीतेंरि
षमुनीश्वरसहितस्थावरजंगमप्रजाउत्पन्नकरी॥ जैसेंमनोराजकरिकेंकोऊपुरुषर
चलेवे॥ तैसेंमनोराजकरब्रह्माजगतकोंउत्पन्नकीया॥ तिसजगतकीकोणविषे
जोजंवूदीपभरतखंडहै॥ तिसविषेमनुष्योंकोंदुःखकरतदेख्या॥ देखकरब्रह्माजीकों
करुणाउत्पन्नभई॥ जैसेंपुत्रकोंदुःखीदेखकरपिताकोंकरुणाउपजतीहै॥ तवतिन
केसुखकेनिमित्तब्रह्माजीनतपकोंउत्पन्नकीयाजोसुखीहोवेंगे॥ अरुआज्ञाकरीजोत
पकरो॥ तवजीवतपकरनेभए॥ तिसतपकरस्वर्गआदिकोंकोंजाइप्राप्तहोवणेलगे॥
तिनसुखकोंभोगकरवहुरगिरे॥ तेदुःखीहीरहे॥ ऐसेंब्रह्माजीदेखकरसत्यवाकधर्म
कीप्रतिपादनाकरतभये॥ तिनकोंसुखकेनिमित्तशिक्षाकरी॥ तिसधर्मकोंप्रतिपाद
नाकरसुखलोकोंकोंप्राप्तहोवणेलगे॥ तहांकेताककालसुखभोगकरवहुर
गिरहि॥ वहुरदुःखीकेदुःखीरहे॥ वहुरब्रह्माजीनेदानतीर्थादिकसुभकर्मउत्प
नकरकेंतिनकोंआज्ञाकरी॥ जोइनकेसेवनेकरसुखीहोवोगे॥ तवउहजीवतिनकों
सेवणेलागे॥ तिसकेसेवनेकरकेंवडेपुण्यलोकोंकोंप्राप्तहूए॥ अरुतिनकेसुखभो
गणेलागे॥ केताककालअपणेकर्मोंकेअनुसारभोगकरवहुरगिरे॥ तवत्रिसा
कंकेंवहुरदुःखीहूए॥ अरुदुःखकरआतेहूये॥ तवब्रह्माजीदुःखितभया॥ जोजन्मअरुमर
णेकेदुःखकरकेंमहादीनवहूतेहै॥ तातेंसोईउपायकरीये॥ जिसकरइनकादुःखनि
वर्तहोवे॥ हेरामचंद्रब्रह्माजीविचारतभया॥ जोइनकादुःखब्रह्मज्ञानविनानिवर्त
नहींहोता॥ तातेंआत्मज्ञानकोंउत्पन्नकरीये॥ जोइहसुखीहोवे॥ इसप्रकारविचारक
रब्रह्माजीआत्मतत्वकाध्यानकरतभया॥ आत्मतत्वकेज्ञानकासंकल्पकीया॥ तिस
ध्यानकेकरणेकरकेंसुद्धजोतत्वज्ञानहै॥ तिसकोंमूर्तिहोइकरमेंप्रगटभया॥ सोमेंकै
साहों॥ जोब्रह्माजीकेसमानहों॥ जैसेंउनकेहाथविषेकमंडलहै॥ तैसेंमेरेहाथ
विषेकमंडल॥ अरुजैसेंउनकेकंठविषेरुद्राक्षकीमाला॥ तैसेंमेरेकंठविषेरुद्राक्ष
कीमाला॥ जैसेंऊनकेऊपरमृगछाला॥ तैसेंमेरेऊपरमृगछाला॥ ऐसाहूए॥ इसप्रका
रब्रह्माजीकाअरुमेरासमानहीआकार॥ अरुस्वरूपमेराभीसुद्धज्ञानरूप॥ अरुजगत
मुझकोंकछुनभासे॥ स्वप्नवतमुझकोंजगतभासता॥ तवब्रह्माजीविचारकीया
जोइसकामेंजीवोंकेकल्याणनिमित्तउत्पन्नकीयाहै॥ अरुइहतोसुद्धज्ञानरूपहै॥
अरुज्ञानकाउपदेशमार्गतवहोवे॥ जोकछुप्रश्नउत्तरहोवे॥ अरुतत्वमिथ्याकावि
चारहोवे॥ हेरामचंद्रजीवोंकेकल्याणनिमित्तमुझकोंगोदविषेवैठाया॥ अरुसी
परहाथफेरया॥ तिसकरमेंशीतलहोगया॥ जैसेंचंद्रमाकीयांकिरणोंकरशीत
लहोताहै॥ तैसेंमेंशीतलभया॥ तवब्रह्माजीमुझकोंकहा॥ जैसेंहंसकोंहंसकहै॥
हेपुत्रजीवोंकेकल्याणनिमित्तएकमुहूर्तपर्यंततूंअज्ञानकोंअंगीकारकर॥ ॥
श्रेष्ठपुरुषअरुकिनिमित्तभीअंगीकारकरतेआएहै॥ जैसेंचंद्रमावहुतनिर्मल
है॥ अरुश्यामताकोंअंगीकारकीयाहै॥ तैसेंतूंभीएकमुहूर्तअज्ञानकोंअंगीकारकरु
मैंतुझकोंसरापदेताहों॥ तिसकोंअंगीकारकरु॥ हेरामचंद्रइसप्रकारजवमुझकों
कहकरब्रह्माजीसरापदीया॥ जोतूंअज्ञानीहोवेगा॥ तवमैंब्रह्माजीकीआज्ञामान
करसरापकाअंगीकारकीया॥ तवमेराजोसुद्धआत्मतत्वअपणाआपथा॥ तिस
मेंअल्पकीन्याईहोतभया॥ अपणीस्वभावसत्तामुझकोंविस्मरणहोगई॥ तिस
काविस्मरणहोवणा॥ अरुमेरामनजागआया॥ भावअभावरूपजगतमुझकों
भासणेलागा॥ अरुआपकोंमैंवसिष्ठजाणनेलागा॥ जाणताभया॥ अरुब्रह्मा
जीकापुत्रआपकोंजाणताभया॥ अरुनानाप्रकारकेपदार्थोंसहितजगतकों

जाणताभया॥ अरुतिनकीगैरचंचलहोतभया॥ तबमैंसंसारभ्रमजालकोंइषहूय
जाणकरब्रह्माजीकेपासोंप्रश्नभया॥ हेभगवनयहसंसारभ्रमकैसेउत्पनहूयाहै
अरुकैसेलीनहोताहै॥ हेरामचंद्रजबइसप्रकारमैंपितासोंजीसोंप्रश्नकीया॥ तबभ
लेप्रकारमुझकोंउपदेशकरतभए॥ तिसकरमेराअज्ञानतमनिवर्तहोगया॥ जैसेसू
र्यकेउदेहूएतमनिवर्तहोजाताहै॥ तैसेमेराअज्ञानतमनष्टहोगया॥ तममैंसहतोकों
प्रापतभया॥ जैसेआदर्शकोंमार्जनकरीताहै॥ अरुस्वछहोआवताहै॥ तैसेमैंस्वधहूया
हेरामचंद्रमैंकैसाहो॥ जोब्रह्माजीतेंभीअप्रथकहोतभया॥ तबमुझकोंपरमेष्टीब्रह्मा
जीनेंआज्ञाकरी॥ हेसुतजंबूदीपभारतखंडविषेजाइ॥ तुझकोंसृष्टपर्यंतअधिकारहै॥
तहांजाइकरजीवोंकोंउपदेशकरु॥ जोसंसारकेसुखोंकोंचाहतेहै॥ ऐसीइछाजिनकों
होवेगी॥ तिनकोंकर्ममार्गकाउपदेशकरणा॥ तिसकरस्वर्गादिकसुषभोगेगे॥ अरु
जोसंसारतेंविरक्तहोवेगे॥ जिनकोंआत्मपदकीइछाहोवेगी॥ तिनकोंज्ञानकाउपदे
शकरणा॥ तौतेंअवहैभूलोकविषेजाइ॥ हेरामचंद्रइसप्रकारमेराउपजाणाहूयाहै
इतिश्रीमुमुक्षुप्रकरणेज्ञानावतारवर्णनंनामदशमसर्गः॥ ॥ वसिष्टउवाच
हेरामचंद्रइसप्रकारमैंप्रथिवीविषेआवतभयाहों॥ कैसामैंहोंज्ञानहीबोलतेहै जि
सकों॥ तिसकरमुझकोंब्रह्माजीउत्पनकरतभयाहै॥ रामउवाच॥ हेभगवनतिसज्ञा
नउपजनेकेअनंतरजीवोंकीबुधकैसेहोतभईसोकहो॥ वसिष्टउवाच॥ हेरामचंद्र
सहजोआत्मतत्वहै॥ तिसकास्वभावरूपसंवेदनफुरीहै॥ सोब्रह्मरूपहोकरस्थितः
भईहै॥ जैसेसमुद्रअपणीद्रवताकरकेतरंगरूपहूयाहै॥ तैसेब्रह्माजीहोतभयाहै॥
बहुडइसंकल्पणेंजगतउत्पनकीया॥ अरुतीनोकालउत्पनकीये॥ जबकीताकालवि
तीतहूया॥ अरुकलयुगआया॥ तिसकरजीवोंकीबुधमलीनहोगई॥ अरुपापविषे
विचरणेलागे॥ शास्त्रवेदकीआज्ञाकोंमाननेतेंरहगए॥ इसप्रकारधर्मकीमर्यादाछ
पनहोगई॥ अरुपापप्रगटभया॥ जेतीकछुराजकीमरजादाथी॥ अरुधर्मकीमरजादा
थी॥ सोसभनष्टहोगई॥ अरुअपणीअपणीइछाकोंअनुसारजीवविचरणेलागे॥ तबक
ष्टपावणेलागे॥ तिनकोंदेषकरब्रह्माजीकोंकरुणाउपजी॥ तिसदयाकोंधारकरमुझमि
लोकविषेमुझकोंभेजया॥ अरुकहाहैपुत्रजाइकरतुमधर्मकीमर्यादास्थापनकरो
अरुजीवोंकोंशुभउपदेशाकरो॥ जिनकोंभोगोंकीइछाहोवे॥ तिनकोंकर्मकांडकाउप
देशकरणा॥ अरुजोसंसारतेविरक्तहूएहै॥ अरुमुक्तहै॥ परमपदकेपावणेकीइछा
जिनकोंहै॥ तिनकोंब्रह्मविद्याकाउपदेशकरणा॥ हेरामचंद्रजिसप्रकारमुझेआज्ञा
करभूमिलोकविषेभेजतेभए॥ तैसेहीसनतकुमारआदिकोंकोंभीकहतेभए॥ अरु
नारदादिकोंकोंभीकहतेभए॥ तबहमसविभीचारएकदेहोइकरविचारकरतेभए॥ जो
किसीप्रकारजगतकीमर्यादाहोवे॥ अरुजीवसुभमार्गविषेविचरे॥ तबहमोंनेइह
विचारकीया॥ जोप्रथमेराजयोंकोंउत्पनकरीये॥ जोजीवतिनकीआज्ञाअनुसारवि
चरे॥ अथसेइइकरताराजस्थापनकरीये॥ तबहमोंनेराजेस्थापनकीएदेशोंके॥ कैसे
राजेजोवडेवडेवीर्यवान॥ अरुतेजवान॥ वडेउदारआत्मासोंराजेहोतभए॥ तिनरा
जोंकोंहमनेअध्यात्मविद्याउपदेशकरी॥ तिसउपदेशकरपरमपदकोंप्रापतहोत
भए॥ जोपरमानंदरूपअविनाशीपदहै॥ तिसब्रह्मविद्याकाउपदेशतिनकोंभया॥
तोसर्वोहूए॥ इसकारणेंतेंब्रह्मविद्यानामराजविद्याहै॥ हेरामचंद्रतबहमोंनेवेदः
शास्त्रस्मृतिपुराणकरधर्मकीमर्यादास्थापनकरी॥ जोजपतपदानयज्ञस्नानादि
कक्रियाकोंप्रगटकीया॥ जोअरजीवोंतुमसहनकेसवनेकरकेसुषीहोवोगे॥ तबति
नकोंसेवणेलागे॥ जोफलकोंधारकरतिनविषेकोउविरलानिह्कामहृदेसहकेः
निमितभीकरे॥ हेरामचंद्रजोमूर्खथे॥ सोकामनाफलोंकाकरेअरुकर्मोंकोसेवे॥ अ
रुघटीयंत्रकीन्याई॥ भटकनेफिरेअधःकोंभीअरुऊरधकोंभीअरुजोनिह्कामकरे

तिनकाहृदाशुद्धहोवे॥ बहुडविद्याकेअधिकारीहोवहि॥ तबउनकोंज्ञानउपदेशहोता
आत्मपदकीप्रापतहोवे॥ इसप्रकारकईजीवनमुक्तहूए॥ कईराजाविदितवेदहूए॥ हे
रामचंद्रइसप्रकारराजयोंकोंपरंपराइसारेउपदेशद्वाराज्ञानकीप्रापतहोतभई॥ अ
रुइहराजादशरथभीज्ञानवानहूया॥ अवतूंभीराजकुमारज्ञानप्रापतहूयाहै॥ सो
तूंसभतेंश्रेष्टहै॥ जैसातूंविरक्तआत्माहै॥ तैसाआगेकोऊनहीहूया॥ स्वभावकविरः
देसइककेंहूयाहै॥ इसीकारणतेंतूंश्रेष्टहै॥ जोकोऊअनिष्टदुषप्रापतहोताहै॥ तिस
करविरक्तताउपजतीहै॥ सोतुझकोंऐसेनहीउपजी॥ तुझकोंसमबुद्धियोंविषय
भीविद्यमानहै॥ तिनकेहोतेजोवैरागउपजाहै॥ तुझकोंतातेंतूंश्रेष्टहै॥ हेरामचंद्रअ
पदादिकजोकष्टकेस्थानहै॥ तिनकोंदेषकरसभकोंवैरागउपजताहै॥ जोकछु
नहीमरजावणाहै॥ तिसविषेभीजोकोऊश्रेष्टपुरुषहोताहै॥ जोतिनकोंदृष्टहोजा
ताहै॥ औरजोतूंषहै॥ सोविषयोंविषेअपशताहोजातेहै॥ तातेंजिनकोंअकारणवै
रागउपजाहै॥ सोश्रेष्टहै॥ हेरामचंद्रजोश्रेष्टपुरुषहै॥ सोअपणेवैरागअरुअभ्यासके
बलकरकेसंसारकेबंधनतेंमुक्तिहोजातेहै॥ जैसेहस्तीवंधनकोंतोडकरनिकसः
ताहै॥ अपणेबलसों॥ तबसुषीहोताहै॥ तैसेहीवैरागअभ्यासकेबलकरबंधनतेंमु
क्तहोताहै॥ हेरामचंद्रइहसंसारवडाअनर्थरूपहै॥ जिनोंपुरुषोंनेअपणेपुरुषार्थ
करकेइसकोंनहीतोडया॥ तिनकोंरागअरुद्वेषरूपीअग्निपडीजलावतीहै॥ अरु
जेउसपदकोंप्रापतहूएहै॥ तिनकोंअध्यात्मकअधिदैवकअधिभूतकतापजला
इनहीसकते॥ जैसेवर्षाकालविषेजोसहृतवर्षाकेहोतेवनकोंअग्निकेलाटाः
जलाइनहीसकतीयां॥ तैसेज्ञानीकोंअध्यात्मकादितापकष्टनहीदेइसकते॥ हेरा
मचंद्रजिनोंश्रेष्टपुरुषोंनेंसंसारकोंविरसजाणकरत्यागाहै॥ तिनकोंसंसारकेप
दार्थगिडाइनहीसकते॥ अरुजोमूर्षहै॥ तिनकोंगिडाइदेतेहै॥ जैसेअधेरीजोहैती
षणपवणकावेगसोगोरहछोंकोंगिडावताहै॥ पररकलपवृक्षकेगिडावनेकोंस
मर्थनहीहोता॥ हेरामचंद्रश्रेष्टपुरुषभीउहीहै॥ जिनिकोंसंसारविरसहोगयाहै
केवलआत्मतत्वकीइछाकरतेहै॥ अरुतिसीपरायणहूएहै॥ ब्रह्मविद्याकाअधिकार
भीतिनहीकोंहै॥ अरुउतमपुरुषभीउन्हीहै॥ हेरामचंद्रतसभीतैसेउजलपात्रहै
जैसेकोमलपृथिवीविषेबीजबोवीताहै॥ तैसेमैंअवतुझकोंउपदेशकरताहों॥ अरु
जिनकोंभोगोंकीइछाहै॥ अरुसंसारकीरजनाकरतेहै॥ तेपशुवतहै॥ श्रेष्टपुरुषनेः
ईहै॥ जिनकोंसंसारकेतरणेकापुरुषार्थहूयाहै॥ हेरामचंद्रअबभीतिसीसोंकरीये
जोजाणीयेमेरेप्रश्नकेउतरदेवणेकोंसमर्थहै॥ अरुजोदेषीयेमेरेप्रश्नकेउतरदेवः
णेकोंसमर्थनही॥ तबतिससोंप्रश्ननकरीये॥ अरुजोउत्तरदेवणेकोसमर्थदेषीए
अरुतिसकेवचनविषेआस्तिकभावनानहोवे॥ तबप्रश्नउसप्रतिनकरीये॥ काहेतेः
जोदंभकरप्रश्नकरणापापीहोताहै॥ अरुगुरुभीउपदेशतिसकोंकरेजोसंसारतेंवि
रक्तहोवे॥ अरुकेवलआत्मपरायणजिसकोंश्रद्धाहोवै॥ अरुआस्तिकभावहोवे॥ ऐसे
पात्रकोंदेषकरउपदेशाकरे॥ पात्रविनाउपदेशनकरे॥ हेरामचंद्रगुरुअरुसिष्यदो
नोउत्तमहोतेहै॥ तबवचनशोभतेहै॥ सोतूंभीउपदेशकाश्रेष्टपात्रहै॥ तैतेकछुगु
णशास्त्रोंविषेवर्णनकीयेहै॥ सोसभहीशुभगुणतेरेविषेपाइतेहै॥ अरुऐसेभीः
कहरोंउपदेशकरणेकोंसमर्थहों॥ तातेंकार्यशीघ्रहोवेगा॥ हेरामचंद्रशुभगुण
साथतेरेबुधनिर्मलहोइरहीहै॥ मेरेजोसिद्धांतकासारवचनहै॥ सोतेरेहृदेविषे
प्रवेशकरजावेगे॥ जैसेउजलवस्त्रकोंकेसरकारंगशीघ्रचडजाताहै॥ तैसेतुझकों
उपदेशलगजावेगा॥ अरुजैसेसूर्यकेचडेहूए॥ सूर्यमुषीकमलषिडावतेहै॥ तैः
सेतेरीबुधशुभगुणोंकरषिडाईहै॥ हेरामचंद्रजोकछुशास्त्रोंकासिद्धांतआत्मतत्वः

जैसेमृकेतरणकों
अगनिजलावती
है तैसेउनकोंरागद्वेष
जलावताहै

मैंनफकोंकहताहै॥ तिसविषेतेरीबुद्धशीघ्रहीप्रवेशकरजावेगी॥ जैसेउजलविषे
सूर्यकीक्रांतिप्रवेशकरजातीहै॥ तैसेतेरीबुद्धआत्मतत्वविषेप्रवेशकरजावेगी
सुइताकरकै॥ तोकछुमैंनफकौंउपदेशकर्ताहो॥ तिसविषेतूंआस्तिकभावनाक
रु॥ तोअनेंवचनोंकरमेराकल्याणहोवैगा॥ अरुजोतूंकेधारणानहोवे॥ तोभ्र
महीमतकरो॥ जिससिष्यकोंगुरुकेवचनोंविषेआस्तिकभावनाहोतीहै॥ तिस
काशीघ्रकल्याणहोताहै॥ तातेंमेरेवचनोंविषेआस्तिकभावनाकरु॥ अरुजिस
तूंआत्मपदकोंप्रापतहोवे॥ सोमैंकहताहों॥ अप्रमत्तहूहकरु॥ जोअज्ञानीजीवों
विषयाउहीयोंकासंगत्याग॥ अरुमोक्षद्वारकेजोचारद्वारपालकहैं॥ तिनसों
मित्रभावकरु॥ तबतिनसोंमैत्रीभावकरैगा॥ तबमोक्षद्वारकेअंतरवाडदेइगे॥ तो
आत्मदर्शनतूंफकोंहोवेगा॥ द्वारपालकोंकानामश्रवणकरु॥ शमऔरसंतोषअ
रुविचारअरुसंतोंकेसंगतइहचारोंद्वारपालकहैं॥ जिसपुरुषइनकोंवसकीयाहै
तिसकोंइहशीघ्रहीमोक्षरूपद्वारकोंअंतरवाडदेवेंगे॥ रामचंद्रजीजोसभवसनहो
वे॥ तोत्रयहोवे॥ अथवादोहीहोवे॥ अथवाएकहीहोवे॥ तोभीचारोंआवेंगे॥ इन
चारोंकापरस्परस्नेहहै॥ जहांएकभीआवताहै॥ तहांचारोंआनस्थितहोतेहैं॥ जि
सनेइसकेसाथस्नेहकीयाहै॥ तेसुखीभएहैं॥ अरुजिनोंइकात्यागकीयाहै॥ तेदुखी
हैं॥ हेरामचंद्रयद्यपिप्राणोंत्यागहोवे॥ तोभीएकतोबलकरकेवशकरीये॥ एक
केवशहूएचारोंवशआवेंगे॥ अरुतेरीबुद्धविषेसभगुणोंनेआइनिवासकीयाहै॥
जैसेसूर्यविषेसर्वप्रकाशआएहहैं॥ तैसेसतशास्त्रअरुसंतोंकरजोनिर्मलगुण
कहेहैं॥ तेसभहीतेरेविषेपाईतेहै॥ हेरामचंद्रअबतूंमेरेवचनोंकाअधिकारीहै॥ जैसेत
डीकेसुणनेकाअडोराअधिकारीहोताहै॥ अरुसभगुणोंकरतेरीबुद्धिषिडाईहै॥ जैसेचंद्र
माकेउदेहूएचंद्रमुखीकमलखिडावताहै॥ हेरामचंद्रसतशास्त्रअरुसंतोंकीसंगतद्वारा
बुद्धकोंतीक्षणकीयेतेशीघ्रहीआत्मतत्वविषेप्रवेशकरताहै॥ तातेंश्रेष्ठपुरुषवडहीहै॥
जिनोंसंसारकोंविरसजाणकरत्यागकीयाहै॥ अरुसतशास्त्रअरुसंतोंकेवचनविचार
द्वाराआत्मपदपावणेकायत्नकरतेहैं॥ अरुअविनाशीपदकोंप्रापतहोतेहैं॥ अरुजोस
भमार्गकोंत्यागकरसंसारकीओरलागेहैं॥ तेमहामूर्खहैं॥ अरुजडहै॥ जैसेजलरहइजड
ताकरकेजडरूपहोजाताहै॥ तैसेउहअज्ञानीहटमूर्खताकरकेआत्ममार्गसोंजडहो
जातेहैं॥ हेरामचंद्रअज्ञानीकेहृदेरूपीबिलविषेदुरआसारूपीसर्परहताहै॥ कदावि
तशांतकोंनहीप्रापतहोता॥ अरुआनंदकरप्रफुलतकदाचितनहीहोता॥ अरुआशा
करसदासकचयारहताहै॥ जैसेअग्निविषेघ्रसपायासकचजाताहै॥ हेरामचंद्रआत्म
पदकेसाक्षातकारविषेआशाहीआवर्णहै॥ जैसेसूर्यकेआगेमेघकाआवर्णहोताहै॥ तै
सेआत्मपदकेआगेदुराशाआवर्णहै॥ जबआशारूपीआवर्णनिवृत्तहोवे॥ तबआत्मपद
कासाक्षात्कारहो॥ अरुआशानवहूरहोवे॥ जोसंतोंकीसंगतअरुसतशास्त्रोंकाविचार
होवे॥ हेरामचंद्रसंसाररूपीएकवडावृक्षहै॥ तिसकोंबोधरूपीषड्गकरकेछेदो॥ त
बसतशास्त्रअरुसतसंगकरतीक्षणबुद्धहोवे॥ तबसंसारवृक्षनष्टहोवे॥ जहांसभगु
णहोतेहैं॥ तहांआत्मज्ञानभीआनविराजताहै॥ जैसेजहांकमलहूलहोतेहैं॥ तहां
भ्रमरेभीआनस्थितहोतेहैं॥ हेरामचंद्रगुणरूपपवनकरजबइच्छारूपीमेघनिवृ
तहोताहै॥ तबआत्मरूपीचंद्रमासाक्षात्कारहोताहै॥ जैसेचंद्रमाकेउदेहूएआकाशशो
भताहै॥ तैसेआत्माकेसाक्षात्कारहूएतेरेबुद्धशोभेगी॥ इतिश्रीवक्तापश्नवर्णननामेकाद
शसर्गः॥ ॥

श्रीहरिॐ

वसिष्टउवाच

हेरामचंद्रअबतूंमेरेवचनोंकाअधिकारीहै॥ काहेतेंजोतपवैराग्यविचारसंतोषआदि
कजोसभगुणशास्त्रअरुसंतोंकहेहैं॥ सोसभहीतेरेविषेपाईतेहै॥ तातेंमेरेवचनोंको

सुण॥ परंतुकिसप्रकारसुण॥ जोरजसतमगुणोंत्यागकरशुद्धसात्विकभावहोयकर
सुण॥ राजसजोइहविषयपरअरुतामसजोइहलयहोजावणा॥ तिन्हाविषेतिनहोनों
कात्यागकरकेसुण॥ जैसेकछुजरणासीकेगुणशास्त्रोंवर्णनकीयेहैं॥ तिनकीआव
लीपंक्तितेरेविषेपाईतीहै॥ अरुजैसेकछुगुरोंकेगुणशास्त्रोंवर्णनकीयेहैं॥ तिस
आवलीपंक्तिकरमैंसंपन्नहों॥ जैसेसमबस्त्रोंकरसमुद्रसंपन्नहोताहै॥ तैसेमैंसंप
न्नहों॥ तातेंमेरेवचनोंकातूंअधिकारीहै॥ अरुमूर्खइनोंवचनोंकाअधिकारीनहीं॥
हेरामचंद्रजैसेचंद्रमाउदेहोताहै॥ तबचंद्रकांतमणिद्रवीभूतहोतीहै॥ अर्थवहद्र
वतीहैंअरुपत्थरनद्रवताहै॥ औरजोपथरकीयाशिलाहै॥ तिनोंतेंनहीद्रवता॥ तैसे
जहांजरणासीहोताहै॥ तिसकोंपरमार्थवचनलगतेहैं॥ अरुअज्ञानीकोंनहीलगा
ते॥ हेरामचंद्रजोसिष्यसतपात्रहोवे॥ अरुउपदेशकरणेवालाज्ञानवाननहोवे॥ त
बभीउससिष्यकोंआत्मासाक्षात्कारनहीहोता॥ जैसेचंद्रमुखीकमलनीनिर्मलभी
होवे॥ परचंद्रमानहोवे॥ तबप्रफुलतनहीहोती॥ तातेंतूंमोक्षकापात्रहै॥ अरुमैंभी
परमगुरुहों॥ मेरेउपदेशकरतेराअज्ञाननष्टहोवेगा॥ सोमोक्षउपायकहताहों॥ तिस
कोंतूंभलेप्रकारविचारेगा॥ तबजैसाकछुमननतूंनेमनकीयाहतीहै॥ तिनकाअभा
वहोजावेगा॥ ऐसेमहाप्रलयकेसूर्यसंदराचलपर्वतआदिकजलजातेहैं॥ तातें
हेरामचंद्रवैराग्यअरुअभ्यासकेबलकरइसमनकोंआपणेविषेलीनकरु॥ जोशां
तआत्माहोवे॥ इंनोवालअवस्थातेलेकरअभ्यासकरखेआयाहै॥ तातेंमनकोंउप
समकरु॥ जोआत्मपदकोंप्रापतहोवे॥ हेरामचंद्रजिनोंसतशास्त्रअरुसंतोंकेसंग
द्वाराआत्मपदकोंपायाहै॥ तेईसुखीभएहैं॥ वहुडदुखउनकोंनहीलागता॥ काहेते
जोउहदेहअभिमानकरहोताहै॥ सोदेहकाअभिमानउनोंत्यागयाहै॥ जैसेसर्पकं
चुकोंत्यागताहै॥ अरुआत्मताकर्केग्रहणनहीकर्ता॥ तैसेजिसदेहकाअभिमा
नत्यागयाहै॥ सोदेहवहुडआत्मताकरकेग्रहणनहीकरता॥ तातेंसर्वदासुखीरह
ताहै॥ हेरामचंद्रआत्माकाबलधारकरविचारद्वाराआत्मपदकोंपायाहै॥ तेअ
कृतमआनंदकरसदाहर्षीहैं॥ सभजगततिनकोंआनंदरूपभासताहै॥ अरुजो
असम्यकदर्शीहैं॥ तिनकोंजगतअनर्थरूपभासताहै॥ हेरामचंद्रसंसाररूपजो
सर्पहै॥ सोअज्ञानीकेहृदेविषेदृढहोगयाहै॥ सोयोगरूपगरुडमंत्रकरके
नष्टहोताहै॥ अन्यथानष्टनहीहोता॥ अरुऔरसर्पादिकोंकाजोविषहै॥ सोएक
जन्मविषेमारताहै॥ अरुसंसाररूपीजोविषहै॥ तिसकरकेअनेकजन्मोंकोंमा
रताहूयाचल्याजाताहै॥ शांतवानकदाचितनहीहोता॥ हेरामचंद्रजिनोंपुरुषों
नेसतसंगअरुसतशास्त्रोंकेविचारद्वाराआत्मपदकोंपायाहै॥ तेआनंदीभएहैं॥ अ
रुअंतरबाह्यसभजगततिनकोंआनंदरूपभासताहै॥ अरुसभक्रियाकर्मविषे
तिनकोंआनंदविलासहै॥ अरुजिनोंसतसंगअरुसतशास्त्रोंकाविचारत्यागया
है॥ अरुसंसारकेसन्मुखहूएहैं॥ तिसकरतिनकोंसंसारअनर्थरूपहै॥ अरुऐसे
दुखदेताहै॥ जैसेसर्पकेडंगनेतेदुखीहोवीताहै॥ अरुशस्त्रोंकरघाइलहूएदुखी
होवीताहै॥ अरुअग्निकेन्याईउनकोंसंसारजलावताहै॥ अरुजेवडीयोंसाथगं
धीतेहैं॥ जैसेअंधकूपविषेगिरनेकष्टपाईताहै॥ सोकष्टपावतेहैं॥ हेरामचंद्र
जिनोंपुरुषोंनेसतसंगअरुसतशास्त्रोंकेविचारद्वाराआत्मपदकोंनहीपाया
तेऐसेकष्टकोंपावतेहैं॥ नरकोंकीअग्निविषेजलतेहैं॥ अरुचक्कीविषेपीसतेहैं
अरुपाषाणोंकीवर्षाकरचूर्णहोवीतेहैं॥ जंभविषेपीडीतेहैं॥ अरुशस्त्रोंसाथक
टीतेहैं॥ इत्यादिकजोबडेकष्टहैं॥ सोतिनकोंप्रापतहोतेहैं॥ रामचंद्रऐसादुखको

कुनहीं॥ जो इनजीवोंकोनहींप्रापतहोता॥ आत्मकेप्रमादकरसभदुषहोतेहैं॥ अरु
जिनोंपापोंकोइहरमणीकजाणतेहैं॥ सोचककीन्याईंचंचलहैं॥ स्थिरकदाचितन
हींरहते॥ सतमार्गकोंत्यागकरजोतिनकीइछ्याकरतेहैं॥ सोसहाइदुःखकोंप्रापतहो
तेहैं॥ अरुजिनोंपुरुषोंनेइससारकोंविरसजाणाहै॥ अरुइहदुषरूपजाणाहै॥ अरुप
रमार्थकीओरहहोइहैं॥ तिनकोंआत्मपदकीप्रापतहोतीहै॥ हेरामचंद्रजिनपुरु
षोंकोंआत्मज्ञानकीदृढइछ्याहुईहै॥ तिनकोंदुषकदाचितनहींहोता॥ अरुजोति
नकेइछनष्टनहोते॥ तोज्ञानकेनिमित्तपुरुषार्थकोऊनकरतो॥ जोअज्ञानीहैं॥ तिन
कोंसंसारदुषरूपहै॥ अरुज्ञानीकोंसर्वजगतआनंदरूपप्रत्यक्षभासताहै॥ द्वैतभ्रम
कोऊनहींभासता॥ हेरामचंद्रज्ञानवानविषेनानाप्रकारकीचेष्टाभीदृष्टआवती
है॥ तोभीसदाशांतरूपहै॥ अरुआनंदरूपहै॥ संसारकादुषउसकोऊनहींस्पर्श
ता॥ काहेतेंज्ञानरूपीकवचकोंपहराहै॥ हेरामचंद्रजोज्ञानवानकोंभीदुषहोता
है॥ तोवडेजोब्रह्मरिषअरुराजरिषअरुओरभीज्ञानवानहूएहैं॥ तोभीदुषकोंस
हारनसकते॥ दुषकरअज्ञानहोजाते॥ सोज्ञानवानज्ञानकाकवचपहराहै॥ तातेंदु
षकोऊनहींस्पर्शकर्ता॥ सदाआनंदरूपहै॥ जैसेब्रह्माविस्नुरुद्रनानाप्रकारकीचे
ष्टाकरतेअरुजीवोंकोंदृष्टआवतेहैं॥ परसदाशांतरूपहैं॥ इसप्रकारओरभीज्ञान
वानजोउत्तमपुरुषहैं॥ सोशांतरूपहैं॥ कर्तृत्वकाअभिमानउनकोनहींफुरता॥ हे
रामचंद्रअज्ञानरूपीजोमेघहै॥ अरुतिसविषेमोहरूपीकुहीडहै॥ सोज्ञानरूपी
सर्तकालककेनष्टहोगईहै॥ तांतेपरमस्वछताकोंप्रापतहूएहैं॥ अरुसदाआनं
दकरकेपूर्णहैं॥ हेरामचंद्रजोकछुक्रियाकरतेहैं॥ सोउनकोंविलासरूपहै॥ अरुस
भजगतआनंदरूपहै॥ अरुशरीररूपीरथहै॥ अरुइंद्रियांरूपीअस्वहैं अरुमनरूपी
लगामवारजसमानहै॥ जोसोअस्वोंकोंपैंचीताहै॥ पेंचयतहै॥ अरुबुद्धरूपीरथवा
हीहै॥ तिसरथविषेइहपुरुषवैठाहै॥ अरुइंद्रियांरूपीअस्वविरुद्धमार्गविषेडार
तीयांहै॥ अरुज्ञानवानकेरथकेअस्वरूपीइंद्रियांश्रेसहै॥ जोजहांजातीहैं॥ तहां
हीआनंदरूपहै॥ किसीठौरविषेषेदनहीं॥ सदासर्वक्रियाविषेउनकोंविलासहै॥
इतिश्रीमनूस्वरूपकरणेतत्वतमहात्मवर्णनेनामद्वादशसर्गः॥१२॥ ॥ ॥
ॐश्रीतत्वात्मनेनमः॥ वशिष्ठउवाच॥
हेरामचंद्रश्रेसीदृष्टकोंआश्रयकरु॥ जोतेरादृढापुष्टहोवे॥ अर्थइहजोवलपा
वै॥ वहुरुसंसारकेइष्टअनिष्टविषेचलायमाननहोवे॥ हेरामचंद्रजिनोंपुरुषों
कोइसप्रकारआत्मपदकीप्रापतभईहै॥ तेपरमआनंदभएहैं॥ नशोककरतेहैं
नकछुयाचनाकर्तेहैं॥ हेयअरुउपादेयतेरहतपरमसत्यरूपी॥ अस्थलकरकेपूर्ण
होरहेहैं॥ हेरामचंद्रउहपुरुषनानाप्रकारकीचेष्टाभीकरतेदृष्टआवतेहैं॥ अरु
कछुनहींकरते॥ जहांउनकेमनकीवृत्तिजातीहै॥ तहांआत्मसत्ताहीपडीभास
तीहै॥ आत्मआनंदकरपूर्णहोरहीहै॥ जैसेपूर्णमासीकाचंद्रमाअमृतकरकेपू
र्णहोताहै॥ तैसेज्ञानवानपरमानंदकरपूर्णहोताहै॥ हेरामचंद्रइहजोमैनेतुझ
कोंअमृतरूपीवृत्तिकहीहै॥ इसकोंतवजाणेगा॥ जवतुझकोंआत्मतत्वकासा
क्षात्कारहोवेगा॥ तवइसकोंआत्मज्ञानकीप्रापतहोतीहै॥ तवसभदुषन
ष्टहोजातीहै॥ जैसेचंद्रमाकेमंडलविषेतपतनहींहोती॥ तैसेज्ञानीकोंकदाचि
तदुषनहींहोता॥ अरुअज्ञानीकोंशांतकदाचितनहींहोती॥ जोकछुक्रियाक
रताहै॥ तिसविषेदुषहीपावताहै॥ सुषकोंनहींपावता॥ जैसेकिकरकेवृक्षसों
कंटकपडेउत्पनहोतीहैं॥ तैसेअज्ञानसोंदुषपडेउत्पनहोतेहैं॥ हेरामचंद्रअसजी

वकोंमूर्षताकेकेवडेदुषउत्पनहोतेहैं॥ श्रेसादुषप्रथिवीतलकोऊनहीं॥ अरुकिसीअ
आपदाकरभीश्रेसादुषनहींहोता॥ ओरभीश्रेसादुषकोऊनहीं॥ जैसादुषमूर्षताकर
पाईताहै॥ हेरामचंद्रजोहाथविषेठीकराहोवे॥ अरुचंडालोंकेगृहभिक्षामांगे॥ तो
भीओरपदार्थतेंश्रेष्ठहै॥ परआत्मपदकीजिज्ञासाहोवे॥ मूर्षताविषेजीवणाअछ्युं
है॥ तिसमूर्षताकेहरकरणेकेअर्थमोक्षउपायमैंकहताहों॥ हेरामचंद्रइहमो
क्षउपायवोधकापरमकारणहै॥ कछुकवुद्धसंस्कृतहोवे॥ अर्थइहजोपदपदा
र्थकेजाणनेवालीहोवे॥ अरुमोक्षशास्त्रकोंविचारे॥ तोतिसकीमूर्षतानिवृत्तहो
जावेगी॥ अरुआत्मपदकीप्रापतहोवेगी॥ जैसेआत्मवोधकाकारणइहशास्त्रहै
तैसाओरत्रिलोकीविषेकोऊनहीं॥ नानाप्रकारकेदृष्टांतोंसहितइतिहासकथा
है॥ तिसकोजवइहविचारेगा॥ तवपरमानंदकोंप्रापतहोवेगा॥ अरुअज्ञानरू
पीतमकेनाशकरणेकोंज्ञानरूपीदीपशिलाकाहै॥ अरुजैसेअंधकारकोंसूर्यनाश
कर्ताहै तैसेअज्ञानकोंइहशास्त्रविचारकीयेतेनाशकर्ताहै॥ हेरामचंद्रजिसप्रकारइ
सकाल्याणहोताहै॥ सोश्रवणकरु॥ गुरुजोज्ञानवानहै॥ सोशास्त्रकाउपदेशकरे॥ अरु
आपणीअनुभवहोवे॥ तवगुरुअरुशास्त्रअरुआपणीअनुभवतीनोंएकठेमिले॥ तवइ
सकाकल्याणहोवे॥ जवलगअकृतमआनंदनहींप्रापतभया॥ तवलगइहअभ्यासक
रै॥ तिसअकृतमआनंदकेप्रापतकरणेहारेइहमगुरुहैं॥ इसजीवकीइहममित्रहैं॥ श्रेसा
मित्रओरकोऊनहीं॥ जैसेइहममित्रहैं॥ इहसारीसंगतइसजीवकोंआनंददेवणहारीहै॥
तांतेजोकछुमैंकहताहों॥ सोसुनकरु॥ हेरामचंद्रइहजोसंसारकेभोगहैं॥ सोक्षिणकहैं॥ तां
तेइनकात्यागकरु॥ सुषक्षिणकहैं॥ अरुपरिणामविषेअनंतदुषहैं॥ इनकोंविषरूपजाण
करत्यागि॥ अरुसंसारतेंज्ञानवानोंकासंगकरु॥ अरुइहमारेवचनोंकोंवारंवारविचारे॥ तातें
तेरेदुषनष्टहोजावेंगे॥ हेरामचंद्रजिसपुरुषइहमारेसाथप्रीतकरीहै॥ तिसहमआनंदप
दकीप्रापतकरीहै॥ अरुजिसकोंपाइकरब्रह्मादिकआनंदीभएहैं॥ अरुओरज्ञानवानआ
नंदीहूएहैं॥ तिसनिर्दुषपदकोंसोप्रापतहोताहै॥ जोइहमारेसाथप्रीतकर्ताहै॥ हेराम
चंद्रश्रेष्ठपुरुषसोईहै॥ जिसनेसंतोंकेसंगतअरुसतशास्त्रोंकेविचारद्वारादृश्यकोंअ
दृश्यताकोंप्रापतकीयाहै॥ अरुनिर्भयहूयाहै॥ आत्माकाअप्रमादइसकोंदीनकर्ताहै॥ अ
ज्ञानीकाहिदेरूपीकमलतवलगसंकुचयारहताहै॥ जवलगअविद्यारूपीरात्रहोती
है॥ जवज्ञानरूपीसूर्यउदेहूया॥ तवविद्यारूपीरात्रिनष्टहोजावेगी॥ अरुहिदारूपीका
मलआनंदकरषिडआवेगा॥ हेरामचंद्रजिनोंपुरुषोंनेपरमार्थमार्गकोंत्यागयाहै॥ अ
रुसंसारकेषानपानादिकभोगोंविषेमगनहूएहैं॥ तिनकोंतूंदूरजाण॥ जैसेकीचवि
षेदुइपडेदादुरकरतेहैं॥ तैसेहीउहपुरुषहैं॥ हेरामचंद्रइहसंसार॥ वडीआपदाकास
मुद्रहै॥ जोकोऊश्रेष्ठपुरुषहै॥ सोसंतोंकीसंगतअरुसतशास्त्रोंकाविचारकरकेतिसतेंउ
लंघतहोताहै॥ अरुपरमानंदपदकोंप्रापतहोताहै॥ अरुआदिअंतमध्यतेंरहितनिरा
वाधपदकोंप्रापतहोताहै॥ अरुजोसंसारसमुद्रकेमत्स्यहूयाहै॥ सोदुषोंतेदुषपदकों
प्रापतहोताहै॥ कष्टतेंकष्टतरनरकतेंनरककोंप्रापतहोताहै॥ जैसेविषकोंजाणेजो
इहविषहै॥ अरुउसकोंपानकरे॥ तोविषउसकोनाशकरताहै॥ तैसेजिनोंपुरुषोंसं
सारकोंअसतरूपजाणाहै॥ अरुवहुडसंसारकेपदार्थोंकीओरयत्नकरतेहैं॥ तेमरनकों
प्रापतहोवेंगे॥ हेरामचंद्रजोपुरुषआत्मपदतेंवेमुषहैं॥ अरुआपकोंकल्याणरूपइ
जाणतेहैं॥ जैसेकिसीकेगृहकोंअग्निलागे॥ अरुइहभीतृणोंकाहोवे॥ अरुतिसविषे
तृणोंकीशय्याकरकेशयनकरेहैं॥ तोनाशतांकोंप्रापतहोवेगा॥ तैसेउहभीजन्ममरन
कोंप्रापतहोवेंगे॥ अरुजिससंसारकेपदार्थोंकोंदेषकररागहैवानहोतेहैं॥ सोदुष
सुषश्रेसेहैं॥ जैसेविजलीकाचमतकारहोताहै॥ अरुमिटजाताहै॥ स्थिरनहींरहता

तैसेसंसारकास्वरूपभ्रममात्रपायाहै॥ हेरामचंद्रइहसंसारअविचारकेभासताहै॥ अरु
विचारकीयेतेलीनहोजाताहै॥ जोविचारतेलीननहोता॥ तौतुमकोभीदोसनहोता॥
सोतौविचारकीयेतेलीनहोजाताहै॥ इसीतेपुरुषार्थकहीताहै॥ जैसेहाथविषेदीपहो
वै॥ अरुअंधेकूपविषेगिरै॥ तौमूर्षताहै॥ तैसेसंसारभ्रमकेनिवर्तिकरणेवालेसंतअ
रुसतशास्त्रभीविद्यमानहोवै॥ अरुतिनकीशरणनजावै॥ तौमूर्षताहै॥ हेरामचंद्रजि
नोंपुरुषोंनेसंतोंकीसंगतअरुअरुसतशास्त्रोंकेविचारद्वाराआत्मपदकोंपायाहै॥ ते
पुरुषकेवलकेवलीभावकोंप्राप्तहूएहै॥ अर्थयहजोसद्चेतन्यकोंप्रापहूएहै॥ अरु
संसारभ्रमतिनका निवर्तहोगयाहै॥ हेरामचंद्रअरुसंसारमनकेसंसरणेतेउत्पतहूया
है॥ सोइसकाकल्याणबोधवींकरनहीवणा॥ अरुतीर्थोदाकरहावयोंकरभीनहीहोव
णा॥ नअपणीयांभुजानेउंरैइष्यजैकरहोवणा॥ एकमनकेजीतणेकरकेकल्याणहोवै
गा॥ हेरामचंद्रतिसीकोंज्ञानपरमपदकहतेहै॥ अरुतिसहीकोंरसायणकहतेहै॥
जिसकेपाइतेनाशनहोवै॥ अमरहोताहै॥ अरुसभसुषोंकीसंगणनाहोतीहै॥ अरुतिस
कासाधनसमताअरुसंतोषहै॥ शमअरुसंतोषकर्केंज्ञानउत्पन्नहोताहै॥ सोआत्म
ज्ञानकैसाहै॥ ज्ञानइपोएकहाहै॥ तिसकास्थूलक्षोहै॥ अरुस्थिततिकाकहतेहै॥ जि
सपुरुषकोंज्ञानप्राप्तहूयाहै॥ सोज्ञानवानहूयाहै॥ हेरामचंद्रजोपुरुषज्ञानवानहै
सोसदानिर्लेपरहतेहै॥ तिनकोंसंसारकाभावअभावरूपस्पर्शकछुनहीहोता॥ जै
सेआकाशविषेसूर्यउदेहोताहै॥ तौजगतकीक्रियाहोतीहै॥ अरुजोअस्तहोजाताहै
तवक्रियाभीजगतकीलीनहोजातीहै॥ तैसेतिसक्रियाकेहोवणे॥ अरुनहोवणेवि
षेआकाशज्योंकात्योंहै तैसेज्ञानवानसदानिर्लेपहै॥ तिसआत्मज्ञानकेउत्पतका
उपाइइहसेवाशास्त्रश्रेष्टहै॥ हेरामचंद्रजोपुरुषइससोक्षउपाइकोंश्रद्धासंयुक्तजि
सदिनपढने॥ अरुसुणनेलागे॥ तिसहीदिनइसकोंमोक्षभागीजाणीये॥ अरुमोक्षके
चारद्वारपालमैनकहेकोंकहेहै॥ सोइनोविषएकभीअपणेवशआवै॥ तवमोक्षद्वार
विषेइसकाप्रीअद्वीप्रवेशहोवै॥ तिनचारोंकाअववविस्तारश्रवणकर॥ हेरामचंद्रइक
शमइसकोपरमविश्रामकाकारण॥ अरुइहसंसारजोदेषीताहै॥ सोमारूथलकी
नदीवतहै॥ तिसकोंदेषकरमूर्षअज्ञानीरूपजोमराहै॥ सोसमरूपजलकोंजाणकर
दौडताहै॥ परशांतकोंनहींप्राप्तहोता॥ जवशमरूपीमेघकीवर्षाहोवै॥ तवसुषी
होताहै॥ अन्यप्रासुषीनहीहोता॥ हेरामचंद्रशमहीपरमानंदहै॥ अरुशमपरमप
दहै॥ जिसपुरुषशमकोंपायाहै॥ सोसंसारसमुद्रतेपारहूयाहै॥ अरुतिसकोंशत्रुभी
मित्रहोजातेहै॥ हेरामचंद्रजहांचंद्रमाआनउदेहोताहै॥ तहांअमृतकीयांकिरणां
पड़ीयाकुरतीयांहै॥ अरुशीतलताहोतीहै॥ तैसेजिसकीहृदेविषेसमरूपेचंद्रमा
उदेहोताहै॥ तिसकीसर्वतपतमिटजातीहै॥ अरुपरमशांतवानहोताहै॥ हेराम
चंद्रसमकरकेइसकोपरमशोभाहोतीहैउजल॥ जैसेविस्नुकेदोइदेहहै॥ एकअप
णेशरीरविषेरहताहै॥ इसवासनेतोविषरहताहै॥ तैसेइसकेदोइदेहोतेहै॥ एकशरी
रविषहसवासमभीइसकाहृदाहोताहै॥ हेरामचंद्रअैसाआनंदअमृतकेपानकीये
नहीहोता॥ अरुलक्ष्मीकेप्राप्तहूएभीनहीहोता॥ जैसाआनंदसमकरहोताहै
अरुअैसाआनंदराजाकोंभीनहीहोता॥ जोवासिष्टहमैत्रीहोतीहै॥ अरुअंतरसुंद
रस्त्रीयांहोतीयांहै॥ जैसाआनंदसमसपन्नपुरुषकोंहोताहै॥ हेरामचंद्रजिसपुरुष
कोंसमप्राप्तभईहै॥ सोवंदनाकरणेकेयोगहै॥ जिसकोंसमताप्राप्तभईहै॥ ति
सनेलोकइहैरागनहीपावता॥ अरुलोकोंतेउहउद्वेगनहीपावता॥ उसकीह
कोंयांकिरणांशीतलअरुअमृतरूपहै॥ अरुसमकोहृदेअंगमहै॥ तैसेसंतजनों

केवचनहै॥ जिसपुरुषकोंसमप्राप्तहूएहै॥ तवइसजीवकोंउसकोंसंगतप्रा
पतभईहै॥ तवपरमआनंदीहोताहै॥ हेरामचंद्रजैसेवालकमाताकोंपाइकरआ
नंदमानहोताहै॥ जिसकोंसमकीप्राप्तभईहै॥ तिसकामनराजिसकोंप्राप्तहो
ताहै॥ सोवालकतेभीअधिकआनंदमानहोताहै॥ जैसेकिसीकावांधवमूयाहूया
फिरआवै॥ अरुउसकोंआनंदप्राप्तहोताहै॥ तिसतेभीअधिकआनंदशमसंपन्नके
संगतेपुरुषकोंहोताहै॥ हेरामचंद्रअैसाआनंदचक्रवर्तीराजके
अरुत्रिलोकीकेराजपाएतेभीनहीहोता॥ जैसाआनंदशमपाएतेहोताहै॥ जिसकों
शमकीप्राप्तभईहै॥ तिसकेशत्रुभीमित्रहोजातेहै॥ अरुतस्करकाभयउसकोनही
रहता॥ सर्पकाभयभीउसकोनहीहोता॥ सिंहकाभयभीनहीहोता॥ अरुभीभयकि
सीकानहीहोता॥ सर्वदाशांतरूपहोताहै॥ हेरामचंद्रजोकोइकष्टआनप्राप्तहोवै
अरुप्रलयकालकीअग्निआनलगे॥ तोभीवलाइमाननहीहोता॥ सदाशांतरूपर
हताहै॥ जैसेशीतलचांदनीचंद्रमाविषेस्थितहोतीहै॥ तैसेजोकछुसमयगुणअरु
संपदाहै॥ सोसमहीशमसंपन्नपुरुषकेहृदेविषेआनस्थितहोतेहै॥ हेरामचंद्रजो
पुरुषअध्यात्मकआदितापोंकरविषयजलताहै॥ अरुउसकेहृदेविषेशमकीप्राप्त
होवै॥ तवतापमिटजाताहै॥ अरुजैसेतपतपृथ्वीवर्षाकरशीतलहोजातीहै॥ तैसे
उसकाहृदाशीतलहोजाताहै॥ जिसकोंशमकीप्राप्तभईहै॥ सोसमक्रियाविषेभी
आनंदरूपहै॥ तिसकोंदुषकोऊनहींस्पर्शकर्ता॥ जैसेवज्रशिलाकोंवाणनहींवेध
सकता॥ तैसेजिनोंपुरुषोंशमरूपकवचपहिराहै॥ तिनकोंअध्यात्मकआदिताप
वेधनहींसकते॥ उहसर्वदाशीतलरूपरहताहै॥ हेरामचंद्रतपस्विअरुपंडतअरु
यज्ञकरावणेवालाअरुधनाढ्यभीपूजामानकरणेकोंजोगहै॥ परजिसकोंसम
प्राप्तभईहै॥ सोसभतेउत्तमहै॥ अरुसभनोंकोंपूजनेयोगहै॥ उसकेमनकीजावृत्ति
है॥ सोआत्मतत्वकोंग्रहणकरतीहै॥ अरुशमकरपूर्णहै॥ अरुसमक्रियाविषेसोसमता
है॥ अरुजिसपुरुषकोंशब्दस्पर्शरूपरसगंधइंद्रीयांकेइष्टअनिष्टविषेरागअरुद्वेष
नहीं॥ तिसकोंशांतआत्माकहतेहै॥ हेरामचंद्रजोपुरुषसंसारकेरमणीकपदार्थों
विषेवंधमाननहीहोता॥ अरुआत्मानंदकरतृप्तहै॥ तिसकोंशांतवानकहतेहै॥
जोशांतवानहै॥ सोसंसारकेशुभअशुभकरमलीननहीहोता॥ सदानिर्लेप
रहताहै॥ जैसेआकाशसभपदार्थोंतेनिर्लेपरहताहै॥ तैसेशमवानपुरुषनिर्ले
परहताहै॥ हेरामचंद्रअैसाजोपुरुषहै॥ सोइष्टविषयोंकोप्राप्तविषेसंतुष्टवान
भीदृष्टआवताहै॥ अरुअनिष्टकीप्राप्तविषेद्वेषमानभीदृष्टआवताहै॥ अरुअंतरतेस
दाशांतवानहै॥ कोऊदुषउसकोंदुषनहीदेता॥ अपणेआपविषेसदापरमानंदरूपरहै
जैसेसूर्यकेउदेहूएअंधकारनष्टहोजाताहै॥ तैसेशांतकेपाएतेसभदुषनष्टहोजा
ताहै॥ हेरामचंद्रउहपुरुषसभचेष्टाभीकरतेदृष्टआवतेहै॥ परसदानिर्गुणरूपहै
कोइक्रियाउनकोंस्पर्शनहीकरती॥ जैसेजलविषेकमलनिर्लेपरहताहै॥ तैसेशां
तवानसदानिर्लेपरहताहै॥ हेरामचंद्रजोपुरुषशमतेरहितहै॥ तिनकाचित्तषिण
षिणविषेरागद्वेषकरपड़ाछेदीताहै॥ अरुजिसकोंशांतकीप्राप्तहूईहै॥ सोअंतर
वाहरतेशीतलहै॥ अरुसदाएकरसहै॥ जैसेहिमालयपर्वतशीतलहोताहै॥ तैसेउह
पुरुषशीतलहोताहै॥ अरुमुखकीकांतभीवहुतसुंदरहोजातीहै॥ जैसेनिष्कलंक
चंद्रमाहोताहै॥ तैसेशांतवानकीनिष्कलंककांतहोतीहै॥ हेरामचंद्रजिसकोंशां
तप्राप्तहूईहै॥ सोपरमआनंदीहै॥ अरुपरमलाभतिसहीकोंप्राप्तभयाहै॥ अरु
ज्ञानीतिसकोंपरमपदकहतेहै॥ अरुपुरुषार्थजोकरणाहै॥ जिसकरइसकोंशांतकी
प्राप्तहोवै॥ तांतेहेरामचंद्रजैसेमैंकहाहै॥ तिसक्रमकरकेशांकोंग्रहणकरो॥ तव
संसारसमुद्रकेपारकोंप्राप्तहोवो॥ इतिश्रीमुमुक्षुप्रकरणेशमनिरूपणंनामत्रयोदशः॥

सर्गः ॥ २३ ॥ वसिष्ठ उवाच ॥ हे रामचंद्र अब तें विचार का निरूपण सुण ॥ जब इहदा सङ्ग होः
ता है ॥ तब इसको विचार उपजता है ॥ अरु शास्त्र के अर्थ विचार द्वारा जब वड़ती क्षण होः
ता है ॥ तब शीघ्र ही आत्मपद को प्रापत होता है ॥ हे रामचंद्र अविचार रूपी जो वन है ॥
तिस विषे आपदा रूपी वल्लीयां उत्पन होतीयां है ॥ तिसको विचार रूपी खड्ग कर के
काटे ॥ तब शांत आत्मा होवे ॥ अरु मोह रूप हस्ती है ॥ अरु जीवों के हृदे रूपी कमलों
को खंड खंड पड़ा करता है ॥ अर्थ इह जो इष्ट अरु अनिष्ट पदार्थों विषे राग द्वेष करके खे
दता है ॥ जब विचार रूपी सिंह प्रगटे ॥ तब मोह रूपी हस्ती को नाश करे ॥ अरु इह शांत
आत्मा होवे ॥ हे रामचंद्र जिसको कछु सिद्धता प्रापत भई है ॥ सो विचार अरु पुरुषार्थ
कर प्रापत भई है ॥ अरु राजा जो होता है ॥ सो प्रथम विचार करके पुरुषार्थ करता है ॥ ति
सके राज्य को प्रापत होता है ॥ अरु बल बुद्ध अरु तेज अरु चतुर्थ जो पदार्थ का आगम
न अरु पंचम पदार्थ की प्रापत होती है ॥ सो इह पांचों भी विचार करके प्रापत होती है ॥ व
ल अर्थ यह जो इंद्रियों को जीतणा ॥ अरु मन को जीतणा ॥ अरु बुद्ध अर्थ यह जो आत्माः
को व्यापणा ॥ अरु तेज अरु पदार्थ का आगमन प्रापत विचार कर होता है ॥ हे रामचंद्र
जिनों पुरुषों ने विचार का आश्रय लीया है ॥ सो इष्ट विचार करके जिसको वांछा करते है
तिसको पावते है ॥ तातें विचार इसका परम मित्र है ॥ जो विचारवान पुरुष है ॥ सो आप
दा विषे मगन नहीं होता ॥ जैसे तूंबा जल विषे डूबती नहीं ॥ तैसे उह आपदा विषे न
हीं डूबता ॥ हे रामचंद्र विचार संयुक्त इह जो कछु देता है लेता है क्रिया करता है ॥ सो सभः
सिद्धता का कारण होती है ॥ धर्म अर्थ काम मोक्ष चारों पदार्थ विचार की दृढता कर सि
द्ध होते है ॥ विचार रूपी कल्प वृक्ष है ॥ तिस विषे जिसका अभ्यास करीता है सोई पदा
र्थ सिद्ध होता है ॥ हे रामचंद्र सत्य आत्म का विचार दृढ करो ॥ अरु आत्म ज्ञान को प्रापतः
होवो ॥ जैसे दीपक करके पदार्थ ज्ञान प्रापत होता है ॥ तैसे विचार करके आत्म ज्ञान प्रापतः
होता है ॥ जिस पुरुष विचारक के सत अरु असत को जाण्या है ॥ अरु असत्य को त्याग कर
सत्य को ऊरयत्न कीया है ॥ सो विचारवान कहाता है ॥ हे रामचंद्र संसार रूपी समुद्र विः
षे आपदा रूपी तरंग है ॥ जो विचारवान पुरुष है ॥ सो संसार के भाव अथवा अभाव विषे
कष्ट को नहीं प्रापत होता ॥ जो कछु विचार संयुक्त क्रिया होती है ॥ तिसका परिणाम सुख
होता है ॥ अरु जो विचार विना चेष्टा होती है ॥ तिसकर दुख प्रापत होता है ॥ हे रामचंद्र
अविचार रूपी करीर वृक्ष का बूटा है ॥ तिसते दुख रूपी कंटक पड़े उत्पन होते है ॥ अरु अवि
चार रूपी रात्रि है ॥ तिस विषे तृष्णा रूपी पिशाचनी आन विचरती है ॥ अरु जब विचार रू
पी सूर्य उदे होता है ॥ तब अविचार रूपी रात्रि अरु तृष्णा रूपी पिशाचनी नष्ट हो जाती
है ॥ हे रामचंद्र मेरा इह आशीर्वाद है ॥ जो तुमारे हृदे सों अविचार रूपी रात्रि विचार रू
पी सूर्य कर नष्ट होवे ॥ अविचार करके संसार दुख उदे होता है ॥ अरु विचार कीये तें संसार
दुख नष्ट हो जाता है ॥ जैसे बालक अविचार करके अपणी परछाईं को वेताल कल्पकरः
भय को पावता है ॥ अरु विचार कीये तें भय नष्ट हो जाता ॥ तैसे अविचार करके संसार दु
ख भय को देता है ॥ अरु संत शास्त्रों की युक्त कर विचार कीये तें संसार भय नष्ट हो जाता है
हे रामचंद्र जहां जहां विचार है ॥ तहां तहां दुख नहीं रहते ॥ जैसे जहां जहां प्रकाश हो
ता है ॥ तहां तहां अंधकार नहीं रहता ॥ अरु जहां जहां प्रकाश नहीं होता ॥ तहां अंधका
र रहता है ॥ तैसे जहां विचार है ॥ तहां संसार भय नहीं रहता ॥ अरु जहां विचार नहीं ॥ त
हां संसार भय रहता है ॥ अरु जहां आत्म विचार उत्पन होता है ॥ तहां सुख के देवणहा
रे सभ गुण आन स्थित होते है जैसे मानसरोवर विषे कमल उत्पन होते है ॥ तैसे वि
चार विषे सभ गुण आन स्थित होते है ॥ अरु जहां विचार नहीं ॥ तहां दुखों का आगमन होः
ता है ॥ हे रामचंद्र जो कछु अविचार करके क्रिया करीती है ॥ सोई दुखों का कारण है ॥ जैसेः
वृक्ष जो भुइं को छेदता है ॥ अरु स्तन का निकासता है ॥ तहां एक रंग करता है ॥ तहांः

स्तन का तेल ली उत्पन होती है ॥ तैसे अविचार करके इह पुरुष स्तन का रूप खोको एकटा
करता है ॥ तिसतें आपदा रूपी वल्ली निकसती है ॥ अरु अविचार रूपी वृक्ष का बाधा सूका
वृक्ष है ॥ तिसतें सुख रूपी फल फलता है ॥ तो नहीं निकसते ॥ अविचार किसका नाम है
जिसकर के शुभ क्रिया न होवे ॥ अरु जिसकर शास्त्र के अनुसार क्रिया होवे ॥ तिसका नाम वि
चार है ॥ हे रामचंद्र विवेक विचार रूपी राजा है ॥ अरु विचार रूपी ध्वजा है ॥ जिहां विवेक रूः
पी राजा आसन करता है ॥ तहां विचार रूपी ध्वजा भी साथ है ॥ अरु जहां विचार रूपी ध्वजा
आवती है ॥ तहां विवेक रूपी राजा भी आवता है ॥ जो पुरुष विचार करके संपन्न है ॥ सो सज्ज
नों है ॥ तिसको सभ कोई नमस्कार करता है ॥ जैसे द्वितीया की चंद्रमा को सभ नमस्कार कर
ते है ॥ तैसे विचारवान को सभ नमस्कार करते है ॥ हे रामचंद्र हमारे देखते अल्प बुद्धी भी
विचार के देखतां तें मोक्ष पद को प्रापत हुए है ॥ तातें विचार इसका परम मित्र है ॥ जो विचारवा
न पुरुष है ॥ तिसका अंतर बाह्य शीतल हो जाता है ॥ जैसे हिमालय पर्वत अंतर तें भी शीतल
है ॥ अरु बाह्य भी शीतल है ॥ तैसे उह शीतल हो जाता है ॥ विचार करके ऐसे पद को प्रापत हो
जाता है ॥ जो पद नित्य है ॥ अरु स्वच्छ है ॥ अरु अनंत है ॥ परमानंद स्वरूप है ॥ तिसको पाइ कर
न किसी के त्यागण की इच्छा होती है ॥ ना किसी के ग्रहण की इच्छा होती है ॥ इष्ट अनिष्ट विषे
सम हो जाता है ॥ जैसे गंगा के उदर विषे अरु लीन होवण विषे समुद्र सम रहता है ॥ तै
से विवेकी को इष्ट अनिष्ट की प्रापत विषे समता है ॥ अरु संसार भ्रम मिट जाता है ॥ आधार
आधेय तें रहत केवल अद्वैत तत्व उसको आन होता है ॥ हे रामचंद्र इह जगत अपणे मनः
के मोह तें उपजा है ॥ अरु स्वपर के अविचार करके दुखदाई भासता है ॥ जैसे अविचार कर बा
लक को वेताल भासता है ॥ तैसे इसको जगत भासता है ॥ जब ब्रह्म विचार के प्रापत होवे
तब जगत भान नष्ट होवे ॥ हे रामचंद्र जिस हृदय विषे विचार उपजता है ॥ तहां समता आः
न उत्पन होती है ॥ जैसे बीज तें अंकुर निकस आवता है ॥ तैसे विचार तें समता उपज आवः
ती है ॥ अरु विचारवान पुरुष जिस ओर देखता है ॥ तिसी ओर आनंद दृष्ट आवता है ॥ दुख कः
हूं दृष्ट नहीं आवे ॥ जैसे सूर्य को अंधकार नहीं दृष्ट आवता ॥ तैसे विचारवान को दुख दृष्टः
नहीं आवता ॥ जहां अविचार है ॥ तहां दुख है ॥ अरु जहां विचार है ॥ तहां दुख नहीं ॥ जैसे अं
धकार विषे बालक को वेताल दृष्ट आवता है ॥ अरु भय को पावता है ॥ अंधकार के अभाव हू
ए वेताल भी अभाव हो जाता है ॥ अरु भय नहीं रहता ॥ तैसे विचार कीये तें दुखों का अभावः
हो जाता है ॥ हे रामचंद्र संसार रूपी दीर्घ रोग है ॥ तिसके नाशक रोग को स्वविचार बड़ा औ
षध है ॥ जिसको विचार के प्रापत भई है ॥ तिसके मुख की कांत भी उजल हो जाती है ॥ जैसे
पूर्णमासी के चंद्रमा की उजलता होती है ॥ तैसे विचारवान के मुख की कांत उजल होती है
हे रामचंद्र विचार करके इसको पद की प्रापत होती है ॥ जिसकर अर्थ सिद्ध होवे ॥ सो वि
चार कहीये ॥ अरु जिसकर अनर्थ को प्रापत होवे ॥ सो अविचार है ॥ अविचार रूपी मदिरा
है ॥ जो इसको पान करता है ॥ सो उनमत्त हो जाता है ॥ तिसतें शुभ आचार कोई नहीं हो आ
वता ॥ शास्त्र के अनुसार जो कछु शुभ क्रिया है ॥ सो तिसतें होइ नहीं आवती ॥ तातें अविचार
करके अर्थ सिद्ध नहीं होता ॥ अरु विचार करके सभ अर्थ सिद्ध होते है ॥ हे रामचंद्र इच्छा रूपी
रोग है ॥ सो विचार रूपी औषध करके निवर्त होता है ॥ जिनों पुरुषों ने विचार द्वारा परमार्थ
सत्ता आश्रय कीया है ॥ सो परम शांत हो जाते है ॥ अरु हेय उपादेय बुद्ध तिनकी जाती रः
ही है ॥ अरु दृश्य को सभी शून होइ कर देखते है ॥ अरु संसार के भाव अभाव विषे ज्यों केः
त्यों रहते है ॥ अरु उदे अस्त तें रहत निःसंग रूप है ॥ जैसे आकाश निःसंग है ॥ तैसे तिह सं
ग है ॥ अरु जैसे समुद्र जल कर पूर्ण है ॥ तैसे विचार आत्म तत्व कर पूर्ण होते है ॥ अरु जैसेः
अंध कूप विषे गिड़या हूया रस्सी के आश्रय निकसता है ॥ तैसे संसार रूपी अंधे कूपः
विषे गिड़या हूया विचार के आश्रय होकर विचारवान निकसणे को समर्थ होता है ॥
हे रामचंद्र राजों को जो कोई कष्ट आन प्रापत होता है ॥ तब उह विचार करके यत्न करते है

तिसकर उनका कष्ट निवर्त होता है॥ तातें इहु विचार देष जो किसी को पद प्रापत होता है॥
सो विचार करके प्रापत होता है॥ ऐसी विचार को आश्रय करके सिद्धता को प्रापत होवे॥
सो विचार इस प्रकार प्रापत होता है॥ जो वेद अरु वेदांत अरु सिद्धांत को भली प्रकार वि
चारीये॥ जब तूं इनको श्रवण कर अथवा पठन करि भली प्रकार विचारैगा॥ तब विचार
की दृढता कर आत्मतत्त्व को प्रापत होवैगा॥ जैसे प्रकाश करके पदार्थों का ज्ञान होता है॥
तैसे शास्त्र अरु गुरों के वचन विचार कर आत्मतत्त्व का ज्ञान होता है॥ अरु जैसे प्रकाश भी
होवे॥ अरु नेत्रों तें अंध होवे॥ तिसको भी पदार्थ की प्रापत नहीं होती॥ तैसे शास्त्र अरु गुरो
के होते भी जो विचार तें शून्य होवे॥ तिसको भी आत्मपद की प्रापत नहीं होती॥ तातें हे रा
मचंद्र ऐसा विचार करे॥ जो मैं कोन हों अरु इहु जगत क्या है॥ अरु इसकी उत्पत्ति कैसे हुई है॥
लीन कैसे होता है॥ इस प्रकार संत अरु शास्त्रों के अनुसार विचार कर सत को सत जाणे॥ अ
रु असत को असत जाणे॥ वहुड जिसको असत जाणिया है॥ तिसको त्याग करीये॥ अरु स
त विषे स्थित होवीये॥ इसका नाम विचार है॥ इस विचार कर आत्मपद की प्रापत होती है॥
हे रामचंद्र विचार रूपी दिव्य दृष्ट जिसको प्रापत भई है॥ तिसको सभ पदार्थों का ज्ञान हो
ता है॥ तैसे विचार कर आत्मपद की भी प्रापत होती है॥ तिसको पाइ कर पूरण होता
है॥ वहुड संसार के शुभ अशुभ विषे चलाइमान नहीं होता॥ ज्यों का त्यों ही रहता है॥ अरु
जब प्रारब्ध वेग होता है॥ तब शरीर की चेष्टा पड़ा करता है॥ अथवा जब लग अपणी इच्छा
होवै॥ तब लग शरीर की चेष्टा करता है॥ वहुड शरीर को त्याग कर केवल शुद्ध रूप होजा
ता है॥ तातें हे रामचंद्र ब्रह्म विचार को आश्रय करके संसार समुद्र को तर जो॥ जो कोऊ रोगी
होता है॥ सो एता रुदन नहीं करता जेता रुदन विचार तें रहत पुरुष करता है॥ अरु जिस
को कोऊ कष्ट प्रापत होता है॥ सो भी एता रुदन नहीं करता॥ जेता विचार तें रहत पुरुष
करता है॥ हे रामचंद्र जो पुरुष विचार तें शून्य है॥ सभ ही आपदा तिसको आन प्रापत होती
यां है॥ जैसे सर्व नदीयां समुद्र विषे स्वभाव कर प्रवेश करतीयां है॥ तैसे अविचारी पुरुष
विषे सभ आपदा प्रवेश करतीयां है॥ हे रामचंद्र चिकड़ का कीट होवणा भी भला है॥ अरु
गर्त का कंटक होवणा भी भला है॥ अरु बिल विषे सर्प होणा भी भला है श्रेष्ठ है॥ अरु
विचार तें रहित होवणा तुच्छ है॥ जो पुरुष विचार तें रहत है॥ अरु भोगों विषे पड़ा धाव
ता है॥ सो श्वान है हे रामचंद्र विचार तें शून्य वडे कष्ट को प्रापत होता है॥ तातें एक निमेष भी
विचार तें रहित नहीं होवणा॥ दृढ होइ कर निरोग करणा जैसें कर सको॥ अरु इसका
है॥ ऐसे विचार करके सत्तरूप आत्मा को जाणकर स्थित होवणा॥ अरु असत रूप जाण
कर दृश्य को त्याग करणा॥ हे रामचंद्र जो पुरुष विचारवान है॥ सो संसार के भोगों विषे
नहीं गिरता॥ अरु सत्य विषे स्थित होता है॥ विचार जब दृढ होता है तब तिस तें तत्त्व
ज्ञान होता है॥ अरु तत्त्वज्ञान तें विश्राम होता है॥ अरु विश्राम करके चित्त उपशम होता
है॥ अरु चित्त के उपशम होए सभ दुःखों का नाश होता है॥ इति श्री मुमुक्षु प्रकरणे वि
चार निरूपणं नाम चतुर्दशः सर्गः॥१४॥ ॐ वसिष्ठ उवाच॥ हे राम
चंद्र अविचार रूपी शत्रु के हते जिसको संतोष प्रापत हुया है॥ सो परम आनंदी हुया
है॥ अरु त्रिलोकी का ऐश्वर्य उसको तृण की न्याई तुच्छ भासता है॥ हे रामचंद्र ऐसा आ
नंद त्रिलोकी के राज कर नहीं प्रापत होता॥ अरु अमृत के पान कीये तें भी ऐसा आनं
द प्रापत नहीं होता॥ जैसा आनंद संतोषवान को होता है॥ हे रामचंद्र इच्छा रूपी रात्र
है॥ अरु हृदे रूपी कमल को संकुचाइ लेती है॥ जब संतोष रूपी सूर्य उदे होता है॥ तब
इच्छा रूपी रात्र का अभाव हो जाता है॥ अरु जैसे क्षीर समुद्र उज्जलता कर के शोभता है॥
तैसे संतोषवान की कांत शोभते है॥ हे रामचंद्र जो त्रिलोकी का राजा है॥ पर इच्छा
निवर्त नहीं होई॥ तब दरिद्र ही है॥ अरु जो निर्धन है॥ पर संतोषवान है॥ तो सर्व का
ईश्वर है॥ सो संतोष किसका नाम है॥ श्रवण कर जो अप्राप्त वस्तु की इच्छा न करे॥ अरु प्रा

पत होई इष्ट अरु अनिष्ट विषे राग अरु द्वेष न करे॥ तिसका नाम संतोष है॥ अरु संतोष
का नाम परमपद है॥ संतोषवान पुरुष सदा आनंद रूप है॥ अरु आत्मस्थित कर तृप्तमय
है॥ तिसको रोग इच्छा कछु नहीं करती॥ अरु संतोष कर के उसका हृदा प्रफुलत होरहा
है॥ जैसे सूर्य के उदे हूए पंकज कमल प्रफुलत होता है॥ तैसे संतोषवान का हृदा प्र
फुलत है॥ जो अप्राप्त वस्तु है॥ तिसकी इच्छा नहीं करता॥ अरु जो अनिच्छत प्रापत भया है॥
तिसको यथाशास्त्र क्रम करके ग्रहण करता है॥ तिसको संतोषवान कहते है॥ जैसे पूर्ण
मासी का चंद्रमा अमृत करके पूर्ण होता है॥ तैसे संतोषवान संतुष्ट करके पूर्ण होता है॥ अरु
जो संतोष तें रहत है॥ तिसके हृदे रूपी वन विषे सदा दुःख अरु चिंता रूपी फूल पड़े उप
जते है॥ हे रामचंद्र जो चित्त संतोष तें रहत है॥ तिस विषे नाना प्रकार की आपदा
उत्पन्न होतीयां है॥ जैसे समुद्र विषे नाना प्रकार के तरंग पड़े उत्पन्न होते है॥ अरु जो संत
है आत्मा है॥ सो परम आनंदी है॥ तिसको जगत के पदार्थों विषे॥ हेय अरु उपादेय बुद्धि न
ही होती॥ हे रामचंद्र जैसा आनंद संतोषवान को होता है॥ तैसा अष्टसिद्धी के ऐश्वर्य प्राप
ते भी नहीं होता॥ अरु अमृत के पान करि भी नहीं होता॥ संतोषवान सदा शांत रूप है॥
अरु सदा निर्मल रहता है॥ इच्छा रूपी धूड जो सर्वदा उडती थी॥ सो संतोष रूपी वर्षा कर
तिसकी शांत होताई है॥ इस कारण तें निर्मल है॥ हे रामचंद्र संतोष सभ को प्यारा लगता है॥
जैसे पर पक्व फल आव का स्वाद रहता है॥ अरु सभ को प्यारा लगता है॥ तैसे शांतवान पुरुष
सभ को प्यारा लगता है॥ अरु उत्तम करतो को जागे है॥ जिस पुरुष को संतोष प्रापत भया है॥
तिसको परम लाभ हूया है॥ हे रामचंद्र जहां संतोष है॥ तहां इच्छा नहीं रहती॥ अरु सो शोवि
षदीन नहीं होता॥ उह उदार आत्मा है॥ अरु सर्वदा आत्म आनंद कर त्रिप्त रहता है॥ जैसे
पवन के आए ते मेघ नष्ट होता है॥ तैसे संतोष के आए ते इच्छा नष्ट हो जाती है॥ अरु जो संतो
षवान पुरुष है॥ तिसको देवता ऋषीश्वर सभ नमस्कार करते है॥ अरु धन्य धन्य कहते है॥
हे रामचंद्र इस संतोष को धारी नवपरम शोभा पावोगे॥ इति श्री मुमुक्षु प्रकरणे संतोष नि
रूपणो नाम पंचदशमः सर्गः॥१५॥ ॐ वसिष्ठ उवाच॥ हे रा
मचंद्र और जेते कष्ट दान तप तीर्थ आदिक साधन है॥ तिनों करके आत्मपद की प्रापत ऐसे
नहीं होती॥ जैसे साध संग कर आत्मपद की प्रापत होती है॥ साध संग रूपी एक वृक्ष है॥
तिसका फूल आत्मज्ञान है॥ जिस पुरुष ने इस फूल की रक्षा करी है॥ सो अनुभव रूपी फल
को पावेगा॥ हे रामचंद्र आत्मआनंद तें रहत जो है॥ सो फेर संसार ने संतों के संग करके आ
त्मानंद सों पूर्ण होता है॥ अरु अज्ञानी जो आपदा स्तन को पावता है॥ सो संतों के संग कर
संपदा को पावता है॥ आपदा रूपी कमलों का नाश करती॥ संतों का संग राग है॥ संतों के
संग कर आत्म विषयणी बुद्धि प्रापत होती है॥ तिसकर के मृत तें रहत होता है॥ अरु सर्व
दुःखों तें रहत होता है॥ अरु परमानंद को प्रापत होता है॥ हे रामचंद्र संतों की संगत कर
इसके हृदे विषे ज्ञान रूपी दीप जागता है॥ तिसकर के अज्ञान रूपी तम नष्ट हो जाता है॥
अरु वडे ऐश्वर्य को प्रापत होता है॥ वहुड किसी भोग पदार्थ की इच्छा नहीं रहती॥ अरु वो
धवान होता है॥ अरु सम अतें उत्तम पद विषे विराजता है॥ जैसे कल्प वृक्ष के निकट गए तें
वांछत फल की प्रापत होती है॥ तैसे संतों की संगत कर वांछत फल की प्रापत होती है॥
हे रामचंद्र संसार रूपी समुद्र के पार उतारणे वाले संतजन है॥ जैसे जीव नौका कर के
पार करती है॥ तैसे संतजन शुभ करके संसार समुद्र तें पार करते है॥ अरु मोह रूपी मेघ का ना
श करते॥ संतों का संग पवन है॥ जिनका देहादिक अनात्म विषे स्नेह नष्ट भया है॥ अरु
शुद्ध आत्म विषे स्थित भई है॥ अरु तिसकर त्रिप्त भए है॥ वहुड संसार के इष्ट अनिष्ट वि
षे चलायमान नहीं होता॥ सदा समता भाव विषे स्थित है॥ ते संतजन संसार समुद्र
के पार जावणे को पुल है॥ अरु आपदा रूपी वली को जड़ों समेत नाश करते है॥ हे रामचंद्र
संतजन अप्रकाश रूप है॥ जिनके संग तें पदार्थ की प्रापत होती है॥ पर जो अपणे पुरुषा
र्थ रूपी नेत्रों ते हीन होता है॥ तिसको पदार्थ की प्रापत नहीं होती॥ जिनों पुरुषों ने सत

संगकात्यागकीयाहै॥ तेनरकरूपीअग्निविषेजलकरीयाहोकरजलतहिंगे॥ अरुजिनोंपुरु
षोंसतसंगकीयाहै॥ तिनकोंनरकरूपीअग्निकानाशकर्त्तासाधसंगमेघहोवेगा॥ हेरा
मचंद्रसतसंगरूपीगंगाहै॥ जिनोंसतसंगरूपीगंगाकास्नानकीयाहै॥ तिनकोंवहुरदा
नतपआदिकसाधनसाधवकाप्रयोजनहै॥ उहुसतसंगरूपीगंगास्नानकरकेहीपरमप
गतकोंपावेंगे॥ तातेंहोरसभउपावोंकोत्यागकरसतसंगकोंखोजीये॥ जैसेनिर्द्धनचिं
तामणिआदिकधनकोंखोजताहै॥ तैसेमुमुक्षसतसंगकोंखोजे॥ अध्यात्मआदिकती
नतापोकरजोपड्याजलताहै॥ तिसकोंशीतलकरणेहारासंतोंकासंगहै॥ जैसेतपी
हुईपृथवीमेघकरशीतलहोतीहै॥ तैसेसंतोंकेसंगकरहृदाशीतलहोताहै॥ हेरामचं
द्रमोहरूपीवृक्षकानाशकर्त्तासतसंगरूपीगडाहै॥ सतसंगकरकेंइहुपुरुषअविना
शीपदकोंप्रापतहोताहै॥ अरुतिसपदकेपायेंतेंवहुड़गेरकछुपावणेकीइछ्यानहींर
हती॥ अरुसर्वतेंउत्तमहोताहै॥ जैसेसर्वअपछरातेंलछमीउत्तमहै॥ तैसेसतसंगकर्त्ता
सभतेंउत्तमहै॥ तातेंअपणेकल्याणकेनिमित्तसतसंगकरणातुमकोयोगहै॥ हेराम
चंद्रइहचारजोमोक्षकेद्वारपालतुझकोंमैंकहेहैं॥ जिनोंपुरुषोंइनकेसाथप्रीतकरी
है॥ तेपुरुषहीआत्मपदकोंप्रापतहूएहैं॥ अरुजोइनकोंसेवनानहींकर्ते॥ सोमोक्षकों
प्रापतनहींहोते॥ हेरामचंद्रइनोंचारोंविषेएकभीजहांआवताहै॥ तहांगेरभीआवते
हैं जहांशमआनस्थितहोताहै॥ तहांसंतोषअरुविचारअरुसाधसंगभीआवतेहैं॥ जै
सेजहांसमुद्रहोताहै॥ तहांसर्वनदीयांआवतीयांहैं॥ तैसेजहांशमहोताहै॥ तहांउ
रभीतीनोंआवतेहैं॥ अरुजहांसाधसंगमहोताहै॥ तहांशमसंतोषविचारभीआव
तेहैं॥ जैसेजहांकल्पवृक्षकेनिकटहोताहै॥ तहांसभलछमीआनस्थितहोतीहै॥ अ
रुजहांसंतोषहोताहै॥ तहांशमअरुविचारअरुसाधसंगभीआवताहै॥ जैसेपूर्णमा
सीचंद्रमाविषेगुणकलासभहीप्रकटीहोतीयांहैं॥ तैसेजहांसंतोषआवताहै॥ त
हांतीनोंभीआवतेहैं॥ अरुजहांविचारआवताहै॥ तहांसंतोषउपशमसाधसंगभीआ
वताहै॥ जैसेश्रेष्टमंत्रीकरलछमीराजविषेआनस्थितहोतीहै॥ तैसेजहांविचारहो
ताहै॥ तहांगेरभीतीनोंआवतेहैं॥ तातेंहेरामचंद्रजोचारोंएकठेहोवें॥ तवतोपरमश्रे
ष्टहै॥ अरुजोचारेंनहोवें॥ तोएककोंअवशआश्रयकरे॥ जोएकआवेगा॥ तवचारोंआ
नस्थितहोवेंगे॥ मोक्षकीप्रापतहोवणेकोंइहुपरमसाधनहै॥ गेरउपायोंकरमुक्ति
कीप्रापतनहींहोती॥ संतोषःपरमोलाभःसत्संगःपरमागतिः॥ विचारःपरमंज्ञानं
शमश्चपरमंसुखं॥ रामचंद्रइहुपरमकल्याणकेकर्त्ताहैं॥ जोइनोंकरकेसंपन्नहै॥ तिस
कीब्रह्मादिकभीउस्तुतिकरतेहैं॥ तातेंइनोंसाथदृढवाइकरइनकोंआश्रयकरकेम
नकोंवशकर॥ हेरामचंद्रमनरूपीहस्तीविचाररूपीअंकुशकरकेंवशहोताहै॥ अरु
मनरूपीवनविषेवासनारूपीनदीचलतीहै॥ तिसकेशुभअशुभदोकनारेहैं॥ अरु
पुरुषार्थकरणाएहहै॥ जोअशुभकीओरतेंरोककरशुभकीओरचलावणा॥ जवअं
तर्मुखीआत्माकेसनमुखवृत्तिकाप्रवाहहोवेगा॥ तवतुमपरमपदकोंप्रापतहोवो
गे॥ हेरामचंद्रप्रथमपुरुषार्थकरणाएहहै॥ जोअविचाररूपीउचाउहूरकरणी॥ ज
वअविचाररूपीदिवारदूरहोवेगा॥ तवआपहीप्रवाहचलेगा॥ हेरामचंद्रदृष्टपकीओ
रजोप्रवाहचलताहै॥ सोवंधनकाकारणहोता॥ अरुजवआत्माकीओरअंतरमुखप्र
वाहहोताहै॥ सोमोक्षकाकारणहोताहै॥ आगेजैसेतेरीइछ्याहोइसोकर॥ इतिश्रीमु
मुक्षप्रकरणेसाधसंगसमउपमावर्णनंनामसवोडशःसर्गः॥ १६॥ वसिष्ठउवाच
हेरामचंद्रइहजोमेरेवचनहैं॥ सोपरमपावनहैं॥ जोविचारवानशुद्धअधिकारीहै॥
तिसकोंइहवचनयोगहैं॥ कैसेवचनहैं॥ जोपरमबोधकेकारणहैं॥ जोपुरुषमुमुक्षु
पात्रहै॥ सोइनोंवचनोंकोंपायकरशोभताहै॥ अरुइहवचनभीउहांशोभापावतेहैं॥
जैसेमेघोंकेअभावहूएसर्वकालविषेचंद्रमाअरुआकाशशोभापावताहै॥ अरुचं
आकाशकरकेंवदलोंकेअभावहूएचंद्रमाशोभताहै॥ अरुवदलोंकेअभावहूएतेचं

माकरकेंआकाशशोभताहै॥ तैसेजिग्यासीअरुनिर्मलवचनोंकोंसदृशमोहै॥ हेरामचंद्र
तुमपरमपात्रहो॥ अरुमेरेवचनउत्तमहैं॥ इहजोमहारामायणमोक्षउपायशास्त्र
है॥ सोआत्मबोधकापरमकापरमकारणहै॥ अरुपरमपावनवाक्योंकोंकहताहै॥
अरुसुगमअर्थवाकहै॥ अरुनानाप्रकारकेदृष्टांतकहेहैं॥ अरुजिनकेवहुजन्मों
केपुण्यएकठेआनहोतेहैं॥ तिनकाकल्पवृक्षहोताहै॥ अरुफलोंकरफलेपड़ताहै
तवतिसकोंइहशास्त्रश्रवणहोताहै॥ अरुप्रथजोजीवहैं॥ तिनकोंइसकाश्रवणन
हीप्रापतहोता॥ उनकीवृत्तिइसकेश्रवणविषेनहींआवती॥ तैसेजोधर्मात्माराजा
होताहै॥ तिसकीत्याइशास्त्रकेश्रवणविषेइछ्याहोतीहै॥ जोपापात्माराजाहोताहै
तिसकोंइछ्यानहींहोतीहै॥ हेरामचंद्रतैसेपुन्यवानकोंइछ्याश्रवणविषेहोतीहै॥ अ
धर्मकीइछ्यानहींहोतीहै॥ जोपुरुषपरमसमहारामायणमोक्षउपायशास्त्रकाप्र
यत्नकरे॥ अथवानिहकामकेमुखतेंश्रद्धासंयुक्तश्रवणकरे॥ अरुआदितेंलेकरअंत
पर्यंतविचारे॥ एकत्रभावहोइकर॥ तवतिसकासंसारभ्रमनिवर्तहोजावे॥ जैसेजे
वड़ीकेजाणनेंसर्पभ्रमनष्टहोजाताहै॥ तैसेआत्मतत्त्वअद्वैतकोंजाणकरतिसका
संसारभ्रमनष्टहोजावेगा॥ इसमोक्षउपायशास्त्रकेद्वात्रिंशतसहस्रश्लोकहैं॥ अरुष
टप्रकरणहैं॥ प्रथमवैरागप्रकरणहै॥ सोवैरागकापरमकारणहै॥ हेरामसमाश्रु
लेविषेवृक्षनहींलगता॥ परवर्षाहोवे॥ तवतहांभीवृक्षउत्पनहोआवताहै
तैसेअज्ञानीकाहृदाश्रपजोमारूथलहै॥ तिसविषेवैरागरूपीवृक्षनहींउपजता॥
परइहशास्त्ररूपीजोवर्षाहै॥ तिसकरहृदेरूपीमारूथलविषेवैरागरूपीवृक्षउ
त्पनहोइआवेगा॥ तिसकाएकसहस्रपंचसैश्लोकहै॥ तिसकेअनंतरमुमुक्षुव्यव
हारप्रकरणहै॥ तिसविषेपरमनिर्मलवचनहैं॥ तिसकरकेंइहपुरुषपरमनिर्मलहोता
है॥ जैसेमलीनहूईमणिमार्जनकीयेतेंउजलहोइआवतीहै॥ तैसेइसकेश्रवणतें
इहनिर्मलहोइआवताहै॥ अरुविचारकेवलकरकेंआत्मपदकेपावणेकोंसमर्थहोता
है॥ तिसकाएकसहस्रश्लोकहै॥ तिसकेअनंतरउत्पत्तिप्रकरणहै॥ तिसकेपंचसहस्र
श्लोकहैं॥ तिसविषेवडीयांसुंदरकथाइतिहासमाहितकहीयांहैं॥ सोकेसीउत्पत्तिकही
है॥ जिसकेविचारतेंजगतकोसत्यत्वभावमनतेंचलतारहताहै॥ अर्थयहजोजगत
काअत्यंताभावजाणीताहै॥ हेरामचंद्रइहजगतमनुष्यदेवतादैत्यपर्वतनदीयांदेश
लोकपृथिवीअपतेजवायुआकाशआदिकस्थावरजंगमभासताहै॥ सोअज्ञानकरभा
सताहै॥ अरुइसकीउत्पत्तिकेसेभईहै॥ जैसेजेवरीविषेसर्पउत्पन्नहोताहै॥ अरुसिपीवि
षेरूपाउत्पनहोताहै॥ अरुसूर्यकीयांकिरणांविषेजलाभासहोतीहै॥ आकाशविषेत
रमरेभासतेहैं॥ जैसेआकाशविषेदूसराचंद्रमाभासताहै॥ जैसेगंधर्वनगरभासताहै॥
मनोराजकीसृष्टिहोतीहै॥ संकल्पकापुरहोताहै॥ स्वप्ननगरहोताहै॥ स्वर्णविषेभूष
णहोतेहैं॥ समुद्रविषेतरंगहोतेहैं॥ आकाशविषेनीलताहोतीहै॥ जैसेनौकाविषेवैठा
नेकनारेकेवृक्षपर्वतचलतेदृष्टआवतेहैं॥ अरुवदलेकेचलनेतेंचंद्रमाधावतादृष्टआ
वताहै॥ जैसेकथाकेअर्थभासतेहैं॥ अरुथंभविषेपुतलीयां॥ भविष्यतनगरतेंआदिले
करअसत्यपदार्थहैं॥ जैसेअसत्यपदार्थसत्यरूपहोकरभासतेहैं॥ तैसेहीसभजगत
आकाशरूपहै॥ अर्थआकारकछुनहीं॥ अरुजोअर्थरूपभासताहै॥ सोअज्ञानकरकेभा
सताहै॥ अज्ञानकरउत्पनहोताहै॥ अरुज्ञानकरकेंलीनहोजाताहै॥ जैसेनिद्राकरकेंस्वप्न
कीसृष्टिउत्पनहोतीहै॥ अरुजागतेंनिवृत्तहोजातीहै॥ तैसेअविद्याकरकेजगतउत्प
नहोताहै॥ अरुसम्यकज्ञानकरकेनिवर्त्तहोजाताहै॥ सोअविद्याभीकछुवस्तुनहीं॥
सर्वब्रह्मसत्चिदाकाशरूपहै॥ सोनित्यहैशुद्धहै॥ अनंतहै॥ परमानंदस्वरूपहै॥ तिस
विषेजगतनउपज्याहै॥ नलीनहोवणाहै॥ ज्योंकात्योंआत्मसत्ताअपणेआपविषेस्थि
तहै॥ तिसविषेजगतऐसेहै॥ जैसेचितरेकेचित्तविषेचित्रहोताहै॥ जोइसथंभेविषेपुत
लीयांहैं॥ परइहपविनाभासतीयांहैं॥ तैसेइहसृष्टिमनविषेस्थितहै॥ वास्तवतेंक

रूवणीनहीं॥ सभ्याकाशरूपहै॥ जवचितसंवेदनस्पंदरूपहोतीहै॥ तवनानाप्र
कारकाजगतहोइकरभासताहै॥ अरुनिस्पंदहोतीहै॥ तवजगतमिटजाताहै॥ इस
प्रकारउत्पत्तप्रकरणविषेजगतकीउत्पत्तकहीहै॥ तिसकेअनंतरस्थितप्रकर
णहै॥ तिसविषेजगतकीस्थितकहीहै॥ सोकैसेकहीहै॥ जैसेइंद्रकाधनुषआकाश
रूपहै॥ अरुअविचारकर्केतिसविषेअसत्भावनाहोतीहै॥ जैसेसूर्यकीयांकिरणविषे
जलाभासहोताहै॥ अरुजैसेजेवडीविषेसर्पअसम्यकदृष्टकरकेप्रतीतहोतीहै
तेअज्ञानकरकेजगतकोप्रतीतहोतीहै॥ अरुजैसेमनोराजकरनगररचलेताहै॥ सोउ
त्पतकछुनहीहूया॥ तैसेयहजगतभीसंकल्पमात्रहै॥ जैसेजवलगमनोराजहै॥ त
वलगउहनगरहोताहै॥ अरुजवमनोराजकाअभावहूया॥ तवनगरकाअभावहो
जाताहै॥ तैसेजवलगअज्ञानहै॥ तवलगजगतहोताहै॥ उत्पतभीअरुस्थितभीहो
ताहै जवसंकल्पलयहूया॥ तवजगतकाअभावहोताहै॥ जैसेइंद्रजालणकेदसपु
त्रोंकीयांदससृष्टांसंकल्पकरकेस्थितभईयांहै॥ सोसंकल्पकरकेउत्पतभईयां॥ अ
रुसंकल्पहीकरकेस्थितहूईयां॥ तैसेयहजगभीहै॥ कोउपदार्थअर्थरूपनहीं॥ हेरा
मचंद्रइसप्रकारस्थितप्रकरणविषेकहाहै॥ तिसकेतीनसहस्रश्लोकहै॥ तिसकेविचा
रणेकरजगतसत्ताजातीहै॥ तिसकेअनंतरउपशमप्रकरणहै॥ तिसकेपंचसहस्रश्लो
कहै॥ तिसकेविचारतेंअहंत्वआदिकवासनालीनहोजातीयांहै॥ जैसेस्वप्नतेंजागे
हूएस्वप्नकीयांवासनाजातीयांहै॥ तैसेविचारवानकीयांअहंत्वआदिकवासनाजा
तीयांहै॥ काहेतेंजोउसकेनिश्चयविषेजगतनहींरहता॥ जैसेएकपुरुषसोयाहोताहै
तिसकोस्वप्नेकाजगतभासताहै॥ उसकेनिकटजोजाग्रतपुरुषवैठाहै॥ तिसकोउस
केस्वप्नकाजगतआकाशरूपहै॥ तैसेविचारवानकोंयहजगतआकाशरूपहोताहै॥ ज
वआकाशरूपहूया॥ तववासनाकेसरहै॥ जववासनानष्टहोई॥ तवमनभीउपशमहो
ताहै॥ तवदेषणमात्रउसकोसंभवहोतीहै॥ परउसकेमनविषेअर्थरूपीइछान
हीहोती॥ जैसेमूर्तीकीअगनिदेषणमात्रहोतीहै॥ अर्थकारणहीहोती॥ तैसेउसकी
चेष्टाहोतीहै॥ हेरामचंद्रजवमनविषेइछानष्टहोतीहै॥ तवमनभीनिर्वाणहोजाता
है॥ जैसेतेलतेंदीपकसहजसोनिर्वाणहोजाताहै॥ तैसेइछातेंरहतमननिर्वाणहो
ताहै॥ इसप्रकारउपशमप्रकरणहै॥ तिसकेअनंतरनिर्वाणप्रकरणहै॥ जोचौदहहजा
र॥ १४५००॥ श्लोकहै॥ तिसविषेपरमनिर्मलवचनकहेहै॥ विचारकीयेतेंअज्ञानकार
चितअरुचेत्यकासंवंधहै॥ सोनिर्वाणहोजाताहै॥ जैसेसरतेंकालविषेमेघोंकेअभा
वतेंसुधआकाशहोताहै॥ तैसेपुरुषविचारकरनिर्मलहोताहै॥ हेरामचंद्रअहंकार
रूपीजोपिशाचहै॥ सोविचारकरनष्टहोताहै॥ जेतीकछुइछाफुरतीयांहै॥ सोनिर्वा
णहोजातीयांहै॥ जैसेपथरकीशिलाफुरणोतेंरहतहोतीहै॥ तैसेइछातेंरहतहोता
है॥ जेतेकछुजगतकोजानताहै॥ सोतिसकीहोइचुकतीहै॥ जोकछुकरणाथासोकरचु
कताहै॥ हेरामचंद्रशरीरकेहोतीहीउहअशरीरहोजाताहै॥ अरुनानाप्रकारकाज
गतउसकोंनहींभासता॥ जगतकीनेततेउहअंधहोजाताहै॥ अरुअहंत्वआदिकज
गतभ्रमतिसकोनहींभासता॥ जैसेसूर्यकोंअंधकारनहींदृष्टआवता॥ तैसेउसको
जगतनहींभासता॥ अरुऐसेपदकोप्राप्तहोताहै॥ जिसकेकिसीपरमाणुविषेज
गतसारहै॥ जैसेसमेरुकेकिसीकोणविषेकमलहोताहै॥ तिसकेऊपरभ्रमरस्थित
होवै॥ तैसेब्रह्मकेकिसीकोणविषेजगतभासताहै॥ उहपुरुषअचेत्यचिन्मात्रहोताहै
अरुरूपआलोकमनसकारतिसकोंआकाशरूपहोजाताहै॥ हेरामचंद्रजिसपद
कोंउहप्राप्तहूयाहै॥ तिसपदकीउपमाब्रह्माविस्नुरुद्रअनेकहै॥ तोभीकहणे
कोंसमर्थनहोवै॥ जोअैसाहै॥ इतिश्रीमहारामायणेसोलापायेमुमुक्षुव्यवहारप्रका
रणेसप्तसहस्रसंहितायांवाल्मीकीयेआर्षेवाक्यदेवदूतउक्तेप्रकरणविभागवर्ण
नंनामषोडशःसर्गः॥१६॥

ॐवसिष्ठउवाच॥ हेरामचंद्रइहपरमउतमवाक्यहैं॥ इनकोंविचारकरणेहारा
उतमपदकोप्राप्तहोताहै॥ जैसेउतमक्षेत्रविषेउतमबीजवोयातें उतमफलहो
उत्पनहोताहै॥ तैसेइनकेविचारणेवालाउतमपदकोप्राप्तहो॥ कैसेवाकहैंइहज
श्रेष्टवकवाकहै॥ हेरामचंद्रजोजुगततेंरहतवाकआर्षभीहोवे॥ तौतिनकात्यागक
रीये॥ अरुपौरुषवाकजुगतसहितहोवे॥ तौतिनकाअंगीकारकरीये॥ हेरामचंद्रब
लाकेवचनयुक्ततेरहतहोवे॥ तिनकोभीतृणकीन्याईत्यागकरीये॥ अरुवा
लककेवचनयुक्तपूर्वकहोवे॥ तवतिनकोअंगीकारकरीये॥ अैसेनकरीयेजोपिता
काकूपहोवे॥ तिसविषेषाराजलहोवे॥ अरुनिकमिष्टजलकोत्यागकरनासकेतिस
तेंषाराजलपानकरीये॥ पिताकाजानकरषाराजलपानकरणातौमूर्खताहै॥ तैसे
वडेअरुछोटेकाविचारनकरे॥ युक्तपूर्वकवचनहोवे॥ तिनकोंअंगीकारकरीये॥ हे
रामचंद्रमेरेवचनसमयुक्तपूर्वकहै॥ अरुवोधकेपरमकारणहै॥ जोपुरुषएकाग्र
होइकरइसशास्त्रकोंआदितेलेकरअंतपर्यंतपडे॥ अथवाआपतेंसुनकरके
विचारे॥ तवतिसकोउहसंस्कारहोवे॥ प्रथमवैरागप्रकरणकीविचारनेंइसकों
वैरागउपजे॥ जेतेकछुसंसारमणिकभोगपदार्थहै॥ तिसकोंविरसहोजावे॥ अरुकि
सीपदार्थकीवांछानरहै॥ जवभोगपदार्थोंविषेवैराग्यहोताहै॥ तवशांतरूपआत्मतत्त
विषेप्रीतउत्पनहोतीहै॥ जवसंसारतेंवैरागअरुआत्मतत्वविषेप्रीतउपजी॥ तववि
चारकरदृढसंस्कारहोवेगी॥ तवशास्त्रकासिद्धांतदृढविषेआनस्थितहोवेगा॥ अरुसं
सारकेविकारोंतेंरहितवुद्धनिर्मलहोवेगी॥ जैसेसरतकालविषेवदलोंकाअभावहोणे
करआकाशसर्वओरतेंस्वच्छहोताहै॥ तैसेवुद्धनिर्मलहोवेगी॥ वहुडआधिव्याधिकीपी
डाउसकोंनहोवे॥ हेरामचंद्रज्योंज्योंविचारदृढहोवेगा॥ त्योंत्योंशांतआत्माहोवेगा॥
तांतेंजेतेकछुसंसारकेयत्नहै॥ तिनकोंत्यागकरइसशास्त्रकोंविचारे॥ इसकोवारंवा
रविचारणेकरचैतन्यसताउदेहोवेगी॥ ज्योंज्योंचैतन्यसताउदेहोवेगी॥ त्योंत्योंलोभ
मोहादिकविकारनष्टहोवेगे॥ जैसेज्योंज्योंसूर्यउदेहोताहै॥ त्योंत्योंअंधकारनष्टहोताहै
तैसेविकारनष्टहोवेगे॥ वहुडतिसपदकोप्राप्तहोवैगी॥ जिसकेपाएतेंसंसारकेदो
समिटजावेंगे॥ हेरामचंद्रजैसेसरतेंकालविषेमेघनष्टहोजातेहै॥ तैसेसंसारकेलोभ
मिटजावेंगे॥ हेरामचंद्रज्ञानवानपुरुषकोंसंसारकेरागद्वेषवेधनहीसकते॥ जैसेजि
सपुरुषकवचपहिरयाहै॥ तिसकोंवाणनहीवेधसकते॥ तैसेतिसकोंरागद्वेषरूपी
वाणनहीवेधसकते॥ अरुभोगोंकीइछानहींरहती॥ जोविषयभोगविद्यमानप्राप्त
आनहोतेहै॥ तौभीतिनकोंवुधविषयभूतकरकेनहींग्रहणकरती॥ अर्थजाणकविवा
स्यनहीनिकसती॥ अंतरआत्माविषेहीस्थितरहतीहै॥ जैसेपतिव्रतास्त्रीअपणेअंतः
पुरतेंवाहरनहीनिकसती॥ तैसेवुद्धअंतरतेंनहीनिकसती॥ हेरामचंद्रवास्तवतेउहः
भीप्राकृतजनोंकीन्याईदृष्टआवताहै॥ जोकछुअनिछतप्राप्तहोताहै॥ तिसकोंभोग
ताअरुकरताहृष्टआवताहै॥ परअंतरतेंरागद्वेषउसकोंनहीफुरता॥ हेरामचंद्रजेत
कछुजगतकीउत्पतअरुलयकाक्षोभहै॥ सोज्ञानवानकोंकष्टनहींदेसकता॥ जैसेसूर्य
तलिखीवल्लीकोंआंधीनहीचलाइसकती॥ तैसेउसकोंजगतकाकष्टनहींहोता॥ अरुसं
सारकीओरतेंहृक्षकीन्याईजडहोजाताहै॥ अरुसमुद्रकीन्याईगंभीरहोताहै॥ अरुप
र्वतकीन्याईस्थिरहोताहै॥ अरुचंद्रमाकीन्याईशीतलहोताहै॥ हेरामचंद्रआत्मज्ञा
नकरअैसेपदकोंप्राप्तहोताहै॥ जिसकेपाएतेंऔरपावणेजोगकछुनहींरहता॥
सोआत्मज्ञानकाकारणइहमेरासोलहउपायशास्त्रहै॥ कैसाशास्त्रहै॥ जोनानाप्रकारके
दृष्टांतइसविषेकहेहै॥ दृष्टांतकिसकानामहै॥ सोसुण॥ जोवस्तुअपरछिन्नहोवे॥ अ
रुदेषणेविषेनआईहोवे॥ तिसकीन्याईजोदेषणेविषेआवे॥ तिसकेदृष्टांतकरसम
झाए॥ पूर्वकजोसमझीए तिसकानामदृष्टांतहै॥ हेरामचंद्रइहजोजगतकाजेकारण

रूप है॥ अरु आत्मा कार्य कारणतें रहत है॥ आत्मा अरु जगतकी एकता कैसे होवै॥ तो
तें जो कछु मैं दृष्टांत देवौंगा॥ तिसका एकदेश अंगीकार करणा॥ सर्वदेश कर नही अंगी
कार करणा॥ हे रामचंद्र कार्य अरु कारणकी कल्पना मूर्खों करी है॥ तिनके निषेधणे
कों मैं स्वप्नदृष्टांत कहौंगा॥ तिसके समझणे करनेतें संसार नष्ट होवैगा॥ अरु दृश्यका
भेद मूर्खोंको भासता है॥ तिसके दूर करणे अर्थ भी स्वप्नदृष्टांत कहौंगा॥ तिसके विचा
रणे कर मिथ्या विभाग कल्पनाका अभाव होवैगा॥ हे रामचंद्र ऐसी कल्पनाका नाश कर
ता सरा मोक्षउपाय शास्त्र है॥ जो पुरुष आदितें लेकर अरु अंत पर्यंत इसको विचारैगा॥ त
ब पंडित साहित संस्कारी होवैगा॥ जो पद पदार्थकों जाणनेवाला होवै॥ अरु इसकों
वारंवार विचारै॥ तब दृश्य भ्रम तिसकों शांत होजावै॥ इस शास्त्रके विचार विषे और कि
सी तीर्थ तप दान तीर्थादिककी अपेक्ष्या नही॥ जहां स्थान होवै तहां होवै॥ अरु जैसा भो
जन गृह विषे होवै॥ तैसा करीये॥ अरु वारंवार इसका विचार करीये॥ तब अज्ञान नष्ट
होजावैगा॥ अरु आत्मपदकों प्रापत होवैगा॥ हे रामचंद्र इह शास्त्र प्रकाशरूप है॥ जैसे
अंधकार विषे पदार्थ दृष्ट नही आवता॥ अरु दीपकके प्रकाश कर अरु चक्षोंसहित पाई
ता है॥ सो शास्त्ररूपी दीपक विचाररूपी नेत्रोंसहित होवै॥ तब आत्मपदकी प्रापत होती
है॥ हे रामचंद्र आत्मज्ञान विचार विना वरप्राप्त कर प्रापत नही होता॥ जब विचार कर दृ
ढ अभ्यास करीये तब प्रापत होता है॥ तातें मोक्षउपाय जो परम पावन शास्त्र है॥ तिसके
विचार कीयेतें जगत भ्रम नष्ट होजावैगा॥ जगतके देखनेतें देखनें जगत भाव मिट जा
वैगा॥ जैसे सर्पकी मूर्ति लिखी होती है॥ अविचार करतें तिसतें भय पाईता है॥ जब विचार दे
खीये तब सर्प भ्रम जाता है॥ सर्पका आकार दृष्ट भी आवता है॥ पर तिसका भय नष्ट हो
जाता है॥ तैसे इह जगत भ्रम विचार कीयेतें नष्ट होजावैगा॥ अरु जन्म मरणका भय भी न र
हेगा॥ हे रामचंद्र जन्म मरणका भी बड़ा दुःख है॥ पर इस शास्त्रके विचारतें नष्ट होजा
वैगा॥ अरु जिनने इस विचारका त्याग कीया है॥ सो माताके गर्भ विषे कीट होवैगा॥ अरु
कष्टतें न छूटैगा॥ अरु विचारवान पुरुष आत्मपदकों प्रापत होवैगा॥ अरु अनंत स्वरूप
आत्मज्ञानीकों अपणाही रूप भासतीया है॥ कोऊ पदार्थ आत्मतें भिन्न नही भासता॥ जि
सकों जलका ज्ञान हूया॥ तिसकों लहरी आवर्त सभ जलही रूप भासते हैं॥ तैसे सभ आ
त्मस्वरूप ज्ञानवानकों भासता है॥ अरु इंद्रियोंके इष्ट अनिष्ट विषयोंकी प्रापत विषे इछा
द्वेष नही कर्ता॥ सदा एकरस रहता है॥ अरु मनके संकल्पतें रहत शांतरूप होता है॥ जैसे
मंद्राचल पर्वतके निकसेतें क्षीरसमुद्र शांत भया है॥ तैसे संकल्प विकल्पतें रहत हूया
इह पुरुष शांत होता है॥ हे रामचंद्र जो रजो तेज होता है॥ सो दाहक होता है॥ अरु ज्ञान
रूपी तेज जिसके हृदे विषे उदे होता है॥ सो शीतल शांतरूप होता है॥ बहुर तिस विषे
संसारका विकार कोऊ नही रहता॥ जैसे कलपवृक्ष विषे उपद्रव कर्ती॥ शिखावाला ता
रा उदे होता है॥ कलपवृक्षके अभाव हूए नही उदे होता॥ तैसे ज्ञानवानके चित्त विषे विका
र नही उत्पन्न होता॥ हे रामचंद्र संसार भ्रम आत्माके प्रमाद कर उदे होता है॥ सो आत्मा
के पावणे विषे यत्न विना विचार मोक्ष करणा नही होता है॥ फलपत्रके काटणे विषे भी
कछु यत्न होता है॥ पर आत्माके पावणे विषे यत्न कछु नही॥ काहेतें जो बोधरूप बो
धही कर जाणीता है॥ हे रामचंद्र जो जानते मात्र ज्ञानस्वरूप है॥ तिस विषे स्थित होव
णा क्या यत्न है॥ आत्मा शुद्ध अद्वैतरूप है॥ अरु जगत भ्रममात्र है॥ जो एवं अपर विचार
कीयेतें सत्य होवै॥ तिसकों रूप जाणीये॥ अरु एवं अपर विचार कीयेतें जिसका न पाईये
तिसकों भ्रममात्र जाणीये॥ सो इस जगतकी सत्ता न आदि विषे पाईती है॥ न अंत विषे
पाईती है॥ तातें स्वप्नवत है॥ जैसे स्वप्ना आदि विषे भी नही पाईता॥ अरु अंत विषे भी न
ही रहता॥ तैसे जाग्रत भी आदि विषे नही पाईती॥ अरु अंत विषे भी नही रहती॥ तातें
जाग्रत स्वप्न दोनों तुल्य है॥ हे रामचंद्र इह वार्ता वाल्मीकिजी जाणते हैं॥ जो आदि अरु

अंत विषे जिसकी सत्ता न पाईये॥ सो स्वप्नवत है॥ जो आदि न होवै॥ अरु अंत भी न र
है॥ तिसकों मध्य विषे भी असत्य जाणीये॥ तिस विषे इह दृष्टांत कहते हैं॥ संकल्पपुर
नगरकी न्याई॥ स्वप्नपुरकी न्याई॥ अरु वर आप जो उपजता है॥ तिसकी न्याई॥ जो
वर्षा ले उपजेकी न्याई॥ नर पदार्थोंकी सत्ता आदि होती है॥ तिसकी न्याई जो
विषे जो भासते हैं॥ सो भी भ्रांतिरूप है॥ तैसे इह जगत है॥ तातें अकारण है॥ अरु मध्य
कारणभाव मध्य विषे भासते हैं॥ तो कार्य कारणरूप जगत हूया॥ अरु कार्य
अकारण है॥ जगत है साकार॥ अरु आत्मा है निराकार॥ इस जगतका दृष्टांत जो आत्मसत्ता
विषे देवौंगा॥ सो तिसका एक अंश ग्रहण करणा॥ जैसे स्वप्नकी सृष्टि होती है॥ ति
सका सर्व अपर भाव आत्मतत्व विषे मिलता है॥ काहेतें जो अकारण है॥ अरु भावका
दृष्टांत नही मिलता॥ काहेतें जो उपमेय अकारण रूप है॥ अरु उपमान कार्य कारण
रूप है॥ तो तिसका अरु इसका समान दृष्टांत कैसे होवै॥ तातें अपणे बोधके अर्थ दृष्टां
तका एक अंश ग्रहण करणा॥ हे रामचंद्र जो विचारवान पुरुष है॥ सो गुरु शास्त्रोंतें
श्रवण करके सुद्ध बोधके अर्थ दृष्टांतका एक अंश ग्रहण करते है॥ हे रामचंद्र तिन
कों आत्मतत्वकी प्रापत होती है॥ काहेतें सारग्राहक होते हैं॥ अरु जो अपणे बोधके
अर्थ दृष्टांतका एक अंश नही ग्रहण करते॥ अरु वाद करते हैं॥ तिनकों आत्मतत्वकी प्रा
पत नही होती॥ तातें दृष्टांतका एक अंश ग्रहण करणा॥ सर्व भाव कर दृष्टांतकों नही
मिलावणा॥ अरु प्रतत्तकों दोष करतें नही करणा॥ एक अंश दृष्टांतका आत्मबो
धके निमित्त सार ग्रहण करणा॥ जैसे अंधकार विषे पदार्थ पड़ा होवै॥ तिसको
दीपकके प्रकाश साथ देख लेवणा॥ सो दीपकके प्रकाश साथ प्रयोजन है॥ ऐसे न
ही करणा॥ जो दीपक किसका है॥ अरु बाती तेल कैसा है॥ अरु किस स्थानका है॥ दी
पकका प्रकाशही अंगीकार करणा॥ तैसे एक अंश दृष्टांतका आत्मबोधके निमित्त
अंगीकार करणा॥ हे रामचंद्र जिसकर वाक्यार्थ सिद्ध होवै॥ सो वचन लेवणा॥ अरु
जिसकर वाक्यार्थ सिद्ध न होवै॥ तिसकों त्याग करणा॥ जो वचन अनुभवकों प्रगट
करै तिसकों अंगीकार करणा॥ अरु जो अनुभवकों प्रगट न करै॥ तिसका त्याग क
रणा॥ जो पुरुष अपणे बोधके निमित्त ग्रहण करता है॥ सो श्रेष्ठ है॥ अरु जो वा
दके निमित्त ग्रहण करता है॥ सो बोध चेतु है॥ सो क्या कहीये॥ ज्ञान कथा करदा है॥ वेदांत न
हीं ज्ञान विषे॥ सो बोधचेतु कहीए॥ उह अर्थकों सिद्ध नही करता॥ जो कोऊ अभिमानकों ले
कर कहता है॥ सो हस्तीकी न्याई सिरपर मिट्टी डारता है॥ तिसका अर्थ सिद्ध नही होता॥ अरु
जो अपणे बोधके निमित्त वचनकों ग्रहण करता है॥ अरु विचार तिसका अभ्यास करता है॥ त
ब उह आत्मशांतको पावता है॥ हे रामचंद्र आत्मपदके पावणे निमित्त अवश्य सेव अभ्यास
चाहीता॥ शांत विचार संतोष अरु संतसमागम सद्बुद्धकी प्रापत होवै॥ तब परमपद
को पावता है॥ हे रामचंद्र दृष्टांत जिसका कहीता है॥ सो पदार्थका एक अंश लेकर कहीता
है॥ सर्वस्व करके ग्रहण कर अखंडका अभाव होता है॥ अरु जो सर्वस्व दृष्टांत कर जाणीये॥ तब
असत्रूप होता है॥ सो ऐसे नही॥ आत्मसत्रूप है॥ अरु अखंड है॥ कार्यकारणतें रहत सद
चेतन्य है॥ तिसके लखावणे निमित्त कार्यकारण जगतका दृष्टांत कैसे दीजे॥ इस जगतका
जो दृष्टांत कहीता है॥ सो एक अंश लेकर कहीता है॥ अरु बुद्धवान भी दृष्टांतके एक अंशकों
ग्रहण करते है॥ हे रामचंद्र जो श्रेष्ठ पुरुष है॥ सो अपणे बोधके निमित्त सारकों ग्रहण क
रता है॥ अरु जिज्ञासीकों एही चाहीता है॥ जो अपणे बोधके निमित्त सारकों ग्रहण करै औ
र वाद न करै॥ जैसे क्षुधार्थीकों चावल पाक आय प्रापत होवै॥ तब भोजन करणेका प्रयोजन
है॥ उनकी उत्पत्ति अरु स्थितका वाद करणा व्यर्थ है॥ हे रामचंद्र वाक सोई है॥ जो अनुभ
वकों प्रगट करे॥ जो अनुभवकों प्रगट न करे॥ तिस वाककों त्याग करणा है॥ जो इसीका वा
क होवै॥ अरु आत्म अनुभवकों प्रगट करै॥ तिसकों ग्रहण करीये॥ अरु परमगुरु जाणी॰

यै ॥ अरु वेद का वचन होवै ॥ अरु अनभव को न प्रगट करै ॥ तिसको भी त्याग करणा है ॥ जै
वलग विश्राम को नहीं पाया ॥ तवलग विचार कर्ना है ॥ विश्राम का नाम तुरीयपद है ॥
जब विश्राम को प्रापत भई ॥ तब अत्यंत शांत होती है ॥ जैसे मंद्राचल पर्वत के क्षोभ ते र
हत क्षीरसमुद्र शांतरूप होया है ॥ तैसे शांत होता है ॥ हे रामचंद्र जो तुरीयपद सो शुद्ध स्व
रूप है ॥ तिसका श्रुति स्मृति उक्त कर्मों के करणे कर प्रयोजन कछु नहीं सिद्ध होता ॥ अ
रु न करणे कर कछु प्रत्यवाय नहीं होती ॥ सदेह होवै ॥ अथवा विदेह होवै ॥ ग्रहस्त होवै
भावे विरक्त होवै ॥ तिसको कर्तव्य कछु नहीं ॥ उह पुरुष संसार समुद्र के पार को प्रापत हो
या है ॥ हे रामचंद्र उपमेय को उपमान कर के जानीता है ॥ सो एक अंश को ग्रहण करके जा
णीता है ॥ तब बोध की प्रापत होती है ॥ अरु जो बोध ते रहित है ॥ सो मुक्त को प्रापत नहीं
होता ॥ उह अर्थ वाक कहता है ॥ हे रामचंद्र सत उत चिद्रूप आत्मा सत्ता इसके घट विषे
विराजत है ॥ तिसको त्याग कर जो और विकल्प उठावता है ॥ सो बोधवंचु है ॥ अरु मूर्ख है
हे रामचंद्र जो अर्थ प्रतक्ष है सो प्रमाण मानता है ॥ अरु जो प्रमाण है ॥ अनुमान अर्था
पत्ति आदिक सो तिसकी सत्ता प्रत्यक्ष प्रमाण कर होती है ॥ जैसे सर्व नदीयां का अधिष्ठा
न समुद्र है ॥ तैसे सर्व प्रमाणों का अधिष्ठान प्रतक्ष प्रमाण है ॥ प्रतक्ष कहा है श्रवण कर
हे रामचंद्र सर्व का चक्षुरूप ज्ञान संवित संवेदन है ॥ तिस चक्षु कर के जो विद्यमान होवै
तिसका नाम प्रतक्ष प्रमाण है ॥ तिन प्रमाणों को विषय करणेवाला जीव है ॥ अपणा वा
स्तवरूप के अज्ञान कर के अनात्म रूपी दृश्य वर्णी है ॥ तिस विषे अहंकृत कर अभिमानी
हूया है ॥ जिस जिस विषे अभिमान हूया है ॥ वहु दृश्य विषे हेय अरु उपादेय बुद्धि हुई
है ॥ अरु राग द्वेष कर के पडा जलता है ॥ आपको कर्ता मान कर वहिर मुखी पडा भटकता है
हे रामचंद्र जब विचार कर के संवेदन अंतरमुखी होवै ॥ तब आत्मपद प्रतक्ष होता है ॥ अरु
निजभाव को प्रापत होता है ॥ परिछिन भाव का अभाव हो जाता है ॥ अरु शुद्ध सत्ता को
प्रापत होता है ॥ जैसे स्वप्न ते जागे स्वप्ने का पारी रूप अरु दृश्य भ्रम नष्ट हो जाता है ॥ तैसे आ
त्मा के प्रतक्ष कीये ते सब भ्रम मिट जाता है ॥ अरु शुद्ध आत्म सत्ता भासती है ॥ हे रामचंद्र
द्रष्टा दृश्य अरु दर्शन है ॥ सो मिथ्या है ॥ जो द्रष्टा है तो दृश्य होती है ॥ अरु जो दृश्य है तो द्र
ष्टा होता है ॥ सो इह भ्रम मिथ्या है आकाशरूप है ॥ जैसे पवन विषे स्पंद शक्ति रहती है ॥ तै
से आत्म विषे संवेदन रहती है ॥ जब संवेदन स्पंदरूप होती है ॥ तब दृश्यरूप होकर स्थि
त होती है ॥ जैसे स्वप्ने विषे अनुभव सत्ता दृश्यरूप होकर स्थित होती है ॥ तैसे इह दृश्य है
तो ते सर्व आत्म सत्ता है ॥ ऐसे विचार कर के आत्मपद को प्रापत होवो ॥ अरु जो ऐसे विचार क
र के आत्मपद को प्रापत न होइ सको ॥ तब अहंकार उलेख जो फुरता है ॥ तिस ही का अभा
व करो ॥ पाछे जो शेष रहैगा ॥ सो शुद्ध बोध आत्म सत्ता है ॥ जब शुद्ध बोध को तुम प्रापत हो
वोगे ॥ तब ऐसे चेष्टा पडी होवेगी ॥ जैसे यंत्री कीयां पुतलीयां की संवेदन विना चेष्टा पडी
होती है ॥ तैसे देहरूप पुतली के पालनहारा मन संवेदन है ॥ तिस कर के चेष्टा पडी होवे
गी ॥ परंतु अहंकृत का अभाव होवेगा ॥ ताते यत्न कर के तिस पद को पावणे का अभ्यास करो ॥ जो
नित्य है ॥ शुद्ध है ॥ शांतरूप है ॥ हे रामचंद्र और देव शाह को त्याग कर अपणा पुरुषार्थ करो ॥ अ
रु आत्मपद को प्रापत होवो ॥ जाको पुरुषार्थ विषे शूरमा है ॥ सो आत्मपद को प्रापत होता
है ॥ अरु जो नीच है सो नहीं प्रापत होता ॥ ताते अपणे पुरुषार्थ को आश्रय कर के संसारस
मुद्र के पार को प्रापत होवो ॥ इति श्री मुमुक्षु व्यवहार प्रकरणे दृष्टांत प्रमाण वर्णनं नाम
सप्तदशमः सर्गः ॥ १७ ॥ ओं नमो परमात्मने वसिष्ठ उवाच ॥
हे रामचंद्र प्रथम इह पुरुष सत संग कर शुद्ध बुद्ध करै ॥ तब आत्मपद के पावणे को समर्थ
होवै ॥ प्रथम सतसंग इह है ॥ जिनकी चेष्टा शास्त्र के अनुसार है ॥ तिनका संग करै ॥ तिनके
गुणों को हृदे विषे धारै ॥ वहु इस महापुरुषों के शम संतोष आदिक गुणों को आश्रय करै ॥ शम
संतोष आदिकों कर विज्ञान उपजता है ॥ जैसे मेघों कर के अन्न उपजता है ॥ अरु अन्न कर प्रजा हो
ती है ॥ यज्ञ ते मेघ होते हैं ॥ अरु परस्पर होते हैं ॥ जब शमादिक गुण होते हैं ॥ तब तिन
कर आत्मज्ञान उपजता है ॥ जब आत्मज्ञान होता है ॥ तब शमादिक गुण भी आन स्थित हो
ते हैं ॥ जैसे वडे तडाग विषे मेघ शुभ होते हैं ॥ वहु उन कर तडाग शुभ होता है ॥ तैसे शमा
दिक गुणों कर आत्मज्ञान होता है ॥ अरु आत्मज्ञान ते शमादिक गुण होते हैं ॥ ऐसे विचा
र कर के शमादिकों का अभ्यास करै ॥ तब शीघ्र ही आत्मपद को प्रापत होवै ॥ हे रामचं
द्र ज्ञानवान पुरुष को शमादिक गुण स्वाभाविक प्रापत होते हैं ॥ अरु जिज्ञासी को अ
भ्यास कर के शमादिक प्रापत होते हैं ॥ तिस ते अनंतर आत्मज्ञान को प्रापत होती है ॥
जैसे धानों की पालना स्त्री करती है ॥ अरु उह शब्द भी करती रहती है ॥ तिस कर पंखीयों
को उडावती है ॥ जब इस प्रकार पालना करती है ॥ तब फल को पावती है ॥ तिस कर आयु
पुष्ट होती है ॥ तैसे शमादिकों के पालने कर ॥ आत्मतत्व को प्रापत होता है ॥ हे रामचंद्र
इस मोक्ष उपाय शास्त्र को आदि ते लेकर अंत पर्यंत विचारै ॥ तब अज्ञान निवर्त हो जावैगी
अरु धर्म अर्थ काम मोक्ष सर्व पुरुषार्थ की सिद्धता प्रापत होती है ॥ अरु जस होता ॥ अरु
मोक्ष उपाय शास्त्र बोध का परम कारण है ॥ जो शुद्ध बुद्धिवान पुरुष इसको श्रद्धा संयुक्त
विचारैगा ॥ तिसको शीघ्र ही आत्मपद की प्रापत होवैगी ॥ ताते इस मोक्ष उपाय का भ
लीप्रकार अभ्यास करै ॥ इति श्री मोक्षप्रकरणे निर्वाणे समाप्तः ॥ अष्टादशमः सर्गः ॥ १८
ओं नमो ब्रह्मणे ॥ वसिष्ठ उवाच ॥ हे रामचंद्र ब्रह्म अरु ब्रह्मवेत्ता इह सभ शब्द ब्रह्मस
त्ता के आश्रय पडे फुरते हैं ॥ मैं अरु तूं एह सो इत्यादिक सर्व शब्द आत्मसत्ता के आश्रय फु
रते हैं ॥ जैसे स्वप्ने विषे जेते शब्द होते हैं ॥ सो सभ अनुभव सत्ता विषे होते हैं ॥ तैसे इह
भी जाण ॥ अरु और जो तिस विषे विकल्प है ॥ जो जगत क्या है ॥ अरु कैसे उत्पन्न हूया है ॥
अरु किसको है ॥ इत्यादिक जो विकल्प है ॥ सो बोधवंचु है ॥ हे रामचंद्र इह सभ जगत आ
त्मरूप है ॥ ऐसा स्वप्न का दृष्टांत विचार लेवणा ॥ प्रथम मुमुक्षु प्रकरण तुझको कहा है
अब उत्पत्ति प्रकरण तुझको कहता हों ॥ कैसे उत्पत्ति है ॥ सो श्रवण कर ॥ जो ज्ञान है ॥ जो
वस्तु है ॥ जो स्वभाव है ॥ जो क्रम है ॥ हे रामचंद्र वढता भी उही पदार्थ है ॥ जो उपजया
होता है ॥ अरु घटता भी उही है ॥ जो उपजया होता है ॥ अरु वंध अरु मोक्ष भी उही होता है
उत्तम भी उही होता है ॥ नीच भी उही है ॥ जो उपजया होता है ॥ अरु जो उपजया न होवे
गा ॥ तिस न वढणा है ॥ न घटणा है ॥ न वंध होवणा है ॥ न मोक्ष होवणा है ॥ न उत्तम होव
णा है ॥ न नीच होवणा है ॥ हे रामचंद्र स्थावर जंगम जो कछु जगत देखीता है ॥ सो आ
काशरूप है ॥ दृष्टा का जो दृश्य साथ संजोग है ॥ इसी का नाम वंधन है ॥ तिस संयोग का नि
वर्त होवणा इसका नाम मोक्ष है ॥ सो तिस निवर्त का उपाय मैं कहता हों ॥ देहरूपी जो ज
गत है ॥ सो चिन्मात्ररूप है ॥ और कछु उपजया नहीं ॥ अरु उपजया जो भासता है ॥ सो ऐसे
है ॥ जैसे सुषुप्ति ते स्वप्ना होता है ॥ तैसे जगत की उत्पत्ति होती है ॥ जैसे स्वप्ने ते सुषुप्ति हो
ती है ॥ तैसे जगत की प्रलय हो होती है ॥ जो प्रलय विषे शेष रहिता है ॥ तिसकीयां सं
ज्ञा व्यवहार के निमित्त इह राखीयां हैं ॥ ऋत सत ब्रह्म आत्मा सच्चिदानंद इत्यादिक जि
सके नाम राखे हैं ॥ सो सभका अपणा आपरूप है ॥ चेतनता कर के तिसका नाम जीव हू
या है ॥ अरु शब्द अर्थों को ग्रहण करणे लागा है ॥ हे रामचंद्र शब्द अरु अर्थों को जो ग्रह
ण करता है ॥ सो जीव है ॥ अरु चैतन्य मात्र विषे संवेदन जो स्पंदता हूई है ॥ सो संकल्प
रूपी मन होइ कर स्थित हूया है ॥ तिसके संसरणे कर के देश काल नदीयां पर्वत स्थाव
र जंगमरूप जगत हूया है ॥ जैसे सुषुप्ति ते स्वप्ना होवै ॥ तैसे जगत हूया है ॥ तिसको क
ई अविद्या कहते हैं ॥ कोई जगत कहते हैं ॥ कोई माया कहते हैं ॥ कोई संकल्प कहते हैं ॥ कोई
दृश्य कहते हैं ॥ अरु वास्तव ते सभ ब्रह्मस्वरूप है ॥ अपर कछु नहीं ॥ जैसे स्वर्ण ते भूषण
होता है ॥ सो भूषण स्वर्णरूप है ॥ स्वर्ण ते इतर भूषण कछु वस्तु नहीं ॥ तैसे जगत

अरुब्रह्मविषेकछुभेदनहीं॥ अरुभेदतवहोवैजोकछुजगतउपजायाहोवै॥ जोउपजाहीनहोवै॥ तवभेदकैसेहोवै॥ अरुजोकछुभेदभासताहै॥ सोम्रगत्रिस्नाकेजलवतहै॥ जैसेम्रगत्रिस्नाकीनदीकेतरंगभासतेहैं तहांसूर्यकीयांकिरणांहीजलकीन्याईभासतीयांहैं॥ जलकानामभीनहीं॥ तैसेआत्माविषेजगतभासताहै॥ चेतन्यकेअणुअणुप्रतिसृष्टीहै॥ परकैसीयांहै॥ जोअभासरूपहै॥ कछुउपजयानहीं॥ सर्वदाअद्वैतसत्ताअपणेआपविषेस्थितहै॥ तिसविषेजन्ममरणअरुवंधमुक्तकैसेहोवै॥ जेतीकछुकल्पनावंधमुक्तादिकभासतीहै॥ सोवास्तवकछुनहीं॥ आत्माकेअज्ञानकरकेभासतीहै॥ हेरामचंद्रहोअजगतकोऊनहींउपजया॥ अपणीकल्पनाहीजगतरूपहोइकरभासतीहै॥ अरुपरमादकरकेसत्यहोइरहीहै॥ निवर्तहोवणाकठणहोइरह्याहै॥ अरुजेतनेतिथाहजोकहेहैं॥ तेभीविचारविनाव्यर्थहै॥ इनोंवचनोंमात्रकरतोजगतदूरनहींहोता॥ हेरामचंद्रइकार्थवचनोंविनाहृदयभ्रमनिवर्तनहींहोता॥ अरुजोतनकोंकरकेअरुतपतीर्थदानस्नानध्यानादिककरकैंजगतभ्रमकोंनिवर्तकीयाचाहतेहैं॥ तेमूर्खहैं॥ इसप्रकारतोदृष्टहोताहै॥ जहांजावेगा॥ तहांइसकोंदेशकालकयातेतपंचभूतकसृष्टिहीदृष्टआवेगी॥ अरुकछुदृष्टनआवैगा॥ तोतेंइसकानाशनहोवेगा॥ अरुजोजगततेंउपरतहोइकरसमाधिलगाइवैठेगा तवभीचिरकालतेंउतरेगा॥ वहइजगतकेग्राहअरुअर्थइसकोंभासआवेगे॥ तोवहइअनर्थरूपसंसारभासया॥ तोसमाधिकाक्यासुखहूया॥ जवलगसमाधिविषेरहेगा॥ तवलगसुखरहेगा॥ तोतेंइनोंउपावोंकरकेजगतनिवर्तनहींहोता॥ जैसेकमलकीडोडीविषेवीजहोताहै॥ जवलगउसवीजकानाशनहींहोता॥ तवलगवहइउत्पनहोताहै॥ जोहृछकेपाततोडीयें॥ तोभीवीजकानाशनहींहोता॥ तैसेतपदानादिकोंकरजगतनहीनिवर्तहोता॥ जवलगअज्ञानरूपीवीजनष्टनहींहोता॥ जवअज्ञानरूपीवीजनष्टहोवेगा तवजगतरूपीहृक्षकाअभावहोवेगा॥ औरजोउपाइहैं सोपातोकातोडनाहै॥ अरुऔरउपावोंकरअलयपदनहींप्रापतहोता॥ अरुअलयसमाधिनहींप्रापतहोती॥ हेरामचंद्रऐसीसमाधतोकिसीकोंप्रापतनहींहोती॥ जोशिलाकीन्याईहोजावै॥ मैंसःअस्थालदेवरहाहो॥ अरुजोऐसीभीहोवै॥ तोभीसंसारसत्तानिवर्तनहोवेगी॥ काहेतें जोअज्ञानरूपीवीजनिवर्तनहींभया॥ इहसमाधिऐसीहै॥ जैसेजाग्रततेंसुखुप्तहोजावे॥ जैसेअज्ञानरूपीवासनाकरसुखुप्ततेंवहुतजागआवताहै॥ तैसेअज्ञानरूपीवासनाकरकेसमाधितेंभीजागआवताहै॥ उसकोंवासनाखैंचलेआवतीयांहैं॥ हेरामचंद्रतपसमाधिआदिकोंकरसंसारभ्रमनिवर्तनहींहोता॥ जैसेकांजेकरकेछायाकिसीकीनिवर्तनहींहोती॥ तैसेतपसमाधिकरचित्तकीहत्तिएकाग्रहोतीहै॥ परसंसारनिवर्तनहींहोता॥ जवलगचित्तसमाधिविषेलगाहै॥ तवलगसुखहोताहै॥ जवउठयातवकृइनानाप्रकारकेग्राहअरुअर्थोंसंयुक्तसंसारभासताहै॥ हेरामचंद्रअज्ञानकरकेजगतभासताहै॥ अरुविचारकीयेतेंनिवर्तहोताहै॥ जैसेवालककोंअपणेअज्ञानकरपछांवेविषेवैतालकल्पनाहोतीहै॥ अरुज्ञानकरकेंनिवर्तहोतीहै॥ तैसेउहजगतअविचारकरकेभासताहै॥ विचारतेंनिवर्तहोताहै॥ हेरामचंद्रवास्तवकछुजगतउपजयानहीं॥ असतरूपहै॥ जोकछुस्वरूपतेंउपजयाहोता॥ तवनिवर्तहोता॥ जोतेंविचारकरनिवर्तहोताहै॥ तातेंजाणीताहै योवरोपाकछुनहीं॥ जोवस्तुसत्यहोतीहै॥ तिसकीनिवर्तनहींहोती॥ अरुजोअसत्यहै सोथिरनहींरहती॥ हेरामचंद्रसतरूपआत्माहै॥ तिसकाअभावकदाचितनहींहोता॥ अरुअसतरूपजोजगतहै॥ सोस्थिरनहींहोता॥ वहइजगतआत्माविषेअभासरूपहै॥ अरंभअरुपरिणामकरकछुउपजयानहीं॥ जहांचेतन्यअणुहोताहै॥ तहांसृष्टहोतीयांहै॥ काहेतेंजुआभासरूपहै॥ आत्मरूपआदर्शहै॥ तिसविषेअनंतसृष्टांप्रतिविवतहोतीयांहै॥ अरुआदर्शविषेप्रतिविंवभीतवहोताहै जोहृसदानिकटहोताहै॥ अरुआत्मानिकटदूरसाकोऊनहीं अरुप्रतिविंवहोताहै॥ काहे

तेंजुआभासरूपहै॥ एकहीआत्मसत्ताचेतन्यताकरकेद्वैतकीन्याईहोइकरभासतीहै॥ औरकछुवणानहीं॥ जैसेफूलविषेसुगंधहोतीहै॥ अरुतिलोंविषेतेलहोताहै॥ अरुअग्निविषेउस्नताहोतीहै॥ अरुजैसेमनोराजकीसृष्टहोतीहै॥ तैसेआत्माविषेजगतहै॥ जैसेमनोराजतेंमनोराजकीसृष्टभिन्नकछुनहीं॥ तैसेइहजगतआत्मातेंभिन्नकछुवणानहीं॥ इतिश्री[illegible]नामप्रथमसर्गः॥ ॥ [illegible]म:॥ वसिष्ठउवाच॥ हेरामचंद्रएकआकाशजआख्यानहै॥ अरुश्रवणेकाभूषणहै॥ अरुवेथकाकारणहै॥ तिसकोंश्रवणकरु॥ आकाशजएकब्राह्मणहोतभया॥ सोकैसाब्राह्मणहै॥ सुधचिदाकाशतेंतिसकीउत्पतभईहै॥ धर्मनिष्ठहै॥ अरुसदाआत्मस्थितरहताहै॥ अरुभलीप्रकारप्रजाकीपालनाकरताहै॥ सोचिरजीवीहै॥ तवमृत्युदेवताविचारकरतभया॥ जोमैंअविनाशीहों॥ औरजीवजोउपजतेहैं॥ तिनकोंमैंमारताहों॥ परइहजोब्राह्मणहै॥ तिसकोंमैंनहींभोजनकरसकता॥ मरीचादिकइसब्राह्मणपरिकोंदितहोगईहै॥ जैसेषड्गकीधारापथरऊपरचलाईऊंदितहोइजातीहै॥ तैसीमेरीशक्तिब्राह्मणपरिकोंदितहोजातीहै॥ हेरामचंद्रऐसेविचारकरकैंमृत्युब्राह्मणकोंभोजनकरणेकेनिमित्तउठया॥ जैसेश्रेष्ठपुरुषअपणेआचारकर्मकोंनहींत्यागकरते॥ तैसेमृत्युअपणेकर्मकोंविचारकरचलया॥ जवब्राह्मणकेगृहविषेमृत्युप्रवेशकीया॥ तवइसकोंअग्निज्वालाकोंउदतभई॥ जैसेप्रलयकालविषेमहातेजसंयुक्तअग्निसर्वपदार्थोंकोंजलावतीहै॥ तैसेमृत्युकोंअग्निजलावणेलगी॥ तवमृत्युदोउकरआगेगयाजहांब्राह्मणवैठाथा॥ अंतःपुरविषेजाइकरपकडनेलागा॥ परब्राह्मणकोंपकडनसके॥ जैसेवलवानपुरुषभीऔरकेसंकल्पपुरुषकोंपकडनहींसकता॥ तैसेब्राह्मणकोंमृत्युपकडनसके॥ तवमृत्युवहइधर्मराजकेगृहमेंआवतभया॥ अरुकहा॥ हेभगवनजोकोऊउपजयाहै॥ तिसकोंमैंभोजनकर्ता॥ परएकब्राह्मणजोआकाशतेंउपजयाहै॥ तिसकोंनहींकरसकता॥ इहक्याकारणहै॥ ॥यमउवाच॥ हेमृत्युतूकिसीकोंमारनहींसकता॥ जोकोऊमरताहै॥ सोअपणेकर्मकरमरताहै॥ जोकोऊकर्मोंकाकर्ताहै॥ तिसकेमारणेकोंतूसमर्थहोवेगा॥ अरुजिसकाकर्मकोऊनहीं॥ तिसकेमारणेकोंसमर्थनहोवेगा॥ तातेंजाइकरब्राह्मणकेकर्मखोजो॥ जवकर्मोंकोंपावेंगा॥ तवउसकेमारणेकोंसमर्थहोवेगा॥ अन्यथासमर्थनहोवेगा॥ हेरामचंद्रजवइसप्रकारयमकहा॥ तवकर्मखोजनेकेनिमित्तमृत्युचलया॥ कर्मनामहैवासनाका॥ ऊहांजाइकरब्राह्मणकेकर्मोंकोढूंढणेलागा॥ दशोदिशादेखीयां॥ तालसमुद्रवगीचेदेखे॥ द्वीपतेंद्वीपांतरदेखे॥ इत्यादिकसभस्थानदेखेफिर॥ परब्राह्मणकेकर्मोंकीप्रतमाकहूंनपाई॥ हेरामचंद्रमृत्युवडावलवंतहै॥ परब्राह्मणकेकर्मोंकेनपावतभया॥ तवमृत्युवहइधर्मराजपासआया॥ केसाधर्मराजहै॥ जोसंपूर्णसभायोंकानाशकरताहै॥ अरुसदाज्ञानस्वरूपहै॥ तिसकोंमृत्युकहतभया॥ हेसभायोंकेनाशकरता॥ तिसब्राह्मणकेकर्मफलकोंकहूंनहींदृष्टआवते॥ वहुतप्रकारढूंढरह्याहों॥ जोशरीरधारीहै॥ सोसभकर्मसंयुक्तहै॥ इसकाजोकर्मकोऊनहीं सोक्याकारणहै॥ ॥यमउवाच॥ हेमृत्युइसब्राह्मणकीउत्पतसुधचिदाकाशतेंहूईहै॥ तहांनकोऊकारणथा॥ नकोऊकर्मथा॥ जोपदार्थकारणविनाहै॥ सोजिसविषेभास्याहै॥ सोईस्वरूपहै॥ हेमृत्युसुधआकाशतेंजिसइसकाहोवणाहूयाहै॥ तोइहभीउहीरूपहै॥ इहब्राह्मणभीसुधचिदाकाशरूपहै॥ अरुइसकाचेतन्यहीवपुहै॥ इसकाकर्मकोऊनहीं॥ नकोऊकर्मकीयाहै॥ सुधचिदाकाशइसकास्वरूपहै॥ अपणेस्वरूपतेंआपहीइसकाहोवणाहूयाहै॥ इसकारणतेंइसकानामस्वयंभूहै॥ अरुसदाअपणेआपविषेस्थितहै॥ इसकोंजगतऔरकछुनहींभासता॥ सदाअद्वैतरूपहै॥ ॥मृत्युउवाच॥ हेभगवनजोइहआकाशरूपहै॥ तोसाकाररूपकोंदृष्टआवताहै

रामउवाच॥ हे स्वामी इह सदा निराकार चैतन्य वपु है॥ इसके साथ आकार कोऊ नहीं॥ अरु अ-
हंभाव भी इस विषे नहीं॥ वहु इनाश इसका कैसे होवै॥ अहंत्व को जानता ही नहीं॥ जग-
त का निश्चय भी इस विषे नहीं॥ इह ब्रह्म आ अचैत्य चिन्मात्र रूप है॥ जिसके मन विषे पदा-
र्थी का सद्भाव होता है॥ तिसका नाश भी होता है॥ जिसको जगत भासता ही नहीं॥ तिस-
का नाश कैसे होवै॥ हे स्वामी जो वडवानली भी कोऊ होवै॥ अरु जेजीरे से भी होवै॥ तो भी
आकाश को बांध न सकेगा॥ तैसे ब्रह्म आकाश रूप है॥ इसका नाश कैसे होवै॥ तां ते इ-
सके नाश करणे का उद्यम त्याग करु॥ अरु देहधारीयों को जाउ मारु॥ इह तुमसों न सहेगा
हे रामचंद्र ऐसे सुणकर मृत्यु आश्चर्यवान होइकर अपणे गृह विषे आया॥ रामउवाच॥ हे
भगवन इह तो हमारे बडे पितामह ब्रह्मा की वारता तैने सो कही है॥ वसिष्ठउवाच॥ हे रामचं-
द्र वारता ब्रह्मा की कही है॥ पर मृत्यु अरु यम के विवाद निमित्त मैं तुम को श्रवण कराई है
इस प्रकार जब बहुत काल वितीत हुया॥ अरु कल्प का अंत आया॥ तब मृत्यु सर्व भूतों को
भोजन कर लीया॥ वहु ब्रह्मा के भोजन करणे को गया॥ जैसे किसी का कर्म होता है॥ अरु
एक वार सिद्ध न भया॥ तो छोड नहीं देता॥ वहु उद्यम करता है॥ तैसे मृत्यु भी ब्रह्मा के सन्मु-
ख गया॥ तब धर्मराज कहा॥ हे मृत्यु इह जो ब्रह्मा है॥ सो आकाश रूप है॥ अरु आकाश ही इ-
सका शरीर है॥ तो आकाश के पकडने को तूं कैसे समर्थ होवेगा॥ अरु इह जो इसका वपु भासता
है॥ सो ऐसे है॥ जैसे शिलपी के मन विषे थंभ की पुतली होती है॥ सो कछु हुई नहीं॥ थंभ-
ही है॥ तैसे स्वरूप ते इतर इसका होवणा नहीं॥ इह तो ब्रह्म रूप है॥ इसारत मारत माव-
मन विषे इसकी प्रतिभा हुई है॥ इह तो निरवपु है॥ जो पुरुष देहवंत होता है॥ तिसको ग्रह-
ण करणा सुगम होता है॥ नहीं वंध्या के पुत्र के ग्रहण करणे को समर्थ होवीता॥ काहे ते
जो निरवपु है॥ इसके मारणे की तैसे इह भी निरवपु है॥ इसके मारणे की कल्पना को-
त्याग॥ और देहधारीयों को जाइ मार॥ इति श्री उत्पत्तिप्रकरणे प्रथम मृत्यु ब्रह्म वर्णनं नाम द्वि-
तीय सर्गः॥२॥ हरिॐ वसिष्ठउवाच॥
हे रामचंद्र इस प्रकार मृत्यु का यम कहा॥ जब्रह्मा जो आकाश रूप है॥ अरु हेतु कलना ते र-
हित है॥ हे रामचंद्र शुद्ध चिन्मात्र सत्ता स्वरूप मह है॥ जिस विषे आकाश भी पर्वत न्याई स्थूल है
तिस चिन संवित विषे जो अहं अस्मि चैत्योन्मुखत्व हुया है॥ तिस कर अपणे साथ देह को दे-
खत भया है॥ सो देह भी आकाश रूप है॥ हे रामचंद्र शुद्ध चिन्मात्र विषे चैत्य का उल्लेख किसी
कारण कर के नहीं हुया॥ स्वतः ही स्वतंत्र ऐसे उल्लेख आन फुरा है॥ तिसका नाम स्वयंभू ब्रह्मा
हुया है॥ तिस ब्रह्मा को सदा ब्रह्म ही का निश्चय है॥ ब्रह्मा अरु ब्रह्म विषे भेद कछु नहीं॥ जैसे
समुद्र अरु तरंग विषे कछु भेद नहीं॥ जैसे आकाश अरु शून्यता विषे भेद नहीं॥ फूल अरु
गंध विषे भेद नहीं॥ तैसे ब्रह्मा अरु ब्रह्म विषे भेद नहीं॥ जैसे जल ही द्रवता करके तरंग रूप
होकर भासता है॥ तैसे आत्म सत्ता चैत्यता करके ब्रह्मा होकर भासती है॥ ब्रह्मा ही सरीर वस्तु
कछु नहीं॥ सदा चैतन्य आकाश है॥ पृथिवी आदिक तत्वों ते रहित है॥ हे रामचंद्र न कोऊ
इसका कारण है॥ न कोऊ कर्म है॥ रामउवाच॥ हे भगवन तुम सो कहा जो पृथिवी आदिक-
तत्वों ते रहित ब्रह्माजी का वपु है॥ अरु संकल्प मात्र है॥ तो स्मृति संस्कार ही इसका कारण
क्यों न होवै॥ जैसे हम को स्मृति है॥ और जीवों को स्मृति है॥ तैसे ब्रह्मा को भी होवेगा॥ वसिष्ठ-
उवाच॥ हे रामचंद्र संस्कार स्मृति उसका कारण होती है॥ जो आगे भी देहवान होता है॥ जो
पदार्थ आगे देख्या होता है॥ तिसकी स्मृति संस्कार भी होता है॥ अरु जो देख्या नहीं होता॥
अरु तिसकी स्मृति संस्कार भी नहीं होता॥ सो ब्रह्माजी अद्वैत है॥ अज है॥ आदि मध्य अंत ते
रहित है॥ इसकी स्मृति कारण कैसे होवै॥ इह तो सद्बोध रूप है॥ अपणे आप ते जु इस-
का होवणा हुया है॥ इसी ते इसका नाम स्वयंभू है॥ सद्बोध विषे चैत्य उल्लेख हुया है॥
सो आत्म तत्व ब्रह्मा रूप होइकर स्थित हुया है॥ अपणे चित्त संवित कारण होवे सो-
होवै॥ अरु इसका कारण कोऊ नहीं॥ सदा निराकार है॥ अरु संकल्प रूप इसका शरीर है

और पृथिवी आदिक भूतों ते रहित शुद्ध आतिवाहक इसका वपु है॥ रामउवाच॥ हे मुनी-
श्वर जेते कछु जीव हैं॥ तिनको दो दो शरीर हैं॥ एक आतिवाहक शरीर है॥ दूसरा अधिभूतक श-
रीर है॥ तो ब्रह्मा का एक ही आतिवाहक शरीर कैसे है॥ इह वारता स्पष्ट कर कहो॥ वसिष्ठउ-
वाच॥ हे रामचंद्र जो सकारण रूप जीव हैं॥ तिन के दो शरीर हैं॥ अरु ब्रह्माजी अकारण है
इस कारण ते इसका एक आतिवाहक शरीर है॥ हे रामचंद्र सभनों जीवों का कारण ब्रह्मा
है॥ इस कारण ते उह जीव दो दो देहों को धारते हैं॥ अरु ब्रह्माजी का कारण नहीं॥ अपणे
आप ते उपज्या है॥ इस कारण ते इसका नाम स्वयंभू है॥ अरु आदि जो तन का प्रादुर्भाव हु-
या है॥ सो आतिवाहक शरीर है॥ अपणे स्वरूप का विस्मरण नहीं भया॥ सदा अपणे वास्त-
व स्वरूप विषे स्थित है॥ तां ते आतिवाहक है॥ अरु दृश्य को अपणा संकल्पमात्र जाणते हैं
अरु जिनको दृश्य दृढ प्रतीत हुई है॥ तिनको अधिभूतक कहीता है॥ जैसे जडता कर के जल
राग होता है॥ तैसे दृश्य के दृढता कर के अधिभूतक होता है॥ हे रामचंद्र जेता कछु जगत तु-
झको दृढ आवता है॥ सो सभ आकाश रूप है॥ किसी पृथिवी आदिक भूतों ते नहीं हुया॥ भ्र-
म कर के अधिभूत भासते हैं॥ जैसे स्वप्न नगर आकाश रूप होता है॥ किसी कारण सों नहीं
उपज्या॥ न किसी पृथिवी आदिक तत्वों ते उपज्या है॥ सभ आकाश रूप है॥ अरु निद्रा दो-
ष कर के अधिभूत कहो इकर भासता है॥ तैसे इह जाग्रत जगत भी अज्ञान कर के अधिभूत-
क भासता है॥ जैसे स्वप्न अज्ञान भ्रम कर के अर्थाकार भासता है॥ तैसे जाग्रत अज्ञान कर के अ-
र्थाकार भासती है॥ हे रामचंद्र इह संपूर्ण जगत संकल्पमात्र है॥ और कछु वणा नहीं॥ जै-
से मनोराज के पर्वत आकाश होती है॥ तैसे इह जगत आकाश रूप है॥ वास्तव कछु वणा
नहीं॥ सभ संकल्प के पुरुष है॥ सभ जगत संकल्प ते उपज्या है॥ जैसे बीज ते देशकाल कर
के अंकुर निकसता है॥ तैसे सभ दृश्य मन ते उपजती है॥ सो मन रूपी ब्रह्मा॥ अरु ब्रह्मा-
ही तद्रूप है॥ तिसके संकल्प विषे संपूर्ण जगत स्थित है॥ सो सभ आकाश रूप है॥ अधि-
भूतक कोऊ नहीं॥ हे रामचंद्र अधिभूतक जो आत्मा विषे भासते हैं॥ सो भ्रांतिमात्र मात्र
है॥ जैसे बालक को परछावें विषे वैताल भासता है॥ तैसे अज्ञानी को अधिभूतक भासते हैं॥
सो भ्रांतिमात्र है॥ वास्तव कछु नहीं॥ हे रामचंद्र जेते कछु जीव हैं॥ सो सभ ही आतिवाहक
हैं॥ परंतु अज्ञानी को आतिवाहकता निवृत्त हो गई है॥ अरु अधिभूतकता दृढ हो गई है॥
अरु जो ज्ञानवान पुरुष हैं॥ सो आतिवाहक रूप हैं॥ हे रामचंद्र जिनों पुरुषों को प्रमाद न-
ही हुया॥ सो सदा आत्मा विषे स्थित हैं॥ आतिवाहक रूप हैं॥ अरु सभ जगत आकाश रू-
प है॥ जैसे संकल्पपुर होता है॥ जैसे गंधर्वनगर होता है॥ जैसे स्वप्नपुर होता है॥ तैसे
इह इह जगत है॥ जैसे थंभ विषे पुतलीयां शिल्पी कल्पता है॥ जो एती पुतलीयां थंभ वि-
षे हैं॥ सो पुतलीयां उपजीयां कछु नहीं॥ ज्यों का त्यों थंभ स्थित है॥ पुतलीयां का सद्-
भाव शिल्पी के मन विषे होता है॥ तैसे सभ विश्व मन विषे स्थित है॥ स्वरूप ते कछु व-
णी नहीं॥ दृश्य ही मन रूप है॥ अरु मन ही दृश्य रूप है॥ जैसे तरंग ही जल रूप है॥ जल
ही तरंग रूप है॥ रामचंद्र जब लग मन का सद्भाव है॥ तब लग दृश्य है॥ दृश्य बीज म-
न है॥ जैसे कमल डोडे का सद्भाव उसके बीज विषे होता है॥ तिस कर कमल डोडे की उत्प-
त्ति होती है॥ तैसे जगत का बीज मन है॥ सभ जगत मन ते उत्पत्ति होता है॥ हे रामचंद्र जब
तुझको स्वप्न आवता है॥ तब तेरा ही चित्त दृश्य को चेतता जाता है॥ और तो कारण ऊहां
कोऊ नहीं॥ तैसे इह जगत भी जाण॥ इह तेरे अनुभव की वारता कही है॥ काहे ते जु तिन
तुझको अनुभव होता है॥ हे रामचंद्र मन ही जगत का कारण है॥ और कोऊ नहीं॥ जब
मन उपशम होवेगा॥ तब दृश्य भ्रम मिट जावेगा॥ जब लग मन उपशम नहीं होता
तब लग दृश्य भ्रम निवृत्त नहीं होता॥ अरु जब लग दृश्य नहीं निवृत्त होता॥ तब लग स-
द्बोध नहीं होता॥ जब लग सद्बोध नहीं होता॥ तब लग आत्मानंद नहीं प्राप्त
होता॥ इति श्री उत्पत्तिप्रकरणे बोध हेतु वर्णनं नाम तृतीय सर्गः॥३॥ ॥

ॐ श्रीगुरुभ्योनमः ॥ वाल्मीकिरुवाच ॥ इसप्रकारसुनिशार्दूलवसिष्ठजीकहकरतूसी
भए ॥ अरुसर्वश्रोतावसिष्ठजीकेवचनोंकोश्रवणकरकेतिनकेअर्थविषेस्थितभए ॥ इं
द्रियोंकीचपलताकोंत्यागकरवृत्तिकोंस्थिरकरभए ॥ अरुतुरंगकेघुंघरूजनकेतेथे
सोस्थिरहोगए ॥ पिंजरेयोंविषेजोतोतेथेतेभीसुणकतूसीहोगए ॥ अरुललनाजो
चपलथीयां सोतिसकालविषेअपणीचपलताकोंत्यागकरतभईयां ॥ अरुवनके
जोपशूपंछीनिकटथे सोभीसुणकरतूसीभए ॥ मध्याह्नकासमाहूया ॥ तवराजा
कोंवडेभृतोंग्रानकहा ॥ हेराजनअवस्नानसंध्याकासमाहूयाहै ॥ उठकेरस्नानसंध्या
करो ॥ जवइसप्रकारवडेभृतोंकहा ॥ तववसिष्ठजीवोले ॥ हेराजनअवजोकछुकहणा
था सोकहरहेहै ॥ कालकछुवहुडकहींयेगा ॥ तवराजेकहाअस्तश्रैसेहीहोवो ॥ तव
राजाउठकरअर्घपादनेवेदकरवसिष्ठजीकापूजनकरतभया ॥ औरजोब्रह्मऋषि
थे ॥ तिनकीयथायोगपूजाकरी ॥ तववसिष्ठजीउठखडेहोए ॥ परस्परआपसमेंनम
स्कारकीये ॥ अरुअपणेअपणेस्थानोंकोचले ॥ आकाशचारीआकाशकोंगए ॥ पृथिवी
ऊपररहणेवालेब्रह्मऋषिराजऋषिपृथिवीपरगए ॥ पातालवासीपातालकोंगए
अरुसूर्यभगवानदिनरात्रकीकल्पनाकोंत्यागकरअस्थिरहोरहे ॥ अरुमंदमंदपवन
चल्यासुगंधसहित ॥ मानोपवनभीकृतार्थहोवणेआयाहै ॥ तवसूर्यअस्तहूए ॥ औरअं
धेरकोंप्रकाशनेलगे ॥ काहेतेंजोसंतजनसभदोरकोंप्रकाशतेहै ॥ अरुरात्रेहूई ॥ ता
रागणप्रगटहोआए ॥ वहुडअस्तनहूयीकिरणोंकोधारेहूएचंद्रमाआनउदेहूया ॥ अंध
कारकाअभावहोगया ॥ अरुराजाकेद्वारभीचंद्रमाकीयांकिरणसाथसीतलहोरहे
मानोवसिष्ठजीकेवचनोंकोसुणकरइनकीतप्तभीमिटगईहै ॥ अरुसभस्रोताविचा
रपूर्वकरात्रकोंवितीतकरतभए ॥ तवसूर्यकीयांकिरणानिकसीयां ॥ तवअंधकारन
ष्टहोगया ॥ जैसेसंतोंकेवचनोंकरअज्ञानीकेहृदेकातमनष्टहोताहै ॥ तैसेअंधकारन
ष्टहोगया ॥ अरुसभजगतकीक्रियाप्रगटहोआई ॥ तवसूर्यकीयांकिरणांसाथसभ
श्रोतास्नानकरकेसंध्याकरकेआनस्थितभए ॥ खेचरभूचरपातालकेवासीसभअ
पणेअपणेस्थानोंपूर्वदिनकेमोंआइवैठे ॥ परस्परनमस्कारकीये ॥ तवइहवेलेप्रसं
गकोंपाइकर ॥ रामउवाच ॥ हेभगवनश्रैसामेतोमनहै ॥ संसाररूपीडंखोंकोमंजरीजिस
नेंवदीहै ॥ तिसमनकास्वरूपतुकोकहोजोक्याहै ॥ वसिष्ठउवाच ॥ हेरामचंद्रइस
मनकारूपकछुदेखणेविषेनहीआवता ॥ इहमनतामममात्रहै ॥ वास्तवरूपइसका
कछुनही ॥ आकाशकीन्याईसूनहै जैसेआकाशसून्यरूपहै ॥ तैसेमनसून्यरूपहै
हेरामचंद्रमनआत्माविषेकछुउपजयानही ॥ जैसेसूर्यविषेतेजहोताहै ॥ तैसेआ
त्माविषेमनहै ॥ जैसेवायुविषेस्पंदहै ॥ जैसेजलविषेतरंगहै ॥ जैसेआकाशविषेदू
सरांचंद्रमाहै ॥ सोवास्तवकछुनही ॥ तैसेमनआत्माविषेकछुवास्तवनही ॥ हेरा
मचंद्रइहआश्चर्यहै ॥ जोवास्तवतेकछुउपजयानही ॥ अरुआकाशकेन्याईसभत्रि
टीविषेवर्ततताहै ॥ अरुसंपूर्णजगजसनकरकेभासताहै ॥ असत्यरूपजगतजिस
करकेभासताहै ॥ तिसकानाममनहै ॥ अरुसंकल्पविकल्पजोफुरताहै ॥ सोमनका
रूपहै ॥ तहांजहांसंकल्पफुरताहै ॥ तहांतहांमनहै ॥ जैसेजहांजहांतरंगफुरता
है ॥ तहांतहांजलहै ॥ तैसेजहांजहांसंकल्पफुरताहै ॥ तहांतहांमनहै ॥ औरभी
मनकेनामहै ॥ स्मनकहीये ॥ अविद्याकहीये ॥ मलनताकहीये ॥ तमकहीये ॥ स
भमनकेनामहै ॥ ज्ञानवानपुरुषजानतेहै ॥ हेरामचंद्रजेतेकछुजगतजालभास
तेहै ॥ सोसभमननेंउत्पतेहूएहै ॥ अरुसभदृश्यमनरूपहै ॥ काहेतेंजमनकीरची
हूईहै वास्तवकछुनही ॥ हेरामचंद्रमनरूपजोदेहहै ॥ तिसकानामआतवाहक
शरीरहै ॥ सोसंकल्परूपहै ॥ अरुसभजीवोंकाआदिवपुहै ॥ तिससंकल्पविषेजो
दृढअभ्यासहूयाहै ॥ तिसकरअधिभूतकभासणेलगाहै ॥ अरुआदिस्वरूपकाप्र

माटहूयाहै ॥ हेरामचंद्रइहसभजगतसंकल्परूपहै ॥ परस्वरूपकेप्रमादकरकेपिं
डआकारभासताहै ॥ जैसेस्वप्नदेशसभआकाशरूपहोताहै ॥ पृथिवीआदिकतत्वोंकाअ
भावहोताहै ॥ अरुअज्ञानकरकेअधिभूतभासतेहै ॥ सोमनहीकासंसरताहै ॥ तैसेइह
जगतहै ॥ सभमनकेफुरणेकरभासताहै ॥ हेरामचंद्रजहांमनहै ॥ तहांदृश्यहै ॥ जहां
दृश्यहै तहांमनहै ॥ जवमननष्टहोवे ॥ तवदृश्यभीनष्टहोवे ॥ शुद्धवोधमात्रविषेजोदृ
श्यभासतेहै ॥ सोमनहै ॥ जवलगदृश्यभासतीहै ॥ तवलगमुक्तनहोवेगा ॥ जवदृश्यअस
नष्टहोवेगा ॥ तवशुद्धवोधकोंप्राप्तहोवेगा ॥ हेरामचंद्रदृष्टादर्शनदृश्यरूपजोत्रिपुटी
भासतीहै ॥ सोमनकरभासतीहै ॥ जैसेस्वप्नविषेत्रिपुटीभासतीहै जोत्रिपुटी
त्रिपुटीकाअभावहोजाताहै ॥ अरुअपणाआपहीभासताहै ॥ जवजागतउठया ॥ तव
हूए ॥ अपणाअद्वैतहीभासताहै ॥ जवलगशुद्धवोधप्राप्तनभया ॥ जैसेआत्मसत्ताविषेजागे
वर्तनहीहोता ॥ अरुवाहरदेखताहै ॥ तवरहिहीरहआवतीहै ॥ तवलगदृश्यभ्रमनि
रहरहआवतीहै ॥ अरुतिसकोंसमताणकरवागदेषकल्पनाउठतीहै ॥ जवअंतरदेखतातोभी
आत्मपदकोंप्राप्तनहोताहै ॥ तवदृश्यभ्रमनष्टहोजाताहै ॥ अरुजवमन
मिटी ॥ तववृक्षकेपत्रोंकाहलनाभीमिटजाताहै ॥ जैसेजववायुकीस्पंदना
णहै ॥ रामउवाच ॥ हेभगवनइहदृश्यरूपीविसूचकारोगहै ॥ तोतेंमनरूपीदृश्यहीवंधनकाकाम
वे ॥ सोकृपाकरकेकहो ॥ वसिष्ठउवाच ॥ हेरामचंद्रसंसाररूपीवैतालइसकोंलगाहै ॥ तिसकीनिवृत्तिकेसेहो
तिसकीनिवृत्तिअकसमात्रकरहोतीहै ॥ प्रथमतोविचारकरकेजगतकास्वरूपजाणे ॥ ति
सकेअनंतरजवआत्मपदविषेविश्रांतहोवेगी ॥ तवतूंसर्वआत्माहोवेगा ॥ हेरामचंद्रदृ
श्यभ्रमजोतुझकोंभासताहै ॥ तिसकोंमैंउत्तरग्रंथकरनिवर्तकरोंगा ॥ इसविषेसंदेहनही
श्रवणकरु ॥ इहदृश्यमनतेंउपजीहै ॥ इसकासदभावमनविषेहूयाहै ॥ जैसेकमलकेडो
डेकाजोउपजणाहै ॥ सोकमलडोडेकीवीजविषेहै ॥ तैसेसंसारकाउपजणासत्तातेहो
ताहै ॥ सोसत्तअनुभवआकाशविषेहोतीहै ॥ हेरामचंद्रसत्तातिसपदार्थकीहोतीहै
जिसकाअनुभवसदभावरूपग्रहणहोताहै ॥ अरुजेताकछुजगततुझकोंभासताहै ॥ सो
संकल्परूपहै ॥ कोउपदार्थसततरूपनही ॥ जोवस्तुअसतहै ॥ तिसकीस्थिरतानहीहोती
अरुजोसत्यवस्तुहै ॥ तिसकाअभावकदाचितनहीहोता ॥ जेताकछुप्रपंचभासताहै ॥
सोअसत्यरूपहै ॥ मनकेचितवणेतेंउत्पतिहूयाहै ॥ जवमनफुरणेतेंरहतहोवे ॥ त
वजगतभ्रमनिवर्तहोजाताहै ॥ हेरामचंद्रपृथिवीपर्वतआदिकजगतअसत्यरूपनहो
ता ॥ तवमुक्तभीकोउनहोता ॥ मुक्तजोहोणाहै ॥ सोदृश्यभ्रमतेंहोणाहै ॥ जोदृश्यभ्रम
नष्टनहोता ॥ तोमुक्तकोउनहोता ॥ सोतोब्रह्मऋषिराजऋषिदेवतेइत्यादिकवहुते
मुक्तहूएहै ॥ इसकारणतेकहीताहै ॥ जोदृश्यअसत्यरूपहै ॥ मनकेसंकल्पविषेस्थित
है ॥ हेरामचंद्रमनस्थितकरदेखु ॥ वहुडअहंत्वंइदंआदिकजगततुझकोंकछुनभासे
गा ॥ चित्तरूपीआदर्शहै ॥ तिसविषेसंकल्परूपीदृश्यमलनताहै ॥ जवइहमलनताहू
रहोवेगी ॥ तवआत्माकासाक्षात्कारहोवेगा ॥ हेरामचंद्रइहदृश्यभ्रममिथ्याउदेभईहै
जैसेगंधर्वनगरहोताहै ॥ तैसेस्वप्नपुरहोताहै ॥ तैसेइहजगतभीहै ॥ जैसेशुद्धआदर्शवि
षेपर्वतप्रतिविंवतहोताहै ॥ तैसेचित्तरूपीआदर्शविषेइहदृश्यप्रतिविंवतहै ॥ मुकर
विषेजोपर्वतकाप्रतिविंवहोताहै ॥ सोआकाशरूपहै ॥ कछुपर्वतकासदभावनही ॥
तैसेआत्माविषेजगतकासद्भावनही ॥ जैसेवालककोंभ्रमकरपरछावेंविषेपिशाच
वुद्धहोतीहै ॥ तैसेअज्ञानीकोंजगतभासताहै ॥ वास्तवतेजगतकछुनही ॥ हेरामचंद्रन
कछुमनउपजयाहै ॥ नजगतउपजयाहै ॥ दोनोअसत्यरूपहै ॥ जैसेआकाशविषेदूस
राचंद्रमाभासताहै ॥ तैसेआत्माविषेजगतभासताहै ॥ जैसेआकाशअपणीसूनताकेक
हणेहै ॥ तिसविषेजगतकाअत्यंतअभावहै ॥ जैसेसमुद्रजलककेहणेहै ॥ तैसेब्रह्म
सत्ताअपणीआपविषेस्थितपूरणहै ॥ तिसविषेजगतकाअत्यंतअभावहै ॥ रामउवाच

हे भगवन इह तुमारे वचन ऐसे हैं ॥ जैसे कहीये वंध्या के पुत्र पर्वत चूर्ण कीया है ॥ अरु ससे के शृंग अति सुंदर हैं ॥ अरु रेतु विषे तेल निकसता है ॥ अरु पथर की शिला निरतन करती है ॥ अरु जैसे कहीये मृतक का सेन्या गर्जता है ॥ अरु पथर की यां पुतलीयां पाठ करतीयां है ॥ तैसे तुमारे शास्त्र मुझ को भासते हैं ॥ तुम कहते हो इह प्रपंच कछु उपजी है नहीं ॥ अरु है ही नहीं ॥ अरु मुझ को जरा मृत्यु आदिक विकारों सहित प्रतक्ष भासती है ॥ ताते मेरे मन विषे तुमारे वचनों का सद्भाव नहीं स्थित होता ॥ अरु जो तुमारे निश्चे विषे इसी प्रकार है ॥ तो अपणा निश्चा मुझ को भी जनावो ॥ वसिष्ठ उवाच ॥ हे रामचंद्र इह जो हमारे वचन सो यथार्थ है ॥ हमो ने असत्य कदाचित नहीं कहा ॥ ते विचार कर देखु इह जो जगत अडंबर है ॥ सो कारण विना है ॥ जब महाप्रलय होती है ॥ तब पाछे सुद्ध चैतन्य संवित रहती है ॥ तिस विषे कार्य कारण कल्पना कोऊ नहीं रहती ॥ तिस जो बहुड इह जगत उपजा है ॥ सा कारण विना फुरना है ॥ जैसे सुपन सो स्वप्न की सृष्टि फुरती है ॥ जैसे स्वप्न सृष्टि अकारण है ॥ तैसे इह सृष्टि भी अकारण है ॥ हे रामचंद्र जिस का समवाय कारण अरु निमित्त कारण होवे ॥ अरु प्रतक्ष भी भासे ॥ तब जाणीये जो भ्रांत रूप है ॥ जैसे निंद्र स्वप्न का अनुभव तुझ को होता है ॥ तिस विषे नाना प्रकार के पदार्थ कार्य कारण सहित भासते हैं ॥ अरु कारण विना है ॥ तैसे इह जगत भी कारण विना है ॥ ताते आदि कारण विना जगत उपज्या है ॥ जैसे गंधर्व नगर भासता है ॥ जैसे संकल्प पुर भासता है ॥ जैसे आकाश विषे दूसरा चंद्रमा भासता ॥ तैसे इह जगत भासता है ॥ कोऊ पदार्थ सत्य नहीं ॥ जैसे स्वप्ने विषे राज प्रत्तन भासते हैं ॥ अरु नाना प्रकार के पदार्थ भी भासते हैं ॥ सो किसी कारण ते तो नहीं उपजे ॥ सभ आकाश रूप है ॥ मन के संसरण कर के भासते हैं ॥ तैसे इह जगत चित्त के संसरण कर के भासता है ॥ जैसे स्वप्ने ते और स्वप्ना भासता है ॥ बहुड अरु स्वप्ना भासता है ॥ जैसे इह जगत भासते ॥ तैसे जाग्रत जगत जाल मन की कल्पना कर भासते हैं ॥ हे रामचंद्र चलणा दोडणा देणा लेणा बोलणा सुणना सुंघणा इत्यादिक जगत विषे दृष्य आदिक व्यवहार जो है ॥ सो सभ मन के फुरणे कर होते हैं ॥ आत्मा विषे विकार कोऊ नहीं ॥ जब मन उपशम होता है ॥ तब सभ कल्पना निवृत्त हो जाती है ॥ तैसे संसार का कारण मन है ॥ इति श्री उत्पत्ति प्रकरणे बोध हेतु वर्णनं नाम [illegible] सर्ग: ॥

५१

ॐ श्री परमात्मने नमः ॥ राम उवाच ॥ हे भगवन मन का इह रूप क्या है ॥ इह तो माया मय है ॥ इस का होवणा जिस ते है ॥ सो कवन पद है ॥ वसिष्ठ उवाच ॥ हे रामचंद्र जब महाप्रलय होती है तब सभ जगत का अभाव हो जाता है ॥ पाछे जो शेष रहता है ॥ सो सत्य रूप है ॥ अरु आदि सर्ग के भी सत्य रूप होता है ॥ तिस का नाश कदाचित नहीं होता ॥ सदा प्रकाश रूप है अरु परमदेव है ॥ सुद्ध परमात्म तत्व अजन्म अविनाशी है ॥ अद्वैत है ॥ जिस को वाणी नहीं कह सकती ॥ सो पद जीवन मुक्त पावता है ॥ हे रामचंद्र आत्म आदिक जो शब्द हैं ॥ सो भी उस पद विषे कल्पते हैं ॥ स्वभाव कर कोऊ शब्द नहीं प्रवर्तता ॥ शिष्य को जगावणे के निमित्त शास्त्रकारों ने एते नाम देव के कल्पे हैं ॥ मुख्य तो देव को एक अक्षर कहते हैं ॥ एक कहते हैं निर्मल रूप ॥ शून्यवादी कहते हैं ॥ शून्य ही शेष रहता है ॥ वेदांतवादी ब्रह्म कर कहते हैं ॥ विज्ञानवादी बोध ॥ तिस को विज्ञान कर के कहते हैं ॥ एक कहते हैं प्रकाश रूप है ॥ जिस के प्रकाश कर सूर्य आदिक प्रकाशते हैं ॥ एक उस को वक्ता कहते हैं ॥ जो आदि वेद का वक्ता वही है ॥ अरु सस्त कर्ता कहते हैं जो सभ कछु स्मरण कर के उह करता होता है ॥ सभ कछु उस की इच्छा कर के होया है ॥ ताते सभ का कर्ता है ॥ सर्व वित है ॥ सर्व आत्मा है ॥ अरु सर्व का कर्ता है ॥ हे रामचंद्र इत्यादिक संज्ञा तिस की या शास्त्रकारों ने कीया है सर्व का जो अधिष्ठान है ॥ सो परमदेव है ॥ उदे अरु अस्त के विकारों ते रहत है ॥ सुद्ध चैतन्य है ॥ सूर्यवत प्रकाश रूप है ॥ सो देव सभ जगत विषे पूर्ण हो रहा है ॥ हे रामचंद्र आत्म रूपी सूर्य है ॥ ब्रह्म विष्णु रुद्रादिक तिस की यां किरणां हैं ॥ अरु इह आत्म रूपी समुद्र है ॥ तिस विषे जगत रूपी तरंग बुदबुदे उत्पत्ति होते हैं ॥ अरु लीन होते हैं ॥ आत्मा के प्रकाश कर प्रकाशते हैं ॥ जैसे दीपक अपणे आप कर प्रकाशता ॥ अरु सर्व पदार्थ को भी प्रकाशता है ॥ तैसे आत्मा अपणे प्रकाश कर प्रकाशता है ॥ अरु और रहे ॥ हे रामचंद्र इह जो उपजते हैं ॥ सो आत्म सत्ता कर उपजते हैं ॥ सर्व को सत्ता देवन वा तिस ही करी है ॥ पवन विषे स्पर्श तिस ही कीया है ॥ आकाश विषे शून्यता छां उपजाई रा है ॥ सो आत्म सत्ता कर रहे हैं ॥ सर्व पदार्थ को सत्ता उस ही है ॥ सो रके पथर विषे जो जडता है सो तिस ही करी है ॥ स्थावर जंगम जगत का अधिष्ठान रूप ब्रह्म है ॥ हे रामचंद्र आत्म रूपी चंद्रमा है ॥ तिस की या किरणा सो ब्रह्मांड रूपी असंख्य उत्पत्ति होता ॥ सो कैसा चंद्रमा है जो शीतलता अरु अस्त करणे ॥ ब्रह्म रूपी मेघ है ॥ तिस ते जो जीव रूपी बूंदा अवलीयां हैं जैसे जुलीका प्रकाश होता है ॥ अरु छपन हो जाता है ॥ तैसे जगत होता है प्रगट ॥ अरु छपन हो जाता है ॥ सभ का अधिष्ठान आत्म सत्ता है ॥ सो नित्य सुद्ध बुद्ध परमानंद रूप है ॥ सत असत रूप पदार्थ सभ आत्म सत्ता कर के सिद्ध होते हैं ॥ हे रामचंद्र तिस देव की सत्ता कर के जड दृश्य एक चैतन्य हो कर चेष्टा करते हैं ॥ जैसे चुंबक पथर की सत्ता कर के लोहा चेष्टा कर्ता है ॥ तैसे चैतन्य रूपी मन कर देह चेष्टा करती है ॥ सो आत्मा चैतन्य नित्य है ॥ सभ का करता आत्मा ही है ॥ जिस का करता और कोऊ नहीं ॥ सभ साक्षी अभेद रूप है ॥ समान सत्ता है ॥ उदे अस्त ते रहत है ॥ हे रामचंद्र जो पुरुष तिस देव को साक्षात्कार करता है ॥ तिस की कुया सभ नष्ट हो जाती है ॥ अचित जड ग्रंथ भेदी जाती है ॥ केवल बोध रूप होता है ॥ तुरस्वभाव सत्ता विषे मन स्थित होता है ॥ तब वस्तु को सन्मुख देख कर भी विह्वल नहीं होता ॥ इति श्री उत्पत्ति प्रकरणे देव रूप वर्णनं नाम [illegible] सर्ग: ॥ ॥ हरि ॥ वसिष्ठ उवाच ॥

हे रामचंद्र इह देव किसी स्थान विषे नहीं रहता ॥ अरु कहूं दूर भी नहीं ॥ अपणे आप विषे स्थित है ॥ हे रामचंद्र घट घट विषे देव है ॥ पर अज्ञानी को दूर भासता है ॥ सो स्नान दान तप आदिक कर के नहीं प्राप्त होता ॥ ज्ञान ही कर प्राप्ति होता है ॥ कर्तव्य कर के नहीं प्राप्त नहीं होता ॥ जैसे मृगतृष्णा की नदी भासी है ॥ सो कर्तव्य कर नहीं निवर्त होती ॥ ज्ञान कर के निवर्त होती है ॥ तैसे जगत की निवृत्त आत्म ज्ञान कर होती है ॥ हे रामचंद्र सोई कर्तव्य भी है ॥ जिस कर आत्म ज्ञान की प्राप्त होवे ॥ राम उवाच ॥ हे भगवन जिस देव के जाने ते पुरुष बहुड जन्म मरण को नहीं प्राप्त होता ॥ सो कहां रहता है ॥ अरु किस तप क्लेश कर तिस की प्राप्त होती है ॥ वसिष्ठ उवाच ॥ हे रामचंद्र किसी तप कर देव को नहीं ॥ अपणे पुरुष प्रयत्न कर विचार प्राप्त होवीता है ॥ जेता कछु राग द्वेष तृष्णा क्रोध मत्सर अभिमान सहित तप है ॥ सो निःफल दंभ है ॥ इस कर आत्म पद की प्राप्त नहीं होती ॥ हे रामचंद्र परम औषध संत संग अरु सत शास्त्र का विचार है ॥ जिस कर दृष्ट रूपी विसूचिका निवर्त होती है ॥ अथ इस का आचार भी शास्त्र अरु लोको साथ अविरुध होवे ॥ अर्थ यह जो शास्त्रों के अनुसार होवे ॥ अरु भोग रूपी राग ते विषे गिरे नहीं ॥ संतोष संयुक्त यथा लाभ संतुष्ट होवे ॥ अनिच्छित भोग प्राप्त होवे ॥ अरु शास्त्र विरुध है ॥ तिस को भी त्याग करे दीन न होवे ॥ ऐसा जो उदार आत्मा है ॥ तिस को शीघ्र ही आत्म पद की प्राप्त होती है ॥ हे रामचंद्र आत्म पद पावणे का कारण सत संग अरु सत शास्त्र है ॥ संत कौन है ॥ जिस को सभ लोक भला सा होका विचार होवे ॥ तब शीघ्र ही आत्म पद की प्राप्त होती है ॥ जब इह पुरुष शुद्ध विचार द्वारा अपणे पद स्वभाव विषे स्थित होता है ॥ तब ब्रह्मा विष्णु रुद्र भी इस की दया करते हैं ॥ काहे ते जो इह पुरुष परम होता है ॥ हे रामचंद्र संतों का संग अरु सत शास्त्रों का विचार इस को निर्मल करता है ॥ इह पुरुष जैसे मल तिस को नाश कर्ता है ॥ जैसे निर्मल कर के जल की मैल दूर होती है ॥ अरु परम निर्मल होता है ॥ तैसे इह पुरुष निर्मल होता है ॥ अरु चैतन्य होता है ॥ इति श्री उत्पत्ति प्रकरणे प्रदेशा नाम सप्तदशो सर्ग ॥

ॐ नमः परमार्थ साराय ॥ राम उवाच ॥ हे भगवन इह देव जो तुम ने कहा ॥ जिस के जाणे ते संसार बंधन ते मुक्त होता है ॥ सो देव क

हांस्थितिहै॥ अरुकिसप्रकारतिसकोंपाईताहै॥ वसिष्ठउवाच॥ हेरामचंद्रइहदेवहरन
हीं॥ शरीरविषेस्थितहै॥ नित्यचिन्मात्ररूपहै॥ सर्वविषेपूर्णहै॥ अरुसर्वविश्वतेरहतहै
चंद्रमाकोमस्तकविषेधारेजोसदाशिवहै॥ सोचिन्मात्ररूपहै॥ अरुकमलनाभिविष्णु
जीचिन्मात्ररूपहै॥ इंद्रादिकसभचिन्मात्ररूपहै॥ अरुसभजगतभीचिन्मात्ररूपहै॥ रामउ
वाच॥ हेभगवनइहतोअज्ञानीबालकभीकहतेहैं॥ जोआत्माचिन्मात्रहै॥ तुमारेउपदे
शकरक्यासिद्धहूया॥ वसिष्ठउवाच॥ हेरामचंद्रइहविश्वजोचिन्मात्रहैजाणताहै॥ इस
केजाणेतेंसंसारसमुद्रनहींलंघयाजाता॥ इसचेतन्यकानामसंसारहै॥ इहचेतन्यजी
वहै॥ पशुहैसंसरनारूपहै॥ इसनेजरामरणरूपतरंगउत्पत्तिहोतेहैं॥ काहेतेंजोइहअरु
पपरुदुषपावताहै॥ हेरामचेतनतेंरहितहोकरजोचेततताहै॥ सोअर्थकाकारणहै॥ अरुचेत्यते
रहतचेतन्यहै॥ सोपरमात्माहै॥ तिसपरमात्माकोंजाणकरमुक्तहोताहै॥ तवचेत्यता
मिटजातीहै॥ हेरामचंद्रपरमात्माकेजाणेतेंहृदयकीचितजडग्रंथिटटतीहै॥ अर्थइह
जोअहंममभावनष्टहोताहै॥ अरुसर्वसंशयछेदेजातेहैं॥ सर्वकर्मक्षीणहोजातेहैं॥ रा
मउवाच॥ हेभगवनचितचेत्यतेंरहतनहोताहै॥ जोआगेदृश्यभासतीहै॥ सोदृश्य
पड़ीभासतीहै॥ इसकेहोतेचितकेरोकणेकोंकैसेसमर्थहोवीताहै॥ अरुदृश्यकिसप्र
कारनिवृतहोतीहै॥ वसिष्ठउवाच॥ हेरामचंद्रदृश्यसंयोगीजोचेतन्यहै॥ सोजीवहै॥ ज
न्मरूपीजंगलविषेभटकताभटकतायकपड़ताहै॥ इसचेतन्यकोंजोचेतनकहतेहैं॥ सो
पंडितभीमूढहै॥ इहजोसंसारीजीवहै॥ इसकेजाणेतेंमुक्तकैसेहोवे॥ मुक्तपरमात्माके
जाणेहोतीहै॥ अरुसर्वदुखहोतेहैं॥ जैसेविषविसूचकारोगउत्तमऔषधिकरनिवृतहो
ताहै॥ तैसेपरमात्माकेजाणेतेमुक्तहोतीहै॥ रामउवाच॥ हेभगवनपरमात्माकारूप
क्याहै॥ जिसकेजाणेतेंमोहरूपीसमुद्रकोंतरताहै॥ वसिष्ठउवाच॥ हेरामचंद्रदेशांतदे
शांतरकोंनिमेषविषेहरजोसंवित्जातीहै॥ तिसकेमध्यविषेजोज्ञानसंवित्है॥ सोपर
मात्माकारूपहै॥ अरुजहांसंसारकाअत्यंतअभावहोताहै॥ तिसकेपाछेजोबोधमात्र
शेषरहताहै॥ सोरूपपरमात्माकाहै॥ हेरामचंद्रजहांदृष्टादर्शनदृश्यकाअभावहोता
है॥ ऐसाजोआकाशहै॥ सोरूपपरमात्माकाहै॥ अरुजोअशून्यहै॥ अरुशून्यकीन्याईंस्थि
तहै॥ जिसविषेदृष्टांकासंवृनत्वहै॥ ऐसेजोअहंतसत्ताहै॥ सोरूपपरमात्माकाहै॥ हे
रामचंद्रमहाचेतन्यरूपवडेपर्वतकीन्याईंस्थितहै॥ अरुअजडहै॥ जडकीन्याईंस्थितहै॥
सोरूपपरमात्माकाहै॥ अरुअंतरबाह्यस्थितहै॥ अरुसर्वकोंप्रकाशताहै॥ हेरामचंद्रजेसेसू
र्यकाप्रकाशरूपहै॥ अरुजैसेआकाशशून्यरूपहै॥ तैसेइहजगतआत्मरूपहै॥ रामउवाच॥
हेभगवनजोसर्वपरमात्माहीहै॥ तवजाणयाक्योंनहींजाता॥ सोसभजगतहीभासताहै
इसजगतकानिवारणकैसेहो॥ वसिष्ठउवाच॥ हेरामचंद्रइहजगभ्रमकरकेउत्पत्तिहूया
है॥ वास्तवकछुनहीं॥ जैसेआकाशविषेनीलताभासतीहै॥ तैसेआत्माविषेजगतभा
सताहै॥ जवजगतकाअत्यंतअभावजाणेगा॥ तवपरमात्माकासाक्षात्होवेगा॥ और कि
सीउपाइकरनहींहोता॥ जवदृश्यकाअत्यंतअभावनिश्चैकरेगा॥ तवदृश्यउसीप्रकार
स्थितरहेगी॥ अरुतुझकोंपरमार्थसत्ताहीभासेगी॥ हेरामचंद्रचित्तरूपीजोआदर्शहै॥ सो
दृश्यकेप्रतिबिंबविनाकदाचितनहींरहता॥ जवलगदृश्यकाअत्यंतअभावनहींहोता॥
तवलगपरमबोधकासाक्षात्कारनहींहोता॥ रामउवाच॥ हेमुनीश्वरइहदृश्यजालब्र
ह्मरूपमनविषेकैसेस्थितहूया॥ जैसेसरसोंकेदाणेविषेसुमेरुकाआवणाआश्चर्यहै॥ तै
सेजगतकाआवणाब्रह्मविषेआश्चर्यहै॥ वसिष्ठउवाच॥ हेरामचंद्रकछुकदिनतूंधैर्यतें
रहतहूइकरस्थितहोइ॥ संतसंगअरुसतशास्त्रपरायणहोइ॥ एकचित्तविषेदृश्यरूप
मैलदूरकरेगा॥ जैसेसूर्यकीयांकिरणांजाणेतेंमारूविषेजलकाअभावहोताहै॥ तै
सेदृश्यभ्रमतेराअभावहोजावेगा॥ जवदृश्यकाअभावहूयातवदृष्टाभीशांतहोवेगा॥ ज
बदोनोंकाअभावहूया॥ तवपाछेशुद्धआत्मसत्ताभासेगी॥ हेरामचंद्रजवलगदृष्टाहै॥
तवलगदृश्यहै॥ अरुजवलगदृश्यहै॥ तवलगदृष्टाहै॥ जैसेएककोंअपेक्षाकरदोहोते

हैं॥ दोइहतोएकहै॥ एकहैतवदोभीहै॥ जोएकनहोवे॥ तवदोकहांहोवे॥ तैसेएककानाश
हूएदोनोंकानाशहोताहै॥ अभावहोताहोताहै॥ दृष्टाकोंअपेक्षाकरदृश्यहै॥ दृश्यकोंअ
पेक्षाकरकेदृष्टाहै॥ एककाअभावहूएदोनोंकाअभावहोताहै॥ हेरामचंद्रअहंतातेंआदि
लेकरजोदृश्यहै॥ सोतेरेमार्जनकरदेवेंगा॥ आत्मसत्तातेंइतरजोदृश्यसत्ताभासतीहै॥
सोईमलहै॥ तिसतेंरहितहोयाचित्तदर्पणनिर्मलहोवेगा॥ जोपदार्थअसत्यहै॥ ति
सकदाचितसत्तानहींहोवणा॥ अरुजोपदार्थसत्यहै॥ तिसअसत्यकदाचितनहींहोव
णा॥ जोवास्तवीसत्यनहोवे॥ तिसकामार्जनकरणाक्याअर्थहै॥ हेरामचंद्रइहजगतआ
दिउत्पत्तिनहींभया॥ जोकछुदृश्यभासतीहै॥ सोआत्मामात्रहै॥ सर्वनिर्मलचेतन्यब्रह्म
है॥ जैसेस्वर्णतेंभूषणहोताहै॥ सोभूषणस्वर्णतेंभिन्ननहीं॥ तैसेजगतअरुब्रह्मविषे
भेदकछुनहीं॥ हेरामचंद्रमलकेमार्जनअर्थबहुतप्रकारकीयांविस्तारकरकहेंगा॥
तिसकरतुझकोंअद्वैतआत्मसत्ताकाभानहोवेगा॥ इहजगतजोतुझकोंभासताहै॥ सो
किसीकारणद्वाराउपज्यानहीं॥ जैसेमारूथलकीनदीभासतीहै॥ जैसेआकाशविषे
दूसराचंद्रमाभासताहै॥ तैसेइहजगतकारणविनाभासताहै॥ जैसेमारूथलविषे
जलनहीं॥ जैसेवंध्याकापुत्रनहीं॥ जैसेआकाशविषेवृक्षनहीं॥ तैसेइहजगतहैनहीं
जोकछुदेखीताहै॥ सोनिरामयब्रह्महै॥ इहजोकछुतुझकोंकहाहै॥ सोवाणीमात्रन
हींक॥ युक्तपूर्वककहाहै॥ हेरामचंद्रगुरोंकीकहीयुक्तकोंजोमूर्खताकरकेत्यागकरतेहैं॥
तिनकोंसिद्धांतनहींप्रापतहोता॥ इतिश्रीउत्पत्तिप्रकरणेदृश्यअभावप्रतिपादननाम
प्रथमसर्गः॥ ॥ अथद्वितीयसर्गप्रारंभः॥ रामउवाच॥
हेमुनीश्वरइहयुक्तकवनहै॥ अरुकैसेप्रापतहोतीहै॥ जिसकेधारेतेपुरुषआत्मपद
कोंप्रापतहोताहै॥ वसिष्ठउवाच॥ हेरामचंद्रमिथ्याविसूचकाजगतनामसनीबहुतका
लकीदृढहोरहीहै॥ सोविचाररूपीमंत्रकरकेशांतहोतीहै॥ हेरामचंद्रबोधकीसिद्धता
अर्थतुझकोंआख्यायकाकहताहूं॥ तिसकोंश्रवणकरकेतूंमुक्तहोवेगा॥ अरुजोअर्थ
अबोधहोइकरतूंउठजावेगा॥ तवतिर्यगादिधर्मकोंभीप्रापतहोवेगा॥ हेरामचंद्रजिस
अर्थकेपावणेकीइहइच्छाकरताहै॥ तिसकेअनुसारपावणेकायत्नभीकरे॥ तौअव
श्यमेवतिसकोंपावताहै॥ जोथककरफिरेनहीं॥ तातेंसतसंगतअरुसतशास्त्रपराय
णहोवो॥ जवतूंइनकेअर्थविषेदृढअभ्यासकरेगा॥ तवकेतेकुदिनविषेपरमपद
कोंप्रापतहोवेगा॥ रामउवाच॥ हेभगवनआत्मबोधकाकारणकोनशास्त्रहै॥ शास्त्रों
विषेश्रेष्टकोनहै॥ जिसकेजानेशोकनरहै॥ वसिष्ठउवाच॥ हेमहामतिरामचंद्रआत्म
बोधकाजोकारणहै॥ सोशास्त्रोंविषेपरमशास्त्रइहमहारामायणहै॥ जिसविषेवृत्तां
तमइतिहासहै॥ जिनकरपरमबोधकीप्रापतहोतीहै॥ हेरामचंद्रसर्वइतिहासों
कासारमेंतुझकोंकहताहूं॥ जिसकोंसुणकरधारेतेजीवनमुक्तहोवेगा॥ अरुजग
तऐसेभासेगा॥ जैसेस्वप्नतेजागेहूएस्वप्नकेपदार्थभासतेहैं॥ जोकछुसिद्धांतहै॥ तिन
सभनोंकासिद्धांतइसविषेहै॥ अरुजोइसविषेनहीं॥ सोऔरोंशास्त्रोंविषेभीनहीं॥ इसकों
सर्वशास्त्रविज्ञानभंडारउपवानजानतेहैं॥ हेरामचंद्रजोपुरुषश्रद्धासंयुक्तइसकोंश्रव
णकरै॥ अरुनित्यहीसुणकरविचारकरै॥ तोउसकीबुद्धिउदारहोवे॥ अरुपरमबोधकोंप्रा
पतहोवे॥ इसविषेसंशयनहीं॥ जिसकोंइसशास्त्रविषेरुचनहीं॥ सोपापआत्माहै॥ इसकों
चाहीये॥ अथमेऔरशास्त्रकोंविचारे॥ तिसतेंअनंतरइसकोंविचारे॥ इसकोंविचारकरजीवन
मुक्तहोवेगा॥ जैसेउत्तमऔषधकररोगशीघ्रनिवृतहोताहै॥ तैसेइसशास्त्रकेश्रवणअरु
विचारणेकरशीघ्रहीअज्ञाननष्टहोवेगा॥ अरुआत्मपदकोंप्रापतहोवेगा॥ हेरामचंद्र
आत्मज्ञानकीप्रापतवरआपकीन्याईनहीहोती॥ जोवरदेणेकरआत्मज्ञानप्रापतहोवे
तवविचारअभ्यासकरै॥ तवआत्मज्ञानप्रापतहोताहै॥ हेरामचंद्रदानकरणेकरतपस्या
करवेदकेपढणेकरभीआत्मपदकीप्रापतनहींहोती॥ केवलआत्मविचारकरआत्मपद

कोप्राप्तहोतीहै॥ अरुसंसारभ्रमनष्टहोताहै॥ अन्यथानहीहोता॥ इतिसमाप्तस्वनिर्वाणेयो
नामाष्टमसर्गः॥८॥ वसिष्ठउवाच
हेरामचंद्रजिसपुरुषकाचित्तभीआत्माविषेहै॥ अरुप्राणोंकीचेष्टाभीआत्मकीओरहै॥ प्र
सन्नताभीआत्मविषेहै॥ ऐसेजोज्ञाननिष्टजीवनमुक्तहै॥ सोवहुडविदेहमुक्तहोताहै॥
रामउवाच॥ हेमुनीश्वरजीवनमुक्तअरुविदेहमुक्तकालक्षणकहोजोउसकोइष्टकों
लेकरमैंभीतैसेहीकरों॥ वसिष्ठउवाच॥ हेरामचंद्रजोपुरुषसभजगतव्यवहारकरताहै
अरुहृदेविषेद्वैतभ्रमशांतभयाहै॥ सोजीवनमुक्तहै॥ अरुजोसभक्रियाकरताहै॥ अंतरतेंआ
काशकीन्याईनिर्लेपरहताहै॥ सोजीवनमुक्तहै॥ जोपुरुषसंसारकीओरतेंसुषुप्तभ
याहै॥ अरुस्वरूपविषेजाग्रतभयाहै॥ जगतभ्रमजिसकानिवृत्तहोगयाहै॥ सोजीवनमु
क्तहै॥ हेरामचंद्रइष्टकीप्राप्तविषेजिसकेमुखकीकांतवढतीनही॥ अरुनिष्टप्राप्तवि
षेक्षीननहीहोती॥ सोपुरुषजीवनमुक्तहै॥ अरुजोपुरुषसर्वव्यवहारकरताहै॥ अरुअंतर
रागद्वेषतेंरहतशीतलरहताहै॥ सोजीवनमुक्तहै॥ हेरामचंद्रजोपुरुषसर्वव्यवहारकर्ता
है॥ रागद्वेषआदिकसंजुगतदृष्टआवताहै॥ इष्टविषेरागवानदेषीताहै॥ अनिष्टविषेद्वेषवा
नदृष्टआवताहै॥ अरुअंतरसदाशांतहै॥ सोजीवनमुक्तहै॥ जिसपुरुषकोंअहंममकाअ
भावहै॥ अरुबुधकिसीविषेलेपवाननहीहोती॥ सोकर्मकरेअथवानकरैजीवनमुक्तहै॥
हेरामचंद्रजिसकोंमानअपमानभयक्रोधविषेविकारकोऊनहीउपजता॥ आकाशकीन्या
ईशून्यहोगयाहै॥ सोजीवनमुक्तहै॥ जोपुरुषभोगताभीहै॥ अंतरतेंअभोगताहै॥ सोचित्तदृ
ष्टआवताहै॥ तोभीअचित्तहै॥ सोजीवनमुक्तहै॥ जिसपुरुषतेंलोकउद्वेगवाननहीहो
ता॥ अरुजोलोकोंतेंउद्वेगवाननहीहोता॥ रागद्वेषभयक्रोधतेंरहतहै॥ सोजीवनमुक्त
है॥ हेरामचंद्रजोपुरुषचित्तकेफुरणेकरजगतकोउत्पन्नजाणताहै॥ अरुचित्तकेअफु
रणेजगतकीप्रलयजाणताहै॥ अरुसर्वविषसमबुधहै॥ सोजीवन्मुक्तहै॥ जोपुरुष
पर्वतकी न्याईस्थितहै भोगोंकरजीवताहृष्टआवताहै॥ पर्वतकीन्याईअचलहै॥ जोचेष्टाकरताहृष्टआवताहै
सोजीवनमुक्तहै॥ हेरामचंद्रजोपुरुषव्यवहारकरताहृष्टआवताहै॥ चित्तविषेइष्टअनिष्ट
कोऊविकारनही॥ सोजीवनमुक्तहै॥ जिसपुरुषकोंसभजगतआकाशरूपभयाहै॥ अ
रुनिर्वासनबुधभयीहै॥ सोजीवनमुक्तहै॥ काहेतेंजुसदाआत्मस्वभावविषेस्थितहै॥
सभजगतकोंब्रह्मस्वरूपजाणताहै॥ रामउवाच॥ हेभगवनजीवनमुक्तकीलक्षणकव
नगतकहीहै॥ इष्टअनिष्टविषेसमशीतलबुद्धकैसेहोताहै॥ वसिष्ठउवाच॥ हेरामचंद्र
इष्टअनिष्टरूपीजगतअज्ञानीकोंभासताहै॥ ज्ञानीकोंसभआकाशरूपीभासताहै॥ रा
गद्वेषकिसीविषेनहीभासता॥ शरीरकीइष्टविषेचेष्टाकरताहृष्टआवताहै॥ परजगत
कीओरतेंसुषुप्तभयाहै॥ हेरामचंद्रजीवनमुक्तकोंकुकालरहकरजवशरीरकोंत्यागता
है॥ तवब्रह्मपदकोंप्राप्तहोताहै॥ जैसेपवनस्पंदताकोंत्यागकरनिस्पंदहोताहै॥ तैसे
जीवन्मुक्तपदकोंत्यागकरविदेहमुक्तहोताहै॥ तवऐसेहोकरस्थितहोताहै॥ सूर्यहोइ
करतपावताउहीहै॥ ब्रह्माहोकरउत्पत्तिकर्ताहै॥ विष्णुहोइकरपालनाकरताहै॥ रुद्र
होकरसंहारउहीकर्ताहै॥ पृथिवीहोकरसभभूतोंकोधारताहै॥ जलहोकररसदेताहै
औषधअन्नादिकोंकोउत्पन्नकरताहै॥ पवनहोकरपृथिवीकोरोकताहै॥ जलहोकरव
द्रवताहै॥ अग्निहोकरउष्णताकोंधारताहै॥ वायुहोकरपदार्थोंकोसुकावताहै॥ चंद्रमा
होकरऔषधीयोंकोंपुष्टिकरताहै॥ आकाशहोइकरसर्वपदार्थोंकोदाउदेताहै॥ मेघ
होकरवर्षाकरताहै॥ स्थावरजंगमजेताककुजगतहै॥ सर्वविषेआत्माहोकरस्थित
होताहै॥ रामउवाच॥ हेभगवनविदेहमुक्तभीशरीरोंकोधारतेंतोमवाननहोताहै॥ व
सिष्ठउवाच॥ हेरामचंद्रजगतअरुईश्वरअज्ञानीकेहृदेविषेस्थितहै॥ ज्ञानवानकोसभचि
दाकाशरूपहोताहै॥ विदेहमुक्तसोईरूपहोताहै॥ जहांउदेअस्तकीकल्पनाकोऊनही
केवलसद्बोधमात्रहै॥ हेरामचंद्रइसजगतआदितेंउपजयानही॥ अज्ञानकरकेभास

ताहै॥ मैंतूंअरुजगतसभआकाशरूपहै॥ जैसेआकाशविषेनीलताभासतीहै॥ जै
सेआकाशविषेदूसराचंद्रमाभासताहै॥ जैसेमारूथलविषेजलभासताहै॥ जैसेसमु
द्रविषेतरंगभासताहै॥ तैसेआत्माविषेजगतभासताहै॥ हेरामचंद्रजैसेस्वर्णविषे
भूषणउपजयाकछुनही॥ तैसेआत्माविषेजगतकछुउपजयानही॥ जैसाकछुज
गतजालहै॥ सोमनकेफुरणेकरभासताहै॥ स्वरूपतेंवणयाकछुनही॥ ज्ञानीको
सर्वदाएहीनिश्चयरहताहै॥ वहुडजगतहोभउसकोकैसेभासे॥ रामउवाच॥ हेभग
वनजगतकेअत्यंतअभावहूएविनावोधकीप्राप्तनहीहोती॥ दृश्यदृष्टामिथ्याभ्रम
उदेहूयाहै॥ जवदोनोविषेएककाअभावहोवै॥ तवदोनोंकाअभावहोवै॥ जवदोनोंका
अभावहोवै॥ तवसद्बोधमात्रशेषरहताहै॥ जिसप्रकारजगतकाअत्यंतअभावहो
वै॥ सोउक्तमुझकोंकहो॥ वसिष्ठउवाच॥ हेरामचंद्रचिरकालकाजगतदृढहोरहाहै
सोमिथ्याज्ञानविसूचिकाहै॥ सोविचाररूपीमंत्रकरकैनिर्मूलहोताहै॥ जैसेपर्वतऊ
परचडनाओरउतरणाशनैशनैहोताहै॥ शनैशनैक्रमकरचडीताहै॥ उरुशनैशनै
उतरीताहै॥ तैसेआविद्यकभ्रमचिरकालकादृढहोरहाहै॥ विचारक्रमसेंतिसकी
निवृत्तिहोतीहै॥ जगतकेअत्यंतअभावहूएविनाआत्मबोधनहीहोता॥ सोअत्यंतअ
भावकेनिमित्तयुक्तमैकहताहों॥ तिसकेसमझणेकरजगतभ्रमनष्टहोवेगा॥ अरु
जीवनमुक्तहूएकरतूंविचरैगा॥ हेरामचंद्रवंधनकरसोईवाधीताहै॥ जोउपजयाहोता
है॥ इहसृष्टभीहोताहै॥ जोउपजयाहोताहै॥ इहजगतजोतुझकोंभासताहै॥ सोउप
जयानही॥ जैसेआकाशविषेनीलताभासतीहै॥ सोउपजीनही॥ अरुमारूथलवि
षेनदीभासतीहै॥ सोउपजीनही॥ भ्रमकरभासतीहै॥ तैसेआत्माविषेजगभासताहै
सोउपजयानहीभ्रमकरकेभासताहै॥ वास्तवनही॥ जैसेअर्धमीलतनेत्रपुरुषकोंआ
काशविषेतरवरेभासतेहै॥ तैसेभ्रमकरकेजगतभासताहै॥ हेरामचंद्रजवमहाप्रल
यहोतीहै॥ तवस्थावरजंगमदेवताकिंनरदैतमनुष्यब्रह्माविष्णुरुद्रआदिकजगत
काअभावहोताहै॥ तिसकेअनंतरजोरहताहै॥ सोईजोयाशसत्तनही॥ असत्यभीन
ही॥ नशून्यहै॥ नअशून्यहै॥ नप्रकाशहै॥ नअंधकारहै॥ नदृष्टाहै॥ नदृश्यहै॥ नकेवल
है॥ नअकेवलहै॥ नचैतन्यहै॥ नजडहै॥ नज्ञानहै॥ नअज्ञानहै॥ नसाकारहै॥ ननिराका
रहै॥ नकिंचनहै॥ नअकिंचनहै॥ सर्वशब्दोंतेरहतहै॥ तिसविषेवाणीकीगमनही
अरुजोहै॥ तोचित्यतेंरहतचैतन्यआत्मतत्वमात्रहै॥ जिसविषेअहंत्वकीकल्पनाको
ऊनही॥ ऐसाशेषरहताहै॥ हर्षअहर्षआदिसप्रश्नतेंरहितहै॥ अजरअमरसद्बो
धरूपहै॥ अरुसर्वशब्दोंतेंरहतहै॥ सोईसत्ताजगतरूपहोइकरभासतीहै॥ औरकछुज
गतउसविषेवणयानही॥ जैसेमरीचकाविषेजलभासताहै॥ तैसेआत्माविषेजगत
भासताहै॥ हेरामचंद्रजवचित्तशक्तिस्पंदरूपहोतीहै॥ तवजगतआकारभासताहै
अरुजवनिस्पंदहोतीहै॥ तवजगतअभावहोताहै॥ अरुआत्मसत्तासदाएकरसहै॥ जै
सेवायुस्पंदरूपहोतीहै॥ तवभासतीहै॥ निस्पंदरूपहोतीहै॥ तवनहीभासती॥ परवायु
एकहीहै॥ तैसेचित्तसंवेदनस्पंदरूपहोतीहै॥ तवजगतरूपहोइभासताहै॥ जवनिस्पं
दरूपहोतीहै॥ तवजगतमिटजाताहै॥ हेरामचंद्रचैतन्यजाननताभीतवहोताहै॥ जव
संवेदनस्पंदरूपहोतीहै॥ जैसेसुगंधकाग्रहणआधारभूतपृथ्व्यादिपदार्थकरहोताहै
आधारभूतद्रव्यविनासुगंधकाग्रहणनहीहोता॥ अरुवस्त्रश्वेतहोताहै॥ तवरंगकोग्र
हणकरताहै॥ अन्यथास्वेतवस्त्रविनारंगनहीचडता॥ तैसेआत्माकाजानणाभीस्पंदक
रहोताहै॥ स्पंदविनाजानणेकीकल्पनाभीनहीहोती॥ जैसेआकाशविषेसूनताभासती
है॥ तैसेअग्निविषेउष्णताभासतीहै॥ तैसेआत्माविषेजगतभासताहै॥ अभिन्नरूपहै॥ जैसे
जलद्रवताकरकेतरंगरूपहोइकरभासताहै॥ तैसेआत्मसत्ताजगतहोइकरभासतीहै॥ सो
आकाशवनसडहै॥ अरुश्रवणावचनासकांत्ववादेहतेंरहतहै॥ शब्दस्पर्शरूपरसगंध
तेंअतीतहै॥ अरुसर्वओरतेंश्रवणकरताबोलताद्रष्टास्पर्शकरतारसलेताभीआपही

है ॥ आत्मारूपी सूर्यकी यां किरणां विषे जलरूपी त्रिलोकी यां फुरती यां भासती यां हैं ॥ जै
से जल विषे चक्र आवर्त फुरते भासते हैं ॥ सो जलते इतर कछु नहीं जलरूप ही है ॥ तैसे
जगत आत्माते इतर कछु नहीं ॥ आत्मरूप है ॥ आत्मही जगतरूप होइकर भासता है ॥
रसना नहीं ॥ अरु बोलता है ॥ अरु भोगता है ॥ सोई भोगता होइकर भासता है ॥ हे अफुर
सोई फुरता भासता है ॥ अद्वैत है ॥ सोई द्वैतरूप होइकर भासता है ॥ निराकार है ॥ सोई
साकाररूप होइकर भासता है ॥ हे रामचंद्र सर्व पदार्थोंते आत्मसत्ता अतीत है ॥ सोई सर्व
पदार्थोंको धारती है ॥ अनंत सृष्टि होकर भासती है ॥ पर इतर कछु हुया नहीं स्वरूप है ते ॥
सदा आत्मरूप है ॥ जैसे स्वर्ण विषे भूषण समान आकार भी होते हैं ॥ अरु विलक्षण आ
कार भी होते हैं ॥ कंकणते आदि लेकर जो भूषण है ॥ पर स्वर्णते इतर कछु नहीं होते ॥
स्वर्णरूप है ॥ तैसे जगत आत्मस्वरूप है ॥ स्थूल आकाशते भी निर्मल बोधमात्र है ॥ हे राम
चंद्र जब तिस विषे तू स्थित होवेगा ॥ तब जगत भ्रम मिट जावेगा ॥ जगत वास्तव कछु न
हीं ॥ आत्मसत्ता ज्यों की त्यों भासती है ॥ सो सत्ता ज्यों की त्यों ही अधिष्ठानरूप है ॥ इह जग
त सभ उसी ते हुया है ॥ अरु उसहीरूप है ॥ सभका कारण आत्मसत्ता है ॥ उसका कारण कोऊ
नहीं ॥ अरु अकारण है ॥ काहे ते जो अद्वैत है ॥ इति परमकारणवर्णनं नाम नवम सर्गः ॥ ९
ॐ श्रीगुरुभ्यो नमः ॥ रामउवाच ॥ हे भगवन जब महाप्रलय होती है ॥ सभ पदार्थ नष्ट हो जा
ते हैं ॥ तिसके पाछे जो रहता है सो शून्य नहीं ये ॥ अथवा प्रकाश कहीये ॥ तम है नहीं चैतन्य हो
वे ॥ मन है नहीं बुद्ध होवे ॥ सत असत किंचन अकिंचन इनों विषे कोऊ तो होवेगा ॥ तम कैसे
कते हो ॥ वाणीको गम नहीं ॥ वसिष्ठउवाच ॥ हे रामचंद्र इह तुमने बडा प्रश्न कीया है ॥ तिसको
विना यत्न मैं नाश करोंगा ॥ जैसे सूर्यके उदे हूए अंधकार नष्ट होता है ॥ तैसे तेरे संशयका
नाश होवेगा ॥ हे रामचंद्र जब महाप्रलय होती है ॥ तब संपूर्ण दृश्यका अभाव हो जाता
है ॥ पाछे जो शेष रहता है ॥ सो शून्य नहीं ॥ अरु दृश्य आभास उस विषे सदा रहता है ॥ जैसे
थंभे विषे सिलपी पुतलीयांको कल्पता है ॥ जो एती पुतलीयां इस थंभे सो निकसेंगीयां
सो उस विषे सिल्पी कल्पता है ॥ उह तो थंभा ही है ॥ जो थंभ न होवे ॥ तो सिल्पी पुतलीयां
किस विषे कल्पे ॥ तैसे आत्मरूपी थंभे विषे मनरूपी सिल्पी पुतलीयां कल्पता है ॥ जो आत्मा
न होवे ॥ तब पुतलीयां किस विषे कल्पे ॥ जैसे थंभे विषे पुतलीयां थंभरूप है ॥ तैसे सभ जगत
ब्रह्मरूप है ॥ ब्रह्मते इतर जगतका होवणा नहीं ॥ जैसे पुतलीयांका सदभाव अरु असदभा
व थंभे विषे है ॥ काहेते जो अधिष्ठानरूप थंभा है ॥ थंभे विना पुतलीयां नहीं होतीयां ॥ तैसे
जगत आत्मा विना नहीं होता ॥ हे रामचंद्र सदभाव जो होता है ॥ सो सत ते होता ॥ असतते न
हीं होता ॥ अरु असदभाव भी जो सिद्ध होता है ॥ सो सत ही विषे होता है ॥ असत्य विषे नहीं
होता ॥ तांते सत शून्य नहीं ॥ जो शून्य होवे ॥ तो भासणा किस विषे होवे ॥ जैसे सोम जल वि
षे तरंगका सदभाव भी होता है ॥ अरु असदभाव भी होता है ॥ असदभाव इसकारणते हो
ता है ॥ जो तरंग जलते भिन्न कछु नहीं ॥ अरु सदभाव इसकारणते होता है ॥ जल ही विषे
तरंगका होवणा है ॥ सदभाव असदभाव इसी कारणते जल विषे होता है ॥ तैसे जगतका
सदभाव अरु असदभाव आत्मा विषे होता है ॥ शून्य विषे नहीं होता ॥ अरु अशून्य भी नहीं ॥
काहेते जु अशून्यका प्रतियोगी विरोधी होता है ॥ जो शून्य नहीं ॥ तो अशून्य काहेते होवे
इह दोनो आभासमात्र है ॥ हे रामचंद्र इह जो सूर्य तारा दीपक आदिकोंका भूतक प्रकाश है
सो भी कोऊ नहीं ॥ काहेते जु इह प्रकाश अंधकारका विरोधी है ॥ जु इही प्रकाश होता ॥ तो अं
धकार सिध न होता ॥ सो तो अंधकार भी सिद्ध होता है ॥ इसी कारणते कहता है ॥ जो प्रका
श भी कोऊ नहीं ॥ अरु जो कहीये तम ही रहता होवेगा ॥ तो तम भी नहीं ॥ काहेते सूर्य आदि
क जिसकर प्रकाशते है ॥ सो तम कैसे हो ॥ आत्मप्रकाश विना सूर्य आदिक भी तमरूप है ॥
तांते न शून्य न अशून्य न तम है केवल आत्मतत्त्वमात्र है ॥ जैसे थंभे विषे पुतलीयां कछु
हूईयां नहीं ॥ तैसे आत्मा विषे कछु जगत हुया नहीं ॥ जैसे तिल अरु तिलकी मज्जा विषे क
छु भेद नहीं ॥ तैसे आत्मा अरु जगत विषे कछु भेद नहीं ॥ जैसे जल अरु तरंग विषे कछु भेद न

हीं ॥ जैसे मृत्तिका अरु घट विषे कछु भेद नहीं ॥ तैसे ब्रह्म अरु जगत विषे कछु भेद नहीं ॥ ना
ममात्र भेद है ॥ वास्तवते कछु भेद नहीं ॥ हे रामचंद्र जल अरु रत्नका आकार होता जो दीया है
सो आत्मा विषे ऐसे भी नहीं ॥ जैसे जल विषे तरंग होता है ॥ अरु रत्नका विवर्त होता है ॥ सो
भी परिणामरूप होता है ॥ अरु आत्मा विषे जगत मानसी है ॥ जो मानसी है ॥ तो आकाशरू
प है ॥ तांते जगत भिन्न कछु नहीं ॥ रूप आलोक मनसकार जेता कछु भासता है ॥ सो सभ
आकाशरूप है ॥ आत्मसत्ता ही चित्तके फुरणेकर जगतरूप होइ भासती है ॥ जगत इस बात
स्त नहीं ॥ जैसे सूर्यकी यां किरणां विषे जलाभास होता है ॥ तैसे आत्मा विषे जगत भासता
है ॥ हे रामचंद्र जिस विषे इह जगत भासता है ॥ तिसको शून्य कैसे कहीये ॥ अरु जो कहीये
चैतन्य है ॥ तो भी नहीं ॥ काहेते जो चैतन्य जानणा भी तब होता है ॥ जब चित्तकला फुरती है
जफुरणा न होवे ॥ तहां चैतन्यता कैसे रहे ॥ जैसे मरचको चाबता है ॥ तब तिसकी कोडाये
भासती है ॥ आप विना नहीं भासती ॥ तैसे चैतन्य जानणा भी स्पंदकला विषे होता है ॥ आ
त्मा विषे जानणा भी नहीं ॥ चैतन्यताते रहित चिन्मात्र है ॥ अलक्ष्य सूक्ष्मरूप है ॥ तिसको
तुरीयक कहीता है ॥ सो ज्ञेय ज्ञान ध्यानकर गम्य है ॥ हे रामचंद्र जो उत्कृष्ट तिस विषे स्थित हू
या है ॥ तिनको संसाररूपी सर्प डंस नहीं सकता ॥ उह अचेत्य चिन्मात्र होते हैं ॥ जिसको आ
त्मा विषे स्थित नहीं ॥ तिसको दृश्यरूपी सर्प डंसता है ॥ आत्मसत्ता विषे तो देह न कछु हूया
नहीं ॥ आत्मसत्ता आकाशते भी स्वच्छ है ॥ द्रष्टा दर्शन दृश्य परंतकी स्वत्व जो अनुभव सत्ता है
सो आत्माका रूप है ॥ तब अभ्यास करीये ॥ तब तिसको प्राप्त होवीये ॥ हे रामचंद्र तिस वि
षे देह न कल्पना कछु नहीं ॥ अद्वैत आत्मतत्त्वमात्र है ॥ न द्रष्टा है ॥ न दृश्य है ॥ न जीव है ॥ न को
ऊ विकार है ॥ अद्वैत अपणे आपही विषे स्थित है ॥ जो यह चैत्यका फुरणा ही आदि नहीं
हूया ॥ तब जीव कैसे होवे ॥ जो जीव ही नहीं ॥ तो बुध कैसे होवे ॥ जो बुध ही नहीं तो मन दे
ह इंद्रियां कैसे होवे ॥ जो इह नहीं तो जगत कैसे होवे ॥ हे रामचंद्र आत्मसत्ता विषे सभ कल्प
ना मिट जाती है ॥ तिस विषे कछु कहणा नहीं बणता ॥ ईश अनीश सत्य असत्यते न्यारा है
भाव अभावका विचार कोऊ नहीं ॥ आदि मध्य अंतकी कल्पना नहीं ॥ अजर अमर आनंद
स्वरूप है ॥ अचेत्य चिन्मात्र अवाच्यपद है ॥ सूक्ष्मते भी सूक्ष्म है ॥ आकाशते भी अधिक सूक्ष
म है ॥ रामउवाच ॥ हे भगवन यह जो अचेत्य चिन्मात्र परमार्थ सत्ता है सो कहो ॥ तिसका रूप
बोधके निमित्त मुझको बहुड कहो ॥ वसिष्ठउवाच ॥ हे रामचंद्र जब महाप्रलय होती है
तिसका रूप कहता हों ॥ मनरूपी जो ब्रह्मा है ॥ जब मनकी वृत्ति क्षीण होती है ॥ तब पाछे
जो रहता है ॥ सो निर्केवल सत्ता अनंत आत्मा है ॥ असत्य नहीं कह सकीता ॥ हे रामचंद्र जब
जाग्रतका अभाव होता है ॥ अरु सुषुप्ति नहीं आई ॥ उह जो रूप है सो परमात्माका है ॥ अरु दृ
कों जो सौंत उसका स्पर्श होता है ॥ तिसका अनुभव करणेवाली परमात्मसत्ता है ॥ जि
स विषे द्रष्टा दर्शन दृश्य उपजते हैं ॥ अरु बहुड लीन होते हैं ॥ सो परमात्माका रूप है ॥ कै
सी सत्ता है ॥ जिस विषे चैतन्यता भी नहीं ॥ ऐसा जो अचैत्य चिन्मात्र है ॥ सो परमात्माका
रूप है ॥ अरु सभ व्यवहार जो पर करता है ॥ अरु अंतर जिसके आकाशरूप है ॥ कोऊ क्षोभ
नहीं ॥ ऐसी जो है ॥ सो परमात्माका रूप है ॥ शून्य है ॥ पर शून्यताते रहत है ॥ हे रामचं
द्र द्रष्टा दर्शन अरु दृश्य जिस विषे तीनो प्रतिबिंबित होते हैं ॥ अरु निराकार है ॥ ऐ
सी जो सत्ता है ॥ सो परमात्माका रूप है ॥ स्थावर विषे जो स्थावरभाव कर व्याप्या है ॥
चैतन्य विषे चैतन्यभाव कर व्याप्या है ॥ मन बुद्ध इंद्रियां जिसको नहीं पाइ सकतीयां ॥
ऐसी जो सत्ता है ॥ सो परमात्माका रूप है ॥ हे रामचंद्र ब्रह्मा विष्णु रुद्र इंद्र इनका ज
हां अभाव हो जाता है ॥ तिसके पाछे जो शेष रहता है ॥ जिस विषे विकल्प कोऊ न
हीं ॥ अचेत्य चिन्मात्र जो सत्ता है ॥ सो परमात्माका रूप है ॥ इति श्री परमात्मस्वरूप
वर्णनं नाम दशम सर्गः ॥ १० ॥ हरिॐ रामउवाच
हे भगवन इह दृश्य जो स्पष्ट भासती है ॥ सो महाप्रलय विषे कहां जाती है ॥ अरु
कहांते आवती है ॥ जैसे प्रकाशवान है ॥ तैसे इह जगत है ॥ वसिष्ठउवाच ॥ हे रामचंद्र
वंध्या स्त्रीका पुत्र कहांते आवता है ॥ अरु कहां जाता है ॥ जैसे प्रकाशवान है ॥ तैसे इह

जगतहै॥ रामउवाच॥ हे मुनीश्वर वंध्याका पुत्र अरु आकाशका वन तौ कालनहीं होता
शब्दमात्र है॥ उपजया कछु नहीं॥ अरु इह जगत स्पष्ट भासता है॥ वंध्यापुत्रके समान कै
से होवे॥ वसिष्ठ उवाच॥ हे रामचंद्र जैसे वंध्याका पुत्र अरु आकाशका वन उपजया नहीं
तैसे इह जगत भी उपजया नहीं जैसे संकल्प पुर होता है॥ जैसे स्वप्न नगर प्रत्यक्ष भा
सता है॥ अरु आकाशरूप है॥ कोऊ पदार्थ उपजया नहीं॥ तैसे इह जगत आकाशरूप है
कछु उपजया नहीं॥ जैसे जल अरु तरंग विषे भेद नहीं॥ जैसे कांजर अरु श्यामता विषे
भेद नहीं॥ जैसे अग्नि अरु उस्नता विषे भेद नहीं॥ तैसे ब्रह्म अरु जगत विषे भेद नहीं॥ सदा
अपणे स्वभाव विषे स्थित है॥ जैसे वायु अरु स्पंद विषे भेद नहीं॥ जैसे आकाश अरु शून्य
ता विषे भेद नहीं॥ जैसे चंद्रमा अरु सीतलता विषे भेद नहीं॥ तैसे जगत अरु ब्रह्म विषे भे
द नहीं॥ हे रामचंद्र जगत कछु वण्या नहीं॥ आत्मसत्ता ही अपणे आप विषे स्थित है॥ ति
स विषे अज्ञान करके जगत भासता है॥ जैसे आकाश विषे दूसरा चंद्रमा भासता है॥ जैसे
मारुथल विषे जल भासता है॥ जैसे आकाश विषे तरवरे भासते है॥ तैसे आत्मा विषे अज्ञान
कर जगत भासता है॥ रामउवाच॥ हे भगवन दृश्यके अत्यंत अभाव विना बोधकी प्रापत
नहीं होती॥ अरु जगत स्पष्टरूप भासता है॥ द्रष्टा अरु दृश्य जो भ्रम करके उदे हूए है॥
सो भ्रम करके बंधे हूए है॥ जो एक भी है॥ तौ दोनो बंधे हूए है॥ जब दोनो विषे एकका अभा
व होवे॥ तब दोनो मुक्त होवे॥ काहेतें जो जहां द्रष्टा है॥ तहां दृश्य भी है॥ अरु जहां दृश्य है
तहां द्रष्टा भी है॥ जैसे सद्दुआदर्श प्रतिबिंब विना नहीं रहता॥ तैसे द्रष्टा दृश्य विना नहीं
रहता॥ अरु दृश्य द्रष्टा विना नहीं॥ हे मुनीश्वर दोनो विषे एक नष्ट होवे॥ तब दोनो नि
र्वाण होवे॥ तातें सोई युक्ति कहो॥ जिसकर दृश्यका अत्यंत अभाव होवे॥ अरु आत्मबो
ध प्रापत होवे॥ एक अंशे सभी कहते है॥ जो दृश्य आगे थी॥ अब नाश हूई है॥ तब उसको भी
संसार भाव दिखावेगी॥ अरु तुम कहते हो जगतका अत्यंत अभाव है॥ अरु जगतका का
रण कोऊ नहीं॥ आभासमात्र है॥ उपजया कछु नहीं॥ हे मुनीश्वर जिसका अत्यंत अभा
व होता है॥ उह वस्तु वास्तव नहीं होती॥ जो दृश्य नहीं॥ तौ बंधन भी किसीको न हूया॥ स
भ मुक्तस्वरूप हूए॥ अरु जगत प्रतक्ष भासता है॥ तातें सोई युक्ति कहो॥ जिसकर जगतका
अत्यंत अभाव होवे॥ वसिष्ठ उवाच॥ हे रामचंद्र दृश्यके अत्यंत अभाव निमित्त एक कथा
श्रवण करावता हौं॥ जिसके अर्थ निश्चे कर समझे तें दृश्य भ्रम शांत होजावेगी॥ बहुड़ि संसा
र कदाचित न होवेगा॥ जैसे समुद्र विषे धूड़ नहीं उडती॥ तैसे तेरे चित्त विषे संसार न रहेगा
हे रामचंद्र इह जगत तुझको भासता है॥ सो अकारणरूप है॥ इसका कारण कोऊ नहीं
हे रामचंद्र जिसका कारण न होवे॥ अरु भासे॥ तिसको जाणीये॥ जो भ्रममात्र है॥ उपजी
कछु नहीं॥ जैसे स्वप्ने विषे स्पष्ट भासती है॥ सो किसी कारणतें उपजी नहीं॥ सो चित्तरूप है
तैसे सर्ग आदि कारणतें नहीं उपजया॥ आभासरूप है॥ परमात्माका कचन है॥ हे रामचं
द्र जो पदार्थ कारण विना भासे॥ तौ जिस विषे भासता है॥ वस्तु सोई है॥ सु अधिष्ठानरूप
है जैसे तुझको स्वप्ने विषे स्वप्नका नगर होइ भासता है॥ तौ अगर पदार्थ कहां कोऊ नहीं॥ आ
भासरूप है॥ संवित्त ज्ञान चेत्यता करके नगररूप होइ भासती है॥ तैसे विश्व अकारण आ
भास आत्मसत्ता तें होइ कर भासती है॥ जैसे जल विषे द्रवता है॥ वायु विषे स्पंदता है॥ जै
से तेज विषे प्रकाशता है॥ तैसे आत्मा विषे चित्त संवेदन है॥ जब चित्त संवेदन स्पंदरूप हो
ता है॥ तब जगतरूप होइ कर भासता है॥ और जगत कोऊ वस्तु नहीं॥ हे रामचंद्र जैसे और
तत्वोंके अणु है॥ सो और और होर भी पाईते है॥ अरु आकाशका अणु और होर नहीं पाईता॥ का
हेतें जु आकाश शून्यरूप है॥ तैसे आत्मातें इतर दूसर जगतका भाव कहूं नहीं पाईता॥ काहे
तें जो आभासरूप है॥ किसी कारणतें उपजया नहीं॥ जो तूं कहें पृथिवी आदिक तत्वोंतें
जग उपजया है॥ तौ अैसे कहणा असंभव है॥ जैसे छायातें धूप नहीं उपजती॥ तैसे त
त्वोंतें जगत नहीं उपजता॥ काहेतें जु आदि आपही नहीं उपजे॥ तौ कारण किसका हो
वे॥ तातें सर्वदाकाल ब्रह्मसत्ता अपणे आप विषे स्थित है॥ उही सत्ता जगतरूप होइ कर
भासती है॥ जैसे सुवर्ण भूषणरूप होता है॥ तौ भूषण कछु उपजया नहीं॥ तैसे ब्रह्मसत्ता॥

जगत्रूप होइ कर भासती है॥ जैसे अनुभव संवित स्वप्न नगररूप होइ भासती है॥ तैसे इह
स्पष्ट कंचनरूप है॥ दूसरी वस्तु कछु नहीं॥ सदा ब्रह्मसत्ता अपणे आप विषे स्थित है॥ जे
ता कछु स्थावर जंगमरूप जगत भासता है॥ सो आकाशरूप है॥ इति श्री उत्पत्ति प्रकरणे
परमार्थरूपवर्णनंनाम एकादश सर्गः॥ ११॥ वसिष्ठ उवाच॥
हे रामचंद्र आत्मसत्ता नित्य सुद्ध है॥ अजर अमर है॥ सदा अपणे आप विषे स्थित है॥ ति
स विषे जिस प्रकार सृष्टि उदे भई है सो श्रवण कर॥ तिसके जाणेतें जगत कल्पना मिट
जाती है॥ मिट जावेगी॥ हे रामचंद्र भाव अभाव ग्रहण त्याग स्थूल सूक्ष्म जन्म म
रण पदार्थों कर जीव पडे छेदीते है॥ सो तिसतें तूं मुक्त होवेगा॥ जैसे तूं हे सुमेर पर्वत
को चूर्ण नहीं कर सकते॥ तैसे तुझको संसार के भाव पदार्थ चूर्ण न करेंगे॥ हे रामचंद्र
आदि समुद्र देव अचेत्य चिन्मात्ररूप है॥ तिस विषे चेत्यभाव सदा रहता है॥ काहेतें जु चेत
न्यरूप है॥ जैसे वायु विषे स्पंदशक्ति सदा रहती है॥ तैसे चिन्मात्र विषे चेत्यका उरणा
रहता है॥ अहं अस्मि इस भावको प्रापत हूया है॥ इस कारणतें तिसका नाम चेतन्य है॥ हे
रामचंद्र चेतन्य संवित जु अपणे स्वरूपकी ओर नहीं आवती॥ तब लग इसका नाम
जीव है॥ संकल्पका वीज चित्त संवित है॥ तिसतें सर्व भूतजात उत्पत्ति हूए है॥ तातें स
भका वीज चित्त संवित है॥ जीव संवित जब चेत्यको चेतती भई॥ तब प्रथम शून्य हूया॥
तिस विषे शब्द गुण हूया॥ तिस आदि शब्द तन्मात्र तें पद वाक प्रमाण सहत वेद उत्प
न्न भए॥ जेता कछु जगत विषे शब्द है॥ तिसका वीज शब्द तन्मात्रा है॥ बहुड़ि स्पर्श तन्मा
त्रा होइ॥ जिसतें सभ वायु अरु स्पर्श होणा है॥ बहुड़ि रूप तन्मात्रा हूई॥ जिसतें सूर्य अग्नि
आदिक प्रकाश होणा है॥ बहुड़ि रस तन्मात्रा है॥ जिसतें सभ जल होणा है॥ सभ जल
का वीज उही है॥ बहुड़ि गंध तन्मात्रा है॥ जिसतें संपूर्ण पृथिवी होणी॥ सभ पृथिवी का
वीज उही है॥ हे रामचंद्र इस प्रकार पांचो भूत हूए॥ पृथिवी आप तेज वायु आकाश तें व
डड जगत हूया है॥ सो भूत पंचीकृत भी है॥ अरु अपंचीकृत भी है॥ अरु इह भूत सद्दृवि
स्पष्ट भासीया है॥ जैसे वटधाना विषे वड़ का विस्तार होता है॥ तैसे चिदअणु विषे
स्पष्ट है॥ कहूं युगा विषे छिण भासता है॥ चिदअणु विषे अनंत सृष्टा पड़ीयां फुरतीयां
है॥ जब चित्त संवित चेत्यान्मुखत्व होती है॥ तब अनेक सृष्टा होइ भासतीयां है॥ अरु ज
ब चित्त संवित आत्माकी ओर आवती है॥ तब आत्माके साक्षात्कार होणेकर सभ सृष्टा
पिंडाकार रूप होजातीयां है॥ अर्थ यह जो सभ आत्मरूप होतीयां है॥ तातें इस जगतकी
जसु षष्टम भूत है॥ अरु इनका वीज चिदअणु है॥ हे रामचंद्र जैसा वीज होता है॥ तैसा ही
वृक्ष होता है॥ तातें सभ जगत चिदाकाशरूप है॥ संकल्प करके इह जगत अंडवर हो
ता है॥ संकल्पके मिटे तें सभ चिदाकाश होता है॥ जैसे संकल्प आकाशरूप है॥ तैसे ज
गत भी आकाशरूप है॥ जो सभ आत्म अनुभव आकाशरूप है॥ तातें थिरता विषे एकरू
प होजाता है॥ जैसे संकल्प नगर अरु स्वप्न पुर होता है॥ तैसे इह जगत है॥ इति जग दु
त्पति वर्णनंनाम द्वादश सर्गः॥ १२॥ ॐ वसिष्ठ उवाच
हे रामचंद्र परमब्रह्म सम है॥ शांत है॥ स्वच्छ है॥ अनंत है॥ चिन्मात्र है॥ सर्वदा अपणे
आप विषे स्थित है॥ तिस विषे चेत्यका फुरणा हूया है॥ तिसका नाम जीव हूया॥ तिस
ने दृश्यको चेत्या है॥ तिस कर तन्मात्रा शब्द स्पर्श रूप रस गंध उपजे है॥ तिनातें पृथि
वी आप तेज वायु आकाश पांचो भूत रूपी हत्व हूया है॥ तिस हत्व सा पत्र फूल रूपी फ
ल लागा है॥ तातें जगतका कारण पंच तन्मात्रा ही है॥ अरु तन्मात्राका वीज आदि सं
वित आकाश है॥ तातें सर्व जगत ब्रह्मरूप हूया॥ हे रामचंद्र जैसा वीज होता है॥ तैसा
ही फल होता है॥ जो इसका वीज परब्रह्म है॥ तौ इह भी परमब्रह्म हूया॥ आदि जो अचे
त्य चिन्मात्र स्वरूप है॥ सो परम आकाश है॥ अरु जिस चैतन्य संवित विषे जगत भा

स्याहै॥ सोइहुभीसुद्धनिर्मलहै॥ काहेतेंजुपृथिवीआदिकभूतोंतेंरहितहै॥ हेरामचंद्र
इहुजगतजुतुझकोंभासताहै॥ सोसभचिदाकाशरूपहै॥ अरुइहेतवास्तवकछुनहीं॥
वण्या॥ इहुतुझकोंब्रह्मआकाशअरुआकाशकहाहै॥ अवजिसकरइसकोंशरीरग्र
हणहूयाहै॥ सोश्रवणकर॥ हेरामचंद्रसुद्धचिन्मात्रविजोचेत्योन्मुषत्वहूया॥ अ
हंअस्मितिसुअहंभावकरकेआपकोंजीवअणुजाणताभया॥ अपणाजुवास्तवरू
पथा॥ तिसतेंअन्यभाकीन्याईहूया॥ तिसजीवअणुविषेअहंभावदृढहूया॥ तिस
कानामअहंकारहूया॥ तिसअहंकारकीदृढताकरकेनिश्चयआत्मबुद्धहूई॥ तिसतें॥
आगेसंकल्पविकल्परूपीमनहूया॥ तवमनसंस्वरणेलागारूपकीओर॥ तवसुणने
कीइछाकरी॥ तिसकरश्रवणइंद्रीप्रगटभई॥ तवदेषणेकीइछाकरी॥ तवजिह्वाइं
द्रीहूई॥ इसीप्रकारदेहइंद्रियांचेत्यताकरकेभासीयां॥ तिनोंविषेअहंप्रतीतकरणे
लागा॥ हेरामचंद्रजैसेदर्पणविषेपर्वतकाप्रतिविंवहोताहै॥ सोपर्वतवाह्यहोता
है॥ तैसेदेहइंद्रियांवाह्यरूपहै॥ अरुअपणेविषेभासीयांहै॥ तिसकरतिनोंविषे
अहंप्रतीतहोतीहै॥ अरुजैसेकूपविषेमनुषआपकोंदेषै॥ तैसेदेहविषेआपकों
देषताहै जैसेइवेविषेरत्नहोताहै॥ तैसेदेहविषेआपकोंदेषता॥ सोईचिदअणु॥
देहसाथमिलकररूपकोंरचताहै॥ तिसकानामस्वयंभूब्रह्माहूया॥ जैसेसंकल्प
दूसराचंद्रमाभासताहै॥ तैसेमनोमयजगतभासताहै॥ जैसेसहेकेसृंगहोतेहै॥ तै
साइहुजगतहै॥ कछुउपजयानहीं॥ चित्तकेस्पंदविषेजगतफुरताहै॥ जैसाजैसाचि
तफुरयाहै॥ तैसेतैसेदेशकालद्रव्यस्थावरजंगमजगतकीमर्यादाभई॥ तातेंसभ
जगतसंकल्परूपहै॥ संकल्पतेंइतरजगतकाआकारकछुनहीं॥ जवसंकल्पफु
रताहै॥ तवआगेरूपभासतीहै॥ जवसंकल्पनिस्पंदहोताहै॥ तवरूपकाअभा॥
वहोताहै॥ हेरामचंद्रइसप्रकारकरब्रह्मानिर्वाणहूएहै॥ वहुरओरउपजेहै॥ तातें
स्नभीकारणनहूई॥ काहेतेंजोउहुब्रह्मानिर्वाणहोगया॥ वहुरओरउपजा॥ ता
तेंसभसंकल्पमात्रहै॥ जैसेनटवापटकेशेलेनानाप्रकारकेसांगकरकेनिकस॥
आवताहै॥ तैसेसंकल्पकरजगतनिकसआवताहै॥ तातेंदेषजोसभमायामात्र
है॥ हेरामचंद्रजवचित्तचेत्यकीओरसंसरताहै॥ तवरूपकाअंतनहींआवता॥
अरुजवअंतरमुषहोताहै॥ तवसभजगतएकआत्मरूपहोताहै॥ तवचित्तकेअ॥
स्पंदहोणेकरएकषिणविषेनष्टहूयाकेयो॥ जुसंकल्पहीरूपथा॥ तातेंजुकछुज॥
गतभासताहै॥ सोआकाशरूपहै॥ उपजयाकछुनहीं॥ आत्मसत्ताहीज्योंकीत्योंअ
पणेआपविषेस्थितहै॥ जैसेस्वप्नेविषेपर्वतनदीयांभ्रमकरदेषताहै॥ तैसेभ्र॥
मकरकेइहुजगतभासताहै॥ जैसेस्वप्नविषेआपकोंमूयादेषताहै॥ सोभ्रममात्रहै॥
तैसेइहुजगतभ्रममात्रहै॥ हेरामचंद्रस्थावरजंगमजेताकछुजगतभासताहै॥ सो॥
सभचिदाकाशहै॥ हमकोंतोसदाचिदाकाशभासताहै॥ आदिविराटरूपब्रह्माभीवा॥
स्तवतेंकछुउपजयानहीं॥ तोजगतकोंउपजयाहोवे॥ जैसेस्वप्नविषेनानाप्रकारके
देशकालव्यवहारदृष्टआवतेहै॥ सोअकारणहै॥ उपजेकछुनहीं॥ आभासमात्रहै॥
तैसेइहुजगतआभासमात्रहै॥ कार्यकारणसहितभासतेहै॥ तोभीअकारणहै॥ हे
रामचंद्रहमकोंतोजगतभ्रमभासताहै॥ जैसेस्वप्नेतेंजागेस्वप्नकाजगतमनविषेकोंभास॥
ताहै॥ जोअकारणभासाहै॥ सोभ्रांतिमात्रहै॥ सोइहुजगतकिसीकारणद्वाराउपजया॥
नहीं॥ स्वप्नवतहै॥ जैसेसंकल्पपुरभासताहै॥ जैसेगंधर्वनगरभासताहै॥ तैसेइहुजगतभी
जाण॥ आदिजोविराटआत्माहै॥ सोआतिवाहककहीरूपहै॥ पृथिवीआदितत्वोंतेंरहित
है॥ आकाशरूपहै॥ तोइहुजगतअधिभूतककैसेहोवे॥ सभआकाशरूपहै॥ इतिश्री
उत्पत्तिप्रकरणेस्वयंउत्पत्तिवर्णनेनामत्रयोदशसर्गः॥१३॥ ॥ ॥ ॥
श्रीवसिष्ठउवाच॥ हेरामचंद्रइहुदृश्यमिथ्याअसत्यरूपहै॥ जोइहुसोनिरामयब्रह्महै

सोब्रह्मआकाशजीवकीन्याईहूयाहै॥ जैसेसमुद्रद्रवताकरकेंतरंगरूपहोताहै॥ तैसेब्र
ह्मजीवरूपहोताहै॥ आदिजोसंवितस्पंदरूपहूईहै॥ सोब्रह्माहूयाहै॥ तिसब्रह्मातेंआगे
जीवहूएहै॥ जैसेएकदीपकतेंवहुतेदीपकहोते॥ जैसेएकसंकल्पतेंवहुतेसंकल्पहो
तेहै॥ तैसेएकआदिजीवतेंवहुतेजीवहूएहै॥ जैसेथंभेविषेशिल्पीपुतलीयांकल्पता
है॥ जोएतीपुतलीयांइसथंभेविषेहै॥ सोपुतलीयांशिल्पीकेमनविषेहोतीयांहै॥ थं
भाज्योंकात्योंस्थितहै॥ तैसेसभपदार्थआत्माविषेमननेकल्पेहै॥ वास्तवज्योंकात्यों॥
आत्माब्रह्महै॥ तिनोंपुतलीयोंविषेवडीपुतलीब्रह्माहै॥ ओरजीवछोटीयांपुतलीयां
है॥ जैसेवास्तवतेंथंभाहीहै पुतलीकोऊनहींउपजी॥ तैसेवास्तवआत्मसत्ताहै॥ जग॥
तकछुउपजयानहीं॥ संकल्पकरकेजगतभासताहै॥ संकल्पकेमिटेतेंजगतकल्प
नामिटजातीहै॥ रा॥उ॥वा॥ हेभगवनएकजीवतेंजोवहुतेजीवहूएहै॥ सोपर्वतविषेपा
णकीन्याईउपजतेहै॥ जोपर्वतविषेअनंतपिंडआकारहोतेहै॥ अथवामेघविषेवूंदां
कीन्याईहै॥ अथवाअग्नितेंविस्फुलिंगकीन्याईउपजतेहै॥ सोकहो॥ अरुएकजीवक
वणाहै॥ जिसतेंसहस्रांजीवउपजतेहै॥ व॥ह॥उ॥वा॥ हेरामचंद्रनएकजीवहै॥ इहुते
रेवचनऐसेहै॥ जैसेकोऊकहैमैसहेकेसृंगउडतेदेषतेहै॥ एकजीवहीउपजयानहीं
तोअनेककैसेकहों॥ जोऐसेउपजेहै॥ सदअद्वैतआत्मसत्ताअपणेआपविषेस्थित
है॥ अनंतआत्माहै॥ तिसविषेभेदकीकल्पनाकोऊनहीं॥ हेरामचंद्रजोकछुजगततु
झकोंभासताहै॥ सोसभआकाशरूपहै॥ कोऊपदार्थउपजयानहीं॥ संकल्पकेफुरणे॥
करजगतभासताहै॥ जीवशब्दअरुजीवशब्दकाअर्थकोऊआत्माविषेउपजयानहीं
इहुकल्पनाभ्रमकरकेभासतीहै॥ आत्मसत्ताहीजगतकीन्याईभासतीहै॥ तिसवि
षेनएकजीवहै॥ नअनेकजीवहै॥ हेरामचंद्रआदिजोविराटआत्माहै॥ सोआकाशरू
पहै॥ तिसतेंओरजगतउपजयानकुकोंक्याकहों॥ जगतविराटरूपहै॥ अरुविराटजी॥
वरूपहै॥ अरुजीवआकाशरूपहै॥ वहुडअरुजगतक्यारहाअरुजीवक्याहूया॥ स॥
भचिदाकाशरूपहै॥ रा॥उ॥वा॥ हेमुनीश्वरतुमकहतेहोआदिजीवकोऊनहीं॥ तोइ
नजीवोंकापालनेहाराकोनहै॥ व॥ह॥उ॥वा॥ हेरामचंद्रजिसकोंतूंआदिजीवकहताहै
सोब्रह्मरूपहै॥ नित्यहै॥ सद्है॥ अनंतशक्तहै॥ अपणेआपविषेस्थितहै॥ तिसविषे
जगतकल्पनाकोऊनहीं॥ हेरामचंद्रजोसुद्धचिदाकाशअनंतशक्तहै॥ तिसविषेआ
दिजोचितकचनहूयाहै॥ सोसुद्धचिदाकाशब्रह्मसत्ताहीजीवकीन्याईभासणेलगी
है॥ स्पंदद्वाराहूएकीन्याईभासतीहै॥ स्वरूपतेंइतरकछुहूयानहीं॥ चेतन्यसंवित
आदिविराटआत्माब्रह्मारूपकरस्थितभईहै॥ तिसनेआगेसंकल्पकरकेजगतरच
या॥ तिसविषेसभअसभकर्मरचेहै॥ तिनकरनेतकरीहै॥ जुइहुसुभहै॥ इहुअसुभ
है॥ जैसेआदिनेतरचीहै॥ तैसेहीमहाप्रलयपर्यंतज्योंकात्योंचलीजातीहै॥ हेराम
चंद्रउहुजोदेवहै॥ सोअनंतशक्तहै॥ तिनोंविषेनेतशक्तप्रधानहै॥ तिसकेलंघनें
कोंसमर्थकोऊनहीं॥ जैसेरचीहै॥ तैसेमहाप्रलयपर्यंतरहतीहै॥ हेरामचंद्रआ॥
दिजोविराटपुरुषहै॥ सोआतिवाहकरूपहै॥ पृथिवीआदिकतत्वोंतेंरहितहै॥ अ
रुइहुजगतभीआतिवाहकहै॥ पृथिवीआदिकतत्वोंतेंनहींउपजया॥ सभसंकल्प
रूपहै॥ जैसेमनोराजकानगरशून्यहोताहै॥ तैसेइहुजगतशून्यहै॥ हेरामचंद्रइस
सर्गकानिमित्तकारणकोऊनहीं॥ अरुसमवायकारणभीकोऊनहीं॥ जोपदा
र्थनिमित्तकारणसमवायकारणविनादृष्टआवे॥ सोभ्रममात्रजाणीये॥ उपज॥
याकछुनहीं॥ जोकोऊपदार्थउपजताहै॥ सोदोकारणोंकरउपजताहै॥ सोजगत
काकारणकोऊनहीं॥ ब्रह्मसत्तानित्यसुद्धअद्वैतहै॥ तिसविषेकार्यकारणकीकल्प
नाकैसेहोवे॥ हेरामचंद्रजगतअकारणकहै॥ भ्रांतकरकेभासताहै॥ जवतुझकों॥
आत्मविचारउपजेगा॥ तवइहुदृश्यभ्रममिटजावेगा॥ जैसेदीपकहाथलेकरअंधकार

कोदेषीये तौ दृष्ट नहीं आवता । तैसे विचार कर देषेगा तौ जगत भ्रम दृष्ट न आवेगा । जगत भ्रम मन के फुरणे कर उदे हूया है । तातें संकल्प मात्र है । इसका अधिष्टान ब्रह्म है । सम तामहरूप ब्रह्म सत्ता विषे कल्पत है । षट विकार भी ब्रह्म सत्ता विषे फुरते हैं । अरु सभ ते रहत भी है । शुद्ध चिदाकाश रूप है । अरु जगत भी वही रूप है । जैसे समुद्र विषे द्रवता कर के तरंग फेण बुदबुदा भासते हैं । तैसे आत्म सत्ता विषे चित्त के फुरणे कर जगत भासता है । जैसे आदि चित्त विषे पदार्थ सत्ता दृढ हुई है । तैसे ही स्थित है । अरु आत्मा साथ अभेद है । इतर कछु नहीं । सभ चिदाकाश रूप है । इछा भी आकाश रूप है । देवता भी आकाश रूप है । समुद्र पर्वत भी आकाश रूप है । हे रामचंद्र इस को चिदाकाश ही भासता है । आत्म सत्ता ही भिन्न रूप होइ भासती है । अरु वही रूप होइ भासती है । पर्वत कंदरा सभजग न होइ कर भासती है । जब चैत्योन्मुख होता है । तब जगत भासता है । जैसे जब वायु स्पंद होती है । तब भासती है । असपंद रूप होती है । तब नहीं भासती । तैसे जब चित्त संवेदन अस्पंद होती है । तब जगत कल्पना मिट जाती है । हे रामचंद्र चिन्मात्र जो चैत्य भाव हूई है । इसी का नाम जगत है । जब चैत्य ते रहत हूया । तब जगत भ्रम मिट जाता है । तौ जगत ही न रहा । तब भेद कल्पना आत्मा विषे कैसे होवे । तातें कोऊ कार्य है । न कारण है । न जगत है । सभ भ्रम मात्र कल्पना है । शुद्ध चिन्मात्र अपणे आप विषे स्थित है । हे रामचंद्र शुद्ध चिन्मात्र विषे चित्त कचन सदा रहता है । जैसे सरवा के बीज विषे तीखणता सदा रहती है पर जब चाईती है । तब तीखणता भासती है । अन्यथा नहीं भासती । तैसे जब चित्त संवेदन चैत्योन्मुख होती है । तब जीव जगत चैतन्य भासता है । अरु संवेदन ते रहत जीव जगत कल्पना नहीं भासती । हे रामचंद्र जब संवेदन साथ परिछिन्न संकल्प मिलता है । तब जीव होता है । अरु जब इसते रहत होता है । तब शुद्ध चिदात्मा ब्रह्म होता है । जिस पुरुष की अशेष विशेष कल्पना मिट गई है । अरु शुद्ध निर्विकार ब्रह्म सत्ता का साक्षात्कार हूया है सो पुरुष संसार भ्रम ते मुक्त हूया है । हे रामचंद्र इह सभ जगत आत्म का आभास रूप है सो आत्मा अछेद्य है । अदाह्य है । अक्लेद्य है । नित्य शुद्ध है । सर्वगत है । स्थाणु की न्याई अचल स्थित है । सो अहं रूप है । सभ जगत चिदाकाश रूप है । इस को तौ सदा ऐसे ही भासता है । अज्ञानी वाद विलाप पड़े करते हैं । इस को वाद विलाप कोऊ नहीं । काहे ते जो इसमारा सभ भ्रम नष्ट हो गया है । हे रामचंद्र इह सभ जगत ब्रह्म रूप है । अरु है तब कछु नहीं । सावयवी जो पुरुष है । तिसके अंग अपणा स्वरूप ही है । तौ निराकार निरवयवी सत्ता की अंग अपणा स्वरूप कौन होवे । तातें जेता कछु प्रपंच है । सो सभ चिदाकाश ही रूप है । पर अज्ञानी को भिन्न भिन्न भासते है । अरु जन्म मरण आदिक विकार भासते हैं । अरु ज्ञानवान को सभ आत्म रूप ही भासता है । पृथिवी आप तेज वायु आकाश सभ आत्मा के आश्रय फुरते हैं । अरु चित्त शक्ति ही ऐसे होइ कर भासती है । जैसे बसंत ऋतु आवती है । तिस विषे रस शाक कर वृक्ष वलीयां सभ प्रफुलत होइ कर भासतीयां हैं । तैसे चित शक्ति स्पंदता कर के जगत रूप होइ कर भासती है । हे रामचंद्र जैसे वायु स्पंदता कर स्पर्श रूप होइ भासती है । तैसे चित्त संवित जगत रूप होइ भासती है । जैसे समुद्र तरंग रूप होइ भासता है । तैसे आत्मा जगत रूप होइ भासता है । पर वायु जड है । आत्मा चैतन्य है । अरु जल भी परिणाम कर के तरंग होता है । आत्मा अच्युत है । निराकार है । हे रामचंद्र चैतन्य रूप वत्त है । जगत तिस का चमत्कार है । है हूं अरु नहीं हूं चैतन्य रूप अभि है तिस विषे जगत रूपी उल्लता है । है हूं अरु नहीं हूं चैतन्य रूपी सूर्य है । तिस विषे जगत रूपी दिन है । आत्मा रूपी समुद्र है । तिस विषे जगत रूपी तरंग है । आत्म रूपी कुसम है तिस विषे जगत रूपी सुगंध है । आत्म रूपी अग्नि है । तिस विषे जगत रूप उसनता है । आत्म रूपी वरफ है । तिस विषे शीतलता रूपी जगत है । आत्म रूपी वली है । तिस विषे जगत रूपी फल है । आत्म रूपी स्वर्ण है । जगत तिस विषे भूषण है । ब्रह्म रूपी पर्वत है । तिस विषे जगत रूपी जडता है । आत्म रूपी अग्नि है । तिस विषे जगत रूपी प्रकाश है । आत्म रूपी आकाश है । तिस विषे जगत रूपी शून्यता है । आत्म रूपी गन्ना है । तिस विषे जगत रूपी मधुरता है । आत्म रूपी दूध है । तिस विषे जगत रूपी घृत है । आत्म रूपी माषी है । तिस विषे जगत रूपी मधुरता है । आत्म रूपी सूर्य है । तिस विषे जगत रूपी जलाभास है । है हूं अरु नहीं हूं । हे रामचंद्र इस प्रकार देष जो सर्व ब्रह्म है । नित्य है । शुद्ध है । परमानंद स्वरूप है । सर्वदा अपणे आप विषे स्थित है । भेद कल्पना कोऊ नहीं । जैसे जल द्रवता कर के तरंग रूप होइ भासता है । तैसे ब्रह्म सत्ता जगत रूप होइ भासती है । और न कोऊ उपजया है । न कोऊ नष्ट होता है । हे रामचंद्र आदि जो चित्त शक्ति स्पंद रूपी हूई है । सो विराट रूप हूया है । सो भी चिदाकाश रूप है । आत्म सत्ता ते इतर भाव कोऊ नहीं प्राप्त भया । जैसे पत्र ऊपर लीकां होतीयां हैं । सो पत्र ते भिन्न लीकां कछु वस्त नहीं । पत्र रूप है । तैसे ब्रह्म विषे जगत है । कछु इतर नहीं । अरु पत्र ऊपर लीकां भी आकार है । ब्रह्म विषे जगत कछु आकार ही नहीं । सभ आकाश रूप है । मन विषे पड़ा फुरता है । जगत कछु हूया नहीं । जो कछु है । तौ परम ब्रह्म है । जो ब्रह्म ही है । तौ कल्पना कैसे होवे । वाल्मीकि रुवाच । इस प्रकार मुनि शार्दूल वसिष्ठ जी कहा ॥ तब सायंकाल का समय हूया । सभ परस्पर नमस्कार कर के आश्रमों को गए । बहुड़ सूर्य की यां किरणां साथ अपणे अपणे स्थान पर आइ बैठे । इति श्री उत्पत्ति प्रकरणे सर्व ब्रह्म प्रतिपादनं नाम नवदेश सर्गः ॥ १४ ॥

ॐ नमो ब्रह्मणे । वसिष्ठ उवाच । हे रामचंद्र आत्मा विषे जगत कछु उपजया नहीं । भ्रम कर के पड़ा भासता है । जैसे आकाश विषे भ्रम कर के तिरवरे मुक्त माला भासतीयां हैं । तैसे अज्ञान कर के आत्मा विषे जगत भासता है । जैसे थंभे विषे उकेरे बिना पुतलीयां सिल्पी विषे भासतीयां हैं । जो उनते पुतलीयां थंभ विषे है । सो पुतली कोऊ नहीं । काहे ते जो किसी कारणते नहीं उपजीयां । तैसे चैतन्य रूपी थंभे विषे मन रूपी सिल्पी त्रिलोकी यां कल्पता है । पर कछु कारण कर उपजया नहीं । ब्रह्म सत्ता ज्यों की त्यों स्थित है । जैसे सोम जल विषे त्रिकाल तके मनसों नरंगों का सदभाव होता है । तैसे ब्रह्म विषे जगत है । वास्तव ते कछु जगत का होणा नहीं । चित्त के फुरणे विषे जगत भासता है । जैसे सूर्य की यां किरणां करोखे विषे आवतीयां हैं । तिस विषे सूक्ष्म त्रिसरेणू होते हैं । तिस ते भी चिदणु सूक्ष्म है । जैसे त्रिसरेणू ते सुमेरु पर्वत स्थूल है । तैसे चिदणु ते त्रसरेणु स्थूल है । ऐसे सूक्ष्म चिदणु विषे इह जगत पड़ा फुरता है । सो क्या रूप है । आकाश ही रूप है । कछु उपजया नहीं । फुरणे कर के जगत भासता है । हे रामचंद्र आकाश पर्वत समुद्र पृथिवी आदिक जेता कछु जगत भासता है । सो उपजया कछु नहीं तौ और पदार्थ उपजे कहां होवे । सभ आकाश रूप है । वास्तव ते कछु उपजया नहीं जो कछु अनुभव विषे होता है । सो भी असत है । जैसे स्वप्न सृष्टि अनुभव होती है । सो भी उपजे कछु नहीं । असत रूप है । तैसे इह जगत असत रूप है । सत्य निर्विकार सत्ता अपणे आप विषे स्थित है । तिस सत्ता को त्याग कर जो अवयव अवयवी के विकल्प उठावते हैं । तिन को धिकार है । इह सभ जगत आकाश रूप है । अरु अधिभूत के जगत जो भासता है । सो गंधर्व नगर स्वप्न सृष्टि वत है । हे रामचंद्र पर्वतों सहित जगत भासता है । सो रत्ती भर भी नहीं । जैसे स्वप्ने की पर्वत जाग्रत को रत्ती भर भी नहीं होते काहे ते जो कछु हूए नहीं । तैसे इह जगत असत रूप है । भ्रांति कर के भासता है । जैसे संकल्प का मेरु इस मेरु सो सूक्ष्म होता है । तैसे इह जगत असत्य है अरु आत्मा विषे तुछ है । जैसे ससे के सींग असत्य होते हैं । तैसे जगत असत्य है । जैसे रेगबिला की नदी असत्य होती है । तैसे इह जगत असत्य है । असम्यक ज्ञान कर के जगत भासता है । विचार कीये ते शांत होता है । शुद्ध चैतन्य सत्ता विषे जब चित्त संवेदन होती

है॥ तब उहही संवेदन जगत रूप होइ भासती है॥ पर जगत कछु हूया नहीं॥ जैसे समुद्र
आपणी द्रवता स्वभाव करके तरंग रूप होइ भासता है॥ पर तरंग कछु और वस्तु नहीं
जल ही रूप है॥ तैसे ब्रह्मसत्ता जगत रूप होइ कर स्फुरती है॥ सो और तो जगत भिन्न प
दार्थ कोऊ नहीं॥ ब्रह्मसत्ता ही कचनहारा ऐसे भासती है॥ जैसे बीज होता है॥ तैसे ही
अंकुर निकसता है॥ जैसी आत्मसत्ता है॥ तैसा ही जगत है॥ इस रीव वस्तु कोऊ नहीं॥ आ
त्मसत्ता ही आपणे आप विषे स्थित चित्त संवेदन के स्पंद कर जगत रूप होइ भासती
है॥ हे रामचंद्र तिस ऊपर मैं इतिहास आख्यान तुझ को कहता हौं॥ सो श्रवणां का भूषण है
तिस के समझे तें सभ संसे मिट जावैंगे॥ अरु विश्राम को प्रापत होवैगा तूं॥ रामउवा च
हे भगवन मेरे बोध की दृढता के निमित्त मैं इक आख्यान जिस प्रकार हूया है तैसे संक्षे
पतें कहौ॥ वसिष्ठ उवाच॥ हे रामचंद्र इस पृथ्वी में एक राजा पदम होत भया॥ सो
कैसा था॥ जैसा कमल प्रफुल्लित रूप था॥ अरु संतानवान॥ अरु बडी लक्ष्मी कर
संपन्न अरु समुद्र वत मर्यादा को धारणे हारा॥ अरु दुष्टों रूपी तम का नाश करता सू
र्य॥ अरु सत गुण रूपी हंसों का मानसरोवर॥ अरु दोष रूपी तृणों का नाश कर्ता अग्नि है॥
अरु प्रजा के पालन को शत्रु को नाश करणे को विष्णु जीव तथा॥ मित्र रूपी चंद्रमुख
कमलनीयां को चंद्रमा था॥ अरु राजसी सात्विकी संपूर्ण गुणों कर संपन्न था॥ एक ली
ला नाम नी तिस की स्त्री थी॥ बहुत सुंदर थी॥ मानो लक्ष्मी अवतार आन लीया है॥ सो
राजे की प्रसन्नता को देष कर आप भी प्रसन्न होवै॥ अरु राजे को दलगीर देष कर आप
भी दलगीर होवै॥ अरु राजे को क्रोधवान देषे॥ तब भयमान होवै॥ बहुत सुशीलता
संयुक्त रहै॥ तिस साथ राजा क्रीडा करता भया बागां जावै॥ ताल वृक्ष कदम वृक्षों कल्प
वृक्षों के नीचे जावै॥ सुंदर सुंदर स्थानों विषे जाइ कर क्रीडा करे॥ बरफ के मंदर बनाइ कर
तिस विषे रहै॥ अरु रत्न मणी के जडे हूए स्थानों विषे शय्या बिछाय के विश्राम करे॥
इस प्रकार विचरते भए॥ बहुडि ठाकुर द्वारे तीर्थ जो जाहर भी पवित्र स्थान थे तहां गए॥ इ
स प्रकार राजसी अरु सात्विकी स्थानों विषे विचरते भए॥ आपस में वकार ना पावे॥ एक
एक पद कहे॥ इसरा तिस को श्लोक कर उत्तर देवै॥ अरु श्लोक भी ऐसे पढे जो पढने में भाषा भा
से॥ अरु अर्थ विषे संस्कृत होवै॥ अरु नेत्र को अरु शृंगार की चतुराई सीषे॥ अरु राजा चंद्रमा
कों न्याई सुंदर॥ अरु राजसी विद्या करके संपूर्ण॥ हस्ती घोडा रथ आदिक चलावणे कों भी वि
द्यावान शस्त्रों के चलावणे की विद्या संपन्न हूया॥ इस प्रकार राजा बहुत वान रहूया॥
अरु दोका परस्पर आपस में स्नेह भया॥ अरु दोनो की यौवन अवस्था हूई॥ अरु दोऊ गु
णवान जो राजा का चित्त और किसी और न जावे॥ अरु राणी का चित्त भी और किसी और न जा
वे॥ राणी पतिव्रता अरु राजा धर्मात्मा हूया॥ तब एक समें राणी विचार कीया॥ जो रा
जा मुझ को बहुत प्रीतम है॥ अपणे प्राणों की न्याई प्यारा है॥ अरु बहुत सुंदर है॥ किसी
प्रकार इस की युवा अवस्था सदा रहे॥ जो अजर अमर रहे॥ इस का अरु मेरा वियोग कदाचि
त न होवे॥ सो ई उपाइ करीये जत्न करो दान पुन करो॥ ऐसे विचार कर के ब्राह्मणों रिषीश्वरों
मुनीश्वरों सों पूछती भई॥ हे विप्रो अरु अमर न रहे किस प्रकार होता है॥ जिस प्रकार हो
ता है॥ सो हम कों कहो॥ विप्र उवाच॥ हे देवी जप तप आदिक कर के सिद्धता प्रापत हो
ती है॥ पर अजर अमर नहीं होवीता॥ सभ जगत नाश रूप है॥ इस शरीर कर किसी
स्थिर नहीं रहणा॥ हे रामचंद्र इस प्रकार ब्राह्मणों ते सुण कर राणी विचार करणे ला
गी॥ जो भरता सों प्रथम मैं मरों॥ तब मेरे बडे भाग है॥ मैं सुखवान होवौंगी॥ अरु जो
इह प्रथम मरता होवै॥ मैं दुषमान होवौंगी॥ तब सो ई उपाइ करों॥ जिस कर राजा का
जीव मेरे अंतःपुर विषे ही रहे॥ बाहर न जावे मैं दर्शन करती रहौं॥ तां ते सरस्वती को मैं सेवौं
हे रामचंद्र ऐसे विचार कर के तप रूप जो सरस्वती है॥ तिस का पूजन करती भई॥ तब त्रय दिन
पर्यंत निराहार रहे॥ चतुर्थ दिन उपारणा करे॥ जिस प्रकार शास्त्र विधि है॥ तिसी प्रकार करे

देवता ब्राह्मण पंडित गुरु ज्ञानीयों की पूजा करे॥ स्नान दान तप ध्यान नित प्रति करे॥ इ
ह नेम कीया॥ अरु इह विषे जिस प्रकार आरोक रतोथी॥ उसी प्रकार विचरे॥ भरता को
लखावे नहीं॥ इस प्रकार नेम संयुक्त होइ कर सरस्वती की पूजा करी॥ तब वाणी शरी
प्रसन्न होइ करि दर्शन देती भई॥ अरु हाई उ त्रीन तुझ भरता के निमित्त निरंतर तप कीया
है॥ सो मैं प्रसन्न भई हौ॥ जो कछु तुझ को अभीष्ट वर है॥ सो मंग॥ लीला उवाच॥ हे देवी तेरी
जै होवै॥ मैं अनाथ ने तेरी शरण हौं मेरी रक्षा करु॥ अरु जन्म जरा इह जो अग्नि है॥ सो बहु
त प्रकार कर के जलावती है॥ तिस के शांत करणे कों तूं चंद्रमा है॥ अरु तिदे विषे जो तम
है॥ तिस के नाश करणे कों तूं सूर्य है॥ हे माता मुझ को दो वर देहु॥ एक इह वर है जो जब
मेरा भरता अस्त न होवै॥ तब इस का जीव जो है पुर्येष्टक सो बाहर न जावे॥ अंतःपुर विषे ही
रहे॥ अरु दूसरा वर इह है॥ जो मेरी प्रार्थना सों दर्शन होवै॥ तब दर्शन देवो॥ सरस्वत्युवा
च॥ ऐसे ही होवैगा॥ हे रामचंद्र इस प्रकार वर देकर सरस्वती अंतरध्यान होत भई॥ जैसे
समुद्र विषे तरंग उपज कर लीन होता है॥ तैसे देवी अंतरध्यान भई॥ ऐसे सुण कर ली
ला बहुत प्रसन्न भई॥ जैसे गीत को सुण कर मृग प्रसन्न होता है॥ तैसे लीला प्रसन्न भ
ई॥ काल रूपी चक्र फिरता है॥ जिस को षिण इ घड़ी आवलां गाहूया है॥ तिस के त्रय सौ सा
ठ किले हैं॥ वर्ष पर्यंत उसी ठौर बहुडि आवता है॥ ऐसा जो कार चक्र है॥ तिस कर राजा पद
म अस्त भया॥ तब ऐसा हो गया राजा॥ जैसे सूके पत्र सों रस निकस जाता है॥ तैसे पुर्येष्टक
के निकसने कर राजा का शरीर कुमलाइ गया॥ तब राणी उसके मरणे कर बहुत शोक
वान भई॥ मुष की कांति दूर होइ गई॥ जैसे कमलनी जल विना कुमलाइ जाती है॥ तैसे वि
रलाप करणे लागी॥ कबहूं ऊंची स्वर कर रुदन करे॥ कबहूं चुप कर जावे॥ राजा के वियो
ग कर बहुत शोकवान भई॥ जैसे चकवे के वियोग कर चकवी शोकवान होती है॥ शोक के
स्वास लेणे कर मूर्छा जैसी होइ गई॥ जैसे सर्प के फुंकारे लगे को ऊ मूर्छा होइ जाता है॥ तैसे
शोक के स्वासों लीला मूर्छित होइ गई॥ अरु व्याकुल होइ कर प्राण त्यागणे लागी॥ तब सर
स्वती जी दया कर के आकाशवाणी करी॥ हे सुंदरी इह जो तेरा भरता अस्त भया है॥ तिस
को सर्व और ते फूलों कर ढांप राषु॥ बहुडि तुझ को भरता की प्रापत होवैगी॥ अरु फूल न कु
मलावैंगे॥ तेरे भरते को ऐसे अवस्था है॥ जैसे आकाश की निर्मलता है॥ अरु तेरे ही मं
दर विषे है॥ गया कहूं नहीं॥ हे रामचंद्र इस प्रकार कृपा कर के जब देवी वचन कहे॥ तब ली
ला कछुक शांतवान हूई॥ जैसे जल विना मछी तड़फती हूई॥ मेघ की वर्षा कर के कछुक
शांतवान होती है॥ तैसे लीला कछुक शांतवान होत भई॥ तब लीला ऊपर फूलों कर ढ
के भरता को ढांप्या॥ उसके पास आप भी शोकवान हूई कर बैठ रही॥ अरु रुदन करणे लागी
बहुड देवी जी की आराधना करी॥ तब अर्धरात्र के समें देवी जी आन प्रापत भई॥ अरु
कहा॥ हे सुंदरी तूं किस मेरा स्मरण किस निमित्त कीया है॥ अरु तूं शोक किस का करती
है॥ इह जो सभ जगत भ्रांत मात्र है॥ जैसे मृगतृस्णा की नदी होती है॥ तैसे इह जगत है॥ अरु
त्व इदं ते आदि लेकर जो जगत भासता है॥ सो सभ कल्पना मात्र है॥ भ्रांत कर के भासता
है॥ आत्मा विषे हूया कछु नहीं॥ तूं किस का शोक करती है॥ लीलोवाच॥ हे परमेश्वरी मेरा
भरता कहां स्थित है॥ अरु क्या रूप धारा है॥ तिस को मुझ के मिलावो॥ तिस विना अपणा
जीवणा मैं देषन ही सकती॥ देव्युवाच॥ हे लीले आकाश तीन है॥ एक भूताकाश है॥ ए
क चित्ताकाश है॥ एक चिदाकाश है॥ अरु जो आकाश है॥ सो भूताकाश है॥ चित्त आकाश
के आश्रय है॥ अरु चित्त आकाश चिदाकाश के आश्रय है॥ तेरा भरता अब भूताकाश को त्या
ग कर चित्त आकाश विषे गया है॥ सो चित्त आकाश चिदाकाश के आश्रय स्थित है॥ ज
व तूं चिदाकाश विषे स्थित होवैगी॥ हे लीले देषाने देषांतर को षिण विषे संवित
जाती है॥ तिस के मध्य जो अनुभव आकाश है॥ सो चिदाकाश है॥ जब तूं संकल्प को त्या

गाकरदेवेगी॥ तिसतेंशोभरहे॥ सोचिदाकाशहे॥ हेलीलेजबदृश्यकाअत्यंतअभावहोता
हे॥ तबपरमपदकीप्राप्तहोतीहै॥ सोचिरकालकेअभ्यासतेंप्राप्तहोतीहै॥ अरुमे
रानुफकोंइहबरहे॥ जोतुफकोंशीघ्रहीप्राप्तहोवेगी॥ हेरामचंद्रजबइसप्रकारदे॥
वीकहिकरअंतरध्यानहोतभई॥ तबलीलाकरकेलीलाराणीनिर्विकल्पसमा॥
धिविषेस्थितभई॥ अरुचित्तसहितदेहकात्यागउडी॥ जैसेपंषेरुणीअपणेगृहतेंउ
डकरआकाशकोंगमनकरतीहे॥ तैसेराणीचिदाकाशकोंउडी॥ तबएकषिणविषेचि॥
दाकाशकोंप्राप्तभई॥ जुनित्यसुद्धअनंतआत्माहे॥ परमशांतरूपहे॥ सर्वकाअधि
ष्टानहे॥ तिसविषेजाइकरभरताकोंदेषतीभई॥ संपदकल्पनाकोंलेगईथी॥ तिसकरके
अपणेभरताकोंदेषतीभई॥ अरुमंडलेश्वरसिंहासनोपरिआकाशविषेदेषे॥ अरुवडे॥
सिंहासनपरवैठेभरताकोंदेषतीभई॥ चारोंओरतेंजयजयकारशब्दहोताहे॥ जोहेरा॥
जनतेंराजयहोवे॥ तूंबहुतजीवे॥ अरुवडेसुंदरमंदरोकोंदेषतीहे॥ राजेकेपूर्वदिशाकों
देषे॥ तबब्राह्मणऋषीश्वरमुनीश्वरअनेकवैठेहे॥ पछमदिशाकोंदेषे॥ तबअनेकमं
डलेश्वरराजावैठेहे॥ अरुदक्षिणदिशाकीओरदेषे॥ तबसुंदरस्त्रीयांवैठीयांहे॥ अरु॥
नानाप्रकारकेभूषणोंसंयुक्तअनेकहे॥ उत्तरदिशाकीओरदेषे॥ तबहस्तीघोडारथ॥
पियादाचारोंप्रकारकीअनंतसेनाहे॥ देषकरआश्चर्यकोंप्राप्तभई॥ औरनगरदेषअ॥
जादेषीसभअपणेअपणेव्यवहारविषेस्थितहे॥ वहुडराजेकीसभाविषेजाइवैठी॥ रा
णीसभकोंदेषे॥ अरुराणीकोंकोऊनदेषे॥ जैसेओरकेसंकल्पपुरकोनहींदेषसकीता
तैसेराणीकोंदेषकोऊनहींसके॥ तबराणीउसकाअंतःपुरदेष्या॥ जहांठाकरद्वारेवणे
हूएहे॥ देवत्योंकीपूजाहोतीहे॥ अरुगंधधूपकीपवनकरत्रिलोकीसोंगमनकरती
हे॥ राजेकायशावहुतहूयाहे॥ चंद्रमाकीन्याई॥ तबपूर्वदिशासोंहरकारेआए॥ तिनोंक
हाहेराजनपूर्वदिशामोंओरराजेकाद्रोभहूयाहे॥ वहुडउत्तरदिशासोंहरकाराआया
तिसकहाहेराजनउत्तरदिशामोंओरराजेकाद्रोभहूयाहे॥ तमाराजोमंडलेश्वरहे॥ सो
युद्धपडाकरताहे॥ अग्नीपकारदक्षिणदिशाकीओरसोंआया॥ उसभीकहा॥ ओरराजेका
द्रोभहूयाहे॥ वहुडपश्चिमदिशासोंआया॥ उसकहापछमदिशामोंद्रोभहूयाहे॥ वहु
डओरआया॥ तिसनेकहासुमेरपर्वतओदेवत्योंसिद्धोंकेरहणेकास्थानहे॥ तहांद्रोभहू
याहे॥ वहुडअस्ताचलपर्वतसोंआया॥ तिसकहा॥ अस्ताचलमोंद्रोभहूयाहे॥ तबरा
जेकीआज्ञाकरवहुतसेनाविद्यमानस्थितथानहुई॥ जैसेवडेमेघआवे॥ तैसेसेनाआवे॥
अरुजैतमंत्रीथेअरुनटआदिकजोटहलूएथे॥ ओरऋषीश्वरमुनीश्वरब्राह्मणतहांदेष
तीभई॥ जैतेभूतथेसोसभसंदर॥ अरुवषातेंरहतस्वेतवादरोंकीन्याईतिनकेस्वेत
वस्त्रदेषतीभई॥ अरुवडेवेदपाठीब्राह्मणदेषतेभई॥ जिनकेप्राह्रकरनगारेयोंकेशा
ब्दभीसूक्ष्मभासे॥ हेरामचंद्रइसप्रकारऋषीश्वरमुनीश्वरमंत्री॥ टहलूएवालकदेष॥
तभई॥ सोअपूर्वदेषतभई॥ देषकरआश्चर्यवानभई॥ चित्तविषेइहशंकाउपजी॥ जोमे
राभरताहीमूया॥ केसहूणनगरभीस्तकभया॥ जोपरलोकविषेआएहे॥ तबदेष्या
जोमध्याह्नकासूर्यसिरपरउदेहे॥ अरुराजासोलहवर्षकाहे॥ जराअवस्थाअप॥
सकोंत्यागकरतोतनपारीरकोंधारेवेठाहे॥ ऐसेआश्चर्यकोंदेषकरराणीवहुडअपणे
गृहमोंआवतभई॥ तबदेष्याजोअर्धरात्रहे॥ अपणीयांसखीयांकोंसोयांहूयांदेषत॥
भई॥ सहेलीयांकोंजगावतभई॥ अरुकहाजिससिंहासनपरमेराभरतावैठताथा॥ तिस
कोंसाफकरो॥ मेंतिसकेपासवैठतीहो॥ अरुजिसप्रकारतिसकेनिकटमंत्रीभृतआ
नवैठतेथे॥ तिसीप्रकारकरो॥ इसप्रकारसुणकरसहेलीयांवडेमंत्रीकोंकहा॥ तब
मंत्रीयोंसभकोंजगाया॥ पाइकरकेजलकीवर्षाकरीमेघकीन्याई॥ सिंहासनऊप
रवस्त्रविछाए॥ आसपासभीवस्त्रविछाए॥ मसालांजागीयां॥ वडाप्रकाशहूया॥ अं

धकारनष्टभया॥ जैसेअगस्तमुनिसमुद्रकोंपानकीयाथा॥ तैसेअंधकारकोंप्रकाश
पानकरलीया॥ तबमंत्रीटहलूएपंडितविद्याधरज्ञानवानसभआनस्थितहूए॥ जो
कछुराजाकेपासआवतेथे॥ सोसभआनस्थितभए॥ सिंहासनकेनिकटवैठे॥ ओर
लोकभीआनस्थितभए॥ मानोप्रलयकालविषेसमुद्रसभहूये॥ वहुडउनलसों
पूर्णहूएहे॥ प्रलयहूयसरहिमानोनूतनउत्पतिभईहे॥ इसप्रकारमंत्रीटहलूये॥
पंडितवालभरतेविनादेषकरवडेआश्चर्यकोंप्राप्तभई॥ जोएकआदमीकेदोनोंठौ
रअंतरवाहरसरहिभासतीहे॥ इसप्रकारदेषकरअंतरकीवार्ताउनकोंनजनावत॥
भई॥ वहुडअंतरआइकरकहनभई॥ वडाआश्चर्यहे॥ ईश्वरीमायाजाणीनहींजाती॥ इ
हक्याअरुउहक्या॥ इसप्रकारआश्चर्यमानहोइकरसरस्वतीकुमारीआराधनकीया॥ त
वसरस्वतीकुमारीकन्याकारूपधारकरआनप्राप्तभई॥ तबलीलाकहाहेभगवती
मेवारंवारपूछतीहो॥ तुमउहेगवाननहींहोवणा॥ वडयोंकाइहस्वभावहे॥ जो
शिष्यवारंवारपूछेतोभीषेदवाननहोते॥ अवमेंपूछतीहो॥ जुइहजगतक्याहे॥
अरुओहजगतक्याहे॥ दोनोविषेकृतमकोनहे॥ अरुअकृतमकोनहे॥ देव्युवाच॥ हे
लीलेतूंहीकहु॥ कृतमकोनहे॥ अरुअकृतमकोनहे॥ पाछेमेंतुफकोंकहोगी॥
लीलोवाच॥ हेदेविजहांहमतुमवैठेहे॥ अवसोअकृतमहे॥ अरुउहजोमेरेभरता
कासर्गहे॥ सोकृतमहे॥ काहेतेंअन्यस्थानविषेउहसृष्टिहुईहे॥ देव्युवाच॥ हेलीलेजेसाका
रणहोताहे॥ तैसाहीकार्यहोवे॥ तोकारणसत्यहोताहे॥ तोकार्यभीसत्यहोताहे॥ सत्यतें
असत्यनहींहोता॥ अरुअसत्यतेंसत्यनहींहोता॥ कारणतेंअन्यकार्यनहींहोता॥ तातेंजे
सेइहजगतहे॥ तैसाउहजगतहे॥ लीलोवाच॥ हेदेविकारणतेंअन्यभीकार्यसत्यहोता
हे॥ काहेतेंजुमृत्तिकाजलकेउठावणेकोंसमर्थनहींहोती॥ अरुजबस्तनकाकारणदवरा
ताहे॥ तबजलकोंउठावताहे॥ तोकारणतेंअन्यभीकार्यकीसत्ताहुईकछु॥ देव्युवाच॥ हेली
लेकारणतेंअन्यकार्यसत्तानवहोतीहे॥ तोसहकारीभिन्नभिन्नहोतीहे॥ जहांसहकारीन
होहोते॥ तहांकारणतेंअन्यकार्यकीसत्तानहींहोती॥ तेरेभरताकीसृष्टिजोभासीहे॥ सो
कारणविनाभासीहे॥ उसकीजोवउजोउध्यहकाथी॥ सोआकाशरूपथी॥ तहांनकोऊस
मवायकारणथा॥ ननिमित्तकारणथा॥ तिसकोंकृतमकेसेकहीये॥ जोकिसीकाकीया
हूयाहोवे॥ तोकृतमहोवे॥ उहतोआकाशरूपपृथ्वीआदिकतत्वोंतेंरहतहे॥ जोसम
वायकारणनहोवे॥ तोतिसकानिमित्तकारणकेसेहोवे॥ तातेंउहजोतेरेभरताकासर्गहे
सोअकारणहे॥ लीलोवाच॥ हेदेविउससर्गकीस्मृतजोसंस्कारहे॥ सोईकारणकुनहे॥
वे॥ देव्युवाच॥ हेलीलेस्मृततोकोऊवस्तुनहीं॥ स्मृतआकाशरूपहे॥ स्मृतनामसंकल्प
कासंकल्पआकाशरूपहे॥ अरुतोवस्तुकछुनहीं॥ मनोराजरूपहे॥ तोतिसकीसत्ता
कछुनहीं॥ अभासरूपहे॥ लीलोवाच॥ हेईश्वरीजोउहसंकल्पमात्रआकाशरूपे॥ तोइह
भीआकाशरूपहे॥ तहांतुमहमवैठेहे॥ जैसेउहहे॥ तैसेइहहे॥ दोनोतुल्यहूए॥ देव्युवा
च॥ हेलीलेजैसेतूंकहतीहे॥ तैसेहीहे॥ अहंत्वंइदंइहउहसंपूर्णजगतआकाशरूपहे॥ अं
तमात्रभासतीहे॥ उपजयाकछुनहीं॥ सभआभासमात्रहे॥ स्वरूपतेंइनकाकछुसदभा
वनहीं॥ जोपदार्थसत्तनहूए॥ तिनकीस्मृतकेसेसत्तहोवे॥ लीलोवाच॥ हेदेवीअप्र
नेवेनमेराभरताथा॥ सोमृतवेनहूया॥ अरुतिसकोंजगभासणेलागा॥ सोकेसेभास्या
हे॥ इहभीभ्रमरूपहे॥ जैसेइहभ्रमतुफकोंभास्याहे॥ सोसुण॥ एकमहाचिदाकाशहे॥
तिसकाकवनाविदश्रणहे॥ तिसकेकिसीअंशविषेजगतहे॥ सोजगतरूपीवृक्षहे॥ स
मेरुतिसकाथंभहे॥ सप्तलोकतिसटासहे॥ आकाशउसकीसिषाहे॥ अरुसप्तसमुद्र॥

उसविषेरसाहै ॥ अरुपर्वततिसकेनिकटवेटेहैं ॥ तीनोलोकफलहै ॥ तिसविषेसिद्धगंधर्व
वेदेवतेमनुषदेतद्रुपमछरहै ॥ नारायणतिसकेफूलहैं ॥ तिसद्रुक्षकेकिसीछिद्रविषे
एकदेशहै ॥ तिसविषेएकपर्वतहै ॥ तिसऊपरएकनगरवसताहै ॥ तहांएकनदीकाप्रः
वाहचलताहै ॥ कहांएकवसिष्ठनामब्राह्मणरहताथा ॥ सोवडाधर्मात्माथा ॥ सदाअग्नि
होत्रकरताथा ॥ धनअरुविद्याकरसंपन्नथा ॥ जैसाब्रह्मवसिष्टके ॥ विद्याअरुकर्मअरुः
धनप्राक्रमसभतिसकेसमानथा ॥ परज्ञानविषेभेदथा ॥ जोब्रह्मवसिष्टकाज्ञानहै ॥ ते
साब्रह्मवसिष्टकानथा ॥ तिसकीस्त्रीकानामभीअरुंधती ॥ सोपतिव्रताथी ॥ अरुचंद्रमाः
कीन्याईसुंदरथाजिसका ॥ तिसअरुंधतीकेसमानविद्याकर्मअरुधनचेष्टाप्राक्रमजिस
का ॥ परंतेनन्यताजोहैज्ञानसोसमाननथा ॥ औरसभलक्षणएकसमानथे ॥ वहआका
शकीअरुंधतीहै ॥ अरुभूमिकीअरुंधतीथी ॥ एककालसोवसिष्टब्राह्मणपर्वतकेशि
खरपरवैठाथा ॥ तहांसेंदरदूरतेत्रिणोकरशोभायमानस्थानहै ॥ एकराजाउसपर्वतकेः
निकटशिकारखेलनेकेनिमित्तसभपरवारसहितचल्याजाताथा ॥ सोवडतसुंदरअरु
नानाप्रकारकेभूषणोंसहतभूषतकीयाहूया ॥ अरुसीसपरचमरहोताजाताथा
मानोचंद्रमाकीयांकिरणांप्रसररहीयांहै ॥ अरुसिरपरअनेकप्रकारकेछत्रोंकीछा
या मानोआकाशभीरूपेकाकीयाहै ॥ अरुभजाभीवहुतहै ॥ अरुरत्नमणीकेभूषणो
कोपहरेहएमंडलेश्वरसाथहै ॥ अरुहस्तीघोडारथपियादाचारोप्रकारकीसेनाआगे
चलीजातीहै ॥ तिनकीधूडउडकरहोकरस्थितभई ॥ अरुगीतनगारेवाजतेजातेहै ॥
तिसकोदेषकरवसिष्टब्राह्मणमनविषेचितवनकरतभया ॥ जोराजाकोवडासुख
प्रापतहोताहै ॥ जोसभसोभागकरकेराजासंपन्नहोताहै ॥ ऐसाराजकिसीप्रकारः
मुझकोंभीप्रापतहोवै ॥ इहवांछाकरतभया ॥ मैकवदशोदिशाकोंजीतोंगा ॥ अरुमे
रेजससाथदशोदिशापूर्णकवहोवेगीयां ॥ ऐसेछत्रमेरेशिरपरकवफुलेंगे ॥ अरुचा
रोप्रकारकीसेनामेरेआगेकवचलेगी ॥ अरुसुंदरसुंदरांविषेसुंदरस्त्रीयांसाथमेंकवः
विलासकरोंगा ॥ मंदमंदपवनशीतलसुगंधताकेसाथकवस्पर्शहोवेगा ॥ हेलीलेइस
प्रकारब्राह्मणसंकल्पकोधारतभया ॥ अरुजोकछुअपणासतकर्महै ॥ सोभीकरः
ताहै ॥ परकामनाहटदिविषेस्थिरहोरही ॥ तवब्राह्मणकोजराअवस्थाआनप्राप्तः
तभई ॥ शरीरजरजरीभावहूया ॥ जैसेकमलऊपरवरफपडतीहै ॥ अरुकमलाघजा
ताहै ॥ तैसेब्राह्मणकाशरीरकुमलायगया ॥ अरुमृतकासमानिकटआया ॥ तवति
सब्राह्मणकीस्त्रीभरताकोंमृतनिकटदेषकरकष्टवानभयी ॥ तवउसनेरीआराधना
करी जैसेतपकरीथी ॥ तैसेउसकरीयां ॥ जुभरताकीआगंअसतहइलैमजानकरम
फसोवरमांगतभई ॥ हेदेवीमुझकोइहवरदेवो ॥ जवमेराभरतामृतकहोवे ॥ तवइस
काजीवघरतेवाहरनजावै ॥ तवमैंकह्यांऐसेहीहोवेगा ॥ हेलीलेजववहुतकालवीती
तहूया ॥ तवब्राह्मणमृतकभया ॥ तवउसकाजीवमंदरहीविषेरहा ॥ जैसेमंदरविषे
आकाशरहताहै ॥ तैसेमंदरविषेरहा ॥ हेलीलेतवआकाशरूपहोगया ॥ अरुउस
कोपूर्वलीइच्छाविषेजोराजकासंकल्पथाइहइ ॥ तवउइहसंकल्पउसकोंआनफुरया
जैसेवीजसोंअंकुरनिकसआवताहै ॥ तैसेआनफुरया ॥ तिसकरकेअपणाराजकोंः
देषताभया ॥ त्रिलोकीकाराजहै ॥ अरुपरमसोभागताकरकेसंपन्नहै ॥ परमप्राक्र
वानसर्वशुभगुणोंकरकेसंपन्न ॥ दशोंदिशाजसकरकेपूर्णहोइरहीयांहै ॥ सा
तोतसरूपीचंद्रमाकोइहहरणमासीहै ॥ अरुजैसेप्रकाशअंधकारकोंनाशकरता
है ॥ तैसेशत्रोंरूपीअंधकारकानाशकर्तीप्रकाशहूया ॥ अरुब्राह्मणोंकेचरणोंका
सिंहासनहूया ॥ अर्थयहजोब्राह्मणोंकोंवहुतपूजनेलागा ॥ अरुअर्थीयोंकाकल्प
वृक्षहूया ॥ अरुस्त्रीयोंकोकामदेवहूया ॥ इत्यादिकजोसात्वकीराजसीगुणहै ॥ तिनों

करकेसंपन्नहूया ॥ तिसकीस्त्रीतिसकोंमृतकदेषकरवहुतशोकवानभई ॥ जैसेग्री
ष्मआषाढकीमंजरीसूककजातीहै ॥ तैसेशोकवानभई ॥ तवउहभीआनवाइकधा
रकेभरताकोंजाइप्रापतभई ॥ जैसेनदीसमुद्रकोंजाइप्रापतहोतीहै ॥ अरुब्राह्मण
केपुत्रजोथे ॥ सोधनसंयुक्तअपणेगृहविषे ॥ उसब्राह्मणकोंमृतकहूए ॥ अरुब्राह्मण
नहूएहै ॥ सोवसिष्टब्राह्मणतेराभरतापदमहूया ॥ अरुअरुंधतीउसकीस्त्रीतूलीलाह
ईहै ॥ अरुजेतीकछुआकाशपर्वतसमुद्रपृथिवीत्रिलोकीहै ॥ सोवसिष्टब्राह्म
णकेमनरूपघरविषेएककोणविषेस्थितहै ॥ उहांउसकोआठदिनाविलीनभएहै ॥
सूतकभीनहोगया ॥ अरुइहांतुमसातसहस्रवर्षराजकीयाहै ॥ नानाप्रकारकेसुंदर
भोगभोगेहै ॥ हेलीलेइसप्रकारतुमसोजन्मलीयाहै ॥ सोमैसमझकहाहै ॥ सोक्याहै ॥ सा
भ्रममात्रहै ॥ जेताकछुजगतभीतुझकोंभासताहै ॥ सोअभासमात्रहै ॥ संकल्पकर
केफुराफुरताहै ॥ तुमहमसभउसीब्राह्मणकेमंदरविषेस्थितहै ॥ लीला उवाच ॥ हेदे
वेतसारवचनोंकोंऐसासत्यकैसेकहों ॥ जोतंकहतीहै ॥ उसब्राह्मणकाजीवअपणे
गृहरहा ॥ तहांइहमतुमसवेहै ॥ अरुदेशदिशापर्वतसमुद्रलोकपालसभजगतउसी
होएहविषेहै ॥ सोसमावतेकैसेहै ॥ इहवचनतुमारेऐसेभासतेहै ॥ जैसेकहीयेसर
योकेदांतोविषेउन्मतहस्तीवांधेहूयेहै ॥ अरुसिंहोसाथमच्छरयुधकरताहै ॥ सिंहम
च्छरसोभागतेजातेहै ॥ अरुकमलडोडेविषेसुमेरुपर्वतआयाहै ॥ तिसकमलऊपर
भ्रमराआनवैठाहै ॥ तिसकोपानकरलीया ॥ अरुस्वप्नेविषेमच्छगर्जतेहै ॥ अरुजायतकी
मूर्तिउषविलिष्याहोयासोरमच्छकोगर्जतादेषकरनिरतनकरताहै ॥ जैसेइहअसंभव
वार्ताहै ॥ तैसेतुमारावचनमुझकोंअसंभवभासताहै ॥ देवा उवाच ॥ हेलीलेइहमै
तुझकोंकूठनहींकहा ॥ हमाराकहणाअसत्यकदाचितनहीं ॥ काहेतेजुआदिपरमा
त्माकीनीतहै ॥ जोमहापुरुषअसत्यनहींकहते ॥ इसीकारणतेहमअसत्यनहींकहते
हमलोधर्मकेप्रतिपादनकरणेहारेहै ॥ जहांधर्मकीहानहोतीहै ॥ तहांइहमप्रतिपाद
नकरतेहै ॥ जोइहमधर्मकीप्रतिपादननकरे ॥ तवइहमकोंऔरकैसेमाने ॥ हेलीलेजैसेसो
एहूएस्वप्नेविषेत्रिलोकीभासआवतीहै ॥ सोअंतःपुरविषेहीहोतीहै ॥ अरुस्वप्नेतेजाय
तहोतीहै ॥ तैसेमरणाभीजाणु ॥ जवजहांमृतकहोताहै ॥ तहांजीवजोपर्यष्टकहै ॥ सोआ
काशरूपहोजाताहै ॥ वहुडवासनाकेअनुसारतिसकोंजगतभासआवताहै ॥ जैसेस्वप्नवि
षेभासआवताहै ॥ सोक्यारूपहै ॥ आकाशरूपहै ॥ तैसेइसकोंभीजाणु ॥ हेलीलेइहसभ
जगततेरेउसीअंतःपुरहीविषेहै ॥ काहेतेजगतचित्तआकाशविषेस्थितहै ॥ जैसेआ
दर्शविषेप्रतिविवहोताहै ॥ तैसेचित्तविषेजगतहै ॥ अरुचित्तआकाशरूपहै ॥ तोचित्तअंत
पुरविषेहूया ॥ तोजगतभीहूयाक्यों ॥ हेलीलेइहजगतजोतुझकोंभासताहै ॥ सोआकाश
रूपहै ॥ जैसेस्वप्ननगरभासताहै ॥ संकल्पनगरभासताहै ॥ जैसेकथाकेअर्थभासतेहै ॥
तैसेइहजगतभीहै ॥ जैसेमृगतृस्नाकाजलभासताहै ॥ तैसेइहजगतजाणु ॥ हेलीलेवा
स्तवतेपदार्थउपजाकोऊनहीं ॥ भ्रमकरकेपडेभासतेहै ॥ जैसेस्वप्नेविषेस्वप्नांतरभासः
ताहै ॥ वहुडऔरस्वप्नादेषीताहै ॥ तैसेतुमकोंइहसृष्टभ्रमभास्याहै ॥ हेलीलेइहजगतआ
त्मरूपहै ॥ जहांचिदअणुहै ॥ तहांजगतभीहै ॥ परक्यारूपहै ॥ आभासरूपहै ॥ जैसेइहआः
काशरूपहै ॥ तैसेइहजगतभीआकाशरूपहै ॥ जिसप्रकारइहचेत्यताहै ॥ तिसीप्रकारहो
इकरभासताहै ॥ तातेसंकल्पमात्रहै ॥ जैसेस्वप्नपुरभासताहै ॥ जैसेसंकल्पनगरहोता
है ॥ तैसेइहजगतहै ॥ जैसेमरुस्थलकीनदीकीतरंगभासतेहै ॥ तैसेइहजगतभासताहै ॥ तां
तेइसकीकल्पनाकोत्यागो ॥ लीला उवाच ॥ हेदेवेतिसवसिष्टब्राह्मणकोंमूएआठदिनः
वीतेहै ॥ अरुइहांमोंइहांसातसहस्रवर्षवीतेहै ॥ इहवार्तासत्यकैसेजाणीये ॥ देवी उवाच
हेलीलेजैसेथोडेदेशविषेवहुतदेशआवताहै ॥ तैसेथोडेकालविषेवहुतकालभीआ
वताहै ॥ त्वतासत्तआदिकजेताकछुजगतहै ॥ सोआभासमात्रहै ॥ तिसकोंकसकरके

स्मरण॥ जब इह जीवन्मुक्त होता है॥ तब मूर्छा होजाता है॥ अरु इस मूर्छा को चैतन्यता अ
रु आवती है॥ तिस विषे भास आवता है॥ जो इह आधार है॥ इह आधेय है॥ इह मेरे हाथ पा
द शरीर है॥ इह मेरा पिता है॥ इसका मैं पुत्र हौं॥ अब एते वर्षों का मैं हूआ हौं॥ इह मेरे
बांधव हैं॥ तिनके साथ स्नेह करता है॥ इह मेरा गृह है॥ मेरा कुल चिरकाल का चल्या
आवता है॥ मरणे के अनंतर एते क्रम को देखता है॥ हे लीले जिस प्रकार उह देखता है॥ तैसे इ
ह भी एक क्षण विषे और का और भासणे लागता है॥ इह जगत चैतन का किंचन है॥ जैसे
चैतन संवित विषे चैत्यता होती है॥ तैसा जगत भासता है॥ जैसे स्वप्ने विषे इहां प्रपंच दर्शन
ती भासते॥ तैसे आत्मसत्ता विषे इह जगत किंचन होता है॥ भ्रम कर के भासता है॥ वास्त
व नानात्व कछु हुई नहीं॥ जैसे स्वप्ने विषे कारण बिना नाना प्रकार का जगत भासता है॥ अ
सो क्या रूप है॥ आकाश ही रूप है॥ मन के भ्रमण कर के भासते हैं॥ तैसे इह जगत मन के भ्र
म कर भासता है॥ स्वप्न जगत॥ अरु परलोक जगत॥ अरु जाग्रत जगत विषे भेद कछु न
हीं॥ जैसे उह भ्रममात्र है॥ तैसे इह भ्रममात्र है॥ वास्तव ते कछु उपज्या नहीं॥ जैसे स
मुद्र विषे तरंग विषे कछु वास्तव नहीं॥ तैसे आत्मा विषे जगत कछु वास्तव नहीं॥ अस
त्य ही सत्य की न्याई होइ भासता है॥ जिस कारण ते उपज्या नहीं॥ तिस कारण ते अवि
नाशी है॥ हे लीले जैसे अचैत्य चिन्मात्र स्वरूप चैतन्य आकाश भासता है॥ तैसे चैत्यता विषे
भी चैतन्य आकाश है॥ काहे ते जु कछु हूआ नहीं॥ जैसे समुद्र ते तरंग होता है॥ सो तरंग क
छु जल ते इतर हूआ नहीं जल ही है॥ तैसे आत्मा विषे जगत कछु इतर नहीं हूआ॥ अरु
जल विषे तरंग की न्याई भी आत्मा विषे जगत नहीं॥ जैसे ससे के सींग असत्य है॥ तैसे जगत
असत्य है॥ कछु उपज्या नहीं॥ हे लीले जब इह पुरुष मृतक होता है॥ तब जैसा इसको दे
श भासता है॥ जैसा काल जैसी क्रिया उत्पत्ति नाश भाई कुटुंब शरीर वर्ष आदिक नाना रूप
भासते हैं॥ सो क्या रूप है॥ आभास ही रूप है॥ जिस प्रकार शिशु विषे भ्रम करणे भास आव
ते हैं॥ तैसे कारण बिना इह जगत भास्या है॥ तो इह अपर स्थान भी कोऊ नहीं हूआ॥ इह जो देश का
ल क्रिया द्रव्य देह इंद्रिया प्राण मन बुद्धि सब भ्रम कर के भासते हैं॥ आत्मा उपाधि ते रहित आ
काश रूप है॥ तिस के प्रमाद कर के जगत भ्रम उदे हूआ है॥ हे लीले भ्रम विषे क्या नहीं होता
जैसे एक रात्रि विषे हरिचंद को द्वादश वर्ष भ्रम कर के भासे थे॥ तैसे इहां भी थोड़े काल विषे ब
हुत काल भास्या है॥ दोऊ स्थानो विषे इसको और का और भासता है॥ स्वप्ने विषे भी और का औ
र भासता है॥ अरु उन्मत्तता कर के भी और का और भासता है॥ हे भ्रमागता॥ अरु आपको आगता
न विषे मृतक भाव के शोक को देखता है॥ किसी को उत्साह होता है॥ अरु स्व
या देखता है॥ अरु होता है मिल्या हूआ॥ आपको विछुड्या जानता है॥ स्वप्ने विषे मिल्या हू
आ और भ्रम कर के और का और देखता है॥ तां ते देख जो सब भ्रमरूप है॥ और काल होता है
तैसे इह जगत भी भ्रम कर भासता है॥ जैसे भ्रम कर इह भासते है
है॥ जैसे समर चावि विषे नीपजता है॥ परब्रह्म ते इतर कछु नहीं॥ तां ते नवें थे॥ तमो हा
लीयां है॥ तैसे आत्मा विषे जगत है॥ जैसे थंभ विषे पुतलीयां हो
भी है॥ सिल्पी के मन विषे पुतलीयां कछु हूई नहीं॥ ज्यों का त्यों थं
भ रूपी पुतलीयां कल्पीयां है॥ तैसे ब्रह्म विषे जगत है नहीं॥ मन रूपी सिल्पी जग
त है॥ स्वभाव स्थित है॥ इति श्री महारामायणे सोतापाये आत्मसत्ता अपणे आप विषे स्थित है॥ अजहै अ
के वासको उत्पत्ति प्रकरणे मंडपोपाख्याने परमार्थ प्रतिपादनं नाम पंचदशमः सर्गः

१५

देव्युवाच॥ हे लीले जब इह जीवन्मृतक मूर्छा होता है॥ तब शीघ्र ही बहुत कल्प जन्म भा
स आवता है॥ देश काल क्रिया द्रव्य अरु अपणा परिवार भास आवता है॥ नाना प्रकार का ज
गत भास आवता है॥ पर वास्तव ते कछु नहीं॥ स्मरण भी असत है॥ एक स्मरण अनुभव ते हो
ता है॥ एक स्मरण अनुभव बिना भी होता है॥ पर दोऊ स्मरण मिथ्या है॥ जैसे स्वप्ने विषे अप
णा मरणा देखता है॥ सो अनुभव असत्य है॥ किसी अपणे मरणे की स्मरण कर के नहीं भा
स्या॥ अरु तिस मरणे की स्मरण भी असत्य है॥ स्वप्ने विषे कोऊ पदार्थ देख्या॥ तिसको जाग्रत
विषे स्मरण करणा भी असत्य है॥ वस्तु ते कछु हूआ नहीं॥ जो है सो चिदाकाश है॥ ब्रह्म है
और न कछु विद्रथ की सृष्टि सत्त है॥ न इह सृष्टि सत्त है॥ सभ संकल्पमात्र है॥ लीलोवा
च॥ हे देवी जो इह सृष्टि भ्रममात्र है॥ तो इह जो विद्रथ की सृष्टि है॥ सो सृष्टि के संस
कार कर के हूई है॥ अरु इह सृष्टि उस ब्राह्मण अरु ब्राह्मणी की स्मरण संस्कार ते हूई है॥
तो ब्राह्मण अरु ब्राह्मणी की स्मरण विषे हूई है॥ देव्युवाच॥ हे लीले इह जो वसिष्ठ ब्रा
ह्मण की सृष्टि है॥ सो ब्रह्मा की संकल्प विषे हूई है॥ अरु ब्रह्मा ब्रह्म विषे उपज्या है॥ प
र वस्तु ते कछु ब्रह्मा ही हूआ नहीं तो॥ तो तिस की सृष्टि क्या कहों॥ इह जेती कछु सृष्टि
है सो उसी ब्राह्मण के मंदिर विषे है॥ वस्तु ते कछु हूई नहीं॥ सभ संकल्परूप है॥ मन के
फुरणे विषे पड़ी भासती है॥ जैसे जैसे संकल्प फुरता है॥ तैसे तैसे होइ कर भासता है॥ उ
ह सृष्टि जो तेरे भरता को भास आई है॥ सो दृढ संकल्प के भाव ते भास आई है॥ थोड़े काल
विषे बहुत भ्रम होइ कर भासता है॥ लीलोवाच॥ हे देवी जी जहां ब्राह्मण को स्मरण
का हूए आठ दिन व्यतीत भए हैं॥ तिस सृष्टि को किस प्रकार हम देखें॥ देव्युवाच॥ हे ली
ले जो तू अभ्यास योग कर के तब देखे॥ अभ्यास बिना देखणे को समर्थ न होवेगी॥ काहे ते
जु उह सृष्टि चिदाकाश विषे फुरती है॥ जब तू चिदाकाश विषे अभ्यास कर के प्राप्त हो
वेगी॥ तब तुझ को उस सृष्टि का भास आवेगी॥ याते उह जो सृष्टि है॥ सो और के संकल्प विषे है
जो उसके संकल्प विषे प्रवेश करे॥ तब उसको सृष्टि भासे॥ अन्यथा नहीं भासती॥ जै
से एक के स्वप्ने को दूसरा नहीं जाण सकता॥ तैसे और की सृष्टि नाहीं भासती॥ जब तू
आतिवाहक रूप होवे॥ तब उस सृष्टि को देखे॥ जब लग आधिभूतक जो है॥ स्थूल पंचतत्वो
का शरीर तिसका अभ्यास है॥ तब लग उसको न देख सकेगी॥ काहे ते जु निराकार को नि
राकार ग्रहण करता है॥ निराकार को आकार ग्रहण नहीं कर सकता॥ तां ते इह जो आधिभू
तक देह भ्रम है॥ इसको त्याग कर चिदाकाश सत्ता विषे स्थित होइ॥ जैसे पंखी आलय
को त्याग कर आकाश विषे उड़ता है॥ तब जहां इच्छा होवे तहां चला जाता है॥ तैसे चि
त्त को एकाग्र कर के स्थूल शरीर को त्याग॥ अरु अभ्यास योग कर आत्मसत्ता विषे स्थित
हो॥ तब आधिभूतक को त्याग कर चिदाकाश विषे अभ्यास के बल ते स्थित होवेगी॥ त
ब आवरण ते रहित होवेगी॥ बहुर जहां इच्छा करेगी॥ तब तहां चली जावेगी॥ जो कछु
देख्या चाहेगी॥ सो देखेगी॥ हे लीले हम सदा निर्मल चिदाकाश विषे स्थित हैं॥ हमारा व
पु चिदाकाश है॥ इस कारण ते हमको आवरण को रोक नहीं सकता॥ हम सारखे जो
उदार आत्मा है॥ तिनको सदा स्वरूप विषे स्थित है॥ अरु सदा निरावरण है॥ कोऊ का
रज हमको आवरण नाहीं कर सकता हम स्वच्छंद है॥ जहां गया चाहें॥ तहां जाते हैं
सदा आतिवाहक रूप है॥ अरु तूं अबलग आधिभूतक रूप है॥ इस कारण ते उह सृष्टि
तुझ को नाहीं भासती॥ अरु तूं उहां जाइ भी नाहीं सकती॥ हे लीले अपणा ही संकल्प
जो सम तो राज होता है॥ तिस विषे चित्त की वृत्ति लागती है॥ तिस काल विषे इह अप
णा शरीर नहीं भासता॥ तो और का कैसे भासे॥ जब तुझ को आतिवाहक का दृढ अभ्यास
हो॥ अरु आधिभूतक स्थूल शरीर को और ते वैराग होवे॥ तब आधिभूतकता मिट जावे
गी॥ काहे ते जु आगे ही सभ सृष्टि आतिवाहक रूप है॥ संकल्प की दृढता कर के आधि
भूतक पड़ा भासता है॥ जैसे जल दृढ शीतलता कर के गड़ा रूप होजाता है॥ तैसे आति
वाहक ते आधिभूतक होजाता है॥ प्रमाद रूप संकल्प ते वास्तव ते कछु हूआ नहीं॥
जब वही संकल्प उलट कर स्वरूप आतिवाहक ही और आवता है॥ तब आधिभूतक
ता मिट जाती है॥ आतिवाहकता आन उदे होती है॥ जब इस प्रकार तुझ को निरावर
ण रूप उदे होवेगा॥ तब देखणे अरु जावणे विषे यत्न कछु न होवेगा॥ साकार सा·

य निराकार कों ग्रहण नहीं कर सकीता॥ निराकार की एकता निराकार साथ होती है॥
अन्यथा नहीं होती॥ तब तूं आतिवाहक रूप होवैगी॥ तब उसकी संकल्प सृष्टि विषे तेरा
प्रवेश होवैगा॥ हे लीले इह जगत संकल्प भ्रम मात्र है॥ वास्तव कछु हूया नहीं॥ ए
क अद्वैत आत्म सत्ता अपणे आप विषे स्थित है॥ द्वैत कछु है नहीं॥ लीलोवाच॥ हे दे
वीजी जो एक अद्वैत आत्म सत्ता है॥ तो कल्पना इह सरीर वस्तु क्या हूई॥ इह कहो॥ देव्युवा
च॥ हे लीले जैसे स्वर्ण विषे भूषण कछु वस्तु नाहीं॥ जैसे सिपी विषे रूपा इह सरी व
स्तु नाहीं॥ जेवडी विषे सर्प नहीं॥ तैसे कल्पना भी कछु वस्तु नहीं॥ एक अद्वैत आत्म
सत्ता ज्यों की त्यों स्थित है॥ तिस विषे नानात्व भासती है॥ सो भ्रम मात्र है॥ वास्तव
अपणा आप एक अनुभव सत्ता है॥ लीलोवाच॥ हे देवीजी एक अनुभव सत्ता है॥
अरु मेरा अपणा आप है॥ तो मैं एता काल क्यों भ्रमती रही हो॥ देव्युवाच॥ हे लीले अ
विचार भ्रम करके भ्रमती रही है॥ विचार कीये तें भ्रम शांत हो जाता है॥ सो भ्रम भी अरु
विचार भी तेरा स्वरूप है॥ तुझ ही तें उपजा है॥ पर जब तुझ कों अपणा विचार होवै॥
तब भ्रम निवर्त हो जावैगा॥ जैसे जेवडी के जाणे तें सर्प भ्रम नष्ट हो जाता है॥ सिपी के
जाणे तें रूपा भ्रम नष्ट हो जाता है॥ तैसे आत्मा के जाणे तें अधिभूतक भ्रम नष्ट हो जा
वेगा॥ तब दृश्य कों अत्यंत अभाव जाणकर दृढ वैराग करीये॥ अरु आत्म स्वरूप का दृ
ढ अभ्यास होवै॥ तब आत्मा का साक्षात्कार होवै॥ भ्रम शांत हो जावै॥ इस करके कल्याण
है॥ हे लीले जब दृश्य जगत विषे वैराग होता है॥ तब वासना क्षय हो जाती है॥ वासना
के क्षय हूए शांत प्राप्त होती है॥ हे लीले तूं आत्म सत्ता का अभ्यास करु॥ तब जगत
भ्रम शांत हो जावेगा॥ भ्रम भी कछु वस्तु नहीं देहादिक भ्रम भी कछु हूया नहीं॥ जै
से जेवडी के जाणे तें सर्प का अत्यंत अभाव जाणीता है तैसे आत्मा के जाणे तें देहादि
कों का अत्यंत अभाव जाणीता है॥ इति श्री महारामायणे मोक्षोपाये उत्पत्ति प्रकरणे वि
ज्ञानवर्णनं नाम षोडश सर्गः॥ १६॥
देव्युवाच
हे लीले जैसे कछु शरीर तुझ कों भास॥ सो स्वप्न शरीर की न्याई है॥ जैसे स्वप्न विषे शरीर भा
सता है॥ तब स्वरूप का स्मरण होता है॥ तब स्वप्न का शरीर वास्तव नहीं भासता है॥ तै
से इह शरीर भी भासते है॥ जब स्वरूप का ज्ञान होवेगा॥ तब इह भी वास्तव न भासेगा॥
जैसे स्वरूप के स्मरण हूए॥ स्वप्न शांत हो जाता है॥ तैसे वासना के निवर्त हूए जाग्रत शरी
र भी शांत होता है॥ जैसे स्वप्न का देह अभाव जानने तें असत होता है॥ तैसे जाग्रत शरीर की
भावना त्यागे तें असत भासता है॥ इसके नष्ट हूए आतिवाहक देह उदे होवेगा॥ जैसे निद्रा
करके स्वप्न विषे रागद्वेष कों पावता है॥ तब पदार्थों की वासना बोधकर निरबीज होती
है॥ तब उनके विषे ऐते मुक्त होता है॥ जैसे जिस पुरुष की वासना जाग्रत पदार्थों विषे न
ष्ट भई है॥ सो पुरुष जीवन्मुक्ति पद कों प्राप्त होता है॥ तब उस विषे बहुड वासना भी दृ
ष्ट आवे॥ तब उह वासना भी निर्वासना है॥ जो सर्व कल्पना तें रहित है॥ तिसका नाम सत्तास
मान है॥ हे लीले जिस पुरुष वासना गरी की है॥ अरु अज्ञान निद्रा कर आवरया हूया है॥ तब उ
सकों स्वप्न रूप जाणु॥ उसकी वासना स्वप्न है॥ अरु जिसकी वासना प्रगट है॥ जाग्र
त रूप करके विचारता है॥ तिसकों अधक मोह कर आवरया जाणु॥ अरु जो पुरुष बेधाक
रना इष्ट आवता है॥ अरु अंतर वासना उसकी नष्ट भई है॥ तिसकों तुरीय जाणु॥ हे लीले
जो पुरुष अनन्त बेधाक ना है॥ अरु अंतर वासना तें रहत है॥ जो जीवन मुक्त है॥ तिस पुरु
ष का चित्त सत्त पद कों प्राप्त भया है॥ तिसकों जगत की वासना नष्ट हो जाती है॥ जो वा
सना पुरनी भी भासती है॥ तो भी सत जाणकर नहीं फुरती॥ जब शरीर की वासना नष्ट
होती है॥ तब अधिभूतकता नष्ट हो जाती है॥ आतिवाहकता आन प्राप्त होती है॥ जै
से बरफ की पुतली सूर्य के तेज लगे तें जल रूप हो जाती है॥ तैसे अधिभूतकता क्षीण हो जा
ती है॥ आतिवाहकता प्राप्त होती है॥ जब आतिवाहकता प्राप्त भई॥ तब इसका शरी
र अमांस मय चित्त रूप होता है॥ अरु सभ का ज्ञान इसकों होइ आवता है॥ अपणे जन्मांतरों

का ज्ञान भी होइ आवता है॥ बीतीयां सृष्टी का ज्ञान भी होइ आवता है॥ अरु जहां जावणे
की इच्छा करे॥ तहां जाइ प्राप्त होता है॥ किसी सिद्ध कों मिलणे की इच्छा करे॥ अथवा क
छु देखणे की इच्छा करे॥ सभ किछु सिद्ध होता है॥ पर आतिवाहक बिना इह बात नहीं
होती॥ जब इह संदेह सों अहं भाव तेरा उठेगा॥ तब सभ जगत तुझ कों अंतर भासेगा॥ हे ली
ले जब अधिभूतक शरीर की वासना नष्ट होती है॥ तब आतिवाहक देह होती है॥ त
ब आतिवाहक विषे स्थित होती है॥ और के संकल्प की सृष्टि भी भासती है॥ तां तें वास
ना घटावणे का यत्न करु॥ जब वासना नष्ट हो जावैगी॥ तब तूं जीवन्मुक्त पद कों
प्राप्त हो जावैगी॥ हे लीले जब लग दृढ बोध तुझ कों नहीं प्राप्त भया॥ तब लग
देह कों इहां स्थापकर ऊहां सृष्टि कर चल कर देखु॥ अधिभूतक शरीर साथ आतिवा
हक नहीं देखीता॥ काहे तें अमांस मय शरीर जो है चित्त॥ तिस साथ मांसमय स्थूल देह
का व्यवहार मिथन नहीं होता॥ जैसे स्थूल देह साथ सूक्ष्म कार्य नहीं होता॥ तां तें आति
वाहक शरीर का अभ्यास करु॥ जब अभ्यास करेगी॥ तब उह सृष्टि देखणे कों समर्थ होवै
गी॥ हे लीले जैसी अनुभव जैसे स्थित है॥ सो मैं तुझ कों कही है॥ इह वारता बालक भी जा
णते है॥ तब रज आप की न्याई नहीं॥ अरु जब अपणा अभ्यास करेगी॥ तब बोध की प्रा
प्त होवैगी॥ हे लीले सभ जगत आतिवाहक रूप है॥ अर्थ यह जो संकल्प रूप है॥ आ
बोध रूप संकल्प के अभ्यास करके अधिभूतक उत्पत्ति हूया है॥ तिस करके संसार के वा
सना दृढ भई है॥ जन्म मरण आदिक जो विकार है॥ सो चित्त विषे पड़े भासते है॥ जीवत
मरता है॥ न जन्मता है॥ जैसे स्वप्न विषे जन्म मरण भासता है॥ जैसे संकल्प विषे भ्रम
कर भासते है॥ तैसे जन्म मरण भ्रम करके भासता है॥ जब आत्म पद का अभ्यास करे त
ब इह विकार मिट जावैगे॥ अरु आत्म पद की प्राप्त होवैगी॥ लीलोवाच॥ हे देवी तुम नि
र्मल उपदेश मुझ कों कीया॥ जिसके जाणे तें दृश्य विसूचका निवर्त होती है॥ सो अभ्या
स क्या है॥ अरु कैसे होता है॥ अरु अभ्यास पुष्ट कैसे होता है॥ अरु पुष्ट हूए ते फल क्या पाईता है
देव्युवाच॥ हे लीले जो कछु करता है जिस काल विषे सो अभ्यास विना सिद्ध नहीं
होता॥ चित्त विषे आत्म पद का चिंतवना होवै॥ कथन भी आत्मा का होवै॥ परस्पर बोध
भी आत्म पद का होवै॥ प्राणों की चेष्टा भी आत्मा विषे होवै॥ मन भी आत्म पद का होवै॥ इस
का नाम ब्रह्म अभ्यासक कहते है बुद्धवान॥ जिनों पुरुषों के पाप अंत कों प्राप्त भए है॥ अरु
पुण्य बढे है॥ ते रागद्वेष तें मुक्त हूए है॥ तिन कों तूं ब्रह्म सेवक जाणु॥ हे लीले जिन पुरुषों
कों रात्रि दिन अध्यात्म शास्त्र की चिंतवना विषे विलीन होता है॥ अरु वासना नता कों प्रा
प्त होती या है॥ तिनकों ब्रह्म अभ्यासी जाणु॥ उह ब्रह्म अभ्यास विषे स्थित है॥ हे लीले जिन
की भोग वासना क्षीण भए है॥ अरु संसार के अभाव की भावना करते है॥ ऐसे जो विरक्त चि
त्त महात्मा पुरुष भव्य मूर्ति है॥ सो शीघ्र ही आत्म पद कों प्राप्त होते है॥ जिन की शुभ वैरा
ग इह धीरता साधारणी है॥ अरु आत्मानंद की ओर रहत धावती है॥ ऐसे जो उदार आत्मा है
ते ब्रह्म अभ्यासी कहीते है॥ हे लीले जिन पुरुषों जगत कों अत्यंत अभाव जाणया है॥ अरु प
रमात्म तत्व कों सत्य जाणया है॥ उस युक्ति विषे अभ्यास करते है॥ ते ब्रह्म अभ्यासी कहीते है
जिन पुरुषों कों दृश्य असंभव का बोध हूया है॥ रागद्वेष तें रहित हूए है॥ इह जगत है॥ इह मै
हो॥ इस युक्ति का भी अभाव करके॥ पर आत्म पद विषे प्रीति करते है॥ ते ब्रह्म अभ्यासी कही
ते है॥ हे लीले जब लग दृश्य के अभाव जाने विना रागद्वेष निवर्त नहीं होते॥ तब लग राग
द्वेष उह लोक विषे दुखों कों प्राप्त करती है॥ अरु जिस कों दृश्य की असंभव दृढ प्राप्त
भई है॥ तिसकों ज्ञेय रूप परमात्म तत्व है॥ तिसका ज्ञान प्राप्त होता है॥ जब दृढ अभ्यास
तिस तिस पद विषे होती है॥ तब परमानंद निर्वाण पद कों प्राप्त होता है॥ तां तें जिस प्रकार

मेंअभ्यासतुकोंकहाहै॥ तैसेअभ्यासकीयेतेंतूंपरमपदकोंप्राप्तहोवेगी॥ वसि
ष्ठउवाच॥ हेरामजीअज्ञानरूपीनिद्राविषेरहेजीवसेनकररहाहै॥ तिसजगतकोंना
नाप्रकारदेषताहै॥ तैसेअविद्यारूपीनिद्रातेंलीलाकोंविवेकरूपीवचनोंकेजलकी
वर्षाकरकेदेवीजगाया॥ तवअज्ञानरूपीनिद्रातिसकीनष्टहोगई॥ जैसेसर्तकालवि
षेमेघकुहीडनष्टहोजाताहै॥ तैसेलीलाकाअज्ञाननष्टभया॥ वाल्मीकिरुवाच
इसप्रकारजवमुनीश्वरकहा॥ अरुसायंकालकासमाहूया॥ तवसर्वसभायथस्पर
नमस्कारकरकेस्नानकोंगए॥ सूर्यकीयांकिरणांजवउदेभईयां॥ तवबहुडआनस्थि
तभए॥ इतिश्रीउत्पत्तिप्रकरणेविज्ञानअभ्यासवर्णनेनामसप्तदशसर्गः॥१७॥

वसिष्ठउवाच॥

हेरामजीइसप्रकारअर्धरात्रकेसमेदेवीअरुलीलाकासंवादहूवा॥ सभलोकस
हेलीयांवासुसोएपड़ेथे॥ लीलाकाभरताभीलोंविषेदाप्याहूयाथा॥ तिसकेपास
दिव्यवस्त्रपहरेहूए॥ चंद्रमाकीन्याईज्ञानजिनकी॥ ऐसीयांसुंदरदेवीयांसर्वकल्प
नाकोंत्यागकरअंगोंकोसंकोचकरकेसमाधिविषेस्थितभईयां॥ मानोरत्नोंकोछं
भेसोंपुतलीयांउत्कीर्णकीयांस्थितहै॥ अंतःकरभीतिनकेप्रकाशकरप्रकाशवा॰
नभयाहै॥ वहुडकैसीयांहै॥ मानोकागतऊपरदोमूर्तीलिषछोडीयांहै॥ इसप्रकार॰
समस्तदृश्यकलनाकोंत्यागकरनिर्विकल्पसमाधिविषेस्थितभईयां॥ जैसेकल्पवृ
क्षकीलतादूसरीविनुकेआएतेंआलेरसकोंत्यागकरदूसरीविनुकेरसकोंअंगीका
रतीहै तैसेदृश्यभ्रमकोंत्यागकरआत्मतत्वविषेस्थितभईयां॥ तवअहंतानेआदिले
करजोदृश्यभ्रमहै॥ सोतिकाशांतहोगया॥ दृश्यरूपीपिशाचकाकोंशांतहूए॥ निर्म
लभावकोंप्राप्तभईयां॥ जैसेसर्तकालकाआकाशनिर्मलहोताहै॥ तैसेनिर्मलभा॰
वकोंप्राप्तभईयां॥ हेरामजीयहजगतससेकेश्रृंगांन्याईअसत्यहै॥ जोआदिनहोवे॥
अंतभीनरहै॥ जोवर्तमानदृष्टआवे॥ तोभीअसत्यजाणीये॥ जैसेमृगतृस्नाकाजल
असत्यहै॥ तैसेइहजगतअसतहै॥ ऐसेजवस्वभावसत्तादृढदेविषेचिदाकाशविषे॰
स्थितभईयां॥ तवअन्यसृष्टिदेषणेकासंकल्पधारा॥ सोआनफुरया॥ तिसफुरणे
करआकाशरूपदेहसाथचिदाकाशविषेउडीयां॥ सूर्यचंद्रमांकेमंडलोंकोंलंघगई
यां॥ दूरतेंदूरगईयां॥ अनंतयोजनपर्यंतस्थानलंघगईयां॥ तववहुडभूलोकोंकोंसरा
देषी॥ तिसविषेप्रवेशकीया॥ इतिउत्पत्तिप्रकरणेलीलोपाख्यानेविज्ञानदेहकाशग
मनेनामअष्टादशसर्गः॥१८॥

ॐ

वसिष्ठउवाच॥

हेरामचंद्रइसप्रकारपरस्परहाथपकडकरदूरतेंदूरचलीयांजावे॥ मानोंएकहीआ
सनपरदोनोंचलीयांजातीयांहै॥ मेघोंकेस्थानलंघे॥ अग्निकेपवनकेवडेवेगनदी॰
कीन्याईचलतेथे॥ तहांतेंलंघतीयांगईयां॥ तहांनिर्मलहीआकाशभासे॥ जैसेज्ञान
कोंटहानिर्मलहोताहै॥ तैसानिर्मलआकाशभासे॥ तहांतेंआगेगईयां॥ कहूंचंद्रमा
सूर्यकाप्रकाशहीनही॥ कहूंचंद्रमासूर्यकाप्रकाशहै॥ देवतेविमानोंपरआरूढहूएफि
रतेहै॥ सिद्धउडउडतेफिरतेहै॥ विद्याधरकिन्नरगंधर्वगाइनकरतेहै॥ कहूंसृष्टिउत्पत्ति
होतीहै॥ कहूंप्रलयपडीहोतीहै॥ सिधाधारीतारेउपद्रवकरतेउदेहूएहै॥ कहूंआ
गीअपणेव्यवहारविषेलगेहूएहै॥ कहूंअनेकमहाउग्रध्यानस्थितहै॥ कहूंहस्ती
विचरतेहै॥ कहूंगरुडपक्षीविचरतेहै॥ कहूंदेतडाकिनीविचरतेहै॥ योगिनीलीला
करतेहै॥ कहूंअथअरुगुंगुरहतेहै॥ कहूंगंधर्वसिद्धयोडयोंकेंवोलेगणविचरतेहै॥ क
हवरुणकुवेरइंद्रयमआदिकलोकपालवेठेहै॥ अरुवडेपर्वतसुमेरुमंदराचलआदि
कदेष॥ कहूंअनेकयोजनोंपर्यंतनदहीचलेजातेहै॥ कहूंअनेकयोजनोंपर्यंतअविना॰

शीप्रकाशहै॥ कहूंअनेकयोजनोंपर्यंतअविनाशीअंधकारहै॥ कहूंजलकरकेशून्य
स्थानहै॥ कहूंसुंदरपर्वतोंपरगंगाकेप्रवाहचलेजातेहै॥ कहूंसुंदरवगीचेवावली
योतालहै॥ तिनोंविषेकमलललगेहूएहै॥ कहूंभविष्यतहूगीटदृष्टआवे॥ कहूंकल्या
लहोंकेवनहै॥ विलासमणीअनंतहै॥ कहूंशून्यस्थानहै॥ भूतप्राणीकोऊनही॥ कहूंदे
वन्यांअरुदेवतोंकेगृहपडेहोतेहै॥ नलतबकपडेफिरतेहै॥ कहूंप्रलयपरीहोतीहै
देवतेविवानोंसहितपडेगिरतेहै॥ कहूंशामकारकेतनकेवाघरूपमोरोंकेसेवुहवि॰
हवतेहै॥ कहूंकाकटमोरआदिकपंछीविद्याधरोंकेवाहनपडेविचरतेहै॥ कहूंयम
केवाहनमहिषेसंबुहविचरतेहै॥ कहूंपक्षोंयुक्तपर्वतपडेउडतेहै॥ कहूंभैरवगण
घरेलिगनकरतेहै॥ कहूंविद्युतचमकतेहै॥ कहूंकल्पलतहै॥ मंदमंदशीतलपव
नसुगंधकोंलीयेचलताहै॥ कहूंपर्वतमणिअरुमणीकरशोभतेहै॥ हेरामचंद्रइत्यादि
कजगतोंकेजालतिनोंदेवीयोंनेदेषे॥ जीवरूपीमच्छरतिलोकीरूपीगूलरोंकेअनं
तहूंदेष॥ तिसतेंअनंतरभूमंडलकोंदेषकरमहीतलविषेप्रवेशकीया॥ इतिउत्प
त्तिप्रकरणेलीलोपाख्यानेगगनगमनेनामअष्टादशसर्गः॥१८॥ ॐश्रीवसिष्ठउवाच
हेरामचंद्रतवदेवीयांनभतलग्रामविषेआवतभईयां॥ ब्रह्मांडरूपघरविषेप्रवेशकीया
केसाहै ब्रह्मांडत्रिलोकीरूपीकमलहै॥ तिसकीयांअष्टपंषडीयांहै॥ तिसविषेपर्वत
रूपीडंडीहै॥ चैतन्यतासुगंधहै॥ नदीयांसमुद्रतिसकेअंबकणहै॥ जवरात्ररूपीभव॰
रेआनविराजतेहै॥ तवउहकमलसकलबंदहोजाताहै॥ पातालरूपीचिकडविषेलागाहै
पत्ररूपीमानुषदेवतादैतरात्सतिसकेकंटकहै॥ अरुशेषजीउसकोंशोभताहै
जवउहढलताहै॥ तवभूचालआवताहै॥ दिनकरकेप्रकाशताहै॥ ऐसाजुकमलहै
तिसकाइसप्रकारविस्तारहै॥ एकलक्षयोजनजंबूद्वीपहै॥ तिसकेपरेदूणाषारी॰
समुद्रहै॥ तिसजलकरद्वीपआवर्णकीयाहै॥ जैसेहाथकोंकंकणहोताहै॥ तिसके
आगेदूणाशाकाख्यद्वीपहै॥ तिससोंदूणाषीरसमुद्रहै॥ तिसकरवेष्टितहै॥ तिसतेंआ
गेदूणीपृथिवीहै॥ तिसकानामकुशद्वीपहै॥ तिसतेंदूणाघृतसमुद्रकरवेष्टितहै
वहुडदूणीपृथिवीहै॥ तिसकानामक्रौंचद्वीपहै॥ तहांदूणोदधिकेसमुद्रकरवेष्टि
तहै॥ वहुडशाल्मलद्वीपहै॥ तिसतेंदूणामधुकासमुद्रहै॥ वहुडगोमेदकद्वीपहै
तिसतेंदूणामदिराकासमुद्रहै॥ वहुडदूणापुष्करद्वीपहै॥ तिसतेंमीठेजलकासमु
द्रहै॥ इसप्रकारसप्तसमुद्रहै॥ तिनोंतेंपरेदशकोटियोजनकंचनकीपृथिवीप्रकाशवा
नहै॥ तिसतेंआगेलोकालोकपर्वतहै॥ तिसऊपरवडाशून्यवनहै॥ तिसतेंपरेएकव
डासमुद्रहै॥ तिसतेंपरेदशगुणीअग्निहै॥ अग्नितेंपरेदशगुणीवायुहै॥ वायुतेंपरेदश
गुणीआकाशहै॥ आकाशतेंपरेलक्षयोजनपर्यंतघनरूपब्रह्मांडकीकंधहै॥ तिसकों
देषकरदोनोंफिरआईयां॥ इतिश्रीउत्पत्तिप्रकरणेलीलोपाख्यानेभूलोकवर्णनंनाम
ऊनविंशसर्गः॥१९॥

हरि

वसिष्ठउवाच

हेरामचंद्रतहांतेंफिरकरवसिष्ठब्राह्मणअरुअरुंधतीकामंडलदेषतभईयां॥ वहुडआ
समअरुगृहकीसोभादेषीजोजातीरहीहै जैसेकमलोंऊपरगडेकीवर्षाहोवे॥ अरुक
मलकीशोभाजातीहै॥ जैसेवनकोंअग्निलागे॥ अरुवनकीलक्ष्मीजातीरहे॥ जैसे॰
अगस्त्यमुनिसमुद्रकोंपानकरलीया॥ अरुसमुद्रकीसुंदरताहूरभई जैसेतेलअरुवा
तीकेहरणभएतेंदीपककाप्रकाशअभावहोजाताहै॥ जैसेवायुकेचलणेकरमेघोंका॰
अभावहोताहै॥ तैसेग्रामकोंशोभाकाअभावदेषतभईयां॥ जोकछुप्रथमशोभाथी
सानष्टहोगईहै॥ दासीयांरुदनकरतीयांहै॥ तवलीलाराणीजिसनेंचिरकालपर्यंत

योग॰ वा॰ ३३

ज्ञानका अभ्यास कीया था ॥ तिसकों इह इच्छा उपजी ॥ जो मुझकों अरु देवी कों सरेवां
थ वदेष ॥ तब लीला के सत्य संकल्प कर बांधव लोक देखत भए ॥ तब उनों देष कर अ
कहा ॥ जो इह वनदेवी गौरी अरु लक्ष्मी आई है ॥ इनकों नमस्कार करीये ॥ हे रामचंद्र
ऐसें जेष्ट सर्मा जो वसिष्ठ का बडा पुत्र था ॥ सो कुल लोक तिन दोनों के चरण पूजता भया ॥ अरु
कहा हे देवी जो तुम्हारी जय होवे ॥ हे देवी जो ई हां ब्राह्मण अरु ब्राह्मणी रहते थे ति
नका परस्पर अधिक स्नेह था ॥ मेरे पिता अरु माता थे ॥ सो अब दोनों काल के वश स्व
र्ग कों गए हैं ॥ तिस कर हम बहुत शोकवान भए हैं ॥ हम कों लोक त्रय शून्य भासते हैं
हम सम भही रुदन पड़े करते हैं ॥ वृक्षों ऊपर जो पक्षी रहते थे ॥ सो भी उनकों स्नेह कर दे
ष कर वन कों स्नेह कर देष कर चलते रहे हैं ॥ वन की यां के द्वारा सो पवन आवता है ॥ सो उ
नकद्रा के रुदन कर आवता है ॥ नदीयां जो वेग कर आवती यां है ॥ अरु तरंग उछलते
है ॥ मानो उह भी रुदन करती यां है ॥ अरु कमलों ऊपर जो जल कण के है ॥ मानो क
मलों के नेत्रों ते रुदन कर जल चलता है अरु दिशा ते जो उस्न पवन आवता है मा
नो दिशा भी शोक कर के उस्न स्वास कों छोडती यां है ॥ हे देवी यो हम सम भही शोक कों
प्राप्त भए है ॥ तुम कृपा करके हमारा शोक निवर्त करो ॥ काहे ते जो महापुरषों का
समागम निःफल नहीं होता ॥ अरु महापुरषों का शरीर परउपकार के निमित्त
है ॥ हे रामचंद्र जब इस प्रकार जेष्ट सर्मा ने कहा ॥ तब लीला ने कृपा करके तिसके
सीस पर हाथ राषा ॥ लीला के हाथ राषणे कर के उसका संताप नष्ट होगया
अंतःकरण शांत कों प्राप्त भया ॥ जैसे जेष्ट आषाढ के दिनों विषे पृथिवी तपती है
अरु तिस ऊपर मेघ की वर्षा होती है ॥ तब शीतल होती है ॥ तैसे उसका अंतःकरण
शीतल भया ॥ अरु जो उहां के निर्धन थे ॥ सो तिनके दर्शन कर लक्ष्मीवान भए ॥ अरु शां
न कों प्राप्त भए ॥ शोक नष्ट होगया ॥ राम उवाच ॥ हे भगवन लीला का पुत्र जो जेष्ट सर्मा
भया ॥ तिसकों लीला माता रूपी होकर दर्शन क्यों न दीया ॥ सो कारण मुझ कों कहो ॥
वसिष्ठ उवाच ॥ हे रामचंद्र सर्व आत्मसत्ता विषे जो स्पंद संवेदन हुई है ॥ सो संवेदन भ्रां
ता पिंडकार होइ भासती है ॥ अरु वास्तव ते आकाश रूप है ॥ भ्रांति कर के पृथिवी आदिक
भूत भासते हैं ॥ जैसे बालक कों परछाहीं विषे भ्रम कर के वैताल भासता है ॥ तैसे संवे
दन के फुरणे कर के पृथिवी आदिक भूत भासते हैं ॥ जैसे स्वप्न विषे भ्रम कर के पिंड आ
कार भासते हैं ॥ अरु जागे ते आकाश रूप भासते हैं ॥ तैसे भ्रम के निवर्त हूए पृथिवी
आदिक भूत आकाश रूप भासते हैं ॥ जैसे स्वप्न के नगर स्वप्न काल विषे अर्थाकार भास
ते हैं ॥ अरु प्रज्वलावती है ॥ जागे ते सम शून्य हो जाते हैं ॥ तैसे अज्ञान के निवर्त हूए ते इ
ह जगत भी आकाश हो जाता है ॥ जैसे मूर्छा विषे नाना प्रकार के नगर भासते हैं ॥ जै
से परलोक जगत भासता है ॥ जैसे आकाश विषे तरुवर भासते हैं ॥ अरु माला भास
ती यां है ॥ जैसे नौका पर बैठे हूए तट के वृक्ष चलते भासते हैं ॥ तैसे इह जगत भ्रम
कर के अज्ञानी कों भासता है ॥ अरु जो ज्ञानवान है ॥ तिन कों सम चिदाकाश भासता
है ॥ जगत की कल्पना कों ऊह नहीं फुरती ॥ ताते लीला उसकों पुत्र भाव अरु आप
कों माता भाव कैसे देषे ॥ उसका अहं अरु मम भाव नष्ट होगया था ॥ जैसे सूर्य के उदे हूए
अंधकार नष्ट हो जाता है ॥ तैसे लीला का अज्ञान भ्रम नष्ट होगया था ॥ सभ जगत उस
कों चिदाकाश ही भासता था ॥ इस कारण ते आप कों माता भाव न भासता भई ॥ अरु सि
र पर हाथ रषा था ॥ सो प्रवाह कार्य कर राषा था ॥ अर्थ यह जो संतों का दयालु स्व
भाव है ॥ इस कारण ते उसके सिर पर हाथ राषा ॥ अरु माता पुत्र की उसकों कल्पना
कछु न थी ॥ केवल आत्मरूप जगत उसकों भासा था ॥ इति उत्पत्ति प्रकरणे लीलोपा

ख्याने सिद्धदेनकथननाम विंशतितमः सर्गः ॥ २० ॥ ॐ वसिष्ठ उवाच
हे रामचंद्र तिस पर्वत ऊपर जो आश्रम था ॥ अरु तिस विषे वसिष्ठ ब्राह्मण का गृह था
तिस अंतःपुर सों देवी अरु लीला दोनों अंतर्ध्यान होगई यां ॥ तब उहां के लोक करु
णा लागे ॥ जो वनदेवी यां हम ऊपर कृपा करके दर्शन दाया कीया ॥ अरु अंतर्धा
न भई यां ॥ अरु परस्पर संवाद करते भई यां ॥ जैसे स्वप्न विषे संवाद होता है ॥ जैसे
संकल्प पुर विषे संवाद होता है ॥ तैसे उनका संवाद परस्पर हुआ ॥ देवी कहा हे ली
ले जो कछु जानणा था सो तुझ जाणा है कि अरु जो कछु देषणा था सो देषा है कि
इह ब्रह्म की शक्ति है ॥ और कछु पूछना होवे तब पूछो ॥ लीला उवाच ॥ हे देवी मेरा जो भ
र्ता है विदूरथ ॥ तिस पास मैं गई ॥ तब उसने मुझ कों क्यों न देषा ॥ अरु जेष्ट सर्मा आ
दिकों हम कों देषा ॥ सो कारण कहो ॥ देव्युवाच ॥ हे लीले तब तेरा द्वैत भ्रम नष्ट न था
भया ॥ अरु अद्वैत कों अभ्यास कर प्राप्त न भई थी ॥ जैसे धूप वाले कों छाया का सुष
नहीं अनुभव होता ॥ तैसे तुझ कों अद्वैत अनुभव न भया था ॥ हे लीले जैसे रितु का सं
ध होता है ॥ जैसे आषाढ विलीन होता है ॥ अरु वर्षा आई नहीं ॥ सो मध्य रितु कहीये
तैसे तूं थी ॥ अर्थ इह जो संसार मार्ग कों त्यागी थी ॥ अरु अद्वैत तत्त्व कों प्राप्त न भई थी
तिस कर आत्म शक्ति तुझ कों प्रतच्छ न भई थी ॥ ताते आगे तेरा सत्य संकल्प न था
अरु अब तूं सत्य संकल्प भई है ॥ इस कारण ते विदूरथ तुझ कों न देषत भया ॥ अरु अ
ब जो संकल्प कीया तुझ कों जेष्ट सर्मा देषे ॥ तिस कर तुझ कों देषते भए ॥ अब तूं विदू
रथ के निकट जावें ॥ तब पूर्वले तेरे साथ व्यवहार होवे ॥ लीला उवाच ॥ हे देवि इ
स मंडप आकाश विषे मेरा भरता वसिष्ठ ब्राह्मण हूया ॥ वहुड इस तन कर हूया ॥ तब इ
सी लोक मंडप आकाश विषे उसकों पृथिवी लोक का आया पद्म राजा होत भया
चिरकाल पर्यंत उस चारों ओर ही पका राज कीया ॥ वहुड इस तन कर हूया ॥ तब इसी
मंडप आकाश विषे उसकों जगत भासा ॥ अरु पृथिवीपति भया ॥ तिसका नाम वि
दूरथ भया ॥ हे देवी इसी मंडप आकाश विषे जरा मरण भाव अरु मरण जन्म हूया
अरु अनेक ब्रह्मांड इस विषे स्थित हैं ॥ जैसे संपट विषे सरयों के दाणे अनेक होवे
तैसे इस विषे ब्रह्मांड मुझ कों सभी ही भासते हैं भरता की स्मृति भी मुझ कों अं
तर भासती है ॥ अब जो कछु तुम आज्ञा करो सो मैं करों ॥ देव्युवाच ॥ हे भूतलअ
रुंधती इस मंडप विषे तीन तेरे भरते हैं ॥ एक वसिष्ठ ब्राह्मण था ॥ सो तो स्वतन कहूया
तिसका शरीर तो भस्म हो गया है ॥ वहुड पद्म राजा हूया ॥ सो तेरे मंडप विषे शावप
डा है ॥ अरु तीसरा भरता संसार मंडल विषे वसुधापति हूया है ॥ संसार समुद्र वि
षे भोग रूपी कल्लोलों कर तिसकों चित्त नाना आकुल है ॥ कैसा है संसार समुद्र का
कछू हूया है ॥ अरु राज कार्य विषे चतुर हूया ॥ आत्मपद ते विमुष हूया ॥ अज्ञान कर
कै जाणता है ॥ जो मैं ईश्वर हों ॥ मेरी आज्ञा सभ के ऊपर चलती है ॥ अरु मैं वडे भोगों का
भोगणहारा हों ॥ मैं सिद्ध हों बलवान हों ॥ हे लीले ऐसे संकल्प विकल्प रूपी जे
वडी सों बांध्या हूया है ॥ अब तूं किस भरता के पास चलती है ॥ तहां तेरी इच्छा हो
वे ॥ तहां मैं तुझ कों ले जावों ॥ जैसे सुगंध कों वायु ले जाती है ॥ तैसे तुझ कों ले जावों
गी ॥ हे लीले जिस संसार मंडल कों तूं समीप कहती है ॥ सो चिदाकाश की अपेक्षा
करके समीप भासता है ॥ अरु स्वर्गों की अपेक्षा कर अनंत कोटि योजनों का भेद है ॥ अ

हे रामचंद्र तब दोनों आकाश विषे आकाश रूप अंतर्धान भई यां

रूपआकाशरूपहै वपुजिनका ॥ ऐसीयांअनंतसृष्टीं पड़ीयांफुरतीयांहैं ॥ समुद्रअरु
मेरुाचलआदिकअनंतहैं ॥ तिनकेपरमाणुओंविषेअनंतसृष्टांचिदाकाशकेआश्र
यपड़ीयांफुरतीयांहैं ॥ चिदअणुविषेरुचीकेअनुसारसृष्टांवडेआरंभकरकेदृष्टआव
तीयांहैं ॥ अरुवडीयांस्थूलगरिष्टहूइदृष्टआवतीयांहैं ॥ परविचारकरतौलीयेतौएक
चावलकेसमान भीनहींहोतीयां ॥ हेलीलेनानाप्रकारकेरत्नौंकरपूर्णपर्वतभी
दृष्टआवतेहैं ॥ परआकाशहीरूपहैं ॥ जैसेस्वप्नेविषेचेतन्यकाकचनानाप्रकारका
जगतहूइदृष्टआवताहै ॥ तैसेइहजगतचेतन्यकाकचनहै ॥ पृथिवीआदिकतत्वोंकर
कछुउपजयानहीं ॥ हेलीलेआत्मसत्ताज्योंकीत्योंअपणेआपविषेस्थितहै ॥ अरु
जगतआभासउपजताभीहै ॥ मिटभीजाताहै ॥ जैसेआत्माविषेजगतजालउपज
तेहैं ॥ अरुनष्टभीहोतेहैं ॥ तैसेआत्माविषेजगतजालउपजतेहैं ॥ अरुनष्टभीहो
जातेहैं ॥ परआत्मसत्ताइनकेउपजणेअरुलीनहोवणेविषेएकरसहै ॥ आभास
रूपहै ॥ वास्तवकछुनहीं ॥ लीलोवाच ॥ हेमाताअवपूर्वलीसृष्टकोंस्मरनहूईहै
प्रथमजोमैराजसीजन्मपायाहै व्राह्मणीने ॥ तिसतेंआदिलेकरनानाप्रकारके मैं
अष्टशतजन्मपाएहैं सोअनंतसृष्टकोंभासतेहैं ॥ प्रथमजोचिदाकाशतेंमेरा
जन्महै सोविद्याधरकीस्त्रीभईहौं ॥ तिसकेअनंतरभीलनीहूईहौं ॥ कदमवनवि
षेविचरणेलागी ॥ वहुरवनलताभईहौं ॥ तहांगुछेहीमेरेअस्तनथे ॥ अरुपत्र
मेरेहाथथे ॥ तहांएकरिषीश्वरमुफकोंहाथकरस्पर्शकीया ॥ तवमैमनुष्यभई ॥ व
हुरमैतिसकेगृहविषेपुत्रीभई तहांजोमुफसोंकर्महोवे ॥ सोअरुषहौकाकर्म
होवै ॥ तिसतेंमैवडीलक्ष्मीकरसंपन्नराजाभई ॥ तहांमुफसोंदुष्टकर्महूए ॥ ति
सकरमैनवलीभई ॥ कष्टसंगोकरअष्टवर्षमैरुहारही ॥ वहुरमैवलदहूई ॥ मु
फकोंदुष्टषेतीकेहलविषेजोते ॥ तिसकरदुखीभई ॥ वहुरपंछीभई ॥ तहांजाल
विषेफसीतिसकरदुखपाया ॥ वहुरभ्रमरीभई ॥ कमलोंऊपरजाइकरसुगंधले
वों ॥ वहुरमृगीभई ॥ चिरपर्यंतवनविषेविचरी ॥ वहुरएकदेशकाराजाभई ॥ सौं
वर्षपर्यंतऊहांसुषभोगे ॥ वहुरकछूकाजन्मलीया ॥ वहुरगौंइसकाजन्मली
या ॥ इसप्रकारजन्मोंकोधारतीरहीमै ॥ अववडेकष्टपाए ॥ हेदेवीइत्यादिकअष्ट
सौंजन्मपावतीफिरीहौं ॥ संसारसमुद्रविषेवासनाकरघटीयंत्रकीन्याईभ्रमी
हौं ॥ हेदेवीअवमैनिश्चैकीहै ॥ जोआत्मज्ञानविनाजन्मोंकाअंतकदाचितनहीं
होता ॥ तुमारीकृपातेंअवनिदुःखकल्पपदकोंप्राप्तहूईहौं ॥ इतिश्रीउत्पतिप्रक
रणलीलायाख्यानेजन्मांतरवर्णनंनामएकत्रिंश सर्गः ॥ २ ॥ ॥
ॐ रामउवाच ॥ हेभगवनवज्रसारकीन्याईब्रह्मांडषपरथा ॥ अनंतकोटयोजन
पर्यंततिसकाविस्तारथा ॥ असेब्रह्मांडकोंदोनोंकैसीयांलंघतीयांभईयां ॥ व
सिष्टउवाच ॥ हेरामचंद्रसारब्रह्मांडषपरकहांहै ॥ अरुकौनगयाहै ॥ नकोऊवज्र
सारब्रह्मांडहै ॥ नकोऊलंघ्याहै ॥ सभआकाशहीरूपहै ॥ उसीपर्वतकेग्रामविषे
जोवसिष्टव्राह्मणकागृहथा ॥ तिसीमंडपआकाशविषेसृष्टोंकाअनुभवकरता
भईयांहै ॥ हेरामचंद्रजववसिष्टव्राह्मणमृतकभया ॥ तवउसीमंडपआकाशकेको
णविषेआपकोंचक्रवर्तीसमुद्रांपर्यंतपृथिवीकाराजाजानताभया ॥ जोराजापद्म
हाअरुअरुंधतीकोंलीलादेषताभया ॥ जुमेरीस्त्रीहै ॥ वहुरमृतकभया ॥ तवउ
सीमंडपआकाशविषेउसकोंऔरजगतकाअनुभवभया ॥ आपकोंराजाविदूर

यज्ञानताभया ॥ सोनृदेषजुकहोगयाहै ॥ अरुक्यारूपहै ॥ इसीमंडपआकाशविषेउ
सकोंसृष्टकाअनुभवभयाहै ॥ तौतैंजुसृष्टांहै ॥ सोउसीवसिष्टकेविनविषेस्थितहै
तवदेवीजोतत्रहूए ॥ तिसकीकृपातेंआपणाहीदेहआकाशविषेलीलाउडीहै ॥ आ
तिवाहकदेहजुआकाशरूपहै ॥ तिसकरकेउडीहै ॥ ब्रह्मांडकोंलंघकरवहुरउ
सीगृहविषेआईहै जैसेस्वप्नतेंस्वप्नांतरकोंप्राप्तहोवीताहै ॥ तैसेदेषआईयांहै
तोतैंगयांकहां ॥ अरुआईयांकहां ॥ एकहीस्थानविषेस्थितहोकारणकसृष्टतेंअन्य
सृष्टांकोदेष्याहै ॥ हेरामचंद्रजैसेस्वप्नेकीसृष्टनानाप्रकारकेअववहारोंसहितहो
शीरभासतीहै ॥ आभासमात्रहै तैसेइनोंभीजगतदेषा ॥ नकोऊब्रह्मांडहै ॥ नकोऊ
जगतहै ॥ नकोऊकुडहै ॥ केवलचेतन्यकाकचनहै ॥ अरुकछुवणानहीं ॥ जैसीवि
तसेवदनफुरतीहै ॥ तैसाआगेहोइभासताहै ॥ केवलवासनामात्रहीजगतहै ॥ पृ
थिवीआदिकभूतकोऊउपजयानहीं ॥ निरावर्णज्ञानआकाशअनंतरूपस्थितहै
जैसेस्पंदअरुनिस्पंदहोनोरूपपवनहीहै ॥ तैसेफुरणअफुरणरूपआत्माहै ॥ कचनविषे
भीज्योंकात्योंहै ॥ अजहै शांतरूपहै ॥ सर्वत्रसर्वरूपचिदाकाशहै ॥ जवचिनकचनहो
ताहै ॥ तवआपहीजगतरूपहोइभासताहै ॥ दूसराकछुनहीं ॥ जिनोंपुरुषोंआ
त्माकोंजाणाहै ॥ तिनकोंजगतआकाशतेंभीसूक्ष्मभासताहै ॥ अरुजिनोंनेनहींजा
णा ॥ तिनकोंजगतवज्रसारकीन्याईदृढभासताहै ॥ जैसेस्वप्नेविषेनगरभासतेहैं
तैसाइहजगतहै ॥ जैसेमारूथलविषेजलभासताहै ॥ जैसेस्वर्णविषेभूषणभास
तेहैं ॥ तैसेआत्माविषेजगतभासताहै ॥ हेरामचंद्रइसप्रकारदेवीअरुलीलाध्यान
करकेनानाप्रकारकेस्थानोंकोंदेषतभईयां ॥ फरणेपातेजलचलत्याआवे ॥ अरुसुंदर
मेघपवनसंजगतदेषीतेहैं ॥ वावलीयांसुंदरतालवगीचेहदेषे ॥ तिनोंविषे
पंछीशब्दकरतेहैं ॥ अरुसुंदरमेघपवनसंयुक्तदेषीतेहैं ॥ मानोंस्वर्गईहांआनलगा
है ॥ इतिश्रीउत्पतिप्रकरणेलीलोपाख्यानेआसकवर्णनंनामद्वाविंशसर्गः २२ ॥
ॐवसिष्टउवाच ॥ हेरामचंद्रइसप्रकारदेषकरदोनोंशीतलचितनशामविषेवासक
रतभईयां ॥ भोगअरुमोषदोनोंकरकेशीतलचितहैं ॥ अर्थयहजुसंतष्टहैं ॥ तोकछु
अरुंधतीकेशरीरकरकीयाथा ॥ सोदेवीकोंकहतीभई ॥ हेदेवीतुमारीकृपातेंपूर्व
लीस्मरनमुफकोंभई ॥ जोकछुइसदेशविषेमैंकीयाथा ॥ सोअगटभासताहै ॥ एक
ईहांव्राह्मणीथी ॥ तिसकाशरीरवृद्धहोतभया ॥ नाडीयडीयांदृष्टआवे ॥ अरुमर
नेकोंवहुतप्यारीथी ॥ अरुपुत्रोंकीमाताथी सोमैहीहौं ॥ हेदेवीदेवताव्राह्मणोंकी
मैपूजाकरतीथी ॥ ईहांमैगृहधर्मपालतीथी ॥ ईहांअन्नादिकोंकेवासनराषतीथी ॥ अरु
मेरेपुत्रथेपुत्रीयांजवाईइहतेरेवैठतेथे ॥ ईहांमैंवैठतीथी ॥ अरुभृतोंकोंकहतीथी
शीघ्रहीकार्यकरो ॥ जैसेवर्षाकालविषेइइ्पडेशब्दकरतेहैं ॥ तैसेमैशब्दकरतीथी
हेदेवीइहांमैरसोईकरतीथी ॥ अरुभरतामेरासाकगोवरलेआवताथा ॥ अरुसभस
यांदाकहताथा ॥ इहमेरेहाथवूटेवोएहूएहैं ॥ इहदृढमेरेलगाएहूएहैं ॥ कछुफल
मैइनसोंलीयेहैं ॥ कछुरहतेहैंसोइहहैं ॥ ईहांमैजलपानकरतीथी ॥ हेदेवीमेराभ
रतासभकर्मोंविषेसमर्थथा ॥ परआत्मपदतेंशून्यथा ॥ सभकर्ममुफकोंस्मरणहोते
हैं ॥ ईहांमेरापुत्रज्येष्टशालाशृहविषेरुदनपड़ाकरताहै ॥ ईहावलीमेरेगृहविषे
विस्तरीहै ॥ अरुसुंदरफूलल्लगेहैं ॥ इनकेगुछेउजोंकीन्याईहैं ॥ अरुफरीषवलीकर
आवरेहूएहैं ॥ इहमेरामंडपआकाशहै ॥ इसविषेमेराभरताकाजीवआकाशहै ॥ अं
गुष्टमात्रइहदाहै ॥ तिसविषेउसकाचितआकाशहै ॥ तिसविषेजोराजकीवासना

रहथी॥ तिसकरतिसकोंचारसमुद्रपर्यंतपृथिवीराजकरआया॥ तेमेराजाहों॥ इहां
आठदिनमृतकहूएवीतेहैं॥ अरुइहांचिरकालराजकीयाअनुभवकरतभयाहै॥ हेदेवी
इसप्रकारथोडेकालविषेबहुतकालकाअनुभवभयाहै॥ अरुहमारेहांमंडपविषेउ
हशावपडाहै॥ अरुतिसकीउर्व्याष्टिकाविषेडौरजगतहुआयाहै॥ तिसविषेआपकों
राजाविदूरथजानतभया॥ इसराजकेसंकल्पकरउसकीसंवितइसीमंडपआका
विषेस्थितहै॥ जैसेआकाशविषेगंधकोलेकरपवनस्थितहोवे॥ तैसेउसकीचे
तन्यसंवितसंकल्पकोंलेकरइसमंडपआकाशविषेस्थितहै॥ उसकीसंवित॥
इसमंडपआकाशविषेउसराजकीसृष्टिमुझकोंकोटियोजनोंपर्यंतभासतीहै
पर्यंतमेंअनेकयोजनोंपर्यंतलंघतीयोंथा॥ तबभरताकेनिकटआयतहोतो
तोतेंचलोजहांराजाविदूरथमेरामरताहै॥ दूरहैतोभीनिश्चेवानोंकोनिकटहै
वसिष्ठउवाच॥ हेरामचंद्रइसप्रकारकहकरदोनोंमंडपआकाशविषेउडीयां॥ जै
सेपंषीउडताहै॥ तैसेउडीयां॥ जैसेघटकीधाराश्यामहोतीहै॥ जैसेविसूजीके
अंगश्यामहोतेहै॥ जैसेकाजरश्यामहोताहै॥ जैसेभवरेकीपीठश्यामहोतीहै॥ तै
साआकाशश्यामहै॥ तिसआकाशविषेआतिवाहकशरीरकरकेउडीयां॥ मेघोंके
स्थानलंघीयां॥ वडीवायुकेस्थानलंघीयां॥ सूर्यअरुचंद्रमाकोंलंघगईयां॥ ब्रह्म
लोकपर्यंतजोदेवतायोंकेस्थानथे॥ तिनकोंलंघगईयां॥ अरुलोककोंलंघीयां॥ शिव
लोककोंविदेहलोककोंलंघगईयां॥ इसप्रकारदूरतेंदूरगईयां॥ शून्यआकाशविषे
ऊर्ध्वजाइकरअधःकोंदेषतभईयां॥ तसूर्यअरुचंद्रमाआदिककोऊनहींभासता न
वलीलाकहा॥ हेदेवीएताजुसूर्यआदिकतेजथासोकहांगया॥ इहांतोमहांअंधका
रहै॥ ऐसाअंधकारहै॥ मानोमृष्टिविषेशूद्रलाहोताहै॥ देव्युवाच॥ हेलीलेहमसम
आकाशविषेआएहैं॥ इहांमहांअंधकारकास्थानहै॥ सूर्यआदिककैसेभासे॥ जैसे
अंधेकूपविषेटनागानहींभासता॥ तैसेइहांसूर्यचंद्रमानहींभासता॥ हमबहु
तऊर्ध्वकोंआएहैं॥ लीलोवाच॥ हेदेवीबडाआश्चर्यहै॥ जहमहरतेंहरआएहैं॥ त
हांसूर्यआदिककोंकाप्रकाशनहींभासताहै॥ इसतेआगेअबकहांजावनाहै॥ हम
देव्युवाच॥ हेलीलेइसकेआगेब्रह्मांडकापटआवरणहै॥ सोबडावज्रसारहै॥ अरु
अनंतकोटियोजनोंपर्यंततिसकाविस्तारहै॥ जिसकीपृथिवीकणकाभीइंद्रकेव
ज्रसमानहै॥ वसिष्ठउवाच॥ हेरामचंद्रइसप्रकारदेवीकहतीजातीथी॥ तआ
गेब्रह्मांडकिवाटआया॥ महातनुसार॥ अरुकोटियोजनोंपर्यंततिसकाविस्ता
रदेष्या॥ तिसकोभीलंघगईयां॥ अरुकलेशकछुनभयाहै तैसेजैसाजैसाकि
सीकोंनिश्चाहोताहै॥ तिसकोंतैसाहीहोताहै॥ निरावरणआकाशजोदेवीयां
हैं॥ सोआकाशकिवाटकोंलंघगईयां॥ तिसकेपरेदशगुणाजलकाआवरणहै॥
तिसकेपरेदशगुणाअग्नितत्वहै॥ तिसकेपरेदशगुणावायुहै॥ तिसकेपरेदशगु
णआकाशहै॥ तिसकेपरेपरमआकाशहै॥ तिसकाआदिमध्यअंतकोऊनहीं॥ जै
सेवंध्यापुत्रकीकथाचेष्टाकाअंतआदिकोऊनहीं॥ तैसेपरमआकाशकाआदिअंत
कोऊनहीं॥ नित्यस्वअनंतरूपहै॥ अपणेआपविषेस्थितहै॥ हेरामचंद्रतिसके
अंतलेवरणेकोंसदाशिवमनरूपेवेगकरकल्पपर्यंतधावे॥ तोभीनपावे॥ अरु
विष्णुजीगरुडपरआरूढहोइकरकल्पपर्यंतधावे॥ तोभीतिसकाअंतनपावे
अरुपवनअंतलीयाचाहे॥ तोभीनपावे॥ आदिमध्यकीकल्पनातेंरहितबोधमात्र
है॥ इतिश्रीउत्पत्तिप्रकरणेपुनआकाशवर्णनंनामअष्टाविंशसर्गः॥ २८॥ ॥

ॐवसिष्ठउवाच॥ हेरामचंद्रजबपृथिवीअपतेजआदिकआवरणकोंलंघगईयां
तबप्रमाणोंतेंरहितपरमआकाशउनकोंभास्या॥ तिसविषेब्रह्मांडइहरकीन्याईआ
ये॥ जैसेसूर्यकीयांकिरणांविषेत्रसरेणभासतेहैं॥ तैसेआभासरूपीब्रह्मांडपर
माकाशविषेभासतेहैं॥ सोमहास्वच्छकोधारणेहारापरमाकाशहै॥ अरुअंबक
णचिदअणुसृष्टीजिसविषेफुरतीयांहैं॥ ऐसामहाचिदसमुद्रहै॥ कोईअधःकों
जानेहैंतिसविषे॥ कोईऊर्ध्वकोंजातेहैं॥ कोईतिर्यगगतकोंजातेहैं॥ हेरामचंद्रचि
तसंवितविषेजैसाजैसास्पंदफुरताहै॥ तैसातैसाआकारहोइभासताहै॥ वास्त
वनकोऊऊर्ध्वहै॥ नकोऊअधःहै॥ नकोऊआवताहै॥ नजाताहै॥ केवलज्योंकीत्यों
आत्मसत्ताअपणेआपविषेस्थितहै॥ फुरणेकरिजगतभासताहै॥ उत्पतिहो
ताहै॥ वहुडनष्टहोजाताहै॥ जैसेबालककासंकल्पजालउपजउपजनष्टहो
ताहै॥ तैसेचेतन्यसंवितविषेजगतफुरकरनष्टहोजाताहै॥ रामउवाच॥ हेभगव
नअधःक्याहोताहै॥ अरुऊर्ध्वक्याहोताहै॥ अरुतिर्यककयाभासताहै॥ अरुईहां
क्यास्थितहै॥ सोमुझकोंकहो॥ वसिष्ठउवाच॥ हेरामचंद्रपरमाकाशजोसत्ताहै
सोआवरणतेंरहितहै॥ स्वच्छबोधरूपहै॥ तिसविषेजगतऐसेभासताहै॥ जैसेआ
काशविषेभ्रांतकरतरवरेभासताहै॥ तिसविषेअधःअरुऊर्ध्वकल्पनामात्रहै॥
जैसेहलोहुडकेवटेकेवांधेरकीडीयांफिरतीयांरहे॥ अरुउनकेमनविषेअधः
ऊर्ध्वपडभासे॥ तेउनकेमनविषेअधःऊर्ध्वकीकल्पनाहूईहै॥ हेरामचंद्रइह॥
जगतआत्माकाआभासरूपहै॥ जैसेमंद्राचलपर्वतऊपररहतीयांकेसमूहविच
रतेहैं॥ तैसेआत्माविषेअनेकजगतफुरतेहैं॥ अरुवस्तुतेंसर्वब्रह्मरूपहै॥ कर्तृक
रणकर्मसंप्रदानअधिकरणसर्वब्रह्महीहै॥ इहजगतब्रह्मसमुद्रकेतरंगहैं॥ ति
नोंजगतब्रह्मांडोंकोदेवीयांदेषतभईयां॥ कैसेकेसेब्रह्मांडउनोंदेषे॥ सोतंश्रवण
करकईसृष्टोंउत्पतिहोतीयांदेषीयां॥ कईप्रलयहोतीयांदेषीयां॥ कईउपजणे
काआरंभदेष्या॥ जैसेतोतनतथेऊरनिकसताहै॥ तैसेउपजणेलागीयां॥ कहूंजल
हीजलहै॥ औरकछुनहीं॥ कहूंअंधकारहीहै॥ प्रकाशकछुनहीं॥ कहूंसर्वअव
स्थारसेयुक्तहै॥ कहूंअरुवेदशास्त्रकमैहै॥ कहूंआदिईश्वरब्रह्माहै॥ तिसनेस
मस्तसृष्टांहूईयांहैं॥ कहूंआदिईश्वरविष्णुहै॥ तिसतेंसमस्तसृष्टांहूईयांहैं॥ कहूंआ
दिईश्वरसदाशिवहै॥ तिसतेंसमस्तहियाहूईयांहैं॥ इसीप्रकारऔरअजायनिकर
हतेहैं॥ कहूंदेवताहीरहतेहैं॥ कहूंमनुष्यहीरहतेहैं॥ कहूंतिर्यकहीजीवर
तेहैं॥ कहूंसून्यरूपहै॥ हेरामचंद्रइसप्रकारअनेकसृष्टांचिदाकाशविषेदेषत
भईयां॥ तिनकीसंख्याकरणेकोंकोऊसमर्थनहीं॥ चिदात्माकाआभासरूपप
डीयांफुरतीयांहैं॥ जैसेजैसेफुरणाहोताहै॥ तिसकेअनुसारसृष्टांफुरतीयांहैं॥
इतिश्रीउत्पत्तिप्रकरणेब्रह्मांडवर्णनंनामनवविंशसर्गः॥ २९॥ ॐ॥ ॐ
ॐवसिष्ठउवाच॥ हेरामचंद्रइसप्रकारदोनोंदेवीयांउडकरराजाकेजगतविषे
आईयां॥ तहांआपणामंडपस्थानकोंदेषतभईयां॥ जैसेसोयाहूयाजागकरदेष
ताहै॥ तैसेआपणेमंडपविषेप्रवेशकीया॥ तबक्यादेषेंजुराजाअरुलोकेसाथदा
ध्याहूयाशवपडाहै॥ अरुअर्थराजकासमाहै॥ सर्वलोकघरमेंसोयापडाहै॥ अ
रुराजापद्मशवकेपासलीलाकाशरीरथासोपडाहै॥ अंतःपुरविषेधूपचंदनक

रेरु अगरकी सुगंध भर रही है ॥ तब विचार करत भई ॥ जहां चलीये ॥ जहां राजा
राज करता है ॥ तब उस भरता की पुत्र पिका जो थी ॥ जिस विषे विदूरथ का अंतभ
व हूया है ॥ तिससे कल्प के अनुसार विदूरथ की सृष्टि देषणे कों देवी के साथ चली
आति वाहक शरीर साथ आकाश मार्ग कों उडी ॥ जाते जाते ब्रह्मांड किवाट कों लंघ
गईयां ॥ तब विदूरथ के संकल्प विषे जगत कों देषत भईयां ॥ जैसे ताल वडी सवा
ल होता है ॥ तैसे जगत कों देषत भईयां ॥ सप्तद्वीप देषे ॥ नौषंड देषे ॥ सुमेरु आदि
क पर्वत देषे ॥ समुद्रादिक सभ र च ना देषत भईयां ॥ तिस विषे जंबूद्वीप भारत षंड
देष्या ॥ तिस विषे विदूरथ राजे का मंडपस्थान देषत भईयां ॥ तहां राजा सिंधु सेना
कों ले आया ॥ अरु दोनो सेना मिल कर युद्ध करणे लागे है ॥ अरु त्रिलोके युद्ध कार्यों
त कदेषण आई है ॥ देवते विवानो पर आरूढ होइ कर देषणे लागे है ॥ सिद्ध चारण
गंधर्व विद्याधर शास्त्र मार गकों छोडि कर देषणे कों स्थित भए है ॥ जु सूरमे युद्ध वि
षे प्राणों को त्यागे ॥ तब हम इन कों स्वर्ग विषे ले जावैंगे ॥ ऐसे विचार कर विद्याधर
स्थित हूए है ॥ अरु रक्त मांस कों भोजन करणे कों भूत राक्षस पिशाच योगिणीआ
न स्थित भए है ॥ हे रामचंद्र जो पुरुष सूरमे है ॥ सो स्वर्ग के भूषण है ॥ अरु अक्षय स्व
र्ग कों भोगैंगे ॥ जिनका मरण धर्म पर उलक रके संग्राम विषे होवेगा ॥ तेई स्वर्ग जावैं
गे ॥ रा म उ वा च ॥ हे भगवन सूरमा किसको कहते है ॥ अरु जो युद्ध करके स्वर्ग कों प्रा॰
पत नहीं होते सो कवन है ॥ व सि ष्ट उ वा च ॥ हे रामचंद्र जो शास्त्र के अनुसार युद्ध न
हीं करते ॥ अनर्थ रूपी अर्थ के निमित्त युद्ध करते है ॥ सो नरक कों प्रापत होते है ॥ अ
रु पुरुष धर्म के रक्षा निमित्त युद्ध करते है ॥ ते सूरमे है ॥ तेई स्वर्ग लोक कों प्रापत॰
होते है ॥ अरु जु पुरुष गौ के अर्थ युद्ध करते है ॥ ब्राह्मणों के अर्थ ॥ मित्रों के अर्थ शर
णागत के अर्थ युद्ध करते है ॥ सो सूरमे हूए स्वर्गलोक कों प्रापत होते है ॥ स्वर्ग के भूष
ण कहीते है ॥ अरु जो राज पालना के निमित्त युद्ध करते है ॥ सो भी पहूए स्वर्ग कों प्रा
पत होते है ॥ उनका यश स्वर्ग विषे भी वहुत होता है ॥ जो पुरुष धर्म के अर्थ युद्ध करते॰
है ॥ सो अवश्य स्वर्ग लोक कों प्रापत होते है ॥ अरु जो अधर्म कर युद्ध करते है ॥ ते सूरते॰
होइ नरकों नरकों प्रापत होते है ॥ हे रामचंद्र जो पुरुष कहते है ॥ संग्राम विषे मूए
सभ स्वर्ग कों प्रापत होते है ॥ ते मूर्ष है ॥ स्वर्ग कों उह्ही जाते है ॥ जिनका मरण धर्म
के अर्थ हूया है ॥ अरु जो किसी भोग अर्थ के निमित्त युद्ध करते है ॥ ते नरक कों प्रापत
होवैंगे ॥ इ ति श्री यो गवा सि ष्ठे उ त्प त्ति प्र क र णे लीला स्वर्ग व र्ण नं ना म प॰ चा॰
विं श ति स र्गः ॥ २५ ॥ व सि ष्ट उ वा च
हे रामचंद्र तब दोनों देवीयां रणसंग्राम कों देषत भईयां ॥ क्या देषे जु महाप्रलय व॰
ते है ॥ तिस विषे दोनो सेना जुडीयां है ॥ जैसे वडे समुद्र उछल कर परस्पर मिलते ला
गे ॥ तैसे सेना मिलीयां ॥ योधे आन स्थित हूए ॥ मच्छव्यूह ॥ गरुडव्यूह ॥ वज्रव्यूह ॥ गा
जव्यूह ॥ इस प्रकार सेनो के भाग भिन्न भिन्न हूए ॥ दोनो सेना के योधे एक एक हूइ कर
युध करणे लागे ॥ प्रथम परस्पर देषे ॥ जइ इह वाण चलाए ॥ ऐसे कहैं ॥ जु तैं प्रथम च
लाइ ॥ उह कहे तैं प्रथम चलाइ ॥ अरु क्रोध हट कर स्थिर होइ रहे ॥ मानो मूर्ती लिषि॰
होईयां है ॥ तिसके अनंतर ॥ और योधे दोनो सेना के आए ॥ मानो प्रलयकाल के मे॰
घ उछले है ॥ तिन के आवणे कर एक एक योधे की मर्यादा दूर होइ गई ॥ एक दे हो यु
द्ध करणे लागे ॥ वडे शस्त्रों के प्रहार होणे लागे ॥ कहूं षड्गों के प्रहार होवहि ॥ कहूं

धों के ॥ त्रिसूल मोहले वरछी कटारी छूरी चक्र गदा आदिक शस्त्र चलणे लागे ॥ जै
से वर्षा काल के मेघ वर्षा करते है ॥ तैसे शस्त्रों की वर्षा होवणे लागी ॥ वडे शब्द करे
अरु शस्त्र चलावे ॥ हे रामचंद्र जैसे कछु प्रलय काल के उपद्रव होते है ॥ सो एक देष
ते हूए ॥ योधे जो घे सो जाण कर युद्ध कों उरथावहि ॥ अरु जो कायर थे सो भाग आवे
ऐसे संग्राम हूया जु जो योधों के सिर काटे गए किनो के हस्त छोड स्तन कों प्रापत भ
ए ॥ जैसे कमल फूल काटे जाते है ॥ तैसे तिन के सिर काटे जावे ॥ तब दोनो सेना के श
जे चिंता करणे लागे जु क्या होवे ॥ हे रामचंद्र ऐसा युध हूया जु रुधिर की यां नदी
यां चलीयां ॥ तिस विषे प्राणी वहते जावे ॥ अरु वडे शब्द करे ॥ तिनों शब्दों के आगे मे
घों के शब्द भी तुच्छ भासे ॥ रा म उ वा च ॥ हे भगवन उह देवीयां कहा स्थित होइ कर दे॰
षत भईयां ॥ शिव को समाकार कर कहीता है ॥ तब सम जता है ॥ व सि ष्ठ उ वा च ॥
हे रामचंद्र दोनो देवीयां संकल्प के विवान कल्प कर आकाश विषे स्थित भईयां ॥
क्या देषे जो ऐसा युध हूया है ॥ जैसे महाप्रलय विषे समुद्र एक रूप होजाते है ॥ अरु
बिजुली की न्याई शस्त्रों का चमतकार होता है ॥ अरु जो सूरवीर थे तिन के रक्त की वृ
ष्टि पृथिवी कपर पडती है ॥ पृथ विषे तिस बूंद विषे जैसे मस्तक के कणके गिले हो
ते है ॥ ते तब ही स्वर्ग कों भोगैंगे ॥ जो जो सूरमा युध विषे मृतक होवे ॥ तिस कों विद्या॰
धरीयां स्वर्ग कों ले जावे ॥ अरु देवगण स्तुति करें ॥ उह सूरमा स्वर्ग कों प्रापत भ
या ॥ अक्षय स्वर्ग भोगेगा ॥ अर्थ इह जो चिरकाल पर्यंत स्वर्ग सुष भोगेगा ॥ हे रामचं
द्र सूरमे स्वर्ग लोक के भोग मन विषे चिंतकर हर्षवान होवे ॥ अरु युध करे ॥ प्राणों
के त्यागणे का शोक न करे ॥ नाना प्रकार के शस्त्र चलावे ॥ अरु मस्त होवे ॥ वडे युध के॰
सनमुष होवे ॥ धीर्य धार कर स्थित होइ रहे ॥ जैसे सुमेर पर्वत धीर्यवान अचल॰
स्थित है ॥ तिस ते भी अधिक धीर्यवान रहे ॥ ऐसे संग्राम विषे योधे चूर्ण होवे ॥ जैसे
उषल विषे मूसल कर हरणा कछु करीता है ॥ तैसे रण विषे चूर्ण होवे ॥ पर वडे इस
न मुष होवहि ॥ हाहाकार वडे शब्द होवे ॥ अरु हस्ती परस्पर युध करे ॥ पाव करे ॥ हे
रामचंद्र अनेक जीव इस प्रकार नाशता कों प्रापत भए ॥ जो जो सूरमा मरे ॥ तिस॰
कों विद्याधरीयां स्वर्ग ले जावे ॥ परस्पर वडे युध होवहि ॥ षड्ग वाले साथ षड्ग
वाल युध करे ॥ त्रिसूल वाले साथ त्रिसूल वाला युध करे ॥ जैसा जैसा शस्त्र किसी
पास होवे ॥ तैसे ही साथ वडे युध करे ॥ जब शस्त्र दूर हो जावे ॥ तब मुष्टों साथ
युधि करहि ॥ दशों दिशा युध कर पूर्ण होइ रहीयां ॥ इ ति श्री यो गवा सि ष्ठे उ त्प त्ति प्र क र णे
ना म ष ड्विं श स र्गः ॥ २६ ॥ व सि ष्ठ उ वा च
हे रामचंद्र जब इस प्रकार वडा युद्ध हूया ॥ तब सूर्यों के रुधिर का प्रवाह चलया
जैसे गंगा प्रवाह तीव्रता चलता है ॥ तैसे तीव्रता प्रवाह चलया ॥ तिस प्रवाह वि॰
षे हस्ती घोडा मनुष्य रथ सभ वहते जावे ॥ अरु सेना शून्यता प्रापत होती जावे
हे रामचंद्र वडा क्षोभ आन कर उदे हूया ॥ यक्ष राक्षस पिशाच आदिक जो तामसी
लोक थे ॥ सो भोजन करणे लागे ॥ मांस षावे अरु रुधिर पान करे ॥ उन कों उत्सा
ह कों प्रापत भए ॥ जैसे मंदिराचल पर्वत कर क्षीर समुद्र कों क्षोभ हूया था ॥ ते
से युद्ध संग्राम विषे योधों कों क्षोभ हूया ॥ रुधिर का समुद्र चलया ॥ तिस विषे ह
स्ती घोडे रथ सूरमे तरंग रूपों की न्याई उछलते दृष्ट आवे ॥ रथ वाले साथ रथ वाला॰
युद्ध करे ॥ घोडे वाले साथ घोडे वाला युद्ध करे ॥ हस्ती वाले साथ हस्ती वाला पिया

देसाथ पियादा युद्ध करे ॥ त्रिशूलवाले साथ त्रिशूलवाला ॥ छुरीवाले साथ छु
रीवाला युद्ध करे ॥ हे रामचंद्र जैसे प्रलयकाल की अग्नि विषे जीव पड़ जलते हैं ॥ ते
से जो जो जोधा रणभूमिका विषे आवे ॥ सो नाशको प्रापत होवे ॥ जैसे दीपक
विषे पतंग प्रवेश करते हैं ॥ जैसे समुद्र विषे नदीयां प्रवेश करतीयां हैं ॥ तैसे
रणभूमिका विषे दशा दिशाके योधे प्रवेश करे ॥ अरु नाश होजावे ॥ किसीका सी
स काटया जावे ॥ किसीकी यां भुजा काटी या जावे ॥ किसीका धर काटया ऊपर र
है ॥ शिर तलेको होजावे ॥ कोऊ आपतलेको होवे ॥ तिसके ऊपर रथ होजावे ॥ ह
स्ती घोड़े उलट पड़े ॥ अरु नाश होजावे ॥ हे रामचंद्र दोनो राजयोंकी सहायता नि
मित्त अनेक राजे आएथे ॥ सर्व दिशा की ओरते आएथे ॥ कुशिमगधादेशके ॥ मिथ
लादेशके ॥ मालवादेशके ॥ मेकलादेशके ॥ कवटादेशके ॥ किरातदेशके ॥ म्लेछ
देशके आए ॥ जिनको शास्त्र के अनुसार मर्यादा नहीं तिने म्लेछ हैं ॥ पारसीवाले आ
ए ॥ काशमीर देशके आए ॥ पंचावदेशके आए ॥ हिमालय पर्वतके आए ॥ सुमेरु पर्वत
सो आए ॥ इत्यादिक अनेक देशपाल आए ॥ जिनके वडे दंत हैं ॥ अरु वडे केश हैं ॥ अरु
वडे भयानक रूप हैं ॥ सर्व युद्ध करणेके निमित्त आए ॥ सर्व द्वीपोंके राजे थे ॥ सुमेर
कैलासके राजे थे ॥ जैनेकछु पृथिवीके राजा हैं ॥ सो सभ ही युद्ध विषे आए ॥ जैसे म
हाप्रलयके समुद्र उछलते हैं ॥ अरु दिशा स्थान जलकर पूर्ण होजाते हैं ॥ तैसे
सेसेना करके सभ स्थान पूर्ण भए ॥ दोनो ओरते युद्ध करणे लागे ॥ चक्रवाले सा
चक्रवाला युद्ध करे ॥ खड्गवाले साथ खड्गवाला ॥ कुहाड़ेवाले कुहाड़ेवालेयोंके सा
थ युद्ध करे ॥ त्रिशूलवाले साथ त्रिशूलवाले ॥ सो ह्याछुरी कटारी वरछी गदा वाण
आदिक शस्त्रोंकर परस्पर युद्ध करणे लागे ॥ उह कहे प्रथम मैं जाना हैं ॥ उह कहे
प्रथम मैं जाना हों ॥ हस्तीवाले साथ हस्तीवाला युद्ध करे ॥ घोड़ेवाले साथ घोड़ेवा
ला ॥ रथवाले साथ रथवाला युद्ध करे ॥ पियादे साथ पियादा युद्ध करे ॥ हे रामचंद्र
तिस काल मों ऐसा युद्ध होणे लागा जो कहणे विषे नहीं आवता है ॥ दौड़ दौड़ कर
जोधे रण विषे जावे ॥ अरु मरनको प्रापत होवे ॥ जैसे अग्नि विषे तृणको आहुति या
ई भस्म होती है ॥ जैसे दीपक विषे पतंग प्रवेश ही प्रवेश करते हैं ॥ अरु भस्म होते
हैं ॥ तैसे रण विषे घोड़े पड़े नाशको प्रापत होवे ॥ ऐसा युद्ध हूया ॥ जो रुधिरका सम
द्र चलया ॥ तिस विषे हस्ती घोड़ा रथ मनुष्य त्रिणोंकी न्याई वहते जावे ॥ सभ पृ
थिवी रक्तमयी होगई ॥ जैसे अथेरी करके फूल फल छूटे गिरते हैं ॥ तैसे पृथिवीऊ
पर कटे कटे शस्त्रकर तैसे शिर गिरे ॥ हे रामचंद्र तिस काल मों जु युद्ध हूया है ॥ सो कह
णे विषे नहीं आवता ॥ सहस्र मुख जु शेषनाग है ॥ जो युद्धके कर्मोंको इहणेते
भी संपूर्ण वर्णन न कर सकेगा ॥ तब और कोऊ क्या कहेगा ॥ सो संक्षेप ते कछु श्रव
ण कराया है ॥ इति लीलापाख्याने द्वंद्व युद्ध वर्णनं नाम सप्तविंशः सर्गः ॥ २१ ॥ १ ॥
श्री वसिष्ठ उवाच ॥ हे रामचंद्र जब इस प्रकार युद्ध हूया तब सूर्य अस्त हूया ॥ मानो उ
सकी यां करणां भी शस्त्रोंके प्रहार कर अस्त करप्रापत भईयां हैं ॥ तब वि हर अर्थ अ
ना पति हैं ॥ सो मंत्रीयोंको बुलाइकर कहत भया ॥ हे मंत्रीयो अब युद्धको शांत करी
थे ॥ काहे ते सूर्य भी अस्त भया है ॥ अरु योधे भी सभ युद्ध करते थके हैं ॥ रात्रिको अ
राम करे ॥ बहुड़ दिनको युद्ध करेंगे ॥ तौ तिन वस्त्रके तोज ध्वज पट शांति करीथे ॥ त
व मंत्री दोनो सेनाके मध्य विषे ऊचे वढ़ कर वस्त्र फेरया ॥ जु अब युद्धको शांत करो

बहुड़ दिनको युद्ध करेंगे ॥ तव दोनो सेना युद्ध त्याग कीया ॥ अरु सभ रणोंके पत्नी
सेना विषे न चलन न गारे वाजने लगे ॥ राजा विदूरथ भी अपने गृह विषे आन स्थि
त भया ॥ रणभूमिका शांत होगई ॥ जैसे सर्ग काल विषे मेघोंते रहित आकाश
निर्मल होता है ॥ तैसे रणभूमि शांतको प्रापत भया ॥ तब रात्रिको देखकर राजा
सोयिशाचा गिद्ध इ विछ्यावड़ा किरणोंमांसको भोजन करणे आए ॥ मांस खावे अरु
रुधिर पान करे ॥ अरु और भाई मित्रोंको देखने पिवे ॥ हे रामचंद्र रात्रि विषे राजा वि
दूरथ स्वर्णके मंदिर विषे शय्याऊपर विश्राम करत भया ॥ कैसे शय्या है ॥ जु शुक्ल
है जैसे चंद्रमाकी न्याई शीतल अरु सुंदर है ॥ तिस ऊपर किवाड़को बंद करकर वि
श्राम कीया ॥ अरु मंत्रीयोंके साथ विचार कीया ॥ जु प्रातःकालको उठकर ऐसे युद्ध
करेंगे ॥ ऐसे विचार करके सेन कीया ॥ मुहूर्त एक पर्यंत राजा सोया ॥ बहुड़ चिंता कर
सो जागवता ॥ अरु दोनो देवीयां भी आकाशते उतर कर इह विषे सूक्ष्म प्रमाणके रंध्र
सो प्रवेश कीया ॥ जैसे संध्याकाल सोकमल मुखको मूंदते हैं ॥ तिनो विषे वायु प्र
वेश करजावे ॥ तैसे मंदर मों सूक्ष्म प्रमाणोंके मार्गकर कंदर विषे प्रवेश कीया ॥
राम उवाच ॥ हे भगवन शरीरके साथ प्रमाणोंके रंध्रोंके विषे देवीयोंके प्रवेश
करत भईया ॥ इह लोक मलकीतत ते भी सूक्ष्म होते हैं ॥ वसिष्ठ उवाच ॥ हे रामचं
द्र आधान करजो अधिक शरीर उठे हूया है ॥ तिस अधिभूत शरीर करके आपने सूक्ष्म
रंध्र विषे प्रवेश कोऊ नहीं कर सकता ॥ परमनतू यीशरीरको नारीककोऊ नहीं
सकता ॥ हे रामचंद्र देवी अरु लीलाका आतिवाहक शरीर था ॥ तिसने सूक्ष्म प्र
माणोंके मार्ग उनको प्रवेश करणेका यत्न कछु न हूया ॥ जो उनको अधिभूतक
शरीर होता ॥ तौ यत्न भी होता ॥ जहां अधिभूतक न होवे ॥ तहां यत्न किसका होवे
हे रामचंद्र और भी शरीर विनतृ पड़े ॥ पर जैसा निश्चे अनुभव से विन विषे होता
है ॥ तैसे ही सिद्ध ना होती है ॥ अन्यथा नहीं होती ॥ तिसके निश्चे विषे इह शरीर आ
दिक आकाश रूप है ॥ तिसको अधिभूतकका अनुभव नहीं होता ॥ अरु निश्चे वि
षे अधिभूतक दृढ़ हूया है ॥ तिसको आतिवाहकका अनुभव नहीं होता ॥ जिस
पुरुषको हर्व अर्थका अनुभव नहीं ॥ तिसको उत्तर अर्थ विषे गमन नहीं होती
जैसे वायुका चलना ऊर्ध्वको नहीं होता ॥ तिलकास्पर्श होता है ॥ अरु अग्निका
चलना अधःको नहीं होता ॥ जैसे आदि चैतन्य संवित विषे प्रवर्त भई है ॥ तैसे अव लग
स्थित है ॥ तौ ते जिसको आतिवाहक शक्ति उठे भया है ॥ तिसको अधिभूतक नहीं रह
ता ॥ अरु जिसको अधिभूतकता दृढ़ है ॥ तिसको आतिवाहक शक्ति उदे नहीं होती
हे रामचंद्र जो पुरुष छाया विषे वैठा होवे ॥ तिसको धूपका अनुभव नहीं होता ॥ अ
रु जो धूप विषे ठाढ़ा है ॥ तिसको छायाका अनुभव नहीं होता ॥ अनुभव भी तिसका होता
है ॥ जिस कि चित विषे दृढ़ता होती है ॥ अन्यथा किसीको कदाचित नहीं होता ॥ हे रा
मचंद्र जैसा प्रमाणा चित संवित चित विषे होता है ॥ जब लग और अर्थ नहीं होती
तब लग तैसे ही सिद्धता होती है ॥ जैसे जेवड़ी विषे सर्प भासता है ॥ अरु भय करके
पायमान होता होता है ॥ सो कंपना भी तब लग है ॥ जब लग सर्पका अनुभव अन्य
था नहीं होता ॥ जब जेवड़ीका अनुभव उदे हूया ॥ तब सर्पका भ्रम नष्ट होजाता है ॥ तै
से ही जैसा अनुभव चित संवित विषे प्रमाण दृढ़ होरहा है ॥ तिस ही का अनुभव
होता है ॥ इह वारता वालक भी जाणते हैं ॥ जो जैसी चितकी भावना होती है ॥ तैसा

होइ रूप भासता है॥ निश्चै गोर होवै॥ अरु अनुभव गोर प्रकार होवै॥ सो कदाचित न
हीं होता॥ हे रामचंद्र जिनकों इह आकार स्वप्न संकल्प पुरकी न्याई हूए है॥ सो आ
भास रूप हूए है॥ जिनकों ऐसा निश्चै होवै॥ तिनकों राककों कोऊ नहीं सकता॥ अरु भी
सर्व का चित मात्र शरीर है॥ पर जैसे जैसे वेदना है हम ही है॥ तैसा तैसा आपकों
जाणते है॥ हे रामचंद्र आदि सर्ग आत्मा ने स्वभाव उठया है॥ सो अकारण रूप है॥
पछे ते प्रमाद करहे तेकार ज कारण रूप होइ कर स्थित भया है॥ हे रामचंद्र आका
श तीन है॥ एक चिदाकाश है॥ एक चित्ताकाश है॥ एक भूताकाश है॥ तिन विषे वा
स्तव एक चिदाकाश है॥ अरु भावना करके भिन्न भिन्न कल्पना हूई है॥ आदि सृ
चिदाकाश अचेत्य चिन्मात्र विषे जो संवेदन फुरी है॥ तिसका नाम चित्ताकाश
है॥ तिस विषे इह संपूर्ण जगत हूया है॥ हे रामचंद्र चित्त रूपी जो शरीर है॥ सो स
र्वगत होइ कर स्थित भया है॥ जैसा जैसा स्पंद तिस विषे होता है॥ तैसा होइ कर
भासता है॥ जेते कछु सर्व पदार्थ है॥ तिस सर्वों विषे व्याप रहा है॥ अरु सर्व राके
अंतर भी सूक्ष्म भाव कर स्थित भया है॥ आकाश के अंतर भी व्याप रहा है॥ कमल
अरु इह फल तिसके अंकुर विषे भी रस रूप होइ कर स्थित भया है॥ जिसते पत्र फल हो
ते है॥ जल विषे तरंग होइ कर स्थित भया है॥ अरु शैल जो पर्वत है॥ तिनके अंतर
भी इही फुरता है॥ अरु मेघ होइ कर भी इही भरषता है॥ अरु जलते वर्षा भी चित ही
होता है॥ अनंत आकाश रूपी भी इही है॥ परमाणु रूपी भी इही है॥ अनंत वाह्य सर्व
जगत कर इही है॥ तेता कछु जगत है॥ सो चित रूप ही है॥ अरु वास्तव आत्मा साथ
अनन्य रूप है॥ जैसे समुद्र अरु तरंग विकछु भेद नहीं॥ तैसे आत्मा अरु चित वि
षे कछु भेद नहीं॥ जिस पुरुष कों ऐसे अखंड सत्ता आत्मा का अनुभव हूया है॥ अरु
सर्ग के आदि चित ही जिसका शरीर है॥ अधिभूतक ताकों नहीं प्राप्त भया॥ सो
महा आकाश रूप है॥ जिनकों पूर्व ला स्वभाव स्मरण रहा है॥ इसकारणते तिन
का आतिवाहक शरीर है॥ हे रामचंद्र जिस पुरुष कों आतिवाहक विषे अहं प्रत्य
य है॥ तिसकों सब जगत संकल्प मात्र होता है॥ अरु जहां जावणे की इछा उह करता
है॥ तहां जाता है॥ आवरण कोऊ उसकों रोक नहीं सकता॥ अरु जिसकों अधिभूत वि
षे निश्चै है॥ तिसकों आतिवाहक प्राप्त नहीं होती॥ हे रामचंद्र सब ही आतिवाहक
रूप है॥ पर भ्रम करके अन होता है अरु अधिभूतक देखते है॥ जैसे मार्ग रूपल विषे
जल भासता है॥ स्वप्न विषे जैसे वंध्या के पुत्र का सद्भाव होता है॥ तैसे अधिभूत
क जगत भासता है॥ रामउवाच॥ हे भगवन चित्त मयी क्यों है॥ अरु कैसे होता है॥
अरु कैसे नहीं होता अरु जगत कैसे चित्त रूप है॥ अरु चित्त विषे अन्यथा कैसे होता
है॥ वसिष्ठउवाच॥ हे रामचंद्र एक एक जीव प्रति चित्त होता है॥ जैसा जैसा चित्त
है॥ तैसा तैसा भासता है॥ अरु चित्त विषे जगत भ्रम होता है॥ चित्त विषे कल्प अरु सं
पूर्ण जगत उदे होइ आवता है॥ अरु चित्त विषे संपूर्ण लय हो जाता है॥ किसी कों
निमेष विषे कल्प होइ आवता है॥ किसी कों क्रम करके भासता है॥ सो तू सुण॥ हे
रामचंद्र जब मरणे की मूर्छा होती है॥ तिस महा प्रलय रूपी मृतक मूर्छा के अनंतर
नाना प्रकार का जगत उसकों फुर आवता है॥ तैसे स्वप्न विषे सृष्टि फुर आवती है
जैसे संकल्प का प्रभासता है॥ तैसे मृतक मूर्छा के अनंतर सृष्टि भासती है॥ जैसे म
हा प्रलय के अनंतर आदि विराट रूप ब्रह्मा होता है॥ तैसे मृतक के अनंतर इसकों अनु

भव होता है॥ इह भी विराट होता है॥ काहे ते जो इसका मन ही प्रथम आगे होता है॥ रा
म उवाच॥ हे भगवन मृतक के अनंतर जो सृष्टि होती है॥ सो किस कारण रूप है॥ वसिष्ठ
उवाच॥ हे रामचंद्र जब महा प्रलय होती है॥ तब ब्रह्म विष्णु रुद्रादिक सभ विदेह मुक्त
होते है॥ बहुड़ उत्पत्ति संभव कैसे होवै॥ इस आदिक जो बोध आत्मा है॥ जब विदेह
मुक्त हूए॥ तब उत्पत्ति संभव कैसे है॥ अरु अब के जो जीव है॥ तिनका जन्म मरण स्म
रण कारणते होता है॥ काहे ते जो मोक्ष नहीं होते॥ मोक्ष का उनकों अभाव है॥ हे रा
मचंद्र जब इह जीव मरते है॥ तब मृतक मूर्छा होते है॥ पर केवली भाव विषे स्थि
त नहीं होते॥ मूर्छा करि उसकों चित्त कला आकाश रूप होती है॥ तिसते बहुड़
चित संवेदन फुर आवती है॥ तब क्रम करके जगत फुरता है॥ जब बोध होता है॥
तब तन्मात्रा अरु काल क्रिया भाव अभाव स्थावर जंगम जगत सभ आकाश रू
प हो जाते है॥ अरु जिसकों संवेदन इह प्रपंच की उलटी आवती है॥ तिसकों मृतक मूर्छा
के अनंतर संवेदन फुरती है॥ तिसकर शरीर की भ्रांति भास आवती है॥ कैसा शरीर
है॥ आतिवाहक शरीर है॥ पर चिरकाल की प्रतीति करके अधिभूतक होइ भासता
है॥ तब इसकों देश काल क्रिया आधार आधेय उदे होइ कर स्थित होते है॥ तैसे वा
यु स्पंद अरु अस्पंद रूप है॥ जब स्पंद होती है॥ तब भासती है॥ अरु अस्पंद हूए ते
नहीं भासती॥ तैसे संवेदन करके जगत भासता है॥ तब जाणता है मै हूं उ
पजया हूं॥ जैसे स्वप्न अंगना का स्वप्न विषे स्पर्श का अनुभव होता है॥ सो भी मिथ्या
है॥ तैसे भ्रम करके आपकों उपजया देखता है॥ सो भी मिथ्या है॥ हे रामचंद्र जहां इ
ह जीव मृतक होता है॥ तहां ही जगत भ्रम देखता है॥ अरु वास्तव ते जीव भी आ
काश रूप है॥ पर अज्ञान करके आपकों उपजया मानता है॥ अरु आगे जगत भ्र
म देखता है॥ अरु वास्तव ते जीव भी आकाश रूप है॥ अरु जगत भी आकाश रूप है॥
पर अज्ञान करके आपकों उपजया मानता है॥ अरु आगे जगत भ्रम देखता है॥ इह
नगर है॥ इह पर्वत है॥ इह सूर्य चंद्रमा है॥ इह तारागण है॥ अरु जरा मरण आधि
व्याधि संकट करके व्याकुल होता है॥ भाव अभाव भय स्थूल सूक्ष्म चिरभ्र चिर नदी
यां पृथिवी पर्वत भूत भविष्य वर्तमान लय अलय भूमि कों देखता है॥ मै उपज
या हों॥ अमुक के का पुत्र हों॥ इह मेरा कुल है॥ इह मेरा माता है॥ इह मेरा बांधव है॥ ए
ता धन इसकों प्राप्त भया है॥ इत्यादिक वासना जालों विषे दुःखी होता है॥ अरु क
हता है॥ इह सुख है॥ इह दुःख है॥ प्रथम मै बालक था अब मै वीर्य हूं अवस्था भई
है॥ इह मेरा वर्ण है॥ इत्यादिक जगत कल्पना एक एक जीव कों उदे होती है॥ हे रा
मचंद्र संसार रूपी एक वृक्ष उदे हूया है॥ चित्त रूपी बीज है॥ तारागण तिसके फूल
है॥ अरु मेघ चंचल पत्र है॥ अरु जंगम जीव मनुष्य देवता दैत्य आदिक पक्षी व
ठे गोवाले है॥ अरु रात्रि तिसकी पर भूउ है॥ अरु समुद्र तिसकी तल्ला वडी है॥ अ
रु पर्वत उस विषे सिलावटे है॥ अरु अनुभव रूप अंकुर है॥ जहां इह जीव मरता
है॥ तहां चित्त विषे देखता है॥ इस प्रकार एक एक जीव कों अनेक जगत भासते
है॥ हे रामचंद्र कई कोटि ब्रह्मा अरु रुद्र इंद्र पवन सूर्य आदिक हूए है॥ काहे ते
जु जहां सृष्टि है॥ तहां इह भी होते है॥ जो ते चिदणु विषे अनेक सृष्टि है॥ जो जी
व भी अनंत है॥ सो तिनां विषे सुमेरु मंडल दीप लोकों का की मिलत कहां होवै॥
जो जीव चिदणु विषे सृष्टि का अंत नहीं॥ तो परमब्रह्म विषे अनंत कहा होवै॥ अरु

वासनवनेहूनहीं॥ जैसेपर्वतकीकथविषे सिलपीउनलीयाकल्पे॥ नोकछु
हैनहीं॥ तैसेजगतचिदाकाशविषेहैनहीं॥ मननमात्रहीहै॥ हेरामचंद्र मनन॰
अरुस्मरणभीचिदाकाशरूपहै॥ अरुचिदाकाशहीविषे मननअरुस्मरणहै॥ जै
सेतरंगभीजलहीरूपहै॥ अरुजलहीविषेतरंगहोताहै॥ जलतेंइतरतरंगकछु
वस्तुनहीं॥ तैसेमननस्मरणभीचिदाकाशरूपजाणु॥ हेरामचंद्र द्रष्टकछु
भिन्नवस्तुनहीं इच्छाहीदृष्टकीन्याईहोकरभासताहै॥ जैसेइंद्रमणिकाप्रकाश॰
नानाप्रकारहोइभासताहै॥ तैसेचिदाकाशकाप्रकाशनानाप्रकारकाजगतहोइ
भासताहै॥ इहविश्वसभचिदाकाशरूपहै॥ इसकोंतोश्रेसेहीभासताहै॥ जिस॰
कोंइहजगतअर्थरूपभासताहै॥ इसीकारणतेंकहाहै॥ जुलीलाअरुसरस्वती
आकाशरूपथे॥ अरुसर्वज्ञथीयां॥ स्वच्छरूपनिराकारथे॥ जहांचाहेतहांजाइप्रा
पतहोवे॥ जैसीइच्छाकरेतैसीसिद्धहोवे॥ काहेतेंजु जिसकोंचिदाकाशकाअनुभ
वहूयाहै॥ तिसकोंकुइआदिकरोकनहींसकते॥ सर्वरूपहूएकरजुस्थितहूया
तिसकोंगृहविषेप्रवेशकरणक्याआश्चर्यहै॥ उइआतिवाहकरूपहै॥ इतिश्री॰ त्य
ति॰ प्र॰ क॰ रा॰ लीलोपाख्यानेस्वप्नअनुभववर्णनंनामअष्टविंशमसर्गः॥२८॥
उंवसिष्ठउवाच॥ हेरामचंद्रजबदोनोंदेवीयांराजाकेअंतःपुरविषेप्रवेशकरस्थि
तभईयां॥ चंद्रमाकीन्याईकांतहै जिनकी॥ अरुनिर्मलकल्पवृक्षोंकीसुगंधपव॰
करशरीरकोंस्पर्शभईहै॥ तबवहअंतःपुरविषेभया॥ अरुशीतलताकर॰
आधिनाशवानभया॥ जैसेनंदनवनहोताहै॥ तैसेअंतःपुरभया॥ जैसेप्रातःकाल॰
विषेसूर्यकाप्रकाशहोताहै॥ तैसेदेवीयांकेप्रकाशकरअंतःपुरपूर्णभया॥ मानो
देवीयांकेप्रकाशसोंराजाउपरअमृतकोसंचनाभई॥ तबराजादेखतभया॥ मानोंसु
मेरुकेस्रंगतेंदोनोंचंद्रमाउदेहूएहैं॥ ऐसेदेखकरविस्मयकोंप्राप्तभया॥ बहुडवि
तवनाकरतभया॥ जुइहदेवीयांहैं॥ सिजानेंउठिखडाहूया॥ जैसेशेषनागकीसिय्या
तेविस्नुभगवानउठिताहै॥ तैसेउठकरवस्त्रओढकरहाथोंविषेपुष्पलीए॥ हाथ
जोडकरदेवीयांकेचरणोंऊपरचडाए॥ अरुमस्तकटेकया॥ पद्मआसनबंधकरपृ
थिवीऊपरबैठा॥ अरुकहतभया॥ हेदेवीयांतुमारीजैहोवे॥ तुमदुःखरूपीतपतकेना
तुमशांतकरणहारेचंद्रमाहो॥ अरुअपूर्वसूर्यहो॥ तबऐसेराजाप्रजनकरकहा॥ ति
सतेंअनंतरमंत्रीयोंराजाकेपाससोयाथा॥ जैसेनदीकेतटऊपरफूलोंकाढेरहोवे
तैसेराजासोयाथा॥ तिसकेजन्मअरुकुलकेकहावणेनिमित्तसंकल्पकरकेदेवीजग॰
गावतीभई॥ तबमंत्रीभीउठकरफूलोंकरदेवीयोंकोपूजनकरिप्रणामकरकेराजाके॰
समीपबैठगया॥ तबसरस्वतीकहतभई॥ हेराजातूंकवनहै॥ किसकापुत्रहै॥ अरु
कबकाजन्मलीयाहै॥ हेरामचंद्रजबइसप्रकारदेवीपूछया॥ तबतिसकामंत्रीबोला
थासोबोलतभया॥ हेदेवीतुमारीकृपाकरिराजेकाजन्मअरुकुलमैंकहताहों
इक्ष्वाकुकुलविषेएकराजाहोतभया कमलकीन्याई तिसकेनेत्र अरुशोभावानथा
अरुतिसकानामकुंदरथभयाहै॥ तिसकापुत्रभद्ररथभया॥ तिसकापुत्रविश्वर
थहोतभया॥ तिसकापुत्रबृहद्रथहोतभया॥ तिसकापुत्रसिंधुरथहोतभया
तिसकापुत्रशैलरथहोतभया॥ तिसकापुत्रकामरथहोतभया॥ तिसकापुत्रमही
रथहोतभया॥ तिसकापुत्रविष्णुरथहोतभया॥ तिसकापुत्रकलारथहोतभया
तिसकापुत्रसूर्यरथहोतभया॥ तिसकापुत्रनभरथहोतभया॥ तिसनभरथका॰
पुत्रवडेपुण्योंकरकेविदूरथहोतभयाहै॥ जैसेक्षीरसमुद्रसोंचंद्रमानिकसताहै

तैसेसुमित्रामातातेंउपजयाहै॥ जैसेगौरीजीतेंस्वामिकार्तिकउत्पत्तिभयाहै
हेदेवीजीइसप्रकारतोहमारेराजेकाजन्महूयाहै॥ तबदशवर्षोंकाभया॥ तब
पिताराजइसकोंदेइकरआपवनकोंउठिगयाहै॥ तिसदिनतेंलेकरइसधर्मसे॰
कीमर्यादासाथपृथिवीकीपालनाकरीहै॥ अरुबडेपुण्यकीयेहैं॥ जोतिनोंपु॰
ण्योंकाफलतुमारादर्शनइसकोंप्राप्तभयाहै॥ हेदेवीजीतुमारेदर्शनकेनि॰
मित्तजोबडेतेंतपकरतेहैं॥ तिनकोंभीतुमारादर्शनपावणाकठनहै॥ तोतिनइ॰
सकेबडेपुन्यहैं॥ जुतुमारादर्शनप्राप्तभया॥ तुमारेदर्शनकरअबइहपरम॰
पावनपदकोंप्राप्तभयाहै॥ हेरामचंद्रइसप्रकारकहकरमंत्रीचुपहोकरतभ
या॥ तबदेवीजीकृपाकरकेराजाविदूरथकेसीसपरहाथराखतभयी॥ अरुक
हाहेराजनतूंअपणेपूर्वजन्मकोंविवेकदृष्टिकरकेदेखकितूंकवनहै॥ तबइस
प्रकारदेवीकहा॥ तबराजाकेहृदेविषेजोअज्ञानतमथा॥ सोदेवीकेहाथरा॰
खणेकरनिवर्तहोतभया॥ अरुहृदाप्रफुलतहोइआया॥ जैसेसूर्यकेप्रकाशकरि
सूर्यमुखीकमलप्रफुलतहोतेहैं॥ तैसेदेवीकेप्रसादकरराजाकाहृदाप्रफुलत
भया॥ तबराजाकोंपूर्वलीस्मृतफुरआई॥ लीलाअरुपद्मराजाकावृत्तांतसंपूर्ण
स्मरणकरकेकहतभया हेदेवीवडाआश्चर्यमैंजाणयाहै॥ जुइहजगतमननकरके॰
रचयाहै॥ तेरेप्रसादकरमैंजाणयाहै॥ जुमैंपद्मराजाथा॥ अरुलीलामेरीस्त्रीथी
एकदिनमुझकोंमृतकहूएबीत्याहै॥ अरुइहांसत्तरवर्षकाभयाहों॥ सोमैंभ्रम
करकेभीनहींजाणया॥ अनेकजाणताहों॥ अरुअनेककार्यजोमैंकीयेहैं॥ सत्त
रवर्षोंविषेसोमुझकोंस्मरणहोतेहैं॥ अरुअपितामहभीमुझकोंस्मरणवि
षेआवताहै॥ अपणीबालकअवस्थास्मरणविषेआवतीहै॥ योवनअवस्था॰
भीस्मरणविषेआवतीहै॥ मित्रबांधवस्मरणहोतेहैं॥ इहबडाआश्चर्यहूया॥
सरस्वत्युवाच॥ हेराजनजबइहमृतकहोताहै॥ तबइसकोंबडीमृतकमूर्छाहो
तीहै॥ तिसमूर्छाकेअनंतरऔरलोकभासआवतेहैं॥ एकमुहूर्तविषेअनेकवृ॰
र्षोंकाअनुभवहोताहै॥ जैसेस्वप्नेविषेएकमुहूर्ततेंसोंअनेकवर्षोंकाअनुभवहो
ताहै॥ तैसेतुझकोंमृतकमूर्छाकेअनंतरइहलोकभ्रमभासआयाहै॥ हेराजनतूं॰
जोपद्मराजाथा॥ तिसअपणेगृहविषेमृतकहूएतुझकोंएकमुहूर्तबीतयाहै
अरुइहांतुझकोंबहुतेवर्षोंकाअनुभवभयाहै॥ अरुतिसनेभीजोपिछलाह
तांतहै॥ सोश्रवणकर॥ हेराजनएकपहाडकेऊपरग्रामथा॥ तिसविषेवसि
ष्ठब्राह्मणथा॥ अरुंधतीतिसकीइस्त्रीथी॥ दोनोमंदिरविषेरहतेथे॥ तिसअरुं
धतीनेमुझसोंवरलीयाथा॥ जुजबमेराभरतामृतकहोवे॥ तबउसकाजीवइसी
मंडपआकाशविषेरहै॥ हेराजनजबउहमृतकभया॥ तबउसकापुर्यष्टकाउस
हीमंदिरविषेरहा॥ तिसकोंमंदिरविषेजुराजकीदृढवासनाथी॥ तिसमंडप
आकाशविषेतिसकोंपद्मराजाकीसृष्टिफुरआई॥ अरुअरुंधतीइस्त्रीतिसकों
लीलाहोइकरप्राप्तभई॥ अरुपद्मकामंडपउसब्राह्मणकेमंडपआकाशविषे
स्थितफुरया॥ बहुडतिसमंडपविषेराजाअंतःस्मृतकभया॥ तबतेरासंवितविषे
नानाप्रकारकेआरंभसंयुक्ततुझकोंइहजगतफुरआया॥ हेराजनइहतेराजगतहै
सोपद्मराजाकेहृदेविषेफुरयाहै॥ अरुपद्मराजाकेमंडपआकाशविषेस्थितहै॥
सोउसहीवसिष्ठब्राह्मणकेगृहआकाशविषेस्थितहै॥ हेराजनजहांतुमअरुह
मसभबैठेहैं॥ इहजोजगतहै॥ सोउसीब्राह्मणकेमंडपआकाशविषेस्थितहै॥ अरु
उहीवसिष्ठब्राह्मणतूंविदूरथराजाभयाहै॥ सोकैसेस्थितहै॥ जैसेआकाशहीवि॰

वि आकाश स्थित है॥ हे राजन इह सभ जगत प्रतिभा मात्र है॥ मनकी कल्पना कर
के भासता है॥ उपजया कछु नहीं॥ विद्रथ उवाच॥ आश्चर्य है॥ जैसे मेरा इह जन्म
भ्रम रूप भया॥ तैसा इक्ष्वाकु का कुल भ्रम रूप॥ तैसे मेरा पिता माता तैसी भूमी तु
भ्रम रूप भई॥ तिस विषे मैं जन्म लीया॥ बहुड बालक हूया द्वादश वर्षो का लव पिता
मृतकों राज देइ कर वनवास लीया॥ बहुड मैं दिग विजय करके निःकंटक राज
कीया॥ धर्म यज्ञ कर्म करके मैं प्रजा की पालना करी॥ सत्तर वर्ष का मृतकों अनुभ
व होता है॥ अरु अव मृतकों दारुण अवस्था युद्ध की आन प्राप्त भई है॥ युद्ध क
रके रात्रि कों मैं गृह विषे आन स्थित भया हों॥ बहुड इ दोनो देवीयां मेरे गृह विषे आ
इयां है॥ मै इनकी पूजा करन भया हों॥ बहुड मृतकों इनों पूछया है॥ दोनों विषे एक
देवी कृपा करके मेरे सीस विषे हाथ रखा है॥ तिस कर मृतकों ज्ञान प्रकाश भ
या है॥ जैसे सूर्य के प्रकाश कर कमल प्रफुल्लत होता है॥ तैसे मेरा हृदा देवी के प्र
साद कर प्रफुल्लत भया है॥ इनकी कृपा तें मैं कृतकृत्य भया है॥ अव मेरा संशय सभ
नष्ट भया है॥ अरु परम निर्वाण समनासघ निर्मल पद कों प्राप्त भया हों॥ ऐसा
मेरा अनुभव होता है॥ सरस्वत्युवाच॥ हे राजन जेते कछु तू कों भासता है॥ सो सभ
भ्रम मात्र है॥ नाना प्रकार के व्यवहार भी अरु लोकांतर भी भ्रम मात्र है॥ काहे तें मृत
होन कों स्थल रूप॥ एक मुहूर्त में विलीन भया है॥ तिस तें अनंतर उसी मंडप आका
श विषे तू कों इह जगत भास्या है॥ अरु उह पद्म राजा की सृष्ट ब्राह्मण के मंड
प विषे स्थित है॥ काहे तें जु तेरी शुद्ध सृष्ट का इसी मंडप आकाश विषे ही स्थित है
न हों ही न तू कों नदीयां पर्वत समुद्र पृथिवी आदिक भूत संपूर्ण जगत भास आ
या है॥ जैसे समुद्र विषे तरंग आवने जावने है॥ तैसे तू कों जगत भास आया
है॥ हे राजन स्वप्न मूर्छा के अनंतर कवहूं उही जगत भासता है॥ कवहूं और प्रकार
का भासता है॥ कवहूं पूर्व अरु अपूर्व मिश्रत भासता है॥ सो मन की कल्पना कर के
भासता है॥ वास्तव तें असत रूप है॥ अज्ञान कर के असत्य की न्याई भासता है॥ जैसे
एक मुहूर्त के स्वप्न कर के स्वप्न विषे वहु तें वर्षों के कर्म देखता है॥ तैसे जगत का अनु
भव होता है॥ जैसे संकल्प पुर विषे अपना जीवणा बहुड मरणा देखता है॥ जैसे गंध
र्व नगर भ्रम मात्र होता है॥ जैसे नौका विषे वैठे हूए कों तट के वृक्ष चलते भासते
है॥ जैसे भ्रमण कर के पर्वत पृथिवी मंदर भ्रमते भासते है॥ जैसे स्वप्न विषे अपणा
सीस काटया भ्रम कर के भासता है॥ तैसे इह जगत भ्रम कर भासता है॥ हे राजन अ
ज्ञान कर के मिथ्या कलना तू कों उपजी है॥ वास्तव तें न तू मृतक भया है॥ न जन्म
लीया है॥ शुद्ध विज्ञान शांत रूप है तू॥ अपणा आप जो आत्म पद है॥ तिस विषे स्थि
त हो॥ नाना प्रकार का जगत अज्ञान भासते की न्याई है॥ सम्यक ज्ञान कर के सर्व
आत्म सत्ता भासती है॥ आत्म सत्ता ही जगत की न्याई भासती है॥ जैसे वडी मन का
कंचन नाना प्रकार का होइ भासता है॥ सो सम्यक ज्ञान कर कछु नहीं॥ तैसे आत्म सत्ता
का कंचन आकाश आदिक जगत भासता है॥ विद्रथ सम इहु मन सभ कंचन रूप है॥ जैसा
कछु जगत विस्तार तू कों भासता है॥ सो लीला अरु पद्म राजा के मंडप आकाश वि
षे स्थित है॥ अरु इह लीला पद्म का राज्य था तो उ सभ वसिष्ठ ब्राह्मण के मंडप आकाश
विषे स्थित है॥ हे राजन इह जगत वसिष्ठ ब्राह्मण के हृदे मंडप आकाश विषे पड़ा
फुरता है॥ कैसा है मंडप आकाश॥ जु आकाश ही विषे आकाश स्थित है॥ न पृथिवी
है॥ न कोऊ उपवन है॥ न कोऊ सैल पर्वत है॥ न कोऊ मेघ है॥ न कोऊ समुद्र है॥ न कोऊ म
नुष है॥ केवल शून्य विषे शून्य स्थित है॥ और न कोऊ जगत है॥ न कोऊ देषणे वाला है

विद्रथ उवाच॥ हे देवि जो ऐसे है॥ तौ इह मेरा भृत्य भी आत्मा विषे सत्त है॥ अथ
वा असत है॥ इह कहो॥ देव्युवाच॥ हे राजन विदित वेद जो पुरुष है॥ सो शुद्ध
बोध रूप है॥ तिन कों कछु भी जगत सत रूप नहीं भासता॥ तैसे तिन पुरुषों कों
सभ चिदाकाश रूप ही भासता है॥ जैसे जेवड़ी विषे सर्प भ्रम निवृत हूया॥ तव वा
हु सर्प नहीं भासता॥ तैसे जिन पुरुषों कों आत्मबोध हूया है॥ अरु जगत भ्रम नि
वृत हूया है॥ तिन कों जगत सत्त नहीं भासता॥ तैसे जिन कों आत्मबोध हूया है॥ अरु
जगत कों असत्य जाण्या है॥ तिस कों सत्त नहीं भासता॥ हे राजन जैसे स्वप्न विषे को
ऊ भ्रम कर के आपणा सीस काटया देखता है॥ जागे तें स्वप्ना का मरणा नहीं देख
ता॥ तैसे ज्ञानवान कों जगत नहीं भासता॥ जैसे स्वप्न का मरणा भ्रम कर के सत्य दे
खता है॥ तैसे अज्ञानी कों जगत सत्य भासता है॥ परवास्तव कछु नहीं॥ शुद्ध बोध वि
षे जगत भ्रम नहीं भासता॥ जैसे सतें काल विषे मेघों ते रहित शुद्ध आकाश होता
है॥ तैसे शुद्ध बोध वाले कों अहंत्व आदिक दृश्य भावों का अभाव होता है॥ शुद्ध
विज्ञान घन रूप तिस का शेष रहता है॥ वाल्मीकि उवाच॥ इस प्रकार जव देवी अ
रु विद्रथ का संवाद वसिष्ठ जी ने राम चंद्र कों कह्या॥ तव सूर्य अस्त भया॥ सर्व सभा
परस्पर नमस्कार कर के स्नान कों गए॥ रात्रि जव व्यतीत भई॥ तव सूर्य की किरणा
सहित सभ आपस आपणे स्थान ऊपर आइ वैठे॥ इति श्री लीलोपाख्याने भ्रांति वि
बोधो नाम षड्विंशो सर्गः॥ २६॥ ॥ ॥ वसिष्ठ उवाच
हे रामचंद्र जु एक प्रबोध है॥ अरु इह जो परम पद विषे स्थित नहीं भया॥ तिस कों
जगत वज्र सार की न्याई दृढ़ भासता है॥ जैसे मूर्ख बालक कों अपणी परछाई विषे वैता
ल भासता है॥ अरु मरण पर्यंत दुख देता है॥ तैसे अज्ञानी कों असत रूप जगत सत हो
भासता है॥ जैसे मारूथल विषे मृग कों असत्य रूप जल भासता होइ भासता है॥
तैसे मूढ़ बुद्धि कों असत रूप जगत सत होइ भासता है॥ जैसे स्वप्न विषे कृया अर्थ का
र भ्रम कर के होता है॥ तैसे अज्ञानी कों असत रूप जगत सत होइ भासता है॥ जैसे स्व
प्न विषे जिस कों स्वर्ण बुध नहीं होती॥ तिस कों भूषण उइ सत्त भासता है॥ तैसे अ
ज्ञानी कों असत रूप जगत सत होइ भासता है॥ जैसे नेत्र दूषण कर के आकाश वि
षे मुक्ता माला भासती है॥ तैसे असम्यक दर्शी कों असत्य रूप जगत सत होइ भा
सता है॥ हे रामचंद्र इह जगत दीर्घ काल का स्वप्ना है॥ सो अहंता कर के दृढ़ जाग्रत
रूप होइ भासता है॥ वास्तव तें कछु उपज्या नहीं॥ वास्तव परम चिदाकाश है॥ सर्वदा
शांत रूप है॥ अचेत्य चिन्मात्र स्वरूप है॥ सर्वगत है॥ सर्व शक्ति सर्वात्मा है॥ जहां जहां
जैसा स्पंद फुरता है॥ तैसा तैसा जगत होइ कर भासता है॥ जैसे स्वप्न सृष्टि भासती है॥
सो स्वप्न सृष्टि चिदाकाश विषे स्थित है॥ तिस चिदाकाश विषे एक स्वप्न पुरुष फुरता
है॥ उहु द्रष्टा होइ कर दृश्य कों देखता है॥ सो द्रष्टा अरु दृश्य दोनों चेतन्य संवित आ
भास रूप है॥ हे रामचंद्र सर्ग ते आदि जो शुध आत्म सत्ता थी॥ तिस विषे आदि संवे
दन स्पंद हूया॥ सो ब्रह्मा जी है॥ तिस के संकल्प विषे इह संपूर्ण जगत स्थित है॥
इह संपूर्ण जगत स्वप्न की न्याई है॥ तिस स्वप्न रूप विषे तू मारा सदभाव हूया है॥ जै
से तुम सभ हो॥ तैसे मैं भी हों॥ जैसे स्वप्न विषे स्वप्न नर कों और स्वप्न नर होवे॥ जैसे स्वप्न न
गर वास्तव सत नहीं होता॥ तैसे इह जगत भी जो दृष्ट आवता है॥ सो भ्रम मात्र है॥ जे
से स्वप्न विषे असत्य ही सत्य होइ कर भासता है॥ तैसे इह भी अहंत्व आदिक भास
ता है॥ जैसे स्वप्ने विषे सभ कर्म पड़े होते है॥ तैसे इह भी जाणु॥ राम उवाच॥ हे भगवन

नस्वप्नतेंजवजागताहे॥ तवस्वप्नकेपदार्थअसद्रूपहोइजातेहे॥ अरुइहतुंज्योंकेत्यों
रहतेहे॥ जवदेषीये॥ तवश्रेसीहीहे॥ वहुरजाग्रतअरुस्वप्नतुल्यकैसेहुए॥ वसिष्ठउ
वाच॥ हेरामचंद्रजैसेस्वप्नाहे॥ तैसेजाग्रतहे॥ स्वप्नअरुजाग्रतविषेभेदकछुनही
स्वप्ननगरकौंभीस्वप्नद्रष्टाअसत्यतवजाणताहे॥ जवजागताहे॥ जवलगजाग्या
नही॥ तवलगअसत्यनहीजाणता॥ तैसेइहभीजवलगआत्मपदविषेनहीजाग्या
तवलगअसत्यनहीभासता॥ जवआत्मपदविषजागे॥ तवइहजगतभीअसत्यरूप
भासेगा॥ हेरामचंद्रइहजगतअसत्यरूपहे॥ परभ्रमकरकेसत्यकीन्याईभासताहे
जैसेस्वप्नकीइस्त्रीअसत्यरूपहोतीहे॥ अरुसत्यरूपजणावतीहे॥ तैसेइहजगतभी
असत्यरूपसत्यहोइदिषावताहे॥ आभासरूपजगतहे॥ अरुआत्मसत्तासर्वत्रसर्वदा
अहेतद्रूपहे॥ परजहांजैसेचेत्यताहे॥ तहांतैसेहोइकरभासताहे॥ जैसेरत्नविषे
अनेकरत्नहोतेहे॥ जिसकोंचाहीताहे॥ तिसकोंलेवीताहे॥ तैसेसर्वगतचिदाकाश
जहांजैसेचेत्यताहे॥ तहांतैसेहोइभासताहे॥ हेरामचंद्रजवदेवीविहरणरूपपरअमृत
रूपवचनोंकीवर्षा॥ तवउसकिरिदेविषाविवेकरूपेसुंदरअंकुरआनउत्पत्तिभया॥ व
हुरउसरस्वतीकहतभई॥ हेराजनजोकछुकहणाथा॥ सोमैंनेतुझकोंकहाहे॥ अवइह
सजातेहे॥ लीलाकोंदिषावणेकेनिमित्तहमआएथे॥ सोदिषायाहे॥ वसिष्ठउवाच॥
हेरामचंद्रजवइसप्रकारमधुरवाणीकरसरस्वतीजीकहा॥ तवउठवानजोराजाविदूर
थहे सोकहतभया॥ विदूरथउवाच॥ हेदेविमेंश्रवणसमावादर्शनकीयाहे॥ अरुवडेयों
कादर्शननिरर्थकनहीहोता॥ महाफलकादेवनहाराहे॥ तातेंइहवरमुझकोंदेवो॥
जोइसदेहकोंत्यागकरलोकांतरविषेपद्मकेशरीरदेहविषेजाइप्राप्तहोवो॥ हेदेवी
जीजोसगतशरणकोंआइप्राप्तहोताहे॥ वडेतिसकात्यागनहीकरते॥ उकाअर्थ
सिद्धकरतेहे॥ तातेंइहीवरमुझकोंदेवो॥ जोउसीदेहविषेजाइप्राप्तहोवो॥ मेंअरुमं
त्रीअरुभार्यालीलाभीमेरेसाथहोवे॥ सरस्वत्युवाच॥ हेराजनतेंऐसेहीहोवेगा॥ पद्मरा
जाकेशरीरविषेप्राप्तहोवेगा॥ अरुवोथसहिततिहमाककहोइकरराजकरेगा॥ हमारा
सेवनाकिसीकोंव्यर्थनहीहोता॥ जैसेकामनाकरकेकोउहमकोंसेवताहे॥ तैसेफ
लकोंप्राप्तहोताहे॥ इतिश्रीउत्पत्तिप्रकरणेलीलोपाख्यानेस्वप्नरूपसमताना
मत्रिंशसर्गः॥३०॥ ॥ ओं ॥ सरस्वत्युवाच॥
हेराजनअवतेंरणविषेमस्तकहोवेगा॥ मस्तकहोइकरपूर्वलेपद्मराजाकेशरीरवि
षेजाइप्राप्तहोवे॥ अरुतुमरीभार्याअरुमंत्रीभीतहांजाइप्राप्तहोवेगे॥ हेराजनत
मश्रेसेचलजावोगे॥ जैसेवायुचलीजातीहे॥ अवहमजातेहे॥ तुमाराअरुहमारा
कासाथहे॥ जैसेअश्वअरुमृगअरुवृक्षस्त्रीकासंगनहीहोता॥ तैसेतुमाराहमारा
क्यासंगहे॥ तुमारामार्गऔरहे॥ हमाराऔरहे॥ तातेंहमजातेहे॥ वसिष्ठउवाच॥ हेराम
चंद्रजवइसप्रकारदेवीजीकहा॥ तवएकपुरुषधाइनिकस्या॥ अरुकहतभया॥ हेराज
नशत्रुवहुतआएहे॥ अरुचक्रगदाआदिकशस्त्रोंकीवर्षाकरतेआवतेहे॥ जैसेप्रलय
कालविषेमहावलअस्ताचलआदिकपर्वतवायुकरउडतेहे॥ तैसेशस्त्रचलेआ
वतेहे॥ अरुसर्वदिशामोतकरपूर्णभईयांहे॥ जैसेमहाप्रलयविषेसर्वस्थानपूर्ण
होतेहे॥ जैसेसेनाकरसर्वस्थानपूर्णभएहे॥ अरुअग्निभीतिनोंलगाईहुईहे॥ तिस
करस्थानजलनेलागेहे॥ अरुदाहकरतेहे॥ अरुवाणनदीकेप्रवाहकीन्याईचले
आवतेहे॥ अग्निऐसेलगीहे॥ जैसेमहाप्रलयकीवडवाअग्निसमुद्रकोंसोषती
हे॥ तैसेनगरकोंजलावतीहे॥ तवदोनोंदेवीयांअरुराजाअरुमंत्रीऊंचेहोइकरक
रोषांविछ्यवेदेषणेलागे॥ क्यादेषाजोवडीसेनाचलीआवतीहे॥ जैसेप्रलय

कालविषेमेघआवतेहे॥ तैसेसेनाचलीआवतीहे॥ अरुजैसेप्रलयकीअग्निकरदि
शापूर्णहोतीयांहे॥ तैसेअग्निकीज्वालाकरदिसापूर्णभयेयांहे॥ अरुतिसतेंचिणगारे
उडतेहे॥ मानोंतारेगणगिडतेहे॥ अंगारोंकीवर्षाहोतीहे॥ तिसकरजीवपडेजलतेहे॥
अरुजोसुंदरइस्त्रीयांनानाप्रकारकेभूषणोंसहितपूर्णथीयां॥ सोतिनोंकीअग्निविषे
पडीयांजलतीयांहे॥ अरुगृहअरुवस्त्रपडेजलतेहे॥ अरुहाइहाइशब्दकरतेहे॥ अरु
वांधवोंकेनिमित्तझूंझोंकीन्याईपुकारतेहे॥ अरुजलनेजलतेवांधवअरुइस्त्रीयांकोंदू
ढतेहे॥ हेरामचंद्रइहआश्चर्यदेषाजोऐसेस्नेहकरकेजीवबांधेहूएहे॥ जोमरनेकालविषे
भीस्नेहकोंत्यागनहीकरते॥ इसप्रकारवडाक्षोभहूया॥ अरुसेनाकेलोकलोकोंकोंमा
रकरइस्त्रीयोंकोंलेलेजावे॥ कईअग्निविषेजले॥ हेरामचंद्रतिसकालमेंऐसाशब्दहूया
जारणभूमिकाकाणहूच्छपराया॥ ऐसाणहूकरे॥ हाइभाईहेपिताहाइमाताहाइपुत्र
हाइस्त्रीइत्यादिकशब्दोंकरणकामहारूढवादयागया॥ अरुजोउगांवलदहूदआदिक
पसूमिलगए॥ अरुअग्निकीज्वालावृद्धिहोतीजावे॥ वडाक्षोभआनहूया॥ जैसेमहाप्रल
यकीअग्निहोतीहे॥ तैसेसभइस्थानअग्निकरविदीर्णभए॥ तिनोंविषेअनेकजीवअरुस्था
नपडेदग्धहोवे॥ अरुदाहकरे॥ इतिश्रीलीलोपाख्यानेअग्निदाहवर्णनंनामएकत्रिंश
सर्गः॥३१॥ ॥ ॥ वसिष्ठउवाच॥
हेरामचंद्रइसप्रकारराजानगरकोंदेषताथा॥ जोउसपुरकीलीलासहेलीयांसहि
त॥ अपणाहूसरेस्थानतेंतहांआई॥ जहांराजाविदूरथथा॥ जैसेकमलोंकीमालाविषे
लक्ष्मीआवे॥ तैसेआई॥ महासुंदरभूषणकछुटटेहूए॥ कछुकसाथरहे॥ अरुसहेली
यांसाथआई॥ एकसहेलीकहतभई॥ हेराजनतेरेजोशत्रुथेसोवहतेरेआनपरेहे॥ अ
रुअंतःपुरविषेजोइस्त्रीयांथीयांसोभीलेगएहे॥ तिनोंमेंइहलीलारानीहेसहुरालेआ
एहे॥ जैसेइंद्रकेगृहविषेदैत्यआनपडे॥ अरुइंद्राणीकोंवचाइकरइहांपासलेआवे॥ ते
सेहमवचाइलेआएहे॥ अरुलोकोंकोंतिनोंशत्रुनेवडाकष्टदीयाहे॥ तुमारेहारेपरजो
सेनावैठीथी॥ तिसकोंउनोंचूर्णकरछोडयाहे॥ अरुनगरजलाइदीयाहे॥ लूटलीयाहे॥
हेरामचंद्रजवइसप्रकारराजेकोंसहेलीकहा॥ तवराजासरस्वतीजीकोंकहतभया॥
हेदेवीजीइहलीलातुमारीशरणआईहे॥ अरुचरणकमलोंकीभ्रमरीहे॥ इसीकीरषा
तुमकरणी॥ मेंअवयुद्धकरणेकोंरणकोंउठचला॥ जैसेमत्तहस्तीधावताहे॥ अथवा
सिंहकंदरातेंनिकसकरधावताहे॥ तैसेअर्धरात्रकेसमेराजाचला॥ जवऊहांलीला
सहेलीयांसहितआई॥ तवदेवीसाथजोप्रथमलीलाथी॥ सोदेषतभई॥ क्यादेषेतुअ
पणीमूर्तिसुंदरताआकारहे॥ जैसेआरसीविषेप्रतिविंवहोताहे॥ तैसेदेषकरकहत
भई॥ प्रबुद्धलीलोवाच॥ हेदेविइहमेंकिंउकरआनप्राप्तभईहे॥ जवमेंप्रथमआई
थी॥ तवमरुकोंमंत्रीटहलूपुरवासीअनेकदृष्टआएथे॥ उइहसमामेंतुझसोंनिवर्त
कीयाथा॥ वहुडइहजोमैंहोंइसप्रकारकेसेआनस्थितभईहों॥ अरुइहमपरूपकैसाधा
रयाहे॥ जिसकेअंतरवाह्यप्रतिविंवहोताहे॥ इहसंसामेवाहूरकरो॥ देव्युवाच॥ हेली
लेजैसेचित्तसंवित्तविषेस्फुरदस्फुरताहे॥ तैसेतानकालसिद्धहोताहे॥ जिसअर्थकोंचि
तवतीचित्तसंवित्तशरीरकोंत्यागतीहे॥ तिसीअर्थकोंजाइप्राप्तहोतीहे तिसीवि
णविषे॥ देशकालपदार्थकीचेतनाहोतीहे॥ जैसेस्वप्नसृष्टिफुरआवतीहे॥ तैसेप
रलोकसृष्टिफुरआवतीहे॥ तैसेपर॥ हेलीलेजवतेंरामभरतास्तनहोणलगाथा॥
तवरसकास्नेहजोतेरेविषेअरुमंत्रीयोंविषेऔरांविषेवहुतथा॥ तिसकरउडीशु
यसतहोइकरअपणेवासनाकेअनुसारभासेहे॥ जैसेसंकल्पपुरभासताहे॥ जै
सेस्वप्नसेनाभासतीहे॥ तैसेइहदेशकालपदार्थभासेहे॥ हेलीलेजोकछुपदार्थ

सतहूपहोइकरभासतेहैं॥ सोअज्ञानकालविषेभासतेहैं॥ ज्ञानकालविषेसभतलहो
जातेहैं॥ अधिकन्यूनकोईनहींरहता॥ जाग्रतविषेस्वप्नआरूढभासताहै॥ स्वप्नेविषे
जाग्रतकिअभावहोजाताहै॥ जाग्रतशरीरस्वप्नविषेनाशहोजाताहै॥ स्वप्नजन्मवि
षेअसतहोजाताहै॥ स्वप्नविषेजन्मअसतहोइजाताहै॥ हेलीलेजबइसप्रकारमन
कोंविचारदेषीये॥ तोसभअवस्थाभ्रांतमात्रहै॥ वास्तवकोऊनहीं॥ हेलीलेसर्गतेंआ
दिअरुमहाप्रलयपर्यंतहूयाकछुनहीं॥ सदाजैसीकीतैसीब्रह्मसत्ताअपणेआपवि
षेस्थितहै॥ जगतकल्पनाआभासमात्रहै॥ अज्ञानकरकेंभासताहै॥ जैसेआकाशवि
षेतरवरेभासतेहैं॥ तैसेआत्माविषेजगतभ्रमकरकेंभासताहै॥ अरुवास्तवतेंकछु
नभीकछुनहीं॥ जैसेसमुद्रविषेतरंगउपजकरलीनहोताहै॥ तैसेआत्माविषेजगत
उपजकरलीनहोताहै॥ तैतैंअहंत्वआदिकशब्दभ्रांतमात्रहै॥ हेलीलेइहजगतस्व
गतस्याकेजलवतहै॥ इसविषेआस्थाकरणीअज्ञानहै॥ अरुभ्रांतभीकछुभिन्नवस्तु
नहीं॥ जैसेचैतन्यसत्ताविषेयहभासताहै॥ सोयहकछुवस्तुनहीं॥ तैसेब्रह्मसत्ताज्यों
कीत्यों॥ भ्रांतभीकछुवस्तुनहीं॥ जन्मस्वप्नमोहसभअसतरूपहै॥ तैतेंकछुअहंत्वआ
दिकशब्दहै॥ सोमहाप्रलयविषेअभावहोजातेहैं॥ तिसकेपाछेसदसंतरूपहै॥ अब
भीसोईजाणु॥ ज्योंकीत्योंब्रह्मसत्ताअस्थितहै॥ हेलीलेइहजोपृथिवीआदिकभूतभा
सतेहैं॥ सोआसंवितरूपहैं॥ काहेतेंजबचित्तसंवित्तस्पंदरूपहोतीहै॥ तबइहजग
तरूपहोकरभासतीहै॥ इसीकारणतेंसंवितरूपहै॥ हेलीलेजीवरूपजोसमष्टिहै॥ ति
सविषेजगतरूपीतरंगउत्पत्तिहोतेहैं॥ अरुलीनहोतेहैं॥ परस्वरूपतेंजलइरूपहै॥ इत
रकछुनहीं॥ जैसेअग्निविषेउस्नताहोतीहै॥ तैसेजीवविषेसर्गहै॥ जोज्ञानवानहै॥ तिस
कोंसर्वआत्माभासताहै॥ अरुअज्ञानकोंभिन्नभिन्नकल्पनाहोतीहै॥ हेलीलेजैसेसूर्य
कीयांकिरणांविषेत्रसरेणुभासतेहैं॥ जैसेपवनविषेस्पंदहोताहै॥ तिसविषेसुगं
धहोतीहै॥ सोनिराकारहै॥ तैसेजगतआत्माविषेनिरवयहै॥ भावअभावग्रहणत्याग
सूक्ष्मस्थूलचरअचरसर्वब्रह्मकेअवयवहै॥ हेलीलेइहजगतजोसाकाररूपभासताहै
सोआत्मातेंभिन्ननहीं॥ जैसेवृक्षकेअंगपत्रफूलफलटासरूपहोइभासतेहैं॥ तैसेब्रह्म
सत्ताहीजगतरूपहोइकरभासतीहै॥ इतरकछुनहीं॥ जैसेजैसेचैतन्यसंवेदनविषेसं
वेदफुरताहै॥ तैसेहोइकरभासताहै॥ सोआकाशरूपसंवितज्यौंकीत्योंहै॥ तिसविषेअ
रकल्पनाभ्रममात्रहै॥ हेलीलेइहजगतजोभासताहै॥ सोनसतहै॥ नअसतहै॥ जैसे
जेवडीविषेसर्पभासताहै॥ तैसेआत्माविषेजगतभासताहै॥ जिसकोंअसम्यकज्ञानहो
ताहै॥ तिसकोंजेवडीविषेसर्पभासताहै॥ तोअसत्यनहूया॥ अरुजिसकोंसम्यकबोधहू
या॥ तिसकोंसर्पसत्यनहीं॥ तैसेअज्ञानकरजगतअसत्यनहींभासता॥ आत्मज्ञानहूये
सत्यनहींभासता॥ काहेतेंकछुवस्तुनहीं॥ हेलीलेजैसेजैसेजीवकेअंतरसंपदफुरता
है॥ तिसकाअनुभवकरताहै॥ जबइहजीवस्वप्नकूंहोताहै॥ तबइसकोंचिराविषेजग
तफुरआवताहै॥ किसीकोंअपूर्वरूपफुरआवताहै॥ किसीकोंपूर्वअपूर्वमिश्रतफुरताहै
तिसकारणतेंतेरेभरताकोंउहीमंत्रीउहीस्त्रीसभाउहीवासनाकेअनुसारफुरआईहै
काहेतेंजुआत्मासर्वगतरूपहै॥ तैसातैसाउसविषेतीव्रसंवेदनफुरताहै॥ तैसाहोकर [तैसा]
भासताहै॥ हेलीलेजैसेअपणेमंतोराजविषेप्रतिभासहोइआवताहै॥ तैसीसत्यरूपहो
इभासतीहै॥ तैसेजोइहलीलातेरेमनमुषवर्तीहै॥ सोऐसेहीहूईहै॥ अरुतेरेभरताकीजो
तीव्रवासनातेरेविषेथी॥ तिसकरउसकोंतेराप्रतिबिंबरूपहोइकरइहलीलाआनप्राप्त
भईहै॥ तफहीजैसापीलअरुआचारकुलवपइसकोंप्रापतभयाहै॥ हेलीलेसर्वगतसं
वितआकाशहै॥ जैसाजैसाउसविषेफुरणाहोताहै॥ तैसासंवितरूपआदर्शविषेप्रति
बिंबभासताहै॥ जेताकछुजगतहै॥ सोचैतन्यदर्पणविषेप्रति ~ बिंबहोताहै॥ वस्तुतेंसे
हेजगतआकाशभवनपृथिवीराजआदिकसभआत्मरूपहै॥ आत्माहीजगतरूपहोइभास

भासताहै॥ जैसेबिलविषेसर्पहोताहै॥ सोबिलतेंइतरकछुनहीं॥ बिलहीस्वरू
पहै॥ तैसेइहजगतब्रह्मरूपहै॥ अरुसदाअपणेआपविषेस्थितहै॥ इति लीलोपा
ख्याने अस्थिदाहराविषयजगतब्रह्मत्ववर्णनंनामद्विविंशसर्गः॥ २२॥ देव्युवाच
हेलीलेतेराजोभरताराजाविदूरथहै॥ सोरणविषेसंग्रामकरकेंशरीरत्यागेगा॥
त्यागकरउसीअपणेअंतःपुरविषेप्रापतहोवेगा॥ अरुवहुडराजकरेगा॥ वसिष्ठउ
वाच॥ हेरामचंद्रइसप्रकारजबदेवीकहा॥ तबविदूरथकेउरकीजोलीलाहै॥ सोहा
थजोडकरदेवीकोंप्रणामकरतभई॥ अरुकहतभई॥ द्वितीयलीलोवाच॥ हेदेवीजीम
भगवतीज्ञप्तरूपकोंनित्यइहजतीरहीहो॥ वहइस्वप्नविषेउसमुफकोंदर्शनदीयाहै
जैसीउहईश्वरीथी॥ तैसीतुमफकोंहष्टआवतीहै॥ तोतेंमुफपरकृपाकरिकेमनवांछि
तफलकोंदेवो॥ वसिष्ठउवाच॥ हेरामचंद्रइसप्रकारजबविदूरथकीलीलाकहा॥
तबअपणेभगतउपरप्रसन्नहोइकरदेवीजीकहतभई॥ देव्युवाच॥ हेलीलेतुफमन
न्यहोइकरमेरीभगतकरीहै॥ तिसकरतेराशरीरभीजीर्णभयाहै॥ अबमैंतुफपरप्रसन्न
हों॥ जोकछुतुफकोंवांछितहैसोवरमांग॥ द्वितीयलीलोवाच॥ हेदेविजबमेरा
भरतारणविषेदेहकोंत्यागकरजावे॥ तबमैंइसीशरीरसाथतिसकोंप्राप्तहोवों॥ देव्यु
वाच॥ तुफभलीप्रकारभावनासहितपुष्पादिकोंसेंनिर्विघ्नसेवनाकरीहै॥ तातेंऐसे
हीहोवेगा॥ वसिष्ठउवाच॥ हेरामचंद्रइसप्रकारजबदेवीजीकहा॥ तबप्रथमलीला
कहतभई॥ प्रबुद्धलीलोवाच॥ हेदेविजुमनोसतसंकल्पमनकासब्रह्मरूपहै॥ मु
फकोंउसशरीरसाथविदूरथकेगृहविषेक्यौंनलेगई॥ देव्युवाच॥ हेलीलेमैंकि
सीकाकछुनहींकरती॥ सर्वजीवोंकासंकल्पमात्रदेवताहै॥ अरुमैंज्ञप्तरूपहों॥ एकए
कजीवकेअंतरचैतन्यमात्रदेवताहोइकरस्थितहों॥ जोजोजीवजैसीजैसीभावना
कोंधारताहै॥ तैसीतैसीतिसकोंसिद्धताहोतीहै॥ हेलीलेजबतुफमेराआराधन
कीयाथा॥ तबइहप्रार्थनाकरीथी॥ जुमेरेभरतेकाजीवइसीआकाशमंडपविषेरहै॥
अरुज्ञानकीप्रापतभीमुफकोंहोवे॥ तबमैंतुफकोंज्ञानउपदेशकीया॥ तुफकोंज्ञा
नप्रापतहूया॥ अरुइसनेइसहीनिमित्तपूजनकीयाहै॥ तातेंइसकोंइहीप्रापतभया
है॥ जोदेहसहितभरतासाथजावेगी॥ जैसाजैसाचित्तसंवित्तविषेस्पंदहढहोता
है॥ तैसीतैसीसिद्धताहोतीहै॥ हेलीलेइहजोकोऊतपकरतेहैं॥ तिसकोइहताक
रकेचिदात्माहीदेवतारूपहोइकरफलकोंदेताहै॥ जैसेजैसेसंकल्पकीतीव्रताकि
सीकोंहोतीहै॥ चैतन्यसंवित्ततेंतिसकोंतैसाहीफलहोताहै॥ चित्तसंवित्ततेंइतर
किसीनेंकिसीकोंकचितकछुफलनहींप्रापतहोता॥ तिसीतेंसभकेसीकोंफलहो
ताहै॥ आत्मासर्वगतसर्वकेअंतरहै॥ जैसेतिसविषेचैतन्यतायत्नहोताहै तिसकोंतै
साहीसभभावप्रापतहोताहै॥ इतिश्री[illegible]संकल्पनामत्रिविंशसर्गः॥ २३॥
रामउवाच॥ हेभगवनराजाविदूरथजोदेवीजीकोंकहकरसंग्रामविषेगयाथा॥ सो
क्याकरताभया॥ वसिष्ठउवाच॥ हेरामचंद्रजबराजाग्रहतेंनिकसा॥ अरुसंग्रामसे
नाकरकेशोभताभया॥ जैसेतारयोंविषेचंद्रमाशोभताहै॥ तैसेसेनाविषेशोभ
ताभया॥ तबरथपरआरूढसेनासहितसंग्रामविषेआया॥ कैसारथहै॥ जुसोती
माणकोंसाथपूर्णहै॥ अरुआठघोडेहैं॥ जुवायतेंभीतीव्रचलताहै॥ पंचध्वजा
है॥ ऐसेरथपरआरूढहूयासंग्रामविषेआइपडा॥ जैसेसुमेरपर्वतसमुद्रविषेजाइप
डा॥ तैसेजाइपडा॥ तबदोनोंसेनाएकठीयाहोगईयां॥ जैसेप्रलयकालविषेसमुद्रएक
ठेहोजातेहैं॥ तैसेसेनाएकठीयांभईयां॥ बडाशब्दहोवणेलागा॥ अरुप्रलयमेघोंकीन्या
ईजोधेयोंकेशब्दहोणेलगे॥ अरुशस्त्रोंकीवर्षाहोवणेलगी॥ जैसेमेघोंकीवर्षाहोतीहै॥ जै
सेअग्नितेंचिणगारेनिकसतेहैं॥ तैसेजोधेयोंतेंशस्त्रोंकीवर्षाहोणेलागी॥ चक्रगदाषड्ग

त्रिशूल मसलक हाडे व रछीयां ने आदि लेकर शास्त्रों की वर्षा परस्पर युद्ध करणे ला
गे ॥ जैसे प्रलयकाल की वडवाग्नि होती है ॥ तैसे शास्त्रों ते अग्नि निकसे ॥ तिनों शास्त्रों
तिनों शास्त्रों कर अनेक जीव मरनकों प्रापत भए ॥ परस्पर युद्ध करणे लागे ॥ ऐसे शास्त्र
चलावे ॥ जिनतें वडवाग्नि की न्याई ॥ अग्नि निकसे ॥ वडा युद्ध होणे लागा ॥ तव विदूर
थ की सेना कछुक निर्वल भई ॥ उर्ध्व जो देवता थीयां दोनो लीला तिनों कहा ॥ इ
देवी हैं तो सर्व शक्ता है ॥ अरु इस मोरे कृपा करने दीदया भी है ॥ इस मोरे भरता की जै क्यु नहीं है
तो ॥ यह कारण कहो ॥ दे वी उ वा च ॥ हे लीले विदूरथ का शत्रु सिंधु राजा है ॥ तिसने चिर
काल पर्यंत जयके निमित्त मेरी पूजा करी है ॥ अरु तुमारे भरताने जयके निमित्त पूजा
नहीं करी ॥ मोक्ष के निमित्त पूजा करी ॥ तातें जीत सिंधु राजा की होवेगी ॥ अरु तेरे भरता
कों तैसा ही फल देती है ॥ तातें राजा सिंधु विदूरथ कों जीतकर राज करेगा ॥ व सि ष्ट उ वा
च ॥ हे रामचंद्र इस प्रकार देवी कहती थी ॥ जु सेना सम देषणे लागी ॥ अरु दोनों राजयों का
परस्पर तीव्र युद्ध होणे लागा ॥ ऐसे वाण चलावे जु दोनों विलक्ष होइ षडे हैं ॥ एक वाण वि
दूरथ छोडया ॥ तिसके सहस्र होगए ॥ आगे गए तव कोडील होगए ॥ तव सिंधु भी एक
वाण चलाया ॥ तिसके सहस्र होगए ॥ तव आगे गए उहभी लक्ष होगए ॥ वाण ही परस्प
र युद्ध करते टूटके होइकर गिड पडे ॥ ऐसे वाण हरनें हर छलेजावे ॥ जैसे दीपक निर्वाण
की आभा नहीं भासती ॥ तैसे वाण भासते नहीं ॥ तव राजे सिंधु मोह रूपी अस्त्र चलाया ॥ ति
सके आवणे कर एक विदूरथ विना ॥ सभ सेना मोहत भई ॥ जैसे उनमत्त कों सुद्ध कछु नहीं
रहती ॥ तैसे उनकों सुद्ध कछु न रही ॥ नेत्रों कों ऊपर करके देषने ही रहे ॥ मानों मूर्ती लिष
छोडीयां है ॥ तव राजे विदूरथ प्रबोध रूपी अस्त्र चलाया ॥ तिसकर सभनों का मोह निवृत्त
होगया ॥ सभनों देष कमल न होइ आए ॥ जैसे सूर्य के उदे हूए ॥ सूर्यमुखी कमल प्रफुलित हो
इ आवते हैं ॥ तव सिंधु राजे नागास्त्र रूपी वाण चलाया ॥ तिसकर के अनेक नाग निकस आ
ए ॥ ऐसे नाग आवे ॥ मानों पर्वत उडने आवते हैं ॥ सर्व दिशा नागों कर पूर्ण होगईयां ॥ ति
सकर विदूरथ की सेना वहुत कष्ट पाया ॥ तव राजे विदूरथ गरुडनामा अस्त्र चलाया
तिसकर अनेक गरुड प्रगट होइ आए ॥ तिनों कर सभ सर्प नष्ट होगए ॥ जैसे सूर्य के उदे
हूए ॥ अंधकार नष्ट हो जाता है ॥ तैसे सर्प नष्ट भए नागों कों नष्ट करके गरुड भी अंतर्ध्यान हो
गए ॥ जैसे संकल्प के त्यागते संकल्प सृष्टि अभाव हो जाती है ॥ तैसे गरुड अभाव होगए
जैसे स्वप्न तें जागे हूए स्वप्न नगर का अभाव हो जाता है ॥ तैसे गरुड अभाव होगए ॥ जो को
ऊ वाण सिंध चलावे ॥ तिसकों विदूरथ इसी प्रकार नष्ट करे ॥ जैसे सूर्य दैत्यसों युद्ध कर
णेकों समाधान होता है ॥ तैसे विदूरथ सिंधु सों युद्ध करणेकों समाधान भया ॥ अरु वडी वा
णों की वर्षा करी ॥ तिसकर सिंध भी लोभ कों प्रापत भया ॥ तव पिछे लीली लाफ रोषे विषे
देषकर देवी का आवाहन कीया ॥ अरु कहा हे देवि मेरे भरता की अवज्ञय होती है ॥ तव दे
वी जी सुणकर मुसकाणी ॥ सुवने कछु न कहा ॥ इदि विषे जु जीवों का चित्त वहुत चंचल है
आस्था कों नहीं पावता ॥ ऐसे देषने षे जु सूर्य उदे भया ॥ मानों सूर्य भी युद्ध का कौतुक देष
णे आया है ॥ सिंधु राजे तम रूपे अस्त्र चलाया ॥ तिसकर सर्व दिशा श्याम होगईयां भासे क
छु नहीं ॥ मानों कज्जल की समष्टता एकठी भई है ॥ तव विदूरथ सूर्य के प्रकाश रूपे अस्त्र च
लाया ॥ तिसकर सर्व तम नष्ट होगया ॥ जैसे सरनकाल कर श्याम घटा नष्ट हो जाती है
सूर्य आकाश दृष्ट होता है ॥ जैसे आत्मज्ञान कर ज्ञानी कों लोभ का अभाव हो जाता है ॥ तैसे अ
काश कर तम नष्ट होगया ॥ सर्व दिशा निर्मल भईयां ॥ अरु जैसे अगस्त्य मुनि समुद्र कों
पान कर गया था ॥ तैसे प्रकाश तम कों पान कर गया ॥ तव सिंधु क्रोध करके राक्षस रूपी अ
स्त्र चलाया ॥ तिसकर कोटि राक्षस निकस आए ॥ भयानक रूप अरु कुरूप अरु जिह्वा
निकसीयां हूईयां ॥ ऐसे चमत्कार करें ॥ जैसे श्याम मेघ विषे विजुली चमत्कार करती

है ॥ ऐसे अनेक राक्षस पाताल अरु दिशा ते निकसकर सेना कों ग्रहे होवे ॥ तिसकों भषिवे पा
र लेवें ॥ तिनकों देषकर विदूरथ की सेना वहुत भय कों प्रापत भई ॥ जिसके सनमुष ह
स कर देषे उह भयसों मर जावे ॥ तव राजे विदूरथ अपणी सेना कों कष्टवान देषकर वि
ष्णु अस्त्र चलाया ॥ तिसकर सभ राक्षस नष्ट होगए ॥ वहुड राजे सिंधु अग्निनामा अस्त्र च
लाया ॥ तव सर्वत्र दिशा विषे अग्नि पसर गई ॥ तिसकर लोक जलणे लागे ॥ तव राजे
विदूरथ वरुण रूपी वाण चलाया ॥ तिसकर अग्नि का दाह सभ मिटगया ॥ जैसे संतोंनके
संगकर अज्ञानी के तीनो ताप मिटजाते हैं ॥ तैसे अग्नि का ताप मिटगया ॥ तव सभ
स्थान जलकर पूर्ण होन भए ॥ अरु सेना सिंधु की वहुत वहती जल विषे ॥ तव सिंधु
शोषण नामक अस्त्र चला ॥ तिसकर सभ जल सूक गया ॥ कहूं कहूं चिकड़ी रह गई ॥ वहुड
तेजमय वाण चलीया ॥ तिसकर चिकड भी सूक गया ॥ अरु विदूरथ की सेना गर्मी कर व्या
कुल होगई कंपणे लागी ॥ जैसे मूर्ख का हिदा क्रोध कर षउ जलता है ॥ तव विदूरथ मे
घनामा अस्त्र वाण चलाया ॥ तव मेघ वर्षणे लागा ॥ अरु शीतल मंद मंद वायु चली ॥
तिसकर सेना का तपन मिटने जावे ॥ जैसे आत्मा की ओर आवतें जीव का संसार ताप
ट जाता है ॥ तैसे विदूरथ की सेना शीतल भई ॥ तव सिंधु वायु रूपी अस्त्र चलाया ॥ तिस
कर रस्ते के पत्र की न्याई विदूरथ का रथ फिरणे लागा ॥ तव विदूरथ पहाड अस्त्र चलाया
जिसकर पहाडों की वर्षा पड़ी होवे ॥ अरु वायु का सारा रोका गया ॥ वायु का क्षोभ भी मि
ट गया ॥ सभ पदार्थ स्थिर भूत होगए ॥ जैसे संवेदन तें रहत चित्त शांत होता है ॥ तैसे शां
त होगए ॥ हे रामचंद्र इस प्रकार परस्पर युद्ध होत भया ॥ जो सिंधु अस्त्र चलावे ॥ तव
विदूरथ उसकों विदारण करे ॥ अरु जो विदूरथ चलावे ॥ तव सिंधु विदारण कर डारे
विदूरथ राजे एक ऐसा अस्त्र चलाया ॥ जु राजे सिंधु का रथ चूर्ण कर डारया ॥ घोडे भी
भस्म कर डारे ॥ सिंधु राजा रथतें निकस पडा ॥ वहुड सिंधु ऐसा अस्त्र चलाया ॥ जु विदू
रथ का रथ तोड नष्ट कीये ॥ वहुड दोनों के रथवाही और रथ ले आए ॥ तिनके ऊपर आरू
ढ होइकर युद्ध करणे लागे ॥ विदूरथ सिंधु कों वरछी चलाई ॥ उस वचाइ लीनी ॥ वहु
ड सिंधु वरछी चलाई ॥ विदूरथ के हृदे लागी ॥ तिसकों देषकर विदूरथ की लीला
शोकवान भई ॥ अरु कहन भई ॥ हे देवि मेरा भरता तो मरता है ॥ सिंधु इष्ट वडा कष्ट दी
या ॥ हे रामचंद्र ऐसे कहती थी ॥ जु सिंध षड्ग चलाया ॥ विदूरथ की याटका काटी घागईया
वहुड गोडे काट डारे भी विदूरथ युद्ध करता रहा ॥ वहुड विदूरथ के सिर पर षड्ग का प्र
हार कीया ॥ तव विदूरथ मूर्छा होइकर गिर पडा ॥ ऐसे देषकर उइ लीला भी मूर्छा हो
इकर गिर पडी ॥ विदूरथ का जो रथवान ही था ॥ सो रथ कों दोडायकर गृहसों ले आव
णे लागा ॥ तव सिंधु तिसके दौडया जु सीस रसका मैं ले आवों ॥ जैसे वानर के पकडने
कों सिंह दौडे ॥ तैसे दौडया ॥ पर पकड न सकया ॥ जैसे अग्नि विषे मच्छ प्रवेश नहीं क
र सकता ॥ तैसे देवी प्रभाव कर विदूरथ कों पकड न सकया ॥ इ ति वि दू र था सा र णं ना
म च तु र्विं शा स र्गः ॥ २४ ॥ ॐ व सि ष्ट उ वा च ॥
हे रामचंद्र तव रथवाही राजा कों गृहसों ले आया ॥ इस्त्रीयां बांधव कुटंबी रुदन क
रणे लागे ॥ वडे शब्द होणे लगे ॥ अरु सिंधु की सेना लूटने लागी ॥ इस्त्री घोडा आदिक
स्वामीयों विना फिरें ॥ अरु शब्द होणे लगा जु राजे सिंधु की जय है ॥ वहुड ढंढोरा फिर
या तव सर्व ओर शांत भई ॥ सिंधु राजा के ऊपर छत्र होणे लागा ॥ सभ पृथिवी का रा
ज सिंधु कों हूया ॥ सिका मुहर सिंधु की चली ॥ जैसे क्षीर समुद्र तें मंदराचल निकस शां
त भई थी ॥ तैसे सर्व ओर शांत होगई ॥ हे रामचंद्र जव विदूरथ राजा गृह विषे जाइ प
डा था तव ॥ तव तिसकों अरु दूसरी लीला कों देषकर प्रबुद्ध लीला कहन भई ॥ हे दे
वि इह लीला भरता के साथ ऊहां किउं कर जाइ प्रापत होवेगी ॥ इह तो भरता कों ऐसे

देषकरस्वप्नरूपहोगईहै ॥ अरुराजाभीस्वप्नकोनिकटपडाहै ॥ कछुकस्वासआवताहै ॥ दे
वीउवाच ॥ हेलीलेइहजेतेअरुंभमतूदेखतीहै सुघडहूए ॥ अरुनानाप्रकारकाजगतहै ॥
सोसभभ्रांतिमात्रहै ॥ अरुजोतेराभरतापद्मथा ॥ तिसकाइहदाजोमंडपआकाशविषेथा
तहांहीइहसंपूर्णजगतस्थितहै ॥ अरुउहपद्मकामंडपआकाशवसिष्टब्राह्मणके
मंडपआकाशविषेस्थितहै ॥ अरुउहवसिष्टमंडपआकाशचिदाकाशकेआश्रयस्थि
तहै ॥ हेलीलेसंपूर्णजगतवसिष्टब्राह्मणकेमंडपआकाशकीअंगुष्टिकाविषेहीस्थित
है ॥ सोकैसेस्थितहै ॥ आकाशविषेहीआकाशस्थितहै ॥ कवनहै ॥ तिसकरकेसंपूर्णज
गतपडाफुरताहै ॥ अरुवास्तवकवनभीकछुवस्तुनही ॥ आत्मसत्ताहीअपणेआपवि
षेस्थितहै ॥ तिसआत्मसत्ताविषेअहंत्वआदिकजगतभ्रमकरकैभासताहै ॥ उपज्याक
छुनही ॥ हेलीलेतिसवसिष्टब्राह्मणकेमंडपआकाशविषेनानाप्रकारकेस्थानहैं ॥ प
कनितेविषेप्राणीआवतेजातेव्यवहारहोतेभासतेहैं ॥ जैसेस्वप्नसृष्टिविषेनानाप्रका
रकेआरंभभासतेहैं ॥ सोअसतरूपहै ॥ तैसेइहजगतभीअसत्यरूपहै ॥ हेलीलेनइह
दृष्टाहै ॥ नआगेदृश्यहै ॥ सभभ्रमरूपहै ॥ अरुदृष्टादर्शनदृश्यभेददृश्यहीविषेहै ॥ जो
दृश्यनहीतोदृष्टाकैसेहोवे ॥ सभअसत्यरूपहै ॥ अरुजोइनोतेरहतपरमपदहै ॥ सोउ
देअस्ततेरहतनित्यशुद्धअजन्मअविनाशीअद्वैतरूपअपणेआपविषेस्थितहै ॥ जब
तिसकोजानीताहै ॥ तबदृश्यभ्रमनष्टहोजाताहै ॥ हेलीलेलीलेइहदृश्यभ्रमकरके
भासतीहै ॥ वास्तवतेकछुउपज्यानही ॥ जैसेकछुमेरुआदिकपर्वजालभासतेहैं ॥ अ
रुपृथिवीआदिकतत्वभासतेहैं ॥ सोसभआकाशरूपहै ॥ वास्तवतेकछुउपज्यान
ही ॥ जैसेस्वप्नसृष्टिप्रतक्षभासतीहै ॥ अरुवास्तवकछुनही ॥ तैसेइहजगतभीजा
नु ॥ हेलीलेजीवजीवप्रतिअपणीसृष्टिरहतीहै ॥ परतिसविषेसारकछुनही ॥ जैसे
केलेकेथंभसोसारकछुनहीनिकसता ॥ तैसेसृष्टिविषेविचारकीयेतेसारकछुनही
निकसता ॥ परचित्तसंवेदनकेफुरणेकरपडेभासतेहैं ॥ हेलीलेतेरेभरतापद्मकीसृ
ष्टिहै ॥ सोवसिष्टब्राह्मणकेमंडपआकाशविषेस्थितहै ॥ अरुतिसपद्मकेमंडप
आकाशविषेइहजगतस्थितहै ॥ अर्थइहजोविदूरथकाजगतपद्मकेसृष्टिविषेफु
रताहै ॥ जहांतेराशरीरपडाहै ॥ अरुराजापद्मकाशरीरशवपडाहै ॥ हेलीलेतेरेभ
रतापद्मकीसृष्टिहै ॥ सोइहमकोआदेशमात्रहै ॥ तिसआदेशमात्रविषेअंगुष्टप्रमा
णइहदाकमलहै ॥ तिसविषेतेरेभरताकाजीवआकाशहै ॥ तिसजीवआकाशविषेइह
जगतपडाफुरताहै ॥ सोआदेशमात्रभीहै ॥ अरुदूरतेदूरकोटियोजनपर्यंतहै ॥ मार्ग
विषेवज्रसारकीन्याई ॥ तत्वोंकाआवरणहै ॥ तिसकोलंघकरतेरेभरताकेसृष्टिहै ॥ जहां
उहशवपडाहै ॥ तिसकेपासइहलीलाजाइप्रापतभईहै ॥ लीलोवाच ॥ हेदेवीअ
तेमार्गकोलंघकरउहथिणविषेकैसेजाइप्रापतभईहै ॥ अरुजिसशरीरसाथजाव
णाथा ॥ सोशरीरतोईहांहीपडाहै ॥ उहकिसरूपकरकेप्रापतभईहै ॥ अरुउहांकेलो
कउसकोकैसेदेखतेजाणतेभए ॥ सोकहो ॥ देवीउवाच ॥ हेलीलेइहलीलाकावृत्तां
तकथाकीन्याईनही ॥ इहवृत्तांतऐसाहै ॥ जिसकेधारेहूए ॥ इहजगतभ्रमनिवर्तहोजा
ताहै ॥ सोसंक्षेपतेकहतीहों ॥ हेलीलेजेताकछुजगतभासताहै ॥ सोभ्रममात्रहै ॥ इह
भ्रमरूपजगतपद्मकेसृष्टिविषेफुरताहै ॥ तिसविषेविदूरथकाजन्मभीभ्रमरूपहै ॥ अ
रुलीलाप्रापतहोवणाभीभ्रमहै ॥ सर्वासभीभ्रमरूपहै ॥ विदूरथकामरणभीभ्रमरूप
है ॥ तिसकेभ्रमरूपजगतविषेतुमहमसभभएहैं ॥ इहलीलाभीतूंभीराजाभीभ्रमरूप
अरुसंसर्वआत्माहो ॥ भ्रमकोसत्ताकरहीनिश्चयकरताहै ॥ हमजोउदेहूए ॥ सोउदेकीन्याई
है ॥ उदेनहीहूए ॥ हेलीलेजबतेराभरतास्वप्नतहोवणेलागाथा ॥ तबतेरेविषेउसकाते
हवढूतथा ॥ तिसकरस्वप्नतकहूएभीकमलनेत्रपवाअवस्थामहांसुंदरभूषणोंकोपर

हकशरीरभीभूतहै ॥ काहेतेंजुसंकल्परूपहै ॥ जोसंकल्परूपहै ॥ सोफुरतहै ॥ तोते
जेताकछुजगततुझकोंभासताहै ॥ सोउपज्याकछुनही ॥ शुद्धचिदाकाशसत्ताअ
पणेआपहीविषेस्थितहै ॥ लीलोवाच ॥ हेदेविजीजोइहसर्वजगतसंकल्परूपहै
तोभावरूपपदार्थकैसेहोतेहैं ॥ अरुअभावरूपकैसेहोतेहैं ॥ जोअग्निउष्णहीरूप
है ॥ पृथिवीस्थिररूपहै ॥ बरफशीतलहीरूपहै ॥ आकाशकीसत्ताहै ॥ कालकी
सत्ताहै ॥ कोऊस्थूलपदार्थहै ॥ कोऊसूक्ष्मपदार्थहै ॥ इहग्रहणकरणात्यागकरणा
जन्मकरस्वप्नहोताहै ॥ स्वप्नहूयावहुडजन्मताहै ॥ इत्यादिकसत्ताकैसेभासती
है ॥ देव्युवाच ॥ हेलीलेजबमहाप्रलयहोतीहै ॥ तबसर्वपदार्थअभावताको
प्रापतहोतेहैं ॥ अरुकालकीसत्ताभीनष्टहोजातीहै ॥ तिसकेपाछेअनंतचि
दाकाशसर्वकलनातेरहितबोधमात्रब्रह्मसत्ताहीरहतीहै ॥ तिसचैतन्यमात्रसत्ता
तेजबचितसंवितचेत्यताहै ॥ तबचैतन्यसंवितआपकोतेजअणुजाणतीहै ॥ जैसे
स्वप्नेविषेकोऊआपकोपंखीरूपउडतादेखे ॥ तैसेदेखतीहै ॥ तिसतेस्थूलताहोतीहै
स्थूलब्रह्मांडरूपहोतीहै ॥ तिसविषेउहतेजअणुआपकोब्रह्मारूपजाणतीहै ॥ जुमै
ब्रह्माहों ॥ वहुडब्रह्मारूपहोइकरजगतकोंरचतीहै ॥ जैसेब्रह्माचेततताजावे ॥ तैसेतैसे
स्थिरतारूपहोतीजावे ॥ आदिरचनाकरजैसेनिश्चयथा ॥ जुइहऐसेहोवे ॥ अरुएताका
लरहै ॥ तिसकानामनेतहूया ॥ जैसेआदिहोरचनानेतकरहूईहै ॥ सोज्योंकीन्योंहोती
है ॥ तिसकेनिवारणेकोकोऊसमर्थनही ॥ अरुवस्तुतेआदिब्रह्माहीअकारणरूपहै ॥
अर्थइहजुउपज्यानही ॥ तौजगतकाउपजणासनुकोकैसेकहो ॥ हेलीलेस्वरू
तेकछुउपज्यानही ॥ परचैतन्यसंवेदनकेफुरणेविषेजगतआकारहोइभासताहै
तिसविषेजैसेनिश्चयहै ॥ तैसाहीस्थितहै ॥ अग्निउष्णहीहै ॥ बरफशीतलहीहै ॥ पृथि
वीस्थिररूपहै ॥ जैसेउपजेहै ॥ तैसेहीस्वभावविषेरहेहैं ॥ हेलीलेजोचैतन्यहै ॥ तिस
रूपअभिन्नहै ॥ जुउपदेशकाअधिकारीहै ॥ अरुजोजडहै ॥ तिनोविषेउहीस्वभावहै
जोआदिचित्तसंवितविषेआकाशफुरणाहूया ॥ तबआकाशरूपहोइकरस्थितभया ॥
जबकालसंपदफुरताहै ॥ तबउहीचैतन्यसंवितकालरूपहोइकरस्थितहोतीहै ॥ ज
बवायुकीचेतनाहूई ॥ तबउहीचैतन्यसंवितवायुरूपहोइकरस्थितहोतीहै ॥ इसीप्र
कारअग्निपृथिवीरूपहोइकरस्थितभईहै ॥ स्थूलसूक्ष्मरूपहोइकरचैतन्यसंवितही
स्थितभईहै ॥ जैसेस्वप्नेविषेचैतन्यसंवितहीपर्वतवृक्षरूपहोइकरस्थितहोतीभईहै
तैसेहीचैतन्यसंवितजगतरूपहोइकरस्थितभईहै ॥ हेलीलेजैसेजैसेआदिनेतवि
षेपदार्थोंकासंकल्पधाराहै ॥ तैसेहीस्थिरहै ॥ तिसकेनिवारणेकोसमर्थकोऊनही
काहेतेंजुतीअभ्याससेचैतन्यसंवितकाकीयाहै ॥ जबउहीसंवितउलटकरऔरप्रका
रसंपदहोवे ॥ तबऔरप्रकारहोवे ॥ अन्यथानहीहोता ॥ हेलीलेइहजगतसत्यनही ॥
जैसेसंकल्पनगरभ्रमसिद्धहै ॥ जैसेस्वप्नकाउधरअसत्यरूपहोताहै ॥ जैसेध्याननगर
असत्यरूपहोताहै ॥ तैसेइहजगतअसत्यरूपहै ॥ अज्ञानककेसत्यकीन्याईभासताहै
जैसेस्वप्नसृष्टकेआदिसन्मात्रसत्ताहोतीहै ॥ तिससन्मात्रतेआभासकचनस्वप्नसृ
ष्टिप्रकारणहोतीहै ॥ तैसेइसजाग्रतजगतकेआदिसन्मात्रसत्ताहोतीहै ॥ तिसतेक
चनप्रकारणरूपइहजगतहोताहै ॥ हेलीलेइहजगतकछुवास्तवतेउपज्यान
ही ॥ असत्यहीसत्यकीन्याईहोइभासताहै ॥ जैसेस्वप्नकीअग्निस्वप्नेविषेअसत्यही
सत्यरूपहोइभासतीहै ॥ तैसेइहजगतअज्ञानकरकेअसत्यहीसत्यरूपहोइभासता
है ॥ जैसेजन्मअरुमरनअरुकर्मोंकाफलहोताहै ॥ सोभीतूंश्रवणकर ॥ हेलीलेवडा
अरुछोटाजोहोताहै ॥ सोदेशकालअरुद्रव्यकरहोताहै ॥ एकवालकअवस्थाहीविषे
मरतहोतेहैं ॥ एकयौवनअवस्थाविषेमरतहोतेहैं ॥ जिसकीचेष्टादेशकालक्रियाद्रव्यकी
यथाशास्त्रहोतीहै ॥ तिसकीआयुभीशास्त्रकेअनुसारहोतीहै ॥ अरुशास्त्रविरुद्धहो

ताहै। तौ आयुर भी तैसी होती है। हे लीले जो पापकर्म वाले हैं। अरु मरनक होते हैं। ति
नकौ मरनकाल मैं भी बडा कष्ट प्रापत होता है॥ लीलोवाच॥ हे देवि मरनक हूए स्वप्र
रूप कैसे होता है। अरु फल कैसे भोगता है॥ देव्युवाच॥ हे लीले तीन प्रकार की मृ
न जीवों कौ होती है। एक मूर्षों की मरन होती है। दूसरी धारणा अभ्यासी कौ होती है। तीस
री ज्ञानवान कौ होती है। तिनका भिन्न भिन्न वृत्तांत सुण। हे लीले जो धारणा अभ्या
सी हैं। मूर्ष भी नहीं। अरु ज्ञानवान भी नहीं। सो जिस इष्ट देवता की धारणा करते हैं। ते
मरन होइकर। अर्थ यह जो शरीर कौ त्यागकर तिसही देवता के लोक कौ प्रापत होते हैं
इह धारणा अभ्यासी की मरन कही। अरु जो मूर्ष मरन होणे लागता है। सो वडे कष्ट कौ प्राप
त होता है। मूर्ष कौन है। जिनकौ अज्ञानीयों की संगति है। अरु शास्त्रों के अनुसार विचर
णा नहीं। अरु सदा विषयों की ओर धावते हैं। अरु पाप आचार करते हैं। ऐसे पुरुषों कौ श
रीर त्यागणे विषे वडा कष्ट होता है। हे लीले जब इह मरनक होणे लागता है। तब पदा
र्थों कर आवरण। अर्थ यह जो वंधमान था। तिनो साथ वियोग होणे लागता है। अरु कंठ
घुरकणे लागता है। नेत्र फाट जाते हैं। अरु शरीर की कांति विरूप जैसी होती है। जैसे कं
मल फूल काट्या हूया कुमलाइ जाता है। तैसे मरनकाल मों शरीर विरूप होइ जाता है
अरु अंग पडे टूटते हैं। प्राण नाडीयों सो निकसते हैं। जिनो अंगो साथ तादात्म्य संबंध हू
या था। अरु इस्त्रीयों विषे वहुत स्नेह था। तिनोंते वियोग होणे लगता है। तातें वडा कष्ट
होता है। जैसे किसी कौ अग्नि के कुंड विषे डारे तैं कष्ट होता है। तैसा उनकौ कष्ट होता है
सम पदार्थ भ्रमते भासते हैं। पृथिवी आकाश रूप भासता है। अरु आकाश पृथिवी भास
ता है। महा विपर्यय दिशा कौ प्रापत होता है। चित्त की चेतन्यता घट जाती है। स्नेह पदा
र्थों के ज्ञान ते अंध होजाता है। जैसे सायंकाल मों सूर्य अस्त होता है। तब नेत्रभ्रांत वाले कौ
दिशा ज्ञान नहीं रहता। तैसे इसकौ पदार्थों का ज्ञान नहीं रहता। तैसे इसकौ पदार्थों का
ज्ञान नहीं रहता। अरु कष्ट का अनुभव करता है। जैसे आकाश ते गिडता कष्ट पावता है॥
जैसे पाषाण विषे पीसता कष्ट पावता है। जैसे पवन विषे तृण भ्रमता कष्ट पावता है॥
जैसे अंधे कूप विषे गिरता कष्ट पावता है। जैसे कोल्हू विषे पीडता कष्ट पावता है। जै
से घमाणी विषे चलाया वटा कष्ट पावता है। जैसे अथेरी विषे डड्या शिला कष्ट पाव
ता है। जैसे रथ ते गिडता कष्ट पावता है। जैसे गले मों फासी डारकर खेंचते ते कष्ट पावता
है। जैसे वाडवकर के जल यानते गावडवाअग्नि मों पड्या जलता है। अरु कष्ट पावता है। तै
सें इव मरनकाल विषे कष्ट पावता है। जब पुर्यष्टका का वियोग हूया। तब मूर्छा कर ज
ड जैसा होजाता है॥ लीलोवाच॥ हे देवीजी जब इह मरनक होणे लगता है। तब इस
कौ मूर्छा कैसे होती है। शरीर तौ अखंड तन पडा रहता है। कष्ट कैसे पावता है॥ देव्यु
वाच॥ हे लीले जो कछु इस जीव अहंभाव कौ लेकर कर्म कीये हैं। सो समएकदेहो
ते जाते हैं। सो समे पाइकर अनुभव प्रापत होते हैं। जैसे वीज वोया हूया समे पाइकर फल
आन लगता है। तैसे तिसकौ कर्मवासना सहित का फल आन प्रापत प्रगट हो
ता है। तब इसका शरीर छूटणे लागता है। तब शरीर की तादात्म्यता अरु पदार्थों के स्नेह
के वियोग कर इसकौ कष्ट होता है। जो प्राण अपान के कला है। तिसके आश्रय शरीरा
होता है। सो टूटणे लगती है। जिनो स्थानों विषे प्राण फुरते थे। तिनों स्थानों अरु नाडी
यों सो निकसते हैं। जिस स्थान ते निकसते हैं। तहां वहुड प्रवेश नहीं करते। उह नाडीयां
जरजरी भाव होजातीयां हैं। सभ स्थानों कौ प्राण जब त्याग जाते हैं। तब उह पुर्यष्टि
शरीर कौ त्याग निर्वाण होती है। जैसे दीपक निर्वाण होजाता है। जैसे पथर की सिला
जडीभूत होती है। तैसे पुर्यष्टिका शरीर कौ त्यागकर जडीभूत होजाती है। प्राण अपाण
की कला टूट पडती है। हे लीले इह मरण अरु जन्म भी भ्रांति करके भासता है। आत्मा वि
षे कोऊ नहीं। संवित्मात्र विषे जो संवेदन फुरती है। सो अन्य स्वभाव सत्ता की न्याई हो

रहूए। तब जैसी वासना के अनुसार उसकौ आन प्रापत भई। हे लीले जब इह मरनक हो
ता है। तब प्रथम इसका आतिवाहक शरीर होता है। पाछे ते प्रमाद कर अधिभूतक हो
जाता है। तैसे तेरा भरता भी जब मरनक हूया। तब प्रथम उसका आतिवाहक शरीर था
जब उस विषे सत्त्वभावना भई। अरु सर्वे लाशरीर भूला। तब अधिभूतक होगया
जब अधिभूत रूप हूया। तब मरणा भी हूया। जन्म भी हूया। जब तेरा भरता मरनक हू
या। तब इसकौ अपना जन्म अरु कुल भास आई। अरु जनता। अर्थ यह जो जनकों
कौ समूह भास आए। लीला का जन्म भास आया। माता पिता भास आए। लीला सा
थ विवाह भास आया। जैसे नृपपद्म कौ भास आई थी। तैसे इह विरूप कौ भास आई। इ
त्यादि सब आपणी वासना के अनुसार उसकौ भास आया। हे लीले ब्रह्मसत्ता सर्व
आत्मा है। जैसा जैसा तिस विषे तीव्र संवेद होता है। तैसा ही सिद्ध होता है। अरु सं
जहै। हे लीले जैसी जैसी इच्छा धारकर कोऊ इसकौ सेवता है। तिसकौ तैसी सिद्ध
ता प्रापत होती है। इसते लीला तूं सुण सो वरंमण वासी तिसकर मरन मूर्छा के अ
नंतर तिसकौ अपणा शरीर भास आया। अपणे शरीर सहित जहां तेरा भरता पद्म
का शरीर पडा है। तहां मंडप विषे उसही जैसे शरीर साथ उसके निकट जाइ
प्रापत भई है॥ इति लीलोपाख्याने स्वप्न मूर्छा नंतर प्रतिभास सर्गः॥
वसिष्ठ उवाच॥ हे रामचंद्र जिस प्रकार उह लीला पद्म राजा के मंडप विषे जाइ प्रा
पत भई है। सो श्रवण कर। तब उह लीला मरनमूर्छा कौ प्रापत भई। तिसके अनंतर उ
सकौ स्वप्ने शरीर की न्याई वासना के अनुसार आपणा शरीर भास आया। जानता भ
या मैं उसी शरीर साथ आई हौं। पर देवी के वर कर आई हौं। सो कसा शरीर है। आतिवा
हक शरीर कर के आकाश विषे पंछी की न्याई उडती जावै। तब तिसकौ अपणे आगे
कुमारी दृष्ट आई। तब लीला कहा। हे देवी तूं कवन है। देवी कहे मैं ज्ञप्तदेवी की पुत्री
हौं। तेरे पहुचावणे कौ मैं आई हौं। तब लीला कहा चलो। हे रामचंद्र तब कुमारी आ
गे हूई। अरु लीला पाछे चली। दोनों आकाश मार्ग कौ उडीयां। चिरकाल पर्यंत पं
छी की न्याई निर्मल आकाश विषे उडतीयां गईयां। आगे मेघों के स्थान आए। वहुड
वायु के स्थान आए। तिनकौ लंघ गईयां। वहुड सूर्य का मंडल आया। तारामंडल आ
या। वहुड ओर लोकपालों के स्थान आए। तिनकौ लंघ गईयां। आगे ब्रह्मा का लोक
आया। वहुड विष्णु का लोक आया। वहुड रुद्र का लोक आया। तिनकौ लंघ गईयां
आगे ब्रह्मांड किवाट। महावज्रसार की न्याई आया। तिसकौ भी लंघ गईयां। जैसे कुं
भ विषे वरफ पाईये। तिसकी शीतलता वाहर प्रगट होती है। तैसे उह ब्रह्मांड ते वा
हर निकस गईयां। तिस ब्रह्मांड ते दश गुणा जल तत्त्व आया। तिसकौ भी लंघ गईयां
इसी प्रकार अग्नि वायु आकाश तत्त्व के आवरणों कौ भी लंघ गईयां। तिनके आगे चेतन्य
आकाश आया। तिसका अंत कहूं नहीं। आदि अंत मध्य ते रहित है। हे रामचंद्र जो
कोटि कल्प पर्यंत गरुड उडता जावै। तौ भी तिसका अंत न पावे। ऐसे परम आकाश
विषे गईयां। तहां इनकौ कोटि ब्रह्मांड दृष्ट आए। जैसे वन विषे अनेक वृक्षों के फल
होते हैं। अरु परस्पर आपा पर कौ नहीं जाणते। तैसे उह सर्व ष्टा आप कौ न जाणें
तब एक ब्रह्मांड रूपी फल विषे दोनों प्रवेश करत भईयां। जैसे फल के मुख मार्ग
मों चींटी प्रवेश कर जाती है। तैसे उह ब्रह्मांड फल विषे प्रवेश कर गईयां। तिस
विषे वहुड ब्रह्मा विष्णु रुद्र सहित त्रिलोकी देखत भईयां। तिनके लोक लंघ आईं
अरु तिन ते नीचे ओर लोकपालों के स्थान लंघे। वहुड चंद्रमा मंडल तारामंडल
सूर्य का मंडल लंघ आईयां। अरु मेघमंडल कौ लंघकर उतरीयां। जहां राजा नगर
था। तिस विषे जु मंडप आकाश मों था। तहां आन प्रवेश कीया। जहां पद्म राजा हू

लोसाथरा थ्याप्रावपड़ाथा ॥ तिसकोदेषतभईथी ॥ तवउसकुवारीअंतरथ्यानहोगई जे
सेसाथासमैयेपदार्थहोवै ॥ अरुअंतरथ्यानहोजावै ॥ तैसेअंतरथ्यानहोगई ॥ अरुलीला
पद्मकेपाससैवैठरही ॥ अरुमनविषेविचारतभई ॥ जोइहमेराभरताहै ॥ ऊहांइससंथ्या
सकीयाथा ॥ सोअवस्तवमत्यकीगतिकोंप्रापतभयाहै ॥ इसपरलोकविषेआइकरसेन
करहाहै ॥ तिसकेपाससेभीअपणोशरीरसाथदेवीकेवरकरकेआनप्रापतभईहों
मैजेसाअवकोऊनहीं ॥ मैंवडेआनंदकोंप्रापतभईहों ॥ हेरामचंद्रऐसेविचारकरथ्यास
चमरपड़ाथा ॥ तिसकोंहाथविषेलेकरभरताकोंचमरकरणेलागी ॥ जैसेचंद्रमाकि
रणोंसाथशोभायावताहै ॥ तैसेचमरशोभापावै ॥ अरुउहीदेवीसोंलीलापूछतभई
प्रवृद्ध लीलोवाच ॥ हेदेविइहराजातोअवस्तकहोताहै ॥ इसकेस्वासअवथोडेर
हेहै ॥ जवईहांतेंस्तकहोइकरपद्मकेशरीरविषेजावेगा ॥ तवराजाकेजाकेजाते
हुएमंत्रीटहलूएकैसेजाएगेहिगे ॥ देवीउवाच ॥ हेलीलेतवमंत्रीटहलूएजोहोवेंगे
तिनकोंइहहैतकलनाकछुनभासेगी ॥ जुआश्चर्यहूयाहै ॥ इसहलांकोंएकतूंजाणे
गी ॥ एकमेंजाणोंगी ॥ एकउहलीलाजाणेगी ॥ औरकोऊनजाणेगा ॥ काहेतेंजुइनके
संकल्पकोंगेरकोऊकैसेकरजाणे ॥ लीलोवाच ॥ हेदेविजोलीलाजुऊहांजाइप्रापत
भया ॥ शरीरतोंईहांपड़ाहै ॥ अरुतिसाराऊसकोंवरभीथा ॥ इसशरीरसाथकुनजाइप्रा
पतभई ॥ देवीउवाच ॥ हेलीलेछायाभीकोविनधूपविषेगईहै ॥ अरुसाचकूरभीकदाचि
तएकताभयाहै ॥ इहआदिनेतहै ॥ जोजैसेआदिहूयाहै ॥ अन्यथानहीहोता ॥ हेलीले
जोपछावेविषेवेतालकल्पनामिटी ॥ तौपछावाअरुवेतालवहुरइएकतानहीहो
ता ॥ तैसेभरमरूपजगतकाशरीरउसजगतविषेनहीजाता ॥ जैसेइहसवकेसंकल्पवि
षेइहसवाश्रयशोशरीरसाथजाइनहीसकता ॥ काहेतेंजुउहऔरशरीरहै ॥ इहकोरश
करपताहूया ॥ जोजवउसकोंस्तनमूर्छाप्रापतभई ॥ तवउसकोंइसहीजैसाअपणा
शरीरभासआया ॥ अरुउसकाजोशरीरथासोसंकल्पविषेस्थितथा ॥ सोअपणासंकल्प
उहसाथलेगईहै ॥ तांतेंअपणोउसीशरीरसाथउहगईहै ॥ ऐसेआपकोंजाणतीभई
है ॥ तैसेउहीलीलाहों ॥ हेलीलेआत्मसत्ताजुहै ॥ सोसर्वआत्मरूपहै ॥ जैसीजैसीभा
वनाउसविषेदृढहोतीहै ॥ तसाहीरूपउसकाहोइजाताहै ॥ जिसकोंइहनिश्चेहूया
जोमेंपंचभूतकरूपहों ॥ तिसकोंऐसहीदृढहोताहै ॥ जुमैंउडनहीसकता ॥ हेली
लेइहलीलातोअविदितवेदथी ॥ अर्थइहजुअज्ञानसहितथी ॥ अधिभूतकभ्रम
नहीनिवर्तभया ॥ परमेशवरजुथाइसकारणतेंउसकोंस्तनमूर्छाकेअनंतरभासआ
या ॥ जुदेवीकेसैवरकरवलाजावगाहै ॥ इसवासनाकीदृढताकरकेजाइप्रापतभई
है ॥ हेलीलेइहजगतभ्रमकरकेभासताहै ॥ सर्वजगतआत्माविषेआभासरूपहै ॥ सर्व
काअधिष्ठानआत्मसत्ताअपणाआपहै ॥ अज्ञानकरकेदृढभासताहै ॥ हेलीलेजोता
नवालथकछहै ॥ सोसदाशांतरूपआत्मातेंदरकरत्रियतवड्नेहै ॥ अरुजोअज्ञानीहै
सोअशांतरूपहै ॥ जैसेजिसकोंतपवड्याहोताहै ॥ तिसकाअंतरभीपडाजलताहै ॥ अ
रुविशासीवहूजलतातीहै ॥ तैसेजिसकोंअज्ञानरूपीतपवडुयाहूयाहै ॥ तिसकाअं
तरवाहिदथकरकेपडाजलताहै ॥ अरुविषयोंकीतृस्नारूपीत्रिषाभीवहुतहोतीहै
अरुजिसकाअज्ञानरूपतपनष्टभयाहै ॥ तिसकारागद्वेषादिककरअंतरभीनहीजल
ता ॥ अरुविषयोंकीतृस्नारूपीत्रिषाभीनष्टहोजातीहै ॥ इति लीलोपाख्यानेसत
मर्त्यअंतरनाममपंच त्रिंशसर्गः ॥ ३५ ॥ ॐ ॥ देव्युवाच ॥
हेलीलेजउहचअविदितवेदहै ॥ अर्थयहजोजाननेजोगपदकोंनहीजाणा ॥ अ
उद्यापवानहोवे ॥ तौभीआतिवाहकताजिसकोंप्रापतनहीहोती ॥ परआतिवा

हकरस्थितहोतीहै ॥ मरणअरुजन्मतिसविषेभासतेहै ॥ जैसीजैसीवासनाहोतीहै
तिसकेअनुसारसुषदुषकाअनुभवकरतीहै ॥ जैसेकोऊषुकपनदीविषेअवेशकरताहै
तिसविषेकहूंवडाजलहोताहै ॥ कहूंछोटाजलहोताहै ॥ कहूंवडेतेरंगहोतेहै ॥ कहूंसी
मजलहोताहै ॥ सोसमजलविषेहोतेहै ॥ तैसेजैसेवासनाहोतीहै ॥ तिसकेअनुसारस
षडुषकाअनुभवहोताहै ॥ अधःऊर्ध्वसमवासनारूपीगतिविषेपडेगिइतेहै ॥ जैसेव
लीविषेवांहीहोतीयांहै ॥ तैसेसंवेदनविषेजन्मसरणकीकल्पनाहोतीहै ॥ अरुशुद्ध
चेतन्यमात्रविषेकोऊकल्पनानहीं ॥ अनेकशरीरनष्टहोजातेहै ॥ अरुचेतन्यसत्ता
ज्योंकीत्योंरहतीहै ॥ जोचेतन्यसत्ताभीस्तकहोवे ॥ तवएककेनष्टहूएसभनष्टहो
जावै ॥ सोऐसेतोनहीं ॥ चेतन्यसत्ताकरसभकछुसिद्धहोताहै ॥ जोउहनहोवे ॥ तोको
ऊकिसीकोंनजाणे ॥ हेलीलेचेतन्यसत्ताजोहै ॥ सोनतीहै ॥ नमरतीहै ॥ सर्वकल्पना
तेंरहितकेवलचिन्मात्रहै ॥ तिसकाकिसकालविषेकेसनाशनाहोवे ॥ जन्मसरण
कीकल्पनासंवेदनविषेहोतीहै ॥ अचेत्यचिन्मात्रविषेकछुहूयानहीं ॥ हेलीलेस्तन
सोईहोताहै ॥ जिसकेनिश्चेविषेस्तकासदभावहोताहै ॥ जिसकेनिश्चेविषेस्तकास
द्भावनहीं ॥ सोकेसेमरे ॥ जवइसकोंदृश्यकाअत्यंतअभावहोवे ॥ तवबंधतेंमुक्तहो
वे ॥ वासनाहीइसकोंवंधनकाकारणहै ॥ जववासनातेंमुक्तहोताहै ॥ तववंधनको
ऊनहीरहता ॥ हेलीलेआत्मविचारकरकेज्ञानहोताहै ॥ अरुज्ञानकरकेदृश्यकाअत्य
तअभावहोताहै ॥ जवदृश्यकाअभावहूया ॥ तववासनानष्टहोजातीहै ॥ इहजगत
उदेहूयानहीं ॥ परउदेहूएकीन्याईवासनासत्ताकरकेभासताहै ॥ तांतेंवासनात्यागा
करु ॥ जववासनानिवृत्तभईतववंधनकोऊनरहेगा ॥ इति श्रीमृत्युविचारोनाम षट्
त्रिंशः सर्गः ॥ ३६ ॥
ॐ लीलोवाच ॥
हेदेवीजीइहजीवस्तनकैसेहोताहै ॥ अरुजन्मकैसेलेताहै ॥ मेरेवोधकीदृढताके
निमित्तवहुडकहु ॥ देव्युवाच ॥ हेलीलेइसकेअंतरप्राणअपाणकीएककलाहै
तिसकेआश्रयइहशरीररहताहै ॥ जवस्तनकहोणेलगताहै ॥ तवप्राणवायुअपा
णस्थानकोंत्यागतीहै ॥ जिसजिसस्थानतनाडीसोंनिकसतीहै ॥ सोस्थानसिथल
होताहै ॥ जवऊर्ध्वहिकाशरीरकोंनिकसतीहै ॥ तवप्राणकलाटूटपरतीहै ॥ अरुचे
तनतानाडीविषेअंतर्भूतहोजातीहै ॥ तवअज्ञानवालेलोकइसकोंप्रेतकहतेहै ॥ जु
इहस्तनहूयाप्रेतभयाहै ॥ हेलीलेइसकेचित्तकीचेतन्यताजडीभूतहोजातीहै ॥ के
वलचेतन्यजोआत्मसत्ताहै ॥ सोज्योंकीत्योंरहतीहै ॥ स्थावरजंगमसर्वजगतविषेव्या
परहीहै ॥ आकाशपहाडदृढतअग्निवायुआदिकसर्वपदार्थोंविषेव्यापरहीहै ॥ उदेअ
स्तसतेंरहतहै ॥ हेलीलेजवइसकोंस्तनमूर्छाहोतीहै ॥ तवप्राणपवनआकाश
विषेलीनहोताहै ॥ तिसप्राणविषेचेतन्यताहोतीहै ॥ अरुचेतन्यताविषेवासनाहो
तीहै ॥ ऐसेजोप्राणअरुचेतन्यसत्ताहै ॥ सोवासनाकोंलेकरआकाशविषेआकाशरू
पस्थितहोतीहै ॥ जैसेगंधकोंलेकरआकाशविषेवायुस्थितहोतीहै ॥ तैसेवासना
कोंलेकरचेतन्यतास्थितहोतीहै ॥ हेलीलेतिसअपणेआदेशमात्रहृदस्थानसोंअ
पणीवासनाकेअनुसारवहुडजगतफुरनआवताहै ॥ तिसविषेदेशकालक्रियाद्र
व्यमरकरदेषताहै ॥ सोस्तनभीजीवोंकोंदोप्रकारहै ॥ एकपापात्माकोंस्तनहै ॥ एकपु
न्यात्माकोंस्तनहै ॥ वहुडपापीभीतीनप्रकारकेहै ॥ एकमहापापीहै ॥ एकमध्यमपापीहै
तीसरेअल्पपापीहै ॥ इसीप्रकारपुन्यभीतीनप्रकारकेहै ॥ एकमहापुनीहै ॥ एकमध्य
मपुनीहै ॥ तीसरेअल्पपुनीहै ॥ प्रथमपापीयोंकोंस्तनश्रवणकर ॥ जववडापापीस्तन
होताहै ॥ तवमरकरजडीभूतहोता ॥ वनपाषाणकीन्याईसहस्रवर्षोपर्यंतमूर्छाविषे
पडारहताहै ॥ कईऐसेजीवहै ॥ तिसमूर्छाविषेभीउनकोंदुःषहोताहै ॥ जैसेवायुरुं
द्रियाकोंदुःषहोताहै ॥ तिसकेरागद्वेषकोंलेकरचित्तकीवृत्तअंतरहृदेविषेजाइस्थि

नहोतीहै ॥ तैसेपापवासनाकाइष्टअंतरदुषहोताहै ॥ तिसकरदुषहोताहै ॥ अंतरज
लताहै ॥ इसप्रकारजडीभूतमूर्छाविषेरहिताहै ॥ तिसतेअनंतरदुसकोवहुडचैतन्य
ताकरआवतीहै ॥ अपणेसाथशरीरकोदेषताहै ॥ वहुडनरकोंकोजाइभोगताहै ॥ चि
रकालपर्यंतनरकोंकोभोगकरवहुरतेजन्मपसुआदिकोंकोभोगताहै ॥ तिनकोंभोगक
रमनुषशरीरकोंपावताहै ॥ महानीचदरिद्रीयोंनिरधनोंकेगृहविषेजन्मलेताहै ॥
नहांभीदुषोंकरितपतारहताहै ॥ हेलीलेइहमहापापीयोंकीगतितुझकोंकही ॥
अवमध्यमपापीगतिसुण ॥ जवमध्यपापीगतिहोताहै तवउहसीहछकीन्याईमू
र्छाकरजडीभूतहोजाताहै ॥ अंतरदुषकरजलताहै ॥ जडीभूततेथोडेकालविषेवहुड
चैतन्यताकोंपावताहै ॥ नरकोंकोजाइभोगताहै ॥ नरकोंकोभोगकरतिर्यगादिजूनीकों
भोगताहै ॥ तिनकोंभोगकरवासनाकेअनुसारमनुषशरीरकोंपावताहै ॥ अरुअल्प
पापीकीगतिसुण ॥ हेलीलेजवअल्पपापीगतिहोताहै ॥ तवमूर्छाहोजाताहै ॥ केता
कुकालतेउसकोंचैतन्यताआनफुरतीहै ॥ चैतन्यताकोंपाइकरनरकोंकोजाइकरभोग
ताहै ॥ तिनकोंभोगकरकर्मोंकेअनुसारओरजन्मोंकोभोगताहै ॥ वहुडमनुषशरीरआ
नधारताहै ॥ हेलीलेइहपापात्मेयोंकीगतिकही ॥ अवधर्मात्मेयोंकीगतिसुण ॥ जो
महाधर्मात्माहै ॥ सोजवमृतकहोतेहैं ॥ तवउनकेनिमित्तविवानआवतेहैं ॥ तिनपा
विमारूढकरकैस्वर्गोंमोंलेजातेहैं ॥ जिसइसदेवताकीउपासनाउसकेहृदेविषेहो
तीहै ॥ तिसकेलोककोंलेजाताहै ॥ तहांजाइकरस्वर्गसुषभोगताहै ॥ जैसेकर्मकी
येहोतेहैं ॥ तैसेसुषकोंभोगताहै ॥ तैसेस्वर्गसुषहै ॥ जोगंधर्वविद्याधरअपसराआ
दिकभोगहैं ॥ तिनकोंभोगकरवहुडगिरताहै ॥ किसीफलविषेआनस्थितहोताहै ॥ ति
सफलकोंमनुषभोजनकरताहै ॥ तववीर्यविषेजाइस्थितहोताहै ॥ तिसवीर्यसा
थमाताकेगर्भविषेजाइस्थितहोताहै ॥ तहांतेवासनाकेअनुसारवहुडजन्मले
ताहै ॥ जोकछुभोगोंकीकामनाहोतीहै ॥ तवश्रीमानधर्मात्मेयोंकेगृहविषेउप
जताहै ॥ अरुजोभोगोंतेनिहकामहोताहै ॥ तवसंतजनोंकेगृहविषेजन्मलेताहै ॥
अवमध्यमधर्मात्मायोंकीगतिसुण ॥ हेलीलेजोमध्यमधर्मात्मामृतकहोताहै
तिसकोंशीघ्रहीचैतन्यताफुरआवतीहै ॥ अरुस्वर्गकोंचलाजाताहै ॥ अपणेपुन्यकेअ
नुसारस्वर्गकोंभोगकरवहुडगिरताहै ॥ किसीफलविषेआनस्थितहोताहै ॥ उसफ
लकोंपुरुषभोजनकरताहै ॥ तवपिताकेवीर्यद्वारामाताकेगर्भविषेआवताहै ॥ वा
सनाकेअनुसारजन्मलेताहै ॥ अरुजोअल्पधर्मात्मामृतकहोताहै ॥ तवउसकों
इहफुरताआवतीहै ॥ जैसेमृतकहुयाहों ॥ मेरेवांधवअरुपुत्रोंनेमेरीपिंडक्रियाक
रीहै ॥ मैंपितरलोककोंचलाजाताहों ॥ उहपितरलोककोंअनुभवकरताहै ॥ पि
तरलोककेसुषभोगकरगिरताहै ॥ तवधानविषेआनस्थितहोताहै ॥ तवधानकोंपु
रुषभोजनकरताहै ॥ तववीर्यरूपहोइकरस्थितहोताहै ॥ तिसवीर्यद्वाराकरकेमाता
केगर्भविषेआवताहै ॥ वहुडवासनाकेअनुसारजन्मलेताहै ॥ हेलीलेजवपापीमृ
तकहोताहै ॥ तवतिसकोंमहाक्रूरमार्गभासताहै ॥ तिसमार्गपरचलताहै ॥ चरणों
विषेकंटकचुभतेहैं ॥ सिरपरसूर्यजलावताहै ॥ सूर्यकीधूपकरशरीरकष्टवा
नहोताहै ॥ अरुजोपुन्यात्माहोताहै ॥ तिसकोंसुंदरछायाकाभावहो ॥ वावलीअरुसुंद
रस्थानोंकेमार्गमहेतउसकोंलेजातेहैं ॥ जहांधर्मराजावैठाहै ॥ तिसकेनिकटलै
प्रापतकरतेहैं ॥ धर्मराजाचित्रगुप्तसोंपूछताहै ॥ तिनकर्मोंकेअनुसारस्वर्गअरुनरक
कोंभोगताहै ॥ तिसकोंभोगकरवहुडगिरताहै ॥ धानअथवाओरकिसीअन्नविषेआन
स्थितहोताहै ॥ जवउसअन्नकोंपुरुषभोजनकरताहै ॥ तवउहसुषुप्तवासनाकोंलेक
रवीर्यविषेआनस्थितहोताहै ॥ जवपुरुषकास्त्रीसाथसंयोगहोताहै ॥ तववीर्यद्वा
रामाताकेगर्भविषेआवताहै ॥ तहांभीअपणेकर्मोंकेअनुसारमाताकेगर्भकोंप्रापत

होताहै ॥ तिसमाताकेगर्भविषेउसकोंअनेकजन्मोंकास्मरणहोताहै ॥ वहुडवाहनि
कसकरवालकअवस्थाकोंधारताहै ॥ तवपिछलीस्मृतिविस्मरणहोजातीहै ॥ तहां
नहस्वअवस्थाकोंधारताहै ॥ परमार्थकीसुहृदकछुनहींहोती ॥ क्रीडाविषेमगनहोताहै ॥
तिसतेआगेयोवनअवस्थाआवतीहै ॥ तवकामआदिकविकारोंविषेअंधहोजाताहै ॥
विचारकछुनहींरहता ॥ वहुडजराअवस्थाआवतीहै ॥ तवशरीरमहांकृशऐसाहोजा
ताहै ॥ अरुरोगआनउपजतेहैं ॥ शरीरकुरूपहोजाताहै ॥ जैसेकमलोंपरपालापडता
है अरुकमलायजातेहैं ॥ तैसेहीइसअवस्थाविषेशरीरकुमलायजाताहै ॥ सभशक्ती
घटजातीयांहैं ॥ अरुत्रिस्नावधजातीहै ॥ वहुडमृतकहोणलगताहै ॥ तवकष्टवानहो
ताहै ॥ कष्टकोंपाइकरमृतकहोताहै ॥ तववासनाकेअनुसारस्वर्गनरकोंप्रापतहोता
है ॥ इसप्रकारसंसारचक्रविषेवासनाकेअनुसारघटीजंत्रकीन्याईभ्रमताहै ॥ स्थिरक
दाचितनहींहोता ॥ हेलीलेइसप्रकारजीवआत्मपदकेप्रमादकरकेजन्ममरणकेप
दकोंप्रापतहोतेहैं ॥ वहुडवहुडमाताकेगर्भविषेआवतेहैं ॥ वालकअवस्थायोवनअ
वस्थावृद्धअवस्थामृतकअवस्थाकोंप्रापतहोतेहैं ॥ वहुडवासनाकेअनुसारपरलोक
कोंदेषतेहैं ॥ जाग्रतस्वप्नकीन्याईभ्रमतेंअनंतरभ्रमकोंदेषतेहैं ॥ जैसेस्वप्नतेअनंतरदे
षताहै ॥ तैसेअपणीकल्पनाकरकै ॥ जगतभ्रमफुरआवताहै ॥ स्वरूपतेकिसकोंकछुभ्र
मनहीं ॥ आकाशरूपआकाशविषेस्थितहैं ॥ भ्रमकरकेविकारभासतेहैं ॥ लीलोवाच ॥
हेदेवीपरब्रह्मविषेइहजगतभ्रमकैसेहुयाहै ॥ सोमेरेवोधकेदृढताकेनिमित्तकह
देव्युवाच ॥ हेलीलेस्वरूपतेंसभआत्मस्वरूपहै ॥ पहाडभीपरमार्थघनहै ॥ वृक्षभी
परमार्थघनहै ॥ पृथिवीभीपरमार्थघनहै ॥ आकाशआदिकस्थावरजंगमजेताककुज
गतहै ॥ सभपरमार्थघनहै ॥ परमार्थसत्तासर्वआत्माहै ॥ हेलीलेतिसपरमार्थसत्तासं
वित्त ॥ आकाशविषेजवसंवेदनआभासफुरताहै ॥ तिसकरजगतभ्रमसताभासताहै ॥
आदिसंवेदनजोसंवित्तमात्रविषेजोहुईहै ॥ सोआकाशरूपहोइकरस्थितभयाहै ॥ वहुडजै
सेउहचेततागयाहै ॥ तिसहीप्रकारस्थावरजंगमजगतहोइकरस्थितभयाहै ॥ हे
लीलेशरीरजोहुयाहै ॥ तिसकेअंतरविषेनाडीहै ॥ नाडीविषेछिद्रहैं ॥ तिनछिद्रोंविषे
प्राणस्पंदरूपहोइकरविचरताहै ॥ तिसकोंजीवकहीताहै ॥ जवउहजीवनिकसजा
ताहै ॥ तवशरीरमृतकहोताहै ॥ हेलीलेजैसेजैसेआदिसंवितमात्रविषेसंवेदनफुरी
है ॥ तैसेअवलगस्थितहै ॥ जवचैतन्यात्मेजडहुवा ॥ तवजडरूपपृथिवीआपतेजवायुआ
काशपर्वतवृक्षआदिकहोइकरस्थितभई ॥ जडकीभावनाकरजडहूई ॥ चेतनकीभाव
नाकरचैतन्यरूपहोइकरस्थितभई ॥ हेलीलेजिनविषेप्राणक्रियापाईतीहै ॥ सोजंग
मरूपवोलतेचलतेहैं ॥ अरुजिनविषेप्राणस्पंदक्रियानहींपाईती ॥ सोस्थावररूपहै ॥
अरुआत्मसत्ताविषेदोनोंतुल्यहै ॥ जैसेजंगमहैं ॥ तैसेस्थावरोंविषेचैतन्यताहै ॥ अरु
जोतूंकहैस्थावरोंविषेचैतन्यताभासतीक्युंनहीं ॥ तिसकाउत्तरसुण ॥ हेलीलेजैसेउत्त
रदिशाकेवासीमनुषोंकीवोलीकोंदक्षिणदिशाकेसमुद्रवालेनहींजाणते ॥ अरुद
क्षिणदिशाकेसमुद्रवालोंकीवोलीकोंउत्तरदिशाकेसमुद्रवालेनहींसमझसकते ॥
तैसेस्थावरोंकीवोलीकोंजंगमनहींसमझसकते ॥ अरुजंगमोंकीवोलीकोंस्थावरन
हींसमझसकते ॥ परस्परअपणीअपणीजातिविषेचैतन्यहै ॥ उसकाज्ञानउसकोंहो
ताहै ॥ जैसेकूपविषेदडूहोताहै ॥ सोओरकूपकेदडूकोंनहींजानता ॥ अरुओरकूपकाद
डूउसकूपदडूकोंनहींजानता ॥ तैसेजंगमोंकीवोलीस्थावरनहींजाणसकते ॥ अरु
स्थावरोंकीवोलीकोंजंगमनहींजाणते ॥ हेलीलेजोआदिसंवित्तविषेसंवेदनफुरी
है ॥ तैसारूपहोइकरमहाप्रलयपर्यंतहै ॥ अन्यथानहींहोती ॥ जवतिससंवित्तविषे
आकाशकीसंवेदनफुरीहै ॥ तवआकाशहोइकरस्थितभईहै ॥ जवस्पंदनाकोंचेततीभ
ई ॥ तववायुरूपहोइकरस्थितभई ॥ जवउस्नताकोंचेततीभई ॥ तवअग्निरूपहोइकर
स्थितभई ॥ जवद्रवताकोंचेततीभई ॥ तवजलरूपहोइकरस्थितभई ॥ जवगंधकीचि

तबनाकरी॥ तबपृथिवीरूपहोइकरस्थितभई॥ इसीप्रकारजिसजिसकोंचेतती॥ सोसो
पदार्थप्रगटभया॥ आत्मसत्ताविषेप्रतिबिंबितभया॥ वास्तवतेंनकोऊस्थावरहै॥ नजंग
महै॥ केवलब्रह्मसत्ताज्योंकीत्योंअपणेआपविषेस्थितहै॥ तिसविषेजगतभ्रमकरकेय
ड़ाभासताहै॥ औरदूसरीवस्तुकछुनहीं॥ हेलीलेअबराजाविदूरथकोदेष॥ जोस्तन
कहोताहै॥ लीलोवाच॥ हेदेवीजीइहराजायुधकेघावधारीवालेमंडपविषेकिसमा
र्गकरजावेगा॥ अरुइसकेपाछेहमकिसमार्गकरजावेंगे॥ देव्युवाच॥ हेलीलेअप
णीवासनाकेअनुसारमनुषमार्गकेराहजावेगा॥ हेचिदाकाशरूप॥ परअज्ञानकरके
इसकोंइहस्थानभासेगा॥ अरुहमभीइसहीकेमार्गइसकेसंकल्पसाथसंकल्पमिलिता
नहीं॥ तबलगएकत्वभावनहींहोना॥ इसीकारणतेंइसकेसंकल्पसाथअपणासंक
ल्पमिलाइकरइसहीमार्गजावेंगे॥ वसिष्ठउवाच॥ हेरामचंद्रइसप्रकारदेवीजीलीलाकों
उपदेसकीया॥ केसाउपदेशहै॥ मानोंबोधकासूर्यउदेहूयाहै॥ असेसंवादकरतेंथेजेरा
जाजड़ीभूतहोवणेलागा॥ इति लीलोपाख्याने संसारमरणादिवर्णनंनामसप्त
त्रिंशसर्गः॥ ३७॥

॥ ॐ॥

वसिष्ठउवाच॥ हे
रामचंद्रइसप्रकारदेवीअरुलीलादेषतीथी॥ जुराजेकेनेत्रफाटगए॥ अरुशरीरनीरस
होगया॥ अरुगिरिपड़ा॥ स्वासप्रस्वासकाकेमार्गनिकसगए॥ तबजैसेरसतेंरहतपत्र
होताहै॥ अरुजैसेकाटयाहूया कमलबिरसहोजाताहै॥ तैसेराजाकाशरीरनीरसहो
गया॥ जोकछुचित्तकीचेतनाथीसोजड़ीभूतहोगई॥ स्तनमूर्छारूपीअंधकूपविषेरा
जाजाइपड़ा॥ अरुप्राणचेतनाअरुवासनासंयुक्तआकाशविषेजाइस्थितभए॥ प्रा
णविषेचेतनाविषेवासनाथी॥ सोचेतनाअरुवासनासहितप्राणआकाशविषेजा
इस्थितभए॥ जैसेवायुगंधकोंलेकरस्थितहोतीहै॥ हेरामचंद्रउहराजकीपुर्यष्ट
कातोजड़ीभूतहोगई॥ परदोनोंदेवीयांउसकोंदिव्यदृष्टिसाथपड़ीयांदेषें॥ जैसेभ्र
मरनीगंधकोंदेषतीहै॥ तबराजाएकमहूर्तपर्यंतमूर्छाविषेरहा॥ बहुडउकोंचे
तनताफुरआई॥ अपणेसाथशरीरभासआया॥ अरुमाननताभया॥ जुमेरेबांधवोंने
मेरीदशगात्रपिंडक्रियाकरीहै॥ तिसकरइहमेराशरीरहूयाहै॥ अरुधर्मराजके
स्थानकोंमुझकेइतलेचलेहैं॥ हेरामचंद्रइसप्रकारअनुभवकरताधर्मराजकेस्थानकों
चल्याजावे॥ तिसकेपाछेदेवीअरुलीलाचलीजावें॥ जैसेवायुकेपाछेगंधचलीजा
तीहै॥ तैसेचलीयाजावें॥ तबराजाविदूरथधर्मराजकेपासजाइप्रापतहूया॥ धर्मराज
नेचित्रगुप्तकोंकहाजुइसकेकर्मविचारकरहो॥ तबचित्रगुप्तनेकहा॥ हेभगवनइसको
कुपापकर्मनहींकीया॥ अरुबडेबडेपुण्यकीयेहैं॥ पापनहींकीये॥ अरुभगवतीसरस्व
तीकाइसकोंवरहै॥ अरुइसकाशवशरीरफूलोंसाथढांप्यापड़ाहै॥ तिसशरीरविषे
भगवतीकेवरकरजाइप्रवेशकरणाहै॥ तातेंओरइसकोंअबकछुनहींकहणा॥ हे
रामचंद्रऐसेउहांकहा॥ तबराजाकोंअपणेस्थानतेंचलाइदीया॥ तबआगेराजाचला
जावे॥ जैसेधमारणाकरकेचटावेगासोंचलावतेहैं॥ तैसेहीचलाजावे॥ चलायदीया॥ त
बआगेराजाचल्याजावे॥ तिसकेपाछेदोनोंदेवीयांचलीयाजावें॥ राजेकोंसहदेषतीयां
जावें॥ अरुराजाइनकोंदेषनसके॥ तबतीनोंएकब्रह्मांडकोंलंघगए॥ जिसकाराजाविदू
रथकीयाथा॥ तिसकोंलंघकरपद्मकेमंदरविषेआए॥ जहांफूलोंसाथढांप्याशवथा॥
एकाग्रताविषेदेवीयांआनमिलीयां॥ जैसेमेघकोंवायुआनमिलतेहैं॥ जैसेसूर्यकोंसूर्य
कोंकमलकोंभ्रमरआनमिलतीहै॥ जैसेवायुकोंगंधआनमिलतीहै॥ जैसेआन
मिलीयां॥ रामउवाच॥ हेभगवनउहराजातोस्तनकहूयाथा॥ स्तनकहोइकरतिससा
रीकोंकेसेपछाननभया॥ जुआनप्रापतहूया॥ वसिष्ठउवाच॥ हेरामचंद्रउहविदूरथ
जोस्तनकभयाथा॥ सोउसकीवासनातोनष्टनथीभई॥ उसअपणीवासनाकरअपणे
स्थानकोंदेषाअरुआइप्रापतभया॥ हेरामचंद्रआंतमात्रजोजगतहै॥ सोचिदअणुजी
वकेउदरविषेहै॥ जैसेवटकेबीजविषेअनंतवटवृक्षहोतेहैं॥ तैसेचिदअणुविषेअनंत

जनातेहै॥ जोअपणेअंतरस्थितहै॥ तिसकोंकुंनदेषे॥ जैसेजीवअपणेविषेजीवत्वकाअ
रदेषताहै॥ तैसेस्वभचिदअणुत्रिलोकीयांकोंदेषताहै॥ जैसेकाऊपुरुषकिसीस्थानवि
षेधनकोंदबावे॥ अरुआपदूरदेशकोंजावे॥ तोधनकोंवासनाकरकेबडादेषताहै॥ तैसे
वासनाकीदृढताकरविदूरथदेषताभया॥ अरुजैसेकोऊजीवस्वप्नभ्रमकरकिसीबडेधन
वानकेगृहविषेजाइउपजताहै॥ भ्रमकेशांतहूए॥ तिसकाअभावदेषताहै॥ तैसे
करताहै॥ रामउवाच॥ हेभगवनजिसकीवासनापाछेपिंडदानक्रियाकीनहींरही॥ तैसेअनुभव
तकभयाहै॥ तबउहकेसेअपणेसाथदेहकोंदेषताहै॥ जिसकीपिंडक्रियाहूईनहीं॥ अरुतत्त
ज्ञताकाच॥ हेरामचंद्रइहजोकछुमातापिताकेपिंडजोकरतेहै॥ उनकेवासनाइसकेहृदे
विषेहोतीहै॥ सोवासनाफलरूपहोइकरइसकोंभासतीहै॥ जुमेराशरीरहै॥ मेरेबांधवोंने
मेरेबांधवोंपिंडदानक्रियाकरीहै॥ तिसकरमेराशरीरहूयाहै॥ अपणीयावासनाकातिस
कोंइसप्रकारअनुभवहोताहै॥ हेरामचंद्रसदेहहोवे॥ अथवाविदेहहोवे॥ अपणीवासना
केअनुसारइसकोंअनुभवहोताहै॥ भावनातेंइतरअनुभवनहींहोता॥ चित्तसप्तदृढरूप
षहै॥ जोचित्तविषेपिंडकीवासनादृढहोतीहै॥ तबआपकोंपिंडवानहोजानताहै॥ तातें
पदार्थोंकाकारणभावनाहीहै॥ कारणविनाकार्यनहींउदेहोता॥ महाप्रलयपर्यंतकार
णविनाकार्यहोतादेष्यानहीं॥ अरुसुण्याभीनहीं॥ तातेंकहाहै जोजैसीवासनाहोतीहै
तैसाअनुभवहोताहै॥ रामउवाच॥ हेभगवनजिसपुरुषकोंअपणेपिंडदानआदिकधर्म
कीवासनानहीं॥ उहजबस्तकहोताहै॥ तबप्रेतवासनासंयुक्तहोताहै॥ जुमेंप्रेतहूयाहों॥
अरुपाछेतिसकेबांधवउसकेनिमित्तधर्मक्रियाकरतेहैं॥ सोधर्मक्रियाउसकोंप्रापत
होतीहै॥ अथवानहींहोती॥ बांधवोंकेमनविषेदृढभावनाभई॥ जुउसकोंप्रापतहोवेगी॥
अरुउसकेमनविषेभावनानहीं॥ जुकिसकरणीहै॥ धनकेअभावतेंअथवाश्रद्धादिकोंकेअ
भावतेंउहनिरासहै॥ अरुकिसीअभावतेंकिसीमित्रआदिककरी॥ सोकैसेहोतेहैं॥ वसिष्ठउ
वाच॥ हेरामचंद्रभावनाजोहोती॥ सोदेशकालक्रियाद्रव्यसंपदाचारोंकरहोतीहै॥ जैसेकि
सीकीभावनाहोतीहै॥ तैसेसिद्धहोतीहै॥ जिसकीकरतवतावलीहोतीहै॥ तिसकीजय
होतीहै॥ जोधर्मपक्षकीवासनादृढहोतीहै॥ तबतिसबुद्धिविषेप्रसन्नताउपजआवतीहै॥
सर्वभावनानष्टहोजातीहै॥ अरुसोभगतकोंप्रापतहोताहै॥ जोअतिबलीवासनाहोतीहै॥
तिसकीजयहोतीहै॥ तातेंअपणेकल्याणकेनिमित्तशुभकाअभ्यासकीयाचाहीये॥ रा
मउवाच॥ हेभगवनक्रियादेशकालद्रव्यचारोंकरवासनाहोतीहै॥ तोमहाप्रलयसर्ग
कीआदिविषेदेशकालक्रियाद्रव्यसंपदाकोऊनहींहोती॥ जहांचारोंकारणनहींहोते
अरुतिनकीवासनाभीनहींहोती॥ तिसअद्वैततेंजगतभ्रमबहुरडकैसेहोताहै॥ वसिष्ठउवा
च॥ हेरामचंद्रमहाप्रलयअरुसर्गकीआदिविषेदेशकालक्रियाद्रव्यसंपदाकोऊनहीं
रहिता॥ अरुनिमित्तकारणसमवायकारणकाअभावहोताहै॥ परचिदात्माविषेजग
तकछुउपज्याभीनहीं॥ अरुहैभीनहीं॥ वास्तवतेंदृश्यकाअत्यंतअभावहै॥ अरुजोकछु
भासताहै॥ सोब्रह्मकाकचनहै॥ सोब्रह्मसत्तासदाअपणेआपविषेस्थितहै॥ ऐसेअनेक
जगतोंकरमेनुजकोंकहोंगा॥ अबतूंश्रवणकरसुण॥ हेरामचंद्रजबउहदेवीयांतिसमंद
रविषेजाइप्रापतभईयां॥ तबदेषतभईयांजुमहाफूलोंकरसुंदरशोभितस्थानबनेहूएहैं॥
जैसेवसंतऋतुविषेवनभूमिकाहोतीहै॥ तैसेस्थानहै॥ अरुप्रातःकालसमाहै॥ स्वर्गके
कुंभजलसाथभरेमंगलरूपपड़ेहैं॥ दीपकोंकीप्रभामिटगईहै॥ किवाड़लगेहूएहैं॥ अरु
मंदरविषेलोकसोएहैं॥ तिनकेस्वासआवतेजातेहैं॥ महासुंदरफरोषहै॥ ऐसेस्थानबने
हूएहैं॥ जैसेसंपूर्णकरचंद्रमाशोभता॥ तैसेभासताहै॥ इंद्रकेस्थानजैसेसुंदरहै॥ तैसा
मंदरसुंदरहै॥ जिसकमलतेंब्रह्माजीउपजाहै॥ तैसाउहकमलसुंदरहै॥ तैसेसुंदरस्था
नमंदरकोंदेषतभईयां॥ ॥ इति श्री मरणसमनंतरप्रत्यनंतरदृश्यावर्णनंनामअष्टत्रिंश
सर्गः॥ ३८॥

॥ ॐ नमः॥

॥ वसिष्ठउवाच

हे रामचंद्र तब दोनों देवीयां तिस राजा के पास विदूरथ की लीला कों देखन भईयां ॥ जो उस
के रत्नतें प्रथम तहां आन प्रापत भई है ॥ सर्व जैसे वस्त्र भूषण पहिरे हूए है ॥ सर्व जैसे आचार
है ॥ सर्व जैसे सुंदर है ॥ सर्व जैसे शरीर है ॥ तिस लीला कों देख भईयां ॥ कैसा सुंदर स्वरूप है ॥ जिस
के लवकणा के भी चंद्रमा की न्याई प्रकाशते है ॥ अरु महा सुंदर स्त्रीयों की दृष्टि पर वैठी है ॥ ल
क्ष्मी के समान लीला है ॥ अरु विष्णु के समान राजा है ॥ तिस लीला कों कछुक चिंता सहित दे
खत भईयां ॥ जैसे दिन के समे चंद्रमा की मध्यम प्रभा होती है ॥ तैसे कछुक चिंता सहित राजा
के वामें ओर वैठी है ॥ विदूरथ कों हाथ के आधार राख्या है ॥ अरु हस्त वे हाथ कर चमर करती है ॥ ति
स लीला कों इह दोनों देखन भईयां ॥ पर उह लीला इनकों न देखत भई ॥ काहेतें जो इह दोनो
प्रबुध आत्मा थीयां ॥ अरु सत्त संकल्प थीयां ॥ अरु उह लीला इनके समान प्रबुद्ध न थी ॥ ति
स कारणतें उह इनकों न देखन भई ॥ राम उवाच ॥ हे भगवन तिस मंडप विषे जो पूर्व लीला देह कों
स्थापकर अरु ध्यान विषे विदूरथ की सृष्टि देखणे कों सरस्वती साथ गई थी ॥ सो तिस देह
का वर्णन कछु न कीया ॥ उस देह की क्या दसा भई ॥
वसिष्ठ उवाच ॥ हे रामचंद्र लीला कहां थी ॥ अरु कहां गई ॥ तिसका वृत्तांत श्रवण क
कहां थी ॥ उह तो अरुंधती के मन विषे लीला शरीर कहां था ॥ अरु तिसकी सत्ता
षे जल की प्रतिभा होती है ॥ तैसे लीला शरीर की प्रतिभा हूई थी ॥ जैसे मरुस्थल वि
न करके भासते है ॥ बोध करके अधिभूतकता निवर्त होइ जाती है ॥ हे रामचंद्र अधिभूतक आ
य विषे परिणाम हूया ॥ तब तिसका अधिभूतक शरीर निवर्त होगया ॥ जब तिस लीला कों बो
रवरफ का पुतला गल जाता है ॥ तैसे ज्ञान करके तिसकी अधिभूतकता नष्ट होगई ॥ जैसे सूर्य के तेज क
रु आतिवाहकता उदे भई ॥ हे रामचंद्र जेता कछु जगत है ॥ सो सभ आकाश रूप है ॥ अ
जैसे जेवड़ी विषे सर्प भ्रम करके भासता है ॥ तैसे आतिवाहक विषे अधिभूतक भासता
है ॥ आदि शरीर आतिवाहक अर्थ यह जो संकल्प मात्र है ॥ तिस विषे जो दृढ भावना हो
गई है ॥ तिस कर पृथिवी आदिक तत्वों का शरीर भासणे लगा है ॥ वास्तव तें न कोऊ भूमि आ
दिक तत्व है ॥ न कोऊ तत्वों का शरीर है ॥ इनके शब्द अर्थ ससे के शृंग की न्याईं असत्य है ॥
हे रामचंद्र आत्मा विषे अज्ञान करके अधिभूतक भासते है ॥ जब आत्मा का बोध होता है ॥
तब अधिभूतकता नष्ट होजाती है ॥ जैसे कोऊ पुरुष स्वप्ने विषे आपकों हरण देखता भया
जब जाग उठया ॥ तब हरण का शरीर दृष्ट नहीं आवता ॥ तैसे अज्ञान करके अधिभूत
कता दृष्ट आई है ॥ अरु आत्मबोध हूए तें अधिभूतकता दृष्ट नहीं आवती ॥ जब सत्य का
ज्ञान उदे होता है ॥ तब असत्य का ज्ञान लीन होजाता है ॥ जैसे जेवड़ी के अज्ञानतें स
र्प भासता है ॥ अरु जेवड़ी के ज्ञानतें सर्प का ज्ञान लीन होजाता है ॥ जैसे जेवड़ी के ॥ स्मरण
जगत मन तें उदे हूया है ॥ अज्ञान कर अधिभूतकता कों प्रापत भया है ॥ जैसे स्वप्ने वि
षे जगत अधिभूतक होइ भासता है ॥ अरु जागे तें स्वप्न शरीर नहीं भासते ॥ तैसे आत्म
ज्ञान करके अधिभूतक होइ भासता है सो निवर्त होजाती है ॥ अरु आतिवाहक शरीर
भासता है ॥ राम उवाच ॥ हे भगवन योगेश्वर जो आतिवाहक शरीर साथ ब्रह्मलोक पर्य
न्त आवते जाते है ॥ तिनके शरीर कैसे भासते है ॥ वसिष्ठ उवाच ॥ हे रामचंद्र शरीर ऐसे है ॥ जै
से कोऊ पुरुष स्वप्ने विषे होवे ॥ तिसकों देवता जाग्रत शरीर संयुक्त होवे ॥ तब स्वप्न शरीर इसकों
दृष्ट भी आवता है ॥ पर तिसकों आकाश रूप जानता है ॥ तैसे अधिभूतकता बोध करके नष्ट
होजाती है ॥ जैसे सरत काल के मेघ देखणे मात्र होता है ॥ तैसे योगेश्वर ज्ञानवान का शरीर देख
णे मात्र होता है ॥ पर अदृष्ट रूप मात्र है ॥ अदृष्ट रूप है ॥ और कों शरीर दृष्ट आवता है ॥
का आकाश रूप भासता है ॥ हे रामचंद्र इह देहादिक आत्मा विषे भ्रांत करके दृष्ट आवते है ॥ उसकों आ
ज्ञान कर निवर्त होजाती है ॥ जैसे जेवड़ी के अज्ञान करके सर्प भासता है ॥ जब जेवड़ी का ज्ञान
हूया ॥ तब सर्प भाव तिसका निवर्त होजाता है ॥ तैसे तत्व बोध के हूए देह कहां होवे ॥ अरु
देह की सत्ता कहां रहे ॥ दोनों का अभाव होजाता है ॥ केवल ब्रह्म सत्ता अद्वैत भासती है ॥ राम

उवाच ॥ हे भगवन आतिवाहक ते अधिभूतक रूप कैसे होता है ॥ अथवा अधिभूतक ते आति
वाहक रूप होता है ॥ सो तुम हों कों कहो ॥ वसिष्ठ उवाच ॥ हे रामचंद्र में तुझ कों वारंवार कहा
है ॥ तूं मेरे कहे कों धारता क्यों नहीं ॥ में आगे कहा है ॥ जो जेते कछु जीव है ॥ सो सर्व आतिवा
हक रूप है ॥ अधिभूतक कोऊ नहीं ॥ आदि जो शुद्ध संवित मात्रतें संवेदन आभास उठा है ॥
तिसकर के इस जीव का आदि शरीर आतिवाहक संकल्प रूप हूया है ॥ जब उस विषे
दृढ अभ्यास हूया ॥ तब उह संकल्प रूपी शरीर अधिभूतक होइ कर भासणे लगा है ॥ जै
से जल दृढता कर के बरफ होजाता है ॥ तैसे परमाद करके संकल्प के अस्पंदतें अधि
भूतक रूप होजाता है ॥ तिस अधिभूतक के तीन लक्षण होते है ॥ भारी शरीर होता है ॥
अरु कठोर भाव होता है ॥ स्थूल होता है ॥ तिस विषे अहं प्रतीत होती है ॥ इस कारणतें
अधिभूतक कहीता है ॥ अरु जब तत्व का बोध होता है ॥ तब इह अधिभूतक आकाश
रूप होजाता है ॥ जैसे स्वप्ने विषे देहतें आदि लेकर संपूर्ण पदार्थ स्पष्ट रूप भासता है ॥ अ
रु जब स्वप्ने विषे स्वप्ने का ज्ञान होता है ॥ तब उह स्वप्ना है ॥ तब उह स्वप्न का शरीर लघु
रूप होजाता है ॥ अथवा इह संकल्प रूप होजाता है ॥ तैसे परमात्मा के बोध रूप तें अधिभूत
क शरीर निवर्त होजाता है ॥ संकल्प रूप ही भासता है ॥ हे रामचंद्र अधिभूतकता जु इस
कों प्रापत भई ॥ सो अबोध के अभ्यास कर प्रापत भई है ॥ जब उलट कर उह ही अभ्यास बोध का
होवे ॥ तब अधिभूतकता नष्ट होजावेगी ॥ अरु आतिवाहकता उदे होवेगी ॥ हे रामचंद्र अ
न्य शरीर जु इह प्रापत होता है ॥ सो एक शरीर कों त्याग कर इस देह का अंगीकार करता है ॥
जैसे स्वप्ने तें स्वप्नांतर कों प्रापत होता है ॥ अरु जब बोध होता है ॥ तब शरीर और कछु वस्त
नहीं रहता ॥ उह ही अधिक शरीर शांत होजाता है ॥ जैसे स्वप्ने तें जागे हूए स्वप्न शरीर शां
त होजाता है ॥ तैसे बोध रूप अधिभूतक शरीर शांत होजाता है ॥ हे रामचंद्र जेता कछु ज
गत तुझ कों भासता ॥ सो सब स्वप्न भ्रम मात्र है ॥ अज्ञान करके सत्य की न्याईं भासता है ॥ ज
ब आत्मबोध होवे ॥ तब सब आकाश रूप होवेगा ॥ इति श्री लीलोपाख्याने स्व [illegible]
[illegible] नाम सर्गः ॥ ३५ ॥

ॐ वसिष्ठ उवाच
हे रामचंद्र जब उह दोनों देवीयां अंतःपुर विषे गईयां ॥ तब प्रबुद्ध लीला कहत भई ॥ हे
देवी जी समाधि विषे लगे मुझ कों केता काल व्यतीत भया है ॥ अरु जो मैं ध्यान करके भू
पाल के सृष्टि विषे गई थी ॥ मेरा शरीर कहां पड़ा था ॥ सो कहां गया ॥ देवी उवाच ॥ हे ली
ले अब तुझ कों समाधि विषे लगे एकतीस दिन व्यतीत भए है ॥ अरु जो जब तें ध्यान वि
षे लगी ॥ तब तेरी उस चिका विदूरथ की सृष्टि विषे विचरती फिरी ॥ इस शरीर की वास
ना तेरी निवर्त होइ गई ॥ जब इह शरीर तेरा निर्जीव होइ कर गिर पड़ा ॥ जैसे रस तें रहत
पत्र सूक जाता है ॥ तैसे तेरा शरीर सरस तें रहत भया था ॥ जैसे काष्ठ पाषाण होता है ॥ तैसे हो
इ गया था ॥ अरु बरफ की न्याईं शीतल होइ गया ॥ तब देख कर मंत्रीयों विचार कीया ॥ जु इ
ह मृतक भया है ॥ इस कों जलाईये ॥ तब चंदन अरु घृत साथ लेप कर जलाइ दीया
बोधव जन कर दहन करणे लागे ॥ अरु पुत्रों पिंड क्रिया करी ॥ हे लीले अगे जो तूं ध्यान तें उत
रती ॥ तब तुझ कों देख कर लोक आश्चर्यमान न होता ॥ अरु अब देख कर आश्चर्यमान होवेंगे
जो रानी परलोक तें वहुड़ फिर आई है ॥ हे लीले तुझ कों जो बोध उदे हूया है ॥ तिस कर उस
शरीर की वासना नष्ट भई है ॥ अरु आतिवाहक विषे दृढ निष्ठा भया ॥ इस कारणतें उह श
रीर निर्जीव भया ॥ अरु अब जो उसके समान तेरा शरीर है ॥ सो इस कारणतें है ॥ जो तुझ कों बो
ध हूया ॥ सो लीला वासना विषे हूया ॥ मैं लीला हों ॥ ऐसे जो तेरी वासना भई ॥ अरु सत्य सं
कल्प भई है ॥ जैसे तेरी इच्छा होवे ॥ तैसे अनुभव होवेगा ॥ हे लीले जैसी वासना जिसकों दृढ
होती ॥ तिसके अनुसार तिसकों प्रापत होती है ॥ जैसे बालक कों अंधकार विषे जैसी भावना
होती है ॥ तैसा ही भान होता है ॥ जो वैताल की भावना होती है ॥ तब वैताल ही होता है

परवास्तव वैतालकोकछु नहीं ॥ तैसे जेती कछु अधिभूतकता भासती है ॥ सोभ्रम मात्र
है ॥ सभ जीवोंका आदि शरीर आतिवाहक है ॥ परमाद करके अधभूतकता भासताहै ॥
हे लीले एक लिंग शरीर है ॥ एक आतिवाहक शरीर है ॥ सो दोनो संकल्परूप है ॥ परएता
भेद है ॥ लिंगशरीर शुद्ध मन है ॥ तिसविषे जिको अधिभूतकताका अभिमान हूया है ॥ ति
सकों गौरत्वरूप अरु कठोररूप वर्णाश्रमका अभिमान हूया है ॥ जिस पुरुषकों ऐसे·
अनात्मविषे आत्म अभिमान हूया है ॥ तिसकों अधिभूतक लिंग देह है ॥ अरु यह जो तिस
की चितवना सत्त नहीं होती ॥ अरु जिसकों अधिभूतकका अभिमान नहीं ॥ सो आतिवा
हक शरीर है ॥ उह जैसे चितवना करता है ॥ तैसी सिद्ध होती है ॥ हे लीले इह आतिवा
हक विषे दृढ स्थित भई है ॥ इस कारणते तेरा वड़ड उसीजे सा शरीर हूया है ॥ अधिकउ
धते रीव्र थनष्ट गई है ॥ उह शव शरीर होइ कर गिड पड़ा ॥ जैसे जल ते वर्फ ॥ तम गई होते है
जैसे सुगंध ते रहित फूल होवे ॥ तैसे ते शाशरीर होगया ॥ अरु अव तू सत्त संकल्प भई है ॥
जैसे चितवना करे तैसे होता है ॥ हे लीले इह जो कमल ते नालीला ते रे भरताके पास वैठी
है ॥ तिसकों इह अंतःपुर के लोक सहीलीयां जान नहीं सकतीयां ॥ काहे ते जु मैं इनकों नि·
द्राकर केमोहित कीया था ॥ जव लग मेरा दर्शन इसकों न होवे ॥ तव लग इसकों ओर कोऊ
न जाण सके ॥ अव इह इसकों देखेगी ॥ वसिष्ठ उवाच ॥ हे रामचंद्र ऐसे विचार करदेवी उस
कों अपणे संकल्पसाथ सावधान करती भई ॥ तव उस लीलादेख्याजु अंतःपुर विषे वडा
प्रकाश होत भया है ॥ जैसे वहुते सूर्योंका प्रकाश एकटा होवे ॥ अरु चंद्रमा की न्याई सीतल·
प्रकाश ऐसे प्रकाशवान दोनों देवीयोंकों देख कर नमस्कार कीया मस्तक टेकया ॥ अरु दो
नोंकों स्वर्णके सिंहासन पर वैठाया ॥ अरु कहत भई ॥ हे जीवके दाता ते री जय होवे ॥ तुम
मेरे उपर वडी कृपा करी है ॥ तेरे प्रसाद कर मैं इहां आन प्रापत भई हों ॥ देवी उवाच ॥ हे पुत्री·
तूं इहां कैसे आन प्रापत भई है ॥ अरु क्या हत्तांत तुझ देख्या है ॥ सो कहु ॥ विदूरथ उवाच ॥ ली
लोवाच ॥ हे देवीजी जव मेरा भरता संग्राम विषे हाइल भया था ॥ तिसकों देख कर मैं मूर्छा भ
ई अरु गिड पड़ी ॥ मैं मूर्छा भई परमृत न भई ॥ तिसते अनंतर वडड सुपकों चेतन्यता उह आई
तव मैं अपणे साथ उह शरीर दीखती भई ॥ तिस शरीर कर मैं आकाश मार्गकों उडी ॥ एक कुवारी
सुफकों उडावती इहां लेआई है ॥ जैसे वायु गंधकों ले आवती है ॥ तैसे उडावती परलोक·
विषे सुफकों भरताके पास आन वैठाया है ॥ अरु आप अंतरध्यान होइ गई है ॥ अरु मेरा भरता
जो संग्राम कर थका है ॥ सो आइ कर सोइ रहा है ॥ अरु मैं तुमकों संभालती मार्ग विषे छूटती
आई हों ॥ परसुफकों तुम दर्शन कहु न आए ॥ ईहां कृपा कर तुम दर्शन दीया है ॥ वसिष्ठ उवाच
हे रामचंद्र इस प्रकार सुण कर देवी प्रवुद्ध लीलाकों कहत भई ॥ जु अव राजाकी जीवकला
कों छोडती हों ॥ ऐसे कह कर जीवकलाकों छोड दीया ॥ तव नासकाके मार्गसों जीवकला
प्रवेश कर गई ॥ जैसे कमलके अंतर वायु प्रवेश कर जावे ॥ अथवा वंशीके अंतर वायु प्रवे·
श कर जावे ॥ तैसे शरीर विषे जीवकला प्रवेश कर गई ॥ कैसी जीवकला है ॥ जो वासना कर के पू
र्ण है ॥ जैसे समुद्र जलकर पूर्ण होता है ॥ तैसे पूर्व सृष्टिकी वासना कर पूर्ण है ॥ ऐसी जीवक
ला शरीर विषे प्रवेश कीया ॥ तव शरीर की कांति उज्जल होत भई ॥ अंगो विषे प्राणवायु प्रसर
गई ॥ जैसे वसंत रितु विषे फूल हरे छ्व विषे फूल खिड आवते हैं ॥ तैसे इंद्रीयां खिड आईयां ॥ त
व राजा पूर्ण लोंके सयाने उठ वडा हूया ॥ जैसे रोक या हूया विंध्याचल पर्वत उठ आया ॥ तव
दोलीलां राजाके सन्मुख आ रहीयां ॥ तव राजे कहा मेरे आगे तुम कोन खडे हो ॥ तव प्रवुध
लीला कहा ॥ हे स्वामी मैं ते री पूर्व पटराणी लीला हों ॥ सदा ते रे संग रही हों ॥ जैसे शब्द
के संग अर्थ रहिता है ॥ तैसे मैं ते रे सदा संग रही हों ॥ हे राजा जव तूं ईहां शरीर त्याग परलो
क गया था ॥ तव मेरे वि घने रास्नेह वहुत था ॥ तिस वासना कर मेरा प्रतिविंव इह लीला त
मकों भासी थी ॥ और जों कया का हतांत है ॥ सो मैं तुमकों कहांगी ॥ हे राजन इहमारे ऊपर उस

देवी कृपा करी है ॥ तोतमारे सीसकों और स्वर्णके सिंहासन पर वैठी है ॥ इह सरस्वती सर्व
कीजननी ॥ इस हमारे ऊपर वडी कृपा करी है ॥ अरु लोकांतरते तुमकों इहां ले आई है ॥ हे राम
चंद्र ऐसे सुण कर राजा प्रसन्न हूया ॥ अरु उठ खडा हूया अरु सरस्वतीके चरणों पर मस्त
क राखा ॥ अरु कहत भया ॥ राजो वाच ॥ हे सरस्वतीजी तुमकों मेरा नमस्कार है ॥ तुम भक्तों हि·
तकारी है ॥ अरु मुफ पर वडा अनुग्रह कीया है ॥ अव कृपा कर मुफकों इह वर देवो ॥ जो मेरी दी·
नकारी है ॥ अरु मुफ पर वडा अनुग्रह कीया है ॥ अरु लक्ष्मी भी वहुत होवे ॥ अरु रागकी ह·
आर्वला भी वडी होवे ॥ अरु निहकंटक राजकरो ॥ अरु लक्ष्मी भी वहुत होवे ॥ अरु रागक ह
आर्वला भी वडी होवे ॥ अरु मैं आत्मज्ञान कर के भी संपन्न होवां ॥ अर्थ यह जो भोग अरु मोक्ष दो
भी कोऊ नहोवे ॥ अरु मैं आत्मज्ञान कर के भी संपन्न होवां ॥ अर्थ यह जो भोग अरु मोक्ष दो
तो मुफकों देवो ॥ देवी उवाच ॥ हे राजन ऐसे ही होवेगा ॥ ते री आर्वला भी वडी होवेगी अरु
ते रा शत्रु भी कोऊ न होवेगा ॥ निहकंटक राज को तू करेगा ॥ अरु आपदा तुफकों कोऊ न हो
वेगी ॥ अरु तू लक्ष्मी संपदा कर संपन्न होवेगा ॥ अरु प्रजा भी वहुत सुखी रहेगी ॥ तुफकों दे
वक र प्रसन्न होवेगी ॥ अरु ते री प्रजा विषे भी आपदा किसीकों न होवेगी ॥ अरु तूं आत्मा
नंद कर भी पूर्ण होवेगा ॥ इति उत्पत्ति प्रकरणे लीलोपाख्याने राजा जीवनवर्णनं नाम
डोंवसिष्ठउवाच
सर्गः ॥ ५· ॥
हे रामचंद्र इस प्रकार कह कर देवी जी अंतर्धान होत भई ॥ तव प्रातःकालका समय हूया
सभ लोक जागा उठे ॥ जैसे सूर्य के उदे हूए सूर्यमुखी कमल खिड आवते हैं ॥ तैसे सभ लो·
क खिड आए ॥ तव राजा दोनो लीलाकों कंठ लगावत भया ॥ अरु प्रसन्न भया ॥ अरु आश्चर्य
मान भी भया ॥ तव तिस मंदर विषे नगारे वाजने लगे ॥ शाह होव रोलने लगे ॥ वहुड मंगल
गावे ॥ अरु हुल्लास करे ॥ मंदर विषे वडा आनंद आन वरता ॥ अंगना अनेक नितन करणे
लागीयां ॥ वहुड उत्साह हूया ॥ विद्याधर सिद्ध देवता इस लीलाकी शोभा करणे लागे ॥ अरु
लोक वडे आश्चर्यकों प्रापत हूए ॥ जु लीला परलोकते वहुड आई है ॥ अरु भरताकों भी ले
आई है ॥ हे रामचंद्र इह कथा देशांतरों के ग्रामांतरकों चली गई ॥ तव मंत्रीयों अरु मंडलेश्वरों उन
रदाव्हिणपूर्वपश्चिम चारों ओर ते समुद्रका जल मंगाया ॥ अरु सर्व तीर्थोंका जल मंगाया ॥
अरु राजेकों राजका अभिषेक कीया ॥ तव चार समुद्रों पर्यंत राजा निहकंटक राज करत
भया ॥ राजा अरु लीला पूर्व लीयां कथाकों विचारे ॥ अरु आश्चर्यमान होवे ॥ सरस्वतीके
उपदेशकों पाइ कर राजे अरु दोनों लीला अस्सी सहस्र वर्ष पर्यंत जीवन मुक्त होइ·
कर राज कीया ॥ कैसे राज कीया जो मन सहित षट इंद्रियोकों वश कीया ॥ अरु यथा·
लाभ विषे संतुष्ट रहे ॥ दृष्ट प्रमति तिनका नष्ट होगया ॥ ऐसे जीवन मुक्त होइ कर राज कर
तभए ॥ कैसा सुंदर राजा है ॥ मानो तिसकी सुंदरता समुद्रका एक लवक णकाचंद्रमा है ॥
वहुड कैसा राजा है ॥ जिसके तेजका मानो कणका सूर्य है ॥ इस प्रकार राज करत भए ॥ स
भ प्रजाकों भली प्रकार तुष्ट करते भए ॥ वहुड विदेहमुक्त निर्वाणपदकों दोनों प्रापत हू
डोंवसिष्ठउवाच ॥
ए ॥ इति निर्वाणवर्णनं नाम सर्गः समाप्तः ॥ ५१ ॥
हे रामचंद्र यह दोनो कथा मैं तुमकों विस्तार कर श्रवण कराई यांहै ॥ एक आकाशज ब्रह्म
णकी ॥ इसरी लीलाकी सो दृश्यदोष के निवृत्त अर्थ कहीयां है ॥ हे रामचंद्र दृश्य की दृ
ढता जो हृदय रही है ॥ तिसकों त्याग ॥ अरु अव तूं दोनों इतिहासोकों संक्षेप ते सुण ॥ इह ज
गत जु तुमकों भासता है ॥ सो आभास रूप है ॥ आदि ते कछु उपजया नहीं ॥ जो वस्तु सत्य
होती है ॥ तिसके निवर्त करणे विषे यत्न होता है ॥ अरु जो वस्तु असत्य ही होवे ॥ तिसके
निवर्त करणे विषे तो यत्न कछु नहीं ॥ इस कारण ते ज्ञानवान कों सभ आकाशरूप होजा
ता है ॥ अरु आकाशकी न्याई स्थित है ॥ हे रामचंद्र आदि जो ब्रह्मसत्ता विषे आभास सं वे
दन फुरी है ॥ सो ब्रह्मारूप होइ कर स्थित भई है ॥ सो ब्रह्मा पृथिवी आदिक भूतों ते रहित है
जो आप ही आभासरूप होवे ॥ तिसते उपजया जगत कैसे सत्य होवे ॥ हे रामचंद्र ज्ञानवा
न पुरुष आकाशरूप है ॥ जिनकों आत्मपदका साक्षात्कार हूया है ॥ तिसकों दृश्य भ्रम·

काअभावहोजाताहै॥ अरुजोअज्ञानीहै॥ तिसकोजगतभ्रमस्पष्टभासताहै॥ शुद्धचिदाकाशकाएकअणुजीवहै॥ तिसजीवअणुविषेइहुजगतभासताहै॥ तिसजगतकीआस्थामेंतुमकोंक्याकहों॥ पदार्थक्याकहों॥ हेरामचंद्रओरजगतभासताहै॥ शुद्धसंवित्तरूपदेशाविषेसंवेदनरूपीनदीचलतीहै॥ तिसविषेइहुजगतपडाफुरताहै॥ जवसंवेदनकोंयत्नकरकेरोकीयेगा॥ तवदृश्यभ्रमनष्टहोजावेगा॥ सोयत्नकरणाइहीहै॥ जोसंवेदनकोंअंतर्मुषकरणा॥ जवलगआत्माकासाक्षात्कारहोता॥ तवदृश्यभ्रमनष्टहोजावेगा॥ सोयत्नकरणाइहीहै॥ तवलगश्रवणमननिदिध्यासनकरदृढअभ्यासकरीये॥ जवसाक्षात्कारहूया॥ तवदृश्यभ्रमनष्टहोजावेगा॥ हेरामचंद्रइहुसर्वजगतजोतुमकोंभासताहै॥ सोइहुमकोंअखंडब्रह्मसत्ताहीभासतीहै॥ जगतमायामयहै॥ परमायाभीकछुओरवस्तुनही॥ ब्रह्मसत्ताहीअपणेआपविषेस्थितहै॥ रामउवाच॥ वडाआश्चर्यहै॥ हेमुनीश्वरतुमममकोंपरमदृष्टकहीहै॥ कैसातुमाराउपदेशहै॥ दृश्यरूपीत्रिणाकोंनाशकरनादावाअग्निहै॥ अरुअध्यात्मकअधिभूतकअधिदैवकतापोंकाशांतकर्ताचंद्रमाहै॥ हेमुनीश्वरतुमारेउपदेशाकरमैंज्ञानज्ञेयभयाहों॥ अरुपांचविकल्पमेविचारेहै॥ जोयहुजगतमिथ्याहै॥ स्वरूपतेंअनिर्वचनीयहै॥ आत्माविषेआभासहै॥ २॥ इसकास्वभावपरिणामीहै॥ ३॥ अज्ञानकरकेउपज्याहै॥ ४॥ अरुअनादिअज्ञानपर्यंतहै॥ ५॥ असेजाणकरमेंशांतआत्माज्ञानवानोंकीन्याईभयाहों॥ अरुनिर्वाणसुखकीन्याईभयाहों॥ हेमुनीश्वरओरशास्त्रोंतेंइहतुमाराउपदेशआश्चर्यरूपहै॥ श्रवणरूपीपात्रतुमारेवचनरूपीअमृतकरतृप्तनहीहोते॥ तातेंइहमेरासंशयहरकरो॥ जोलीलाकेभरताकोंतीनसृष्टोंकाअनुभवभया॥ प्रथमवसिष्टकीवहुडपदमकीवहुडविदूरथकी॥ तिनोंविषेकालकाव्यतिक्रमदेख्या॥ जोकहूंदिनहूया॥ कहूंमासहूया॥ कहूंवर्षोंकाअनुभवभया॥ सोकालकाव्यतिक्रमकैसेहूया॥ हेमुनीश्वरइहुलोहकेवटेविषेजलनहीस्थितहोता॥ अरुकुंभविषेस्थितहोताहै॥ तातेंस्पष्टकरकहों॥ जोतुमारेवचनमेरेहृदयविषेस्थितहोवे॥ एकवारकहणेकरहृदयविषेस्थितनहीहोते॥ तातेंवहुडकहो॥ वसिष्ठउवाच॥ हेरामचंद्रशुद्धसंवित्तसभकाआपणाआपरूपहै॥ कहूंक्षणाविषेकल्पाकेसंवुद्धवीतेभासतेहै॥ कहूंकल्पविषेक्षणकाअनुभवहोताहै॥ हेरामचंद्रजिसकोविषकोंअमृतकीभावनाहोतीहै॥ तिसकोंअमृतहोइभासताहै॥ अरुजिसकोंअमृतविषेविषकीभावनाहोतीहै॥ तवउहीविषरूपहोइभासताहै॥ किसीपुरुषकाशत्रुहोताहै॥ अरुउसविषेमित्रकीभावनाकरताहै॥ तवउहमित्ररूपहोइभासताहै॥ अरुजिसकोंमित्रविषेशत्रुकीभावनाहोतीहै॥ तवउहीशत्रुहोइभासताहै॥ हेरामचंद्रजैसीजैसीसंवेदनफुरतीहै॥ तैसाहीरूपहोइकरभासताहै॥ जिसकीसंवेदनतीव्रभावअभ्यासकरकेनिर्मलभावकोंप्रापतहोतीहै॥ तिसकासंकल्पसत्यहोताहै॥ जैसेचेततीहै॥ तैसेहीसिधहोताहै॥ तोसंवेदनहीकीतिव्रताभई॥ हेरामचंद्रजोकोऊपुरुषरोगीहोताहै॥ तिसकोंएकरात्रकल्पकेसमानवितीतहोतीहै॥ अरुजोअरोगीहोताहै॥ तिसकोरात्रएकक्षणविषेवितीतहोतीहै॥ अरुएकमुहूर्तकेस्वप्नेविषेअनेकवर्षोंकाअनुभवकरताहै॥ जाणताहैजुमैंउपज्याहों॥ इहुमेरेमातापिताहै॥ अवमैंवडाहूयाहों॥ इहुमेरेवांधवहै॥ हेरामचंद्रएकमुहूर्तविषेएतेभ्रमदेखताहै॥ अरुजागेहूएएकमुहूर्तभीनहीवीत्याहोता॥ हरिचंदकोंएकरात्रविषेवारहवर्षोंकाअनुभवहूयाथा॥ राजेलवणकोंएकक्षणविषेसोवर्षकाअनुभवभयाथा॥ तातेंजैसेजैसेरूपहोइकरसंवेदनफुरतीहै॥ तैसेतैसेहोइकरभासतीहै॥ हेरामचंद्रब्रह्माकेमुहूर्तविषेमनुकीआवलीवितीतहोजातीहै॥ सोब्रह्माएकमुहूर्तकाअनुभवकरताहै॥ मनुसंपूर्णआवलीकाअनुभवकरतीहै॥ अरुजोपहलोसेंअपणीसृष्टिआवलीकाअनुभवकरतीहै॥ सोविष्णुकाएकदिनहोताहै॥ ब्रह्माकीआवलीवितीतहोतीहै॥ अरुविष्णुकोंएकदिनअनुभवहोताहै॥ तातेंजैसेजैसेसंवेदनविषेदृढताहोतीहै॥ तैसातैसाभानहोताहै॥ हेरामचंद्रजेताकछुजगततूंदेखताहै॥ सोसंवेदनफुरणेविषेस्थितहै॥ जवसंवेदनस्थिरभूतहोतीहै॥ तवनदिनभासताहै॥ नरात्रभासतीहै॥ नकोऊपदार्थभासताहै॥ नअपणाशरीरभासताहै॥ सोकेवलआत्मत्वमात्रसत्तारहतीहै॥ तातेंतूंदेषजोसभजगतभ्रममनकेफुरणेविषेहोताहै॥ जैसेजैसेफुरताहै॥ तैसातैसारूपहोइभासताहै॥ कटुकविषेजिसकोंमधुरकीभावनाहोतीहै॥ तवकटुकतिसकोंमधुरहोजाताहै॥ अरुमधुरविषेजिसकोंकटुकभावनाहोतीहै॥ तवमधुरभीतिसकोंकटुकरूपहोजाता॥ अरुस्वप्नमोंशून्यस्थानविषेनानाप्रकारकेव्यवहारहोतेभासतेहै॥ अरुआपस्थिरहीहोताहै॥ अरुस्वप्नेविषेदौडताफिरताहै॥ तातेंजैसाजैसाफुरणामनविषेहोताहै॥ तैसाहीहोइभासताहै॥ हेरामचंद्रजोपुरुषवेडीविषेवैठाहोताहै॥ तिसकोंतटीनदृक्षोंसहितदौडतेभासतेहै॥ सोस्थिरपदार्थचलतेभासतेहै॥ जोविचारवानहै॥ सोचलतेभासणेविषेभीस्थिरजाणतेहै॥ अरुजोपुरुषभौताहै॥ तिसकोंस्थिरभूतमंदरभ्रमतेपडेभासतेहै॥ अरुजोविचारविषेदृढहै॥ तिसकोंभ्रमतेभासविषेभीअचलबुधहोतीहै॥ तातेंजैसाजैसानिश्चाहोताहै॥ तैसातैसाहोइभासताहै॥ हेरामचंद्रजोस्वेतपदार्थहोताहै॥ अरुकिसकेनेत्रोंविषेदूषणहोताहै॥ तिसकोंपीतवर्णभासताहै॥ अरुजिसकेशरीरविषेवातपित्तकफदोषमानहोतेहै॥ तिसकोंपदार्थविपर्ययभासतेहै॥ पृथिवीआकाशरूपहीभासतीहै॥ अरुआकाशपृथिवीरूपभासताहै॥ अरुचलपदार्थअचलपडाभासताहै॥ अचलपदार्थचलतापडाभासताहै॥ हेरामचंद्रस्वप्नविषेअंगनाअसत्तरूपहोतीहै॥ परभ्रांतकरकेउसकोंस्पर्शकरताहै॥ अरुप्रसन्नहोताहै॥ तिसकालमेंप्रत्यक्षभासताहै॥ अरुजैसेवालककोंपरछावेविषेवैतालभासताहै॥ सोअसत्तहीसत्तरूपहोताहै॥ अर्थयहजोभयकोंदेताहै॥ शत्रुहोताहै॥ हेरामचंद्रअरुजोउसविषेमित्रभावनाहोतीहै॥ तवउहशत्रुमित्रसुहृदहोइभासताहै॥ जैसेजेवडीविषेसर्पहैनही॥ परभ्रमकरकेसर्पभासताहै॥ अरुभयकोंदेताहै॥ अरुअवांधवहोताहै॥ जोउसविषेवांधवकीभावनाकरीतीहै॥ तवअवांधवभीवांधवरूपहोइभासताहै॥ अरुवांधवभीभावनाकेअभावतेंअवांधवहोइजाताहै॥ हेरामचंद्रशून्यस्थानस्वप्नेविषेवडेक्षोभभासतेहै॥ औरनिकटवर्तीजागतेकछुनहीभासता॥ स्वप्नवालेकोंस्वप्नेकाअनुभवहोताहै॥ अरुजाग्रतवालेकोंजाग्रतकाअनुभवहोताहै॥ इत्यादिकपदार्थविपर्ययहोभासतेहै॥ सोभ्रमकरभासतेहै॥ जवमनफुरताहै॥ तवहीभासतेहै॥ तैसेलीलाकेभरतेकोंभीअैसीधारणाकाअनुभवहूया॥ जैसेजाग्रतकेमुहूर्तसुपनमोंवडेवडेकालकाअनुभवहोताहै॥ तैसेलीलाकेभरतेकोंभीहूयाथा॥ जैसाजैसामनकाफुरणाहोताहै॥ तैसातैसारूपचेतन्यसंवित्तविषेभासताहै॥ अरुहमकोंसदाब्रह्मकानिश्चाहै॥ तातेंसभजगतहमकोंब्रह्महीस्वरूपभासताहै॥ जिसकोंजगतभावदृढहै॥ तिसकोंजगतहीपडाभासताहै॥ हेरामचंद्रजेताकछुजगतभासताहै॥ सोआदितेंकछुउपज्यानही॥ सभआकाशरूपहै॥ रोकणेवालेभित्तकोऊनही॥ वडेविस्तारकरभीजगतभासताहै॥ परस्वप्नवतहै॥ जैसेथंभविषेउकेरेविनापुतलीयांशिल्पीकेमनविषेभासतीयांहै॥ थंभेविषेकछुवनीयांनही॥ तैसेआत्मरूपीथंभाहै॥ तिसविषेसंवेदनजगतरूपीपुतलीयांकोंरचतीहै॥ पदार्थकछुहूएनही॥ आत्मसत्ताज्योंकीत्योंहै॥ हेरामचंद्र॥

जैसे एक स्थानविषे दोइ पुरुष सोए होवैं॥ तिनों विषे एक जाग्रत होवै॥ दूसरा स्वप्न
विषे होवे॥ जो स्वप्ने विषे है॥ तिसकों वडे युद्ध होते पडे भासते हैं॥ अरु जागते कों आका
शरूप है॥ तैसे जो अबोध आत्मा ज्ञानवान है॥ तिनकों जगत स्वप्न की न्याई अभाव है॥
अरु जो अज्ञानी है॥ तिनकों नाना प्रकार व्यवहारों संहित जगत स्पष्ट भासता है॥
जैसे वसंत रितु विषे पत्र फूल गुच्छे रस संहित भासते हैं॥ तैसे आत्मसत्ता चेतनता
करके जगत रूप भासती है॥ जैसे स्वर्ण विषे द्रवता रहती है॥ पर जब अग्नि का संयो
ग होता है॥ तब उस विषे द्रवता भासती है॥ तैसे आत्म विषे जगत आभास दा रहता
है॥ पर जब संवेदन फुरती है॥ तब जगत भासता है॥ हे रामचंद्र आत्मा जगत विषे क
छु भेद नहीं॥ जैसे अवयवी अरु अवयवों विषे कछु भेद नहीं॥ तैसे आत्मा अरु जग
त विषे कछु भेद नहीं॥ आत्मसत्ता ही संवेदन करके जगत रूप होइ भासती है॥ और क
छु दूसरी वस्तु नहीं॥ जब महाप्रलय होती है॥ अरु सर्ग नहीं होता॥ तब कार्य कार
ण की कल्पना कोऊ नहीं होती॥ केवल चिन्मात्र सत्ता होती है॥ तिसते जो वहुरि ज
गत भासता है॥ सो उसही रूप हुया कछु॥ अरु जो तूं कहै इस जगत का कारण स्मृत हो
ती है॥ तो सुण॥ हे रामचंद्र जब महाप्रलय होती है॥ तब ब्रह्माजी तो विदेह मुक्त हो
ता है॥ वहुरि उह जगत कारण कैसे होवे॥ अरु जो तूं स्मृत कारण माने॥ तो स्मृत भी
अनुभव विषे होती है॥ जो स्मृत ते जगत हुया॥ तो भी अनुभव रूप हुया॥ राम उवाच
हे भगवन पद्मराजे के मंत्री टहलूए सभ लोक विदूरथ कों जाइ प्राप्त हुए॥
सो कैसे हुए॥ इह वार्ता वहुरि कहो॥ व[illegible]ष्ठ उवाच॥ हे रामचंद्र केवल चेतन सं
वित सभ का आपणा आप रूप है॥ जैसे जैसे तिस संवित के आश्रय संवेदन
फुरती है॥ तैसा तैसा रूप होइ भासता है॥ हे रामचंद्र जब राजा विदूरथ स्मृत होणे
लागा॥ तब राजे कों वासना उनों विषे वासना वहुती थी॥ अरु मंत्री टहलूए आदि
क राजे का अंग है॥ इस कारणते तैसे ही मंत्री टहलूए उसकों प्राप्त भए॥ जैसे
महामरण की यांकि रणा मन के अंग है॥ तैसे मंत्री टहलूए आदिक सामग्री राज
के अंग है॥ जैसे स्वप्ने विषे आपकों कोऊ देषे॥ मैं इस कुल विषे उपज्या हों॥ इह
मेरा कुल आचार है॥ मैं राजा हों॥ इह मेरे मंत्री टहलूए है॥ अरु अनेक पदार्थ है
तैसे ही स्मृत हुया॥ राजा विदूरथ देषत भया॥ हे रामचंद्र तैसी भावना संवेदन वि
षे दृढ होती है॥ तैसे रूप हुए भासता है॥ एक चल पदार्थ होते है॥ एक अचल पदा
र्थ होते है॥ जो अचल पदार्थ होता है॥ तिसका प्रतिबिंब आदर्श विषे भासता है॥
अरु चल पदार्थ ठहरता नहीं॥ तातें उसका प्रतिबिंब नहीं भासता॥ तातें जिस प
दार्थ की तीव्र संवेग भावना होती है॥ तिसका प्रतिबिंब चेतन्य दर्पण विषे भा
सता है॥ अन्यथा नहीं भासता॥ जैसे तीव्र वेगवान तब ज्ञान दृढ होता है॥ सो समुद्र
कों शीघ्र ही जाइ प्राप्त होता है॥ और नहीं प्राप्त होइ सके॥ तैसे जिसकों दृढ
वासना होती है॥ तिसके अनुसार शीघ्र फल कों पावता है॥ हे रामचंद्र अनेक वा
सना जीव के हृदे विषे रहती है॥ पर तिसकी तीव्रता होती है॥ तिसकी जय
होती है॥ जैसे समुद्र विषे अनेक तरंग होते है॥ कोऊ उपजते है॥ कोई नष्ट होजा
ते है॥ तैसे अनेक सृष्टि एक एक चिदअणु विषे स्थित होती थी॥ वास्तव कछु न
हीं॥ चिदाकाश ही चिदाकाश विषे स्थित है॥ अरु इह जो जगत भासता है॥ सो आ
काश रूप है॥ जो जाग्रत रूप होइकर स्पष्ट भी भासता है॥ तो भी शून्य रूप है॥ अस
ही सत्य की न्याई होइ भासता है॥ जैसे पत्र फूल फल फल टास सभ ब्रह्म ही रूप
है॥ ब्रह्म ही अनेक रूप होइकर स्थित है॥ तैसे अनंत ब्रह्माण्ड परमात्मा अनेक रूप होइ
कर भासता है॥ हे रामचंद्र इह जो दृश्य प्रपंच त्रिपुटी है॥ सो ज्ञानी कों अज्ञ नमा

प्रपंच भासती है॥ अरु अज्ञानी कों द्वैत रूप जगत होइकर भासती है॥ कहूं शून्य भासता
है॥ कहूं अशून्य भासता है॥ कहूं तम भासता है॥ कहूं प्रकाश भासता है॥ अरु देश का
ल क्रिया द्रव्य आदिक सभ जगत है॥ सो सभ आदि अंत मध्य ते रहत स्वच्छ आत्मस
त्ता अपणे आप विषे स्थित है॥ जैसे समुद्र जल ते तरंग भी होते है॥ सो जल ही रूप है॥
तैसे अहं अरु त्वं आदिक जगत भी सद्बोध रूप है॥ सदा अपणे आप विषे स्थित है ति
स विषे द्वैत कल्पना का अभाव है॥ इति लीलोपाख्याने प्रयोजन वर्णनंनाम सर्गः॥ ४२
राम उवाच॥ हे भगवन अहं त्वं आदिक जो दृश्य भ्रांत है॥ सो कारण विना परमात्म ते कै
से उदे हुया है॥ जिस प्रकार मैं समझों तिसी प्रकार मुझकों वहुरि समझावो॥ वसिष्ठ
उवाच॥ हे रामचंद्र जेता कछु कारण कार्य जगत भासता है॥ तिसका उदे होणा आदि प
रमात्मा ते सभ ही हुया है॥ अर्थ यह जो संवेदन के फुरणे ते॥ एकटे ही सभ पदार्थ भास
आए है॥ अरु सर्वदा काल सर्व प्रकार सर्व आत्मा अज रूप अपणे आप ही विषे स्थित
है॥ हे रामचंद्र सर्व शब्द अरु अर्थ रूप कलना भासती है॥ सो भी ब्रह्म रूप है॥ ब्रह्म ते इतर
कछु नहीं॥ अरु ब्रह्मसत्ता सर्व शब्द अर्थ की कलना ते रहत अपणे आप ही स्थित है॥ जैसे
स्वर्ण ते इतर भूषण नहीं॥ अरु जल ते इतर तरंग नहीं॥ तैसे ब्रह्म ते इतर जगत नहीं
ब्रह्म ही स्वरूप है॥ हे रामचंद्र ईश्वर जो आत्मा है॥ जो जगत रूप है॥ पर जगत ईश्वर रूप
नहीं॥ जैसे स्वर्ण भूषण रूप है॥ पर भूषण स्वर्ण नहीं॥ अर्थ यह जो स्वर्ण विषे भूषण
शब्द अर्थ कल्पत है॥ वास्तव नहीं॥ तैसे जगत आत्मा का आभास रूप है॥ वास्तव कछु न
हीं॥ हे रामचंद्र जेता कछु जगत है सो ब्रह्म रूप है॥ ब्रह्म ते इतर कछु नहीं जैसे अवयवी
ते भिन्न अवयव नहीं होते॥ तैसे निरवयव आत्मसत्ता के अवयवी भिन्न नहीं होते॥ आत्मा
विषे संवेदन के फुरणे कर तन्मात्रा फुरीयां है॥ आत्मा विषे इनका उपजणा सम हुया है॥
पाछे विभाग कल्पना भई है॥ जो तिनते भूत हुए है॥ इत्यादिक जगत रूप के सा है॥ जो आ
त्मा आभास अन्य नहीं॥ जैसे सिला विषे चितेरा भिन्न भिन्न पुतलीयों कों कल्पता है॥ सो
सिला रूप ही है॥ इतर कछु नहीं॥ तैसे अहं त्वं आदिक जगत चिदघन आत्मा विषे मन
रूपी चितेरे ला कल्पता है॥ सो चिदघन रूप ही है॥ इतर कछु नहीं॥ जैसे जल विषे त
रंग स्थित होते है॥ सो जल रूप ही है॥ तरंगों का शब्द अरु अर्थ जल विषे कोऊ नहीं॥ ते
से आत्मा विषे जगत स्थित है॥ पर आत्मा जगत के शब्द अरु अर्थ ते रहित है॥ हे राचंद्र
जगत परमपद ते भिन्न नहीं॥ अरु परमपद जगत विना नहीं॥ जैसे अवयव अवयवी
ते भिन्न नहीं होता॥ अरु अवयवी अवयवों भिन्न नहीं होता॥ अरु अवयवी अवयवों की न्याई
ते भिन्न नहीं होता॥ अरु अवयवी अवयव ते भिन्न नहीं होता॥ अरु जैसे वायु अरु स्पंद विषे भेद
भी नहीं॥ केवल चिद रूप अपणे आप विषे स्थित है॥ अरु जैसे वायु अरु स्पंद विषे भेद
भी नहीं॥ केवल चिद रूप अपणे आप विषे स्थित है॥ जब स्पंद रूप होती है॥ तव स्पर्श
कछु नहीं॥ स्पंद अरु अस्पंद दोनो रूप वायु के है॥ पर जब स्पंद रूप होती है॥ तब स्पर्श
कछु नहीं॥ तैसे जगत अरु ब्रह्म विषे भेद
होइकर भासती है॥ अरु अस्पंद हुए स्पर्श नहीं भासता॥ तैसे जगत अरु ब्रह्म विषे भेद
होइकर भासती है॥ अरु अस्पंद हुए स्पर्श नहीं भासता॥ तब जगत रूप हो भासती है॥ अरु से
कछु नहीं॥ पर जब संवेदन कवन रूप होती है॥ तब जगत रूप हो भासती है॥ अरु से
वेदन के अस्पंद हुए ते जगत नहीं भासता॥ पर आत्मसत्ता सदा एक रूप है॥ हे रामचंद्र सं
वेदन के अस्पंद हुए ते जगत नहीं भासता॥ पर आत्मसत्ता सदा एक रूप है॥ हे रामचंद्र जब
व संवेदन फुरणे रहित होइकर आत्मपद विषे स्थित होवे॥ तब संकल्प रूप जगत वहु
इ भासे भी तब आत्म रूप भासेगा॥ जैसे वायु कों स्पंद अस्पंद दोनो रूप अपणा आप भा
सता है॥ तैसे इसकों भासता है॥ जैसे वायु विषे स्पंदता वायु रूप कर स्थित है॥ तैसे जगत
आत्म विषे आत्म रूप कर स्थित है॥ जैसे तेज अणु का प्रकाश मंदर विषे होता है॥ तब वा
हर भी प्रकाश वरात होता है॥ तैसे जब केवल संवित मात्र विषे संवेदन स्थित होती है॥ त
व फुरणे विषे भी संवित मात्र ही भासता है॥ हे रामचंद्र जैसे रसतन मात्र विषे जल स्थि
त होता है॥ तैसे आत्मा विषे जगत स्थित है॥ जैसे गंधतन मात्रे के अंतर संघर्ण पृथिवी स्थि
त है॥ तैसे कचन रूप जगत आत्मा विषे स्थित है॥ सो आत्मसत्ता निराकार चिन्मात्र है उ

हे अरु असत्त ते रहित अपणे आप विषे स्थित है ॥ प्रपंच भ्रम तिस विषे कोऊ नहीं ॥ हे राम
चंद्र जो ज्ञानवान पुरुष है ॥ तिनकों दृष्टी भूत जगत भी आकाशरूप भासता है ॥ अरु जो
अज्ञानी है ॥ तिनकों असत्य जगत भी सत्यरूप होइ भासता है ॥ हे रामचंद्र जैसी जैसी सं
वेदन चित्त संवित्त विषे फुरती है ॥ तैसा तैसा रूप जगत होइ भासता है ॥ काहे ते जु आत्मा
सर्वशक्तवान है ॥ जिस जिस पदार्थ का फुरणा फुरता है ॥ सोई अनुभव विषे सत्तरूप हो
इकर भासता है ॥ अरु जो कछु पंचज्ञान इंद्रियां छठवे मन का विषे होता है ॥ सो सभ अस
त्यरूप है ॥ अरु आत्मसत्ता इनते अतीत है ॥ अरु विश्व भी क्या रूप है ॥ जैसे समुद्र विषे तरं
ग होते है ॥ तैसे आत्मा विषे जगत स्थित है ॥ जैसे तेज अरु प्रकाश अनन्यरूप है ॥ जैसे छोटे
विषे सिलपी उतली या देषता है ॥ जैसे रत्न का के पिंड विषे कल्लोल वासना देषता है ॥ जैसे
जैसे भित्त ऊपर मूर्ती रंग लिषता है ॥ सो अनन्य रूप है ॥ तैसे परमात्मा विषे सृष्टी अनन्य
रूप है ॥ हे रामचंद्र जैसे मारूथल विषे मृगत्रिस्ना के जल तरंग असत्य ही सत्यरूप भास
ते है ॥ तैसे आत्मा विषे असत्यरूप जगत त्रिलोकीयां भासतीयां है ॥ जब चित्त संवित्त
विषे संवेदन फुरती है ॥ तब जगत भासता है ॥ अरु जब संवेदन नहीं फुरती ॥ तब जगत
भी भासता नहीं ॥ पर जगत कछु ब्रह्म ते भिन्न नहीं जैसे बीज अरु वृक्ष विषे भेद नहीं
जैसे हीर अरु मधुरता विषे भेद नहीं ॥ जैसे मरच अरु तीक्ष्णता विषे भेद नहीं ॥ जैसे समु
द्र अरु तरंगों विषे कछु भेद नहीं ॥ जैसे वायु अरु स्पंद विषे कछु भेद नहीं ॥ तैसे आत्मा अरु ज
गत विषे कछु भेद नहीं जैसे अग्नि विषे उष्णता स्वभावक स्थित है ॥ तैसे निराकार आत्मा
विषे सृष्टी स्वभावक स्थित है ॥ हे रामचंद्र इह जगत ब्रह्मरूपी रत्न का कंचन है ॥ जैसा जैसा
कंचन होता है ॥ तैसा तैसा होइकर भासता है ॥ जो कंचनरूप है तो अकारण ही हुया क्युं
जो पदार्थ अकारण होता है ॥ अरु जिस अधिष्ठान विषे भासता है ॥ तिस साथ अनन्य
रूप होता है ॥ अधिष्ठान ते भिन्न उसकी सत्ता नहीं होती ॥ तैसे इह जगत आत्मा विषे
अनन्यरूप है ॥ कछु उपजया नहीं ॥ पर संवेदन के फुरणे कर पडा भासता है ॥ ताते सं
वेदन के अभाव का पुरुषार्थ करो ॥ जब संवेदन का अभाव होवेगा ॥ तब जगत भ्रम नष्ट हो
जावेगा ॥ अरु वास्तव ते न कछु उपजया है ॥ न कछु नष्ट होता है ॥ सर्व शांतरूप चिदघन ब्र
ह्म सिलाघन की न्याई अपणे आप ही विषे स्थित है ॥ हे रामचंद्र चित्त परमाणु परमाणु
प्रति चेत्यता करके अनेक सृष्टी भासतीयां है ॥ तिनों सृष्टी विषे जो परमाणु है ॥ तिनों पर
माणों के अंतर और सृष्टी स्थित है ॥ तिनकी संख्या कछु नहीं ॥ जैसे जल विषे तरंग अने
क हो ॥ कई प्रगट होते है ॥ सो जल की शक्ति रूप है ॥ तैसे जगत स्वप्न सुषुप्त अवस्था जी
वों के अंतर स्थित है ॥ कई गुप्त रूप है ॥ कई प्रगट रूप है ॥ हे रामचंद्र जब लग इसकी सं
वेदन द्वैत साथ मिली हुई है ॥ तब लग सृष्टी का अंत नहीं ॥ जब चित्त उपशम होवेगा
तब जगत भ्रम निवर्त हो जावेगा ॥ जब कछु भी भोगों विषे विरति उपजे ॥ तब जाणीये
जो आत्मपद की प्रापत होवेगी ॥ इह अंत का निशा है ॥ हे रामचंद्र ज्युं ज्युं इसका मम
त्व र होता है ॥ ज्युं ज्युं बंधनों ते मुक्त होता है ॥ जब अहंभाव है ॥ जीवत्वभाव तिसकी नि
वीणता होती है ॥ तब जन्मों की जो परंपरा संपदा है ॥ सो भी नष्ट हो जाती है ॥ केवल अ
द्वैतरूपी होता है ॥ तब तिनों पुरुषों को स्थावर जंगम रूप जगत सभ आत्मारूप
होता है ॥ जैसे समुद्र को तरंग बुदबुदा सभ अपणा ही रूप भासता है ॥ तैसे ज्ञानवान
कों सभ जगत आत्मरूप भासता है ॥ हे रामचंद्र सदा आत्मसत्ता विषे जो संवेदन फुरी
है ॥ सो आपको ब्रह्मारूप जाणत भई है ॥ तिस ब्रह्मा ने अंगीभावना करके संकल्परू
प नाना प्रकार का जगत रचा है ॥ तिसको असत्य रूप अंतर अनुभव करत भया है ॥ ति
स विषे कहूं निमेष विषे अनेक युगों का अंत पडा भासता है ॥ कहूं अनेक युगों विषे
निमेष का अनुभव पडा होता है ॥ इति श्री उत्पत्ति प्रकरणे जगत कंचन वर्णनं नाम

सर्ग: ॥ ॥ वसिष्ठ उवाच ॥ हे रामचंद्र चिदपरमाणु विषे जो निमेष होती है ॥ तिसके
किसी भाग विषे जगतों के अनेक कल्प फुरते है ॥ तिन सृष्टी विषे जो परमाणु है ॥ तिनों
विषे भी सृष्टीयां पडीयां फुरतीयां है ॥ जैसे समुद्र विषे तरंग फुरते है ॥ सो जल ही रूप है त
रंग साह्म अरु तिसका अर्थ भ्रमरूप है ॥ तैसे ही आत्मा विषे भ्रमरूप अनेक सृष्टीयां फुरती
यां है ॥ जैसे मारूथल विषे मृगत्रिस्ना की नदी चलती दृष्ट आवती है ॥ तैसे आत्म वि
षे जगत भासता है ॥ जैसे स्वप्नसृष्टि भासती है ॥ जैसे गंधर्वनगर भासता है ॥ जैसे कथा के
अर्थ चित्त विषे आन फुरते है ॥ जैसे संकल्पपुर भासता है ॥ सो असत्तरूप सत्त होइकर भा
सते है ॥ तैसे जगत असत्यरूप सत्य होइ भासता है ॥ राम उवाच ॥ हे ज्ञानवानों विषे श्रेष्ठ
जिस पुरुष को विचार सम्यक ज्ञान हुया है ॥ अरु निर्विकल्प आत्मपद की प्रापत भई है ति
सको देह अपणे साथ कैसे भासता है ॥ अरु देव प्रारब्धकर के तिसका शरीर कैसे रहता है
वसिष्ठ उवाच ॥ हे रामचंद्र आदि जो ब्रह्म चित्तशक्त विषे संवेदन फुरी है ॥ तिसका नाम ने
त हुया है तिस विषे जैसे भवत व्यपारी है ॥ जो इह पदार्थ ऐसे होवेगा ॥ अरु इस कर हो
वेगा ॥ एता काल रहेगा ॥ सो अनेक कल्प पर्यंत तैसे ही होता है ॥ तिसका नाम नेत है म
हासत्य र तिसको कहीता है ॥ महाचैतन्य भी तिसको कहीता है ॥ महाशक्त भी तिस
को कहीता है ॥ महादृष्ट महाक्रिया भी तिसको कहीता है ॥ महाउदभव भी तिसको कही
ता है ॥ आइ रहे जो अनंत ब्रह्मांडों की उपजावणे हारी है ॥ जैसा उह फुरणा दृढ हुया है
तैसा रूप धारकर स्थित है ॥ जो इह स्थावररूप है ॥ इह जंगमरूप है ॥ इह दैत्य है ॥ इह देवता
है ॥ इह नाग है ॥ इह नारी है ॥ ब्रह्मा ते आदि तृण पर्यंत जैसे तिस धारा है ॥ तैसे ही स्थि
त है ॥ स्वरूप ते ब्रह्मसत्ता का विभक्त्रावर कदाचित नहीं हुया ॥ सदा अपणे आप ही विषे स्थि
त है ॥ जो ज्ञानवान पुरुष है ॥ तिनको सभ ब्रह्मस्वरूप भासता है ॥ अरु जो अज्ञानी है ॥ ति
नकों जगत अरु नेत भिन्न भिन्न पडे भासते है ॥ ज्ञानवान को सभ अचल ब्रह्म ही भासता
है ॥ अज्ञानी को चलरूप जगत भासता है ॥ सो जगत कैसा है ॥ जैसे आकाश विषे शून्य हो
ता है ॥ जैसे सिला के उदर विषे मूर्ति होती है ॥ सो सिलारूपी होती है ॥ सो इह जगत ब्रह्म
विषे है ॥ ज्ञानवान है ॥ तिनकों सर्ग अरु नेत सभ ज्ञानरूप ही भासती है ॥ जैसे अवयवी
के अवयव अपणा रूप होते है ॥ हे रामचंद्र तैसे ब्रह्मसत्ता के अवयव ब्रह्मा ते नेत सर्ग आ
दिक अपणा रूप है ॥ हे रामचंद्र तिस नेत को दैव कहते है ॥ जो कछु किसी को प्रापत
होता है सो तिस दैव के आज्ञा करके प्रापत होता है ॥ काहे ते जो आदि इही निश्चा धा
रा है ॥ इस साधन कर इह फल इसको प्रापत होवेगा ॥ तैसा साधन होवे ॥ तैसा फल
अवश्य को प्रापत होता है ॥ इस कारण ते नेत को दैव कहते है ॥ दैव ही को नेत कहते है
हे राम इह पुरुष जो कछु पुरुषार्थ करता है ॥ तिसके अनुसार जो इसको प्रापत हो
ता है ॥ कारण ते इसका नाम नेत है ॥ तिस ही का नाम पौरुष है ॥ तुम जो मुझ को दैव
अरु पुरुष है का निरणा पूछ्या ॥ अरु मैं कहा ॥ तिसकी तुम पालना करी ॥ इसका नाम
पुरुष हे रामचंद्र जो पुरुष ऐसे दैव परायण हुया है ॥ जो मुझको दैव भोजन करावे
गा ॥ रहेगा ॥ अरु मौन धारकर अक्रिय होइ बैठा है ॥ तिसको जो आइ प्रापत होवे ॥ सो भी
नेत है ॥ जो पुरुष भोगों के निमित्त पुरुषार्थ करता है ॥ सो भोगों को भोगेगा ॥ अरु अने
क प्रकार को मोक्ष पर्यंत धारेगा ॥ इह भी नेत है ॥ हे रामचंद्र जो आदि संवित्त विषे संवेद
न फुर भवन अनाथा रही है ॥ तिस ही प्रकार स्थित है ॥ तिसका नाम भी नेत है ॥ तिस
नेत लंघणे को ब्रह्मा विष्णु रुद्रादिक भी समर्थ नहीं ॥ सभ नेत के अनुसार स्थित है
और कैसे उलंघे ॥ हे रामचंद्र जो पुरुषार्थ को पुरुष त्याग बैठे है ॥ तिनको फल न
ही प्रापत होता ॥ इह भी नेत है ॥ अरु जो पुरुष फल के निमित्त पुरुषार्थ करता है ॥ तिसको
प्रापत होता है ॥ इह भी नेत है ॥ अरु जो पुरुष प्रयत्न को त्याग कर निष्क्रिय हो बैठे है.

अरुमनकरविषयोंकोचिंतवनेहै॥ सोनिःफलहीरहतेहै॥ अरुजोपुरुषडोरकरतप
कोंत्यागकरचित्तकीहननेंसून्यदेवपरायणहोरहेहै॥ विषयोंकोचिंतवनानहींकर
तिनकोंसफलहोतीहै॥ काहेतेंजुफुरणेतेंरहितहोवणभीपुरुषार्थहै॥ इहतेंतहै अ
रुजोअर्थचिंतवनेवालेकोंनहींप्रापतहोता॥ अरुअचाहकोंप्रापतहोता॥ हेरामचं
द्रपुरुषार्थभीसफलसोईहै॥ जोब्रह्मपदकेनिमित्तहोवे॥ जबब्रह्मपदकीडोरतीब्रअ
भ्यासहोताहै॥ तबपरमपदकीअवश्यप्रापतहोतीहै॥ जबपरमपदकोंपाया॥ तबस
र्वजगतचिदाकाशरूपहोभासताहै॥ तिनआदिकविस्तारजोकहाहै॥ सोसर्वब्रह्महै॥ ब्रह्म
सत्ताहीऐसेहोभासतीहै॥ जैसेपृथिवीविषेरससत्ताहीत्रिणवलीगुच्छफलफलरूप
होइकरस्थितहोतीहै॥ तैसेतेतआदिकसभजगतहोइकरब्रह्महीस्थितहोताहै॥ डोरव
स्तकछुनहीं॥ इतिश्रीउत्पत्तिप्रकरणेदेवपुरुषार्थविचारोनामसर्गः॥ ५४॥ १॥ ॐ
वसिष्ठउवाच॥ हेरामचंद्रजोकछुजगतकोभासताहै॥ सोसर्वप्रकारसर्वदाकालसर्वओ
रतेंब्रह्मतत्त्वसर्वशक्तकरसर्वआत्माहोइकरस्थितभयाहै॥ सोअनंतअनंगः॥ जबतिस
विषेचितशक्तिप्रगटहोतीहै॥ अर्थयहजोसुद्धचैतन्यमात्रविषेअहंफुरणहोताहै॥
तबआगेजगतभासताहै॥ कहूंउपजताभासताहै॥ कहूंनष्टहोताभासताहै॥ कहूंउल्ला
सभासताहै॥ कहूंअनहोताभासताहै॥ कहूंकिंचितभासताहै॥ कहूंप्रगटअप्रगटभा
सताहै॥ नानाप्रकारकाजगतहै॥ जहांजैसीतीब्रअभ्यासहोताहै॥ तहांतैसाहोइकरभा
सताहै॥ काहेतेंजोआत्मासर्वशक्तिसर्वरूपहै॥ जैसाफुरणातिसविषेदृढहोताहै॥
सोईरूपहोइकरभासताहै॥ हेरामचंद्रजोनानाप्रकारकीयांशक्तीकहीहै सोवा
स्तवआत्मातेंइतरकछुनहीं वहवानोंतेंसमझावणेकेनिमित्तनानाप्रकारकेविक
ल्पजालकहेहै॥ आत्माविषेविकल्पजालकाऊनहीं॥ जैसेजलअरुतरंगविषेकछु
भेदनहीं॥ जैसेस्वर्णअरुभूषणविषेभेदकछुनहीं॥ जैसेअवयवीअरुअवयवोंविषेभे
दकछुनहीं॥ तैसेआत्माअरुशक्तीविषेभेदनहीं॥ हेरामचंद्रएकसंवितहैएकसंवेद
नहै॥ संवितजोहैसोवास्तवहै॥ अरुसंवेदनकल्पनहै॥ जबसंवितचिन्मात्रविषेसंवे
दनफुरतीहै॥ तबउहजैसेचेतनताजातीहै॥ तैसेआगेहोइकरस्थितहोताहै॥ इहचिन्मा
त्रसंवितविषेअंतरअरुबाह्यकल्पनाकोऊनहीं॥ जबस्वभावतेंकचनसरसंवेदन
होतीहै॥ तबआगेकछुदेषतीहै॥ तिसदेषणेकरनानाप्रकारकेआकारसतेहै॥
सोडोरतोकछूनहूया॥ सर्वब्रह्महीहूया॥ हेरामचंद्रशक्तअरुशक्तिमानविषेभेदअ
ज्ञानीदेषतेहै॥ अरुअवयवीअवयवभेदभीकल्पतेहै॥ परमार्थतेंभेदकछुनहीं॥ केव
लब्रह्मसत्ताअपणेआपविषेस्थितहै॥ तिसकेआश्रयसंकल्पजालभासहोते
है॥ तिससंकल्पकीतीव्रताहोतीहै॥ सतहोवे अथवाअसतहोवेतिसकाभास
होताहै॥ इतिउत्पत्तिप्रकरणेचित्तअवतारोनामसर्गः॥ ५५॥ १॥ वसिष्ठउवाच
हेरामचंद्रइहजोसर्वगतदेवपरमात्मामहेश्वरहै॥ सोस्वच्छअनुपरमा
त्मास्वरूपहै॥ आदिअंततेंरहितहै॥ तिससेथचिन्मात्रपरमानंदतेंनामजी
वउपजयाहै॥ तिसतेंचित्तउपजया॥ चित्ततेंआगेजगतउपजयाहै॥ उवाच
हेभगवनप्रमाणकरकेजुसर्वब्रह्मतत्व सर्वव्यापीहैतिसतेंरहितनास्तिहै॥ ति
सविषेतच्छरूपजीवकैसेसतताकोंपावतभयाहै॥ वसिष्ठउवाच॥ हेरामचंद्र
ब्रह्मअसदाभासहै॥ अर्थयहजोअसतरूपजगततिसकाआभासहै॥ स्वच्छ
है॥ अर्थयहजोअसतरूपजगततेंभीरहतहै॥ अरुहहतहै॥ अर्थयहअंडाहै
सोवडाआई दोप्रकारहै॥ अविद्याकृतजगतकरजोवडाहै॥ सोअविज्ञानजना
वणेअर्थकहीताहै॥ जोसर्वदेशसर्वकालसर्ववस्तुमोंपूर्णहै॥ अविकृतदेश
कालवस्तुतेंरहितनिराकारहै॥ सोज्ञानीकाविषयहै॥ तातेंवहहतहै॥ परम

चैतन्यहै॥ अरुभैरवहै॥ अर्थयहजोभयकरचंद्रमाअरुसूर्यअग्निवायुजलअपणी
मर्यादामोंचलतेहै॥ परमानंदअविनाशीहै॥ सर्वओरतेंपूर्णसमहै॥ सुद्धहै॥ अविर
तहै॥ अर्थयहजोवाणीकरनहींकहाजाता॥ ऐसापरमशांतपदहै॥ सोभ्रांतरहितचि
न्मात्रहै॥ ऐसोजोआत्मसत्ताब्रह्महै॥ तिसकाजोस्वभावसपंदहै॥ तिसकानामजीव
है॥ अर्थयहजोसुद्धचिन्मात्रविषेअहंऐसेजोफुरणाहै॥ तिसकानामजीवहै॥ तिसअ
नभवरूपीदर्पणविषेअहंरूपीप्रतिबिंबफुरणेकानामजीवकहीताहै॥ सोजीव
अपणेशांतपदकोंत्यागेकीन्याईस्थितहोताहै॥ सोचिदात्माहीफुरणेद्वाराआपकों
जीवरूपजानताभयाहै॥ जैसेसमुद्रहीद्रवताकरकेतरंगरूपहोताहै॥ समुद्रअरुतरं
गविषेभेदकछुनहीं॥ तैसेब्रह्महीजीवरूपहोताहै॥ ब्रह्मअरुजीवविषेभेदकछुनहीं
जैसेअग्निअरुउस्नताविषेभेदकछुनहीं॥ जैसेबरफअरुशीतलताविषेभेदकछु
नहीं॥ जैसेब्रह्मअरुजीवविषेभेदकछुनहीं॥ हेरामचंद्रचिदरूपजोआत्मातत्वहै अ
पणेस्वभाववशतेंमायाकरकेवेदनासहितजीवरूपकहीताहै॥ सोजीवआगेफुरणे
करकेवडेविस्तारकोंधारतभयाहै॥ जैसेइंधनोंकरअग्निकेवहुतअणहोतेहै॥ अरु
वडेप्रकाशकोंप्रापतहोतेहै॥ तैसेजीवफुरणेकरजगतरूपकोंप्रापतहोताहै जैसे
आकाशविषेनीलताभासतीहै॥ सोनीलताकछुभिन्नवस्तुनहीं॥ तैसेअहंभावकरके
ब्रह्मविषेजीवरूपभासताहै॥ अहंकृतकोंअंगीकारकरकेकल्पतरूपकीन्याईस्थित
होताहै॥ जैसेघनसून्यताकरकेआकाशमोंनीलताभासतीहै॥ तैसेस्वरूपकेप्रमादः
करकेदेशकालवस्तुकेअछेदसहितअहंकाररूपीजीवभासताहै॥ वास्तवतेंचिदाका
शविषेस्थितहै॥ जैसेवायुकरकेसमुद्रतरंगरूपहोताहै॥ तैसेसंवेदनफुरणेकरआ
त्मसत्ताजीवरूपहोतीहै॥ सोजीवचैत्यानमुषत्वताकरकेएतीसंज्ञाकोंपावताहै॥ चित
कहीये॥ जीवकहीये॥ मनबुद्धिअहंकारमायाप्रकृतइहसभतिसहीकेनामहै॥ सो
जीवसंकल्पकरकेपंचभूततन्मात्राकोंचेततभया॥ तबतिनपंचतन्मात्राकेआकार
तेजकणरूपहोइकरस्थितभए॥ तिसतेंअनुउपजेही॥ उपजेकीन्याईस्थितभए॥
अरुभासणेलगे॥ बहुडउहचितसंवेदनतेंजअणकोंअंगीकारकरकेजगतकोंरचः
तीभई॥ जैसेबीजतेंशाखेंशाखेंअंकुरबहुहोताहै॥ तैसेसंवेदनविस्तारकोंपावतीभई॥
प्रथमएकअंडरूपीहोइकरस्थितभई॥ तिसअंडकोंफोरतभई॥ तबतिसविषेजगत
भासनेलगा॥ जैसेगंधर्वनगरभासताहै॥ जैसेस्वप्नसृष्टिभासतीहै॥ तैसेजगतभा
सणेलगा॥ तिसमोंभिन्नभिन्नदेहअरुभिन्नभिन्ननामकल्पे॥ जैसेरतनकाकोसेनावा
लककल्पताहै॥ तिसकेभिन्नभिन्ननामकल्पताहै॥ तैसेस्थावरजंगमआदिकनाम
कल्पनाकरी॥ इहपृथिवीहै॥ इहजलहै॥ अग्निवायुआकाशहै॥ तिनोंपांचोंभूतोंकीसृ
ष्टिसंकल्पतेंउपजतभई॥ हेरामचंद्रआदिब्रह्मतेंजोजीवफुरयाहै॥ तिसकानामब्रह्मा
है॥ सोब्रह्माआत्माविषेआत्मभूतहोइकरस्थितहै॥ तिसतेंआगेक्रमकरकेजगतहूः
याहै॥ जैसेउहचेततताहै॥ तैसाहोइकरस्थितहोताहै॥ जैसेसमुद्रविषेद्रवताकरके
तरंगहोताहै॥ तैसेब्रह्मविषेचितस्वभावकरकेजीवहोताहै॥ सोजीवजबप्रमादक
रकेअनात्मभावकोंधारणेलगा॥ तबकर्मोंकेबंधमानहोवणेलगा॥ जैसेजलज
वहहठजडताकोंअंगीकारकरताहै॥ तबबरफरूपहोइकरजेवडीकेबंधनमोंआव
ताहै॥ जीवजबअनात्माविषेअभिमानकरताहै॥ तबकर्मोंकेबंधनमोंआवताहै॥ हे
रामचंद्रकर्मोंकाबीजसंकल्पहै॥ अरुसंकल्पजीवतेंफुरताहै॥ अरुजीवत्वभावइः
सकोंतबहोताहै॥ जबस्वथचैतन्यमात्रस्वरूपतेंइसकाउत्थानहोताहै॥ उत्थान
अर्थयहजबप्रमादहोताहै॥ तबइसकोंजीवत्वभावहोताहै॥ जबजीवत्वभावहो
ताहै॥ तबआगेअनेकसंकल्पकलनाफुरतीहै॥ तिससंकल्पकलनातेंकर्महोतेहै॥
कर्मोंतेजन्ममरणआदिकनानाप्रकारकेविकारहोतेहै॥ जैसेबीजतेंअंकुरहोताहै
अंकुरतेंपत्रहोतेहै॥ आगेफुलफलटासहोजातेहै॥ तैसेसंकल्पकर्मोंतेंनानाप्रकारः

केविकारहोतेहै॥ जैसेजैसेकर्मजीवकरताहै॥ तिनकेअनुसारजन्ममरणअर्थःऊर्ध
कोंप्राप्तहोताहै॥ हेरामचंद्रकर्मनाममनकेफुरणेकाहै॥ फुरणेकानामचित्तहै॥ अ-
रुफुरणेहीकानामकर्महै॥ अरुफुरणेहीकानामदेवहै॥ तिसहीकरइसकोंसभअसभ-
गामप्राप्तहोतीहै॥ सभकाआदिकारणब्रह्महै॥ तिसतेंप्रथममनउत्पतिभयाहै॥ ति-
समनहीसंपूर्णजगतकीरचनाकरीहै जैसेबीजतेंअंकुरहोताहै॥ तैसेब्रह्मतेंमनअ-
रुजगतउपजियाहै॥ इति उत्पत्तिप्रकरणेबीजांकुरवर्णनंनामसर्गः॥ ५६॥ ९ ॐ
वसिष्ठउवाच॥ हेरामचंद्रआदिकारणब्रह्मतेंमनउत्पत्तिभयाहै॥ सोमनसंकल्परूप-
है॥ अरुमनकरसंपूर्णजगतहूयाहै॥ अरुमनआत्माविषेमनत्वभावकरकेस्थितहै
है॥ तिसमननेंभावअभावरूपीजगतकल्पयाहै॥ जैसेगंधर्वकीइच्छाकरकेगंधर्वनग-
रहोताहै॥ तैसेमनकरजगतहोताहै हेरामचंद्रआत्माविषेद्वैतअरुएकभेदकीक-
ल्पनाकछुनथा॥ इसमनकरकेएतीसंज्ञाभईयां॥ ब्रह्मअरुजीवअरुमनअरुमाया-
करनाकर्मजगतदृश्यदृष्टासभभेदमनकररहूएहै॥ आत्माविषेभेदकोऊनही॥ जैसे
समुद्रविषेतरंगउछलतेहै॥ अरुबडेविस्तारकोंधारतेहै॥ तैसेसंवितरूपीसमुद्रविषे
संवेदनकरकेनानाप्रकारकाजगतविस्तारकोंपावताहै॥ सोअसतरूपीजगतहै॥ काहे-
तेंजस्थिरनहीरहता॥ सदाचलायमानहै॥ अरुजोअधिष्ठानस्वरूपभावकरदेषीये तो
सत्यरूपहै॥ तोतेंद्वैतकछुनहूया॥ जैसेस्वप्नेकाजाग्रतसत्यअसत्यरूपचित्तकरकेभास-
ताहै॥ तैसेसत्यअसत्यरूपरहूजगतभासताहै॥ सोवास्तवकछुउपजयानहीं॥ चि-
त्तकेभ्रमकरकेभासताहै॥ जैसेइंद्रजालकीवाजीविषेनानाप्रकारकेहस्तीघोडेबथीभास-
तेहै॥ सोभ्रममात्रहै॥ तैसेइहजगतभ्रममात्रहै॥ हेरामचंद्रइहजगतदीर्घकालकास्व-
प्नाहै॥ मनकेभ्रमकरकेसत्यहोइभासताहै॥ जैसेस्थाणुविषेपुरुषअसम्यकज्ञानकर-
केभासताहै॥ अरुचोरजानकेभयकोप्राप्तहोताहै॥ तैसेजीवअनित्यभावकोप्राप्तहो-
इकरशोककरताहै जैसेबालभ्रमकरकेपछावेविषेवेतालकल्पताहै॥ अरुभयकोप्रा-
प्तहोताहै॥ तैसेइहपुरुषचित्तकेसंयोगकरकेद्वैतकरभयकोप्राप्तहोताहै॥ जै-
सेविचारकीयेतेंवेतालकाभयनष्टहोताहै॥ तैसेआत्मज्ञानकरकेभयआदिकविका-
रनष्टहोजाताहै॥ हेरामचंद्रआत्मअनात्मस्वरूपहै॥ अरुअप्राअप्रीभावतेंरहतेंशुद्धचे-
तनरूपहै॥ जवअहंचेतन्यसंवित्तचेत्योन्मुखहोतीहै॥ तवचित्तअर्थयहजोचेतन्य-
ताकालक्षणहोताहै॥ तिसतेंआगेजीवकल्पनाहोतीहै॥ तिसजीवविषेअहंभाव-
होताहै॥ जमेहो॥ जवअहंभावहूया॥ तवतिसतेंचित्तफुरताहै॥ चित्ततेंइंद्रियांहोती-
यांहै॥ तिनइंद्रीयोंतेंदेहभावहोताहै॥ तिसदेहअभ्रमकरकेमोहितहूया॥ नरकस्वर्गवं-
धमोक्षकल्पनाहोतीहै॥ जैसेबीजतेंअंकुरपत्रफूलफलदासहोतेहै॥ तैसेअहंभा-
वतेंजगतविस्तारहोताहै॥ हेरामचंद्रजैसेदेहअरुकर्मोविषेकछुभेदनही॥ तैसेब्रह्म
अरुचित्तविषेकछुभेदनही॥ तैसेचित्तअरुजीवविषेकछुभेदनही॥ तैसेजीवअरुचि-
त्तविषेकछुभेदनही॥ जैसेजीवअरुचित्तविषेकछुभेदनही॥ तैसेचित्तअरुदेहविषे
कछुभेदनहीं॥ जैसेचित्तअरुदेहविषेकछुभेदनहीं॥ तैसेदेहअरुकर्मोविषेकछुभेदन-
ही॥ जैसेकर्मअरुदेहविषेकछुभेदनही॥ तैसेचित्तअरुदेहविषेकछुभेदनही॥ जैसे
चित्तअरुदेहविषेभेदनहीं॥ तैसेचित्तअरुजीवविषेकछुभेदनही॥ जैसेचित्तअरुजी-
वविषेभेदनही॥ तैसेजीवअरुईश्वरविषेभेदनही॥ जैसेजीवअरुईश्वरविषेभे-
दनही॥ तैसेईश्वरअरुआत्माविषेकछुभेदनहीं॥ तातेंहेरामचंद्रसर्वब्रह्मही
हूयाकों॥ तवब्रह्महीस्वरूपहै॥ द्वैतकछुनही॥ इतिजीवविचारोनामसर्गः ५६
वसिष्ठउवाच॥ हेरामचंद्रइहजोनानात्वभासतीहै॥ सोवास्तवएकब्रह्मस्वरूपहै
चेतनाकरकेएकअनेकरूपहोइभासताहै॥ जैसेएकदीपकतेंअनेकदीपहोजा-
तेहै॥ तैसेएकपरब्रह्मअनेकरूपहोताहै॥ हेरामचंद्रअसतरूपीजगततिस-
विषेआभासहै॥ तिसआत्मतत्वकाजवयथार्थज्ञानहोताहै॥ तवचित्तविषेजोअ-

हंभावहै सोनष्टहोजाताहै॥ तिसअहंभावकेनष्टहूएतेंसभशोकनष्टहोजाताहै॥ हेरा-
मचंद्रइहपुरुषचित्तरूप॥ अरुचित्तहीविषेजगतहूयाहै॥ जवचित्तनष्टहोवै॥ तवज-
गतभ्रमभीनष्टहोजावैगा जैसेअपणेचरणविषेचरणदासीपाईतीहै॥ तवसर्वपृथि-
वीचर्मकरलपेटीकीन्याईहै॥ जोतपुतकंटकमिटजातेहै॥ तैसेजवअपणाचित्तशां-
तकोंप्राप्तहोताहै॥ तवसर्वजगतशांतरूपहोताहै॥ जैसेकेलेकाथंभहोताहै॥ ति-
सविषेपत्रोंतेंअन्यसारकछुनहीनिकसता॥ तैसेसभजगतभ्रममात्रहै॥ औरसारक-
छुनहीनिकसताहै॥ हेरामचंद्रएताभ्रमचित्तकरकेहोताहै॥ जैसेबालकअवस्थामें
क्रीडाकरताफिरताहै॥ वहुडजोवनअवस्थाकोंधारकरविषयोंकोंसेवताहै॥ वृद्धअ-
वस्थाचिंताविषेमगनजरजरीभावहोताहै॥ वहुडमृतकोंप्राप्तहोताहै॥ कर्मोकेअ-
नुसारनरकस्वर्गकोंचलाजाताहै॥ हेरामचंद्रइहसभमनकीनिरतहै॥ मनहीपडाभ्र-
मताहै॥ जैसेनेत्रहूघणकरकेआकाशविषेदोचंद्रमेभासतेहै॥ तैसेअज्ञानकरकेजग-
तभ्रमभासताहै॥ जैसेमदपानकरताभ्रमकरकेवृक्षकोंभ्रमतादेषताहै॥ तैसेचित्तके
भ्रमकरइहजीवजगतभ्रमकोंदेषताहै॥ हेरामचंद्रजवचित्तद्वैतरूपदृश्यकोंचेतता
है॥ तवएकअरुद्वैतभ्रमइसकोंभासताहै॥ अरुजवचित्तद्वैतकोंनहीचेतता॥ तवएक
अरुद्वैतभ्रममिटजाताहै॥ जवचित्तकीचेतन्यतापडीफुरतीहै॥ तवलगनानाप्रकार-
काजगतपडाभासताहै॥ शांतकोंनहीप्राप्तहोता॥ अरुजवचनचेतन्यताकोंप्राप
नहोवै॥ तवशांतकोंप्राप्तहोताहै॥ अरुजगतभ्रममिटजाताहै॥ जैसेअल्पबीवाप-
डावकताहै॥ शांतवाननहीहोता॥ अरुजवचनचीवल्वताकोंप्राप्तहोताहै॥ तवव-
कणेतेंशांतहोजाताहै॥ तैसेजवइहमहाचेतन्यचलनताकोंप्राप्तहोताहै॥ तवशांत-
वानहोजाताहै॥ व्यवहारविषेहोवै॥ अथवानूसींहोरहे॥ सदाशांतवानहोताहै॥ हे
रामचंद्रजवचित्तकीचेतन्यताफुरतीहै॥ तवजगतभ्रमनानाप्रकारकेविकारदेषताहै॥
अरुभ्रमकरकेऐसेजानताहै॥ जोमेउपजयाहों॥ अववडाभयाहों॥ मरोंगाइत्यादिक
विकारअसत्यरूपअपणेविषेजानताहै॥ अरुस्वरूपतेंचेतन्यताब्रह्मतेंअन्यनही॥ जै-
सेवायुअरुस्पंदविषेकछुभेदनही॥ तैसेब्रह्मअरुचेतन्यताविषेकछुभेदनही॥ जववायु
स्पंदरूपहोतीहै॥ तवस्पर्शकरकेभासतीहै॥ तैसेचेतन्यताकरकेजगतभासताहै॥
तवचित्तसोंदृश्यकीचेतनतामिटतीनही॥ अरुब्रह्मकीचेतताहोवै॥ तवजगतभ्रममि-
टजावै॥ केवलशुद्धब्रह्मसत्ताहीपडीभासे॥ जैसेजीवडीकेअज्ञानकरकेसर्पभ्रमहो-
ताहै॥ अरुजीवडीकेयथार्थजाणेतेंसर्पभ्रममिटजाताहै॥ जेवडीहीपडीभासतीहै॥ तै-
सेब्रह्मकेअज्ञानतेंजगतभ्रमभासताहै॥ जवब्रह्मकायथार्थज्ञानहोताहै॥ तवजग-
तभ्रमजाताहै॥ केवलब्रह्मसत्ताहीभासतीहै॥ हेरामचंद्रदृश्यरूपीइसकोंव्याधिरोग
लगाहै॥ तिसरोगकानाशकरतासंवित्तमात्रहै॥ जवलगचित्तवहिर्मुखहोइकरदृ-
श्यकोंचेतताहै॥ तवलगशांतनहीप्राप्तहोती॥ अरुजवचित्तसर्ववासनाकोंत्या-
गकरअंतरमुखीअपणेस्वभावविषेस्थितहोवेगा॥ तवतिसहीकालमोंमुक्तरूप-
शांतकोंप्राप्तहोवेगा॥ इसविषेसंशयकछुनही॥ जैसेजीवडीकेदूरसोंदेषणेकरस-
र्पभासताहै॥ अरुजवनिकटहोइकरदेषीतीहै॥ तवसर्पभ्रमनष्टहोइजाताहै॥ जेवडी-
हीभासतीहै॥ तैसेआत्माकाविवर्तस्वरूपजगतहै॥ जववहिर्मुखहोइकरदेषीताहै
तवजगतहीभासताहै॥ जवअंतरमुखीहोइकरदेषीये॥ तवजगतभ्रममिटजाताहै
आत्माहीपडाभासताहै॥ हेरामचंद्रजिसविषेअभिलाषाहोवै॥ तहांतिसकोंत्याग
कीयेतेंनिःशेषकरमुक्तप्राप्तहोतीहै॥ सोत्यागणेविषेयत्नकछुनही॥ महात्माजोउ-
रुषेहै॥ सोप्राणोंकोंतृणकीन्याईत्यागदेतेहै॥ अरुवडेदुषकोंसहरहतेहै॥ तुमकोंअ-
भिलाषत्यागणेविषेक्याकठनताहै॥ हेरामचंद्रआत्माकेआगेअभिलाषहीआवर-
णहै॥ अभिलाषकेहोतेआत्मानहीभासता॥ जैसेवदलोंकेआवरणकरकेसूर्यनहीभा-
सता॥ जववदलोंकाआवरणनाशहोताहै॥ तवसूर्यभासताहै॥ तैसेअभिलाषकेनिव-

योग-
वा

नेहूए आत्मा भासता है ॥ तातें जो कछु अभिलाष उठे तिस को त्यागना ॥ अरु नि:अभिला
ष होइ कर आत्मपद विषे स्थित होइ ॥ अरु प्रकृत आचार जो कछु देह इंद्रीयों कर ग्रहण
करणा होवे ॥ तिस को ग्रहण करो ॥ अरु जो कछु त्याग करणा होवे ॥ तिस को त्याग करो
परंतु देह विषे ग्रहण अरु त्याग की इछा न होवे ॥ हे रामचंद्र जब तूं संसरणी रूप की इछा त्यागो
गा ॥ तब तुम को अतंत्र आत्मपद भासेगा ॥ जैसे हाथ विषे बिल्वफल प्रतक्ष होता है ॥ जै
से नेत्रों आगे प्रतिबिंब प्रतक्ष भासता ॥ तैसे अभिलाष के त्यागे तें आत्मपद तुम कों प्रत
क्ष भासेगा ॥ अरु सभ जगत भी आत्मरूप भासेगा ॥ जैसे महाप्रलय विषे सभ जलमयी
होती है ॥ और कछु दृष्ट नहीं आवता ॥ तैसे आत्मपद ते इतर तुम को कछु न भासेगा ॥ आत्म
तत्व का न जानना इसी का नाम बंधन है ॥ अरु आत्मतत्व जानना इसी का नाम मोक्ष है
और बंध मोक्ष कोऊ नही ॥ इति संस्त उपशम योगो नाम सर्ग: ॥ ५७ ॥ ॐ
रामउवाच ॥ हे रामचंद्र केस्वामे कंचुकर उत्पन्न हूया ॥ अरु जीव आत्मा विषे कैसे हूया है
सो मुझ कों वहुड़ कहो ॥ वसिष्ठ उवाच ॥ हे रामचंद्र ब्रह्म अनंत शक्ति है ॥ तिस विषे अनेक प्र
कार का चलन होता है ॥ जहां जहां जैसी जैसी शक्ति फुरती है ॥ तैसी तैसी रूप होइ कर भासती
है ॥ जब शुद्ध चिन्मात्र विषे चेतन्य शक्ति फुरती है ॥ जो अहं अस्मि तब तिस फुरणे कर जी
व कहीता है ॥ सो चित शक्ति संकल्प का कारण भूत है ॥ जब दृश्य की ओर फुरती है ॥ तब ज
गत दृश्य होइ कर भासता है ॥ वहुड़ इ नाना प्रकार के कार्य कारण होइ कर भासते है
राजोवाच ॥ हे मुनें विषे जो इस प्रकार है ॥ तो देव किस का नाम है ॥ अरु कर्म क्या
है ॥ अरु कारण किस कों कहते है ॥ वसिष्ठ उवाच ॥ हे रामचंद्र फुरणा अफुरणा दोनों
चित मात्र सत्ता का स्वभाव है ॥ जैसे फुरणा अफुरणा दोनों वायु के स्वभाव है ॥ पर जब
फुरती है ॥ तब आकाश विषे स्पर्श होइ कर भासती है ॥ अरु जब चलणे तें रहत होती
है ॥ तब शांत होइ जाती है ॥ तैसे शुध चिन्मात्र विषे चेतन्यता जु है ॥ लक्षण अहं अ
स्मि अर्थ यह जो मैं हूं ॥ तब तिस का नाम स्पंद वुधी स्फुरक कहते है ॥ तिस कर जग
त दृश्य रूप होइ भासता है ॥ तिस जगत दृश्य तें रहत होवणा ॥ तिस कों अस्पंद क
हते है ॥ चित के फुरणे कर नाना प्रकार का जगत होइ भासता है ॥ अरु चित के अफु
रणा हूए जगत भ्रम मिट जाता है ॥ नित्य शांत ब्रह्मपद की प्रापत होती है ॥ हे राम
चंद्र जीव अरु कर्म अरु कारण इस सभ चित स्पंद के नाम है ॥ अरु चित स्पंद तें
अनुभव भिन्न नही ॥ अनुभव ही चित स्पंद हूए की न्याई भासता है ॥ जीव कर्म का कार
ण का बीज रूपी चित स्पंद है ॥ चित स्पंद कर्म के आगे दृश्य होइ भासती है ॥ वहु
ड़ चिदाभास हांग देह विषे अहं प्रतीत होती है ॥ तिस देह विषे स्थित होइ कर चि
त संवेदन दृश्य की ओर संसरती है ॥ सो संसरणा दो प्रकार है ॥ एक वडा है एक अल्प
है ॥ किनहू को संसरणे विषे अनेक जन्म प्रतीत होते है ॥ अरु किनहू को एक जन्म
होता है ॥ जो फुरकर दृश्य की ओर चले जाते है ॥ तिन को वहुते जन्म होते है ॥ चित के
फुरणे कर ऐसा अनुभव करते है ॥ पुन्य क्रिया कर के स्वर्ग को जाते है ॥ पाप क्रिया क
कै नरक को जाते है ॥ इस प्रकार दृश्य भ्रम को देखते है ॥ अज्ञान कर के बंधन विषे र
हते है ॥ जब ज्ञान की प्रापत होती है ॥ तब मोक्ष का अनुभव करते है ॥ सो वडा संसर
णा है ॥ अरु जो एक ही जन्म पाइ कर आत्मा की ओर आवते है ॥ सो अल्प संसरणा है ॥ हे
रामचंद्र जैसे स्वर्ण ही भूषण रूप कों धारता है ॥ तैसे संवेदन ही काष्ट लोष्ट आदिक
रूप होइ कर भासती है ॥ इस चित के संयोग कर अज अविनाशी पुरुष कों नाना प्र
कार के देह प्रापत होते है ॥ अरु जानता है ॥ अरु मै उपजया हौं ॥ अब जीवता हौं ॥ व
हुड़ मर जावौंगा ॥ इत्यादिक भ्रम कर के अपणे विषे जन्म आदि अवस्था भासती यां
आत्मा के अज्ञान कर कै जीव कों अहं आदिक कल्पना फुरती है ॥ जैसे मथुरा के राजा
लवण कों चंडाल का भ्रम भया था ॥ तैसे चित्त के फुरणे कर इह जीव जगत भ्रम को दे

षता है ॥ हे रामचंद्र इह सभ जगत मन के भ्रम कर के पड़ा भासता है ॥ शिव जो परमत
त्व है ॥ सो चिन्मात्र है ॥ तिस विषे जब चेत्योन्मुख चित्त होता है ॥ जो मै हों ॥ तिस का नाम जीव
है ॥ जैसे सोम जल कछुक इछता होती है ॥ तिस विषे चक्र फुरता है ॥ वहुड़ इ तरंग होते है
तैसे ब्रह्म रूपी सोम जल है ॥ तिस विषे चक्र फुरते है ॥ वहुड़ चित रूपी तरंग उदे होते है
वहुड़ चित रूपी वुदवुदे होते है उपजकर लीन होते है ॥ हे रामचंद्र चेतन्य फुरणे हा
रा जीव की न्याई हो भासता है ॥ जैसे समुद्र ही द्रवता कर के तरंग रूप हो भासता है ॥ चि
त चेत्य के संयोग कर जीव कहीता है ॥ तिस जीव तें जब संकल्प का फुरणा होता है ॥ तब
मन कहीता है ॥ अरु संकल्प निश्चे रूप होता है ॥ तब वुध होइ कर स्थित होती है ॥ अरु ज
ब अहं भाव होता है ॥ तब अहंकार कहीता है ॥ तिस अहं भाव कों पाइ कर तन्मात्र की कल्प
ना होती है ॥ पृथिवी जल तेज वायु आकाश इह सूक्ष्म भूत होते है ॥ तिन तें आगे जगत हो
ता है ॥ हे रामचंद्र असत्य रूपी चित्त के संसरणे कर के जगत सत्य रूप होइ भासता है ॥ जै
से नेत्र दूषण कर के आकाश विषे मुक्ता माला भासती यां है ॥ जैसे भ्रम मात्र गंधर्व नगर भा
सता है ॥ जैसे स्वप्न भ्रम कर स्वप्न जगत भासता है ॥ तैसे चित्त के संसरणे कर जगत भ्रम भा
सता है ॥ हे रामचंद्र शुद्ध आत्मा नित्य शुद्ध शांत रूप है ॥ अरु सम अपणे आप ही विषे स्थित
है ॥ तिस विषे चित्त संवेदन तें जगत को रचा है ॥ तिस जगत कों भ्रम कर के सत्य की न्याई देखीत
है ॥ जैसे स्वप्न सृष्ट को भ्रम कर देखीता है ॥ तैसे इह जगत फुरणे कर सत भासता है ॥ हे राम
चंद्र मन के संसरणे का नाम जाग्रत है ॥ अरु अहंकार का नाम स्वप्न है ॥ अरु चित्त जो है ॥ सु
जाती रूप चेतनेवाला ॥ तिस का नाम सुषुप्त है ॥ चिन मात्र का नाम तुरीय पद है ॥ जब सु
द्ध चिन्मात्र विषे अत्यंत परिणाम होवे ॥ तिस का नाम तुरीयातीत पद है ॥ तिस विषे स्थि
त हूया वहुड़ शोकवान कदाचित नहीं होता ॥ तिस ब्रह्म सत्ता तें सभ उदे होते है ॥ अरु ति
सही विषे सभ लीन होते है ॥ अरु वास्तव तें न कोऊ उपजया है ॥ न कोऊ लीन होता है ॥ चित्त
के फुरणे कर सभ भ्रम भासता है ॥ जैसे नेत्र दूषण कर आकाश विषे मुक्तमाला भासती
यां है ॥ तैसे चित्त के फुरणे कर इह जगत भासता है ॥ हे रामचंद्र हंदूके व याव णे कों आका
श छोड देता है ॥ जे तो कछु बीज की सत्ता होवे ॥ तेता आकाश विषे वढता जावे ॥ तैसे आ
त्म सत्ता विषे जो जो रूप चित्त कल्पता जावे ॥ सो सभ कों आत्मा छोड देता है ॥ अरु सत्ता रूप
भी संवेदन कर के करता भया है ॥ हे रामचंद्र जैसे लोहा निर्मली कीया हूया ॥ आरसी कर
प्रतिबिंब कों ग्रहण करता है ॥ तैसे आत्मा विषे संवेदन कर के जगत का प्रतिबिंब होता है
अरु वास्तव तें जगत तो भी कछु हस्ती वस्तु नहीं ॥ जैसे एक बीज ही पत्र फूल फल टास होइ
भासते है ॥ तैसे आत्मा संवेदन कर के नाना रूप जगत होइ भासता है ॥ जैसे अबोध रूप प
त्र फूल बोध रूप बीज तें भिन्न नहीं ॥ तैसे अबोध रूप जगत भी बोध रूप आत्मा तें भिन्न न
ही ॥ पर ज्ञानवान है ॥ तिन कों अखंड सत्ता भासती है ॥ अरु अज्ञानी कों भिन्न भिन्न नाम रूप
सत्ता भासती है ॥ जैसे समुद्र ही तरंग वुदवुदे होइ कर भासता है ॥ जैसे बीज ही पत्र फूल
फल टास होइ कर भासता है ॥ जो मूर्ख देखता है ॥ तो तिन के भिन्न भिन्न नाम रूप सत्ता भा
सता है ॥ अरु ज्ञानवान तिन कों देख कर एक रूप हो जाणता है ॥ तैसे जो मूर्ख अज्ञानी है ॥ तै
से भिन्न भिन्न नाम रूप जगत कों जाणते है ॥ अरु ज्ञानवान कों एक ब्रह्म सत्ता अनंत भास
ती है ॥ और जगत भ्रम उन कों कोऊ नही भासता ॥ राजोवाच ॥ वडा आश्चर्य है ॥ जो असत्य
रूपी जगत सत्य होइ कर भासता है ॥ अरु वडे विस्तार स्पष्ट भासता है ॥ अरु इह जगत
ब्रह्म का आभास है ॥ अनेक तन मात्र तिस के जल वुंदो की न्याई है ॥ अविद्या कर के पड़ी
यां फुरती यां है ॥ ऐसे भी मैं श्रवण की या है हे मुनीश्वर इह कैसे फुरणा वहिरमुख हो
ता है ॥ अरु अंतर्मुख कैसे होता है ॥ वसिष्ठ उवाच ॥ हे रामचंद्र इस दृश्य का अत्यंत अभा
व है ॥ अज्ञानी दृश्य का फुरणे कर अनुभव होता है ॥ शुध चिन्मात्र ब्रह्म सत्ता विषे फु

रणेकरजीवत्वहुयाहै॥ सोजीवत्वअसतहै॥ अरुसत्यकीन्याईहोताहै॥ अरुजीवब्रह्मसा
थअभिन्नहै॥ फुरणेकरकेभिन्नकीन्याईस्थितहोताहै॥ तिसजीवविषेसंकल्पकलनाहो
तीहै॥ तबमनरूपहोइकरस्थितहोताहै॥ अरुस्मरणकरकेचित्तहोताहै॥ निश्चैकरणे
तेंबुधहोतीहै॥ अहंभावकरणेकरअहंकारहोताहै॥ बहुडकाकतालीकीन्याईचित्त
अणविषेतन्मात्राफुरआवतीयांहै॥ तबशब्दकेश्रवणकीइछाभई॥ तबश्रवणइंद्रीप्र
गटभई॥ जबरूपकीइछाभई॥ तबनेत्रइंद्रीप्रगटभई॥ गंधलेवणेकीइछाकरनासका
इंद्रीप्रगटभई॥ स्पर्शकीइछाभईतबत्वचाइंद्रीप्रगटभई॥ रसलेणेकीइछाभई॥ तबर
सनाइंद्रीप्रगटभई॥ इसप्रकारपांचोंइंद्रीयांप्रगटभईयां॥ भावनाकरकेअसत्यहीसत्य
कीन्याईभासणेलगीयां॥ हेरामचंद्रइसप्रकारआदिजीवहुया॥ तिसकीभावनाकरके
आतवाहकताकीन्याईशरीरहोइआएहै॥ चलतेभासतेहै॥ तोभीअचलरूपहै॥ तातेंजे
ताकछुजगतभासताहै॥ सोसभब्रह्मस्वरूपहै॥ इतरकछुनही॥ प्रमाताभीब्रह्महै॥ प्रमा
णभीब्रह्महै॥ प्रमेयभीब्रह्महै॥ परसंवेदनभ्रमकरकेअनेकरूपनानाप्रकारभासतेहै॥
जैसीजैसीसंवेदनफुरतीहै॥ तैसातैसारूपहोइकरभासताहै॥ जोदृश्यकोचेततीहै॥ तब
नानाप्रकारकीदृश्यभासतीहै॥ अरुजबअंतरमुखीब्रह्मकोचेततीहै॥ तबब्रह्मरूपहोइ
जातीहै॥ हेरामचंद्रइहदृश्यकछुउपजीनही॥ आत्मासदाआपणेआपहीविषेस्थित
है॥ जोदृश्यकाहीअसंभवहुया॥ तबबंधकिसकोकहीये॥ अरुमोक्षकिसकोकहीये॥
विचारकिसकाकरीये॥ सर्वकल्पनाकाअभावहै॥ इहजोतेराप्रश्नहै॥ तिसकाउत्तरसि
द्धांतकालविषेहोवेगा॥ इहांनहीवणता॥ जैसेकमलफुलोंकीमालाजोहोतीहै॥ सो
अपणेकालविषेवणतीहै॥ समेविनाशोभानहीदेती॥ तैसेतेराप्रश्नसिद्धांतकालवि
षेशोभापावेगा॥ समेविनासार्थकशब्दभीनिरर्थकहोताहै॥ इसकारणतेंकहाहै॥ जोसि
द्धांतकालविषेशोभापावेगा॥ सिद्धांतकालविनाइहप्रश्नशोभानहीपावता॥ हेरामचंद्र
जेतेकछुपदार्थहै॥ तिनकाफलभीसमेपाइकरहोताहै॥ समेविनानहीहोता॥ अबएवं
प्रसंगसुणु॥ हेरामचंद्रब्रह्मविषेचेत्यात्मत्वकरकेइहआदिजीवआपकोंपितामाता
जाणताभया॥ जैसेस्वप्नेविषेआपकोंकोऊदेखे॥ तैसेब्रह्माजीआपकोंजाणताभया॥
सोब्रह्माप्रथमऊंशब्दकोउचारतभया॥ तिसशब्दतन्मात्रातेंचारोंवेददेखतभया॥ तिस
तेंअनंतरमनोराजकरकेंसृष्टकोंरचताभया॥ तबअसत्यरूपसृष्टभावनाकरकेसत्य
होइभासणेलगी॥ जैसेस्वप्नेविषेपर्वतभासतेहै॥ जैसेगंधर्वनगरभासआवताहै॥ तैसे
असत्यरूपसृष्टिसत्यभासणेलगी॥ हेरामचंद्रब्रह्मसत्तातेंजैसेब्रह्माआदिकाकाउप
जणाभया॥ तैसेहीऔरजीवोंकाउपजणाभयाहै॥ जगतकाकारणसंवेदनहै॥ संवेदन
भ्रमकरकेजीवोंकोजगतभासताहै॥ तिनकोंभौतकशरीरविषेजोअहंप्रतीतभईहै
तिसकरअपणेअपणेनिश्चैकेनुसारशास्त्रभईहै॥ ब्रह्माविषेब्रह्माकोशास्त्रकानिश्चै
हुयाहै॥ कीटीविषेकीटीशास्त्रकानिश्चैहुयाहै॥ हेरामचंद्रजैसीवासनासंवितविषे
होतीहै॥ तिसकेअनुसारहीअनुभवहोताहै॥ सुद्धचिन्मात्रविषेजोचेत्यानसुषत्वहु
याहै॥ तिसविषेजोज्ञानरूपसताहै॥ सोपुरुषहै॥ तिसविषेजोफुरणाहै॥ सो
कर्महै॥ जैसेजैसेफुरताहै तैसेतैसेभासताहै हेरामचंद्रआत्मसत्ताविषेजो
अहंहुयाहै॥ तिसकानाममुनिहै॥ तिसतेंआगेजगतरचाहै॥ सोअविचारतेसि
धहै॥ विचारकीयेतेनष्टहोजाताहै॥ जैसेअविचारकरकेअपणीपछावेविषेभू
तपिशाचकलपीताहै॥ तिसतेंभयउत्पत्तिहोताहै॥ विचारकीयेतेपिशाचअ
रुभयदोनोनष्टहोजातेहै तैसेआत्मविचारतेचित्तअरुजगतदोनोनष्टहोजा
तेहै॥ हेरामचंद्रब्रह्मसत्तासदाअपणेआपविषेस्थितहै॥ तिसविषेचित्तकल्पना
कोऊनही॥ अरुप्रमाणप्रमाताप्रमेयाभीब्रह्मतेंइतरकछुभीनही॥ तोएकअरु

तकीकल्पनाकैसेहोवे॥ जैसेससेकेशृंगअसत्यहै॥ तैसेद्वैतएककल्पनाआत्माविषेअसत्य
है॥ जैसेआकाशकेफूलअसत्यहै॥ तैसेआत्माविषेद्वैतएककल्पनाअसत्यहै॥ हेराम
चंद्रइहब्रह्मांडभावनामात्रहै॥ जिसकोंसतभासताहै॥ तिसकोंबंधनकाकारणहोता
है जैसेश्वगायणअपणाशब्दवणावतीहै सोअपणेबंधकाकारणहोताहै॥ तिसवि
षआपसमरतीहै॥ तैसेजोजगतकोंसत्यमानताहै॥ तिसकोंअपणामानताहीबंधन
करताहै॥ तिसकरजन्ममरणकोंदेखताहै अरुजिसकोजगतकाअसत्यनिश्चैहुयाहै
तिसकोबंधननहीहोता॥ उसकोउल्लासहै॥ हेरामचंद्रअनुभवसत्तासभकाअपणा
आपहै॥ तिसविषेजैसाजैसानिश्चैकिसीकोंहोताहै॥ तिसकोअपणेअनुभवकेअनु
सारपदार्थभासतेहै॥ कोऊनिमेषविषेकल्पवितीतहुयेकाअनुभवकरतेहै॥ कोऊव
हुतकालविषेनिमेषवीतकाअनुभवकरतेहै॥ अरुवास्तवतेंइहजगतउपजयानही
जगतकाउपजणामिथ्याहै॥ बंधनभीमिथ्याहै॥ रसभीमिथ्याहै॥ रसलेणेवालेभीमि
थ्याहै॥ सदब्रह्मसर्वगतनित्यअद्वैतसदाअपणेआपविषेस्थितहै॥ परअज्ञानकरके
स्वछभीअस्वछभासताहै॥ सर्वगतभीपरिछिन्नभासताहै॥ ब्रह्मभीअब्रह्मभासताहै॥ नि
त्यभीअनित्यभासताहै॥ अद्वैतभीद्वैतसहितभासताहै॥ हेरामचंद्रअज्ञानकरऐसाभा
सताहै॥ जैसेजलअरुतरंगविषेभेदमूर्षमानतेहै॥ परभेदनही॥ तैसेब्रह्मअरुजग
तविषेभेदअज्ञानीदेखहै॥ परभेदनही जैसेस्वर्णअरुभूषणविषेभेदअज्ञानीदेखते
है॥ जैसेजेवड़ीविषेसर्पमूर्षदेखतेहै॥ तैसेब्रह्मविषेनानात्वमूर्षदेखदेहै॥ ज्ञानीकोंस
भचिदाकाशहै॥ हेरामचंद्रजबआत्मसत्ताविषेअनात्मरूपदृश्यकीचेतनताहोतीहै॥
तबकल्पनाउत्पत्तिहोतीहै॥ सोकल्पनामनरूपहोइकरस्थितहोतीहै॥ तिसतेंअनंत
रअहंभावहोताहै॥ बहुडतनमात्राकीकल्पनाहोतीहै॥ बहुडशब्दअर्थकीकल्पनाहो
इसीप्रकारचित्तसत्ताविषेजैसीजैसीचेतनताफुरतीहै॥ तैसातैसारूपभासणेलगता
है॥ सतअसतपदार्थसभभावनाकेवशतेंफुरआएहै॥ जैसेस्वप्नकोसृष्टिफुरआवती
है॥ सोअनुभवरूपहीहोतीहै॥ तैसेइहजगतफुरआयाहै॥ सोअनुभवरूपहीहै॥ तातें
सृष्टिविषेचिन्मात्रहीहै॥ अरुचिन्मात्रहीविषेसृष्टिहै॥ सर्वकीसत्तारूपचिन्मात्रही
है॥ अंतबाहरऊर्धअधःचिन्मात्रहीहै॥ मातमानमितप्रमेयसर्वपदचिन्मात्रहीथोरेहै
नित्यशांतरूपहै॥ समस्तजगतकीसत्तातिसहीकरहोतीहै॥ सोएकहीसमहै॥ अ
रुतरीयअतीतपदहै॥ नित्यस्थितहै इत्युत्पत्तिप्रकरणेसत्योपदेशोनामसर्गः 
वसिष्ठउवाच हेरामचंद्रइसप्रसंगऊपरएकपुरातनइतिहासहै॥ तिसविषेमहाप्र
सेंकाहंसंवादहकहाहै॥ सोश्रवणकरु॥ एकमहाश्यामकजलकेपहाडकीन्याई॥ कर्क
टीनामराक्षसीहिमालेपर्वतकेउत्तरशिखरऊपरहोतभई॥ विशूचकाभीतिसकाना
महुया॥ अस्थिरबिजलीकीन्याईतिसकेनेत्रअरुअग्निकीन्याईबडीजिहवातिसकीचम
त्कारकरै॥ बडेतबअरुऊचाशरीरजिसका॥ सोभोजनकरत्रिपतकदाचितनहोवे॥ जै
सेवडवाअग्निचिपतनहीहोती॥ तैसेत्रिपतनहोवे॥ तबउसकेमनविषेउपजीजोजंबू
द्वीपकेसंपूर्णजीवोंकोभोजनकरों॥ तबत्रिपतहोवों॥ अन्यथामेरीत्रिपतनहीहोती
अरुआपदाउद्यमकीयेतेंदूरहोतीहै॥ तातेंउद्यमकरो॥ जोअच्छिन्नचित्तहोइकरत
पकरों॥ हेरामचंद्रऐसेविचारकरकेएकांतपर्वतकीकंदराविषेएकटंगकरस्थित
भई॥ दोनोंभुजाऊर्धकोंधारीया॥ मानोंमेघकोंपकडतीहै॥ शरीरअरुप्राणस्थितभई
मूर्तीकीन्याईहोगई॥ शीतअरुउष्णकेहोवतेरहभई॥ पवनकरशरीरजरजरीभाव
हुया॥ तबइसप्रकारसहस्रवर्षव्यतीतभया॥ दारुणतपकीया॥ तबब्रह्माजीआए॥
अरुकहाहेपुत्रीतैंकठनतपकीयाहै॥ उठखडीहो॥ जोकछुचाहतीहैसोवरमांग॥ क
टी च हेभगवनमैंलोहेकीन्याईसूचकाहोवों॥ जोजीवोंकेहृदिविषप्रवेशक
रजावों॥ हेरामचंद्रजबऐसेमूर्षराक्षसीकहा॥ तबब्रह्माजीकहा॥ ऐसेहीहोवे॥ तेरा

नाम भी प्रसिद्ध विशूचका होवेगा ॥ हे राक्षसी जो दुराचारी जीव होवे ॥ तिनके हृदे विषे
तूं प्राणवायु के मार्ग कर जाइकर प्रवेश करेगी ॥ अरु जो गुणवान तेरे निवर्त करणे निमि
त्त ॐ मंत्र पढेगा ॥ जो हिमालेके उत्तर सिषर विषे कर्कटी नाम राक्षसी विशूचका सो हूइ
होवे ॥ तिन विषे तूं प्रवेश न कर सकेगी ॥ हे रामचंद्र जब इस प्रकार ब्रह्माजी कहा ॥ त
व कर्कटी का शरीर सूषम होणे लगा ॥ जैसे संकल्प का पहाड संकल्प के क्षीण हूए
ते क्षीण हो जाता है ॥ तैसे कर्म कर लोह की सूई की न्याई सूक्षम होगया ॥ जैसे कमल की
तंतु होती है ॥ तैसे होगया ॥ हे रामचंद्र असे रूपकों कर के दीर्घाकार भई ॥ देषु मूर्ष अवि
चारी जो पुरुष है ॥ सो तृणकी न्याई शरीर को त्यागते है ॥ अरु जो पूर्व अपरकों विचारते
है ॥ सो पाछे कष्ट नहीं पावते ॥ जो पूर्व अपर विचारते रहते है ॥ सोई पाछे कष्ट पावते है
अरु अनर्थ रूप होइ कर दोरांकों कष्ट देते है ॥ एक पदार्थकों भला जाणकर तिसके निमि
त्त यत्न करते है ॥ न धर्मकी ओर देषते है ॥ न सुखकी ओर देषते है ॥ इस प्रकार मूर्ष राक्ष
सी भोजन निमित्त बडे शरीरकों त्यागकर तुच्छ शरीरका अंगीकार कीया ॥ सो एक शरीर
सूषम हूया ॥ दूसरी पुर्यष्टिका भई ॥ कहूं शरीर साथ जाइ प्रवेश करे ॥ कहूं पुर्यष्टिका सा
थ जाइ प्रवेश करे ॥ प्राणवायु साथ प्रवेश करके दुष देवे ॥ प्राणों विपर्यय करे तब प्राणी
कष्ट पावे ॥ रक्त आदिक जो रस है ॥ तिनकों पान करे ॥ पर त्रिस्ना निवर्त्त न होवे ॥ अरु शरी
र वा स्थनि कर्से तब कष्ट पावे ॥ वायु चलेनि सकर टोप विषे गिडे ॥ छिकड विषे गिडे ॥ चर
णों के तले आवे ॥ देषो विषे रही ध्यास त्रिणों विषे रही ॥ जो नीच पापी जीव है ॥ तिनकों क
ष्ट देवे ॥ अरु जो गुणवान है ॥ तिनके कष्ट देणेकों समर्थ न होवे ॥ जो मंत्र पढे ॥ तिनोंते
निवर्त्त होवे ॥ जो किसी छिद्र विषे गिडे तब जाणे जो बडे कूप विषे गिडी हों ॥ हे रामचंद्र
मूर्षता कर के एते कष्टकों प्राप्त भई ॥ वाल्मीकि उवाच ॥ इस प्रकार जब वसिष्ठजी क
हा ॥ तब सूर्य अस्त भया सायंकाल का समा हूया ॥ सर्व सभा परस्पर नमस्कार करके स्ना
न कों गए ॥ विचार सें युक्त रात्र कों बीतावत भए ॥ सूर्य की यां किरणां जब उदे भई यां त
ब बहुर आइ बैठे ॥ इति विशूचका व्यवहार वर्णनं नाम सर्गः ४८ ॥ १ ॥ वसिष्ठ उवाच ॥
हे रामचंद्र इस प्राणीयों के मारणे विषे ॥ जब के तेक वर्ष उसकों व्यतीत भए ॥ तब उसके
मन विषे विचार उत्पत्ति या ॥ जो बडा कष्ट है ॥ बडा कष्ट है ॥ इह सूचका शरीर मुझकोंके से
प्राप्त भया है ॥ मैं मूर्षता कर के इह वर ब्रह्माजी सें मांगा था ॥ जो सूर्य आदिकाकों मैं ग्रा
स्यां करलेती थी ॥ मंदराचल पर्वतकी न्याई मेरा उदर कहा गया ॥ वडवाग्नि की न्याई मे
री जिह्वा कही गई ॥ जैसे कोऊ अभागी पुरुष चिंतामणिकों त्याग देवे अरु कचकों अं
गीकार करे ॥ तैसे मैं बडे शरीरकों त्याग कर तुच्छ शरीर कों अंगीकार कीया ॥ के सा तुच्छ है
जो एक बूंद कर भी त्रिपत हो जाता है ॥ पर त्रिस्ना पूर्ण नहीं होती ॥ उस शरीर साथ मैं नि
र्भय विचरती थी ॥ इह शरीर पृथिवी की कणा के साथ भी दब या जाता है ॥ अब मैं कहा
पाया है वडा ॥ अब मैं मस्त होवोत बहुटी ॥ परमार्गी मस्त भी हाथ नहीं आवती ॥ तातें मे
वकूं उस शरीर के निमित्त तप करों ॥ उह कवन पदार्थ है ॥ जो उद्यम कीयेतें हाथ नहीं
आवता ॥ हे रामचंद्र इस प्रकार धूर्व ले शरीर के निमित्त तप करणेकों समर्थ भई ॥ तब
हिमाले पर्वत के तन निर्जन स्थान विषे एक टंग के आधार स्थित भई ॥ सुष कर्थं कर के
तप करणे लगी ॥ हे रामचंद्र तब पवन जो चले ॥ सो इसके मुष में फल के मास जल
के कणके आन राषे ॥ पर उह अंतर गृहण करे ॥ मुषकों सूंद लेवे पवन देष कर आश्चर्य
कों प्राप्त भया ॥ जो मेसुमेर आदिककों भी चलायमान कीया है ॥ पर इसका निश्चा
नहीं चलायमान होता ॥ मेघ के वर्षा कर चिकड विषे डूगई ॥ पर ज्यों की त्यों ही रही ॥
मेघ के बडे शब्द हो कर भी चलायमान न भई ॥ हे रामचंद्र सहस्र वर्ष इस प्रकार उ
सकों वितीत भया ॥ हठ ठेराग कर के उसका चित्त निर्मल भया ॥ तब सर्व संकल्प कों
त्यागने तिसकों परमपद की प्राप्त न भई ॥ अरु बडे ज्ञान का प्रकाश उदे हूया ॥ परंतु

व ब्रह्मका तिसकों साक्षात्कार हूया ॥ तिस कर परम पावन रूप भई ॥ तब चिंत
सूची होत भई अर्थ इह जो चैतन्य विषे उसका एकत्व भाव हूया ॥ तिसके तप कर स
र्व लोक तप्त हूए ॥ तब इंद्र नारदसें प्रस्न जाइ कीया ॥ जो असा तप किसने कीया है ॥
जिसके तप कर लोक जलणे लगे है ॥ तब नारद कहा ॥ हे इंद्र सहस्र वर्ष कर्कटी ना
म राक्षसी वडा दारुण तप कीया है ॥ तिस कर सूचका भई थी ॥ तिस कर बहुत क
ष्ट पाया ॥ अरु लोकोंकों कष्ट दीया ॥ जैसे विराट आत्मा सर्व विषे प्रवेश कीया है ॥
जैसे चिन शक्ति सर्व विषे प्रवेश कीया है ॥ तैसे सर्व देहां विषे प्रवेश कीया ॥ पर मंत्र ज
प होवे ॥ तहां निवर्त्त हो जावे ॥ अरु जहां मंत्र जाप न होवे ॥ तिनके अंतर प्रवेश करके
रक्त मास भोजन करे ॥ पर त्रिपत न होवे ॥ शरीर कर त्रिपत होवे ॥ मन विषे त्रिस्ना रहे
सूषम शरीर कर धूड विषे दवी जावे ॥ बहुत कष्टकों पाइ कर विचार कीया ॥ जो उग्र त
प कर सम भ कछु प्राप्त होता है ॥ तातें स्थूल शरीर के निमित्त बहुड एकांत स्थान विषे
तप जाइ करों ॥ तब एक गिरध पंषी कूं हां आन बैठा ॥ कछु भोजन करणे लागा ॥ तिस
की चूंच के मार्ग विसूचका भी अंतर चली गई ॥ तब ऊ ल पंषी कष्ट पाइकर उडइया ॥ उ
ह विसूचका उसकी पुर्यष्टि काके साथ मिल कर उसकों प्रेर कर हिमाले पर्वत की
ओर ले चली ॥ जैसे वायु मेघकों ले जाती है ॥ तैसे हिमाले पर्वत के वन मों ले गई ॥ ऊ
हां उस गीध छुदं कर डारी ॥ जैसे जो गेश्वर संवेदन कों त्याग कर निर्विकल्प पद विषे
जाता है ॥ तैसे छुदंकों डारकर पंछी उड गया ॥ जैसे पेंडाई वियारी पोटकों त्याग कर
सुखी होता है ॥ तैसे पंछी छुदंकों त्याग कर सुखी भया ॥ तब उसी शरीर साथ सूचका
तप करणे लागी है ॥ हे रामचंद्र इस प्रकार इंद्र सुण कर उसके देषणे निमित्त पवन
कों चलाया ॥ तब पवन आकाशकों छोड कर क्रम सों हिमाले के वन विषे सू षम शा
रीर साथ उसकों देषत भया ॥ पवन चलाइ रहा ॥ सूर्य तप पाइ रहा ॥ पर चलायमान
भई ॥ प्राणवायु का भी भोजन करे ॥ तब पवन आश्चर्यमान होइ के रहा ॥ हे तपस्विनी
तूं किस निमित्त तप करती है ॥ हे रामचंद्र असे पवन कहा ॥ तब भी विषूचका न बोली
पवन कहा भगवती विषूचका बडा तप कीया है ॥ अब कोऊ कामना इसकों नहीं ॥ असे
कहकर उड्या ॥ क्रम सों इंद्र के पास आया ॥ इंद्र विषूचका के दर्शन महात्म कर पवन
कों कंठ लगा मिला आदर कीया ॥ जहां तू बडे महात्मावान का दर्शन कर आया है ॥ पवन भी
सम्ह त्तांतक हूं सुणाया ॥ अरु कहा ॥ हे राजन उसके तेजकर हिमाले की पीन लता
आछादी गई है ॥ तुम ब्रह्माजी पास चलो ॥ नहीं तो उसके तप कर जगत जल जावेगा ॥
हे रामचंद्र जब इस प्रकार पवन कहा ॥ तब इंद्र पवन देवते गणों सहित ब्रह्माजी के
पास आया प्रणाम करके बैठ गए ॥ तब ब्रह्माजी कहा तुमारा हृत्तांत मैं जाणा है ॥ हे
इंद्र तुम जावो मैं विसूचका पास जाता हों ॥ हे रामचंद्र ब्रह्माजी इंद्रकों कह कर विसूच
का पास आइ प्राप्त भया ॥ तिसकों देष कर आश्चर्यमान हूया ॥ जो त्रिणकी न्याई विसू
चका सुमेरतें भी अधिक धीरज धारा है ॥ जैसे मध्यान्हका सूर्य तेजवान होता है ॥ तैसे
इसका तप तेजवान है ॥ अरु परमब्रह्म विषे स्थित भई है ॥ जगत भ्रम इसका अब शांत
हो गया है ॥ तातें इह वंदना करणे योग है ॥ हे रामचंद्र तब आकाश तल विषे स्थित
होकर ब्रह्माजी कहा ॥ हे पुत्री कर्कटे तूं अब वरकों गृहण कर ॥ तब विसूचका विचार
करणे लागी ॥ जो कछु जाणने योग था ॥ सो मैं जाणा है ॥ अरु शांत रूप भई हों ॥ सं
पूर्ण संशय मेरे नष्ट भए है ॥ अब वर साथ मेरा क्या प्रयोजन है ॥ इह जगत भ्रम तो
संकल्प तें उपज्या है ॥ जैसे बालककों अपणी परछादे विषे वेताल बुध होती है ॥ तिस
कर भयकों प्राप्त होता है ॥ तैसे मैं स्वरूप के प्रमाद कर भटकती फिरी हों ॥ अब इष्ट अ
निष्ट जगत की मुझकों इच्छा कछु नहीं ॥ अब मैं निर्विकल्प शांत विषे स्थित हों ॥ हे रा

मचंद्र ऐसे विचार करता चांडाली होरही॥ तब ब्रह्माजी वीतरागात्मा तत्र वध उसकी
भावीकों देखकर कहतभया॥ ब्रह्मोवाच॥ हे कर्कटे तूं कचूर करकें गृह्हणकर स्फूर्ति
ककाल भूतल विषें नृकग्रहणा है॥ भोगोंको भोगकरते विदेह मुक्त होवेगी॥ अरु तू
कजीव नमुक्त होकर विचरणा है॥ तेनके निष्ठेकों लंघने कोउ नहीं सकता॥ अरु जब
तें जपतपकरणे लागीथी॥ तब पूर्वदेह पावणे का संकल्प कीयाथा॥ उह संकल्प
अदसफल भयाहे॥ जैसे बीजविषे वृक्षका सदभाव होताहे॥ सोकालपाइकर विस्ता
रकोंधारताहे॥ तैसे तेरे विषे पूर्व शरीरका संकल्पथा॥ सो अब प्रापत होवेगा॥ उ सोजे
सा शरीर पाइकरतूं हिमालेके बन विषे विचरेगी॥ हे पुत्री तूं राक्षसी शरीर विषे जीव
न मुक्त होइकर विचरेंगी॥ और जन्म तूं फेर नहीं पावेगी॥ इसजन्म विषे तूं परम
शांत विषे रहेगी तूं॥ अरु सर्न कालके आकाशकी न्याई निर्मल होवेगी॥ जब ते
रीवृत्ति बहिर्मुखी होवेगी॥ तब सम्यक्ज्ञान तुझकों आत्मारूप भासेगा॥ व्यवहार
विषे भी समाधि रहेगी॥ अरु समाधि विषे भी समाधि रहेगी॥ पापी जीवकों तूं
भोजन करे॥ ता बाधक तेरा नाम होवेगा॥ अरु विवेक पालक तेरा देह होवेगा तो
तें पूर्व ले शरीरकों अंगीकार करकें॥ वसिष्ठ उवाच॥ हे रामचंद्र ऐसें कहकर ब्रह्मा
जी अंतर्ध्यान होतभया॥ तब सूचीकहा॥ ऐसें ही होवो॥ हमकों दोनों तुल्य है॥ त
बजैसे बीजतें वृक्ष होताहे॥ तैसें क्रमकर तिसका शरीर वधगया॥ इति सूचीशा
रीरलाभो नाम सर्गः॥ ५८॥ वसिष्ठ उवाच॥
हे रामचंद्र जैसे वर्षाकालका बादल सूक्ष्मतें स्थूल होजाताहे॥ तैसें सूची शरीर सो व
ड़ कर्कटी राक्षसी होतभई॥ जैसे सर्प कंजकों त्यागकर आत्मरूपकर नहीं ग्रहणाक
ता॥ तैसे राक्षसी शरीरकों आत्मा कर ग्रहण कीया॥ ऐसे शरीरकों पाइकर बड़ेउ
पद्मआसन बांधकर सो दिन सन्ता विषे निर्विकल्प स्थित भई॥ बहू मास पर्यंत प
हाड़ के शिखरकी न्याई समाधि स्थित रही॥ बहुरि ऐसे बधकर जागआई॥ जब हृत्त
हिमें रही भई॥ तब क्षुधा लागआई॥ काहेतें जु शरीरके स्वभाव शरीर पर्यंत रहते हैं
तब विचारत भई जो विवेकी है॥ तिनको मैं भोजन नहीं करोंगी॥ तिनके भोजन करणे
तें मेरा मरण श्रेष्ठ है॥ जो न्याइकर भोजन करणा जोगा है॥ तिसकों करोंगी॥ जो शरीर न
ष्ट होवे॥ तो भी न्याय विना भोजन न करोंगी॥ देहादिक सभ संकल्पमात्र है॥ मृतकों न
मरणेकी इच्छा है॥ अरु न जीवनेकी इच्छा है॥ हे रामचंद्र ऐसे विचार करती चांडाली हो
इवैठरही॥ राक्षसी स्वभावकों त्यागदीया॥ इस निमित्त स्वयं भगवान आकाशवाणी
करकहतभया॥ हे कर्कटी तूं जाइ मूढजीवोंको भोजन कर॥ तूं भोजन करेगी॥ तब उन
का कल्याण होवेगा॥ मूढोंका उधार करणा भी संतोंका स्वभाव है॥ जो विवेकी पुरुष
है॥ तिनकों तूं मत भोजन करहि॥ अरु जोतेरे उपदेश कर जीतने कों साथे॥ तिनकों भी न
खावे॥ अरु जो तेरे उपदेश कर भी बोध आत्माका न होवे॥ तिनकों भोजन कर॥ इह न्याइ
है॥ तब राक्षसी कहा॥ हे भगवन तुम अनुग्रह करके कहा है॥ इसी प्रकार मुझकों ब्रह्मा
जी भी कहाथा॥ हे रामचंद्र ऐसें करती हिमालेके शिखरतें उतर नीचे आई॥ तहां कि
रातोंका स्थान था॥ बहुत सघन वृक्ष तहां थे॥ तिनों विच विचरणे लगी॥ रात्रभी शाम अरु
राक्षसी शाम अरु तमाल वृक्ष भी॥ शाम महा अंधकार भासे॥ जैसें भ्रमरीकी पीठ शा
म होतीहै॥ मानो काजलका मेघ आन स्थित भया है॥ ऐसी शामता विषे किरात जो
है॥ तिनका राजा मंत्री सहित वीर यात्राकों निकसथा॥ तिनकों आवता देखकर
राक्षसी विचारत भया॥ जो मुझकों भोजन आइ प्रापत भया है॥ इह मूढ अज्ञानी है
इनकों देहभाव है॥ इनसे जीवोंके जीवणे कर कछु अर्थ सिद्ध नहीं होता॥ न लोक सि
द्ध होताहे॥ न परलोक सिद्ध होताहे॥ ऐसे जीवोंका जीवणा दुखके निमित्त है॥ इनकों
यत्न कर भी मारणा जोगा है॥ इनका पालना अनर्थके निमित्त है॥ पापीकों दंड करतें है

आदि अहिंसा कीनी है॥ जो पापीयोंको मारणा जोगा है॥ अरु जो गुणवान है॥ तिसकों मार
णा जोगा नहीं॥ कदाचित इह गुणवान होवे॥ तब मैं न मारोंगी॥ गुणवान भी दोप्रकार
के है॥ जो अभिमानी अरु भी अहिंसी गुणवान है॥ सो भी गुणवान है॥ अरु उपकार करणे
वाले॥ तो भी गुणवान है॥ अरु महा गुणवान अहिंसा है॥ तिनके जीवने कर बहुत लोकों का
कार्य सिद्ध होता है॥ जो मेरा यथा शरीर भोजन विना नष्ट हो जावे॥ तो भी गुणवानों को न
मारोंगी॥ जो उदार पुरुष है॥ सो पृथिवी का चंद्रमा है॥ तिनकों संतान कर स्वर्ग भी होता॥ तो
है॥ अरु मोक्ष भी होता है॥ जैसे संजीवनी बूटीकर मृतक भी जीवता है॥ तैसे संतोंके सं
गतकर अमर होता है॥ तातें मैं प्रश्न करकें इनकी परीक्षा करों॥ कदाचित इह भी गुणवान
न होवे॥ अरु कमल नेत्र ज्ञानवान भासते है॥ जो ज्ञानवान पुरुष है॥ तो मेरा भोजन जोगा
है॥ अरु जो मूर्ख है॥ तो दंड देवणे जोगा है॥ मैं इनकों भोजन करोंगी॥ इति राक्षसी प्र
चारो नाम सर्गः॥ ५९॥ वसिष्ठ उवाच॥
हे रामचंद्र तब राक्षसी उनकों देखकर मेघकी न्याई गर्जणे लागी॥ अरु कहत भई॥ अरे
अटवी इस पीआकाश के चंद्रमा सूर्य तम कवन हो बुधवान हो॥ अथवा दुर्बुद्धि हो॥ अब क
हाते आए हो॥ अरु क्या आचार है तुमारा॥ तुम तो मुझकों ग्रास आन प्रापत भए हो॥ अब
तुमकों भोजन करती हों॥ राजोवाच॥ अरी भौतिक शरीर इस तुच्छ शरीरकों पाइ कर तूं
कहां रहती है॥ हमकों देखकर जो तूं गर्जती है॥ सो तेरा शब्द हमकों भ्रमरी के शब्दव
त भासता है॥ कछु हमकों भय नहीं होता॥ हे राक्षसी इह शरीर तेरा मायामात्र है॥
इस तुच्छ स्वभावकों भय नहीं होता तो त्याग कर॥ अरु जो कछु तेरा अर्थ है॥ सो कहु
हम पूर्ण करदेवेंगे॥ हे रामचंद्र इस प्रकार राजे कहा॥ तब तिनके चलावणे निमित्त
राक्षसी प्रलयकालके मेघोंकी न्याई बड़ा शब्द करत भई॥ जैसे पहाड़ों चूर्ण होते शब्द
होवे॥ तैसा शब्द करणे लागी॥ सभ दिशा शब्द कर भर रही॥ और बड़ा भुजा कर भया
नक शब्द करे॥ बिजली की न्याई नेत्रोंका चमकावे॥ तिसकी मूर्ति देखकर राक्षस पिशाच
भी कंपायमान होवे॥ ऐसे भयानक स्वभावकों देखकर भी दोनों धीरज विषे रहे॥ तब
मंत्री कहा॥ अरी राक्षसी ऐसे शब्द तूं व्यर्थ क्यों करती है॥ इनकर तेरा प्रयोजन कछु
सिद्ध न होवेगा॥ इस आरंभकों त्यागकर अपना अर्थ होवे सो कहु॥ बुधवान जो पु
रुष होते है॥ सो तिस अर्थकों ग्रहण करते है॥ जो अपना विषय भूत होता है॥ जो अ
पना विषय भूत न होता॥ तिसके निमित्त यत्न नहीं करते॥ सो हम तेरा विषय
भूत न होवेंगे॥ जैसे मच्छर महीमर्दन कीये है॥ हे राक्षसी हमारे धीर्य रूपी पवन कर तेरे
जैसे अनंत मच्छर उड़ते फिरते है॥ तातें नीच स्वभावकों त्याग॥ स्वस्थ चित्त हो
इकर जो कछु अपना प्रयोजन है॥ सो प्रगट कर॥ बुधवान जो विवहार करते है॥ सो
स्वस्थ होइकर करते है॥ स्वस्थ हुए विना व्यवहार भी सिद्ध नहीं होता॥ इह आदि नेत है
तातें स्वस्थ होइकर अपना अर्थ कहु॥ हम तेरा अर्थ सिद्ध करदेवेंगे॥ हमारे पासों स्व
प्नें विषे भी अर्थी व्यर्थ नहीं गया॥ सभका अर्थ हम पूर्ण करते है॥ तातें अपना प्रयोजन
कहु॥ हे रामचंद्र जब ऐसे मंत्री कहा॥ तब राक्षसी चित्त में विचार भई॥ जो इह बड़े उदार आत्मा
प्र आवते है॥ अरु उज्जल आचारवान है॥ औरों जीवोंके समान इह नहीं॥ इह बड़े प्रकाश
वान है॥ उदारताकर इनके वचन ज्ञानवानों सारथ मिलते है॥ अब मैं इनकों जाणया है
अरु इनो मुझकों जाण्या है॥ मुझसों इनका नाश न होवेगा॥ काहेतें जु इह अविनाशी पुरु
ष है॥ ब्रह्म सत्ता विषे स्थित है॥ तातें ज्ञानवान है॥ ऐसा निश्चा ज्ञानवान विना और किसी
विषे नहीं होता॥ परकदाचित अज्ञानी होवे॥ तब बड़े संदेहकों अंगीकार करकें पूछती
हों॥ संदेहवान होइकर बोधवान कों पाइ नहीं पूछते॥ सो भी नीच बुद्धि है॥ हे रामचंद्र ऐ
से मन विषे पाइकर बहुर पूछती भई॥ कवन हो तुम॥ अरु तुमारा आचार क्या है॥ हे निष्पा

योंमहापुरुषोंकोदेषकरमित्रभावउपजआवताहै॥ मंत्रीउवाच॥ किरातदेशकाय
हराजाहै॥ अरुमैंइसकामंत्रीहौं॥ अरुराविविषेतुमसारछोडहौंकेमारणेनिमित्त
उठेहै॥ रात्रदिनविषेहमाराइहीआचारहै॥ जोजीवधर्मकीमर्यादाकोंत्यागणेहारेहैं
तिनकोंहमनाशकरतेहैं॥ जैसेइंधनोकोंअग्निनाशकरतीहै॥ तैसेहमदुष्टोंकोनाश
करतेहैं॥ राक्षसीउवाच॥ हेराजनइहतेरादुष्टमंत्रीहै॥ जिसराजेकामंत्रीभलानही
होता॥ उहराजाभीभलानही॥ अरुजिसराजेकामंत्रीभलाहोताहै॥ तिसकीप्रजाभी
धर्मवानहोती॥ भलामंत्रीसोकहीताहै॥ जोराजाकोंन्यायविषेअरुविवेकविषेजो
डे॥ जोराजाविवेकीहोताहै॥ तबशांतआत्माहोताहै॥ जोराजाशांतवानहूया॥ तब
प्रजाभीशांतवानहोतीहै॥ सभगुणोंतेजोउत्तमगुणहै॥ सोआत्मज्ञानहै॥ जोआत्मा
कोंजानताहै॥ सोराजाहै॥ अरुसोईमंत्रीहै॥ जिसविषेप्रमत्ताभीहोवै॥ अरुसमदृष्टहो
अरुजोंप्रमतासमदृष्टतांतेरहतहै॥ सोनराजाहैनमंत्रीहै॥ हेराजनजोतुमआत्म
ज्ञानवानपुरुषहो॥ तौतुमकल्याणरूपहो॥ अरुजोज्ञानतेरहतहो॥ तबतुमकोंमैं
भोजनकरतीहोंकरोगी॥ तुमकोंछूटनेकाइहीउपायहै॥ जोप्रश्नोंकासंशयदूरकरती
हो॥ तिनकाउत्तरदेवो॥ जोप्रश्नोंकाउत्तरदीया॥ तबमैंपूजणेयोगहो॥ अरुमेराअ
र्थहोवैगासोकहोगी॥ तुमहरांकरोगे॥ अरुजोप्रश्नोंकाउत्तरनदीया॥ तबतुमको
भोजनकरोगी॥ इत्युत्पत्तिप्रकरणेराक्षसीविचारोनामसर्गः॥ ५२॥

वसिष्ठउवाच

हेरामचंद्रजबइसप्रकारराक्षसीकहा॥ तबराजेकहा॥ तूंप्रश्नकरहमतुझकोंउत्त
रदेवेंगे॥ राक्षसीउवाच॥ हेराजनउहएकअणुकवनहै॥ अरुअनेकरूपहूयाहै॥
अरुउहअणुकवनहै॥ जिसविषेअनेकब्रह्मांडहोतेहैं॥ जैसेसमुद्रविषेअनेकबु
द्बुदेउपजकरलीनहोतेहैं॥ तैसेएकअणुविषेअनेकब्रह्मांडउपजतेहैं॥ अरु
लीनहोतेहैं॥ अरुउहआकाशकवनहै॥ जोपोलतेरहतहै॥ अरुउहकवनअ
णुहै॥ जोनकिंचनहै॥ अरुउहकवनअणुहै॥ जिसविषेमेराअरुतेराअहंफुरता
है॥ अरुसोकवनअणुहै॥ जोतिष्टतभीहै॥ अरुनहीतिष्टत॥ अरुउहकवनअणुहै
जोपाषाणवतहै॥ अरुउहकवनअणुहै॥ जिसआकाशविषेचित्रकीयेहैं॥ अरुउह
कवनअग्निअणुहै॥ जोदाहणेतेरहतहै॥ अरुउहअग्निकवनहै॥ जिसतेअग्नि
उपजतीहै॥ अरुउहअणुकवनहै॥ जोचंद्रमाताराकेप्रकाशतेरहतप्रकाशमा
नहै॥ अरुअविनाशीहै॥ अरुउहकवनअणुहै॥ जोनेत्रोंकरदेष्यानहीजाता॥
अरुसभप्रकाशोंकोंउत्पत्तिकरताहै॥ अरुउहकवनजोतअणुहै॥ जोफूलफल
वलीकोंप्रकाशताहै॥ अरुजन्मकेअंधकोंभीप्रकाशताहै॥ अरुकवनअणुहै
जोआकाशआदिकभूतोंकोउपजावताहै॥ अरुउहकवनअणुहै॥ जोस्वभाव
प्रकाशरूपहै॥ अरुउहअणुवभंडारकवनहै॥ जिसतेब्रह्मांडरूपीरत्नउपजतेहैं
अरुउहकवनअणुहै॥ जिसविषेप्रकाशअरुतमदोनोएकठेरहतेहैं॥ अरुउहक
वनअणुहै॥ जिसविषेसतअसतदोनोंएकठेरहतेहैं॥ अरुउहकवनअणुहै॥ जो
दूरभीअहरहै॥ अरुउहकवनअणुहै॥ जिसविषेसुमेरआदिकपर्वतसमावतेहैं
है॥ अरुउहकवनहैअणु॥ जिसविषेनिमषमोंकल्पहै॥ अरुकल्पमांनिमषहै
अरुउहकवनअणुहै॥ जोप्रत्यक्षहै॥ अरुअसतरूपहै॥ अरुतुच्छहै॥ अरुउहकवन
चेतन्यहै॥ जोअचेतनहै॥ अरुउहकवनवायुहै॥ जोवायुरूपहै॥ अरुउहकवनम
हहै॥ जोअग्राहरूपहै॥ अरुउहकवतहै॥ जोसर्वहै॥ अरुनकिंचितहै॥ अरुउहकव
नअणुहै॥ जिसविषेअहंनही॥ अरुहै॥ अरुउहकवनहै॥ जोअनेकजन्मोंकेयत्न
करपाईताहै॥ अरुपाइकरकहीताहै॥ कछुनहीपाया॥ अरुसभकछुपायाहै॥

सोबलाजाताहै अरुबलाकदावितनही अरुसोकवनअणुहै

अरुउहकवनअणुहै॥ जिसविषेसुमेरआदिकतीनोंभवनतृणसमानहैं॥ अरु
उहकवनअणुहै॥ जोअनेकयोजनोंकोपूर्णकरताहै॥ अरुउहकवनअणुहै॥ जि
सकेदेषणेकरजगतफुरआवतेहैं॥ अरुउहकवनअणुहै॥ जोअणुताकोंत्यागे
बिनासुमेरआदिकस्थूलआकारकोंप्राप्तहोताहै॥ अरुउहकवनहै॥ जोबा
लकासौवांभागसुमेरतेंमोटाभयाहै॥ अरुउहकवनअणुहै॥ जिसविषेसभ
अनुभवअणुस्थितहै॥ अरुउहकवनअणुहै॥ जोअत्यंतनिहस्वादहै॥ अरुआप
हीसभस्वादहोताहै॥ अरुउहकवनअणुहै॥ जोआपणेढांपणेकोंसमर्थनही॥
अरुसर्वकोंढांपरहाहै॥ अरुकवनअणुहै॥ जिसकरसभजीवतेहैं॥ अरुउहकव
नअणुहै॥ जिसकाअवयवकोऊनही॥ अरुसर्वअवयवोंकोधाररहाहै॥ अरुउह
कवननिमषहै॥ जिसविषेबहुतेसौकल्पस्थितहोतेहैं॥ अरुउहकवनअणुहै
जिसविषेबीजतृछहोतेहैं॥ अरुउहकवनअणुहै॥ जिसविषेबीजतेआदिअरुफ
लपर्यंतअनंतदेहरूपभीभासतेहैं॥ उहकवनहै॥ जोप्रयोजनतेंअरुकर्तृत्वतेंरह
तहै॥ अरुप्रयोजनवान॥ अरुकर्तृत्ववानकीन्याईस्थितहै॥ अरुउहकवनदृष्टाहै
जोदृश्यकोंमिलकरदृष्टापणाहोताहै॥ अरुउहकवनअणुहै॥ जोदृश्यकेनष्टहूए
भीआपकोंअखंडदेषताहै॥ अरुउहकवनअणुहै॥ जिसकेजाणेतेंद्रष्टादर्शनदृ
श्यतीनोलयहोजातेहैं॥ जैसेस्वप्नकेजाणेतेंभूषणभावलीनहोजाताहै॥ अरुउह
कवनहै॥ जिसतेंभिन्नकछुनही॥ जैसेजलतेंभिन्नतरंगोंकाअभावहै॥ अरुउहए
कहीकवनहै॥ जोदेशकालवस्तकेपरिछेदतेंरहतसतअसतकीन्याईस्थितहै
अरुउहकवनद्वैत॥ जिसतेंद्वैतभीभिन्ननही॥ जैसेसमुद्रतेंभिन्नतरंगनही॥
अरुसोकवनहै॥ जिसकेदेषेतेसतअसतसभलीनहोजातेहैं॥ अरुउहकवनहै॥
जिसविषेभ्रमरूपीअनंतजगतस्थितहै॥ जैसेबीजविषेवृछहोतेहैं॥ अरुउह
कवनहै॥ जोसर्वकेअंतरहै॥ जैसेवृछविषेबीजहोतेहैं॥ अरुउहकवनहै॥ जोस
तेंअसतरूपआपहीभयाहै॥ जैसेबीजहीवृछरूपहै॥ अरुवृछबीजरूपहै॥ अरुउ
हकवनअणुहै॥ जिसविषेमिसकीनतुभीसुमेरकीन्याईस्थूलहै॥ तिसकेअंतर
कोटिब्रह्मांडहैं॥ भोराजनतिसअणुकोंदेष्याहै॥ तबकहो॥ हेराजनइहमुझकों
संशयहै॥ तिसकोतुमअपणीमुषकरदूरकरो॥ जिसकेविषमानसंसारनिवर्तनहो
वै॥ तिसकोंपंडितनहीकहीता॥ अरुजोज्ञानवानहै॥ तिनकोइनप्रश्नोंकाउत्तर
कहणासुगमहै॥ इससंसेकोंउहशीघ्रहीछेदडारतेहैं॥ अरुजोअज्ञानीहै॥ तिन
कोउत्तरकहणाकठनहै॥ हेराजनजोतुममेरेइनप्रश्नोंकाउत्तरदीया॥ तबतुममेरे
पूजणेयोग्यहो॥ अरुजोमूर्षताकरकेप्रश्नोंकाउत्तरनदेवोगे॥ अरुप्रश्नोंकाविपर्जै
जाणोगे॥ तबतुममेरेउदररूपीजठरअग्निकेइंधनहो॥ दोनोमेरेउदरविषेजाइपड़ो
गे॥ तिसतेंअनंतरतुमारीसर्वप्रजाकोंग्रासकरलेवोगी॥ काहेतेंजोमूर्षपापीयोंका
मारणाश्रेष्टहै॥ आगेपापकरणेतेंछूटेगे॥ वसिष्ठउवाच॥ हेरामचंद्रशामसेघ
कीन्याईजिसकाआकारहै॥ ऐसीराक्षसीइसप्रकारकहकरसुआशेकोंलकरदू
सीस्थितभई॥ जैसेसतेकालविषेमेघमंडलनिर्मलहोताहै तैसेनिर्मलभाव
सोस्थितभई॥ इतिउत्पत्तिप्रकरणेराक्षसीप्रश्नवर्णनंनामसर्गः॥ ५३॥
वसिष्ठउवाच॥ हेरामचंद्रअर्धरात्रकेसमेशून्यवनविषेमहाराक्षसीमहांकोजबकी
या॥ तबमहामंत्रीतिसकोंउत्तरकहतभया॥ महामंत्रीउवाच॥ हेराक्षसीइहजो
तुमप्रश्नकीयेहैं॥ संसेकोल्लेकर॥ तिनकामैंक्रमकरउत्तरकहताहौं॥ अरुतेरेसंसेको
छेदनकरताहौं॥ जैसेउन्मत्तहस्तीकोंकेसरीसिंहनष्टकरताहै॥ तैसेमैंतेरेसंसेकों
नष्टकरताहौं॥ हेराक्षसीकमलनेनीजेतेकछुतुमप्रश्नकीयेहैं॥ सोएकपरमात्मा
हीकीकीयेहैं॥ तांतेंतेरासभप्रश्नोंकाएकहीप्रश्नहै॥ परंतुअनेकप्रकारकीयेहैं॥

सोब्रह्मवेत्योंकोंयोगहै॥ हेरामजीजोअनात्महै॥ अर्थयहजोसर्वइंद्रीयोंकाविषय
नहीं॥ अरुअगमहै॥ अर्थयहजोमनकीचितवनातेंआगेहै॥ ऐसीसत्ताचिन्मात्रहै॥
अरुआकाशतेंभीसूक्ष्महै॥ इसकारणतेंतिसकोंअणुकहीताहै॥ तिसअणुविषे
सतअसतकीन्याइजगतस्थितहै॥ अरुतिसहीचिदअणुविषेजवकछुकसंवेद
नफुरतीहै॥ तवउहीसंवेदनसतअसतजगतकीन्याईभासतीहै॥ तिसकरकिंचि
तकहीताहै॥ अरुस्वच्छतेंएवंतिसविषेकछुनथा॥ तिसकरनकिंचितकहीताहै॥ अ
रुइंद्रीयोंकाविषयनहीं॥ तांतेंभीनकिंचितहै॥ अरुउहीचिदअणुसर्वकाआत्माहै॥
तांतेंअनंतभोगनाभूरूपकिंचनहै॥ तिसतेंइतरकछुनहीं॥ तांतेंनकिंचनहै॥ अ
रुसोचिदअणुएकहीआभासकरकेअनेकरूपभासताहै॥ जैसेस्वर्णतेंनानाप्र
कारकेभूषणभासते॥ अरुउहीचिदअणुपरमआकाशरूपहै॥ जोआकाशतें
भीसूक्ष्महै॥ अरुमनवाणीतेंअतीतहै॥ सोसर्वात्माहै॥ शून्यकैसेहोवे॥ सतकों
शून्यकहतेहैं॥ सोउन्मत्तकहीतेहैं॥ काहेतेंजोअसत्तभीसत्तविनासिद्धनहीं
होता॥ जिसकेआश्रयअसतभीसिद्धहोताहै॥ सोसत्तहै॥ अरुउहीचिदअणुपंचकोशों
विषेछिपतानहीं॥ जैसेकर्पूरकीगंधप्रगटहोतीहै॥ तैसेप्रगटहोताहै॥ अरुउहीचिन्मा
त्रसर्वरूपकरकिंचनहै॥ अरुअचेतचिन्मात्रहै॥ तांतेंअकिंचनहै॥ इंद्रीयोंतेंरहितहै॥
तांतेंनिर्मलहै॥ तिसहीचिदअणुविषेफुरणेकरअनेकजगतस्थितहैं॥ जैसेसमुद्र
विषेफुरणेकरअनेकरअनेकतरंगउपजतेहैं॥ वहुडलीनहोतेहैं॥ तैसेचिदअणु विषे
फुरणेकरअनेकजगतउपजकरलीनहोतेहैं॥ अनअरुइंद्रीयोंतेंअतीतहै॥ तांतेंचि
दअणुशून्यकहीताहै॥ अपणेआपहीकरप्रकाशताहै॥ तांतेंअशून्यहै॥ हेरामजी
मेराअहंअरुतेराअहंजिसतेंभयाहै॥ अरुतिसहीचिदअणुशून्यकहीताहै॥ केवोध
तेंब्रह्मरूपहोताहै॥ अरुतिसहीवोधविषेअहंत्वसभलीनहोतेहैं॥ अथवासर्वआप
हीहोताहै॥ विकटीरूपभीउहीहै॥ अरुउहीचिदअणुअनेकयोजनोंपर्यंतजाताहै॥
अरुकदाचितचलायमाननहींभया॥ काहेतेंजोसर्वविततअनंतरूपहै॥ योजनोंके
समूहतिसकेअंतरहैं॥ अरुनकोऊआवताहैनजाताहै॥ अपणेआकाशकोंमाति
वसर्वदेशकालस्थितहै॥ तिसहीचिन्मात्रपरमात्माविषेसंवेदनआकाररचेहैं॥
आदिअंततेंरहितविषेविचित्ररूपीजगतरचाहै॥ अरुउहीचिदअणुअग्निकीन्या
इंप्रकाशरूपहै॥ अरुजलावणेतेंरहितहै॥ जानकरकेप्रकाशमानहै॥ अग्निभीति
सतेंउपजीहै॥ अरुसर्वगतभीउहीहै॥ अरुदेवोंकोपचावनाभीउहीहै॥ प्रलय
विषेसर्वभूततिसविषेलीनहोतेहैं॥ अरुज्ञानरूपहै॥ आकाशतेंभीनिर्मलहै॥
अरुप्रकाशरूपहै॥ जअग्निभीतिसतेंउत्पन्नहोतीहै॥ अरुसर्वकोंसत्तादेणेहा
राहै॥ सूर्यआदिकभीतिसकेप्रकाशकरप्रकाशतेहैं॥ अरुअनुभवरूपहै॥ हृदेरू
पीमंदिरकादीपकहै॥ अनंतपरमप्रकाशरूपहै॥ अरुमनइंद्रीयोंकाविषयनहीं
अरुलताफूलफलआदिकसर्वकोंआत्मत्वप्रकाशताहै॥ सर्वकाअनुभवकरता
उहीहै॥ कालआकाशक्रियाआदिकपदार्थोंकोंसत्तादेवणेहाराउहीचिदअणु
है॥ अरुसभकास्वामीकरताउहीहै॥ सभकापिताउही॥ अरुसभकाभोगताभीउ
हीहै॥ तिसतेंइतरकछुनहीं॥ इसकारणतेंकिंचनअरुस्वरूपतेंमात्मानमेय
रूपीजगततिसविषेअसतरूपहै॥ उपजयाकछुनहीं॥ चिदात्माकाकचनरूप
है॥ कचनकरकेजगतकीन्याईभासताहै॥ जोतरूपहुयाहैदूरअरुनिकटकवन
है॥ सोअलक्षभावकरकेदूरभीउहीहै॥ अरुचिदरूपभावकरकेअदूरभीउहीहै॥ अ
थवाअज्ञानकरकेदूरभीउहीहै॥ ज्ञानकरकेनिकटभीउहीहै॥ अरुअज्ञानकरके
तमरूपअरुज्ञानकरकेप्रकाशरूपभीउहीहै॥ अरुतिसहीचिदअणुविषेसंवेद
नकरकेसुमेरआदिकस्थितहैं॥ हेरामजीजैताकछुजगतनफकोंभासताहै॥ सोस

मसंवेदनरूपहै॥ सुमेरआदिकपदार्थभीकछुउपजेनहीं॥ चिदअणुसत्ताज्योंकीत्यों
स्थितहै॥ तिसविषेजैसीसंवेदनफुरतीहै॥ तैसाआकारहोइभासताहै॥ जहांनिमे
षकीसंवेदनफुरतीहै॥ तैसाआकारहोइभासताहै॥ तहांनिमेषकहीतीहै॥ अरु
जहांसंवेदनविषेकल्पकीप्रतीतहोतीहै॥ तहांकल्पकहीताहै॥ कल्पकहयाआदि
कसभजगतविलासनिमेषविषेफुरआयाहै॥ जैसेमनकेफुरणेकरकेवहुतयोज
नोपर्यंतपुरभासआवताहै॥ अरुजैसेअल्पमुकरविषेवडेनगरकाविस्तारप्रतिविं
वसमायजाताहै॥ तैसेनिमेषकेफुरणेविषेसभजगतफुरआवताहै॥ अरुनिमेषक
ल्पसमुद्रपुअनंतयोजनोंकाविस्तारचिदअणुहीविषेस्थितहै॥ अरुहैतएकअम
तेरहतहै॥ हेरामजीइहजगतस्वरूपतेंअचलरूपहै॥ संवेदनफुरणेकरभासता
है॥ जैसेजैसेसंवेदनविषेदृढप्रतीतहोतीहै॥ तैसातैसाअनुभवहोताहै॥ हृदेषणक
द्वाणसपनेविषेसत्तअसत्तजगतफुरआवताहै॥ अरुवहुतेकालकाअनुभवहो
ताहै॥ थोडघडीहोताहै॥ तिसकोंथोडेकालविषेवहुतकालभासताहै॥ अरुजोसघी
होताहै॥ तिसकोंवहुतकालविषेभीथोडाभासताहै॥ जैसेहरीचंदकोंएकरात्रविषे
द्वादशवर्षकाअनुभवभयाथा॥ तांतेंजैसाजैसासंवेदनविषेनिश्चयदृढहोताहै॥ तैसा
तैसादेशकालहोइभासताहै॥ सत्तभीअसत्तकीन्याईहोइभासताहै॥ जैसेस्वर्णविषे
भूषणवुधहोतीहै॥ तवभूषणहीभासतेहैं॥ अरुसमुद्रविषेतरंगोंकीदृष्टतातेंतरं
गहीभासतेहैं॥ तैसेनिमेषविषेकल्पभासतेहैं॥ अरुवस्तुतेंननिमेषहीहैनकल्पही
है॥ नदूरहीहै॥ नअदूरहीहै॥ सभचिदअणुआत्माआभासरूपहै॥ हेरामजीप्रकाशअ
रुतमदूरअरुअदूरसभचैतन्यसंपटविषेरत्नोंकीन्याईहै॥ वस्तुतेंअनन्यरूपहै॥ भेद
भावकछुनहीं॥ हेरामजीजवलगदृश्यकासद्भावदृढहोताहै॥ तवलगदृष्टानहीं
भासता॥ जैसेजवलगभूषणवुधहोतीहै॥ तवलगस्वर्णनहींभासता॥ अरुस्वर्णजा
णा॥ तवभूषणवुद्धनहींरहती॥ स्वर्णहीभासताहै॥ तैसेजवलगदृश्यकासद्भाव
होताहै॥ तवलगद्रष्टानहींभासता॥ अरुजवआत्माकाज्ञानहोताहै॥ तवकेवल
ब्रह्मसत्तानिर्मलहीभासतीहै॥ तिसकोसर्वत्रकरकेसदरूपकहतेहैं॥ अरुउ
लक्षताकरकेअर्थयहजोमनइंद्रीयोंकेविषयतेंअसतरूपकहतेहैं॥ चेत्यताकर
केतिसकोंचैतन्यकहतेहैं॥ अरुचेत्यकेअभावतेंअचेतनरूपकहतेहैं॥ अर्थयहजो
चेत्यकेअभावतेंअचेत्यचिन्मात्रकहतेहैं॥ सोचैतन्यचमत्कारतेंजगतकीन्याईहोइ
भासताहै॥ हेरामजीहोरजगततिसविषेकोऊनहीं॥ जैसेवायुविषेलहरकाआ
कारभासताहै॥ अरुजैसेसत्यनधुपकरकेमृगतृष्णाकीनदीभासतीहै॥ तैसेएक
अद्वैतचैतन्यहै॥ सोचनचैतन्यताकरकेजगतकीन्याईहोइभासताहै॥ जैसेसू
क्ष्मसूर्यकीयांकिरणोंकाकचनमृगतृष्णाकाजलहोताहै॥ तिसनदीकाप्रमाण
कछुनहीं॥ तैसेइहजगतअसत्तभासताहै॥ कुडआदिकअप्रमाणहै॥ सभआकाश
रूपहै॥ जैसेभ्रमकरकेकणकयोंविषेंस्वर्णकीन्याईचमत्कारहोताहै॥ तैसेजगत
कल्पनाचित्तकेफुरणेकरभासतीहै॥ जैसेस्वप्नगंधर्वनगरकुडआकारसहित
भासतेहैं॥ सोसत्तहैनअसत्तहै॥ तैसेइहजगतदीर्घस्वप्नाहै॥ नसत्तहैनअसत्तहै॥
हेरामजीजवतिसआत्माविषेअभ्यासहोवे॥ तवइहकुडआदिकऐसेहीरहें॥ अरुआ
काशरूपहीपडेभासे॥ स्वरूपतेंकुडआदिकभीआकाशरूपहै॥ आकाशअरुकुडआ
दिकोंविषेकछुभेदनहीं॥ परस्थूलताकरकेभेदपडाभासताहै॥ ज्ञानीकोंसभचिदा
काशरूपभासताहै॥ हेरामजीब्रह्मातेंआदिलेतृणपर्यंतजैसेसंवेदनविषेकल
नादृढहोइरहीहै॥ तैसेहीभासताहै॥ अरुवास्तवतेंउहीचिदाकाशपदार्थप्रका
शताहै॥ चनचैतन्यताकरकेउहीआकारोंकीन्याईभासताहै॥ तिसीकाइहप्रका
शहै॥ सोअनन्यरूपहै॥ जैसेवीजअरुवृक्षअनन्यरूपहै॥ जैसेएकवीजविषेअनेक
वृक्षहोतेहैं॥ परअनन्यरूपहै॥ तैसेअसंखजगतब्रह्मसत्ताविषेस्थितहैं॥ सोअनन्य

रूपहै ॥ जैसे बीज वृक्षका भाव स्थित होता है ॥ सो आकाश रूपहै ॥ सो ब्रह्मसत्ता सर्व
औरतें शांत रूपहै ॥ अजहै ॥ एकहै ॥ आदि मध्य अंततें रहत है ॥ तिस विषे एक अरु द्वैत
की कल्पना कोऊ नहीं ॥ अनुदय ही उदे हुई है ॥ निर्मल स्वप्रकाश आत्मा ही है ॥ इति
राक्षसीप्रश्नभेदो नाम सर्गः ॥५५॥ ॐ ॥ ॥ वसिष्ठ उवाच
राक्षसीउवाच ॥ बडा आश्चर्य है ॥ बडा आश्चर्य है ॥ मंत्रीनो इह परम पावन परमार्थ वचनक
हे हैं ॥ अब कमलनेन राजा भी कछु कहै ॥ राजोवाच ॥ हे राक्षसी इह जो जायत जगत प्रती
त होती है ॥ सो इसका जब अभाव होवे ॥ तब आत्म प्रतीत है ॥ जब सर्व संकल्प की चेतना
संन्यास होवे ॥ तब आत्मा का साक्षात्कार होवे ॥ सो आत्मसत्ता कैसी है ॥ तिस विषे संवेद
न फुरणे कर जगत होइकर भासता है ॥ अरु संवेदन के संकोच करके दृष्ट की प्रलय हो
ती है ॥ तिसका अधिष्ठान रूप आत्मसत्ता है ॥ तिसी को वेदांतवाक अर्थ जनावणे के अर्थ
कछु कहते हैं ॥ काहेतें जो वाणी तें अतीत पद है ॥ हे राक्षसी इह जो अद्वैत रूप है ॥ तिस
के अंतर अनुभव सत्ता है ॥ सो परमात्मा है ॥ सो परमात्मा ही इह द्वैत रूप होइकर भा
सता है ॥ तिस विषे जगत चित्तमयी लीला है ॥ परंतु नानात्व भाव करके भी कछु द्वैत भा
व को प्रापत नहीं भया ॥ अखंड ही रहा है ॥ तिसको सत्मात्र सत्ता ब्रह्म कर कहीता है ॥
हे भद्रे साई चिद अणु संवेदन करके वायु रूप हूआ है ॥ पर वायु तिस विषे अत्यंत शांत रूप
है ॥ काहेतें जो केवल सुद्ध चिन्मात्र रूप है ॥ जब तिस विषे शब्द की संवेदन फुरती है ॥ त
ब शब्द रूप होइ भासता है ॥ पर शब्द भाव तिस विषे शांत दर्शन है ॥ तिस विषे शब्द अ
रु शब्द का अर्थ देषणा हार तेह रहे है ॥ काहेतें जो केवल चिन्मात्र है ॥ तिस विषे अहं अ
रु त्वं कछु नहीं ॥ अरु उह निह किंचन ही ऐसे रूप होइकर भासता है ॥ काहेतें जो सर्वशा
स्त्ररूप आत्मा है ॥ तिस विषे जैसी प्रतिभा फुरती है तैसा होइकर भासता है ॥ तातें फुर
णा ही इस जगत का कारण है ॥ अरु अनेक यत्नों कर पावणे योग्य है ॥ सो भी आत्मसत्ता
है ॥ जब तिसको पावता है ॥ तब उसको कछु नहीं पाया ॥ अरु सभ कछु पाया है ॥ पाया तो
इसकारणतें नहीं ॥ जो आगे भी अपणा आप ही था ॥ अरु सभ कछु पाया इसकारण
तें है ॥ सो आत्मा के पाए तें कछु और पावणा नहीं रहता ॥ हे राक्षसी अज्ञानरूपी वसंत रि
तु करके जन्मों की परंपरा वली तव लग वढती जाती है ॥ जव लग इसके काटणे हारा
बोध रूप षड्ग नहीं उदे भया ॥ जब बोध रूप षड्ग उदे होता है ॥ तब जन्मों रूपी वली
कों काट डारता है ॥ हे राक्षसी चिद अणु ही संवेदन द्वारा आपको दृश्यता विषे प्रापत
करता है ॥ जैसे किरणा का चमत्कार ही जल रूप होइकर स्थित होता है ॥ सो सूक्ष्म ही
संवेदन द्वारा आपको फुरता देषता है ॥ तैसे चिद अणु विषे संवेदन द्वारा जगत हुए
है ॥ सो सुमेरतें आदि लेकर तीनों भवन तृण न्याई स्थित होते हैं ॥ अरु वस्तुतें भ्रम
मात्र है ॥ भ्रम करके पडे भासते हैं ॥ जैसे स्वप्न विषे रागी को स्वप्न स्त्री का आलिंगन हो
ता है ॥ सो भ्रम मात्र है ॥ तैसे इह जगत मन के फुरणे करके पडा भासता है ॥ सो भ्रम
मात्र है ॥ हे राक्षसी सर्व शक्ति रूप आत्मा विषे जैसे सृष्टि के आदि फुरणा हूआ है ॥ तै
सा रूप होइकर भासणे लगा है ॥ जैसा संकल्प कीया है ॥ तैसे स्थित भया ॥ तातें स
भ जगत संकल्प मात्र है ॥ जैसे जिस विषे बालक का मन लागता है ॥ तैसा रूप उसका
हो जाता है ॥ तैसे संवित के आश्रय जैसी संवेदन फुरती है ॥ तैसा रूप होइ भासता है ॥
हे राक्षसी चिद अणु परमाणु तें भी सूक्ष्म है ॥ अरु तिस ही सरब जगत को ग्रास कीया है
सभ जगत अनेक आहै ॥ तिस विषे संवेदन करके जगत की रचना हुई है ॥ जैसे नट नाय
क होता है ॥ जैसे जैसे बालकों को नेत्र कर जनावता है ॥ तैसे उह निरत करते हैं ॥ जब
उह जनावता है ॥ वह रजावातें उठ हठ रजाते हैं ॥ तैसे चित के अवलोकन करके
सुमेर आदिक तृण पर्यंत जगत पदार्थ निरंतर करता है ॥ जैसे जैसे चित संवेदन फुरती
अनंत शक्ति आत्मा विषे तैसे तैसे होइ भासता है ॥ हे राक्षसी देश काल वस्तु के परि
छेद तें आत्म सत्ता रहत नी है ॥ इसकारण तें सुमेर आदिकों तें भी स्थूल है ॥ तृणा के सम्मा

न सुमेर आदिक है ॥ अरु बाल के अग्र का सोलवां भाग होवे ॥ तिसतें सूक्ष्म है ॥ सो अल्पता
करके नहीं ॥ ऐसा सूक्ष्म है ॥ तिस विषे सरषों का दाणा भी सुमेरु वत स्थूल है ॥ माया
की कला वडून सूक्ष्म है ॥ तिसतें भी चिद अणु सूक्ष्म है ॥ काहेतें जो निरमाया पद पर
मात्मा है ॥ जैसे स्वर्ण अरु भूषणा की प्रेम आसमान नहीं ॥ अर्थ यह जो स्वर्ण विषे भूषण
कल्पना है ॥ समान कैसे होवे ॥ तैसे माया परमात्मा के समान नहीं ॥ काहेतें जो कल्प
ना है ॥ हे राक्षसी जैसे कछु सूर्य आदिक प्रकाश है ॥ सो सभ आत्म अनुभव कर प्रकाश
ते है ॥ इनका सद्भाव पूर्व कछु न था ॥ तिस ही सत्ता करके इनका प्रगट होणा भया है
अरु वडे जडी भूत न होते हैं ॥ प्रकाश रूप सुद्ध चिन्मात्र सत्ता है ॥ सो सदा अपणे आ
प विषे स्थित है ॥ तिस चिद अणु के अंतर वारा प्रकाश है ॥ अरु इह जो सूर्य चंद्रमा अ
ग्नि आदिक प्रकाश है ॥ सो तम साथ मिले हुए है ॥ काहेतें जो अपेक्ष प्रकाश है ॥ इनो
विषे एता ही भेद है ॥ जो प्रकाश सुक्ल रूप है ॥ अरु तम कृस्न रूप है ॥ रंग का भेद है
प्रकाश रूप कोऊ नहीं ॥ जैसे श्याम कही रसेत की होती है ॥ अरु सुकल कही इवर
फ की होती है ॥ पर दोनों कुही इहै ॥ तैसे तम अरु प्रकाश दोनों तुल्य है ॥ अरु आत्म
सत्ता दोनों को प्रकाशती है ॥ तातें दोनों का आश्रय भूत आत्मसत्ता है ॥ हे राक्षसी रा
त्र दिन अंतर वायु नदीयां पहाड आदिक सभ लोक आत्मसत्ता के अर्क कर प्रकाश
ते हैं ॥ जैसे कमल अरु नीलोत्पल दोनों कों सूर्य प्रकाशता है ॥ कमल खिलते है ॥ अरु
नीलोत्पल शाम है ॥ जहां कमल खिलते है ॥ तहां नीलोत्पल का अभाव है ॥ अरु जहां
नीलकमल है ॥ तहां खिलत कमल का अभाव है ॥ पर दोनों का प्रकाशक सूर्य है ॥ तैसे
तम अरु प्रकाश दोनों का प्रकाशक चिदात्मा है ॥ जैसे रात्र अरु दिन दोनों सूर्य करके
सिद्ध होते हैं ॥ तैसे तम अरु प्रकाश दोनों आत्मा कर सिद्ध होते हैं ॥ जैसे दिन तब का
होता है ॥ जो सूर्य उदे होता है ॥ अरु जब सूर्य अस्त होता है ॥ तब रात्र होती है ॥ आत्मा
तैसे भी नहीं ॥ आत्म प्रकाश सदा उदे रूप है ॥ उदे अरु अस्त भाव ते रहत है ॥ तिस वि
ना कछु सिद्ध नहीं होता ॥ सभ का प्रकाशक चिद अणु है ॥ हे राक्षसी तिस चिद अ
णु के अंतर विचित्र अनुभव अणु है ॥ जैसे वसंत रितु के अंतर पत्र फूल फल टास
होते हैं ॥ तैसे चिद अणु तें सर्व अनुभव अणु होते हैं ॥ जैसे एक बीज तें अनेक वृक्ष
होते हैं ॥ तैसे एक चिद अणु तें अनेक अनु होते हैं ॥ कई विलीन भए हैं कई अब वर्त
मान है ॥ अरु कई भविष्यत होवेगे ॥ जैसे समुद्र विषे कई तरंग होइ वीते हैं ॥ कई वर्त
ते है ॥ कई आगे होवेगे ॥ तैसे आत्मा विषे तीनों काल कीयां सृष्टां वर्ततीयां है ॥ हे राक्ष
सी उह चिद अणु आत्मा उदासीन ही ॥ अरु आसीन की न्याई स्थित होता है ॥ सभ का
करता भी है ॥ भोगता भी है ॥ अरु स्पर्श किसी साथ नहीं कीया ॥ जगत की सत्ता तिसतें
उदे होती है ॥ इसकारणतें सभका कर्ता है ॥ अरु सभ का अपणा आप है ॥ तातें सभका
भोगता भी है ॥ अरु वास्तव तें न कछु जगत उपजया है ॥ न लीन होता है ॥ चिन्मात्र
सत्ता ज्यों की त्यों सदा अपणे आप विषे स्थित है ॥ अरु अखंड है ॥ सूक्ष्म है ॥ इसकार
णतें किसी साथ स्पर्श नहीं की ॥ हे राक्षसी जेता कछु जगत देषीता है ॥ सो सभ आ
आत्म रूप है ॥ आत्मा अरु जगत विषे कछु भेद नहीं ॥ आत्मा अरु जगत कहणा मा
त्र दो नाम है ॥ वस्तु एक आत्मा ही है ॥ आत्मा का चमत्कार ही जगत रूप होइ भास
ता है ॥ जगत कछु वणया नहीं ॥ चिन्मात्र सदा अपणे आप विषे स्थित है ॥ अरु जे
ती कछु कहणा है ॥ सो उपदेश जनावणे के निमित्त है ॥ वास्तव इह सर्व वस्तु कछु
नहीं ॥ तातें जगत चिदाकाश रूप है ॥ हे राक्षसी इह द्वैत ही जब दृश्य पद को प्रापत हो
ता है ॥ तब स्वभाव का अपणे आत्मभाव कों नहीं देषता ॥ जैसे नेत्र जब घट को देषते
है ॥ तब घट ही भासता है ॥ अपणा नेत्र भाव नहीं दृष्ट आवता ॥ तैसे दृश्य के होते
दृष्टा नहीं भासता ॥ अरु जब दृश्य नष्ट होजावे ॥ तब दृष्टा भी अवास्तव है ॥ काहे

तैंजो दृष्टाभी उसकों दृश्यके संबंध करकहीताहै॥ जब दृश्यहीन होवै॥ तब दृष्टा
किसकाकहीए॥ दृश्यहै सोविषयभूतहोतीहै॥ जोअदृश्यहै सोविषयभूतकिसी
कानहीं॥ इसकारणातें तिसविषे ऐसकल्पनाकोऊ नहींवणती॥ अरु इहु जगतभी
तिसकाआभासहै॥ हे रामजी दृष्टेविना दृश्यनहीं होती॥ जैसे पिताविनापुत्रन
हीहोता॥ जैसे एकविनाद्वैतनहीं होता॥ जैसे भोगतेविनाभोगनहीं होता॥ तैसे
दृष्टेविनादृश्यनहीं होती॥ हे रामजी दृष्टाकों दृश्यके उपजावणेकी समर्थताहै
काहेतें दृष्टाचेतनहै॥ पर दृश्यकों दृष्टाके उपजावणेकी समर्थनहीं॥ काहेतें दृ
श्यजडहै॥ जैसे स्वर्णतें भूषणवनताहै॥ अरु भूषणतें स्वर्ण नहींवणता॥ तैसे दृष्टा
तें दृश्यहोतीहै॥ दृश्यतें दृष्टानहीं होता॥ हे रामजी स्वर्णविषे जो भूषणहै॥ सोभ्रम
रूपहै॥ तैसे दृष्टाविषे जो दृश्यहै॥ सो भ्रमरूपहै॥ इसीतें जडहै॥ जब दृष्टादृश्य
कों देषताहै॥ तब दृश्यहीभासतीहै॥ दृष्टत्वभावनहीं भासता॥ अरु जब दृष्टाअ
पणेस्वभावविषे स्थितहोताहै॥ तब दृश्यनहीं भासती॥ जैसे जवलग भूषणबुध
होती॥ तवलग स्वर्णनहीं भासता॥ भूषणहीभासताहै॥ अरु जब स्वर्णका ज्ञान
होताहै॥ तब स्वर्णहीभासताहै॥ भूषणनहीं भासता॥ अरु एकसत्ताविषेदोनों
नहीं सिध होते॥ जैसे अंधकारविषे पुरुषकों देषकर तिसविषे पसभासे॥ तौ ज
वलगपसबुधहोतीहै॥ तवलग पुरुषका निश्चे नहींहोता॥ अरु जब निश्चे करके
पुरुषजाणया॥ तब वहु पसबुधनहीं रहती॥ तैसे जब दृष्टादृश्यकों देषताहै॥
तब दृष्टाभावनहीं भासता॥ दृश्यहीभासतीहै॥ अरु जब दृष्टास्वभावविषे स्थि
तहोताहै॥ तब दृश्यनहीं भासती॥ जैसे जेवडीविषे सर्पभासताहै॥ तब सर्पका
अभावहोजाताहै॥ तैसे बोधकरके दृश्यका अभावहूया॥ तब एकही परमात्मस
त्ताभासतीहै॥ द्रष्टासंज्ञाभीनहीं रहती॥ काहेतें जो दृश्यकी अपेक्षाकरके दृष्टा
कहीताहै॥ जो दृश्यका अभावहूया॥ तब दृष्टा किसकाहोवै॥ जैसे दूसरेकी अपेक्षा
कर एककहीताहै॥ दूसरेके अभावहूए एककहणाभीनहीं रहता॥ तैसे दृश्यके अ
भावहूए॥ द्रष्टाकहणाभीनहीं रहता॥ स्वस्थ संवित्तमात्रही शेषपद रहताहै॥
तिसविषे वाणीकीगमनहीं॥ जैसे दीपकपदार्थोंकोंप्रकाशताहै॥ अरु बोधकर
के आत्ममानमेंत्रिपुटीलीन होजातीहै॥ जैसे स्वर्णके जाणेतें भूषणाकल्प
नाका अभावहोजाताहै॥ तैसे ज्ञानकरके त्रिपुटीका अभावहोजाताहै॥ केवल स्व
य अद्वैतरूप रहताहै॥ हे रामजी परम अणु जो अत्यंत निह्स्वाद है॥ सोई सर्वस्वादों
कों उपजावताहै॥ जहांतहां समसत्ताहोतीहै॥ तहां चिदअणुविनानहीं होता॥ सर्व
सर्वकोरसदेवणेहारा चिदअणु॥ अरु सर्व आत्मभावकरके सभका अधिष्ठानहै
अरु सूक्ष्मतें सूक्ष्महै॥ तातें निह्स्वादहै॥ सोई चिदअणु अपणे गोपकरणेकों
समर्थनहीं॥ अरु सर्वजगतकों दांपताप्याहै॥ आप किसकरके आछादानहोजा
ता॥ सो अणु जो चिदाकाशरूपहै॥ अरु सभपदार्थोंकी सत्तादेवणेहाराहै॥ अरु
सर्वका आश्रयभूतहै॥ सो किसकर आछादयाजावै॥ जैसे घासके वनविषे हस्तीन
हीछपता॥ तैसे आत्माकिसेपदार्थनहीं छपता॥ हे रामजी जिसकर सर्वपदार्थ
सिद्धहोतेहै॥ अरु सदाप्रकाशरूपहै॥ सो मूर्षोंकों नहीं भासता॥ इहु आश्चर्यहै॥ स
दाअनुभवरूपहै॥ इहु सर्वजगत तिसहीकर जीवताहै॥ जैसे सर्वत्र रितुकर फू
लफलटासपत्र फूलतेहै॥ तैसे सभ जगत आत्माकर फूलताहै॥ उही चिदात्मा
जगतरूप होइभासताहै॥ जैसे वसंतकी रसफूलफलपत्रटास विचित्ररूपधार
तीहै॥ तैसे चिदात्मा संवेदनकरके जगतकीन्याईं भासताहै॥ अरु सर्व आत्मभाव
करके सर्वतिसके अवयवहै॥ अरु परमार्थ निरवयवरूपहै॥ निराकाररूपहै॥ क
छु तिसविषे उदेनहीं भया॥ हे रामजी एक निमेषके अबोधकरके चिदअणुविषे

अनेककल्पोंका अनुभवहोताहै॥ जैसे एकक्षणके स्वप्नेविषे आपकों वालकवृद्ध
उहइअवस्थादेषणेलागताहै॥ अरु तिनोंकल्पोंविषेभीजो निमेषहै॥ तिसविषेभी
अनेककल्पव्यतीतहोतेहै॥ काहेतें जोअधिष्ठान सर्वपाकूमानहै॥ जैसे संवेदनज
हांफुरतीहै॥ तैसारूप तहांहोइभासताहै॥ जैसे स्वप्नेविषे अभोगताकोंभोगत
त्वका अनुभवहोताहै॥ तैसे निमेषोंविषे कल्पका अनुभवहोताहै॥ जैसे वासनाक
रआविष्टहूया अभोगताही आपकोंभोगतादेषताहै॥ अरु जैसे स्वप्नेविषे अपणाम
रणाअनतदेषताहै॥ तैसे इहु जगत भ्रमभीहोताहै॥ जैसा फुरणा जहां दृढहोता
है॥ तहांतैसाहोइभासताहै॥ हे रामजी जेतेकछु आकारभासतेहै॥ सो भ्रांतमात्र
है॥ जैसे निर्मल आकाशविषे नीलताभासतीहै॥ तैसे आत्माविषे विश्वभासतीहै
आत्मासर्वगतहै॥ अरु सर्वका अनुभवरूपहै॥ हे रामजी तिसविषे व्याप्यव्यापकभा
वनहीं॥ काहेतें जो आत्माहै॥ अरु सर्वरूपभी उहीहै॥ जब स्वस्थ चित्तसंवित्तविषे संवे
दनफुरतीहै॥ तब पृथक्पृथकभावकों चेततीहै॥ इच्छाकरके जिसपदार्थकी उपल
ब्धहोतीहै॥ तिसविषे व्यापभावकल्पनाहोतीहै॥ वस्तुतें जो इच्छाहै॥ सोई पदार्थहू
या॥ जैसे जलविषे द्रवताहोताहै॥ तिसकर तरंगफेनवुदवुदाहोताहै॥ सो जलही
रूपहै॥ जलतें इतर तौ कछु नहीं॥ तैसे इच्छाकर उपजे पदार्थ आत्मही रूपहै॥ इतर
कछु नहीं॥ आत्मा देशकालवस्तुके परिछेदतें रहितहै॥ केवल स्वस्थ चिन्मात्रहै॥ अ
रु सर्वहोइकर उही अस्थित भयाहै॥ सर्वका अनुभवभी तिसविषे भयाहै॥ सोतौ स
हसत्तामात्रहै॥ तिसविषे द्वैत एककल्पना कैसे कहीये॥ हे रामजी जब कछु द्वैत हो
ताहै॥ तब एकभी होताहै॥ जो द्वैत नहीं तौ एक कैसे कहीये॥ जैसे धुप कहीतीहै॥ तैसे
एककी अपेक्षाकर द्वैत कहीताहै॥ द्वैतकी अपेक्षाकर एककहीताहै॥ जहां एककहणा
भीनहीं॥ तौ द्वैतकल्पना कहांहोवै॥ इसकल्पनातें रहितहै॥ सो स्वच्छ चिन्मात्ररूपहै
अरु जगतभी तिसतें वितरेकनहीं॥ जैसे जल अरु द्रवताविषे कछु भेदनहीं॥ तैसे
आत्माविषे अरु जगतविषे कछु भेदनहीं॥ हे रामजी नानाप्रकारके आरंभ दृष्टआव
तेहै॥ सोभी आत्मसत्तासमहै॥ जैसे वीजके अंतर वृक्षहोताहै॥ सो नानाप्रकारके रूप
कोंधारताहै॥ पत्रफूलफलटास होतेहै॥ पर वीजकों छडतानहीं होती॥ तातें द्वैतभी
तिसतें नहीं भिन्न॥ जैसे स्वर्णतें भूषण भिन्ननहीं॥ तैसे ब्रह्मतें जगत भिन्ननहीं॥ का
हेतें जो द्वैत कछु वस्तु नहीं॥ आत्मसत्ताही द्वैतकीन्याईं होइभासतीहै॥ जैसे स्वर्ण
हीभूषणरूप होइभासताहै॥ हे रामजी जब इसकों सम्यक बोधहोताहै॥ तब द्वैत
भी अद्वैतरूप भासताहै॥ काहेतें जो अज्ञानकर द्वैतकल्पनाहोतीहै॥ वास्तवकछुन
हीं॥ अज्ञानके अभावहूए द्वैतकाभी अभावहोताहै॥ वास्तव ब्रह्म अरु जगतविषे कछु
भेदनहीं॥ जैसे जल अरु द्रवताविषे कछु भेदनहीं॥ जैसे वायु अरु स्पंदनाविषे कछु भे
दनहीं॥ तैसे आत्मा अरु जगतविषे कछु भेदनहीं॥ जैसे आकाश अरु शून्यताविषे क
छु भेदनहीं॥ तैसे आत्मा अरु जगतविषे कछु भेदनहीं॥ हे रामजी द्वैत अरु अद्वैतजान
णा दुषका कारणाहै॥ द्वैत अद्वैतकी कल्पनातें भी रहित होवणा॥ इसीकों परमपद
कहतेहै॥ अरु द्रष्टा दर्शन दृश्यरूप जो जगतहै॥ सो चिदपरमाणुविषे स्थितहै॥ तिसे
विषे सुमेरु आदिक स्थितहै॥ तातें वडा आश्चर्यहै॥ माया महा आश्चर्यहै॥ जो चिदपरम
अणुविषे त्रिलोकीयां परस्पर स्थितहै॥ इसीतें असंभवरूप मायामेंहै॥ जैसे वीज
विषे वृक्ष स्थितहोताहै॥ तैसे चिदअणुविषे जगत स्थितहै॥ जैसे साषापत्रफूल
फलकरि वीज अपणे वीजत्वकों नहीं त्यागता॥ अखंडही रहताहै॥ तैसे चिदअणु
के अंतर जगका विस्तारहै॥ पर अणुत्वभावकों नहीं त्यागता॥ अखंडही रहताहै॥ हे
रामजी वीजभी परणामकरके वृक्षभावकों प्राप्तहोताहै॥ अरु चिदअणु परिणाम

करकेजगतरूपनहीहोता॥चिदणुकाकवनरूपहै॥चिदणुहीअमेदिषाईदेताहै॥
वास्तवतेंनहैनहै॥नअद्वैतहै॥नबीजहै॥नअंकुरहै॥नस्थूलहै॥नसूक्ष्महै॥नकछुउ
पजताहै॥ननष्टहोताहै॥नआस्तिहै॥ननास्तिहै॥नषामहै॥नक्षोभहै॥नजगतहै॥न
अजगतहै॥केवलचिदानंदआत्मसत्ताअचेत्यचिन्मात्रअपनेआपविषेस्थितहै॥सो
ईसर्वात्माहै॥जैसीजैसीभावनाहोतीहै॥तैसातैसाहोइभासताहै॥हेराक्षसीउहअ
णुउदेहीसंवेदनाकेवशतेंउदेहोइकरभासताहै॥जैसेबीजतेंद्रुमअनन्यरूपअने
कहोइभासताहै॥तैसेएकआत्माअनेकरूपहोइभासताहै॥नकछुउदेहूयाहै॥नमि
टताहै॥हेराक्षसीतिसचिदअणुतेंभिसकीतंततसमेरकीन्याईस्थूलहै॥जैसेभिसकी
तंततेंसमेरुस्थूलहै॥तैसेचिदणुतेंभिसकीतंतुस्थूलहै॥अरुदृष्टरूपहै॥अरुचिद
णुदृष्टनहीमनसहितषटइंद्रीयोंकाविषयनही॥इसकारणतेंभिसकीतंततेंसूक्ष्म
है॥तिसचिदअणुविषेअनंतसमेरुआदिकस्थितहै॥सोक्यारूपहै॥जैसेआकाशवि
षेशून्यताहोतीहै॥तैसेआत्माविषेजगतहै॥हेराक्षसीजिसकोंतिसआत्माकाबोधहू
याहै॥तिसकोंजगतस्वप्नकीन्याईहोताहै॥सोआत्मसत्तासदाअद्वैतरूपहै॥अरु
परिणामतेंरहतहै॥तिसविषेसृष्टरूपसदास्थितहै॥परमार्थतेंजगतभीब्र
ह्मरूपहै॥भिन्नभावकछुनही॥इतिश्रीसूचीउपाख्यानेपरमार्थपिंडीकरणनामसर्गः
५५॥वसिष्ठउवाच॥हेरामचंद्रइसप्रकारराजाकेमुषतेंश्रवणकरकेकरकटीजीवोंके
मारणेकीचपलताकोंत्यागतभई॥अरुअंतरतेंशीतलभई॥अरुविश्रामकोंप्रापतभ
ई॥अंतरकीतप्तसभमिटगई॥अरुपरमानंदकोंप्रापतभई॥जैसेवर्षाकालविषेमोर
णीप्रसन्नहोतीहै॥अरुजैसेचंद्रमाकोंदेषकरचंद्रमुषीकमलप्रफुल्लतहोताहै॥जै
सेमेघकेशब्दकरबगलीगर्भवानहोतीहै॥तैसेराजाकेवचनश्रवणकरकेकर्कटीप
रमानंदकोंप्रापतभई॥राक्षसीउवाच॥बडाआश्चर्यहै॥बडाआश्चर्यहै॥हेराजनतुम
हापावनवचनकहेहै॥तिंतैंतुमारासबोधमैंविमलदेष्याहै॥अरुअमितसारहै॥अरुबो
धरूपीसूर्यहै॥अरुशीतलहै॥समरसकरपूर्णहै॥अरुस्वच्छहै॥रागद्वेषादिकमलतेंरहि
तहै॥जैसेपूर्णमासीकाचंद्रमाशीतलअरुअमृतकरसंपूर्णहोताहै॥तैसेंतुमारीबुद्धि
है॥राजनतेंरेविवेकसोंएककणमेंदेष्याहै॥सोतुमसेविवेकीजगतविषेपूजनेहै॥तु
मारेवचनोंकरकेमेरीबुधप्रफुल्लतहोइआईहै॥जैसेचंद्रमाकोदेषकरकमलनीप्रफु
ल्लतहोइआवतीहै॥जैसेफूलोंसाथमिलकरवायुसुगंधमानहोतीहै॥जैसेसूर्यकेउ
देहूएसूर्यमुषीकमलप्रफुल्लतहोइआवताहै॥तैसेसंतोंकीसंगतकरबुद्धसुषकों
प्रापतहोतीहै॥हेराजनउहकवनहैजोदीपकहाथविषेहोवे॥अरुदोषविषेगिरे॥तैसे
उहकवनहै॥जोसंतोंकेसंगकरभीदुषीरहै॥संतोंकेसंगकरसभहीदुषनष्टहोतेहै॥हे
राजनतुमजोइसवनविषेआएहोसोक्याप्रयोजनहै॥तुमतोंपूजनेयोगहो॥अब
प्रयोजनकहो॥राजोवाच॥हेराक्षसीमेरेनगरविषेजोमनुषरहतेहै॥तिनकोंएकवि
सूचकाव्याधरोगआनलगाहै॥तिसविसूचकाकरउहबहुतकष्टवानभएहै॥औष
धभीबहुतकररहेहै॥परदुषदूरनहीहोता॥अरुहमसोसुणयाहै॥जोएकराक्षसीहै॥उ
नीहै॥तिसतुमसमारष्यांकेमारणेनिमित्तमैंरात्रमोंवीरयात्रकरणेनिकस्याहौं॥हे
राक्षसीजोउहराक्षसीतुहीहै॥तोहमारातुमारासंवादभीहूयाहै॥तिसकोंअंगीकारक
रकेप्राणीयोंकोंहिंसाकरणीछोडदेह॥किसीकोंभीकष्टनदेह॥राक्षसीउवाच॥हेराज
नतुमसत्यकहाहै॥अबहिंसाथसैंकात्यागकीयाकिसीजीवनमारोंगी॥राजोवाच॥
हेकमलनेनेतुमजोकहा॥मैअबकिसीजीवकोंनमारोंगी॥सोतेरातोआहारहीजीव
है॥जीवोंकेमारेबिनातेरेशरीरकानिर्वाहकैसेहोवेगा॥राक्षसीउवाच॥हेराजनछह
सौवर्षमैंसमाधिविषेस्थितरहीथी॥तिसतेंउपरांतसमाधितेंलीनवैष्यालगी॥

थी॥अबबहुरहिमालेपर्वतकीकंदराविषेजाइकरनिश्चलसमाधिविषेजुडोंगी॥
जैसेसूरतलिखीहोतीहै॥तैसेस्थितहोवोंगी॥जबसमाधितेंउतरोंगी॥तबअस्त
कीधारणाविषेविश्रामकरोंगी॥जबतिसभीउतरोंगी॥तबशरीरकोंत्यागकरोंगी॥ए
सहिंसानकरोंगी॥हेराजनजिसप्रकारमैंहिंसाथसैंअंगीकारकीयाहै॥सोसुणु॥मु
झकोक्षुधाजबबडीलगीतबतिसकेनिवारणेअर्थहिमालेपर्वतकेउत्तरशिषरकू
परएकवनहै॥तिसविषेएकस्वर्णकीसिलाहै॥तिसकेपासमैलाइकेषंभकीन्याई
आकारसाथजीवोंकेनाशनिमित्तमैंतपकरणेलागी॥जबबहुततवर्षव्यतीतभए॥तब
वरवांछितमनकामफलकोंब्रह्माजीदीया॥तबमेरेदोशरीरभए॥एकआधारभूतसूई
कीन्याई॥अरुदूसरापुर्यष्टकारूपहूया॥तबसेविषूचकानामराक्षसीभई॥तिसश
रीरसाथमैंअनेकजीवोंकोंभोजनकरों॥अंतरजाइप्रवेशकरों॥परब्रह्माजीमुझकों
कहा॥जोपुरुषगुणवानहोवेगा॥तिनपरतेराबलनचलेगा॥अरुजहांउहमंत्रपढेंगे
तहांभीतेराबलनचलेगा॥तूनिवर्तहोजावेगी॥हेराजनतउहीमंत्रकाउपदेशअवन
सभीअंगीकारकरो॥तिसमंत्रकेपाठकरसभनोंकेव्याधरोगनष्टहोजावेंगे॥ब्रह्माका
जोउपदेशहै॥तिसकोंतुमनदीकेतटपरजाइकरपवित्रहोइकरशीघ्रहीग्रहणक
रो॥तिसकेपाठकरनेतेंप्रजाकादुषनष्टहोवेगा॥वसिष्ठउवाच॥हेरामचंद्रइ
सप्रकारजबअर्धरात्रकेसमेराक्षसीकहा॥तबनिकटनदीकेतीरपरराजाअरु
मंत्रीअरुराक्षसीतीनोंगए॥अरुअन्वयव्यतिरेककरकेआपसमोंसहितभए॥ती
नोंपवित्रहोइकरनदीकेतीरपरबैठे॥तबजोमंत्रराक्षसीकोंब्रह्माजीउपदेशदी
कीयाथा॥सोईमंत्रविषूचकाअनसंषक्राराजाकोंउपदेशकरतभई॥तिसकेजप
पाठकरकार्यसिद्धहोवे॥तिसमंत्रकोक्रमकरउपदेशकीया॥अरुचलणलागे
तबराजेकहा॥हेमहादेवितूहमारागुरुहै॥तुमारेविषेमानहमकछुप्रार्थना
करतेहै॥सोअंगीकारकरणी॥जोमहापुरुषोंकीसृष्टदृताहै॥सोवृथानहीरह
ती॥अरुतुमाराशरीरभीउछाचारीहै॥तोतेंलघुशरीरकोंधारो॥केसाशरीरजो
मनकेहरणहाराभूषणवस्त्रसंयुक्तस्त्रीशरीरधारकेकोऊकालहमारेनगरवि
षेनिवासकरो॥राक्षसीउवाच॥हेराजनमैंतोलघुआकारभीधारोंगी॥परमेरे
भोजनदेणेकोंतुमकैसेसमर्थहोवोगे॥जोलघुस्त्रीकाशरीरधारोंगी॥तोभीमे
राशरीरस्वभावतोराक्षसीहै॥इसकोंतृप्तिकरणेसमानजनोंकीन्याईतोनही
जैसाकछुशरीरोंकास्वभावपडाहै॥सोसृष्टिपर्यंततैसाहीरहताहै॥अन्यथा
नहीहोता॥राजोवाच॥हेकल्याणरूपहेंस्त्रीसमानशरीरधारकरहमारेनगर
विषेचलकररहु॥जोकछुचोरपापीमेरेमंडलविषेआवेगे॥सोहमतेरेविष
मानकरेंगे॥तबतूस्त्रीरूपकोंत्यागकर॥राक्षसीशरीरसाथतिनकोंलेजावणा॥
अरुएकांतहोइहिमालेकीकंदराविषेजाइकरभोजनकरणा॥काहेतेंजोबडेभोज
नकरणेवालेकोंएकांतषावणासुषरूपहै॥तिनकोंभोजनकरकेनिद्राहोवेगी
तबसोइरहणा॥जबनिद्रातेंजागेगी॥तबसमाधिविषेस्थितहोवणा॥जबसमा
धितेंभीउतरेगी॥तबबहुरहमारेपासआवणा॥हमतेरेनिमित्तबंदीजनएकठे
करराषेंगे॥तिनकोंलेजावणा॥तिनकोंभोजनकरणा॥जोधर्मकेनिमित्तहिंसाक
रीतीहै॥सोहिंसापापरूपनही॥अरुजिसकोंहिंसाकरीताहै॥तिसकामरणाभीम
रणानही॥उसऊपरदयाकरीतीहै॥काहेतेंजोपापकरणेतेंछूटनाहै॥राक्षसीउवा
च॥हेराजनतमयुक्तवचनकहेहैं॥मैस्त्रीकाशरीरधारकरतुमारेसाथचलतीहों॥युक्त
पूर्वकयोवचनहै॥तिसकोंसभकोऊमानताहै॥वसिष्ठउवाच॥हेरामचंद्रइसप्र
कारकहकरराक्षसीमहासुंदरस्त्रीकाशरीरधारा॥बहुटेकंकणआदिकनानाप्र
कारकेभूषणधारे॥अरुपट्टकेवस्त्रबनाइकरराजेकेसाथचली॥राजाअरुमंत्री
दोनोंआगेचलेजावे॥अरुस्त्रीपाछेचलेजावे॥तबतिसीरात्रकेसमेराजातिसकों

अपणा गृह मों ले गया ॥ एकांत स्थान विषै तीनों जाइ बैठे ॥ रात्रि मों परस्पर चर्चा करने
रहे ॥ जब प्रातःकाल भया ॥ तब सो भागवती स्त्री राक्षसी राजा के अंतःपुर विषै जाइ बैठी
जो कछु स्त्रीयों का व्यवहार रहे ॥ सो करती रहे ॥ राजा अरु मंत्री अपणे व्यवहार विषै स्थि
त भए ॥ जब षट दिन व्यतीत भए ॥ तब राज के मंडल विषै तीन सहस्र चोर पाप आत्मा
बांधे आए ॥ उह सभ ही राजे ने तिस कर्कटी के विद्यमान कीये ॥ तब उह राक्षसी का शरी
र धार कर उनकों भुजा मंडल विषै पाया ॥ जैसे मेघ बूंदों को धारता है ॥ तैसे धार कर
हिमाले के सिषर कों चली ॥ जैसे किसी दरिद्री को स्वर्ण प्रापत होता है ॥ तब प्रसन्न हो
ता है ॥ तैसे उह प्रसन्न भई ॥ अरु ले कर हिमाले सिखर कों ले गई ॥ अरु तीन पर्यंत भो
जन कीया ॥ अरु सुखी होइ कर सोइ रही ॥ दो दिन पर्यंत सोई रही ॥ उपरांत जाग कर
समाधि विषै जुड़ी पंच वर्ष पर्यंत समाधि विषै स्थित रही ॥ तिस ते जब उतरी ॥ तब
बहुड़ राजा के पास आई ॥ इस ही प्रकार जब आवे ॥ तब उह राजा पूजा करे ॥ जैते कछु
दुष्ट जन एकठे कीये होवे ॥ सो तिस के विद्यमान करे ॥ उह ले जावे ॥ हिमाले की कंद
रा विषै जावे ॥ अरु भोजन करे ॥ भोजन कर के बहुड़ ध्यान विषै जुड़े ॥ जब ध्यान ते उतरे ब
हुड़ तहां आवे ॥ बहुड़ ले जावे ॥ हे रामचंद्र जीवन मुक्त होइ कर उह राक्षसी प्रकृत स्वभा
व को करती रही ॥ अनेक वर्ष व्यतीत भए ॥ तब राजा विदेह मुक्त हूया ॥ बहुड़ जो कोऊ उ
स मंडल का राजा होवे ॥ तिस राजे के साथ भी राक्षसी सुहृद रहे ॥ इति राक्षसी सुहृद
ता वर्णन नाम सर्गः ॥ ५६ ॥ ॥ श्रीवसिष्ठ उवाच
हे रामचंद्र जब उह राक्षसी आवे ॥ तब ही किरात देश का राजा पूर्व की न्याई उसकी पू
जा करे ॥ अरु जो कछु उनकी प्रजा विषै उत्पात होवे ॥ विषूचिका होवे ॥ अथवा कोऊ
रोग होवे ॥ सो राक्षसी निवर्त कर देवे ॥ इस प्रकार अनेक वर्ष व्यतीत भए ॥ तब एक
वार उसकों ध्यान विषै बहुत वर्ष बीत गए ॥ तब किरात देश का राजा जीवों के दुष
निवारणे के अर्थ ॥ एक तिसकी प्रतिमा ऊंचे स्थान पर स्थापन करत भया ॥ तिस
प्रतिमा का एक नाम देवी ॥ अरु दूसरा नाम मंगला देवी भया ॥ तिसका ध्यान करके
पूजा करणे लागे ॥ तिस कर भी तिसका कारज सिद्ध होणे लागा ॥ हे रामचंद्र तिस
प्रतिमा विषै उह देवी अनन्य वास करती भई ॥ जो कोऊ जिस फल के निमित्त प्रति
मा की पूजा करे ॥ तिसका कार्य सिद्ध होवे ॥ अरु दुख भी दूर होवे ॥ अरु जो तिस प्रति
मा की पूजा न करे ॥ तिसका कार्य सिद्ध न होवे ॥ तां ते जो कोऊ कछु कार्य करणे लागे ॥
सो प्रथम ही कंदरा मंगला देवी की पूजा करे ॥ तिस कर बहुत प्रसन्न होवे ॥ हे रामचंद्र अ
ब लग उह ही प्रतिमा किरात देश विषै स्थित है ॥ जिस जिस फल के निमित्त कोऊ उस
की सेवन करता है ॥ तैसा तैसा फल उसकों देती है जैसे भावना होती है ॥ तैसा फल
परमबोध रूप चिंतदेती है ॥ इति सूचीउपाख्याने समाप्तनाम सर्गः ॥ ॐ ॥ ५७ ॥ ॐ ॥

वसिष्ठ उवाच ॥ हे रामचंद्र इह अनिंदत कर्कटी का उपाख्यान जैसे पूर्व वितीत भया
तैसे मैं तुझ को कहा है ॥ रामउवाच ॥ हे भगवन राक्षसी का कृष्ण वपु किस निमित्त था
अरु कर्कटी इसका नाम क्यों था ॥ जैसे हूया है सो कहो ॥ वसिष्ठ उवाच ॥ हे रामचंद्र इह
राक्षसों के कुल की कन्या थी ॥ सो राक्षसों का कृष्ण वपु भी होता है ॥ अरु कृष्ण वपु भी
होता है ॥ एक जल जंतु कर्कट नाम प्राणी होता है ॥ उसका श्याम आकार होता है ॥
तिसके समान एक कर्कट नामा राक्षस था ॥ तिसके समान श्याम आकार उसकी दुहि
ती भई ॥ इस कारणा ते इसका नाम कर्कटी भया ॥ हे रामचंद्र इह जो रे कर्कटी का प्रयो
जन कछु नही था ॥ इही अध्यात्म प्रसंग था ॥ शुद्ध चैतन्य के निरूपण निमित्त मैं तुझ
को कहा है ॥ इह आश्चर्य है ॥ जो असत्त रूप जगत के पदार्थ हैं ॥ सो सत्त रूप होइ कर भा
सते हैं ॥ अरु जो आत्म सत्ता सदा संपन्न रूप है ॥ सो अविद्यमान की न्याई भासती है हे
रामचंद्र वस्तु ते तौ एक अनादि अनंत परम कारण आत्म सत्ता ही स्थित है ॥ तिस वि

षै भावना के वश ते जगत रूप भासता है ॥ पर स्वरूप ते अनन्य रूप है जैसे जल अरु
तरंग विषै कछु भिन्नता है नहीं ॥ तैसे ब्रह्म अरु जगत विषै कछु भिन्न नहीं ॥ आत्मा वि
षै जगत कछु है न रूप हूया नहीं ॥ सदा आत्म सत्ता अपणे आप ही विषै स्थित है ॥ ति
स विषै जैसा जैसा चित स्पंद दृढ़ होता है तैसा तैसा रूप होइ कर भासता है ॥ जैसे वा
दर वन कों एकठा करके तिस विषै अग्नि की भावना करते हैं ॥ अरु तापते हैं ॥ तब उ
नका शीत निवृत होता है ॥ तैसे स्थिर सम रूप आत्मा विषै जब जगत की भावना फु
रती है ॥ तब नाना प्रकार का जगत भासता है जैसे थंभ विषै पुतलीयां अनउदे ही हैं
पर सिल्पी के मन विषै उदे की न्याई भासतीयां हैं ॥ तैसे भावना के वश ते जगत होइ
भासता है जैसे बीज विषै पत्र फूल फल टास सहज ही अनन्य रूप होता है ॥ तैसे ब्रह्म
साथ जगत अनन्य रूप है ॥ जैसे बीज हृदत विषै भेद कछु नहीं ॥ तैसे ब्रह्म अरु जग
त विषै भेद कछु नहीं ॥ अविचार कर के भेद पड़ा भासता है ॥ जैसे बीज अरु वृक्ष वि
षै भेद मृषता कर के भासता है तैसे भिन्न भिन्न सत्ता नाना प्रकार का जगत मृषा
ना कर भासता है ॥ विचार कीये ते जगत भेद नष्ट होता है ॥ हे रामचंद्र इह अव
विचार नहीं करणा ॥ जो कैसे उपजया है ॥ कहां सो आया है ॥ अरु कब का हूया है ॥
जैसे हूया तैसे हूया ॥ अब इसके निवर्त का उपाउ करीये ॥ जब तूं जागेगा ॥ तब चि
द जड़ ग्रंथि हृदे की टूट जावेगी ॥ यह अरु अर्थ कीजे तो कछु कल्पना उठती है ॥
सो मेरे वचनों कर स्वरूप विषै स्थित भए तैसे भ्रम नष्ट हो जावेगा ॥ हे रामचंद्र इ
ह सर्व जगत अनर्थ रूप चित ते उपजया है ॥ सो मेरे वचनों के श्रवण कीये ते भ्रां
न हो जावेगा ॥ इस विषै संसे नहीं करणा ॥ सभ जगत ब्रह्म ते उपजया है अरु स
र्व ब्रह्म ही स्वरूप है जब तूं ज्ञान विषै जागेगा ॥ तब इसका अंत ही जाणेगा ॥ राम उ
वाच ॥ हे भगवन जो जिस ते होता है ॥ सो तिस ते वितरेक होता है ॥ जैसे कुलाल
ते घट होता है ॥ सो कुलाल ते भिन्न होता है ॥ तम कैसे कहते हो ॥ जो सभ जगत
ब्रह्म ते उपजया है ॥ अरु ब्रह्म ही स्वरूप है ॥ वसिष्ठ उवाच ॥ हे रामचंद्र इह जगत
ब्रह्म ते उपजया है ॥ इह शाह भी शास्त्रों के उपदेश जनावणे के निमित्त कहा है ॥
जैसे कछु प्रतियोगी सहत शाह शास्त्रों कहे हैं ॥ सो शाह विषै है ॥ उपदेश जनावणे
के निमित्त कहे हैं ॥ वास्तव इह शाह कोऊ नहीं ॥ जैसे किसी बालक कों पछावें
विषै वेताल भासता है ॥ अरु कोऊ पूछता है ॥ जो इस बालक कों वेताल किस ठौ
र विषै स्थित होइ कर भय दीया है ॥ सो व्यवहार के निमित्त उसकों कहीता है ॥ अ
मुके ठौर विषै भय दीया है ॥ और वेताल तौ कोऊ नहीं ॥ तैसे आत्मा विषै उपदेश नि
मित्त भेद कल्पना करी है ॥ वास्तव ते तिस विषै द्वैत एक कल्पना कोऊ नहीं ॥ अ
रु हे रामचंद्र ब्रह्म ते जगत हूया ॥ इह अर्थ केवल वितरेक विषै ही नाहीं होता
अभिन्न विषै भी होता है ॥ अरु भिन्न विषै भी होता है ॥ जो कुलाल ते घट उपज
ता है ॥ सो वितरेक के अर्थ है ॥ स्वामी का टहलूवा ॥ इह भी भिन्न के अर्थ है ॥ अरु इह अभि
न्न रूप भी होते हैं ॥ जैसे कही ये अवयवी के अवयव हैं ॥ अरु स्वर्ण ते भूषण ग्रहण हैं रत्न
का ते घट ग्रहण है ॥ सो इह अभिन्न रूप होते हैं ॥ अवयव अवयवी रूप है भूषण स्वर्ण रूप
है ॥ घट रत्न का रूप है ॥ तैसे ब्रह्म ते उपजया जगत ब्रह्म ही रूप है ॥ अरु वास्तव ते भिन्न अ
भिन्न कारण कार्य परिणाम भाव विकार अविद्या अरु विद्या सत्व बंध आदिक मिथ्या क
ल्पना अज्ञान कर उठी है ॥ अग्राह्य ही पद शोध रहिता है ॥ जब तूं ज्ञान ज्ञेय होवेगा ॥ तब
ऐसे जाणेगा ॥ जो आदि अंत मध्य ते रहत अविभाग अखंड रूप एक आत्म सत्ता तुझ को
स्थित है ॥ अज्ञान कर के भेद कल्पना होती है ॥ अथवा जिज्ञासी कों उपदेश के निमि
त्त है तवाद कल्पीता है ॥ बोध हूए ते द्वैत भेद कछु नहीं रहता ॥ हे रामचंद्र वाच्य वाचक
भाव द्वैत विना सिद्ध नहीं होता ॥ जब बोध हूया ॥ तब वाच्य वाचक की मौन होती है ॥ तां

तैसे महावाक के अर्थ विषे निष्ठा करु॥ अरु जेती कछु भेदकल्पना मन ने रची है॥ तिस
के निवर्त्त अर्थ मेरे वचन श्रवण करु॥ हे रामचंद्र इहु मन अग्र से उपज्या है जैसे गंधर्व
नगर होता है॥ तिस ते आगे जगत की रचना करी है॥ जैसे मैं देख्या है तैसे तुझ कों दृष्टा
त कहता हों॥ जिस के जाणे ते सभ जगत तुझ कों भ्रांतिमात्र भासेगा॥ अरु निश्चे कों धा
र कर जगत की वासना हृदे ते त्याग देवेंगा॥ बोध करके सभ जगत मन का मनन रूप
भासेगा अरु आत्म रूप होइ कर अपणे आप विषे निवास करेगा॥ अर्थ इहु जो जगत
की कल्पना त्याग कर अपणे स्वभाव सत्ता विषे स्थित होवेगा॥ तां ते सावधान होइ कर स्र
ण॥ हे रामचंद्र इहु मन रूप वडा रोग है॥ विवेक रूपी औषध कर तिस की चिकित्सा करो॥
अरु सभ जगत कर के कल्प्या है॥ सो शरीर आदिक वास्तव कछु नही॥ जैसे रेत सों तेल
नही निकसता॥ तैसे जगत वास्तव सत्त कछु नही निकसता॥ चित्त करके पड़ा भासता
है॥ सो चित्त रूपी संसार स्वप्न की न्याई है॥ अरु राग द्वेष आदि संकल्पां कर के युक्त है॥ ति
स ते जो रहत हूया है॥ सो संसार समुद्र के पार कों प्रापत हूया कहीता है॥ तां ते सभ यु
गां कर चित्त की सहइता करो॥ अरु ये जो विवेकी है॥ सभ कों रज कों करते है॥ असभ कों
नही करते॥ आहार अरु व्यवहार सभ विचार कर के करते है॥ तैसे ही आर्यां की न्याई तु
म सभ चेष्टा शास्त्र के अनुसार ही करो॥ जब ऐसा ही अभ्यास तुम कों होवेगा॥ तब शी
घ्र ही ज्ञानवान होवोगे॥ अरु ज्ञान के प्रापत हूए सर्व कल्पना मिट जावेगी॥ अरु आत्म
विषे स्थित होवेगी॥ अरु सभ जगत रूप चित्र मन ही ने रचे है॥ जैसे मोर का अंड काल
पाइ कर अनेक रंगों कों धारता है॥ तैसे मन अनेक प्रकार के जगत कों धारता है॥ सो म
न जड अरु चैतन्य रूप है॥ जो मन विषे चैतन्य भाग है॥ सो सर्व अर्थां का बीज रूप है॥ जी
न कही ये सर्व का उपादान रूप है॥ तिस का जो जड भाग है॥ सो जगत रूप है॥ हे रामचंद्र
सर्ग के आदि विषे पृथिवी आदिक तत्व अविद्यमान थे॥ तिन कों विद्यमान की न्याई ब्रह्मा
देषता भया॥ जैसे स्वप्ने विषे जगत विद्यमान की न्याई भासता है॥ तैसे देषता भया॥ सो अ
प्रमाद कर देषता भी अदेषता है॥ जड वेदता कर पहाड आदिक जगत देषता भया॥ अरु
चैतन्य वेदता कर जंगम रूप कों देषता भया॥ सो सभ जगत दीर्घ वेद मा है॥ वास्तव ते
सभ देहादिक सून्य रूप है॥ सर्व आत्मा करके व्यापे हूए है॥ अरु तिस का शरीर कोऊ न
ही॥ अपणे करके जो दृष्य रूप मन चेत्या है॥ सो ई मन आत्मा का शरीर है॥ सो आत्मा
विस्तीर्ण है अरु निर्मल स्थित है॥ मन तिस का आभास रूप है॥ जैसे सूर्य कीयां किर
णां जलाभास होता है॥ तैसे आत्मा का आभास मन है सो मन रूपी बालक जगत रू
पी पिशाच कों अज्ञान करके देषता है॥ अरु ज्ञान करके परमात्म पद शांत रूप निराम
य कों देषता है॥ हे रामचंद्र जब आत्मा चेतनता कों प्रापत होता है॥ तब उही चित्त रूप
जो दृश्य है॥ सो द्वैत एक भ्रम कों देषता है॥ तिस के निवर्त्त अर्थ मैं तुझ कों कथा कहता हों
तू श्रवण करु॥ जो वचन दृष्टांत अरु दार्ष्टांत सहित होता है॥ अरु वाणी भी मधुर हो
ती है॥ अरु स्पष्ट वचन होवे॥ तब गुरु का वचन श्रोता के हृदे विषे पसर जाता है॥ जै
से जल विषे तेल की बूंद पसर जाती है॥ तैसे पसर जाता है॥ अरु जिस का वचन दृ
ष्टांत अरु दार्ष्टांत ते रहित होता है॥ अरु अर्थ स्पष्ट भी नही होता॥ अरु शोभ का इली
सं युक्त वचन कहीता है॥ अरु अक्षर भी पूर्ण नही होता॥ सो वचन श्रोता के हृदे वि
षे नही वहु रता॥ उपदेष्टा का वचन भी निष्फल जाता है॥ अरु मैं जो तुझ कों आख्या
न कथा कहता हों॥ सो नाना प्रकार के दृष्टांतों सहित॥ अरु मधुर वाणी सहित वचन क
हता हों॥ अरु स्पष्ट अर्थ करके कहता हों॥ जैसे चंद्रमा अपणे दृष्ट रूप कर आनंद देता हो
वे॥ अरु मंदर शीतल हो जावे॥ तैसे मेरे स्पष्ट वचन अरु प्रकाश रूप अर्थ कर श्रवण
कीये ते तेरा भ्रम निवर्त्त हो जावेगा॥ इति श्री मन अंकुर उत्पत्ति कथनं नाम सर्गः॥ ५८॥

वसिष्ठ उवाच॥ हे रामचंद्र पूर्व जो मैं तुझ कों ब्रह्मा जी सर्ग के हेतां विषे कहा है॥ सो मैं तु

झ कों कहता हों॥ पूर्व एक काल मों मैं ब्रह्मा जी पास गया था॥ अरु पूछ्या था जो हे भ
गवन इहु जगत नाना कहां ते आया है॥ अरु कैसे उत्पत्ति भया है॥ तब पितामह जी मु
झ कों इहु ब्राह्मण का आख्यान कहत भया॥ ब्रह्मोवाच॥ हे मुनीश्वर इहु सभ जगत म
न ते उपज्या है॥ अरु मन करके पड़ा फुरता है॥ जैसे जल मे द्रवता करके नाना प्रकार के
तरंग चक्र पड़े फुरते है॥ तैसे मन के फुरणे कर सभ जगत पड़े फुरते है॥ अरु मन रूप
है॥ हे मुनीश्वर पूर्व कल्प विषे मै एक वृतांत देख्या है॥ सो तूं सुण॥ एक समे दिन का अं
त हूया॥ मैं संपूर्ण सृष्टि कों संहार करके एकाग्र भाव होइ कर रात्र कों स्वस्थ भाव हो र
हा॥ जब मेरी रात्र व्यतीत भई॥ अरु मैं जाग्या॥ तब उठ कर संध्या आदिक कर्म विधि से
युक्त करत भया॥ अरु वडे आकाश की ओर मैं देखत भया॥ सो तम अरु प्रकाश ते रहत अ
व्याकृत शून्य रूप अनंत ते रहित मैं देखत भया॥ अरु चिदाकाश विषे चित्त कों जोड्या॥ अ
रु सृष्टि के उपजावणे का संकल्प चित्त विषे धारा॥ तब मुझ कों सूक्ष्म चिदाकाश विषे
सृष्टियां दृष्ट आईयां॥ सो कैसीयां सृष्टां भासीयां॥ जो वडे विस्तार सहित अरु परस्पर अग्रह
ष्ट रूप जो एक सृष्टि कों हूं सरीन देखें॥ अरु एक एक सृष्टि विषे ब्रह्मा विष्णु रुद्र तीनों देवते
रहे॥ अरु देवता गंधर्व दैत्य किंनर नाग मनुष्य सुमेरु मंद्राचल कैलास हिमाला आदि
क पर्वत अरु पृथिवी नदीयां अरु साते समुद्र आदिक सर्व सृष्टी के विस्तार मे देषत भ
या॥ सो दश सृष्टी कर संख्या देषी॥ तिनों विषे दश ब्रह्मा देषे॥ मानो मेरा ही प्रति बिंब है
मेरी ही रूपता है॥ कमल ते उत्पत्ति हूए॥ अरु राजहंस के ऊपर आरूढ हूए दशों ही ब्रह्मा
देषे॥ अरु भिन्न भिन्न तिन कीयां दशों ही सृष्टीयां देषीयां॥ वडे नदीयों के प्रवाह चलते है
वायु आकाश विषे चलता है॥ सूर्य चंद्रमा उदे होते है॥ देवते स्वर्ग विषे क्रीडा करते है
मानुष पृथिवी ऊपर विचरते है॥ दैत्य नाग पाताल विषे भोगों कों भोगते है॥ काल च
क्र पड़ा फिरता है॥ द्वादश मास तिस के द्वादश किले है॥ षट ऋतू वसंत आदिक है॥ वा
सनां के अनुसार सुभ असुभ आचार कर के नरक स्वर्ग के भोग भोगते है॥ अरु मोक्ष फ
ल कों भी प्रापत होते है॥ सृष्टि विषे सप्त दीप है॥ उत्पत्ति प्रलय कल्प कर होती है॥ गं
गा जी के प्रवाह जगत के गले मों यज्ञोपवीत है॥ कहूं ऐसे स्थान है॥ जहां सदा प्रका
श रहता है॥ कहूं अंधकार ही रहता है॥ अंधकार भी रहता है॥ तिस विषे स्थावर जं
गम रूप प्रजा मैं देषता भया॥ बिजली की न्याई सृष्टी उपजती है॥ अरु मिट जा
तीयां है॥ जैसे वृक्ष के पत्र उपजते है॥ अरु नष्ट हो जाते है॥ अरु गंधर्व के नगर वत सृ
ष्टां देषीयां॥ एक ब्रह्मांड विषे स्थावर जंगम प्रजा देषीयां॥ जैसे गूलर फल विषे अने
क मच्छर होते है॥ तैसे एक एक ब्रह्मांड विषे जीव देषे॥ आत्मा विषे काल का भी अभाव
है सो तत्काल वा दिन मास वर्षों का प्रवाह चला जाता देष्या॥ हे मुनीश्वर आतिवाहक
दृष्ट कर के मैं उन सृष्टों कों देषता भया॥ जब मैं चर्म दृष्ट कर देषों॥ तब कछु न भासे
दिव्य दृष्ट कर देषों तब भासे॥ चिरकाल पर्यंत मै देषता रहा॥ जो कदाचित भ्रम हो
वे॥ पर स्पष्ट ही भासे॥ तब एक सृष्टि के सूर्य कों देष कर मै आवाहन कीया॥ तब सूर्य मे
रे निकट आइ प्रापत भया॥ तिस कों मै कहत भया॥ हे देव देव प्रभासकर तुम कों कम
ल ते हो॥ ऐसे कह कर मैं बहुड़ कहा॥ कि इह सूर्य तूं कवन है॥ अरु इह सृष्टि कहां ते उप
जी है॥ अरु इह एक जगत है॥ अथवा अनेक जगत है॥ जैसे तुम जानते हो॥ तैसे कहो
तब इह सूर्य भी त्रिकालज्ञाता था॥ मुझ कों जाण कर परिणाम कीया॥ अरु अ
निंद्य वाणी कर कहत भया॥ सूर्य उवाच॥ हे ईश्वर इस दृश्य रूपी पिशाच के नमित्त
नही कारण होते हो॥ तुम आप ही जाणते हो॥ मेरे पास तो किस निमित्त पूछते हो
जो जैसे वर्तता हूया है॥ तैसे तुमारे विद्यमान प्रार्थना करता हों॥ हे भगवन इहु स
त असत रूपी नाना प्रकार के व्यवहारों संयुक्त जगत भासता है॥ सो सभ मन के
फुरणे विषे स्थित है॥ इति श्री उत्पत्ति प्रकरणे ब्रह्मा आदित्य समागम नाम सर्गः॥ ५९॥

ॐ भानुरुवाच ॥ हे भगवन तब मातांजो कलका दिन व्यतीत भयाहै ॥ तिस कल्प विषे जो
जंबूद्वीप था ॥ तिसकी कोण विषे कैलास पर्वत था ॥ तिसकी कंदरा विषे स्वर्णज्येष्ठ नाम
एक तमाराभ्रत था ॥ सो ऊहां कुटी रचता भया था ॥ तहां जाइ करि साथ जन निवास करते
थे ॥ तहां वेदका वेत्ता शांतरूप इंदु नामा ब्राह्मण कश्यप ऋषीश्वर की कुलते प्रगट्या
हूया तिस कुटी विषे जाइ कर स्त्री सहित निवास करत भया ॥ तिस स्त्री विषे प्राणों की
न्याई तिसका स्नेह था ॥ सो इस्त्री पुत्रते रहित होत भई जैसे माडूथल विषे घास न ही उ
पजता ॥ तैसे उसते संतान नहीं उपजे ॥ अरु वह तन सुंदर रूपवान ॥ पर पुत्रते रहित ॥ जै
से सबन काल की बली बहुत सुंदर होती है ॥ पर फलते शून्य होती है ॥ तैसे उह स्त्री थी
तब उह दोनो पुरुष अरु स्त्री पुत्र के निमित्त तप करणे लागे कैलास के निकट निर्ज
न स्थान विषे एक वृक्ष था तिसके ऊपर चढ बैठे ॥ तहां बैठ कर तप करणे लागे ॥ जलपा
न करें और भोजन कछु न करें ॥ इस प्रकार दिन अरु रात्र कों व्यतीत करें ॥ बहुरि एक ही चु
ली जल की पान करणे लागे ॥ बहुरि चुली का भी त्याग कीया ॥ करणे तें रहित हवा कीन्या
ई होकर बैठ रहे ॥ तिन कों तप करते करते द्वापर युग व्यतीत भया ॥ तब शशिकला धा
री रुद्र तुष्टमान होइ कर तिनके निकट आए ॥ अरु भवानी शंकर दोनों तिनके सन्मुख
आइ खडे ॥ स्त्री पुरुष दंपती देखते भए ॥ जो इस्त्री पुरुष दोनों वृक्ष ऊपर बैठे हैं ॥ तब तिनों शि
व कों देख कर प्रणाम कीया ॥ अरु दोनों प्रफुल्लित होइ आए ॥ जैसे दिन की तनकर सकुचे हूए
चंद्रमुखी कमलनीयां चंद्रमा के उदे हूए प्रफुल्लित होइ आवती यां है ॥ तैसे महा हिम की
न्याई शिव कों देख कर प्रफुल्लित भए ॥ मानो आकाश अरु पृथिवी दोनो रूप धार कर आन
खडे हूए हैं ॥ ऐसे भवानी शंकर तिस ब्राह्मण कों कहते भए ॥ ईश्वर उवाच ॥ हे ब्राह्मण तूं
वर मांग ॥ मैं तुझ पर तुष्ट हूया हों ॥ जो कछु तुझ कों वांछित वर है सो मांग ॥ हे ब्रह्मा जी ज
ब ऐसे शिव कहा ॥ तब ब्राह्मण प्रफुल्लित होइ करि कहत भया ॥ हे भगवन देवदेव ऐसे
रे गृह विषे दश पुत्र होवें ॥ सो बडे बुद्धिवान होवें ॥ अरु कल्याणमूर्ति होवें ॥ जिसकर मुझ
कों बहुरि शोक कदाचित न होवें ॥ भानुरुवाच ॥ हे भगवन इस प्रकार जब ब्राह्मण कहा ॥ त
ब ईश्वर कहा ॥ ऐसे ही होवेगा ऐसे कह कर अंतर्धान भए ॥ जैसे समुद्र का तरंग उछल क
र मिट जाता है ॥ तैसे शिव अंतर्धान भए ॥ तब उह दोनों पुरुष इस्त्री दोनो शिवके वरकों ग्रहण
करके प्रसन्न होत भए ॥ जैसे सदा शिव अरु भवानी मूर्ति है ॥ तैसे उह प्रसन्न होइ कर अपने
गृह विषे आवत भए ॥ तब ब्राह्मणी गर्भवान होत भई ॥ जैसे वर्षा काल के बदल जल
कर पूर्ण होते है ॥ तैसे उह गर्भ कर पूर्ण भई ॥ समे पाइ कर दश पुत्र तिसके होत
भए ॥ जैसे द्वितीया के चंद्रमा की शोभा होती है ॥ तैसे उनकी शोभा भई ॥ अरु थोड भाव षंके
आकार की न्याई ब्राह्मणी का आकार रहा ॥ इह भाव कों न प्रापत भया ॥ अरु उह दश ही सं
स्कार कों लेकर उपजे ॥ अरु जो थोडे काल विषे बडे हो गए ॥ जैसे वर्षा काल की बूंद ली
थोडी भी शीघ्र बडी हो जाती है ॥ तैसे उह थोडे काल विषे बडे भए ॥ जब सप्त वर्षों के भए ॥
तब सब वाणी के वेत्ता भए ॥ जब कछु काल व्यतीत भया ॥ तब उनके माता पिता दोनों श
रीर कों त्याग कर अपणी गति कों प्रापत भए ॥ उह दश ही ब्राह्मण माता पिता तें रहित
भए ॥ अपणे गृह कों त्याग कर कैलास के शिखर ऊपर जाइ बैठे ॥ अरु परस्पर विचार क
रणे लागे ॥ जो उह कवन पद श्रेष्ठ है ॥ जो परमेश्वर रूप है ॥ अरु उह कवन श्रेष्ठ पद है ॥ जि
सके पाए बहुरि दुःखी न होवीये ॥ अरु जिसका नाश भी न होवे ॥ अरु जिसके पाए तें सभ
काई ईश्वर होवीए ॥ तब एक भाई कहा ॥ जो सर्व तें बडा ऐश्वर्य मंडलेश्वर का है ॥ सभ ऊ
पर तिसकी आज्ञा चलती है ॥ बहुरि दूसरे भाई कहा मंडलेश्वर की विभूति भी कछु न
हीं ॥ काहेतें जो उह भी राजे के अधीन होता है ॥ तातें चक्रवर्ती राजपद बडा है ॥ बहुरि
और भाई कहा राजे की विभूति भी कछु नहीं ॥ काहेतें जो राजा चक्रवर्ती के अधीन होता
है ॥ तातें चक्रवर्ती पद बडा है ॥ बहुरि और भाई कहा चक्रवर्ती भी कछु नहीं ॥ उह भी ज
म के अधीन होता है तातें यम का पद बडा है ॥ बहुरि और भाई कहा ॥ जो इंद्र के आगे य

म की विभूति भी कछु नहीं ॥ तातें इंद्र बडा पद है ॥ तब और भाई कहा ॥ इंद्र की विभूति भी
कछु नहीं ॥ ब्रह्मा के एक मुहूर्त विषे इंद्र नष्ट हो जाता है ॥ तब सभनों का ज्येष्ठ बडा भा
ई कहा ॥ जैसे भृंगों कों भृंग कहै ॥ तैसे छोटे भाईयों कों बुद्धिवान बडा भाई शीरव सनक
र कहत भया ॥ जेती कछु विभूति है ॥ सो सभ ब्रह्मा के कल्प विषे नष्ट हो जाती है ॥ तातें सभ
तें बडा ऐश्वर्य ब्रह्मा जी का है ॥ उसतें बडा और कोऊ नहीं ॥ हे भगवन ब्रह्मा जी इस प्रकार ज
ब बडे भाई कहा ॥ तब सभनों कहा भला कहा ॥ तब बडे भाई कों कहा ॥ हे तात जो सर्व
दुःखों का नाशकर्ता जगत पूज्य ब्रह्म पद है ॥ तिसकों हम कैसे प्रापत होवें ॥ जिस उपाय
कर प्रापत होवें ॥ सो उपाय कहो ॥ बहुरि बडा भाई कहत भया ॥ हे भाईयो और सभ वास
नाकों त्याग करो ॥ अरु इह भावना निश्चय करके करो ॥ जो हम ब्रह्मा हैं ॥ अरु पद्मासन ऊप
र बैठे हैं ॥ मैं ब्रह्मा हों ॥ अरु सृष्टि का कर्ता हों ॥ अरु सर्व की पालना कर्ता हों ॥ अरु संहार क
र्ता मैं ही हों ॥ जेते कछु जगत जाल है ॥ तिसका आश्रयभूत मैं ही हों ॥ सभ सृष्टि मे
रे अंगों विषे स्थित है ॥ ऐसे निश्चय कों धार रहे हो ॥ अरु सजाती भावना कों धार कर रहे हो ॥
तब तुम कों ब्रह्मा का पद प्रापत होवेगा ॥ हे भगवन ब्रह्मा जी तब इस प्रकार बडे भा
ई कहा ॥ तब छोटे भाईयों कहा ॥ हे भाई तुम यथार्थ कहा है ॥ जैसे तुम कहा है ॥ हम तै
से ही करते हैं ॥ ऐसे मान कर बडे भाई सहित सभ ध्यान विषे स्थित भए ॥ जैसे कागत ऊ
पर मूरत लिखी होती है ॥ तैसे ही दशों भाई ध्यान विषे जुड गए ॥ अरु मन विषे इही चि
तवना करत भए ॥ जो मैं ब्रह्मा हों ॥ कमलआसन मेरा है ॥ मैं सृष्टि का कर्ता हों ॥ भो
गता भी मैं ही हों ॥ महेश्वर भी मैं ही हों ॥ सांगोपांग सहित जगत के मैं मैं ही रचे हैं ॥
अरु सरस्वती गायत्री सहित जो वेद हैं ॥ सो मेरे आगे आन खडे हैं ॥ अरु इह लोकपा
ल अरु सिद्धों के मंडल लोकों को पालनेवाले हैं ॥ सो सभ मैं ही रचे हैं ॥ स्वर्गलोक भूमि
लोक पाताल लोक पहाड नदीयां समुद्र सभ मैं ही रचे हैं ॥ अरु महा वाडव अग्नि के धार
णेहारा यज्ञों का भोगता इंद्र मैं ही रचा है ॥ अरु सूर्य मेरी आज्ञा सों तपता है ॥ जगत की
मर्यादा निमित्त सभ लोकपाल मैं ही रचे हैं ॥ जैसे गौवों को गोपाल पालता है ॥ तैसे
लोकपाल मेरी आज्ञा पाइ कर जीवों को पालते हैं ॥ अरु जैसे समुद्र विषे तरंग उपजते
हैं ॥ बहुरि मिट जाते हैं ॥ तैसे जगत मुझ ते उपजता है ॥ बहुरि मेरे ही विषे लीन होता है
अरु मैं सदा आत्म पद विषे स्थित हों ॥ अरु क्षण दिन मास वर्ष युग आदिक काल मे
रा ही रचा हूया है ॥ मैं ही सभ काल के नाम राखे हैं ॥ मैं ही दिन कों उत्पन्न करता हों ॥ रात्रि
कों लीन करता हों ॥ अरु सदा आत्म पद विषे स्थित हों ॥ अरु पूर्ण परमेश्वर मैं ही हों
हे ब्रह्मा जी इस प्रकार उह दशों ही भाई भावना धार कर रहे हैं ॥ मानों कागत ऊपर मू
रत लिख छाडी है ॥ तैसे सभ अहंता के जाल कों अंतर तें त्याग कर एक ब्रह्मा जी के ध्यान वि
षे जुड आए ॥ इति ऐंदवसमाधाननाम सर्गः ॥ ६ ॥ ॐ भानुरुवाच ॥
हे भगवन इस प्रकार इंदु के दश ही पुत्र पिता माता की भावना धार कर रहे ॥ तब तिन
के देह धूप अरु पवन कर के सूक गए ॥ जैसे जेठ आषाढ विषे कमल पत्र सूक कर गिर
पडते हैं ॥ तैसे तिन के देह सूक कर गिर पडे ॥ तब वनचर जो जीव थे ॥ सो तिन तें मांस कों
भक्षण करें ॥ अरु पारीरों कों आयों आय खैंचे ॥ जैसे फल कों वानर पकडते हैं ॥ अरु विदी
रण करते हैं ॥ तैसे इनके देहों को विदीरण करते हैं ॥ तैसे इनके देहों को विदीरण कर
णे लागे ॥ पर तिन की वृत्ति ध्यान कों छोडै नहीं ॥ वासुदेह दिक अभ्यास विषे न आवे ॥
ब्रह्मा की भावना विषे ही लागी रहे ॥ इस प्रकार जब चतुर्युग का अंत भया ॥ अरु तुम्हा
रे कल्प दिन का क्षय होवणे लागा ॥ द्वादश सूर्य तपणे लागे ॥ पुष्कर मेघ गर्ज कर
वर्षा करणे लागे बडे भूचाल आवणे लगे ॥ वायु चलणे लागी ॥ समुद्र उछल पडे ॥ सभ
जल ही जल हो गया ॥ सभ भूत लय कों प्रापत भए ॥ सभ कों संहार करके रात्रि में तुम आ
त्म पद विषे जाइ स्थित भए ॥ तब उनके शरीर भी नष्ट हो गए ॥ अरु पुर्यष्टका उनकी

आकाश विषे आकाशरूप होइ कर ब्रह्मा के संकल्प कों लकर तीव्र भावना के वशतें
दश सृष्टों सहित दश ही ब्रह्म होत भए॥ भिन्न भिन्न अपणी अपणी सृष्टि के ब्रह्म
भए हैं अब तुम जाग कर देखे हैं॥ जो आकाश विषे फुरते हैं॥ हे भगवन तिन दश ब्रा
ह्मणों के चित्त आकाश विषे दस ही सृष्टां स्थित हैं॥ तिन दसों सृष्टी के मध्य विषे
एक सृष्टि का सूर्य मैं हों॥ आकाश विषे मेरा मंदिर है कालजो है क्षणादिन मास॥
पक्ष वर्ष युग सो मेरे कर होता है॥ इस कथा विषे मुझ कों उनजो उपाहै हे भगव
न इस प्रकार तुम कों मैं दस ही ब्रह्मा अरु दस ही सृष्टां कहीयां है॥ सो के सीयां सृष्टा
हैं॥ सब मन ही मात्र है॥ मन ही विषे स्थित है और जैसे तुमारी इच्छा है॥ तैसे करो॥
भिन्न भिन्न कल्पना जगत जाल विस्तार कों प्रापत भया है॥ सो इंद्र जाल की न्याई है
चित्त के भ्रम कर के प्रत्यक्ष भासता है इति जगत रचना निर्णयो नाम सर्गः॥ ६१॥
ब्रह्मोवाच॥ हे ब्राह्मण ब्रह्मवेत्यों विषे श्रेष्ठ इस प्रकार उस ब्रह्मा के सूर्य ने ब्रह्मा कों क
ह कर तुष्णी करी॥ तब तिसके वचनों कों विचार कर मैं कहत भया॥ हे भानो तुं कहु इनों
सृष्टों तें अन्य मैं क्या रचों॥ इह दश सृष्टां हुई यां है॥ अरु दश ही ब्रह्मा है॥ अब मैं रचने कर
क्या सिद्ध होवेगा॥ हे मुनीश्वर जब इस प्रकार मैं कहा॥ तब सूर्य विचार कर के मुझ कों कह
त भया॥ सूर्य उवाच॥ हे प्रभो तुम तो निरइच्छत हो॥ तुमारे विषे इच्छा कछु नहीं सृष्टि रच
ने की॥ सृष्टि का रचना तुम कों विनोद मात्र है॥ किसी कामना के निमित्त तुम नहीं रचते
तुम निष्काम रूप हो॥ जैसे जल कर के सूर्य का प्रतिबिंब होता है॥ जल विना प्रतिबिंब
की कल्पना नहीं होती॥ तैसे संवेदना कर के तुमारे विषे सृष्टि की रचना होती है॥ अ
ज्ञानी कों तुम सृष्टि कर्ता भासते हो॥ तुम ज्यों के त्यों सदा निष्काम स्वरूप हो॥ हे भगवन तु
म कों शरीर आदिकों की प्रापत अरु त्याग विषे राग द्वेष कछु नहीं॥ उत्पत्ति अरु संहार
कों तुमारे विषे कल्पना कछु नहीं॥ लीला मात्र तुम तें सृष्टि होती है॥ जैसे सूर्य कर के
दिन होता है॥ अरु सूर्य ही कर के दिन की लय होती है॥ अरु सूर्य असंसक्त रूप है॥ तैसे
तुमारे विषे संवेदन के फुरणे कर सृष्टि होती है॥ संवेदन के अफुरणे हूए सृष्टि की ल
य होती है अरु तुम सदा असंसक्त रूप हो॥ अरु जगत की रचना तुमारा नित्य कर्म है॥
नित्य कर्म को त्याग कीये तुम कों कछु अपूर्व वस्तु भी प्रापत नहीं होती॥ तातें तो कछु
तुमारा नित्य कर्म है॥ सो तुम करो॥ हे जगत पति महापुरुष जो होते हैं॥ सो जो कछु
उन कों प्रापत होता है॥ तिस यथा प्रापत विषे असंसक्त होइ कर वरतते हैं॥ कार्य कों क
रते हैं॥ जैसे निष्कलंक दर्पण प्रतिबिंब कों अंगीकार करते हैं तैसे महापुरुष यथा
प्राप्त कों असंसक्त होइ कर अंगीकार करते हैं॥ जैसे ज्ञानवान कों कर्म करणे विषे कछु
प्रयोजन नहीं॥ तैसे तिस कों अकरणे विषे भी कछु प्रयोजन नहीं॥ करणा अकरणा दो
नो तिस कों सम है॥ इस कारणतें दोनों तें स्वच्छ रूप होता है॥ हे भगवन तुम तो सदा
स्वच्छ रूप है॥ तुम कों उत्थान किसी प्रकार नाहीं॥ तातें तुम स्वच्छ प्रबोध होइ कर अ
पणे प्रकृत आचार कों करो॥ जो इंदु ब्राह्मण के पुत्रों की सृष्टि कों देखा॥ तब भी विरुद्ध
कछु नहीं॥ तो ज्ञान दृष्ट कर देखा॥ तब एक ही अद्वितीय है ब्रह्म॥ अरु कछु वर्णया न
हीं॥ अरु जो चित्त दृष्ट कर के देखा॥ तब संकल्प रूप अनेक सृष्टां पडी यां फुरती यां॥
हैं॥ तिन विषे स्याक रणी क्या है॥ अरु जो चर्म दृष्ट कर के देखा॥ तो तुमारी सृष्टि विषे॥
उन की सृष्टि भासती ही नहीं॥ उन के साथ तुमारा क्या है॥ उन की सृष्टि उन ही के चि
त्त विषे स्थित है॥ अरु उन की सृष्टि कों तुम नाश भी न कर सको गे॥ काहे तें जो कछु क
र्म इंद्रियां साधक सिद्ध होता है॥ तिस के नाश करणे कों भी समर्थ होवीता है॥ पर मन के
निश्चे कों नाश नहीं कर सकीता॥ हे भगवन जो निश्चा जिस के चित्त विषे दृढ होगया
है॥ तिस कों उही निवर्त करे॥ तब निवर्त होता है॥ और कोऊ निवारणे कों समर्थ नहीं॥
होता॥ जो चिरकाल का निश्चे दृढ हो रहा है॥ तिस का स्वरूप तें नाश नहीं होता देह न
ष्ट होता है॥ पर निश्चे नष्ट नहीं होता॥ हे भगवन जो मन विषे दृढ निश्चा हो रहा है॥

सोई पुरुष का रूप है॥ तिस का निश्चा और किसी कर नाश नहीं होता॥ जैसे जल के सेच
ण कर के पर्वत नहीं चलाइमान होता॥ तैसे चित्त का निश्चा और कर नहीं चलाइमान॥
होता॥ इसी कारणतें कहा है जो सृष्टां उन के चित्त विषे दृढ हो रहे हैं॥ उन का नाश नहीं हो
ता॥ इति ऐंदव निश्चय कथनं नाम सर्गः॥ ६२॥ हे रिखों भानुरुवाच
है देवेश इस पर एक पूर्व इतिहास हूया है॥ सो तुम श्रवण करो॥ एक इंद्रद्युम्न नाम रा
जा था॥ तिस की कमल नयनी इस्त्री थी॥ तिस का नाम अहिल्या था॥ तिस के नगर वि
षे इंद्र नामा एक पुरुष था॥ अरु ब्राह्मण का पुत्र था॥ बहुत सुंदर था अरु बडा बुधवान था
अहिल्या राजे की पटराणी थी॥ तब तिस राणी पूर्व अहिल्या गोतम की इस्त्री अरु इंद्र
की कथा सुणी॥ तब एक सहेली कहा॥ हे राणी जैसे पूर्व अहिल्या थी तैसे तूं है॥ अरु
जैसा उह इंद्र था सुंदर॥ तैसा तुमारे नगर विषे भी एक इंद्र ब्राह्मण है॥ हे भगवन जब इस प्र
कार राणी सुणाया॥ तब उस विषे राणी का अनुराग हूया॥ पर उह उस कों प्रापत न हो
वे॥ राणी का शरीर इसी कारणतें सूकता जावे॥ तब राजे सुणाया जो उस कों गर्मी का क
ष्ट रोग है॥ तिस के निवारणे अर्थ मिष्ट अरु केले के पत्र और शीतल औषध तिस कों देव
ता॥ पर उस कों वांछित पदार्थ कोऊ न दृष्ट आवे॥ खान पान सिहजा आदि कछु उही यो॥
के वांछित पदार्थ है॥ सो तिस कों सुखरूप कोऊ न भासे॥ उह दिन दिन विषे पीत वर्ण॥
होती जावे॥ अरु इंद्र के वियोग कर के पडी तडफे॥ जैसे मछली जल विना मारूथल वि
षे तडफे॥ तैसे उह तडफती रहे॥ कहे हाय इंद्र हाय इंद्र ऐसे विरलाप करती रहे॥ लो
कलाज कों त्याग दीया॥ उस इंद्र विषे बहुत स्नेह बध गया॥ तब विचार कर एक सखी
कहा॥ हे राणी जी मैं इंद्र ब्राह्मण कों ले आवती हों॥ जब इस प्रकार सखी कहा॥ तब रा
णी सावधान होइ आई॥ जैसे चंद्रमा कों देख कर कमलनीयां खिड आवतीयां है॥ तैसे उस
के घाहू कर राणी खिड आई॥ तब उह सखी ब्राह्मण के घर विषे गई॥ उस इंद्र कों प्रबोध कर
के रात्र के समे अहिल्या के पास ले आई॥ तब गोप स्थान विषे एक दे भए॥ तहां परस्पर उ
न लीला चेष्टा करी॥ अरु दोनों का चित्त परस्पर स्नेह कर बंधमान भया॥ अरु बहुत प्र
सन्न भी भए॥ जैसे चकवी अरु चकवे का स्नेह होता है॥ तैसे उन का स्नेह भया॥ एक दूसरे
विना एक छिण भी रह न सके॥ और सभ कुछ या उन की निवर्त हो गई॥ लज्जा भी दूर हो
गई जैसे चंद्रमा कों देख कर चंद्रमुखी कमल प्रसन्न होता है॥ तैसे एक दूसरे कों देख कर
उह प्रसन्न होवे॥ हे भगवन ब्रह्मा जो उस राणी का भर्ता भी बडा गुणवान था॥ पर राणी
भर्ता का त्याग कीया॥ अरु इंद्र साथ उस का परस्पर स्नेह भया॥ जब राजे इन का सं
वृत्तांत श्रवण कीया॥ तब बल कर इन कों दंड ताडना करावणे लागा॥ पर उन कों
खेद कछु न होवे॥ जब चिकड विषे उन कों डारा॥ तब कमल की न्याई ऊपर ही रहे॥ कष्ट
कछु न पावे॥ बहुर बरफ विषे उन कों डार दीया॥ तो भी खेदवान न हूए॥ तब राजे क
हा वे दुर्मती यो तुम कों खेद कछु नहीं होता॥ उह कहे हम कों दुख कैसे होवे॥ हम
नो आप कों भी नहीं जाणते॥ अहिल्या कहे मुझ कों सभ इंद्र ही भासता है॥ भिन्न दुख
कहा होवे॥ इंद्र कहे मुझ कों सभ अहिल्या ही भासती है॥ भिन्न दुख कहा होवे॥ तेरे दंड
करणे कर हम कों कछु नहीं होता॥ परस्पर हम मह धमान है॥ तब राजे उन कों बंध
डारया॥ बहुर अग्नि विषे डार दीया॥ तो भी जल ने नाहीं॥ बहुर हस्ती के चरणों तले डा
र दीया॥ तो भी कष्ट कछु न भया॥ तब राजे कहा रे पापीयो तुम कों अभिप्रादि कों क
र दुख क्यों नहीं होता॥ तब इंद्र कहा हे राजन जो कछु जगत जाल है॥ सो मन विषे स्थि
त है॥ अरु जैसा मन है तैसा रूप पुरुष है॥ जैसा निश्चा मन विषे दृढ होता है॥ तिस
के दूर करणे कों कोऊ समर्थ नहीं॥ जे तें भावे तें तें दंड दे हम कों दुख कछु नहीं हो
ता॥ काहे तें जो हम मोर हृदे विषे परस्पर प्रतिभा हो रही है॥ जो कोऊ हम कों अनिष्ट
होवे॥ तब दुख भी होवे॥ अनिष्ट कछु नहीं दुख कैसे होवे॥ हे राजन जो कछु मन विषे
दृढ हो रहा होता है॥ सोई प्रत्यक्ष भासता है॥ तिस का निश्चा दूर कोऊ नहीं कर सकता॥ ध॥

रोधनष्टहोजाताहै॥ परमनकानिश्चानाशनहींहोता॥ हेराजनजेमनविषेतीव्रसंवेगहोताहै॥ सोवरश्रुरुशापकरभीदूरनहींहोता॥ जैसेसुमेरपर्वतकोंमंदमंदवायुनहींचलाइसकती॥ तैसेमनकेनिश्चेकोंकोऊनहींचलाइसकता॥ इसीकारणानेकहाहै॥ जोमेरेहृदेविषेइसकीमूर्तिस्थिरभईहै॥ इसकेहृदेविषेमेरीमूर्तिस्थिरभईहै॥ इसकोंसभजगततसेंहीभासताहै॥ अरुमुझकोंसभजगतइहीभासतीहै॥ जोकछुहमकोंहसरापसेनवडपभीहोवै॥ जैसेलोहेकेकोटिविषेदेवीभगवतीहोवे तिसकेउपदेवणकोंसमर्थकोऊनहीं॥ तैसेमुझकोंदुखकोऊनहीं॥ जहांमैंजाहों॥ तहांसर्वओरतेमुझकोंअहल्याप्रशीभासतीहै॥ तातेंदुखकोऊनहीं॥ जैसेज्येष्ठआषाढकीवर्षाविषेपर्वततपायमाननहींहोता॥ तैसेहमकोंदुखकोऊनहींहोता॥ हेराजनमनकानामअहल्याहै॥ अरुमनहीकानामइंद्रहै॥ अरुमनहीसभजगतरचाहै जैसाजैसामनविषेदृढनिश्चाहोताहै॥ तैसाहीभासताहै॥ सुमेरुकीन्याईस्थिरहोजाताहै॥ नष्टनहींहोता॥ जैसेपत्रफूलटासकेकाटेतेंवृक्षनष्टनहींहोता जववीजनहींनष्टहोवे॥ तववृक्षनष्टहोताहै॥ तैसेसरीरकेनष्टहूएतेंमनकानिश्चानष्टनहींहोता जवमनकानिश्चाहीउलटपडे तवहीदूरहोताहै॥ एकशरीरजवनष्टभीहोताहै॥ तवऔरशरीरधारलेताहै॥ जैसेस्वप्नविषेइहशरीरपडारहताहै॥ औरशरीरधारकरपडा चेष्टाकरताहै॥ तोशरीरकेअधीनक्याहूया॥ तैसेशरीरकेनष्टहूए मनकानिश्चानहींदूरहोता॥ जवमननष्टहोवे॥ तवशरीरकेहोतेभी॥ कछुक्रयासिद्धनहींहोती॥ तातेंसभकावीजमनहै॥ जैसाचित्तहै॥ तैसाइरूपरूपहै॥ तातेंजहांमैंजाताहों तहांसर्वओरतेंराणीभासतीहै॥ मुझकोंदुखकैसाहोवे इतिश्रीकृत्रिमैंदवाकंनाममसर्गः॥ ६६॥ सानुरुवाच॥ हेभगवनइसप्रकारजवइंद्रब्राह्मणकहा॥ तवकमलनयनराजेकेसमीपजोभरतनाममुनीश्वरवैठाथा॥ तिसकोंराजाकहतभया॥ हेसर्वधर्मीकेवेताभरतमुनीश्वरतुमदेखो॥ इहकैसादीढपापात्माहै जैसाइनकापापहै॥ तिसकेअनुसारइनकोंश्रापदेवो॥ जोइहमरजावै॥ जोमारणेयोगनहोवे॥ तिसकोराजामारे॥ तवराजाकोंपापहोताहै॥ जैसेतिसकोंमारेतेंपापहोताहै॥ तैसेपापीकेनमारणेतेंभीपापहोताहै॥ तातेंइहोपापीयोंसापदेवो॥ जोइहनष्टहोजावे॥ हेभगवनजवइसप्रकारराजाशाइेलकहा॥ तवभरतमुनितेतिनकेपापोंकाविचारकरकहा॥ अरेपापीयोंतुममरजावो॥ जवइसप्रकारमुनीश्वरकहा॥ तवइंद्रनेकहा॥ हेमुनीश्वरतेनेअपनातपखीनकीयाहैवृथा॥ हमारामनकानिश्चयनहींदूरकरसका॥ एहस्थूलशरीरअस्थिरस्वभावहै तिसकोतेराशापलगेगा॥ एहकर॥ तवदोनोंपृथिवीपरगिरपडे॥ जैसेमूलकेकाटेतेंवृक्षगिरपडताहै॥ तैसेउहगिरपडे॥ अरुवासनासंयुक्तजोथेतिसकरदोसृगभए॥ तहांभीपरस्परस्नेहविषेरहे॥ वहुरतिसदेहकोंत्यागकरपंषीजन्मकोंपाया॥ हेब्रह्माजीतिसदेहकोंभीत्यागकीया॥ अवइहमारीसृष्टविषेतपकरिपुन्यवानब्राह्मणअरुब्राह्मणीभएहै॥ तातेंतुमदेखो जोभरतमुनिभीश्रापदीया तवउनकेशरीरनष्टहूए॥ परमनकाजोकछुनिश्चाथा॥ सोनष्टनभया जहांशरीरपावे॥ तहांदोनोंएकठोरहे॥ आपसमोंअकृतमप्रेमवानभए॥ जोऔरकिसीकरआनंदमाननहोवे॥ इतिकृत्रिमेंद्राहल्यानुरागोनामसर्गः॥ ॥ ॥ ओंभानुरुवाच हेनाथहृदेषजोजैसामनकानिश्चाहोताहै॥ तिसकेअनुसारआगेभासताहै॥ इंद्रकेपुत्रोंकीसृष्टिवनमनकेनिश्चेकोंदूरकरनहींसकीता॥ हेजगतकेपतिमनहीजगतकाकर्ताहै॥ अरुमनहीपुरुषहै॥ मनकाकीयाहोताहै॥ शरीरकाकीयाकार्यनहींहोता॥ जोमनविषेदृढनिश्चाहोताहै॥ सोकिसीऔषधकरकेदूरनहींहोता॥ अरुशापकरभीकिसीसेंदूरनहींहोता॥ जैसेमणिविषेप्रतिविंवहोताहै॥ सोमणिकेउदाएविनाप्रतिविंवदूरनहींहोता॥ तैसेमनकानिश्चाकिसीऔरकरदूरनहींहोता॥ जवमनहीउलटेतवदूरहोवे॥ इसकारणतेंकहाहै॥ जोअनेकसृष्टोंकेभ्रमवि

विषस्थितहै॥ तातेंहेब्रह्माजीतुमभीचिदाकाशविषेसृष्टिकोंरचो॥ हेनाथतीनआकाशहै॥ एकभूताकाशहै॥ एकचित्ताकाशहै॥ तीसराचिदाकाशहै॥ सोतीनोंअनंतहैं॥ इनकाअंतकहूंनहीं॥ भूताकाशजोहै॥ सोचित्ताकाशकेआश्रयस्थितहै॥ अरुचित्ताकाशचिदाकाशकेआश्रयस्थितहै॥ भूताकाशअरुचित्ताकाशइहदोनोंचिदाकाशकेआश्रयप्रकाशतेहै॥ तातेंचिदाकाशकेआश्रयजेतीतुमारीइच्छाहोवै॥ तेतीसृष्टितुमभीरचो॥ इहब्राह्मणकेपुत्रोंनेमायाकल्पीयाहै॥ अपणानिश्चकरतेतुमसभीकरो॥ ब्रह्मोवाच॥ हेवसिष्ठजीइसप्रकारजवसूर्यमुझकोंकहा॥ जोसभजगतजालमनतेंउठेहै॥ तवमैंविचारकरकेकहा॥ हेभानुतुमसत्यवचनकहेहै॥ जोएकभूताकाशहै॥ एकचित्ताकाशहै॥ एकचिदाकाशहै॥ सोतीनोंअनंतहै॥ अरुभूताकाशचित्ताकाशचिदाकाशकेआश्रेहीफुरतेहै॥ तातेंहमभीअपणेनित्तकर्मकोंअवकरतेहै॥ अरुजोकछुमैंतुमकोंकहताहों॥ सोतुमभीसुनो॥ मेरीसृष्टिकेतुमस्वयंभूमनुप्रजापतिहोवो जैसेतुमारीइच्छाहोवैतैसेरचो॥ अरुजवमैंकहा॥ तवसूर्यमेरीआज्ञामानकरअपणेदोशरीरकीये॥ एकतोपूर्वलासूर्यकारूपकीया॥ उसकरसूर्यहूया॥ अरुदूसराशरीरउसस्वयंभूमनकाकीया॥ हेवसिष्ठजीमेरीआज्ञाकेअनुसारउसनेसृष्टिरची॥ तातेंमैंतुमकोंकहाहै॥ जोइहजगतसभमनकारचाहूयाहै॥ जोमनविषेदृढनिश्चाहोताहै॥ सोईसफलहोताहै॥ जैसेइंदुब्राह्मणकेपुत्रोंकीयांसृष्टांहै॥ हेमुनीश्वरदेहकेनष्टहूएभीमनकानिश्चादूरनहींहोता॥ चित्तविषेउहीभासतआवताहै॥ सोचित्तआत्माकाचेतनरूपहै॥ जैसेतिसविषेफुरणाहोताहै॥ तैसाहीभासताहै॥ प्रथमजोइहइसचिनरूपविषेउत्थानहूयाहै॥ सोआतिवाहकशरीरहै॥ वहुरजवउसविषेदृढअभ्यासहूयाहै॥ अरुस्वरूपकाप्रमादहूयाहै॥ तवअधिभूतकशरीरहोयाहै॥ जवअधिभूतककाअभिमानभीभया॥ तवइसकानामजीवहूया॥ देहअभिमानकरनानाप्रकारकीयांवासनाहोतीयांहै॥ तिनकेअनुसारखटीयभकीन्याईपदाभटकताहै॥ तववहुरआत्माकावोधहोताहै॥ तवदेहतेंआदिलेकरसभदृश्यशांतहोजातीहै॥ हेमुनीश्वरजेतीकछुदृश्यभासतीहै॥ सोभ्रमकरकेभासतीहै॥ वास्तवतेंनकोऊभयाहै॥ नकोऊजगतहै॥ इहसभभ्रमचित्तकररचाहै॥ वसिष्ठजीओरदेहनकछुउपजयानहीं॥ चित्तकेफुरणेकरकेअहंत्वआदिकभ्रमभासताहै॥ जैसेइंदुब्राह्मणकेपुत्रमनकेनिश्चेकरब्रह्मारूपहोतभये॥ तैसेमैंब्रह्माहोसत्यआत्माविषेचेतनताहोतीहै॥ साईचेतनताब्रह्मरूपहोइकरस्थितहोतीहै॥ सत्यआत्माविषेजोचेतनताहोतीहै॥ सोईमनरूपहै॥ तिसमनकेसंयोगकरचेतनकोजीवकहीताहै॥ जवइसविषेजीवत्वहोताहै॥ तवअपणीदेहकोदेखताहै॥ वहुरनानाप्रकारकेजगतभ्रमकोदेखताहै॥ जैसेब्राह्मणकेपुत्रोंकीयांसृष्टांहूईयां॥ तैसेइहजगतभीहै॥ जैसेभ्रमकरआकाशविषेदूसराचंद्रमाभासताहै॥ जैसेजेवडीविषेसर्पभासताहै॥ तैसेइहजगतभासताहै॥ जोजगतसत्तनहीं॥ अरुअसत्तभीनहीं॥ प्रतक्षदेखणेकरसत्तभासताहै॥ अरुनाशीभावकरअसत्तहै॥ सोसभमनविषेपडाभ्रताहै॥ अरुमनकेदोरूपहै॥ एकजडरूपहै॥ दूसराचेतन्यरूपहै॥ जडरूपमनकादृश्यहै॥ अरुचेतन्यमनकोब्रह्महै॥ जवदृश्यकोऔरफुरताहै॥ तवदृश्यरूपहोताहै॥ अरुजवचेतन्यभावकीओरस्थितहोताहै॥ तवजडभावदृश्यरूपइसकानष्टहोजाताहै॥ जैसेसूर्यकेजागणेतेंभूषणभावनष्टहोजाताहै॥ अरुजवजडभावविषेफुरताहै॥ तवनानाप्रकारकेजगतकोंदेखताहै॥ वास्तवतेंब्रह्माआदिकतृणपर्यंतसभचेतन्यहीरूपहै॥ जडकछुनहीं॥ जडतिसकोकहीताहै॥ जोअभावरूपहोवे॥ जैसेलकडीविषेचित्तनहींभासता॥ अरुप्राणधारीयोंविषेचित्तभासताहै॥ परस्वरूपतेंदोनोंतुल्यहैकारतेंजोसभपरमात्माकरकेप्रकाशतेहै॥ जडअरुचेतन्यकाविभागअवाच्यब्रह्मविषेनाहीपाईता॥ जैसेसमाइस्थलविषेवल्लीनाहीपाईती॥ तैसेब्रह्मविषेजडचेतन्यकाभ्र

हइ अर्थ नहीं पाईता ॥ हे मुनीश्वर ब्रह्म विषे चेतनता भई सो मन भया ॥ तिस मन विषे जो
चेतन्य भाग है ॥ सो ब्रह्म है ॥ अरु जड भाग है ॥ सो अबोध है जब अबोध भाव होता है ॥ तब दृ
श्य रूप को देषता है जब चेतन्य भाग विषे स्थित होता है ॥ तब सद्रूप स्थित होता है ॥
हे मुनीश्वर चेतन्य मात्र विषे अहंकार उत्थान दृश्य पड़ा है ॥ अरु परमार्थ ते कछु भेद नहीं ॥ जै
से तरंग जल ते भिन्न नहीं होता ॥ तैसे अहं चेतन मात्र ते भिन्न नहीं ॥ सर्व को अहं प्रतीत
ब्रह्म ही विषे होती है ॥ सो परमपद है ॥ सम दृष्टिवानो ते रहित है ॥ सोई स्वच्छ चित्त जीव चेतन्य
भाव को चेतता है ॥ तब जड भाव को देषता है जैसे स्वप्न विषे कोऊ अपणा मरणा देष
ता है ॥ तैसे उह चित्त जड भाव को देषता है ॥ सो आत्मा सर्व शक्ति है ॥ कर्ता है तो भी कछु न
ही करता ॥ तिसके समान अरु कछु नहीं ॥ काहे ते जो और कछु वस्तु है नहीं ॥ हे मुनीश्वर
इह जगत कछु वास्तव ते उपज्या नहीं ॥ चित्त के फुरणे कर के पड़ा भासता है ॥ जब चि
त का फुरणा होता है ॥ तब जगत जाल भासते हैं ॥ जब चेतन्य भाग आत्मा विषे स्थित
होता है ॥ तब मन का जड भाग नहीं रहता ॥ जैसे पारसमणि के मिलापते तांबा स्वर्ण
हो जाता है ॥ वहुड़ तांबा भाव तिसका नहीं रहता ॥ तैसे जब मन चेतन्य आत्मा विषे स्थि
त होता है ॥ तब मन की जडता रूप भाव नहीं रहता ॥ अरु जैसे स्वर्ण को शोधन क
रीता है ॥ तब मैल जल जाता है ॥ शुद्ध ही शेष रहता है ॥ तैसे जब चित्त आत्मा विषे स्थि
त होता है ॥ तब जड भाग इसका जल जाता है ॥ शुद्ध चेतन्य भाग शेष रहता है ॥ अरु
वास्तव ते पूछे तो शोधन भी है न विषे होता है ॥ आत्मा विषे है तो कछु नहीं ॥ ताते शोधन
कैसे होवे ॥ जैसे आकाश के फूल हैं तो वास्तव कछु नहीं ॥ तैसे शोधन भी वास्तव नहीं ॥
हे मुनीश्वर जब लग आत्मा का अज्ञान है ॥ तब लग नाना प्रकार का जगत भासता है ॥ ज
ब आत्मा का बोध होता है ॥ तब जगत भ्रम नष्ट हो जाता है ॥ इह जगत चित्त विषे स्थित
है ॥ जैसा जैसा निश्चा चित्त विषे दृढ होता है ॥ तैसा ही होइ भासता है ॥ इस ऊपर अरु इत्या
अरु इंद्र का इतिहास कहा है ॥ ताते जैसी भावना दृढ होती है ॥ तैसा तैसा होइ भासता है ॥ हे
वसिष्ठ जी जिसको इही भावना दृढ है ॥ जो मैं देह हौं ॥ सो पुरुष जो कछु चेष्टा करता है
सो देह के निमित्त करता है ॥ तिस कारण ते वहुत काल पर्यंत कष्ट पावता है ॥ जैसे बाल
क वेताल की कल्पना करता है ॥ तिसकर आपही भय पावता है ॥ तैसे देह विषे अभिमा
न करके पुरुष भय पावता है ॥ तैसे देह विषे अभिमान करके पुरुष दुःख पावता है ॥ अ
रु जिसको देह भावना निवर्त भई है ॥ अरु शुद्ध चेतन्य विषे स्थित पाई है ॥ तिसको दे
ह आदिक जगत भ्रम शांत हो जाता है ॥ इति जीवावतार कमोपदेशो नाम सर्गः ॥ ६ ॥
वसिष्ठ उवाच ॥ हे रामचंद्र जब इस प्रकार ब्रह्मा जी मुझको कहा ॥ तब मैं वहुड प्रश्न कीया
जो हे भगवन तुम मोको कहा ॥ जो शाप मंत्र आदिकों का वल होता है ॥ सो सर्व शाप भी असिद्ध
रूप है ॥ मिटता नहीं ॥ सो मैं ऐसे भी देष्या है ॥ जो सराप करके मन [illegible] भी जड़ी
भूत हो जाती यां है ऐसे तो नहीं जो देह को सराप होवे ॥ अरु [illegible] न होवे ॥ हे भगव
न मन अरु देह ते अनन्य रूप है ॥ जैसे वायु अरु स्पंद [illegible] भेद नहीं ॥ जैसे [illegible]
कनाई विषे भेद नहीं ॥ तैसे मन अरु देह विषे भेद नहीं ॥ अरु जो क[illegible]
रूप नहीं ॥ चित्त ही चित्त है ॥ देह भी चित्त विषे कल्पत है ॥ जैसे [illegible]
मृगतृष्णा का जल होता है ॥ जैसे दूसरा चंद्रमा भासता है ॥ [illegible] ॥ जैसे
कुं नहीं नष्ट हो जाते ॥ तैसे देह के सराप कर चाहीये ॥ जो मन को भी सराप लाग जावे
सो मैं देष्या है ॥ जो सराप कर भी जड़ी भूत हो गए ॥ अरु तुम कहते हो जो देह का कर्म म
न को नहीं लागता ॥ सो कैसे जानीये ॥ ब्रह्मोवाच ॥ हे मुनीश्वर ऐसा पदार्थ जगत विषे
कोऊ नहीं ॥ जो सर्व कर्म को त्याग करके पुरुष रूप पुरुषार्थ कीये ते सिद्ध न होवे ॥ पुरु
षार्थ कीये ते सब कछु होता है ॥ ब्रह्मा आदि कीटी पर्यंत जिस जिसकी भावना होती
है ॥ तैसा रूप होइ भासता है ॥ अरु सर्व जगत के दो शरीर हैं ॥ एक मन रूपी शरीर है ॥ सो
चंचल रूप है ॥ अरु दूसरा अधिभूतक मांसमय शरीर है ॥ जो मांसमय शरीर है ॥ ति

स का कीया कार्य निष्फल है ॥ अरु जो मन करके चेष्टा होती है ॥ सो सफल होती है ॥ हे
मुनीश्वर जिस पुरुष को मांसमय शरीर विषे अहंभाव है ॥ तिसको आधि व्याधि अरु सरा
प भी अवश्य लागता है ॥ अरु मांसमय शरीर जो मूक है ॥ अरु तुच्छ है ॥ अरु दीन है ॥ अरु
क्षणनाशी है ॥ इस साथ जिसका संयोग है ॥ सो दीन नहीं रहता है ॥ अरु चित्त रूपी शरीर चंच
ल रूप है ॥ अपणा चित्त अरु वश किसी के नहीं होता ॥ जैसे जैसे मन विषे निश्चा होता है ॥ ते
सा ही सफल होता है ॥ मांसमय का कीया सफल नहीं होता ॥ अरु जो मन विषे निश्चा है
सो ही सफल होता है ॥ हे मुनीश्वर जिनो पुरुषों चित्त को आत्मपद विषे स्थित कीया है ॥ तिन
को दुःख नहीं होता ॥ अरु जल विषे पाईये तो भी डूबन नहीं होता
कों अग्नि विषे पाईये तो भी दुःख कछु नहीं होता ॥ आत्मा ही विषे स्थि
त है ॥ काहे ते जो उनका चित्त वासना स्पर्श आदिक भाव को ग्रहण नहीं करता ॥ आत्मा ही विषे स्थि
का है ते जो उनका चित्त वास स्पर्श आदिक भाव को ग्रहण नहीं करता ॥ आत्मा ही विषे स्थि
का है ॥ जो सर्व भाव को त्याग कर मन का निश्चा जिस विषे दृढ होता है ॥ सो
न होता है ॥ हे मुनीश्वर जो सर्व भाव को त्याग कर मन का निश्चा जिस विषे दृढ होता है ॥ सो
त होता है ॥ हे मुनीश्वर जो सर्व भाव को त्याग करके मन को मार ॥ अरु चित्त को परम पद विषे जोड़ ॥ जब आत्मा
ई पड़ा भासता है ॥ ताते मन साथ मन को मार ॥ अरु चित्त को परम पद विषे जोड़ ॥ जब आत्मा
विषे दृढ ही भूत होता है ॥ तब जगत के पदार्थों कर चलायमान नहीं होता ॥ जैसे इंद्र ब्राह्मण
चलायमान न भया ॥ तैसे मन आत्मा विषे स्थित हूआ चलायमान न होवेगा ॥ हे मुनीश्वर जे
साजे सा मन विषे तीव्र निश्चा होता है ॥ तिसही की सिद्धता होती है ॥ दीर्घ तपा एक विषे
स्वरूप ॥ इहु अंधे कूप विषे किसी प्रकार गिड़ पड़ा ॥ तिस अंधे कूप ही विषे मन कर यज्ञ कर
णे लागा ॥ मन विषे यज्ञ का दृढ निश्चे कीया ॥ तिस यज्ञ कर मन ही विषे देवता होइ कर
फल भोगणे लागा ॥ अरु जैसे इंद्र ब्राह्मण के पुत्र मनुष्यों के समान थे ॥ अरु मन विषे जो
ब्रह्मा की दृढ भावना करी ॥ तिसकर दश ही ब्रह्मा भए ॥ दश ही तिन अपणी अपणी सृ
ष्टि रची ॥ सो कैसी यां सृष्टि हैं ॥ जो मुझ कर भी षंडन नहीं होती थी ॥ ताते जो कछु दृढ अ
भ्यास होता है ॥ तिसका नष्ट नहीं होता ॥ और भी जो देवता महा विष्णु आदिक धीर्य मान हु
ए हैं ॥ जिनकी एक षिण भी वृत्त वास्ते चलायमान नहीं होती ॥ तिनको संसार का ता
प कोऊ नहीं स्पर्श करता ॥ जैसे कमल फूल का प्रहार सिला को फोड़ नहीं सकता ॥ तै
से धीरजवान को संसार का ताप नहीं षंडन कर सकता ॥ अरु जिसको आधि व्याधि दुष
षंडन करते हैं ॥ सो जाणीये परमार्थ दर्शन ते शून्य है ॥ हे मुनीश्वर जो पुरुष स्वरूप विषे
सावधान भए हैं ॥ तिनको दुष कोऊ नहीं स्पर्श करता ॥ स्वप्न विषे भी तिनको दुष का
अनुभव नहीं होता ॥ काहे ते जो तिनका चित्त सावधान है ॥ ताते दृढ पुरुषार्थ कर मन
के साथ मन को मार ॥ तिसकर जगत भ्रम नष्ट हो जावेगा ॥ हे मुनीश्वर जिसको स्वरू
प का प्रमाद होता है ॥ तिसको षिण विषे जगत भ्रम दृढ हो जाता है ॥ जैसे वालक को
षिण विषे वेताल भास आवता है ॥ तैसे प्रमाद कर जगत भासता है ॥ हे मुनीश्वर मन दृ
ष्टि को लाल है ॥ अरु हृतन रूपी स्तन का है ॥ तिस मन कर हृतन षिण विषे अनेक आकार धार
ती है ॥ जैसे स्तन का घटादिक अनेक आकार धारती है कलाल कर ॥ तैसे निश्चे के अनुसा
र हृतन अनेक आकारों को पावती है ॥ जैसे सूर्य विषे उल्लू आदिक भावना करके अंधकार
को देषते हैं ॥ अरु किनहू को चंद्रमा की यां किरणां भी भावना कर अग्नि रूप भासती यां
हैं ॥ किनहू को विष विषे अमृत की भावना होती है ॥ तिनको विष भी अमृत होइ भासती
है ॥ इसी प्रकार कटु अरु अमल लवण भी भावना के अनुसार भासता है ॥ जैसा मन
विषे निश्चा होता है ॥ तैसा ही इसको भासता है ॥ मन रूपी वाजीगर है ॥ जैसी रचना चाह
ता है ॥ तैसी रच लेता है ॥ अरु मन का रचा हूआ जगत है ॥ सो सत नहीं ॥ अरु असत भी न
हीं ॥ असत भास ते कर सत है ॥ असत ना हीं ॥ अरु नष्ट भाव ते असत है ॥ सत नाहीं ॥ अ
रु सत असत रूप भी मन कर के पड़ा फुरता है ॥ वास्तव कछु नहीं ॥ इति मनो महात्म्य व
र्णनं नाम सर्गः ॥ ७ ॥ वसिष्ठ उवाच ॥
हे रामचंद्र इस प्रकार प्रथम ब्रह्मा जी मुझको कहा था ॥ सो मैं अब तुझको कहा है ॥ जो
प्रथम ब्रह्म अग्राह्य पद स्थित था ॥ तिस विषे चित्त हूआ ॥ अर्थ यह जो अहं अस्मि चेतन्य
ता का लक्षण हूआ ॥ तिसको जब दृढता हुई ॥ तब मन हूआ ॥ तिस मन पंच तन्मात्रा की

कल्पनाकरी॥ सोतेजआकारब्रह्मापरमेष्टीकहीताहै॥ हेरामचंद्र ब्रह्माजीमनरूपहै॥
अरुमनहीब्रह्मरूपहै॥ तिसकाइपसंकल्पहै॥ वहुइआगेजैसासंकल्पकरताहै॥ तैसा
होताहै॥ तिसब्रह्मानेएकअविद्याशक्तिकल्पीहै॥ अनात्माविषेआत्मअभिमानकर
णाइसकानामअविद्याहै॥ वहुइअविद्याकीनिवर्तकविद्याकल्पी॥ इसप्रकारपहाड़
त्रिणजलसमुद्रस्थावरअरुजंगमसंपूर्णजगतकोंउत्पत्तिकीया॥ इसप्रकारब्रह्माहू
या॥ अरुइसप्रकारजगतहूया॥ जैसेतुफकोंकहा॥ सोजगतकैसेउपजताहै॥ अरुकैसे
मिटताहै॥ श्रवणकर॥ जैसेसमुद्रविषेतरंगउपजताहै॥ अरुसमुद्रविषेलीनहोता
है॥ तैसेसंपूर्णजगतब्रह्मविषेउपजताहै॥ अरुब्रह्महीविषेलीनहोताहै॥ हेरामचं
द्रस्वथआत्मसत्ताविषेजोअहंकारलेषहूयाहै॥ सोमनहै॥ अरुसोईब्रह्माहै॥ तिसनेना
प्रकारकाजगतरचाहै॥ सोसर्वविषेचित्तशक्तिपसरीहै॥ सोचित्तकेफुरणेकरना
नाभासतीहै॥ हेरामचंद्रजेतेकछुजीवहै॥ तिनसर्वोविषेआत्मसत्ताहीअस्थितहै॥ पर
अपणेस्वरूपकेप्रमादकरकेपड़ेभटकतेहै॥ जैसेकर्मरूपीवायुकरकेवनगिरकीया
कुंजाविषेसूकेपातभटकतेहै॥ तैसेकर्मरूपीवायुकरजीवपड़ेभटकतेहै॥ अधःअरुऊ
र्धविषेघटीयत्रकीन्याईअनेकजन्मोंकोंधारतेहै॥ जवकाकतालवतसतसंगकीप्राप्त
होवे॥ अरुअपणापुरुषार्थकरेतवमुक्तहोतेहै॥ इसकोंजवलगप्राप्तनहीभई॥ तवलू
लगकर्मरूपीजेवडीसाथवंधेहूए॥ अनेकजन्मोंविषेभटकतेहै॥ जवज्ञानकीप्राप्तहूये
तवहीइसभ्रमतेछूटे॥ अन्यथानछूटे॥ हेरामचंद्रइसप्रकारब्रह्मतेजीवउपजतेहै॥ अ
अरुमिटतेहै॥ अनंतसंकटोंकाकारणवासनाहै॥ वासनाहीनानाप्रकारकेभ्रमकोंदि
षावतीहै॥ अरुजगतरूपीवनकीजन्मोरूपीवली॥ वासनाजलकरकेवदतीहै॥ जव
सम्यक्ज्ञानप्राप्तहोवे॥ सोईभयाकुदारा॥ तिसकरइसकोकाटे॥ तवमनविषेवा
सनाकाक्षोभमिटै॥ तवशरीररूपीअंकुरमनरूपीवीजतेउपजेनही॥ जैसेभुन्यावीज
अंकुरनहीलेता॥ तैसेवासनातेरहतमनशरीरकोंनहीधारता॥ इति उत्पत्ति दर्शनेना
मसर्गः॥ ६७॥ ॥ ॐवसिष्ठउवाच॥ हे
रामचंद्रजेतेकछुदृश्यतजातहै॥ सोब्रह्मतेउपजतेहै॥ जैसेसमुद्रतेतरंगबुदबुदेहोतेहै॥
कईवडेकईछोटेकईमध्यभावहोतेहै॥ सोसभजलहीजलहै॥ तैसेइहजीवब्रह्मतेउप
जतेहै॥ सोब्रह्महीरूपहै॥ जैसेसूर्यकीयोंकिरणविषेजलभासताहै॥ जैसेअग्नितें
चिणगारेउपजतेहै॥ तैसेब्रह्मतेंजीवउपजतेहै॥ जैसेकल्पवृक्षकीमंजरीनानारूपों
कोंधारतीहै॥ तैसेब्रह्मतेंजीवहोतेहै॥ जैसेस्वर्णतेंअनेकभूषणहोतेहै॥ तैसेब्रह्मतेंज
गतहोताहै॥ जैसेजरणेमेंजलकणकेउपजतेहै॥ तैसेपरमात्मातेंभूतउपजतेहै॥ जै
सेआकाशएकहीहै॥ तिसविषेघटमठकीउपाधकरघटाकाशमठाकाशकहीताहै॥
तैसेसंवेदनकेफुरणेकरजीवकल्पनाहोतीहै॥ जैसेजलहीद्रवताकरकेतरंगआव
र्तरूपहोइभासताहै॥ तैसेब्रह्महीसंवेदनकरकेजगतरूपभासताहै॥ द्रष्टादर्शन
दृश्यसभब्रह्मतेंउपजतेहै॥ जैसेसूर्यकेतेजकरमृगतृष्णाकीनदीभासतीहै॥ तैसेसंवे
दनकरकेब्रह्मविषेद्रष्टादर्शनदृश्यत्रिपुटीभासतीहै॥ वास्तवतेंद्रष्टादर्शनदृश्यक
ल्पनाकोऊनही॥ जैसेचंद्रमाअरुचांदनाविषेकछुभेदनही॥ जैसेसूर्यअरुप्रकाश
विषेभेदनही॥ तैसेब्रह्मअरुदृश्यविषेकछुभेदनही॥ जैसेसमुद्रविषेतरंगउपजते
है॥ अरुसमुद्रहीविषेलीनहोतेहै॥ तैसेजीवब्रह्मतेउपजतेहै॥ अरुब्रह्महीविषे
लीनहोतेहै॥ कईसहस्रजन्मोंतेंअनंतरप्राप्तहोतेहै॥ कईथोडेवहुतजन्मोंकरप्रा
प्तहोतेहै॥ हेरामचंद्रइसप्रकारकाजगतपरमात्मातेंहूयाहै॥ अरुतिसहीइच्छाअ
नुसारव्यवहारकरतेहै॥ सोईव्यवहारकीन्याईहोभासताहै॥ इतिसर्वब्रह्मप्रतिपाद
नंनामसर्गः॥ ६८॥ ॐवसिष्ठउवाच॥ हे
रामचंद्रकर्ताअरुकर्मअभिन्नरूपहै॥ अरुएकदाहीब्रह्मतेंउत्पत्तिहूएहै॥ जैसेफूल
अरुसुगंधएकठीउत्पत्तिहोतीहै॥ तैसेकर्ताअरुकर्मएकठेउत्पन्नहोएहै॥ जवजीव

सर्वसंकल्पकलनाकोंत्यागताहै॥ तवनिर्मलब्रह्मरूपहोताहै॥ जैसेआकाशविषे
नीलताभासतीहै॥ तैसेआत्माविषेजगतकल्पनाफुरतीहै॥ आत्माअद्वैतसदाअप
णेआपविषेस्थितहै॥ अरुइहअज्ञानीकेबोधउपजावणेकोंकहीताहै॥ जोजीवब्र
ह्मतेउपजतेहै॥ अरुइसप्रकारसात्विकराजसतामसगुणोंकेभेदकरस्थितहै॥ जो
ज्ञानवानहै॥ तिनोंप्रतिइहकहणाभीनाहीवणता॥ जोब्रह्मतेउपजेहै॥ तोभीइसरा
कछुनही॥ इसरेकोंअंगीकारकरकेउपदेशकरीताहै॥ वास्तवतेंब्रह्मसत्ताविषेको
ऊकल्पनानही॥ सदाअपणेआपस्वभावविषेस्थितहै॥ जोज्ञानवानहै॥ तिनकों
सदाऐसेहीप्रतक्षभासताहै॥ अरुअज्ञानीकोंहरनेहूरभासताहै॥ तिनकोंसुमेरसे
द्वाचलकीन्याईअनेराभासताहै॥ आत्माअरुजीवका॥ हेरामचंद्रपरमपदआत्माके
अज्ञानतेंजगतउपजताहै॥ अरुज्ञानकरकेआविषेहीलीनहोताहै॥ जैसेवसंतरितुः
करकेनानाप्रकारकेतोमतअंकुरप्रगटहोतेहै॥ वसंतरितकेअभावतेनष्टहोजाते
है॥ तैसेचित्तकेफुरणेकरकेजीवरासउपजतेहै॥ चित्तकेअफुररूपसभलीनहो
जातेहै॥ अरुमनअरुकर्मोविषेभेदकछुनही॥ मनअरुकर्मएकठेहीउत्पत्तिहोते
है॥ जैसेवृक्षसोंफूलअरुगंधएकठीउत्पन्नहोतीहै॥ तैसेआत्मासोंमनअरुकर्मएका
ठेहीउपजेहै॥ अरुवहुइआत्माविषेलीनहोतेहै॥ हेरामचंद्रदेवतामनुष्यदैत्यआ
दिकजेतेकछुजीवतुफकोंभासतेहै॥ सोआत्मातेउपजेहै॥ अरुवहुइआत्माहीविषेली
नहोतेहै॥ इनकाउत्पत्तिकारणअज्ञानहै॥ आत्माकेअज्ञानकरकेपड़ेभटकतेहै॥ जव
आत्मज्ञानउपजताहै॥ तवसंसारभ्रमनिवर्तहोजाताहै॥ रामउवाच॥ हेभगवनजोप
दार्थशास्त्रप्रमाणकरकेसिद्ध॥ सोइसतहै॥ अरुप्रमाणशास्त्रउहीहै॥ जिसविषेरागद्व
षतेरहितनिरणाहूया॥ अरुअमानित्वअरुअदंभित्वआदिकगुणप्रतिपादनकीये
है॥ तिससमहढकरजोउपदेशकीयाहै॥ सोपदार्थप्रमाणहै॥ तिसकेअनुसारजोविच
रतेहै॥ सोभलीउत्तमगतकोंप्राप्तहोतेहै॥ अरुजोशास्त्रप्रमाणविपरीतवरततेहै सो
भलीउत्तमगतकोंप्राप्तहोतेहैनही॥ सोअसुभगतकोंप्राप्तहोतेहै॥ अरुलोकवि
षेभीप्रसिधसुणीताहै॥ जोकर्मोंकेअनुसारजीवउपजतेहैवर्ततेहै॥ जैसेवीजतेंअं
कुरउपजताहै॥ सोजैसावीजहोताहै॥ तैसाहीतिसतेंअंकुरउपजताहै॥ जैसाजैसाकर्म
होताहै॥ तैसीगततिसकोंप्राप्तहोतीहै॥ अरुतुमकहतेहो॥ मनअरुकर्मब्रह्मतेंएक
ठेहीउत्पन्नहूएहै॥ इसपक्षकरशास्त्रकेवचनअरुलोककेवचनअप्रमाणहोतेहै॥ हेवेद
वेत्तांविषेश्रेष्ठइहसंसाहरणकोंतुमनहीजोगहो॥ जैसेसत्यहैतैसेहीकहो॥ वसिष्ठउ
वाच॥ हेरामचंद्रप्रश्नइहतुमभलाकीया॥ तिसकाउत्तरमेंतुमकोंकहताहों॥ जिसके
श्रवणकीयेतुमकोंज्ञानप्रकाशहोइआवेगा॥ हेरामचंद्रसद(?)संवित्तमात्रब्रह्मतत्ववि
षेजोसंवेदनफुरीहै॥ सोकर्मोंकाबीजमनहूयाहै॥ सोसभकाकर्मरूपहै॥ तिसबीजतें
सभफलहोतेहै॥ तातेंकर्मअरुमनविषेकछुभेदनही॥ जैसेसुगंधअरुकमलविषे
कछुभेदनही॥ तैसेमनअरुकर्मविषेकछुभेदनही॥ मनविषेसपंदहोताहै॥ सोअंकु
रकर्मज्ञानवानकहतेहै॥ हेरामचंद्रपूर्वइसकादेहमनहीहै॥ तिसमनरूपीशरीरसा
थकर्महोताहै॥ सोफलपर्यंतसिद्धहोताहै॥ मनविषेजोफुरणहोताहै॥ सोईक्रियाहै॥
अरुसोईकर्महै॥ तिसमनकरकीयाकर्मअवश्यहोताहै॥ अन्यथानहीहोता॥ ऐसा
पर्वतकोऊनही॥ नआकाशहै॥ नकोऊलोकहै॥ जिसकोंप्राप्तहोइकरकर्मतेंछूटे
जोकछुमनसंकल्पसाथकीयाहै॥ सोअवश्यमेवसिद्धहोताहै॥ पूर्वजोपुरुषप्रय
त्नकछुकीयेसोनिष्फलनहीहोता॥ अवश्यमेवतिसकोंप्राप्तहोतीहै॥ हेरामचंद्र
ब्रह्मविषेजोचेतनताहूईहै॥ सोईमनहोताहै॥ अरुमनजोहै॥ सोकर्मरूपहै॥ अरुस
र्वलोकोंकाबीजहै॥ इतरकछुनाही॥ हेरामचंद्रजवकोऊदेशतेंदेशांतरजावणल
गताहै॥ तवजावणेकासंकल्पसाथलेजाताहै॥ सोजल्पनकर्महै॥ तातेंफुरणारूप
कर्महूया॥ अरुफुरणारूपमनकाहै॥ मनअरुकर्मविषेभेदकछुनही॥ अदोभसरु

द्रूपी ब्रह्म है ॥ तिस विषे द्रवता रूपी चेतनता है ॥ अरु तिस ही का नाम मन है ॥ सो मन क
र्म रूप है ॥ जैसे जैसे मन फुरता है ॥ सोई सिद्ध होता है ॥ जो कछु मन करके कार्य करीता है
सोई सिद्ध होता है ॥ शरीर चेष्टा करी सिद्ध नही होती ॥ इसी कारण ते कहा है ॥ जो म
न अरु कर्म विषे भेद कछु नही ॥ जैसे तिल अरु तेल विषे भेद कछु नही ॥ तैसे कर्म
अरु कर्म विषे भेद कछु नही ॥ भिन्न भिन्न भासते है ॥ सो मिथ्या कल्पना मूर्ख करते है
बुधिवानन नही करते ॥ जैसे समुद्र अरु तरंगो विषे भेद मूर्ख मानते है ॥ बुधिवानों को
भेद कछु नही भासता ॥ तैसे मन अरु कर्म विषे भेद मूर्खों को भासता है ॥ बुधिवानों को
भेद कछु नही भासता ॥ तैसे मन अरु कर्म विषे भेद मूर्खों को भासता है ॥ प्रथमे परमा
त्मा सो मन अरु कर्म एक ठे ही उत्पत्ति भए है ॥ जैसे समुद्र ते तरंग द्रवता कर फुरते है ॥
तैसे चित्त के फुरणे कर कर्म आत्मा ते उपजे है ॥ जैसे तरंग समुद्र ही विषे लीन होते है
तैसे मन अरु कर्म परमात्मा विषे लीन होते है ॥ जैसे जो पदार्थ दर्पण के निकट होता
है ॥ तैसा ही प्रतिबिंब भासता है ॥ जैसे बरफ का रूप शीतलता है ॥ शीतलता बिना बर
फ नही होती है ॥ तैसे चित्त कर्म रूप है ॥ कर्मो बिना चित्त नही होता ॥ जब चित्त सो सं
दता मिट जाती है ॥ तब चित्त भी नष्ट होता है ॥ चित्त के नष्ट हूए कर्म भी नष्ट होता है ॥
अरु कर्म के नाश हूए मन का नाश होता है ॥ जो पुरुष मन ते मुक्त हूया है ॥ सोई मुक्त है
जो चित्त ते मुक्त नही हूया ॥ सो बंधन मों है ॥ एक के नाश हूए दोनों नाश होते है ॥ जैसे ना
श हूए अग्नि के उष्णता भी नाश होती है ॥ अरु जब उष्णता नाश होती है ॥ तब अग्नि भी ना
श होती है ॥ तैसे मन के नष्ट हूए कर्म भी नाश होते है ॥ अरु कर्म के नाश हूए मन भी नष्ट
होता है ॥ एक के अभाव हूए दोनों का अभाव होता ॥ कर्म रूप चित्त है ॥ अरु चित्त रूपी कर्म है
परस्पर अभेद रूप है ॥ इति कर्म बोध रूपयो रैक्य प्रतिपादनं नाम सर्गः ॥ ९८ ॥ ॥
वसिष्ठ उवाच ॥ हे रामचंद्र मन जो है ॥ सो भावना मात्र है ॥ भावना नाम है फुरणे का ॥ अरु फु
रणा क्रिया रूप है ॥ तिस क्रिया फुरणे कर सर्व फल प्राप्त होता है ॥ राम उवाच ॥ हे ब्राह्म
ण इस मन का रूप विस्तार करके कहो ॥ जड अजड रूप मन का आकार तिस को विशेष क
र कहो ॥ वसिष्ठ उवाच ॥ हे रामचंद्र आत्म तत्व अनंत रूप सर्व शक्तिमान है ॥ जब तिस वि
षे संकल्प शक्ति फुरती है ॥ तब तिस को मन होता है ॥ जड अजड के मध्य विषे दोलाय
मान होता है ॥ तिस मिश्रित रूप का नाम मन है ॥ हे रामचंद्र भाव रूप जो पदार्थ है ॥ तिन
के मध्य विषे जो सत असत का निश्चा करता है ॥ तिस का नाम मन है ॥ तिस विषे जो इह
निश्चा करणा ॥ मैं चिदानंद रूप नंद नही ॥ मैं कृपण हों देह साथ मिलकर ऐसे फुरता
है ॥ सो मन का रूप है ॥ जो कल्पना करता रहता है ॥ इस ते रहित मन नही होता ॥ जैसे
गुणी बिना गुण नही होता ॥ तैसे कर्म कल्पना बिना मन नही रहता ॥ जैसे उष्णता की
सत्ता अग्नि ते भिन्न नही पाईती ॥ तैसे कर्मो की सत्ता मन ते भिन्न नही पाईती ॥ अरु मन अ
रु आत्मा विषे कछु भेद नही ॥ हे रामचंद्र मन रूपी बीज है ॥ तिस ते संकल्प रूपी नाना प्र
कार के फूल होते है ॥ तिस कर के नाना प्रकार के शरीर होते है ॥ तिस कर जगत देखीता है
जैसी जैसी जैसी मन विषे वासना होती है ॥ तिस के अनुसार फल की प्राप्त होती है ॥ तं
तैं मन का फुरणा ही कर्मो का बीज है ॥ तिस कर जो भिन्न भिन्न क्रिया होती है ॥ सो तिस वृ
क्ष की शाखा है ॥ अरु नाना प्रकार के जगत विचित्र फल है ॥ हे रामचंद्र जिस ठौर मन का
निश्चा होता है ॥ तिसी ठौर कर्म इंद्रीयों भी प्रवर्तती यां है ॥ जो कर्म है सोई मन का फुरणा
है ॥ अरु मन ही फुरणा रूप है ॥ इसी कारण ते कहा है ॥ जो मन कर्म रूप है ॥ तिस मन की
यां पती यां संज्ञा कही है ॥ मन कहीये ॥ बुद्धि कहीये ॥ चित्त कहीये ॥ कर्म कर्म कहीये क
लना कहीये ॥ स्मृत कहीये ॥ वासना कहीये ॥ अविद्या इंद्रियों प्रयत्न प्रकृति माया इत्या
दिक कल्पना संसार का कारण है ॥ चित्त को जब चेत्यता संजोग होता है ॥ तब संसार भ्र
म होता है ॥ अरु इह जेती संज्ञा तुझ को कही यां है ॥ सो चित्त के फुरणे कर के का कता
लीं वन अरु असमान ते फुरआए है ॥ राम उवाच ॥ हे भगवन अद्वैत तत्व परम संवित

आकाश विषे एते कल्पना के से हुई यां है ॥ अरु तिन विषे अध्याइ पर ठला के से हूइ है ॥ व
सिष्ठ उवाच ॥ हे रामचंद्र शुद्ध संवित मात्र जो सत्ता है ॥ सो फुरणे की न्याई स्थित भई है ॥ ति
स का नाम मन है ॥ अरु जब उहां ते निश्चे रूप भई ॥ जो भाव अरु अभाव पदार्थों को निश्चे क
रत भई ॥ जब इह पदार्थ ऐसा है ॥ तिस हत का नाम बुद्धि है ॥ तब मिथ्या अभिमान रूप हू
या ॥ तब तिस का नाम अहंकार हूया ॥ सोई मिथ्या अहंकार ते संसार बंधन का कारण है ॥ कि
सी पदार्थ को ग्रहण करती है ॥ किसी को त्याग करती है ॥ बालक की न्याई विचार ते रहित प
ड़ी धावती है ॥ तिस का नाम चित्त है ॥ अरु इत का फुरणा कर्म है ॥ तिस फुरणे विषे फल को
आवो पकर तिस की ओर धावणा ॥ तिस का नाम कर्म है ॥ अरु सर्व जो कार्य की या होवे ॥ ति
स पदार्थ को त्याग कर तिस का संस्कार चित्त विषे धार कर स्मरण करणा ॥ तिस का नाम
स्मरते है ॥ अरु जिस पदार्थ का अनुभव होवे ॥ अरु तिस का संस्कार दृढ विषे दृढ होवे ॥ तिस
का नाम वासना है ॥ हे रामचंद्र आत्म तत्व अद्वैत है ॥ तिस विषे अविद्यमान द्वैत विद्यमान
हो कर भासता है जिस कर ॥ तिस का नाम अविद्या है ॥ अरु स्वरूप को तुलाइ कर अपणे ना
श के निमित्त प्रपंच ग्रहण करता है ॥ अरु सत् इह आत्मा विषे मिथ्या विकल्प पडे उठते है ॥ तिस
का नाम मूल अविद्या है ॥ अरु बाह्य स्पर्श रूप रस गंध इन पांचों को दिखावणहारीयां है ॥ अ
रु इह परमात्मा को दिखावनहारीयां है ॥ तिन का नाम इंद्रीयां है ॥ अरु अद्वैत तत्व आत्मा वि
षे जिस इह जाल को रचा है ॥ तिस का नाम प्रकृति कहीता है ॥ अरु सत्त को असत्त की न्या
ई दिखावती है ॥ अरु असत्त को सत्त की न्याई दिखावती है ॥ सो माया कहीती है ॥ अरु शब्द
स्पर्श रूप रस गंध इह कर्म है ॥ अरु जिस कर शब्द स्पर्श रूप रस गंध होते है ॥ सो कर्ता क
हीता है ॥ सोई कार्य कारण कहीता है ॥ अरु शुद्ध चैतन्य चेत्य भाव को प्राप्त होता है ॥ सो
कलंक की न्याई होता है ॥ तिस फुरणा हूते कर इह पर्याय कहते है ॥ जब तिस को फुरणे कर
के नाना प्रकार के संकल्प जाल उठते है ॥ तब इस को जीव कहीता है ॥ मन भी इसी का ना
म है ॥ बुद्धि भी इसी का नाम है ॥ हे रामचंद्र परमार्थ शुद्ध चित्त ही चेत्य के संयोग कर स्वरूप
ते गिरे की न्याई स्थित भया है ॥ राम उवाच ॥ हे भगवन इह मन जड है ॥ अथवा चेतन्य है ॥
एक रूप जड का निश्चय मुझ को कहो ॥ जो मेरे हृदे विषे स्थित होवे ॥ वसिष्ठ उवाच ॥ हे राम
चंद्र मन जड नही ॥ अरु चैतन्य भी नही ॥ जड चैतन्य की जो गांठ है मध्य भाव ॥ तिस का
नाम मन है ॥ अरु संकल्प विकल्प रूप मन है ॥ तिस मन ते इह जगत उत्पत्ति हूया है ॥ जड
अरु चैतन्य दोनों भावों विषे दोलायमान है ॥ अथवा इह जो कबहू जड भाव की ओर आवता
है ॥ कबहू चैतन्य भाव की ओर आवता है ॥ तिस का नाम मन है ॥ तिस मन की यां अनेक सं
ज्ञा है ॥ शुद्ध चैतन्य मात्र विषे फुरणा हूया तिस का नाम मन है ॥ तिस मन की यां अनेक
संज्ञा है ॥ मन बुद्धि चित्त अहंकार जीव आदिक अनेक संज्ञों को मन ही प्राप्त हूया है ॥ जैसे
एक नट वा स्वांगों कर के अनेक संज्ञों को पावता है ॥ जिस का स्वांग करता है ॥ तिसी का ना
म कर के होता है ॥ तैसे संकल्प कर के मन अनेक संज्ञा को पावता है ॥ तैसे पुरुष विचित्र
कर्मों कर के अनेक संज्ञा को पावता है ॥ पाठ कर पाठक कहीता है ॥ रसोई कर रसोईया
कहीता है ॥ तैसे मन संकल्पों कर अनेक संज्ञा को पावता है ॥ हे रामचंद्र इह जो मैं तुझ को
चित्त की यां अनेक संज्ञा कही यां है ॥ अन्यथा कर के बहुत प्रकार वादीयों नाम राखे है ॥ जै
सा जैसा अपणा मनु है ॥ तैसा स्वभाव लेकर मन बुद्धि इंद्रीयों को मानते है ॥ जो मन को ज
ड मानते है ॥ अरु जीव को मनन ते है ॥ भिन्न भिन्न मानते है ॥ सो मिथ्या कल्पना करते है ॥ नै
यायक कहते है ॥ सृष्टि तत्वों के सूक्ष्म परमाणों ते उपजती है ॥ जब प्रलय होती है ॥ त
ब स्थूल तत्व प्रलय होइ जाते है ॥ तिन के सूक्ष्म परमाणु रहते है ॥ बहुड उत्पत्ति काल
विषे उही सूक्ष्म परमाणु हूणे त्रिगुण आदिक होइ कर स्थूलता को प्राप्त होते है ॥
तिनों पांचों तत्वों ते सृष्टि होती है ॥ अरु सांख्य कहते है ॥ प्रकृति माया के परिणाम ते हो
ती है सृष्टि ॥ अरु चारुवाकी दृष्टि को जल तेज वायु चारों तत्वों के एकठे होणे ते सृष्टि
उपजती मानते है ॥ अरु चारों तत्वों के शरीर को पुरुष मानते है ॥ जब तत्व आपो आपवि

जाइ जाते हैं॥ तब प्रलय होती है॥ अरु जैसे मन आईन और ही प्रकार मानते हैं॥ बोध वैशेषक आ-
दिक और ओर प्रकार मानते हैं॥ पांचरात्रिक और प्रकार मानते हैं॥ परस्पर भनो सिद्धांत रूप एक
ही परम ब्रह्म आत्म तत्व है॥ जैसे एक ही स्थान के ते मार्ग होवें॥ सो अनेक मार्गों कर उस ही स्था-
न को पहुंचीता है॥ तैसे अनेक मतों का अधिष्ठान एक आत्म तत्व है॥ अरु जो भिन्न भिन्न मत-
मान कर वाद करते हैं॥ सो आत्म तत्व के अज्ञान करके करते हैं॥ सिद्धांत सभ का एक है॥ ति-
स विषे वाद को ऊ नहीं प्रवेश करता॥ हे रामचंद्र जेते कछु शास्त्रों के मत वाले हैं॥ सो अपणे-
अपणे मत की उपमा करते हैं॥ दूसरे की उपमा नहीं करते॥ जैसे मार्गों के चलणे वाले अप-
णे अपणे मार्गों की उपमा करते हैं॥ दूसरे की नहीं करते॥ तैसे मन के भिन्न भिन्न रूप कर के सो-
भी एक मन को लेकर अनेक प्रकार जगत को कहते हैं॥ एक मन ही की यां अनेक संज्ञा हूयां
हैं॥ जैसे एक पुरुष को अनेक प्रकार कहीता है॥ स्नान करणे ते स्नान करता है॥ दान करणे ते
दान करता है॥ तप करणे ते तप करता है॥ तपस्वी यां इत्यादिक क्रिया कर अनेक संज्ञा होती-
यां हैं॥ तैसे अनेक शास्त्री करि मन को ही अनेक नाम कर कहीता है॥ मन ही नाम जीव है॥ वास-
ना भी मन ही का नाम है॥ कर्म भी तिस ही का नाम है॥ हे रामचंद्र एक चित्त ही फुरणे कर के
संपूर्ण जगत हूया है॥ अरु मन ही फुरणे कर भासता है॥ जब इह पुरुष चैतन्य के फुरणे ते
रहित होता है॥ तब देखता है॥ तो भी कछु नहीं देखता॥ अरु इह प्रसिद्ध जाणीये॥ जिस पु-
रुष को शब्द स्पर्श रूप रस गंध जो हैं॥ इंद्रीयों के विषय सो इष्ट अनिष्ट विषे हर्ष शोक देते हैं॥
जो इष्ट सो विषे हर्ष होता है॥ अनिष्ट दुष्ट विषे शोक होता है॥ तिस का नाम जीव है॥ मन-
ही कर सिद्ध होते हैं॥ सर्व अर्थों का कारण मन ही है॥ जो पुरुष चैतन्य ते छूटा है॥ सो मुक्त रूप है॥
अरु जिस को चैत्य का संयोग है॥ सो बंधन सो बांधा है॥ हे रामचंद्र जो पुरुष इस मन को
केवल जड मानते हैं॥ तिन को अत्यंत जड हूं जाणा॥ अरु जो पुरुष इस मन को केवल चैत-
न्य कहते हैं॥ सो भी जड है॥ इह मन केवल जड नाहीं॥ अरु केवल जड नाहीं॥ अरु केवल-
चैतन्य भी नाहीं॥ जो एक ही रूप मन का होवे॥ तब सुघट घट आदिक विचित्रता नहीं होते
अरु जगत की लीनता भी नहीं होता॥ जो केवल चैतन्य ही रूप होवे॥ तउ जगत का का-
रण नहीं होता॥ अरु जो केवल जड ही रूप होवे॥ तब भी जगत का कारण नहीं होता॥ काहे-
ते जो केवल जड पाषाण रूप होता है॥ सो पाषाण ते कछु क्रिया उत्पन्न नहीं होती॥ तैसे के-
वल जड जगत का कारण नहीं होता॥ ताते मन केवल चैतन्य भी नाहीं॥ अरु केवल जड
भी नाहीं॥ मन चैतन्य अरु जड के मध्यभावी है॥ सोई जगत का कारण है॥ हे रामचंद्र सर्व अर्थों
का कारण मन है॥ जैसे प्रकाश पदार्थों का कारण है॥ जब लग चित्त है॥ तब लग चैत्य पद
भासता है॥ जब चित्त अचैत्य होवे॥ तब सर्व बंधन लीन हो जाते हैं॥ जैसे एक ही ज-
ल रस कर के अनेक रूप होइ भासता है॥ जैसे एक ही पदार्थ रूप होइ कर भासता है॥
अरु अनेक संज्ञा इस की यां शास्त्रों के मत वाल्यों ने कल्पीयां हैं॥ सभ का कारण मन-
ही है॥ अरु मन भी एक परमदेव परमात्मा सर्व शक्ति रूप की एक शक्ति है॥ तिस परमा-
त्मा ते इह फुरया है॥ जड भाव फुर कर वहुड तिस ही विषे लीन होता है॥ जैसे ववा हो-
आप ही सो तंतु को पसारता है॥ वहुड आप ही विषे लीन कर लेता है॥ जैसे ववा हो ते
ते तंतु उपजती है॥ तैसे परमात्मा ते जड भाव उपजते हैं॥ हे रामचंद्र नित्य शुद्ध बोध
रूप ब्रह्म है॥ सो ई जब शक्ति भाव को धारण होता है॥ तब अविद्या के वश ते नाना प्रकार के
जगत को धारता है॥ तिस ही के सर्व पर्याय होते हैं॥ जीव कहीये॥ मन कहीये॥ चित्त कहीये॥ बु-
द्ध कहीये॥ अहंकार कहीये॥ इत्यादिक संज्ञा मलन चैतन्य की यां होती यां हैं॥ तिन की सं-
ख्या भिन्न भिन्न वादी कल्पना करते हैं॥ हम को संख्या साथ क्या प्रयोजन है॥ इति श्री मनो सं-
ज्ञा विचारो नाम सर्गः॥ ६९॥
श्रीरामउवाच॥
हे भगवन इह सभ जगत अडंबर मन ही रचा है॥ अरु सभ मन ही रूप है॥ अरु मन ही के
मैं रूप है॥ अरु तुमारे कहणे कर मैं निश्चे कीया है॥ पर इस का अनुभव कैसे होवे॥ वसिष्ठ उ-
वाच॥ हे रामचंद्र इह मन भावना मात्र है॥ जैसे प्रचंड सूर्य की धुप होती है॥ सो मारूथल वि-

षे जल रूप होइ कर भासती है॥ तैसे आभास आत्मा का मन रूप होता है॥ तिस मन क-
र जेता कछु जगत भासता है॥ सो सभ मन ही रूप है॥ कहूं मन पशु रूप होइ कर स्थित
भया है॥ कहूं देवता रूप होइ कर स्थित भया है॥ कहूं दैत्य कहूं यक्ष कहूं गंधर्व रूप भया
है॥ नाग पुरुष पतन आदिक जेते कछु रूप भासते हैं॥ सो सभ मन ही कर विस्तार को-
प्राप्त भए हैं॥ सो कैसे हैं॥ चिंतामणि का दृष्टांत कल्प वृक्ष की उपमा है॥ तिन के विचार
णे कर के क्या है॥ इह सभ मन की रचना है॥ सो मन अविचारत सिद्ध है॥ विचार कीये-
ते नष्ट हो जाता है॥ मन के नष्ट हूए परमात्मा ही शेष रहता है॥ सो कैसा है सर्व पद ते-
अतीत अरु सर्व व्यापी सर्व का आश्रय भूत है॥ तिस के प्रमाद कर के मन जगत के रच-
ने को समर्थ होता है॥ इसी कारण ते कहा है॥ जो मन के मैं रूप है॥ अरु शरीरों का कारण
है॥ हे रामचंद्र जन्म मरण आदिक जेते कछु विकार हैं॥ सो मन कर के भासते हैं॥ अरु
मन अविचारत सिद्ध है॥ विचार कीये ते लीन हो जाता है॥ जब मन लीन हूया॥ तब क-
र्म आदिक भ्रम भी सभ नष्ट हो जाता है॥ जो इस भ्रम ते मुक्त हूया॥ सो मुक्त है॥ सो पुरुष ज-
न्म अरु मरण विषे बहुड नहीं आवता॥ सभ भ्रम उस का नष्ट हो जाता है॥ रामउवाच॥ हे
भगवन तीन प्रकार के सात्विकी राजसी तामसी जो जंतु मों कहे॥ तिन का कारण प्रथमे
सत असत रूप मन कहा॥ सो मन असत रूप शुद्ध चिन्मात्र तत्व ते कैसे उपजत भया॥ अ-
रु उपज कर बडे विस्तार रूप विचित्रता जगत के कारणत्व को कैसे प्राप्त भया॥ वसिष्ठ-
उवाच॥ हे रामचंद्र तीन आकाश हैं॥ एक चिदाकाश है॥ एक चित्त आकाश है॥ तीसरा
भूताकाश है॥ सो आकाश भाव कर के समान रूप है॥ अरु अपणी अपणी सत्ता है हैं॥ चि-
दाकाश जो है॥ सो चित्त शक्ति कर के नित्य उपलब्ध रूप है॥ चैतन्य मात्र सभ के अंतर वा-
हर स्थित है॥ अरु सत्ता रूप है॥ बोध रूप है॥ सर्व भूतों विषे सम व्यापक होता है॥ सो चिदाका-
श है॥ अरु जो भूतों का कारण रूप है॥ अरु आपक लना रूप है॥ अरु सर्व जगत को जिसने
विस्तारा है॥ सो चित्ताकाश कहीता है॥ अरु दशो दिसा के विस्तार कर जिस का वप परि-
छेद को नहीं प्राप्त होता॥ अरु शून्य है जिस का स्वरूप॥ अरु पवन आदिक भूतों का आश्रय-
भूत है॥ सो भूत आकाश कहीता है॥ हे रामचंद्र चित्त आकाश अरु भूत आकाश इह दो-
नो चिदाकाश ते उपजे हैं॥ अरु सर्व का कारण चित्त है॥ जैसे दिन कर सर्व कार्य होते हैं॥
तैसे चित्त कर सर्व पदार्थ प्रगट होते हैं॥ अरु चित्त जड भी नहीं॥ अरु चैतन्य भी नहीं॥ म-
लन चैतन्य का नाम विषय मन ही॥ अरु ज्ञानवान जो तीन आकाश कहते हैं॥ सो अज्ञानी-
यों उपदेश जनावणे के निमित्त कहते हैं॥ ज्ञानवान को एक परम ब्रह्म सर्व विषे पूर्ण सर्व-
कलना ते रहित भासता है॥ द्वैत अरु अद्वैत आदिक शब्द भी उपदेश के निमित्त कहते हैं॥
प्रबोध के विषे शब्द को ऊ नहीं॥ हे रामचंद्र जब लग प्रबोध आत्मा नहीं भया॥ तब लग मैं-
त्रय आकाश कहता हौं॥ वास्तव ते कल्पना को ऊ नहीं॥ जैसे दावा अग्नि के लागणे वन ज-
ल जाता है॥ सो शून्य जैसा भासता है॥ तैसे ज्ञान अग्नि कर के जले हूए चित्त आकाश अरु भू-
ताकाश चिदाकाश विषे शून्य कल्पत भासते हैं॥ करण द्वारा इह पडे भासते हैं॥ मल-
न चैतन्य जो चितता को प्राप्त होता है॥ तिस कर इह जगत भासता है॥ जैसे इंद्रजाल की
वाजी होती है॥ तैसे इह जगत है॥ बोध हीन को इह जगत भासता है॥ जैसे असम्यक दर्शी-
कों सिपी विषे रूपा भासता है॥ तैसे अज्ञानी को जगत भासता है॥ आत्म तत्व नहीं भासता
जब इह भ्रम नष्ट हो जावे॥ तब मुक्त रूप होता है॥ इति श्री चिदाकाश महात्म वर्णनं नाम स-
र्गः॥ ॥
वसिष्ठउवाच॥
हे रामचंद्र इह जो कछु उपजया है॥ सो तू चित्त ते उपजया जाण॥ सो जैसे उपजया है ते से
उपजया॥ अब तूं इस के निवृत वास्ते जतन कर के आत्म पद विषे चित्त को जोड॥ तब इह
जगत भ्रम नष्ट हो जावेगा॥ हे रामचंद्र इह चित्त के मारने ऊपर एक चित्त आख्यान इह-
या है॥ सो श्रवण कर॥ जैसे मैं देख्या है॥ तैसे तुझ को कहता हौं॥ एक महा शून्य वन था॥ जिस
को किसी कोण विषे इह आकाश स्थित है॥ तिस उजाड विषे मैं एक पुरुष देखता भया॥ सो
कैसा था॥ जो सहस्र ही जिस के कर अरु लोचन थे॥ अरु चंचल रूप अरु व्याकुल रूप अरु बडा-

हीआकारजिसका। अरुसहस्रहाथजासाथअपणेशरीरकोंताडनाकरेमारे। वहुडआ
पहीकष्टमानहोइकरभागे। तववहुतेयोजनपर्यंतचलयाजावे। अरुदोडदोडताथ
कपडे। अंगचूर्णहूएएकअंधेकूपविषेजाइगिडे। सोहुवाहृस्परात्रकीन्याईभयान
कहैपतिसविषेजाइपडे। तवकेताककालवितीतहोवे। तवउहांतेनिकसकरके
वनविषेजाइपडे। तहांकंटककरभेतवकष्टपावे। जैसेपतंगदीपककोंसुषरूपजा
णकरतिसविषेप्रवेशकरताहै। अरुतापताकोंभीप्रापतहोताहै। तैसेउहजहांसु
षरूपजाणकरप्रवेशकरेतहांहीकष्टपावे। वहुडकरोंजूएकेवनविषेजाइपडे। व
हुडतिनिकसकरआपकोंहीकरप्रहारकरे। तिसकरकष्टमानहोवे। वहुडदोडे। दोडता
दोडताअंधेकूपविषेजाइपडे। तहांतेनिकसकरकदलीकेवनविषेजाइप्रवेशकीया
तहांतेनिकसकरवहुडआपकोंप्रहारकरणेलागा। जवकदलीवनविषेजावे तव
कछुइकक्षणतवानभीहोवे। अरुप्रसन्नताकोंप्रापतहोवे। वहुडदोडेआपकोंप्रहार
करे। कष्टमानहोइकरहूरतेंहूरजाइपडे। इसीप्रकारअपणाकोयाआपहीकष्टभोगे
इसप्रकारभटकताफिरे। तवमैंउसकोंपडकरकेप्रछनभया। अरेतूंकवनहै। अरुइह
क्याहै। इहकर्मकिसअर्थकर्ताहै। अरेतेरानामक्याहै। अरुइहांकिउंमिथ्यायत्नविषे
मोहकोंप्रापतहूयाहै। हेरामचंद्रजवइसप्रकारमैंप्रछ्या। तवउहमुझकोंकहतभ
या। जोतनमैंकछुहों। नकछुअहूहै। नमैंकछुकरताहूं। अरुतूंतोमेरापाघहै। तेरेदेषणे
करमैंनाशकोंप्रापतहूयाहूं। इसप्रकाउहकरअपणेअंगोंकोंदेषतभया। देषअरुरु
दनकरे। क्षणमात्रतेंउसकावपुनाशहोणलागा। मेरेदेषतेदेषतेउहपुरुषअपणे
अंगोंकोत्यागतभया। प्रथमेंउसकासीसगिडपडा। वहुडभुजागिडपडीया। वहुडवष्य
सथलवहुडउदरइसप्रकारक्रमकरउहपुरुषअपणेशरीरकोंत्यागतभया। जैसे
स्वप्नेतेजागेस्वप्नकाशरीरनष्टहोताहै। तैसेएकक्षणविषेउसकाशरीरनष्टहोगयो
तवमैंनेतपाक्तिकोंविचारकरकेआगेगया। तवओरएकपुरुषदेष्या। सोभीइसीप्रका
रआपकोंआपहीप्रहारकरे। अरुकष्टमानहोइकरदोडे। जाइकरएककूपविषेगिड
पडे। उहांतेनिकसकरवहुडप्रहारकरे। वहुडवनविषेजाइकरोंजूंगोंकेवनविषे
कवहूंकदलीविषे। जवकदलीवनविषजावे। तवसुषहोवे। अरुहर्षकोंप्रापतहोवे
जवतिसतेंनिकसे। तवहुडआपकोंप्रहारकरे। वहुडदोडेकरोंजूएकदलीआदिकव
नोंविषेजाइपडे। जवउसमुझकोंदेष्या। देषकरप्रसन्नभया। अरुवडेहर्षकोंप्रापतभ
या। अरुहस्या। तिसकोंतवरोककरमैंउसीप्रकारप्रछ्या। जवमैंप्रछ्या। तवउहभीमे
रेदेषतेदेषतेअपणेअंगोंकोंत्यागतभया। त्यागतेंहूएकष्टमानहूया। अरुहर्षमान
भीभया। उसकोंदेषकरमैंवहुडआगेगया। तवओरएकपुरुषदेष्या। उहभीइसीप्रका
रकरतावहै। अपणेहाथोंआपकोंप्रहारकरे। वहुडअंधेकूपविषेजाइगिडे। हेरामचंद्र
चिरकालपर्यंतमैंउसकोंदेषताभया। कूपतेंनिकस्या। तवमैंउसकूंपरप्रसन्नहोइक
रउससोंप्रछनभया। जैसेउनसोंपूछाथा। तवमैंउहमूर्षमुझकोंलज्जाणाकरहूरतें
त्यागगया। जोकछुअपणाप्रहारव्यवहारथा। तिसविषेजाइगा। तिसकेअनंतरचिर
कालपर्यंतमैंउसवनविषेविचरतारहा। तवईसीप्रकारमैंवहुतपुरुषदेषतारहा
जोआपहीआपकोंनाशकरे। जिसकोंमैंप्रछों। अरुउससेरेपासआवे। तिनकोंमैंकष्ट
तेंछुडाइदेवों। अरुआनंदकोंप्रापकरो। अरुजोमेरेनिकटहीनआवे। मुझकोंत्यागजा
वे। तिनकाउहीहालपडाहोवे। उसअटवीविषेउहीव्यवहारकरे। हेरामचंद्रउसअटवी
तेंमभीदेषीहै। परन्तुमउहव्यवहारनहींकीया। तूंउसअटवीविषेजावणेकोंजोगभी
नहीं। तूंवालकहै। अरुउहअटवीमहाभयानकहै। तिसकोंप्रापतहूएकेंदककोंप्रा
पतहोवीताहै॥ ७१॥ इतिचित्तउपाख्यानेनामसर्गः॥ ७१॥ श्रीरामउवाच॥
हेब्राह्मनउहकवनअटवीहै। अरुमैंकवदेषीहै। अरुउहपुरुषकवनहै। अरुतूंवउ
हुअपणेनाशकेनिमित्तक्योंउदमकरतेथे। सोकहो॥ वसिष्ठउवाच॥ हेरामचंद्रउ
हअटवीहूरनहीं। अरुउहपुरुषभीहूरनांहीं। इहजोगंभीरवडाअसाररूपसंसा

रहे। सोईअटवीहै। कैसीअटवीहै। जोशून्यहै। अरुविकारोंकरपूर्णहै। अरुउहअटवीमें
आत्माकरसिद्धहोतीहै। जैसेस्वर्णकाकंकणस्वर्णसिद्धहोताहै। तैसेइहसंसाररूपीअटवी
आत्मकरकेसिद्धहोतीहै। अरुतिसविषेजोपुरुषवहतेहैं। सोसभमनहैं। दुषरूपीचेष्टा
करतेहैं। अरुमैंजोज्ञानरूपीविवेकथा। इनकोंबोधकरताथा। जोमेरेनिकटआवतेथे। सो
मेरेप्रकाशकरकेप्रफुल्लितहोइआए। जैसेसूर्यकेप्रकाशकरकेसूर्यमुषीकमलषिडि
आवतेहैं। तैसेमेरेप्रबोधकरके। इहसमतेहूए। अरुउहचितरूपीउपशमहूए। परम
पदकोंजाइप्रापतहूए। अरुजोमेरेनिकटनआए। अविवेककरकेमोहहूएमेरानिरादर
करतभए। सोमोहकष्टविषेहीरहे। अवतिनकेअंगअरुप्रहारअरुकूपअरुकरोंजूए
अरुकेलेकेवनसुणो। हेरामचंद्रजेतेकछुविषयअभिलाषहैं। सोतिनमनोंकेअंगहैं। अ
रुहाथोंकरप्रहारकरतेहैं। जिसकामकर्मकरतेहैं। तिनकरफटेहूएहूरतेंहूरदोडता
हैथे। सोमृतकहोतेहैं। मृतकहोइकरनरककोंप्रापतहोतेहैं। सोईअंधेकूपविषेगिडताहै।
अरुविवेककात्यागणा। इसप्रकारउहपुरुषआपकरआपकोंप्रहारकरतेभटकतेफिर
तेहैं। अरुअभिलाषरूपीसहस्रअंगोंकरआवरेहूएमृतकहोकरनरकरूपीकूपविषेपडे
हूए। जववाहरनिकसेतवपुण्यकर्मोंकरस्वर्गविषेप्रापतजाइहोवे। सोइहीकदलीके
वनसमानहै। तहांकछुसुषपावे। तिसतेंजवनिकसेतवकरोंजूएवनविषेपडे। स्त्रीपु
त्रकलत्रआदिकजोकुटंबहै। सोईकरोंजूएकेवनहै। अरुकरोंजूएसाथकंटकहोतेहैं
सोवंधनअरुलोकोंकीकामनाकरतेहैं। इहीभएकंटक। तिनकरकेपडेकष्टपावतेहैं
तवनरकरूपीअंधेकूपविषेपडतेहैं। अरुपुण्यकर्मकरतेहैं
जवमहापापकर्मकरतेहैं। तवकछुकहुलासकोंप्रापतहोतेहैं
हे। तवकदलीवनकीन्याईस्वर्गकोंप्रापतहोतेहैं। इहमनरूपअसेमूर्षहैं। जिनकु
हेरामचंद्रगृहस्थमहादुषरूपहै। करोंजूएवनकीन्याई। अपणेनाशकेनिमित्तवहुडउहीदुषरूपकरतेहैं। जोति
टवआदिकोंविषदुषपावतेहैं। सोशुभअशुभरूपीकर्मोंकेवंधनतेंमुक्तिहो
नोंविषेछिनकरकेविवेकनिकटआवतेहैं। अरुजोविवेकसाथछिननांहीकरते। सोहरनेहरपडे
इकापरमपदकोंप्रापतहोतेहैं। अरुजोविवेककेनिमित्तयत्नकरकेतपआदिकपुन्यकरतेहैं
भटकतेहैं। हेरामचंद्रजोपुरुषभोगनेकेनिमित्तयत्नकरकेतपआदिकपुन्यकरतेहैं
सोउत्तमशरीरधारकरस्वर्गसुषभोगतेहैं। अरुउहजोमुझकोंदेषकरमनरूपीपुरुष
कहताथा। जोतूंहमारामात्रुहै। तुझकरहममनष्टहूएहैं। अरुरुदनकरतेथे। सोविषया
भोत्यागणेकेनिमित्तमूर्षचितकष्टपावताहै। मूर्षोंकीप्रीतिविषयोंहीविषेहोतीहै
तिसकेत्यागणेकरकेकष्टमानहोतेहैं। अरुविवेककोंदेषकररुदनकरणेलागतेहैं
काहेतेंजअर्थप्रवृत्थहै। जिनकोंपरमपदकोंप्रापतनहींभई। सोभोगोंकोंत्यागतेहूए
कष्टमानहोतेहैं। अरुरुदनकरतेहैं। अरुजवअज्ञानीमूर्षचित्तअर्थप्रवृतअपणेअ
भिलाषरूपीअंगोंकोंनपाइमानहूयाहैसणलागताहै। तोतेविवेककोंनपाइमा
नप्रापतहोइकरसंसारकीयावासनाकोंत्यागताहै। तवआनंदमानहोताहै। अरुपूर्व
लास्वभावअभिलाषअरुनीचचेष्टाकोंदेषकरहसताहै। जोमेरेमिथ्याचेष्टापडाकर
ताथा। चिरकालपर्यंतमूर्षताकरकेमैंकष्टपावतारहा। हेरामचंद्रइसप्रकारविवेक
कोंप्रापतहोइकरचित्तपरमपदविषेविश्रामपावतारहा। तवपूर्वलीअपणीदीनचे
ष्टाकोंस्मरणकरकेहासीकरताहै। हेरामचंद्रजवमैंउसमनरूपीपुरुषकोंरोककेकै
हुछनाथा। अरुउहअपणेअंगोंकोंत्यागताजाताथा। सोभीसुणमैंविवेकरूपहों
जवउसचित्तरूपीपुरुषकोंमिलया। तवउहअपणेसहस्रकरअरुलोचनरूपी
अभिलाषकोंत्यागतभया। अरुआपकोंप्रहारकरणेतेंभीरहगया। अरुउसका
सीसजोप्रथमगिडपडा। सोपरिछिन्नदेहअभिमानीजोअहंकारहै। सोइसीसस्या
लहै। जवउहगिडया। तवउवासनारूपीओरअंगोंकोत्यागतभया। तिनकोंत्यागक
रआपभीनष्टहोगया। सोअहंकारअहंकारअपणीनिरवाणताकोंदिषावताभया

अर्थयहहैजोपरमब्रह्मविषेलीनहोगया॥ हेरामचंद्रइसपुरुषकोंबंधनकाकारणवास
नाहै॥ जैसेवालकविचारतेंरहितचंचलरूपीचेष्टाकरताहै॥ सोकष्टपावताहै॥ अग्निविषे
हथपाया॥ अथवाजोरअैसाकारजकीया॥ अरुजैसेबरायणकीटआपहीआपणेवेष्टणे
कीजुफावनायकरआपहीफसमरताहै॥ तैसेइहपुरुषअपणीवासनाकरआपही
वंधनमोंपडताहै॥ अरुजैसेमरकटलकडीविषेहाथपाइकरकिलीकोंकाटणेलागता
लीलाकरताहै॥ तवउसकाहाथफसपडताहै॥ वहुडकष्टपावताहै॥ तैसेअज्ञानीकोंअ
पणीचेष्टाहीवंधनकरतीहै॥ काहेतेंजोविचारविनाकरताहै॥ तातेंहेरामचंद्रइसचि॰
त्तकोंशास्त्रअरुसंतोंकेगुणोंकरचिरपर्यंतपाल॥ जोकछुशास्त्रविषेअर्थप्रतिपायाहै॥
तिसकीदृढभावनाकर॥ जवअभ्यासकरतेंचित्तस्वस्थहोवेगा॥ तवतुझकोंशोककोउ
नहींहोवेगा॥ हेरामचंद्रजवचित्तआत्मविषेस्थितहोवेगा॥ तवकोऊदुःखनव्यापेगा॥
पर्वतपहाडकीन्याईकूटस्थहोवेगा॥ रागअरुद्वेषकुरवलाइमाननहोवेगा॥ अरुजो॰
कछुदेहादिकोंसायपरिछिन्नअहंकारहै॥ सोनष्टहोजावेगा॥ जैसेतृणकेउदेहुएवरफ
गलजातीहै॥ तैसेतुछअहंकारनष्टहोजावेगा॥ परमतत्वआत्मनहीभासेगा॥ हेरामचंद्र॰
जवलगइसकोंआत्मज्ञाननहींप्रापतभया॥ तवलगशास्त्रकेअनुसारअनिंदआचार
विषेवरते॥ अरुशास्त्रकेअर्थविषेअभ्यासकरे॥ अरुमनरागद्वेषआदिकतेंमोनकरे॥ त
वपाछेपावणेजोगजोपदहै॥ सोअजन्महै॥ अद्वैतशांतिरूपहै॥ तिसपदकोंप्रापतहो॰
वेगा॥ तवसर्वशोककोंतरेगा॥ शांतरूपहोवेगा॥ इतिउत्पत्तिप्रकरणेचित्तउपाख्यानंना
मसर्गः॥ ॥

वसिष्ठउवाच॥
हेरामचंद्रइहजोचित्तपरमब्रह्मपदतेंउपजयाहै॥ सोआत्मरूपभीहै॥ आत्मरूपनहींभी॰
जैसेसमुद्रतेंतरंगहोताहै॥ सोतन्मयभी॥ अरुअतन्मयभीहै॥ तैसेचित्तहै॥ जोज्ञानवान
है॥ तिसकोंतरंगभीजलहीरूपभासताहै॥ अरुज्ञानतेंरहितहै॥ तिनकोंमनसंसारभ्रम
काकारणहै॥ जैसेजिनकोंजलकाज्ञाननहीं॥ तिनकोंभिन्नभिन्नतरंगभासतेहै॥ तैसेजो
अज्ञानहीतिनकोंभिन्नभिन्नजगतभासताहै॥ अरुज्ञानवानकोंकेवलब्रह्मसत्ताभासती
है॥ हेरामचंद्रजोज्ञानवानभीवेदकभेदकल्पतेहै॥ सोअज्ञानीकोंउपदेशकेनिमित्तभे॰
दकल्पतेहै॥ अपणीदृष्टिविषेसर्वब्रह्महीभासताहै॥ अरुमनआदिकभीज्ञानुकोंभा
सतेहै॥ सोब्रह्मसोंभिन्ननहीं॥ अनन्यरूपहै॥ शक्तिरूपहै॥ सर्वशक्तिपरमब्रह्महै॥ सोनित्य
है॥ अरुसर्वओरतेंपूरणहै॥ अविनाशीहै॥ तिसतेंअन्यकोऊपदार्थनहीं॥ सभब्रह्मसत्ताविषे
है॥ सर्वशक्तिभगवानआत्माहै॥ जैसीउसकोंशक्तिफुरतेहै॥ सोईशक्तिप्रगटहोतीहै॥ सर्वश
क्तिरूपहोइकरपसरयाहै॥ चेतन्यशक्तिजीवोविषेज्ञानरूपकरकेप्रगटहै॥ वायुविषेस्पं
दशक्तिउहीहै॥ पथरविषेजडशक्तिहै॥ जलविषेद्रवताशक्तिहै॥ अग्निविषेतेजशक्तिहै॥ शून्य
शक्तिआकाशविषेहै॥ भावशक्तिसर्वविषे॥ नाशशक्तिकालविषेहै॥ शोकविषेशोकशक्ति
है॥ मुदताविषेआनंदशक्तिहै॥ वीरविषेवीरशक्तिहै॥ सर्वकेउपजावणेविषेउहीउपजाव॰
णशक्तिहै॥ कल्पकेअंतविषेसर्वकानाशकरताउहीशक्तिहै॥ इसतेंआदिलेकरजेताकछु
भावअभावपदार्थशक्तिहै॥ सोसभब्रह्मशक्तिहै॥ जैसेजैसेफूलफलवलीपत्रसाखादिक
जेतेविस्तारहै॥ सोवीजतेंअंतरभावहोताहै॥ तैसेसभजगतब्रह्मविषेस्थितहोताहै॥ जी
वअरुचित्तअरुमनआदिकभीब्रह्मविषेस्थितहै॥ जैसेनानाप्रकारकेपत्रफूलफलवीज
केअंतरस्थितहोतेहै॥ तैसेसभब्रह्मविषेस्थितहै॥ हेरामचंद्रजैसेवसंतकरएकहीरस
नानाप्रकारकेफूलफललतासवरूपोंकोंधारताहै॥ तैसेएकहीआत्मतत्वचेतनताकर
केजगतरूपहोइभासताहै॥ तिसविषेअरुदेसकालआदिककीविचित्रताकोऊनहीं॥ सं
पूर्णजगतब्रह्मस्वरूपहै॥ सोब्रह्मआत्मासर्वज्ञहै॥ नित्यउदितरूपहै॥ इहदृष्टहैजुस
भतेवडाहैवपुजिसका॥ हेरामचंद्रतिसविषेकछुमननकलनाहोतीहै॥ तवतिसकों
मनकहीताहै॥ जैसेआकाशविषेमारकेइछावनतरवरेभासतेहै॥ तैसेआत्माविषेम॰

नहैहेरामचंद्र॥ जैसेसूर्यकीयांकिरणांजलभासताहै॥ तैसेआत्माविषेमनहै॥ हेरामचंद्र
ब्रह्मविषेचित्तनाहोतीहै॥ सोमनकारूपहै॥ सोमनब्रह्मकीशक्तिरूपहै॥ इसीकारणतेंब्र
ह्मसोंइतरनहीं॥ ब्रह्महीहै॥ ब्रह्मतेंइतरकल्पनाकरणीअज्ञानहै॥ ब्रह्मविषेअैसाउत्थान
हुयाजोमैंहों॥ इसीकानाममनहुया॥ तिसजडअजडरूपमनतेंआगेजगतहुयाहै॥ मन
हीआगेप्रतियोगीभेदकल्पेहै॥ जैसेजलतत्वविषेदृढमननहोताहै॥ तैसेसोहोइभासताहै
इंदुब्राह्मणकेपुत्रोंकीन्याई॥ जैसेसमुद्रविषेद्रवताकरकेतरंगचक्रहोइभासतेहै॥ तैसेमहे
चिन्मात्रविषेजीवफुरणेकरकेनानाप्रकारकाजगतहोइभासताहै॥ परकछुहुयानहीं
ब्रह्महीआपणाआपविषेस्थितहै॥ जैसेतरंगकेहोणेअरुमिटणेविषेजलएकहीरसहै
तैसेजगतकेउपजणेअरुमिटणेविषेब्रह्मज्योंकात्योंहै॥ जैसेसूर्यकीयांकिरणांदृढ॰
तेजकरकेजलहोइभासतीयांहै॥ तैसेआत्मतत्वविचित्ररूपहोइकरभासताहै॥ परस
दाआपणेआपहीविषेस्थितहै॥ हेरामचंद्रकरणकर्मकर्ताजन्ममरणआदिकजेतेक
छुभासतेहै॥ सोसभब्रह्मरूपहै॥ ब्रह्मतेंइतरकछुनहीं॥ अरुब्रह्मसदरूपहै॥ तिसविषे
नलोभहै॥ नमोहहै॥ नतृष्णाहै॥ अरुसर्वआत्माहीहै॥ जैसेस्वर्णतेंनानाप्रकारकेभूषण
होइभासतेहै॥ तैसेब्रह्मतेंजगतहोइभासतेहै॥ जोज्ञानवानपुरुषहै॥ तिनकोंसदाब्र॰
ह्महीभासताहै॥ अरुजोअज्ञानीहै॥ तिनकोंभिन्नभिन्ननामरूपकल्पनाभासतीहै॥ जैसे
किसीकावांधवहोताहै॥ अरुहरदेशतेंचिरकालपाछेआवताहै॥ तवदेशकालकेविधान
करकेवांधवकोंअवांधवकरजानताहै॥ तैसेअज्ञानकेविवथानकरकेअभिन्नरूपआत्म
कोंभिन्नरूपजाणताहै॥ जैसेआकाशविषेदूसराचंद्रमाभ्रमकरकेभासताहै॥ तैसेसत॰
असत्यरूपमनआत्माविषेभासताहै॥ तिसमनकेशाहअर्थरूपभिन्नभिन्नकल्पनारची
है॥ अरुआत्मतत्वसदाअपणेआपहीविषेस्थितहै॥ तिसविषेबंधअरुमोक्षकल्पनाका
अभावहै॥ रामउवाच॥ हेभगवनजोमनविषेनिश्चाहोताहै॥ सोईहोताहै॥ अन्यथानहींहो
ता॥ अरुमनविषेजोबंधकानिश्चेहोताहै॥ सोबंधकैसेअसत्तहै॥ वसिष्ठउवाच॥ हेरामचंद्र
बंधकीकल्पनामूर्खकरतेहै॥ तातेंमिथ्याहै॥ जोबंधकल्पनामिथ्याभई॥ तोबंधकीअपेक्षा
करजोमोक्षहै॥ सोभीमिथ्याभई॥ तातेंबंधमोक्षकीकल्पनामूर्खमिथ्याकरतेहै॥ वास्त॰
वतेंनबंधनहै॥ नमोक्षहै॥ हेरामचंद्रअज्ञानकरकेअवस्तुभीवस्तुरूपहोइभासतीहै॥ जे
सेजेवडीविषेसर्पभासताहै॥ अरुज्ञानवानकोंअवस्तुसतनहींभासती॥ जैसेजेवडीकों
ज्ञानतेंसर्पनहींभासता॥ तातेंबंधमोक्षकल्पनामूर्खोंकोंभासतीहै॥ ज्ञानवानकोंबंध॰
नमोक्षकोऊनहींभासती॥ हेरामचंद्रआदिपरमात्मातेंमनउपजयाहै॥ तिसमनही॰
नेंबंधनअरुमोक्षमोहकरकेकल्पाहै॥ वहुडइहप्रपंचकोंरचाहै॥ सोइहप्रपंचकल्प
नामात्रहै॥ वालककीकथावतमूर्खोंकोंरुचताहै॥ अर्थयहहैजोविचारतेंरहितहै॥ तिस
कोंइहजगतसतभासताहै॥ इतिचित्तचिकित्सावर्णनंचित्तोत्पत्तिवर्णनंनामसर्गः॥ ७३॥
रामउवाच॥ हेमुनीश्वरविषेश्रेष्ठवालककीकथाकयाहै॥ कृपाकरकेमुझकोंकहो॥ व॰
सिष्ठउवाच॥ हेरामचंद्रएकमूर्खवालकथा॥ सोधात्रीजोहैदाईतिससोंपूछतभया॥ तो
कोऊपूर्वकथाकहो॥ जोतुझकोंआवतीहै॥ जोआगेहूईहै॥ हेरामचंद्रजवइसप्रकारवा॰
लककहा॥ तवतिसकेविनोदनिमित्तमहाबुधवानधात्रीकथाकहतभई॥ धात्रीउवाच
हेपुत्रसुण॥ एकवडाशून्यनगरथा॥ तिसकाएकराजाथा॥ तिसराजेकेतीनपुत्रथे
सोकैसेपुत्रथे॥ सुभतिनकाआचारथा॥ अरुवडेसुंदरतेजवानथे॥ जैसेआकाशविषेता॰
रेहै॥ तैसेसुंदरतेजवानथे॥ सोदोइतोउपजेनथे॥ अरुएकगर्भविषेभीआयानथा॥ सोती
नोंसभआचारवानसभक्रियाकरतेहुवेकेअर्थजीतणेकोंचले॥ शून्यनगरतेंवाहरनिक
से॥ निरवुद्धअरुशोकसहितएकठेजावें॥ जैसेबुधअरुशुक्रअशुभनक्षत्रएकठेचलेतैं
सेचले॥ अरुमरीहकेफूलोंकीन्याई॥ तिनकेअंगकोमल॥ सोमारगकरकेथके॥ ऊपरतें
सूर्यकीधूपतपी॥ जैसेज्येष्ठआषाढकीधूपकरकमलपत्रकुमलाइजातेहै॥ तैसेकुम॰

लाइगए॥ अरु चरणों ने नकीन पनकरने लागे॥ महाशोककों प्रापत हूए॥ जैसें म
गोंकूं संबूरूनें विछुडया एक म्रग शोककों प्रापत होता है॥ तैसें शोककों प्रापत भए
चरनों विषें दंभके कंठे तुंभे॥ अरु मुख धूसर करश्रु मल होगए॥ तीनो कष्टमान होइकर
आए॥ आगे तीन हूत देखे॥ सो कैसे हूत हैं॥ जो दोइ तो उपजे ही नाही॥ अरु तीसरेका
बीज भी नहीं बोया॥ सो तीनो तिना विषें एक हूतके नीचे आइकर विश्राम करत भ
ए॥ जैसें कल्पहूतके नीचे स्वर्ग विषें इंद्र अरु वायु अरु यम आइ वैठें॥ तैसें आइ वैठें अ
रु तिनके फल भक्षण कीये॥ अरु फलोंका रसका ठकूर पान कीया॥ अरु तिनके फूलो
कीयां माला गल विषें पहरीयां॥ अरु चिरकाल पर्यंत तहां विश्राम कीया॥ वहूर व
ले हूर हूरागए॥ ऊपर मध्याह्नका समा हूया॥ तिस करतप्यारमान हूए॥ तव आगे ती
नदीयां देषीयां॥ तिनके निकट गए॥ जो वडे नरगें करके लीलाइमान हैं॥ सो कैसी
यां हैं॥ जो दोइ विषें जल कछु नहीं॥ अरु तीसरी सूकी पडी है॥ तिस विषें चिरकाल प
र्यंत क्रीडा करत भए॥ जैसें गंगाजी विषें ब्रह्मा अरु विस्नु अरु रुद्र कलोल करें॥ तैसें तिन्ह
विषें कलोल करें॥ अरु जल पान करें॥ तव दिन अस्त होणे लगा॥ ऊहांहांतें चले॥ एक
भविष्यत नगर देष भए॥ वडी ध्वजा कर संपन्न है॥ अरु रत्न मणी स्वर्ण करकें जडा है
मानो सुमेरका सिषर है॥ तिस विषें वडा ही रमणीक करकें जडया मंदिर देष्या॥ तिस
विषें जाइ प्रवेश कीया॥ तहां वहूत आंगना है॥ तिस मंदिर विषें जाइकर विचार करत
भए॥ जो रसोई करीयें॥ अरु ब्राह्मणोंको भोजन षवाईयें॥ तव कंचनकी यां तीन वटलो
हीयां मंगाईयां॥ सो कैसीयां॥ जो दोइ के छेदने वाली उपजयां नहीं॥ अरु तीसरी चूरां चूर
पडे॥ तिस चूर्ण वटलोही विषें तिना थोडा मासे रौंद्र थोडे मासे चावल चढाए॥ तिस
कर से कडे ब्राह्मणोंको भोजन करावत भए॥ अरु आप भी करत भए॥ इस प्रकार उह तीन
राजपुत्र आज पर्यंत सुषसाथ स्थित हैं॥ इह रमणीक कथा मैं तुझकों सुणाई है॥ जव तुं
इसकों हृदे विषें धारेगा॥ तव पंडित होवेगा॥ हे रामचंद्र इस प्रकार धात्री वालककों क
था सुणाई॥ वालकके मन विषें सच आइ गई॥ जैसें उह सकथाका रूप संकल्पतें इतर कछु
नहीं॥ जैसें इह जगत है॥ सभ संकल्परूप है॥ अज्ञानीके हृदे विषें स्थित हो रहा है॥ भ्रम क
रकें इस विषें आस्था भई है॥ वंध मोक्ष भी कल्पना मात्र है॥ संकल्पतें इतर इसका स्वरूप
कछु नहीं॥ हे रामचंद्र स्वथ आत्मतत्व निहकिंचन रूप है॥ संकल्पके वशतें किंचन हो
इकर भासता है॥ पृथिवी आकाश वायु पर्वत नदीयां देश आदिक जो प्रपंच भूतक स्रष्ट है
सो सभ संकल्प मात्र है॥ जैसें स्वप्ने विषें नाना प्रकारकी स्रष्टि भासती है॥ अरु आकाश रू
प है॥ कछु उपजी नहीं॥ तैसें इह जगत जाणु॥ जैसें राजपुत्र नगर विषें स्थित हूए॥ उह
संकल्प रचना वालककों स्थिर भूत होगई॥ तैसें इह जगत संकल्प मात्र मनके फुरणे
करे हढ भया है॥ जैसें द्रवताकरके जलतें तरंग होते हैं॥ सो जल ही जल विषें स्थित है॥
तैसें आत्मा ही आत्मपद विषें स्थित है॥ इह सभ जगत संकल्प उपजया है॥ अरु वडे वि
स्तारकों प्रापत भया है॥ जैसें दिनकरकें व्यवहार विस्तारकों प्रापत होता है॥ तैसें सं
कल्पजालक रउपजया॥ जगत विस्तारकों प्रापत भया है॥ अरु चित्तका विलास है
चित्तके फुरणे करकें पडा भासता है॥ तातें हे रामचंद्र तुं संकल्परूपी मैलकों त्याग
करते निर्विकल्प आत्मपदकों आश्रय करो॥ जव तिस पद विषें स्थित होवेगा॥ तव पर
शांतकों प्रापत होवेगी॥ इति वालकाख्यायिका नाम सर्गः॥ ७४॥ वसिष्ठ उवाच
हे रामचंद्र जो मूढ अज्ञानी पुरुष है॥ सो अपणे संकल्प करकें आपही मोहकों प्रापत हो
ते होते हैं॥ अरु जो पंडित हैं॥ सो मोहकों नहीं प्रापत होते हैं॥ जैसें वालक मूर्षता करकें
अपणे परछावें विषें पिशाच कल्पना करकें भयकों प्रापत होता है॥ तैसें मूर्ष अपणी
कल्पना करकें दुखी होते हैं॥ रामउवाच॥ हे भगवन ब्रह्मवेत्यां विषें श्रेष्ठ उह संकल्प
क्या है॥ अरु परछावां क्या है॥ जो असत्य सत्यरूप पिशाचकी न्याई दिषाई देता है॥ वसिष्ठ

उवाच॥ हे रामचंद्र पंचभूत शरीर परछावेंकी न्याई है॥ जैसें मिथ्या परछावें विषें पिशाच
कों देषकर भयमान होता है॥ तैसें देह विषें अहंकार देषकर खेदकों प्रापत होता है॥ हे
रामचंद्र एक परम आत्मा सर्व विषें स्थित है॥ तव अहंकार कैसें होवे॥ वास्तवतें अहं
कार कोऊ नहीं॥ परमात्मतत्व ही अभेदरूप है॥ तिस विषें अहं वुद्धि भ्रम करकें भासती
है॥ जैसें मिथ्या दृष्टीकों मारुथल विषें जल भासता है॥ तैसें मिथ्या ज्ञान करकें अहंका
र कल्पना होती है॥ जैसें मणीका प्रकाश मणी ऊपर पडता है॥ सो मणीतें इतर नहीं॥
मणीरूप ही है॥ तैसें आत्मा विषें जगत भासता है॥ सो आत्मा ही आत्मा विषें स्थित है॥
जैसें जल विषें द्रवता करकें चक्र तरंग होइ भासते हैं॥ सो जल ही जल है॥ तैसें आत्मा वि
षे जगत भासता है॥ सो आत्मा ही आत्मा विषें स्थित है॥ चित्त करकें नानात्व होइ भास
ता है॥ सो आत्मा तें इतर कछु नाहीं॥ असम्यक दर्शन करकें नानात्व भासती है॥ तातें अ
सम्यक दृष्टकों त्यागकर आनंदरूप आत्माको आश्रय करो॥ मोहके आरंभतें रहित हो
इकर सुद्ध बुद्ध सहित विचारो॥ विचार करकें सत्तकों ग्रहण करो॥ असत्तका त्याग करो
हे रामचंद्र अहं सोके आरंभ विद्या मिथ्या भ्रम करकें दृष्ट हूए हैं॥ अनंत आत्मतत्व विषें क
ल्पना कोऊ नहीं॥ कौन किसको कहै॥ जो कछु नानात्व भासती है॥ सो है नाहीं॥ अ
रु जीव भी ब्रह्म साथ अभिन्न रूप है॥ तिस ब्रह्मतत्व विषें कौन वंध कहीये॥ अरु कौन
मोक्ष कहीये॥ वास्तवतें न कोऊ वंध है॥ न मोक्ष है॥ केवल ब्रह्मसत्ता अपणे आप विषें
स्थित है॥ जो आत्मतत्व अनंत है॥ सो अज्ञान करकें अंतकी न्याई भासता है॥ जव अना
त्म विषें आत्म अभिमान करता है॥ तव परिछिन्न कल्पना होती है॥ तव शरीरके अंगा
छेदन करकें कष्टमान होता है॥ अरु आत्मपद विषें भेद अभेद विकार कोऊ नहीं पाइता
काहेतें जो नित्य सुद्ध बुद्ध अविनाशी पुरुष है॥ हे रामचंद्र देहके नष्ट हूए आत्मा नष्ट नहीं
होता॥ जैसें घल्लडी विषें आकाश होता है॥ सो घल्लडीके नाश हूए आकाश नाश नहीं हो
होता॥ तैसें शरीरके नाश हूए आत्माका नाश नहीं होता॥ जैसें फूलके नाश हूए गंध आका
श विषें होती है॥ लीन होती है॥ अरु जैसें कमल ऊपर वरफ परती है॥ तव कमल नष्ट
होता है॥ भ्रमर नाश नहीं होता॥ तैसें देहके नाश हूए आत्मा नाश नहीं होता॥ जैसें से
चके नाश हूए पवनका नाश नहीं होता॥ तैसें शरीरके नाश हूए आत्माका नाश नहीं
होता॥ हे रामचंद्र सभका शरीर मन है॥ सो मन आत्माकी शक्ति है॥ तिस मन आगे इह श
रीर आदिक जगत रचा है॥ वहुड शरीर आदिकके नाश हूए तेरा नाश नहीं होता॥ तूंकों
मिथ्या शोकवान होता है॥ वहुड शरीर आदिकके नाश हूए आत्माका नाश नहीं होता
हे रामचंद्र शरीरके नाश हूए तेरा नाश नहीं होता॥ तूंकों मिथ्या शोकवान होता है
तूं तो नित्य सुद्ध ज्ञानरूप आत्मा है॥ हे रामचंद्र मेघके हीण हूए पवन नतो हीण नहीं
होता॥ अरु कमलोंके सूक गए तें भ्रमरा तो नष्ट नहीं होता॥ तैसें देहके नष्ट हूए तें आ
त्मा नष्ट नहीं होता॥ संसार विषें क्रीडा करता जो मन है॥ तिसका भी संसार दशा विषें ना
श नहीं होता॥ तो आत्माका नाश कैसे होवे॥ जैसें घटके नाश हूए घटका नाश नहीं होता
तैसें देहके नाश हूए आत्माका नाश नहीं होता॥ हे रामचंद्र जैसें जलका कुंड होता है॥ ति
स विषें सूर्यका प्रतिविंव पडता है॥ तिस कुंडके नष्ट हूए प्रतिविंवका नाश नहीं होता
अरु तिस जलकों जो होर ले जाईये॥ तव प्रतिविंव भी चलता भासता भासता है॥ तैसें
देह विषें जो आत्मा स्थित है॥ देहके चलनेतें आत्मा भी चलता भासता है॥ जैसें घटके फूटे
ते घटाकाश महाकाश विषें स्थित होता है॥ तैसें देहके नाश हूए आत्मा निर्दुषपद वि
षे स्थित होता है॥ हे रामचंद्र सभ तें जीवोंका देह मन रूपी है॥ जव मृत होता है॥ तव को
ऊ काल मूर्छा पर्यंत देश काल पदार्थोंका अभाव हो जाता है॥ तिसके अनंतर वहुड प
दार्थ भास आवती है॥ तिस मूर्छाका नाम मृतक है॥ अरु आत्माका नाश तो नहीं होता॥
चित्तकी मूर्छा करकें देश काल पदार्थोंका अभाव होणा इसीका नाम मरना है॥ तिसकार

गोतें शोक किसी का नाही करणा ॥ हे महावाहो तूं तो नित्य शुद्ध अविनाशी रूप
है ॥ इह संकल्प वासना करके तेरे विषे जन्म मरण आदिक भासते हैं ॥ सो भ्रांति मा
त्र है ॥ ताते इस वासना को त्याग करके शुद्ध चिदाकाश विषे स्थित हो ॥ जैसे गरुड पं
खी अंडे को त्याग करके आकाश को उडता है ॥ तैसे वासना को त्याग करके तूं चिदाका
श विषे स्थित हो ॥ हे रामचंद्र शुद्ध आकाश विषे जो मनन फुरता है ॥ सोई मन है ॥
सोई मनन जगत रूप होइ अनिष्ट करके इसको बंधन का कारण होती है ॥ सो मन मिथ्या
भ्रांति करके हुया है ॥ जैसे स्वप्न सृष्टि भ्रांति मात्र होती है ॥ तैसे जगत सृष्टि भ्रांति मात्र
है ॥ हे रामचंद्र जगत अविद्या करके वधिया है ॥ अरु दुःख का कारण ॥ सो अविद्या को
तरणा अति कठन है ॥ अविचार करके अविद्या सिध है ॥ अरु विचार कीये ते नष्ट
होती जाती है ॥ तिस अविद्या ने इस जगत को विस्तारया है ॥ अरु इह जगत वरफ
की कंध है ॥ जब ज्ञान रूपी अग्नि का तेज होवेगा ॥ तब निवर्त होइ जावेगा ॥ हे रामचंद्र
इह जगत आकाश रूप है ॥ अविद्या भ्रांति दृष्ट करके आकार होइ भासता है ॥ असत अविद्या
करके वडे विस्तार को प्रापत भया है ॥ दीर्घ काल का स्वप्ना है ॥ विचार कीये ते निवर्त होइ जा
ता है ॥ हे रामचंद्र इह जगत भावना मात्र है ॥ वास्तव ते कछु उपज्या नहीं ॥ जैसे आकाश
विषे भ्रांत दृष्टि करके मोर पुछ की न्याईं तरवरे भासते हैं ॥ तैसे भ्रांत करके जगत भा
सता है ॥ जैसे वरफ की सिला तेज करके लीन होइ जाती है ॥ तैसे आत्म विचार ते जगत
लीन होइ जाता है ॥ जैसे वरफ की सिला उस्नता विना सिलात्व भाव को त्यागती नहीं ॥
तैसे आत्म विचार विना जगत भावना नहीं निवर्त होता ॥ हे रामचंद्र इह जगत अविद्या
करके वधिया है ॥ सो अनर्थ का कारण है ॥ जैसे जैसे चित फुरता है ॥ तैसा तैसा आकार हो
इ भासता है ॥ जैसे इंद्रजाल वाजीगर जैसी स्वर्ण की वर्षा आदिक रचता है ॥ तैसी होइ भा
सती है ॥ तैसा चित जैसा फुरता है ॥ तैसा होइ भासता है ॥ तेती कल्पना आत्म के परमाद
करके होतीयां है न ॥ सो अपणे नाश के कारण होती है ॥ जैसे धुरायण की चेष्टा अपणे बं
धन का कारण होती है ॥ तैसे मन की चेष्टा अपणे नाश के निमित होती है ॥ अरु जैसे द्रव
अपणे क्रिया करके नाना प्रकार के रूपों को धारता है ॥ तैसे मन अपणे संकल्प विकल्प कर
के नाना प्रकार के भाव अभाव के रूपों को धारता है ॥ अरु जब चित संकल्प विकल्प को त्या
ग कर आत्मा की ओर देखता है ॥ तब चित नष्ट होइ जाता है ॥ जब लग आत्मा की ओर देखता नहीं
तब लग जगत को पसारता है ॥ सोई दुःख का कारण होता है ॥ हे रामचंद्र असंकल्प मात्र हो
वणा ॥ इस विषे यत्न तो कछु नहीं ॥ संकल्प रूप आवरण को दूर करो ॥ तब आत्म तत्व प्र
काशेगा ॥ संकल्प विकल्प ही आत्मा के आगे आवरण है ॥ जब इसको त्यागोगे ॥ तब आत्म
तत्व प्रकाशेगा ॥ हे रामचंद्र मन के नाश विषे वडा आनंद उदे होता है ॥ अरु मन के उदे हू
ए वडा अनर्थ होता है ॥ ताते मन के नाश करणे का यत्न करो ॥ मन के धावणे का यत्न
मत करो ॥ हे रामचंद्र मन रूपी किरसाण जगत रूपी वन रचा है ॥ तिस वन विषे सुख
दुःख रूपी वृक्ष है ॥ अरु जम रूपी सर्प तिस विषे रहता है ॥ विवेक ते रहित जो पुरुष है ॥
तिनको भोजन करता है ॥ हे रामचंद्र इह मन परम दुःख का कारण है ॥ ताते इस मन रूपी
शत्रु को वैराग ॥ अरु अभ्यास रूपी खडग साथ मारो ॥ तब आत्म पद को प्रापत होवोगे ॥ वाल्मी
कि उ ॥ च ॥ इस प्रकार जब वसिष्ठ जी कहा ॥ तब सायंकाल का समा हुया ॥ सभ श्रोता
परस्पर नमस्कार करके स्नान को गए ॥ वहुड सूर्य की किरणां के उदे हुए अपणे अपणे
स्थान पर आन वैठे ॥ इति श्री मनखुदरनेतोपदेशो नाम सर्गः ॥ ७५ ॥ ॐ वसिष्ठ उवा
च ॥ हे रामचंद्र इह चित भी परमात्मा ते उदय है ॥ जैसे समुद्र ते लीला करके अंबु कणका
उदे होते हैं ॥ तैसे परमात्मा ते मन उदे हुया है ॥ वहुड मन ने जगत भावना रची है ॥ सो ज
गत वडे विस्तार को प्रापत भया है ॥ छोटे को वडा चाह करता है ॥ जो अपणा आप रूप
है ॥ तिसको अन्य की न्याईं दिखावता है ॥ अरु जो अन्य रूप है ॥ तिसको अपणा आप दिखा

वता ॥ अर्थ शुद्ध आत्मा कों अनात्म भाव प्रापत करता है ॥ अरु अनात्मा कों आत्म भाव प्राप
त करता है ॥ ऐसा जो भ्रांत रूप मन है ॥ सो निकट वस्तु कों दूर दिखावता है ॥ अरु दूर वस्तु कों नि
कट कर दिखावता है ॥ जैसे निकट वस्तु भ्रम करके दूर होइ भासती है ॥ अरु दूर वस्तु निक
ट होइ भासती है ॥ हे रामजी एक निमेष विषे मन संसार को उत्पन्न करता है ॥ अरु निमे
ष विषे लीन कर लेता है ॥ जेता कछु स्थावर जंगम रूप जगत भासता है ॥ सो सर्व मन ही ते उ
पज्या है ॥ देश काल क्रिया द्रव्य अनेक भांती विपर्जे रूप मन ही दिखावता है ॥ अपणा फु
रणा करके भाव अभाव को मन ही प्रापत होता है ॥ जैसे नट वा लीला करके नाना प्रकार के
स्वांगों को प्रापत होता है ॥ सत को असत कर दिखावता है ॥ अरु असत को सत कर दिखावता
है ॥ तैसे मन विषे जैसा जैसा फुरणा दृढ होता है ॥ तैसा ही होइ भासता है ॥ जैसा जैसा नि
श्चा चल मन विषे दृढ होता है ॥ तिसके अनुसार इंद्रियां वरततीयां है ॥ अन्यथा नाहीं
वरततीयां ॥ हे रामजी जो मन करके चेष्टा होती है ॥ सोई सफल होती है ॥ शरीर करि चेष्टा
मन विना सफल नहीं होती ॥ जैसे वालक मन का की सेना वणावता है ॥ अरु नाना प्रकार
के नाम धरता है ॥ तैसे मन भी संकल्प करके जगत को रच लेता है ॥ जैसे माटी की सेना माटी
ते भिन्न कछु नाहीं ॥ तैसे आत्मा विषे नाना प्रकार का जगत कल्प्या है ॥ सो आत्मा ते भिन्न क
छु नहीं ॥ अरु जैसे स्वप्ने विषे अर्थों को नाना प्रकार
कल्पता है ॥ तैसे मन संकल्प विषे अर्थों को कल्पता है ॥ हे रामजी एक सो पद मन अनेक
कल्पता है ॥ तैसे इह जगत जाग्रत भी मन करके कल्प्या है ॥ अरु छिण विषे कल्प को रच लेता
है ॥ अरु कल्प को छिण चाइ करता है ॥ अरु छिण विषे कल्प को रच लेता
योजन को रच लेता है ॥ जैसा कछु मन विषे तीव्र संवेग होता है ॥ तैसा ही होइ कर भासता है ॥ तिसको रचणा वि
षे ॥ जैसा जैसा तीव्र संवेग होता है ॥ तैसा ही भा
सता है ॥ बिलंब नाही लागती ॥ रचणा को समर्थ है ॥ सभ का कारण मन है ॥
जेते कछु देश काल आदिक पदार्थ है ॥ सो मन ते उपजे है ॥ अरु समुद्र ते लहरी तरंग होते
हैं ॥ सोई जल रूप है ॥ जैसे पत्र फूल फल टास वृक्ष ते उपजते है ॥ सो वृक्ष रूप है ॥ तैसे नाना प्रकार के स्वभा
व मन ते उपजे दृष्ट आवते हैं ॥ सो मन ही रूप है ॥ अरु जैसे अग्नि के उस्नता अग्नि रूप है ॥ हे रामजी कर्ता कर्म क्रिया दृष्टा दर्शन दृश्य सर्व
मन ही के पसारे हैं ॥ जैसे स्वर्ण के नाना प्रकार के भूषण होते है भासते हैं ॥ सो जब लग स्व
र्ण का अज्ञान है ॥ तब लग नाना प्रकार के भूषण भासते हैं ॥ अरु स्वर्ण का जब ज्ञान हुया ॥ तब स
र्व भूषण एक स्वर्ण ही भासता है ॥ भूषण भावना नहीं भासती ॥ तैसे जब लग आत्मा का प्र
माद है ॥ तब लग द्वैत रूप जगत भ्रम पडा भासता है ॥ अरु जब आत्मा का ज्ञान हुया ॥ तब
सर्व भ्रम मिट जाता है ॥ इति श्री चित्त महात्म्य वर्णनं नाम सर्गः ॥ ७६ ॥ ॐ वसिष्ठ उवाच ॥
हे रामजी अब एक दृष्टांत तुझ को कहता हों ॥ जो पूर्व वितीत हुया है ॥ इह जगत इंद्रजा
ल वत है ॥ जैसे मन रूपी इंद्रजाल विषे इह जगत स्थित है ॥ तैसे तूं सुण ॥ हे रामजी इस पृ
थिवी विषे एक वडा वन था ॥ तिस विषे नाना प्रकार के वृक्ष अरु फल फूल तला उथे ॥ नद्या
विद्याधर आनकर कलोल करते थे ॥ अरु वहुत सुंदर स्थान थे ॥ केले के वृक्ष अरु खजूर अ
रु कैरों जूए के वृक्ष थे ॥ अरु मोर शब्द करते हैं ॥ अरु अनेक प्रकारों के पंछी शब्द करते हैं ॥ अ
रु अनेक प्रकार के फूलों ते सुगंध चलती है ॥ तहां विद्याधर अरु सिध गण देवते आन वि
श्राम करते हैं ॥ किंनर आन गायान करते हैं ॥ मंद मंद पवन चलता है ॥ तिस स्थान का ल
वन नाम राजा होत भया ॥ हरीचंद की कुल विषे उपज्या ॥ अरु वडा धर्मात्मा होत भ
या ॥ सो तेज कर सूरज पृथिवी विषे उदे हुया है ॥ वडा तेजवान ॥ जेते कछु शत्रु है ॥ तिन
सभनों को कुहाडे साथ नाश कीया ॥ अरु साधु पुरुष गुणवान है ॥ तिनकी रक्षा करी ॥
दुष्ट जीवों को नाश कीया ॥ हे रामजी ऐसा तेज उस का हुया ॥ जो शत्रु राजे का नाम सुण
कर ॥ तब उनको ताप चड जावे ॥ अरु श्रेष्ट पुरुषों की पालना करे ॥ तिस राजे के जस क
र स्वर्ग पृथिवी पूरण भई ॥ अरु स्वर्ग विषे देवता विद्याधर जस गावे ॥ लोकपाल भी ति
स का जस सुणे ॥ सर्व लोक विषे उसका जस प्राक्रम प्रसिद्ध भया ॥ हे रामजी तिस राजे के स

मानऊेरकोऊस्वप्नविषेभीदृष्टनआवै॥कदलनाअरुलोभतिमविषेकछुदृष्टनआ
वै॥अरुवडाउदारवान॥अरुउदारताउसविषेमनदृपाईये॥जैसेब्रह्माजीकेकंदविषे
दृदासमालाप्रत्यक्षपाईतीहै॥तैसेउसकीउदारताअरुतेजदृष्टआवै॥सोयमीत्मा
एकदिनसभसंयुक्तवैठाथा॥अरुदोमहूर्तदिनरह्याहै॥वडेसिंहासनपरवैठाहै॥जै
सेदेवतोंकीसभाविषेइंद्रवैठाहोताहै॥तैसेवैठाहै॥अरुमंडलेस्वरकीसेनाअनर
वहुडवाहानिकसआवतेहै॥स्त्रीयांपडीयांनिरतकरतीयांहै॥वजंत्रवाजतेहै॥म
धुरधुनिहोतीहै॥चामरफुलताहै॥मंत्रीआनआगेखडीहोतीहै॥तैसेदेवगुरुवृह
स्पतिहोताहै॥तिसकेसमानराजाकोंदेशमंडलकीयांवार्तासुणावतेहै॥अरुइति
हासकथाकापुस्तकवाचकरदांपराख्याहै॥भटलोकउस्तुनकरतेहै॥तिसीकाल
मोंसभाविषेएकइंद्रजालवाजीगर॥अपणाअडंवरसंयुक्तआनप्रापतभया॥जैसा
वर्षाकालकामेघजलकरपूर्णआवताहै॥तैसेआइप्रापतभया॥अरुराजाऊआसन
पररचरणलमकायहूएवैठाहै॥जैसेसुमेरकासिषरहोताहै॥तैसेग्रीवाकोंऊंचेकी
येवैठाहै॥अरुजैसेपहाडऊपरहस्तहोताहै॥तिसकेफलपडेलमकतेहै॥तैसेराजा
सिंहासनपरवैठाहै॥अरुचरणपडेलमकतेहै॥तिसराजाकेनिकटइंद्रजालआन
प्रापतभया॥जैसेनिकटहस्तकेमरकटवांनरआवताहै॥तैसेआइकहतभया॥हे
राजनएकतुमसेराकोंतुकदेषो॥हेरामऐकहकरउसपिटारषोलया॥तिसमो
एकमोरकाहरकाप्रच्छकाटकरभ्रमावणेलागा॥तिसकेभ्रमावणेकरनानाप्र
कारकीरचनाभासणेलागी॥मानोंपरमात्माकीमायाहै॥तिसनानाप्रकारकेरं
गोंकोंराजादेषताभया॥जैसेइंद्रधनुषआकाशविषेभासताहै॥तैसेसूर्यकीयांकि
रणांवतप्रकाशवानरंगभासणेलागे॥वहुडतिसीषिणविषेएकमंडलेस्वरकाहू
तआनप्रापतभया॥जैसेआकाशविषेतारामंडलकोलंघकरमेघआवताहै॥तैसे
द्वारविषेजोडाअरुसभाकोलंघताआया॥अरुकहतभया॥हेराजनइहमहावा
हनघोडामेरेराजेतुमकोंदीयाहै॥सोकैसाघोडाहै॥जैसेऊचेस्रवणवालाइंद्रका
घोडासमुद्रमथनतेनिकस्याहै॥तैसाइहघोडाहै॥अरुपवनकीन्याईतिसकावेग
है॥मानोपवनकीमूर्तिहै॥मेरेस्वामीकह्याहै॥जोउत्तमपदार्थहै॥सोमहंतावडयों
कोयोगहै॥इसकारणतेंघोडयोंविषेरत्नतुमकोंदीयाहै॥तुमारेयोगहै॥तातेंल
वो॥हेरामजीजवइसप्रकारकहतकह्या॥तवइंद्रजालकवोलतभया॥जैसेमेघगा
जकरचुपकरताहै॥अरुपाछेववोहावोलताहै॥तैसेइंद्रजालककह्या॥हेराज
नइसघोडेपरतुमआरूढहोइकरविचरो॥अरुशोभापावो॥जैसेआकाशविषेसूर्य
शोभताहै॥अरुनगतकोंभीशोभतकरताहै॥तैसेतुमसेशोभो॥अरुघोडाभीशोभे
गा॥हेरामजीजवइसप्रकारइंद्रजालककह्या॥तवराजाघोडेकीओरदेषभया॥देष
करमूर्छितहोगया॥जैसेकागतऊपरमूर्तिलिषीहोतीहै॥तैसेदोमुहूर्तपर्यंतराजा
निरसंपंदहोगया॥जैसेवीतरागमुनीश्वरपरमानंदब्रह्मपदविषेस्थितहोवै॥तै
सेराजाहोगया॥हेरामचंद्रराजेकोंभयकरकेमंत्रीजगावतेनाही॥हाथापाउराजे
काकछुहलेनाही॥सिरपरचमरपडाफुले॥जैसेचिकडविषेकमलअचलहोताहै॥
जैसेराजाअचलहोगया॥भटाकामहजोउस्तुतकरतेथे॥सोभीतुस्नीहोरहा॥जैसेव
र्षाकालकामेघगाजकरशांतहोजाताहै॥तैसेशांतहोगये॥अरुमंत्रीटहलूएसभसं
सेकेसमुद्रविषेडूवगए॥उहजानतभएजोराजेकेमनविषेकोऊवडीचिंताउपजी
है॥अरुसभसभाकेलोकआश्चर्यमानहूए॥इतिइंद्रजालोपाख्यानेनृपव्यामोहोनाम
सर्गः॥ ॥
वसिष्ठउवाच॥
हेरामजीतवराजादोमुहूर्तउपरांतचेतन्यताविषेआया॥जैसेवर्षाकालकेमेघतेंछुट
करकमलप्रफुलतहोइआवतेहै॥तैसेराजाजागकरसिंहासनऊपरकंपणेलागा

जैसेभूकंपविषेपर्वतहलतेहै॥तैसेराजेकेअंगहलणेलागे॥जैसेसमुद्रकेमथ
नतेंमंदराचलकंपताथा॥तैसेकंपकरराजागिडनेलागा॥तवमंत्रीअरुटहलूएभुपक
ड़करराजेकोंथांभतेभए॥जैसेप्रलयकालविषेसुमेरगिडनेलागे॥अरुपासलेपर्वत
थांभछोडे॥गिडनेनदेवे॥तैसेराजेकोंगिरनेनदीया॥पररजिकोंवडिव्याकुलभई॥तव
राजावोलतभया॥इहनगरीकिसकाहै॥अरुसभाकिसकीहै॥अरुराजाकोनहै॥इह
क्याहै॥हेरामचंद्रजवइसप्रकारराजेकावचनसुणया॥तवमंत्रीकछुकशांतवान
हूए॥जैसेसूर्यराहुतेंछुटताहै॥तवकमलषिडआवतेहै॥अरुतिनकोंदेषकरभ्रमर
प्रसन्नहोतेहै॥अरुग्राहककरतेहै॥तैसेमंत्रीअरुटहलूएप्रसन्नहोइकरकहतभए॥जैसे
प्रलयकेक्षोभतेंअसतामारकडा॥तिसकोंदेवतेपूछतेथे॥तैसेपूछतेभए॥हेराजन
तूंकोंव्याकुलताकोंप्रापतभयाहै॥तेरातोनिर्मलमनहै॥हेदेवजिनपुरुषोंकीप्रीत
विषयपदार्थोंविषेहै॥अरुअपानरमणीयभोगोंविषेजिनकाचित्तहै॥तिनकामनतेमा
हविषेभ्रमजाताहै॥अरुजोसंतजनउदारचित्तहै॥तिनकामननिर्मलहोताहै॥तिना
कामननमोहविषेकेसेडुवे॥हेदेवचित्तभोगोंकीतृस्नाकरकेछेद्याहूयाहै॥तिनकाम
नमोहकोंप्रापतहोताहै॥अरुजोमहापुरुषसंतजनहै॥तिनकामनमोहविषेडूवे
तानाही॥जिनकाचित्तपूर्णआत्मभावविषेस्थितहूयाहै॥अरुवडेगुणांकरकेसंपन्न
है॥तिनकोंशरीरकेरहणेविषे॥अरुनष्टहोवणेविषेकछुमोहनाहींउपजता॥अरु
जिनकोंआत्मतत्वकाअभ्यासनाही॥प्रापतभया॥अविवेकहै॥तिनकाचित्तदेशकाल
मंत्रऊेषधोंकेवशतेंमोहकोंप्रापतहोताहै॥तुमारचित्ततोविवेकभावकोंग्रहणाकरकें
रता॥जोनित्यहीनोतनकथाअरुशास्त्रसुणातेहो॥अववकेसेमोहकरकेचलाइमानहूए
हो॥जैसेवायुकरकेपर्वतचलाइमानहोवे॥तैसेतुमचलाइमानहूएहो॥सोआश्चर्यहै
हेरामजीजवइसप्रकारमंत्रीअरुटहलूएकहतभए
तुमअपणीउदारताकोंस्मरणाकरो॥हेरामजीजवइसप्रकारमंत्रीअरुटहलूएकहतभए
तवराजासावधानहोतभया॥अरुमुषक्रांतउजलहोइआई॥जैसेसरतकालकीमंजरी
रूकीहूईवसंतरितुविषेप्रफुलतहोइआवतीहै॥तैसेराजानेत्रोंकोंषोलकरदेषत
भया॥जैसेसूर्यराहुकीओरदेषताहै॥जैसेसपनोलकीओरदेषताहै॥तैसेइंद्रजालकी
ओरदेषकरकहा॥हेदुष्टइंद्रजालतुनेइहक्याकर्मकीया॥राज्योंसाथभीकोऊऐसाक
र्मकरताहै॥जैसेजलविनामच्छलोकषूपाइकरवहुडजलविषेप्रसन्नहोवे॥तैसेमें
हूयाहो॥वडाआश्चर्यहै॥परमात्माअनंतशक्ति॥अनेकप्रकारपदार्थफुरतेहै॥मैंदो
मुहूर्तोंविषेकाभ्रमदेष्या॥मैंरामननसदाज्ञानकेअभ्यासविषेस्थितथा॥सोभीमोहया
गया॥तोअज्ञानजीवोंकीवातक्याकरणीहै॥मैंवडाआश्चर्यभ्रमदेष्याहै॥सोतुमसमभ
हीसुणतेसुणो॥इहजोइंद्रजालकहै॥सोसांवरदेत्यहैक्या॥दोमुहूर्तोंविषेइसमुक
कोंअनेकदेशानदीयांपदार्थदिषाएहै॥जैसेब्रह्मामुहूर्तविषेनानाप्रकारकेपदा
र्थोंकोरचलेवे॥तैसेमुहूर्तविषेइसमुर्षकोंअनेकभ्रमपदार्थदिषाएहै॥सोसभम्हे
मेंतुमारेआगेकहताहो॥मानोसारीसृष्टिइसकेपिटारविषेहै॥इतिराजाप्रवोधो
नामसर्गः॥ ॥२८॥
राजोवाच
हेसाधोइससप्थिवीकामैंराजाहौं॥सभप्थिवीविमेरीआज्ञाचलतीहै॥अरुमैंइं
द्रकीन्याईसिंहासनपरवैठताहों॥जैसेस्वर्गविषेइंद्रकेआगेदेवतेहोतेहै॥तैसेमे
रेआगेभृतहैमंत्रीहै॥ऐसाउदारताकरकेमैंसंपन्नहों॥सोमैंवडेभ्रमकोंदेषता
भयाहों॥हेसाधोजवइसइंद्रजालपिटारसोकाइकरछकोंभ्रमाया॥तवइहपे
च्छमुषकोंसूर्यकीयांकिरणोंकीन्याईभास्या॥जैसेवडामेघगाजकरशांतहोता
है॥अरुपाछेइंद्रधनुषदृष्टआवताहै॥तैसेमैंविचित्ररूपच्छमुषकोंदृष्टिआया॥तव
तिसकेअंतरहूतएकघोडालेआया॥तिसघोडेऊपरमैंआरूढभया॥सोचिनहीकरि
घोडामुषकोंहरतेंहरलेगया॥इहांहीमैंवेठारहा॥अरुघोडामुषकोंहरतेहरलेगया

यो॰ ग॰ वा॰ २६

जैसे भोगों की वासनाकरके मूर्ष चरही वे देहरूं नेहर भ्रमते फिरते हैं॥ तैसे घोडा मुझकों
हरले गया॥ एक महा भयानक निर्जन देश विषे ले गया॥ जैसे प्रलय काल वि
षे जले हुए स्थान होते हैं॥ तैसे स्थान विषे मुझ कों ले गया॥ मानों सात समुद्र कों उल्लं
घकर महा अटवी विषे ले आया है॥ मानों हे सर्वा आकाश है॥ जैसे आकाशवत ज्ञानी
का चित्त होता है॥ अरु जैसे अज्ञानी का चित्त कठोर होता है॥ अरु शून्य होता है॥ तैसा
स्थान है॥ जहां घास वा मजीव हृदय मनुष कोऊ दृष्ट न आवै॥ तहां मैं महा कष्टवान भ्र
न हुया दीनता को प्रापत भया॥ जैसे धन अरु बांधवों ते रहित देश अरु बलते रहित
पुरुष कष्ट पावता है॥ तैसे मैं कष्टवान हुया॥ तब दिन का अंत हो गया॥ तहां उजा
ड विषे कष्ट साथ रात्र कों मैं व्यतीत कीया॥ रात्र कों पृथिवी ऊपर सैन कीया॥ परु नि
द्रा भी न पडी॥ जब सूर्य उदे हुया॥ तब ऊहां ते चला॥ आगे गया पंछीयों का शब्द सु
णया॥ वहुड वृक्ष दृष्ट आए॥ परु षान पान कछु न पया॥ तिन वृक्षों देषकर भी प्रसन्न
भया॥ जैसे सरणते छूटा पुरुष रोग सहित भी प्रसन्न होता है॥ तैसे मैं वृक्षों को देषकर
प्रसन्न हुया॥ एक जम्बू के वृक्ष का मैं आश्रय लीया॥ जैसे मार्कंडे विषने प्रलय के समुद्र वि
षे भ्रमता हुया वट का आश्रय लीया था॥ तैसे मैं वृक्ष कों शरण कीया॥ तब घोडा मुझ
कों छोड कर चलता रहा॥ जैसे गंगा विषे टवीलू गोकर पाप चलते रहें॥ तैसे घोडा मु
झ कों छोड गया॥ वहुड सूर्य अस्त भया॥ तहां रात्र मैं व्यतीत करी न कछु भोजन कीया
न जलपान कीया॥ न स्नान कीया॥ महा दीनता कों मैं प्रापत भया॥ जैसे कोऊ विकाण
मनुष दीन होजाता है॥ अरु जैसे अंधे कूप विषे गिडया मनुष कष्टमान होता है॥ तैसे
मैं कष्टमान हुया॥ अरु कल्प के समान रात्र व्यतीत भई॥ दिन भया॥ कोऊ फूल फल पत्र
जल ऊहां दृष्ट न आवै॥ जैसे मूर्ष के शरीर विषे कोऊ गुण दृष्ट नहीं आवता॥ तैसे ऊहां
अन्नपान कछु दृष्ट न आवै॥ तब मैं आगे गया॥ तहां पंछी शब्द करते हैं॥ अरु पहर दिन र
हा है॥ एक कन्या मुझ कों दृष्ट आई॥ तिसके हाथ विषे मृत्तका की मटकी॥ तिस विषे विधे
हुए चावल॥ अरु जंबू के रस की टिंडु भरी हुई लीए जाती है॥ तिसकों देषकर मैं तिसके स
नमुष आया॥ जैसे रात्रि के सनमुष चंद्रमा आवता है॥ तैसे मैं आइकर कहा॥ हे वाले मुझ
कों भोजन देह॥ मैं क्षुध्याकर वहुत आतुर रहा॥ जो कोऊ दीन आर्त कों अन्न देता है॥ सो वडी
संपदा कों प्राप्त होता है॥ ताते तूं भोजन मुझ कों देह॥ हे साधो जब मैं वारंवार उसकों कहा
तब उस कहा॥ तूं तो कोऊ राजा भासता है॥ जो नाना प्रकार के भूषण वस्त्र पहिरे हुए हैं॥
तूं जो भोजन मांगता है॥ सो मैं न देवोंगी॥ ऐसे कहकर आगे चली जावे॥ अरु मैं भी तिसके
पाछे चला जावों॥ जैसा पछवा वां चला जाता है॥ तैसे मैं कहता जावों॥ हे वाले मुझ कों भो
जन देह जो मेरी क्षुध्या शांत होवे॥ तब उस कहा हे राजन हम नीच लोक हैं॥ अपणे भर्ता
जन विना किसी कों नहीं देते॥ जे तूं मेरा भरता होवे॥ तब मैं देती हों॥ इह अन्न मैं पिता के
निमित्त ले चली हों॥ उह समसाण विषे हूं ताल कीन्या ई अवधूत वैठा है॥ अरु भूख साथ
अंग भरे हुए हैं॥ जे तूं मेरा भरता होवे॥ तब मैं देती हों॥ काहेते जो भर्ता प्राणों ते भी प्यारा
होता है॥ पिता मैं दिसाकर राखलेवोंगी॥ हे साधो जब चंडाली ऐसे कहा॥ तब मैं कहा॥ भ
ला मैं भर्ता होता होता हों॥ मुझ कों भोजन देह॥ हे साधो ऐसा कोन है॥ जो ऐसी आपदा वि
षे अपणे वर्णाश्रम के धर्म कों दृढ राषै॥ तब उस मुझ कों अर्ध भाग भोजन दीया॥ अरु अर्ध
ही जंबू को रस दई॥ तिसकों भोजन अरु पान कीया॥ तब कछुक शांतवान हुया॥ परु मेरा मो
ह निवर्त न भया॥ तब दोनों ऊहां ते चले॥ मेरा हाथ पकड कर मुझ कों आगे ले गया॥ अप
णे पिता के निकट ले गई॥ जैसे पापी कों यम दूत ले जाते हैं॥ तब चंडाली कहा पिता इह मैं भ
र्ता कीया है॥ पिता कहा भला कीया है॥ ऐसे कहकर चावल अरु जम्बू पिता कों भोजन क
राया॥ भोजन करके पिता कहा॥ हे पुत्री इस कों अपणे घर ले जाइ॥ तब मुझ कों अपणे घ
र ले चली॥ जब घर के निकट गए॥ तब मैं देष्या जो अस्थि मांस रुधिर वहुत पडा है॥ केतेक

कुत्ते गर्धव हस्ती आदिक जीवों की यां षलडीयां अंबुद्धां पडीयां हैं॥ तिसकों लंघाकर अपणे गृह विषे ले गई॥ जैसे पापी कों नरक विषे यमदूत ले जाते हैं॥ एक दारा निकट था॥ तिसके आगे अपणी माता सन्मुख कों ले गई॥ अरु कहा हे माता इह ते राजवाई हुया है॥ माता कहा भली वात है॥ तब उनके घर हम विश्राम कीया॥ इस चंडाली मुझ कों भोजन दीया॥ तिसकों मैं भोजन कीया॥ मानो अनेक जन्मों के पाप भोगीते है॥ वहुड विवाह का दिन स्थापन कीया॥ तिस दिन विषे विवाह कीया चंडाल हूमैं॥ अरु निरत करे॥ मानो पाप पडे निरत करते हैं॥ उह चंडाली मुझ कों विवाह दई॥ जैसे पापी कों त्रास देवती है॥ तैसे चंडाली वस्त्र आदिक पदार्थों सहित मुझ कों विवाह दई॥ इति श्री चंडाली विवाह नाम सर्गः॥ २६

३०

राजोवाच॥ हे साधो वहुत कष्ट करक्या है॥ ऊहां मैं वडा चंडाल होत भया॥ सप्त दिन पर्यंत विवाह का उत्साह होत भया॥ तहां अष्ट मास मैं रहा॥ तिसके अनंतर ओर स्थान मों जाइ रहा॥ तब उह चंडाली गर्भवंत भई॥ तिसने एक कन्या उत्पत्ति भई॥ अरु पाछे होवी वधगई॥ जैसे मूर्ष के चित्त विषे चिंता वध जाती है॥ वहुड तीन वर्ष पाछे तिसते वालक उत्पत्त भया॥ जैसे इंधन ते अनर्थ उत्पत्ति होता है॥ वहुड पुत्र वहुड कन्या उपजी॥ इसी प्रकार तीन पुत्र अरु तीन कन्या उत्पत्ति हुए॥ तब मैं वडा परवारवान हुया॥ तिस चंडाली साथ मेरे चिरकाल पर्यंत चंडालों विषे विचरता रहा॥ जैसे ब्रह्महत्यावान नरकों विषे चिंता सहित वसता रहे॥ तैसे मैं रहा॥ अरु तिनके साथ मेरा वहुत सनेह भया॥ जैसे जाल विषे पंछी वंधायमान होता है॥ तैसे मैं तिनों विषे वंधायमान भया॥ हे साधो तिनों विषे मैं वडे वडे कष्ट पाए॥ सो तिनों विषे मैं सिर पर भार उठावों॥ अरु नीचे चर्म जो पटका मोटा वस्त्र भी चुभता था॥ रात्रि कों कंकरीयां कंटयों ऊपर सैन करों॥ अरु सिर पर सूर्य तपावै॥ ऊपर कोकोऊ वस्त्र प्रापत न होवे॥ पुरातन कुपीन तिस कर मैं वडा कष्ट कों पावता भया॥ अरु काक रहस्ती अरु जीवों जेतों अरु लोहू माथा भरी हुई असत्य जैसी का पइदा होवे॥ अरु रुधिर कों पान करों॥ ऐसी इस मारी चककड आदिक अस्व पदार्थों का भोजन पाईये॥ अनेक प्र छा होवे॥ जाल साथ हम ने पंछी भी मारे॥ कंडी साथ मच्छ कच्छ आदिक भी मारे॥ अनेक प्रकार के क्रूर नीच कर्म हम करते भए॥ जैसी कैसी वस्तु पाई सो भोजन कर लीया॥ विचारत हीन हम चिरकाल पर्यंत ऐसी चेष्टा करते रहे॥ अरु ऐसी अवस्था भई॥ जो अस्थि अरु मांस के निमित्त हम मारा आपस मों रामहोवे॥ पुत्र अरु स्त्री सम भले॥ अरु शीतकाल मों शीतकर कष्ट पावै॥ उष्णकाल मों उष्णता कर कष्ट पावै॥ मेरा शरीर वहुत कृश हो गया॥ अवस्था भी वृद्ध भई॥ अरु हम साथ तिस विषे हमारा वहुत काल व्यतीत भया॥ मांस अरु रक्त भोजन पान करें॥ अरु जो वेताल जन्म पावे॥ तिनकों हम मारें॥ जैसे चंडकादे न्यो अरु वेताल लोकों मारया था॥ आंद्रा अरु चमडे तिनके विछाइ करि सैन करें॥ अरु पिशाचों कों सिराणे राषे॥ जैसे सेसनाग की सय्या ऊपर विष्णु भगवान सैन करता है॥ तैसे हम सैन करें॥ ऐसे चिरकाल पर्यंत हम चेष्टा करते रहे॥ वांधवों विषे हम वहुत व्यग्र भए॥ ऐसी नीचता कों हम प्रापत भए॥ परु त्रिसा वहती जावे॥ जैसे वर्षाकाल कीनदी वहती जाती है॥ तैसे तृस्ना वडती जावै॥ मृतक के पात्रों विषे आगे चांडाल भोजन कर जावे॥ तिनों वासनों विषे हम भोजन करें॥ वहुड वर्षा होणे ते रह गई॥ काल पड़ा सूर्य तपणे लागा॥ मानों द्वादश सूर्य एकठे तपते हैं॥ अरु दावा अग्नि वन कों लागी है॥ वन के जीव अन्न अरु जल के निमित्त कष्ट पावणे लागे॥ अपणे देश कों छोड करि देशांतर जावे॥ महा उपद्रव आन प्रापत हुए॥ सभ मे विना मानों प्रलय आई है॥ क्षुध्या अरु तृषा करके कई जीव मृतक हो जावें॥ कई गिड गिड पडे॥ वहुत कष्ट आन पड़ा॥ तब हम ऊहां सो निकसे॥ तीन पुत्र अरु तीन कन्या स्त्री सहित मैं निकस्या॥ जहां अन्न जल स्नानीय तहां जावें॥ मांस षावे॥ जल अथवा रक्त पान करें॥ वहुड इह भी

२६

हाथ आवणे तें रहगए ॥ तब बहुत शोकवान हूए ॥ शरीर भ्रष्ट होगया ऐसे कष्टमा
न हूए ॥ पुत्र को पिता न सम्हाले ॥ अरु पिता कों पुत्र न सम्हाले ॥ बांधवों का स्नेह आ
पस मों छूटगया ॥ अपणे वास्ते सभ दोडे ॥ इति इंद्रजालोपाख्याने उपद्रव वर्णनं ना
म सर्गः ॥ ॥ ८ ॥ राजा उवाच ॥

हे सभा इस प्रकार हम विचरते थे ॥ मेरा शरीर बृद्ध होगया ॥ अरु बाल बरफ की न्या
ई स्वेत होगए ॥ जैसे स्त्रके पात वायु करके विचरता है ॥ तैसे हम कर्मों के वशते भ्रमते र
हे ॥ जो कछु अपणे राजत्व का अभिमान था ॥ सो सभ कों विस्मरण होगया ॥ अरु चंडाल
भाव मेरे विषे दृढीभूत होगया ॥ जैसे पंषों के टूटे तें पहाड अचल भए हैं ॥ तैसे चंडाल का
कल्प मेरे विषे दृढ होगया ॥ अरु व्याकलता करके हम महा कष्टवान हूए ॥ तृण फू
ल फल जल कहूं दृष्टि न आवे ॥ जब वायु चले ॥ तब रेत के कणके उडते मेघ की न्याई
दृष्टि आवे ॥ अरु अनेक स्थानस्थाकीयां नदीयां दृष्ट आवें ॥ सब जीव कष्टमान होइ क
र कलत्रों कों छोड छोड जावें ॥ कोऊ पहाड ऊपर चढ कर दुःष के निमित्त गिर पडे ॥ जैसे चि
डी कों बाज भोजन करता है ॥ तैसे जीवों कों विचयाड भोजन करे ॥ बहुरि एक वृक्ष पा
या ॥ तिसके नीचे हम विश्राम कीया ॥ तब एक बालक जो सभों ते छोटा था ॥ सो मेरे पास
आया अरु कहा ॥ हे पिता मुझ कों मांस देहु ॥ जो मैं भोजन करों ॥ नहीं तो मेरे प्राण निकस
ते हैं ॥ तब मैं कहा मांस तो है नहीं ॥ तब उह कहत भया ॥ भावे किथोडा देहु ॥ तब मैं स्नेह क
रता था अरु छोटा ॥ पुत्र सभन ते प्यारा होता है ॥ तिसकर मैं कहा ॥ हे पुत्र मेरा मांस षाता है
तब उस उह बडी कहा देवो ॥ तब मैं बन ते लकडीयां चुण ले आया ॥ तिन कों एकठा करके
अग्नि जलाई ॥ अरु कहा ॥ हे पुत्र मैं अग्नि मैं प्रवेश करता हों ॥ जब परिपक होवेगा ॥ तब
तुम भोजन करणा ॥ हे सभा इस प्रकार मैं स्नेह करके कहा ॥ जो किसी प्रकार इह जी
वते रहें ॥ ऐसे कहकर मैं चिषा दिषे प्रवेश कीया ॥ जब मुझ कों उस्नता लागी ॥ तब मै
रहांके पाइ मान हूया तुम कों दृष्ट आया ॥ बहुरि कछु सावधान भया ॥ अरु शाहूतरी बा
जने लागी ॥ हे साधो इस प्रकार मैं चरित्र देष्या है ॥ जैसे तुमारे आगे कहा है ॥ जैसे मार
कंडा प्रलय विषे क्षोभ कों देषे ॥ अरु देवत्यों कों कहे ॥ तैसे मैं तुम कों अपणा वृत्तांत कहा
है ॥ तब इस इंद्रजालक ब्रह्म कों असाया ॥ तिसके अभाव होणे साथ मैं थोडे पर आरूढ भ
या ॥ तिसकर एता काल मैं भ्रम कों प्रत्यक्ष ही देषता रहा ॥ तां तें बडा आश्चर्य है ॥ जो मैं
ऐसे विवेकवान राजा कों मोहन कीया है ॥ तो और प्राकृत जीवों की क्या वार्ता है ॥ माया
महा आश्चर्य है ॥ वसिष्ठ उवाच ॥ हे रामजी इस प्रकार जब तें जवान राजे कहा ॥ तब
उह सांबर अंतर्धान होगया ॥ अरु सभा विषे जो मंत्री ते आदि लेकर बैठे थे ॥ सो सभ
आश्चर्यवान हूए ॥ अरु देष देष कर परस्पर कहणे लागे बडा आश्चर्य है ॥ भगवान की मा
या विचित्र रूप है ॥ इह सांबरी माया नाहीं ॥ काहे तें जो सांबर अपणे लोभ के निमित्त स्वां
ग दिषावता है ॥ पाछे यत्न करके धन आदिक पदार्थ मांगता है ॥ अरु इह तो लीये बिना
ही अंतर्धान होगया है ॥ इह ईश्वर की माया है ॥ तिसकर ऐसा विवेकवान राजा मोह
कों प्राप्त हूया है ॥ जो बडा तेजवान अरु शूरमा राजा मोहित भया है ॥ तो समान जीवों
की क्या चली है ॥ हे रामजी ऐसे संदेहवान होइकर सभ स्थित भए ॥ अरु मैं भी तिस सभा
विषे बैठा था ॥ इह वृत्तांत मैं प्रत्यक्ष देष्या है ॥ किसी और सत्यवादी के मुष ते श्रवण कर
के मैं नाहीं कहता ॥ आप प्रत्यक्ष देष्या ॥ सोई तुझ कों कहता हों ॥ हे रामजी इह जो फुरण
रूप मन है ॥ सो महा मोह है ॥ अरु इही अविद्या है ॥ इसके फुरणे कर अनेक प्रकारों का
मोह देषीता है ॥ जब इह मन उपशम होवे ॥ तब ही कल्याण है ॥ तां तें मन जो बहुत क
ल्पना उठावता है ॥ तिस कों त्याग कर आत्मपद विषे स्थित करो ॥ जब मन उपशम हो
वेगा ॥ तब परम पावन पद प्राप्त होवेगा ॥ इति सांबरोपाख्याने समाप्तम ॥ ८ ॥ शुभम

ॐ वसिष्ठ उवाच ॥ हे रामजी आदि जो सुद्ध परमात्मा तें चित्त संवेदन फुरी है ॥ सो क
ल्पना रूप होइकर स्थित भई है ॥ तिसकर दृष्ट असत्य होइकर भासणे लागी है ॥ आ
त्मा के परमाद करके मोह कों प्राप्त हूया है ॥ सो चित्त फुरणे करके विपर्यय तें जग
त विषे मग्न होरहा है ॥ सो मन असत्य रूप है ॥ अरु मन ही संपूर्ण जगत कों विस्तारया
है ॥ तिसकर अनेक दुःष कों प्राप्त हूया है ॥ जैसे बालक अपणी परछावें विषे बैताल
कल्पकर आपही भयमान होता है ॥ अरु उही मन जब संसार की वासना कों त्यागकर
आत्मपद विषे स्थित होवे ॥ तब एक क्षण ही विषे सभ दुःष नष्ट होजावें ॥ जैसे सूर्य की
यों किरणां कर अंधकार नष्ट होजाता है ॥ हे रामजी ऐसा पदार्थ कोऊ नाहीं ॥ जो अभ्या
स कीये तें प्राप्त न होवे ॥ तां तें जब आत्मपद का अभ्यास करीये ॥ तब प्राप्त होता है
आत्मपद का अभ्यास कीये तें आत्मा निकट भासता है ॥ अरु संसार दूर भासता है ॥ अरु
जब जगत ही का अभ्यास दृढ होता है ॥ तब जगत निकट भासता है ॥ आत्मा दूर भास
ता है ॥ हे रामजी जो मूर्ष मनुष्य हैं ॥ तिन कों अभय पद विषे भय होता है ॥ जैसे पंथी कों
हरने वृक्ष विषे बैताल कल्पना होती है ॥ अरु भय कों पावता है ॥ तैसे चित्त कीयां वास
ना कर जीव भय कों प्राप्त होता है ॥ हे रामजी जो वासना सहित मलीन मन होता है
तिस विषे नाना प्रकार का संसार असम उठता है ॥ अरु जब आत्म विषे स्थित होता है ॥ त
ब भ्रम मिटजाता है ॥ जैसा मन विषे निश्चा होता ॥ तैसे ही होइ भासता है ॥ जब मित्र वि
षे शत्रुबुधि होती है ॥ तब निश्चै कर शत्रु होजाता है ॥ अरु जो मधुकर उन्मत्त होता है
तिस कों संपूर्ण पृथ्वी भ्रमती दृष्ट आवती है ॥ अरु व्याकल मन होता है ॥ तब चंद्रमा भी
घाम जैसा भासता है ॥ अरु जो अम्रत विषे विष की भावना होती है ॥ तब अम्रत भी वि
ष की न्याई भासता है ॥ जैसे कछु जाग्रत पदार्थ देश काल क्रिया पतन भासते हैं ॥ सो मन
करके ही भासते हैं ॥ हे रामजी संसार का जो कारण है ॥ सो मोह है ॥ तिस मोह करके नाना
प्रकार कीयां वासना पडीयां उठतीयां हैं ॥ तिन वासना करके जीव पडा भटकता है ॥ तां तें
ज्ञान रूपी कुहाडे करके वासना रूपी वन कों काटो ॥ आत्मपद कों पावणे विषे वासना ही
आवर्ण है ॥ हे रामजी वासना जाल करके मनुष्य रूपी हिरणा आवर्या है ॥ अरु संसार रूपी
वना विषे पडा भटकता है ॥ जिस पुरुष ते विचार करके वासना कों नष्ट कीया है ॥ तिस कों
परमात्मा प्रकाश भासता है ॥ जैसे बदलों ते रहित सूर्य प्रकाशता है ॥ तैसे वासना तें रहि
त चित्त विषे आत्म प्रकाशता है ॥ हे रामजी मन ही कों तूं पुरुष जाण ॥ देह कों मनुष्य न जा
नना ॥ काहे तें जो देह जड है ॥ अरु मन सो ही जड ॥ अरु चेतन्य ते विलक्षण है ॥ जो मन करा
कार्य करीता है ॥ सो कार्य सफल होता है ॥ जो मन कर दान कीया है ॥ जो कछु मन कर ली
या है ॥ सोई दीया अरु लीया है ॥ जो देह ही कर कीया ॥ सो नाहीं कीया ॥ हे रामजी इह संपूर्ण
जगत मन रूप है ॥ मन ही पर्वत है ॥ मन ही आकाश है ॥ वायु अग्नि जल पृथ्वी सभ मन
ही है ॥ सूर्य आदिकों का प्रकाश मन ही कर होता है ॥ अरु सब स्पर्श रूप रस गंध सभ ही
ग्रहण होता है ॥ अरु नाना प्रकार कीयां वासना करके नाना प्रकार के रूप मन ही धारता है
जैसे नृत्य नाना प्रकार के स्वांगों कों धारता है ॥ तैसे नाना प्रकार के रूप मन धारता है ॥ ल
घु पदार्थ कों दीर्घ मन ही करता है ॥ सत कों असत की न्याई करता है ॥ अरु असत जगत के प
दार्थों कों सत की न्याई करता है ॥ मित्र कों सत्रु करता है ॥ अरु शत्रु कों मित्र करता है ॥ हे रा
मजी जैसी दृढता मन विषे दृढ होती है ॥ सोई सत्त होइकर भासती है ॥ हरिचंद कों एक रा
त्रि विषे बारां वर्षां प्रतिभास आई ॥ अरु इंद्र मन कों एक मुहूर्त विषे युगों का अनुभव हूया
अरु मन ही के दृढ निश्चै तें इंद्र ब्राह्मण के पुत्र दस ही ब्रह्मा के पद कों प्राप्त भए ॥ हे राम
जी जो सुष साध्य वेदा है ॥ अरु मन विषे कोऊ चिंता आन लगी है ॥ तो सुष ही विषे उस कों
रौरव नरक होजाता है ॥ अरु मन विषे शांत है ॥ तो दुःष भी सुष होजाता है ॥ तां तें जैसा निश्चा
मन विषे होता है ॥ तैसा ही होइ भासता है ॥ अरु जिस ओर मन का निश्चा होता है ॥ तिसी ओ
र इंद्रीयों का समूह भी विचरता है ॥ अरु इंद्रीयों का आधार भूत मन है ॥ जो मन टूट परता
है ॥ तब इंद्रियां भी भिन्न भिन्न होजातीयां हैं ॥ जैसे तागे के टूटे तें मनके भिन्न भिन्न होपरते

है॥ तैसेमनतें रहित इंद्रियांश्रर्थोतें रहित होजातीयांहैं॥ अरुवास्तवश्रात्मतत्त्वसभविः
षेअधिष्ठानस्थितहै॥ सोस्वछ निर्विकार स्वरूपसमभाव नित्यहै॥ अरुसर्वकासाक्षीभू
तहै॥ अरुसर्वपदार्थोंकाज्ञाताहै॥ अरुदेहतेंअधिकसूक्ष्मरूपहै॥ अर्थयह॥ अहंभावके
उथानतेंरहतहै॥ चिन्मात्रहै॥ तिसविषेमनकेफुरणेकरकेसंसारभासताहै॥ वास्त
वेंहैतभ्रमतेंरहितहै॥ सभजगतश्रात्माकाकचनहीरचयाहै॥ सभविषेचैतन्यशक्तिव्या
पीहै॥ वायुविषेसपंदरूपउहीहै॥ पृथिवीविषेकठोरताउहीहै॥ सूर्यअग्निआदिकः
विषेप्रकाशउहीहै॥ जलविषेद्रवतारूपउहीहै॥ आकाशविषेसून्यतारूपउहीहै॥
सर्वपदार्थोंविषेचैतन्यशक्तिव्यापरहीहै॥ सोअनेकतावास्तवनहीं॥ मनकरकेअ
नेकताभासतीहै॥ सकलपदार्थकोंहृस्वताइकरताहै॥ अरुहृस्वकोंसकलताइक
रताहै॥ देशकालक्रियाद्रव्यकों मनही विपर्यय करताहै॥ हेरामजीजैसानिश्चयम
नविषेदृढहोताहै॥ सोईसिद्धहोताहै॥ मनविनाकिसीकाज्ञाननहींहोता॥ हेरामः
जीजिह्वाकरकेभोजनकरीताहै॥ परमनऔरठौररहोताहै॥ तवउसकास्वादकछुना
हीआवता॥ अरुनेत्रोंकरचित्तसहितदेषताहै॥ तवरूपकाज्ञानहोताहै॥ इसीप्रकारः
मनविनाकिसीइंद्रियाविषयनहीसिद्धहोताहै॥ अंधकारअरुप्रकाशभीमनविना
नाहींभासता॥ हेरामजीइंद्रीयांतेंमननाहींउपजया॥ अरुमनतेंइंद्रियांउपजतीयां
है॥ अरुजेताकछुइंद्रियांकाविषयदृष्टपजालहै॥ सोसभमनतेंउपजयाहै॥ जिनपुरु
षोंमनवशकीयाहै॥ सोमहात्मापुरुषपंडितहै॥ तिनकोंनमस्कारहै॥ हेरामजीना
नाप्रकारकेभूषणअरुफलअरुफूलपहिरीहूई॥ स्त्रीप्रीतसाथकंठसोंमिले॥ अरुजो
चित्तउसकाआत्मपदविषेस्थितहोवे॥ तवउहउसकोंमृतकाकेकंठकीसमानहै॥ अ
र्थयहजोउसकोइष्टअनिष्टकारागअरुद्वेषकछुनाहींउपजता॥ इष्टअरुअनिष्टवि
षेरागअरुद्वेषमनउपजाताहै॥ मनकेस्थितहूएरागद्वेषकछुनहीउपजता॥ हेराम
जीएकवीतरागब्राह्मणध्यानावस्थितवनविषेवैठाथा॥ तिसकेहाथकोकोऊवनच
रजीवतोडलेगया॥ परतिसकोंकष्टकछुनभया॥ काहेतेंजोमनस्थितथा॥ इहमन
फुरणेकरसुषकोभीदुषताईकरताहै॥ अरुअपणेस्थितहूएदुषकोभीसुषताइकर
ताहै॥ हेरामकथाकेश्रवणविषेवैठाहै॥ अरुजोमनचितवनाविषेजाताहै॥ तवक
थाकाअर्थकछुनाहींसमझसकता॥ अरुमनकेसंकल्पकरकेपहाडरूपरदौडकरः
टूटपडताहै॥ तवउसकोंप्रतक्षअनुभवपडाहोताहै॥ सोमनकाभ्रमहै॥ जैसाफुरणाः
मनविषेश्रानफुरताहै॥ सोईपडाभासताहै॥ जैसेस्वप्नविषेएकक्षणमोंनदीयांपहा
डआकाशआदिकपदार्थभासणेलागतेहैं॥ तैसेइहपदार्थभासते है॥ हेरामजीअ
पणेअंतरसृष्टिभीमनकेभ्रमकरकेवाह्यपडीभासतीहै॥ जैसेजलकेअंतरअनेकतरंग
होतेहैं॥ जैसेवृक्षकेअंतरपत्रफूलफलदासहोतेहैं॥ तैसेएकमनकेअंतरजाग्रतस्वप्न
आदिकभ्रमहोताहै॥ जैसेस्वर्णतेंभूषणअन्यनहींहोता॥ तैसेजाग्रतअरुस्वप्नअवस्था
भिन्ननाहींहोती॥ जैसेतरंगवुदवुदाफगजलतेंभिन्ननहींहोता॥ जैसेनटयानानाप्र
कारकेस्वांगोंकरकेअनेकरूपधारताहै॥ तैसेहीमनवासनाकरअनेकरूपोंकोंधारताः
है॥ हेरामजीजैसेजैसेसपंदमनविषेदृढहोताहै॥ तैसाहीअनुभवहोताहै॥ जैसेलव
णराजाकोभ्रमकरकेचंडालीकाअनुभवभया॥ तैसेइहजगतकाअनुभवमनोमात्र
है॥ अरुचित्तकेभ्रमणेकरकेपडाभासताहै॥ हेरामजीजैसीजैसीप्रतिभामनविषेहो
तीहै॥ तैसाहीउसकोंअनुभवहोताहै॥ इहसर्वजगतमनोमात्रहै॥ जैसेतेरीइछा
होवे॥ तैसेकरु॥ जैसाफुरणामनविषेहोताहै तैसातैसाहीउभासताहै॥ मनकेफुरणे
करदेवतेभीदैत्यहोजातेहैं॥ अरुदैतभीमनकेफुरणेकरनागहोजातेहैं॥ वृक्षहोजाते
हैं॥ जैसेलवणराजाआपदाकाअनुभवकरतभया॥ हेरामजीमनकेफुरणेकरमरणा
होताहै॥ वहुरइमनकेसंकल्पकरजन्महोताहै॥ संकल्पहीकरपुरुषतेंस्त्रीहोतीहै॥ अ
अरुइस्त्रीतेंपुरुषहोजाताहै॥ पितापुत्रहोजाताहै॥ अरुपुत्रपिताहोजाताहै॥ जैसेः
नटयासीब्रह्मीअपणेस्वांगकरअनेकरूपोंकोंधारताहै॥ संकल्पहीकरमरिताभासता

अरुसंकल्पहीकरजन्मताभासताहै॥ हेरामजीइहजीवनिराकारहै॥ परमनकेकरके
अकारकीन्याईभासताहै॥ तिसमनविषेजोमनहै॥ सोमूढताहै॥ तिसमूढताकरकेजोः
वासनाहूयांहै॥ तिसवासनारूपीपवनकरकेइहजीवरूपीपत्रपडाभटकताहै॥ संकः
ल्पकेवसहूयासुषअरुदुषभयअरुअभयकोंप्रापतहोताहै॥ जैसेतलतिलोंविषेरह
ताहै॥ तैसेसुषदुषमनविषेरहतेहैं॥ जैसेतिलोंकोकोहलूविषेपीडताहै॥ तवतेलः
प्रगटभासताहै॥ तैसेमनकोमननकेसंयोगतेंसुषदुषप्रगटभासताहै॥ जोसंकल्पदेश
कालक्रियाकरकेघनत्वहोताहै॥ अरुदेशकालआदिकभीमनविषेस्थितहोतेहैं॥ अरुजि
सकामननहीउपशमहोताहै॥ तिसकासभजगतभ्रमभिटजाताहै॥ उहसदाशांतरूपरः
हताहै॥ अरुजिनकामनपडाफुरताहै॥ तिनकोंनानाप्रकारकाहोभवानजगतपडाभाः
सताहै॥ हेरामजीजिनकामनआपदविषेस्थितभयाहै॥ तिनकोंक्षोभभीहृष्टआवताहै
परमनआत्मपदतेंचलायमाननहींहोता॥ जैसेघोडेकाअसवाररणविषेजाइपडुः
ताहै॥ तोभीघोडाउसकेवशरहताहै॥ तैसेउसकामनजोविस्तारकोंपडरजाताहै॥ तोभी
अपणेवसरहताहै॥ हेरामजीजवमनकीचपलताकेरागकरकेहरहोतीहै॥ तवमनवश
होजाताहै॥ जैसेवंधनोंकरकेहस्तीवशहोताहै॥ तैसेजिसपुरुषकामनवसहोताहै॥
अरुसंसारकीओरतेंनिवर्तहोइआत्मपदविषेस्थितभयाहै॥ सोश्रेष्टमहापुरुषकहीतेः
है॥ अरुजिनकामनसंसारकीओरपडाधावताहै॥ सोविकडकेकीटहैं॥ अरुजिनपुरुषोंः
कामनअचपलहै॥ अरुसंसारकीओरतेंनिवर्तहोइकरएकाग्रभावविषेस्थितभयाहै
अरुआत्मपदकेध्यानविषेलगाहूयाहै॥ सोसंसारकेवंधनोंतेंमुक्तहोतेहैं॥ हेरामजी
मनसोंमननहरहोताहै॥ तवउसकोंशांतिप्रापतहोतीहै॥ जैसेक्षीरसमुद्रतेंमंदराच
लनिकस्या॥ तवशांतकोंप्रापतहूया॥ अरुजिसपुरुषकामनभोगोंकीओररहइहोताहै
सोपुरुषविषरूपीवृक्षसंसारकावीजवोवताहै॥ हेरामजीजिनकाचित्तस्वरूपतेंभ्र
ष्टहूयाहै॥ अरुसंसारकेभोगोंविषेलागाहै॥ सोवडेकष्टकोंपावतेहैं॥ जैसेतृणजलके
चक्रविषेआयाहोभमानहोताहै॥ तैसेइहजीवमनभावकोंप्रापतहूयाभ्रमकोंप्राप
तहोताहै॥ तातेंइसकोंस्थितकरु॥ जोशांतआत्माहोवे॥ इतिचित्तवर्णननामसर्गः॥ ८४

वशिष्ठउवाच॥ हेरामजीइहचित्तरूपीमहाव्याधिरोगहै॥ तिसकेनिवर्तकोंमैंतुमकोंश्रे
ष्ठऔषधकहताहौं॥ सोतूंसुण॥ यत्नभीअपणाहोताहै॥ अरुआपहीसाध्यहोताहै॥ अरु
औषधभीआपहोताहै॥ सभपुरुषार्थआपहीकरसिद्धहोताहै॥ तातेंयत्नकरकेचित्तरूपी
वेतालकोंनष्टकरो॥ हेरामजीजोकछुपदार्थकोंत्यागकरेगा॥ तवमनकोंजीतहोवेगी
अरुअचलपदकोंतूंप्रापतहोवेगा॥ जैसेलोहेकोलोहेसाथकाटीताहै॥ तैसेमनसा
थमनहीकोंकटो॥ अरुयत्नकरकेशुभगुणोंकरके॥ चित्तरूपीवेतालकीपालनाकरो॥ अ
वस्तुदेहादिकोंविषेजोवस्तुकीभावनाहै॥ तिसकोत्यागा। अरुवस्तुआत्मतत्त्वविषेजो
देहादिकोंकीभावनाहै॥ तिसकोंत्यागकर॥ आत्मत्वभावनाजोड॥ हेरामजीजैसेचित्तः
विषयपदार्थोंकीचितवनाहोतीहै॥ तैसेआत्मपदपावणेकीचितवनाकरु॥ सतकर्मों
कीस्तुइताकोंलेकरचित्तकोंयत्नकरकेचैतन्यमेंचित्तकोओरलगावो॥ अरुसर्ववासनाकोंः
त्यागकरएकाग्रकरो॥ तवपरमपदकोंप्रापतहोवो॥ हेरामजीजिनपुरुषोंकोअपणीइछा
त्यागणीकठनहूईहै॥ सोविषयोंकेकीटहैं॥ काहेतेंजोअसतभपदार्थमूढताकरकेतिसको
रमणीकभासतेहैं॥ तिनअसतभकोंअसतभजानया॥ अरुसतभकोंसतभजानया॥ इहपुरुषाः
र्थहै॥ हेरामजीसतभअरुअसतभदोनोपहिलवानहैं॥ दोनोविषेजोवलीहोताहै॥ तिसकी
जयहोतीहै॥ तातेंशीघ्रहीपुरुषप्रयत्नकरकेअपणेचित्तकोंजीतो॥ जवतमअचित्तहो
वोगे॥ तवयत्नविनाआत्मपदप्रापतहोवेगा॥ जैसेवदलोंकेअभावहूएयत्नविनासूः
र्यभासआवताहै॥ आत्मपदकेआगेचित्तकाफुरणाहीजोवदलवतआवरणहै॥ सोचि
त्तकाफुरणाअभावहोवेगा॥ तवअयत्नसिद्धआत्मपदभासेगा॥ सोचित्तस्थितकरणे
कामनुभीआपकरहोताहै॥ अरुजिसकोंअपणेचित्तवशकरणेकीभीशक्तिनाहीं॥ तिसकोंधि
क्कारहै॥ उहमनुषोंविषेगीदडहै॥ अपणेपुरुषार्थकरकेमनकोंवशकरणासोअपणेसाथ

परम मित्र नाहे ॥ अरु अपरो मनको वश करणो विना आपणा आपही शत्रु हे ॥ अर्थ यह
जो मनको उपशम करणो विना घटीयंत्रकी न्याई संसारचक्र विषे भटकता फिरेगा ॥ अरु
जिनो मनधी मनकों उपशम कीया हे ॥ तिनकों परम लाभ हूया हे ॥ हे रामजी मनके मार
णेका मंत्र यह हे ॥ जो दृश्यकी ओरते चित्तकों निवर्त करणा अरु आत्मचेतन्यमें चित्त विषे
लगावणा इही मनको जीतना हे ॥ आत्मचित्तवना करके चित्तकों मारणा आपकरके स्व
रूप हे ॥ हे रामजी इछाकरके मन उपज होता हे ॥ तब अंतरतें इछा निवर्त भई ॥ तब मन उप
शम होता हे ॥ तब मन उपशम हूया ॥ तब गुरु अरु शास्त्रोंके उपदेश अरु मंत्रार्थ आदिकों
की अपेक्षा नाही रहती ॥ हे रामजी जब यह पुरुष असंकल्परूपी औषध करके चित्तरूपी रो
गकों काटे ॥ तब तिस पदकों प्रापत होवे ॥ जो सर्व हे ॥ अरु सर्वगत शांतरूप हे ॥ अरु जो इह दे
ह हे ॥ सो निश्चे करके मूढ मन संकल्प करके कल्यी हे ॥ ताते पुरुषार्थ करके चित्तकों अचित्त
करो ॥ तब इस वंधनतें छूटो ॥ हे रामजी सुद्ध संवित आकाश विषे यत्न करके चित्तकों जोडो
जब चिरकालपर्यंत मनका तीव्र संवेग आत्माकी ओर होवेगा ॥ तब चेतन्य चित्तकों भ्रष
णा कर लेवेगा ॥ जब चित्तका चित्तत्व निवर्त होजावेगा ॥ तब केवल चेतन्यमात्रही शेष र
हेगा ॥ हे रामजी जब जगत भावनातें तूं मुक्त होवेगा ॥ तब तेरी वृद्धि परमात्मतत्व विषे ज
डेगी ॥ अर्थ यह जो बोधरूप होजावेगी ॥ ताते इस चित्तकों अचित्त करके ग्रास लेहु ॥ जब तूं पर
म पुरुषार्थ करके चित्तकों अचित्त करेगा ॥ तब महा अद्वैत पदकों प्रापत होवेगा ॥ हे राम
जी मनके जीतने विषे ओर तुझकों यत्न कछु नहीं ॥ एक संवेदनका प्रवाह उलटावणा हे
जो दृश्यकी ओरतें निवर्त करके आत्मकी ओर लगावणा ॥ इसी कर चित्त अचित्त होजावेगा
चित्तके क्षोभतें रहित होवणा परम कल्याण हे ॥ ताते क्षोभतें रहित होवो ॥ जिनो पुरुषो म
नकों जीत्या हे ॥ तिनकों त्रिलोकीका जीतना तृणके समान हे ॥ हे राम ऐसे सूरमे हे ॥ जो श
स्त्रोके प्रहारकों सहते ॥ अरु अग्नि कर जलणा भी सहते हे ॥ अरु शस्त्रोंकों मारते हे ॥ स्वभाव
कठोरणेके सहणे विषे तुझकों क्या कृपणता हे ॥ जो समर्थ नाही होता ॥ हे रामजी जिस
को अपणे चित्तके उलटावणेकी समर्थता नाही ॥ सो नरो विषे अधम हे ॥ जिनोंको इही अ
नुभव पड़ा होता हे जो मैं जन्म्या हों ॥ अरु मरूंगा मैं जीव हों ॥ सो असत्रूप चपलता प्रमाद

करके पड़ी भासता हे ॥ जैसे किसी स्थान विषे वेताल होवे ॥ अरु मनके फुरणे कर ओर देश विषे
कार्य करणे लगजावे ॥ सो भ्रमरूप हे ॥ तैसे ही आपकों जन्मता मरता भ्रम करके मानता हे
हे रामजी यह पुरुष मनरूपी शरीर साथ इस लोक अरु परलोक विषे पड़ा भटकता हे ॥
सो मोक्ष होवणेपर्यंत चित्त विषे पड़ा भासता हे ॥ जो चित्त भी मोक्षपर्यंत नाश नाही होता
तो तुझकों स्तनका भय क्यों होता हे ॥ तेरा स्वरूप नित्य सुध बुध सर्व विकारोंते रहित हे ॥
अरु इह लोक परलोक आदिक भ्रम चित्त मननरूपके फुरणेतें उपजया हे ॥ मननतें इतर
चित्तका कछु नाम नही ॥ अरु पुत्र भाई टहलूए आदिक जो स्नेहका स्थान हे ॥ तिनके क्लेश
कर जो आपकों कलेश मानता हे ॥ सो भी चित्तही कर मानता हे ॥ जब चित्त अचित्त होजावे
तब सर्व बंधनोंते मुक्त होवे ॥ हे रामजी मेरु अंध अथः सम स्थान देखे हे ॥ तिनकों एकांत वे
ठकर वारंवार विचारया हे जो शांतके प्रापत होवणेका ओर उपाउ कोउ नाही ॥ चित्तका
उपशम करणाही उपाइ हे ॥ जब लग चित्त दृश्यकों पडा चितवता हे ॥ तब लग शांत
नाही प्रापत होती ॥ अरु जब चित्त उपशम होवे ॥ तब इसकों तिस पद विषे विश्राम
होता हे ॥ जो नित्य हे ॥ अरु स्वस्थ हे ॥ अरु सर्वात्मा हे ॥ सर्वका पररूप हे ॥ सर्वके हृदे विषे हे ॥
चेतन्य आकाश हे ॥ परम शांतरूप हे ॥ तिस पद विषे विश्राम पावेगा ॥ हे रामजी हृदे आका
श विषे जो चेतन्य चक्र हे ॥ तिसका अर्थ यह जो ब्रह्म आकार रहत हे ॥ जब मनका तीव्र संवे
ग तिसकी ओर होवे ॥ तब सभही दुखोंका अभाव होजावे ॥ हे रामजी जो संसारके भो
ग मन करके रमणीक भासते हे ॥ सो जब रमणीक भासणेते रहत होवे ॥ तब जाणी
ये जो मनके अंग टूटे हे ॥ जेते कछु अहं अरु त्व आदिक शब्द अर्थ भासते हे ॥ सो सभ मनो
मात्र भासते हे ॥ जब दृढ विचार करके इनको अभाव ना होवे ॥ तब मनकी थां वासना न
ष्ट होजावे ॥ जैसे दाजी करके खेती नष्ट होती हे ॥ तब निर्विकल्प परमतत्व परम सुद्ध

भासेगा ॥ जैसे घटांके अभाव हूए सर्वत्र कालका आकाश निर्मल भासता हे ॥ तैसे·
वासनातें रहित मन सुद्ध भासेगा ॥ हे रामजी मन इसका परम शत्रु हे ॥ सो मन इछासं
कल्प करके पुष्ट होता जाता हे ॥ अरु जब इछा कोऊ न उपजे ॥ तब आप मन छीन हू·
होजावेगा ॥ जैसे अग्नि विषे काष्ठ पाईये ॥ तब अग्नि वधती जाती हे ॥ जब काष्ठ ओर पा
वणेतें रहित हूए ॥ तब अग्नि आपही नष्ट होजाती हे ॥ हे रामजी इस मन विषे जो सं
कल्प कलना पड़ी उठती हे ॥ तिसकों त्याग करु ॥ तब आपही मन तेरा नष्ट होवेगा ॥
जहां शस्त्र वडे चलते हे ॥ अरु अग्नि पड़ी लागती हे ॥ तहां सूरमे निर्भय होइकर जा·
पडते हे ॥ अरु शस्त्रोंको मारते हे ॥ प्राणोंका त्याग करणेका भय नाही करते ॥ तुझकों सं·
कल्प त्यागणे विषे क्या भय होता हे ॥ हे रामजी चित्तके पसारणे विषे अनर्थ होता
हे ॥ अरु चित्तके अफुरणे हूए कल्याण हे ॥ इह वार्ता वालक भी जाणते हे ॥ जैसा पि
ता वालककों अनुग्रह करके कहता हे ॥ तैसे मैं तुझकों समझावता हों ॥ जो मनरूपी
एक शत्रु हे ॥ तिसने भयकों प्रापत कीया हे ॥ संकल्पकलना कर जेती कछु विपदा
हे ॥ सो मनतें उपजती हे ॥ जैसे सूर्यकी या किरणां करके मृगतृस्नाका जल होता हे
तैसे अरु जिसका मन स्थित हूया हे ॥ तिसकों क्षोभ कोऊ नहीं होता ॥ हे रामजी प्रलय
कालका पवन चले ॥ अरु सभ समुद्र मर्यादाकों त्यागकर एकठे होजावे ॥ अरु द्वाद·
श सूर्य एकठे होइ कर तपे ॥ तो भी मननते रहत जो पुरुष हे ॥ तिसकों विघ्न कोऊ नहीं होता
वह सदा शांतरूप हे ॥ हे राम मनरूपी वीज हे ॥ तिसतें संसार वृक्ष उपजया हे ॥ सप्त लो·
क तिसके पत्र हे ॥ अरु सुख अरु दुख वध तिसके फल हे ॥ सो मन संकल्पतें रहित नष्ट हो
जाता हे ॥ अरु संकल्पके वधतें अनर्थका कारण वधता हे ॥ ताते संकल्पतें रहित जो·
चक्रवर्ती राजापद हे ॥ तिस विषे आरूढ हूया परमपदकों प्रापत होवेगा ॥ हे रामजी
मनके क्षीण होणे करके इह परम आनंद उत्तम पदकों प्रापत होवेगा ॥ ताते मनके
संकल्प उपजणे विषे अनर्थ होता हे ॥ अरु संकल्पके लीन हूए कल्याण पद प्रापत
होता हे ॥ हे रामजी संतोष करके मन वश होता हे ॥ तब नित्य उदे रूप निरीह परम प
द निर्वाण निरमल सम अरु सर्व विकार विकल्पोंतें रहत आत्मपद शेष रहिता हे ॥
सो तुझकों प्रापत होवेगा ॥ इति श्रीमनःप्रशांतिरूप प्रतिपादनं नाम सर्गः ॥ ८३ ॥ ॥

वसिष्ठ उवाच ॥ हे रामजी जहां जिस जिसके मन विषे तीव्र संवेग होता हे ॥ तिसकों
मन देखता हे ॥ अज्ञान करके जो दृश्यका तीव्र संवेग भया हे ॥ तिस करके चित्त जन्म मर
ण आदिक विकारोंकों देखता हे ॥ जिसका निश्चा मन विषे दृढ होता हे ॥ तिसीका अ
भव करता हे ॥ जहां मनका फुरणा फुरता हे ॥ तहां तेसा रूप होजाता हे ॥ जैसे वर्फ
का सकलरूप हे ॥ अरु काजरका कृष्णरूप हे ॥ तैसे मनका रूप चंचल हे ॥ राम उवाच ॥
हे व्राह्मण यह जो वेराग अवेराग कारण मन चंचलरूप हे ॥ तिस मनकी चपलता जैसे नि·
वर्त होवे ॥ सो प्रकार तुम कहो ॥ वसिष्ठ उवाच ॥ हे रामजी तूं सत्य कहता हे ॥ चंचलतातें
रहत मन कहूं नाही देखीता ॥ काहेतें जो मन चंचल ही स्वभाव हे ॥ जैसे अग्निका उष्ण
ही स्वभाव ॥ हे रामजी जो मन विषे चंचल फुरणा शक्ति हे ॥ सो मानसी शक्ति हे ॥ सो इज
गत मइं वरका कारणरूप हे ॥ जैसे वायुका स्पंदरूप हे ॥ तैसे मनका चंचलरूप हे ॥
अरु जहां चंचलतातें रहित हे ॥ तिस मनकों मृतक कहते हे ॥ रामजी तपका अरु शा·
स्त्रका जो सिद्धांत हे ॥ सो इही हे ॥ मनके मृतक उपरांत इसकों मोक्ष कहते हे ॥ जब मन·
क्षीण होता हे ॥ तब सभ ही दुख नष्ट होजाते हे ॥ अरु जब चित्तरूपी राक्षस उठता हे
तब वडे दुखकों प्रापत होता हे ॥ अरु जब यह नष्ट होता हे ॥ तब अनंत सुख भोग इस·
कों प्रापत होता हे ॥ अर्थ यह जो परमानंदस्वरूप आत्मपद प्रापत होता हे ॥ हे राम
जी मन विषे जो चंचलता हे ॥ तिसीका नाम अविद्या हे ॥ इस राक्षसका नाम अविद्या हे
अरु वासना हे ॥ सो इह अविचार करके सिद्ध हे ॥ विचार कीयेतें नष्ट होजाती हे ॥ चित्तको·

चंचलतारूपजोवासनाहै॥ सोअंतरस्थितहै॥ जवयहनष्टहोजावे॥ तवपरमसारकीप्रा
पतहोतीहै॥ तातेंयत्नकरकेइसचपलतारूपअविद्याकात्यागकरो॥ जवचपलतानि
वर्तहोवेगी॥ तवमनप्रशांतहोजावेगा॥ सोमनकारूपसुण॥ हेरामजीसत्यअरुअस
त्यकेमध्यहै॥ जडअरुचैतन्यकेमध्यजोदोलायमानहै॥ तिसकानाममनहै॥ हेराम
जीजवमनइहतीव्रताकरकेजडकीओरलागताहै॥ तवआत्माकेप्रमादकरजडरूपहो
जाताहै॥ अर्थयहजोअनात्मविषेआत्मप्रतीतहोतीहै॥ अरुजवविवेकविचारविषे
लागताहै॥ तवतिसअभ्यासकरजडतानिवर्तहोजातीहै॥ केवलचैतन्यआत्मतत्व
पदभासताहै॥ जैसाअभ्यासदृढहोताहै॥ तैसाअनुभवइसकोंप्राप्तहोताहै॥ जैसेपदा
र्थकीएकताचित्तविषेहोतीहै॥ अभ्यासकेवशतेचित्ततैसारूपहोजाताहै॥ हेरामजी
जिसपदकेनिमित्तपुरुषप्रयत्नकरताहै॥ तिसपदकोंप्राप्तहोताहै॥ अरुअभ्यास
कीतीव्रतातेंभावितरूपहोजाहै॥ इसीकारणतेंतुझकोंकहीताहै॥ जोचित्तकोंचित्त
करकेस्थितकरु॥ अरुअशोकपदकोंआश्रयकरु॥ जेतेकछुभावअभावरूपसंसारके
पदार्थहै॥ सोसभमनतेंउपजेहै॥ तातेंमनकेउपशमकरणेकाप्रयत्नकरु॥ मनकेउप
शमविनाओरउपायछूटणेकाकोऊनाही॥ अरुमनकोंमनहीनिग्रहकरताहै॥ ओर
कोऊसमर्थनाही॥ तैसेमनसाथमनहीयुद्धकरताहै॥ तातेंतूंमनहीसाथमनकों
मारु॥ जोशांतकोंप्राप्तहोवे॥ हेरामजीइहपुरुषवडेसंसारसमुद्रविषेपडाहै॥
तिसविषेत्रिस्नारूपीतंदूयेइसकोंआवरणकीयाहै॥ तिसकरअधःकोंचलाजाता॥
है॥ अरुरागद्वेषरूपीचुंमरहेरोंविषेकष्टपावताहै॥ तिसविषेतारावणेकेनिमित्त
भीमनरूपीवेडीहै॥ जवसुद्धमनरूपीवेडीपरआरूढहोवे॥ तवसंसारसमुद्रतेंपार
पहुचे॥ अन्यथाहोवेतोकष्टकोंप्राप्तहोवे॥ हेरामजीअपणामनहीवंधनकाकार
णफांसीहै॥ तिसकोंमनहीसाथछेदकछूटे॥ सोकिसप्रकारछेदीये॥ दृश्यकीओर
जोमनसदाधावताहै॥ तिसतेंवैरागकरे॥ अरुआत्मतत्वकाअभ्यासकरे॥ तवछूटे ओ
रउपायछूटणेकानाही॥ जहांजेसीवासनाकरमनवासनाउठे॥ तिसकोंतहांहीवो
धकरकेत्यागेतेंतेरीअविद्यानष्टहोजावेगी॥ हेरामजीजवप्रथमभोगोंकीवासना
कात्यागकरेगा॥ तवयत्नविनाजगतकीवासनाछूटजावेगी॥ जवभावअभावरूप
जगतकात्यागकीया॥ तवनिर्विकल्पसुखरूपहोवेगा॥ जवसभदृश्यकेभावपदा
र्थोंकीअभावनाहोतीहै॥ तवभावनाकरणेहारामनभीनष्टहोताहै॥ हेरामजीजोक
छुसंवेदनापडीफुरतीहै॥ इससंवेदनाकाहोणाहीजगतहै॥ अरुसंवेदनतहोणाइ
सीकानामनिर्वाणहै॥ अरुसंवेदनकरकेदुखहै॥ तातेंप्रयत्नकरकेसंवेदनकाअभा
वकर्तव्यहै॥ जवभावकीअभावनाहूई॥ तवकल्याणहै॥ जेतेकछुभावअभावपदा
र्थोंकारागद्वेषउपडाउठताहै॥ सोमनकेअवोधकरकेहोताहै॥ इहपदार्थसभमृग
त्रिस्नाकेजलवतमिथ्याहै॥ तातेंइनकीआस्थाकोंत्यागकरो॥ इहसभअवस्तुरूपहै॥
अरुतेरास्वरूपनित्यतृप्तिअपणेआपविषेस्थितहै॥ इत्युपदेशकथनंनामसर्गः॥

॥ ८४॥

श्रीवसिष्ठउवाच॥ हेरामजीइहजोवासनाहै॥ सोभ्रांतकरकेउठीहै॥ जैसेआकाशविषे
दूसराचंद्रमाभ्रांतिकरकेभासताहै तैसेआत्माविषेजगतभ्रांतिकरकेभासताहै॥ तैसे
आत्माविषेजगतभ्रांतकरभासताहै॥ इसकीवासनादूरतेंत्यागकरो॥ हेरामजीजो
ज्ञानवानहै॥ तिनकोंजगतनाहीभासता॥ अरुजोअज्ञानीहै॥ तिनकोंअविद्या॥ वि
द्यमानकीन्याईभासतीहै॥ अरुसंसारनामकरकेसंसारकोंअंगीकारकरतेहै॥ अरु
ज्ञानवानसम्यकदर्शीकोंआत्मतत्वतेंइतरसभअवस्तुरूपभासताहै॥ जैसेसमुद्रद्रव
ताकरकेतरंगवुदवुदाहोइकरभासताहै॥ परजलतेंइतरकछुनाही॥ तैसेअपणेवि
कल्पकल्पकरकेभावअभावरूपजगतकोंदेखताहै॥ वस्तुतेंअसतरूपहै॥ आत्मतत्व
हीअपणेआपविषेस्थितहै॥ सोनित्यशुद्धसमअद्वैतहै॥ तेराअपणाआपहै॥ तवतुक

रताहै॥ नअकरताहै॥ करताअकरताअकरताग्रहणअरुत्यागभेदोंकोंलेकरकेहोताहै॥
तूंदोनोविकल्पोंकोंत्यागकरअपणेस्वरूपविषेस्थितहो॥ अरुजोकछुअकृतिआत्मा
रआनप्राप्तहोवे॥ तिसकोंकरु॥ अरुअंतरतेंअसक्तहोरहु॥ अर्थयहजोकर्तृत्वभोक्तृ
त्वअपणेविषेमानतेंनरहतहो॥ काहेतेंजोकर्तृत्वआदिकतवहोतेहै॥ जोकछुग्रह
णकरणाहोताहै॥ अरुकछुत्यागकरणाहोताहै॥ अरुयहग्रहणत्यागतवहोताहै॥ जो
पदार्थसतभासतेहै॥ सोतोयहपदार्थसभमिथ्याइंद्रजालकीमायावतहै॥ हेरामजी
मिथ्यापदार्थोंविषेआस्थाकरणीतिसकरग्रहणअरुत्यागकरणाक्याहै॥ सभससा
रकावीजअविद्याहै॥ सोअविद्यास्वरूपकेप्रमादकरअविद्यमानहीसतकीन्याईहो
भासतीहै॥ हेरामजीचित्तविषेचैतन्यमयवासनापडीफुरतीहै॥ सोमाइकाकारणहै
संसाररूपीवासनातोचक्रकीमृत्तिकाहै॥ जैसेकुंभारचक्रऊपरचढाइकरमृत्तिकातेंअने
कप्रकारकेघटआदिकवासनरचताहै॥ तैसेचित्ततेंजोविषयवासनाफुरतीयांहै॥
सोसंसारकेपदार्थोंकोउत्पत्तिकरतीयांहै॥ इहअविद्यारूपीसंसारदेषणेमात्रतोव
डासुंदरभासताहै॥ परअंतरतेंसून्यहै॥ अरुजैसेकेलकाहस्तदेषणेकोंविस्तारस
हितभासताहै॥ अरुअंतरतिसकेसारकछुनाही॥ जैसेवासवडेविस्तारकोंप्राप्त
होताहै॥ परअंतरतेंसून्यहै॥ तैसेसंसारअसारसून्यरूपहै॥ जैसेनदीकाप्रवाहहो
चलाजाताहै॥ तैसेसंसारनाशरूपहै॥ हेरामजीइहअविद्याकेसीहै॥ जोघकडीथि
तोयहणकछुनाहीहोती॥ अरुकोमलभासतीहै॥ परअत्यंततीक्षणरूपहै॥ प्रगटआ
कारभीदृष्टआवतेहै॥ परमृगतृस्नाकेजलवतअसतरूपहै॥ अविद्यामायाकहूंविका
ररूपभासतीहै॥ कहूंस्पष्टरूपभासतीहै॥ कहूंदीर्घरूपभासतीहै॥ तिसकरकेइहज
गतउपजताहै॥ अरुआत्मातेंविवेकअभावकोंप्राप्तहोतीहै॥ अंतरतेंसून्यहै॥ आत्म
तत्वविषेहैनही॥ अरुसर्वइहीभासतीहै॥ अरुजडहै॥ अरुआत्माकीसत्ताकरकेचैतन्य
होतीहै॥ अरुएकनिमेषकेक्षणकरकेवडेभ्रमकोंदिषावतीहै॥ जहांनिर्मलप्रकाश
रूपआत्माहै॥ तिसविषेतमकोंदिषावतीहै॥ जोसेआत्माकोंनाहीजाणता॥ जैसेउलू
कोंसूर्यविषेअंधकारभासताहै॥ तैसेसूर्यकोंअनुभवरूपआत्मानाहीभासता॥ जग
तभासताहै॥ अरुस्वरूपतेंअसतरूपहै॥ जैसेमृगतृस्नाकीनदीविस्तारसहितभा
सतीहै॥ तैसेअविद्यानानारंगविलासिनीहै॥ विकाररूपहै॥ अरुविषमरूपहै॥ स्वप्न
रूपहै॥ मदकहीयेकामरूपहै॥ अरुकठनरूपहै॥ अस्त्रीकीन्याईचंचलहै॥ अरुहोम
रूपहै॥ अरुसर्पणीहै॥ अरुतृस्नारूपीजिहवासाथमारतीहै॥ अरुदीपककीशिखव
तप्रकाशवानहै-जवलगस्नेहहोताहै॥ तवलगदीपकप्रज्वलतहोताहै॥ जवतेलक्षी
णभया॥ तवनिर्वाणहोजाताहै॥ तैसेजवलगजगतकेभोगोंविषेप्रीतहै॥ तवलगअ
विद्याहृद्दहै॥ जवभोगोंविषेस्नेहक्षीणभया॥ तवनष्टहोजातीहै॥ राराइपअविद्याच
स्नाविनानाहींरहती॥ अरुभोगरूपप्रकाशविजलीकीन्याईचमतकारकरतेहै॥ अ
रुअविद्यात्रासकेदेवणहारीहै॥ अरुभोगपदार्थवडेयत्नकरकेप्राप्तहोतेहै॥ अरुजव
प्राप्तहोतेहै॥ तवअनर्थकोंउत्पत्तिकरतेहै॥ जोभोगोनिमित्तयत्नकरेहै॥ तिनकोंमेरी
धिक्कारहै॥ काहेतेंजोभोगवडेयत्नकरउत्पत्तिहोतेहै॥ वहुडस्थिरभीनाहीरहते॥ अरुअ
नर्थकोंउत्पत्तिकरतेहै॥ तिनकीतृस्नाकरकेपडाभटकताहै॥ सोमहामूर्षहै॥ हेरामजी
ज्योंज्योंइनकास्मरणहोताहै॥ त्योंत्योंअनर्थउत्पत्तिहोतेहै॥ अरुज्योंज्योंइनकाविस्मर
णहोताहै॥ त्योंत्योंसुषहोताहै॥ इसकारणतेंदृश्यकाविस्मरणअत्यंतसुषकेनिमित्त
है॥ अरुस्मरणदुषकेनिमित्तहै॥ जैसेकिसीकोंदुष्टकूरस्वप्नआवताहै॥ वहुडतिसके
स्मरणविषेकष्टमानताहै॥ तैसेगौरकिसीउपद्रवप्राप्तहोणेकीस्मृतविषेअनर्थजा
णताहै॥ तैसेअविद्याजगतकेस्मरणविषेकष्टअनर्थहोताहै॥ तैसेअविद्याएकमुहूर्
तविषेत्रिलोकीकोंरचलेतीहै॥ अरुएकक्षणविषेवहुडग्रासकरलेतीहै॥ जैसेएक
मुहूर्तविषेराजालवणकोंअनेकवर्षोंकेअनर्थकाअनुभवभया॥ अरुहरीचंद्रकोंद्वाद
शवर्षोंकाभ्रमभासआया॥ हेरामजीजोएकस्त्रीकावियोगवानपुरुषहोताहै॥ रागीति

सकोंएकरात्रिकल्पकीन्याईवीतजातीहै ॥ अरुजोवडुतसुषीहोताहै ॥ तिसकोंरात्रि
हाणकीन्याईवीतजातीहै ॥ दुषीकोंदीर्घरूपहोतीहै ॥ कालभीअविद्याप्रमादकरके
विपर्जेरूपहोजाताहै ॥ हेरामजीऐसाकोऊपदार्थनहीं ॥ जोअविद्याकरविपर्जे
नहोवे ॥ सदानिर्विकारनिराकारअद्वैतनत्वविषेअविद्याकरकेकर्तत्वभोक्तृत्वकाम
पंदपडाफुरताहै ॥ हेरामजीजेतेकछुजगतजालतुमकोभासतेहैं ॥ सोअविद्याकरि
भासतेहैं ॥ जैसेदीपककाप्रकाशहीपदार्थोंकोंरूपदिषावताहै ॥ तैसेअविद्यापदार्थोंकों
दिषावतीहै ॥ सोसभअवस्तुरूपहै ॥ जैसेनानाप्रकारकीसृष्टिमानोराजविषेभासती
है ॥ अरुजैसेस्वप्नकीसृष्टिभासतीहै ॥ तिसविषेअनेकप्रारब्धसंयुक्तदृष्टपडेभासतेहैं
सोतिसविषेअसत्तरूपहै ॥ तैसेइहजगतअसत्तरूपहै ॥ जैसेमृगतृस्नाकीनदीवडीअ
डंवरसाथभासतीहै ॥ तैसेइहजगतहै ॥ जैसेमृगतृस्नाकीनदीकोंदेषकरमूर्षमृगति
पानकेनिमित्तिदौडतेहैं ॥ अरुकष्टमानहोतेहैं ॥ मानुषनाहीदौडते ॥ तैसेजगतकेप
दार्थोंकोदेषकरअज्ञानीयत्नकरतेहैं ॥ ज्ञानवानतृस्नाकरकेयत्ननाहीकरते ॥ ज्योंज्यों
मूर्षमृगदौडतेहैं ॥ त्योंत्योंकष्टपावतेहैं ॥ शांतिकोंनाहीप्रापतहो ॥ तैसेअज्ञानीजग
तकेभोगोंकीतृस्नाकरतेहैं ॥ परशांतकोंनाहीप्रापतहोते ॥ जैसेतरंगफेणवुदवुदा
संदरभासतेहैं ॥ परग्रहणकीयेतेंकछुनाहीनिकसते ॥ तैसेशांतिकाकारणजगतवि
षेसारपदार्थकोऊनाहीनिकसता ॥ जडरूपाअविद्याविदाकारहुईहै ॥ सोचैतन्यसा
थअभिन्नरूपहै ॥ परभिन्नकीन्याईस्थितभईहै ॥ जैसेववोहाअपणीतनुकोंपसराता
है ॥ वहुडअपणेविषेलीनकरलेताहै ॥ सोतंतुववोहेसाथअभिन्नरूपहै ॥ परभिन्न
कीन्याईभासतीहै ॥ हेरामजीजैसेअग्नितेंधूमनिकसकरवदलकाआकारहोताहै
सोरसकोंषेंचताहै ॥ वहुडमेघहोइकरवर्षाकरताहै ॥ तैसेअविद्याआत्मतेंउपजके
अरुआत्माकीसत्तापाइकरजगतकोंरचतीहै ॥ तिसजगतविषेइहजीवघटीयं
त्रकीन्याईपडाभटकताहै ॥ जैसेत्रिगुणजेवडेसाथवांधाहुइदिडैअधःअरुऊर्धकों
पडाभटकतीयाहै ॥ तैसेतीनोगुणोंकीयांत्रासत्तासाथवांधयाहुयाजीवपडाभ
टकताहै ॥ जैसेविकडतेंभिसउपजताहै ॥ तिसकेअंतरछिद्रहोतेहैं ॥ तैसेअवि
द्यारूपीविकडतेंइहजगतउपजयाहै ॥ अरुविकाररूपीइसविषेछिद्रहैं ॥ सारवस्
तुइसविषेकछुनाही ॥ जडरूपहै ॥ जैसेअग्निचूनअरुइंधनकेसंयोगतेंवढतीजा
तीहै ॥ जैसेतृस्नाकेसंयोगतेंअविद्यावढतीजातीहै ॥ जैसेअग्निकाष्टचूनतेंरहि
तशांतहोइजातीहै ॥ तैसेतृस्नातेंरहितअविद्याशांतहोजातीहै ॥ जबविवेकरू
पीजलकासंचनहोवे ॥ अरुतृस्नारूपीचूननपडे ॥ तबअग्निरूपीअविद्यानष्टहो
जातीहै ॥ अन्यथानहीनाशहोती ॥ हेरामजीइहअविद्यादीपककीशिषावतहै
तृस्नारूपीतेलकरअधकप्रकाशमानहोतीहै ॥ जबतृस्नारूपीतेलतेंरहितहो
वे ॥ अरुविवेकवायुचले ॥ तबदीपककीशिषावतअविद्यानिर्वाणहोजावेगी ॥ अरु
नजाणीयेगीजोकहांगई ॥ अरुअविद्याकुहीडकीन्याईआवरणकरतीभासतीहै ॥ पर
ग्रहणकरीये ॥ तोकछुनहीहाथआवती ॥ देषणेमात्रस्पष्टदृष्टआवतीहै ॥ परविचार
कीयेतेंअणुमात्रभीनाहीरहती ॥ जैसेरात्रकोंवडाअंधकारभासताहै ॥ परजवदीपक
लेकरदेषीये ॥ तबअंधकारअणुमात्रभीनाहीदृष्टआवता ॥ तैसेअविद्याविचारकी
येतेंनाहीरहती ॥ वहुडकेसोहै ॥ जैसेआकाशविषेनीलताभासतीहै ॥ अरुजैसेआ
काशविषेदूसराचंद्रमाभ्रांतकरभासता ॥ अरुजैसेस्वप्नकीसृष्टिभ्रममात्रभासतीहै
जैसेवडीपरचढतेंतटकेवृक्षचलतेभासतेहैं ॥ जैसेमृगतृस्नाकीनदीभ्रांत
करकेभासतीहै ॥ अरुजैसेसिपीविषेरूपाअरुजेवडीविषेसर्पभ्रमकरकेभासताहै
तैसेअविद्यारूपीजगतअसत्तहीकोसत्तभासताहै ॥ हेरामजीइहजाग्रतजगतभीऐ
सेकालकास्वप्नाहै ॥ जैसेसूर्यकीयांकिरणांविषेजलवुद्धिमृगाकेचित्तविषेआईहै
तैसेजगतकीसत्तामूर्षकेचित्तविषेस्थितभईहै ॥ अरुजोज्ञानवानपुरुषहै ॥ तिन
कोंअसतरूपहै ॥ किसीपदार्थकीआस्थातिनकेचित्तविषेनाहीरहती ॥ हेरामजी

जिनोंपुरुषोंकीपदार्थोंविषेरतआस्थाहोरहीहै ॥ तिनकीभावनाकरकेचित्तषैंची
ताहै ॥ अरुतिनपदार्थोंकोअंगीकारकरकेवडेकष्टकोंपावतेहैं ॥ जैसेपंछीआकाशवि
षेउडताहै ॥ अरुदाणयोंविषेउसकीप्रीतहोतीहै ॥ तिसचोगकेनिमित्तपृथिवीप
रआनगिरताहै ॥ जवसोपंछीअजाणकरचुगणेलागताहै ॥ तवजालीविषेफसता
वहुडकष्टमानहोताहै ॥ जैसेदाणयोंकीतृस्नापंछीकोंडषदेतीहै ॥ तैसेजीवोंकोंभो
गोंकीतृस्नादुषदेतीहै ॥ हेरामजीइहभोगप्रथमेतोअमृतकीन्याईसुषरूपभासतेहैं
अरुपरणामविषेकीन्याईहोतेहैं ॥ मूर्षअज्ञानीकोंइहसुंदरभासतेहैं ॥ परइनकेस्पर्शकी
येतेंनाशकोंप्रापतहोतेहैं ॥ जैसेमूर्षपतंगदीपककोंसुषरूपजाणकरवांछाकरताहै
परजवदीपकसाथस्पर्शकरताहै ॥ तवनाशकोंप्रापतहोताहै ॥ तैसेइहभोगोकर
जीवनाशहोतीहै ॥ जैसेसंध्याकालविषेआकाशमोलालीभासतीहै ॥ तैसेअविद्या
करजगतभासताहै ॥ जैसेदूरवस्तुनिकटभासती ॥ अरुनिकटवस्तुदूरभासतीहै ॥ भ्रम
करकेजैसेस्वप्नेविषेवहुतकालमोंथोडाभासताहै ॥ अरुथोडकालमोंवहुतभासता
है ॥ तैसेइहजगतजालसभअविद्याकरकेभासतेहैं ॥ अविद्यारूपहै ॥ आत्मज्ञानकरकेन
ष्टहोजातेहैं ॥ तातेंजतनकरकेमनकेप्रवाहकोंरोकों ॥ हेरामजीजोकछुदृष्टमानजग
तहै ॥ सोसभतुच्छरूपहै ॥ मिथ्याभावनाकरकेजगतकोंअंधकीयाहै ॥ वडाआश्चर्यहै ॥ हे
रामजीअविद्यानिराकाररूपहै ॥ अरुतुच्छरूपहै ॥ तिसनेअसतहोइकरजगतकोंअंधकी
याहै ॥ अर्थयहजोअसतरूपपदार्थोंकोंसतजाणकरपदेयत्नकरतेहैं ॥ जैसेसूर्यप्रकाशमा
नविषेउलूकोंअंधकारभासताहै ॥ भ्रांतकरकेसूर्यउनकोंनाहीभासता ॥ तैसेचिदानंदरू
आत्मासदाअनुभवकरप्रकाशताहै ॥ अरुअविद्याकरकेनाहीभासता ॥ असतरूपअवि
द्याजगतकोंअंधकीयाहै ॥ तातेंवडाआश्चर्यहै ॥ जोविकर्मोंकोंकरावतीहै ॥ अरुविचारकी
येतेंरहतीनाही ॥ तिसकरअपणाआपनाहीभासता ॥ वडाआश्चर्यहै ॥ जोसंपूर्णजगत
कोंअंधकीयाहै ॥ जोधीर्यवानधर्मात्माकोंभीअपणेवशकरकेसमर्थहोणनाहीदेती
अरुअविचारतसिथअविद्यारूपीइस्त्रीपुरुषकोंअंधकरकेअनंतदुषोंकाविस्तारपसा
रतीहै ॥ उत्पत्तिअरुनाशसुषअरुदुषकोंकरतीहै ॥ आत्माकोंभ्रमावतीहै ॥ अनंतअज्ञान
करदिषावतीहै ॥ बोधतेंहीनकरतीहै ॥ कामक्रोधउपजावतीहै ॥ जोमनोविषेवासना
करइहीभावनादृढकरतीहै ॥ इत्यविद्यावर्णनंनामसर्गः ॥ ॥ ॥ ॥

रामउवाच ॥ हेऋषिजीजेताकछुजगतदृष्टआवताहै ॥ सोसभअविद्याकरकेउपजया
है ॥ सोअविद्याकिसभांतिनिवृत्तहोतीहै ॥ वसिष्ठउवाच ॥ हेरामजीजैसेवरफकीपुतली
हाणविषेसूर्यकेतेजकरकेनष्टहोजातीहै ॥ तैसेअविद्याआत्माकेप्रकाशकरकेनष्टहो
जातीहै ॥ जवलगआत्माकादर्शननाहीभया ॥ तवअविद्यापुरुषकोंभरमदिषावतीहै
अरुनानाप्रकारकेदुषोंकोप्रापतकरतीहै ॥ अरुजवआत्माकेदर्शनकीइछाहोतीहै ॥ त
वउहीइछामोहकोंनाशकरतीहै ॥ जैसेधुपकरकेछायाक्षीणहोतीहै ॥ आत्मपदकी
इछाकरितैसेअविद्याक्षीणहोतीहै ॥ अरुसर्वगतदेवआत्माकेसाक्षात्कारहूएतेंनष्ट
होजातीहै ॥ जैसेद्वादशसूर्यउदेहूएतेंदेशकीछायानष्टहोजावे ॥ तैसेआत्माकेसाक्षा
त्कारहूएअविद्यानष्टहोजातीहै ॥ हेरामजीजोदृश्यपदार्थोंकीइछापडीउपजतीहै
तवइसीकानामअविद्याहै ॥ अरुतिसइछाकेनाशकानामविद्याहै ॥ अरुतिसविद्याही
कानाममोक्षहै ॥ सोअविद्याकानाशअसंकल्पमात्रहै ॥ जैसाकछुदृश्यपदार्थहै ॥ ति
सकीइछानउपजे ॥ अरुकेवलचिन्मात्रविषेचित्तवृत्तस्थितहोवे ॥ इहअविद्यानाश
काउपाइहै ॥ जवसर्ववासनानिवृत्तहोवे ॥ तवआत्मतत्वप्रकाशआवे ॥ जैसेरात्रिकेक्ष
यहूएसूर्यप्रकाशताहै ॥ तैसेवासनाकेक्षयहूएआत्माप्रकाशताहै ॥ जैसेसूर्यकेउ
देहूएनाहीजाणीताजोरात्रकहांगईहै ॥ हेरामजीइहपुरुषसंसारकीदृढवासना
करकेवांध्याहूयाहै ॥ जैसेसंध्याकालविषेमूर्षवालवालकपछावेंविषेवेतालकल्प
नाकरभयमानहोताहै ॥ तैसेइहपुरुषअपणीवासनाकरभयकोंपावताहै ॥ रामउव

हेभगवनजोकछुरूपहै ॥ सोअविद्याकरहुईहै ॥ अरुअविद्याआत्मभावनाकरनाथा
होतीहै ॥ सोआत्माकेसाहै ॥ वसिष्ठउवाच ॥ हेरामजीचैतन्योनमुखत्वतेरहितअरुसर्वग
नसमानअनुभवरूपअैसाजोचेतनत्वअग्राह्यअरूपहै ॥ सोआत्मापरमेश्वरहै ॥ हेरामजी
ब्रह्मातेलेकरअरुतृणपर्यंतजोजगतहै ॥ सोसर्वआत्माहै ॥ औरअविद्याकछुनही ॥ हे
अनघसर्वदेहोविषेनित्यचेतनत्वअनअविनाशीपुरुषस्थितहै ॥ तिसविषेमनोना
मनोकल्पनाअभासअन्यकीन्याईहोभासतीहै ॥ अरुआत्मतत्वतेइतरकछुनाही ॥ हेरा
मनकोउजन्मताहै ॥ नमरताहै ॥ नकोउविकारहै ॥ केवलआत्मतत्वप्रकाशसत्तास
मानहै ॥ अविनाशीचैतन्यतेरहितसुधचिन्मात्रतत्वअपणेआपविषेस्थितहै ॥ सोनित्य
है ॥ सर्वगतहै ॥ सुद्धचिन्मात्रहै ॥ निरुपद्रवहै ॥ शांतरूपसत्तासमाननिर्विकारअद्वै
तआत्माहै ॥ हेरामजीतिसएकसर्वगतदेवसर्वशक्तिमहात्माकीजवविभागकल्प
नाशक्तिहोतीहै ॥ तिसकानाममनहै ॥ जैसेसमुद्रविषेद्रवताकरकेलहरीहोतीहै ॥
तैसेसुद्धचिन्मात्रविषेजोचेत्यताहोतीहै ॥ तिसकानाममनहै ॥ संकल्पकलनाकरके
रूपकीन्याईभासताहै ॥ तिसीसंकल्पकलनाकानामअविद्याहै ॥ संकल्पहीकरउप
जी ॥ संकल्पहीकरनष्टहोजातीहै ॥ जैसेवायुकरकेअग्निउपजतीहै ॥ अरुवायुहीकर
लीनहोतीहै ॥ तैसेसंकल्पकरकेअविद्यारूपीजगतउपजताहै ॥ अरुसंकल्पहीकरन
ष्टहोताहै ॥ जवचित्तकीवृत्तदृश्यकीओरफुरती ॥ तवअविद्यावढतीहै ॥ जववृत्तदृश्य
कोंत्यागकरस्वरूपकीओरआवतीहै ॥ तवअविद्यानष्टहोजातीहै ॥ हेरामजवसंकल्पक
रताहै ॥ जोमैंब्रह्मनाहीं ॥ तवमनदृढवंधमानहोताहै ॥ अरुजवइहीसंकल्पदृढकर
ताहै ॥ जोसर्वब्रह्महै ॥ तवमुक्तहोताहै ॥ जवअनात्माविषेअहंअभिमानकासंकल्प
दृढकरताहै ॥ तवबंधनहोताहै ॥ अरुसर्वब्रह्मकेसंकल्पकरमुक्तहोताहै ॥ दृश्यकासंक
ल्पबंधनहै ॥ अरुसंकल्पतेरहितमोक्षहै ॥ आगेजैसेतेरीइच्छाहोवै ॥ तैसेकरु ॥ जैसेबा
लकआकाशविषेसुवर्णकेकमलोंकीकल्पनाकरै ॥ जोसूर्यवतप्रकाशअरुगंधकरह
णेहै ॥ सोभावनामात्रहोतेहै ॥ तैसेअविद्याभावनामात्रहै ॥ जोअज्ञानीजानताहै ॥ मैंकु
शहौं ॥ अरुछोटाहौं ॥ बंधहौं ॥ हस्तपादइंद्रीयांवालाहौं ॥ ऐसेअहंकारकरबंधमान
होताहै ॥ अरुजवऐसेजाणैजोमैंइनोनाहीं ॥ नमेरीदेहहै ॥ नमेरीबंधनहै ॥ ऐसीभा
वनाकरमुक्तहोताहै ॥ नमैंमांसहौं ॥ नअस्थिहौं ॥ देहतेअन्यसाक्षीहौं ॥ ऐसेनिश्चै
वानअनअविद्यातेमुक्तकहीताहै ॥ जैसेसूर्यविषेअंधकारनाहीं ॥ तैसेआत्माविषे
अविद्यानाहीं ॥ जैसेपृथिवीपरस्थितपुरुषआकाशविषेनीलताकल्पताहै ॥ तैसेअ
ज्ञानीआत्माविषेअविद्याकल्पताहै ॥ वास्तवकछुनाहीं ॥ रामउवाच ॥ हेभगवनसु
मेरकीछायाभीआकाशविषेनाहीं ॥ अरुतमकीप्रभाभीनाहीं ॥ वहुरिआकाशविषे
नीलताकैसेभासतीहै ॥ वसिष्ठउवाच ॥ हेरामजीआकाशविषेनीलताहैनाहीं ॥ इह
शून्यताकागुणहै ॥ नसुमेरकीछायाहै ॥ अरुनतमहै ॥ आकाशपोलमात्रहै ॥ हेरामजी
इहब्रह्मांडतेजरूपयाइसकाप्रकाशहीस्वरूपहै ॥ तमकास्वभावनाहीं ॥ दृढशून्यता
करकेआकाशविषेनीलताभासतीहै ॥ औरनीलताकछुनाहीं ॥ जिसकीमंददृष्टिहै
तिसकोंनीलताभासतीहै ॥ जिसकीदिव्यदृष्टिहै ॥ तिसकोंनीलतानाहींभासती ॥ पो
लाईभासताहै ॥ जैसेमंददृष्टीकोंआकाशविषेनीलताभासतीहै ॥ तैसेअज्ञानीकों
आत्माविषेअविद्यासतभासतीहै ॥ जैसेदिव्यदृष्टवालेकोंनीलतानाहींभासती ॥ तै
सेज्ञानवानकोंअविद्यानाहींभासती ॥ ब्रह्मसत्ताहीभासतीहै ॥ चैतन्यकोंछोडकरजो
कछुस्मरणाकरताहै ॥ तिसकानामअविद्याहै ॥ अरुजवचित्तअचलहोताहै ॥ तवअ
विद्यानष्टहोजातीहै ॥ असंकल्पहोणेकरअविद्यानष्टहुईदृष्टकरकहतेहै ॥ जैसेआ
काशकेफूलतैसेअविद्याहै ॥ इहभ्रमरूपजगतमूर्खोंकोंसतभासताहै ॥ वास्तवक
छुनाहीं ॥ मनकोंफुरणेतेरहतकरो ॥ तवजगतकछुनाहीं ॥ भावनामात्रजगतहै
तिसीकानामअविद्याहै ॥ सोमोहकाकारणहै ॥ तवइहीभावनाउलटकरआत्मा
कीओरआवै ॥ तवअविद्यानाशहोवै ॥ भावनाकिसकानामहै ॥ जोवारंवारचितव

नाकरणी ॥ इसकानामभावनाहै ॥ जवभावनाआत्माकीओरनिकटहोतीहै ॥ तवआत्मा
कीप्रापतहोतीहै ॥ अरुअविद्यानष्टहोजातीहै ॥ मनकेसंसरणेकानामअविद्याहै ॥ ज
वसंसरणाआत्माकीओरहूया ॥ तवअविद्यानष्टभई ॥ हेरामजीजैसेराजेकेआगेमंत्रीइ
त्यादिकार्यकोंकरतेहै ॥ तैसेमनकेआगेइंद्रीयांकार्यकोंकरतीयांहै ॥ हेरामवाह्यकेविषे
पदार्थोंकीभावनाछोडकरअंतरआत्माकीभावनाकरो ॥ तवआत्मपदकोंप्रापत
होवो ॥ जिनोपुरुषोंअंतरआत्माकीभावनाकायत्नकीयाहै ॥ तेशांतकोंप्रापतभएहै
हेरामजीजोपदार्थआदिविषेनाहींहोता ॥ सोअंतविषेभीनाहींहोता ॥ तातेजोकछुभा
सताहै ॥ सोसमभवब्रह्मसत्ताहै ॥ इतरकछुनाहीं ॥ जोकछुइतरभासताहै ॥ सोमननमात्र
है ॥ अरुतेरास्वरूपनिर्विकारनिराकारआदिअंततेरहितब्रह्मतत्वहै ॥ तूंकोंशोककर
ताहै ॥ अपणेपुरुषार्थकरकेसंसारकीभोगवासनाचित्तसेंमूलतेंउखारो ॥ अरुआत्म
पदकाअभ्यासकर ॥ जोदृश्यभ्रममिटजावे ॥ हेरामजीइहसंसारकीवासनाकाउदेहो
णाजरामरणमोहकोंदेवनहाराहै ॥ जवस्वरूपकाप्रमादहोताहै ॥ तवइसकोंइहक
ल्पनाउठतीहै ॥ आशारूपीअनंतफांसीयोंकरबंधमानहोताहै ॥ अरुवासनाविरुद्ध
होजातीहै ॥ कहताहैमेरापुत्रहै ॥ मेराधनहै ॥ मेरेबांधवहै ॥ इहमैंहौं ॥ इहओरहै ॥ इसते
लेकरवासनातिसकेचित्तविषेपडीयांउत्पत्तिहोतीयांहै ॥ इंद्रजालकीवाजीकीन्याई
हेरामजीजिसशरीरसाथमिलकरइहकल्पनाकरताहैसोशरीरअल्परूपहै ॥ जैसे
वायुविरालेविषेतृणपडेउडतेहै ॥ तैसेअविद्यारूपीवासनाकरकेशरीरपडेउडतेहै
अहंत्वआदिकजगतसभअज्ञानीयोंकोपडाभासताहै ॥ अरुज्ञानवानकोंकेवलब्रह्मत
त्वभासताहै ॥ पृथिवीनदीयांतेआदिलेकरजगतअज्ञानमात्रकरकेभासताहै ॥ अ
रुज्ञानमात्रतेनष्टहोजाताहै ॥ जैसेजेवडीकेनजाणणेकरसर्पभासताहै ॥ अरुजेव
डीकेसम्यकज्ञानकरनष्टहोजाताहै ॥ तैसेआत्माकेअज्ञानकरकेजगतभासताहै
अरुआत्मकेसम्यकज्ञानहुएजगतभ्रमनष्टहोजाताहै ॥ तातेंआत्माकीभावनाकरो
हेरामजीजेवडीविषेदोविकल्पहोतेहै ॥ एकजेवडीकादूसरासर्पका ॥ सोदोनोंविक
ल्पअज्ञानीयोंकोहोतेहै ॥ ज्ञानीकोंदोविकल्पनाहींहोते ॥ जोजिज्ञासीहोताहै ॥ ति
सकीहृतसतअरुअसतविषेडोलायमानहोतीहै ॥ अरुजोज्ञानवानहै ॥ तिसकों
विचारतेरहितब्रह्मतत्वहीभासताहै ॥ तातेंतूंअज्ञानीमतहोऊ ॥ ज्ञानवानहोऊ
जेतीकछुजगतकीवासनाहै ॥ सोसर्वकोंत्यागकरु ॥ तवशांतरूपहोवेगा ॥ हेराम
जीसंसारभोगकीवासनाभीतवहोतीहै ॥ जोअनात्माविषेआत्मअभिमानहोता
है ॥ सोतूंदेहकेसाथकाहेकोंअभिमानकरताहै ॥ इहतोदेहमूकजडहै ॥ अरुअस्थि
मांसकीथैलीहै ॥ ऐसीदेहतेंक्याताहै ॥ तवलगदेहविषेअभिमानहोताहै ॥ तवल
गसुखदुखकोंभोगताहै ॥ अरुइच्छाकरताहै ॥ जैसेकाष्टअरुलाखकासंयोगहोताहै
जैसेघटअरुआकाशकासंयोगहोताहै ॥ तैसेदेहअरुदेहीसंयोगहै ॥ जैसेघलडु
केअंतरआकाशहोताहै ॥ सोघलडीकेनष्टहुएआकाशतोनष्टनाहींहोता ॥ अरुजै
सेघटकेनष्टहुएघटआकाशनष्टनाहींहोता ॥ तैसेदेहकेनष्टहुएआत्मानाशना
हींहोता ॥ हेरामजीजैसेमृगत्रिसनाकीनदीभ्रांतकरकेभासतीहै ॥ तैसेअज्ञानकर
केसुखदुखकीकल्पनाहोतीहै ॥ तातेंसुखदुखकीकल्पनाकोंत्यागकरअपणेस्वभा
वसत्ताविषेस्थितहो ॥ अरुवडाआश्चर्यहै ॥ जोब्रह्मतत्वसतस्वरूपहै ॥ सोसवघा
कोंभूलगयाहै ॥ अरुजोअसतअविद्याहै ॥ तिसकोंवारंवारस्मरणाकरतेहै ॥ ऐसी
अविद्याकोंतूंमतप्रापतहोऊ ॥ हेरामजीमनकाजोमननहै ॥ सोईअविद्याहै ॥ अ
रुइहीअनर्थकाकारणहै ॥ इसकरजीवअनेकभ्रमकोंदेखताहै ॥ मनकेफुरणेक
रचंद्रमाकाप्रतिविंवअमृतकरणीभीनरककीअग्निसमानभासताहै ॥ अरुवडे

लहरीतरंगासहित अरुकसलोसंयुगानजलभीमाडयलकीनदीसमानभासताहै
जैसेस्वप्नविषेमनकेफुरणेकरकेनानाप्रकारकेसुषअरुदुषअनुभवहोतेहैं ॥ तैसेइ
हसभजगतभ्रमचित्तकीवासनाकरकेपडाभासताहै ॥ जाग्रतअरुस्वप्नविषेइहजीव
विचित्ररचनाकोंदेषताहै ॥ सोमनकेफुरणेकरकेदेषताहै ॥ जैसस्वर्गविषेदेवताहोता
है ॥ अरुस्वप्नविषेउसकोनरककोंकाअनुभवहोताहै ॥ हेरामजीअज्ञानीमनकेफुरणे
करकेसुषसम्पूर्णविषेसंपूर्णजगतभ्रमकोंदेषताहै ॥ जैसेराजालवणसिंहासनपर
वैठाहूया ॥ चंडालीअवस्थाकाअनुभवकरतभया ॥ तातेंसंसारकीवासनाचित्ततेंत्याग
देह ॥ इहवासनासंसारवंधनकाकारणहै ॥ सर्वभावोविषयवर्ज्जितो ॥ परंरागकिसीविषे
नहोवे ॥ हेरामजीजैसेफटकमणिसभप्रतिविंवकोंलेतीहै ॥ परंरंगकिसीकानाहींले
ती ॥ तैसेतुससभकारजकरो ॥ परंरागदेषकिसीविषेनहोवे ॥ हेरामजीजोकछुप्रकृत
आचारतुसकोंआनप्रापतहोवे ॥ देवणालेणाचलणाइत्यादिकसभकार्यकोंकरो ॥ पर
अंतरतेंअभिमानकछुनकरो ॥ निरअभिमानहोइकरकार्यकरो ॥ इहज्ञानसभतेंश्रेष्टहै
इतियथाकथितदोषपरिहारोपदेशोनामसर्गः ॥ ८६ ॥ ॐ वसिष्टउवाच
इसप्रकारजवमहात्माएरुषवसिष्टजींकिहा ॥ तवकमललनेनरामजीवसिष्टजीकी
ओरदेषताभया ॥ अरुअंतःकरणप्रफुलतहोइआया ॥ जैसेरात्रिकेमुंदेहूएकमलसूर्य
केउदेहूएप्रफुलतहूइआवतेहैं ॥ तैसेप्रफुलतहोइकररामजीवोलतभया ॥ रामोवाच
वडाआश्चर्यहै ॥ वडाजोपदमकीतंतुसाथपर्वतवांधेहैं ॥ अविद्यमानजोहैअविद्यातिस
नेंसंपूर्णजगतकोंवसकीयाहै ॥ अरुअविद्यमानजगतकोंवज्रसारवतदृढकीयाहै
तीतोजगतअसतरूपहै ॥ अरुसतकीन्याईस्थितकीयेहै ॥ हेभगवनइससंसारकीनाट
नीजोमायाहै ॥ तिसकाइहपक्याहै ॥ अरुलवणराजामहागुणवानथा ॥ सोऐसीवडी
आपदाकोंकैसेप्रापतहूया ॥ अरुइंद्रजालकजोभ्रमदिषावताभयासोकवनथा ॥ उ
सकोअपणाअर्थकछुनथा ॥ सोइंद्रजालककहांगया ॥ अरुइसदेहजीवअरुदेहकासंवं
धकैसेहूयाहै ॥ अरुशुभअशुभकर्मोकेफलभोगणेकोंकैसेसमर्थहोताहै ॥ एतेप्रश्नोंका
उत्तरमेरेवोधकेनिमित्तकहो ॥ वसिष्टउवाच ॥ हेरामसर्वदेहकाष्टअरुमाटीकेसमान
है ॥ जैसेस्वप्नविषेचित्तकेफुरणेकरकेदेहभासतीहै ॥ तैसेइहदेहचित्तकीकल्पीहूईहै
अरुचित्तचेतन्यसंवंधकरकेजीवतत्वपदकोंप्रापतभयाहै ॥ सोजीवचित्तपाछिंघोभाइमा
नहै ॥ तिसचित्तकेफुरणेकरकेसंसारउपजयाहै ॥ सोचित्तवांनरकेवालकवतचंचल
है ॥ अरुअपणेफुरणेरूपकर्मोकरनानाप्रकारकेशरीरोंकोंधारताहै ॥ तिसचित्तकेएते
नामहैं ॥ अहंकारकहीयै ॥ मनकहीयै ॥ जीवकहीयै ॥ इत्यादिकनामचित्तकेहींहैं ॥ सोचित्त
अज्ञानकरकेसुषदुषकोंभोगताहै ॥ शरीरमाहीभोगता ॥ अरुयोअवोधचित्तहै ॥ सोशांत
रूपहै ॥ जवलगमनअप्रवुधहै ॥ अविद्यारूपीनिद्राकरकेंसोयाहूयाहै ॥ तवलगस्वप्नरूप
अनेकसृष्टांकोंदेषताहै ॥ अरुजवअविद्यानिद्रातेंजागताहै ॥ तवनाहींदेषता ॥ हेराम
जीजवलगजीवअविद्यासाथमलतहै ॥ तवलगसंसारभ्रमकोंदेषताहै ॥ अरुजववो
धवानहूया ॥ तवसंसारभ्रमनिवर्त्तजोहोताहै ॥ जैसेरात्रिकरकमलमुंदेजातेहैं ॥ अरुसू
र्यकेउदेहूयेषिडआवतेहैं ॥ तैसेअविद्याजगतभ्रमदेषताहै ॥ वोधकरकेअद्वेतरूपहो
ताहै ॥ तातेंअज्ञानहीदुषकाकारणहै ॥ अविवेकरथपंचकोंपाजोदेहहै ॥ तिसविषेअभि
मानीहोइकरजैसेकर्मकरताहै ॥ तैसेहीभोगताहै ॥ शुभकरताहै ॥ तवसुषभोगताहै
अशुभकरताहै ॥ तवदुषभोगताहै ॥ जैसेनटवाअपणीक्रियाकरकेअनेकस्वांगोंको
धारताहै ॥ तैसेमनअपणेफुरणेकरकेअनेकशरीरोंकोंधारताहै ॥ जेकछुइहअनिष्ट
सुषदुषहै सोएकमनकेफुरणेविषेहै ॥ शरीरविषेस्थितहोइकरमननकरताहै ॥ जैसे
रथऊपरआरूढहोइकररथवाहीचिष्टाकरताहै ॥ जैसेभूइविषेकुंजविषेवैठकरसर्प

चेष्टाकरताहै ॥ तैसेशरीरविषेस्थितहोइकरमनचेष्टाकरताहै ॥ हेरामअचलरूपा
शरीरकोंमनचंचलकरताहै ॥ जैसेवृक्षकोंवायुचंचलकरतीहै ॥ तैसेजडशरीरकों
मनचंचलकरताहै ॥ जेतेकछुसुषअरुदुषकीकलनाहै ॥ सोमनहीकरताहै ॥ मन
हीभोगताहै ॥ हेरामजीअवलवणकाहृत्तांतसुण ॥ लवणराजाजोमनकेअसंषोकर
केचंडालहूया ॥ जेताकछुमनकरकेकरीताहै ॥ सोसफलहोताहै ॥ हेरामजीएकका
लमोंहरीचंद्रकीकलनेंउपजयाजुहै ॥ राजालवणसोएकांतवगीचेविषेवैठकर
विचारकरताभया ॥ जोपिताहमेरावडाराजाहूयाहै ॥ अरुमेरेवडेयोंसभनेराजसू
यज्ञकीयेहैं ॥ अरुमैंभीउनकीकुलविषेउपजतभयाहों ॥ मैंभीराजसूययज्ञकरों
इसप्रकारचिंतवनाकरकेलवणमानसीयज्ञकाआरंभकरतभया ॥ देवताऋषीस्वे
रसुनीश्वरसभनोंकीमनहीकरपूजाकरतभया ॥ अग्निअरुपवनआदिकदेवताकों
पूजतभया ॥ मंत्रअरुसमग्रीजोकछुराजसूययज्ञकाकर्महै ॥ सोसंपूर्णकरतभया ॥
अरुमनहीकरसर्वदक्षिणादेतभया ॥ सवावर्षपर्यंतयज्ञसंपूर्णभयाकीया ॥ अरु
मनहीकरसर्वदक्षिणादेतभया तिसकाफलभोगताभया ॥ तातेंहेराममनहीं
करसभकर्महोताहै ॥ अरुमनहीभोगताहै ॥ जैसाचित्तहै ॥ तैसाहीपुरुषहै ॥ संपूर्ण
चित्तकरसंपूर्णहोताहै ॥ अरुनष्टचित्तकरनष्टहोताहै ॥ अर्थयहजोजिसकाचित्तआ
त्मतत्वकरसंपूर्णहै ॥ सोसंपूर्णहै ॥ अरुजोआत्मतत्वतेंनष्टचित्तहै ॥ सोनष्टरूपदुष
है ॥ हेरामजीजिसकोइहनिश्चेहै ॥ जोमैंदेहहों ॥ सोअवथानीचअनेकदुषोंकोंप्रा
पतहोवेगा ॥ अरुजिसकाचित्तसंपूर्णविवेकविषेजागयाहै ॥ तिसकोंसर्वदुषोंकाअ
भावहोजाताहै ॥ जैसेसूर्यउदेहूएकमलोंकासंकोचणाहरहोजाताहै ॥ अरुषिड
आवतेहैं ॥ तैसेविवेकरूपीसूर्यकेप्रकाशतेंरहतपुरुषहै ॥ सोदुषोंकरसंकोचरह
रहताहै ॥ अरुजोविवेकरूपीसूर्यकेप्रकाशकरप्रफुलतभयाहै ॥ सोसंसारके
दुषोंकोंनरजाहै ॥ इतिसुषदुषभोक्तृपदेशानंनामसर्गः ॥ ॥ ॐ रामउवाच
हेभगवनराजालवणराजसूयज्ञकरतभया ॥ अरुमनहीकरतिसकाफलभोग्या
परऐसावरकोनथा ॥ जिसउसकोंऐसाभ्रमदिषाया ॥ वसिष्टउवाच ॥ हेरामजी
जवउससावरलवणराजाकेसभाविषेआया ॥ तवमैंउहांथा ॥ मैंभीउहदेष्याथा
तवतहांमफ़सोंलवणअरुमंत्रीपूछतेभए ॥ जोइहकवनथा ॥ तवमैंउनकोंकहा ॥
जोकछुउनकोंकहाथा ॥ सोतुझकोंकहताहों ॥ हेरामजीजोपुरुषराजसूययज्ञक
रताहै ॥ तिसकोंद्वादशवर्षकीआपदाप्रापतहोतीहै ॥ तिनद्वादशवर्षोविषेअनेके
दुषोंकोदेषताहै ॥ तवराजालवणजोमनकरयज्ञकरतभया ॥ तिसकोंआपदाभी
मनकरप्रापतभई ॥ स्वर्गतेंइंद्रअपणाहूतपठाया ॥ आपदाभुगावणेकेनिमित्त
सांवरआकारवानहोइकरआया ॥ राजेकोंचंडालीकीआपदाभुगाइकररवरूइइस्व
र्गकोंचलयागया ॥ हेरामजीजोकछुमैंप्रतक्षदेष्याथा ॥ सोतुझकोंकहाहै ॥ तातें
मनहीकर्ताहै ॥ मनहीभोगताहै ॥ जैसाजैसादृढसंकल्पमनविषेफुरताहै ॥ ति
सकेअनुसारउसकोंसुषदुषकाअनुभवहोताहै ॥ हेरामजीजवलगचित्तपडा
फुरताहै ॥ तवलगइसकोंसुषदुषकाअनुभवहोताहै ॥ जैसेज्योंज्योंकिकरकाह
ढवढताहै ॥ त्योंत्योंकंटकवधतेजातेहैं ॥ तैसेमनकेफुरणेकरआपदापरती
जाती ॥ अरुजवमनस्थिरहोताहै ॥ तवआपदामिटजातीहै ॥ तातेंहेरामइसचि
त्तरूपीवरफकरणकोंविवेकरूपीतप्तकरगालो ॥ तवपरमसारकोंप्रापतहोवे
इहचित्तहीसकलजगतअडंवरकाकारणहै ॥ तिसकोंतूंअविद्याजाण ॥ जैसेकि
सीकछुकहा ॥ किसीविटपकहा ॥ किसीतरुकहा ॥ सोएकहीवस्तुकेनामहैं ॥
तैसेकिसीअविद्याकही ॥ किसीजीवबुद्धमनअहंकारकहा ॥ सभफुरणेकेना
महैं ॥ इसकोविवेककरलीनकरो ॥ हेरामजैसासंकल्पइसविषेदृढहोताहै
तैसाहीदेषताहै ॥ हेरामजीउहकवनपदार्थहै ॥ जोयत्नकीयेतेंसिद्धनहोवे
जोदृढकरफिरेनाहीं ॥ तोसभकछुसिद्धहोताहै ॥ जैसेआपकेवासरणेकों

जलडारीये ॥ तव जलकी पनाहो जाती है ॥ रामउवाच ॥ हे भगवन् तन मक हो जो
सो घट्ट वस भ मनही विषे स्थित है ॥ अरु तिन तन ष्टष्ट पसभनष्ट होजाती है ॥ सो व
पल रूप हत केसे लय होवे ॥ वसिष्ठउवाच ॥ हे रघुकुल आकाशके चंद्रमा मे
न फकों मन के प्रशमन की युक्ति कहता हों ॥ जैसे असवारके वश विषे घोड़ा आ
वता है ॥ तैसे मन तेरे वश विषे आवेगा ॥ हे रामजी समष्टि मन ब्रह्म ही तें उपजे हैं
सो तिन की उत्पत्ति तीन प्रकार की है ॥ एक राजसी ॥ एक सात्त्विकी ॥ एक तामसी
प्रथम जो महत् चिन्मात्र ब्रह्म विषे कलना उठी है ॥ सो वायुमय फुरणे का नाम म
न हुया ॥ सो ब्रह्मा रूप है ॥ सो ब्रह्मा संकल्प रूप आगे संकल्प करता भया ॥ जैसा
जैसा संकल्प कीया ॥ तैसा आगे देषता भया ॥ तिस ने भवन अंड वर कल्प्या ॥ ति
स विषे जन्म मरण सुष मोह आदिक संसरणा कल्प्या ॥ इस प्रकार बहुत प्रका
र आरंभ करकर बहुड आप निर्वाण होगा ॥ अपणा आरंभ सुष्टि जैसे वरफा का कण
का समुद्र तें उपज बहुड लीन होजावे ॥ बहुड संकल्प के वश तें उपजया ॥ बहु
ड लीन होगया ॥ बहुड उपजया बहुड लीन होगया ॥ इस प्रकार अनंत कोटि
ब्रह्मांड ब्रह्म तें उपज उपज उपज कर लीन होगये हैं ॥ अरु कई होवेगा ॥ जैसे स
मुद्र तें तरंग होते हैं ॥ अरु लीन होजाते हैं ॥ तैसे ब्रह्म तें ब्रह्मांड उपज कर लीन हो
जाते हैं ॥ अब तैसे ब्रह्म तत्त्व तें उपजे हैं ॥ अरु जैसे मुक्त होते हैं ॥ सो सुण ॥ हे रामजी
सुद्ध ब्रह्म तत्त्व तें प्रथम मन फुरणा उपजी है ॥ तब उह आकाश कों चेतती भई ॥ तब आ
काश हुया ॥ तिस तें बहुड पवन हुया ॥ बहुड अग्नि भया ॥ तिस तें आगे जल हुया ॥ ति
स कों दृढ़ता तें पृथ्वी भई ॥ तब चित्त शक्ति दृढ़ संकल्प करया पांच भूतन कों प्राप्त भई
तब अंत:करण जो सूक्ष्म प्रकृत है ॥ सो पृथ्वी अपने जब वायु साथ मिल कर धा
न विषे आन प्राप्त होती है ॥ तिस कों पुरुष भोजन करते हैं ॥ तब उह परिणाम
होइ कर वीर्य रूप हिर रूप गर्भ विषे करती है ॥ तिस तें पुरुष उपजता है ॥ सो पुरु
ष जन्म मात्र तें वेद कों पढने लागता है ॥ बहुड गुरु के निकट जाता है ॥ बहुड क्रम
कर के तिस की बुद्धि विवेक सो चमत्कारवान होजाती है ॥ तुमारी न्याई तिस के चि
त को हत होजाती है ॥ यह राग अरु त्याग सुभ असुभ विषे विचार उपजता है ॥ तब
निर्मल अंत:करण सहित उकृष्ट स्थित होता है ॥ तव क्रम कर के सप्त भूमिका यो
ग की या तिस के विषे प्रकाशती या है ॥ इति सात्त्विक जन्मावतारो नाम सर्ग: ॥ ८८ ॥
रामउवाच ॥ हे सर्व शास्त्रों के तत्त्ववेत्ता भगवान के मे उह सप्त भूमिका ज्ञान की या
सिद्ध करणे हारी या है ॥ संक्षेप तें मुझ कों कहो ॥ वसिष्ठउवाच ॥ हे रामजी सप्त
भूमिका अज्ञान की या है ॥ अरु सप्त भूमिका ज्ञान की या है ॥ तिन के अंतरगत और
अवस्था बहुत है ॥ तिन के संख्या कछु नहीं ॥ अज्ञान की या भी अरु ज्ञान की या भी
असंख्य है ॥ परम भूमपति के अंतरगत है ॥ हे रामचंद्र आत्मा रूपी वृक्ष है ॥ अपणा ही
पुरुषार्थ रूपी वसंत ऋतु है ॥ तिस कर के दो प्रकार की वल्ली उत्पत्ति होती है ॥ एक
सुभ अरु एक असुभ है ॥ तिस पुरुषार्थ रूपी रस के बट रोक कर फल की प्राप्त होती
अब भूमिका सुण ॥ ज्ञान किस कों कहते हैं ॥ अरु अज्ञान किस कों कहते हैं ॥ प्रथम
श्रवण ॥ सुद्ध चिन्मात्र विषे चेतना फुरने तें रहित होइ कर स्थित होवणा इसी का
नाम ज्ञान है ॥ अरु सुद्ध चिन्मात्र अहं तन विषे अहं जो वेदना फुरती है ॥ सो स्वरूप तें गि
रिता है ॥ अज्ञान दशा है ॥ हे रामचंद्र इह मन कों संक्षेप तें ज्ञान अज्ञान का लक्षण क
हा है ॥ सुद्ध चिन्मात्र विषे स्थिति है ॥ जिन की अरु मन तन स्वरूप तें चलायमान ना
ही होते ॥ अरु राग द्वेष किसी विषे नाही सो ज्ञानी है ॥ अरु ऐसे सुद्ध चिन्मात्र स्वरू
प तें जो गिरे हैं ॥ अरु जगत के पदार्थों विषे मगन है ॥ सो अज्ञानी है ॥ इस तें पर
मोह कोऊ नहीं ॥ न हुया है ॥ न कोऊ होवेगा ॥ इही परम मोह है ॥ अरु स्वरूप स्थि
ति किस का नाम है ॥ एक अर्थ कों छोड़ कर जो मन वृत्ति और अर्थ प्राप्त होती है ॥ जै
से जाग्रत त्याग कर स्वप्न को प्राप्त होती है ॥ तिस के मध्य विषे जो निर मनन रूप

जो सत्ता है ॥ तिस विषे स्थिति होवणा ॥ सो स्वरूप स्थिति कहीती है ॥ हे रामचंद्र भ
ली प्रकार सर्व संकल्प जिस के शांत हुए है ॥ अरु सिल्ला के अंतरवत सून्य है ॥ केसी हो
न्यता है ॥ जो निद्रा अरु जड़ता तें रहित है ॥ तिस सत्ता विषे स्थित होवणा सो स्वरूप
स्थिति कहीये ॥ केसा स्वरूप है ॥ अहं त्वं आदिक फुरणे तें रहत है ॥ भेद विकार तें र
हत है ॥ जड़ता तें रहत है अरु चैतन्य चिन्मात्र है ॥ सो आत्म स्वरूप कहीता है ॥ तिस तत्त्व तें
फुरणे कर जो जीवों की अवस्था हुए है ॥ सो सुण ॥ हे रामचंद्र एक वीज जाग्रत है प्रक
जाग्रत है ॥ तीसरी महा जाग्रत है ॥ चौथी जाग्रत स्वप्न है ॥ पंचम स्वप्न है ॥ षष्ठम स्वप्न
जाग्रत है ॥ सप्तम सुषुप्त है ॥ इह सप्त प्रकार मोह की या अवस्था है ॥ इन के अंतरगत
और अनेक है ॥ असंख्य इह सप्त है ॥ अब इन के लक्षण सुण ॥ हे रामचंद्र प्रथम जो सुद्ध
चिन्मात्र ॥ अप्रावृत तत्त्व सो चैतन्यता लक्षण अहं हो ॥ तिस का भविष्यत जीव नाम
होता है ॥ सो आदि सर्व पदार्थों का वीज रूप है ॥ तिस का नाम वीज जाग्रत है ॥ अरु ति
स के अनंतर जो अहं अरु इह मेरा इत्यादिक प्रतीत दृढ़ होगई है ॥ जन्मांतर विना भा
से ॥ तिस का नाम जाग्रत है ॥ अरु इह है ॥ सो है मैं हों ॥ इत्यादिक शाहो साथ तन्मय हो
जावणा ॥ जन्मांतर विषे जो अरु इह दृढ़ प्रतीत होजावे तिस का नाम महा जाग्रत है ॥ अ
रु महा जाग्रत विषे बैठा हुए मन पदार्थ फुरता है ॥ मनोराज विषे उह फुरणा दृढ़ हो
इ भासे ॥ अथवा अहं दृढ़ होवे ॥ सो जाग्रत स्वप्न कही है ॥ अरु दूसरा चंद्रमा भासे ॥ सि
पी विषे रूपा भासे ॥ मृगतृष्णा का जल भासे ॥ इत्यादिक विपर्यय भासणा ॥ सो जाग्रत
स्वप्न है ॥ अरु निद्रा आई तिस विषे मन फुरणे लागा ॥ नाना प्रकार के पदार्थ चित्त के
फुरणे कर भासणे लागे ॥ जब जागा उह तब कहता है ॥ मै अल्प काल विषे केते प
दार्थ देषे ॥ निद्रा काल विषे जो पदार्थ देषे थे ॥ तिन कों असत रूप जाणत भया ॥ ति
स निद्रा काल विषे फुरणे का नाम स्वप्न है ॥ अरु स्वप्न आया ॥ तिस विषे दीर्घ काल
बीत गया ॥ अरु फलत अपणा वड़ा वपु देषता भया ॥ तिस विषे अहं मम भाव दृढ़ हु
या ॥ आप जन्म मरण आदिक देषता भया ॥ ईहां देह रहे अथवा न रहे ॥ तिस का नाम
स्वप्न जाग्रत है ॥ अरु इन षटों अवस्था का जहां अभाव होजावे ॥ जड़ रूप होवे ॥ अरु
भविष्यत दुःख होवणा है ॥ तिस का नाम सुषुप्त है ॥ तिस अवस्था विषे तृण पाषाण वृ
क्षादिक स्थित है ॥ हे रामजी इह अज्ञान की या सप्त भूमिका कही या है ॥ तिन के ए
क एक विषे असंख अवस्था भेद है ॥ हे रामचंद्र स्वप्न चिरकाल कर के जाग्रत रूप हो
जाता है ॥ तिस के अनंतरगत और स्वप्न जाग्रत है ॥ तिस के अंतर और है ॥ इस प्रकार ए
क एक के अंतर अनेक है ॥ इह मोह की घनता है ॥ तिस कर जीव पड़े भ्रमते है ॥ जैसे ज
ल नीचे तें नीचे कों चला जाता है ॥ तैसे मोह तें अनंतर मोह कों पावते है ॥ हे रामचंद्र
इह तुझ कों अज्ञान की या अवस्था कही या है ॥ नाना प्रकार कार का मोह भ्रम विका
र है ॥ तिन तें तूं विचार कर मुक्त हो ॥ जब तूं महात्मा पुरुष आत्म विचार कर के निर्म
बोधवान होवेगा ॥ तब इस भ्रम कों तर जावेगा ॥ इति श्री अज्ञान भूमिका वर्णनं नाम सर्ग: ॥ ८९
वसिष्ठउवाच ॥ हे रामचंद्र अब तूं सप्त भूमिका ज्ञान की या सुण ॥ भूमिका कहीये
चित्त की या अवस्था ॥ सो ज्ञान की या भूमिका केसी या है ॥ जिन के जाने तें बहुड मो
ह रूपी चिकड़ विषे डूबे नाही ॥ हे रामचंद्र मतों वाले भूमिका को बहुत प्रकार कर
के कहते है ॥ अभिमत हमारे तो इह ही है ॥ इस कर के सुगम निर्मल बोध कों प्राप्त हो
ता है ॥ स्वरूप विषे जागणे का नाम ज्ञान है ॥ तिस ज्ञान की या सप्त भूमिका है ॥ अरु
मुक्ति इन सप्त भूमिका के परे है ॥ सो विदेह मुक्ति है ॥ अब भूमिका के नाम भेद सुण
प्रथम सुभेच्छा है ॥ दूसरी विचारणा ॥ तीसरी तनुमानसा ॥ चतुर्थ सत्वापत्ति ॥ पंचम
असंसक्ति ॥ षष्टम पदार्थ अभावनी ॥ सप्तम तुरीया ॥ इन कों प्राप्त हुया बहुड सो
क नहीं करता ॥ अब इन का अर्थ श्रवण कर ॥ हे रामचंद्र जिस कों इह विचार फुर आवे
जो मै महा मूढ़ होरहा हों ॥ मेरी बुद्धि सत विषे नाही ॥ अरु संसार की ओर लगी हुई है ॥ अ

से विचार करके सत शास्त्र अरु संतजनोंकी संगत करणी ॥ वैराग पूर्वक सतकी इछा
होवे ॥ इसका नाम सुभइछा है ॥ अरु सत शास्त्रोंको विचारणा ॥ अरु संतोंकी संगत वि
षयोंते वैराग ॥ सत मार्गका अभ्यास ॥ इन सहित सत आचार विषे वर्तणा ॥ सत
कों सत जाणना ॥ अरु असतकों असत जानकर त्याग करणा ॥ इसका नाम विचार
है ॥ विचार अरु सुभइछा संयुक्त तत्वका अभ्यास करणा ॥ अरु इंद्रियोंके विषयोंते
वैराग करणा ॥ तिसका नाम तनुमानसा है ॥ मन सूक्ष्म होता है ॥ तीसरी भूमि
काका नाम तनुमानसा है ॥ तीन भूमिकाका अभ्यास करणा ॥ अरु इंद्रियोंके विष
योंते वैराग करणा ॥ जगतते वैराग करणा ॥ तिसकर करके सत आत्मा विषे स्थित हो
नी है ॥ इसका नाम इसका श्रवण मनन निदिध्यासन है ॥ तिसकर सत आत्मा विषे
स्थित होणा सत्वापत्ति है ॥ सत आत्माका साक्षात्कार होता है ॥ इह जो चार भूमि
का है ॥ संयमरूप ॥ तिसका फल जो है सु इह विश्रांति ॥ तिस फल विषे असंसक्त रह
णा ॥ तिसका नाम असंसक्ति है ॥ दृश्यकों विसरणा अरु आत्मारामी अंतर बाह्यते
नाना प्रकारके पदार्थोंका तुछ भासणा होवे ॥ तिसका नाम पदार्थ अभावनी है
सो छटी भूमिका है ॥ हे रामचंद्र चित्त पर्यंत जो छटी भूमिकाका अभ्यास करके भेद कल
नाका अभाव हो जाता है ॥ स्वरूप विषे दृढ परिणाम होवे ॥ छटी भूमिका जहां ए
कताकों प्रापत होवे ॥ तिसका नाम तुर्या है ॥ इह जीवनमुक्तकी अवस्था है ॥ जी
वनमुक्त तुर्यापद विषे स्थित है ॥ अथ इह जो तीन भूमिका जगतकी जाग्रत अ
वस्था विषे है ॥ अरु चौथी तत्वज्ञानीकी है ॥ अरु पंचम षष्टम सप्तम जीवन्मुक्तकी
अवस्था है ॥ अरु तुरीयातीत पद विषे विदेहमुक्त स्थित होता है ॥ हे रामचंद्र जो पु
रुष महाभागवान है ॥ सो सप्तम भूमिका विषे स्थित होते है ॥ सो आत्मारामी महा
पुरुष है ॥ परमपदको प्रापत होते है ॥ हे रामचंद्र जो जीवन्मुक्त पुरुष है ॥ सो सु
षदुष विषे मगन नहीं होता ॥ शांतरूप होकर अपणे आचारकों करते है ॥ अथ
वा न होकर रहे ॥ तो भी तिनकों बंधन कछु नहीं ॥ तिनकों क्रियाका बाधक कछु नहीं
रहता ॥ जैसे सुषुप्त पुरुषके निकट जाइकर कोई क्रिया करे ॥ उसकों बोध कछु नहीं ॥ तै
से उसकों क्रियाका बोध कछु नहीं ॥ सुषुप्तवत उन्मीलन लोचन है ॥ हे रामचंद्र जै
से सुषुप्त पुरुषकों रूप अरु इंद्रियां मनका अभाव हो जाता है ॥ तैसे सप्तम भूमिका
विषे अभाव हो जाता है ॥ इह सप्त भूमिका ज्ञानकी ज्ञानवानका विषय है ॥ प
शु पक्षी म्लेछ वन जो मूर्ष है ॥ अरु पाप आचारी है ॥ तिनके चित्त विषे इनका अधि
कार नहीं होता ॥ जिसका मन निर्मल है ॥ तिसको भूमिका विषे अधिकार है ॥ अ
रु मलेछादिकोंकों भी इनका अभ्यास होवे ॥ तब उह भी मुक्त हो जाते है ॥ इस विषे
संसा कछु नहीं ॥ हे रामचंद्र आत्मज्ञान कर जिनके हृदेकी गांठ टूट गई है ॥ तिनकों
संसार मृगतृस्नाके जलवत मिथ्या भासता है ॥ उह मुक्तरूप है ॥ अरु जो संसारते
विरक्त होइकर इन भूमिका विषे आए है ॥ अरु मोहरूपी समुद्रकों तरे नहीं ॥ परमप
दकों प्रापत नहीं भए ॥ अरु सप्त भूमिका विषे किसी भूमिका विषे लागे है ॥ सो भी
आत्मपदकों पाइकर हर्ष आत्मा होवेंगे ॥ हे रामचंद्र एक सप्त भूमिकाकों प्रा
पत हुए है ॥ कई एक भूमिकाकों ॥ कोऊ दूसरीकों ॥ कई तीसरीकों ॥ कई चतुर्थकों
कई पंचमीकों ॥ कई छटवीकों ॥ अरु कोऊ अर्ध भूमिकाकों ॥ कोऊ चौथे पादकों ॥ को
ऊ डेढ ॥ कोऊ अढाई ॥ कोऊ साढे तीन ॥ कोऊ साढे चार ॥ कोऊ साढे पांच ॥ कोऊ साढे
छेह ॥ कोऊ सप्तकों प्रापत भया है ॥ कोऊ गृहस्त विषे स्थित है ॥ कोऊ बन विषे है
कोऊ तपस्वी है ॥ कोऊ अतीत है ॥ इस ते आदि लेकर सो पुरुष धन्य है ॥ अरु बडे सू
रमे उही है जो बडे दिगपाल हस्ती है ॥ अरु बडे बडे सूरमे है ॥ सो तिनके सूरमत्व
आगे तृणवत है ॥ काहेते जो और सूरमे हलसम भसुरास है ॥ परइंद्रीयां अरु मनरूपी
शत्रुको जीतना कठन है ॥ जिनों पुरुषोंने इनोंका जीता है ॥ सो वडे सूरमे है ॥ जिस

पुरुषने किसी भूमिकाकों जीता है ॥ सो वंदना करणीयोग है ॥ तिनकों चक्रवर्ती राजा
जाणना ॥ राज अरु गौरव ऐश्वर्य विभूति सभ तिसकों तृणवत है ॥ उह परमपदकों
प्रापत हुए है ॥ इति श्री मोक्षोपाये महारामायणे ज्ञान भूमिका उपदेशो नाम सर्ग: ॥

॥ ८८ ॥

वसिष्ठ उवाच ॥ हे रामचंद्र जैसे स्वर्ण विषे भूषण होते है ॥ अरु तिसकों अपणा स्वर्ण भा
व भूलजावे ॥ अरु कहे मै भूषण हूं ॥ तैसे चित्त संवेदन जिस स्वरूपते फुरी है ॥ तिसते
भूल कर अहं वेदना हुई है ॥ अहंकार रूप धारा है ॥ जैसे इह ठीक कहो ॥ राम उवाच ॥ हे
भगवन स्वर्ण विषे जो भूषण होता है ॥ तैसे मै जाणता हूं ॥ पर आत्मा विषे अहंभाव
कैसे होता है ॥ सो कहो ॥ वसिष्ठ उवाच ॥ हे रामचंद्र अहंकार आदिकोंका जो होणा है
सो असत्य रूप है ॥ आगमापायी ॥ तिनका कछु भिन्न रूप नहीं ॥ इह आत्माका चमत्का
र है ॥ वास्तवते द्वैत वस्तु कछु नाहीं ॥ जैसे समुद्र विषे अध: ऊर्ध्व जल ही जल है ॥ औ
र कछु नाहीं ॥ तैसे परम तत्व विषे अरु विभाग कलना कोनाहीं ॥ शांतरूप है ॥ जैसे
समुद्र विषे द्रवताकर करके तरंग आदिक भासते है ॥ जैसे वेदनाकर करके आत्मा विषे
नाना प्रकार भ्रम भासता है ॥ पर और कछु नाहीं ॥ जैसे स्वर्ण विषे भूषण भासते है ॥ तै
से परम तत्व विषे जगत भासते है ॥ कारणते रहित शांतरूप परमपद है ॥ हे रामचं
द्र जैसे मस्तकाकी सेना होती है ॥ तिस विषे हस्ती घोडा सिपाही होता है ॥ सो सभ म
स्तकारूप है ॥ इतर कछु नाहीं ॥ तैसे सभ जगत आत्मारूप है ॥ भ्रम करके नानत्व
भासता है ॥ आत्मा ही दर्शनरूप अपरोक्ष दर्शनभाव विषे स्थित है ॥ जैसे आकाश विषे
आकाश स्थित होवे ॥ तैसे ब्रह्म विषे ब्रह्म स्थित है ॥ सत विषे सत स्थित है ॥ जैसे दर्प
ण विषे प्रतिबिंब स्थित होता है ॥ तैसे आत्मा विषे जगत है ॥ जैसे स्वप्ने विषे हरपदा
र्थ अहंकार भासते है ॥ अहंवृहे ॥ सो हरभासते है ॥ रामजी असत नहीं जगत भ्रम करके स
तरूप भासता है ॥ वस्तुते असतरूप है ॥ जैसे दर्पण विषे नगरका प्रतिबिंब होवे ॥
जैसे मृगतृस्नाका जल होता है ॥ जैसे दूसरा चंद्रमा भासता है ॥ आकाश विषे ॥ तै
से इह जगत आत्मा विषे भासता है ॥ जैसे इंद्रजालके जोग धूड करकर आकाश विषे न
गर भासे ॥ तैसे इह असतरूप जगत अज्ञान कर सत हो भासता है ॥ हे रामचंद्र इह ज
गत भ्रम अविद्या करके भासता है ॥ जब लग आत्म विचाररूपी अग्नि कर अविद्यारू
पी वल्लीकों तूं नहीं जलावता ॥ तब लग जगतरूपी वेल निवर्त न होवेगी ॥ अने
क प्रकारके सुषदुष दिषावेगी ॥ जब विचार करके मूल सहित इसकों जलावोगे
तब शांत पदकों प्रापत होवोगे ॥ इति श्री उत्पत्ति प्रकरणे संसुक्ति उपदेशो नाम सर्ग: ॥
वसिष्ठ उवाच ॥ हे रामचंद्र जैसे स्वर्ण विषे भूषण होता है ॥ सो मिथ्यारूप है ॥ तैसे आ
त्मा विषे अहंत्व आदिक इह अविद्यारूप है ॥ जैसे लवणको नृप सुणी है ॥ अब वह इतिहा
स ॥ हे रामचंद्र उह जो लवण राजा था ॥ सो इक दिन विचार करणे लागा ॥ जो इह मुझ
कों भ्रम भास्या है ॥ पर सत्यरूप होकर दिषाया है ॥ देश नगर मनुष्यादिक पदार्थ मुझ
कों प्रत्यक्ष दिषाए है ॥ वह इंद्रजाल करदेषा जोके सेवा रता है ॥ ऐसे विचार करके दिग विज
यका नाम करके मंत्री अरु सेनाकों साथ लेकर दक्षिण दिशाकी ओर चला ॥ देशाकों
लंघता विंध्याचल पर्वतकों जाइ प्रापत हुआ ॥ पूर्व अरु दक्षिणके समुद्रके मध्य विषे अ
टवीकों भ्रमता भ्रमता जाइ प्रापत भया ॥ जैसे आकाशवीथीयों विषे सूर्य भ्रमता है ॥ तैसे
राजा भ्रमता भ्रमता देषता भया ॥ जो हृत तीन अरु शारीरग्राम पदार्थ भ्रम विषे देषे थे ॥
सो प्रत्यक्ष देषत भया ॥ तब विस्मयकों प्रापत भया ॥ इह देव उह क्या है ॥ जो कछु मैं भ्रम
विषे देष्या था ॥ सो अब प्रत्यक्ष भासता है ॥ बडा आश्चर्य है ॥ ऐसे विचार कर आगे
गया ॥ क्या देषे जो अग्नि कर हुए दग्ध जले हुए है ॥ अरु अकाइ दूसरी छपरी थी ॥ तिसकर जो
संबंधी देषे ॥ तिनकी चेष्टाके स्थान देषे ॥ अरु उनकी कथा सुणी ॥ इस प्रकार देषने दे

छेनेआगेगए॥ कयादेषजोचंडालशरीरकीमसवेठीहै॥ सोरुदनकरतीहै॥ हेदेवमेरा
पुत्रकहांगयाहै॥ पुत्रजमकहांगए॥ मेरीकन्याथी॥ साजोगांदरुहोगईहै॥ चंद्रमाकी
न्याईजिसकामुषथेसाराजकुमारथा॥ अरुमृगनयनीमेरीबेटीथी॥ अरुइद्विपेड्डि
जीयांथीयां॥ अरुडुर्भिक्षताकरकेसभजातेरहे॥ तिनकेइहपावणोकेपदार्थहे॥ वेषा
केस्थानहे॥ वनकाकीमालाकंदविषेडारतेथे॥ जीवोंकेमासखातेथे॥ अरुरुधिरपानक
रतेथे॥ उहकहांगए॥ इसतेलेकरपुत्रअरुपुत्रीअरुभर्तोजवाईकानामलेलेरुदनकरे
औरलोकआइवेठेउहभीरुदनकरे॥ तवराजेउसकोरुदनतेछुडाया॥ अरुहतातनपुछ
णेलागा॥ जोतूंकिसनिमित्तरुदनकरतीहै॥ किससाथतेरावियोगहुयाहै॥ इत्यु
त्पत्तिप्रकरणेचंडालीप्रवचनंनामसर्गः॥ ८२॥ ॥ चंडालीउवाच॥ हे
राजनएककालवर्षाहोणेतेंरहगई॥ कालपडा॥ जीवोंकोवडाडुषआनप्रापतभया॥
तवमेरेपुत्रअरुडुहित्रीयांजवाईभरताआदिकवांधवथे॥ सोनिकसगए॥ उहकहं
कष्टकोपावतेमरगए॥ उनकेसोगकरकेमेडुषीहोकररुदनकरतीहों॥ तिनोंवि
नामेंसूनहोगईहों॥ हेरामचंद्रजवइसप्रकारचंडालीकहा॥ तवराजाविस्मकोप्रा
पतभया॥ अरुमंत्रीकेमुषकीओरदेषणेलागा॥ जैसेकुपरकालकेप्रवलीहोतीहै
तैसेराजाहोगया॥ विचारविचारआस्चर्यमानहोवे॥ उसचंडालीसोंवारंवारपुछे॥ उ
हववुडकहे॥ राजाआस्चर्यमानहोवे॥ तवराजाउसकोयथायोगधनदेकरविरपर्य
तरहा॥ वहुडुअपणेराजमंदिरकोआवतभया॥ जवप्रातःकालहुया॥ तवसभाला
गी॥ तवराजाभ्रमसेंमुक्तभया॥ हेमुनीश्वरइहस्वप्नाभ्रमकोप्रत्यक्षकैसेहुया
है॥ इसकोदेषकरमेंआस्चर्यवानहुयाहों॥ जवइसप्रकारराजेकहा॥ तवमेंप्रस्नकेउ
त्तसारउत्तरउसकोदीया॥ भगवानसहितउसकेचित्तकासंमाहूरकीया जैसेमेघोंको
वायुदूरकरे॥ हेरामचंद्रअविद्याअैसीहै॥ जोअसत्तकोशीघ्रहीसत्तकरदिषावतीहै॥
अरुसत्तकोअसत्तकरदिषावतीहै॥ वडेभ्रमकोदिषावणहारीहै॥ राजाउवाच॥ हे
भगवनस्वप्नासत्तकोकैसेप्रापतहुया॥ इहमेराचित्तविषेसंसाभारीस्थितभया
है॥ तिसकोदूरकरो॥ वशिष्ठउवाच॥ हेरामजीइसविषेक्याआस्चर्यहै॥ अविद्यावि
षेसभकछुवणताहै॥ स्वप्नेविषेदेषेप्रत्यक्षदेषजोघटतेंपटहोजाताहै॥ अरुपट
तेंघटहोजाताहै॥ अनेकपदार्थइसीप्रकारविपर्ययहोतेहैं॥ तैसेउहभीहुया॥ दूरनि
कटहोजाताहै॥ निकटदूरहोजाताहै॥ जैसेदर्पणविषेपर्वतकाप्रतिविंवहोताहै
तैसेभ्रमविषेचिरकालअल्पहोजाताहै॥ अरुअल्पकालदीर्घहोजाताहै॥ जैसेभ्रमे
गताअरुभूषाअकतेभोगता अरुराजाहुयाकरताफिरताहै॥ जैसेमदपानकोऊ
करताहै॥ तिसकेवुद्धिविपर्ययहोतीहै॥ जैसेमूर्छाविषेवुद्धिविपर्ययहोतीहै॥
जैसेस्वप्नविषे॥ जैसेमृतविषेमूर्छाकेअनंतरवुद्धिविपर्ययहोजातीहै॥ एतेस्था
नोंविषेचित्तविपर्ययहोकरभ्रमकुभ्रमदेषताहै॥ तैसेवासनाकरवेष्टितजिनकाचि
त्तहै॥ तिनकोजैसेसंवेदनफुरतीहै॥ तैसेभासताहै॥ श्रीअहो॥ हेरामजीजिनकावि
त्तस्वरूपतेंगिरियाहै॥ तिनकोअविद्याअनेकभ्रमदिषावतीहै॥ कल्पकोक्षणअरु
क्षणकोकल्पकरदिषावतीहै॥ उहकोनअवस्थाहै॥ जिसकोचंचलमननहीप्राप
तहोता॥ हेरामजीजैसेमदपानकरणेवालेअरुविषपीवणेवालाभ्रमकोप्रापत
होताहै॥ तैसेअविद्याकरजीवभ्रमकोप्रापतहोतेहैं॥ एकजोराजाथा॥ तिसकोइह
अवस्थाप्रापतभईथी॥ सोसभस्मरतलवणराजेकेचित्तविषेफुरआई॥ जैसेउसकी
चेष्टाहुईथी॥ तैसेउसकोफुरई॥ तवजानतभया॥ जोइहजैसेकरीहै॥ जैसेअभोग
ताफुरषआपकोस्वप्नेविषभोगताहै॥ जोमैराजाहुयाहूं॥ छिद्रपतहूं॥ परभूषासो
याहै॥ अरुअकरताइपसोयाहै॥ अरुआपकोकर्तादेषताहै॥ जइहहुयाकरीहै॥ स्व
प्नेविषजैसेदेशांतरकोजावे॥ सोअचलरूपहीचलताभासताहै॥ तैसेलवणरा

कोंफुरआयाहै॥ सोप्रतिभामात्रहै॥ सभाविषेअचलपर्वतकीन्याईवेठा॥ चंडालचहा
लवणफुरआईहै॥ अथवाविंध्याचलपर्वतकेचंडालोंकोलवणकीप्रतिभाकरीहै
लवणोदेचित्तकाभ्रमउनकोदृढहोगयाहै॥ जैसेएकहीमरुधाभ्रमअनेकोंकोफुर
आवताहै॥ अरुस्वप्नासदृशहोताहै॥ एकहीजीवहीविषेअनेकोंकोसत्यभासताहै
इसीप्रकारअनेकजीवोंकोएकभ्रमअनेकहोभासताहै॥ तैसेउनकोफुरआईहै॥ हे
रामजीतैनेकछुपदार्थभासतेहैं॥ तिसकोसत्तारूपसंवेदनहै॥ तैसेतिसविषेसंक
ल्परूपहहोताहै॥ तैसेहोकरभासताहै॥ जोपदार्थसत्तरूपहोभासताहै॥ सोसत्तहो
जाताहै॥ अरुजोअसत्तरूपहोभासताहै॥ सोअसत्तहोजाताहै॥ सभहीपदार्थसंवेद
नरूपहै॥ तीनोकालसंवेदनकरउपजेहैं॥ इनकावीजसंवेदनहै॥ सभपदार्थअवि
द्यारूपहै॥ अरुअविद्याकाहै॥ जैसेरेतविषेतिलनहीं॥ तैसेआत्माविषेअविद्यान
हीं॥ जैसेस्वर्णविषेभूषणहै॥ तैसेअविद्याआत्माविषेहै॥ आत्माकोअविद्याकासं
वंधकदाचित्तनहीं॥ काहेतेजासंवंधतिसकाहोताहै॥ जोसमरूपहोतेहैं॥ जैसेका
ष्ठअरुलाषकासंवंधहोताहै॥ सोआकारसहितहै॥ जोआकारतेरहितहोवे॥ तिस
कासंवंधकैसेहोवे॥ जैसेप्रकाशअरुतमकासंवंधनहींहोता॥ तैसेअविद्यारूपदेहहै
सं अरुआत्माकोवंधनहींहोता॥ जडसाथजडकासंवंधहोताहै॥ चैतन्यसाथचैतन्यका
संवंधहोताहै॥ सोसजातीरूपकासंवंधहोताहै॥ विजातीकातोसंवंधनहींहोता
तातेंअविद्यारूपदेहकोआत्मासाथसंवंधनहींहोता॥ जोजडसाथआत्माकासं
वंधहोवे॥ तवआत्माभीजडहोजावे॥ सोतोआत्मासदाचैतन्यरूपहै॥ सर्वदाअनु
भवकरकेप्रकाशताहै॥ तिसकोजडकैसेकहीये॥ जैसेस्वादकोजिह्वाग्रहणकरती
है,औरअंगनहींकरते॥ तैसेचैतन्यसाथचैतन्यकीएकताहोतीहै॥ जडसाथजड
कीएकताहोतीहै॥ जलसाथजलकीमाटीसाथमाटीकी॥ अग्निसाथअग्निकीप्र
काशसाथप्रकाशकी॥ तमसाथतमकी॥ इसप्रकारसर्वपदार्थोंकीसजातीसाथएक
ताहोतीहै॥ विजातीकीनहींहोती॥ तातेंसर्वचैतन्यआकाशहै॥ औरपाषाणआ
दिकहप्रपंचवर्गकोउनहीं॥ भ्रमकरकेइनकेआकारभानरूपभासतेहैं॥ जैसेस्वर्णादि
कोत्यागकरनानाप्रकारकेभूषणभासतेहैं॥ तैसेजवअहंवेदनाआत्माविषेफुरती
है॥ तवअनेकरूपहोकरविस्वभासताहै॥ जैसेस्वर्णकीओरदेखीये॥ तवसर्वभूषण
स्वर्णभासतेहैं॥ तैसेजवब्रह्मसत्ताकीओरदेखीये॥ तवसर्वजगतब्रह्मरूपभासता
है॥ जैसेस्वप्नकीसेनावालककोअनेकरूपभासतीहै॥ अरुवुद्धवानकोएकस्वप्न
काइरूपभासतीहै॥ तैसेअज्ञानीकोइहजगतनानारूपभासताहै॥ ज्ञानवानकोएक
ब्रह्मसत्ताहीभासतीहै॥ सोकौनब्रह्महै॥ जोदृष्टादर्शनदृश्यजिसविषेफुरेहै॥ इनके
मध्यअरुइनतेंरहितजोसत्ताहै॥ सोब्रह्मसत्ताहै॥ हेरामचंद्रजोसत्ताअजडरूपहै
अरुसिलाकीन्याईनिर्विकल्पहै॥ तन्मयरूपहै॥ तिसविषेजवस्थितहोवेगा॥
तवसमाधिविषेरहे॥ अथवाउत्थानहोवे॥ तउकोसमभउहीरूपभासेगा॥ हेराम
चंद्रजोपुरुषनिमंतनसत्ताविषेस्थितभयाहै॥ सोशरीरकेइष्टविषेहर्षमानन
हीहोता॥ अरुअनिष्टविषेद्वेषमाननहींहोता॥ निरमलनरूपहोउकरस्थितहो
ताहै॥ जैसेसभविष्णुनगरविषेजीवपडेवसतेहैं॥ अरुअनेकचिंताकरसंयुक्तभा
सतेहैं॥ सोसभतिसकेचित्तविषेस्थितहोतेहैं॥ जैसेकोउपुरुषदेशांतरकोजाता
है॥ अनेकपदार्थमार्गविषेतिसकोइष्टअनिष्टरूपभासतेहैं॥ पइजहांजावणा
है॥ तिसकेहृदयविषेरहताहै॥ मार्गकेपदार्थोविषेउसकोरागद्वेषनहींहोता॥
तैसेजोज्ञानीहै॥ जैसेपथरसोंजलनहींनिकसता जैसेजलसोंअग्निनहींनिकसती॥ तैसे
आत्माविषेचित्तनहीं॥ भ्रमकरकेचित्तभासताहै॥ विचारकरकेचित्तनाहीपाईता
जैसेप्रकाशकरतमकाअभावहोताहै॥ जैसेभ्रमकरकेआकाशविषेदूसराचं

इमाभासताहै॥ तैसेआत्माविषेचित्तभासताहै॥ वास्तवतेंकछुनहीं॥ आत्मस
त्तानित्यसुखपरमानंदस्वरूपअपरोक्षआपविषेस्थितहै सोअनुभवरूपहै॥ ति
सकेविस्मरणकरकेदुःखकोप्रापतहोताहै॥ सोमहामूर्षहै॥ तिसकोअमृतरूपे
चंद्रमाविषअग्निप्रापतहोताहै॥ तातेंहेरामचंद्रतूंसावधानहो॥ इहजोकारण
पडाउदताहै॥ इसीकानामचित्तहै॥ अरुतोचित्तकोकुनाही॥ इसाचित्तकोंहइतें
त्यागकरजोतूंहैसोईस्थितहो॥ संसारकीभावनातेंमुक्तिहोकरपरमनिर्वाण
स्वरूपविषेस्थितहो॥ हेरामचंद्रअसतरूपचित्तहीसंसारहै॥ जोतिसकोंसत्य
जाणकरत्यागनहीकरता॥ सोआकाशकेवनविषेविचरताहै॥ तिसकोंसेराधि
कारहै अरुजिनकामननभावनछूट्याहै॥ सोमहापुरुषहै॥ संसारपारकोंप्राप
तहूएहै॥ परमपदनिरचित्तरूपहै॥ इतिश्रीचित्तअभावप्रमाणप्रतिपादनंनाम
सर्गः॥ ॥ ॥ श्रीवसिष्टउवाच॥
हेरामचंद्रइहपुरुषभूमकाकोंक्योंकरप्रापतहोताहै॥ तिनकाक्रमसुण॥ प्रथ
मजातिमात्रतेंपुरुषकोंकछुकबोधहोताहै॥ वहउक्रमकरकेवडाहोकरसं
तोंकीसंगतकरताहै॥ सदासद्रूपजोसंसारकाप्रवाहहै॥ तिसकेतरणेकों
सतशास्त्रअरुसतजनोंकीसंगतबिनासमर्थनहीहोता॥ जवसंतोंकासंग
तअरुसतशास्त्रोंकाश्रवणकरणेलागताहै॥ तवइसकोंयहइणअरुत्याग
कीवुद्धउपजतीहै॥ जोइहकर्तव्यहै॥ अरुत्यागणेइहजोगहै॥ इहविचारउप
जताहै॥ इसकानामसुभइछ्याहै॥ जवइहइछ्याहुई॥ तवसारग्रहणइसकोंदृढ
विचारउपजताहै॥ जोइहसुभहै॥ अरुइहअसुभहै॥ सुभकोंग्रहणकरणा॥ अ
सुभकोंत्यागकरणा॥ यथाशास्त्रविचारणा॥ इसकानामविचारहै॥ तवसम्य
कविचारदृढहोताहै॥ तवमिथ्यारूपसंसारकीवासनात्यागताहै॥ अरुसत्त
विषेस्थितहोताहै॥ इसकानामतनमानसाहै॥ तवसंसारकीवासनात्यागीजा
होतीहै॥ अरुसत्तकाहढअभ्यासहोताहै॥ तवतिसतेंवैराग्यअरुअभ्याससेकरसम्य
कज्ञानउपजताहै॥ आत्माकासाक्षात्कारहोताहै॥ तिसकानामसत्वापत्ति
है मनतेंवासनानष्टहोजातीहै॥ तिसकरसिद्धीआदिकपदार्थआनप्रापत
होतेहै॥ तिनकीप्रापतविषेभीसंसक्तनहीहोता॥ स्वरूपविषेसदासावधान
रहताहै॥ सिद्धीआदिकपदार्थप्रारब्धकरप्रापतहोतेहै॥ तिनकोंस्वप्नरूपजा
णताहै॥ इसकानामअसंसक्तहै॥ जोकर्मोंकेफलविषेवंधमाननहीहोता
इसीकानामअसंसक्तहै॥ इसकेअनंतरमनकीतनुताहोतीगईहै॥ अरुस्वरूप
कीओरचित्तकापरिणामहोताहै॥ तवदृढपरिणामकरकेविवहारकाभी
अभावहोजाजाताहै॥ जोपलपलविषेकर्मकरणेअथवाप्रारब्धवेगकरक
रताहै॥ परइसकेचित्तविषेकुरणाकछुनहीफुरता॥ मनहीणभावकोंप्राप
तहोताहोताहै॥ करताहुयाभीउहकछुनहीकरता॥ देषताहैतौभीनहीदेषता
अर्थसउत्रवतहोताहै॥ कर्तृत्वकीभावनानहीफुरती॥ मननहीकरता॥ इ
सकानामपदार्थअभावनीयोगभूमिकाहै इसविषेचित्तलीनहोजाताहै॥
इसअवस्थाविषेजोअभ्यासपराहोताहै॥ सोभावीजीवित्तका॥ जवकेताककेका
लइसअभ्यासविषेवितीतहोताहै॥ अरुअनंतपदार्थोंकोअभावनाहढहो
तीहै॥ तवतुरीयरूपहोताहै॥ तवजीवन्मुक्तकहीताहै॥ इहकोपाइकरइहवे
षामनहीहोता॥ अरुतिसकोनिवर्तविषेशोकवाननहीहोता॥ केवलविगत
संदेहहोताहै॥ सोउत्तमपदकोप्रापतहोताहै॥ हेरामचंद्रतूंभीअववातते
यहपद॥ जोकछुजानणेजोगहै॥ सोतूंपछ्याकात्यांजाणयाहै॥ सर्वपदार्थकी
वासनातेरीतनुताकोप्रापतभईहै॥ अवतेरसाधपरीरहै॥ अथवानरहै॥ अ

हर्षअरुशोकतेंरहितहूं निरामयआत्माहै॥ तूंस्वच्छआत्मतत्त्वविषेस्थितहै॥
सर्वगतसदाउदतरूपहै॥ जन्ममरणजरामृत्युषटउघतेंरहितआत्मरूपहै॥ वो
षट्रूपशोकतेंरहितहै॥ तूंअद्वैतरूपअपरोक्षआपविषेस्थितहै॥ देहउत्पन्नहोती
है॥ अरुलीनभीहोजातीहै॥ जोदेशकालवस्तुकेभेदतेंरहितजोआत्माहै॥ सो
उदेअरुअस्तकहांहोवे॥ हेरामचंद्रतूंअविनाशीहै॥ आपकोंनाशरूपजाणकर
शोककाहेकोंकरताहै॥ तूंअमृतस्वच्छरूपहै॥ जैसेघटकेटूटणेकरघटाकाशका
नाशनाहीहोता॥ तैसेशरीरकेनाशहूएतेंतेरानाशनाहीहोता॥ जैसेसूर्यकीया
किरणांकेजाणेतेंमृगतृस्नाकेजलकानाशहोताहै॥ किरणांकानाशतोनहीहो
ता॥ तैसेदेहकेनाशहूएआत्माकानाशनहीहोता॥ हेरामचंद्रजैतेकछुजगत
केपदार्थभासतेहै॥ सोअसतरूपहै॥ तिनकीवासनाभ्रांतकरकेहोतीहै॥ तातोस
हैतरूपहै॥ इहसभमनतेंरच्यायामात्रहै॥ तूंकिसकोंवांछाकरताहै॥ प्राहूसर्परूपस
गंधर्वइहजोपाचोंविषयरूपहरुपहै॥ सोतूंफतेंभिन्नरंचकमात्रभीनहीं॥ सभमतेंगा
स्वरूपहै॥ तूंअसमकोंमतप्रापतहोवहि॥ हेरामचंद्रसर्वशक्तिआत्माहै॥ सोईआ
भासकरकेअनेकरूपभासताहै॥ जैसेआकाशविषेशून्यताशक्तिहै॥ सोआकाश
तेंभिन्ननहीं॥ तैसेआत्माविषेसर्वशक्तिहै॥ जोजगतहैतरूपहोइकरभासताहै॥
सोचित्तकरकेदृढहूयाहै॥ फुरणेकेउदयविषेस्थितहै॥ सोतीनप्रकारकाक्रम
करत्रैलोकजगतजीवकोंभ्रमहूयाहै॥ एकसात्विक॥ एकराजस॥ एकतामस॥
जवइनतीनोंकीउपशमहोवे॥ तवकल्याणहोताहै॥ जववासनाक्षयहोवे॥
तवसर्वकर्मक्षयहोजातेहै॥ तिसकरभीभ्रमनाशहोजाताहै॥ चित्तकेससरणे
कानामवासनाहै॥ सोकर्मसंसारमायामात्रहै॥ इसकेनष्टहूएसभशांतहोजा
तीहै हेरामचंद्रइहसंसारघटीयंत्रकीन्याईहै॥ जीवरूपीडिंडाहै॥ वासनारूपीर
सीसाथवांधेहूएपडेभ्रमते॥ तूंआत्मविचाररूपीशस्त्रकरकेयत्नसोइसकोकाट॥ अ
रुअविद्याकेसेहै॥ जवलगइसकोजाणीतानाहो॥ तवलगइहवडेमोहभ्रमकोदि
खावतीहै॥ अरुजवइसकोजाणीताहै॥ वडेसुखकोप्रापतकरतीहै॥ अरुअनंतेअनाख्य
ब्रह्मतत्त्वकोंप्रापतकरतीहै॥ अथयहजवलगअविद्याकोंवस्तुतेंनहीजाणीता॥ जोका
है॥ तवलगसंसारसत्तभासताहै॥ तिसविषेअनेकभ्रमप्रापतहोतेहै॥ जवइसकोंस्व
रूपतेंजाण्या॥ जोकछुवस्तुनहीभ्रमरूपहै॥ तवसंसारहूतकोंत्यागकरताहै॥ अरुस्वरू
पकोंप्रापतहोताहै॥ इहसंसारब्रह्मतेंउपजयाहै॥ अरुउसीकरभोगभोगताहै॥ लीला
करताहै॥ वहउब्रह्महीविषेलीनहोताहै॥ हेरामचंद्रशिवतत्त्वजोहैसोतीरूपहै॥ अ
रुअप्रमेयनिरदुःखरूपहै॥ समभूततिसीतेंउपजेहै॥ जैसेसूर्यतेंप्रकाशहोताहै॥ जै
सेकंचनतेंभूषणउपजतेहै॥ जलतेंतरंगअरुअग्नितेंउष्णताहोतीहै॥ तैसेब्रह्मतेंजग
तहोताहै॥ अरुतिसीविषेस्थितहै॥ सोउहीरूपहै॥ सोसर्वकाआत्माहै॥ सोआत्माही
ब्रह्मकरकहीताहै॥ तिसकेजाणेतेंजगतजाणीताहै॥ अरुतीनोंलोकोंकेजाणेतें
उसकोंनहीजाणीता॥ अद्भुतनिर्वाणरूपहै॥ तिसकेजानणेनिमित्तशास्त्रकारोंने
ब्रह्मआत्माआदिक—मककल्पेहै॥ वास्तवतेंनामसंज्ञाकोउनही॥ हेरामचंद्रजोपु
रुषद्वंद्वदेषतेंरहतहै॥ इंद्रियोंअरुविषयोंकेसंयोगविषेरागअरुद्वेषकोंनहीप्राप
तहोता॥ जोएकचैतन्यसत्तइसंवित्तअनुभवरूपहै॥ अविनाशीअरुआकाशतेंभीस्व
च्छनिर्मलहै॥ तिसविषेजगतऐसेस्थितहै॥ जैसेदर्पणविषेप्रतिबिंबहोताहै॥ अन
रवायरूपहोकरस्थितहै॥ ऐसेयोजानताहै॥ लोभमोहादिकवोधतेंभिन्ननहीं॥ अ

योग॰ वा॰ ९१

रुबोधआत्मातेंविनरेकनहीं॥ उहीरूपहै॥ तोतेंहैतरूपकछुनहीं॥ हेरामचंद्रदेहतें
रहितनिर्विकल्पचैतन्यतेराआकारहै॥ लज्जामोहभयआदिकविकारकरहीहैत
रुकों॥ तूंआदिरूपहै॥ लज्जाहर्षभयआदिकअसत्यरूपहै॥ तूंक्योंउवेहीमूर्षोंकीन्या
ईविकल्पजालकोंप्राप्तहोताहै॥ तूंचैतन्यआत्माअषंडरूपहै॥ देहकेषंडनहूएआ॰
त्माकाअभावनहीहोता॥ असम्यकदर्शीभीऐसेमानतेहै॥ वोधवानोंकीक्याकहणी
है॥ हेरामचंद्रचित्तसंवेदनजोजातीहै॥ तिसकेअनुभवकरणेवालीजोसत्ताहै॥ जो
सूर्यकेमार्गकरकेनाहीरोकीजाती॥ तिसकोतूंचित्तसत्ताजाण॥ सोईपुरुषरूपहै॥ श
रीरपुरुषरूपनही॥ हेरामचंद्रशरीरसतहोवे॥ अथवाअसतहोवे पुरुषतोशरीरनही
देहकेरहणेअरुनष्टहोणेकरकेज्योंकात्योंहीहै॥ अरुजोसुषदुषकोंग्रहणकरते
है॥ सोदेहइंद्रीआदिकचिदात्माकोंनहीग्रहणकरते॥ जिनपुरुषोंकाअज्ञानकरकें
देहविषेअभिमानहूयाहै॥ तिनकोंसुषदुषकाअभिमानहोताहै॥ ज्ञानवानकोंनही
होता॥ आत्माकोंकोईदुषस्पर्शनहीकर्ता॥ सर्वविकारोंतेंरहितहै॥ मनकेमार्गतेंअ
तीतहै॥ अरुसूर्यकीन्याईस्थितहै॥ तिसकोंसुषदुषकैसेंहोवे॥ अरुदेहसाथमिल्या
हुयाभासता॥ सोस्वरूपकोंत्यागकररूपकेचेतनेतेंदेहादिकभ्रमभासताहै॥ अरु
वासनाकेवलकरदेहसाथसंयोगहोताहै॥ जैसेभ्रमरअरुकमलोंकासंयोगहोता
है॥ सोदेहपिंजरकेनाशहोहैतोआत्माकानाशनहीहोता॥ जैसेकमलकेनाशहू
एभ्रमरेकानाशनहीहोता॥ जोनाशनहिहोतातोतूंकोंहृथाशोककरताहै॥ हेरा
मजीजगतकोंसत्तजाणकरभावनानकरो॥ तमआकाशवतहोवो॥ साक्षीभूतसम
स्वच्छनिर्विल्पचिदात्माविषेजगतहोइभासताहै॥ जैसेमन्मणिप्रकाशरूपहोभा
सतीहै॥ वहइजगतअरुआत्मासंवंधकेसेंहोवे॥ जैसेअनिछतदर्पणविषेप्रतिविं
वआनप्राप्तहोताहै॥ तैसेआत्माकोंजगतकासंवंधभासताहै॥ जैसेदर्पणविषेप्रा॰
तिविंवहैतभीअद्वैतरूपहोताहै॥ तैसेआत्माविषेजगतभीदअभेदरूपहै॥ जैसेसूर्य
केउदेकरसभजीवोंकीक्रयाहोतीहै॥ अरुजैसेदीपककरकेपदार्थोंकाग्रहणहोता
है॥ तैसेआत्मसत्ताकरजगतपदार्थकाअनुभवहोताहै॥ इहजगतचैतन्यतकेस्वभाव
तेंउपजयाहै॥ प्रथमआत्मातेंमनउपजयाहै॥ तिसमनकरइहजगतजालरचाहै॥ वा
स्तवतेंआत्मसत्ताविषेआत्मसत्तास्थितहै॥ जैसेशून्यआकाशशून्यताविषेस्थित
है॥ तिसविषेजगतभासयाहै॥ सोऐसेहै॥ जैसेआकाशविषेनीलताभासतीहै॥ जैसे
आकाशविषेइंद्रधनुषभासताहै॥ सोनानारूपहोताहै॥ परस्वरूपतेंसूत्यहै॥ हूयातो
कछुनही॥ तैसेइहजगतकछुहूयानही॥ हेरामचंद्रइहजगतजोहै॥ सोचित्तविषे
स्थितहै॥ अरुचित्तसंकल्परूपहै॥ जवसंकल्पक्षयहोताहै॥ तवचित्तनष्टहोजाता
है॥ जवचित्तनष्टहूया॥ तवसंसाररूपीकहीडनष्टहोतीहै॥ निर्मलसतेंकालकेआ
काशवतआत्मसत्ताप्रकाशतीहै॥ सोचैतन्यमात्रसत्ताएकहै॥ अजहै॥ आदिअंतम॰
ध्यतेंरहितहै॥ तिसतेंसपंदफुरयाहै॥ सोसंकल्परूपब्रह्माहोकरस्थितभयाहै॥ ति
सतेंआगेनानाप्रकारकाजगतरचाहै॥ सोजगतशून्यरूप॥ मूर्षवालकोंकोसत्तरू
पभासताहै॥ जैसेवालकोंकोपछावेविषेवैतालभासताहै॥ जैसेजीवोंकोअज्ञानक
रदेहअभिमानहोताहै॥ असतरूपहीसतहोइकरभासताहै॥ जवसम्यकज्ञानहोता
है॥ तवलीनहोजाताहै॥ अपणेआपतेंउपजकरलीनहोजाताहै॥ अपणेविषेजै
सेसमुद्रतेंतरंगउपजकरसमुद्रविषेलीनहोताहै॥ तैसेआत्माविषेजगतउपजक
रआत्माविषेलीनहोताहै॥ इतिश्रीमहारामायणेमोक्षोपायेउत्पत्तिप्रकरणेपरमा
र्थनिरूपणंनामसर्गः॥ ९४॥ इतिउत्पत्तिप्रकरणंसमाप्तम् शुभम्॥

उँ श्रीगणेशायनमः॥ अथस्थितिप्रकरण॥ श्रीवसिष्ठउवाच॥ हे रामजी अब स्थितिप्रकरण
श्रवण करु॥ जिसके श्रवणतें निर्वाणताको प्राप्त होवेगा जगत कैसा है॥ अहंता है आदि
जिसके आभासा जो जगत दृश्यपदार्थ है॥ सो असतरूप भानमात्र है॥ जैसे आकाश विषे
इंद्रधनुष भासता है नाना प्रकार के रंगों संयुक्त॥ सो असतरूप है॥ तैसे यह जगत है॥ द्र
ष्टि बिना अनुभव होता है॥ अरु निद्रा बिना स्वप्न भासता है॥ जैसे भविष्यत नगर चित्त वि
षे फुर आवता है॥ तैसे भ्रम करिकै चित्त विषे जगत स्थित हूआ है॥ जैसे बाउरक कौंको
पक वक्र करिके अग्नि की कल्पना करते हैं॥ सो तिस करि शीत निवर्त नहीं होती॥ भावना
मात्र अग्नि होती है॥ तैसे यह जगत भावनामात्र है॥ जैसे आकाश विषे रतनमणि का प्र
काश॥ अरु गंधर्व आकारतें रहित होता है॥ अरु भासता है अरु जैसे मृगत्रिसा की नदी
भासती है॥ सो अज्ञान करि स्थित होत है॥ तैसे यह जगत भ्रमकरि चित्त विषे स्थित है
जैसे संकल्पपुरुष हृदय अनुभव करिकै भासता है॥ तो भी असतरूप है॥ जैसे कथा के।
अर्थ बिना विषे भासते है॥ तैसे निःसाररूप जगत॥ चित्त विषे साररूप होइ भासता है
जैसे स्वप्न विषे पर्वत भास आवत है॥ तैसे सर्वभूत दीर्घ भी भासते हैं॥ तो भी आकाशवत
शून्यरूप है॥ जैसे स्वप्न अंगना कौं देखिकै विभ्रम उपजता है॥ सो निरर्थक निराकार रू
प होती है॥ तैसे यह जगत नाना प्रकार की वरण रचना संयुक्त भासता है॥ तो भी अ
र्थतें रहित है असतरूप है॥ जैसे मूर्त्ते पर लिखी अग्नि अरु सूर्य प्रकाश भासमान भी
होते हैं॥ तो भी तिनतें कछु अर्थ सिद्ध नहीं होता॥ तैसे यह जगत प्रत्यक्ष अनुभव भी हो
ता है॥ परंतु अवास्तवरूप है॥ निरर्थक है जैसे चित्रकमलनी सुगंधतें रहित होती है॥ तै
से यह जगत शून्यरूप है॥ जैसे आकाश विषे इंद्रधनुष तैसे जगत है॥ जैसे केले का स्थंभ
पत्रों संयुक्त सुंदररूप भासता है॥ परंतु असार है॥ तैसे यह जगत दृष्टिमात्र सुंदर रमणीए
क भासता है॥ परंतु अंततें असतरूप है॥ इसतें सार कछु नहीं निकसता॥ तत्त्वदे
खणे विषे अनुभव होता है॥ परंतु मृगत्रिसा के जलवत असतरूप है है कछु नहीं॥ राम
उवाच॥ हे भगवन सर्व संशयों के नाशकर्ता॥ जब महाकल्प क्षय होता है॥ तब दृश्य
मान जगत सर्व आत्मरूपी बीज विषे जाइ लय होता है॥ जैसे बीज विषे अंकुर रहिता है॥
बहुड़ि तिसीतें उपजता है॥ तिसी कार स्थित होता है॥ बहुड़ि तिसी विषे लीन होता है॥ प
ह जो बुद्धि है॥ सो अज्ञानी की है॥ अथवा ज्ञानी की है॥ सर्व संशय निवर्त के अर्थ मुझ स
पृथक विकहो॥ वसिष्ठउवाच॥ हे रामजी इस प्रकार महाकल्प के क्षयरूप बीज आत्मा
विषे॥ जगत जाइ स्थित होता है॥ अरु जो कहिते हैं॥ सो परम अज्ञानी महामूढ बालक
है॥ जो ब्रह्म कौं जगत का कारण कहिते हैं॥ तो भी मूढ हैं॥ तिनके आत्मे भ्रमिष्ट हैं॥ बीज
तें अंकुर की न्याईं करि परिणाम होता है॥ बीज तो दृश्यरूप इंद्रियों का विषय होता है॥ जैसे व
ट बीजतें अंकुर होता है॥ बहुड़ि अति विस्तार कौं पावता दृष्ट आवता है॥ सो इंद्रियों का विष
य है॥ अरु जो मन संयुक्त षट इंद्रियोंतें अतीत है॥ अरु यह जो इनका विषय नहीं॥ आ
काशतें भी अति निर्मल है॥ तिसकौं जगत का बीज कैसे कहीये॥ आकाशतें भी अति स
त्म परम उत्तम अनुभव करि उपलब्ध है॥ नित्य प्राप्त है॥ तिसकौं बीजभाव होवणा अस
भव है॥ हे रामजी शांत सत्त्व सम सदा प्रकाशरूप वसता है॥ अरु दृश्य जगत जिस विषे अ
सदरूप है॥ तिसकौं बीजरूप कैसे कहीये॥ जो बीज कहिणा नहीं बणता॥ तो तिसतें अंकु
र कैसे कहीये॥ आकाशतें भी अधिक सूक्ष्म निर्मल परमपद विषे सुमेर समाइ आ
काशादि जगत॥ असंभव है जो अकिंचन है॥ अरु किंचन है॥ अरु निराकार असत व
त सत्ता है॥ तिस विषे विद्यमान जगत कैसे होवे॥ महा सूक्ष्मरूप है॥ दृश्य तिस विषे
विरुद्धरूप है॥ जैसे धूप विषे छाया नहीं॥ जैसे सूर्य विषे तम नहीं॥ जैसे अग्नि विषे बर्फ
नहीं॥ जैसे अणु विषे सुमेर नहीं होता॥ तैसे आत्मा विषे जगत नहीं होता॥ सतरूप आ

न्मा विषे असत रूप जगत कैसे होवे बट का बीज भी साकार रूप होता है ॥ तिसतें अंकुर रूप वृ
क्ष भी साकार होता है ॥ अरु निराकार रूप आत्मा विषे साकार रूप जगत का होणा असंभव है ॥ हे
रामजी कारण द्वि प्रकार का होता है ॥ एक समवाय कारण ॥ द्वितीय निमित्त कारण ॥ सो आ
त्मा दोनो कारण भाव तें रहित है ॥ निमित्त कारण तब होता है ॥ जब कार्य तें भिन्न कर्ता हो
ता है ॥ आत्मा अद्वैत है ॥ तिसके समीप द्वितीय वस्तु ही नहीं ॥ कर्ता कैसे अरु किसका हो
वे ॥ सहकारी भी कोऊ नहीं ॥ जिन करि के कार्य को करे ॥ मन अरु इंद्रियां तें रहित निरा
कार अव्यक्त रूप है ॥ अरु समवाय कारण भी परिणाम करि होता है ॥ जैसे बट बीज परि
णाम करि वृक्ष होता है ॥ सो आत्मा अच्युत रूप है ॥ परिणाम को कदाचित नहीं प्राप्त होता
समवाय कारण कैसे होवे ॥ जायते ॥ अस्ति ॥ वर्धते विपरिणमते ॥ क्षीयते ॥ नश्यते ॥ इन षट् वि
कारों तें रहित निर्विकार आत्मा जगत का कारण कैसे होवे ॥ तातें यह जगत अकारण रूप भ्रा
न्ति करि के भासता है ॥ जैसे आकाश विषे नीलता है ॥ सिपी विषे रूपा भासता है ॥ जैसे निद्रा
दोष करि स्वप्न सृष्टि भासती है ॥ तैसे यह जगत भ्रान्ति करि भासता है ॥ जब स्वरूप विषे जाग
तब जगत भ्रम मिट जाता है ॥ तातें कार्य कारण भ्रम को त्याग करि अपणे स्वरूप विषे
स्थित होहु ॥ दुर्बोध करि संकल्प रचना हुई है ॥ तिसको त्याग करि आदि मध्य अंत तें रहित
जो सत्ता है ॥ तिसी विषे स्थित होहु ॥ जगत भ्रम मिट जावेगा ॥ इति श्री स्थिति प्रकरणे ज
गज्जनक निराकरणं नाम सर्ग ॥ ॥ वसिष्ठ उवाच ॥ हे देवदेवों विषे श्रेष्ठ रामजी बीज तें अं
कुरवत आत्मा तें जगत का होणा अंगीकार करीये तौ नहीं संभवता ॥ आत्मा समस्त कल्प
ना तें अतीत है ॥ महा चैतन्य निर्मल आकाशवत है ॥ तिसको जगत का बीज कैसे मानीये ॥
बीज परिणाम करि अंकुर होता है ॥ अरु निमित्त समवाय कारण करि होता है ॥ आत्मा वि
षे समवाय अरु निमित्त सहकारी कदाचित नहीं बणते ॥ जैसे वंध्या स्त्री की संतान कि
सी नहीं देखी ॥ तैसे आत्मा तें जगत नहीं होता ॥ जो समवाय अरु निमित्त कारण सहकारी
विना पदार्थ भासे ॥ तौ जाणीये ॥ जो पदार्थ है ही नहीं ॥ भ्रान्तिमात्र भासता है ॥ आत्मसत्ता अप
णे आप विषे स्थित है ॥ सृष्टि स्थिति प्रलय रूप करि ब्रह्म सत्ता ही अपणे आप विषे स्थित
है ॥ जो इस प्रकार स्थित है ॥ तौ कारण कार्य का क्रम कैसे होवे ॥ जो कार्य कारण भाव न
हुआ तौ पृथ्वी आदि भूत कहां तें उपजे कहीये ॥ है नहीं ॥ अरु जो कार्य कारण मानीये ॥ तौ
दृष्ट जो विकारक हेतु है ॥ तिनका दर्शन आवता है ॥ तातें न कोऊ कारण है ॥ न कार्य है कार
ण कार्य विना पदार्थ भासे तिसको जो सत रूप जाणे ॥ सो मूढ बालक है ॥ अरु विवेक तें र
हित है ॥ तातें हे रामजी यह जगत न आगे था ॥ न अब है ॥ न होवेगा स्वच्छ चिदाकाश सत्ता
अपणे आप विषे स्थित है ॥ जो जगत का अत्यंत अभाव हुआ तौ संपूर्ण ब्रह्म ही दृष्ट आवता है
जैसे समुद्र विषे तरंग भासते हैं ॥ तैसे आत्मा विषे जगत भासता है ॥ अन्यथा कारण कार्य
भाव कोऊ नहीं ॥ प्राग अभाव अरु प्रध्वंस अभाव अरु अन्योन्य अभाव कोऊ नहीं ॥ प्राग
अभाव कहीये ॥ जो प्रथम न था ॥ जैसे प्रथम पुत्र नहीं होता ॥ अरु पाछे उत्पत्ति होता है ॥ जै
से घट काले उपजत है ॥ अरु प्रध्वंस अभाव कहीये ॥ जो प्रथम होइ करि नष्ट हो जाता है ॥
जैसे घट था अरु नष्ट हो गया ॥ अरु अन्योन्य अभाव कहीये ॥ जैसे घट विषे पट का अभाव है
पट विषे घट का अभाव है ॥ जिसको देखि यह त्रि प्रकार का अभाव है ॥ इसकरि भी जगत अ
दृष्ट होता है ॥ तातें शांत नहीं प्राप्त होती ॥ हे रामजी जब जगत का अत्यंत अभाव देखता है ॥ त
ब चित्त शांतवान होता है ॥ सो अत्यंत अभाव जगत का इसप्रकार विना अवर उपाय करि न
हीं होता ॥ अरु अशेष जगत के निवर्त विना मुक्त नहीं ॥ सूर्यादिक जेता कछु प्रकाश
है ॥ अरु पृथ्वी आदिक तत्त्व हैं ॥ अरु क्षण वर्ष कल्पादिक जो काल है ॥ यह मैं हौं ॥ यह
अवर है ॥ यह अवर है ॥ अरु रूप अलोक मनस कार इत्यादिक जगत सर्व संकल्पमा
त्र है ॥ कल्पित अरु कल्प ब्रह्मांड ॥ अरु ब्रह्मा ॥ विष्णु रुद्र इंद्र कीट तें आदि लेकरि जेतेक

सृजगत जाल है ॥ सो उपज उपज करि निश्चेतन स्थित होता है ॥ महा चैतन्य परम आकाश विषे अनं
त है तौ उदय होते हैं ॥ जैसे जगत के सर्व पोल रूप मनता थी ॥ तैसे ते अब भी माणा ॥ अवर कछु हु
आ नहीं ॥ प्रमाणु का सहस्रवां अंश होवे ॥ तिसकी निआई सूक्ष्म चित्त कला है ॥ तिस चित्त
कला विषे अनंत को दृष्टा स्थित है ॥ उही चित्त सत्ता जगत रूप होइ फुरती भासती है ॥ अरु
प्रकाश रूप है ॥ निराकार शांत रूप है ॥ नउ दृष्ट होती है मन अरु स्थित होती है ॥ न आवती है ॥
जैसे शिला के अंतर रेखा होत है ॥ तैसे आत्मा विषे जगत है ॥ जैसे आकाश विषे आकाश
सत्ता फुरत है ॥ तैसे आत्मा विषे जगत फुरत है ॥ अरु आत्मा ही विषे स्थित है ॥ निराका
र निर्विकार रूप विज्ञान घन आत्मसत्ता अपणे आप विषे स्थित है ॥ उदय अस्त तें रहित वि
स्तृत रूप है ॥ हे रामजी जो सहकारी कारण कोऊ न हुआ ॥ तौ जगत दृष्ट न हुआ ॥ ऐसे
जाणे तें सर्व कलंक कल्पना शांत हो जाती है ॥ दीर्घ निद्रा करि जो सोया है ॥ सो अभावक
विकेता को जब ज्ञान भ्रम का को प्राप्त होवेगा ॥ तब निःशोक पद को प्राप्त होवे ॥ इति श्री
स्थिति प्रकरणे स्मृति बीजोपन्यासः ॥ सर्गः ॥ राम उवाच ॥ हे भगवन महाप्रलय के अंत वि
षे अरु सृष्टि के आदि विषे जो प्रजापति होता है ॥ सो जगत को पूर्व की स्मृति करि के उसी प्रकार
रचता है ॥ तौ जगत स्मृति रूप क्यों न होवे ॥ वसिष्ठ उवाच ॥ हे रामजी महाप्रलय के अंत अरु
सृष्टि के आदि जो प्रजापति होता है ॥ अरु उही स्मरण करि के पूर्ववत जगत को रचता है ॥ ऐ
से मानीये तौ असंभव है ॥ काहे तें जो महाप्रलय विषे प्रजापति का होकर हिता है ॥ जो आप ही
तर है ॥ तौ तिसकी स्मृति कैसे मानीये ॥ जो महाप्रलय विषे प्रजापति रहिता होवे ॥ तौ
तिसकी स्मृति भी मानीये ॥ जैसे आकाश विषे वृक्ष नहीं होता ॥ तैसे महाप्रलय विषे प्रजाप
ति नहीं होता ॥ राम उवाच ॥ हे ब्रह्मण्य जगत के आदि जो ब्रह्मा था जिस जगत रचा था ॥ महाप्र
लय विषे तिसकी स्मृति का नाश तौ नहीं होता ॥ सो पुनः उठे तब तिन स्मृति करि के उसी प्र
कार जगत रचता है ॥ तौ वाणता है ॥ तुम कैसे कहते हो ॥ जो असंभव है ॥ वसिष्ठ उवाच ॥ हे सु
व्रत रामजी महाप्रलय के सर्व जो ब्रह्मादिक होते हैं ॥ सो महाप्रलय विषे सर्व निर्वाण
हो जाते हैं ॥ अर्थ यह जो विदेह मुक्त होते हैं ॥ ब्रह्म तत्त्व विषे लय होते हैं ॥ जो सम कर्मों के
हो अंतर्धान भये ॥ तौ स्मृति कहां रहे ॥ जो स्मृति विस्मृत हुई ॥ तब जगत का कारण नि
स को कैसे कहीये ॥ महाप्रलय तिसका नाम है ॥ जहां शब्द अर्थ संयुक्त निर्मल हो जाते
है ॥ जहां सर्व अंतर्धान भये ॥ तहां स्मृति किसकी कहीये ॥ जो स्मृति का अभाव भया ॥ तौ
वे कारण किसको किसकी न्याई कहीये ॥ तातें सर्व जगत चित्त के फुरणे मात्र है ॥ जब
महाप्रलय होता है ॥ तब यतन विना सर्व मोक्ष भागी होते हैं ॥ जो आत्मसत्ता न होवे ॥ तौ
जगत होते ही मोक्ष भागी होते हैं ॥ अरु जो आत्मबोध नहीं ॥ तौ जगत होते ही मोक्ष
भागी होते हैं ॥ अरु जो आत्मबोध नहीं ॥ तौ जगत दृढ होता है ॥ निवृत्त नहीं होता ॥
जब दृष्ट जगत का अभाव होवे ॥ तब स्वच्छ चैतन्य सत्ता प्रकाशती है ॥ सो आदि अंत तें र
हित है ॥ जगत भी सर्व उही रूप भासता है ॥ अनादि सिद्ध ब्रह्म सत्ता ही प्रकाशता है ॥ ति
स विषे जो आदि संवेदन फुरी है सो ब्रह्मा कहीये है ॥ अतिवाहक देह विराट जगत हो भासता
है ॥ तिसका एक प्रमाणु रूप यह त्रिजगत है ॥ तिस विषे देश काल क्रिया द्रव्य आदिक ना
ना हुआ है ॥ बहुड तिसके परमाणु के अंतरगत जगत पड़े फुरते हैं ॥ एक एक अ
णु विषे अनेक जगत पड़े फुरते हैं ॥ सो कैसा रूप है ॥ सर्व संकल्प रूप है ॥ ब्रह्म सत्ता का
प्रकाश है ॥ जो पूर्व द्वि आत्मसत्ता तिन्हों नहे ॥ तिसकों सर्व जगत एक ब्रह्म रूप भासता है
अरु जो अज्ञानी है ॥ तिसके चित्त विषे अनेक प्रकार के जगत की भावना है ॥ द्वैत भ्रम क
रि उत्पत्ति भ्रमता है ॥ जैसे इस ब्रह्मांड के अनेक जीव प्रमाणु हैं ॥ तिनके अंतर अनेक
सृष्टे हैं ॥ तिन सृष्टों के अणुओं के अंतर अवर अनेक सृष्टे हैं ॥ तैसे अवर जो अनेक सृष्टे हैं
तिनके अंतर अवर अनंत सृष्टे फुरते हैं ॥ सो ब्रह्म तत्त्व का प्रकाश है ॥ जैसे बडे संथ भवि।

ग्रं॰प्र॰
२

ऐसे अनेक पुतलीयां कलसे ॥ तिनके अंतर अवर अनेक पुतलीयां कलसे ॥ तिनके अंतर अवर अ
नेक होवे ॥ जैसे प्रमाणु प्रमाणु विषे अनेक त्रिलोकी स्थित ॥ सो अभिन रूप है अवर कछु
हु आन नही ॥ जैसे पर्वत के अंतर गत असंख प्रमाणु होते हैं ॥ सो तिस साथ अभिन रूप है
तैसे ब्रह्म स्वरूप महा सुमेर है ॥ तिसके अंतर अनेक प्रमाणु रूप जगत है ॥ सो अभिन रूप है
हे राम जी सूर्य मंडल होवे ॥ तिनकीयां किरणां विषे त्रसरेणु होते है ॥ तिनकी सं
ख्या करणे को कोऊ समर्थ होवे ॥ अरु आदि अंत ते रहित जो आत्म रूप सूर्य है ॥ तिसके त्रि
लोकी यां रूपी प्रमाणों की संख्या करणे को कोऊ समर्थ नही ॥ जैसे समुद्र विषे जल के
प्रमाणु होते हैं ॥ जैसे पृथ्वी विषे धूड के प्रमाणु होते हैं ॥ सो असंख्य है ॥ तैसे आत्मा विषे अस
ख प्रमाणु सृष्टि है ॥ जैसे आकाश शून्य रूप है ॥ तैसे आत्मा चिदाकाश ही जगत रूप है ॥ यह
जो मैं तुझ को सृष्टि कहीयां है ॥ जो इन को तूं जगत शब्द करि जाणेगा ॥ तो अज्ञान वुद्धि है।
अरु अनेक दुःख भ्रम को देखेगा ॥ अरु जो इन को ब्रह्म शब्द का अर्थ करि जाणेगा ॥ त
व सुद्ध करि परम सार को प्राप्त होवेगा ॥ सर्व विश्व ब्रह्म ते फुरी है ॥ अरु विज्ञान घन ब्र
ह्म स्वरूप है ॥ अवर है नक कछु आन नही ॥ जब जागेगा तब तूं कों ऐसे ही भासेगा ॥ इ
ति स्थिति प्रकरणे जगदनेकत्व वर्णनं नाम सर्गः ॥ ॥ वसिष्ठ उवाच ॥ हे राम जी इंद्रियों का जो
ग्राम है ॥ तिस साथ युद्ध करणा तिन को जीतणा ॥ सो संसार रूपी समुद्र के पार करणे
को बेडा है ॥ अर्थ यह जो इंद्रियों का जीतणा मोक्ष का कारण है ॥ अवर किसी करि उ
पाय करि संसार समुद्र तर्या नही जाता ॥ सत शास्त्रों का विचारणा ॥ अरु संतो का सं
ग करणा ॥ इस करि जब आत्म तत्व का बोध होता है ॥ तब इंद्रियों का जीतणा होता है
अरु जगत का अत्यंत अभाव होता है ॥ जब लग जगत का अत्यंत अभाव नहीं होता ॥
तब लग आत्मा का बोध नही होता ॥ इह मैं तुझ कों क्रम कहा है ॥ सो संसार समुद्र के त
रणे का उपाउ है ॥ बहुत कहिणे करि क्या है ॥ सर्व कर्मों का बीज मन है ॥ मन छेदे ते स
र्व जगत छेद्या जाता है ॥ जब मन रूपी बीज नष्ट होता है ॥ तब जगत रूपी अंकुर भी नष्ट होता
है ॥ सर्व जगत मन ही का रूप है ॥ तांते मन ही का अभाव का यत्न करो ॥ मन ते अ
नेक जन्मों के समूह उपजते हैं ॥ इस के जीते ते सर्व लोकों विषे जय होवेगी ॥ सर्व जगत
मन करि हूआ है ॥ मन ते रहित हूए देह भी नही भासता ॥ जब मन ते दृश्य का अभाव हो
ता है ॥ तब मन भी असत कहा जाता है ॥ अवर उपाय को कोऊ नहीं ॥ हे राम जी मन रूपी पिशा
च है ॥ तिसका नाश अवर किसी प्रकार नही होता ॥ अनेक कल्प व्यतीत भयी है ॥ अरु वी
तजावे ॥ तो भी नष्ट नही होता ॥ तांते जब लग विद्यमान है ॥ तब लग इसका उपाइ क
री जगत का अत्यंत अभाव चिंतवणा ॥ अरु स्वरूप का अभ्यास करणा ॥ यह परम औ
षध है ॥ इस उपाइ करि मन रूप कष्ट नष्ट होता है ॥ अवर करि नही होता ॥ जब लग
मन नष्ट नही होता ॥ तब लग मन के मोह को पाय करि जन्म मरण को पावेगा ॥ ज
ब ईश्वर परमात्मा की शरण जाता है ॥ तब मन बंधन ते मुक्त होता है ॥ सर्व जगत म
न मनन फुरणा करि भासता है ॥ जैसे आकाश विषे शून्यता भासती है ॥ जैसे गंधर्व न
गर भासता है ॥ तैसे संपूर्ण जगत मन विषे भासता है ॥ जैसे पुष्प विषे सुगंध होती है
जैसे तिलों विषे तेल रहिता है ॥ जैसे गुणी विषे गुण रहिता है ॥ जैसे धर्मी विषे गुण रहि
ता है ॥ जैसे धर्मी विषे धर्म रहिता है ॥ तैसे यह सत असत स्थूल सूक्ष्म कार्य का
रण जगत मन विषे रहिता है ॥ जैसे समुद्र विषे तरंग फुरते है ॥ जैसे आकाश वि
षे द्वितीय चंद्रमा फुरता है ॥ जैसे मारुस्थल विषे मृगतृष्णा का जल फुरता है ॥ जैसे
चित विषे जगत फुरता है ॥ जैसे सूर्य की यां किरणां संग है ॥ जैसे तेज विषे प्रका
श है ॥ जैसे अग्नि विषे उष्णता है ॥ तैसे मन विषे जगत है ॥ जैसे बर्फ विषे शीतलता है
जैसे आकाश विषे शून्यता है ॥ जैसे पवन विषे चपलता है ॥ तैसे मन विषे जगत है ॥ स

र्व जगत मन रूप है ॥ अरु मन रूप जगत है ॥ परस्पर एक रूप है ॥ द्वितीय विषे एक नष्ट हो
वे ॥ तब दोनों नष्ट होजाते हैं ॥ मन नष्ट होवे तब जगत नष्ट होजाता है ॥ जगत नष्ट होवे त
ब मन नष्ट नही होता ॥ जैसे वृक्ष नष्ट हूए पत्र फूल फल नष्ट होजाते हैं ॥ फूल फल नष्ट
हूए वृक्ष नष्ट नही होता ॥ इति श्री स्थिति प्रकरणे [illegible] नाम सर्गः ॥ रा
मउवाच ॥ हे भगवन सर्व धर्मों के वेता ॥ सर्व अपर के ज्ञाता मन के फुरणे करि जगत कै
से स्फुरना को प्राप्त हूआ है ॥ जैसे प्राप्त भया है ॥ तैसे दृष्टांत एक को विस्तार करि कहो ॥ व
सिष्ठ उवाच ॥ हे राम जी जैसे इंदु ब्राह्मण के पुत्रों को मन फुरणे विषे स्थित भये ॥ अरु जैसे
ही ब्रह्मा होत भये ॥ सो मन फुरणे ते उपजे करि [illegible] भासी ॥ तैसे यह
लवण राजा को इंद्रजाल की माया करि चंडाल की [illegible] ॥ तैसे भार्गव शुक्र मन के फुरणे करि चिरकाल स्वर्ग
जगत मन विषे स्थित भया है ॥ सो मन भ्रम मद उहां इं भासा ॥ तैसे यह जगत
भोग लेता रहा ॥ अरु अवर अनेक भ्रम देखे ॥ [illegible] भृगु ऋषीश्वर के पुत्र भ्रम करि के
मन भ्रम करि स्थित भया है ॥ रामोवाच ॥ हे भगवन भृगु ऋषीश्वर के पुत्र भ्रम करि के
कैसे स्वर्ग सुख भोगा है ॥ अरु कैसे भोगों का अप्रतिकूआ ॥ अरु कैसे संसारी होइ के
भ्रम मंद देखत भया ॥ वसिष्ठ उवाच ॥ हे राम जी भृगु मस्तक का है तीन श्रवण करु भृगु अ
रु काल का संवाद मंद्राचल विषे भया है सो सुण ॥ एक काल मो भृगु जी अरु शुक
दोनों मंद्राचल पर्वत विषे स्थित थे वे इ मावन शुक्र का सुख ॥ अरु बडा प्रकाश है ॥ अ
रु भृगु जी वडे उदार आत्मा तहां स्थित थे ॥ जहां महा कल्प वृक्ष मंदार वृक्ष आदि कम्प्रे न
क सुंदर स्थान दिसते है ॥ तहां भृगु जी तप करे ॥ अरु शुक्र जी टहिल करे ॥ सो एक
काल भृगु जी निर्विकल्प समाधि विषे स्थित भये ॥ तब निर्मल मन ते शुक्र जी एक ता
ते मे भृगु जी निर्विकल्प समाधि विषे स्थित भये ॥ सो शुक्र विद्या अविद्या के
जाइ वेहा ॥ कंठ विषे मंदार के कल्प वृक्ष के फूलों की माला ॥ सो शुक्र विद्या अविद्या के
मध्य स्थित था ॥ जैसे त्रिशंकु राजा चंडाल था ॥ विश्वामित्र के वर को पाइ करि स्वर्ग गया
तब देवतों ने अनादर कीया ॥ स्वर्ग ते गिराइ दीया जो पह चंडाल है ॥ तब विश्वामित्र
ने देख करि कहा ई हां ही ठहरइ ॥ तब उह अम मम अरु आकाश के मध्य स्थित रहा ॥ ते
से शुक्र विद्या अविद्या के मध्य स्थित था सो शुक्र वैठा है ॥ उसी समे एक अपसरा तिस
के ऊर्ध्व आकाश मार्ग स्वर्ग को जाती थी अति सुंदर ॥ तिस को शुक्र देखत भया ॥
जैसे लक्ष्मी को उरोविस्नजी देखे ॥ तिसके दो नेत्र महा सुंदर अनेक प्रकार के भूषण पहिरे हूए है
तैसे अपसरा को देखत भया ॥ वस्त्र अरु महा सुगंधत आकाश मार्ग भी तिस करि सुगंध
भया है ॥ पवन जो तिस का स्पर्श करि चलता है ॥ तिस करि सुगंध प्रसती है ॥ अरु म
न भया है ॥ ऐसी अपसरा को देख करि शुक्र का मन उन्मत भया
होमद करि उसके ग्रमेलोचन है ॥ तैसे उसकी हृत अवस्मा
जैसे पूर्णमासी के चंद्रमा को देख करि क्षीर समुद्र उल्लभन होता है ॥ काम देव का जो कोऊ वाण है स्म तक
गीते रहित होइ करि अपसरा विषे ही जाइ स्थित हूई ॥ इति श्री स्थिति प्रकरणे भार्गव उपाख्याने भार्गव संचलनं नाम सर्गः
रण ॥ सो अनलाणा ॥ हे राम जी इस प्रकार उस अपसरा को देख करि ते वह मंद होत भया ॥ मंद करि विम
गः ॥ वसिष्ठ उवाच ॥ हे राम जी इस प्रकार उस अपसरा को देख करि ते तिस स्वर्ग को गई है ॥ मैं ति
सो राज को पसारत भया ॥ चिंतवण लागा जो पह लल ना मृग नेत्री स्वर्ग को गई है ॥ जाते जाते मन करि स
मके निकट जाइ प्राप्त होवे ॥ ऐसे विचार करि उसके पाछे चल्या ॥ जाते जाते मन करि स
गीलोक विषे जाइ प्राप्त भया ॥ तहां मंदार वृक्ष कल्पतरु हैं पुष्पों की सुगंध ता संयुक्त दे
खत भया ॥ इंद्र का नंदन वन है ॥ पारावत जिनके ॥ ऐसे देवता अरु हास विलास संयुक्त इंद्र गी
अरु सम्बन्ध नते त्र हैं जिस के ॥ सो देखत भया ॥ मलीयां के से हह देखे ॥ अरु अन्य परस्पर
उन विषे प्रीति विलुपइते हैं ॥ विश्व रूप को उपसा इस संगी लोक मो देखी ॥ मंद मंद पवन चल
ता है ॥ मंदार तरों साथ मंजरी प्रफुलत रूप है ॥ तहां अपसरा गण विचरते हैं ॥ इंद्र के वन

विषे आगे गया ॥ तब ऐरावत हस्ती बडे मद सो मत्त होता है ॥ दंतो विषे चूर्ण कीये हैं ॥ ऐंद्र से मे
दंतो जिसने ॥ अरु देवतयों के आगे अपस्रा गाइन करते हैं ॥ अरु स्वर्ण कमल लगे हूए
हैं ॥ तहां ब्रह्मा के हंस अरु सारस पक्षी विचरते हैं ॥ गंगाजी का प्रवाह चल्ला जाता है ॥ दे
वतयों के नाउ कुतहां विश्राम करते हैं ॥ बहुड लोकपालों के स्थान देखे ॥ यम वरुण आस
ऐंद्र वायु अग्नि लोकपाल सर्व देखत भया महा जाल वर्तते हैं ॥ प्रकाश जिनके ऐसे
देवता संहूह देखत भया ॥ ऐरावत देखे ॥ तिस कुं दंतो विषे दंतो की पंचकत पड़ी हूई
है ॥ आगे देवता देखे विवानो पर आरूढ विचरते हैं ॥ भूषणो संयुक्त तिनके आकार म
णि करि खचत सुंदर विवानो की पंकति विचरती हैं ॥ कहूं मंदार वृक्ष हैं ॥ कहूं कल्पतरु
हैं ॥ तिन संग सुंदर वल्ली हैं ॥ गंगाजी का प्रवाह चलता है ॥ तहां अपस्रा गण बैठे हैं ॥
कहूं पवन चलता है सुगंध संयुक्त ॥ कहूं रुद्रगण पाने जल निकसता है ॥ सुंदर नंदनवन
है ॥ कहूं अपस्रा बैठी हैं ॥ कहूं नारदादिक मुनि बैठे हैं ॥ अवर लोकपाल जिन्होंने कीया
देखडे ॥ सोवते हैं ॥ सुख भोगते हैं ॥ विवानो पर आरूढ विचरते हैं ॥ कहूं इंद्र को अपस्रा सेव
नहैं ॥ कामदेव करि मत्त है शरीर जिनके ॥ जैसे वन कीया लता वन को सेवत हैं ॥ तैसे
अपस्रा इंद्र को सेवत हैं ॥ कल्पवृक्षों संग रतनों के गुच्छ लटकते हैं ॥ जैसे वृक्षों संग अप
वा फल लटकते हैं ॥ तैसे रतन अरु चिंतामणि लगे हूए हैं ॥ कहूं वैडूर्य का नामणा स्वर्ण
नी है ॥ इस प्रकार मन के विभूरूप स्वर्ग रचना देखत भया ॥ देखदेखते करि इंद्र के समीप जा
इ प्राप्त भया कैसे रचना देखी ॥ मानो त्रिलोकी की रचना इहां ही है ॥ तब इंद्र शुक्र को दे
खकरि उठ खड़ा भया ॥ जो हितो यह भृगुजी आये हैं ॥ बडे प्रकाश संयुक्त शुक्र की मूर्ति को इंद्र
प्रणाम कीया ॥ अरु हस्त ग्रहिण करि के अपणे पास बैठाया ॥ अरु कहित भया हे
शुक्रजी आज हमारे धन्य भाग हैं ॥ जो तुमारा आगमन भया है ॥ हमारा स्वर्ग आज सफ
फल शोभत निर्मल भया है ॥ तुमारे आवणे सों ॥ अब तुम रहो स्थित होवो चिरपर्यं
त ॥ हे रामजी जब ऐसे इंद्र कहा ॥ तब शुक्रजी भले भये ॥ तिस को देखकरि स्वर्ग के सं
हूह प्रणाम करते भये ॥ जो भृगु सुत शुक्रजी आया है ॥ इस प्रकार शुक्रजी मन करि इंद्र
के समीप जाइ बैठे ॥ इति श्री स्थिति प्रकरणे भार्गव मनोराजन नाम सर्गः ॥ वसिष्ठ उवा
च ॥ हे रामजी जब इस प्रकार शुक्रजी इंद्र के पास जाइ बैठा ॥ तब आपणा जो कोउ निज भा
वया ॥ तिस को विस्मरण करत भया ॥ अरु जो मेरा चल पर्वत विषे आपणा शरीर था ॥ सो
विस्मरण भया ॥ अरु तोसना को रिमनो राज को देहदृढ हो गया ॥ एक महूर्त पर्यंत इंद्र
के समीप स्थित रहा ॥ परचित्त अस अपना विचरहा ॥ तिस के अनेतर उदघाटा भया ॥ स्वर्ग को
देखणे लागा देवन्यों करहा ॥ चेला स्वर्ग रचना देखा ॥ तब शुक्रजी देखने नहां गये ॥ जहां उहां
अपस्रा थी ॥ अवर अनेक अपस्रा थीं या ॥ तिन विषे उह भी स्थित थी ॥ मृग वत नेत्र हैं तिस
के ॥ तिस को शुक्रजी देखा ॥ जैसे चंद्रमा चाटनी को देखे ॥ तैसे देखकरि शुक्र का शरीर द्र
वीभूत होता गया ॥ सो देखा है पसीना तिसकरि ... होगया ॥ जैसे चंद्रमा को देखकरि चंद्र को ता
मणि द्रवीभूत होता है ॥ तैसे द्रव होगया ॥ कामदेव के नेत्रों को देखकरि चंद्र को ता मणा द्रवीभू
त होता है ॥ तैसे द्रव होगया ॥ कामदेव के नेत्रों को देखकरि चंद्रकोता मणा द्रवीभ
तिसकरि व्याकुल होगया ॥ अरु शुक्र को देखकरि उसका चित्त भी मोहित होगया ॥ शुक्र को दे
ष काम का बाण तिस को भी आन लागा ॥ उह भी कामकरि तृष्णा होगई ॥ जैसे वर्षा काल
की नदी जल करि तृष्णा होती है ॥ परस्पर स्नेह हृदय भया ॥ तब शुक्र मन करि केते हा तम का रव
नाभया ॥ तब सर्व स्थानों विषे तम होगया ॥ जैसे लोकालोक पर्वत के तट विषे तम होता है
जैसे समर्थ का अभाव भया ॥ तब सर्व भूत जान अपने अपणे स्थान विषे गमन करते भये ॥ जै
से दिन के अभावरूप पक्षी पक्षी अपणे अपणे गृह को जाते हैं ॥ तैसे तम के होणे करि सर्व

वल्लतेरहे वनसों ॥ तब उह अपस्रा शुक्र को निकट आवत भयी ॥ शुक्रजी भी तिस अपस्रा ते
हृगये ॥ अपस्रा भी चरणो को निकट वेटगई जैसे भ्रमर पदम पर चढे होते हैं ॥ जब ऐसे करि दो
नो काम के वश हूए ॥ तब अपस्रा मधुर अरु कोमल विला सणी वाणी करि कहित
भयी ॥ हे नाथ मैं निर्बल होइ करि तुमारी शरण आई हो ॥ मुझ को कामदेव दहन करता
है ॥ तुम रक्षा करो ॥ मैं इसकरि संपूर्ण होगयी हो ॥ अरु हम परस्पर मिले है ॥ तिस को सोई
जाणता है ॥ जिस को प्राप्त होता है ॥ जिन को इस का रस नहीं आया ॥ सो क्या जाणे ॥ हे
नाथ ऐसा सुख त्रिलोकी मो अवर को ऊन हीं ॥ जैसे सुख परस्पर स्नेह विषे होता
है ॥ अब तुमारे चरणो को पाइ करि आनंद मान हूई हो ॥ जैसे चंद्रमा को पाइ करि क
मलनी आनंद मान होती है ॥ जैसे चकोर चंद्रमा कीया किरणों पाइ करि आनंदमा
न होता है ॥ तैसे मुझ को स्पर्श करि आनंद होवेगा ॥ हे रामजी जब इस प्रकार वारंवार
अपस्रा कहा ॥ तब दोनो काम वश होइ करि भोग वन विषे क्रीडा करते भये ॥ इति
श्री स्थिति प्रकरणे भार्गव आख्याने मनोराजन सर्गः ॥ वसिष्ठ उवाच ॥ हे रामजी इस
प्रकार तिस को पाइ करि शुक्र आप को आनंद मानता भया ॥ अरु मंदार वृक्ष कल्प
वृक्ष के नीचे क्रीडा करे ॥ दिव्य वस्त्र अरु भूषण पुष्पो की माला पहिरे हूए वन अरु ब
गो चे विषे किलोले के स्थानो ॥ विषे क्रीडा करे ॥ चंद्रमा कीया किरणा मार्ग अमृत पा
नकरे स्वर्ग विषे विचरे ॥ विद्याधरों के गण संग होवे ॥ तिन के स्थानो विषे अरु दिक स्था
नो विषे क्रीडा करते भये ॥ अरु केलास पर्वत पर गए ॥ अपस्रा संयुक्त नंदनवन को जो व
पर्वत पर गए क्रीडा करते भये ॥ मेरु चल पर्वत के
शिखरों पर रहे ॥ बहुड लोकालोक पर्वत पर गए ॥ क्रीडा करते भये ॥ मेरु चल पर्वत
कीया कंदरा विषे विचरे ॥ स्थित होइ विषे रहे अरु अर्थ शत युग ॥ बहुड गंधर्वों के नगरो विषे
विचरे ॥ इस के वन विषे रहे ॥ बत्तीस युग पर्यंत स्वर्ग मो रहे ॥ जब पुन क्षीण भये ॥ तब
भूमि लोक को गिराय दीये ॥ गिरते गिरते देव शरीर दूर कीया ॥ जैसे फूल गिरी विषे अ
ल होवे ॥ तैसे शरीर अंतर ध्यान होगये ॥ तब चिंता संयुक्त उन को पुरियष्टक आ
काश विषे निराधार रहा रही ॥ जैसे पक्षी आलय विना स्थित होवे ॥ तैसे उन की पु
रियष्टक चिंता संयुक्त निराधार रहि हूई ॥ तब बासना रूप दोनो चंद्रमा कीया किरणो
विषे जाइ स्थित भये ॥ बहुड किरणो द्वारा धान विषे आन निवास कीया ॥ तब दशा
रण नाम ब्राह्मण था ॥ तिस ने धान को भोजन कीया ॥ तब उह दोनो बल वीर्य होइ
करि ब्राह्मणी के गर्भ विषे जाइ रहे ॥ उहा मालव देश का राजा भोजन करता भया ॥
तिस के वीर्य को इस्त्री के उदर विषे जाइ रहे ॥ उहां मालव देश का राजा भोजन
तिस के वीर्य करि इस्त्री के उदर विषे जाइ स्थित भयी ॥ तब दसारण ब्रा
करता भया ॥ तिस के वीर्य करि इस्त्री के उदर विषे ... अरु कुमा
ह्मण के गृह विषे शुक्र पुत्र भया ॥ अरु मालव देश के राजा की पुत्री हूई ॥ तब शो
करि के बढी ॥ जब षोडश वर्ष की हूई ॥ पिता के गृह विषे यौवनवान हूई ॥ तब शो
कर महादेव की पूजा करत भयी ॥ जो हे देव मुझ को एसा भर्ता ही कीजो मेरा होवे ॥ इस प्र
कार नित्य पूजन करे ॥ अरु वह मांगे ॥ अरु उह हो उहयौवनवान भया ॥ इहां पहयो वर
न हूई ॥ तब राजा यज्ञ का आरंभ कीया ॥ तिस राजा यज्ञ विषे सर्व ब्राह्मण बुलाए
॥ सो दसारण ब्राह्मण भी पुत्र संयुक्त आया ॥ तब राजपुत्री तिस पूर्व जन्म के भर्ता को
देखा ॥ जैसे चंद्रमा को देख करि चंद्रकांतामणि द्रवीभूत होती है ॥ तैसे राजकन्या
होगयी ॥ अरु कहा कि ॥ तब उह राजकन्या दशारण के पु
त्र को देख करि पुष्पो की माला तिस के कंठ मो डार दीनी ॥ भर्ता कीया ॥ तब राजा
विषे राजा देख करि आश्चर्य मान भया ॥ अरु निश्चय कीया जो भला हूआ ॥ बहुड

स्थि॰ २
४

क्रमकरिके विवाह कीया॥ तब राजा पुत्री अरुजा बाईको राज देकरि आप तप करणेनि
मित्त वनको चलता रहा॥ ईहां इक्ष्वाकुरूप कुषमालवादेशका राज कर्ते भये॥ चिरका
ल राज करते रहे॥ बहुत दीनो इयभए॥ शरीर जरजरीभूत होगये॥ तब कुषको शरी
र विषे वैराग हुआ॥ जो इक्ष्वाकु है महादुःखरूप है॥ सो दुःखरूप अवस्था देखक
रि मनमाने वैराग उपजया॥ जरजरीभूत अरु विषयसे वर्णीते रहित अरु शांति भये
परंतु आत्मनिवर्तन भयी॥ राजा मरत अवस्थाको प्राप्त भया॥ बांधवां जलाइ दीया
एह महाअंधकूप मोह विषे जाइ पडा ज्ञानकी प्राप्ति विना॥ हे रामजी मरतसमै
तें अनेन परलोक तिसको भास आया॥ तहां कर्मोके अनुसार सुखदुःखको
भोगकरि॥ अवानमदेश विषे भीवर भया॥ तहां अपणे जीवरोके कर्म कर्ते भया
जो एह संसार महादुःखरूप है॥ ऐसे जाणकरि सूर्यभगवानका तप कर्ते भ
या॥ जब मस्तक भया॥ तब तपकर्मके वशिते सूर्यवंश विषे राजा भया॥ संभाव
नाके वशितें तहां कछुक ज्ञानवान भया॥ योग करे अरु वेद पढे॥ योगकी भाव
नाकरि जो देह छूटा॥ तातें बडा गुरु हूआ सर्वको उपदेश करे॥ मंत्रसिद्ध कर्ते भ
या॥ वेदविषे अतिप्रवक्ता भया॥ तब मंत्रोके वशितें विद्याधर भया॥ चिरकाल प्र
र्यंत विद्याधरो विषे रहा॥ एककल्प वीता॥ तब कल्पका अंत भया॥ सर्व शरीर अं
तरस्थान होगये॥ इनका पवनरूप शरीर वासना संयुक्त होर रहा॥ जब ब्रह्माकी
रात्र लय हूई॥ अरु दिन भया॥ बहुरि सृष्टि रची तब एक मनीश्वरके गृह विषे पुत्र
भया॥ तहां बडा तप कर्ते भया॥ बहुरि मेरु पर्वत पर जाइ स्थित भया॥ मनन
रत हो रहा॥ इक हजार युग वीतके ढीठ्ठ तीतन भयी॥ तहां तिसनें भोगकरि हर
णीका पुत्र भया॥ अरु मनु एकाआकारत हो रहे॥ तिस पुत्रके अहंकारि॥ मोह
को प्राप्त भया॥ इसमें रे पुत्रको थन हो॥ गुणआवेला बहुत हो॥ निरंतर एही चि
तवना करणे लागा॥ इस कारणतें अपणे तपधर्मतें विरत हूआ॥ आविल
लीणा भयी॥ त्रितरूप समयेंने ग्रास लीया॥ तपके भंशनिमित्त॥ अरु तपके व
लकरि शरीर छूटा॥ तब भोगोकी चिंतासंयुक्त॥ सो मद्रदेशके राजाके गृह पुत्र
भया॥ तिस देशका राजा भया॥ चिरपर्यंत राजभोगकरि वृद्धावस्थाको प्रा
प्त भया॥ शरीर जरजरीभूत होगया॥ तपको अभिलाष विषे शरीर छूटा॥ ता
तें तपस्वीका पुत्र भया॥ अब संतापमें रहित होइ करि गंगाजीके किनारे तप
वेदा करता है॥ हे रामजी इस प्रकार मनके फुरणे करि एकअनेक देह भोगता
भया॥ इतिश्री स्थितप्रकरणे भार्गवपाख्याने विपर्जन्मावर्णनं नाम सर्गः॥ व
सिष्ठ उवाच॥ हे रामजी इस प्रकार शुक्र मनकरि भ्रमता फिरा॥ तब भृगुके स
मीप जो शरीर था॥ सो निर्जीव होगया॥ पुरिष्टका निकस गई॥ पवन अरु धू
प करि देह जरजरीभूत होगया॥ जैसे मूलतें काटा वृक्ष गिरपडता है॥ तैसे देह
गिरपडा॥ मन जो चंचल है॥ सो भोगविलासकरि विचरिगया॥ जैसे मृग वनमें
भ्रमता है॥ जैसे चक्रकरि भ्रमे॥ तैसे भ्रमते भ्रमता नरको देखा॥ जब मुनीश्वर
देह पाया॥ तब चित विश्राम पाया॥ गंगाके तटपर तप करत भया॥ मंद्राचल
पर्वतें वाल वधनिरस होगया॥ अस्थिचर्ममात्र शेष रहि गये सूक गया॥ शरीरके रं
ध्रमार्गकरि पवन चले॥ तब वांसरीवत शब्द होवे॥ मानो वेणा पाठ करि देह आ
नंदी भया है स्थित॥ जब अतिपवन चले॥ तब भ्रमर्मा विष लोटता फिरे॥ नेत्रादिक
जो रंध्र ये॥ सो गर्त्त वन्न होगये॥ अरु मुख दशसर गया॥ मानो अपणे सर्व स्वभाव

देखकरि हसता है॥ जब वर्षाकाल आवे॥ तब जलको स्पर्श होता है॥ अरु जल तिस विषे
प्रवेश करिके रंध्रोमार्ग निकस जावे॥ जैसे करंतोनें जल निकसता है॥ जब उष्णका
ल आवे तब धूप करि सूक जावे॥ महाकाष्ठवत स्थित भया है॥ वन विषे मौनरूप हो
करि स्थित भयी है॥ एक उस देहको पशुपक्षी नाश न कर्ते भये॥ कारण एह॥ एक
तो रागद्वेषतें रहित पुन आश्रम था॥ अवर भृगुजी महातपस्वी तेजवान॥ तिसके
निकट कोउ आय न सके॥ तातें देह नष्ट न कर्ते भये॥ ईहां देहकी एह अवस्था भयी॥ अ
रु शुक्र पवन शरीरकरि विचेष्टा कर्ते भया॥ इतिश्री स्थितप्रकरणे भार्गवकलेव
लनं नाम सर्गः॥ वसिष्ठ उवाच॥ हे रामजी जब सहस्र वर्ष दिव्य व्यतीत भया॥ भृगुजी समाधितें उतरे॥ जागकरि देखन भ
त्रिलत अरु साढसहस्र वर्ष॥ तब भगवान भृगुजी॥ तब नेत्र पसारकरि भली प्रकार देखा
ये॥ जो अपणा आगे शुक्रका शरीर दृष्ट न आया॥ अरु जाणत भये॥ जो काल
तब महाक्रूप उपजे सादे हम भ्रमपरागि उयादृष्ट आया॥ तब महाक्रोध करि जरजरीभूत होगया है॥ तेत्रदोषेन
सको भक्षण कीया है॥ देह धूप अरु वायुमेघकरि जरजरीभूत होगया है॥ नेत्रदोषेन
गये हैं॥ शरीर विषे कीट आइ स्थित भये हैं॥ जीवोंने अपणे रहिणेके आले स्थान।
कीये हैं॥ कराइणक्रूम सलेका आवत है॥ श्वेत दंत निकस आये है॥ मानो शरीरकी
दशा देखकरि हसते हैं॥ मुख श्री बामहा भयानक रूप श्वेत ... होगये हैं॥ नासि
काअवण सर्व इस्थान जरजरीभूत होगये हैं॥ वायु चले॥ तब वांसरीवत वाजणे
लागत है॥ आइ नेत्रतारा होगये हैं॥ महा आश्चर्य रूप एक प्रा होकरि शरीर गिडप
इपडता है॥ अस्थिचर्ममात्र रहि गये हैं॥ रूपवस्तु करि याहे गगा हे घुते रहित होइक
रिस्थित भया है॥ मृगपक्षी भक्षण न कर्ते भये॥ सो क्या कारण है॥ एक तो पुन।
स्थान था॥ द्वितीय भृगु तपस्वीका तेज था॥ इस कारणतें हिंसक भक्षण कर्ते न
भये॥ शरीरकी एह दशा देखकरि भृगु उठ खडे भये॥ क्रोध सो इरणा होइके दिन
भये॥ कालने क्या समझा है॥ जो मेरे पुत्रको मार याहै शुक्र परम तपस्वी॥ इसमें
छूपये तरहिणा था॥ सो भी विना कालमेरे पुत्रको मारा है॥ एह कव मारीते है॥ तातें मे
कालको शाप देता हों॥ अरु भस्म कर्ता हों॥ मेरे पुत्रको समय विना मृतक कीया है॥ त
वकालका रूप जो काल है॥ सो अधिभूत करि शरीर धारकरि आया॥ खटमुख॥ अरु
खटभुजा॥ हस्त विषे खड्ग त्रिशूल॥ अरु फासी॥ अरु कानों विषे मणी पहिरे हूए
मुखतें ज्वाला निकसती है॥ अतिश्याम शरीर॥ अग्निकी न्याई जिह्वा है॥ कमल फूल
वत ज्वाला निकसती है॥ त्रिशूलके अग्रतें अग्निकी ज्वाला निकसत है॥ जैसे प्रल
यकालकी अग्नितें धूम्र निकसता है॥ तैसे श्याम वपु देखें पर्वत तब तउ अरु कप है
जहां चरण धरे॥ तहां पृथ्वी पर्वतके पाय मान होवे॥ महाभयानक रूप काल भग
वान भृगु ऋषीश्वरके निकट आवत भया॥ सो अप महाशूल यके समदृष्ट वनेको
धकरि शरणाया॥ तिसको कालने कहित भया॥ हे मुनीश्वर जो मर्यादाके वेता है
अरु परावर परमात्माके वेता है॥ पर कहीये ब्रह्मादिक देवता॥ अवर कहीये मनु
ष्यादिक॥ तिस पराव र में सम व्यापक परमात्माके जो वेता है॥ सो पुरुष क्रो
धकों न ही प्राप्त होते॥ तो काहु क्रोध करणेको आवे॥ तो भी मोहके वशि होइ क्रि
याकों न ही प्राप्त होते॥ तुम काहेको कारण विना मोहित हूए क्रोधको प्राप्त होते।
तुम काहेको कारण विना मोहत हूए क्रोधको प्राप्त होते हो॥ ते ब्रह्मण तपस्वी हो
अरु हम तेनके पालक हैं॥ हमारे करि तुम पूजणे योग हो॥ पहले तेनकी इच्छा
है॥ अरु तुम तपके बलकरि क्षोभमत करु॥ तेरे शापकरि मेरे भस्म भी नहीं होता॥ प्र
लयकालकी अग्नि भी मुझको दग्ध नही करि सकी॥ तो तेरे शापकरि मैं कब भस्म हो
ता हो॥ हे मुनीश्वर मैं तो अनेक ब्रह्मांड भक्षण करि गया हो॥ केइ कोट रुद्र ग्रास ली

स्थि॰ प्र
५

ये हैं ॥ कोई कोटर विखु आसन करि लीये हैं ॥ तेरा शाप मुझ कों क्या करि सक्ता है ॥ जैसे आदि नेत
ईश्वर रची है ॥ तैसे स्थित है ॥ हम सर्व के भोगता हैं ॥ अरु तुम सारखे हमारे भोग हुए हैं ॥
यह आदि नेत हुई है ॥ हे मुनीश्वर अग्नि स्वभाव करि ऊर्ध्व को जाती है ॥ अरु जल स्वभाव करि
अधः को जाता है ॥ अरु भोग जो हैं ॥ सो भोगता को प्राप्त होते हैं ॥ अरु तुच्छ सर्व काल के
खावने को प्राप्त होती है ॥ आदि परमात्मा की नेत ऐसे ही हुई है ॥ जैसे रची है ॥ तैसे ही स्थित
है ॥ अरु जो निह कले करि ताने दृष्टि करि देखो ॥ तब कर्ता भोगता अनेक प्रकार के भ्रम भा
सते हैं ॥ हे ब्राह्मण कर्ता भोगतादि कर्ता भ्रम है ॥ सो असम्यक ज्ञान करि होता है ॥ जब
सम्यक ज्ञान हुआ ॥ तब कर्ता कार्य भोगता भोग कोऊ नहीं ॥ जैसे हूं तासाथ पुष्प स्व
भाव करि उपज आवते हैं ॥ अरु स्वभाव करि ही नष्ट हो जाते हैं ॥ तैसे भूत प्राणी तुष्टि विषै स्व
भाव करि आवते हैं ॥ वहुड़ स्वभाव करि ही नष्ट हो जाते हैं ॥ अयस्वरूप हैं ॥ भी आभी उ
त्पत्ति करता है ॥ अरु वहुड़ नष्ट करता है ॥ जैसे चंद्रमा का प्रतिबिंब जल विषै पडता है ॥ सो जा
ले के हलणे करि चंद्रमा हलता है ॥ जल के ठहिरने ते प्रतिबिंब ठहिर जाता है ॥ वास्तव ते कछु
नहीं ॥ मिथ्या मन के फुरणे कों लोक विषै कर्तृतादिक भासते हैं ॥ जैसे जेवरी विषै
सर्प भ्रम करि भासता है ॥ तैसे आत्मा विषै कर्ता भोगता भ्रम करि भासते हैं ॥ वास्तव ते क
छु नहीं ॥ ताते क्रोध मन के राग द्वेष कर्म अपदा का कारण है ॥ हे मुनीश्वर मैं जो तुझ कों
एह वचन कहिता हों ॥ सो अपणी विभुता ते अरु अभिमान करि नहीं कहिता ॥ एह
स्वतः ईश्वर की नेत है ॥ तिस विषै हम स्थित हैं ॥ जो बोधवान पुरुष हैं ॥ सो अपणे प्रकृ
त आचार विषै पडे विचरते हैं ॥ अरु अपणे अभिमान करि नहीं विचरते ॥ जो कर्तव्य
कर्ता हैं ॥ सो वाह्य प्रकृत आचार को करते हैं ॥ जैसा आय प्राप्त होवै ॥ अरु अंतर ते सु
षुप्तवत को ॥ आत्म पद करि कै स्थित हैं ॥ उह ज्ञान दृष्टि कहां ॥ उह महत्तता कहां ॥ उह
धीरता अरु उदारता कहां जो शास्त्र करि प्रसिद्ध है ॥ तुम कछु अंध की न्याई मार्ग विषै मो
हत होते हो ॥ हे साधते तो त्रिकालदर्शी है ॥ अविचार करि मूढ़ ते बल जगत भ्रम वि
षै मोह को क्यों प्राप्त होते हो ॥ तुमारा पुत्र अपणे कर्मों के फल कों पावत भया है ॥ अ
रु तै अविचार करि के मूढ़ होवत तुझ को शाप दीया चाहता है ॥ हे मुनीश्वर इस लो
क विषै जीवों के द्वि देह शरीर हैं ॥ एक मन रूप है ॥ द्वितीय आधिभूतक रूप है ॥ आधि
भूतक रूप है ॥ अरु अत्यंत विनाशी है ॥ जहां उसको मन प्रेरता है ॥ तहां चल्या जा
ता है ॥ आप ते कछु करि नहीं सक्ता ॥ जैसे सारथी भला होता है ॥ तब रथ को भले स्था
न ले जाता है ॥ अरु जो भला नहीं होता ॥ तो रथ को दुःख स्थान मों ले जाता है ॥ तै
से जो मन भला होता है ॥ तो उत्तम लोक को प्राप्त करता है ॥ जब दुष्ट होता है ॥ तब
नीच स्थान को प्राप्त करता है ॥ जिसको मन प्रसन्न करता है ॥ तिसको प्रसन्न करता
है ॥ जैसा कर्ता है कल्पता है तैसा होइ भासता है ॥ जैसे मूरत का के पुरुष बाल
क वण वता है ॥ वहुड़ भगन करते हैं ॥ कवहूं सत करते हैं ॥ कवहूं प्रसन्न करते
हैं ॥ जैसे करते हैं ॥ तैसे देखते हैं ॥ हे साधु एह चित्त रूप पुरुष है ॥ जो चित्त करते है
सो कीया होता है ॥ जो चित्त न ही कर्ता ॥ सो न ही कीया होता है ॥ एह जो फुरणा है
जो एह देह है ॥ एह नेत्र है ॥ एह शिर है ॥ एक अंग है ॥ इत्यादिक सर्व मन ही रूप है
अरु सर्व मन ही के नाम हैं ॥ जीव भी मन ही का नाम है ॥ मन का जीवणा जीव है ॥ इ
ही मन की हृत निश्चय रूप होती है तब तिसका नाम बुद्धि है ॥ अहं रूप धारती
है ॥ तब तिसका नाम अहंकार होता है ॥ देह को स्मरण करती है ॥ तब तिसका
नाम चित्त होता है ॥ ताते पृथ्वी रूप शरीर कोऊ नहीं ॥ मन का फुरणा ही शरी
र रूप होइ भावना करि हो जाता है ॥ सोई आधिभूतक रूप हो भासता है ॥ ज
व देह भावना को त्यागता है ॥ तब चित्त परम पद पावता है ॥ जेता कछु जगत है

सो मन फुरणे विषै स्थित है ॥ जैसे मन फुरणा होता है ॥ तैसे ही रूप होइ भासते हैं ॥ अरु तै
रा भी जो पुत्र था ॥ अरु सो अपणे मन फुरणे करि अनेक अवस्था को देखत भया है ॥ ज
व तुम समाधि स्थित भये थे ॥ तब विस्माची देव सुंदरी जो अपसरा थी सो चली जाती थी
तिसके पाछे मन करि कै चल्या गया ॥ इंद्र लोक स्वर्ग को ॥ जाइ प्राप्त भया ॥ देवता होइ
करि मंदार वृक्षों विषै विषय रमण लागा ॥ पारयात जो वृक्ष तो विषै नंदन वनों विषै विचर्ता
लोकपालों के स्थानों विषै विचरा ॥ वतीस युग पर्यंत विस्माची देव अपसरा साथ विचरता
रहा ॥ तिसको सेवता भया ॥ जैसे भ्रमर कमल को सेवता है ॥ तैसे सेवता तीव सेनेरा
कों भोगता भया ॥ जब पुन्न क्षीण भये ॥ तब तहां ते गिरया ॥ जैसे अपक्व फल वृक्ष ते
गिरता है ॥ तब देव शरीर आकाश मार्ग विषै अंतरध्यान हो गया ॥ भ्रम लोक विषै
आन पड़ा धान विषै आइ ॥ कोर ब्राह्मण के वीर्य द्वारा ब्राह्मणी का पुत्र भया ॥ कोसल
देश का राज कीया ॥ वहुड़ धीवर का जन्म पाया वहुड़ त्रिगर्त देश विषै सूर्यवंशी रा
जा हूआ ॥ वहुड़ विद्याधर भया ॥ कल्प पर्यंत विद्याधरों विषै बुद्धिवान रहा ॥ इस प्रकार अ
नेक शरीर पाये ॥ अब गंगा जी के तट पर ब्राह्मण का पुत्र होइ करि तप करता है ॥ वसु
देव तिसका नाम है ॥ हे मुनीश्वर इस प्रकार तेरा पुत्र इत्यादिक अनेक शरीर वासना
करि पावता रहा है ॥ विद्याचल पर्वत विषै गोप हूआ ॥ किरात देश विषै जीवर हूआ ॥
वन विषै विचरा ॥ वहुड़ त्रिगर्त देश विषै राजा हूआ ॥ किरात देश विषै हरण हूआ ॥ वहुड़ उल्लादिक भूषणों क
ध्यावान गुरु हूआ ॥ वहुड़ विद्याधर श्रीमान भया ॥ कल्प पर्यंत ऊहां रहा
विसंपत तव उपे सूर्यवान गंधर्वों का मुनि नाउ कम भूषण हूआ ॥
तब पुन्न लय होण लागी ॥ तब स्वर्ग लोक भस्म हो गये ॥ जैसे अग्नि विषै पतंग भस्म
होते हैं ॥ तब तेरा पुत्र निराधार निराकार ॥ रवासना करि के आकाश मार्ग विषै भ्रम
ता रहा ॥ जैसे आलणे बिना पक्षी रहता है ॥ तैसे रहा ॥ जब ब्रह्मा की रात्रि व्यतीत हू
ई ॥ तब सृष्टि रचना बणी ॥ उह सतयुग विषै ब्राह्मण का बालक वसुदेव नाम गंगा
जी के तीर पर तप करता है ॥ केतेक युग तप व धारे के तिसको तप करते वीते हैं ॥ अष्ट मान
वहुत तप कीया है ॥ तैसे भी जान तू एक बार देखे ॥ तब सर्व ही वृत्तांत उस काल तुझ को भास
आवे ॥ ताते देखु जो इसी प्रकार है ॥ अथवा किसी अवर प्रकार है ॥ इति श्री स्थिति प्रक
रणे कालवाकी नाम सर्गः ॥ काल उवाच ॥ हे मुनीश्वर महा तेरा उठ चलते हैं ॥
अरु फोकार शब्द होते हैं ॥ अरु भी गंगा जी के तट पर तेरा पुत्र तप करता है ॥ सो सपवे
रीयां जटा हैं ॥ सर्व इंद्रियों के भ्रम को तिसने जीता है ॥ जो तुम को उसके मन का
विस्तार देखणे की इच्छा है ॥ तो इन नेत्रों को मूंद करि ज्ञान नेत्रों सों देखो ॥ वशिष्ठ
उवाच ॥ हे राम जी जब इस प्रकार जगत ईश्वर काल ने कहा ॥ सो कैसा काल है ॥ सम
दृष्टि है जिसकी ॥ तब मुनीश्वर चितवता भया ज्ञान नेत्रों संग ॥ अरु इन नेत्रों को मूं
द करि देखत भया ॥ एक मुहूर्त विषै अपणे पुत्र का सर्व वृत्तांत देख लीया ॥ जैसे
कोऊ अपणी बुद्धि विषै प्रतिबिंब को देखे ॥ तैसे देख करि वहुड़ इस मंदराचल पर्वत पर
जो भृगु का शरीर था ॥ तिस विषै प्रवेश कीया ॥ आनि वार कदे हक रि ॥ अरु अपणे आश्र
म विषै काल भगवान को देखत भया ॥ पुत्र को गंगा के तट पर देख आया ॥ आश्च
र्य को प्राप्त भया ॥ तब विकार दृष्टि त्याग करि निर्मल सुंदर दृष्टि साथ वीतरागता को
वीतराग ता मुनीश्वर वचन कहित भया ॥ भृगु उवाच ॥ हे भगवन त्रिकाल के ज्ञाता ई
श्वर ॥ हम बालक हैं ॥ इसी ते निर्दोष हैं ॥ तुम सारखे बुद्धिवान हैं ॥ त्रिकाल अमलद
र्शी हैं ॥ हे भगवन ईश्वर की माया महा आश्चर्य रूप है ॥ जीवों को अनेक भ्रम दिखा
वती है ॥ सत को असत करि दिखावती है असत को सत करि दिखावती है ॥ बुद्धिवा
नों को भी मोह करती है ॥ मूढ़ों को क्या वार्ता है ॥ तुम सर्व कछु जाणते हो ॥ जीवों की
वार्ता सर्व तुमारे अंतर गत है ॥ जीव नहता के अनुसार भ्रमते हैं ॥ सो मन वृत्त सर्व तु

मोरेअंतरिगतफुरतीहे ॥ तमसर्वकेज्ञाताहो ॥ जेसेइंद्रजालअपणीबाजीकोवेताहोता
हे ॥ हेभगवनतेमेंजोभ्रमकरिक्रोधकीया ॥ सोइसकारणतेंकीया ॥ जोमेरेपुत्रकी
मननयी ॥ विवजीवीया ॥ तिसकोंमनकहूआदेखकरिमेंभ्रमकोप्राप्तभया ॥ अरु
हमाराजोक्रोधहे ॥ सोअपदाकाकारणनहीं ॥ कोहेतेंजोमेंपुत्रकाशरीरनिजीवदे
खा ॥ तबकहाजोअकालमृतहूआ ॥ तातेंक्रोधकीयाहे ॥ सोक्रोधभीनेतरूपहे अ
थयदिजोक्रोधकास्थानहोवे ॥ तहांक्रोधवाहीताहे ॥ पहनेतहे ॥ मेंसंसारकोगते
विचारकरिक्रोधनहींकीया ॥ अथयदिजोपुत्रकीअवस्थादेखकरिक्रोधनही
कीया ॥ निजीवदेहदेखकरिक्रोधकीया ॥ इसीतेंपहक्रोधअपदाकाकारणन
हीं ॥ अरुकाकारणकरिजोक्रोधहे ॥ सोअपदाकाकारणहे ॥ पहकर्तव्यमेंसारस
ताविषेस्थितहे ॥ पवनेतहे ॥ जबलगजीवहे ॥ जबलगजीवहे ॥ तबलगजगतक
महे ॥ जबलगअग्निहे ॥ तबलगउसनताहे ॥ तबलगउसनताहे ॥ तेसेजोकर्तव्यहे ॥
सोकरणाहे ॥ जोत्यागणेयोगहे ॥ सोत्यागहे ॥ पहनेतजगतविषेस्थितहे ॥ जो
हेयउपादेयकोंनहीजाणता ॥ तिसकोंत्यागणायोगताते मेंपुत्रकोअकाल
मृतदेखकरिक्रोधकीयाया ॥ अविचारकरिजबतेंमस्मरणकराया ॥ तबमेंवि
चारदेखाहे ॥ जोअनेकभ्रमकोंपावतापावता अवबेगजीकेतदपरतपक
तोहे ॥ हेभगवनतुमजोकहाजीवोकेदिहदेहहे ॥ एकमनोमय ॥ द्वितीय अ
धिकभतक ॥ अरुमेंपहमानताहो ॥ जोशरीरएकमनहीहे ॥ द्वितीयकोकुनही
मन ॥ काहीकीयासफलहोताहे शरीरकानहीहोता ॥ को॰ वा॰ ॥ हेमुनीशुर
तरुपयथार्थकहाहे ॥ शरीरएकमनहीहे ॥ स्थूलदेहमेंकल्पकरिरचतहे ॥ जे
सेघटकोंकुलालरचताहे ॥ तेसेमनदेहकोंरचताहे ॥ जोमनशरीरतेरहित
निराकारहोताहे ॥ तोतणविषेआकारकोंरचलेताहे ॥ जेसेबालकपच्छावेविषे
वेतालरचलेताहेभ्रमकरि ॥ हेसाधमनविषेफुरणाशक्तिहे ॥ स्वभ्रमतिस
कोंदिखावताहे ॥ वडेआकारअरुगंधर्वनगरभासआवतेहे ॥ सोमनकीश
क्तिहे ॥ स्थूलदृश्टकरिजीवोकोंदृढशरीरभासतेहे ॥ बोधवानकों ॥ त्रिजगतमन
हीरूपभासतेहे ॥ सर्वमनकरिरचेहे ॥ जबभेदवासनाहोतीहे ॥ तबअसतरूप
जगततानाप्रकारहोइभासताहे ॥ जेसेअसम्यदृश्टकोंरिदिवेइमाभासतेहे स
म्यकदर्शीकोंपकवेइमावतसर्वशांतरूपआत्माहीभासताहे ॥ भेदवासनाक
रिहरपदादिकअनेकपदार्थभासतेहेमेंदुर्बलहोंमोटाहों ॥ स्वावीहोंदुःखी
होपहजगतहेपहकालहे ॥ इत्यादिकअनेकभ्रमदेखताहे ॥ सोसंसारवासना
रूपहे ॥ जबमनशरीरकावासनाकोंत्यागकरिपरमार्थकीओरआवताहे ॥ त
बब्रह्मकोप्राप्तहोताहे ॥ हेमुनीश्वरसमुद्रतेंतरंगउठकरिऊर्धहोजाताहे
तोउहजाणेमेंतरंगहोंतोमूढहे ॥ पहीअज्ञानदृश्टहे ॥ जोऊर्धकोंजावेगा ॥
तोजाणेगा ॥ मेंऊर्धगयाहों ॥ नीचेजावेगा ॥ तबजाणेगा ॥ मेंपातालगया
हों ॥ पहकल्पनाअज्ञानहे ॥ वास्तवदृश्टपहहे ॥ जोआपअधहो ॥ अथवाऊ
र्धहोजलहीरूपजाणे ॥ तेसेजोपुरुषपरिछिन्नदेहादिकोंविषेअहंप्रतीतक
रताहे ॥ सोअनेकभ्रमदेखताहे ॥ सम्यकदर्शी सर्वआत्मरूपजाणताहे ॥ सर्व
वेआत्मारूपीसमुद्रकेतरंगहे ॥ अज्ञानकोंभिन्नअरुज्ञानकरिउहीरूपहेआत्म
रूपसमुद्रसमहे ॥ स्वच्छहे ॥ शुद्धस्वादरूपहे ॥ शीतलअविनाशीविस्मनरूप
हे ॥ अपणीमहिमाविषेस्थितहे ॥ अरुसर्वदाआनंदरूपहे ॥ जेसेजलविषे
कोऊस्थितहे ॥ तटरूपरचवेतकहेमेंदग्धहोताहों ॥ जेसेभ्रमकरिकेउसकों
जलततनाभासताहे ॥ तेसेजीवोकोंआभासरूपजगतदुःखदाईभासताहे अ
रुजेसेतटपदार्थहदलवर्तनजलविषेप्रतिबिंबितभासतेहे ॥ अरुउनकोंदेखक

विनातनभासे ॥ तेसेआभासरूपजगतकोंजीवनानारूपमानतेहे ॥ जेसेएक
समुद्रविषेअनेकतरंगभासतेहे ॥ तेसेआत्माविषेअनेकआकारजगतभास
ताहे ॥ वस्तुतेंद्वैतकछुनहीसर्वणाकरूपदृश्यसताहे ॥ तिसकरिविचित्रस्व
चंचलभीसताहे ॥ तोभीएकरूपहे ॥ अपणाआपविषेस्थितहे ॥ ब्रह्मविषेजग
तफुरताहे ॥ वहइतिसीविषेलयहोताहे ॥ जेसेसमुद्रविषेतरंगउपजकरि
तिसविषेलयहोतेहे ॥ अवरभेदकछुनही ॥ सर्वविषेपूर्णस्थितहे ॥ जेसे
जलतेंभिनतरंगनहीं ॥ तेसेईश्वरतेंभिनजगतनहीं जेसेपत्रफूलफल
टासबहूरूपहे ॥ तेसेसर्वजगतआत्मरूपहे ॥ सोआत्माअनेकशक्तिरू
पहे ॥ जेसेएकहीपुरुषअनेककर्मकाकर्ताहोतहे ॥ जेसाकर्मकर्ताहेते
सेसंज्ञाकोंपावताहे ॥ पाठकरणेतेंपाठककहीताहे ॥ पाककरणेतेंपाच
ककहीताहे ॥ जापकतापकआदिकअनेकनामोंकोंधारताहे ॥ तेसेएक
आत्माअनेकशक्तीकोंधारताहे ॥ जेसेएकधूपजिसआकारप्रतिपइतो
हे ॥ तेसाआकारतिसकाभासताहे ॥ जेसेएकमेघविषेअनेकरंगोंमें
युक्तइंद्रधनुषभासताहे ॥ तेसेएहअनेकभ्रमकोंपावताहे ॥ हेसाधसर्व
जगतअग्नितेंफुरयाहेजडभासताहे ॥ सोभीचेतनसत्तातेंफुरेहे ॥ जेसेऊर्णनाभ
जोहेवडोहा ॥ सोअपणीतंतुकोंमुखतेंनिकासकरिआपहीग्रासलेताहे स
चेतनअबलाहोहे ॥ सोजडरूपतनउत्पतिहोतीहे ॥ तेसेचेतनजीवतेंसबप्रजउ
ताउपजतीहे ॥ वहइतिसीविषेनिवर्तहोजातीहे ॥ तातेंअपणीइच्छाकरिपह
पुरुषबंधायमानहोताहे ॥ अरुअपणीइच्छाकरिहीमुक्तहोताहे ॥ जोबहि
र्मुखदेहादिक ॥ अभिमानमात्रमिलताहे ॥ तोआपकोंबंधायमानकर्ताहे ॥
जेसेशुगराइण ॥ अपणीरचेहुएविषेबंधायमानहोतीहे ॥ अरुजोपुरुषार्थकरि
केअंतरमुखहोताहे ॥ तबमुक्तकोंपावताहे ॥ जेसेअपणीहस्तीकेबलकरि
काऊबलीबंधनकोंतोडकरिनिकसजाताहे ॥ हेसाधईश्वरकीविचित्ररूप
शक्तिहेजेसीशक्तिफुरतीहे ॥ तेसारूपकोंदिखावतीहे ॥ जेसेऊहीइआकाश
विषेउपजतीहे तिसीकोंअच्छादलेतीहे ॥ तेसेआत्माविषेजोशक्तिउपजे
तीहे सोईइच्छाआवरणकरिलेतीहे ॥ तनमयरूपहोजाताहे ॥ अरुवास्तवतेंईश्वर
कोंबंधनहोणासोबंधननहीं ॥ मोक्षहोवणतेंमोक्षनहीं ॥ बंधअरुमोक्षदोनोंश
ब्भ्रांतमात्रहे ॥ मेंजाणतानहीं ॥ जोबंधअरुमोक्षलोकविषेकहांतेंआएहे ॥ अ
लोकोंनबंधहे ॥ नमोक्षहे ॥ अमेसतरूपकोंअसतरूपलेअसयाहे ॥ जोकहि
ताहेमेंदुःखीहों ॥ सुखीहों ॥ दुर्बलहों ॥ मोटाहों ॥ इत्यादिकभ्रमकोंदेखता
हे ॥ पहमायामहाआश्चर्यरूपहे ॥ जिसनेजगतकोंमोहितकीयाहे ॥ हेमुनी
श्वरजबचितसंवितकलनारूपहोतीहे ॥ अर्थयदिजोदृश्यमात्रमिलीफु
रणारूपहोतीहे ॥ तबइगराइणावत ॥ आपहीआपकोंबंधनकरतीहे ॥ अरुज
बहृदयकेफुरणेतेंरहितअंतरमुखहोतीहे ॥ तबशुद्धआनंदरूपभासणेलाग
तीहे ॥ बंधअरुमुक्तदोनोंमनकीयाशक्तिहे ॥ जेसेजेसेमनफुरताहे ॥ ते
सेतेसारूपहोइभासताहे ॥ सोअनेकशक्तीआत्मासायअनन्यरूपहे ॥ सर्वआत्मा
तेंउपजतेहे ॥ अरुआत्माहीविषेस्थितहे ॥ बहुरउसीविषेलयहोतहे ॥ उसीवि
षेभिनहोइकरिभासतेहे ॥ जेसेसमुद्रविषेतरंगउपजतहे ॥ तिसीकेआश्रयरहि
करितिसीविषेलयहोजातेहे ॥ जेसेवृक्षतेंकिरणाउदेहोइकरिभिन्नभासत

है॥ तिसीकरिस्थितहोइकरितिसीमोलयहोतेहैं॥ तैसेपरमात्मारूपमहासमु
द्र है॥ चेतन्यतारूपतिसविषेजलहै॥ तिसकेअनेकतरंगउपजतेहैं॥ तिसकेअ
नेकतरंगउपजतेहैं॥ तिसकेआश्रयस्थितहोइकरितिसीविषेलयहोजातेहैं॥
कोऊतरंगवड़ाभयाहै॥ कोऊतरंगविष्णुरूपकोऊरुद्ररूपहोइकरिप्रका
शतेहैं॥ जिसतेंउपजतेहैं॥ तिसीसभावविषेस्थितहोतेहैं॥ कोऊइंद्रकोऊ
सूर्यकोऊअग्निरूपहै॥ अवरकोअवरहननकरतेहैं॥ चपलरूपहैं॥ कोऊम
नुष्यकोऊदेवता॥ कोऊगंधर्व॥ विद्याधरयक्षकिंनरादिकरूपहोइकरिउपज
तेहैं॥ वहुरिलयहोजातेहैं॥ कोऊलहिरस्थितहोइकरिचिरकालपर्यंतरह
तीहै॥ जैसेब्रह्मादिकहैं॥ कोऊउपजकरिकछुककालरहिकरिविध्वंसहोजा
तेहैं॥ सोदेवतामनुष्यादिकहैं॥ कोऊकृमकीटपतंगसर्पादिकफुरतेहैं॥ चि
रकालभीरहितेहैं॥ अल्पकालविषेभीनष्टहोजातेहैं॥ आत्मरूपसमुद्रके
तुरतुरतरंगपरेफुरतेहैं॥ वहुरितिसीविषेलयहोजातेहैं॥ कोऊउपजकरि
ब्रह्मादिकअप्रमादिरहितेहैं॥ कोऊप्रमादीहोतीहैं॥ तुच्छशरीरीरूपहैं॥ परम
मात्मस्वरूपआरंभहै॥ अरुहटेइहोइकरिभासतीहै॥ कोऊकैसेकोऊकैसेरूपकरि
स्थितहैं॥ सरूपकेप्रमादिकोंदीनताकोप्राप्तभयेहैं॥ ऐसेमानतेहैं जोमैं
कृपणहोइ दुःखीहौं॥ इत्यादिकभ्रमकोमरनाकरिकेपड़ेदेखतेहैं॥ सोसर्वआ
त्मसमुद्रकेतरंगपरेफुरतेहैं कोऊजंगमरूपकोऊस्थावररूपमनुष्यदेवता
दैत्यतिर्यकपशुपक्षीसर्वआत्मसमुद्रकीयोलहिरीहैं॥ उपजउपजकरिवहुरि
लयहोजातेहैं॥ इतिश्रीस्थितप्रकरणेसंसारप्रवृत्तदर्शनंनामसर्ग ३
कालोनाव॥ हेमुनीश्वरदेवतादैत्यमनुष्यादिकजोआकारहैं॥ सोब्रह्मस
त्यअभिन्नरूपहैंपरीसत्यहै॥ जवमिथ्याविकल्पोंनाशजीवकलंकता
होतीहै॥ तवजाणतीहै मैंब्रह्मनहीं॥ इसनिश्चयकोंपाइकरिमोहतहोताहै
मोहतेहआअग्रथःकोंचलाजाताहै॥ यद्यपिब्रह्मसेतत्सायअभिनरूपहैं॥ तिसी
विषेस्थितहैं॥ तोभीभावीकेवशितैआपकोंभिनजाणकरिमोहकोंप्राप्त
होताहै॥ शुद्धब्रह्मविषेसंवितकाउल्लेखहोताहै॥ सोकलंकतनहूआकर्म
कावीजहोताहै॥ तिसतेआगेंविस्तारहोताहै॥ जैसेजलजैसेजैसेवीजसा
थमिलताहै॥ तैसेतैसेरसकोंप्राप्तहोताहै॥ तैसेसंवितकाफुरणाजैसे
जैसेकर्मसाथमिलताहै॥ तैसीतैसीगतकोंप्राप्तहोताहै॥ संकल्पकोवि
कलेकतहूयाअनेकदुःखोंकोंपावताहै॥ परप्रमादिरूपकर्मकैसाहै
कर्मरूपकतेजूपकावीजहै॥ तिसकोंमष्टीभरभरवोवताहै॥ सोअ
णकदुःखकाकारणहोताहै॥ परजगतआत्मरूपसमुद्रकीतरंगाहै॥
विस्तारकरिकेफुरतीहै॥ कोऊहस्तीहै॥ कोऊरुद्रकतीहै॥ कोऊऊर्ध्व
कोंजातीहै॥ कोऊअधःकोंजातीहै॥ फुरफुरकरिवहुरिलयहोजातेहैं
ब्रह्मादिकतिणपर्यंतजसर्वोंकायहीधर्महै॥ जैसेपवनकाअस्पंदरूप
मेंहै॥ कोऊलहिरअतिनिर्मलहजणायाहै॥ सोब्रह्माविष्णुरुद्रादिकहैं॥
कोऊएककछुकमोहसेयुक्तहैं॥ जैसेसर्पमनुषदेवताहैं॥ कोऊएकअत्यंत
मोहविषेस्थितहैं॥ जैसेवृक्षतृणादिकहैं॥ कोऊएकअज्ञानकरिकैमृतहैं॥
सोकर्मकीदौरकर्योनेकोंप्राप्तहुयेहैं॥ कोऊहरतेहरचलेगयेहैं॥ जैसेजल
केप्रवाहतिणवलेजातेहैं॥ यहअप्राप्तभ्रमकोहै॥ सर्पमनुषदेवतादिक

कोऊएकभ्रमकावानभीहोतेहैं॥ कोऊएकतनटकेनिकटदेवकरिवहुरवहिजातेहैं
अर्थयहिजोसतशास्त्रअरुसतसंगकोंपाइकरिभीवहुरिमायाकेव्यवहारसोंव
हिजातेहैं॥ यमरूपजोइहाहै॥ सोतिनकोंपड़ाकाटताहै॥ कोऊएकअनंतगतश
स्वसमुद्रकोंजाणकरिस्थितरूपहै॥ तिसकोंतरंगरूपहै॥ एकअलपमोहकोंप्राप्तहो
इकरिब्रह्मसमुद्रविषेलयभयेहैं॥ कोऊएककोटजन्मोंकरिविश्रामहोतेहैं॥ कोऊ
अधःतेअधःतेअधःकोंचलेजातेहैं॥ वहुरिऊर्ध्वकोंजातेहैं॥ कोऊऊर्ध्वतेअधः
कोंजातेहैं॥ प्रमादिदोषकरिअनेकदुःखयोनकोंपड़ेभोगतेहैं॥ जवआत्मज्ञा
नहोताहै॥ तवअपदातेछूटकरिविश्रामवानकोहोतेहैं॥ इतिश्रीस्थितप्रकर
णेभागीवोपाख्यानेउत्पत्तिविस्तारवर्णनंनामसर्गः॥ कालोनावच॥ हेसाधु
हजेताकछुभूतजातविस्तारहै॥ सोसर्वआत्मरूपसमुद्रकेतरंगहैं॥ एकहो
अनेककोविचित्रविस्तारकोंप्राप्तभयाहै॥ जैसेवसंतऋतुविषेएकहीरसअनेकप्र
कारकेफूलफलरूपकोंधारताहै॥ तैसेपरजीवहै॥ तिनजीवोंविषेजिन्होंनेमना
जीतकरिसर्वात्माब्रह्मकादर्शनकीयाहै॥ तेजीवनमुक्तरूपहैं॥ अवरमनुषदेव
तानागगंधर्वकिंनरादिकसर्वपड़ेभ्रमतेहैं॥ इनतेभीइतरकाष्ठकृम्यादिकमूढ़
अवस्थास्थावरभावकोंप्राप्तभयेहैं॥ तिनकीकथावार्ताकहिणीहै॥ त्रिप्रकारके
जीवहैंलोकविषे॥ एकअज्ञानीमहामूढ़हैं॥ एकजगत्यासीहैं॥ एकज्ञानवानहैं॥ जोमू
ढ़हैं॥ तिनकोंतोशास्त्रकेश्रवणअरुविचारविषेकछुरुचिहीनहीं॥ अरुजोजगत्यासी
हैंतिनकेनिमित्तज्ञानवानोंनेसतशास्त्ररचेहैं॥ जिसजिसमार्गकरिउदरप्रवृत्तिआ
त्मारूपहै॥ तिसतिसप्रकारकेतिनशास्त्ररचेहैं॥ तिसमार्गकरिअवरजीवभीमोक्ष
भागीहोतेहैं॥ हेमुनीश्वरमनघासनेजोज्ञानवानोंकाविवेकरूपहै॥ सोजवनिहपा
पयुरुषात्मनकोंविचारणेलागताहै॥ तवउसकोंनिर्मलवोधउपजताहै॥ तिसका
त्रिमारहितवतेहोताहै॥ जोनिर्मलवुद्धिहोतीहै॥ तवमनतृष्णासेंरोकेअभ्यासकरिविमो
हनष्टहोजाताहै॥ जैसेसूर्यकेप्रकाशकरितिमरनष्टहोजाताहै॥ अरुजोमदअज्ञा
नीहैं॥ सोआत्माकेप्रमादिकरिविषयोंकीविस्ताकरिमोहकोंप्राप्तहोतेहैं॥ जैसेग्र
पोरोगअहोवे॥ अरुकुपरनेकहीइभीहोवे॥ तवलगमनेनमहोताहै॥ तैसेमूढ़मोह
तैसाहकोंप्राप्तहोतेहैं॥ अपणोंसंकल्पकरिआपहीदुःखीहोतेहैं॥ जैसेवालकअ
पणीपरछाईविषेवेतालकल्पिकरिआपहीदुःखीहोताहै॥ तातेजेतेकछुभ्रमजान
है॥ तिनसर्वोंकोंमलदुःखकाकारणमनरूपीदेहहैजैसेउरफुरताहै॥ तैसेगत
पावताहै॥ मांसमयपहीशरीरकाकीयाकछुसफलनहीहोता॥ सोसबअस्थ्यादि
ककोमिलताहैआत्मज्ञानतोपृथिवीभूतकप्राप्तहै॥ सोमनकेविकल्पकरिकेरचाहै॥ प
रमार्थतेकछुनहीं॥ संकल्पकीदृढ़तातेपृथिवीभूतकभासणेलागाहै॥ स्वप्नवत॥ मन
रूपशरीरकेविजोतेरपुत्रकीयाहै॥ तिसीगतकोंशीघ्रहीप्राप्तभयाहै॥ इसविधिहमकों
कछुअपराधनहीं॥ हेमुनीश्वरअपणीवासनाकेअनुसारजैसाजैसाकर्मकोऊकर्ता
है॥ तैसेतैसेफलकोंप्राप्तहोताहै॥ मांसमयशरीरकोंकछुनहींहोता॥ जैसेजैसेतेरेपु
त्रकामनफुरतागयाहै॥ तीव्रभावनातेंसोतैसीगतपावताभयाहै॥ स्वर्गअरुनरककेसर्व
कोंभोगतभयाहै॥ अपणेमनकेमाहकोंसर्वदेखाहै॥ अवरवड़तेकहिणाकौनक्या
प्रयोजनहै॥ उठोअबतनहांवलीयेजहांउहब्राह्मणकापुत्रहोइकेतिलपकरणेलागाहै
गंगाजीकेतटपरतपकरताहै॥ तहांउसकोंदेखे॥ वाल्मीकोवाच॥ हेभारद्वाजजवइ
सप्रकारकालभगवानकहा॥ तवदोनोंजगतकीगतकोंहसतेहुएउठिखड़ेहूए॥
हस्तमायरूपत्वपकइकरिकहितभयेवड़ाआश्चर्यहै॥ ईश्वरकीनेतमहाआश्चर्यहै जी

वोंकों अतिभ्रमसों प्राप्तकर्ती है॥ जैसे उदयाचलपर्वततें सूर्य उदे होता है॥ तैसे दोनों चल्ले जै।
से आकाशमार्गविषे सूर्य अरु चंद्रमा चले॥ तैसे महातेज की निधि दोनों चले॥ प्रकाशरू
प उदार आत्मा हैं॥ इसप्रकार जब वसिष्ठजी रामजी प्रति कह्या॥ तब सूर्य अस्त भया।
सर्व सभा स्नान कों गये॥ रात्रि के क्षय हूए उदय हूए अरुणोदय आसन पर आनि स्थित भये
इति श्री स्थितिप्रकरणे भृगुसमाश्वासने नाम सर्गः॥ [illegible]॥ वसिष्ठ उवाच॥ हे
हे रामजी काल्ल अरु भृगुजी दोनों मंदराचलपर्वततें उतरते भये भ्रमविषे जहां पुत्र दे
दाथा॥ तहां चले॥ महा सुंदर स्थान वन वगीचे वावलीयां लतातें देवता विद्याधर
अपसरा की क्रीडा के स्थान लंघते भये॥ कल्पवृक्ष मंदारवृक्ष पारजात वडे वडे वृक्ष
फूलों करि सुंदर वायु साथ में उनतें फूलों की वर्षा होती है॥ ऐसे महादिव्य स्थान हैं॥
तिनकों लंघते आगे गये॥ धातों के स्थान लंघे॥ आगे मृग चरते फिरते देखे॥ हस्ती
देखे॥ आगे सिंहों के समूह देखे॥ वानर देखे॥ इसप्रकार अनेक वनजीवों कों देखते भ।
ये॥ वडे वडे सुंदर स्थान छूहारे॥ खजूर रवदामादिकों के वृक्ष हैं॥ सर्वकों लंघते लंघते
हो गये॥ जहां ब्राह्मण शरीर साथ उग्र तप करता है॥ गंगाजी के तट पर समाधिस्थित
तिसकों देखते भए॥ मनरूप जो मृग है॥ सो अचल होइ करि विश्राम कों प्राप्त भया
है॥ जैसे चिरकाल का थका चिरपर्यंत विश्राम पावे॥ तैसे विश्राम पाया है॥ अनेक
जन्मों की चितवना विषे भटकता भटकता॥ अब तप विषे लागा है॥ अरु विश्रांतवान भया
है॥ जैसे चक्र भ्रमता रहि रहता है॥ तैसे ठहिर रह्या है॥ संसाररूप महासमुद्र है॥ तिस
के आवर्तसों निकस करि पद कों तिस्थित भया है॥ अरु इंद्रियां अरु मन की चिंता कों त्याग
करि निर्विकल्प समाधि विषे स्थित भया है॥ स्थावर की न्याई॥ अचल हुआ है॥ संसार
के दुःख आधि अरु व्याधि थे तिनतें रहित अरु संपूर्ण ही कल्पना जालतें मुक्त परम
शांत पद कों प्राप्त हुआ है॥ केसा पद है॥ अनंत अरु विस्तृत है॥ अरु राग द्वेषतें रहित हो
इ करि स्थित भया है॥ हेय अरु उपादेय जो विकार हैं॥ तिनतें रहित॥ अरु संकल्पतें र
हित शुद्ध बोधरूप उदार विषे समाधि स्थित तिसकों देखि करि काल कह्या॥ हे भृगु देखु जो।
समाधि विषे स्थित है॥ अब जगाईये॥ इसप्रकार वेगवान वडे शब्द करि कह्या काल भ।
गवान॥ तब तिसकी कल्पना फुरणे करि अरु बाह्य शब्द करि पुत्र जीजागो॥ जैसे मे
घके शब्द करि मोर जागो॥ अरु उनमीलन नेत्रों करि के काल अरु भृगु कों अपणे आ
गे देखत भया॥ एक अज्ञानरूप अर्थ पहिं जो काल अरु भृगु थे पछाणता न था॥ त
व देखो जो दोनों के समान आकार हैं॥ अरु वडे प्रकाशरूप हैं॥ जैसे सूर्य अरु चंद्रमा।
होवें॥ महा उज्जल अरु उदार आत्मा प्रबोधरूप रूप देखत भया॥ जैसे विष्णुजी अरु
सदाशिवजी होवें॥ तैसे देखकरि उठि खडा हूआ॥ अरु पीत शर्व कच्च में वेदना करी॥ अ
रु कह्या मेरे वडे भाग है॥ जो प्रभो के चर्ण इस स्थान विषे प्राप्त भये हैं॥ वहुत निम्रता करि
के आदर कीया॥ एक सिला पडी थी॥ तब तिनों उसपरि बैठ गये॥ जैसे सुमेर की पीठ ऊप
र ब्रह्मा विष्णु शिवजी बैठते हैं॥ तैसे सिला के सिंहासन पर बैठे॥ तब वसुदेव ब्राह्मण नाम
जो पुत्र है॥ तप के संयोगतें तिस का नाम शांत तप भया॥ तिस तपस्वी शांत अरु सिद्ध।
अरु सुंदर वचन काल अरु भृगु कों कहित भया॥ हे अभिमानमारा दर्शन करि के में पवित्र
भया हौं॥ तुम सूर्य अरु चंद्रमा एकठे मेरे आश्रम कों आये हो॥ जो शास्त्रों करि के अरु तप
करि कें अरु ज्ञानविद्यादिक करि कें भी मन का मोह निवर्त होणा कठिन हैं॥ सो तुमारे दर्श
न करि कें मेरे मन का मोह नष्ट भया है॥ हे साधो ऐसा सुख ईश्वर करि कें नही प्राप्त होता
अमृत की वर्षा करि भी ऐसा सुख नही प्राप्त होता॥ जैसा सुख महात्मा पुरुषों के दर्शनक
रि होता है॥ तुमारे दर्शन करि मेरा मोह नष्ट होगया है॥ अरु अध्यात्मक आदिक कंदिके

ताप नष्ट होगये हैं॥ तुम ज्ञान का सूर्य अरु चंद्रमा हो हे ऋषीश्वरो तुम हमारा स्था
न पवित्र कीया है॥ मैं धन्य आत्मा हूआ हौं॥ तुम कवण हो ऐसे प्रकाशरूप उदार
आत्मा सूर्य अरु चंद्रमा की न्याई मेरे आश्रम पर आये हो॥ इसप्रकार जन्मांतर के
पुत्र भृगुजी के ही तब भृगुजी कह्या हे साधो तूं आप कों स्मरण करु जो कवण है॥ अ
ज्ञानी तौ न हीं॥ तेरे बोध आत्मा है॥ तब इसप्रकार भृगुजी कह्या॥ तब उद्दन मील
त लोचन होकरि ध्यान विषे जुड गया॥ एक मुहूर्त विषे सर्व अपणा वृत्तांत देखलीया
देखकरि नेत्र खोले॥ अरु विस्मयवान होइ करि हसता भया॥ अरु कहा ईश्वर की ने
त विचित्र रूप है॥ इसके वशि मैं वडे भ्रम कों प्राप्त भया हौं॥ जगतरूप चक्र पर आरू
ढ हूआ अनेक जन्मों विषे भ्रमा हौं॥ तिन सर्वों कों स्मरण करि के आश्चर्यमान होता।
हौं॥ मैं अति दुःख भोगे हैं॥ अरु अनेक अवस्था देखीयां हैं॥ स्वर्ग विषे रहा हौं॥ मंदा
र कल्पवृक्षों के नीचे रहा हौं॥ सुमेर कैलाशादिक वनों ऊं जो विचरहा हौं॥ अनेक
स्थानों विषे ऐसा पदार्थ भोजन न कीया नही॥ जो मैं नही भोजन कीया॥ ऐसा को।
ऊ कार्य नही जो मैं नही कीया॥ ऐसा कोऊ इष्ट अनिष्ट स्वर्ग नरक पदार्थ नही॥
मैं नही देखा॥ अव जो कछु जाणने योग है सो मैं जाण्या है॥ जो कछु पावणे यो
ग था॥ सो पाया है॥ जो कछु देखणे योग था सो देखा है॥ अव मैं आत्मतत्व विषे
विश्रांतवान भया हौं॥ संकल्प भ्रम मेरा नष्ट होगया है॥ अव चलीये॥ जहां मे
द्राचल पर्वत पर मेरा शरीर पडा है॥ सूका हूआ॥ हे भगवन अव मुझ कों इच्छा
कछु नही॥ आवणा अरु जावणा है यह उपाय दृष्ट मुझ कों कछु नही रहा॥ तथा।
नियतकी रचना देखकरि कहिता हौं॥ जो वोधवान है॥ सो प्रकृत आचार विषे वि
चरते हैं॥ आगे जैसे इच्छा होवे॥ तैसे करीये॥ वोधवान उसी आचार कों अंगीकार क
रते हैं॥ तातें अपणे प्रकृत आचार कों ग्रहण करि के व्यवहार विषे विचरें॥ इ
ति श्री स्थितिप्रकरणे भार्गवजन्मांतरवर्णने नाम सर्गः॥ वसिष्ठ उवाच॥ हे
रामजी इसप्रकार विचार करि के तीनों आकाशमार्ग कों उडे॥ शीघ्र ही मेघमंडल
कों लंघकरि सिद्धों के मार्गों में मंद्राचलपर्वत सुवर्ण की कंदरा ऊपर आनि स्थि
त भये तब एवं जो शुक्र का शरीर था॥ तिसकों देखते भये॥ ब्राह्मण तपस्वी कहा
हे तात यह मेरा पूर्व शरीर देखो॥ जो तुम करि बहुत पावन कीया था॥ कपूर चंद
न सुगंध करि अरु दिव्य पुष्पों पदार्थों करि शोभन कीया था॥ उर्वशी की सिना
पर से नकती था॥ सो अव धूप करि वेष्टित पडा है॥ अरु सूक गया है॥ जो
शरीर स्वरूप स्त्रीयां करि सेवता था देखि देखि करि मोहत होती यां थीयां॥ अरु पु
ष्पन माल कंद विशेष शोभन थी थी॥ मानों तारेयां की पंकत है॥ सो शरीर पृथ
वी पर गिड पडा है॥ नंदनवन विषे इस अनेक भोग भोगे हैं॥ अरु इस कों मैं आ
त्मरूप जाण करि पुष्ट करता था॥ सो अव मुझ कों भयानक भासता है॥ जो श।
रीर देवांगनों संग मिलता था॥ अरु तिन करि रागवान होता था॥ सो तिनकी
चिंतातें रहित सूक गया है॥ जिन जिन विलासों कों चाहता था॥ तिन तिन भावों
कों प्राप्त होता था॥ अव तो चिंतातें रहित स्वस्थ हो रहा है॥ महाभागी हूआ पृथ्वकि
सूक गया है॥ महा विकराल भयानक भासता है॥ जिसकों मैं आत्मरूप जाणता था
तिस विषे प्रेम करि कें विलास करता था॥ जिस शरीर विषे कमल पुष्प पडने थे॥
अरु जाणगण प्रकाशते थे॥ तिस तन विषे पपीलका परीपा फिरते हैं॥ जो वप
द्रवत सुवर्णवत सुंदर प्रकाशरूप था॥ जिसकों देखि करि देव अंगना मोहत

हो होते पाथीयां ॥ सो भूपक रिसखके भयानक भासता है ॥ सर्व गुण इस कों त्याग
गये हैं ॥ मानो विरक्त आत्मा भया है ॥ पाहृ सपर्यारूप रमणं थइनतें मुक्त निर्विकल्प
समाधि स्थित भया है ॥ हे शरीर तें अहं छृतनकों प्राप्त भया है ॥ अवने रे विषे लोभ को
कुनली ॥ चित्तरूप वैताल तैने विषे शांत होगया है ॥ प्रावणे ज्ञाणों तें रहित विश्रान
वान भया है ॥ सर्व कल्पना तेरी नष्ट भयी है ॥ संकल्पजाल मिटगये हैं ॥ काठे न सो
या है ॥ चित्तरूप मर्कट तें रहित शरीर रूपी वृक्ष हट गया है ॥ काटलो तें रहित भया
है ॥ सर्व अनर्थों तें रहित सर्वत अचल भया है ॥ यह देह अब सर्व दुःखों तें रहित परमा
नंद विषे स्थित भया है ॥ हे साधो सर्व अनर्थों का कारण चित्त है ॥ जवलग चित्त शांत न
हीं होता ॥ तवलग जीव को आनंद नहीं प्राप्त होता ॥ जव अमनस्क पद कों प्राप्त
होता है ॥ तव महा आधि व्याधि जगत के दुःखों कों तर करि विगतज्वर परमा नं
द कों प्राप्त होता है ॥ रामोवाच ॥ हे भगवन सर्व धर्मों के वेत्ता भृगु का जो पुत्र था
तिसने तो अनेक शरीर धारे थे ॥ अरु भोग भोगे थे बहुत बडे ॥ अरु भृगु तें
जो उत्पत्ति भया था हे ह ॥ तिसकों बहुत परदेवना करी ॥ अरु अवरों कों समाप्त न
कीया सो कौन कारण है ॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी शुक्र की जो संवेदन कल्पना थी
॥ सो जीवभाव कों प्राप्त हुई थी ॥ सो कर्म आत्मक होइ करि उपजी थी भृगु तें ॥
सो सुणा ॥ आदि जो प्रथम परमात्मतत्त्व तैतें चित्त कला फुरी है ॥ सो भृगु का श
कों प्राप्त हुई है ॥ उही वात कला विषे स्थित होइ करि प्राण अपान के प्रवाह सा
गे करि कै भृगु के रिदे विषे प्रवेश कर्त भई ॥ वीर्य के स्थान कों प्राप्त होइ करि गा
र्भ मार्ग सो उत्पत्ति भयी ॥ क्रम करि कै वडी हुई ॥ विद्या अरु गुण संपन्न शुक्र श
रीर होत भया ॥ तिसकों जो चिरकाल सेवन कीया था ॥ इस कारण तें उसी कों
परदेवना करी ॥ यद्यपि वीतराग अरु निरिच्छित था ॥ तो भी चिरकाल का जो
अभ्यास कीया था ॥ सो अंकुर आया ॥ हे रामजी ज्ञानी होवे ॥ अथवा अज्ञानी
होवे अथवा अज्ञानी होवे व्यवहार दोनो का तुल्य है ॥ परु शक अरु अशक का भे
द है ॥ ज्ञानवान अशक्त निर्लेप रहिता है ॥ अरु अज्ञानी क्रिया विषे बंधायमान
होता है जो ज्ञानी है ॥ सो मोक्षरूप है ॥ जो अज्ञानी है ॥ सो दरिद्री है ॥ जैसे जल वि
षे जाल में पक्षी फसता है ॥ तैसे अज्ञानी लोकक व्यवहार विषे बंधायमान होता
है ॥ व्यवहार जैसे ज्ञानी कर्ता है ॥ तैसे अज्ञानी कर्ता है ॥ वासनातें रहित है ॥ सो नि
र्बंध है ॥ वासनासंयुक्त बंध है ॥ वासना मात्र भेद है ॥ तवलग शरीर है ॥ तवलग सु
ख भी होता है ॥ अरु दुःख भी होता है ॥ परु ज्ञानवान दोनो विषे शांत बुद्धि रहिता
है ॥ अरु अज्ञानी हर्ष शोक करि तपायमान होता है ॥ जैसे सूर्य का प्रतिबिंब जल
विषे पडता है ॥ सो जल के हलणे करि हलता भासता है ॥ पन स्वरूप तें स्थिर ही
है ॥ तैसे ज्ञानी विषे सुख दुःख करि कै सुख दुःख भी भासता है ॥ परंतु अंतर सुख का
सुहे ॥ जैसे सूर्य का प्रतिबिंब जल के हलणे करि हलता भासता है ॥ स्वरूप तें ज्यु का त्यु है
तैसे ज्ञानवान इंद्रियों करि सुख दुःख भी भासता है ॥ स्वरूप तें ज्यु का त्यु है ॥ अरु अ
ज्ञानी वाह्य तें क्रिया का त्याग कर्ता है ॥ तो भी बंधन मों रहिता है ॥ अरु ज्ञानवान
क्रिया कर्ता है तो भी मोक्षरूप है ॥ बुद्धि इंद्रियां अंतःकरण करि जो अनात्म धर्म वि
षे बंधायमान है ॥ अरु वाह्य कर्म इंद्रियों करि मुक्त है ॥ तो भी बंधन मों है ॥ अरु बु
द्धि इंद्रियों करि मुक्त है ॥ कर्म इंद्रियों करि बंधायमान भासता है ॥ तो भी मुक्त
रूप है ॥ जो सर्व क्रिया का त्याग वैठा है ॥ अरु अंतर जगत की सत्ता है ॥ भावे कछुक

देह बंधन मों है ॥ अरु वाह्य भावें कै साथ व्यवहार करे ॥ परंतु अंतर तें अहंता नहीं तो
शुद्ध मुक्त रूप है ॥ तिसकों कर्म बंधन नहीं कर्ता ॥ तातें हे रामजी सर्व कार्यों कों कर्ता
अंतर तें शून्य रहो ॥ सर्व इषणा तें रहित आत्मपद विषे स्थित होवे ॥ आपणा प्रकृत
व्यवहार कों करो ॥ यह संसार रूप समुद्र है तिस विषे आधि व्याधि रूप दोष है ॥ अहं
अरु मम कूप है ॥ तिन विषे गिरया है सो अधः तें अधः कों जाता है ॥ तातें संसार
के भाव विषे मत स्थित होवु ॥ शुद्ध बोध आत्मस्व भाव विषे स्थित होवो ॥ तें ज्ञा
स्य है ॥ शुद्ध है ॥ सर्वात्मा है ॥ निर्विकार निराकार आत्मपद विषे जो स्थित है ॥ तिन
कों नमस्कार है ॥ इति श्री स्थितप्रकरणे भार्गवपरदेशवर्णनं नाम सर्गः ॥ वसिष्ठोवाच
हे रामजी जव इस प्रकार शुक्र शरीर कों वर्णन कीया ॥ अरु विकराल रूप देव
करि उस विषे त्याग बुद्धि करी ॥ तव काल भगवान शुक्र की वचनों कों न मान करि
गंभीर वाणी सों वोलत भया ॥ कालोवाच ॥ हे भृगु तैं इस तपरूप शरीर कों
त्याग अरु भृगु का जो पुत्र शरीर है भार्गव तिसकों अंगीकार करु ॥ जैसे राजा दे
शादेशांतर कों भ्रमता ॥ अपणे नगर विषे प्रवेश कर्ता है ॥ तैसे तु इस शरीर वि
षे प्रवेश करु ॥ काहे तें जो भार्गव तन तप साध्य असुरों का गुरु होवणा है ॥ यह आ
दि परमात्मा की नेत है ॥ महाकल्प पर्यंत तन आवेला है ॥ तव महाकल्प का अं
त होवेगा ॥ तव भार्गव तन नष्ट होजावेगा ॥ अरु तुझ कों देह का ग्रहण बहुरि
न होवेगा ॥ जैसे रस के सूके तें पुष्प गिर पडता है ॥ तैसे प्रारवध वेग के पूर्ण हू
ए तेरा शरीर गिर पडेगा ॥ अरु शरीर के होते ॥ जीवन मुक्त पद कों प्राप्त हू आप
कृत आचार विषे विचरेगा ॥ तातें तुम शुक्र शरीर साथ महादैत्यों के गुरु होइ करि विचित्र
न होवो ॥ यह ईश्वर की नेत है ॥ तातें इस शरीर कों त्याग करि भार्गव शरीर विषे प्रवेश
करो ॥ अव हम जाते हैं ॥ तुम दोनों का कल्याण होवे ॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी काल भग
वान ऐसे कहि करि दोनों अदर्श हुवे ॥ अरु अंतरध्यान होगये ॥ तव तपस्वी ने तना
है ॥ भवतव्य तिसकों विचारणे लागा ॥ जो क्या होवणा है ॥ विचार करि देखत भये
ता जैसे काल भगवान कहा है ॥ तैसे ही होणा है ॥ ऐसे विचार करि मृतक रूप
नो देख्या ॥ तिस विषे प्रवेश कीया ॥ अरु तपस्वी ब्राह्मण का तन त्याग दीया ॥ जैसे
वसंत रुत विषे वल्ली सों रस प्रवेश कर्ता है ॥ तैसे भार्गव तन विषे प्रवेश कीया ॥ जैसे स
र्प कंचुक कों त्यागता है ॥ तैसे तपस्वी शरीर का त्याग कीया ॥ तव उस शरीर की शोभा जा
ती रही ॥ कंपकंप करि पृथ्वी पर गिर पडा ॥ जैसे सत्व के काटने वल्ली गिर पडती
है ॥ तैसे उस देह के गिरे तें शुक्र देह जीव कला सें युक्त होआई ॥ तव भृगु जीव कला सें
युक्त होआई ॥ तव भृगु जी वकला संयुक्त आपतें उत्पत्ति भये शरीर समराहु शांत सेकों
देखि करि उठि खडा भये ॥ हस्त विषे जल का कमंडल लीया ॥ मंत्र विद्या जो है पुष्टक
शक्ति ॥ तिसकों पाइ करि पुत्र शरीर ऊपर जल सिंचया ॥ तिस सिंचणे करि सर्व नाडी श
रीर कीयां पुष्ट हो आईयां ॥ जैसे वर्षा काल विषे मेघ पूर्ण होते हैं ॥ जैसे वसंत रित वि
षे कमलनी प्रफुल्लत होते हैं ॥ तैसे शरीर कीयां नाडी पुष्ट होगया ॥ प्राण पवन आ
वणे जाणे लागा ॥ तव पिता के सन्मुख होइ करि नमस्कार कर्त भया ॥ जैसे मेघ ज
ल करि फुल्लित होइ करि पर्वत के आगे निचै ॥ तैसे पिता सन्मुख नमस्कार करि कै नित्य
त भया ॥ अरु स्नेह करि नेत्र सजल भये ॥ तिनतें जल श्रवणे लागा ॥ सुपुत्र कों देख क
रि कंठ लगाया ॥ जो यह मेरा पुत्र है ऐसे स्नेह करि संपूर्ण भृगुजी होगये ॥ हे रामजी जव
लग देह है ॥ तवलग देह के धर्म भी फुर आवते है ॥ इस प्रकार ज्ञानीयों कों भी मम

स्थि.प्र.
१०

तपकर आपा तेहू ॥ तब इनतेरों की आवार्ता कहियती है ॥ पिता अरु ब्रह्मा तेनो वैराग
ये ॥ एक महूर्त पर्यंत कथा वार्ता चर्चा करते रहे ॥ बहुरि उठ करि तपस्वी शरीर कों
जलाइ दीया ॥ जो को ऊर्ध्व बुद्धिवान हैं ॥ सो धारणा आचार विषे स्थित होते हैं ॥ तिस के
अनंतर दोनों मंदराचल पर्वत विषे स्थित भये ॥ तप करि के प्रकाशते हैं ॥ वपु तिन
के अरु स्याम कांत हैं ॥ सो सूर्य अरु चंद्रमा वत प्रकाशमान जीवन्मुक्त उदार आ
त्मा होइ करि विहार हित भये ॥ समय करि के शुक्रजी त्रैलोक के गुरुरूप ॥ अरु भृगु जी
समाधि विषे स्थित होवें ॥ ताते जो सर्व विकारों ते रहित जीवन्मुक्त पुरुष जगत
गुरु हैं ॥ सो सर्व को पूजन योग हैं ॥ ॥ इति श्री स्थिति प्रकरणे शुक्रप्रथम जीव
न नाम सर्गः ॥ १ ॥ रामोवाच ॥ हे भगवन जैसे भृगु के पुत्र को यह प्रतिभा फुरती
गई है ॥ अरु सफल भयी प्रत्यक्ष होइ जो सिद्ध होगयी ॥ तैसे अवर जीवों को सिद्ध क्यों
नहीं होती ॥ वशिष्ठ उवाच ॥ हे रामजी शुक्र का प्रथम जो चेतन तिसते फुरणा हुआ
है ॥ सो भार्गव जन्म का हुआ है ॥ अवर जन्म करि कलंकित न हो भया ॥ सर्व ईष
णा ते रहित शुद्ध चेतन था ॥ निर्मल रिदे वाले को जैसे जैसे फुरणा होता है ॥ तैसा
तैसा सिद्ध होजाता है शीघ्र ही ॥ अरु मलीन रिदे वाले का संकल्प सिद्ध नहीं होता ॥ जैसे
भृगु पुत्र को मनोराज भ्रम हूआ है ॥ अरु भ्रमता फिरया है ॥ तैसे सर्व जीव स्वरूप के
प्रमाद करि भ्रमते हैं ॥ जब लग स्वरूप का साक्षात्कार नहीं ॥ तब लग शांत नहीं
प्राप्त होती ॥ यह मैं भृगु सुत का दृष्टांत तुझ को सुणाया है ॥ मनोराज की दृढता के
निमित्त जैसे बीज ते अंकुर फूल फल अनेक भाव को प्राप्त होता है ॥ तैसे सर्व भूतजा
त को मन का भ्रमणा अनेक भ्रम को प्राप्त करता है ॥ जेता कछु जगत तत्व को भासता
है ॥ सो सर्व मन के फुरणे का रूप है ॥ मिथ्या भ्रम करि के नानात्व भासता है ॥ अवस्तु
कुछ आन नहीं एक एक प्रति ऐसा भ्रम है ॥ सर्व संकल्प मात्र है ॥ न कछु उदय होता है ॥ न अ
स्त होता है ॥ कदाचित भी किसी को सर्व मिथ्या रूप माया मात्र है ॥ जैसे स्वप्न पुरुष संक
ल्पनगर भासता है ॥ अरु परस्पर व्यवहार दृष्ट आवते हैं ॥ अरु हुआ कछु नहीं ॥ तैसे ए
ह जाग्रत भ्रम भी अज्ञान करि भासता है ॥ भूत पिशाचादिक जेते कछु जीव हैं ॥ तिन को
भी संकल्प मात्र शरीर है ॥ जैसे उन को सुख दुःख का भोग होता है ॥ तैसे तुम हम को
होता है ॥ जैसे हमारा यह जगत है ॥ तैसे अनंत जगत पड़े वसते हैं ॥ परस्पर अ
ज्ञात हैं ॥ एक को द्वितीय नहीं जाणता ॥ जैसे एक स्थान विषे अनेक पुरुष शयन क
रते हैं तिन को मनोराज स्वप्न भ्रम परस्पर अज्ञात रूप है ॥ तैसे यह जगत है ॥ वस्तु ते क
छु आन नहीं केवल ब्रह्मसत्ता अपणे आप विषे स्थित है ॥ जो इस जगत को सत जाण
ता है ॥ तिस का पुरुषार्थ न हूं होता है ॥ यह जाग्रत जगत भी दीर्घ स्वप्न है ॥ चित्त रूप
हस्ती को बंधन है ॥ चित्त सत्ता करि के जगत भ्रम भासता है ॥ अरु जगत सत्ता कर
के चित्त है ॥ एक के नाश हुए ते दोनों का नाश होता है ॥ जो जगत का सद्भाव नष्ट हो
ता है ॥ तब चित्त भी नहीं रहिता ॥ अरु जो चित्त नष्ट होता है ॥ तो जगत नहीं रहिता
इस प्रकार एक के नष्ट हुए ते उभय नष्ट होते हैं ॥ उभय का नाश आत्म विचार करि होता है
अरु विचार तब होइ आता है ॥ जब रिदे निर्मल होता है ॥ जैसे उज्जल वस्त्र ऊपर केसर का
रंग शीघ्र चढ़ जाता है ॥ मलीन ऊपर नहीं चढ़ता ॥ सो निर्मल चित्त तब होता है ॥ जब शा
स्त्र के अनुसार क्रिया करता है ॥ हे रामजी एक एक जीव के रिदे विषे अपणी अपणी सृ
ष्टि है ॥ मलीनता करि एक को द्वितीय नहीं जाणता ॥ जब चित्त शुद्ध होता है ॥ तब अवर की
सृष्टि को भी जाणता है ॥ जैसे शुद्ध धातु परस्पर मिल जाती है ॥ तब चिरपर्यंत इस को

दृढ अभ्यास इस का होता है ॥ तब सर्व कछु भासणे लाग जाता है ॥ काहे ते जो अधिष्ठा
ता सर्व का एक है ॥ तिस विषे स्थित हूए सर्व का ज्ञान होता है ॥ रामोवाच ॥ हे मुनिशार्दूल
शुक्र को प्रतिभामात्र आभास हूआ था ॥ तिस विषे ऐसा काल क्यों पाइया उस का देह
होइ करि कैसे भासया ॥ वशिष्ठ उवाच ॥ हे रामजी जो कछु फुरने है सोई जगत तैसा अप
णे अनुभव रूप भंडार विषे मन के फुरणे करि देखता है ॥ जैसे मोर के अंडे ते अनेक
रंग निकसते हैं ॥ तैसे इस को अपणे अंतर भ्रम भासता था ॥ जैसे बीज ते पत्र फल फु
ल टास निकसते हैं ॥ तैसे जीव को अपणे अपणे अनुभव विषे संसार खंड पड़े फुर
ते हैं ॥ तैसे जीव को अपणे अपणे अनुभव विषे संसार खड़े फुरते हैं ॥ देह स्वप्न दृष्टा
न प्रत्यक्ष है ॥ एक एक के स्वप्न विषे जैसे जगत होता है ॥ तैसे यह जगत है ॥ दीर्घ स्वप्न जा
ग्रत हो भासता है ॥ जैसे दृढ होता है ॥ तैसे भासणे लाग जाता है ॥ रामोवाच ॥ हे भगवन
सृष्टी कैसे हुइ परस्पर मिलते कैसे हैं ॥ अरु कैसे नहीं मिलते ॥ वशिष्ठ उवाच ॥ हे राम
जी जो मलीन चित्त है ॥ सो परस्पर नहीं मिलते ॥ अरु जो शुद्ध है सो मिलते हैं ॥ जैसे शु
द्ध धातु मिल जाती है ॥ सर्व स्वरूप आत्मा सो सर्व फुरे हैं ॥ सो तन्मय रूप है ॥ जिस को
तिस विषे दृढ अभ्यास होता है ॥ सो ज्ञान दृष्टि करि सर्व संग मिल जाता है ॥ जैसे जल
संग जल मिल जाता है ॥ तैसे उह सर्व संग मिल करि सर्व को जाणता है ॥ अवर
नहीं जाणता ॥ ॥ इति श्री स्थिति प्रकरणे मनोराज संमीलन नाम सर्गः ॥ वशि
ष्ठ उवाच ॥ हे रामजी जेते कछु संसार खंड हैं ॥ तिन सर्वों का बीज रूप आत्मा है ॥ सर्व
आत्मा ही का आभास है ॥ सो आभास के उदय होवणे अरु निवर्त होणे विषे आत्मसत्ता
समकी रहती है ॥ अपणे स्वभाव के त्याग ते रहित है ॥ अरु सर्व जीवों का अपणा आप
वास्तव रूप है ॥ अरु सत्य ब्रह्म बल अंकुर है जिस सत्ता ते जीव फुरते हैं ॥ तब स्वप
न वत जगत भ्रम देखते हैं ॥ जो जीव प्रति अपणी अपणी सृष्टि स्थित होती है ॥ जो शु
द्ध उज्जल है करि आत्मपद इणे होता है सो आत्मपद पावता है ॥ जिन पुरुषों को आत्मा
ब्रह्म साथ एकता भयी है ॥ तिन को सर्व अवर जीवों की सृष्टि भी भासती है ॥ अंतःकरण वि
षे सृष्टि भासती है ॥ सो तिन का संकल्प पूर्ण मिलता है ॥ तिस अंतःकरण जीव
कला के मिले ते परस्पर सृष्टि भास आवते ॥ उह कहिते है ॥ जीवों की अपणी अपणी
सृष्टि है ॥ सर्व का अपणा आप सन्मात्र सत्ता है ॥ तिसी विषे सर्व सृष्टि स्थित होत है ॥ जै
से कपूर का पर्वत होवे ॥ तिस के अणु अणु विषे सुगंध होती है ॥ अरु सर्व अणुओं की
सुगंधता को पवन विषे एकता होती है ॥ तैसे सर्व जीवों का अधिष्ठान आत्मसत्ता है ॥ जै
से सर्व नदीयों के जल का अधिष्ठान समुद्र है ॥ तैसे सर्व जीवों का अधिष्ठान परमात्मा
है ॥ सो सृष्टि कहूं परस्पर मिलत है ॥ कहूं भिन्न भिन्न स्थित हैं ॥ जहां तन्मात्र सत्ता सा
थ एकता है ॥ तहां चित्त की वृत्ति जिस साथ मिल्या चाहे ॥ तिस सृष्टि साथ मिलता है मली
न चित्तवाला नहीं मिल सकता ॥ पर एक एक जीव विषे सृष्टि परस्पर अंत
त रूप वसती यों है ॥ जहां जैसा फुरणा दृढ होता है तैसा ही जहां भासता है ॥ जहां मन
का फुरणा कोमल होता है ॥ सो सफल नहीं होता ॥ अरु जहां दृढ होता है ॥ सो भासणे
लाग जाता है ॥ अरु हे रामजी जब देह की भावना मिट जाती है ॥ अरु प्राण पवन के स्थित
होणे सो चित्त तत्सम भाव विषे स्थित होती है ॥ तब अवर के चित्त की चेष्टा भी इस को चि
त विषे फुर आवती है ॥ अरु जब लग चित्त मलीन होता है ॥ अरु देह भावना को त्या
गता नहीं ॥ तब लग किसी पदार्थ संग इस की एकता नहीं होती ॥ हे रामजी जिस का
प्राण पवन शुद्ध होता है ॥ तिस को जैसे अवर के चित्त का ज्ञान होइ आवता है ॥ तैसे अवर
सृष्टि विषे भी मिलने की शक्ति होइ आवती है ॥ अशुद्ध को नहीं होती ॥ अरु सर्व जीवों
को निश्चय स्थाणु अज्ञान स्वप्न सम भ्रम होत है ॥ जिस अवस्था ही आत्मा विषे जीव काल ब
ता है ॥ जैसे मृगतृष्णा की नदी के तरंग भ्रमते हैं ॥ किरणा विषे तिन का अभाव है ॥

तैसे आत्मा विषे अवस्था का अभाव है॥ अरु जीवों को आत्मा का प्रमाद है॥ तातें
त्रिअवस्था विषे परे भटकते हैं॥ जब चित कला तुरीया विषे स्थित होत है॥ तब जीव
न मुक्त होता है॥ आत्म सत्ता स्वभाव विषे स्थित रूप ते आत्मा साक्षात्कार कौं प्राप्त हो
ता है॥ अरु सर्व जीवों मायामय विरस भाव होता है॥ जब अज्ञानी सगुण सरूप आत्म स
त्ता ते जागता है॥ अर्थ यह है जो संसार कौं चितवता है॥ तब संसार को प्राप्त होता है॥
संसार विषे अवर संसार तिस विषे अवर इसी प्रकार प्रमादि करिके अनेक सृष्टों कों
देखता है॥ जैसे केले के थंभ में पत्रों का समूह निकसि आवता है॥ जैसे सृष्टि सों सृष्टि
कौं देखता है॥ अंत नहीं पावता अनेक भ्रम देखता है॥ जब उलटि करि अपने स्वभा
व विषे स्थित होता है॥ तब नाना स्वभाव मिटि जाता है॥ शांत रूप होता है॥ जैसे केले
का अंतर शीतल होता है॥ हे राम जी जगतों के समूह भासते हैं तो भी आत्मा विषे क
छु हैं नहीं आत्मा साक्षात्कार रूप है॥ जैसे केले के अंतर तें पत्रों ते अंतर कछु नहीं निक
सता॥ तैसे आत्मा तें अंतर कछु जगत नहीं जैसे बीज फल भाव कौं प्राप्त होता है॥ फलते
वृक्ष उ बीज होता है॥ तैसे ब्रह्म तें मन होता है॥ वृक्ष रूप बुद्धि करि विस्तृत होता है बीज का कारण उ
ही रस है॥ आत्मा विषे कारण कार्य भाव कछु बणता नहीं॥ अद्वैत अव्यक्त रूप है॥ सादि प
रमात्मा अकारण रूप है॥ सोई विचार तोयो ग है॥ अवर विचार साथ का प्रयोजन है॥ बी
ज अपणे भाव कौं त्यागता है॥ तब फल भाव कौं प्राप्त होता है॥ अरु ब्रह्म सत्ता अपणे स्व
भाव कौं कदाचित नहीं त्यागती॥ अरु बीज परिणामी होता है आकार रूप है॥ आत्मा
अरूप निराकार अच्युत रूप है॥ इस कारण ते परमात्मा बीज जब तब भी कारण नहीं बणि
ता॥ आकाश ते आकाश ही उपजता है॥ अरु अभिन्न रूप है॥ न कछू उपजा है न किछु
उपजाया है॥ केवल ब्रह्म आकाश अपणे आप विषे स्थित है॥ जब द्रष्टा पुरुष दृश्य कौं
देखता है॥ तब आप कौं नहीं देख सकता॥ काहे तें जो मन राजस कार्य जगत विषे परिणाम
जाता है॥ तब विद्यमान वस्तु कौ संभाल नहीं रहती॥ देहादिकों विषे आत्म अभिमान
होता है॥ जो पुरुष आत्म सत्ता कौं देखता है तिसकों जगत भार वन हीं रहिती॥ अरु जो
जगत कौं देखता है॥ तिसकौं आत्म सत्ता नहीं भासती॥ जैसे जो मृग त्रिसना की नदी कौं
मिथ्या जाणता है तिसकौं जल भावना हीं रहिता॥ अरु जो जल जाणता है॥ तिसकौं
तिस मों असत बुद्धि नहीं होती॥ आकाश वत पूर्ण द्रष्टा पुरुष है॥ सो जब दृश्य को औ
र जाता है तब आप कौं नहीं देखता॥ जैसे नेत्र जो रूप की ओर जाते हैं तब आप कौं देख
नहीं सके॥ आकाशवत ब्रह्म सत्ता सर्व ठौर पूर्ण है सो अज्ञानी कौं नहीं भासती॥ अरु दृ
श्य कौ अत्यंत अभाव है॥ तिसकौं प्रत्यक्ष देखते हैं॥ अनुभव का भासणा दूर होगया
है॥ हे रामजी जो कोऊ स्थूल पदार्थ होता है॥ पर्वत वृक्षादिक जब तिस के आगे पट आव
ता है॥ तब उह भी नहीं भासता॥ जो सूक्ष्म निराकार रूप द्रष्टा पुरुष है॥ तिस के आ
गे आवरण आवे॥ तब उह कैसे भासे॥ जो द्रष्टा रूप पुरुष है॥ सो अपणे द्रष्टा भाव ही वि
षे स्थित है॥ दृश्य भाव कौं नहीं प्राप्त होता॥ अरु दृश्य ही भासते हैं॥ द्रष्टा दृश्य विषे नहीं
आवता॥ अरु दृश्य कछु वस्तु है ही नहीं॥ तातें द्रष्टा एक परमात्मा ही अपणे आप वि
षे स्थित है॥ सो आत्मदेव सर्व शक्ति रूप है॥ जैसा जैसा तिस विषे फुरणा होता है॥ ते
ता तैसा शीघ्र ही भास आवता है॥ जैसे बसंत ऋतु विषे एक ही रस अनेक रूप धारता
है॥ फूल फल रस होते हैं॥ तैसे एक ही आत्म सत्ता अनेक जीव देह होइ करि भासते हैं
जैसे अपणे अंतर ही अनेक स्वप्न भ्रम देखता है॥ तैसे अहं आदिक जगत दृश्य भ्रम
अनेकता कौं अनुभव ही प्राप्त होते हैं॥ एक स्वरूप तें कछु अवर है आन नहीं जैसे बीज ए
क होता है॥ तिसके अंतर दास फल पत्र अनेक होते हैं॥ तिस विषे अवर बीज होते हैं
बीज के अंतर अवर वृक्ष तिस वृक्ष के अंतर अवर बीज इसी प्रकार अनंत हूए॥ एक बी
ज के अंतर होते हैं॥ तिसी प्रकार एक आत्मा विषे चिदअणु अनेक फुरते हैं॥ तिन

के अंतर सृष्टि ब्रह्मांड सृष्टि के अंतर सृष्टि सावहू इ चिदअणु के अंतर लक्ष है॥ इसी प्रकार आत्मा वि
षे अनेक सृष्टि अस्या इ है॥ तिनकी संख्या कछु करी नहीं जाती॥ अपणे आप कौं स्फुरते
हैं॥ आप स्वाद लेता है॥ एक एक चिदअणु के अंतर अनेक सृष्टि है॥ जैसे तिल विषे तेल तैसे चि
दणु विषे आकाश पवनादिक अनेक सृष्टि स्थित हैं आकाश विषे पवन अग्नि विषे ज
ल पृथ्वी सर्व भूतों विषे सृष्टि स्थित है ऐसा पदार्थ कोऊ नहीं जो चित सत्ता तें रहित हो
वे॥ अरु जहां चित सत्ता है॥ तहां तिसका आभास रूप सृष्टि भी स्थित है॥ जैसे एक इव
विषे लवग होते हैं॥ तिसके नष्ट हूए द्रव्य नष्ट नहीं होता जैसा जैसा तिस विषे फुरणा हो
ता है॥ तैसा तैसा स्थित होता है॥ सर्व का अधिष्ठान रूप आत्मा है॥ जैसे तक्षक कम
ल है तिनकों पूर्ण करणे हारा जल है॥ तिसकरि सर्व सूरज जीव होते प्रकाशते हैं॥ तैसे
सर्व सृष्टि कौं सत्ता देवणे हारा आत्मा है॥ सर्व का आश्रय रूप है॥ सो आत्म तत है॥ अरु
यह जगत दीर्घ स्वप्न स्वरूप अपणे अनुभव तें उदय हूआ है॥ सो बाह्य रूप होइ करि भा
सता है॥ तिन स्वप्नों ते आगे स्वप्नांतर होता है॥ तिसते आगे अवर स्वप्न इसी प्रकार सृ
ष्टों की स्थित हूई है॥ जैसे एक बीज अनेक वृक्ष स्थित है॥ तैसे एक चिदअणु विषे अने
क सृष्टि स्थित है॥ जैसे जल विषे अनेक तरंग भासते हैं॥ तैसे आत्म आत्मा अनुभव
विषे अनेक जगत भासते हैं॥ सो अभिन्न रूप है॥ तातें द्वैत भ्रम कौं त्यागकरि कछु दे
षा है॥ न काल कछु याजगत है॥ केवल एक अद्वैत आत्म तत अपणे आप विषे स्थि
त है॥ जैसे आकाश विषे आकाश स्थित होवे॥ तैसे आत्म सत्ता अपणे आप विषे स्थि
त है॥ ब्रह्मादिक कीट पर्यंत जेता कछु जगत भासता है॥ सो एक परमात्मा ही अ
पणे आप विषे कंचन रूप होता है॥ जैसे एक रस सत्ता कहूं पुष्प रूप सुगंध संयुक्त हो
इ भासती है॥ कहूं कांट रूप कौं प्राप्त होता है॥ तैसे एक परमात्म सत्ता कहूं कोमल रूप
होइ भासती है॥ कहूं जड रूप दिखाई देते हैं॥ जो सर्वगत अविनाशी परमात्मा है॥
सोई सर्व का बीज रूप है॥ तिसी के अंतर सर्व जगत स्थित हैं॥ जिसकौं आत्मा का प्र
मादि है॥ तिसकौं नाना रूप भासता है॥ जैसे जल विषे बुद्बुदे निकसे॥ बहुरि उ
वे बुदबुदे निकसे अरु जैसे स्वप्न कौं त्याग करि अवर स्वप्न कौं प्राप्त होवे॥ अवर त्याग
करि अवर पावे तैसे प्रमादि दोष करि एक भ्रम त्याग करि अवर नाना प्रकार के जगत
कौं देखता है॥ जगत अरु आत्मा विषे भेद भी कछु नहीं॥ काहे तें जो आत्मा ही जगत
वत होइ भासता है॥ जगत कछु है आन नहीं॥ भ्रांति करिके जगत भासता है॥ जैसे
विचार ते रहित कौं सुवर्ण विषे भूषण बुद्धि होती है॥ विचारे ते भूषण बुद्धि नष्ट हो
जाती है॥ सुवर्ण ही भासता है॥ तैसे जो विचार ते रहित है॥ विचार का कहीये जो मैं कव
ण हों यह जगत क्या है॥ कैसे उपजया है॥ कैसे लय होता है॥ इस विचार ते रहित कौं जग
त पदार्थ भासता है॥ अरु जिस नें संग अरु सत शास्त्रों के संयोग ते विचार उपजया है
तिसकौं यह फल होता है॥ जो दिन दिन प्रति भोगों की त्रिसना घटती जाती है॥ जैसे कि
सी कौं तप चढया होता है॥ अरु औषध करिके तप निवर्त होता है॥ तब दिलदण
तिस विषे प्रवृत्त होते हैं॥ एक विवेक जो बडा तपा सो निवर्त हो जाता है॥ शांतसता
प्रगट होती है॥ तैसे ज्यों ज्यों विवेक दृढ होता है॥ त्यों त्यों इंद्रियां का जीतणा होता है॥ स
नष्ट करि अंतर शीतल होता है॥ सर्वात्मा ही भासता है॥ यह विवेक का फल है॥ हे राम
जी जिस पुरुष कौं वचनका विवेक है॥ अरु निश्चय विषे नहीं तिसका विवेक कछु
कार्य सिद्ध नहीं करता जैसे मूर्त का लिखी अग्नि होता है॥ तिसतें कछु कार्य सिद्ध नहीं हो
ता॥ तैसे निश्चय ते रहित वचन का विवेक है॥ सो दुःखों कौं निवर्त नहीं करता॥ शांत न
हीं प्राप्त होती॥ जैसे जब पवन चलता है तब पत्र वृक्षादि हलते हैं॥ उस काल तण भी स

ताहै॥ वाणीकरिकहीये॥ तबहलतानहीं॥ तैसेजबविवेकरिदविषेग्रावताहै॥ तबभोग
कीत्रिस्नाछूटतीजातीहै॥ मुखकेकहिणेकरित्रिस्नानहीछूटती॥ जैसेचित्रकीमूरतरूप
रग्रमृतलिखाहोताहै॥ सोपानकरणेग्ररुग्रमरकरणेकाकार्यनहीकरती॥ ग्ररुमू
र्तेकीलिखीग्रग्निप्रीतकोनिर्वाणनहीकर्तेपाककरणेकेकार्यकोंनहीकर्तीग्ररु
मूरतकोलिखीस्त्रीस्पर्शकरणेग्ररुसंतानउपजावणेकाकार्यनहीकर्ती॥ तैसेमु
खकाविवेकवाणीविलासहै॥ परुभोगांकीत्रिस्नाकोनिकर्तकरिकेशांतकोंनही
प्राप्तकर्ता॥ जैसेमृतकोंदृष्टमात्रहै॥ तैसेउहविवेकवाकवाविलासहै॥ हेरामजीप्रथ
मजोविवेकग्रावताहै॥ तोरागद्वेषकानाशकर्ताहै॥ ग्ररुत्र्ययलोकप्रयंतजेतक
सुविषयभोगसुखहैं॥ तिनकीत्रिस्नाकोंग्ररुवैरभावकोंनष्टकर्ताहै॥ जैसेसूर्य
केउदेहूएग्रंधिकारकाग्रभावहोताहै॥ तैसेविवेककेउदेरूपग्रज्ञाननष्टहोताहै
ग्ररुपावनपदकीप्राप्तहोतीहै॥ इतिश्रीस्थितप्रकरणेजीवरवउकावतारोनामपर्व
केहूयेदिनकेपुस्तकपरइसग्रथेनउत्पत्तिप्रकरणसंपूर्णकीयाहै॥ ग्रागेस्थितवल्ला
पहपावांतरभेदहै॥ वसिष्ठउवाच॥ हेरामजीइसतेंग्रागेस्थितप्रकरणग्रवणके
रु॥ जिसकेजाणनेतेंनिर्वाणपदकोप्राप्तहोवेगा॥ सर्वबीजोंकाबीजपरमात्माहै
सोसर्वठोरतग्राकाशकीन्याईस्थितहै तिसकेफुरणेकानामजीवहै॥ जीवकेग्रंतरज
गतहै तिसकेग्रागेग्रोरनानाप्रकारकीरचनाहै॥ वस्तुतेंचिदद्युनजीवकेरूपसेंग्रंत
रस्थितभयाहै॥ सर्वजीवचिदद्युनरूपहैं जैसेकेलेकेस्थंभविषेपत्रहोतेहैं॥ तैसेग्रा
त्मसत्ताकेग्रंतरजीवस्थितहैं॥ जैसेपुरुषकेग्रंतरकृमहोतेहैं॥ जैसेग्रात्माविषेजी
वरासहैं॥ जैसेउस्नकालविषेस्वबसेंलीखादिकजीवउपजतेहैं॥ ग्रवरमदाथीतें
कीटउपजग्रावतेहैं॥ तैसेग्रात्मासोंचितकलाकेफुरणेकरिजीवोंकेसमूहफुरग्रावते
है॥ वहुडजीवजैसीजैसीसिद्धताकेनिमित्तयतनउपासनाकर्तेहैं॥ तैसीगतकोंप्रा
प्तहोतेहैं॥ उपास्नाकीविचित्रतातेंनानाप्रकारकीगतकोंप्राप्तहोताहै॥ जोदेवताकीउ
पस्नानकर्तेहैं॥ सोदेवताकोंप्राप्तहोतेहैं॥ यक्षोंकेउपासकयक्षोंकोंइसीप्रकार
जिसकीउपास्नाकर्तेहैंतिसीकोंप्राप्तहोतेहैं॥ ब्रह्मकेउपासकब्रह्मकोंप्राप्तहोतेहैं
तातेंजोग्रत्युत्तमपदहै॥ तिसीमहत्तपदकोंग्राश्रयकरो॥ जैसेजुग्रारदृष्टकीग्रोरलागा
तबग्रनेकप्रकारकेदृश्यभ्रमकोंप्राप्तहूग्रा॥ जबबोधकीग्रोरग्राया॥ तबनिर्मल
बोधकोंप्राप्तभया॥ तैसेजिसकीउपासनाकोंकर्ताहै॥ तिसीकोंप्राप्तहोताहैग्रन्य
कोंनहीप्राप्तहोता॥ रामोवाच॥ हेभगवनजाग्रतग्ररुस्वप्नकाजोभेदहैसोकहो॥ जो
जाग्रतक्याहै॥ ग्ररुस्वप्नक्याहै॥ वसिष्ठउवाच॥ हेरामजीस्थिरप्रतीतकानामजाग्र
तहै॥ ग्ररुग्रनस्थिरप्रतीतकानामस्वप्नहै॥ जोचिरकालरहितीहैतिसकानामस्थित
है॥ ग्ररुजोग्रल्पकालरहै॥ तिसकानामग्रनस्थितहै॥ दीर्घकालकीप्रतीतका
नामजाग्रतहै॥ ग्रल्पकालकानामस्वप्नहै॥ ग्रवरभेदकोउनहीं॥ दोनोंकाग्रनुभवस
महोताहै॥ जोशरीरकेग्रंतरस्थितहोइकरिशरीरकोंजीवताहै॥ तिसकानामजी
वहैतेजरूपहै॥ बीजरूपहै॥ जीवधातहै॥ यहसर्वतिसकेनामहै॥ जीवधातजबस्पंद
रूपहोतीहै॥ शरीरकेरंध्रोंविषेप्रसरतीहै॥ तबमनवाणीदेहकरिसर्वव्यवहारहोता
है॥ रंध्रखुलजातेहैं॥ तबइसकोंजाग्रतकहितीहै॥ ग्ररुजबचितकलाजाग्रतव्यवहा
रविषेग्रस्पष्टरूपहोतीहै॥ ग्ररुग्रंतरहोइफुरतीहै॥ तिसकरिग्रंतरजगतभ्रमभा
सणेलागताहै॥ तबस्वप्नकहीताहै॥ ग्रवसुषुप्तकाक्रमश्रवणकरु॥ मनवाणी
ग्ररुशरीरकरिजवक्षोभकोउनही॥ ग्ररुस्वछ्छहृतजीवधातग्रंतरस्थितहोतीहै
रिदेकोंग्रोविषेप्राणवायुकरिकेक्षोभनहीहोता॥ नाडीरसकरिपूर्णहोतीहै उ

सनाग्रोसोः ग्राणाग्रावणेजातेरहितहोताहै॥ सोभीतेरहितसमवाफचलतीहै॥ तिसकाना
मसुषुप्तहै॥ जैसेतहांसंवितसत्ताग्रपणेग्रापकाग्रनुभवलेतीहै॥ जैसेतिलोंविषेतैलस्थित
होताहै॥ तैसेजीवसंवितकलनाकरिकैकलुखतनतिसकालमेंग्रपणेग्रापविषेस्थितहो
तहै॥ जैसेवर्फविषेशीतलताहोतीहै॥ हृतविषेस्निग्धताहोतीहै॥ तैसेतहांसंवितस्थितवि
षेसंवितसत्तास्थितहोतीहै॥ तिसकानामसुषुप्तग्रवस्थाजडरूपहै॥ तिससुषुप्तग्रवस्था
तेंजागे॥ ग्ररुदृश्यभावकोंनप्राप्तहोवे॥ निर्विकल्पप्रकाशताविषेस्थितहोवे॥ सोज्ञानरूप
तुरीयहै॥ तबव्यवहारपडाकरे॥ तोभीजीवनमुक्तहै॥ जाग्रतस्वप्नसुषुप्तविषेवर्ताइमानत
हीहोता॥ हेरामजीग्रात्मसत्तातेंजबफुरणहोताहै॥ ग्ररुस्वरूपविस्मरणहोजाताहै॥ ग्र
रूफुरणदृढहोइकरिस्थितहोताहै॥ तबइसकानामजाग्रतहै॥ ग्ररुस्वरूपतेंप्रमादिदे
प्रकरिफुरे॥ जगतभासेतिसकोंसतरूपजाणे॥ ग्रल्पकालउहप्रतीतरहिकरिवहुडनिव
तेहोजावे॥ तिसनामस्वप्नहै॥ ग्ररुदृश्यफुरणेकाजहांग्रभावहोजावे॥ ग्ररुग्रज्ञानरह
तरहेजडतारूपतिसकानामसुषुप्तहै॥ ग्रनुभवविषेग्रज्ञानस्थितहै॥ ग्ररुजहांजाग्रत
स्वप्नसुषुप्तप्रतीतकाव्यवहारहोवे॥ ग्ररुनिश्चयविषेइनकासदभावरंचकभीनहोवे॥ केवल
ज्ञानसत्ताविषेग्रहंप्रतीतहोवे॥ हृततिसतेंचलाइमाननहोवे॥ तिसकानामतुरीयपदहैति
सविषेजीवनमुक्तस्थितहोताहै॥ ग्रवरजोजीवहै॥ सोजाग्रतस्वप्नसुषुप्तत्रिग्रवस्थाविषे
स्थितहोतेहैं॥ जबनाडीग्रन्नकेरसकरिपूर्णहोजातीहै॥ प्राणपवनतिदेनाडीनाडीविषे
नहीग्रावत॥ तबचितसंवितग्रक्षोभरूपसुषुप्तहोतीहै॥ तबग्रन्नउपनाडीसोंपचताहै॥ ग्र
रूप्राणपवनचलणेलागताहै॥ तबचितसंवितक्षोभरूपफुरणेलागतीहै॥ तिसफुरणे
करिग्रपणेग्रंतरहीवडेजगतभ्रमकोंदेखतीहै॥ जैसेबीजतेंवृक्षहोजाताहै॥ जबवायुकार
सनाडीविषेविक्षेपहोताहै॥ तबचितसत्ता॥ ग्राकाशविषेउडणा॥ ग्ररुवायुग्रांधीग्रादिक
पदार्थदेखतीहै॥ ग्ररुजबकफकारसनाडीविषेग्रधिकहोताहै॥ तबफूलवलीवावली
जलसेंउबगीचेइत्यादिकपदार्थभासतेहैं॥ जबपित्तकीग्रधिकताहोतीहै॥ तबइसरू
पग्रग्निरक्तवस्त्रादिकभासणेलागतेहैं॥ इसप्रकारवासनाकेग्रनुसारजगतभ्रमकोंदेख
ताहै॥ जैसीजैसीभावनादृढहोतीहै॥ तैसातैसापदार्थहोइभासताहै॥ ग्ररुजबपवनतेंक्षोभा
ग्रुमानहोताहै॥ चितसंवितनेत्रादिकद्वारेंयातेंवाह्यनिकसकरिरूपादिककाग्रनुभवक
तेहै॥ सतजागणकरिचिरप्रयेतकानामजाग्रतहै॥ वासनाकेग्रनुसारमनरूपशरीरसा
थनेग्रोजिहवादिकविनारूपरसादिककाग्रनुभवहोताहै॥ तिसकानामस्वप्नहै॥ स्वरूप
तेनकोउस्वप्नहै॥ नजाग्रतहै॥ नसुषुप्तहै॥ केवलब्रह्मसत्ताग्रपनेग्रापविषेस्थितहै॥ ति
सकेफुरणेकानामजाग्रतस्वप्नहै॥ फुरणाचिरप्रयंतहोवे॥ तिसकानामजाग्रत॥ ग्रल्पका
नामस्वप्न॥ सोप्रतीतकाभेदहूग्रा॥ वस्तुतेंभेदनहीकछुजोवस्तुतेंभेदनहूग्रा॥ तोजगत
स्वप्नहूग्राकुं॥ तातेंयहीभावनाविदेविषेदृढकरोजोजगतग्रसतरूपस्वप्नवतहै॥ जगत
कीसतभावनाकरणी॥ यहीदुःखकाकारणहै॥ इतिश्रीस्थितप्रकरणेजाग्रतस्वप्नसुषुप्त
प्रतीयस्वरूपवर्णनंनामसर्गः॥ वसिष्ठउवाच॥ हेरामजीयहमेंतुझकोंमनकारूपनि
रूपणकरिदिखायाहै॥ ग्रवस्थाकानिरूपणभीइसीनिमित्तकीयाहै॥ ग्रवरप्रयोजनक
छुनही॥ जैसेनिश्चयचितविषेहोताहै॥ तैसाहीहोइभासताहै॥ जैसेंग्रग्निविषेडारया
लोहग्रग्निरूपहोजाताहै॥ तैसेमनजिसपदार्थसोंलागताहै॥ तिसकारूपहोजाताहै॥
भावग्रभावग्रहिणत्यागसर्वमनहीकुरिहोतेहैं॥ ग्रवरनकोउसतहै॥ नग्रसतहै॥ के
वलमनकीचपलताकरिकेयहफुरतेहैं॥ मनकेमोहकरिजगतभासताहै॥ मनकेन
शरूपजगतनष्टहोजाताहै॥ जोसत्तनमनहै॥ सोग्रपणेफुरणेकरिकेजगतरचताहै॥
पहमनहीपुरुषहै॥ इसकोंतुमग्रशुभमार्गविषेमतलगावो॥ जबमनकोंजीतोगे॥ त
वसर्वजगतविषेतुमारीजयहोवेगी॥ मनकेजीतेसर्वजगतजीतीताहैतबवडीविभूतप्रा
प्तहोतीहै॥ जोशरीरकानामपुरुषहोवेतोशरीरशुकाकापडारया॥ ग्रवरशरीरोंकोनर

स्थिर-
२२

वताशरीरकहांपडारहा॥अरुमनअवरशरीरकोरचताफिरा॥तातेंशरीरकानाममपुरुष
नही॥मनहीकानामपुरुषहै॥शरीरचिंतनकाकीयाहोताहै॥शरीरकाकीयाचिंतनहीहो
ता॥जिसओरचितजाइलागताहे॥तिसीपदार्थकीप्राप्तहोतीहे॥इसविषेसंशयनही।ता
तेंअनंतछपदआत्मसताहे॥चितविषेसदातिसीकाअनुभवसंधानकरो॥अवरभ्रमकोंत्याग
देवो॥जवमनदृश्यकीओरसंसरताहे॥तवअनेकजन्मदुःखोंकोंपावताहे॥अरुजवआत्मा
कीओरइसकाप्रवाहहोताहे तवपरमपदकोंप्राप्तहोताहे॥तातेंदृश्यभ्रमकोंत्यागकरिआ
त्मपदविषेस्थितकरो॥इति श्री स्थितिप्रकरणे भार्गवउपाख्याने समाप्त नाम सर्गः [illegible]
॥ हेभगवनसर्वधर्मांकेवेता॥मेरेचितविषेवडासंसयउत्पतिभयाहे॥जैसेसमुद्रविषेतरं
गउपजकरिप्रसरजाताहे॥तैसेसंसारतेरेचिदविषेप्रसराहे॥जोदेशकालवस्तुकेपरिछे
दतेंरहितनित्यनिर्मलविस्तृतनिरामयआत्मसताहे॥तौतिसविषेमलनसंवितजोहै
मननामननीसोकहांतेंआईहे॥अरुकैसेस्थितभयी जिसतेंउतरअवरकछुवस्तहीन
हीनआगेहोवेगी॥तिसविषेकलंकनाकहांसोआई॥वसिष्ठउवाच॥हेरामजीतुझकोंस्वच्छ
साएच्छाहेतेरीवुद्धिअवमोक्षभागणीहुईहे॥जैसेनंदनवनकेकल्पवृक्षसाथमंज
रीलागतीहे॥तैसेतेरीवुद्धिपूर्वअपरकेविचारविषेजागीहे॥तेअवतिसपदकोंप्राप्तहो
वेगा॥जिसपदकोंशुक्रादिकप्राप्तहूयेहें॥अरुतेरीप्रस्नकाउतरमेंसिद्धांतकालविषे
कहोंगा॥अरुतिसकालविषेतुझकोंआत्मपदहस्तामलवतप्रतक्षभासेगा॥हेराम
जीसिद्धांतकाप्रस्नअरुउतरसिद्धांतहीकालविषेशोभताहे॥जगपासकालविषेजग्या
सहीकाशोभताहेजैसेवर्षाकालविषेमोरकीवाणीशोभतीहै॥शरदकालविषेहंसकी
वाणीशोभतीहे॥जैसेवर्षाकालकेनष्टहूयस्वभावकरही॥आकाशकीनीलमाप्रगटभा
सतीहे॥अरुवर्षाकालविषेमेघकीयाश्यामताशोभतेहें॥तैसेप्रस्नउतरजैसेसमयहोवे
तैसेहीशोभताहे॥हेरामजीमेंतुझकोंअनेकप्रकारकेदृष्टांतयुक्तोंकरिकेमनकास्व
रूपकहोंगा॥अरुजिसप्रकारपदनिवर्तहोताहे॥सोभीक्रमअनेकप्रकारकरिकहोंगा
मनकेशांतकाउपाइपाइवृंदानिरूपणकीया॥अरुशास्त्रकारोंकहाहेतिनकेलक्षणतें
अवणकरुंकेवलजोमनहै॥तिसनजेसाभावअंगीकारकीयाहे॥तैसारूपहोइकरि
भासणेलागाहे॥जैसेजैसीसुगंधकासाथपवनमिलताहे॥तैसातिसकास्वभाव
होजाताहे॥जैसेजिसरंगसाथजलमिलताहे॥तैसाहीरूपहोइभासताहे॥तैसेमनजि
जिसपदार्थसाथमिलताहे॥तिसकारूपहोजाताहे॥जोक्रियाशरीरकरिकेमनतेंर
हितकरीतीहे॥तिसकाफलकछुनहीहोता॥जोमनकरिकेकरतीहे॥तिसकाफलप्र
गटहोताहे॥जिसओरमनजाताहे॥शरीरभीतिसीओरचलगताहे॥जोकर्मइंद्रियाक्षोभ
मानहोवे॥अरुवुद्धिइंद्रियजोमनरूपहेसोक्षोभकोनप्राप्तहोवे॥तौतिनकीक्रियास
फलनहीहोत॥अरुमनक्षोभयुक्तहोवे॥अरुदेहइंद्रियांस्थिरहोवें॥तौकार्यहोता
हे॥जैसेधूड्क्षोभाइमानहोवे॥तवपवनविनाआकाशकोंनहीउडसकती॥अरुप
वनक्षोभाइमानहोवे॥तौभावैकैसीस्थिरधूड्होवे॥पवनतिसकोंउडाइलेजाताहे॥तै
सेदेहपडारहिताहे॥मनअपणेफुरणेकरिस्वप्नविषेअनेकअवस्थाकोंप्राप्तहो
ताहे॥अरुदेहकोंलेजाताहे॥तातेंसर्वकार्योंकावीजमनहे॥मनतेंसर्वकर्महोतेहें
एहपरस्परअभिन्नरूपहे॥जैसेपुष्पअरुसुगंधअभिन्नरूपहोतेहें॥तैसेमनअरुक
र्महेजिसकर्मकाअभ्यासमनविषेदृढहोताहे॥तैसाकर्मकीसावधतातीहे॥अरु
तिसीफलकोंप्राप्तहोताहे॥अरुतिसीस्वादकाअनुभवकरताहेजिसजिसभावकों
चितग्रहिणकरताहे॥तिसीभावकोंप्राप्तहोताहे॥अरुतिसीकोंकल्याणरूपमा
नताहे॥धर्मअर्थकाममोक्षपुरुषार्थहेतिनविषेजिसकीभावनामनदृढक
रताहे॥तिसीकोंसिद्धकरताहे॥कपलदेवजीसर्वशास्त्रकीयेहे॥सोमनकेमताक
रिकेकीयेहें॥तिनमेंनिरणाकीयाहे॥प्रकृतजोहेमायातिसकाद्वैतस्वभावहे॥एकअ

नुलोमपरिणाम॥द्वितीयप्रतिलोमपरिणाम॥प्रतिलोमपरिणामजवहोता
हे॥तवदृश्यभावकोंप्राप्तहोताहे॥जवअनुलोमपरिणामहोताहे॥तवअंत
रमुखआत्माकीओरआवतीहे॥आत्माशुद्धरूपहे॥मायाकाअनुलोम
परिणाममोक्षकाकारणहे॥अवरउपायनेही॥अरुवेदांतवादीयानप
जमनियमआदिकतिसकाकारणहे॥शमदमआदिककरिजवमनसंपन्नहो
हनिश्चयकीयाहे॥जोयहसर्वब्रह्महीहे॥ब्रह्मज्ञानविनमुक्तनहीहोती॥
तेहे॥तवयहनिश्चयधारणाहोतीहे॥जोसर्वब्रह्महे॥अरुविज्ञानवादीकहिते
अवरयत्नकरिमोक्षनही॥इनकेचितविषेयहीनिश्चयहे॥जवइसकाफुरणास्वभावधि
हें॥जवलगवुद्धिपडीफुरतीहे॥तवलगसंसारहे॥जवउकालआवेगातवमोक्ष
वहोताहे॥तवइसकालविषेस्वरूपस्थितहोतीहे॥तिनकोंअपणेनिश्चयकेअनुसारहे॥जैसा
कीप्राप्तहोवेगी॥आर्हतजोसर्वबुद्धहे॥मीमांसकपातंजलअरुवैशेषकन्याइतेआदि
निश्चयदृढहे॥तैसाहीभासताहे॥अपणीवुद्धिकारिजैसाजैसानिश्चयतिन्होंधाराहे तैसाही
लेकरिजोशास्त्रकारहे॥नशास्त्रहेसर्वकाकारणमनहे॥
तैसातिनकोंभासताहे॥स्वरूपतेंनकोऊमनहे॥सर्वकाकारणमनहे॥नतिंवकदुकहे॥नग
मनकोंअंगीकारकरिकेसर्वमतहूयहे॥जैसेजैसेजिसकेमनविषेनिश्चयहो
त्रामिष्टहे॥नअग्निउष्णहे नचंद्रमाशीतलहे॥किसीकोंनिसचयहोतीहे तिसकोंगत्रा
ताहे॥तैसातैसातिसकोंहोइभासताहे॥तिसकाजोकीटहेतिसकोंगत्रानहीकचआवता॥तौदहुक
कटुकलागताहे॥इसीकारणतेंवालवनहीविरोहणइस्त्रीकोंचंद्रमाअग्निवतभासता
होयाकोंा॥जैसीजैसीभावनापदार्थविषेहोगईहे॥तैसे
हे॥वकोअग्निकोंभक्षणकरिलेताहे॥जिसपुरुषकोंदृश्यविषेभावना
तैसेहोइभासतहे॥सर्वजगतभावनामात्रहे॥अरुजिसकोंसमदमआदिकसाधनकरिकेअक
हे॥सोअनेकदुःखभ्रमदेखताहे॥सोअंतकोंप्राप्तहोताहे॥अ
तमपदकीभावनाहुईहे॥अरुमनतदाकारभयाहे॥सोस्वर्गविषेस्थितहे॥सो
वरनहीप्राप्तहोताहे॥हेरामजीयहजगतदृश्यपलेरेमनकेस्मरणविषेस्थितहे॥प
तछरूपहे॥इसकोंमनतेंत्यागकरो॥यहसवदुःखसमूहभ्रमकोंदेणहारीहे॥आभासरूपहे
हसंसारअपवित्रअरुअसतमोहरूपमहाभयकाकारणहे॥जगतसाथसंवि
मायामात्रअविद्यारूपहे॥इसकीभावनाभयकाकारणहे॥जवइच्छाकोंदृश्यप
तकीतनमयतनाहोवती॥इसकानामकर्मबुद्धीश्वरकहितेहें॥दृश्यसाथमिलकरिभ्रमसे
साथसेयोगहोताहे॥तवबेडमोहकोंप्राप्तहोताहे॥देहादिककोंअपणाआपकरिजाणताहे॥
अनात्माविषेआत्मअभिमानकरतीहे॥स्वरूपकीसंभालइसकोंनहीरहिती
संसाररूपमदकरिकेउनमतहोजाताहे॥जोदृश्यसाथमिल्याहे॥तिसकाकल्याण
इसकानामअविद्याउईश्वरकहितेहें॥तिसकोंस्वरूपकाभावनहीहोता
नहीहोता॥जिसकेआगेमनकापटलहे॥यद्यपिवडाप्रकाशरूपहे॥तोभीनही
जैसेसूर्यकेआगेमेघकाआवरणआवताहे॥तातेंमनरूपआवरणकोंना
भासता॥तैसेमनकेआवरणकरिआत्मानहीभासता॥तिसकोंत्यागकरणा॥अर्हकल्पहो
शाकरो॥मनकास्वरूपजोहेसोफुरणाहे॥हेरामजीजवतेंसर्वभावविषअसंगहोवगा स
वृणोकरिमननष्टहोजावेगा॥तिसकोंनिर्विकल्पचिदाकाश
देपलार्थोविषे॥तवइष्टाचरुषप्रसन्नहोवेगा॥नसुखहेनदुःखहे॥कोव
कीप्राप्तहोवेगी॥तहांजगतकोंसताहे॥नअसताहे॥जवसंसारकीभावनातेंरहि
लकेवलीभावहेसोअपणेआपविषेप्रकाशताहे॥अरुदृश्यभ्रमनिवर्त
देसोउठिजावेगी॥तवनिर्मलस्वरूपविषेस्थितहोवेगी॥

होजावेगा॥ जैसे जीवके सम्यक भावनातें दृश्य बुद्धि नष्ट होजाती है॥ जैसी भावना होती
है॥ तैसे रूप भासते हैं॥ जब प्रथम कल्पना की भावना कों त्याग करिये अवर भावना करीती
है॥ तब प्रथम का अभाव होजाता है॥ जैसे दिन भये तें रात्रिका अभाव होजाता है॥ रात्रि विषे
दिन नहीं रहिता॥ जैसे लोहे कों लोहा काटता है॥ तैसे भावना कों भावना काटती है॥ ता
तें अनन्त छ पदार्थ जो निरूपाधि निरंशरूप है तिसकों आश्रय करो॥ जब तिसकी भाव
ना दृढ होवेगी॥ तब भ्रमतें रहित सिद्धपद की प्राप्ति होवेगी॥ हे रामजी तेरा स्वरूप आत्मा
है॥ तूं क्षुधादिकों की कल्पना मत करु॥ जैसे कुशूल विषे बालक कों कहीये जो सिंह
है॥ तो उह भयमान होता है॥ तैसे अनशरीर विषे अहंबुद्धि होती है॥ तब भय कों प्राप्त
होता है॥ जैसे शून्य महर विषे देखनेसें जन नहीं पाईता॥ तैसे शरीरादिकों विषे विचा
रनेतें धन ही पाईता पद में हो पद पद है॥ इत्यादिक कल्पना जो आत्मा विषे होती है॥
सो ऐसी है॥ जैसे बालक कों अपणी पछांवे विषे वैताल कल्पना होती है॥ इस जीव कों
अपणी कल्पना के वशितें भाव अभाव शुभ अशुभ लाभ अलाभ विषे पडे भासहोते हैं
को उसत रूप भासते हैं॥ कोऊ असत रूप भासते हैं॥ जैसी जैसी भावना होती है॥ तैसे
भासत है॥ परस्त्री होती है॥ अरु उस विषे काम बुद्धि होती है॥ तब स्पर्शादिक वा विके
खीवन आनंददायक होती है॥ अरु जो इस्त्री होती है॥ तिस विषे जब माता भावना करी
ती है॥ तब तिस विषे काम भावना जाती रहिती है॥ तातें तूं देख जैसी जैसी भावना
होती है॥ तैसे होइ भासत है॥ भावना के अनुसार इसकों फल होता है॥ तातकाल ति
सी आकार होइ देखता है॥ ऐसा पदार्थ कोऊ नहीं जो सतत ही॥ अरु ऐसा कोऊ नहीं
जो असत तत ही॥ जैसे जैसे किसी निश्चय कीया है॥ तिसकों तैसा ही भासता है॥ तातें
इस संसार की भावना कों त्याग करि स्वरूप विषे स्वस्थ होवे॥ हे रामजी मन विषे जो
प्रतिबिंब पडता है॥ तिसके दूर करने कों समर्थ मन नहीं होता॥ तूं तौ चैतन्य रूप है
आत्मा है॥ तिस विषे जो दृश्य का प्रतिबिंब पडता है॥ तूं तिसकों त्याग करु॥ जैसे त्याग
तौ से कल्प दृश्य का उदै॥ तिसकों असत रूप जाण करि त्याग देउ॥ अरु अहंता अवहार
ज्ञान प्राप्त होवे॥ तिसकों करु॥ परमात्मा की न्याईं अंतरतें रजतम न हो॥ जैसे प्रति
बिंब वाह्य दृष्ट आवता है॥ पर अंतर रंग नहीं चढता॥ तैसे वाह्य दृष्ट व्यवहार तेरे वि
षे भासे॥ अंतर राग द्वेष स्पर्श न करे॥ ३॥ इति श्री स्थितिप्रकरणे विज्ञानकुंदोलासमसर्ग
व सिहिवा ॥ हे रामजी जब जीव कों संतों के संग अरु सत शास्त्रों के संग करि वि
चार उपजता है॥ तब अबाहर कों रतें हत उपरत होजाती है॥ अरु संसार दृश्य का मन
न निवर्त होता है॥ विवेक रूप बुद्धि आन उदै होती है॥ तब संसार दृश्य की त्याग बुद्धि
होती है॥ दृष्टा आत्मा विषे प्रीतीकार बुद्धि होती है॥ दृष्टापद मगन होता है॥ दृश्य
जो है सो अदृश्यपना कों प्राप्त होती है॥ अर्थ यह जो दृष्टा कों लक्ष करि दृश्य कों अ
सत रूप जाणता है॥ उह पुरुष ज्ञानेत्य होता है॥ तब परम तत्व विषे जागता है॥
अरु संसार की ओरतें शयन सुषुप्त मूर्छकवत होजाता है॥ संसार की ओरतें वैराग अरु
भोगों विषे अभोग रसों विषे नीरस बुद्धि उपजती है॥ जब ऐसी बुद्धि दृढ हुई॥ तब
मन अपणी सत्ता त्याग करि आत्म रूप होता है॥ जैसे वर्फ का पुतला सूर्य के ते
जसों जल रूप होजाता है॥ जब मन विषे संसार की सतता होती है॥ तिस पुरुषों क
विजई भागी मन होता है॥ जब विवेक रूपी सूर्य उदै होता है॥ तब मन गल करि आ
त्म रूप होजाता है॥ जैसे जब लग मरुस्थल विषे धूप होती है॥ तब लग मृ
गतृष्णा की नदी नष्ट नहीं होती॥ जब वर्षा होती है॥ तब नष्ट होजाती है॥ तैसे
जब लग संसार की सत्यता मन विषे होती है॥ तब लग मन नष्ट नहीं होता॥ जब
ज्ञान की वर्षा होती है॥ तब दृश्य संयुक्त मन नष्ट होजाता है॥ हे रामजी संसार रू
पी वासना का जाल है॥ तिस विषे जीव रूप पक्षी फसे हैं॥ जब वैराग रूप प्रहार
सकों तुन वजाता है॥ तब जीव निर्वंध होता है॥ जैसे ममल नेत जल विषे निर्मल लीउ

वेतें जल निर्मल होता है॥ जब जीव तौ रागनिरुपाधि संग होता है॥ अरु राग द्वेष मोह तें रहि
त होता है॥ तब जैसे पिंजरे के टूटे तें पक्षी निर्वंध होता है॥ तैसे जीव निर्वंध होता है॥ सदेह कों
जाइ मेंतत है॥ सो शांत होजाती है॥ जगत भ्रम नष्ट होजाता है॥ अंतर शीतल होजाता है॥ जैसे पू
र्णमासी का चंद्रमा शोभता है॥ तैसे ज्ञानवान शोभता है॥ सर्व तें उत्तम सौंदर्यता कों प्राप्त
होता है॥ उद्वेग राग द्वेष नष्ट होते हैं॥ अरु सर्व कों समता भाव आन वर्तता है॥ कुतर्ता अ
रु विशेषता भावन नष्ट होजाता है॥ जैसे पवन तें रहित समुद्र सो म अचल रूप होता है॥
तैसे असंग पुरुष सकल उद्वेग कर्म की वासना तें रहित अचल होता है॥ उस सर्व चेतन्य प्र
काश करि देख्या है॥ बुद्धि विवेक करि के तिस की प्रफुलता होआवती है॥ जैसे सूर्य के उदै हु
ए सूर्यमुखी कमल प्रफुलित होता है॥ उह पुरुष परमलताकी करि ऐसे शोभता है॥ जैसे पू
र्णमासी का चंद्रमा शोभता है॥ अवर विशेषक करिया है॥ ज्ञान ज्ञेय ज्ञाता पुरुष है॥
सो आकाशवत होजाता है॥ न उदै होता है॥ न अस्त होता है॥ विचार करि के जिसने आत्म
तत्त कों जाण्या है॥ सो तिस पद कों प्राप्त होता है॥ जहां व्रह्मा विष्णु रुद्र स्थित है॥ सर्व श्रम
परम श्रम न होते हैं॥ अरु दृश्याकार उसका भासता है॥ पर अंतर अहंकार तें रहित होता
है॥ विकल्पा के सो हुए तिसकों खेच नहीं सकते॥ जैसे जल का अभाव जाण नहारे कों मृ
गतृष्णा की नदी खेच सकती॥ हे रामजी आवर भाव प्रकृति भाव रूप जो संसार है॥ तिस
कों रमणीक जाण करि ज्ञानवान विरत नहीं पावता॥ न देह के नाश विषे अपणा नाश मान
ता है॥ न उपजणे विषे उपजा मानता है॥ जैसे घट उपजे तें आकाश नहीं उपजता का है तें जो
आगे सिद्ध है॥ अरु घट अभाव तें आकाश अभाव नहीं होता॥ तैसे देह के उपजे तें आत्मा न
हीं उपजता॥ देह के नष्ट हुए नष्ट नहीं होता॥ जब ऐसा विवेक उदै होता है॥ तब वासना
का जाल नष्ट होजाता है॥ कोऊ भ्रम नहीं रहिता॥ जैसे मृगतृष्णा की नदी का ज्ञान करि
अभाव होजाता है॥ जब लग इसकों यह विचार नहीं उपजता॥ जो मैं कवण हों॥ अरु ज
गत क्या है॥ तब लग संसार रूप अविकार रहिता है॥ जो पुरुष ऐसे जाणता है॥ जो संसार
मिथ्या भ्रम करि उदै हुआ है॥ परम अपदा का कारण देह है॥ अनात्म रूप है॥ आत्मतें भिं
न कीया यह जगत कछु नहीं॥ सर्व आत्मसत्ता करि कें स्थित है॥ जो ऐसे देखता है॥ सो
ई यथार्थ देखता है सर्व चेतन्य सत्ता है॥ मैं अनंत चिदाकाश स्वरूप हों॥ देश काल वस्तु के
परिछेद तें रहित हों॥ आधि व्याधि भय उद्वेग जरा मरण जन्मादिक विकारों संयुक्त जो
जगत देह है॥ सो मैं नहीं॥ ऐसे जो देखता है॥ वहु इसमें कोंसा है॥ एक केश के अग्र अग्र काल त
भाग करीये॥ वहुर एक भाग का कोट भाग करीये॥ ऐसा सूक्ष्म में सर्व व्यापी हों॥ ऐसे
जो देखता है॥ सोई देखता है॥ मैं सर्व शक्ति अनंत आत्मा हों॥ सर्व भाव पदार्थों विषे स्थित मैं
अद्वैत चिदादित्य हों॥ जो ऐसे देखता है॥ सो देखता है॥ अधः ऊर्ध्व मध्य सर्व विषे मैं व्याप्य
हों॥ मुझ तें इतर द्वैत कछु है ही नहीं॥ जो ऐसे देखता है॥ सो देखता है॥ जैसे सूत्र के विषे मणा
के पोये होते हैं॥ तैसे सर्व मुझ करि अनुस्यूत है॥ ऐसे जो देखता है॥ सो देखता है॥ न मैं हों
न यह जगत है॥ केवल आत्मसत्ता स्थित है॥ सत असत के मध्य जो एक देव प्रकाश है॥
त्रिलोकी विषे सो मैं॥ एक अविनाशी पुरुष हों॥ जैसे समुद्र विषे तरंग फुरते हैं॥ तैसे मे
रे विषे जगत फुरते हैं॥ अरु लय होते हैं॥ ऐसे देखता सो देखता है॥ प्रथम अहं है॥ त
व पाछे दृश्य जगत होता है॥ सो न मैं हों न जगत है॥ केवल एक आत्मसत्ता है॥ अहं अ
रु मन तिस विषे कोऊ नहीं ऐसे जो देखता है॥ सो देखता है॥ मैं दृश्यतें रहित चेतन्य
स्वरूप अपार हों॥ जगत जाल कों पूर्ण करि रहा हों॥ ऐसा जो देखता है॥ सो देखता है॥
जो पुरुष ज्ञानवान है॥ सो सुख दुःख भाव अभाव विषे चलाइमान नहीं होता॥ केव
ल स्वरूप विषे स्थित होत है॥ अवर जगत की भावना तें रहित तर्क सों रहित अनाभा
स सन्मात्र रूप है॥ जो हेय उपादेय बुद्धि तें रहित आकाशवत सर्वात्म भाव विषे
स्थित भया है॥ कोऊ पदार्थ जगत का उसकों अपणे वशि नहीं करि सका॥ सो महा
त्मा पुरुष सदेह तमप्रकाश तें रहित है॥ सर्व कलना तें मुक्त॥ सम स्वच्छ रूप है॥ उ

दे अरु तिनतें रहित मम हृत है जिसको ॥ ऐसा जो अनंत स्वरूप परम बोध आत्मसत्ता है ॥
तिसकों मेरा नमस्कार है ॥ इति श्री स्थितिप्रकरणे अनंतपद विश्रांत स्वरूप नाम स ॥ गं॰
वसिष्ठ उवाच ॥ हे रामजी उत्तमपद का जिसने आश्रय कीया है ॥ ऐसा जो जीवन्मुक्त पुरु
ष है ॥ कैभकार के वज्रवत घार वध तिसकी पीर रही है ॥ सो पुरुष शरीर रूप नगर वि
षे राज करता है ॥ अरु लिपायमान नहीं होता ॥ तिसकों भोग अरु मोक्ष दोनों सिद्ध होते
हैं ॥ जैसे इंद्र का वन स्वस्वरूप है ॥ तैसे उसका शरीर रूपी नगर स्वस्वरूप हो जाता है ॥ श
रीर के सुख सें प्रसन्न नहीं होता ॥ अरु शरीर के दुःख करि दुःखी नहीं होता ॥ आपणे स्व
रूप विषे स्थित रहिता है ॥ राम उवाच ॥ हे महामुने सुर शरीर रूप नगर कैसा है ॥ अरु इ
स विषे रहि करि योगीराज कैसे करते हैं ॥ अरु सुख कैसे भोगता है ॥ वसिष्ठ उवाच ॥ हे राम
जी ज्ञानी का शरीर रूप नगर रमणीक होता है ॥ सर्व गुणों से प्रसन्न ज्ञानवान कों अने
त आनंद विलास दिखावता है ॥ जैसे सूर्य प्रकाश कों उदे करता है ॥ अब तिस नगर का
स्वरूप लक्षण श्रवण करु शरीर विषे जो गाठी हैं ॥ सो इहां हैं अरु रुधिर मांस गारे के
स्थान हैं ॥ अस्थल कडी थांभ हैं ॥ अरु पर किवाट हैं ॥ रोम वनासपती हैं ॥ उदर खान है ॥ छाती
चौक है ॥ नव द्वार हैं ॥ तिन विषे नेत्र झरोखे हैं ॥ जिस द्वार करि त्रिलोकी का प्रकाश होता है ॥ हे
लगाली हैं ॥ जिस करि लेता देता है ॥ मांटे वडीं कंध हैं ॥ ग्रीवा सीस वडे मंदर हैं ॥ अरु रेखा माल
हैं भिंन भिंन लगी हुई ॥ अरु नाडी विभाग करणे के स्थान हैं ॥ प्राणादिक वायु करि जीव वि
चर्ते हैं ॥ नाडी विषे आत्म चिंतारूप श्रेष्ट इस्त्री तासों रहिती है ॥ अरु श्रेष्ट बुद्धि इंद्रियां रूपी वांदर
वां धक्षों हुई है ॥ हास रूप तिसका महा मंदर पुष्प है ॥ ऐसा शरीर रूपी पुरुष ज्ञानवान कों म
हा सुख के निमित है ॥ सौभाग्य मंदर रूप है ॥ शरीर के सुख दुःख करि ज्ञानवान सुखी दुः
खी नहीं होता ॥ हे रामजी जो अज्ञानी है तिनकों शरीर रूपी नगर अनंत दुःखों का भंडार है
अज्ञान करि कै शरीर के नष्ट हुए आप कों नष्ट होता मानते हैं ॥ अरु ज्ञानी इसके नाश हुए
नाश नहीं होता ॥ जब लग रहिता है ॥ तब लग शब्द स्पर्श रूप रस गंध कों ग्रहण करता है
इष्ट रूप होइ करि भासते हैं ॥ अरु शरीर रूप नगर विषे अमनें रहित निहकंटक राज्य क
रता है ॥ लोभ तें रहित है इस कारण तें शत्रुओं का छुले तान हीं ॥ अरु उसकों आपणे स्थान वि
षे आवणे देता नहीं ॥ शत्रु कवण हैं ॥ अज्ञान ही शत्रु है ॥ काम क्रोध मान मोहादिक अज्ञान
का देश है ॥ तिन विषे आप प्रवेश नहीं करता ॥ अरु आपणे देश विषे तिसकों आवने नहीं दे
ता ॥ सावधान ही रहिता है ॥ आपणा देश कवण है ॥ उदारता अरु धीर्य संतोष वैराग्य सत्ता
मैत्री ज्ञान का देश है ॥ तिन विषे अज्ञान कों प्रवेश करणे नहीं देता ॥ अरु आप ध्यानरूप
नगर विषे रहिता है ॥ सत्यता अरु एकता दोनों इस्त्रीयों कों संग राखता है ॥ तिन करि सदा
शोभाइमान रहिता है ॥ जैसे चंद्रमा चित्रा अरु विशाखा दोनों इस्त्रीयों करि शोभता है ॥ तैसे
ज्ञानवान सत्यता अरु एकता करि शोभता है ॥ अरु मन रूपी अश्व पर आरूढ होइ करि तीर्थों के
इस्नान कों गमन करता है ॥ विचार रूपी तिस लगाम राखता है ॥ अरु जीव ब्रह्म की एकता रू
पी संगम तीर्थ विषे स्नान करता है ॥ तातें सदा आनंदमान रहिता है ॥ अरु जीव ब्रह्म की एक
ता रूपी संगम तीर्थ विषे स्नान करता है ॥ तातें सदा आनंदमान रहिता है ॥ भोग अरु मोक्ष दो
नों करि संपन्न होता है ॥ जैसे वृक्ष अपणे पुष्प विषे शोभता है ॥ तैसे ज्ञानवान देह विषे शो
भता है ॥ जैसे घट के फूटे तें आकाश की कछु हानता नहीं होती ॥ तैसे देह के नष्ट हुए ज्ञानी
की कछु हानता नहीं होती ज्यों का त्यों ही रहिता है ॥ जो देह होती है ॥ तो भी तिसका घट स्पर्श
नहीं करता ॥ जैसे घट कों आकाश स्पर्श नहीं करता ॥ सर्व क्रिया कों करता अरु भोगता भी है ॥
पर किसी करि लेप नहीं पावता ॥ सदा एक रूप भगवान आत्मदेव इस विषे वसता है ॥
जब विवान पर आरूढ होइ करि शरीर रूपी नगर विषे विचर्ता है ॥ तब मैत्री रूप नेत्र सा
थ सर्व कों देखता आनंद स्थित होता है ॥ मैत्री भाव सदा तिसके हिदे विषे रहिता है ॥ सत
ता अरु एकता सदा तिसके समीप हैं ॥ तिन करि शोभता सदा आनंदमान विचर्ता है ॥

अरु जीवों कों दुःख रूप आगे माथ का टीला देखता है ॥ जैसे कोउ पर्वत पर आरूढ आप स्थि
रु पृथ्वी पर लोकों जलता देखे ॥ आप आनंदमान होवे ॥ तैसे ज्ञानवान जीवों कों दुःखी देखक
रि आनंदमान होता है ॥ उसकी दृष्टि विषे तो सदा अद्वैत रूप है ॥ पर आप आनंद की अपेक्षा क
रि अज्ञान मध्य मो जीवों कों दुःखी देखता कहीता है ॥ उसके निश्चय विषे न जगत जीव कोऊ नहीं
अरु चतुर्थ प्रयोजन धर्म अर्थ काम मोक्ष तिसके पूर्णता कों प्राप्त भये हैं ॥ किसी के रचे उ
स कों वंछता नहीं ॥ सर्व संपदा सें पूर्ण विश्राममान होता है ॥ जैसे पूर्णमासी का चंद्रमा न्यून
ता तें रहित विराजता है ॥ यद्यपि भोगों कों सेवता है ॥ तो भी तिसकों दुःखदाइक नहीं होते
जैसे काल कूट विष कों सदाशिव पान कीया ॥ पर दुःखदायक तिनकों न भयो ॥ तैसे उ
द भी समर्थ है ॥ तातें भोग दुःखदायक नहीं होते ॥ जैसे चोर कों जाण्या ॥ अरु अपणा वशि
वर्ती कीया तब मित्रभाव हो जाता है ॥ तैसे उसकों भोग दुःख नहीं देते ॥ जब भोगों कों जा
णीता है ॥ जो हरु कछु वस्तु नहीं ॥ तब सुख का कारण होते हैं ॥ जब लग इनकों सत जा
णा करि आसक्त होता है ॥ तब लग दुःख का कारण होते हैं ॥ हे रामजी जैसे कोउ यात्रा कों जा
ता है ॥ एक मार्ग विषे इस्त्रीयां पुरुष मिलते हैं ॥ वन विषे पकडावे रमण अरु चलणा भी हो
ता है ॥ परंतु परस्पर आशक्त नहीं होते ॥ आगे पाछे चले जाते हैं ॥ तैसे ज्ञानवान संसार
के पदार्थों विषे चित कों नहीं लगावता ॥ अरु जैसे कोउ कामना पर्यो इ किसी देस कों जा
ता है ॥ अरु मार्ग विषे कोई सुंदर रमणीक स्थान आवते हैं ॥ कोई मलन कष्ट के स्थान भा
सते हैं ॥ अरु राग द्वेष किसी विषे नहीं करता ॥ जैसे कैसे देखता चल्या जाता है ॥ तैसे ज्ञान
वान भोग क्रिया विषे उदासीन होता है ॥ इंद्रियां के इष्ट अनिष्ट पदार्थों विषे राग द्वेष क
रि चलाइमान नहीं होता ॥ जैसे मेरु के पुछ करि पर्वत चलाइमान नहीं होता ॥ सर्व संश
य तिसके सम्यक ज्ञान करि शांत हो जाते हैं ॥ कोउ पदार्थ उसकों आश्चर्य कौतक नहीं
देखाई देता ॥ वासना के समूह नष्ट हो जाते हैं ॥ चक्रवर्ती राजा की न्याई शोभता है ॥ पर
पूर्ण होइ करि स्थित होता है ॥ जैसे क्षीर समुद्र अपणे आप विषे पूर्ण होता है ॥ तैसे ज्ञान
वान अपणे आप विषे पूर्ण समावता नहीं ॥ हे रामजी इस जीव कों भोगों की इच्छा दी
न कर्ती है ॥ तिस करि आत्मपद तें गिरते हैं ॥ अरु आत्मपद विषे परम रूप कृपण हो जाते हैं
तिनकों देखकरि उत्तम पद आले वी हसते हैं ॥ तो इह मिथ्या दीनभाव कों प्राप्त हुए हैं ॥
जैसे स्वामी होइ करि इस्त्री के वशि होवे ॥ इस्त्री स्वामी की न्याई होवे ॥ अरु भरता दीन
हो जावे ॥ तो लोक उसकों देखकरि हसते हैं ॥ तैसे ज्ञानवान भोगों की त्रिस्ना वालेयों कों
देखकरि हसते हैं ॥ केवल मन ही परम मित्रता है त्यों तें जीवों कों गिरावता है ॥ तातें मन
रूपी हस्ती कों विचार रूपी अंकुस संग वशि करे ॥ तब सिद्ध पद कों प्राप्त होवे ॥ जिसका
मन विषयों की ओर धावता है ॥ सो संसार रूप विष का बीज पडा बोवता है ॥ तातें प्रथ
म इस मन कों ताडना करे ॥ तब शांत की प्राप्त होवे ॥ जो मानी होता है ॥ अरु उसकी मान
करीती है ॥ तब उह कछु उपकार नहीं मानता ॥ जब प्रथम उसकों ताडना करीती है
तब पाछे अल्प उपकार कीये तें भी प्रसन्न होता है ॥ जैसे थाल जल करि पूर्ण होते हैं ॥ तो ज
ल के मेघ वर्षा करि उनकों उपकार नहीं होता ॥ अरु जो जेठ आषाढ की धूप करि तप्त हो
रहिते हैं ॥ तब थोडा जल मेघ वर्षा भी उनकों प्रसन्नता वन होता है ॥ तैसे जो प्रथम सनमान क
न मान करीये तो मित्र भाव नहीं होता ॥ अरु जब ताडना करि कै पाछे सनमान करी
येगा ॥ तब उपकार मान करि मित्र भाव होइ रहेगा ॥ सो ताडना करणी का है ॥ विषयों तें
संजम करावणा ॥ संजम करि कै निरमान हूआ तब उसका सनमान करणा ॥ जो सं
सार के पदार्थों विषे वरतावणा ॥ तब शत्रुभाव कों त्याग करि मित्र हो जाता है ॥ जैसे व
र्षा काल विषे नदी जल करि पूर्ण होती हैं तिन विषे जल का उपकार नहीं होता ॥ शरद का
ल विषे जल का उपकार होता है ॥ जैसे राजा कों जो अवरदेश का राज प्राप्त होवे ॥ तब उ

इसकुं प्रसन्नताको प्राप्त नहीं होता॥ जो प्रथम वैरी स्थान विषे जारीये॥ अरु पाछे एक ग्राम
दीजीये॥ तो तिसकरिभी प्रसंन नहीं होजाता है॥ तैसे जब प्रथम मनकों ताडना करीये॥ तब पा
छे अल्पसनमानकरिभी सुखदायक होता है॥ तातें हे रामजी प्रथम लंमी इकरि अरु दंतों सा
थ दंत मिलाइकरि ओ गोसों अंगकों दबाइकरि इंद्रियां रूपी शत्रुओं कों जीतो॥ इस पुरुषके रिदे वि
षे मनरूपी सर्प कुंडल मारके बैठा है॥ अरु कलनारूप विषेकरि पूर्ण है॥ जिस पुरुषने उस
कों मर्दन कीया है॥ तिसकों मेरा बहुत नमस्कार है॥ उदय ही विभूत करि शोभता है॥ इति श्री
स्थि॰ त॰ प्रकरणे शत्रु रनगा॰ वनो नाम सर्गः॥ वसिष्ठ उवाच॥ हे रामजी अज्ञानी जीव मू
ढ मनकों विषे प्राप्त होते हैं॥ आशा रूपी वासनों की पांशुलाका लगाती है॥ इंद्रियरूप श
त्रु इसकों मारते हैं॥ इंद्रिय बडे अकृतघन हैं॥ जिस देहके आश्रय रहते हैं॥ तिसीकों शो
क अरु इछाकरि पूर्ण करते हैं॥ अरु महा दुःखदायक भंगुर हैं॥ इनकों तुम जीतो॥ इंद्रिय
मनरूपी इलपती है॥ जब विषय नहीं होते॥ तब क्रोधकों उठती है॥ जब विषय आनप्रा
प्त होते हैं॥ तब तीनेकों आनि गिरती हैं॥ जिस पुरुषने विवेकरूपी जालकाप्रदुन कीया
या है॥ तिसकों एह भोजन नहीं करि सका॥ जैसे पाषाणके कमलकों हस्ती नहीं भोज
न करि सका॥ हे रामजी एह भोग अप्रमाण रमणीय हैं॥ अंत्य नीरस हैं॥ जो पुरुष इन विषयों
का कर्ता है॥ सो अगनि नरकों कों प्राप्त होता है॥ जो पुरुष ज्ञानधन करि संपन्न है॥ अरु देह रू
पी देश विषे रहता है॥ सो परमशोभाकों पावता है॥ अरु आनंदमान होता है॥ काहेतें जो
इंद्रियरूप शत्रु तिसने जीते हैं॥ बडे ऐश्वर्य करि संपन्न घर विषे बसता है॥ ऐसे सुख
हों न रही प्राप्त होता है॥ जैसा सुख निर्वासी मनज्ञानवानकों होता है॥ जो अपने आपही
र आनंद विषे रहिता है॥ जिस पुरुषने इंद्रियअरु मनरूप शत्रु जीते हैं॥ सो परमशोभाक
रि शोभता है॥ जैसे हिमरितु कों जीतनकरि बसंतरितु विषे मंजरी शोभते हैं॥ जिस पुरु
षके चित्तका गर्व नष्ट भया है॥ अरु इंद्रियरूपी शत्रु जीते हैं॥ तिसकी भोगवासना न
ष्ट होजाती है॥ जैसे शीतकाल विषे पद्मनी नष्ट हो जाती है॥ हे रामजी वासनारूपी वैता
ल तिसका चरतब लग विचरते हैं॥ जब लग एक तत्वका दृढ अभ्यास करिके मन नहीं जी
ता॥ जब विवेकरूपी सूर्य उदय होता है॥ तब नष्ट हो जाते हैं॥ जब मनकों विवेक करि व
शि करता है॥ तब इंद्रियां अंतःकरण रूप होजाते हैं॥ अरु मनरूप सभा मित्र हो जाता
है॥ आपदा जाहोइ करि स्वरूप राजकों भोगता है॥ विवेकीकी पांचों इंद्रियां पतिव्रता
स्त्रीवत हो जाती हैं॥ अरु मन पिताकी न्याई पालना करणेहारा होता है॥ चित्त स्वच्छ हो
जाता है॥ जब निश्चयवान पुरुष मत शास्त्रों कों विचारता है॥ तब परम सिद्धांतकों
प्राप्त होता है॥ अरु मन अपनेमन भावकों त्यागकरि शांतरूप होपिता वत पालना
करता है॥ तातें मनकों विवेककरि वशि करो जैसे मणी कों घसाइ करि धागे साथ छेद
करि परोवते हैं॥ अरु कंठविषे धारते हैं॥ वडी शोभा प्राप्त होती है॥ तैसे मनरूपी मणि है॥ तिसकों
आत्म विचार साथ छेद करावणा॥ वैराग्य करि उज्वल करिणा अभ्यासरूप छेद करि पाइक
रि विवेकरूपी तागे साथ परोवणा॥ कंठ विषे स्थित करणे सों वडी शोभा देती है॥ विवे
कके वैसा है॥ तनरूपी स्वत्तों का नाश करता कुठार है॥ काष्ठ जारता है॥ अरु मनरूप श
त्रुकों मित्र करता है॥ सदा शुभ कर्मों कों करावता है॥ अरु विषयों के परिणाम दुःखकों
निकट आवणे नहीं देता॥ तातें मनकों वशि करणा आनंदका कारण है॥ जो मन वशि
नहीं होता तो दुःख होता है॥ जो वशि होता है तो महा सुखदाइक होइ जाता है॥ हे रामजी मन
रूप मणि है॥ सो भोगों की मलिन्ता करि कलंक होता है॥ जब विवेकरूपी जलकरि इस
कों शुद्ध करेगा॥ तब शोभावान होवेगा॥ एह संसार महाभयके देवणेहारा है॥ विवे
कवान पुरुषभी मायारूप संसार विषे गिडते हैं॥ तुछ कलंक करि इस विषे मत गिडें इ
तर जीवोंकी न्याई॥ एह संसार मायारूप है॥ अनेक अनर्थों के जाल करि पूर्ण है॥ स

ता अरु देवतों का युद्ध हुआ॥ जैसे वर्षाकालसों आकाश विषे मेघ जर्जरीभूत होजाते हैं॥ तै
से देवता अरु दैत्य सर्व एक अग्र भये दिशा विदिशा सर्व स्थान पूर्ण भये॥ इति श्री॰ स्थि॰ म॰ शाल
क दैत्ये सम वर्ण नं नाम सर्गः॥ वसिष्ठ उवाच॥ हे रामजी इस प्रकार घोर संग्राम करता॥ देव
ता दैत्य पर्वत गिडते हैं॥ रुधिर के प्रवाह चले बडे शब्द हो
ता अरु दैत्यों के शरीर गिडे॥ जैसे पलय हुए पर्वत गिडते हैं॥ रुधिरके प्रवाह चले बडे शब्द हो
वें आकाश पृथ्वी शब्द करि पूर्ण होरही॥ दामने देवतों के संमुख वेष्टन कीये॥ व्यालने एक
उ देवतों कों पर्वतों विषे पाप्त न कीया॥ कटने देवतों के समूह चूर्ण कीये॥ उनके स्थानतें
उडाये॥ बडा क्रूर संग्राम कीया॥ तब देवतों के हस्ती कों जीत गया॥ जिसको गिनत पा
इ आता॥ ताडना करि दीनता होगया॥ सो ऊर्ध्व होतें भागा अरु भयभीत होइकरि देवता भी भागे॥ तब दे
वतों की सेना छूट होत भयी॥ जैसे मध्यान के सूर्य का बडा प्रकाश होता है॥ तैसे दैत्य प्रका
शवान भये॥ देवता अनेक मारे गये॥ जैसे पुल के टूटे जलका प्रवाह तीक्ष्ण वेग करि चल
ता है॥ तैसे देवता तीक्ष्ण वेग करि भागे॥ जल के प्रवाह चलत मर्यादा छूट गयी दामव्या
लकट की सेना जीतपावत भयी॥ देवतों के पाछे लागे मारते जावें॥ जैसे काष्टों तें रहित
हुई अग्नि अंतरधान होजाती है॥ तैसे बलवान देवता बल सों हीन भये॥ अंतरधान हो ग
ये॥ दैत्य ढूंढते फिरें॥ पर देवता कहूं न पाये॥ जैसे जाल सों निकसे पक्षी हाथ न ही आवते
तैसे देवता तिनके हाथ न आये॥ जैसे मृग वंधन सों छूटा निकसि जावे॥ सिंह ढूंढ रहे॥ ति
सके हाथ न आवें॥ तैसे दैत्य ढूंढ रहे देवता उनके हाथ न आये॥ तब दाम व्याल कट तीनो
सेना संयुक्त पाताल विषे आन स्थित भये॥ अपणा स्वामी जो शंबर था॥ तिसके निक
ट आये॥ प्रसन्नताकों लीये॥ अरु इहां देवतों आवण कीया॥ जो दैत्य पातालकों गये पीछे
तब भये हैं॥ तब विचार करिके चितवते भये॥ जो किसी प्रकार इनतें हमारी रक्षा करे
ऐसी चिंता करि आतुर भये॥ तब ब्रह्माजी देवतों के निकट स्थान प्रगट भये॥ देवता ब्र
ह्माजी के निकट गये अमित तेज है जिसका॥ अरु अमित जगत् कार्य तव स्तुते हैं॥ जैसे संध्या
कालसों रक्त वर्ण वादर होते हैं॥ तिन विषे चंद्रमा शोभता है॥ ऐसे शांत रूप प्रकाश मा
न ब्रह्माजी कों देखकरि इंद्रादिक देवता प्रणाम करते भये॥ पूर्णवर दैत्य की शत्रुता करिके
कहत भये॥ हे त्रैलोकी के ईश्वर हम तुमारी शरण आये हैं हमारी रक्षा करो॥ शंवर दैत
हमकों अति दुःख दीया है॥ तिसके सैनापति दाम व्याल कट हैं॥ सो बडे दैत्य हैं॥ किसी प्रका
र हमसों मारे नहीं जाते॥ अरु हमारी सेना उनबडेन चूर्ण करी है॥ हे रामजी इसी प्रकार
संपूर्ण वृत्तांत दामादिकों का ब्रह्माजी प्रति कहत भये॥ अरु कहा के इनके मारणे का उपा
उ हमकों कहो॥ जिस करि एह नष्ट होवें॥ तब संपूर्ण जगत पर्दाया के रणहारा ब्रह्मा
जी ऐसे वचन कहत भया सो कैसे वचन जो शांतके कारण॥ ब्रह्मोवाच॥ हे अमरेश आप
जी वै ऐसे वचन कहत भया॥ जब एक सहस्र वर्ष वृत्तान्त हो वेगा॥ तब एह मरेंगे॥ विष्णुजी
हैं तब अवतीनष्ट न होवेंगे॥ जब एक सहस्र वर्ष वृत्तान्त हो वेगा॥ तब एह मरेंगे॥ विष्णुजी
इनकों मारेगा॥ मैं इनकी भविष्यत देखी है॥ अब दाम व्याल कट युद्ध विषे भागन हीं जात
ते॥ अरु मरणे मारणे का इनकों ज्ञान ही न ही॥ एह शंवर दैत्य की माया करि रचे हैं॥ इन
कों नाश कैसे होवे॥ जिसकों अहं अरु मम अभिमान होता है॥ तिसका नाश होता है॥
सो अहं ममादिक भावों कों एह जाणते नहीं॥ इनका नाश कैसे होवे॥ इस प्रकार इनका ना
श अब कदाचित नहीं होवणा॥ जब इनकों अहंकार उपजेगा॥ तब इनका नाश होवेगा सो उ
पाक यही चित नहीं होवणा॥ जब इनकों अहंकार उपजेगा॥ तब इनका नाश होवेगा॥ इस प्रकार
हंकार उपजणे का उपाइ मैं तुमकों कहता हों तुम इनके साथ युद्ध करते रहो॥ इस प्रकार
कबहूं इनके आगे होवे॥ कबहूं दाहने कबहूं वाले होवो॥ कबहूं भाग जावो॥ इस प्रका
र जब तुम बारंबार करोगे॥ तब उनको युद्धके अभ्यास वशितें अहंकार का अंकुर आ
न उपजेगा॥ जब अहंकार का चमत्कार उपजा चित्त विषे॥ तब तिसका प्रतिबिंब इनके हृ
दय भी देखेंगे॥ बडाई वासना भी फुर आवेगी॥ जो हम एह हैं॥ हमकों एह कर्तव्य है॥ एह शरी

षि॰प्र॰
५८

ताकरतोयोगहै॥ एहकल्यानयोगहै॥ इत्यादिकवासनाजालउनकेचितविषेफु
रआवेगा॥ आपकोंदामव्यालकटजाणेगे॥ तबतुमउनकोंवशिकरिलेवोगे॥ तुमारी
जयहोवेगी॥ जैसेजालविषेफसापक्षीवशिहोजाताहै॥ तैसेइहअहंकारकरिकैव
शिहोवेंगे॥ अबउहवशिनहीहोते॥ सोतुम्हवतेंरहितवडेथीयेवानहैं॥ देवत्योंकरि
जीतणाउनकाकठणाहै॥ हेसाधो जोपुरुषवासनातेंसाथबांधेहूयेहैं॥ अरुकीदहू
पकार्यांकेवशिहैं॥ सोइसलोकविषेवशिहोतेहैं॥ जोकिंचिसीबुद्धिवानसर्वत्रसमबुद्धि
है॥ किसीविषेबंधाइमाननहीहोते॥ इष्टकीप्राप्तविषेहर्षनही॥ अनिष्टकीप्राप्तविषे
शोकहोयनही॥ सोकिसीकरिजीतेनहीजाते॥ उहअजीतपुरुषहै॥ अरुजिसकेअंत
रवासनाहै॥ वासनारूपीजेवडीसाथबांधेहूयेहैं॥ देहविषेअहंअभिमानहै॥ सोवडाभी
है॥ अरुसर्वकावेत्ताभीहै॥ तौबालकभीउसकोंजीतलेतेहैं॥ अहंममइदंइत्यादिककल
नाकरिकलंकतजोपुरुषहैसोसर्वआपदाकापात्रहै॥ सर्वआपदाउसविषेप्रवेशकरत
हैं॥ जैसेसमुद्रविषेनदीयांप्रवेशकरतीहैं॥ हेसाधो एहदेहमात्रपरिछिन्नरूपजोपुरु
षकोंजाणताहै॥ तिसीविषेभावनाभावितकरीहै॥ सोसर्वज्ञभीहै॥ तौभीकृपणताकों
प्राप्तहोताहै॥ उसविषेउदारताकहांहै॥ इसकाआपणास्वरूपअनंतआत्माहै॥ अप्रमेय
है॥ तिसस्वरूपकाजिसकोंप्रमादहूआहै॥ तिसआपकोंआपहीहीनकीयाहै॥ आ
त्मतत्वतेंउतरकछुभीइसकोंजवलगसतभासताहै॥ त्रिलोकविषेतवलगउपादेयबु
द्धिहोतीहै॥ तिसकीभावनासाथबांधारहिताहै॥ संसारविषेसतभावनाकरनीअने
कदुःखोंकाकारणहै॥ अरुसंसारविषेअसतबुद्धिसुखकाकारणहै॥ हेसाधो जबलग
रादामव्यालकटकोंजगतकेपदार्थोंविषेआस्थाभावनहै॥ तबलगतुमइनकेजीत
णेकोंसमर्थनहोवोगे॥ जैसेमच्छीवायुकेजीतणेकोंसमर्थनहीहोती॥ जिसकेअंत
रदेहविषेअहंभाववासनाहोतीहै॥ अरुजगतविषेसतबुद्धिहोतीहै॥ सोजीवहै॥ अरुदी
नताकोंप्राप्तहोताहै॥ भावेंकैसाबलीहोवे॥ उहजीतणासुगमहै॥ अरुजोछुकृपणहै
परुजिसकेअंतरवासनाहीनही॥ सोमुक्तिवतभीहै॥ तौभीसुमेरुवतदृढहोजाताहै
हेदेवताजोवासनासंयुक्तहै॥ सोपरकृपणताकोंप्राप्तहोताहै॥ सोतृणऔतृणक
रिवेध्याजाताहै॥ जैसेमनकेविषेछिद्रहोताहै॥ तबतागेकरिपरोयाजाताहै॥ जोछिद्र
तेंरहितहैसोपरोयानहीजाता॥ तैसेजिसकाहिदेवासनाकरिवेध्याहै॥ तिसकेअंतर
तृणऔतृणप्रवेशकरतेहैं॥ जोनिर्वंधहैतिसकेअंतरप्रवेशनहीकरते॥ तातेंतिसप्र
कारअहंसोअरुइदंआदिकवासनादामव्यालकटकेअंतरउपजे॥ सोईउपाउकरो
तातवतुमारीजयहोवेगी॥ जिसजिसविपदाकेभावअभावकोंजीवप्राप्तहोतेहैं॥
सोत्रिलोकीरूपीकरोजणकाहूटाहै॥ तिसकेभावकरिआपदाअरुअभावकरिआपदाका
अभावहोजाताहै॥ जोवासनारूपीतंतुसाथबांधेहूयेहैं॥ सोअनेकजन्मदुःखोंकोप्रा
प्तहोवेंगे॥ जोधीर्यवानहै॥ अरुसर्वज्ञहै॥ कुलकाअधिष्टाताबडाभीहै॥ परुत्रिलोपुत्र
है॥ तौबांधाहूआहै॥ जैसेसिंहहैपरुसंगलपिंगलपिंजरेविषेबांधाहूआहै॥ तबउस
काबलअरुवडयाईकिसीकार्यनहीआवती॥ तैसेत्रिलोकरिकैजोबांधाहै॥ सोतुच्छ
है॥ तिसकोंदेहमात्रविषेअहंभावहै॥ अरुचिदेविषेतृस्नापडीउपजतीहै॥ सोपुरुषअ
सेहैं॥ जैसेतागेसाथबांधापक्षीहोवेअरुपरमभीतिसीकोंवशिकरताहै॥ जैसेरत्नसाथबां
धेपक्षीकोंबालकभीलेवकरिवशिकरिलेतेहैं॥ अरुजोनिर्वासीपुरुषहैतिसकों
मारकोउनहीसकता॥ जैसेआकाशविषेउडतेपक्षीकोंकोउपकडनहीसकता॥ तातें
शास्त्रपढकोंत्यागेअरुउनकोंवासनाउपजावो॥ तबउहवशिहोवेंगे॥ इहजिसकोंअ
हंममइदंआदिकवासनानही॥ अरुरागद्वेषकरिअंतःकरणहोभमाननहीहोता॥ ति

हामोहरूपकहीरकरिजीवअहोगायेहैं॥ तातेंतुमविवेकपरकाआश्रयकरो॥ वो
धकरिकैसम्यकअवलोकनकरो॥ इंद्रियरूपशत्रोंकोंजीतकरिसंसारसमुद्रकों
तरिजावो॥ शरीरभीअसतहै॥ इसविषेसुखअरुदुःखभीअसतहै॥ तुमकोंदाम
व्यालकटकीन्याईमनतहोवे॥ भीमभासदृढकीस्थितकोंग्रहणकरिकैविशो
कहो॥ अहंअरुममादिकजोनिश्चयहै॥ सोअर्थहै॥ तिसकोंत्यागकरितनपद
काआश्रयकरो॥ चलतेवैठतेखातेपीतेमनविषेमनकाअभावहोवेगा॥ इति श्रीवसिष्ठ
करणमनस्यासततप्रतिपादनंनामसर्गः॥ वसिष्ठउवाच॥ हेरामजीइसलोकविषे
वांधवालोंकीन्याईविचरोगे॥ तवपरमसारकोंप्राप्तहोवेगे॥ दामव्यालकटकीन्याईम
तहोवे॥ भीमभासदृढकीस्थितहोवे॥ रामउवाच॥ हेभगवनसंसारतापकेहरकरणहा
रेहो॥ परंतुमोकोंकहो॥ उसकोंसंपूर्णकरिकहो॥ जोदामव्यालकटकान्याईकैसेहै
अरुभीमभासदृढकीस्थितकैसीहै॥ जैसेवर्षाकालकामेघतपकोंहरकरताहै॥ सो
वकोंप्राप्तकरिजगावताहै॥ तैसेतुमअपणीवाणीकरिजगावो॥ वसिष्ठउवाच॥ हेराम
जीप्रथमइनकाप्रकारअरुस्थितश्रवणकरु॥ पाछेजोइच्छाहोवेगा॥ तिसविषेविच
रणपातालकुहरविषेशंवरनामदैतराजहोतभयाथा॥ सोमायारूपसलीकास
मुद्रअरुसर्वआश्चर्यरूपमनकेमोहणेहारमलीक॥ सोदैतअपणीमायाकरिकै
आकाशविषेनगररचताभया॥ वागरचे॥ दैतोंकेमंदररचे॥ सूर्यअरुचंद्रमारचे
अनेकऐश्वर्यकरिसंपनदैतरचे॥ अरुरत्नोंकीयांइस्त्रीयांरचीयां॥ अरुनानाकरिदेव
तयोंकीयांइस्त्रीयांभीतिनजीतीयां॥ अरुहृदरचे॥ चंद्रमावततिनसाथफलेलागे॥ अ
रुकमलनीयांसेतपीतरत्नोंकीयां॥ सुवर्णकेहंसरचे॥ अरुसारसपक्षीसुवर्णकेअ
लवरीयांशाखाकरिवढेहूयअरुकरोंजपकेवृक्ष॥ तिनसाथकल्पवृक्षोंकेफूलपडेर
ततोकरिजडेहूयसेदरस्थानचेदनरचे॥ इंद्रकामंदरनवनतिसकोंजीतनहारेसर्वक
तीकेफूलतिनविषेदेवतयोंकीयांइस्त्रीयांतेअधिकसुंदरसुवर्णकीयांइस्त्रीयांक्रीडा
करतेफिरें॥ अरुवडेऐश्वर्यरचेविस्तीरणअरुमहाशिवजीकेसदृशऐश्वर्यसंयुक्तअपणा
नगररचीयां॥ रत्नोंकेताराणगालरचेवडेप्रकाशमानसंयुक्तजवराजतवसोचंद्रमापकटहो
देहोवे॥ चलतीयांजावकरें॥ अरुमायाकेहस्तीऔसेरचे॥ जोइंद्रकेऐरावतकोंजीत
लेवें॥ त्रिलोकीकीविभूतितेंउनकीविभूतिउसरची॥ अंतरवाह्यसर्वसंपदाकोंएककी
या॥ सर्वऐश्वर्यकरिसंपनअरुसर्वदैतमेउलेश्वरवडेदैताकेरे॥ आपसर्वदैतोंकाराजा
हूआ॥ सामंतोंकरिशोभारामसर्वउसकीआज्ञाविषेवरतें॥ महावडीयांभुजातिसकेनी
नीचेसर्वदेवताविश्रामकरें॥ इसप्रकारसेंहूणराजअरुस्थानोंकेमंडलेपरतिसरचे॥ सै
नारचीअरुराजकर्तेभया॥ तवशंवरसेनकरेअथवादेशांतरकोंजावे॥ तवअवका
शदेखकरितिसकीसेनाकोंमारजावें॥ अरुस्थानलूहलेजावेंदेवतयोंकोनाईकत
वरताकरणहारदैसेनापतिरचे॥ वडइसमाहेखकरिदेवतातिनकोंमारगये॥ तवस्त
णाकविशंवरकोपकीया॥ जोइनकोंनाशकरों॥ ऐसेविचारकरिअमरपुरीऊपरच
ढनकरीतवदेवताभयभीतहोइकरिसुमेरपर्वतविषेभवानीशंकरकेचरनोंकेसमीप
जाइकरिछपनभये॥ अबरवनईजोअरुसमुद्रविषेजाइछपे॥ जैसेप्रलयकालविषे
सर्वदिशांसूनहोजातीयांहैं॥ तैसेअमरपुरीसगरीसूनहोगया॥ तवदैतराजअमरापु
रीकोंशून्यदेखकरिकोपमानहूया॥ अग्निलगाईदीलोकपालोंकेपुरसर्वजलाइ
दीये॥ देवतयोंकोहेलकरा॥ परंतुकहूंदेखणेविषेनआये॥ जैसेपापीपुरुषोंकोंदेवता
अरुकहूंदृष्टनआवें॥ तैसेदेवताकहूंनभासे॥ तवशंवरकोपवानहोइकरिवडेवली

स्थि॰प्र॰
१२

वाहतसेनाकीरक्षानिमित्तमायाकरिकैरचताभया॥ मानोंकालकीसामग्रीहै॥ ऐ
सेहोइकरिस्थितभये॥ वडेआकारमानोपहाडोंसेघुरूपर्वतडरतेहैं॥ ऐसेयारीवदा॰
मयालकटकएहत्रितिनकेनामहैं॥ इसोविषेवडेशस्त्रअरुभुजाकल्पहतोंकी
नाई॥ अरुयथाप्राप्तकर्मविषेलागेरहैं॥ परुउनकाधर्म॥ अरुउनकेकर्मकाअभाव॥
काहेतेंजोपूर्ववासनाकरिउनकाकोउनया॥ निर्विकल्पचिन्मात्रउनकास्वरूपपरु
अपणेस्वभावसत्ताविषेस्थितनये॥ अरुअनात्मभावकोंभीनयेप्राप्तभये॥ एक
स्परस्मात्रकर्मरूपचैतनाउनविषेथी॥ सोकर्मोकावीजचितकल्पनारूपणी
हुईथीमननआत्मकयास्वशहारकउसरवेतिसीकोंपडेकरें॥ परुअंतरविषेसु
ष्टवासनाउनकेकोउनफुरे॥ अकसमातस्वभावकरूपाउनकीयडीहोवे॥ जैसेअ
धस्वप्नवालकअपणेअंगोंकोंस्वभावकरुलावताहै॥ वासनातेंरहिततैसेवासना
विनाउनचेष्टाकरें॥ सोइनाअरुविडवणाकछुनजाणे॥ नजाणेंसोहमइसकोंमाव
तेहैं॥ नपहजाणेंसोहममरतेहैं॥ नदौडजाणें॥ नभागजाणें॥ नजाणेहमजीवतेहैं
नजाणेहममरतेहैं॥ जीतअरुहारकोंकछुनजाणे॥ केवलशस्त्रकाप्रहारकरें॥ जैसे
यंत्रीकीपुतलीतागेकरिपडीचेष्टाकरतीहै॥ जैसेतागेकोंउरचलावताहै॥ तैसेसंवे
दननेंरहितचेष्टाकरतीहै॥ तैसेदामादिकचेष्टाकरें॥ महांवलीजिनकेप्रहारकरिप
र्वतभीचूरणहोवे॥ तिनकोंदेखकरिशांवरततुष्टमानभया॥ जोयहसेनाकीरक्षा
करणेकोंवडेवलीहैं॥ इनकानाशभीउनसेंनहोवेगा॥ काहेतेंजोइनदृष्टअनिष्ट
कछुनही॥ जिसकोंइष्टअनिष्टकाज्ञानअरुवासनाहोतीनही॥ तिनकानाशकेसे
होवे॥ अरुभागेंकेसे॥ जैसेदेवतयोंकेहस्तीवलीभीहैं॥ सोभीसुमेरपर्वतकोंउखा
डनहीसकै॥ रंतउनकेचूर्णहोजातेहैं॥ तैसेदेवतावडेवलीभीहैं॥ परुइनकोंनमा
रसकेंगे॥ यहवडेवलीरक्षकहैं॥ इति श्रीस्थितिप्रकरणेदामव्यालकटउत्पत्तिवर्णने
नामसर्गः॥ वसिष्ठउवाच॥ हेरामजीइसप्रकारनिरणयकरिकेशंवरदामव्याल
कटकोंस्थापनकीया॥ अरुभूतलविषेदेवतयोंकीसेनाभीआई॥ जवशांवरच
ढताया॥ तवभागजातेथे॥ अरुसेनाकोंदेखकरिअवरभीनिकसे॥ समुद्रपर्वतों
सेंउछलकरिनिकसे॥ एकओरतेंदैतहूए॥ एकओरतेंदेवतानिकसे॥ वडीसे
नासेयुद्धकरणेलागे॥ जैसेप्रलयकालविषेसमुद्रक्षोभतेहैं॥ सर्वजल॰
मयीहोजातीहै॥ तैसेदेवताअरुदैतसर्वओरतेंपूर्णहोगये॥ वडेवाणोंकरियु
द्धकरणेलागे॥ शंखधुनकरें॥ शस्त्रचलावेंतिनकेशब्दहोवें॥ अरुअग्निनिक
से॥ तारयोंवतचमत्कारकरें॥ शरीरसेंसिरकाटेजावें॥ धडकेएकएकचिरि
गिरिपडें॥ परस्परदोनोंओरतेंशस्त्रचलें॥ दामव्यालकटभागजाणेहीनही॥ मारते
हीजावें॥ जिनकेप्रहारोंसाथपर्वतचूर्णहोजावे॥ सर्वदिशाविषेशस्त्रपूर्णहोगये
रुधिरकीधाराचलें॥ तिनविषेदेवतादैतमृत्युवहितेजावें॥ महाप्रलयवतभय
उदेहूआ॥ एकएकअस्त्रऐसाचलें॥ जिनसेंशस्त्रोंकीधानदीयांचलें॥ कोउअग्निका
शस्त्रचलावें॥ द्वितीयमेघशस्त्रचलावे॥ कोउतमशस्त्रचलावें॥ द्वितीयप्रकाशरू
पअस्त्रचलावे॥ कोउनिद्रारूपद्वितीयप्रवोध॥ कोउसर्परूपद्वितीयगरुडरूपइसप्र
कारपरस्परयुद्धकरें॥ वहुरवअस्त्रचलावें॥ शिलाकीवर्षाहोवें॥ सर्वपृथ्वीचक्र
मानकविस्मरणहोगये॥ अनेकजीवोंकेंसीसधडगिरिपडे॥ जैसेवृक्षोंतेंपकेफल
गिरतेहैं॥ तैसेदेवतादैतगिरें॥ वडाफडभयागंधर्वकिंनरदेवतावहुतनष्टभये
दैतभीवहुतनष्टभये॥ एककछुकउनकीजीतरहे॥ इसप्रकारमायावीशांवरकीसे

सकोंप्राप्तोंकरिभीअरुअस्त्रोंकरिभीजीतकोउनहीसका॥ तातेंदामव्यालकटकेजी
तणेकोंअवरउपाइकरिसमर्थनहोवे॥ एहीउपाइहै॥ जोयुद्धअभ्यासकरिउनकोंअ
हंकारउपजावोगे॥ तोउहसमावेशविहोवेंगेतुमउनकेजीतणेकोंसमर्थहोवोगे॥
हेसाधो॥ उहतोशांवरदैतनेंरचेहूएयंत्रपुरुषहैं॥ उनकोंअंतरवासनाकोउनही
जैसेउसरवेहैंतैसेनिर्वासपुरुषहैं॥ जवतुमउनकोंयुद्धकाअभ्यासकरावोगे॥ त
वउनकोंअहंकारवासनाउपजआवेगा॥ यहउनकेवशिकरणेकीपरमयुक्तिहै॥ ज
वलगउनकेअंतरवासनानहीफुरती॥ तवलगतुमकरिउहअजीतहैं॥ इति श्री
स्थितिप्रकरणेदामव्यालकटोपाख्यानेब्रह्मावाक्योनामसर्गः॥ वसिष्ठउवाच॥ हेरामजीइ
सप्रकारब्रह्माजीकहिकरिकेअंतरध्यानहोतभये॥ जैसेसमुद्रविषेतरंगउ
पजकरिशांतहोकरिकेलयहोजाताहै॥ तैसेअंतरध्यानहोगये॥ तवदेवतावचनसु
णकरिअपणीअपणीदिशाकोंगमनकरतभये॥ जैसेकमलकीसुगंधकोंलेक
रिपवनजाताहै॥ तैसेजाइकरिकोउकदिनअपणेकल्याणकेनिमित्तअरुउनके
नाशनिमित्तउहअपणेस्थानोंतेंउठकरियुद्धकरणेकोंचले॥ प्रथमदेवतानेशं
खवजाये॥ महांवडेशब्दहूए॥ जैसेप्रलयकालकेमेघगर्जतेहैं॥ तैसेशब्दकरिसर्व
स्थानपूर्णहोगये॥ तवपातालछिद्रविषेशब्दसुणकरिदैतनिकसे॥ आकाश
मार्गतेंदेवताआये॥ वहुरयुद्धहोवणेलागा॥ तववरछीवाणमुदगरमूसल
गदाचक्रवज्रपर्वतअग्निवृक्षसर्पगरुडतेंआदिकरिअस्त्रशस्त्रचलाये॥ एक
ओरतेंमायकदैतचलावें॥ शस्त्रोंकेप्रवाहचले॥ देव
ओरतेंदेवताचलावें॥ वृक्षोंकीपांतदीयांचलीयांगईयां॥ चक्रमुदगरत्रिशू
परदेशविषेपर्वतपाषाणवृक्षोंकीपांतदीयांचलीयां॥ देवतयोंकेस्थानसोंभूमलोकविषे
लादिकशस्त्रऐसेचलेजैसे॥ गंगाजीकाप्रवाहदेवतयोंकेस्थानसोंभूमलोकविषे
आवताहै॥ तैसेशस्त्रोंअस्त्रोंकेप्रवाहचलेजावें॥ अग्निल
गीतणवेगकरिचलायाआवताहै॥ तैसेघास्त्रोंअस्त्रोंकेप्रवाह॥ सीसभुजाकाटेगये
गाईदेवताअरुदैतोंकेसंहूहनपहूहोगये॥ अंगफूटगये॥ जैसेसमुद्रकेउछलणेकरिपृथ्वीजलकरि
संपूर्णहोपृथ्वीरक्तकरिपूर्णभयी॥ जैसेसमुद्रकेउछलणेकरिपृथ्वीजलकवि॰
पूर्णहोजातीहै॥ तैसेरुधिरकरिपूर्णहोताहै॥ आकाशदिशाविषेअग्निकातेजव
गया॥ जैसेप्रलयकालविषेद्वादशसूर्यकातेजउदेहोताहै॥ वडेपर्वतोंकीवर्षाहो
वेरुधिरकेप्रवाहविषेपर्वतभ्रमतेफिरें॥ जैसेसमुद्रविषेतरंगघुमरखेरफिरते
हैं॥ हेरामजीऐसाघोरयुद्धभया॥ तणविषेपर्वतोंकेप्रवाहदृष्टआवें॥ तणविषेशस्त्रों
केप्रवाह॥ तणविषेसर्पोंके॥ तणविषेगरुडोंके॥ तणविषेअपस्वागणअंतविदे॥
तणविषेजलमयीहोजावे॥ तणविषेसर्वस्थानअग्निसोंपूर्णहोजावें
विषेभासें॥ तणविषेसर्वओरतेंअंधिकारभासे॥ महाभयानक
तणविषेसूर्यकाप्रकाशभासेतणविषेसर्वओरतेंअंधिकारभासे॥ महाभयानकयु
द्धहोणेलागा॥ दैतआकाशविषेवडेउडउडकरियुद्धकरेंदेवतावज्रावज्रादि
कशस्त्रचलावें॥ जैसेपहाडोंसेंरहितपर्वतगिरतेहैंतैसेदैतगिरेंभूमलोकविषेआन
नपडें॥ अनेकदेवताअरुदैतोंकेसंहहविउपडे॥ किसीकाशिरकिसीकीयांभुजा
कटीयांगेयां॥ चर्णहस्तहस्तकाटेगयेजैसेवृक्षपर्वततेंहीनहैं॥ तैसेजिनकेशरी
रहैं॥ सोगिडपडे॥ अनेकसंकटोंकोंदेवताअरुदैतप्राप्तभये॥ महादारुणयुद्धहो
वणेलागा॥ इति श्रीस्थितिप्रकरणेदामव्यालकटोपाख्यानेयुद्धवर्णनेनाम
सर्गः॥ वसिष्ठउवाच॥ हेरामजीइसप्रकारजवदेवताअरुदैतोंकायुद्धभया॥ तवदेव
तयोंकाधीर्यनष्टभया॥ यहतेंकपणारूढकविअंतरधानहोगये॥ वडूडपेतीस
वर्षकेउपरांतआनकरियुद्धकरतभये॥ कवहूंदिनपंचसमअष्टउपरांतकवहूंमा

सद्रूपता नयुद्ध करें ॥ वहां उठ पजावें ॥ ऐसे विचार करि छलसों उनके साथ युद्ध करणे ला
गे ॥ कबहूं रामादिकके निकट जावें ॥ कबहूं रहणे ॥ कबहूं धावें ॥ कबहूं आगे ॥ कबहूं पाछे
कबहूं भाग जावें ॥ हे रामजी जब देवताने ऐसे अनेक उपाय कीये ॥ तब वहि युद्धके अभ्या
सतें देवतोंके पाछे धावणे लागे ॥ इति उतिओर देखकरि मारणे लागे ॥ देहादिक विषे तिन
कों अहंकार फुर आया ॥ हे रामजी अतिशय निकटता करिकें दर्पण विषे भी प्रतिबिंब प
डता है ॥ दूर काम नहीं पडता तैसे अतिशय करिके अभ्यासतें अहंकार उर आवता है ॥ अ
न्यथा नहीं फुरता ॥ जब अहंकार तिनकों फुरा ॥ जब परायों की वासना भी फुर आई ॥ व
डा पह फुर आया ॥ जो हम दामादिक हैं ॥ किसी प्रकार जीवने रहें जीवणे की इच्छा क
रिके दीन भावको प्राप्त भये ॥ तब भयको प्राप्त भये ॥ जो इस प्रकार हम नाश होवेंगे
इस प्रकार हमारी रक्षा होवेगी ॥ सो उपाय करें ॥ जिसकरि हम जीवते रहें ॥ इस प्रका
र आशा की फांसी साथ बांधे हूए दीन भावको प्राप्त भये ॥ आपको देह मात्र विषे आस्था
करते भये ॥ कहित भये जो देह रूप लता हमारी स्थिर रहे ॥ हम सुखी होवें ॥ हम कों धन
होवे ॥ तिसकरि सुखी होवें ॥ इस वासना करि गुरु रूप सबलें धीर्यको त्यागते भये ॥ जा
णने लागे ॥ जो यह मारे शत्रु हैं नाश करेंगे ॥ इनते हमारी रक्षा होवे ॥ इत्यादिक कायरता
कों प्राप्त हूये धैर्य नष्ट होगया ॥ जैसे जल बिना कमल की शोभा जाती है ॥ तैसे इनकी शो
भा जाती रही ॥ खानपान की वासना फुर आई ॥ संसार की भयानक गतकों प्राप्त हूए
युद्ध करे तब आश्रय ले करि करें ॥ वर्म ढालादिक धारेंगे ॥ अहंकार करिकें भयभीत
हूए ॥ यह हमकों मारते हैं ॥ हम मरते हैं ॥ इस चिंता करिकें तिनके विदेषाद भये ॥ दानेश
ने युद्ध करणे लागे ॥ जब देवता सन्मुख आवें ॥ तब बचाइ जावें ॥ भयभीत होइकरि भा
गें ॥ अहंकार जो आन करि उदय हूआ ॥ तिसकरिकें तिनके मस्तक पर आपदा ने आन वर्षा
दीये ॥ मरुं दीन जैसे होगये ॥ मुख की शोभा जाती रही ॥ धीर्य बल नष्ट होगया ॥ ऐसे होग
ये ॥ जो कोऊ आगे आन पडे दीन होइकरि तो भी तिसकों मार न सकें जैसे काष्ठ ते रहित अग्नि दी
खकों नहीं भक्षण करती ॥ तैसे वह निर्बल होगये ॥ अंग काटे जावें ॥ भाग भाग जावें ॥ जैसे
अवर सामान्य पुरुष युद्ध करते हैं ॥ तैसे युद्ध करणे लागे ॥ हे रामजी विशेष करि दामा
दि मरणते विशेष भय करते भये ॥ युद्ध न करि सकें ॥ तब देवता जो वज्रादिकों करि तिनर
कों प्रहार करें ॥ तिनकरि घूर्ण होइकरि भयभीत भागे ॥ सर्वसेना दैत्यों की भागी जावे ॥ जो र
जो देश देशांतरमें आय ये अरु मारे कोउ किसी देशकों कोउ पर्वत कंदरा जल विषे गये
जहां जहां स्थान देखा तहां तहां होवले गये ॥ दैत भयभीत होइकरि पराजेन हूए अरु दव
मोंकी जगह ई ॥ दैत्य भागकरि पाताल विषे जाइ छपे ॥ इति श्रीस्थितिप्रकरणे दामव्याल
कटोपाख्याने अहंकारप्रशानेनाम सर्गः ॥ वसिष्ठ उवाच ॥ हे रामजी इस प्रकार जब दे
वताउत्पमानहूए अरु दाम व्याल कट भयभीत होइकरि भागे पाताल कों गये ॥ देवत्यो
का भय पाया ॥ अरु शंबर सो भी भय पाया ॥ जैसे प्रलयकाल की अग्नि प्रज्वलित होती
है ॥ तैसे शंबर प्रज्वलित अग्निका रूप है ॥ तिसके भय सों दाम व्याल कट समसमें पाता
ल विषे जाइ स्थित भये ॥ तहां देनों के मंडलकों छोड करि जहां यम किंकर रहते हैं ॥ ति
नहां विषे जाइ रहे ॥ कऊ हानाम होइकरि तिनहां रहते भये ॥ नरक रूप समुद्र की यांपल
कों यम किंकर हैं ॥ तिनदों दया करिकें इनकों वैठाया ॥ जैसे पापीयोंकों चिंता प्राप्त हो
ती है ॥ तैसे इनकों इस्त्री प्राप्त भयी ॥ तिससे पुत्र जन्मे पाताल विषे रहते भये ॥ आगे
उनकी बडी संतान हूई ॥ सब पौत्रादिक समस्त ॥ १० ॥ वर्ष तहां वसतीन की ये वासना
दृढ होगई ॥ यह मेरे पुत्र हमेरी इस्त्री है ॥ पुत्र कलत्र बांधवों विषे अरु अति होगया ॥ एव

कालमें धर्मराज यमपाली इच्छा करि तहां आगमन करते भया ॥ तिनकों कालकूट कार्य करणा था ॥ ति
सकों देखकरि सर्व किंकर उठि खडे भये ॥ प्रणाम कीये ॥ अरु दाम व्याल कट तिसकी वडयाई
कों नहीं जानते ॥ अवरों किंकरों के सामान जाणकरि प्रणाम नहीं करते भये ॥ तब वैव
स्वत यमराजने क्रोध कीया ॥ जो इह दुष्ट मानी हैं ॥ इनकों सामना दईया चाहीये ॥ इस प्रकार वि
चारकरिकें भृकुटी ऊंची साथ करि उनकों कहा अग्निकी ज्वाला ई है ॥ तहां इनकों डारदेवो ॥ प
रवार बांधवों समेत ऊहां कदन करते रहें प्रकार तेरहे ॥ परंतु धर्म किंकरों ने डार दीया परवा
र संयुक्त नक्र अग्नि विषे जल गये ॥ जैसे दावाग्नि विषे पत्र फूल फल सब स्थित भस्म होते
जल जाता है ॥ तैसे जल गये ॥ तब उन्ह समते वासना करिकें किरात देश का जो राजा था ॥ ति
सके किंकर जीव जनाइ हूए ॥ कहा जीवोंकी हिंसा करते रहे सब जीवों का शरीर छूटा तर
व कुवजो हूए ॥ वडे उछल हूए ॥ वह उवगले जाइ भये बहुरि उचिरातें देश विषे जीव रहूए ॥ वे
डु उवर देश विषे मछ हूये ॥ मगध देश विषे कीट जाइ भये ॥ हे रामजी इस प्रकार दाम व्या
ल कट तीनों वासना करिकें अनेक जन्मों को पावते भये ॥ वडे अवक पंभीर देश विषे
पंकत तलाव है ॥ तिस विषे तीनों ताहूए ॥ वनकों अग्नि लागी थी ॥ तिसकरि जल भी सूक
गया ॥ अल्प जैसा उष्ण रूप रहा ॥ तिसी विषे रहते हैं ॥ अरु उही जल पान करते हैं न मरते
हैं न जीवते हैं ॥ जीवणे की जो कोऊ संपदा है तिसकों भी न दीखते ॥ चिंता करिके पडे ज
लते हैं ॥ हे रामजी अज्ञान करि उपजते भी रहे ॥ अरु मरते भी रहे ॥ अनेक बार जन्म अरु मृ
त्यु ॥ जैसे समुद्र विषे तरंग उपजते हैं ॥ अरु मिटते हैं ॥ जैसे जल विषे तृण आयातन वेगोक
विभ्रमता है ॥ तैसे उह वासना करिकें भ्रमते फिरे हैं ॥ अब लग इनकों शांतता नहीं प्राप्त भयी ॥
अहंकार वासना महादुःखों दुःखका कारण है ॥ इसके त्यागनें सुख है ॥ अन्यथा सुखक
दाचित नहीं ॥ ११ ॥ इति श्रीस्थितिप्रकरणे दामव्यालकट जन्मांतर वर्णनं नाम सर्गः ॥ वसिष्ठ
उवाच ॥ हे रामजी तेरे अवबोधके निमित्त मैंने तुझकों दाम व्यालकट का न्याइ कहा है ॥ जो तिनकों
स्याई तुझकों मत होवे ॥ इस निमित्त इतिहास कहा है ॥ अवकों ऊली ला का प्रयोजन था ॥
अविवेकीयोंका निश्चय ऐसा है ॥ अनेक आपदाकों प्राप्त करता है ॥ अनेक दुःखोंकों भुगतवता
है ॥ कहां शंबर दैत्य की सेनाके नायक अरु देवत्यों के नाशक ते ॥ अरु कहां तम जल के जलम
लजनरजीभावकों प्राप्त हूए शरीर भावकों प्राप्त हूए शरीर तिनके ॥ कहां उह धीर्य अरु
बल जिसकरि देवत्योंकों नाश करणा ॥ अरु भगावणा ॥ अरु आप चलायमान न होइ
वणा ॥ अरु कहां किरात देश के राजा के किंकर होवणा ॥ कहां उह निरहंकार चित शो
न अरु उदारता धीर्य ॥ अरु कहां मिथ्या वासना करिकें बलत मिथ्या अहंकार संयुक्त
होवणा ॥ यते दुःख आपदाकों जो प्राप्त हूए ॥ सो अहंकार करि हूए हैं ॥ अहंकार क
रिकें संसार रूप विषकी मंजरी साया प्रतिष्ठा पावती है ॥ संसार रूप पह्दत्त का अंकुर
अहंकार है ॥ जब लग अहंकार है ॥ तब लग अनेक आपदा दुःख प्राप्त होते हैं ॥ ता
तें तुम यत्न करिकें अहंकार का मार्जन करो मार्जन क्या कहीये ॥ अहंरूप जो अहंक
त है ॥ तिसकों असत रूप जाणो ॥ जो यह मैं कछु नहीं ॥ इस मार्जन करिकें सुखी होवे
गो ॥ हे रामजी आत्मरूप अमृत का वेदायवेके ॥ शांत लशांत रूप तिसके आगे है ॥ अहंका
र रूप मेघ आया है ॥ तिसकरि प्रकाश भया भासता नहीं ॥ जब विवेक रूप पवन चले
तब अहंकार रूप बादल नष्ट होजावे ॥ आत्म रूप चंद्रमा प्रत्यक्ष भासे ॥ अहंकार रूप पि
शाच उपजया ॥ तब दाम व्याल कट यह तीनों माया रूप दानव समंत होइ करि घने कष्ट
पदाकों भोगते भये ॥ अब कश्मीर के तडाग विषे मछ पडे हैं ॥ सिवाल कोल वभोज न
लगकरणे कों पडे यत्न करते है ॥ जो अहंकार न होता तो एती आपदाकों प्राप्त होते
रामोवाच ॥ हे भगवन् सत का अभाव नहीं होता ॥ अरु असत का अभाव नहीं हो

वासि०

ता॥ सो असत राम बालक के सत के से भये॥ वशिष्ठोवाच॥ हे रामजी इस प्रकार है जो सत न
हीं सो किसी को कबहूं कछु नहीं होता॥ एक ते सत किस को असत को आपमें देखता है॥ अरु
असत कबहूं सत होता देखा है॥ तो स्थिर रूप आहे॥ इसी ते रे कहता हों सो युक्त करि मेरे उपदेश को
बोध करोगा॥ रामोवाच॥ हे भगवन हम तुम जो पदार्थ हैं सो सत रूप हैं अरु हम पद कहता
ये सो असत रूप था या माया सो सत के से भये सो कहो॥ वशिष्ठोवाच॥ हे रामजी जैसे रामादि
क माया रूप असत ही सत होते हैं॥ इस करि स्थित भये॥ मृगत्रिष्णा के जल वत॥ तैसे ही तुम हम आदि
क देवता दानव संपूर्ण संसार असत माया मात्र असत होइ कर विभासता है॥ बस्त ते कछु हूआ न
हीं॥ जैसे स्वप्न विषे अपणा मरणा आपन भव होता है॥ सो भी असत रूप है॥ तैसे तुम हम आदिक ए
ह जगत अनुभव होता है॥ सो भी असत रूप है॥ जैसे स्वप्न विषे अपणे बोध बस्त आन मिलते
हैं॥ व्यवहार करते हैं प्रत्यक्ष भासते हैं॥ सो असत रूप होते हैं॥ तैसे एह जगत असत रूप है॥ हे रा
मजी एह जो मेरे वचन हैं॥ सो मूढों का विषय होते नहीं॥ उन को शोभते नहीं॥ काहे ते जो अ
ज्ञानी के हिरदे विषे संसार का सदभाव दृढ है॥ अरु अभ्यास विना इस निश्चय का अभाव नहीं
होता॥ जैसा निश्चय किसी के चित विषे दृढ होय रहा है॥ सो दृढ अभ्यास के यत्न विना दूर नहीं
होता कदाचित भी॥ जिस को एह निश्चय है॥ तो जगत सत है॥ सो मूढ उनमत है॥ अरु जो ज्ञा
नवान है॥ तिस के हिरदे विषे जगत का सदभाव नहीं होता॥ केवल ब्रह्म सत्ता का भान होता है॥
अज्ञानी को जगत सत भासे है॥ अज्ञानी के निश्चय को ज्ञानी नहीं जाणता॥ ज्ञानी के निश्चय
को अज्ञानी नहीं जाणता॥ जैसे मर करि मन होवे॥ तिस के निश्चय को असत नहीं जाणता॥
अरु असत के निश्चय को मत नहीं जाणता॥ तैसे ज्ञानी अज्ञानी का निश्चय एक वचन दी होता
एह अपरिक्षा याप कवन नहीं होता॥ जिस के चित विषे जो निश्चय है॥ तिस को उही दूर करे अ
भ्यास यत्न करि॥ तो दूर होता है॥ अन्यथा नाही होता॥ ज्ञानी भी अज्ञानी के निश्चय को दूर
नहीं करि सकता॥ जैसे मृतक को जीवत का ज्ञान को मन धन नहीं ग्रहि करि सके॥ जो उस के निश्च
य विषे आहे जो ज्ञानवान है॥ तिस के निश्चय विषे सर्व ब्रह्म का भाव होता है॥ अवर जगत
है न कछु नहीं॥ तिसी को मेरे वचन शोभते हैं॥ आत्म अनुभव सर्वदा सत रूप है॥ अवर स
र्व असत पदार्थ हैं॥ एह वचन अबुध का विषय है॥ तिस को शोभते हैं॥ अरु अज्ञानी को ज
गत सत भासता है॥ ता ते ब्रह्मवाणी तिस को नहीं शोभा देती॥ ज्ञानी को एह निश्चय है
जो जगत रंचक मात्र भी सत नहीं॥ एक अद्वैत परम सत्ता स्वरूप है॥ एह अनुभव बोधवा
न का है॥ तिस के निश्चय को दूर कोऊ नहीं करि सकता॥ परमात्मा ते चित रे चित रे कछु भे क
छु नहीं॥ जैसे स्वर्ण विषे भूषण कछु नहीं होता॥ तैसे आत्मा विषे वशिष्ठ भाव कछु न
हीं॥ अरु अज्ञानी को ऐसे भासता है चित ने रे कछु नहीं भासता॥ जैसे स्वर्ण विषे भूषण हो
ता है॥ तैसे उह आप को नाम मात्र जाणता है॥ सम्यक दर्शी को इस ते विपरीत भासता है
जो पुरुष होवे अरु कहे मैं बहुत हों जैसे एह वचन उनमत रूप है तैसे हम तुम आदिक अस
त हैं सत उही है जो शुद्ध संवित बोधाकाश निरंजन रूप है॥ सर्वगत शांत रूप है॥ इत्यादि अ
र्थ ते रहित है॥ जैसे नेत्र दूषण वाले को आकाश विषे तरवरे भासते हैं॥ तैसे अज्ञानी
को जगत सत रूप भासता है॥ आत्म सत्ता विषे जैसा जैसा किसी को निश्चय होगया है॥ तै
सा तैसा तिस को आन होइ भासता है॥ बस्त ते जैसे हम आदिक अण होते हैं॥ तैसे तुम हम आ
दिक जगत है॥ अनंत चेतन आकाश सर्वगत निराकार तिस विषे फुरणा होता है॥ सोई देह
इ भासे॥ तैसे तुम हम आदिक फुरणे मात्र हैं संवेदन के फुरणे करि स्थित भये हैं॥ जैसे
स्वप्न का नगर भासता है॥ जैसे मृगत्रिष्णा की नदी भासती है॥ तैसे तुम हम आदिक ज
गत आत्मा विषे भासता है॥ अबुद्धि को सर्व चिदाकाश ही भासता है॥ अरु अवर सर्व स्वप्न

नगर स्वप्न नगर मृगत्रिष्णा के जल वत भासता है॥ जो आत्मा की ओर जागे हैं॥ अरु जगत की ओर
ते सोए हैं॥ सो महा रूप है॥ अरु जो आत्मा की ओर ते सोए हैं॥ अरु जगत की ओर जागे हैं सो
जागे हैं॥ सो अज्ञानी बंध रूप हैं॥ अरु बासना बंधन को ऊ मान्या है तब जागता है॥ तब बंध है न
मा है॥ केवल चिदाकाश है॥ सोई जगत रूप होइ भासता है॥ निर्वाण सत्ता ही जगत्वेद
मी होइ करि स्थित भयी है॥ अरु जगत निर्वाण रूप है॥ दो नाम एक ही वस्तु के पर्याय हैं
जैसे विटप अरु द्रुम एक ही वस्तु के दि नाम हैं॥ जैसे ब्रह्म अरु जगत एक ही वस्तु के पर्याय
हैं॥ जैसे आकाश विषे तरवरे भासते हैं॥ अरु है नहीं॥ आकाश ही है॥ तैसे अज्ञानी को ब्र
ह्म विषे जगत भासता है सो है नहीं॥ ब्रह्म ही है॥ अपणे नेत्रां विषे तिमिर रोग होता है॥
तिस करि तरवरे भासते हैं॥ तरवरे नेत्र रोग ते भिन्न नहीं॥ तैसे अपणा आप ही नाना
रूप होइ भासता है॥ सो चिदाकाश स्थान विषे भासता है॥ सो चिदाकाश सर्व ओर
व्यापक है॥ तिस ते उपर जग असत रूप है॥ कछु बस्त नहीं॥ सत रूप एक निर्मल आकाश
उही सता है॥ महाशिला अनवत स्वच्छ निरस्पर ई उदे अस्त ते रहित है॥ ताते सर्व संकल्प
कलना को त्याग करि तिसी अपणे आप विषे स्थित होवा॥ इति श्री स्थिति प्रकरणे नि
र्वाणवर्णनं नाम सर्गः॥ रामोवाच॥ हे भगवन असत नहीं सत नहीं तो होइ स्थित रूप आहे
जैसे बालक को परछावें विषे पिशाच होइ भासता है॥ सो जैसे सत्य था तैसे हुआ अब एह क
हो जो राम बालक के दुःख का अंत कैसे होवेगा॥ वशिष्ठोवाच॥ हे रामजी जब तिन
को यमराज अग्नि विषे भस्म करावा॥ तब यम सों किंकर एह कहत भये॥ हे प्रभो इन का उद्धा
र कब होवेगा॥ तब यमराज कहा॥ हे किंकरो जब एह तीनों परस्पर बिछुड जावेंगे अरु
अपणे संपूर्ण कर्मा आवरण करेंगे॥ तब निरसंदेह होइ करि मुक्त होवेंगे॥ एह नेत है॥ रा
मोवाच॥ हे भगवन एह अपणा हूं तीनों तब कहां होवेंगे॥ अरु कब स्वरूप पावेंगे॥ अरु कब मा निरू
पण करेगा॥ वशिष्ठोवाच॥ हे रामजी कश्मीर देश विषे एक वडा कहै॥ अरु कमलों क
रि पूर्ण है तिस के निकट एक पर्वत के निकट दुर्गा का है॥ तिस विषे चिरकाल पर्यंत वारे वा
र मत्स्य होवेंगे॥ जब अनेक जन्मों के पुण्य परम पुरुषों की स्तुती तक वेंगे तब मत्स्य शरीर त्या
ग करि सारस पक्षी होवेंगे॥ कमलों के तडाग उपर रहेंगे॥ कलोर अरु कमलनी पाउत
पल आदिक कमलों विषे विचरेंगे॥ सुगंध को लेते चिरकाल वृत्ती तक रहेंगे॥ तब उस त
डाग तीर्थ के मलातम करि के अनेक पाप नष्ट होवेंगे॥ अरु बुद्धि निर्मल होवेगी॥ तब
तीनों आपस मों विछुड जावेंगे॥ अरु मन की शुद्धि उन को प्राप्त होवेगी॥ जैसे रा
जसता मसता न क गुण स्वभाव छुट तब विछुड जाते हैं॥ आपस मों तैसे उह परस्पर छुट तब विछु
ड जावेंगे॥ कश्मीर विषे एक पर्वत है॥ तिस के सिखर पर एक नगर बसेगा॥ तिस
शिखर का नाम प्रद्युमन होवेगा॥ तिस शिखर पर कमलों के विषे एक तडाक होवे
गा॥ तहां एक राजा का स्थान होवेगा॥ ईशान कोण की ओर राजा का मंदर होवेगा॥ ति
स मंदर के किसी छिद्र विषे आसन लोपाइ करि आलना मैं तत्र चिडा होइ करि रहे
गा॥ आलना वणाय करि कैसा आलना जो वायु करि के पड रहे अरु लेंमे त्रिणादिक जिस
के॥ तहां उह पक्षी हूं करेगा॥ जैसा शब्द जो अर्थ जिस का कछु न भासे॥ निरर्थक शब्द हो
वेगा॥ अरु तिस मंदर विषे रहेगा॥ तिस काल मों श्री यशस्कर देव नाम राजा होवेगा
गुण विभूत करि संपन्न मानो इंद्र है॥ दूसरी तिस के मंदर छत की कडी के छिद्र विषे दा
म नाम देत मच्छर होइ करि रहेगा॥ भूं भूं शब्द करि तो विचरेगा॥ अरु कट नाम दैत नदी
ओरडा का पक्षी होवेगा॥ रत्नों करि खचित पिंजर विषे रहेगा॥ तिस राजा का मंत्री बडा
बुद्धिवान होवेगा॥ जैसे हम आमल होता है॥ तैसे बंध अरु मोक्ष का ज्ञान मंत्री को प्रसि
द्ध होवेगा॥ अरु नरसिंह नाम मंत्री का नाम होवेगा॥ सो मंत्री राजा के आदाम बालक को

स्थित॰ ४५

काया ओ के बांधक विसलाणा वेगा ॥ तब करकर नाम पक्षी हूआ कर देते हैं ॥ सो पिंजर वि
षे श्रवण करेगा ॥ तिस श्रवण करणे ते उसकों अपणी सर्वहृत तत्स्मरण आनंद होवे
गा ॥ तिसकों विचारेगा ॥ तब मिथ्या अहंकार गलित हो जावेगा ॥ परम निर्वाण सत्ता को
प्राप्त होवेगा ॥ इसी प्रकार राजा के मंदर के छिद्र विषे बालदेत चिडइ हूआ भी श्रवण क
रेगा ॥ उह भी परम निर्वाण सत्ता को प्राप्त होवेगा ॥ इसी प्रकार लकडी के छिद्र विषे रहि
णे हारा दाम नाम देत मछर भी श्रवण करि कै मोक्ष होवेगा ॥ हे रामजी करकर पक्षी
अरु विडा अरु मछर तीनो पर्वत के शिखर राजमंदर विषे वसणे हारे मोक्ष होवेगे ॥ प
रु से एणे क्रम तुझ कों कहा है ॥ जो संसार माया मय है ॥ अत्यंत भी सत्य प्रकाश
रूप भासता है ॥ तो भी अत्यंत असत् अविचार ते सिद्ध है ॥ विचार करि कै ज्ञान रूप ते शांत
हो जाता है ॥ जैसे मृगतृष्णा का जल सत्य की प्रकार देखते शांत हो जाता है ॥ अज्ञानी
पुरुष पिवे ते पद कों प्राप्त होता है ॥ तो भी अपि ते अपि अहंकार कों चला जाता है ॥ जैसे दाम
व्याल कट महाजाल विषे पडे ॥ कहां उह बल जो भुजों करे देवकरणे करि सुमेर चंद्रावल
पर्वत जैसे उखजावें ॥ कहां राजा के गृह विषे काष्ठ के छिद्र मो मछर होणा ॥ कहां उह बल
जिस के रस्तह की चपेट करि कै सूर्य अरु चंद्रमा गिर पडें ॥ कहां शत्रुमन पर्वत के गृह छिद्र
विषे विडा हो रहिणा ॥ कहां उह बल जो सुमेर पर्वत कों पीनपुष्प वत लीला करि कै उठा
इ लेणा ॥ अरु कहां पर्वत के शिखर गृह विषे करकर पक्षी होणा ॥ एक अज्ञान रूप अहंका
र करि कै पतीलघुता कों जीव पावते हैं ॥ अज्ञान करि कै रंजन भये मिथ्या भ्रम देखते हैं
प्रकाश रूप चिदाकाश सत्ता कों त्यागे विना त्यागे की न्याई इन कों भासता है ॥ अपणी वा
सना कल्पना करि कै जगत असत रूप भासता है ॥ जैसे मृगतृष्णा का जल मिथ्या भ्रम
करि कै सत भासता है ॥ तैसे अपणी कल्पना करि जगत सत भासता है ॥ इस संसार सम
द्र के तरणे कों उह ही समर्थ होता है ॥ जो मन तथा शास्त्रा के विचार द्वारा निर्वाण पुरुष हूआ है ॥
जो संसार ॥ जो संसार निरूपक शास्त्र है तारक कहिणे कों वडा प्रकाश रूप शब्द है जिन
का ॥ तिन कों आश्रय जो करता है ॥ सो संसार के पदार्थों कों भस्म रूप जाणता है ॥ ताते अ
धः कों गिरता है ॥ जैसे दीपक कों जल रूप जाण कर स्नान के निमित्त जावे ॥ अरु गिर पडे
हे रामजी अपणा अनुभव रूप जो प्रसिद्ध मार्ग है ॥ तिस विषे जो प्राप्त भये हैं ॥ तिन का ना
श न ही होता ॥ सावेन सर्व उन्नत वले जाते हैं ॥ जैसे पंथी सुधे मार्ग चला जावे ॥ अरु निरूप
क जो शास्त्र है ॥ सो अखेद मार्ग है ॥ अवर संसार निरूपक दुःखदायक मार्ग है ॥ एह जग
त असत रूप भ्रांत मात्र है ॥ जिस की बुद्धि इसी विषे है ॥ जो पद पदार्थ एह सुख रूप कों
हावे ॥ इस प्रकार संसार के विषयों की त्रिसना करता है ॥ सो अभागी है ॥ अरु जो आत्मवान पु
रुष है ॥ तिन कों जगत तृणवत तुच्छ भासता है ॥ जिस पुरुष के रिदे विषे परमात्मा
का चमतकार भया है ॥ सो इस ब्रह्मांड खंड लोक अरु लोकपालों कों तृणवत देखता है ॥ जै
से जीव अपदा कों त्यागते हैं ॥ तैसे उन के चित विषे स्वर्ग भी अपदा रूप त्यागणे योग है
ताते अंतर निश्चय आतमा विषे राखवा ॥ अरु वाह्य जैसा अपणा आचार है ॥ तैसे विवे
आचार विति क्रम न ही करणा ॥ अतिक्रम करि तो करि के शुभ कार्य भी अशुभ हो जाता है ॥
जैसे राहु दैत ने यद्यपि अमृत पान करणे का यतन कीया ॥ तो भी विति क्रम करणे क
रि मारीवे कदावत भया ॥ ताते शास्त्र अनुसार चेष्टा करणी कल्याण का कारण है ॥ सत
शास्त्र अरु संत जनों की संगत वडा प्रकाश करती है ॥ जो पुरुष इन का सेवन करता है ॥ सो
मोह अंधकूप को नहीं प्राप्त होता ॥ हे रामजी वैराग संतोष धीर्य उदारतादिक जो गुण हैं
हैं ॥ सो जिस के रिदे विषे प्रवेश करते हैं ॥ सो पुरुष परम संपदा पावता है ॥ अपदा उस कों न
ष्ट हो जाती है ॥ जो पुरुष शुभ गुणों करि संपन्न है ॥ अरु सत शास्त्र श्रवण विषे लगा है ॥ अ

हुस्सल वासना है ॥ सो पुरुष मनुष्य है ॥ अवर सर्व पशु है ॥ जिन पुरुषों कों वैराग संतोष धीर्या
दिक गुणों की चांदणी प्रसर रही है ॥ अरु विवेक रूप आकाश विषे विवेक रूप चंद्रमा प्रकाश
ता है ॥ तिन का शरीर न हीं मानो क्षीरसमुद्र है ॥ तिन के रिदे विषे विसनु विराजता है ॥ जो कछु
तिन भोगणा था ॥ सो सर्व भोग्या है ॥ जो कछु देखणा था ॥ सो देख्या ॥ वहुड भोगणे देखणे
की त्रिसना न ही रहती ॥ जिस पुरुष का यथा क्रम यथा शास्त्र आचार है ॥ अरु उदार चित
है ॥ तिस के रिदे सों भोगों की त्रिसना निवृत हो जाती है ॥ जिन पुरुषों के गुण आकाश विषे
सिद्ध देवता अपसरा गाइन करते हैं ॥ सो पुरुष जीवते हैं ॥ अवर सर्व मृतक हैं ॥ ताते परम पुरु
षार्थ का आश्रय करो ॥ जो परम सिद्धता कों पावो ॥ उह कवण वस्तु है ॥ जो शास्त्र अनुसा
र अनुद्वेग होइ करि पुरुषार्थ कीये ते न प्राप्त होवे ॥ अवश्य मेव प्राप्त होता है ॥ अरु यथा शा
स्त्र रूपा करे ॥ अरु चिरकाल हू तीत हो जावे ॥ सिद्ध न हो जावे ॥ तो भी उद्वेग न करे ॥ उह फल
अपक होइ करि विश्राम होवेगा ॥ जैसे वृक्ष सों फल चिरकाल पकइ होइ करि उतरता है ॥ तव
आधि का सिद्ध होता है ॥ अरु सुख दायक होता है ॥ यथा शास्त्र व्यवहार करणे हारा तिस
पद कों प्राप्त होता है ॥ जहां शोक भय यतन सर्व नष्ट हो जाते हैं ॥ परम शांत पावता है ॥ हे
रामजी मैं इसी वों वतन सम संसार रूप विषे मत गिरो ॥ एह संसार मिथ्या है ॥ तुम उदार बुद्धि
वाले हो ॥ उदार होवो ॥ अपणे पुरुषार्थ कों आश्रय करो ॥ अरु इस शास्त्र कों विचारो ॥ जैसे
रण विषे प्राण निकसणे लागे तो भागी ता न ही ॥ शास्त्रों कों पकडु करि युद्ध करता है ॥ तो
प्रम स्वपद प्राप्त होवे ॥ तैसे संसार रूप रण है ॥ तिस विषे पुरुष कों पुरुषार्थ ही अस्त्र है
सो शास्त्र कों विचारो ॥ जो कर्तव्य का है ॥ अरु अकर्तव्य का है ॥ जो विचार ते रहित है ॥ सो
दुरभाग दीनता अशुभ कों प्राप्त करणे हारी है ॥ महामोह रूप वचन निद्रा है ॥ तिस कों त्या
ग करि जागो ॥ पुरुषार्थ अंगीकार करो ॥ सो जरा मृत के शांत का कारण है ॥ अवर जे तो के
वल अर्थ है सो सर्व अनर्थ रूप है ॥ भोग सर्व रोगों के समान है ॥ संपदा सर्व अपदा रूप है
एह सर्व त्यागणे योग है ॥ सत मार्ग कों अंगीकार करि कै प्रयत्न पूर्वक आचार विषे विचरो
शास्त्र अरु लोकाचार दोनो अनुसार व्यवहार करो ॥ शास्त्र अनुसार कर्म करणे सुखदाइ
कहे ते हैं ॥ जिस पुरुष का शास्त्र अनुसार व्यवहार है ॥ ऐसा जो विवेक पुरुष है ॥ तिस के
से संसार दुःख नष्ट हो जाते हैं ॥ अरु यार वलवान अरु गुण लक्ष्मी वृध होती है ॥ जैसे वसं
त विषे की मंजरी प्रफुलत होती है ॥ तैसे उह प्रफुलत होता है ॥ इति श्री स्थितप्रकरणे
मुव्यालकटोपाख्याने सदाचार निरूपणं नाम सर्गः ॥ वसिष्ठ उवाच ॥ हे रामजी सर्व सु
ख के देवणे हारा सर्व सुख का फल सर्व कों सर्व दा सर्व काल विषे अपणे कर्मों का फ
ल होता है ॥ जो उद्वेग ते रहित चेष्टा करते हैं ॥ ते दीनता एक सवो वर पर जाइ करि सदा शि
व का आराधना करते भया ॥ तिस करि सदा शिव जी प्रसन्न भये ॥ ताते उस मृत कों जीता ॥ अ
रु प्रथम ते ह्या सो ते दीनता नाम भया ॥ अरु मित्र वांधव सर्व कों सुखदेवणे हारा भया ॥
तो कछु करि भया ॥ अपणे शुभ यत्न करि कै ही भया ॥ अरु दैत शास्त्र के अनुसार यतन
करते हैं ॥ तो क्रम करि कै देवतों कों मारते हैं ॥ सो कैसे देवता हैं ॥ जो सर्व ते उत्कृष्ट वर्तते
हैं ॥ जैसे हस्ती मलों कों उखाडता है ॥ तैसे दैत देवतों कों उखाडते हैं ॥ सो अपणा ही पुरुषार्थ
है सो ॥ अरु मरुत राजा के यज्ञ विषे संवर्त नाम महा ब्रह्म आया ॥ तिस ने देवता दैत मनु
षादिक संयुक्त अपणी सृष्ट रचली ॥ मानो दूजी ब्रह्मा है ॥ तो ऐसी सृष्ट अपणे पुरुषा
र्थ ही करि रची ॥ अरु विश्वामित्र वारं वार तप कीया ॥ तप की आधिक्यता ते राजा ते ब्र
ह्म ऋष भया ॥ सो अपणे ही शुभ आचार करि हूआ ॥ हे रामजी एक दुरभाग ब्राह्मण
था ॥ उपमान तिस का नाम था ॥ तिस कों अपणे गृह विषे भोजन भी समान प्राप्त होवे
न वउस एक वे गृह ते भोजन कीया ॥ पिता संयुक्त दुग्ध वावल खंड से युक्त भोजन क

विकैगरहविषेआया ॥ वहरपिताकोंकहितेलागा ॥ मुझकोंउहीभोजनदेवो ॥ जोकुहांभ
लणकीयांथा ॥ तवपितासबांककैवावलअरुआटेकीरोटीकरिदीनी ॥ उसभोजनकीया
तवउसकोंतैसास्वादनआया ॥ तवपिताकोंकहा ॥ मुझकोंउहीभोजनदेवो ॥ जोकुहां
था ॥ पिताकहा ॥ हेपुत्रउह ॥ भोजनहमारेपासनही ॥ सदाशिवपास ॥ उहभोजनहै ॥ जब
उहदेवे ॥ तवहमलावैं ॥ तवउहब्राह्मणसदाशिवकीउपासनाकरणेलागा ॥ ऐसातप
कीया ॥ जोशरीरअस्थिमात्रहोरहा ॥ अवररमकमांससर्वसूकगया ॥ तवसदाशिवजीप
सन्नहोइकरिदर्शनदीयाअरुकहा ॥ हेब्राह्मण जैसीतुझेइछाहै ॥ सोवरमांग ॥ ब्राह्मणक
हा ॥ दुग्धअरुचावलदेवो ॥ तवसदाशिवकहा ॥ दुग्धअरुचावलमा ॥ वालुहैपरंतुमक
रताहै ॥ तोपहीभोजनकीयाकरु ॥ तवउसकोंउहीभोजनप्राप्तहुआ ॥ अरुजवतंसमर
णकरेगा ॥ तवमैंदर्शनदेवोंगा ॥ तोहेरामजीएहुभीअपणाहीपुरुषार्थहुआ ॥ त्रिलो
कीकीपालनाहारेविष्णुभयाहै ॥ तिनकोंकालनेणकीन्याईमर्दनकरतीहै ॥ तिसका
लकोंस्वेतनेजीता ॥ स्वेतनामकोउसकीस्वरहुआहै ॥ सोअपणेपुरुषार्थसेंकालकों
जीतकरिमित्तंजयनामकोंपावतभयाहै ॥ सोअपणाउद्यमहुआ ॥ अरुसाविज्ञीकाभ
र्तामृतहुआथा ॥ उहपतिव्रताथी ॥ सोइस्तवनसमकारकरिकेयमकोंप्रसंनकीया
भर्ताकोंपरलोकसोंलेआई ॥ एहभीअपणापुरुषार्थहै ॥ तातैंऐसापदार्थकोउनहीं
जोयथाशास्त्रउद्यमकीयेतेंनप्राप्तहोवे ॥ जोअपणेपुरुषप्रयत्नकात्यागनकरै ॥ तोसु
खफलसर्वकोंप्राप्तहोतीहै ॥ जोअविनाशीसुखकीइछाहोवे ॥ तोआत्मज्ञानकाअभ्या
सकरो ॥ अवरजेतेकछुसुखहैंसंसारके ॥ सोदुःखोंसेंमिश्रितहैं ॥ अरुआत्मसुखसर्व
दुःखोंकानाशकर्ताहै ॥ अरुकिसीदुःखसाथमिश्रितनही ॥ वास्तवकरीयें ॥ तोअशमभी
परब्रह्महै अरुशमभीपरमपदहै ॥ यद्यपिऐसेहैतोभीशमपरमकल्याणकर्ताहै ॥ ता
तेंअभिमानकोंत्यागिकरिशमका ॥ आश्रयकरो ॥ अरुनिरंतरबुद्धिकरिविवेकविचारकरो
अरुयतनकरिकेसंतसंगकरो ॥ तवपरमपदपावो ॥ हेरामजीसंसारसमुद्रकेपारक
रणेकोंऐसासमर्थतपनहीं ॥ नतीर्थकरणोकरि ॥ नअवरसमानशास्त्रोंकरितरणे
कोंसमर्थहोताहै ॥ जैसेसंतजनोंकेसंगनेकरिभवसागरतेंसुखनेतरणाहोताहै ॥ जि
सपुरुषकेलोभमोहहर्षक्रोधादिकविकारदिनदिनप्रतिक्षीणसूक्ष्महोतेजातेहैं ॥ अ
रुयथाशास्त्रतिसकाआचारकर्महै ॥ ऐसेपुरुषोंकोंसंतजनकहीताहै ॥ अरुआर्जवक
हीताहै ॥ तिनकासंगसंसारकेपापकर्मोंतेनिवर्तकर्ताहै ॥ अरुशुभविषेजोड़तहै
अध्यात्मवेताजोपुरुषहै ॥ तिनकेसंगकरिकेईसकीबुद्धिविषेसंसारकाअत्यंतभावहो
ताहै जवदृश्यकाअत्यंताभावहुआ ॥ तवशेषआत्माहीरहिताहै ॥ इसक्रमकरिकेजीव
काजीवत्वनिवर्तहोताहै ॥ सोषपुउनतनरहिताहै ॥ जगतनउपजयाहै ॥ नआगेउपजेगा
नवर्तमानविषेहै ॥ इसप्रकारमेंतउकोंअनंतयुक्तोंकरिकहाहै ॥ अरुकहोंगा ज्ञानवानोंकों
सर्वदाऐसेहीभानहोताहै ॥ अवलेचिदात्माहै ॥ तिसविषेचेवलचिनफुरयाहै ॥ तिसनेज
गतआभासरचयाहै ॥ जैसेजैसेफुरताहै ॥ तैसेतैसेजगतभासताहै ॥ परवस्तुतेंकछुअ
वरनहीहुआ ॥ आत्मरूपसूर्यहै ॥ जगततिसकीकिरणारूपहै ॥ जैसेसूर्यअरुकिरणाविषे
कछुभेदनही ॥ तैसेजगतअरुआत्माविषेकछुभेदनही ॥ अद्वैतरूपआत्माहै ॥ तिसविषेआप
कोंनजाणना ॥ सोईआत्माआकाशविषेमैंभ्रमलनताहै ॥ जवपरमार्थअहंभावकोंऐसे
जाणे ॥ तवअनात्माविषेअहंभावलयहोजाताहै ॥ अरुचिदाकाशसेंराजीवकीअत्यंतप्रक
ताहोतीहै ॥ जैसेघटकेफूटेतेघटाकाशकीमहाकाशसंगएकताहोजातीहै ॥ अद्वैआदिकः
जोदृश्यहै ॥ सोनिश्चयकरिजाणो ॥ जोवास्तवतेंकछुनही ॥ विचारकीयेतेंनहीरहिती ॥ जै
सेवालककोंपछांवेंविषेवेतालपिशाचभासताहै ॥ सोध्यानमात्रहोताहै ॥ तैसेएहजगत

अंतसिद्धहै ॥ अपणीकल्पनाकरिभासताहै ॥ अरुदुःखदाइकेहोताहै ॥ तेविचारकरिदेखे ॥
तोनष्टहोजाताहै ॥ हेरामजीआत्मरूप ॥ चंद्रमाकीप्रकाशरूपचांदणीहैं ॥ तिसकेआगेअहं
काररूपमेघआयाहै ॥ तिसकरिबुद्धिरूपपरमार्थकमलनीसोविगासकोंनकाररूपमेघ
आयाहै ॥ तिसकरिबुद्धिरूपपरमार्थकमलनीसोविगासकोंनहीप्राप्तहोतीहै ॥ मेदतमख
होरहीहैं ॥ तातेंविवेकरूपवायुकरिअहंमेघकोंनष्टकरो ॥ नर्कस्वर्गवंधमोक्षविस्मय
हिंसात्यागादिकसर्वअहंकरिपड़ेफुरतेहैं ॥ चिदरूपआकाशविषेजवलगअहंकाररूप
मेघगर्जताबर्षताहै ॥ तवलगतिसनारूपीकदुमंजरीवटतीजातीहै ॥ जवलगअहंकाररू
पवादरआत्मरूपसूर्यकोंआछादनकीयाहै ॥ तवलगज्ञानरूपीअरुअंधिकारहै ॥ प्रकाशन
हीउदैहोता ॥ अहंकाररूपवृक्षहै ॥ तिसकीयांअनंतशाखाप्रसरतीयांहैंममरूप ॥ अहंमम
ममआदिकविस्तारअनेकअनर्थोंकोंप्राप्तकर्ताहै ॥ जेतेकछुसुखदुःखसंसारविषेप्राप्त
होतेहैं ॥ सोसर्वअहंकारकरिकेहोतेहैं ॥ संसाररूपचक्रहै ॥ अहंकारतिसकानाभहै ॥ तातेंप
डाभ्रमताहै ॥ अहंकाररूपवृत्तकेअनंतममरूपदासहै ॥ अहंकाररूपवीजहै ॥ तिसतेंअ
नेकजन्मरूपवृत्तोंकीपरंपराउदैहोतीहै ॥ प्रलयहोतीहै ॥ तोनष्टकबहूनहीहोती ॥ ता
तेंयतनकरिकेअहंकारकानाशकरो ॥ जवलगअहंकाररूपतमहै ॥ तवलगचिंतारूपी
पिशाचनीविचरतीहै ॥ अहंकाररूपपिशाचनेजिसकोंग्रहणकीयाहै ॥ तिसनीचपुरु
षकोंमंत्रअरुऔषधीनतातेंनहीछुड़ायसकै ॥ रामउवाच ॥ हेभगवन निर्मलज्ञोचिनमा
त्रआत्मसत्ताहै ॥ सोअपणेआपविषेस्थितहै ॥ तिसविषेअहंकाररूपमलकहांतेंप्रतिवि
वितभयीहै ॥ वशिष्ठउवाच ॥ हेराघवअहंकारकाजोचमत्कारभासताहै ॥ सोवास्तवधर्म
नहीमिथ्याहै ॥ वासनाकरिकेइसकाप्रादुर्भावहुआहै ॥ पुरुषप्रयतनकरिकेनाशहोता
है ॥ कैसेनष्टहोताहै ॥ सोसुणु ॥ नमेंहों ॥ नकोउमेराहै ॥ अरुमैंममसारकोउनहीं ॥ जवअहंम
मशांतहोवेगा ॥ तवदुःखभीकोउनरहेगा ॥ ऐसेभावनाकानिश्चयहोवेगा ॥ तवअहंका
रनष्टहोजावेगा ॥ मैं आत्माविषेअहंकोउनही नहमसारहै ॥ इसप्रकारजवइसकाहोण
हारनभया ॥ तवअहंकारभीनष्टहोवेगा ॥ जवअहंकारनष्टभया ॥ तवद्वेषउपादेयबुद्धि
शांतहोजावेगी ॥ सपनाअरुप्रसंनताआनउपजेगी ॥ अरुअहंकारकीप्रवृत्तिदुःखोंकाका
रणहै ॥ रामउवाच ॥ हेप्रभोअहंकारकाआकारक्याहै ॥ अरुत्यागकैसेहोताहै ॥ इसकात्या
गमानपुरीवसेयुक्तहोताहै ॥ अथवाशरीरतेंरहितहोताहै ॥ अरुइसकेत्यागतेंकुछलक्षा
होताहै ॥ वशिष्ठउवाच ॥ हेरामजीअहंकारत्रिप्रकारकाहै ॥ सोद्विप्रकारकाश्रेष्ठअगीका
रकरणेयोगहै ॥ अरुएककुत्यागणेयोगहै ॥ सोसुणु ॥ एहसर्वदृश्यमैंहीहों ॥ सोमैंपरमा
त्माअविनाशीहों ॥ मुझतेंइतरकछुनही ॥ एहनिश्चयजिसकेहिदेविषेहै ॥ सोपरमअहं
कारहै ॥ मोक्षकेदेणेहारहै ॥ बंधनकाकारणनही ॥ इसविषेजीवनमुक्तविचरतेहैं ॥ अ
रुएहअहंकारभीमैंतुझकोंउपदेशकेनिमितकल्पकरिकहाहै ॥ वास्तवतेंएहअहंका
रभीनही ॥ केवलअचेतचिन्मात्रसताहै ॥ अरुद्वितीयअहंकारएहहै ॥ जोमैंसर्वतेंअ
तिरेकहों ॥ अरुवालकेअग्रतेंशतभागसूक्ष्महों ॥ ऐसाजोनिश्चयहै ॥ सोभीजीवनमु
क्तकाहै मोक्षदाइकहै ॥ बंधनकाकारणनही ॥ एहअहंकारभीकल्पकरिउसकोंक
हा ॥ वास्तवतेंइहकदिणाभीनही अरुत्रितीयअहंकारएहहै ॥ हस्तपादमुखइत्यादिकः
जोदेहकारहै ॥ इतनामात्रआपकोंजाणना ॥ इसविषेजिसकानिश्चयहैलोकविषे ॥ सो
तुच्छहै ॥ बंधनकारणहै ॥ इसकात्यागकरो ॥ एहदुष्टरूपहै ॥ परमशत्रुहै ॥ इसकरिजोमा
रेहैंजीव ॥ सोपरमार्थकीओरनहीआवते ॥ एहअहंकाररूपजोशत्रुहै ॥ सोवडाचतुरहै ॥ अ
रुवडावलीहै ॥ नानाप्रकारकेशरीरअरुमानसीदुःखकामक्रोधरागद्वेषादिकोंकादेव
णेहाराहै ॥ सर्वजीवोंकोंनीचकर्ताहै ॥ संकटोंविषेजोड़ताहै ॥ इसदुष्टअहंकारकेत्यागेतें
पाछेजोशेषरहिताहै ॥ सोआत्माभगवानमुक्तरूपसताहै ॥ हेरामजीलोकविषेजोअहं

भावना है ॥ सो वपु की हैं ॥ मैं वपु एतना मात्र हौं ॥ यही दुःखों का कारण है ॥ इसकों महापुरुषोंने
त्याग कीया है ॥ अरु जाणते हैं जो हम देह नहीं ॥ शुद्ध चिदाकाश चिदानंदस्वरूप हैं ॥ प्रथम जो
हि अहंकार मैं तुम कों कहे हैं ॥ सो अंगीकार करणे योग है ॥ अरु मोक्षदायक है ॥ अरु त्रितीय
अहंकार त्याग करणे योग है ॥ काहेतें जो दुःखों का कारण है ॥ इसी अहंकार कों ग्रहण करिकैं
दाम व्याल कट असुर दाकों प्राप्त भये हैं ॥ जो महा भयदायक हुते दिशों विषे नहीं आवते ॥ जिनों भो
गे हैं ॥ तिनकी कथा कही गई है ॥ अरु जो जाणते हैं ॥ राम उवाच ॥ हे ब्रह्मन तीसरा अहंकार जो तु
मो लौकिक कहा है ॥ तिसके त्यागतें पुरुष का क्या भाव रहता है ॥ अरु तिसकों क्या विशेष
ता प्राप्त होती है ॥ वशिष्ठ उवाच ॥ हे रामजी जब यह जीव अनात्म अहंकार कों त्याग करता है ॥ ता
तें इसकों त्याग करि आनंदमान होवे ॥ इसकों त्याग करि महापुरुष शोभते हैं ॥ जब तुम
भी इसकों त्यागोगे ॥ तब ऊंचे पद विषे विराजमान होगे ॥ सर्वदा काल सर्व यतन करिकैं दुः
खरूप जो तुच्छ लौकिक अहंकार है ॥ तिसकों नष्ट करो ॥ परमानंद बोध के आगे आवरण
यही है ॥ इसके त्यागतें बोधवान कहीता हैं ॥ जब यह अहंकार निवर्त होता है ॥ तब शरी
र पुनरूप होजाता है परमसार के आश्रय कों प्राप्त होता है ॥ यही परमपद है ॥ जब स्थू
ल अहंकार का त्याग कीया ॥ तब सर्व व्यवहार चेष्टा विषे भी आनंदमान रहता है ॥ जिस
पुरुष का अहंकार शांत भया है ॥ तिसकों भोग अरु रोग दोनो स्वाद नहीं देते ॥ जैसे अमृ
त करिकै जो कोउ तृप्त भया है ॥ तिसकों खट्टा अरु मीठा दोनो स्वाद नहीं देते ॥ अर्थ यहि
जो राग द्वेष करि आपणे वशि नहीं करि सकते ॥ एकरस रहता है ॥ जिसकों आत्मा विषे
अहंभाव नष्ट भया है ॥ तिसकों भोगों विषे हर्ष नहीं होता ॥ चित्त का राग नष्ट होजाता है ॥
जैसे सूर्य के उदे भये अंधिकार नष्ट होजाता है ॥ जैसे सूर्य के उदे भये अंधिकार नष्ट होजाता
है ॥ तैसे अपणे इष्ट पुरुषार्थ करिकै ॥ जिसके हृदे सो अहंकार का अनुसंधान नष्ट होता है
जैसे सूर्य के उदे भये अंधिकार नष्ट होजाता है ॥ तैसे अपणे इष्ट पुरुषार्थ करिकै ॥ जिसके हृदे
सो अहंकार का अनुसंधान नष्ट होता है ॥ सो संसार समुद्र कों तर जाता है ॥ तातें यही निश्चय
धारो ॥ जो न मैं हों ॥ न कोउ मेरा है ॥ अथवा सर्व मैं ही हों ॥ मुझतें इतर कछु वस्तु नहीं ॥ ए
से कल्प जब दृढ होवेगा ॥ तब संसार की द्वैत भावना मिट जावेगी ॥ केवल आत्मतत्त्व का
सर्वत्र भान होवेगा ॥ इति श्री स्थितिप्रकरणे दामव्यालकटोपाख्याने ऽहंकारविचारो ना
म सर्गः ॥ वसिष्ठ उवाच ॥ हे रामजी अब सुन जब दामादिक युद्ध कों तें भाग गये ॥ तब शंबर के
नगर की जो विवस्था हुई सो सुण ॥ कैसा नगर है ॥ पर्वत के समान है ॥ तहां शंबर की जेती क
छु सेना थी ॥ सो सर्व नष्ट होगयी ॥ जैसे शरदकाल विषे मेघ नष्ट होजाते हैं ॥ तैसे नष्ट भयी ॥ तब
देवता जीत करि अपणे अपणे स्थानों पर जाय बैठे ॥ अरु शंबर लोभ त्याग करि बैठ रहा ॥ ज
ब केतेक वर्ष वृतीत भये ॥ तब देवत्यों के नाश निमित्त शंबर एक चिंतवना भयी जो दामादि
कों मैं माया करि रचे थे ॥ सो मूढ थे ॥ बलकरि के ऊंचे थे ॥ पर मिथ्या अहंकार का बीज अज्ञान उ
नकों थी ॥ तिस कारणतें उनकों मिथ्या अहंकार आन फुरा ॥ तातें नष्टरूप भाग गये ॥ अब
मैं ऐसे योधे रचों ॥ जो आत्मवेत्ता ज्ञानवान निरहंकार होवें ॥ जिनकों अहंकार कदाचित न उ
पजे ॥ तिनकों जीत कोउ न सकेगा ॥ सर्व देवत्यों की सेना मारेंगे ॥ हे रामजी इस प्रकार चिंतव
न करि शंबर माया करि दैत्यों कों रचता भया ॥ जैसे समुद्र अपणे बुदबुदे रचलेवे ॥ तैसे शंब
र दैत्यों कों रचलीया ॥ सो कैसे रचे ॥ सर्वज्ञ विद्या के वेत्ता ॥ अरु वीतराग ॥ विरक्त आत्मा ॥ अरु य
था प्राप्त कों करते सदा आत्मभाव निश्चय आत्मक रूप ॥ ऐसे उत्तम पुरुष उपजाये ॥ भीम
अरु भास अरु दृढ तिनके नाम हैं ॥ सो तीनो इस संपूर्ण जगत कों तृणवत जाणे ॥ परम प
वित्र तिनके हृदे ॥ ऐसे पुरुषों कों उपजाया ॥ अरु गर्जता भया ॥ महा बलकरि आहूकवें तिन
के शब्द करि आकाश पूर्ण होगया ॥ इंद्रादिक देवता स्वर्ग विषे तिनका शब्द श्रवण करते भये

स्मरण करि वडी सेना कों संग ले करि आये ॥ अरु यह भीम दृढ बली विचरत करें ॥ हे रामजी तब म
हा वडे योधे देवताओं से युद्ध होने लागा ॥ शस्त्रों की मानों नदीयां प्रवाह चले ॥ अरु भीम भास दृ
ढ धीर्य सों दौडे ॥ कबहूं पास का कोऊ प्रहार लागा ॥ तब यह देह के अभ्यास करि देह का मोह धार
ण करे ॥ वरु इ विचार विषे सावधान होवे ॥ सो हम न आ शरीर रचे तन्मय निराकार निर्वि
कार अछेद अच्युत रूप हैं ॥ हम असंग गंभीर रूप हैं ॥ जब जब मोह आवे ॥ तब तब ऐसा
ही विचार करें ॥ जरा मरण उनकों कछु न भासे ॥ निर्भय होइ करि वर्तमान यह कार्यक
र्ते भये ॥ वासना के जाल तें मुक्तरूप प्राणों कों पंड मारे ॥ यह कारण है ॥ वह नहीं कैव
लण ॥ ऐसी जो हेय उपादेय ग्रहण अरु त्याग भावना है ॥ तिसतें रहित जो मन था ॥ निर्दोष
निरंतर समदृष्ट कों लीये वाराय फड कार्य कों करते हैं ॥ जब दृढ युद्ध आन हूआ ॥ तब देवत्यों
की जो सेना थी ॥ सो दैत्योंने मारी ॥ कछु भीम भास दृढ ने सब हाण करी ॥ शेष कछु रहे ॥
सो भागे ॥ जैसे पर्वततें उतरता जल तीक्षण वेग करि चलता है ॥ तैसे देवता तीक्षण वेग
करि भागे ॥ सो क्षीरसमुद्र विषे विष्णु भगवान की शरण जाइ प्राप्त भये ॥ जैसे वायु करि
चलाये मेघ वादर पर्वतन के आश्रय जाइ रहित हैं ॥ तैसे भागते गये भयकरि ॥ तब ति
नकों देखकरि विष्णु कहा ॥ तुम ईहां स्थित होवो ॥ मैं उनकों फड करिके मार आवता
हों ॥ ऐसे करि करि सुदर्शन चक्र कों लीये भगवान शंबर की ओर आये ॥ तब विष्णु भ
गवान अरु शंबर का युद्ध होता भया ॥ वडा फड हूआ ॥ मानो अकाल प्रलय आई है ॥ वडे
वडे कोलाहल पर्वत उछले ॥ अरु फड होवे ॥ तब शंबर बल खडा हूआ ॥ महा शकाम
रूप सुदर्शन तब चक्र साथ विष्णु भगवान जीने शंबर कों मार लीया ॥ शंबर शरीर त्याग क
रि विष्णुपुरी कों प्राप्त भया ॥ वहुरि विष्णु भगवान अंतर्यामी पुरुष भीम भास दृढ के अंतर
पुर्येष्टका करि जाउ प्रवेश कीया ॥ उनकी चितकला जो प्राणां संयामि स्तनथी ॥ तिसकों अ
स्त कीया ॥ जैसे पवन दीपक कों निर्वाण करता है ॥ तैसे उनकी पुर्येष्टका फुरणा नि
र्वाण हूया ॥ आगे जीवन मुक्त थे ॥ सो विदेह मुक्त भये ॥ हे रामजी इह भीम भास दृढ निर्वा
सी थे ॥ इस कारणतें दीपकवत निर्वाण होगये ॥ तातें वासना संयुक्त है ॥ सो बाधा हूआ
है ॥ जो निर्वासी है ॥ सो मुक्तरूप है ॥ तुम भी विवेक करिकै निर्वासी होवो ॥ जब यही नि
श्चय होवे ॥ जो सर्वत्र जगत असत्यरूप है ॥ तब भावना उसकी नहीं फुरती ॥ यही यथार्थ
देखणा है ॥ जो किसी ॥ पदस्थ कही वस्तु के नाम हैं ॥ सर्व पदार्थों के पाछे अरु अरु अर्थ वि
न विषे स्थित है ॥ जबलग मन का अवलोकन सम्यक ज्ञान नहीं होवेगा ॥ तब यह लय होजावे।
गा ॥ परमपद प्राप्त होवेगा ॥ जो चित्त वासना संयुक्त है ॥ तिस विषे अनेक पदार्थों की भा
वना होती है ॥ तिस भावनातें मुक्त है ॥ सो मुक्त कहीता है ॥ नाना प्रकार के घटपटादिक
आकार भासते हैं ॥ सो चित्त के फुरणा करि अनेकता कों प्राप्त होते हैं ॥ जैसे बालकों विषे।
वेताल भ्रम होता है ॥ तैसे नाना भ्रम भासता है ॥ हे रामजी जैसी जैसी भावना कों लेक
रि चित्त स्थित होता है ॥ तैसा आकार निश्चय करि होइ भासता है ॥ दाम व्याल कट का रूप
भी चित्त के परिणाम करि स्थित भया ॥ भीम भास दृढ का आकार भी चित्त के परिणाम
करि स्थित भया ॥ सो भीम भास दृढ का निश्चय नष्ट कों होवे ॥ दाम व्याल कट का नि
श्चय मत होवे ॥ हे रामजी ॥ एह ह ॥ तातें मुझ कों पूर्व ब्रह्माजी कहता था ॥ सो मैं अवलक कों
कहा है ॥ इस संसार विषे भी कोऊ विरला सुखी है ॥ दुःखदायी अनेक हैं ॥ जब तन मइ समें
सार की भावना त्यागोगे ॥ तब देह आदिकों विषे यथाइ मान न होवेगा ॥ व्यवहार विषे
भी असक्तता न होवेगी ॥ इति श्री स्थितिप्रकरणे दामव्यालकटोपाख्याने [illegible] नाम
सर्गः ॥ वसिष्ठ उवाच ॥ हे रामजी अविद्या करिके संसार की ओर जो मन सन्मुख भया है ति
सकों जिन पुरुषों ने जीता है ॥ सो उही शूर हैं उही सुखी हैं ॥ तिनही की जय है ॥ यह संसार सर्व
उपद्रव का देखणहारा है ॥ इसका उपाय एही है ॥ जो अपणे मन कों वश करणा ॥ एह जो म
राशा न है ॥ सो सर्वज्ञान संयुक्त है ॥ इसकों स्मरण करि आपकों विचारे ॥ जो मैं क्या हों ॥ अरु
यह जगत क्या है ॥ ऐसे विचार करि भी बीते उपजे हैं ॥ अरु सतरूप आत्मा का अभ्या
स करणा ॥ जेती कछु भोगों की इच्छा है ॥ सो बंधन का कारण है ॥ अरु भोग इच्छा त्याग।

ताकौं मोहन करती नाहीं ॥ अवरु शास्त्रों का सर्व विस्तार है ॥ जो जो विषय भोग हैं तिनकौं विष।
की न्याईं अरु अग्नि की न्याईं जाणौ जैसें विष अरु अग्नि नाश का कारण हैं ॥ तैसे विषय भोग ना
श का कारण हैं ॥ असे जाणि करिके इन कौं त्याग करै ॥ बारंबार एही विचार करै जो विषय भोग
विष की न्याईं है ॥ असे जाणि करि चित सों त्यागेगा ॥ तब सेवने हूं भी एह सुखदाइक होंगे।
वैंगे ॥ जैसें मंत्र शक्ति करिके सर्प तें सर्प दुःखदायक नहीं होता ॥ तैसें दुःखदायक नहीं
होते ॥ तातें संसार कौं सत जाणि करि जो वासना फुरती है ॥ सो दुःखों का कारण है ॥ जैसें जैसा
बीज पृथ्वी विषे बोवीता है ॥ सोई उगवता है ॥ कटुक तें कटुक उपजता है ॥ मिष्ट तें मिष्ट ही उप
जता है ॥ तैसें जिस बुद्धि विषे संसार भोग वासना रूपी बीज पाया है ॥ तिस तें दुःखों की प्रा
प्त उत्पत्ति होती है ॥ अरु जिस बुद्धि विषे संतन की शुभ वासना आरंभ तें होती है ॥ तिस तें शुभ
गुण वैराग धीर्य उदारता पौन रूप उत्पत्ति होवेगी ॥ अरु शुभ भावना का अनुसंधान होवे
गा ॥ मन बुद्धि निर्मल भाव कौं प्राप्त होवेंगे ॥ जब मन निर्मल हूआ ॥ तब शनै शनै अज्ञा।
न नष्ट हो जावेगा ॥ सो जन्म नाहू थ होवेगी ॥ जैसें शुक्ल पक्ष के चंद्रमा की कला वढती जाती।
है ॥ जब उन शुभ गुणों की परिपक्व स्थिति होती है ॥ तब विवेक उत्पत्ति होता है ॥ तिस के प्र
काश करिके हिरदे का मोह तम नष्ट हो जाता है ॥ जैसें सूर्य के उदे हूए तम नष्ट हो जाता है ॥ तब
धीर्य उदारता हृदय होते हैं ॥ संत संग अरु सत शास्त्रों के अभ्यास होवे ॥ इस विषे आनंद उदे
होते हैं ॥ तब महा आनंद का कारण श्री तल्ल शांत रूप ताप्रगट होती है ॥ जैसें शर्द मासी
के चंद्रमा की कांति होती है ॥ आनंददायक श्री तल्लता प्रसर जाती है ॥ तैसें सत संग रूप वृ।
क्ष का फल ॥ इस कौं शांत प्राप्त होती है ॥ हे रामजी सत संग रूप वृक्ष है ॥ तिस तें विवेक रू
प फल प्रगट होता है ॥ तिस विवेक तें अमृत स्रवता है पाक मनारूप ॥ तिस करि मन नि।
र्द्वंद हो जाता है ॥ सर्व कामना तें रहित निरूपद्रव होता है ॥ मन की जो चपलता है ॥ सो अ
नर्थ शोक भय कौं प्राप्त करती है ॥ मन के अचल रूप सर्व शांत हो जाते हैं ॥ सतशास्त्रु
के अर्थ या शांत करि संदेह नष्ट हो जाते हैं ॥ नाना प्रकार के कौतक आशय निवृत हो जाते हैं
कल्पना के जाल नष्ट हो जाते हैं ॥ इस प्रकार जीवन मुक्त अलेपक हो जाता है ॥ कछु
संसार का लोभ तिस कौं स्पर्श नहीं करता ॥ निरिच्छत निरुपाधि निरपेक्ष निर्दुःख हो
ता है ॥ शोक रूप ऋद्धी इनतें रहित हूआ ॥ चित जड ग्रंथ सों मुक्त परमानंद रूप होता है ॥
त्रिस्ना रूप सूत्र करिके कीया जो है जाल ॥ तिसतें जो पुरुष निकस गया है ॥ सो ईश्वर रू
प है ॥ अरु जिस पुरुष त्रिस्ना कौं नष्ट नहीं कीया ॥ सो अनेक जन्म दुःखों विषे पडा भ्रम
ता है ॥ जब विषयों की त्रिस्ना बढ जाती है ॥ तब मन भी सूक्ष्म हो जाता है ॥ जब मन सच्छ
म भया ॥ तब कल्याण भया ॥ मन विषे जो स्थूलता है ॥ सो भोगों की त्रिस्ना है ॥ जब त्रि
स्ना नष्ट हूई तब मन भी नष्ट हो जाता है ॥ हे रामजी जो भले रहिल्प होते हैं ॥ सो स्वामी
के निमित्त रण विषे त्रिणवत शरीर त्यागते हैं ॥ तिस करि स्वामी की जय होती है ॥ जो
इष्ट है सो नहीं त्यागते ॥ तिस करि दुःख का कारण होते हैं ॥ तैसे मन का उदे होवणा इ
स जीव कों नाश का कारण है ॥ अरु मन का नाश होवणा जीव कों सुख का कारण है ॥
ज्ञानवान का मन नष्ट हो जाता है ॥ अज्ञानी का मन दृढ होता है ॥ सर्व जगत म
नोमात्र है ॥ एह पर्वत मेरु भी मनोमात्र है ॥ आकाश भी मन है देह भी मनोमात्र है ॥ स्था
वर जंगम रूप जेताक कछु जगत है ॥ सो सर्व मन रूप है ॥ मन किस कों कहिते हैं सो ॥ श्र
वण करो ॥ शुद्ध चिन्मात्र विषे जो चित कला का फुरणा हूआ है ॥ अरु उही संवेदन संक
ल्प विकल्प साथ मिल करि मलिन हूई है ॥ अरु स्वरूप विस्मरण भया है ॥ तिस का नाम म
न है ॥ सोई मन वासना करिके संसार भागी होता है ॥ जब तब चित संवेदन दृश्य सा
थ मिलती है ॥ तब तिस कुबुद्धि साथ मलिन होती है ॥ तिस साथ तन मय होणे का
रि चित से चित कौ नाम जीव होता है ॥ सोई जीव हृदय वेग साथ मिल करि संसार दृश्य
कों बलात्कार ताहे ॥ अनेक विस्तार कौं प्राप्त होता है ॥ अरु आत्मा जो पुरुष है सो परम
ब्रह्म है ॥ संसारी पुरुष नहीं ॥ वह कदाचित नमो मरे ॥ न मारी रहै ॥ जारी एदिक संबन्ध
उरूप है ॥ आत्मा आकाशवत अलेप है ॥ जो पारी रवो भि ज्ञ भि ज्ञ करि देखी है ॥ तो

ह्रदय विषे सो सत्य असत्य तें इतर कछु नहीं निकसता ॥ जैसे केले के वृक्ष कौं फोलते हैं तौ पे
ते पत्रों तें इतर कछु नहीं निकसता तैसें मन जीव है जीव मन है ॥ मन तें इतर आकार
को कुछ नहीं ॥ मन ही सर्व भाव विकार कौं प्राप्त भया है ॥ हे रामजी इस पुरुष कों बंधन
का कारण अपनी ही कल्पना है जैसे कुरंग अपणा यत्न करि आपही बंधन कों प्रा
प्त होती है ॥ तैसे पुरुष अपनी वासना करि आप ही संसार बंधन कों पावता है ॥ ता
तें इस भ्रम कौं त्याग करि मन तें भोगों की वासना निवृत करै ॥ संसार का बीज वा
सना ही है ॥ जैसे जिस वासना करि सो पुरुष हृदय विषे चितवता है ॥ तैसा ही आवता
है ॥ जैसे जैसी वासना होती है ॥ तैसे पुन पाप के अनुसार परलोक भासता है ॥ अपणी
वासना करि जगत भास आवता है ॥ जैसे अन्न जैसे द्रव्य स्वाद संग मिलता है ॥ तैसे
भासता है मिष्ट साथ मिष्ट अवदे साथ खटा ॥ कटुक साथ कटुक हो जाता है ॥ तैसे जै
सी वासना इसके हिरदे विषे दृढ होती है ॥ तैसे ही भासता है ॥ जैसे बडा पुनवान होता
है ॥ तिस को स्वप्न विषे अपनी इंद्र की सी भासता आवती है ॥ नीच को नीच मर्त्त भास
ती है ॥ भूतों के संगी कौं भूतादिक भास आवती है ॥ तैसे वासना के अनुसार परलोक
भास आवता है ॥ जब मन विषे निर्मल भाव स्थित होता है ॥ तब मन की मलिनता पा
प वासना निवर्त हो जाती है ॥ अरु जब मन विषे मलिन वासना वढती है ॥ तब निर्म
लता नहीं भासती ॥ उही रूप फल प्राप्त होता है ॥ तातें दुर्वासना कल्लेक कौं त्याग
करि पूर्णमासी के चंद्रमा वत विराजमान होवो ॥ एह संसार भ्रांत मात्र है ॥ सत रू
प नहीं ॥ अज्ञान करिके भेद विकार भासते हैं वास्तव तें न कोऊ बंध है न मोक्ष है
न कोऊ बंधन करणहारा है ॥ एह सर्व इंद्रजाल की न्याईं मिथ्या भ्रम भासते हैं ॥ जैसे
गंधर्व नगर मिथ्या होता है ॥ मृग त्रिस्ना का जल भासता है ॥ जैसे आकाश विषे द्विती
य चंद्रमा भासता है ॥ सो भ्रमत रूप है ॥ तैसे एह जगत भ्रमत रूप है ॥ जीवों कों अज्ञान
करिकै ऐसे निश्चय हो रहा है ॥ मैं अनंत आत्मा नहीं ॥ मैं लघु जीव हूं ॥ तब इस निश्चय
का चिंतन सो आभाव होवे ॥ अरु आपकों अनंत आत्मा निश्चय करि जाणो ॥ प्रथम इस
का अभ्यास करे तब हिरदे विषे स्थित होवे इस निश्चय करि दूसनीच निश्चय का अ
भाव हो जाता है ॥ सर्वगत सत्कल निर्मल आत्मा है ॥ तिस विषे जिस कों देहादिक भाव
ना हूई है ॥ तिस कों लोक विषे बंधन होता है ॥ अपणे से कल्प करि आप बंधन विषे आ
वता है ॥ पशु की न्याईं ॥ अरु जिस कों स्वरूप विषे भावना होती है ॥ तिस कों मोक्ष भासती
है ॥ आत्म सत्ता बंध अरु मुक्त दोनों तें रहित है ॥ एक अरु द्वै है तिन तें रहित अद्वैत ब्रह्म सत्ता
है ॥ जब मन निर्मल होता है ॥ तब इस प्रकार भासता है ॥ किसी
अपणे आप विषे स्थित है ॥ जब मन निर्मल होता है ॥ तब सम हो जाता है ॥ तब
पदार्थ विषे बंधाईमान नहीं होता ॥ तब मनन भाव तें रहित समन हो जाता है ॥ तब
ब्रह्म सत्ता कों देखता है ॥ अन्यथा नहीं देखता ॥ जब वैराग अरु अभ्यास रूपी जल क
रिके मन कों निर्मल भाव होता है ॥ तब ब्रह्म ज्ञान रूपी रंग चढ जाता है ॥ सर्व आत्मा ही
भासता है ॥ जब सर्व आत्मा की भावना हूई ॥ तब अहंकार त्याग की वृत्त नष्ट होती है ॥
वेध मोक्ष भी नहीं रहिती ॥ जब मन के काल पाइ पक होते हैं ॥ अर्थ यह जो भोगों की
स्थूल वासना तें मुक्त होता है ॥ शास्त्रों के विचार करिके वैराग के ॥ क्रम तें जब बुद्धि
विषे वैराग उपजता है ॥ तब परम बोध कों प्राप्त होता है ॥ बुद्धि कमल की न्याईं खिड
आवती है ॥ मन करिके सर्व पदार्थ रचे हैं ॥ तिन संग मिल करि चित रूप होता है ॥ तिस
का नाम असम्यक ज्ञान है ॥ जब सम्यक दृष्ट होती है ॥ तब तिस का नात काल नाश
करती है ॥ जब अंतर वाह्य की दृश्य कौं त्याग करता है ॥ अरु मन सत स्वभाव विषे स्थि
त होता है ॥ तब परम पद कौं प्राप्त हूआ करता है ॥ हे रामजी एह दृष्टा अरु दृश्य जो

सप्रहुआ भासते हैं ॥ सो असतरूप है ॥ तिस असत साथ तनमय होता वर्णा मनका
रूप है ॥ सो पदार्थ आदि अरु अंत विषे न होवै ॥ अरु मध्य भासै ॥ तिसकों भी असं
तरूप जाणीये ॥ सो पद दृश्य आदि विषे नथी उपजी ॥ अरु अंत विषे नहीं ॥ रहि
ती मध्य विषे जो भासती है ॥ सो असतरूप है ॥ अज्ञान करिकै सत भासती है ॥ ति
नकों दुःख की प्राप्त है ॥ आत्मभावना विना दुःख निवर्त्त नहीं होता ॥ जब दृश्य
विषे आत्मभावना होती है ॥ तब दृश्य भी मोक्षदायक होजाती है ॥ जब जल अ
वर है तरंग अवर है ॥ यह अज्ञानी का निश्चय है ॥ तब जल अरु तरंग एकही रूप है
यह ज्ञानी का निश्चय है ॥ तैसे जगत नानारूप अज्ञानी का निश्चय है ॥ तिस करि दुःख
पावता है ॥ अहिंसा अरु त्याग की बुद्धि विषे पराभव करता है ॥ अरु ज्ञानी कों सर्व आत्म भा
सता है ॥ भेदभावतें रहित अंतर्मुख वृत्ती रहिता है ॥ हे रामजी नानात्व जो है ॥ सो मन के उ
रणे करि रचा है ॥ अरु मनही का रूप है ॥ अपणे संकल्प कल्पना का नाम मन है ॥ सो अ
सतरूप है ॥ जो असत विनाशी रूप है ॥ तिसके सत करणे विषे कलेश होता है ॥ जिस
का बांधव परदेश सों आवता है ॥ अरु उसकों पछाणता नहीं ॥ दृष्ट भी आवता है ॥ पर
उसके सुख दुःख विषे राग द्वेष नहीं होता ॥ जब उस विषे अपणे की भावना करता है ॥ तब हो
ता है ॥ तैसे जब आत्मसत्ता विषे अहंप्रतीत होती है ॥ अरु देहादिक विषे नहीं होती ॥ तब
देहादिक के सुख दुःख आपकों स्पर्श नहीं करते जब देहादि कों विषे भावना होती है ॥ त
ब स्पर्श करते हैं ॥ हे रामजी जब शिव तत्त का ज्ञान होता है ॥ तब दुःख कोऊ नहीं रहिता
सो कैसा शिव है ॥ जो दृष्टा अरु दृश्य के मध्य विषे व्यापक है ॥ तिस विषे स्थित हूआ मन
शांत होजाता है ॥ जैसे वायु तें रहित धूड़ उड़णे सों रहिता जाती है ॥ तैसे मन के शांत हूए
देहरूप धूड़ शांत होजाती है ॥ वहुड़ संसार रूपी झड़ी उड़ का अभाव होता है ॥ वर्षा रितु रू
पी वासना क्षीण होजाती है ॥ तब जाणा याना नहीं जाता ॥ जो जड़ता रूप बल्ली कहोताई ॥ जब
अज्ञानरूप मेघ वर्षणा तरूआ ॥ तब विस्तार रूप बल्ली सूक जाती है ॥ विदेह रूप वन में ॥ मोह
रूप कुहीड़ नष्ट होजाती है ॥ जैसे प्रातःकाल रात्र नष्ट होजाती है ॥ अज्ञानरूप मेघ के
नीराहूए देहाभिमान रूप जड़ता नहीं जाणी ती जीक होगयी ॥ जब लग अज्ञान अहं
काररूपी मेघ गर्जता है ॥ तब लग संकल्प रूप मोर नृत्य करता है ॥ जब अहंकार रूप मे
घ नष्ट होता है ॥ तब परम निर्मल चिदाकाश भासता है ॥ जीवरूप सर्प स्वच्छ प्रकाशता है
जब मोहरूप वर्षा काल का अभाव भया ॥ तब ज्ञानरूप शरद काल विषे दिशा निर्मल हो
जाता हैं ॥ आत्मरूप चंद्रमा शीतल चांदनी सों प्रकाशता है ॥ सो सर्व संपदा का देवणे हारा
है ॥ परमानंद की प्राप्ति करणे हारा है ॥ जब प्रथम शुभ गुणों करि विवेकरूपी बीज सेच
न होता है ॥ सो शुभ मन सर्व संपदा के देवणेहारा परमानंद अत्यंत सफलता श्रम कों प्राप्त
होता है ॥ तिस विवेकी पुरुष कों पर्वत वन वन देश भवन सर्व आत्मा ही प्रकाशता है सो
निर्मलतें निर्मल शीतलतें शीतल भावना विषे भासता है ॥ विदेहरूप तड़ाग अति विस्तार
वान होता है ॥ स्फुरणावत उत्तल स्वच्छ जल करि पूर्ण होता है ॥ तिस विषे धीर्य उदारता
रूप कमल विराजते हैं ॥ तिस विदेह कमल पर अहंकार रूप भ्रमर विचरता था ॥ सो नष्ट हो
ता है ॥ वहुड़ नहीं आगमन करता ॥ सो पुरुष निरपेक्ष सर्व ते सर्व तें श्रेष्ठ निर्वाणशी शोभता
न अपणे देहरूप नगर विषे विराजता है ॥ ईश्वर होता है ॥ जिसकों आत्मप्रकाश उदे हूआ ति
स बुद्धिवान का मन तुर्यात्मता लज्जाता है ॥ भय आदिक विकार नष्ट होजाते हैं ॥ देहरूप नग
र विषे विराजता रहता है करि विराजमान होता है ॥ इति श्री स्थितप्रकरणे उपशम सत्वरूप
वर्णनं नाम सर्गः ॥ ३० ॥ वा ॥ हे रामजी आत्मा चेतन्य रूप है ॥ अरु विश्व तें अतीत है ॥ तिस वि
शाल्मा विषे विश्व कैसे स्थित भया है ॥ वोधकी वृद्धता निमित्त वहुड़ उत्तम कों कहता ॥ वसिष्ठोव

हे रामजी जैसे सोमजल विषे तरंग अव्यक्त रूप होते हैं ॥ पर त्रिकालदर्शी कों तिनका सद
भाव नहीं भासता ॥ तिनका रूप संकल्पमात्र होता है ॥ तैसे आत्मा विषे जगत संकल्पमात्र
स्थित है ॥ जैसे सर्वगत आकाश है ॥ पर सूक्ष्मभाव करिकै लखणे विषे नहीं आवता ॥
तैसे आत्मा निरंश निराकार सर्वगत सर्व व्यापक है पर लख्या नहीं जाता ॥ यथ्यक अरूअ
चिंतरूप है ॥ तिस आत्मा विषे जगत भ्रम है ॥ जैसे स्तंभ अनगढ़ रूप होवे ॥ तिस विषे शिल्
पी पुतलीयां कल्पता है ॥ सो कहां हैं ॥ शिल्पी के मन विषे पुतलीयां फुरती हैं ॥ जो पुतलीपु
तलीं स विषे हैं ॥ सो अप्रगट होती हैं तिसके मन विषे होते हैं ॥ तैसे आत्मा विषे अवगाहो
ता जगत भासता है ॥ सो आत्मा के आधार है ॥ आत्मा के आश्रय आत्मा विषे स्थित है ॥ अरु
आत्मा कदाचित इस संग स्पर्श नहीं करती ॥ जैसे मेघ आकाश के आश्रय आकाश विषे स्थि
त होता है ॥ अरु आकाश तिस साथ स्पर्श नहीं करता ॥ तैसे आत्मा अस्पर्शी है ॥ आत्मसत्ता
सर्व वरणों है ॥ पर भासती सूर्य का रूप विदे विषे है ॥ जैसे अग्नि सूर्य का प्रकाश सर्व ठ
वर व्यापक है ॥ पर जल विषेही प्रतिविंबत होइ भासता है ॥ पृथ्वी काष्ठ विषे प्रतिविंबत न
हीं होता ॥ तैसे आत्मा देह इंद्रियां प्राणों विषे प्रतिविंबत नहीं होता ॥ विदे पुर्यष्टका विषे भा
सता है ॥ सो आत्मा सर्व संकल्पतें रहित है ॥ सर्व नाम संज्ञातें रहित स्वरूप है ॥ तिसकों
ज्ञानवान पुरुष उपदेश के निमित्त चेतन्य अविनाशी आत्मा ब्रह्मादिक संज्ञा करिकै कहि
ते हैं ॥ सो आकाशतें भी सूक्ष्म स्वच्छ निर्मल है ॥ आकाश सकलं कहै ॥ आत्मा निःकलं कहै
आभास करिकै जगतरूप होइ भासता है ॥ अवर जगत कछु वस्तु नहीं ॥ जैसे जल रव
ता करिकै तरंगरूप होइ भासता है ॥ पर तरंग कछु अवर वस्तु नहीं ॥ जल ही जल है जै
से जलतें रहित तरंग नहीं ॥ तैसे आत्मा तें अतिरेक जगत नहीं ॥ चेतन्य सत्ता चेतनता कु
रले करि जगतरूप होइ भासती है ॥ पर जगत कछु वस्तु नहीं ॥ जो ज्ञानवान पुरुष है ति
नकों तो एक आत्मसत्ता भासती है ॥ अरु अज्ञानी कों नाना प्रकार जगत भासता है ॥ अवर
जगत कछु वस्तु नहीं ॥ केवल आत्मसत्ता सदा अपणे आप विषे स्थित है ॥ अनुभव स्व
भाव करिकै प्रकाशता है ॥ सूर्यादिक प्रकाश सर्व कों प्रकाशणे हारी है ॥ सर्व स्वादों का स्वा
द उही है ॥ सर्व भाव तिसी करि सिद्ध होते हैं ॥ सो सत्ता उदे अरु अस्ततें रहित है ॥ चलतो अ
चलणेतें रहित है ॥ न लेता है न देता है ॥ अपणे आप विषे स्थित है ॥ जैसे अग्नि का संकूडला
का रूप होइ भासता है ॥ जल का संचूर्ण तरंग रूप भासता है ॥ तैसे आत्मसत्ता जगत रू
प होइ भासती है ॥ अपणे संवेदन फुरणे करिकै नाना प्रकार के संकल्पों विपर्यय
रूप देखती है ॥ यह देह मैं हों मेरा है ॥ इत्यादिक भावना कों प्राप्त होती है ॥ तब अपणे आप
कों जाणती है ॥ तब अज्ञान भ्रम नष्ट होजाता है ॥ जैसे हृदय विषे वीज समाता है ॥ परिणाम
करिकै आकाशसत्ता के आश्रय वरतना जाता है ॥ तैसे आत्मसत्ता विषे चित्त संवेदन फुर
ती है ॥ फुरणा रूप परस्पर परिणाम करिकै आत्मसत्ता के आश्रय विस्तार भाव कों प्राप्त होती
है ॥ सो संकल्परूप है ॥ संकल्प विषे जगत की रचना है ॥ तैसे संवेदन फुरती है ॥ तैसे स्थि
त होता है ॥ तिस विषे नहीं है ॥ जो पदार्थ पड़ा जिस प्रकार होवे ॥ सो तैसे स्थित है ॥ अन्य
था नहीं होता ॥ जैसे चित्त विषे स्मृति विस्तार कों पावता है ॥ कार्तिक विषे धान उपज
ते हैं ॥ हिम रितु विषे जल पाषाण रूप होजाता है ॥ अग्नि उष्ण रूप है ॥ वर्फ शीतल है ॥ इत्या
दिक पदार्थ जैसे रहे हैं ॥ तैसे ही महाप्रलय पर्यंत स्थित हैं ॥ अन्यथा भाव कों नहीं प्राप्त हो
ते ॥ जगत विषे चौरासी प्रकार के भूत जात हैं ॥ जिनकों आत्मज्ञान प्राप्त होता है ॥ सो शांत
रूप आत्म कों पाइ करि आनंदमान होते हैं ॥ अरु जिनकों प्रमाद है ॥ सो पड़े भटकते हैं ॥ ज
न्म मरण कों प्राप्त होते हैं ॥ जैसे कर्म करते हैं ॥ तैसी गति पावते हैं ॥ आवागमन विषे भटकते

भरचाले यमके मुख विषे जाइपड़ते हैं ॥ जैसे समुद्र विषे तरंग उठ उपजकर लय
होजाते हैं ॥ तैसे जन्म जन्म करि मरते हैं उन्मत की न्याई प्रमादी पुरुष भ्रमते हैं ॥ ३१ ॥ इति श्री आ
त्मस्वरूपवर्णनंनाम सर्गः ॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी इस प्रकार स्थित भासता है सो आ
त्म चंचल आकार है ॥ परिणाम रूप है ॥ जैसे समुद्र विषे तरंग चंचल रूप है ॥ तैसे जगत च
कीगत चंचल है ॥ आत्मा तें जो जगत उपजता है ॥ सो स्वतः होता है ॥ किसी कारण करि
के नही होता ॥ पाछे कार्य कारण भाव होता है ॥ सो ई जगत विषे दृढ होजाता है ॥ आत्मा वि
षे पर कोऊ नही ॥ जैसे स्वभाव करि जल तें तरंग उठ कर लय होजाता है ॥ तैसे आत्मा विषे
जगत स्वभाव कर उपज कर लय होजाता है ॥ जैसे धूप करि रात्री तपत करि मारस्थल वि
षे जल की नदी स्पष्ट होइ भासती है ॥ अरु है कछु नही तैसे आत्मा विषे जगत भासता है है
कछु नही जैसे पुरुष प्रधान रूप है ॥ तिन करि के आपको मनुष देवतादिक शरीर जा
णते अरु कहते हैं ॥ हे रामजी पर जगत आत्मा विषे न समते है ॥ न भ्रमत है जैसे सुवर्ण
विषे भूषण तैसे आपको आकाश मानते हैं ॥ जीवसमूह ताते तनमहत्व को त्याग करि इ
च्छा विषे स्थित होवो ॥ जिस करि शब्द को जाणता है ॥ रस रूप गंधादिक सर्व को जाणता
है ॥ तिस को आत्मा परमब्रह्म जाण ॥ सो सर्व विषे पूर्ण स्थित है ॥ स्वच्छ निर्मल आत्म सत्ता
विषे एक है न कल्पना कछु नही ॥ तब लग आत्मा तें इतर कछु वस्तु भासती है ॥ तब लग
इच्छा वासना तिसकी उठ रथावती है ॥ हे रामजी आत्मा तें व्यतिरेक कछु सिद्ध नही होता ॥ ज
वे ऐसे भासे ॥ तब किसकी वांछा करे ॥ किसका अनुसंधान करे ॥ त्याग ग्रहण किस
का करे ॥ इस कारण तें इहां अनीह तृष्ण अनिच्छादिक विकार विकल्प कोऊ आत्मा को स्प
र्श नही करती ॥ कर्ता करण कर्म तीनो की एकता है ॥ न कोउ आधार है ॥ न आधेय है ॥ द्वैत कल्प
ना का असंभव है ॥ अद्वैत ग्राहिक कोऊ नही ॥ केवल ब्रह्म सत्ता स्थित है ॥ ऐसे जाण करि
सर्वदा काल निर्द्वंद्व होइ करि सर्व संतापतें रहित कार्य विषे प्रवर्तो ॥ एवं जो कछु तम की पे
अरु नही कीया तिसकर लोकप्रकरण करि तमको का सिद्ध हूआ है ॥ अरु का भावना यो
गपद पाया है ॥ अब स्मृतों की गणती विषे का भावता है ॥ तुम तिस विषे आपको अकर्ता भा
वना करो ॥ अरु वासदेह इंद्रियां करि जगत के कार्य करो ॥ जब स्थिरता रूप समपद विषे
तुम्हारी बुद्धि धीर्यवान होवेगी ॥ तब शांत आत्मा होवोगे ॥ इस जगत विषे तो हूरतें हू
र भोग पेहैं ॥ परमशांत अंतर नही होती जहां इच्छा होवे ॥ तहां गमन करे ॥ भावे कैसे प
दार्थ पावणे का यतन करे तिसके पाये तें भी शांत न प्राप्त होवेगी जब सर्व इस दृश्य
जगत के पदार्थों को त्याग करि जो शेष अपणा स्वरूप रहिता है सो चिदात्मा है तिस वि
षे स्थित रूप तें शांत की प्राप्त होवेगी ॥ ३१ ॥ इति श्री स्थित प्रकरणे उपदेश वर्णनं नाम स
र्गः ॥ ३१ ॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी इस प्रकार जो ज्ञानवान पुरुष है ॥ तिस विषे कर्तृत्व भा
व दृष्ट आवता है ॥ यज्ञादिक सर्व कर्म करता है ॥ अरु हिंसादिक तामसी कर्म भी दृष्ट आव
ते हैं ॥ तौ भी स्वरूप ज्ञान करि के उदासता अकर्ता ही है कर्ता वित कछु नही कीया
अरु जो मूढ अज्ञानी है ॥ सो जैसा कर्म करते है ॥ तैसा तिसका फल भोगते हैं ॥ कर्तृत्व कि
स का नाम है ॥ सो श्रवण करो ॥ मन विषे सत जाण करि जिस पदार्थ के ग्रहिण की इ
च्छा करता है ॥ सो फुरणा वासना रूप होता है ॥ तिस सद्भाव फुरणे का नाम कर्तृत्व है
तिस चेष्टा तें फल की प्राप्त होती है ॥ जैसे पदार्थ को सत जाण करि वासना फुरती है ॥ तै
से पदार्थ का अनुभव करता है ॥ शरीर करि के करे ॥ अथवा न करे ॥ जैसी वासना मन वि
षे दृढ होती है ॥ शुभ अथवा अशुभ तिसको ॥ अनुसार इस को भासआवता है ॥ शुभ क
रि के स्वर्ग भासता है ॥ जिन पुरुषो को आत्मा का अज्ञान है ॥ सो यद्यपि शत त्र प्रकर्ते हैं

तो भी अनेक कर्मों के फल का अनुभव करते हैं ॥ अरु जो ज्ञानवान है ॥ तिन के हृदे विषे प
दार्थों का सद्भाव अरु वासना दोनो नही ॥ इस कारण तें कर्तृत्व का अभाव है यद्यपि क
र्ते हैं तो भी कर्तृत्व के फल को नही प्राप्त होते ॥ संसार को असत जाणत है ॥ केवल शरी
र के स्पंद मात्र उन का कर्म है तिस विषे बंधायमान नही होता ॥ एवंविध बाहर बंध कर्म करि
के सुख दुःख फल तिनको भी प्राप्त होता है ॥ पर आत्मा तें भिन्न तिनको नही जाणत सर्व
ब्रह्म ही देखता है ॥ अरु तो अज्ञानी है ॥ सो अनर्थ को के स्पंद विषे आपको कर्ता मानता है
तिस के अनुसार सुख दुःख भोगता है मोह को प्राप्त होता है ॥ अनात्म भाव विषे सत
न है मन जिसका सो अकर्ता हूआ भी कर्ता होता है ॥ ताते मन करि कीया सो कीया प
है मन तें रहित केवल शरीर करि कीया ॥ सो अकीया होता है ॥ ताते मन कर्ता है दे
ह कछु नही कर्ता ॥ एह सर्व जगत मन तें उपजा है ॥ अरु चित रूप है ॥ चित ही करि
स्थित है ॥ जिन का मन अमन भाव को प्राप्त भया है ॥ तिसके सर्व शांत रूप है जै
से तीक्ष्ण धूप करि सूर्य की किरणां की नदी भासता है ॥ सो सत नही ॥ जब वर्षा होती
है तब शांत हो जाती है ॥ तैसे जब आत्मज्ञान होत है ॥ तब देह जगत सर्व शांत होत है संसार
के सुख दुःख तिन को स्पर्श नही करते न उद्वेग चंचल है न स्थित है ॥ न सत है ॥ न असत है सर्व विक
ल्पते रहित शांत रूप है ॥ मन को ही दुःख होता है ॥ शांत रूप कर्मों को कर्ता भी कछु नही कर
ता ॥ मन करि मद्य लेप रहिता है ॥ हे रामजी हस्त पादादिक इंद्रियो करि करणे का नाम कर्म
नही मन के फुरणे का नाम कर्म है ॥ मन ही सर्व कर्मों का कर्ता है ॥ अरु तब सर्वभाव सर्व लोकों
का बीज सर्व गत मन है ॥ जब मन नाश होवे ॥ तब सर्व कर्म नष्ट हो जाते है ॥ सर्व दुःख भी क्षी
ण हो जाते हैं ॥ सर्व आनंद प्राप्त होते है ॥ जैसे बालक मन करि के नगर रचे वह उपशांत करि
ले वे ॥ तिस को उपजावणे का हर्ष अरु लीन करणे विषे दुःख नही होता ॥ तैसे परमार्थदर्शी
को किसी कर्म का लेपन नही होता ॥ कर्ता हूआ भी कछु नही करता ॥ तिस विवेक तें न भोगता र
त्व सुख दुःख अज्ञानी मोह करि कै अध्यारोप करते है ॥ एह है कछु नही ॥ बंधमोक्ष सुख दुःख
उस को कछु नही भासता ॥ अस्मक मन कहीता है ॥ जिस का मन सत है तिस को जैसे स्थि
त है ॥ तैसे ही भासता है ॥ ज्ञानवानको केवल आत्म सत्ता भासती है ॥ एक अरु द्वैत कल्पना तें
रहित है जैसे जलतें भिन्न तरंग नही होता ॥ तैसे आत्मा तें भिन्न जगत नही ॥ न कोऊ बंध है
न मोक्ष है ॥ न बोध का योग है ॥ अज्ञान दृष्टि करि के दुःख है बोध करि के लीन हो जाता है ॥ बंध अ
रु मोक्ष संकल्प करि कल्पित मिथ्या रूप है ॥ तुम इस मिथ्या कल्पना अनात्म अहंकार को त्याग
करि आत्मा विषे निःस्पृह करो ॥ धीर बुद्धिवान होइ करि प्रकृत आचार कर्म को करो स्पर्श कछु
न करेगा ॥ ३२ ॥ इति श्री महारामायणे वासिष्ठे मोक्षोपाये स्थित प्रकरणे उपदेश वर्णनं नाम सर्गः ॥
रामोवाच ॥ हे भगवन सत चित आनंद अद्वैत निर्विकार इत्यादिक गुणों करि विशिष्ट जो
ब्रह्म तत है ॥ तिस विषे एह अविद्यमान जगत अविद्या विचित्र कहां तें आई है ॥ वसिष्ठोवाच
हे राजपुत्र अपरसंपूर्ण जगत ब्रह्म स्वरूप है ॥ ब्रह्म सत्ता सर्व शांत है ॥ इस कारण तें जगत दृश्य
रूप होइ करि भी नही भासती है ॥ संसार की वासना विषे नही डुबता ॥ अज्ञानी है सो डुबता है
तिसका मन संसार भ्रम विषे मगन होता है ॥ सदा पदार्थों की चिंतवणा करता है ॥ ज्ञानी न
हीं करता ॥ हे रामजी अब दृष्टांत करि के श्रवण करो ॥ जो अज्ञानी को अकर्तृत्व विषे कर्तृत्व है
अरु कर्तृत्व विषे अकर्तृत्व है ॥ एक पुरुष सिजा ऊपर शयन करि रहा है ॥ सो स्वप्न विषे गर्त मों गि
र्या दुःख पावता है ॥ सो अकर्तृत्व विषे कर्तृत्व भई है कों ॥ अरु एक गर्त विषे गिड्या है ॥ उसका
मन स्थित समाधि विषे लागा रहा है ॥ उसको सर्व शांत रूप है तो कर्तृत्व विषे भी अकर्ता भ
या कुं ॥ जो सिजा विषे सोया था ॥ तिस का मन चपल था ॥ ताते अकर्तृत्व विषे उसको कर्तृत्व
भयी ॥ दुःख का अनुभव करणे लागा ॥ द्वितीय को सुख का अनुभव भया ॥ ताते एह नि
श्चय कीया है ॥ जैसा मन होता है ॥ तैसी सिद्धता को प्राप्त होता है ॥ तुम भी असंसक्त होइ क

स्थिति. २

विकर्षकरो ॥ तब अकर्ताही रहोगे ॥ जौलों कछु जगत भासता है ॥ सो आत्मा ते अतिरेक क
छु नहीं ॥ जिसकों यह निश्चय होता है ॥ तिस ज्ञानवान कों सुख दुःख नहीं स्पर्श करते ॥ आ
धार आधेय दृष्टा दर्शन दृश्य इत्यादिक निश्चय आत्मा तें भिन्न कछु नहीं भासता ॥ जब इस कों ऐ
से निश्चय होता है ॥ मैं देह नहीं ॥ सर्व पदार्थों तें विलक्षण बाल के अग्र तें शत भाग सूक्ष्म
हौं ॥ अथवा जो कछु दृश्य जगत है ॥ सो सर्व मैं ही हौं ॥ सर्व तत्वों का प्रकाशक हौं ॥ सर्वव्या
पी हौं ॥ इस निश्चय करि इसकों दुःख सुख का क्षोभ नहीं होता ॥ विगतज्वर होइ करि स्थित
न होता है ॥ यद्यपि कोऊ दुःख संकट ज्ञानवान कों आन प्राप्त होता है ॥ तौ भी उसकों नहीं
भासता ॥ परम आनंद कर विश्रांत मान लीला मात्र पड़ा विचरता है ॥ जैसे चंद्रमा की चांद
णी शीतलता करती है ॥ अरु प्रकाशती है ॥ तैसे उदारपुरुष शीतल प्रकाशमान होता है ॥ ति
सकों न चिंता होती है ॥ सत असत द्वैत एक इत्यादिक संगरूप होइ भासती है ॥ स्वरूप तें ऐ
से है ॥ जैसे जल विषे जल उल्लासरूप नानाप्रकार के तरंग बुद बुदे आवर्त आकार होइ
भासता है ॥ तौ भी जल एकरूप है ॥ तैसे चिद्घन विषे चिद्घन सर्वशक्ति सर्वरूप होइ
करि स्फुरता है ॥ कहूं कर्मरूप कहूं वासनारूप कहूं रंगरूप ॥ कहूं मनरूप इस प्रकार
कहूं भ्रमण पोषण नाश करण होता है ॥ सर्व पदार्थों का बीज उत्पत्तिकर्ता ब्रह्म सत्ता है ॥
जैसे समुद्र तें तरंग उपजकरि तिसी विषे लय होते हैं ॥ तैसे सर्व पदार्थ ब्रह्म विषे उपजकरि
विलय होते हैं ॥ श्रीरामउवाच ॥ हे भगवन यह जो तुम्हारे वचन हैं ॥ सो प्रगट भी हैं ॥ इन
का उच्चार ॥ तौ भी कठिन अतिगंभीर है ॥ इनका तोल नहीं पाया जाता ॥ तातें अतोल हैं ॥ इ
नका यथार्थ भाव मैं पाइ नहीं सका ॥ मन संयुक्त षट् इंद्रियों की हत तें अतीत है ॥ स्वरू
प जिसका ॥ अरु सर्व पदार्थों की रचना तें रहित है ॥ सो कहां ॥ अरु जगत कहां ॥ जो पदा
र्थ जिसतें उपजता है ॥ सो उसहीरूप होजाता है ॥ जैसे दीपक तें उपजा दीपक उसहीरूप हो
ता है ॥ मनुष तें उपजा मनुष अन्न तें उपजा अन्न उसहीरूप होता है ॥ इसी प्रकार कारण तें जो
कार्य उपजता है ॥ सो तिसके सदृश होता है ॥ तैसे जो निर्विकार आत्मा तें जगत उपजा है ॥ तौ
जगत भी निर्विकार चाहीये ॥ सो तौ ऐसे नहीं ॥ आत्मा निर्विकार शांतरूप है ॥ अरु जगत वि
कारी दुःखरूप है ॥ आत्मा निष्कलंकरूप है ॥ तिस तें कलंकरूप जगत कैसे उपजा है ॥
वाल्मीकिरुवाच ॥ जब इस प्रकार रामजी कहा तब वसिष्ठजी ब्रह्म अर्थ बोलते भये ॥ व
सिष्ठउवाच ॥ हे रामजी यह सर्व जगत ब्रह्मरूप है ॥ नानाप्रकार का मलनरूप से सो भा
सता है सो मल नतान नहीं ॥ जैसे तरंगों के से बुदबुद समुद्र विषे फुरते हैं सो मलनता भ्रंउ न
हीं उसीरूप है ॥ तैसे आत्मा विषे जगत कलंक कछु नहीं ॥ उसहीरूप है ॥ जैसे अग्नि विषे उ
ष्णता अग्निरूप है ॥ तैसे आत्मा तें जगत आत्मरूप है इतर कछु नहीं ॥ श्रीरामउवाच ॥ हे ब्रा
ह्मण निर्दुःख निर्धर्म ब्रह्म ते जो जगत दुःखरूप उपजया है ॥ सो यह कलंक है ॥ यह जो
तुम्हारे वचन हैं कि सर्व आकाशरूप है ॥ सो तुम्हारे वचनों का स्पष्ट भासते हैं ॥ मैं इनकों
जाण नहीं सक्ता ॥ वाल्मीकिरुवाच ॥ हे पुत्र जब इस प्रकार रामजी कहा ॥ तब वसिष्ठजी मु
नि साक्षात रामजी के उपदेश निमित्त चित्त विषे विचारत भये ॥ जो अब परम प्रकाश कों इ
नकी बुद्धि नहीं प्राप्त भई ॥ बाहक निर्मलभाव कों प्राप्त भई है ॥ पदार्थ भ्रम का कों जाणते
भये हैं ॥ पर परमार्थवेत्ता नहीं भये ॥ जिसकों परमार्थ बोध प्राप्त होता है ॥ अरु मन जिस
का शांत हूआ है ॥ ऐसा जो ज्ञानते यथा पुरुष है ॥ सो मोक्ष उपाय की वाणी के पार कों प्राप्त होता
है ॥ संसार अरु अविद्या मल उसकों कछु नहीं भासती ॥ केवल अद्वैत सत्ता भासती है ॥ जब
लग अवर उपदेश रामजी कों न करों ॥ तब लग इसकों विश्राम भी न प्राप्त होवेगा ॥ जो अर्ध
प्रबुद्ध है ॥ तिसकों सर्व ब्रह्म कहिणा नहीं शोभता ॥ काहे तें जो चित्त उसका भोगों तें विरक्त
नहीं भया ॥ सर्व ब्रह्म के वचन सुणकरि भोगों विषे आसक्त होवेगा ॥ सो नाश का कारण है ॥
तिसका नाश होवेगा ॥ अरु तिसकों परम सुख प्राप्त हूआ है तिसकों भोगों की इच्छा नहीं उपज
ती ॥ तातें सर्व ब्रह्म का कहिणा रामजी कों सिद्धांत काल विषे शोभेगा ॥ प्रथम गुरों कों शि
ष्य प्रति सर्व ब्रह्म कहिणा नहीं बणता ॥ प्रथम शम दम आदिक गुणों करि के शिष्य कों शु
द्ध करै ॥ पाछे सर्व ब्रह्म शुद्ध है ॥ ऐसे उपदेश करै ॥ इसका विज्ञान उदय होता है ॥ जो अज्ञानी अर्ध
प्रबुद्ध है तिसकों ऐसे कहिणा जो सर्व ब्रह्म है ॥ सो ऐसे उपदेश कर गुरु उसकों महा नरक कों
विषे डारता है ॥ जो प्रबुद्ध है ॥ तिसकों भोगों की इच्छा दीन होजाती है ॥ उदय हूआ है आत्म पद
जिसकों ॥ तिसकों अविद्यारूप मल नहीं रहती ॥ अविद्यारूप मल नष्ट भया है ॥ तिसकों क
हिणा बणता है इस प्रकार भगवान वसिष्ठजी अज्ञानरूप तम के नाशक जो ज्ञान के
सूर्य मन विषे श्रेष्ठ रामजी प्रति कहित भये ॥ वसिष्ठउवाच ॥ हे राघव कल्पनारूप कलं
क ब्रह्म विषे है ॥ अरु नहीं ॥ यह मैं तुझ कों सिद्धांत काल विषे कहोंगा ॥ अथवा तूं आप जाण
लेवेंगा ॥ ब्रह्म सत्ता सर्वशक्ति सर्वव्यापक है ॥ सर्वगत है ॥ सर्व तिसी करि रचते हैं ॥ जैसे इ
न्द्रजालक विचित्र शक्ति करि अनेक रूप रचता है ॥ सत कों असत अरु असत कों सत क
रि दिखावता है ॥ तैसे आत्मा माया का परम इन्द्रजालक है ॥ अघट घटना ॥ अर्थ यह जो
न बणे तिसकों बणावे ॥ तिसकी शक्ति है ॥ गाड़ें कों ऐसा करती है ॥ वेली विषे पाषाण लाग
न बणे तिसकों बणावे ॥ तिसकी शक्ति है ॥ गाड़ें कों ऐसा करती है ॥ वेली विषे पाषाण लाग
ते हैं ॥ पाषाण विषे वेली लागते हैं ॥ जैसे सुमेर के तरु ऊपर नंदन वन है ॥ वन की पृथ्वी
कों आकाश करती है ॥ आकाश कों पृथ्वी करते हैं ॥ अरु वृक्ष वेली मानो पाषाण लागते हैं ॥ जै
से कल्प वृक्ष माया रत्न लागते हैं ॥ जैसे गंधर्व नगर आकाश विषे भासता है ॥ अरु
वन कों आकाश करती है ॥ जैसे पुरुष की छाया आकाश होजाती है ॥ आकाश कों भ्रम क
री है ॥ जैसे आकाश विषे गंधर्व नगर रत्नजड़ित स्थान भासते हैं ॥ आकाश पृथ्वी भाव कों प्राप्त
कों प्राप्त करती है ॥ जैसे रत्नों की धरपृथ्वी पर होवे ॥ तिस विषे आकाश का प्रतिबिंब पड़ता
है ॥ हे रामजी यह विचित्ररूप दृश्य पसारा कों कहीं है ॥ सो शुद्ध अव्यक्त तत्व अचेत्य चिन्मात्र वि
षे चैतन्यकाल तत्व जो जाणता है तिसी कर रची है ॥ सो कैसी रची है ॥ उहीं चित्त संवेदन
जाणना रूप फुरणे करि के जगत रूप होइ भासती है ॥ तातें सर्व ब्रह्म सर्व प्रकार सर्वरूप उ
हीं है ॥ जो एक रूप अरु विद्यमान है ॥ हर्ष शोक आश्चर्य किसकी न्याई किसका मानीये ॥ ए
हु अवसर कोऊ नहीं ॥ सर्व एकरूप है ॥ इसी कारण तें हम कों सदा समता भाव रहिता है ॥ हर्ष
शोक आश्चर्य मोह हम कों नहीं प्राप्त होते ॥ समता अरु चपलतादिक विकार कोऊ न
हीं होता ॥ कदाचित हम जाणते नहीं नहीं ॥ देश काल वस्तु परिच्छेद जगत सम अवमान कों
प्राप्त हो तें भासते हैं ॥ तिन का विपर्यय होणा भी भासता है ॥ पर उदय अणु तें स्वभाव विषे स
तारूप स्थित है ॥ काहे तें जो यह दृश्य उन कों अपणे स्वरूप का आभास फुरता भासता
है ॥ जैसा कछु दृश्य प्रपंच भासता है ॥ सो स्वतः चित्त संवेदन के संदकल्पना करि के फुरता है
नानाप्रकार देश काल क्रिया द्रव्य होइ करि भासते हैं ॥ तिस प्रपंच कों आत्मसत्ता किसी
यत्न न करि के तौ न सीरचती ॥ स्वभाव करि फुरणे करि पड़े फुरते हैं ॥ जैसे समुद्र तरंगों कों
यत्न न करि के तौ नहीं रचती ॥ स्वभाव करि फुरणे करि पड़े फुरते हैं ॥ जैसे समुद्र तरंगों कों
यत्न न करि के न ही उपजावता अरु लीन करता ॥ स्वभाव करि समता कार पड़ा फुरता है ॥ तैसे
आत्मा विषे स्वभाव करि सृष्टि फुरत अरु लय होते हैं ॥ जैसे समुद्र अरु तरंगों विषे कछु भे
द नहीं तैसे आत्मा अरु जगत विषे कछु भेद नहीं उहीरूप है ॥ जैसे दुग्ध दूधरूप है ॥ जैसे
पृथ्वी के अणु घटरूप हैं जैसे तंतु पटरूप होइ भासते हैं ॥ जैसे वट धान वृक्षरूप हो
इ भासते हैं ॥ समुद्र तरंगरूप होइ भासते हैं ॥ तैसे आत्मा जगतरूप होइ भासते हैं ॥ हे रा
मजी इन दृष्टांतों का संगत लेणा ॥ कार्य कारण भाव कों नहीं लेणा ॥ आत्मा विषे नकोऊ

स्थिति. २८

कर्ता है॥ न भोगता है॥ न कोऊ विनाश कों प्राप्त होता है॥ केवल आत्मतत्त्व साक्षी निराभय स
मभ्रउभुत अपणे आप सत्ता स्वभाव विषे स्थित है॥ यह जगत आत्मा का प्रकाश है॥ जैसे
दीपक का प्रकाश स्वभाव है॥ सूर्य का प्रकाश स्वभाव है॥ पुष्प का सुगंध स्वभाव है तैसे आत्मा का
स्वभाव जगत है॥ किसी कार्य कारण भाव करि नहीं भया॥ जगत आत्मा का स्वभाव है॥ आ
भासरूप है॥ आत्मा ते इतर कछु नहीं हूआ॥ जैसे पवन का स्वभाव स्पंदरूप है॥ जब स्पंद ते र
हित होता है॥ तब भासता नहीं॥ अरु स्पंद करि भासता है॥ तैसे आत्मा विषे संवेदन फुरती है
तब जगत होइ भासता है॥ एक जगत तक कछु नहीं॥ न सत है न असत है॥ कहूं जगत प्रग
ट भासता है॥ कहूं अप्रगट भासता है॥ नाना प्रकार का विचित्र रूप भासता है॥ जैसे वन वि
षे वृक्षों का रस होता है॥ तिनके उपजणे अरु नष्ट होणे विषे न वन उपजता है॥ न नष्ट होता
है॥ तैसे आत्मसत्ता जगत के उपजणे अरु नष्ट होणे विषे उपजणे विनसणे ते रहित है॥ अरु
वास्तव ते जगत भी न उपजता है॥ न नष्ट होता है॥ आत्मा ही अपणे आप विषे स्थित है॥ अस
म्यक ज्ञान करि जगत भासता है॥ अनेक ताखां वा विस्तार रहा है॥ इस कों ज्ञानरूप कुठा
र साथ काट डारे तब वासना ही होवे॥ जगत रूप वृक्ष है॥ असम्यक ज्ञान इस का बीज है॥ शुभ
अशुभ कर्मरूप फूल हैं आशा रूप वल्ली करि वेष्टत है॥ दुःख रूप पत्र होते हैं॥ भोग रूप फल है॥ न
र रूप फल है॥ चिंता रूप सलना सो भ्रमर भासते हैं॥ अरु सा जो संसार रूप विष का वृक्ष है ति
स कों आत्म विवेक रूप कुठार साथ काट छेदन करि कै॥ तब मनुष्य आत्मा होवे॥ जैसे गज
पति अपणे बल सों सांगल तोड़ कर विचरता है॥ तैसे तू मन निर्बंधन होइ करि वि
चरो॥ ४४॥ इति श्री स्थितिप्रकरणे सर्वैकताप्रतिपादनं नाम सर्गः॥ रामउवाच॥ हे भ
गवन पहले जो साक्षी वहे हैं इनकी उत्पत्ति कैसे हूई है ब्रह्म पद है॥ अरु कैसे तिन का रूप है॥ सो म
उ कों विस्तार करि कै कहो॥ वसिष्ठ उवाच॥ हे महाबाहो जैसे यह विचित्र जाते उपजे ते
है॥ अरु जैसे नाश होते हैं॥ जैसे वर्तते हैं॥ जैसे स्थित होते हैं॥ सो क्रम करि कै तुझ कों कह
ता हौं॥ हे निष्पाप शुद्ध जो ब्रह्म तत्त्व है॥ तिस की जो आद्या चेतन शक्ति है॥ सो निर्मल है॥ ज
व उही स्फुरण रूप होती है॥ तब कल्पना रूप स्थित होती है॥ जब उही चेतन रूप भाव को
प्राप्त होती है॥ तब संकल्प रूप कों धारती है॥ बहुरि तन्मय होइ कै मन रूप होती है॥ सो म
न संकल्प मात्र करि कै जगत को रचता है॥ विस्तार भाव कों प्राप्त करता है॥ जैसे गंधर्व नगर
ता विषे विस्तार भाव को प्राप्त होता है॥ तैसे मन करि दृश्य का विस्तार होता है॥ परब्र
ह्म दृष्ट कों त्याग करि रचता है॥ सो सर्व आत्म सत्ता का चमत्कार है॥ वास्तव कछु नहीं
हम कौं तो सर्व आकाश रूप भासता है॥ इन दृष्टीयों कों जगत भासता है॥ जैसे चित्त में वे
दन विषे संकल्प फुरता है॥ तैसा रूप होता है॥ प्रथम ब्रह्मा का संकल्प फुरया है॥ सो चि
त संवित आप कों ब्रह्मा रूप देखत भयी है॥ ब्रह्मा रूप होइ करि जगत कों कल्पती है॥ आ
प अपणा पनि होइ करि चवदं प्रकार के भूत जात उत्पत्ति कों अंगीकार करती है॥ वस्तु ते स
र्व तपन रूप है॥ चित के फुरणे करि कै जगत भासता है॥ सो चिन्मात्र ही अनंत आकाश रूप
है॥ अवर शरीर कछु वस्तु ते नहीं॥ संकल्प मात्र नगर अज्ञान करि कै भासता है॥ तिस अज्ञान
रूप जगत विषे तो जीव भये है॥ सो कोई सो दृढ करि कै सन्तुलत है॥ कोउ अज्ञानी है॥ कोई म
ध्य स्थित है॥ केई जिज्ञासी है॥ कोऊ ज्ञानवान है॥ उपदेष्टा है॥ तैते कछु भूत जात है॥ सो सर्व
आधि व्याधि दुःख करि दीन रूप है॥ तिन विषे ज्ञानवान आत्मा को मान की है॥ अरु राजस सा
त्विकी है सो शांत आत्मा पुरुष है॥ तिन कों संसार दुःख कदाचित स्पर्शता नहीं कर्ते॥ उह सर्व
ब्रह्म सत्ता विषे स्थित है॥ हे राम जी यह जो मैं तुझ कों भूतजात कहे हैं सो सर्व ब्रह्म जो पर
म प्रमरत रूप सर्व व्यापी है॥ चिन्मय चेतन्य स्वरूप अनंत आत्मा आधि व्याधि दुःख ते रहि

त भ्रम सों हीन है॥ तिस के किसी एक देश विषे स्थित है॥ जैसे अनंत सोम जल के किसी स्थान वि
षे तरंग फुरते हैं तैसे ब्रह्म सत्ता के किसी स्थान विषे जगत अपेचे फुरता है॥ रामउवाच॥ हे भगव
न आत्मतत्त्व तो अनंत निराकार निरवयव रूप है॥ तिस का एक अंश एक स्थान कहां ते हूआ
निरवयव विषे अवयव क्रम कैसे होता है॥ वसिष्ठ उवाच॥ हे राम जी तिस करि कै उपजे हैं॥ अ
थवा तिस ते उपजे हैं॥ पर कारण अरु उपादान हैं सो भ्रांति मात्र है॥ यह शास्त्र रचना व्यवहार के
निमित्त करी है॥ परमार्थ ते कछु नहीं अवयव करि कै जो देश आदिक कल्पना है॥ सो क्रम ते न
ही उपजी॥ इहै शब्द प्रपंच तिहू मात्र भी होती है॥ एक कल्पना मात्र है॥ सो कल्पना भी आत्मस्वरू
प है॥ आत्मा ते रहित कल्पना भी कछु वस्तु नहीं॥ न हई है॥ न होवेगी॥ तिस विषे क्रमादिक क
जो शब्द अरु अर्थ है॥ सो व्यवहार के निमित्त है॥ परमार्थ ते कछु नहीं शब्द अर्थ की कल्पना है
सो तिस करि उपजी है॥ तिस ते उपजी है॥ यह द्विती कल्पना भी नहीं॥ तन्मय रूप है॥ आत्मा
ही शांत रूप है॥ अवर कछु नहीं॥ जैसे अग्नि ते अग्नि की ज्वाला होइ फुरती थी है॥ सो अग्नि रूप है
तिस करि उपजी थी अरु तिस ते उपजी थी अरु तिस ते उपजी थी॥ यह कल्पना अग्नि विषे को
ऊ नहीं॥ अग्नि ही अग्नि है॥ तैसे अन्य अरु जनक जो है कार्य कारण भेद सो आत्मा विषे को
ऊ नहीं॥ कार्य कारण भाव कल्पना मात्र है॥ जहां अधिकता एक तै नता होती है॥ तहां कार
ण कार्य भाव होता है॥ जो यह अधिक कारण है॥ तिन कार्य देखि न कार्य कारण शब्द वृण
ता भी है॥ जहां भेद होता है॥ अरु जहां भेद कल्पना ही न होवे॥ तहां एक अद्वैत विषे शब्द कै
से होवे॥ अरु शब्द का अर्थ कैसे होवे॥ जैसे अग्नि अरु अग्नि की शिखा विषे भेद नहीं॥ तैसे कार्य
कारण भाव आत्मा विषे कोऊ नहीं॥ शब्द अर्थ कल्पना मात्र है॥ जहां प्रतियोगी व्यवछेद
संख्या भ्रम होता है॥ तहां है तत्ता न तत्ता है॥ प्रतियोगी कहीये॥ प्रतिपक्षी जैसे चेतन्य को
प्रतियोगी जड़ अरु जड़ का प्रतियोगी चेतन्य अरु व्यवछेद कहीये॥ परिछिन्न॥ जैसे घट
विषे आकाश होता है॥ संख्या कहीये जीव ईश्वर यह जो शब्द अर्थ है॥ सो द्वैत कल्पना वि
षे होता है॥ जहां एक अद्वैत आत्म सत्ता ही है॥ तहां शब्द अर्थ कोऊ नहीं॥ जैसे समुद्र विषे त
रंग बुदबुदे लहिरी चक्र सर्व जल ही जल है॥ जल ते इतर कछु नहीं॥ तैसे शब्द अर्थ कल
ना ब्रह्म स्वरूप है॥ इतर कछु नहीं॥ जो बोधवान पुरुष है॥ तिन कों सर्व ब्रह्म ही भासता है
चित्त भी ब्रह्म है मन भी ब्रह्म है ज्ञान भी शब्द अर्थ भी ब्रह्म है॥ ब्रह्म ते इतर कछु नहीं॥ ति
स विषे इतर भासता है॥ सो मिथ्या ज्ञान के विकल्प हैं॥ जैसे अग्नि अरु अग्नि की ज्वाला
टां की कल्पना भ्रांति मात्र है॥ विकल्प मार वस्तु ते कछु नहीं॥ तैसे आत्मा विषे जगत की
भिन्न कल्पना असत रूप है॥ जो ज्ञान ते रहित है॥ तिस कों दृष्टि दोष करि कै सत होइ भास
ता है॥ इसी कारण ते सर्व ब्रह्म है॥ ब्रह्म ते इतर कछु नहीं पाईता॥ निश्चय करि कै परमार्थ
ते सर्व ब्रह्म है॥ सिद्धांत काल विषे तुझ कों यह ही दृष्ट उपजेगी॥ यह जो सिद्धांत पिंजर मैं
तुझ कों कहा है॥ तिस के उपरि उदाहरण कहौंगा॥ जो यह क्रम विषा का कछु भी नहीं
अज्ञान के नाश रूप अत्यंत असत जाणोगा॥ जैसे भ्रांत दृष्टि के हूय पहुते वस्तु ते वस्तु भूत
जे वही भासती है॥ इसी प्रकार अवर पदार्थ तम करि कै विपर्यय भासते हैं॥ जब तम दूर हो
ता है॥ प्रकाश के उदे हूए॥ तब ज्यूं की त्यूं वस्तु भासती है॥ तैसे अज्ञान दृष्ट करि कै जगत
भासता है॥ जब सत विचार करि कै अज्ञान दृष्ट नष्ट होवेगी॥ तब निर्मल प्रकाश रूप आ
त्म सत्ता तुझ कों भासेगी॥ इस विषे संशय नहीं निश्चित अर्थ है॥ ४५॥ इति श्री महारामाय
णे मोक्षोपाये स्थितिप्रकरणे ब्रह्मप्रतिपादनं नाम सर्गः॥ रामउवाच॥ हे भगवन य
ह जो तुमारे वचन हैं॥ सो क्षीर समुद्र के तरंगवत उज्ज्वल शीतल हैं॥ त्रिताप के नाश क
र्ता हिरदे की मल हरकारणे कों निर्मल रूप है॥ अरु अज्ञान रूप तम के नाश कर्ता प्रका

रूपहै॥ अरु गंभीर है॥ जिनका मोल मैं पाइ नहीं सक्ता॥ एक लक्षण विषे ग्रंथिका रवों प्राप्त हो
ते हैं॥ से कृपा करिकै॥ अरु अवर लक्षण विषे निह संशय रूप प्रकाश कों प्राप्त होता है॥ जैसे च
पल रूप मेघ कों रवि सूर्य का प्रकाश कव ही भासता है॥ कव ही अच्छादि जाता है॥ ताते मेरा सं
शय हर करो॥ जो आत्मा अनंत सत्ता अप्रमेय रूप है॥ सर्वज्ञ ही प्रकाश रूप है॥ असत भावते
रहित सार रूप है॥ तो तिस अद्वैत तत्त्व विषे कलना कहां ते आई है ॥वसिष्ठोवाच॥ हे राम
जी जो कछु मैं तुझ कों कहा है॥ सो मेरे वचनों का यथाभूत अर्थ है॥ जैसे कहा है तैसे ही है
अस्मार्थ रूप वचन भी नहीं॥ जिसके हिरदे विषे दृढ हि रहे॥ तिसकों आत्म सत्ता कों प्राप्त करे॥ अ
रु विरूप भी नहीं॥ इनका रूप फल भी प्रगट है॥ जिनके धारे ते सर्व दुःख संसार के मिट
जाते हैं॥ अरु पूर्व अपर विरोध भी नहीं॥ जो प्रथम कछु अवर कहा हो॥ पाछे कछु अवर कहे
ता जो कछु कहा है॥ सो यथार्थ कहा है॥ परु ज्ञान दृष्ट करि जब तेरा हिरदे निर्मल होवेगा॥
विलक्षण बोध सत्ता हिरदे विषे प्रकाशेगी॥ तब तूं मेरे वचनों के तात्पर्य कों हिरदे विषे जाणे
गा॥ अवर जो तुझ कों उपदेश करता हों॥ सो वाच्य वाचक संबंध शास्त्रों के उपदेश लि मि
त करता हों॥ जब इन युक्त वचनों करि तूं जागेगा॥ तब तुझ कों अद्वैत निर्मल सत्ता भा
सेगी॥ अवर जो कछु वाच्य वाचक शब्द अर्थ रचना है॥ तिस कों त्याग करोगे॥ ज्ञानवा
न कों सदा परमार्थ कर अद्वैत सत्ता भासती है॥ इच्छादिक कल्पना आत्मा विषे कछु नहीं
पाईती॥ आत्मा नीरोग निर्द्वंद्व है॥ सोई जगत रूप करिकै स्थित भया है॥ इस प्रकार तुझ
कों मैं विचित्र रूप करिकै कहोंगा॥ जब लग सिद्धांत का अवकाश है॥ अर्थ यह जब लग आत्म स
त्ता नहीं प्रकाशी॥ सुकालों आत्म बोधन हीं हुआ तब लग उपदेश है॥ जब आत्म बोध होवेगा॥ त
ब आप ही जाणेगा॥ अज्ञान रूप जो तम है॥ सो वाक्य विस्तार विना शांत नहीं होता॥ इस प्रका
र मैं तुझ कों अनेक युक्तों करि कहोंगा॥ हे रामजी शुद्ध जो आत्म सत्ता है॥ तिस विषे आपको सं
वेद स्फुर आभास फुरया है॥ तिसी का नाम अविद्या है॥ सो हि रूप पावन है॥ एक उत्तम है॥ ए
क मलीन है॥ जो स्पंद कला अपणे नाश निमित्त प्रवर्तती है॥ सो उत्तम है॥ विद्या भी तिसी का
नाम है॥ सर्व दुःखों कों नाश करती है॥ एक जो संसार की ओर फुरती है॥ सो अविद्या कहीती है॥ ता
ते पर्यंत जो आत्मा के सन्मुख होती है॥ सो विद्या है॥ अरु जो दृश्य जगत के सन्मुख फुरती
है॥ सो अविद्या है॥ सो दोनो स्पंद रूप हैं॥ ताते अविद्या करि अविद्या का नाश करो॥ जैसे अस्त्र
अस्त्र करि युद्ध शांत करीता है॥ जैसे मैल कों कलर मैल हर करती है॥ जैसे विष कों वि
ष नाश करती है॥ जैसे शत्रु कों शत्रु मारता है॥ तैसे अविद्या करि अविद्या नष्ट होती है॥ जो ऐ
से हुआ तो तूं भी इस कों नाश करे॥ तब हर्ष दायक होती है॥ विचार करिकै इस का नाश हो
ता है॥ विचार करी ये तो नहीं जाणी जाती जो कहां गई॥ जैसे दीपक साथ अंधकार देखीये
तो नहीं जाणीता जो कहां गया॥ बड़ा आश्चर्य है॥ बड़ा आश्चर्य॥ जो जीवों का ज्ञान इस अ
ज्ञान हि लीया है॥ सदा प्रत्यक्ष आत्मसत्ता है॥ सो जीवों कों नहीं भासती॥ अविद्या कैसी है॥ ज
ब लग जाणीती नहीं॥ तब लग पड़ी फुरती है॥ जब जाणी तब न हो जाणीता जो कहां गई॥ अ
ज्ञान मात्र सिद्ध है॥ बड़ा आश्चर्य है॥ जो माया ने संसार कों बांधा है॥ सत कों ओई प्राप्त भयी
है॥ अरु असत है॥ बुद्धिवानों कों भी इस ने नाश करि छोड्या है॥ जो इन रोंकी वाक हिणी है नि
रंतर अभेद रूप आत्मा है॥ तिस विषे अविद्या भेद कल्पना को रूप नहीं॥ जिस पुरुष ने संसार मा
या कों सुकालों जाण्या है॥ सो पुरुषोत्तम है॥ जिसकों एह भावना हुई॥ जो अविद्या पर मा
र्थ ते कछु नहीं असत है॥ सो ज्ञानवान है॥ जो कछु जाणवे योग है॥ सो तिस जाण्या है॥ इ
स विषे संशय नहीं॥ जब लग ते स्वरूप विषे जाग्या नहीं॥ तब लग मेरे वचनों विषे आस्ति
क बुद्धि हो॥ अरु वेद निश्चय कों धारना अविद्या नाशरूप है॥ है नहीं॥ जो कछु जगत दृ

ष्ट आवत है॥ सो मन का मनन रूप है॥ असत रूप है॥ जिस कों एह निश्चय हुआ सो पुरु
ष मोक्ष भागी होता है॥ एह जो जगत दृश्य भाव कों प्राप्त हुआ है॥ मन का फुरणा रूप सो
सर्व चेतन स्वरूप है॥ एह निश्चय जिस के अंतर स्थित हुआ॥ सो भी मोक्ष भागी होता है॥
अरु जिस कों चराचर विषे द्वैत भावना है॥ सो बंधन है॥ जैसे पक्षी जाल विषे बंधायमा
न होता है॥ हे रामजी संशय ते जीव इस संसार की मन रूप करि बांधे रूप है॥ सर्व जगत तत्त्व
अभ्रांत रूप है॥ तिस विषे तिस कों असत बुद्धि है॥ अथवा सत ब्रह्म बुद्धि है॥ सो अस मा
हो इकरि संसार दुःख विषे डूबता नहीं॥ अरु जिस कों अनात्म धर्म देहादिक विषे भा
वना है॥ स्वरूप विषे आत्म बोध नहीं॥ सो हर्ष शोक आपदा कों प्राप्त होता है॥ अरु जिस
कों स्वरूप विषे स्वरूप बोध है॥ अरु अनात्म धर्म का त्याग है॥ तिस कों संसार अरु अवि
द्या नहीं रहिती॥ विकार दोष तिस कों स्पर्श नहीं करते॥ जैसे जल विषे धूड़ नहीं उडती॥
तैसे तिस महात्मा पुरुष के चित्त विषे दोष नहीं उदे होते जो ज्ञानवान पुरुष है॥ तिस कों
हिरदे विषे जगत के शब्द अर्थ का रंग नहीं चढ़ता॥ जैसे तंतु विना पट नहीं होता॥ पट तं
तु ही रूप है॥ तैसे आत्मा विना जगत नहीं होता॥ जगत आत्म रूप है॥ ऐसे जाण करि जो
व्यवहार विषे वर्तता है॥ सो पुरुष मान सीं दुःख कों नहीं प्राप्त होता है॥ अरु जो अविद्या मा
त्र संसार विषे परा भद्रकता है॥ सो आत्मतत्त्व कों पाय नहीं सक्ता॥ विद्यमान है तो भी नहीं
भासता॥ जब आत्म ज्ञान होवे॥ तब अविद्या का नाश होता है॥ अवर कि नहीं होता॥ सो आ
त्म ज्ञान शास्त्रों के अर्थ विचार करि दृढ अभ्यास ते होता है॥ जिस कों आत्म ज्ञान हुआ सो अ
विद्या रूप नदी कों तर जाता है॥ आत्म सत्ता के प्राप्त हुए अविद्या लीन हो जाती है॥ जिन
कों अविद्या रूप संसार के पदार्थों की इच्छा उदे होती है॥ सो अविद्या रूप नदी विषे वहि
जाते हैं॥ हे रामजी एह अविद्या जहां ते उपजी है॥ तहां ते उपज करि मोह भ्रम कों देती है॥
निश्चय करिकै स्थित हुई है॥ अरु तत्त्व पद कों इस अच्छादि लीया है॥ ताते तुम एह न विचा
रो जो अविद्या कहां ते उपजी है॥ कवण इस का कारण है॥ इस के नाश का उद्यम करो॥ जब
एह नष्ट होवेगी॥ तब इस की उत्पत्ति भी जाणलेवोगे॥ जो इस प्रकार उपजती है॥ अरु
एह इस का स्वरूप है॥ एह इस का कारण है॥ अरु एह कार्य है॥ हे रामजी अविद्या वस्तु
ते है नहीं अविचार करिकै प्रतीभासती है॥ विचार दृष्ट करि नष्ट हो जाती है॥ तब जा
णी नहीं जाती जो कहां गई॥ जब स्वरूप विस्मरण होता है॥ तब उपज करि हृद होती है॥ बड़
दुःखदायक होती है॥ ताते बल करिकै इस का नाश करो॥ बड़े बड़े शूरमी भी रूप हैं॥ ति
न कों अविद्या व्याकुल कीया है॥ ऐसा बुद्धिवान कोऊ नहीं॥ जिस कों अविद्या व्याकुल न
ही कीया॥ अविद्या रूप रोगों का मूल है॥ यत्न करिकै इस का औषध करो॥ जिस करि फि
र इह जन्म दुःख न प्राप्त होवे॥ जेती कछु आपदा हैं॥ तिन का एह अधिष्ठाता सखी है॥ अ
ज्ञान रूप वृक्ष की एह वली है॥ अनर्थ रूपी अर्थों की जननी है॥ ऐसी अविद्या रूप म
ल कों हर करो॥ मोह भय आपदा दुःख के देवणे हारी है॥ हिरदे विषे मोह उपजाइ करि जी
वों कों व्याकुल करती है॥ अज्ञान चेष्टा करि बुध होती है॥ जब अविद्या रूप संसार समुद्र
के पार कों प्राप्त होवोगे॥ तब शांत प्राप्त होवेगी॥ ॥ इति श्री स्थितप्रकरणे अविद्याक
थनं नाम सर्गः॥ वसिष्ठोवाच॥ हे रामजी अविद्या रूप रोग कों काट करि शांत रूप
स्थित होता है॥ अरु विचार ने ज्ञों करि देखे ते एह नष्ट होता है॥ सो विस्तार आधिकारो
पस्थित जीव ज्ञान का विस्तार मैं तुझ कों कहि लेता था॥ सात करा असाधिक मन
की वृत्ति विचारण के अर्थ मैं प्रवर्तता था॥ सो अव सुण॥ जो तत्त्व अस्ति असत्व अनुभव रू
प है॥ सो सर्वव्यापी निरामय चेतन प्रकाश अनंत है॥ आदि अंत ते रहित भ्रम सो हीन

चैतन्यप्रकाशतिसकावपुहै॥ जबउहचैतन्यप्रकाशअस्पंदरूपहोइफुरताहै॥ तबचितक
लाजगतकों चेतलेजातीहै॥ जैसेसोम्यसमुद्रजलविषेइच्छाताकरिकैतरंगतफुरती
है॥ तैसेदीपकवततेजप्रकाशरूपचैतन्यसोंचितकलाकरिजगतफुरताहै॥ जैसेसमु
द्रकेथंभतरंगविषेजलतेंकुछअवकछुनहीं॥ तैसेसर्वशक्तिआत्मातेंइतरचितकलाका
रूपकछुनहीं॥ स्पंदरूपभीअभेदहै॥ जैसेआकाशविषेआकाशस्थितहै॥ तैसेआत्मा
विषेचितशक्तिहै॥ जैसेनदीविषेवायुकेसंयोगतेंतरंगउठतेहैं॥ तैसेआत्माविषेचित
कलासोंदृश्यजगतहोताहै॥ ऐसेभीनहीं आत्माअद्वैतहै॥ स्वतःजिसविषेचितकलास्पं
दहोइआवतहै॥ जैसेवायुविषेकारणविनास्पंदहोआवतहै॥ स्पंदअस्पंददोवायुकेरू
पहैं॥ जबस्पंदरूपहोतीहै॥ तबभासतीहै॥ अस्पंदहोतीहै तबअलखहोजातीहै॥ तैसेचि
तकलाफुरतीहै॥ तबलखणविषेआवतीहै॥ निस्पंदहुईअनालखअलखहोतीहै॥ शास्त्रकी
गंमनहींहोती॥ स्पंदकरिकेजगतभावकोंप्राप्तहोतीहै॥ जैसेसमुद्रविषेतरंगवकफु
रतेहैं तैसेचैतन्यविषेचितकलाफुरतीहै॥ जैसेआकाशविषेमुक्तमालाभासतीहै॥ सो
हैनहीं॥ तैसेआत्माविषेविश्ववस्तुतेंहैनहीं॥ स्पंदभावविषेकछुकम्पतत्वभनहोइभा
सतीहै॥ आत्मातेंभिन्नकछुनहीं॥ परंभिनकीन्याईभासतीहै॥ जैसेप्रकाशलक्ष्मीप्रका
शकोदरविषेस्थितहोतीहै॥ तैसेचितशक्तिआत्माविषेहै॥ देशकालक्रियाद्रव्यकोंजै
सेजैसेवेन्यतीहै॥ तैसेतैसेभासतहै॥ आगेनामसंज्ञाहोतीहै॥ अपणेस्वरूपकोंविस्मरणक
रिकैदृश्यताजतवमयहोतीहै॥ तोभीस्वरूपतेंचितरेकनहींहोती॥ परंचितरितकोंन्या
ईभावनाहोतीहै॥ जैसेसमुद्रविषेतरंगभिननहीं॥ सुवर्णतेंभूषणभिननहीं॥ तैसेचित
शक्तिआत्मातेंभिननहीं परंअपणेअनंतस्वभावकोंविस्मरणकरिकैदेशकालक्रिया
इकेभेदमानतीहै॥ संकल्पकीजोरधावणकरिकलनाभावकोंप्राप्तहोतीहै॥ विकल्पक
लनाकरिचितशिक्तहेतन्नरूपहोतीहै॥ अरुशरीरकानामक्षेत्रहोताहै॥ शरीरकोंअंत
रवाह्यजाणनेतेंक्षेत्रज्ञनामहोताहै॥ सोक्षेत्रज्ञअहंभावकीवासनाकरताहै॥ तिसअहंके
कहिणसोंआत्मातेंइतरचितकलाअहंकाररूपधारतीहै॥ वहुअहंकारमोंनिश्चयकल
नाहोतीहै॥ तिसकानामवुद्धिहोताहै॥ जबअहंभावनिश्चयमनसंकल्पकलनाहोतहै
तिसकानाममनहोतहै॥ इहीचितकलामनभावकोंप्राप्तहोतीहै॥ जबमनसोंघनविक
ल्पउठतेहैं॥ शब्दस्पर्शरूपरसगंधकीभावनाकरिइंद्रियांकरआवतीयांहै॥ वहुउहस
पाद्प्राणसंयुक्तदेहभासआवतीहै॥ इसप्रकारजगतविषेदेहकोंपाइकरिजन्मअरुम
तकोंप्राप्तहोताहै॥ वासनासाथवांधाहुआजीवदुःखोंकेमेहूहकोंप्राप्तहोताहै॥ कर्मोंक
करिकैविंताभावकोंधारताहै॥ जैसेसमसेपाइकरिफलमयफुरताहै॥ अन्यथानहीहोता
स्वरूपकेप्रमादिकरिकैजीवतेसेदृश्यभावकोंप्राप्तहोताहै॥ आपकोंकार्यकारणमा
नताहै अहंकारभावकोंप्राप्तहोताहै॥ निश्चयहृतकरिवुद्धिभावकोंप्राप्तहोताहै॥ संक
ल्पकरिसंयुक्तमनभावकोंप्राप्तहोताहै॥ सोमनदेहइंद्रियांरूपहोइकरिस्थितहोताहै
अपणाअनंतरूपभूलजाताहै॥ परिछिन्नभावकोग्रहिणकरिकेपतियोंमीयवछेदभाव
पावताहै॥ तबइच्छामोहादिकशक्तिकोंप्राप्तहोताहै॥ जैसेसयकविमातेंवृषभकोंगोआन
मिलतीहै॥ तैसेसर्वअपदादुःखइसकोंआनप्राप्तहोतेहैं॥ जैसेसमुद्रविषेनदीयांआनप्रवे
शकरतेहै॥ इसीप्रकारअहंकारअपणीरचनाकरिआपहीवंधनपावताहै॥ जैसेकुशायणअ
पणेस्थानकोंरचकरिआपहीवंधायमानहोतीहै॥ वृशलिदहै॥ जोआपहीसंकल्पकरि
दृश्यकोंरचताहै॥ वहुउहदेहविषेआस्थाकरताहै॥ तातेंआपहीदुःखीहोताहै॥ अंतरतेंतमा
वद्धिताहै॥ आपकोंवंधाइमानकरिसंसारजेगलविषेअविद्यारूपआशाकोंलीयेफिर

ताहै॥ अपणेसेकल्पकरिकल्पततन्मात्रअहंरूईहै॥ तिसविषेअहंप्रतीतहोतीहै॥ जैसेजलवि
घतरंगहोतेहैं॥ तैसेदेहादिकउदेहुएहैं॥ तिनसाथवांधाहुआपडादुःखपावताहै॥ जैसेसि
तृसंगलोंसाथवांधाजावे॥ तैसेवांधाहै॥ एकस्वरूपहै॥ माईफुरणेकेवशितेंनानाभावकोंप्रा
प्तहूआहै॥ कहूंमनकहूंवुद्धि॥ कहूंअहंकारकहूंज्ञानकहूंक्रिया॥ कहूंपंचविषयकाकहूंप
कतकहूंमायाकहूंकर्म॥ कहूंविद्याकहूंअविद्या॥ कहूंइच्छाकरिकहितीहै॥ हेरामजीइ
सप्रकारचितकरिजीवअनेकभ्रमकोंप्राप्तहूआहै॥ त्रिलोकरूपीरोगकरिरोगीदुःखपा
वताहै॥ तमयतनकरिकैइसकोंतरो॥ जरामरणादिकतोविकारहैं॥ अरुसंसारकीभा
वनाहै॥ सोइसकोंनहकतीहै॥ परंपरभलाहै॥ प्रतिग्याकरीये॥ परंतुराग्यावरणरोगहै॥ नि
सकरिअस्थाअविद्याकेरंगसाथरंजतभयाहै॥ इछाकरणेसोंइसकास्वरूपमलिनभयाहै
कर्मरूपअंकुरसोंसंसाररूपवृक्षवढतागयाहै॥ अपणाआत्मस्वरूपविस्मरणभयाहै
कलनाकरिआपकोंमलिनजाणतभयाहै॥ अविद्याकेसंयोगकरिदिनकोंभोगताहै॥ संसा
रकीभावनारूपपर्वतकेनीचेदवागयाहै॥ आत्मपदकीओरउठणेकोंसमर्थनहींहोता॥ सं
साररूपविषकावृक्षकावृक्षहै॥ जरामरणरूपशाखोंकरिवढगयाहै॥ आशारूपफा
सीसाथवांधेहूयजीवपडेभटकतेहैं॥ इसकरिचिंतारूपअग्निविषेजलतेहैं॥ क्रोधरूप
सर्पजीवोंकोंचर्वतकीयाहै॥ कामरूपअंधतेइसकोंनाशकीयाहै॥ अपणीवासनावस
ताइसकोंविस्मरणभईहै॥ जेहणेअपणेश्रूयसेरहतेंहलाशोकवर्शदुःखीहोताहै॥
जैसेपतंगदीपककीशिखामोंजलमरताहै॥ जैसेमलतेकोवाककमलेमलनभावकों
प्राप्तहोताहै॥ तैसेआशाकरिदृढहुआप्रमादीहोइकरिपराइदुःखपावताहै॥ जैसेकोऊ
मृगविषकोंमृगवरूपजाणकरिभक्षणकरिनोदुःखपावताहै॥ तैसेइसकोंभोगोंवि
षैमित्रवुद्धिहुईहै॥ परंतुइसकेपरमशत्रुहैं॥ इसकोंउनमतकरिकैमूर्छाकरतेहैं॥ वहुदुः
खकोंप्राप्तकर्तेहैं॥ जैसेवांधाहुआपक्षीसमरद्दविषेदुःखपावताहै॥ तैसेपरदुःखपावता
है॥ तातेंइसकोंतरो॥ परंजगतजालअसतहै॥ वोधवंनगरवतअसंतहै॥ इसकीउछाअन
र्थोंकाकारणहै॥ इसकेसारसमुद्रविषेमतद्वो॥ जैसेहस्तीकीचमोंअपणेवलक
रिनिकसताहै॥ तैसेअपणाउद्धारकरो॥ संसाररूपलोभविषेमनरूपवेलनामनहो
गयाहै॥ तिसकरिअंगजीरणभयेहैं॥ अभ्यासअरुवैराग्यरूपवलकरिइसकोंनिकासो
अपणाउद्धारकरो॥ जिसपुरुषकोंअपणेमनऊपरभीदयानहीउपजती॥ जोसंसारदुः
खतेंनिकासे॥ सोमनुषकाआकारहै॥ परंतनरातमहै॥ तातेंतुमउद्धारो॥॥ इति श्रीचि
तमकरणेजीवावतरणंनामसर्गः॥ वशिष्ठउवाच॥ हेरामजीइसप्रकारजीवआत्मसं
तातेंफुरकरिसंसारकीभावनाकरतेहैं॥ तिनकीसंख्याकछुकरीनहींजाती॥ कोईएवं
उपजेहैं॥ कोईअवउपजेहैं॥ अवलगउपजतेजातेहैं॥ जैसेफुरणेसोंजलकणकेप्रगटहो
तेहैं॥ तैसेव्रह्मसत्तासोंजीवफुरतेहैं॥ अपणीवासनाकरिवांधेपडेभटकतेहैं॥ दशोंदिशा
जलथलविषेपडेभ्रमतेहैं॥ जैसेसमुद्रतेंतरंगउपजकरिनष्टहोतेहैं॥ तैसेजन्ममरणपाव
तेहैं॥ केयोंकोंप्रथमहूआहै॥ केयोंकोंशतजन्महूएहैं॥ केयोंकोंअसंख्यजन्महूएहैं॥ कोई
आगेहोवेंगे॥ कोईअवहोवेंगे॥ कोईहोइकरिमिटगयेहैं॥ कोईअनेककल्पांपर्यंतअज्ञा
नकरिकैपडेभटकेंगे॥ अवकेईजगतविषेस्थितहैं॥ कोईयोवनविषेस्थितहैं कोई॥ कोईमो
हदुःखकरिनष्टभयेहैं॥ कोईअल्पवपुहोइकरिस्थितहैं॥ कोईअनंतआनंदीहूएहैं॥ कोईसु
र्यंकतउदतरूपहैं॥ कोईकिंनर कोईविद्याधररूपहोइकरिस्थितहैं॥ कोईसूर्यइंद्रवरुणकु
वेरसदाशिवविष्णुव्रह्मादिरूपहोइकरिस्थितभयेहैं॥ कोईयक्षवेतालसर्पादिकस्थितहैं॥ के

स्थित.
३९

ईश्वाराण दर्शी वैश्य शूद्र इगण कहीनते है॥ केई किरात वंशादिक स्थित हैं॥ केई त्रिलोचन
धोपत्र फल पेड़ मूल कों प्राप्त भये हैं॥ केई लता गुच्छे पाषाण शिखर रूप हैं॥ केई कदंब
नलन मालचूत रूप है॥ केई कदंब नलन मालचूत रूप हैं॥ केई मेरु लेश्वर चक्रवर्ती हु
ए भ्रमते हैं॥ केई मुनीश्वर मौन पर विषे स्थित हैं॥ केई कृमि कीट पपील कादिक रूप हैं॥
केई सिंह मृग घोरे खच्चर गर्धव लादिक पशु स्थित हैं॥ केई सारस चकोर बक कवाको
कलादिक पक्षी होइ करि स्थित हैं॥ केई कमल कल्ली को मत्स्य गोधादिक स्थित हैं॥ के
ई अपदा करि दुःखी हैं॥ केई संपदावान हैं॥ केई स्वर्ग विषे केई नर्क विषे स्थित हैं॥ केई नक्ष
त्र चक्र कों ऊ आकाश वायु सूर्य की यों किरणों विषे॥ कोऊ चंद्रमा की यों किरणार स वि
षे स्थित हैं॥ स्वाद लेत हैं॥ कोऊ जीवन मुक्त हैं केई अज्ञान करि पड़े भ्रमते हैं॥ केई क
ल्पाण भामी चिर पर्यंत भोगों कों भोगते हैं॥ केई परमात्मा विषे परिणाम पाये हैं॥ केई
अल्प काल विषे शीघ्र ही आत्मतत्व विषे लय भये हैं॥ केई चिर काल करि जीवन मुक्त
होवेंगे॥ केई मूढ दुर्भावना ही करते हैं॥ सो आत्मा ही विषे पड़े भ्रमते हैं॥ केई मृत होइ
करि इसी जगत विषे उपजते हैं॥ केई अवर जगत विषे जाई स्थित होते हैं॥ केई नई हो
उपजते हैं॥ नऊ होउ उपजते हैं॥ आत्मतत्व विषे लय होते हैं॥ केई मंदराचल सुमेरादि
क पर्वत होइ करि स्थित होते हैं॥ केई क्षीर समुद्र घृत समुद्र ईख रस जलादिक स
मुद्र रूप हैं॥ केई नदी यों तड़ाग कमये हैं॥ केई स्त्री रूप स्त्री दर्शन रूप हैं॥ केई पुरुषाकार केई
मूढ नपुंसक रूप केई शुद्ध मति॥ केई अत्यंत मूढ रूप केई अज्ञानी॥ केई ज्ञानवान॥ केई विदि
पत॥ केई समाधि विषे स्थित हैं॥ इसी प्रकार जीव अपणी वासना करि बोध रूप पड़े भ्रमते हैं सं
सार की भावना करि के जगत विषे कबहूं अधः कबहूं ऊर्ध्व कों जाते हैं॥ काम क्रोधादिक दुः
खों करि पीड़ा पावते हैं॥ कर्मों करि पड़े भ्रमते हैं॥ अनेक आशा रूप फांसों साथ बांधे हुए देह कों
उठाई फिरते हैं॥ जैसे भारवाही भार कों उठाई फिरते हैं॥ तैसे कोई मनुष्य शरीर तें बहुरि मनुष्य
शरीर पावते हैं॥ इसी प्रकार आत्म रूप कों भूलाइ करि देह साथ मिलणे सो वासना रूप कर्म
करते हैं॥ तिनके अनुसार अधः ऊर्ध्व मध्य विषे भ्रमते हैं॥ जिनकों आत्म बोध हुआ है॥ सो पुरुष
कल्याण रूप हैं॥ अवर सर्व दुःखी माया रूप संसार विषे मोहित भये हैं॥ यह संसार रचना
इंद्रजाल की न्याई है॥ जब लग आपणे आनंद स्वरूप कों नहीं पाया॥ सा ज्ञात कारने ही भया
तब लग संसार विषे भ्रमता है॥ जिस पुरुष अपणे स्वरूप कों जाण्या है॥ अरु त्याग न ही क
रो॥ बारंबार संसार के पदार्थों तें रहित आत्मा की ओर धावता है॥ सो सर्व पाप करि आत्मप
द कों प्राप्त होवेगा॥ बहुरि जन्म न पावेगा॥ केई पुरुष अनेक जन्मों के भोग भोग करि ज्ञान
करि अथवा तप करि ब्रह्मा के लोक कों प्राप्त होते हैं॥ बहुरि परम पद पावते हैं॥ केई सहस्र जन्म
भोग भोग बहुरि संसार विषे प्राप्त होते हैं॥ केई बुद्धिवान विवेक कों भी प्राप्त होते हैं॥ बहुरि
संसार विषे प्राप्त होते हैं॥ अर्थ यह पर गये ज्ञान कों पाइ करि बहुरि संसारी होते हैं॥ कोई इंद्र प
द पाइ करि तुच्छ बुद्धि सो बहुरि तिर्यक पशु योनि कों पावते हैं॥ बहुरि मनुष्य आकार धारते हैं॥
केई महा बुद्धिवान ब्रह्म पद तें उपजे करि तिसी जन्म विषे ब्रह्मतत्व कों प्राप्त होते हैं॥ केई अनेक ज
न्मों करि प्राप्त होते हैं॥ केई थोरे जन्मों करि प्राप्त होते हैं॥ केई एक जन्म करि के अवर वर्ष होइ कों प्रा
प्त होते हैं॥ केई इसी विषे केई देवता तें पशु जन्म पावते हैं॥ पशु तें देवता हो जाते हैं॥ केई नाग हो जा
ते हैं॥ जैसी जैसी वासना होती है॥ तैसा रूप हो जाते हैं॥ ऐसे यह जगत विस्तार रूप है॥ जैसे अने
क जगत हैं॥ केई समान रूप हैं॥ केई विलक्षण आकार हैं॥ केई रूप हैं केई होवेंगे॥ विचित्र रू
प सृष्टि उपजती है॥ अरु मिटती है॥ केई गंधर्व भाव केई यक्ष देवतादिक भाव कों प्राप्त भये हैं॥

तैसे इस जगत विषे जीव व्यवहार करते हैं॥ तैसे अवर जगतों विषे करते हैं॥ आकार विलक्षण हैं
अपणे स्वभाव के वशि हुए जन्म मरण कों पावते हैं॥ जैसे समुद्र सों तरंग उपजते मिटते हैं
तैसे सृष्टों की प्रवृत्त उत्पत्ति लय पड़ी होती है॥ जब संवित स्पंद रूप होती है॥ तब उपजते हैं॥ नि
स्पंद होती है॥ तब लय होती है॥ जैसे दीपक का प्रकाश आलय होता है॥ जैसे सूर्य की यों किरणा
उपजते हैं॥ तप्त लोहे सों कणके निकसते हैं॥ जैसे अग्नि तें चिणगारे निकसते हैं॥ जैसे काल तें ऋ
तु विकसते हैं॥ जैसे अग्नि तें चिणगारे उपजते हैं॥ पुष्प तें सुगंध प्रगट होते हैं॥ समुद्र तें तरंग उप
जते हैं॥ लय होते हैं॥ तैसे आत्म सत्ता तें जीव उपजते हैं॥ बहुरि तिसी विषे लय होते हैं॥ जैते क
छु जीव हैं॥ सो सर्व समय करि के अपणे पद विषे लय होवेंगे॥ स्वरूप तें इनका उपजणा भी मि
थ्या है॥ स्थित अरु बंधन भी मिथ्या है॥ मोक्ष होवणा भी मिथ्या है॥ त्रिलोकी रूप महामाया मो
ह करि उपजत नाश होते हैं॥ समुद्र विषे तरंगों वत॥ ॥ इति श्रीजीव वीचय से स्याने पदे श
नाम सर्गः॥ ४४॥ राम उवाच॥ हे भगवन इस क्रम करि जीव आत्म स्वरूप विषे स्थित हैं॥ बहुरि
अस्थों करि हाड पिंजर इसकों कैसे प्राप्त भया है॥ वसिष्ठ उवाच॥ हे रामजी मैं प्रथम ही तु
कों अनेक प्रकार कहा है॥ तूं अब लग जागत नहीं भया॥ पूर्व अपर विचार करणे हारी बुद्धि तें
री कहां गई है॥ जेता कछु शरीरादिक स्थावर जंगम जगत है दृष्ट आवता है॥ सो सर्व आभा
स मात्र है॥ स्वप्न की न्याई उदय है॥ दीर्घ स्वप्न है॥ मिथ्या भ्रम करि भासता है॥ जैसे आकाश वि
षे द्वितीय चंद्रमा भ्रम मात्र होता है॥ जैसे भ्रमण करि पर्वत भ्रमते भासते हैं॥ तैसे जगत अ
ज्ञान करि भासता है॥ अरु जिन पुरुषों की अज्ञान निद्रा नष्ट हुई है॥ अरु निश्चय करि के सं
सार भावना गलत भयी है॥ सो प्रबुद्ध चित्त हैं॥ संसार कों स्वप्न रूप देखते हैं॥ अरु स्वरूप भा
व करि के कछु देखते ही नहीं॥ अपणी ही स्वभाव करि संसार कल्पते हैं॥ परंतु जीव संसा
र मोह तें प्रथम सर्वदा सत्य रूप देखते हैं॥ तिन कों संसार भावना नष्ट नहीं होती॥ जगत
आकार सर्वदा अपणे अंतर कल्पते हैं॥ अरु जीव को अनेक आकार चपल रूप लक्षण भेद
न होते हैं॥ जैसे जल विषे तरंग चक्र रूप होते हैं॥ जैसे विष विषे अंकुर नहि होता है॥ अंकुर के
अंतर पत्र होते हैं॥ पत्रों विषे फूल नहि होते हैं॥ फूलों विषे फल रहते हैं॥ तैसे कल्पना रूप दे
ह गगन फुरणे विषे रहते हैं॥ हे रामजी देह नहीं होती जहां मन फुरता है॥ तब ऊहां ही देह
कों रच लेता है॥ जैसे स्वप्न विषे मनोराज विषे देह कों रच लेता है॥ तैसे पंच देह जगत भ्रम
न करि रचा हुआ है॥ तैसे मन का पिंड चक्र पर चढ़ा घट रूप हो जाता है॥ तैसे मन के फुर
णे करि देह बण जाता है॥ सर्व देह मन के फुरणे विषे स्थित हैं॥ जेता कछु जगत भासता है
सो संकल्प मात्र है॥ जैसे मृग तृष्णा का जल भ्रम तें रूप होता है॥ तैसे यह जगत भ्रम तें है॥ जै
से बालक कों अपणी परछावें विषे वैताल भासता है॥ तिस करि भयवान होता है॥ तैसे जीव कों
अपणे संकल्प फुरणे करि देहादिक भासते हैं॥ हे रामजी सृष्टि के आदि विषे जो शरीर उत्पत्ति
भये हैं॥ सो आभास मात्र संकल्प करि उपजे करि ब्रह्मा रूप पद कों प्राप्त विषे स्थित हुआ
जिस ने संकल्प के क्रम करि विस्तार कीया है॥ जैसे संकल्प पुरुष स्थित होवे॥ तैसे स्थित कीए
या है॥ सो सर्व माया मात्र है॥ माया की चेतनता करि के देखे जगत भासता है स्वरूप तें है के कुछ
नहीं॥ राम उवाच॥ हे भगवन आदि जीव जो मन फुरणा रूप कों पाइ करि फिर देह स्थापद
कों प्राप्त होता भया॥ सो इस आतें सोहं आश्रय करि स्थित भया है सो मुझ कों समझाइ करि कहो॥ व
सिष्ठ उवाच॥ हे महाबाहु रामजी प्रथम ब्रह्म शरीर कों उत्पत्ति कीया है॥ तिस के श्रवण
करि स्थित भी जाण लेवेगा॥ देश कालादिक के परिच्छेद तें रहित आत्मतत्व अपणे आप
विषे स्थित है॥ सो अपणी शक्ति लीला करि के देश काल क्रिया कल्पत पकरते भया है॥ ति
स जीव के पते नाम पर्याय हैं॥ वासना करि तत्पर हुई चित कला चपल रूप मन हुआ है॥
सो दृश्य कल्पना के सन्मुख हुई॥ प्रथम अहं चित कला मान नी शक्ति होइ करि आकाश

कीभावनाकर्तेभयी॥ सक्ष्मबीजरूप जोशब्द है॥ तिसके सन्मुख हूई॥ तव आकाशपोलरू
पफुरआया॥ बहुरि स्पर्शबीजके सन्मुख हूई॥ तव पवन फुरिआया॥ जव शब्द स्पर्श आका
शपवनकासमूर्छणभया॥ तव मनके तनमात्रेणकुहि अग्नि उपजतभया॥ बहुरि प्रकाशरू
आ॥ बहुरि रसतन्मात्राकी भावना करी॥ तव शीतलभावनासों जलफुरआया॥ तैसे अति सू
क्ष्मतें स्थूलनिकसआवना है॥ बहुरि गंधतन्मात्राकी भावना करी॥ तिसके विज्ञाणरेही नि
कसआई॥ स्थूलताकी भावनाकरि जलतरूप पृथ्वीरूप भासतेलागे॥ इसीप्रकार शब्दरू
शीरूपरसगंधतन्मात्रा अपतेजवायुआकाशपृथ्वीरूप करि स्थित भये॥ आकाशवि
षेवडासकाशरूपआ॥ अहंकारकी कलनाकरि अरु बुद्धिरूप बीजकरिके समन्वतरू
पहूई॥ अष्टमजीवसत्ता हूई॥ इन अष्टोंकानाम पुर्यष्टका भया॥ सो देहरूपकमलोंका
भ्रमरहूई तिस आत्मासत्ताविषे तीव्रभावनाकरिके उद्दीचितसत्ता अपणा वपुस्थूलभा
स्वरवपु देखतभयी॥ जैसे बीजतें इत्पुष्पहोंणेकों रसपविणम्यतीहै॥ तैसे निर्मलआका
शविषे तैसे दृरूप हूई है॥ जैसे सुचेविषे भूषणके निमित्त उवतम वर्णादिक धावपा
ईतीहै॥ सो उसका आकाररूप ज्ञातीहै॥ तैसे ब्रह्माजी अपणी चेतन्यसंवेदन मनरूपसुवे
विषेतीव्रभावनाके वृत्तिनेस्थूलतीकों प्राप्तभये॥ स्वतः एरूफुरणस्फाररूपक्रमकवि
वैरूआ॥ जो ऊर्ध्वमीसहै॥ मध्यउदरहै अधःपादहै॥ पासेदिशा हस्त हैं मध्यविषेउदरध
मैहै॥ जैसे नेतनवालकप्रगटहोतहै॥ महा उज्जलप्रकाशज्वालाकीयोज्वादोवतप्रग
होतहै॥ तैसे ब्रह्माकाशरीर उत्पत्ति भया॥ इस प्रकारवासनाकरिकल्पतमनकविकारी
वउत्पत्तिवाकीलीया॥ आदिब्रह्माकाप्रकाशकीशरीरभया॥ सर्व बुद्धीकी समष्टतारूपउ
सकीवुद्धि॥ अरु वलउनसाःकी समष्टतावडूडकैसाहै॥ सर्वज्ञानरूप अरुसंदरागोपेस्थ
थे॥ संपूर्णशक्तिवडातेजउदारताकरिसंपन्नस्थितहै॥ इसप्रकारभगवान ब्रह्माजी
सर्वलोकोंकाअधिपतिनाइकहोतभया॥ अरु इवतसुवर्णवतकांतऐसाशरीरपरमआका
शतेंउपजकरिपरमआकाशरूपस्थितभया॥ अपणी लीलाकेनिमित्तअपणेनिवासस
कागृहरचताभया॥ हे रामजी कवहूं ब्रह्माजी परमआकाशविषेरहिताहै॥ जो काशअ
नंतहै॥ कवहूं जलविषे रहिताहै॥ कवहूं कल्पश्वेतकोस्यांई महाभास्वर अग्निविषेरहिता
है॥ कवहूं सुवर्णकेमलविष्णुजीकेनाभकमलविषेरहिताहै॥ इसीप्रकार अनेकप्रकार
केआसनरचकरिकवहूं कहूं कवहूं स्थितहोताहै॥ लीलाकर्ताहै॥ जवपरमतत्तसोंशून्य
महीइसप्रकारफुरताहै॥ तवअपणेसंगशरीरदेखताहै॥ जैसेवालकनिद्रातेंजागकरिअ
पणेसंगशरीरदेखताहै॥ तैसे ब्रह्माजी अपणेसंगशरीरदेखतभया॥ कैसा शरीर प्राणोंके
प्रवाहसंपन्नप्राणअपाणज्ञानेआवतेरहै॥ पंचतत्तजोइसहै॥ तिनकरिरचतरूप्या॥ च
हुईश्वरसदाशिवपंचभागशरीरकेहै॥ नवद्वारहैं॥ द्विजनस्थलद्विपादअरुद्विजभुजा॥
अरुवीसअंगुलहैहस्तपादोंकीयां॥ अरुवीसनखहैं॥ एकमुखद्विनेत्रद्विभुजाहैं कवहूं
अपणीइछायासों अनेकभुजा॥ अनेकमुखनेत्रकरिलेताहै॥ मांसकरिकद्विगलकरीहै
ऐसाशरीरहूआ॥ सोचितरूपीपक्षीकाआलयस्थानहै॥ कामदेवकेभोगणेकास्थानहै
जिसारूपीपिशाचणीकागृहहै॥ जीवरूपीसिंहकीकेहरणाहै॥ अभिमानरूपहस्तीकावं
धनस्थानहै॥ इसप्रकारशरीरकोब्रह्माजीदेखतभया॥ वडीउत्तमशोभावानशरीरकोंदेखके
विभगवानब्रह्माजीचितवताभया॥ जोत्रिकालअमलदर्शीहै॥ जोइसकेआदिकाहोतभ
याहै॥ अरु अवहूमोनेसाकरणाहै॥ ऐसेपरमआकाशविषेसदानिर्मलदृष्टीदेखतभया
तोआगेभतोंकासर्गवृतीतभयाहै॥ वेदोंसंयुक्तऐसेअनेकरूपहै॥ तिनकेसाधर्मथे॥ सोस
वसमरणकरिकैदेखताभया॥ वागमयभगवतीकासमरणकीया॥ वेदोंकासमरणसर्व

मृष्टीकेधर्मगुणविकारउत्पत्तिस्थितविनाशादिसर्वलीलाकारुद्देशकहताभया॥ सर्वथ
मृष्टीकेधर्मगुणविकारभी देखतभया॥ जैसेवसंतऋतुपुष्पोंकोदेखतीहै॥ जैसेयोगेश्वरअप
नेकोंसमस्तशक्तिविदेखतभया॥ जैसेवसंतऋतुपुष्पोंकोदेखतीहै॥ जैसेयोगेश्वरअप
णाअनुभवकीया॥ अरु अवरोंकाअनुभवकोयादेखलेताहै॥ चितशक्तिविषेस्थितदे
इकरिसमस्तशक्तिसोंदेखलेताहै॥ तैसेब्रह्माजीअनुभवकर्तेभया॥ दिव्यनेत्रोंसोंवहुउ
इच्छाहूई॥ जोलोलाकरिकेविचित्ररूपप्रजाकोंउत्पत्तिकरों॥ ऐसेविचारकरिउत्पत्तिकरी
जैसेगंधर्वनगरतानकालहोजाताहै॥ तैसेसवहोगयी॥ तिनकेधर्मअर्थस्वर्गमोक्षतो
चतुर्पदार्थहै॥ तिनकेसाधनशास्त्ररचे॥ वहुरितिनविषेविधिनिषेधरचीजोपरकर्तव्यहै
पद्गनहीकर्तव्यतिनकेअनुसारफलोंकीरचनाकरी॥ शुभअशुभकीविचित्रतारची॥ हेरा
मजीइसप्रकारफुरणेकाविस्तारहुईहै॥ फुरणेकीदृढताकरिकेस्थितकोंप्राप्तभयीहै
तिसविषेतेतकालक्रमपादुर्यथर्मकर्मरचेहैं॥ जैसेनेतकरीहै तैसेस्थितहै॥ जैसेवसंत
रितकविपुष्पउत्पत्तिहोतेहै॥ तैसेब्रह्माकेमनकाविस्तारचीहै॥ विचित्ररूपरचनाका
विलासचितरूपवशमनज्ञाताब्रह्माहै॥ तिसकेचितकरिकल्पाहै॥ सोकल्पनारूपहै
कालविषेउत्पत्तिहूईहै॥ कालहीकरिस्थितहै॥ स्वरूपतेंनकछुउपजेथाहै॥ ननष्टहोत
है॥ जैसेस्वप्नहोतीहै॥ तैसेपदसमसाररचताहै॥ इतिश्रीस्थितप्रकरणेसंसारप्रवतरणप्र
तिपादनंनामसर्गः॥ वसिष्ठउवाच॥ हेरामजीइसप्रकारजोउपजयाहै॥ सोकछुनउपजा
सोंनकछुउपजाहै॥ नस्थितहै॥ आत्मआकाशरूपहै॥ मनकोफुरणकरिस्फुरतीहै॥ व
उदेशकालकूयासफलजोवस्तुउद्दृष्टआवताहै॥ सोपरमार्थतेंतिसनेकछुभीस्थान
ताकथानहीं॥ काहेतेंजोउपजाहीनहीं॥ सर्वआकाशरूपहै॥ स्वप्नरूपवनेसंकल्पम
चहै॥ आधारविनाचित्रहै जैसेआधारविनाचित्रमिथ्याहोतहैसर्वतैका॥ तैसेएहजग
तवडाभासस्वरूपभासताहै॥ तोभीमिथ्याहै असतरूपहै॥ तमरूपहै॥ आकाशविषेचि
त्रलिखरूपहै॥ तैसेस्वप्नविषेभासरूपजगतभासताहै॥ सोभीअसतरूपहै॥ तैसेपह
शरीरादिकजगतमनकेफुरणेकरिभासताहै॥ मनकाफुरणाइसकाकारणहै॥ 
जैसेनेत्रोंकाकारणप्रकाशहै॥ तैसेजगतकाकारणचितहै सर्वजगतआभासमा
त्रहै॥ वस्त्ररोआदिकभ्रमसहितभासतेहै॥ तोभीअसतरूपहै॥ जैसेजलविषेआव
र्तचक्रभासतेहैं॥ सोअसतरूपहै॥ तैसेपृथ्वीपर्वतादिकजगतअसतरूपहै॥ अप
णेनिवासकेनिमित्तमनगरूपवीरचताहै॥ जैसेकोशकारअपणेनिवासनिमित्त
स्थानरचतीहै अरुआपहीवंधनमोंआवतीहै॥ तैसेमनशरीरादिककोरचकरि
आपहीदुःखीहोताहै॥ ऐसापदार्थकोऊनहींजोसंकल्पतेंरहितसिद्धहोवे॥ अरुमन
केयत्नकरिसिद्धनहीहोवेकदाचित्पदार्थभीमनकरिसिद्धहोताहै॥ परमात्माजोहै
सोसर्वशक्तिहै॥ मनभीतिसकीशक्तिहै॥ उहकवणपदार्थहै॥ जोमनकरिसिद्धन
होवे॥ सर्वकछुवणजाताहै॥ काहेतेंजोजेतेकछुपदार्थहैं॥ तिनविषेसत्तापरमात्माकी
है तिसतेंइतरकछुनहीं॥ तातेंपरमात्मदेवविषेसर्वकछुसंभवताहै॥ आदिचितकला
अस्याकपहोइकविउठभयीहै॥ तिसभावनाकेअनुसारआपकोब्रह्माकाशरीरदेखत
भयीहै॥ तिसकमलजब्रह्मानेकलनारूपजगतरचाहै॥ देवताअसुरमनुष्यस्थावर
जंगमरूपजगतसंकल्पकरिकेरचेहैं॥ जवलगउसकासंकल्पहै॥ तवलगतेसहीं
स्थितहै॥ जवसंकल्पमिटजावेगा॥ तवसर्वसृष्टनष्टहोजावेगी॥ जैसेतेलतेंरहितदी
पकनिर्वाणहोजाताहै॥ तैसेजगतहै॥ सोआकाशवतसर्वकलनामात्रहै॥ दीर्वस्व
प्रवतस्थितहै॥ वस्ततेंनकोऊउपजताहै॥ नमरताहै परमार्थतेंतोऐसेहै॥ परअज्ञानकरि
केसर्वपदार्थविकारसंयुक्तभासतेहैं॥ नकोऊदृढहै॥ ननष्टहोताहै॥ तिसविषेअवरवि

कारके से मानीये ॥ जैसे पत्र की रेखा उपजती अरु नष्ट होवती विषे वृक्ष कों कछु आधि व्याधि
क्यता अरु नंदता नहीं होती ॥ जैसे शरीर के उपजने अरु नष्ट होवने विषे आत्मा को लाभ
हानि कछु नहीं ॥ सर्व जगत दृश्य भ्रांति करिकै भासता है ॥ ज्ञानवानों की दृष्टि करिकै देखु अ
ज्ञानीयों की न्याई कछु मोह न होता है ॥ जैसे मृगतृष्णा का जल भ्रम करि भासता है ॥ सो मिथ्या
भ्रांतिमात्र होता है ॥ तैसे ब्रह्मादिक तृणपर्यंत सर्व जगत भ्रांतिमात्र है ॥ जैसे आकाश विषे
वेदूसा भासता है ॥ तैसे मिथ्याज्ञान करिकै जगत भासता है ॥ जैसे नौका पर बैठे को तट के
वृक्ष स्थान चलते भासते हैं ॥ तैसे भ्रम दृष्टि करिकै जगत भासता है ॥ इस जगत को तूं इंद्रजा
लवत जाणु ॥ यह हि माया करि रचित जगत देखिये जब है मन के मनन करि रचा है अरु असत
रूप है ॥ परु भ्रम करिकै सत की न्याई स्थित भया है ॥ अवर है न जगत कछु रूप नहीं ॥ अस
मता ही में काल स्थित है ॥ अवर शरीरादिक कैसे किस की न्याई करता स्थित कैसे होवे ॥ एह
पर्वत है एह आए है ॥ इत्यादिक जो जगत आडंबर है ॥ सो भ्रांतिमात्र मन की भावना करिकै
हुए हों भासता है ॥ असत ही सत रूप होइ करि स्थित भया है ॥ हे राम जी एह प्रपंच नाना
प्रकार की रचना संयुक्त भासता है ॥ तो भी अंतर तें तुच्छ है इसकी कामना त्रिस्ना त्याग क
रि सुखी होवो ॥ जैसे स्वप्न विषे बड़े मंदिर भासते हैं ॥ सो भ्रांतिमात्र असत रूप हैं वास्तव तें क
छु नहीं ॥ तैसे एह जगत दीर्घ काल का स्वप्न है ॥ चित्त करिकै कल्पित है ॥ देखणे विषे वडा वि
स्तार रूप भासता है ॥ विचार करिकै ग्रहिण करीये तो हाथ कछु नहीं आवता ॥ जैसे स्वप्न
स्पष्ट जाग्रत विषे कछु नहीं पाईती जैसे कोई आकार बुरा पापी को अपणा रचया हुआ वध
न करता है दुःख देता है तैसे अपणा रचाया जगत मन कों दुःख देता है ॥ ताते इसका त्या
ग करो ॥ जिस पुरुष इस कों असत जाणया है ॥ सो जग की भासना बुद्धि इनहीं करता ॥ जैसे
मृगतृष्णा के जल कों जिस असत जाणया है ॥ सो बुद्धिवान पान के निमित्त धावता नहीं
जैसे अपणे मन की कल्पी इस्त्री कों जाणकरि बुद्धिवान राग नहीं करते ॥ तैसे ज्ञानवा
न जगत के पदार्थों विषे राग नहीं करते ॥ अरु जो अज्ञानी है सो राग करिकै यथा यमान
होते हैं जैसे स्वप्न विषे अवस्तु इस्त्रीसों चेष्टा करते हैं ॥ तैसे अज्ञानी असत जगत कों सत
मान करि चेष्टा करते हैं ॥ बुद्धिवान सत मान कर नहीं करते ॥ जैसे जल वडी विषे सर्य भा
सता है सर्व जगत भावना मात्र है जैसे जल विषे वेश्या प्रतिबिंबित भासता है वे वल रू
प तिस के ग्रहिण की इच्छा बालक करते हैं ॥ तैसे संसार ए ज्ञानवान नहीं करते ॥ तैसे जग
त के पदार्थों की इच्छा अज्ञानी करते हैं ॥ ज्ञानवान नहीं करते हे राम जी एह मैं परम
गुण का सेतु रूप तुझको उपदेश कीया है ॥ तिस की भावना करिकै तूं सुखी होवेगा
जो भ्रष्ट अन वचनों कों हृदय करिकै दृश्य की ओर लागते हैं ॥ ताकों सुख का कारण जाण
ते हैं सो पुरुष असे हैं ॥ जैसे कोई अग्नि तकार करि कै दुःखी होवे ॥ अरु प्रत्यक्ष अग्नि कों त्या
ग करि जल विषे प्रतिबिंब तत अग्नि का आश्रय करे ॥ तिस का विपरीत निवर्त कीया चाहे
सो मूढ है तैसे आत्मविचार कों त्याग करि जो जगत के पदार्थों की इच्छा सुख के निमित्त
करते हैं सो मूढ हैं ॥ सर्व जगत असत रूप है ॥ मन के मनन करि रचया है जैसे स्वप्न मो अ
पणे चित्त विषे नगर भासता है तैसे जगत के नष्ट हुए तें आत्मा का नाश नहीं होता ॥ उपजने
कोई आत्मा उपजता नहीं वह सोई रहता तैसे रहिता है ॥ जैसे बालक अपणी क्रीड़ा के अर्थ मन
विषे देश नगर रचि करि नाश करि डारता है ॥ सो उहां उपजणे मिटणे करि उपजता मिट
ता नहीं ॥ जैसे इंद्रजाल माया करि बाजी कों पसारता है ॥ बहुर लय करता है ॥ सो बाजी की उ
त्पत्ति लय करि आप ज्यूं का त्यों है ॥ तैसे जगत की उत्पत्ति लय विषे आत्मा ज्यों का त्यों है ॥ काशी का
नष्टा वित कछु नष्ट नहीं होता ॥ जो सर्व सत है तो किसी का कछु नाश नहीं होता ॥ जो सर्व सत

है तो किसी का कछु नाश नहीं होता ॥ इस कारण तें जगत विषे हर्ष शोक करणा योग्य नहीं ॥
अरु जो सर्व असत है ॥ तो भी नाश किसी का न हूआ ॥ नाश को अभाव विषे दुःख भी किसी को न
हूआ ॥ सत असत दोनो प्रकार हर्ष शोक नहीं बणता स्वरूप तें किसी का नाश नहीं सर्व जगत अ
सत रूप है ॥ तो सुख दुःख कहां है ॥ असत्य सत्ता विषे कछु हेत जगत हुआ था नहीं ॥ सर्व जगत अ
नंत अनुभव होता है ॥ तो भी असत रूप है ॥ तिस असत रूप संसार विषे ज्ञानवान कों ग्रहिण
करणे योग्य कोऊ पदार्थ नहीं ॥ जो सर्व असत भ लों विषे व्यापत तत है ॥ इतर कछु नहीं त्रिलोकी वि
षे तो किस पदार्थ के ग्रहिण करणे की इच्छा करीये ॥ अरु त्याग किस का करीये ॥ जगत सत
यह होवे अथवा असत रूप होवे ॥ ज्ञानवान कों सुख दुःख कोऊ नहीं ॥ त्रितीय दृष्टि भ्रांति अज्ञा
नी कों दुःखदायक होता है ॥ जो वस्तु आदि अंत विषे असत होवे ॥ सो वर्तमान काल विषे भी अस
त रूप होती है ॥ तिस के पाछे जो शेष रहिता है ॥ सो सत रूप है ॥ जिस करि असत भी सिद्ध होता है
जो मोह करि आवृत बाल बुद्धि हैं ॥ सो जगत के पदार्थों की इच्छा करते हैं ॥ बुद्धिवान हैं सो नहीं क
रते बालकों कों जगत विस्तार रूप भासता है ॥ तिस करि अपणा प्रयोजन वांछते हैं ॥ बहुर सु
ख दुःख भोगते हैं तैं बालक मत होवो ॥ जगत अनित्य है ॥ इसकी आस्था त्याग करि सत आत्मा वि
षे स्थित हो जो जाणोगे सम संपत्ति संबंध तें जगत असत रूप है ॥ तो भी विघ्न अधिक कछु नहीं अरु जो
आप संबंध जो सर्व सत जाणोगे तो इस दृष्टि करि भी हर्ष शोक न हो ॥ एह दोनों दृष्टांत सुखदायक
हैं ॥ मध्य दृष्टि दुःखदायक है जो आप संबंध सर्व असत रूप जाणोगे ॥ तो दुःख न होवेगा ॥ अ
रु आप संयुक्त सर्व सत रूप जाणोगे तो भी दुःख न होवेगा ॥ बाल्मीक उवाच ॥ जब इस प्रका
र वशिष्ठ जी करु तब सूर्य भगवान अस्त हूए ॥ सर्व सभा परस्पर नमस्कार करि के अपणे
अपणे स्थानों कों गये ॥ स्नानादिक कर्म करि कै रात्रि व्यतीत करी ॥ बहुर सूर्य की किरणों
से गए अपणे अपणे स्थान विषे आय बैठे ॥ ॥ इति श्री स्थित प्रकरणे भाषा में तार्थे योगोपदेश
नाम सर्गः ॥ वशिष्ठ उवाच ॥ हे राम जी जो धन इस्त्री आदिक नष्ट हो जावें तो इंद्रजालक की बाजी
वत देखीये ॥ इस करि भी शोक का अवसर नहीं होता तत्काल विषे दृष्टि आये ॥ बहुर नष्ट होगये
तिन का शोक करणा व्यर्थ है गंधर्व नगर जो तुं तन मसली करि भूषित कीया है अथवा दुःखों क
वि हावत कीया हो ॥ तो हर्ष शोक का स्थान कहां है ॥ जैसे अविद्या करि रचे पुत्र इस्त्री धनादिक
हैं तिन के सुख अरु दुःख का कम कहां है ॥ जो पुत्र धनादिक वढे तो हर्ष का स्थान कवण है
जैसे मृगतृष्णा का जल बढ्या ॥ तो भी अर्थ सिद्ध करता नहीं होता ॥ तैसे धन दारादिक वढे ॥ तो
भी हर्ष कहां है ॥ शोकवान ही रहिता है ॥ उहु कवण पुरुष है ॥ जो मोह माया के तुच्छ रूप तें शो
कवान होवे ॥ इह तो दुःखदाइक है जो मूढ हैं सो भोगों को देखकरि हर्षमान होते हैं ॥ अधक
तें अधिक चाहते हैं ॥ तिन ही भोगों ने बुद्धिवानों को वैराग्य उपजता है ॥ जिनों कों आत्मा का सा
क्षात्कार नहीं भया ॥ अरु भोगों को आदि अंत वंत न नहीं जाणया ॥ अर्थ एह जो उत्पत्ति अरु वि
नाश तिन की निश्चय कर तिन ही जाणी ॥ तिन कों भोगों की त्रिस्ना होती है ॥ अरु जो बुद्धिवान
हैं सो भोगों को आदि अंत वंत जाणते हैं ॥ दुःखरूप जाणकरि भोगों की इच्छा नहीं करते ॥ ते
सोहे गए सब ज्ञानवानों की न्याई व्यवहार विषे विचरो ॥ जो नष्ट होवें सो होवे ॥ जो प्राप्त होवें सो हो
वें तिन विषे हर्ष शोक न करो ॥ जो प्राप्त होये तिस कों यथा शास्त्र ग्रहण है ॥ अनंत रहित होइ कै विभो
गो ॥ अरु जो न प्राप्त होवे तिस की इच्छा न करो ॥ एह पंडितों का लक्षण है हे राम जी एह संसार
दुःख रूप भोगों करि पूर्ण है इस विषे मोह कों नहीं प्राप्त होवणा ॥ जैसे ज्ञानवान विचरते
हैं तैसे विचरणा ॥ दोवतन है विचारणा एह संसार आडंबर अज्ञान करि रचा है ॥ जो इस को
सुख का स्थान नहीं देखते ॥ सो कबहीं नष्ट होते हैं ॥ जिस की पदार्थों की इसकी इच्छा होती है ॥ सोई
बंधन का कारण है ॥ तिन विषे डूबता है ॥ जो बुद्धिवान है सो जगत के पदार्थों विषे प्रीति नहीं
करते जिस के निश्चय विषे इस प्रकार निश्चय है ॥ जो सर्व जगत असत रूप है किसी पदार्थ विषे
वे धारमान नहीं होता ॥ अविद्या रूप पदार्थ तिस कों देख नहीं देते वस्तु बुद्धि करि देखे च नहीं

सने॥ जिसकी बुद्धि विषे पदार्थ निश्चय रूप आ जो सर्व मैं हैं। ऐसे जाण कर किसी पदार्थ की इच्छा
नहीं करता है रामजी शुद्ध जो सत् असत् जगत के भाव अभाव है॥ अंतर तें किसी कों आश्रय
करो अवलंबन वासना तें जगत दृश्य पदार्थ है॥ तिसकों मन तें ग्रहण करो॥ इसकी आस्था त्या
ग करि परमपद कों प्राप्त होवो॥ अति विस्तृत स्वच्छ रूप आत्मा विषे स्थित होवो॥ रागसों र
हित सर्व कार्य करो जैसे आकाश सर्व पदार्थों मों व्यापक निर्लेप है। तैसे सर्व कार्यों कों करतो
अंतर तें निर्लेप हो॥ रागद्वेष तें रहित होवो। जिस पुरुष कों न किसी पदार्थ की इच्छा है॥ न अ
निच्छा है॥ कर्मों विषे स्वभाव कर स्थित है। तिसकों कर्मों का स्पर्श नहीं होता। कमल वत् स
दा निर्लेप रहता है॥ देखणा सूंघणा आदि कर इंद्रियों करि व्यवहार होता है। तैसे तुम इंद्रियों
साथ करो॥ अभिमान न करो॥ परंतु इन विषे निरिच्छित रहो॥ अभिमान तें रहित होइ करि आत्मा वि
षे स्थित होवो॥ यह मैं हों यह मेरा है इस मिथ्या अभिमान तें रहित सर्वदा होवो॥ इंद्रियों के अ
र्थों का सार जो अहंकार है॥ जब यह विदे विषे न फुरेगा॥ तब तूं मन योगपद कों प्राप्त होवोगे रा
गद्वेष तें रहित हुए संसार समुद्र कों तर जावोगे॥ जब इंद्रियां के राग द्वेष तें रहित हुए॥ त
ब मन की इच्छा न करे॥ तो भी मुक्त रूप है हे रामजी इस देह तें आप कों विलक्षण जाण
करि उत्तम पद जो आत्म पद है तिस विषे तुम स्थित होवोगे॥ तब तुम्हारा जन्म शुद्ध होवेगा जै
से पक्षी तें सुगंध प्रगट होती है॥ यह संसार रूपी समुद्र है॥ तिस विषे वासना रूपी जल है
तिस विषे जो आत्म विषयणी बुद्धि रूप बेडी पर चढे हैं सो तर जाते हैं॥ अरु जो नहीं चढे सो
डूब मरते हैं॥ यह बोध मैं तुम कों तरु धारा की न्याईं तीक्षण कहता है॥ जो अविद्या के कार
कों जाण करि विचार करि के आत्म तत्त्व विषे स्थित होवो॥ जैसे तत्त्ववेत्ता आत्म तत्त्व
जैसे जीवन मुक्त महात्मा पुरुष नित्य उत्तम का आचार है तिसकों अंगीकार करणा॥ औ
र महात्मा श्रेष्ठ के वेत्ता हैं पुरुष॥ सो न कछु ग्रहण करते हैं॥ न कछु त्याग करते हैं॥ न किसी
की आकांक्षा करते हैं॥ जैसे साधु व्यवहार आरब्ध वेग करि प्राप्त हुआ है तिसी विषे विचरते हैं राग
वशी विभूत होवे॥ तो भी ज्ञानी अज्ञानी वत् अभिमान नहीं करते॥ अरु महा शून्य वन विषे वे
ह वान नहीं होते देवतों का सुंदर वन विद्यमान होवे॥ तिस विषे हर्ष मान नहीं होते॥ न
किसी की इच्छा है न त्याग है॥ जैसे सीस व स्थान आन प्राप्त होवे॥ राग द्वेष तें रहित तिसी
विषे विचरते हैं॥ जैसे सूर्य सम भाव कों लीये विचरता है॥ तैसे अभिमान तें रहित होइ करि
देह रूप पृथ्वी ऊपर विचरते हैं॥ तुम भी अब विवेक कों प्राप्त होवो यह केवल करि तिस विषे
स्थित हो॥ अवर किसी पदार्थ की ओर न देखना॥ तिस मन निर्वैर हृष्ट कों लीये विच
रणा सर्व भाव विषे सम उत्तम आनंद पृथ्वी मों स्थित होणा॥ संसार की इच्छा हृदय तें त्याग करि
यथा प्राप्त व्यवहार विषे विचरणा परम शांत रूप रहिणा॥ वाल्मीकोवाच॥ इस प्रकार निर्म
ल वाणी करि जब वशिष्ठजी कहा॥ तब निर्मल चित्त रामजी का विदेह अवस्था होइ करि सुख
मी तुल्य हो भया॥ जैसे पूर्णमासी का चंद्रमा अमृत करि स्थिर शीतल होता है। तैसे राम
जी शांत करि हर्षित भया॥ ॥ इति श्री मोक्षोपाये स्थिति प्रकरणे उपशमा भूमिका प्रकर
णे गोपद ज्ञाना नाम सर्गः॥ रामोवाच॥ हे भगवन् सर्व धर्मज्ञ वेद वेदांत के पारगामी तुमारे शुद्ध
वचनों करि मैं स्वस्थ की न्याईं स्थित भया हौं॥ कैसे तुमारे वचन हैं उदार विस्तृत रूप हैं॥ को म
ल अरु उचित हैं॥ तिन तुमारे वचन रूपी अमृत कों पान करता मैं तृप्त नहीं होता॥ हे भगवन
तुमरा वचन समाप्त कहने तें तत्काल ही लागे थे॥ सो कछुक संक्षेप तें कहे थे॥ तिन विषे अवकाश
पाइ करि तुम ब्रह्मा की उत्पत्ति कही तिस करि मुझ कों यह संदेह भया सो विदे विषे बड़े वि
स्तार कों पावत भया है॥ अरु तुम सर्व संशयों के नाश करता हो॥ कृपा करि के शीघ्र ही मुझ

कों उत्तर कहो॥ तो कहूं ब्रह्मा की उत्पत्ति कमल तें कही है॥ कहूं आकाश तें कहूं अंडे तें कहूं अ
तें कहूं जल तें उत्पत्ति कही है॥ सो विचित्र रूप शास्त्रों का विवेक मैं कहो है॥ वशिष्ठोवाच॥ हे राम
जी के ईश्वर ब्रह्मा रूप है॥ अनेक स्थान के ईश्वर रूप हैं॥ महत् सर्व विस्तृत होइ बीते हैं॥ अब भी अ
नेक अनेक ब्रह्मांडों विषे अनेक प्रकार के आचार व्यवहार संयुक्त होते हैं॥ केई तुल्य होते हैं
ते अनेक ब्रह्मांडों विषे अनेक प्रकार के आचार व्यवहार संयुक्त होते हैं॥ जगत स्वप्न की न्याईं उत्पत्ति होते हैं के
केई वडे छोटे काल के होते हैं॥ ऐसे आभास होते जाते हैं॥ जगत स्वप्न की न्याईं उत्पत्ति होते हैं॥ के
ई बीते हैं॥ केई अब हैं केई आगे होवेंगे॥ तिन विषे ब्रह्मा उत्पत्ति श्रुती है॥ सो सुण॥ सो भी
अनेक प्रकार है कबहूं सृष्टि सदाशिव तें उत्पत्ति होती॥ कबहूं आत्मा तें कबहूं विष्णु नाभि तें
अनेक प्रकार है कबहूं ब्रह्मा कमल तें उपजता है॥ कबहूं जल तें वायु तें॥ कबहूं
कुबहूं मनी स्वर चलते हैं॥ कबहूं ब्रह्मा कमल तें उपजता है॥ किसी ब्रह्मांड विषे ईश्व
र तें उपजया है॥ कबहूं किसी ब्रह्मांड विषे सूर्य तें जहां होता है॥ कबहूं सदाशिव होता है॥ कबहूं सृष्टि विष्णु
ते होता है॥ कबहूं पुरुषी काल तें विस्तृत होता है॥ कबहूं मनुष्यों करि सृष्टि कबहूं वृत्तों करि
वैतत उपजे हैं तिन करि पृथ्वी तीर्थ रूप हुई है॥ कबहूं मनुष्यों करि सृष्टि कबहूं वृत्तों करि
पूर्ण होती है॥ अनेक प्रकार सृष्टि की उत्पत्ति होती है॥ किसी ब्रह्मांड विषे पृथ्वी स्वर्णमयी
होती है॥ कबहूं पाषाणमयी होती है॥ कबहूं भस्ममय धूममयी है॥ कबहूं तव वर्णी कोइक
वी भयी है॥ इसी प्रकार कों तुम सुणो ऐसी भयी है॥ बन्न देश लोक हैं॥ किसी सृष्टि विषे पर्वत हो
लोक भया है दृष्टि नीय कोऊ नहीं॥ किसी सृष्टि विषे ब्रह्मा नहीं हुआ॥ इसी प्रकार अनेक सृष्टि
विदा का अबल अनंत सो फुरी था है॥ फुर करि लय भई था है॥ जैसे समुद्र विषे तरंग उपज क
रि लय होजाते हैं॥ तैसे आत्मा विषे सृष्टि अनेक प्रकार की था उपजकर लय होते हैं॥ जैसे
मारुस्थल विषे मृगतृष्णा की नदी भासती है॥ जैसे पृथ्वी विषे सब संघर होती है॥ तैसे परमा
त्मा विषे जगत है॥ जैसे सूर्य की किरणों विषे त्रसरेणु भासते हैं॥ तिन की संख्या करी नहीं जा
ती॥ कोऊ ऐसा समर्थ होवे जो इन की संख्या भी करे॥ परब्रह्म अनंत विषे सृष्टि जो फुरती था
हैं॥ तिन की संख्या करणे कों समर्थ न होवेगा॥ जैसे वर्षा ऋतु विषे गंगा के तेज मों मच्छर
होते हैं॥ अरु नष्ट होजाते हैं॥ तैसे आत्मा विषे सृष्टि उपज करि नष्ट होजाते हैं॥ उह काल जा
णया नहीं जाता॥ जिस काल विषे सृष्टि का उपजणा भया है॥ आत्म तत्त्व विषे नित्य ही सृष्टि
का उपजणा अरु लय होणा होता है॥ अंत कछु नहीं॥ जैसे समुद्र विषे तरंग फुरते हैं इन ते
का उपजणा अरु लय होणा होता है॥ अंत कछु नहीं ज्ञाणया जाता॥ जैसे आत्मा
हर्ष अवर उनके हर्ष अवर इसी प्रकार आदि पुरुष अंत कछु नहीं देवता दैत्य मनुष्यादि करि केई उपज करि लय भये हैं के
विषे सृष्टि का आदि अंत कछु नहीं देवता दैत्य मनुष्यादि करि केई उपज करि लय भये हैं॥ जैसे अने
ई आगे होवेंगे जैसे यह ब्रह्मांड ब्रह्मा का रचा या है॥ तैसे अनेक ब्रह्मांड होगये हैं॥ जैसे समुद्र विषे तरंग होते हैं॥ तैसे अ
कबहू किधौं करि उत्पत्ति विषे वृत्तीत होते हैं॥ तैसे बीते हैं॥ तैसे समुद्र विषे तरंग होते हैं॥ तैसे अ
नंत तत्त्व विषे अनंत जगत होते हैं॥ केई सृष्टि बीत्या है केई अब होती या है॥ केई आगे होवेंगी
या॥ जैसे सत का विषे बढ़ होते हैं॥ जैसे हृदयं गम अनेक पत्र होते हैं॥ बढ़ते उ मिट जाते हैं॥ जे
से जब लग समुद्र है तिस विषे जल है॥ तब लग ऊर्मि तरंग आवर्त निवर्तन नहीं होते॥ के
उपजते हैं॥ कोई लय होते हैं॥ तैसे ब्रह्म चिदाकाश है॥ तब लग त्रिलोकी जगत सृष्टि उपजे
उपज कर विलय होते हैं॥ जब लग अपणे स्वरूप का प्रमाद है॥ तब लग विकार संयुक्त
जगत फुरते हैं॥ बड़े विस्तार संयुक्त भासता है॥ जब आत्म स्वरूप दृष्टि करि देखेगा॥ तब कों
ऊ विकार न भासेगा॥ जब लग आत्म दृष्टि करि नहीं देख्या॥ तब लग आभासगत विषे उ
जते भी हैं मिट भी जाते हैं॥ न असत कहते हैं॥ न सत कहे जाते हैं॥ वास्तव तें अरु अरु जगत विषे क
छु भेद नहीं॥ समुद्र विषे तरंगों की ई अभेद है॥ भिन्न होइ करि जो भासते हैं सो अविद्या करि
भासते हैं॥ विचार कीये तें निवर्त होजाते हैं दृष्ट नष्ट स्वरूप है॥ चर अचर रूप जगत नाना
प्रकार की चेष्टा संयुक्त अनंत सृष्टि सर्व अपर आत्मा विषे फुरते हैं॥ सो भिन्न नहीं॥ जैसे
बगीचा फूल फल ह्व तें भिन्न नहीं भिन्न भासते हैं॥ तो भी अभिन्न है॥ तैसे आत्मा सों जग

श्रि॰ने
१९

तभी भिनभासताहै तोभी भिनभासताहै तोभी भिन नही॥ सर्व आत्मस्वरूप है हे रामजी मे
नेकेको सृष्टि पृथूरूप वस्तुदेषा भवनोंमें पूछकरि कहीहै॥ कोउ अल्पनिकृष्टरूपहै॥ कोउ
वडे है॥ सो सर्व परमात्मआकाश विषे उपजतेहें॥ अरु जडीरूप है॥ कवहू अनंतसों आ
काश उपजताहै॥ सो उपजकरि पनिषाकों पावताहै॥ तिस आकाशतें ब्रह्मा उपजेताहै
तव ब्रह्माका नाम आकाशज होताहै॥ कवहू प्रथम पवन उपजाहै॥ पनिष्टतरूपाहै॥ तिस
तें ब्रह्मा उपजाहै॥ सो वायुजनामकों पावतभयाहै॥ प्रजापतिनामकरि कहीताहै
कवहू प्रथम जल उत्पतिभयाहै॥ जलस्थितभया तिसतें ब्रह्मा उपजकरि जलजनाना
म पावतभयाहै॥ कवहू प्रथम पृथ्वी उपजीहै॥ सो विस्तारभावकों प्राप्तभयी॥ तिसतें ब्रह्मा उप
जाहै॥ तव पार्थिवनाम पावतभयाहै॥ अग्नितें उपजया अग्निजानाम पायाहै॥ हे रामजी एह पंच
भूतोंतें उत्पति मैं तुझकों कहीहै॥ तव वचनतें तपर्ण होतेहें॥ अरु पंचतत्व सर्वसों वरताहै॥ तव
तिसतें प्रजापतिकी उत्पति होतीहै॥ सो उपजकरि अपणे जगतकों रचताहै॥ कवहूं ब्रह्मांतन
तें आपही फुरआवताहै॥ जैसे पुष्पतें सुगंध फुरआवतीहै॥ तैसे ब्रह्मा उपजकरि पुरुषकीभा
वनाकरि पुरुषरूप स्थितहोताहै॥ तिसका नाम स्वयंभू होताहै॥ कवहू पुरुष जो विराटदेव
है तिसकी दृष्टिसों उपजआवताहै कवहू तेजोसों प्रगट होताहै॥ कवहू नाभसों उत्पतिहोत
है॥ तव प्रजापतिका नाम पद्मजा होताहै वास्तवतें सर्वमात्र माया है स्वप्नकीन्याई॥ मिथ्या
रूपसत होइभासतेहें॥ जैसे मनोराजकी सृष्टि भासआवतीहै॥ तैसे एह जगतहै॥ जैसे नदी
विषे तरंग अभिन्नरूप फुरतेहें॥ तैसे आत्मासों अभेद जगत फुरताहै॥ वास्तवतें कछु नही॥ ज
व गुह मनोंका आभास संवेदन फुरतीहै॥ तव उही जगतआकार होइ भासतीहै॥ जैसे वाल
कके मनोराज विषे सृष्टि भासतीहै॥ सो वास्तव कछु नही॥ तैसे एह है॥ कवहू शुद्धआकाशवि
षे मनन कला फुरतीहै॥ तिसतें सवर्णका अंड उपजताहै॥ अंडसों ब्रह्मा उपजआवताहै क
वहू पुरुष विराटदेव जलविषे वीर्य धरताहै॥ तिसतें पद्म अथवा ब्रह्मा उपजताहै तिसीसों
ब्रह्मा प्रगट होताहै कवहू लक्ष्मीसों फुरआवताहै॥ इसीप्रकार विचित्ररूप रचना ब्रह्माएतें उ
पजतीहै॥ वहुरउ लयहोजातीहै॥ तेरे दिखावणेके निमित्त मैं अनेकप्रकारकी उत्पति कही
है॥ सो सर्व मनका फुरणामात्रहै॥ अवरूआ कछु नही हे रामजी तेरे प्रबोधके निमित्त मैं स
ष्टिका क्रम कहाहै॥ अरु एह समका स्वरूपहै॥ जो मनोमात्र है उपजकरि लयहोजातीहै॥ वहुरउ
सुख वहुरउ दुःख वहुरउ ज्ञान वहुरउ अज्ञान वहुरउ बंध वहुरउ मोक्ष होतीहै॥ वहुरउ दुः
खहोतेहें॥ वहुरउ मिटजातेहें॥ जैसे दीपकका प्रकाश उपजकरि नष्टहोताहै॥ कवहू मिटकरि वहुरउ प्रा
प्ति नष्टहोजातेहें॥ कालकी ऊनता अरु विशेषता पतीहै॥ जो कोऊ चिरकाल पर्यंत रहिताहै॥ तैसे देह उपजक
कोऊ कालीचरी नष्टहोजाताहै॥ पएह सर्व विनाशरूपहै॥ ब्रह्मादिक विटीपर्यंत जेतेक कुआका
रभासतेहें॥ कालके भेदकोंत्यागकरि देखि जो सर्वनाशरूपहै॥
कवहू त्रेता कवहू द्वापर कवहूं कलयुग आवताहै॥ कवहूं सतयुग आवताहै
प्रकार कालवक्र पदभ्रमताहै॥ वहुरउ वहुरउ मन्वंतरोंका आरंभहोताहै॥ वहुरउ वहुरउ ही आवते अरु जातेहें इसी
तीतहोतीहै॥ जैसे प्रातःकालतें वहुरउ प्रातःकाल आवताहै॥ कल्पाकी परंपराहू
अंधिकार वहुरउ वहुरउ प्रकाश होताहै॥ तैसे जगतकी उत्पति हैं॥ वहुरउ
है॥ जैसे लमलेलादेसों चिणगारे उडतेहें॥ ब्रह्मतत्वतें सफुरणरूप होइकरि वहुरउ लीनहोजाता
है॥ आकाशसों उपजतेहें॥ सो चिदाकाश विषे स्थितहोतेहें॥ तैसे एह सर्व भाववि
टहोतेहें॥ जैसे समुद्र विषे तरंग होतेहें विषेप्रगटहोतेहें॥ कवहूं अव्यक्तरूप होतेहें॥ कवहूं प्रग
हृष्टपणकरिके आकाश विषे द्वितीय चंद्रमा भासतेहें॥ तैसे आत्मा विषे जगतहें॥ जैसे नेत्र
तभासतेहें॥ तिसी विषे स्थितअरु लयहोतेहें॥ तैसे चितके फुरणेकरि आत्मा विषे जग
कल्पितहोतेहें॥ तैसे आत्मा विषे सृष्टि है सोस्वरूपतें कछुअरंभनहीअरुआ॥ मनके फुरणे

करिभासतेहें॥ हे रामजी आत्मा सर्वशक्तिहै॥ जो शक्तिजिस विषे फुरतीहै॥ तिसीका रूपहो
इभासताहै॥ जगत सर्व भ्रममात्ररूपहै॥ जिसके चित्त विषे महाप्रलयकीन्याई भ्रमसत्ता नि
वृत्तहोइयाहै॥ सो पुरुष वहुरउ संसारी नहीं होता॥ स्वरूप विषे जडइयाररहिताहै॥ ऐसे महामतीजा
याहै॥ सो पुरुष वहुरउ संसारी नहीं होता॥ स्वरूप विषे जडइया रहिताहै॥ ऐसे महामती जा
नवानकी दृष्टि विषे सर्व ब्रह्मका निश्चयहोताहै॥ हमकोंभी एही निश्चयहै॥ जो संसार रहैन
ही॥ सदा असत्ततही है॥ सदा विद्यमानहै अरु अज्ञानीकी दृष्टि विषे जगत निरंतर सतरूप
है॥ संसार उसकों विद्यमानहै॥ सो वहुरउ वहुरउ उपजकरि नष्टहोताहै॥ स्वरूपतें उपजणा अरु
विनसणा करि भी नष्ट नहीं होता॥ अज्ञानीकों जगत मिथ्या नहीं भासता॥ सदा जगतकों
स्थितजाणताहै॥ इसकरि सर्व नष्ट होतेहें॥ सर्व जगतके पदार्थ विनाशरूपहै॥ इसप्रकार
जगत असत नहीं भासता जो स्थिररूप पदार्थ भासतेहें॥ सो नाशरूपहै॥ शरीरका किसी
नही॥ कोउ पदार्थ सत नभासताहै॥ कोऊ असत भासताहै॥ ऐसा कवण पदार्थहै इस जगत
विषे कल्ना फुरणेकरि विस्तार रूप चरस विषे नष्ट होणे॥ एह जगत महाप्रलय विषे नष्टहो
जाहै॥ वहुरउ उत्पति होयावताहै॥ वहुरउ वहुरउ जन्मअरु मरण होताहै॥ मानवइ दिशाआ
काश कर्म में चर पृथ्वी पवन सर्व वहुरउ वहुरउ उपजआवतेहें॥ जैसे सूर्यकी प्रभाउ देआस्तिकों
प्राप्तहोती रहितीहै॥ तैसे सृष्टि वहुरउ वहुरउ देशप्रकाश भासतेहें॥ वहुरउ देवता वहुरउ दैत्य वहुरउ
लोकोंतर क्रमहोतेहें॥ स्वर्गलोक इंद्र चंद्रमा तारायण देव पर्वत सपं वरुण अग्नि आदिक लो
कपाल वहुरउ वहुरउ होइ आवतेहें॥ समेरादिक स्थान फुरआवतेहें॥ तमरूप जो दैत्य हें तिन
के भेदणेकों सर्वरूप वे सरीर उपज आवतेहें॥ स्वर्ग इंद्र फुरआवताहै॥ प्रपस्त गुणफुर
आवतेहें॥ असत फुरआवताहै॥ धर्म ग्रंथ कामना क्रियाकर्म सभ अशुभ रूपहोआवतेहें॥
यज्ञ दान होमादिक सर्व क्रियाकरि संयुत जीव संसारी होतेहें॥ शुभकर्म करणेहारे स्वर्ग वि
षे विचरतेहें॥ सुख भोगतेहें॥ पुत्रोंको लोभ रूप किडइ मिलतेहें॥ मृतलोक विषे आवतेहें॥ इ
सप्रकार कर्म करतेहें उपजतेहें॥ वहुरउ नष्ट होतेहें॥ स्वर्गरूप कमलहै॥ तिस विषे इंद्ररूप भ्र
मर है॥ तिस स्वर्गकी सुगंध लेकरि उडइ इ वलनारहिताहै॥ अवर इंद्ररूप भ्रमर स्वर्गके क
मलकी सुगंध लेणे आवताहै॥ जेताकाल शुभकर्म कीयाहोताहै॥ तेताकाल स्वर्गसुख भो
गकरि नष्टहोजाता॥ वहुरउ कल युगादिक युग आवतेहें॥ सर्व देशकाल क्रियादि जीव उ
पज आवतेहें॥ तैसे कुलालचक्रविषे वासना उपजाइ लेताहै॥ तैसे चित्तकाल कल्पनाक
रिजगत अनेक पदार्थों कों उत्पति करतीहै॥ संसार स्थान जीवों संयुक्त होतेहें॥ सो नष्ट होजातेहें॥
जगत समस्त रूप होजाताहै॥ कल्प
असतमात्र जीवोंके नाश करिके सार स्थिर नहीं होजाताहै॥ जगत समसाणरूप होजाताहै॥ कल्प
चल पर्वतके आकार वन वृक्ष जल वर्षा करतेहें॥ तिन विषे जीव समस्त काष्ठ दग्धहोइ ऊ
स्थितहोतेहें॥ द्वादश सूर्य आन उदे होतेहें॥ शेषनागके मुखतें अग्नि निकसतीहै॥ तिसकरि
विश्व सर्व जगत दग्ध होताहै॥ वहुरउ अग्निकी ज्वाला शांत होजातीहै॥ एक शून्य आकाश
ही शेष रहिताहै॥ सो भी न रहिजातीहै॥ जव रात्रकों भोग चुकताहै॥ वहुरउ जीव दीखणे देहक
विसंकल्प मनरूप ब्रह्मा रचलेताहै॥ इसप्रकार शून्य आकाश विषे जगतकों मनरचताहै
जैसे शून्य स्थान विषे गंधर्व माया करि नगर रचलेताहै॥ तैसे जगतकों मन रचलेताहै॥ व
हुरउ प्रलय होजाताहै॥ इसप्रकार जगत गण उपजकरि महाप्रलय विषे नष्ट होतेहें॥ ब्रह्मा
के दिन लय हुए जव ब्रह्माका दिन होताहै॥ तव वहुरउ रचलेताहै॥ महाप्रलय विषे ब्रह्मा
दिक सर्व अंतरधान होजातेहें॥ इसप्रकार प्रलय अरु महाप्रलय अनेक जगतगण वृत्ती
तहोगयेहें॥ महाटीर्घ माया शांवारूप कालचक्र पदुधि फिरताहै॥ तिस विषे मैं तुझकों सत
काकहो असत कहो सर्व भ्रांतरूपहै॥ दाशूरकी आख्यायका वतजाणतेहें॥ कल्पनाक
विरचत वक्रहै॥ वक्रतें शून्य अवस्तुरूपहै॥ वेउ अरंभ संयुक्त विस्ताररूप भासताहै॥ तोभी
असतरूपहै॥ जैसे भ्रांतकरि द्वितीय चंद्रमा भासताहै॥ तैसे एह जगत दृष्टोंके दिदे विषे स
तभासताहै॥ नमम दृष्टोंवत नही जाणता॥ ज्ञानवानोंवत जगतकों विचारकरि असत जाणता

स्थित.
३०

३ ॥ इति श्रीस्थितिप्रकरणे शततमसप्त रामोपदेशो नाम सर्गः ॥ वसिष्ठ उवाच ॥ हे रामजी भोगते
सर्पके विषैं जो है तिन तिनका सो नाना प्रकारकी क्रिया के आरंभ करते हैं ॥ राजस सात्तकता मम
रागण कर्मके करते हैं ॥ इसी कारणतें उह सतपुरुषों नास्माकों नहीं प्राप्त होते ॥ जब भोगों की त्रिस्ना तें र
हित होवें ॥ तब आत्मा कों देखें ॥ तिन पुरुषों कों इंद्रियों के गण वशि नहीं करि सकते ॥ सो आत्मा
कों चलता हुआ विषै विलप लवता देखते हैं ॥ तिस पुरुष विचार करिकें अहंकाररूप मल
न शरीर का त्याग कीया है ॥ तिसका जेतन घन रूप होजाता है ॥ जैसे सर्प कुंजकों त्यागता है ॥ अ
रु अवर नीतनकों पावता है ॥ तैसे मिथ्या शरीर कों त्यागकरि उह आत्म विचार करि आत्म
शरीर पावते हैं ॥ ऐसे जो निरहंकार आत्मदर्शी पुरुष हैं ॥ सो जगत के पदार्थों विषे असक्त भा
सते हैं ॥ तौ भी जन्म मरण कों नहीं पावते ॥ जैसे अग्नि करि जिसका आकार जल गया है ॥ ऐ
सा जो अन्नादि का बीज है ॥ सो खेत्र विषे बोया नहीं उत्पन्न होता ॥ तैसे ज्ञानवान बहुड़ जन्म न
हीं पावता ॥ अरु जो भोगों विषे असक्त बुद्धि अज्ञानी है ॥ सो मन अरु शरीर के दुःखों करि दुः
खी होता है ॥ वारंवार जन्म मरण कों पावता है ॥ जैसे आज दिन होता है ॥ बहुड़ रात्रि होती है
बहुड़ बहुड़ आवते जाते हैं तैसे उह जन्म मरण पावते हैं ॥ तातें तुम अज्ञानी की न्याई न
होवणा ॥ चेष्टा विवहार जैसे अज्ञानी की होती है ॥ तैसे करो ॥ अरु अंतर तें भोगादिकों
का स्वी और विनकों न देवो ॥ आत्मपरायण रहो ॥ राम उवाच ॥ हे भगवन तुम जो कहा संसार
रूप दाग्धर की आख्यायका वर्नते हैं ॥ कल्पना करिके रचन है ॥ इसका आकार वस्तुतें नहीं है ॥ परंतु सो
क्या कहा ॥ इसकों अगर करिके कहो ॥ वसिष्ठ उवाच ॥ हे रामजी जगत माया रूप वर्नने के नि
मित मैं तुमकों कहा है ॥ अवर दाग्धर के प्रसंग साथक हु अर्थो जातनथा सो सुणो ॥ हे रामजी इस
वसुधा पीठ विषे एक मगध नामे देश है ॥ सो विचित्र वृक्ष फूलों करि शोभित है ॥ बड़ा कदंब वन विस्ता
रण ताल करिके वल्लन जेताला विचित्र रूप पवही रहे ॥ मनों के मोहणहारा चलन ऊरते नीर युक्त म
न पुष्पों संयुक्त तडाक बगीचे अति महा सुंदर देश है ॥ तहां एक पर्वत के तट ऊपर नीरस रूप के तें
हारवं इहै ॥ अवर अनेक वृक्ष फूल फलों सो पूर्ण जीवों की ॥ जीवना रूप कोकलादिक अनेक प
क्षी शब्द करते हैं तहां नगर विषे एक परम धर्मात्मा महा तपस्वी होता भया ॥ दाग्धर तिसका ना
म महातपकरि संयुक्त कदंब वृक्ष ऊपर बैठा करि वीतराग महा बुद्धिवान तप करता था ॥ राम
उवाच ॥ हे भगवन जो ऋषीश्वर तपसी वन विषे किस निमित्त आया था ॥ अरु कदंब वृक्ष ऊपर
किस निमित्त बैठा सो कारण कहो ॥ वसिष्ठ उवाच ॥ हे रामजी शरलोमा नाम ऋषीश्वर ति
सका पिता होता भया था ॥ मानो द्वितीय ब्रह्मा था ॥ सो तिस पर्वत ऊपर रहता था ॥ तिसके गृ
ह विषे दाग्धर नाम पुत्र होता भया जैसे बृहस्पति के गृह विषे कच होवे ॥ तिस दाग्धर पुत्र
संयुक्त वन विषे चिरकाल व्यतीत कीया ॥ तिसके अनंतर फेर भोगों के गण भोग करि देह
त्याग कीया ॥ स्वर्गलोक मो गमन करते भया ॥ जैसे पक्षी अपना आलय त्याग करि आकाश
मो उडता है तिस वन विषे दाग्धर एकाकी रहि गया ॥ पिता के वियोग करि रुदन करते भया
जैसे कुंज वियोग करि कुरलावते है ॥ तैसे माता अरु पिता के वियोग करि कुरलावे ॥ रिदे करि
तपाइमान सुख की शोभा मलन होगयी जैसे हिमवंत विषे कमलों की शोभा नष्ट हो जाती
है ॥ तैसे दीन होगया ॥ तब उहां एक अशरीर बनदेवी थी ॥ सो दया करिके आकाशवाणी क
रि कहत भयी हे ऋषिपुत्र बुद्धिवान अज्ञानीयों की न्याई क्यों रुदन करता है ॥ एह संसार सर्व
अस्त रूप है ॥ तूं इस संसार कों देखता नहीं एह तो नाश रूप महा चंचल है ॥ सर्वदा काल उ
त्पत्ति अरु विनाश होता है कोऊ पदार्थ स्थित नहीं रहता ब्रह्मातें आदि कृम पर्यंत जेता
कछु जगत तुमकों भासता है ॥ सो सर्व नाश रूप है ॥ इस विषे संदेह कछु नहीं ॥ तातें तुम पि
ता के मरण का विरलाप मत करो ॥ परंतु ऐसा कोऊ प्रकार होवे जिस करि इस हृदय की
शाखा पर आश्रम साग विषे में स्थित पावें ॥ एह बात अवश्य इसी प्रकार है ॥ जो उत्पत्ति भया
है ॥ सो नष्ट हो जावेगा स्थिर रहिगा किसी नहीं ॥ जैसे सूर्य उदे होता है ॥ बहुड़ अस्त होता

है ॥ हे रामजी जब इस प्रकार अशरीर देवी की वाणी दाग्धर श्रवण करी ॥ तब वनतालें चलता
अरु धीर्य कों प्राप्त भया ॥ जैसे मेघ का शब्द सुणकरि मोर प्रसन्न होती है ॥ तैसे शोकवान
होइकरि पुण्य स्नान आदि संयुक्त पिता की लोक क्रिया करत भया था ॥ सो सर्व करते भया
तिसके अनंतर सिद्धता के निमित्त तप कों उद्यम करते भया ॥ आत्मा का जो कोऊ कर्म है
तपकी विद्या अपणी संपूर्ण सीखता था ॥ तिस कों अध्ययन करि कि विद्या होत भया था
अर्थ पहलें जो अपणी माला पढ़ या था ॥ अरु अज्ञान रिदया ज्ञानी तथा ऐसा जो श्रीरोत्र
विलप के निमित्त उद्यम ॥ विचारते भया ॥ सो कोऊ पवित्र इस्थान देखे ॥ तहां जाइकरि
तप करों देखता देखता पृथ्वी विषे किसी स्थान सों चित्त विश्रांतवान न भया ॥ सर्व स्थ
ल पवित्रता भासे ॥ कहूं कोऊ अपवित्रता भासे ॥ कहूं कोऊ अपवित्र आवे
वीतलउस कों अशुद्ध दृष्ट आवे ॥ जो अवर स्थान तौ सर्व अ
इसी प्रकार सर्व पृथ्वी कों अशुभ देखकरि संकल्प करते भया ॥ ऐसे चिंतवन करि अग्नि प्रज्व
लत है ॥ वृक्ष की शाखा के अग्रभाग पर बैठकरि मैं तप करों ॥ जब इस प्रकार हृदय मन
न करी ॥ अरु अपणी मों टेका मांस काटकरि हवन करणे लागा ॥ तो मैं रेसुख विषे आस
करणे लागी ॥ तब सर्व देवतों का मुख जो अग्नि है ॥ सो विचारत भया ॥ जो मैं शाखा के समीप आन प्राप्त
ता का सो सम भयावे ॥ ऐसे विचार करि अरु चित्त जैसी हद धारकरि ब्राह्मण के समीप प्रगट होत भया
या ॥ अरु कहि तभया ॥ जैसे ब्रह्मा कों कहते है ॥ तैसे अग्नि कहते भया ॥ जैसे भंडार कों खोलकरि माला लेवीती
है ब्राह्मण कों मार जो कछु तुम कों वांछित है ॥ सो वर मांग ॥ जैसे भंडार की खोलकरि माला दिक
है ॥ तैसे मुज सों वर लेह ॥ जब इस प्रकार अग्नि कहा ॥ तब दाग्धर पाद्य अर्घ गंध पुष्प धूप तिलादिक
करि अग्नि का पूजन कीया ॥ अरु प्रसन्न होइकरि कहत भया ॥ हे भगवन प्राण आत्मा अरु शरीर
तीर में तप के निमित्त उद्यम कीया है ॥ अरु प्रसन्न होइकरि कहत भया ॥ हे भगवन प्राण आऊ
तप वन शरीर में तप के निमित्त उद्यम कीया है ॥ अरु शुद्ध स्थान अवस्था कों कोऊ न ही भासे
ना ॥ वृक्ष कों देखकरि में प्रसन्न होता हों ॥ अरु चाहता हों ॥ जो इस वृक्ष ऊपर एकाग्र बैठकरि तप
करों ॥ वृक्ष के अग्र शाखा विषे स्थित होणे की शक्ति मुज कों होवे एही वर देवो ॥ जब इस प्रका
र सुनि ॥ तब अग्नि देवकरा ऐसे ही होवे ॥ ऐसे कहि करि अंतरधान होगया ॥ जैसे
संध्या काल के मेघ अंतरधान होजाते हैं ॥ तब दाग्धर मन होइकरि विविध के मार अप्रसन्न भया ॥ जैसे
में पूर्णमासी का चंद्रमा कला करि पूर्ण प्रसन्न होता है ॥ तैसे प्रसन्न भया ॥ जैसे चंद्रमा के प्रकाश
कों पाइकरि कमलनी विकासवान होती है ॥ तैसे वर कों पाइकरि प्रसन्न भया ॥ ४१ ॥ इति श्री
स्थितिप्रकरणे दाग्धरोपाख्याने दाग्धर वनोपमहस्त नाम सर्गः ॥ वसिष्ठ उवाच ॥ हे रामजी इस
प्रकार वर कों पाइकरि दाग्धर कदंब वृक्ष के ऊपर चढ़ने की इच्छा करत भया ॥ कैसा वृक्ष है ॥ जो आ
काश मो टेलकों ॥ जिसने स्पर्श जाइ कीया है ॥ अरु सम ध्यान का समर्थ होता है ॥ तिसके स्थ केतो
दृश्य के रूप माना तिस वृक्ष का आश्रय करते है ॥ अति दीर्घ है जिसने तापस पसारे हैं ॥ सो माना दिशा
कों मापते हैं ॥ अरु फूल रूप नेत्रों करि माना देखते हैं ॥ अरु वायु करि जो पत्र हलते हैं ॥ सो माना नि
शा कों मल रूप पदार्थों माय पूछते हैं ॥ अरु बड़े गुच्छे लागे हैं ॥ अरु रस करि पूर्ण जैसे मद गोमानी
का चंद्रमा प्रकाश करि पूर्ण होता है ॥ तैसे पूर्ण है ॥ अरु चकोर को कला आश्रय करते है ॥ माना किन्नर
वाइन करते हैं ॥ जैसे मेघ विषे इंद्र धनुष अनेक रंगों संयुक्त भासता है ॥ तैसे श्याम पत्र रूप मेघ अ
रु रक्त पीत पुष्प माना इंद्रधनुष है ॥ बड़े शाख करे हैं ॥ तिन ऊपर बैठकरि पक्षी जिव जिव शब्द के
ते हैं ॥ अवर अवर भांत के पक्षी विश्राम करते हैं ॥ जैसे स्वर्ग कुटी विषे सिद्ध विश्राम करते हैं ॥ तैसे पक्षी
जीव तिस विषे विश्राम करते हैं ॥ फूल गुच्छे संयुक्त वल्लीसों दुरलामती यांहे ॥ जैसे स्वर्ग विषे अप्स
रा गण होते हैं ॥ इंद्र देव संग ॥ तैसे नाना प्रकार के पुष्प लागे हैं ॥ सब हस्त भुजा रूप तिसके डास है
आकाश को रक्त कों भी तिसने माना पूर्ण कीया है ॥ माना विश्वरूप इहां नित्त करता है ॥ चंद्रमा स
र्य तिसके दो नेत्र कुंडल हैं ॥ अरु तारागण इस का शोभना है ॥ लता पुष्प इसके मालविषे माना इस
विषे हितीय ममेरुल है ॥ आकाश इसका सीस अरु पाताल चरण है ॥ माना एह सर्व पर्वत वनों का

स्थित

पितामाहे॥ सर्वऋतुतेउत्पन्नभयेहैं॥ मानोफूलफलादिकोंकाप्रत्यक्षरूपहै॥ पत्रजोश्यामरंगतेहैं
अरुतिनविषेपुष्पस्वेतहोतेहैं॥ मानोआकाशतारागणकरिआछादितकीयाहै॥ अरुचकोर
कोकलादिकपक्षीजोशब्दकर्तेहैं॥ तिनकुंविषेऐसाजानोऊंगावेहे॥ महामंदरवगाहे॥ मानो
कामदेवकास्थानहै॥ सर्ववनदेवीयोंकापरमउत्तमस्थानहै॥ सुंदरछायाकरिसंपन्नहै॥ जोजी
वआवताहैसोतहांविश्रामपावताहै॥ जैसेवडेधनवानसोंकोऊनिरअर्थकनहींजाता॥ स
र्वकाअर्थपूर्णकर्ताहै॥ तैसेसर्वजीवतिसकेनिकटआवतेहैं॥ सोतिसअरुसंतवानहोआ
वतेहैं॥ फलफलछायाकरिसुखीहोतेहैं॥ जोजीवआवें॥ तिनकीपूजाकर्ताहै॥ कोकलाव
कोकादिकपक्षीजोशब्दकर्तेहैं॥ सोमानोकुशलकल्याणपूछतेहैं॥ जवनिकटआवें॥ त
वऊपरपुष्पोंकीवर्षाहोवे॥ फलोंकरितृप्तहोवे॥ सर्वकोप्रसन्नहोजावे॥ टासतिसके
वडेऊर्ध्वकोंगयेहैं॥ मानोआकाशकोंजीतणेलागेहैं॥ कोऊआकाशकोंजाइमिलेहैं॥ अरु
मध्यभागविषेवृक्षयोंकेसमूहलागेहैं॥ मानोइनकरिसहस्रनेत्रइंद्रकोंजीतणेलागा
है॥ पुष्पगुच्छेयनेतपातालकोउठेहैं॥ सोमानोशेषनागकेफणहैं॥ मानोशेषनागआकाश
कोंदेखणेलागाहै॥ अरुधूडकरिभूसलहोगयाहै॥ मानोद्वितीयसदाशिवविभूतलगाइक
विश्रामस्थितभयाहै॥ अरुमानोसर्वमुनीश्वरोंकोंतिसकेकल्याणकरणेहाराकल्पतरुहै॥ जे
सेस्वर्गविषेकल्पतरुहोतेहैं॥ तिनकेआश्रयदेवतालोगआपस्थारणविचरतेचेष्टाक
र्तेहैं॥ तैसेतिसवृक्षकोंदासूरआश्रयकरताभया॥ ॥ इतिश्रीस्थितप्रकरणेदासूरोपाख्या
नेकदंबवर्णनंनामसर्गः॥ वसिष्ठउवाच॥ हेरामजीफूलपत्रसंयुक्तऐसेवृक्षकोंदेखकरिम
हाबुद्धिवानदासूरतिसकेऊपरलेरासकेअग्रभागपरजाइबैठा॥ जैसेप्रलयकालविषेसम
द्रएककवराजातेहैं॥ अरुविष्णुजीकल्पवृक्षऊपरजाइबैठताहै॥ तैसेदासूरकदंबपरजाइबैठा
तोतिनकमलपत्रऊपरविराजतेदेखणेलागा॥ दिशाकाकौतककेवलरूपदेखा॥ दृश्यरूपम
वोचेवलभुतलीहै॥ श्यामआकाशतिसकाशीसहै॥ तिसपरश्यामकेशहैं॥ प्रकाशरूपहै॥ पाता
लतिसकेचरणहैं॥ मेघरूपवस्त्रहैं॥ पृथ्वीकीआरोग्यअंगहै॥ ऐसीदृश्यरूपएकस्त्रीहै॥ समुद्र
चौलाआदिकतिसकेभूषणहैं॥ प्राणरूपउरस्थलसोंजलवल्लीरूपहै॥ सूर्यचंद्रमातिसके
कुंडलहैं॥ पर्वतमोंडेहैं॥ नदीयांताडीहैं॥ पवनश्वासवायुहै॥ दिशाहस्तसमुद्रआसोंहै॥ सूर्यादि
कउष्णातिसकेपित्तहैं॥ चंद्रमाकफहै॥ ऐसीत्रिलोकीरूपीएकपुतलीहै॥ ॥ इतिश्रीस्थितप्र
करणेदासूरोपाख्यानेदिशावलोकनंनामसर्गः॥ वसिष्ठउवाच॥ हेरामजीतिसकेअनं
तरस्थितहोइकरिउग्रतपकरणेलागा॥ तहांउसकानामकदंबतपादासूरहुआ॥ एककल
लादिवसोंकोदेवकरिउहांतेंवृक्षकोंविचनभया॥ पद्मआसनबांधकरिमनकोंएकाग्रकी
या॥ सोदासूरकैसाथा॥ परमार्थपदतेंअज्ञातथा॥ फलकीकामनाकरिकेअंतरविषे
स्थितथा॥ परमार्थपदतेंअज्ञानथा॥ फलकीकामनाकरिकेअंतरविषे
कीउद्देशमनथा॥ आकाशकोंलागताथा॥ पत्रतिसवृक्षका॥ तिसपत्रऊपरस्थितभया॥ फल
नकरिकेयज्ञकाआरंभकीया॥ जेतीकछुसामग्रीविषयथी॥ सोसर्वपशुसामग्रीमनकरिके
कर्तेभया॥ दशवर्षमनविषेव्यतीतकीये॥ सर्वदेवत्योंकापूजनकीया॥ गोमेधअश्वमेधन
रमेधसर्वयज्ञयथाविधमनकरिकेकर्तेभया॥ ब्राह्मणोंकोंवडेदक्षिणादियी॥ इसप्रकार
कैतैसेमेपारकरिउसकाअंतःकरणशुद्धभया॥ चित्तविषेनिर्मलताचित्तविषेस्थित
भयी॥ बलात्कारसेंज्ञानउसकेहृदयविषेप्रकाशितभया॥ आत्माकेआगेवासनामलआव
रणथा॥ सोनष्टहोगया॥ जैसेशरदकालविषेतडागनिर्मलहोताहै॥ तैसेमुनीश्वरकाचित्तकल
मलोंतेंरहितभया॥ तबउहमुनीश्वरजोवृक्षकेऊर्ध्वटासपरबैठाथा॥ पुष्पकेअग्रमोंतहांएक
वनदेवीकोंअग्रभागविषेदेखतभया॥ वडेविशालनेत्रअरुचपलरूप॥ पुष्पोंकीन्याईदेत॥
कामदेवकीन्याईमहासुंदरशरीरअरुकामकेमदयुक्तविभ्रम॥ नीलकमलकीन्याईलोचन
मनकेहरणेहारीहै॥ तिसवनदेवीकोंमुनीश्वरदेखतभया॥ अरुउहनिम्रतमस्तकहोइकरिदे

खेलभयी॥ जैसेकोकलाहंसमोरकरिविराजितवनलताकेआगेनिम्रतहोवे॥ तैसेनिम्रतभूतकों
मुनीश्वरकहितभया॥ हेकमलनैणीतूंकवणहै॥ कैसीशोभनरूपहैतूं॥ अरुइसपुष्पोंकवि
मंजरीलताविषेकिसनिमित्तआनस्थितभयीहै॥ जवइसप्रकारमुनीश्वरकहा॥ तवमहागो
रीस्तनवालीकामदेवकेमोहनहारीबोलतभयी॥ हेमुनीश्वरजोजोपदार्थवडेकष्टकरि
प्राप्तहोताहै॥ इसपृथ्वीलोकविषेसोसोपदार्थमहापुरुषोंकीकृपाकरिप्राप्तहोताहै॥ ह
मइसवनकेदेवताहैं॥ लीलाकर्तेफिरतेहैं॥ जिसनिमित्तमेंतुमारेआगेआईहों॥ सोसुणो॥ हेमु
नीश्वरपिछलेदिनोंकीजावेउत्सवदीनीयात्राथी॥ तिसदिनविषेइंद्रकेनंदनवनमोंउत्सव
हूआथा॥ तहांसर्ववनदेवीयांएकत्रभईथी॥ त्रिलोकीकीयांस्त्रीयांआगमनकीया॥ तहांस
वदेवीयांपुत्रोंसंयुक्तवडेपुष्पोंकरिविलासक्रीडाकरतभईयां॥ अरुमैंअपुत्रथी॥ तिसकार
णतेंमैंमहादुःखितभयी॥ अबदुःखनिवर्तकरणेअर्थतुमारेसमीपआईहों॥ तुमसर्वअर्थ
केसिद्धकर्ताहो॥ वडेवृक्षकेऊपरस्थितहो॥ मैंअनाथपुत्रकीवांछाकरिकेतुमारेनिकटआई
हों॥ तातेंमुझकोंपुत्रदेवो॥ अरुजोनदेवोगे॥ तबमैंअग्निप्रज्वलकरिकैप्रवेशकरोंगी॥ जलम
रोंगी॥ इसप्रकारअपनेदुःखदाहनिवर्तकरोंगी॥ हेरामजीजवइसप्रकारवनदेवीकहा॥ तब
मुनीश्वरहसिकरिकहा॥ अरुदयाकरिकेहस्तमोंपुष्पदीयाहै॥ हेसुंदरवदनेजाउ॥ तुझको
एकमासतेंउपरांतपुत्रहोवेगा॥ सोकैसाहोवेगा॥ पूजणेयोग्य॥ अरुमहासुंदर॥ [illegible]
च्छाधारीथी॥ पुत्रनप्राप्तहोवेगा॥ तबजलमरोंगी॥ तिसवासनाकरिपुत्रज्ञानीपुत्रहोवेगा
यत्नकरिकेज्ञानतिसकोंप्राप्तहोगा॥ जवइसप्रकारमुनीश्वरदेवीकोंकहा॥ तबवनदे
वीप्रसन्नहोइकरिकहितभया॥ हेमुनीश्वरदेवीकोंकहा॥ तबवनदेवीप्रसन्नहोइकरि
कहितभया॥ हेमुनीश्वरमैंइहांरहितीहों॥ तुमारेपासटहिलकरोंगी॥ परंतमुनीश्वरति
सकात्यागकीया॥ अरुकहा॥ हेसुंदरेतेंजाइअपनेस्थानविषेरहु॥ तबउहअपणीवनदेवी
योंविषेआई॥ तिसतेंसमेपाइकरिपुत्रउत्पन्नभया॥ तबदशवर्षोंकाबालकहुआ॥ तबमुनी
श्वरकेनिकटलेआई॥ अरुएकचित्तसेंयुक्तदोनोंप्रणामकीया॥ मुनीश्वरकेआगेपुत्रकोंस्था
पककरिकहितभयी॥ हेभगवनपरमजोकल्याणमूर्तबालकहै॥ सोहमतुमदोनोंकापुत्रहै॥
इसकोंमैंसंपूर्णविद्याकलासिखाईहैं॥ प्रपंचकीयाहै॥ सर्वकावेत्ताभयाहै॥ परकेव
लज्ञानकोंनहींप्राप्तभया॥ परअज्ञानीहै॥ जिसकरिकैसंसारपंथविषेबडेदुःखपाव
है॥ सोज्ञानकृपाकरिकेतुमइसकोंउपदेशकरो॥ हेप्रभोजोशुभकुलविषेउत्पन्नहोवेअरु
वाहेमेरापुत्रमूढरहे॥ नउद्धारवे॥ सोऐसेकवणहै॥ हेरामजीजवइसप्रकारदेवीकहा॥ तब
मुनीश्वरकहा॥ इसकोंतेंइहांछोडजाइ॥ तबउहदेवीछोडकरिगमनकर्तेभयी॥ अरुबाल
कपिताकेसमीपरहितभया॥ कवणयत्नकरिकैतिसकोंज्ञानकीप्राप्तिभयी॥ नाना
प्रकारकीयांउक्तोंकरिकेचिरकालपर्यंतआख्यायकाइतीहासअरुअपणेदृष्टांतकल्प
करिपुत्रकोंजगावताभया॥ वेदवेदांतकानिश्चयअनेकहेतोंकरिकेउपदेशकीया॥ विस्ता
रकरिकेकथाकेक्रमहैजोअनुभवकरिकेहृदयवडेबुद्धिवानअर्थहै॥ सोकहे॥ जोअपणे
अनुभवस्थितैयतलहे॥ सोवलकरिकेउपदेशकीया॥ सिंगारआदिकजोमहारसहैं॥ ति
नतेंरहितपरमार्थतत्वकाउपदेशकीया॥ जोग्रंथमेंकहियाहै॥ सोउसमहात्मापुत्रकों
उपदेशकीया॥ तिसकरिज्ञानअरुशांतआत्माहोतभया॥ जैसेमेघकेशब्दकरिमोरप्र
सन्नताकोंप्राप्तहोताहै॥ तैसेप्रसन्नभया॥ ॥ इतिश्रीस्थितप्रकरणेदासूरोपाख्यानेदासूरपु
त्रावबोधनंनामसर्गः॥ वसिष्ठउवाच॥ हेरामजीमैंभीनवकैलाशवाहनीगंगाजीकेस्नाननि
मित्तचलाजाताथा॥ अरुशरीरसंयुक्तआकाशवीथीमोंसप्तऋषीयोंकेमंडलतेंचलाथा॥ ति
सवृक्षऊपरउहबैठेथे॥ तिसकेपाछेमैंआयातबकछुशब्दश्रवणकीयावनविषेजोवृक्ष
है॥ तिसकेऊपरछिद्रविषेजैसेमंदेहएककमलमोंभ्रमरकाशब्दहोवे॥ तैसेवृक्षकेअग्रमोंश

वि॰ प्र॰ ३४

हे श्रवण कीया ॥ जो कहिता है ॥ हे पुत्र महा बुद्धिवान श्रवण करु ॥ मैं तउ कों वस्तु के निरूप
ण निमित्त यथार्थ रूप आख्यान का कथन कहिता हों ॥ एक राजा होत भया है ॥ सो महा वीर या
क्रमी अरु त्रिलोक विषे प्रसिद्ध नाम उसका स्थात्य है ॥ बडा लक्ष्मीवान जगत की रचना क्रम
को उदय कर्ता है ॥ अरु सर्व मन जो जगत बडे नाइ कहे ॥ सो भी उत्तम बडा उत्तम गुण करि कै तिस कों
सीस विषे धारते है ॥ अरु कर्म जो कर्ता है ॥ सो सारे समग्र सम्पूर्ण है नाना प्रकार के आश्चर्य अव
तार कर्ता है ॥ अरु तिस महात्मा उत्तम कों त्रिलोकी विषे वर्णन नही कीया ॥ सहस्र ही तिस के
आरंभ है ॥ सर्व अरु दुःख कों दूर करता है तिन की संख्या कछु करी नही जाती ॥ तैसे अंस के
अर्थ विश्रंभ है ॥ अरु उस का जो वीर्य पराक्रम है ॥ सो किसी शास्त्र अरु प्रशस्त अधिक विधे
यान ही जाता ॥ जैसे आकाश कों मुष्टि प्रहार करि के तोडन सकीस कातें से उद्वेग दुःखी यों विस्तार
तिस कीयां भुजों है ॥ अरु लीला करि कै आरंभ कों रचता है ॥ तिस के आरंभ हर रवरूप कों कोन
तु समर्थ नही ॥ इंद्र विष्णु सदाशिव भी समर्थ नही ॥ हे महा बाहु त्रिलोकी उस के देह हे दिशा कों
भ्रमते है ॥ तिन दो कर जगत विषे भ्रमते रहते है ॥ उत्तम अधम मध्यम करि कै ॥ अरु बडे विस्
तार रूप आकाश तें उत्पत्ति भया है ॥ अरु नही तो ही आरी तो विषे स्थित भया है ॥ जैसे आकाश
का पक्षी आकाश विषे रहिता है ॥ जैसे पवन आकाश विषे रहता ॥ तिस पुरुष ने तिस पर
म आकाश विषे एक नगर रचया है ॥ तिस विषे चतुर्दश बडे स्थान है ॥ त्रि विभाग करि
नगर सम्पूर्ण कीया है ॥ वनस्पति रु वगीचे सें युक्त अरु पुष्पों क्रीडा का स्थान रचया है ॥ पर्वतों
के शिखर मीलों यों की पावन लीरची है ॥ सप्त वावली पोखरी यां है तिन करि स्थान शोभ
ते है ॥ दिव्य दीपक रचे है ॥ जो ते ज अरु वाती तें रहित प्रकाशते है ॥ सो शीत अरु उष्ण रूप है
कव हूं अध ॥ कव हूं ऊर्ध्व नगर विषे भ्रमते है ॥ मूर्ख वराक गण रचे है ॥ को ऊ गण ऊर्ध्व स्थित
है ॥ को ऊ मध्य को ऊ अधः विशेष स्थित है ॥ केई दीर्घ काल करि नष्ट होते है ॥ केई शीघ्र ही
नष्ट हो जाते है ॥ कोई आछादन वस्त्र कों पहिरे हुए है ॥ केई वस्त्रों तें रहित है ॥ नव द्वा
रे के विद्र आछादन कीये है ॥ तिस कों निरंतर रवरूप उरोख की ये है ॥ पंच दीपक देखने
निमित्त कीये है त्रि स्तंभ कीये है ॥ तिन विषे अवकाश उं स्थंभ कीये है ॥ सूत्रों में कोमि
न ऊपर लेपन कीया है ॥ पाठन ली करि संकल्प कीये है ॥ महा मनसा माया करि तिस रा
जा ने उस नगर रचा है ॥ नगर की रक्षा निमित्त सेना रची है ॥ एक ले तद देख वालक पहे
विवर करण गोल करि के उच्छलता है ॥ नाना प्रकार की क्रीडा करता है ॥ जैसे आल ने विषे प
क्षी क्रीडा करता है ॥ त्रिशरीरों कर करि सर्व द्वार विषे विचरता है ॥ पद सर्व द्वार विषे समीप
होते है ॥ लीला करि कै एक स्थान कों त्याग करि अवर स्थान विषे जाइ चेष्टा करता है ॥ कव
हू तिस की इच्छा होती है ॥ तव चेवल चित्त सों भविष्यत पुरु को रच करि तिस विषे स्थित
न होता है ॥ नायक रि अविष्ट तरू आन होते उदित आवता है ॥ वेग करि कै गंधर्व को रच
नाफि रता है ॥ जब इच्छा कर्ता है ॥ ता मैं उपजे तब उपजे आवता है ॥ जब इच्छा कर्ता है ॥ सै स
रजावों तब मर जाता है ॥ जैसे समुद्र विषे तरंग उपज आवते है ॥ बहु उत्पन्न हो जाते है ॥ उ
प्रकार राजा बडे सम वरार कों कर्ते है ॥ वारंवार रचना करि कै कथहु आप ही रूदन करता
लागता है ॥ मैं क्या करो ॥ मैं अज्ञानी हो ॥ मैं दुःखी हो ॥ ऐसे विचार करि कै चिंता सों आतुर हो
ता है ॥ कव हूं उद्देह हो इक रि बडा स्थूल हो जाता है ॥ जैसे वर्षा काल की नदी वढती है ॥ ते
से वह कहि अपकों सुखी मानता है ॥ विस्तार कों पाइ करि चलता फिरता वडे प्रकाश
करि प्रकाशता है ॥ तिस महीपति की वडी महिमा है उचित रूप होइ करि नगर मों
स्थित है ॥ ॥ इति श्री स्थिति प्रकरणे दाशूर पाख्याने विश्व विभव नेन नाम सर्गः ॥ वसि
ष्ठोवाच ॥ हे राम जी जब इस प्रकार दाशूर कह्या ॥ तब जे वृद्धही एक वन विषे जो कदेव ह्
ता है ॥ तिस के आश्रम आगे बैठे पुत्र प्रश्न कर्ता भया ॥ पुत्र उवाच ॥ हे भगवन ऊहु सो आख्यान मरा

जा कवण है ॥ जगत विषे प्रसिद्ध उत्तम जिस की कीर्ति है ॥ अरु नगर तिस ने कवण र
चा है ॥ सो भविष्यत नगर विषे रहिता है ॥ सो कैसे है रहिता सो वर्तमान विषे होता है भ
विष्यत विषे कैसे रहिता है ॥ यह विरूप अर्थ कहिता के से जानता हैं ॥ इन वचनों करि मे
री बुद्धि मोह तह होती है ॥ दाशूर उवाच ॥ हे पुत्र तें श्रवण करु ॥ मैं तउ कों यथार्थ कहि
ता हों ॥ जिस के जाणे तें संसार चक्र का कों सुं काइं जाणेगा ॥ जो यह वस्तु ते कहा है ॥ यह
संसार प्रपंच भ्रम तं उदय भया है ॥ बडे विस्तार सें युक्त भासता है ॥ सो भी असत रूप है
कछु है स्थान ही ॥ जैसे यह संसार स्थित है ॥ तैसे मै तुझ कों कहिता हों ॥ यह आख्यान
का मैं तुझ कों जगत के निरूपण अर्थ कही है ॥ हे पुत्र जो शुद्ध अवेदन चिन्मात्र चिदा
काश है ॥ तिस ते जो संकल्प उठया है ॥ तिस संकल्प का नाम राजा है ॥ सो आपही उ
पजता है ॥ अरु आप ही लीन होता है ॥ सर्व जगत तिस का स्वरूप है ॥ जो बडे विस्तार
रसं युक्त भासता है ॥ सो तिस के उपजे करि उपजता है ॥ तिस के नष्ट हुए नष्ट
हो जाता है ॥ ब्रह्मा विष्णु रूद्र इंद्रादिक उस के अवयव है ॥ जैसे वृक्ष के अंश टास होते
है ॥ जैसे पर्वत के अंग शिखर होते है ॥ जैसे तिस के अंग है ॥ सो न आकाश विषे तिस ने ए
ह जगत रूप नगर रचा है ॥ प्रतिभास के अनंत सें धाव तें उही चित्तकला विरंच पद कों प्रा
प्त भयी है ॥ अरु चतुर्दश स्थान जो कहे है ॥ सो विस्तार संयुक्त चतुर्दश लोक है ॥ वन
उपवन वगीचे उपवन संयुक्त पर्वत सुमेरु अचल महा अचल सुमेर आदिक क्रीडा के स्थान है ॥ शी
तल अरु उष्ण जो दिव्य दीपक तेल वाती विना कहे है ॥ जो चंद्रमा अरु सूर्य है ॥ जगत रू
प नगर कों प्रकाशते है ॥ अधः अरु ऊर्ध्व कों प्रकाशते फिरते है सूर्य की यों किरण ॥ ग
का जो चमत्कार है ॥ सो मानों मोती यों के तरंग पडे फुरते है ॥ अरु इंद्र रमणीय है ॥ ग
ङ्गा की रस का सम हृदीर्घ पाली आदिक जो सप्त समुद्र है ॥ सो वावलीयां है ॥ जीव
रूपी किरण देव राज कर्ते है ते अरु ले ते अधः ऊर्ध्व कों जाते है ॥ पुन कर्मों करि कै उ
र्ध्व लोक स्वर्ग कों जाते है ॥ पापों करि अधः कों चले जाते है ॥ अरु जगत विषे संकल्प क
रि कै जो क्रीडा के निमित्त सने चिवर गण रचे है ॥ सो देह होइ है ॥ को ऊ देवता रूप होइ करि ऊर्ध्व
स्वर्ग विषे रहिते है ॥ को ऊ नर नागादिक होइ करि अधः लोक रहिते है ॥ स्वर्ग ते अधः
मध्य लोक कहा है ॥ अरु रात्तस नागादिक पाताल विषे रहिते है ॥ वायु रूप यंत्र कों स
वाहु करि कै समस्त यंत्र चलता फिरता है ॥ असत रूप तिस विषे लकडीयां है ॥ रक्त मांस
करि कै लेपन कीया है ॥ कोऊ दीर्घ काल करि कै नष्ट होते है ॥ कोई शीघ्र ही नष्ट हो जा
ते है ॥ सीस ऊपर केश है ॥ सो ढक्कन वस्त्र है ॥ कर्ण नासिका नेत्र जिह्वा अरु सूत्र पुरीत के स्था
न लिंग इंद्री गुदा ए हूं नव द्वार है ॥ तिन मों निरंतर पवन चलता है ॥ शीतल उष्ण रूप
प्राण अपान तिन का नाम है ॥ नासिकादिक स्थान है ॥ सो तुम के झरोखे है ॥ भुजा रूप
गली यां है ॥ पंच इंद्रिय रूप दीपक है ॥ हे महा बुद्धिवान यह सर्व संकल्प ने माया क
रि कै रचे है ॥ अहंकार रूप तिस विषे पक्षी है परम भय का स्थान एक अहंकार क
रि होता है ॥ देह रूप विवर गया है ॥ सो अहंकार रूप यक्ष में युक्त विचरते है ॥ हे अ
सत पर सत होइ करि क्रीडा कर्ते है इसके साथ ॥ जिस प्रकार भरोले विषे विलार
वैठे ॥ जैसे भस का विषे सर्प वैठे ॥ जैसे वांस के अंतर मोती होवें ॥ तैसे देह विषे अहंका
र है ॥ क्षण विषे उद्देह होइ आवता है क्षण विषे शांत होइ जाता है ॥ दीपक वत देह रूप
गृह विषे संकल्प पडा उठता है ॥ जैसे समुद्र विषे तरंग उदे होते है अरु भविष्यत
नगर जो कहा है ॥ सो सुण ॥ अपणा जो को उ स्वार्थ चितवता है ॥ जो यह कार्य इस
प्रकार करोंगा ॥ इस के दिन ऊसदेश जावोंगा जैसे चितवता है ॥ तैसे भासता

वताहै॥ तिस विषे जाइ प्राप्त होता है॥ सो प्राणी होने कों वर्तमान करता है॥ जब लग इस संकल्प पे उ
ड़ते हैं॥ तब लग अनेक दुःख होते हैं॥ अरु यह दृश्य मन अहंकार स्थूल होजाता है॥ अरु संकल्प
तें रहित रूप जो ब्रह्म है इसका नाश होता है॥ जब तें संकल्प कों नाश करेगा॥ तब कल्याण श्री
कों प्राप्त होवेगा॥ अपणा संकल्प उठक विश्राम कों दुःखदायक होता है॥ जैसे बालक कों अप
णी परछांई विषे वैताल कल्पना होती है॥ आपही भय पावता है॥ तैसे अपणा संकल्प अनंत दुः
खदायक होता है॥ सुख कों नहीं पावता है॥ संपूर्ण जगत विस्तार संकल्प करि होता है॥ आ
त्मा की सत्ता करि के वर्तता है॥ बहुरि नष्ट होजाता है॥ विचार कीये तें नहीं रहिता॥ जब मन विषे
विचार उत्पन्न होता है॥ तब नष्ट होजाता है॥ जैसे साये काल सों धूप का अभाव होजाता है॥ जै
से प्रकाश उदे रूप॥ तमस अभाव होजाता है॥ तैसे विचार करि के संकल्प आपही नष्ट होजाता
है॥ आपही क्रिया करता है॥ आपही दुःख पावता है॥ बहुरि रुदन करणे लागता है॥ जैसे बांदर
का छुकीयें जी किलीकों हलावता है॥ अरु उस विषे हस्त कों डारि करि काढणे लागता है॥ तब
हस्त फस पड़ता है॥ तातें दुःख पावता है॥ निकास नहीं सकता॥ तैसे अपणा संकल्प आपकों दुः
खदायक होता है॥ संकल्प करि कल्पना आनंद दे है॥ विषयों का॥ उहल वकण आनंद जीव कों
प्राप्त होता है॥ तब ऊंची ग्रीवा सों हर्षमान होता है॥ जैसे अकस्मात तें किसी वृक्ष सों फल उछ के
मुख मों आन लागे॥ अरु उह ऊंची ग्रीवा करि के विचरे॥ तैसे अज्ञानी जीव विषयों की प्राप्त करि के
ऊंची ग्रीवा करि हर्षमान होते हैं॥ तिस विषे जीव कों विषयों की प्रीति उपजती है॥ विशेष करि
के इष्ट की प्राप्त करि वड़ती है॥ कोउ दुःख आन प्राप्त हूआ॥ तब उह प्रीति प्रसंनता उठ जाती
है॥ तिस विषे विकारी होजाता है॥ तिस विषे वड़ उप्रसंन होवैठता है॥ वस्तु गुण की प्राप्त वि
षे हर्षमान होता है॥ शुभ संकल्प करि शुभ कों देखता है॥ अशुभ संकल्प करि अशुभ कों देख
ता है॥ शुभ करि निर्मल होता है॥ अशुभ करि मलिन होजाता है॥ आगे जैसी तेरी इछा होवे
तैसे करु स्वांन्य के जो मैंने तुझ कों विचारी कहे थे॥ उनमें मध्यम अधम सो मान कर राजसता
मस है॥ एह त्रिगुणात्मिक है॥ एही सर्व का कारण जगत विषे स्थित है॥ जब तमरूप संकल्
साथ मिलता है॥ तब नीच रूप पाप चेष्टा प्रकृत कर्म करता है॥ परम कृपणता कों प्राप्त होता है
स्त होइ करि कृमि कीट जन्म कों पावता है॥ जब राजस संकल्प साथ मिलता है॥ तब लोकि
क व्यवहार करता है॥ इस्त्री पुत्रादिक के राग सों रंजित होजाता है॥ पाप कर्म नहीं करता॥ तब सं
सार विषे सूत होइ करि मनुष्य शरीर पावता है॥ जब सात्विक भाव विषे स्थित होता है॥ तब ध
र्म ज्ञान परायण होता है॥ मोक्ष पद तिस के अंतर भाव होता है॥ धर्म ज्ञान धारि करि चक्रव
र्ती राजा की न्याई स्थित होता है॥ जब तीनों भावों कों त्याग करता है॥ तब संकल्प भाव नष्ट हो
जाता है॥ परम अद्वय पद कों धर रहिता है॥ तातें संसार दृष्ट कों त्याग करि मन करि के मन कों
वशि करु॥ अंतर अरु बाह्य की दृश्य का जो अर्थ है स्थित चित विषे तिस के संसकार अंकुर
कों त्याग करु॥ जो शांत पद कों प्राप्त होवे॥ हे पुत्र इस बिना अवर उपाइ नहीं॥ जो तूं सहस्र व
र्ष तप करे दारुण रूप॥ अथवा लीलावत आप कों शिलावत अन्य वर्ष वरण करे॥ अथवा समु
द्र विषे प्रवेश करे॥ अथवा वडवा अग्नि विषे प्रवेश करे॥ गर्त विषे गिरे॥ खड्ग धारा के सन्मु
ख युद्ध करे॥ अथवा सदाशिव तन कों उपदेश करे दया करि के॥ ब्रह्मा उपदेश करे॥ वड़ी दया
करि के विष्णु उपदेश करे॥ बृहस्पति करे॥ पाताल विषे जाइ स्थित होवे॥ पृथ्वी विषे स्वर्ग वि
षे जाइ स्थित होवे॥ इत्यादिक अवर स्थानों विषे जावे॥ तो भी अवर उपाइ कोऊ नहीं कल्याण
के निमित॥ जैसा संकल्प का उपशम उपाइ है॥ जो अनादि अविनाशी अविकारी परम पा
वन सुख है॥ सो संकल्प के उपशम तें पाईता है॥ तातें यतन करि पुरुषार्थ यही है॥ जो संकल्प
कों उपशम करु॥ जेते कछु भाव पदार्थ हैं॥ सो सर्व संकल्प रूप तें तुमाया प्रपंच रूप हैं॥ जब सं

कल्प रूप तें नष्ट पड़ती है॥ तब नदी जाली ता जो पदार्थ कहा गये॥ सत असत पदार्थ सर्व संक
ल्प मात्र हैं॥ जब लग संकल्प है॥ तब लग पदार्थ सत भासते हैं॥ संकल्प निवर्त रूप असत हो
जाते हैं॥ संकल्प करि के एह जैसी जैसी चितवना करता है॥ तिस विषे तैसे ही होजाता है॥ संसार श्र
म संकल्प करि के उदे भया है॥ संकल्प के त्याग कीये तें चित अद्वैत के सन्मुख होवेगा॥ जब
तूं संकल्प कों त्याग करि विश्राम विषे विचरेगा॥ तब तूं कों कछु खेद न होवेगा॥ सर्व
जगत असत रूप है॥ माया करि के रचा है॥ सर्व असत रूप है॥ जो जगत के कार्यों विषे दुः
खित होता पदारथ है॥ आप संपूर्ण जगत कों असत कों असत जाण॥ जो है ही नहीं॥ त
व दुःखी न होवेगा॥ जब लग जगत का भाव भासता है॥ तब लग दुःख होता है॥ जब
असत जाणया॥ तब दुःखी नहीं रहिता॥ जो बुद्धिवान हैं॥ तिन कों दुःख कोऊ नहीं भास
ता॥ तातें जो नित्य प्रकाश सत्ता रूप है॥ तिसी कों प्राप्त हो॥ विकल्पों के जो समूह हैं वहुरु चे
तिन कों त्याग॥ अरु अद्वैत आत्मपद है॥ तिस सों विश्रांत सुख कों प्राप्त होइ करि स्व भुज
रूप चित वृत कों धारि विचरु॥ ॥ इति श्री स्थित प्रकरणे संसार विचारो नाम सर्गः ॥ पुत्रोवाच
हे भगवन संकल्प कैसे है॥ अरु उत्पत्ति कैसे होता है॥ अरु वृध कैसे होता है॥ अरु नाश कै
से होता है॥ दाशूरो वाच॥ हे पुत्र अनंत जो आत्म तत्व है॥ सो सत्ता सामान रूप है॥ सो चेतन्य
सत्ता जब हेतन के सन्मुख होती है॥ तब चेतन्यता का लक्षण ज्ञानना रूप कहीता है॥ सो
संकल्प का बीज रूप चितन संचितन है॥ सो इस आत्म सत्ता चमत्कार कों पाइ करि चितन भाव कों प्रा
प्त होता है॥ उही चेत्य भाव कों प्राप्त होता है॥ सो इक फुरणा फुरक करि आकाश कों चेतता है
तिस करि आकाश कों स्पर्श करता है॥ जैसे जल करि मेघ स्थूल होजाता है॥ जैसे फुरणे की
दृढ़ता करि आकाश होता है॥ अपणा स्वरूप उस कों आत्म ज्ञान सों भिन्न भासता है॥ यही भाव
ना चित विषे भावना होजाती है॥ जैसे बीज अंकुर भाव कों प्राप्त होता है॥ तैसे चितन संचितन सं
कल्प भाव कों प्राप्त होती है॥ संकल्प ही करि संकल्प उपजता है॥ अरु आप ही विस्तारः हो
वड़ता है॥ तिस करि सुखी दुःखी होता है॥ जब अवलंब रूप है॥ चित से वेदन फुरती है
दृश्य की ओर॥ तब तिस फुरणे का नाम संकल्प होता है॥ जब दृश्य की ओर फुरता है॥ अरु
स्वरूप तें भूल करि ग्रसती है॥ जब दृश्य की ओर फुरता है॥ अरु स्वरूप तें भूल करि ग्रसती है
तब संकल्प वृध होता है॥ सोई दृष्ट रूप आन जगत जाल कों रचता है॥ जैसा के तुम प्रपंच है॥ सो
संकल्प कारक संकल्प मात्र है तैसे भी संकल्प मात्र है॥ जगत भी संकल्प मात्र है॥ जैसे सम
मृग जल मात्र होता है॥ अंतर नहीं॥ तैसे जगत भी संकल्प तें अंतर नहीं॥ काकताली वत
अकस्मात तें भ्रांति करि के जगत फुर आया है॥ जैसे मृग तृष्णा का जल भ्रांति करि
के भासता है॥ जैसे आकाश विषे द्वितीय चंद्रमा भासता है॥ तैसे तुमारा उपजणा अरु
वधणा भ्रम मात्र है॥ जैसे नका चमत्कार होता है॥ तिस करि वृक्ष भासता है॥ तैसे एह
जगत मिथ्या संकल्प करि उदे हूआ तिस कों भासता है॥ हे पुत्र तेरा उपजणा भी असत
है॥ वधणा भी असत है॥ जब तें इस प्रकार जाणेगा॥ तब इस विषे आस्था लीन होजा
वेगी॥ एह पुरुष है॥ एह है॥ मैं हों॥ एह जो भाव सुख दुःख करि संजुत पदार्थ भासते हैं॥
मैं अरु मेरा॥ सो एह भावना अज्ञान करि कै अर्थ भासते हैं॥ इन विषे आस्था करि के अंतर तें
तुमारा रहिता है॥ अरु तूं आदिक दृश्य सर्व असत रूप है॥ इन की भावना न करेंगा॥ तब तूं
पृथ्वी विषे कल्याण रूप होइ करि विचरेंगा॥ तातें संसार कों प्राप्त न होवेगा॥ जब अभा
व की भावना करी॥ अरु तें आदि लेकरि सर्व दृश्य भावना दिढ़ सो गई॥ तब इस का अभा
व होजावेगा॥ हे पुत्र फूल कों तोड़ करि मर्दन करणे विषे भी कछु यतन न होता है॥ पर अभा
प करि सिद्ध हो अभाव मात्र है॥ संकल्प का त्यागणा तिस विषे कछु यतन नहीं॥ फूल के
ग्रहिण विषे भी हस्त का यतन है॥ स्वाद होता है॥ काहे तें जो कछु भाव रूप है॥ जो है ही न

ही तिसके त्यागणे विषे कायतन है ॥ तातें कछु नही ॥ इस प्रपंच द्रष्टव्य वर्ग का जो कोऊ होणा
है ॥ तिसका विपर्यय भावकरणा जो न मैं हों न जगत है ॥ जिस पुरुष इस दृश्य जगत का सद्भा
व संकल्पना शकी या है ॥ सो शांत रूप होता है ॥ यह संकल्प तो एक निमेष विषे लीला सें ही
नष्ट होवी जाता है ॥ भावमात्र जो आत्म सत्ता है ॥ तिस विषे जब प्रयत्न आप उपशम कीया ॥ तब सब सं
कल्प नाश होता है ॥ अपणे मन रूप संकल्प करिकै अपणे मन सें कल्प कों छेद जो आत्म स्वरू
प विषे स्थित होवें ॥ इस विषे कायतन है ॥ संकल्प के उपशम रूप जगत उपशम होता है ॥ अ
रु सर्व दुःख संसार के मूल तें नाश हो जाते हैं ॥ संकल्प मन जीव चित्त बुद्धि वासना अहंका
रादिक ते नाम हैं ॥ सो भेद कहिते मात्र हैं ॥ इन के अर्थ स्वरूप विषे भेद कछु नही जैसा कछु
दृश्य प्रपंच जानता है ॥ सो सर्व संकल्प मात्र है संकल्प के अभाव रूप कछु नही रहिता ॥ ति
स कारण तें संकल्प कों त्रिट सों काटे ॥ आकाश वत जगत शून्य रूप है ॥ जैसे आकाश वि-
षे नीलता भ्रांत करिकै भासती है ॥ तैसे यह जगत असत विकल्प करि उठ्या है ॥ संकल्प
अरु जगत दोनो असत है ॥ तातें कछु नही सर्व असत रूप है ॥ असत रूप संकल्प ते सिद्ध भी
या है ॥ इसकी भावना आस्था करणी जोग्य है ॥ जब ऐसे जाणया ॥ तब इष्ट रूप किसकों जाणे
अरु वासना किसकी करे ॥ अरु अनिष्ट किसकों जाणे ॥ सर्व वासना नष्ट हो जाती है ॥ वासना
के नष्ट हुए सिद्धता की प्राप्त होती है ॥ हे पुत्र जो कछु यह जगत असत होता ॥ तो विचार कीये तें
भी दृष्ट आवता ॥ सो तो विचार कीये तें इसका शेष कछु नही रहिता ॥ जैसे प्रकाश करिकै
देखिये तें तम दृष्ट नही आवता ॥ तैसे विचार करि देखिये तें जगत सत नही भासता ॥ तातें विचा
र तें सिद्ध है ॥ सो असत रूप है ॥ बुद्धि की चपलता करिकै भासता है ॥ जिस पुरुष कों जगत की
भावना उठ गयी है ॥ तिसकों जगत के दुःख स्पर्श नही करते ॥ निरोध करिकै जो असत रूप
जाण्या तिस विषे बहुड आस्था नही उदे होती जब आस्था गयी ॥ तब हर्ष शोक भाव अभा
व बुद्धि भी नही उदे होती ॥ संसार सब दुःख सर्व मिथ्या मन के फुरणे करि रचे हैं ॥ मनो
राज के नगर वत स्थित भये हैं ॥ भूत भविष्य वर्तमान काल जगत मन ने वासना करि कु
आवरण विषे सम आकार धारता है ॥ अरु हिणा करीये ॥ तो शुद्ध हिणा की यात नही जाता ॥
जैसे शुक्ल हीर कों गुहिणा करीये ॥ तो पकड़ा नही जाती ॥ तैसे मन है ॥ यद्यपि जगत अ
गार वडे आकार से युक्त भासता है ॥ तो भी कछु वस्तु नही ॥ वासना भंगुर आकार है ॥ जैसे मेघ
सों रामजी का आकार प्रगट होर करि तत्काल विषे मिट जाता है ॥ तैसे जगत तत्काल भंगुर आ
कार है ॥ वासना करिकै संसार भासता है ॥ वासना के त्याग से शांत हो जाता है ॥ जब तक
कों वासना फुरे ॥ तब तिसी काल विपर्यय ही उपाय करिकै तिसकों त्यागे ॥ एक दृश्य
प्रपंच कछु है नही ॥ असत भ्रांत रूप है ॥ ऐसा भावना करिके वासना नष्ट हो जावेगी ॥ इस
विषे संदेह कछु नही जो यह संकल्प रूप जगत सत होवे ॥ तो इसका त्याग चिकित्सा दुः
ख करि होवे ॥ यह तो असत भ्रांत प्रपंच है ॥ तिसकी अल्प यत्न ही चिकित्सा करते रु
को यतन कछु नाही होवणा ॥ तो हावे ही नही ॥ तिसकी चिकित्सा विषे कायतन है ॥ जो इह सं
सार मल सत होता ॥ तो इसके नाश निमित्त कोऊ न प्रवर्तता ॥ जैसे कोले कों स्वेत करणे
के अर्थ कोऊ नही प्रवर्तता ॥ तातें सर्व जगत असत रूप है विचार कीये तें कछु न
ही पाइता ॥ तातें असत अहंकार दृश्य कों त्याग करि सत आत्मा कों अंगीकार करु ॥ जै
से धाने सों तहार देते हैं ॥ अरु रत्नों कों अंगीकार करते हैं ॥ तैसे यही यत्न करु ॥ जो दृश्य
वर्ग कों त्याग करि आत्म पद विषे प्राप्त होवे ॥ यह परम पुरुषार्थ है ॥ अवर कछु या किस नि
मित्त करता है ॥ मल रूप संसार का नाश करु ॥ जैसे तंदुल सों तुष दूर करीते हैं ॥ तब वा
स्तव आकार तें दल भासते हैं ॥ तिसी प्रकार यत्न करिकै जाणा जो संसार असत कृतम

रूप है ॥ तिसके नाश विषे कायतन है ॥ जैसे तांबा रसों कालमा युक्त करिकै दूर करीते हैं ॥ तब नि
र्मल भासता है ॥ तैसे यत्न करि दृश्य मल दूर होती है ॥ तब शुद्ध स्वरूप प्राप्त होता है ॥ तिसका
शरणा तें उपशम वासना है ॥ हे पुत्र यह संसार संकल्प विकल्प करि उत्पत्ति भया है ॥ विचार करि विभ्र
म पायत न सो निवर्त हो जाता है ॥ अरु तें देखउ ह कवण है ॥ जो सदा स्थिर रहिता है ॥ सर्व पदा
र्थ असत रूप हैं ॥ देखते देखते नष्ट हो जाते हैं ॥ अविचार करिकै जगत भासता है ॥ विचार की
ये तें नष्ट हो जाता है ॥ जैसे दीपक के प्रकाश करि अंधकार का अभाव हो जाता है ॥ जैसे दुष्ट
दृष्ट करि विद्या का आ विषे द्वितीय चंद्रमा भासता है ॥ सम्यक् दृष्ट करि द्वितीय का अभाव हो जा
ता है ॥ तैसे विचार करि जगत भ्रम नष्ट होता है ॥ न यह जगत तेरा है ॥ न तूं इस जगत का है
यह भ्रांत करि भासता है ॥ भ्रांत कों त्याग करि देख ॥ यह असत रूप है ॥ अपणा एक तत्त्व आत्मा
व इया ईश्वर्य प्रकाश विलास था ॥ यह तेरे रिदै मत होवे ॥ यह मिथ्या भ्रम है ॥ ऐसे तत्त्व उ
दराया ॥ सो आपकों भी अरु जगत कों भी असत जाणा ॥ आत्मतत्त्व तें इतर कछु नही ॥ ने
व ऐसे निश्चय करेगा ॥ तब जगत भावना नष्ट हो जावी ॥ सर्व आत्म तत्त्व प्रकाशेगा ॥ इति
श्री हासूरोपायनेम कल्पचिकित्सा नाम सर्गः ॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रघुकुल रूपी आका
श के चंद्रमा रामजी जब इस प्रकार पुत्र कों उपदेश कीया ॥ तब मैं इसके पिछे आकाश
विषे स्थित था ॥ सो कदे वह तिके आगे आ प्रभाग जाइ स्थित भया ॥ जहां अरु वे दे पेड
छाल ताप पत्र फल फूलों जैसे मेघ वर्षा तें रहित तत्काली करि पर्वत के शिखर ग्रह विषे जा
इ स्थित भया ॥ आगे के साथ दास सूर था ॥ जो सूर मा अज्ञान रूप शत्रु का नाश करता ॥ अरु प
रम करि युक्त अग्नि वत प्रकाशमान ॥ अरु तप करिके क्रश मात्र हो गया है ॥ मानो स्वर्ण का चम
त्कार है ॥ तिस दास पुरुष कों अपणे अग्रभाग विषे स्थित देख्या ॥ तो वसिष्ठ मुनीश्वर आया है ॥ ऐ
से जाणा करि उठ हि टोटा भया ॥ अर्घ पाद करि मेरा पूजन कीया ॥ बहुड हम दोनो पत्र ऊपर बै
ठ गाये बहुड पूजन कीया ॥ जब पूजन करि रहा ॥ तब मैं अरु दास परकथा का प्रसंग चरचा कर
ते लागे ॥ तिस चरचा के वचनों करि तिसके पुत्र कों हम जगावते भये ॥ संसार स्वप्न तें पार
करणे कों बहुड मैं इहु की ओर देखणे लागा ॥ कैसा इहु तरु है ॥ मानो कोट वन ते वण्या है ॥ अरु दा
सूर की इच्छा द्वारा सर्व सुगंधि तिसके अग्र ये रहित है ॥ अपणे स्थान बनाये हैं ॥ तहां को
जो पुष्प है ॥ सो मानो हसते हैं ॥ लता जो उनके ऊपर वलत हैं ॥ अरु पवन सा यह लते हैं ॥ सो मानो
चमर पड़े होते हैं ॥ अरु ऊपर जो मेघ धूल स्थित होते हैं ॥ सो मानो पाई काल का आकाश है ॥ अ
रु तोसके कण के जो ऊपर आन स्थित होते हैं ॥ सो मानो मोतीयों करि जड़े हैं ॥ अरु अनेक पुष्प
करि शोभमानों आदि के निमित्त पुष्प एक चक्र करि स्थित रूप है ॥ अरु सुंदर लता पुष्पों संयुक्त
लागीयां हैं ॥ मानो वा जाके संग भूषण पहे रे हैं पेड़ की यां हैं ॥ अरु वृक्षों यां जरां दासों सावेष्ट
त हैं ॥ मानो वडीयां जटां संयुक्त मुनीश्वर हैं ॥ कोऊ मंजरी लता करि ऐसे विराजे ॥ जैसे पताल
करिके उन सब का नगारा विराजता है ॥ अरु कली ला करिके मृग आन करि स्वतन करते हैं ॥ प
क्षी शब्द करते हैं ॥ अपणे अपणे स्थान बणाइ करि स्थित होते हैं ॥ निर्भय होइ करि विचरते वैठ
ते हैं ॥ फूल फल संयुक्त वृक्ष की वडी छाया है ॥ तिसके निकट जो कोऊ जाता है ॥ सो श्रम कों त्या
गकरि विश्राम वान होता है ॥ वनदेवीयां आन करि क्रीडा करती हैं ॥ कोकला शब्द करती हैं ॥ स्वग
पक्षी पत्रों पर आन शोभन करते हैं ॥ फल पृथ्वी आन नीचे टटे हैं ॥ हे रामजी बड़ नक हिरण करिका
है ॥ तिसके पात ऊपर मृग शोभन करते हैं ॥ अरु पात पात ऊपर पक्षी स्थित हैं ॥ फूल अरु फलों क
रि पूर्ण है ॥ छिद्र दृष्ट कोऊ नही आवता ॥ ऐसे गुणों संयुक्त वृक्ष मैं देखत भया तिसका जो पुत्र
था ॥ तिसकों हम अवर अवर कथा करिकै विज्ञान दृष्ट सोर मणीक दृष्टांत अरु युक्तों साथ ज
गावते भये ॥ नाना प्रकार की विचित्र कथा करि तिस बालक कों जगाया ॥ रात्र वृत्तीत भये ॥ सि

ऊंलकथाविषैलागेहूपयकमरूखवतहमकोंराबुनीतहुई॥ तबप्रातःकालभया॥ सूर्यकी
याकिरणानिकसनेपरआई॥ तबमैंउदरवादाभया॥ दाम्रूरअपणोपुत्रसंयुक्तमेरेसंगचला॥ ज
लोलगाकदंबकाआकाशवशीतलथा॥ तहांलगआयेतिसकेअनंतरवहुतकरिमैं॥ तिनकोंह
हिरावतभयाअरुमैंगंगाजीकोंवलास्नानकेनिमितमैंआकाशतेंउतरयास्नानकरिकैं
वडइमैंअसअपणेकेमंडलविषेजाइस्थितभया॥ हेरघुनंदनयहदाम्रूरकाआख्यानमैंतुम
कोंकहाहै॥ यहजगतप्रतिविंवआभाकेसदृश्यहैपतलभासताहै॥ तौभीअसतरूपहै॥ जगतके
निरूपणअर्थयहआख्यानश्रवणकीयाहै॥ जोएहजगतअसतरूपहैसोनहीवस्तुबुद्धिक
रितककोंराममतहोवे॥ इसकथाकासिद्धांतविर्देविषेधारकरिविचरेगा॥ तबसंसारमल
तउककोंस्पर्शनकरेगी॥ इतिश्रीस्थितप्रकरणेदाशूरोपाख्यानेनामसर्गः॥ वसिष्ठोवाच॥ हे
रामजीएहप्रपंचहैकछुनही॥ ऐसेनिरणासोजाणकरिसर्वपदार्थोंतेंनीरागहोवो॥ जोवस्तु
होनहोवे॥ तिसकीआस्थाकरणीक्याहै॥ परअप्रपंचजोदृष्टआवताहै॥ सोइसकेभासणेविषे
तुमाराक्याजाताहै॥ तुमनिर्विचनहोइकरिआत्मतत्वविषेस्थितहोवो॥ तुमकोंक्याविघ्नहो
ताहै॥ जोऐसेजाणेकिजगतहैभीअरुनहीभी॥ इसनिश्चयकरिभीतुमअसंगहोतुमके
सेजगतहोतेहो॥ इसवलअचलेदृष्टआवणेविषेतुमकोंक्याहै॥ हेरामजीएहजगतनतत्रान्ति
है॥ नतास्तिहै॥ केवलस्वात्मजोचितसंवेदनमनरूपहै॥ तिसकेफुरणेमात्रहै॥ फुरणेकरि
कैइसप्रकारभासताहै॥ वस्तुतेंकछुहैनही॥ एहजगतकिसीकर्तानेकीयानही॥ नकिसी
अकर्ताकीयाहै॥ केवलआभासरूपहै॥ आभासविषेकर्ताअकर्तापदकोंप्रापभयाहै॥ अ
कृतकरूपहै॥ किसीकीयातोनही॥ इससाथतुककोंसंवंधमतहोवे॥ एहीभावनाविर्दे
विषेधारणोहकछुनही॥ काहेतेंजोकिसीकर्तेनेकरिहुआनही॥ सर्वइंद्रियांतेंअतीतआ
त्माहै॥ जडकोन्याईअकर्तारूपहै॥ तिसकोंकर्ताकैसेकहीये॥ कर्ताकहिणानहीवणता॥ अ
कस्मातनतेएहजगतजालफुरआयेहै॥ सोआभासरूपहै॥ जोकाकतालीवतकुछउपज
आया॥ तिसविषेअसकृतनहीहोवणा॥ एहअसतनभोनरूपहै॥ इसविषेआस्थामृदकालके
करतेहै॥ बुद्धिवाननहीकरतें॥ स्वरूपतेंतोंएहजगतकछुउपजयानही॥ अरुनाशभीन
होहोता॥ निरंतरदृष्टमोंपडिआवताहै॥ वारंवारभावनाहोतीहै॥ अज्ञानकरिकै॥ तोभी
जगतकछुहैनहीं॥ असतरूपहै॥ पतलनिरंतरनष्टहोजाताहै॥ अज्ञानकरिकैहोता
जोअवस्थाआनकहोजातेहैं॥ तुमसर्वइंद्रियांतेअतीतजोआत्म॥ तितअकर्तारूपहै॥ तिस
विषेस्थितहोइकविगिअनन्वरहोवो॥ कार्यकोंकर्तेंभीखेदकोनप्राप्तहोवो॥ वास्तवतेंजग
तकछुवण्यानही॥ आभासतातिविषेवण्याभासताहै॥ तुमआभासमात्रविषेनिस्पृह
होवो॥ जैसेहुआहै॥ तैसेहैं॥ भावअभावरूपदिशामयहै॥ आदर्शरूप॥ अरुआभासविषे
स्थितहोवेरूपस्थितमईहैं॥ सोजैसेहूपहैं॥ तैसेहैं॥ विपर्यैनहीहोती॥ हेरामजीइसप्रपंचमैंवि
धेरसकाउपराजिनकालहै॥ सोअनंतहै॥ इसपदार्थोंकाकछुअंतनहीं॥ अरुजोआत्मवि
चारकरिकेदेखो॥ तौसवभवनहैं॥ हैनहीं॥ जोवस्तुतेंऐसेहोवे॥ तिसविषेआस्थाकरिकै
यत्नकरणाव्यर्थहै॥ जगतकेपदार्थनाशरूपहैं॥ इनविषेआस्थानहीवणतीकाहेतेंजो
तेंअसतनहीसततहै॥ अरुजगतअसतहै॥ अन्योंअन्यविलक्षणस्वभावहै॥ जडअरुचेतन
नकासंयोगकछुनही॥ जोजगतकेपदार्थस्थिरमानीयेंतौनहीरहितें॥ इसकारणतेंआस्था
सोभीनहीपावतै॥ जैसेजलकीतृणाकाबांवाहोताहै॥ सोअस्थिरहै॥ तिसकेआश्रयकोउ
पारहुआचाहै॥ तोदुःखपावताहै॥ तैसेजगतकेपदार्थोंकाआश्रयकीयेतेंदुःखीहोताहै॥
जगतकीआस्थाकरणीहीवंधनहै॥ जगतनाशरूपहै॥ तुमस्थिररूपहो॥ तातेंआस्थाभी
नहीसंभवती॥ संवंधकैसेकहीये॥ काहेतेंजलकीतृणाकाअरुपर्वतकाभीसंवंधभयाहै॥

जोतमसतजगतकोंअसतजाणो॥ अरुआपकोंसतजाणो॥ तौभीजगतकेपदार्थोंकीवांछा
नहीवणती॥ काहेतेंजोसतकोंअसतकीवांछानहीसंभवती॥ अरुजोआपसंयुक्तजगत
कोंअसतजाणो॥ तोभीवांछानहीसंभवती॥ असतकोंसतभावनाकरणीक्याहै॥ अरुजोज
गतकोंसतजाणोतेहोआपसंयुक्त॥ तौभीवांछानहीसंभवती॥ काहेतेंजोएकअद्वैतआत्मा
है॥ तिसकेसमीपद्वैतवस्तुकछुहैनही॥ तुमतोएकअद्वैतआत्माहो॥ वांछाकिसकीकरते
हो॥ तातेंतुमकोंकिसीपदार्थकीइछाअरुअनिछनहीसंभवती॥ हेयउपादेयतेंरहितके
वलस्वस्थरूपहोइकैविश्रपणेआपविषेस्थितहोवो॥ कैसाआत्मतत्वहै॥ जोसर्वकाकर्ताहै॥ अ
रुअकर्ताहै॥ कदाचितकछुकीयानहीं॥ उदासीनकीन्याईस्थितहै॥ जैसेदीपकसर्वपदार्थों
कोंप्रकाशकर्ताहै॥ परकिसीइछाद्वाराकिसीकेअर्थसिद्धकरणेनिमित्तनहीप्रवर्तता॥
स्वभावकरहीप्रकाशरूपहै॥ तैसेआत्मतत्वहै॥ सोसर्वकाकर्ताहै॥ तिसकाकर्ताकोउनही॥ जै
सेसूर्यभगवानसर्वकीक्रियासिद्धकर्ताहै॥ अरुआपकिसीक्रियाकरिलिप्तनहीहोता॥ काहे
तेंजोआपदीपप्रकाशस्वरूपहै॥ चलताहैपरकदाचितचलायमाननहीभया॥ जैसेसूर्यप्रति
विंवतचलताभासताहै॥ सोकवहूचलयानही॥ अर्थजहांप्रतिविंवकाचलणासूर्यविषे
पेनही॥ तैसेतुमारास्वरूपआत्मासदाअकर्ताअचलहै॥ तिसीविषेस्थितहोवो॥ जेताकछुज
गतभासताहै॥ इसविषेविचरो॥ परंतभावनाकरिकैइसविषेवंधायमाननहीहोवणा॥ एह
असतरूपहै॥ हेरामजीजद्यपिप्रतलआदिकप्रमादकरिकैजगतसतभासताहै॥ तोभीहै
नहीं॥ अरुउचितकरिकैआपमोविचारो॥ अरुआपविषेस्थितहोवे॥ तबजगतनभासेगा॥ जो
प्रतलवडेतेजवलवीर्यकरिसंपनभासताथा॥ अरुअंतरधानहोगया॥ तोसतकैसेकहीं
ये॥ इसविचारकरिभीजगतकीभावनातुमकोंनहीवणती॥ जैसेवडुपरचारूढहैपतेंसर्वस्था
नभ्रमतेदृष्टआवतेहैं॥ जैसेस्वप्नरारभ्रमकरिकैभासताहै॥ तैसेएहजगतभ्रमकरिकै
भासताहै॥ किसीकारणतेंकार्यहोइकरिनहीउपजया॥ आभासमात्रहै॥ अकस्मातमनके
फुरणेकरिभासआयाहै॥ जैसेकोउजीवअस्मानतेंआइनिकसताहै॥ सोमिथ्याभ्रमकाभागी
नहीहोता॥ विचारकीयेविनावुद्धिवाननिसविषेरुचिनहीवांधते॥ इसतेदिर्दताकापात्र
नहीहोता॥ तैसेभ्रमकरिकैभास्याजोजगतहै॥ सोआस्थाकरिकैभावनावांधणेयोगन
ही॥ जैसेचेटमाउसअकसूर्यतीनलसगत्रिलोकीनहीइनकीभावनाकरणीअयोगहै॥
तैसेजगतकीसतभावनाकरणीअयोगहै॥ एहसंकल्परूपस्वप्नगारहितीपवेइसाभावते
असतहै॥ भ्रमकरिकैभासताहै॥ हेरामजीअंतरतेंभावपदार्थोंकीआस्थालक्ष्मीकोंत्याग
करो॥ अरुवाह्यलीलाकरतेविचरो॥ अंतरतेंअकर्तापदविषेस्थितहोइकरिकेतत्वभाव
विषेविचरो॥ सर्वभावपदार्थोंविषेस्थितसर्वतेंअतीतरहो॥ आत्मतत्वसर्वपदार्थोंविषेस
र्वदाकालस्थितहै॥ अरुसर्वतेंअतीतहै॥ तिसीकीसत्ताकरिकैजगतनेतविषेस्थितहै॥ जैसे
दीपककेप्रकाशकरिसर्वपदार्थप्रकाशमानहोतेहैं॥ परदीपककोंइछाकछुनही॥ इछा
तेरहितप्रकाशताहै॥ सर्वकीक्रियातिसकरिसिद्धहोतीहै॥ परजैसेइछातेंरहितसूर्यआ
काशविषेउदेहोताहै॥ तिसकेप्रकाशकरिजगतकाविवहारप्रगटहोताहै॥ तैसेअनि
छतदेवआत्माकीप्रकाशसत्ताकरिसर्वजगतप्रकाशताहै॥ जैसेइछातेंरहितरतनका
प्रकाशस्थितहोताहै॥ सोप्रकाशस्थानविषेप्रसरजाताहै॥ तैसेआत्मदेवसत्तामात्रकरि
कैजगतगणप्रवर्ततेहैं॥ इसकारणतेंआत्मासर्वकाकर्ताहै॥ स्वरूपतेंआपअकर्ताहै॥ इछाते
रहितहै॥ तातेंअकर्ताहै॥ तिसकीसत्ताकरिकैजगतगणप्रवर्ततेहैं॥ तातेंकर्ताहै॥ सर्वइंद्रियां
केविषयोंतेंअतीतहै॥ इसकारणतेंअकर्ताहै॥ अभोगताहै॥ सर्वइंद्रियोंकेअंतरगतस्थित
है॥ इसकारणतेंकर्ताभोगताभीउहीहै॥ इसप्रकारदोनोंप्रकारआत्माविषेवणतेहैं॥ क
र्ताभोगताभीसंभवताहै॥ अरुअकर्ताअभोगताभीसंभवहोताहै॥ जिसकरिकैतेंअपणाक

स्थित॰
४३

43

त्याग जाणे॥ तिसी विषे स्थित करु॥ हे रामजी इस प्रकार निश्चय करो॥ जो सर्व मैं हों॥ अकर्ता अ
भोगता हों॥ असी भावना दृढ करि कै जगत के सब्द रूप जितने कार्य कों कर्ते भी कछु बंधन न हो
गा॥ सर्व आत्मा कर्ता भोगता तें रहित है॥ इस प्रकार चित्त में चित्त विषे दृढ निश्चय कीये तें भी
भोगों की वासना नाही रस होइ जावेगी॥ तब चित्त भोगों की ओर न आवेगा॥ जिस कों यह निश्चय
होता है॥ जो मै कदाचित भी कछु कीया नही॥ सदा अकर्ता रूप हों सो भोगों के संबंधों की वास
ना किस निमित्त करेगा॥ अरु त्याग किस का करेगा॥ ताते तुम यही निश्चय धारो॥ जो मै नि
त्य अकर्ता रूप हों॥ तब यह तौ बुद्धि दृढ होवेगी॥ तब परम अमृत नामनी जो सामान सत्ता है॥ सो
ईश्वर पद होगी॥ अथवा यह निश्चय धारो॥ जो सर्व का कर्ता मै ही हों॥ सेम हा कर्ता हों॥ सर्व के अंतर
स्थित होइ करि सर्व कार्य मैं कर्ता हों॥ हे रामजी यह दोनों निश्चयत्व कों कहे है॥ जिस विषे तेरी रु
ची होवे॥ तिसी विषे स्थित हो॥ जहां यह निश्चय होता है॥ जो मैं सर्व का कर्ता हों॥ सर्व जगत
भ्रम भी मै ही हों॥ तब इन पदार्थों के भाव अभाव विषे राग द्वेष नही होवेगा॥ जो सर्व आप ही
भया॥ तो राग द्वेष किस का करेगा॥ उस कों यह निश्चय होता है॥ एक शरीर मेरा पडा दग्ध हो
ता है॥ एक शरीर सुगंधादिकों संयुक्त लौ झाकता है॥ तिस कों खेद अरु उल्लास किस का
होवे॥ ताते तुम कों जगत के उदय अरु अस्त विषे सुख दुःख सम होवे॥ सर्व का कर्ता मैं हों॥ ते
खेद उल्लास भी मैं कर्ता हों॥ आत्मा अकर्ता कों एकता है॥ तब खेद उल्लास सर्व आ
प ही होता है॥ सत्ता सामान शेष रहती है॥ सो इस तास वे भाव पदार्थों विषे अनुस्यूत
होइ स्थित है॥ तिसी विषे जब चित्त स्थित होता है॥ तब बहुरि दुःख कों नही प्राप्त होता है
हे रामजी सर्व का कर्ता आप कों जाणे जो कर्ता पुरुष मैं हों॥ अथवा आप कों अकर्ता जाणे॥
जो मैं कछु नही कर्ता॥ अथवा उभे निश्चय त्याग करि निर्विकल्प मन होइ रहो॥ जो कछु शे
ष है॥ सो ईश्वर रूप परम पद जानते है॥ यह मैं है॥ यह मेरा है॥ इस कुत्सित भावना दृष्ट को
त्याग करो॥ इस अभिमान विषे स्थित न होवणा॥ यह देह विषे अहंकार जो है॥ सो के
सा है॥ काल सर्प नाम जो नर्क है॥ तिस की प्राप्ति का कारण है॥ नर्कों का जाल है॥ शास्त्रों की बा
धा होती है॥ जिन पुरुषों ने लिनका स्थान देह अभिमान है॥ अर्थात हृदे में दुःख दाइक
है॥ ताते सर्व यत्न करि कै इस का त्याग करो॥ यह सर्व के नाश विषे ही स्थित है॥ भावी क
ल्याण जो श्रेष्ठ पुरुष है॥ सो इस साथ स्पर्श नही कर्ते जैसे चंडाली होवे॥ अरु तिस की गोद
विषे स्वान का मास पडा होवे॥ तिस साथ श्रेष्ठ पुरुष स्पर्श नही कर्ते तैसे देह अभिमान सा
थ स्पर्श नही करणा॥ यह सत्ता नीवल अहंकार रूप पकने ज्ञों कों पटल आया है॥ तिस क
रि आत्मा नही भासता॥ तब विचार विवेक करि इस पटल को हर कर देता तब आत्म सत्ता का
प्रकाश उदे होवेगा॥ जैसे मेघ बादलों के हटे हूए सूर्य का प्रकाश आवता है॥ तैसे अहंकार
के अभाव तें आत्मा प्रकाशता है॥ जब तें इन विषे कोऊ निश्चय धारेगा॥ तब सर्व दुःखों
ते रहित शांत पद को प्राप्त होवेगा॥ यह निरणे सर्व तें उत्तम है॥ इस निश्चय विषे उत्तम पु
रुष महा स्थित रहते है॥ ताते तुम भी तिस अथवा तिघ दोनो विषे कोऊ निश्चय धारो
॥ इति श्री मोक्षोपाये कर्तृत्व विचारो नाम सर्गः॥ राम उवाच॥ हे ब्राह्मण जेते कछु तुम मो सें दूर
ब वन कहे है सो सत है॥ अकर्ता रूप आत्मा भी कर्ता है॥ अभोगता भी सर्व का भोगता है॥
भूतों को धारणे हारा है॥ सर्व का आश्रय भूत है॥ अरु सर्व गत व्यापक है॥ सो चिन्मात्र निर्म
ल पद है॥ अनुभव रूप देव है॥ सर्व भूतों के अंतर स्थित है॥ हे प्रभो ऐसा जो द्रष्टा तत्त्व है॥ सो
मेरे हृदे विषे विस्तार सह आत्मा के वचनों कर प्रकाश होता है॥ कैसे तुमारे वचन है॥ शीत
ल शांत रूप है तम कों मिटावते है॥ जैसे वर्षा करि के पृथवी अरु पर्वत शीतल होइ जाते है॥ तैसे
मेरा हृदे शीतल भया है॥ आत्मा उदासीन की न्याइ अनिछत स्थित है॥ कर्तृत्व भोक्तृत्व तें रहित है॥ अ
रु सर्व जगत लोकों कों प्रकाशता है॥ सर्व के या निमित्त करि सिद्ध होती है॥ इस कारण तें भोगता भी

रही है॥ अरु कर्ता भी उही है॥ यह कछु संशय मुझ कों है॥ सो हृदे विषे विस्तार कों प्राप्त भया है
तिस कों आपणी वाणी करि कै छेदो॥ जैसे चंद्रमा की या किरण तम कों नाश कर्ती है॥ जैसे
हर करो॥ यह सत्त है॥ यह असत्त है॥ यह मैं हों॥ उह सोर है एक है॥ इत्यादिक क
ल्पना रूप मेल अनेक जन्मों के विस्तार तें रूप विषे करि हृदे ते स्थित भई है॥ तिस तुं विषम लेदके
भया है॥ वसिष्ठ उवाच॥ हे रामजी इस तेरे प्रश्न का उत्तर मैं सिद्धांत काल विषे कहोंगा॥ अथवा
तें आप जाण लेवेगा॥ सो तिस पार जो यह शास्त्र है॥ तिस का सिद्धांत जब भली प्रकार तेरे हृदे
विषे प्राप्त होवेगा॥ तब तें इस प्रश्न के उत्तर का पात्र होवेगा॥ अन्यथा योग्य नाही होवेगा॥ अन्यथा ति
स अवस्था विना नही होता॥ हे रामजी सुंदर स्त्रीयां जो है॥ अरु तिन की सुंदर वाणी सो भी त
होता है॥ कामी जीव जोवन वाले पुरुष है॥ तेई तिस का अधिकारी होता है॥ तैसे ते सिद्धांत अ
वस्था विषे मेरे वचनों का अधिकारी होवेगा॥ जैसे राग मय कथा बालक के आगे कहनी
व्यर्थ होती है॥ जैसे बोध समय विना उदार कथा कहनी व्यर्थ होती है॥ तैसे समतें काल विषय
लों संयुक्त बुद्धि सो भासता है॥ अरु वसंत ऋतु विषे जैसे पुष्पों करि शोभते है॥ तैसे ही अव
स्था युक्त की होती है॥ तैसा उपदेश कहणा शोभता है॥ किसी समे कैसा किसी समे कैसा
शोभता है॥ अरु उपदेश भी तब दृढ लागता है॥ जब बुद्धि शुद्धि होती है॥ मलीन बुद्धि विषे उत्त
म नहीं लागता॥ जैसे निर्मल वस्त्र ऊपर केसर का रंग शीघ्र चढ जाता है॥ मलीन वस्त्र ऊपर नही च
ढता॥ तैसे पापरूप जो आत्मा है॥ तिस का विज्ञान उपदेश सिद्धांत अवस्था वाले कों लागता
है॥ जिस कों बोध सत्ता प्राप्त भया है॥ अरु तेरे प्रश्न का उत्तर तो मैं उल्लास मात्र करि कै कहा भी है
विस्तार करि कै नही कहा॥ अरु तें नही माना॥ तो भी मत दुःख है॥ जब तें आपक ही आप कों वि
मुक्त होवेगा॥ तब आप ही इस प्रश्न के उत्तर कों जाण लेवेगा॥ इस विषे संदेह कछु नही जब सि
द्धांत काल विषे बोध प्राप्त होइ कर स्थित होवेगा॥ तब मैं भी इस प्रश्न का उत्तर विस्तार करि कै
कहोंगा॥ जब आप करि अपणा आप निर्मल करेगा॥ तब अपणा आप कों जाण लेवेगा॥ हे रा
मजी कर्ता अरु वासना का विचार जो मैं ने तुम कों कहा है॥ तिस कों विचार करि कै अरु वासना कों
त्याग करि कै तत्त्ववेत्ता हो॥ जब लग संसार की वासना इस के हृदे विषे होती है॥ तब लग बंधा हुआ
मान होता है॥ जब वासना क्षय होती है॥ तब मुक्त होता है॥ ताते तें वासना त्याग करु॥ अरु मोह
अरु जो वासना है॥ तिस कों भी त्याग कर सुखी हो॥ इस क्रम करि वासना कों त्याग अथवा प्रथम
तुं विकट्ट तामसी वासना कों त्याग करु॥ बहुरि विषयों की वासना त्याग करि मैत्री करुणा मु
दिता उपेक्षा इन निर्मल वासना कों अंगीकार करु॥ मैत्री अर्थात हृदे जो कोऊ लक्ष्मीवान होवे
तिस साथ मैत्री भाव सखा भाव होवे॥ हर्ष भाव होवे अरु दुःखी कों देख करि दया करणी सो क
रुणा कहणा॥ अरु धर्मात्मा पुरुष कों देख करि प्रसन्न होवणा इस का नाम मुदिता है॥ पापी यो
कों देख करि उदासीन होवणा॥ उसतें निंदा न करणी॥ इस का नाम उपेक्षा है॥ इन चतुरों का
र की वासना करि तें पूर्ण होवणा॥ अरु अंतर तें इन का भी त्याग करणा॥ तौ हृदे विषे इन का अ
भिमान न होवे॥ अरु वाह्य इन का व्यवहार होवे॥ बहुरि अंतर तें सब मय गुणों की वासना त्या
ग करि चिन्मात्र वासना राखणी॥ पाछे तें इस कों भी मन बुद्धि साथ मिस्तन जाणणा करि त्याग
करणा॥ पाछे जिस करि सर्व वासना त्यागी है॥ सो शेष रहेगा तिस कों भी त्याग करणा॥ हे रा
मजी चिन्मात्र तत्त्व तें कलना करि कै देह इंद्री प्राण आकाश तम वासना वा सकल आदि भा
स आये हैं अंत करि कै॥ तब मूल संयुक्त इन कों त्याग करेगा॥ मलेन कही ये अहंकार संयुक्त
तव आकाश वत सम स्वच्छ शांत होवेगा॥ इस प्रकार सर्व कों त्याग करि पाछे जो तें रहेगा
सो तें होएगी जुहरी॥ तब हृदे सो इस प्रकार त्याग करि कै स्थित होता है॥ सो पुरुष मुक्त रूप तब
परमेश्वर होता है॥ सो समाधि विषे इस्थित होए है॥ अथवा कर्म करे वा न करे॥ जिस के हृदे सो
सर्व अंशों की आस्था नष्ट हूई है॥ सो मुक्त है॥ उसमय उदार चित्त है॥ तिस पुरुष कों निष्कर्म हो
णे तें कछु अर्थ सिद्ध नही होता॥ न कर्म करणे करि कै कछु अर्थ सिद्ध होता है॥ न समाधि क
रणे विषे अर्थ है॥ न तप करि अर्थ है॥ काहे तें जो मन तिस का वासना तें रहित भया है॥ हे राम

स्थि॰ नि॰
५५

55

में चिरकाल पर्यंत अनेक शास्त्र विचारे हैं॥ अरु उत्तम गुरु वो साधु व रवाकरी है॥ परस्पर
तिस करि एह निश्चय कीया है॥ जो भली प्रकार वासना को त्याग जो करु उत्तम मैत्रव है॥ ताति
सतें उत्तम पद अवर कोऊ नहीं॥ इस विना उत्तम पद प्राव ग्यो योग को उ नहीं॥ जो कछु देखता
योग है॥ सो सर्व देख्या है॥ अरु दसो दिसा भ्रम्या हों॥ परंतु केतेऊ जन यथार्थ दर्शी मुरु को दृष्ट
आये हैं॥ जो जो कछु जीव मैंने देखे हैं॥ जहां जहां गया हों॥ तहां तहां हेय अरु उपादेय करि सं
पूर्ण नऊ कों दृष्ट आये हैं॥ एही यतन न करते हैं॥ इस ते इतर यतन न कछु होते हैं॥ इस विषे आस्था
करि के यतन न करणा वडी मूर्खता है॥ सर्व जगत आत्मा के एक अंश करि विकल्पित है॥ इस की
उपमा त्रिण मात्र मान भी नहीं इस प्रकार नकु रूप त्रिलोकी जगत को जाण करि आत्म वेता
सि की पदार्थ के हर्ष शोक विषे बंधायमान नहीं होते॥ ग्रहण अरु त्याग ते रहित हैं सदा॥
शिव के लोक पर्यंत अरूप नाला दिक॥ पर्वत जल रु समुद्र जो रा जस मात कु नामसम कवि
से जेते जेते कछु जगत के पदार्थ हैं॥ सो ज्ञानवान को प्रसंन नहीं करि सकते॥ इस की इच्छा विषे
विषे नहीं होती॥ एक अद्वितीय आत्म भाव को प्राप्त भया है॥ आकाशवत आप को वुद्धि होता
है॥ अपणे आप विषे स्वस्थ होता है॥ चेतन्य दृश्य ते रहित अचेतन्य चिन्मात्र है॥ शरीर रूप जा
ला है॥ सो ईश्वर याकूं रची इ तिस करि जगत रूपी को टर भ्रम वहोर रहा है॥ सो तिस पुरुष का शां
त हो जाता है॥ सर्व जगत तिस को पं न व न वत भासता है॥ द्वितीय वस्तु का अभाव भया है॥ व्र
ह्म रूप वडा विस्तार मैं रहै॥ तिस विषे रुगा के हूंवे कुला चल पर्वत है चेतन्य रूप समर्थ है॥
तिस विषे रूत त्रिलोकी नहीं रूप जगत लोहमी है॥ अरु ब्रह्म रूप समसु है॥ तिस विषे जग
त रूप तरंग है॥ ऐसे ज्ञाण ने हारा जो ज्ञानवान है॥ तिस को एह जगत आनंद दाइक कैसे हो
वे॥ सूर्य चंद्रमा अग्नि एह जो तत्त कों प्रकाशरूप भासते हैं॥ सो भी तुदका शादि को वत ज
ड रूप है॥ जिस करि एह प्रकाशते है॥ सो सर्व को सिद्ध कर्ता आत्म सत्ता है॥ अवर सत्ता को ऊ नहि
है एह जो हस्ता करु थिरमा सत्र अस्थ की वाणी है॥ इंद्रियां करि वेष्टन है॥ तिस देह जगत रूप इ वै वि
षे चेतन्य जीव रूप रत्न है॥ तिस करि विराजता है॥ चेतन्य विना जड रूप पाथर रूप है॥ हे राम जी
एह जो इस्त्री का देह भासता है॥ सो चर्म की एक पुतली वणी है॥ तिस को देख करि मूर्ख व
लवाय मान होते हैं॥ जो वुद्धि नहीं॥ किसी को ग्रहण कीसी को त्याग की इच्छा करते हैं॥ नाना
प्रकार की कृया के आरंभ करते हैं॥ सो सर्व देह के अर्थ करते हैं॥ आत्मा के अर्थ नहीं करते हैं॥ पा
ताल विषे स्वर्ग अरु लोकांतरे आदि सर्व लोक देखे है॥ तिनहां विषे केतेऊ सेन मरु को दृ
ष्ट आये है॥ जिनहोंने देखिया योगा है॥ परंतु सर्व अमत अज्ञान करि उठे हैं॥ एह निश्चय जिनको
गत भया है॥ ऐसे ज्ञानवान केई विरले हैं दुरलभ है॥ सर्व ब्रह्मांड कारज करु अग्नि विषे
प्रवेश करें जा वे॥ जल विषे प्रवेश करि वे॥ अरु सर्व शक्ति करि संपन्न भी होवे॥ तो भी आत्म
लाभ विना जीव को विश्रांत नहीं प्राप्त होती वडे वुद्धिवान सो भोते है॥ जिनहोंने अप
णे हृदय रूप शत्रु जीते है॥ सो ईश्वर मेहैं॥ तिनहां को जन्म जरा विनाश के अभाव का का
रण है॥ अरु इह उपासना करणे योग है॥ हे राम जी ज्ञानवान को किसी दृश्य पदार्थ विषे
प्रीत नहीं होती॥ काहे ते जो पृथ्वी अप तेज वायु आकाश पंचभूत नहीं सर्व ठवर पाईते है॥ अ
वर षष्ट वा पदार्थ कोऊ नहीं त्रिलोकी विषे एही है तो प्रीति किस विषे होवे॥ एक करि विवेक ज्ञा
नवान संसार समुद्र को गोपद वत तर जाते है॥ अरु जिनहोंने एक को दूर ते त्याग कीया
है॥ तिन को संसार महामत्तम मृट्की नाई हो जाता है॥ अरु जो उदार चित पुरुष है॥ तिस
को एह संपूर्ण ब्रह्मांड करि दे व हृत के गोल वत हो जाता है॥ तिस विषे उद त्याग किस का करे
अरु भोग किस का करे॥ हे रघुनाथ यतें रहित होता है॥ जगत इस को तुच्छ जैसा भासता है॥
इस कारणते जगत के पदार्थो निमित्त यत्न नहीं करता॥ अरु जो इ वुद्धि जीव होते है॥ सो ते
छ ब्रह्मांड के पृथ्वी इत्यादि बरतते है॥ अरु अनीक जीवों का घात करते हैं॥ ममता विषे वं
धायमान है॥ अरु एह जगत केसा है॥ कल्पमात्र विषे नष्ट हो जाता है॥ अरु लाग लाग वि
षे नाश विपर्जते है॥ रचने इसमें नहीं करते॥ जैसे संसार के विषयों की इच्छा अज्ञानी करते है

ज्ञानवान नहीं करते॥ इति श्री सि नम करण पूर्ण प्रकरण वर्णनं नाम सर्ग॥ वसिष्ठ उवाच॥ हे रा
मजी एह ऐसा सिद्धांत परें उचित जो वना है॥ तिस की गाथा अरु स्थिति का जो पुत्र कहूं है ति
सगाई था॥ सो परम पावन रूप है॥ एक काल मेरु पर्वत के किसी गहन स्थान विषे
देव गुरु का पुत्र जाइ स्थित भया॥ अभ्यास के वशि ते कहा चित उस को आत्म तत्त विषे वि
श्राम मग्न भयी॥ अरु अंतःकरण उसका सम्यक ज्ञान रूप अवस्थित करि विश्रांत भया॥ अरु
पंच भूत मयी जो मल ना दृष्ट है॥ तिस ते विरक्त भया॥ वासना विषे अफुर होइ करि निरम
ता भया॥ निराभास आत्म तत्त ते इतर रुप को कछु न भासे॥ एक अद्वैत आत्म तत्त ही भास॥
ऐसे रहे वना हुआ गद वाणी सो वाल न भया मैं क्या करों॥ अरु के कहां जावों॥ क्या ग्रहण करों
किस का त्याग करों॥ सर्व विश्व एक आत्मा पूर्ण हो रहा है॥ जैसे महा प्रलय विषे सर्व ओर ते
जल पूर्ण हो रहिता है॥ तैसे दुःख भी आत्मा है॥ सुख भी आत्मा है॥ आकाश दशो दिशा पूर्ण है
तैसे आदि लेकर सर्व जगत आत्मा ही है॥ वराक दृष्ट जो अपणे आप विषे मैं न दृष्ट आया॥
देह के वा हय भी आत्मा है॥ अंतर भी आत्मा है॥ अधः ऊर्ध्व इत उत सर्व आत्मा है॥ आत्मा ते इतर के
कछु नहीं॥ सर्व ओर ते एक आत्म तत नहीं स्थित है॥ अरु सर्व आत्मा विषे स्थित है॥ एह सर्व मैं ह
अपणे आप विषे स्थित हों॥ अपणे आप विषे मैं न ही समावता॥ अर्थ यह जो आदि अंत ते
रहित अनंत आत्मा हों॥ अग्नि भी मैं हों॥ वायु भी मैं हों॥ आकाश जल पृथ्वी भी मैं हों॥ ज्ञा
न पदार्थ मैं नहीं॥ सो हे ही नहीं जो कछु है॥ सो सर्व विस्तार रूप मैं ही हों॥ एक पूर्ण परम आ
काश भैरव रूप हों अद्वितीय ही जो भव रहा हों॥ सर्व जगत भी ज्ञान रूप है॥ समुद्र एक अरूप
में स्थित है सो कल्याण तत्ते इस प्रकार भावना कवान है सो प्रसंन नहीं होते॥ इस प्रकार
संसार के विषय भोग ज्ञानवान को प्रसंन नहीं करते॥ जैसे वायु के चलणे करि पर्वत चलाइ
मान नहीं होते॥ तैसे विषय भोगों करि ज्ञानवान चलाइमान नहीं होते॥ ज्ञानवान तिस उत्त
म पद विषे विराजता है॥ तिस की अपेक्षा करि चंद्रमा सूर्य भी पाताल विषे भासते हैं॥ अर्थ
यह जो इन का वड़ा प्रकाश भी लघु तुच्छ जैसा भासता है॥ परम उत्तम पद विषे ज्ञानवान
विराजता है॥ जहां स्थित हुए तें एह संसार रूप मट जीवने मात्र समुद्र विषे सर्पों वत वहिते फि
रते भासते है॥ जैसे हम को भासते हैं॥ तैसे देखते है॥ इस जगत विषे भाव पदार्थ ऐसा कोऊ
नहीं जो ज्ञानवान को राग करि के रंजित करे॥ जैसे नगर का राजा जो महा सुंदर रूप है॥ अरु नाग
री नाली महा विरक्त दृष्ट से एक ता है॥ तिस को कुग्राम की गोमट नी चरस्त्री यो प्रसंन नहीं करि
सकती॥ तैसे इस जगत के भाव पदार्थ तत्त वेत्ता के रिदे को प्रसंन इक रिस्पर्श नहीं करि सकते
अर्थ यह जो राग द्वेष नहीं उपजावते जैसे॥ आकाश विषे मेघ वादर रहिते हैं॥ पर आकाश
को स्पर्श नहीं करते॥ ऐसा पदार्थ जगत विषे कोऊ नहीं॥ जो ज्ञानवान को राग उपजावे
जैसे हर जो सदा शिव है॥ सो महा सुंदर गौरी की निर्लज्ज देखणे हारा जोगी से युक्त है तिस को
चोर रोग की निर्लज्ज दायक नहीं होती॥ तैसे ज्ञानवान को जगत के पदार्थ दुःख दायक न
हीं होते॥ जैसे जल करि पूर्ण कुंभ विषे रतन का प्रतिबिंब होवे॥ तिस को देख के वुद्धिवा
न का चित नहीं ग्रहण करता॥ तैसे ज्ञानवान का चित जगत के पदार्थ नहीं चाहता॥ एह सं
सार चक्र वडा विस्तार रूप भासता है॥ सो असत रूप है॥ तिस को देख करि वुद्धिमान कि
स की इच्छा करें॥ यह तो प्रतिबिंब वत है मावत है॥ शरीर भी असत है॥ इस को इच्छा मूढ
करते हैं॥ जैसे सिवाल को मल्ल कछु भोजन करता है॥ आकेवस्र्ण के पर्वत की गुफा विषे स्थि
त भया॥ तिस के अनंतर ओंकार को उचारत भया वडे स्वर सों॥ अरु ओंकार की जो अर्धकला
है॥ जिस को अर्धमात्रा कहिते हैं॥ फूल ते भी कोमल है॥ वहुर तिस विषे स्थित होत भया॥
तिस के अनंतर ओंकार को उचारत भया वडे स्वर सों॥ अरु ओंकार की जो अर्धकला है॥ जि
स को अर्धमात्रा कहिते है॥ फूल ते भी कोमल है॥ वहुर तिस विषे स्थित होत भया॥ सो अ
र्धमात्रा के मीहै॥ न अंतर स्थित है॥ न वाह्य है॥ हिदे विषे भावना करता हुआ तिस विषे स्थि

नभया॥ कल्पनारूपजोमलथी॥ तिसतेरहितनिर्मलभया॥ चित्तकीवृत्तनिरंतरली
नहोगई॥ जैसेमेघोंकेनष्टहूएपसरदकालकाआकाशनिर्मलहोताहै॥ तैसेकलंककरु
लनाकेदूरहूएतेनिर्मलस्वरूपहूआ॥ जैसेपवनकीपुतलीअचलरूपहोतीहै॥ तैसे
कचसमाधिस्थितअचलभया॥ इतिश्रीमोक्षोपायेस्थितप्रकरणेकचगाथावर्ण
नं॥ वसिष्ठोवाच॥ हेरामजीतिसविषेअंगनाकेशरीरादिकजोभोगपदार्थहैं॥ सो
तिनतेइतरजोज्ञानवानविषेसत्वकछुनहीं॥ सोतोपरपदार्थज्ञानवानकोतुछभा
सतेहैं॥ इनविषेजोआस्थाकरनेनहीं॥ वहुरइछाकिसपदार्थकीकरें॥ इनभोगवे
श्वयेपशुआदिकोंकरिमूढअसाधलोपावतेहैं॥ जोज्ञानवानसाधहै॥ सोइनविषेप्रीतनहीक
रतेजोकृपणअज्ञानीहैं तिनजीवोंकोभोगहीसर्वसहै॥ अरुभोगकैसेहैं॥ आपातरमणीकहैं॥
आदिअंतमध्यविषेतुछरूपहैं॥ जोपुरुषइनविषेआस्थाकरतेहैं॥ सोगर्धपहैं॥ हेरामजीइसमेंऐ
केसीहै॥ किसीगंरतेवनकेहैंकईअस्थकईमांसआदिककरिपूर्णहैं॥ जोइसकोंपारखकरिलोप
नहोतेहैं॥ सोगिरउवनहैंमनुषतेनहीं॥ अरुजोज्ञानवानहैंसोकिसीजगतकेपदार्थविषे
प्रीतनहीकरतें॥ पृथ्वीसर्वमृतकारूपहै॥ वृक्षसर्वकाष्टरूपहैं॥ देहसर्वमांसरूपहैं॥ पर्वत
सर्वपाषाणरूपहैं॥ पातालअधःआकाशऊर्ध्वदशोदिशाकरिव्याप्याहै॥ सर्वविस्वपंचभू
तहीरूपहै॥ इनविषेअपूर्वसत्वतौकोउनहीं॥ जिसविषेज्ञानवानप्रीतकरें॥ इंद्रियोंकेजोरूप
रसगंधशब्दस्पर्शविषयहैं॥ सोभीमोहकोंदेवणेहारेहैं॥ विवेकमार्गकेरोकणेहारेहैं॥ जे
तीककुसंसारजालमेंपूर्णविभूतहैं॥ वडेऐश्वर्यपदार्थहैं॥ सोसर्वदुःखरूपहैं॥ प्रथमइनका
प्रकाशभासताहै॥ पाछेतेंकलंककेभावकोंप्राप्तकरतेहैं॥ जैसेदीपकप्रथमदीप्रकाशकोंदेखा
वताहै॥ वहुरइकाजलकलंककोंदेताहै॥ तैसेइंद्रियोंकेविषयआगमापायीअनित्यरूपहैं॥ इन
करिशांतमनपदनहीप्राप्तहोता॥ अज्ञानीकोंइसत्रीआदिकपदार्थरमणीकभासतेहैं॥ ज्ञान॰
वानकीतृतरइनकीइछानहीकरती॥ अज्ञानीकोंस्थिररूपभासतेहैं॥ सारदेतेहैं॥ नष्टकरतेहैं॥
अरुज्ञानकोंअसतअरुचलरूपभासतेहैं॥ नष्टकाकारणनहीहोतेविषयोंकेभोगकैसे
हैं॥ विषकीन्याईहैं॥ एहस्मरणमात्रतेंभीविषकरिमूर्छनकरतेहैं॥ मनविचारभनताहै॥ ता
तेंइनकोंत्यागकरिअपणेस्वभावविषेस्थितहोवो॥ अरुज्ञानवानोंकीन्याईविचरो॥ हेरामजी
नश्वरसत्तीवकोंअनात्माविषेआत्मअभिमानहोताहै॥ तवअसतरूपजगतरूपजगतजा
लभासतहोइभासतेहैं॥ ब्रह्मकोंभीवासनाकेवशितेंकल्पनदेहकासंयोगहोताहै॥ जैसेसु
वर्णकाप्रतिविंवजलविषेपडताहै॥ अरुतिसकीजलककेधऊपरपडतीहै॥ जैसेसुवर्णका
संयोगकेधसाथहोताहै॥ तैसेब्रह्मकासंयोगदेहसाथहोताहै॥ सोवास्तवकछुनहीकल्प
नामात्रदेहहै॥ रामोवाच॥ हेमहामतिविरंचकेपदकोंप्राप्तहोइकरिवहुरउपदेसजैनरूपजग
तकिसप्रकाररचीतेहैं सोक्रमकरिकैकहो॥ वसिष्ठोवाच॥ हेरामजीजवप्रथमकमलजालउ॰
त्पाउत्पतिभया॥ तवजैसेगर्भतेंवालकउपजताहै॥ तैसेउपजकरिवारंवारएहशब्दउचार
नभया॥ ब्रह्मब्रह्मब्रह्म तिसकारणतेंउसकोंब्रह्माकहीताहै॥ वहुरूसेकल्पजालहैरूपजि
सका॥ ऐसाकल्पनतआकारमनहोआया॥ तिसमनतेंआगेसंकल्पलक्ष्मीपसारी॥ प्रथमसंक
ल्पतेंमायाउत्पतिभयीअरुतेजअग्निकेचक्रवतफुरणेलागी॥ तिसतेजतेंवडाआकाररूपग॰
या ज्वालाकीन्याईस्वर्णलताकरूपवडीजहांकरिसंजुत॥ वडेप्रकाशकोंधारे॥ शरीरमनक
रिसंयुक्तसूर्यरूपहोइकरिस्थितभया॥ अपणेसमानआकारवडेप्रकाशसंयुक्तभासक
रकोंकल्पतभया॥ ज्वालाकामेरुलआकाशकेमध्यस्थितहोतभया॥ कैसामंडलहैसुवर्णरू
प॥ अरुज्वालारूपहैजहांतिसकीप॥ परशुरामभारकोंधराये॥ अग्निरूप अरुअग्निहीजिस
केअवयवहैं॥ आकाशकोंपूर्णकरिरहाहै मंडलजिसकादेखकरबुद्धिवानरामजीइसप्रका
रतोब्रह्मातेंसूर्यभयाहै॥ अरुअवरजोतेजकिरणफुरीयांहैं॥ सोआकाशविषेतारागणवि
वानोंपरआरूढहूएफिरतेहैं॥ वहुरइसेसंउहसंकल्पकरतीगया॥ तवजोतनकालहीसि॰

हुइहोइकरिआगेभासणेलागे॥ असीप्रकारआगेजगतकोंरचताभया॥ जिसप्रकारइससृष्टिवि
षेब्रह्मारचताहै॥ तिसीप्रकारअवरअवरसृष्टोंविषेभीरचताहै॥ सप्तसप्तप्रतिब्रह्मारचताहै॥ प्र
थमप्रजापतिकोंरचताहै॥ वहुरकालकलनानदीवनागगणरचे॥ वहुरदेवतादेतनदीयोंम
मरपर्वतनमनुष्यनागगंधर्वयक्षगणसर्वइसीप्रकारकल्पतभया॥ जैसेसमुद्रतरंगोंको
कल्पलेवे॥ तैसेसिद्धरचे॥ तिनकेकर्मरचे॥ सोभीब्रह्मसंकल्परूपतिसका॥ उहसंकल्पकरेंसो
ईसिद्धहोइकरिभासणेलागे॥ सर्वप्राणिसंपन्न॥ तत्कालसंकल्पकरिभासणेलागे॥ प्रजापति
संकल्पकरिसिद्धोंकोंउत्पतिकीया॥ तिनहोंआगेअवरउत्पतिकीये॥ तिनहोंवहुरअवरउत्प
तिकरी॥ इसीप्रकारवहुरअवरभूतगणउत्पतिकीये॥ तवब्रह्माजीवेदोंकोंस्मरणकरतभया
जीवोंकेनामयत्नकर्मव्रतआदिकपुनःकथासर्वजगतकीमर्यादाकरीनेतरूपजोइस्त्रीहै
तिसकोंरचताभया॥ सोजगतरूपपुरकीमर्यादाहै॥ इसनिमितउत्पतिकीया॥ जोइसप्रकार
ब्रह्मकीमायाप्रसादपरोइकरिवडेशरीरकोंधारताहै॥ आगेदशकोंविस्ताराहै॥ लोकप्रथक
लोकपालोंकेक्रमकीयेहैं॥ सुमेरुपृथ्वीकेमध्यदशोदिशारचेसमुद्रवहुरवनगाराहैं॥ प्र
गरकीये॥ इसप्रकारसंपूर्णजगतस्थितिरूपब्रह्माजीरचताभया॥ जैसेजैसेउसनेरचेहैं तैसे
तैसेस्थितहैं॥ जैसेतेतथापीहैतैसेहीस्थितरूपहैं॥ अरुहैका॥ सोकछुसंपूर्णदृश्यदृष्टआवती
है॥ अवलग॥ सोसर्वमायारूपहै॥ हेरामजीइसप्रकारसर्वजगतकाक्रमरूपआहै॥ सोसंकल्परू
पसेसारहै॥ परवडास्थिररूपहोइकरिभासताहै॥ सोअज्ञानमोहकरिजगतस्थिरभास
ताहै॥ यदितोमनकेसंकल्पकरिरचाहै॥ संकल्पवशितेजगतकीकृपापसारीहै॥ अरुसंक॰
ल्पवशितेंहैवनेतरूपहोइकरिस्थितभयाहै॥ सर्वजगतब्रह्माकेसंकल्पविषेस्थितहै॥ ज
वतिसकासंकल्पनिर्वाणहोताहै॥ तवजगतलयहोजाताहै॥ एकसमैब्रह्माजीपद्मआसन
कोंधारेवैठेथे॥ अरुचिंतवनभये॥ जोएहजगतजालसर्वसंकल्पमनकेफुरणेमात्रहै॥ मनके
फुरणेकरिउपजआवताहै॥ वडाविस्ताररूपनानाप्रकारकेअवताररविकारसंयुक्त॥ देउपे
दुरगणमनुष्यदेतपर्वतसमुद्रपातालपृथ्वीदिशांतेंलेकरिजेतातजाल सर्वमायामात्रहै
वडाप्रमररहाहै॥ अवमैंइसतेंनिवर्तहोताहैं॥ ब्रह्माजीइसप्रकारचिंतवकरिब्रह्माजीसंक
ल्पअनर्थरूपतेंउपरवभया॥ आदिअंततेंरहितअनादिमतत्वोपरमब्रह्महै॥ स्फारआत्म
रूपतिसआत्मततविषेमनकोंलयकरतेभया॥ आनंदरूपआत्माहोइकरिअपणेआप
कोंस्थितभया॥ जैसेपूरणहोतेंस्थितरूपआविद्यामकहीहै॥ तैसेअपणेआपकरिब्रह्मावि
षेस्थितभया॥ निर्ममनिरंकारपरमतत्वकोंप्राप्तभया॥ जैसेअग्निइंधनसेरहितहोताहै॥ तैसे
स्थितहूआ॥ ध्यानविषेलगगया॥ जववहुरध्यानतेंभगवानब्रह्माजीउतरे॥ जैसेसमुद्र
सेउछलकरिकैतरंगफुरआवे॥ तैसेचितकेवशितेब्रह्माजीफुरणरूपहोआया॥ तवज
गतकोंदेखकरिविचारभया॥ कैसाएसंसारहै॥ सुखदुःखकेविसंजतनहै॥ हेरामजीइसप्रकार
जीवोंकोंदेखकरिजगतनाथकोंदयाउपजी॥ दयाकरिकैअभ्यासतानमोगभंतवेदउपनि॰
षधवेदांतकोंप्रगटकरतेभया॥ वहुरअर्थसंयुक्तनानाप्रकारकेशास्त्ररचेवहुरपुराणरचे
सर्वजीवोंकेमुक्तनिमितिनकोंरचकरिवहुरउपरमपदविषेअपरातेजोरहितहै॥ तिस॰
विषेस्थितभया॥ जैसेमंदवलपवनकेनिकसेतेजीरसमुद्रशांतहोताहै॥ तैसेशांतरूपहो
इकरिस्थितभया॥ वहुरइसीसकारणतापा॥ जगतकोंदेखकरिमर्यादाविषेजीवपावहुरउस
लयीविषेस्थितहोइकरिआत्मतत्वकेध्यानपरायणभया॥ इसीप्रकारलोककुअपणेपारी
रकीमर्यादाकरीहै॥ ब्रह्माजीतिसीप्रकारनेतकेसमकारप्रयत्नपराक्रीडाकरताहै॥ कालकेव
वतनेतनकेअनुसारविचरताहै॥ जैसेतरुजाअरुवासनामें॥ रहितरूपआपसकरिफिरताहै॥ जैसेन
लकारणतेंरहितहै॥ तिसकोंनयागीरकेत्यागनेविषेकछुइछाहै॥ नकछुग्रहणकरणेकी
इछाहै॥ नजगतकेस्थितअरुअस्थिरविषेकछुइछाहै॥ नजगतकोंस्थितअरुअस्थिरविषेकछु
इछाहै॥ किसीजगतकेपदार्थकेग्रहणअरुत्यागकीभावनाविषेअसक्तनहीं॥ सर्वपदार्थों

स्थिति ५८

96

विषेसमत्रुटिहै॥ परिपूर्णसमस्वतस्थितहै॥ सर्वरूपहै॥ कवहूंसंकल्पतेंरहितशांतरूपहो
रहिताहै॥ कवहूंसर्वसंकल्पतेंरहितशांतरूपहोररहिताहै॥ कवहूंअपनीइछाकरिजग
तकोंरचताहै॥ एकउसकोंजगतकेरचणेअरुत्यागणेविषेकछुभेदनहीं सर्वपदार्थअवस्था
विषेतत्पताहै॥ हेरामजीयहतुमकोंअवस्थास्थितकहीहै॥ यहस्वरूपदशाअवरभीकिसी
देवताकोंउपजेतवतिसकोंसमताजाणीये॥ तुरीयहमानकरूपहै॥ सृष्टकेआदिजोशुद्धअ
त्मतत्वविषेचितकलाफुरीहै॥ सोफुरणारूपमनकलाब्रह्मारूपहोइकरिस्थितभईहै॥ त
बवहुउजगतकेस्थितक्रमविषेकलनाउत्पतिहोतीहै॥ तवउसीब्रह्मारूपआकाशपव
नकोंआश्रयकरिकेंऔषधीयवोंविषेआनप्रवेशहोतीहै॥ कोउएकदेवताभावकोंप्राप्तहो
तीहै॥ कहूंमनुष्यतभावकोंप्राप्तहोतीहै॥ कहूंतिर्यगपशुपक्षीआदिककोंप्राप्तहोतीहै॥ चंद्रमा
कीयाकिरणाद्वाराऔषधीकोंजोअन्नआदिकहैं॥ तहांप्राप्तहोतीहै॥ जैसेजैसेभावकोंलेक
रिचितकलाफुरतीहै॥ तैसातैसाभावशीघ्रहीउत्पतिहोआवताहै॥ कोउएककउपजकरिसम
ंगकेवशितेंतिसीजन्मविषेवंधनतेंमुक्तहोजातेहैं॥ अपनास्वरूपकाचमतकारहोताहै॥ को
ईअनेकजन्मोंकरिकेंमुक्तहोतेहैं॥ कोईथोडेजन्मोंकरिकेंहोतेहैं॥ इसप्रकारइककल्याणरू
पजगतकाक्रमस्थितहै॥ अनत्मकरकर्मवंधनमोतरूपउपजतेहैं॥ केईमिटजातेहैं॥ इस
प्रकारकर्मवंधमोक्षकरिरहणाहै॥ जवइकुकलनामलनष्टहोजातीहै॥ तवइसतेंमुक्तहो
ताहै॥ जवलगकलनाहोतीहैतवलगसंसारभासताहै॥ ॥ इति श्री स्थितप्रकरणे मल
नअवरूपनामसर्गः॥ वसिष्ठोवाच॥ हेरामजीइसप्रकारभगवानब्रह्माजीनिर्मलपदवि
षेस्थितहोइकरिसर्गकीअवस्थाकरताहै॥ संसाररूपजोकुम्पहै॥ तिसविषेजीवघटीयत्रव
तपडेभ्रमतेहैं जीवरूपरिंटाहै॥ त्रिलोकरूपजेवडीसाथवांधेहुएकवहूं अधःकवहूंऊर्धकों
जातेहैं॥ जववासनारूपजेवडीटूटपडतीहै॥ तवब्रह्मनतसेंजोउदेथ॥ सोकंडउब्रस्तन
संगपकवहोजातेहैं॥ इसप्रमजानतेंसर्वजीवउपजतेहैं॥ वहुउत्रयमतविषेलयहोतेहैं॥ जै
सेसमुद्रसोंतरंगउपजतेहैं॥ वहुइतिसविषेलयहोतेहैं॥ सोत्रयपरआदिअंतनतेंरहितहै
तिसविषेउपजकरिजीवलयहोतेहैं॥ जैसेसमुद्रसोंमेघजलकणकेथूम्रद्वाराउपजते
है॥ वहुइवर्षाकरितिसीमोंप्रवेशकरतेहैं॥ तैसेतवमतततन्मात्रासेइलसाथजीवएकरूप
होजातेहैं॥ जैसेमहारकूतकेवृक्षोंकीसुगंधवायुसंगमिलतएकरूपहोजातीहै॥ तैसे
चितकलाजीवतन्मात्रासेंगमिलकरिप्राणनामकोंपावतीहै॥ इसप्रकारप्राणवायुजी
वकलाकोंलेचलतीहै॥ प्राणवायुनेंआदितन्मात्रसर्वसाथहोतेहैं॥ जैसेवडेरथवेउव
लीहैनोवेसेवृहदेवल्योंकोंखेचे॥ तैसेखेचयारूआजीवतन्मात्रासाथएकरूपहोजाता
है॥ तैसेगंधअरुवायतन्मयहोतेहैं॥ इहप्राणतन्मात्राजीवकेशरीरविषेवीर्यस्थानमें
नाइप्राप्तहोतेहैं॥ तवजगतविषेउपजकरिप्राणप्रततहोतेहैं॥ अवरकेईप्रममार्गक
रिदेवतानकेशरीरविषेप्रवेशकरतेहैं॥ मेघविषेजाइकरिवृष्टमार्गऔषधीविषेरसरूप
होइकरिजाइस्थितहोतेहैं॥ तिसकोंभोजनकरतेहैतिसकेअंतरवीर्यरूपहोइकरिस्थि
तहोतेहैं॥ केईअवरप्राणवायुद्वाराप्रगटहोतेहैं॥ उहचवस्थावरूपहोतेहैं॥ कोईपव
नमार्गकरिकेंधानतोहै॥ चावलतिनकेंहोयविषेजाइस्थितहोतेहैं॥ तिनकोंजीवभो
जनकरतहैं॥ तिसकरिवीर्यतभागकोंप्राप्तहोतेहै॥ नानाप्रकारकेप्रभणधर्मीरंगभेदकरिउप
जतेहैं॥ केईउपजणेमात्रतेंजीवोंकीपरंपराताकरिकेंवेष्टतआकाशकोदरविषेजाइस्थि
तहोतेहैं॥ तवलगरहितेहैं॥ जवलगचंद्रमाउदेनहीभया॥ जवचंद्रमाउदेहोताहै॥ तवउस
कारसजोकिरणाहै॥ महाशीतलअरुस्वेतचीरसमुद्रवतहै॥ तिनविषेजाइप्राप्तहोताहै॥
तिनकेअंतरगतहोइकरिपत्रऔषधीविषेस्थितहोताहै॥ जैसेकमलकेऊपरभ्रमरकोंपंक
जआनस्थितहोवे॥ तैसेजीवऔषधीविषेस्थितहोतेहैं॥ पृथ्वीविषेस्वादरूपहोइकरिस्थित
होतेहैं॥ तैसगाढारसकरिकेपावरहोताहै॥ तैसेजीवोंकरिऔषधीफलपूर्णहोजातेहैं॥ जैसे

मातकेस्तनदूधकरिपरपूरणहोतेहैं॥ तैसेजीवोंकरिफलपूर्णहोतेहैं॥ तवइहफलतेंप
रपक्वहोतेहैं॥ तिसकोंदेहधारीभक्षणकरतेहैं॥ तिनविषेवीर्यरूपहोइआत्मकरूपहोइकरि
स्थितहोतेहैं॥ सोसमसवासनाकरिवेष्टतरूपगर्भपिंजरविषेजाइपडतेहैं॥ हेरामजीजीवविषे
सहतीवरहितेहैं॥ जैसेमृतकाविषेसदाघटादिरहितेहैं॥ काष्टविषेसदाअग्निरहितीहै॥ उ
पविषेछूतरहिताहै॥ तैसेवीर्यविषेजीवरहितेहै॥ इसप्रकारपरमात्मामहेश्वररूपतें
जीवोंकीपरंपराउपजती॥ वायुमार्गकरिधूममार्गकरिमेघमार्गऔषधीरसमार्गकरि॥ प्रा
णमार्गवेइसाकीयाकिरणामार्गकरि॥ इनतेंआदिकअनेकप्रकारजीवउपजतेहैं॥ जोउ
पजणेकरिकेंआत्मसत्तासोंअप्रमादीरहितेहैं॥ तिनकोंअपणास्वरूपविसमरणनहीहोता
सोशुद्धसातकीहैं॥ महाउदारव्यवहारवानहोतेहैं॥ अरुजिनकोंउपजणेकरिकेंहिप्रम
रणहोजाताहै॥ वहुउसीशरीरकोंघआत्माकासाक्षात्कारहोताहै॥ सोसातकोंरूपहै॥ अ
रुजोउपजकरिनानाप्रकारकेव्यवहारकोंप्राप्तहोतेहैं॥ अरुस्वरूपविसमरणहोजाता
है॥ जन्मोंकीपरंपराकाइकरिजिनकोंस्वरूपकासाक्षात्कारहोताहै॥ सोराजससात्तकी
कहीतेहैं॥ अरुजिनकोंअनेकजन्मआइरहिताहै॥ तिनकोंजिसप्रकारमोक्षहोतीहै॥ तिन
कोंक्रमअवनरकोंकहिताहौं॥ सोराजसतेंसातकभावकोंप्राप्तहोतेहैं॥ अरुमोक्षहोतेहैं
हेरामजीउपजणेमात्रतेंअप्रमादीरूपसोशुद्धसातकीहैं॥ अरुजोप्रथमजन्मकरिवाधवा
नहूए॥ सोसातकीहैंसोदुलभहै॥ अरुजोकवहूंकाहुकिसीजन्मकरिमोक्षहूएहैं॥ अथ
यहिजोजन्मांतरोंकरिकेंसंभवतेंहैं॥ मोक्षहोतेहैं॥ सोराजससातकीहैं॥ अरुजोपरमा
त्मततेंउपजकरिअप्रमादीरूपहैं॥ सोमहागुणवालीउदारआत्मादुलभहैं॥ इनतेंइ
तरहैं॥ सोनानाप्रकारकेसकलइअनेकहैं॥ तमसंयुक्तस्थावरादिकहैं॥ जिनकोंआत्म
पदप्राप्तभयाहै॥ अरुतिनकोंजोमिलतेहैं॥ तिनकोंअंतकाजन्महै॥ असेपुरुषविचा
रतेहैं जोमैंकवणहूं॥ यहजगतक्याहै॥ इसविचारकेक्रमकरिमोक्षभागीहोतेहैं॥ सोरा
जससातकीहोतेहैं॥ इति श्री स्थितिप्रकरणे ... विचार्य ... रूपनाम
सर्गः॥ वसिष्ठोवाच॥ हेरामजीजोराजससातकीरूपहैं॥ सोपृथ्वीविषेमहापु
रुषकरिशोभायमानहोतेहैं॥ महाउदाररूपरहितेहैं॥ जैसेआकाशविषेचंद्रमारहिता
है॥ तैसेदुःखरूपविघ्नकोंनहीप्राप्तहोते॥ जैसेआकाशकोंमलनहींस्पर्शकरता॥ तैसे
आपदाकोंनहीप्राप्तहोते॥ जैसेराजकेप्राप्तरूपसवर्णकेकमलमेंदेनहींजाते॥ तोकछुअकृत
आचारहै॥ तिसकेअनुसारपदचेष्टाकरतेहैं॥ अवरसकाजनहीकरते॥ जैसेदिनकोंभीहैसर्व
सोअपणेआचारविषेविचरताहै॥ अवरआचारनहीकरता॥ तैसेचंद्रमाकीयाकलाहीण
भीहोतीयांहैं॥ तोभीअपणीशीतलताकोंनहींत्यागता॥ तैसेज्ञानवानअपदाकेप्राप्तरूप
भीमलनताकोंनहींप्राप्तहोता॥ सर्वदाकालमेंत्रीआदिकगुणोंकरिसंपन्नरहिताहै॥ सम
तिनकरिशोभताहै॥ समतारूपतोसमरसहै॥ तिसकरिप्रकाशअरुशांतरूपनिरंतरसंपुष्ट
समुद्रवतअपणीमर्यादाविषेस्थितरहिताहै॥ हेरामजीतुमभीमहापुरुषोंकेमार्गचलो
सदा॥ जोमार्गपरमपावनअपदातेंरहितमानकोंहै॥ तिसकेअनुसारचलो॥ तवअपदा
कोसमुद्रविषेनडूवोगे॥ जैसेउहरखेदतेंरहितजगतविषेविचरतेहैं॥ तैसेविचरो॥ जिसक
मकरिराजससतेंसातकमोक्षभागीहोतीहै॥ सोसुणोप्रथमआर्जवभावकोंप्राप्तहोवं
णा॥ अर्थयहिजोयथाशास्त्रसतव्यवहारकरणा॥ तिसव्यवहारकरिजवअंतःकरण
शुद्धहोताहै॥ तवआर्जवहोताहै॥ शांतिपदकोंपाइकरिसंतोंसाथमिलणा॥ अरुवारंवा
रसतशास्त्रोंकोंविचारकरणा॥ अरुसंसारकेजोअनित्यपदार्थहैं॥ तिनकीप्रीतनकरणी
विरक्तताउपजावणी॥ तिनकीइछातेंरहितहोवणा॥ अरुजेपदार्थोंकेहोणेविषेनि
नकेअभावविषेतोत्रिलोकीकोंसमानरूपहै॥ वारंवारतिसीकीभावनाकरणी॥ अवरभाव

स्थित· ५०

नाकौत्यागणा॥ यौग्रहीमिथ्याज्ञानकरित्यागकरणा॥ जोकछुजगतदृश्यभासताहै
सोअसम्यकदृष्टहै॥ निष्फलताकीयथार्थज्ञानकरितिसकीभावनात्यागणी॥ अरुस
म्यकज्ञानकोसमकरणा॥ जोमैंकवनहौ॥ अरुयहविस्तृतसंसारक्याहै॥ भलीप्रकारप्रय
तनसोविचारणा॥ विवेकसंपन्नसत्शास्त्रअध्यात्मशास्त्रकोविचारणा॥ संतअवरूआत्मतकी
कर्मकरणा॥ अवज्ञाकरिकैमनकोनत्यागणा॥ जोसनविसमरणकर्मकैसंसारकार्यवि
षेलगजातेहैं समरणकरिकैसतमार्गविषेलागणा॥ जिसउत्तमपदविषेज्ञानीपुरुष
स्थितहैं॥ महाउदारशीतलचित्ततिसकेमार्गअरुदर्शनविषेसदाइच्छाराखणी॥ जैसं
सारकौंमैंचकीइच्छारहितीहै॥ हेरामजीअहंकारजोदेहविषेस्थितहै॥ यहदेहसंसा
रविषेउपजीहै॥ तिनकोभलीप्रकारविचारकरिकैनाशकरो॥ यहदेहसंसारकधिरमां
समज्जादिककीवणावतहै॥ जेतेकछुभतज्ञानहै॥ सोसर्वचैतन्यरूपताहीविषेमोती
परोयहै तिनभूतोकोंत्यागकरिचिन्मात्रतत्वकोदेखो चैतन्यसत्तामतहै॥ नित्यविस्तृत
है॥ शुद्धहै॥ सर्वज्ञसर्वभावतिसविषेहै सोत्रिलोकीकाभूषणअरुप्रपंचतहै॥ जोचैतन्य
आकाशमांसूर्यविषेहै॥ सोईचैतन्यपृथ्वीकेछिद्रमांजोकीटहै॥ तिसविषेहै जैसेघ
टआकाशअरुमहाआकाशविषेवाभेदनहीं तैसेशरीरमांचैतन्यविषेकछुभे
दनहीं॥ तैसेजेतीयांकछुभरयांहैं॥ तिनविषेतीतणताकछुतापकरीहै॥ तैसेसर्वजन्म
तेविषेचैतन्यतनपकरीअनुसततहै॥ अनुभवकरिकैजाणीताहै तिसप्रकाचिन्मात्र
विषेभिन्नताकहांहोवे॥ एकसत्यताजोनिरंतरचिन्मात्रवस्तुरूपहै॥ तिसविषेजन्मम
रणादिकअज्ञानतेहैस्थित॥ जगतविकारतिसविषेआभाससमात्रहै॥ नष्टहै नअसत
है॥ चित्तकेउच्छलनेकरिभासताहै॥ मनकेशांतहूएसर्वशांतहोजाताहै॥ जोज्ञान
कोसतमानीयेतोअनादिरूपआभीशोककरणाकिसीकानहींवणता॥ अरुजोज्ञा
तकोअसतमानीये॥ तोभीशोककाअस्थाननहीवणता॥ तातेंहद्युनिराकारकरिकै
स्थितहोवो॥ शोककोत्यागकरो॥ तमकोंनत्रमहै॥ तमवरणहै॥ आकाशवतनिर्मल
समसप्तानतरूपस्थितरहो॥॥॥ इतिश्रीस्थितप्रकरणेमातविचारोनामसर्गः वशि
ष्ठोवाच॥ हेरामजीधैर्यवानपुरुषहै बुद्धिवान सोसतशास्त्रोंकोविचारेअरुसंतजनोंकेत
त्यआचारकोंग्रहिणकरे॥ अरुसंतोकेसंगरहै जोजोदुःखोंकीनाशकर्ताइष्टहै श्रेष्टज्ञान
है॥ तिसतिसकोंध्यावोयतनकरिकै॥ अर्थयहजोप्रायमकेनिमितयतनकरे तवइसको
भोमेतजननाआनप्राप्तहोवेगी॥ संतजनजोविरक्तआत्माहै॥ तिनसंगमिलकरिसतशा
स्त्रोंकोविचारे॥ तवपरमपदकोप्राप्तहोताहै॥ हेरामजीपुरुषसतशास्त्रोंकेविचारतेउत्ता
दहै॥ अरुसंतजनोकासंगवैराग्यअरुअभ्यासआदरसेयुक्तकरताहै॥ सोतमारीव्याखितो
भताहै॥ अर्थयहजोविज्ञानकापात्रहै॥ तमतोउदारआत्माहै॥ धीर्यवानोकेजोगुणहैं॥ सु
भआचारहै॥ तिनकेसमुद्रहो॥ अवनिर्दुःखहोइकरिस्थितहोवो॥ अवराजससातकोभ
येहो॥ मननशीलभयेहो वज्रदेअतेदरथरूपसंसारविषेदुःखोंकेपात्रनहोवोगे॥ यह
तमाराअतनकाजतनहै॥ जोअपणेस्वभावकीओरधावनेहो॥ अनेरमुखयतनवर्तेहो
निर्मलदृष्टतुमकोंप्रगटभयीहै॥ यथाभूतजगतवस्तुकोंजाणतभयेहो॥ जैसेसूर्य
केप्रकाशकरियथार्थवस्तुकाज्ञानहोताहै॥ अवमेरेवचनोंकीपंक्तकरिकैमलस
वंदरहोजावेगी॥ निर्मलताकरिशुभाइमानहोवोगे॥ जैसेमेघकेनष्टभयेसर्वकालका
आकाशशोभताहै॥ तैसेसंसारकीभावनातेमुक्तहोइकरिहतमसंविनसायशुभरू
प॥ तवचिंतातेमुक्तहोएनिर्मलभावकरिकैशोभोगे॥ ग्रहसंसारादिकजोअनेककल्प
नाहै॥ तिनतेमुक्तभयेमुक्तहै॥ इसविषेसंशयकछुनहीं हेरामजीतेराजोयहउत्तमसव
हारहैअनभवरूपतिसकेअनुसारवरतेगातोभीतेंअशोकपदकौंप्राप्तहोवेगा अव

रकोंअरुइसव्यवहारविषेवर्तेगा॥ सोमनतूभीमेसारसत्नइकौंतरजावेगे॥ अपणोअनुभव
रूपवेउकरि॥ तुमारेतलमनरोवेगोमनजिसकी॥ सोमेतननसमदृष्टी॥ सोज्ञानदृष्टकोपा
गहे॥ जैसेसर्वकोताप्रदरनाकाघात्रपूर्णमासीकाचंद्रमाहोताहै॥ अरुतुमतोअशोकदि
शाकोंप्राप्तभयेहो॥ अरुयथाप्राप्तविषेवर्ततेहो॥ जवलगदेहहै॥ तवलगरागद्वेषतेंरहि
तबुद्धिकरिस्थितरहो॥ यथाशास्त्रजोआचारहैउचितवाहीतेंतिसीकोकरो॥ अरुअन्तरतेंस
र्वइच्छाकोंत्यागकरिपरमशीतलताकोंप्राप्तहोवो॥ जैसेपूर्णमासीकाचंद्रमाशीतल
स्थितहोताहै॥ हेरामजीइनसातकअरुराजससातकतेंजोइतरजीवहैंतामसी॥ तिनकावि
चारईहांनहीकरणा॥ उहमहानिद्रहैं॥ मांसादिककेखावणेहारेहै॥ तिनकेविचारसाथ
काप्रयोजनहै॥ जोमेनरुकोंसातकीजन्मकहे हैं॥ तिनकेभजनकरिभीबुद्धिअंतकोजन्म
वतीहोतीहै॥ अर्थयहिजोतामसीतिनकाभजनकरें॥ तौउनकीबुद्धिभीउदारहोजातेहै॥
तिसतिसज्ञानकेगुणोकरिशनैःवृद्धीसंतनतरहोजातेहै॥ सर्वजोकोऊभावहोताहै॥ सोज्ञा
नकर्मकेवशितेंउदजातारहिताहै॥ अंतकाजन्महोजाताहै॥ जिसज्ञानविषेउदउपजत
है॥ अरुउसज्ञानकेजन्मकेगुणकोंजीतणेकापुरुषार्थकर्ताहै॥ तवयत्नकरिपूर्वलेस
भावकोंजीतलेजाताहै॥ जैसेधीर्यवानपुरुषशत्रुकोंजीतलेताहै॥ पूर्वइसकाअशुभ
संस्कारहै॥ तवमलनबुद्धिकोंधीर्यकरिउधारकरैजैसेमृगतृष्णाकीचविषेफसा
जावे॥ अरुतिसकोकाढलेवे॥ तैसेबुद्धिकोंमलनसंस्कारतेंकाढलेवे॥ हेरामजीता
मसीअरुराजसीजोजातहै॥ तिसकोंभीजन्मकर्मकेसंस्कारवशितेंसातकप्राप्तहो
तीहै॥ उहभीअपणेविचारद्वारासातकज्ञानकोंप्राप्तहोतेहै॥ इसपुरुषकेअंतरअनुभ
वरूपनिर्मलचिंतामणिहै॥ तिसविषेलोककछुनेवेदनकर्ताहै॥ सोईरूपइसकाहोइ
जाताहै॥ तिसकारणतेंपुरुषार्थकरिकैअपणाउद्धारकरैपुरुषप्रयत्नकरिकैयह
पुरुषमहावडेगुणोंकरिसंपनहोताहै॥ अरुअमृततत्ताकोंप्राप्तहोताहै॥ अरुअंतकाजन्म
होजाताहै॥ आगेजन्मनहीपावता॥ अशुभज्ञानकेकर्मनिवर्तहोजातेहै॥ ऐसापदार्थ
पृथ्वीविषेकोऊनहीं॥ आकाशदेवलोकविषेभीकोऊनहीं॥ जोअपणेशास्त्रगुणोंकरि
संयुक्तप्रयत्नेतनपाईया॥ अर्थयहिजिसकायत्ननहोवे॥ सोपाईताहै॥ हेरामजीतुमतोवडे
गुणोकरिसंपन्नहो॥ धीर्यवानअरुउत्तमवैराग्यअरुदृढबुद्धिसंयुक्तहो॥ अरुतिसकेपाव
णतेंधर्मबुद्धिकरिवीतशोकरूपहो॥ तुमारेकर्मकोंजोकोऊजीवग्रहिणकरेगा॥ सोभी
मूरतताकोंत्यागकरिवीतशोकपदकोंप्राप्तहोवेगा॥ अवतुमतोअंतकाजन्महै॥ वडेवि
वेककरिसंयुक्तहो॥ बुद्धिविषेसातकीगुणअतिप्रसरेहैं॥ तिनकरितुमशोभतेहोसा
तकगुणकर्मकरिसर्वविषेरमरहेहो॥ संसारकीबुद्धिमोहविलासतुमकोंमिथ्याहै
तुमअपणीहीस्वस्वरूपविषेस्थितरहोका॥॥॥ इतिश्रीदेवकृतउत्तममहारामायणेवशि
ष्ठमहत्वसंहितायांमोक्षोपायेस्थितप्रकरणेसमाप्तम ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

ॐ श्री गणेशाय नमः ॥ अथ उपशम प्रकरण लिख्यते ॥ वसिष्ठ उवाच ॥ ॥ हे रामजी इह संसार ना
मनी जो माया है सो अनंत है ॥ अरु किसी प्रकार इसका अंत नहीं ॥ जब चित्त वस होवै तब यह
निरवर्त हो जाती है ॥ अन्यथा नहीं होती ॥ एक जेता कछु जगत देषणे अरु सुनणे विषे आवता
है ॥ सो सर्व माया मात्र है ॥ सो माया रूपी जगत चित के भ्रम कर के प्रतिभासता है ॥ इस उपर पूर
व वरतंत हूया है ॥ सो तुम सुणो ॥ हे रामजी इस प्रथवी उपर एक कौशल्ला नाम देस है ॥ सो दे
सा देस है जो रतनों कर के पूरण है ॥ जैसे सुमेर परवत कलप ब्रिषों सों पूरन है ॥ तैसे वह रत
नों कर रहते है ॥ रतन का कहां पजात तजात विषे जो उत्तम पदार्थ है तिस का नाम रतन है ॥ सो
सर्व उत्तम पदार्थ तिस विषे पाई तिष्टे ॥ तिस देस विषे एक गाधि नाम ब्राह्मण होत भया ॥ सो
कैसा था ॥ वेद विद्या विषे प्रवीन मानो वेद की मूर्त था ॥ सो वैरागादिक गुणों कर संपन्न सो
भता भया ॥ जैसे प्रकास कर के भवन सोभता है ॥ तैसे सोभता हूआ एक काल विषे कछु का
रन मन विषे धार कर तप करणे कों बन विषे गमन करत भया ॥ एक बन विषे कमलों क
र के पूरन सुंदर तडाग देषत भया ॥ तिस विषे कंठ प्रयंत जल मों इस्थत होइ कर तप कर
णे लागा ॥ जैसे शुद्ध आकास विषे महतारा मंडल के चंद्रमा विराजता है ॥ तैसे शुद्ध तडाग
विषे मह कमलों के वहु विणत्ता भया ॥ अपणे कारज निमित विस्नजी के ध्यान विषे मन
कों इस्थत कर के द्रिढा होइ रहा ॥ अष्ट मास प्रयंत दिन रात जप विषे द्रिढ होइ रहा ॥ तब तिस के
द्रिढ तप कों देष कर विस्नदेव प्रसंन भए ॥ जहां ब्रह्मण तप करता था ॥ तहां आन प्राप्त भए ॥ जै
से जेष्ठ आषाढ की तपत प्रथवी उपर स्याम घटा मेघ आवता है ॥ तैसे आइ कर विस्नजी कह
त भए ॥ हे ब्रह्मण जल ते निकस कर जो कछु बांछत वर है सो मांग ॥ तब गाध कहा ॥ हे भगव
न तीनों लोकों का जो हिरदा कमल है ॥ तिस छिद्र विषे तुम भ्रमर हो ॥ वहुड़ कैसे हो तुम त्रिलो
कीया रूपी जो कमल है तिन के तुम तड़ाग हो ॥ ऐसे ईस्वर जो तुम हो सो तुम कों मेरा नम
सकार है ॥ अरु अर्थ रूप है ॥ जिस कर यह जगत रचा है ॥ किसी प्रकार मैं तिस कों देषौ ॥ हे राम
जी जब इस प्रकार गाध ब्रह्मण कहा तब विस्नजी कहा हे ब्रह्मण तूं माया कों देषेगा अरु दे
ष कर वहुड़ त्याग भी करेगा ॥ ऐसे कह कर विस्नजी अंतरध्यान होगए ॥ जैसे गंधर्व नगर
भास कर अंतरध्यान हो जाता है ॥ तैसे विस्नजी अंतरध्यान होगए ॥ तब ब्रह्मण वर कों पा
इ कर वहुत आनंद मान होत भया ॥ अरु जल ते निकस्या ॥ जैसे निरधन पुरुष धन कों पाय
कर प्रसंन होवे ॥ तैसे वर कों पाइ कर ब्रह्मण प्रसंन भया ॥ अरु चलते वेद ते उस की सुरत न
विस्नजी के चरन की ओर लाग रही ॥ जो माया कों मैं कब देषोगा ॥ तब एक काल विषे तिस नदी
तड़ाग उपर इस्नान करणे लागा ॥ अरु जब की लगाई मन विषे अघमर्षण मंत्र कों जपणे
लागा ॥ अघमर्षण कहीए पापों का नास करता तिस मंत्र कों जपते जपते तिस का चित विप
रीत होइ कर निकस गया ॥ तब उस कों स्नान मे अभूत लग गया ॥ अरु आप कों वहुड़ अपणे
ग्रह विषे इस्थत देषत भया ॥ वहुड़ आप कों म्रतक हूआ देषत भया ॥ जो मैं म्रितक हूया हो
अरु सब कुटंब के लोक रुदन करते है ॥ शरीर की कांत जाती रही है ॥ जैसे काटे कमल की सो
भा जाती रहती है ॥ तैसे प्राण निकस गए ॥ ते अकार गए है अरु अंग चेष्टा ते रहत भए है ॥ अरु स्व
र विरस भए है ॥ मानो अपणी ज्ञाती वणों कों हसते है ॥ जैसे पवन के टह्के ते व्रिष अचल हो जाता है
तैसे शरीर सिथल हो गया है ॥ मानो सुषपत विषे आप गया है ॥ अरु माता चव कों पकड़ दुषी
है ॥ सर्व परवार एकठा भया है ॥ जैसे व्रिष उपर कूंज पंषी एकटे आन रोते है ॥ जैसे पुल के टूटे ज
ल वह चलता है ॥ तैसे रुदन करता है ॥ ते रोते जल चलता जाता है ॥ तब बांधव लोक कहणे ला
गे ॥ जो अब इस कों मसाण ले चलो ॥ इस कों जलावो ॥ ऐसे कह कर जलावणे कों ले चले ॥ चिता वि
षे डार कर जला पड़ीया ॥ जलाइ कर अपणे ग्रह विषे आवत भए ॥ अरु पाक कर्म करणे लागे ॥ हे
रामजी तिस के उपरंत ब्राह्मण आप कों चंडाली के गर्भ विषे देषत भया ॥ जो मैं इहां आन पड़ा
हों ॥ जैसे स्थान के विष्टा विषे क्रिम होता है ॥ तैसे आप कों प्रवेश करता देषता भया ॥ तब समै
पाइ कर गर्भ ते वाहर निकसत भया ॥ जैसे पका फल व्रिष ते गिर जाता है ॥ अरु जैसे वर्षा मेघ ते छोटा

उ.प्र. ९

मेवनिकसताहै॥ तैसेस्याममूर्तचंडालीकेगर्भतेनिकसतभया॥ वहजतसुंदरबालकजन्मया
तवचंडालीकीइससाथप्रीतभई॥ जैसेवृषकाअंकुरवढताजाताहै॥ तैसेदिनदिनविषेवडाहो
जावे॥ तवद्वादशवर्षकाभयावहजडषोडशवर्षोकाभया॥ तवस्वानोंकोंसाथलेकरवनविषे
मृगोंकोंमारे॥ इसप्रकारवहुतइस्थानोंमेंविचरेवहइएकचंडालकीकन्यासाथइसकावि
वाहभया॥ तवअन्यप्रवारीभया॥ पुत्रकलित्रवहुतभए॥ तोवनअवस्थाकोंअरुस्थविषेवि
तीतकरताहै॥ वहउत्कृष्टभयातवशरीरजरजरीभावभया॥ अरुपत्नीकीकुटीवणाइकरा
आपवाहरजाइरहा॥ जैसेमुनीश्वररहतेहैं॥ तवदुरभिक्षपडीदुष्टातवइसकेजोवांधवथे
सोक्षुधाकरमरणेलागे॥ तवऊहांवांधवोंकोंछोडकरआपएकलाहीनिकसगया॥ मार
गमोंकोहीइस्थानदेसवनोंकोंलंघगया॥ अरअकस्मातहीकिरातदेसविषेजाइप्राप्तभया
अरस्यागेकिरातदेसकाराजामृतकहूयाथा॥ तवमंत्रीयोंविचारकीयाजोएकहस्तीअतजा
तीसंदरहै॥ उसकोंराजमार्गविषेछोडदीजीए॥ जिसपुरुषकोंमस्तकहरहस्तीअपणेऊप
रचढाइलेवेतिसीकोंहमराजाकरें॥ हेरामजीऐसेविचारकरकेमंत्रीयांहस्तीकोंचलाइदी
या॥ अरस्यागेतिसमार्गविषेश्वपचचंडालचलाआवथा॥ तवइसनेदेषाजोअतसुंदरचर
णोकरवै॥ हस्तीचलाआवताहै॥ मानोसुमेरपर्वतचरणोंकरचलाआवताहै॥ जवनिकट
आयातवइसकोंहस्तीनेसुंडसाथपकडकरआपणीपीठऊपरवैठाइलीया॥ जैसेमेघसुमे
कोंसीसपरवैठाइलेवे॥ तैसेहस्तीचंडालकोंवैठाइलीया॥ तवनगारेअरवंसरीयांअनेकप्र
कारकेवाजेंत्रअतशब्दकरवाजणेलागे॥ अरजेजयजयशब्दहूआ॥ अरवाजेंत्रोंकेवाजणे
करचउंघाहूभया॥ मानोप्रलयकालकेमेघगाजतेहैं॥ अरभाटस्यानंककेउच्चारकरणेला
गे॥ अरउसकेमुषकीसोभाहसतीऊपरआरूढहूएकीअवरकीअवरहोइगई॥ तवसेनाअ
संपूर्णतराजासोभतभया॥ जैसेनषत्रोंविषेचंद्रमासोभताहै॥ तैसेमंत्रीयोंविषेसोभताभ
या॥ अरनगरविषेप्रवेशकीया॥ अरजमकरकेराजसभाविषेआइप्राप्तभया॥ तवहस्तीने
उतारकरअतसुंदरसिंहासनऊपरआनइस्थितभया॥ तवमंत्रीसर्वप्रणामकरकेअपनेअपनेअ
स्थानोंकोंगएतवराजेअंतहपुरविषेप्रवेशकीया॥ तवसभदासीराणीयांप्रणामकरतभ
ईयां॥ अरषेदतेरहतराणीयोंविषेविश्रामकीया॥ जैसेसमुद्रविषेसर्वनदीयांप्राप्तहो
तीयांहै॥ तैसेइसकोंसर्वराणीयांसषीयांसंजगतप्राप्तभईयां॥ तवआइकरइसकोंवट
णामलणेलागीयां॥ अरस्नानकराइकेनानाप्रकारकेभूषणपहिरेअरमोतीयोंमेंषचत
कीएरूपदिव्यऊजलवस्त्रइसकोंपहराए॥ तिनकरसोभायमानभया॥ तवराजाहोइक
रराजकरतभया॥ सर्वइस्थानअरदेसोंविषेइसकीआज्ञाचलणेलागी॥ अरसर्वलोका
इसतेभयपावणेलागे॥ अरअततेजकरकेसंपन्नहूया॥ अरअतलक्षमीकरसंपन्नभया॥ क
ल्पवृक्षकीन्याईअरतेजवानहोइकेविचरणेलागा॥ जैसेवनविषेसिंहविचरताहै॥ इसप्रका
रचिरकालपर्यंतराजकरताभया॥ हस्तीऊपरआरूढहोइकरसिकारषेले॥ गवलनाम
राजाहोइकरसर्वदेसपरआज्ञाकरतभया॥ अरअतआनंदमानहूया॥ २॥ इतिश्रीउपश
मप्रकरणेगाधचंडालराजाभूमआगमनामसर्गः॥ वसिष्ठोवाच॥ हेरामजीइसप्रकारराजलष
मीकोंपाइकरआनंदमानहूया॥ जैसेपूर्णमासीकाचंद्रमासोभताहै॥ तैसेराजलषमीक
रपूर्णसोभताभया॥ अरअष्टवर्षपर्यंतराजकर्तभया॥ तवएकसमेभूषणअरवस्त्रपहरे
इस्थतहै॥ अरमनविषेसंकल्पआनफुराजोमुझकोंभूषणोंअरवस्त्रोंकेपहरणेकरक्याहै॥ उ
नकीसुंदरताकाहै॥ मैतोराज्याथराज्यअपणेतेजकरतेजस्वीहों॥ अरशोभायमानहों॥ हेरामजी
ऐसेविचारकरकैभूषणअरवस्त्रउतारडारे॥ शुद्धस्याममूरतहोइकरइस्थितभया॥ जैसेप्र
भातकेकालकोंतारागणोंकेप्रभावतेस्यामआकासरहजाताहै॥ तैसेहोइकरवहउअपणी
चंडालअवस्थाकेवस्त्रपहरकरएकलाहीनिकसया॥ अरवाहरकीउचवडीविषेआइइस्थित
भया॥ जैसेआकासमार्गमेंसूर्जएकलाचलताहै॥ तैसेएकलाहोइकरराजमार्गकीडेवढीप
रआयठाढाभया॥ तववेइरवतेहूनदेसकेचंडालवहभीदुभिक्षकरतिसदेसविषेआयप्राप्त

भयथे॥ अरतिससमेवहचंडालराजमंदरकेआगेदोनंदरीहस्तविषेधारकरावनेआनंनिक
मे॥ जैसेकोयलोंकेसंहरविषेएककोइलशब्दकरे॥ तैसेएकचंडालबीणावजायानिसनेरा
जाकोंदेषकरपूछानियाजोएहतोहमाराहीभाईहै॥ ऐसेजाणकरराजाकेसनमुषआया
मानोस्यामपर्वतचलाआवताहै॥ अरकहतभयाहेभाईएतनाकालतूंकहांथा॥ हमकोंछोड
करतएकलाहीचलाआया॥ हमकोंतोदुःखअतकष्टप्राप्तभया॥ अरतेंतोअवपुष्टभयाहै॥ ह
मकोंतूंछोडकरतूंएकलाहीहांसुषभोगणेलागाहै॥ हेभाईदीयोंकेगानेतुमकोंसुषीकी
याहोवेगा॥ काहेतेतोतूंगावताभलाहै॥ राजाकोंरागअतप्याराहोवेगा॥ अरतेंकोंकला
कीयाहोगावताहै॥ इसीकार्णतेतूंऊपरप्रसन्नहोइकरवडतधनदीयाहोवेगा॥ अथवाकि
सीअवरधनीतूंऊपरप्रसन्नहोयकरमहदअरधनतूंकोंदीयाहोवेगा॥ हेरामजीइसप्र
कारवहचंडालमुषतेकहता॥ अरभुजापसारतातिसकेसनमुषचलाआवे॥ अरराजाति
सचंडालकोंनेत्रोंअरहस्तोंसाथसैनकरे॥ तोहस्तीहोइकरमुषतेकछुनकहे॥ परवहचं
डालकछुसमझेनहीं॥ सनमुषचलेहीआवे॥ सुंसुराजावर्जनकरे॥ तैसेतैसेवहचंडालच
लेहीआवे॥ अरराजाकेमुषकीकांतघटतीजावे॥ जैसेगाडेकरमारेकमलोंकीकांतघटजा
तीहै॥ अरऊपरझरोषेविषेमहलीयांदेषतीयांथीयां॥ यहवृत्तांतदेषकरसहेलीयांराणीऊ
कोंकहा॥ तवसरवोंनेविचारकीयाजोयहराजाचंडालहै॥ ऐसेविचारकरकेअतशोककों
प्राप्तभईथीयां॥ कहनेलागीयांहाइहाइहमकोंमृतपापप्राप्तभयाहै॥ जोइसकेसाथहमऊस
परसकीयाहै॥ अरभोजनकीयाहै॥ चिरकालपर्यंतविचरेहैं॥ ऐसेशोककोंप्राप्तहोइकरस
वोंकीकांतनष्टहोगयी॥ जैसेवरफकेपडनेकरकमलोंकीकांतजातीरहतीहै॥ अर
जैसेवनकोंअगनलागणेकरवृषोंकीकांतजातीरहतीहै॥ तैसेउनकीकांतनष्टहोगई॥ इ
सप्रकारकष्टमानहोइकरमहाशोककेसमुद्रविषेडुवगईयां॥ अरसर्वनगरवासीभीम
रणाकरशोकवानभए॥ अरहाइहाइशब्दकरणेलागे॥ तववहचंडालराजाअपणेअंतहपुर
विषेआया॥ जेतेककुटंबीनगरकेलोकथेसोतिसकोंदेषकरभागेनिकटकोऊआवैनहीं॥
जैसेपरवतकोंअगनलागतीहै॥ परतिसतेस्वापदपंषीसर्वभागजातेहैंनिकटकोऊनहींआव
ता॥ तैसेचंडालराजाकेनिकटकोऊनआवे॥ मंत्रीभीअरइस्त्रीयांसर्वदूरहींतेभागे॥ जैसेकोऊ
ग्रहविषेमृतकहोताहैतिसकोंनिकटकोऊनहींआवता॥ अरजैसेरुषकोंअगनलागतीहै॥
तवपंषीकोऊनिकटनहींआवतातैसेचंडालराजाकेनिकटकोऊनआवे॥ तवतिसदेसवि
छेवडेतोपंडितविचारवानथेतिनोंविचारकीयाजोमहाअनर्थहूयाहै॥ जोएताकालहम
चंडालराजाकरकेजीवहैं॥ वडापापहमकोंलागाहै॥ यहपापकिसीअवरप्रायश्चितकरकों
निवरतनहींहोता॥ जोहमसर्वहीचिताबणाइकरअगनविषेप्रवेशकरकेजलमरेतव
निवर्तहोवे॥ हेरामजीजवयहविचारश्रेष्टब्राह्मणवडेलोकोंनेकीयातवतिसकेअनंत
रचिताबणाइकरलागजलणेपुत्रकलत्रबांधवोंकोंछोडकरअगनविषेप्रवेशकरतभ
ए॥ जैसेदीपकविषेपतंगप्रवेशकरकेजलतेहैं॥ तैसेश्रेष्टपुरुषपडेजले॥ जैसेआकास
विषेअनेकतारेदृष्टआवते॥ तैसेअनेकचिताकाचमत्कारदृष्टआवे॥ अरअनेकचिताके
धूमकरकेअंधिकारहोरहा॥ कोईमनुष्यधर्मात्माअपणीइछाकरकेजलें॥ अरकोईआप
तेजलणेकीइछानकरे॥ तवतिनकोंअवरधर्मात्मेधरमकीमर्यादासनमुषराषकरबला
तकारकरकेजलावे॥ तवचंडालराजाविचारकरतभया॥ जोमेएकाकेनिमितएतेनगरवा
सीपरेजलतेहैं॥ अरतिसकाजीवणाश्रेष्टहै॥ जिसकेजीवणेकरकेसोभाउत्पनहोवे॥ अरजि
सकेजीवनेकरकेपापउत्पनहोवे॥ तिसकाजीवणेतेमरणाश्रेष्टहै॥ हेरामजीऐसेविचा
रकरकेउसराजाभीएकचिताबणाई॥ जैसेदीपकविषेपतंगवेगकरकैप्रवेशकर्ताहै॥
तैसेचिताविषेराजप्रवेशकर्तभया॥ जवअगनकातेजशरीरकोंलागा॥ तवगाधकाप्रारी
रजोनदीविषेडुवकीलगाईथीसोकंपाइमानहोया॥ तवजलतेंवाहरसीसकोंनिका
सिया॥ हेरामएतोभ्रमउसमहूर्तविषेदेषा॥ वहुउअर्थघरीपर्यंतजोउसकोवोधकहु

नहूया॥ अरु सावधान न भया॥ ॥ इति राजा अथ संसव नें नं नाम सर्गः॥ वसिष्ठ उवाच॥ हे राम वेद
तिस ते अनंतर सीस कों वाश्यनिकाम कर विचारणे लागा॥ जो मुरु कों कछु भ्रम जैसा हूया है॥ क
हा था वह मेरा शरीर विषे मरणा वहुरि चेडाल के गृह विषे जनम लेणा॥ वहुरि कुटंव विषे रहिणा
वहुरि उरभिष कर निकस जाणा॥ वहुरि राज करणा॥ वहुरि चिषा विषे प्रवेश करके जलना॥ अ
रवा हो यह दिसा जो गाध ब्राह्मण इहां इस्थित हों॥ पर अत भ्रम मुरु कों भया है॥ हे रामजी ऐसे विचा
र कर वो जल ते वाहर निकसिया॥ संध्यादिक करम कर के इस्थित भया॥ इस भ्रम कों वारं वार सम
रो करे॥ अरु आश्चर्यमान होवे॥ पर ऐसे न जाणा सके॥ जो भगवान का वर पाइ कर मैं माया दे
षी है॥ जव केतेक दिन इस कों विनीत भए॥ तव एक ब्राह्मण उर्वेल सा अरथा का हूया इस के आ
श्रम पर आया॥ मानो ब्रह्मा के आश्रम पर उरवल सा ब्राह्मण आया है॥ तव गाध उस कों आद
र संजुगत वैठाया॥ अरु फल फूल एकठे कर वो तिस के आगे आन राषे॥ जैसे वसंत रित कर के
फूल फलो साथ व्रष प्रसन होते हैं॥ तैसे उस कों प्रसन कीया॥ अरु ब्राह्मण का षेद निवरत कीया॥
जव केतेक दिन रहि रहा॥ अरु संध्यादिक करम भी एकठे करते रहे॥ मंत्र जाप करते रहे॥ रात्र
कों एक ठौर सिरहजा पर मैन करे॥ तव रात्र के समे सिरहजा ऊपर वैठ कर वारता चरचा करते ला
गे॥ अरु गाध पूछ्या है॥ ब्रह्मन तेरा शरीर ह्रास जैसा है॥ अरथा का हूया है सो का कारण है॥ हे
रामजी इस प्रकार जव गाध पूछ्या तव उस ब्राह्मण कह्या है साध॥ जो कछु तुम पूछ्या है॥ सो मै
कहता हों॥ हम सतवादी हैं॥ जैसे यह ब्रतांत भया है॥ तैसे तुम सुणो॥ हे साध एक काल विषे
देशांतर फिरता फिरता उतर दिशा की ओर एक नव किरात देश विषे मैं जाय प्राप्त भया॥ तहां र
हणे लागा॥ ऊहां के गृहसती मेरी भली प्रकार टहल करत भए॥ तव भले भोजन अरु वसत्रों कर
अरु तिन के भोगों कर मेरा चित प्रसन होणे लागा॥ सो किया अरु मैं जो मैं इह भोजन अरु वसत्रों कर के
प्रसन होवणे लागा॥ एक दिन मेरे मुष ते यह शवद निकस्या जो इहां के लोक अत श्रद्धावान
अरु दयावान हैं॥ तव निकट जो मानुष वैठे थे ऊहां के वासी सो मुरु कों कहत भए॥ हे साध
आगे इहां दयाधरम वहुत था॥ अव कछु घट गया है॥ तव मैं कहा अव ही हा दयाधर्म क्यों कर
घट गया है॥ सो ब्रतांत कहो॥ तव वह कहत भए॥ हे साध इस देस का जो राजा सो मृत्यु वस भया॥ त
व उहां चेडाल राजा होत भया॥ पर प्रथम किसी न जाणा॥ अष्ट वरष पर्यंत वहुत राज करत भ
या॥ जव उस की वारता प्रगट भई जो यह तो चेडाल है॥ तव देस वासी धर्मात्मा जो थे ब्राह्मण थे
तिनों चिषा वणाय कर अगन विषे प्रवेस कीया॥ अनेक जीव इस प्रकार ब्राह्मणादिक दग्ध हो
त भए॥ वहुर राजा भी दग्ध भया॥ ऐसा पाप इस देस भया है॥ इस कारण ते दयाधर्म घट गया
है॥ हे गाधजी जव इस प्रकार मैं नगरवासीयों ते सुणा॥ तव मैं अत शोकवान भया॥ अरु कहा
ते निकस भागाया॥ जो हा इहां मैं महापाप देस विषे रहा हों॥ ऐसे विचार करता मैं पियाग आ
दिक तीरथों के स्नान निमित चलया॥ अरु पियाग आदक तीरथों के सिनान कर के चष चंद्राय
णब्रत राषे॥ क्रस्णपक्ष विषे एक एक ग्रास घटाता जावों॥ जव उमावसिया आवे तव उपवास कर
हों॥ वहुर शुकल पक्ष विषे एक एक ग्रास वधावता जावों॥ पूर्णमासी पर्यंत चंद्रमा की किर
णां साथ वधावणा॥ अरु किरणां ही साथ घटावणा॥ इस प्रकार मैं तृतीय चंद्रायण ब्रत की
ए हैं॥ अव कुहां ते गमन कर कै तुमारे आश्रम विषे आइ कर ब्रतों का उपारना कीया है॥ हे साध
इस निमित मेरा शरीर क्रस भया है॥ सो मैं सरव ब्रतांत अपणा तुमारे आगे नेवेदन कीया है॥
हे रामजी जव इस प्रकार तिस ब्राह्मण कहा॥ तव गाध अत विसमय कों प्राप्त भया॥ जो मैं जाण
ता था मुरु कों कछु भ्रम भास्या है॥ सो इसने प्रतष वारता कर सुणाई है॥ ऐसे विचार कर वहुउ
पूछत भया॥ वहुउ भी उस ऐसे ही कहा॥ तव गाध सुण कर अत आश्चर्यमान होत भया॥ जव रा
त्र वितीत हूई॥ तव ब्रह्मांड रूपी मंदर का दीपक सूरज भगवान उदे हूया॥ अरु वह ब्राह्मण संधा
दिक कर्म करत भए॥ जव वह अस्थित ब्राह्मण गाध के आश्रम ते गमन कीया॥ तव गाध एका
ला हो इ कर विचारत भया॥ जो मैं कैसा भ्रम देषा है॥ अरु ब्राह्मण ने सत कर दिषाया॥ भ्रम सत कै
से भया॥ ता ते अव मैं उसी देस कों चल कर देषों जहां मुरु कों चेडाल का शरीर भास्या था॥ हे रा

मनो इस प्रकार विचार कर के मनो राज स्वपन देषणे के निमित गाध ब्राह्मण चल्या॥ जैसे वाइ वेग सा
ती षणो वेग कर चलता है॥ तैसे चला जाता॥ भूत देस विषे जाय प्राप्त भया॥ जैसे कुटंव कोट कों के अं
षो कों टोलता के टंकों के घरो विषे जाय प्राप्त होवे॥ तैसे गाध चेडालों के इस्थानों के जाय प्राप्त भया
तव वहुत लो के इस्थान देषत भया॥ जहां अपणा इस्थान था तिस कों देषत भया॥ अरु अपणे रहणे
षे वो वालक का इस्थान देषत भया॥ कछुक पड़ा है कछु कषाड़ विगड़ा है॥ अरु पसूयों के अस्थ
आहार मिला अपणो इस्थान पर दोरवो सो प्रतष देषत भया॥ देषकर आश्चर्यमान होवे॥ हे देव यह
क्या आश्चर्य है॥ जो वालक अवस्था विषे क्रीडा करणे के इस्थान थे॥ सो देषत भया॥ अरु वर भोज
नों के इस्थान देषे॥ अरु मद पान के पात्र इत्यादिक षान पान भोगों के इस्थान प्रतष देषत भया॥
अरु देष कर महा वैराग कों प्राप्त होत भया॥ अरु ग्राम के वासी मानुषों सो पूछत भया जो कदाचि
त कैसे कहोगे॥ हे साधो इहां एक चेडाल भी होता था॥ वडा स्याम ऊंचे शरीर वाला॥ तुम कों भी स्म
रण है कछु॥ हे रामजी जव इस प्रकार गाध ब्राह्मण पूछ्या तव ग्रामवासी कहत भए॥ हे ब्राह्मण इ
हां एक कटंजन नाम चेडाल होत भया है॥ उस कर के वह वडा हूया वहुड इस का विवाह भया॥ पुत्र के
न्याय परवार संयुक्त कुटंव भी भया॥ वहुड वृध अवस्था कों प्राप्त भया॥ वहुड देव संयोग ते उरभिष प
ड़ी॥ तिस कर लोक पृथ्वी मरणे लागे॥ तव वह कुटंव कों त्याग कर एकला ही निकस गया॥
जाता जाता किरात देस विषे जाय प्राप्त भया॥ आगे उहां का राजा मृतवस भया था॥ तव केसे जीर
यो राज उस कों दीया॥ तहां वह अष्ट वर्ष पर्यंत राज करत भया॥ जव नगरवासी उस मेणा जो यह चेडा
ल था॥ तव अत शोक करत भए॥ अरु चिषा वणाय कर जल जल मूए॥ इस प्रकार उस का व्रितांत भया है॥
सो तुम कों कहा है॥ हे रामजी इस प्रकार सुण कर गाध अत आश्चर्यवान हूया॥ एक सों म्हण कों ब
हुड अवरु सो पूछता उस भी तिसी प्रकार कह्या॥ ऐसे वारं वार लोकों सो पूछत भया है॥ तव लोकों वि
चारत भए जो यह तायक पूछता है॥ इस का वह हृवाय वसिठ हो वेगा॥ हे रामजी गाध उहां एक मा
स रह कर आगे गमन कीया॥ नदीया पर्वत देसों कों लंघता हिमाले पर्वत के उतर दिशा की ओ
र किरात देस गया॥ तहां जाइ प्राप्त भया॥ जेतेक उह इस्थान विचरणे के थे॥ सो सर्व ही देषत भया
राज के इस्थान देषे॥ जहां मंदर इसत्रीयां रहती थीयां॥ तिन कों प्रतष देषत भया॥ जहां चमर हो
ते थे तिन इस्थानों कों देषत भया॥ तिन कों देष कर वहुड नगरवासीयों सों पूछत भया॥ हे नग
रवासी जो इहां कोउ चेडाल भी राजा भया था॥ तुम कों कछु जानते हो॥ तव मुरु कों कहे
हे रामजी ऐसे जव ब्राह्मण पूछ्या तव नगरवासी कहत भए॥ हे साध इहां का राजा मृतवस भ
या था॥ तव मंत्रीयों हसती छोडा॥ जो प्रथम इस हसती के सनमुष आवे तिस कों राजा करें॥ जव
हसती चलावत तिस के सनमुष चेडाल आइ निकसिया॥ तिस कों हसती अपणे सीस पर आरू
ढ कर लीया॥ तव अवर विचार किसी कछु न कीया॥ जव अष्ट वर्ष उस चेडाल राज कीया॥ तव
अकसमात उस के वांधव आय निकसे॥ अरु उस के साथ मिल कर चरचा करने लागे॥ तव सहे
हेलीया ऊपर सो देषा जो यह तो चेडाल है॥ ऐसे जाण कर तिन सरवों उस का त्याग कीया॥ व
हुड लोक विचारवान जो श्रेष्ट उस कों राजा जाण कर चेष्टा करते थे ते सर्व ही जल मूए॥ वहुड
वह राजा भी आप कों धिकार कर के अगन विषे प्रवेश करत भया॥ अष्ट वर्ष पर्यंत वह राज क
रत भया है॥ अव द्वादश वर्ष उस कों मृतक भए कों वितीत भए हैं॥ हे रामजी इस प्रकार अ
वृतांत के गाध ब्राह्मण प्रतष आश्चर्य कों प्राप्त होत भया॥ अरु विचारत भया॥ जो कहूं मैं जल
विषे इसनान कीया॥ अरु कहां पतीत अवस्था देषता भया॥ अत आश्चर्य है॥ ऐसे कह कर विचार
कीया॥ जो अव अपणा चेडाल जनम देस कों चलों हों॥ तहां जाइ कर देषों जो उहां मुरु कैसे
भ्रम भया॥ सो जाय कर देषों जो उहां सो ब्रतांत है॥ हे रामजी ऐसे विचार कर के गाध ब्राह्मण
चलया॥ आवता आवता कितनेक काल पाछे भूतन देस विषे आइ प्राप्त भया॥ तव आय
कर अपणे गुर के निकट पूछत भया॥ जो इहां गाध नाम एक ब्राह्मण होता था॥ तिस कों तुम
जानते हो॥ तव उहां के वासी उने करा वह तो देसांतर कों गया राजा हूया॥ अरु उस के बांधव
मृत्यु वस भए है॥ हम उस कों जाणते हैं॥ वह अत श्रेष्ट वेरागवान था॥ हे रामजी ऐसे सुण कर गाध

उ.प.
३

यमहा आश्चर्य सो पाम भया ॥ अरु कहत भया जो यह मुझ को भ्रम भया के स्वप्न ही भया ॥ सो य
ह महा आश्चर्य है ॥ अरु हां ते गमन करके बहुरि किरात देस विषे गया ॥ वहां जो इकठा भया
तब बहु उसी प्रकार कहै ॥ तब गाधि ब्राह्मण सुनकर आश्चर्यमान होवे ॥ बहुरि अपने देस विषे
आवै ॥ बहुरि चंडाल जनम के देस विषे बहुरि जहां अभूत बस्थान की याद्या तहां जावै ॥ हे रा
मजी गाधि ब्राह्मण बारंबार भ्रमता फिरे ॥ अरु आश्चर्यमान होवे ॥ कबी ऊहां जावे कबी ऊहां जावे
अरु विचारे मन मों कीया जो यह मुझ कों भ्रम भया के सत भया ॥ ऐसे विचारता था ॥ जो सर्वलोक
तोंतस्मर्णों विषे आया यह आश्चर्य भगवान की माया का है ॥ जो मैं भगवान सों वर लीया था
तिस माया कर कै मै एता भ्रम देषा है ॥ अरु यह आश्चर्य है जो सी हां जल विषे डुब महूर्त मु
झे बतीत भए है ॥ अरु हां एता काल मुझ कों भास्या है ॥ स्वप्न भ्रम की न्याईं ॥ सी अरु मन हो इ
स्थित भया है सो बडा आश्चर्य है ॥ ताते संशय निवारण अर्थ बहुरि विस्नजी का आराधन करों
जिस की माया कर मै एता भ्रम देष्या है ॥ अवर को इस संशय निवारण कों समर्थ नहीं ॥
हे रामजी ऐसे विचार करके गाधि ब्रह्म पर्वत की कंदरा विषे जो वन था ॥ तिस विषे जाय
कर बहुरि तप करत भया ॥ एक चुली जल की पान करे ॥ अवर कछु भोजन करे ॥ इस प्रका
र अष्ट दस मास तप कीया ॥ तब त्रिलोकनाथ विस्नु भगवान जी प्रसंन होय कर ब्राह्मण
के सन्मुष आवत भए ॥ अरु कहत भए हे ब्रह्मण तैं माया को तो देषत भया ॥ अब अवर कि
या इछा है ॥ हे राम जी जब विस्नु भगवान ऐसे कहा तब ब्रह्मण कहत भया ॥ जैसे मेघ कों
देष कर चात्रक प्रसंन्न होय करता है ॥ तैसे ब्राह्मण बोलत भया ॥ गाधिरुवाच ॥ हे भगवान तुमारी
माया तो मै देषी है ॥ पर एक संशय मुझ कों रहा है ॥ जो सी हां जल विषे मुझ कों दो महूरत न
बितीत भए है ॥ तिस दो महूर्तों विषे चिरकाल पर्यंत भ्रमता रहा हों ॥ स्वप्न वन काल का बितक्रम भा
स्या ॥ पर तिस मिथ्या भ्रम के पदार्थों कों बहुरि जाय तत्व विषे प्रतषमे के मैं देषत भया ॥ श्री भगवानो
वाच ॥ हे ब्राह्मण यह अवर कछु नहीं तेरे चित का भ्रम है ॥ जिस चित विषे तत्व की अदृष्टता है ॥ ति
सके यह भ्रम होते है ॥ अवर हुवा भ्रम था ॥ जेता कछु जगत तूं प्रतष देषता है ॥ सो भी तेरे मन विषे
इ स्थित है ॥ जैसे बीज के अंतर ब्रष फूल फल पत्र टास होते है ॥ तैसे प्रथवी अपते ज वायु अकास जे
ता कछु पांच भूतक जगत का सर्व विमता रहै ॥ सो चित विषे इस्थित है ॥ जैसे ब्रष का विस्तार बीज
विषे दृष्ट नहीं आवता ॥ जब बोईता है तब निकसि आवता है ॥ पर प्रतष पड भासता है ॥ तैसे ज
व लग चित अत्यसता विषे लीन होता है ॥ तब लग जगत नहीं भासता ॥ अरु जब ब्रह्म के अमा
द कर चित सपंद हूपकरता है ॥ तब अनत विस्तार संयुक्त जगत भ्रम सत पड भासता है ॥ हे ब्राह्म
ण जेता कछु जगत तुझ कों दृष्ट आवता है ॥ सो सर्व चित का भ्रम है ॥ जैसे एक ही अभकार अ
नेक ऊ भादिक बासनों कों उत्पन करता है ॥ तैसे एक ही चित अनेक भ्रमों कों उत्पन करता है
जो बासना संयुक्त चित है ॥ सो अनेक भ्रम पदार्थो का कारण है ॥ अर जो चित बासना ते रहत है ॥
तिस ते भ्रम पदार्थ को ऊन ही उपजता ॥ ताते चित चित ही कों इस्थित करो ॥ हे ब्राह्मण इस चित विषे
क ही को टब्रह्मांड इस्थित है ॥ जो तम कों चंडाल अवस्था का भ्रम भया है ॥ सो इस विषे का आश्चर्य
है ॥ जो तू कहता है ॥ मै अनत आश्चर्य रूप माया देषी है ॥ सो इसी कों का माया कहता है ॥ अब जो क
छु तुझ कों विद्यमान पड भासता है ॥ सो भी माया मात्र है ॥ जो तुम कों अपणे ग्रह विषे मरणे
का अनुभव भया था ॥ सो भी माया थी ॥ अर चंडाल के ग्रह विषे जनम देष्या सो भी माया थी ॥ कुटं
बी होणा अवराज करणा भी माया थी ॥ बहुरि चिता विषे जलणा भी माया थी ॥ बहुरि अतिथ ब्रह्म
ण कों मिलणा भी माया थी ॥ बहुरि उठ कर सर्व इस थान ही तूं जो देषे सो भी माया है ॥ जैसे एते भ्र
म तूं ने माया कर देषे ॥ तैसे यह वर्तमान भी सर्व माया ही है ॥ हे साधो जैसे स्वप्न विषे नाना प्रका
र के पदार्थ पड भासते है ॥ अर जैसे मदरापान करणे वाले कों पदार्थ भ्रमते भासते है ॥ जैसे नौ
का पर बैठे कों तट के ब्रष बिपरीत चलते भासते है ॥ सो भ्रम मात्र भासते है ॥ तैसे यह जगत भ्रम मा
त्र भासता है ॥ हे साध जिस चित के भ्रम मात्र ते यह जगत भासता है ॥ तिस चित कों इस्थित कीए ते
जगत भ्रम नष्ट हो जाता है ॥ अन्यथा भ्रम की निवृत नहीं होती ॥ जैसे पत्र फूल फल टास के का

रणे कर ब्रष का विस्तार नष्ट नहीं होता ॥ जब मूल सें पुडं उषाडीए तब ब्रष नष्ट होता है ॥ तैसे ज
गत भ्रम का मूल चित है ॥ जब चित कों नष्ट करीए ॥ तब सर्व जगत भ्रम निवर्त हो जाता है ॥
सो चित का नष्ट करणा क्या है ॥ जो चित की चेतनता दृश्य की ओर धावती है ॥ सो जगत भ्रम का बीज
है ॥ जब वही चेतनता दृश्य की ओर फुरणे ते रोक कर अंतरमुषी आत्मा की ओर इस्थित करे ॥ तब सर्व
र न जगत भ्रम मिट जाता है ॥ अरु जगत की ओर फुरणा तब ही मिटे जब सर्व जगत कों मिथ्या
मात्र ही जानीए ॥ हे साध यह सर्व जगत माया मात्र है ॥ को उ पदार्थ सत नहीं ॥ जैसे वह भ्रम तुझ कों
त्याग कर कै अपणा जो ब्रह्मण का कर्म है तिसी विषे जाइ कर इस्थित हो ॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी
इस प्रकार कह कर विस्नु देव उर्धान होते भए ॥ तब गाधि अरु अवर जो ऊहां रिषी मुनीस्वर थे सो
सर्व विस्नु देव की पूजा करत भए ॥ अरु गाधि ता ले कर विस्नु भगवान पीर समुंद्र कों गमन कीया ॥ तब
वह गाधि ब्रह्मण उठ कर बहुरि उसी भ्रम कों देषणे लागा ॥ किरात देस विषे गया ॥ बहुरि हून देस
विषे गया ॥ तिन कों देष देष आश्चर्यमान होवे ॥ अरु कहे भगवान जी के से माया मात्र कहते है ॥ य
ह तो प्रतक्ष ही मै देषता हों ॥ जो कछु भ्रम कर के देषा था सो ई प्रतष देषता हो ॥ ऐसे विचार कर
के बहुरि बहुत भया ॥ तो इस संशय के दूर करणे कों अवर को समर्थ नहीं ॥ ताते बहुरि विस
का आराधन करों ॥ हे रामजी ऐसे विचार कर गाधि बहुरि पर्वत की कंदरा विषे जाइ कर तप करत भया ॥ त
ब अल्प काल विषे विस्नु भगवान प्रसंन होइ कर आइ प्राप्त भए ॥ जैसे मेघ के देषे मयूर सोभते है तैसे भ
गवान ब्राह्मण सों कहत भए ॥ श्री भगवानुवाच ॥ हे ब्राह्मण अब तें क्या चाहता है ॥ गाधिरुवाच ॥ हे
भगवन तुम कहते हो सर्व ही भ्रम मात्र है ॥ अरु मुझ कों प्रतष पड भासता है ॥ जो भ्रम होता है ति
सका प्रतष अनुभव नहीं होता ॥ अरु मैं बहुरि जाइ कर सर्व ही इस्थान देषता फिरा हों ॥ अरु अल्प
काल विषे दीर्घ काल देषणे का मुझ कों संशय है ॥ सो तुम कृपा कर के निवर्त करो ॥ श्री भगवा
नुवाच ॥ हे ब्राह्मण यह जो कछु तुझ कों भासता है ॥ सो सर्व माया मात्र है ॥ अरु जिस प्रकार तुझ
कों यह अनुभव भया है ॥ सो श्रवण कर ॥ हे ब्राह्मण वह कटंज नामा चांडाल एक चंडाल के ग्र
ह विषे उत्पन भया था ॥ बहुरि बहु कुटंब कर के बडा कुटंबी भया ॥ जब हां तुरमिष पडी तब वह
उस देस कों त्याग कर किरात देस का राजा भया ॥ बहुरि लोकों ने जाण्या जो यह चंडाल है ॥ तब सर्व
होइ अह लोक अगन विषे जले ॥ बहुरि वह चंडाल अप भी अगन विषे जला ॥ सो वह कुटंब चंडा
ल अवस्था ॥ तिस कों यह सर्व अवस्था भई है ॥ सो ई प्रतभा तुझ कों आन फुरी है ॥ जैसे ई अ
वस्था तिस कों भई थी वही तेरे चित विषे आन फुरी ॥ इस कारण ते तें जाणा तें भया ॥ जो यह अव
स्था मैं देषी है ॥ हे साध अकस्मात ऐसे भी होता है ॥ जो अवर की प्रतभा अवर कों फुर आवती
है ॥ कहूं अनथा की अनथा भी होता है ॥ कहूं एक जैसा भी फुर आवती है ॥ इस भ्रम का अंत लव
णा नहीं आवता ॥ यह सर्व चित के धमणे ते भासता है ॥ जब चित आत्मा पद विषे इस्थित होता
है ॥ तब सर्व भ्रम जगत मिट जाता है ॥ अरु काल की विषमता भी हो जाती है ॥ जैसे जाग्रत के ए
क महूर्त विषे निद्रा वश हो इ कर स्वप्न विषे अनेक वर्षों का अनुभव देषता है ॥ तैसे तें यह भी
जाण यह चित का धर्म है ॥ तें इस भ्रम कों मत देष ॥ अपणे चित को इस्थित कर के अपणे ब्राह्म
ण के आचार कों कर ॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी ऐसे कह कर विस्नु जी अंतरध्यान होत भए ॥ पर
ब्राह्मण कों संशय न वर्तन भया ॥ गाधि ऐसे मन विषे विचारत भया ॥ जो अवर की प्रतभा मुझ कों
कैसे भासे ॥ यह जो प्रतष मैं नहीं भोगी है ॥ तो मैं भोगी है ॥ सो मैं प्रतष जाइ देषी है ॥ यह अवर की
वारता कैसे होवे ॥ जो आप देषी न हो होती तिस का अनुभव भी नहीं होता ॥ मैं तो प्रतष अनुभव
कीया है ॥ ऐसे विचार कर बहुरि बहुरि इस्थान जाइ देषे ॥ अरु आश्चर्यमान होवे ॥ बहुरि लागा वि
चारणे जो मुझ कों यह अनत संशय है ॥ इस के निवारण का उपाइ मै भगवान जी सों बहुरि पूछौ
ऐसे विचार कर के बहुरि तप करत भया ॥ हे रामजी केताक काल पर्वत की कंदरा विषे तप करते
यती भया ॥ तब बहुरि विस्नु जी आइ कर कहा ॥ श्री भगवानुवाच ॥ हे ब्राह्मण अब तेरी का इछा है ॥
गाधि ब्रह्मणोवाच ॥ हे भगवन विस्व भरजी तुम कहते हो यह अवर की प्रतभा तुझ कों फुर आरी
है ॥ अरु मुझ कों प्रतष प्रमाणी हो कर भासते है ॥ यह संशय मेरे चित ते जिस प्रकार निवर्त होवे

उ.प्र.
५

सोईउपाउकेहा ॥ अवरघंथोज्ञानतुरुकोंकछुनही ॥ एहभ्रममेराजनिवर्तकरो ॥ श्री भगवानुवाच ॥ अ
रजुनयहसर्वजगतमेरामायाकररचियाहै ॥ तिसविषेमेतुरुकोंमनकाकहो ॥ अरु अमनकाक
हो ॥ जोकछुतुरुकोंभासताहे ॥ सोसर्वमायामात्रहै ॥ चितकेभ्रमकरकेपहभासताहै ॥ जैसेउमच
शालकीअवस्थाभई ॥ सोतेसेचितविषेभासआईहै ॥ जैसेएकजेवड़ीपड़ीहै ॥ तिसविषेकिसीकोंस
र्पभ्रमभासिया ॥ इसीप्रकारअवरकिसीकोंउसीजेवड़ीविषेसर्पभासताहै ॥ तैसेहीउसकोंभ्रमभात
रुकोंभासआईहै ॥ अरकालजोहैसोअवस्थामात्रहै ॥ तिसकाकछुरूपआकारनही ॥ अरकालभीतु
रुकोंएकपदार्थकीन्याईहोआयाहै ॥ चितविषेपदार्थकालकरभासतेहै ॥ अरकालपदार्थोंक
रभासताहै ॥ अन्योअन्यभासतेहै ॥ अरअल्पदीर्घजोहोताहैसोसभ्रमवतहै ॥ जैसेजाग्रतकेएकमुहू
र्तविषेनिद्राकरस्वप्नविषेअनेकवरषोंकाअनुभवहोताहै ॥ यहचितकासंपदजैसेफुरताहै ॥ तै
सेतैसेहोयकरभासताहै ॥ रोगीकोंअल्पकालभीदीर्घहोयभासताहै ॥ अरभोगीकोंदीर्घकाल
भीअल्पहोयभासताहै ॥ हेसाधूजोनहीभोगयाहोतातिसकाभीअनुभवहोताहै ॥ जैसेत्रिकालद
रसीकोंभूतकालअरुभविष्यतकालअरवर्तमानकीन्याईप्रतक्षभासताहै ॥ तैसेतुरुकोंभीअनु
भवभया ॥ जबलगचितआत्मपदविषेइस्थतनहीभया ॥ तबलगअनेकभ्रमभासतेहै ॥ जबचि
तइस्थतहोवैतबसर्वभ्रममिटजातेहै ॥ केवलएकअद्वैततत्वआत्माहीभासताहै ॥ हेसाधजेता
कछुजगतहै ॥ सोअज्ञानकरकेभासताहै ॥ आत्मज्ञानभएतेनष्टहोजाताहै ॥ जैसेसम्यकमेउके
पास्कराहेकाम्रेतनष्टहोजाताहै ॥ अरअसम्यकमेरकारनासनहीहोता ॥ तैसेतेराचितअवलग
वसनहीभया ॥ चितकोंआत्मपदविषेलगावों ॥ जोसर्वभ्रमनष्टहोजावे ॥ हेसाधुअहंतेआदि
कलेतेकछुसहुदै ॥ सोअज्ञानीविषेदृढहोतेहै ॥ ज्ञानवानइनोंविषेफासतानही ॥ जैसेजलवि
षेतेवड़ीडूबतीनही ॥ तैसेअहंतेआदिकशत्रुोविषेज्ञानवानडूबतेनही ॥ सर्वधाहचितविषे
वर्ततेहै ॥ सोज्ञानवानोंकाचितअचितपदकोंप्रापहुयाहै ॥ तातेतेंइसवर्षप्रयंतनयविषेइस्थ
तहो ॥ तबतेराअंतःकर्णसुधहोवैगा ॥ जबअंतकर्णसुधहोवैगातबसर्वसंकल्पातेरहतआत्म
पदतुरुकोंप्राप्तहोवैगा ॥ जबआत्मपदप्राप्तभयातबजगतभ्रममिटजावैगा ॥ वसिष्ठोवाच
हेरामजीऐसेकहकरत्रिलोकीकेनाथविस्नभगवानअंतरध्यानहोतभए ॥ जैसेहीएकअंतर
ध्यानहोजाताहै ॥ तबगाधब्राह्मणतैसेहीमनविषेधारतेतपकरतभया ॥ जोकछुमनकीसंसा
रणीवृतहै तिसकोंइस्थतकर्तभया ॥ इसवर्षप्रयंतचितकोंसमाधइस्थतराषा ॥ जबऐसाएमन
पकीया ॥ तबशुद्धचिदानंदआत्माकासाक्षातकारतिसकोंहोतभया ॥ जेतेकछुरागद्वेषादि
कविकारहैतिनतेरहतशांतपदकोंप्राप्तभया ॥ ॥ इतिश्रीउपशमप्रकरणेगाधउपाख्याने
गाधेवेप्रसादप्राप्तनामसर्गः ॥ वसिष्ठोवाच ॥ हेरामजीइसगाधकाउपाख्यानतुरुकोंइह
मायाकीविषमतादिषावणेअर्थकहाहै ॥ जोएसीत्मापऐसीमायाहै ॥ जोआत्मतत्वतेभूलाहैति
सकोंआश्चर्यरूपभ्रमदिषावतीहै ॥ तुमदेषोजोदोमहूर्तकाहुअरपताकालप्रयंतभ्रमकोंदे
षणाकहा ॥ वहुइभ्रमकासतहोइभासताकहा ॥ यहसर्वमायाहीकीविषमताहै ॥ जोअसतरू
पअसिद्धभ्रमथासोईदृढहोइकरसतभासया ॥ तातेआश्चर्यरूपआत्माकीमायाहै ॥ जबलगबो
धनहीहोतातबलगअनेकभ्रमकोंदिषावतीहै ॥ श्रीरामोवाच ॥ हेभगवनयहजोमायामयसंसा
रहै ॥ तिसकाअंतनीपावेगाहै ॥ अरसर्वअंगोकोंछेदतेहागाहे ॥ जिसकरइनभ्रमतेछूटीएसोउ
तुमहुकोंकहो ॥ वसिष्ठोवाच ॥ हेरामजीइहजोमायामयसंसारहैतिसकानाभइस्थानचितहै ॥
जबचितहीवसहोवैतबसंसारचक्रकावेगरोकाजावै ॥ अवरकिसीप्रकाररोकयानहीजाता ॥
हेरामजीइसवार्ताकोंतभीभलीप्रकारजाणाताहै ॥ जोचक्रकानाभरोकतीहै ॥ तबचक्रइस्था
नहोताहै ॥ नाभरोकेविनाइस्थतनहीहोता ॥ जिसकेआश्रयचक्रभ्रमताहै ॥ तिसकानामना
भहै ॥ सोसंसाररूपीचक्रकानामचितहै ॥ जबजबमचितकोंइस्थतकरेगातबजगतभ्रमनि
वर्तहोजावैगा ॥ हेरामजीजबचितइस्थतहोताहै ॥ तबपरमसंपदाप्राप्तहोतीहै ॥ अरजोकछुक
रतव्यथासोपूर्णहोताहै ॥ कृतकृत्यकहोताहै ॥ अरजोकछुप्राप्तहोणाथासोप्राप्तहोताहै ॥ वहु
ड्याछेपावणाकछुनहीरहता ॥ तातेतपतीर्थदानध्यानआदिकजेतेकछुउपायहै ॥ तिनसर्वो

कोंत्यागकरकेचितहीकोंइस्थतकरणेकाउपाउकरो ॥ संतोकासंगअरब्रह्मविद्याकानिरूपणति
सविषेकहाहै ॥ ऐसेसतशास्त्रोंकाविचारइसउपायकरकेचितकोंआत्माविषेइस्थतअभ्यास
करकरणाउहीपरमपदहै ॥ जोसंतोंअरसतशास्त्रकरनिरणेकीयाअर्थआत्मपदहै ॥ तिसविषेवा
रंवारअभ्यासकरणा ॥ अरसंसारकोंस्वप्नवतअरमृगतृष्णाकेजलवतजाणकरइसतेवैरागकर
णा ॥ इनद्वितीयउपावोंकरचितइस्थतहोताहै ॥ अरआत्मपदकीप्राप्तहोतीहै ॥ अवरकिसीउपा
उकरआत्मपदकीप्राप्तनहीहोती ॥ हेरामजीबोलणेचलणेआदिकक्रियाकानषेधनहीबो
लीएअथवादानकरीए ॥ वाल्मीजीएअथवाकरीए ॥ इत्यादिककर्मसर्वयथाप्राप्तहोवैसोकी
जीए परइनकीओरचितकोंमतलगावो ॥ इनकासाषीजोहैजाणनेहाराअनुभवअकाम ॥ ति
सकीओरइचनहो ॥ जबपुरुषकरणाहोवैतबकरीए ॥ परचेतनसाषीकोंओरदेह ॥ तिसीकोंअपणा
रूपजाणीए ॥ अरइस्थतहोवीए ॥ शब्दस्पर्शरूपरसगंधयहजोइंद्रीयोंकेविषेहै ॥ इनकोंअंगीका
रकरीए ॥ परइस्थतसाषीइनकेजाणनेहारेविषेहोवे ॥ जोतेराअपणासरूपचिदाकासहै ॥
जबतिसहीकावारंवारअभ्यासहोवैतबचितइस्थतहोवे ॥ अरआत्मपदकीप्राप्तहोवे ॥ हेरामजी
जबलगचितआत्मपदविषेइस्थतनहीहोता ॥ तबलगजगतभ्रमनिवर्तनहीहोता ॥ इस
चितहीकेसंयोगतेचेतनकानामजीवहै ॥ जैसेघटकेसंयोगतेआकासकोंघटाकासकहीताहै
जबघटभगनहोजावे ॥ तबघटाकासभीमहाकासहोजावे ॥ तैसेजबचितनष्टहोजावे ॥ तब
यहजीवचिदाकासहोजावे ॥ अरयहजगतभीचितविषेइस्थतहै ॥ जैसेघटविषेआकासइस्थ
तहै ॥ जबघटनष्टहोजावैगातबघटाकासभीनरहैगा ॥ हेरामजीजबलगचितहैतबलगसं
सारहै ॥ जहांचितनहीतहांसंसारभीनही ॥ जैसेजबलगमेघहैतबलगबूंदभीहै ॥ जबमेघ
काअभावभया ॥ तबबूंदभीनहीरहतीया ॥ जैसेजबलगचंद्रमाकीकिरणसीतलहै ॥ तबलग
जाणीताहै जोचंद्रमाकेमंडलविषेउपावहै ॥ तैसेजबलगचितहैतबलगसंसारभ्रमहै ॥ जै
सेजहांमासकेइस्थानमसाणादिकहोतेहै ॥ तहांइलपंषीआनइकटेहोतेहै ॥ अवरठवरए
कटेनहीहोते ॥ तैसेजहांचितहैतहांरागद्वेषभयदेहादिकविकारभीहोतेहै ॥ अरजहांचि
तकाअभावभयाहै ॥ तहांविकारोंकाभीअभावहै ॥ हेरामजीपिसाचादिकोंकीचेष्टाजैसेरात्र
विषेहोतीहै दिनविषेनहीहोती ॥ तैसेरागद्वेषभयइछाआदिकविकारचितविषेहोतेहै
जहांचितनहीतहांविकारभीकोईनही ॥ जैसेअगनविनाउस्नतानहीहोती ॥ अरुबरफवि
नाशीतलतानहीहोती ॥ अरजैसेसूरजविनाप्रकाशनहीहोता ॥ अरजैसेजलविनातरंग
नहीहोते ॥ तैसेचितविनाजगतभ्रमनहीहोते ॥ हेरामजीशांतभीइसीकानामहैजोचितन
ष्टहोवे ॥ अरशिवपदभीतबहीप्राप्तहोताहै ॥ जबचितनष्टहोताहै ॥ आत्मताभीइहीहै ॥ तसभी
इहीहै ॥ सरवज्ञताभीइहीहै ॥ जोचितनष्टहोवे ॥ अरजहांचितनष्टनहीतहांएतेपदोंविषेको
ऊनही ॥ हेरामजीचिततेरहतजोचेतनहै ॥ सोप्रत्यकचेतनकहीताहै ॥ अरअमनसकहै ॥ अर
सरवकलनातेरहतहै ॥ जबलगइसकोंबोधनही ॥ तबलगनानाप्रकारकेपदार्थभासतेहै
जबवसतकाबोधभयातबएकआत्मसताहीभासतीहै ॥ हेरामजीसेचितज्ञानमात्रकीओर
ब्रतकोंराषणा ॥ अरजगतकीओरनहीराषणा ॥ जाग्रतकीओरनहीजावणाजाग्रतकेजाणने
वालेकीओरब्रतकोंराषणा ॥ स्वप्नअरसुषोपतकीओरनहीजावणा ॥ जोइनकेजाणनेहारीस
ताहै ॥ तिसहीकीओरब्रतकोंलगावणायहचितकेइस्थतकरणेकापमेउपाइहै ॥ जोसंतोंअ
रसतशास्त्रोंकरकेनिर्णकीयाजोअर्थहै ॥ तिसविषेअभ्यासयोगहोवे ॥ तबचितनष्टहोजाता
है ॥ हेरामजीजोअभ्यासहोसकेप्रथमतोभीसतशास्त्रोंकाश्रवणअरसंतोंकासंगबलातका
रकरकेकरीए ॥ तबसहजेहीअमनकाउहोआवेगा ॥ मनकोंमनसाथमथीएतिसतेज्ञानरू
पीअगनिकसेगी ॥ सोसर्वआसारूपीफासीकोंदग्धकरेगी ॥ हेरामजीजबलगचितआत्म
पदतेवेमुषहैतबलगसंसारभ्रमकोंदेषताहै ॥ जबआत्मपदविषेइस्थतभया ॥ तबसर्वक्षोभ
मिटजातेहै ॥ जबतुरुकोंआत्मपदकासाक्षातकारहोवैगा ॥ तबकालरूपविषभीअंम्रतसमा
नहोजावैगी ॥ विषकाजोविषतभावहैसोनरहैगा ॥ हेरामजीजबयहअपणासभाव

उ.प०
५

विषे इस्थित होता है ॥ तब संसार का कारण मोह मिट जाता है ॥ अरु वर्तमान काल भी भविषत की न्याई हो जावेगा ॥ जैसे भविष्यत काल के रागद्वेष स्पर्श नहीं करते ॥ तैसे वर्तमान काल का रागद्वेष भी स्पर्श न करेगा ॥ हे रामजी आत्मा पर्यंत दृष्टरूप है ॥ जिसके पाए ते अनंत भी विषमता न भासता है ॥ अर्थ यह जो अंतःकरण रूप जाण करके जो चित्त को चला बनाया ॥ सो चित्त किसी दृश्य पदार्थ की ओर चलता नहीं ॥ जिस पुरुष की इस्थिति आत्मपद विषे भई है ॥ सो सर्व ते उत्तम है जैसे सुमेर परवत के निकट तृण तुच्छ भासता है ॥ तैसे तिसके निकट सर्व त्रिलोकी के पदार्थ तुच्छ भासते हैं ॥ अरु यत्न दृष्टि ते जिसको प्राप्त होता है ॥ जिसने तिसको स्पर्श नहीं प्रकाश सत्ता ॥ ऐसा परमप्रकाश रूप है ॥ अरु शांत रूप है सर्व कलना ते रहित अद्वैत रूप है ॥ हे रामजी तिस आत्मतत्व विषे इस्थित होवो ॥ जिस पुरुष ऐसे स्वरूप को पाया है ॥ तिस सर्व कछु पाया है ॥ अरु जिसने ऐसे स्वरूप को नहीं पाया तिस कछु नहीं पाया ॥ हम को तो ज्ञान की वार्ता ते लज्जा कछु नहीं ॥ अरु जो तिस स्वरूप ज्ञान की वार्ता ते विमुख है ॥ पद पदार्थ मरता [illegible] भी है तो भी गरदभ पवन है ॥ जो अनर्थ स्वर्ग नरक के सेवन भी है ॥ अरु आत्मपद ते विमुख है ॥ तिसको विष्टा के कीट ते भी नीच जाणना ॥ हे रामजी जीवना तिसका श्रेष्ठ है ॥ जो आत्मपद के निमित्त यत्न करते हैं ॥ अरु तिनका जीवणा व्यर्थ है ॥ जो संसार के निमित्त यत्न करते हैं ॥ देखणे मात्र तो चेतन हैं ॥ पशु की न्याई ॥ अरु जो तत्व के ज्ञाते भए हैं ॥ सो अपणे प्रकाश करके सूरज चंद्रमा नक्षत्र तारियों वत प्रकाशते हैं ॥ अरु जिनको सरीर विषे अभिमान है ॥ सो मृतक समान हैं ॥ हे रामजी इस चित्त की दीनता कीया है ॥ ज्यूं ज्यूं चित्त मोटा होता है ॥ त्यूं त्यूं इसको कष्ट होते हैं ॥ अरु जब चित्त क्षीण होता है ॥ तब कल्याण होता है जब आत्मभाव अनात्मा विषे दृढ होता है ॥ अरु भोगों की त्रिस्ना होती है ॥ तब चित्त मोटा होता है अरु आत्मभाव ते विमुख होता है ॥ जैसे बडे मेघ के आवरण करके सूर्य नहीं भासता ॥ तैसे अनात्म अभिमान करके आत्मा नहीं भासता ॥ अरु जब भोगों की त्रिस्ना निवर्त होती है तब चित्त क्षीण हो जाता है ॥ जैसे बसंत रुत ते रहित पत्र कुमल हो जाते हैं ॥ तैसे भोगों की वासना अभाव ते चित्त क्षीण हो जाता है ॥ हे रामजी चित्त रूपी सर्प है ॥ सो दुर्वासना रूपी मुख अरु भोग रूपी वायु अरु शरीर विषे दृढ आसथा रूपी [illegible] इस स्थान कर मोटा होता है तीन पदार्थों कर जब मोटा भया ॥ तब मोह रूपी विष करके इसको मारता है ॥ हे रामजी ऐसे दुष्ट चित्त रूपी सर्प को मारो ॥ तब तेरा कल्याण होवै ॥ देह विषे जो आत्म अभिमान है ॥ अरु भोगों की त्रिस्ना पूरी करती है ॥ तिस कारण मोह रूपी विष इसको चरमकीया है ॥ जब विचार रूपी गारुड मंत्र को चितारे ॥ तब मोह रूपी विष उतर जाती है ॥ अवर उपाउ विष उतरणे का कोऊ नहीं ॥ हे रामजी चित्त रूपी एक विष का व्रक्ष है अरु देह रूपी भूम पर लागा है ॥ संकल्प विकल्प रूपी फूल तिसके वास हैं ॥ दुरवासना रूपी पत्र हैं ॥ अरु दुख रूपी तिसके फल हैं ॥ अरु अहंकृत रूपी जल के सिंचणे कर वधता है ॥ जब वैराग विचार रूपी कुहाड़े कर तिसको काटे ॥ तब शांत को प्राप्त होवै ॥ अन्यथा शांत को न पावेगा हे रामजी चित्त रूपी एक हसती है ॥ अरु शरीर रूपी तडाग विषे आन इस्थित भया है ॥ सो तिस ते सुभ वासना रूपी जल को मलन करता है ॥ अरु धीरज संतोष वैराग रूपी कमलों को मरदन करता है ॥ अरु भोगों की त्रिस्ना रूपी [illegible] धीरज संतोष आदिक कमलों को मरदन करके नष्ट करता है ॥ हे रामजी ऐसा जो दुष्ट हस्ती है चित्त ॥ अरु जो सिंह की न्याई सर्व पुरुषार्थ करणे को समरथ है ॥ अपणे आत्म विवेक रूपी नखों साथ चित्त रूपी हसती को छेदो अरु हे रामजी चित्त रूपी काक उपाइ है ॥ अरु दुरवासना रूपी हलना तिसका प्रकार है ॥ अरु देह रूपी अपवित्र इस्थान पर आन बैठा है ॥ अरु एक विषे ओर धावता है ॥ सो ही तिसका एक नेत्र है ॥ अरु विषयों के रस रूपी अपवित्र पदार्थों को भोजन करता है ॥ अरु हाय दुःखी हाय दुःखी रूपी कांय कांय शब्द करता है ॥ अरु शांत रूपी लक्ष्मी को कबहूं नहीं पावता ॥ अरु लज्जा रूपी [illegible] घर ऊपर पड़ा देखता है ॥ हे रामजी ऐसे अमंगल रूपी काग को विवेक रूपी धनुष साथ निकासोगे ॥ तब सुखी होवोगे ॥ अरु चित्त रूपी इल पंखी है ॥ अरु अमंगल रूप है ॥ जब अहं रूपी सरीर पर आन बैठता है ॥ तब आत्मपद रूपी विभूत का अभाव हो जाता है ॥ अरु भोग रूपी मांस के निमित्त सर्व ओर प

रा धमता है ॥ अरु लोभ रूपी क्रूर मार कर चिगाने पदार्थ ले जाता है ॥ सो तृस्ना रूपी ऊंचे चढ कर पड़ता है ॥ अरु आकास विषे पड़ा धमता है ॥ न [illegible] नहीं होता ॥ अरु अभिमान रूपी ग्रीवा को सदा ऊंचा रखता है ॥ हे रामजी ऐसा जो चित्त रूपी अमंगल इल पंखी है तिसको आत्म अभ्यास करके दूर करो ॥ तब शांतवान होवोगे ॥ अरु चित्त रूपी पिशाच इसको आन लागा है ॥ अरु त्रिस्ना रूपी पिशाचणी साथ पड़ा [illegible] सत्य असत करता है ॥ पर आत्मपद को नास करता है ॥ आत्म रूपी स्वरूप को भुलाय करके अनात्म रूप देहादिकों का अभिमान करता है ॥ हे रामजी ऐसे चित्त रूपी पिशाच को वैराग रूपी मंत्र कर जलावो ॥ तब सम भाव समता को प्राप्त होवो ॥ अरु चित्त रूपी वानर है ॥ सो महा चंचल रूप है ॥ सर्वदा भटकता फिरता है ॥ इस्थिर कदाचित नहीं होता ॥ कबहूं किसी पदार्थ की ओर धावता है कबहूं किसी पदार्थ की ओर धावता है ॥ अरु सरीर रूपी व्रक्ष को हलावता ही रहता ॥ ठहरता नहीं देता ॥ हे रामजी चित्त रूपी मर्कट इस्थित होवै तब देह भी इस्थिर होवै ॥ अरु चित्त रूपी जेवड़ी है ॥ कर्म क्रिया रूपी तिसके त्रय वल दृढ हैं ॥ तिस साथ संपूरन जगत बांधा हूया है ॥ जैसे एक संगलि साथ अनेक बंदीवान बांधीते हैं ॥ अरु जैसे एक तागे साथ अनेक मणके बांधीते हैं ॥ तैसे चित्त रूपी जेवड़ी साथ सर्व देहधारी बांधे हूए हैं ॥ तिस जेवड़ी को असंग रूपी शस्त्र करके काटो ॥ तब सुखी होवो ॥ हे रामजी इह चित्त रूपी अजगर सर्प है ॥ अरु भोगों की त्रिस्ना रूपी विष कर पूरन है ॥ जब अहंकार रूपी फुंकार करता है ॥ तब सम दम धीरजादिक सर्व गुण जल जाते हैं ॥ इस दुष्ट के मारणे को अवर कोऊ समरथ नाहीं ॥ एक विचार रूपी मंत्र कर इसका नास होता है ॥ जब चित्त नास होता है तब आत्म रूपी निधि प्राप्त होती है ॥ हे रामजी इह चित्त [illegible] शस्त्रों कर काटिया नहीं जाता अरु अगन कर जलता नहीं ॥ न अवर किसी उपाइ कर नष्ट होता है ॥ एक साधु संग अरु सत शास्त्रों के विचार करके इसका नास होता है ॥ हे रामजी यह चित्त रूपी गाढे का मेघ है ॥ सो अनत कष्टों का दाता है ॥ अरु भोगों के रस रूपी दामनी तिस विषे चमकती है ॥ तहां यह वरषा करता है ॥ तब स्वार्थ रूपी खेत्र अरु सम दमादिक रूपी कमलों का नास करता है ॥ जब विचार रूपी मंत्र होवै तब शांत को प्राप्त होता है ॥ हे रामजी चित्त की जो चपलता है तिसको असंकल्प करके त्यागो ॥ जैसे अभ्यास करके [illegible] को छेदीता है ॥ तैसे मन ही साथ मन को छेदो ॥ अर्थ यह जो अंतरमुखी होय कर इस्थिर रहो ॥ जब तेरा चित्त रूपी मर्कट अचल होवेगा ॥ तब [illegible] रूपी व्रष [illegible] हो जावेगा ॥ हे रामजी सम्यक बोध करके चित्त को जीतो ॥ यह जगत तृण ते भी तुछ है ॥ इसके पार को प्राप्त होवो ॥ तब शांत पावोगे ॥ ॥ इति श्री उपशम प्रकरणे चित्त चिकित्सा वर्ननं नाम सर्ग ॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी यह जो मन की चेतनता है ॥ सो इष्ट अरु अनिष्ट को ग्रहण करती है ॥ अरु षड्गुण की धारावंती प्रमाण है ॥ इस विषे तुम मत प्रतीत करो ॥ इसको मिथ्या जाणकर तिआग करो ॥ हे रामजी बोध रूपी वली सुभ खेत्र अरु काल सुभ करके प्राप्त भई है ॥ तिसको विवेक रूपी जल कर सिंचीए ॥ तब परमपद की प्राप्त होवै ॥ मैं जो तुझ को वचन कहे हैं ॥ तिनको तुझ जाणया है ॥ इनका दृढ अभ्यास करो ॥ तब दृश्य भ्रम मिट जावेगा ॥ हे रामजी इह पंचभूत का सरीर आदिक जगत जो तुझ को भासता है सो तेरा स्वरूप नहीं ॥ तूं शुद्ध चेतन स्वरूप है ॥ [illegible] सो विचार करके अनात्म पंचभूतों के अभिमान को जैसे उदालक त्यागत भया है तैसे तुम भी त्यागो ॥ रामोवाच ॥ हे भगवन किस क्रम करके अरु किस प्रकार इनका अभिमान त्याग कर उदालक सुखी भया है ॥ जैसे भया है तैसे कहो ॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी यह जगत रूपी जीरण घर है ॥ तिसकी प्रथवी के कोण विषे एक देस है ॥ तहां वडे ऊंचे परबत हैं ॥ अरु तमालादिक वडे व्रक्ष हैं ॥ अरु सघनी जिनकी छाया है ॥ अरु फूलों करके अनेक इस्थान पूरन हैं ॥ जीरण फूलों विषे [illegible] चर्ण इव जाते हैं ॥ अरु महा मणी के इस्थान हैं ॥ तिस इस्थान विषे एक उदालक नाम ब्राह्मण था ॥ बुधिवान अरु मान करके योग विद्यावान था ॥ परु अल्प बुध का है ते जो न पाया था आत्मपद जिसने ॥ ऐसा जो ब्राह्मण है सो सुभ इच्छा करके यम अरु नेम को शास्त्रों के साधन भया ॥ तब उसके चित्त विषे इह विचार उपजत भया ॥ जो जिस पद के पाए ते बहुड़ पावणे योग कछु न रहे ॥ हे देव ऐसा पद मुझ को कब प्राप्त होवैगा ॥ अरु चित्त की [illegible] दृश्य रूपी वासना मेरी कब मिटैगी ॥ जैसे समुद्र ते

उ.प.
८

तरंग उपजते हैं ॥ तैसे मन ते संकल्प विकल्प उपजते हैं ॥ तिस ते रहत मैं कव शांत होवेगा ॥ जैसे
कपट ते रहत अपथीत वान होता है ॥ अरु तृस्ना रूपी नदी ते मैं कउ बोध रूपी नौका पर आरूढ होइ क
र ॥ अरु संत संग अरु सतशास्त्र रूपी मलाह करके कव पार उतरोंगा ॥ अरु चित रूपी इनमत
हस्ती कौ विवेक रूपी सिंह होइ कर कव मारोंगा ॥ अरु अज्ञान रूपी सूरज कौ उदय करके अज्ञा
न रूपी तम कौं कव नष्ट करोंगा ॥ जिस कर चित रूपी बुद्ध जगत ते शुध होवेगा ॥ हे देव सर्व आ
रंभों कौं करता भी अलेप कव होवोंगा ॥ जैसे जल विषे कमल अलेप रहता है ॥ तैसे मुझ कौं कर्म
न स्पर्श करैं ॥ अरु कव हम ताकव होवेगा ॥ जो मैं जल मों के अंश थ कौ ज्ञान रूपी नेत्र प्राप्त होवेग
जिन कर मैं परम पद कौं देखोंगा ॥ अरु कव हम समाकव होवेगा ॥ जो मेरा चित्त रूपी मेघ वासना रू
पी वायु ते रहत आत्म रूपी सुमेर पर्वत विषे इस्थित होय कर शांत वान होवेगा ॥ अज्ञान दि
शा कव जावेगी ॥ अरु ज्ञान दिशा कव आवेगी ॥ पर वहु समाकव होवेगा ॥ अरु कव हम सा क
होवेगा ॥ जो जगत के कर्म मैं बालक की चेष्टा वत मिथ्या जाण करकरोंगा ॥ अरु जगत मु
झ कौं स्वपन की न्याई होजावेगा ॥ अरु वहु कव न समा होवेगा ॥ जो मन झ कौं पाषाण की सि
ला वत निरविकल्प समाध लाग जावेगी ॥ अर प्रारीर विषे पंषी आन कर आलाणा करेंगे
अरु निहसंक होइ कर छाती पुर वैठेंगे ॥ जैसे वृक्ष पर वैठते हैं ॥ हे देव वहु समाकव आवेगा
जो अष्ट अनिष्ट की प्राप्त विषे मेरे चित्त की वृत सम रहेगी ॥ अर विराट की न्याई सर्वात्मा हो
वोगा ॥ अरु अपुणे स्व भाव विषे इस्थित होवोगा ॥ वशिष्ट वाच ॥ हे राम ऐसे विचार कर
उदालक चित कौ ध्यान विषे लगावणे लागा ॥ पर चित रूपी मर्कट इन्द्रीआं की ओर निकस
जावै ॥ जैसे पवन ठहरता नहीं ॥ तैसे इस्थित होवे नहीं ॥ वहु इ ध्यान विषे लगावै वहु इन्द्रि
न भोगों की ओर निकस जावै ॥ जब वाह्य विषयों कौ त्याग कर चित कौं अंतर मुष कीया
तब चित कौ अंतर जोनष्ट आरो ॥ तौ भी विषयों कौं चितवणे लागे ॥ निरविकल्प न होवे
जब ऐसे करत थे तब सुषोपत विषे लीन हो जावै ॥ विषय अरु लय होवे निद्रा तिस ही विषे
चितर है ॥ तब तहां ते उठ कर अवर इस्थान कौ चला ॥ जैसे सूरज सुमेर की प्रदक्षणा कौं च
लता है ॥ तब गंधमादन पर्वत की कंदरा विषे जाय इस्थित भया ॥ सो के गंधमादन पर्वत जो फू
लों संयुक्त है अरु पशु पंषी मृग रहते हैं ॥ ऐसा एकांत इस्थान है ॥ जो देवतयों कौं भी देष
णा कठन है ॥ तहां अन्य तन प्रकाश भी नहीं ॥ अरु अन्य तत्त्व भी नहीं ॥ न अन्य तत्त्व उस्ता होइ न
षीन है ॥ जैसे मधु रितकार तक होता है ॥ ऐसे पर्वत विषे तहां कुटी वणाई ॥ वहु देवी
यों का इस्थान ॥ किसी सिद्ध का विषय भी होवे ॥ पर अवर किसी की दासन नहीं ॥ तिस कुटी वि
षे तमाल वृक्ष के पत्रों का आसन करके ऊपर मृगछाला विछाई ॥ तिस के ऊपर वैठ कर
सर्व कामना कौ त्यागत भया ॥ जैसे ब्रह्मा जी जगत कौं उत्पन करके छोड वैठे ॥ तैसे सर्व
कामना कौ त्याग कर पद्म आसन कौं धारा ॥ अर विचार करत भया ॥ उदालक उवाच ॥ अ
रे मन तूं क्या करता है ॥ यह संसार तो सर्व माया मात्र है ॥ तां का लत्तूं जगत विषे
भटकता रहता है ॥ कई जन्म कौं शांत भी प्राप्त भई ॥ काहे कौं अर्थ पड़ा भावता है ॥ सो अमृत कौं
त्याग कर विष का वीज वोवता है ॥ जो उपशम कौं त्याग कर विषयों के भोगों की ओर धाव
ता है ॥ हे मन तुम नय ह चेष्टा ते रीस्सव दा अपणे दुषों के निमित है ॥ जैसे ज्वायला आप ही तु
पावणा युकर आप ही कौ वंधन करती है ॥ तैसे तूं आप ही से कल्प उठाय कर आप कौं वंधता
है ॥ अब तूं संकल्प के संसर्ग कौं त्याग कर आत्म पद विषे इस्थित हो ॥ जो तूं झ कौं शांत प्राप्त
होवै ॥ हे मन जिह्वा साथ तूं मिल कर जो शब्द करता है ॥ सो हाटक के आवद्वत ने राम थी है ॥
जब तूं श्रवणों साथ मिल कर श्रवण करता है ॥ तब अशुभ वाक ग्रहण कर के मृग की
न्याई तूं नष्ट होता है ॥ अरु त्वचा साथ मिल कर जो तूं स्पर्श की इच्छा करता है ॥ सो हस्ती की
न्याई नष्ट होवेगा ॥ अरु रसस्वाद की जो तूं इच्छा करता है ॥ सो मीन की न्याई नास कौं प्राप्त
होवेगा ॥ अरु गंध लेणे की जो तूं इच्छा करता है सो भ्रमरे की न्याई नास होवेगा ॥ जैसे भ्रम
रा सुगंध के निमित पद्मों विषे फास रहता है ॥ तैसे तूं फास मरेगा ॥ अरु सुंदर रूप इस्त्रीयों
की जो वांछा करता है ॥ सो पतंग वत दग्ध हो जावेगा ॥ हे मूढ जो एक एक इंद्री का स्वाद लेने ते

ते हैं सो नास ता कौ प्राप्त होता है ॥ तैसे तूं पंचों विषयों के सेवणे हारा ॥ ना जाने कैसे न होवेगा ॥
ताते तूं इन की इच्छा त्याग ॥ जो तुझ कौं शांत प्राप्त होवे ॥ अरु जो तूं इन भोगों की इच्छा न त्यागे
गा तब मैं ही तुझ कौं त्याग छोडोंगा ॥ तूं तो मिथ्या असत रूप है ॥ तेरे संग मेरा का प्रयोज
न है ॥ विचार करके मैं तेरा त्याग करता हों ॥ हे मूढ मन तूं जो देह विषे अहं पड़ा करता है ॥ सो ते
भी अहं किस पदार्थ मों है ॥ चरन के अंगुष्ट ते लेकर अर सीस पर्यंत विषे अहं का व नव
ल है ॥ यह सरीर तो अस्थि मांस रक्त पीप पुरीष की लोथ है ॥ इन विषे तो अहं रूप कोऊ
नहीं ॥ अरु स्वास जो है सो पवन रूप है ॥ अरु पुलाउ है ॥ सो आकास रूप है ॥ यह पंच तत्तो
का सारीर वणा है ॥ अहं रूप तो व वलाइ स विषे कछु नहीं ॥ हे मूढ मन तूं अहं अहं क्या पड़ा
करता है ॥ यह जो तूं कहता है मैं देषता हों मैं सुणता हों ॥ मैं सूंघता हों ॥ मैं स्पर्श करता हों
मैं स्वाद लेता हों ॥ इन के अष्ट अनिष्ट विषे राग द्वेष करके पड़ा जलता ॥ सो व्यर्थ कष्ट पाव
ता है ॥ रूप कौं नेत्र ग्रहण करते हैं ॥ सो नेत्र रूप ते उत्पन भए हैं ॥ तेज का अंश नेत्रों विषे इस्थि
त है ॥ सो अपणे विषयों कौं ग्रहण करते हैं ॥ इन के संग मिल कर तूं क्युं तपायमान होता है ॥ अ
रु शब्द श्रवण आकास ते उत्पन भया है ॥ सो आकास की अंस श्रवणों विषे इस्थित है ॥ सो अव
णा अपणे ग्रहण शब्द कौं ग्रहण करते हैं ॥ इन के संग मिल कर तूं क्यों राग द्वेष कर तपा
य मान होता है ॥ अरु स्पर्श इन्द्री वायु ते उत्पन भई है ॥ अरु वायु कौ अंस त्वचा विषे इस्थित
है ॥ सो त्वचा ही स्पर्श कौं ग्रहण करती है ॥ तिस संग मिल कर तूं क्यों राग द्वेष करता है ॥ अ
रु रसना इन्द्री जल ते उपजत भई है ॥ जल का अंस जिह्वा के अग्र भाग विषे इस्थित है ॥ सो
ही रस कौं ग्रहण करता है ॥ अरु घ्राण इंद्री गंध पृथवी ते उपजती है ॥ सो पृथवी का अंस
घ्राण विषे इस्थित है ॥ वही गंध कौं ग्रहण करती है ॥ तिस संग मिल कर तूं क्यों व्यर्थ राग द्वेष करता है
हे मूढ मन ए इन्द्रीयां तो अपणे अपणे विषयों कौ ग्रहण करतीयां हैं ॥ तूं क्यों इन विषे अभिमान करता
है ॥ जो मैं देषता हों मैं सुणता हों मैं स्पर्श करता हों ॥ रस लेता हों ॥ यह तो सर्व इंद्रीयां आ
प भई हैं ॥ अर्थ यह जो अपणे अपणे विषयों कौं ग्रहण करतीयां हैं ॥ अवर के विषयों कौं अवर ग्रहण
नहीं करती ॥ जो नेत्र देषते हैं श्रवण नहीं करते ॥ अरु कान श्रवण करते हैं देषते नहीं ॥ इत्यादिक
सर्व इंद्रीयां अपणा धर्म न किसी कौ देतीयां हैं न किसी का लेतीयां हैं ॥ अपणे अपणे धर्म विषे इस्थि
त हैं ॥ अरु विषयों कौं ग्रहण करके इन कौं राग द्वेष कछु नहीं उपजता ॥ अरु इन विषे वासना कछु न
हीं ॥ जो नेत्र इष्ट कौं देषें अरु अनिष्ट कौं न देषें ॥ इत्यादिक सर्व इंद्रीयां इष्ट कौं भी ग्रहण करतीयां हैं
अरु अनिष्ट कौ भी ग्रहण करतीयां हैं ॥ इन कौं हेय अरु उपादेय नहीं ॥ इष्ट अनिष्ट जैसे विषय आवे ते
से ही ग्रहण करतीयां हैं ॥ अरु तूं एता मूढ है जो अवरों के धर्म अपणे विषे मान कर राग द्वेष कर
पड़ा जलता है ॥ जब तूं वासना ते रहत होय कर चेष्टा करै तब तुझ कौं भी दुःख कछु न होवे ॥ ज
व तूं वासना सहत कर्म करेगा ॥ तब वहीं कर्म वंधन के कारण होवेंगे ॥ अरु वासना विना दु
ष कछु नहीं ॥ अर तूं तो महा मूढ है ॥ जो विचार कर नहीं देषता ॥ ताते मैं तुझ का त्याग करता हों
तेरे संग मिल कर मैं अनंत खेद कौं पाया है ॥ जैसे वध्याद के वालक कौं सिंघ चूर्ण करता है ॥ तैसे
तुझ मुझ कौ चूर्ण कीया है ॥ तेरे संग मिल कर मैं तुच्छ भया हों ॥ अब तेरे संग मेरा संवंध कछु न
हीं ॥ मैं तो निर्विकल्प शुद्ध चिदानंद हों ॥ जैसे महा प्रकाश सूर्य दर्शन मिल कर विदाकाम होता है
तैसे तेरे संग कर मैं तुच्छ जीव हो गया हों ॥ इसी कारण ते तेरा संग त्याग कर मैं चिदाकास पद मैं चेतन
कौं प्राप्त होवेंगा ॥ मैं निर्विकार हों अद्वैत भाव की कल्पना ते रहत हों मैं ॥ अरु तूं क्या अहं अहं प
डा करता है ॥ प्रारीर विषे व्यर्थ अहं करणे हारा अवर कौं फल होता है ही वोर दे ॥ अव मैं तुझ कौं प
रा करता हों ॥ तेरे मिथ्या त्याग कीया है ॥ तूं तो अज्ञान ते उपज्या है ॥ तूं मिथ्या घन रूप है ॥ जैसे वालक अ
कवुक रने त्याग कीया है ॥ तेरा घलेप छावे कौं पिशाच जाण कर आप ही भय कौं पावता है ॥ तैसे तुझ सर्व जगत कौं दुषदी या
है ॥ जब तूं नष्ट होवे तब ही आनंद होवै ॥ तेरे उपजणे कर महा दुष है ॥ जैसे कोऊ उ वे पर्वत सों
गिर कर कूप विषे जाय पड़े ॥ अर कष्ट मान होवे ॥ तैसे तेरे संग कर मैं आत्म पद ते गिर कर दे
ह अभिमान रूपी गर्त विषे गिर या राग द्वेष रूपी दुष पाया ॥ अव मैं तुझ कौं त्याग कर निर दे

३५१ कारणरूपकोंप्राप्तभयाहों सो कैसा पद है न प्रकाश है न तम है नएक है न द्वितीय है नहीं है दैन
अल्प है अहंत्व आदिकों ते रहत अचेत चिन्मात्र है जन्म जरा मृत्यु राग द्वेष भय सर्व विकार तेरे
संयोग ते होते हैं अब तेरे वियोग ते मैं निर्विकार शुद्ध पद कों प्राप्त भया हों हे मन तेरा त्याग ही दु
षों का कारण है जब तैं निर्वाण होवेगा तब मैं ब्रह्मरूप होवेगा तेरे संग करके दुष्ट होता हों
जब तैं निवर्त भया तब मैं शुद्ध भया हों जैसे मेघ की रज के होने प्रकाश मलीन भासता है जब
रज का अभाव भया तब शुद्ध निर्मल प्रकाश होय भासता है तैसे तेरे निवर्त भए आत्मा निर्म
ल सत्ता अपना आप भासती है हे चित इन जो देह इंद्रीयादिक पदार्थ है सो पृथक पृथक है इ
न विषे अहं कछु वस्तु नहीं इनकों तैं ही एकठा कीया है जैसे तागा अनेक मणकों कों एक
ठा करता है तैसे सर्व कों एकठा करके तैं अहं अहं पणा करता है सो तैं मिथ्या राग द्वेष कों ग्रह
ण करता है तातें तूं सर्व इंद्रीयों कों लेकर निर्वाण होजाय तो तेरी जय होवै ॥ ॥ इति श्री उपश
मप्रकरणे उद्दालकविचारो नाम सर्गः ॥ उद्दालक उवाच ॥ आत्मा जो है सो सूक्ष्म तें सूक्ष्म है अ
रु स्थूल तें स्थूल है शुद्ध निर्विकार रूप है सो मैं हों ॥ अचेत चेतन हों मेरे विषे विकार कोऊ नहीं
जेते कछु जन्म मरणादिक विकार भासते हैं ॥ सो आत्मा विषे चितनें कल्पे है आत्मा विषे को
ऊ नहीं जन्म तिसकों कहीता है जो प्रथम न होवे अरु उपजे आत्मा तो आदि भी सिद्ध है वृद्धि
रु जन्म कैसे कहीए अरु मरण तिसकों कहीता है जो प्रथम होवे वृद्धि अरु अभाव कों प्राप्त होवे
आत्मा तो जगत के अंत विषे भी सिद्ध है वृद्धि अरु सत्य अंश का भाव कैसे कहीए देह के आदि अ
न्त मध्य त्रिकाल विषे आत्मा सिद्ध है तातें सर्व विकारों ते रहत है अरु चित के संयोग ते विकार
संयुक्त भासता है हे चित तेरे संग ते मैं एते भ्रम कों प्राप्त भया था अरु शरीर विषे अर्थ अहं प्र
हे पड़ी होती है सो ज्ञान या न होता जो कवन था शरीर तो रक्त मांस का पिंड है इंद्रीया म
नादिक सर्व जड़ है अहंकार ते जान्या कवन था अरु अहं जब होती है तब भाव अभाव रूप प
दार्थों कों ग्रहण करता है जहां अहं अहंकार अभाव भया तहां भाव अभाव कैसे होवे अ
हं जो है सो मिथ्या है इंद्रीया अपने अपने गोचरों कों ग्रहण करती हैं अरु मनादिक भी अपने
स्वभाव विषे स्थित है अब सर्व पदार्थ अपने अपने भाव विषे स्थित है आत्मा भी अपने
भाव विषे स्थित है यह अहंकार होता न ही पाईता जो कवन था अहंकार रूप अरु प्रका
र कछु नहीं पाईता तब यह निश्चय भया जो सर्व पदार्थ मिथ्या है अरु अहंकार सर्व पदा
र्थों के ग्रहण करणे हारा भी मिथ्या है जेते कछु दुख है सो अहंकार करके होते हैं मैं कौं
देह इंद्रीओं संग मिलकर इष्ट अनिष्ट विषे राग द्वेष कर जलाया इनका अरु मेरा संयोग क
छु नहीं मैं तो आत्मा हों निरलेप हों मैं अद्वैत हों संयोग किसे का होवे भाव रूप वस्तु सत्य है
सो तो मैं हों मेरा संयोग किस संग होवै यह दृश्य तो है ही नहीं सर्व भ्रम रूप है अरु जो कही
ए देहादिक भी है तो भी संयोग नहीं बनता जैसे लोह अरु वरी का संयोग नहीं होता य
ह बड़ा आश्चर्य है जो सर्व का अहंकरणे हारा कवन था इह मिथ्या अहं अविचार करके दुष
दाई था जैसे अविचार करके बालक कों परछांवे विषे पिशाच भाव करके दुख होता है अरु जै
से पर्वत ऊपर बदल स्थित होता है सो पर्वत बदल नहीं होता अरु बदल पर्वत नहीं हो
ता तैसे आत्मा अनात्मा नहीं होता अरु अनात्मा आत्मा नहीं होता जैसे सूर्य की किरणों वि
षे जल भासता है अरु जेवरी विषे जैसे सर्प भासता है वैसे मैं अपने विषे अहंकार भासता
है अरु विचार कीए ते अहंकार कछु वास्तव नहीं निकसता जहां अहंकार होता है तहां
दुख भी आन स्थित होते हैं जैसे जहां मेघ होता है तहां दामनी भी होती है तैसे जहां अहं
कार है तहां दुख भी है अरु जहां अहंकार रूपी मेघ वर्षा करता है तहां देह रूपी वृक्ष सों दुख
रूपी मंजरी बड़ती है जैसे गरुड़ के विद्यमान सर्प नहीं रहता तैसे आत्मविचार के विद्यमा
न अहंकार नहीं रहता तातें चितादिक सर्व मिथ्या है अज्ञान करके पड़े भासते हैं इनक

---

र आत्मा रूप या जगत के संसरन होवै ॥ यह जगत कारण ते रहत है ॥ तातें मिथ्या है ॥ भ्रम करके भास
ता है ॥ जैसे आकाश विषे अंधेरा करके दूतीय चंद्रमा भासता है ॥ अरु जैसे नौका विषे आरूढ कों
तट के वृक्ष चलते भासते हैं ॥ अरु जैसे गंधर्व नगर भासता है ॥ अरु जैसे बालक कों भ्रमणे ते
पृथ्वी भ्रमती दृष्टि आवती है ॥ तैसे चित के भ्रम करके यह जगत भासता है ॥ जब चित नष्ट
होता है तब सर्व भ्रमों का अभाव हो जाता है ॥ देह विषे जो अहं अभिमान है सो दुखों का कार
ण है ॥ जब लग विचार नहीं उपजा तब लग भासता है ॥ जैसे वर्फ की पुतली तब लग दृष्टि आ
वती है ॥ तब लग सूर्य का तेज नहीं स्पर्श करता ॥ जब सूरज का स्पर्श हूया तब गल जा
ती है ॥ तैसे अहंकार विचार के उपजे ते गल जाता है ॥ हे मन तेरे संग मिलणे करके अनंत
कष्ट होते हैं ॥ अब तूं कहते रहन मैं आप कों देषा है ॥ अब तें सर्व इंद्रीयों समेत निर्वाण हो ॥ अ
रु आत्म स्वरूप अगन विषे स्थित हो ॥ जो सर्व मैल तेरी जल जावे ॥ अरु सदा कों शांत होइ
वे ॥ अरु इस देह के संग जो तेरा मिलाप है ॥ सो दुखों के निमित है ॥ मन अरु देह का अंतर ते आप
स विषे सद्भाव है ॥ अरु वास्तव मने है भासता है ॥ अंतर लेप संबंध सकरने की इच्छा करते
हैं ॥ जब अत्यंत कष्ट होता है ॥ तब मन देह के नाश की रक्षा करता है ॥ अरु देह कहती है ॥ जो म
न नष्ट होवे ॥ तो मेरे विषे कष्ट कोऊ नाही ॥ इनका मिलणा ही दुखकूं का कारण है ॥ देह अरु मन
देह को भी तेरे संग कर दुख होता है ॥ आपने इस विषे भी दुख कोऊ नहीं ॥ जब मन विषे देह
का अभाव होवे तब भी दुख कोऊ नहीं ॥ अरु देह सों मन दूर होवे तब भी दुख कोऊ नहीं ॥ इ
नके मिलणे कर दुख होता है ॥ अरु वियोग करके दुखों का अभाव हो जाता है ॥ जैसे अगन
अरु जल के मिलणे विषे दोनों को दुख होता है ॥ अरु त्याग करके दोनों को दुख कोऊ नहीं ॥ तै
से मन अरु देह के आप विषे दुख कछु नहीं ॥ जैसे जहां अंगारियों की वरषा होवे तहां वृ
क्ष नहीं रहते ॥ तैसे इनके मिलाप विषे हम कों रहना योग नहीं ॥ हे मूढ मन तेरे ताको
कछु दुख नक कों होता है सो देह के मिलाप ते होता है ॥ देह के संग ते किस निमित मिल
ता है ॥ अरु आप कों स्वप्न ज्ञान कर देह संग मिलता है ॥ अरु तें नहीं जाणता जो हाथ सों दु
ष उत्पन्न होता है ॥ परंतु ऐसा मूढ है ॥ जो वारंवार देह के निमित पतन करता है ॥ सुष जाण
ता है परंतु नाश निश्चय करता है ॥ जैसे दीपक कों सुषरूप जाणकर पतंग मिलणे
की इच्छा करता है ॥ अरु दग्ध होता है ॥ अरु जैसे मीन मास की इच्छा करता सह होती है
तैसे तूं देह मिलणे की इच्छा करके अपने स्वरूप ते नाश होता है ॥ तातें देह का अभिमान
त्याग तो तूं शांत प्राप्त होवे ॥ अरु देह कछु वस्तु नहीं मन ही का विकार है ॥ पंच तत
जिनकी इह देह वणी है ॥ सो भी कछु वस्तु नहीं सर्व मन के फुरणे कर रचे है ॥ तातें फुरणे
कों त्याग कर आत्म पद विषे स्थित हो ॥ तातें तूं कों शांति की प्राप्त होवै ॥ अरु मैं सर्वातीत अ
तीत शुद्ध चिदानंद स्वरूप हों ॥ मेरे समीप तूं कों मन देने दिष्टि पाई है ॥ मैं अद्वैत रूप हों है
सो जे के समीप ऐसे ही न होता तैसे मेरे समीप मन अरु इंद्रीया अरु देह कोऊ नहीं मैं स
दुआत्मन नहीं हो ॥ मोकों मैं गये तेरा क्या प्रयोजन है ॥ जो इनके संग मिलकर दीनता कों प्रा
प्त होवीता है ॥ सो मुझ कों इनके संग प्रयोजन कछु नहीं चिरकाल पर्यंत रह अरु या नाश
वहीं नष्ट होजावे इनके नाश होवण कर मेरा नाश नहीं होता ॥ अरु इनके संग कछु मेरो
जतन नहीं ॥ इनतें आप कों भिन्न जाण्या है ॥ जैसे तिलों ते तेल निकास लीया तब बहुड़ इनहीं
मिलता ॥ अरु दूध सों माखण निकास लीया ॥ तब बहुड़ दूध ही मिलता ॥ तैसे विचार क
र के मैं अपणा आप इनसों निकास लीया ॥ बहुड़ इनसंग कब मिलता हों ॥ सो मैं इनों
संग मिलता नहीं ॥ मैं शुद्ध चिदानंद आत्मा हों ॥ सर्व जगत मेरा आश्रय है ॥ सर्व विषे
मैं एक हों अनंत आप हों ॥ अब तिसी स्वरूप विषे स्थित होवों ॥ वशिष्ठ उवाच ॥ हे राम
जी ऐसे विचार कर उद्दालक अंतःकरण को विषयों ते निवर्त कर कै पद्मासन धारकर

रमृतावजोदेसारपत्रिमात्रअकारउकारमकारअरअर्धमात्रातिनकीक्रमकरकेउपासना
कर्तभया॥प्राणायामकरकेमात्राकाध्यानकर्तभया॥अकारब्रह्माउकारविस्नुमकारशिव
अर्धमात्रातुरीयपदतिनकोंक्रमसेव्रगतप्राणायामकरनेलागा॥प्रथमरेचकप्राणायामकर्तभ
या॥अरअकारकीध्यानसेंप्रारेचककर्तभया॥तिसकरसर्वप्राणवायुअंतरतेनिकासी॥त
वअंतरशून्यहोतभया॥अरसूपहोतभया॥जैसेअगस्त्यमुनिसमुद्रकोंशून्यकरतेभया
था॥तैसेंउदालकरेचककरकेअंतरकोंशून्यकरतभया॥अरअकारकरकेऐसीधुन
उचारी॥जोब्रह्माविस्नुरुद्रपर्यंतवलीगाई॥अरदेहअभिमानकोंत्यागकरपुर्यष्टकाकों
सुषमनकेमार्गब्रह्मरंध्रविषेप्राप्तकीया॥जैसेपंषीआलनेकोंत्यागकरअकासकोंउ
डताहै॥तैसेउदालकपुर्यष्टकाकोंब्रह्मरंध्रविषेप्राप्तकीया॥जवलगचित्तस्पंदनरहा
तवलगइस्थितरहा॥काहेतेजोदृढकरकेकरणेसोदृढहोताहै॥तवपुर्यष्टका
कीवायुप्रथःकोंआई॥अरउकारविस्नुरूपकीधुनअरध्यानसेंपूरकप्राणायामकीया
सर्वप्राणवायुकोंअधारचक्रविषेरोकाताताकेंगमनकोरेनऊरधकोंगमनकरेतिस
करप्राणइस्थितसंघटहोतभए॥तिसतेअगनिकसीतिसकरकेइसकापापपैनरूपी
शरीरजलनलगया॥तिसकुंभकविषेजवलगस्पंदनरहातवलगइस्थितरहा॥काहेतेजोदृ
ढहोगढपदायकहै॥वहुडपीलतेभया॥वहुडमकारकीधुनअररुद्रकाध्यानकरकेपूर्व
प्राणायामकरतभया॥पूर्वप्राणायामकरसर्वइस्थानवायुसेंपूरणकीए॥अरऊरधकों
चितकलाप्राप्तभई॥महाशीतलहैस्पर्शजिसका॥ऐसावेइमावामंडलहै॥तिसतेअ
मृतकीवर्षाहोतीहै॥तिसकरयहअवयोंकेपवित्रकरणेहाराहूया॥जैसेधूमआकाश
कोंजाताहै॥अरजलकोंपायकरवहअवयोंकोंशीतलकरणेहाराहोताहै॥तैसेइसका
सरीरअवयोंकोंपवित्रकरणेहाराहूया॥जैसेमहाचलपर्वतकेंपायवीरसमेंइतिस
तेकलप अवनिकस्या॥तैसेतिसकेशरीरविषेप्राणवायुइस्थितभई॥पदमआसनवां
धकरइंद्रीयोंकोंरोकताभया॥जैसेहस्तीवंधनोसंगवांधीताहै॥तैसेइंद्रीयोंकोंरोकक
रअर्धमात्राजोहैतुरीयपदतिसकेदर्सनननिमितयत्नकर्तभया॥जोनेत्रोंकोंअर्धमूंदतभ
या॥अरवाह्यविषयोंकोंत्यागतभया॥अरइंद्रीयोंकोंभीत्यागतभया॥प्राणअरअपानकें
मूलचक्रविषेरोकताभया॥तिसकरनवद्वारेरोकेगए॥जैसेवालककेषेलणेका
मृत्तकाकापात्रीचीरहोताहै॥तिसकेमुषमूंदणेकरजलतापाणीसर्वछिद्रोतेरोकाजा
ताहै॥तैसेमूलचक्रकेरोकणेकरनवद्वारेरोकेगए॥तवमनरूपीवेलवलम्साहोइ॥त
ववैराग्यअरअभ्यासकेवलकरवहुडषेचलेआवै॥जैसेवनकरकेजलकावेगरोकी
ताहै॥तैसेतिसविषेचितकोंइस्थितकीया॥तवअंतहकरणकीशांतकीव्रतजोथीप्रका
सरूपतिसकोंभीत्यागकरआगेइस्थितभया॥तवमनकीव्रतजोहैनिद्रारूपीजरता
तिसविषेमनमूर्छाहोगया॥जैसेसर्जेराजविषेइस्थितहोवै॥तैसेमननिंद्राविषेलीनहो
गया॥तवराजसतामसमांतकगुणोंकोंजोप्रवाहहैसोवहुडफुरणेलागा॥तिसकों
आत्मविवेककेवलकरछेदतभया॥जैसेप्रकासकरकेतमकेविकल्पकोंअरतमकों
छेदीताहै॥तैसेयहत्रिगुणअज्ञानरूपीतमकेविकल्पहैसोंदोनोंछेदभया॥विवेककेव
लकरचितकीव्रतकोंचितकलाविषेलगाया॥तिसकोंचितकीव्रतसाक्षातकार
कीया॥महाप्रकासवानअरशांतरूपतिसविषेएकक्षणचितइस्थितरहा॥वहुडवाध
निकसगया॥जैसेवचकोंतोडकरजलनिकसजाताहै॥तैसेनिकसगया॥वहुडफेरक
रअभ्यासकेवलकरआत्मकलाविषेलगाया॥तवतिसपर्मशांतआत्मपदविषेचितकी
व्रतइस्थितभई॥तहांमहाप्रेमतआनंदकेसमुद्रविषेमगनभई॥जोप्रशावदआनंदपू
र्णआत्मतेरहेहै तिसविषेइस्थितभया॥जिसविषेसिद्धदेवताविषीश्वरइस्थितहै॥अरजि

सत्पदविषेब्रह्माविस्नुरुद्रइस्थितहै॥तिसपदविषेउदालकइस्थितभया॥हेरामजीजो
एकक्षणभीतिसपदविषेइस्थितभयाहै॥अरजोवर्षपर्यंतइस्थितभयाहैसोदोनोतुल्य
है॥जिसकोंतिसपदकाअनुभवभयाहै॥सोभोगोंकीइछानहीकरता॥जैसेजिसस्वर्गका
नंदनवनदेषाहै॥सोकरीरएकवनदेषणेकीइछानहीकरता॥तैसेज्ञानवानोकोंभो
गोंकीइछानहींहोती॥अरशोककदाचितनहीउपजता॥जैसेजिसकोंराजप्राप्तभ
याहैसोदीनताकोंनहीप्राप्तहोता॥तैसेजिसआत्मपदविषेइस्थितपाईहै॥जिसकों
विषयोंकोंत्रिस्नाअरशोकनहीउपजता॥हेरामजीइसप्रकारउदालकआत्मपदवि
षेइस्थितभया॥तवसिद्धगंधर्वविद्याधरोकेगणसेंहूहूतिसकेनिकटआइप्राप्तभ
ए॥सोअतितेजवानअरचंद्रमाकीन्याईजिनकेमुषहै॥सोआइकरइसकोंप्रणामक
तेभए॥अरकहाहेभगवानतुमस्वर्गकोंचलो॥अरदिव्यभोगोंकोंभोगो॥तुमवडीतप
स्याकरीहै॥अरपुन्नेकासारहो॥अरकामकामारत्नाहैसोइसमीयाहै॥सोइसमीयाते
सारेभोगणेकेनमितहै॥सोकेसीयाइसमीयाहै॥विद्याधरोंयामहादिव्यअपसरास
र्वभोगाइदकेनिकटहै॥तातेतुमविवानपरआरूढहोइकरस्वर्गकोंचलो॥वहुडतकाल
पर्यंतभोगोंकोंभोगो॥हेरामजीइसप्रकारजवसिद्धोंवहुडतेकेहो॥तवउदालकअने
कोंअतिथजाणकरनिरादरनकीया॥यथाजोगपूजाकरकेकहतभया॥हेसाधोतु
मकोंनमस्कारहैतुमगमनकरो॥उनकीसिद्धविषेअसतानहूया॥काहेतेजोपर्मा
नंदविषेइस्थितथा॥विद्योकेसुषकोंतुछजाणतभया॥जैसेअमृतपानकरणेहाराप
लकीवाछानहीकरता॥तैसेउदालकविषेयसुषकोनचाहतभया॥तवकछुकाल
नसिद्धनहारहकरउदालककोंपूजतभए॥वहुडगमनकरतभए॥अरयहपर्मपद
विषेइस्थितभया॥अरपर्मपदविषेइस्थितहूयाअपणीप्रसन्नतविचरतेकोंकरताभ
या॥सुमेरपर्वतमंद्राचलपर्वतविषविचराकरे॥अरकंदराविषध्यानकरवैठेकें
वहूएकदिनवैठारहै॥वहुडमासपर्यंतवैठणेलागा॥वहुडवर्षपर्यंतवैठारहा॥
वहुडवरषोंकेसंहूहविनीतहोजावे॥इसप्रकारसमाधकरकेउत्थानहूयातवस
वैसमाधहोगई॥सत्तासमानविषेइस्थितहोइकरविचरतीभयापरमशांतकोंप्राप्त
भया॥५१॥इतिश्रीउपशमप्रकर्णेउदालकविश्रांतवर्णननामसर्गः॥रामोवाच॥हेभग
वनज्ञानरूपीदिनकेप्रकासकर्ता॥अरदेसंशयरूपीमिणीकेजलावणेहारेअगन
अरदेमअज्ञानरूपीतमकेक्षीनकरताचेद्रमावसिष्ठजीसतासमानकारूपकाहै॥वसि
ष्ठोवाच॥हेरामजीजवजगतकेअत्यंताभावकीभावनाकरकेचितक्षीणहोजावै॥ति
सतेसेषजोरहैसोसतासमानहै॥जवचिततनेरहतआत्मसताहोवैजिसविषेचितली
नहोजावै॥तवसतासमानउदेहोवै॥जोअग्निकीन्याईइस्थितहै॥सोसतासमानदे
हेरामजीजवसर्वदृश्यप्रपंचशांतहोजावै॥अरसुधसमवोधरहे॥अंतरवाह्यकाअव
धानमिटजावै॥तवसर्वजगतएकरूपहोजावै॥समाधअरउत्थानएकजेसाहोजा
वै॥ऐसीदृष्टकीजोप्राप्तहैसोसत्तासमानकीप्राप्तहै॥सोदेहकेविद्यमाननहीविदे
हरूपहै॥तिसकोंतुरीयातीतपदकहतेहैं॥समाधइस्थितहैतोभीकेवलीरूपहै
अरउतथानविषेहोवैतोभीकेवलीरूपहै॥अरजोअज्ञानीहैतिसकोंसमाधअरउ
त्थानतुलनहीहोता॥काहेतेजोज्ञानतेउपजीसमाधउसकोंनहीप्राप्तभई॥अरजो
जीवन्मुक्तपुरषहै॥इसतेआदलेकरजिनकोंज्ञानदृष्टप्राप्तभईहै॥नारदतेआदले
करदेवरिषअरब्रह्माविस्नुरुद्रादिकअवरभीजोज्ञानवानपुरषहै॥सोसतासमा
नविषेइस्थितहै॥तिनकोंसमाधअरउत्थानविषेतुलताहै॥जैसेआकाशविषेपव

नकामयंरूपसरूपहैसमानहै॥ जैसेपृथ्वीविषेजलरस्थितहै॥ अरआगनविषेउसनतारस्थितहै
सोरसीरस्थितविषेरस्थितहै॥ तिसीपदविषेरस्थितहोयकरउदालकविचरताभया॥ तबलग
जगतकोरविषेविचरणेकीइछाथी॥ तबलगऐसेविचरताभया॥ जबविदेहमुक्तहोणे
कीइछाभईतबपरबतकीकंदराविषेपद्मआसनकरपद्मआसनबांधया॥ अर
बाह्यविषेजोकरइंद्रीयोंकेस्पर्शकात्यागकीया॥ अरअर्धमेंदननेयंकीए॥ कायाअरग्रीवाको
समकीया॥ अरप्राणवायुकोंमूलाधारचक्रकरकेनवद्वारहारोकतभया॥ ऐवगीसंदनाकरके
दंतोकेसंगदंतमिलाए॥ अरसर्वसंकल्पोकात्यागकीया॥ नअंतरबाहुनऊर्धनअधरू॥
भावनअभावसर्वविकल्पोंकोंत्यागकरआत्मामात्रविषेचितकीस्थितिकोंजोडताभया
तबसुद्धचिन्मात्रविषेचितकीवृतजायप्राप्तभई॥ सोमयहेसंपतिसयथानंकोंभी
त्यागकीया॥ तबसत्तासमानविश्रंभरपदकोंप्राप्तभया॥ परमविश्रांतरूपजोआनंदअ
नेदसंद्दरूपहै॥ तिसपदकोंप्राप्तहूयाविरंकालकरकेषीणमनहोगया॥ तबपुतलीकी
न्याईसरीरहोगया॥ जैसेसरतकालकाआकाशनिर्मलहोताहै॥ तैसेनिर्मलपदकोंप्राप्तभया
जिसनेचिनउपज्ञाया॥ तिसीविषेजायलीनभया॥ जैसेसूर्जकीकिरणांहाराअषविषेर
सहोतीहै॥ अरसूर्जलीयेचलेताहै॥ अरजैसेसमुद्रतेतरंगउपजकरसमुद्रविषेलीनहो
तेहै॥ तैसेचितलीनहोगया॥ अरसंश्रनेसंकल्पविलासकीयाउपाधतेरहतभया॥ अर
तिसनंदकोंप्राप्तभयाजिसविषेइंद्रादिकोंकाआनंदतुछत्रिणवतभासताहै॥ ऐसावि
स्वंभरस्थानेदजोउत्तमपुरषोंकरसेवणेयोगहै॥ तिसकोंउदालकप्राप्तभया॥ अरहेतअरा
वदसत्तासमानपदकोंप्राप्तभया॥ शांतरूपहोतभया॥ तबकेतेककालपीछेतिसकाश
रीरगिरपडा॥ जैसेरसमूकेतेअषगिरपडताहै॥ तैसेसूर्यकीयाकिरणांकरसूकाहूयाश
रीरवीणाकीन्याईहोतभया॥ जैसेवीणावाजतीहै॥ अरतिसकाशब्दप्रगटहोताहै॥ तैसे
जबपवनचलेतबतिससरीरविषेप्रवेशकरनिकसेंशब्दप्रगटहोवे॥ केतेककालपी
छेसरीतेदेवताआए॥ महाआनंदवनप्रकाशजिनकाहै॥ ऐसेदेवताआइकरतिसकेसरी
रकेकंदविषेसुंदरबृषोंकेफूलोंकीयामालापहरावतभए॥ अरसोरकेपलुवतसेइकर
केतिसकेआगेएजाकरनर्तकरणेलागे॥ अरलीलाकरकेसोभावतभए॥ अरप्रसंनभ
ए॥ हेरामजीउदालककेचितकीव्रतकलनातेविवेकरूपीवलीप्रगटभई॥ तिसकोंआ
त्मानंदरूपीफलपडा॥ अवरजिसकेहिरदेविषेभीऐसेफलकीसुगंधतारस्थितहोवे
सोसर्वभ्रमकोंतरजावै॥ जिसकोंऐसाविवेकप्राप्तहोवे सोसर्वभ्रमोतेमुक्तहोवे॥ ५॥ इतिश्री
उपशमप्रकरणेउदालकनिर्वाणवर्णनंनामसर्गः॥ वसिष्ठोवाच ६॥ हेरामजीजिसप्रकारउदा
लकरिषीश्वरआत्मपदकोंप्राप्तभया॥ तैसेक्रमकरकेअपणेआपकोंविचारकरतुमभ
भीआत्मपदकोंप्राप्तहोवे॥ हेकमलनेनकरतव्ययहीहैजोशास्त्रअरगुरोंकेवचनोंकोंधा
रकरजगतभ्रमतेमुक्तहोवे ॥ इतिश्रीउपशमप्रकरणेउदालकनिर्वाणवर्णनंनामसर्गः
वसिष्ठोवाच॥ हेरामजीजिसप्रकारउदालकरिषीश्वरआत्मपदकोंप्राप्तभया॥ तैसेक्रमक
रकेअपणेआपकोंविचारकरतमभीआत्मपदकोंप्राप्तहोवै॥ हेकमलनेनकरतव्यय
हीहैजोशास्त्रअरगुरोंकेवचनोंकोंधारकरजगतभ्रमतेमुक्तहोवणा॥ अरआत्मपदकोंअ
भ्यासकरणा॥ तिसकरशांतपदकोंप्राप्तहोवणा॥ अथमेंगुरोंअरशास्त्रोंकेवाक्यसमझी
ए॥ तिसकरजोविषयोंमनअर्थहै तिसकेअभ्यासविषेबुद्धकोंलगाईए॥ इसप्रकारजबदृ
ढताहोवैतबपरमपावनपदकीप्राप्तहोवै॥ अथवाएकबुधतिसविषेतीषणअभ्यासहोवै
कलंककलनातेरहतसावधानहोवैवैराग्यादिकसमग्रीतेरहतहोवैतोभीअविनासी
पदकोंपावताहै॥ रामोवाच॥ हेभगवनएकेरीश्वरएकज्ञानवानपुरुषसमाधविषेरस्थि

तहोतेहै॥ अरबहुरजगतकेव्यवहारोंविषेभीविचरतेहै॥ अरएकसमाधविषेरस्थितहोते
है॥ अरबहुरजगतकेव्यवहारोंविषेभीविचरतेहै॥ अरएकसमाधरस्थितहीरहतेहै॥ जग
तकाव्यवहारनहीकरते॥ तिनदोनोंविषेश्रेष्टकोनहै॥ वसिष्ठोवाच॥ हेरामजीप्रथम
तेसमाधकालक्षणसुणो॥ एहजोगुणोंकासमाहारहैदेहइंद्रियामनबुधचितअहं
कारतेलेकरजोइनकोंअनात्मरूपजाणताहै॥ अरआपकोंकेवलइनकासाषीचेतन
जाणताहैदेषताहै॥ अरइसप्रकारअंतरशीतलहै॥ तिसकाजिसकाअंतरशीतलहोया
हैतिसकानामसमाधहै॥ सोसमाधजिसकोंकहतेहै॥ अरध्यानकिसकोंकहतेहै॥
जोमैत्रीकरुणामुदितातथाआदिकगुणोंकरस्थितहूयामनआत्माकोंविषयकरके
शांतकोंप्राप्तहै॥ तिसकोंसमाधकहताहै॥ अरजिसकोंऐसेनिश्चयहोताहै॥ जोमैं
सधचिदानंदरूपहों॥ अरदृश्यवर्गसेवपदार्थहूनहो॥ ऐसेनिश्चयकरजिसकाअंतर
करणसीतलहोताहै॥ सोकाहूवनविषेरहोअथवाग्रहहीविषेरहो॥ उभयइस्थानउस
कोतुल्यहै॥ अरबहुअभयपूर्णतलहै॥ जोअंतःकरणसीतलहोवे॥ सोबड़तपोकाफ
लहै॥ हेरामजीजोइंद्रीयोंकोसंजमकरकेसमाधलगाइबैठतेहै॥ अरमनकरजगत
केपदार्थोंकीचिंतवनाकरतेहै॥ तिनकीसमाधमिथ्याहै॥ वहउनमतकीन्याईनि
तेकरतेहै॥ अरजिसकेमनविषेवासनाकोउनाही॥ अरव्यवहारपराकरताहै॥ कोउजा
नमानअवहारकोत्यागकरवनविषेसमाधइस्थितहोबैठाहै॥ सोउभयनिश्चयकर
परमपदकोंप्राप्तहोतेहै॥ इसविषेसंशयनहीकरणा॥ ज्ञानवाननिर्वासीपुरुषकरता
भीदृष्टआवताहै॥ तोभीअकर्ताहोहै॥ अरअज्ञानीकछभीकछुनहीपरवासनाक
रकेतत्वभावकोंप्राप्तहोताहै॥ जैसेकोउपुरषकथाश्रवणकरणेबेठाहै॥ अरमन
किसीअवरदेवानिकसगया॥ तोसुणताभीनहीसुणता॥ तैसेज्ञानवानकाचित
आत्मपदकीओरजायलागाहै॥ तातेबहुतकरताभीकछुनहीकरता॥ उसकोंकर्तृत्व
काअभिमानकछुनहीहोता॥ अरवासनासहतजोअज्ञानीसर्वइंद्रीयोंकोइस्थितक
रकेसोयाहै॥ तिसकामनअविषेप्रवेतनतेगिडनेकरअनुभवभया॥ अरकेइमान
होताहै॥ तातेजहावासनाहैतहाहेबोभहै॥ अरजहावासनाकछुनहीतहाहीशां
तहै॥ हेरामजीजिसचितविषेकरकरतत्वकाअभिमाननहीं॥ अरनिश्चयकरकेआ
पकोंअकर्ताजाणताहै॥ तिसकोंकेवलीभावसमाधविषेइस्थितजाण॥ अरजिसचि
तविषेकर्तत्वकाअभिमानहै॥ अरसमाधइस्थितभीहै॥ तोभीतिसकोंसुषुप्तानजाणो॥ हे
रामजीचितकोंबलावणेकाकारणसिमरतहै॥ जोसिमरतजगतकीलेकरसमाधले
गायबैठताहै॥ तोभीचितवासनाकरकेविसतारकोंपावताहै॥ तैसेबीजसोंअंकुरउ
पजताहै॥ अरविस्तारकोंपावताहै॥ तैसेमनविषेजोसिमरतवासनाकीहोतीहै॥ ति
सकरचितविस्तारकोंप्राप्तहोताहै॥ अरजोमनसोंजगतकीसिमरतजातीरहै॥ अरध्येय
हजोजगतकासतभावनिवर्तहोजावे तबचितअप्रबलहोजावे॥ हेरामजीजिसचितते
वासनानष्टहोतीहै॥ तिसकोंअचलअरइस्थितकहीताहै॥ सोध्यानविषेइस्थितकेवली
भावहोताहै॥ अरजिसचितविषेसदावासनाफुरतीहै॥ तिसकोंसदाषोभरहता
है॥ तातेनिर्वासीहोइकरपरमपदकोंपावो॥ अरहेरामजीजिसचितविषेवासनाकीउठन
ताहोतीहै॥ तहांकरतत्वकाअभिमानपडाफुरताहै॥ तिसकरसदादुषीहोताहै॥ अरवा
सनाकेषीणभएतेमुक्तहोताहै॥ जिसपुरुषकेचितसोंजगतकीआस्थानिवर्तभई
है॥ अरवीतरागहूयाहैसोस्वच्छआत्माहै॥ तिसकोंसमाधकहीताहै॥ हेरामजीजिस
केअंतरतेसंसारकारागद्वेषमिटगयाहै॥ अरशांतकोंप्राप्तभयाहै॥ तिसकोंसदास
माधहै॥ तातेचितविषेजोपदार्थोंकीभावनाहै॥ तिसकोंत्यागकरकेअपणेस्वभावविषे

इस्थित होवे ॥ तब ग्रह विषे रहे अथवा वन विषे जावे ॥ उभय समकों तुल्य है ॥ अरु हे राम
जी जो ग्रह विषे इस्थित है ॥ अरु चित्त तिन का समाहित है अहंकार दोष ते रहत है ॥ तिन
कों कुटंब अरु जनों के संग हू भी वन की न्याई है ॥ जैसा उजन कों नगर है तैसा ही वन है ॥ हे रा
म जो वन विषे जाय कर समाधि लगाय बैठा है ॥ अरु चित्त की वृत्ति विषयों विषे रहती है ॥
तब वह जनता के संकल्पों कों पेषता है ॥ जो चित्त उत्थान विषे है ॥ सो [illegible]
या है ॥ तब जगत भ्रम कों प्राप्त होता है ॥ अथवा स्वप्न विषे जडीभूत होता है ॥ हे राम
जी जो चित्त आत्मपद विषे निर्वाण होता है तब इस्थित हो जाता है ॥ वह पुरुष सर्व भाव
पदार्थों ते आत्मा कों अतीत जानता है ॥ अथवा सर्व भाव अभाव आत्मा ही कर जानता
है ॥ सो समाहित चित्त कहीता है ॥ अरु जिस कों ज्ञान जगत सम्यक भासता है ॥ ति
स कों समाहित चित्त कहीता है ॥ वह इसु पुरुष जनता के संग रहू विषे रहता है ॥ तो भी उस
का संबंध किसी साथ नहीं ॥ जैसे कोऊ पुरुष राजमार्ग विषे चला जाता है ॥ तिस कों किसी अ
वर मार्ग के पदार्थों साथ स्नेह नहीं होता ॥ तैसे उस पुरुष का अभिमान कर अहंमम
भाव नहीं फुरता ॥ जिस पुरुष का मन अंतरमुखी भया है ॥ तब सोन करै ॥ अथवा बैठे
अथवा गमन करै देषे नगर ग्राम सर्व उस कों महा वन रूप भासते हैं ॥ जगत संपूर्ण
उस कों आकाश रूप भासता है ॥ जिस पुरुष कों आत्मा विषे अहं प्रत्यय भया है तिस कों
अंतरसुष कहीता है ॥ जिस का अंतर आत्मज्ञान कर शीतल भया है ॥ तिस कों सर्व
जगत शीतल रूप भासता है ॥ जब लग वह जीवता है ॥ तब लग विगतज्वर होइ कर
जीवता है ॥ अरु हे रामजी जिस का अंतर त्रिस्ना कर प्रज्वलता है ॥ तिस कों सर्व जगत
दावा अगन साथ तपता भासता है ॥ हे रामजी यह सर्व जगत इस के चित्त विषे इस्थित है
जैसी भावना चित्त विषे होती है ॥ तिस के अनुसार ही जगत भासता है ॥ स्वर्ग भूलोक
वायु आकाश पर्वत नदीयां देस काल जेता कछु जगत है ॥ सो सर्व चित्त के अंतर भाव
विषे है ॥ बाहीर कहा विसतार होइ कर भासता है ॥ जैसे वट के बीज विषे वट का विसतार
होता है ॥ तैसे जगत का विस्तार चित्त विषे होता है ॥ अरु बाह्य जो स्वर्ग आदिक भास
ते हैं ॥ सो भी चित्त के अंतर इस्थित हैं ॥ जैसे फूल विषे होता है अरु तिस के अंतर की सुगंध
बाहर भासती है ॥ अरु ताक कछु अंतर है ताक कुवास है ॥ जैसे अंतर के वचन होता है तैसा
ही वेत्ता कर के वायु पर भासता है ॥ एक आत्मसत्ता जगत रूप होइ कर पड़ी भासती
है ॥ सर्व जगत रूप आत्मा ही है ॥ अवर कों उन्मत्त है न भ्रमत है ॥ एक आत्मसत्ता जु
की न इस्थित है ॥ सो ज्ञानवान पुरुष है ॥ तिन कों सदा ऐसे ही भासता है ॥ हे रामजी जि
स के अंतर शांत है तिस कों सर्व जगत शांत रूप है ॥ अरु जिस के अंतर अहं अभिमान है
सो ताप रूप है ॥ अरु सर्प कों प्राप्त होता है ॥ किसी ठौर ते शांत उस कों नहीं होती ॥ स्वर्ग
लोक पृथवी वायु आकाश पर्वत नदीयां देस काल सर्व कों प्रलय काल की अग्नि कर
जलते देषता है ॥ जैसे जिस कों ताप चढ़ता है तिस कों सर्व जगत तपता भासता है ॥ अ
रु आत्मज्ञानी कों सर्व शांत रूप भासता है ॥ जैसे अंध कों सर्व जगत तम रूप भास
ता है ॥ अरु सचक्षु कों सर्व जगत प्रकाश रूप भासता है ॥ हे रामजी जिस पुरुषों कों आ
त्मपद विषे प्रतीत भई है ॥ अरु कर्म इंद्रीयां साथ कर्म भी पड़ा करता है ॥ अरु हर्ष शोक के
वश नहीं होता ॥ सो समाहित चित्त कहीता है ॥ जो पुरुष सर्व जगत आत्मा कों देषता
है तीनी कों विचारता नहीं ॥ अरु भविष्यत की इच्छा नहीं करता ॥ अरु वर्तमान विषे राग
द्वेष ते रहित होइ कर विचरता है ॥ सो समाहित चित्त कहीता है ॥ हे रामजी जो पुरुष जग
की इस्थित अरु जगत कों देष कर हसता है अरु समपद विषे इस्थित है ॥ अरु किसी विषे म
न नहीं करता ॥ सो समाहित चित्त कहीता है ॥ अरु जो पुरुष अहंता ममता ते रहत है ॥ अरु

जगत के विभाग कल्पना ते भी रहत है ॥ चेतन अचेतन भाव जिस कों कछु नहीं फुरता ॥ सो
पुरुष सत है ॥ अरु प्रकाशवत स्वच्छ है ॥ अरु राग द्वेष क्रोधादिक विकारों ते रहत काष्ट लोष्ट के
समान होइ रहा है ॥ अरु सर्व भूतों कों आप समान देषता है ॥ अरु अवर के द्रव्य कों माटी का
ढेला लोष्ट के समान जान कर इच्छा नहीं करता ॥ स्वभाव ही कर नहीं चाहता ॥ नहीं कछु देउ के भय
कर त्यागता ऐसे जो देषता है ॥ अहंकार ते रहत होता है ॥ न जगत के सत भाव कों देषता है ॥ न अस
त भाव कों देषता है ॥ न ज्ञान कों देषता है ॥ न अज्ञान कों देषता है ॥ न जड कों देषता है ॥ न चेत
न कों देषता है ॥ केवल अद्वैत तत्व कों देषता है ॥ सो महापद विषे इस्थित है ॥ सो उदय हुआ होवै ॥ अथ
वा बैठे ॥ कछु उदय होवै ॥ अथवा अभाव होवै ॥ अनभोगों विषे रहे अथवा वन विषे जाय वसै ॥ अ
थवा मद्यपान कर उन्मत्त होवै ॥ अरु निर्लक वा गंगादिक तीर्थों विषे निवास करै ॥ अथवा
सर्व का संग त्याग कर शांतवान रूप्या कंद्रा विषे ताइ निवास करै वा शरीर कों चंदन अगर क
का लेपन करे ॥ अथवा कीच संग लपटावै ॥ वा देह अब ही नष्ट होवै ॥ वा कल्प पर्यंत रहे
तिस पुरुष कों रंच कभी कलंक कदाचित नहीं स्पर्श करता ॥ जैसे स्वर्ण कों कीच के मिल
णे का दोष नहीं स्पर्श करता ॥ तैसे ज्ञानवान कों कर्तृता का दोष कछु नहीं स्पर्श करता ॥ हे
रामजी इस संवित कों अहंता की कलंक है ॥ सो महात्मा पुरुष अहंता ते रहत हैं ॥ ताते स्पर्श न
ही करते ॥ जैसे सिपी कों रूपे का अभ्यास स्पर्श नहीं करता ॥ तैसे ज्ञानवान कों कर्या स्पर्श नही
करती ॥ हे रामजी अहंता ही कर रहदीन होता है ॥ जब अहंता इस कों फुरती है ॥ तब अने
क प्रकारों के दुष मुषों कों देषता है ॥ अरु बारंबार जन्म मरण आदिक संकटों कों देषता है ॥ अ
र भय कों प्राप्त होता है ॥ जैसे जेवरी विषे किसी कों सर्प भासता है अरु भय पावता है ॥ अर
जब भली प्रकार दीपक के प्रकाश साथ देषता है ॥ तब सर्प भय निवृत्त हो जाता है ॥ तब नि
र्भय होय कर विचरता है ॥ तैसे अहंता कर के यह दुष भय कों पावता है ॥ अरु अहंता के निव
र्त हुए शांतवान होता है ॥ हे रामजी ज्ञानवान जो कछु कर्म करता है ॥ तिस विषे अहं का
र अभिमान नहीं करता ॥ ताते करणे विषे उस का अर्थ कछु सिद्ध नहीं होता ॥ अरु जो न
ही करता तिस विषे भी अभिमान कछु नहीं ॥ ताते अकरणे कर के उस की कछु हानता
नहीं होती ॥ अपणे स्वभाव विषे इस्थित होता है ॥ जगत कों भी द्वैत भाव कर नहीं देषता
सर्व आत्मभाव कर देषता है ॥ ताते कर्म स्पर्श नहीं करते ॥ ॥ इति श्री उपशम प्रकरणे
ज्ञान विचारो नाम सर्गः ॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी चित्तादिक जो जगत है ॥ सो वासना व
आत्मा ते कछु भिन्न नहीं ॥ आत्मरूपी सर्व है ॥ तिस विषे चित्त अहंता अरु देस काल रूपी
दीषता है ॥ जैसे तीक्ष्णता मिरचां ते भिन्न नहीं ॥ तैसे चित्त अहंता देस काल आत्मा ते भिन्न
नहीं ॥ जैसे पाषाण विषे कठोरता है ॥ तैसे आत्मा विषे जगत है ॥ अरु जैसे पर्वत विषे जडता
है ॥ तैसे आत्मा विषे जगत है ॥ अरु अहंता है ॥ जैसे जल विषे द्रवता है ॥ तैसे आत्मा विषे अ
हंता है ॥ जैसे वृक्ष ते फूल फल पत्र टास भिन्न नहीं होते ॥ तैसे आत्मा ते अहं आदिक भेद भि
न नहीं होते ॥ जैसे अग्नि विषे उष्णता होती है ॥ अरु बर्फ विषे शीतलता होती है ॥ अरु सू
र्य विषे प्रकाश होता है ॥ अरु जैसे गुड विषे मधुरता होती है ॥ तैसे आत्मा विषे देस काल की वे
दना होती है ॥ हे रामजी जैसे मणि विषे प्रकाश होता है ॥ तैसे आत्मा विषे अहंतादिक हो
ते हैं ॥ जैसे जल ते भिन्न तरंग नहीं होते ॥ तैसे आत्मा ते भिन्न अहंतादिक नहीं होते ॥ जेता कछु
जगत भासता है ॥ सो आत्मसत्ता का प्रकाश है ॥ सो आत्मा अनंत है अरु सर्व विषे पूर्ण है ॥ ए
क ही स्वभाव विषे इस्थित है ॥ तहां शिलावत घन इस्थित है ॥ तिस ते भिन्न कछु नहीं ॥ जैसे अका
श अपणे भाव विषे इस्थित है ॥ तैसे केवल आत्मतत्व अपणे आप विषे इस्थित है ॥ सो नि
र्वेदन है पर वेदना भी तिस ते कछु भिन्न नहीं ॥ जैसे जल ही तरंग होय भासता है ॥ तैसे आ
त्मा ही वेदना रूप होइ कर भासता है ॥ अरु जैसे जल विषे द्रवता भासती है ॥ अरु पवन विषे

चलायमान भासता है ॥ तैसे ज्ञानरूप आत्मा विषे अहंता अरु देस काल जगत भासता है ॥ हे राम
जी जीवणा है सो ज्ञान करके होता है ॥ अरु ज्ञानी का जीवणा चैतनमात्र करके होता है
ताते चिनमात्र अरु जीवो विषे रंचक भी भेद नहीं ॥ अरु ज्ञान अरु जगत विषे भेद कछु न
हीं एक अखंड सत्ता ही सुख की सुंदर स्थित है ॥ हे रामजी सर्व सत्ता एक अज अनादि आद्य अनंत मह
ते रहत प्रकाशरूप है ॥ सो चिनमात्र अद्वैत तत्व अपणे आप विषे स्थित है ॥ अरु अशब्
द पद है ॥ जिस विषे वाणी प्रवेश नहीं कर सकती ॥ अरु जेते कछु वाक्य है सो तिसके नेत्र
वणे न मिनक है है ॥ वास्तव ते है तौ वस्तु कछु नहीं ॥ एक आत्म तत्व को अपणे हृदे विषे
धारकर के स्थित होवो ॥ ॥ इति श्री उपशम प्रकरणे भ्रम निरासो नाम सर्गः ॥ वसिष्ठ उवाच ॥
हे रामजी एक और पुरातन इतिहास कहता हूं जिसको ऋषीश्वर कहते है ॥ सो तुम सुणो
किरात देस का राजा सुरघु होता भया तिसका यह वृत्तांत है ॥ सो तिस समय का उपजाव
णा सुणो ॥ हे रामजी उत्तर दिशा विषे पृथ्वी है ॥ तहां सुंदर सुगंध पत्ता है ॥ मानो कपूर कर
के लेपत है ॥ मानो सदाशिव के हंस अस्थान एक भए है ॥ हिमालय का शृंग है ॥ तिसरूप
र कैलाश पर्वत है ॥ सो सेव पर्वतों ते उत्तम है ॥ अरु महा उज्वल श्वेत है ॥ तैसा विष्णु जी का
क्षीर समुद्र उज्वल है ॥ तैसा जल सम धारी कई जो के निवास स्थान कैलास प
र्वत है ॥ तहां अनंत ही कल्प वृक्ष है ॥ सु स्रम्ने कर तनो के गुच्छे तिनके संग लटकते है ॥
अरु गंगा जी का प्रवाह तहां चला जाता है ॥ अवर नदीयां अवर नद चलते है ॥ अरु अनेक
तड़ाग कमलों से लगते है ॥ अरु महां सुंदर स्थान है ॥ जो पास पंछी अनेक है मानो
वसंत ऋतु की नौतन रचना बनी है ॥ तिस हिमालय के शिखर विषे हेतकट तोपा जनवाले कि
रात रहते है ॥ जैसे वृक्ष के मूल विषे पीलका रहती है ॥ अरु जैसे मानुष के आश्रय जूं अ
रु लीषा रहती है ॥ तैसे तिस पर्वत के आश्रय जीव किरात देस विषे रहते है ॥ तिस
किरात देस का राजा सुरघु होता भया ॥ कैसा राजा लक्ष्मी जिसकी भुजा विषे प्रत्यक्ष र
है ॥ मानो साक्षात कर्म की मूरत है ॥ अरु वेगवान ऐसा मानो पवन की मूरत है ॥ अरु वैराग्यवा
न ऐसा जैसा जिन ईश्वर ॥ अरु बुधवान ऐसा जैसा ब्रह्म सम है ॥ अरु कवि ऐसा जैसा शुक्र है
अरु राजा ऐसा जैसा राजा इंद्र है ॥ अरु धनी ऐसा मानो कुबेर है ॥ ऐसा सो भाग्यवान राज
करता भया ॥ अरु भली प्रकार प्रजा की पालना करे जो सभ मार्ग विषे वरते तिनकी र
क्षा करे ॥ अरु जो पापकर्म चोरी आदिक करै तिनको दंड देवे ॥ अरु जैसा कर्म आन प्रा
प्त होवे ॥ तिसको राग द्वेष ते रहत वितीत करे ॥ एक काल विषे अपणे स्थान विषे इ
स्थित है ॥ अरु चित विषे इह विचार उपजा जो अनकष्ट मैं जीवों को कष्ट देता हो ॥ जैसे ति
लों को तेली पीडता है ॥ तैसे मैं पापीयों को कष्ट देता हों ॥ ताते इनको अब न देवों ॥ कष्ट न देवों
पर दुष्टों को दंड दीए बिना राज नहीं चलता ॥ जैसे जल बिना नदी का प्रवाह नहीं चल
ता ॥ अरु जो दंड देता हों तब वह अति दुष पावते है ॥ ताते मैं क्या करों ॥ दोनो वारता विषे कष्ट
है ॥ हे रामजी ऐसे विचार विषे राजा भ्रमता रहे ॥ जैसे वायु चिरोले विषे आया तृण भ्रम
ता है ॥ तैसे संशय विषे राजा भ्रमता रहे ॥ तब एक दिन विषे राजा को समीप मांडव मुन
आन निकसे ॥ जैसे इंद्र के गृह विषे नारद आवे ॥ तैसे राजा के गृह विषे मुन आय प्राप्त
भया ॥ तब राजे ने मुन का विधिपूर्वक पूजन कीया ॥ अरु संदेहवान होइ कर प्रश्न की
या ॥ सुरघोवाच ॥ हे भगवन सर्व धर्मज्ञ तुमारे आगमन कर मैं अति अनंद को प्राप्त भ
या हो ॥ जैसे वसंत ऋतु कर के पृथ्वी प्रफुल्लत होती है ॥ तैसे तुमारे आवणे कर मैं प्रफु
ल्लत भया हो ॥ मैं भी आपको अब पुन्यवान जानत भया हों ॥ जो मैं भी पुन्यवानो विषे प्रसि
द्ध होवोगा ॥ काहे ते जो तुमों मेरे गृह विषे कृपा करी है ॥ जैसे सूर्य के उदय होवणे कर क
मल खिड़ आवते है ॥ तैसे मैं तुमारे दर्शन कर प्रसन्न भया हों ॥ हे भगवन मुझको संश

य है तिसके निवारणे कों तुम योग हो ॥ जैसे सूर्य के उदय हुए अंधकार नष्ट हो जाता है ॥ तैसे तुमको
देखे मेरा संशय निवर्त हो जावेगा ॥ जो कोऊ महां पुरुषों का संग करता है तिसका संशय अव न
ष्ट हो जाता है ॥ अरु संशय परम दुषों का कारण है सो संशय रहे है ॥ हे मुनी अरु जो कोउ दुष्ट क
र्म कर्ता है तिसको मैं दुष देता हो ॥ अरु जब उसको दुषी देखता हो तब मुझ को दया उपजती है
अरु जब दंड नहीं करता तब परजा निर्भय होइ कर पाप करती है ॥ इह मेरा संशय मुझ को पड़ा
खेवता है ॥ जैसे सिंह के नख हसती को खेंचते है ॥ ताते वह उपाव मुझ को कहो तिसक
र मुझको समताभाव प्राप्त होवे ॥ जैसे सूर्य की चांदिनी सर्व ठौर विषे सम होती है ॥ तै
से इष्ट अनिष्ट की प्राप्ति विषे मैं सम होवे ॥ सो कृपा करके मुझको कहो ॥ मांडव उवाच ॥
हे राजन इसको अन सुगम है ॥ अरु अपणे आधीन है ॥ आपही कर सिद्ध होती है ॥ अरु अपणे
गृह विषे है ॥ हे राजन सर्व उपाधि मन ते उठती है सो मन तुच्छ है ॥ विचार कीए ते निवर्त हो
जाता है ॥ जैसे उष्णता करके बरफ जमरी हो जाती है ॥ तैसे विचार कीए ते मनन भाव लीन
हो जाता है ॥ जब मनन भाव नष्ट हो जाता है तब ताप मिट जाता है ॥ जैसे सीत काल के आग
नते कड़ी उनष्ट हो जाती है ॥ तैसे विचार कीए ते मन नष्ट हो जाता है ॥ सो विचार इस प्रका
र करे जो मैं कवन हों अरु देह इंद्रियां क्या है ॥ अरु जगत क्या है ॥ अरु जन्म मर्ण किसको हो
ता है ॥ इस विचार करके जब तैं अपणे स्वभाव विषे स्थित होवेगा ॥ तब राग द्वेष जो है तुझ
को कदाचित चलाय न सकेंगे ॥ जैसे वायु कर पर्वत चलायमान होते नहीं ॥ तैसे तैं
अचल रहेंगा ॥ हे राजन जब आत्मबोध होवेगा ॥ तब मन अपणे मनन भाव को त्याग
देवेगा ॥ तैसे ताप ते रहत अपणे स्वरूप को प्राप्त होवेगा ॥ जैसे तरंग भाव के मिटेगो क
र जल निर्मल भाव होता है ॥ तैसे तू अचल होवेगा मन धर्म भी रहेगा ॥ परम ध्येय सो अज्ञा
न नष्ट हो जावेगा ॥ आत्म तत्व ही का भान होवेगा ॥ जैसे काल वही रहता है पर हत अवर
हो जाती है ॥ तैसे मन वही होवेगा ॥ पर स्वभाव अवर हो जावेगा ॥ अरु तेरे मन अरु प्रजा भी
साधतवान हो जावेगी ॥ तेरी आज्ञा के अनुसार ही वरतेगी ॥ अरु तुझ को देषकर प्रसन्न हो
वेगी ॥ हे राजन जब तैं विचार रूपी दीपक संग आत्म रूपी चिंतामणि पदार्थ पावेगा ॥ तब तेरी
अगुप्त मेरु अरु समुद्र अरु आकाश ते भी दीर्घ हो जावेगी ॥ जब तुझ को आत्म महत्ता प्राप्त हो
वेगी तब तैं संसार की तुच्छ व्रति विषे न डूबेगा ॥ जैसे गोपद के जल विषे हस्ती नहीं डूबता
तैसे तू राग द्वेष कर न डूबेगा ॥ हे राजन जिन को देह विषे अभिमान है ॥ अरु चित विषे वा
सना है सो तुच्छ संसार की व्रत विषे पड़े डूबते है ॥ जैसे कीच का कीट कीच विषे पड़ा दुःव
ता है ॥ ताते जेता कछु अनात्म भाव दृश्य है तिसको त्याग कर ॥ जो कछु संशय रहेगा सो
परम पद है आत्म तत्व है ॥ हे राजन जो सत वस्तु है तिसको हृदय विषे धार ॥ अरु जो असत
है तिसको त्याग कर ॥ जैसे तब लग सुन्यारी यान्यारे कल्लर कंकरी को धोवता है ॥ जब लग
स्वर्ण नहीं निकस्या ॥ जब स्वर्ण निकसता है तब धोवणे का त्याग करता है ॥ तैसे तब लग
आत्म विचार करतव्य है ॥ जब लग आत्म तत्व का साक्षात्कार नहीं भया ॥ जब आत्म तत्व का
साक्षात्कार होता है ॥ तब विचार संग प्रयोजन नहीं रहता ॥ हे राजन सर्व विषे अरु सर्व
प्रकार सर्वदा काल सर्वात्मा की भावना कर अथवा जेता कछु दृश्य भाव है ॥ सो सर्व को
त्याग कर जो शेष रहेगा ॥ सो तुझ को भासेगा ॥ जब लग सर्व दृश्य भाव को त्याग न क
रेगा तब लग आत्म पद का लाभ न होवेगा ॥ सर्व पदार्थों के त्यागे ते सो आत्म पद भासे
गा ॥ हे राजन जो किसी अवर पदार्थ पावणे का यत्न करता है ॥ तौ जब लग अवर को
त्याग कर उसका यत्न नहीं करता ॥ तब लग प्राप्त नहीं होती ॥ तैसे आत्म तत्व अनन्य होइ कर
रचित वे बिना कैसे प्राप्त होवै ॥ जब सर्व अपणा यत्न एक ही ओर लगावता है ॥ तब तिस

पदकोंप्राप्तहोताहै तातेग्रात्मपदकेपावणेनमितसर्वदृश्यकोंत्यागकरसर्वकेत्यागकीपजोसेग्राय
हैसोपरमपदहै हेराजनसर्वत्यागकीपरणाछेजोसतानिसकाग्रुधिष्ठानरहेगी सोतमकोंग्रा
त्मभावकाप्राप्तहोवेगी ॥ ॥ ॥ **इतिश्रीउपशमप्रकरणेमरवध्वजतमोइसउपदेशवर्ननंनाम**
**सर्गः ॥ ॥ वसिष्ठउवाच ॥** हेरामजीइसप्रकारसोइध्यमनकरकेग्रपणेइस्थानकोंगमनक
तेभया ॥ तबसुरघराजाएकांतवेठकरविचारकर्तेभया ॥ जोमेंकवनहों ॥ नामेंसुमेरहोंनमेरासु
मेरहै ॥ नमेंजगतहोंनमेराजगतहै ॥ नमेंप्रथवीहोंनमेरीप्रथवीहैनमेंकिरातमंडलहै ॥ काहेते
जोयहग्रपणेभावविषेइस्थितहै ॥ मेरेभावकरतोइस्थितनही ॥ जोमेंनहोवोतोभीइहऐसेकेऐसेइ
स्थितहै ॥ तोमेरेकैसेहोवेग्ररमेंइनकाकैसेहोवों ॥ नमेंनगरहोंनमेरानगरहै ॥ मेंनाग्ररहसतीहो
इमेंरथधननग्ररइस्त्रीपुत्रादिकजेतेकछुपदार्थहैसोनमेंहोंनयहमेरेहै ॥ इनोविषेग्रासक्तहोव
णाव्यर्थहै ॥ इनसंगमेरासंबंधकछुनही ॥ जेतेकछुभोगोंकेसंबंधहैनमेंहोंनइहमेरेहै ॥ भूतक
लग्रसर्वग्रपणेभावकरकेसिद्धहै ॥ मेराइनसंगसंकेतकछुनही ॥ नमेंराजाहोंनमेराराजहै
मैयहएककाकीशरीरमात्रहों ॥ इनविषेमेराममतकरणाव्यर्थहै ॥ काहेतेजोप्रथवीग्रपणेसंके
तविषेइस्थितहै ॥ ग्ररदेसग्ररवनग्रादिकग्रपणेसंकेतविषेइस्थितहै ॥ ग्ररदेसपर्वतग्रादिकग्र
पणेसंकेतविषेइस्थितहै ॥ ग्ररवृषग्रादिकग्रपणेसंकेतविषेइस्थितहै ॥ नगरहाटग्ररदविषे
काष्टलोष्टइटोंमितेकाग्रादिकसर्वपदार्थग्रपणेसंकेतविषेइस्थितहै ॥ नयहमेरेहोंनकोऊ
मेराहै ॥ मंत्रीग्रपणेसंकेतविषेइस्थितहै ॥ ग्ररराजपदग्रपणेसंकेतविषेइस्थितहै ॥ काहेते
जोजवमेंनथातवभीराजसेजाथी ॥ ग्ररराजाराजकरतेथे ॥ ग्ररजोमेंनहोवोगा तोभीराजसे
जाहोवेगी ॥ ग्ररराजाराजकरेंगे ॥ तातेनमेंराजाहोंनमेराराजहै ॥ ग्रवशरीरमात्रविषेजोग्रहं
मानताहों सोभीव्यर्थहै ॥ काहेतेजोहस्तपादग्रादिकजिसकाग्रंगहै ॥ येसाजोशरीरतिस
विषेग्रनेकग्रंगहै ॥ सोग्रपणेग्रपणेसंकेतविषेइस्थितहै ॥ ग्ररभिंनभिंनसंज्ञाराषतहै ॥ इनकेमां
सग्ररस्थमज्जाग्रादिकग्रपणेग्रपणेसंकेतविषेइस्थितहै ॥ सोमेंनहीनयहमेरेहै ॥ इनसंगमे
राकछुसंबंधनही ॥ यहजडहैमेंचेतनहों ॥ जैसेजलकास्पर्शकमलकोंकछुनही ॥ तैसेइनका
स्पर्शमुझकोंकछुनही ॥ ग्ररनमेंकर्मइंद्रीयाहोंनमेरीयाकर्मइंद्रीयाहै ॥ यहतोजडहै ॥ नमेंज्ञा
नइंद्रीयाहोंनमेरीयाज्ञानइंद्रीयाहै ॥ इनतेपरेमनहैसोभीमेंनही ॥ यहतोजडहै ॥ मनबुद्धिचि
तग्रहंकारपदसर्वग्रनात्मरूपहै ॥ मेराइनोंसंगग्रविद्याकरकेसंबंधहै ॥ भ्रांतकरकेइनोंमेंग्र
पणारूपपराजाणताथा ॥ इहसर्वभूतोंकाकारनहै ॥ इनकेपरेचेतनजीवहै ॥ सोचेतनग्रपकोंचेत
नेहारहै ॥ सोचेतनचेतनताभीमेंनही ॥ इनसर्वतेशेषग्रचेतनचिनमात्रहैसोसत्तामेरास्वरूपहै ॥ व
डाग्राश्चर्यहैजोमेंग्रपणाग्रापपाया ॥ ग्रवमेंजागाहों ॥ ग्ररग्रपणास्वरूपपायाहै ॥ वडाग्राश्च
र्यहैजोमेंग्रर्थहेरादिकोंकोंग्रापमानकरशोकमोहकोंप्राप्तहोताथा ॥ मेंतोएकनिर्विक
ल्पचेतनहों ॥ ग्ररग्रनंतग्रात्माहों ॥ ग्ररसर्वविषेव्यापरहाहों ॥ ब्रह्मरूपात्मायहीहै ॥ इंद्रीयोंतेग्रा
दिलेकरजेतेभूतगणहै सर्वकाग्रात्माहोंयहभगवानग्रात्मासर्वविषेव्यापकहै ॥ जैसेसर्वविषे
ततव्यापकहै ॥ तैसेसर्वविषेततव्यापकहै ॥ तैसेयहचेतनरूपसर्वततभावोंकोंधारकरभर
रहाहै ॥ सर्वभावोविषेव्यापरहाभैरवहै ॥ उदेग्रस्तादिकभावविकारोंतेरहतहै ॥ ब्रह्मादिक
ग्ररत्रणपर्यंतसर्वकाग्रात्मायहीहै ॥ सर्वप्रकाशोंकादीपकप्रकाशणेहारायहीहै ॥ ग्ररसंसार
रूपीमोतीयोंकेपरोवणेहाराधागाइहीहै सर्वकार्यकारणयहीहै ॥ ग्ररविकारोंतेरहतहै ग्ररश
रीरग्रादिकसर्वइसकीसत्ताकरउपलवयहपहोतेहै ॥ शरीररूपीरथइसीकरचलताहै ॥ ग्ररव
ह्लतेशरीरादिककछुवस्तनही ॥ यहजगतचितरूपीनटकीनिर्तलीलारूपहै ॥ चित्तविषेज
गतपड्राफुरताहै ॥ वास्तवतेग्रवरकछुनहीवस्त ॥ ग्रतकरग्रनकरणा ॥ जोमेंग्रर्थीनगरग्रनग
रकीचिंतापड्राकरताथा ॥ यहतोगुणोंकाप्रवाहहै ॥ मेंइनविषेकछुशोकवानहोताथा ॥ ग्रतग्रा

ग्रर्थहैजोग्रसतरूपजगतभ्रमरूपकोंसतवतपडुभानहोताथा ॥ ग्रवमेंनिश्चेकरकेसमग्रवो
धभयाहों ॥ ग्ररदुरदर्शनभ्रममेरामिटगयाहै ॥ दृष्टाकीजोग्रपलदृष्टहैसोमैदेषीहै ॥ तिस
कोंप्राप्तभयाहों ॥ जेतीकछुदृश्यहैतिसतेंमैस्वरूपतेदेष्याहै ॥ ग्ररग्रहंममग्रादिकदुषोंका
मेंइहमेरामिटगयाहै ॥ मेंसर्वचिदानंदग्रात्माहों ॥ तिसमेंदृग्रनंतग्रात्माग्रपणेग्रापविषे
इस्थितहै ॥ नगरकाग्ररनगरकायहकल्लेसकोऊनही ॥ नकोऊसषहैनदुषहै सर्वब्रह्महै ॥
ग्रवरहेतनकछुवस्तनही ॥ रागकिसकाकरों ग्ररद्वेषकिससंगकरोंमें मिथ्याभ्रमताकोंप्रा
प्तहोइकरदुषीहोताथा ॥ ग्रवकल्याणभयाहै ॥ तोमैविचारकरकेंग्रपणेग्रापस्वरूपस्व
भावविषेइस्थितभयाहों ॥ ऐसेग्रात्माकेसाक्षात्कारकरतेरहतडरीथा ॥ इसकाज्ञानपाइकर
ग्रवकिसकाशोककरों ॥ ग्ररकैसेमोहकोंप्राप्तहोवों ॥ ग्रवमेंकादेषोंग्ररकाकरों ॥ परकेहाइ
स्थितहोवों ॥ ग्ररकहांगमनकरों ॥ यहसर्वजगतग्रात्माकेप्रकासकरभासताहैसर्वग्रात्मरू
पहै ॥ तातेनमस्कारहैनम ॥ हेग्रनंतरूपनिहकलंकहैइष्टतमारी ॥ ग्रर्थयहजोतनोकी
उपाधरहतहै ॥ मेंग्रवसम्यकज्ञानवानभयाहों ॥ तातेनमस्कारहैमेरीमझकों ॥ मेंग्रनंत
ग्रात्माहों ॥ ग्ररभवरूपीभूमतेरहतनिहकलंकसर्वदेशकालतेरहतसमवलशांतरूपहों
ग्रचेतचिनमात्रसदाग्रपणेग्रापविषेइस्थितहों ॥ ॥ ॥ **इतिश्रीउपशमप्रकरणेसुरघविश्रां**
**तिवर्ननंनामसर्गः ॥ वसिष्ठउवाच ॥** हेरामजीइसप्रकारसुरघजोहैकिराततिनका
राजायमीनेदपदकोंप्राप्तभया ॥ इसप्रकारविचारग्रभियासकरकेंग्रसरूपभया ॥ ज्ञानवोध
हूग्राग्रनेकराजकेकार्योंकोंकर्तेभया ॥ जैसेसूर्यइष्टग्रनिष्टविषेसमहैविगतज्वरहोइकर
दिनकोंवितीतकरताहै ॥ तैसेरागद्वेषतेरहतराजकार्यकर्तेभया ॥ जैसेजलऊचीग्ररनीचीटो
रविषेगमनकरताहै ॥ वहिताहै ग्रपणेजलभावकोंनहीत्यागतासमहीरहताहै ॥ तैसेराजा
हर्षशोकतेरहतहोइकरराजकार्यकोंकर्तेभया ॥ ग्ररग्रपणेस्वभावकोंनत्यागतभया ॥ ग्रा
त्मरूपकोंधारेहएविचरतभया ॥ सुषमवतग्रंतरहोवासी ॥ संसारभावकाफुरणाकछुनफुरे
जैसेवायुतेरहतदीपकप्रकाशताहै ॥ तैसेवहप्रकाशकोंधारतभया ॥ हेरामजीदयाकरता
ग्ररदयातेवहतभीग्रवगोंकोंदृष्टग्रावै ॥ पर
दृष्टग्रावै परउसकीदृष्टविषेकछुदयानही ॥ नकछुसषनदुषनग्रर्थनग्रनर्थन ॥ सर्वपदार्थों
उसकीदृष्टविषेकछुनिरस्थानही ॥ ग्ररग्रात्माकाके
विषेएकग्रात्मभावदेषे ॥ ग्ररग्रंतरतेपूर्नमासीकेचंद्रमावतसीतलरहे ॥ ग्ररशोककरता
चनरूपजगतकोंजाणतभया ॥ सुषदुःषकाजोभावहै ॥ सोशांतहोगया ॥ ग्ररशब्दस्पर्शरूपरसगंधविषयोंकों
विलासकरतामनहोताइस्थितहोताचलताश्वासलेता ॥ तैसेकर्न्ह
ग्रहणकर्तेभीरागद्वेषकोंनप्राप्तभया ॥ जैसेपाषाणविषेफुरणाकछुनहीहोता ॥ जैसेजलविषेकमलग्रले
त्वकाग्रभिमानकछुनफुरे ॥ सर्वक्रियाकोंकर्ताभीनिहसंगरहा ॥ ग्रनेकशतवर्षोंको
पवहताहै ॥ तैसेराजाराजविषेनिर्लेपहोइकरजीवनमुक्तहोतभया ॥ जैसेवर्षकाकणकासूर्यकेतेजकरजल
वीतावतभया ॥ तिसकेपनेतरशरीरकोंत्यागतभया ॥ ग्रात्मसत्ताविषेलीनहोगया ग्ररजैसेनदीस
मयहोजाताहै ॥ तैसेशरीरग्रपणेभावकोंत्यागकरपर्म
मुद्रविषेलीनहोजातीहै ॥ समुद्रतेइतरनहीभासती ॥ तैसेसुरघग्रपणेभावकोंप्राप्तहोतभया ॥ जैसेशरतका
ब्रह्महोतभया ॥ कल्पनारूपीमैलकोंत्यागकरऊजलभावकोंप्राप्तभया ॥ जैसेघटकेफूटेघटा
लकाशनिर्मलहोताहै ॥ तैसेनिर्मलचिदानंदस्वात्मभावकोंप्राप्तभया ॥ ॥ ॥ **इतिश्रीउप**
काशमहाकाशहोजाताहै ॥ तैसेसुरघपूर्नब्रह्मसचिदानंदतत्वहोतभया ॥ हेरामजीतुमभीइसीदृष्टकोंप्रा
**शमप्रकरणेसुरघ** वृतांतसमाप्तनामसर्गः ॥ **वसिष्ठउवाच** ॥ हेरामजीतुमभीइसीदृष्टकोंप्रा
प्तहोकरकेविचरो ॥ तवभयमिटजावै ॥ जैसेमहाघोरतमविषेवालकभयकोंपावताहै ग्र
रजवदीपकाप्रकाशहोताहै तवनिरभयहोताहै ॥ तैसेसंसाररूपीघोरतमविषेग्रायाग्रूरू
षदुषपावताहै ॥ जवज्ञानरूपीदीपकउदेभयातवनिरभयहोताहै ॥ हेरामजीग्रात्मविचार

उ॰प्र॰ २२

विषेनक्ककुछभी इसका चित विश्राम पावता है॥ तब तिस विश्राम कों आश्रय करकै संसार
समुद्र ते निकस जाता है॥ जैसे रोप विषे गिरे तिसकों तृण का बूटा हाथ लागे तो भी तिसकों आश्रय
करकै निकस आवता है॥ हे रामजी इह पावन रष्ट मैंने तुम कों कही है॥ इस कों चित विषे विचार॥ प
रस्पर मिलकर उदाहरणों से हृत अभ्यास करके नित एक समाध विषे इस्थित होवो॥ अरु व
पन का अभ्यास होइ करकै लोक विषे विचरो॥ **रामउवाच॥** हे मुनी अब एक समाध किस कों कही
ए॥ अरु एक समाध कैसे होती है॥ सो कहो जो मेरा चित इस्थित होवै॥ अब तौ पड़ा फुरता है॥ जैसे वा
यु करकै मयुर का पंछ पड़ा हल्लता है॥ तैसे चित सदा चंचल रूप पड़ा फुरता है॥ **वसिष्ठोवाच॥** हे
रामजी तब सरस्वती प्रबुध भया था तब तिसका परस्पर राजा साथ संवाद हूया है॥ सो मरु अद्भुत
संवाद है॥ तिसकों स्रवण करने से विचारोगे तब एक समाध वान होवोगे॥ जो उनो मिलकर पर
स्पर चरचा करी है॥ तिसकों स्रवण करो॥ हे रामजी पारस देस का राजा महावीर था॥ अरु प
रजुति सका नाम था सो सुरघु का मित्र था॥ जैसे नंदनवन विषे कामदेव अरु बसंत का मित्र
भाव होता है॥ तैसे सुरघु अरु परघ का मित्रभाव होता भया॥ एक काल विषे परघ के देस में प्रल
य विनाम लय की न्याई होत भई॥ तिसकर सर्व जीव दुष पावणे लागे॥ प्रजा के जीवों की
जो पापबुधी तिसका फल आय प्राप्त भया॥ जैसे प्रलय काल विषे जीवों की बुध भ्रष्ट कर
नाम लेत है॥ तैसे जीवों की बुध भ्रष्ट करना मरु होते है॥ तैसे जीवों की बुध भ्रष्ट करम हो दुरभि
षआन परी॥ कोई इक क्षुधा करि मृतक होत भये॥ कोई एक अग्न विषे जल गए॥ कोई वाद वि
वाद करके मर गए॥ प्रजा के जीव अत कष्ट कों प्राप्त भए॥ परघ आप राजे कों दुष कछु न भया॥ जै
से सूध मन जिन कों जाह स्पर्श नहीं करता॥ तैसे राजा कों दुष न स्पर्श करै॥ जब प्रजा अति दुष पा
या॥ तब राजा प्रजा कों दुषी देषत भया॥ पर प्रजा के कष्ट निवारण कों समर्थ न भया॥ तिसकर सं
सारों भर्म अरु कुटंब कों त्यागत भया॥ जैसे वन कों अगन लागती है॥ अरु पंषी वन कों त्या
ग जाते है तैसे त्यागता भया॥ तब एक पर्वत की कंदरा विषे जाइ कर तप करते भया॥ सो कैसा तप
कीया जैसा जितेंद्रिय तप कीया था॥ फल पत्र हरियों का भोजन भी त्याग दीया॥ सूके पत्रों का
भोजन करने भया॥ जैसे अगन सूके पत्रों का भोजन करते है॥ तिसकर तिसका नाम परणाद
होत भया॥ एकांत तप कारणे करणे दीप विषे तिसका नाम परणाद प्रसिद्ध होत भया॥ अ
र तप का निमित यही जो चित की वृत आत्मपद विषे जोड़त भया॥ सहस्र वर्ष पर्यंत तप की
या॥ जब अभ्यास कर चित इस्थित भए ते केवल ज्ञान स्वरूप आत्म तत प्रकास आया॥ तब सर्व त
प सिद्ध भए॥ तिसकर राग द्वेष ते रहत अक्रिय सम दरसी जीवन मुक्त होइ कर निर्भय त्रिलो
की रूपी मही विषे विचरता भया॥ सिद्धों के अस्थानों विषे जावे॥
लिकट है सो कों अनंत जाइ मिलता है॥ तैसे सिद्धों कों राजा जाय मिले॥ जैसे सरोवर विषे कमलों के
कसमे अकस्मात त्रिगर्त देस विषे आय प्राप्त भया॥ ऐसे विचरते विचरते प
रउद्दत होता भया॥ परस्पर दर्सन करके मिले॥ उभय ज्ञान ते पूर्ण अरु परस्पर भाव करकै एक ही आ
सन पर इस्थित भए॥ अरु परस्पर कुसल प्रस्न करत भए॥ प्रथम परघ बोलत भया॥ **परघोवाच॥**
हे सुरघु तेरे दर्सन करके मैं परमानंद कों प्राप्त भया हों॥ जैसे चंद्रमा के मंडल विषे जाय कर
कोऊ अनंद मान होता है॥ तैसे मैं आनंद मान भया हों॥ मित्र का जो वियोग होता है॥ तब अंतःकरण
तपती है॥ जैसे ब्रछ कों ऊपर से ताप देने वडा उष्ण विसना होइ जाता है॥ हे साध अब मैं भी ज्ञा
वान भया हों॥ अरु तुम भी साउव रिष के प्रसाद अरु आत्म प्रसाद करके ज्ञान कों पावत भए हो॥ हे
राजन अब तुम दुष दुःख ते मुक्त भए हो॥ अरु विश्रांत कों भी प्राप्त भए हो॥ अरु आत्मपद या व
रणे की जो वड़ियाई है॥ सो सुमेर आद के ते भी ऊची है॥ तिसकों तुम प्राप्त भए हो॥ अब पर
मकल्याण वान तौ भए हो॥ अरु आत्मा तुम भया है॥ अरु राग द्वेष मल ते रहत भया है॥
जैसे सरत काल का तड़ाग निर्मल होता है॥ तैसे निर्मल भए हो॥ अरु सर्व का जो कोई कर्ता सम भाव वि

घर रहता है॥ अरु आपदा आध ताप ते रहत भए है॥ अरु तेरी प्रजा भी विगत दुष भई है॥ अरु ए
वर रहता है॥ अरु आर्द सोहिमा विषे तेरी कीर्ति प्रसर रही है॥ जैसे चंद्रमा
नगर जन मानस विषे कुसल है॥ अरु तेरी कीरत कों आन नगर विषे के आगा वती याहे॥ हे रा
की सीतलता प्रसर जाती है॥ तैसे तेरी कीरत कों आन नगर विषे के आगा बती या है॥ अरु प्रपात रमणीय ते विषय
जन पुत्र भृत पुत्र कलत्र सर्व आध व्याध ते रहत भए है॥ अरु त्रिस्ना रूपी सर्पणी तुम कों डसती नहीं॥ हे
राजन हे॥ तिन विषे अब तेरी प्रीत तो नहीं॥ अरु हम कहा रहे है॥ अब
राजन तुमारी अरु हमारी मित्रता दीर्घ काल ते पाइ करत मक हार रहे॥ अब तुम कहा रहे है॥ अब
बड़ुड़ एक आन भए है॥ बड़ा आश्चर्य है॥ ही भाव की नेत जाणी न हीजाती॥ सब काउ कहो भा
वव बहुड़ एक आन भए है॥ बड़ा आश्चर्य है॥ ऐसा भव की दसा आगमपार है॥ संयोग का वियोग हो
ता है॥ अरु दुख गए ते बहु दुष हो जाता है॥ तैसे व मारा हमारा संयोग का वियोग होता भया था
जाता है अरु वियोग का संयोग हो जाता है॥ बड़ा आश्चर्य है ही भाव की नेत जाणी नहीं जाती
अब बहुड़ वियोग का संयोग आन भया है॥ बड़ा आश्चर्य है॥ तिसकी नेत कों जाणन ही सकता महा गंभीर है॥
**सुरघोवाच॥** हे भगवन देव जो प्रमात्मा है॥ तिसकी नेत कों जाणन हीं सकता महा गंभीर है॥
विसमय कों देवणे हारी है॥ तुमारा हमारा वियोग भया तब दूर ते दूर जाइ पड़े॥ तुम कहो अर
ह सम सर्व कों दुर विज्ञेय है जाणी नहीं जाती॥ अरु तुम जो मुझ कों कुसल पूछि या सो तुमा
रे आगमन ते जो पुन है॥ तिसकर मै धर्म पावन भया हों॥ तुमारे दर्सन कर सर्व पाप नास हो
जाते है॥ आज हम कों पुंनो का फल प्राप्त भया है॥ जो तुमारा दर्सन भया है॥ अब जेती कछु की
रत अरु संपदा है॥ सो अब तुम कों प्राप्त भई है॥ हे भगवन संतों का जो आगमन है सो अमृत
ते भी अधिक मिष्ट है॥ जैसे अंम्रत ऊरणों ते इवता है॥ तैसे तुमारे दर्सन अरु वचनों कर अ
मार्थ रूपी अंम्रत इवता है॥ तिस कों पाइ कर जीव निरभय पद कों प्राप्त होते है॥ सतों का मि
लणा परम पद का सरोवर है॥ तिसकर हम अब परम सद्गुरा कों प्राप्त भए है॥ ॥ इति श्री उप
सम प्रकरणे सर्व पर्घ समागम वर्नने नाम स [illegible] सर्गः॥ **वसिष्ठोवाच॥** हे रामजी जब इस
प्रकार पूर्व वृतांत परस्पर भाव करहे॥ तब बहुड़ पर्घ बोलत भया पर [illegible] वा॥ हे राजन
जो जो समादिन चित इस्सत गत तत्काल विषे कर्म करती है सो मुख रूप होता है॥ अब संकल्प ते
रहत जो पर्म विश्रांत है॥ अरु पर्म उपसम समाध है तिस विषे तुम इस्थित भए हो॥ **सु** ॥
जो वह हे भगवन तुम सर्व संकल्प ते रहत परम उपसम समाध किस कों कते है॥ जो
ज्ञानवान महात्मा पुरष है॥ सो न लीला है अथवा व्यवहार करै॥ वह असमाहित चित कदा
चित नहीं होते॥ हे साध नित प्रबुध जिनका चित नहीं॥ अरु जगत के कारज भी पड़े करते है॥
अरु आत्म तत विषे इस्थित है॥ तो वह सर्वदा समाध विषे इस्थित है॥ अरु जो पद्म आसन बां
धकर बैठा है॥ अरु ब्रह्म अंजली हाथ राषता है॥ अरु चित आत्म पद विषे नहीं इस्थित होता
विश्रांत कों नहीं पावता तो उसकों समाध कहा है॥ वह समाध नहीं कहीती॥ हे भगवन अ
मार्थ तत जो बोध है॥ सो सर्व आसा रूपी त्रिणों कों जलावणे हारी अगन है॥ ऐसी नि वासी
रूपी जो समाध है॥ सो समाध कहीती है॥ तैलीको रूपणो का नाम तो समाध नहीं॥ हे साध
चित जिसका सदा समाहित अरु नित तृप्त है॥ सो सदा समाध इस्थित है॥ अरु हे साध जे ताक
छु जगत द्रष्ट आवता है॥ सो आत्मा ते भिंन कछु वस्तु नहीं॥ जैसे सीतलता विना वर्फ नहीं
पाईती॥ अरु जैसे स्यामता विना काजर नहीं पाईता॥ तैसे आत्मा ते भिंन जगत नहीं पाई
ता॥ हे साध जिस कों आत्मा ते इतर कोऊ पदार्थ नहीं भासता तिस कों उथान कैसे होवे
सर्वदा मैं वा यह पद्म आसन वैठा निर्मल है॥ सर्वदा सर्वात्मा समाहित चित है॥ ताते उथान
मुझ कों कदाचित नहीं॥ आत्मा ते इतर मुझ कों कोऊ पदार्थ भासता नहीं॥ सर्व प्रकार
आत्मा तत ही भासता है॥ हे साध आत्मतत सर्व कों जाणने योग है॥ सर्वदा सर्व ओर सर्व
प्रकार सर्वात्मा इस्थित है॥ बहुड़ समाध अरु उथान कैसे होवे॥ अरु जिन कों कारज कर
ते विषे भाग कल्याना नहीं करती॥ अरु आत्म तत विषे इस्थित है॥ तिन कों समाहि
त अरु असमाध की कहीए॥ अरु आत्म तत विषे इस्थित है॥ तिन कों समाहित अरु अस

उ.प्र.
९७

माथ क्या कहीय ॥ समाधान अरु अस्थान का भेद वास्तव कछु नहीं ॥ आत्मतत्व सदा अपने आप विषे स्थि
त है ॥ द्वैत भेद कछु नहीं ॥ तो समाहित असमाहित का कहीए ॥ ॥ इति श्री उपशम प्रकरणे समाध
निश्चयो वर्णनं नाम सर्गः ॥ वशिष्ठ उवाच ॥ हे राजन निश्चय कर के अब तूं जागा है ॥ अरु परम पद कौं
प्राप्त भया है ॥ अरु सरत्न मासी के चंद्रमावत शीतल अंतःकरण भया है ॥ अरु हृदय कमल तुमारा पर्म
सोभायमान भया है ॥ अरु ब्राह्मी लक्ष्मी कर के परमानंद सों पूर्ण भया है ॥ पुनि तल्ल अरु सलिता दले
वाहि नष्ट पंक मल विराजता है ॥ निर्मल विस्तार अरु गंभीर ताते री गुरु कों प्रगट भासती है ॥ अरु अहं
कार रूपी मेघ ते राग नष्ट होगया है ॥ सरत काल के आकाशवत निर्मल स्वच्छ है ॥ हे राजन अब तू
कौं सर्व ब्रह्म सत्य अरु लषता है ॥ अरु किसी विषे राग नहीं ॥ वीतराग होइ कर विराजता है ॥ अरु सार
असार कौं तुम भली प्रकार जाणया है ॥ अरु जाण कर संसार असार रूपी समुद्र के पार कौं प्राप्त भ
या है ॥ अरु महाबोध कौं त्यों काल ज्ञान कर अपने स्वरूप तिसी विषे पारी है ॥ भाव अभाव पदार्थ
दोनो कौं तें जाणत भया है ॥ सगुण सम जो जगत के लोल पदार्थ ॥ तिन ते मुक्त भया है ॥ अरु रता
अरु शांत आत्म हूआ है ॥ अरु वस्तु अवस्तु अर्थ यह जो भला अरु बुरा ग्रहण अरु त्याग ते तू निवर्त
होगया है ॥ अरु राग द्वेष सत्ता रूपी मेघ वादरों ते रहित निर्मल आकाशवत सोभता है ॥ अरु अपने
आप कर तृप्त भया है ॥ कछु इच्छा तुझ कौं नहीं रही ॥ जनक उवाच ॥ हे मुनीश्वर इस जगत विषे
ग्रहण करणे योग्य वस्तु कोउ नहीं ॥ जेते कछु दृश्य पदार्थ हैं सो सर्व आभास रूप है ॥ तो किस कौं
ग्रहण करीए ॥ अरु जो कछु पदार्थ ग्रहण योग नहीं तो त्याग भी करी तो आभास रूप पदार्थ का त्याग
का करीए ॥ काहे ते जो दूसरी नहीं सर्व तुच्छ पदार्थ है ॥ जैसे सूरज की किरणों विषे जल भास
ता है ॥ तो जल आभास का कवण अंगीकार करे अरु कवन त्याग ग्रहण करीए ॥ तैसे यह जगत है ॥
हे मुनीश्वर जगत विषे पंक तुच्छ पदार्थ है ॥ अरु एक अतुच्छ पदार्थ है ॥ जो अल्प काल विषे नष्ट
होजाता है सो तुच्छ है ॥ अरु जो दीर्घ काल पर्यंत रहता है सो अतुच्छ है ॥ सो दोनो काल ते उपजे अ
रु काल ही कर नष्ट होते हैं ॥ जब मैं अकाल स्वरूप आत्मा कौं देषा तब दोनो तुल्य होगए ॥ वहुरि
इच्छा किस की करे ॥ अर्थ यह जो इच्छा कछु नहीं ॥ हे मुनीश्वर जो रमणीक पदार्थ जाणीता है
तिस की इच्छा भी करीती है ॥ सो त्रिलोकी विषे रमणीक पदार्थ तो कोऊ नहीं ॥ सर्व तुच्छ पदार्थ
है ॥ असार नाश रूप है ॥ अरु जीवों कौं जो वडे पदार्थ भासते हैं ॥ सो अविचार कर के भासते हैं ॥ वा
ह्य स्पर्स रूप रस गंध जेते कछु इंद्रीयों के विषे हैं सो सर्व असार रूप है ॥ इस जीवों कौं वडा पदा
र्थ जाणते हैं ॥ सो वास देषणे मात्र सुंदर है ॥ अंतर ते मास रक्त विष्टा मूत्र की लोथ वनी हूई है ॥ इस
विषे सार कछु नहीं ॥ अरु पर्वत जो वडे पदार्थ हैं ॥ सो पाषाण वृक्ष है समुद्र है सो जल है ॥ अरु वन है
सो काष्ठ पत्र है ॥ इत्यादिक जेते कछु पदार्थ हैं सो सर्व अपावन माणीये हैं ॥ अर्थ यह जो विचार विना सुं
दर भासते हैं ॥ इन की जो इच्छा करते हैं ॥ सो अपणे नाश के निमित करते हैं ॥ जैसे पतंग जो दीपक की
इच्छा करता है ॥ सो अपणे नाश के निमित करता है ॥ अरु जैसे मृग नाद श्रवण की इच्छा करता है ॥
तव नष्ट होता है ॥ तैसे जो विषयों की इच्छा करते हैं ॥ सो अपणे नाश के निमित करते हैं ॥ ताते विचा
र ते रहत अज्ञानी है ॥ अरु जो सम्यक दरसी ज्ञानवान हैं ॥ सो रमणीक जान कर किसी जगत
के पदार्थ की इच्छा नहीं करते ॥ जैसे सूर्य के अस्त भए ते प्रकाश का अभाव हो जाता है ॥ तैसे राग
पदार्थों विषे उठ गया ॥ तव त्रिस्ना किस विषे रहे ॥ हे साधो गहे घर इच्छा ग्रहण त्याग जेते कछु
विकार हैं ॥ तिन सर्वो ते रहत मैं शुद्ध आत्म तत विषे स्थित हों ॥ वहुत कहने कर क्या है ॥ जि
स पुरुष के मन ते वासना नष्ट भई या है ॥ सो उपशमवान कल्याण मूर्त परम पद कौं प्राप्त होता
है ॥ संसार समुद्र कौं तर जाता है ॥ ॥ इति श्री उपशम प्रकरणे सुख स्वरूप निश्चय वर्णनं नाम
सर्गः ॥ वसिष्ठ उवाच ॥ हे रामजी इस प्रकार परस्पर जगत कौं भ्रम रूप विचारत भए ॥ विचार क
र के परस्पर गुर जाण कर पूजन कीया ॥ तव पीछे इच्छित उद्यान कौं गमन करते भए ॥ हे रामजी यह
तो मैं तुझ कौं इन का परस्पर संवाद श्रवण कराया है ॥ सो परम बोध का कारण है ॥ इस विचार के
क्रम कर के बोध कौं प्राप्त होता है ॥ तो पण तू दृढ कर के जव विचार करेगा ॥ तव अहंकार रूपी वाद

र का अभाव होतावेगा ॥ अरु सद हिरदे रूपी अकास विषे आत्म रूपी सूर्ज का साक्षातकार होवे
गा ॥ ताते आत्मपद लाभ के निमित अहंकार रूपी वादर के अभाव का यतन करो ॥ सो आत्मा सम
है सर्व आनंद की संपदा है ॥ चिदाकास है तिस विषे स्थित पावेगा ॥ हे रामजी जो पुरुष नित्य तृप्त
रमण अ आत्ममय है ॥ अरु नित चिदानंद विषे चित कौं जोडता है ॥ सो सदा सुषी है ॥ तिस कौं
योगकवा चिंतन नहीं होता ॥ अरु जो पुरुष आत्मपद विषे स्थित हूआ है ॥ सो वडे विवहार करे अरु
राग द्वेष मन विषे होवे ॥ तो भी तिस कौं कलेक कछु नहीं स्पर्श करता ॥ जैसे कमल जल विषे रहे
आवता है ॥ तो भी ऊचा ही रहता है ॥ जल उस कौं स्पर्श नहीं कर सकता ॥ तैसे ज्ञानवान कौं राग
द्वेष व्यवहार का अंतर स्पर्श नहीं होता ॥ हे रामजी जिस का मन अंतर ते शांत भया है ॥ तिस कौं
संसार के इष्ट अनिष्ट पदार्थ दुष नहीं देते ॥ जैसे सिंह कौं मृगा दुष नहीं दे सकते ॥ तैसे ज्ञानवान
कौं जगत के पदार्थ दुष नहीं दे सकते ॥ जिस पुरुष कौं आत्मानंद प्राप्त भया है ॥ तिस कौं विष्यों
की इच्छा नहीं रहती ॥ वह विष्यों के निमित दीन नहीं होता ॥ जैसे जो पुरुष नंदन वन विषे स्थि
त भया है ॥ सो किस कर के विष्टा की इच्छा नहीं करता ॥ तैसे ज्ञानवान कौं जगत के पदार्थों की
इच्छा नहीं होती ॥ हे रामजी जिस पुरुष अविद्या रूप जगत कौं जाण कर त्याग कीया है ॥
तिस के चित कौं जगत के पदार्थ दुष नहीं दे सकते ॥ जैसे विरक्त की इस्त्री मर जावे ॥ तव उस
कौं दुष नहीं होता ॥ तैसे ज्ञानवान कौं जगत के पदार्थ इष्ट अनिष्ट नष्ट भए दुष नहीं होता ॥ जि
स पुरुष कौं आत्मबोध हूया है ॥ अरु संसार का कारण मोह निवृत भया है ॥ सो जगत के कार्ज
करता भी दृष्ट आवता है ॥ तो भी उस कौं सपर्स नहीं करते ॥ जैसे ग्रंथकार अकाश विषे दृष्ट आ
वता है ॥ परंतु आकास कौं स्पर्स नहीं करता ॥ तैसे ज्ञानवान कौं कर्म स्पर्स नहीं करते ॥ हे रामजी
अविद्या के निवर्त का कारण विद्या का जाणना है ॥ अवर किसी उपाव कर निवर्त नहीं होती ॥
जैसे प्रकास विना तम नहीं निवर्त होता ॥ तैसे अविद्या विचार विना नहीं निवर्त होती ॥ अ
विचार ही का नाम अविद्या है ॥ अरु विचार ही का नाम विद्या है ॥ जव अविद्या नष्ट होवे तव मीत
॥ हे रामजी ज्ञानवान कौं इंद्री
यों के भोग स्वादन देवेंगे ॥ आत्मानंद कर तृप्तवान रहेगा ॥ अवर अपटे जाते है
यों के व्यवहार अंध नहीं कर सकते ॥ जैसे जल विषे मीन अंध नहीं होती ॥ अवर जीव अंध होजाते हैं
तैसे ज्ञानवान व्यवहार विषे अंध नहीं होते ॥ जव ज्ञान रूपी सूर
ज उदे होता है ॥ तव अज्ञान रूपी रात्रि निवर्त होजाती है ॥ अरु चित परमानंद कौं प्राप्त होता है
अरु राग द्वेष रूपी निसाचर नष्ट होजाते हैं ॥ वहुड मोह कौं प्राप्त नहीं होता ॥ जिस के हिरदे आ
काश विषे आत्मज्ञान रूपी चंद्रमा प्रकासता है ॥ तिस का जन्म अरु कुसल फल होता है ॥ जे
से पूरनमासी का चंद्रमा अपणे अमृत कौं पाइ कर अपने विषे सीतल होता है ॥ तैसे जिस पु
रुष आत्म चिंतवना का अभ्यास कीया है सो शांत कौं पावेगा ॥ हे रामजी वोध भी वही श्रेष्ट
है ॥ अरु मित्र भी वही है ॥ अरु शास्त्र भी वही है ॥ जिस कर संसार ते वैराग उपजे ॥ अरु आत्मतत्व
की चिंतवना उपजे ॥ तव आत्मतत्व पद कौं पावता है ॥ तव संसार के कलेस मिट जाते हैं ॥ अरु जिन
कौं आत्म चिंतवना विषे रुच नहीं ते महा अभागी है ॥ चिरपर्यंत कर कष्ट पावेंगे ॥ जनम रूपी उ
हान के वश होवेंगे ॥ हे रामजी जीव रूपी ॥ जीव रूपी वलद है ॥ अरु आसा रूपी अनेक फांसीयों
कर वाधा है ॥ अरु जरा अवस्था रूपी पाषाणों के मार्ग कर के जरजरी भाव होता है ॥ अरु भो
ग रूपी तलावडी गर्त विषे गिडया है ॥ अरु करम रूपी भार कौं लीए जनम रूपी उद्यान वि
षे पडा भरता हूया इच्छा रूपी कीच विषे फसिया ॥ राग द्वेष रूपी मछरों कर डंसीता है ॥ अरु स
नेह रूपी नथ कर पकड्या हूया पडा खिचीता है ॥ अरु पुत्र इस्त्री आदिकों की ममता रूपी जल
विषे पडा गोते षाता है ॥ अरु महा संसार रूपी मारग विषे कर्म रूपी रथ संग जोडा है ॥ अरु उ
पर सो अज्ञान रूपी तम कर जलता है ॥ अरु मन मात्र अरु संत जन रूपी वृक्ष की छाया न
हीं पावता ॥ हे रामजी ऐसा जो जीव रूपी वलद है ॥ सो निकसणे का यतन न करे ॥ जव तलेका
श विलोकन करेगा ॥ तव चित्त भ्रम नष्ट होजावेगा ॥ हे रामजी संसार रूपी जो समुद्र है तिस

उ॰प्र॰
२९

केतरणेकाउपाअश्रवणाकरु॥ सत्पुरुषजोसंतजनहैंसोमल्लाहहैं॥ अरतिनकीयुक्तरूपी
नरूतहोवे॥ तिसकरसंसाररूपीभयानकसमुद्रकोंतरजावे॥ अवरउपाइकोऊनहीं॥ जिसदे
सविषेसंतजनरूपीश्रवनहीं॥ जिनकीफलोंसेयुक्तसीतलछायाहोतीहै॥ तिसनिरजन
देसरूपीमारूथलविषेएकदिवसभीनरहावादीए॥ हेरामजीसंतजनरूपीवेसेत्रषहैं॥ स
निराथअरशीतलवचनरूपीजिनकेपत्रहैं॥ अपसेनताउनकेफूलहैं॥ अरउनकेनिश्चय
केउपदेसरूपीजोवचनहैंसोफलहैं॥ जवइहपुरुषतिनकेनिकटजावेगा॥ तवमलामोहरू
पीतमतेछूटेगा॥ अरस्नानकोंप्रापतहोवेगा॥ अरशीतलकेफलकोंपाइकरत्रिपतहोवेगा॥ अर
सर्वदुषहुतेमुक्तहोवेगा॥ हेरामजीइसपुरुषकाअपणाआपहीमित्रहै अरअपणाआपही
शत्रुहै॥ तातेअपणेआपकोजन्मरूपीकीचविषेनडारे॥ जोदेहविषेअहंभावकरकेविषयों
कीइछाकर्ताहै॥ सोअपणाआपनष्टकर्ताहै॥ अरजोदेहकेअहंममभावकोंत्यागकरआत्म
अभ्यासकर्ताहै॥ तवअपणाउद्धारकर्ताहै॥ सोअपणेआपकामित्रहै॥ अरजोआपकोंसंसारस
मुद्रविषेडारताहै॥ सोअपणेआपकाशत्रुहै॥ हेरामजीप्रथमऐसेविचारकरनाजोइहजगतका
है॥ अरकैसेउत्पनभयाहै॥ अरकैसेनिवृतहोवेगा॥ अरमैंकवणहों अरसतकाहै॥ अरअसत
काहै॥ जोसतहैतिसकाअंगीकारकरो॥ अरजोअसतहैतिसकात्यागकरो॥ हेरामजीतथ
नइसकाकल्याणकर्ताहै॥ नमित्रवांधवइसकाकल्याणकरतेहैं॥ अपणाउद्धारइसआपही
करणाहै॥ अपणेमनमाइयाहीकरे॥ वडेउच्चैराग्यअरअभ्यासकायतनकरे॥ तवसंसारदुः
षतेछूटे जवअभ्यासअरवैराग्यकरततअवलोकनवेडीऊपरचढे॥ तवसंसाररूपीसमुद्रतेपा
रहोवे॥ हेरामजीजीवरूपीहंसतीहै॥ अरजन्मरूपीगर्तविषेगिड्याहै॥ अरअहंकाररस्सा
रूपीजंजीरसाथवांधाहै॥ अरकामनारूपीमदकरमाताहै॥ जवइसत्रितीयवेधनतेछूटेत
वमुक्तहोवै॥ अन्यथानहींमुक्तहोता॥ जवआत्मविचाररूपीदंतोंसाथइनवेधनोंकोतोडेत
वमुक्तहोवे॥ हेरामजीविदेहरूपीनेत्रोविषेअनात्मअभिमानरूपीमलनरकरहीगई॥ तवविचा
ररूपीअवषधअंजनकरकेइनमलननताकोंहरे॥ तवआत्मरूपीसूरजकादर्शनहोवे॥ हेरामजी
तोअवरउपाइकोऊनकरे॥ तवएकउपाइहीकरे॥ जोदेहकोंकाष्टलोष्टकेसमानजाणकर
इसकेअभिमानहींकात्यागकरे॥ जवअहंकाररूपीवादरनष्टहोवेगा॥ तवआपहीआत्म
रूपीसूरजभासआवेगा॥ सोपरमानंदस्वरूपहै॥ अरसपनतेभीमोनसफुरहै॥ केवलअद्वै
ततत्वहैवाणीकाविषयनहीं॥ अनभवकरकेआपहीमोंजाणीताहै॥ हेरामजीसर्वजगतअ
नेतआत्माहै॥ जवचितकाहढअभ्यासइसहीविषेहोवै॥ तवइस्थावरजंगमरूपजगतवि
षेवहीशिवदेवप्रतिभासेगा॥ अनवासनासर्वमिटजावेगी॥ केवलपरमानंदआत्मतत्वअनुभ
वकरकेप्रत्यक्षआवेगा॥ सोस्वरूपशुद्धनअद्वैतहै॥ अनसर्वयतनकोंत्यागकरकेतिसीके
पावणेकायतनकरो॥ ॥॥ इतिश्रीउपशमप्रकरणेकालिउपदेसवर्णनंनामसर्गः॥ वसिष्टो
वाच॥ हेरामजीमनकरकैमनकोछेद॥ अरअहंममभावकोंत्याग॥ जवलगमनतनहींनष्ट
होतातवलगजगतकेकष्टनहींनिवर्तहोते॥ जैसेमस्तकात्तजैमतकेनष्टहूएविनाअ
स्तनहींहोता॥ जवमस्तनष्टहोवे तवसर्जनकाआकारहरहोवे॥ अन्यथाहरनहींहोता
तैसेजवमननष्टहोवै॥ तवसंसारकेदुषनष्टहोवे॥ अन्यथानहींनासहोते॥ हेरामजीजैसे
प्रलयकालविषेअनंतदुषहोतेहैं॥ तैसेमनकेजीतेविनाअनंतदुषहोतेहैं॥ जैसेस्याम
घटामेघकेवरषणेकरनदीयावढतीयाजातीयाहै॥ तैसेमनकेप्रमादीसंसारणेजा॥
गतेअपदावढतीयाजातीयाहै॥ इसऊपरपुरातनइतहाससुनीस्वरकहतेहैं॥ सोपर्म
परमित्रकाहैतसश्रवणाकरो॥ हेरामजीसह्यापर्वतवडापर्वतहै॥ ऊचातोआकासकों
गयाहै॥ अरनीचेपातालकोंगयाहै॥ त्रिलोकीकोउसनीवनरायाहै॥ तिसकेऊपरपुष्प
वेसंहूरहै॥ अरनानाप्रकारकेत्रषहैं॥ अरजलकेफवारेचलेजातेहैं॥ अरधनीजोहेकुवे
रतिसकेग्रहकारणेकेइस्थानहैं॥ अरमोतीयोंकेइस्थानहैं स्वर्णकेसंगहैं॥ अरअवरया

नकेऐगाहै॥ कहूपुष्पहेकेलतडागहै॥ कहूकमलोंपरअमरगुंजारशब्दउच्चारकरतेहैं॥ कहूदेव
ताअरदेवतोंकीयाइस्थानहैं॥ अरकहूनानाप्रकारकेत्रषोंपरपंषीशब्दकरतेहैं॥ अरविद्य
धरीयागीतगानकरतीयाहैं॥ कहूदेवतपोंकेइस्थानहैं॥ अरनीचेकिंनरतहतेहैं॥ ऊपरस्वार
गविषेमिठुरेयताविद्याधररहतेहैं॥ अरपीहविषेमानुषरहतेहैं॥ नीचेनागासर्परहतेहैं॥
मानोसेसर्वजगतकाआश्रयहीहै॥ वडेवडेवेदनकेत्रषहैं॥ तिनमेंगतनागलपटेहूएहैं॥ इस्मा
ह्किअतलदूरचनावालीहूईहै॥ तिसकेउत्तरदिशाविषेअतिसुंदरतडागहै॥ अत्रपुष्पों
संयुगतअतमनोरमाइस्थानहै॥ सत्यलोकअरब्रह्मलोकअरशिवलोकजैसीउपमाहैति
सकी॥ तहाअत्रनामाविषीश्वरवसताथा॥ साधोंकाआश्रमहविकवलेहारा॥ तिसकेआश्र
मकेसमीपहोइतपसीआनवसे॥ जैसेआकासविषेवृहस्पतअरसुक्रआइवसेहैं॥ तैसेवहदे
नेआइरहे॥ तवदोनोंकेग्रहविषेदोपुत्रउत्पतभए॥ अतसुंदरजैसेकमलउत्पतहोतेहैं तै
सेउत्पतभए॥ एककानामभासया अरदूतीयकानामविलासभया॥ उभयक्रमकरके
वडेभए॥ जैसेउभयपत्रअंगरीकेवढतेहैं तैसेवढतेजावै॥ अरपरस्पररतिनकीप्रीतअत
वही॥ अरएकदेहीरहे॥ जैसेतैलअरतलएकदेरहतेहैं॥ अरजैसेपुष्पअरसुगंधएकहै
रहतेहैं॥ जैसेइस्त्रीअरपुरुषकीआपसमेंप्रीतहोतीहै॥ तैसेउनकीप्रीतवधी॥ देषणेमात्र
देमहराभासे॥ परमात्मापएकहीहै॥ इस्थानआदिकक्रियाभीतिनकीएकसमान॥ अरमह
संदरप्रकासवान॥ जैसेचंद्रमाअरसूर्जहै॥ तैसेप्रकासवान॥ जवकेताककालवतीतभ
एतवतिनके
या॥ तवतिनकेमाताअरपिताशरीरकोंत्यागकरस्वर्गकोंगमनकरतभए॥ तवतिनके
आगाकरहीतोशोकवानभए॥ सुषकीकांतजातीरही॥ तैसेकमलकीकांतजलविनाजा
तीरहतीहै॥ तैसेउनकीकांतकुमलायगई॥ तवउनकेमरणकीक्रियासर्वकरतेभए प
उनकेगुणस्मरणकरे॥ अरविलापकरेअरशोकवानभए॥ हेरामजीइसप्रकारशोक
करउनकाशरीरकृशहो॥ ॥॥ इतिश्रीउपशमप्रकरणेभासविलासवृतांतेसवि
रवृतंतेनामसर्गः॥ ॥ वसिष्टोवाच॥ हेरामजैसेजलविनात्रषसूकजाता॥ तैसेउनके
शरीरमातापिताकेवियोगकरकृशहोगए॥ तवउभयविरक्तहोइकरविचरणेलागे
जैसेजयसेवूलसेहूटेविछुडियाहूयाशोकवानहोताहै॥ तैसेविचरेवडेइआपस
सोभीविछुडगए॥ एकलेएकलेविचरणेलागे॥ जवकेताककालवतीतभया॥ तववडे
इछ्याइमिले॥ तवविलासकहतभया॥ विलासोवाच॥ हेभाईजीवणरूपीजोत्रषहैति
सकाफलसुषहै॥ सोपताकालतुमसपसमयतोअतीतभयाहैकेंु॥ अरतुमाराहृमारा
आपसमोवियोगभया॥ तवतुमकैसीक्रियाकोंकरतभए॥ तुमकछुनिर्मलतपकीयाहै
कोंु॥ अरविद्याअभ्यासकोंफलीहैकेंु॥ अरतुमारीवुद्धिशोकतेरहतभईहैकेंु॥ तुमेंअ
बआत्मापदकीप्राप्तभईहैकेंु॥ अबकुशलरूपतोभयाहैकेंु॥ ॥ भासउवाच॥ हेसाधअ
वहमकोंकुशलकहांहै॥ इससंसारविषेहमकोंइस्थितरूपसुषकहांहै॥ जवलगचि
तमोंदुषनिवर्तनहींहोता॥ तवलगचितकीभ्रमकाननहीनष्टहोती॥ जवलगसंसारस
मुद्रकेपारकोंनहीप्राप्तहोते॥ तवलगहमकोंसुषकहांहै॥ जवलगचितरूपीषेत्रवि
षेआसारूपीविषकीवलीवढतीजातीहै॥ अरआत्मविचाररूपीदात्रीसाथनहीं
काटीती॥ तवलगहमकोंकुशलकहांहै॥ तवलगआत्मज्ञानउदयनहींभया॥ अर
समताभावउदयनहीभया॥ तवलगकुशलकहांहै॥ हेसाधसंसाररूपीविसूचका
रोगहै॥ सोआत्मज्ञानरूपीऔषधविनादूरनहींहोता॥ सर्वजीववहीक्रियाकरतेहैंति
सकरदुषोंकीप्राप्तहोवेसुषकोंनहींप्राप्तहोते॥ देहरूपीएकत्रषहै॥ तिसविषेकौ
मारअवस्थापत्रहै॥ अरजोवनअवस्थाफूलहै॥ अरजराअवस्थाफलहै॥ सोसमकाल
केसुषविपत्तापरताहै वडउपजताहै॥ वडउनष्टहोताहै॥ हेसाधचितरूपीसमनी

है॥ सो वैराग रूपी मंगल द्वारे विना हूए तें हूए वल जाता है॥ दृष्ट्य वन्ही होता॥ अर शब्द स्पर्श रूप रस
गंध जो है॥ विषय इनकी ओर ही धावता है॥ जैसे हलय पंछी मास कों ओर ही धावता है॥ तैसे चित विषयों की ओ
र धावता है॥ आत्मरूपी जो चिंतामणि है तिसकी ओर नही धावता॥ गर्व अभिमान रूपी जो है इ लसो देह
दिकों रूपी संसार की ओर धावता है॥ सत्यरूपी जो कमल है सो अपमान रूपी धूर कर मूसला होइ
जाता है॥ अर योग रूपी वर्फ करनए हो जाता है॥ हे साधु देह रूपी गर्त विषेय हगिड्या है॥ भोग रूपी
तिस विषे सर्प है॥ अर आशा रूपी कंटक है॥ अर तृष्णा रूपी मल नजल है॥ तिस विषे जीव पराइ ववला
है॥ अर कष्ट पावता है॥ हे साधु चित रूपी समुंद्र है॥ अर चिंता रूपी तिस विषे तुमर होवे है॥ जीवरूपी
तृण तिस विषे आयाप ड्या फिरता कष्ट पावता है॥ अर बुद्धरूपी पंछी है सो वासना रूपी जाल विषे
फसा कष्ट पावता है॥ हे मित्र यह मैं कीया है॥ अर यह करता हों अस्य हू करोंगा॥ इह वासना रूपी
जाल विषे बुद्ध रूपी पंछणी पड़ी कष्ट पावती है॥ एक क्षण भी विश्राम कों नही पावती॥ हे भाई हृद
ति रूपी कमल है॥ तिसकों राग द्वेष रूपी हस्ती मलदन करता है॥ जो यह मेरा सहृत है॥ अर इह
मेरा मित्र है॥ अहं अर मम इसकों माती है॥ पुत्र आत्मस्वरूप कों त्याग कर देहादिक अनात्मरूप
विषे अहं भाव करता है॥ अर दीनता कों प्राप्त होता है॥ जैसे राजा तें रहत राजा कष्ट पावता है॥ तैसे आ
त्मभाव तें रहत इह कष्ट पावता है॥ देह के अभिमान कर के जन्म मरण के कष्टों कों पावता है॥ जब
देह अभिमान कों त्यागे तब कुशल होवेगा॥ अन्यथा कुशल नही होता॥ ॥ इति श्री उपशम
प्रकर्णे अलिन प्रतपाद ने नाम सर्गः॥ वसिष्ठ उवाच॥ ॥ हे रामजी इस प्रकार अनुप्रसपर कुशल
प्रश्न कीया॥ तब केतक काल व्यतीत भया॥ तब अभ्यास द्वारा उनकों निर्मल ज्ञान प्राप्त भया
अर मोक्ष पद कों प्राप्त हूए॥ ताते हे रामजी ज्ञान तें इतर अन्य मार्ग कल्याण के निमित कोऊ नं
ही॥ जिसका चित आशा रूपी फासी साथ वाधा हूया है॥ सो संसार समुंद्र के पार होवणे कों समर्
थ नही होता॥ ताते जीव संसार समुंद्र विषे पड़े गोते खाते है॥ अर ज्ञानवान शीघ्र ही तर जाते है॥
जैसे गोपद कों लंघणा सुगम होता है॥ तैसे ज्ञानवान संसार कों तुच्छ जाणकर लंघ जाते है॥
अर जैसे जिस पंछी के पंख नहे है सो समुद्र के पार नही पहुचता॥ मध्य ही गिर कर गोते खाता
है॥ अर पंखो संग गारुड़ शीघ्र ही लंघ जाता है॥ तैसे जिन पुरुषों के वैराग अर अभ्यास रूपी पंख नह
पड़े है॥ सो संसार समुद्र ते पार नही हो सकते॥ अर जिनके वैराग अर अभ्यास रूपी पंख है॥ ऐसे
ज्ञानी शीघ्र ही तर जाते है॥ हे रामजी जो देहते अतीत महात्मा पुरुष चिन्मात्र आत्मतत्व विषे
स्थित है॥ सो ऊंचे होकर देखते है॥ अर हसते है॥ जैसे सूर्ज जनतां कों देखकर हसता है॥ अर्थ यह
जो जगत की क्रिया ते निरलेप रहता है॥ जैसे रथ के नष्ट हूए ते सारथी कों कछु दुख नही होता॥ तैसे
देह के कष्ट कर ज्ञानवान कों कछु दुख नही होता॥ अर मन के क्षोभ कर भी आत्मतत्व कों कछु
दुख नही होता॥ जैसे तरंग ऊपर जो धूड़ पड़ती है॥ तिस कर समुद्र कों कछु लेप नही होता॥ तैसे
मन के दुख कर आत्मा कों कछु दुख नही होता॥ हे रामजी देह अर आत्मा का संजोग कछु नही
जैसे जल अर हंस का आपस विषे संबंध कछु नही॥ जैसे जल अर वेड़ी का संबंध कछु नही॥ तैसे
देह अर आत्मा का संबंध कछु नही॥ जैसे पवन अर समुंद्र का संबंध कछु नही॥ जैसे जल अर पा
षाण एकठे रहते है॥ पर संबंध कछु नही॥ तैसे देह अर आत्मा का संबंध कछु नही॥ हे रामजी
इसकों जो दुख होता है॥ सो संग कर होता है॥ जहां अहं मम अभिमान होता है॥ तहां दुख भी होता
है॥ जहां अहं मम का अभिमान नही तहां दुख भी कछु नही॥ जैसे जल विषे वेड़ी कों अभिमान न
हो॥ तो दुख भी नही॥ अर मीन कों जल विषे ममता होती है॥ तब जल वियोग कर कष्ट पावती है॥
तैसे जिस पुरुष कों देह विषे अहं मम भाव है॥ सो बड़े कष्टों कों पावता है॥ अर जिसकों देह विषे
अहं मम का अभिमान नही तिसकों दुख भी कोऊ नही॥ ज्यों ज्यों मन मों संसर्गता निवर्त होती
है॥ त्यों त्यों भोग प्रवाह का कष्ट नही होता॥ जैसे जल अर पाषाण कों कष्ट कोऊ नही होता॥ जै
से अर दर्पण विषे प्रतिबिंब परवत का होता है॥ सो जल अर दर्पण कों पर्वत का संग कछु न
ही होता॥ ताते कष्ट भी कछु नही होता॥ काहे ते जो दर्पण विषे पर्वत का प्रतिबिंब पड़ता है तो दर्प

ण कुर्ण तो वही होता॥ तैसे देह अर देही का संबंध संगाभाव उदन्ता वे तब कष्ट कोऊ नही॥ काहे ते जो दे
ह की क्रिया मिथ्या कों मन आप विषे अंगीकार कर के इह आत्मा विषे प्रतिबिंबित होता है॥ पर आत्मा र
कों स्पर्श नही होता॥ काहे ते जो शुद्ध आत्मा विषे देहादिक जगत त्रिकाल ही नही बणा अभासमा
व है॥ हे रामजी सर्व थास्त चित मात्र आत्म सत्ता अपने आप विषे स्थित है॥ सो सत् है॥ हे तम्बू के अ
व्यापे रहते है॥ जो तिस पद विषे स्थित है॥ तिनकों द्वैत का फुरना नही होता॥ अर जो अज्ञानी है तिनकों
द्वैत कलना पड़ी उठती है॥ हे रामजी सर्व जीव अदुख रूप है॥ पर अज्ञान भ्रम कर के आप कों दु
खी मानते है॥ जैसे अस्थान विषे चोर की भावना अविचार कर के होता है॥ तैसे आत्मा विषे कष्ट की
भावना होती है॥ यह पुरुष असंबंध रूप है॥ पर कल्पना के वश ते आप कों संबंध मानता है॥ तै
से स्वप्न अंगना बंधन करती है॥ अर जैसे इस्थान विषे वेताल भासता है॥ अर भय कों प्राप्त करता
है॥ तैसे आपनी कल्पना कर के बंधायमान होता है॥ हे रामजी देह अर आत्मा का संबंध असत
है॥ जैसे जल अर वेड़ी का संबंध असत है॥ जब लग अभाव हो जावे॥ तब वेड़ी कों चिंता कछु नही
होती॥ अर वेड़ी का अभाव हो जावे तब जल कों चिंता कछु नही होती॥ ताते असत संबंध है॥ तैसे
आत्मा का देह साथ संबंध असत है॥ जब ऐसे ही जाणे अर अंतर ते असंग होवे॥ तब देह का दुख क
छु न भासे॥ देह के दुख सुख विषे आप दुखी सुखी न होवे॥ देह विषे अहंमान कर के आत्मा दुखी
सुखी जो मानता है॥ सो जन्म मरणादिक संबंधनों कों पावता है॥ जब देह अभिमान कों त्यागे
तब मुक्त होवे॥ ऐसे बुद्धीश्वर कहते है॥ जैसे जल अर पाषाण एकठे भी रहते है॥ अर अंतर संग
का अभाव है॥ ताते दुख कोऊ नही होता॥ तैसे अंतर संग ते यह भी रहत होवे॥ तब देह इंद्रीयों के
विद्यमान भी दुख कछु स्पर्श न करे॥ निर्दुख पद कों प्राप्त होवे॥ हे रामजी जिसकों देह का अभि
मान है तिसकों जन्म मरण रूपी संसार है॥ जैसे बीज ते वृक्ष उपजता है॥ तैसे देह अभिमान ते सुख
दुख रूपी संसार उपजता है॥ अर संसार समुद्र विषे डूबता है॥ अर जो अंतर ते असंग रहता है
सो संसार समुद्र कों तर जाता है॥ हे रामजी जिसके अंतर देह अभिमान है॥ तिसके चित रूपी
वृक्ष ते मोह रूपी अनेक साखा उपजेगीयां॥ अर जो अंतर ते असंग है तिस का मोह निवृत होजा
वेगा॥ उसकों लीन चित कहीता है॥ अर जिसका चित देहादिकों विषे बंधायमान है॥ तिस
कों नाना प्रकार का जगत रूपी भ्रम भासता है॥ अर जिसका चित देहादिकों विषे निर अभिमा
न होता है॥ सो एक आत्मा भाव कों सदा देखता है॥ जैसे एक दर्पण विषे अनेक प्रतिबिंब भास
ते है॥ अर स्फटक एक ही प्रतिबिंब कों ग्रहण करता है॥ तैसे संशयवान चित विषे नाना प्रका
र का जगत भासता है॥ अर स्वछ चित विषे एक ही आत्मा भासता है॥ हे रामजी जो पुरुष सब व्यवहा
र भी प्रगट करता है॥ अर अंतर ते असंग है॥ ऐसा निर्मल संसार ते मुक्त है॥ अर जो सर्व व्यवहार कों
त्याग कर तप भी प्रगट करता है॥ पर अंतर चित विषयों विषे बंधन है॥ सो अंतर बंधनों विषे है॥ अर अं
तर असंग मुक्त है॥ अर अंतर ते चित किसी पदार्थ विषे बंधन है सो बंध है॥ बंध अर मोक्ष का एक
ही लक्षण वासना ग्रहण त्यागवता है॥ जो अंतर संग ते रहत है सो सर्व कार्य कों करता भी अकर्ता ही है
जैसे नभ आकाश सर्व स्थानों कों धारता भी अलेप है॥ अर जो अंतर अभिमान से फक कछु नही॥ कर्ता
तो भी कर्ता ही है॥ जैसे सर्व कों त्याग कर के शयन करता है॥ अर स्वप्न विषे अनेक सृष्टियों कों
भोगता है॥ तैसे वह सर्व कछु करता ही है॥ चित के करने कर कर्ता है॥ अर चित के अकर्ता होण कर अ
कर्ता है॥ शरीर का कर्ण ही कर्ण नही॥ अर शरीर का अकर्ण ही नही॥ जो अयत्न त्याग करै तो भी अस
मर्थ पुरुष कों कछु पाप नही होता॥ अर जो अणुमेष पतन करै तो भी कछु पुन नही होता॥ जिसके चि
त ते सर्व अमल क्रिया रम रही है सो सत् है॥ अर धन है॥ अर जिसका चित संसक्त है सो बंध है अर दुखी है
अर तीर्थ प्रतिसंसक्ता जे रहत है सो आत्मकी त्याणी निर्मल है॥ अर सर्व भाव पकडे है न आत्मत
त विषे स्थित है॥ ॥ इति श्री उपशम प्रकरणे अंतर संग विचारो नाम सर्गः॥ रामउवाच॥ हे
भगवन संग किस कों कहते है॥ अर बंध किस कों कहते है॥ अर मोक्ष किस कों कहते है॥ अर अ
संसक्त बंधनों ते रहत किस कों कहते है॥ अर मोक्ष किस कों कहते है॥ अर असंसक्त बंधनों ते र

हतकिसकोंकहतेहै॥ अरकिसउपाइकरमुक्तहोताहैसोकहो॥ वसिष्टोवाच॥ हेरामजीदेहकाजोभो
गहैअरतिससंगजोमिलकरकर्ताभानताहै॥ अरदेहमात्रविषेजोअपणाविश्वासकर्ताहै॥ तोपलाही
मेहो॥ इसीकोसंगअरबंधकहतेहै हेरामजीआत्मतत्वअनंतहै अरदेहविषेअहंभावमानकरआप
कोपरतावानपुरुषजाणताहै॥ अरतिसविषेअभिमानकर्ताहै॥ अरसुषकीइछाकरताहै॥ इस
कानामसंगअरबंधकहीताहै॥ अरजिसकोइहनिश्चयभया॥ जोसर्वआत्माहैसोकिसकीइछाकरे
अरकिसकात्यागकरे॥ सोइसदृष्टकरजीवन्मुक्तकहीताहै॥ अयवानमेंहोनयहजगतहै॥ सर्व
भावअभावकोंत्यागकरअहैतसत्ताविषेइस्थतहोवणा॥ इसदृष्टकानामभीजीवनमुक्त
है॥ नकर्मोंकेत्यागकीइछाहैनकरणेकीइछाहै यथाप्रवाहकरनयशकरताहै॥ अरपेत
रतेजिसकोंकर्तत्वभावनही॥ इससंगकाजिसत्यागकीयाहै सोअसंगसंगकहीताहै॥ हेरा
मजीएकआत्मतत्वविषेहैनिष्टाजिसकी॥ अररागद्वेषजोहैहर्षशोकतिनकेवशनहीहो
ता॥ सोअसंगकहीताहै॥ अरसर्वकर्मोकाफलजिसत्यागकीयाहै॥ जोमैकछुनहीकर्ताहो
ऐसाजोमनकरत्यागीहैसोअसंसक्तकहीताहै॥ तिसकोंकोऊकर्मवाधानहीकरसका
अरसंपदातिसकोहोजातीहै अरजोपुरुषसंसक्तकरतमभोगअरअभिमानसंल्गतहै
तिसकेअंतरदुषपइउत्पनहोतेहै॥ जैसेकोऊपुरुषगर्तविषेगिरपडेअरतिसविषेकंटकों
करदुषहोवे॥ तिसकारकष्टपावताहै॥ तैसेसंसक्तपुरुषदेहरूपीगर्तविषेगिरकररागद्वेषरूपीकंट
कोंकरकष्टपावताहै॥ हेरामजीजैसेनास्तिकविषयमरीडारकरउष्ट्रअरवलदसोभारउठातेना
है॥ अरमारपडाषाताहै॥ तैसेसंसक्तजीवआसारूपीफांसीकरबंधेहुएदुषपडेपावतेहै॥ व
हीसंसक्तताकाफलउष्टपक्षिआदिकभोगतेहै॥ जंगलविषेरहतेहैशीतउष्णकरकष्टमानहोते
है॥ संसक्तवनकेमृगहोइकरकठोरसायकाहीनतेहै॥ अरकष्टमानहोतेहै॥ पृथ्वीकेछिद्रविषेकीर
होइकरकष्टपावतेहै॥ सोसंसक्तकाफलभोगतेहै॥ अरचिराअरअंनहोइकरउपजतेहै॥ अरदाझी
सायकाटीतेहैअरअंतरतेदुषपावतेहै॥ वृक्षहोतेवीतेहै॥ वृक्षकाटीतेहै॥ यहसंसक्तकाफलभो
गतेहै इसप्रकारअनेकयोनीकोंपावतेहै अरकष्टमानहोतेहैसोसमझेहै॥ हरेत्रिलोकोंस्वर्गभ
लाणकरतेहै॥ अरवधकोंपाणकरचितहोतेहै॥ अरकष्टमानहोतेहै॥ इसप्रकारजोतिकों
जीवदुषपावतेहैसोसंसक्तकरबाधेहूएहै॥ सोसंसक्तभीदोप्रकारकाहै॥ एकबंधहै॥ अरएकवंदना
करणेयोगहै॥ जोसंसक्तजीवहैसोबंधहै॥ अरतिनकेवेनावंदनाकरणेयोगहै॥ हेरामजीआत्मतत्व
तेजोमिटेहै॥ अरदेहादिकोंविषेअभिमानकरतेहैसोमूढहै॥ संसारविषेजन्ममरणकोंप्राप्तहोते
है॥ अरजिनकोंआत्मतत्वकाबोधभयाहै॥ अरआत्मतत्वविषेजिनकीनिष्टाहै॥ सोवंदनाकर
णेयोगहै॥ तिनकोंवहुरजन्ममरणसंसारनहीहोता॥ संषचक्रगदापद्मजिसकेहस्तवि
षेविराजतेहै॥ अरसदाआत्मतत्वविषेनिश्चयधारताहै॥ सोआत्मतत्वविषेसंसक्तहै॥ अरत्रिलो
कीकीपालनाकरताहै॥ ऐसाजोविष्णुभगवानहैसोवंदनाकरणेयोगहै॥ अरजोनिरालंबस
दाआकाशविषेसर्जेभगवानविचरताहै॥ अरसदास्वरूपनिष्टहैसोवंदनायोगहै॥ अरजोसदा
प्रलयपर्यंतजगतकोउत्पतपराकरताहै॥ अरसदास्वरूपविषेसंसक्तहै ब्रह्मारूपकरविराज
ताहै॥ सोवंदनाकरणेयोगहै॥ अरजोलीलाकरकेरसजीरूपीदेवीकोंअर्धंगराषताहै॥ अर
विभूतकोंलगावताहै॥ अरसदास्वरूपविषेसंसक्तहै॥ अरत्रिनेत्रशंकरवपकोंधारकरइस्थतहै
ऐसायोसदाशिवभगवानहैसोवंदनाकरणेयोगहै॥ इनतेआदलेकरसिद्धदेवताविद्याधरलोकपा
लहै॥ जिनकीसंसक्तताआत्मरूपहीविषेहै॥ सोआत्मरूपहैअरवंदनाकरणेयोगहै॥ अरजोदेहादिकोंविषे
संसक्तहैसोबंधहै॥ अरजन्मजरामृत्युकोंपावतेहै॥ अरकष्टमानहोतेहै॥ हेरामजीजिनकोंदेहअभि
मानहै॥ अरवासनातेउदास्तभीदुषपावतेहै॥ परजवभोगोंकोदेषतेहै॥ तवइसप्रकारगिरतेहै॥
जैसेमांसकोंदेषकरआकाशतेउल्लपंषीगिरताहै॥ तैसेवहगिरतेहै॥ अरस्वर्गयतनकरतेहै॥ हे
रामजीसंसक्तरूपजोजीवहै॥ सोबोधरूपकहीदेवतारूपधारकरस्वर्गविषेरहतेहै॥ त्रिलोकीवि
षेभटकतेफिरतेहै॥ कहीमानुषमध्यलोकविषेरहतेहै कहीसर्पदैत्यादिकपातालविषेइस्थित

है॥ त्रिलोकीविषेपडेभटकतेहै॥ जैसेसरलरविषेअनेकमछुवरहतेहै॥ जैसेवड़वाग्निविषेनानाप्र
कारकेसंसक्तजीवरहतेहै॥ जैसेसमुद्रविषेतरंगउपजतेहै उछलतेहै॥ अरमिटजातेहै॥ तै
सेसंसारविषेजीवउपजतेअरहतेहै॥ अरनष्टहोजातेहै॥ कालरूपीबालककागेंदजीवहै॥ क
वहूऊर्धकोंउछालताहै कवहूअधकोंउछालताहै॥ हेरामजीजेताकछुजगतहैसोअसतरू
पहै॥ मनरूपीचितेरेसंगरूपीरंगसाथसत्यआकाशविषेदेहादिकजगतलिप्याहै॥ सोसर्वअस
तरूपहै॥ जिनकामनदेहादिकोंविषेसंसक्तहै॥ सोअभिमानरूपीअग्निविषेत्रिलोकतपडेजलतेहै
हेरामजीजोसंसक्तपुरुषहैतिनकोंशरीरपावणेकीकछुसंख्यानही॥ समुद्रकेकेतारेतेतोके
लक्षोंकीसंख्याभीहोवे॥ परदेहअभिमानीजेतेकछुशरीरधारणेहै॥ तिनकीसंख्याकछुनही
अरजेतीकछुआपदाहै॥ सोतिनकोंप्राप्तहोवेंगे॥ जैसेसमुद्रविषेसर्वनदीयांआयप्राप्तहोतीहै
तैसेसर्वआपदादेहअभिमानीकोंआइप्राप्तहोतीयांहै॥ हेरामजीजोदेहअभिमानीसदाविष्योंको
सेवनाकरतेहै॥ सोनर्ककीअगनकेईंधनहोवेंगे॥ दाधहोयकरकरकष्टपावेंगे॥ अरजेते
कछुकष्टइस्थानहै॥ सोसर्वसंसक्तचितजीवकोंप्राप्तहोवेंगे॥ अरजोअसंसक्तचितहैतिनपु
रुषोंकोंसर्वविभूतसंपदाप्राप्तहोवेगी॥ जैसेवर्षाकालविषेनदीयांजलकरपूर्णहोतीया
है॥ अरजैसेमानसरोवरविषेसर्वहंसआनप्राप्तहोतेहै॥ तैसेअसंसक्तचितपुरुषकोंसर्वसंपदाआ
यप्राप्तहोतीयाहै॥ अरजिसपुरुषकोंदेहअभिमानवढताजाताहै॥ सोअभिमानविषवत्तनासके
रताजाता॥ अरजिसकोंदेहअभिमानघटताजाताहै॥ सोवढताअमृततत्वअमरकेतोजाणा॥
हेरामजीजिसपुरुषकाचितदेहादिकोंत्यागकरस्वरूपविषेसंसक्तभयाहै॥ सोमुषीहै॥ अर
चंद्रमावतशीतलसंसक्तरूपहै॥ अविद्यारूपीविषचक्रकारोगतिसकानष्टहोताहै॥ शांतरूपसो
ताहै॥॥॥ इतिश्रीउपशमप्रकरणेसंसक्तविचारोनामसर्गः॥ वसिष्टोवाच॥ हेरामजीयह
जोमैंतुमकोंउपदेशकीयाहैतिसकोविचारकरअभ्यासकरो॥ जोसर्वदाकालसर्वइस्थानम
वंकरसोवोकर्ताचितकोंदेहादिकोंविषेसंसक्तनकरो॥ केवलचेतनतत्वजोआत्मतत्वहैतिसं
हीविषेइस्थतहोवे॥ हेरामजीनसंसक्तचितविषेहोवे॥ नचेष्टाविष्टचितहोवे॥ नकिसीपदार्थों
कोंमतजाणकरतिसविषेचितहोवे॥ नप्रतवचितहोवेनप्राणोंविषेनअंवरविषे॥ नभवोंकेम
ध्यनासकाकेअग्रविषे॥ नतालुतननसंभनसषोप्ननतिर्मलनतमनप्रकाशविषेनस्वामव
र्णनरक्तवर्ण॥ नपीतनस्वेतवर्णविषेनइस्थरविषेनचरविषेआदिनअंतनमध्यविषेनहू
रतनिकटविषेनकिसीपदार्थविषेनचितादिकअंतःकर्णविषेनशब्दस्पर्शरूपरसगंधवि
षेनकुमलनाअकलनाविषेचितकोंलगावे॥ सर्वकीओरतेचितकोंवर्जकरकेकेवलचेतन
तत्वविषेविश्रामकरो॥ कछुकदेहतोलेकरवेतनतत्वकाआश्रयकरो॥ हेरामजीसर्वतेनीरस
भया॥ अरआत्मतत्वविषेइस्थतभया॥ जबविगतसंगहोवेगा॥ तबजीवकाजीवनचलता
रहेगा॥ केवलचिदात्माहोइकरइस्थतहोवेगा॥ सर्वव्यवहारकरेअरध्यानकरेकर्ताभीनहीक
तौ॥ अथवाइसकोंभीत्यागकरो॥ केवलचिद्घनशांतरूपजोतत्वहैतिसविषेइस्थतहोवो॥ अद्वै
तरूपतत्वकेस्वभावकेभासआवेगा॥ जैसेवादरोंकेहटपसरजेस्वभाविककाभासपावताहै
तैसेफुरनेतेरहितचेतनभासआवताहै॥ जैसेचिंतामणिप्रकाशरूपस्वभावकोंप्रकासतीहै॥ तै
सेआत्मास्वभाविकप्रकाशभासआवेगा॥ वहुरजोकछुक्रियाकरेगासोफलदायकनहोवेगी
जैसेकमलकोंजलस्पर्शनहीकर्ता॥ तैसेतुझकोंक्रियास्पर्शनकरेगी॥ अरचितआत्मतत्वविषे
णरूपहोवेगा॥ क्रियाकोंकर्ताभीअकर्ताहूवेगा॥॥॥ इतिश्रीउपशमप्रकरणेसातलकेसमा
धारपेपोपदेशोनामसर्गः॥ वसिष्टोवाच॥ हेरामजीअसंसक्तजोपुरुषहैसोध्यानकरेअथवा॥
नकरे॥ अथवाव्यवहारकोवहुसदाध्यानविषेइस्थतहै॥ अरशोकतेरहतहै॥ वाहर्षशोभमानभी
नहीपावताहै॥ परअंतरसर्वकलनातेरहतहै॥ तोवहसंपूर्णलक्ष्मीवानसंपन्नसोभताहै॥
हेरामजीजिसपुरुषकामनचेतनतेरहतकेवलभीहैसोविगतज्वरहै॥ तिसकोंकछुदुषस्पर्श
नहीकर्ता॥ जैसेकमलकोंजलस्पर्शनहीकर्ता॥ जोपुरुषआत्मतत्वविषेलीनहै॥ वहक्षोभमा
नभीदृष्टआवतेहै॥ परक्षोभकदाचितनही॥ जैसेसर्पकाप्रतिबिंबहलतेजलविषेक्षोभमानदृष्ट

उ॰प्र॰
१८

यावताहै॥ पर सूर्य को षोभ कदाचित नहीं तैसे ज्ञानवान का चित्त यद्यपि व्यवहार विषे षोभवान भी दृष्ट आवता तौ भी षोभ कदाचित नहीं॥ हे रामजी आत्माराम जो पुरुष है सो बाह्य मर्यादा की चेष्टा के वस तें चल भी दृष्ट आवता है॥ पर अंतर तें सुमेर पर्वत की न्याई अचल है॥ जिसका चित्त आत्म पद विषे इस्थित है॥ तिनको सुषदुष अपने वस नहीं कर सके॥ जैसे स्फटक को प्रतिबिंब का रंग नहीं स्पर्श करता॥ तैसे ज्ञानवान को सुषदुष का रंग नहीं स्पर्श करता॥ जिन पुरुषों को परमार्थ ब्रह्म का सम्यक ध्यान का अभ्यास है॥ तिनका चित्त राग द्वेष कर रंजन नहीं होता॥ जैसे आकाश विषे बादर प्रतिबिंब दृष्ट आवते हैं॥ पर आकाश को स्पर्श नहीं कर सकते॥ तैसे ज्ञानवान के चित्त को राग द्वेष नहीं स्पर्श कर सके॥ जो आत्म ध्यानी है तिसको परम बोध का साक्षात्कार होता है॥ अरु केवलानंद तें मग्न भया है॥ सो अब संसार संग कहीं ताहै॥ हे रामजी जो आत्माराम पुरुष है॥ तिसको आत्म ज्ञान के अभ्यास कर्म से सकल तान वृत्ति हो जाती है॥ अरु यह संसार का भाव निवर्त नहीं होता॥ जब चित्त का शम आत्मा की ओर होवेगा॥ तब जाग्रत भी सुषुप्त की न्याई होजावेगी॥ अरु चित्त राग द्वेष तें रहित परम शांत को प्राप्त होवेगा॥ जैसे वेदमा शराम के वश ते इस अवस्था को स्वच्छ रूपी होजाता है॥ तैसे चित्त आत्मा की ओर इच्छा प्रणाम के वश ते आत्मरूप होजावेगा॥ जब चित्त चेतन भाव ते ही न होता है॥ तब षीण चित्त कहीता है॥ अरु शोक कल्पना कहीता है॥ तब जाग्रत इस को सुषुप्त रूप हो जाता है॥ इस अवस्था विषे जो कछु क्रिया करता है॥ सो फल को नहीं आरंभती॥ काहे ते जो निरहंकार हो जाता है॥ जैसे यंत्री की पाषान ली या अहंकार ते रहित चेष्टा करती या है॥ अरु संवेदन ते रहित है॥ तिन को दुष कोई कुछ नहीं होता॥ तैसे ज्ञानी निरहंकार संवेदन ते रहित निरिच्छ अरु अलेप चेष्टा करते हैं॥ हे रामजी इष्ट अनिष्ट भाव अभाव रूपी जगत चित्त विषे होता है॥ जब चित्त आत्म भाव को प्राप्त भया॥ तब किस को तिस कर किसका बंधन होवे॥ सर्व आत्म तत्व हो जाता है॥ जैसे नट अरु सर्व स्वांगो को धारता है॥ पर अपना अभिमान किसी विषे नहीं करता॥ ताते बधायमान नहीं होता॥ तैसे सुषुप्त बोध पुरुष जगत की क्रिया करता है॥ अरु बंधायमान कबहूं नाही होता॥ जीवन मुक्त होइ कर इस्थित होता है॥ हे रामजी सुषुप्त बोध को आश्रय कर कै जगत की क्रिया को करो॥ क्रिया कर्म कर्तृत्व की भावना ते रहित होवो॥ तब तुम को कछु दुष न होवेगा॥ नदान विषे त्याग विषे अभिमान होवे॥ यथा प्राप्त विषे इस्थित होवे॥ सुषुप्त बोध विषे जो इस्थित है सो कर्ता भी कछु नहीं कर्ता॥ ऐसे निश्चय को धारकर जैसे इच्छा होवे तैसे करो॥ हे रामजी ज्ञानवान की चेष्टा बालक वत होती है॥ जैसे बालक पालने विषे अंगों को निर अभिमान पन हलावता है॥ संवेदन ते रहित पड़ा षेलता है॥ तैसे ज्ञानवान निर अभिमान संवेदन ते रहित कर्म करता है॥ इसी कारण ते फल का स्पर्श नहीं होता॥ जब चित्त अचित रूप होता है॥ तब जाग्रत जगत सुषुप्त रूप हो जाता है॥ अरु जो कछु क्रिया करता है सो स्पर्श नहीं करता॥ हे रामजी जब इस को जगत ते सुषुप्त दशा प्राप्त भई॥ तब इस का अंतर शीतल होइ जाता है॥ राग द्वेष कछु नहीं फुरता॥ आत्मानंद कर पूर्ण होइ जाता है॥ जैसे पूर्णमासी का चंद्रमा शोभता है तैसे वह शोभता है॥ जो सुषुप्त बोध विषे इस्थित होता है॥ सो महातेजवान सूर्य होता है॥ आत्मानंद कर पूर्ण चंद्रमा की न्याई होइ जाता है॥ हे रामजी जो पुरुष सुषुप्त अवस्था विषे इस्थित होता है॥ सो किसी संसार के षोभ कर चलाइमान नहीं होता॥ जैसे भूकंप कर सर्व व्रक्षादिक चलाइमान होते हैं॥ पर अचल पर्वत कंपायमान नहीं होता॥ तैसे ज्ञानवान किसी षोभ कर नहीं चलाइमान होते॥ जैसे पर्वत सर्वदा काल विषे सम स्वरूप रहता है॥ तैसे ज्ञानवान सर्वदा काल विषे सम रहता है॥ जैसे अनेक प्रकार फूल फल पर्वत ऊपर होते हैं॥ वहुर गिर पड़ते हैं॥ पर वह ज्यों का त्यों रहता है॥ तैसे ज्ञानवान अनेक प्रकार की क्रिया विषे सम रहता है॥ हे रामजी ऐसी सुषुप्त दशा अभ्यास योग कर प्राप्त होती है॥ जब इस दशा विषे दृढ होवै तब इस को तत्ववेत्ता तुरीया पद कहते हैं सो आनंद रूप है॥

तिस विषे सर्व दुःष नाश होजाते हैं॥ अरु संत होजाता है॥ अरु मन का मनन भाव निवर्त होजाता है॥ तब ज्ञानी को महा सुष उदय होता है॥ परमानंद कर पूर्ण होजाता है॥ इस संसार की रचना को लीला स्वभाव ते देष कर सर्व शोक भय ते रहित विचरता है॥ संसार भ्रम तिस का निवर्त होजाता है॥ जब तुरीया पद को प्राप्त होवेगा॥ तब बहुर संसार विषे न गिरेगा॥ तब तत्ववान पुरुष परम पावन पद विषे इस्थित होता है॥ तब संसार को देष कर हंसता है॥ जैसे कोऊ पुरुष पर्वत पर बैठा नगर को जलता देष कर हंसता है॥ तैसे ज्ञानवान आत्मानंद को पाइ कर संसार के कार्यो को दुषजाण कर हंसता है॥ हे रामजी तुरीय अवस्था विषे जो इस्थित है सो अवनाशी होता है॥ अरु आनंद रूप है॥ अरु आनंद की कलना ते रहत है॥ अनंद अनंद है॥ जब अभ्यास तुरीयातीत पद विषे प्राप्त होता है॥ जब जन्म मरण के बंधन ते मुक्त होता अभिमान आदिक कल्पना भ्रम ते रहित होता है॥ परम ज्ञान विषे लीन होता है॥ जैसे लवण की डली समुद्र विषे डारी तुल्य रूप होजाती है॥ तैसे वह आत्मा रूप होजाता है॥ ॥ इति श्री उपशम प्रकरणे अमेसेवकिनसा उपदेस वर्ननो नाम सर्गः

वसिष्ठोवाच॥ हे रामजी जब लग तुरीय पद विषे इस्थित होता है॥ तब लग केवल पद जीवन मुक्त विषे होता है॥ इस ते उपरांत जो विदेह पद तुरीयातीत है॥ सो वाणी का विषय नहीं॥ जैसे आकाश को कोऊ भुजा कर के पकड़ नहीं सकता॥ तैसे तुरीयातीत पद वाणी का विषय नहीं॥ जो वाणी कर कहा सकीए॥ तुरीयातीत पद विश्रांत ते भी परे है॥ विदेह मुक्त कर के पाईता है॥ अब तू कछुक काल ऐसी सुषुप्त अवस्था विषे इस्थित होइ कर भोग पाछे परमानंद पूर्ण पद विषे इस्थित होवणा॥ हे रामजी तुरीयावस्था विषे ज्ञानी इस्थित भया है॥ सो निरहंकार भाव को प्राप्त भया है॥ जब तुम सुषुप्त अवस्था विषे इस्थित होवोगे॥ तब जगत के कर्ते भी रहोगे॥ अरु सदा एकार होगे॥ उदय अस्त भाव को कदाचित न प्राप्त होवोगे॥ जैसे मृत्ते पर लिष्या चंद्रमा उदय अस्त को नहीं प्राप्त होता॥ हे रामजी जो इस शरीर को आप जाणकर राग द्वेष विषे पड़ा जलता है॥ जिस पदार्थ का संनिवेश होता है॥ तिस के नष्ट भए नष्ट होता है॥ जैसे स्वप्न का संनिवेश ह्रद विषे होता है॥ सो ह्रद के नष्ट भए ते॥ मन का नाश भी होवे॥ ऐसे भ्रम को मन ते अंगीकार करो॥ तुम सदा ज्यों का त्यों ही है॥ तेरा संनिवेश का नाश भी होवे॥ पातो देहादिकों विषे कछु न हूया॥ ताते ज्ञानवान देह के नष्ट भए शोकवान नहीं होता॥ अरु देह के इस्थित हूए हर्ष भी नहीं होता॥ काहे ते जो देह संग कछु संबंध नहीं राषते॥ ज्ञानदर्सी पुरुष है सो यथा प्राप्त विषे निरदुष होइ कर विचरते हैं॥ जो पुरुष अभिमानादिक विकारों ते रहत भया है॥ सो निर्दुष निर्मल आकाश रूप है॥ तैसे समे काल की गर्द इत्यादिक ते आकाश निर्मल प्रकाशवान होता है॥ तैसे मन की वृत्ति विकारों ते रहत आत्म पद विषे इस्थित हूई संसार को ग्रसवान होता है॥ तैसे मन की वृत्त विकारों ते रहत ज्ञात आकाश विषे उड़ता जाता है॥ सो पुरुष बहुर नहीं गिरता॥ जैसे योगी मंत्र तप सिद्ध कर के संपन्न आकाश विषे उड़ता जाता है॥ सो पुरुष बहुर नहीं गिरता॥ हे रामजी यह सर्व जगत चिदानंद स्वरूप है॥ आद अंत मध्य ते पृथवी पर नहीं गिरता॥ हे रामजी यह सर्व जगत चिदानंद स्वरूप है॥ आत्मा केवल अद्वैत रहत है॥ अहंत्व आदिक भ्रम को त्याग कर तिस पद विषे इस्थित होवो॥ आत्मा दिक नाम भी उपदेश निमित्त वरणाते रहत हैं॥ तिस का शरीर संग कैसे संबंध होवे॥ आत्मादिक नाम भी उपदेश निमित्त वरणाते रहत हैं॥ नाम रूप भेद ते रहत अशब्द पद सो ही जगत रूप होइ कर स्थित भया है॥ जगत कछु भिन्न वस्तु नहीं॥ जैसे जल तरंग रूप होइ कर भासता है॥ सो तरंग जल ते कछु भिन्न वस्तु नहीं॥ तैसे आत्मा ते भिन्न जगत कछु नहीं॥ जैसे समुद्र जल रूप है॥ जल ते इतर समुद्र कछु नहीं॥ तैसे सर्व जगत आत्मा ते भिन्न कछु नहीं॥ जैसे जल पट है॥ जल ते इतर समुद्र कछु नहीं॥ तैसे सर्व जगत आत्मा ते भिन्न कछु नहीं॥ जैसे ब्रह्म अरु जगत अभेद है॥ अरु जैसे पट अरु तंत अभेद रूप है॥ तैसे ब्रह्म अरु जगत अभेद रूप है॥ पर मैं तेरे उपदेश के निमित्त द्वैत अंगीकार करता हूं॥ हे रामजी अवर द्वैत वस्तु कछु नहीं॥ पर मैं तेरे उपदेश के निमित्त द्वैत अंगीकार करता हूं॥ यह जो शरीर है तिस संग तेरा संबंध कछु नहीं॥ जैसे छाया अरु धूप एकत्र नहीं होते॥

उ॰प्र॰ ५५

एक देखनहार है तैसे श्रकाश अरु वनमय करके नहीं होते ॥ तैसे आत्मा अरु देह का संबंध कछु नहीं हो
ता ॥ जैसे शीत अरु उस का परस्पर विरोध है ॥ तैसे आत्मा अरु देह का संबंध कछु नहीं ॥ देह जड है ॥ अर
मलन है दृश्य है असत है ॥ अरु आत्मा चेतन है ॥ सत है अरु निर्मल है अरु दृष्टारूप है ॥ इंद्रियों का विष
य नहीं ॥ तिनका अरु देह का संबंध कैसे होवे ॥ जैसे वन कों अग्नि लागे तो जीव जलते हैं ॥ तैसे अ
मरूपी हुआ देह विषे अहंभाव करके जलते हैं ॥ जैसे मारूथल विषे सूर्य की या किरणा कर जल
भासता है ॥ तैसे आत्मा विषे अविद्या कर के देह भाव देषता है ॥ हे रामजी चिदात्मा निर्मल है ॥ अर नि
त्य सब का शुद्ध है दुष कोते रहते है ॥ अर देह मलन है ॥ अस्थ मांस रक्त मय है ॥ ऐसी मलीन देह संग
आत्मा का संबंध कैसे होवे ॥ आत्मा विषे देह का अभाव है ॥ केवल एक अद्वैत आत्मा तत्व सदा ज्यों
का त्यों अपणे आप विषे स्थित है ॥ तिस विषे द्वैत भ्रम कैसे होवे ॥ हे रामजी सरूप तें न कोउ बंध
है न कोउ मुक्त है ॥ सर्व एक सत्ता आत्म तत्व स्थित है ॥ हे रामजी सरूप तें न कोउ बंध है न कोउ मु
क्त है ॥ सर्व एक सत्ता आत्म तत्व स्थित है ॥ अंतर बाहर सर्व वही है ॥ मेरे सर्व दोष दुषी हो मूढ हो ॥ ऐसी
मिथ्या दृष्टि कों हरते त्याग ॥ आप कों केवल आत्म रूप जाण कर स्थित होवो ॥ यह मिथ्या दृष्टि प
में दुष देने को देवणहारी है ॥ उसकर दुषी आप होते है जैसे तिल अरु पर तेल की एकता नहीं हो
ती ॥ जैसे पद अरु पाषाण की एकता नहीं होती ॥ तैसे आत्मा अरु शरीर की एकता नहीं होती ॥ जै
से तम अरु प्रकाश का एकता संयोग नहीं होता ॥ अरु दोनों तुल्य भी नहीं होते ॥ तैसे आत्मा अरु श
रीर का एकता संयोग नहीं होता ॥ अरु दोनो तुल्य भी नहीं होते ॥ जैसे शीत अरु उष्ण की एक
ता नहीं होती ॥ जैसे चेतन अरु जड की एकता नहीं देषी ॥ तैसे आत्मा अरु शरीर की एकता
नहीं देषी ॥ हे रामजी शरीर जो चलता फिरता है ॥ सो वायु के वल कर चलता है ॥ अरु बोलता भी वा
यु के वल कर है ॥ सो अष्ट स्थानों विषे वायु के वल कर अक्षरों का उच्चार होता है ॥ उरा कंठ शिर जि
ह्वामूल दंत नासिका ओष्ठ तालु यह अष्ट स्थान है ॥ कष ग घ ॥ इन चारों का कंठ विषे उच्चार
होता है ॥ च छ ज झ ॥ इन चारों का तालु स्थान विषे उच्चार होता है ॥ ट ठ ड ढ ॥ इन चारों का मूर्ध
न शिर विषे उच्चार होता है ॥ त थ द ध ॥ इन का दंतो विषे उच्चार होता है ॥ प फ ब भ ॥ इन का ओष्ठो वि
षे उच्चार होता है ॥ ङ ञ ण न म इन का नासिका विषे उच्चार होता है ॥ अ इ उ ऋ ष ग ण कंठ स्था
न ॥ १ ॥ इ च य श तालु स्थान ॥ २ ॥ ऋ ट र ष मूर्धा स्थान ॥ ३ ॥ लृ त ल स
दंत स्थान ॥ ४ ॥ उ प ओष्ठ स्थान ॥ ५ ॥ ए ऐ कंठ तालु स्थान ॥ ६ ॥ ओ औ कंठ ओष्ठ
स्थान ॥ व दंत ओष्ठ स्थान ॥ जिह्वामूल विषे जिह्वामूल का उच्चार है ॥ हकार हो
वे अादि जिसपद के सो उर हृदे विषे उच्चार होता है ॥ इन अष्ट स्थानों विषे इन वरनों का उच्चार
वायु कर होता है ॥ अरु न वमस रोम सो का उच्चार होता है ॥ अरु आत्मा इन तें निर लेप है ॥ जैसे
वों सरी वायु कर शब्द करती है ॥ तैसे यह पंच तत्वों कर के शरीर होता है ॥ तिस शरीर के स्थानों
पर वायु का स्पर्श होता है ॥ तब शब्द उठता है ॥ जैसे नगारे पर डंके का स्पर्श होता है तब शब्द
उठता है ॥ इन विषे आत्म अभिमान करणा जो मैं कर्ता हों सो महा मूढता है ॥ अरु ने त्रादिक इंद्री
या भी वायु कर चेष्टा करती या है ॥ ताते इस भ्रम कों त्याग कर के आत्म पद विषे स्थित हो ॥ आत्मा
आकाश वत सर्व विषे पूर्ण है ॥ जैसे आकाश सर्व ठवर विषे स्थित है ॥ परंतु जहां आदर्श होता है
तहां आकाश तत विंब होइ कर भासता है ॥ तैसे आत्मा सर्व ठवर विषे पूर्ण है ॥ परंतु जहां चित हो
ता है तहां भासता है ॥ हे रामजी तहां वासना करके चित रूपी पंषी जाता है ॥ तहां आत्मा का अनु
भव होता है भासता है ॥ जो मैं ही हों ॥ जैसे जहां पुष्प होता है तहां गंध भी होती है ॥ तैसे जहां चित
होता है ॥ तहां अहं भाव भी होता है ॥ जैसे आकाश सर्व स्थान विषे होता है ॥ परंतु जहां प्रतिविंब हो
ता है तहां भासता है ॥ जैसे जल सर्व पृथ्वी विषे है ॥ परंतु जहां षोदीता है तहां ही भासता है ॥ तैसे आ
त्मा सर्व ठवर पूर्ण है ॥ पर भासता तहां है जहां चित है ॥ जैसे सूर्य का प्रकाश सर्व ठवर है ॥ परंतु प्र
तिविंब तहां भासता है जहां जल अथवा आदर्श दर्पण होता है ॥ अन्यथा नहीं भासता ॥ तैसे आत्मा

सर्व विषे है परंतु भासता तहां है ॥ आत्मा का प्रतिविंब चित वि
ज हां कछु आपक है ॥ परंतु चित है अहं भाव कर तहां ही भासता है ॥ जैसे सूर्य की या किरण
वि भासता है ॥ सो चित आत्मा की सत्ता या इस कर जगत की रचना पसारता है ॥ जैसे सूर्य की या वि
एक कों पसारती या है ॥ हे रामजी भ्रमों का कारण अंतःकरण है ॥ अध्यात्म तत्व सर्वत्र अलीन है ॥ आ
त्म का कारण यही है ॥ परवास्तव ते अकारण है ॥ जगत जो सत भासता है ॥ सो अविचार कर के भास
ता है ॥ तिस के निवर्त्त उपाइ आत्म ज्ञान है ॥ हे रामजी संसार का कारण अंतःकरण है ॥ सो अस
म्यक ज्ञान कर सत रूप भासता है ॥ जैसे मारूथल विषे असम्यक ज्ञान कर के जल भासता है ॥
तव यथार्थ आत्मा का ज्ञान होवेगा ॥ तब जगत का कारण चित नष्ट होवेगा ॥ जैसे दीपक के
उदे होणे कर अंधकार नष्ट हो जाता है ॥ हे रामजी संसार का कारण अपणा चित है ॥ इसी का नाम
जीव अंतःकरण चित अरु मन है ॥ वा लो वा च ॥ हे मानस्मानके दे वणहारे रानी या संज्ञा चित
कीया के से कहीया है ॥ व शि ष्ठो वा च ॥ हे रामजी सर्व भाव रूप एक परमात्म तत है ॥ जैसे समुंद्र त
रंग आदिक अनेक संज्ञा एक जल ही धारता है ॥ अरु सदा एक रूप है ॥ संवेदन संपट रूप करके
अनेक रूपो कों धारता है ॥ जैसे एक जल ही तरंग कहूं बुद बुदा अरु फेण अरु कहूं चिक्रणाई कर
इस्थिर एतीया संज्ञा कों धारता है ॥ पर सर्व जल ही रूप है ॥ तैसे सर्व शक्ति रूप आत्मा सर्व श
रीरो विषे चितादिक संज्ञा सर्व रूप होता है ॥ जब संपदके कलना हरहो ती है तब सत्य स्वरू
प हो इ भासता है ॥ अरु जहां अज्ञान संसरण कों अंगीकार करता है ॥ तहां वही अनंत आत्मा
जीव कहता है ॥ जैसे केसरी सिंह पिंजरे विषे फासता है ॥ तैसे यह जीव होता है ॥ हे रा
मजी जहां अहं भाव कर फुरता है ॥ तहां जीव कहीता है ॥ अरु जो निश्चय धारन कर फुरता है ॥ ति
स कों बुद्धि कहीता है ॥ अरु संकल्प विकल्प रूप कर मन कहीता है ॥ अरु चिंतना करणे ते चि
त कहीता है ॥ प्रकृत भाव कर के प्रकृत कहीती है ॥ हे रामजी प्रकृत रूप जो पदार्थ है सो ज
ड है ॥ अरु चेतन है सो जीव कर कहीता है ॥ तद जो देह रूप भाव कर संवित भागा है ॥ अरु अज
ड जो है जीव अरु देह सो दृष्टा भाव कर सिद्ध होता है ॥ इनके जो मध्य है सो परमात्म तत्व है ॥ सो नाना
रूप हो इ भासता है ॥ इहु रूप जीव का वृहदारण्यक उपनिषत विषे वरुन प्रकार कर के क
हा है ॥ इस ते इतर जो संज्ञा पास लोका गो विकल्प कर कहीया है ॥ सो व्यर्थ कल्पना करीदे
जब लग अहं भाव कर के चित पदार्थ में सता है ॥ तव लग जगत भ्रम होता है ॥ जैसे जव ल
ग सूर्य उदे है तब लग प्रकाश है ॥ जब सूर्य अस्त भया तब प्रकाश जाता रहता है ॥ तैसे
जब चित का अभाव भया तब जगत भ्रम जाता रहता है ॥ अरु देह विषे विषे जो आत्मा बुद्ध
कर्ता है ॥ सो अहंकार महा मूढता है काहे ते जो यह तो आधार अधेय संजोग है ॥ तो आत्मा का
ऐसे संजोग न होवे ॥ तब देह के नष्ट हुए आत्मा भी नष्ट हो जावेगा ॥ जब आधार आधेय एक
है होवे तब देह के नष्ट हूए आत्मा भी नष्ट होवे ॥ जैसे बडे वृक्ष के एक पत्र नष्ट हूए वृक्ष नष्ट न
होता ॥ तैसे शरीर के नष्ट हुए आत्मा नष्ट नहीं होता ॥ जैसे पुरातन वसत्रों कों त्याग कर पु
रुष नौतन वसत्र का अंगीकार करता है ॥ तैसे पुरातन शरीर कों त्याग कर आत्म रूप जीव नौ
तन शरीर कों अंगीकार करता है ॥ इस का नाम मूढ मृतक कहते हैं ॥ शरीर के नाश रूप कछु आत्मा
तो नाश नहीं होता ॥ हे रामजी जिस का चित निर्वासी भया है ॥ तब उस का शरीर रह दता है
तब उस शरीर विषे चिदाकाश विषे लीन होता है ॥ अरु जिस के चित विषे वासना है ॥ सो एक शरीर
कों त्याग कर अवर कों पावता है ॥ वह उस शरीर कों त्याग कर अवर कों ग्रहण करता है ॥
तो भी शरीर के नाश रूप आत्मा नाश नहीं होता ॥ अरु जो शरीर के नाश रूप अपणा नाश मा
नते है सो अज्ञानी है ॥ जैसे स्थान विषे अज्ञान कर के वेताल भासता है ॥ तैसे आत्मा विषे
अज्ञान कर के मृत भासती है ॥ अर जो इस का अत्यंत नाश होवे ॥ अर्थ यह जो चित नाश होवे
जावे ॥ वहुड फुरणे ते न वर्तित होवे सो ता को नंद भया ॥ अरु जो शरीर के नष्ट रूप आत्मा कों न
ष्ट कहते हैं ॥ सो मूढ है मिथ्या कहते है ॥ जैसे कोउ देसांतरो गोन कों जाता है ॥ तो उस का श्र

भावतैनहीहोता ॥ तैसेशरीरकोंत्यागकरवहुरश्रवरशरीरकोंपावताहै ॥ श्रात्माकानाश
नहीहोता ॥ तैसेजलविषेतरंगफुरताहै ॥ वहुरलीनहोइकरश्रवरतरंगफुरताहै तैसेए-
कशरीरकोंत्यागकरश्रात्माश्रवरशरीरकोंधारताहै ॥ जैसीपंषीउडताउडतादूरजाताहै ॥ त
वदृष्टनहीश्रावता तैसेशरीरकेनाशहूएश्रात्माश्रवरदेवरजाइप्रगटहोताहै ॥ नाशनही
होता ॥ हेरामजीवासनाकेवशतेयहजीवशरीरकोंत्यागकरश्रवरशरीरकोंग्रहण
करताहै ॥ जैसेवांतरवनविषेएकब्रछकोंत्यागकरश्रवरब्रछऊपरजाइवैठताहै ॥ वहुरउ
सकोभीत्यागकरश्रवरपरजाइवैठताहै ॥ इसीप्रकारवासनाकेश्रनुसारजीवफिर
ताहै ॥ वासनारूपीजेवडीकरमनरूपीवांदरजन्मरूपीइसथानोंविषेजीवरूपीवालकली
एफिरताहै ॥ हेरामजीवासनारूपीजेवडीसाथवांधाहूयापडाभरकताहै कवहूपर्व
तकीकंदराविषेकवहूनगरोंविषेकवहूऊर्धलोककवहूश्रधःलोककवहूमानुषलो
कविषेयहीजेवडीत्यागीपडाभटकताहै ॥ हेरामजीजीवकेहिरदेविषेजोवासनाहोतीहै ति
सकरजन्ममरणादिकदुषकरदुषीहोताहै ॥ श्ररकर्मोकेफलरूपीजोभारहै तिनकोंउ
ठाइफिरतीहै ॥ चढइस्वर्गलोकजाताहै ॥ कवहूश्रधलोककवहूमध्यलोकविषेश्रावताहै
शांतकोंकदाचितनहीपावता ॥ ताते हेरामजीश्रविद्यारूपीजोसंसारहै तिसकोंश्रमरू
पजाणकरइसकीवासनात्यागकरश्रपणेस्वरूपविषेस्थितहोवो ॥ हेभारद्वाज इसप्रकार
जववसिष्ठजीकहतेभए तवसूर्यश्रस्तभया ॥ सर्वसभासंध्यादिककर्मोकेनिमित्तउठती
हैभए ॥ परस्परनमस्कारकरकेश्रपणेश्रपणेइस्थानोंकोंगमनकरतेभए ॥ जवनिशा
व्यतीतभईतववहुरसूर्यकीकिरणोंसाथश्रपणेश्रपणेइस्थानोंविषेश्रायस्थितभए ॥
इतिश्रीउपशमप्रकरणेसंसारोपदेशोनामसर्गः ॥ वसिष्ठउवाच ॥ हेरामजीश्रात्मादेहकेउपजे
तेउपजतानही ॥ श्ररदेहकेनासभएनासनहीहोता ॥ तैंनिहचैकरलेकश्रात्मारूपहै ॥ श्ररदेहका
संवंधतेरेकोंकदाचितनही ॥ जैसेकुंडविषेफलएषाहोताहै ॥ सोएककेनष्टभए दूतीयनष्ट
नहीहोता ॥ जैसेघटविषेघटाकाशहोताहै ॥ सोपरस्परभिंनभिंनरूपहोतेहै ॥ घटकेनाशहू
एतौघटाकाशनष्टनहीहोता ॥ तैसेदेहकेनष्टहूएश्रात्मानष्टनहीहोता ॥ श्ररजोदेहकेनाशहू
एविषेश्रपणानाशमानतेहै ॥ सोमूढजडहै जैसेरथश्ररजेवडीयाश्ररघोडियोंकेसनेहतेरह
तसंवंधहोताहै ॥ तैसेशरीरश्ररचित्तश्ररइंद्रियोकासंजोगहै ॥ हेरामजीरथश्रादिककेनष्टहू
एसारथीकीनाशतानहीहोती ॥ तैसेदेहइंद्रीयादिकेनाशहूएश्रात्माकानाशनहीहोता ॥
जैसेपृथवीपर्वतऊपरजलकेप्रवाहकासंयोगहोताहै ॥ श्ररवियोगभीहोताहै ॥ सोएकके
नाशहूएदूतीयकानाशनहीहोता ॥ तैसेदेहइंद्रियोंकासंयोगहै ॥ इनकेनाशहूएश्रात्माका
नाशतौनहीहोता ॥ जैसेइस्थानविषेवैतालकल्पकरभैमानहोताहै ॥ तैसेदेहविषेश्रहंभावमा
नकररागद्वेषसुषदुषकोंपावताहै ॥ जैसेएककाष्ठकीपाश्ररनेकपुतलीयाहोतीयाहै ॥ सो
काष्ठतेइतरकछुनही ॥ तैसेजेतेकछुशरीरहै ॥ सोपंचभूतकेहै ॥ पंचभूतोंतेइतरकछुनही ॥ व
ऊठेयहपंचभूतकशरीरपंचभूतोंविषेलीनहोताहै ॥ तिसकोंमिरनेकोंकहतेहै ॥ यह
आश्चर्यहै जोपरतक्षपंचभूतकाशरीरहै ॥ तिसविषेश्रातमभावइस्थापनकरतेहै ॥ वहुरदुषश्र
रशोककोंप्राप्तहोतेहै ॥ इसीतेमूढहै ॥ हेरामजीतिनकोंऊपरूपहैतिनकोंदुइससीहै ॥ श्ररइनकेनमि
त्तनरकपडेकष्टनकरतेहै ॥ तातेजोकछुमेंतुझकोंउपदेसकीयाहैतिसकोंश्रादतेलेकरश्रंतप
र्यंतभलीप्रकारविचारदेष ॥ इसएककेऊपरकरशोककात्यागकरो ॥ तवंधकेत्यागसोंकीइछा
करो ॥ नमोषकेप्राप्तहोवणेकीइछाकरो ॥ एंजीकीयापुतलीयाकीन्याईनिरश्रभिमानजैसेवे
ष्टाहो तैसेहीकरो इसकानामश्रात्मामौनहै ॥ हेरामजीमोषनामाकोऊपदार्थश्राकासविषेन
हीइस्थित ॥ नकोऊपातालविषेइस्थतहै ॥ श्ररभूमलोकविषेभीमोषनामापदार्थइस्थतनही ॥
चित्तकानिर्मलहोवणा ॥ सर्वथयहजोश्रनात्मासाथश्रापकोंमिलावणातिसविषेश्रात्मश्रभि

मानकरणायहीमैलहै ॥ इसश्रनात्यागकरणा ॥ शुद्धश्रात्माविषेचित्तकोंलगावणा ॥ यहनि
र्मलचित्तहोवणाइसीकानाममोषहै ॥ जवचित्तसोंगुणमयवृत्तनकात्यागहोवै ॥ श्ररसम्यकज्ञा
नहोवै ॥ तिसकोंतत्वदरसीमोषकहतेहै ॥ हेरामजवलगश्रात्माकावोधनहीहोता ॥ तवलग
इहदीनश्ररदुषीहोताहै ॥ जवश्रात्माकानिर्मलवोधहूया तवसर्वदुषदूरतेमुक्तहोताहै ॥ ताते
श्रवरउपावोकोंत्यागो ॥ भलेकरकेश्रात्मवोधकोंपाइजोसुषीहोवैं ॥ हेरामजीजवचित्तश्रचित्त
होताहै ॥ तवसर्वजगतभ्रमसिटजाताहै ॥ श्ररजगतकछुद्वितीयवस्तनही ॥ एकश्रद्वैतश्रात्म
तत्तहै ॥ जोवहीहैतौवंधकिसकोंकहीए श्ररमोषकिसकोंकहीए ॥ मोषवंधकीकल्पनात्तु
कहै ॥ इसकल्पनाकोंत्यागकरश्रात्मपदविषेइस्थतहोवो ॥ श्ररसर्वकलनाकोंत्यागकर
चक्रवरतीहोइकरपृथवीकीपालनाकरो ॥ तुझकोंकर्तव्यकास्पर्सकछुनहोवैगा ॥ जैसेक
मलकोंजलकास्परसनहीहोता ॥ तैसेतुझकोंकर्तव्यकास्पर्शनहोवैगा ॥ इतिश्रीउपशम
प्रकरणेश्रात्माविचारोनामसर्गः ॥ वसिष्ठउवाच ॥ हेरामजीइसदेहकेसंकल्पतेजगतउपज्याहै
श्ररश्रज्ञानकरकेश्रापकोंशरीररूपजानताहै ॥ श्रपणेसंकल्पकरउपजायकोंश्रापजा
णताहै ॥ जैसेकोऊसुंदररूपहोवै ॥ तिसकेमुषदेषेविनाउसकोंकुरूपजाणे ॥ तैसेश्रात्मा
केसाक्षात्कारविनादेहरूपश्रात्माकोंजाणताहै ॥ जोसेदेहहोज्योंज्योंस्वरूपकाप्रमादहो
ताहै ॥ त्योंत्योंदेहविषेदृढश्रभिमानदृढहोताजाताहै ॥ जैसेत्योंत्योंमदपानकरताजाताहै
त्योंत्योंमत्तहोताजाताहै ॥ हेरामजीयहजोनानाप्रकारकीदृष्टाभासतीहै ॥ सोश्रज्ञानकर
केभासतीहै ॥ जैसेसूर्यकीयाकिरणोंकरकेमारूथलविषेजलभासताहै ॥ तैसेश्रसम्यकज्ञा
नकरके ॥ श्रात्माविषेजगतभासताहै ॥ एककलनाकेफुरणेकरकेमनवुधचित्तश्रहंकारइं
द्रीयादेहभासतेहै ॥ सोएकफुरणेकीव्यापतीपासतीहै ॥ जैसेएकजलकीयाश्रनेकसत्ता
होतीयाहै ॥ तैसेएकफुरणेकीयासर्वसत्ताहै ॥ जोचित्तहैसोईश्रहंकारहै ॥ जोश्रहंकारहैसोईम
नहै ॥ जोमनहैसोईवुद्धहै ॥ इनविषेभेदकछुनही ॥ जैसेवर्फश्ररशुक्लताश्ररशीतलता
विषेभेदकछुनही ॥ तैसेमनवुद्धिश्रादिकोंविषेभेदमिथ्याहै ॥ एककेनाशहूएसर्वकानाश
होजाताहै ॥ जैसेपटकेनष्टहूएसर्वतंतनकाश्ररशुक्लताकानाशहोजाताहै ॥ तातेमनविषेजो
कछुकलनाहै तिसकोंत्यागकरो ॥ मोषकीइछाभीत्यागकरो ॥ श्ररवंधनिवृतकीइछाभीत्याग
करो ॥ हेरामजीविवेकश्ररवैरागश्ररश्रभ्यासकरकेमनकोंनिर्मलकरो ॥ जवमननिर्मलहू-
श्रा तवमनकामननभावभीनष्टहोजावैगा ॥ जवएहलोपहूताहै ॥ जोसेमोषहोवैतौभीमन
जागश्रावतीहै ॥ श्ररमनकेजागतेमननभीहोइश्रावताहै ॥ श्ररमननभावतवश्रपणेसंगश-
रीरभासश्रावताहै ॥ तवश्रनेकदुषभासतेहै ॥ हेरामजीश्रात्मतत्वसर्वतेश्रतीतहै ॥ सुष्यावास
र्वरूपवहीहै ॥ तवकवलावंधहोवै ॥ श्ररकवलमोषहोवै ॥ जवमनकामनननिर्मलहूश्रा
तवनकोऊवंधहैनकोऊमोषहै ॥ श्रात्मासर्वक्रियातेश्रतीतहै ॥ श्ररसर्वक्रियाभीइसप्रकारहो
तीहै ॥ जैसेवायुकेचलणेतेवृक्षकेपत्रफूलहलतेहै ॥ तैसेप्राणोंकेफुरणेकरहस्तपादश्रादि
कइंद्रीयाचेष्टाएडीयाकरतीयाहै ॥ हेरामजीचितनशक्तिजोहै सोसर्वव्यापीहै ॥ श्ररसूषमहै
श्रचलहै ॥ नश्रापहीचलतीहै ॥ नकिसीश्रवरकीप्रेरीहूईचलतीहै ॥ महाइस्थिररूपहै ॥ जै
सेसुमेरपर्वतनश्रापहीचलताहै नवायुकरचलाइमानहोताहै ॥ तैसेचितशक्तिचलायमान
नहीहोती ॥ हेरामजीजेतेकछुपदार्थभासतेहै ॥ सोश्रात्मरूपीश्रादर्शविषेप्रतिविंवतहोते
है ॥ जैसेसर्वपदार्थोंकोंदीपकप्रकासताहै ॥ तैसेसर्वपदार्थोंकोंश्रात्माप्रकाशताहै ॥ श्ररस
र्वपदार्थोंविषेएकश्रनस्तश्रात्माव्यापकहै ॥ श्ररश्रहंश्रादिककीकलनातेरहतहै ॥ नहीं
श्रहंत्वश्रादिककल्पनानहीफुरती नहोसुषभीनहीफुरता ॥ जैसेसुषोपतिविषेश्रहंत्व-
श्रादिककावरणनहीफुरते ॥ तैसेश्रात्माविषेनहीफुरते ॥ तातेज्ञानवानविषेकर्तृत्वभोगतृ
त्वनहीफुरते ॥ हेरामजीश्रात्मानिरहंकारहै ॥ श्ररनिराकारहै तिसविषेकर्तृत्वभोगतृत्व

भोगतत्व कैसे होवे॥ करतत्व अरु भोगतत्व आत्मा विषे अज्ञान करके भासते हैं॥ जैसे मारूथल विषे जल भासता है॥ अरु हे राम जी अज्ञान रूपी मदरा कों पान करके मनरूपी मृग मत्त हूया है॥ तिस कर मन असत का विचार कछु नहीं करता॥ जैसे असत मृगत्रिष्णा की नदी सत होइकर भासती॥ मृग तिस कों सत जाणकर पान के नमित धावते हैं॥ तैसे इन जीवों का मन है॥ जो असत रूप संसार कों सत जाणकर सुष के नमित धावता है॥ अरु दुषी होता है॥ अरु जब आत्म सत्ता का सम्यक बोध होता है॥ तब यह अविद्या नष्ट हो जाती है॥ जैसे ब्राह्मणों के मध चंडाल की कन्या आइ बैठे॥ अरु जब उन ब्राह्मणों उस कों जाणा जो यह चंडाल की कन्या है॥ तब वह चलती रहती है॥ जैसे जब अविद्या कों जाण्या जो यह अविद्या है॥ तब अविद्या नष्ट हो जाती है॥ हे रामजी जब अविद्या कों ज्यों का त्यों जाणीए तब अविद्या रूप जगत मन कों वेषन हीं सकता॥ जैसे मृगत्रिष्णा की नदी को असत जाणा यातें वह जल मन कों षेंचे नहीं सकता॥ हे रामजी जब यथार्थ सत्ता का बोध होता है॥ तब सम्मल वासना नष्ट हो जातीयां हैं॥ जैसे दीपक के उदे हूए तें अंधकार नष्ट हो जाता है॥ तैसे आत्म ज्ञान कर अविद्या से युक्त वासना नष्ट हो जातीयां हैं॥ हे रामजी अविद्या अविचार तें सिद्ध है॥ जब सतशास्त्रों की युक्त से यथार्थ विचार इस कों प्राप्त होता है॥ तब अविद्या नष्ट हो जाती है॥ जैसे बरफ का कणका धूप करके जल हो जाता है॥ तैसे विचार कर के अज्ञान नष्ट हो जाता है॥ हे रामजी देह जड है अरु आत्मा सदा चेतन रूप है॥ वह इस देह के नमित भोगों की इच्छा करणी यह मूढता है॥ जो ज्ञानवान पुरुष है॥ सो इस बंधन कों तोड डारते हैं॥ जैसे केसरी सिंह पिंजरे को तोड कर निकस जाता है॥ तैसे ज्ञानवान पुरुष भोगों के निश्चय कों तोड डारता है॥ हे रामजी आसा रूप जो फांसी है तिस कों छिरदे तें काटो जब आसा रूपी आवर्ण दूर भया॥ तब पूर्नमासी के चद्रमा च अंतर सीतल हो जावेगा॥ जैसे परबत कों अगन लागती है॥ जिस कर जलते के ऊपर मेघ बर्षा होवे तब तपत मिटता होइकर सीतल हो जाता है॥ तैसे यह पुरुष तीनो तापों ने मत्त भया॥ आत्मपद कों पाइकर शांतवान हो जाता है॥ हे रामजी आत्मा कैसा ब्यांतकार रूप परमानंद कों प्राप्त होता है॥ जैसे रंक को त्रिलोकी का राज्य प्राप्त होवे॥ अरु उस कों आनंद की प्राप्त होवे॥ तैसे ज्ञानवान कों आनंद प्राप्त होता है॥ अरु परम लक्ष्मी कर सोभता है॥ जब इस के विदे सों आत्मा रूप मैं लज लजाता है॥ तब सर्व काल के आकासवान पुरुष अपणे आप विषे समावता नहीं॥ जैसे महाकल्प के समुद्र इन नहीं समावता॥ तैसे ज्ञानवान पूर्ण होता है॥ जैसे मेघ जल को त्याग कर मौन हो जाता है॥ तैसे ज्ञानवान आसा कों त्याग कर आत्म मौन हो जाता है॥ जैसे अगन ईंधनों कों जलाइकर पुनः तेरहत अपणे आप विषे स्थित होता है॥ तैसे चित्त अंतर ते रहत भया॥ आत्मपद विषे निर्वाण हो जाता है॥ जैसे दीपक निर्वाण होता है॥ तैसे चित्त निर्वाण भया॥ परमानंद कों प्राप्त होता है॥ जैसे अमृत कों पान करके पुरुष आनंदमान होता है॥ तैसे परमानंद कर पूर्ण अपणे आप विषे प्रकाशता है॥ जैसे वायु ते रहत स्थान विषे दीपक प्रकाशता है॥ अरु जैसे पुष्प मणि अपणे प्रकाश कर प्रकाशती है॥ तैसे ज्ञानवान अपणे प्रकाश कर प्रकाशता है॥ सेमवों त्यारों सर्वगत हो सर्व का ईश्वर हो॥ सर्व आकार हो निराकार हो केवल चिदानंद आत्मा हो सदा अपणे आप विषे स्थित॥ हे रामजी ऐसे वह ज्ञानवान अपणे आप को जाणता है॥ अरु पूर्व जो छिन्न वृत्तीन भए हैं॥ तिन कों स्मरण कर के हसता है मै तो आनंद आत्मा हों॥ माया के भ्रम कर आप कों कर्ता भोक्ता मानता था॥ हे रामजी ऐसे जाणकर राग द्वेषादिक रोगों तें रहत परम स्थान कों प्राप्त होता है॥ उस के ताप सर्व निवर्त होता है॥ अरु आत्मा विषे सदा प्रीत रहती है॥ अरु चित्त सर्व तें शांत हो जाता है॥ अरु सर्व कों पवित्र करणे हारा होता है॥ कामरूपी वज्र तें मुक्त होता है॥ जन्मों के बंधनों कों काट डारता है॥ रागद्वेषादिक द्वंद्व अरु सर्व के भय तें रहत होता है॥ अरु अविद्यारूपी संसार समुद्र को तर जाता है॥ अरु उत्तम लक्ष्मी कों प्राप्त होता है॥ अरु प

पद जो परमपद कों प्राप्त होता है॥ वह [illegible] जन्म मरणों कों नहीं प्राप्त होता है॥ अरु करमों का अंत हो जाता है॥ हे रामजी ज्ञानवान की क्रिया कों देषकर अवर सर्व बांछा करते हैं॥ पर अवर की क्रिया कों देषकर ज्ञानवान किसी की इच्छा नहीं करता॥ अरु सर्व कों आनंदवान करता है अरु आप किसी कर आनंदवान नहीं होता न किसी कों देता है न लेता है॥ न किसी की उपमा करता है॥ न निंदा करता है न किसी उत्तम पदार्थ कों पाइकर उदय होता है॥ अरु न अनिष्ट कों पाइकर अस्त होता है॥ हर्ष अरु शोक तें रहत है॥ सर्व आरंभ अरु तिन के फलों का त्याग कीया है॥ सर्व उपाधि तें रहत है॥ करतृत्व अरु भोगतृत्व ते आप कों न्यारा जाणता है॥ ऐसा जो पुरुष है सो जीवनमुक्त कहीता है॥ हे रामजी सर्व इच्छा कों त्याग कर चित्त कों मौन करेगा॥ तब निवर्त मोष भाव कों तूं प्राप्त होवेगा॥ जैसे मेघ जल कों त्याग मोष भाव कों प्राप्त होता है॥ तैसे तूं सम मोष भाव कों प्राप्त होवेगा॥ हे रामजी जैसे कामी पुरुष सुंदर इस्त्री कों कंठ लगाइकर आनंदमान होता है॥ तिस कों ऐसा आनंद नहीं होता॥ जैसे आनंद निरासी पुरुष कों प्राप्त होता है॥ अरु फुलवली गुच्छे कर बसंत रित ऐसी नहीं सोभती॥ जैसे निरासी पुरुष सोभता है॥ अरु हिमालय पर्वत विषे प्राप्त भया भी ऐसा सीतल नहीं होता॥ जैसा निरासी मन सीतल होता है॥ अरु केले के वन कों प्राप्त भया॥ ऐसा सुखी नहीं होता॥ अरु चंदन का पान कीए भी ऐसा सीतल नहीं होता॥ जैसा सीतल निरासी मन होता है॥ अरु चंद्रमा के स्पर्श कीए भी ऐसा सीतल नहीं होता॥ जैसा निरासी पुरुष सीतल होता है॥ काहे तें जो चंद्रमा बाह्य की तपत कों मिटावता है॥ पर अंतर की तम निवर्त नहीं कर सकता॥ अरु निरासता कर के अंतर की तम मिट जाती है॥ पर परम शांत कों प्राप्त होता है॥ जैसी सीतलता निरासी पुरुष के संग कर प्राप्त होती है॥ तैसी अवर किसी उपासक नहीं प्राप्त होती॥ हे रामजी ऐसा सर्व पसंग विषे भी नहीं होता॥ अरु सुंदर इसत्री के परस की प्रते भी नहीं होता॥ जैसा सुख निरासी कों प्राप्त होता है॥ निरासी पुरुष तिस सुष कों पावता है॥ जिस विषे त्रिलोकी के सुष त्रिणवत भासते हैं॥ हे रामजी आसा रूपी कैजी पकाश है॥ तिस के कारणे कोउ अपूर्व रूपी कुदार है॥ जो पुरुष निरास भया है तिस कों संपूर्ण ब्रह्मांड गोपद के समान तुछ भासती है॥ अरु सुमेर पर्वत एक वृक्ष के समान भासता है अथवा दिवे के समान भासता है॥ काहे तें जो महाउत्तम पद कों प्राप्त भया है॥ त्रिलोकी की विभूत त्रिणवत देषता है॥ जो पुरुष निरासरूपी भूषण कर भूषत भया है॥ सो जगत कों देषकर हसता है॥ अरु कदाचित जगत के पदार्थों की कलना नहीं फुरती॥ त्रिणवत जगत कों जाणकर त्याग दीया है॥ अरु सर्वदा आत्म तत्व विषे स्थित भया है॥ तिस कों उपमा किस की दीजीए तिस पुरुष की उदे अस्त तिस तें जाणता हों॥ तो थो होवे अरु थो न होवे॥ यह तत्व आदिक सर्व कलना नष्ट हो गई है॥ केवल आत्म सभाव कों प्राप्त भया है॥ तिस कों कवण तोल सके जो तुलीय उस के समान होवे तब बोले॥ हे रामजी वह पुरुष सर्व संकल्पों के अंत कों प्राप्त भया है॥ अरु संकदस्तव कों प्राप्त भया है॥ अरु परम शोभा गत ताकों प्राप्त भया है॥ हे रामजी यह जगत मिथ्या भ्रम रूप है॥ जैसे आकाश विषे द्वितीय चंद्रमा भासता है सो भ्रम कर भासता है॥ अरु जैसे मारूथल विषे नदी भ्रम कर भासती है॥ अरु जैसे स्वपन नगर भ्रम कर के भासता है॥ तैसे यह जगत मिथ्या भ्रम कर के भासता है॥ इस का आसा मत करो॥ तुम बुद्धिवान पंडित हो॥ तू दोवत मोह कों कहु प्राप्त हो॥ यह मैं हों यह मेरा है॥ यह अज्ञान कर के भासते हैं॥ इस कल्पना कों चित तें दूर करो॥ यह वास्तव कछु नहीं॥ सर्व जगत आत्म रूप है नाना नमक कछु नहीं॥ जो सत्य कट रसी पुरुष है सो एक रूप जगत कों जाण कर धीरजवान रहते हैं॥ अरु षेद कों नहीं प्राप्त होते॥ हे रामजी जो पुरुष निरासी भया है॥ अरु आत्म विचार कर आत्म पद कों प्राप्त हूया है॥ तिस कों देषकर जगत के मोहणे हारी माया भी भाग जाती है॥ इस के निकट नहीं आवती॥ जैसे सिंह के निकट मृग नहीं आवता॥ अरु ज्ञानवान कों इंद्र इसत्री अरु मणा अस्वर्णादिक ध

उ.प्र. २२

न अरु पाषाण अरु वृक्षादिक तुल्य भासते हैं। अरु भोगों कर तिस को सुख नहीं होता। अरु दुःखदाइक उस
कों कष्ट नहीं देते। सदा ज्यों का त्यों रहता है। जैसे पर्बत वायु कर चलायमान नहीं होता। तैसे ज्ञानी
सुख दुःख कर के चलायमान नहीं होता। सुंदर बाला इस्त्री उस के चित्त कों खैंच नहीं सकती। अरु का
मदेव के चलाए बाण उस पर टूट टूट कर होजाते हैं। अरु राग द्वेष उस को खैंच नहीं सकते। काहे ते जो
उस कों स्पर्श नहीं करते। सदा आप कों अद्वैत निराकार अक्रिय निर्मल जानता है। अरु सुंदर बगी
चे लता बल्ली अरु सुंदर स्थान इस्त्रीयों के भोग अरु अनिष्ट कष्ट देवणे हारे स्थान वालो कों तत्व
राग द्वेष कों नहीं प्राप्त कर सकते। तैसे पर्बत विषे रितु के अनुसार मिष्ट कटक फल फूल लेक
ते हैं। सो पर्बत कों किसी विषे राग द्वेष नहीं होता। तैसे ज्ञानवान कों यथा प्राप्त भेद कर सुख दुःख
आय प्राप्त होते हैं। तब राग द्वेष किसी कर नहीं उपजता। जैसे नेत्र रूप कों देखते हैं। पर भले बुरे वि
षे इन कों राग द्वेष कछु नहीं। तैसे ज्ञानवान भोगों कों भोगता है। पर राग द्वेष किसी विषे नहीं
करता। अरु समान जो भोग आय प्राप्त होता है। तिस कों भोगता है। पर हर्ष शोकवान नहीं
होता। हे रामजी जो यथा भूत दरसी है। तिस कों इष्ट अनिष्ट विषे सुख दुःख नहीं होता। जैसे बसं
त रितु के गमन अरु आगमन अरु वर्षा रितु के आवणे जावणे विषे पर्बत कों सुख दुःख नहीं प्राप्त हो
ता। कर्म इंद्री कर कर्म करता है। पर तिस विषे मगन नहीं होता। वाक्य ते उन विषे आसक्त दृष्ट आ
वता है। पर अंतर ते आसक्त नहीं होता। अरु जो वाक्य ते आसक्त नहीं दृष्ट आवता। अरु अंतर ते वि
न देह विषे आसक्त है सो मगन होता है। डूबता है। अरु जैसे सर्प अंतर ते सुध है। अरु वाक्य को चे
विषे पड़ी दृष्ट आवती है। तो भी तिस कों कलेश कछु नहीं निरुवालंब है। अरु जो अंतर ते खोटी है।
अरु वाक्य से सुंदर उज्जल भासती है। तो भी सकलेश है। जैसे अपणे चित्त कर जो आसक्त है। सो दुःख
सक्त है। अरु जो चित्त भाव कर आसक्त नहीं सो ही असंसक्त है। हे रामजी शरीर सो जिस का अहं
भाव मिट गया है। अरु इंद्रीयों कर कर्म पड़ा करता है। तो करता भी कछु नहीं करता। अरु जो देह
विषे अहं भाव है। सो अकर्ता भी करता ही है। हे रामजी आत्म सत्ता सदा प्रकाश रूप है। अरु
नित शुद्ध है परमानंद स्वरूप है। जिस पुरुष कों अपणे शुद्ध स्वरूप का ज्ञान है तिस कों विस्
मरण नहीं होता। जैसे किसी कों बांधव चिरकाल ते मिल्या तिस कों जाण्या बहुड़ विस्मरण
नहीं होता। तैसे अपणा स्वरूप जिस जाण्या है। तिस कों विस्मरण नहीं होता। हे रामजी जि
स कों स्वस्वरूप का ज्ञान भया है। तिस कों भ्रांत रूप जगत बहुड़ नहीं भासता। जैसे जेवड़ी वि
षे सर्प भ्रम भास्या था। जब सर्प भ्रम निवर्त भया। तब जेवड़ी जो सर्व रूप है तिस का विस्मर
न नहीं होता। अरु सर्प भ्रम नहीं भासता। अरु जैसे मारुथल विषे जल बुद्धि निवर्त हुई तौ बहुड़ ज
ल बुद्धि नहीं होती। तैसे आत्मा को जाण के बहुड़ देह भावना नहीं होती। जैसे परबत ते नदी उतर
ती है। सो बहुड़ पर्बत ऊपर नहीं चढ़ती। अरु जैसे स्वर्ण को घोर अग्नि कर जलाया बहुड़ खोटा नहीं
होता। ताकी च विषे शरीर तो भी खोटा नहीं होता। जैसे जब हिरदे की चिद्जड़ ग्रंथ टूटी तब
गुणों के विकार विषे भी गेर नहीं पड़ती। अरु बंधायमान नहीं होता। जैसे वृक्ष ते टूटा फल बहु
ड़ नहीं लागता। तैसे जिस का देह सो अभिमान टूटा है सो बहुड़ देह विषे नहीं लागता। उस का
अभिमान स्वरूप विषे रहता है। जैसे जो है कै टूटा ड़े सो पाषाण को चूर्ण कीया। बहुड़ तिस कों
एकठा पाषाण कोऊ नहीं कर सकता। तैसे आत्म विचार मन को जब चूर्ण कीया तब बहुड़ पक
ठा नहीं होता। जिस पुरुष अविद्या जाणी तब बहुड़ नहीं देह संग मिलता। जैसे जिस ब्राह्मण चं
डालो की सभा जाणी तब उन की संगत बहुड़ नहीं करता। जैसे जिस अविद्या रूप जगत को जाण्या
तब बहुड़ जगत के पदार्थों विषे आसक्त नहीं होता। हे रामजी विष जो मधुर जल में गमिला
ही हुई होवे तो जब लग जाण्या नहीं। तब लग तिस कों पान करता है। जब उस को जाण्या तब ब
हुड़ पान करणे की इच्छा नहीं करता। तैसे जब लग इस संसार कों ज्यों का त्यों न जाण्या तब लग इ
स के पदार्थों की इच्छा करता है। तब जाण्या जो माया मय है तब इस की इच्छा नहीं करता। हे रामजी

सुंदर इस्त्रीयां जो नाना प्रकार के वस्त्रों अभूषणों से युक्त दृष्ट आवती हैं। जो इन को जाणता है
अस्थि मांस रुधिरादिक की पुतली है। अवर कछु नहीं ऐसे जाण कर तिस की इच्छा निवर्त होती
है। तैसे मूरत ऊपर रत्न सुवर्ण लिपे होते हैं। तैसे उन को इस्त्री के वस्त्र अभूषण के सभ भासते हैं।
हे रामजी जिन पुरुषों कों आत्मा का साक्षात्कार भया है। तिन को अवस्तु विषे वस्तु बुद्धि नहीं हो
ती। अवस्तु विषे वस्तु बुद्धि तब होती है। जब वस्तु स्वरूप का विस्मरण होता है। सो तो ज्ञानवा
न को सदा स्वरूप का स्मर्ण है। अवस्तु विषे वस्तु बुद्धि उस कों कैसे होवे। जिस कों आत्म अनु
भव हूया है। तिस कों विस्मर्ण नहीं होता। जैसे किसी पुरुष गुड़ किसी पास ते खाया होवे अर
वह भषण कर जावे। तो उस को अवर दृष्टादिक कर सके गा। पर उस के स्वाद का अनुभव तो ह
रन कर सके गा। उस की समर्थता नहीं जो हर कर सके। तैसे जिस कों आत्म अनुभव हूया है।
तिस के हर करणे कों कोऊ समर्थ नहीं। हे रामजी जैसे परब्रह्मनी नारी होती है। किसी परपु
रुष संग उस का चित्त लागा हूया है। तब वह उस घर के कर्म भी पड़ी करती है। पर उस का चित्त स
दा तिस विषे रहता है। तैसे ज्ञानवान क्रिया कर्म भी सर्व करता है। पर उस का चित्त सदा आत्मपद
विषे रहता है। जैसे परब्रह्मनी इस्त्री कों अपणा भर्ता दंड भी करता है। तो भी स्पर्श के सुख का
अनुभव उस के हिरदे ते हर नहीं कर सकता। तैसे जिस कों आत्म अनुभव हूया है। तिस के
हर करणे कों कोऊ समर्थ नहीं। देवता असुर दैत भी हर नहीं कर सके। अवरों की क्या वारता
है। जो बड़े सुख वा दुःख का प्रवाह भी आन पड़ता है। तो भी तिन कों फेर नहीं कर सकता।
ज्ञानी कर्ता हूया भी अकर्ता होता है। जैसे परब्रह्मनी नारी परपुरुष के संयोग कर दुःख भी पा
वती है। पर उस कों जो सुख का अनुभव भया है। तिस कों संकल्प कर अनुभव पड़ी करती है।
तिस कर उस कों दुःख नहीं होइ भासता। तैसे जिस कों आत्म सुख प्राप्त भया है। तिस कों अव
र कछु सुख दुःख नहीं भासते। हे रामजी सम्यक् ज्ञान कर के जिस की अविद्या नष्ट भई
है। सो दुःख कों नहीं देखता। जिस के अंग काटीए तो भी दुःख कों नहीं देखता। रुदन करता है
तो भी नहीं करता। जो अंग पड़े जलते हैं तो भी नहीं जलता। शरीर के नष्ट हूए नष्ट नहीं होता।
सुख दुःख तिस के नष्ट होजाते हैं। उस का निश्चय सदा आत्मपद विषे रहता है। सो करवान भी प
रा दृष्ट आवता है। पर उस कों संकल्प कोऊ नहीं। वन विषे रहे अथवा गृह विषे रहे। अथवा बड़ा
र करे अथवा न करे। अथवा समाधि करे। वह सदा आत्मा में रहता है। उस कों फेर कछु किसी प्र
कार नहीं होता ॥ ॥ इति श्री उपशम प्रकरणे रामसपद भोनवर्णनं नाम सर्गः ॥ वसिष्ठ उवाच ॥
हे रामजी राजा जनक राज्य व्यवहार करता रहा। पर आत्मपद विषे स्थित रहा। तिस कर उस कों क
लेश न भया। सदा आगत न्याय करता रहा। अरु तुमारा पिता माता जो राजा दलीप है। सो भी सर्व आरंभ
कों करता रहा। पर अंतर ते राग द्वेष कों न प्राप्त भया। जीवनमुक्त होइ कर चिरकाल पर्यंत पृ
थ्वी का राज्य करते भया। अरु राजा मानधाता नाना प्रकार की युद्धादिक चेष्टा करता रहा। सो स
दा आत्मपद विषे निश्चल रहा। अरु कदाचित मोह कों न प्राप्त भया। अरु राजा बल पाताल विषे जा
इ स्थित भया। महात्यागी अरु राज व्यवहार कों करते भी दृष्ट आया। पर स्वरूप के ज्ञान कर सदा आ
त्मरूप जीवनमुक्त होइ कर व्यवहार करता भया। अरु नमुचि दानवों का राजा सदा नाना प्रकार की
युद्धादिक क्रिया विषे रहा। पर हिरदे विषे कछु तापन भया। अरु इंद्र के युद्ध विषे वृत्तासुर दैत
मारा। पर उदासीन रहा कदाचित खोभवान न भया। अरु दैतों का राजा प्रह्लाद पाताल विषे रा
ज करता रहा। पर हिरदे विषे खोभ न होता भया। हे रामजी शंबर नाम दैत सदा श्रेष्ठ अपणी के
रचणे कों उदय भया। सो अपणे संसार के रचणे विषे बंधायमान भया। अरु विष्णु भगवान जो सदा
दैतों कों नाश करता है। अरु युद्ध करता रहता है। अरु हिरदे विषे अलेप बुद्ध है। तिस कर स
दा सुखेन जीवनमुक्त है। अरु मुसल नाम दैत विष्णु भगवान जी संग युद्ध कर के शरीर कों त्या
गत भया। पर हिरदे कर जो देह संग बंधायमान न था। इस कर जीवनमुक्त सुखी रहा। खेद कों न

उ·प·
९३

पावन भया ॥ हे रामजी सर्व देवतों का मुख अग्नि है ॥ सो यह लक्ष्मी कों चिरकाल पर्यंत भोगता है
पर ज्ञानवान है ॥ इस कर षेद कों नहीं प्राप्त होता ॥ सदा शीतल है ॥ अरु देवते सदा चंद्रमा की पा॰
किरणां ते अमृत पान करते हैं ॥ पर चंद्रमा कों कछु क्षोभ नहीं होता ॥ अरु बृहस्पति देवतों का
गुरु इसी ते चंद्रमा साथ युद्ध कर्ता भया ॥ अरु देवतों ने मिल नाना प्रकार के कर्म कर्ता है ॥ पर रा
ग द्वेष ते रहत है ॥ ताते जीवन्मुक्त है ॥ हे रामजी दैत्यों का गुरु जो है शुक्र जी सो दैत्यों के निमित
सदा यत्न कर्ता है ॥ अरु लोभी की न्याई अरथों कों चितवता रहता है ॥ पर कदाचित षोभ अरु
षेद कों नहीं प्राप्त होता ॥ अरु पवन प्राणीयों के अंगों कों चिरकाल का पड़ा जु रखता है ॥ चे
ष्टा करावता है ॥ पर निश्चय सदा अपने स्वरूप विषे है ॥ षेद कों नहीं प्राप्त होता ॥ ताते
जीवन्मुक्त है ॥ अरु ब्रह्मा जी सदा लोकों कों उत्पत्त कर्ता है ॥ प्रलय पर्यंत इसी क्रिया विषे र
हता है ॥ पर स्वरूप का साक्षात्कार है ताते जीवन्मुक्त है ॥ अरु विष्णु भगवान जी सदा युद्धादि
क द्वंद्व विषे रहते हैं ॥ अरु सर्व की पालना करते हैं ॥ पर सदा मुक्त रूप है ॥ अरु शिव भग
वान जी तो त्रिनेत्र है ॥ अर्ध अंग इसी रूप देवी सदा रहती है ॥ जैसे कामी पुरुष कामनी कों
धारता है ॥ तैसे ही धारते हैं पर तिस विषे आसक्त नहीं ॥ ताते जीवन्मुक्त है ॥ अरु मोतीयों की माला॰
कंठ विषे पहनी जो गौरी सी प्यारी है ॥ पर अंतर ते सीतल रहती है ॥ ताते जीवन्मुक्त है ॥ अरु स्वामि का
र्तिक दैत्य साथ युद्ध कर्ता रहा ॥ सो ज्ञान रूपी रत्नों का समुद्र ज्ञानवान है ॥ पर अंतर कों शीत
ल राषत है ॥ ताते मुक्त रूप है ॥ अरु सदा शिव का भृंगी गण नाना प्रकार की युद्ध क्रिया कर्ता भया
पर जीवन्मुक्त है ॥ इस कारण ते सदा सुखी है ॥ अरु नारद मुनी अरु सदा मुक्त स्वभाव है ॥ सर्व दा
जगत की क्रिया जाल विषे रहता है ॥ पर षोभ कों नहीं प्राप्त होता ॥ ताते जीवन्मुक्त है ॥ अरु जी
वन मुक्त मन मौन जो विश्वामित्र है ॥ सो वेदों के कर्म कों कर्ता रहता है ॥ पर सदा सीतल रिदे
य है ताते जीवन्मुक्त है ॥ अरु सूर्य भगवान दिन कों कर्ता है ॥ अरु फिरता रहता है ॥ पर जी
वन मुक्त सदा तपी है ॥ अरु यम सदा जीवों कों दंड करता है ॥ अरु षोभ विषे रहता है ॥ पर जी
वन मुक्त है ॥ इंद्र कुबेर ते आदि लेकर त्रिलोकी विषे अनेक जीवन्मुक्त हैं ॥ व्यवहार विषे इस्थ
त हैं ॥ कई होइ बीते हैं ॥ कई होवेंगे कई व्यवहार विषे इस्थित हैं ॥ पर अंतर ते सीतल हैं ॥ कई
मूढ शिला वत होइ रहे हैं ॥ कई धर्म बोध नाना वन विषे जाइ इस्थित भए हैं ॥ जैसे भृगु अरु भा
रद्वाज अरु विश्वामित्र जाइ इस्थित भए हैं ॥ अरु कई चिरकाल पर्यंत प्रजा की पालना राज कर
ते हैं ॥ जैसे जनक अरु मानधाता आदिक करते रहे हैं ॥ कई आकाश विषे [illegible] कों धार कर
बृहस्पति शुक्र चंद्रमा आदिक जाइ इस्थित भए हैं ॥ कई स्वर्ग विषे अग्नि वायु वरुण यम नारद आदि
क जाइ इस्थित भए हैं ॥ कई देवता रूप धार कर आकाश लोक विषे इस्थित हैं ॥ उन कों सर्वथा
सर्व प्रकार सर्व विषे सर्वात्म रूप भासता है ॥ इतर कछु नहीं भासता नाना प्रकार का व्यवहार
अरु शिला आदिक सर्व आत्मा के नाम हैं ॥ अरु वस्तु रूप विषे जो अवस्तु है ॥ अरु अवस्तु विषे जो वस्तु
है ॥ सो अवस्तु तिस वस्तु ते निकसती है ॥ ज्यों वायु ते होती है ॥ अरु वस्तु सों अवस्तु भी उठ कर के दूर
होती है ॥ जैसे अवस्तु रूप जो है रेत तिस सों स्वर्ण उठ कर निकसता है ॥ पर वस्तु रूप स्वर्ण सों
मैल फक कर के दूर होती है ॥ तैसे अवस्तु रूप देहादि कों विषे वस्तु रूप आत्मा सों यत्न करी उठ
कर पाईता है ॥ अरु वस्तु रूप आत्मा सों दृश्य रूपी अवस्तु सो यत्न कर दूर होती है ॥ हे राम
जी पाप ते जो भय कर ता है ॥ सो धर्म विषे प्रवर्तता है तब निरभय होता है ॥ जैसे दुःख के भय क
र के जीव आत्म पद की ओर प्रवर्तता है ॥ तब भावना के वसते असत सों सत कों पावता है ॥ धिया
न अरु योगाभ्यास है ॥ पर यत्न के बल कर के तिस सामान्य पद पावता है ॥ अरु जो असत वस्तु
है ॥ सो उदय होइ कर सत भासता है ॥ जैसे बाजीगर की बाजी सो सत के ज्यों भास आवते हैं ॥ तैसे
आत्मा विषे यह जगत भ्रम रूप है ॥ सो अज्ञान कर के दृढ होइ भासता है ॥ पर कल्पना के अंत
विषे यह भी नष्ट होइ जाता है ॥ हे रामजी यह जो सूर्य चंद्रमा इंद्रादिक हैं तिन के नाम भी न रहेंगे

अरु वे सुमेरादिक पर्वत अरु समुद्रादिक सर्व नष्ट होइ जावेंगे ॥ जेते कछु तुच्छ का भाव पदार्थ भा
सते हैं ॥ उत्कृष्ट अरु निकृष्ट सर्व नास होवेंगे ॥ सर्व माया मात्र है रहणा किसी नहीं ॥ ऐसे विचार॰
कर के इन के भाव अभाव विषे हर्ष अरु शोक मत करो ॥ अरु समता भाव कों प्राप्त होवो ॥ हे रामजी तुम
है असत वत भासता है ॥ अरु जो असत है सो सत की न्याई परभासता है ॥ इन कों यथार्थ विचार
कर सम स्वरूप आत्म पद विषे इस्थित होवो ॥ अरु असत रूपी जगत की आस्था कों त्याग करो ॥ अ
रु समता भाव कों ग्रहण करो ॥ इस लोक विषे जो अविवेक मार्ग कर विचरता है ॥ सो मुक्त नहीं हो
ता ॥ इस प्रकार करी कोई जीव संसार समुद्र विषे डूबे है ॥ अरु जो विवेक विषे प्रवर्तता है सो मु
क्त होता है ॥ हे रामजी जिस का मन नष्ट होइ गया है ॥ तिस कों तू मुक्त रूप जाण ॥ अरु जिस का म
न नष्ट नहीं भया ॥ सो बंधन विषे है ॥ ताते जिस कों सर्व दुःख हरने मुक्त की इच्छा होवे सो आत्म वि
चार करे ॥ तिस कर सर्व दुःख नष्ट होइ जावेगा ॥ हे रामजी दुःख का जो मूल है ॥ सो चित है जब लग
चित है तब लग दुःख है ॥ जब चित नष्ट भया तब दुःख मिट जाते हैं ॥ हे रामजी जब आत्म ज्ञान होता
है तब चित का अभाव हो जाता है ॥ अरु सर्व दुःख मिट जाते हैं ॥ राग इच्छा दुःख भय सर्व मिट जाते हैं ॥
केवल शांत रूप हो जाता है ॥ जनकादिक जो जीवन्मुक्त भए हैं सो वीतराग निरसंग होइ कर
महाबुद्धिवान बड़े व्यवहार भी करते रहे हैं ॥ पर सदा सीतल चित रहे हैं ॥ ताते तुम भी विवेक क
र के चित कों लीन करो ॥ [illegible] ॥ अरु सर्व विषे सम होइ कर जीवन्मुक्त
होइ कर विचरो ॥ हे रामजी मुक्त भी द्वि प्रकार की है ॥ एक जीवन्मुक्त है एक विदेह मुक्त है ॥ जो
पुरुष पदार्थों विषे असंसक्त है ॥ अरु मन एकांत भाव कों प्राप्त भया है ॥ सो पुरुष मुक्त कही
ते हैं ॥ अरु जिस पुरुष का संसार के पदार्थों विषे ज्ञान कर स्नेह नष्ट होइ गया है ॥ जो पुरुष सर्व भाव अ
भी कर्ता है दृष्ट आवता है तो भी सीतल चित है ॥ सो जीवन्मुक्त कहीता है ॥ अरु शरीरादिक की क्रिया कों उन
भाव पदार्थों कों त्याग कर केवल अद्वैत पद कों प्राप्त भया है ॥ अरु जो त्रितीय जिस का मन इन पदार्थों विषे निवर्तन न॰
ही दृष्ट आवती सो विदेह मुक्त कहीता है ॥ अरु जब यत्न कर सर्व कृत यत्न करता है ॥ तब
ही भया ॥ सो बंधवान कहीता है ॥ मुक्त के अर्थ यत्न भी करता है ॥ तिस कों गोपद भी दुस्तर है
दुस्तर भी सुगम होजाता है ॥ अरु जो फल ते रहित यत्न करता है तिस कों दुस्तर जगत समुद्र भी गो
जाता है ॥ हे रामजी जिनों आत्मा कर आत्म विचार कीया है ॥ अरु अज्ञानी कों जो कोऊ इष्ट अनि
पद वत होता है ॥ अरु अज्ञानी कों गोपद भी दुस्तर होजाता है ॥ अरु ज्ञानवानों कों
ष्ट अल्प भी आन प्राप्त होता है ॥ तिस विषे डूब जाते हैं ॥ निकस नहीं सकते ॥ अरु तिस
अत्यंत विभूति ऐश्वर्य आन प्राप्त होवे ॥ अथवा तिस का विपर्यय कष्ट अभाव होजावे तो भी तिस
कर सागर हर्ष विषे नहीं डूबता ॥ हे रामजी जिस कों कछु प्राप्त होता है ॥ सो अपने प्रयत्न के बल॰
कर होता है ॥ जो कोऊ प्रधान भया है सो प्रयत्न रूपी वृक्ष के फल कर भया है ॥ आत्म पद की प्रा
प्ति होती है ॥ सो भी प्रयत्न रूप वृक्ष का फल है ॥ अरु वर प्रयत्न का त्याग करो ॥ ताते आत्म पद पाव
का प्रयत्न करो ॥ ॥ ॥ इति श्री उपशम प्रकरणे मुक्तामुक्त विचारो नाम सर्गः ॥ वसिष्ठ उवाच ॥ हे राम
जी जेते कछु जगत जाल है ॥ सो सर्व आत्मा ब्रह्म का आभास रूप है ॥ अज्ञान कर के इस्थिरता कों प्राप्त
भए हैं ॥ विवेक कर के शांत होजाते हैं ॥ ब्रह्म रूपी जो समुद्र है ॥ तिस विषे जगत रूपी आवर्त पड़े हुए
ते हैं ॥ तिन की संख्या करणे कों कोऊ समर्थ नहीं ॥ हे रामजी असम्यक दर्शन ही जगत की इस्थि
त का कारण है ॥ अरु सम्यक दर्शन कर के शांत हो जाता है ॥ जैसे मारूथल विषे असम्यक दर्शन
कर जल भासता है ॥ अरु सम्यक दर्शन कर जल का अभाव होजाता है ॥ हे रामजी संसार रूपी जो
समुद्र है सो आत्म अभियास विना तरणा कठन है ॥ सो दुःख रूपी जल कर पूर्ण है ॥ अरु मरण रूपी
आवर्त हैं ॥ अरु बड़वा अग्नि इस के यौवन विषे नरकों के समान है ॥ तृष्णा रूपी कपट तिस विषे प
रता है ॥ इंद्रियां अरु मन रूपी तरंग उठते हैं ॥ जन्म मरण रूप आवर्त चक्र है ॥ इन कों जो तरजाते हैं
सो पुरुष है ॥ अरु इस की या जो आस हुलागतीयां है ॥ ते गज जिन के वाम लोवन हैं ॥ अरु दंत मोतीयों की
न्याई हैं ॥ अरु गो मद नरीया वत है ॥ इत्यादिक जो मैद अंग हैं ॥ सो अंतड पड के देषणे हारे हैं ॥ बडवा

आगानवतत्यागकरतेहैं॥ जोइनकोंतरजानेहैवहीपुरुषहै॥ हेरामजीजोजनअरमलाहकेवि
द्यमानइसभयानकसमुद्रकोंनहीतरेतिसकोंधिक्कारहै॥ जनजनअरमलाहकवनहै सोआव
णकरुमानुषदेहविषेविचारसंयुक्तहुइहै॥ सोजनतानहै॥ अरसंतजनसंतजोअरविवेकीसंतज
नमलाहहै॥ इनकोंपाइकरजोउसनरसंसारकोंनहीतरतेतिनकोंधिक्कार॥ ऐसेअपारसं
सारसमुद्रकोंग्रहणकरकेजोपुरुषलेवियाहै तिसकोपुर्षकहीताहै॥ हेरामजीजिसपुरुष
आत्मविचारविषेबुधकोंलगायाहै॥ सोतरजाताहै॥ अरअध्यानहीतरसकता॥ जिनकोआत्मप
दकाअभ्यासहोताहै॥ सोतरणेकोंसमरथहोतेहै॥ हेरामजीयहजोविषयोकेभोगहै॥ सोवि
षरूपहैजोइनकोंसेवेंगोसोनष्टहोजावेगा॥ परजिसकोज्ञानप्रापभयाहै॥ तिसकोंयह
भीदुषनदेसकैगे॥ जेसेगारुडमंत्रपढणेवालेकोंसर्पनहीदुषदेसक्ता॥ तैसेज्ञानीकोंविष
यदुषनहीदेसकते॥ जिसकाप्राणामसड्भयाहैसोविभ्रांतहै॥ वलवीरजनेजयद्वितीय
हद्वितीयमेंकेसाक्षात्कारभएवफआवतेहै॥ जेसेवसंतकेआगमनतेरसफूलफलस
वैसंवृद्धहोआवतेहै॥ हेरामजीजोज्ञानकाधर्मलक्ष्मीप्रापभईसोपूरनअर्थसुतनरूपहै शीत
तलहैसुंधरहैसमहै॥ प्रकासरूपहै परमानंदरूपहै॥ ऐसीलक्ष्मीकोंपाइकरविदवेद इ॰
स्थितहोइरहतेहै॥ ॥ इतिश्रीउपशमप्रकरणेसंसारसागरयोपमासप्रतपादनेनामसर्गः
रामोवाच॥ हेमुनीश्वरसंमतलक्षणवड्समुआकोंकहो॥ जिनकोज्ञानकाचमत्कारभया
हैतिनकोउदारवृत्तकेहैं॥ ऐसाकहणाहै॥ जोतुम्हारेउदारवचनसुणनेसपहोवै॥ वशिष्ठोवा
च॥ हेरामजीजीवनमुक्तकालक्षणोमेंबहुतप्रकारवर्णआगेकहाहै॥ बहुडभीअवणक
रहैमहात्मावोज्ञानवानसंसारकोंसुषुप्तकीन्याईजाणताहै॥ अरसर्वहीप्रपंचउसकोंपा
नष्टहोगयाहै॥ अरसर्वजगतकोंआत्मरूपकरदेषताहै॥ केवलभावकोंप्रापहोताहै॥ अ
रसंसारकीडोरतेसुषुप्तहोजाताहै॥ अरआत्मानंदविषेतृप्तहोताहै॥ किसीकोकछुदेता
हैपरअपणेजाणकरकिसीकोनहीदेता॥ अरलोकदृष्टिकरयतपरसतोसायग्रहण
करताहैपरअपणीदृष्टिकरकछुनहीग्रहणकरता॥ ऐसाजोसमआत्मदर्शीज्ञानवा
नउदासआत्माहै॥ सोयंत्रीकीपुतलीवत्चेष्टाकरताहै॥ जेसेयंत्रीकीयापुतलीयानिर
अभिमानचेष्टाकरतीयाहै॥ तैसेज्ञानवाननिरअभिमानचेष्टाकरतेहै॥ देषताहै हस
ताहैदेताहैलेताहै॥ अरअंतरतेसदाअकर्तापणेतलपाणीवतरहताहै॥ भविषतकाकछु
विचारनहीकरता॥ अरवीतीकीभीकछुचितवणानहीकरता॥ अरवर्तमानविषेइच्छा
तनहीकर्ता॥ सर्वकार्योविषेप्रकर्तोहैसंसारकीओरतेशयनकरहाहै॥ अरआत्मा
कीओरजाग्रतभयाहै॥ अंतरतेसर्वकोंत्यागकीयाहै वाह्यसर्वकार्योकोंपडाकरता
है॥ अरअंतरकिसीपदार्थकीइच्छानही॥ वाह्यप्रकृतआचारजैसेप्रापप्रापहोवैतैसेकर
ताहै॥ रागद्वेषकिसीविषेनहीकरता॥ सोसुषभोगविषेदिशापवनकीन्याईस्थित
है॥ भ्रमकोंत्यागकरसर्वकर्मोकोंपडाकरताहै॥ उदासीनकीन्याईकर्मोकोंकरता॰
है॥ नकिसीकीवाछाकरताहैनकिसीविषेद्वेषवानहोताहै॥ वाह्यतेसर्वकछुकर्तादृष्ट
आवताहै॥ परअंतरतेसदाअसंगहै॥ हेरामजीवहपुर्षभोगताविषभोगताहै॥ अरमहो
विषमहोवतस्थितहै॥ वालकोंविषेवालकोंवतस्थितहै॥ वृद्धविषेवृद्धवतस्थितहै
वीरोविषेवीर्यवानवतस्थितहै॥ सुषीओविषेसुषीहैधीजवानहै॥ अरसदापुनकर्ता
बुद्धवानहै॥ अरसदाप्रसंनमधुरवाणीसंयुक्तहै अरअंतरतेसदाप्रिमहै॥ दीनताति
सकीनिवर्तहोइगईहै॥ अरसर्वसाधुकोमलस्वभावहै॥ अरवेदमाकीन्याईसीतलता
करपूर्णहै॥ सभकर्मकरणेविषेकछुअर्थनही॥ नअसंभविषेकछुपायहै॥ अग्रहणविषेन
ग्रहणहैनत्यागविषेत्यागहै॥ नवंधहैनमोक्षहै॥ नआकासविषेकाजहैनपातालविषे
कार्यहै॥ यथावस्तुयथार्थआत्माहीकोंदेषताहै॥ द्वैतभावउसकोंकछुनहीफुरती॥ वंध
अरमोक्षकेनिमितकछुवासनानही॥ सर्वसंदेहसंमकजालनेकरजातेरहेहै॥ जेसेपहीले

मुक्तहुयापंषीउडकरआकासविषेजाताहै॥ तैसेशंकातेरहतभयाचित उनकाआत्माकास॰
विषेप्रापहोताहै॥ हेरामजीजिसपुरुषकाचित्तसंसारभ्रमतेमुक्तहुयाहै॥ परमसमसअ
लभावविषेइस्थितभयाहै॥ तिसकोइष्टविषेकछुरागनहीहोता॥ अरअनिष्टविषेद्वेषनही
होता॥ आकासवतसर्वविषेसमरहताहै॥ जेसेपिंजरेविषेवालकअंतरिअभिमानप
डाअंगोकोंहलावताहै॥ तैसेज्ञानीकीचेष्टानिरअभिमानपडीहोतीहै॥ जेसेमदरापान
करलेहाराहुन्मनहोजाताहै॥ वाह्यक्रियाकीकछुसंभालनहीहोती॥ तैसेआत्मानंदविषे
ज्ञानीचूरमहोजाताहै॥ द्वैतकीसंभालतिसकोंकछुनहीरहती॥ हेयअरउपादेयवुद्धिते
रहतहोताहै॥ हेरामजीसर्वकोंसर्वप्रकारग्रहणकरताहै अरत्यागभीकरताहै॥ परअंत
रतेग्रहणत्यागकछुनहीफुरता॥ तैसेवालककोंग्रहणत्यागकीवुधकछुनहीहोती॥ तै
सेज्ञानीकोंनहीहोती॥ सर्वकार्योविषेउसकोंरागद्वेषकछुनहीफुरता॥ जगतकेपदार्थोंको
नसनजाणकरग्रहणकरताहैनत्यागकरताहै॥ सर्वविषेअनुस्यूतआत्मतत्त्वदेषताहै॥ नइष्टवि
षेसुषवुधकरताहैनअनिष्टविषेद्वेषवुद्धकरताहै॥ हेरामजीस्वरूपसीतलहोजावे अरचंद्रमाउ
ष्णहोजावे॥ अगनअपरकोंथावेतोभीज्ञानवानकोंकछुआश्चर्यनहीभासता॥ जोवहजाणताहै
जोयहसर्वचिदात्माकीशक्तिपडीयाफुरतीयाहै॥ नकिसीपरदयाकरताहै॥ नअदयाकरताहै
नलज्जाकरताहै॥ नअलज्जाकोंधारताहै॥ नदीनहोताहैनउदारहोताहै॥ नसुषीहैनदुषीहै
नहर्षहै नशोकहै॥ सर्वविकारोतेरहतस्वछअपणेआपविषेस्थितहै॥ जेसेशीतकालका
आकाशनिर्मलहोताहै॥ तैसेनिरमलभावविषेस्थितहै॥ जेसेआकाशविषेअंकुरउदयनही
होता॥ तैसेउसविषेरागद्वेषनहीउदेहोता॥ हेरामजीऐसाजोपुरुषहैसोसवकोंकैसेग्रहण
करे॥ अरइसकोंकैसेग्रहणकरे उसकोंजगतजालऐसेभासतेहै जेसेजलविषेतरंगहोतेहै
हेरामजीइसप्रकारतुमभीजाणकरअपणेस्वभावविषेस्थितहोवो॥ हेरामजीजैसेस्वप्नविषेप
र्वतमेघकरस्वप्नसृष्टिफुरआवतीहै॥ अरक्षणविषेवहिनष्टहोजातीहै॥ अरवहफुरआव
तीहै॥ तैसेजाग्रतविषेउपजतीहै अरलीनहोजातीहै॥ जेतेकछुइच्छाअनिच्छासुषदुषप
कमोहआदिकविकारहै॥ सोसर्वमनविषेफुरतेहै॥ जहांमनहैतहांविकारभीहोतेहै॥ जेसे
जलसमुद्रहोताहै तहांतरंगभीहोताहै॥ तैसेजहांमनहोताहै॥ तांविकारभीहोतेहै॥ अरजे
हांचितकाअभावहै॥ तहांविकारोकाभीअभावहै॥ जिनकाचितज्ञानरूपीअगनकरनिर्मल
भयाहै॥ तिनविषेविकारनहीरहते॥ जबलगचितपडाफुरताहै॥ तबलगजगतभ्रमहोताहै॥
जबविचाररूपीसूर्यकेतेजकरमनरूपीवर्फकापुतलागलगया॥ तबआनंदभया॥ दुषदृष
कीदिशांसांतहोजातीहै॥ जबसुषकाअभावभयातबग्रहणअरत्यागभीमिटजातेहै॥ जबसु
दरसुषमिटेतवहीपसतअनीपसतजोहैवांछितअरअवांछितसोभीनष्टहोजातेहै॥ जबसुषदुः
षमिटेतवहीपसतअनीपसतजोहैवांछितअरअवांछितसोभीनष्टहोजातेहै॥ जबयहभीन
ष्टभएतवसुभअरअसुभभीनहीरहते॥ जबसुभअसुभनरहे तबरमणीकअरअरमणीकभी
नष्टहोजातेहै॥ अरभोगोकीइच्छाभीनष्टहोजातीहै॥ जबभोगोकीइच्छामिटीतबमनभीनि
रामपदविषेजाइलीनहोताहै॥ हेरामजीजवइसप्रकारमनसंयुक्तमननष्टभया॥ तबमनवि
षेजोहै संसारकेसंकल्पविकल्पकोकहारहे॥ जेसेतिलोकेजलणेतेतेलनहीरहता॥ तै
सेमनकेजलनेहूपसंकल्पविकल्पनहीरहते॥ केवलशांतआत्मपदहीशेषरहताहै॥ जेसेसमुद्र
चलनेसेक्षोभमिटेतेषीरसमुद्रशांतवानभया॥ तैसेचितशांतहोताहै॥ तातेहेरामजीभाववि
षेअभावकीदृढभावनाकरो॥ अरस्वरूपकाअभ्यासकरो॥ जेसेसरतकालकाआकासनि
लहोताहै॥ तैसेकल्पनाकोंत्यागकरमहात्मापुरुषनिर्मलहोताहै॥ कालयतातेरहतनि॰
तत्यमहोताहै॥ ॥ इतिश्रीउपशमप्रकरणेजीवनमुक्तव्यवस्थावर्णनंनामसर्गः॥ वशिष्ठो
वाच॥ हेरामजीजेसेजलविषेद्रवताकरकेचक्रहोइभासतेहै॥ सोअसतहीसतवतहोइभा

सते है॥ जैसे चित्तके फुरणेकर जगत भ्रम सत्य होकर भासता है॥ जैसे नेत्र दूषण करके फुरणे
कर जगत भ्रम नहीं सत् तबलग होकर भासता है॥ जैसे नेत्र दूषण कर आकाश विषे मोरके पंखवत् तर-
वरे मुक्तमाला भासते हैं॥ तैसे चित्तके फुरणे कर जगत भासता है॥ जैसे बादलों के धावणे ते चंद्र-
मा धावता दृष्ट आवता है॥ तैसे चित्तके फुरणे कर असत्य ही जगत सत्यवत् होकर भासता है॥ रामोवा-
च॥ हे भगवन् जिस कर चित्त फुरता है अरु जिस कर अफुर होता है सो प्रकार कहो जो तिस-
का उपाय करों॥ वसिष्ठोवाच॥ हे रामजी जैसे बरफ विषे शीतलता होती है अरु तिलों विषे तेल
होता है अरु जैसे पुष्पों विषे सुगंधता होती है॥ जैसे अग्नि विषे उष्णता होती है॥ जैसे अग्नि विषे
उष्णता होती है॥ तैसे चित्त विषे फुरना है॥ चित्त अरु फुरणा अभिन्न है॥ एक वस्तु है तब उभय विषे
एक नष्ट होवे तब दोनों नाश हो जावें॥ जैसे शीत अरु श्वेतता नष्ट हुए बरफ नष्ट हो जाती है॥ तैसे
एकके नाश हुए दोनों नाश हो जाते हैं॥ चित्त नाशके हैं क्रम है योग अरु ज्ञान॥ योग कहीए प्राण का
निरोध करणा अरु ज्ञान कहीए सम्यक विचारणा॥ इन दोनों उपायों कर मन नाश हो जाता है॥
राम उवाच॥ हे भगवन् जगत के भ्रमको हिरणहार किसको कहते हैं॥ अरु वह समरूप आदर्श कुवन
है जिस विषे सर्व पदार्थ प्रतिबिंबत होते हैं॥ सो कृपा कर कहो॥ वसिष्ठोवाच॥ हे रामजी जग-
तके भ्रमको हिरते हैं॥ एक तो दृढ ग्रहण करणे योग है॥ एक त्यागणे योग है॥ तिनका भे-
द श्रवण करो॥ देह विषे तो नाम प्रयंत दस प्राण हैं सो त्यागणे योग है॥ प्रछिन्न भाव करके
अस्थित है॥ अरु तिस विषे जो संवित मात्र ज्ञान स्वरूप अनुभव करके प्रकाशता है सो ग्रहण
करणे योग है मनुष्यों को सो अंतर बाह्य आप ही है॥ अरु वास्तव अंतर बाह्य ते भी रहते हैं॥ सो
प्रधान विद्या है॥ अरु सर्व पदार्थों का प्रतिबिंब धारणहारा आदर्श है॥ वह सर्व जीवों का संवित
हिरदय है॥ नदी एकके अवयव का नाम हृदा जैसे जैसे जल विषे एक प्रमाण पाषाण डूबा होवे
सो तो जलन्त ही है जाता॥ तैसे संवित मात्र के निकट से चित्त मात्र तो नहीं होता॥ तातें बल क-
रके संवित मात्र की ओर चित्त को लगावो॥ तब प्राण स्पंद भी रोका जावेगा॥ हे रामजी प्र-
माणों का रोकणा मैं तुमको कहता हूं॥ अरु अवर गुरों विषे भी अनेक प्रकार करके कहा है
जिस जिस प्रकार गुरों के मुख ते किसी श्रवण कीया है तिसी प्रकार अभ्यास करे तब प्राणों
का निरोध होता है॥ गुरों के उपदेस ते अन्यथा करे तब सिद्ध नहीं होता॥ तिनको अभ्यास
करके निरोध सिध भया है॥ सो कल्याण मूरत है अरु वह कल्याण मूरतें नहीं होते॥ हे रामजी
अभ्यास करके प्राण शम होता है॥ अरु वैराग्य की दृढता कर के वासना शम होता है॥ अर्थ
यह जो वासना रोकीती है॥ जब दृढ अभ्यास करे तब चित्त अचित्त हो जाता है॥ हे रामजी स्प-
टीके हृदय सम्यक प्रबल प्रयत्न तो वासना जाती है॥ तिसका जब वारंवार अभ्यास करीता है॥ तब प्राण
क्षीण हो जाते हैं॥ अरु षट वरस लग करके तात्काल निर्विकल्प माई कर जो अभ्यास करे तो भी प्रा-
ण रोके जाते हैं॥ इस प्रकार के अभ्यास कर चित्त की आकुलता जाती रहती है॥ अरु परम उपशम
की प्राप्ति होती है॥ तब यह पुरुष आत्माराम होता है॥ सर्व शोक मिट जाते हैं॥ आनंद की प्राप्त हो-
ती है॥ तातें तुम भी अभ्यास करो॥ अभ्यास कर के प्राण स्पंद रोक जावेगा॥ अरु मन परमपद
को प्राप्त होवेगा॥ तिसके पाछे जो पद है सो निर्वाणरूप है॥ हे रामजी जब प्राण स्पंद मिट जाता
है॥ तब चित्त इस्थित होता है॥ जब चित्त इस्थित भया तब वासना नष्ट हो जाती है॥ जब वासना न-
ष्ट हुई तब मोक्ष की प्राप्त होती है॥ जबलग चित्त वासना कल्पे दिया है॥ तबलग जन्म मरणों
को देखता है॥ जब मन वासना ते रहत होता है तब मोक्ष होता है॥ हे रामजी प्राण वायु को रोक-
कर वासना ते रहत होकर यथा इच्छा होवे तैसे ही विचरो॥ तुमको बंधन कछु न होवेगा॥ ज-
ब प्राण फुरते हैं तब मन उदय होता है॥ जब मन उदय भया तब संसार उदय होता है॥ जब म-
न उदय भया तब संसार उदय होता है॥ जब मन क्षीण भया तब संसार भ्रम मिट जाता है॥ हे रा-
मजी जब मन सो कल्पना मिटती है॥ तब अद्वैत पद प्राप्त होता है॥ जिसते यह सर्व है॥ अरु

जो सर्व है॥ अरु जिसते न सर्व है॥ अरु जो न सर्व है॥ सो निर्गुण तत्व है॥ सो सर्व कल्पना के त्यागते प्रा-
प्त होता है॥ तिसको उपमा किसकी दीजे॥ अनंत वस्तु तो दूसरी कोऊ नहीं॥ जेते कछु स्वाद हैं तिनको
स्वाद करता वही है॥ अरु जेते कछु प्रकाश हैं तिनका प्रकाश करता वही है॥ सर्व कलना का क-
लनारूप वही है॥ जेते कछु पदार्थ हैं तिन सबका अधिष्ठानरूप वही है॥ ऐसा जो चैतन्य है
सो चित्तरूपी आरसी के दूर हुए प्राप्त होता है॥ अरु सर्व पदार्थों की सीमा वही है॥ तिस विषे जुड़वा
नत्व इस्थित होता है॥ तब जीवन्मुक्त होता है॥ अरु सर्व इच्छा नष्ट होती है॥ अरु हंता आदिक क-
लपणा मिट जाती है॥ तब सर्व व्यवहार विषे समरस रहता है॥ ऐसा जो सुजन मन है सो उपशम को प्राप्त हो-
ता है॥ इति श्री उपशम प्रकरणे जीवन्मुक्त ज्ञान तत्व वर्णनं नाम सर्गः॥ ॥ रामोवाच॥ हे प्रभो
योग की उक्ति तो तुमने कही जिसकर चित्त उपशम होता है॥ अब सम्यक ज्ञान का लक्षण भी कृपा क-
रके कहो॥ वसिष्ठोवाच॥ हे रामजी यह जो निश्चय है आत्मा निरूप है॥ सर्वथा प्रकाशरूप है॥ सर्व-
प्रमात्मा तत्व है॥ इस निश्चय को सम्यक ज्ञान बुद्धिमान कहते हैं॥ घटपटादिक सर्व आत्मरूप है॥ ऐ-
सी जो दृष्टि है सो सम्यक दृष्टि है॥ सर्व आत्मा है नित्य शुद्ध है॥ परमानंद स्वरूप है॥ सदा अपने आप विषे
इस्थित है॥ ऐसा निश्चय सम्यक ज्ञान है॥ अरु जो रस ने रहते हैं सो दृष्ट है असम्यक ज्ञान है॥ हे
रामजी सम्यक दरसी को मोक्ष है॥ अरु असम्यक दरसी को बंध है॥ तिसको आत्मा मात्र ही भासता
है॥ अरु सम्यक दरसी को सर्वात्मा ही भासता है॥ जैसे जेवरी विषे असम्यक दरसी को सर्प भा-
सता है॥ अरु सम्यक दरसी को जेवरी ही भासती है॥ सर्व संवेदन कल्पना ते रहत शुद्ध संवेदन प्रमा-
त्मा है॥ जिसको तो जाणता है सो परमात्मा को त्याग नहीं करता॥ इसते रचना विहद कहते हैं॥ हे
रामजी आत्म तत्व सदा आपणे विषे इस्थित है॥ तिस विषे द्वैत कल्पना कोऊ नहीं॥ ऐसे जो य-
थाभूत दरसी है सर्वात्मा देखते हैं भावाभाव बंध मोक्ष कोऊ नहीं॥ नयक देन देते हैं अरु मोक्ष का कारण कहीए
परम आपविषे इस्थित है॥ जो सर्व ही चिदाकाश है तो बंध का कारण कहीए॥ अरु मोक्ष का कारण कहीए
ऐसा जिनको ज्ञान है तिनको काष्ठ पाषाण ब्रह्मा ते आदि ची प्रयंत सम सर्व भासता है॥ अ-
ल्पमात्र भी भेद नहीं भासता॥ कल्पना के सन्मुख कैसे होवे॥ हे रामजी वस्तु ते आदर अंतेजो
अनत्व पदार्थ होते हैं तो भी आत्मसत्ता के करके आत्मसत्ता सिद्ध है अर्थ यह जो पदार्थ होते हैं
तो भी आत्मसत्ता में घर रहती है॥ जैसे तिसी प्रकार आत्म अनुभव सत्ता जगत रूप
हो होते हैं॥ अरु पदार्थ का अभाव होता है॥ तो भी आत्मसत्ता बनी रहती है॥ वही अनुभव सत्ता जगतरूप
होवो॥ जो अवनाशी अनुभव तत्व है॥ तिस विषे इस्थित होवो॥ वही अनुभव सत्ता जगतरूप होकर भा-
सती है॥ जरा मरण आदिक जो नाना प्रकार के विकार अवस्था रूप होकर भा-
सते हैं॥ सो एक आत्म तत्व आपणे आप विषे फुरता है॥ जैसे जल विषे तरंग नाना प्रकार के भा-
सते हैं॥ सो एक जल ही रूप है इतर कछु नहीं॥ तैसे चित्त के फुरणे क-
प्रकार के नाना प्रकार देह होते हैं॥ सो एक आत्मरूप है इतर कछु नहीं॥ आत्मतत्व-
के आत्मा विषे नाना प्रकार के पदार्थ भासते हैं॥ तब कछु उदय नहीं होता॥ जो पु-
रुष आपणे आप विषे इस्थित है॥ तब तिस विषे इस्थित होता है॥ जैसे मेरु पर्वत कर के स्वरूप
रूप घट विचारवान है सो भोगों करके लाइमान नहीं होते॥ तिनको भोग ग्रास लेते
लायमान नहीं होता॥ अरु जो अज्ञानी है सो विचार ते रहत मूढ है॥ तिनको भोग ग्रास लेते
हैं॥ जैसे जलते रहत मीन को बगला ग्रास लेता है॥ अरु जिनको सर्वात्मा ही भासता है सो सम-
दृष्टि सब तें अलिप्त है वही सम्यक दर्शी पुरुष का ही लाभ है वही मनोरूप है॥ ॥ इति श्री उपशम प्रकरणे सम्यक ज्ञान ल-
क्षण वर्णनं नाम सर्गः॥ वसिष्ठोवाच॥ हे रामजी जो विवेकी पुरुष है सो निकट आई प्राप्त हो
भोगों विषे भी इच्छा नहीं करते॥ जैसे सुंदर कमलनी विचकी लिपी हुई निकट भी आई प्राप्त हो-
वे॥ तब भी भ्रमर उसकी इच्छा नहीं करता॥ काहेते जो अर्थ बुद्ध तिस विषे नहीं होता॥ हे रामजी
सुख दुःख की प्राप्त अरु निवर्त विषे इच्छा तबलग होती है जबलग देह अभिमान होता है॥ जब
देह अभिमान निवर्त होता है॥ तब कछु इच्छा नहीं होती॥ हे रामजी ममता करके इसको दु-
ख होता है॥ जो रूप को नेत्र देखते हैं॥ तिसको इष्ट मानकर रहते प्रसन्न होता है॥ अरु अनिष्ट मान

उ॰प्र
२९

करदेषकर्ता है॥ जैसे बलद भार वाहक चेष्टा कर्ता है॥ उसको लाह गोते का हर्ष शोक कछु नही॥ जि
सको उस विषे ममत्व होता है॥ वह लाह तोटे विषे हर्ष शोक करता है॥ तैसे ममत्व कर इंद्रियों विषे
हर्ष शोक वान होता है॥ जैसे गर्धव की व विषे द्वेष राजा के हमेरे नगर के मसल्लों का गर ध
वडूवा है॥ ऐसे ममत्व मान कर शोक करे॥ तैसे यह इंद्रियो विषे ममत्व कर के दुष पावता है॥ यह इं
द्रिया तो अपणे विषयो को ग्रहण करतीया है॥ तिन दु विषे जीव तपायमान होता है॥ सो आश्चर
ज है॥ अरु जिन विषयो की इच्छा करता है॥ सो षण विषे नष्ट हो जाते है॥ हे राम जी जो मारता विषे
वल ने किसी साथ सनेह हो जाता है॥ तिस के ममत्व प्यार कर दुष सेवता है॥ जो देह विषे मम
त्व करेगा तिस को दुष कछु न होवेगा॥ तिस्य य कर देवे ही गा॥ इह अर्थ है॥ इंद्रियो के विष्यो को अ
संभाव कर के ग्रहण करेगा॥ तो उनके नाश होणे कर यह भी नाश होवेगा॥ जिनने जो का विष
य रूप है॥ सो नेत्र रूप को साषी होइ कर ग्रहण करने है॥ अरु इह पे सामुष है॥ जो अवरो के धर्म
आप विषे मान लेता है॥ अरु तिन हवि षेत पायमान होता है॥ जैसे भ्रम दृष्टि कर के आकास
विषे मोर के पुछ वत निरवर भासते है॥ अरु द्वतीय वे इमारह ष्ट आवता है॥ तैसे मूर्ख लाकर
के इंद्रियों के धर्म आप विषे माने है॥ जैसे इंद्रीया साषी होइ कर विषयो को ग्रहण करती पा
है॥ तैसे चित भी अभिमान ते रहत साषी होइ कर विषयो को ग्रहण करे तब राग द्वेष कर त
पायमान होवे॥ जैसे जल विषे तरंग व बुदबुदे उठते दृष्ट आवते है॥ तैसे आत्मा विषे अहंकार आ
दिक फुरते दृष्ट आवते है॥ बहुर इंद्रिया अरु रूपादिक विषय फुर आवते है॥ अरु अधायक
र इन का संबंध होता है॥ अरु चित इन के साथ मिल कर व्याकुल होता है॥ अरु इंद्रिया रूप
अमन इनका परस्पर असंग है॥ तैसे मूर्ष परस्पर ता अरु मन विवत्र संगाभिन भिन है॥
तैसे यह भिन भिन है॥ अरु अज्ञान कर के मिश्रत भासते है॥ जैसे लाष कर के काष्ठ पाछुनी
का संयोग होता है॥ तैसे अज्ञान कर के रूप अवलोकन मनसकार का संयोग होता है॥ जे
व ज्ञान रूपी अगन साथ अज्ञान रूपी लाष जल जावे॥ तब परस्पर भिन भिन हो जाते है॥ बहुर कि
सी का दुष किसी को नही लागता॥ जैसे काष्ठ के टूकडों का संयोग लाष कर होता है॥ तैसे
अज्ञान कर विषय इंद्रीया मन का संयोग होता है॥ ज्ञान रूपी अगन कर वियोग होइ जाता है॥
वहुर इनही संयोग होता॥ जैसे भिंन भिंन मणको को सूत का तागा एक कर करता है॥ तैसे दे
ह इंद्रीया विषय मन को अज्ञान एक कर करता है॥ जब विचार कर के अज्ञान रूपी तागा टू
ट पडे तब भिंन भिंन होजाते है॥ बहुर एकत्र नही होते॥ हे राम जी जिन पुरषो को आत्म
विचार प्राप्त भया है॥ सो ऐसे विचारते है॥ जो हम को दुष देवणे हारा चित था॥ चित के नष्ट
भए आनंद भया॥ जैसे मंदर विषे दुष देवणे हारा पिशाच रहता है॥ तो मंदर ही दुष देता
पिशाच वहु दुष देता है॥ तैसे शरीर रूपी मंदर विषे दुष देवणे हारा चित है॥ हे चित तू के मि
ष्ट दुष जग को दीया था॥ अब मैं आप को जाण्या है॥ तै आद भी न कृपा॥ अंत भी त
ठ है॥ वर्तमान भी तैं मिथ्या जीवो को कष्ट दीया था॥ जैसे मिथ्या परछावा बालक को वे
ताल होइ कर कष्ट देता है॥ तैसे तैं मिथ्या जागत को दुष देता है॥ बड़ा आश्चर्य है अरे चितत
तब लग कष्ट देता है॥ जब लग आत्म स्वरूप को नही जाण्या॥ जब आत्म स्वरूप का ज्ञा
न भया तब तेरा कछु भी दृष्ट न आवेगा॥ तेरा माया मात्र है॥ अब तेरे ऊपर अथवा जारुमे अ
वल कर सो मोह न नही होता॥ तेरा मरह है अरु जड है सरन कहे॥ तेरा आकार तो अविचार
त सिद्ध है॥ अब मैं पूर्व ला स्वरूप पाया है॥ तो निमल नत रूप है आनंद रूप है॥ शावद है जो मूढ है
सो तक कर मोहत होते है॥ विचारवान मोहत नही होते॥ जैसे दीपक कर के अंधकार
दृष्ट नही आवता॥ तैसे ज्ञान करके तेरा नही दृष्ट आवता॥ हे मूढ चित तें वहु तकाल इस
देह रूपी गृह विषे रहा है॥ अरु तेंवेताल रूप है॥ जैसे अपवित्र स्थान विषे वेताल रहता
है॥ तहा मसाण आदिक स्थान होते है॥ तैसे सेन संग ते रहत जो देह रूपी गृह है॥ सो म

साण के समान है॥ महा अपवित्र है॥ तहा तेरे निवास का स्थान है॥ अरु जहा संतो का निवास हो
ता है॥ तहा तुम सारषे नही ठवर न पावते॥ सो अब मे देह रूपी गृह विषे शुभ ज्ञान संतोष आदिक
संत जन आइ स्थित भए है॥ अब तेरे निवास का स्थान नही॥ हे चित पिशाच तेरे रषवाला रूपी वि
शांतपणी अरु क्षमा संतोष आदिक गुण अपणे नाल ले कर चिरकाल पर्यंत विचरया था॥ अब विवेक
रूपी मंत्र कर के मैं तुझ को निकासया है॥ तब कल्याण हूया है॥ हे चित पिशाच तें अमा रूपी
मद्य पान कर के मत भया था॥ अरु चिरकाल पर्यंत नित करता था॥ सो अब विवेक रूपी मंत्र
कर तुझ को निकासया है॥ जब देह रूपी कंदरा शुद्ध हूई है॥ तब सत पुरुष आइ निवास के
रेगे॥ जैसे सिंघ कंदरा ते निकस जाता है॥ तब मुनीश्वर आइ निवास करते है॥ तैसे ही तुम्ह भा
व प्रवेश करेगा॥ हे चित मैने तुझ को विवेक रूपी मंत्र कर वस कीया है॥ वह दिषा अब तेरा का
या कुमद है॥ तब लग तें दुष देता था॥ जब लग विचार रूपी मंत्र मैंने न पाया था॥ अब तेरा कल्प क
छु नही चलता॥ जो मैं केवल आत्म भाव विषे स्थित हो॥ आगे भी मैं तुझ को जगावता था
अंग तेतें शाव रूप था॥ जैसे कछुवे मे रपट सोहं भाव को जगावता है॥ अरु आप कछु पावता है
अब मैं अपणे आत्म विचार रूपी मंत्र कर वश कीया है॥ तुझ को तत्व ज्ञान भया हो॥ ममता
अभिमान मेरा कछु नही॥ सो अहं अहंकार अब नष्ट होगया है॥ इनका कलंक भी न छूटेगा
या है॥ मैं कलंक तत्व नित विमल निर्विकल्प चेतन आत्मा हो॥ मेरा मुझ को नमस्कार है
न मेरे विषे कोऊ आसा है॥ न कर्म है न सेवा रहे न कर्ता रहे न भोग न्याय है न दे है॥ ऐसा निर्गु
ण रूप आत्मा हो॥ सो मेरा मुझ को नमस्कार है॥ न कोऊ आत्मा है न अनात्मा है॥ न अहं है
न तें है किसी शब्द का प्रवेश नही॥ ऐसा जो निराभास हो॥ सो मेरा मुझ को नमस्कार है॥ नि
रूप दोष का सरूप हो॥ अरु निर्मल आत्मा हो॥ अपणे आप विषे स्थित हो॥ ऐसा जो मैं आत्मा हो
सो मेरा मुझ को नमस्कार है॥ निर्विकार हो नित हो निराश हो॥ सर्व आकार अकार तो विषे अन
स्युत हो॥ ऐसा सर्वात्मा जो मैं हो॥ सो मेरा मुझ को नमस्कार है॥ समसे समते गत हो समपम हो॥ अप
णे सम भाव विषे स्थित हो॥ सो ऐसे अपणे आप को आपणी नमस्कार है॥ पृथ्वी पर्वत समं
द्र आकाश आदिक जगत मैं न ही॥ अरु मैं ही सर्व पदार्थ हो कर भासता हो॥ ऐसा अपणा आप
जो सर्वात्मा है सो अपणा आप को नमस्कार है॥ अब मैं सम भाव को प्राप्त भया हो॥ अरु मन न भा
व मुझ को निवर्त भया है॥ मेरे प्रकाश कर विश्व भासती है॥ अजर अमर आनंद हो॥ गुणातीत अ
द्वैत हो॥ ऐसे मुझ को मेरा नमस्कार है॥ ॥ इति श्री उपशम प्रकरणे उपदेश मन संबंध विचारो ना
मसर्गः॥ ॥ वसिष्ठ वाच॥ हे राम जी इस प्रकार विचार कर सर्व ते आत्मा को अस्त कर जाणते है॥ त
म भी इस विचार को आश्रय कर के आत्मपद को प्राप्त होवो॥ यह सर्व जगत आत्मा है॥ ऐसे ज
ण कर चित से जगत की ममता का त्याग करो॥ आप को जब ऐसा विचार होगा तब चित कहा है
वडा आश्चर्य है जो चित वस्तु रूपी देषा है ताथा॥ सो चित अविद्यक है॥ माया मय असत रूप
था॥ जैसे आकाश के पुष्प कल्पना मात्र है है नही॥ तैसे चित कल्पना मात्र है॥ अविचार कर दे
षा दिषाई देता है॥ विचारवान को चित असत भासता है॥ काहे ते जो अविचार ते सिध है॥ तै
से तैसे का परवे देते वालक जाणता है॥ तो तरके भय पच ले जाते है॥ अरु बुधवान को वलणा कास
ह भावना ही भासता॥ तैसे मूर्ख को चित सत भासता है॥ अरु विचारवान का चित नष्ट होजाता
है॥ जब मूढता मोह भ्रम शांत भया॥ तब चित कहा ही नही पाईता॥ जैसे वालक चक्र पर फिर
रता है॥ तो तिसको पर्वत आदिक पदार्थ भ्रमते दृष्ट आवते है॥ अरु जब वेग ठहर जाता है॥ त
व तिस को पर्वत आदिक पदार्थ अचल भासते है॥ तैसे चित के ठहरे ते है तक कछु न ही भासता
आगे मुझ को है तभासता था॥ सो चित के फुरणे कर नाना प्रकार की इच्छा उठती थी॥ अरु अब चित
के नष्ट हूए इन पदार्थो की भावना भी नष्ट हूई है॥ शरीरों के संबंध मेरे नष्ट भए॥ अब विगत ज्व
र स्थित हो॥ जैसे इस्थित होवे तैसे होवे हीणा को कनही॥ जब चित का चेतन भाव नष्ट हूया तब
इच्छादिक कारण कहा रहे॥ जैसे प्रकाश के नष्ट हूए वर्ण ज्ञान कछु न ही रहता॥ तैसे चित के नष्ट
भए इच्छादिक नही रहते॥ अब चित रूप तम भया तृष्णा नष्ट होगई॥ मोह का पिंजर टूट पड़ा अब

मैंनिरहंकारहोबोधवानहो सर्वजगतशांतरूपआत्माहै॥ अबरनानाजकछुनहीं॥ मैंनिर्भीस
होंआरमध्यअंततेरहतआनंदपदकोंप्राप्तभयाहों॥ सर्वबातनसेपरमऐसाजोआत्मतत्वअपना
आपहै तिसविषेमैंनिरंतरइस्थितहों॥ इनविचारोंसेंजाग्रतअरुसुषुप्तकोंकाटे॥ जबलगमैंदेहरू
पकोंजानताथा॥ तबलगमैंदुखवस्थाविषेरहविचरयाथा॥ अबमैंअभिनआकाशकोंप्राप्तभ
याहों॥ केवलपरब्रह्मचिदानंदपदकोंप्राप्तभयाहों किसकाविचारकरों॥ मायमेंआपहीचि
तरूपीवैतालकोंजगावताथा॥ अरआपहीडरपताथा॥ अबविचाररूपीमंत्रकरकेइसकों
नष्टकीयाहै॥ अरनिरागकरकेअपनेस्वरूपकोंप्राप्तभयाहों शांतआत्माअपनेआपविषेइ
स्थितहों॥ हेरामजीजिनकोंइहनिश्चयभयाहै॥ सोनिरद्वंद्वअरुरागद्वेषतेरहतहोइकरइस्थि
तभयाहै॥ प्राकृतकर्मकोंकरताहै॥ मानमदतेरहतआनंदरूपहोताहै॥ जैसेंमरनेंका
लकीरात्रविषेचंद्रमाहरणीमाकीकाअंमृतकरपूर्णहोताहै॥ तैसेंप्राकृतकार्यकोंकर्ता
तानवानशांतरूपइस्थितहोताहै॥ इति श्रीयुगवशमप्रकरणे विलासप्रतपादनंनामसर्गः
वसिष्ठोवाच॥ हेरामजीयहविचारसेवनेंविदुषनेंकीयाहै॥ सर्वमृतकोंउसविंध्याचलपर्व
तविषेकहाथा॥ इसविचारकरकेवहआत्मपदविषेइस्थितभयाहै॥ इसीहष्टकोंआश्रयक
रकेंआत्मविचारपरायणहोइकरतमरूपसेंतार॥ संसेंहकोंतरजावो॥ हेरामजीइसहू
परएकअवरधर्मसेंहष्टसुणो॥ सोहष्टपरमपदकोंप्राप्तकरणेहारीहै॥ जिसप्रकारमुनी
स्वरवीतहव्यविचारकरनिर्दसंकरइस्थितभयाहै॥ जैसेंश्रवणकरू वीतहव्यनामएकमु
नीश्वरमहातेजवानथा॥ सोसंसारआधियापहतेवैराग्यकरतभया॥ अरनानाप्रिगवर
होइकरपरवतकीकंदराविषेविचरणेलागा॥ जैसेंसूर्यसुमेरपर्वतकेचौफेरफिरताहै॥
तैसेंविचरताभया॥ अरसंसारकीक्रियाकोंदुखरूपविचारतभया॥ जोयहअंतभ्रमकोदेव
तोहोतीहै॥ ऐसेंजाणकरउद्वेगकोंप्राप्तभया॥ अरनिर्विकल्पसमाधकीइच्छाकर्तभया॥ अ
पणाजोकछुमवहारथा॥ तिसकात्यागकर्तभया॥ अरगौरजअपणीकुटीथीतिसकों
त्यागकरअवरस्थामपर्वतकीवगारइवैठा॥ जैसेंभ्रमरकमलपुष्पकोंत्यागकरनीलकमल
परजाइबैठे॥ तैसेंवहगौरकुटीकोंत्यागकरस्थामकुटीविषेजाइबैठा॥ नीचेकुशाविछा
ईतिसपरमृगछालाविछाइकरपदमआसनकरबैठा॥ जैसेंमेघजलकोंत्यागकरशुद्धअ
रमकइस्थितहोताहै॥ तैसेंअवरक्रियाकोंत्यागकरशांतचैतन्यमितशांतरूपइस्थितभया॥ इ
द्रियांकोंनीवेकीयाअरमुखकोंऊरधकीया॥ अरग्रीवाकोंसूधाकरकेइस्थितभया॥ जैसेंप
र्वतकीकंदराइस्थितहोतीहै॥ तैसेंइस्थितभया॥ अरइंद्रीयांकीव्रतकोरोकिभयावऊंद्रतन
कीव्रतकोभीरोकलीया॥ जैसेंसुमेरकीकंदराविषेआयाहूयासूर्यकाप्रकाशछपजाते
मिटजाताहै॥ तैसेंइंद्रीयाअरमनकीव्रतरोकीवासनामिटाई॥ अरअंतरतेविषयोंकी
चितवणाकात्यागकीया॥ इसप्रकारक्रमकरकेइस्थितभया॥ जबतननिकसजावैतब
कहै॥ अनआश्रयहै॥ मनमहाचंचलहैमहाचंचलहै॥ जोमैंइस्थिरकर्ताहोवरूइतनिक
सजाताहै॥ जैसेंसमुद्रकापानीजलकेतरंगविषेआयाहूयानहीं॥ तैसेंमनएकक्षणभीन
हीठहरता॥ सर्वदाविषयआदिकइंद्रीयोंकरकेसब्दस्पर्शरूपरसगंधकीओरधावताहै॥ जैसे
गेंदखेलनेकोंज्योंज्योंताडनाकरतीहै॥ त्योंत्योंउछलताहै॥ तैसेंइसमनकोंजिसओरतेषेंची
ताहै॥ तिसीओरदउडधावताहै॥ उन्मत्तकीन्याईहै॥ जबशब्दकीओरतेषेंचीताहैतबपढ
पोओरधावताहै॥ जबरूपकीओरतेषेंचीताहैतबरसकीओरजाताहै॥ जबरसकीओरते
षेंचीताहैतबगंधकीओरजाताहै॥ इसीप्रकारशब्दस्पर्शादिकहवाकोओरधावताहै॥ इ
स्थिरकदाचितनहींहोता॥ जैसेंचेनरकहूंकिसीठामपरजाइबैठताहैकबहूंकिसीठा
मपरजाइबैठताहै॥ इस्थिरकदाचितनहींहोता॥ इसकेग्रहणकरणेकोंपंचइस्थानहैं॥ जिन
मारगोंकरइंद्रियोंकोंग्रहणकरताहै॥ सोपंचस्थानइंद्रियाहै॥ अरमनचितवतहैकिसन
मितविषयांकीओरधावताहै॥ यहतोआपजडअसत्रूपहै॥ अरज्ञातमात्रहैतेइनकरशो
भनकोंकैसेंप्राप्तहोवेगा॥ इनविषेचलताकरकेइच्छाकरणीअनर्थकाकारणहै॥ ज्योंज्योंइनके

अर्थकोंस्मरणकरताहैत्योंत्योंदुखकेसमूहकोंप्राप्तहोवेगा॥ यहरूपादिकभीजडअसत्रूप
है॥ अरइंद्रीयाभीजडअसत्रूपहै अरतेंभीजडहै॥ जैसेंमृगतृष्णाकीनदीअसतरूपहै॥ तैसें
यहअसतरूपहै॥ हेमनयहतोसर्वअसाररूपहै॥ अरतेंभीइंद्रीयोंसंयुक्तजडहै॥ तेंकर्ताहै
काअतिमानकरताहै॥ सर्वकाकर्ताचिदानंदआत्माभगवानहै॥ अरसदासाषीरूपहै॥ तैसेंआत्मा
तेंमोहवानपाइमानहोताहै॥ जैसेंसूर्यसर्वकीक्रियाकोंकर्ताबनतासाषीभूतहै॥ तैसेंआ
त्माभीसाषीभूतहै अरजडसर्वभ्रांतमात्रहै॥ तैसेंजैसेंदर्पणविषेप्रतिबिंबभासताहै॥ जैसेंप्रकाशअरपातालकासंबंधनहींहोता॥ जै
स्याविषेजलतेअज्ञानकरअपनाआभासताहै॥ जैसेंसूर्यअरतमकासंबंधकछुनहीं॥ जैसेंसूर्य
सेंप्रत्यक्षअरवेतालकासंबंधकछुनहीं॥ तैसेंआत्माअरचितइंद्रीयादिकोंकासंबंधकछुनहीं॥ आत्मसत्ता
अरतमकासंबंधकछुनहीं॥ तैसेंआत्माअरचितइंद्रीयादिकोंकासंबंधकछुनहीं॥ आत्मात्याभासाषीभूतहै॥ तैसेंमृगतृ
माग्रहै॥ अरयहअसतरूपहै॥ इनकेसंगसंबंधकैसेंहोवै॥ आत्माआत्माभासाषीभूतहै॥ हेचितत्तेंतोमहामूढहै॥
सर्वजनोंतेन्यारासाषीभूतहै॥ तैसेंआत्मान्यारासाषीभूतइस्थितहै॥ हेचितत्तेंतोमहामूढहै॥
विषयरूपीचरणविषेतेंचलताहै॥ अरसर्वउपरनेमघणाकलोचिमकदाचितनहींहोता
अरविचारविनामिथ्याचेष्टाकरताहै॥ अरकुकरकीन्याईनीचचेष्टाकरताहै॥ तेरेसाथहम
कोंप्रयोजनकछुनहीं॥ हेमरतेंतोअहंअहंप्रलापकरताहै॥ तेरेसाथहमकोंप्रयोजन
कछुनहीं॥ हेमरतेंतोअहंअहंप्रलापकरताहै सोमिथ्याहै॥ अरतेरीवार्ताभीअसतअसत
रूपहै॥ अरजिनपदार्थोंकीतेंवासनाकरताहै॥ सोभीमृगतृष्णाकेजलवतअसतरूप
है॥ तेराअरआत्माकासंबंधकैसेंहोवै॥ आत्माचेतनरूपहैअरतेंमिथ्याजडरूपहै॥ अर
यहमैंनाणाहैजोजनममरणआदिकविकारअरजीवनभावतकहीमुक्तकोंप्राप्तकी
पायामैंतोकेवलचिदानंदपरमंवसतहूं॥ मिथ्याअहंकारकरकेमैंनेजीवनभावकोंप्राप्त
याथा॥ अरदेहमात्रआपकोंजानताथा॥ अबसंवितमात्रचितशुद्धहों॥ आदअंततेरह
तपरमानंदचिदाकाशअनंतआत्माहों॥ अबमैंस्वरूपविषेआपज्ञातपाहों॥ अरतेरास
दभावसफकोंकहूंनहींइघुआवना॥ हेमृढजिनजिनभोगोंकोंतेंसतअरसुखरूपजा
णकरधावताहै॥ सोप्रथमअविचारकरकेअमृतकीन्याईभासतेहैं॥ अरपाछेविष
कीन्याईहोतेहैं॥ भोगकरकेजलावतेहैं॥ अरआपकोंकर्ताभोगताभीतूंमिथ्यामानता
है॥ तूंभीकर्ताभोगतानहीं॥ अरइंद्रीयाभीभोगतानहीं॥ काहेतेजोजडहैंसोतमजडरूप
है॥ तोतमाराहमारासंगमिथ्याभावकैसेंहोवै॥ तोतेंजडअसतरूपहै॥ तोकर्ताभोगताकैसें
होवै॥ अरजोतूंचेतनसतरूपहै॥ तोभीतेरेविषेकर्तापनाभोगतापनानहींसंभ
वै॥ तेंमिथ्याहै॥ अरमैंप्रतक्षचेतनहों॥ तेकर्तापनाभोगतापनातेंमिथ्याअ
स्थापनकरताहै॥ तेंमिथ्याहैमनतूकोंसिद्धकरताहोतबहोताहै॥ तूंनिश्चयकरकेन
हुईहै॥ तूकोंकर्तापनाभोगतापनाकैसेंहोवै॥ जैसेंपाषाणकीशिलानिर्तकरणेकोसमर्थनहीं
होती॥ तैसेंतूकोंभीकर्तापनाकीसमर्थतानहींहोती॥ तेरेविषेजोकर्तापनाहैसोमेरीस
त्ताहै॥ जैसेंदात्रीजोघासतृणआदिकोंकोंकाटतीहै॥ सोकेवलआपतेनहींकाटती
है॥ सोभीआपतेनपुरुषकीशक्तिकरकाटतीहै॥ अरघडुगाकरकेजोहननक्रियाहोतीहै॥ सोभीआपतेन
हींहोती॥ पुरुषकीशक्तिकरहोतीहै॥ तैसेंतमारेविषेकर्तापनाभोगतापनामेरीशक्तिकरहो
तीहै॥ जैसेंपात्रकरकेजलपानकीयाजाताहै॥ पात्रनहींकरता॥ पात्रकरकेपुरुषपानकरताहै
तैसेंतमारेविषेमेरीशक्तिकरतापनाभोगतापनाकरतीहै॥ मेरीसत्ताकोंपाइकेतनमअपणेअ
पणेवेगविषेविचरतेहैं॥ जैसेंसूर्यकेप्रकाशसत्तापाइकरलोकअपणीअपणीचेष्टा
करतीहै॥ तैसेंमेरीसत्ताकरतमारीचेष्टाहोतीहै॥ अज्ञानकरकेतमजडजीवतेरचनेहो
अरज्ञानकरकेलीनहोजातेहो॥ जैसेंसूर्यकेतेजकरबर्फगलजातीहै॥ तातेंहेचितअब
मैंनिश्चयकीयाहै॥ तोतमअज्ञानतकरूपहोप्रमार्थतेनतोहैनइंद्रियाहैनविषयहै
जैसेंइंद्रजालकीबातीकेपदार्थभासतेहैं॥ सोसर्वमिथ्याहै॥ केवलविज्ञानस्वरूपमैंअप

उ.पु.
२९

सो आप विषे स्थित होय निरामय रहो। अजर अमर रहो। नित्य शुद्ध परमानंद स्वरूप रहो। अरु मैं दीना
नारूप होय करि भासता हो। परंतु कहा चिंतन है तिस भाव कौं नहीं प्राप्त हुआ। सदा अपणे आप विषे स्थि
त नहीं। जैसे जल विषे तरंग बुदबुदे आदिक दृष्टि आवते हैं सो जल ही है। तैसे सर्व पदार्थ मे
रे विषे भासते हैं। सो इतर कछु नहीं है। अंगते भी चिंतमात्र भाव कौं प्राप्त होउ। जब तें चिंतमा
त्र भाव कौं प्राप्त होवेगा। तब तेरा भिन्नभाव कछु न रहेगा। अरु शोक तेरे हृदय न होवेगा। आत्म
तत्त्व सर्वगत सर्व भाव विषे स्थित है। सर्वरूप है जब तिस कौं प्राप्त होवेगा तब सर्व कछु तुझ कौं
प्राप्त होवेगा। तुझ कौं दृष्टि है ते जगत है सर्व ब्रह्म ही है। ब्रह्म ही ऐसे भासता है। अरु वास्तव
अहंता आदिक कल्पना कोऊ नहीं है चित्त जो आत्मा है तेरा रूप है। तो सर्वगत आत्मा है। त
व आत्मा ते इतर कछु नहीं तो संताप तुझ कौं कछु न चाहिए। अरु जो आत्मा ज्ञान इस अस्त रूप
है। तो भी तेरा रहा। जो कछु परछिन्न जैसा तें पछान्या है सो मिथ्या भ्रम है। आत्म तत्त्व सर्व
विषे व्यापक रूप है इतर कछु नहीं। जो सर्व वही है तो भिन्न अहं अरु त्वं की कल्पना कैसे होवे। अ
रु असत सो कारज सिद्ध कछु नहीं होता। जैसे ससे के शृंग असत है। तिन सो कारज सिद्ध कछु
मारणे का नहीं होता। तैसे तम असत है। तम सो कछु तत्त्व भोगता तिस का कारज कैसे होवे। अ
रु जो तें कहै मैं सत अरु असत अरु जड़ चेतन के मध्य भाव हों जैसे तम अरु प्रकाश का मध्य भाव छाया
होती है। तौ सर्व रूप परमात्मा निरंजन के विद्यमान मध्य भाव की छाया का रूप रहती है। ताते का
रज भोगता बंधन फंसो नहीं होती। काहे ते जो जड़ है। जैसे काष्ठ की पुतरी होती है। तिस सो का
रज का करणे का आपते कछु नहीं होता। जब पुरुष कौं इच्छा करते है तब कार्य कौं करती है।
तैसे तम सो आपते कारज कछु नहीं होता। जब आत्म सत्ता तम सो मिलती है तब तम सो
कारज होता है। जैसे पुरुष स्वपन करता है। अरु स्वप्न के आद अहंता एक आप ही अनेक रूप
होती है। अरु अलिकृत अकसमात स्वप्न जगत तव रण पड़ता है। सो नाना प्रकार के पर्वत नदीआ
पदार्थ इस्थावर जंगम भासते है। अरु मन तत्पसम ऐसी टेढ़ी इंद्रीया मन कार्यकारी तब तप द्रा भ
सता है। सो है सूक्ष्म न कछु कार्य बणा है। सो बड़ तो सर्व आत्मा का स्वरूप है। इतर है न कछु न
ही। अरु बणा है तो ब्रह्म सत्ता अपणे साथ आप ही कल्लोल करती है। अरु कछु मानाद कोई दी
या द्वितीय वस्तु नहीं। जैसे स्वप्न जगत सर्व आत्म स्वरूप है। तैसे यह जगत परमात्मा का स्वरू
प है। तम कौं अध्यारोप अहंकार करके तपायमान होते हैं। अरु जो कहा ही अरु कछु उपकारि हुआ तो
ही अरु जो परमात्मा है। तिस करणे विषे कछु अर्थ नहीं। अकर्ण विषे कछु प्रयोजन नहीं। अ
रु सर्व का तौ वही है। अरु सदा अकर्ता है। जैसे आकाश पोल करके सर्व कौं विथना कर ते इस्थान
देता है। परंतु परं किसी संग नहीं करता। तैसे परमात्मा सर्व कौं सत्ता देवणहारा है। अरु अलेप है इ
च्छा मन ते लेको भोगा की इच्छा करके अर्थ तपायमान होता है। अरु जो ते आपणे निमित्त भो
गा की इच्छा करता है। सो तेरे तो नहीं है। असतरूप है। अरु देह भी जड़ असतरूप है भोग के सम्भो
गी है। अरु जो परमात्मा के निमित्त इच्छा करता है। तो परमात्मा सदा तृप्त है। द्वितीय ते रहत एक अ
द्वैत प्रकाश रूप अपणे आप विषे स्थित है तिस कौं किस की चिंता है। ताते सर्व कल्पना कौं
त्याग करके आत्मपद विषे स्थित हो। जहां सर्व कलेस शांत हो जाते हैं। अरु जो कहै परमात्मा सं
ग तेरा कर्त्तव्य भोगादिक का संबंध है तो संबंध भी नहीं बणता। जैसे पृथ्वी अरु पाषाण का
संबंध नहीं होता। तैसे परमात्मा साथ तेरा संबंध नहीं होता। काहे ते जो समान ताथ कर्ण द्रव्य का
संबंध होता है। जैसे जल मृतका का संबंध होता है। अरु जैसे पृथ्वी विषे चंद्रमा की सत्ता प्राप्त
होती है। अरु जैसे रत्न की तम रत्न करि शिला नयन जाती है। अरु जैसे बीज अरु अंकुर का संबंध होता
है। जैसे पिता पुत्र का संबंध होता है। सो द्रव्य अरु गुण का संबंध होता है। जो आकार से अ
गत है वस्तु तिस का संबंध बणता है। जो निराकार निरगुण वस्तु है। तिस का संबंध कैसे हो
वे। समान करके संबंध भी होता है। सो तो आत्मा के समान इतर कोऊ द्वितीय वस्तु नहीं। एक अ
द्वैत सत्ता ज्यों की त्यों अपणे आप विषे स्थित है। सो परमात्मा देवता है अरु तू है वह प्रकाश रू

प है। तेजस्वरूप है वह सत्त सरूप है। तद् अनंत रूप है। अरु परमात्मा सर्व कलना ते अतीत है। ते
न की एकता ते जल साथ होती है। जल की एकता जल साथ होती है। तब कलना रूप है। अरु परमात्मा
कलना ते अतीत है। तेरी एकता परमात्मा साथ कैसे होवे। तिस का अंग कछु मिलता है। तिस
का संबंध भी होता है। जो परस्पर विरोधी होवे तिन का संबंध कैसे होवे। तम ते परमात्मा के अन्त
नकार उदे हुए हो। अरु परमात्मा के ज्ञान करि मन इंद्रीयादिक दृष्टि का अभाव हो जाता है। वह इस
बंध कैसे होवे। देखने जेते कछु जगत जाल है सो सर्व ब्रह्म स्वरूप है। तिस ते इतर रहै न कछु न
ही। अरु देखनेवाली कलना ते रहता अरु सत्ता अपणे आप विषे स्थित है। सर्व कलना ते रे विषे धी
अरु तैसे तब लग अज्ञान लगा स्वरूप का अज्ञान था। तब स्वरूप का साक्षात्कार हुआ। अरु अत
नन हुआ। तब तेरे कहा रहे। जैसे निशा के अभाव रूप निशाचरों का अभाव हो जाता है। तैसे
अज्ञान के नष्ट हुए तेरा अभाव हो जाता है॥ इति श्री उपशम प्रकरणे वीतहव्योपाख्याने चित्त
अभाव वर्णनं नाम सर्गः॥ वसिष्ठ उवाच॥ हे राम तौ इस प्रकार वीतहव्य मुनीश्वर विचार करके पर्व
त की कंदरा विषे विचार करत भया। तो प्राण वायु साथ अरु भी जो कछु विकार की याद है सो अ
वण करो। अनात्मा जो देह इंद्रीया सो से कल्प तें उपजे है। तब ज्ञान दृष्टि भया तब देह इंद्रीया
मनादिकों का अभाव हो जाता है। जैसे सूर्य के उदे हुए तम का अभाव हो जाता है। तैसे चित्त उदे हू
ए परमात्मा अनुभव रूप के उदे हुए तम का अभाव हो जाता है। वासना कर के तिस के आगे आ
वर्ण होता है। जब वासना का अभाव होता है। तब आवर्ण का भी अभाव हो जाता है। तैसे मे आ
के नष्ट हुए स्वयं प्रकाशता है। तैसे वासना के अभाव रूप आत्म तत्त्व प्रकाशता है। वासना का
मल अज्ञान है। जब ज्ञान से जगत वासना नष्ट हुई। तब चिदानंद ब्रह्म प्रगट भासता है। वास
ना का नाम ही बंधन है अरु वासना कौन विर्ने का नाम मोक्ष है। जब वासना रूपी जेवड़ी कौं काटेगा
तब परमात्मा का साक्षात्कार होवेगा। जैसे अंधकार प्रकार विना प्रत्यक्ष पाइकर नष्ट नहीं
होता। तैसे मन इंद्रीयादेह आदिक जगत आत्म विचार विना अभाव नहीं होता। तब विचार करके
आत्मपद की प्राप्ति होवे। तब मन संयुक्त इंद्रीयादिक जगत का अभाव हो जाता है। अर्थ यह जो इन
का अभिमान नष्ट हो जाता है। वह इन के धर्म अपणे विषे नहीं भासते। जब देह इंद्रीयो सा
थ वैर तव अविद्या हूआ है। तब लग आत्मपद को पावत नहीं सकता। ताते आत्मपद पावणे अ
र्थ कल्याण के निमित्त निरंतर अभ्यास करो। जब लग मन इंद्रीयादिकों के के गुणो संग अप
णे को मिश्रित रूप जाणता है। तब लग अपणे स्वरूप की विमलता अरु स्वच्छता इस कौं नहीं भासती
तब आत्मा का साक्षात्कार होवेगा। तब राग द्वेषादिक विकार नष्ट हो जावेंगे। जैसे सूर्य
के उदे हुए निशाचरों का अभाव हो जाता है। तैसे आत्मा के साक्षात्कार रूप विकारों का अभा
व हो जाता है। जिस के दर्शन ते रंक का नाश हो जाता है। तिन के संग मन का संबंध कैसे होवे। जै
से प्रकाश अरु तमस्कार संबंध नहीं होता। जैसे शीत अरु उष्ण का संबंध नहीं होता। जैसे मन अर
अमन का संबंध नहीं होता। जैसे जीवन अरु मिरतक का संबंध नहीं होता। तैसे आत्मा साथ मन
आदिक अनात्मा का संबंध होता नहीं। आत्मा सर्व कलना ते रहत है। अरु मन आदिक सर्व कल्पना रू
प है। कहा यह सब जड़ अरु अनात्म रूप। अरु कहां नित चेतन प्रकाश निराकार आत्म रूप इन
का परस्पर विरोध है। संबंध कैसे कहीए यह तो निश्चय करके अनर्थ का कारण है। जब लग इन का अ
भिमान है। तब लग जगत दुख रूप भासता है। अरु जब इन का वियोग होवे तब जगत परमात्ममय
होता है। जब लग इन कौं परमात्मा का प्रमाद है। तब लग आप कौं इन संग मिल्या हूआ देखता है। अ
रु दुख पावता है जब आत्म ज्ञान हूआ तब अपणे संग इन का संयोग नहीं देखता। अरु यह मैं निश्च
य करि जाणा है। जो इंद्रिया अरु मन के संयोग ते जगत भासता है। जब इंद्रीयों का नाश प्रगट हो जा
वे तब जगत परमात्म मय हो जाता है। अरु मैं जो आत्मा अरु मन इंद्रीयादिकों कौं एक कर जाणता था
सो प्रमाद रूपी मद था तेम नक रजाणता था। अब आत्म विचार करके मन नष्ट हूआ तब मैं सुखी हूआ
अरु जो विष कौं पान करके मरता नहीं होवे सो तो अचरज है। पर जो पान की ए विना मूर्छित होवे तो आ
श्चर्य है। तैसे जब आत्मा का इन का इन संग संयोग होता है तब सुख दुख करके राग द्वेषवान होता

उ.प्र.
९९

भी बलता पर संयोग तौ है ही नहीं ॥ अरु रागद्वेष करिके परजलता है जौ महा स्वरूप है ॥ आत्मा तो न
दुःख का साक्षीभूत है ॥ जैसा आभास तिसके आगे होता है ॥ तैसा ही प्रतिभासता है ॥ कदाचित विप
र्ययभाव कौं नहीं प्राप्त होता ॥ तिस साक्षी इंद्रीयों का संयोग कछु मैं होवै ॥ जब संवेदन का अभाव सि
द्ध भया ॥ तब आत्मा विषे कर्तृत्व भोगतृत्व कैसे करि होय ॥ जहां चित्त कल्पना होती है तहां कर्तृत्व भो
क्तृत्व होता है ॥ जहां चित्त कल्पना का अभाव भया तहां कर्तृत्व भोगतृत्व कहां होवै ॥ ऐसा निश्च
ल कर आत्मतत्त्व मैं रहो ॥ सो अकर्ता हौं भोगता हौं न मेरे विषे बंध है न मोक्ष है न अहंता है न आत्म
ता है ॥ ऐसे सर्वात्मा अलेपरूप रहो ॥ हे मन तेरे भी मैं दीनै ॥ अरु सर्वपदार्थ आपने जाया की संपत्रभ
न भी मैं होते ॥ इस प्रकार निरंतर पकरके जिस निश्चय यथा रहै सो मोह कौं नहीं प्राप्त होता ॥ ज
ब अहं अभिमान कर कै इन कौं जाणने हाथा भिन्न होता है ॥ तब दुःखी होता है ॥ जब अपरोक्ष
भाव विषे स्थित होता है ॥ तब परमसुखी होता है ॥ ताते जिस कौं कल्याण की इच्छा होवै ॥ तिस
कौं एक आत्मध्यान परायण रहो बणा योग है ॥ जब स्वरूप कौं त्याग कर संकल्प की ओर धाव
ता है ॥ तब दुःख के संकट कौ प्राप्त होता है ॥ हे चित्त तेजो अपरोक्ष विषे कर्तृत्व देखता है ॥ सो त
मे तो जड़ पाषाण के समान हो ॥ तुम सो कर्तृत्व कैसे होती है ॥ जैसे आकाश विषे वन नहीं ल
गता तैसे तुम सौं कर्तृत्व नहीं होती ॥ तब इस कौ स्वरूप का प्रमाद होता है ॥ तब चित्तादिकौं
साथ आप कौं मिथ्या जाणता है ॥ अरु चित्तादिक आत्मा कौ सत्ता कौ पाइकर चेतन होते हैं ॥ जैसे
अगन की सत्ता पाइ कर लोह चेतन होता है ॥ लोह ज्वाला कौ समर्थ होता है ॥ तैसे आत्मसत्ता
पाइ कर चित्तादिक चेतन होते हैं ॥ जब आत्मविचार करकै स्वरूप का साक्षात्कार होता है ॥ अ
रु अज्ञान निवृत्त नष्ट हो जाता है ॥ अरु मनादिकौं का वियोग होता है ॥ तब सर्व कल्पना तेर र्हि
त भया केवल साक्षस्वरूप आत्मा होता है ॥ कर्तृत्व भोगतृत्व का अभाव हो जाता है जैसे आकाश
विषे लाली का अभाव है ॥ तैसे आत्मा विषे कर्तृत्व का अभाव है ॥ सर्व जगत आत्मस्वरूप भासता है
जैसे समुद्र तरंगादिक नाना आकार होइ भासता है सो सर्व जल ही रूप है ॥ जल ते इतर कछु नहीं
तैसे सर्व जगत आत्मरूप है ॥ आत्मा ते इतर कछु नहीं ॥ सो विद्वान ने आत्मा मैं सदा आपणे आप
विषे स्थित रहो ॥ अब रहित कलना मेरे विषे कछु नहीं जैसे समुद्र उष्णता ते रहत है तैसे परमा
त्मा सर्व कलना ते रहत है ॥ जैसे आकाश विषे वन नहीं होता तैसे परमात्मा विषे कलना नहीं
होती ॥ संवेदन ते रहत संवित मात्र है सो सर्व है ॥ जब तिस का साक्षात्कार होता है ॥ तब अहंत्व
आदिक कलना का अभाव हो जाता है ॥ सो अनादि अरूप सर्वगत है ॥ सदा आपणे आप विषे इ
स्थित है ॥ नित उदार सर्व का सार अद्वैत तत्त्व आत्मा है ॥ तिस विषे द्वैत कलना का अभाव है ॥ स
र्व विषे पूर्ण नित्य शुद्ध निर्मल अनंत रूप है ॥ ऐसे आत्मा कौं अब मैं प्राप्त हुआ हौ ॥ इस जगत का
जो कछु सुख दुःख है ॥ सो अब नष्ट भया है सम शांत रूप हुआ हौ ॥ ॥ इति श्री उपशम प्रकरणे वी
त हव्योपाख्याने श्री यान्तत्त्व आसने नाम सर्गः ॥ ॥ वसिष्ठ उवाच ॥ हे राम जी इस प्रकार वीत हव्य मु
नीश्वर श्रेष्ठ विचार करता भया ॥ बहुरि लोक कछु अवर निर्मल बुद्धि साथ विचार करने भया है सो
तुम श्रवण करौ ॥ हे इंद्रीयो भ्रम मन तुम कौ आपणे अर्थों की ओर धावते हौ ॥ तुम कौ विषयों क
र तौ शांति नहीं प्राप्त होती ॥ जैसे मारुथल विषे जल जाण कर मृग धावता है अरु शांति कौ
नहीं पावता ॥ बहुरि तृष्णा करके वारंवार धावता है ॥ सो कहीं जल नहीं पावता काहे ते जो
उहां जल का नाम भी नहीं ॥ अरु मूढ वारंवार धावता है ॥ सो दुःख पावता है ॥ ताते मूढ पशु है ॥ जैसे
तुम मिथ्या संसार के विषयों की तृष्णा करके वारंवार धावते हो ॥ अरु शांति कौ नहीं पावते ॥ यह जो संसा
र असार मिथ्या मारुथल का जल अम तन रूप है ॥ अरु इच्छा जो करी ती है सो सुख के निमित करी
ती है ॥ सो तौ संसार असार के विषयों विषे सुख शांति का नाम भी नहीं ॥ तिस ते बाल जाणा जो
शांति सुख तिस कौ बुद्धिवान कहते हैं ॥ जिस सुख के पावने ते बहुर दुःख की प्राप्ति न होवै ॥ सो तौ भर्
विषय सुख मैं है जैसे दामनी का चमत्कार होता है ॥ अरु लोप हो जाता है ॥ जैसे लुहार की संड्ही

कबहु अगन विषे डारी ती है ॥ कबहुं जल विषे डारी ती है ॥ बहुरि अगन विषे डारती है ॥ इसी प्र
कार कबहु अगन विषे डारी ती है ॥ कबहुं जल विषे डारी ती है ॥ बहुरि अगन विषे डारती है ॥ इसी प्र
कार कदाचित शांति कौ नहीं पावती ॥ तैसे विषयों के सुख क्षणभंगुर है ॥ इसी प्रकार तुम
कौ प्राप्त होते है ॥ कबहु सुख कबहुं दुःख ॥ विषयों की इच्छा करके सुख के निमित अनर्थ को र करते
धावते जाते है ॥ कबहु सुख कबहु दुःख ॥ विषयों की इच्छा करके सुख के निमित अनेक कर्म
शमान होइ कर जप करते है ॥ तासौं र्स्वर्ग कौ प्राप्त होते है ॥ सो उहां भी सुख नहीं ॥ काहे ते जो क
हा भी अवर कौं अधिक सुख कौ देख कर तृष्णा मेरा परजलते है ॥ अरु काल कर गिरते है
ते है ॥ तब जन्म मरण के दुःख प्राप्त होते है ॥ बहुरि नरक कौं विषे अनंत कष्ट नाइ भोगते है ॥ इ
सी प्रकार वारंवार भोगों की इच्छा करके नाना प्रकार के दुःख अरु परतंत्र ही सुख भोगते है
शांति कौं कदाचित नहीं पावते ॥ इन सुख कौं सुख मृग जाणते है ॥ मृग तृष्णा की न्याई
पर है ॥ अरु बुधवान पंडित तिस सुख कौं दुःख जाणते है ॥ जिस सुख के पावने ते बहुरि दुःख न
प्राप्त होवे ॥ सो सुख परमात्मा अपणा आप सर्व निरंजन अद्वैत समा है ॥ ताते तुम इन विषयों
की इच्छा त्याग करि सत शांत सुख जो है परमात्मा तिस का अभाव कदाचित नहीं होता
सर्व अवस्था विषे एक रस है ॥ तिस कौं ग्रहण करो ॥ तब तुम्हारे सर्व दुःख जावेंगे ॥ अवर कि
सी प्रकार दुःख निवर्तन होवेंगे ॥ तुम्हारे संग मैं मिलि पाया तब मैं भी दुःख पाया था ॥ तब अ
ज्ञान कर कै इत्यादि भए हो ॥ जो तुम्हारे संग मिलता है ॥ तिस कौं भी दुःख प्राप्त होते है ॥ जैसे त
पीहू शीला विषे जिस के सरीर संग स्पर्श करती है ॥ तिस कौं जलावती है ॥ तैसे जिस कौ तुम
पीडा है सो तुम्हारे संग कौं जो ... तिस कौं मिलता है ॥ हे मन तुम्हारे नाश ते सर्व भरता है ॥ सो काल के मुख विषे जा
ता भया है ॥ सो दुःख कौ प्राप्त होता है ॥ हे मन पहले जो जीव मरता है ॥ सो काल के मुख विषे जा
प्रवेश करता है ॥ सो तुम्हारे संग कर जो इस पुरुष है ॥ जैसे नदी जल मैं जगत होती है ॥ तब समु
द्र की ओर चली जाती है ॥ जब जल ते रहत होवै ॥ तब क्या जावै ॥ तैसे तुम्हारे संग कर समुद्र
समुद्र काल के मुख विषे जाइ पडता है ॥ जब तुम्हारा संग नहीं वैतवका हे कौं पडे ॥ अरु जैसे म
वकुरु दुःख मैं कौं अच्छादलेता है ॥ तैसे मन रूपी मत्त उच्छा रूपी छोड़ कर के आत्मरूपी
सूरज कौ अच्छादलेता है ॥ अरु परंपरा दुःख की वर्षा करता हारा है ॥ हे मन तेरे विषे जो चि
ता पड़ी उदती है ॥ सो तैसे मरकट की न्याई है ॥ जैसे मरकट वृक्ष के टहणी गहीं देता वारं
वार पडाह लावता है ॥ तैसे चित्त देह कौं कबहु टहणी नहीं देता ॥ अरु चित्त रूपी पंखी है ॥ जो
भग्र रलजा तिस के दुःख है ॥ अरु राग द्वेष रूपी चुंच है ॥ तिस कर ससारी रूपी अंगप र वेदक र
शुभगुण रूपी ॥ फलों कौं काट करि भक्षण करता है ॥ अरु चित्त रूपी कुकुर है सो महानीच
चवे है ॥ भोग वासना रूपी जो अपवित्र पदार्थ है ॥ तिन कौं हृदय रूपी श्मशान विषे पडा एक चक
रता है ॥ ऐसी चेष्टा ते कदाचित निवर्तन नहीं होता ॥ अरु चित्त रूपी अल्लक है ॥ अज्ञान रूपी गृह विचि
वि आइ निवास करता है ॥ अरु चेष्टा कर प्रसन्न होता है ॥ अरु शब्द करता है ॥ जैसे समसाण विषे वै
ताल शब्द करता है ॥ तब अज्ञान रूपी रात्रि नष्ट होवे ॥ तब चित्त रूपी उल्लू काट कौं का अभाव हो
जाता है ॥ अरु संपदा उदै होती है ॥ जैसे सूर्य के उदै हुए ते सुखी कमल प्रफुलित होते है ॥ तै
से संपदा प्रफुलित होती है ॥ जब मोह रूपी कुहीर अरु इच्छा रूपी धूर हृदय रूपी आकाश सौं नि
वर्त होती है ॥ तब निर्मल प्रकाश प्रगट होता है ॥ हे चित्त जब लग तेरे नहीं नष्ट होता तब लग
नहीं शांत होती ॥ जैसे अद्दश्य आकाश सामान्य ते अंधकार वर्षा करे ॥ तिस कर सार्ग
के बल ते हारे पेशे ही कछु पावते है ॥ तैसे सब दिवैदेह के चिंता आस मग होती है ॥ सो ते
रे संयोग कर होती है ॥ अरु संकल्प विकल्प गारे की वर्षा करता है ॥ तिस कर समता रूपी गबल
तो हारे दुःख पावते है ॥ अरु जब चित्त नष्ट हो जाता है ॥ तब सर्व कौं आनंद होता है ॥ पर तेलते
अविमितना कर ससाभव नहीं होता है ॥ जैसे शीत काल का आकाश निर्मल होता है ॥ मेघों के न
हुए रूप स्वैत प्रकाशता है ॥ जैसे अज्ञान के नष्ट हुए आत्म प्रकाशता है ॥ तब अस्मेन ताअर गंभी
रता अरु समता अरु सतता अरु समता होती है ॥ जैसे वायु अरु सदा चलपर्वत ते रहित धीर सम
दृष्टांत वान हुआ ॥ अरु जैसे शरनमासी का चंद्रमा सोभता है ॥ तैसे पद अज्ञान के नष्ट रूप आ

उ॰प्र॰
३॰

मानेह कों पाइकर आनंदरूप शोभता है॥ हे चित्त यह जो स्थावर जंगम जगत है सो मैं चित्त प्रका
स विषे है तिस महत ब्रह्म कों तूं भी प्राप्त होइ जैसे पुरुष आसा रूपी फासी को तोड़कर आनंद
कों प्राप्त भया है॥ अरु संसार का सरभाव है रक्षा है॥ सो जन्म अरु मरण के बंधन विषे नहीं
पड़ता॥ जैसे जल पाहूया पत्र बंधन में आवान नहीं होता॥ तैसे चित्त नष्ट हूया बहुड़ जन्म मरण
कों नहीं पावता॥ हे चित्त सर्व कों भखण करणेहारा जो तूं संसार की सत्ता मानकर जगत
की ओर धावैगा तब कष्टमान होवैगा॥ अरु जो आत्मा की ओर आवैगा तब तेरा परम कल्याण
होवैगा॥ जो तूं अपणा अभाव करके आत्मपद विषे इस्थित होवैगा॥ तब तेरा अनंत कल्याण
होवैगा॥ अरु जो तूं अपणा सदभाव करेगा तो अहंकार कों न त्यागेगा तब दुखी होवैगा
तो तेरा जीवणा है सो मृतक के समान है॥ अरु तेरा मृतक होवणा जीवणे के समान है॥ उभय पक्षों
विषे जो तेरी इछा है सो अंगीकार कर॥ जो तूं अपणा आत्मभाव विषे आपकों निर्वाण करेगा
तब परमपद कों प्राप्त होवैगा॥ परम सुखी होवैगा अरु जो प्रमाद करके न निर्वाण होवैगा त
ब दुखी होवैगा॥ अरु आत्मसत्य कों त्याग कर प्रमादी होवैगा॥ तब मृतक होवैगा॥ तेरा नि
र्वाण होवणा आत्मपद विषे जीवणे के निमित है॥ अरु आत्मा ते इतर मान कर ले जीवणे
की इछा करे सो तेरा जीवणा मिथ्या है॥ न होवैगा यह अर्थ है काहे ते जो तेरा न आरही आन
अ नहीं होवैगा॥ अब भी विचार विना भ्रममात्र है॥ विचार कीए ते नष्ट हो जावैगा॥ जैसे सूर्य
के प्रकाश विना अंधकार होता है॥ अरु प्रकाश करके तम का अभाव हो जाता है॥ तैसे वि
चार विना चित है॥ अरु विचार करके नष्ट हो जावैगा॥ एता काल मैं अविवेक ने तेरे संग मिल
कर दुख पावता रहा हों॥ जैसे बालक कों अपणे पछावे विषे बैताल्य की कल्पना होती है॥
अरु विचार विना भय कों पावता है॥ अरु विचार करके निरभय होता है॥ तैसे मैं अब तेरे सं
योग ते दूर अपणे एव रूप कों प्राप्त हूया हों विवेक करके तेरा अभाव भया है॥ ताते वि
वेक कों नमस्कार है॥ चित अविवेक करके तूं मेरा शत्रु था॥ अब बोध करके तेरा चित्यभाव न
ष्ट भया है॥ तूं परमेश्वर रूप भया है॥ चित्यता भाव तेरे विषे अज्ञान कर उपजिया दुख का का
रण था॥ सो विवेक कर लीन भया॥ जैसे रात्र के पदार्थ सूर्य के उदै हूए नष्ट हो जाते हैं॥ तैसे वि
वेक कर चित्यता भाव नष्ट हो जाता है॥ सो परम सिद्धता के निमित है॥ तेरे संग काहू मैं न छूटे
सो हो गया॥ अब मतने बेकी यात्रा कों कर निर्णा कीया है॥ जो तूं न आदर्या न अब है न
अंते होवैगा॥ जब लग मैं आप कों न जाण्या था तब लग तेरा सदभाव था॥ अब मैं आप
कों जाणा है॥ अरु अपणे आप विषे इस्थित भया हों॥ मैं परम निर्वाण स्वरूप हों॥ शांतरूप
हों॥ सर्व ताप मेरे नष्ट भए हैं॥ निज शुद्ध परम ब्रह्म सत चित आनंद स्वरूप हों॥ जगत की स
त अरु असत की कलना मेरी नष्ट भई है॥ काहे ते जो कलना सर्व चित विषे थी॥ जब चित निर्वा
ण होगया॥ तब कलना कहां रहे॥ मैं केवल स्वच्छ आत्मा हों॥ न कोऊ प्रतियोगी है न व्यव
छेद है॥ काहे ते जो द्वितीय कोऊ नहीं चित की चेतना फुरती थी सो निर्वाण होगई॥
अब मैं स्वस्थ हूया हों॥ जैसे तरंगा ते रहत समुंद्र अचल होता है॥ तैसे मैं सर्व कलना ते रहत
निर्मल रंग हों॥ संवेदना ते रहत समतामात्र अपणे आप विषे इस्थित हों॥ इति श्री उपशम
प्रकरणे वीतहव्य व्रतांत चित शांत उपदेशो नाम सर्गः॥ वसिष्ठोवाच॥ हे रामजी इस
प्रकार वीतहव्य निर्वासी होइ कर निरणे करके विंध्याचल पर्वत की कंदरा विषे समाधि क
ते भया॥ निर्मल चित आकाश की न्याई कर बोर इंद्रीयों की व्रत वासना ते रोक कर अचल कीते
भया॥ सिर अरु ग्रीवा कों सम कीया अरु चित की व्रत आत्म तत्त्व साक्षी रूप विषे इस्थित कीया
जैसे ईंधन कों जलाइकर अगन की ज्वाला शांत अस्पंद हो जाती है॥ तैसे प्राण अरु मन की व्र
त का स्पंद मिट गया॥ जैसे शिला विषे उकेरी पुतली होती है॥ अरु जैसे मंदिर पर लिपी पुतली होती
है॥ तैसे इस्थित हो गया॥ अरु तीन वर्ष समाध विषे व्रतीत होगए॥ जैसे एक अर्ध महूर्त व्रतीत होता है
तैसे व्रतीत भया समाध विषे इस्थित भए॥ मेघ की वर्षा भी मधुर होवै॥ अरु मंडल ऊपर प्रान करणिका रखे ते

वरे साहू होवै अरु बिछू वंतरों के शब्द होवैं॥ सिंहों की न्याई हस्ती पाकर गाहू होवै॥ परवत हिला
गे नहीं॥ अरु वन कों अगन लागा॥ गड़े की वर्षा होवै अरु दारुण पवन चले॥ धूप लागे तो भी
समाध ते न जागे॥ तब जैसे पर्वत विषे शिला पड़ी होती है तैसे पड़ा रह विषागया॥ जब ऐसा
न वर्ष व्रतीत भए तब चित आनंद फुरया सो भी वसे रे संग है पर प्राण नहीं फुरे॥ तब चित के
फुरणे विषे आप कों कैलास के वन का कदंब वृक्ष के नीचे शत वर्ष पर्यंत विद्याधरों विषे वि
चाप रहोर कर विचरते भया॥ अरु पंच युग इहां होकर रहा॥ रामोवाच॥ हे भगवन ऐसे ह
सकाल का अनुक्रम कों कैसे भास्या॥ वसिष्ठोवाच॥ हे रामजी चित शक्त सर्व आत्मा रूप है
जैसा जैसा तिस विषे फुरणा फुरता है तैसा होइ भासता है॥ जैसे जैसे देस अरु काल का फुरणा फु
रता है तैसा ही अनुभव होता है॥ हे रामजी जेता कछु प्रपंच है सो मनोमात्र है॥ जैसा जैसा म
न का फुरणा तीव्र होता है॥ तैसा अनुभव सत्ता विषे भासता है॥ जो अज्ञानी होता है तिस कों ना
ना प्रकार की वासना होती है॥ तिस करके नाना प्रकार का जगत भासता है॥ अरु जो ज्ञानवान हो
ता है सो सर्व आत्मा देखता है॥ तिस का फुरणा भी अफुरणा है॥ अरु वासना भी अवासना है॥ वीतह
व्य मुनीश्वर जो ऐसे देखत भया॥ सो चित के स्पंद कर देखत भया॥ पर स्वस्थ रूप था॥ उस
की वासना अवासना थी॥ जैसे भुना बीज होता है सो वृक्ष नहीं उगावता॥ तैसे उसकी वासना अ
वासना है॥ भोगन का कारण नहीं कल्प पर्यंत चेतूपुरी महाशिवजी का गण होकर विचर्या
समस्त विद्या का ज्ञाता सर्वज्ञ त्रिकालदर्सी जीवन मुक्त होइ कर विचरते भया॥ हे रामजी
जैसा किसी का संस्कार दृढ होता है तैसा अनुभव तिस कों होता है॥ जैसे वीतहव्य चित
के स्पंद विषे भी जीवन मुक्त का अनुभव करते भया॥ रामोवाच॥ हे भगवन जो ऐसे है तो जी
वन मुक्त के मन विषे भी बंध मोक्ष हूई॥ तैसे वीतहव्य कों॥ वसिष्ठोवाच॥ हे रामजी
जीवन मुक्त कों सर्व ब्रह्म सम स्वरूप भासता है॥ बंध अरु मुक्त अवस्था तिस विषे कहा है
ज्ञान मात्र प्रकास विषे जैसा जैसा फुरणा है तैसा होइकर भासता है॥ हे अंग यह सर्व वि
ज्ञान मात्र स्वरूप है॥ अरु जगत जेता नाना प्रकार भासता है॥ सो मन करके भासता है॥ वास्त
व ते न जगत है न अजगत है॥ केवल चैतन्य सत्ता ही परी भासती है॥ भूत भविष्यत वर्तमान
जगत केवल ब्रह्म सत्ता भासती है॥ चिन्मात्र ते जो कछु इतर भासता है॥ सो मन के फुर
णे करके भासता है॥ ऐसा जिन कों ज्ञान नहीं तिन कों जगत वज्रसार ते दृढ होइ करि भा
सता है॥ अरु ज्ञानवान कों आकास रूप होइ भासता है॥ हे रामजी अज्ञान करके मन उपज
ता है॥ तिस कर संसार जगत भया है॥ वास्तव ते अवर कछु नहीं॥ जैसे समुंद्र विषे तरंग फु
रे है॥ तैसे ब्रह्म विषे जगत है॥ तैसे चित का फुरणा होता है॥ तिस के अनुसार चि
दाकाश विषे आकार भासते हैं॥ जब चित अचित हो जाता है तब द्वैत कछु नहीं भासता॥ इ
ति श्री उपशम प्रकरणे वीतहव्य मनो जगत वर्णनं नाम सर्गः॥ रामोवाच॥ हे भगवन वी
तहव्य मुनीश्वर जो विंध्याचल पर्वत की कंदरा विषे इस्थित था सो बहुड़ उसकी क्या दि
शा भई सो कृपा कर कहो॥ वसिष्ठोवाच॥ हे रामजी तिसके अनंतर बहुड़ ब्रह्म दिन वीत
हव्य मुनीश्वर जो तेजवान था॥ सो एक काल विषे अपणे शरीर सातों को मन कर विचारते
भया॥ जो कोऊ दिन नष्ट हो गए हैं कहीं अनष्ट हैं॥ अनष्ट विषे बहुड़ अपणी देह विषे इस्थि
त था तिस कों देखत भया॥ जो एक कोटर विषे पड़ी थी वर्षा करके शोभता था॥ सो बहुड़ इ
सीच विषे फस रहा है॥ ऊपर जल जाल उगा आवत है॥ तिस कों देख करके कहणे लागा॥ जो इ
स विषे प्रवेश करों॥ बहुड़ विचार कीया जो यह तो मृतक जड़ अश्लील रूप है॥ अरु पाप रूप
है॥ इसके निकासणे कों मैं समर्थ नहीं॥ ताते मैं सूर्य मंडल विषे जावों॥ सूरज का जो सार
थी है पिंगला रण सो इस कों निकासेगा॥ अथवा मन करके इसके साथ भी क्या प्रयोजन है य

उ॰प्र॰
३१

हनष्ट होजावे ग्ररु वार है॥ पलायनन मैं जोइसके नमिनकरों सो मै ग्रपणे निर्वाणस्वरूपविषे
इस्थित होवों॥ देहके संगमेरा का शोजन है॥ हे रामजी इसप्रकार विचार करके वीत हव्य मनी
होगया॥ जब एक घड़ी विनीत भया॥ तब बडे उविचारने भया॥ जो प्रथवी विषे न देह कर क
छु त्याग होया है॥ ग्ररु कछु ग्रहण करणे योग है॥ जैसे देहका त्याग रणने से राघवण सम
न है॥ इह सरीर किसनमित दविचार हे॥ ग्रस्वकुल का लइसका ग्रारब्ध बेगा है॥ इसकों स
जं केस्मारथी कर के निकासों॥ हे राम जीपेसे विचार करके मुनी स्वर काशमारग कों व
डिया॥ पुरय हका ह्ल एक करके सूर्जे भगवान के ग्रंतर सणा मकार के प्रवेश कीया॥ तब सूर्जे
भगवान जाणत भए॥ जो वीतहव्य मुनी स्वर ध्यान प्रवेश कीया है॥ सो किस नमित ग्राया
है॥ सोसूर्ज भगवान भी सर्वज्ञ था॥ इसकर जाणत भया॥ जो प्रथवी विषे इसका शरीर द
या हूया है॥ कीच ग्ररु तिणों कर ग्रच्छादिया हूया है॥ तिसके निकासणे नमित ग्रावत भया
है॥ ऐसे विचार करके ग्रपणे सारथी कों कहत भया॥ दे सारथी विंध्याचल पर्वत की कंद
रा प्रथवी विषे वीतहव्य मुनी स्वर का शरीर दया पड़ा है॥ तिसकों तुम निकासदेवो॥ जब ऐसे
सूर्ज भगवान ग्ररुन वनाम सारथी कों कहा॥ तब इस्ली वत शरीर है जिसका सो विंध्याचल
विषे ग्राइकर नखों साथ सरीर कों निकासत भया॥ जैसे समुंद्र के किनारे भिड़का दथा ईप
नैसे पर्वत कों कंदरा ते शरीर कों निकासता॥ तब मुनी स्वर पुरुष हका कर के तिस शरीर
विषे प्रवेश करत भया॥ जैसे पंषी ग्राकास मार्ग विषे उरता उड़ता ग्राल्लणे विषे ग्रान प्रवेश क
रे॥ तैसे शरीर विषे ग्रान प्रवेश कीया॥ ग्ररु सावधान होइकर ग्ररुण वकों नमस्कार करत भया
ग्ररु ग्ररुणवती तहव्य कोंन मस्कार कीया॥ परस्पर नमस्कार कर के ग्रपणे कारजकी ग्रोर ग्ररु
ण व ग्ररुण व ग्राकास मारग कों गया॥ तब मुनी स्वर तड़ो क कीउर गया॥ सो सूर्ज कीया कि
रणावत प्रकाश हूए कमल ग्राकरशुणित ड़ाक था॥ तिस विषे कीच साथ लपेटे हूए शरीर
कर मुनी स्वर डुवकी मारत भया॥ जैसे हस्ती मलधोता है॥ तैसे सिनान करके संध्या दि
क जप कर्म करत भया॥ ग्ररु सूर्ज भगवान कों इजत भया॥ जैसे घघ मतप कर शरीर सोभता था
तैसे वकहुइ सुसोभनकीया॥ ग्ररु मैत्री समता सांत ब्रुप मद्या दिक गुणों कर संपन भया॥ परसर्व
के संग ते ग्रतीत भया॥ जो इनो शुणों कों भी सरूप विषे स पर्स नकरे॥ ग्रापकों सु स्वरूप जाणे
इति श्री उप शम प्रकरणे वीतहव्यसमाधि योगोपदेश वर्णनं नाम सर्गः॥ वसिष्ठो वाच॥ हे रामजी इ
स प्रकार जब केतेकु दिन व्यतीत भए तब समाधि के नमित मुनी स्वर का मन उदे होत भया॥ तब
उहकर विंध्याचल पर्वत की कंदरा विषे जाय इस्थित भया॥ पूर्व जो विचार ग्रभ्यास की या था
ग्ररु परा वर पर्मात्मतत्त्व ग्राम भयी थी॥ तिस कर बड़ेह चित कों कहत भए॥ हे चित ग्रहं ड़ी यो
मैं तुम्हारा परच दी ग्रहार कर छोड़िया है॥ ग्रब तुम्हारे चिंतन ग्ररु ग्रचिंतन विषे ग्रर्थ ग्रनर्थ
कछु नहीं कहे॥ तेजो ग्रासन जासन कल नाम सेरी मिथ्या ही है॥ ग्रासन वा सत केपाछे जो र
से पर हता है तिस विषे मैं इस्थित हूं॥ जैसे पर्वत का ग्रंग ग्रचल होता है॥ तैसे मैं ग्रचल होंग्र
रु सदा उदे रूप ग्रस्तकी न्याईं इस्थित हों॥ उदे रूप इस कारणते हों जो सदा ज्ञानस्वरूप प्रकाश
वान हों॥ ग्ररु ग्रस्तकी न्याईं इस कारणते हों जो ग्रक्रिय स्वरूप हों॥ इस प्रकार उदे ग्ररु ग्रस्तवत
जो सर्वका साक्षी भूत हों॥ ग्ररु इंद्रियादिकों का विषे नहीं॥ ग्ररु उदेवत इस कारणते हों
सा हों ग्रहरु हों॥ ग्रस्त पुरुष विषे इस्थित हों॥ प्रभु इस कारणते हों जो इंद्रीयों कों विष्यों की
उपलब्ध करता हों॥ ग्ररु ग्रस्त इस कारणते हों॥ जो इष्ट ग्रनिष्ट की प्राप्त विषे हर्ष शोक ते रहत
हों॥ ग्ररु जगत की ग्रोर ते सुषुप्त समाधि विषे हों॥ तुरीया पद ग्रात्मतत्त्व की ग्रोर जाग्रत विषे इ
स्थित हों॥ जैसा इस घाणघंभ इस्थित होता है तैसे इस्थित रूप हों॥ तिन घड़ इसमान मना ग्रा

पद हैं॥ तहां मैं नित्य मधरूप होइकर इस्थित हों॥ हे रामजी इसप्रकार चिंतवता हूआ मनी स्वर ध्या
न विषे रहा॥ तिसके उपरांत जाग्रत तब एक पलके समान जाणत भया॥ जैसे ग्रायन की पायक
पल विषे जागे॥ इसी प्रकार वीतहव्य उरु पद कों प्राप्त भया तो वन मुक्त होइकर चिरकाल पर्यंत
विचरता भया॥ तब कोउपद ग्रस्थ उसको हर्ष देवे ग्ररु न शोक देवे॥ चलता हूया भी इस्थित रहे॥ इंद्री
यों के ग्रवस्था करता हूया ग्रनिष्ट की प्राप्त विषे सम रहे॥ कदाचित किसी विषे चला इमान न होवे॥ च
लता ग्रावता मन ग्ररु इंद्रीयों कों कहे॥ ग्रहो इंद्रीयो तुम ग्ररु मन ग्रव तुम ग्रम वान हूया है॥ ग्रा
त्मपद कों पाइकर देषदेवो ग्रव तुमकों काम्य है॥ तिस तत्त्व के पायते ग्रवर पावणे योगक
छु नहीं रहता॥ जीवा सघ है ऐसी जो पर्म शांत रूप सत्य ग्रचल है॥ तिसकों ग्राश्रय करके ग्र
रु चंचलता कों त्याग कर॥ ग्रहो इंद्रीयो तुम सारा तो कछु ग्रपणा वास्तव स्वरूप नहीं॥ ग्ररु ग्रात्मप
द विषे तुम सदृश्यहीनहीं ग्रावती या॥ ग्रपणे स्वरूप कों जाणे बिना तुम मध्य ग्रनर्थ कों इघटीया
या॥ ग्रव मैं ग्रपणे स्वरूप विषे इस्थित भया हों॥ ग्रव तुम कों व श कर णे की तुम कों समर्थता
नहीं॥ काहेते जो तुम ग्रवस्तरूप हो॥ ग्रात्मतत्त्व के प्रमाद करके तुम्हारा भान होता है॥ जैसे जेव
री विषे सर्प भासता है॥ तैसे ग्रात्मा विषे ग्रनात्म भाव नाग्ररु ग्रनात्म विषे ग्रात्मभावना होती
है॥ सो ग्रविचार कर के होती है॥ ग्रव विचार कर के यह भ्रम मिट गया है॥ तुम इंद्रीयों के गणा
ग्रवर हो ग्ररु ग्रहंकार ग्रावर है॥ ग्रहा ग्रवर है कहते ग्रवर है भोग तृष्णा ग्रवर है॥ ग्रवरों का उ
घ ग्रप विषे मान लेणा पहीम रहता है॥ जैसे वन की पाल कड़ी यां ग्रवर हैं॥ वांस ग्रवर हैं चर्म
ग्रवर है॥ जिसकर केरथ वुणीता है ग्ररु लोहा ग्रवर है॥ पितल ग्रवर है जेवड़े ग्रवर है॥ जि
सकर रथजकड़ीता है॥ वलद ग्रवर है॥ जो रथ कों चलावते हैं॥ तिन सर्वों कर के ग्रक समा
तते रथ वणता है॥ जैसे एकरथ का ग्रकार होता है॥ तैसे रथ भया तिस विषे बैठा होहारापु
रुष ग्रवर होता है॥ ग्ररु रथ की समिग्री परस्पर विलक्षण होती है॥ तिस रथ विषे बैठ रणहारा
रथी कहे॥ जो मैं रथ हों वा मेरा रथ है ग्ररु रथ का दुख सुख ग्रापकों मानते तो ग्रति मूढ़ता है॥ तैसे शरी
र रूपी रथ है ग्रज्ञान कर के मिल्या है॥ हड्डी मास ग्रवर है नस ग्रवर है॥ मनादिक ग्रवर है॥ तिन विषे
पुरुष रूपी जीव रहे॥ सो जीव कहे मैं शरीर हों वा मेरा शरीर है॥ तो महा मूढ़ता है॥ तिस शरीर के
सुख दुख मूढ़ता कर के ग्रापकों मानता है॥ सो विचार करदेष तब राग द्वेष के षोभ ते मुक्त हो
वे॥ सो ग्रविचार रूपी स्वरूपकी विस्मृत में हरने त्यागी है॥ ग्ररु स्वरूपकी विस्मृत सपष्ट करी है
जो ग्रात्मतत्त्व सत रूप है॥ तिस कों सत जाण्या है॥ ग्ररु जो ग्रसत था॥ तिसकों ग्रसत जाण्या
है॥ जो सत है सो इस्थित है॥ जो ग्रसत था सो क्षीण होगया॥ हे रामजी इस प्रकार विचार करके
वीतहव्य जीवन मुक्त भया॥ ग्रपणे स्वरूप विषे इस्थित बहुत बरषों कों ग्रतीत करत भया॥ ग्र
पणा जो निरभय पद है जिस विषे चिंतादिक भ्रम सर्व नष्ट हो जाते हैं॥ ग्ररु मूढ़ता हर हो
जाती है॥ तिस सत्त पद कों प्राप्त भया॥ यथाभूत ग्रर्थ ग्रात्म ध्यान विषे इस्थित भया॥ यह हगा क
रणे योग ग्ररु त्याग णे योग की भावना कछु न रही॥ ऐसे पर्न ग्रात्मपद कों प्राप्त भया॥ ग्रागे जन्म कु
न का पुत्र वीतहव्य तिस पद कों पाइकर निर्वाणी होत भया॥ बडे जिस काल विषे जिस प्रकार वि
देह मुक्त भया है॥ सो ग्रव ग्राकर॥ जीवन मुक्त ग्ररु सप्तवर्ष पर्यंत जीवन मुक्त होइकर रहा॥ ब
हुरि विदेह मुक्त हूया॥ जो इच्छा ग्रवस्था निष्ठा ते ग्रतीत पद है॥ ग्रव तन न मों ग्ररु कर्मी का जि
स विषे ग्रंत है॥ ऐसा जो राग द्वेष ते रहत पद है तिस कों प्राप्त होत भया॥ हे रामजी हिमालेप
र्वत की एक कंदरा थी॥ तिस विषे प्रवेश करके पद्मासन धार कर ग्रापकों हस तजोड़ कर ग्रा
पही कहत भया॥ हे राग ग्ररु भी नी राग ता कों जाइ प्राप्त होइ॥ ग्ररु हे द्वेष तुम भी निर द्वेष ता कों जाइ
प्राप्त होइ॥ तुम्हारे संग मैं चिर काल पर्यंत क्रीड़ा करी है॥ परंतु विवेक करके करी है॥ तुम ग्र
व गमन करो मेरी नमस्कार है तुम कों॥ ग्ररु हे भोगो तुम्हारी लाल ना कर के मैं ग्रनेक जन्म
भ्रमपावता रहा हों॥ तुम्हारी लालना कर ग्रज्ञ कों परमपद विस्मरण भया था॥ जैसे माता स

उ.प्र.
३२

षकेनमित्तपुत्रकीलालसाकरतीहै। तेसेमैंसपजाणकरतुमारीलालसाकरतेभया। मलाग्रव
गमनकरोतमकोंमेरानमस्कारहै। ग्रबमैंनिर्वाणपदकोंप्राप्तहोताहूं। ग्ररहेदुषरूमकोंभी
मेरानमस्कारहै। तुमारेउपदेसकरमैंग्रात्मपदकोंप्राप्तभयाहूं। काहेतेजोमैंसदाभोगन
षकोंचाहताथा। तबतपग्रागमनकरेतबतमकोभीसाथलीएग्रावे। सपनेतुमारीउत्पनह
तीहै। सपकीलालसाकरकैतोमैंग्रनेकजन्मपावतारहता। परसुपग्रावैतोंतुमकोंभीमेरा
लीएग्रावैतमकोंदेषकरमझकोंग्रात्मपदकीइछाउपजी। तेरेप्रसादकरमैंपरमसीतल
पदकोंप्राप्तभयाहूं। हेदुःषतेरेतोदुःषपावेपरतमकोपरमसुषप्राप्तकीया। तातेतेराकु
ल्याणहोवे। तंभीग्रबगमनकरहेमित्रसंसारविषेजीवताकोप्रसारहै। जिसकासंयो
गहोताहै तिसकावियोगभीहोताहै। ग्ररतुझमेरेसाथपरमउपकारकीयाहै। जोग्रपणा
नासकीयाहै। ग्ररमझकोंसुषप्राप्तकीयाहै। जोतंमुझकोंनप्राप्तहोता तबमैंग्रात्मपद
कोनमितकवचननकरता। तुजेग्रपणानासकरणामानया। ग्ररमझकोंसुषप्राप्तकीं
या। हेमित्रतंबांधवोंकीन्याईचिरकालग्रयंतमेरेसंगरहा। कदाचितदूरनहीभया। ग्र
बमैंतेरानासनकीया। तुजेग्रपणानासग्रापहीकीयाहै। जबतंमझकोप्राप्तहूयातब
मझकेविवेकउत्पनभया। तिसविवेकनेतेरानासकीयाहै। तातेतंग्रबगमनकरमेरा
नमस्कारहैतमकों। ग्ररहेमातातम्हातमकोंभीमेरानमस्कारहै। तंसदामेरेसंगरहीहै
कदाचितनुमझकोंत्यागनहींकीया। जैसेइयाणेबालेककामातापितात्यागनहींकर
ते। तैसेतुमैंमेराकवहत्यागनहींकीया। सोग्रबतंगमनकर। ग्ररहेकामदेवतंरोग्राप
हीविपर्ययरूपहोइकरग्रपणानासकीयाहै। जबतमवासनाषयेतवजीवनेथे। तबतु
मारासवादग्रंतरसपभयातबतमनिवर्तहोगए। सोतमकोंभीमेरीनमस्कारहै। ग्रर
हेशुक्रतेतमकोंभीनमस्कारहै। तुमइभीग्रतउपकारकीयाथा। जोनरककोंमेनिका
सकरस्वर्गविषेप्राप्तकीयाथा। परग्रंतसर्वकावियोगहोताहै तातेतमभीजावोनमस्
कारहै। हेदुहकृततोंतमभीजावो विकर्मतुमाराहूपहै सोमैंग्रहै। ग्ररजोबनग्रवस्थावो
नहे। तिसतेनरकदुषफलउपजतेहैं। सोतमारासंयोगभीमयाथा। इसकारणतेतमकों
भीनमसकारहै तमजावो। ग्ररहेमोहतमकोंभीनमस्कारहै। तझकरमैंचिरकालक
वोध्यहूयाथा। ग्ररनानाप्रकारकेइस्थानोंकोंप्राप्तभयाथा। ग्ररतमभयदिषावतेथे
निसकरमैंविवेककोंप्राप्तभया। तातेतमकोंभीनमसकारहै ग्रबजावो। ग्ररहेचिरकेदु
तपकोंभीनमस्कारहै। तेरेविषेमैंचिरकालतपकीयाहै। ग्ररहेबुद्धहेविवेकतमकोंभी
नमस्कारहै। तुमहमेरेसंगवडाउपकारकीयाहै। जोसंसारबंधनतेमुक्तकीयाहै। ता
तेतमकोंभीनमसकारहै तमभीजावो। ग्ररहेइंदकरमैंदुलतमकोंभीनमसकारहैतु
मभीजावो। वहुतकालकेतुममेरेसंबंधीहो बंधनाहै ग्रबतमभीजावो। ग्ररहेदेहरतम
सकायिंतरहोइकरतंमेरेसंगचिरकालरहाहै। ग्ररतमउपकारकीयाहै। जोविवेकउप
जणेकाइस्थाननहीहै। तेरेसंयोगकरमैंपरमपदपायाहै। तंभीग्रबजाहनमस्कारहै। ग्र
रहेसंसारकेव्यवहारोतमकोंनमस्कारहै। तमारेविषेमैंवडाकालक्रीडाकरीहै। ग्रर
हेइस्थानदेसकेपाकमैंसर्वोकोंनमस्कारहै। तमारेविषेमैंबहुतकालरहाहों। नानाप्र
कारकेकर्मकीएहै। ऐसापदार्थजगतविषेकोऊनही। तोदीयाकीयानहोवैगासोकर्म
कोऊनही। ग्ररऐसापदार्थकोऊनही। ग्ररऐसापदार्थकोऊनहीजोलीयानहोवेगा। ग्रर
ऐसादेसकोऊनहीजोदेषानहोवेगा। ग्रबसर्वकोंनमसकारहै। तमारादमाराचिरका
लकासंयोगथा। परग्रबवियोगभया। काहेतेजोजिसकासंयोगहैतिसकावियोगभीहो
ताहै। तमाराहमाराभीवियोगहोताहै। जोवर्षाकीजोतरंगमंडलविषेजाइलीनहोवे।

गी। ग्ररज्वालकोंतेजप्रथवीकोंग्रेसप्रथवीविषेप्राणनवाकाशपवनवायुविषे ग्रवकाशग्राका
शविषे जिहादरसजलविषेग्ररनेत्रसूर्यविषेजाइलीनहोवेगा। इसीप्रकारग्रपणीग्रपणी
ग्रंससर्वविषेजाइलीनहोवेंगी। सुषदुषसंसारकेग्रपणेकारणविषेलीनहोवेंगे। जैसेलक
डीयोंकेजलतेग्रगनशांतहोजातीहै। ग्ररजैसेतेलतेरहदीपकनिर्वाणहोजाताहै। ग्ररजैसे
महावलधंतेरहतघोरससंद्रशांतभया। ग्ररजैसेसरतेकेग्रतलरूपग्रकाशशांतहोजाताहै
ग्ररजैसेसीतकालविषेमेघशांतहोजातेहै। तैसेमनादिकशांतहोजावेगे ग्ररइछादिकविक
रशांतहोजावेगे। हेरामजीऐसेविचारकरतेकरतेमननसर्वकाधीतेरहतप्राणवकेध्यानवि
षेइस्थितहोगया। सर्वदशातेशांतहोगया। मोहरूपीमलकोंत्यागकरचितप्राणवकेउचा
रविषेलागा। इति श्रीउपशमप्रकर्णेउपनिरवाणवर्णनेनाम सर्गः। वशिष्ठ उवाच। हेरा
मजीइसप्रकारशब्दब्रह्मप्रणवकोउचारकरतेमनपंचमब्रह्मकाजोचितकीग्रवस्थाहै।
तिसकोंप्राप्तभया। जोवाह्यग्रंतरकेसुषमइस्थूलपदार्थहै। ग्ररचिलोकीकेसंकल्पसर्व
इछाकोंत्यागकरग्रषोभइस्थितभया। जैसेचिंतामणग्रपणेप्रकाशविषेइस्थितहोतीहै। ग्र
रजैसेसरदकालाकोंलेकरपूर्णमासीकाचंद्रमाग्रपणेग्रापकरइस्थितहोताहै। ग्ररजै
सेमहाचलकेनिकसेतेधीरसमद्रइस्थितभया। ग्ररजैसेमग्रागेतेरहतमहावलइस्थित
हूया। ग्ररजैसेकुंभकारकाचक्रफिरताहूदूरजाताहै। ग्ररजैसेसरतेकेग्रतलभएग्रवरू
रकयाजीवोंकीदूरहजातीहै। ग्ररजैसेमेघोंतेरहतशरदकालकाग्राकाशनिर्मलहो
ताहै। ग्ररजैसेमप्रकाशग्रवतमतेरहतग्राकाशहोताहै। तैसेमनफरणेतेरहतप्राण
कोंप्राप्तभया। प्राणवकेध्यानकरके। वहुरतिसग्रंतकेभीग्रंतकोंप्राप्तभया। मेरकों
भीत्यागनभया। तमकोंभीत्यागकीया। जैसेसरूपुरुषक्रोधकोंत्यागतेहै। तैसेतमग्रन
कोंत्यागतभया। वहुरतेजप्रकाशउदेभया। तिसकोंभीनिमेषविषेत्यागतभया। ग्रागे
नतेजहेतमहै। जिसविषेग्रभावबनरहतीहै। तिसकोंभीनिमेषविषेभीत्यागकीया।
तबजैसेनोतनबालककजनमेकीपटारथजाननेतेरहतग्रवस्थाहोतीहै। तेसीग्रवस्थाप्रा
प्तभई। तबशांतपदजोमनतामात्रग्रांतमतनसुषमपदहै तिसकोंप्राप्तहोतभया। वहुरि
केवलग्रचेतचिन्मात्रतरीयपदनिरानंदग्रानंदहै। जिसविषेस्वरूपतेइतरग्रवरग्रानंद
नही। ऐसेग्रानंदकोंप्राप्तभया। जोग्रमनतमतनरूपहै। सर्वकथातेग्रतीतहै। इसकारणते
ग्रसतवतहै। ग्ररग्रनुभवरूपहै। इसकारणतेसतरूपहै। ऐसेग्रशब्दपदकोंप्राप्तभया। जो
परमशुद्धपरमपावनपदहै। ग्ररसर्वभावकेग्रंतरशामहै। ग्ररसबभावशवदतेरहतहै। जि
सकोंशून्यवादीशूनकहतेहै ग्ररब्रह्मवादीजिसकोंब्रह्मकहते। ग्ररविज्ञानवादीविज्ञा
नकहतेहै। ग्ररसांषमतवालेपुरुषकहतेहै। ग्ररजोगवालेईस्वरकहतेहै। ग्ररशैवति
सकोंशिवकहतेहै ग्ररवैसनविसनकहतेहै शाक्तीधर्मशाक्तकहतेहै कालवादीजिस
कोंकालकहतेहै। ग्रात्मवादीग्रात्माकहतेहै जोसर्वकेकलनाभावग्रभावतेरहतहै तिसव
शेषग्रात्माहै। ग्ररसाधमजिसकोमधमकहतेहै। इत्यादिकजोशास्त्रोंकेमतवालेग्रप
णग्रपणाइष्टदेवतिसीकोंकहतेहै। सोएकपरमतत्वकोंकहतेहै। काहेतेजोसर्वदाकाल
सर्वप्रकारसर्वविषेसर्वरूपवहीहै। ऐसेसर्वात्माकोंवीतहव्यमुनीप्राप्तभया। जि
सप्रानेरससमंद्रकेलवकरसर्वकोग्रानंदहोताहै ग्ररसर्वपदार्थोंकेप्रकाशनेहारा
हीएकहै। ऐसेग्रात्मतत्वग्रनुभवरूपग्रपणेग्रापकोंवीतहव्यप्राप्तहूया। वहीरूपहोतभया
जोग्रन्यहैग्रनन्यहै। जनहै निरंजनहै। सर्वहैग्रसर्वहै। ग्रजरहैग्रमरहै। सर्वकीग्रारहै सक
लहै। ग्ररनिःकलहै। ऐसाजोग्राकाशतेभीनिर्मलपदहै। तिसविषेइस्थिरवीतहव्यइस्थि
तहोतभया। इति श्रीउपशमप्रकरणेवीतहव्यनिर्वाणयोगोपदेशवर्णनंनाम सर्गः। व
शिष्ठउवाच। हेरामजीवीतहव्यजोमुनीस्वरथा सोदुःषरूपसंसारसमुद्रकेपारपरमपदको।

उ.प्र.
३३

33

प्राप्त भया ॥ जिस पद कों प्राप्त हूए जनन मरण नहीं पावता तिस विषे स्थित हूया ॥ प
मे शांति उपशम आनंद कों प्राप्त भया ॥ जैसे इंदु रस मंद्र विषे पडी हूई समुद्र होजाती है ॥ तैसे
ब्रह्म समुद्र विषे स्थित हूया ब्रह्म ही होया सो ईभया ॥ अरु सरीर जो वीतहव्य का था सो वि
दरा होइकरि गिरपड्या ॥ अरु सरीर रूपी ब्रह्म था ॥ तिस विषे हूदा रूपी आलण्या था ॥ तिस वि
षे प्राण रूपी पंषी रहता था ॥ सो भी विदेह कमल विषे प्राप्त हूया ॥ जैसे भ्रमाणी कर पाणा था
वता है तैसे ताय प्राप्त भया ॥ अपणे स्वरूप विषे स्थित भया ॥ हे राम जी तिस कों यह वीतहव्य
की कथा श्रवण करी है ॥ सो अनंत विचार कर युक्त है ॥ इस प्रकार विचार कर के वीतहव्य वि
श्रांतवान हूया है ॥ तुम भी इसी उपदेश कों विचार कर के सिद्धांत सार कों प्राप्त होवो ॥ अव
र दृश की चितवना कों त्याग कर सावधान होवो ॥ हे राम जी जो कछु मैं तुम कों पूर्व कहा है ॥
अरु अब जो कछु कहता हों ॥ अरु वह कहूंगा जो कछु कहूंगा तिस कों विचार ॥ जो मन का ज्ञान न
ही करि प्राप्त होती है ॥ अरु ज्ञान ही करि दुःख नाश होते हैं ॥ अरु ज्ञान ही करि अज्ञान निवृत्त हो
ता है ॥ अरु ज्ञान ही करि परम सिद्धांत कों प्राप्त होता है ॥ पावणे योग्य यही वस्तु है ॥ दुःख के नाश
करणे कों अवर कोऊ समर्थ नहीं ॥ जब यह निश्चय हूया जो ज्ञान करि कै सर्व पाश काटे जा
ते है ॥ तब दुःख रूप के संयूहन छूट जाते है ॥ जो ज्ञान ही करि वीतहव्य चित कों चूर्ण कीया ॥ हे
राम जी वीतहव्य की जो संवत थी सो जगत ते अतीत होय तभई ॥ जेता कछु दृश्य है सो मन
करि होता है ॥ जब मन उपशम होता है तब सर्व जगत अनभव रूप होजाता है ॥ वीतहव्य
भी मन ही मात्र था अरु मैं भी मनो मात्र हों ॥ तुम भी मनो मात्र हो ॥ पर्वतादिक सर्व जगत
भी मनो मात्र ही है ॥ मन ते इतर कछु नहीं ॥ जहां मन होता है तहां जगत होता है मन ही ज
गत रूप है ॥ अरु जगत ही मन रूप है ॥ जो ज्ञानवान पुरुष है सो मन की दृश्य कों त्या
ग कर कै केवल चिदानंद आत्मा तत्व विषे स्थित होते है ॥ राग द्वेषादिक विकार तिन
के मिट जाते है ॥ अनभव पद कों पाइ कर विवेकी सर्व शोक कों तर जाते है ॥ इति श्री उ
॥ पशम प्रकरणे वीतहव्य विश्रांति समाप्तं नाम सर्गः ॥ वशिष्ठोवाच ॥ हे राम जी वीतह
व्य मुनीश्वर कों आदि विदेह होइ कर राग द्वेष ते रहत स्थित होवा ॥ जैसे तीं समस्त वर्ष वी
तहव्य तीत शोक जीवन मुक्त होइ कर विचर्या है ॥ तैसे तुम भी विचरों ॥ अवर भी महा बुद्धीवा
न अरु मुनीश्वर हूए है ॥ जो ज्ञान ज्ञेय होय कर राज्यादिक व्यवहार विषे भी रहे है ॥ तैसे तुम
भी जीवन मुक्त होइ कर रहो ॥ हे राम जी सुख दुःख कर्म आत्मा कों ग्रहण नहीं कर सकते ॥ आत्मा
सर्व तत्व है तुम किस निमित्त मिथ्या शोक करते हो ॥ अनेक विदेह वेद मय पृथ्वी लोक विषे विचर
ते है ॥ परलोक कों कदाचित नहीं प्राप्त होते ॥ जैसे तुम नहीं अशोक कों प्राप्त होते ॥ हे राम जी
तुम स्वस्थ होउ राहो ॥ समस्त सर्व तत्त्व होय आत्मा होत मन कों वडु जन्म नहीं ॥ जीवन्मुक्त जोगु
षं अपणे स्वरूप विषे स्थित है ॥ सो हर्ष शोक के वश कों नहीं प्राप्त होते ॥ जैसे सिद्धेंद्र वैतरो
के वश नहीं होता ॥ जैसे जीवनमुक्त विकारों के वश नहीं होते ॥ रामोवाच ॥ हे भगवन इस प्रसं
ग विषे मुझ कों संशय उदे हूया है ॥ तिस का निवारण करो ॥ हे तत्ववेत्ताओं विषे श्रेष्ठ जीवनमुक्त
के शरीर विषे जो कोन हूए है आवती या तो आकाश विषे उडते फिरे ॥ अवर स्वरूप क
र अवर शरीर विषे प्रवेश कर जावे ॥ इत्यादिक शक्ती उस विषे नहीं देषीती या ॥ वशिष्ठोवाच ॥ हे
राम जी आकाश गमनादिक जो सिद्धी है ॥ सो कर्म तपादिक पदार्थों की शक्ति है ॥ जैसे कछु व
विष जाल है ॥ विषारी देवता ॥ बहु रूप हो जाण इत्यादिक वस्तु द्रव्य के स्वभाव है ॥ आत्म
ज्ञान की शक्ति नहीं ॥ हे राम जी जो कोऊ द्रव्य कृया काल कों ॥ यथा क्रम साधना है तिस कों श
क्ति प्राप्त होती है ॥ ज्ञानी साधे अथवा अज्ञानी साधे शक्ति प्राप्त होती है ॥ परंतु शक्ती आत्म ज्ञा
न का फल नहीं ॥ आत्म ज्ञानी कों आत्मा की सिद्धता होती है ॥ वह आत्मा कर आप विषे तृप्त हो
ते है ॥ सिद्धी जो अविद्या रूप है ॥ तिन की ओर नहीं धावता ॥ जेता कछु जगत है सो तिस अवि

द्या रूप जाल था है ॥ पदार्थों कर पदार्थों विषे इच्छावान नहीं ॥ जो आत्मज्ञानी है सो सिद्धता के निमि
त्त इन पदार्थों कों साधते है ॥ अरु जो ज्ञानवान है सो इन के निमित्त यत्न नहीं करते ॥ अरु जो प
रम तत्व है तो ज्ञानी होवे अथवा अज्ञानी होवे ॥ इंद्रीयादिकों केरी पर सकों पावता है ॥ परम तत्त्व
ज्ञान करि कै नहीं ॥ द्रव्य की शक्ति है सो अविद्या रूप है ॥ अज्ञानी इन की ओर धावते है ॥ ज्ञानवान नहीं
धावते ॥ वह सर्व ते अतीत है ॥ सर्व इच्छा का तिन त्याग कीया ॥ अरु आत्म पद विषे संतोष पाया
है ॥ वह इन की इच्छा नहीं करते ॥ इन शक्तीयों की इच्छा भोगों के निमित्त अथवा वडाई के निमि
त्त होती है ॥ अथवा मान अरु जीवणे के निमित्त सिद्धी की इच्छा होती है ॥ अरु आत्म ज्ञानी को न
भोगों की इच्छा होती है न सिद्धता की न मान की इच्छा होती है ॥ न जीवणे की इच्छा होती है वा
हे ते जो यह सर्व धर्म अनात्म धर्म है ॥ वह नित त्रिप्त शांत रूप है ॥ वीतराग निर्वासी पुरुष है ॥
अरु आकाश वत निर्मल अपणे आप विषे स्थित है ॥ जैसे सुष सम भाव का आवता है ॥ तैसे दुष भी
स्वभाव आवता है ॥ शरीर की दुष सुष अवस्था विषे चलायमान नहीं होते ॥ तिन ते
मरण संग होते है ॥ अरु जीवणे मरणे की चाहना उन कों नहीं फुरती ॥ सर्व विषे सम रहते है
जैसे समुद्र विषे नदीयां प्रवेश करती यां है ॥ अरु समुद्र अपणी मर्यादा विषे स्थित है ॥ तै
से ज्ञानवान धाम कों नहीं प्राप्त होता ॥ हे राम जी ज्ञानवान कों जो कछु प्राप्त होता है ॥ सो अ
स्या विषे अरचन करता है ॥ तिस कों वारणे विषे कछु अर्थ नहीं ॥ अरु ग्रहण करणे विषे कछु अ
नवापु नहीं ॥ अरु किसी का आश्रय तिस कों नहीं सदा अपणे स्वरूप विषे स्थित है ॥ अरु य
ह जो सिद्धी है ॥ सो मंत्र कर्म काल कर होती यां है ॥ एक योग कर्या पासी है ॥ तिस के साधणे
कर उडणे की शक्ति होती है ॥ एक मंत्र कर शक्ति होती है ॥ एक गुडका मुष विषे राषणे
करणे की शक्ति आवती है ॥ इत्यादिक शक्ती की प्राप्ति होती नहीं है ॥ तिस ते आत्मज्ञान
ही ॥ हे राम जी जैसी जैसी शक्ति जिस साधन कर होती है ॥ तिस ते अन्यथा करणे कों समर्थ
व भी समर्थ नहीं ॥ काहे ते जो स्वभाव वश ते स्वतः सिद्ध है ॥ जैसे वेद मा विषे आदित्य तल ता
है ॥ अरु अग्नि विषे उष्णता है ॥ इत्यादिक पदार्थों विषे प्राप्त ने नैक रके तैसा स्वभाव भया है
तिस के विपर्यय करणे कों कोऊ समर्थ नहीं ॥ सर्वज्ञ जो त्रिलोकी भगवान है ॥ सो भी अन्यथा
करणे कों समर्थ नहीं ॥ हे राम जी तिस द्रव्य विषे मारणे की समर्थता है सो मारता है ॥ अरु मद रा
विषे मत्त करणे की समर्थता है ॥ अरु एक औषध ही विषे उकलेद करणे की शक्ति है ॥ तिस
के मधरण करणे कर उकलेद होता है ॥ इत्यादिक जैसे इन तिलीय विषे अपणी अपणी शक
है ॥ तैसे द्रव्य योग काल आदिक विषे सिद्धता शक्ति नेत करह ही है ॥ तो इन कों साधता है ति
स कों यह शक्ति प्राप्त होती है ॥ जो आत्मज्ञानी भी यह साधन करे तो तिस कों भी यह शक्ति हो
ती है ॥ वह करता भी अकर्ता है ॥ अरु सिद्धी आत्मज्ञान के पावणे विषे कछु उपकार नहीं क
रती या ॥ परंतु जो इन की इच्छा करे ॥ तो पावता है ॥ यत्न कर कै पावता है ॥ यत्न बिना नहीं
पावता आत्मज्ञानी कों इच्छा भी नहीं होती ॥ आत्म परायण ही होता है ॥ सर्व इच्छा का तिस
के सांत होगए है ॥ आत्म लाभ कर के हे राम जी जेते कछु लाभ है ॥ तिन ते परे आत्म लाभ है ॥
आत्मा कों पाइ कर वह कछु इच्छा किसी की नहीं रहती ॥ जैसे अमृत कों पान कर के अवर जल की
इच्छा नहीं करता तैसे आत्म लाभ कर के अवर इच्छा नहीं रहती ॥ ऐसा आत्मा लाभ जिस पाया
है ॥ तिन कों इन की इच्छा कैसे होवे ॥ जैसी जैसी किसी कों इच्छा होती है ॥ तिस कों तैसा ही प्रा
प्त होता है ॥ ज्ञानी होवे अथवा ज्ञान ते रहत होवे ॥ इच्छा यत्न के अनुसार फल होता है ॥ यह
जो वीतहव्य था तिस कों इच्छा कछु न रही थी ॥ अरु अयमनो मस्तं पास गया था ॥ तिस विषे य
ह शक्ति रहत आगे थी ॥ सो जय आगे कों साधना कर के थी ॥ पाछे जब ज्ञान उपज्या है तब इच्छा
कछु न रही ॥ हे राम जी जो कछु किसी कों कछु फल प्राप्त होता है ॥ सो अपणे यत्न कर के हो

ताहै॥ जो ज्ञानवान है सो सदा विमर्हता है॥ इष्ट अरु अनिष्ट की इछा कछु नहीं फुरती॥ रा॥ मो॥ वा॥ च॥ हे भगव
न एता काल जो वीतहव्य विंध्याचल वर्ष समाधि विषे रहा॥ सो तिसका शरीर पृथ्वी साथ पृथ्वी क्यों न हो
गया॥ अरु सिंह व्याघ्रादिक उस शरीर कों भोजन क्यों न कर गए॥ अरु पाछे जो विदेहमुक्त भया॥ सो प्र
थमही क्यों न भया॥ जो पृथ्वी विषे देह कै रूप देह के निमित्त एता यतन कीया॥ इस संशय को निवारण
करो॥ व॥ सि॥ ष्टो॥ वा॥ च॥ हे रामजी जो मै चित्त वासनारूपी ने तमाय कों थी रूही है॥ सो सुख अरु दुख कों भोग
ती है॥ अरु मलन भाव कर बावरी रूही है॥ अरु जो वासना ते रहित है सो समुद्र समता रूप है॥ सुख दुख के
भोगते रहता है॥ किसी कारण कर छेदी नहीं जाते॥ हे रामजी जिस जिस पदार्थ विषे चित्त लागता है
सोई सोई पदार्थ स्वरूप विषे दृढ भासता है॥ यह पदार्थ की शक्ति है॥ जैसी जैसी पदार्थ विषे भाव
है॥ तैसी तैसी भासती है॥ इस कारण ते वडे ज्ञानवान धनी नहीं होते हैं॥ तो भी समाधि के बल कर तिनका श
रीर ज्यों का त्यों रहता है॥ काहे ते सो चित्त जिस पदार्थ विषे लागता है॥ तिसका रूप हो जाता है॥
जैसे मित्र भाव को देख कर स्वभाव कर ही प्रसन्न होता है॥ अरु शत्रु भाव कों देख कर चित्त विषे स्वभा
व के अप्रसन्नता फुर आवती है॥ मिष्ट वस्तु को देख कर चित्त स्वभाव कर ही लोलुप हो जाता है॥ अ
रु दुर भोजन विषे स्वभाव कर संकुचि जाता है॥ कटुक विषे विरसता कों प्राप्त होता है॥ जैसे पृथ्वी
का चित्त पंथ के परवत अरु वृक्षा विषे योगवान वंधायमान नहीं होता॥ जैसे चंद्रमा के निकट गए
ते सीतलता होती है॥ अरु सूर्य के निकट उष्णता प्राप्त होती है॥ सो पदार्थों की शक्ति है॥ जिस पदा
र्थ संग चित्त का सपर्श होता है॥ तिसका स्वभाव का अनुभव फल प्राप्त होता है॥ तैसे जब जोगी देह
अरु इंद्रीयों की वासना सम भाव कों अभ्यास कर सम भाव विषे इस्थित होता है॥ तब तिसकों सम
का अनुभव होता है॥ सम भाव सर्व विषे एक ही है॥ इस कारण ते तिसके शरीर कों सिंह अरु आदिक
कोऊ छेदन नहीं सकता जो जीव उसके ज्ञान करणे कों आवता है॥ तौ भी हिंसा भाव कों त्याग देता है॥ अ
हिंसा हो जाता है॥ इस कारण ते निकर आप भी शांत हो जाते हैं॥ वीतहव्य का शरीर छेद कों न प्रा
प्त भया॥ अरु न पृथ्वी विषे पृथ्वी हो गया॥ सर्व समता का सपर्श की इस्थित है॥ काष्ट लो
ष्ट पाषाण अरु आदिक प्रयंत सर्व विषे समता एक अनंत है॥ परंतु जहां पुर्यष्टक होती न
हीं भासती है॥ जहां पुर्यष्टक नहीं होती है तहां नहीं भासती॥ जैसे सूर्य का प्रतिबिंब सर्व ठ
वर सर्व होता है॥ परंतु जहां स्वछ ठवर दर्पण जलादिक होते हैं॥ तहां सूर्य का प्रतिबिंब भास
ता है॥ अरु जहां जल ठवर नहीं होती॥ तहां प्रतिबिंब भी नहीं भासता॥ तैसे जहां पुर्यष्ट
का है तहां संवित भासती है॥ अन्यथा नहीं भासती॥ इस कारण ते वीतहव्य की जो संवि
त सम भाव विषे इस्थित भई॥ इसकों किसी तत्व अरु किसी जीव का क्षोभ न होत भया॥ अरु प
वन जो का क्षोभ भी न होता है॥ जब प्राण फुरते हैं जब प्राण फुरणे ते रहत होते हैं॥ तब त
तों का क्षोभ नहीं होता॥ सो वीतहव्य की वाह्य अरु अभ्यंतर स्पंद कला प्राणों की शांत हो
गई थी॥ अरु चित्त फुरणे की कला भी शांत हो गई थी॥ प्राण अरु चित्त उभय कला फुरणे
ते रहत थी॥ इस कर धातों का क्षोभ भी न भया॥ जब इनका फुरणा होता है॥ तब शरीर
नाश होता है॥ अन्यथा नाश नहीं होता॥ हे रामजी जब देह रूपी घर सर्व विषे चित्त अरु वायु का स्पं
द शांत होता है॥ तब सर्व तत्व मेरु वत इस्थित हो जाते हैं॥ किसकी समर्थता है॥ जो तिसकों
स्वभाव ते अरु नाश करे॥ योगेश्वर का जो चित्त अरु प्राण स्पंद रहित होजाता है॥ सो इनकों वश
करके ठहरता है॥ तब तत्व उसकों तत्वों का क्षोभ होता है॥ नव धातु पित्त कफ का क्षोभ होता है॥ त
है॥ नष्ट नहीं होता जैसे वज्र कों छेदन कोऊ नहीं कर सकता॥ तैसे तिसके शरीर कों नाश
कोऊ नहीं कर सकता॥ सर्व की शक्ति तिस ऊपर कुंठित होजाती है॥ इस कारण ते वीतहव्य का
शरीर ज्यों का त्यों रहा॥ अरु तब कों न विदेहमुक्त भया॥ परंतु जो तै मे प्रश्न कीया॥ सो तिसका
उतर श्रवण कर॥ हे रामजी जो तत्वज्ञानी वेद वीतराग महा बुद्धिमान हैं॥ तिनकी अभिमान गो

वहदग्धी है॥ सो पुरुष सम तत्व इस्थित होते हैं॥ तिनको न कोऊ प्रारब्ध कर्म है न संचित कर्म है
न वर्तमान का कर्म है॥ सर्व ते मुक्त तत्ववेत्ता तत्व इस्थित होते हैं॥ अरु स्वछंद विचरते हैं॥ अ
रु जैसी इछा करै तैसी सिद्धि होती है॥ हे रामजी वीतहव्य कों काकतालीवत॥ अकस्मात जी
वणे का सपंद फुरया॥ तब केताक काल जीवता रहा॥ तब उसकी संवित विषे विदेहमुक्तरू
पणे का सपंद फुरया तब विदेहमुक्त भया॥ उनकी इस्थित स्वभाव कर संतन रहोती है॥ ज्ञानवान
की संपूर्ण वासना क्षीण होती है॥ मन आत्मपद विषे इस्थित होता है॥ जिसकी वांछा करता
है॥ सो तातकाल होजाता है॥ काहे ते जो आत्मा सर्वशक्त है॥ ॥ इति श्री उपशम प्रकरणे
सिद्धताभविता नाम सर्गः॥ रा॥ जो॥ वा॥ च॥ हे भगवन जब विचार वीतहव्य का चित्त शांत हो
गया तब उसकों मैत्री करुणादिक गुण आनि प्राप्त हुए यह तुम मो कहो॥ पर विवेक कर तो चित्त
उसका नष्ट होगया॥ बहुड मैत्री आदिक गुण कहां उपजत आन हुए॥ व॥ सि॥ ष्टो॥ वा॥ च॥ हे रामजी चि
त्त नाश द्वै प्रकार का है॥ जीवनमुक्त का चित्त अचित्तरूप होजाता है॥ अरु विदेहमुक्त का चित्त
रूप ते नष्ट होजाता है॥ जैसे भुना दाणा होता है॥ तैसे जीवनमुक्त का चित्त है॥ देखणे कर चि
तरूप है अरु मथन भाव नहीं॥ अरु जैसे दाणा नष्ट होजावे तैसे विदेहमुक्त का चित्त है जो रव
णमात्र भी नहीं रहता॥ हे रामजी चित्त की जो सत्ता है सो दुख का कारण है॥ अरु चित्त की जो असत्ता
है सो सुख का कारण है॥ चित्त विषे जो अविद्यारूप वासना फुरती है॥ सो चित्त है॥ अरु जन्मों के
देवणेहारी है॥ अरु दुख का कारण है॥ अरु चित्त की जो असत्ता है॥ सो सुख का कारण है॥ अरु दुख
विषे जो अविद्यारूप वासना फुरती है॥ सो चित्त है॥ अरु जन्मों के देवणेहारी है॥ अरु दुख
का कारण है॥ गुणों के संग कर अहं मम भाव विषे रहता है॥ अरु चित्त की सत्ता कर जीव के हो
ता है॥ हे रामजी जब लग चित्त विद्यमान है॥ तब लग अनेक दुख होता है॥ दुखरूपी वृक्ष का वी
ज चित्त है॥ तब चित्त नष्ट हूया तब कल्याण भया॥ रा॥ मो॥ वा॥ च॥ हे आत्माराम किसका नाम अ
याहै॥ अरु कैसे नष्ट होता है॥ अरु किस कर नाश होता है॥ अरु संत कैसे होता है सो कहो॥ व
सिष्टो वाच॥ हे प्रश्नवेत्तों विषे श्रेष्ठ सर्वगुण॥ सुख अरु दुख दशा जिसके धीरज कों चलाइ न
सकती॥ स्वरूप ते जैसे सुमेर कों पवन चलाइ नहीं सकता॥ तैसे जिसके चित्त कों सुख दुख न
हीं चलाइ सकते॥ तिसका चित्त सतक जाणु॥ अर्थ यह जो वह चित्त सत्पद कों प्राप्त हूया है॥
उस चित्त सों चिंता नाश हो गई है॥ जैसे भुंने दाणे सों अंकुर नाश होता है॥ तैसे उसकी सत्ता
नष्ट भई है॥ आत्मा ते इतर जिसकों कछु नहीं फुरता सो चित्त मिरतक हूया है॥ हे रामजी अ
हंकार इछादिक विकार जिसके चित्त कों न छल न कर सकें॥ तिसका चित्त मिरतक जाणु॥ अरु
जिसकों इंद्रीयों विषे इष्ट अथवा अनिष्ट प्राप्त होवे॥ अरु राग कर के ग्रहण की हूलना भा
वना न उपजे॥ इष्ट विषे अरु अनिष्ट विषे द्वेष कर के त्याग की हूलन भावना न उपजे॥ जैसे का तै
सा ही रहे॥ तिस पुरुष का चित्त मिरतक जाणु॥ तिसका चित्त नष्ट हूया है सो जीवनमुक्त
है॥ अरु तिसकों संसार इष्ट पदार्थ विषे राग होता है॥ तिस कर ग्रहण की इछा करता है॥ अरु अ
निष्ट की प्राप्ति विषे द्वेष कर के त्याग की इछा करता है॥ अरु अहं मम भाव मानता है॥ देह वि
षे अहं अभिमान है॥ तिस कर आपकों दुखी सुखी मानता है॥ ऐसा जो प्राणी विषे अनुभव हो
ता है॥ सो चित्त जीवन है॥ सो पुरुष जीवता है॥ यह चित्त सत्ता है॥ अरु जब चित्त संसार ते विरक्त हो
वे॥ अरु सत्संगत कर के सत्शास्त्रों का श्रवण मनन करे॥ अरु स्वरूप का अभ्यास होवे
तब चित्त अचित्त होजाता है॥ अरु परमानंद की प्राप्ति होती है॥ तब मुक्तरूप होकर विचर
ता है॥ अरु मैत्री आदिक गुण जिस प्रकार जीवनमुक्त विषे होते हैं॥ सो श्रवण करु॥ हे रामजी
चित्त विषे जो संसार की सत्तारूपी मैल है यही चित्त का चित्तत्व भाव है॥ सो आत्मज्ञान कर
के नष्ट होजाता है॥ तब मैत्री आदिक गुण आन प्राप्त होते हैं॥ जैसे सूर्य के उदय हूए तम निव
र्त होजाता है॥ अरु प्रकाश उदय होता है॥ अरु जैसे भुंने दाणों का अंकुर भाव जल जाता है॥ तै

सेज्ञान करके चित का चितत्व भाव नष्ट हो जाता है ॥ अरु मैत्री आदिक गुण उदै होते हैं ॥ हे रामजी मात्र चित्त देषी ता है ॥ अज्ञानी वृत यतन करना भी भासता है ॥ परु अज्ञानी का चित्त जन्म का कारण होता है ॥ अरु ज्ञानी का चित्त जन्म का कारण नहीं ॥ जैसे काचा दाणा उगावता है भुंना नहीं उगावता ॥ तैसे अज्ञानी वहु जन्म लेता है ॥ अरु ज्ञानी वहु उलटन मन नहीं लेता ॥ जैसे चंद्रमा राहु ते छूटता है ॥ तब उसकी सीतलता अरु प्रकास उदय होता है ॥ तैसे जब अविद्या ते छूटता है ॥ तब चित्त विषे मैत्री करुणा मुदितादिक गुण आन उतपन होते हैं ॥ जैसे वसंत ऋतु के आगमन ते वल्ली सर्व प्रफुल्लित हो आवती हैं ॥ तैसे चित्तभाव के मिटे ते मैत्री आदिक गुण स्वभाव कर आन फुरते हैं ॥ अरु जब विदेह मुक्त होता है ॥ तब तिसका चित्त रूप ते भी नष्ट हो जाता है ॥ उदार गुण कोऊ नहीं रहता ॥ वह अवस्था अवर कोऊ नहीं जाणता ॥ विदेह मुक्त होय जाता है ॥ तिस विषे द्वैत कल्पना कोऊ नहीं फुरती ॥ निर्मल पावन पद है ॥ हे रामजी जीवन मुक्त विषे चित्त का स्वरूप अचित होइ करि रहता है ॥ अरु विदेह मुक्त विषे चित्त रूप ते नष्ट हो जाता है ॥ इस कारण ते जीवन मुक्त विषे मैत्री करुणादिक गुण पाईते हैं ॥ अरु विदेह मुक्त का विषे आत्मा निष्कल है ॥ सो चित के नष्ट भए विदेह मुक्त विषे कर्ता है ॥ गुणों की कल्पना तिस विषे कोऊ नहीं फुरती ॥ परम पावन निर्मल पद विषे इस्थित होता है ॥ अरु सत्तादिक गुण भी नष्ट हो जाते हैं ॥ काहे ते जो चित्त रूप ते नष्ट हो जाता है ॥ चित्त के नष्ट हुए चित्त की यां अवस्था कहता हूं ॥ न कोऊ गुण रहता है न अगुण रहता है ॥ न वह गुणों ते अतीत रूप या सार कहीता है ॥ न अगुणों ते उत्पन रूप या प्रसार कहीता है ॥ न तो लपता है न उदै है न अस्त है ॥ न हर्ष है न सोक है न तेज है न तम है ॥ न दिसा है न आकाश है ॥ न धर्म है न अधर्म है न वासा है न अवासा है ॥ न अंजन है न निरंजन है ॥ न सत है न असत है ॥ न वह स्माता से सूने है ॥ ऐसा जो सर्व कलना ते रहत पद है तिस विषे अवर कोई गम नहीं ॥ जैसे आकास के इसथान को पवन जाणता है ॥ तैसे तैसे उसकी अवस्था नहीं जाणी ॥ तदो इस्थित भए सर्व दुख शांत हो जाते हैं ॥ इस आनंद विषे लीन होता है ॥ आकाश की न्याई निर्मल पद को ज्ञानवान प्राप्त होता है ॥ जिसके पाए ते अवर पावणा कछु नहीं रहता ॥ ॥ इति श्री उपशम प्रकरणे चित्त विचारो नाम सर्गः ॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे भगवन परम आकाश के कोश विषे पर्वत है ॥ तिसके ऊपर जगत रूपी वृक्ष है तारागण तिसके पुष्प है ॥ अरु मेघ पत्र है ॥ अरु सूर्य चंद्रमा सकंध है ॥ अरु देवता दैत्य मनुष्यादिक जीव सर्व तिस उपर पंखी रहते हैं ॥ सपत समुंद्र तिसके समीप वावली या है ॥ अनंत नदीयां तिन विषे प्रवेश करतीया हैं ॥ च्यार दश प्रकार के भूत जात उत्पन होते हैं ॥ सुख दुख फलों कर पूर्ण है ॥ मोह रूपी जल कर सिंचीता है ॥ सो दृढ कर के इस्थित भया है ॥ तिसका बीज कवण है तिस बीज का बीज कवण है ॥ यह ज्ञान रूपी सार बोध की वृधता के निमित मुझ को संषेप ते कहो ॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी इस संसार का बीज देह आभी है ॥ तिसके अंतर अरंभ की धनता है ॥ जब सुभ असुभ अरंभ का अंकुर धारी रहोता है ॥ तब असुभ सुभ को धारता है ॥ तिसके आगे इस संसार का बीज सरीर है ॥ तिस सरीर का बीज चित है ॥ सात करण समता समस्त जिसकी पाबती हो रासु है ॥ अरु जन्म मरणों का भंडार है अरु दुख रूपी रतनों का डबा है ऐसा जो है चित सो इस सरीर का कारण है ॥ हे रामजी जेता कछु जगत जाल दृष्ट आवता है ॥ सो सर्व असत रूप है ॥ चित के फुरणे कर के नाना प्रकार के अडंबर भासते हैं ॥ जैसे गंधर्व नगर स्वप्न करि के नाना प्रकार के आरंभ संतके भासता है ॥ सो असत है ॥ तैसे यह जगत असत है ॥ जैसे मन का विषे सद भाव होता है ॥ तैसे चित विषे जगत का सद भाव होता है ॥ चित रूपी अंकुर के दो रूपी दृढ पदार्थ है ॥ एक प्राणों का फुरणा दूतीय दृढ भावना जब प्राण संपंद होता है ॥ फुरणा तो एको नर सों नाड़ी तिन की ओर तब चित संवेदन उदय होता है ॥ जब प्राण सपंद तिन की ओर नहीं फुरता तब चित नहीं उपजता ॥ जब प्राण फुरता है ॥ तब सूधमात कचित आन फुरता है ॥ तिस विषे जगत भासता है ॥ जैसे आकाश विषे नीलता भासती है ॥ तैसे प्राण विषे चित भासता है ॥ जब प्राण सपंद होता है ॥ तब चित सवित उछलती है ॥ जैसे दृढ करके ताउन की

पावेन उछलता है ॥ तैसे प्राण सपंद विषे सर्वगत संवित उपलवध रूप होती है ॥ तहां पतन चिंतन होइ कर सांतक भाग विषे इस्थित होती है ॥ सो मन रूप घम ते स्वघम मनत रहे ॥ जैसे वायु विषे गंध रहती है ॥ सो संवित स्वरूप को त्याग कर के दृढ रस बुध धावती है ॥ तिस कर नाना प्रकार का जगत भासता है ॥ अरु नाना प्रकार की धावना सा उठती या है ॥ तिस कर अनेक दुख दृढ को प्राप्त होता है ॥ ताते हे रामजी संतरुष चक्र के वाहने ते एक ण पर्म कल्याण का कारण जाण ॥ जब संवित स्वरूप विषे इस्थित होती है तब भ्रम मिट जाते हैं ॥ जब शुद्ध संवेदन विषे अहं उल्लेख फुरता है ॥ तब संवेदन रूप चित होता है ॥ चित कर अनेक दुख होते हैं ॥ चित का होवणा अनर्थ का कारण है ॥ जब चित न उपजे तब यत्न होता है ॥ चित के अनेक दुख होते हैं ॥ अरु चित तब निवर्त होवे ॥ जब प्राण सपंदन की पछ्यवा वासना नष्ट होवे ॥ सो प्राण न हो जाती है ॥ अरु चित तब निवर्त होवे ॥ अरु प्राणायाम कर योगी अर प्राण फुरणे को रोकते हैं ॥ तब चित इस्थित हो जाता है ॥ जब चित इस्थित रह्या ॥ तब जगत भ्रम शांत हो जाता है ॥ यह योग कर अनुभव कीया है ॥ अरु ज्ञान कर भी अनुभव कीया ॥ हे रामजी चित वासना कर उतपन होता है ॥ सो वासना विचार ते रहत फुरती है ॥ जैसे वालक को जनम ते ही पुण्य पाप लेंन ते चेष्टा को अम फुर आवती है ॥ तैसे अक समात ते भावना की दृढता ते वासना फुर आवती है ॥ हे रामजी जिस विषे तीव्र भावना पुरुष की होती है सो ही रूप पुरुष होता है ॥ स्वरूप के प्रमाद कर के इस को संसार भासता है ॥ तिस विषे दृढ प्रतीत हो गई है ॥ जब तिसकी भावना करता है ॥ तब जगत की वासना कर मोह को प्राप्त होता है ॥ जो स्वतः सिद्ध अनुभव रूप आत्मा है ॥ तिसको त्याग नहीं सकता ॥ अरु वासना को वल कर के सरूप का त्याग कीया है ॥ अरु भ्रांत रूप जगत को पकड़ देखता है ॥ जैसे मद कर मत को पदार्थ विपर्यय अवर के अवर भासते हैं ॥ तैसे मूढ को वासना के वल कर जगत के पदार्थ सत भासते हैं ॥ हे रामजी अममकतान करके जीव दुखी होता है ॥ शांत को नहीं प्राप्त होता ॥ मन की चिंता कर पकड़ लेता है ॥ मन किसका नाम है सो श्रवण कर ॥ जो असमयक ज्ञान अनात्मा विषे आत्म भावना होवै ॥ अरु वस्तु आत्मा विषे अवस्तु अनात्म भाव होवे ॥ तिसका नाम मन है ॥ सो मन कैसे उपजता होता है ॥ चैतन संवित विषे जो पदार्थों की चितवना होती है ॥ बहुरि तिन पदार्थों की दृढ भावना होती है ॥ तिस चित ते बहुर जन्म मरणादिक विकार उपजते हैं ॥ तब वही चैतन संवित चित रूप हो जाती है ॥ जब ग्रहण अरु त्याग का संकल्प विकल्प ॥ बहुर किसी का ग्रहण करता है ॥ किसी का त्याग करता है ॥ जब वासना नष्ट होतीया है ॥ तब मन असंकल्प अंतर ते त्यागा जावे ॥ तब चित भी मृतक हो जावे ॥ हे रामजी जेते के मन पद को प्राप्त होता है ॥ मन का अमन होवणा परम उपशम का कारण है ॥ अरु सर्व जगत को अवस्तु भूत करके त्यागीए ॥ तुझ जगत के पदार्थ हैं ॥ तिनकी अभावना करीए ॥ हे रामजी चित का रूप पदार्थ मात्र है ॥ जब पदार्थों विषे रस उठ जावे ॥ हृदय आकाश विषे चित शांत हो जावे ॥ जब लग पदार्थों का रस पड़ा फुरता है ॥ तब लग चित दृश्य विषे रस उठ जावे ॥ तब चित वहुर न उपजे ॥ जब लग पदार्थों विषे आत्म भावना है ज्यों ज्यों पदार्थ दृढ होता होती जाती है ॥ असम्यक ज्ञान कर के जो परमात्मा विषे आत्म भावना है ॥ अरु ज्यों ज्यों आत्मा विषे भावना दृढ होती है सो सो चित रूपी विष को अवषध अनर्थ के निमित वढता जाता है ॥ सो सो चित रूपी अवषधी गुण दृढ निवर्त होती जावे ॥ जो अवस्त विषे वस्तु बुद्ध निवर्त होती है ॥ जब चित यथा भूत यथार्थ अर्थ को देखता है तब होता जाता है ॥ सो परम कल्याण के निमित है ॥ जब चित पर्म शांत हृदय विषे आन फुरती चित अचित होता जाता है ॥ अरु सर्व आशा निवर्त हो जाती है ॥ परु ज्ञान ते राग संयुक्त वासना निवर्त भई है ॥ तिस कर दे ॥ तब पदार्थों को ग्रहण भी करता है ॥ परु ज्ञान ते राग संयुक्त वासना निवर्त भई है ॥ अरु वासना चित अचित पद को प्राप्त होता है ॥ हे रामजी जीवन मुक्त विषे भी चेष्टा दृष्ट आवती है ॥ परु जन्म का कारण नहीं होती ॥ जैसे न ढूंढा अभिमान ते रहत अनेक प्रकार भी दृष्ट आवती है ॥ जैसे कुंभकार का चक्र भ्रमता उनके त्याग थाती है ॥ तैसे ज्ञानी अभिमान ते रहत चेष्टा करता है ॥ तैसे ज्ञानवान का चित वेष्टा करता भी दृष्ट आवता है ॥ परु वते रहत रूप शनै शनै दृढ हो जाता है ॥ तैसे ज्ञानवान का चित वेष्टा करता भी दृष्ट आवता है ॥ परु जन्म का कारण नहीं ॥ जब प्रारब्ध वेग सरन होवेगा ॥ तब स्वभाव कर दृढ ढ़व जावैगा जैसे भुंना

उ॰प्र॰
१९

बीजउगावतानहीं॥तैसेरामजीरहतज्ञानीकीचेष्टाजन्मकाकारणनहींहोता॥अरदेषणेमात्रचे
ष्टाज्ञानीअज्ञानीकीतुल्लभासतीहै॥जैसेभुनाअरकचावीजएकसमानदृष्टआवताहै॥परकचा
उगावताहै॥अरभुंनानहींउगवता॥तैसेज्ञानीकीचेष्टाजन्मकाकारणनहींहोती॥काहेतेजो
चित्तशांतहोगयाहै॥हेरामजीजिसकीचेष्टाअभिलाषतेरहतहै॥सोजीवनमुक्तकहीताहै॥अ
रुचित्तकेवलचिनमात्रकोंप्रापतहूयाहै॥जवशरीरकोंत्यागताहैतवअचित्तरूपचिदाकाशहोजा
ताहै॥हेरामजीचित्तकेदोवीजहैं॥एकप्राणोंकाफुरणा॥द्वितीयवासनाकाफुरणा॥दोविषेजवए
ककाअभावहोवे॥तवदोउभयनाशहोतेहैं॥यहदोपरस्परकारणहैं॥जैसेतडागकमेवजलस्थानव
रजातेहैं॥वहुरवर्षाकरकेतडागकोंपुष्टकरतेहैं॥सोपरस्परकारनरूपहैं॥तैसेप्राणसपंदअरवा
सनापरस्परकारणकारूपहै॥जैसेवीजतेअंकुरहोताहै॥अरअंकुरतेवीजहोताहै॥तैसेप्राण
सपंदतेवासनाहोतीहै॥अरवासनातेप्राणसपंदहोताहै॥यहउभयचित्तकाकारणहै॥तैसेसुगं
धविनापुष्पनहींहोता॥पुष्पविनासुगंधनहींहोती॥तैसेवासनाविनाप्राणनहींहोते॥अ
रप्राणोंविनावासनानहींहोती॥हेरामजीजववासनाफुरतीहै॥तवसंवितविषेक्षोभहोताहै॥
वहुप्राणोंकोंजगावतीहै॥तिसकरचित्तउपजताहै॥अरजवप्राणसपंदधर्मविदयविषेहो
तेहैं॥तवसंवितविषेक्षोभहोताहै॥अरचित्तरूपीवालकउपजताहै॥इसप्रकारवासनाअरप्राण
उभयचित्तकाकारणहै॥इतीयविशेषकनासहोवे॥तवउभयनष्टहोजावें॥हेरामजीचित्तरूपी
एकवृक्षहै॥सोवृक्षउभयरूपीउभयसकेपदहै॥शरीररूपीसहापलहै॥कार्यरूपीपत्रहैंअनरू
पीवल्लीसंगवेष्टनकीयाहै॥अरत्रिष्णारूपीकालीसरपणीसंगवेष्टनकीयाहै॥अररागद्वेषरू
पीहोवगलेतिसऊपरस्थानवैठतेहैं॥इंद्रीयारूपीतिसविषेछिद्रहैं॥इछाविषेयादिकोंरू
पीजलकरपुष्टहोताहै॥अज्ञानइसकामूलहै॥सोअवासनारूपीषड्गकीधाराकरसीघ्र
हीकाटयाजाताहै॥संसारकीअभावनाकरकेअरस्वरूपकीभावनाकरकेसीघ्रहीनष्टहोजाता
है॥जैसेहस्तीपवनअग्नीकरकेएकाफलवृषसोभीछुटीगिरपडताहै॥तैसेआत्मभावनाक
रकेसंसारवृक्षपीवृषसोचित्तरूपीफलगिरपडताहै॥हेरामजीचित्तरूपीअंधीरैअरसर्वदि
शातेसनेमलनकरलीयाहै॥अरप्रकाशकोंअछादरलीयाहै॥अरविलाकरूपीत्रिशणातिसक
रपडेउछललतेहैं॥अरशरीररूपीमतंभअगकारअज्ञानरूपीकूडतेउपज्याहूयावायुविरोलाव
डेक्षोभकोंकरतीहै॥जवअंतरप्रकाशहोवेतवतमदूरहोवे॥जवप्राणसपंदरोकीयतवधूरशांत
होवे॥आत्मविचारकरकेजवयहवासनातेरहतहोवे॥तवशरीररूपीधूरशांतहोजावे॥हेरा
मजीप्राणोंकाजोसपंदहैसोरोकनेकरशांतहोजाताहै॥अरवासनाकेअनंदतेचित्तइस्थिरहो
जाताहै॥प्राणसपंदअरवासनाकावीजसंवेदनहै॥जवसुद्धसंवितमात्रविषेसंवेदनफुरतीहै॥
तवतिसतेप्राणसपंदभीहोताहै॥अरवासनाभीहोतीहै॥जवसंवेदनकात्यागकरेगातववा
सनाअरप्राणउभयनाशकरेगे॥जैसेजववृषकामूलकाटीयतववृक्षउडनहींउगवता॥तैसेइन
कामूलसंवेदनहै॥जवसंवेदनकाअभावहोवे॥तवउभयनहींफुरते॥संवेदनकावीजआत्मस
त्ताहै॥संवितसत्तातेसंवेदनप्रगटभईहै॥तिसतेइतरनहीं॥जैसेतिलोविनातेलनहींपाईता
तैसेसंवितसत्ताविनासंवेदननहींपाईती॥अंतरवाह्यअवरकछुनहींपाईता॥सर्वसंवित
सत्ताकाअभासहै॥वहीसंकल्पद्वारासंवेदनकोंदेषतीहै॥जैसेसुपनविषेअपणामरणादेष
ताहै॥अरदेसतेदेशांतरदेषताहै॥तैसेसंवितसत्तासंवेदनकोंदेषतीहै॥जवसुद्धसंवितचिन
मात्रविषेसंवेदनकाउत्थानहोताहै॥तोअसत्यवसंवेदनजगतजालकोंदिषावताहै॥जे
सेवालककोंअपणेसंकल्पतेउपज्यावैतालसतभासताहै॥अरजैसेअस्थाणविषेपुरुषभास
ताहै॥तैसेसंवितविषेसंवेदनभासतीहै॥हेरामजीअसम्यकज्ञानकरकेसंवेदनजडदेह
आ॥तिसविषेआत्मवुद्धहोतीहै॥अरसम्यकज्ञानकरकेलीनहोजातीहै॥जैसेजेवडीविषेअ
सम्यकज्ञानकरकेसर्पभासताहै॥अरजैसेनेत्रभ्रांतकरकेआकाशविषेद्वितीयचंद्रमाभास

ताहै॥तैसेआत्माविषेसंवेदनभासतीहै॥त्रिजगतसंवितरूपहै॥संवेदनभीकछुभिनवस्त
नहीं॥यहनिश्चयजिसकोंदृढहोवैतिसकोंमुनीश्वरसम्यकज्ञानकहतेहैं॥जोमनषअप
नवजगतहै॥तिससोंवास्तवुद्धत्यागकरणी॥इसकरभीसंसारकेपारकोंप्रापतहोवेगा
अरजोवास्तवुद्धजाणकरनत्यागकरेगा॥तवजगतकेवडेविस्तारकोंप्रापतहोवेगा॥हेराम
जीसंवेदनकरजोस्वरूपतेउत्थानहोताहै॥सोअनेकदुषकेदेवणहाराहै॥अरअसंवेद
नजोहैजरवतसजडसोअनेकसंपदाकाकारणहै॥सोआनंदउत्थानतेरहतअनेरस
रूपहै॥जिसकोंसंवेदनरूपीउत्थानतेरहतअसंवेदसंवितआत्माकाबोधभयाहै॥सोसंसा
रसमुद्रकेपारकोंप्रापतहोताहै॥रामोवाच॥हेभगवनइनतेरहतवडडोअसेचित्तकेसेरह
तीहै॥अरअसंवितकरकेजरनाकेसेनिवर्तहोतीहै॥वसिष्ठोवाच॥हेरामजीजोसर्वअव
रविषेदृश्यनहींहोता॥अरकछुचित्तकीचेतकोंनहींलगावता॥अरजीवकाज्ञानक
छुनरहे॥सोअसंवितजडतातेरहतहै॥संवितजोहैसर्वदृश्यतिसकरजोदृश्यभासतीहै
अरजोदृश्यकीओरतेजडहै॥अरस्वरूपविषेचेतनहैसोअजडकहीतीहै॥हेरामजीहृद
यआकाशज्योचेतनतनसंवितहै॥तिससंगसंवेदनकासपर्शकछुनहोवै॥ऐसीसंवि
तअजडहै॥तिसकोंजीवनमुक्तकहतेहैं॥जवदृश्यकीभावनानउदे॥जैसेवालकमू
कहोताहै॥अरअभिमानतेरहतहोताहै॥तैसेपरज्ञानकरनिर्वीसीहोवै॥तवजडतातेमुक्त
होताहै॥अरसर्वआत्मभावकोंप्रापतहोताहै॥अरजिसमेचित्तविषेदृश्यकासपर्शहै॥सोसं
वितजडहै॥काहेतेजोसुद्धस्वरूपविषेमलकासपर्शहोताहैइसीतेजडहै॥अरजोसंवितदृ
तकेफुरणेतेरहतहैसोसुद्धहै॥अरअजडहै॥अरजोसंवितद्वैतभावकोंग्रहणकरतीहै॥
सोस्वरूपकीओरतेजडहै॥अरदृश्यकीओरतेचेतनहै॥सोभीजडहै॥हेरामजीजिसकों
स्वरूपकीओरइस्थितहुईहै॥अरदृश्यभावकालेपनहींहोता॥सोसर्ववासनाकात्यागक
रनिर्विकल्पसमाधिविषेजरताहै॥जैसेआकाशविषेनीलताअभावकेवर्ततीहै॥ते
सेयोगीआनंदविषेवर्तताहै॥अरविहसंवेदनसंवितविषेलीनहोताहै॥अरसोईरूप
होजाताहै॥मनकीचितलताइस्थितहोजातीहै॥देषतेवोलतेसपर्शकरतेसुगंधलेतेहैं
एतेसुणतेसर्वइंद्रीयोंकीक्रियाकरतेभीमनइस्थितहोरहताहै॥दृश्यकीओरअभिमाननहीं
फुरता॥सोअजडकहीताहै॥संवेदनतेरहतसुषीहोताहै॥हेरामजीऐसीदृश्यप्रथमतोकष्ट
रूपभासतीहै॥परसर्वदुषकानाशकतीहोतीहै॥तातेइसदृष्टकोंआश्रयकरकेदुषरू
पसंसारसमुद्रकोंतरो॥सोकैसाहैसंसारजैसेसूक्ष्मवीजतेवटकाहोताहै॥अरविस्तार
रकोंपाइकरआकाशकोंसपर्शकरणेलगताहै॥तैसेसूक्ष्मसंवेदनतेसंकल्पनव
फुरतीहै॥तववहीवडेजगतकेविस्तारकोंपावताहै॥अरजनमोंकेजालकोंप्रापतहोताहै॥
वीजरूपहोइकरआपहीआपकोंजनमोंविषेडारताहै॥वहुरवडेमोहविषेगिरताहै॥अ
रजवसंवितआपणीओरहोतीहै॥तवमोहकोंप्रापतहोताहै॥जैसीजैसीचित्तविषेभावनादृ
ढहोतीहै॥साईसिद्धहोतीहै॥जैसेनटअनेकस्वांगोंकोंधारताहै॥तैसेसंवितअनेक
प्रकारोंकोंधारतीहै॥अरजवनटभसकाकोंत्यागतीहैतवअपणेवास्तवरूपकोंप्रापतहो
तीहै॥हेरामजीसंवितरूपीनटणीहै॥अरजगतरूपधारकरपटीनिरतनकरतीहै॥
देवताभीवहीहै॥नागदैत्यराक्षसहस्तीमनुषआदिकइस्थावरजंगमरूपसर्ववहीधार
तीहै॥हेरामजीअपणीचेष्टाकरकेसंवितआपकोंआपहीवांधतीहै॥जैसेघुरागआपकों
आपहीगृहवणाइकरवांधतीहै॥तैसेसंवितआपकोंआपहीवांधतीहै॥अरजवआपणी
ओरआवतीहैतवआपहीआपकोंप्रापतहोतीहै॥हेरामजीजगतरूपसमुद्रहै॥संवितरू
पीतिसविषेजलहै॥तिसकरसर्वस्थानपरनहोरहेहैं॥अंतरवाहरअरपृथवीअकाशपर्व
तनदीयांदिशाआदिकसर्वसंवितरूपजलकीयालहरीहै॥तातेसर्वजगतसंवितमात्रहै

हैतकलपनाका तिसविषे अभाव है॥ यह सम्यकज्ञान है॥ इस संवितका बीज सनमात्र है॥ स
नमात्र सत्ताते संवतका होणा हुआ है॥ जैसे प्रकाशते जो तजदे होत है॥ अर इस सत्ताके दो रूप है
एक नानाप्रकार होइकर भासती है॥ दूजी एकही अद्वैतरूप है॥ वस्त्र घट तत्ता मनता इत्यादिक
एक सत्ताके नानाप्रकार विभाग इस्थित है॥ सो विभागते रहत एक सत्ता इस्थित है॥ सत्याप
णा आप विषे॥ सो सत्ता समान अद्वैतरूप परमार्थ सत्ता है॥ हे रामजी विशेषकों त्याग करके जो सत्ता
है॥ सो अलेपक है एकरूप है सो महासत्ता है॥ तिसकों परमसत्ता ज्ञानवान कहते हैं॥ अर नाना
प्रकार भी सत्ता कलहूं नही धारे॥ यह संवेदनकरके हूप है॥ इसकारणते अवलरूप है॥ अ
र परमसत्ता एकरूप है॥ निर्मल है अविनाशी है॥ न कबहूं नाश होती है॥ न विस्मर्ण होती है॥ काहे
ते जो अनुभवरूप है॥ हे रामजी एक कालसत्ता है॥ एक आकाशसत्ता है॥ सो यह सत्ता अवसत
रूप है॥ इस विभागसत्ताकों त्याग कर सनमात्र जो सत्ता है तिसी परायण होवो॥ कालसत्ता अ
वा सत्ता भी यद्यपि उतम है॥ परवास्तव नही जहां नाना आकार विभाग कलपना अर ना ना
कारण है॥ सो पवित्रकारता पावन नही॥ असीते कहा है जो अकासकाल आदिक सत्ता वास्त
व नही॥ अर सत्ता समान जो संवितमात्र है॥ सो संवितका बीज है॥ तिसीते सर्वका प्रवर्त होती
है॥ हे रामजी जेते कछु पदार्थ हैं तिनकी कलना सत्तासमान है॥ जो तिस परमपद अनंत अनाद
बीजरूपका बीज अवर कोऊ नही॥ जब तिसका भान होवे॥ तब यह निरविकार होइकर इस्थि
त होवे॥ वहुरि दुखरूप संसार संमुद्र विषे गिरे नही॥ सो सत्ता सर्व कारणका कारण है॥ तिस
का कारण कोऊ नही॥ अर सर्व सारोंका सार है तिसका सार कोऊ नही॥ तिस चेतनरूप म्हा
दर्पण विषे सब वस्तु जान प्रतिबिंबत होती है॥ जैसे तडाकके तीरके वृक्ष तडाक विषे प्रतिबिं
बत होते हैं॥ तैसे सर्व वस्तु चिदर्पण विषे प्रतिबिंबत होती है॥ हे रामजी जेते कछु पदार्थ हैं॥
सो सर्व आत्मसत्ता कर सिद्ध होते हैं॥ उसी अनुभव विषे सर्वका अनुभव होता है॥ जैसे षट
रसोंका स्वाद जिह्वा कर सिद्ध होता है॥ तैसे सर्व पदार्थ जिहा कामके आश्रय सिद्ध होते है॥
सर्व जगत तिसीते उपजते हैं॥ अर तिसी विषे वर्तते वढते इस्थित देखीते हैं॥ अर तिस
ही विषे लीन होते हैं॥ सर्वका अधिष्ठान सत्ता वही है॥ वहुरि कैसी है गुरोका गुरु वही है॥ अर ल
घोंकी लघुता वही है॥ इस्थूलोंकी इसथूलता वही है॥ सूषमोंकी सूषमता वही है॥ अर दूरो
इस्थ वही है॥ काष्ट विषे काष्टता है॥ अर वस्तुयों विषे वस्तु तव वही है॥ तेजोंका तेज है॥ अर तमका
तम वही है॥ वस्तुकी वस्तु वही है॥ रसकी रस वही है॥ इच्छयोंका इच्छा वही है॥ किंचन विषे किं
चन है॥ अकिंचन विषे अकिंचन है॥ अर तत्तोका तत्त वही है॥ असतोंका असत वही है॥ सतोंका
सत वही है॥ असत्य विषे असत्य वही है॥ नास्ति विषे नास्ति वही है॥ हे रामजी ऐसा जो परम पावन स
ता है॥ सो तिस विषे यतन करके इस्थित होवो॥ वहुरि जैसे इच्छा होवे तैसे करो॥ सो आत्मतत्त निर्म
ल है॥ अजर अमर शांतरूप है॥ चितके क्षोभते रहत है॥ भवसंसारते मुक्त केन मित तिस विषे इ
स्थित होवो॥ इति श्रीउपशम प्रकरणे संवितबीज विचारो नाम सर्गः॥ रामोवाच॥ हे मानद
मानके देवणेहारे यह जो बीजोंका बीज तत्त मोंके हा सो प्राप्त किस प्रकार होवे॥ तिस उपाइ
कर सो पद सो शीघ्रही प्राप्त होवे सो कहो॥ वशिष्ठ उवाच॥ हे रामजी सत्ता समान पद विषे इस्थित हो
वणेके निमित यतन करतव्य है॥ तेते कछु संसारकी वासना है॥ तिसकों वलकर त्याग करी
ए॥ अर स्वरूप आत्मस्वरूपका तीव्र अभ्यास करीए॥ तव शीघ्रही अविचल आत्मस्वरूपकी प्राप्त
होवे॥ हे रामजी सत्ता समान से संवित तत्त है सो सार है॥ तिस विषे इस्थित होइकर जो इच्छा है सो क
रो॥ तिस विना अवर कछु सिद्ध नही होता॥ ऐसा जो अनुभव तत्त है सो तुमारा स्वरूप है॥ तिस
के ध्यान विषे इस्थित होवो॥ तुमकों खेद कछु न होवेगा॥ हे रामजी केवल संवेद साथ ध्यान न
होता॥ काहेते जो सरव अर्थ भवसंवितनका है सेवन महाइकसर्वदा सर्वकाल विषे होती
है॥ अर सर्व संग मिली हुई है॥ जहां कछु चितवे जहां इस्थित होवे॥ जो कछु करे सो सर्व संवेदन

करसिद्ध होता है॥ हे रामजी आत्मतत्त महापूरण है॥ तिसका भान नही होता॥ अर अवर कछु प्रतिभा
सता है॥ यही अविद्या अर आवर्ण है॥ सोई इसकों दुख देता है॥ तव स्वरूपके प्रमाद कर दृश्यकी वा
सना करता है॥ तव तिसकी इच्छा कर अंतःकर्ण दुख पावता है॥ जव यतन करके वासनाका त्याग
करोगे तव मन अर शरीरको दुख सिथल होइकर नष्ट होजावेगा॥ परस्वरूप जो इसको दृढ इसो
दृढ होइ रहा है॥ तिसकर वासनाका त्यागणा कठन होइ रहा है॥ जैसे सुमेरकों मूलते उखाडणा
कठन है॥ तैसे वासनाका त्यागणा कठन होइ रहा है॥ सो वासना मनते होत है॥ जवलग मन नही
षय होता तवलग वासना भी नष्ट नही होती॥ अर तत्तज्ञान विना मन नही नाश होता है॥ जव तत्त
ज्ञान होवे॥ तव मन नष्ट होवे॥ अर तत्तज्ञान तव होता है॥ जव वासना अर मनका आवर्ण दूर हो॥
ता है॥ यह पुरुषार्थका रूप है॥ ताते हे रामजी तुम पूर्ण प्रयतन कर मनके॥ संकल्पविकल्पको
निवर्त करो॥ अभ्यास अर विचार करके विवेककों पावो॥ अर भोगोंकी वासना हृदयते त्यागो॥ इ
सकर तुम शांतवान होवोगे॥ इन त्रितीयका सम अभ्यास करो॥ तत्तज्ञान अर मनोनास अर वा
सनाषयका वारंवार अभ्यास करो॥ जवलग इनकों न साधोगे॥ तवलग अनेक उपाइ करो॥
तोभी शांतकों न पावोगे॥ हे रामजी जो वासना षय करे॥ अर मनोनाश अर तत्तज्ञानका अ
भ्यास करे नही॥ तव कार्यसिद्ध नही होता॥ अर जो मनकों नाश करे अर तत्तज्ञान अर वासना
षय न होवे॥ तोभी कल्याण नही होता॥ अर तत्तज्ञानका विचार पूरा करे अर मनोनाश वास
नाषय न करे॥ तोभी कुशल न होवेगा॥ जव त्रितीयका सम अभ्यास होवे तव फलकी प्राप्त होइ
वे॥ हे रामजी एक एकके सेवणे कर सिद्धता नही प्राप्त होती॥ जैसे मंत्रकों कोऊ प्रनवे यथवा इक
रता है॥ तव मंत्र नही फलता॥ तैसे एककला किसीकर कारज न होवेगा॥ जव चिरकाल इन त्रिती
यका एककदा होइ सेवणा होवे॥ तव कारज सिद्ध होवे॥ जैसे वडी सेनामे एकएकको जुदा होवे॥ अर तिस
के मारणेको एक एक सूरमा जावे॥ तव शत्रुकों मार नही सकते॥ जव एकत्रही सेना होइक
र उसकुपर जाइ पडे तव शत्रुकों जीत लेवे॥ तैसे संसाररूपी शत्रु है॥ जव तत्तज्ञान मनोनाश वा
सनाषयका एकत्रही अभ्यास होवे॥ तव संसाररूपी शत्रुकों नाश करे॥ हे रामजी जव त्रि
तीयका दृढ अभ्यास करोगे॥ तव हृदयकी अहंमम आदिक ग्रंथी टूट पडेगी॥ जैसे बिसकी तं
तु टूट पडती है॥ तैसे अनेक जन्मोंकी संसार ममतारूपी ग्रंथी जो इसके हृदय विषे इस्थित हो र
ही है॥ सो अभ्यासयोग कर टूट पडेगी॥ नाश होजावेगी॥ ताते चलते वैठते भोजन करते तथा
लेकरते सुमरणते संथलते सपरसरते जागते सेन करते॥ इन त्रितीयका अभ्यास करो॥ हे रामजी
वासनाके त्यागते प्राणस्पंद रोका जाता है॥ जव प्राणोका स्पंद रोकया तव चित अचित
होइ जाता है॥ अर आत्मततते एकाभावना है॥ इनहू विषे जो तुमारी इच्छा है सोई करो प्राणो
का रोकणा योग करो॥ अथवा वासनाका त्याग करो॥ प्राणायाम तव दृढ होता है॥ जव गुरुकोदी
वी युक्त इस्थत होती है॥ आसन अर अहारके संजम कर प्राणोका स्पंद रोकीता है॥ अर सम्य
क ज्ञान कर जो जगतको अवास्तव जाणीता है॥ तव वासना नही प्रवर्तती॥ जो जगतके आ
दभी अर अंतभी सत्ता है॥ तिस विषे मन इस्थित होवे तव वासना नही उपजती॥ हे रामजी जव व
वहार विषे निहसंगरूपा॥ अर संसारकी भावनाते विरक्तरूपा॥ अर शरीर विषे नाशवंत
बुध हुई॥ तव वासनाभी नही परवर्तती॥ जव विचार करके वासनाषय होवेगी॥ तव चितभी
नष्ट होजावेगा॥ जैसे वायुके ठहरते धूड उडनी रहजाती॥ तैसे वासनाके षयहूए चित नही उपजे
ता॥ जो प्राणसपंद है सोई चितसपंद है॥ जव वासना उपजती है॥ तव जगतभ्रम होता है॥ जे
से गरुडहीते धूड उपजती है॥ तैसे चितते वासना जगत उपजता है॥ अर जव प्राणसपंद ठहर
ता है॥ तव चितभी ठहर जाता है॥ ताते जतन करके प्राणोका सपंद अथवा वासनाके जीतणे
का अभ्यास करहु॥ तव शांतवान होवोगे॥ अर जो एह उपाइ न करोगे॥ अवर कोउ चितव
रणेका उपाइ करोगे॥ तव बहुतकाल कर पावेगा॥ हे रामजी मनके जीतणेको अनिंदित इन
फलेंको विना अवर कोउ उपाइ नही॥ जैसे मतवाले हसतीको अंकुस विना वस करणेका अव
र उपाइ कोऊ नाही॥ तैसे मन युक्ता विना वस नही होता॥ सो युक्ति कहते है॥ अध्यात्म शास्त्रोंका

विचारणा। अरु संतों की संगत करणी॥ तिन कर कल्याण होइ है उपाइ तत्वज्ञान अरु वासना षय अरु
प्राणों का रोकणा॥ यह चित्त के वस करणे पुष्ट युक्त है॥ इसकर के चित्त सो अदृष्ट होता जाता है
अरु जो इनो उपावों को त्याग कर हठ सों मन को वस कीया चाहते हैं॥ सो क्या करते हैं॥ जैसे तम के ना
स करणे निमित्त दीपक को न जगावै अरु शस्त्रों कर तम को काटै सो तम नास न होवैगा॥ जैसे अव
र उपावों कर चित्त वश न होवैगा॥ हाथ सों वदला जावैगा ताते अवर उपाइ जो करते हैं सो मूढ हैं
जैसे मतवाला हस्ती भिम कीलते तमाशा न होवै वा ध्याजाता॥ तैसे मन के जीतणे को अवर प्रकार
जो हठ करते हैं॥ सो मूढ हैं॥ अरु उपाइ कर कलेश ते कलेश को प्राप्त होवैगे॥ हे रामजी जी
र्थ तप दान देवतों का पूजन यह चतुर्थ प्रकार अभ्यास तिन इस ने कवा वसा था है अरु म
न जीतणे का उपाइ नही कीया॥ तो मृग की न्याई हूये हैं अरु भ्रमते फिरे हैं॥ परवतों की कंदरावि
षे फल पत्र भक्षण करते फिरे हैं॥ मन का नाश जो नाही कीया ताते आत्म पद को नही पाया॥ सो
अवर पशुओं के समान हैं॥ जैसे मृग आदिक पशु पर्वतों विषे विचरते हैं॥ तैसे वह भी हैं॥ हे रामजी॥
जिस पुरुष मन को वश नही कीया तिस को शांति कदाचित नही होती॥ जैसे कोमल अंग मृ
ग ग्राम विषे गया हूया शांति को नही पावता॥ जैसे जल विषे आया तृण नदी के वेग कर
भटकता फिरता है कष्ट पावता है॥ तैसे यह पुरुष जो कर्म करता है॥ सो मन को इस्थित कीए
विना कष्टमान होता है॥ कवहू दुष संग जलता है॥ कवहू कर्म वशते स्वर्ग को प्राप्त हो
ता है॥ सो भी नाश हो जाता है॥ जैसे जल विषे तरंग उठ्या कवहू अधः को जाता है कवहू
ऊर्ध्व को जाता है॥ तैसे कर्म वशते जीव कवहू नर्क कवहू स्वर्ग वडे नर्कों विषे भटकते फिर
ते हैं॥ तिसका ते हे रामजी ऐसी दुराशा दृष्टि को त्याग कर सर्व संवेदन मात्र को आश्रय करो
अरु वीतराग होइ कर इस्थित होवो॥ हे रामजी जगत विषे सुखी ज्ञानवान ही है॥ अरु जीवता भी
ज्ञानवान ही है॥ अवर सर्व दुखी मृतक समान है॥ अरु वली ज्ञानवान ही है॥ जो मोह रूपी
शत्रु को मार कर संसार समुद्र के पार को प्राप्त भया है॥ अवर सर्व निर्वल है ताते तुम भी
ज्ञानवान होवो॥ संवेदन ते रहत जो संवत मात्र तत्व है॥ सो एक है सर्व की आदि है सर्व ते उत्तम
है कलना ते रहत है॥ सर्व के हिरदय विषे इस्थित है॥ तिस विषे इस्थित होवो तब कल्याण हूया
भी अकर्ता होवैगा॥ अरु परम ज्ञान पद उदै होवैगा॥ इति श्री उपशम प्रकर्णे संसार तरीजनि निरा
करणोपदेश वर्णनं नाम सर्गः॥ वसिष्ठोवाच॥ हे रामजी जिस पुरुष आत्म विचार क
र के अल्प भी चित्त अपणा निग्रह कीया सो से फल को प्राप्त होवैगा॥ विचार रू
पी करणा का भी जिस के चित्त विषे उदै हूया है सो अभ्यास कर के वडे विस्तार को पावैगा
वैराग रूप वृक्ष विचार जिस के हृदय विषे उपज्या है॥ सो वढ जावैगा अवर गुण रूप के फल
को का हणे गा॥ हे रामजी जिस को सम्यक ज्ञान प्राप्त हूया है॥ अरु निर्मल वोध कर यथा
र्थ दर्शन भया है॥ तिस को इंद्रीयों के विषे चलाइ नही सकते जव लग स्वरूप का प्रमाद
होता है॥ तव लग आधि व्याधि दुःख इस को होते हैं॥ अरु जव स्वरूप विषे इस्थित होता है त
व शरीर के अरु मन के दुख इस को वश नही कर सकते॥ जैसे दामनी को शस्त्र कोऊ नही
कर सकता॥ अरु जैसे मुसलधार मेघ को मरुस्थल विषे कोऊ नही ले सकता॥ अरु जैसे आका
श के चेहरे को तरनों के रवै विषे कोऊ नही पाइ सकता॥ तैसे ज्ञानवान को दुख कोऊ
नही वश कर सकता॥ हे रामजी जो मद कर मन हस्ती है॥ अरु विकल्प ही मस्तक ते चि
ती है॥ अरु भ्रमरे तिस के आगे फिरते हैं शब्द करते हैं॥ जैसे मछरों के खास तिस को
नही छेद सकते॥ तैसे ज्ञानवान को विघ्नों के रागद्वेष नही चलाइ सकते॥ अरु जिस
हस्ती के मस्तक सों मोती निकसता है॥ ऐसे वलवान हस्ती के मस्तक को तो
षरू साधवि दारणहारा जो सिंह है॥ जैसे उस सिंह को मृग नही मार सकते॥ तैसे ज्ञा
नवान को रागद्वेष नही चलाइमान कर सकते॥ अरु जिस के प्रकार साधवन के ऊ
चे वृक्ष जल जाते हैं॥ ऐसा जो है सर्प जैसे उस सर्प को इंद्र नही ग्रास कर सकता॥ तै
से ज्ञानवान को रागद्वेष नही चलाइ सकते॥ जैसे राजे सिंहासन वैठे हूए को कोऊ

दुखनही दे सकता॥ तैसे स्वरूप भूमका विषे इस्थित जहै ज्ञानी॥ तिस को इंद्रीयों के विषय नही दे सकते॥
अरु जो विचार ते रहत देह अभिमानी है आत्मतत्व को प्राप्त नही भए तिन को विषय उडाइ ले जाते
है॥ जैसे सूके पत्र को पवन उडाइ ले जाता है॥ तैसे अज्ञानी को रागद्वेष उडाइ ले जाते हैं॥ अरु दृढ बोध को आ
है॥ जैसे सुमेरु पर्वत को पवन चलाइ नही सकते लोकन पांत की वाइओं से हार रहे हैं पर्वत॥ जैसे सुमेरु
मकुरते हैं॥ अरु ज्ञानवान को चलाइ नही सकते॥ तैसे ज्ञानवान सुख दुख विषे चलाइमान नही होते॥ अ
नमद मंद पवन कर चलाइमान नही होते॥ तैसे ज्ञानवान सुख दुख विषे चलाइमान नही होते॥ अरु ज्ञान भरी है स
रते विचारते रहते हैं॥ सो देहादिकों के परणाम भाव विषे इस्थित पावनता है॥ अरु ज्ञान भरी है स
सार के पदार्थों विषे आनन्द रूप ता पावनता करणा इत्यादिक विघ्नों विषे सावधान है॥ अरु मान प
न मकर जो गुरु शास्त्र को मारग है॥ तिस की उपलेश्नान कर रहे हैं॥ मूढ होइ रहे हैं॥ विचारते रहते मो
मृतक समान है॥ तिन को मृतक कहीता है॥ अरु यह विचार मान षटेहपारू के दूसको करत
है॥ जो मैं कवन हो अरु यह जगत का है॥ अरु किस प्रकार उपज्या है॥ अरु कैसे निवर्त होवैगा॥ इस
प्रकार अध्यात्म शास्त्र अरु संतों के संग कर विचार करे॥ जव इस विचार कर परु षस्वरूप भाव को प्र
गट कर आत्म तत्व विषे इस्थित होता है॥ सो परम पद को पावता है॥ जैसे अंधकार विषे पडा हूया प
दार्थ दीपक के प्रकाश कर पाईता है॥ तैसे विचार कर आत्मतत्व पाईता है॥ हे रामजी जो स
तशास्त्र विचार कर आत्म तत्व का वोध प्राप्त होवे॥ सो ज्ञान कहीता है॥ सो ज्ञान ज्ञेय के साथ अभि
न रूप है॥ अध्यात्म विद्या को विचार कर ज्ञान प्राप्त होता है॥ जैसे दुग्ध सों मथकर माखण निका
सीता है॥ तैसे विचार कर विश्राम ज्ञान प्राप्त होता है॥ ज्ञेय तिस के पाछे नष्ट होता है॥ सो ज्ञेय परम ब्रह्म
सत असत रूप सों रहित इस्थित है॥ ज्ञानवान तिस को पाइ कर इस्थित होता है॥ अरु जीवन मुक्त हो
इ कर अपणे आप विषे प्रकाशता है॥ जैसे चक्रवर्ती राजा विष्णु आनंद कर तृप्त आनंद मान होता
है॥ तैसे ज्ञानवान विघ्नों की इछा ते रहत ब्रह्म आनंद कर सोभता है॥ ऐसा परम रूप परम बोध पद
है॥ तिस विषे ज्ञानवान इस्थित होता है॥ अरु तिस को अरु पंच इंद्रीयों के हैं विषे तिन कर विषे आपात नही होता॥ अरु मथा रशब्द तंद्री के राग विषे अरु स्व
जो पंच इंद्रीयों के हैं विषे तिन कर विषे आपात नही होता॥ अरु अनेक कुसुम स्पर्श
इंद्रीयों के गावणे विषे अवर भी किसी पदार्थ विषे आपात नही होता॥ अरु अनेक कुसुम स्पर्श
है॥ सुद्द पुष्प चंदन अरु मंदार वृष अरु कलप वृषों के पुष्पों का सपर्श करणा अरु अनेक इस्त्री
योंसो आप स्पर्श करणा देवता विद्याधरीयां नाग कन्या अरु स्वर्ग की देवतीयां आदि जिन के अंग हैं तिन
का सपर्श करणा॥ अरु हीरा मणीयों के भूषण अरु नाना प्रकार के वस्त्र तिन हूं विषे भी वे धारे
मानन हीं होते॥ जैसे चंद्रमा सुंदर अरु प्रीत लहै॥ अरु स्त्रज मुषी कमलों के विगास मान नही कर
सकता॥ तैसे संदर पर्वत आदि के वित्त को नही दर्प मान करते॥ जैसे मारुथल विषे हंस नही प्र
संन होते॥ तैसे ज्ञानवान सपर्श विषे नही प्रसंन होते॥ अरु ज्ञानवान रस स्वाद विषे भी नही वंध
मान होते॥ पिंड कुहारा नारी दुग्ध वडी चतरा आदिक जो रस है॥ अरु षट भोजन चोसल पचत प्र
यमान होते॥ पिंड कुहारा नारी दुग्ध वडी चतरा आदिक जो रस है॥ अवर भी अनेक प्रकार का जो रस है॥ तिन
प्रकार का भोजन है॥ अरु कट अम्ल लवण मिष्ट षट्ट रसनि पा षट् प्रकार का जो रस है॥ तिन
को ज्ञानवान इछा नही करते॥ किसी पदार्थ विषे वंधाइमान नही होते॥ आकाश वोध कर तिन
कोज्ञानवान इछा नही करते॥ जैसे अमृत कुके के जनम पाच मणी की इछा न
हम है॥ किसी भोग की वांछा नही कर सकते॥ जैसे चंद्रमा कुके के जनम पाच मणी की इछा न
ही करता॥ तैसे ज्ञान उरवसी रंभा मेनका दिक अपसरा की इछा नही करता॥ अरु गंधर्व की भी इछा
नही होता॥ वंदन अगर कस तूरी अवर कदंव कोरवरमेदार व्रष आदिकों के फल सुगंध की भी इछा
नही करता॥ जैसे मीन मारू थल की इछा नही करता॥ अरु रूप की इछा भी नही करता॥ सो दइस्त्री
या वर्गी चेन दीयान इत्यादिक जो रूपवंत पदार्थ है तिन की इछा नही करता॥ जैसे वंदमा
वाटको की इछा नही करता॥ तैसे ज्ञानवान रूप की इछा नही करता॥ अवर की क्या वारता है॥ इं
द्र धनुष विस्तव्र आस मेरु कैलास मंद्रा चल रतन मणी अरु वेवन यह वडे पदार्थ हैं॥ तिन की इछा
भी नही करता॥ तैसे ज्ञानवान रूप की इछा नही करता॥ हे रामजी एते पदार्थ दोष कर राग अ
रु द्वेष नही करता॥ समुद्र के गर्जणे कर॥ अरु सिंह के गर्जणे कर अरु दामनी मेघ केरा गर्जणे ते
भाद लेके रन ध्यान कपा हूद है तिन को अवण कर के भयमान नही होता॥ जैसे सरनाथन ष का
वि वरसणा कर भयमान नही होता॥ तैसे ज्ञानवान मन वाले हसती अरु वेताल पिसाच के षा
वद को सुण कर भयमान अरु केपाइमान नही होता॥ स्वरूप इस्थित ते चलायमान नही होता

अरु जो आरे साथ तिस के शरीर कों काटीए अथवा चंदन का लेप करीए तौ भी उस कों राग द्वेष कि
सी विषे नहीं होता ॥ जो उस के शरीर ऊपर एक ओर जलता अंगार राषीए ॥ अरु एक ओर पुष्पों
का सपर्श होवे ॥ तौ भी हर्ष शोक नहीं होता ॥ अरु एक ओर स्त्री इस्थी होवै अरु एक ओर तम शिला हो
वै ॥ तौ दोनो उस कों तुल है ॥ एक ओर मारने हारी विष होवै ॥ अरु दूसरी ओर जीव दान अंम्रत हो
वै ॥ सो उभय उस कों समान है ॥ राग द्वेष ते रहत है ॥ हे रामजी देह अभिमान ते जो मुक्त भया है ॥ ति
स का शरीर नर्क अग्नि विषे होवै ॥ अथवा धरती विषे गिडे अथवा स्वर्ग विषे होवै ॥ सो सर्व इस्था
न उस कों तुल है हर्ष कोप ते रहत है ॥ हे रामजी जिस की स्वरूप विषे द्रड इस्थत भई है सो च
लायमान नहीं होता ॥ जैसे सुमेर इस्थत होता है ॥ अरु जो उस कों पवित्र पदार्थ प्राप्त होवै ॥ अथ
वा अपवित्र प्राप्त होवै ॥ पथ्य होवै अथवा अपथ्य होवै ॥ विष होवै अथवा अंम्रत होवै ॥ मिष्ट क
टक अम्ल लवण उस्न दही दूध जल दाने की रस रूप सो सम्पदा अरु त्रिणादिक अरु भष
भोजे चोष लेह जो भोजन है ॥ सो सर्व सम है इन विषे रागवान होता है न अनिष्ट विषे द्वेष
वान होता है ॥ अरु जो काहू प्राणों के निकासणे कों सन्मुख आवै ॥ अरु दूती प्राणों की रष्या
के निमित आवै ॥ तौ ज्ञानी दोनों कों आत्म रूप शांत स्वरूप देषता है ॥ राग द्वेष ते रहत है रमणी
क अरमणीक पदार्थों कों सम देषता है ॥ सर्व संसार की आस्था त्याग करी है ॥ अरु सत्य
विवेक द्रड निश्चय भई है ॥ नीराग मद कों चित प्राप्त भया है ॥ अरु सर्व जगत उस कों आत्म
रूप भासता है ॥ शब्द सपर्श रूप रस गंध पंच विषय अपणा अवसर नहीं पावते ॥ जैसे दरपण
कों देषणे लागे तब तिस विषे प्रतिबिंब भासता है ॥ अरु दरपण की सुरत नहीं रहती ॥ तैसे विष्यो विषे आ
त्मा देषता है ॥ विष्यो की सुरत नहीं रहती ॥ अरु जो अज्ञानी है ॥ तिस कों इंद्रीयां ग्रास लेती यां है
जैसे त्रिण कों मृग ग्रास लेता है ॥ ताते जिस आत्मा विषे शांत नहीं पाई तिस कों इंद्रीयां ग्रास ले
ती यां है ॥ हे रामजी जो अज्ञानी रूपी समुंद्र विषे पड़ा है ॥ अरु वासना रूपी तरंग साथ मिल कर उ
छलता है ॥ अरु गिरता है तिस कों आशा रूपी तंदूआ बंधन कर के ग्रास लेता है ॥ हा हा करता
रहता है ॥ शांत कों नहीं प्राप्त होता ॥ अरु जो विचार कर के आत्म पद कों प्राप्त भया है ॥ सो विश्रां
त कों पाइ कर चलाइमान नहीं होता ॥ जैसे सुमेर पवन जल के समूह कर चलाइमान नहीं हो
ता ॥ तैसे ज्ञानी संकल्प विकल्प कर चलाइमान नहीं होता ॥ तैसे ज्ञानी संकल्प विकल्प कर च
लाइमान नहीं होता ॥ सर्व संकल्प की सीमा आत्म पद विषे जिस कों विश्रांत भया है ॥ सो उ
त्तम अवस्था कों प्राप्त भया है ॥ हे रामजी यह जगत तिस कों ज्ञान मात्र भासता है ॥ संवन्न मात्र जा
ण कर व्यवहार पड़ा करता है न किसी का त्याग करता है ॥ न ग्रहण करता है ॥ ताते अंत कों त्या
ग संवन्न मात्र ही तेरा स्वरूप है ॥ किस का त्याग करता है अरु किस की इछा करता है ॥ जो आदि
विषे न होवे ॥ अरु अंत विषे भी न होवै ॥ अरु मध्य विषे कछु भासे सो भ्रम मात्र जाणीए ॥ इस प्रकार जा
ण कर भाव अभाव के धारणे हारी जो बुद्ध है ॥ तिस कों त्याग अरु निर संवेदन रूप होइ कर संसार रू
प होइ कों न रजावो ॥ मन कर वो बुद्ध कर वो इंद्रीयां कर के कर्म करो ॥ अथवा न करो ॥ पर अंतर ते जब
असंग होवैगा ॥ तब तुझ कों कछु लेपन सपर्श करेगा ॥ हे रामजी जिस का मन अभिमान ते
रहत हूआ है ॥ सो कर्म कर्ता भी लिपाइमान नहीं होता ॥ जैसे जब मन अवर ठवर गया होता है
तब विद्यमान भी सब रूप अथवा रूप पदार्थ ते ते नहीं जाणीता ॥ तैसे मन आत्मा विषे जिस का इ
स्थित भया है ॥ तिस कों सुष दुष नहीं सपर्श करते ॥ जो अभिमान ते रहत पुरुष है सो काई से विषे
सुष दुष भोगता द्रष्ट आवता है ॥ पर उस कों सपर्श नहीं करता ॥ जैसे मन अवर ठवर होता है ॥ तब
कथा को सुणता वेठता भी नहीं सुणता ॥ तैसे वह पुरुष कर्ता हूआ भी नहीं करता ॥ देषता हूआ भी
नहीं देषता ॥ यह वार्ता बालक भी जाणते हैं ॥ जो मन अवर ठवर होता है तो सुणता हूआ भी नहीं
सुणता ॥ हे रामजी जिस का मन गलत संग भया है ॥ सो देषता है पर नहीं देषता ॥ सुणता है पर नहीं
सुणता ॥ सपर्श करता है पर नहीं करता ॥ सूंघता है पर नहीं सूंघता ॥ रस लेता है पर नहीं लेता ॥ इ
त्यादिक जो कछु कर्म चेष्टा है सो करता भी अकर्ता है ॥ उस का चित जो आत्म पद विषे लीन भया

है ॥ जैसे कोऊ पुरुष सती पुरुष देषणे कों गया होता है ॥ सो ऊस देश विषे विवहार कर्म पड़ा क
रता है ॥ पर उस का चित गृह विषे रहता है ॥ तैसे ज्ञानवान का मन आत्मा विषे रहता है ॥ यह
वार्ता मूढ भी जाणते हैं ॥ जो जैसा मन विषे तीव्र संवेग होता है ॥ तिस की सिद्धता होती है ॥ सो
ही भासता है ॥ अवर कछु नहीं भासता ॥ हे रामजी सर्व अनर्थों का कार्ण संग है ॥ सो संसार के
संग कर के जनम मर्णों के बंधन कों प्राप्त होता है ॥ अरु संग के त्याग कर मोष होता है ॥ ताते सं
ग कों त्याग कर जीवन मुक्त होइ कर विचरो ॥ रामोवाच ॥ हे सर्व संशय रूपी कुहीड के नाश
क कर्ता शरत काल के पवन समान संग किस कों कहीता है संक्षेप ते मुझ कों कहो ॥ वसिष्ठोवा
च ॥ हे रामजी भाव अभाव रूपी जो पदार्थ है ॥ सो हर्ष अरु शोक के देवणेहारे है ॥ तिस मल
न वासना कर यह प्राप्त होते है ॥ सो वासना संग कहीता है ॥ हे रामजी देह विषे जो अहं बुद्ध होती
है ॥ अरु संसार की सत प्रतीत होती है ॥ तिस संसार विषे भाव अभाव के ही पद ग्रहण अनिवृत्ति
न कों जो राग अरु द्वेष कर ग्रहण अरु त्याग करता है ॥ ऐसी जो मलिन वासना है तिस का ना
म संग है ॥ अरु जीवन मुक्त की वासना हर्ष शोक ते रहत शुद्ध है ॥ ताते लिहु संग कहीता है
तिस कों वासना जनम का कारण नहीं होती ॥ हे रामजी जिस पुरुष कों देह अभिमान नहीं है
अरु स्वरूप विषे इस्थत है ॥ अरु शरीर के इष्ट अनिष्ट विषे राग द्वेष नहीं करता उस की सद वा
सना है ॥ वह जो कछु करता है सो बंधन का कार्ण नहीं होता ॥ जैसे भुना बीज उगवता नहीं ॥ तै
से ज्ञानवान की वासना कर्म बंधन का कार्ण नहीं ॥ अरु जिस की अंत जगत के पदार्थों विषे
षचत है ॥ अरु राग द्वेष संयुक्त ग्रहण त्याग करती है ॥ ऐसी जो मलिन वासना है सो संग जन
म का कारण है ॥ इस वासना कों त्याग कर जब तुम इस्थत होवोगे ॥ तब करने हूए भी निरलेप
रहोगे ॥ हर्ष शोक आदिक जो विकार है तिन ते रहत जब तुम होवोगे ॥ तब वीतराग भय क्रो
ध अरु असंग इस्थत होवोगे ॥ हे रामजी जिन का मन असंग हूया है ॥ सो जीवन मुक्त भए है
ताते तुम भी वीतराग होइ कर आत्म तत विषे इस्थत होवहु ॥ जो जीवन मुक्त पुरुष है सो इं
द्रीयों के ग्राम कों निग्रह कर के इस्थत होते है ॥ अरु मान मद वैर कों त्याग कर संताप ते रह
त इस्थत होते है ॥ अरु जो कछु करम करते है सो सरवात्मा जाण कर करते है ॥ आपण करते
है ॥ पर आपा रहते रहत असंग होइ कर करते है ॥ सो करते भी अकरते है ॥ तिन कों अपदा
प्राप्त होवे ॥ अथवा संपदा प्राप्त होवे ॥ परु अपणे स्वभाव कों नहीं त्यागते ॥ जैसे षीर समुंद्र वि
षमद्रा चल पाइ कर मथ्या ॥ परु अपणी स्वकलता कों न त्यागत भया ॥ तैसे जीवन मुक्त अपणे
स्वरूप भाव कों नहीं त्यागते ॥ हे रामजी अपदा प्राप्त होवे ॥ अथवा चक्रवर्ती राज प्राप्त होवे ॥ अ
थवा सर्प का शरीर प्राप्त होवे अथवा इंद्र का शरीर प्राप्त होवे ॥ उभय विषे समान आत्म भा
व जाण कर इस्थत होते है ॥ अरु हर्ष शोक कों नहीं प्राप्त होते अरु सर्व प्रारंभ कों त्याग करना
तत्व भावते रहत इस्थत होते है ॥ हे रामजी विचार कर जिन आत्म तत पाया है ॥ जैसे इस
थित होवै तैसे होवै ॥ तुम भी इसी दृष्ट कों पाय कर आत्म तत कों देषो तब विगत ज्वर होवोगे
आत्म पद कों पाइ कर बहुर जनम के बंधन विषे न आवोगे ॥ इति श्री आर्षे वसिष्ठ महारामा
यणे सतसहस्र्या संहितायां वाल्मीकीये मोक्षोपाये उपशम प्रकरणे ... नाम सर्ग ॥ वाल्मीकिरुवा
च ॥ हे भारद्वाज उपशम प्रकरण के उपरांत निर्वाण प्रकरण सुण तिस कों जाण कर निर्वा
ण पद कों प्राप्त होवेगा ॥ वसिष्ठ के वचन जो मन ना इक जी रामजी श्रवण करते है ॥ सो रामजी कैसे
है जो मनी अरु वाक्य युक्त है ॥ सो सर्व उनके मन कों षैच कर तिसी ॥ विषे इस्थापन कीया
है जिस ने ॥ अरु अवर भी जो राजे लोक है ॥ सो सर्व ही निस पंद होइ रहे ॥ मानो कागद ऊपर मूरतें
लिष छोडी या है ॥ ऐसे होइ कर श्री वसिष्ठ जी के वचनों कों विचारते है ॥ अरु जे ते राजकुमार थे सो
विचारते है ॥ अरु कंठ कों हलावते है ॥ सिर अरु भुजों कों फेरते है ॥ अरु विसमय आश्चर्य कों प्रा
प्त होते ॥ तिस कर प्रापत हूया जो है प्रकाश तिस कर प्रसन्नता कों प्राप्त होवे ॥ जो यह जगत

उ॰प्र॰
४०

सनजानकरक्याविचरतेथे ॥ जोहैहीनहीऐसेआश्चर्यविषेआश्चर्यमानहोवै ॥ तवदिनका
चतुर्थभागआनरहा ॥ अरुसूर्यअस्तभयाजातभया ॥ मानोवसिष्टजीकेवचनसुणकरश्रमकोफर
लालगाहै ॥ जोदाहकतेजथीणहोगयाहै ॥ अरुसीतलताआनप्राप्तभईहै ॥ अरुस्वर्गतेजोसि
द्धदेवताआएथे ॥ तिनकेकंठविषेमंदारादिकव्रिक्षोंकेजोपुष्पहै ॥ सोपवनकेचलणेकरसर्व
इस्थानसुगंधतहोतेहै ॥ अरुभ्रमरेपुष्पोपरजाइशब्दकरतेहै ॥ अरुरोखोंकेमार्गकर
सूरजकीयाकिरणआवैतिनकरकमलपुष्पसूरजमुषीराजेअरुदेवत्याकेसीसऊपरथे
सोसकुचणेलागे ॥ जैसेमनसोजगतकीसत्तानिरवर्तहोवै ॥ तवअंतसकचतीजातीहै ॥ जैसेस
कचतेजावै अरुवालकजोसभाविषेवैठेथे ॥ अरुपिंजरोंविषेपंछीवैठेथे ॥ वेलगेकेतिनकेभोज
नकासमाहूया ॥ तववालककेभोजननामितमातालाउटीयां ॥ अरुचतुर्थपहरराजाकेनोव
तनगारेछेनगारभेरीतरीइत्यादिकवजंत्रवाजणेलागे ॥ वसिष्टजीजोअतिऊचीस्वरसा
थकरतेथे ॥ तिनकाशव्दनगारियोनेआछादलीया ॥ जैसेवरषाकालकामेघगाजताहै ॥ ति
सकरमयूरतूसनीहोजाताहै ॥ तैसेवसिष्टजीतूसनीहोगएऐसासवदहूया जिसकरआका
शपृथवीदसोदिशासर्वपूरनहोरहीया ॥ पिंजरियोंविषेपंषीभरकणेलागे ॥ अरुपंषोंकोपसा
रकरजैसेभूकंपहूयतेलोककंपतेशब्दकरतेहै ॥ तैसेपंषीभइशब्दकरकेपणेलागे ॥ अरुजो
वालकथेसोमाताकीत्वचासंगमिलगए ॥ वडाशव्दहोनभया ॥ तवतिसकेअनंतरमुनसा
रदूलवसिष्टजीवोले ॥ सर्वसभाकेमध्यविषे ॥ ॥ वसिष्टोवाच ॥ ॥

श्रीगणेशायनमः ॥ वाल्मीकउवाच ॥ हे भारद्वाज तृतीयप्रश्नप्रकरणकी कथनं
करतेहैं जिसकोंजाणकरितूं निर्वाणपदकोंप्रापतिहोवेगा वहिउतम
तरनिर्वाणप्रकरणहै ॥ जिसकोंजाणकरितूं निर्वाणपदकोंप्रापतिहोवेगा ॥ वहिउतम
वचनजोमुनिनाथक ॥ रामजीप्रतिकहे ॥ सोरामजीकैसेहै ॥ जोमुनीश्वरवाकअर्थकहा
है ॥ सभजोवतेमनकोंएकवितिसीविषे ॥ जिसनेइस्थापनकीयाहै ॥ अरुओरभीजोराजे
लोकहै ॥ सोसभनिस्पंदहोरहेहै ॥ मानोंकागदऊपरसूरतोंलिषछोडियाहै ॥ ऐसेहोकरि
वसिष्टजीकेवचनोंकोविचारतेहै ॥ अरुजोनेराजकमारथे सोविचारतेहै ॥ अरुकंठकोह
लावतेहै ॥ सिरअरुभूवोंकोफेरतेहै ॥ अरुविसमेंआश्चर्यकोंप्रापतहोवे ॥ तिसकरिप्रापत
हूआजोहैप्रकास ॥ तिसकरिप्रसन्नताकोंप्रापतहोवें ॥ जऊइहजगतसत्तजाणकरिविच
रतेथे ॥ जुहै अरुनहि ॥ ऐसेआश्चर्यविषेआश्चर्यहोवे ॥ तवदिनकाचतुर्थभागरहा ॥ अरुसू
रजइस्थितहूआ ॥ मानोवसिष्टकेवचनसुनकरिइसकोंफललागाहै ॥ जोदाहकतेजथी
णहोगयाहै ॥ अरुसीतलताआनप्रापतभईहै ॥ अरुस्वर्गतेजोसिद्धदेवताआएथे ॥ तिन
केगलेविषेमंदारआदिकविरछोंकेफूलथे ॥ पवनकेचलनेकरिसभइस्थानसुगंधतहोत
भए ॥ अरुभ्रमरफूलोंपरगुंजारशब्दकरे ॥ अरुझरोषेकेमारगकरिसूरजकीयांकिरणआवें
तिनकरिकमलफूलसूरजमुषीराजे ॥ अरुदेवत्योंकेसीसऊपरथे ॥ सोसकुचणेलागे ॥ जैसे
सेमनसोंजगतसत्तानिवर्तहोवे ॥ अरुहृदसकुचतीजातीहै ॥ तैसेसकुचतेजावें ॥ अरुवा
लकजोसभाविषेवैठेथे ॥ अरुपिंजरोंविषेपंछीवैठेथे ॥ घलगेकेतिनकेभोजनकासमा
हूआ ॥ वालकोंकेभोजननिमित्तमाताउठियां ॥ अरुचौथीपहररातेकेनोवतनगारेछे
णेसरनाईभेरीवाजणेलागीयां ॥ वसिष्टजीजोवडीऊचीस्वरसाथकथाकरतेथा ॥ तिस
कासवदनगारेयोंवजंत्रोंकरिआछादयागया ॥ जैसेवर्षाकालकामेघगाजताहै ॥ अरुमोर
तूस्नीहोजातेहै ॥ तैसेवसिष्टजीतूस्नीहोगये ॥ ऐसेसवदहूआजिसकरिआकासपृथवी
सवदसोंभररही ॥ पिंजरेविषेपंछीभइभइसवदकरणेलागे ॥ पंषोंकोपसारकरिजैसे
भूकंपआयतेलोककंपतेसवदकरतेहै ॥ तैसेपंछीभइकरणेलागे ॥ वालकथेसोमाता
साथमिलगए ॥ वडासवदहूआ ॥ तिसकेअनंतरमुनवडासारदूलवसिष्टजीवोले ॥ स
वकेमध्यविषे ॥ किहेनिहः पापरहूनाथमेतेरेचित्तरूपीपंछीपंछीकेफसावणेकेनिमि
त्तआपणावाकरूपीजालपसारयाहै ॥ तिसतेअपणेचित्तकोंवसकरिकेआतमपदविषे
जोड ॥ हे रामजी इहजोमेंतुझकोंउपदेसकीयाहै ॥ तिसकाजोसारहै ॥ तिसविषेइसवडकों
त्यागकरिचित्तकोंलगाउ ॥ जैसेहंसजलकोंत्यागकरिदुधकोंपानकरताहै ॥ तैसेसभउपदेसआ
आदितेलेकरिअंतपरजंतवारंवारविचारकरि ॥ सारकोंअंगीकारकर ॥ इसप्रकारसंसार
समुद्रतेउतरकरि ॥ परमपदकोंप्रापतहोवेगा ॥ अन्यथानहोवेगा ॥ हे रामजी जोइनवच
नाकोंअंगीकारकरेगा ॥ तवसंसारसमुद्रतरजावेगा ॥ अरुजोअंगीकारनकरेगा ॥ तवनीच
गतकोंप्रापतकोंप्रापतहोवेगा ॥ जैसेविंध्याचलपर्वतकीषानविषेहस्तीगिरियाप
कष्टपावताहै ॥ तैसेसंसारविषेकष्टपावेगा ॥ हे रामजी इहजोमेरेवचनहै ॥ जोतेरी
वुधइनकोंग्रहणनकरेगी ॥ तवअधःकोंगिरेगी ॥ जैसेपाथ ॥ हाथविषेदीपकत्या
गकरि ॥ रात्रकेसमेंटोएविषेगिरताहै ॥ तैसेंगिरेगा ॥ अरुजोअसंगहोइकरिविवहारविषेविचा
रेगा ॥ तवआत्मसिद्धताकोंप्रापतहोवेगा ॥ इहजोमेंतुझकोंतत्वज्ञानअरुमनोनाशअरुवास
नाछयकहाहै ॥ इसअभ्यासकरिकेसिद्धताकोंप्रापतहोवेगा ॥ उइहशास्त्रकासिद्धांतहै ॥ इहस
भाहैमहाराजोरामलछमनभूपतेजोकछुमेंतुमकोंकहाहै ॥ तिसकोंतुमविचारो ॥ अरुओ
रजोकछुकरणाहो ॥ सोप्रातःकालकोंकहोगा ॥ वाल्मीकउवाच ॥ हे साधइसप्रकारमुनीश्व
रजवकहा ॥ तवसर्वसभाउठषडीहूई ॥ अरुवसिष्टकेवचनोंकोपाइकरिसभहीविगसाए ॥
जैसेंसूरजकोंपाइकरिकमलनीयांविगसावतीआहै ॥ तैसेंसभविगसाए ॥ अरुवसिष्टविश्वा
मित्रदोनोंइकटेउठे ॥ वसिष्टजीविश्वामित्रकोंआपनेआश्रमलेगए ॥ अरुआकाशचारीजो
देवतेथे ॥ अरुसिद्धथेसोवसिष्टजीकोंनमस्कारकरिकेअपनेअपनेइस्थानोंकोंगए ॥ राजा
दसरथअरघपादकरिवसिष्टजीकोंपूजनभया ॥ पूजाकरिअपणेअंतहपुरविषेगया ॥ ओर
जोआनभीआज्ञालेकरिअपणेअपणेइस्थानकोंगए ॥ राजकुमारअपणेमंदिरकोंगए ॥ मुनीश्व
रवनकोंगए ॥ रामलछमणभरतसत्रुघनवसिष्टजीकेसाथआश्रमकोंगए ॥ पूजाकरिकेवा
हुडअपणेगृहकोंआए ॥ तवसभओनेअपणेअपणेइस्थानकोंजाइकरिइसनानसंध्याआदि

कनवा

कर्मकरतेभए॥ बहुरिपितरदेवताकोंपूजतेभए॥ बहुरिब्राह्मणोंतेंआदिलेकरिभूतपर्यं
तसभकोंभोजनकराकरि॥ आपभीमित्रभाईसाथभोजनकीया॥ बहुरियथाक्रमअपणे
वरणआश्रमकेधर्मसाधतेभए॥ तवसूरजभगवानअस्तहूआ॥ दिनकीक्रियानिवर्तहो
गई॥ रात्रिआनप्रापतभई॥ निसाचरआनविचरणेलागे॥ तवभूपरअरुराजरिषप्रह्लादिष
राजपुत्रजेतेथेतेथे॥ सोरात्रिकोंएकांतवैठकरिअपणीसिजाविछाईकरिविचारतेभए
राजकुमाररामजेअपणेसवसत्रुस्थानोंपरवैठे॥ ब्रह्मतपस्वीयोंकुशाआदिकविछाईकरि
विचारतेभए॥ जोसंसारकेतरणेकोंउपाइक्याकहेहै॥ वसिष्टजीक्यावचनकहेहै॥ तिनो
विषेंभलेप्रकारचित्तकोंएकाग्रकरतेभए॥ एकपहरभलेप्रकारविचारकरिनिद्राकोंप्रा
पतभए॥ जैसेसूर्यअस्तहूएपदमनीयांमूंदियांजातीयांहै॥ तैसेसुखेनसुखपतकोंप्राप
तभए॥ अरुरामलछमणभरतसत्रुघनतीनपहरवसिष्टजीकेउपदेसकोंविचारतेरहे॥
अर्धपहरसोएवहुरिउठे॥ इसप्रकारसभहीविचारपूर्वकरात्रिकोंवीतावतेभए॥ आनंदका
लहोणेपरआया॥ सूरजकेप्रकाशकरिचंद्रमाकीकांतिजातीरही॥ चंद्रमरवीकमलमूं
देगए॥ इतिश्रीनिर्वाणप्रकरणेदिवसआपारवर्ननेनामप्रथमसर्गः॥१॥ वाल्मीकउवा
च॥ हेसाधइसप्रकाररात्रिवितीतभए॥ तमकापटलनिवर्तहूआ॥ तवरामलछमणभ
रतसत्रुघणउठकरिइसनानकरतभए॥ संध्याआदिककर्मकीये॥ वहुरिवसिष्टजीकेआ
श्रमकोंगए॥ तहांजाइस्थितभए॥ बहुरिवसिष्टजीसंध्याआदिककरिकेअग्निहोत्रकर
णेलागे॥ जवकरिचुके॥ तवरामजीआदिकवसिष्टजीकोंअर्घपाद्यकरिपूजनभए॥ चर
णोंऊपरमलीप्रकारमस्तकराषा॥ तवरामजीराएथे॥ तववसिष्टजीकेद्वारेपरमानपी
एकघडीविषेंकइसहस्रजीवआनप्रापतिभए॥ राजकुमारव्रालमनीषरइस्लेघोडारथ
वहुतसेनाआनप्रापतभई॥ तववसिष्टजीरामजीतेंआदिकेकोंसाथलेकरि॥ राजेदसर
थकेगृहविषेंआए॥ तवराजादसरथकेतार्कमारराजावाणकोंआगेआया॥ तववसि
ष्टजीकोंआदरसाथपूजनकरतभया॥ औरलोकोंभीवहुतपूजनकीया॥ इसप्रकारसभा
विषेंआनप्रापतहूए॥ तवनभचरअरुभूचरजेतेकछुथेतेथे॥ सोसभआनप्रापतहूए
सभाविषेंआइकरिनमस्कारकरिकेवैठगए॥ जेतेकछुसभाकेलोकथे॥ सोनिस्पंदएका
ग्रहोइकरिस्थितभए॥ जैसेनिस्पंदवाइकरिकमलोंकीपांनअचलहोतीहै॥ तैसेइस्थित
भए॥ भाटजनजोउस्तुतकरणेवालेथे॥ सोएकओरइस्थितभए॥ तवसूरजकीयांकिरणां
झरोकेमारगआनप्रापतभएओं॥ मानोंकिरणांभीवसिष्टजीकेवचनकोंश्रवणाकर
णआईयांहै॥ तववसिष्टजीकीओररामजीदेषतेभए॥ जैसेस्वामकार्तिकसंकरकीओर
देषें॥ जैसेकचटहूस्पतकीओरदेषें जैसेंप्रह्लादसुक्रकीओरदेषे॥ जैसेंगरुडविष्णुकीओर
देषें॥ तैसेवसिष्टजीकीओररामजीदेषतेभए॥ जैसेभ्रमरताभ्रमतामरभ्राकासमारगतें
कमलऊपरआनवैठताहै॥ तैसेरामजीकीदृष्टओरोंकोदेषतेदेषतेवसिष्टजीऊपरआ
नस्थितभई॥ अरुवसिष्टजीरामजीकीओरदेषताभया॥ देषकरिवोलतभया॥ वसिष्ट
उवाच॥ हेरघुनंदनतमेंजोतुमकोंउपदेसआकीयाहै॥ तुमकछुसिमरणकीयाजोइहवचा
नकहेहै॥ केसेवचनकहेहै॥ जोपरमार्थवोधकाकारणंअनिदमहागंभीरवचनकहेहै॥ अ
रुवोरभीवोधकाकारण॥ अरुअज्ञानसत्रुकेनासकरतेहैइसप्रणावचनहै॥ तिनोकोसुण
आत्मसिद्धांतनिरंतरशास्त्रनकोंकहूंताहों॥ हेरामजीवैराग्यअरुअभ्यासअरुतत्वका
विचार॥ इसकरिकेसंसारसमुद्रकोंतरताहै॥ सम्यकतत्वकेवोधकरिदुखईनिवर्तहोजा
तीहै॥ तववासनाकाआवेशनष्टहोजाताहै॥ अरुनिरदुष्पदकोंप्रापतहोताहै॥ केसाप
दहै॥ देसकालवस्तुकेपरछेदतेंरहितहै॥ सोईब्रह्मजगततद्रूपहोइकरिइस्थितभया
है॥ अरुभ्रमकरिकेद्वैतकीन्याईभासताहै॥ जोसर्वभावकरिकेअवछिन्नहै॥ सर्वत्रब्रह्महै
सत्तासमानहै॥ इसप्रकारमहत्वसरूपजाणकरिसांतवानहो॥ हेरामजीकेवलब्रह्म
तत्वआपणेआपविषेइस्थितहै॥ नकछुचित्तहै॥ नअविद्याहै नमनहै॥ नजीवहै इह
सभकल्पनाब्रह्मविषेंभ्रमकरिकेपडीफुरतीहै॥ जोस्पंदफुरणाहृपपहै॥ अरुचित्तहैसो
कल्पनारूपसभभ्रमहै॥ ब्रह्मतेंअनत्रपदार्थकोऊनाहीं॥ वसिष्टउवाच॥ हेरामजीस्वर्ग
पतालभूमविषेसदाशिवतेंआदिलेकरि॥ अरुत्रितापरजतेनजोकछुदृष्पहै॥ सोसभ
परमब्रह्महै॥ विद्रूपतेंअन्यकछुनाहीं॥ उदासीनअरुमित्रवांधवतेंआदिलेकरसभब्रह्म

है॥ जवलगअज्ञानकल्पनाकरजगतविषेसवसुहहै॥ अरुब्रह्मभावनानाही॥ तव
लगचित्तआदिककल्पनाहोतीहै॥ अरुजवलगदेहविषेंअहंभावहै॥ अरुअनात्म
रूपविषेममत्वहै॥ तवलगचित्तआदिकभ्रमहोतहै॥ तवलगसंतजनअरुसत
सास्त्रोंकरिऊंचेपदकोंनहींप्रापतभयाहै॥ अरुमूरषताछीणनाहीभईहै॥ तवल
गचित्तआदिकभ्रमहोताहै॥ हेरामजीजवलगदेहअभिमानमिटताकोंनहीं
प्रापतभया॥ अरुसंसारकेभावनानाहीमिटी॥ अरुसम्यकज्ञानकरिकेइस्थितता
हीपाई॥ तवलगचित्तआदिकप्रगटहै॥ जवलगअज्ञानकरिकेअंधहै॥ जवलगवि
षयोंकीआसाकेअवेसकरिमूरछतहै॥ जवलगमोहमूर्छातेंउठयानहीं॥ तवल
गचित्तआदिकल्पनाहोतीहै॥ वसिष्टउवाच॥ हेराजीजवलगआसारूपीविषकीगं
धरिदेरूपीवनविषेंहोतीहै॥ तवलगविचाररूपीचकोरनहोनाहीप्रापतहोता
भोगवासनानाहीमिटती॥ जवभोगोंकीआसामिटजावे॥ अरुसतसीतलसंत
हनाविटेविषेंआनप्रापतहोवें॥ तवचित्तरूपीभ्रमनिवर्तहोजाताहै॥ जवमोह
अरुत्रिस्नानिवर्तकरीये॥ अरुनितसीतलसंवित्तहोये॥ तवचित्तशांतभूसकाकोंप्राप
तहोताहै॥ हेरामजीजिसपुरुषकीइस्थितस्वरूपविषेंभईहै॥ सोआपकोंटहतेहरदे
षताहै॥ तिससमकदरसीकेचित्तकीभूसकाकहाहै॥ जवअनंतचेतनतत्वकीभावना
होतीहै॥ अरुदृश्यकोत्यागकरिआत्मस्वरूपकोंप्रापतहोताहै॥ तवउहपुरुषसमभजे
तकोंअपणेआपहीदेषताहै॥ तिसकोंजीवतआदिकभ्रमकहाहै॥ जवभ्रमज्ञाननिवर्त
होताहै॥ तवपरमअद्वैतपदउदेहोताहै॥ जैसेंरात्रिकेषीणहूएसूरजउदेहोताहै॥ तैसे
मोहकेनिवर्तहूएतेंआत्मतत्वकासाक्षात्कारहोताहै॥ जवस्वरूपकासाक्षातकारहोता
है॥ तवचित्तनष्टहोजाताहै॥ जैसेसूकापत्रअग्निविषेंदग्धहोजाताहै॥ तैसेंज्ञानवान
काचित्तनष्टहोजाताहै॥ हेरामजीजीवनमुक्तजोमहात्मापुरुषहै॥ अरुपरावरदरशी
है॥ सर्वब्रह्मजिसकोंदृष्टआयाहै॥ तिसकाचित्तसतपदकोंप्रापतहोताहै॥ सोचित्तक
हिताहै॥ अरुतिसविषेंवासनाभीदृष्टआवतीहै॥ सोचेतनत्रमनहै॥ उहचित्तत्रमनहै॥
उहचित्तसत्तपकोंप्रापतभयाहै॥ इहजगतज्ञानवानकोंलीलामात्रभासताहै॥ विव
हारकरताहै॥ परुअंतरतेंशांतरूपहै॥ नित्तत्रिपतहै॥ सर्वदाउसकोंआत्मजोतभासतीः
है॥ विवेककरिकेउसकेचित्तसोजगतकीसत्तानिवर्तहोगईहै॥ अरुस्वरूपविषेंअस्थित
पाईहै॥ सोचित्तसत्तकहेताहै॥ वहुरिउहकर्मचेष्टाकरिताभीदृष्टआवताहै॥ परुमोह
कोनाहीप्रापतहोता॥ जैसेभुनावीजउगवतानाही॥ तैसेज्ञानीकीचेष्टाजन्मकाकारण
नाही॥ अरुजोअज्ञानीहै॥ तिसकीवासनामोहसंजुगतहै॥ जैसेकचावीजवहुरिउगा
वताहै॥ तैसेअज्ञानीकरिकेवहुरिवहुरिजन्मलेताहै॥ अरुजिसचित्तसोंआसकतानिव
र्तभईहै॥ सोतिसकीवासनाजन्मकाकारणनाही॥ उहचित्तकहीताहै॥ वसिष्टउवाच॥
हेरामजीजिनपुरुषोंपावणेयोगपदपायाहै॥ अरुज्ञानअग्निकरिकेचित्तकोंदग्ध
कीयाहै॥ सोवहुरिजन्मनाहीलेता॥ जेताकछुजगतहै॥ सोतिसकोंसभब्रह्मरूपहै॥
जैसेंविरछअरुतरुनाममात्रदोइहै॥ वस्तुएकहीहै॥ तैसेंब्रह्मअरुजगतनामसमात्रदो
है॥ वस्तुएकहीहै॥ जैसेंजलविषेंतरंगावुदवुदेजलहीरूपहै॥ तैसेंब्रह्मविषेंजग
तब्रह्महीरूपहै॥ चेतनआत्मारूपीमरवहै॥ अरुजगतरूपीतीषणताहै॥ वसिष्ट
उवाच॥ हेरामजीअैसाव॥ अरुजोतूंकहैं॥ मैचेतनत्रनाही॥ तोकछुतोमानताजान
ताहै॥ क्योंजोतूंकहैमेंजडहों॥ तोतूंआकाशवतहूआ॥ तेरेविषेंकल्पनाकाउलेख
केसेहोवें॥ अरुजोचेतनहै॥ तोसोककिसकाकरताहै॥ अरुजोचित्रमात्रमयहै॥ तो
निराधासआदिअंततेंरहितहूआ॥ सर्वतूंहीहै॥ अपणेस्वरूपकोंसिमरणकरतें
वणांतकोंप्रापतहोवेगा॥ जोसर्वभावविषइस्थितहै॥ अरुसभकोंउदेकरणेहा
राहै॥ सोतूंहीहै॥ शांतरूपहै॥ चेतनब्रह्मरूपहै॥ हेरामजीअैसीजोचेतनरूपीसि
लाहै॥ तिसकेउदरविषेंवासनारूपीफुरणाकहाहै॥ उहतोमहाघनरूपहै॥ हेरा
मजीजोतूंहै॥ सोसोहै॥ अैसाअरुतेरेविषेंभेदकछुनाही॥ सोईसतअसतरूपहोइ
करिभासताहै॥ सर्वपदारथजिसकेअंतरहै॥ अरुनानात्वजिसविषेंकछुनाही॥

नि॰प्र
२

2

अहंत्वं अज्ञान इ जिस विषे कल्पना कछु नाही ॥ ऐसा जो सत स्वरूप चिदघन आत्मा है ॥ ति
सको नमस्कार है ॥ हे रामजी तेरी जय है ॥ कैसा है तूं ॥ आदि अरु अंत ते रहित विशाल है ॥
अरु शिला के अंतरवत चिदघन स्वरूप है ॥ आकाशवत निर्मल है ॥ जैसे समुद्र विषे तरंग
है ॥ तैसे तेरे विषे जगत है ॥ सो लीला मात्र है ॥ तूं अपने घन स्वरूप विषे स्थित हो ॥ इति
श्री निर्वाण प्रकरणे विसंभदहीनर एं नाम द्वितीयः सर्गः ॥ २ ॥ श्री वसिष्ठ उवाच ॥
हे निहपाप रामजी जिस चेतन अद्वैत रूपी समुद्र विषे जगत रूपी तरंग पैड फुरते है ॥ अरु
लीन होजाते है ॥ ऐसा अनंत आत्मा है ॥ सो तूं भाव की भावना ते मुक्त है ॥ ऐसा जो चिदा
त्मा तेरा स्वरूप है ॥ सो सब जगत उहि रूप है ॥ तौ वासना आदिक और कहां है ॥ जीव अ
रु वासना सब आत्मा का कचन है ॥ इस ते वस्त कछु नाही ॥ तौ और कथा प्रसंग के सा है
हे रामजी महत्तत्त्व गंभीर प्रकाश रूप जो चेतन समुद्र है ॥ सो तेरा स्वरूप है ॥ अरु राम
रूप कतरंग फुरया है ॥ सो समुद्र तूं है ॥ ऐसा जो आत्मतत्त्व है ॥ सोई जगत रूप होइ कर
व्याप रहा भासता है ॥ जैसे अग्नि ते उष्णता भिन्न नाही ॥ अरु जैसे फूल ते सुगंध भिन्न ना
ही ॥ जैसे कजल ते कृष्णता भिन्न नाही ॥ अरु बरफ ते सुकलता भिन्न नाही ॥ जैसे गन्ने ते
मधुरता भिन्न नाही ॥ जैसे सूर्य ते प्रकाश भिन्न नाही ॥ जैसे ब्रह्म ते अनुभव भिन्न नाही
अनन्य रूप है ॥ अरु अनुभव ते अहं भिन्न नाही ॥ अहं ते जीव भिन्न नाही ॥ जीव ते मन भिन्न ना
ही ॥ मन ते इंद्रियां भिन्न नाही ॥ इंद्रीयां ते देह भिन्न नाही ॥ सरीर ते जगत भिन्न नाही ॥ इस
प्रकार महा चक्र की न्याई फुरया है ॥ सो कछु प्रवर्त्या नाही ॥ न सीघ्र प्रवर्त्या है ॥ न चिरकाल
का प्रवर्त्या है ॥ न कोऊ नूतन है ॥ न अंधक है ॥ सर्व एक अखंड सत्ता परमात्म तत्व है ॥ जैसे
आकाश विषे आकाश इस्थित है ॥ तैसे अपना आप विषे इस्थित है ॥ उही सत्ता वस्तु भूत हो
इकरि इस्थित है ॥ उही इहां होइकरि इस्थित है ॥ इत रहि न कल्पना कछु नाही ॥ असे
अपणा स्वरूप विषे जो इस्थित है ॥ सो जीवन मुक्त है ॥ ऐसा जो ज्ञानवान है ॥ सो मन इंद्रि
यां सरीर की चेष्टा करता है ॥ अरु उसको करत्तव्य का लेप कछु नाही लगता है ॥ वसिष्ठ
उवाच ॥ हे रामजी ज्ञानवान कछु त्याग ग्रहण जोग रहता है ॥ न ग्रहण जोग रहता है ॥ सर्व
पदार्थों ते निरलेप रहता है ॥ जब लग इसको ग्रहण अरु त्याग की बुद्ध होती है ॥ तब ल
ग संसार के सुख दुःखां का भागी होता है ॥ इसी उपाधि का जिस को अभाव है ॥ सो सुख दुःख का
भागी न होइ होता है ॥ हे रामजी जेता कछु जगत है ॥ सो एक अद्वैत आत्मतत्त्व है ॥ नानत्व क
छु नाही ॥ जैसे घट मट कोठ पाथी करि आकाश नाना आकार भासता है ॥ जैसे समुद्र तरंगों
करि अनेक रूप भासता है ॥ अरु नानत्व भाव को प्रापत नही होता ॥ जैसे आत्मा विना नाना
प्रकार का जगत भासता है ॥ अरु नानत्व भाव को नाही प्रापत होता ॥ ऐसे स्वरूप को जाण
करि इस्थित हो ॥ हे रामजी अंतर आकाश की न्याई निर्मल होइ करि इस्थित है ॥ अरु बाहर ज
ने अपणा वरणाश्रम का विवहार करु ॥ काष्ठ पाषाण की न्याई अंतर रहु बाहर ग्योकन रहित
स्थित होइ ॥ सर्व तत्त्व मात्र आत्मा को जो अपणा स्वरूप देखता है ॥ सोई सम्यक दरसी है ॥ तिस
का अज्ञान अरु मोह नष्ट होजाता है ॥ जैसे नदी का वेग मूल सहित तट के वृक्षों को काटता है
अरु सहदता अरु वैर हर्ष सोक राग द्वेष आदिक जो विकार है ॥ सो चित्त विषे रहते है ॥ सो
चित्त उसका नष्ट होजाता है ॥ हे रामजी ज्ञानी सो वर्तता भी दृष्ट आवता है ॥ पर सो वर्तता कदा
चित नाही ॥ जिसको अनात्म विषे अहंभाव निवर्त्त भया है ॥ अरु बुद्ध तिसकी लिपाइमान न
ही होती ॥ सो पुरुष इस लोक को मारै भी ॥ तौ उसको न कोई मारया है ॥ अरु न उह बंध्याई मा
न होता है ॥ हे रामजी जो वस्त होवे नाही ॥ अरु भासे तिसको माया मात्र जानीये ॥ उसको
जाण्या ते नष्ट होजावेगा ॥ जैसे तेल विना दीपक शांत होजाता है ॥ तैसे ज्ञान करि वासना क्षय
होजाती है ॥ चित्त अचित्त होजाता है ॥ जिसको सुख दुःख विषे ग्रहण त्याग नाही ॥ सो जीव मु
क्त आत्मा विषे इस्थित है ॥ इति श्री निर्वाण प्रकरणे ब्रह्मक ति द नाम तृतीयः सर्गः
३ ॥ श्री वसिष्ठ उवाच ॥ हे रामजी मन बुद्धि अहंकार इंद्रियां आदिक जो दृश्य है ॥ सो सब
अचेत चिन्मात्र है ॥ अरु जीव भी अभिन्न रूप है ॥ जैसे स्वर्ण अरु भूषण विषे भेद कछु नाही
तैसे चिन्मात्र अरु जीव आदिक अभिन्न है ॥ जब लग चित्त अज्ञान मय होता है ॥ तब लग ज
गत का कारण होता है ॥ जब अज्ञान नष्ट होता है ॥ तब चित्त आदिकों का अभाव होजाता है

करसे

अध्यात्म विद्या जो वेदांत शास्त्र है ॥ तिसके अभ्यास करिके अज्ञान नष्ट होता है ॥ जैसे अ
ग्नि के तेज करि सीत का अभाव होता है ॥ तैसे अध्यात्म विद्या के विचार करिके अज्ञान नष्ट
होजाता है ॥ जब लग अज्ञान का कारण त्रिसना उपसम को नाही प्रापत भई ॥ तब लग अ
ज्ञान है ॥ जब त्रिस्ना नाश होवे ॥ तब जाणिये जो अज्ञान का अभाव भया ॥ हे रामजी त्रिस्ना
रूपी विसूचका रोग है ॥ तिसका नाश करणे का मंत्र अध्यात्म शास्त्र है ॥ तैसे अभ्यास करि चि
त्त सांत होता है ॥ जैसे सरत काल विषे मेघ नष्ट होजाते है ॥ तैसे विचार करि त्रिस्ना नष्ट
होजाती है ॥ जब चित्त अचित्तता को प्रापत होता है ॥ तब वासना क्षीण होजाती है ॥ जैसे
धागे साथ मोती परोए होते है ॥ अरु धागे के टूटे ते मोती भिन्न होजाते है ॥ तैसे अज्ञान के नष्ट हू
ए ते मन आदिक सब नष्ट होजाते है ॥ अरु जो पुरुष अध्यात्म शास्त्र के अर्थ को नाही धारते
अरु प्रीति नाही करते ॥ सो पापी कीट आदिक नीच जन्मों को प्रापत होवेगे ॥ हे कमलनेत्र तेरे वि
षे जो कछु मूर्खता चंचलता थी ॥ सो नष्ट होगई है ॥ जैसे पवन के ठहरे ते जल अचल होता
है ॥ तैसे तूं इस्थित को प्रापत भया है ॥ भाव अभाव ते रहित परम आकाशवत निर्मल पद
को प्रापत भया है ॥ हे रामजी ऐसे मै मानता हौं ॥ जो मेरे वचनों करि तूं बोध को प्रापत हू
आ है ॥ अरु विस्तार अज्ञान रूपी निद्रा ते जागा है ॥ समान जीव भी इस मेरी वाणी करि जागा
है ॥ तेरे जागणे विषे क्या आश्चर्य है ॥ हे रामजी जो गुरु भी आवते है ॥ तूं तो अति उदार बुद्ध है ॥ तब गुरु के वचन उसके अंतर प्रवेस करके रहते है ॥ अरु सिष भी सुद्ध पात्र होता है ॥ अरु सब सास्त्रों ते है ॥ सो मेरे गुरु भी समर्थ है ॥ जो गुरु को अपणा स्वरूप सदा प्रतच्छ है ॥ अरु सब सास्त्रों के अन्तसार मे वचन है ॥ अरु ते गहरदाम है ॥ तिस विषे प्रवेस करि जाणे है ॥ जैसे तपत पृथ्वी विषे जल प्रवेस करि जाता है ॥ तैसे तेरे विषे वचनों प्रवेस कीया है ॥ हे राघव हम सम भाव अरु वैसकल के बडे गुरों के गुरु है ॥ हम मेरे वचनों को धारणा आवते है ॥ अरु वेदों ते बडी इस करि अपणे प्रकृत आचार को करो ॥ वाल्मीक उवाच ॥ इस प्रकार जब मुनीश्वर कहि तब सूरज अस्त होणे लगा ॥ सब ही सभा परस्पर नमस्कार करिके ॥ अपणे अ
पणे इस्थानों को गए ॥ सूरज की या किरणों साथ बहुरि आइ बैठे ॥ इति श्री निर्वाण प्रकर
णे नवम ... नाम चतुर्थः सर्गः ॥ ४ ॥ श्री राम उवाच ॥ हे मुनीश्वर मै परम स्वस्थ
ता को प्रापत भया हौं ॥ अब अपणे आप विषे इस्थित हौं ॥ अरु तुमारे वचनों की भावना
करि जगत जाल इस्थित हूआ भी है ॥ मुझको शांत हो गया है ॥ अरु आत्मा परमानंद करि
तृपत भया है ॥ जैसे अनाहद करतपीडा इष्ट वस्तु का लाभ करिके तृपत होती है ॥ तैसे
तृपत समसीतल भया हौं ॥ अरु सुखसाथ प्रसन्नता को पाइकरि इस्थित हौं ॥ अरु सर्व
उरते केवल आत्मा रूप मुझको भासता है ॥ नानत्व का अभाव भया है ॥ जैसे कुहीड ते रहि
त दिसा अरु आकाश निर्मल भासता है ॥ तैसे सम्यक ज्ञान करिके ॥ मुझको सर्व आत्मा
भासता है ॥ अरु मोह निवृत्त होगया है ॥ मोह रूपी जो जंगल है ॥ तिस विषे तृष्णा रूपी
जो मृगया ॥ अरु राग द्वेष आदिक धंधुक रहे थी ॥ सो सब निवृत्त होगई है ॥ ज्ञान रूपी व
र्षा करिके सब सांत होगई है ॥ अब मै आत्मा आत्मा आनंद को प्रापत भया हौं ॥ जो आदि अ
रु अंत ते रहित है ॥ अरु परम अमृत है ॥ ऐसे अमृत का स्वाद भी जिसके आगे तुच्छ तृण
भासता है ॥ ऐसे आनंद अपने स्वभाव को प्रापत भया हौं ॥ मै राम हौं अर्थ यह जो सभ
विषे रमण हारा हौं ॥ मेरा मुझको नमस्कार है ॥ अब मै सर्व संदेह ते रहित हौं ॥ सभ सं
से अरु विकार मेरे नष्ट भये है ॥ जैसे प्रात काल करि निसाचर वेताल आदि निवृत्त हो
जाते है ॥ तैसे गृह आदिकों का अभाव भया है ॥ निर्मल विस्तीर्ण हिम की न्याई जो हृ
दा कमल है ॥ तिस विषे इस्थित हौं ॥ जैसे भ्रमर फिरता फिरता कमल विषे आन इस्थि
त होता है ॥ तैसे मै आतम रूपी हृदे सार विषे इस्थित हौं ॥ अविद्या रूपी कलंक आतमा
को कहां था ॥ मैं तो निष्कलंक निर्मलता को प्रापत भया हौं ॥ जैसे सूरज के उदे हुए तम का
अभाव होता है ॥ तैसे मेरे संसे अरु अविद्या नाश भई है ॥ सर्व आत्मा भासता है ॥ और कल
पना कोऊ नाही ॥ भावना आकार अपणे स्वरूप को प्रापत भया हौं ॥ इस प्रकृत को देख
करि हसता हौं ॥ जो क्या जाणता था क्या करता था ॥ मै तो ज्यों का त्यों नित्य सुद्ध आदि अंत
ते रहित हौं ॥ हे मुनीश्वर तेरे वचन रूपी अमृत के समुद्र विषे मै स्नान कीया है ॥ तिस
करिके अजर अमर आनंद पद को प्रापत भया हौं ॥ अरु स्वर्ग ते भी ऊचे पद को प्रापत भया

है॥ अरु वीतसोक होकरि परमसुद्धता सीतलता अनुभव अद्वैतको प्राप्त भया है॥ इति
श्री युवितने नाम पंचम सर्गः॥५॥ श्री वसिष्ठ उवाच॥ हे महाबाहो रामजी वह
हु भी मैं परम वचन सुण॥ जैसे हितकी कामनाकरिके मैं कहता हौं॥ आत्मपदको प्रा
पत भया है॥ परबोधकी दृढताके निमित्त वहुडि सुण॥ तिसके श्रवणकरि अल्पबु
द्धि भी आनंदपदको प्रापत होते है॥ हे रामजी जिसको अनात्मा विषे आत्म अभिमान
है॥ अरु आत्मज्ञान नाही॥ तिसको इंद्रियां रूपी सत्रु दुःख देते है॥ जैसे निर्बल पुरुष
को चोर दुख देते है॥ तैसे अज्ञानीको इंद्रियां दुख देती है॥ अरु जिसको आत्मपद विषे
स्थित भई है॥ तिसको इंद्रियां दुख नाही देतीयां॥ जैसे दृढ गढके सत्रु भी मित्र हो जाते
है॥ तैसे ज्ञानवानको यों इंद्रियगण मित्र हो जाते है॥ अरु जिस पुरुषको देह विषे स्थि
त बुद्धि है॥ अरु इंद्रियोंके विषयोंको सेवना करता है॥ तिसको बडे दुख प्रापत होते है॥
हे रामजी आत्मा अरु सरीरका संबंध कछु नाही॥ इस परस्पर विलक्षण स्वभाव है॥
जैसे तम अरु प्रकासका विलक्षण स्वभाव है॥ तैसे आत्मा अरु देहका परस्पर वि
लक्षण भाव है॥ आत्मा सर्व विकारोंते रहित नित्य मुक्त है॥ अरु देह क्षतते रहित स
भते निर्लेप है॥ अरु सदा ज्योंका त्यों प्रकासरूप भगवान आत्म सत्त स्वरूप है॥ तिसका
संबंध किस साथ होवे॥ अरु देह जड असत्य अज्ञान तुच्छ अविनासी कृतघ्न रूप है॥
तिसका संयोग किस साथ होवे॥ अज्ञानकरिके देह अरु आत्माका संयोग भासता
है॥ सम्यक्ज्ञानकरिके संबंधका अभाव भासता है॥ हे रामजी इह मैं तिसुन वचन क
हे है॥ तिसका वारंवार अभ्यास करे॥ तो संसार मोहका अभाव हो जावे॥ तब संसार
का कारण मोह निवर्त हूआ॥ तब बहुडि दुखभावना होवेगा॥ अज्ञानरूपी निद्राते जब
लग इह होइ करि नाही जागता॥ तबलग बहुडि आवर्ण हो जाता है॥ जैसे निद्राते अ
गे बहुडि निद्रा घेर लेति है॥ जब दृढ करि जागे॥ तो बहुडि नाही घेरती॥ तैसे दृढ अभ्या
सकरि अज्ञान निवर्त हूया॥ बहुडि आवर्ण न होवेगा॥ ताते मोह दुखके निवर्त हूआ
अर्थ इह अभ्यास करु॥ वसिष्ठ उवाच॥ हे रामजी आत्मा देहके गुणको अंगीकार नाही
करता॥ जो देहके गुण ग्रहण करे॥ तब आत्मा भी जड हो जावे॥ सो तो सदा ज्ञानरूप है॥
अरु देह जो आत्माका गुण परमार्थते अंगीकार करे॥ तब देह भी चेतन हो जावे॥ सो
तो जड ही रूप है॥ इसको अपना ज्ञान कछु नाही॥ जब ज्योंका त्यों इनका ज्ञान होवे॥
सब सरीर तुच्छ जड भासे॥ अरु आत्मा चेतन भासे॥ हे रामजी आत्मा अरु देहका जल्लद
कीन्याई संजोग संबंध नाही॥ अरु तंतु पटकी न्याई समवाइ संबंध भी नाही॥ वहुडि इस
साथ मिलकरि सुख दुखको ग्रहण करणा॥ इस मनने औरु रचना क्या है॥ एही मूर्खता है॥ जो
कछु भी समान लक्षण होवे॥ तो संबंध भी होवे॥ जिनका समान लक्षण कछु न
होवे॥ तिसका संबंध कैसे होवे॥ आत्मा चेतन रूप है॥ देह जड है॥ आत्मा सत्तरूप है॥ देह अस
त्तरूप है॥ आत्मा प्रकासरूप है॥ देह तमरूप है॥ आत्मा निराकार है॥ देह साकार है॥ आ
त्मा सूक्ष्म है॥ देह स्थूल है॥ वहुडि आत्मा अरु देहका संयोग कैसे होवे॥ जो संयोग
नाही॥ तो दुख किसका होवे॥ जैसे सूक्ष्म अरु स्थूलका संजोग नाही होता॥ जैसे दि
न अरु रात्रीका संयोग नाही होता॥ तैसे ज्ञान अरु अज्ञानका संयोग नाही होता॥ जैसे
धूप अरु छायाका मिलाप नाही होता॥ जैसे सत्त अरु असत्तका संयोग नाही होता॥ तै
से आत्मा अरु देहका संयोग नाही होता॥ अज्ञानकरिके संयुगत मिले हूये भासते है॥
परु संबंध कछु नाही॥ जैसे आकाश अरु वायुका संजोग नाही होता॥ जैसे इनका संजोग
नाही होता है॥ देहके सुख दुख करिके आत्माको सुख दुख जाणना मिथ्या भ्रम है॥ जरा मर
ण सुख दुख भाव अभाव आत्मा विषे रंचक मात्र भी नाही॥ जब देह विषे अभिमान होता है
तब अपणे विषे भासते है॥ जब देह विषे आत्म अभिमान होता है॥ तब ऊंच अरु नीच ज
न्मोंको पावता है॥ वास्तवते कछु नाही॥ केवल ब्रह्म सत्ता अपणे आप विषे स्थित
है॥ तिस विषे विकार कोऊ नाही॥ जैसे सूर्यका प्रतिबिंब जल विषे होता है॥ अरु जलके
हलनेकरिके प्रतिबिंब चलता भासता है॥ तैसे देहके सुख दुख करि आत्मा विषे सुख दु
ख विकार दृष्ट देखते है॥ परु आत्मा सदा निर्लेप है॥ तब सम्यक जणा श्रुत आत्मज्ञान हो

वे॥ तब देह विषे इस्थित भी भ्रमको न प्रापत होवै॥ वसिष्ठ उवाच॥ हे रामजी जब जथा
भूत ज्ञान होता है॥ तब सत्तको सत्त जाणता है॥ अरु असत्तको असत्त जाणता है॥ जैसे दी
पक हाथ विषे होता है॥ तब सत्त असत्त पदार्थ भासि आवते है॥ तैसे ज्ञानकरि सत्त अस
त्त जथार्थ जाणीता है॥ अरु अज्ञानकरिके मोह विषे भ्रमता है॥ जैसे वायु विषे प्रापत हू
आ त्रिण पड़ा भ्रमता है॥ तैसे मोहरूपी वायु विषे अज्ञानी जीव भ्रमता है॥ स्वस्थ कदा
चित नाही होता॥ अरु जैसे जंत्रकी पुतली धागेकरिके पड़ी चेष्टा करती है॥ तैसे अज्ञा
नी जीव प्राणोरूपी धागेकरि पड़े चेष्टा करते है॥ जैसे नटुआ अनेक स्वांगोंको धारता है॥
तैसे कर्मोंकरि जीव अनेक सरीरोंको धारता है॥ जैसे पाषाणकी पुतली त्रिणका खल
आदिकोंका लेती त्यागती है॥ अरु निरल करती है॥ तैसे इह प्राणी पड़े चेष्टा करते है॥ सब
द स्पर्स रूप रस गंधको ग्रहण करते है॥ जैसे पुतलीयां जड है॥ तैसे इह जड है॥ अरु जो
कहिये॥ इहां विषे प्राण है॥ तो जैसे लुहारकी खल होती है॥ उह स्वासोंको लेती अरु त्यागा
ती है॥ तैसे इह जीव भी पड़े चेष्टा करते है॥ वसिष्ठ उवाच॥ हे रामजी अपणा आप जो नाक
व स्वरूप है॥ सो ब्रह्म है॥ तिसके प्रमाद मोहकरिके कृपणताको प्रापत होते है॥ जैसे लुहा
रकी खल वृथा स्वासोंको लेती है॥ तैसे इनकी चेष्टा व्यर्थ है॥ इनकी चेष्टा अरु बोलणा अनर्थ
के निमित्त है॥ जैसे धनुर्वान जो बाण निकसता है॥ सो हिंसाके निमित्त है॥ औरु कछु काम
न सिद्ध नाही होता॥ तैसे अज्ञानीकी चेष्टा अरु बोलणा है॥ सो अनर्थ दुखके निमित्त है
सुखके निमित्त नाही॥ तिनके संगते भी कल्याणके निमित्त नाही॥ जैसे जंगलका इंद्रा
विरछ होता है॥ तिसकी छाया अरु फलकी इच्छा करणी व्यर्थ है॥ तिसते कछु फल ना
ही प्रापत होता॥ अरु विश्रामके निमित्त छाया भी प्रापत नही होति॥ तैसे अज्ञानी जी
वोंकी संगतते सुख नाही प्रापत होता॥ तिनको देवणा भी व्यर्थ है॥ जैसे विकट विषे चून
पाया व्यर्थ होता है॥ तैसे मूर्खको दान दीया व्यर्थ होता है॥ अरु तिनके साथ बोलणा भी
व्यर्थ है॥ जैसे जंगल विषे स्वानका बुलावणा निष्फल है॥ तैसे उनके साथ बोलना निष्फ
ल है॥ हे रामजी जो अज्ञानी जीव है॥ सो संसार समुद्र विषे आवते जाते जनमते मरते है॥
सरीर विषे आस्था करते है॥ अरु तिसके संबंधी पुत्र दारा धनते आदिकों विषे ममत्व बु
द्धि करते है॥ इस मिथ्या दृष्टकरिके दुख पावते है॥ मनको कदाचित नाही होते॥ काह
ते जो अनात्मा विषे आत्म बुद्धिको त्यागना नाही करते॥ अरु ममत्व बुद्धि विषे दृढ रहते है॥ इस
ते मुक्त नाही होते॥ हे रामजी जो अज्ञानी है॥ अवस्तु पदार्थको देखते है॥ अरु वस्तु रूप
को जो रतने ग्रंथ है॥ इसकरि परमार्थ धनते वेमुख रहते है॥ नरकका सार जो इस्त्री आ
दिक है॥ तिन विषे प्रीत करते है॥ अरु तिनको देखकरि प्रसन्न होते है॥ जो नरकका साध
न है॥ जैसे मेघको देखकरि मोर प्रसन्न होता है॥ तैसे इस्त्री आदिकोंको देखकरि प्रसन्न
होते है॥ हे रामजी सुखके मारणेके निमित्त इस्त्री रूपी विषकी वेली है॥ अरु नेत्ररूपी
तिसको फल है॥ अरु ओठरूपी पत्र है॥ अस्तनरूपी तिसके गुच्छे है॥ अरु अज्ञानी भ्रम
र तहां विराजमान होते है॥ अरु नासको पावते है॥ मनमरीरूपी नलाउ है॥ इह रथरूपी
तिस विषे कमल है॥ अरु चित्तरूपी भ्रमर तहां सदा रहता है॥ अरु अज्ञानीरूपी नदी है
दुखरूपी तिस विषे लहरी है॥ अरु तृष्णारूपी बुदबुदे है॥ असो जो नदी है॥ सो मरणरू
पी बडवाअग्नि विषे जाइ पडेगी॥ वसिष्ठ उवाच॥ हे रामजी जब जन्म लेता है॥ तब म
हा भय अग्नि तिने जलता हूआ निकसता है॥ तब बालक महा अंध रूप अवस्था निरभाग्य
रूपी होता है॥ अरु जब जोवन अवस्थाको प्रापत होता है॥ तब विषयोंको सेवता है॥ सो
भी दुखका कारण होते है॥ बहुडि वृद्ध अवस्थाको प्रापत होता है॥ तब सरीर निरस
क्त हो जाता है॥ अरु अंतर तृष्णा पड़ी जलावते है॥ इस प्रकार जन्म मरण अवस्था
विषे पड़े भटकते है॥ हे रामजी संसाररूपी कूप है॥ तिस विषे मोहरूपी मूढ गणा है॥
अरु वासनारूपी सर्ड़ी साथ बांधे हूए है॥ अरु जीवरूपी घट अध: अरु ऊर्ध्वको भ्रमते
अरु ज्ञानवानको संसार कोऊ दुख नाही देता॥ गोपदकी न्याई तुच्छ हो जाता है॥ अज्ञा
नीको समुद्र वत तरणा कठिन होता है॥ अपणे अंतर हि पड़ा भ्रमको देखना है॥ नि
कस नाही सकता॥ थोड़ा भी उसको बहुत हो जाता है॥ जैसे पंखेरूको पिंजरा है वि

विषैवड़ासा रागहोजाताहै॥ अरुजैसेकोइ लूकैवलदकोचरहीविषैवड़ामारगहोजा
ताहै॥ तैसेअज्ञानीकोंतुछसंसारवड़ाहोइभासताहै॥ वसिष्ठउवाच॥ हेरामजीजिस
जगतकोरहरमणीककजानकरिपदार्थोंकीइछाकरताहै॥ सोसभपंचभूतकापदार्थ
है॥ मोहकरिकैतिनकोंसुंदरजानताहै॥ अरुतिनविषेप्रीतकरताहै॥ इस्थिरजाणताहै
सोअनर्थकेनिमित्तहोतेहैं॥ हेरामजीअज्ञानरूपीचंद्रमाउदेहूआहै॥ तिसकरिके
भोगरूपीवृछपुष्टहोतेहैं॥ जनमोंकीपरंपरारसकोपावतेहैं॥ अरुकर्मरूपीजलक
रिसंचितेहैं॥ पत्रअरुपापरूपीमंजरीहोतीहै॥ अरुअज्ञानरूपीचंद्रमाहै॥ वासनारू
पीजलसोंईभयाअम्रत॥ आसारूपीचकोर॥ तिसकोदेषकरिप्रसन्नहोताहै॥ अरुआ
सारूपीकमलनीदेषकरीप्रसन्नहोतीहै॥ प्रफुल्लतहोतीहै॥ अरुअज्ञानीरूपीभ्रमर
तिसकूपरवेवकरिप्रसन्नहोताहै॥ तातेंसभजगतअज्ञानकरिकेरमणीकभासताहै॥
हेरामजीइहजगतसभअज्ञानकरिकेइस्थितहै॥ तिसअज्ञानकाजोपरवारहै॥ सोसु
अज्ञानरूपीचंद्रमाशोभाकरिकेइस्थितहोताहै॥ तबकामनारूपीक्षीरसमुद्रउछल
ताहै॥ अरुअनेकतरंगोंकोपसारताहै॥ अरुत्रिस्नारूपीमंजरीपुष्टहोतीहै॥ तिसकेरसक
रि अरुकामक्रोधलोभमोहरूपीचकोर॥ तिसकोदेषकरिप्रसन्नहोतेहैं॥ अरुदेहअभि
मानरूपीरात्रविषेतिसकाप्रकाशहोताहै॥ अरुदेहअभिमानरूपीरात्रिकेनिवर्तहूए॥
अरुविवेकरूपीसूरजकेउदेहूए॥ अज्ञानरूपीचंद्रमाकाप्रकाशनिवर्तहोजाताहै॥ हेरा
मजीअज्ञानकरिकेइहजीवभ्रमेहै॥ अरुचेष्टाधनकीविषयजेहोगईहै॥ जोतुछनीचहै
सर्वपदार्थहै॥ तिनकोरमणीकसुषदाइकरजाणताहै॥ इस्त्रीकोंदेषकरिप्रसन्नहोता
है॥ कवीस्वरकहतेहैं॥ इसकेकपोलकमलवतहैं॥ अरुनेत्रभ्रमरवतहैं॥ ओठहसनेवाले
हैं॥ अरुवल्लीकीन्याईरमाकियाअजाहै॥ अरुकंचनकेकलसवतअस्तनहै॥ उदरवषम्स्थ
लकेलेकेथंभवतहै॥ इत्यादिकजिसकीअस्तुतिकरतेहैं॥ सोइस्त्रीरक्तमाससमलकीपुत
लीहै॥ कपोलभीरक्तमासहैं॥ भुजाविषकेविरछकेटासवतहै॥ ओठभीरक्तमांसहै॥ अ
स्तनभीरक्तमांसहै॥ औरभीसर्वशरीररक्तमांसअस्थिकाएकवनवणायाहै॥ इसकोजे
रमणीकजाणतेहैं॥ सोमूर्षमोहकरिविमोहतभएहैं॥ अपणेनासकेनिमित्तइसकीइछा
करतेहैं॥ जैसेसर्पणीसाथकोऊहितकरैगा॥ सोनासकोंप्रापतहोवेगा॥ तैसेइस्त्रीसाथ
हितकीचेतनाघाहोवेगा॥ जैसेकदलीवनकाहस्तीमहावल्लीकामकरिकेनीचतातेंको
पावताहै॥ अरुसंशलपवतेहैं॥ अंकुसकोसहताहै॥ अपमानकोप्रापतहोताहै॥ सोएक
हस्तीनीकेहितकरिअैसेगतकोप्रापतहोताहै॥ तैसेइहजीवइस्त्रीकेइछाकरिकेअनेक
दुषकोंप्रापतहोताहै॥ जैसेदीपककोपतंगरमणीकजाणकरितिसमोंप्रवेसकरताहै
अरुनासकोप्रापतहोताहै॥ तैसेइहजीवइस्त्रीकीइछाकरताहै॥ तिसकेसंगकरिनासा
कोंप्रापतहोताहै॥ अरुलछमीकोआश्रयकरिकेजोसुषकीइछाकरताहै॥ सोभीसुषी
नहोवेगा॥ जैसेपहाडहरनेंदेषणेमात्रसुंदरलगताहै॥ तैसेइहभीदेषणेमात्रसुंदरभा
सतीहै॥ जैसेफणकोआश्रयकरिकेपारकोइआचाहै॥ सोनहोवेगा॥ तैसेलछमीकोंआश्र
यकरिकेसुषकीइछाकरै॥ सोनहोवेगा॥ अनर्थदुषकोप्रापतहोवेगा॥ जबलगलछमीप्रा
पतहोतीहै॥ तबलगअनर्थपापोंकोकरणेलागताहै॥ अरुदुषोंकापात्रहोताहै॥ तिसक
रिजलतारहताहै॥ वसिष्ठउवाच॥ हेरामजीजगतविषैसुषोंकीइछाकरतेहैं॥ सोन
होवेगा॥ प्रथमजनमलेताहै॥ तबभीदुषसाथनिकसताहै॥ वहुडजन्मकरिमूर्षनीच
अवस्थाकोंप्रापतहोताहै॥ तिसविषैविचारकछुनाहीहोता॥ तिसकरिदुषपावताहै
जबजोवनअवस्थारूपीरात्रआवतीहै॥ तबतिसविषैकामक्रोधलोभमोहरूपीनिसा
चरआनविचरतेहैं॥ अरुत्रिस्नारूपीपिशाचनीआनविचरतिहै॥ विवेकरूपीचंद्रमाना
हीउदेहोता॥ तबअंधकारविषैसभक्रीडाकरतेहैं॥ हेरामजीजोवनअवस्थारूपीव
र्षाकालहै॥ तिसविषैवहआदिकनदीयांमलनभावकोंप्रापतहोतीयांहै॥ अरुका
मरूपीमेघगरजताहै॥ अरुत्रिस्नारूपीमोरनीतिसकोदेषकरिप्रसन्नहोतीहै॥ अरुनि
र्तनकरतीहै॥ अरुलोभरूपीदादुरआवतेहैं॥ अरुसवदकरतेहैं॥ इत्यादिकअनर्थों
काबीजहोताहै॥ वहुडजोवनअवस्थारूपीवृछहै॥ कोजरारूपीविल्लीभोजनकरिजातीहै

आमहाजरजरीभूतहोजातेहैं॥ सरीरअसमर्थहोजाताहै॥ दरसावहजातेहैं॥ अंतरतेपच
जलताहै॥ वहुडमृत्युरूपीसिंहजरारूपीहरणोंको॥ भोजनकरिलेताहै॥ इसप्रकारउपजा
ताहै॥ अरुमरताहै॥ कालरूपीनियामककोपिलनाकरिकै॥ आसारूपीरसडीसाथबांधा
हूआ॥ घटीजंत्रकीन्याईपराभटकताहै॥ कबहूअधःकोंजाताहै॥ कबहूऊर्ध्वकोंजाताहै
शांतिकोकदाचितनाहीप्रापतहोता॥ हेरामजीब्रह्मंडरूपीएकहछहै॥ अरुजीवरूपीति
सकोपत्रलागेहैं॥ सोकर्मरूपीवायुकरिहलतेहैं॥ अज्ञानरूपीऊचाहछहै॥ तिसऊपरलो
भादिकरूपीछुछ्रआनवैठतेहैं॥ अरुजगतरूपीतालहै॥ तिसविषेशरीररूपीकमलहै
तिन्होंविषेजीवरूपीभ्रमरआनवैठतेहैं॥ अरुकालरूपीहस्तीआइकरितिनकोंभोजनक
रिजातेहैं॥ हेरामजीजंतरूपीजीवरणापंछीहै॥ आसारूपीफासासाथवांधेहूए॥ वासनारूपी
मीर्षाविषेपड़ेहैं॥ रागद्वेषरूपीअगनीसाथपकेहूए॥ कालरूपीपुरुषकेमुषविषेप्र
वेशकरतेहैं॥ अरुजनतारूपीपंछीउड़तेफिरतेहैं॥ सोकोदिनहै॥ जबकालरूपीवध
कजालपसारेगा॥ तबहीफसाईलेवेगा॥ वसिष्ठउवाच॥ संसाररूपीतालहै॥ अरुजीव
रूपीतिसविषेमछीयांहै॥ कालरूपीवगुलातिनकोभोजनपड़ाकरताहै॥ अरुकालरू
पीकुमारहै॥ जनतारूपीम्रतकाकेवासनकरताहै॥ वहुडसीघ्रहीफूटजातेहैं॥ अरुजीव
वरूपीनदीहै॥ कर्मरूपीतरंगोंकोपसारतीहै॥ सोकालरूपीवडवाअगनिकेमुषमेंजाइ
पड़तीहै॥ अरुजगतरूपीहस्तीहै॥ जीवरूपीमातीतिसकेमस्तकविषैहै॥ तिसहस्तीकोंका
लरूपीसिंहभोजनकरजावेगा॥ सोकालमहाभछकहै॥ जिसनेअनेकब्रह्मंडोंकोंभोजन
कीयाहै॥ अरुकरताहै॥ अरुतृप्तनहीहोता॥ जैसेअगनिघृतकीआहुतकरितृप्तनाही
होती॥ तैसेकालजीवोंकेभोजनकरिकेतृप्तकदाचितनाहीहोता॥ हेरामजीइहजगतए
कनिमेषविषेपसरताहै॥ अरुइहनिमेषविषेलीनहोताहै॥ सभकेअभावहूएजोसेषरह
ताहै॥ सोरूढहै॥ वहुडरूढभीनिवर्तहोइजाताहै॥ सभकेपाछेएकपरमतत्वब्रह्मसत्ताश
हतीहै॥ हेरामजीजोकछुजगतहै॥ सोअज्ञानकरिकेभासताहै॥ जन्ममरणवालजोवन
व्रिधआदिकै॥ विकारअज्ञानहीकरिकेभासताहै॥ अज्ञानकेनष्टहूएसभनष्टहोजा
ताहै॥ अरुजवलगआत्मविचारनाहीउतपतभया॥ तवलगअज्ञानरहताहै॥ जबआ
त्मविचारउपजताहै॥ तवअज्ञानरूपीरात्रनिवर्तहोजातीहै॥ केवलब्रह्मपदभासताहै
इतिश्रीनिर्वाणप्रकरणेज्ञानाहारावर्णनेनामषष्ठसर्गः॥ ६ ॥ ॥ श्रीवसिष्ठउवाच
हेरामजीइहजोसंसारवनहै॥ सोचेतनरूपीपर्वतकेशृंगपरइस्थितहै॥ तिसविषेअविद्यारूपी
वल्लीवहीहै॥ अरुविकासकोंप्रापतभईहै॥ वहपर्वतवेलीविषेगाढीहै॥ अरुदुषसुषभावअ
भावज्ञानअज्ञानइसकेपत्रहैं॥ अरुफूलफलहैं॥ जहांविद्यासूक्ष्मरूपहोइकरिइस्थितभईहै॥
जहांऊचेसुषकोभोगावतेहैं॥ तेसीकेसनभावकोप्रापतहोतीहै॥ अरुजहांदुषरूपहोइकरि
इस्थितहोतीहै॥ तहांदुषरूपभासतीहै॥ सोइसुषअरुदुषतिसकेफलगुछेहैं॥ अरुदिनरूपी
फूलहै॥ रात्ररूपीभ्रमरहै॥ जन्मरूपीअंकुरहै॥ अरुभोगरूपीरसकरिपूर्णहै॥ जबविचाररूपी
छुराअविद्यारूपीवृछकोघाणेलागताहै॥ तबनष्टहोजातीहै॥ जबलगविचाररूपीछुरा
नाहीलागता॥ तवलगदिनदिनवढतीजातीहै॥ अरुदृढहोजातीहै॥ हेरामजीइहअविद्यारू
पीवल्लीहै॥ अरुमूलइसकासंवितफुरणाहै॥ तिसहीकरिपसररहीहै॥ तारेगणइसकेकिसो
रेफलहैं॥ चंद्रमासूरजइसकाप्रकाशहै॥ अरुइहतनकर्मरूपीमरकटसाथकेटकेहैं॥ अशुभ
कर्मरूपीस्वर्गइसकेफलप्रकाशेहैं॥ अरुसुषदुषरूपीफललागतेहैं॥ जीवरूपीइसकेपत्र
हैं॥ अरुकालरूपीवायुकरिकेहलतेहैं॥ कईजीवरणहोइकरिगिडपड़तेहैं॥ पृथवीरूपीतचा
है॥ पर्वतगोडेहैं॥ मरणरूपीइसविषेछिद्रहैं॥ जन्मरूपीअंकुरहैं॥ मेघरूपीकलीयांहैं॥ महा
समुद्रगोगम्रहैं॥ तिसकरिजीवमोहतहोतेहैं॥ जैसेइस्त्रीकोदेषकरिमोहतहोतेहैं॥ अरुस
पतसमुद्रोंकेजलकरिसंचतिहै॥ तिसकरिपुष्टहोतीहै॥ तिसवेलीविषेएकविषकीभरी
सर्पणीरहतीहै॥ जोकोऊइसकेनिकटजाताहै॥ तिसकोडंगकरतीहै॥ तबइहमूर्छाहोइकर
गिड़पड़ताहै॥ संसाररूपीमूर्छादेवणेहारी॥ त्रिस्नारूपीसर्पणीहै॥ सोवेलीअन्यथानहूता
हांहोती॥ जबविचाररूपीछुराइसकोलागे॥ तबनष्टहोजातीहै॥ हेरामजीजेताकछुपर
पंचतुझकोंभासताहै॥ सोअविद्यारूपहै॥ कहूंइहअविद्याजलरूपीहूईहै॥ कहूंचंद्रमा॥ क
हूंसूरजकहूंतारेकहूंतम॥ कहूंप्रकाशतेज कहूंसात्वदहोइहै॥ कहूंतेजतमतेरहितकहै

निप्र· ५

5

अविद्या किसको कहतेहैंतत्व १

पापकहूंपवन्न॥कहूंस्थावररूपहुए॥कहूंअज्ञानकरिआपहिछीणहोजातीहै॥कहूंतप
दानआदिकोंकरिछीणहोतीहै॥पापआदिकोंकरिदृढहोतीहै॥कहूंस्वर्गहोइकरिप्रका
सतीहै॥कहूंअस्थाणुरूपहोतीहै॥कहूंनरकविषेलीनहै॥कहूंस्वर्गनिवासनीहै॥कहूं
देवताहोतीहै॥कहूंकमहोतीहै॥कहूंविस्नुरूपहोइकरिइस्थितभईहै॥कहूंब्रह्मारूपहो
इकरइस्थितभईहै॥कहूंरुद्ररूपभईहै॥कहूंअग्निरूपकहूंपृथिवीरूपभईहै॥कहूंआकास
कहूंकालभूतभविष्यवर्तमानभईहै॥हेरामजीजोकछुदेषणेआवताहै॥सोमहामहिमा
इसीकीहै॥ईस्वरतेंआदिअरुतृणपर्यंतसभअविद्यारूपहै॥जोइसदृष्टजालतेंअतीतहै
तिसकाआत्माभीजाणा॥इतिश्रीनिर्वाणप्रकरणेअविद्यासत्तालीलावर्णनंनामसप्त
मसर्गः॥७॥श्रीरामउवाच॥हेभगवनब्रह्मासुरुविस्नुअरुशिवादिकतोमुझआकारआका
रजानेहैं॥इनकोंअविद्याकरभुमकैसेंकहतेहो॥इहसुनिकरिमुझकोंसंसाउत्पतिहुआ
है॥श्रीवसिष्ठउवाच॥हेरामजीप्रथमअविद्याअरुतत्वश्रवणकरु॥जोकिसकोंकहते
है॥जोअविद्यमानहोवे॥अरुभासेसोअविद्याहै॥अरुजोसदाविद्यमानहै॥तिसकोंतत्व
कहतेहैं॥हेरामजीसहसंवित्तकल्पनातेंरहितचिन्मात्रआत्मसत्ताहै॥सोतत्वहै॥तिस
विषेअहंइत्यादिककरिजोसंवेदनकलपनाकरणारूपफुरीहै॥सोचिन्मात्रसेंचित्तका
आभासहै॥सोईफुरणाफुरकरिदेषअस्थूलमध्यभावकोंप्रापतभईहै॥इस्थानभेदकरिवहु
इउहीदृष्टसंवेदनकरिकेमनरूपभावकोंप्रापतभईहै॥अरुसात्वकराजसतामसजोगुण
सोइसकेआकारहूएहै॥सोअविद्याप्रकृतित्रिगुणधर्मणीहोतभईहै॥अरुतीनगुणजोमुह
ककोंकहेहैं॥सोभीएकएकगुणतीनप्रकारहुआहै॥अविद्याकेगुणनवप्रकारकेभेदकोंप्रा
पतभएहै॥सोअविद्याकेनवोगुणविषेहै॥रिषीस्वरमुनीस्वरसिद्धनागविद्याधरदेवताजो
हैं॥सोअविद्याकासात्विकभागहै॥तिससात्वककेभागविषेनागतामसीसातकहै॥अरुवि
द्याधरसिद्धदेवतामुनीस्वरइहअविद्याकेसातकभागविषेसातकराजसहै अरुहरिहरा
दिकसातकसातकहै॥हेरामजीसातकजोप्रकृतभागहै॥तिसकरीतत्वतजोएहै॥सोमो
हकोंनाहीप्रापतहोते॥मुक्तहोतेहैं॥सोइहरिहरादिकशुद्धसातकहै॥सदामुक्तरूपहोइक
रिजगतविषेइस्थितहैं॥जबलगजगतविषेहैं॥तबलगजीवनमुक्तहैं॥जबिदेहमुक्तहूए
तबपरमेस्वररूपकोंप्रापतहोतेहैं॥हेरामजीएकअविद्याकेदोरूपहैं॥एकअविद्यारूपव
हुडहीविद्यारूपहोतीहै॥जैसेंवीजहीफलताकोंप्रापतहोतेहैं॥अरुफलवीजभावकों
प्रापतहोताहै॥जैसेंजलतेंवुदवुदाउदताहै॥तैसेंअविद्यातेंविद्याउपजाती॥अरुविद्या
करिअविद्याभीलीनहोतीहै॥जैसेंकाष्टतेंउपजकरि॥अगनिकाष्टकोंदगधकरतीहै॥
तैसेंविद्याअविद्यातेंउपजकरिअविद्याकोंनाशकरतीहै॥तैसेंविद्याअविद्यातेंउपज
अरुवासवतेंसभचिदाकासहै॥जैसेंजलविषेतरंगकल्पनाभावनाहीमात्रहै॥तैसेंअविद्याअरु
विद्याभावनाहीमात्रहै॥इसकोंत्यागकरिसिषआत्मसत्तावहतीहै॥अविद्याअरुविद्याआपससोंवि
रोधीहै॥जैसेंतमअरुप्रकाशहोताहै॥तैसेंइनदोनाकात्यागकरिआत्मसत्ताविषेइस्थितहोतीहैवि
द्याअरुअविद्याकल्पनामात्रहै॥विद्याकेअभावकानामअविद्याहै॥अरुअविद्याकेअभावकानामवि
द्याहै॥इहप्रतिजोगीकल्पनामिथ्याउठीहै॥जबविद्याउपजतीहै॥तबअविद्याकोनासकरतीहै॥या
पेआपभीलीनहोजातीहै॥जैसेंकाष्टतेंउपजीअगनिकाष्टकोंजलाईकरिआपभीशांतहोजाती
है॥तैसेंअविद्याकोंनाशकरिकेविद्याआपभीलीनहोजातीहै॥तिसतेंसेषरहताहै॥सोअसवदप
दहै॥सोसर्वव्यापीहै॥जैसेंवटवीजविषेपत्रफूलफलडालेहोतेहैं॥तैसेंसर्वविषेएकअनुस्यू
तसत्ताव्यापीहै॥सोब्रह्मतत्वसर्वसक्तहै॥सर्वसक्तिकासपदहै॥अरुआकासतेंभीअधिकसू
क्षमहै॥संवेदनतेंरहितचिदात्माहै॥जैसेंसूरजकांतविषेअगनिहोतिहै॥तैसेंइहांविषेंहूतहो
ताहै॥तैसेंसभजगतविषेव्रह्मव्यापरहाहै॥जैसेंदधिकोंमथेविनाघृतनाहीनिकसताहै॥
तैसेंविचारविनाआत्मानाहीभासता॥जैसेंअग्निमेंविननाशकेनिकसतेहै॥अरुसूरजतेंकिरणां
निकसतीयाहै॥तैसेंइहजगतआत्माकाचित्तरूपहै॥जैसेंघटकेनासहूएघटाकासअविना
सीहै॥तैसेंजगतकेअभावतेंभीआत्माअविनासीहै॥हेरामजीजैसेंचुंवककीसत्ताकरिकेजड
लोहाचेष्टाकरताहै॥अरुचुंवकसदाअकर्ताहीहै॥तैसेंआत्माकीसत्ताकरिकेजगतदेहादिक
चेष्टाकरतेहैं॥चेतनहोतेहैं॥परुआत्मासदाअकरताहीहै॥इसजगतकावीजचेतनअआत्मास
ताहै॥तिसविषेसंवित्तसंवेदनआदिकसभवटभीकल्पनामात्रहै॥जैसेंजलकोंकहिएवहूत

मंद्रहहै॥चंचलहै॥सोजलहीजलहै॥तैसेंसंवेदआदिकसभचेतनब्रह्मरूपहै॥जहांनकिंच
नहै॥नअकिंचनहै॥सोतेरास्वरूपहै॥इतिश्रीनिर्वाणप्रकरणेअविद्याचिकित्सानामअ
ष्टमसर्गः॥८॥श्रीवसिष्ठउवाच॥हेरामजीइस्थावरजंगमजेताकछुजगततुमकोंभा
सताहै॥सोआधिभूतिकताकोंनाहीप्रापतभया॥सभचिदाकासरूपहै॥तिसविषेंकछुभा
वअभावकीकल्पनानाही॥अरुजीवआदिकभेदभीनाही॥हमकोंतोभेदकल्पनाकछुना
हीभासती॥जैसेंजेवडीविषेंसर्पकाअभावहै॥तैसेंव्रह्मविषेंभेदकल्पनाकाअभावहै॥हे
रामजीआत्माकेअज्ञानकरिभेदकल्पनाभासतीहै॥आत्माकेजाणनेतेंभेदकल्पनामिटी
जातीहै॥सोसर्वसंपदाकाअंतहै॥अरुसदइचेतनविषेंचित्तकासंवधहोताहै॥तवइसी
कानामअविद्याहै॥जोपुरुषचित्तकीउपाधितेंरहितचिन्मात्रहै॥सोसरीरकेनासहूएतें
नासनहींहोता॥अरुसरीरकेउपजेतेंउपजतानाही॥सरीरकेउपजणेअरुविनसणेविषें
आकासज्योंकात्योंहोताहै॥तैसेंसरीरकेभावअभावविषेंआत्माज्योंकात्योंहै॥जैसेंवालक
दोडताहै॥तिसकोंसूरजभीदोडताभासताहै॥अरुइस्थितहोवणेविषेंइस्थितभासताहै॥अ
रुसूरजज्योंकात्योंहै॥तैसेंचित्तकीचंचलताकरिकेमूरषआत्माकोंव्याकुलदेषतेहै॥अरु
चित्तकीअचलताविषेंअचलतादेषतेहै॥अरुआत्मासदाज्योंकात्योंहै॥जैसेंवोहाअपणी
तंतुकरिकेआपहीविष्टतहोताहै॥निकसनाहीसकता॥तैसेंइहजीवअपणीवासनाकरि
केआपवंधमानहै॥श्रीरामउवाच॥हेभगवनअत्यंतमूर्षताकोंप्रापतहोइकरिजोइस्था
वरादितनुकोंपाइकरिइस्थितहूएहै॥तिनकीवासनाकैसीहोतीहै॥श्रीवसिष्ठउवाच॥हे
रामजीइस्थावरजोजीवहै॥सोअमनसकताकोंनाहीप्रापतहूए॥अरुकेवलमनअवस्था
विषेंभीतिष्टतनाही॥मध्यअवस्थाविषेंहै॥उनकीधुर्यछकासुषपतरूपहै॥सोकेवलउष
काकारणहै॥उनकामननछूनाहीहूआ॥सुषुपतअवस्थाविषेंजडहूएइस्थितहै॥सोका
लकरिजागेंगे॥अवउनकीसत्तामूकजडवतहोइकरिइस्थितहै॥सत्तामात्रइस्थितहै॥श्रीरा
मउवाच॥हेदेवदेवत्योंविषेंश्रेष्टजोउनकीअद्वैतरूपहोइकरिइस्थावरविषेंइस्थितहै॥अरु
कलनोंतेंरहित॥तोमुक्तअवस्थातिनकेनिकटभईहै॥इहीसिद्धहूआ॥श्रीवसिष्ठउवाच॥
हेरामजीमुक्तकैसेंनिकटहोतीहै॥मुक्ततवहोतीहै॥जोवडसर्वकवस्तुकोंविचारीये जव
जथाभूतअर्थदृष्टआवे॥तवसत्तासमानकावोधहोवे॥तवकेवलआत्मापदकोंप्रापत
होवे॥हेरामजीजवज्योंकात्योंपदार्थजाणकरिवासनाकोंत्यागकरि॥सोउत्तमहै॥तवस
त्तासमानपदप्रापतिहोवे॥प्रथमआस्त्रयजोहै॥श्रेष्टपुरुषतिनसाथमिलकरिअध्या
त्मशास्त्रकोंविचारे॥तिसविषेजोसारहै॥तिसकीवारंवारभावनाकरि॥तिसकरिजोप्राप
तहोवे॥सोसत्तासमानपरमब्रह्मकहितहै॥स्थावरोंकेअंतरवासनाहै॥अरुवाहजदृष्ट
नाहीआवती॥काहेतेंजोसुषपतवासनाहै॥परजैसेंवीजकेअंतरअंकुरहोताहै॥वहुडआ
वतानाही॥तैसेंउनकोजनमहोवेगे॥अरुवासनाजागेगीयां॥जोउनकेअंतरजगतकीसत्ता
है॥अरुवाहजनाहीदृष्टआवती॥सोसुषपतवतजडधर्माहै॥वहुडअनंतजनमोंकादुष
पावेगे॥हेरामजीइस्थावरअवजडधर्मासुषुपतपदविषेइस्थितहै॥सोवारंवारजन्मों
कोंपावेगा॥जैसेंवीजविषेपत्रफूलफलडालइस्थितहोतेहै॥जैसेंरतनकाविषेंघटस
क्तइस्थितहै॥तैसेंइस्थावरोंविषेंवासनाइस्थितहै॥जहांवासनारूपीवीजहै॥सोसुषुप्त
रूपकहीताहै॥सोसिद्धताजोमुक्तहै॥तिसकोनहींप्रापतकरती॥अरुजहांनिरवीजवास
नाहै॥सोतुरीयापदहै॥सोसिद्धताकोंप्रापतकरतीहै॥हेरामजीजवचित्तशांतवासना
साथमिलीहोतीहै॥तवइस्थावरजूनहोतीहै॥सोवहुडजागतीहै॥जैसेंकोऊकर्मकरता
हूआसोइजाताहै॥सुषुपततेंउठकरीवहुडउहीकर्मकरणेलागताहै॥कर्मरूपवासना
तिसकेअंतररहतीहै॥तैसेंस्थावरवासनाकरिकेवहुडजनमोंकोंपावेगें॥जवउहवास
नाअंतरतेंदग्धहोजावे॥तवजनमकाकारणनाहीहोता॥ताहीतेंथोडीवासनाभीवहुत
होजातीहै॥इसकोंथोडानजाणिये॥इहथोडीभीहोतीहै॥तोवधकरनासकरतीहै॥जैसें
अग्निथोडीभीवहुतहोजातीहै॥रोगथोडाहीवधकरनष्टकरताहै॥विषथोडीहीनष्टकर
तीहै॥तैसेंहीवासनाथोडीहीवधकरिदुषदेतीहै॥अरुआत्मसत्तासमानरूपकरिकेघटप
टादिकसर्वपदार्थोंविषेंइस्थितहै॥जैसेंवर्षाकालकामेघएकहीनानारूपरसहोइकर
इस्थितहोताहै॥तैसेंआत्मसत्ताएकहीसर्वपदार्थोंविषेइस्थितहोतीहै॥तातेंसर्वआत
माहीव्यापरहाहै॥असीदृष्टतेंजोरहितहै॥तिसकोंविपर्जदृष्टभ्रमदाइतीहोतीहै॥जव
आत्मादृष्टप्रापतहोतीहै॥तवसर्वदुषनासहोजातेहै॥हेरामजीअसत्यकदृष्टकानाम

अविद्याकूंहीस्वरूपकहतेहै॥ सोअविद्याजगतकाकारणहै॥ तिसकरिसभजगतयसाराहोता
है॥ तिसतेरहितजवअपणास्वरूपभासे॥ तवअविद्यानष्टहोती॥ जैसेवरफकाकणकारू
पकरिकेनाशहोजाताहै॥ तैसेशुद्धस्वरूपकेअभ्यासकरिकेअविद्यानष्टहोजातीहै॥ जैसे
सुपनेतेरहितजवअपनास्वरूपदेखताहै॥ तववहुडसुपनेकीओरनहीजाता॥ तैसेस्व
इस्वरूपकेअभ्यासतेंसंपूर्णभ्रमनिवर्तहोजाताहै॥ वसिष्ठउवाच॥ हेरामजीजववस्तु
कोंवस्तुजाणिताहै॥ तवअविद्यानष्टहोजातीहै॥ जैसेप्रकाशकरिकेअंधकारनष्टहोजा
ताहै॥ दीपककोहाथलेकरिदेखिए॥ तवअंधकारकीमूरतभीदृष्टनाहीआवती॥ अरुजै
सेउस्नताकरिकेचूनकापिनोडागलाजाताहै॥ तैसेआत्माकेदरसनहूएअविद्यानाहीर
हती॥ अरुवास्तवतेंअविद्याकछुवस्तुनाही॥ अविचारतेंसिद्धहै॥ विचारकीयेतेंलीनहोती
है॥ जैसेप्रकाशकरीतमलीनहोजाताहै॥ तैसेविचारकरअविद्यालीनहोजातीहै॥ जव
लगआत्मतत्वकोनाहीदेख्याहै॥ तवलगअविद्याकीप्रतीतहोतीहै॥ जवआत्माकोदेख्या
तवअभावहोजातीहै॥ प्रथमइहविचारकरे॥ जोरक्तमांसअस्थिकाजंत्रवणयाशरीरहै
तिसविषेमक्यावस्तुहो॥ सतक्याहै॥ अरुअसतक्याहै॥ तिसविषेजिसकाअभावहोताहै
सोअसतहै॥ अरुजिसकाअभावनाहीहोता॥ सोसतहै॥ वहुडऐसेविवेककरिविचारे॥
जोकारजकलपतकेहोतेभीहोवै॥ अरुतिसकेअभावविषेभीहोवे॥ सोअनभैसतहै॥ जै
सेदेहादिककेभावविषेभीआत्माअधिष्टानहै॥ इनकेअभावविषेभीनिरउपाधिसिद्धहै
सोसतहै॥ अरुदेहादिकविनसेकअसतहै॥ ऐसेविचारकरिकेआत्मतत्वकाअभ्यासक
रे॥ अरुअसतदेहादिकोंतेवैरागकरे॥ तवनिश्चेकरिकेअविद्यालीनहोजातीहै॥ कहतेजो
वास्तवनाहीअसतरूपहै॥ तिसकेनष्टहोएजोसेषरहै॥ सोनिहकिंचितरूपहै॥ सोसत
है॥ ब्रह्महै॥ निरंतरहै॥ सोतत्ववस्तुउपादेयकरणेजोगहै॥ हेरामजीऐसेविचारकरिके
अविद्यानष्टहोजातीहै॥ जैसेराजेकोरसजिह्वासाथलागतीहै॥ तवअवस्यस्वादभीआ
वताहै॥ तैसेंआत्माकेविचारकरिअविद्याअवस्यकरिनष्टहोतीहै॥ अरुजोवास्तवतेंकहे
तोअविद्याभीकछुवस्तुभिन्ननाही॥ सर्वएकअखंडतब्रह्मततहीहै॥ घटपटरथआदिक
जेतेकछुपदार्थहै॥ जिसकोभिन्नभिन्नभासतेहै॥ तिसकोअविद्याजाणि॥ अरुजिसको
सर्वविषेएकब्रह्महीकीभावनाहै॥ तिसकोअविद्याजाणि॥ इसविद्याकरिअविद्यानष्टहो
जावेगी॥ इतिश्रीनिर्वाणप्रकरणेअविद्या कि क तनिर्नयोनामनवमसर्गः॥ रु॥
वसिष्ठउवाच॥ हेरामजीवोधकेनिमित्तमैंतुमकोंवारंवारसारकहताहों॥ जोआत्मसाक्षा
तकारभावनाअरुअभ्यासविनानहीहोवेगा॥ सोअनंतजनमोंकादृढभयाहै॥ सोअंतर
वाह्यजकरिकेदिखाईदेताहै॥ आत्मासर्वइंद्रीयोंतेअगोचरहै॥ जवमनसहितषटइंद्रीयो
काअभावहोजावे॥ तवकेवलशांतकोंप्राप्तहोजाताहै॥ हेरामजीजेतेकछुचितवासु
नाउपजतीहै॥ सोअविद्याहै॥ काहेतेजोआत्मतत्वतेंअंतरजाणाकरिकरतीहै॥ औरजो
अंतरमुखीआत्मवाकीओरफुरतीहै॥ सोविद्याहै॥ सोविद्याअविद्याकोंनाशकरेगी॥ अवि
द्याकेदोरूपहै॥ एकप्रधानरूपहै॥ एकनिकृष्टरूपहै॥ जोअंतरमुखहै॥ सोप्रधानरूपविद्या
है॥ अरुजोवाह्यमुखहै॥ सोअविद्यानिकृष्टरूपहै॥ तिसअविद्यातेंउपजकरिविद्याअविद्या
कोंनासकरतीहै॥ वहुडआपभीनासहोजातीहै॥ जैसेवांसतेअग्निउपजतीहै॥ अरुवांस
कोजलाइकरिआपभीशांतहोजातीहै॥ तैसेअविद्यातेंउपजकरिअविद्याकोंनासकर
तीहै॥ वहुडआपभीनासहोजातीहै॥ तातेंअविद्याभावकोंनासकरु॥ हेरामजीअभ्यास
विनाकछुसिद्धितानाहीहोती॥ जोकछुकिसीकोंप्राप्तहोताहै॥ सोअभ्यासरूपीवृक्ष
काफलहै॥ चिरकालकाजोअविद्याकाअभ्यासदृढहूआहै॥ तोअविद्यादृढभईहै॥ जवआत्म
ज्ञानकेनिमित्तजतनकरिदृढअभ्यासकरिगा॥ तवनासहोजावेगी॥ हेरामजीहृदेरूपीविरि
छहै॥ तिससाथअविद्यारूपीवुरीलताहृढहोरहीहै॥ तिसकोंज्ञानरूपीखडगकरिकेका
टो॥ अरुजोकछुप्रकृतआचारहै॥ तिसकोंकरो॥ तवतुमकोंदुषकोऊनहोवेगा॥ जैसेजन
कराजाज्ञानमेंयहोइकरिविवहारकोंकरतभयाहै॥ तैसेआत्मज्ञानकादृढअभ्यासक
रिकेतुंविचार॥ हेराजीजैसेनिश्चेकोंधारकरिपवनकारज॥ अकारजविषेविचारताहै॥ अरु
जैसानिश्चास्वरूपविषेविसुजीकाहै॥ अरुसभकारजकरताहै॥ अरुजैसेनिश्चासदाशिव
काहै॥ जोगौरीअरधंगरहतीहै॥ अरुकदाचितछोभकोंनाहीप्राप्तहोता॥ सदाशांतरूप
है॥ अरुजैसानिश्चाब्रह्माकाहै॥ जोवाहजरारागअरुद्वेषदृष्टआवताहै॥ परअंतरतेरागद्वे
षकछुनाही॥ अरुजोनिश्चावृहस्पतिदेवत्याकेगुरुकाहै॥ जोनिश्चावंद्रमाअरुअग्निका

है॥ जोनिश्चानारदपुलहपुलस्तअंगिराभृगुअत्रिसुकदेवकाहै॥ औरभीदेवत्योकेवि
षीश्वरोंवालषोमुनीश्वरोंकाहै॥ दावियांआदिकोंज्ञानतेंयकानिश्चाहै॥ सोतफकोंअ
पतिहोवे॥ श्रीरामउवाच॥ हेब्रह्मणजिसनिश्चयकरिकेवुद्धवानविपाकहोइकरी
दृस्थितभएहै॥ सोमुफिकोंकहो॥ श्रीवसिष्ठउवाच॥ हेरामजीजैसेसंपूर्णज्ञानवानो
कानिश्चाहै॥ अरुविवहारविषेसमरहतेहै॥ सोसुणो॥ विस्तारजेताकछुजगतजाल
तुमकोंभासताहै॥ सोनिर्मलब्रह्मसत्ताआपणीमहिमाविषेइस्थितहै॥ जैसेतरंग
समुद्रविषेइस्थितहोताहै॥ अरुनानाप्रकारकीउतपतिहोतीहै॥ सोएकजलहीके
रूपहै॥ जलतेंइतरकछुनाही॥ तैसेजेतेकछुपदार्थजालभासतेहै॥ सोसभब्रह्मरू
पहै॥ जोगृहणकरणेजोगहै॥ सोब्रह्महै॥ अरुग्रहणकरताहै॥ अरुजिसकोभोजनक
रताहै॥ सोभीब्रह्महै॥ ब्रह्महीअपणेआपविषेइस्थितहै॥ इहनिश्चाज्ञानवानकोस
दारहताहै॥ वहुडकैसानिश्चाहै॥ सत्रुभीब्रह्महै॥ मित्रभीब्रह्महै॥ ब्रह्मकोंब्रह्मसपरस
करताहै॥ तोकिसनेकाकोस्पर्सकीया॥ हेरामजीजिसकोंसदाइहीनिश्चारहताहै॥ ति
नकोरागद्वेषकछुदेषनाहीदेइसकता॥ ब्रह्महीब्रह्मविषेपड़ाफुरताहै॥ भावरूपभी
ब्रह्महै॥ अभावरूपभीब्रह्महै॥ इतरकछुनाही॥ वहुडरागद्वेषकल्पनाकैसेहोवे॥ ब्र
ह्महीब्रह्मकोचेततताहै॥ ब्रह्महीब्रह्मविषेइस्थितहै॥ ब्रह्महीअहंअस्मिहै॥ ब्रह्महीना
हममस्मिहै॥ ब्रह्महीअंतरआत्माहै॥ घटभीब्रह्महै॥ पटभीब्रह्महै॥ ब्रह्महीविस्तारकोंप्रा
पतभयाहै॥ हेरामजी॥ जोसर्वब्रह्महीहै॥ तोरागविरागकल्पनाकैसेहोवे॥ मरणाभीब्र
ह्महै॥ मरताभीब्रह्महै॥ मारताभीब्रह्महै॥ जैसेजेवडीविषेसर्पभ्रमकरि
केभासताहै॥ तैसेआत्माविषेसुषदुषमिथ्याहै॥ भोगभीब्रह्महै॥ भोगणेवालाभीब्रह्म
है॥ भोगनादेहभीब्रह्महै॥ सर्वब्रह्महीहै॥ जैसेसमुद्रविषेतरंगउपजतेहै॥ अरुमिटजाते
है॥ सोजलतेंइतरकछुनाही॥ तैसेसरीरउपजतेहै॥ अरुमिटजातेहै॥ सोब्रह्महीब्रह्म
विषेइस्थितहै॥ हेरामजीजलकातरंगजोमृतकोंप्रापतभयाहै॥ सोकयामूआउहतो
जलहीहै॥ तैसेमृतकब्रह्मजोदेहब्रह्मकोंमाहाततोकौनमूआ॥ अरुकिसमारा॥ तैसेए
कतरंगजलतेंउपजया॥ अरुइहसंवतरंगसाथमिटगया दोनोएकदेहोकरिमिटगएहै॥ सोज
लहीजलहै॥ जहांमेंतुंहंसराकछुनाही॥ तैसेआत्माविषेजगतहै॥ सोआत्माहीअपणेआ
पविषेइस्थितहै॥ ततामततामिन्नकछुनाही॥ जैसेस्वर्णविषेभूषणहोतेहै॥ जैसेसमुद्रवि
षेतरंगहोतेहै॥ सोअभेदरूपहै॥ तैसेब्रह्मअरुजगतविषेभेदकछुना॥ श्रीवसिष्ठउवाच
हेरामजीजोगुरुषयथार्थदर्सीहै॥ तिसकोंसदाइहीनिश्चारहताहै॥ अरुजिनकोंसम्य
कज्ञाननाहीप्रापतभया॥ तिनकोंविपरजेरूपऔरकाऔरभासताहै॥ वस्तुसदाएकरूप
है॥ परज्ञानअरुअज्ञानकाभेदहै॥ जैसेजेवडीएकहोतीहै॥ परजिसकोसम्यकज्ञानहोता
है॥ तिसकोजीवडीहीभासतीहै॥ अरुजिसकोसम्यकज्ञाननाही॥ तिसकोसर्पहोइभास
ताहै॥ तैसेज्ञानवानपुरुषहै॥ तिसकोसभब्रह्मसत्ताभासतीहै॥ अरुजोअज्ञानीहै॥ तिस
कोजगतरूपभासताहै॥ तिसकोंनानाप्रकारकाजगतदुषदाईभासताहै॥ औरजोज्ञानवा
नहै॥ तिसकोसुषरूपहै॥ जैसेअंधकोसर्वओरतेंअंधकारभासताहै॥ अरुचषवानकोंप्र
काशरूपभासताहै॥ अज्ञानीकोदुषदाईहै॥ जैसेवालककोंअपणीपछावेविषेपिसाच
वुद्धहोतीहै॥ तिसकरिभयकोंप्रापतहोताहै॥ अरुवुद्धवाननिर्भयहोताहै॥ तैसेअज्ञानी
कोंजगतदुषदाईहै॥ अरुज्ञानीकोसुषदाईहै॥ अरुजोमेरानिश्चापूछोतोऐसेहै॥ कैसेब्र
ह्महीनितसुद्धसर्वविषेइस्थितहै॥ नकोउमरताहै॥ नउपजताहै॥ जैसेजलविषेतरं
ग॥ सोनकछुउपजताहै॥ नविनसताहै॥ जलहीजलहै॥ तैसेभूतभीआत्माविषेहै॥ जग
तभीआत्मारूपहै॥ आतमाब्रह्महीअपणेआपविषेइस्थितहै॥ सरीरकेनासहूएभीआत्मा
कानाशनाहीहोता॥ भूतरूपभीब्रह्महै॥ शरीरभीब्रह्महै॥ ब्रह्महीअनेकरूपहोइकरिभा
सताहै॥ ब्रह्मतेंभिन्नसरीरआदिककछुसिद्धनाहीहोता॥ जैसेंजलतेंभिन्नतरंगसिद्ध
नाहीहोता॥ जैसेतरंगफेनवुदवुदेजलरूपहै॥ तैसेदेहकल्पनाइंद्रियांइछाद्वेषआदि
कसभब्रह्मरूपहै॥ ब्रह्महीब्रह्मविषेस्थितहै॥ जैसेस्वर्णतेंभिन्नभूषणनाहीहोता॥ स्व

नहीं॥ अघणारूपहोताहै॥ जैसेब्रह्मतें विनेकजगतनाहीहोता॥ ब्रह्महीजगतरूपहै जो
मूढहै॥ तिनकोंद्वैतकीकल्पनाभावनहोतीहै॥ हेरामजीमनबुद्धिअहंकारतनमात्राइं
द्रियांसभब्रह्महीकेनामहै॥ औरस्तघडपकछुनथाहीनाही॥ अहंऐसेसवदहै अरुइ
नविषेभिन्नभिन्नभावनाहैसोव्यर्थाहै॥ अपणाअनुभवहीअन्यकीन्याईहोइभासताहै
जैसेपहाडविषेसवदकरीताहै॥ तिसकरिप्रतिसवदकाभासहोताहै॥ सोअपणाही
सवदहै॥ तिसविषेऔरकीकल्पनामिथ्याहै॥ जैसेसुपनेविषेअपणासिरकाटयादे
षताहै॥ सोव्यर्थहै॥ श्रीवसिष्ठउवाच॥ हेरामजीब्रह्मसर्वसत्ताहै॥ तिसविषेजैसीभाव
नाहोतीहै॥ सोइभासआवताहै॥ जिसकोसम्यकज्ञानहोताहै॥ सोनिरहंकारस्वप्रका
शस्वसत्तादेषताहै॥ करताकर्मकरणसंप्रदानअपादानअधिकरण॥ इहजोषट्का
रकविधहै॥ सोसर्वब्रह्महीदेषताहै॥ ब्रह्मअर्पणंब्रह्महविर्ब्रह्माग्नौब्रह्मणाहुतने
वालाब्रह्महीफलऐसेदेषताहै॥ ऐसेजाणनेकानामज्ञानहै॥ असेनजाणनेोअज्ञा
नहै॥ ऐसेजाणनेवालेकानामब्रह्मवित्तहै॥ हेरामजीजोचिरकालकाबांधवविछि
डियाहोवे॥ अरुउसकोंदेषीए॥ तबजानीयेंजोबांधवहै॥ अरुदेषणेमोनआया॥ तो
उसकाअभ्यासहरहोगया॥ तबबांधवअबांधवकीन्याईहोजाताहै॥ तैसेआपणाब्र
ह्मस्वरूपहै॥ जबभावनाहोतीहै॥ तबऐसेभासआवताहै॥ जोमैंब्रह्महों॥ अरुद्वैतकल्प
नालीनहोजातीहै॥ सर्वब्रह्महीभासताहै॥ जैसेजिसनेअमृतकापानकीयाहै॥ सोअ
मृतमयहोवेगा॥ अरुजिसनेनाहीपानकीया॥ सोअमृतमयेहोवेगा॥ तैसेजिसजाणि
याजोमैंब्रह्महों॥ सोब्रह्महीहोवेगा॥ जिसनाहीजाणिया॥ तिसकोनानात्वकल्पना
तेजन्ममरणभासेगा॥ अरुब्रह्मअप्रापतकीन्याईभासेगा॥ हेरामजीजिसकोब्रह्मभाव
नाकाअभ्यासजागयाहै॥ सोअभ्यासकेबलकरीसीघ्रहीब्रह्महोताहै॥ ब्रह्मरूपदर्पे
णविषेजैसेभावनाकोऊकरताहै॥ तैसोरूपहोइभासताहै॥ सभभावनामात्रहै॥ इर
वासनाकरिकेइसकास्वरूपआवर्णभयाहै॥ जबवासनानष्टहोजातीहै॥ तबनि
हकलंकआत्मतत्त्वभासताहै॥ जैसेसूर्यवसनरऊपरकेसरकारंगसीघ्रचडजा
ताहै॥ तैसेवासनातेरहितविषेब्रह्मस्वरूपभासआवताहै॥ हेरामजीआत्मास
र्वकल्पनातेरहितहै॥ अरुतीनोंकालोंविषेनितशुद्धसमप्रीतरूपहै॥ जिसको
ज्ञानहोताहै॥ सोऐसेजाणताहै॥ जोमैंब्रह्महोंसर्वकालविषेव्यापरहाहों॥ नमुझकोंकोऊ
दुषहैनकर्महैनकिसीकात्यागकताहों॥ नाकिसीकीवांछाकताहों॥ अरुसर्वकल्पनातेरहितम
हों॥ निरामयहों॥ मैंहीरक्तहों॥ मैंहीपीतहों॥ मैंस्वेतमैंश्यामहों॥ रक्तमासअस्थिकावपुभीमैं
हों॥ घटपटआदिकजगतभीमैंहीहों॥ त्रिणवेलीफूलफलगुच्छेमैंहीहों॥ वनपर्वतसमुद्रन
दीयांभीमैंहीहों॥ शूद्राणाकरणात्यागणासकुचणाभूतसकलसभमैंहीविस्तारकोप्रापतभ
याहों॥ वृक्षवेलीफूलफलगुच्छेजिसकेआश्रयहोरनेहै॥ सोचिदात्मामैंहीहों॥ सभनोंवि
षेरसरूपमैंहीहों॥ जिसविषेइहसर्वहै॥ जिससेइहसर्वहै॥ जोसर्वहै॥ जिसकोसर्वहै॥ ऐ
साचिदात्माब्रह्ममैंहीहों॥ चेतनआत्माब्रह्मसतअमृतज्ञानरूपइत्यादिकजिसकेनाम
है॥ ऐसासर्वगतचिन्मात्रचेत्यतेरहितमैंहीहों॥ प्रकाशमात्रसान्तसर्वभूतोंकाप्रकाश
कमैंहीहों॥ मनबुद्धिइंद्रीयांकास्वामीहों॥ जेतीकछुभेदकल्पनाहै॥ सोइहाकारिणी॥ अव
द्वैतकीकल्पनाकोत्यागकरिअपणेप्रकाशविषेइस्थितहों॥ चेतनब्रह्मनिरदुषहों॥ स
वदसपरसरूपरसगंधसभजगतकाकारणहों॥ तिनसभनोंकाआत्माचेतनरूपब्रह्म
निरामयमैंहों॥ अविनासीहों॥ निरंतरस्वच्छआत्माप्रकाशरूपमनकेउत्थानतेंरहितमो
नरूपमैंहीहों॥ परमअमृतनिरंतरसर्वभूतोंकेसत्तरूपकरिकेमैंहीइस्थितहों॥ सदा
अलेपकसाक्षीसुषुपतकीन्याईहों॥ द्वैतकल्पनातेंरहितप्रांतरूपसभजगतविषेही
पसररहाहों॥ वासनासर्वतेंरहितअनुभवरूपअनुभवमैंहीहों॥ सभस्वादोंकाजिसकरी
अनुभवहोताहै॥ ऐसाचेतनब्रह्मआत्मामैंहीहों॥ इस्त्रीविषेआसक्तहै॥ चित्तजिसकाअ
रुचंद्रमाकीकांतिकरिमृदताअधिकहै॥ जिसकोइस्त्रीकासपरसअरुमृदताकाजिसक
रिअनुभवहोताहै॥ ऐसाचेतनब्रह्ममैंहीहों॥ पृथ्वीविषेइस्थितजोपुरुषहै॥ तिसकोह

द्वजोचंद्रमाकीमंडलमेंजाइलगतीहै॥ तिसकाअनुभवजिसविषेहोताहैसोमैंहीहों
सुषदुषकीकल्पनातेरहितअननसकलअनुभवरूपजोआत्माहै॥ सोचेतनरूप
आत्माब्रह्ममैंहीहों॥ षजूरअरुनिमआदिकविषेस्वादरूपमैंहीहों॥ षेदअरुआनंद
लाभअरुअलाभमफककोसमहै॥ जाग्रतसुपनसुषुप्तितुरीयारूपअरूपआदिअरुअंतते
रहितचेतनब्रह्मनिरामयमैंहीहों॥ जैसेघटकेअनेकरत्नोंविषेएकहीरसहोताहै॥
तैसेअनेकमूर्त्तीविषेएकब्रह्मसत्ताइस्थितहै॥ सोसतमुद्रसमसांतरूपहै॥ सोसर्व
तहै॥ प्रकृतजोसूक्ष्महै॥ तिसकाप्रकासहै॥ सूरजकीन्याईप्रकासरूपब्रह्ममैंहीहों
सभसरीरोंविषेव्यापरहाहों॥ जैसेमोतीयांविषेतंतुगुपतहोतीहै॥ जिसविषेमो
तीपरोएहै॥ तैसेसरीररूपीमोतीयांविषेतंतुरूपगुपतमैंहीहों॥ अरुजगतरूपीदु
द्धविषेब्रह्मरूपीघृतमैंहीव्यापरहाहों॥ वसिष्ठउवाच॥ हेरामजीजैसेस्वर्णविषेना
नाप्रकारकेभूषनवणतेहै॥ सोस्वर्णतेइतरकछुनाही॥ तैसेसभपदार्थआत्माविषेइ
स्थितहै॥ आत्मातेइतरकछुनाही॥ पर्वतसमुद्रनदीयांविषेसत्तारूपआत्माहीहै॥ सर्व
संकल्पोंकाफलदाताहै॥ अरुसर्वपदार्थोंकाप्रकासआत्माहीहै॥ सर्वपावनेजोगपदार्थों
काअंतहै॥ तिसआत्माकीहमउपासनाकरतेहै॥ घटपटनटकंधविषेइस्थितहै॥ अरुजा
ग्रतविषेसुषुप्तरूपहै॥ जिसविषेफुरणाकोऊनाही॥ ऐसेचेतनरूपआत्माकीहमउपा
सनाकरतेहै॥ सफुरविषेजोसफुरताहै॥ अरुतोषणविषेजोतोषणताहै॥ अरुगलतवि
षेगलतासक्तहै॥ तिसचेतनआत्माकीहमउपासनाकरतेहै॥ जाग्रतसुपनसुषुप्ती
तुरीयाअरुतुरीयातीतविषेजोसमतत्वहै॥ तिसकीहमउपासनाकरतेहै॥ त्रैलो
कीकेदेहरूपीजोमोतीहै॥ तिन्होंविषेजोतंतुकीन्याईअनुसूतहै॥ अरुपसारणेसको
चणेकाकारणहै॥ तिसचेतनआत्माकीहमउपासनाकरतेहै॥ जोषोडशकलासंजुक्त
है॥ अरुषोडशकलातेरहितहै॥ अरुअकिंचनकिंचनरूपहै॥ तिसचेतनआत्माकीहम
उपासनाकरतेहै॥ चेतनरूपअमृतहै॥ जोक्षीरसमुद्रनेनिकस्यानाही॥ नचंद्रमाकी
मंडलविषेरहताहै॥ ऐसाजोसतःसिद्धअमृतहै॥ जिसकोपीकरिकदाचितमृतनहो
वे॥ तिसचेतनआत्माकीहमउपासनाकरतेहै॥ जोअषंडप्रकासहै॥ अरुसर्वभूतोंको
वे॥ तिसचेतनआत्माकीहमउपासनाकरतेहै॥ सवदसपरसरूपरसगंधजि
सुंदरकरताहै॥ तिसचिदात्माकोहमउपासनाकरतेहै॥ सर्वमेंहो
सकरिप्रकासतेहै॥ अरुआपइनतेरहितहै॥ तिसकीहमउपासनाकरतेहै॥ सर्वमेंहो
अरुसर्वनाही॥ अरुभीकोऊनाही॥ इसप्रकारविदितवेदज्ञानिकविअपणेअद्वैतरूप
विषेविगतज्वरहोकरिइस्थितहोतेहै॥ इहीनिष्ठाज्ञानवानोंकाहोतीहै॥ इतिश्रीनिर्वा
णप्रकरणेजीवन्मुक्तनिर्णयरूपहेतुनामदशमसर्गः॥१०॥ श्रीवसिष्ठउवाच॥
हेरामजीजोनिहपापपुरुषहै॥ तिसकोइहीनिरूचारहताहै॥ जोसतरूपआत्मानत्व
है॥ इहद्दरणबोधवानकानिष्ठाहै॥ तिसकोनकिसीविषेरागहोताहै॥ नद्वेषहोताहै
जीवणाअरुमरणाउसकोदुषसुषनाहीहोवनदेता॥ इहसमानरहताहै॥ सोविस्तना
वाघरणकाअंगहै॥ अर्थइहजोअभेदहै॥ सदाअचलहै॥ जैसेसुमेरपर्वतवाइकरिना
हीचलाइमानहोताहै॥ ऐसाजोज्ञानवानपुरुषहै॥ सोवनविषेभीविचरतेहै॥ नगरों
विषेनदीयोंविषेभीफिरतेहै॥ नानाप्रकारकेइस्थानोविषेफिरतेहै॥ एकदुषकोनाही
प्रापतहोतेहै॥ स्वर्गविषेफलोंकेबगीचेवनविषेफिरतेहै॥ कईपर्वतकीकंदराविषे
रहतेहै॥ कईराजकरतेहै॥ सत्रुकोंमारकरिसीसपरचामरफलावतेहै॥ कईश्रुतिस्मृ
तिकेअनुसारकर्मपडेकरतेहै॥ तपदानध्यानजपयादिककर्मकरतेहै॥ कईइस्त्रीयांसा
थलीलापडेकरतेहै॥ कईभोगपडेभोगतेहै॥ कईनंदनविषेगंधर्वगाईनकरतेहै॥
कईगृहहीविषेइस्थितहै॥ कईतीर्थजनसकरतेहै॥ कईतोपतनगारेतुट्टयांसुणतेहै
इत्यादिकनानाप्रकारकेअस्थानोंविषेरहतेहै॥ अरुआसक्तकछुनाहीहोते॥ जैसेसुमे
रपर्वततालविषेडुबतानाही॥ तैसेज्ञानवानकिसीपदार्थविषेडुबतानाही॥ इहकों
पाइकरिहर्षमाननाहीहोता॥ अरुअनिष्टकेविषेनाहीहोता॥ आपदाअरुसं
पदाविषेभूलनाहीरताहै॥ उहअकृतआचारकर्मकोकरताहै॥ परअंतरसर्वआरंभ
तेंरहितहै॥ हेराघवजीइसीदृष्टकोंआश्रयकरिकेतुमभीविचरो॥ इहदृष्टसर्वपापोंका
नासकरतीहै॥ अहंकारतेंरहितहोईकरिजोइछाहोवे॥ सोकरो॥ जवजगयाभूतअर्थ
दर्सीजुए॥ तबनिरबंधनहूए॥ जोकछुपततप्रवाहकरिआइप्रापतहोवे॥ तिसविषे

तमसुमेरकीन्याईअचलरहोगे॥ हेरामजीइहसभजगतचित्तमात्रहै॥ नकछुसत्तहै
नअसत्तहै॥ उहीइसप्रकारहोइकरिभासताहै॥ इसदृष्टकोआश्रेकरिकै ओरमुछदृष्ट
कोत्यागो॥ हेरामजीअसक्तबुद्धहोइकरिसर्वभावअभावविषेंइस्थितहोइकरिरागः
द्वेषकरिचलाइमाननहोवेगा॥ अवसावधानहोउ॥ श्रीरामउवाच॥ वडाआश्चर्यहै
हेभगवनमैंतुमारेप्रसादकरिकैजाणनेजोगपदजाणयाहै॥ अरुप्रवुद्धहूआहों
जैसेंसूरजकीयांकिरणाकरिकमलप्रफुलतहोताहै॥ तैसेप्रफुलतहूआहों॥ जैसेंस
रतकालविषेंकहीडनष्टहोजातीहै॥ तैसेंतुमारेवचनोंकरिमेरासंदेहनष्टभयाः
है॥ मानमोहमदमातसरसभनष्टहोगयाहै मैंअवसर्वछोभतेंरहितशांतकोंप्रा
पतभयाहों॥ इति श्रीनिर्वाणप्रकरणेजीवन्मुक्तनिर्णयोनामएकादशसर्गः॥११॥
श्रीरामउवाच॥ हेभगवनसम्यकज्ञानविलासकरिवासनाविलय॥ अरुमेरेकोंजी
वन्मुक्तपदविषेविश्रांतकीउदेहोतीहै॥ प्राणोंकेरोकणेकरकेवासनाविलयहूवे
कजीवन्मुक्तिपदविषेकिसप्रकारपाइए॥ विश्रांतइहकहो॥ श्रीवसिष्ठउवाच॥ हे
रामजीसंसारकेतरणेकोजोजुगतहै॥ सोजुगतदोप्रकारकीहै॥ एकचित्तकाउपसमः
करणाहै॥ आत्मज्ञानकरिकै॥ अरुद्वितीयप्राणोंकारोकणाते॥ श्रीरामउवाच॥ हेभगव
नइनदोनोंविषेसुगमकोनहै॥ जिसकरिदुःखभीनप्रापतहोवे॥ अरुवहुतभीक्षोभन
होवे॥ श्रीवसिष्ठउवाच॥ हेरामजीदोनोप्रकारजोगशब्दकरिकैकहीताहै॥ तोभीः
जोगनामप्राणोंकेरोकणेकाहै॥ अरुसंसारकेतरणेकोजोगअरुज्ञानदोनोउपायहै
इनदोनोंकाफलएकहीसदाशिवनेकहाहै॥ हेरामजीकिसीकोंजोगकरणाकठन
है॥ अरुज्ञानकानिश्चासुगमहै॥ किसीकोज्ञाननिश्चाअसाध्यहै॥ अरुजोगकरणासु
गमहै॥ अरुजोमुझसेपूछै॥ तोदोनोविषेंज्ञानसुगमहै॥ इसविषेजतनकछुथोडाहै
जाणनेजोगजोपदार्थहै॥ तिसकोजाणेहूएवहुडस्वप्नविषेभीभरमनहोवे॥ साः
क्षीभ्रमनहोइकरिदृष्टादेषताहै॥ अरुजोवडेधानजोगेश्वरहै॥ तिनकोंभीजतनकः
छुनाहीं॥ सुभावकरिचलेजाते॥ तिनएकजुगतसमझकरीचित्तशांतहोजाताहै
हेरामजीदोनोकीसिद्धताअभ्यासजतनकरिहोतीहै॥ अभ्यासविनाप्रापतकछु
नाहीहोता॥ सोज्ञानतोमैंतुझकोंकहाहै॥ जोहृदेविषेंविराजमानज्ञेयहै॥ तिस
कोजाणनाज्ञानहै॥ अरुप्राणअपानकेरथऊपरजोआरूढहूएहै॥ हृदेरूपीगुहाः
विषेंइस्थितहै॥ हेरामजीतिसजोगकाभीक्रमसुणो॥ अनंतसिद्धताकेनिमि
त्तहै॥ प्राणवायुजोमुषअरुनासिकाकेमारगपडीआवतीजातीहै॥ तिस
कोरोकणेकाक्रमकहीताहै॥ तिसकरिचित्तउपसमहोजावेगा॥ इतिश्रीनि
र्वाणप्रकरणेज्ञानयोगविकल्पेनामद्वादशसर्गः॥१२॥ श्रीवसिष्ठउवाच
हेरामजीअलषरूपीजोआकाशहै॥ तिसकेकिसीकोणविषेंइहजगतरूपीसंपदाआः
भासहूआहै॥ जैसेंमरुस्थलविषेंसूरजकीयांकिरणाकरिमृगतृस्नाकाजलफुरआ
वताहै॥ तैसेंजगतब्रह्मविषेंफुरतीहै॥ तिसजगतकेकारणभावकोंप्रापतहूआहै॥ अ
रुविस्नुकेनाभकमलतेंहैउत्पत्तिजिसकी॥ अरुपितामाईनामकरिकहतेहै॥ अरुति
सकासमानसोपुत्रश्रेष्टहै॥ आचारजिसका॥ ऐसेजोमेंवसिष्ठहों॥ अरुनछत्रताराचक्र
विषेंमेरानिवासहै॥ जुगजुप्रतिमैंतहांरहताहों॥ सोमैंजवनछत्रचक्रतेंउठयात
वइंद्रकिसभाविषेंआया॥ उहांविषीसुरमुनीश्वरवैठेथे॥ तवनारदआदिकोंविषेंचिर
जीवियोंकाकथाप्रसंगचलया॥ तवतहांएकशातातपनामसुनीश्वरथा॥ सोकेसा
था॥ सोनीमानकरणेकोजोगवुद्धवानथा॥ उसकहतभया॥ किहेसाधोसभनोविषें
जोचिरजीवीहै॥ सोएकहै॥ सुमेरपर्वतकीकंदराहै॥ तिसकीकोणविषेपद्मरागमनीके
टरकाशिषरहै॥ तिसऊपरएककल्पवृछहै॥ सोमहासुंदरहै॥ अपणीसोभाकरि
पूर्णहै॥ तिसवृछकेदक्षिणदिसाकाजोडालहै॥ तहांपछीरहतेहै॥ तिनपछीः
योंविषेमहाश्रीमानएककोआरहताहै॥ भुषुंडइतिसकानामहै॥ सोकेसा
है॥ वीतरागअरुमहावुद्धवानउहतहांरहताहै॥ उसकाआलनाकल्पवृ
छकोडालऊपरवणायाहूआहै॥ जैसेंब्रह्मानाभकमलविषेंरहताहै॥ तैसेंउहआलणे
विषरहताहै॥ जैसेंउहजीयाहै॥ तैसाकोऊनहीजीयाहै॥ नजीवेगा॥ वडीउमरकोआ
रवलाहै॥ अरुश्रीमानमहावुद्धवानविश्रांतवानहै॥ शांतरूपअरुकालकावेत्ताऐसा

उहहै॥ हेसाधोवहुतजीवणाभीतिसकासुफलहै॥ अरुधनवानभीउहीहै॥ तिस
कोआतमपदविषेविश्रांतभीहै॥ अरुसंसारकीआसाजातीरहीहै॥ ऐसाजोपुरुषहै
सोउहहै॥ ऐसेगुणोंकरिसंपन्नहै॥ तिसकानामकाकभुसुंडहै॥ इसप्रकारजवउसदे
वत्योंकेदेवनेकहा सेहरणसभाविषे॥ तववसिष्ठोंकेमध्यविषेमैंहसरीवारउछ
याजोउसकाचिरंतनवृद्धकहै॥ तवउसवडवृत्तंतनकीया॥ तिसकालमोंसुनआः
श्चर्यकोप्रापतभए॥ जवऐसेकथावारतांहोउचुकी॥ तवसभाहीसभाउठधडीहोइ॥ अ
पणोअपणेआश्रमकोंगए॥ अरुमेंजोथासोआश्चर्यमानहूआ॥ जोऐसेपंछीकोंकिः
सीप्रकारदेषीए॥ ऐसेविचारकरिमेंसुमेरपर्वतकीकंदराकेसन्मुषहूआचलया॥ तव
एकछिनविषेंजाइप्रापतभया॥ क्यादेषाजुमहाप्रकाशरूपकंदराकाशिषरहै॥ रत्न
अरुसणिकरपूरतहै॥ अरुगेरीकीन्याईरंगहै॥ ऐसेअग्निकीज्वालाहोतीहै॥ तैसेप्रः
काशरूपहै॥ मानोप्रलयकालकीअग्निकीज्वालापडीजागतीहै॥ ऐसेसमणीअरुरत्नो
काप्रकाशहै॥ अरुवीचजोनीलमणीहै॥ सोधूम्रकेसमानहै॥ मानोधूआपडानिकुस
ताहै॥ अरुसर्वरंगोंकीषानहै॥ अरुतेजकछुसंध्याकेलालवदलहोतेहै॥ सोमानो
एकठेआनहूएहै॥ मानोजोगीश्वरोंकोब्रह्मरंध्रतेंअग्नीनिकसीयांएकठीयांआनभईः
याहै॥ जठरागनिएकठीयाहै॥ मानोवडवाअग्निसमुद्रसेंनिकसकरीमेरुकोंयहइ
गाकेनिमित्तआनइस्थितभईहै॥ महासुंदररचनावणीहोईहै॥ फूलोंअरुफलोंरत्नो
मणीसेजुगतप्रकाशमानहै॥ ऊपरगंगाजीकाप्रवाहचल्याजाताहै॥ सोजुरथापवी
तपट्टाहूआहै॥ गंधर्वगीतपढेगावतेहै॥ देवीयांकेरहणेकाइस्थानहै॥ हर्षकेउपजा
वणेकोंमहासुंदरलीलाकाइस्थानविधातानेरचयाहै॥ तिसकोमेदेषताभया॥ इ
तिश्रीनिर्वाणप्रकरणेभुसुंडोपाख्यानेसुमेरुनिर्णयोनामत्रयोदशसर्गः॥१३॥ श्रीः
वसिष्ठउवाच॥ हेरामजीऐसेशिषरऊपरमैंकल्पवृछकोंदेषताभया॥ जोमहासुंदर
फूलोंफलोंकरिसुंदरताकोअरुमणीगुछेलागेहै॥ अरुस्वर्णकीयांवेलीलागीयांहोइयां
है॥ अरुताराजेसोंहूरागफूलफलदृष्टआवतेहै॥ अरुमेघकेमंडलोंतेंहरेपत्रदृष्टआव
तेहै॥ अरुसूर्यकीयांकिरणातेंहरियांतिरछीयांभासतीयांहै॥ अरुविजलीकीन्याईचः
मत्कारहै॥ अरुपत्रोंऊपरआनकरिदेवताअरुकिंनरवैठतेहै॥ विद्याधरदेवीयांआनवै
ठतेहै॥ अरुगाइनकरतीयांहै॥ जैसेंभ्रमरगुंजतेहै॥ अरुभ्रमतेहै॥ हेरामजीतहांरत्नोंके
गुछेनीरंध्र॥ अरुफूलभीनीरंध्र॥ कलीयांभीनीरंध्र॥ पत्रफलभीनीरंध्र॥ मणीकेगुछेनी
रंध्र॥ सभनीरंध्रहीदृष्टआवें॥ अरुमहस्थानफलफूलगुछेकरपूरणहै॥ अरुवटविते
केफूलफलतहांपाईये॥ महाविचित्ररचनावणीहोई॥ तिसकेएकडालऊपरपंछी
वैठेहै॥ सिद्धवैठेषातेहै॥ कहूंफूलफलआदिकषातेहै॥ कहूंब्रह्माजीकेहंसवैठेहै॥ क
हूंअग्निकेवाहनतोतेवैठेहै॥ अरुकहूंअस्वनीकुमारअरुभगवतीकेमोरशिषावालेवैठे
है॥ कहूंवगुले॥ कहूंकवूतर॥ कहूंगरुडवैठेहै॥ अरुऐसेसवदकरतेहै॥ मानोब्रह्मापढ
तेंउपजाहूआ॥ ओंकारकाउच्चारकरतेहै॥ कोईपंछीऐसेहै॥ जोदोदोतिनकीयांचुंचांहै
तहांमैंदेषकरिआगेदक्षणकीकोणकोंगया॥ जहांउसविरछकाडालथा॥ तहांकोए
अनेकवैठतेहै॥ जैसेंमहाप्रलयकालविषेमेघलोकालोकपरवतपरआनवैठतेहै॥ तै
सेउहांकोएवैठेहै॥ अरुअचलआकारवैठेहै॥ सोमसूर्यअरुइंद्रवरुणकुवेरइनकीराषी
[illegible]॥ अरुपुन्नवानइस्त्रीयांकोंपरसन्नतादेवणेहारेहै॥ भक्तांकेसः
जयकीउहांलेवणहारेहै॥
देसपहूंचावणेवालेहै॥ सोउहांवैठेहै॥ तिनकोंमेदेषताभया॥ तिनकेमध्यविषेंमहाः
श्रीमानभुसुंडवैठाहै॥ ऊंचीग्रीवाकीएहूए॥ अरुऊंचीकांतिहै॥ जैसेंनीलमणचमकतेहै॥ तै
सेउसकीग्रीवाचमकतीहै॥ अरुहरणासत्तअरुमानी॥ अरुधैर्यजोमानकरणेकोंजोगअरु
प्राणसर्वअंग॥ अरुसुंदरप्राणोंकेसंपदकोंजीततेहारानित्तअंतरमुषअरुनिनहीसुषी
अरुचिरजीवीप्रसनहोवेंताहै॥ जगतविषेदीर्घआयुजगतकी॥ आगमपाठजि
सकोदेषतेवहुतकलपोंकासिमरणहै॥ अरुइंद्रकोकइपरमपदादेषीहै॥ लोकपालवरुण
कुवेरजमआदिकोंकेकईजनमदेषेहै॥ देवनेसिधोंकेअनेकजनमइसभुसुंडदेषेहै॥ प्रसन्नम
कुराभावहै॥ अंतःकरणजिसका॥ अरुसुंदरस्निग्धहैवाणीजिसकी॥ विकसतातेरहितनि
रभयअरुनिरहंकारसभकासुहृदअरुमित्रहै॥ वडयोंकाटहलउनकीन्याईहै॥ जोपितासः
मानहै॥ तिनकोपुत्रकीन्याईहोताहै॥ अरुजोपुत्रोंकेसमानहै॥ तिनकोउपदेसकरणेकेनिः

नि·प्र·
५

मित्र पिता अरु गुरु की न्याई समर्थ होता है ॥ अरु सर्वथा सर्व प्रकार सर्व काल सर्व विषे
समर्थ है ॥ अरु प्रसन्नता महा सत्त हृदा पुंडरीक व्यवहार का वेत्ता है ॥ अरु गंभीरता ऐसा महा
मान रूप है ॥ अरु ज्ञान ज्ञेय ध्रुव को वेदादेवन भया ॥ इति श्री निर्वाण प्रकरणे भु
शुंडाख्याने नाम त्रयोदशः सर्गः ॥ १३ ॥ ॥ ॥ ॥ श्री वसिष्ट उवाच
हे रामजी तिसके अंतर मैं आकाश मार्ग तें उड़ता आन पड़ा ॥ महा तेजवान दीपक वत
प्रकाशवान मेरा सरीर जब मैं गिड़िया ॥ तब जेते कछु पंछी बैठे थे सो क्षोभ को प्रा
पत हूए इक्याहूआ ॥ कमलवन जिनकी या ग्रीवा है ॥ सो क्षोभ को प्रापत हूए जैसे
वायु करि के कमलों की पांत क्षोभमान होती है ॥ जैसे कंप करि समुद्र क्षोभ को प्रापत हो
ता है ॥ तैसे पंछी क्षोभ को प्रापत हूए ॥ तिनके मध्य विषे जो भुशुंड था ॥ सो मुझ को देखत
भया ॥ मैं कैसा था ॥ अग्नि का रूप था ॥ जिसका जावणा ॥ सो मैं अकस्मात तें आया ॥ तब भी मुझ
को उसने जाण लीया ॥ जु इह वसिष्ट है ॥ ऐसे देखकरि उठि खड़ा हूआ ॥ अरु कहत भया
हे मुनीश्वर स्वस्थ हो बैठो ॥ अरु कुसल है बैठो ॥ हे रामजी ऐसे कहि करि संकल्प के हा
थ रचे ॥ तिन साथ मेरा अर्घ पाद कीया ॥ भाव संजुगत पूजन करत भया ॥ अरु टहलि
यों का हरकरि के आप ही हाथों के पत्र लिए ॥ तिनका आसन रचकै मुझ को बैठाया ॥ अ
रु कहत भया ॥ श्री भुशुंड उवाच ॥ चिरपर्जंत हि ॥ अहो आश्चर्य है ॥ हे भगवन तुम बड
डी कृपा करी दर्शन दीया है ॥ चिरपर्जंत प्रसन्नता को निमित्त दरसन रूपी अमृत करि
हम विरछ सहत शर्ण होइ हे ॥ हे भगवन हमारे जो पुन्य एकठे हूए थे ॥ सो एकठे हो
य करि तुम को प्रेर ले आए हैं ॥ हे मुनीश्वर देवते पूजणे जोग हैं ॥ तिनके भी तुम पू
ज हो ॥ सो तुमारा आवणा किस निमित्त हूआ है ॥ इस संसार मोह रूप तें तुम र
हत हो ॥ अरु अखंड सत्ता समान विषे तुम स्थित हो ॥ अरु सदा पावन रूप हो ॥ अभी
ष्ट इह है ॥ जो तुमारा आवणा किस निमित्त होया है ॥ इह मुझ को कहो क्या प्रार्थना है
अर्थ इह जो तुम को क्या प्रार्थना इच्छा है इह कहो ॥ अब तेरे चरनों के दर्शन करि के मेरा ना
स भ कछु जाणा है ॥ जिस निमित्त तुमारा आवणा हूआ है ॥ स्वर्ग की सभा विषे चिरजी
वीयों का प्रसंग चल्या था ॥ तब मैं स्मरण विषे आया था ॥ तिस करि तुम मुझ को पवि
त्र करणे आए हो ॥ इह तुमारे चरणों के प्रसाद से जाणा है ॥ पर प्रभु के वचन रूपी जो अ
मृत है ॥ तिसके स्वाद की मुझ को इच्छा है ॥ इस निमित्त मैं प्रभो के मुखतें सुणता हों ॥ हे
रामजी इस प्रकार मो को भुशुंड नाम पंछी ॥ चिरजीवी मुझ को कहत भया ॥ तब मैं कह
त भया ॥ श्री वसिष्ट उवाच ॥ हे पंछीयों के महाराजा ॥ जो कछु तुम कहा है ॥ सो सत्त
कहा है मैं अभ्यागत तेरे आश्रम इसी निमित्त आया ॥ जो चिरजीवीयों की कथा चली
थी ॥ सो हे मुझ को सीतल चित्त हूआ आवता है ॥ अनिराकुल मन है ॥ अरु संसार रूपी
जाल तें निकस्या हूआ द्रष्टि आवता है ॥ ताते मेरे संसे को दूरि करु ॥ जो किस काल वि
षे तूं जनम्या है ॥ अरु ज्ञान ज्ञेय के सभ या है ॥ अरु तेरी आयुर्बल केती है ॥ अरु कौन कौन वृ
तांत तुझ को देख्या हूआ समरण है ॥ अरु किस कारण इहां निवास कीया है ॥ श्री भुशुं
ड उवाच ॥ हे मुनीश्वर जी जो कछु तुम मने पूछ्या है ॥ सो सर्व इह कहता हों ॥ शनैः शनैः
कहियै मैं दे महत श्रवण करु ॥ तुम जो हो सो साक्षात प्रभु त्रिलोकी के पूजत हो ॥ अरु त्रि
लोकी के दरसी हो ॥ पर जो कछु तुम आज्ञा करी है ॥ सो मानणी जोग है ॥ तुम सरीखे जो
महा महात्मा पुरुष हैं ॥ तिनके विद्यमान कहे हूए भी अपणे विषे कछु तपन होती
है ॥ सो निवर्त हो जाती है ॥ जैसे मेघ के आगे आए हूए ॥ सूर्य की तपत मिट जाती है ॥ तै
से तुमारे आगे कहणे कर तपत निवर्त हो जाती है ॥ इति श्री निर्वाण प्रकरणे भुशुंड
समागम नाम चतुर्दशो सर्गः ॥ १४ ॥ हे रामजी ऐसे कहि करि मुझ को भुशुंड कहत भ
या कैसा भुशुंड है ॥ सर्वज्ञ अरु सुंदर अरु समता संजुगत है ॥ सो स्थिर अरु गंभीर वाणी
करि कहत भया है ॥ कैसा भुशुंड है ॥ मानतान कड़ी विषे तिस ब्रह्मंड ने तो लछोड़या है ॥ अ
रु जगत तिसको त्रिण की न्याई तुच्छ भासता है ॥ काहे तें जो लोकों की उत्पति अरु प्रलय
उस बहुत देखी या है ॥ अरु चित्त की वृति किसी विषे लगाई नाही ॥ जैसे खीर समुद्र तें
निकस्या ॥ महा अचल पर्वत पूर्णम सत है ॥ तैसे उसका मन समुद्र है ॥ जैसे खीर समुद्र
उज्जल है ॥ तैसे आत्मपद विषे विश्राम पाइ करि आनंद को विस्तारता है ॥ अरु जगत की उ
तपति विनास जिसने देखे हैं ॥ ऐसा जो गोरव मुझ को मधुर अरु उचित हृदय गम वाणी क

रि कहत भया ॥ श्री भुशुंड उवाच ॥ हे मुनीश्वर इह जगत विषे जो बड़ा है ॥ सो सदाशिव स
भका नायक देवत्यों का देव है ॥ अरु अर्धंगी भगवती गौरी को सरीर विषे धारी है ॥ म
हा सुंदर मूर्ति अरु त्रिनेत्र है ॥ बड़ीयां जटा है ॥ अरु मस्तक पर चंद्रमा है ॥ अस्तन जिस
ते स्रवता है ॥ असमतानामित्र ॥ अरु गंगा जी जिसकी या जटा के चौफेर वेष्टन चल
ती है ॥ ऐसे जटा साथ थे ॥ आगे जैसे हूलों की माला कंठ विषे होती है ॥ तैसे चलती
है ॥ अरु नीलकंठ है ॥ कालकूट विष के भोजन करि उह विषे श्यामल होता है ॥ अरु कंठ विषे
रुंडों की माला है ॥ अरु सर्व अंगों में भस्म लगी होई है ॥ अरु दिसा हैं जिसके वसत्र है ॥ अरु
मसाणों विषे है गृह जिसका ॥ अरु महा शांतरूप विचरता है ॥ अरु साथ जो सेना है ॥ सो
तिनका महा भयानक आकार है ॥ किसी के तीन तीन नेत्र हैं ॥ रुद्र की न्याई ॥ अरु किसी
के तीन की न्याई मुख है ॥ किसी का ऊंट का मुख है ॥ किसी का गर्दभ का मुख है ॥ किसी को
सिंह का मुख है ॥ किसी का वलद का मुख है ॥ भूत विचरणे होते हैं ॥ कई जीवों के अंतर परवे
स करि जावणा होता है ॥ रक्त मांस को भोजन करणे वाले जिसके साथ फिरते हैं ॥ पहाड़ों
विचरहने है ॥ कई वनों विषे कंदरा विषे मसाणों विषे इत्यादिक इस्थानों विषे उनका
निवास होता है ॥ अरु साथ देवीयां भी ऐसी हैं ॥ तिनकी भी महा भयानक चेष्टा आचार
है ॥ तिन देवीयां विषे भी जो मुख्य देवीयां हैं ॥ तिनका जिस जिस दिसा विषे निवास है ॥
सो सुणा ॥ जया अरु विजया अरु जयंती अरु अपराजिता ॥ वामदिसा को आवरे अरु रुद्र के
आश्रित है ॥ अरु सिद्धा अरु मुक्ता अरु रक्ता ॥ अरु उत्पला भैरव रुद्र के आश्रित है ॥ सो सर्व
देवीयों के मध्य विषे इह अष्ट नायका है ॥ अरु सत्त सहस्र देवीयां हैं ॥ ब्राह्मी अरु वैस्नवी अ
रु ब्राह्मी ॥ अरु वाराही ॥ अरु वायवी ॥ अरु कौमारी ॥ अरु वासवी ॥ अरु सौरी इत्यादिक सह
स्र देवीयां हैं ॥ इहो साथ मिलीयां होईयां हैं ॥ आकास विषे उनमदे व किन्नर गंधर्व पुरुषा
स्वरसना सोभतीयां हैं ॥ तिन्हो साथ मिलीयां होईयां भूचर पृथवी विषे को दिहै ॥ नाना प्र
कारों के रूप नाम धारे होईयां पृथवी विषे जीवों को भोजन करती यां है ॥ तिनके वाह
न ऊंट है ॥ किन हूं के वाहन नाते हैं ॥ इत्यादिक वाहन तिनके तीनों जगतों विषे रहते हैं ॥ जि
न्हो देवीयां विषे कई पसु धर्मी णा है ॥ जो छुद्र कर्मी विषे इस्थित हैं ॥ अरु कई विदत्व दे
जीवन मुक्त पद विषे इस्थित हैं ॥ तिनके मध्य विषे नाइका अलंबुसा देवी है ॥ तिसका वा
हन काक है ॥ जैसे विस्नु जी का वाहन गरुड़ है ॥ तैसे देवी का वाहन काक है ॥ सो देवी अष्ट सि
द्धों करि संजुगत है ॥ सो देवीयां एक काल मैं समागम करती भईयां हैं ॥ जगत के पूज तुं
बरु अरु भैरव को पूजन भईयां ॥ अरु इह विचार करत भईयां ॥ जो सदा सिव हमारे साथ भा
व संजुगत नहीं बोलता ॥ अरु हम को तुच्छ जानता है ॥ हम इसको कछु अपणा प्रभाव दि
खावें ॥ प्रभाव दिखाए बिना कोऊ किसी को नाहीं जाणता ॥ ऐसे विचार करि के गौरी को व
श करि के चुराए ले गईयां ॥ अरु उहां उनसाह रचिया ॥ मद मांस आदिक भोजन कीया
अरु माया के छल करि के ॥ पारवती को मारकरि वावली की न्याई रांधी ॥ अरु निरत क
रणे लागीयां ॥ कछुक अंग उसके राखे हूए ॥ सदासिव जी को आनि दीए ॥ तब सदासिव ने
जान्या जो मेरी पियारी पारवती इन्हो मारी है ॥ ऐसे निस्चा करि के कोपणे लागा ॥ तब उ
न्हो देवीयों अपणे अपणे अंगों तें उसके अंग निकाले ॥ सौरी ने त्र निकाले ॥ कौमारी नासि
का निकाली ॥ इसी प्रकार अपणे अपणे अंग निकास करि तिनसी ही पारवती की मूरत ब
नदीई ॥ अरु तिन ने विवाह करि दीया ॥ तब सदासिव जी प्रसन्न भए ॥ सर्वतें उडन सव
आनंद कीया ॥ तब सर्व देवीयां अपणे अपणे इस्थानों को गईयां ॥ अरु चंड नाम काक
जो अलंबुसा देवी का वाहन था ॥ सो ब्रह्माणी देवी की या हंसनी यां साथ क्रीडा करता
भया ॥ क्रम करि के सभनों साथ रमण क्रीडा करी ॥ तब उन हंसनी को गर्भ प्राप
त हूए ॥ अरु हंसनी यां ब्रह्माणी देवी के निकट गई यां ॥ तब देवी ब्रह्माणी कहा ॥ तु
म गर्भवंती यां भई यां हो ॥ जहां तुमारी इच्छा होई ॥ तहां जावो बहुड़ि फिर आवणा ॥ का
क भुशुंड उवाच ॥ हे मुनीश्वर जी ऐसे कहि करि ब्रह्माणी निर्विकल्प समाधि विषे
इस्थित भई ॥ अरु नाभि सरोवर जो ब्रह्मा जी का उत्पत्ति इस्थान है ॥ तहां जाई इस्थित
भई ॥ तिस नाल के कमल पत्र ऊपर आन निवास कीया ॥ तब तिन्हों केताक काल विती
न भया ॥ तब उन हंसनीयों तीन तीन अंडे दीए ॥ जैसे वेली तें अंकुर उत्पति होता है ॥ जैसे

उनेनें एकविंशति अंडे क्रमकरि उत्पन्न भए॥ तिनको फोडुन भईयां॥ जोसे अंड कपरको फोडीये॥ तिन्हों अंडयों विषें हम भाई अंगउत्पति भए॥ क्रमकरिकें हम वधे उडुणे जोगहुए॥ तव माता हमकौं ब्रह्माणी पास लेगईया॥ तिसके आगे हम मस्तक टेके॥ तव ब्रह्माणी समाधिते उत्तरी थी॥ उसने हमकौं देखकरी कृपा कौ हाथ धारी॥ अरु हमारे सीस ऊपर हाथ धराथ्या॥ उसके हाथ धरणे सो हमारी अविद्या नष्ट होगई॥ अरु हमारा मन विपन्न ज्ञानरूप होगया॥ अरु जीवन्मुक्त पद विषें हम ई स्थित भए॥ तव हम कोई हिविरनंकर आई॥ जो हम किसी प्रकार एकांत ध्यान विषें ई स्थित होवे॥ तव देवीजी आज्ञा करि हम पिता पास आए पिता हमको कंठ लगाया॥ अरु मस्तक चुंवन कीया॥ तव हम अलंवमा देवीकी पूजा करते भए॥ तव पिता हमकौं कहा॥ हे पुत्र तुम संसार रूपीजाल विषें तो नाहीं फसेक्यो॥ वासना रूपी ह्माणे गंठी है विषें॥ अरु जानि कसे नाही फसेहो॥ तव मे भगवती देवीजी की प्रार्थना करता हों॥ उह देवी भक्तो पर दयाल है॥ जो संतुमको ज्ञान की प्रापत होवेगी॥ ते सतुमको प्रापत करेगी॥ भुशुंड उवाच॥ हे मुनीश्वरजी तव मैं कहा॥ हे पिताजी हम जो ज्ञान तें यह पद है॥ लोक छुजाणे जोगा है सो जाणा है॥ परलोक छुपावणो जो गथा सो हम पाया है॥ अलादेवी के प्रसाद करिकें॥ अव हमको एकांत स्थानकी इछा है॥ जहां एकांत होवे॥ तहां जाइ स्थित होवे॥ तव चंड पिता कहा॥ हे पुत्रो एकांत इस्थान सुणो॥ निरदोष पावन महा सुंदर आछ्रणावणपा हूया॥ निलोभ निमोह सर्व लोभ तें रहित तहां कोऊ दुख नाहीं॥ असो एकांत इस्थान है॥ अरु सर्व रतनों कौ उहां खान है॥ अरु सर्व देवलोक आश्रारूप है॥ सुमेरनाम सो पर्वत है॥ सूरज चंद्रमा उसके दीपक है॥ चौफेर घडे फिरते है॥ ब्रह्मंड रूपी मंडप का उह थंभा है॥ अरु रतनों का है॥ चंद्रमा सूरज तिसके नेत्र है॥ अरु तारे कंठ विषें माला है॥ दसो दिसा तिसके वस्त्र है॥ रत्नमणी के भूषण पहिरे हुए है॥ विरछवेली तिसके रोमावली है॥ त्रैलोकी विषें तिसकी पूजा है॥ चोदसहस्त्र जोजन पाताल विषें है॥ तहां नाग दैत्य इसकी पूजा करते है॥ अरु चोरासी सहस्त्र जोजन ऊपर धरती के है॥ अरु चोरासी तहां गंधर्व राछस मानुष देवता किंन्नर इसकी पूजा करते है॥ असा पर्वत जंवूद्वीप के एक इस्थान विषें इस्थित है॥ चोदस प्रकार के भूत जात उसके आसरे रहते है॥ वडा ऊचा पर्वत है॥ तिस पर्वत का पदमराग मणी का एक सिषर है॥ मानो सूरज आन उदे हुआ है॥ असा प्रकाश रूप है॥ तिस सिषर ऊपर एक वडा कल्पवृछ है॥ मानो जगत रूप सिषर का प्रतिविंव आनपडा है॥ तिस कल्पवृछ के दछण दिसा की ओर जो डाल है॥ महां रतनों के गुछे है॥ तिसकौ अरु स्वर्न के पत्र है॥ अरु चंद्रमा के विंव वन जिसके फूल है॥ अरु सवर्न मणी के गुछा लागे है॥ तहां एक आहलणा वन्या हूया है॥ ऊहां भी मैं आगे रहिआया हो॥ जव देवीजी समाधि विषें इस्थित भई थी॥ तव मैं तहां आहलणा वणाई करि इस्थित भया था॥ चिंतामणी की या उसकौ सलाका लगीया है॥ महां रत्नों सा वणया है॥ स्वर्गवन कटीवणी है॥ तहां तुम जाई करि निवास करो॥ आगे भी ऊहां कोऊ केषअरहते है॥ अंतकरनका आत्मा ज्ञान करि सीतल है॥ अरु वाइ जाते फल फूलो करि सीतल है॥ तहां तुमभी जाइ करि इस्थित होवो॥ तुमको उहां भोग भी है॥ अरु मोषभी है॥ षेद तें रहित तहां जाई अस्थित होवो॥ हे वसिष्ठजी इस प्रकार जव पिता हमको कहा॥ तव हम सभही पिता के चरणे लागे॥ पिता हमारा मस्तक चुंवन कीया॥ तव विंध्याचल पर्वत तें हम उडे आकास मार्ग को मेघों के इस्थान लंघे पवन के इस्थान लंघे॥ तिहुं चक्र लंघे॥ लोकालोकों के इस्थान को लंघकरि ब्रह्मलोक विषें जाइ प्रापत हुए॥ तहां जाइकरि देवीजी को प्रणाम करते भए॥ भलीप्रकार उस हमारे पर कृपा करिकें देषी॥ अरु आतम सहित कंठ लगाया मस्तक चुंवन कीया॥ हम भी मस्तक टेककरि सुमेर के सिषर को चले॥ सूरज चंद्रमा के लोक लंघगए॥ नारागणा लोकपाल देवताके इस्थान को लंघगए॥ मेघ पवन के इस्थान कौ लंघकरि॥ सुमेर पर्वत के कल्पवृछ इसी ऊपर आन इस्थित भए॥ हे मुनीश्वरजी जिस प्रकार हम उपजे है॥ अरु जिसकरि ज्ञान को प्रापत भए है॥ जिसकरि इहां आन इस्थित भए है॥ सो सभ अपने वृतांत मै आगे कहा है॥ आगे जो कछु तुमको संसय होइ सो पूछो॥ इति श्री

निर्वाणप्रकरणे भुशुंडोपाख्याने विश्रमलीलानाम पंचदशः सर्गः॥१५॥ श्रीभुशुंड उवाच हे मुनीश्वरजी इह चिरकाल की वारता तुमकौं कही है॥ वहुत कल्प वितीत भए है॥ उहसृष्टि इस सृष्टि तें इतर है॥ वहुत जुग वितीत भए है॥ पर मैं तुमकौं वर्तमान की न्याई सुणाया है॥ अभ्यास के वल तें॥ हे मुनीश्वरजी मेरा जो कोऊ पुन्न था सो फल्या है॥ जो तुम्हारा निरविघ्न दर्शन हूआ॥ इह जो आहलणा है॥ अरु इह जो साषा है॥ अरु इह जो वृछ है॥ जो तेरा दर्शन हूआ है॥ सो आज पावनताको प्रापत हूआ है॥ अव जो कछु संसा होता है॥ सो पूछो मैं कहों॥ हे रामजी इह प्रकार कहि करि वहुड भली प्रकार उसने मेरा अर्घ्य पाद करि पूजन कीया आदर संयुगत॥ तव मैं उसको कहा है पंछीयों का ईस्वर तें रहु भाई कहा है॥ जो तेरा समान तत्व के वेत्ता॥ सो तो दृष्ट नाहीं आवते॥ एकला तूंही दृष्ट आवता है॥ भुशुंड उवाच॥ हे मुनीश्वरजी इहां मुझ कौं वहुत काल वितीत भया है॥ जुगोंकी पंकत वितीत भई है॥ जैसे सूरज का दिन रात्र कई वितीत होजाते है॥ तैसे मुझ कौं जुग वीतीते भए है॥ केताक काल उह भी रहे थे॥ समेपाई करि उन्हों सरीर त्यागदीए॥ त्रिणवत जैसे कोऊ त्रिणको त्यागे॥ तैसे त्याग दीये॥ त्याग करि सिवपद आत्मपद कौं प्रापत हूए॥ हे मुनीश्वर वडी आवला होवे॥ अथवा संतम हंत होवे॥ अथवा ईश्वर्यवान होवे॥ सभ कौं काल ग्रास लेता है॥ वसिष्ठ उवाच॥ हे साध जव प्रलयकाल का समा आवता है॥ तव सूरज चंद्रमा वायु मेघ इह आपणी मरजादा की त्याग देते है॥ तव वडा छोभ होता है तुम कौं षेद किस कारण ते नहीं प्रापत होता॥ सूर्य का षेद होता है तपतकरि॥ अस्ताचल अरु उदयाचल आदिक पर्वत भस्म होजाते है॥ जिस छोभ विषें तू षेदवान कौं नाहीं होता॥ भुशुंड उवाच॥ हे मुनीश्वरजी एक जीव जगत विषें आधार करि रहते है॥ जिन का ए स्वजे सेना आदिक पदार्थ होते है॥ सो सहित आधार है॥ अरु जो इन पदार्थों ते रहित है॥ सो निराधार है॥ सो दोनो हमतुछ देषे है॥ सत कोऊ नाहीं॥ वडे वडे ऐश्वर्यवाले वलीभी है॥ पर सत कोऊ नाहीं॥ तिन्हो विषें पंछीयों विषें भी काक महां तुछ है॥ महा उजाड वन विषें इनका निवास है॥ उहां ही इनका दाणा पाणी है॥ इछि रालव है॥ इनकी उपजीवका देवने इसी प्रकार वणाई है॥ हे भगवन तुम मे तो सदा सुषी हो॥ अरु अपणे आप विषें इस्थित हो॥ आत्मसतोषकरी मैं त्रिपत हो॥ मैं कदाचित इस जगत के छोभ करी नहीं षेद को प्रापत होता॥ स्वभावमात्र विषें ही सतुष्ट हो॥ कष्ट चेष्टा तें मुक्त हो॥ हे ब्राह्मण इह सभ अवकेवल काल कौ वितीत करते है॥ और जगत केइ इष्ट अनिष्ट हमकौ चलाइ नाहीं सकते॥ न मरणे की हमकौं इछा है॥ न जीवणे की इछा है॥ कहिं ते जो जीवणा मरणा सरीर की यां अवस्था है॥ आत्मा की यां अवस्था नाहीं॥ हमकौं जीवणे मरणे विषें हर्ष नाहीं जैसे अवस्था आन प्रापत होवे॥ तिसे विषें संतुष्ट है॥ हे मुनीश्वरजी असे देषे है॥ जो इष्ट को प्रापत होए है॥ वहु इभस्म सो गए है॥ तिसकी अवस्था को देषकरि हम सारी मनकी चपलता जाती रही है॥ अरु हम इस कल्पवृछ के ऊपर वैठे है॥ कैसा कल्पवृछ है॥ रत्नों की लता वेली तिसकौं लागी है॥ तिस पर वैठकरि मैं प्राण अपान की गत कौं पडा देषता हो॥ इन की कला कौं ग्रहण करता है॥ तिस कामै जाता हो॥ तिसको मैं जाणता हो॥ दिन अरु रात्र की मुझ कौं ज्ञान कछु नाहीं॥ सात कौ वृद्धि करिकें मैं काल कौ जाणता हो॥ अरु सार असार कौं मैं भले प्रकार जाणता हो॥ भुशुंड उवाच॥ हे मुनीश्वरजी जेती कछु जगत की गति विस्तार करिकें भासती है॥ सो सभ भूठ है॥ सत कछु नाहीं इस कारण ते हम कौं किसी दृस्य पदार्थ की इछा नहीं॥ अरु परम उपसाम विषें इस्थित है॥ सभ जगत भी हम कौं शांत रूप है॥ जो कोऊ इस जगतजाल कौं आश्रे करता है॥ सो सुषी नाहीं होता॥ इह जगत सभ चंचल रूप है॥ इस्थिर कदाचित नाहीं होता॥ इस की अवस्था विषें हम पर्वतवत अचल है॥ न किसी का हम को राग ऊरता है॥ न द्वेष करता है॥ किस की इछा करे॥ सभ जगत हमकौं तुछवत भासता है॥ इह सभ भूत रूपी नदीयां काल रूपी समुद्र के मुष मों जाई पडतीयां है॥ अरु हम कंठ पर पडे है॥ इवन कदाचित नाहीं॥ और जेते कछु जीव भूत है॥ सो पडे इवते है॥ कई एक तुम सरीषे निकसे हूए है॥ अरु तुमारी कृपा करिकें हम भी निर्विकार पद कौं प्रापत हूए है॥ हे मुनीश्वरजी मै निरविकार हो॥ सभ जगत के छोभ तें रहित हो॥ आत्मपद कौं पाइ करि उपसम रूप हो॥ हे मुनीश्वरजी तुम्हारा विदरसन करिकें मैं अव वडे आनंद कौ प्रापत हूआ हो॥ अरु संतों की संगत चंद्रमा की चांदनीवत सीतल हो॥ अमृत की न्याई आनंद कौ देवुणे हारी है॥ असे कौन है॥ जो संतों के संग करि आनंद कौ न प्रापत हो॥ सभ आनंद को प्रापत होते है॥ इह सभ थे है॥ हे मुनीश्वरजी संत संग चंद्रमा के अमृत तें भी अधिक है॥ काहिं ते जो उह सीतलता गौण है॥ अंतर कौ न पतनाहीं मिटावता॥ अरु संतों का संग अंतर कौ तपन भी मिटा

वताहै॥ उहअम्रत जो क्षीरसमुद्रकेमथनतें क्षोभसाथ निकस्याहै॥ अरु संतोंका संगसु
खनप्रापत होताहै॥ अरु आत्मा आनंदकों प्रापत करताहै॥ तातें इह परमउत्तमहै॥ मैं
नाइसतें परेउत्तम ओर नाही मानता॥ संतोंका संग सभतें उत्तमहै॥ अरु संतभी सेई है
जिनकी यासव इछ्या निवर्त भई याहै॥ आपातरमणी अर्थ इह जो विचारेविना सुंदरभ
भासतेहै॥ अरु नासवंतहै॥ असे पदार्थ सभ तुछ भासेहै॥ अरु सदा आत्मानंदकविषे तृपत
अरु आनंदित है॥ इतकल्पनाका जिनको अभाव भयाहै॥ सदा आत्मानंद विषे इस्थितहै॥ असे पु
रुषसंत कहितेहै॥ तिन संतोंकी संगत असीहै॥ जैसे चिंतामणी होतीहै॥ जिसके पाएतें सवदु
षोंका नास होताहै॥ हे मुनीस्वरजी त्रिलोकीरूपी कमलोंके भ्रमर एक तुमही दृष्टआएहो॥ अ
रु सभनों ज्ञानवानों विषे उत्तम दृष्टआएहो॥ तुमारे वचन स्निग्ध अरु कोमल अरु आत्मरसक
रि पूर्ण अरु हृदेअंगम अरु उचितहै॥ अरु हृदा महागंभीर अरु उदार अरु धीरजवान॥ सदाआ
नंदकरि तुमारी तृपितहै॥ तातें सभनें उत्तम मुझकों दृष्टआएहो॥ तुमारे दर्सनकरिके मेरे दु
ष पाप नष्ट भएहै॥ आज मेरा जनम सफल भयाहै॥ तुमसरिषे संतोंका संग आत्मपदकोंप्रा
पत करताहै॥ अरु दुषभयकों नष्ट करिके निरभैताकों प्रापत करताहो॥ इति श्री निर्वाणप्र
करणे भुसुंडोपाख्याने स्वरूपनिर्णयोनाम षोडषसर्गः॥ १६॥ ॥ भुसुंड उवाच
हे मुनीस्वरजी तुमनें पूछ्याथा जो हृदयवायु जलका क्षोभ होताहै॥ तव तुम षेदवानकों ना
हीहोता॥ तिसका उत्तर स्रवणकरो॥ जव जगतकों क्षोभ होताहै॥ तव मैं आकल्प इहां स्थिर र
हताहै॥ अरु क्षोभकों नाही प्रापत होताहै॥ हे मुनीस्वर इह मेरा जो वृछहै॥ सो सभलोकों अग
महै॥ इसकरिभी मैं सुषी रहताहों॥ जव हिरणाक्ष सातुदीप सहित पृथवीकों समेटकरि
पातालकोंलेगयाथा॥ तवभी मेरा वृछ कंपायमान नाहीभया॥ अरु जव देवत्यां अरु देतोंका
जुद्ध हूआ॥ तव ओर पर्वत सभ चलाइमान भए॥ पर मेरा वृछ इस्थिर रहीरहा॥ अरु जव क्षीरस
मुद्रके मथने निमित्त विस्नुजी सुमेरकों एकभुजा थकउपरदावा वलसाथ॥ अरु दूसरी भुजासा
थ मंदराचलकों उषाडनेलागे॥ तवभी मेरा वृछ कंपायमान नभया॥ मंदराचलकोंलेगए तव क्षी
रसमुद्रकों मथनेलागे॥ प्रलयका पवन अरु मेघोंका क्षोभ हूआ॥ तवभी मेरा वृछ कंपाइमान
नभया॥ वहुड एकदेत सुमेरकों आनपुटणेलागा॥ उसनें कछक सुमेरकों उषाड्या॥ परमेरा
वृछ कंपायमान नाहीहूआ॥ हे मुनीस्वर जो इत्यादिक वडेवडे कष्ट हूएहै॥ प्रलयकालके मेघ
अरु पवन अरु सूरज तपेहै॥ तवभी मेरा वृछ इस्थिर रहाहै॥ वसिष्ठ उवाच॥ हे साध जव प्रल
यकालकी वायु अरु मेघ क्षोभनेहै॥ तव तूं किसतरकेसे रहताहै॥ भुसुंड उवाच॥ हे साध जव प्र
लकालके वायु अरु मेघादिक क्षोभ करतेहै॥ तव मैं कुनष्टकेन्याई अपणे आल्हणेकों त्यागजा
ताहों॥ अरु सभ क्षोभनें रहित आकाश विषे आइ इस्थिर होताहों॥ अरु सभ अंगोंका संकुचा
इलेताहों॥ जैसे वासनाकों रोकेतें मन संकुच जाताहै॥ तैसे मै अंगोंको संकुचाइलेताहों॥ हे
मुनीस्वर जव प्रलयकाल विषे सूरज तपताथा॥ तव मै जलकी धारणाकरी जलरूप होइ
ताथा॥ अरु जव वायु वहुत चलतीथी॥ तव पर्वतकी धारणा वांधकरी इस्थिर होइजाताहों॥
जव वहुत ततोंका क्षोभ होताथा॥ तव सभनोंका त्यागकरि व्रह्मंडरूपरके पार जो निरमल
परमपद होताहै॥ तहां मैं जाइ इस्थित होताहों॥ सषोपतवत अचल गंभीर होताहों॥ जव व्र
ह्मा इहउपजककरि वहुड सृष्टकोरताथा॥ तव मैं समेर विरछरूप वरमी आल्हणे विषे इस्थित
आन होताहों॥ वसिष्ठ उवाच॥ हे पंछीयोंके इस्वरजी जैसे तुम अषंडित इस्थिर होतेहो॥ तैसे
ओर जोगेस्वर इस्थिर कोंनाही होते॥ भुसुंड उवाच॥ हे मुनिस्वरजी इह नेत परमात्माकीहै
सो किसीसों लंघीनाही जाती॥ उनजोगेस्वरोंकी नेत इसी प्रकार रही है॥ मेरा होवणा इसीप्र
कार भयाहै॥ ईस्वरकी नेत अतुलहै॥ उनविसेष किसीसों करी नाहीजाती॥ जहां जैसीनेत होइ
रहै॥ तहां तैसे ही हो॥ अन्यथा किसीसों नाही होता॥ इसी प्रकार हमकोंभई है॥ जो कलपक
लप विषे इसी पर्वतके कलपविरछरूप आल्हणा होताहै॥ हम आन निवास करतेहै॥ वसिष्ठ उ
वाच॥ हे पंछीयोंकेनाइक तुमारी अत्यंत दीर्घ आयुहै॥ ज्ञानविज्ञानकरिभी संपन्नहो॥ अरु जोगे
स्वर हो॥ तुमनें अनेक आस्चर्य देषेहै॥ तिन विषे जोजो स्मरण आवताहै॥ सो कहो॥ भुसुंड उवाच
हे मुनीस्वरजी एकवार असे स्मरण आवताहै॥ जो पृथवी उपर वृछ अरु त्रिण हीथे॥ अरु क
छु नथा॥ वहुड एकवार एकादस सहस्र वर्ष परजंत भस्म ही दृष्टआवे॥ जो वृछ त्रण जलगए
थे॥ एकवार असी सृष्ट होई॥ जो तिस विषे चंद्रमा अरु सूरज न उपजे॥ दिन अरु रात्रकी गतक
छु जाणीयेनाही॥ कछु कछु सुमेरके रतनोंका परकास ही होवे॥ एककल्प असा हूआ जो दे

वत्यों अरु देतोंका जुद्ध हूआ॥ अरु देतोंकी जीत भई॥ सभही देवते तिन्हों मलेछोंकीन्याई हुत
कोंय॥ व्रह्मा विस्नु रुद्र तीनोंही देवता रहे॥ ओर सभ भ्रष्ट होइ जीतो॥ वोसजुग पर्यंत
तिन्होंकी आज्ञा वरती॥ वहुड एकवार असे वित्त आवताहै॥ जो दोजुग पर्यंत पृथवी उप
र वृछही रहे॥ ओर सृष्ट कछु नभासे॥ वहुड एकवार दोजुग पर्यंत पृथवी उपर पर्वत
ही सघन रहे॥ ओर कछु नभासे॥ अरु एकवार असे हूआ॥ जो सभ जलचड गए॥ ओर कछु
नदीसे॥ एक सुमेर पर्वत थंभेकीन्याई भासे॥ अरु एकवार अगस्तमुनी दक्षिण दिसा तें
आया॥ अरु विंध्याचल पर्वत मवधया॥ सभ व्रह्मंड उसचूरणकरदीया॥ इह स्मरण आवता
है॥ हे मुनीस्वर वहुतकछु स्मरण आवताहै॥ पर संक्षेपतें सुणो॥ एककाल मों सृष्टवि
षे देवते ही होए॥ मनुष्य रुद्र देत आदिक कछु नभासे॥ एकवार असी सृष्ट होई जो व्रह्म
ण मद्पान करें॥ अरु सूद्र वडे होईवेंदे॥ अरु जीवों विषे विपरजेही धर्म होवे॥ अरु एक
सृष्ट असी स्मरण मों आवती है॥ जो पृथवी विषे पर्वत कोऊ नदृष्ट आवे॥ सदा उजाड ही
होवही॥ एक सृष्ट असी होए॥ जो सूरज चंद्रमा नक्षत्र लोकपाल कोई न उपजाए कसृष्ट
असी होइ॥ जो सम सही होई॥ जो तिस विषे स्वामी कार्तिक न उपजूया॥ देत वहुत वध गए
देतोंही का राज होगया॥ इत्यादिक मुझकों वहुतकछु स्मरणहै॥ केताक कहों॥ सूरज चं
द्रमा नक्षत्र इंद्र उपिंद्र लोकपाल इनके वहुत जनम मुझकों स्मरण आवतेहै॥ जव हिरण्य
नाषसकों हरिनें मारियाहै॥ सो भी चेतहै॥ तावेदोंकों ले आयाहै॥ अरु क्षीरसमुद्र मथेहै
सो भी वहुत स्मरण मोंकों आवतेहै॥ असी सृष्टभी दृष्टआई॥ जो विस्नुजीका वाहन गरुड
नहूआ॥ तो हंसवाहन हूआ॥ अरु व्रह्मा हंसवाहन नहूआ॥ वृषभवाहन हूआ॥ अरु रुद्र वलदवा
हन नहूआ॥ गरुड वाहन हूआ॥ इसते आदि लेकरि स्मरण वहुते मोंकों आवतेहै॥ सो अरु जो वा
लकहै॥ सो भी जाणतेहै॥ मैं तो वहुत कछु देष्याहै॥ क्या कहूं तुमारे आगे वरनन करों॥ इति श्री नि
र्वाणप्रकरणे जीतनोवर्णनंनाम सप्तदशसर्गः॥ १७॥ ॥ भुसुंड उवाच
हे मुनीस्वरजी जव वहुत सृष्ट उत्पत्ति भई॥ तव तुम उत्पत्ति हूए भारद्वाज॥ पुलह॥ पुलस्त॥ ना
रद॥ इंद्र॥ मरीच॥ उद्दालक॥ क्रतु॥ भृगु॥ अंगरा॥ सनत्कुमार॥ भृंगीस आदिक उपजे॥ वहुड सुमेर
मंदराचल॥ केलास॥ हिमालय आदिक पर्वत उपजे॥ अत्रि॥ व्यासदेव॥ वाल्मीक इत्यादिक इन
तों अल्पकालके उपजेहै॥ कई चिरकालके उपजेहै॥ हे मुनीस्वरजी तुम जो हो॥ सो व्रह्माके पु
त्रहो॥ आवजनन मतुमारे मुझकों स्मरण आवतेहै॥ कवहूं तुम आकासतें उपजेहो॥ कवहूं जलतें
उपजेहो॥ कवहूं पहाडतें उपजेहो॥ कवहूं पवनतें उपजेहो॥ कवहूं अग्नितें उपजेहो॥ हे मुनीस्वरजी
मंद्राचल पर्वत क्षीरसमुद्र विषे पाइकरि जव मथने लागेहै॥ तव देवते अरु देत क्षोभवान हूए
है॥ मंद्राचल अधःकों चल्याजावे॥ तव विस्नुजी कछूरूप धारीकरि पर्वतकों ठहरावत भए॥ अरु अ
म्रतकों निकास्या॥ सो मुझकों द्वादसवार स्मरण आवताहै॥ अरु तीनवार हिरणाक्ष पृथवीकोंस
मेटलेगयाहै॥ पाताल विषे॥ अरु षष्टवार परसराम रेणुकामाताका पुत्र हूआहै॥ वहुत सृष्ट
के पाछे हूआहै॥ अरु तत्त्व नारायणकीयाहै॥ जव देत जीयोंके सृष्ट विषे उपजणे लागे॥ तिस नि
मित्त विस्नुजी परसरामका अवतार लेत भया॥ वहुत कालजुगोंके वितीत होगए है॥ हे मुनीस्व
रजी एक सृष्ट असी भई है॥ जो अगाले नविपरजे रूप शास्त्र अरु पुराणोंके अर्थ ओर ओर प्रकार
के अरु एककाल विषे ओरही पाठ ओरही जुगतो ओरही अर्थकाहि तें जुगजुग प्रति ओरही पु
राण होतेहै॥ कई देवते कर्तेहै॥ कई ऋषीस्वर करतेहै॥ ओरु कथा इतिहास वहुत वहुत स्मरण मैं
आवतेहै॥ वालमीक है नाम जिसका॥ असा जो एकजीहै॥ तिसनें द्वादसवार रामायण कीयाहै॥ सो
विसमरण होगयाहै जगत विषे॥ दोवार महाभारत व्यासदेव जीनें कीयाहै॥ अरु इह जो व्यासना
माजीवहै॥ तिसस सवार कीयाहै॥ हे मुनीस्वरजी इस प्रकार व्याख्यान कथा इतिहास शास्त्र जो जो
हूएहै॥ सो मुझकों वहुत स्मरण मों आवतेहै॥ हे साध देतोंके मारणेके निमित्त॥ विस्नुजी अवता
रधारकरि मारताहै॥ जुगजुग प्रति एकादसवार मुझकों राम स्मरण मों आवता॥ अरु वसुदेवके
गृह विषे पृथवीका भार उतारणेके निमित्त कृस्नजी सोलह अवतार लीएहै॥ सो मुझकों स्मर
णहै॥ तीनवार नरसिंह अवतार धारीकरि हिरनकशपकों माराहै॥ पर सभही भ्रममात्र है क
छु उपजीया नाही॥ जव आत्मतत्त्व विषे देषताहों॥ भुसुंड उवाच॥ हे मुनीस्वरजी इस प्रका
र मुझकों अनेक सृष्टा स्मरण आवतीयाहै॥ पर सभही भ्रममात्र है॥ कछु उपजीया भी नाही
जव आत्मतत्त्व विषे देषताहों॥ तव सृष्टा कछु नाही भासतीया॥ सभ आभासमात्रहै॥ जैसे ज
ल विषे वुदवुदे उपजकरि जल विषे लीन होजातेहै॥ तैसें आत्मा विषे मनके फुरणे करिके॥

कई स्त्रष्टां उपजतीयां हैं॥ परली नहीं होजातीयां हैं॥ तिस पुरुष ने करि कई स्त्रष्टां देखतीयां हैं॥ कई स्त्रष्टां सहस्रांही उपजतीयां हैं॥ कई अर्थ सहस्रां उपजतीयां हैं॥ कई विपर्जे रूप होजातीयां हैं॥ कई मुनीश्वर कई स्त्रष्टां विषे उन्हीं जैसे आकार उन्हीं जैसे कर्म आचार होते हैं॥ कई मन्वंतर प्रति और ही और स्त्रष्टां होतीयां हैं॥ किसी विषे असे होता है॥ जो पिता पुत्र रूप होजाता है॥ पुत्र पिता रूप होजाता है॥ सत्रु मित्र होजाता है॥ अरु मित्र सत्रु होजाता है॥ बांधव अबांधव अबांधव बांधव होजाता है॥ इस प्रकार विपर्जे होते देख्या है॥ तब हे मुने मलतावान कल्प पर्यंत इस ही ऊपर हमारा आश्रम होता है॥ कबहुं मंद्राचल विषे॥ कबहुं हिमालय पर्वत विषे कबहुं मालव पर्वत विषे॥ हमारा आश्रम होता है॥ इसी प्रकार बनवेली बिरछ ऊपर होजाता है॥ कबहुं इसी कल्पवृछ ऊपर होता है॥ अरु इसी आश्रम विषे हमारा निवास होता है॥ जब सृष्टि नास होजाती है॥ तब भी मेरा इही सरीर रहता है॥ मैं जो आसन लाई करि विभूपणी पृथ्वी का को ब्रह्मसत्ता विषे इस्थित करता हों॥ इसी कारण ते बहु ढुंढ ह सरीर मुक्त को प्रापत होता है॥ हे मुनीश्वर इह जगत सभ संकल्प मात्र है॥ जैसा संकल्प करता है॥ तैसा आगे जगत होई भासता है॥ इह जगत सत्त भी नाहीं॥ अरु असत्त भी नाहीं॥ केवल ब्रह्म रूप है॥ तिस जगत भ्रम विषे अनेक आश्चर्य दृष्ट आवते हैं॥ पिता पुत्र होजाता है॥ मित्र सत्रु होजाता है॥ इस्त्री पुरुष होजाती है॥ अरु पुरुष इस्त्री होजाती है॥ अनेक बार असे होते हैं॥ कबहुं सतजुग विषे कलजुग बरतणे लागा॥ कबहूं कलजुग विषे सतजुग बरतणे लागा है॥ द्वापर विषे त्रेता त्रेता विषे द्वापर बरतणे लागता है॥ अरु इही वेद विद्या के अर्थ होते हैं॥ नाना प्रकार के आश्चर्ज भासते हैं॥ हे मुनीश्वर सहस्र चोकडीयां जुगां की बितीत होती है॥ तब ब्रह्मा जी का एक दिन होता है॥ सो दो दिन ब्रह्मा जो समाधि विषे जुडी रहा॥ सृष्ट नहीं रही॥ इह भी स्मरण आवता है॥ अरु कई देश काल क्रिया विचित्र रूप चित्त आवते हैं॥ क्या क्या कहों॥ इति श्री निर्वाण प्रकरणे विश्राम नवरीव तेने नाम सप्तदशम सर्गः॥ १७॥ २ ॥ वसिष्ठ उवाच॥ हे रामजी इस प्रकार जब उस कहा॥ तब मैं बहुडि ऐसा अर्थ कल्पवृछ ऊपर पूछता भया॥ कि हे पंछीयों के ईश्वर तूं चिरपर्जंत जगत विषे विवहार करता रहा॥ तेरे सरीर को मृत्यु क्यों न ग्रहण कीया॥ भुसुंड उवाच॥ हे मुनीश्वर तूं सर्वज्ञाता है॥ पर ब्रह्म जिज्ञासा करिके पूछता है॥ तां ते जैसे पतन ढुहलूआ॥ वेद अर्थ पढ कर विवहुड्युरां के आगे कहता है॥ तैसे मैं आगया मान करि कहता हों॥ हे मुनीश्वर जो मृत्यु किसको मारती है॥ अरु किसको नाहीं मारती॥ सो श्रवण करु॥ इच्छा रूपी जो मानी है॥ अरु वासना रूपी तंतु मा यप वापं हैं॥ इह माला जिसके कंठ विषे पडी होई है॥ तिसको मृत्यु मारती है॥ अरु जिसके कंठ विषे इह माला नाहीं पडी॥ तिसको मृत्यु नाहीं मारती॥ सरीर रूपी वृछ है॥ अरु चित्त रूपी सर्प तिस विषे रहा है॥ आसा रूपी अग्नि जिस वृछ को नाहीं जलावती॥ सो मृत्यु को बस नाहीं है॥ अरु रागद्वेष रूपी विषकरी हरण जो है चित्त रूप सर्प॥ अरु त्रिस्ना करी पडा चूरण होता है॥ अरु लोभ रूपी अविद्या करि पडा न छूटता है॥ तिसको मृत्यु ग्रास लेती है॥ जिसको इनका दुख नाहीं होता॥ तिनको मृत्यु नाहीं नष्ट करती॥ हे मुनीश्वर सरीर रूपी समुद्र है॥ अरु क्रोध रूपी बडवानल अग्नि करि पड जालता है॥ जिसको क्रोध रूपी अग्नि नाहीं जलावती॥ तिसको मृत्यु भी नाहीं मारती॥ जिसका मन परम पावन निर्मल पद विषे दृढ इस्थित विश्राम पाया है॥ तिसको मृत्यु नाहीं नास करती॥ हे मुनीश्वर काम क्रोध लोभ मोह भय तृस्ना॥ चिंता चंचलता॥ अभिमान प्रमाद आदिक दुख जिस विषे होते हैं॥ तिसको मृत्यु मारती है॥ अरु जिसको काम क्रोध लोभ मोहादिक रोग संसार बंधन का कारण बंध नाहीं सकते॥ अरु इह लोक विषे लिपायमान नाहीं होता॥ तिसको समाहित चित्त कहिता है॥ हे मुनीश्वर आधि बिआधि मल जिसको स्पर्श नाहीं करती॥ सो समाहित चित्त कहिता है॥ अरु देता लेता है॥ सभ कारज को करता है॥ अरु चित्त विषे अनात्म अभिमान स्पर्श नाहीं करता॥ तिसको समाहित चित्त कहीता है॥ अरु जो पुरुष इष्ट की वांछा नाहीं करता॥ अनिष्ट विषे द्वेष नाहीं करता॥ दोनो की प्रापत विषे सम रहता है॥ तिसको समाहित चित्त कहीता है॥ हे मुनीश्वर जेते कछु ईश्वर जीवान सुंदर पदार्थ हैं॥ सो सभ असत्त रूप हैं॥ चक्रवर्ती राजे अरु स्वर्ग विषे गंधर्व विद्याधर किन्नर देवते तिनकी यां राणीआं अरु इस्त्रीयों की सेना आदिक सभ नास रूप हैं॥ मनुष्य देत देवते असुर पहाड ताल समुद्र नदीयां॥ जेते कछु बडे पदार्थ हैं॥ सो सभ भी नासरूपी हैं॥ स्वर्ग लोक पृथ्वी लोक पाताल लोक जेताक जगत भोग है॥ सो सभ असत्त रूप है अरु असभ है॥ कोऊ पदार्थ श्रेष्ट नाहीं॥ न पृथ्वी का राज श्रेष्ट है॥ न देवत्यों का रूप श्रेष्ट है॥ ना नागों का पाताल लोक श्रेष्ट है॥ न कछु सास्त्रों का विचारणा श्रेष्ट है॥ न काव्यों का जानना श्रे

ष्ट है॥ न भगवान्न की कथा के क्रम वर्णन करणा श्रेष्ट है॥ जहां संतों का मन इस्थित है॥ तिसते श्रेष्ट कछु नाहीं॥ न बहुत जीवणा श्रेष्ट है॥ न सृत ता करि मरणा श्रेष्ट है॥ न नरकों विषे पडना श्रेष्ट है॥ न इन लोकों त्रीन विषे और पदार्थ श्रेष्ट है॥ जहां संतों का मन इस्थित सोई श्रेष्ट है॥ नाना प्रकार के जगत क्रम चल ही रूप है॥ जो ज्ञानवान पुरुष है॥ सो इह होई करि विसल पदार्थों विषे ना ही रमते॥ उह बहुत जीवणे की भी इच्छा नाहीं करते॥ इति श्री निर्वाण प्रकरणे भुसुंडोपाख्याने क नि करणं नाम अष्टादस सर्गः॥ १८॥ ॥ भुसुंड उवाच हे मुनीश्वर एक केवल आत्मा दृष्ट सर्व ते श्रेष्ट है॥ तिसके पाए ते सर्व दुख नास होते हैं॥ अरु परम पद को प्रापत होते हैं॥ सो आत्म चिंतवन सर्व दुखों को नास करता है॥ चिरकाल का जो तीनों तापों करि तपया जो जीव है॥ अरु जन्म मरनों मार्ग करि थका होता है॥ तिसके श्रम को दूर करती है॥ अरु तपत भी मिटावती है॥ सम्सत दुखों को सत्ता अनर्थ कारण हारी है तिसको नास करती है॥ जैसे अंधकार को प्रकास नास करता है॥ तैसे इसके अंतर सीतल प्रकास उपजावती है॥ हे भगवन्न असी जो आत्म चिंतवन है॥ सो सर्व संकल्प ते रहित है॥ सो तुम सरीखों को सुगम प्रापत है॥ परम सारी खों को कठन है॥ काहे ते जो समस्त कल्पना ते अतीत हो॥ हे मुनीश्वर तिस आत्म चिंता की सखी॥ ओर भी कोऊ इसको प्रापत होवै॥ तब इसका ताप मिट जावे॥ अरु महा सीतल होजावे॥ तिन्हां विषे एक सखी मुक्ति को प्रापत भई है॥ सो सर्व दुखों का नास करती है॥ सर्व सोभा यदे वणा हारी है॥ अरु जीवणे का कारण है॥ असी प्राण अपान चिंता मुक्ति को प्रापत भई है॥ वसिष्ठ उवाच॥ हे रामजी जब इस प्रकार मुझ को काक भुसुंड ने कहा॥ तब मैं जाणता हुआ भी क्रीडा के अर्थ बहुड पूछ्या॥ कि हे सर्व संसयों के छेदणे हारे चिरंजीवी पुरुष सत्तकहु॥ प्राण चिंता किसको कहते हैं॥ भुसुंड उवाच॥ हे सर्व वेदांत के वेता सर्व संसयों के नास कर्ता॥ मुझ को उपहास के निमित्त पूछता है॥ तूं तो सर्व कछु जाणता है॥ तथापि तुम सो सो इच्छा सें करता हों॥ पुर्वों के आरोक हरणा भी कल्याण के निमित्त है॥ भुसुंड को जीवणे का कारण अरु भुसुंड को आत्म लाभ देणे हारी प्राण चिंता कहते हैं॥ हे भगवन्न इह जो तुम देह रूप प्रत्यट मनोहर सुंदर देखते हो॥ सो तीनों के आसरे है॥ वात पित कफ तीनो थंभ अरु नव द्वारों करि संजुत है॥ तिस विषे पुर्यष्टका रूप कलत्र रहता है॥ परवानत है॥ पंच इंद्रियां आदि अनुचाच लगजिह्वा नासिका पंच इंद्रियां छह सन तन समबंध अहम अहंकार॥ इसका नाम पुर्यष्टका है॥ सो देह विषे इस्थित है॥ अहंकार रूपी गृहस्ती सभ की प्रतिपालना करता है॥ नेत्र आदिक द्वारे तिसके झरोखे हैं॥ अरु भुजा रूप दो प्रधान द्वारे हैं॥ तिनके बिलेणा अरु देणा होता है॥ दंत अरु लवणाक करिके मुख रूप द्वार सोभता है॥ अरु तिनरही जिह्वा रूप द्वारपाली सबद करती रहती है॥ अंगुली रूप लोक है॥ चरण रूप थंभे हैं॥ अस्तन रूप डेव ढी है॥ रकत मास नाडी करि वेष्टत है॥ इह विषे जाबडा इह है॥ सो हृदय थभा है॥ अरु पिष्ट रूप वडी कंध है॥ इस प्रकार की देह विषे दो हृदि कमल है॥ कोमल अरु उज्वल है॥ रूप मांस अरु स्थिक ऊर्ध्व अरु अधः पर स्पर मिलते हैं॥ तिस विषे प्राण वायु करि के इस सरीर रूप जंत्र पडा चेष्टा करता है॥ हे मुनीश्वर जो इस देह विषे प्राण इस्थित है॥ सो इस्थित हुआ॥ हृदय भाव को प्रापत हुआ है॥ अरु हृदय होकरि अनेक प्रकार सो इस्थित भया॥ ऊर्ध्व अरु अधः इधर ऊर्ध्व भाव को प्रापत भया है॥ इस कारण ते नाम नसंज्ञा को प्रापत भया है॥ प्राण अपान समान वियान उदान आदिक एक पवन की यां संज्ञा॥ विचित्र रूप चेष्टा करिके ज्ञानवान कहते हैं॥ सरीर विषे जो हृदय रूप जंत्र है॥ तिसते उठ करि अध ऊर्ध्व भाव को प्रापत होता है॥ जैसे चंद्रमा की यां किरणां का॥ अधः अरु ऊर्ध्व प्रकास होता है॥ अरु पसरता है॥ तैसे प्राणों का प्रकास सर्व अंग रहता है॥ जावणा आवणा लेणा उत्पति विनास आदिक सभ प्राणसक्ति करिके होता है॥ प्राण भाव करिके हृदे विषे अस्थित है॥ असे बड वानक हते हैं॥ सभ सरीरी की चेष्टा प्राण पवन के आसरे होती है॥ इसी को सक्ति नेत्रों विषे अस्थित होई रूप को ग्रहण करती है॥ अरु त्वचा विषे इस्थित होई करि स्पर्स को ग्रहण करती है॥ कोऊ सक्ति नासका भाव को प्रापत होती है॥ कोऊ वाणी बोलने विषे कोऊ स्रवणों विषे प्रापत होई करि सबद को ग्रहण करती है॥ हे भगवन्न बहुत कहणे करि क्या है॥ जेते कछु सरीर की चेष्टा है॥ सो प्राणों के आसरे होती है॥ जैसे जंत्री के आसरे जंत्र की चेष्टा होती है॥ तैसे जो अधः अरु ऊर्ध्व विचरता है॥ तिसको यां अपान अरु प्राण दो संज्ञा प्रधान प्रगट है॥ अरु सदा विचरते हैं॥ तिनको राति आवणे अरु जावणे की मे सदा देखता रहता हों॥ सीत अरु उसन रूप पथक है॥ आकास विषे आकास पथक है॥ कलेवर रूप जंत्र विषे सदा विचरते हैं॥ अरु श्रम ते रहित हैं॥ अरु हृदे रूप आकास के चंद्रमा अरु सूरज है॥ सीतल अरु उस्न

रूपक रिके सरीररूप पुरीविषे सदा विचरते हैं ॥ अरु सरीरकी पालना करते हैं ॥ मनरूप रथके
पयोग हैं ॥ अरु अहंकार रूप असवार के रहे जो रहे हैं ॥ हे मुनीश्वर प्राण अरु अपान है नाम जिसका
ऐसी जो नदी है ॥ सो सरीरविषे जाग्रत स्वपन सुषुप्ति मैं समान रूप सदा चलती है ॥ विद्यमान
है परंतु लखे नहीं परते हैं ॥ सूक्ष्म गति सो निरंतर वहती है ॥ तिसके आवरण अरु जावण की गति कों जो
ज्योंकात्यों जाणता है ॥ सो महात्मा पुरुष बहुरि जगत विषे जन्म मरन कों नहीं प्रापत होता
है ॥ इति श्री निर्वाण प्रकरणे प्राणविश्रांति नाम अष्टादश सर्गः ॥ १८ ॥ २ ॥ भुसुंड उवाच
हे मुनीश्वर तुम सम्यक ज्ञान जानते हो ॥ लीलाके निमित्त मुझकों पूछते हो ॥ तौ तुम्हारे पूछणे
सों मैं कहता हों ॥ यह प्राणरूप जो वायु है ॥ सो निरंतर पड़ी वहती है ॥ प्राण अपान अंतर बा-
हरि सदा संपद रूप है ॥ सो देहके अंतर बाहर प्राणायाम जाग्रत स्वपन सुषुप्ति विषे पड़ा होता
है ॥ तिस विषे जो सावधान है ॥ सो तत्ववेत्ता है ॥ तिनका भेद सुणो ॥ हे मुनीश्वर हृदे कोटर ते निकस
करि बाहर जके मन मुख होता है ॥ प्राण तिसकों बुद्धिवान रेचक कहते हैं ॥ द्वादश अंगुल पर्यंत
तवाहर कों जाता है ॥ तिसते उठ करि जव हृदे कोटि कों ऊरध आवता है ॥ तव तिसका नाम पूरक
होता है ॥ अपान जव प्राण विषे आनर स्थित होता है ॥ जव लग हृदे सों प्राण आया नाहीं ॥ तव
लग तिसका नाम कुंभक है ॥ सो जोगी को ही अनुभव होता है ॥ यह तीन प्रकार की रेचक पूरक कुं
भक कहि ॥ यह भी दोदो प्रकार की है ॥ एक अंतर पूरक रेचक कुंभक है ॥ एक बाह्य की पूरक रेचक कुं
भक है सो भी अंतर की कही ॥ अव बाहर की सुण ॥ मुषते बाहर द्वादस अंगुल पर्यंत अपान है ॥
तिसते उठकरि जव अंतर आवता है ॥ तव बाह्य का रेचक होता है ॥ हृदे ते उठकरि बाहर जाता है
तव बाह्य पूरक होता है ॥ तव प्राण वाह्य होता है ॥ उहां सो उठ्या नहीं तव लग बाह्य कुंभक हो
ता है ॥ अंतर अरु बाह्य षट प्रकार भई ॥ तिसके अंतर दो प्रकार की अवस्था और है ॥ सो सुण ॥ जव
प्राण जाइ करि अपान के अस्थान विषे अस्थित होता है ॥ अरु वाह्य ते अपान नहीं उदे भया ॥
उह जो प्राण के कुंभक साथ मिली अवस्था है ॥ तिसकों भी पूरक कहते हैं ॥ अरु अपान जव अं
तर आनकरि स्थित होता है ॥ अरु प्राण हृदे सों उठा नहीं ॥ यह जो अवस्था है कुंभक साथ मिली
हुई ॥ तिसका नाम अंतर पूरक कहे ॥ यह अष्ट प्रकार भई ॥ जो इसकों जाणता है ॥ सो जनन विनाश
दिष्ट नी है ॥ सो बहुरि दुषभागी नहीं होता ॥ इस सुभाव कवायु चरते है ॥ सो सुषदायक है ॥
जाग्रत स्वप्न सुषुप्ति चलते बैठे निरोध कों कदाचित मन हि प्रापत होती ॥ ऐवल ही इसका
भाव है ॥ जो कछु कारज करे भोजन करे सो करे ॥ परइसके आवण जावणका ज्ञान स्मरण
होवे ॥ तव तिसकों लपकछु नहीं होता ॥ इसके अस्थान को जानकरि तिस अस्थान विषे
चित्त को इस्थित करे ॥ तव केतेकु दिनो करि केवल पद को प्रापत होवे ॥ जो इसका अभ्यास
करता है ॥ तिसका चित्त विषयों को बंधमान नहीं होवेगा ॥ जैसे स्वान की षलड़ी की इच्छा ब्रा
ह्मणको नहीं होती ॥ भुसुंड उवाच ॥ हे मुनीश्वर इस दृष्टको आश्रम करि के मैं परमपद
कों प्रापत हुआ हों ॥ बंधन मुझको कोऊ नहीं होता ॥ बैठते चलते जागते सोवते सर्व ठो
र सर्व अवस्था विषे ॥ मेरा चित्त सावधान रहता है ॥ इस कारन ते बंधन कोऊ नहीं होता
हे मुनीश्वर प्राण अरु अपान के संस्मरण की गति मैं पाई है ॥ तिस जुगति करि मुझकों आत्म
बोध हुआ है ॥ तिस बोध करि मैं रेसद मोह आदिक विकार नष्ट होगए हैं ॥ अरु सांत रूप हु
इकरि स्थित भया हों ॥ हे मुनीश्वर तिसकों प्राण अपान की गति प्रापत भई ॥ सो सर्व आरंभ
कर्मों के करे ॥ अथवा सर्व आरंभों का त्याग करे ॥ परसदा सांत रूप है ॥ सुष साथ तिसका का-
ल विलीन होता है ॥ हे मुनीश्वर प्राण जो उत्पत्ति होते हैं ॥ सो हृदे कोटर ते उपजता है ॥ उपज क
रि द्वादश अंगुल पर्यंत बाहर जको जाता है ॥ तहां जाइकरि स्थित होता है ॥ तिस ठोर ते अ
पान रूप होइ करि उदे होता है ॥ सो अंतर आवता है ॥ हृदे विषे आइकरि स्थित होता है ॥ हे मु
नीश्वर बाहर जआकाश के सनमुख जो प्राण जाता है ॥ सो अग्नि स्वरूपवत उष्ण होता है ॥ अरु जो
हृदे आकाश के सन मुख आवता है ॥ सो सीतल नदी के प्रवाहवत आवता है ॥ अपान जो है
सो चंद्रमा रूप है ॥ अरु बाहर ते अंतर आवता है ॥ अरु जो अंतर ते बाहर जाता है ॥ सो प्राण
अग्नि रूप सूर्य रूप है ॥ प्राण वायु हृदे आकाश कों तपावती है ॥ अरु अन्न कों पचावती है
अरु अपान जो है ॥ सो हृदे कों सीतल करता है ॥ चंद्रमा की न्याई ॥ हे मुनीश्वर अपान रूप चंद्र
मा जव प्राण रूप सूर्य विषे लीन होता है ॥ तहां सांत तत्व है ॥ तिस विषे मन इस्थित होवे
तव बहुरि सोक को न प्रापत होवे ॥ अरु प्राण रूपी सूर्य जव अपान रूपी चंद्रमा के घर विषे
जाइ लीन होता है ॥ तिस अवस्था विषे मन इस्थित होवे ॥ तव बहुरि जनम का भागी न होवे ॥ हे

मुनीश्वर सूर्य रूपी प्राण है ॥ इसने अपने स्वजे भाव कों त्यागा ॥ अरु अपान रूपी चंद्रमा कों जव
लग नाहीं प्रापत भया ॥ तिस अवस्था के देस काल कों विचारे ॥ सव बहुरि सोक कों न प्रापत होवे
सर्व भरम नास होजावे ॥ अरु द्वादश अंगुल पर्यंत जो आकाश है ॥ तिसते अपान रूप चंद्रमा
उपज करि हृदे विषे प्राण रूप सूर्य विषे लीन होता है ॥ अरु सूर्य भाव कों जव लग प्रापत नाहीं
होता ॥ तिसके मध्य भाव अवस्था विषे जिसका मन लागा है ॥ सो परमपद कों प्रापत होता है
हृदे विषे चंद्रमा अरु सूर्य के उदे अस्तभाव का जव ज्ञाता होवे ॥ अरु इनका आधार रूप जो है आ
त्मा तिसकों जाने ॥ तव मन बहुरि नाहीं उपजता है ॥ मुनीश्वर प्राण अपान रूपी जो हृदे आकाश
विषे सूर्य अरु चंद्रमा उदे अरु अस्त होता है ॥ तिनका जो प्रकाशक है ते विषे भासकर देवे है ॥ ति
सकों जो देषता है ॥ सो ई देषता है ॥ अरु बाहर जो सूर्य का प्रकाश प्रकाश होता है ॥ कवहूं अंधकार
होता है ॥ तव प्रकाश के उदे हूए तम के क्षीण होए कछु सिधता नाहीं प्रापत होती ॥ पर जो हृदे
का तम दूर होता है ॥ तव परम सिद्धता प्रापत होती है ॥ बाहर के तम नष्ट हूए लोकों का प्रका
स होता है ॥ अरु हृदे के तम नष्ट हूए ॥ आत्म प्रकाश उदे होता है ॥ अरु अज्ञान अंधकार का अभा
व होता है ॥ अरु परमपद कों जाणकरि मुक्त होता है ॥ प्राण अपान की जुगति जाणे ते तन मन
छूट जाता है ॥ भुसुंड उवाच ॥ हे मुनीश्वर जो अपान रूपी जो चंद्रमा अरु प्राण रूपी जो सूरज
है जो जन्म विनाश उदे अरु अस्त पड़े होते हैं ॥ जव प्राण रूपी सूरज हृदे कोटर ते उदे होइ करि बाह
र कों गमन करता है ॥ तव उसी छिण अपान रूपी चंद्रमा विषे जाइ लीन होता है ॥ इह अपान उ
दे होआवता है ॥ अरु जव अपान रूपी चंद्रमा हृदे कोठ विषे सूरज रूपी प्राण वायु विषे आनर स्थि
त होता है ॥ तो उसी छिन विषे प्राण रूप सूरज उदे होता है ॥ प्राणों के अस्त होए ॥ अपान उदे
होता है ॥ अरु अपान के अस्त हुए प्राण उदे होता है ॥ जैसे छाया के अस्त हूए धूप उदे होती है ॥ धू
प के अस्त हूए छाया होती है ॥ तैसे प्राण अपान की गति है ॥ हे मुनीश्वर जव हृदे कों दिते प्राण
उदे होता है ॥ तव प्राणों का रेचक होणे लगता है ॥ अरु अपान का पूरक होणे लगता है ॥ जव
जाइकरि अपान विषे इस्थित हुआ ॥ तव अपान का कुंभक होता है ॥ तिस कुंभक विषे जव इ
ह इस्थित होता है ॥ तव बहुरि तीन तापों कर विनाष्टि न पाता ॥ जव अपान का रेचक होता है ॥
तव प्राण का पूरक होणे लागता है ॥ अपान जव जाइ इस्थित होता है ॥ तव प्राणों का कुंभ-
क होता है ॥ तिस विषे जव इस्थित होता है ॥ तव बहुरि तीन तापों करि समपाइमान नहीं होता
हे मुनीश्वर प्राण अरु अपान के अंतर जो शांत रूप आत्मतत्व है ॥ जिस विषे जव इस्थित होता है ॥ तव
न पाइमान नहीं होता ॥ तव अपान आनइ स्थित होता है ॥ अरु प्राण उदे नाहीं भया ॥ तिस अवस्था
विषे जो साक्षी भूत सत्ता है ॥ सो आत्मतत्व है ॥ जिस विषे जव अस्थित होता है ॥ तव बहुरि सोक वान
नाहीं होता ॥ तव प्राण जाइ अस्थित होता है ॥ अपान के अस्थान विषे ॥ अरु अपान जव लग उदे
नाहीं भया ॥ तहां जो देसकाल अवस्था है ॥ तिस विषे मन अस्थित होवे ॥ तव मन का मनत्व भा-
व जाता है ॥ बहुरि उपजता नाहीं ॥ हे मुनीश्वर प्राण जो अस्त होता है ॥ अपान विषे ॥ अरु अपान उदे
नाहीं हुआ ॥ उह जो पूरक साथ मिली कुंभक है ॥ अरु अपान अरु प्राण विषे इस्थित भई ॥ प्राण ज
व लग उदे नाहीं हुआ ॥ उह जो पूरक साथ मिला हुआ कुंभक है ॥ तिस विषे जो शांत तत्व है ॥ सो
आत्मा का स्वरूप है ॥ सो सुष है ॥ परम चैतन्य है ॥ जो इसकों प्रापत होता है ॥ सो बहुरि सोकवान
नहीं होता ॥ हे मुनीश्वर पुष्प विषे जैसे गंध होती है ॥ सो पुष्पों कों गंध साथ प्रयोजन होता
है ॥ तैसे प्राण अपान के अंतर जो अनुभव तत्व इस्थित है ॥ तिस साथ प्रयोजन है ॥ सो न प्राण
है अपान है ॥ तिस अनुभव आत्मतत्व की हम उपासना करते हैं ॥ प्राण लय कों प्रापत होता
है ॥ अपान कोट विषे अरु अपान प्राण कोट विषे लय होता है ॥ तिस प्राण अपान के मध्य वि
षे जो चिदात्मा है ॥ तिसके हम उपासना करते हैं ॥ हे मुनीश्वर प्राणों का जो प्राण है ॥ अरु अपान
का अपान है ॥ जीव का जीव है ॥ अरु देह का आधारभूत है ॥ ऐसा जो चिदात्मा है ॥ तिसकी हम उ
पासना करते हैं ॥ अरु जो सर्व प्रकाशों का प्रकाश है ॥ सर्व पावनों का पावन है ॥ अरु सर्व भाव अभा
व पदार्थों का अपणा आप है ॥ तिस चिदात्मा की हम उपासना करते हैं ॥ जो पवन परस्पर हृदे वि
षे संघट रूप है ॥ तिस विषे जो इस्थित साक्षी रूप है ॥ अरु बाहर अंतर सभ ठोर रही है ॥ तिस
चिदात्मा की हम उपासना करते हैं ॥ जव प्राण अस्त होता है ॥ अरु अपान उपज्या ॥ ऐसा जो
नासिका के अग्र विषे स्थित आकास है ॥ तिस विषे जो मन तिन आनंदता है ॥ तिस मनतिन आनं-
दता की हम उपासना करते हैं ॥ जो प्राण अरु अपान के उत्पत्ति का अस्थान है ॥ अंतर बाहर सर्व ठो

रनेंव्याप्याहै॥ सभजोगाकलाकाआधारथनाहै॥ तिसचिततत्वकीहमउपासनाकरतेहैं॥ जोप्रा
णअपानकेरथपरआरूढहै॥ अरुमनकासरूपहै॥ तिसचिततत्वकीहमउपासनाकरतेहैं॥
हेमुनीश्वरजोसंपूर्णकलाकलंकतेंरहितहै॥ अरुसर्वकलाजिसकेआश्रेहै॥ ऐसाजोअनुभ
वतत्वहै॥ सर्वदेवताजिसकोंसंरणाकोंप्राप्तहोतेहैं॥ तिसआत्मतत्वकीहमउपासनाकरतेहैं
॥ इतिश्रीनिर्वाणप्रकरणेप्राणायामसमाधिवर्णनंनामएकनविंशोसर्गः॥ ९१॥ भुसुंडउवा
च॥ हेमुनीश्वरजीइसप्रकारमैंप्राणसमाधिकोंप्राप्तहूआहौं॥ इसक्रमकरिकेमैंआत्मपदकों
प्राप्तहूआहौं॥ इसनिर्मलदृष्टकोंआश्रयकरिकैइस्थितहौं॥ एकनिमेषभीचलायमाननाहीं
होता॥ सुमेरपर्वतकीन्याईअस्थिरहौं॥ चलताहूआभीस्थिरहौं॥ जाग्रतविषेंभीसुषुप्तहौं॥
सुप्तविषेंभीइस्थितहौं॥ सर्वदाआत्मसमाधिविषेंलगारहताहौं॥ विचियनकदाचितनाहीं
होता॥ हेमुनीश्वरनितअरुअनितभावकरिइस्थितजोजगतहै॥ तिसकोंत्यागकरिमैंअंत
रमुखअपणेआपविषेंइस्थितहौं॥ अरुप्राणअपानकीकलाजोतुमारेसाथविदमानकहीहै
सोतिसकासदाऐसेहीप्रवाहचल्याजाताहै॥ तिसविषेंअजतनसमाधिहै॥ इसकरिमैंसदा
सुखीरहताहौं॥ कष्टकछुनाहींहोता॥ अरुजिसकोंइहकलानाहींप्राप्तभई॥ सोकष्टकरताहै॥
हेमुनीश्वरअज्ञानीजोजीवहै॥ महाप्रलयपरजंतसंसारसमुद्रविषेंपडेइवतेहैं॥ निकलकरी
वहुडइवतेहैं॥ इसीप्रकारघटीगोतखातेहैं॥ अरुजिन्होंपुरुषोंपुरुषार्थकरिआत्मपदपायाहै
सोसुखसाथविचरतेहैं॥ हेमुनीश्वरभूतकालकीमुझकोंचिंतानाहीं॥ अरुभविष्यकालकीइ
छानाहीं॥ वर्तमानविषेंयथाप्राप्तरागद्वेषतेंरहितहौं॥ इनकरिविचरताहौं॥ अरुसुषुप्तकी
न्याईइस्थितहौं॥ नातेंकेवलरूपइस्थितहौं॥ भावअरुअभावपदार्थोंतेंरहितहौं॥ अपणेआप
विषेंअस्थितहौं॥ इसकारणतेंचिरजीवताहौं॥ प्राणअरुअपानकीकलाकोंसमकरिकैस्वरू
पविषेंस्थितहौं॥ इसकारणतेंदुखरहितजीवताहौं॥ आजइहकछुमैंपायाहै॥ अरुयहकाल
मैंपावोंगा॥ इहचिंताइरहीगईहै॥ इसकरिनिरदुखजीवताहौं॥ नकिसीकीउस्ततकरताहौं
नकिसीकीनिंदाकरताहौं॥ कदाचितअरुसर्वकोंआत्मरूपदेखताहौं॥ इसकारणतेंसुखी
जीवताहौं॥ इष्टकीप्राप्तविषेंमैंहरखमाननहींहोता॥ अरुअनिष्टकीप्राप्तविषेंसोकवा
ननाहींहोता॥ इसकारणतेंनिरदुखचिरजीवताहौं॥ मैंपरमत्यागकीयाहै॥ सर्वआत्माभावदे
खताहौं॥ जीवभावदूरहोगयाहै॥ इसकारणतेंअदुखजीवताहौं॥ भुसुंडउवाच॥ हेमुनीश्वर
मनकीचपलतामिटगईहै॥ अरुरागद्वेषदूरहोगयाहै॥ अरुमनसांतकोंप्राप्तभयाहै॥ ति
सकारणतेंअरोगजीवताहौं॥ जरामृतुसुखदुखकाष्टअरुसंपदाइस्त्रीअरुपदार्थविषेंअरा
गितिसवनेंसर्वत्रसमभावदेखताहौं॥ तातेंनिरदुखजीवताहौं॥ आजइहपायाहै॥ इहआगे
प्राप्तहोवेगा॥ इहचिंतारूपीजोजरासरहै॥ तिसतेंरहितसुखीजीवताहौं॥ हेमुनीश्वरज
रामरणाकेदुखविषें॥ अरुराजलाभकेसुखविषेंसोकअरुहर्षतेंरहितहौं॥ समभावकरि
इस्थितहौं॥ तातेंनिरदुखजीवताहौं॥ इहमेरेवांधवहै॥ अरुइहअन्यहै॥ इहमैंहौं॥ इहमेरा
है॥ इहकल्पनामुझकोंकछुनाहीं॥ तातेंसुखीजीवताहौं॥ अहारकरताहौं॥ विवहारकरता
हौं॥ वेवताचलताहुवतास्पर्शकरतास्वासलेताहौं॥ परइहजोअभमानहै॥ मैंदेहहौं॥
इसअभिमानतेंरहितसुखीजीवताहौं॥ इससंसारकेडोरतेंसुषुप्तरूपहौं॥ अरुसंसारकी
गकोंदेखताहौं॥ जोहैताहीं॥ यहआस्चर्यहै॥ इसकारणतेंनिर्दुखजीवताहौं॥ हेमुनीश्व
रसदासर्वदाकालसर्वप्रकारसर्वपदार्थोंविषेसमवुद्धहौं॥ विषयतामुझकोंकछुनाहीं
भासती॥ नकिसीकरिसुखीहोताहौं॥ नदुखीहोताहौं॥ जैसेहाथपसारीये॥ तोभीसरीरहै
अरुसकोचीये॥ तोभीसरीरहै॥ इसप्रकारमैंसर्वआत्माआपकोंजाणाहै॥ तातेंमुझकोंदु
खकोऊनाहीं॥ मेरीवोलीअरुतिस्वैस्थिरथअरुकोमलसमकोंदेखेअरामहै॥ सर्वजोअ
सेदेखताहौं॥ इसकारनतेंनिर्दुखजीवताहौं॥ वरनोंतेंआदिमस्तकपरजंतदेहविषेंमु
झकोंममतनाहीं॥ अरुअहंकाररूपीविकडसोंनिकसाहौं॥ इसकारणतेंअरोगजीवता
हौं॥ कारजकरताअरुभोजनकरताभीमैंहरखआवताहौं॥ परमेरामनविषेंनिहकर्मता
हुहहै॥ इसकारणतेंमैंनिरदुखजीवताहौं॥ हेमुनीश्वरसमर्थकरिकेकारकरो॥ तोभीमुझ
कोंअभिमाननाहींहौ॥ अरुदारिद्रीहोवों॥ तवसंपदासुखकीइछानाहींहोती॥ किसीविषें
आसक्तनाहींहोता॥ इसकारणतेंअदुखजीवताहौं॥ इसअसक्तरूपीसरीरकेनासहूए॥ अ



भिमाननाहींहोता॥ अरुभूतोंकासमुद्रसभअसतरूपहै॥ अरुआत्मसतरूपहै॥ ऐसेज्ञानकरि
मैंइस्थितहौं॥ इसकारणतेंमैंसुखीजीवताहौं॥ आसारूपीफासीतेंमुक्तचित्तकीहतसमाहितहौ
मैंइस्थितहौं॥ इसकारणतेंमैंसुखीजीवताहौं॥ भुसुंडउ
ईहै॥ अनात्माविषेंआत्मअभमानकीरतनाहींकरतो॥ इसकारणतेंसुखीजीवताहौं॥ सुखविषेंअरुफलवतप
वाच॥ हेमुनीश्वरजीमैंजगतकोंअसतजाणाहै॥ अरुआत्माकोंसतजाणाहै॥ तिसकारणतेंनिरदुखजीवताहौं॥ सुखकोंपा
वतकछुजाणाहै॥ इसजगतविषेंसुभअसुभदुखहौं॥ तिसकारणतेंनिरदुखजीवताहौं॥ सर्वकायरसमित्रहौं॥ इसकार
रकारिसुखीनाहींहोता॥ अरुदुखकोंपाइकरिदुखीनाहींहोता॥ अरुसंपदाविषेंसभजगतकामित्रहौं॥
णतेंमैंनिरदुखजीवताहौं॥ आपदाविषेंअचलचित्तहौं॥ नपरछिनमैंहौं॥ नकोऊअन्य
भावअभावकरज्योंकात्योंहौं॥ इसकारणतेंसदासुखीजीवताहौं॥ निसकारणतेंसुखीजी
हौं॥ नकोऊमेराहै॥ नमैंकिसीकाहौं॥ इहभावनामेरेचित्तविषेंदृढहै॥ तिसकारणतेंसुखीजी
वताहौं॥ वहुडकैसेहौं॥ मैंहीजगतहौं॥ मैंहीआकाशहौं॥ देसकालक्रयासभमैंहीहौं॥ इह
निश्चामुझकोंदृढहै॥ तातेंअरोगजीवताहौं॥ घटभीचेतनहै॥ पटभीचेतनहै॥ वटभीचेतनहै॥ रथ
भीचेतनहै॥ इहसभचेतनत्यतत्वहै॥ इहनिश्चामुझकोंदृढहै॥ सदाइसकारणतेंअदुखजीवताहौं॥ हे
मुनीसाहलइहसभकछुमैंतुझकोंकहाहै॥ भुसुंडनामकाकत्रिलोकीरूपीकमलोंकाभ्रमराहौं॥
तिसका॥ हेमुनीश्वरजैसामैंहौं॥ तैसातुमारेआगेकहाहै॥ सातुमारेआगेकामिद्धअर्थकहाहै॥ तुम
ज्ञानकेपारगामीहौ॥ वसिष्ठउवाच॥ हेभगवनआस्चर्यहै॥ आस्चर्यकेपाछेवहुडआस्चर्यहै॥ तुम
अवणाकाभूषणकहाहै॥ आत्मसतांतरूपवचनजोतुमकहेहैं॥ सोपरमविसमैकाकारणहै॥ हेभ
गवनतुमधन्यहौ॥ तुममहात्मापुरुषहौ॥ चिरजीवियोंकेमद्धविषेंसाक्षातुमझकोंहसवेअ
भासतेहौ॥ आजहमभीधन्यहूए॥ जोतुमसरीषेमहापुरुषोंकेनवचनआत्मउदेतेंरसप्रकास
णाहै॥ जैसेमैंपूछया॥ तैसातुमकहाहै॥ हेमुनीश्वरमैंसभभूमलोकदेख्याहै॥ अरुदिसागणदेखेहै॥
आकासलोकदेखेहै॥ पाताललोकदेख्याहै॥ त्रिलोकीदेखीहै॥ तुमसरीखेकोऊविरलाहै॥ जैसेवा
सवडत्योंविषेंमोतीयोंवालाविरलाहोताहै॥ तैसेतुमजैसेविरलेहै॥ भुसुंडउवाच॥ हेसाधआज
हमपवित्ररूपहूएहै॥ हमारेदिनआजपवित्रहोईहै॥ जोतुमसरीखेमुझकोआत्मकादरसनहूआहै॥ व
सिष्ठउवाच॥ हेरामजीइसप्रकारकहिकरिमैंकहा॥ हेसाधअवहमजातेहैं॥ हमारेमध्याह्नकासम
माहूआहै॥ सप्तऋषियोंकेमधजाताहौं॥ जवऐसेमैंकहा॥ तवकल्पवृक्षकोंलतातेंउठखडाहूआ॥ अ
रुसंकल्पकेहाथकरिकैउसनेस्वर्णकोपात्रकरिकैमोतीअरुरत्नोंकरिकैभयामुझकोंअर्घपाद
कीयापूजनकीया॥ जैसेत्रिनेत्रसदासिवकीपूजाकरतेहैं॥ तैसेंचरनोंतेंलेकरिमस्तकपरजंतमेरे
रापूजनकीया॥ अरुमैंउसकोंमननमानकीया॥ इसप्रकारकरपरस्परसनमानकीया॥ तवमैंउहांते
उठखडाहूआ॥ उडकरिआकासमार्गकोंउडया॥ जैसेपंछीउडताहै॥ तैसेमैंउडया॥ उहभीमेरेसा
थउडया॥ परस्परइहमदोनोंहाथपकडणकीये॥ एकजोजनपरजंतउहमेरेसाथचलागया॥ हेरा
मजीतवमैंउसकोंकहा॥ हेसाधतुमअवघरकोंफिरो॥ वारंवारउसकोंकहिकरिइस्थितकीया॥ मैंच
ल्यागयाजवलगमैंउसकोंदृष्टआवतावताकहा॥ तवलगउहदेखतारहा॥ जवदृष्टआवणेतेर
हा॥ तवउहअपणेअस्थानमोंजाइवैठा॥ मैंसप्तऋषियोंकेमंडलविषेंआइप्राप्तभया॥ अरु
धतीकरपूजनहूआ॥ हेरामजीइहभुसुंडकेवचनमैंतुझकोंआस्चर्यसुणायाहै॥ अवभीउ
ससुमेरकेसिंगऊपरजोकल्पवृक्षहै॥ तिसकीलताऊपरकल्पणरूपइस्थितहै॥ अरुआ
तमरूपहै॥ मानकरणेकोंजोगहै॥ अरुसदासमाधवानहै॥ ऐसापुरुषअवलगउहांहीइस्थित
है॥ हेरामजीइहमाराअरुउसकासमागमसतजुगकेजवदोसौवर्षवितीतहोएथे॥ तव
हूआथा॥ अवसतजुगादीणहूआहै॥ त्रेताजुगवर्तमानहै॥ तिसविषेंतुमउपजेहौ॥ हेराम
अवभीवर्षअष्टवितीतहूएहैं॥ जोहमाराअरुउसकामिलापहूआथा॥ तिसीवृक्षकीलताऊप
र॥ हेरामजीइहमैंतुझकोंभुसुंडकाइतिहासकहाहै॥ सोपरमउत्तमहै॥ तिसकोंविचारकरेगा
तवसंसारभ्रमनिवर्तहोजावेगा॥ इहमुनिवसिष्ठकीअरुभुसुंडकेकथाहै॥ जोनिर्मलबुद्ध
साथविचारेगा॥ सोभवरूपीसंसारकेभयतेंतरेगा॥ हेअनघनिहपापइहमैंतुझकोंभुसुं
डकाइतांतसभकहाहै॥ इसवोधकरिकैभुसुंडमहासंकटकोंतरयाहै॥ इसदृष्टाकोंतुमभी
आश्रयकरिकैप्राणोंकीजुगतकाअभ्यासकरो॥ तवतुमभीभुसुंडकीन्याईभवसमुद्रकेपार
कोंप्राप्तहोवेगा॥ जैसेभुसुंडज्ञानजोगकरिकैपावणजोगपदकोंपायाहै॥ तैसेतुमभीपा
वो॥ जैसेप्राणअपानकेअभ्यासकरिपरमतत्वकोंप्राप्तभयाहै॥ तैसेतुमभीअभ्यासकरीके॥

प्रापत होवो॥ विज्ञानदृष्ट जो तुमने श्रवण करी है॥ तिसी ऊपर चित्तको लगाईकरि आत्मपदको पावो
वहुरि जैसे इच्छा होवै तैसे करो॥ श्रीराम उवाच॥ हे भगवन दृष्टी विषे रूप अरूपी तुमारे ज्ञान
कीया किरणोंके प्रकास करि मेरे हृदे सों तमरूपी अज्ञान हर होगया है॥ अव प्रवुध हूआ हों॥ अपणे
आनंदरूप विषे इस्थित भया हों॥ अरु जाणने योग्य पदको जाणत भया हों॥ मानो हम राव सिद्ध भया
हों॥ हे भगवन इह जो तुम ब्रह्मांडका चरित्र कहा है॥ सो परम विसमेका कारण परमार्थ वोधके
निमित्त कहा है॥ तिस विषे सरीररूपी ग्रह रक्त मास अस्थिका किसने रचा है॥ अस कहाते उप-
जा है॥ अरु कैसे इह स्थित हूआ है॥ अरु कोन इस विषे स्थित है॥ वसिष्ठ उवाच॥ हे रामजी परमा-
र्थ तत्वके वोध निमित्त॥ अरु दोषोंके निवर्त अर्थ इह मेरे वचन है॥ सो तुम सुणु॥ अस्थि इस सरीररू-
पी ग्रहका थंभ है॥ अरु नव इसके द्वारे है॥ अरु रक्त मास साथ इह लेपन कीया है॥ सो किसी व-
णाया नाहीं॥ अभ्यासमात्र है॥ मिथ्याभ्रम करिके पड़ भासता है॥ जैसे आकास विषे दूसरा चंद्रमा भ्र-
म करिके भासता है॥ तैसे असत्तरूपी शरीर भ्रम करिके भासता है॥ हे रामजी जव लग अज्ञान है
तव लग देह सत्त भासता है॥ जव ज्ञान होता है॥ तव देह असत्तरूप भासता है॥ जैसे सुपन काल
विषे सुपनेके पदार्थ सत्त भासते है॥ अरु जाग्रत काल विषे सुपन असत्त भासता है॥ तैसे अज्ञान काल
विषे अज्ञानके पदार्थ देहादिक सत्त भासता है॥ ज्ञानकाल विषे असत्त हो जाता है॥ तैसे वुदवुदा
जाल विषे जलके अज्ञान करिके सत्त भासता है॥ जलके जाने ते वुदवुदा असत्त भासता है॥ तैसे दे-
ह अज्ञान काल विषे सत्त भासता है॥ आत्मा ज्ञान करिके असत्त हो जाता है॥ हे रामजी जैसे सूरज
कीयां किरणां विषे मरुस्थलकी नदी भासती है॥ तैसे आत्मा विषे देह भासती है॥ हे रामजी जे-
ता कछु जगत भासता है॥ सो सभ मिथ्या आभासमात्र अज्ञान करिके भासता है॥ अहं त्वं आदिक
कल्पना सभ मनमात्र मन विषे फुरती है॥ तैं इह कहता है देह अस्थि मास करि नाहीं रची संकल्प
मात्र है॥ संकल्प करि भासती है॥ संकल्पके अभावरूप तें देह नाहीं पाईता॥ हे रामजी सुपन विषे
जो देह धार करि दिसा नट पर्वत छदे घना फिरता है॥ जाग्रत हूए उह देह नेरीक हो जाती है॥ सो क-
छो देह सत्त नाहीं होती॥ जो जाग्रत विषे भी रहती॥ अरु मनोराज करिके जो स्वर्गको जाता है॥ अरु सुमे-
र विषे भ्रमता है॥ भूलोक विषे फिरता है॥ तव इह देह तैरीक होती है॥ वसिष्ठ उवाच॥ हे राम-
जी इन्हों स्थानो जैसे मनका फुरणा देह होइ भासता॥ सो असत्तरूप है॥ तैसे इह सरीर भी मनके फु-
रणेमात्र है॥ असत्त ही जाणना॥ इह मेरा धन है॥ इह मेरी देह है॥ इह मेरा देस है॥ इत्यादिक कल्प-
ना सभ मनकी रची हूई है॥ सभका वीज चित्त है॥ हे रामजी इह जगतको दीर्घकालका सुपना जा-
णु॥ और वास्तव तें जगत कछु नाहीं॥ जव अपणे वास्तव परमात्मास्वरूपको अभ्यास करिके जाण-
ता है॥ तव जगत ऐसेही असत्तरूप भासता है॥ हे रामजी मे पूर्व भी तुझको अज्ञानीके वचनो करी
कहा है॥ जो जगत सभ मनका रचा हूआ है॥ तातें इह जगत संकल्पमात्र है॥ चिरकालका जो अभ्या-
स हो रहा है॥ तिसकरि सत्त भासता है॥ जव दृढ पुरुष जतन करि आत्मअभ्यास होवै॥ तव असत्-
त्य भासे॥ हे रामजी जो भावना इसके भावना हृदे विषे दृढ होती है॥ तिसका अभाव सुगम नाहीं
होता॥ जव इसकी विपरीत भावनाका अभ्यास करिये॥ तव उसका अभाव हो जाता है॥ तैसे इह
मैं हों॥ इह मेरा है॥ इत्यादिक कल्पना हृदे विषे दृढ हो रही है॥ जव इसकी विपरीत भावना हो-
वे॥ आत्मभावना करिये तव उह मिट जावै॥ सर्व आत्मा ही पड़ भासै॥ हे रामजी जिसकी तीव्र अभि-
ला होती है॥ उही रूप इसका हो जाता है॥ जैसे कामी पुरुषको सुंदर स्त्रीकी कामना रहती है॥
तैसे ही इसकों सदा आत्मपदकी चिंता रहे॥ तव उही रूप हो जाता है॥ जैसे कीट भृंगी हो जाता है॥
जैसे दिना विषे जिस व्यापारका अभ्यास हो॥ रात्रको सुपने विषे भी उही देखता है॥ तैसे इसकों जि-
सका दृढ अभ्यास होता है॥ सोई अनुभव होता है॥ जैसे आकास विषे सूर्य तपता है॥ अरु मरु-
स्थल विषे जल होइ करि भासता है॥ जो जलका अभाव है॥ तैसे पृथिवी आदिक पदार्थ भ्रम क-
रिके भावते रहित भावरूप पड़ भासते है॥ जैसे नेत्र दूषण करिके॥ आकास विषे तरवरे मोरपछ-
वत भासते है॥ तैसे अज्ञान करिके जगतजाल भासता है॥ हे रामजी इह जगत सभ आभासरू-
प है॥ स्वरूपके प्रमाद करिके भय अरु दुःखको प्रापत होता है॥ जव स्वरूपको जाणता है॥ त-
व भ्रम भय दुःख तें मुक्त होता है॥ जैसे सुपन पुरुष विषे चित्तके भ्रम विषे सिंह ते भय पावता है॥ ज-
व जाग्रत स्वरूप चित आवता है॥ तव सिंहका भय निवर्त हो जाता है॥ तैसे आत्मज्ञान करिके नि-
रभय होता है॥ जव वैराग्य अरु अभ्यास करिके निर्मल हूआ आत्मपदको प्रापत होता है॥ तव वह

इच्छाभकों नाहीं प्रापत होता॥ अरु रागद्वेषरूपी मल इसकों नाहीं ग्रहण करता है॥ तैसे वहुड॥
मल नाहीं होता॥ अहं त्वं आदिक जेता कछु जगत भासता है॥ सो सभ आभासमात्र ही है॥ हे राम-
जी सत्य सत्त अरु असत्तको जाणो॥ असत्तको निरादर करि॥ अरु सत्तका अभ्यास करि॥ तव चित्त
सर्व कल्पनाते रहित होता है॥ अरु निष्कंटक पदको प्रापत होता है॥ जो तत्वज्ञान करि स-
म्यकदर्सी हूआ है॥ तिसको जगतके इष्ट पदार्थ पाए ते हर्ष नाहीं होता॥ अरु अनिष्टको पाए ते सो-
क नाहीं करता॥ न किसीकी उस्तुत करता है॥ न किसीकी निंदा करता है॥ अंतर तें सीतल शांतरू-
प हो जाता है॥ जो कोऊ वंधु मृतक होगया॥ तो उसका विलाप इमान क्यों होणा॥ उसने मरणा ही
था॥ जो अपणी मृत्त आवे॥ तो अव अपसरीर छूटणा है॥ तो इह थाके तन पाईमान होणा॥ अरु जो
संपदा आन प्रापत होती है॥ अरु उसका हर्ष मान नाहीं होता॥ काहे ते जो कछु तो भोगणा था॥
हर्ष किसका होणा॥ अरु दुःख आन प्रापत होवे॥ तव क्या सोक करणा॥ सरीरका व्यवहार
सुख दुःख आवता जाता है॥ इह अमिट है॥ जो अपूर्णकी याकर्मे उत्पत्ति होती है॥ तव भी सो-
क क्यों करणा॥ वसिष्ठ उवाच॥ हे रामजी जो सत्त है॥ सो असत्त नाहीं होता॥ अरु जो अ-
सत्त है॥ सो सत्त नाहीं होता॥ वहुरि रागद्वेष किस निमित्त करणा॥ जिसको ऐसे हूआ है॥ न मैं
हों न जगत है॥ न पृथवी है॥ तो भी सोक कैसा करणा॥ अरु जो देह ते अन्य है॥ सो चेतन तत्र है॥ चेत-
न्नका तो नास नाहीं॥ तव सोक किस निमित्त करिये॥ हे रामजी दुःख तो किसी प्रकार नाहीं॥ त-
व लग विचार नाहीं॥ तव लग दुःख होता है॥ विचार कीये ते दुःख काऊ नाहीं॥ सम्यकदरसी जो
मनीस्वर है॥ सो सत्तको सत्त जाणता है॥ अरु असत्तको असत्त जाणता है॥ इस कारण ते दुः-
ख नाहीं पावता॥ अरु जो असम्यकदरसी है॥ अज्ञान करिके दुःख पावता है॥ जैसे दिनके अंत वि-
षे मंडल सीतल हो जाता है॥ तैसे सम्यकदरसीका अंतर सीतल होइ जाता है॥ जिसको कर्ते-
व्य विषे कर्त्तृत्व अभिमान नाहीं॥ सो सम्यकदरसी है॥ हे रामजी जेते कछु जगतके पदार्थ है॥
तिनको अंतर ते अभ्यासमात्र जाण॥ अरु वाहर ते जैसे आचार होवे तैसे करु॥ अथवा तिसका भी
त्याग करु॥ निरभय होइ करि इस्थित हो॥ मैं चिदाकास हों॥ नित्य सर्ववत्त हों॥ अरु सर्व तें रहि-
त हों॥ ऐसे अभ्यास करि एकांत निर्मल आपको देखेगा॥ अथवा ऐसे धार जो न मै हों॥ न इह
भोग है॥ न अर्थरूप जगत अडंवर है॥ अथवा ऐसे धार जो सभ मैं ही हों॥ नित्त सुध चिदात्मा हों
आकासरूप है॥ मेरे ते इतर कछु नाहीं॥ मैं ही अपणे आप विषे इस्थित हों॥ इन्हों दोनो पछों-
विषे जो इच्छा होइ सो धारु॥ तुझको सिधताका कारण होवेगा॥ अरु अभासमात्र जगतको जा-
ण॥ पर इह भी कल्पकरूप है॥ इस चित्त वनको भी त्याग करि तूं निराभास हो॥ तूं चिदाकास आ-
निर्भै है॥ सर्वव्यापी है॥ अरु सर्वतें रहित है॥ अभ्यासको त्याग करि निर्मल अद्वैत होइ रहु॥ अथ-
वा विधि निषेध दोनोको आश्रय करि॥ वसिष्ठ उवाच॥ हे रामजी क्रियाको करो॥ पर राग द्वेष ते र-
हित होवो॥ जव राग द्वेष नष्ट होवेगा॥ तव उत्तम पदार्थको व्रह्म आनंदको प्रापत होवेगा॥
जो सर्वका अधिष्ठान है॥ तिसको पावेगा॥ हे रामजी तिसका हृदा रागद्वेषरूपी अग्नि करि वि-
पड़ा जलता है॥ तिसको संतोष अरु वैराग आदिक गुण नाहीं प्रापत होते॥ जैसे दग्ध हूए भून-
लवन विषे हरण नाहीं प्रवेस करता॥ तैसे राग द्वेष आदिक वाले हृदे विषे संतोष आदिक
नाहीं प्रवेस करते है॥ हे रामजी हृदारूपी कल्पतरु है॥ जो ऐसा हृदा रागद्वेष आदिक सर्प करि हीन है
तिस तें कोन पदार्थ है॥ जो प्रापत न होवै॥ सहृदे ते सभ कछु प्रापत होता है॥ इह अर्थ है॥ हे रामजी
जो वुधवान है॥ सुभ आचारवान भी है॥ पराक्रमका पाता भी है॥ पर रागद्वेष संयुक्त है॥ सो गोदड़की-
माई नीच है॥ तिसको धिक्कार है॥ जिन पदार्थोंके पावणे निमित्त इह जतन करता है॥ सो तो आवते
जाते है॥ धनको एक दाको ऊ और करता है॥ स्त्रीको ऊ और जाता है॥ भोगताको ऊ और है॥ तो रागद्वेष कि-
सका करिए॥ जो कछु आरव्ध है॥ सो अवस्य होता ही है॥ धनके निमित्त क्या अर्थ जतन करिए॥ वांध-
व अरु मित्र आवते है॥ वहुरि जाते भी है॥ जैसे समुद्र विषे तरंगका आश्रय वुधवान नाहीं लेता॥ तैसे
जगतके पदार्थोंका आश्रय ज्ञानवान नाहीं लेते॥ भाव अभावरूपी परमेसुरकी माया है॥ संसारको
रचना स्वप्नेकी न्याई है॥ तिस विषे जो आसक्त होते है॥ तिनको सर्पणी वलतें इवती है॥ धन वांधव जग वा-
स्तव ते मिथ्या है॥ अज्ञान करिके सत्त भासते है॥ वसिष्ठ उवाच॥ हे रामजी जो आदि न होवे॥ अरु अं-
त भी न रहे॥ अरु मध्य विषे भासे॥ तिसको भी असत्त जाणिये॥ जैसे आकास विषे फूल असत्त है॥ तैसे
समारकी रचना असत्त है॥ जैसे गंधर्वनगर सुंदर भासता है॥ अरु नास हो जाता है॥ जैसे स्वप्न नगर दी-

षे कालका भासता है ॥ सो भ्रम रूप है ॥ तैसे इह जगत असत्य रूप भ्रम मात्र संकल्प रूप अभ्या-
सके वसतें दृढता को प्रापत भया है ॥ कैसा जो आकारवान भासता है ॥ सो आकार तें रहित आकास
रूप है ॥ अरु आत्म पद सुभ्र मकी न्याई अद्वैत रूप है ॥ तिस सुभ्र स्वरूप पद तें जब गिरता है ॥ तब
दीर्घ स्वप्न रूप संसार को देषता है ॥ हे रामजी अग्यान रूपी जो निद्रा है ॥ तिसकरि अपणे सुभाव
तें गिरिया जो है ॥ सो संसार रूपी स्वप्न भ्रम को देषता है ॥ जब अग्यान रूपी निद्रा का अभाव होवे
तब अपणे आत्म राज पद को प्रापत होता है ॥ जैसे सूरज को देषकरि कमल प्रफुलत होता है ॥ ते
सें ग्यान करि सुभ गुण फुल्लते है ॥ आत्म रूपी सूरज के माहि ॥ सर्व दुषों तें रहित है ॥ जो पुरुष निद्रा
मो होता है ॥ सो स्वच्छ मत वचन करि ताहीं जागता ॥ बडे सब्द अरु जल डारणे करि जागता है ॥ सो
मैं तुम को सब की न्याई जगाइ करि वचनो रूपी जल की वरषा करि है ॥ ग्यान रूपी सीतलता सहि
त वचन है ॥ तिन्हो वचनो करि के श्रवण ग्यान रूपी जागृत बोध को प्रापत भया है ॥ ऐसे ग्यान करि
जगत को भ्रम रूप देषेगा ॥ हे रामजी तत्त्व को जन म है ॥ न स्त न है ॥ न कोऊ दुष है ॥ सभ संकल्प नकोऊभरमहै
तें रहित आत्म पुरुष अपणे आप विषे स्थित है ॥ सम है ॥ शांत है ॥ सुभ्र की न्याई तेरी रहत है ॥ अ
ति विस्तार सम सुद्ध अपणे स्वरूप विषे स्थित है ॥ इस प्रकार जब वसिष्ठजी वचन कहे ॥ तब रा
मजी सम संत चेतन तत्त्व विषे विश्राम को पावता भया ॥ अरु परम आनंद को प्रापत भया ॥ और
जो सभा वैठी थी ॥ सो भी वसिष्ठजी के वचन श्रवण करि के सभ आत्म समाधि विषे स्थित होइ र
है ॥ वोलणे का अवसर शांत होगया ॥ आकास विषे जो भासता सब्द था सो सांत होगया ॥ पिं
जरयो विषे जो पंछी वोलते थे ॥ सो भी शांत होगए ॥ तूसी भए ॥ वन के जो वादर थे ॥ सो भी वृषन
मुणाकरि इस्थित होइ रहे ॥ सर्व ओर ते शांत होइ रही ॥ जैसे अर्ध रात्र समे भूमलोक शांत रूप होजा
ता है ॥ तैसे सभा के लोक सूले होइ रहे ॥ अरु वचनों को विचारणे लागे ॥ जो कछु उपदेश मुनीस्वर
को या है ॥ एक घटी पर जंत शांत चित्त को धारते भये ॥ तिसके अगो वहुड वसिष्ठजी वोलते भए ॥
वसिष्ठ उवाच ॥ हे रामजी तूं अव सम्यक प्रवुद्ध हुआ है ॥ अरु अपणे आप विषे स्थित भया है जो
कछु जाणया है ॥ तिसके अभ्यास का त्याग नाही करणा ॥ इसी विषे दृढ रहणा ॥ हे रामजी संसार रू
पी चक्र है ॥ तिसका नाभि स्थान चित्त है ॥ तिस चित्त नाभि के इस्थित हूए ॥ चक्र भी इस्थित होजा-
ता है ॥ इस संसार रूपी चक्र का तीषणा वेग है ॥ जद्यपि रोकता है ॥ तब भी फुरणे लागता है ॥ तांतें
दृढ अभ्यास बल करि के इसको रोकिये ॥ संतो का संग अरु सत्य शास्त्रों का वचन जुगत वुद्ध कर
रोकिता है ॥ हे रामजी अग्यान करि जो देव कल्या है ॥ तिसको त्याग करि अपणे पुरुषार्थ को आ
श्रे करो ॥ इसकरि परम शांत पद को प्रापत होता है ॥ ब्रह्मा ते आदि लेकरि अरु चीटी पर जंत सभ
अग्यान रूपी संसार चक्र है ॥ सो असत्य रूप है ॥ भ्रम करि के सत्य की न्याई होइ भासता है ॥ तिसको त्या-
ग करु ॥ हे रामजी असत्य रूपी पदार्थों विषे जो राग अरु द्वेष करते है ॥ सो मूर्ष है ॥ तिन तें चित्र-
का पुरुष भी श्रेष्ट है ॥ जो इष्ट विषय प्रापत होती है ॥ तव हर्ष करि के प्रफुल्लत होते है ॥ अरु अ-
निष्ट प्रापत होती है ॥ तब राग द्वेष करते है ॥ अरु चित्र के पुरुष को राग द्वेष किसी विषे नाही ॥ इस
कारण तें मैं कहता हो ॥ जो चित्र का पुरुष इन तें श्रेष्ट है ॥ अरु इह आधि व्याधि करि के पडे जलते है
इह चित्र पुरुष सदा ज्यों का त्यों रहता है ॥ अरु चित्र का पुरुष तव नास होवे ॥ जो आधार भूत को ना-
श करिये ॥ अधिष्टान के नाश विना नाश नाही होता ॥ अरु इह पुरुष अविनाशी के आधार है ॥ ति
सका नास होता नाही ॥ अरु मूर्षता करि के आपको नास होता मानते है ॥ तांतें चित्र के पुरुष तें
भी तुछ है ॥ अरु मनो राज संकल्प रूप देह इस स्थूल देह तें श्रेष्ट है ॥ जैतें कछु दुष इसको होते है ॥ सो
बडे काल पर्जंत होते है ॥ अरु मनो राज का दुष हूआ ॥ वहुड और संकल्प के आए तें इसका अभाव
होजाता है ॥ तांते थोडा दुष है ॥ संकल्प देह ते भी स्थूल देह तुछ है ॥ हे रामजी थोडे काल ल-
ते देह हुए है ॥ तिस विषे दुष भी थोडा है ॥ अरु जो दीर्घ संकल्प रूप देह है ॥ सो दीर्घ दुष को ग्र-
हण करता है ॥ तांतें महानीच है ॥ हे रामजी इह देह भी संकल्प मात्र है ॥ सो न सत है ॥ न असत
है ॥ तिस कि भोगों निमित्त मूरख जतन करते है ॥ अरु कलेस पावते है ॥ अरु देह अभिमान करि
इसके सुष साथ सुषी होते है ॥ अरु दुष साथ दुषी होते है ॥ इसके नष्ट होए तें आपको नष्ट होता मानते है
पर देह के नष्ट हूए पुरुष का नाश नाही होता ॥ जैसे मनो राज के छीण हूए नाश हूए पुरुष नाश ना-
ही होता ॥ जैसे द्वितीय चंद्रमा के नाश हूए चंद्रमा का नाश नाही होता ॥ तैसे इस देह के छीण हूए दे-
ही पुरुष का नास नाही होता ॥ जैसे संकल्प पुरुष के नाश हूए पुरुष का नास नाही होता ॥ जैसे स्व-
प्न भ्रम के छीण हूए नास हूए पुरुष का नास नाही होता ॥ तैसे देह के छीण हूए आत्मा का नास नाही होता

जैसे चन भूषन पत करि वन विषे जल भासता है ॥ अरु भले प्रकार निकट जाइ करि देषि-
ये ॥ तब जल का अभाव होजाता है ॥ देषणे का अभाव नाही होता ॥ तैसे संकल्प करि विना सह-
वाजो है देह ॥ तिस देह के नास हुए तुमारा नास तो नाही होता ॥ वसिष्ठ उवाच ॥ हे रामजी दी-
र्घ काल का स्वप्न मय जो है देह ॥ तिसके दुष अरु नास करि आत्मा को दुष अरु नास तो नाही हो-
ता ॥ जो चेतन आत्म सत्ता है ॥ सो नास नाही होता ॥ अरु स्वरूप तें चलाइमान भी नाही होता ॥
न विकार को प्रापत होता है ॥ सर्वदा सुद्ध अच्युत रूप अपणे आप विषे इस्थित है ॥ देह के नाश
हूए तिसका नास होता नाही ॥ अग्यान का इह अभ्यास हूआ है ॥ तब देह के धर्म अपणे विषे भास-
णे लागे है ॥ जब आत्मा का दृढ अभ्यास होवे ॥ तब देह अभिमान अरु देह के धर्म अभाव होजाता
है ॥ जैसे चक्र ऊपर कोऊ चढता है ॥ अरु यह भ्रमता है ॥ जब उतरता है ॥ तब भी केता क काल भ्रम-
ता भासता है ॥ जब चिर काल विनीत होता है ॥ तब इस्थित होजाता है ॥ तैसे देह रूपी चक्र इस
को प्रापत भया है ॥ अरु अग्यान करि के पडा भ्रमावता है ॥ तिसकरि आपको भ्रमता देषता है ॥ जे-
व अग्यान का वेग निवृत होता है ॥ तब भी कोई काल देह भ्रम भासता है ॥ तिसकरि जाणता है
मेरा नास होता है ॥ मुझको दुष होता है ॥ इत्यादिक कल्पना अग्यान दृढ करि भासती है ॥ तिस
भ्रम दृष्ट को धारज करि के निवृत करता है ॥ तब अभाव होजाता है ॥ हे रामजी जैसे जेवडी विषे
भ्रम करि के सर्प भासता है ॥ तैसे आत्मा विषे देह भासती है ॥ भ्रम सत है ॥ अरु जड है ॥ न कोसी कर्म
को करता है ॥ न मुझको होवणे की इच्छा करता है ॥ अरु देव परमात्मा भी कछु करता नाही ॥ इह सदा
सुद्ध द्रष्टा प्रकास है ॥ जैसे निर्वान दीप अपणे आप विषे इस्थित होता है ॥ तैसे सुद्ध रूप अप-
णे आप विषे इस्थित होता है ॥ अरु सर्व जगत को प्रकास करता है ॥ तिसके आश्रे लोक चेष्टा क-
रते है ॥ पर सूरज कछु करता नाही ॥ सभ का साक्षी भूत है ॥ तैसे आत्मा के आश्रे देहादिकों की
चेष्टा होती है ॥ अरु आत्मा साक्षी रूप है ॥ पाप पुण्य तें रहित है ॥ हे रामजी इह देह रूपी सुन्य घर
है ॥ तिस विषे अहंकार रूपी पिशाच कल्पता है ॥ जैसे बालक को पर्छावे विषे वेताल कल्पता है ॥
अरु भय को पावता है ॥ तैसे अहंकार रूपी पिशाच महानीच है ॥ अरु सर्व संत जनों करि निंद है ॥ ज-
व अहंकार रूपी वेताल निकसे ॥ तब आनंद होवे ॥ देह रूपी सुन्य घर विषे इसका निवास है ॥ जो
पुरुष इसका टहलू होइ रहता है ॥ तिसको इह नरक विषे ले जाता है ॥ तांतें तुम इसका टहलू
आ नाही होवणा ॥ इसके नास का उपाय करोगे ॥ तव आनंद को प्रापत होवेगे ॥ वसिष्ठ
उवाच ॥ हे रामजी इह चित्त रूपी उनमत्त वेताल है ॥ जिसको स्पर्श करता है ॥ तिसको अमृत कर-
ता है ॥ अर्थ इह जो तिसका धीरज अरु निश्चा विपर्जे करि देता है ॥ तिसकरि दुष को प्रापत क-
रता है ॥ अपणे स्वरूप तें गिराइ देता है ॥ जो बडे बडे सामर्थ मंत्र है ॥ सो भी इसके भय करि के सम-
माधि विषे इस्थित होते है ॥ जो किसी प्रकार अहंकार अभाव होवे ॥ हे रामजी अहंकार रूपी पि-
शाच जिसको स्पर्श करता है ॥ तिसको आप जैसा करि लेता है ॥ जैसे आप तुछ है ॥ तैसे आप-
को तुछ करि लेता है ॥ अरु उजाड विषे रहता है ॥ जहां सत्संग अरु सत्य शास्त्रों का विचार ना-
ही ॥ अरु आत्म ग्यान रूपी जन वास नाही ॥ तहां सून उजाड मंदिर रूपी देह विषे रहता है ॥ जो-
कोऊ ऐसे स्थान विषे प्रवेस करता है ॥ तिसको प्रवेस करि जाता है ॥ हे रामजी जिसको अहंका-
र रूपी पिशाच लागा है ॥ तिसका धन करि कल्याण नाही होता ॥ न वांधव मित्रों करि कल्या-
ण होता है ॥ अरु अहंकार पिशाच साथ मिल्या हूआ ॥ जेती कछु क्रिया करता है ॥ सो अपने
नास के निमित्त करता है ॥ अरु विष की वेली को उपजावता है ॥ अरु वधावता है ॥ हे रामजी
जो पुरुष विवेक अरु धीरज तें रहित है ॥ तिसको अहंकार रूपी पिसाच सीघ्र ही षाइ जाता
है ॥ सो कैसा है ॥ सर्प रूप है ॥ जिसको स्पर्श करता है ॥ तिसको भी सर्प करि छोडता है ॥ अरु
जिसको अहंकार पिशाच लगा है ॥ सो नरक रूपी अग्नि विषे कांटीयों की न्याई जलेगा ॥ अरु
अहंकार रूपी सर्प जिस देह रूपी वृक्ष की छिद्र विषे विष को धारी बैठा है ॥ तिसके निकट जा-
वेगा ॥ तिसको भी मृतक करेगा ॥ जो अहंकार सम भाव को प्रापत होवेगा ॥ सो मृतक समान होवे-
गा ॥ अहंकार रूपी पिशाच जिसको लगा है ॥ तिसको मलिन करता है ॥ स्वरूप तें गिराइ करि
संसार रूपी विकट विषे डारता है ॥ अरु बडी आपदा को प्रापत करता है ॥ जेती आपदा को अ-
हंकार प्रापत करता है ॥ सो वहुत वर्षों पर जंत में कहता रहे ॥ तव भी आपदा का वर्णन न क-
रि सकोंगा ॥ हे रामजी इह जो अभिमान है ॥ जो मैं हो ॥ अरु मैं मरता हो ॥ मैं दरथ होता हो ॥ मैं
दुषी होता हो ॥ मन्द बुद्धी ॥ इत्यादिक कल्पना जो मलन वि रतय उडती है ॥ सो भी अहंका-
र रूपी पिशाच की सैना है ॥ आत्म स्वरूप नित्य सुद्ध चिदाकास सर्वगत सचिदानंद है ॥ सो सम-

भकाअपणाआपहै॥अहंकारकेवसतेंआपकोंपरिछिनअल्पवुधीपड़ाजाणताहै॥जैसे
आकाससर्वगतअलेपहै॥तैसेआत्मासर्वगतहै॥अरुसर्वसाथअसंवंधहै॥अहंकारकेसंव
धरहतेहै॥तैसेआत्मासर्वगतहै॥हेरामजीग्रहणत्यागचलणावैठणाआदिकजेतीक
छुक्रियाहोवतीहै॥देहरूपीजंत्रअरुवायुरूपीरसडीकरिअहंकाररूपीजंत्रीपड़ाकरावता
है॥आत्मासदानिर्लेपहै॥सभकाअधिष्टानरूपहै॥कारजकारणतेरहितहै॥जैसेविरछकी
ऊंचाईकाकारणआकासहै॥अरुनिरलेपहै॥तैसेआत्मासर्वचेष्टाकाकारणहै॥अधिष्टान
भूतहै॥अरुनिरलेपहै॥जैसेआकासअरुपृथिवीसंवंधनाही॥तैसेआत्माअरुअहंकारका
संवंधनाही॥चित्तकोंआपजाणतेहै॥सोमहामूर्षहै॥आत्माप्रकासरूपहै॥नित्तहैसर्व
गहै॥विभुहै॥चित्तमूर्षहै॥जडहै॥आवर्णकरताहै॥वसिष्ठउवाच॥हेरामजीआत्मासर्व
गतहै॥चेतनरूपहै॥चित्ततुछहै॥अरुपथरवतजडहै॥इसकोहरकरो॥अरुमाइकानवा
इसकाअरुतेरासंवंधकछुनाही॥देहरूपीसून्नगृहविषेचित्तरूपीवेतालकानिवास
है॥तिसकोअपणावसकरताहै॥तिसकोवाधवभीनहीछुडाइसकते॥अरुशास्त्रभीना
हीछुडाइसकते॥अरुजिसकोदेहअभिमानकछुछोराहोगयाहै॥तिसकेछुडाव
णकोगुरुशास्त्रभीसमर्थहोतेहै॥जैसेअल्पविकडतेहरणाकोकाठलीजीताहै॥तैसा
स्त्रगुरुइसकोनिकासतेहै॥हेरामजीदेहरूपीजेतेकछुहैनमंदरहै॥तिनसभनोविषअ
हंकाररूपीपिशाचरहताहै॥कोऊदेहरूपीगृहअहंकारपिसाचविनाभीहै॥अरुसभसु
ष्यमिलयाहुआहै॥जैसेपिसाचअपवित्रअस्थानविषेरहताहै॥पवित्रअस्थानविषेनाही
रहता॥तैसेजहांसंतोषअरुअभ्यासविचारसतसंगहोताहै॥तहांअभावहोजाताहै॥तैसे
कछुसर्वरूपीमसाणहै॥सोचित्तरूपीवेतालकरिशरणहै॥अरुपरममलनमोहरूपवे
तालहै॥जगतरूपीमहावनहै॥तिसकेविषेजीवमोहकोप्रापतहोताहै॥जैसेवालकमोह
पावताहै॥हेरामजीतेंआपविंअपणाउदारकरु॥अरुसतविचारकरिकेंथीरजकोप्रापत
हो॥इहजगतरूपीउद्यानवनहै॥तिसविषेभूतरूपीमृगपड़ेविचरतेहै॥अरुविषारूपी
भोगोकाआश्रयकरतेहै॥सोत्रिणकेसेहै॥देषणेकोसुंदरभासतेहै॥परतिसकेनीचेगरत
है॥जैसेमृगरतनकेउपरहरयावलत्रिणअछादनहोतेहै॥तिनकोदेषमृगकेवालकभोजन
करणेलागतेहै॥अरुगरतविषेगिरपडतेहै॥तैसेजीवरूपीमृगभोगोंकोरमणीकजाणकरि
भोगणेलागतेहै॥तिनकेतृस्नाकरिनरकोंविषेजनमोविषेगिरपडतेहै॥अरुगानिकीन्याईजलतेहै
वसिष्ठउवाच॥हेरामजीतुमऐसेमतहोवणा॥जोकोऊभोगोंकीतृस्नाकरेगा॥सोनरक
रूपीगरतविषेगिरेगा॥तांतेतुमसंसारविरत्तकोत्यागकरि॥सिद्धविरतकोधारणा॥मोहरूपीह
स्तीकोंसिंहहोकरिअपनेतेंसाथविदारणा॥भोगोकीतृस्नातेंरहितहोवणा॥इहअर्थहै
भोगोंकीतृस्नावालेजीवजैसेदीपकरूपीअंगारेविषेपतंगोंकीन्याईभयकरतेहै॥तुमइनकी
न्याईनाहीविचरणा॥हेरामजीइस्त्रीयाजोरमणीकभासतीयाहै॥तिसकाअल्पकालवि
षेसपरसनेसीतलसुषदाईभासताहै॥पकविकडकीन्याईहै॥जैसेविकडकाल्यपसीतल
भासताहै॥परतुछहै॥तैसेइनकासपरसंसीतलभासताहै॥जैसेसडनविकडविषेगलगल
प्रजंतइवाहुआहै॥निकसनाहीसकता॥तैसेइहभीस्त्रीरूपीगलगलविषेफसयाहुआ॥
निकसनाहीसकता॥तांतेतुमसंतोषकीहूतनकोग्रहणकरो॥जोग्रहणकिसकोकरणाकह
तेहै॥अरुत्यागकरणाकिसकोकहतेहै॥अैसेविचारकरिकेअसतहूतनकोत्यागकरो॥अरु
आत्मातत्वकोप्रापतकरो॥हेरामजीइहजोदेहहै॥सोअपवित्रहै॥अस्थिमासरुधिरकरि
पूर्णहै॥अरुतुछहै॥अरुइसवसकाआकारहै॥देहकेतिमितभोगोकीइछाकरणी॥इसके
विषरसाथसिद्धकोऊनाहीहोता॥देहअंतरवाहै॥औरकविचेष्टाकरतीहै॥औरनेइसवि
षेप्रवेशकीयाहै॥इषकोओरग्रहणकरताहै॥इहसूधनाहै॥जोइषकाभागीइहहोताहै॥
संकल्पनेदेहकोरचाहै॥अरुप्राणोंकरिचेष्टाकरतीहै॥अरुअहंकाररूपीपिशाचइसविषे
प्रवेशकीयाहै॥अरुगर्जताहै॥मनकोहूतनसुषदुषकोग्रहणकरतीहै॥अरुइषीजीवहोता
है॥तांतेआश्चर्यहै॥हेरामजीपरमार्थसत्ताएकहै॥अरुसर्वसमानहै॥इतरसत्तातिसविषे
कोऊनाही॥जैसेपथरघनतऊहैहोताहै॥तिसविषओरकछुनाहीफुरना॥तैसेसत्तामात्रे
एकपरमात्माघनरूपहै॥औरजडचेतनभिन्नकोऊनाही॥मिथ्यासंकल्पकीरचनाहै॥जैसे
वालकपछावेविषेवेतालकल्पताहै॥तैसेसभकल्पनामनकीहै॥जैसेएगानेकीरसक
हूंगुडहोताहै॥कहूंघडहोतीहै॥कहूंसकरआदिकहोतीहै॥जैसेएकपरमात्मासत्तासमा

नसर्वहै॥तिसविषेजडचेतनकीकल्पनामिथ्याहै॥जवलगसम्यकदृष्टिनाहीप्रापतभई॥तव
लगजडचेतनकीदृष्टिभीहोतीहै॥जवज्ञानदृष्टिप्रापतहोतीहै॥तवभेदकल्पनासभमिट
जातीहै॥जैसीसीपीविषेरूपाभासताहै॥सोनसतहोताहै॥नअसतहोताहै॥तैसेआत्मा
विषेजडचेतनअसतअसतनेविलक्षणकल्पनाहै॥हेरामजीजोसतहै॥सोअसतनाहीहो
ता॥अरुजोअसतहै॥सोसतनाहीहोता॥आत्मासदासतरूपहै॥अरुअपणेआपविषेइस्थि
तहै॥द्वैतएककातिसविषेअभावहै॥जैसेपथरविषेअन्यसत्ताकाअभावहै॥नानारूपभास
ताहै॥तैसेद्वैतकछुनाही॥सदाअनुभवरूपहै॥विभागकल्पनातिसविषेकोऊनाही॥सदाअ
द्वैतरूपहै॥जेतीकछुभेदकल्पनाभासतीहै॥सोचित्तकरिभासतीहै॥जवचित्तकाअभावहोजा
ताहै॥तवजडचेतनकीकल्पनामिटजातीहै॥जैसेवंध्याकेपुत्रकाअभावहै॥जैसेआकासवि
षेवृछकाअभावहै॥तैसेआत्माविषेकल्पनाकाअभावहै॥वसिष्ठउवाच॥हेरामजीइहजो
कल्पनाहै॥सोइहचेतनहै॥इहजडहै॥इहउपजयाहै॥इहमिटजाताहै॥इत्यादिककल्पना
मिथ्याहै॥जैसेजेवडीविषेसर्पमिथ्याहै॥तैसेकेवलचिन्मात्रनिर्विकल्पआत्माविषेकल्प
नामिथ्याहै॥तैसेकेवलचिन्मात्रहै॥अरुसास्त्रगुरुभीजोआत्माकोचेतनकहतेहै॥अनात्म
कोजडकहतेहै॥सोभीवोधकेनिमित्तकहतेहै॥जगतदृष्टांतकरिइसकोआत्मसरूपविषे
इस्थितकरतेहै॥जवस्वरूपविषेदृढइस्थितहोवेगी॥तवजडचेतनकीभेदकल्पनाजाती
रहेगी॥केवलअचेत्यचिन्मात्रतत्वपदभासेगा॥इसप्रकारगुरुभीजडचेतनकेविभागकाउ
पदेसकरतेहै॥तोभीमूर्षनाहीग्रहणकरिसकते॥तोअपणसहीअचेत्यचिन्मात्रअवाच्यपदका
उपदेसकरे॥तवकैसेग्रहणकरे॥हेरामजीआश्चर्यदेषजोचित्तओरहै॥इंद्रियांओ
रहै॥देहओरहै॥देहकाकर्ताकोऊदृष्टनाहीआवता॥अहंकारकरिकेचेष्टाकरताहै॥इहजीव
असमर्थहै॥देहकोंअपनाआपजाणताहै॥अरुदुषकोप्रापतहोतेहै॥अरुजोविचारवानपु
रुषहै॥अरुआत्मपदविषेइस्थितहुएहै॥तिनमहांतभावोंकोकोऊक्रियादुषवंधननाही
करिसकती॥जैसेमंत्रजाणनेवालेकोंसर्पडषनाहीदेतेहै॥तैसेज्ञानवानकोंकर्मवंधन
नाहीकरते॥हेरामजीनतूंसीसहै॥ननेत्रहै॥नरक्तहै॥नमांसहै॥नअस्थिआदिकहै॥नम
नहै॥नतूंभूतजालहै॥तूंचेत्यतेरहितचेतनकेवलचिन्मात्रसाक्षीरूपहै॥सरीरविषे
समत्वकात्यागकरि॥नित्तसुधसर्वगतआत्मस्वरूपविषेइस्थितहो॥हेरामजीइसीदृष्टिकोआ
श्रयकरु॥अरुभेदनिकष्टदृष्टिकोआश्रयछोडकरिनासकरु॥जवनिकष्टदृष्टिनष्टहोवेगी॥तवआ
त्मआनंदप्रगटहोवेगा॥तिसआनंदकेपाएतेंअष्टसिद्धकाईस्वरजभीअनिष्टजाणकेतिन्या
गेगा॥अवओरदृष्टांतकेसीदृष्टिहै॥जामहामोहकोंनासकरतीहै॥अरुजोआत्मतत्वपाव
णाकुरुतेभीहै॥सोसाधकसिद्धिप्रापतहोवेगा॥वहुरकेसीदृष्टिहै॥जिसकानासनहीहोता॥अरु
दुषतेरहितआनंदरूपमेशिवतेंस्रवणाकरीहै॥पर्वतकैलासकीकंदराविषेसंसारदुषकेशां
तर्थचंद्रधारसदाशिवमुफकोकहीथी॥वसिष्ठउवाच॥हेरामजीमहाचंद्रमाकीन्याईसीत
लअरुप्रकासहै॥जिसकाऐसाजोहेहिमालयपर्वततिसकीकंदरा॥कैलासपर्वतनतहां
गोरीकेरमणेकाअस्थानमंदिरहै॥तहांगंगाजीकाप्रवाहफुवारोंविषेचल्याजाताहै॥
अरुमंदमंदपवनसुषदाईचलताहै॥अरुपंछीसवदकरतेहै॥अरुकुमारकेमोरपडेविच
रतेहै॥कल्पवृछलगेहुएहै॥महाउज्वलसुंदरसीतलकंदराहै॥मंदारविरछतमालविरछआदि
कलगेहुएहै॥तिनकेसाथफूलअैसेहै॥मानोस्वर्नमेघहै॥गंधर्वअरुकिंनरआइकरिगाइनकरते
है॥देवतोंकरमणीकसुंदरअस्थानहै॥तिसपर्वतऊपरभगवानसदाशिवविराजमानहै॥त्र्यने
त्रहै॥अरुहाथविषेत्रिशूलहै॥गणोंकरिवेष्टहै॥अरुभगवतीअरधअंगविषेविराजतीहै॥ऐसा
जोसर्वलोकोंकाकारणईस्वरहै॥सोतहांविराजताहै॥वहुरकैसाहै॥कामदेवकागरवनासकी
याहै॥अरुचंद्रमासहित॥जोस्वामीकार्तिकहै॥तिसकीछायापासप्रापतहै॥अरुमहाभयान
कदृनमसाणविषेतिसकानिवासहै॥तिसमहादेवकीमैपूजनाभया॥तिसपर्वतऊपरएक
कालमेंमैंनेएकरगोलाराषा॥महापवित्ररूपएककुटीवणाई॥तिसविषेयथासास्त्रतपकीयाके
रिमैनेएकरगोलाराषा॥एकएककमंडलुपासराषा॥वनकेविरछोंकेफूलमालाइपूजनकेनिमित्त
राषे॥जलपानकरो॥फलभोजनकरो॥वहुतेविद्यार्थीसिषसाथरहै॥तिनकोंपडावोसास्त्रकाजो
अर्थहै॥तिसकोविचारोब्रह्मविद्याकेपुस्तकोंकासमूहपडाहुआ॥अरुआगेअरुपीछेकेवा
लकविचरे॥इसप्रकारइमकालकोविनावें॥वेदकापढनाब्रह्मविद्याकोविचारणा॥अरुसास्त्र
अनुसारतपकरणा॥इहांगुणोंसेंजगतकेलोंसवनेंकजोविहरुसाविश्रामकरे॥तिसकेअनंतरए
कदिनसावणवदीअष्टमीअर्धरात्रविनीतभईहै॥अर्थपहररहोरभीवितीतहुईथी॥इहपहरग

अरुहतीथी॥ तिसकालमोमैंसमाधितेउतरकरिदेषताभया॥ दसोंदिसाकाहुमैनवतशांत
रूपहै॥ अरुत्रैसानमहै॥ जोप्रानीकाखेदखोवालाहै॥ अरुमंदमंदपवनचलताहै॥ गंगकेक
णकेगिडतेहै॥ मानोपवनहासीकरताहै॥ तिसीसमैंचंद्रमाआनंदेहहुआ॥ महासीतलअमृ
तरूपकिरणांकोप्रकासताभया॥ औषधीयोंकोरससाथपुष्टकरताभया॥ चंद्रमसोकमलवि
डआए॥ चकोरअमृतकीयांकिरणांकोपानकरणेलागे॥ मानोचंद्रमारूपहोगए॥ आनविषेम
गीतारयोंकीयांरूपरआनपडनेलागी॥ अरुसप्तऋषीसिरपरआनकरस्थितभए॥ मानोमैंर
तपकोंदेषणेआएहै॥ सप्तरिषीविषेपाछेलेजोतीनतारेहै॥ तिसकेमध्यविषेमेरामदिषहै
तहामैंसदाविराजताहो॥ तवचंद्रमाकरिसीतलअस्थानहोगए॥ पवनकरफूलगिडे॥ अरु
प्रकासहोवे॥ चंद्रमाकरमहासीतलस्थानहोगए॥ वसिष्ठउवाच॥ हेरामजीअर्धरात्रकेः
समैजोमैंसमाधितेउतऱ्या॥ तवमुझकोंतेजप्रकासदृष्टआवणेलागा॥ जैसमंदाचलपर्वतके
पाएतेछीरसमुद्रउछलयाहैआवता॥ मानोहिमालयपर्वतमूरतधारकरिआनइस्थितहुआ
है॥ मानोमाषणकापहाडपिंडआनइस्थितहुआहै॥ मानोसभसंषोकासमूहआनइस्थितः
भईहै॥ मानोसिपीयोंकासमूहआनइस्थितभईहै॥ मानोमोतीयोंकासमूहएकठाहोकरि
उडलागाहै॥ मानोगंगाकाप्रवाहउछलनेलागाहै॥ महातीक्षणप्रकासदृष्टआवे॥ प
रसीतलतिसकेप्रकासतेंसभदिसाउटचूणकरलीएहै॥ तवमेंदेषकरिआश्चर्यमानः
हुआ॥ जुक्याप्रकाइप्रलयहोवणेलागीहै॥ अरुवोपरदेषकरिविचारणेलागा॥ जुः
इहक्याहै॥ तवमेंदेष्याजोदेवतायोंकेगुरुईस्वरसदासिवजीचलआवतेहै॥ चंद्रकलाकों
धारेहूएहै॥ अरुगौरीभगवतीकेसाथहाथग्रहणकीयाहै॥ अरुगणोंकेसमूहकरि
वेष्टनहै॥ कानोंविषेसर्पपडेहूएहै॥ कंठविषेरुंडोकीमालापडीहै॥ सीसपरजटाहै
तिसपरकदमवृक्षोंकेफूल॥ अरुतमालवृक्षोंकेफूलचडेहूएहै॥ ऐसेसदासिवजीस
वकोंफलदेवणेहारेहै॥ तिनकोंमनकरिकेमैंदेषताभया॥ अरुमनहीकरिसदारहा
छकोंपहूपलेकरिअर्घपादकरतभया॥ अरुमनहीकरिप्रणामकरतभया॥ मनहीं
करिअर्घदछणादेतभया ऐसेकरिकेअपणेआसनतेंउठखडाहूआ अपणेसिषोंकोज
गावताभया॥ जगाईकरिअर्घलेकरिचलाजाइकरित्रिलोचनशिवकोंपहूपअंजलीदई
देकरिपरदछिणाकरी॥ प्रणामकीता तवमुझकोंचंद्रचूडकृपादृष्टकरिदेषतभया
अरुसुंदरमधुरवाणीकरीकहतभया॥ हदेकानमंतछकरताभया॥ सरणपडेकोंपरम
आनंदपदकोंप्रापतकरता॥ ऐसासदासिवजीमुझकोंदेषकरिकहतभया॥ ईश्वरउवाच
हेब्राह्मणलेआउअर्घपाद्य हमतेरेआश्रमविषेआतिथआएहै॥ तिहारापतमुझकोंकल्या
णताहूकेया॥ तेमुझकोंमहासांतरूपभासताहै॥ अरुमहासुंदरउजलतपकोलछमी
करितूसोभताहै॥ चलोहमतुमारेआश्रमकोंचले॥ हेरामजीमुझलोकेरस्थानविषेवै
षसदासिवजी सोऐसेकहिकरिउठिवईहूए॥ तवएकदेअपणेआश्रमविषेआए॥ कंदाविषेआन
इस्थितहूए॥ तवमैंवहुतअर्घपुहूपोंकरिचरणोंकीपूजाकरि॥ वहुडहाथोंकीपूजाकरी॥ इसप्रकार
चरनोंतेलैकरिसीसपर्जंतसर्वअंगोंकीपूजाकरी॥ वहुडगौरभगवतीकोंतेसेपूजनकीया॥ वहुड
गणोंकापूजनकीया॥ हेरामजीइसप्रकारभगतहूवेकजवमैंपारवतीअरुपरमेस्वरकापूजन
करीचुका॥ तवसदा सकलाथारीसीतलवाणीकरिमुझकोंकहतेभया॥ हेब्राह्मणनानाप्रका
रकेचितवरागवालीजोचितनकीवृत्तहै॥ सोतेरसरूपविषेविश्रामकोंपावतभईहैक्यों॥ अरुतुझ
कोंअवकल्याणहूआक्यों॥ अरुसंवितनेंतेरीआत्मपदविषेस्थितभईहैक्यों॥ अरुतुमारेसिषों
कीभीकल्याणताहैक्यों॥ अरुतुमारेपासजोहरणविचरतेहै॥ इहभीसुषसाथहैक्यों॥ अरुमं
दारविरछआदिकतुमकोंपूजाकेनिमित्तफूलफलभलेप्रकारभीदेतहैक्यों॥ अरुमंदाकिः
नीगंगाजोहै॥ सोतुमकोंभलेप्रकारस्नानकरावतीहैक्यों॥ अरुजलपानभलेप्रकारकराव
तीहैक्यों॥ अरुदेहकेइष्टअनिष्टआपतविषेंतुमषेदवानतोनाहीहोतेक्यों॥ अरुइसपर्वत
विषेक्रूरमकरिअनुचररहतेहै जवराषस॥ सोतुमकोंदुषनहीदेतेक्यों॥ अरुमेरेगणजोहै॥ ज
छनिसाचरहै॥ उहभीतुमकोंकष्टनाहीदेतेक्यों हेरघुनंदनइसप्रकारमुझकोंजवदेवसर्वा
छतप्रसनकहै॥ मैंतवउनकोंकहतभया॥ वसिष्ठउवाच॥ हेमनीस्वरत्रिनेत्रजीजोकल्याण
रूपहै॥ तिसतुझकोंसदैदासस्मरतेहै॥ तिनकोंइसलोकविषेअसाध्यपदार्थकोऊनाही॥ जोपाव
णाकठिनहोवे॥ अरुभयभीकिसीकानाही॥ जिसकाचितनुमारेस्मरणकरि॥ आनंदसोंसर्वआ
रतेहरणभयाहै॥ सोजगतविषेदीननाहीहोते॥ तेईदेसतेईजनोंकेस्थान॥ तेईदिसातेईपर्व

नवंदनाकरणेजोगहै॥ जहांएकांतवुद्धिवेदकरीतुमारास्मरणकरतेहै॥ हेप्रभोतुमारास्म
रणापूर्वपुन्यरूपीवृक्षकाफलहै॥ अरुवर्तमानपुण्यकासिंचनहै॥ भविष्यतपुण्यकावीजहै
तुमसमनकेपरममित्रहो॥ अरुसर्वआपदाकाहरणहारातुमारास्मरणाहै॥ सर्वसंपतरूपील
तावधावणेहारातुमारास्मरणाहै॥ हेप्रभोवडीमहिमाअरुवडेयोंतेवडेकर्मोंकेकारणाकाकां
रणतुमारास्मरणाहै॥ हेप्रभोविवेकरूपीफलकेतुमसमुद्रहो॥ अरुपुन्यरूपीरतनोंकीषानतु
मारास्मरणाहै॥ अज्ञानरूपीतिमरकानासकर्तासूरजोकासमूहहै॥ सोतुमारास्मरणहीतमअ
मृतकाकलसहै॥ अरुधीरजरूपीचांदनीकाचंद्रमाहै॥ अरुनिराचरणमोक्षकाद्वारतुमारास्म
रणाहै॥ हेप्रभोतुमारास्मरणारूपीअपूर्वदीपकउत्तमहै॥ चित्तकामंदिरजोहैसंसार॥ तिससर्व
कोंप्रकासताहै॥ हेप्रभोतुमारास्मरणाउदारचिंतामणीकीन्याईसर्वआपदोंकोंछेदणेहारा
है॥ अरुवडेउत्तमपदकोंदेणेहाराहै॥ हेप्रभोतुमारास्मरणएकछिणमात्रभीचित्तविषेः
स्थितहोवे॥ तवसर्वदुषअरुभयकोंनासकरताहै॥ अरुवरदाइकहै॥ तिसकरितुमारीन्याई
सुषसोंवसतेहै॥ वाल्मीकउवाच॥ इसप्रकारजवमुनीस्वरकहा॥ तवदिनकाअंतहूआ॥ सर्व
सभाउठीपरस्परनमस्कारकरिकेअपणेअपणेस्थानोंकोंगए॥ सूरजकीयांकिरणांइस्थित
भईयां॥ वहुडअपणेअपणेस्थानोंपरआईवैठ॥ वसिष्ठउवाच॥ हेरामजीइसप्रकारमैंकहा
तवगौरीभगवतीजगतमातामुझकोंकहतीभई॥ जैसेमातापुत्रकोंकहै॥ तैसेकहतभई॥ गौ
रीउवाच॥ हेवसिष्ठजीपतिव्रताजोअरुंधतीहै॥ सोकहाहै॥ जोपतिव्रतोंविषेप्रथमगणी
तीहै॥ तिसकोंलेआउ॥ जमेरीउहप्यारीसषीहै॥ तिससाथमैंकथासवदचरचाकरोंगी॥ वसिष्ठ
उवाच॥ हेरामजीजवइसप्रकारमुझकोंपारवतीकहा॥ तवमैंसीघ्रहीजाईकरिअरुंधतीकोंले
आया॥ उहदोनोंपरस्परचरचावार्ताकथासंवादविषेपरचीयां॥ अरुमैंविचारकरतभया॥ जोईः
स्वरमुझकोंप्रापतभयाहै॥ अरुपूछणेकाअवकासपायाहै॥ तातेंसर्वज्ञानकेसमुद्रकोंकछुपूछोसं
संदेहकोंहरकरो॥ हेरामजीऐसेविचारकरिकेमैंगौरीसिवकोंपूछतभया॥ जोमुझकोंकछुचंद्र
कलाधरकहाहै॥ सोतुझकोंकहताहों॥ जोमैंपूछयाहै॥ सोसुण॥ वसिष्ठउवाच॥ हेभगवनभू
तभविष्यवर्तमानतीनोंकालकेईस्वरअरुसर्वकारणोंकेकारणतुमारेप्रसादकरिकेमैंकछु
पूछणेकोंसमर्थहूआहों॥ सोप्रसन्नवुद्धिहोइकरिनिवर्तसीघ्रकहो॥ उद्वेगकोंत्यागकरिकहो
सर्वपापोंकेनासकरणेहारा॥ अरुसर्वकल्याणकोंवृद्धिकरणेहारा॥ देवअर्चनकाविधानमुझ
कोंकहो॥ ईश्वरउवाच॥ हेब्राह्मणउत्तमजोदेवअर्चनहै॥ जिसकेकीएतेंसंसारसमुद्रकोंतरजाइ
ये॥ सोसुण॥ हेब्राह्मणोविषेश्रेष्टदेवपुंडरीकदाजोविस्नहै॥ सोनाही॥ अरुत्रिलोचनजोसिवः
है॥ सोभीदेवनाही॥ अरुकमलतेंउपजयाजोहै ब्रह्मा सोभीदेवनाही॥ अरुसहस्रनेत्रइंद्रभीदे
वनाही॥ नदेवपवनहै॥ नसूरजहै॥ नअग्निहै॥ नचंद्रमाहै॥ नब्राह्मणहै॥ नषत्रीहै॥ नतूंहै॥ न
मैंहों॥ नदेवदेहहै॥ नचित्तहै॥ नकल्पनारूपहै॥ अरुअनंतअनादिचेतनतत्वरूपदेवहै॥ सो
देवहै॥ देवसवदकरीकहीताहै॥ तिसकाजोपूजनहै॥ सोईपूजनहै॥ तिसदेवकोंसर्वज्ञजाण
ना॥ जिसतेंइहसर्वहूआहै॥ सोसमताध्यानआत्मरूपहै॥ सर्वठौरविषेंतिसकोंदेषणा॥ एहीउ
सकापूजनहै॥ अरुजोतिसशिवतत्वकोंनाहीजाणते॥ तिनकोंआकारोंकीअरचनकहीहै॥
जैसेजोपुरुषजोजनपर्जंतनाहीचलसकता॥ तिसकोंएककोसदोकोसचलनाभीभलाहै
तैसेजोपुरुषअनंतदेवकीपूजानाहीकरिसकता॥ तिसकोंआकारोंकापूजणाभीभलाः
है॥ हेब्राह्मणजिसकीभावनाकोऊकरताहै॥ तिसकेअनुसारफलभोगताहै॥ सोपरछिन्नकी
उपासनाकरताहै॥ तिसकोंफलभीपरछिन्नप्रापतहोताहै॥ अरुजोअनंतअनादिअनं
तदेवकीउपासनाकरताहै॥ तिसकोंउहीपरमात्मारूपफलप्रापतहोताहै॥ हेसाधअनं
तफलकोंत्यागकरिअनंतकोंचाहतेहै॥ सोक्याकरतेहै॥ जैसेकोऊमंदारवृक्षकेवनकों
त्यागकरिकरंजूएकेवनकोंप्रापतहोतेहै॥ तैसेउहकरतेहै॥ सोदेवकैसाहै॥ अरुइसकीपू
जाकैसेकरिहोतीहै॥ सोसुण॥ तीनफूलहै॥ तीनफूलोंसाथतिसकीपूजाहोतीहै॥ एकवोध
एकसमता॥ एकसम इहतीनोंपुहूपहै॥ वोधनामहैसम्यकज्ञानहै॥ जोआत्मतत्वकोंज्यों
कात्योंजाणना॥ अरुसमनामहैजोसर्वविषेंपूर्णदेषणा॥ सामकाअर्थइहजोचित्तकोंनि
वृतकरणा॥ आनतत्वतेंइतरकछुनाऊरे॥ इनतीनोंफूलोंसाथशिवार्चनमात्रअमृतदेवकीपू
जाहोतीहै॥ हेमनीस्वरवोधसाम्यसमइनपुहूपोंकरिआत्मदेवकीपूजाकरणीहै॥ इहीदे
वकीपूजाहै॥ नहीआकारअरचनकरिअर्चाहोतीहै॥ आत्माजोसवितचिन्मात्रहै॥ तिसकों
त्यागकरिजोआरजड़ोंकीअरचनाकरतेहै॥ सोचिरपर्जंतकलेसकेभागीहोतेहै॥ हेब्रा॥

लक्षण जो ज्ञानतत्वरूप है॥ सो आत्मध्यानतें इतर रूढ जन अरु चानावाल कों कीडा वनमानते है॥
आत्मा भगवान एक देव है॥ सो सिव है॥ परम कारण रूप है॥ तिसकों ज्ञानहीं अरचना करि पूजते
है॥ सर्वदा॥ और पूजा कोऊ नाहीं॥ चेतन आकास अव्यय स्वभाव एक आत्माकों तुं जान॥ और पू
जा रूमक पूजा विपदि करि॥ आत्मदेव की पूजा नाहीं होती॥ वसिष्ठ उवाच॥ चेतन आकास
अव्यय स्वभाव एक आत्माकों जेसे इह जगत है॥ चेतन ही कों जीव आदिक भाव है॥ सो इह सभ
जगत चिदाकास रूप क्यों करि है॥ अरु जो सर्वदा चिदाकास ही रूप है॥ तो जीव आदिक भ्रम के
से हूआ है॥ इह कहो॥ ईश्वर उवाच॥ हे मुनीश्वर चेतन आकास प्रसिद्ध है॥ सर्व प्रहतनें रहित है॥
जो महा कल्प विषे सेष रहता है॥ सो आपही किंचन रूप होता है॥ तिस किंचन करि इह जगत हो
ता है॥ जेसे सुपने विषे चिदात्मा ही सर्व जगत रूप होइ करि भासता है॥ तेसे जाग्रत जगत भी स
भ चिदाकास रूप है॥ आदि सर्गतें लेकरि अरु इसका लय पर्जंत आत्मातें इतर का अभाव है॥ जेसे
सुपने विषे जो जगत भासता है॥ सो सभ चिदाकास रूप है॥ अरु इतर कल्पना कोऊ नाहीं॥ चिन्मा
त्र ही पदार्थ हूआ है॥ चिन्मात्र ही जगत है॥ चिन्मात्र ही आकास है॥ चिन्मात्र ही सभ जीव है॥ चि
न्मात्र सभ भूत है॥ सो भ्रम मात्र है॥ जेसे सुपने विषे किसी के अंग काटे॥ सो किसी काटे तो नाहीं॥
निद्रा दोष करिकै असे भासते है॥ तेसे इह जाग्रत जगत भी भ्रम मात्र है॥ हे मुनीश्वर आकास पर
म आकास ब्रह्म आकास इह जो जगत विषे नाम है॥ सो एक ही के नाम है॥ जेसे तरु पादप अरु वृ
क्ष एक ही के पर्याइ है॥ जेसे आकास परमाकास ब्रह्माकास तीनो एक ही के पर्जाइ है॥ जेसे
सुपने विषे संकल्प विषे माया मय भ्रम विषे अनुभव होता है॥ सो सभ चिदाकास रूप है॥
तेसे इह जाग्रत चिदाकास रूप है॥ जगत का रूप है॥ जेसे सुपनपुर विषे आकासतें इतर इतर
कछु नाहीं॥ तेसे जाग्रत सुपन भी आत्मतत्व होइ करि भासता है॥ आत्मातें इतर दुतीय वस्तु
कछु नाहीं॥ हे मुनीश्वर जेसे सुपने विषे चिदाकास ही घट पट आदिक होइ करि भासता है॥ ते
से उत्पत्ति प्रलय इस्थित आदिक जगत चिदात्मातें इतर कछु नाहीं॥ आत्मा ही असे भासता है॥ जे
से सुद्ध संवित मात्र तें इतर सुपन नगर विषे नाहीं पाईता॥ जेसे जाग्रत विषे अनुभव तें इतर
कछु नाहीं पाईता॥ हे मुनीश्वर भाव अभाव रूपी जो पदार्थ है॥ तीनो काल जगत भासता है॥
सो सभ चिदाकास रूप है॥ आत्मातें इतर कछु नाहीं॥ हे मुनीश्वर इह देव मैंने फकोंकहा है॥ सो
परमार्थतें कहा है॥ अरु तैं मै अरु सभ भूत जात जगत सभ का जो देह है॥ सो चिदाकास परमा
त्मा है॥ तिसतें इतर कछु नाहीं॥ जेसे संकल्प रूप सुपन पुरु विषे सरीर चिदाकास रूप होता है इ
तर कछु वरणा नाहीं होता॥ तेसे इह सभ चिदाकास रूप है॥ हे ब्राह्मण इस प्रकार इह सर्व विश्व के
वल परमात्मा रूप है॥ परमाकास ब्रह्म ही एक देव करि कहीता है॥ तिसका ही पूजना सार है॥
तिसतें ही सर्व फल प्रापत होता है॥ सो देव सर्वज्ञ है॥ अरु सर्व तिस ही विषे इस्थित है॥ अरु ता
स देव अजय परमानंद अखंड रूप है॥ तिसको साधना करिके पावना है॥ तिस करि परम सुख
को प्रापत होवणा है॥ हे मुनीश्वर तैं जाता हूआ॥ तिस कारणतें इस प्रकार की देव अर्चन मैं तु
फकोंकहै॥ अरु जो असम्यक दरसी बालक है॥ जिनकों निष्ठे आत्मक बुध नाहीं प्रापत भई॥
ये लव चित्त है॥ तिनकों धूप दीप पुष्प कमें आदिक अरचना कहीं है॥ आकार करिके कल्पत देव
की मिथ्या कल्पना कहीं है॥ हे मुनीश्वर अपणे संकल्प करि जो देव बणावता है॥ तिसको पु
ष्प धूप दीप आदिक करि पूजते है॥ सो भावना मात्र है॥ तिस करि तिकों संकल्प रचत फल भी
प्रापत होता है॥ सो बालक बुद्धां की अरचना है॥ जो तुम सरीषे है॥ तिनकों इह ही पूजा है॥ जो तु
मको सर्वात्म भावना करिके कही है॥ हे मुनीश्वर इह मारे मत विषे तो और देव कोऊ नाहीं॥ एक
परमात्मा ही देव है॥ तीनो भवनो विषे तिसतें और देव कोऊ नाहीं॥ सो सिव है॥ अरु सर्व पदतें
अतीत है॥ सर्व संकल्पतें उलंगवरतता है॥ अरु सर्व संकल्प का अधिष्ठान उही है॥ अरु देस का
ल वस्तु के परछेद तें रहित है॥ सर्व प्रकार सांत रूप है॥ एक चिन्मात्र निर्मल स्वरूप है॥ तिसकों दे
दकर के कहीता है॥ हे मुनीश्वर सो संवित सत्ता पंच भूतों की कल्पनातें अतीत है॥ अरु सर्व
भाव के अंतर उही इस्थित है॥ अरु सर्व कों सत्ता देवणहारा देव है॥ सर्व की सत्ता रूप रोगहारा भी
उही है॥ श्रीशिव उवाच॥ हे ब्राह्मण जो ब्रह्म सत अरु असत के मध्ये अरु असत के परा कही
ता है॥ सो देव परमात्मा है॥ महा सत्व सत्तासु भाव करिके सर्व को प्रापत भया है॥ अरु महा वि
तक करिके कहीता है॥ सो परमार्थ स्वरूप है॥ असे सर्व विषे इस्थित है॥ जेसे सर्व वृछों लता के अं
तर रस जल इस्थित है॥ तेसे सत्ता समान रूप करिके महा चेतन तत्व अरुंधती का है॥ अरु जो चित
तत्व तुरु विरूपापक है॥ अरु जो चेतन पारवती कान तत्व है॥ सो चेतन तत्व मेरा है॥ सो ई चितत्व

जगत त्रिलोकी का है॥ सो देव है और देव कोऊ नाहीं॥ अरु जो और इह सप्पाद संत जगत देव क
ल्पते है॥ सो भी चिन्मात्र सार है इतर सार कछु नाहीं॥ चिन्मात्र ही सर्व जगत का सारभू
त है॥ सोई अरचना करणे कों जोग है॥ तिसी तें सभ को फल की प्रापत होती है॥ सो देव
कहूं दूर नाहीं इस्थित है॥ अरु किसी को प्रापत होवणा कठन भी नाहीं॥ सर्व के देह विषे
इस्थित है॥ अरु सभ का आत्मा है॥ सो हरि के मह होवे॥ अरु दुष सो प्रापत के संहोवे॥ स
भ क्रिया भी उही करती है॥ भोजन भी उही करता है॥ स्वरण पालन भी उही करती है॥ उही स्वा
स लेता है तो है॥ सभ का ज्ञाता उही है॥ पुरयष्टका विषे प्रतिबिंबत होइ करि उही प्रका
सता है॥ तेसे पर्वत ऊपर चर अरु अचर की चेष्टा होती है॥ चलने बैठने इस्थित होते है॥
सो सभ का आधारभूत पर्वत है॥ तेसे मन सहित षट इंद्रियां की चेष्टा आत्मा के आश्र
होती है॥ तिस देव की यां सत्ता विवहार के निमित्त तत्ववेत्यां ने कल्पी या है॥ सो एक
देव चिन मात्र है॥ स्वरूप है॥ सर्वव्यापी है॥ निरंजन है॥ आत्मा है॥ ब्रह्म है॥ इत्यादिक नाम
ज्ञानवानों ग्रास्त्र बुद्धी उपदेस विवहार के निमित्त राषे है॥ हे मुनीश्वर जेता कछु विस्ता
र सहित जगत भासता है॥ सो सभ का प्रकास उही है॥ अरु सर्व तें रहित है॥ अरु निज स्व
रूप अद्वैत रूप है॥ सभ जगत विषे अनस्यूत है॥ जेसे वसंत रितु विषे नाना प्रकार के फूल वृछ
भासते है॥ अरु सर्व विषे एक ही रस व्यापी हूइ है॥ उही अनेक रूप होइ भासता है॥ तेसे एक
ही आत्म सत्ता अनेक रूप होइ करि भासती है॥ हे मुनीश्वर जेता कछु जगत है॥ सो आ
त्मा चमत्कार भासता है॥ आत्मतत्व विषे इस्थित है॥ कहूं आकास रूप होइ करि इस्थित है॥ कहूं
जीव रूप हूइ करि इस्थित है॥ कहूं चित रूप कहूं अहंकार रूप होइ करि इस्थित है॥ कहूं दिसा रूप
कहूं द्रव रूप॥ कहूं भाव विकार रूप॥ कहूं तम॥ कहूं प्रकास रूप होइ करि इस्थित है॥ कहूं स्थूल जंक
हूं जंछ॥ कहूं पृथिवी॥ कहूं जल॥ कहूं अगनि वायु आदिक स्थावर जंगम रूप करि उही इस्थित है॥
जेसे समुद्र विषे तरंग होते है॥ जेसे एक परमात्मा विषे त्रिलोकी है॥ श्रीशिव उवाच॥ हे मुनी
श्वर देवते अरु दैत मनुष्य आदिक सर्व एक देव विषे परे वहते है॥ जेसे जल विषे त्रिणा वहते है॥
तेसे परमात्मा विषे देवते आदिक वहते है॥ उही चेतन अनंत चेतन रूप होइ करि देतों को नास कर
ता है॥ जेसे जल सेत रूप होइ करि धूप को रोकता है॥ उही चेतन तत्व त्रिनेत्र मस्तक पर चंद्रमा
धारी हूए भसम रमाए हूआ॥ पारवती रूपी कमलनी के मुष का भ्रमर रूप होइ करि इस्थित होता
है॥ अरु उही चेतन विष्णु रूप जोता है॥ तिसके नाभि कमलतें उत्पत्ति हूआ॥ ब्रह्मा त्रिलोकी
वेद त्रयी रूप कमलनी यां को तलाव डा होइ करि इस्थित भया है॥ हे मुनीश्वर इस प्रकार एक
ही चित तत्व अनेक रूप होइ करि इस्थित भया है॥ जेसे एक ही रस अनेक रूप होइ करि इस्थि
त होता है॥ अरु जेसे एक ही स्वर्ण अनेक रूप होइ करि इस्थित होता है॥ तातें सर्व देहां विषे
एक चेतन रूप परमात्मा ही है॥ जेसे एक वृछ के अनेक पत्र होते है तेसे एक ही चेतन की यां सर्व
देह है॥ उही चेतन मस्तक पर चूडामणि धारणहारा त्रिलोकपति इंद्र होइ करि इस्थित भया है॥
देवता होइ करि भी उही इस्थित भया है॥ अरु दैत रूप होइ करि भी उही इस्थित भया है॥ मरणा उ
पजणा का रूप भी उही धारता है॥ तेसे एक समुद्र विषे तरंग के समूह उपजते है॥ अरु मिटजा
ते है॥ सो जल ही जल रूप है॥ तेसे उपजणा विनसणा चेतन विषे होता है॥ सो चेतन ही रूप है
अरु परमात्मा एक ही वस्त है॥ हे मुनीश्वर जो चेतन जो आदर्स है॥ तिस विषे जगत प्रतिबिंब हो
ता है॥ अपणे रचीं होई वस्तु कों आप ही ग्रहण करिके अपणे विषे धारता है॥ जेसे गर्भणी इ
स्त्री अपणे गर्भ कों धारती है॥ तेसे चेतन तत्व जगत प्रतिबिंब कों धारता है॥ हे मुनीश्वर सर्व क्रिया
उसी देव करि सिद्ध होती है॥ देखणा लेणा बोलणा चलणा सभ उसी करि सिद्ध होती है॥ सूरज आ
दिक प्रकास रूप उसी करि प्रकासते है॥ अरु उसी करि प्रफुलत होते है॥ जेसे नील कमल अरु
रक्त कमल सूरज करि प्रफुलत होते है॥ तेसें आत्मा करि अंधकार अरु प्रकास दोनो सिद्ध होते है
हे मुनीश्वर त्रिलोकी रूपी धूड है॥ अरु चेतन रूपी वायु करि पडी उडती है॥ जेते कछु जगत के आ
रंभ है॥ तिन सर्वों को चेतन रूप दीप प्रकास करता है॥ जेसे जल के सचने करिके वेली प्रफुलत
होती है॥ अरु फूल फल कों प्रगट करती है॥ तेसे चेतन सत्ता सर्व पदार्थों कों प्रगट करती है॥
सभ कों सत्ता देकरि सिद्ध करती है॥ हे मुनीश्वर चेतन ही करि जड की सिद्धता होती है॥ अरु चेतन
ही जड का अभाव करता है॥ जेसे प्रकास करि अंधकार सिद्ध होता है॥ अरु प्रकास ही करि अंध
कार का अभाव होता है॥ तेसे सर्व देहां चेतन करी सिद्ध होती है॥ अरु चेतन ही करि देहां का अ

भावहोताहै॥ चेतनभीउसीकरिहोताहै॥ सबभीउसीकरीहोता॥ हेमुनीश्वरश्रेसापदार्थ
कोऊनाही॥ जोचेतनविनाभीसिद्धहोवे॥ जोकोऊपदार्थहै॥ सोआत्माहीकरिसिद्धहोता
है॥ हेमुनीश्वरसरीररूपीहक्षहै॥ मूंदरहै॥ अरुवडेऊचेडालांसहितहै॥ परचेतनरूपी
मजरीविनानाहीसोभता॥ जैसेरसविनाहक्षनाहीसोभता॥ तैसेचेतनविनासरीरना
हीसोभता॥ वहणाचटनाआदिकजोविकारहै॥ सोभीएकआत्माकरिसिद्धहोतेहै॥ इह
जगतसभचेतनरूपहै॥ चेतनमात्रहीअपणेआपविषैस्थितहै॥ वसिष्ठउवाच॥ हेरामजी
इसप्रकारजबअसतरूपीवाणीकरिचित्तेनअमृतकोकहा॥ तबमैंअमृतरूपीवाणीकरिवऊ
हूइत्वनाभया॥ हेदेवजोसर्वगतचेतनदेवव्यापकरूपस्थितहै॥ अरुचेतनचहीवडेविस्तार
कोप्रापतभयाहै॥ तबइहप्रथमचेतनथा॥ सबचेतनतातेरहितस्थितहै॥ इहकल्पना
लोकविषैप्रत्यक्षअनुभवकेसेहोतीहै॥ सतकहो॥ ईश्वरउवाच॥ हेब्रह्मवेत्तावोविषेश्रेष्ट इह
महाप्रसनतुमकीयाहै॥ तिसकाउत्तरसुणो॥ इससरीरविषैदोचेतनस्थितहै॥ एकचेतनच
ऐतन्मुखकहीए॥ चंचलउछिविखेचलचेचलातन्यकाप्रतिबिंवमुखसरूपहै॥ एकनिरवि
कल्पपरमात्माहै॥ जोचेतनवलोनुमुखहृप्पसायामिलयाहै॥ सोजीवहै॥ संकल्पकेफुरणेक
रिकेअन्यकीन्याईहोगयाहै॥ वास्तवेतनओरकछुनाहीहूआ॥ परइहअपसंकल्पकेअनुभवकोग्रह
णकीया॥ इसकरीजीवरूपहूआहै॥ जैसेइस्त्रीअपणेसीलधर्मकोत्यागकरिदुराचारणीहो
तीहै॥ तबसीलताउसकीजातीरहतीहै॥ परइस्त्रीकास्वरूपनाहीजाता॥ तैसेचलोनमुखच
करिकेअनुभवजीवरूपहोजाताहै॥ परचैतन्यस्वरूपकात्यागनहीकरता॥ जैसेउफनसंक
ल्पकेवसतेएकछिणविषैओररूपहोजाताहै॥ तैसेचित्तसत्ताफुरणेभावकरिकेअन्यरूपहूआहै
हेमुनीश्वरजीआदिजोचित्तस्पंदचित्तकलाविषैहूआहै॥ तबसबदकोचेतनेतेआकाशहूआहै॥
वहुडसपर्शतनमात्राकाचेतनाहूआ॥ तबवायुप्रगटभयाहै॥ इसीप्रकारपंचतनमात्राकेफुरणे
करिपांचोतत्वहूएहै॥ वहुडदेशकालआदिकोंविभागहूआहै॥ तिसविषैजीवप्रतिबिंवहोता
है॥ वहुडनिश्चेविरतहूई॥ तिसकानामबुद्धिहूआ॥ वहुडअहंवृत्तफुरीतिसकानामअहंकार
हूआ॥ वहुडसंकल्पविकल्परूपफुरी॥ तबतिसकानाममनहूआ॥ चितवनाकरिकेचित्त
हूआ॥ वहुडसंसारकीभावनाहूईहै॥ तबसंसारकाअनुभवहूआ॥ अभ्यासकेवसतेसंसारभा
सणेलागाहै॥ जैसेविपर्जेभावनाकरिकेब्राह्मणआपकोंचंडालजाणनेलगजावे॥ तैसेभा
वनाकेविपर्जेकरिकेआपकोंजीवमानणेलागाहै॥ संकल्पनजडताकरिकेचेतनरूपतेंव
भावनाकोग्रहणकरिकेसंकल्पविषैवर्ततनाहै॥ अनेतसंकल्पमैजडताजीवताकोंप्रापत
होइकरिजडभावकोंग्रहणकरिकेदेहभावकोंप्रापतहोताहै॥ जैसेजलहृदजडिताकरिकेपा
षाणवतहोजाताहै॥ तैसेचेतनअनेतसंकल्पोंकरिजडदेहभावकोंप्रापतभयाहै॥ तबचित्त
मननमोहतहूआ॥ जडताकोआश्रयकरिकेसंसारविषैजनमलेताहै॥ मोहकोंप्रापतहूआ॥ त
साकरिकेपीडतहोताहै॥ कामक्रोधसंजुगतभावअभावविषैप्राप्तहोताहै॥ अपणीअनंतता
कोत्यागकरिकेप्रच्छनविकारोंविषैवर्ततनाहै॥ दुषदाअवगानिकरितपहूआ॥ तुच्छभावकोप्रा
पतहोताहै॥ भेदभावकोग्रहणकरिकेपरमदीहोरहताहै॥ हेमनीश्वरमोहरूपीजोचिकडहै
तिसविषैजीवरूपीहस्तीफस्याहै॥ भावअभावकरिसदाडलायमानहोताहै॥ जैसेजलविषै
त्रिणभ्रमताहै॥ तैसेअसाररूपीसंसारविषैविकारोंसंजुगतरागद्वेषकरितपतारहता॥ सांत
कोंकदाचितनाहीप्रापतहोता॥ जैसेजूथतेविछडया॥ एकमृगकष्टमानहोताहै॥ तैसेआवि
र्भावजन्मअरुमरणकरिकष्टमानहोताहै॥ अपणेसंकल्पकरिआपभयपावताहै॥ जैसेबा
लकअपणेपछावेविषैवेतालकल्पकरिआपभयपावताहै॥ तैसेजीवअपणेसंकल्पता
करिआपभयभीतहोताहै॥ अरुदुषसंकटोंकोपावताहै॥ आसारूपीफासीकरिवांधाहूआक
ष्टकोंपावताहै॥ कमकविकैनपाइमातहूआ॥ अनेकजन्मपावताहै॥ अरुभयविषैरहताहै
वालकहोताहै॥ तबमहादीनपरवसहोताहोइ॥ वहुडजवनअवस्थाविषैकामआदिकोंकेवस
आहै॥ इस्त्रिविषैचित्तरहताहै॥ अरुहृद्धअवस्थाविषैचिंताकरिमरानहोताहै॥ दुषकरिपडा
कष्टपावताहै॥ जवसूतनहीहोताहै॥ तवकर्मोंकेवसतेलेआजाताहै॥ वहुडजन्मताहै॥ तवग
र्भविषैदुषपावताहै॥ वहुडवालकअरुजोवनअरुहृद्धअरुसतनअवस्थाकोंपावताहै॥ इसिप्रका
रपडाभटकताहै॥ स्वरूपतेंभ्रमयाहूआइसस्थिरताकदाचितनाहीहोती॥ हेमुनीश्वरएकचित्त
सत्तासपंदभावकरीकेअनेकभावकोंप्रापतहोती॥ कहूदुषकरिरोदनकरताहै॥ कहूसुषको
भोगताहै॥ कहूस्वर्गविषैदेवताहोताहै॥ पातालविषैनागतीहोइहै॥ अरुसरोविषैआसुरीराक्ष

सीविषैराक्षसीहोईहै॥ वनकोटविषैवांदरीहोइहै॥ सिंहोविषैसिंहनी॥ किंनरोविषैकिंनरीहो
इहै॥ हरणोविषैहरणीहूईहै॥ विद्याधरोंगंधर्वीहोईहै॥ देवत्योविषैदेवी॥ इसतेआदिलेकरि
जोरूपधारिहै॥ सोचेतन्यतन्मुखजीवकलारूपधारेहै॥ क्षीरसमुद्रविषैविस्नुरूपहोइकरिवि
स्थितहोतीहै॥ ब्रह्मपुरीविषैब्रह्मारूपहोइकरिस्थितहोतीहै॥ पंचमुखहोइकरिरुद्ररू
पहोइकरिस्थितहोतीहै॥ तीषणकलाकरिसूरजरूपदिनकाकरताहोताहै॥ छीणदिनुमा
सबधकोकरताहै॥ चंद्रमाहोइकरीराभ्रकीकरताहै॥ कालहोइकरिनक्षत्रचक्रकोफेरताहै॥ कहू
प्रकासहोताहै॥ कहूतमहोताहै॥ कहूबीजकहूपषाणकहूमनरूपहोताहै॥ कहूनदीहोइकरि
वहताहै॥ कहूफूलहोइकरिफूलेहै॥ कहूभमरहोइकरीभूलेहै॥ कहूफलहोइदिषावेहै॥ क
हूवाइहोइफडावेहै॥ कहूअगनिहोइजलावेहै॥ कहूधूपहोइसीतलावेहै॥ कहूआकासहोइरि
थावे॥ सभअपणेसाफसमावेहै॥ ईश्वरउवाच॥ हेमुनीश्वरइसप्रकारसर्वात्मनासर्वज्ञातास
र्वसत्ताकरिकेएकहीरूपचित्तसत्ताआकासतेभीनिर्मलजैसेचैतन्यातैसेहोइकरिस्थितभया
जैसेजैसेभावनाकरताहै॥ सोईसोईतिसरूपहोइजाताहै॥ परस्वरूपतेंइतरकछुनाहीहोता॥
जलहीजलहै॥ तैसेचित्तसत्ताअनेकरूपधारताहै॥ परचेतनतातेंइतरकछुनाहीहोता॥ कहू
हंसीकहूकाकीवेलविषैवेलीकूकरविषैकूकरीमषीचिडीइत्यादिकरूपधारकरिसेमावि
षप्रचरताहै॥ जैसेजलविषैआयात्रिणाभ्रमताहै॥ तैसेपशुभ्रमताहै॥ अरुअपणेसंकल्पतेंआ
पहीभयपावताहै॥ जैसेसाथडाअपणेमहूकरिआपहीपडादोडताहै॥ अरुभयपावताहै॥ तैसे
जीवअपणेसंकल्पकरिकेआपहीभयपावताहै॥ हेमुनीश्वरजोअसताकाआचारमैंतुमकों
कहाहै॥ इसआचारकोग्रहणकरिकेनीचपदवीदुर्लभसेणीहूईहै॥ स्वरूपकेप्रमादकरिकेजैसाजै
सासंकल्पकरताहै॥ तिसीकमेंरागतकोंप्रापतहोताहै॥ अरुसोकवानहोताहै॥ अनेतदुषोंकोंप्रा
पतहोताहै॥ अपणीचिन्मात्रताकरिमलीनहोताहै॥ जैसेचावलोंकास्वरूपतुषोंकरिआवरि
आजाताहै॥ अरुवडेसंतापकोंप्रापतहोताहै॥ वहुडवहुडरोवतेहै॥ वहुडवहुडउगावतेहैका
टतेहै॥ तैसेस्वरूपकेआवरणकरिकेजीवकेलाइहभागतीहै॥ जनमसमरणदुषकोंप्रापतहो
ताहै॥ जैसेभरतातेरहितइस्त्रीसोकवानहोतीहै॥ तैसेइहकष्टकोंपावताहै॥ ईश्वरउवाच॥ हे
मुनीश्वरजडजोदेहहैअपअनात्मरूपतिसकेसाथप्रीतकरणेकरिअरुनिजस्वरूपकेविस्मरण
करिआसारूपीफासीसाथवाधाहूआ॥ चित्तजीवकोंअधजोतोविषैप्रापतकरताहै॥ जैसेचा
वटीजेत्रकीयांटिंडाकवहूअधःकोंजातीयांहै॥ कवहूऊर्धकोंजातीयांहै॥ तैसेजीवआसाके
वसहूआ॥ कवहूअधःकोंजाताहै॥ हेमुनीश्वर॥ कवहूऊर्धकोंजाताहै॥ हेमुनीश्वरस्वरूपकेवि
स्मरणकरिकेइसप्रकारभ्रमतहै॥ जोमहंताहो॥ मैंदुषीहो॥ सोअनात्माविषैअहंप्रतीतकरि
केदुषकाअनुभवकरताहै॥ जैसेस्वपनेविषैपुरुषआपकोंपर्वततेंगिडताहैदेषताहै अरुदुषी
होताहै॥ अरुस्तनकहूआ॥ आपकोदेषताहै॥ तैसेस्वरूपकेप्रमादकरिअनात्माविषैआत्मअ
भमानकरिकेदुषीआपकोदेषताहै॥ हेमुनीश्वरसुद्धचेतनतत्वविषैजोचित्तभावहूआहै॥ चित्तक
लाऊठीहै॥ सोजगतकाकारणहूईहै॥ तिसकरिजगतहोतागयाहै॥ जैसेजैसेचित्तकलाचेतनीग
ईहै॥ तैसेतैसेजगतहोतागयाहै॥ परवास्तवस्वरूपतेंकछुइतरनाहीभया॥ उहचित्तकारण
रूपभीहूआनाही॥ जोकारणभीनाहीहूआ॥ तोकारजकिसकाकहीये॥ हेमुनीश्वरजउहचित्त
है॥ नचेत्यहै॥ नचेतनवालीवित्तहै॥ नदृष्टाहै॥ नदृश्यहै॥ नदरसनहै॥ जैसेपथरविषैतेलना
हीहोता॥ अरुनकरताहै॥ नकर्महै॥ नकरणइंद्रियांहै॥ जैसेचंद्रमाविषैश्यामतानाहीहोती॥ न
मंतहै॥ नमननहै॥ नमानणेजोगहैअपवस्तुहै॥ जैसेआकासविषैअंकुरनाहीहोता॥ नअहंता
है॥ नत्वंताहै॥ नदृष्यहै॥ जैसेसंषकोश्यामतानाहीहोती॥ हेमुनीश्वरनतनानाहै॥ नअनानाहै
जैसेअणुविषैसमेरनाहीहोता॥ नसबदहै॥ नसबदकाअर्थहै॥ जैसेरूमथलविषैवेलीनाही
होती॥ नअस्तहैनहीं॥ नअवस्ताहै॥ जैसेबरफविषैउस्नतानाहीहोती॥ नसूनहै॥ नअसूनहै न
जडहै॥ नचेतनहै॥ जैसेसूरजमंडलविषैअंधकारनाहीहोता॥ हेमुनीश्वरइत्यादिकसबदअ
रुअर्थकीजोकल्पनाहै॥ सोउसविषैकोऊनाही॥ जैसेअग्नीविषैसीतलतानाहीहोती॥ केव
लकेवलभावहै॥ अद्वैतमात्रतत्वस्वरूपहै॥ किसीकोंभीकछुदुषनाही॥ हेमुनीश्वरजगतकों
सतजाणिकरीभावनाकरणी॥ अरुआत्माकोंनास्तिजाणिकरिभावनाकरणी॥ इसभावनाक
रिकेअनर्थकोंप्रापतहोताहै॥ अरुजवजगतकोंअसतजाणिकरिभावनाकरणी॥ अरुआत्मा
कोसतजाणिकरीभावनाकरणी॥ इसभावनाकरिकेसर्वअनर्थनिवर्तहोजातेहै॥ सोओरकि
सीकरीप्रापतनाहीहोता॥ अपणेआपहीकरीप्रापतहोताहै॥ अरुआदहीसिद्धहै॥ जवतिसकी
दृढभावनाकरतीहै॥ तवभ्रमहीसभमिटजातेहै॥ जवअनात्मभावनाहोतीहै॥ तवउहसाधक

होये॥ पावरण का टन होता है॥ जतन विना उह कैसे पावै॥ जो जतन साथ है॥ सो जतन विना पाया नहि जाता॥ आत्मा के सो है॥ निर्विकल्प है॥ अद्वैत है॥ सर्व ते अतीत है॥ सो अभ्यास विना कैसे पाईये॥ आत्मतत्व परम है॥ एक है॥ स्वच्छ है॥ तेज का भी प्रकासक है॥ सर्वगत निर्मल नित्त है॥ नित उदत निरमन सक रूप है॥ निर्विकार निरंजन है॥ सो घटपट वट कंथ विषे गाडी विषे ब्राद रविषे दैत देवता समुद्र विषे हस्ति विषे इत्यादिक जेता कछु इस्थावर जंगम रूप जगत है॥ सो सर्व विषे एक आत्मतत्व साषी रूप होइ करि इस्थित है॥ दीपक वत सभ को प्रकासता है॥ अरु सर्व क्रिया ते अतीत है॥ तिसी करि सब कारज सिद्ध होते है॥ सर्व क्रिया संजुगत भासता है॥ अरु सर्व विकल्प ते रहित जड वत भी भासता है॥ अरु परम चैतन्य है॥ सर्व चेतना का साक्षी चेतन है॥ निर्विकल्प परम सुख मै है॥ अरु अपणे आप विषे चेतक न होता है॥ अपणे आप के प्रमाद करिके रूपालोक मनसकार त्रिपुटी भासती है॥ जब बोध होता है॥ तब ज्यों का त्यों आत्मा ही भासता है॥ नित सुद्ध निर्मल परमानंद रूप है॥ तिसके प्रमाद करिके चित्त भाव को प्रापत होता है॥ जैसे साथ भी दुर्जनो के संग करि असाथ हो जाता है॥ जैसे अनात्मा के संग करि वह नीचता को प्रापत होता है॥ जैसे सोना कुधात मिलने करि खोटी हो जाता है॥ तब सोधन करिता है॥ तब सुद्धता को प्रापत होता है॥ तैसे अनात्मा के संग करिके इह जीव दुखी होता है॥ जब अभ्यास जतन करिके अपणे सुद्ध रूप को पावता है॥ तब उह ही रूप हो जाता है॥ जैसे स्वास का ही करि दरपण मलन हो जाता है॥ तब उस विषे मुख नाही भासता॥ जब मलनता निवृत करीती है॥ तब सुद्ध होता है॥ तिस विषे मुख सपष्ट भासता है॥ तैसे चित्त संवेदन के प्रमाद करि फुरणे करि जगत भ्रम भासणे लागा है॥ अरु आत्मस्वरूप नाही भासता॥ जब इह जगत सत्ता संकल्प फुरणे रहित होवेगा॥ तब आत्मतत्व पडा भासेगा॥ जगत की असत्तता भासती है॥ हे मुनीश्वर अरु इह सवित्त विषे चेतनता का फुरणा निवृत होता है॥ तब अद्वैत भाव को प्रापत होता है॥ जब अद्वैतता को प्रापत भया॥ तब अविनासी रूप को विनासी पदार्थ जानता है॥ हे मुनीश्वर स्वरूप ते कछु भी उत्थान होता है॥ तिस करि स्वरूप ते गिड करिके दुख को पावता है॥ जैसे पहाड ते गिड या वृक्षा अधः को चल्या जाता है॥ अरु चूर्ण होता है॥ तैसे स्वरूप ते उत्थान हूआ॥ अरु अनात्मा विषे अभिमान अहं प्रतीत हूई॥ तब अनेक रूप को प्रापत होता है॥ ईश्वर उवाच॥ हे मुनीश्वर सर्व पदार्थों की सत्ता रूप आत्मा है॥ तिसके अज्ञान करिके द्वैत भाव को प्रापत हूआ है॥ तब तिसका बोध होवै॥ तब द्वैत भाव निवृत हो जावैगा॥ सो आत्मा सुद्ध चिन्मात्र स्वरूप है॥ तिसकी सत्ता करि देह इंद्रीयादिक भी चेतन होते है॥ अरु अपणे अपणे विषयों को ग्रहण करतीया है॥ जैसे सूर्य के प्रकास करि सभ जगत का विवहार होता है॥ प्रकास विना विवहार नाही होता तैसे आत्मा की सत्ता करिके देह इंद्रियादिको का विवहार होता है॥ अपणे अपणे विषयों को ग्रहण करतीया है॥ हे मुनीश्वर प्राणवायु को लीये ज्ञानेंद्री विषे सुगंध भासता है॥ सो अपणे विषय रूप को ग्रहण करती है॥ तिसका वाहज विषय साथ संजोग होता है॥ तिस रूप का जिस विषे अनुभव होता है॥ सो परम चेतन सत्ता है॥ त्वचा इंद्री अरु सपरस विषय का जब संजोग होता है॥ इन दोनों को जिस करि अनुभव होता है॥ सो साक्षीभूत परम चेतन सत्ता है॥ अरु नासका इंद्री का जब गंध तनमात्रा साथ संजोग होता है॥ तिसके संजोग विषे जो अनुभवता है॥ सो परम चेतन है॥ इसी प्रकार सब्द सपरस रूप रस गंध इह जो है॥ पांचो विषय अरु श्रोत्र त्वचा नेत्र रसना नासका पांचो इंद्रीयां साथ मिलते है॥ इनके जाणनेवाला साक्षी रूप परम चेतन आत्मतत्व है॥ सो सुभ पतन वत सवित परम चेतन्न कहीता है॥ अरु जीव हि रमुख फुरया है॥ दृश्य साथ मिलया है॥ सो मलन वित्त कहीता है॥ अरु जब उसी मलन रूप अपणे सुद्ध स्वरूप विषे इस्थित होता है॥ तब सुद्ध होता है॥ हे मुनीश्वर इह सभ जगत आत्मस्वरूप है॥ सिला घन के न्याई अद्वैत रूप है॥ अरु सर्व विकारों ते रहित है॥ तउ देहो ता है॥ तब अस्त होता है॥ संकल्प के वसते जीव भाव को प्रापत हूआ है॥ संकल्प के निवृत हूए परमात्मा रूप हो जाता है॥ हे मुनीश्वर आदि जो चित्त कला फुरती है॥ सो जीव रूपी रथ पर आरूढ होई है॥ अरु जीव अहंकार रूपी रथ पर आरूढ हूआ है॥ अहंकार बुद्धि रूपी रथ पर चढ्या है॥ बुद्धि मन रूपी रथ पर चढिया है॥ अरु मन प्राण रूपी रथ पर चढिया है॥ अरु प्राण इंद्रियां रूपी रथ पर चढे है॥ इंद्रियों को रथ देह है॥ अरु देह का रथ पदार्थ है॥ जो करम करता है॥ करमों करि जरा मरण संसार रूपी पिंजरा विषे पडा रहता है॥ प्रमाद करिके इस प्रकार चक्र पडा वरतता है॥ तिस विषे जीव पडा भटकता है प्रमाद करिके॥ श्री महादेव उवाच॥ हे मुनीश्वर इह चक्र आत्मा का आभास रूप॥ जैसे सुपन विषे नाना प्रकार के पदार्थ भासते है॥ सो वास्तव कछु नाही॥ जैसे मृग तृस्ना की नदी भ्रम करिके भासती है॥ तैसे इह जगत भ्रम करिके भासता है॥ हे मुनीश्वर मन कारण प्राण है॥ जहां प्राण कला फुरणे ते रहती है॥ तहां मन की कामना इस्थित होती है॥ जब प्राण इस्थित हूआ॥ तब

मन का मनन सांत हो जाता है॥ अरु जो प्राण कला पडि फुरती है॥ तब मन का मनन पडा फुरता है॥ जब प्राण कला इस्थित भई॥ तब निवर्त मनन का हो जाता है॥ जैसे प्रकास विना पदार्थ नाही भासते॥ जैसे जब वायु सांत हूआ॥ तब धूड उडणे ते रहि जाती है॥ तैसे प्राण के फुरणे ते रहित मनन सांत हो जाता है॥ जैसे जहां धूप होता है॥ तहां गंध भी होती है॥ जहां अग्नि है॥ तहां उसनता भी होती है॥ तैसे जहां प्राण संपदा होती है॥ तहां मनन होता है॥ हृदे विषे जो नाडी है॥ तिस विषे सते सी पडी फुरती है॥ तिस करी मनन पडा होता है॥ संवित सुद्ध है सो स्वच्छ रूप जड अजड सर्वत्र विषे भासती है॥ अरु संवेदन प्राण कला विषे फुरती है॥ हे मुनीस्वर आत्मसत्ता सर्वत्र विषे अनुभूत है॥ पर जहां प्राण कला होती है॥ तहां भासती है॥ जहां प्राण कला नाही तहां नाही भासती॥ जैसे सूर्य का प्रकास सर्वत्र होर विषे होता है॥ पर जहां उज्जल इस्थान जल अथवा दर्पण होता है॥ तहां प्रतिबिंब भासता है॥ और ठौर प्रतिबिंब नाही भासता॥ तैसे आत्मसत्ता सर्वत्र है॥ पर जहां प्राण कला पुर्यष्टका होती है॥ तहां भासता है॥ और ठौर नही भासता॥ जैसे आदर्श विषे मुख का प्रतिबिंब भासता है॥ सिला विषे नाही भासता॥ जैसे पुर्यष्टका जु है मन रूप है॥ सर्व दृश्य का प्रतिबिंब भासता है॥ जो आप ही कविकल्प ना है॥ सर्व दृश्य जाल का कारण है॥ अहंकार बुद्धि इंद्रियां मा तिसी के भेद है॥ इह भली प्रकार अनुभव कीया है॥ तिस काल ते मन ही करि उदे होता है॥ और वस्तु कोऊ नाही॥ सो परम वस्तु तत्व तिसी विषे भासती है॥ हे मुनीस्वर रण ते मन ही देहादिकों प्रवर्तता है॥ चेतनता करि चेष्टा करता है॥ आत्मसत्ता विना जीव कबंध वत होता है॥ अरु आत्मसत्ता करी चेतन होइ करि चेष्टा करता है॥ तैसे दुसकप्या प्राण की सत्ता करि इह जड लोह चेष्टा करता है॥ तैसे सर्वगत परमात्मा की सत्ता करि इह जीव फुरता है॥ अरु आत्मसत्ता भी जीवकला विषे भासती है॥ और ठौर नाही भासती॥ जैसे सूर्य का प्रतिबिंब दर्पण विषे भासता है॥ और ठौर नाही भासता॥ तैसे परमात्मा सर्वगत सर्वशक्त है॥ पर जीवकला ही विषे भासता है॥ श्री महादेव उवाच॥ हे मुनीस्वर स्वरूप ते जब इस जीवकला का उत्थान हूआ है॥ अरु इह रूप की डोर वडी है॥ तिसके विषे वास्तव स्वरूप ते चित्त भाव को प्रापत भई है॥ जैसे सूद्रों की संगत करिके ब्राह्मण भी आपको सूद्र मानणे लगा जाता है॥ तैसे स्वरूप के प्रमाद करीके जीवकला आपको चित्त रूप भाव जानणे लगती है॥ अज्ञान करिके आछादया हूआ॥ जीव महा दीन भाव को प्रापत हूआ है॥ जड देह के अभ्यास करिके पडा कष्ट पावता है॥ काम क्रोधादि वा तैसे पितादिक करि पडा जलता है॥ जैसे जैसी भावना होती है॥ तैसे तैसे कर्म करता है॥ तिन कर्मों की भावना साथ मिला हूआ पडा भटकता है॥ जैसे धमारणी करी चलाया पथर चला जाता है॥ तैसे कर्म वासना का प्रेरया जीव पडा भ्रमता है॥ जैसे पथर आश्रद्ध होकरि थीं चलता है॥ तैसे आत्मा मन अरु प्राण कर्मों को दृढ करिके चलता है॥ हे मुनीस्वर चेतन ही जो है॥ सो जड रूप को अंगीकार करिके जीवत्व भाव को प्रापत होता है॥ मन प्राण रूपी रथ पर चढ करि पदार्थ भावने ते नाना प्रकार के भेद भाव को प्रापत हूए की न्याई इस्थित होता है॥ जैसे जल तरंग भाव को प्रापत होता है॥ तैसे चेतन नाना प्रकार होकरि इस्थित होता है॥ सो इह जीवकला आत्मा की सत्ता को पाइ करि विविध विषे फुरणे रूप होता है॥ जैसे सूर्य की सत्ता को पाइ करि नेत्र रूप को ग्रहण करते है॥ तैसे परमात्मा की सत्ता को पाइ करि जीव दृश्य विषे फुरता है॥ परमात्म चित्त तत्व विषे जो इस्थित है॥ तिस करि फुरण रूप जब जीवता है॥ जैसे दीपक घर विषे होता है॥ तब प्रकास होता है॥ दीपक प्रकास विना प्रकास नाही होता॥ अपणे स्वरूप को भुलाइ करि जो जीव दृश्य को अंगीकार लगा है॥ इस प्रकार ते आधि व्याधि करि दुखी होता है॥ जैसे कमल डोडी साथ लागता है॥ इस प्रकार ते आधि व्याधि करि दुखी होता है॥ कमल जब डोडी साथ लागा॥ तब भ्रम आनंद करि इस्थित होते है॥ तिस करि जीव दीन हो जाता है॥ जैसे जल तरंग भाव को प्रापत होता है॥ जैसे बुराई ग्रस अपणी कृत्या करि आप वधाई मान होती है॥ जैसे वालक अपणे पछाव को देख करि आप ही अविचार करिके भय पावता है॥ अरु दीनता को प्रापत होता है॥ हे मुनीस्वर चित्त सत् सर्वगत अपणा आप है॥ तिसकी अभावना करिके दीनता को प्रापत हूआ है॥ जैसे सूर्य बदल लोक विषे छादया जाता है॥ तैसे मूढता करिके आत्मा का आवरण हूआ है॥ जब प्राणों का अभ्यास करे तब जडता निवृत होवे॥ अपणा आप आत्मा स्मरण होवे॥ तिन की वासना निर्मल भई है॥ दृढ देते हूए नाही होती॥ सोई सथिर हूई एक रूप होती है॥ जब जीव जीवन्मुक्त होइ करि चिरपर्यंत जीवते है॥ हृदे कमल विषे प्राणों को रोक करि ध्यान को प्रापत होते है॥ जैसे काष्ट लोष्ट होता है॥ तैसे देह गिड पडता है॥ तब पुर्यष्टका आकास विषे लीन हो जाती है॥ जैसे आकास विषे पवन लीन होती है॥ तैसे तिस का मन पुर्यष्टका तहां ही लीन हो जाता है॥ ईश्वर उवाच॥ हे मुनीस्वर जिन की वासना सुद्ध नाही भई॥ सो मरन काल विषे जिनकी पुर्यष्टका आकास विषे इस्थित होती है॥

तिसकेअनंतरवहुडफुरआवतीहै॥वासनाकेअनुसारस्वर्गनरकदेषणेलागताहै॥जवस
रीरमनअरुपवनतेरहितहूआसवहीजाताहै॥सूनरूपहोजाताहै॥जैसेचरकोत्यागकरिस
प्रकुपहूरजाईरहताहै॥तैसेसरीरकोत्यागकरिमनअरुप्राणओरठौरजाइरहतेहै॥तवसरीर
सूनहोजाताहै॥हेमुनीश्वरजवइहचित्तसत्तासर्वहै॥परजहांजीवपधृष्टकाहोताहै॥तहां
भासतीहै॥चेतनताकाअनुभवहोताहै॥औरठौरनाहीहोता॥हेमुनीश्वरजवइहसरीरजीवको
त्यागताहै॥तवपंचतनमात्राकोग्रहणकरिकेसंगलेजाताहै॥तहांइसकीवासनाहोतीहै
तहांजाइप्रापतहोताहै॥तवप्रथमइसकाअतिवाहकसरीरहोताहै॥वहुडइहप्रथमकेहृदअभ्या
सकरिकेइस्थूलभावकोप्रापतहोजाताहै॥अतिवाहिकताविस्मरणहोजातीहै॥तैसेस्वप
नेविषेंभ्रमकरिकेइस्थूलआकारदेषताहै॥तैसेमोहकरिकेमरताहै॥तवअपणेसाथइ
स्थूलआकारदेषताहै॥वहुडइस्थूलदेहविषेअहंप्रतीतकरताहै॥तिससाथमिलकेविह
याकरताहै॥तवअसतकोसतजाणताहै॥असतकोअसतजाणताहै॥इसप्रकारभ्रमकोप्राप
तहोताहै॥सर्वगतचिंदसकरिकेजीवमनहोताहै॥तवजगतभावकोप्रापतहोताहै॥जव
देहसोंपधृष्टकानिकसतिहै॥तवआकासविषेंजाईलीनहोतीहै॥तवदेहफुरणेतेरहित
होताहै॥तिसकोसिरतककहतेहै॥अपणेस्वरूपसत्ताकोविस्मरणकरिकेजवजरीभावको
प्रापतहोताहै॥जवजीवसत्ताहृदेकमलविषेमूर्छितहोतीहै॥प्राणरोकेजातेहै॥तवइहमृत
कहोताहै॥वहुडजन्मलेताहै॥वहुडमरजाताहै॥हेमुनीश्वरजैसेवृक्षकेसाथपत्रलागतें
है॥वहुडकालपाइनष्टहोजातेहै॥वहुडनोमनपत्रउपजतेहै॥इसीप्रकारइहजीवसरीर
कोधारताहै॥उइहनष्टहोजाताहै॥वहुडओरसरीरधारताहै॥उइहभीनष्टहोजाताहै॥जोवृक्षके
पतरकीन्याईउपजतेहै॥अरुनष्टहोतेहै॥तिनकासोककरणाअर्थहै॥ईस्वरउवाच॥हेमुनीस्व
रचेतनत्वरूपीसमुद्रविषे॥सरीररूपीतरंगबुदबुदेअनेकप्रकारउपजतेहै॥अरुनष्टहोजातेहै
तिनकासोककरणाअर्थहै॥जैसेदर्पणविषेअनेकपदार्थोंकाप्रतिविंवहोताहै॥सोदर्पण
तेइतरकछुनाहीं॥तैसेचेतनत्वविषेअनेकपदार्थभासतेहै॥सोचेतनत्वनिर्मलआकासवतविस्त
र्णरूपहै॥तिसविषेंजोपदार्थफुरतेहै॥सोअनन्यरूपहै॥विवधसरीरभीउहीरूपहै॥वसिष्ठ
उवाच॥हेअर्धचंद्रधारीचेतनतत्वजोमहात्माएकरूपहै॥सोअनेकरूपहै॥तिसकोइहहै
तकहोतेप्रापतभयाहै॥अरुभूतभविष्यतकालकहोतेहैहहोरहाहै॥एकविषेअनेकताकैसे
प्रापतभईहै॥अरुवुद्धवानइथकोकैसेनिवर्तकरतेहै॥अरुकैसेनिवर्तहोताहै॥ईस्वरउवाच
हेब्राह्मणब्रह्मचेतनत्वसर्वसत्ताहै॥जवइहएकहीअद्वैतहोताहै॥तवहीअद्वैतहोताहै॥
तवनिर्मलताकोप्रापतहोताहै॥एककेभावकरिकेद्वैतकहीताहै॥अरुद्वैतकेभावकरि
केएककहीताहै॥एककीअपेक्षाकरिकेद्वैतकहीताहै॥अरुद्वैतकीअपेक्षाकरिएककहीं
ताहै॥सोदोनोंकल्पनामात्रहै॥जवचितफुरताहै॥तवएकअरुदोइकीकल्पनाहोतीहै
चितसंकल्पपरकेअभावहूए॥एकअरुदोइकल्पनामिटजातीहै॥अरुकारजकारणभास
ताहै॥सोभीएकरूपहै॥जैसेवीजतेलेकरिफलपर्जतजोवृक्षकाविस्तारहै॥सोएकहीरूपहै
अरुवधणाघटणाउसविषेकल्पनाहोती॥तैसेचेतनविषेचितकल्पनाहोतीहै॥तवजगत
रूपहोइभासताहै॥परतिसकालविषेभीउहीरूपहै॥हेमुनीश्वरवृक्षकेसभीवस्तुवीज
एकरूपहै॥कछुओरनाहीहूआ॥परवीजफुरताहै॥तवविरक्षहोइभासताहै॥तैसेतवस
उचेतनत्वविषेचैत्यकल्पनाफुरतीहै॥तवजगतरूपहोइभासताहै॥हेमुनीस्वरइहजोनाम
कारकाकारजकारणविकाररूपजगतभासताहै॥सोअसम्यकदृष्टिकरिकेभासताहै॥जैसे
जलविषेतरंगभासताहै॥सोजलहीरूपहै॥अरुद्वैतकछुनाही॥जैसेमहेकेरंगअसतहै॥जै
सेजलविषेतरंगकल्पनाअसतहै॥अज्ञानकरिकेभासतेहै॥तैसेआत्माविषेजगतअ
ज्ञानकरिकेभासतेहै॥तैसेआत्माविषेजगतअज्ञानकरिकेभासतेहै॥तैसेसविनाकरिजल
हीतरंगरूपहोइभासताहै॥तैसेफुरणेकरिआत्मतत्वजगतरूपहोइभासताहै॥अरुद्वैतक
छुनाही॥चेतनत्वरूपीवेलीपसरीहै॥तिसविषेपत्रफूलफलएकहीरूपहै॥जैसेएकवेलीअ
नेकरूपहोइभासतीहै॥तैसेएकहीचेतनत्वअहंत्वदेसकालक्रियाआदिकभेदहोइकरिभास
ताहै॥सोइहीरूपहै॥ईस्वरउवाच॥हेमुनीश्वरजोसभदहोचेतनत्वहै॥तोतेरेप्रस्नकाअवसरक
हांहोवे॥देसकालक्रियातेरहितलेकरिजोसर्वपदार्थहै॥सोएकचिदात्माहीहै॥तैसे
जवलगजलविषेद्रवताहोतीहै॥तवतरंगरूपहोइभासता॥उनकानामतरंगहोताहै॥तै
सेब्रह्मविषेजगतफुरताहै॥तवअहंत्वआदिकनानाप्रकारकेनामहोताहै॥ब्रह्मपरमसिवप
रमात्माचेतनअसतअहंतआदिकनामभीफुरणेकरिकेकहीतेहै॥जोइननामोतेअतीतरूपहै

सोवाणीकाविषयनाही॥ऐसाजोनिरविषयतत्वहै॥सोसदाअपणेआपविषेंइस्थितहै॥इ
हृतगतजोकछुभासताहै॥सोभीउहीचेतनत्वहै॥जैसेवेलीपत्रफूलफलहोइकरिपस
रतीहै॥तैसेचेतनत्वसर्वरूपहोइकरिपसरताहै॥सोउहीरूपहै॥हेमुनीश्वरमहाचेतनत्व
विषेजवकचनहोताहै॥तवजीवरूपहोइकरिइस्थितहोताहै॥आगेद्वैतकल्पनाकोदे
षताहै॥जैसेस्वप्नेविषेंअपणेस्वरूपकोत्यागकरिओरपरिछिन्नवपुकोधारताहै॥अरुआ
गेद्वैतरूपजगतकोदेषताहै॥तवजागताहै॥तवअपणेआपअद्वैतरूपकोदेषताहै॥परजा
गेविनाभीद्वैतकछुहूआनाही॥तैसेइहजोप्रतजगतभीकछुहूआनाही॥भ्रमकरिकेपडाभा
सताहै॥तवइहजीवअपणावास्तवस्वरूपकीओरसावधानहोताहै॥तवतिसकेअभ्यासक
रिउहीरूपहोजाताहै॥हेमुनीस्वरइसजीवकाआदिवपुहै॥सोअतिवाहिकहोताहै॥अरु
तवतिसविषेंअहंभावनातीव्रहोजातीहै॥तवउहीअधिभूतकहोइकरिभासताहै॥तिसवि
षेसत्तताहृदहोतीहै॥तिसकोसततताकीरागाद्वेषसोकभयमानहोताहै॥तवकाकतालीवत
अकस्मातनेहृदेविषेविचारआनउपजताहै॥तवसंकल्परूपीआवरणदूरहोताहै॥तवअप
णेवास्तवस्वरूपकोप्रापतहोताहै॥जैसीवालकअपणेपछावविषेवेतालकरिकेभयपाव
ताहै॥तैसेइहजीवअपणेसंकल्पकरिकेआपहीभयपावताहै॥हेमुनीश्वरइहजेताककुज
गतभासताहै॥सोसभसंकल्पहीमात्रहै॥जैसासंकल्पइसकेहृदेविषेदृढहोताहै॥तैसाहीभा
सणेलागताहै॥पतलेदेषोजोपुरुषकछुकारजकरताहै॥सोकर्तृत्वभावइसकेहृदेविषेंदृढहो
ताहै॥वहुडकंहताहैइसकारजमैंनेकरा॥तवउहीसंकल्पदृढहोजाताहै॥तवउसकारजतें
आपकोअकर्तामाणताहै॥तैसेदृष्यकीभावनाकरिजगतकीसत्तादृढहोगईहै॥जवदृष्यका
संकल्पनिवर्तकरताहै॥अरुआत्मभावनाविषेजुडताहै॥तवजगतभ्रमनिवर्तहोजाताहै॥आ
त्माहीपडाभासताहै॥तैसेजैसीभावनाजीवकरताहै॥तैसेहीसिद्धहोतीहै॥सोईफलहोइक
होतीहै॥जैसेमतद्रीकोयातारोवहुतहोतीयाहै॥अरुवजतीयाहै॥परजोऊचीस्वरवानहोती
है॥सोइसुणीतीहै॥तैसेजोतीव्रभावनाहोतीहै॥सोसिद्धहोतीहै॥ईस्वरउवाच॥हेमुनीश्वरपर
मार्थतेकछुद्वैतहैनाही॥सर्वसंकल्परचनाहै॥सोसंकल्पकरिरचीहुइपहै॥सोसंकल्पकेअभा
वतेअभावहोजाताहै॥जैसेमनोराजगंधर्वनगरमनकारचनहोताहै॥वहुडसंकल्पकेअभा
वहूएअभावहोजाताहै॥तैसेसंकल्पमात्रइहजगतहै॥इसकीइछात्यागणी॥इछाकेत्यागतेइ
सकात्यागहोवेगा॥तवकलेसकछुनरहेगा॥हेमुनीस्वरइहजगतसंकल्पकेइछताकरिके
जीवडुषभागीहोताहै॥जैसेमतवविषसंकल्पकरिकेजीवडुषीहोताहै॥तैसेसंकल्पकारिवत
पदार्थोंकरिडुषीहोताहै॥इससंकल्पमात्रकीइछात्यागणीविषेंक्याकुपणताहै॥अरुसुप्नेवि
षेजोदुषभागताहै॥सोसुषभीकछुवस्तनाही॥भ्रममात्रहै॥तैसेइहसुषअभ्रममात्रहै॥हेमुनीश्व
रसंकल्पविकल्पतेइसकोदीनकीयाहै॥जवसंकल्पविकल्पकोत्यागकरताहै॥तवचितहो
जाताहै॥अरुपरमउचपदविषेविराजमानहोताहै॥जिसपुरुषनेविवेकरूपीवायुकरिसंक
ल्परूपीमेघकोदूरकीयाहै॥सोपरमनिर्मलताकोप्रापतहोताहै॥जैसेसरदकालकाआका
सनिर्मलहोताहै॥तैसेसंकल्पविकल्परूपीमलतेरहितउज्जलभावकोप्रापतहोताहै॥सं
कल्पकेत्यागतेपाछेजोसेषरहताहै॥सोसत्तामात्रपरमआनंदतत्वस्वरूपहै॥हेमतीस्वआ
त्मासर्वसत्तारूपहै॥जैसीजैसीभावनाहोतीहै॥तैसाहीअपणीभावनाकरिकेदेषताहै॥तातें
सभसंकल्पमात्रहै॥भ्रमकरिकेउदेहूआहै॥संकल्पकेलीनहोइसभलीनहोजावेगा॥हेमु
नीश्वरसंकल्परूपकाहीयोंअकडूनकरिकेजन्मरूपीअगनिकोइहजीवपडावधावताहै॥तिस
कविअंतकदाचितनाहीहोता॥जवअसंकल्परूपीवायुकरिअकजलकविइसकाअभावकरि
तवविसमेहोजाताहै॥जैसेदीपकनिर्वाणहोजाताहै॥तैसेजन्मरूपीअग्निकाअभावहोजाता
है॥अरुसंकल्परूपीवायुकरिविप्रणकीन्याईपडाभ्रमताहै॥ईस्वरउवाच॥हेमुनीश्वरहृदयरूपी
करंजरूएकीवेलीहै॥तिसकोसंकल्परूपीजलकरिपडासंचताहै॥तवअसंकल्परूपीसोष
ताअरुविचाररूपीषडगकरिकाटे॥तवतिसकाअभावहोजाताहै॥जोअभ्यासमात्रहै॥सोअ
भ्यासकेत्यागअभावहोजावेगा॥जैसेगंधर्वनगरहोताहै॥जैसेस्वप्नविषेंसृष्टिहोतीहै॥जैसेजीव
डीविषेंमसपेआकासविषेनीलताद्दष्टिभ्रमकरिभ्रममात्रहोताहै॥तैसेइहजगतअसम्यकज्ञा
नकरिभासताहै॥सम्यकज्ञानकरिकेलीनहोजावेगा॥जैसेकोऊराजाहोवे॥अरुस्वप्नेविषे
रंकहोजावे॥इवेलास्वरूपविस्मरणहोजावे॥अरुदानताकोप्रापतहोवे॥जवइवेलास्वरू
पसमरणआवे॥तवआपकोराजाजाने॥अरुडुषसवमिटजावे॥निरडुषराजपदकोप्रापत
होवे॥तैसेइसजीवकोअपणावास्तवस्वरूपविस्मरणहोगयाहै॥तिसकरिआप
कोपरिछिन्नदीनडुषीजाणताहै॥जवस्वरूपज्ञानहोवे॥तवसर्वडुषोंकाअभावहोजावे॥तै

सेसरदकालका आकास निर्मल होता ॥ तैसे निर्मल होजावै ॥ जैसे वर्षाकालकी मलराणते
आकास निर्मल होता है ॥ तैसे अज्ञान मलते रहित जीव निर्मल होता है ॥ अद्वैत पदको प्रापत
होता है ॥ जो ऐसे अकृत्रिम जगतकी भावना करता है ॥ मै आत्मा हो एक हो ॥ द्वैतते रहित हो ॥ जब
ऐसे भावना करिगा ॥ तब सोई होवेगा ॥ द्वैत भावको अभाव होजाता है ॥ उत्तम पद ब्रह्मतत्वदेव है
जन्मजक सज्ञा किंचन किंचितकीन्याई चित्त एकरूप होजाता है ॥ हे मुनीस्वर इस प्रकार दे
व निरंतर स्थित है ॥ द्वैत अरु एक पदते रहित है ॥ अरु द्वैत एक संज्ञा तिसभी उही है ॥ संक
ल्पसाथ मिलकरि चेतन्नरूप संसारताको प्रापत भया है ॥ अरु जो संकल्प मलते रहित
है ॥ सो संसारते रहित है ॥ जब ऐसे जाणता है ॥ जो मै हो ॥ तब इस कलंकका विवसमान
होता है ॥ इसके अभावते मुक्त है ॥ सुषदुषका अभाव होता है ॥ स्वछ निरंस एकसत्ता सर्व
आत्मा आकासवत होता है ॥ इसीका नाम मुक्त है ॥ आकासवत व्यापक ब्रह्म होता है ॥ तब तुरी
यातीत भावको प्रापत होता है ॥ वसिष्ठ उवाच ॥ जब मनकरि मन छिन्न होता है ॥ अरु इंद्रियां म
न विषे लीन होजाती है ॥ द्वितीय अरु तृतीय पद किसकीन्याई सेष रहता है ॥ जो मै हां सत्ता
आत्मसत्ता सर्वको लीन करता है ॥ सो किसीकीन्याई है ॥ ईश्वर उवाच ॥ हे मुनीस्वर मनकरि जब
मन छेदीता है ॥ इंद्रियां जिसके अवयव है ॥ विचार करिके ध्यान करिके अथवा ॐकार उपासना करि
के जब आत्मबोध इसको प्रापत होता है ॥ तब द्वैत एककी कल्पना नष्ट होजाती है ॥ जगतजालकी
सत्ता नष्ट होजाती है ॥ तिसके पाछे जो सेष रहता है ॥ सो आत्मतत्व प्रकास है ॥ जैसे भुने बीज
ते अंकुर नाही उपजता ॥ तैसे मन उपसम होता है ॥ तब तिस विषे जगतसत्ताका अभाव होता है ॥
चेतन्न समता जो है ॥ सो चित्त कल्पनाको भक्षन करिलेती है ॥ जब मनरूपी मेघको सनान ष्ट होती
है ॥ तब सरदकालके आकासवत निर्मल आत्मसत्ता भासती है ॥ चित्तकी चपलता मिटजाती है
तब परम पावन चिन्मात्र तत्व प्रापत होता है ॥ अद्वैत एक भाव अभावरूपी संसारकी कल्पना
मिटजाती है ॥ समसत्तारूप तत्व जो सर्व विषे है ॥ अरु संसार समुद्रते पार करणहारा है ॥ सो प्रापती
होता है ॥ सुष तब तब बोध निरभय होजाता है ॥ शांतरूप आत्मको पाईकरि शांतरूप होजाता है ॥
हे मुनीस्वर मनकी छीनताका इह प्रथम पद तुझको कहा है ॥ अब द्वितीय पद सुण ॥ हे मुनीस्वर
जब इह चित्त संक्रमनके मननते मुक्त होता है ॥ कैसे मन हता है ॥ जो अनेक ओर धावता है ॥ तिसते
जब मुक्त होता है ॥ तब चंद्रमाके प्रकासवत सीतल होजाता है ॥ अरु आकासवत विस्तार तब अपणा
स्वरूप भासता है ॥ अरु चेतन्न सुभस्वरूप होजाता है ॥ जैसे पथरकी सिला पोलते रहित होती है ॥ तै
से रूप पते रहित चेतन्न सुभ सकाआकार होता है ॥ लोणावत रस समेत होजाता है ॥ जैसे आकास
विषे सबद लीन होजाता है ॥ तैसे इसका चित्त आत्मा विषे लीन होजाता है ॥ जैसे वायु चलनेते
रहित अचल होती है ॥ तैसे चित्त अचल होजाता है ॥ जैसे गंध पुष्प विषे स्थित होता है ॥ तैसे वि
द्वान आत्मतत्व विषे विश्रामको पावता है ॥ केवल चेतन्न आकाररूप करि भासता है ॥ आनंद करि
पूर्ण होजाता है ॥ सो आत्मसत्ता कैसे है ॥ न जड है न चेतन्न है ॥ सर्व कल्पनाते रहित अचेत्य चिन्मा
त्र है ॥ अरु रूप सर्वसत्ताके धारणहारा है ॥ देसकालादिकोंके परछेदते रहित है ॥ तिसको उह
प्रापत होता है ॥ तिसको तुरीयापद भी कहते है ॥ सर्व दुषकलंकते रहित पद है ॥ तिस सत्ता
को पाइकरि साक्षीकीन्याई स्थित होता है ॥ सर्व जगत सर्वदा कासमेई स्थित है ॥ सर्वप्रकार उही है
अरु शांतरूप है ॥ तिस आत्मसत्ताका जिसको आत्मत्वकरि अनुभव होता है ॥ जिसको इह तीय पद
प्रापत होता है ॥ ईश्वर उवाच ॥ हे मुनीस्वर इह तृतीयपद तुझको कहा है ॥ अब तृतीयपद श्रवण
करु ॥ जब इहां तका अत्यंत परणाम आत्मतत्व विषे होता है ॥ तब ब्रह्म आत्मा इत्यादिक नामोकी भी
तहां निवृत्तता होजाती है ॥ भाव अभावकी कल्पना कोऊ नाही फुरती ॥ अस्थाणुकीन्याई अचल
रूप होता है ॥ परम शांत निःकलंक तुरीयातीत सभते जो उत्तम पद है ॥ तिसको प्रापत
होता है ॥ सो सर्वका अंत अरु सर्वका आधाररूप है ॥ एक अद्वैत नित्य चिन्मात्र तत्व है ॥ तुरीयाते
भी आगे पद है ॥ तिस विषे बाणीकी भी गम नाही ॥ तिस पदको प्रापत होता है ॥ हे मुनीस्वर
सर्व कल्पनाते अतीत पद मैने तुझको कहा है ॥ तिस विषे स्थित हो ॥ सोई सनातन देव है ॥ अरु
विस्व भी उही है ॥ उहीतत संवेदनके वसते ऐसे रूप होइकरि भासता ॥ अरु वास्तवते न कछु प्र
वर्तते है ॥ न कछु निवर्तते है ॥ न कोऊ प्रवर्त्या है ॥ न कोऊ निवर्त होवेगा ॥ समसत्ता प्रकासरूप अद्वैत
एक भर्म अद्वैत तत्व अपणे आप विषे स्थित है ॥ आकासवत निर्मल है ॥ तिस विषे द्वैत एक भ
र्मका अभाव है ॥ एक चिदघन सत्ता पाषाणवत अपणे आप विषे स्थित है ॥ जगत विषे अ
रु तिस विषे भेद रंचक भी नाही ॥ जैसे जल अरु तरंग विषे भेद कछु नाही ॥ जैसे जगत
विषे अरु ब्रह्म विषे भेद नाही ॥ समस्त सत्ता शिव शांतरूप ॥ अरु सर्व वाणीके विलास
ते अतीत है ॥ ॐ इसकी पांच तुरमात्रा है ॥ तुरीया सो परमपद है ॥ वाल्मीक उवाच ॥

है भावद्वाज इस प्रकार जब ईश्वर कहा ॥ अरु परम शांत आत्मतत्वका प्रसंग वसिष्ठजीने श्रवण की
या ॥ तब दोनोकी वृत्ति आत्मतत्व विषे स्थित होगई ॥ अरु तूष्णी होरही ॥ मानो मूरत लिषी छो
डिया है ॥ एक मुहूर्त परजंत चित्तकी वृत्ति ऐसे रही ॥ वहुरि ईश्वर जागा ॥ एक मुहूर्त उपरांत ईश्व
र जो सदाशिव है ॥ गौरीरूप कमलनीका सरोवर ॥ सो तीनो नेत्रोको षोलत भया ॥ जैसे पृथ्वी अ
रु आकासरूपी देवते सूर्य निकसे ॥ तैसे नेत्र निकसे ॥ अरु जैसे द्वादश सूर्यका प्रकास एकठा
होवै ॥ तैसे नेत्रोका प्रकास हुआ ॥ अरु देषत भए जो वसिष्ठजी नेत्र मूंदे हुए है ॥ ईश्वर उवाच ॥ तब
कहा हे मुनीस्वर जागो ॥ अब नेत्र काहेको मूंद छोडे है ॥ जो कछु देषणा था सो तैने देष्या ॥ अब समा
धि विषे जुडनेका भ्रम किस निमित्त करते हो ॥ तुम सरीषे जो ज्ञानवान है ॥ तिनको हेय अरु उपादेय
किसी विषे नाही होता ॥ तुम जैसा बुद्धवान है ॥ तैसा ही है ॥ तू आत्मदरसी है ॥ जो कछु पावणा जोग था
सो पाया है ॥ जो जाणने जोग था सो जाण्या है ॥ अरु बालकोके बोध निमित्त जो तुम कछु पूछ
या ॥ सो मैं कहा है ॥ अरु अब भी बूझ तुम द्वैतभावको अंगीकार करिके बालकोके निमित्त कछु पूछो
अब तुमको तूष्णी साधका प्रयोजन है ॥ वसिष्ठ उवाच ॥ हे रामजी इस प्रकार कहिकरि फेर अनंत प्र
वसक विके चित्तकी वृत्ति साथ जगाया ॥ जब मै जाग्या तब वहुरि ईश्वर कहत भया ॥ वसिष्ठ उवाच ॥ हे देव
इह जो सरीर है ॥ तिसको आत्मा चेतता है ॥ इसको चलावता नाही ॥ तिसकी क्रियाका कारण
सिष्ठजी इह जो सरीर है ॥ आत्मा तिस विषे उदासीनकी न्याई स्थित है ॥ न क
संवेदन है ॥ प्राणोकरिके सरीरकी चेष्टा होती है ॥ आत्मा अपणे स्वरूपका प्रमाद होता है ॥ तब देह विषे अ
हं करता है ॥ न भोगता है ॥ जब इस जीवको अपणे स्वरूपका प्रमाद होता है ॥ वहुरि भोगता मानता है ॥ इसकरिके पडाउ
भिमान होता है ॥ अरु क्रियाका करता आपको मानता है ॥ अरु जब आत्म विचार उपजता है ॥ तब आत्मा
बंधावता है ॥ इसलोक परलोक विषे भटकता है ॥ देह अभिमान मिटजाता है ॥ इस बंधते मुक्त होता है ॥ सरीरके नष्ट हुएते आत्म
का अभ्यास होता है ॥ देह अभिमान मिटजाता है ॥ सो प्राणोकरिके फुरता है ॥ जब मन प्र
का नास नाही होता ॥ अरु सरीर जो चेतन्न होइकरि फुरता है ॥ सो प्राणोकरिके फुरता है ॥ जब मध्य
सो प्राण निकसजाता है ॥ तब सरीर जडरूप होजाता है ॥ अरु जो चलावणे अरु पवित्र करणे
हारा संवेदन मन है ॥ सो आकासते सूक्ष्म है ॥ उह सरीरके नास हुएते नास नाही होती ॥ जो नास
नाही होती तब विनासका भ्रम कैसे होवे ॥ हे मुनीस्वर आत्मतत्व जो ब्रह्मसत्ता है ॥ सो सर्वत्र है ॥ पर म
सनील होहै ॥ जहां सात्विक गुणका अभ्यास मन होता है ॥ अरु प्राण होते है ॥ मन अरु प्राण सहित देह
विषे भासती है ॥ जैसे निर्मल दर्पण होवे ॥ मुखका प्रतिबिंब भासता है ॥ जो आदर्स मलिन होता है
तब मुख विदमान होता है ॥ परभासता नाही ॥ तैसे जब मन अरु प्राण देह विषे होते है ॥ तब आ
त्मा भासता है ॥ जब मन अरु प्राण निकसजाते है ॥ तब मल न सरीर विषे आत्मसत्ता नाही ॥ हे मुनीस्व
र आत्मसत्ता सभ ठौर पूरण है ॥ परभासती नाही ॥ जब तिसका अभ्यास होवे ॥ तब सर्व आत्मरूप हो
करि भासती है ॥ सर्वकल्पनाते रहित अद्वैत शिवरूप सर्वकी सत्तारूप उही है ॥ विस्नु भी उही है ॥ शि
व भी उही है ॥ ब्रह्मा भी उही है ॥ देवता जात भी उही है ॥ अग्नि वायु चंद्रमा सूर्य इंद्र आदिक जगत सभका
आदि वपु उही है ॥ सो एक देव है ॥ अद्वैत है ॥ चेतन्नरूप है ॥ सर्व देवोंका देव है ॥ और सभ तिसके टहलूए
है ॥ अरु सभ तिसके चित्तउलास है ॥ हे मुनीस्वर इह सर्व जो इस जगत विषे वडे ब्रह्मा विस्नु रुद्र है ॥ सो
उस तत्वते प्रगट भए है ॥ जैसे अग्निते चिनगारे उपजते है ॥ जैसे समुद्रते तरंग प्रगट होते है ॥ तैसे
इह तिसते प्रगट भए है ॥ इह अविद्या उसते प्रगट भई है ॥ वेद अरु वेदका अर्थ अरु जीव सभ उस
अविद्याकी याजटा है ॥ अरु अनंत भावको प्रापत भयी है ॥ वहुरि वहुरि उपजती है ॥ अरु रचती है ॥ दे
सकाल पृथिवी आदिक सभ उसीकी विसपत्र है ॥ पर सर्वकी सत्तारूप उही आत्मदेव है ॥ ब्रह्मा वि
स्नु रुद्र इंद्र सज्ञ है ॥ सोइ माता परम पिता है ॥ सर्वका मूल बीज उही देव है ॥ सभ तिसते उपजते है ॥ जै
से वृक्षते पत्र उपजते है ॥ तैसे सभ महादेवते उपजते है ॥ सर्वका अनुभव करता उही है ॥ सर्व सत्ता
देणहारा उही है ॥ सर्व प्रकासोंका प्रकास उही है ॥ सो तत्ववेत्त्योंकरिके पूजने जोग है ॥ सर्व विषे
अनुस्यूत है ॥ सर्वदा सर्वप्रकार सर्व विषे उदित आकार है ॥ चेतन्न अनुभवरूप है ॥ तिसके आवाहन वि
षे मंत्र आसन आदिक सम ग्रीता नाही वाहोती ॥ काहेते जो सर्वदा अनुभवरूप करिके प्रतक्ष है ॥ अ
रु सर्वप्रकार सर्वदा र विषे विदमान है ॥ जहां जहां तिसके पावणेका जतन करिये ॥ तहां आगे ही
विद्यमान है ॥ उह सिव तत्व आदही सिद्ध है ॥ मन वाणी विषय तीनोरूप उही होइ भासता है ॥ जा
णने जोग भी उही है ॥ हे मुनीस्वर ऐसा जो आत्मतत्व है ॥ सो जरा मृत्यु शोक भयको काटने हारा है
तिसको आपका विश्राम पढी देवता है ॥ तिसके साक्षात्कार हूए चित्त भेने वी जवत होता है ॥ वह
उडगावता नाही ॥ सो सिवजीवोंका जीव है ॥ सर्व पदोंका पद उही है ॥ अनुभवरूप है ॥ आत्मा है
परमपद है ॥ उनरदाहि विषको उइवते हो ॥ हे मुनीस्वर सो जो चिद्रूप तत्व है ॥ सो सर्वके अंतर स्थित है
अनुभवरूप मयरूप देह ईश्वर है ॥ सभ बीजोंका बीज उही है ॥ सर्व सारोंका सार उही है ॥ कर्मोंका कर्म
धर्मोंका धर्म उही है ॥ सो चेतन्न अत्यंत निर्मलरूप सभ कारणोंका कारण उही है ॥ अरु आप अकारण है ॥
सर्वभाव अभावका प्रकास उही है ॥ सर्व चेतनोका चेतन उही है ॥ परमप्रकासरूप है ॥ भौतिक प्रकासते

अरु अनेक साखाको प्रापत भई है

24

रहितअलौकिकप्रकासहै॥ सर्वजीवोंकावीजउहीहै॥ चैतनवचननिर्मलआत्माअस्तिसनमयरू
पहै॥ सतअसततेंरहितमहासत्तारूपहै॥ सर्वसत्ताकीसत्ताउहीहै॥ सोचिन्मात्रतत्त्वहै॥ सोईना
नारंगहोरहाहै॥ जैसेएकहीआत्मसत्तासर्वविषेंआकासकेंथपद्मादिआदिकहोइकरिभासती
है॥ तैसेनानारंगरेजनाउहीहोभासतेहै॥ जैसेसूर्यकीयांकिरणांविषेमरुस्थलकीनदीहो
भासतीहै॥ अनेककोटिकिरणांतेंअनेकतरंगभासतेहै॥ तैसेइहजगततिसविषेंभासतीहै॥ क
ईहोएहै॥ कईहै॥ कईहोवेंगे॥ महाप्रकासरूपआत्माविषेंइहजगतरूपीमरुस्थलकीनदीहै॥
श्रीमहादेवउवाच॥ हेमुनीस्वरऐसीआत्मतत्त्वकाइहअभासप्रकासहै॥ तिसतेंइतरकछुनाहीं
जैसेअगनिविषेंउस्नताअग्निनेंभिन्ननाहीं॥ उहीस्वरूपहै॥ तैसेजगतआत्मातेंकछुभिन्ननाहीं॥ उ
हीस्वरूपहै॥ अरुसुमेरुभीतिसकेअंगेपरमाणूरूपहै॥ अरुसर्वकाललतिसकानिमेषरूपहै॥
कल्पतिसकेउनमेषवतउदेअरुलयहोताहै॥ अरुसप्तसमुद्रसंजुगतपृथिवीतिसकेरोमकेअ
ग्रवतनतुछहै॥ ऐसाउहदेवहै॥ वहदेवकेमाहि॥ संसाररचनाकोकरतानाहीं॥ अरुकर्तृत्वभावको
प्रापतहोताहै॥ वडेकर्मकोकरताभासताहै॥ तोभीकछुनाहींकरता॥ द्रवरूपहुइआवताहै॥ तोभी
द्रव्यतेंरहितहै॥ निरद्रव्यहै॥ तोभीद्रववतहै॥ देहवाननाहीं॥ तोभीदेहवानहै॥ वडादेहवानहै॥
तोभीअदेहहै॥ सभकीसत्तारूपउहीदेवहै॥ हेरामलिखतेमतवलपिंदिलेमालगा॥ वीहोंवि
हिमलालीवलासगुलसभसइत्यादिकवाक्यअनर्थकहै॥ इनकाअर्थकछुनाहीं सोभीदेवकरि
सिद्धहोतेहै॥ आत्मदेवविषेंजैसेअर्थवानसवदहै॥ तैसेअनर्थकसवदहै॥ इसविषेंमूलभासता
है॥ ऐसाकछुनाहीं॥ जोदेवविषेंअनतनाहीं॥ अरुऐसाकछुनाहीं॥ जोदेवकरिसतनाहीं॥ हेमु
नीस्वरजिसतेंइहसर्वहै॥ अरुजोइहसर्वहै॥ जोसर्वमयनितहै॥ तिससर्वआत्माकोंमेरानमस्का
रहै॥ ईस्वरउवाच॥ हेमुनीस्वरइत्यादिकसवदोंसत्तारूपभीउहीहै॥ अरुआत्माविषेंजैसेनिरर्थक
सवदहै॥ तैसेसार्थकसवदहै॥ भानरनदोनोंकातुल्यहै॥ सर्वसत्तारूपपरदेवकोइवाउहीहै॥ उही
तत्त्वचमतकारकरिकेपराक्रवनाहै॥ जैसेजलतरंगवुदवुदाफेनआदिकआकारोंकरिकेपुरता
है॥ तैसेदेवनानाप्रकारकेआकारहोइकरिफुरताहै॥ उहीउछेरूपहोइकरिस्थितहोताहै॥ उ
हीफूलरूपहोइकरिस्थितहोताहै॥ आपहीतिसविषेंसुगंधहोइकरिस्थितहोताहै॥ आप
इंद्रीविषेंस्थितहोइकरिआपहीसोहताहै॥ आपहीनेत्रइंद्रीहोतीहै॥ आपहीपवनहोइकरि
चलताहै॥ आपहीसपरसकोग्रहणकरताहै॥ आपहीजलरूपहोताहै॥ आपवायुहोइकरि
सुकावताहै॥ आपहीश्रवणइंद्रीहोइकरिआपहीसवदहोकरिआपहीग्रहणकरताहै॥ इ
सीप्रकारजिह्वानचनासकाकरनेत्रहै॥ इकरिआपहीरसस्पर्शगंधसवदरूपकोग्रहण
करताहै॥ उसीनेपदार्थरचेहै॥ उसीनेनेतरचीहै॥ ब्रह्माविस्नुरुद्रसिवपंचईस्वरजोहै॥ स
दासिवतिसपरजंतउहीदेवइसप्रकाररहयाहै॥ अरुपंचमईस्वरपरजंतजवपरणाम
कोप्रापतहोजाताहै॥ तोभीआत्मसत्तासांतरूपरहतीहै॥ अरुजवउतपतहोतीहै॥ तोभीज्योंका
त्योंरहताहै॥ अरुसत्ताअनेकरूपहोकरभासतीहै॥ आपहीसाक्षीवतइस्थितहै॥ जैसेदीपकइ
स्थिरहोताहै॥ तिसकेप्रकासकरिसुंदरकीसभक्रियापरीहोतीहै॥ तैसेसंसाररूपीसइपकीसभक्रि
यासाक्षीकरिपडीहोतीहै॥ तिसविषेंअपणीसक्तिनिरतकरतीहै॥ अरुआपसाक्षीरूपहोइकरिदे
खताहै॥ वसिष्ठउवाच॥ हेजगतनाथसिवकिसक्रियाहै॥ अरुकैसाइस्थितहै॥ अरुदेवकोसादि
ताकैसेहै॥ अरुतिसकीनिरतकैसीहोतीहै॥ ईस्वरउवाच॥ हेमुनीस्वरआत्मतत्त्वस्वभावतेंअचल
है॥ अरुशांतरूपहै॥ शिवपरमात्माहै॥ सोनिरमलचिन्मात्ररूपहै॥ निराकारहै॥ तिसकीयासक्ति
है॥ तिनसक्तिकाअंतनाहीं॥ अनंतरूपचिन्मात्रदेवहै॥ इहजोमनुफकोसक्तीकहीयाहै॥ सोभीसिव
रूपतेंभिन्ननाहीं॥ जोकर्तृत्वभागतत्वमादीत्वआदिकभावनातेंसक्तीविविधरूपधारतीयांहै॥ सो
सिवअरुसक्तएकरूपहै॥ वहुतभासतीयांहै॥ अर्थोविषेंअर्थसक्तहै॥ आत्माविषेंसाक्षितासक्तक
ल्पनातेंअतीतहै॥ तैसेकालसक्तहै॥ रतनकीन्याईंब्रह्मंडरूपीरतनमंडलविस्तारकरतीहै॥ क्रियास
क्तकर्तव्यकरिस्तकरतीहै॥ इत्यादिकसक्तीकहीतीयांहै॥ जैसेआदिनेतहुईहै॥ ब्रह्मातेआदिवि
नायरजेततैसेहीइस्थितहै॥ अन्यथानाहींहोती॥ हेमुनीस्वरइहसर्वणजगतपडानिरतकरता
है॥ संसाररूपीनटनीहै॥ तिसकेप्रेरणेहारेनेतहै॥ अरुपरमस्वरूपपरमात्माहै॥ सोसाक्षीरूपहै॥
अरुसदाउदतप्रकासरूपहै॥ एकरसदेवइस्थितहै॥ अरुनेतआदिकसक्तिभीतिसतेंभिन्ननाहीं
उहीरूपहै॥ नातेदूवहीजाणा॥ औरहैतकछुनाहीं॥ हेमुनीस्वरइहजोएकदेवपरमात्माहै सो
सैताकोविसदाप्रजनेजोगहै॥ चिन्मात्रअनुभवआत्मासर्वत्रहै॥ अरुसर्वकाआश्रयरूपहै॥ घटप
टकंधगोईवादरआदिकसर्वत्रविषेंउहीइस्थितहै॥ ब्रह्माइद्रआदिकदेवतेंऔरसभजीवोंकेअं
तरवाहजएकउहीइस्थितहै॥ सर्वात्माशांतरूपदेवकादोप्रकारपूजनहोताहै॥ सोसुण॥ इहदेव
कापूजनजोहै॥ सोध्यानहै॥ सोपूजनहै॥ त्रिभुवनकाजोआकाररूपहै॥ सोआत्माहै॥ तिसकोध्या
नकरिपूजाकरो॥ जहांजहांमनजावे॥ तहांतहांचिद्रूपआत्माकोकरो॥ सभकाप्रकाशआत्माही

है॥ सोचिद्रूपअनुभवकरिकेसिद्धहै॥ सोसभकासाररूपहै॥ सभकाआश्रयरूपहै॥ तिसकाजोवि
राटरूपहैसोसुण॥ तिसकोजाणकरिपूजनकरु॥ वाहुजोकेसाहै॥ अनेतहै॥ पातालनेरहितहै
पातालतिसकेचरणहै॥ अनतदिसातिसकी
परमआकासहै॥ सोउसीकीग्रीवाहै॥ अरुअनंतपातालतिसकेचरणहै॥ ब्रह्मंडसमूहहोकेपरंपराप्र
भुजाहै॥ सर्वप्रकासउकेसस्त्रहै॥ हृदेकोसकोणविषेंइस्थितहै॥ ब्रह्माइद्रविस्नुरुद्रदेवतेंइत्यादिकजीवउसकी
कासताहै॥ परमआकासपारअपारस्वरूपहै॥ ब्रह्माइद्रविस्नुरुद्रदेवतेंइत्यादिकजीवोंकारूपहै॥ अव्या
रोमावलीहै॥ त्रिलोकविषेंजोदेहरूपतेंत्रहै॥ तिहांविषेंइच्छाआदिकघटकीरूपीहै॥ अव्या
है॥ तिसकविसभचेष्टापइकरतेहै॥ सोदेवएकहै॥ अरुअनंतहै॥ अरुसत्तामात्रस्वरूपहै॥ सभ
जगतजालतिसकाविवर्तहै॥ अरुकालतिसकाहारपालकहै॥ पर्वतआदिकब्रह्मंडजगततिसकी
सकेदेहविषेंकिसीकोणविषेंइस्थितहै॥ तिसदेवकोचितवनाकरो॥ वहदेवकैसादेवहै॥ सहस्र
हीजिसकेचरनहै॥ अरुसहस्रहीनेत्रहै॥ सहस्रजिसकेसीसहै॥ सहस्रहीभुजाहै॥ अरुसहस्र
हीभुजाविषेंभूषणहै॥ सर्वत्रजिसकीनासकाइंद्रिहै॥ सहस्रहीनुचाइंद्रीहै॥ सर्वत्रजिसकी
रसनाइंद्रीहै॥ सर्वत्रहीश्रवणइंद्रीयांहै॥ सर्वत्रजोरजिसकामनहै॥ अरुसर्वत्रमननकरताहै॥ अ
तोतहै॥ सर्वदाउहीसिवरूपहै॥ सर्वकासर्वदाकरताहै॥ सर्वसकल्पोंकेअर्थकाफलदायकहै॥ ऐ
सर्वभूतोंकेअंतरइस्थितहै॥ अरुसर्वसाधनोंकासिद्धकरताहै॥ तिसदेवकोचितवनाकरो॥ अव
सदेवकेध्यानविषेंसावधानरहो॥ सदातिसहीकाआकाररहणाइह॥ उसदेवकापूजनहै॥ अव
अनेककापूजनश्रवणकरो॥ हेब्रह्मवेत्ताविषेंश्रेष्ठसंवितमात्रतोदेवहै॥ सदाअनुभवकरिके
प्रकासतानहै॥ तिसकापूजनदीपककरिनाहींहोता॥ अरुधूपकरिकेभीनाहींहोता॥ नपुहुपोंके
रिहोताहै॥ नदानकरिनचंदनलेपकरिनकेसरलेपकरितिसकापूजनहोताहै॥ अरघपाद
दिजोपूजाकीसामग्रीहै॥ तिसकरिदेवकापूजननाहींहोता॥ तिसकापूजनकलसविनानित
हीहोता॥ हेमुनीस्वरएकजोअमृतरूपीवोधहै॥ तिसदेवकासजातीप्रतीतध्यानधारणासोति
सकापरमपूजनहै॥ ईस्वरउवाच॥ हेमुनीस्वरचिद्रूपचिन्मात्रजोदेवहै॥ सोअनुभवरूपहै॥ तिस
कासर्वदाकालसर्वप्रकारपूजनकरो॥ देखताहै॥ सपर्सकरताहै॥ सोचताहै॥ श्रवणकरताहै॥ वो
लताहै॥ देतालेताचलताहै॥ वेखताहै॥ इसतेंलेकरिजोकछुक्रियाहै॥ सोसभप्रत्यक्षचेतनरूपहै॥
सालोविषेंअर्थणकरो॥ तिसोयवायगाहोवो॥ इसप्रकारआत्मदेवकापूजनकरो॥ हेमुनीस्वरआ
त्मदेवकाजोध्यानकरणा॥ एहीधूपदीपहै॥ अरुसर्वसमग्रीपूजनकीइहीहै॥ ध्यानहीदेवकाअ
सतकरताहै॥ तिसकरिपरमानंदप्रापतहोताहै॥ औरकरिदेवकीप्रापतनहींहोती॥ हेमुनी
स्वरजोअमृतहै॥ अरुइसप्रकारध्यानकरिपूजाकरइस्वरकी॥ तवत्रयोदसनिमेषकागोदान
कापफलपावताहै॥ अरुसततनिमेषोंकाध्यानकरिप्रथमकोपूजे॥ तवअस्वमेधयज्ञकेफलकोप्र
वेसउप॥ ध्यानकेवलकरिआत्माकोजोघटीप्रजंतपूजाकरे॥ तवउहपुरुषराजसूयेयज्ञ
केफलकोपावे॥ जोदोपहरपरजंतध्यानकरे॥ तवलक्षजग्यराजसूयेकेफलकोपावे॥ जो
दिनपरजंतध्यानकरेसोअसंखफलकोपावे॥ ईस्वरकेधामकोप्रापतहोवे॥ हेमुनीस्वरइहपरम
जोगहै॥ अरुइहीपरमक्रियाहै॥ इहीपरमप्रयोजनहै॥ हेमुनीस्वरदोनोंपूजानुमकोंमैकहीहै॥
जिसकोइहपरमपूजाप्रापतहोतीहै॥ सोपरमपदकोंप्रापतहोताहै॥ सभदेवतेतिसकोंन
मस्कारकरतेहै॥ सर्वकरिकेउहपुरुषजोगहोताहै॥ सकवतउहीअचलहै॥ श्रीमहादेव
उवाच॥ हेमुनीस्वरअवअभ्यंतरकापूजनतूसुण॥ जोसर्वत्रपवित्रकरणेहारेकोंभीपवित्रकर
ताहै॥ अरुतमसअज्ञानकानासकरताहै॥ सोआत्मपूजनमैंतुमकोंकहताहों॥ सोकैसापूजनहै
सोसर्वप्रकारकेसर्वदाकालविषेंतिसदेवकापूजनपडाहोताहै॥ विवधानकहूंपडैनाहीं च
लतेवैठतेजागतेसोवतेसर्वविवहारविषेंनितध्यानमयरहताहै॥ हेमुनीस्वरनितजोइस
सरीरविषेंस्थितसंवितरूपचिन्मात्रहै॥ तिसकापूजनकरो॥ जोसर्वप्रत्ययकाकरताहै॥ सदा
अनुभवकरिकेंप्रकासताहै॥ तिसकाआपकरिआपपूजनकरो॥ सोतूउठताहुआचलताहुआ
खातापीतात्यागकरता॥ ग्रहणकरता॥ भोगोंकोभोगता॥ जेतेकछुवाहुजअर्थहै॥ तिससभतो
कोंकरताभीदेवकीपूजाकरु॥ हेमुनीस्वरसरीरविषेंजोसिवलिंगहै॥ चिहुनतेंरहितजोलिं
गवोधरूपहै॥ चिद्रूपहै॥ सोदेवहै॥ यथाप्रापतविषेंसमरहणा॥ सोतिसदेवकापूजनहै॥ य
थाप्रापतविषेंसमभावरहणा॥ तिससमभावविषेंइसतानकरिकेसुद्धहोइकरिवोधरूपलिं
गकापूजनकरु॥ जोकछुआनप्रापतहोवे॥ तिसविषेंरागद्वेषतेंरहितहोवणा॥ सर्वदासाक्षी
अनुभवरूपविषेंअस्थितरहणा॥ उहीउसकापूजनहै॥ हेमुनीस्वरस्वरूपजोकेपूजनआकासविषें
उहीस्वरूपहोइकरिप्रकासताहै॥ चंद्रमाकेभवनविषेंउहीचंद्रमाहोइकरिप्रकासइस्थितहो
ताहै॥ तनतेंआदिलेकरिजोपदार्थोंकेसमूहहै॥ जैसीजैसीभावनाकरिकेस्फुरणाहुआ॥ सोईरू
पहोइकरिदेवइस्थितहै॥ हेमुनीस्वरनितसहेवउरूपअहेततिसकोदेखणा॥ औरकिसीवि
षेंविरतकोनलगावणा॥ इहीदेवकापूजनहै॥ प्राणअपानइपीजोरथहै॥ तिसऊपरआरूढहै

आ॥ अंतरहु ज्ञा विषैं स्थित है ज्ञेय॥ तिसका जो ज्ञाता है॥ अरु जेते कछुक कर्म हैं॥ तिनका करताउ
हीहै॥ सर्व भोगोंका भोगताउ ही है॥ अरु सर्व सहरोंका समरण करणहारा भीउही है॥ अरु स
भनोंका प्रकास भीउ ही है॥ अरु भावनरूप है॥ सभकी भावनाके करणहारा परम प्रकासरूप
ऐसा जो सिवतत्व है॥ तिसको सर्वज्ञ जाणकरि चिंतवना करणी॥ सो तिसका पूजन है॥ वह
उकेसा है देव सकल भीउ ही है॥ अरु निहकल भीउ ही है॥ देह विषैं स्थित है॥ तो भी आकास
वत निर्मल है॥ जाणता भी है॥ अरु नहीं जाणता भीउ ही है॥ प्राण रूपी आहे विषै प्रकासता है॥ हृदे
कंठ तालू॥ भुवा नासका पीठु विषैं व्यापक है॥ सर्व दादि विषयोंको करता मनकों प्रेरता है॥ जैसे
तिलों विषैं तेल आश्रयभूत है॥ तैसे आत्मा सर्वत्र विषैं आश्रयभूत है॥ कल्पना रूपी कलंक र
हित है॥ अरु कल्पना गणाकरि संजुगत भीउ ही है॥ संपूर्ण देह विषै एक ही उही देव व्याप रहा
है॥ पर प्रतक्ष हृदे विषैं होता है॥ सो चिन्मात्र निरमल प्रकास रूप है॥ कल्पना रूपी कलंक ते रहि
त सदा प्रतक्ष है॥ अपणे आप ही करि अनुभव होता है॥ सर्व पदार्थोंका प्रकासक प्रत्यक चेतन
आत्मतत्व अपणे आप विषैं स्थित है॥ सो अपणा ही अज्ञान करिके सीघ्र ही देहकी न्याई होइजा
ता है॥ हे मुनीस्वर जेता कछु साकार रूप जगत दृष्ट आवता है॥ सो सभ विराट आत्मा है॥ ताते आप
कों विराट भी भावना करु॥ ब्रह्म पादके सत्ता घर है संपूर्ण ब्रह्मांड मेरा देह है॥ मैं ही प्रकास रू
प एक देव हों॥ अरु इंद्रानी आदिक मेरीयां सकतीं हैं॥ सभ मेरी उपासना करते॥ जैसे स्त्री अपने भरता
कों इस्त्री सेवा करती है॥ तैसे सकती मेरी उपासना करतीयां हैं॥ वृद्ध इंद्र के सेजाण मन सेवा हार पालक
हैं॥ त्रैलोकीका तेवढ नेकरणहारा है॥ अरु चिंतवना मेरी आवरण जावण वाली प्रत्याहारी है॥ ना
ना प्रकारके ज्ञान अंगोंके भूषण है॥ कर्म इंद्रिया मेरे द्वारे है॥ ज्ञान इंद्रियां सहित गुण॥ ऐसा
मै एक अनंत आत्मा हों॥ अखंड रूप हों॥ विवर्जित भेद ते रहित अपणे आप विषैं स्थित हों॥ स
र्व विषैं पूर्ण एक मैं ही हों॥ ईश्वर उवाच॥ हे मुनीस्वर ऐसी भावना करि जो एक देवकी पूजा करे
ता है॥ सो परमात्मा देवकों प्राप्त होता है॥ तब देहना आदिक कलेस सभ नष्ट होजाते हैं॥
अनिष्टकी प्राप्त विषै शोक नाहीं उपजता॥ अरु इष्टकी प्राप्त विषै हरष नाहीं उपजता। त
ताधमान होता है॥ न कोपमान होता है॥ न विषयोंकी प्राप्त विषै है करि त्रिपतमान हो
ता है॥ न इनके वियोग करि खेद मानता है॥ न वांछा करता है॥ न प्राप्तकी त्यागकी इच्छा करता
है॥ सर्व पदार्थों विषैं समभाव है॥ ऐसा जो पुरुष है॥ सो देवका परम उपासक है॥ ग्रहण त्याग
ते रहित सम विषैं तुल है॥ खेदभावकों नाहीं प्राप्त होता॥ सो उत्तम देव अरचन है॥ हे मुनीस्व
र चेतनतत्व देव सैं तुझको कहा है॥ जो इसी देह विषै स्थित है॥ जो प्राप्त होवे वस्तु सो तिस
का अरचन करणी॥ सभ तिसीके आगे राखणी॥ सभका साखी आत्माको देखणा॥ किसी करि खेद
वान नाहीं होवणा॥ अरु प्रतीत तिसी विषैं राखणी॥ इतर रूपकी भावना नाहीं करणी॥ इ
ही देवका अरचना है॥ हे मुनीस्वर जो कछु आन प्राप्त होवे॥ तिस विषै जतनतें रहित हो लरहे॥ जो
भष भोज लेह ज चोपध अन्न प्राप्त होवे॥ सो देवके आगे राखणा॥ ग्रहण त्यागकी वह तिस विषै न क
रणी॥ सो देवका पूजन है॥ सर्व पदार्थोंकी प्राप्ति विषै देवकी पूजा करणी॥ इसकरि अनिष्ट भी इष्ट
होजाता है॥ सुतन आवै सो देवकी पूजा॥ जीवणा आवै तब देवकी पूजा॥ दरिद्र प्राप्त होवे सो भी देवकी
पूजा॥ राज प्राप्त होवे तो भी देवकी पूजा॥ विचित्र नाना प्रकारकी चेष्टा करणी॥ सो सभ देवकी पू
जारूप है॥ रागद्वेष आदिक विषैं सम रहणा॥ सो समताकरिके देवकी पूजा है॥ संतोंके हृदेकी इछ
णाहारि जु है मैत्री संग रन विश्वका मित्र होवणा॥ सो मैत्रताकरिके देवका पूजन है॥ भोगकी त्या
करु जो कछु आन प्राप्त होवे॥ तिसकरि देवका पूजन करु॥ अरु हेताकरु॥ अनहेताकरि जोक
छु आन प्राप्त होवे॥ तिसकरि देवका पूजन करु॥ अरु हेताकरु अनहेता करि जुगत करु॥ अ
नहु आसोहु आ॥ तिन दोनों विषैं निरदिकार रहणा॥ इसकरि देवको अरचन करु॥ इहु भाग
आपात्र मणीय है॥ ज्ञान भी है॥ नष्ट भी होजाते हैं॥ इनकी इच्छा न करणी॥ सदा संतुष्ट रहणा जे
से आन प्राप्त होवे॥ तिस विषैं रागद्वेषतें रहित होवणा॥ सो देव अरचन है॥ ईश्वर उवाच॥ हे मु
नीस्वर जो कछु प्रारब्ध करिके आन प्राप्त होवे॥ तिसकरि आत्माकी अरचना करु॥ इच्छा अरु
अनिच्छाको त्याग करि जो प्राप्त होवे॥ तिसकरि देवकी अरचना करो॥ अथवा इच्छा अरु अनि
च्छा करि जो प्राप्त होवे॥ तिसकरि भी देवकी अरचना करो॥ हे मुनीस्वर ज्ञानवान न किसी
कों वांछा करता है॥ न त्याग करता है॥ जो अनिच्छित आन प्राप्त होवे॥ तिसको भोगता है॥ जे
सेन दीया सम्भइ विषैं जाइ प्राप्त होतीयां है॥ तिनको भोगता है॥ न कछु इरष करता है॥ तैसे
ज्ञानवान इष्ट अनिष्टकी प्राप्त विषैं रागद्वेषतें रहित यथा प्राप्तकों भोगता है॥ सो देवका
पूजन है॥ देस काल क्रिया सुभ असुभ आन प्राप्त होवे॥ अथवा॥ तिस विषैं सम रहणा॥ विन
विकारको न प्राप्त होवे॥ सो देवकी आसासना है॥ जो इदं अनर्थ रूप होवे॥ तो भी सम रससाथ

मिल्या हुआ॥ अमृत होजाता है॥ जैसे षट रस स्वाद है॥ सो खंड साथ मिलेहूए मधुर होजाते हैं
तैसे अनर्थ रूप भी सम रस साथ मिले अमृत होजाते हैं॥ खेद नाहीं करते आनंद रूप होजाता है
तैसे अनर्थ रूप भी समरस साथ मिले अमृत होजाते हैं॥ तैसे आकास निरलेप रहता है॥ तैसे सम
चंद्रमाकी न्याई सभ भावना भी अमृतमय होजाती है॥ दृष्टाको दृश्य साथ मिलाप ते देषणा
ता भाव करिके चित्त रागद्वेषते रहित निर्मल होजाता है॥ दृष्टाको दृश्य साथ मिलापते देषणा
सा घोरूप रहणा॥ सो देवकी अरचना है॥ जैसे पथरकी सिला निस्पंद रहती है॥ तैसे विकल्पते
रहित हुआ॥ चित्त अचल होजाता है॥ सो देवकी अरचना है॥ हे मुनीस्वर अंतर तें आकासवत रहू
णा असंग॥ अरु बाहर प्रकृत आचार विषै रहणा॥ किसी साथ अंतर राग स्पर्स न करु॥ सदा सम
भाव ज्ञानकरि रहणा॥ सो देवका उपासक होता है॥ जिसके हृदे रूपी आकास सौं अज्ञान रूपी
मेघ नष्ट होगया है॥ तिसको स्वप्न विषै भी विकार नाहीं प्राप्त होता॥ अरु जिसके हृदे रूपी आ
कास सौं अहंकार रूपी कुहीड सो नष्ट होगई है॥ सो सर्व कालके आकास वत उजल होजाता है॥ हे
मुनीस्वर जिसकों सभ भाव प्राप्त भया है॥ तिसकरि देवको पाया है॥ सो पुरुष ऐसा होजाता है
जो तनता वालक रागद्वेषते रहित होता है॥ जीवतत्व रूपी जोखेलता है॥ तिसते उलटकरि परम चे
तत्र तत्वको प्राप्त होता है॥ सकल इच्छा भ्रमते रहित सुषड षध मूते मुक्त सरीरका नायक नि
ष्ट नहीं होता है॥ सो देव अरचन है॥ श्री भ हा दे व उवाच॥ हे मुनीस्वर जैसी कामना होवे॥ सो कछु
आरंभ करे॥ अथवा न करे॥ सो अपणे आप करि चिन्मात्र शिवतत्वकी अरचना करु॥ इसकरि दे
व प्रसन्न होता है॥ जब देव प्रसन्न हूआ॥ तब प्रसाद होता है॥ जब उसको पाया॥ अरु स्थित भया तब
रागद्वेष आदिक सर्वटोका अर्थ नाहीं पाईता॥ जैसे आग्नि विषैं वरफ को कणुका नाहीं पाईता
तैसे सम विषैं रागद्वेष आदिक नाहीं पाईता॥ ताते तिस देवकी अरचना करणी जोग है॥ जो राग
ते सम आन प्राप्त होवे॥ अथवा दरिद्र आन प्राप्त होवे॥ अथवा सुख दुख आन प्राप्त होवे॥ सो दे
वकी अरचना करणी॥ हे मुनीस्वर सदा चिन्मात्र सौं प्रमादी न होवणा॥ इसीका नाम अरचना
है॥ जेता कछु घट पट आदिक जगत भासता है॥ सो सभ आत्म रूप है॥ तिसते इतर कछु नाहीं
सो आत्मा शिव सांत रूप आन भासता है॥ एक ही प्रकास रूप है॥ सहरों जगत प्रतीत मात्र है॥
आत्मा ते इतर कछु है तब सत भासता नाहीं॥ सर्व आत्म रूप अहै त तत्व तब भासता तब तिस वि
षै हुआ जाणता है॥ सो वह आत्म स्वरूप है॥ घट पट आदि रूप आत्मा ही होकरि भासता था॥ जीव आदि
कसम उ ही रूप है॥ और इतर कछु नाहीं॥ हे मुनीस्वर इहइ स्वरूप सर्व आत्मा है॥ तब न तद्रूप शिवत
त्व है॥ जिसको ऐसा निस्चा प्राप्त भया है॥ तिस देवकी पूजा जाणी है॥ घट आदिक जो पदार्थ है
पूज पूजा पूजक भाव सो सम ब्रह्म रूप है॥ निर्मल देव आत्मा विषै कछु भेद भावना नाहीं॥ हे
मुनीस्वर आत्म देव सर्व सक्त अनंत रूप है॥ तीनों जगतों विषै तिसतें भिन्न कछु नाहीं॥ निर्मल
प्रकास रूप सर्व विनद्रूप आत्मा स्थित है॥ इसको तो ईश्वर देवतें इतर कछु नाहीं भासता॥ सर्वत्र
सर्व प्रकार सर्वात्मा पूर्ण दृष्ट आवता है॥ अरु जिनको देस कालके परछेद सौं रहित ईश्वर भासता है॥
सो इस माउ पदेसका पात्र नाहीं॥ उहु ज्ञानवान नहीं है॥ तिसको इष्टको त्याग करि मेरी इष्ट का भ्र
म लेह॥ सो मैं तुझको कहा है॥ तिसकरि स्वस्थ होनता लिभय होइ॥ तथा प्रारब्ध जो कछु सुख
दुख आन प्राप्त होवे॥ तिस विषै संतोषको प्राप्त होवणा॥ खेद तें रहित होइ करि तिस देवका अर
चन करु॥ तब मानको प्राप्त होवे॥ हे मुनीस्वर तिस देवकी सर्वदा सर्व प्रकार सर्वात्मा करिके
भावना करु॥ उही इसका पूजन है॥ जो देव सदा अनुभव रूप विषै स्थित है॥ अरु यथा प्राप्त
विषै खेदते रहित विचरणा॥ इही देवकी अरचना है॥ जैसे स्फटकके मंदिर विषै प्रतिबिंब भासते
है॥ सो कछु नाहीं मुद्ध निहकलंक फटक होती है॥ तैसे सर्व और तें जन्म उ धाते रहित निहकल्ल
क फटक होती है॥ तिसकी प्राप्त हूए ते रविवेकलंक जन्म उ धादिक कछु नाहीं रहेगा॥ वसिष्ठ उ
वाच॥ हे देव शिव किसकों कहते हैं॥ अरु ब्रह्म किसको कहते हैं॥ अरु आत्मा किसको कहते हैं॥
अरु परमात्मा किसको कहते हैं॥ तत सत किसको कहते हैं॥ निह किंचन सुन विज्ञान किसको
कहते हैं॥ इत्यादिक जो भेद संज्ञा किसाने मित हूया है॥ हे त्रिलोकीके ईस्वर सो मुझको कहो॥ ईश्व
र उवाच॥ हे मुनीस्वर जब सभका अभाव होता है॥ तब अनादि अनंत अनाभास सत्तामात्र सेष रह
ता है॥ सो इंद्रियोंका विषय नाहीं॥ तिसको निह किंचन करिके कहते हैं॥ वसिष्ठ उवाच॥ हे ईस्वर
जो इंद्रियों बुद्धि आदिकका विषय नाहीं॥ तिसका पावना किसकरि होता है॥ ईश्वर उवाच॥ हे मु
नीस्वर जो मुमुक्षु है॥ अरु बहु आसक विसर्जन सातकी विरत जिसको प्राप्त हुई है॥ तिसको सा
तकी रूप जो अविद्या का भाग गुरु शास्त्र नामनी विद्या प्राप्त होती है॥ तिसकरि अविद्याका भा
ग नष्ट होजाता है॥ अरु आत्मतत्व प्रकास आवता है॥ जैसे सहूण मलकरिके धोबी वस्त्रकी मैल
दूर करता है॥ तैसे गुरु शास्त्र अविद्याका सातकी भाग अविद्याको दूर करते है॥ जब केते काल वि
द्या नास होती है॥ तब अपणा आप ही करि देखता है॥ जैसे वायु करि बदल दूर होते हैं॥ अरु तैसे ही
कुविसर्जन दिखता है॥ जैसे किसी बालकके हाथको स्याही लगजाती है॥ सुतनका जलकरि धो
वते दूर होजाती है॥ सो मैलकरि मैल दूर होती है॥ तैसे अविद्या का सातकी भाग गुरु शास्त्र सो अवि

याआवरणकोंनष्टकरतेहैं॥ हेमुनीश्वरजवगुरुशास्त्रकोंमिलकरिआत्मविचारप्रापतहोता
है॥तवविचारकरिस्वरूपकीप्रापतहोतीहै॥अरुद्वैतभ्रमभिटजाताहै॥सर्वआत्महीप्रकास
ताहै॥जवविचारद्वाराआत्मतत्वनिश्चैहूआ॥जोसर्वआत्माहैइतरकछुनाहीं॥ऐसानिश्चाज
हहोताहै॥तहांअविद्यानाहींरहती॥हेमुनीश्वरआत्माकीप्रापतविषेंगुरुशास्त्रअनछेका
रणनाहीं॥काहेतेंजुवस्तुजिसकेद्वारहूएपाईयें॥सोतिनकेविदमानहोतेकेसेंपाईये॥इं
द्रीयोंकेसमूहकानामगुरुहै॥अरुआत्मसर्वइंद्रियोंतेंअतीतहै॥सोइनकरिकेंसेंपाईए॥अक
रणहै॥परकारणभीहै॥काहेतेजोगुरुसास्त्रकेक्रमकरिकेआत्मज्ञानमेंज्ञानकीसिद्धताहोती
गुरुशास्त्रविनावोधकीसिद्धतानाहींहोती॥आत्माअनिर्देशहै॥अरुअदृष्टहै॥तोभीगुरुअरु
शास्त्रोंकरिकेंपाईताहै॥नगुरोंकरिकेंपाईताहै॥अरुनशास्त्रोंकरिकेंपाईताहै॥अपणेआप
होकरिकेंआत्मतत्वकीप्रापतहोतीहै॥जैसेंअंधकारविषेंपदार्थपड्याहोवे॥अरुदीपकप्रकास
करिदेवे॥सोदीपककरिपाया॥अरुदीपककरिनाहींपाया॥अपणेआपकरिपायाहै॥तैसेंगु
रुशास्त्रभीहै॥जोदीपहोवे॥अरुनेत्रनहोवे॥तवकेसेंपाईये॥अरुनेत्रहोवे॥अरुदीपकहोवे॥तव
भीनाहींपाईता॥जवदोनोंहोवे॥तवपदार्थपाईताहै॥तैसेंगुरुशास्त्रभीहोवे॥अरुअपणापुरु
षार्थतीक्ष्णतवहूहोवे॥तवआत्मतत्वपाईताहै॥अन्यथानाहींपाईता॥गुरुशास्त्रअरुसुद्धवु
द्धिपतीनोंएकठामिलतेहैं॥तवसंसारकेदुःखसुखहरहोतेहैं॥अरुआत्मपदकीप्रापतहोतीहै
गुरुअरुशास्त्रआवरणदूरकरतेहैं॥तवआपकरिआपहीपावताहै॥जैसेंवायुवदलोंकोंदूरक
रतीहै॥तेजोंकरिसूर्यदेषीताहै॥अवतासोंकेभेदसुण॥हेमुनीश्वरजववोधकवसतेंकमें
द्रियोंत्तयहोजातीयांहै॥तिसकेपाछेजोसेषरहताहै॥तिसकानामचिद्आत्मातत्तसत्तआ
आदिकनामोंकरिकहीताहै॥जहांइहसंपूर्णनाहीं॥तिनकीविरतभीनाहीं॥तिसकेपाछेस
षसत्तारहतीहै॥सोआकासतेंभीसूक्ष्म॥अक्षतरहैअनंतहै॥परमसत्तरूपहै॥जहांमनउना
कामीअभावहै॥हेमुनीश्वरअविद्यातद्रूपतौहै॥सुमाहात्मरूमननकल्पनाकरिसंज्ञातेंहै
तिनकोंजीवनमुक्तपदकेवोधनिमित्तशास्त्रसोंकहउपायरचाहैं॥ब्रह्माइंद्रविस्नलोकपाल
पड्डतवसराणवेदशास्त्रसिधांतरचेहैं॥तिसविषेंइहनामतिन्होंनेकहेहैं॥चेतनब्रह्मशिवआत्मा
आदिकभिन्नभिन्ननामसवासीयोंनेकल्पीयांहैं॥ज्ञानीकोंकछुभेदनाहीं॥हेमुनीश्वरऐसाजो
देवहै॥तिन्होंज्ञानइसप्रकारअरचनकरतेहैं॥जिसपदकेइहमआदिकटल्लूएहै॥तिसपरमपद
कोंप्रापतहोतेहै॥वसिष्टउवाच॥हेभगवनइहजगतसभआविदमानहै॥अरुविदमानकीन्या
इइस्थितहै॥सोकेसेंहूआहै॥समसतकारणकोंतुमजानतेहो॥ईश्वरउवाच॥हेमुनीश्वरजोब्रह्मआदि
कनामोंकरिकहीताहै॥सोसुद्धकेवलसंवितमात्रहै॥आकासतेंभीसूक्ष्महै॥जिसकेआगेआ
आकासभीऐसाइस्थूलहै॥जैसेंअणुकेआगेसुमेरइस्थूलहोताहै॥तिसविषेंजववेदनासंकल्प
रीआभासहोईकरितवतिसकानामचेतनहूआ॥वहुडिअहंताभावकोंप्रापतहूआ॥अहंअसिजे
सेंसुपनेविषेंआपकोंपुरुषहस्तीदेषणेलागे॥जैसेंआपकोंअहंमानणेलागा॥वहुडिदेसका
लआकासआदिकदेषणेलागा॥तवचितकलाजीवअवस्थाकोंप्रापतभई॥अरुवासनाकरणे
हारीहूईजवजीवभावहूआ॥तववुद्धिनिश्चैआत्मकहोईकरिइस्थितभई॥सवदअरुक्रियाज्ञानसं
गतभई॥एकएकप्रतिमिलकरिसीघ्रहीकल्पतीभई॥जवमनहूआसोमनसंकल्परूपमायाते
कावीजहै॥तवअतिवाहकसरीरविषेंअारूपहोइकरिब्रह्मसत्ताइस्थितभई॥इसप्रकारउद्भ
तभईहै॥वहुडिवायुसत्तासंपदसत्ताहूई॥तिसतेंसुपरसमात्रआप्रगटभई॥वहुडितेजसत्ताहूई
तिसतेंप्रकाससत्ताहूई॥प्रकासतेंनेत्रसत्ताप्रगटभई॥वहुडिजलसत्ताजलतेंस्वादसत्ता॥स्वादतें
रससत्ताजिह्वाप्रगटभई॥वहुडिगंधसत्तागंधतें॥प्रासिकसत्ताघ्रसितें॥प्राणसत्तापिंडसत्ताप्रग
भई॥देसकालसत्तासर्वसत्ताहूई॥इनकोंएकठाकरिकेंफुरी॥जैसेंवीजपत्रफूलफलआदिकक
अंश्रहोताहै॥तैसेंइहपर्यष्टकजाणणा॥इहीआतिवाहकदेहहै॥तिसकाआश्रभई॥वास्तवतेंकछुउ
पजानाहीं॥केवलपरमात्मसत्ताअपणेआपविषेंफुरतीहै॥जैसेंजलविषेंजलफुरताहै॥तैसें
आत्मसत्ताअपणेआपविषेंफुरतीहै॥हेमुनीश्वरसंवितविषेंजोसंवेदनरूपकछुफुरनाहोकरिफु
रतीहै॥सवदकरिकेजववस्तुरूपकोंजाणणा॥तवनष्टहोजातीहै॥जैसेंसंकल्पकरिरचया॥नग
रसंकल्पकेभावहूए॥अभावहोजाताहै॥तैसेंआत्माकेज्ञानतेंसंवेदनकाअभावहोजाताहै॥हे
मुनीश्वरसंवेदनतवलगभासतीहै॥जवलगइसकोंजाण्यानाहीं॥जवजाणिताहै॥तवसंवे
दनकाअभावहोजाताहै॥संवितविषेंलीनहोजाताहै॥भिन्नसत्ताइसकीकछुनाहींरहती॥हे
मुनीश्वरजोप्रथमअणुतनमात्राथी॥सोभावनाकेवसतेंइस्थूलदेहकोंप्रापतभई॥इस्थूलदे
हहोइकरिभासणेलागी॥अरुजैसेंजैसेंदेसकालआदिकपदार्थोंकीभावनाहोगई॥तैसेंतै
सभासणेलागा॥जैसेंगंधर्वनगरभासताहै॥जैसेंसुपनपुरभासताहै॥तैसेंभावनाकेवसतेंइह
पदार्थभासणेलागे॥वसिष्टउवाच॥हेभगवनगंधर्वनगरअरुसुपनपुरकेसमानइष्टकोंके
सेकहतेहो॥इहजगतप्रतक्षदिखाईदेताहै॥इसकरअनेकविकारइष्टहोतेहैं॥किसजुगतकर

संसारदुषोंतेंमुक्तहोवीये॥सोउपायकहो॥ईश्वरउवाच॥हेमुनीश्वरसंसारवहुदुषइसकोंवा
सनाकेवसतेंदिषाईदेताहै॥जोअविद्यमानविषेंस्वरूपकेप्रमादकरिकेविद्यमानवथहुई
है॥जगतकेपदार्थोंकोसतजाणकरिजोवासनाफुरतीहै॥तिसवासनाकरिदुषहोताहै॥
हेमुनीश्वरइहजगतअविद्यमानहै॥जैसेंमृगतृष्णाकाजलअसतहोताहै॥तैसेंइहजगतअस
तहै॥तिसविषेंवासनाअरुवासकअरुपदारथ॥करणजोगतीताहूयाहै॥जैसेंमृगतृष्णाकेज
लकोंपानकरिकेंतृष्णाकोऊनाहींहोता॥काहेतेजोजलहीअसतहै॥तैसेंसतरूपमृगतृष्णा
केजलकीवासनाकरे॥तैसेंइहजीवहै॥वासनाकरणजोगअरुवासकमिथ्याहै॥तैसेंइहजगत
हीअसतहै॥इसकेपदार्थोंकीवासनाकरणीहूयाहै॥ब्रह्मातेंआदिकृमपर्यंतसभजगतमि
थ्यारूपहै॥वासनावासकअरुपदार्थकरणजोगतीतोकेअभावहूए॥केवलआत्मभावहूता
है॥सभभ्रममात्रशांतहोजाताहै॥हेमुनीश्वरइहजगतभ्रममात्रहै॥वास्तवतेंकछुनाहीं॥जैसें
वालककोंअज्ञानकरिकेंअपणीपरछावींविषेंवेतालभासतीहै॥जवविचारकरिदेषे॥तववेता
लकाअभावहोजाताहै॥तैसेंअज्ञानकरिकेंइहजगतभासताहै॥आत्मज्ञानविचारकरिइस
काअभावहोजाताहै॥जैसेंमृगतृष्णाकीनदीभासतीहै॥जैसेंआकासविषेंनीलताअरुदूसरा
चंद्रमाभासताहै॥तैसेंआत्माविषेंदेहअज्ञानकरिकेंभासताहै॥जिसदेहादिकोंविषेंइस्थिरव
द्धिहै॥हेमुनीश्वरजोविचारवानहै॥जगतविषेंसतवुद्धिहै॥सोइहमारेउपदेसकाजोगनाहीं॥अरुसभक
वानहै॥तिसकोंउपदेसकरणाजोगहै॥जोमूरषहै॥अरुअधमीहै॥अरुअसतवादिहै॥अरुवैरागहोवे
सोंतेरहितअनारजहै॥तिसकोंज्ञानवानउपदेसनकरे॥जिसविषेंविचारहोवे॥अरुजोइनगुणोंतेंरहितविपर्जेहै
कोमलनामअरुआचारहोवे॥तिसकोंउपदेसकरणाजोगहै॥अरुजोइनगुणोंतेंरहितविपर्जेहै
तिसकरणा॥ऐसेंहोताहै॥जैसेंमहासुंदरस्त्रीवनेवनजिसकीकांतऐसीकिसीकीकन्याहोवे
अरुसुपनकल्पनपुरुषकोंविवाहदेणेकीइछाहै॥तैसेंहीअपात्रकोंउपदेसकरणामूरषता
है॥वसिष्टउवाच॥हेभगवनउहजीवजोआदिसृष्टीकेउतपतभया॥अरुदेहअसमअपणेसाथ
देषताभया॥तिसकेअनंतरकैसेंइस्थितभया॥ईश्वरउवाच॥हेमुनीश्वरपरमआकासतेंउप
जया॥तैसेंमनुक्रकोंकहताहै॥तोअपणेसाथसरीरदेषताभया॥सुपननगरकीन्याईसर्ववातवि
दयनआत्मातेंउपजकरिजीवअपणेसरीरकोंदेषणेलागा॥हेमुनीश्वरआदिजोफुरयाजीव
अरुप्रमादकोंनप्रापतभया॥अपणेस्वरूपहीविषेंअहंप्रत्ययरहा॥इसकारणतेंईश्वरहोकरि
इस्थितभया॥तिसकोंइहनिश्चारहा॥जोमेंसनातनहों॥नितहोंसुद्धपरमानंदस्वरूपहों॥अ
च्युतरूपपरमपुरुषहों॥इसप्रकारआदिजीवकानिश्चारहा॥आत्माकीअपेक्षाकरिकेंतिस
कोंजीवकहाहै॥अरुसृष्टजगतकीअपेक्षाकरिकेंउसकोंईश्वरकहाहै॥हेमुनीश्वरउहजोआ
दिजीवहै॥सोकहींविस्नुरूपहोकरिब्रह्माकोंनाभकमलतेंउत्पनकीयाहै॥किसीसृष्टिविषें
प्रथमब्रह्माहूआहै॥विस्नुअरुरुद्रतिसतेंहूएहैं॥विस्नुअरुब्रह्मादोनोंतिसतेंहूएहैं॥चेतन
आकासविषेंजैसाजैसासंकल्पफुरयाहै॥तैसाहोकरिइस्थितभयाहै॥वास्तवतेंसभअसत
रूपहै॥अज्ञानभ्रमकरिकेंहूआहै॥सतरूपहूईभासताहै॥जैसेंपरछावीं विषेंवेतालहोताताल
ताहै॥तैसेंअज्ञानकरिकेंसतरूपहोइभासताहै॥आदिपुरुषनेंकल्पकरिजोसृष्टहै॥सोपरमा
कासकेएकनिमेषतेंहूईहै॥अरुनिमेषविषेंलयहोजातीहै॥एकनिमेषकेप्रमादकरिकें
ल्पोंकसमूहविनीतहोजातेहैं॥अरुप्रमाणप्रमाणविषेंसृष्टफुरतीयांहै॥कल्पअरुमहा
कल्पतिन्होंविषेंभासतेहैं॥कईसृष्टांपरसपरदेषतीयांहै॥कईअन्याअन्यअदृष्टरूपहैं॥इस
प्रकारसृष्टतिसकेसंवितकलास्वरूपकोंआश्रावतीहैं॥तवलीनहोजातीयांहै॥जैसेंसुप
नकापर्वतजागणेतेंलीनहोजाताहै॥जैसेंफुरणेकीसृष्टअफुरहूएलीनहोजातीहै॥हेमुनी
श्वरजीवजीवकीअपणीसृष्टहै॥तिन्होंसृष्टोंकोंकोऊदेसरोकनाहींसकता॥नकालरोकस
कताहै॥काहेतेंजोअपणेअपणेसंकल्पविषेंइस्थितहै॥अरुआत्माकाचमतकारहै॥जैसें
फुरणाफुरताहै॥तैसाचमत्कारहोईभासताहै॥ईश्वरउवाच॥हेमुनीश्वरकछुउपजताहै॥
ननाशहोताहै॥सतहैचेतनतत्वअपणेआपविषेंपड्याचमकताहै॥जैसेंसुपनविषेंनग
रउपजताहै॥अरुमिटजाताहै॥जैसेंसंकल्पपहाडउपजकरिनष्टहोजाताहै॥जैसेंजग
तउपजकरिनष्टहोजाताहै॥जैसेंसुपनविषेंसृष्टअरुसंकल्पपहाडकोंरोककोऊना
हींसकता॥तैसेंअपणीअपणीसृष्टकोंदेसकालनाहींरोकसकता॥काहेतेंजोओरहोव
इनकासदभावनाहीं॥संकल्परूपहैं॥हेमुनीश्वरजैसेंआदितत्वतेंजीवईश्वरफुरेहैं॥तैसें
कर्मफुरेहैं॥कहंतेंलकाविरछपरजंतसभएकछिणविषेंउसतत्वतेंफुरआएहैं॥सुमे
रआदिकभीअपणेइस्थानविषेंरोकतेहैं॥अन्यकोंअणुभीनाहींरोकते॥काहेतेंजोउपज

होइहैहीनाही ॥ तैसेआत्माविषैस्वछताआभासरूपहै ॥ हेमुनीस्वरइसप्रकारजगतसभमा
यामात्रहै ॥ भावकरिकेपडाभासताहै ॥ जवआत्माकाअभ्यासहोताहै ॥ तवभेदकल्पनास
भमिटजातीहै केवलउपसमरूपशिवतत्वपडाभासताहै ॥ हेमुनीस्वरनिमेषकाजोसो
आभागहै ॥ तिसकेअर्धभागप्रमादहोवणेकरिकेनानाप्रकारकाजगतहोताहै ॥ सतअस
तरूपजगतविस्थकर्मावणावताहै ॥ आत्मतत्वनहरहै ॥ नानिकटहै ॥ नअधःहै ॥ नऊरधहै
नहरवहै ॥ सतअसतकेमधअनुभवरूपहै ॥ सर्वकाजानताहै ॥ प्रतछआदिप्रमाणनिकावि
षयनाहीकरसकते ॥ जैसेजलविषेअगनिनाहीनिकसतीहै ॥ तैसेतिसविषेभेदनाहीपा
ईता ॥ हेमुनीस्वरजोकछुतुमनेपुछयाथा ॥ सोमैकहाहै ॥ तिसविषेचित्तकोलगावणा ॥ तेरा
कल्याणहोवेगा ॥ अवहमअपणेवांछतस्थानकोजातेहै ॥ चलोपार्वतीअवअपणेइस्था
नकोजावे ॥ वसिष्ठउवाच ॥ हेरामजीइसप्रकारजवईस्वरकहा ॥ तवमैअर्घपादकरिपूज
नकीया ॥ पार्वतीअरुगणोंकोलेकरिईस्वरआकाससमारगकोचलतेरहे ॥ जवलगमुझकोदृ
ष्टआवतेथे ॥ तवलगमैउनकीओरदेखतारहा ॥ वहुडमैअपणेकुसाकेइस्थानपरजाइवैठा
जोकछुईस्वरउपदेसकीयाथा ॥ सोमैअपणीसहवधसाथविचारणलागा ॥ वसिष्ठउवाच
हेरामजीजोकछुमुझकोईस्वरकहा ॥ सोमैआपभीजाणताथा ॥ अरुतुमभीजाणताथा ॥ इहज
गतभीअसतहै ॥ दषणेवालाभीअसतहै ॥ तिसमायारूपीजगतविषेमुझकोसतक्याक
हो ॥ अरुअसतक्याकहो ॥ जैसेजलविषेद्रवताहोतीहै ॥ अरुजैसेपवनविषेस्पंदहोताहै
जैसेआकाशविषेसुन्नताहोतीहै ॥ तैसेआत्माविषेजगतहै ॥ हेरामजीजोकछुप्रवाहकरिप्रा
प्तहोताहै ॥ तिसोकरिसदेवकाअरचनकरताहो ॥ इसक्रमकरिकेमैनिरवासीहो ॥ जग
तकीक्रियाविषेभीनिरदोषहो ॥ इसकरिचेष्टाकरताहो ॥ विवहारकरताहूंदुखपावताहो ॥ तो
भीसदाशांतरूपहो ॥ यथाप्रापतआचाररूपीफुललोकदृष्टिमैआत्मदेवकीअरचनाकरताहो ॥
छेदभेदमुझकोकोऊनाहीहोता ॥ हेरामजीग्राहकजोहै ॥ विषयअरुग्राहकजोहै ॥ इंद्रियां
तिनकासंवंधजोहै विषयअरुइंद्रियांकामिलना सोसर्वजीवांकोतुलहै ॥ परअज्ञानवा
नदुखपावहै ॥ सोसावधानरहतेहै ॥ जोकछुदेषतेसुणतेवोलतेषातेसोंघतेसपर्शकरते
है ॥ आत्मातेइतरनाहीजाणते ॥ इसप्रकारसावधानरहतेहै ॥ अरुजोअज्ञानीहै ॥ तिनको
कर्तत्वकाअभिमानहोताहै ॥ तिसकरिदुखीभीहोतेहै ॥ हेरामजीतुमभीइसीदृष्टिकोआश्र
यकरिकेससाररूपीवविषेनिहसंगविचरो ॥ तुमकोभीषेदकछुनाहीप्रापतहोवेगा ॥ जिसकी
हृदइसप्रकारसमानहोगईहै ॥ तिसकोवडाकष्टआनप्रापतहोवे ॥ धनअरुवांधवोंकावियोग
होवे ॥ तोभीतिसकोषेदनाहीहोता ॥ इहजोदृष्टमैनेतुझकोकहीहै ॥ इसकोआश्रयकरिरा ॥ तव
तुझकोदुखकोऊनहोवेगा ॥ हेरामजीसुखदुखअरुधनअरुवांधवोंकावियोगइहसभपदार्थ
अनितहै ॥ इहआवतेभीहै ॥ अरुजातेभीहै ॥ इनकोआगमापाईजानकरिविचारो ॥ इहसंसारवि
षमरूपहै ॥ एकरसकदाचितनाहीरहता ॥ इसकोइस्थिरजाणकरिदुखीनाहीहोवणा ॥ हेरा
मजीजैसेपदार्थअरुकालजावे ॥ तैसेजावेअरुजैसेइष्टवस्तुआवेतैसेआवे ॥ इहसभआगमा
पाईपदार्थहै ॥ आवतेभीहै ॥ अरुजावतेभीहै ॥ इष्टकीप्रापतअनिष्टकीनिव्रतविषेहरषवानना
हीहोवणा ॥ अरुअनिष्टकीप्रापतइष्टकेवियोगकरिखेदवाननाहीहोवणा ॥ जैसेआवेतैसे
जावे ॥ जिसआवणाहै ॥ सोआवेहीगा ॥ जिसजावणा ॥ सोजावेहीगा इहसतषडप्रवाहरूप
है ॥ इसविषेआस्थाकरिकेतपायमाननाहीहोवणा ॥ हेरामजीइहसभजगततुच्छहै ॥ तेंइह
हरषअरुसोककिमतिमितकरताहै ॥ इसदृष्टकोआश्रयकरिकेजगतविषेसुषसकरीत्याईवि
चरु ॥ वहुडतुरीयातीतअवस्थाकोप्रापतहोवेगा ॥ जोसमसहीप्रकासरूपहै ॥ हेरामजीजोकछु
मैतुझकोकहणाथा ॥ सोकहाहै ॥ अवआगेजोतेरीइछाहोईसोकरु ॥ परपीछेजोतुझेइछा
थी ॥ जोव्रह्मअनंतरूपविषेमलकलंककेसेप्रापतभयाहै ॥ सोअववहुडप्रस्नकर ॥ जोमैउत्तरक
हो ॥ श्रीरामउवाच ॥ हेव्रह्मणअवमुझकोससाकछुनाही ॥ सभसंसानष्टहोगया ॥ जोकछुजा
णताथा सोमैजाणाहै ॥ अवमैपरमअकृतमत्रिपतताकोप्रापतभयाहो ॥ हेमुनीस्वरआ
त्माविषेकछुमैलहै ॥ नद्वैतहै ॥ नएकहै ॥ कोऊकल्पनानाही ॥ पूर्वमुझकोअज्ञानथा ॥ तवमैपु
छयाथा ॥ अवतुमारेवचनोंकरिमेराअज्ञाननष्टभयाहै ॥ अरुकलंककछुनाहीभासता ॥ तआ
त्माविषेजन्महै ॥ नमृतहै ॥ सर्वव्रह्महीहै ॥ हेमुनीस्वरप्रस्नसंसेकरिउपजयाहै ॥ सोसंसामेरा
नष्टहोगयाहै ॥ जैसेमंत्रीकापुतलीहलावणेतेरहितअचलहोतीहै ॥ तैसेमैसंसेतेरहित
अचलचित्तइस्थितहो ॥ सर्वसारोंकासारमुझकोप्रापतभयाहै ॥ जैसेसुमेरपर्वतअचलहोता
है ॥ तैसेमैअचलहो ॥ कोऊक्षोभमुझकोनाही ॥ असावर्णकोऊनाही ॥ जोमुझकोत्यागणेजोगा

गजोगाहोवे ॥ अरुऐसाभीकोऊनाहीजोग्रहणकरणेजोगाहोवे ॥ नकिसीपदार्थकीमुझको
इछाहै ॥ नअनिछाहै ॥ शांतरूपविषेइस्थितहो ॥ नस्वर्गकीमुझकोइछाहै ॥ ननरकविषेद्वे
षहै ॥ सर्वव्रह्मरूपमुझकोभासताहै ॥ मंद्राचलपर्वतकीन्याईआत्मतत्वविषेइस्थितहो ॥ हे
मुनीस्वरजिसकोअवस्तुविषेवस्तुवुधहोतीहै ॥ अरुकल्पनासुलष्टदृष्टविषेइस्थितहोतीहै सो
किसीकाग्रहणकरताहै ॥ किसीकात्यागकरताहै ॥ अरुदीनताकोप्रापतहोताहै ॥ हेमुनीस्वरइह
संसारमहासमुद्ररूपहै ॥ रागद्वेषरूपीतिसविषेकलोलहै ॥ अरुसभअसुभतिसविषेमछक
छहै ॥ ऐसेभयानकसंसारसमुद्रतेअवमैतरगयाहो ॥ तमाअप्रमादकरिकेसभसंपदाकेअंतको
प्रापतभयाहो ॥ सभदुखनष्टहोगयेहै ॥ सर्वकेसारकोप्रापतभयाहो ॥ पूरणआत्माहो ॥ अदीनप
दकोप्रापतभयाहो ॥ परमअभेदसतकोप्रापतभयाहो ॥ अनात्मारूपीहस्तीकोमैमारयाहै ॥ आत्मा
तेइतरमुझकोकछुनाहीभासता ॥ समस्तविकल्पोंकेजालगलतहोगएहै ॥ इछाआदिविकारन
ष्टहोगएहै ॥ दीनताजातीरहीहै ॥ तीनोजगतोंविषेमैजीताहै ॥ सदाउदितरूपहो ॥ वसिष्ठउवाच ॥
हेरामजीदेहइंद्रीयांकरिजोकेवलकर्मकरताहै ॥ अरुमनविषेअसंगताहै ॥ तोजोकछुउहकरताहै
सोभीकछुनाहीकरताहै ॥ जोकछुइंद्रियांकाइष्टप्रापतहोताहै ॥ सोएकछिनमात्रसुखहोता
है ॥ तिसछिणप्रसन्नताविषेजोवंधमानहोतेहै ॥ सोवालकमूरखहै ॥ जोज्ञानवानहै सोतिस
विषेवंधमाननहीहोतेहै ॥ हेरामजीवांछाहीइसकोदुखीकरतीहै ॥ सोसुंदरविषयोंकीवांछा
करताहै ॥ जोजतनकरितिनकोप्रापतहोतीहै ॥ तवमधछिणसुखहोताहै ॥ वहुडवियोगहो
ताहै ॥ तवइसकोदुखदेजाताहै ॥ तिसकारणतेइनकीवांछाहीत्यागणेजोगहै ॥ इनकीवांछा
तवहोतीहै जोस्वरूपकाअज्ञानहोताहै ॥ अरुदेहादिकोविषेअहंभावहोताहै ॥ जवदेहवि
षअहंहोताहै ॥ तवअनेकअनर्थोकोप्रापतहोतीहै ॥ तातेहेरामजीज्ञानरूपीपहाडऊपर
चडयारहणा ॥ अहंतारूपगर्तविषेनाहीगिडना ॥ हेरामजीआत्मज्ञानरूपीसुमेरपर्वतहै
तिसपरचडु ॥ योवहुडअहंताअभिमानकरिकेगर्भविषेवारंवारलेवणाहै ॥ सोगर्तविषेगिड
नाहोताहै ॥ जवइहअपभावकोत्यागेगा ॥ तवअपणेस्वभावसत्ताकोप्रापतहोवेगा ॥ जोसम
शांतरूपहै ॥ अरुविकल्पजालमिटजावेगा ॥ अरुसमुद्रवत्पूरणहोजावेगा ॥ द्वैतरूपफुरणकोऊ
नफुरेगा ॥ हेरामजीतवअन्तरतेविषयोंकाविसरजावेगा ॥ तवमनभीनिरासहोजाताहै ॥ चित्तनि
हसंगहोताहै ॥ वस्तुतेदेषोतोसभविषेसत्तासमानरूपहै ॥ ब्रह्मविदघनइस्थितहै ॥ तिसतेइत
रजोकछुदेहभासताहै ॥ सोस्वरूपकेप्रमादकरिकेभासताहै ॥ हेरामजीआत्माकाअज्ञानहीवं
धनरूपहै ॥ अरुआत्माकावोधहीमुक्तरूपहै ॥ तातेवलकरिकेआपकोआपहीजगावो ॥ तवबं
धनतेमुक्तहोवे ॥ हेरामजीजिसविषेविषयोंकास्वादताही ॥ अरुजिसविषेइनकाअनुभवहो
ताहै ॥ सोतत्वआकाशवतनिर्मलसत्ताहै ॥ वासनातेरहितहै ॥ जोवासनातेरहितहोइकर[illegible]
कछुकुपाकरताहै ॥ सोविकारकोनाहीप्रापतहोता ॥ जद्यपिअनेकक्षोभआनप्रापतहोवे ॥ तव
भीउसकोकछुविकारनाहीहोता ॥ ज्ञाताज्ञानज्ञेयतीनोआत्मरूपभासतेहै ॥ जवऐसाजाणया
तवभयकिसीकानाहीरहता ॥ चित्तकेफुरणेकरिजगतउत्पतहोताहै ॥ अरुचित्तकेअफुरहुएली
नहोजाताहै ॥ जववासनासहितप्राणउदेहोतेहै ॥ तवजगतउदेहोताहै ॥ जववासनासहित
प्राणलीनहोतेहै ॥ तातेजोगअभ्यासकरिकेवासनाअरुप्राणकोइस्थिरकरो ॥ अरुजवमूरख
ताउदेहोतीहै ॥ तवकर्मउदेहोताहै ॥ अरुमूरखताकेलीनहुएकर्मलीनहोतेहै ॥ तातेसतसंगअ
रुसतशास्त्रोंकाविचारकरिमूरखताकोक्षयकरो ॥ जैसेवायुकेसंगकरिधूडउडकरिवदलकाआ
कारहोताहै ॥ तैसेचित्तकेफुरणेकरिजगतउत्पतहोताहै ॥ हेरामजीजवचित्तफुरताहै ॥ तवदृश्य
दरसनकासंवंधफुरआवताहै ॥ जैसेआकासकरिरूपभासआवताहै ॥ तैसेजवचित्तफुरताहै
तवनानाप्रकारकाजगतफुरआवताहै ॥ अरुचित्तकेअफुरहुएजगतलीनहोजाताहै ॥ वसिष्ठ
उवाच ॥ हेरामजीवासनाक्षीणहोवे ॥ अथवाप्राणकानिरोधहोवे ॥ तवचित्तअफुरहोजाताहै ॥
हेरामजीजवफुरणेतेरहितहूआ ॥ तवचित्तअचित्तहोजाताहै ॥ सोवासनाकेक्षयहुएचित्तअ
चित्तहोताहै ॥ अथवाप्राणकेरोकणेतेचित्तअचित्तहोताहै ॥ जवचित्तअचित्तहूआ ॥ तवपरम
पदकोप्रापतहोताहै ॥ हेरामजीदृष्टादरसनसंवंधकेमधविषेजोसुखहै ॥ सोपरमात्मासुख
है ॥ सोएकांतकसुखहै ॥ सोसंवितव्रह्मरूपहै ॥ तिसकेसाक्षात्कारहुएमनक्षयहोताहै ॥ जहां
चित्तनाहीउपजता ॥ सोचित्ततेरहितअकृतमसुखहै ॥ ऐसासुखस्वर्गविषेभीनाही ॥ जैसेसु
[illegible]विषेद्वैतनाहीहोता ॥ तैसेचित्तसत्ताविषेपरमसुखवाहीहोता ॥ चित्तकेउपसमविषे
जोसुखहै ॥ सोअवाच्यहै ॥ वाणीकरिनाहीकहाजाता ॥ तिसकेसमानऔरसुखकोऊनही ॥ अरु
तिसतेअतिसायसुखभीनाही ॥ अरुसुखनासभीहोजातेहै ॥ आत्मसुखनासनाहीहोता ॥ अवि

नासीहै ॥ अरुउपजणेविसमरणेदोनोंतेरहितहै ॥ हेरामजी अवोधकरिकेचितउदेहोताहै ॥ अ
रुआत्मवोधकरिकेअांतहोजाताहै ॥ जैसेमोहकरिकेवालककोंवेतालदिषाईदेताहै ॥ मोह
केनष्टहुएवेतालनष्टहोजाताहै ॥ तैसेअज्ञानकरिचितउदेहोताहै ॥ चितअज्ञानकेनष्ट
हुएनष्टहोजाताहै ॥ जोविदमानचितभासताभीहै ॥ तोभीवोधकरिकेनिरवीजहोताहै जै
सेतांवापारससापर्सिलकरिकेस्वर्नहोजाताहै ॥ आकारहीपडाहुष्टआवताहै ॥ तवतां
वेकाअभावहोजाताहै ॥ तैसेज्ञानकरिकेचितअचितहोताहै ॥ सतपदकोंप्रापतहोताहै ॥ परु
नामरूपतेसेहीभासताहै ॥ वसिष्ठउवाच ॥ हेरामजी ज्ञानीकोचितभीहुयाकरताहुष्टआवताहै
परुचितअचितहोगयाहै ॥ जेताकछुजगतअवोधकरिकेभासताथा ॥ सोवोधहुएतेघ्रांतहो
जाताहै ॥ जोअज्ञानकरिभासताहै ॥ सोज्ञानकरिकेसून्यहोजाताहै ॥ वहुरउतांहीउपजता ॥ उस
चितसत्तपदकोंप्रापतहोताहै ॥ काहुकालतोउडुरतुरीयअवस्थाविषेस्थितहुआविचरता
है ॥ वकडतरैल्यातीतपदकोंप्रापतहोताहै ॥ अथ उर्ध्वमधसर्वंब्रह्महीसत्तइसप्रकारअनेक
होकरिस्थितभयाहै ॥ [illegible]कोमोकरिकेभीएहीहै ॥ सर्वात्माआरकछुनाहीचितआदिकहै ॥ हे
रामजीजवरहु[illegible]पतएकेअपूर्वआश्चर्यरूपवोधकाकारणआख्यानसुण ॥ एकविलफलहै ॥ अ
रुअनंतजोजनोंपर्यंतत्तिसकाविस्तारहै ॥ अरुअनंतजुगवितीतहोगएहै ॥ उहकवजीर्णभाव
कोकवहुनाहीप्रापतहोताहै ॥ अरुअनादिहै ॥ तिसविषेअविनासीरसहै ॥ कवहुनासनाहीहो
ता ॥ अरुरसकरिपूरणहै ॥ अरुचंद्रमाकीन्याईसुंदरहै ॥ वडउकसाहै ॥ सुमेरआदिकजोवडेपहाड
है ॥ तिसकोमहाप्रलयकापवनत्रिणाकीन्याईउडावताहै ॥ सोपवनभीतिसविलकोंहलाइव
लाइनाहीसकता ॥ हेरामजीजोजनोंकेअनंतकोटवहुडतिनकैभीकोटीकरितिसकोसंख्या
नाहीकरिजाती ॥ ऐसाउहविलफलहै ॥ वडडकेसाहै ॥ वडुतवडाहै ॥ जैसेसुमेरकेनिकटराई
काकणकाहोइ ॥ सोसुछमतुछभासताहै ॥ तैसेतिसविलकेआगेव्रह्मंडतुछसूछमभासताहै ॥
सोविलरसकरिपूरणहै ॥ गिडनाकवहुनाही ॥ अरुपुरातनहै ॥ तिसकाआदिमधअंतब्रह्माविस
नरुद्रइंद्रादिकभीनाहीजाणसकते ॥ उसकेमूलकोंनकोईजाणसकता ॥ नमधकोंजाणसकता
है ॥ अरुउसकाआकारहै ॥ अरुअरुष्टफलहै ॥ अरुअपणाप्रकासकरिप्रकासताहै ॥ वडुइकेसाहै
एकठांउहुतहै आकारजिसका ॥ अरुसदाअचलहै किसीविकारकोंनाहीप्रापतहोता ॥ सततनि
र्मलहै ॥ निर्विकारनिरंतररूपहै ॥ नीरंभहै ॥ अरुचंद्रमाकीन्याईसीतलहै ॥ सुंदरहै ॥ अरुतातसवि
तरूपहीतिविषेरसहै ॥ सोअपणारसआपहीलेताहै ॥ अरुसर्वकारसदेणेवालाउहीहै ॥ स
भकोप्रकासकर्ताउही ॥ तिसविषेअनेकचित्रलेषानिवासकीयाहै ॥ अरुअपणास्वरूपकोत्या
गतानाही ॥ अनेकरूपहोइकरिआपहीभासताहै ॥ तिसविषेस्पंदरूपीरसपडाफुरताहै ॥ मदा
कुरआदिकउसकेकणहै ॥ ततामताइदेतादेसकालहुयानेमरागद्वेषहेयउपादेय ॥ भूतका
लभविष्यतकालप्रकासतम ॥ विद्याअविद्याइत्यादिककल्पनाजालरसकेफुरणेकरिपडिफु
रतेहै ॥ सोविलआत्मारूपहै ॥ अनभवरूपहै ॥ रसतिसविषेसोमदाअपणेआपविषेइस्थित
है ॥ तिनयांतरूपहै ॥ तिसकोजाणकरिपुरुषकृतकृतहोताहै ॥ श्रीरामउवाच ॥ हेभगवनसम
वधर्मोकेवेत्तातुमोइहविलरूपीमहाचिदघनसत्ताकही ॥ सोऐसामेरेनिश्चैभया ॥ सोचेत
नमजारूपअहंताआदिकजगतहै ॥ इसविषेभेदरंचकभीनाही ॥ इतअरुएककल्पनात्म
कसर्वउहीहै ॥ वसिष्ठउवाच ॥ हेरामजीजैसेव्रह्मंडमजासुमेरआदिकपर्वतपृथवीहै ॥ तै
सेचेतनविलकीमजाइहव्रह्मंडहै ॥ सवजगतचेतनविलरूपहै ॥ इतरकछुनाही ॥ तिसस
र्वगतरूपीचमत्कारमरचबीजहै ॥ तिसविषेजगतरूपीचमत्कारतीदृणताहै ॥ सोसुपनवत
निर्मलहै ॥ सिलाकेअंतरवतमामिस्थितहै ॥ हेरामजीअवअउरआश्चर्यवतआख्यानइकसुण ॥
चंद्रमावतमहासुंदरअरुस्निग्धसपरमअरुविस्तारितरूपसिलाहै ॥ सोमहानीरंध्रहै ॥ घ
नरूपहै ॥ तिसविषेकमलउपजतेहै ॥ ऊर्धतिनकीवेलीहै ॥ तिसकाऊर्धअरुअधःमूलहै
अरुअनेकतिसऊपररेषाहै ॥ अरुसंषचक्रगदापद्मआदिकतिसऊपररेषापडीयाहूईयाहै
श्रीरामउवाच ॥ सतकहतेहो ॥ उहसिलामेंभीदेषीहै ॥ जोविस्नकीमूरतंगंडकानदीविषे
सालग्रामहै ॥ जोविस्नुकीमूरतपहाडगंडकानदीविषेहै तिसतेजोसालग्रामकीमूरतउ
रतीहै ॥ तिसऊपरसंषआदिकचिह्नहोतेहै ॥ वसिष्ठउवाच ॥ हेरामजीजैसेतूंजानताहै ॥
अरुदेषीभीहै ॥ सोतैसेहीहै ॥ परजोसिलामेंकहताहों ॥ सोअपूर्वसिलाहै ॥ तिसअंतरव्रह्मां
डोंकेसमूहहै ॥ अरुतकछुभीनही ॥ हेरामजीचेतनरूपीसिलामेंतुझकोंकहीहै ॥ जिसविषे
संहरणेतव्रह्मांडहै ॥ सोउनचेतनतनाकरिकेसिलावरनतकरीहै ॥ अत्यंतघनहै ॥ अनीरंध्रहै
अरुप्रगटअनभवरूपहै ॥ सोपरमब्रह्मआकासमयसिलाहै ॥ आकासपृथवीपर्वतदसइ-

त्यादिक ॥ विस्वनदीसमुद्रसभतिसहीसिलाकेअंतरइस्थितहै ॥ अरुहैकछुनाही ॥ जैसेसिला
केऊपरकमलरेषाहोतेहै ॥ सोसिलाहीरूपहै ॥ सिलातेइतरकछुनाही ॥ तैसेइहजगतआत्म
रूपीसिलाविषेहै ॥ उपजयानाही ॥ अरुमनरूपीसिलपीपडाकल्पताहै ॥ तिसकरितानाप्र
कारकाजगतपडाभासताहै ॥ आत्माविषेकछुउपजयानाही ॥ जैसेसुपनरूपसिलाकेऊपरक
मलरेषालिषीयाहोतीयाहै ॥ सोसिलातेइतरकछुनाही ॥ तैसेइहजगतआत्माविषेहै ॥ सो
आत्मातेभिन्ननाही ॥ जैसेसिलाविषेउतलीयाहोतीयाहै ॥ सोनउदेहोतीयाहै ॥ नअसतहो-
तीयाहै ॥ ज्योंकीत्योंसिलाहीहै ॥ तैसेआत्माविषेजगतउदेहोताहै ॥ नअसतहोताहै ॥ काहेते
जोवास्तवतेकछुनाही ॥ अरुआत्मातेइतरजोकछुहैतकल्पनाहोतीहै ॥ सोअज्ञानकरिकेभा
सतीहै ॥ जववोधहुआतवकल्पनाघातहोजातीहै ॥ तैसेजलकीवूंदसमुद्रविषेडारीसमुद्ररू
पहोजातीहै ॥ तैसेवोधकरिकल्पनाआत्माविषेलीनहोजातीहै ॥ हेरामजीचेतनअनंतआत्मा
अनंतहै ॥ तिसविषेविकारकल्पनाकोऊनाही ॥ अज्ञानकरिकेकल्पनाभासतीहै ॥ ज्ञानकरिके
लीनहोजातीहै ॥ विकारआत्माकेआश्रभासतेहै ॥ अरुआत्माविकारतेरहितहै ॥ ब्रह्मतेविकार
उत्पतहोतेहै ॥ अरुब्रह्महीविषेइस्थितहै ॥ अरुवास्तवतेकछुहूएनाही ॥ सभआभासमात्रहै
जैसेकिरणाविषेजलाभासहोताहै ॥ तैसेब्रह्मविषेजगतविकारआभासहोताहै ॥ जैसेवीजविषे
विरछहोताहै ॥ पत्रफूलफलडालकाविस्तारएकहीवीजकेअंतरहै ॥ अरुवीजसत्ताभतिस
विषेअनुरूपहोताहै ॥ वीजतेइतरकछुनाहीहोता ॥ तैसेचिदघनआत्माकेअंतरजगतविस्तारहै
सोचिदघनआत्मातेइतरकछुनाही ॥ उहीअपणेआपविषेइस्थितहै ॥ अरुजगतभीउहीरूपहै
जोएकसामीएतवहैतभीहोताहै ॥ जोएककहणाभीनाही ॥ तवहैतकहांहोवे ॥ जगतअरुआत्मा
विषेभेदकछुनाही ॥ आत्माहीअद्वैतअपणेआपविषेइस्थितहै ॥ जैसेसिलाकेअंतरमूरत
लेषाहोतीयाहै ॥ सोसिलारूपहै ॥ तैसेजगतआत्मारूपहै ॥ जैसेसिलाविषेमूरताभिन्नभिन्नवि
षमस्वरूपहोतीयाहै ॥ अरुआधारभूतसिलाअभेदहै ॥ तैसेआत्माविषेजगतमूरताभिन्नभिन्नवि
षमस्वरूपभासतीयाहै ॥ अरुआधारभूतचेतनअभेदहै ॥ ब्रह्मसत्तासमानसुषमसमइस्थितहै
वडेविकारभीतिसविषेदृष्टआवतेहै ॥ परुवास्तवतेविकारतेरहितइस्थितहै ॥ कार
णतेरहितचेतनसिलाइस्थितहै ॥ तिसनिरघनरूपचिदघनसत्ताविषेइहजगतकल्पतहै ॥
अधिष्ठानसत्तासदासर्वदासमप्राणरूपहै ॥ भेदभावकोकदाचितनाहीहोती ॥ जैसेजलवि
षेतरंगअभेदरूपहै ॥ जैसेस्वर्नविषेभूषणअभिन्नरूपहै ॥ तैसेआत्माविषेजगतअभिन्नरू
पहै ॥ वसिष्ठउवाच ॥ हेरामजीजैसेवीजकेअंतरफलफूललछसमपूरणहोतेहै ॥ सोआदिभीवी
जहै ॥ अरुअंतभीवीजहै ॥ जवफलपरपकहोताहै ॥ तववीजहीहोतेहै ॥ तैसेजगतविषेभी
आत्माहै ॥ परसदाहीअच्युतहै ॥ अरुसमहै ॥ कदाचितभेदविकारपरिणामकोंप्रापतनही
भया ॥ अपणीसत्ताकरिइस्थितहै ॥ जगतकेआदिभीउहीहै ॥ अरुमधभीउहीहै ॥ अरुअंत
भीउहीहै ॥ कछुअउरभावकोंनाहीप्रापतहूआ ॥ देसकालकर्मआदिकजेतीकछुकल्पनाभासती
है ॥ सोउहीरूपहै ॥ जेतकछुसहअरुअर्थहै ॥ सोआत्मातेभिन्ननाहीपाइते ॥ जैसेहृक्षकेआदि
वीजहै ॥ अरुअंतभीवीजहै ॥ मध्यजोकछुविस्तारभासताहै ॥ सोउहीरूपहै ॥ भिन्नकछुनाही ॥
तैसेजगतआदिभीआत्मसत्ताहै ॥ अंतभीआत्मसत्ताहै ॥ मधजोकछुभासताहै ॥ सोभीउहीरू
पहै ॥ हेरामजीचेतनरूपमहाआदर्सहै ॥ तिसविषेसर्वजगतप्रतिविंववतहोताहै ॥ अ
रुसर्वगणजगतसंकल्पमात्रहै ॥ जैसेजसाकिसीकोफुरणाहडहोताहै ॥ तैसाआत्मसत्ता
केआश्रतहोइकरिभासताहै ॥ जैसचिंतामणिविषेसंकल्पकोऊधारताहै ॥ तैसाप्रगटहोइआ
वताहै ॥ सोसंकल्पहीमात्रहोताहै ॥ तैसेजेसीभावनाकोऊधारताहै ॥ तैसेआत्माकेआश्रतहो
इकरिभासतीहै ॥ अनंतजगतआत्मरूपीसणकेआश्रतइस्थितहोताहै ॥ जैसीजैसीभावनाको
ऊकरताहै ॥ तैसीउसकोहोइभासतीहै ॥ हेरामजीआत्मरूपीउवाहै ॥ तिससोजगतरूपीरतन
मातीपडेनिकसतेहै ॥ तैसाजैसाफुरणाहोताहै ॥ तैसाजगतभासआवताहै ॥ जैसेसिलाकेअं
तरलेषाहोतीहै ॥ सोनानारूपचित्रभासतीहै ॥ सोअनन्यरूपहै ॥ तैसेजगतआत्माविषेअनन्यरू
पहै ॥ जैसेसिलाकेअंतरसंषचक्रआदिकरेषाभासतीयाहै ॥ सोसिलारूपहै ॥ तैसेइहजगतआ
त्माविषेभासताहै ॥ सोआत्मरूपहै ॥ आत्मरूपीसिलातनरंध्रहै ॥ तिसविषेछिद्रकोऊनाही ॥ जैसेज
लविषेतरंगजलरूपहोतेहै ॥ तैसेब्रह्मविषेजगतब्रह्मरूपहै ॥ कैसाब्रह्महै ॥ समप्रांतरूप
सघनचेतनइस्थितहै ॥ तिसविषेजगतकछुफुरयानाही ॥ सिलाकेरजावतहै ॥ जैसेविलके
अंतरमजाइस्थितहोतीहै ॥ तैब्रह्मविषेजगतइस्थितहै ॥ जैसेआकासविषेसून्यताहोतीहै
जैसेजलविषेद्रवताहोतीहै ॥ अजैसेवायुविषेस्पंदहोताहै ॥ तैसेब्रह्मविषेजगतहै ॥ ब्रह्म

अरुजगत विषे भेद कछु नहीं ॥ जैसे तरु अरु ह्रक्ष विषे भेद कछु नाही ॥ तैसे जगत अरु ब्रह्म विषे
भेद कछु नाही ॥ ब्रह्म ही जगत है ॥ जगत ही ब्रह्म है ॥ वसिष्ठ उवाच ॥ हे रामजी भाव अभाव भेद
भावकल्पना कोऊ नाही ॥ ब्रह्मसत्ता ही प्रकासती है ॥ ब्रह्म ही जगतरूप होइ करि भासता है ॥ जै
से मरुस्थल विषे सूर्य की किरणा जलरूप होइ भासतीयां है ॥ तैसे ब्रह्म जगतरूप होइ भा
सता है ॥ हे रामजी सुमेरते लेकरि पर्वत अरु त्रिणते लेकरि मन अरु चित्तते लेकरि जगत अ
रु परमाणते लेकरि धूलतइनको विचार देखीए ॥ तव परमसत्ता ही भासती है ॥ सभ पदार्थों विषे
स्थूलता अरु सूक्ष्मभाव करि उही सत्ता व्यापी है ॥ जैसे जलका रस वनस्पती विषे व्याप्या है ॥ तै
से सभ जगत विषे सूक्ष्मताकरि के आत्मसत्ता व्यापी हुई है ॥ जैसे एक ही रससत्ता ह्रक्ष त्रिणगुः
च्छे विषे व्यापी हुई है ॥ अरु एक ही अनेकरूप हुई करि भासता है ॥ तैसे एक ही ब्रह्मसत्ता अनेकरूप
होइ करि भासती है ॥ हे रामजी जैसे मोरके अंडे विषे अनेक रंग होते हैं ॥ जव अंडा फूटता है तव स
तैसे ते अनेक रंग तिसते प्रगट होते हैं ॥ सो एक ही मोरकार सअनेकरूप होइ भासता है ॥ तैसे एक
ही आत्मा अनेकरूप जगत आकार होइ भासता है ॥ जैसे मोरके अंडे विषे एकरस होता है ॥ परजे
नहीं दीरघदरसी अज्ञानी है ॥ तिनको भविष्यत अनेक रंग उस विषे भासते हैं ॥ अनउपजे ही उप
जे भासते हैं ॥ तैसे इह जगत अनउपजा ही नानात्व अज्ञानीकह दे विषे इस्थित होते हैं ॥ अरु ज्ञा
नवान है ॥ तिनको एकरस ब्रह्मसत्ता भासती है जैसे मोरका रसता ही परणामको प्रापत भया ॥
तौ भी एकरस है ॥ अरु जो परणामको प्रापत होक रनानारूप भया ॥ तौ भी एकरस है ॥ तैसे इस ज
गत परमात्मा विषे गुप्त है ॥ तव भी परमात्मा है ॥ अरु जो तारूप होइ करि भास्या तव भी उही है
परणामको नहीं प्रापत भया ॥ अज्ञानीको नानात्व भासता है ॥ ज्ञानवानको एक सत्ता भासती है ॥
अथवा इस दृष्टांतका इह सरा अर्थ है ॥ जैसे मोरका अंडा है ॥ तिस विषे नानात्व कछु हुई नाही ॥ जिस
को दिव्य दृष्टि है ॥ तिसको उस विषे अनउपजे नानात्व भासती है ॥ अरु जिसको दिव्य दृष्टि नाही ॥ ति
सकों भी उही भासती है ॥ नानात्व नाही भासती ॥ तैसे जिनको ज्ञानरूपी दिव्य दृष्टि है ॥ तिसको अनउ
पजा जगत नानात्व होइ भासता है ॥ अरु जो अज्ञानते रहित है ॥ तिसको एक ही ब्रह्म भासता है ॥ अ
रु कछु नाही भासता ॥ हे रामजी नानात्व भासता है ॥ तौ भी कछु नानात्व नाही ॥ जैसे मोरके अंडे वि
षे नाना रंग भासते हैं ॥ तौ एकरूप है ॥ तैसे इह जगत पदार्थ भिन्न भिन्न भासते हैं ॥ तौ भी एक ब्रह्म
सत्ता है ॥ द्वैत कछु नाही ॥ इति सनातन उपदेश नाम सर्गः ॥ ॥ वसिष्ठ उवाच
हे रामजी जैसे अनउपजी कांतरंग मसूरके अंडे विषे होते हैं ॥ सो वीज में अनेक कछु नाही ॥ तैसे
अहंत्व आदिक जगत आत्मा विषे अनउपजे ही उदे रूप भासते हैं ॥ जैसे वीज विषे उनरंगों की उदे
अहं ता दिसेना अनु भी अनंत है ॥ तैसे आत्मा विषे जगत की उदे भी अनुभवरूप है ॥ अरु आत्मसत्ता असहाय पद है ॥ वाणी
भी अनंत है ॥ तैसे आत्मा विषे जगत को उदे भी अनुभवरूप है ॥ अरु और भी किसी अस्थान विषे अ
कविकछु कसा नाही जाना ॥ असा सुखस्वर्ग विषे नाही पाईता ॥ अरु और भी किसी अस्थान विषे
सा सुख नाही पाईता ॥ जैसा सुख आत्मा विषे इस्थित हूए पाईता ॥ हे रामजी आत्मसुख विज्ञान पा
वणेके निमित्त मुनीस्वर देवता गण ॥ अरु सिध सह्वा विचरद पदधान संवेधर रणको त्यागक
रि इस्थित होते हैं ॥ तौ ते उत्तम सुख है ॥ संवित विषे जो संवेदन का फुरणा है ॥ सो जिनका निवर्त हू
आ है ॥ तिसने जीवभावका त्याग कीया है ॥ जिन पुरुषोंको दृश्य भावना कोऊ नाही फुरती ॥ तिनको
ऊक ते तिनको स्पर्श करता है ॥ अरु प्राण भी तिनके निहसंपद रूप है ॥ चित्त चैत्यके संबंधते र
हित चित्तकी सूरत वृत्ति इस्थित होते हैं ॥ अरु प्राणरूप इस्थित होते हैं ॥ हे रामजी जव चित्त
लाफुरता है ॥ तव इसको समतासुख प्रापत होता है ॥ अरु जव चित्त का फुरणा मिट जाता है ॥ त
वइह प्रांत अहंमत रूप होजाता है ॥ जैसे राजे की सेना जुध करती है ॥ अरु जीत हार राजे की होती
है ॥ तैसे चित्तके फुरणे हारा आत्मा विषे वंधमोक्ष भासता है ॥ आत्मा सभका प्रकाशक है ॥ जैसे
चंद्रमाकी चांदनी ह्रक्ष आदिकोंको प्रकासती है ॥ तैसे आत्मा सर्व पदार्थोंको प्रकासता है ॥ सो
केसा है ॥ न रूप है ॥ न उपदेसका विषय है ॥ न विस्ताररूप है ॥ न दूर है ॥ केवल अनुभव चेतनरूप
आत्मता करि सिद्ध है ॥ न देह है ॥ न इंद्रियों के गण है ॥ न चित्त है ॥ न वासना है ॥ न जीव है ॥ न स्पंद है
न औरका स्पर्श करता है ॥ न आकाश है ॥ न सत है ॥ न असत है ॥ न मध्य है ॥ न सून है ॥ न असून है ॥ न दे
सकाल वस्तु है ॥ न अहं है ॥ न अंत है ॥ इत्यादिक सर्व सब्दोंते रहित इष्ट देइ स्थान विषे प्रकास
ता है ॥ अनुभवरूप है ॥ तिसका न आदि है ॥ न मध है ॥ न अंत है ॥ न शस्त्र काटते हैं ॥ न अग्नि जला
इ सकती है ॥ न अग्नि जल जलाइ गाल सकता है ॥ न दृष्ट है ॥ न उदै है ॥ न वायु सोष सकती है ॥ औ
र किसी समर्थता नाही ॥ सो चित्तरूप आत्मतत्व है ॥ सो न जन्मता है ॥ न मरता है ॥ अरु देह रूपी घट
कई वार उपजते हैं ॥ कई वार नष्ट होते हैं ॥ अरु आत्मरूपी आकाश सभके अंतर बाहर अखंड अविना
सी है ॥ जैसे अनेक घटों विषे एक ही आकाश इस्थित होता है ॥ तैसे अनेक पदार्थों विषे एक ही ब्र

ह्मसत्ता आत्मरूप करि के इस्थित है ॥ हे रामजी जैसा कछु स्थावर जंगमरूप जगत दृष्ट आवता है
सो ब्रह्मरूप है ॥ केसा ब्रह्म है ॥ निर्धर्मक निर्गुण है ॥ निरवयव निराकार है ॥ निर्मल निर्वि
कार है ॥ आदि अंतते रहित नित सांतसमरूप है ॥ इसी दृष्टको आश्रय करि के इस्थित होवे ॥ हे
रामजी इस दृष्टको आश्रय करोगे ॥ तव वडे आरंभका रज भी तुमको स्पर्श न करेंगा ॥ जैसे आकास
कों वदल स्पर्श नाही करते ॥ तैसे तुमको कर्म स्पर्श न करेंगे ॥ काल हयाका रंगाकार जलजन्म इ
स्थित है ॥ सो षिर आदिक जो ससरण रूप संसार है ॥ सो सभ ब्रह्मरूप है ॥ इसी दृष्टको आश्र
यों करी ॥ इति श्री ब्रह्मस्वर्ग कर्म अध्यापानरनेता समसर्गः ॥ ॥ श्रीरामउ
वाच ॥ हे भगवन जो विकाररूप अत्यक ब्रह्म विषे कोऊ नाही ॥ तौ भाव अभावरूप जगत किसके
करिके विचरो ॥ हे भगवन जो विकार प्रत्यक ब्रह्म विषे कोऊ नाही ॥ जो वस्तु अपणा पूर्वस्व
रूप ॥ हे भगवन जो विकार किसको कहते हैं ॥ जो वस्तु अपणे पूर्वस्व
विपड भासता है ॥ वसिष्ठ उवाच ॥ हे रामजी विकार किसको कहते हैं ॥ जो वस्तु अपणे पूर्व स्व
रूपको त्याग करि विपर्यय रूपको प्रापत होवे ॥ अरु वहुड पूर्वले रूपको न प्रापत होवे ॥ तिसको वि
कार कहता है ॥ जैसे दूधते दधि होता है ॥ वहुड दूध नाही होता ॥ अरु जैसे वालक अवस्था वीत
जाती है ॥ वहुड नाही आवती ॥ अरु जुवा अवस्था गई हुई वहुड नाही आवती ॥ तिसका नाम वि
कार है ॥ अरु ब्रह्म निर्विकार निर्मल है ॥ आदि भी निर्विकार है ॥ अरु अंत भी निर्विकार है ॥ मध जो
तिस विषे विकारमल भासता है ॥ सो अज्ञानकरि के भासता है ॥ मध विषे भी ब्रह्म अविकार ज्यों का
त्यों है ॥ हे रामजी पदार्थ विपर्यय रूप हो जाता है ॥ सो वहुड अपने स्वरूपको नाही प्रापत होता ॥ अ
रु ब्रह्मसत्ता सदा ज्यों का त्यों है ॥ हे रामजी पदार्थ विपर्यय रूप हो जाता है ॥ सो वहुड अपने स्वरू
पको नाही प्रापत होता ॥ अरु ब्रह्मसत्ता सदा ज्यों की त्यों है ॥ अद्वैतरूप आत्म अनुभव करिके
प्रकासता है ॥ जो कदाचित अन्यथा रूपको प्रापत होवे ॥ तिसको विकार केसे कहिए ॥ हे रामजी
जो वस्तु विचार ज्ञान करि के निवर्त होती है ॥ तिसको भ्रमसात्र जाणीये ॥ वास्तव ते कछु नाही
तैसे कछु विकार है ॥ सो अज्ञानकरि के भासता है ॥ जव आत्मवोध होता है ॥ तव निवर्त हो जाते हैं
तिसके वाधक करि के विकार नष्ट हो जावे ॥ तिस विषे विकार केसे कहीये ॥ सो ब्रह्म सह करि के
ही नाही है ॥ सो निरवेद चिद्रूप आत्मा है ॥ जो आदि अंत विषे सत होवे ॥ सो मध विषे भी जाणीये ॥
जो मत है ॥ इसते इतर होवे ॥ सो अज्ञानकरि के जाणीये ॥ सो आत्मतत्व सर्वदा सम रूप है ॥ आका
सवायु भी अन्यभावको प्रापत हो जाते हैं ॥ परमात्मतत्व कदाचित अन्यभावको नाही प्रापत होता
ना ॥ प्रकासरूप है ॥ अरु एक है ॥ नित्य है ॥ निर्विकार ईस्वर है ॥ भाव अभाव विकारको कदाचित नाही
प्रापत होता ॥ श्रीरामउवाच ॥ हे भगवन विदमान एते तत्व है ॥ सो ब्रह्म सदा निर्मलरूप है ॥ तिस
सं चित्त ब्रह्म विषे इह अविद्या कहां ते आई है ॥ वसिष्ठ उवाच ॥ हे रामजी इह सर्व ब्रह्म है ॥ आगे
भी ब्रह्म था ॥ अरु पाछे भी ब्रह्म ही होवेगा ॥ तिस निर्विकार आदि अंत मधते रहित ब्रह्म विषे अ
विद्या कोऊ नाही ॥ इह निश्चै है ॥ तिसको वाचवाचक क्रम करि उपदेसके निमित्त ब्रह्म कहीता है
तिस विषे अविद्या कहा है ॥ हे रामजी अहंत्व आदिक जगत भ्रम अग्नि वायु आदिक सर्व ब्रह्म
सत्ता है ॥ अरु अविद्या अल्पमात्र भी नाही ॥ जिसका नाम ही अविद्या है ॥ सो भ्रममात्र असत जा
णु ॥ नहीं जो विद्यमान तिसका नाम अविद्या कहिये ॥ श्रीरामउवाच ॥ उपसम प्रकरण
विषे तुमने क्या कहा है ॥ जो अविद्या है ॥ अव इस प्रकार केसे कहते हो जो अविद्यमान है ॥ हे
ही नाही है प्रभो ॥ वसिष्ठ उवाच ॥ हे रामजी ॥ ए तेकाल पर्यंत तू अवोध था ॥ तिस निमित्त
में कल्पना करि जगत कही थी ॥ सो तेरे जगावणे निमित्त कही थी ॥ अरु अव तू प्रवुध हूआ
है ॥ तव मैं कहा ॥ अविद्या अविद्यमान है ॥ हे रामजी अविद्या अरु जीव जगत आदिक क्रम म
वोधको जगावणेके निमित्त वेदवादीयों वर्णन कीया है ॥ जवलग अप्रवुध मन होता
है ॥ तवलग इसको अविद्या भ्रम है ॥ सो जुगती विना वोधवान कदाचित नाही होता ॥
अनेक उपाय करि भी जुगती विना नाही जागता ॥ अरु जव वोधवान होता है ॥ तव सिधां
त उपदेसको जुगती विना भी पाई लेता है ॥ अरु वोधमात्र जुगती विना नाही पाइसक
ता ॥ हे रामजी जाका रजजुगती करि सिध होता है ॥ सो औरजन नेकरि साध्या नाही जा
ता ॥ जैसे अंधकार जगत विषे दीपक करि दूर होता है ॥ और वलजतन करि निवर्त नाही
होता ॥ तैसे जुगती विना और जतन करि अज्ञान निद्रा नाही निवर्त होती ॥ जो अप्रवुध
दुर्मतीकों सर्व ब्रह्म सिद्धांतका उपदेस करता है ॥ तव उह उपदेस व्यर्थ होता है ॥ जैसे
कोऊ दुखी अपणा दुख पसूके आगे जाइ कहै ॥ तव उसका कहा उह सुणता नाही ॥ उस
का कहणा भी व्यर्थ होता है ॥ तैसे अप्रवुधको सर्व ब्रह्मका उपदेस व्यर्थ होता है ॥ ता ते प्रथम
दृष्टको जुगतों करि जगाईता है ॥ अरु वोधवानको ब्रह्म तत्वका उपदेस करता है ॥ हे

निप्र.
३

रामजीएनाकाल्लनेंअग्रबधया॥इसकारणतेंमैंनफकोंनानाप्रकारकीयांजुगतांका
उपदेसकरिजगायाहे॥अबतूंजागाहै॥तबमैंनफकोंप्रतक्ष्यतत्वकाउपदेसकीया
हे॥हेरामजीअबतूंऐसेधार॥जोमेंब्रह्महों॥इहतीनोंजगतभीब्रह्मरूपहे॥अहंत्वआदि
कसभब्रह्महे॥द्वैतकल्पनाकछुनांही॥ऐसेधारकरिजोतेरीइछाहोईसोकर॥इस

द्विधामेंवेदनफुरेनही॥सदाआत्मविखेहीस्थितहे॥एसप्रकारअनेककाजहांविखभीलेप
नहोवेगा॥हेरामजीजोचेतनरूपप्रकाशरूपहेपरमात्मा॥सोसदाअहंभावककेंफुरताहै
अैसाजोअनभवरूपहे॥चलतेंवैसतेखातेपीतेचेष्टाकरतेतिसीविखेस्थितभइ॥तबअ
हंममभावतेंनिवृतहोजावेगा॥अैसेदलजोशांतरूपब्रह्मसर्वभूतविखेस्थितिहे॥ति
सकोंतेंप्राप्तिहोवेगा॥तबआदिअंतितेंरहितप्रकाशरूपआपकोंदेखेगा॥हेरामजीजबमनरू
पविखेस्थितिहोवेगा॥तबसर्वत्रआत्मरूपदेखेगा॥जेसेमृत्तिकाकेपात्रहोलीहंडिचादि
आदिकसभमृत्तिकाकाअपणाआपहे॥तेसेंसर्वभूतआत्माकोंदेखेगा॥जेसेमृत्तिका
तेंघटिभिंननहीं॥तेसेआत्मातेंप्रकृतिभिंननहीं॥जेसेजलतेंतरंगभिंननहीं॥तेसेंआत्मा
तेंजगतभिंननहीं॥जेसेवाणअरस्पंददोसहूंहै॥अरजेसेजलअरतरंगशब्दमात्रदोहै॥तेसे
आत्माअरप्रकृतिशब्दमात्रदोहे॥भेदभावककुनहीं॥अगिआनककेंभेदभासताहे॥गि
आनकेंकेंभेदनष्टहोजाताहे॥जेसेजेवडीविखेसर्पभासताहे॥तेसेंआत्माविखेप्रकृतिहै
हेरामजीचितरूपअंकुरहे॥अरकल्पनारूपीवीजहे॥जबकल्पनारूपीवीजहैवोवीताहे॥तब
चितरूपीअंकुरउत्पतिहोताहे॥जबआत्मज्ञानकेंकेंकल्पनारूपीवीजदग्धहोजाताहे॥त
बचितरूपीअंकुरनष्टहोजाताहे॥हेरामजीचितरूपीअंकुरतेंसखदुखरूपीव्रिछउत्पति
होताहे॥जबचितरूपीअंकुरनष्टहोजावे॥तबसखदुखरूपीव्रिछकहांउपजे॥हेरामजीजे
ताकछुहेतभ्रमहेसोअवाधककेंउपजताहे॥अवाधककेंनष्टभ्रमछेहोजाताहे॥आत्मा
जोपरमार्थसारहे॥तिसकीभावनाकर॥इतिश्री मि वि र नामसर्गः॥४७॥राम
उवाच॥हेमनीष्वरजोकछुजाननेजोगथासोसभजाणिआहे॥अरजोकछुदेख
णेजोगथासोदेखिआहे॥अबमैंपरमपदविखेप्रणआत्माहुआहों॥तमोरविगिआनरू
पीअमृतकेसेचणेककें॥हेमनीष्वरप्राणतेंसभविसवृष्टणाकरीहे॥प्रमाणतेंप्रमाणप्रतीत
करीहे॥प्रमाणविखेप्रमाणहोयस्थितिहे॥अबरहेतककुनहीं॥एहमनफकोंअबअनभवभएआ
हे॥हेमनीष्वरअैसेमेंजाणाकरलीलाकेनमितममिवरस्खताहों॥अरबोधकोंविधताके
ताकेनमितरक्खताहों॥जेसेबालककापिताभिउहरखताहे॥तबपिताउदेगनहींकरता॥तेसेंमत
मउदेगवानतहींहोवणा॥हेभगवनआदवलनचारसनात्रीगिपाचोइडीप्रनछेइष्टि
आवतीहे॥जबएहमरजातीहै॥तबतिमकालविखेविखिअहंकोंग्रहणकिनहीकरतीआ
अरजीवतेकेमपग्रहणकरतीहे॥आमएकिनहींग्रहणकरतीआ॥अरबदादिकरूकोंनिआएज
इवाहूजेणस्थितिहे॥अंतरणनकाअनभवकेमहोताहे॥लोहितडीशलाकावतभिंनभिंन
हे॥मनकोएकदाहोवणाकिकारहूआहे॥परस्परएककरआत्मताकेंअनभवहोता
हे॥मेंदेखताहों॥मेंसणताहों॥इत्यादिकएकटीवृत्तिकिकारहुएहेमेंजाणताभीहों॥स
मानककें॥पाविशेषककेंनमसिउएसताहों॥वसिष्टउवाच॥हेअगमेएडीआत्मअरचित
आदिकअरघटपटआदिकपदार्थनिर्लेपसेचेतनरूपआत्मातेंभिंननहीं॥आत्मतत्वअ
काशतेभीसूक्षमसवहे॥हेरामजीजबचेतनततचेततनाउरयस्पष्टकीभावनाचितफु
रीहे॥तबइहोगुणरूसहितआगेदेखताभएहे॥तबचितकेआगेइंद्रीगणएहूएहै॥एनकों
हनताककेंचेतनततपरयस्पष्टकाभावकोंप्रापतिहूआहै॥तिसविखेसभघटादिकपदा
र्थप्रतिविंवरूपहे॥परयस्पष्टकाविखेभासहे॥रामउवाच॥हेमनीष्वरअनंतजगतजोए
वेहे॥अरमहाप्रदर्शीविखेप्रतिबिंबतेहेतिनपरयस्पष्टकाकारूपकिआहे॥अरकेसहूएहे
वसिष्टउवाच॥हेरामजीआदिअरअंतेतेरहितजोगजगतकाभीजरूपअनादब्रह्महे॥सो
निरामेंहे॥अरप्रकाशरूपहे॥मधविनमात्रकल्पनातेंरहतअचेतनहे॥सोजबकल्पनाकेंस
न्मखहूआतबतिमकानामजीवहूआ॥सोएजीवदेहकरचेततनाभएआ॥जभअहंभाव
फुरिआतबअहंकारहूआ॥जबमननकरणेलागातबमनहूआ॥जबनिसचेकरणेला
गातबबुधिहूए॥अरएडीपरमात्माकेदेखणेवालीआएडीकाभावनाहूएतबइडीभए
जबदेहकीभावनाकरणेलागा॥तबदेहहूए॥घटपटकीभावनाहूए॥तबघटपटहूए॥ए
सीप्रकारजेसीजेसीभावनाहोतीगए॥तेसेपदार्थहोतेगए॥हेरामजीएहीहेसभावजि
सकानिमकोंपुरयस्पष्टकाकहतेहे॥सरूपतेविपर्जेरूपजोदिशाकीओरभावनाहूएहे॥एक

तेतभोगततसुखदुखआदिककीकलनाअभिमानजोचितकलाविखेहुआतिसकरति
सकोंजीवकहतेहैं॥ जैसीजैसीभावनाअकारहुआ॥ तैसीतैसीवासनाकरतेभए॥ जैसेजलक
रसेंचिआबीजपत्रदासफूलफलभावकोंप्रापतिहोताहै॥ तैसेवासनाकरसेंचिआहुआसत्रू
पतेप्रमादिकरमहाभ्रमजालविखेगिरताहै॥ ऐसेजाणताहैजोमैमानखदेहसहितहों॥
अथवादेवताहों॥ अथवाअस्थावरहों॥ इत्यादिकदेहकोंपाएकरदेहसाथिमिलिआहुआजा
नताहै॥ ऐसेनहीजानताजोमैचिदात्माहों॥ देहिसाथिमिलिपरछिंनतारूपआपकों
देखताहै॥ एसमिथ्याग्यानकरकेदुखताहै॥ देहविखेअभिमानकरकेवासनाकेवसिहुआचिर
परजंततअथेरोर्थमधविखेजीवभ्रमताहै॥ जैसेममेइविखेआएआहूआकाष्टतांगरूकरउछ
लताअथेअरोर्थकोंजाताहै॥ जैसेचादिनेत्रकीटिदाअथेअरोर्थकोंजातीहै॥ तैसेजीववा
सनाकेअनसारकरअथेरोर्थकोंभ्रमताहै॥ जबआत्मबोधकोंपावताहै॥ विचारअरअ
भ्यासकरतबससारबंधनतेमुक्तिहोताहै॥ आदिअरअंततेरहतजोआत्मपदहै॥ तिस
कोंप्रापतिहोताहै॥ बहूतकालजनमरकोंभोगकरआत्मगिआनकेवसितेपरमपदकों
प्रापतिहोताहै॥ हेरामजीसत्रूपतेउतरकरजीवएतप्रकारभ्रमतेहै॥ अरशरीरहूकोंपावते
है॥ अवणहिसुणि॥ जोचखुआदिकइंद्रीआस्रितकहूएविखिअइकोंकिसनमितग्रहण
नहीकर्ती॥ हेरामजीजवमनथलनविखेचितकलनाहोतीहै॥ तबउहकलनाजीवरूपहो
तीहै॥ बहुडिमनसहतषटइंद्रीअहूकोंलेकरदेहरूपाग्रहविखेएस्थितहोतीहै॥ तवबाह
जविखेअइकोंग्रहणाकर्तीहै॥ मनसहितषटइंद्रीअहूकेसंबधकरविखिअइकाग्रहणहो
ताहै॥ एनतेरहितविखिअइकों॥ कदाचितनहीग्रहणकर्ती॥ एसप्रकारएनविखेस्थितहो
करविखिअइकोंग्रहणाकर्तीहै॥ जदपइंद्रीआभिंनभिंनहैंतउभीएनकोंएकठाकरिलेती
है॥ एनकाएकठाहोवणाअहूंकाररूपीनागकुविहोताहै॥ देहइंद्रीआमणकिअहूंकीनि
आएहै॥ एनकोंएकठाकरकेजीवकहताहौहै॥ मैदेखताहों॥ बोलताहों॥ मैसूणताहों॥ इत्या
दिकएनकेअभिमानकर्केविखिअइकोंग्रहणाकर्ताहै॥ हेरामजीदेहइंद्रीमनआदिकजडहै
अरआत्माकेसत्तापाएकरअपणेअपणेविखेअइकोंग्रहणाकर्तीहै॥ जवलगपुरयष्टकादेह
विखेहोतीहै॥ तवलगविखेअइकोंइंद्रीआंग्रहणाकर्तीआहै॥ जवपुरयष्टकादेहसिउंनिक
सजातीहै॥ तवइंद्रीआविखिअइकोंग्रहणानहीकर्ती॥ हेरामजीएहजोप्रतक्षनेत्रनाशका
जिहवातवाभासतीहै॥ सोएहइंद्रीनही॥ इंद्रीसूख्मततनमात्रहै॥ एहतिनकेरहणेकेअस्था
नहै॥ जैसेग्रहविखेकरोखहोतेहैं॥ तैसेएहरणस्थानहै॥ अवजीवकारूपसुणि॥ हेरामजीआ
त्मततसभ्रहेउरोविखिहरणाहै॥ अरतिसकाप्रतिबिंबतहापरताहै॥ जहानिर्मलदेउरा
होतीहै॥ जैसेजलनिर्मलविखेप्रतिबिंबहोताहै॥ तोदोकुंडहोवहिएकजलकरखहणहो
ए॥ इकसराजलतेरहतहोए॥ तवसूर्जकाप्रतिबिंबदोनोविखेतुल्यहोताहै॥ परजिसविखे
जलहैप्रतिबिंबतहाहीहोता॥ जलकेडोलणेकरप्रतिबिंबहलताद्रिष्टिआवताहै॥ अर
जहाजलनहीतहाप्रतिबिंबभीनही॥ तैसेजहाप्राणतकीअरअंतःकरणहोताहै॥ तहाआ
त्मकाप्रतिबिंबजीवभीहोताहै॥ सोजवलगशरीरविखेहोताहै॥ तबलगशरीरचेतनभास
ताहै॥ जबउहोजीवकलापुरयष्टकारूपप्राणवतिआगजातीहै॥ तवशरीरजडभासताहै॥ जै
सेकुंडसिउजलनिकलजावताहै॥ अरकुंडसूर्जकेप्रतिबिंबतेहीनभासताहै॥ तैसेअंतःक
रणअरतनमात्रापुरयष्टकाविखेआत्माकाप्रतिबिंबहोताहै॥ जवपुरयष्टकाशरीरकोंतिआ
गजातीहै॥ तवशरीरजडभासताहै॥ हेरामजीजैसेऊपरखेआगकोंएपदार्थगखीऐ॥ तवरू
पखेकोंपदार्थकागिआनकछुनीहोता॥ जेउप्रेनकास्वामीआनदेखताहै॥ तबपदार्थ
कोंग्रहणाकरताहै॥ तैसेइंद्रीअहूकेएस्थानहूविखितत्तनमात्राग्रहणाकणवालीहोती
है॥ तबविखेअइकोंग्रहणाकर्तीहै॥ जबतनमात्रानहीहोतीतवइंद्रीयाग्रहणानहीकरशक्ति
आ॥ हेरामजीप्रतक्षदेखजोकोउकथाकाश्रोतापुरखकथाविखेवेठाहोताहै॥ अरचितउ
सकाअवरठउरनिकसिजाताहै॥ तउप्रतक्षवेठाहोताहै॥ परसुननाकछुनही॥ काहेते
जोश्रवणइंद्रीमनकेसाधारणहै॥ तैसेपुरयष्टकानिकसजातीहै॥ तवमितकहूआइंद्री
मन॥ आविखिअइकोंनहीग्रहणाकरतीआ॥ हेरामजीअहंममतेआदिलेकरजोद्रिशहै

सोभीमणिकेआदिविखेआत्मरूपीसमुद्रमातरंगावतफुरीहै॥ तिसकरआगेइछाकलनारूप
है॥ सोनदेशहैनकालहैनक्रियाहै॥ एहसभभ्रममात्ररूपहै॥ वास्तवकछुनही॥ ऐसेजाणके
रअरमगविचर॥ ससारकेसुखदुखतेरहतहोवेपाकनकर॥ अरगणादोखतेरहितहोकर
क्विय॥ तवतेमाएआकोंतरजावेगा॥ इ श्री वा प्र र वे न चा नो म
ः व प्रे व॥ हेरामजीवास्तवतेइंद्रीआदिककछुगुणाउपजेनही॥ जैसेआदिकमल
जाब्रह्माकीउत्पतिमतऊकोंकहीहै॥ सोतऊसभभ्रमगाहै॥ जैसेआदिजीवपुरयष्टकारूप
ब्रह्माउपजाहै॥ तैसेअवरभीउपजेहै॥ हेरामजीजीवपुरयष्टकाविखेएस्थितहोकरजैसीजै
सीभावनाकरताभयाआतैसेतैसेहोकरभासणेलागा॥ बहुडतिसकीसत्तापाएकरअप
णेअपणेविखिअइकोंग्रहणाकणेलागा॥ अरवास्तवतेएइंद्रीआभीकछुवस्तनही॥ सभआ
त्माकेअभासकरफुरीफुरतीहै॥ इंद्रीआअरएइंद्रीअइकेअरथएहसंवेदनतेउपजेहै॥ जैसेउप
जेहैतैसेतुऊकोंकहाहै॥ हेरामजीसुधसंवेदनमात्रमनताविखेजोअहंउलेखहुआहै॥ सोमै
वेदनजीवरूपपुरयष्टकाभावकोंप्रापतिहोकर॥ सुधआत्मनपंचतनमात्राकोंउपजायक
रजीवकल्याआपहीतिसविखप्रवेशकरएस्थितिभएहै॥ तिसकोंपुरयष्टकाकहतेहैं॥ पर
वहूउपजीभीस्पंदविखेहै॥ आत्माविखेउपजाकछुनही॥ सोआत्मानहीएकहैनअनेकहै
अनंतआत्मातत्तअसतिअनामैहै॥ अरवेदनाभीतिसतेअनंनरूपहै॥ एसकारणतेकहा
है॥ जोपरमसूक्षमसत्तातेएततरकछुनही॥ हेरामजीतिसविखेनकछुहैनकलनाहै॥ अ
रनकोउमनशक्तिहै॥ तिकेवलशांतसत्ताहै॥ तिसकोंपरमात्माकहतेहैं॥ सोमनसह
तषटइंद्रीअहूतेअतीतहै॥ अचेतचिनमात्रहै॥ तिसतेजीवउत्पतिहुआहै॥ एहभीउपदेशके
निमितकहीताहै॥ वास्तवतेकछुउपजानहीकेवलभ्रममात्रहै॥ जहाजीवउपजाहै॥ त
हातिसकोंअहंभावविपर्जेहूआहै॥ एहीअविद्याबाधाहै॥ सोउपदेशकोंपाइकरलीनहोजा
ताहै॥ जैसेनिर्मलीकरजलकीमलनतालीनहोजातीहै॥ तैसेगुरअरशास्त्रकेउपदेश
कोंपाएकरअविद्यालीनहोजातीहै॥ तवभ्रमरूपीअकारशांतहोजातेहै॥ गिआनरूपी
आत्माशेषरहताहै॥ जिसविखिअकाशसूखमभीएस्थूलहै॥ जैसेपरमाणकेआगेसुमेरएस्थूल
होताहै॥ तैसेअकाशएस्थूलहै॥ हेरामजीआत्माविखेजोएस्थूलताभासतीहै॥ सोभ्रम
मात्रहै॥ जोभडउदारअरभभासतेहै॥ सोभीभ्रमतहै॥ अवरजगततेपदार्थइकोंकिआवा
तेहै॥ हेरामजीआत्माविखेजगतकछुनहीपाएता॥ काहेतेजोवस्तअसंमिकगिआन
करकेभासतेहै॥ सोसंमिकगिआनकरनहीपाएतीजेतेकछुजगतजालभासतेहै॥ सोस
भ्रमाएआमात्रहै॥ अर्थकछुसिद्धनहोहा॥ जैसेमृगत्रिष्णाकोजलजतनकरकीपाननही
कीआजाता॥ तैसेजगतकेपदार्थहूकरकछुपरमार्थसिधनहीहोता॥ असंमिकगिआनकरकेभास
तेहैं॥ हेरामजीजोवस्तसमिकगिआनकर्केपाएअसेसतितजाणीऐ॥ अरजोसमिकगि
आनकरनरहेसोभ्रममात्रजाणीऐ॥ एहजीपुरयष्टकाअविदिकभ्रमअसततहीसतहो
भासतेहै॥ जवगुरअरशास्त्रहूकाविचारहोताहै॥ तवजगतभ्रममिटिजाताहै॥ अरपुर
यष्टकाविखेएस्थितहोकरजैसेभावनाकरताहै॥ तैसीसिधहोतीहै॥ जैसेबालकअप
णेपछावेविखेवेतालकल्पताहै॥ तैसेजीवकल्पाअपणेआपविखेदेशकालतनआदि
ककल्पताहै॥ भावनाकेअनसारतिसकोंभासतेहै॥ जैसेबीजतेपत्रफूलफलदोसआदि
कविस्ताराहोताहै॥ तैसेतनमात्रातेअवरभूतजातबेदअरवीहजदेशकालक्रिआक
महूपहै॥ आदिजीवफुरिकरजैसासंकल्पधारताभएआतैसाहोतभएआ॥ सोएहसंवेदन
भीआत्मासाथिअनंनरूपहै॥ जैसेमर्चअरतीखणताअनंनरूपहै॥ जैसेअकाशविखेसून
ताअभिंनरूपहै॥ तैसेआत्माविखेसंवेदनअनंनरूपहै॥ तिससंवेदनउपजिकरनिसचे
धाराजोएहपदार्थअैसेहोएअरएहअैसेहोए॥ सोतैसेहीएस्थितिहै॥ अनथाकदाचितन
हीहोता॥ जैसेआदिजीवफुरिकरनिसचाधाराहै॥ तिनकानामनेनहै॥ अरसरूपतसवे
आत्माहीहै॥ आत्मसत्ताएहरूपधारकरएस्थितिभएहै॥ जैसेएकहीगेनकीरसनाकारखे
इआदिकअकारोंकोंपावतीहै॥ जैसेएकप्रितकाचदसदटिंडरोलीआदिकअकारहूकों
पावतीहै॥ तैसेआत्मसत्तासर्वसंगिआकोंपावतीहै॥ जैसेएकहीजलकीरसपत्रफूल॰

फलदासग्रादिकहोकरभासतीहै॥तैसेएकहीसत्ताघटपटकंधराद्वीग्रादिकग्रकार
होभासतीहै॥हेरामजीजैसेग्रादिजीवतैसव्याकीग्राहै॥तैसेहीएस्थितिहै॥ग्रनयाकदा
चितनहीहोता॥एसजगतकालविषेग्रेसेहै॥वास्तवतेनविंवहैनप्रतिविंवहै॥कोहै॥
तैसोहैनविषेएस्थितिहोतेहै॥सोद्वैतकछुनही॥केवलचिदग्रानंदब्रह्मततग्रपणेग्रा
पविषेएस्थितिहै॥देहादिकभीसत्रचितमात्ररूपहै॥हेरामजीजेताकछुजगतभासता
है॥सोग्रात्माकाकचनरूपहै॥जैसेजीवरूपीसर्परूपभासतीहै॥तैसेग्रात्माजगतरूप
होभासताहै॥जैसेस्वर्णभूषणहोभासताहै॥तैसेग्रात्मात्रिपुटीहोइभासताहै॥जैसेस्व
र्णविषेभूषणकछुवास्तवनही॥तैसेग्रात्माविषेत्रिपुटीकछुवास्तवनही॥जैसेकग्रप
तिनग्रसतहीसतहोभासताहै॥तैसेजीवकोंग्रवरदहुभासताहै॥हेरामजीग्रात्मसत्ता
जिउंकीतिहै॥परफुरणेकरग्रनेकरूपधारतीहै॥जैसेएकनटग्राग्रनेकस्वांग
कोधारताहै॥तैसेग्रात्मसत्ताग्रनेकदेहादिकरूकोंधारतीहै॥जैसेसुपनेविषेएकहीपुरु
षग्रनेकरूपधारकरचेष्टाकरताहै॥तैसेजाग्रतविषेनानारूपकोंधारताहै॥हेराम
जीग्रात्मानितसुधसर्वकाग्रपनाग्रापहै॥ग्रपणेसरूपकप्रमादिकरजबग्रापकोंजन्म
मरणजाणताहै॥सोजन्ममरणग्रसतरूपहै॥जैसेसेकोंउसेस्वप्नविषेग्रापकोंसुग्रान
रूपजाणे॥तैसेग्रापकोंजन्मताभरतादेखताहै॥जैसेजैसेपसकोंसुरवभावनादृढहो
रहीहै॥तैसातैसाहीहोभासताहै॥भ्रमकरकेग्रसतकोंसतरूपजाणताहै॥जैसेस्वप्ने
विषेवस्तकोंग्रवस्तग्ररग्रवस्तकोंवस्तदेखताहै॥तैसेजाग्रतविषेविपर्जैदेखताहै॥जै
सेजाग्रतभएग्रानतेस्वप्नभ्रमनिवर्तहोजातीहै॥तैसेग्रात्माग्रधिष्टानकेगिग्रानकरजग
तभ्रमनिवर्तहोजाताहै॥जैसेद्रवललेदिनइकितककर्मकीग्राहोवे॥ग्ररतिसकेपाछेस
क्रितकर्मकरीग्र॥तबग्रगलाग्रद्धादिग्राजाताहै॥तैसेसुरवससकारजोनीचवासनाहो
तीहै॥ग्ररपाछेग्रात्मततकाग्रभ्यासकरीग्र॥तबपुरखग्रजतनकरकेमलनवासना
नष्टहोजातीहै॥जबलगवासनामलनहोतीहै॥तबलगउपजनाविनसनापरूणगोते
षातेहै॥जबसंतहकेसंगिग्ररशास्त्रहकविचारकरग्रात्मगिग्रानउत्पतिहोताहै॥तब
संसारबंधनतेछूटताहै॥ग्रनथानहीछूटताहै॥हेरामजीजीवकोंचितवासनारूपीका
लकग्रावरिग्राहै॥ग्ररैदेहिरूपीमदरविषेबैठकरग्रनेकभ्रमकोंदेखताहै॥ग्रादिजी
वजोफुरिग्राहै॥सोग्रपणेसरूपकोंत्यागकरग्रनातमभ्रमकोंदेखतभएग्राहै॥जैसे
बालकपरछाईविषेकल्पनावेतालकीकरै॥तैसेकल्पकारजैसीभावनाकरीतैसेभास
णेलागा॥ग्रादिजीवपुरयष्टकाविषेएस्थितहूग्रा॥पुरयष्टकाकिग्राकहीग्रे॥बुधिम
नग्रहंकारग्ररतनमात्राएनकानामपुरयष्टकाहै॥परग्रतिवाहकदेहिहै॥चेतनग्रा
त्माग्रासरतेहै॥ग्रकाशभीतिसकेनिकटिएस्थूलहै॥प्राणवायुकेकेसमानहै॥
देहसमेरकेसमानहै॥ऐसासूक्ष्मजीवहै॥सुखपतिजडरूपग्ररस्वप्नभ्रमदोनोग्रवस्थावि
षेएस्थावरजंगमरूपजीवपडेभटकतेहै॥कबहूसखोपतिविषेएस्थितिहोतेहै॥कब
हूस्वप्नविषेएसस्थितहोतेहै॥एसप्रकारदोनोग्रवस्थाविषेजीवपडेभटकतेहै॥हेराम
जीसर्वकोदेहग्रतिवाहकहै॥तिसीदेहविषेपरेचेष्टाकरतेहै॥कबहूएस्थावरविषेजाते
हैतेउव्रिछपाषाणग्रादिकजोनिकोंपावतेहै॥जउस्वप्नविषेहोतेहै॥तेउजंगमजोनकोंपाव
तेहै॥सोभीकर्मवासनाकेग्रनसारपावतेहै॥जउताममीवासनाचेतनतवहोतीहै॥त
बकल्पब्रिछचितामणग्रादिकसरूपकोंप्राहोतेहै॥जउकेवलतामसीचेतनमोहरूपहो
तीहै॥तेउग्रवरव्रिछपाषाणग्रादिकजोनकोंपावतेहै॥एनकानामसुखपतिहै॥सोले
वनमोहरूपहै॥ग्ररतिसतेएतरविछेपरूपस्वप्नग्रवस्थाहै॥कबहूतिसविषेहोताहै॥
कबहूसुखपतिरूपहोताहै॥एसएस्थावर॥हेरामजीसुखपतिग्रवस्थाविषेवासनासुख
पतिरूपहोतीहै॥सोवहूदिउगावतीहै॥एसकरकेमोहरूपहै॥ग्ररतिससुखपतितेउत
रताहै॥तबविषेपरूपहोताहै॥जबबोधहोवेतबजाग्रतिग्रवस्थाकोंपावे॥सोजाग्रत
दोप्रकारकीहै॥जाग्रतस्वापहै॥जोलयग्ररविषेपतेरहतचेतनग्रवस्थाहै॥तिसतेरहितसो
ग्रवरमनोराजेसभ्रमरूपहै॥एकजीवनमुक्तिजाग्रतहै॥दूसरीविदेहमुक्तिहै॥जीव॰

३५

एहुग्रवस्थाजीवकोंबोधिकरप्रापतिहो
न्मुक्तितुरीग्रारूपहै॥विदेहमुक्तितुरीग्रातीतहै॥एमतरहतकरनहीहोता॥हेरामजीजीवरूका
तीहै॥ग्ररबोधपुरखप्रजतनकरहोताहै॥तमउहभीउहीरूपहोजाताहै॥ग्रारजोग्र
पुराणगिग्रानरूपहै॥सोद्रिशकोउत्थलागताहै॥जबद्रिशकेसन्मुखहोताहै॥तबदोचेक
क्तिकीउत्थलागताहै॥तबसतरूपहोइजाताहै॥सोभीग्रात्मसत्तातेपतरक
मकोंदेखताहै॥जीवकेग्रंतरजोसिष्टरूपहोएकरफुरताहै॥सोजलतेएत
कुनहीवसता॥तैसेबलोटाहीविषेदाणाग्रउबतजलभीपउउछलताहै॥ग्रवरसिष्टजोभासतीहै॥सो
रककुवसतनही॥तैसेग्रात्माबिनाजीवकेग्रंतरकछुवस्तनही॥सोसतवतहोग्र
माणग्रामात्रेहै॥हेरामजीजीवकोंसरूपकेप्रमादिककेसिष्टिभासतीहै॥ग्ररनानाप्रकारकीवासनाउपजीफुरतीहै
वहै॥तिसकोंनानाप्रकारकीविश्वभासतीहै॥हेरामजीजनवासना
तिसवासनाकरबंधमानहूग्राहै॥जबवासनाकेहोवेतबमुक्तिरूपहै॥जबसरूपकाप्रमादिहोताहै
मोहरूपकानामसुखपतिजडग्रवस्थाहै॥ग्ररदीनसप्नरूपहै॥तबनानाप्रकारकीवासनाउदे
नबीउपाविषेसतवतबुधहोतीहै॥तिसविषेप्रतीतिहोतीहै॥बहुरिवासना
होतीहै॥ग्ररजोसरूपकासाक्षात्कारहोताहै॥तबसंसारवासनानष्टहोजातीहै॥जबसतबुन
नहीफुरती॥हेरामजीवासनातबलगफुरतीहै॥जबलगसतवतबुधिहोतीहै॥तबभूषणबुधि
बुधिरूपीग्रपलववासनाभीनहीरही॥जैसेभूषणबालकरूकवरीकीग्रा॥सोवासना
नहीरहती॥जोग्रगिग्रानकरउपजीवस्तहै॥सोगिग्रानकरलीनहोजातीहै॥हेरामजीजनवासनाकरसुखपतिज
भ्रमकुबोधकरउपजीहै॥ग्ररबोधतेलीनहोजातीहै॥
डग्रवस्थाहोतीहै॥ग्ररतनवासनाकरस्वप्नदेखताहै॥ग्रनवासनामोहकरजीवग्रवस्थावरकों
प्रापतिहोतेहै॥ग्ररमथवासनाकरतिरकजोनपशुपंखीसर्पग्रादिककोंप्रापतिहोतेहै॥ग्र
रतनवासनाकरमानखशरीरग्रादिककोंपावताहै॥ग्ररनष्टवासनाकरमोक्षपदकोंपा
वताहै॥हेरामजीएहजगतसभसंकल्पकररचताहै॥बाहजेघटपटादिककोंदेखताहै॥ग्र
रग्रहणकरताहै॥सोएकग्रंतरदेहविषेएस्थितिहोकरबाहजघटपटादिकएस्थितिहोता
है॥तिनकोंग्रहणकरताहै॥ग्राहजग्राहककासंबंधदेखताहै॥एहजैसेग्रहणकीग्राहै॥एहसैली
ग्राहै॥ग्ररजोगिग्रानवानहै॥सोनकछुग्रहणकरणेकाग्रभिमानकरताहै॥नकछुत्यागणे
काग्रभिमानकरताहै॥तिसकोंग्रंतरबाहजसभचिदाकाशभासताहै॥चेतनसत्ताके
एहचमत्कारहै॥तीनोजगतहोकरउहीप्रकाशताहै॥रंचकमात्रभीकछुग्रनंतनही॥के
वलग्रात्मसत्ताग्रपणेग्रापविषेएस्थितिहै॥जैसेसमुद्रविषेतरंगबुदबुदेहोकरभासतेहै
परजलहीजलहै॥तैसेग्राहीजगतरूपहोकरभासताहै॥ग्रवरद्वैतवस्तकछुनही॥इ
ति श्री न १ ३ ८ नाम सर्गः॥४८॥ वसिष्ठ उवाच॥हेरामजीजिसजीवकोंस्वप्न
विषेसंसारउदेहोताहै॥सोकल्पनामात्रहोताहै॥नसतहै॥नग्रसतहै॥जीवकोंएक
फुरणेकरभ्रमभासताहै॥तैसेएहजाग्रतग्रवस्थाभ्रममात्रहै॥स्वप्नग्ररजाग्रतएकरूप
है॥जैसेस्वप्नविषेजाग्रतकाएकक्षणदीर्घकालहोजाताहै॥तैसेसरूपकेप्रमादिक
रएसकोंजाग्रतभीदीर्घभ्रमहूग्राहै॥सतकोंग्रसतजाणताहै॥ग्ररग्रसतकोंसतजाण
ताहै॥जडकोंचेतनजाणताहै॥ग्ररचेतनकोंजडजाणताहै॥विपर्जैगिग्रानकरकेएसप्र
कारजाणताहै॥जैसेएकहीजीवस्वप्नविषेग्रनेकताकोंप्रापतिहोताहै॥तैसेग्रादिजी
वएकतेग्रनेकहोकरभासताहै॥जैसेग्रस्थानविषेचोरभ्रमकरभासताहै॥तैसेग्रात्मा
विषेतीनोजगतभ्रमकरभासतेहै॥जैसेसुखपतितेस्वप्नभ्रमउदेहोताहै तैसेग्रद्वैतग्रा
त्माततविषेजगतभ्रमहोताहै॥ग्रात्माग्रनंदसर्वगाहै॥जीवकाबीजरूपहै॥जैसेग्राति
सकेग्रागफुरणहोताहै॥तैसाजिसथहोकरभासताहै॥हेरामजीजिनपुरखहूकोंसरू
पकोएस्थितभएहै॥सोसदानिहसंगिहोकरविचरतेहै॥जैसेपुनभीकाशवस्त्रजी॰
निहसंगतउपदेशकरहिग्रो॥तिसकोंपाएकरग्ररजन्मकछिहोविचरेगा॥तैसेहे
महाबाहोतमभीनिसंगविचरहु॥हेरामजीपांडवकापुत्रग्रर्जनजिनामजैसेसुखसों

व॰ भं॰ ३३

थिजीवणाविनीतकरैगा॥ सरविवहारविषेभीसर्वोसवस्थरहैगा॥ तेसेतूंभीविह्रसं
कहोकरविचर॥ रामोवाच॥ हेब्रह्मणपांडवकानंदनअर्जुनकविहोवेगा॥ अरकेसेवि
ज्ञानतिनकौनिहसंगताकाउपदेशकरहिगे॥ वसिष्ठउवाच॥ हेरामजीअसिसन
मात्रजानतेहै॥ जिसविषेआत्माआदिकसंगिआकल्पकारकहीहै॥ साआत्मसत्ता
अपणेआपविषेएस्थितिहै॥ आदिअरुअंततेरहतहै॥ जैसेआकाशविषेआकाश
एस्थितिहै॥ तैसेनिर्मलततअपणेआपविषेएस्थितिहै॥ तिसविषेजगतभ्रमफुर
ताहै॥ जैसेसवर्णविषेभूषणफुरतेहै॥ जैसेसमुद्रविषेतरंगफुरतेहै॥ तैसेआत्मा
विषेचौदशप्रकारकेभूतजातफुरतेहै॥ एससंसारजालविषेभूतप्राणीपडेफुरते
है॥ जैसेपंछीजालविषेपडेभ्रमतेहै॥ तैसेजीवजगतविषेपडेभ्रमतेहै॥ चेद्रमारूजे
लोकपालहोकरएस्थितहै॥ पंचभूतहूकातिनहूभ्रमरचाहै॥ जोएहपुनअहूकौणि
जोगहै॥ एहपापत्यागणेजोगहै॥ पुनहूकरस्वर्गआदिकसुखप्रापतिहोताहै॥ पापक
रनरकप्रापतिहोताहै॥ एहमिजोदालोकपालहूएस्थापनकरीहै॥ एसप्रकारसंसारहू
पीनदीपरअनूडहूएपडेबहितेहै॥ कैसीसंसाररूपीनदीबहतीहै॥ प्रछिनरूपभासतीहै॥
अरनाशरूपखिणखिणविषेपजेनष्टहोतीहै॥ जैसेनदीकावगसमानप्रवाहूककै
उहीपडाभासताहैपरहोताहैअवरअवरउहीभासताहै॥ खिणखिणविषेप्रथमउहूजा
तारहताहै॥ तैसेसंसारअपणेकालविषेअछिनरूपसतभासताहै॥ अरआत्माविषे
कीअपेछाकरकेनाशरूपहै॥ खिणखिणविषेपडानष्टहोताहै॥ तिसजगतविषेबेवस
तसूजेकाभूतजमराजलोकपालबडाप्रतापवानएस्थितहै॥ सोबडातेजवानहै॥ अरस
भजीवहूकौंमारताहै॥ ऐसानामकौधारकरपरजाविषेएस्थितहै॥ आदिप्रवाहएस
प्रकारहूआहै॥ तिसप्रवाहूपतितकाराजकेकर्मविषेएस्थितहै॥ जीवहूकौंमारणा
अरदंडकरणाएहीउसकानेमहै॥ अरचितविषेसमरकीनिम्रापएस्थितहै॥ सोजम
राजहूचहूजुगहूप्रतिएकनेमकौधारताहै॥ जकिसीजीवभूतकौंमारणानहीं॥ कब
हूअष्टवरषकबहूवाहूदशवरषकानेमधारताहै॥ कबहूसप्तवरषकबहूषोडशवरषनेमधा
रताहै॥ तबउदासीनकीनिम्रापएस्थितहोताहै॥ किसीकौंमारतानहीरहता॥ तबक
एउष्टजीवहोतेहै॥ साजीवहूकोउखदेतेहहि॥ तिनकरप्रथ्वीभारीहोतीहै॥ दुखीहोती
है॥ तिसप्रथ्वीकेभारउतारणकेनमितविष्णजीअवतारधारकरजीवहूकौनष्टकेतेहै॥
धर्ममारगकौइढकरतेहै॥ अरदुष्टोंकौनाशकर्तेहैं॥ हेरामजीएसप्रकारनेमधारणे
हूराजमअनेतजगअपणेविवहारकौकरतेवतीतहोगएहै॥ भूतअरुजगतअनेकहो
गएहै॥ एसत्तिष्टकाजोअबवैवस्ततजमहै॥ सोआगेनेमकरेगा॥ द्वादशवर्षपरजंतकि
सीकौनमारेगा॥ ऐसानेमकरेगा॥ तबजीवकरूरकर्महूकौकर्णेलागहिंगे॥ प्रथि
वीभूतहूसाथिनीयंप्रहोजावेगी॥ जैसेब्रिछसाथगछेमेचाढिहोजातेहै॥ तैसेप्रा
णीअहूसाथिवीसंघाटहोजावेगी॥ तबप्रथ्वीभारसाथउखतहोकरविष्णजीकीशर
नजावेगी॥ जैसेचोरहूतडरिकरएस्त्रीभर्ताकीशरनिजावे॥ तैसेप्रथ्वीविष्णजीकी
शरनिजावेगी॥ तबविष्णजीदोदेहूकौधारकरप्रथ्वीकाभारउतारहिगे॥ अरसतमारग
एस्थापनकरहिं॥ अरसभदेवताअवतारधारकरसाथआवहिंगे॥ नरदेहविषेनाएक
भावकौप्रापतिहोवेगा॥ एकदेहकरतेवसुदेवकेग्रहपुत्ररूपवासदेवनामहोवेगा
अरदूसरीदेहकरपांडवकेग्रहअरजननामहोवेगा॥ जुधिष्टरनामधर्मकापुत्रहोवेगा
सर्वदइजिसकौसपलाहै॥ ऐसीजोहैप्रथ्वीतिसकाराजकरेगा॥ पांडवकापुत्रधर्मकाबे
टातिसकेचाचेकापुत्रदुर्जोधनहोवेगा॥ तिसकाअरभीमकाबडाजधहोवेगा॥ दोनो
उरसंग्रामकीलालसाहोवेगी॥ अठारहअखुहणीसेनाएकठीहोवेगी॥ तिसविषेब
डेभएआनकजोधेहोवहिंगे॥ तिसकेबलसौकिरहरिप्रथिवीकाभारउतारहिंगे॥ हेराम
जीतिससैनाकेजधविषेविष्णकाजोअर्जुननामदेहहोवेगा॥ सोगाडीवधनखधारे

गा॥ सोअक्रितभावविषेएस्थितिहोवेगा॥ सोजुधविषेअपणेबांधवसंबंधीअहूकौदे
खकरसूर्छतहोजावेगा॥ सोहूकापरलाकरतिसकेहाथेनधनषगिरपडेगा॥ अरआरत
होवेगा॥ तबबोधदेहहोकरहीतिसकौउपदेशकरहिगे॥ दोनोसेनाकेमधविखजव
अर्जुनमोहतहोकरगिरेगा॥ तबविष्णजीकहहिंगेहेराजसिंघअर्जुनतैसेमनखभावकौ
किंप्रापतिभएआहै॥ अबमोहतमाउकिंहूआहै॥ एसकापरताकौत्यागकर॥ तूंपरमप्र
काशआत्मतहै॥ सर्वकाआत्मातेअभिनाशीअनंदहै॥ अनंतहै॥ आदिअंतमधतेरहत
है॥ क्रियाकाएरताकौप्रापतिहूआहै॥ सर्वविआपीपरमअफुररूपहै॥ अरनिर्मलहै॥ उव
केस्पर्शतेरहतहै॥ नितसमथनिर्मणहै॥ हेअर्जुनआत्मानजनमताहै॥ नमरताहै॥ होकर
हूदिकछुअवरनहीहोता॥ कोहतेजोअजहै॥ नितहैनिरंतरपुरातनहै॥ सर्वकीआदिहै॥ स
रीरकेनाशहूएतिसकानाशनहीहोता॥ इति श्री रा मा य ण ना म स र्गः ५
श्री वि नो वाच॥ ऊंहेअर्जुनजोएसआत्माकौंहंतामानतेहै॥ किंहूननक्रिआकर्ता
है॥ एसआत्माकौंहंतहोतामानतेहै॥ सोआत्माकौनहीजाणते॥ नाएहआत्मामार
ताहै॥ नमरताहै॥ कोहतेमारताअरुमरतानहीं॥ जोअरूपहै॥ अरनिरवेदहै॥ अकाशते
भीसूक्ष्महै॥ तिसआत्मापरमेस्वरकौकरनकिसप्रकारमारे॥ हेअर्जुनतूंअहूकाररूपनहीं
एसअनात्मअभिमानरूपमलकौत्यागकर॥ तूंजन्ममरणतेरहितहै॥ मुक्तिरूपहै॥ जि
सपुरखकौअनातमविषेअहंकारभावनहीं॥ अरबुधिजिसकीकर्तत्वभोगततविषे
लिपायमाननहीहोती॥ सोपुरखसभविश्वकौंमारेतउभीउसकबहूनहीमारिआ॥ न
बंधमानहोताहै॥ हेअर्जुनजिसेकौजैसाइष्टनिसचाहोताहै॥ तैसाहीतिसकौअनभवहो
ताहै॥ तातेएहमैसोअरमेराजोमलतसंबतनिसचाहोताहै॥ तिसकौत्याग॥ अरसरूपवि
खेएस्थितहो॥ ताअैसेभावनाविषेएस्थितनहीहोते॥ अरआपकौनष्टहूआमानतेहै॥
सोसुखदुखविषेरागदोखकरपडेजलतेहै॥ हेअर्जुनअपणेगुणहूकेअशविषेकर्मवर्तते
है॥ सबदस्पर्शरूपरसगंधएनतेपांचोतत्तअकाशवायुअग्निजलप्रिथवीउपजेहै॥ तिनअ
तहूकेअंशश्रवणत्वचानेत्रजिहवानाशकाविषेएस्थितिहै॥ ओइअपणेविषेअहूकौग्रह
कतेहै॥ नेत्ररूपकौग्रहकतेहै॥ त्वचास्पर्शकौ॥ ग्रहकतीहै॥ नाशकागंधकौ॥ श्रवनशब्दकौ
ग्रहकतेहै॥ तिसविषेअहंकारकरनाउहूआहै॥ आत्माजिसकासाक्षतोआपकौमानता
है॥ मैदेखताहौ॥ मैसुनताहौ॥ मैस्पर्शकरताहौ॥ मैआदिलेताहौ॥ हेअर्जुनएहसभकर्मकल
नाककेरचेहै॥ सोईईअहंकारकर्मपडेहोतेहै॥ एहअहंभावकरक्रियाकलेशकाभागीहो
ताहै॥ बहूतिअहंमिलिकरकर्मकौआहै॥ अरतिनविषेएकहीअभिमानीहोकरदुखपावता
है॥ सोबडाअसवजेहै॥ देहइंद्रीअहंकारकर्महोतेहै॥ अरअभिमानीहोएकरसुखदुखवि
खैरागदोखकरजीवजलताहै॥ तातेएनकासंगिअभिमानत्यागकरअपणेसरूपविषे
एस्थितहो॥ मनकरबुधिकरकेवलइंद्रीअहूकरकेजोगीकर्मकरताहै॥ अरतिनविषेअभिमा
नवृत्तनहीकरता॥ तिहूसंगिहोकरकरताहै॥ तिसकौआत्मपदकीसिधताकाकारणहोते
है॥ हेअर्जुनएसजीवकौअहंकारहीदुखदाएकहै॥ अनात्माविषेआत्मअभिमानकर्ता
है॥ तिसअभिमानसहितजोकछुकर्मकर्ताहै॥ सोसभदुखदाएकहोतेहै॥ अरजोअहंका
ररूपीविषकेदूरणतेरहत॥ होकरचेष्टाकर्ताहैलेतादेताहै॥ सोदुखकाकारनहीहोती
सदासुखरूपहै॥ हेअर्जुनसंधवशरीरहोवेअरविष्टामैलसहितअपिविचमलनकीआहो
वै॥ तबतिसकीशोभाजातीरहतीहै॥ तैसेबुधवानभीहोवैअरशास्त्रकावेताभीहोवै॥ इ
त्यादिकगुणहूकरसंपनहोवै॥ अरअनात्माविषेआत्मअभिमानहोवै॥ तिसकीशोभाजा
तीरहतीहै॥ अरजोनिर्मलनिहअहंकारहै॥ अरसुखदुखविषेसमहै॥ ऐसाजोरविमावा
नहै॥ सोशुभकर्मकरे॥ अथवाअशुभकर्मकरे॥ तिसकौकिसीकर्मकास्पर्शनहीहोता
तातेहेअर्जुनऐसेनिसचेकौधारकरकर्मकौकर॥ हेपांडुपुत्रएहजधकर्मतेराधर्महैसो
कर॥ अपणाकर्मभीप्रतिकूलहोवैपरकल्याणकर्ताहै॥ अरपराएआधर्मउत्तमहोवै॥ तो

भीइखदाएकहै ॥ अपणाथमेंअमितकीनिआएअल्पभीसखदाएकहै ॥ हेअर्जुनभावे॰
जेसाकर्मकरजोनेबिखिअहंकारतभावनाहोवे ॥ तबतऊकोंस्पर्शनकरेगा ॥ संगिअ॰
भिमानकोंत्यागकरजोगबिखेइस्थितहोकरकर्मकोंकरु ॥ जोनिहसंगिपुरखहै ॥ तिस॰
कोंकर्मकोंअग्यानमापतिहोवे ॥ तिसकोंकर्तीहूंआबंधमाननहींहोता ॥ तोतेब्रह्मरू
पहोएकेब्रह्मसएकर्मकोंकर ॥ जोकछुअचारकर्महोवेसाब्रह्मबिखेअर्पनकर ॥ तबग्री
ब्रहीब्रह्मरूपहोजावेगा ॥ हेअर्जुनसबेकर्मईश्वरबिखेसमर्पणाकर ॥ सोएईश्वरीआत्मा
है ॥ निरामैकहोएनिडरहै ॥ भावनाकरभावतहूआ ॥ एशारआत्माहोकरप्रथवीकाभ
रवणहोवहिविचरु ॥ सर्वसंकल्पकासंन्यासमनशांतमनहोकरविचरु ॥ संन्यासजोग॰
जगतिहोकरकर्मकाकर्तामाकिरूपहोवेगा ॥ अर्जुनोउवाच ॥ हेभगवनसंगित्यागकि
सकोंकहतेहैं ॥ अरब्रह्मार्पणकिसकोंकहतेहैं ॥ ईश्वरअर्पणकिसकोंकहतेहैं ॥ अरसं॰
न्यासकिसकोंकहतेहैं ॥ जोगकिसकोंकहतेहैं ॥ एनकोंविभागकरकहो ॥ श्रीभगवानो
उवाच ॥ हेअर्जुनप्रथमतंब्रह्मसुणि ॥ जोकिसकोंकहतेहैं ॥ जहांसर्वसंकल्पशांतिहै
एकतघनवेदनाहै ॥ अवरकछुभावनाकाउथाननहीं ॥ अचेतचिनमात्रसताहै ॥ तिसकों
परब्रह्मकहतेहैं ॥ तिसकोंजाणिकरऐसापावणाकाउदमकरणा ॥ जिसविचारसाथिपा
एहै ॥ तिसकोंतिसकानामगिआनहै ॥ अरतिसबिखेएस्थितिहोणातिसकानामजोग
है ॥ अरएहसबब्रह्महै ॥ मैब्रह्महों ॥ सर्वजगतमैहीहों ॥ ब्रह्मतेपतरकछुभावनानहींक
णी ॥ एसकानामब्रह्मार्पणहै ॥ अरनानाप्रकारकाजोजगतभासताहैसोकिआहै
अंतरभीशून्नअरबाहरबीशून्नशिलाकीउपमाहैजिसकों ॥ असाजोप्रकाशवनसतारूप
है ॥ सोनशून्नहैनशिलावतहै ॥ असतिमात्रहै ॥ तिसकेआश्रेकछुसंपदकलनाफुरेकी
तिआएहोकरस्पनवतभासतीहै ॥ सोजगतरूपहोएकरएस्थितिभएहै ॥ परकेसीहैअ॰
काशकीनिआएशून्नहै ॥ तिसबिखेजोविभागकलनाहूएहैसोकाटकाटअरजीवक॰
लाहोतीगएहै ॥ एकहीमध्यकअनेकभूतपृथकपृथकहोकरएस्थितिभएहै ॥ जैसेसमुद्र
बिखेतरंगबुदबुदअनेकरूपहोकरएस्थितहोतेहैं ॥ सोजलहीहै ॥ अवरकछुनहीं ॥ एकहीजल
अनेकरूपहोभासताहै ॥ तैसेएकहीवस्तुसताघटपटआदिकप्रकारहोभासतीहै ॥ सेव
तसारसएआत्माबिखेभेदकलनाकछुनहीं ॥ अगिआनकरकेअनेकरूपभेदकलनाविक
ल्पजालभासतेहैं ॥ अरअनेकभावकोंएककेरखणाभीअगिआनहै ॥ एकअनेकदेखणा
किआहै ॥ जोएकआत्माहै ॥ तिसकोंअनेकनानारूपदेखणासोअगिआनहै ॥ अरभिन॰
भिनदेहइंद्रीआप्राणमनबुधिआदिकअनेकहैं ॥ तिनबिखेअहंप्रतीतकरएकत्रभावेदख
णासोभीअगिआनहै ॥ अगिआनकरएहकलनाहूएहै ॥ अरगिआनकरकेनष्टहोजाती
है ॥ हेअर्जुनजेतेकछुसंकल्पजालहै ॥ तिनकोंतिआगकरणेएसकानामअसंसगते॰
रहतकहतेहैं ॥ अरसबकलनाजालकोंईश्वरसाथिएकतहीभावनाकरणी ॥ एसभावना
करइअंतभावगलतहोजावेगा ॥ तिसकानामईश्वरअरपणाकहतेहैं ॥ हेअर्जुनजबऐसी॰
अभेदभावनाहोतीहै ॥ तबआत्मबोधप्रापतिहोताहै ॥ अरबोधिकरसबेसबदिआएए
करूपभासतेहैं ॥ सर्वसबदकाअर्थएकहीभासताहै ॥ अरएकहीअर्थसमससभदहुबिखेभा
सताहै ॥ हेअर्जुनसभजगतमैहीहों ॥ मैहीदिशाहोंमैहीअकसहों ॥ मैहीकर्महों ॥ मै
हीकालहों ॥ द्वैतभीमैहों ॥ अद्वैतभीमैहों ॥ ऐसाजोसर्वात्मामैहों ॥ सोतूंमेरेबिखेमन॰
कोंलगाए ॥ अरमेरीभगतकर ॥ मेराहीभजनकर ॥ अरमुझहीकोंनमस्कारकर ॥ तबतूं
मुझहीकोंप्रापतिहोवेगा ॥ हेअर्जुनमैआत्माहोंतूंमेरेहीपरायणहो ॥ अर्जुनोउवाच ॥ हे
देवमेरेएतेरेदुइरूपहैं ॥ एकअपररूपहै ॥ एकपररूपहै ॥ तिनदोनहुरूपहुबिखेकिस॰
काआश्राकरों जिसकरमैपरमसिधताकोंप्रापतिहोवों ॥ श्रीभगवानोवाच ॥ हेअनघए
कसमानरूपहै ॥ आपरमरूपभाआदिअंततेरहतएकअनामएहै ॥ सोब्रह्मआत्मापरमा
त्माआदिअंतेतेरहतएकअनामएहै ॥ सोब्रह्मआत्मापरमात्माआदिकसबदहुकरके

होताहै ॥ तबलगातंअप्रबोधहै ॥ अनातमादेहादिकहुबिखेतकेआत्मअभिमानहै ॥ तब
लगमेरेचतरमादेहादिकहुबिखेतकेआत्मअभिमानहै ॥ तबलगमेरेचतरभजनअरुका
रकीपूजापरायणाहोइ ॥ अरकर्महुकोंकर ॥ जबप्रबोधहोवहिगातबमेरेपरमसरूपकों
प्रापतिहोवहिगा ॥ आदिअंतमधितेरहतमेरेरूपकोंप्रापतिहोवहिगा ॥ तिसकोंपाएक
रबहुरिजन्ममरनबिखेनआवेगा ॥ जउंतूंशत्रोंकानाशकरतागिआनवानहूआहै ॥
तबआत्माकरहि ॥ आत्माबिखेमेरापूजनकर ॥ मैसर्वकाआत्माहों ॥ एहमैहों ऐसजोमै
कहताहों ॥ सोआत्मततबहुदिबहुकहताहों ॥ हेअर्जुनमैमानताहों ॥ जोतंअबोधहूआ
है ॥ अरआत्मपदबिखेबिश्रांतवानहूआहै ॥ अरसंकल्पकलनातेरहतमनकाहूआहै ॥ एक
आत्मसताबिखेएस्थितहूआहै ॥ ऐसजोगकरसबभूतहुबिखेएस्थितिआत्माकोंदेखे
गा ॥ अरसबतभूतआत्माबिखेएस्थितिदेखेगा ॥ अरसबत्रबिखेतऊकोंसमबुधिहोजावे
गी ॥ जबसरूपबिखेतऊकोंदृढएस्थितिहोवेगी ॥ हेअर्जुनजोसबभूतहुबिखेएस्थितिआ
त्माकोंदेखताहै ॥ अरएकताभावकरभजनकरताहै ॥ अरआत्मातेएलरजिसकोंअवर॰
भावकोंअवरभावनानहींफुरती ॥ ऐसेएकताभावबिखेजोएस्थितिहै ॥ सोसर्वप्रकारवर्तमा
नभीहै ॥ तऊभीबहुरिजन्ममरणबिखेनहींआवता ॥ हेअर्जुनजिसबिखेसर्वसबदहुका
अर्थहै ॥ अरसबेशास्त्रहुबिखेजोएककाअर्थरूपहै ॥ ऐसजोआत्मासताहै ॥ सोनसतहै ॥ नअस
तहै ॥ सतअसततेजोरहतहैसता ॥ सोआत्मसताहै ॥ सोसबलोकहुकेचितबिखेप्रकाश
रूपहोकरएस्थितहै ॥ ऐसजोअनभवककेएस्थितिहै ॥ सोआत्माहैहोकरएस्थितहै ॥ ऐसे
जोअनभवककेएस्थितिहैसोआत्माहै ॥ हेभारथजैसेसर्वदेहबिखेछिनएस्थितहोताहै ॥
अंतरएकविषेरसएस्थितिहोताहै ॥ तैसेमैसबलोककेअंतरतनरूपएस्थितहों ॥ सर्वशरीर॰
हुकेअंतरजोचेतनहै ॥ तिसचेतनतेजोसत्रकिसत्यअनभवसताहै ॥ सोमैहोंसर्वगतआत्म
एस्थितिहों ॥ जैसेसर्वदेहकेअंतरछिनतहुएस्थित ॥ तैसेसर्वपदार्थहुकेअंतरमैआत्माएस्थि
तिहों ॥ जैसेसत्रकेअंतरबाहरिप्रकाशहोताहै ॥ तैसेमैसर्वपदार्थहुकेअंतरबाहरिएस्थित
हों ॥ जैसेअग्निकाचहुकेअंतरएकहीप्रकाशहोताहै ॥ तैसेअनेकदेहहुबिखेअंतरबाहरमै॰
हीअविअकतरूपधारकेएस्थितहों ॥ अरहेअर्जुनब्रह्मातेआदिअरत्रिणपरजंतजोपदार्थहै
तिनसभबहुबिखेसतासमानककेएस्थितिहों ॥ मैअरनितअजन्माहों ॥ तिसमेरेबिखे
जोचितसंवेदनफुरीहै ॥ सोअब्रह्मसताकीनिआएहोतभएहैं ॥ अरफुरणेकरकेजगतरूप
होभासतीहै ॥ अहंताअरममताआदिकपदार्थहुकोंप्रापतिभएहैं ॥ अरआत्मततआपके
णआपबिखेएस्थितिहै ॥ अवरदूअंतकछुनहीं ॥ हेअर्जुनआत्मासभकासाखीरूपहै ॥ तिसकों
जगतकेसुखदुखस्पर्शनहींकरती ॥ जैसेदर्पणप्रतिबिंबकोंग्रहणकरताहै ॥ अरसभबिखेस
मेहै ॥ किसीकरविदवाननहींहोता ॥ तैसेसभपदार्थअवस्थाकासाखीभूतआत्माहै ॥ प
रोककिसीकोंस्पर्शनहींकरती ॥ अरशरीरकेनाशहुएतिसकानाशनहींहोता ॥ जोऐसेदे
खताहैसोएजथारथदेखताहै ॥ हेअर्जुनप्रथवीबिखेगंधमैहों ॥ अरजलबिखेरसमैहों
पवनबिखेस्पर्शशक्तिमैहों ॥ अरस्पंदशक्तिमैहों ॥ अग्निबिखेप्रकाशशक्ति ॥ प्रकाशबि
खेप्रगटिगुणमैहों ॥ अरगतकोंकिआकहों ॥ जोएहमैहोंअरएहमैहों ॥ मैसर्वात्मा
मैहों ॥ मेरेतेएतरकछुनहीं ॥ हेपांडवएहजोसिष्टापड़ीप्रवर्ततीहै ॥ प्रलयहोतीअर
उत्पतहोतीदिष्टआवतीहै ॥ सोमेरेबिखेऐसेहै ॥ जैसेसमुंद्रबिखेतरंगफुरतेहैं ॥ अर
लीनहोतेहैं ॥ जैसेपहाड़पथररूपहै ॥ अरब्रिछकासरूपहै ॥ जैसेतरंगबिखेजल॰
होताहै ॥ तैसेसर्वपदार्थोंबिखेमैआत्माहों ॥ जोसर्वभूतोंकोंआत्माबिखेदेखता
है ॥ सोआत्माकोंअकर्तादेखताहै ॥ जैसेसमुंद्रबिखेनानाप्रकारकेतरंगभासते॰
हैं ॥ जैसेसवर्नबिखेभूखणभासतेहैं ॥ तैसेनानाप्रकारहुआत्माबिखेभासते॰
हैं ॥ हेअर्जुनएहनानाप्रकारकेपदार्थब्रह्मरूपहै ॥ ब्रह्मतेभिंनकछुनहीं ॥ तबअ

बं म॰ ३९
35

ताक्रियाकरहीयें॥ भावविकारक्रियाकहीये॥ जगतइअतेक्रियाकहीये जोगहीहै॥
तोवधामाइनाहै किंहोताहै॥ एसप्रकारस्मणिकरसमझशीए॥ अरअंतरिभावनाति
मचेतहोकरजीवनमोक्षएसलोकविखेसमरसविचरतेहै॥ हेअर्जुनतिसपदकोन
हीप्रापतिहोता॥ जोपुरखनिर्मानअरनिर्मोहहुएहै॥ अभलाषदोषजिसकानिव
तेभयाहै॥ अरसर्वकामनातरहतहुएहै॥ अरसुखदुखविखरागद्वेखतरहतसम
गिलेसकिहुएहै॥ सोअवेपदकोप्रापतिहुएहै॥५०॥ इतिश्रीम न प पुराणे म
म॥ श्री भगवानुवाच॥ हेमहाबाहोबहुडिमेरेपरमवचनश्रुणि॥ मैतीरप्रस
नाकेनमितकहताहों॥ जोतेराहितकारीहो॥ एहजोशीतउष्नसुखदुखविखेहै॥
सोइंद्रीग्रहकोस्पर्शहोतेहै॥ अस्थानमापाएहै॥ आवतेहै॥ बहुडिनिवर्तहोजातेहै॥ तो
तेअनितहै॥ तिनकोतूसहुकर॥ आत्माकोस्पर्शनहीहोते॥ तूतोआत्माहुएकहै॥ आ
दिअंतमधितेरहतहै॥ तिनकेदुखसुखरणहे॥ तुमकोशीतउष्नदुखसुखदेनेनही
करशके॥ एहकलनाकरचिहुएहे॥ जेसेसवर्णविखभूषणकानिवासहै॥ तेसेए
नेकाआत्माविखअसतनिवासहै॥ हेभारतजिसपुरखकोइंद्रीग्रहकेस्पर्शभोगभ
मेरपवलाएमाननहीकरशके॥ अरसुखदुखजिनकोसमहै॥ तिसकोमोखकी
प्रापतिहोतीहै॥ हेअर्जुनआत्मानितसत्यसरूपहै॥ अरइंद्रीग्रहकस्पर्शअसतरूप
है॥ सोअसतरूपविखेआसतरूपआत्माकोमोहनहीशके॥ रहस्यमात्रनहुहै क
कुवस्तनही॥ अरबोधरूपआत्मतत्तसर्वगतसत्यरूपहै॥ तिसकोएनकास्पर्शकेसे
होवे॥ सतकोअसतस्पर्शनहीकरसके॥ जेसेसूरजकीअग्निकागनकोजलायनहीस
के॥ तेसेदेहइंद्रीआअरतिनकेविखेआत्माकोस्पर्शनहीकरशके॥ हेअर्जुनजोअसत
हेसोअसतनहीहोता॥ सुखदुखआदिकअसतरूपहै॥ हेहीनही॥ अरआत्मसतरूपहै
जगतकेसतचटादेवस्त॥ अरअसतअकाशपुलआदिक॥ तिनदोनोकनिआगेपाहे
जोनिहककेचेनमहासतपदहै॥ तिसविखएस्थितिहो॥ हेअरजनगिआनवानपुरख
है॥ सोइष्टसुखादिकविखिअइकरहरखवाननहीहोता॥ अरनिष्टदुखकरशोक
वाननहीहोता॥ अरवेतेननयारवानवतशरीरविखएस्थितिहोताहै॥ हेसाधएहवि
तभीजडहै॥ अरदेखइंद्रीआदिकभीजडहै॥ अरआत्माचेतनहै॥ एनकेसाथमिलिआ
हुआआपकोकिदेहदेखताहै॥ चितअरदेहभीआपसमाभिनभिनहै॥ देहकेनष्ट
हुएचितनष्टनहीहोता॥ अरचितकेनष्टहुएदेहनष्टनहीहोती॥ एनकेनष्टहुए॥ जो
आपकोनष्टहुआमानतेहै॥ अरएनकेसुखदुखसाथिसुखीदुखीहोतेहै सोम
हामूरखहहि॥ हेअर्जुनसरूपकेप्रमादिककैदेहादिकइसविखअहंप्रतीतकरताहै
जवआत्माकाबोधिहोताहै॥ तवआपकोअकर्ताअभोगताअद्वैतविदेखताहै
जेसेजेवडीकेअग्यानकरकेसर्पभासताहै॥ जवडीकेबोधिकरसर्पकाअभावहोजा
ताहै॥ तेसेआत्माकेअग्यानकरदेहएंद्रीअहंकेसुखदुखभासतेहै॥ अरआत्मग्यानक
रसुखदुखकाअभावहोजाताहै॥ हेअर्जुनएहसमभिष्टअजएकब्रह्मसरूपहै॥ त
कोजोजन्मताहैनमरताहै॥ एहमनउपदेशहै॥ परबोधकरेअसेजाणनाहै॥ हेअर्जुन
ब्रह्मरूपसमझविखेतएकतरागफुरिआहै॥ कर्ताककालगहिकपबहडिलीनहोजा
वहिगातिसीविखे॥ तातेतेरासरूपनिर्मएब्रह्महै॥ सभजगतब्रह्मकासंकल्पहै॥
समपापकरएहादिष्टिआवताहै॥ तातेमानमदपोकसुखदुखसभअसतरूपहै
तूध्यानवानहोइ॥ हेअर्जुनप्रथमतोतेब्रह्मएजधकरि॥ तोजतीकलूहणीसे
ताहै॥ सोसभअनभवकरनाशकरहोड॥ जोएहडोतकछुनहै॥ एकहीवहाप
नविआब्रह्मरूपहै॥ एस्थिति॥ एहब्रह्मएजधको॥ अरसुखदुखलाभअलाभ
जेअसेब्रह्मजयविखएनकोएकताकर॥ जोकछुब्रह्मानेलकरविणाअर्जुनजगत

भासताहै॥ सोसबब्रह्महीहै॥ अरतेधनरकछुनही॥ ऐसेजाणकरलाभअलाभविखे
समहोएकरसएस्थितिहो॥ अरविचिअवनाककछुनकरि॥ हेअर्जुनकर्मभीराजसरूपसा
थिसभावकपरहोवहिगा॥ जेसवाएकाफुरणास्वभावकपराहोताहै॥ तेसपुरीरक
रकर्मसभावकपडेहोतेहै॥ हेअर्जुनजोकछुकाजकरहि॥ अरजोकछुभोजनक
रहिजोकछुजजनजोकछुदानकरहिसोआत्माविखअर्पणकर॥ अरसदोआत्मस
ताविखएस्थितरहु॥ अरसभकोआत्मरूपदेख॥ हेअर्जुनजोकिसीकेअंतरनिसचाइ
इहोताहै॥ सोएरूपउसकोभासताहै॥ तूएसमकाअभ्यासकरगातवस्तरूपहो
जावेगा॥ एसविखसंसाकछुनही॥ हेअर्जुनजोकर्मइंद्रीविखआत्माकोअकर्तादेखता
है॥ अरअकर्ताजोहै॥ अकर्णाअभिमानसहित॥ तिसकोकर्तादेखताहै॥ सोमानसब
बुधिवानहै॥ अरसेशरणकर्मकाकर्ताभीइहीहै॥ कर्तवकछुनही॥ एहअर्थहै॥ हेअर्जु
नकर्मइकेफलकीतरफकोइकामतिहोए॥ अरकर्मविखेविरसताभीमतहोए॥ जोमन
हीकर्ता॥ नागिविखएस्थितिहोकरकर्मकोकरु॥ अरकर्तानअभिमानअरफलकीइछा
कोत्यागकरकर्मकरिहु धनंजयजोकर्मइकेफलअरसंगकोत्यागकरनिरंतरमिहु
आहै॥ सोकर्ताभीहुआभीकछुनहीकर्ता॥ कारजआकारजकोकर्ताभीनहीकर्ता॥
हेअर्जुनजिसअरंभविखेकामनासंकल्पत्यागकीआहै॥ गिआनअग्निकरकर्मजला
एहै॥ तिसकोबुधिवानपंडितकहतेहै॥ सोसमआत्माविखएस्थितिहै॥ सर्वअर्थइवि
देनिसप्रतेहै॥ निर्दंदसतएस्थितिहै॥ नयाप्रापतिविखेवर्ततेताहै॥ सोप्रापवीकामभ
णोहै॥ समदेहकीनिआवअचलहै॥ अरअपणाआपकल्पनिहै॥ नसमसदविखेआनिकत
जेलप्रवेशाकतेहै॥ तेसेगिआनवानविखसुखप्रवेशकतेहै॥ सोआतनरूपसर्वकामं
नातेरहितहै॥५०॥ इति श्रीअर्जुनउपदेशोनामसर्गः॥ श्रीभगवानुवाच॥ ओहेअर्जुन
जोआत्माहै॥ सोकेसाआत्माहै॥ जोदेशकालवस्तुकेपरछेदतेरहतहै॥ अरअभि
नाशीहै॥ अरअजेहै॥ अजरकहीअप्रमाणतरहित॥ हेअर्जुनतूशोकमतकरु॥ एह
जोतरकोभासताहै॥ सोअगिआनकरकेभासताहै॥ अगिआनकहीएअपुणापरमा
द॥ परमात्कहीअअनात्मविखआत्माअभिमान॥ एसकानामअगिआनहै॥ हेअ
र्जुनएहजोतेरासंसाररूपदेहहै॥ सोएसविखेअभिमानमतकरु॥ एहमिथ्याहै॥ एसके
वेंद्रखोहाताहै॥ अरतूअसंगिहैअभिनाशीहै॥ तेरानाशकदाचितनही॥ हेअर्जुनजोवि
नासरूपहै॥ तिसकाहोवणाकदाचितनही॥ एरजोसतहैतिसकाअभावकदाचित
नही॥ एनदोनोकानिर्णकीआहै॥ ततवेतिअइने॥ अरहेअर्जुनतिसकोतूअभिना
सीजाण जिसकरकैएहसर्वप्रकाशतहै॥ तिसकेविनाशकरणेकोकोईसमर्थन
ही॥ हेअर्जुनतूऐसाहै॥ अरएहआत्मासर्वकाअपणाआपहै॥ तिसकाविनाशकिसके
सिहोवे॥ अरजोअगिआनीमनमुखहै॥ तिसकाविनाशहोताहै॥ तिसऊपरअर्जुनप्रश
नकीआहै॥ अर्जुनोउवाच॥ हेभगवनतुमकहितेहो॥ आत्माअविनाशीहै॥ अरत
भकाअपणाआपहै॥ तबजोनकाकिंगेकरनाशहोवे॥ श्रीभगवानुवाच॥ डोकि
हेअर्जुनतूसतकहताहै॥ परमात्मायतेनाशतोकिसीकाभीनहीहोता॥ परंतअगि
आनकरकेजोनकानाशहोता॥ तिनकोमितआमलतीहै॥ हेअर्जुनतूआत्मवेताहो
सोआत्माएकहै॥ अरद्वैतहै॥ जिसकेविखेएकभीकहणानहीसंभवता॥ दोनकहाहो
वे॥ अर्जुनोउवाच॥ हेभगवनतुमकहितेहोआत्माएकहै॥ तोभिरतभीइतीनभएन
वलोकमतेहै॥ वहुजिसरकेनरकस्वगभोगतेहै॥ जोमितनहीतवलोकमवतें
किंहै॥ अरपापपुणपकिंभोगतेहै॥ श्रीभगवानुवाच॥ किहेअर्जुननकोइमरता
है॥ नकोईजन्मताहै॥ एहमिथ्याकल्पनाहै॥ सोसेकीनिआएं॥ जेसेतिंद्रादोख
कवैजन्मणभीअरमरणभीभासताहै॥ तेसेसंसारविखएहजन्मणअरमरण

की

व॰ म॰ ३९

38

भासताहै ॥ सो अज्ञानकर्के भासताहै ॥ सो अज्ञाननाम पुरुषोंकाहै ॥ तिसकरणेही नर
क अरु स्वर्ग कल्पियाहै ॥ हे अर्जुन जेसे एहु जीव भोगताहै सोतूं श्रवणकर ॥ अपणे स्व
रूपके प्रमादिहे होवणे कर आगे संकल्पका शरीर रचेहै ॥ पर यहु काकहीये ॥ सो कियाहै
पृथवी अग्नि जेल वायु आकाश मन बुधि चित अहंकार तिसविषे जीव प्रवेश करताहै ॥
तिससाथ मिलिकर जेसी भावना करताहै ॥ तैसीही आगे भोगताहै ॥ सो वासना तीन प्र
कारकीहै ॥ एक शांतकीहै ॥ एक राजसीहै ॥ एक तामसीहै ॥ जेसी वासना होतीहै ॥ तेसे
स्वर्ग अरु नरक बणिजाताहै ॥ शांतकी वासनाते स्वर्ग बणिजाताहै ॥ एतरहुते नरकादिक
बणिजाताहै ॥ केवल वासनाहीमात्रहै ॥ स्वर्ग अरु नरक वासनावतनकों स्वर्गहै ॥ नको
वो नरकहै ॥ न कोवो मरताहै ॥ न कोउ जन्मिआहै ॥ केवल एक आत्माहीजिंकात्तिए
स्थितिहै ॥ एहु जगत एहु भ्रमकर्के पडा भासताहै ॥ अग्निआनकर्के चिरकालकी आवासना
जो अभ्यासकीआहै ॥ तिनकर्के भ्रमकों पडा देखताहै ॥ अर्जुनउवाच ॥ हे जगतके
पति नरक अरु स्वर्ग आदिक जगतविषे जो एहु जीव जनोंकों देखताहै ॥ तिसनाना
प्रकारके देखणेविषे कारण कौणहै ॥ श्रीभगवानोवाच ॥ हे अर्जुन अज्ञानकर्के जो
अनात्मविषे आत्म अभिमान हुआहै ॥ तिसकर जगतकों सतिजानणेलागाहै ॥ स
तिजाणिकर वासनाकरणेलागाहै ॥ वहुडि जेसे जेसे जगतकों सतिजाणिकर वासनाक
रताहै ॥ तेसेही जगत भ्रमकों देखताहै ॥ जब एसकों आत्मविचार उपजताहै ॥ तब जगत
कों सभकों निस्राप देखताहै ॥ अरु वासनाभी छेहोजातीहै ॥ नव वासनाकेहोतीहै ॥
तब कल्याणकों प्रापतिहोताहै ॥ अर्जुनउवाच ॥ हे भगवन्न विषे अभ्यासकर जो संसार
भ्रमदृढहोरहाहै ॥ सो किसप्रकार उपजाहै ॥ अरु किसप्रकार लीनहोवेगा ॥ श्रीभग
वानुवाच ॥ हे अर्जुन सूरवनाककर्के अग्निआनताकर्के जो अनादहै होदिकहृवि
षे आत्मभावना होतीहै ॥ तिसकर जगतकों सतिजाणिकै वासनाकरताहै ॥ तिसवासना
केअनुसार जगत भ्रमकों देखताहै ॥ जब सतरूपका अभ्यासकरताहै ॥ तब वासनानष्ट
होजातीहै ॥ ताते हे अर्जुन तत्सतरूपका अभ्यासकर ॥ अरु अहंकार ममादिक वासनाकों
त्यागकर्के वल आत्माकी भावनाकर ॥ हे अर्जुन एहु देहु जोहै सो वासनारूपहै ॥ जब वा
सना निवर्त होवेगी ॥ तब देहुभीलीनहोजावेगी ॥ जब देहु लीनभए तब देशकालक्रिया
जन्ममरणभी न रहिहिगे ॥ एहु अपणाही संकल्प करउठेहै ॥ भ्रमरूपहै ॥ तिनकी वासनाक
रवेसूनहुआ जीव पडा भटकताहै ॥ जब आत्मबोध होताहै तब वासनातेमुक्ति होताहै ॥
निरालंब असंकल्प अभिनासी आत्मतत्तकों पावताहै ॥ तिसीकों मोक्ष कहतेहैं ॥ जि
सकी वासना छेद हुएहै ॥ हे अर्जुन जब जीवकों ततकाबोध होताहै ॥ तब वासनारूपी जाल
तेमुक्त होताहै ॥ जो वासनातेमुक्ति हुआहै सो मुक्ति हुआ ॥ जो परखसर्व धर्मपरायणभी
है ॥ अरु सर्वगिहै ॥ अरु शास्त्रोंकावेताभीहै ॥ अरु वासनातेमुक्ति नहीहूआ ॥ सो सर्व बंधन
बंधहै ॥ जेसे पिंजरेविषे पंछी बधिहोताहै ॥ तेसेही उह बधिहै ॥ जेसे दृष्टिदोषक
र्के आकाशविषे तरवरमोरकेपूछवत भासतेहैं ॥ तेसे सरवकोंस्वथ आत्माविषे वा
सनारूपी मलजगतभासताहै ॥ जिसके अंतरि वासनाहै ॥ सो बधिहै ॥ अरु जिसके अंतरि
वासनानहीं तिसकों मोक्ष जाण ॥ हे अर्जुन जिसके अंतर जगतकी वासनाहै ॥ जो व
डो अभ्यासकर भाति दृष्टिआवताहै ॥ तौभी दरिद्रीहै ॥ अरु दुखोंकाभागीहै ॥ अरु जिस
की वासनानष्टभएहै ॥ अरु भताते रहतदृष्टि आवताहै ॥ तौभी बडी प्रभतावानहै
अरु कल्याणरूपहै ॥ ताते वासनारूपी मलकों त्यागकर शांतवान हो ॥ ५३ ॥ इति
श्री निर्वाणप्रकरणे ... ॥ श्रीभगवानोवाच ॥ हे अर्जुन एस
प्रकार निर्वाण जीवनमुक्ति होकर विचर ॥ तब तेरा अंतःकरण शीतल होजावे
अरु जेता मरणते मुक्ति निहसंकप्रकाशवत होवेगा ॥ एह अरु अनिष्टकों त्यागकर

शीतलहोकर एस्थिति होवेगा ॥ हे अर्जुन प्रवाहपतजोकारज आनिप्रापति होवेगा
तिसकोंकर ॥ बुधिविवेकाएरताकोंत्यागकर ॥ आत्मा अभिनाशी है ॥ अरु देहुना
शवंत है ॥ देहुके नाश हुए ॥ आत्माका नाश नहीहोता ॥ हे अर्जुन जीवनमुक्ति प्रारब्ध
है ॥ सो रागदोखते रहित होकर प्रवाहपतित कारजकों करतेहैं ॥ तूंभी जीवनमुक्ति
सभाव होकर विचर ॥ अरु एहु मेंकरोंएहु नकरों ॥ एस ग्रहण अरु त्यागके संकल्पकों त्यागकर
एस ज्ञानवान ते बंधवान नहीहोता ॥ अरु जो मरगवहै सो एसीविषेवंधमान है ॥ मि
रएसकअज्ञान वानतें बंधवाननहीहोता ॥ अरु जो मरखवहै सो एसी विवनपस्थितिहै ॥ कर प्रवाहपतित कारज
है ॥ जो जीवनमुक्ति अरु खहै सो स्वरूपविषे स्थितिहै ॥ कर प्रवाहपतितकारज
कोंकरतेहैं ॥ अधिप्रवृतिकी निस्राप वासनाते रहित कारजकोंकरतेहैं ॥ जेसे कछू अपणे
अंगविषे चलेताहै ॥ तेसे ज्ञानवान वासनाकों संकचायलेताहै ॥ अरु आपकों चिन्मात्ररूप
पजाणताहै ॥ अरु जगत मेरेविषे मणाकिकी निस्रापपराएआहुआहै ॥ मायाभ्रमजगत मे
रंगीहै ॥ जेसे अपणाहाथपसो अरवचे ॥ जेसे समुद्र तरंग उठतेहैं ॥ अरु लीनहोतेहैं
तेसे विश्व आत्माविषे उपजतीहै ॥ अरु लीनहोतीहै ॥ भिन्न कछु नहीं ॥ हे अर्जुन जेसे
दीप आपरिनानाप्रकार चित्रलिखेहोएहैं ॥ पर उहुरंगवस्त्रते भिन्न नहीहोते ॥ तेसे जगत
आत्माविषे मनरूपचित्रेलेरचाहै ॥ अरु अधिनिरउपजिआहौ उपजिआभासताहै ॥ जेसे थंभे
विषेचेलाकल्पताहै ॥ जोएतनीआ पुतलीनिकसेगी ॥ जेसे प्रकाशरूपी पुतलीआ
तिसकेमनविषे फुरतीहै ॥ तेसेएहु तीनोजगतकालसंजगतचित रूपीशिल्पीवि
षेफुरतेहैं ॥ चित्रलाभीनहीलानवलिखताहै ॥ जौभी नहोतीहै ॥ पहु अपूरजेहै जो प्रका
शविषे सूत्रलाकोंकल्पताहै ॥ हे अर्जुन एहुमूरतस्पष्टभासतीहै ॥ तौभी प्रकाशरूपहै
तेसे सभविषे प्रकाशरूपहोतीहै ॥ तेसे एहुहे ॥ प्रकाशअसंकेपविषे भेदकछु नहीं ॥ पर अ
ज्ञानहे तो भेदपडाभासताहै ॥ जेसे मनतासनिसमउपविषे जगत मनके फुरणेकर भास
ताहै ॥ अरु अफुरहुएलीहोताहै ॥ सो मनोमात्रहै ॥ प्रकाशतेभी शून्यरूपहै ॥ तेसे सपने
समनोराजविषे एक छिणमात्रविषे कालकाअनुभवहोताहै ॥ स्वरूपके विस्मरणक
रउहीसति होभासताहै ॥ तेसे एहु जगत सत भासताहै ॥ जब लगप्रमादिहोताहै ॥ तब लग
पडाभासताहै ॥ जब एसक मकर्के आत्माकों देखताहै ॥ तब जगतभ्रम निवर्त हो
जाताहै ॥ प्रगटि दिखीताहै पर लीनहोजाताहै ॥ शरतकालके प्रकाशवत निर्मल भा
सताहै ॥ जेसे चित्रेलेकरमनविषे चित्रपदे फुरताहै ॥ सो प्रकाशरूपहै ॥ तेसे एहु जगत प्र
काशरूपहै ॥ हे अर्जुन भावअभावविवेककों त्यागकर सतरूप विषे एस्थितिहूं ॥ तब प्रकाशव
तनिर्मल होजावेगा ॥ जेसे मेघोंकी प्रवितविषे भी प्रकाश निर्मल होताहै ॥ अरु निवि
रतविषेभी निर्मल होताहै ॥ तेसे तूं पदार्थके भावअभावविषे निर्मल है ॥ तेसे कछु
पदार्थ भासतेहैं ॥ सो सभ प्रकाशरूपहै ॥ जेसे चित्रेलेकेमनविषे पुतलीआ भासतीहै ॥
तेसे एहु जगत प्रकाशरूपहै ॥ जेसे एक छिणमनके फुरणेकर नानाप्रकारके पदार्थ भास
आवतेहैं ॥ अफुरहुए लीनहोजातेहैं ॥ तेसे प्रमादिकर जगत भासताहै ॥ आत्माके जाणे
लीनहोजाताहै ॥ अरु आत्माविषे निर्वाणरूपहै ॥ आत्माविषे एकनमेषके फुरणेक
र प्रमादते वज्रसारकी निस्राप सतअरु दृढहोभासताहै ॥ अरु एहु चित्तके फुरणेकर्के
पडाभासताहै ॥ सभजगतु प्रकाशरूपहै ॥ हे तनक कछू आनहीं ॥ बडा अपूरजेहै प्रकाशहो
परमप्रकाशलिखिाहै ॥ अरु नानारूप रमणीक होकर भासतीहै ॥ अरु सतकों मोहतीहै
हे अर्जुन एहु अपूरजेहै जोकछु है नहीं ॥ अरु नानाप्रकारके रंग भासतेहैं ॥ चंद्रमा तारे अ
दिक फूलअकाशविषे विषिहैं ॥ सो प्रकाशरूपी लीलताहै ॥ अरु मेघरूपी पत्रलागेहैं ॥ हे
अर्जुन प्रवाहअपूरजे देखो विश्व भीतवउत्पति होताहै ॥ जबप्रथम तिसका अर्थाभिन्न अर्थ
वासना होताहै ॥ अरु एहा चित्तप्रथम उत्पति होतेहैं ॥ अरु अर्थारभनकी पाकेबणतीहै ॥ प्रि
थमे एहु नष्ट इलाचित्र वणेहैं ॥ अरु पाछे भिन्न हुएहैं ॥ अरु एहु अपूरजेहै जेसे तेवाइव पथर
तेसे ॥ तेसे एहु अपूरजेहै ॥ हे अर्जुन एहु मायाकी प्रधानताहै ॥ सो वासनवप्रकाशरूपचित्र

बा॰ सं॰ ४६

लाप्रकाशविखेप्रकाशरूपीचित्रपुतलीआइपजीहै ॥ अरप्रकाशविखेलीनहोतीहै
प्रकाशहीकौंभोजनकर्तीआहे ॥ प्रकाशविखहीकोंप्रकाशदेखताहै ॥ प्रकाशकी
एक ॥ स्थितिप्रकाशरूपआत्माविखेप्रकाशरूपणस्थितिहै ॥ हेअर्जुनवास्नातेअैसे
हैआत्मा ॥ तिसअैसेअहंतरूपआत्माविखेजोउथानहुआहै ॥ तिसउथानकरकेस
कौंसरूपकाप्रमादहुआहै ॥ तिसकरआगेद्विशभ्रमकौंदेखताहै ॥ अरअनेकवास्ना
होतीहै ॥ वास्नारूपीजेवडेसाथबाधाहुआपडभटकताहै ॥ वास्नाकरअवरआहंस्रा
ग्रहनआदिकसहस्रकौंजानतेल्यावताहै ॥ अरनानाप्रकारकेभ्रमकौंदेखताहै ॥ तो
भीसरूपजिकातिहै ॥ जैसेदर्पणविखेप्रतिबिंबपडताहै ॥ अरदर्पणजिकातिसहिनहै
तैसेजगतआत्माविखेप्रतिबिंबहोताहै ॥ अरआत्माछेदभेदतेरहितहै ॥ बलहोअरसु
विखेणस्थितिहै ॥ सोसर्वआहीहै ॥ तौंछेदभेदकिसकाहोवे ॥ जैसेजलविखेतरंगबुद्बु
दाहोताहैसोजलहीरूपहै ॥ तैसेपदअर्थहीअसकरुणहै ॥ तिसविखेद्वैतकछुनहीं
जैसेप्रकाशविखेप्रकाशणस्थितिहै ॥ तैसेआत्माविखेआत्मणस्थितिहै ॥ तिसविखे
वासअरवासकभेदकोऊनहीं ॥ कल्पनातेरहितहै ॥ परसरूपकेप्रमादिककेंवासवा
सकभेदहोताहै ॥ जबसरूपकाज्ञानहुआतबवास्नानष्टहोजातीहै ॥ हेअर्जुनजावा
स्नातेमुक्तिहै ॥ सोमुक्तिहुईहै ॥ अरवास्नासाथिबांधाहुआहै ॥ सोबंधहै ॥ जोसर्वप्रा
कावेत्ताभीहै ॥ अरसर्वधर्मकरसंपूरणहै ॥ जोवास्नातेमुक्तिनहींहुआतौबंधहीहै ॥ जै
सेपिंजरेविखेपंछीबांधाहोताहै ॥ तैसेहीवहवास्नाकरबांधाहुआहै ॥ हेअर्जुनजिसके
अंतरवास्नाकाबीजरहिआहै ॥ सोवाहीरोंदिखतानहीआवता ॥ सोबीजभीबडेविस्तारकौंपा
वता ॥ जैसेवटकाबीजबडेविस्तारकौंपावताहै ॥ तैसेहीवास्नाविस्तारकौंपावेगी
अरजिसपुरखआत्माकाअभ्यासकीआहै ॥ तिसकरज्ञानरूपअग्निउपजाएहै ॥ अरति
सकरवास्नारूपीबीजजलायाहै ॥ तिसकौंबहुरिसंसारभ्रमदेखहीहोता ॥ अ
रवस्तुबुधिकरपदार्थकौंग्रहननहींकरता ॥ अरसरबडेरवआदिककरविखडेबतानहीं
सदानिलेपरहताहै ॥ जैसेकंवलजलहीकेऊपररहताहै ॥ तैसेहीसुखदुखकै
तेऊपररहेगा ॥ हेअर्जुनतुंसातिआत्माहै ॥ तेराभ्रमअभिहरिभएआहै ॥ अरआत्म
पदकौंतुंप्रापतिभएआहै ॥ अरमनकामोहतेरानिवीणहोगएआहै ॥ तुंसोभिक
जानीहुआहै ॥ विवहारअंतसर्वातलककौंतुंलभएहै ॥ शांतरूपनिहसोभिपदकौं
तुंप्रापतिभएआहै पहमैजानताहों ॥ ५५ ॥ इतिश्रीअर्जुनविश्रांतिवर्णनंनामस
र्गः ॥ अर्जुनउवाच ॥ हेअच्युततेरामोहअभिनष्टभएआहै ॥ अरआत्मस्मरतिकौं
मैप्रापतिभएआहों ॥ तेरेप्रसादतेमैअभिमानिसेदेहहोअपकरणस्थितिहों ॥ अबजोकछु
तुंकहैसोमैकरताहों ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ हेअर्जुनमनकीजोपांचबिर्तीहै ॥ प्र
मानविपर्जै ॥ विकल्प ॥ अभाव ॥ स्मिरति ॥ जबएहपांचोबिर्तीप्रीजनिवर्तहोजावैं ॥
तबचितमनतेहीजावै ॥ तिसकेपाछेजोशेषरहिताहै ॥ चितरहितचेतनतिसकौंअ
तकचेतनकहतेहै ॥ सोकेवलरूपहै ॥ सर्वउपाधतेरहितहै ॥ सोसबहै ॥ अरसबरू
पहै ॥ तैसेपदकौंप्रापतिहुआहै ॥ तिसकौंआधिविआधिकदुखबंधनहीशाने ॥ जैसे
ज्ञानीशिशनिकसिकरपकौंप्रकाशमार्गकौंजाताहै ॥ तैसेहीदेहअभिमानतेमु
क्तिहोकरआतमसारूपकौंप्रापतिहोताहै तिसकौंदुखनहीबाधसकते ॥ हेअर्जु
नअनंतकेवलचेतनजोसताहैसोपरमप्रकाशरूपहै ॥ नथहै ॥ संकल्पविकल्पतेरहितहै
रहेआहुकेअतीतहै ॥ जोपुरखसर्वतेअतीतपदविखेस्थितहुआहै ॥ तिसकौंवास
नानहीस्पर्शकरसकती ॥ तिसकेप्रापतिहुएएहअरपदआदिकपदार्थसमानं
होजातेहैं ॥ तहांतबवास्नाकाकछुबलनहींचलता ॥ जैसेअग्निसबहीकेतिकोटदेवेफ
गलजाताहै ॥ तिसकौशीतलतानहोरहती ॥ तैसेहीपदकेसाक्षात्कारहएबिन्नकौंवि
नष्टहोजातीहै ॥ वहुरिवासनाकाभीअभावहोजाताहै ॥ हेअर्जुनवास्नातबल

गफुर्तीहै ॥ जबलगसंसारकौंसतिजानताहै ॥ जबआत्मापदकौंप्रापतिहोतीहै ॥ त
बसंसारअरवास्नाकाअभावहोजाताहै ॥ एसकारणतेविरक्तकौंकछुनीबुधक
भोगोंकीवास्नानहीरहती ॥ हेअर्जुनतबलगनानाप्रकारकेअकारविकारसंजुगत
अविद्यापडीफुरतीहै ॥ जबलगसुधआत्माकौंअपणाआपकरजानताआनहीं ॥ म
धआत्माकौंप्रापतिहुएसबभ्रमनष्टहोजाताहै ॥ आत्मतत्वपदस्वरूपविखेप्राप
तिहोताहै ॥ अरणस्थितिहोताहै ॥ प्रकाशवतनिर्मलभावकौंप्रापतिहोताहै ॥ अपणापणे
आपकरसभकौंप्रकाशदेखताहै ॥ सोएआत्मसत्तासर्वप्रकाशरूपहै ॥ अरसर्वप्रकारहै
पनरहितहै ॥ हेअर्जुनजोसर्वटिनेअतीतपरमवस्तवे ॥ तिसकौंकिसकीउपमादीजे
जोवास्नारूपीविसूचकाकात्यागकरअपणेसभावविखेणस्थितिहुआअचलीसोवि
चरताहै ॥ सोत्रिलोकीकानाथहै ॥ श्रीवसिष्ठउवाच ॥ हेरामजीएसप्रकारजबत्रिलो
ककानाथकहैगा ॥ तबअर्जुनएकछिनमौनविखेणस्थितिहोजावेगा तिसतेउपरां
तकहैगा ॥ अर्जुनउवाच ॥ हेभगवनसमसशोकमोहनष्टहोगएहै ॥ तुमारेवचनकरकर ॥
अरबोधिदहुआहै ॥ जैसेसूर्यकेउदेहुएकमलखिरिआवतेहै ॥ तैसेतुमारेवचनकरके
मैंबोधिखिरआएआहै ॥ अबजोकछुतुमारीआगिआहैसोमैकरोगा ॥ वसिष्ठउवा
च ॥ हेरामजीएसप्रकारकहिकरअर्जुनगांडीधनखकौग्रहकरेगा ॥ भगवानकौंसार
थीकरकेनिरसंदेहनिशोकहोकरलीलाकौंकरेगा ॥ कैसाजुधकरेगाजोहस्तीघोडोंका
नरकमोरेगा ॥ लोहूकेप्रवाहचलहिगा ॥ जोभीआत्मतत्वविखेणस्थितिरहेगा ॥ सरूप
तेचलायमाननहोवेगा ॥ भूमिभारकौंनष्टकरिदेवेगा ॥ परजिकातिहोरहेगा ॥ जैसे
पवनमेघोंकौंअभावकरदेताहै ॥ तैसेजोधिअरकाअभावकरनाशकरेगा ॥ परसरूपतेचला
यमाननहोवेगा ॥ ५५ ॥ इतिश्रीअर्जुनविश्रांतिवर्णनंनामसर्गः ॥ भगवानअर्जुनपरिव
नेमावसिष्ठउवाच ॥ हेरामजीएसीदृष्टिकौंअंगीकारकेतिसकोसंन्यासन्यासहोइ ॥
वेसीदृष्टहै ॥ इसलोकमानाशकर्ताहै ॥ जोकछुकर्मवर्तहोवेसोब्रह्मअर्पणकर ॥ जिसविखे
एहसर्वहै ॥ अरजिसतेएहसर्वहै ॥ अैसेजोसत्ताहैतिसकौंतुंपरमआत्माजाण ॥ अनंत
सरूपआत्माहै ॥ तिसकीभावनाकर ॥ तिसकौंप्रापतिहोताहै ॥ एसविखेसमानहीं ॥ जोस
तासंवेदनफुरणतेरहितहै ॥ चेतनतिरहतजोचेतनप्रकाशहै ॥ तिसकौंतुंपरमपदजाण ॥
अरसबकीपरमकाष्ठारूपहै ॥ अरसभकाप्रकाशकहै ॥ सोमहात्मसपरमगुरोंकागु
रुहै ॥ सोआत्मरूपहै ॥ शून्यवादीजिसकौंशून्यकहतेहै ॥ विज्ञानवादीजिसकौंविज्ञान
कहतेहै ॥ ब्रह्मवादीजिसकौंब्रह्मकहतेहै ॥ सोपरमसाररूपहै ॥ अरनित्यशिवरूपहै
शांतरूपअपणेआपविखेणस्थितिहै ॥ सोआत्माएसजगतसदरकौंप्रकाशकरणेहारादी
पकहै ॥ अरजगतरूपीबृक्षकारसहै ॥ अरजबातरूपीपशुकापालकगोपालहै ॥ अर
जीवसत्तरूपीमोतीअहूकोएकत्रकरणेहारा ॥ आत्मातागाहै ॥ अरविदप्रकाशविखेणस्थि
तिहै ॥ अरसत्तरूपीसबाविखेआत्मरूपीतीक्षणताहै ॥ अरसबपदार्थहैविखेपदार्थरूपसत्ता
उहीहै ॥ सतहैविखेसत्ताउहीहै ॥ असतहैविखेअसतउहीहै ॥ जगतरूपीअइविखेपदार्थ
इकाप्रकाशोणहारादीपकउहीहै ॥ तिसकरसभसिधिहोतेहै ॥ अरचंद्रमासूर्यतारेआ
दिकजोप्रकाशरूपभासताहै ॥ तिनकाभीप्रकाशकौंहीहै ॥ एहजडप्रकाशहै ॥ उ
हचेतनप्रकाशहै ॥ तिसीकरएहसिधहोतीहै ॥ अरतिसीतेएहप्रकाशप्रगटिभएहै
सोआपअपणेसतविचारकरणेपताहै ॥ हेरामजीजेतककुभावअभावपदार्थभास
तेहै ॥ सोअसतहै ॥ वास्तवकछुहुएनहीप्रमाददोखकरकेनानारूपभीसतेहै ॥ जब
विचारउपजताहै ॥ तबएहनष्टहोतेहै ॥ हेरामजीअहंभावजिसकेअंतरहै ॥ अैसाजोज
गतजालहैसोमिथ्याहै ॥ भ्रमकरएहभासताहै ॥ तिसकौउपजिआकिआकहीअैअ
रसतकिआकहीअै ॥ किसकौआसघाकरीअै ॥ एहजगतकछुवस्तुनहीं ॥ आदिअंतमध
कीकल्पनातेरहितजोदेवहै सोब्रह्मसत्तासमानअपणेआपविखेणस्थितिहै ॥ अबक

व॰
न॰
३७

कहुं ऐसेनवणिग्रानहीं ॥ जबएहनिश्चातमकोंदृढहोवेगा ॥ तबतूंविवहारकर्त्ताभीग्रं
तरतेनिःसंगशांतरूपरहेगा ॥ हेरामजीजिसपुरखकोंतिससत्तासमानविखेस्थि
तिभएहे ॥ सोइष्टग्रनिष्टकीप्रापतिविखेरागद्वेखतेंरहतग्रंतरतेंसदाशांत
रूपरहताहे ॥ गोहतुदेहोताहे ॥ नग्रमनहोताहे ॥ सदासमताभावविखेस्थितिर
हिताहे ॥ ग्रहेततनविखेस्थितिहोताहे ॥ जगतकीग्रोरतेंसखपतिवतहोजाताहे
विवहारएताकरताहे ॥ परग्राभुवानतहीहोता ॥ तेसेजानवानपुरखकदाचित्तके
ललनाकलककोंनहीप्रापतिहोतातिसकाचित्तविवहारविखेभीसदानिर्मल
रहिताहे ॥ ज्ञानवानकोंजगतग्रात्माकाचमत्कारभासताहे ॥ नएकहे ॥ नग्रनेकहे ॥ ग्रा
त्मतेन्नसदाग्रपणेग्रापविखेस्थितिहे ॥ एहचित्तविखेजोचेतनताभावभासताहे ॥ सो
तिसचित्तकेफुरणेकानामसंसारहे ॥ ग्ररफुरणेतेरहतग्रफुरकानामपरमपदहे ॥ हे
रामजीमहाचेतनविखेजोहोतकाभावहे ॥ किमेनाहीग्रात्माकोंजानता ॥ एस
कानामचित्तसंपदहे ॥ सोएससारकाकारणहे ॥ जबएहभावनाछेहोवे ॥ तबचि
त्तग्रफुरहोजावे ॥ हेरामजीजहांतवभावहोताहे ॥ तहांपदार्थकाग्रभावहोताहे ॥ सोत
बसमझोंदिग्रपणेग्रर्थकोंसिद्धकर्त्ताहे ॥ परग्रात्माविखेप्रवर्त्तनहींग्राकी ॥ जबएह
कहताहे ॥ मैंग्रात्माकोंनहींजाणता ॥ तोभीग्रात्माकाग्रभावनहींहोता ॥ ग्रभावकों
जानणेवालाग्रात्माहीहे ॥ जोग्रात्मतननहोवे ॥ तबग्रभावकवनकहे ॥ सोग्रात्मा
परमसूक्ष्मनहे ॥ परकेसासूक्ष्महे ॥ जोग्रजडरूपहे ॥ परमचेतनरूपहे ॥ हेरामजीतवकाजोग्र
र्थहे ॥ सोग्रात्माविखेतूंछेकर ॥ जोग्रात्माकोंतवकीभावनानहींहोती ॥ ग्रर्थएहजो
ग्रात्माकाग्रभावनमान ॥ ग्ररग्रात्माविखेजोतवकाग्रभावहे ॥ तिसकोंतवकाग्रभाव
कर ॥ ग्रर्थएहजोग्रात्माकोंग्रभावरूपनहींमान ॥ ग्ररग्रनात्माकोंग्रभावरूपमान ॥ जब
एसप्रकारदृढभावनाकुरेगा ॥ तबससारभ्रमनिवर्तहोजावेगा ॥ केवलग्रात्मभावशे
षरहेगा ॥ हेरामजीचित्तकफुरणेकानामससारहे ॥ चित्तकेफुरणेकरससारचक्रपरव
र्ततेहे ॥ मातामानमेएत्रिपुटीरूपचित्तहीहोताहे ॥ जेसेसवर्णतेग्राभूखणप्रग
टहोतेहे ॥ तेसेचित्तकरत्रिपुटीहोतीहे ॥ ग्ररचित्तस्पंदभीकछुभिन्नवस्तनहीं ॥ ग्रात्मा
काग्राभासरूपहे ॥ ग्रज्ञानककैंचितस्पंदहोताहे ॥ ग्ररज्ञानककैंलीनहोजाताहे ॥ जेसे
सवर्णकेभूखणगालतेभूखणबुधिजातीरहतीहे ॥ तेसेचितकेग्रचलहूएचित्तसंगि
ग्राजातीरहतीहे ॥ जेसेभूखणकेग्रभावहूएसवर्णहीरहताहे ॥ तेसेबोधिकरचित्तज
गतकेलीनहूएसुधचेतनसत्ताशेषरहतीहे ॥ वहुरभोगोंकीतिस्नालीनहोजातीहे ॥ ते
ग्रभोगग्रवास्नालीनभए ॥ ग्रासनिवर्तहूएतत्वज्ञानकापरमलत्तणसिद्धहोताहे ॥ हेरा
मजीजोज्ञानवानपुरखहे ॥ ग्ररसतिसरूपकोंजिसपछाणिग्राहे ॥ तिसकोंभोगों
कीएछानहींरहती ॥ जोपुरखग्रंमितकोंपानकरग्रघाएरहाहे ॥ तिसकोंखलग्रादि
कतेकभोजनकीएछानहींरहती ॥ तेसेजोग्रात्मासत्ताज्ञानकरत्रिप्टभएग्राहे ॥ तिसकों
विखिग्रहकीत्रिस्नानहींरहतीएहनिश्चेकरजाण ॥ जबचित्तफुरताहेतभजगतभ्रमहो
भासताहे ॥ ग्ररभोगोंकीएछाहोतीहे ॥ सतिजाणकर ॥ ग्ररजबबोधहोताहे ॥ त
बजगतभ्रमलीनहोजाताहे ॥ वहुरित्रिस्नाकिसकीकरे ॥ ग्ररजोएहोग्रहकेविखेभोग
ग्रानिप्रापतिहोवे ॥ ग्ररहठकरतिनकोंतभोगनवरहसूरखहे ॥ मानोगहग्रकाशकों
सखकरकेदताहे ॥ हेरामजीमनजोवसिहोताहे ॥ सोगुरुशास्त्रोंकीजुगतसाथहोता
हे ॥ ज्ञानकीजुगतविनासिद्धताप्रापतिनहींहोती ॥ जोकोउग्रपणेग्रंगोंकोंकाटेग्र
रतिसकरचित्तकोंएस्थितिकीग्रावाहेतोभीचित्तएस्थिरनहींहोताग्ररससारभ्रमनहीं
मिटता ॥ जबलगचित्तकोंविखिवृतएस्थितिहे ॥ तबलगजगतभ्रमकोंदेखताहे ॥ ज
बगुरुग्ररशास्त्रकीजुगतग्रहणकरकेचितकोंग्रभावकर्त्ताहे ॥ तबमोहनष्टहोजाता
हे ॥ चितग्रचलहोजाताहे ॥ जेसेबालककोंग्रपकारविखेभ्रमकरपिशाचभासताहे

ग्ररतिसकर्कैंभैकोंप्रापतिहोताहे ॥ ग्ररदीपकजगाएदेखतेग्रंधकारनिवर्तहूए ॥ पिशा
चभ्रमनष्टहोजाताहे ॥ तबबालकनिभैहोजाताहे ॥ तेसेग्रात्मज्ञानजगतकाग्रज्ञा
नभ्रमनष्टहोजाताहे ॥ तबबालकनिभैहोजाताहे ॥ तेसेग्रात्मज्ञानकरजगतहूत
ननिवर्तहोताहे ॥ ग्रसमिकबाधककेंजगतभ्रमहूग्राहे ॥ समिकबाधिकरनिवर्तहो
जाताहे ॥ बहुरिजाणिग्रानहींजातासोग्रज्ञानकाजगतभ्रमकहागएग्रा ॥ जेसेदीप
ककेनिर्वाणहूएनहींजाणिताजोजगतकहांगएग्रा ॥ चित्तकेफुरणेकरबंधहोतीहे
ग्ररग्रफुरहूएमाखहोतीहे ॥ परग्रात्मातेभिनकछुनहीं ॥ ग्रात्मसत्ताजिकीतिहे ॥ ति
सविखेनबंधहेनमाखहे ॥ हेरामजीजबएसकोंमाक्षकीएछाहोतीहे ॥ परनिर्भेबंद
तबभोगसकीप्रवर्तताछेहोतीहे ॥ परनिर्भेबंदनहूएकल्याणहोताहे ॥ साग्रताभ्
सग्रजकरूपपरमपदहे ॥ ग्रोचतउनाम्रखकतेरहतेहे ॥ हेरामजीबंधग्ररमोखग्रादिकभी
कल्पनाविखेहोतेहे ॥ जबकल्पनालरहतबाधहोताहे ॥ तबबंधमोखदोनोनहींरहते ॥
जबलगविचारकरनहींदेखिग्रा ॥ तबलगबंधग्ररमोखभासतीहे ॥ विचारकीएतेदो
नोकाग्रभावहोताहे ॥ जोग्रहंतएदग्रादिकभावनाकाग्रभावहोवे ॥ तबकहुबन्धकिसकों
वंधककहे ॥ ग्ररकवनेकिसकोंमोखकहे ॥ सभकल्पनाचितकेफुरणेकरहोतीहे जब
चितकाफुरणानष्टहोताहे ॥ तबसभकल्पनाकाग्रभावहोजाताहे तबशांतवानहो
ताहे ॥ ग्रनथानहींहोतातातेचितकोंग्रात्माविखेलीनकर ॥ जिसकेग्राश्रएहजगतउ
पजताहे ॥ ग्ररजिसकेग्राश्रेलीनहोताहे ॥ ग्रेसाजोज्ञानरूपग्रात्माहे ॥ तिसीग्रनभवरूप
प्रतागिग्रात्मप्रकाशविखेस्थितिहो ॥ ५६ ॥ इतिश्रीप्रत न वो व नि नामस
र्गः ॥ वसिष्ठउवाच ॥ उंहेरामजीजोपरमततपरमात्मपदहे ॥ सोहमकोंसदामतछेहे
सभवस्तरूपउहीहे ॥ एमतेएतरकछुनहीं एहप्रतकुग्रात्माहे ॥ सर्वसत्ताकादर्पणहे सभ
सत्ताएसीतिसप्रगटिहोतीहे ॥ जेसेबीजतेविछकीसत्ताप्रगटिहोतीहे ॥ तेसेग्रात्मातेज
गतकीसत्ताप्रगटिहोतीहे ॥ हेरामजीमनबुधिचितग्रहंकारजडग्रात्मकहे ॥ एततेरहत
हे ॥ एततरहतेहे ॥ सोपरमपदहे ॥ ब्रह्माविस्नरुद्रग्रादिकसभतिसीविखेस्थितिहे ॥
तिससत्ताकोंपाएकरखडेउग्रचीप्रभताकरशोभतेहे ॥ जेसचक्रवर्त्तीराजानिर्धनतेउ
चाशोभताहे ॥ तेसेएहसबलोकातेउचेशोभतेहे ॥ तिसग्रात्माकोंजोप्रापतिहोता
हे ॥ सोचिंतकोंनहींप्रापतिहोता ॥ ग्ररशोकवानकदाचितनहींहोता ॥ ग्ररदीणनहीं
होता ॥ एकखिणमात्रभीग्रप्रमादीहोकरग्रात्माकोंजोकातिजाणताहे ॥ सोससारक
ल्पनाकोंत्यागकरमुक्तिहोताहे ॥ रामउवाच ॥ हेभगवनमनबुधिचितग्रहंकारकल्पनाके
ग्रभावहूएसत्तासमानशेषरहतीहे ॥ सोतिसकाभानकेसेहोवे ॥ वसिष्ठउवाच ॥ हेरा
मजीजोसर्वदेहहूविखेस्थितिहोएकरभोजनकर्त्ताहे ॥ ग्ररजलपानकर्ताहे ॥ द
खताग्रश्रणताबोलताहे ॥ इत्यादिकक्रियाकर्ताद्रिष्टिग्रावताहे सोग्रादिग्रंततेरहतस
बतमताहे ॥ सर्वगतग्रपणेग्रापविखेस्थितिहे ॥ ग्राससभविखेगहोरूपहे ॥ प्रकाश
विखेप्रकाशरूपउहीहे ॥ सहविखेसहरूपउहीहे ॥ ग्ररस्पर्शविखेस्पर्श ॥ नासकाविखे
खेगंधरूपउहीहे ॥ सूनविखेसूनरूपविखेरूप ॥ नेत्रोंविखेनेत्ररूपउहीहे ॥ प्रथवीविखे
प्रथवीजलविखेजलतेजविखेतेज ॥ विकविखेबरुउहीहे ॥ मनविखेमन ॥ बुधिविखे
बुधि ॥ ग्रहंकारविखेग्रहंकाररूउहीहे ॥ ग्रग्निविखेग्रग्निउसत्ताविखेउसत्ता ॥ घटविखे
घटपटविखेपटरूपउहीहे ॥ बनविखेबनएस्थावरविखेस्थावर ॥ जंगमविखेजंगम
रूप ॥ चेतनविखेचेतन ॥ जडविखेजडरूपउहीहे ॥ कालविखेकालनाशविखेनाश
उत्पतिविखेउत्पत्त ॥ होएकरएस्थितिहे ॥ बालकहूविखेबालक ॥ जोबनविखेजोब
न ब्रिधविखेब्रिध ॥ मितविखेमित ॥ होएकरउहीपरमग्राश्रएस्थितिहे ॥ हेरामजीएस
प्रकारसर्वपदार्थहूविखेग्रभिनरूपएस्थितिहे ॥ नानतभीद्रिष्टग्रावतीहे ॥ परेनानारूप
हे ॥ नानतभ्रमकर्कैंद्रिष्टग्रावतीहे ॥ जेसेएकाविखेभ्रमकरकेभेताल्लभासता
हे ॥ तेसाग्रात्माविखेनानाभासतीहे ॥ सर्वविखेसर्वहउग्राउसर्वप्रकारसर्वग्रात्मा
होएस्थितिहे ॥ ग्रेसाजोग्रात्मदेवसत्तासमानहे ॥ तिसविखेस्थितिहो ॥ वाल्मीकउ
वाच ॥ एसप्रकारजबवसिष्ठजीकहा ॥ तबदिनग्रस्तहूग्रा ॥ सर्वसभापरस्परनम

स्वारकैकैएस्थानकौगए॥ बहुरिदिनकौंग्रपणेत्र्प्रपणेएस्थानपरग्रानिवैठे॥५७॥
इतिश्रीवि न ग ए णेनामसर्गः॥ रामउवाच॥ ॐहेभगवनजेसहमारसत्र
विविपुरनगरमंडलहोतेहैं॥ तेसेब्रह्मादिकदेहकौंग्रहकीयाहै॥ ग्रनेकोग्रसतम
एप्रतीतहै॥ हमकोंदृडप्रतीतिकेसेउपजीहै॥ वसिष्ठउवाच॥ हेरामजीग्रसतवत
सर्गप्रघमभासताहै॥ ब्रह्माकोवास्तवनहीभासता॥ सर्वगतचेतनसबतेकोंम
साकेदर्शनकरजवसमिकदर्शनकाग्रभावभएग्रा॥ सप्नरूपविखग्रहंताप्रतीत
भाएतेउपजी॥ जवदृडहोकरदेखणेलागा॥ जेसेग्रपणेसपनेविखजगतदृडभा
सताहै॥ सप्रानहीलखीता॥ तेसेब्रह्माकाजगतभीदृडभासताहै॥ सप्रानहील
खीता॥ तेसेब्रह्माकाजगतभीदृडभासताहै॥ सप्रानहीलखीता॥ जोसपनपुरुस
तेउपजाहै॥ सोसप्रहीरूपहै॥ हेरामजीग्रेसाजोसर्गहै॥ सोएकएकजीवप्रतिउदेह
ग्राहै॥ जेसेसपनेविखतरंगफुरतेहैं॥ तेसेचेतनकाग्रभासजगतफुरताहै॥ जेसेसप
पुरविखग्रवास्तवपदार्थहोतेहैं॥ तेसेएहपदार्थभीग्रवास्तवहैं॥ भ्रमसात्रभीमन
केसंकल्पमात्रहै॥ हेरामजीग्रेसापदार्थकोईनहीं॥ जोएसजगतविखसिद्धनही
होता॥ ग्रसंभवरकाग्रवरनहीभासता॥ ग्ररमर्यादाकोनहीत्यागता॥ काहेतेजो
मनकेसंकल्पमात्रउपजेहैं॥ नदेखजोजलविखग्रग्निसमुद्रविखवडवाग्रग्निहै
सोविपजेहैकिंउ॥ एसीकारणतेमैकहताहों॥ नामनोमात्रहै॥ ग्ररदेखजोग्रका
शविखनगरवसतेहैं॥ विवानग्रतदाचलतेहैं॥ ग्ररशिलाजोहैचितामणआदिक
तिनतेकमलउपजतेहैं॥ जेसेहिमालेपरबतविखबरफउपजतीहै॥ ग्ररसवकती
केफुलएकहीसमेउपजतेहैं॥ कल्पब्रिछसिउजेसेपत्रनिकसिग्रावतेहैं॥ ग्ररजके
गडेनिकसग्रावतेहैं॥ शिलाविखजलनिकसिग्रावताहै॥ चंद्रमाकीनाशिउग्र
म्रितद्रिवताहै॥ एकनेमरवविखघटपटहोजातेहैं॥ सरपविसमरणउएसतकों॥
ग्रसतदेखताहै॥ जेसेकोईविखग्रपणामरणादेखताहै॥ जलकोउर्धकोचलतादेखता
है॥ मेघेहोकरसमीकाचंद्रमाहाकरगंगाजीवहतीहै॥ पथरउडतेहैं॥ जेसेपरव
तसहतपहाडउडतेहैं चिंतामणिशिलासिउसभपदार्थउपजतेहैं॥ इत्यादिकग्र
मनानतविपर्जेकरपेउफुरतेहैं॥ तातेदेखजोमनोमात्रहैकिंउ॥ ग्रवरकेग्रवर
होजातेहैं॥ हेरामजीएहइंद्रजालगंधर्वनगरसमावसमाएग्रावताहै॥ ग्रसतहीहै॥
भ्रमकरकेसतहोभासतेहैं॥ ग्रेसाकोईपदार्थनहीजोसतनहीं॥ ग्ररग्रसतनही
भ्रमविखफुरतेहैं॥५८॥ इतिश्रीनिर्वाणप्रकरणे ग्र स क नेनामसर्गः॥
वसिष्ठउवाच॥ ॐहेरामजीएहसंसारमिथ्याहै॥ जोपुरखएसकोसतजानताहै
सोमहाकुरखहै॥ ग्ररभ्रमविखभ्रमकोदेखताहै॥ ग्ररमहामोहकोप्रापतिहो
ताहै॥ जेसेकोईमिरगहोताहै॥ ग्ररटोएविखगिडपरताहै॥ तोमहादुखकोप्रा
पतिहोताहै॥ ग्ररवडेउचासतेभीवडेटोएविखगिडताहै॥ तोग्रनतहीदुखकोप्राप
तिहोताहै तेसेहीजोमूरखजीवहै॥ सोग्राकग्रज्ञानकरसंसाररूपीटोएविखगि
डताहै॥ तिसविखग्रवरग्रवरभ्रमकोदेखताहै॥ सप्नेविखसुमावरूडिसपनेविखे
ग्रवरसुमादेखताहै॥ एसीतएककहताहों॥ हेरामजीतुमश्रवणकरो॥ एक
सन्यासीथा॥ सोमनशीलसन्यासीजोगकाग्रष्टावांग्रंगजोहैसमाधितिससमा
धिविखएस्थितथा॥ ग्ररशिदाउसकासमाधिकतेकतेसंयहुग्राथा॥ तिससमा
धहोकरदिनकोविताकीग्राकरी॥ जवसमाधतेउतरा॥ तवग्रासनवैठाएकरव
हुडिसमाधिविखजेहै॥ एसीपकारजहुडतरनकालवितीतभएग्राहै॥ तवएक
समसमाधतेउतराहूएएहचिंतवनाकरणेलागा॥ जोजेसेपरकितपुरखविचरतेहैं
चेष्टाकरतेहैं॥ तेसमभीकछुचेष्टाकरों॥ ग्रेसेविचारकरकेमनकेसंकल्पतेविष
कल्पी॥ तिसविखएकग्रापभीवणिग्रा॥ तवतिसकानामजीवटभएग्रा॥ मद
पानकरग्ररब्रह्मणोकीसेवाभीकरै॥ तिसजीवटकेशरीरविखवर्तणेलागा॥
चेष्टाकरतेहूएसोएगएग्रा॥ तवसपनाप्राएग्रा॥ सप्नेविखब्रह्मणकाशरीरग्रप

ग्णभानहूग्रा॥ जोमेब्रह्मणाहों॥ तवब्रह्मणकेशरीरकरवेदकाग्रयेनकीग्रा॥ तव
पाठवहुतकीग्राकरे॥ केताएककालग्रेसीचेष्टाकरतेवितीतभएग्रा॥ तवग्रेसा
एहुएसप्नाप्राप्तएग्रा॥ तिससप्नेविखग्रापकोराजादेखतभएग्रा॥ जोमेराजाहों॥ त
वउसेनामसतुगनराजाहोकरविचरणेलागा॥ शिकारखेलणेलागा॥ केताएक
कालएसप्रकारवितीतभएग्रा॥ तवग्रेसाएहूपवहुउसप्नाप्राप्तएग्रा॥ तिससप्नेविखग्रापकों
चक्रवर्तीराजादेखतभएग्रा॥ जोमेचक्रवर्तीराजाहों॥ तवचक्रवर्तीहोएकरसारीप्रथवी
पाग्राज्ञाचलावणेलागा॥ जवकेताएककालवितीतभएग्रा॥ तवसप्नाप्राप्तएग्रा॥ सेप्र
विखग्रापकोंदेवग्रगनादेखतभएग्रा॥ जोमेदेवताकीएस्त्रीहों॥ तवदेवताकीएस्त्री
होएकरवागांविखविचरेदेवताकेसाथ॥ जेसेवल्लीब्रिछकेसाथशोभापावतीहै॥ ते
सेहीदेवताकेसाथशोभापावणेलागी॥ एसीप्रकारकोएककालदेवताकेसाथवितीत
भएग्रा॥ तववहुडिसप्नाप्राप्तएग्रा॥ तिससप्नेविखग्रापकोहरणीदेखतभए॥ हरणीहो
करवनविखलागीविचरणे॥ कोएककालग्रेसेवितीतभएग्रा॥ वहुडिसप्नाप्राप्तएग्रा॥ त
वग्रापकोंवल्लीदेखतभए॥ जोमेदेवताकेवनकीवल्लीहों॥ तवग्रेसेकोएककालवि
तीतभएग्रा॥ तवसप्नाप्राप्तएग्रा॥ सप्नेविखग्रापकोंभौरादेखतभए॥ जोमेभौराहों॥ भौरा
होएकरसगंधकोग्रहणकरणेलागा॥ तिसतेग्रनंतरवहुडसप्नाप्राप्तएग्रा॥ तवदेखतभ
एग्रा जोमेकमलनीहों॥ कमलनीहोए॥ तवएकसमेहस्तीवल्लीकेनिकटिग्राएकर
वल्लीकोखाएगएग्रा॥ जेसेकोईबालकमोरखहोताहै॥ भलीवस्तकोंभीछेददेतालेताहै
तेसेमूरखहस्तीतिसकौतोरकरखाएगएग्रा॥ तिसतेउपरांततिसवल्लीहस्तीकाशरीर
पाएग्रा॥ वडादुखभीपाएग्रा॥ दोएविखपड़ा॥ केताककालवितीतभएग्रा॥ तवहस्तीको
सप्नाग्राएग्रा॥ वहुडिभउरेहोकरकमलनिविखलागीविचरणे॥ केताककालविती
तभएग्रा॥ तववहुडिवल्लीहूए॥ तवउसवल्लीकेनिकटिएकहस्तीग्राएग्रा॥ तवहस्ती
केपादकरउसवल्लीचूरणभएग्रा॥ तवउसवल्लीकोएकहंसनेखाएलीग्रा॥ तवउ
हवल्लीहंसहूए॥ हंसहोएकरवडेमानसरोवरविखविचरणेलागी॥ तवहंसकेमन
विखग्राएजोब्रह्माकाहंसहोवउं॥ तवसंकल्पकरकेब्रह्माकाहंसवणिगएग्रा॥ तव
ब्रह्माकेउपदेशकरकेहंसकोग्रात्मज्ञानप्रापतिभएग्रा॥ हेरामजीग्रेसेग्रज्ञानकरकेभ्रमे
कोप्रापतिभएग्रा॥ सोज्ञानकरकेशांतिभएग्रा॥ वहुडिविदेहमुक्तिहोवेगा॥ ग्रोहहंस
सुमेरपर्वतविखेउडिग्राजाताहै॥ तिसकेमनविखग्राएजोमेरुद्रहोवउं॥ तवसत
संकल्पकरकेरुद्रहीहोगएग्रा॥ जेसेसुधदर्पनविखप्रतिविवशीग्रहीपडताहै॥ ते
सेसुधग्रंतःकरणकेसंकल्पकररुद्रभएग्रा॥ ग्ररुद्रकहीग्रेजिसकोंग्रनंतज्ञानहै॥ ग्र
नंतरिज्ञानकहीग्रेजिसकेजाणनेग्रावरजानणाकछुनहीहै॥ सर्वतेश्रेष्टज्ञानहै सो
रुद्रकोंग्रनंतरज्ञानहै॥ तिसग्रनंतरज्ञानकरणेभगतरुद्रजीग्रपुनीजोकछुचेष्टाहै
सोकरतेभएग्रा॥ ग्ररग्रागेग्रापणीग्रहंकोदेखतभएग्रा॥ तवरुद्रकेमनविखविचार
हूग्रा॥ जोवडाग्रचरजहै॥ जोमेग्रज्ञानकरकेकेतेभ्रमकोप्रापतिहूग्राथा॥ ग्रेसीग्रा
श्रजेमाएग्राहै॥ मनोएकरूपखडाहों॥ ग्रएहविचमेरामनरूपहै॥ ग्ररउहजोमेरा
है॥ तिसकोजाएकरजगावउं॥ तवरुद्रजीउठखडाहूग्रा॥ ग्रपणेएस्थानकोचलि
ग्रा॥ प्रथमजोसन्यासीकाशरीरथा॥ तिसकोग्राएकरदेखिग्रा॥ देखकरतिसकोंवि
तशक्तिकरजगाएग्रा॥ तवसन्यासीकेशरीरविखभीज्ञानहूग्रा॥ जोसववमेहीखडा
हों॥ ग्ररसन्यासीजागिग्राजोमेरेताएरुद्रजगाएग्राहै॥ तवउसन्यासीमनविखजा
णिग्राजोएतनेशरीरमेरेहोएभोहैं॥ तवउहहाथिउरुद्रग्ररसन्यासीदोनोचले॥ जी
वटकेएस्थानमग्राए॥ देखिग्राजोजीवटपडाहै॥ शावकीनिग्राए॥ ग्ररमदराके
भासनपडेहैं॥ ग्ररचेतनताउहाहीपडीभ्रमतीहै॥ नानाप्रकारकेएस्थानहुकोंप
डीदेखतीहै॥ जेसेफारनेकोछिद्रविखकोडीपडीभ्रमतीहै॥ तवजीवटकोंचितशक्ति
करकेजगाएग्रा॥ तवउठिखडाहूग्रा॥ जीवटकोंग्रेसेस्मरनहूग्रा॥ जोमेरेताएएन
हूनेजगाएग्राहै॥ तवजीवटकेमनविखविचारहूग्राजोएतनेशरीरमेरेहोएरहेहैं

तबजीवटरूद्रअरसंन्यासीतीनोंहीशिरोंवले ॥ तबएनरूद्रविचारकीआ ॥ जोएतेशरीरहू
मकिरोंकोंधाए ॥ आदिएकपरमात्माविखेजोचेतनोंनमरूकरकैसंन्यासीभएआ ॥ बे
हूउसंन्यासीतेजीवटहूआ ॥ बहूडिमदपानकरणेंलागा ॥ बहूडिब्रह्मणहूआ ॥ ब्रह्मणका
शरीरधारकरवेदपाठकरणेंलागा ॥ तिसवेदकेपाठकरजेकाउनजोहै ॥ तिसकरराजे
काशरीरधारिआ ॥ तिसकेआगेजोबहूउनप्रापतिभएआ ॥ तबचक्रवर्तीराजाभएआ ॥
जबचक्रवर्तीराजेकेशरीरविखेकामवहूतहूआ ॥ तिसकेहोवणेकरकैदेवताकीएस्त्रीभ
एआ ॥ तबएस्त्रीकेशरीरमेंजोबहूतप्रीतिनेत्रैबिखेथी ॥ तिसतेहरणीभएआ ॥ बहूडि
भवरीआनभएआ ॥ तिसतेआगेवलीभएआ ॥ एसतेलोकरजोवासनाकेशरीरधारेसो
मिथ्याधारेहैंमैनें ॥ अरअज्ञानकरकैधारेहैं ॥ ज्ञानकीप्रापतिबिनावहूतकालभटकतार
हाहोंमै ॥ अरसहूंसवरखेअनेनजगविचीतनभए ॥ संन्यासितिआदिकअरुद्रपर्यंतवा
सनाकरकैजन्मपाए ॥ एतेजन्मपाएकरबहूडब्रह्मकाहंसजाएहूआ ॥ तहांज्ञानकी
प्रापतिभए ॥ काहेतेजोपूरबअभ्यासकीआथा ॥ तिसकरअकस्मातेंते ॥ सतसंगआनि
प्रापतिभएआ ॥ तबअैसेविचारकरतेहूएउडहोनेचले ॥ तबचेतनअकाशविखेउडे ॥ वे
दपाठकरणेंवालीस्त्रिष्टविखेगए ॥ तबउसकोदेखतभए ॥ जोसोएआपडाहै ॥ तबउस
कोंचितशक्तकरकैजगाएआ ॥ तबफीरुद्रसंन्यासीअरवेदपाठकरणेंवालाचारोंउडा
नेचलेचितअकाशविखेउडे ॥ राजाकेस्त्रिष्टविखेगए ॥ तबदेखतभएजोराजाकीस्त्रिष्ट
पर्णीचएकलीहै ॥ अरराजाअपणेंमंदरविखेपलंघउपरसोएआपडाहै ॥ अररांणीभीसो
एपडीहै ॥ सोराजाकोदेहस्रवणेकोतिआएगाभएमानेहै ॥ अरतेसेहीराणीकोदेहस्रव
णीजेसाहै ॥ सोदोनांकेसमीपएपडेहैं ॥ जेसभवरअरभवरीदोनांसोएहोतेहैं ॥ पदमहलल
भीवहूतशिरपडरवडीहै ॥ अरचमरकुतीहै ॥ जेसेब्रिछकेपासवल्लीवहूतहोतीहै ॥ तेस
हीराजेकेअसणीकेपाससहेलीआहे ॥ तबराजाकोचितशक्तकरजगाएआ ॥ तबराजा
देखतभएआजोसवूविस्वमेराहीसरूपहै ॥ तबराजाभीदेखतभएआ ॥ जोएतेशरीरमेने
धारेहैं ॥ औरआनकरकैअस्वजेसाएआहै ॥ राजासरूपविखेजागिआ ॥ तबरूद्रसंन्यासीजी
वटवेदपाठकरणेवालाब्रह्मणोंउहानेचलेतेवहूत्तोतेआदिलेकरजोशरीरधारेथे ॥ सो
सभजगाए ॥ शरीरसंउ ॥ १०० ॥ संपूरणधारेथे ॥ सोसभजगाए ॥ तिनसभनहूविखेएकी
निश्चेभएआ ॥ जोहंसवितमात्रसरूपहै ॥ अरआवरणतेरहितहै ॥ आवरणकहीहै ॥ अर
णाअज्ञानकरतिसतेरहितहै ॥ तबहेरामजीउनकेशरीरदेखणेकोंशाउदिष्टीआवहि
परचेष्टासभकीएकजेसी ॥ अरनिश्चाभीएकजेसा ॥ उनकानामशतरूद्रभएआ ॥ उ
हशतरूद्रहूएतातेंहेरामजीविश्वमेंशरणअज्ञानरूपीपुणोंकरकेहोतीहै ॥ अरज्ञानकरकै
कछहूआनहीं ॥ अैसेहीउनकीसंवेदनअरनिश्चाएकजेसाहूआ ॥ एकदेखतीसभसे
राहीसरूपहाहि ॥ जोहंसवोदेखेमेराहीसरूपहै ॥ एसीप्रकारसभदेखतभए ॥ जोसवेअ
पणाहीसरूपहै ॥ तिसविखेपरदिष्टानहै ॥ जेसेसमंदतेतरंगहोतेहैं ॥ अरअकारउनके
भिंनभिंनहोतेहैं ॥ सरूपउनकाएकजेसाहोताहै ॥ तेसेहीज्ञानवानसर्वविस्वकोंसरूप
अपणाहीआपदेखताहै ॥ अरअज्ञानीउनकोभिंनभिंनजानतेहैं ॥ अरआपकोंभिं
नजानतेहैं ॥ अरएककोंहूसरानहींजानता ॥ अरहूसरीकोंअपथमनहींजानता ॥ सोअ
किआनहींजाणता ॥ जोमेरापहसरूपहै ॥ एहीनहींजानता ॥ जेसेपथरकेवटदोपडेहैं
तोनआपकोंनजानतेहैं ॥ अरनएकहूसरेकोंजानताहै ॥ जोमेरासरूपहै ॥ तेसही
अज्ञानीअपणेसरूपकोंनहींजानता ॥ नअवरकोंअपनासरूपजानताहै ॥ हेराम
जीएहविश्वअपणाहीसरूपहै ॥ अरअज्ञानकरकेभिंनभासतीहै ॥ अज्ञानकहीअजो
चितमात्रविखेफुरणा ॥ तिसफुरणेंकरविखेसंसारहै ॥ अरअफुरविखेअपणाहीसरू
पहै ॥ तातेहेरामजीफुरणेकोंत्यागकरअवरकछूनहीं ॥ जिसप्रकारशत्रुमेरनिसीप्र
कारमारीऐ ॥ एहीजतनकरीए ॥ अरमनतेरलाएअैसाउपायकहताहोंजिससेविखेज
तनभीकछूनहीं ॥ अरशत्रुभीमारिआजावे ॥ सोउपाएएहीहै ॥ जोचिनवनाकछूक
रीए ॥ विशोविखेजतनभीकछूनहीअरगमउपाएहै ॥ हेरामजीचिनवनाहीदुखहै

अचितनवनातेरहूतेहोवणापरमसुखहै ॥ आगेजोतमपोछाहोएसोकहौं ॥ एकचितकेफु
रणेकरसंसारहै ॥ अरनिवर्तहोणेतेसरूपहै ॥ जेसेपूतलेपथरविखेपूतलीआकल्पताहै
तोपथरतेपतलपूतलीआकाअभावहै ॥ तेसेहीचितनेविशाकल्पीहै ॥ जबचितनिवर्ते
होवे ॥ तोविशअपणासरूपहै ॥ अवरभिंनकछूनहीं ॥ अरचितसाथिजहांजावेतहां
पाचभूतहीदिष्टिआवतेहैं ॥ आत्मादिष्टिनहींआवता ॥ जबचितलेवहूतजानीजहांजावेत
हांआत्माहीदिष्टिआवताहै ॥ जबचितकीजोछितवहिमुखहोतीहै ॥ तबसंसारभानहोता
है ॥ पंचभूतदिष्टिआवतेहैं ॥ जबचितकीअंतरमुखहोतीहै ॥ तबज्ञानरूपअपणाआप
हीदिष्टिआवताहै ॥ जितनेकछूपदार्थहैं ॥ सोज्ञानरूपआत्माबिनासिद्धनहींहोती ॥ पहि
लेआपकोंजाणिताहै ॥ तबपाछेअवरपदार्थजानीतेहैं ॥ एसीतेज्ञानवानसर्वअपणा
आपजानतेहैं ॥ हेरामजीएहजतनपदार्थहै ॥ सोशरणिकल्पीहै ॥ अरजेतेजीवहैं तिनकेसं
वेदनभिंनभिंनहैं ॥ अरसंवेदनविखअपणाअपणाकिष्टिहै ॥ जैसेपुरवसोनाहै ॥ अरनि
सकोंअपणेस्वप्नकीविश्वभासतीहै ॥ अरकोएपासवेठाहोताहै ॥ तिसकोनहींभासती
उसकीविश्वस्वप्नकीनहीजानीती ॥ अरजेज्ञानीहैं ॥ तिसकोअपणाआपहीभासताहै
एसीतेउहसभजानताहै ॥ अरअज्ञानीजिसतउदेखताहै ॥ तिसकोपंचभूतकीदिष्टिआ
वतेहैं ॥ जेसपृथ्वीकेखोदेहूएकाशहीदिष्टिआवताहै ॥ तेसेअज्ञानीचितसहूतिनहो
देखताहै ॥ तहांपंचभूतहीदिष्टिआवतेहैं ॥ तातेहेरामजीतुमफुरणेतेरहितहोफुरणेकेकै
बंधहै ॥ अरअफुरणेकरमोक्षहै ॥ आगेजेसीतमारिएकोहेतेसकरहै ॥ हेरामजीजोअफुरणे
करकेअसततहोजावे ॥ तिसकेनाशविखेक्रिपनताकरणीकिआहै ॥ अरजोतेस्त्रीककेप्रापति
होवतिसकोंप्रापतिजाणा ॥ रामउवाच ॥ हेमुनीशरशतरूद्रजीवटब्रह्मणनेआदिलेकर
संन्यासीकेसरूपसोभविखहूए ॥ तिसतेउपरांतवहूडिकिआहूआ ॥ वसिष्ठउवाच ॥ हेरा
मजीब्रह्मणनेलेकरजेतेशरीरथेसोरूद्रकरजगाएहूएसताहूए ॥ तबसोउहीएकठेभए
तभरूद्रजीवनकोकहाकिहेसाधोतुमअपणेअपणेस्थानकोंजावेउ ॥ अरकोएगिका
लअपणाअपणाकल्पविखेभोगोंकोभोगहु ॥ बहूडितिसमेरेगणहोकरमुक्तकोप्रापति
होवहुगे ॥ महाकल्पविखेहूसभमहीविदेहमुक्तिहोवहिंगे ॥ हेरामजीजवअैसेरूद्रजीके
हा ॥ तबसभअपणाअपणास्थिानरूकोंगएअरुरूद्रजीभीअंतर्ध्यानहोगए ॥ सोसभहीता
आइकाअकारधारहूएकवीकवीसमफकोंअकाशविखेदिष्टिआवतेहैं ॥ रामउवाच
हेभगवनतुमरूजोकहिआसंन्यासीजीवटतेआदिशरीरथारिआ ॥ सोसतकेसेहू
ए ॥ अरतिनकीस्रिष्टिमनतेकेसेहूएसोकहहु ॥ वसिष्ठउवाच ॥ हेरामजीआत्माजोहैसोस
भकाअपणाआपहै ॥ अरएकहै ॥ अरचेतनअकाशहै ॥ अरअनभवरूपहै ॥ तिसअनभव
विखेजेसानिश्चाहोताहै ॥ दशअथवाकालकोअथवावस्तकोतेसेआगेसुणिजाताहै ॥ जे
सेजेसफुरताहै ॥ तिसअनभवविखेजेसानिश्चाहोताहै ॥ सोमनजिसकासथहोताहै
तिसकामनसंकल्पहोताहै ॥ जेसासंकल्पकरताहै ॥ तेसाहीहोताहै ॥ अरजोतेकहै
संन्यासीकारिदासतपहोताथा ॥ तिसनीचअरउचजन्मकेसेपाए ॥ नीचकहीअेमदरा
पाणकरणेंवाला ॥ भडोरीअरवलीतेआदिलेकर ॥ अरउचकहीअेब्रह्मणअरराजाते
आदिलेकर ॥ मधअंतःकरनेविखेअेसजनमनचाहीअे ॥ तिसकाउत्तरएहहै ॥ किसंवे
दनाविखेजेसाफुरणाहोताहै ॥ तेसाहोताहै ॥ जेसेएकपुरखकाअंतःकरणसथहोति
सकेमनविखेफुरिआजोएकशरीरमेरावितिआथरहोवे ॥ अरएकशरीरमेराभडकाहो
वे ॥ अरएकशरीरमेराभलो ॥ तबतिसकेहोजातेहैं ॥ दोनोभलाभीअरवुराभी ॥ अरजो
तेकहेहैवुराकिवणिआभलाहीवणाना ॥ तिसकाउत्तरसुण ॥ जेसेभलेपंडितकरशु
भहोताहै ॥ अरसंस्कारकरकैचारहोताहै ॥ संस्कारकिआजोवासनामलनहोतीहै ॥
तबदुखदेतीहै ॥ तिसकोंतिसतेहेरामजीसर्वफुरणोंहोकरनीचऊचहोतेहैं ॥ जेसाअभ्या
सकरतीहैमनोंकाजाए ॥ अरजोगकहीअेचितकीएस्थितिकरणी ॥ एनकेकेजेसीचित

वं॰
सं॰
४१

61

वनाहोताहै॥ जैसेसिद्धताहोतीहै॥ अरुअज्ञानीकौंनहींहोती॥ जैसेवस्तनिक
टिपरीहै॥ अरुदूरहै॥ अरुतैसेअज्ञानीकीभावनानहीं॥ तबनहींपृथ्वीलोप्रापतिहो॰
तीननिकटिवालोप्रापतिहोतीहै॥ किउंनहींसिद्धहोतीजेउंसकीभावनाहैइ
नहीं॥ अरुदिदाभीरूपनहीं॥ संकल्पभीनतबसिद्धहोताहै॥ जिसकादिदारूप॰
होताहै॥ तिसकासंकल्पभीसिद्धहोताहै॥ जिसकीचित्तवृत्ताकलाहैसोभीसि
द्धहोताहै॥ अरुनिकटिहैसोभीसिद्धहोताहै॥ अरुजोनतेकोहैजोसंन्यासीतेपक
याशरीरबहुरनेकेसेचेतनहूए॥ तिसकाउत्तरसुण॥ जोकहुएजोगसधेहै॥ अरुजो
गनीजादेवीआहै॥ तिनकासंकल्पसत्तहै॥ जैसेसंकल्पफुरिआतैसहीहोता
है॥ ऐसेसत्तसंकल्पवालेअनेकदेखेहैं एकसमेंहूसवाहूअजेनराजाथा॥ जो
द्वीपविखेवैठाहूआसिरपरिकत्रुपराफूलताहै॥ अरुवसरहोताहै॥ अरुतिसकेम
नविखेसंकल्पहूआजोमेंमच्छहोएकरवरसंग॥ तिससंकल्पकेकीएकरएक
शरीरतोराजाकारहा॥ अरुएकशरीरमच्छहोएकरवरसंगणेलागा॥ अरुविस्नजोहै
भगवानसोएकशरीरकरकेसमुंद्रविखेसैनकर्तेहै॥ अरुप्रजाकेनमितअवता
रीधारलेतेहै॥ अरुजगतदेवीआश्रपतेएस्थानहूविखेहोतीहै॥ अरुवहेहै॰
स्वर्जककरविखेभीविचरतीहै॥ अरुइंद्रभीएकशरीरकरकेस्वर्गविखेरहताहै॥ अ
रइंद्रभीएकशरीरकरकेस्वर्गविखेरहताहै॥ अरुअवभ्रकरजगतविखेभीवेदर
हताहै॥ इत्यादिकजोजोगेशरहै तिनकाजैसासंकल्पहोताहै॥ तैसाहीसि
द्धहोताहै॥ अरुजोअज्ञानीमूरखहै॥ तिनकामनवडेभ्रमकोप्रापतिहोताहै॥
अरुवडेमोहकोप्रापतिहोताहै॥ मोहतेआगेवडेदिमोहकोप्रापतिहोताहै॥
अरुनीचगतिकोप्रापतिहोतेहैं॥ जैसेजावडापर्वतहै॥ तिसतेपत्थरगिरड
ताहै॥ तुछनीचएस्थानकोप्रापतिहोताहै॥ तैसेहीमूरखआत्मपदतेगिरु॰
लेकरकेसंसाररूपीटोएविखेगिरतेहै॥ अरुवडेदुखकोप्राप्तिहोताहै॥ रामउ
वाच॥ हेभगवनतुमजोकहाजोसंसारभ्रममात्रहै॥ सोमैनेजानाहै॥ अरुने॰
तमोहरूपविखमैहै॥ आत्माजैसाचेतनरूपआनंदहै॥ तिसकब्रमादिकोकेनडे
दुखीआपकोदुखीजानताहै॥ अरुवडाआश्चर्यहै॥ अरुहेभगवनएहजोतुमने
कहासन्यासीतिसजेसाकोउअवरभीहै॥ अथवानहीं शोकह॥ वसिष्ठउवाच॥
हेरामजीसंसाररूपीजोहैमेंतिसविखेरावकेतमसमायकेकेदेखोगा॥ अ
...नकोतेवलाएजैसेहोवगासोकहोगा॥ वाल्मीकउवाच॥ हेराजाअजैसेजब
वसिष्ठजीकहातवसध्यानकाशमाहूआ॥ अरुलोकतनगारेवाजणलागे॥ व
राशाहिहूआ॥ जैसेप्रलेकालकामेघगर्जताहै॥ तैसेसवदिशावणेलागे॥ तब
वसिष्ठजीकेवचनहूपरराजअरदेवतिअहूफूलवडाए॥ समनो॥ अरुवडीवृष्टिजा
करी॥ जैसेवडापवनचलताहै॥ अरुवागविवृक्षकेफूलपृथ्वीपरगिरतेहै
वेगकरके॥ तैसेहीवहुतफूलहूकीवरखाकरी॥ जवरहजाहोरही॥ तववसिष्ठ
जीकोनमस्कारकरकेगेठखीरहे॥ अरुदिआपविखेनमस्कारकरी॥ जैसे
मेघावरलतेसूरजउदेहोताहै॥ तैसेहीवसिष्ठजीतेआदितेवशरराजादशर॰
थतेआदिसभगोहे॥ तबपृथ्वीकेराजाअरुप्रजाअपवकीकोंचलेअरुआकाशके
सिपअरदेवताथेसोआकाशकोंचले॥ सभअपणेअपणेकरमविखेजाएला
गे॥ तैसेशमलोकतविवहारहै॥ तिसविखेएस्थितिभए॥ अरुजबरात्रिभएतबआ
पोआपविचारतेभए॥ जोवसिष्ठजीकेसोगिआनउपदेशकीआहै॥ तिसविचा
रकतेरात्रएककिमणकीनिआपवितीतभए॥ अरुवसिष्ठजीकेमिलनेकीवा
छाकतेरात्रकल्पकेसमानवीती॥ तवसूर्जकीकिरणउदेहोवगादिशिके॰
आलिएस्थितिभए॥ अरुरामलक्ष्मणतेआदिलकेराजाअरुपरजाअरुअका

पूजाकेदेवताअरुसिद्धअरुमित्रतेआदिलेकरसभएस्थितिभए॥ अरुसभनेहूनमस्कार
कीएपवसपर॥ अरुअपणोअपणपस्थानहूविखेवैठेरहे॥ प्रीतिरूपहोकरएस्थितिभए
जैसेपवनतेरहतकमलएस्थितिहोतेहै॥ तैसेहीफुरणारूपपवनतेरहतशांतिरूपए॰
स्थितिभए॥ तववसिष्ठजीअनुग्रहकरकेआपहीकहतभएथा॥ हेरामजीतेरेप्रीतकेन
मिन्नसंसाररूपीमहीकोंवहुतखोजनकीआ॥ अकाशविखेअरुपातालविखे॥ सप्तदी
पसभक्रोजेहै॥ परऐसासन्यासीकोईदृष्टिनआएआ॥ जैसाअनकासंकल्पनहीभास
ना॥ जवपिछलीरात्रपहररहीथी॥ तवमैवडूडढकरी॥ तवउत्तरदिशाविखेचीनमही
नगरविखेएकएस्थानदेखानहाएकमढीदेखी॥ तिसकेदरवाजेवडहूएतिसविखेक
केकशावासन्यासीवैठाहै॥ अरुवाहूरग्रामकेचलेवैठेहै॥ उहुचेलदरवाजननहीखो॰
लते॥ जैसमतहूमौनगुरकीसमाधखुलजावे॥ तिसएस्थानविखेवैठाहै॥ मानोहूसवाव्र॰
ह्याहीवैठाहै॥ अरुजिदेशविखेवैठाहै॥ तिसकोदिनदिनएकीसमअतीतभए॥ समा
थविखेएस्थितिहूए॥ अरुसमाधविखेउसकोंसमहूस्वरवाअनभवभएआहै॥ अरुवहूतज
न्मभीपाए॥ अरुकेसेजन्मजोप्रतखदेखतभएआ॥ अरुसिद्धअरुपतलोदेखी॥ तिनविखेवि
चेर॥ हेरामजीएसेजैसाएकअवरभीसवकल्पविखथा॥ एहतीनहीथे॥ सोएककोमैव
ऊतेदेखवहाहो॥ उहुद्विष्टनहीआवता॥ तवराजदशरथकहा॥ हेमहात्मनजीतमअज्ञा
करोंतोमैंअपणाअनचरवीनमवीननगरउन्नरवलिभजों॥ तहाजाएकरतिससन्यासी
कोजगावे॥ तदवसिष्ठजीकहा॥ हेराजनवोहूसन्यासीअवब्रह्माकाहैसहोकरब्रह्माके
उपदेशकोंपाएकरजीवन्मक्तिहूआहै॥ अरुएहजोप्राणीग्रामकाहैसोअवगिमितक॰
हैआहै॥ एसविखअवयरपहूकाजोहैजीवमानहीं॥ तिसकोकिआजगावणाहै॥ अ
महीनेएककाएकग्रामकाटचीजाशिवखोलहिंगे॥ तवउन्नाकोउमतनगरकेदेखहि
गे॥ जोसिवनकपडाहै॥ तातेहेरामजीएहविशसंकल्पमात्रहै॥ अरुजितनेकहेजोएक
जैसेकेरोहूएतोसुणे॥ जेतेएहमुनीपारासरवराजअरुअवरजोसंसारविखेलोकहैं॥ सो
कएवारएकजैसशरीरधारतेहै॥ अरुकएसमयधारतेहै॥ अरुकएकछुककथोडाधारतेहैं
कएविलक्षणधारतेहै॥ सोअवणोकर॥ एहजोनारदहैसोएसजैसाअवरभीनारद॰
होवेगा॥ तिसकीचेष्टाभीऐसेहीहोवेगी॥ अरुशरीरभीऐसाहीहोवेगा॥ अरुव्यासजीअ
रुकेदेवअरुभृगअरुभृगकापिताअजैनकरकरी॥ अरुअत्रिरवीशरजैसाअवहै॥ अ
रुअत्रिकीएकस्त्रीभीमदहोवेगी॥ ऐसाहीअत्रेसीहीएस्त्रीहोवेगी॥ एततेआदिलेकरव
डेहिहोवहिंगे॥ जैसेएकहीसमुद्रविखेतरंगएकजैसेभीहोतेहैं॥ अरुद्विरूपभीहोत
हैं॥ तैसेहेरामजीएहसंसारब्रह्मातेआदिअरुपातालपरजंतसभमनकेरचेहूएहैं॥
सोसभमिथ्याहै॥ जवएहचितकलावहिर्मुखहोतीहै॥ तवसंसारदेशकालहोता
है॥ जवअंतर्मुखहोतीहै॥ तवआत्मपदप्रापतिहोताहै॥ अरुजववहिर्मुखहोतीहै
तवदुखकोंपावताहै॥ अपणामहरूपसदाआनंदमानहै॥ तिसविखेचितकलाजानती
है॥ मेंसदादुखीहोंदेहअरुइंद्रीआसाथमिलकरदुखीहोताहै॥ तातेहेरामजीतूंएस
अज्ञानरूपीफुरणेतेरहतहो॥ फुरणेकरएहअवस्थाप्रापतिहोतीहै॥ जैसेचंद्रमाअ॰
म्रितकरकेपूरणहै॥ तिसविखेवर्मदिष्टिकरकेकलंकताभासतीहै॥ तैसेहीआत्माअ॰
म्रितरूपीचंद्रमाविखेअज्ञानदिष्टकरकेजन्मअरुमरणशोकदुखभेकलंकदेखताहै॥ म
हाअन्नजैसाएकहै॥ अरुजैसेचंद्रमाएकहै॥ नेत्रदोखकरकेदोयदृष्टिभासतेहैं॥ तैसेचंद्र
मारूपएकआत्माअद्वैतहै॥ तिसविखेविशरूपनानात्वभानहोताहै॥ अज्ञानकरकेएही
माएआहै॥ हेरामजीतूंएकरूपआत्माहै॥ तिसविखेफुरणेविषाकल्पीहै॥ तातेतूंफु
रणेतेरहितहो॥ फुरणेतेरहितहूएविनाआत्माकादर्शननहीहोता॥ जैसेसूर्जचेडेहूए
भीवदलहूकेहोतेनसूर्यहीभासताहै॥ तैसेफुरणारूपवदलहूकेहटिभएतेसूर्जरूपआ
त्माप्रत्यक्षभासताहै॥ अरुद्विघादर्शनद्विष्टाएहफुरणेकल्पेहै॥ हेरामजीएससारकाअज्ञे

जो है आत्मा तिसविषे सुषुपति की निश्चा एव है ॥ रामोवाच ॥ हे भगवन तीन मोन मे
जानता हूं सो कवन तीन मोन है ॥ एक वाणी की मोन चुप कर रहिणा ॥ अरु एक इंद्री
अरु की मोन ॥ अरु एक काष्ठमोन ॥ काष्ठमोन कहीऐ जो हठ करके मन इंद्रीआं कों
वसि करनो ॥ एह तीन मे जानता हों ॥ अरु सुषुपति मोन तुम कहो जो किआ है ॥ वसि
ष्ठ उवाच ॥ हे रामजी तीन मोन काष्ठ तपसी की है ॥ अरु सुषुपति मोन ज्ञानी की
है ॥ अरु जीवन मुक्ति की ऐ ॥ अरु जीवनमुक्ति की है ॥ अब तीन मोना अज्ञानी तपसी की
है ॥ सो तीन मोना बहुड़ि श्रवण कर ॥ एक मोन भाणि की जो बोलणा नहीं अरु एक
मोन एह इंद्री अरु की चेष्टा ते रहित होवणा ॥ एक मोन समाथि जो नेत्रां को ॥ मूंद लेवणा र
खणा कछु नहीं ॥ अरु हठ करके स्थित होवणा ॥ अरु इंद्री आ अरु मन को विस्मरण
करणा एह तीन मोन काष्ठ तपसी की है ॥ अरु सुषुपति मोन ज्ञानी की है ॥ सुषुपति मो
न कही ऐ जो वाणी के करके अरु इंद्री अरु के चेष्टा भी होवे ॥ अरु आत्मा ते एतर अवर न भा
से ॥ एह उत्तम मोन है ॥ अथवा ऐसे होवे जो न मे हो न जगत है ॥ ऐसे निश्चै विषे स्थि
ति होवणा ॥ एह बडी उत्तम मोन है ॥ अथवा ऐसे होवे जो सर्व मे ही हो ॥ ऐसे निश्चै
विषे स्थिति होवणा ॥ एह बडी उत्तम मोन है ॥ अथवा ऐसे होवे ॥ जो सर्व मे ही हो ॥ ऐ
से निश्चै विषे स्थिति होवणा एह बडी ॥ उत्तम मोन है ॥ हे रामजी विपक के भी आ
त्मा की सिद्ध होती है ॥ अरु निषेधक के भी आत्मा की सिद्ध होती है ॥ तिस आत्मा विषे
स्थिति होवणा एह बडी मोन है ॥ हे रामजी एह जो सुषुपति मोन कही है ॥ सो कि
आ है सर्वाणं समान जो है द्वैत रूप तिसके फुरणे ते सुषुपति होवणा ॥ अरु आत्मा वि
खे जागणा ॥ एही सुषुपति मोन है ॥ उसके फुरणे ते रहत होवणा ॥ एही सुषुप
ति है ॥ अरु आत्मा विखे जागणा एह ते एता एक ही आहे ॥ अरु ऐसे देषणा जो न मै वि
खे जाग्रत है ॥ अरु न सुपन है ॥ अरु न सुषुपति है ॥ ऐसे निश्चै विषे स्थित होवणा ॥ एह तु
री आख्यातीत है ॥ सो पंचम मोन है ॥ ऐसा जो तुरीआ आख्यातीत है ॥ सो अनादि है ॥ अरु अनंत है
अरु जरा ते रहत है ॥ सर्व रूप है ॥ अरु नित उदे है ॥ एसे निश्चै विषे स्थिति होवणा एह उत्त
म मोन है ॥ हे रामजी ज्ञानी एइ आ के राकुणी की एछा भी नहीं करता ॥ अरु न विचरणे
की एछा करता है ॥ ते से स्वभाव करि होती है ॥ तिसी विषे स्थिति होइ रहिता है ॥ एह
परम मोन है ॥ अरु ज्ञानी को सर्व की भी एछा नहीं ॥ एह परम मोन है ॥ अरु हेय उपादेय
ते रहत होवणा ॥ हे रामजी तम रहे वश कुल विषे चंद्रमा हो ॥ अपणे स्वभाव विषे स्थि
ति होवणा एह परम मोन है ॥ हे रामजी संसार भ्रम मन के फुरणे कर के होता है ॥ सो
मिथ्या है ॥ न सभी अवस्था है ॥ न माया सत है ॥ हे रामजी तेरा सत्रूप अंबर है ॥ ऐसे को अं
गीकार करके स्थिति होवणा एही परम उपसमा मोन है ॥ रामोवाच ॥ हे भगव
न एह जो तुम रुद्र शिव रुद्र कहा ॥ सो रुद्र गण अथवा रुद्र है ॥ वसिष्ठ उवाच ॥ हे राम
जी रुद्र जिस को कहते है ॥ गण भी तिसी को कहते हैं ॥ एह सभ ही रुद्र है ॥ रामो उ
वाच ॥ हे भगवन एह जो तुम कहु कि हे आ सुरो रुद्र है आ ॥ सो एह तो एक चितथा सो
किं करहु आ जे से दीपक ते दीप होता है ॥ ऐसी भांत है आ ॥ वसिष्ठ उवाच हे रामजी
एक सावरणा है ॥ अरु एक निरावरण है ॥ जहां सुध अंतः करण है सो निरावरण है ॥ अ
रु जहां मलिन अंतः करण है ॥ सो सावरण है ॥ सुध अंतः करण विषे जे से निश्चै हो
ता है ॥ ते सा आगा सिध होता है ॥ ताकाल ही ॥ अरु मलिन अंतः करण का फुरणा सत
नहीं होता ॥ तां ते सुध जो निरावरन है रुद्र सो आत्मा है ॥ अरु सर्व व्यापी है ॥ जे से उन
को निश्चा होता है ॥ सो सति होता है ॥ रामो उवाच ॥ हे भगवन रुद्र शरीर जो है
सदाशिव ॥ तिस का लोग कोंसल नहीं है ॥ जो शिरां की माला गले विषे धारता है ॥ अ
रु भसम तन लगी है एह ॥ अरु नाग हीं रहते है ॥ अरु सा णी विषे रहते हैं जो सुध अंतः
करण है ॥ वसिष्ठ उवाच ॥ हे रामजी एक सुध अरु असुध अज्ञानी को कहते है

जो सुध विखे वरते अरु असुध विखे न वरते ॥ अरु जो ज्ञानी है सो किआं को अपणे वि
खे नहीं देखता ॥ तिसके सुध असुध मलिन का राग द्वेष कछु नहीं ॥ ऐसे जो
सदाशिव है ॥ तिन कों न त्यागा करणा है ॥ न अंगीकार करणा है ॥ जो स्वभाव के चेष्टा हो
ती है सो होवे ॥ सो कैसे होती है ॥ सो श्रवण कर ॥ आदि परमात्मा ते विष्णु भगवान
का फुरणा हूआ है ॥ जो चार भुजा धारे अरु संसार की रख्या करणी ॥ अरु सुध चेष्टा करणी
अरु गोला धारणे ॥ अरु धर्म की रख्या करणी ॥ अरु पापी असुरों को मारणा ॥ एह आदि फुरणे
हूआ है ॥ हे रामजी एह क्रिआ स्वभाव को न को प्रापत हूए है ॥ एस क्रिआ का न एन को
त्यागा करके उपाए दे है अरु न द्वेष करते है एहे ॥ हे कहीं ऐ त्यागा मोए स क्रिआ के पन
कों अभिमान भी नहीं ॥ जो हम करते है ॥ एसी ते क्रिआ उनको बंधन नहीं करती ॥ ताते ए
ह संसार फुरणे मात्र है ॥ जब तें फुरणे ते रहित होवेगा ॥ तब तेरे ताए त्रिकटी न भासेगी
आत्मा ते एतर कछु न भासेगा ॥ तां ते तूं अज्ञान रूपी फुरणे ते रहित हो ॥ जब तेरे ताए आत्म
पद का साक्षात्कार होवेगा ॥ तब तें जाणेगा जो फुर अफुर दृष्टा अदृष्टा मेरे विषे क
छु नहीं ॥ अरु आत्म मात्र पद है ॥ जिस विषे एक कहणा भी नहीं ॥ तब द्वैत कहां ते हो
वे ॥ हे रामजी दृष्टा दृश्य प्रकृति अरु फुरणा अफुरणा अरु विद्या अविद्या एह सभ जे नाव वाणी के
निमित कहे हैं ॥ आत्मा विषे कहणा कछु नहीं ॥ आत्मा एक है ॥ जिस विषे द्वैत क
छु नहीं ॥ जब चित वहिरमुख प्रणाम होता है ॥ तब विश्व का भान होता है ॥ जब चि
त अंतर्मुख प्रणाम पावता है ॥ तब अहंता अरु ममता का अभाव होता है ॥ अरु चेतन
ऐसा भासता है ॥ अरु जब अंत से अंतर्मुख प्रणाम पावता है ॥ तब चेतन कहणा भी
नहीं रहता ॥ अरु जब एस ते भी अति प्रणाम पावता है ॥ तब हैं नहीं कहणा भी नहीं न
हिता ॥ हे रामजी ऐसा आत्मा तेरा अपणा आप स्वरूप है ॥ अरु शांत पद है जिस विषे वाणी
का गमन नहीं ॥ तो ऐसा कहीऐ अरु ते सा कहीऐ ॥ ऐसा कहीऐ इंद्रीआं का विषे है ॥ अ
रु ते सा कहीऐ ॥ इंद्री आते परे है ॥ जब तूं अपणे विषे स्थिति होवेगा ॥ तब जाणेगा जो
मेरे विषे अहं फुरणा भी नहीं ॥ अरु आत्म रूप जो के साक्षात्कार रूप ते दृश्य रूप अर्थ का
अभाव होजावेगा ॥ जो आत्मा तेरा अपणा आप है ॥ केवल शांत रूप है ॥ अरु निर्मल
है ॥ जे से समुद्र वायु ते रहित गंभीर होता है ॥ ते से आत्म रूप समुद्र संकल्प रूपी वायु ते र
हत गंभीर सुध होता है ॥ अरु एस संसार चित का चमत्कार है ॥ सो चित निरंश है ॥ तिस
विषे अस्त अरु भी भावना ही फुरणे ॥ हे रामजी जब ऐसे बोध विषे स्थिति होवेगा ॥ तब
एस ति स्थिर को भी आत्मरूप देखेगा ॥ अरु बोध करन देखेगा तब विच्छ भान होवेगी ॥ ता
ते हे रामजी बोध विषे स्थिति होव रह ॥ ६० ॥ इति श्री [illegible] प त त द नाम सर्ग ॥
वसिष्ठ उवाच ॥ ॐ हे रामजी सदाशिव का आदि फुरणा हूआ है ॥ जो तीन नेत्र अरु वि
ष्णु का पंचार करणा शिरों की माला पारणी ॥ अरु ब्रह्मा के चार सिर ॥ अरु चारो वेद
हाथो विषे ॥ अरु संसार की उत्पत्ति करणी ॥ ऐसा फुरणा हूआ है ॥ हे रामजी ब्रह्मा विष्णु
अरु सदाशिव एह तीनो एक रूप हैं ॥ अरु चेष्टा एन की स्वभाव करि ए होवन पर्ने है ॥ न राग
करके अंगीकार की आहे ॥ अरु न द्वेष करके एस का त्याग करते है ॥ अरु एह भी संगि आ
लोकों के देखणे मात्र है ॥ अपणा ज्ञान विवेक कछु नहीं करते ॥ जो बोध विषे सदा जाग्रत
है ॥ सो बोध विषे जाग्रत किआ करही ऐ ॥ ऐसे के से होता है ॥ सो श्रवण कर ॥ एक शा
स्त्र मार्ग कर होता है ॥ अरु एक जोग मार्ग कर होता है ॥ शास्त्र मार्ग कहीऐ तिन ते अ
र मिथ्या का विचारणा ॥ तन के हीं ऐसे आत्मा हो ॥ अरु सत हो ॥ अरु चेतन हो ॥ अरु मि
थ्या सर्व दृश्य है ॥ जड है अरु असत है ॥ मेरे विषे अज्ञान करके कल्पते हैं ॥ मे आत्मा
अद्वैत हों ॥ मेरे विषे अज्ञान अरु दृश्य दोनो नहीं ॥ एसी निश्चै विषे स्थिति होवणा ॥ सो
शास्त्र विचार है ॥ अरु जोग कहीऐ प्राणों को स्थिति करणा ॥ जब प्राण स्थिति होते

वा॰
म॰
५३

है॥ तब मन भी एस्थिति होता है॥ अरु जब मन एस्थिति होता है। तब प्राण भी एस्थि
ति होते हैं॥ एन का परस्पर संबंध है॥ रामोवाच॥ हे भगवन जो प्राण एस्थित हू
ए तो मुक्ति होती है॥ तब मिलत अरु खेक प्राण जो नहीं रहते निवर्त होजाते हैं॥
तब समस्त कहू एचाही अ॥ वसिष्ठ उवाच॥ हे रामजी प्रथम तो मरणा अवस्था
कर॥ जो कि आहै॥ एह जीव पुरख यह का विखेप स्थिति होके रिजे भी वास
ना करती है॥ शरीर कौं त्यागकर अरु का पुण्य विखेप स्थिति होता है॥ एस का ना
म मरण है॥ तिन वासना रूप प्राणां कर के वहुडि एस कौं संसार का भान होता
है॥ अरु जब प्राणों की वासना छै होजाती है॥ तब जन्म मरण ते रहित होजाता है
जैसे ना बीज बहुड़ि नहीं उगवता॥ तैसे ही ज्ञानी की वासना के अभाव ते॥
जन्म मरण नहीं होता॥ हे रामजी जन्म मरन दोनो मार्ग हू कर निवर्त होता
है॥ अरु दोनो का फल एक ही आहै॥ हे रामजी ज्ञान कर के चित सत पद कौं प्रा
पति होता है॥ अरु जोग कर के प्राणवायु एस्थित होते हैं॥ तब वासना छै हो
जाती है॥ अरु जब रूप की प्रापति होती है॥ तब संसार के पदार्थ हू का अभाव
होजाता है॥ जैसे रसायन कर के तांबा सोना भए आ॥ तब तांबा ना मनही रहता
तैसे ही विश्व रूप जो है॥ तां बातिस कौं स्मृगि आन रहगी॥ तांबा भाव जाता रहेगा
तैसे ही ज्ञान कर जब चित सत रूप है आफर संसारी नहीं होता॥ अरु आत्मा विखे
न बंध है न मोक्ष है॥ एक परमात्मा ही अहोता है॥ तो बंध कहा अरु मोक्ष कहा
बंधि अरु मुक्ति चित के कल्प हूए हैं॥ अरु चित सो तीन कर्म का जो उपाई है सो क
हिआ है॥ तिस कर के शांत होता है॥ एसी कौं मुक्ति होता है॥ अरु बंध मुक्ति को
ई नहीं॥ चित्त के उदे होणे का नाम बंध है॥ चित का शांति होवणा एही मुक्ति
है॥ हे रामजी जब मन अरु पण वसि होता है॥ तब आत्मा पद प्रापति होता है॥ अथ
वा प्राण एस्थिति होते हैं॥ तब भी आत्म पद प्रापति होता है॥ अरु एह संसार मृग
त्रिष्ना के जल वत मिथ्या है॥ जब वासना निवर्त होती है॥ तब आत्मपद विखे ए
स्थित होती है॥ जैसे मेघ चलते जगत होते हैं॥ तब गरजते है अरु वरखा भी करते हैं॥
अरु जब वरखा कर रहते हैं॥ तब शांत होजाते हैं॥ तैसे ही वासना छै होवेगी॥ तब
चित शांत होजावेगा॥ जैसे शरतकाल का समा आवता है॥ तब बदल अरु कुही
ड़ निवर्त होजाते हैं॥ अरु सुध निर्मल आकाश ही रहता है॥ तैसे वासना रूप बद
ल अरु कुहीड़ के निवर्त हूए ते आत्मा सुध केवल ही भासता है॥ एक मुहूर्त भी चि
त विना एस्थिति होवत वर्तेताप आत्मपद को प्रापति होवेगी॥ जब लग चित
की वासना निवर्त नहीं होती है॥ तब लगि वेड भ्रम को देखता है॥ हे रामजी एह
संसार मृगत्रिष्णा का रूप है॥ अरु असत है॥ अभास मात्र पत्र फुरता है॥ तिस उ
पर एक पदि आन जो आग हूआ है॥ सो कहिता हों श्रवण कर॥ मेंद्राचल पर्वत
दखिण दिशा विखे है॥ तिस की अटवी विखे एक वेताल रहता था॥ अरु महा भए
आनक तिस का आकार था॥ अरु मानुखहू कौं अहार करता था॥ तिस के मन वि
खे विचार उपजा॥ जो किसी नगर कौं भोजन करों॥ अरु वेताल एक साथ का मं
गि भी करता था॥ जो कछु को एति स साथ को आनवाड़े सो तिस वेताल कौं भो
जन करावते थे॥ तब साथ संगि के प्रमाद ते वेताल के मन विखे एह उपजी॥
जो मेरा कवन गति होवेगी॥ जो मेरा अहार मानुख वार होरहे हैं॥ अरु मानुखो
कौं भोजन करता हों॥ सो बडी हत्या है॥ ताते मै एक जतन करों॥ जो अपराध आनी म
नुख है॥ तिन कौ अहार करों॥ अरु जो उतम पुरख है॥ तिन को अहार न करों
हे रामजी ऐसा जतन वेताल को आ॥ जब खुधिआ कर आतुर भी होवे॥ अरु

भले मनुख आण प्रापति होवहि॥ तौ भी उन कौं अहार न करै॥ ऐसे होते एक समे
खुधिआ कर वहुत व्याकुल भए आ॥ तब चलि ते बाहर निकसि आ रात्र के समे॥ त
वेडस नगर का राजा भी वीरजात्रा कौ रात्र के समे निकसि आ था॥ तिस राजा कौ
देखकर वेताल कहिआ॥ कि हे राजा अब तूं मेरे ताईं प्रापति भए आ है॥ तेरे ता
ए मैं भोजन करता हों॥ तूं कहां जावेगा॥ तब राजे कहा कि हे रात्र के विचरणे वाले वे
ताल जब तूं मेरे निकटि अज्ञान कर आवेगा॥ तब तेरा सीस सहंस टुकडे होजावे
अरु तूं गिर पडेगा॥ तब वेताल कहिआ कि हे राजा मैं तेरे ताईं छलता नहीं॥ अरु हे आत्म
हत्या जैसे ते वताए भोजन करोगा॥ आवे के सो वलीन होवहि मैं उरता नहीं॥ उपशांत ए
क प्रश्न पूछता हों॥ जो अज्ञानी कौं भोजन करता हों॥ अरु ज्ञानी कौं नहीं मारता॥ जो
तूं ज्ञानी होवेगा तौ न मारोंगा॥ जो तूं अज्ञानी होवेगा॥ तौ जैसे बाज चिडी कौं मार
ता॥ तैसे ही तुझ कौं मारोंगा॥ जो तूं ज्ञानी है तौ मेरे प्रश्नां का उतर देहि॥ एक शब्द
पहू है॥ जो जिस पवन विखे आकाश रूप आणु उडते हैं॥ सो पवन कवन है॥ अरु हम
राप्रश्न एह है॥ जो जिस विखे ब्रह्मांड रूपी अणु है सो सूरज कवन है॥ अरु तीसरा प्रश्न
एह है॥ जो कल्प के ब्रिछ की निआए॥ जिस विखे अवर कछु नहीं निकसता सो क
वन ब्रिछ है॥ अरु चौथा प्रश्न एह है॥ जो वहु पुरख कवन है जो स्वप्ने ते स्वपना वहु
ड़ि देखता है॥ अरु एक कहीं रहिता है॥ प्राणां सों कौं नहीं प्रापति होता
तिस विखे अवर स्वप्ना देखता है॥ जो वेताल एन प्रश्नां का उतर न देवेगा॥ तब तेरा अहार करोंगा
तो॥ एन प्रश्नां का उतर कहू॥ राजोवाच॥ ओ वेताल एन प्रश्नां का
६०॥ इति श्री वेताल प्रश्नो नाम सर्ग॥ राजोवाच॥ आत्म सत्ता चेत
उतर सुणो॥ ब्रह्मांड रूप एक सर्व बीज है॥ अरु तिस विखे तीन लाल आत्म सत्ता चेत
पद है॥ ऐसे समचोण करा मसमा एक ही सरूप संसार रूप है॥ अरु ऐसे ब्रिछ वन विखे
क एक सहूस है॥ अरु ऐसे कोण सहूस वन एक सिखर पर एस्थिति है॥ अरु ऐसे के ए
महू स्वाशिखर एक पर्वत पर एस्थिति है॥ अरु ऐसे कए पर्वत एक नगर विखे है॥ अरु
ऐसे कए नगर दीप विखे है॥ अरु ऐसे एक एक सहूस दीप एक पृथवी विखे है॥ अरु
ऐसे कए सहूस पृथवी एक अंड विखे है॥ अरु ऐसे कए सहूस अंड एक समुद्र वि
ल होती है॥ ऐसे एक एक सहूस समुद्र एक पुरख के उदर विखे है॥ अरु ऐसे कोए सहू
स पुरख के गले विखे माला पोए हूए हैं॥ ऐसे कए लख कोट कूं जो आत्मा है॥ कअ
णि है॥ जिस सूर्ज कर सर्व प्रकाश मान है॥ सो ऐसा सूर्ज आत्मा है॥ जिस विखे अ
नंत स्त्रिष्टी एस्थिति है॥ हे वेताल जैसे एह स्त्रिष्टा भासती है॥ इद कूके ते सही सर्व
स्त्रिष्टा जाण॥ अरु एह स्त्रिष्ट सति है तौ सर्व स्त्रिष्टी सत जाण॥ अरु जो एह स्त्रिष्ट अस
त है॥ तब सर्व स्त्रिष्टी असत जाण॥ अरु आत्मा ऐसा सूर्ज है॥ जिस ते एतर अवर क
छु नहीं॥ अणु भी॥ अरु सदा अपणे आप विखे एस्थिति है॥ एस ते अवर कि आप
कता है॥ ऐसे आत्मा विखे एस्थिति हो॥ जो आत्म सत्ता मात्र पद है॥ जिस सत्ता मा
त्र ते काल सत्ता हूए है॥ तिसी ते प्रकाश सत्ता हूए है॥ तिस ऐसे सत पद ते सर्व स
ता प्रगटि हूए है॥ सो सम संकल्प ते उदे हूए हैं॥ अरु संकल्प के लीन हूए सभ लै
होजाते है॥ अरु तेने जो प्रश्न की आथ्या जो वहु कवन सूरज है॥ जिस ते ब्रह्मांड रूप
अणु होते है॥ सो उह ब्रह्म सूरज है॥ जिस ते एतर अवर कछु नहीं॥ अरु केला ब्रि
छ ते नेह छ आया॥ सो केले की निआए अंतर वाहर आत्मा एस्थिति है॥ जैसे
केले के अंतर फोले के अंतर फोलते सून आकाश ही निकसता है॥ तैसे विष
के अंतर आत्मा ते एतर नहीं होर कछु सार निकसता॥ तिस ते एतर अवर कछु
नहीं॥ जो अहोते है॥ अरु जो एह पुरख स्वप्ने ते स्वप्ना आगे अवर स्वप्ना देखता है॥ अ

अरु जो एह पवन अर्थ
है जिस पवन विखे
ब्रह्मांड रूप अणु हो
ते है ९

वं॰ मं॰ ४४

सोहृपरगटभएतेसग्रायोगश्रवास्तवादेखताहै ॥ श्ररुएकश्रपणेस्वरूपविषेस्थि
तिहै ॥ सश्राकहाहीश्रैजोचितकलाफुरतीहै ॥ तवश्रनंतब्रह्मांडभानहोतेहैं
तौभीएतनेकछुहूश्रानहीं ॥ एकहीरूपरहिताहैजैसेवत ॥ श्ररुएहमापश्राहैसो
कारववाहै ॥ श्ररुसूक्ष्मतेसूक्ष्महै ॥ श्ररुएस्थूलतेएस्थूलहै ॥ जिसविषे
मेरुत्रावलपर्वतभीश्रणुहै ॥ श्रैसाएस्थूलहै ॥ जिसविषेवाणीकीगमनहो
श्रणेश्रापहीविषेएस्थितिहै ॥ इंद्रीश्रातेजोश्रगोचरहै ॥ एसकारसूक्ष्मत
सूक्ष्महै ॥ श्ररुहणिताकर्केएस्थूलतेएस्थूलहै ॥ हेमरखवेतालतेश्रहारविकिस
कौकहतोहै ॥ परतुथाकरव्याकुलकिंभएश्राहै ॥ तेतोश्रात्माश्रद्वैतरूपहै ॥ श्र
नंदरूपहै ॥ तेश्रपणेसरूपविषेएस्थितिहो ॥ जवश्रैसेप्रश्नकाउत्तरदेकरउपदे
शराजेकीश्रा ॥ तबवेतालउठीचलिश्रा ॥ जोएकांतएस्थानविषेएस्थिति
होवडो ॥ श्रैसाकूटसमारविग्रात्रिश्राकेजलवतेहै ॥ तिसविषेमैरनाएकिश्राप्रि
याजनहै ॥ तबेएकांतएस्थानविषेजाएएस्थितहूश्रा ॥ श्ररुध्यानलगावैठा
ध्यानकहीश्रैजोएकधारावाहकप्रवाहएस्थितिहूश्रा ॥ धारावाहकप्रवाहकहीश्रै
श्रभ्यासश्रात्माकादृढकीश्रा ॥ श्रात्मातेएतरविनफुरनेनही ॥ एकहीरसएस्थितिहू
श्रा ॥ एसीकानामध्यानहै ॥ श्रैसेध्यानविषेएस्थितिहोकरवेतालसनत्पदकहीं
श्रैश्रात्मपदकौंप्रापतिभएश्रा ॥ हेरामजीएहराजेश्ररवेतालकाउपाख्यानतेरे
ताएश्रवणकरएश्राहै ॥ सोश्रात्माकेसाहै ॥ जैसविषेब्रह्मांडश्राणूकीनिश्रा
एएस्थितिहै ॥ तातेनिर्विकल्पश्रात्मपदविषेएस्थितिहो ॥ श्ररुइंद्रीश्रहंतबाह
जतेमकोवकरएस्थितिकरहु ॥ ६२ ॥ इतिश्री वे ल वा वेताल ख्या
प नाम सर्गः ॥ वसिष्ठ उवाच ॥ ओहेरामजीएकुपरविश्राजनश्रागेहूश्राहै ॥ सो
श्रवकर ॥ एकभगीरथनामराजाथा ॥ जैसेउसकोमृउताहै ॥ श्ररुस्वछचित
होकरश्रात्मपदविषेएस्थितिहूश्राहै ॥ श्रपणेपतनप्रवाहविषेविचरिश्राहै ॥
श्रपणेद्रिरपुरखार्थकर्कैस्वर्गलोकतेगंगामधलोकविषेलिश्राएश्रा ॥ तेसे
तेविचरसोकेसाथा ॥ जोश्रर्थीकोएश्रावताथासोतिसकाश्रर्थपूरणकरताथा ॥
जिसपदार्थकाकोऊसंकल्पकरश्रावे ॥ सोराजाउसकाहूरणकरै ॥ श्ररुजोय
जासेमित्रभावहोवेतिसकौंइसमारूपहोवे ॥ जैसेचंद्रमाकौदेखकरचंद्रमणि
श्रमितकौंश्रवतीहै ॥ तेसमित्रभावकोराजाथा ॥ श्ररुजोराजासेंशत्रुभावहोवे
तिनकोंनाशकरनेहाराथा ॥ जैसेसूर्जकेउदेतेश्रंधकारनष्टहोताहै ॥ तेसेहीशत्रो
कानाशकरनेहाराथा ॥ जैसेश्रग्नितेश्रनेकचिनगारेउठतेहै ॥ तेसेहीशत्रो
कोंशास्त्रकीवरखाकरताथा ॥ श्ररुपतनप्रवाहविषेएस्थितिरहताथा ॥ भले
वुरेसुखदुखविषेएकसमानरहताथा ॥ रामोउवाच ॥ हेभगवनश्रैसाजो
राजाभगीरथथातिसकेचितविषेकिश्राश्राएजोगंगाकोलेश्राएश्रा ॥ वसि
ष्ठउवाच ॥ हेरामजीएकसमेश्रपणेनगरकौंदेखतभएश्रा जोलोकभलेसा
रगकौत्यागकरश्ररुवुरेमार्गपापकर्मविषेसभलागेहै ॥ श्ररुमूरखहैलोक
तवलोकोंकेउपकारकेनमितेतपकरणेलागा ॥ ब्रह्माश्ररुमहादेवश्ररुजगन
क्षिपतिनकोंतपकरकेश्राराधनकीश्रा ॥ श्ररुमंत्रजपणेलागा ॥ गंगाकेलिश्राव
णेवासतै ॥ सोगंगाकैसीहै ॥ जिसकाएकप्रवाहस्वर्गविषेचलेहै ॥ श्ररुएकप्र
वाहपतालविषेचलेहै ॥ श्ररुएकप्रवाहभगीरथराजेमर्पिविषेचलाएश्रा
है ॥ बहुरगंगाकैसीहै जिसकरकैपातालकेलोकभीब्रह्मलोककौप्रापति
होतेहै ॥ श्ररुभगीरथराजेगंगाकेश्रानणेकारणसमस्तपरभीउपकारकीश्राहै ॥

श्रा

कैसामसमइहैजोश्रात्मानिकरसकाएहै ॥ तिसगंगाकेलिश्रावणेकारसकै
इकादशिइंद्रीनिवर्तहूश्राहै ॥ श्रैसाजोराजाहैतिसकेमनविषेविचारउप
जिश्रा ॥ सोसंसारकौदेखकरलगाकहणे ॥ जोएकहीकर्मवारवारकरणाश्रा
पहवडीमूरखहै ॥ तिनतेउहीवीजगाएउहीखावणा ॥ इत्यादिककर्मवहुदुखरू
इकरणा ॥ श्ररुजिसकर्मकीणेतेपाछेसुखनिकसेतिसकेकरणेकाकछुहरखन
नहीं ॥ श्रैसेविचारकरवैरागउपजिश्राजोससारकिश्राहै ॥ श्ररुजोवनश्रवस्थाजोहै
जैसेमानुषथलविषेकमलउपजेसोश्रचर्जहै ॥ तेसेजोवनश्रवस्थाविषेविचा
रउपजणाश्रचर्जहै ॥ हेरामजीजवराजाकौश्रैसाविचारउपजेश्रा ॥ तवगरिते
निकसिश्रा ॥ श्ररुत्रितलारवीप्रावजोहै ॥ गुरुतिसकेनिकटिजाएकरप्रश्नकते
भएश्रा ॥ राजोउवाच ॥ हेभगवनउहीकवनसुखहैजिससुखकेपाएतेजग
श्रस्थितकेदुखनिवर्तहोतेहै ॥ श्ररुएहसंसारकेसुखजोहै ॥ सोश्रनतहैंनहै ॥ ए
नकेप्राणामविषेदुखहै ॥ त्रितोउवाच ॥ हेराजनतएकागएहै जानणाजोगजोति
सकेजाणेतेपरमपदप्रापतिहोताहै ॥ सोश्रात्मज्ञानहै ॥ श्ररुश्रात्मसुखकेसाहै
नकदाचितउदहोताहैनश्रसतहोताहै ॥ जिकातिश्रपणेश्रापविषेएस्थितिहै ॥
हेराजाएहजराश्रादितनवलगाभासतेहै ॥ जवज्ञानरूपीसूर्जउदेहोवेगा ॥ तव
ज्ञानश्रंधकाररूपनिवर्तहोजावेगा केवलज्ञानपदविषेएस्थितहोवेगा ॥ श्र
वश्रात्माश्रनादिहै ॥ श्ररुसर्वगहै ॥ जिसकेजाणेतेचिदजडग्रंथटूटजातीहै ॥ चि
दजडग्रंथकहीश्रैश्रनात्मदेहइंद्रीश्रादिविषेश्रात्मश्रभिमानकरणा ॥ सोनिवर्त
होजातीहै ॥ श्ररुसभकर्मभीनिवर्तहोजातेहै ॥ संसेसभनष्टहोजातीहै ॥ श्रैसेस
धमरूपकौपाएकरगिश्रानीएस्थितिहोतेहै ॥ सोमनानामवेहै ॥ सर्वगतिनित
एस्थितिहै ॥ उदेश्ररुश्रसततेरहितेहै ॥ राजा उवाच ॥ हेभगवनश्रैसेजान
ताहो ॥ जोश्रात्माचिनमात्रहैश्ररुसतहै ॥ श्ररुदेहश्रादिकमिथ्याहै ॥ श्ररुश्रात्मा
सर्वगाहै ॥ श्ररुशांतरूपहै ॥ निर्मलश्रच्युतरूपहै ॥ श्रैसेजानताभीहोपरश्रंतरशांत
मेरेताएनहीप्रापतिभए ॥ जोश्रात्मचिनमात्रश्रात्मतमेरेताएनहीभासता ॥ श्र
रुएस्थितिनहीभए ॥ सोकिपाकरकहोजोमएस्थितिहोवऊ ॥ त्रितो उवाच ॥
हेराजाज्ञानतेरेताएकहताहो ॥ जिसकेजाणेतेवहुरदुखकाउनरहेगा ॥ ति
सज्ञानकरकेएविषेतेरेताएनिस्थाहोवेगा ॥ तवतेसर्वश्रात्मरूपहोकरएस्थि
तिहोवेगा ॥ जीवतभावतेरानष्टहोजावेगा ॥ श्रशक्तकहीश्रैदेहइंद्रीश्रादिकवि
खेश्रात्मश्रभिमाननकरणा ॥ एनकौश्रापानजाणणा ॥ श्ररुनितहीसमचितरहे
णा ॥ श्ररुश्रनभिष्वंगरहणा श्रनभिष्वंगकहीश्रैपुत्रश्ररुस्त्रीकेकट
भकेदुखकरश्रापकौदुखीनजाणणा ॥ एष्टश्रनिष्टकीप्रापतिविषेएकरस
रहणा ॥ श्ररुचितकौश्रात्माविषेजोडना ॥ श्रात्मातेएतरचितकौछिनजावनही
श्ररुएकांतदेशविषेएस्थितिहोवणा ॥ श्ररुश्रज्ञानीश्रकासंगनहीकरणा ॥ श्ररुश्र
विद्याकासदाविचारकरणा ॥ ततज्ञानकेदर्शननमित ॥ एहतेरेताएज्ञानकेलक्ष
णकहीहै ॥ श्ररुएसतेविप्रतहैसोश्रज्ञानहै ॥ हेराजाएहगएज्ञानजाणणेजोगहै ॥ ए
सकेजाणेतेकेवलशांतपदकौंप्रापतिहोवेगा ॥ श्ररुदेहकाश्रहंकारभीनिवर्तहो
जावेगा ॥ हेराजाएहदिलेश्रहंहोताहै ॥ तवपाछेममहोतीहै ॥ तातेतूश्रहंममका
त्यागकरजवश्रहंश्ररुममकात्यागकरेगा ॥ तवश्रात्मपदप्रत्तत्तभासेगा ॥ सो
श्रात्मसर्वगाहै ॥ श्ररुसर्वभीश्रापहै ॥ श्ररुश्रतहप्रकाशहै ॥ श्ररुश्रानंदरूपहै
केसाश्रनंदरूपहै ॥ जोसंसारकेश्रनंदतेरहतेहै ॥ तवश्रैसेगुरुकेवचनश्रानद

व॰
म॰
४५

राजा कहत भए॥ रामो उवाच॥ हे भगवन् एह अहंकार जो चिरकालका
देह विषे रहता है॥ अरु अभिमानी है॥ जैसे पर्वत पर चिरकालका वृक्ष पस्थि
ति होता है॥ अरु तिसका नाम प्रसिद्ध होता है॥ तैसे ही अहंकार चिरकालका
देह विषे पसका अभिमाने है॥ तिसका त्याग कैसे करे सो कहु॥ वसिष्ठ उ
वाच॥ हे रामजी अहंकार उपाव प्रजतन करके निवर्त होता है॥ सो श्रवण क
र॥ शुभ भोगहु विषे दोषदृष्टि करणी॥ विचार करणी॥ एसे करके अहंकार जो
वत तेरा निवर्त होवेगा॥ हे रामजी जब अहंकार तेरा निवर्त होवेगा॥ तब सर्व
आत्मा ही तेरे तांई भासेगा॥ शांतरूप अरु उदेअस्त ते रहत सम प्रकाश होवेगा॥ हे राज
जन एह लज्जा रूप फासे जब लग न ही निवर्त होती॥ लज्जा कहीये भय हो अरु से
रा है॥ चिंता अरु शोक अरु दुख अरु भला कहावणा कीपक्षा॥ इत्यादिक जो भी
ह के एस्थान है सो लज्जा है॥ जब एह निवर्तन ही होती॥ तब लग आत्मपदकी
प्रापति नहीं होती॥ तातें तूं अहंममते रहत हो॥ अरु तेरे जो पात्र है॥ जो ते राज
लोककी पक्षा करते है तिनकों अपना राज देहु॥ अरु क्षोभते रहत होकर अपु
ण्य स्त्री अरु बांधव पते के मोहते रहत हो॥ अरु मेरे मोहते भी रहत हो॥ अरु राजका
त्याग करके एकांत देश विषे स्थित हो॥ अरु तिनके चित्त ते भिन्ना मोग॥ जो
तेरे ताप भले कहावणे की पक्षा न रहे॥ ताते मेद खक्रा हो॥ ६३॥ इति श्री
भागि रथ प्र ला म स गः॥ वसिष्ठ उवाच॥ हे रामजी जब एसे राजा
निकसि आत बन कों गया॥ बनते अवरबनो कों विचिरता करि॥ अरु सा
तपद आतमा विषे स्थित रहे॥ अरु निष्कृतवि वेरि॥ जब केता किकाल व्य
तीत भया॥ तब राजा भागीरथ आपणे देस विषे आईआ॥ जो शत्रु राजा के थे
तिनके गेहो भिखिआ मांग लिलागा॥ जब तिन शत्रुओं अरु लोकों ने देखिआ
तब बहुत पूजा करे॥ अरु कहा कि भगवन तुम राजकों ग्रहण करो॥ तब राजे ग्रह
न कीआ॥ जैसे पृथिवी पर पड़ा तृण नहीं ग्रहण करीता॥ तब जानकरके तैसे
ही राजका ग्रहण न कीआ॥ केता काल ऊहां रहकर बहुर चलिआ॥ तब वि
तता रिख जो आपणा नगर था तांहा गया॥ अरु निष्कृत॥ तब गुरु भी आत मिलकर
के ग्रहण कीआ॥ अरु शिख भी गुरुकों आतमन करके ग्रहण कीआ॥ गुरुकी भा
वना तिस अरु सीखके भावना तिह नारहित होवि॥ पुरुके कोउ न ही॥ केतक का
ल इस स्थान विषे रहि बहुर इमन विषे विचरण लागे इकठे॥ अरु सोघ आतमप
द विषे होते इस्थित रहे॥ अरु तिनकों राग दुख ते रहित उपजी॥ केवल इ
कसम इस्थित रहे॥ अरु न तिनकों देह त्यागनि की इक्षा॥ अरु ना देह राखनि के
वांछा॥ अनिकल आरब्ध विषे इस्थित रहि तब स्वर्गलोकके जो सिद्ध थे॥ ति
नकों आनके पूजा करे॥ अरु बडे ईस्वर जे बडाई॥ अरु बहुत अप क्षराई सी गया आ
न्ये आ॥ अरु जेते ईसवर अरु पदार्थों के भोग थे तेते आन इस्थित होवि॥ तिनह
सवनों कोउ न त्यानिया॥ जो आतम सुख करकर प्रसन्न थे॥ अरु केवल अ
कास वत निर्मल थे॥ अप्रकाश रूप अरु सम चित्त रहि अरु कलंकता रूप मल
ते रहित रहि॥ हे रामजी जैसे भागीरथ राजा इस्थित होवा है॥ तैसे तूं इस्थि
त होव रहो॥ इति श्री भागीरथ निर्वाण वरणनं नाम सर्गः॥ ६४॥ वसिष्ठ उवा
च॥ ॐ हे रामजी केताक काल बीतिआ तब भागीरथ उआ तिबलिआ॥ तब
एकदेश का राज्या सांत होता था॥ तिसके जो लक्ष्मी थी सो राजा की ज्या विनाकर
ते थे॥ तिस काल विषे निष्कृत राजा भागीरथ भिक्षा मांगता आया॥ तब

उस राज्या के जो मंत्री थे॥ तिन राजा भागीरथ भिक्षा मांगता आया को देखिआ॥
तब बडा आदि वह राजा जो जेते कछु गुण राजा विषे चाहीतेहि॥ ताते हे इसविषे है॥ त
व राजा भागीरथ कों कहा कि हे भगवन तुम इस राजकों अंगीकार करो॥ कोइ
तेजोगत मकों अनिकता ही प्रापति हुआ है॥ तब राजे राजका ग्रहण कीआ॥ अरु
नाक कसल्ला जातिआ॥ अरु तब राजा निआ॥ एसे ग्रहण कीआ॥ तब राजा हस्ती॥
पर आरोह होवा अरु सेना का सिंघासन भया॥ दिस अरु पस्थान से लोक रहे रण भई
तब बनवार अरु साजे बाजि ने लागि॥ तब राजा अहंढि व आइआ॥ सभ महल॥
गया आन विषयमान भई॥ तब ऊहा देस जो राजा का एहि लाति सदे सके लोका अ
मंत्री अरु प्रजा आन कर कहा कि हे भगवन॥ जिस पुत्र कों ते राज देया था सो
तिनकों मृत भोजन कर लीया॥ जैसे पंक्षी कों मांस मत्स आसलिता है॥
तैसे ही तिस राजा कों मृत्त भोजन कर लीया है॥ ताते अब तुम ही राज करो॥ ज
द पताम कों इक्षा नहीं॥ तब भी राज करो॥ काहि ते जो वस्त अनिछित आन प्राप
त होवे॥ तिसका त्याग सरेष्ट नहीं॥ तातें तुम राजका अंगीकार करो॥ तब जैसे
राजका अंगीकार कीआ॥ अरु राजकरणि लागा तब पीछे लाह ताते राजा ने अ
वणके या॥ जो मेरे पितर कपल मानकि स्रापति भस्म होई है॥ अरु को पवित्र
ता दिजे चित्त करी॥ जो मे तिनका उधार करों॥ तब राज अपणे मंत्री कों दे
करवन कों एकला चला॥ अरु बन की आ जा तप करो॥ तब आ जाण करस्थान वि
षै इस्थित हूकर तप करणे लागा॥ ब्रह्मा का अरु शिवका अरु सा न रिख का ति
सत पकर गंगा जी के लिआवनी की आराधना करि॥ सह स्रवर्ष प्रजंतन तप
कीआ॥ तब गंगाजी रमक पद कीस्त ते॥ अरु तब राजि सके भोवत है॥ अरु विष्णु
भगवान के चरणों ते प्रगट भई है॥ बहुर कैसी है॥ माना भागीरथ राज जिसका
प्रवाह चलाया है॥ तिस गंगा के प्रवाह कों पितरों के उदार निमित्त राज्या लिआ
या॥ बहुर राजा भागीरथ सं चित्त अरु मान पद विषे इस्थित हूकर विचरणे लागा
जिस विषै न कछा भई है॥ अरु ना कछु भय है॥ अरु न कछु इक्षा है॥ केवल सान प
द है॥ तिस पद विषे इस्थित होवा है॥ जैसे पवन ते रहित सम स्वछ अचल होता है॥ तैसे
ही संकल्प रूप पवन ते रहित होकर इस्थित होवा॥ इ भ र प नि मा
म॥ ६५॥ वसिष्ठ उवाच॥ ॐ हे रामजी जो दृष्ट भागीरथ की तिसे तुमने करी है
तिस कों आगे कर के विचिर हू॥ कैसी है ईश्व दृष्ट जो सर्व दुख का नाश करता
है॥ अरु कैवल्या आगमाही आगि वतीत भया है॥ एसा ही सिखरध्वज राजा भया
राम उवाच॥ हे भगवन ऊह सिखरध्वज कवण था॥ अरु किस प्रकार चेष्टा करत भ
या सो कहो कृपा करके॥ वसिष्ठ उवाच॥ हे रामजी राजा सिखरध्वज जो आगे ग्या
पर होइ था॥ सप्तम मन्वंतर जो गया वतीत भई है॥ अरु चोकडी चत्तुर्थ द्वाप
र बहुर भी होवेगा॥ सा के सा राजा जो मेरे रणा पृथिवी का ति
स युग कथी॥ तिस काल विषे होवा है॥ अरु जेते ईस्वज्ञे है तिनका समर्थ
लक था॥ अरु जेते सरीरे है॥ तिनाते उतम था॥ अरु जेते भोग हैं तिन के भोगणे को समर्थ होए कर भोगता था॥ अरु तिनवि
षे था॥ अरु जेते भोग हैं तिनके भोगणे को समर्थ होए कर भोगता था॥ अरु बडे ईस्वर जे कारसुपने था
रे वि ध मान न होत भया॥ ईसी प्रकार भी ना तो था॥ अरु सम चित्त रहि॥ अ
र धीर अरु धीर जवान था॥ किसी पर जो रजो तमों न करता था॥ अरु जेकों इस्य ते होवे तिस
समान पद विषे इस्थित रहे॥ अरु संसरण दुःख ते रहित॥ राम उवाच॥ हे भगवन् ऐसा
का अरु ध्य रूप को करे॥ एसा था अरु बहुर भई होवेगा॥ ग्यानी न बहुर जन्म ने
ग्यानवान था राजा सो बहुर जन्म किस निमित्त पावेगा॥ ग्यानी न बहुर जन्म ने

हीपावता ॥ ऐसेकेसेपावेगा ॥ वसिष्ठ उवाच ॥ हे रामजी जैसे एक समंदहै ॥ ति
सविखेकई प्रतभासमानउठतिहै ॥ अरुकइअर्थफुरतिहै ॥ अरुएक विलक्ष
णभावकरुफुरतिहै ॥ जोसमानफुरितिहै तिनकी चेष्टा अरुअकारएक जैसी
हइआवतेहै ॥ तातेजानेनाहै जाउफुरीहै ॥ तैसेसिखहै जनकेआगेजैसीप्रतभा
होवेगी ॥ हे रामजी इससरीविखिसप्रसन्नवंतविनीतभईहै ॥ अरुचोकरीइन्नव
हाणरजगकीतभजैवाहोयमालवादेसका श्रीमानसिखरहजाइहै राजाहो
तभइआ ॥ अरुशिखरध्वजगोहून हीवेगा ॥ ऐसेजैसाहोरहोवेगा ॥ जबआइरवला
वरखखोइसकीसोथ्याराजकुमार ॥ तबएकसमैराजपुरिकारकौनिकसि
आ ॥ अरुवसंतरुतकासमाथ्या ॥ तबराजबागअपीसांजाइस्थितिभइआ ॥ त
बफूलाइकेअचैभाइस्थानबनेहुइहै ॥ अरुतहाकमलनीआमानाइस्त्रीआहे ॥
अरुथूरकेकणकेतिनकेभूषणाहै ॥ अरुभरवातनकेसमीपीविछहै ॥ इसप्रका
रभउरीअरुभउरेअरुरसमइलीलादेखताभइआ ॥ तबराजाकेमनविखेचितवन
भई ॥ जोमेरेताईइसत्रीप्रापतिहोवे ॥ तबमैचेष्टाकरौ ॥ अरुअधिकचितवनाभई ॥
जोकवमेरोताईप्रापतिहोइगी अरुकबफूलाकीसिजापरिसैनकरौगा ॥ इनआ
दिकजोभोगहाकीब्रितहै ॥ सोराजाचितवनाकरणेलागा ॥ तबमंत्रीअरुकेदे
खिआजोइसोराजाकामनएमत्रीजोपरिहै ॥ ऐसेहोजोराजाकाविवाहकरी
ई ॥ सोमत्रीराजाकेत्रिकालगिआनरखतेथे ॥ शरीरकीअवस्थाजानतेथेइस
तेजानतभई ॥ तबएकराजाथातिसकीकंन्याबहुतसुंदरवरप्रापतिभइथी ॥
तिसराजाकेपुत्रसाथविवाहराजाशिखरध्वजकाकीआ ॥ शास्त्रविधसहित
तबराजावहुतप्रसंनहोकरिअपणेचीरआइआ ॥ अरुतिसइस्त्रीकानामचूडा
लाथ्या ॥ अरुराजाकाहितबहुतिसविखेहुआ ॥ इसप्रकारएकसमैप्रीत
आपसविखेबढी ॥ तबएकसमैराजामंत्रीआकौराजदेकरवनमेगइआ ॥
अरुवनविखेनानाप्रकारकीचेष्टाकरतभएआ ॥ अरुवनविखेविचरे ॥ जैसे
सदाशिवअरुपारवती अरुजैसेविसनभगवानअरुलक्ष्मीविचरहै ॥ तैसेहीराजा
अरुराणीविचरणेलागेबहुडिजोगकीकलाशिषणेलागे ॥ तबसभूरणकलाग
कौराणीसिखावै ॥ सेइसनकलाकेविसपनहूए ॥ बहुडिचूडालाकीबुधि
राजानेतीषणसीघ्रहीजाणिलेवै ॥ बहुडिराजाकौसिखावै ॥ इसप्रकारबहुत
चेष्टाकरीअरुविचरे ॥ इति श्री व धूज उ प्रा ति नाम सर्गः ॥ ६९ ॥
वसिष्ठ उवाच ॥ ॐ हे रामजी इसप्रकारराजाअरुराणीअनंतभोगभोगे ॥ तबतैसे
सेछिद्रसहतकुंभतैसेमनेजललिनिकसिजाताहै ॥ तैसेसमनेसमनेजोबनकेगई
विरधअवस्थाआपप्रापतिभई ॥ तबराजाअरुराणीकौवैरागकारणकौवैराग
कारणकौनप्रभइआ ॥ तिसवैरागकरिइहविचारकरणेलागे ॥ जोइहसंसार
मिथ्याहै ॥ अविनासीहै ॥ एकजेसानहीरहता ॥ अरुविषभोगभीमिथ्याहै ॥ जोइ
ताकालहमभोगतेरहेतौभीत्रिसनाइशरणभई ॥ अरुबथतीगई ॥ हे रामजी इसप्रका
रराजाअरुराणीवैरागकरिविचारकरतभई ॥ जोइहभोगमिथ्याहै ॥ अरुइनका
सुखषणकालहै ॥ जबलगइनकासंजोगहै इंद्रियाकासाथहै ॥ अरुअणभवि
विवरहतउरवहोताहै ॥ अरहमारीजोबनअवस्थाभीविनीतहोइगई ॥ जैसे
विजलीकाचमत्कारविणमात्रहोकरिविनीतहोजाताहै ॥ तिसप्रकार
जोबनअवस्थाविनीतहोभईहै ॥ अरुमितनतिकदिआइगई ॥ अरुजैसेनदी
कावेगतलेकौचलिआजाताहै ॥ तैसेआरवलाविनीतहोजातीहै ॥ अर

जैसेहाथपरजलपाइआनिकसिजाताहै ॥ तिसप्रकारजोबनअवस्थानिव
र्तहोजातीहै ॥ अरुइहसरीरकैसाहै ॥ जैसेबुदबुदेअरतरंगभीजलविखेउपजि
करिलीनहोजातेहै ॥ तैसेहीप्राणीखिनमेमरतेहै ॥ अरुजहाइहचेतनजाताहै ॥
तहादुखभीइसकेसाथचलेजातेहै ॥ निवरतनहीहोते ॥ जैसेमसकेटकुंड
केपीछिइलायचीचलेआजाताहै ॥ तोसोहीजहाअगिआनहोतहादुखभी
पीछेजातेहै ॥ अरइससरीरभीनिवर्तहोजाणाहै ॥ जैसेअबपकाबिरछसाथ
नहीरहितागिडपडताहै ॥ तैसेसरीरभीनष्टहोजाताहै ॥ अरजिसप्रभीरअव
स्थिगिडत्ताहै ॥ तिसकाआसराकरणाकिआहै ॥ जैसेरुखकापाताबिरछकेसा
थिहै ॥ अवगिडपडताहै ॥ तैसेहीइहशरीरगिडपडताहि ॥ तातेहमहैऐसा
कछुकरहि जोसंसाररूपविसूचकातेनिवर्तहोवहि ॥ सोसंसाररूपविसूचे
काब्रह्मविदिआकरिनिवर्तहोताहै ॥ ब्रह्मविदिआकरिगिआनउपजाता
है ॥ अरआतमगिआनकरिसरबदुखनिवर्तहोजाताहै ॥ इसतेउतमउपाइको
नही ॥ तातेआतमगिआनकेनिमितसंतजनपासजावहि ॥ हेरामजीतबइसवि
चारकरकेराजाअरचूडालासंतजनहै ॥ आतमगिआनतेतनकूपासचले ॥ अ
रआत्मगिआनकीवारताकरहि ॥ आत्मगिआनविखेतिनकाचितअरवावना
अरआपसमेविचारणा ॥ अरचरचाकरणी ॥ तबआत्मपरायणहोकरस
तहूपासगई ॥ सोसंतनकैसेहै ॥ जोसंसारसमुद्रकेतरावणवालेहै ॥ अरुआ
त्मविलाहै ॥ तिनपासजाएकरपूजाकरतभए ॥ अरुतिनकोप्रसनकीआ
तबराजाअरराणीब्रह्मविदिआस्रवणकरणेलागे ॥ गिआनसिउराजाआत
मसथहै ॥ अरआनंदरूपहै ॥ जिसकेपाइतेदुखनिवर्तहोजातेहै ॥ चेतन
इकेहै ॥ इसप्रकारसुनतभई तबहेरामजीराणीचूडालाविचारविखेला
गी ॥ तबराजाइसमकोकूगोटहलकेहै ॥ तबबटलकरेपराउसकीचितकीब्र
तिविचारविखरेहै ॥ सोविचारइहहैजोमैकिआहोअरइससंसारकिआहै ॥
अरुसमानकीउतपतिकिसतेहै ॥ ऐसाविचारकरजानणेलागी ॥ जोइहप
चततकाशरीरहै ॥ मैइहनही ॥ काहेतेजोप्राणजडहै ॥ अरुकरमइंद्रीआजो
हैइहभीजडहै ॥ जैसेमरोरहैतैसेहीशरीरकेअवेवहै ॥ अरुइहजोचेष्टाकर
तेहै ॥ सोगिआनइंद्रीआकरकरतेहै ॥ सोगिआनइंद्रीआकारकरतेहै ॥ सो
गिआनइंद्रीआकारकरतेहै ॥ सोगिआनइंद्रीभीमैनही ॥ काहेतेजोइहभी
जडहै ॥ जोमनकरइनकीचेष्टाहोतीहै ॥ अरमनभीजडहै ॥ तिसविखेम
कल्पविकल्पचेतनाहै ॥ जोतिसविखेतिसचाचेतनाहै ॥ सोतिसचा
अहंकारकरहोताहै ॥ अरअहंकारभीजडहै ॥ जोतिसविखेअहंकारचेत
नताकरकेहोताहै ॥ सोचेतनताजीवकरकेहोतीहै ॥ अरजीवभीमन
हो ॥ काहेतेजोजीवतहैरहभीफुरणारूपहै ॥ अरमैरसतरूपअफुरहै ॥ मैसद
उदेरूपहै ॥ अरमनमात्रहै ॥ वहअरूपजेहै ॥ जोचिरकालकारकेमेअपणे
सरूपकोपावताहै ॥ सोकैसापदहै ॥ अनंदहै ॥ अरमैगिआनमाहो ॥ जैसेश्राव
णकालकाआकाशनिरमलहोताहै ॥ तैसेहीनिरमलहोमै ॥ अरविगत
जरहो ॥ रागअरदोखरूपतापतेरहतहो ॥ अरअसतकीनिआईहो ॥ अ
रसनमात्रपदहो ॥ अहंअरतअतेरहतेहो ॥ सिरविखेफुरणाकोनही
इसतेसांतरूपहो ॥ जैसेखीरसमुद्रमंदराचलपरवततेरहतसांतरूपहै ॥ ते

बा॰
म॰
४०

47

सेविततेरहितअरुअचलहो ॥ अरुअद्वैतहो ॥ कदाचितनरूपतेश्रामकैं नहींप्रा
प्तिभइआ ॥ अरुजोमनमात्रपदहै ॥ तिसकोब्रह्मवेत्ति अरुनेतिआकहीहै ॥
मोक्षकहैअरुचेतनहै ॥ परमात्माहै ॥ इत्यादिकनामरारवेहै ॥ अरुवाभजइअरु
हुआनन्दामनबुधिआदिकइसअरुसेसारूपहोकरपमरिआहै ॥ अरुसरूपतेअच
तेहै ॥ सिद्धिआकदाचितनहीं ॥ अरुफुरणाकरकेअकारभासतेहै ॥ तउभीआत्मै
तेरलरकछुनहीं ॥ जैसेपवनवडाहोताहै ॥ तिसकेपवरवदेहोतेहै ॥ तउभीपव
नतेइतरकेछुनहीं ॥ अरुअकारकैसेहै ॥ जैसेगंधर्वनगरहोइतिसविखेनानाप्रका
रहोकोविअकारभासतेहै ॥ तैसेइहसंसारहैमिथ्यानवानकोएकरसहै ॥ अरुअं
गपानकोभेदभावनाहै ॥ जैसबालककोमितकाकेखिलौनेकल्पताहै ॥ इहमृती
वोउराजापरजानाआदिलेकरनामराषताहै ॥ अरजिसकोमितकामिथ्यानेहै
तिसकोएकमितकाहीभासतीहै ॥ तिसतेइतरनहीकछु ॥ तैसेअगिआनकरिके
नानारूपभासतेहै ॥ अरुतेसेजानिआहैजोएकरसहै ॥ हेरामजीइसप्रकारचूडा
लाआपकोजानतभई ॥ जोमैमनमात्रहो ॥ अरुअछेदहो ॥ अरुसदाहो ॥ अरुसब
कहो ॥ अरुनिर्मलहो ॥ मेरविखेअहंतअरुएकअरुदोइअद्वैतमबकोनही ॥ अरुज
नमरितभीकोनही ॥ अरइहसंसारचितकरकेभासताहै ॥ अरुआत्मसरूपहै
देवताअरुजरवअरुगंधर्वमनुष्यावरुजंगमइत्यादिकसर्वआत्मरूपहै ॥ जैसेतर
गअरुबुदबुदाअरुवतसमुद्रविखेअभिंनरूपहै ॥ तैसेहीआतमातेभिंनवस्तकछुन
ही ॥ अरुइसहि— इसमनइहभीआत्माकीसत्ताकरकेचेतनहै ॥ इनकोआपते
सत्ताकछुनही ॥ अरुमेरेविखेअहंकारउथ्यानकदाचितनहीं ॥ अपणेआपवि
खेइस्थितिहै ॥ अरुतिसपदकोआश्रेकरकेचिरकालइसप्रकारविखेविचियोगी
हेरामजीइसप्रकारचूडालाविचारकरतभई ॥ सोचूडालाकेसीहैनिवर्तभएहै
त्रिसाजिसकी ॥ अरुदुखभेभोगवासनाभीनिवर्तभईहै ॥ जिसकोअरकेवलसात्त
जोहै ॥ आत्मपदतिसकोपाइकरसोभतभईहै ॥ जोपावणेजोगपदहै तिसकोपाइक
रजानतभईजोएताकालमैअपणेसरूपतेगिरीरहीथी ॥ अरुमेरेताईसतहैअरउ
रवमरवमिटगएहै ॥ अबिमेरेताईरंचहुरागअरुत्यागकछुनही ॥ हेरामजीअपणे
जोप्रकीतेहै ॥ प्रकर्तकरुहीऐसेभावअतिसमिलिसविखेइस्थितिभई ॥ अरुएकांतवे
ठकेसमाधिविखेलगी ॥ अपणाजोअनंदरूपहै ॥ तिसकोपाइकरचूडाला
इस्थितिभए ॥ हेरामजीऐसेअनंदविखेइस्थितिभई ॥ जिसकोवाणीकरक
हिनसकीऐ ॥ तबसिखेरध्वजअरुआरणीकीओरदेखतभइआ ॥ देखकरआ
अर्जेकोप्रापतिभइआ ॥ अरुकहाकेहेअगलेवडहैजोवनिअवस्याकोप्राप
तिभईहै ॥ अतेरेवडेअनंदकोप्रापतिभइआहै ॥ अरुकदाचितेतेनअम्रितका
रसपानकीआहै ॥ तातेअमरभईहै ॥ अथवातेरेताईजोगीमरकिसीकालको
ताईकवनवस्तप्रापतिभईहै ॥ अरुतेरेचितकोचितमैअसजानताहो ॥ जो
अम्रितकापानतेनेकीआहै ॥ अरत्रिलोकीकेराजतेभीतेनेकोअधिकपदप्रा
पतिपाईआहै ॥ अरतेवडेअनंदकोप्रापतिभईहै ॥ तिसअनंदकाआदिअरुअ
तकोनहींदेरिवता ॥ अरतेरेविखेभोगकावासनाभीनहीदेखती ॥ सोत
हागईहै ॥ जैसेशरदकालकाअकाससनिर्मलहोताहै ॥ तैसतेरारिदेविख
तिमेरवतादेखताहै ॥ सोकहुतेरेताईकिआवस्तप्रापतिभईकिआवस्तप्राप
तिभईहै ॥ तबराणीकहाहेराजनइहजोकछुदेखताहैसोकिंचनहै ॥ अरइ

सेतेजोरहतेहैनिहकिंचनपदतिसकोमैपाइआहै ॥ तिसकाअकासनिहकिंचित
हैं ॥ अरुजोसोकोमैपाइआहै ॥ इसतेमैंश्रीमानहो ॥ अरजेते
हे ॥ अरइहसंसारकाअभावहै ॥ तिसकोमैपाइआहै ॥ अरुआभोगकोभोगिआहै ॥ तिसभोगकर
करभोगीहै ॥ तिनकात्यागकीआहै ॥ अरुभोगकोभोगिआहै ॥ तिसभोगकरत्रिपतभईहो ॥ अरभोगक
त्रिपतभईहोअरुभोगकहीऐआत्मग्यान ॥ तिसभोगकरत्रिपतभईहो ॥ अरुआतमाविखेहीअरामपाइआहै ॥
हीऐआत्मग्यान ॥ तिसकोमैपाइआहै ॥ अरुसदाशांतरूपश्रीमानहो ॥ हेराजनजेतेइह
अरुआत्माविखेहीअरामपाइआहै ॥ सदाशांतरूपश्रीमानहो ॥ रागदोखतेरहतेहो
राजभोगसुखहै ॥ तिसकोत्यागकरपरमसुखकोभोगतीहो ॥ सोसभमिथ्यासुखहै ॥ अरमै
अरमैहीइसप्रस्थिरहो ॥ जेताकछुनेत्रकरकेदेखताहै ॥ सोसभमिथ्याप्रपंचहै ॥ अरमै
नहीइस्थितिभईहोजहांनेत्रकागमनहीं ॥ अरइहाँआपामनकीभीगमनहीं
जहांइनकीगमनहीतहांमैजाइप्रापतिभईहै ॥ हेराजनतिसपदकोमैपाइआ
है ॥ जिसविखेअहंकारउथ्यानभीनही ॥ अरसर्वकाआत्माहै ॥ अरसवजोअम्रि
तहै ॥ तिनकामारअम्रितमैपाइआहै ॥ तातेमैवानासकदाचितनहीं ॥ अरमै
भीकदाचितनहीं ॥ हेरामजीजबइसप्रकाररानीकहातबराजाशिखरध्वजति
सकावचनकोनजानतभइआ ॥ हासिकरअरकहाकिइहमूरखअरबौरहैकि
आकहतीहै ॥ जोप्रतक्षवस्तकोझूठकहतीहै ॥ अरुकहतीहैमैनहीदेखती ॥
अरजोअसतहैतिनकोदेखतीहै ॥ सोतिसकोसतकहतीहै ॥ अरुमैदेखतीहो ॥ इह
वचनतेरकहनमानेगा ॥ इनइवचनेवालासोभानहीपावता ॥ अरकहतीहै
जोइहसभइनकोत्यागकरश्रीमानभईहोअब ॥ निहकिंचनपदकोपाईकरइ
नवचनोवालासोभानहीपावता ॥ अरकहतीहैइनभोगनकोमैत्यागकीआ
है ॥ अरअनंतरहतजोअभोगहै तिसकोमैभोगतीहो ॥ तातेमसरवरहै ॥ अरजेकहतो
हैमैकछुनहीं ॥ वहउकहतीहैमैइसरूपहोइसतेमहामुरखहुइआवतीहै ॥ अरजि
हैमैकछुनही ॥ वडेवडेविनराचितप्रसन्नहैनेत्राखेलेविविरा ॥ परइहवातसुनिकरमनकोनमा
नेगा ॥ जैसेतेरीइछाहैतेसेकर ॥ परतनेरेताईइहसोभतनहीं ॥ हेरामजीऐसेकहि
करराजाउठखडाहूआ ॥ मध्यानकासमाथा ॥ इसनानकरनेमितगइआ ॥ तब
राणीमनविखेपाकवानभईअरविचारकीआ ॥ जोवडाकष्टहै ॥ जोराजाआत्म
पदविखेइस्थितिनपाई ॥ अरमेरेवचनइकोनजानतभएआ ॥ राणीऐसेमन
विखेयथाकरिअपणेआचारविखेप्रवर्तणेलागी ॥ वहुरिउअपणेनिसवासरा
कोनदिखावाइआ ॥ जैसेअगपानकालविखेचेष्टाकरतीथी ॥ तैसेहीग्पानकोपाइ
करलागीचेष्टाकरणे ॥ तबएकसमेरागीकेमनविखेआई ॥ जोमैआपणेकी
ऊपरचढावो ॥ अरुअरधकोलिआओ ॥ अपणाबपिकरोदानअरुअपानवाएकओ
किसनिमितजोअकाशकोभीऊडइओ ॥ अरअरथकोभीआगमनकरेओ ॥ ऐसेचित
वनाकररागीजोगविखेइस्थितिभई ॥ प्राणायामकरणेलागी ॥ रामोउवाच ॥
हेभगवनइससंसारमेकल्पनेजनपतिभइआहै ॥ संसाररूपविकुइस्यावरजंगम
रूपअरसकल्पइसकाबीजहै ॥ तउवहकवणप्राणायामपवनहै ॥ जिसकरिके
अकाशकोउडतेहै ॥ वहुरिदिनलोकोआवतेहै ॥ अरअपानपवनजननकरव
केसिधकरतीहै ॥ अरअपानवानकेमनीलाकरविचिवतेहैइसकाउतरकहहु ॥ व
सिष्ठोवाच ॥ हेरामजीतीनप्रकारसिदहोतीहै ॥ सोअवणकरो ॥ एकतोपादइह
हि ॥ जोइहवस्तमरेताईप्रापतिहोवै ॥ तिसनमितजतनकरतेहै ॥ अरपाती ॥ अरए
कइहजोमैगाइखनिवर्तिहोवे ॥ जोमैसुखीहोऊ ॥ महाअगिआनीजोहै ॥ तिन
कोइहचिंतारहतीहै ॥ अरइहजोमैकर्मकरताहो ॥ इसकाफलमेरेताईसिदहोवै ॥ इ
हभीअगिआनीहै ॥ कहातेजोआपकोकरतामानतेहै ॥ अरज्ञानवानइसतेऊ

दखनाहे यरपेशीयाकर
नाणितहै अरसतकरि
तहनकरतीहै ८

वं०
म०
५८

लेवरततेहै॥ कदाचितज्ञानवानइसविधिवरतताभीहैतोभीतिसकोतिसवेवि
खेईहै॥ जोसेवनकरताहैनभोगताहै॥ अरजोहैसोइसप्रकारजोगकरसिद्धहोती
है॥ जोदेशकेकेअरंडीआकरकेकिआकरीआमखविविगटकारणखणा॥ ति
सकरकेजहांवाहैतिसटउदृविखेजाइप्रापतिहोवे॥ अरअंजननेत्रहोविलेपा
वणाजिसकोदेखिआचाहैतहांदेखलेवे॥ अरलेरगाहाथविखेधारकरसंश्व
णप्रथवीकोवसिकरलेवणा॥ तपककेरहैलोकिआपदार्थहै॥ अरदसजोस
वेतेहै॥ तिसविखेकेतेपीटहै॥ अरवडाउत्तमहै॥ अरइहजोसिधहोतेहै॥ सोअ
वणकर॥ सोकेसेहोतेहै॥ एककुंडलनीशक्तिहै॥ अरअधारचक्रकेविखेनाभके
तलेसरपनीकीतिआईकुंडलेहै॥ जिसविखेकुंडलेकोमारहीहै॥ अरस्वास
नाहीतिसविखेविखेहै॥ अरजेतीनाडीहैतिनकासमसथानहीहै॥ तिसकुंड
लनीविखेजवमननहोताहै॥ तवमनहोकरप्रगटहोताहै॥ अरजवनिसचा
होताहै॥ तववुधिप्रगटहोतीहै॥ अरजवअहंभावहोताहै॥ तवअहंकारप्रग
टहोताहै॥ अरजवसिमरनहोताहै॥ तवचितप्रगटहोताहै॥ जवतिसविखेस
परसकीइछाहोतीहै॥ तवपवनप्रगटहोताहै॥ इसप्रकारपंचतनमात्रा
अरचतरअंतःकरणप्रगटहोताहै॥ अरजेतीनाडीहै॥ इहसर्वकुंडलनीतेप्र
गटहोतीहै॥ अरआत्माकाप्रगटहोणाभीतिसतेजाणीताहै॥ रामोवाच॥
हेभगवन॥ आत्माकाप्रगटहोणातिसतेकेसेजाणीताहै॥ आत्मातोदेशका
लकेपरछेदतेरहतहै॥ सर्वदेशसर्वकालसरववसतकरपूरणहै॥ हेरामजीजेसे
जेकाप्रतिबिंबजलविखेदिखाईदेताहै॥ अरधूपसर्वठौरदेखीअतहै॥ तिसप्रत्यक्ष
तासमानहै॥ अरप्रगटसांतकरणविखेदेखीअतहै॥ जेतीकछुनाडीहै॥ अरइं
द्रीआंहेतिनकोदेखणाहैसोकुंडलीशक्तिहै॥ अरजवइहजीवइसकुंडलनीवि
खेइस्थितहोकरपवनकोइस्थिरकरताहै॥ तवजेतीकछुअंतरआगवाइहै॥ तेसे
सोसवइसकेवसिहोतेहै॥ जेसेसेनासभराजेकेवसहोतीहै॥ तेसेहीसर्वइंद्रीआ
इसकेवसिहोतीहै॥ अरजवप्राणवाइइसकेवसिनहींहोते॥ तवइसकोआधि
विआधरोगउपजतेहै॥ हेभगवन॥ आधिविआधकेसेरोगहोतेहैसोकहहु॥ हेरामजी
आधिनामहैमनकीपीडाका॥ अरविआधदेहकेदुखहकानामहै॥ आधतवहो
तीहै॥ जवइसकोसंकलपहोताहै॥ जोसुखमेरेताईप्रापतिहोवे॥ अरजोइहवसत
प्रापतनहींहोती॥ तवचिंताकरकेपडादुखपावताहै॥ अरविआधतवहोतीहै॥ ज
ववातपितकफकाक्षोभशरीरविखेहोताहै॥ तवदेहदुखपावताहै॥ जवमनकाअरश
रीरकादुखइकठाहोताहै॥ तवआधिविआधइकठेहोतेहै॥ जवभिनभिनहोतेहै॥
तवदुखभीभिनभिनहोताहै॥ अज्ञानकों॥ अरगिआनवानकोंनआधहोतीहै॥
नविआधहोतीहै॥ अरइहजोगकीकलामैविस्तारकरनहींकही॥ काहेतेजोसू
खलगिआनकेसेकाप्रसगरहिजाताहै॥ अरजेतीकलाहै॥ तिनसवहूकोंमै
जानताहां॥ परंतुइहकलागिआनमारगकोरोकणहारीहै॥ इसतेविस्तार
करकेनहींकहता॥ अरवास्नाचारप्रकारकीहैसोश्रवणकरो॥ इकवास्नासखो
पतिहै॥ अरएकवासनासुपनहै॥ अरएकवास्नाजाग्रतहै॥ अरएकखीणवा
स्नाहै॥ अरसथावरजोनकीसुखोपतिवास्नाहै॥ जोआगेफुरेगी॥ अरतिरजक
कोंसुपनवास्नाहै॥ जोवास्नाकाग्यानभीनहीहोनकों॥ अरजंगमजोहैमानु
खअरदेवतातिआदितिनकोंजाग्रतवास्नाहै॥ जोवास्नाहीविखेलगेहै॥ इहतो
नवासनाअभिमानीकोहै॥ अरखीणवास्नागिआनवानकीहै॥ जोवास्नाकोस
ततानष्टभईहै॥ तिसकोवास्नाकाउठनहीं॥ जवइसप्रकारवास्नाकीनिवर्ते

भई॥ तवआगेसंसारभीनहींरहिता॥ अरजवकुंडलनीशक्तितेवासनाफुरतीहै
तवपंचतनमात्रअरआगासंसारभानहोताहै॥ संसाररूपब्रिछकाबीजवास्नाहै॥
है॥ अरदसदिशासंसारब्रिछकेपत्रहै॥ अरशुभअशुभकर्मतिसकेफूलहै॥ जे
सोजेसीवास्नापुरयष्टकासाथिमिलकरजीवकरताहै॥ तेसातेसाआगेहोताहै॥
हेरामजीताते वास्नाकात्यागकरहु॥ वास्नाहीसंसाररूपब्रिछकाबीजहै॥ इहीप्र
रखअजतनकरजववास्नानिवर्तहोवेगी॥ तवविखकाभानकदाचितनहोवे
गा॥ जेसेसूर्जकेउदेहूएअंधकारनहींरहता॥ तेसेहीग्यानरूपसूर्जकेउदे
हेइससंसाररूपअंधकारकानिवर्तहोवेगा॥ हेरामजीइहआधिविआधवडेरोगहै॥
रामोवाच॥ हेभगवन सोआधभीमनकरहोतीहै॥ अरविआधभीमनकरहोतीहै॥ मनकरकेकेसेहोतेहै॥
नआधरोगतेमनकरहोताहै॥ अरविआधतांशरीरकारोगहै॥ एकसाथहै॥ सम
सोकहहु॥ वसिष्ठउवाच॥ हेरामजीविआधदोप्रकारकीहै॥ अरएकजनकरके अरघवाइस
नकहीअरजोशरीरकोकोईदुखआनप्रापतिहोवे॥ अरएकजनकरके अरघवाइस
नानकरकेअरथवाजपकरकेनिवर्तहोवे॥ इहतोसमानकही॥ अरविआधसा
कहीअरजोजनममरणकारोग॥ सोवडारोगहै॥ सोमनकेसांतहूएविनानिवर्त
नहीहोता॥ इसतेआधिविआधदोऊमनकरहोतेहै॥ तवरामजीकहाकिहे
भगवनविआधमनकरकेकेसेहोतीहै॥ तववसिष्ठजीकहाकिहेरामजीजे
वचितसांतहोताहै॥ तवरोगकोनहींरहता॥ अरजवलगचितसांतनहीहो
तानवलगविआधभीहोतीहै॥ अरआधभीहोतीहै॥ सोअवणकरुराजाकेसे
होतीहै॥ जोकछुवाहरअगनिकरकेपरपकहोताहै॥ अरतिसकोभोजन
करतेहै॥ पुरखतवअंतरकुंडलनीजोहैपुरयष्टकासाथिमिलीजीवकला
अरसवप्राणइकीसमसट॥ अरउदानपवणजोहै॥ उरथमुखहोकरफुरती
है॥ अरअपानपवनजोहैतिसतेअरथकोफुरतीहै॥ अरउदानअरअपानआ
पसविखेजुधरावतेहै॥ अरतिनकेवीचअगनिजुडरहतीहै॥ सोरिदकमल
विखेआनइस्थितहोतीहै॥ तवबहुवाहरअगनकाभोजनहृदेआनिपरि
वहुडिपरपकहोतेहै॥ अरसर्वनाडीअपणेआपणेभागकोलेजातीहै॥ तववी
रजवालीनाडीवीरजककेरारखती॥ अरसरवालीनाडीरथरककोरारखती
है॥ इसप्रकारअपणेआपणेरसकोलेजातीहै॥ तवइहपुरखसुखनरहताहै॥ अ
रअपणेसुभावविखरहताहै॥ अरजवरागअरदोखकरकेचितकुंडलनीसक
तिविखेक्षोभहोताहै॥ तवनाडीअपणेइस्थानकोत्यागदेतीहै॥ पुनभीअंत
अपरपकनहीहोता॥ तिसकरकरसकविरागउठताहै॥ जेसेराजाकोक्षोभ
होताहै॥ तवसेनाकोभीक्षोभहोताहै॥ अरजवराजाकोसांतहोतीहै॥ तवसे
नाकोभीक्षोभहोताहै॥ अरजवराजाकोसांतहोतीहै॥ तवहोतीहै॥ तेसेहीजव
मनविखेक्षोभहोताहै तवरोगहोताहै॥ अरजवमनविखेसांतहोतीहै॥ तवनी
री अपणेअपणेइस्थानइविखेइस्थितिहोतीहै॥ रोगकोनहीहोता॥ तातेहे
रामजीआधिविआधतवहोतीहै॥ जवपुरखकाचितनिर्वासनहीहोता॥ जव
चितसांतहोताहै॥ तवरोगकोनहीरहिता॥ तातेनिर्वासपदविखेइस्थितिहो
वहु॥ तवरामजीकहाकिहेभगवनपीछेतुमकहाजोमंत्रकरभीरोगनिव
र्तेहोताहै॥ सोकेसनिवर्तहोताहैइहकहहु॥ तववसिष्ठजीकहाकिहेरा
मजीप्रथमउरखकोसरदाहोतीहैजोइसमंत्रकरमेरारोगनिवर्तहोवेगा॥

अथयागलवाइहु जो अक्षरहै इनकेजापककैं अरजेतेकहुजपमंत्रहै॥सोइनअक्षर
हूकरसिद्धहोतेहैं॥नु सबइनकोजापकरताहै॥भावनासहित॥तबविग्राथयोग
निवर्तहोजातीहै॥अरजगोप्राश्रका कमैजहै प्राणअरअपान सोअवणकर॥जब
इहुप्राणअपानकुंडलनीशक्तिविखेइस्थिहोतेहैं॥अरइनकोवसिकेकै गंभीर
होताहै॥तैसेमसकविखेपवनअरुप्रकारपवनकों॥इस्थितिकरकेमरवमनवि
खेप्रवेशकरतीहै॥कुंडलनीनववद्रह्मरंध्रविखेजाइकरइस्थितिहोतीहै॥जो
महूतपरजेततनहोइरहताहै॥प्रकाशविखेनवसिधीकोदेखताहै॥तबरामजी
कहाकिहेभगवन इहुजीवकलाकुंडलनीनेत्रतासेदेखतेहैं॥अरप्रपीवईहाप
जाइहताहै॥सिधकोंकरदेखतेहै॥ नेत्रहु विना॥तबवसिष्टजीकहाकिहेराम
जोइहुपुरखजबसोताहै॥तबस्वप्नविखेजैसेदेखताहै॥तैसेवुहिनेत्रइंसाथिदेख
ताहै॥अरस्वप्नविखेदेखेजोहैपदार्थ॥सोजाग्रतविखेप्रतक्षनहींहोते॥किसकार
केजोअंतहकरणमलहोताहै॥अरइसजोगघरकाअंतःकरणशुधहोताहै॥वु
हिनेत्रहूकरअंतकुजाअनकीचेष्टादेखताहै॥बहुडिइस्थूलकीभावनाकरताहै
तबइस्थूलहोजाताहै॥अरजिसुसूक्ष्मकीभावनाकरताहै॥तबसूक्षमइंद्रमाहै
अरमधइदेकमलकेइस्थितिहै॥होजाताहै॥ जेउप्राणसेवणकरताहै॥एक
वाईकरजेहै॥एकचंद्रमाहै॥अरमधहिरदेकमलकेइस्थितिहै॥अरमधताकम
लकेउभैरूपकमलहै॥एकभागसूरजकाहै॥सोसूरजहै॥अरअरधभागचंद्रमाहै
अरअगनिरवाभइताहुकोंकहतेहैं॥जोउसनताअरशीतलताहै॥अरअनभीतो
हूनेपवताहै॥चारप्रकारकाहै॥उसनताअरशीतलतादेहुमाताहुकीहै॥अपमा
ग॥अरदीपनमाअग्राहुताहूकोंकहीअंतहै॥इनचारउणअरदक्षिणायणतिसहीका
है॥जोजोगीसरउतरायणकालसूरजकेदेहतिआगताहै॥तबपुनगरभवासनहींहो
ता॥ताकोअरजउदक्षिणायणकालसूरजकेदेहछूटताहै॥तबगरभवासपुनहहो
ताहै॥तबगरभवासपुनहहोताहै॥सोवहुउतरायणइहुहै॥जोजबसूर्जचंद्रमाको
भक्षणकरजाताहै॥अरतहांअमावसहोतीहै॥अरविखवतीसंग्राकतहूताहुको
कहतेहैं॥तोदिनअरराश्रसमानहोताहै॥अरताकालजोगीदेहतिआगकरताहैहै
ताकोसेलहै जोपुनहगरभवासनहींहोता॥अरजोगीआनरूपअनभवअकासमधिए
देरूपकमलकेभडाराहै॥अतिप्रकाशवानउज्जलस्वरनकेसदसअरवाहुकोसूर्ज
हूकहतेहैं॥अरमधिहिरदेकमलकेवहीएवभवाहै॥अरसूर्जकेप्रकाशतेइहुकमलप्र
फुलताहै॥अरजैसेसूर्जसरवीकमलप्रकाशतेइहुकमलप्रफुल्ल॥सूर्जकेप्रफलत
होताहै॥तैसेवहुमहाजोतइकीजोतहै॥अरमहाप्रकाशइतेअधिकप्रकाशहै॥अर
महातेजहूतेअधिकतेजहै॥अरमहागम्यानहूतेअतिदेवग्यानरूपहै॥जबतहांचित
सिधकाइस्थितिरहताहै॥अरतदाकारवृत्तिहोकरतबजोजोसिधकोंचितवताकोंत
दाकारभासै॥अरऐसीसककततोकोंहोइजोइहावेदाहीसपरसदेहविसनकेकोंकरे
अरवतनदशलोकहुकाकौतकइहाहीवेदादेखे॥हेरामजीइहुसर्वकल्पाअभिआ
सकरजोगतेहोतेहैं॥अरऐसेसिद्धकोंपुनहगरभनहीं॥जोउतरायणनामगिआनक
हीअहै॥अरदक्षिणायणधूममारगअगिआनहीकोहै॥सोतासिउदेहछूटताहै
पुनहगरभनिवासहोताहै॥अरअरथमारगदक्षिणायणहै॥अरउरधमारगउतराय
णहै॥अरषटचक्रहीमासहैं॥अरजबसूर्जेचक्रहुरेरथहीकेमोविचारताहै॥त
बचंद्रमाआपसोलीनराखताहै॥अरजबचाहताहै॥उकल्लनकरतीहै॥चंद्रमा
को॥अरजबवहहुडलीनकीआचाहताहै॥तबलीनकरताहै॥जैसेबडवाअग

निजलकोंभसमकरतीहै॥जाइहोइतनहै॥वाअगनिकाअरवहुइभूमइआवर
णाहूकरताहै॥अरकानरदेहहूकोइहीडोलताहै॥जोसूरजअरचंद्रमाताकोंकहती
है॥अरदेहवहीसरबजकुंभिमानहोताहै॥अरसूजेदेहूकूजभासताहै॥जोनिमाकाअ
कारतेइतस्मरगकवनहीभासते॥अरअधिष्टाननहीकहजैहै॥अरदेहआदिकविव
तकवनहैताका॥अरवहीपरमशक्तिकुंडलनीहै॥अरजीवशक्तिजापुराणहै॥ताहूके
अनुभवनामहै॥हेरामजीजोगीकोंजाकुंडलनीतेअणिमादिसिद्धीप्रापतिहोतीहै॥सोअव
णाकर॥जबकुंडलनीरिदेमोआइइस्थितिहोतीहै॥अरअहुइंद्रजोगीकाता
मोहोइ॥जाकोअपनाआपजाणो॥तबताकोजैसीसिधकीइछाहोइतेसहीता
तकालहोताहै॥अरजेउचाहैसमस्तवसहोवेउ॥अथवापस्थूलहोवेउ॥वहूतहो
तनकालहोनेदरूपदेखताहै॥आपकोजोवहुडलनीअणिमकाशरूपहै॥अरविहता
केकणप्रकाशवतनवततहै॥अरअमासस्वरनरूपवतनप्रकाशतेहै॥जैसेमचधूमसा
विततचमकतेहै॥तेसीरेदताकेसोचमकारहोताहै॥अरजैसेकेचलइवरूपहोना
हूअग्रिकेसंजोगतेतेसजोगीजबइस्थितिहोताहै॥अनमवरूपप्रकाशसो॥तबसूर
नेदेहताकाप्रकाशवानअरसोभावानहोताहै॥अरस्त्रीमानशक्तिवानहोताहै॥अ
समवेइरवहुतेसकतिहोकारिमथताचिदाकाशकेलीलाकरतेहै॥अरजिसुपाहैदि
वामअचकेप्रवेसकरे॥वामधमेवमेइसकेइस्थितिहोइवाजलहैमाहूवेनहीं॥वाअ
तिस्तवसमिउसूक्ष्मपदार्थमोप्रवेशकरे॥इहुसर्वशक्तिसोप्रापतिहोतीहै॥हेरा
मजीइहुसजेविस्तारजोगकामेलज्पकोंकहाहै॥अरपरमजोगईहीहै॥अवस्ताण
जोसिद्धगिआनतेहीहोतीहै॥आपारमजोगताहुगिआनकोंकहतेहैं॥जबगिआ
नीतापदसोआनिडिइहोताहै॥तबइहुसिद्धाआइप्रापतिहोतीहै॥हेरामजीआदिस
गेकेकेवलचितरूपहीथा॥तेकोउदेहथी॥तेकोउगणहीथा॥अरनकोउपदार्थ
हीथा॥केवलचिद्रूपजोआतमाआपवहसोइथा॥अरतासिउअथसफुरनाहीआ
सजजीवशक्तिहै॥सोशरीभई॥अरतिसतेभ्रमदेहकाकरा॥अरअतछेदखतभई॥
भ्रमकरकेभ्रमको॥जैसबालकजक्षकाभ्रमदेखताहै॥तैसेप्रकारदेहकाव
लातिसत॥अरवहुइअनेतरूपपदार्थकुलताअपनीमोदेखतभईआ॥अरसभीत
होइकरसूलिअपनाताकोंविसमरणभईआ॥अरजबभानकोंजदेहैंहै॥अपना
जानताहै॥तबसधताकग्रंथकारकेपरतेहै॥जोकोटमूर्जेहोकेप्रशनताकोंअथ
कावहनेहीहोता॥जबकाहूगिआनीकासंगिताकोंहोताहै॥तबगिआनरूपवो
देतेसिउभ्रमभेजकाकानासकरताहै॥अरअपणानिजरूपकोंपावताहै॥अरव
हूदितिआगभ्रमकातोसिउताहै॥अरदेहनामाजडकाअभावकरताहै॥जोता
केवलचिद्रूपमोदेहादिकस्पनभ्रमवनभासतेहैं॥जोमूलरूपताकाअ
तिसूखमहै॥अरनिरंजननिराकारहै॥ताकोंआपजानेकेपुनदेहअरजगत
कोंनहीदेखता॥जैसेबालकमेसीतिजछभावनाकरहोताहै निशाकों॥अरता
कोंकोउप्रकाशदीपकदिखारकाभेताकाद्वूरिकरे॥तैसेगिआनरूपदीपक
सिउअहंकारभ्रमहुरिहोताहै॥अरजबवहीअपनअनभवरूपमोइस्थितिपावै॥अ
रमथिताहूकेसंकल्पअपनाछिडराखे॥तबजैसेचितवैतैसहीहोताहै॥जोइहुसं
कल्परूपजीवचितप्रकाशवाहूकाहैविदिआअरअविदिआउभैरूपतिसहीकेहैं॥
जबविदिआसिउअतिदृढअभ्यासकरताहै॥तबअविद्याकानाशकरतीहै॥अर
सर्वशक्तिवानहोताहै॥जोनिजरूपवीजहैसर्वशक्तइका॥अरअपनाआपहैता
का॥जबताहूसोवासअपणाकरताहै॥तबसभहीशक्तिताकोंनमस्कारकर
तीहै॥अरजउकाहूपरिक्रपालहोइताकोंआपसमानकरताहै॥अगिआन
मूलकापाइकरजीवतअपनेकानासकरताहै॥जैसेतेलसिउरहितदीपक

व॰
म॰
५०

आसनहोजानाहै ॥ अरुमलनरूपहोरहताहै ॥ अरुमलरूपहोरहताहै ॥ अरुअनेदी
अरुमहाम्लखवानहोताहै ॥ हे रामजी इसप्रकारज्ञानवानको ॥ महादिवशाकी
प्रापतिहोतीहै ॥ सोश्रवणकर ॥ जोविस्वदेवअवतारकाहूकावेनतमने
नरविस्खलेताहै ॥ अरुबोधअवतारधारताहै ॥ अरुतीनसिधानआपमोंधारख
ताहै ॥ जुविगिआनजाकोजुपिकहतेहै ॥ अरुसनअरुमापसकोजलिणकहै ॥
रहवाकसवकहूप्रतिकहतेहै ॥ अरुसवकुंताकेवासिधानकोपारकरसिधापा
वतोहै ॥ जोजवतोसिधानरूमालदाकारहोतेहै ॥ तववहूसिधपावतेहै ॥ इहू
समानरूपावोसिधाहोतीहै ॥ जोअवनसजगतिगिआनहै ॥ अरुसनचितव
रसनहीकोकजोखिणभगधिनेहै ॥ तामोवतीआवतेहै ॥ अरुचितकीवृत्त
तामोतदाकारकरोतेसिधोहोतीहै ॥ हेरामजीजिसपुरखकोनिरावनेगिआ
नहोताहै ॥ ताकोसभावकरीसरवशक्तीसिधाकीआइप्रापतिहोतीहै ॥ अरु
जतनहीं ॥ जोकेवलचिदरूपआपकोजानताहै ॥ हेरामपकएहूसिधहै ॥ जोज
वजोगीसरचाहताहै ॥ जोमेदेहकातिआगकरों ॥ अरुअवरदेहमोप्रवेसका
रों ॥ तववहूरेचकप्राणायामकरकेमार्गपवनकेकुंडलनीजोअपनाआपनिक
सिजाताहै ॥ अरुदेहगिरपडताहै ॥ तिसहीअवरदेहमोप्रवेशकरताहै ॥ सिधुअ
रजबचाहताअवरप्रकारकल्पकरिमधिताकेप्रवेसकरना ॥ जोचाहिताहै
जोवहीशरदेहमोप्रवेशकरो ॥ तववाहीमोप्रवेशकरताहै ॥ हेरामजीइहूरेक देह
नअरविंदकरउपजतादीपताहै ॥ अरुजेजोवहूजोगीचाहेमेदेहअपनाकलपयो ॥
तववहूकल्पनोमोजहीतोतकालदेखताहै ॥ जोवहूपरमसवेसकल्पकेहै ॥ अर
जोजोपदार्थकोइछसंकल्पकरताहै ॥ ताहूताहूभानदीसतहै ॥ अरुपदार्थइकोदेख
ताहै ॥ हेरामजीइहूकललामनकीजोवासनाइहि ॥ सर्वसभावकोचितवताहै ॥
अरुतातकालहीतदरूपहोजाताहै ॥ अरुजेजोवाचिदरूपआत्मामोइछअभ्यासक
रे ॥ जोउरखप्रजननजाकोकहतेहै ॥ अरुतदाकारारवोर्घवृत्तको ॥ जोरखास्ताना
सहोताको ॥ अरुसथलाहूकेविवेर ॥ जोजाकोब्रह्मभावनाकहतेहै ॥ सवजोभाइ
अरुसवकिसीकाफलरहीहै ॥ जोताचिदरूपसिउजआपनाआपहैसर्वकाएक
ताहोअरुचितनदाकारहोइ ॥ सोमहामुक्तिजजीवनमक्तिजोवदेहमकिवाहूप
काहूजोअतिहै ॥ अरुनिर्विकल्पसमाथहोताहै ॥ हेरामजीइहूसवकलाजोगकी
अतिविस्तारकरकहीहैमेने ॥ अरुअनिउतमपभावनामावरननभइआहै ॥ अरुप
रेजनइहीहै ॥ जोतिसमहानिर्वाणपदमोइस्थितिहो ॥ अरुआधिविआधदुखकू
कानामहोइ ॥ अरुआत्मब्रह्मकोएकताहोइ ॥ सोफ्तहूउरखुजन्ममादिकउका
नहोवेगा ॥ अरुसभावमोइस्थितिहोइ ॥ जोब्रह्मसतचिदानदरूपहीहै ॥ अरुस
भावमात्रहीहै ॥ जोवाहूसतासिउआपनाआपहै ॥ अरुचिदवपहै ॥ अरुअनभवआ
काशआत्माहै ॥ अरुजेइएकवारतामोतदरूपहोइ ॥ तवसदीवहीतदभाववहै त
वदुखनाकेसबूवनासहोय ॥ अरुपनीसरवशक्तकाहोइ ॥ अरुअविदिआकाम
हूलनासहोइ ॥ हेरामजीवहचूडालानामजोदेवीवतदेवीहै ॥ जववहूअभिआस
जोगअरगिआनकेसिउअभिआसवतहोतभई ॥ तवसरवशक्तिसजगतिहो
करअरुअणमादिकसिद्धताकोप्रापतिहोतभई ॥ तवमधअकासकेउडी ए
कतिसामोराजामेनकरहाथा ॥ अरुतिसनेअवकाशपाइआ ॥ अरुजाइकेम
धअकासकोबहुतस्थानदूसोविचरतभई ॥ अरुमधदेसोकजानभई ॥ अरुम
देवतिअहअरुमधदेतहूकेअसपुरानसहूके अरुमधतारामंडलके ॥ अरुमध
इंद्रलोकके ॥ जानभई ॥ अरुको ततोकादेखकरवहूडिअर्धलोकमे

आवतभई ॥ अरुमधसमंदकेप्रवेशकरकेवहूडिमथअगनिकेप्रवेसक
रतभई ॥ अरुपवनकेपवनरूपहोतभई ॥ अरुमधनागलोककेअरुमध
नागकिनिआकेकीडाकरतभई ॥ अरुमधवनोडोकेअरुमधपर्वतहके
अरुमधभूतहकेअरुमधअपलोके ॥ अरुमधत्रिलोकीकेविचरतभई
अरुलीलाकरतभई ॥ अरुएककरिखिणभोतिसीअस्थानआवतभई ॥ जहारा
जासेनकररहाथा ॥ अरुसमीपराजाकेसनककिरही ॥ जेसेभ्रमरीकम
लनोकेमोथिसेनकरतीहै ॥ अरुराजाताकोनजानतभइआ ॥ जोरागीके
हूगईथी ॥ अरुवडिवनिसपरनहोतभई ॥ अरुप्रातःकालभइआ ॥ अरुरा
जासनानमालामेरइककरस्नानकरतभइआ ॥ अरुप्रवाहकसजोवेदउक्त
है ॥ सोकरतभइआ ॥ अरुरागीहूप्रवाहकमेकरतभई ॥ अरुराजाकोसने
स्नेनउपदेशततकाकीआकेरे ॥ जेसेपितापुत्रकोअतिमिष्टवाणिकरउ
पदेसकरेहै ॥ अरुपंडितहूकोकहतभई ॥ जोराजाकोतुमउपदेसकर
हू ॥ जोइहूजगतस्वप्नवतभ्रमहै ॥ अरुदीरघरोगहै ॥ अरुदुखहूकाकारणहै
अरुआत्मज्ञानरोगवधतेनष्टहोताहै ॥ अरुतोरइसदुखकारोगवधकोउनहीं
ऐसेकरआपराजाकोउपदेसकरे ॥ अरुपंडितासिउभीउपदेसकरावे ॥
अरुराजागिआनकोनपावतभइआ ॥ अरुमधविदेहपताहीकेरहा ॥ अरुआ
त्मापदनाविश्रामनपावतभइआ ॥ जोआपनाआपहै ॥ अरुकेवलवि
रूपहै ॥ अरुआत्माहै ॥ रामउवाच ॥ हेमहामतिजीवहिरणीतोसर्व
शक्तिसंपनभइथी ॥ जोजोगकलामोहूअतिचतुरअरुगिआनकलामो
तदृचितहोतभइथी ॥ अरुराजाहूअतिसदुनथावाकोतिकाउपदेशद्रिढ
किनहोतभएआ ॥ अरुराणीहूताको ॥ अतिप्रीतिकरउपदेशकोआके
वहूकारणकिआथा ॥ जोवाहूइस्थितिनहोतभइआ ॥ अरुपाणपदमो ॥
वसिष्टउवाच ॥ हेमानदजेसेआकिइमोतीमे ॥ तागाप्रवेशनहीकरता ॥ ते
सेउपदेशचूडालाकाताकोनबोधतभइआ ॥ जवलगआपविचारनकरे
अरुदृढअभ्यासतोमानहोइ ॥ ताकोतवलगब्रह्माहूउपदेसुकरेतउभी
ताकोनचपे ॥ काहूतेजोआत्माआपहीकरजानआजाताहै ॥ अरुआप
हीआपकोदेखताहै ॥ अरुविवेकाहूमनआदिकरईडीकानहीं ॥ अरुअपनाआ
पहूसर्वकतवगमजोकहाकिहेभगवनजोअपनेआपकरेदेखीअनिहै ॥ त
वगुरशास्त्रउपदेशाकिमनिमनकरतेहै ॥ तववसिष्टजीकहाकिहेरामजीगुरु
अरुशास्त्रजाणाइदेतेहै ॥ जोतेरासरूपआत्माहै ॥ परदेकेकेनहीदेखावते ॥ अ
आपको
रविचारनेत्रहूसिउआपहीदेखताहै ॥ अरुविचारसिउरहूतताकोनहीदेखसको
ता ॥ जेसेकाहूपुरखकोशाशाकोउदेखावताहै ॥ सवरवजोअमकेस्थानमोगृद
है ॥ देखजोवहिहूसविखहोताहै ॥ तउदेखताहै ॥ अरुजिसेवहूअथहाइवामदृ
ष्टीहोइतेउदेखनहीसक्ता ॥ तेसेगुरुअरुशास्त्ररूपआत्माकावरननकरतेहै ॥ अर
वाकोउलखावतेहै जववहिविचारनेत्रहूसिउदेखताहै ॥ तवकहताहू ॥ जोमे
देखाहै ॥ अरुअवकाहूकोदिखावणाजोगहोताहै ॥ हेरामजीआत्माकोहूई
शीकाविखेनहीं ॥ जोअपनाआपसलरूपहै ॥ अरुईडीकल्पतहैअरजडोकहै
जोतमहूउपदेषाईडीअरुकरकहतेहो ॥ तउतुसमोहूहीअहूकोउविस्मरणके
र ॥ जोमूलअपनाअफआस ॥ अरुअभावविनइडीआकेतेअभावेतासनहोवेगा
हेरामजोइसपरएकरतिहासकिरातकाहै ॥ सोअवणकर ॥ एककिरातथा

व॰ म॰ ५९

51

गेमणामधनग्रग्रनाजभीबहुतथा॥ अरुकिपणभीथा॥ जोकिसकौंदेताक
ढुतथा॥ अरुअवरधनकीइच्छाकरतारहै॥ जोकिसप्रकारसेंवताईविनाम
णप्रापतिहोवे॥ सदाईहीवाछाकरे॥ इसवाछाकरकेंएकसमेंचवेतवाहर
निकसिआ॥ अरुदृष्टीकीरोदेखताजावे॥ तवएकउस्थानथा॥ तहांग्रा
मस्त्रवभूलपडाथा॥ तिसविखेएककौडीदिष्टपडी॥ तवकौडीकोउठाईलि
आ॥ अरुवहडिदेखणेलागा॥ मतिकहुअवरभीनिकसे॥ तवइसरीको
डीनिकसीइसप्रकारढुढतेहूएदिनवैवितीतहुई॥ तवचारकौडीनिक
सी॥ वहुडिअष्टकौडीनिकसी॥ जवदिनत्रेअवरवितीतभएढुढते॥ तव
चितामनप्राप्टेदसीचंद्रमाकीनिआई॥ तवमणकौलिकरउठिआवितास
इआ॥ अरुवेहुदुखकौप्रापतिभइआ॥ तेमहीहेरामजीगुरुअरुशास्त्रक
रतेत्वातमसिअहंब्रह्मास्मिपावणासोकौडीआडेकाखोजणाहे॥ अरुचिता
मणआत्माहे॥ परंतजेसेकौडीआडेकेखोजणेकरचितामणपाई॥ तेसे
खोजविनानहीपाईता॥ धनकरकेअरुतपकरकेअरुकरमककेआत्मापाईता
नही॥ केवलअपनेआपकरपाइताहे॥ हेरामजीराजाशिखरधजजोथासो
छडालाकेपासउठकरइस्तानकौगमनकीआ॥ तवराजाकेमनविखेवेरा
गआइउपजिआ॥ जोइहुससारमिथ्याहे॥ वहुतभोगभीहमभोगेतउभीवि
देविखेसातनभई॥ अरुइनभोगहकापरणामदुखदाइकहे॥ तवमनविखे
ऐसाविचारउपजिआ॥ तवराजेगऊआअरुपृथिवीअरुसर्वनअरुमदरअवरस
मग्रीवहुतदानकरी॥ जेतेकहुहसजेकपदार्थहैसोदानकीए॥ देवतिअरुपि
तरकेअरवस्त्रणहुकौदीआ॥ अरुवरागीवहुअथितहुकौदीआ॥ जेसजेसोकि
सीकाअधिकारदेखिआतेसेदीआ॥ अरुराणीभीवहुतगणहुमंत्रीअहुकौकहा
जोराजाकौतमहीउपदेशकीआकरउ॥ जोइहुभोगमिथ्याहे॥ अरुइनवि
खेसुखकछुनही॥ अरुआत्मसुखवडाहे॥ जिससुखकेपाइतेजन्मअरुमि
तेतमक्तिहोवीताहे॥ इसप्रकाररराजाब्रह्मणहुतेसवकनकरे॥ अरुअपनेमन
विखेभीवैरागउपजाथा॥ तवराजाकहेकिसप्रकारइससमारकेउखतेसेरह
तहोवउ॥ इससेसावडादुखहे॥ इसविखसदाजन्ममरणाहे॥ तवराजेकम
नविखेइपजीजोमेतीरथहुकौजावउ॥ अरुसनानकरौ॥ तवराजातीरथ
हुकौचला॥ तवइस्तानभीकरे॥ इसप्रकारदेवताअरुतीर्थअरुसिधहुकेद
र्शनकीए॥ अरवहुतइस्नानकीए॥ अरुघरकौफिरिआइआ॥ तवआइकर
ऐकेसमेराणसाथिसेनकीआ॥ अरुराणीकौकहाकिहेअगअवमेवन
कौजाताहो॥ तपकरणेकेनमित॥ जोइहुभोगमझकौदुखदाईभासतेहे
अरुराजभीवनकीनिआईउजाडभासताहे॥ तांतेमेतपकेनमितवनकौ
जाताहो॥ अरुइहुभोगवहुतकालपरजतइसभोगतेहे॥ पराइनविखेसु
खनदिशटीआइआ॥ तांतेमेरताईअरुकावणनही॥ मेवनकौजाताहो॥
तवराणीकहाकेहेराजनअवतेरोकवनअवस्थाहे॥ जोतेवनकौजाताहे
अवतेतोहमराजभोगहे॥ जेसवसंतरतविखेकमलसोभापावतेहे॥ अरुवे
कालविखेसोभानहीपावते॥ तेसहमभीविषहोवहिगे॥ तवजनकौजा
वहि॥ अरुवनहीविखेसोभापावहिगे॥ जेसवनकेफूलसर्देतहोवहिग॥
तेसहुमावेकसर्वेतहोवहिगे॥ तवशोभापावहिगे॥ अवतेराजकरेहि
हेरामजीजवइसप्रकाररराणीकहा॥ तवराजेकाचितवैरागविखेहोवहा॥ रा॰

राणीकाकहिणाचितमोनलिआवतभइआ॥ अरुवैरागकेकैकहूणेलागा॥
हेराणीअवमेवेनाईग्रहकावणनही॥ अवराजेमेवनाईढीकालागा॥ मेवे
नाईवनकोगइआजाणा॥ जोढहिराईमेराईहानहीहोता॥ जवतेकहेहोह
मतेगीदहूलकरतेथे॥ पाछेकवनकरेगा॥ तवइसथाहमारीदहूलकरेगी॥ अ
खवनकीवीथीआइसीहोवहिगीआ॥ अरुअसिगइकेवालकहमारेपुत्रहोवहि
ते॥ विवकहुकेपत्रहमारेवस्त्रहोवहिगे॥ अरफूलहुकेगुच्छेहमारेभूखणहे
प्रेमकहाराजेतवआगराव्रकासमाभइआ॥ सूरजाउहातेचला॥ तवराणी
भीपीछेअरुमेलाभीपीछेचलीसहूने॥ वहीभेआनकरात्रविखेचलतवेका
दिकेवीवही॥ जाइकरइस्थितिभईतवराजाअरुराणीसोई॥ जेसभउराअरुभउ
रामावतीहे॥ सनाअरमहेलीआसभसोगई॥ जोआईथेसोसूस्मनिद्राकर
तरहोगई॥ जेसपथरकौशिलाजडहोतीहे॥ जवअर्धरात्रवितीतभई॥ तवराजा
जागिआअरुदेखिआजोसभसोइगईहे॥ तवसिजातेउठिकरराणीकुवस्त्रप
करायकरकेहाथिविखेखडगलकरतेनकसिआ॥ अरुसभलोगहुकौलच
ताआईआ॥ तवचढवाजिकौटिकोपरआइआनहा॥ अर्धमानखजागतेद
ले॥ अरुअर्धसोईहुईथी॥ तवदीनहराजाकौटदेखिआ॥ तवराजेकहाहेइआरण
लानमेहोहीवदेवहो॥ अरुसवीरजथाआकौजाताहो॥ एकलाही॥ तवराजा
तीछणवेगकरचलिआआइआ॥ अरुवाहुवनिकसिकरिकहोहुराजलछमी
तुमकौनमस्कारहे॥ अवमेवनकोचलिआहो॥ तवएकवनविखेआइआ॥ जहा
सिंघअरुसर्पअवरभेआनकजीवहे॥ तिसकेसवदेसलणेअरुआगेचलिआगईआति
सेतआगेवलाआईआ॥ तिसकौभीलीचगईआ॥ जवआदपहरराजाचलिआग
इआ॥ तवएकदराअरुइस्थितिभएआ॥ जवसूर्जउदहूआतवराजाइस्नान
करकेसंधिआआदिककरमकीए॥ अरुविछहकेफलनेकरभछणकीए॥ त
वआगेचलिआसतपीछेकोईअदकावे॥ इसतमितनीदनाचलिआ॥ वडेपहा
डुआवनदीआअवेलगाजाइलचकरदिनदआठशपरजंतचलिआआइआ॥ जव
मंदराचलपरवतकेनिकटिगइआ॥ तवएकवनविखेइस्थितिजाइहूआ॥ त
हापत्रलकरवासहुकीकुटीवनाई॥ अरुतहाइस्थितिभइआ॥ तवप्रातका
लहोई॥ तवइस्नानकरकेपहूपथरजंतजापकरे॥ वहुरेदेवताकेपूजाअनगि
नफूलचुणे॥ अरइतीइस्नानकरकेपहूपाहूविश्रमवितीतकरे॥ जवतीसरापहू
रिहोवे॥ तवफलभोजनकरे॥ अरचत्र्थेपहुरसोवहुडिसंधिआजापकरे॥ इस
प्रकारदिनरात्रवितीतकरे॥ कछककालराजेकौसेनकरेनहीअवरजापसोवि
तीतकरे॥ तववसिष्टजीकहाहेरामजीराजाकीतौइहुअवस्थाभई॥ अवराणी
कीअवस्थाश्रवणकर॥ अरुअर्धरात्रकेपीछेराणीजागी॥ तवकिआदेख
जोराजाइहानही॥ वनिकौनिकसिगइआहे॥ अरुसिजाखालीपडीहे॥ तव
राणीसहेलीआकौजागाईआ॥ अरुकहूणलागीजोवडाकष्टहे॥ जोराजानि
कसिगइआहे॥ अरुवडेभेआनकवनकौजावेगा॥ ऐसेकहिकरमनविखे
इस्थितिहोइकरप्रकाशकौगइ॥ विचारकीआजोराजाकोदेखिआचाहीए
तवजोगविखेइस्थितहोइकरप्रकाशकौगई॥ प्रकाशकीनिआईदेहकौअंत
रध्यानककैजेसेजोगपारीभवानीउडतीहे॥ तेसेगई॥ अरुप्रकाशविखेइस्थि
तिहूकरदेखिआजोराजाचलिआजाताहे॥ तवराणीकेमनविखेआई॥ जोइ
सकाभारवारोकौ॥ वहुडिएकखिणमात्रइस्थितिहोइकरभविषतकौ
विचारणेलागी॥ जोराजाअरुमेरासंजोगकेसेहोहै॥ तवदेखतभईजोराणी

ताहै ॥ अरु सुखकिउंकरि होताहै ॥ अरु सुख दुखका अभावकिउंकरि होता
है ॥ तबदेवपुत्र कहताहै राजन जब इह जीवकौं इसलनीप्राक्ति विखै अस्थित हो
ताहै ॥ अरु ड्रिष्टाजहै अंतःकरणचतुष्टै अरु इंद्री आग्रदेह तिनविखै अ
भिमानकरिकै सुखीहोताहै ॥ इनकीदुखसाधि दुखीहोताहै ॥ अरु इनको
साधि सुखीहोताहै ॥ जैसे जैसे अग्रे प्रतिबिंबहोताहै ॥ तैसा तैसा सुखदु
खभासताहै ॥ जैसे जल सुधि मणिहै ॥ तिसविखे प्रतिबिंबपडताहै ॥ ते
सारंगभासताहै ॥ अरु जबगिआनरूपपटकरिकै आगिआवरनहोताहै ॥ तब
प्रतिबिंब नहीपडता गिआन कहीऐ जो देहके अभिमानते रहितहोव
णा ॥ जोतदेहहै अरु तिसमेइं नकरकछु करताहा ॥ जब ऐसे सति अस्थिहोवै ॥ त
बदुखसुखका भाननहोवै ॥ काहेते जो समसार दुखसुखइसकी भावना वि
खेहै ॥ जबबासनाते रहितहोवैगा ॥ तबदुखभी समनहोजावहिगे ॥ जैसे
ब्रिछजलताहै ॥ तबपत्रफूलफलदगधहोजाते है ॥ तैसे अगिआनरूपवा
सनाके दगधहूएते दुखसमभनिवर्तहोजावहिगे ॥ ऐसे स्रवणकरिकै राजे क
हा ॥ हे भगवन तुमारे वचन स्रवणकरते हूए मेरेताईं त्रिपति नहीहोती ॥ ताते
कहु जो तुमारी उत्पत्ति किसेभई है ॥ तबदेवपुत्र कहताहै राजन जो कोप्रसन
करताहै ॥ तबवहु जोहै तिसका निरादर नहीकरते ॥ ताते तू पूछताहै सो क
हताहौ ॥ हे राजरिखि इह जो धीरबधा सोनारद मुनके पास एक मटकी पडी थी
तिस मटकी विखे पारा था ॥ अरु केसी मटकी थी ॥ जो बनते उजल बसनता का तिस
का ॥ तिसविखे वीरजपाइआ ॥ अरु ओह उसके रूपपाइआ ॥ इह पसाथ मटकीको
हरणकीआ ॥ अरु स्त्री रजको एककोस्का गाकोकीआ ॥ अरु मैत्रकोउचारकीआ अ
रु आहूतीकीए ॥ भलीप्रकार पूजनकीआ ॥ जबएकमास बिलीनभइआ ॥ त
बनारदका पिता जोहै ब्रहमा जो तिसके पासले गइआ ॥ अरु जाइ करनमस्का
रकीआ ॥ तब बालककौ पिता जो गृदविखबैठाइआ ॥ अरु आसीरवादकीआ
जो तूसर्वगहोवहिगा ॥ अरु सीघ्रही अपने सरूपको प्रापतिहोवैगा ॥ अर
कुंभते जो उपजाहै जोबालक सोबालकका नाम भी कुंभज रखिआ ॥ सो कुंभ सु
वणमैहै ॥ नारदका पुत्रहौ ॥ अरु ब्रहमे का पोत्राहौं ॥ अरु सरसती मेरी माताहै
अरु गाइत्री सावित्री मेरी मासीहै ॥ मेरेताई सरबवागिआनी द्रिष्टआवतीहै ॥ तु
मारी बृतांत कहे मे जानताहौ ॥ तब कुंभ कहताहै रामजी जनजेसे तू पूछताभए
आहै सो मैकहताहै ॥ अब तू सकहु जो तू कवनहै ॥ अरु ईहा कर्म किआ करता
है ॥ अरु एहा किसनिमित आएआहै ॥ तबराजे कहाहै देवपुत्र आजमेबड
डे भागोदइएहै ॥ जोतुमारा दर्शन हूआहै ॥ तुमारा दर्शन बडे भागाकरि हो
ताहै ॥ जगत अरुतपरूते भीसृष्टहै ॥ तुमारा दर्शन ॥ तबदेवपुत्र कहाकि
हे राजन तू अपना ब्रितांत कहु जो तू कवनहै ॥ तबराजे कहाहै देवपुत्र मेरा
नाहौं ॥ अरु सिखरधुज मेरानामहै ॥ अरु राजका मैने तिआग कीआहै ॥ जो
मेराभवसमुंद मेरेताइ दुखदेष्टआइआहै ॥ तिसके भैकर राजका तिआगकी
आहै ॥ बांधवा बनिता मेरा सरविखे दिष्टआवताहै ॥ ताते राजका तिआगकरिकै हौ
तपकरणेलागाहौं ॥ तमत्रिकाल गिआनरखताहौ ॥ अरु जानतेहो ॥
तथापि तुमारे पूछणेकरि कछु कहाचाहीऐ ॥ अरु त्रिकालसंध्याकरता
हौं मैं ॥ अरु जपजाप करताहौ मैं ॥ तऊभी मेरेताईं सांत नहीप्रापतिभई ॥ मे
तीर्थ बहुत फिराहौ ॥ देसा बहुत अरु बहुत इस्थान फिराहौ ॥ अब इहु सबविखे आन

वेदाहौ ॥ तऊभी मेरेताईं सांतनहीप्रापतिभई ॥ ताते जिसकरिकै दुखमेरा निवर्त
होइ ॥ अरु सांति प्रापति होइ सो कहहु ॥ तबदेवपुत्र कहा ॥ हे राजरिखि तैंने रा
जका त्यागकीआहै ॥ अरु बहुड़ि तपरूपी टोए विखे आनपडाहै ॥ इहु कि
आकीआहै तैंने ॥ जैसे प्रिथवीका क्रिम बहुड़ि प्रिथवी विखे बडताहै ॥ तैसे तैं
एकटोएकौ तिआगकरि बहुडि उसटोएविखे पडाहै ॥ अरु जिसनिमित राजको
त्यागकीआ तिसकौ नजानतभएआ ॥ अरु एहा आएकरि एकलाही राखी
अरु स्त्री राखी ॥ अरु फलगारखे ॥ इलकरते नमानतभए ॥ ताते अपणा
सरूपविखे मायाजनबस सरूपविखेजागागा ॥ तबदुखसमभनिवर्तहोजावहिगे
अरु इसगोपर एकसमे ब्रहमाजी तेसमेतकीआथामे ॥ जोही पितामाजीकर
मसिष्टहैं ॥ अग्धवागिआनसिष्टहै ॥ जोमूरखकौ किआकरतवेहै ॥ तबपिता
माजी कहा गिआनके पाएते दुखकौ नहीरहता ॥ अरु सबअनंदहूंका अनंद
गिआनहै ॥ जिसते आगे अनंदकौ नही ॥ अरु अगिआनीकौ कर्म स्रेष्टहै ॥
काहेते जोपापकर्मकरहिगे ॥ तबनरककौ प्रापतिहोवहिगे ॥ ताते तप
कलो अरु दानादिक करतेते सरूपकी प्रापति नहीहोती ॥ तऊभी अगिआनी
कौ स्रेष्टहै ॥ जोनरकभोगणते सुरगभोगणा स्रेष्टहै ॥ जैसे कमलते पटका
वस्त्र स्रेष्टहै परंतु पटकावस्त्र नपाईऐ तबकमलभी भलाहै ॥ तैसे गिआन
पटके वस्त्रकी निआईहै ॥ अरु तपकर्म कमलकी निआईहै ॥ कर्मीकर सांतिना
हीप्राप्तिहोती ॥ ताते इहुराजालकाहै कोई सदाईविखेपडेहै ॥ आगे राजावासी
ष्या ॥ अब बनिवासी भएआहै ॥ ताते इहु किआ कीआहै जो अजानहीविखे
ठाढारहा ॥ ताते इहु रखताके वसिपडाहै ॥ जबलग मनतेताईं किआभानहोला
है ॥ जोइहु मेकरता ॥ तबलग परमादहै ॥ इसकर इहु दुख इहुकी निवर्त नहोवेगी
ताते निवासहोइकरि अपणासरूपविखेजागा ॥ अनिवासहोवणा इहु मतिकेहै
अरु वासनासहत ही बंधनहै ॥ अरु पुरखप्रजतनरहीहै ॥ जो निरवासहोवे
णा ॥ अरु जबलग वासनासहतहै ॥ तबलग अगिआनी ॥ तबलग चित
निर्वासहोवे तबगयाहै ॥ निर्वासना कहीऐ ॥ सदा गुरकी भावनाकरनी
अरु गुरु कहीऐ आतमसरूपहै ॥ तिसकौ जाणकरि बहुड़ि इछाकौ नरहे ॥ केव
लचिनमात्र पदविखे इस्थितिहोवणा इसका नाम जोगहै ॥ जो जानणा जोग
ष्यामोजाणिआ ॥ तबअरु वासना नहीरहती ॥ केवल सवका आपही होताहै
हे राजन तैंने अपने सरूपकौ जानना था ॥ तउ राजजालहु विख किसनिमित
पराहै ॥ आतमगिआन बिना और अनेक जतनकरै ॥ तऊभी सांत नहोवेगी ॥ जो
मथनते बहुतीब्रिछ सोनतहू पहूंतोहै ॥ अरु जब उत्थान होताहै ॥ तबसवाभको
प्रापतिहोताहै ॥ जबवासना निवर्तहोवेगी ॥ तबकेवल शांतपदकौ प्रापति
होवेगा ॥ अरु ख्याभ कौ नरहेगा ॥ जबऐसे देवपुत्र कहा ॥ तबसिखरधुजबोले
हे भगवन तुमही मेरे पितामाता हो ॥ अरु तुमही गुरु हो ॥ अरु तुमही क्रितार्थ करनेवालेहो
अब मैं वासनाकरिकै बडा दुखपाइआहै ॥ जैसे कोई ब्रिछ रोइ अरु तिसके फलफु
लपत्रता समसमूह करजावहि ॥ अरु एकला हुइ रहिजाताहै ॥ तैसेही गिआनबिना
मैं दुखी होरहाहौं ॥ ताते क्रिपाकरिकै मेरेताईं सांतकौ प्रापतिकरहु ॥ तबदेव
पुत्र कहाहै राजन तैंने त्यागकरिकै संतकूं कामसगकरनाथा ॥ अरु संतनकेपा
स इहु प्रस्न करनाथा ॥ हे भगवन बंध किआहै ॥ अरु मुक्ति किआहै ॥ अव
मैं किआहौं अरु इहु संसार किआहै ॥ अरु संसारकी उत्पत्ति किसतेहोतीहै ॥

वं॰ म॰ ५४

54

अरसंसारलीनकैसेहोताहै ॥ तेतेइहकिआकीआहे ॥ जोसंतइविनासंईवे
नकोआइसेवनकीआहे ॥ अरुजेसंतजनइकोप्रापतिहोइकरनिर्वासीहो
इ ॥ ऐसेब्रह्मादिकइंभोकह्याहै ॥ जोजवनिर्वासहोताहै ॥ तवसखीहोता
है ॥ तवराजेकहाहेभगवनतमहीसंतहोइ ॥ अरतमहीमेरेगुरहो ॥ अरत
महीमेरेपिताहो ॥ जिसप्रकारमेरेतांईशांतिप्रापतिहोवेसोकहोतवकुंभवो
लिआ ॥ हेराजनतोतेमेउपदेशकरताहो ॥ जोतैंरिदेविखेधारलेवे ॥ अरजेहो
तैरिदेविखेधारेनही ॥ तवमेरेकहणेकरिकिआहोताहै ॥ जेसेदासपरकी
आहोताहै ॥ अरश्रवणभीपडाकरताहै तउभीअपणेकारसभावकोनहीछो
डता ॥ तेसेहीजोतूंकोउईकीनिआईहोवेतउमेरेकहणेकाकिआपएराजनहै
अरजउतोतापंछीहोताहै ॥ तिसकोजोकहीताहै ॥ ग्रहणकरलेताहै ॥ तो
तेतोताआदिकपंछीकीनिआईहोइ ॥ तवशिखरध्वजकहाहेभगवनजो
तमआगिआकरोगसोमेकरउंगा ॥ जेसेप्रासुवेदकेकहेकमेकरताहो ॥ ते
सेहीतमाराकहणाकरउंगा ॥ इहमेरानेमहै ॥ जोतमआगिआकरउगे
सोमेकरोंगा ॥ तवदेवपुत्रकहाहेराजनप्रिथमतोतूंऐसेनिसचेकरजोमे
राकल्याणइनेवचनोंसेहोवेगा ॥ अरऐसेजाणजोजेसेपुत्रकोपिताकहताहै ॥ सो
सभकरताहै ॥ तेसहीजोमेरेतांईकहउंगे ॥ सोसभहीकहउंगे ॥ अरतेराक
ल्याणहोवेगा ॥ तांतेनिसचेजाणजोइनवचनोंसेमेराकल्याणहोवेगा ॥
तांतेएकपविआनजोआगेवितीतभइआहे ॥ सोश्रवणकर ॥ एकपंडितथा
सधअरसभगुणइंकरसंपनथा ॥ अरसदाचिंतामणपावणेकीचिंताकरे ॥
तवकेताकालवितीतभइआ ॥ तवजेसेचंद्रमाकाप्रकाशहै ॥ तेसप्रकाश
वानचिंतामणआइप्रापतिभए ॥ जवपंडितकेमनविखेविचारहूआजोइ
हचिंतामणहै ॥ अथवाअउरकछहै ॥ जेउचिंतामणहोवेतवमेउठाइले
वउ ॥ अरजोचिंतामनहोवेतोकिसनमितएकउं ॥ बहुडकेहएकउलता
हो ॥ मणहीहोवेगी ॥ अरजोमनहोवेतो ॥ किआएकउं ॥ इहमननही ॥
काहेतेजोमणवडेजतनहोकरप्रापतिहोतीहै ॥ मेरेतांईसखेनकिप्राप
तिहोवणीहै ॥ इसतेजाणिताहैजोमणनही ॥ जोसखीनप्रापतिहोतीहुई
वेतोसभलोकधनीहोजावेहे ॥ परसखेनहीपाईती ॥ इसतेजाणिताहै ॥ जो
चिंतामणनही ॥ जवऐसेसंकल्पविकल्पपंडितकरणेलागा ॥ अरइसेक
रवितनतिसकोआवणभइआतवमणछपनहोगई ॥ काहेतेजोसिथीहै ॥ अरव
तिनकामानआदरनेकरीथे ॥ अरउसकाजतननकरीथे ॥ तवत्यागजातीहै ॥ ते
वसरापदेतीहै ॥ जववेहचिंतामणअंतरधिआनहोगई ॥ तवमूरखजोपं
डितथासोवडेदुखकोप्रापतिभइआ ॥ जोचिंतामणमेरेपासतेनिवतेहोग
ई ॥ अरवहुडिजतनलागकरणे ॥ जववहुडिउपाइकीआ ॥ तवकचकी
मणतिसकेपासिआइपडी ॥ किसेहासकरइसकेआगेडारदई ॥ तिसको
इहदेखतभइआ ॥ उसकोइहदेखकरकहणेलागा ॥ जोइहहीचिंतामणहै
तवउसकोउठालीआ ॥ लेकरअपणेघरआइआ ॥ अरवधकेवलउसको
चिंतामणजानतभए ॥ अरजेताकछअपणाधनथासोलुटाइदेआ
अरवकुंवकात्यागकीआ ॥ अरकहणेलागाजोमेरेतांईचिंतामणप्राप
तिभईहै ॥ अववकुंदेवसाधेमराकिआपएराजनहै ॥ अरचवेतनिकसिकरवन
कोगमनकीआ ॥ अरवनविखेकचकीमनसाधिवडेदुखकोप्रापतिभइ

आ ॥ जोकंचकीमनसाधिएसोजनसिद्धकलनभएआ ॥ तेसेहीहेराजनजो
विदिमानवसतप्रापतिहोइतिसकोमूरखत्यागतेहैं ॥ अरतिसकामकात
मनहीजानते ॥ अरलहीपावते ॥ इतिश्रीनिर्वाणप्रकरणेचिंतामणिप्रि ॥ राम
तोलवनेनेकामसर्गः ५८ ॥

देवपुत्रोवाच॥पुनःएकअपरदृष्टांतकहिताहों॥सोतूंश्रवणकर॥मेंअचलपर्वत
केवनविषेएकहस्तीरहिताथा॥सोसर्वहस्तीयोंकाराजाथा॥अरबडाबलवानथा॥ति
सहस्तीकोंमहावतछलकरकेबांधा॥अरमहावतआपनिकटजोवृक्षथातिसपरच
ढवैठा॥सोकिसनिमित्तबैठा॥जोहस्तीकेऊपरचढुबैठउंगाकर॥अरहस्तीसंगलों
करमहाकष्टकोंप्राप्तभया॥कैसेदुखकोंप्राप्तभया॥जोवाणीकरकहानगलोंकों
हींजाता॥तबहस्तीकेमनविषेविचारउत्पन्नभया॥जोमैंबलसाथसंगलोंकोंतोडो
नहींतोंकबछूटोंगा॥तिनसंगलोंकोंबलकरकेतोडदीया॥अरमहावतजोवृक्षप
रबैठाथासोगिरपडा॥हस्तीकेचरणपरआइपडा॥अरभैकोंप्राप्तभया॥जबइसप्रका
रमहावतगिरिया॥तबहस्तीविचारकीया॥जोइहमृतकसमानहै॥तातेमयेकाक्या
मारणाहै॥यदापिमेराशत्रुभीहै॥तोभीमैंनहींमारता॥इसकेमारनेकरमेराक्यापुरु
षार्थसिद्धहोताहै॥तातेमैंनहींमारता॥हेराजन्जबअैसेदयाकरकेहस्तीवनकोंफि
रहीचलिया॥संगलोंकोंतोडकेवनकोंगया॥सोहस्तीगयादेखकरमहावतजोपडा
थासोउठबैठा॥अरआपणेस्वभावविषेस्थितभया॥वहउहस्तीकेपाछेचलिया॥अर
हस्तीकोंदोजलीया॥अरदेखियाजोवृक्षकेतलेसोयापडाहै॥जैसेसंग्रामकोंजीतक
रसर्मोनिश्चिंतसोताहै॥तैसेनिश्चिंतहस्तीसोयापडादेखिया॥जोसंगलोंकोंतोडकर
आइसोयाहै॥तबमहावतविचारकीया॥जोइसकोंवशकरीए॥सोइहीउपाइकरणेला
गा॥जोबलेकेचौफेरखाईकरी॥अरखाईकेऊपरकछुत्रिणकाघासपाया॥अरनीचावा
ईकरी॥तबएकसमयहस्तीउठकरजावणेलागा॥अरखाईकेवीचगिरपडा॥तबमहा
वतहस्तीकेनिकटआया॥अरसंगलोंसाथबांधा॥तबहस्तीकोंमहावतनेवशकीया॥सो
अबतकपराइदुखपावताहै॥काहेतेदुखपावताहै॥जोभविष्यतकाविचारनकीया॥अज्ञानी
कोंभविष्यतकाविचारनहीं॥इसीतेदुखपावताहै॥इहवर्तमानकालविषेविचारनहीं
कर्त्ता॥जोआगेक्याहोवणाहै॥इसीतेअज्ञानीहस्तीकोंदुखप्राप्तभया॥हेराजन्जोइपाख्या
नतेरेतांईश्रवणकराईहै॥एकमणिकाअरएकहस्तीका॥तिसकोंजबसमझेगा॥तबआ
गेउपदेशकरोंगा॥इतिश्रीतिलकाप्रकरणेहस्तीपाख्यानवर्णनंनामसर्गः॥७०॥देवपुत्रो
वाच॥जबदेवपुत्रअैसेकहा॥तबराजेकहाहेदेवपुत्र॥इहजोदोनोपाख्यानतुमोंकहे
मणिअरहस्तीकेसोतुमजानतेहो॥मैंतोनहींसमझताकछु॥तातेखोलकरतुमकहो॥त
बदेवपुत्रकहा॥हेराजनतूंपाहुकेतोअर्थविषेवडतत्त्वतरहैं॥सभअर्थकातूंजाताहै॥प
रस्वरूपविषेतेरेतांईस्थितनहीं॥जैसेअर्ककापाविषेपर्वतनहींठहरता॥तातेजोवचनमेंक
हिताहों॥सोबुद्धिकरग्रहणकर॥जोहस्तीक्याहै॥अरचिंतामणिक्याहै॥प्रथमसर्वत्यागजो
तुमहाकीयाथा॥सोचिंतामणिथी॥तिसकेनिकटतूंप्राप्तभयाथा॥अरसुखीभयाथा॥ज
बतिसकोंतूंआपणीपासराखता॥तबदुखसर्वनिवृत्तहोइजाते॥सोमणिकातैंनेअनाद
रकीया॥जोतिसकोंत्यागिया॥सोकचकीमणितपक्रियाकोंप्राप्तभया॥परदरिद्रीहोरहा
हेराजन्सर्वत्यागरूपचिंतामणिथी॥अरइसक्रियाकाआरंभकचकीमणिहै॥सोतैंने
ग्रहणकरी॥तातेदरिद्रकीनिवृत्तनभई॥तातेतूंदुखीहोरहा॥त्यागरूपचिंतामणिकाआवा
हनथा॥अवरक्रियाआरंभतिसकाअनादरहै॥हेराजन्सर्वत्यागतैंनेनहींकीया॥कीया
भीथापरंतुकछुकरहाभीथा॥तिसकेरहनेकरवडडविस्तारकोंप्राप्तभया॥जैसेवदल
वायुकरकेखीणहोइजाताहै॥अरसमहिजाताहै॥अरपवनकेरहनेतेवडुडविस्तारकों
पावताहै॥अरसर्पकेचुपाइलेताहै॥सोवदलक्याहै॥अरसर्पक्याहै॥अरथोडारहणाक्या
है॥सोश्रवणकर॥जेतापेश्वर्यकात्यागकरणा॥जोस्त्रीअरकुटंबकात्यागकरणा॥इत्यादि
कममत्वका॥अरअहंकारइनविषेकरणासोवदलहै॥अरवैरागरूपपवनकरकेवदल
रूपराजकुटंबत्यागकीया॥अरदेहविषेअहंकाररहा॥सोसतलवदलरहा॥सोवडहुइवध
गया॥अनात्माविषेअभिमानकरकेक्रियाकाआरंभकीया॥इसीकरकेजोसर्परूपआपणा॰ ल

अपदेहै ॥ सोअहंकाररूपबदलकरकेआकादियागया ज्ञानरूपचिंतामणिअज्ञानरू
पकंचकीमणिकरकेजैसेरुपनभई ॥ जबज्ञानकरकेआत्माकोंजाणेगा ॥ तबआत्माप्र
काशेगाअन्यथानभासेगा ॥ जैसेकोऊपुरुषघोडेपरचढकेदोडावताहै ॥ तिसकीदृष्टी
मेंहोजातीहै ॥ तैसेजिसपुरुषकोंआत्माकानिश्चैहोताहै ॥ तिसकोंआत्मातेभिन्नकछु
नहींभासता ॥ हेराजनआत्माकापावणासुगमहै ॥ अरुबडेआनंदकीप्राप्तहोतीहै ॥ अरु
तपादिकक्रियाजोहै ॥ तिसकोंकष्टकरसिद्धकरीताहै ॥ आत्मस्वरूपसुखकीप्राप्तनहींहो
तीहेराजनमेंजानताहूं ॥ जोतपविनहीप्राप्तिहोकातताहै ॥ चतुरहै बडतत्तथापिसम्
पविषेस्थितनहीं ॥ तेरेताई ॥ जैसेआकाशविषेपस्यरनकीद्रहतो ॥ तांतेजोमेंडहेपाकरता
हों ॥ तिसकोंग्रहणकर ॥ तेरेडएनिवृत्तहोजावहिंगे ॥ अरुपाछेजोराजकोंत्यागियाहै ॥ जै
सेबलाकीरात्रविषेसंसारकाअंतहोजाताहै ॥ तैसेत्यागियाथा ॥ हेराजनइहसर्वतेश्रेष्ट
ज्ञानकहियाहै ॥ अरुकहिताहों ॥ तेनेजोतपक्रियाकाआरंभकीयाहै ॥ तिसतपकाजोफल
है ॥ सोतेनेजानियाहै ॥ तिसज्ञानतेश्रेष्टज्ञानकहाहै ॥ अरुकहताहों ॥ जोतेराभ्रमनिवृत्तहो
जावेगा ॥ हेराजनचिंतामणिहूतांतसंसरणमेंतेरेताईकहाहै ॥ अबहस्तीकावृत्तांतजो
आश्चर्यरूपहैसोश्रवणकर ॥ जिसकेसमझणेकरकेअज्ञाननिवृत्तहोजावेगा ॥ सेइ
चलपरबलकाजोहस्तीथासोतहै ॥ अरुमहावतहै सोतेरेताईअज्ञानताहै ॥ अरुअज्ञान
तानेतेरेताईवधियाहै ॥ अरुहस्तीजोसंगलोंसाथबांधाथा ॥ सोआशारूपीसंगलोंसाथ
तूंबांधाथा ॥ अरुसंगलोंतेभीतूंअधिकबांधाहै ॥ जोसंगलतोघसजातेहैं ॥ अरुआशारूपी
फासीघसतीनहीं ॥ सोदिनदिनवढतीजातीहै ॥ हेराजनआशारूपीफासीकरकेतूंमहादु
खीहैं ॥ अरुहस्तीकेदंतवडेथे ॥ जिसकरसंगलोंकोंतोडयाथाबलकर ॥ सोतेरेदंतविवेक
अरुवैराग्यहैं ॥ जोतेनेविचारकीया ॥ जोमैंबलकरकेछुटों ॥ अरुराजअरुदेवसभ्यमताका
त्यागकरिआया ॥ अरुफासकोंकाटा ॥ जबआशारूपरसेकाटे ॥ अरुअज्ञानरूपमहावत
भैकोप्राप्तभया ॥ अरुतेरेचरणोंकेतलेआइपडा ॥ जैसेवृत्तऊपरवेतालरहिताहै ॥ अरुकोऊ
वृत्तकोंछेदनलगताहै ॥ तबवेतालभैकोंप्राप्तहोताहै ॥ तैसेहीतेनेवैराग्यअरुविवेकरू
पीदंतोंकरकेआशाकोराकाटे ॥ तबअज्ञानरूपमहावतगिडिया ॥ अरुतेनेएककाटाइति
सकोंलगायापरंतुमारनगया ॥ तबमहावतभागगया ॥ जैसेवृत्तपरवेतालरहितै
है ॥ जबवृत्तकोंकोऊकाटणेलागताहै ॥ तबवेतालभागजाताहै ॥ तैसेराजवृत्तकोंके
टाहै वैराग्यविवेकरूपीपालोंकर ॥ तबअज्ञानरूपिवेतालभागा ॥ अरुमहावतकार
केतेमहावतकोंनमारा ॥ तिसकोंछोडकरतूंवनविषेगया ॥ जबतूंवनविषेआया ॥ त
बअज्ञानरूपमहावततेरेपाछेचलिआया ॥ आइकरतेरेचौफेरखाईकरी ॥ जोतपादि
कक्रियाकाआरंभकीया ॥ सोखाईविषेतूंगिरपडा ॥ अरुमहादुखकोंप्राप्तभया ॥ तबतें
रेताईसंगलोंसाथदृढबांधा ॥ अरुलागीदंतदुखणे ॥ सोअत्यंतदुखकोंपावताहै ॥ अरुतूंजै
सीखाईविषेगिरियाहै ॥ जोअनात्माविषेअभिमानकरकेइहतपादिकक्रियाका
आरंभकीयाहै ॥ जोमैंकरताहों ॥ ऐसीखाईविषेतूंपडियाहैं ॥ हेराजनतूंजाणिकेखाई
विषेनहींपडा ॥ जोखाईकेऊपरज्ञाममतणपडाथा ॥ सोछलकरकेतूंगिरपडा ॥ सोछ
लअरुतणकवनहैं ॥ सोतूंश्रवणकर ॥ प्रथमजोज्ञानरूपशत्रुकोंनमारा ॥ अरुसंग
लोंकेभैकरभागा ॥ जोवनमेंमेरीकल्याणकरेगा ॥ अरुशास्त्रोंकेवचनोंकोंनजानिया
जोमेरेदुखकोंनिवृत्तकरहिंगे ॥ तपरूपीखाईऊपरआशारूपीतणपत्रादिकथे ॥ सो
महिमाकरकेतूंगिरा ॥ जैसेबलिराजापातालविषेबांधाहुयाहै ॥ छलकरके ॥ तैसेही
प्रथमप्रथमतेनेभविष्यतकालकाविचारनकीया ॥ जोअज्ञानशत्रुरहाहुआमेरा
नाशकरेगा ॥ तिसविचारविनातूंवडादुखीहूआ ॥ इहविचारनकीया ॥ सर्वत्यागतें
कीया ॥ परंतुऐसेनजानियाजोमैंअक्रियहों ॥ सोइसक्रियाकाआरंभकाहेकोंकरता
हों ॥ इसीतेतेंवडहडफासीसाथबांधा ॥ हेराजनजोपुरुषइसफासीतेमुक्तभयाहैसो

इमकिहै ॥ अरुजिसकाचित्तअनात्मअभिमानकरबांधाहै ॥ जोइहमेरेताईप्राप्तहोवे
तिसकरकेदुखकोंपावताहै ॥ जिसपुरुषवैराग्यअरुविवेकदंतोंकरकेआशाजंजीर
कोनहींकाटा ॥ सोकदाचितसुखकोंनहींपावता ॥ विवेकतेवैराग्यउत्पन्नहोताहै
अरुवैराग्यतेविवेकहोताहै ॥ विवेककहीये ॥ सत्यकोंसत्यजाणना ॥ अरुअसत्य
कोंअसत्यजाणना ॥ जबऐसेजानियातबअसत्यकीओरभावनानहींजाती ॥ सोवै
राग्यहै ॥ अरुवैराग्यतेविवेकउपजताहै ॥ अरुविवेकतेवैराग्यउपजताहै ॥ इसवै
विवेकअरुवैराग्यरूपीदंतोंकरआशारूपीसंगलोंकोंतोडु ॥ हेराजनइहहस्तीका
वृत्तांततेरेकहाहै ॥ इसकेविचारकाएतामाहात्महै ॥ तेरानिवृत्तहोजावेगा ॥ हेराजनइह
स्तीवनावलीथा ॥ तिसअज्ञानरूपीमहावतकोंमहिलाकरकेनमारा ॥ तिसकर
केपराडुखपावताहै ॥ तातेंतूंवैराग्यअरुविवेकरूपीदंतोंकरकेफासकोंतोडैगा
तोदुखमिटजावहिंगे ॥ इतिश्रीनिर्वाणप्रकरणेहस्तीवृत्तांतवर्णनंनामसर्गः
७१ ॥ देववशिष्ठउवाच ॥ हेराजनऐसीजोतेरीस्त्रीचूडालाथीब्रह्मवेत्ता ॥ अरुसर्वज्ञानी
योंतेश्रेष्टसाक्षातब्रह्मरूप ॥ अरुसत्यवादी ॥ सोतिसनेतेरेताईउपदेशनकीया ॥ अ
थवातेनेतिसकेवचनोंकोंनिरादरकीयासोकिसनिमित्त ॥ मैंतोसर्वजाणताहों
जोत्रिकालज्ञहों ॥ सोभीतूंअपणेमनविषेकहो ॥ जोउपदेशतिसकाअंगीकारकि
उनकीया ॥ इकतोइहमहिलाकरी ॥ जोउपदेशतिसकाअंगीकारनकीया ॥ अरुइह
गीइहमहिलाहै ॥ जोसर्वत्यागकारकेवडहढअंगीकारकीया ॥ जोसर्वत्यागकरतातोदु
खसर्वमिटजाते ॥ जबऐसेदेवपुत्रकहा ॥ तबराजाबहुडबोलतभया ॥ हेदेवपुत्र
मैंतोसर्वत्यागकीयाहै ॥ जोस्त्रियांअरुपृथ्वीअरुमंदिरअरुहस्तीइत्यादिकजोपदा
र्थहैं ॥ अरुऊंडवहइसोसर्वत्यागकीयाहै ॥ तूंकाहेकोंकहिताहै ॥ जोत्यागनहींकी
यातबचूडालाजोदेवपुत्रहै ॥ तिसनेकहा ॥ हेराजनतेनेक्यात्यागियाहै ॥ राजविषेतेरा
क्याथा ॥ अरुजैसेऐश्वर्यआगेथातैसेअबभीहै ॥ अरुस्त्रियांभी ॥ जैसेअवरमानुष्यथे
तैसेस्त्रीयांथी ॥ तिनविषेतेराक्याथाजोत्यागकीया ॥ पृथ्वीमंदिरहस्तीजैसेआगेथे
तैसेअबभीहैं ॥ तिनविषेतेराक्याथा ॥ जोत्यागकीया ॥ जोतेराहोवे ॥ तिसकातें
त्यागकर ॥ जोनिर्दुखपदकोंप्राप्तहोवहिं ॥ श्रीवशिष्ठउवाच ॥ हेरामजोजबइसप्र
कारदेवपुत्रकहा ॥ तबसर्ववीरजोजितेंद्रीराजाहै ॥ सोमनविषेविचारतभया ॥
जोइहवनमेराहै ॥ अरुवृक्षफूलफलमेरेहैं ॥ तिनकात्यागकरों ॥ अरुकहतभयाहे
देवपुत्रवनअरुवृक्षफलफूलजेमेरेथे ॥ अरुतिनकामैंत्यागकीया ॥ अबतोसर्वत्या
गहुआहै ॥ तबदेवपुत्रकहा ॥ हेराजनअबभीसर्वत्यागनहींभया ॥ जोवनअरुवृक्ष
फूलफलतेरेतेआगेथे ॥ इनविषेतेराक्याहै ॥ जोतेराहै तिसकोंत्यागहि ॥ तबसुखी
होवहि ॥ वशिष्ठउवाच ॥ हेरामजीजबइसप्रकारदेवपुत्रकहा ॥ तबराजाबनविषेवि
चारतभया ॥ जोमेरीबावलीहै ॥ जलपानकीअरुमेरेबगीचेहैं ॥ तिनकात्यागक
रोंजोसर्वत्यागसिद्धहोवे ॥ अरुकहाहेभगवनइहमेरीबावलीहै ॥ अरुबगीचेहैं
तिनकात्यागकीया ॥ अबमेरासर्वत्यागसिद्धहुआ ॥ तबदेवपुत्रकहाहेराजन ॥ सर्वत्या
गअबभीनहींभया ॥ जोकछुतेराहै ॥ तिसकोंत्यागेगा ॥ तबशांतिपदकोंप्राप्तहोव
हिगा ॥ वशिष्ठउवाच ॥ हेरामजीजबइसप्रकारदेवपुत्रकहा ॥ तबराजाविचारत
भया ॥ जोजबमेरीमृगछालाहै ॥ अरुकुटीहै ॥ इसकात्यागकरों ॥ तबराजेनेकहाहेदेव
पुत्र ॥ मेरेपासएकमृगछालाअरुएककुटीहै ॥ तिसकात्यागकीयाअबमैंसर्वत्या
गीभया ॥ तबदेवपुत्रकहाहेराजनमृगछालाविषेतेराक्याहै ॥ इहतौमृगकीत
चाहै ॥ अरुकुटीविषेतेराकाहै ॥ कुटीतोमाटीअरुशिलोंकीहै ॥ इसकरतौसर्वत्याग
सिद्धनहींहोता ॥ जोकछुतेराहै ॥ तिसकोंत्यागेगा ॥ तबत्यागीहोइगा ॥ अरुसर्वदुखोंतेर

हितहोवहिगा॥वसिष्ठोवाच॥हेरामजीजबऐसेकुंभकहातबराजामनविषे
विचारतभया॥जोअबमेराएककमंडलहै॥अरएकमालाहै॥अरएकलादीहै॥इसकी
भीत्यागकरों॥ऐसेविचारकरकेराजाप्रांतिकोंलीएबोलतभया॥हेदेवपुत्रमेरी॥
लादीअरमालाअरएककमंडलहै॥तिसकाभीत्यागकीया॥अबमेंसर्वत्यागी
भया॥तबदेवपुत्रकहाहेराजनकमंडलविषेतेराक्याहै॥अरलादीभीवनकेवां
सकीहै॥अरमालाभीकाष्टकीहै॥तिसविषेतेराक्याहै॥जोकछुतेराहै॥सोति
सहीकात्यागकर॥जबतिसकात्यागकरेंगा॥तबदुखोंतेरहितहोवहिगा॥वसि
ष्ठोवाच॥हेरामजीजबइसप्रकारकुंभकहा॥तबराजाफिरबैठ्याविचारत
भया॥जोअबमेराक्यारहिताहै॥तबदेखियाजोएकआसनरहिताहै॥अरबास
नहै॥जिसविषेफूलफलराषीतेहैं॥अबतिनकात्यागकरों॥तबराजेकहाहेभ
गवनआसनअरबासनइहमेरेपासरहितेहैं॥अबतिनकाभीत्यागकीया॥अ
बतोसर्वत्यागीभयाकिंउ॥तबकुंभकहाहेराजन॥अबभीसर्वत्यागनहीभया
आसनतोभेडकीउनकाहै॥अरबासनमृत्तकाकेहैं॥इनोंविषेतेराक्याहै॥जोकु
छुतेराहै॥तिसकात्यागकर॥जोसर्वत्यागहोइ॥अरदुखोंतेरहितनिवृतहोजाव
हि॥वसिष्ठोवाच॥हेरामजीजबइसप्रकारकुंभकहा॥तबराजाउठखडाहूआ
अरवनकीलकडीएकठीकरी॥अरअग्निजलाई॥जबबडीअग्निजागीतबलादे
कोंहस्तविषेलेकरकहिणलागा॥सोहेलादीतेरेसाथमें॥बहुतदेशोंकाअटन
कीया॥परंतुतुमनेमेरेसाथउपकारकछुनकीया॥अबमेंकुंभमुनिकीकृपातेत
रोगा॥तेरेताईनमस्कारहै॥ऐसेकहिकरअग्निविषेडारदीई॥बहुडमृगछाला
कोंहाथविषेलेकरकहा॥हेमृगछालाबहुतकालमेंतेरेऊपरआसनकीया
परतुमकछुउपकारकछुनकीया॥अबकुंभमुनिकीकृपाकरमेंतरोगा॥तेरेताईनम
स्कारहै॥ऐसेकहिकरमृगछालाकोंअग्निविषेडारदीया॥बहुडकमंडलकों
लेकरलागाकहिणे॥किहेकमंडलतूयत्नहै॥मेंतेरेताईधारा॥अरतुमनेमेरेज
लकोंधारा॥तेनेमेरेसाथअपणाआपानकीया॥तउभीहेकमंडलजेमेंअहंतनकों
त्यागणातिउनिवृतकीकल्पनाभीत्यागणीहै॥तातेतेरेताईनमस्कारहै॥तबरा
जाऐसेकहिकरकमंडलकोंभीअग्निविषेजलाइदीया॥बहुडमालाकोंहाथ
विषेलेकरलागाकहिणे॥हेमालातेरेमणकेजोमेंफेरेहैं॥सोमानोंआपनेजन्म
गिणेहैं॥तेरेमेंबंधकरकेजपकीयाहै॥अबतेरेताईनमस्कारहै॥ऐसेकहिकर
मालाकोंभीअग्निविषेडारदीया॥इसीप्रकारफूलफलआसनकूटीसभजलाइ
दीया॥बडीअग्निजागी॥अरबडाप्रकाशभया॥राजेसर्वजनसमग्रीकात्यागकीया॥इ
तिश्रीनिर्वाणप्रकरणेशिषिध्वजसर्वत्यागवर्णनंनामसर्गः॥८७॥श्रीव
सिष्ठोवाच॥हेरामजीजबसर्वसमग्रीराजेजलाई॥सोभस्महोगई तब राजा
मनविषेविचारतभया॥जोअबकुंभमुनकीकृपातेंबडाआनंदकोंप्राप्तभयाहै
अबदुखमेरेमिटगए॥जेतेकछुभस्मनकेसंकल्पकररचीथीजोमेरीहैं॥सो
जलाइदीहैं॥तिसकामेरेताईनहर्षहैनशोकहै॥सोमेरामममत्वअबकिसीसा
थनरहा॥तातेदुखभीकोऊनहीं॥अबमेंज्ञानीभयाहों॥अबमेराजेहै॥अबमेंनि
र्मलभयाहों॥अरसर्वत्यागमेंनेकीयाहै॥ऐसेविचारकरकेराजाउठखडाहूआ
अरहाथजोडकरकहिणलागा॥हेदेवपुत्रअबसर्वत्यागमेंनेकीयाहै॥जोआर
काशहीमेंरहाहैं॥अरपृथ्वीमेरीपायाहै॥जबऐसेकहाराजे॥तबकुंभकहा
हेराजाअबभीसर्वत्यागनहीकीया॥जोतेराहैतिसकात्यागकर॥जोदुखतेरेनिवृत
होजावहि॥जबऐसेकुंभकहा॥तबराजेकहाहेभगवनअबअवरमेरेपासकछु

नहीरहा॥जोराजाहोइकरतमामेआगोलेदोहोजबएककरकेमामकारेहिहै॥जोकुहै
तोइसकाभीत्यागकरों॥परबतऊपरजाइकरसटूपावों॥ऐसेकहिकरराजापर्वत
कोंदौरिया॥जोदेहिकोंडारदेवों॥तबकुंभकहाहेराजाऐसेपुण्यदेहकोंकिंउत्याग
ताहै॥इसकेत्यागेतेसर्वत्यागनहीहोता॥जिसकेत्यागेतेसर्वत्यागहोवे॥तिसका
त्यागकर॥इसदेहविषेक्यादूषणहै॥जोदेहिपालनवालाअभिमानीहै तिसका
त्यागकर॥जोसर्वत्यागसिद्धहोवे॥अरएहतोगुणजडहै॥इसकेत्यागेतेक्यासिद्धहो
ताहै॥तातेदेहकेप्रेरणेवालेकात्यागकर॥जोदुखतेरहितहोवहि॥हेराजाजिसके
रसर्वहै॥अरजिसविषेसर्वस्थावरहै॥अरजोसर्वओरतेत्यागणेयोग्यहै॥तिसकात्याग
कर॥जोतेरेसर्वदुखमिटजावहि॥तबराजेकहाहेभगवनओहकवनसर्वहै॥अर
जिसविषेसर्वप्राप्तहै॥अरजोसर्वओरतेत्यागणेयोग्यहै॥हेतत्ववेत्तियाविषेश्रेष्ठजि
सकेत्यागेतेजरामरणनष्टहोवे॥तबकुंभकहाहेराजाजिसकानामचित्तहै॥इ
सप्राणहैअरदेहिहै॥ऐसाजोचित्तहै तिसकात्यागकर एकचित्तहैअरनानाप्रकारके
आकारबाहरदृष्टआवतेहैं॥सोचित्तहीकरदृष्टआवतेहैं॥तातेचित्तहीकात्यागकर
हेराजाजैसेसर्पदुइविषेबैठाहोवे॥तौदुइविषेदूषणकछुनहीं॥विषजोहैसोस
र्पविषेहै॥जिसकरडसताहै॥तिसकेनाशकरणेकाउपाइकर॥अरसर्वप्राप्तभीइ
सचित्तविषेहै॥अरआत्माजोहै॥शिवमात्रपदहै॥जिसविषेनएककहिणाहैन
द्वित्वकहणाहै॥अरसर्वओरतेइसीचित्तकात्यागणायागयाहै॥जबइसचित्तकात्या
गकरहिगा॥तबत्यागरूपअमृतकरअमरहोवहिगा॥अरजरामृत्युतेरहितहो
वहिगा॥अरजोचित्तकात्यागनकरहिगातबबडेदुखकोंधारहिगा॥अरदुखकों
भीभोगहिगा॥जैसेएकतेचकेअनेकदाणेउत्पतहोतेहैं॥अरजोतेअहीजल
जाताहै॥तबअन्ननहीउत्पतहोता॥तैसेइहजोदेहहै॥अरदुखजरामृत्युसंसार
नकाबीजचित्तहै॥जैसेअन्नकाकारणदानेहै॥तैसेसंसारदुखकाकारणचित्त
है॥हेराजातातेचित्तहीकात्यागकर॥जबइसीकात्यागकरेगा॥तबसुखीहोवहि
गा॥हेराजाजिससर्वत्यागकीयाहै॥सोसुखीहूआहै॥किसीकास्पर्शनहीकरता॥अ
रोहसर्वतेवडाहै॥अरसुखीहै॥जोसर्वपदार्थनष्टहोजातेहैं॥तोभीसुखीरहिताहै
जिंउसर्वत्यागकीयाहैआकाशवत्॥हेराजातूंभीसर्वत्यागीहो॥राजादिकदेहादिकअ
हंकारजगतहैसोत्यागिकरजोआश्रमहै॥सोसर्वचित्तहीनेकल्पेहैं॥हेराजाजोएककों
त्यागताहै॥तबअवरकिउग्रहणकरताहै॥जोकछुत्यागतेसर्वत्यागनहीहोताहै
राजाइहतीनजोहैं॥धर्मवैराग्यअरऐश्वर्यसोइहभीचित्तकल्पेहैं॥जबचित्तअ
सत्क्रियासोंलागताहै॥तबपापभीप्राप्तहोताहै॥अधर्मअवैराग्यदरिद्रीहोता
है॥अरजबपापकाफलउदयहोताहै॥तबदुखप्राप्तहोताहै॥जबचित्तकात्याग
होताहै॥तबदुखसर्वनष्टहोजातेहैं॥हेराजाजोकोऊपुरुषकिसीवस्तुकोंचाह
तानहीं॥जोमैंनहीलेता॥तबतिसकोंपूजाबहुतहोतीहै॥अरजोकोऊकहिता
है॥जोमेंइसवस्तुकोंलेवों॥अरमेरेताईइहदेवे॥तोउसकोंदेताकोऊनहीं॥तोते
सर्वत्यागकर॥जोसुखीहोवहि॥अरसर्वत्यागकीयतेसर्वतूंहीहोवहिगा॥सर्वा
त्माहोवहिगा॥अरसंपूर्णब्रह्माण्डआपनेविषेदेखहिगा॥जैसेमालाकेमणकि
योंविषेतागाहोताहै॥अरमणकेभीसूत्रकेहैं॥तिसविषेअवरकछुनहीहोता
तैसेहीदेखहिगाजोसर्वमेंहीहों॥अरएकरसहों॥मेरेहीविषेब्रह्माण्डस्थितहैं॥
अरमेंहीहों॥मेरेतेइतरकछुनहीं॥हेराजनजिससर्वत्यागकीयाहै॥सोसुखी
है॥अरसमुद्रकीन्याईस्थितहै॥उसकोंदुखकोऊनहीं॥तातेतूंचित्तकात्यागकर

जो राग अरु द्वेष मिट जावहि ॥ अरु इस चित के एते नाम हैं ॥ चित अरु माया अरु मन अरु अहंका
र अरु जीव एह ॥ सर्व चित ही के नाम हैं ॥ अरु जब लग इह फुरता है ॥ जो मैं त्याग कीया है
अरु अब मैं तप करता हों ॥ तब लग सर्व त्याग नहीं होता ॥ जब इह फुरणा निवृत होता
है ॥ तब इसका त्याग होता है ॥ अरु चित को त्याग कर भी त्यागणे के अभिमान ते र
हित होवणा ॥ ऐसे जब सन्यास करहुगा तब सर्व आत्मा होवहिगा ॥ अरु जब चित को त्या
गोगा ॥ तब ऐसे पद को प्राप्त होवेगा ॥ जो जेता ऐश्वर्य है ॥ अरु जेता सुख है ॥ सो सब ते
तिनका आश्रे है ॥ अरु जेते कष्ट देखे हैं ॥ तिनका नाश करनेहारा है ॥ अरु तिसके जाणे
ते किसी पदार्थ की इछा न रहिगी ॥ काहे ते न रहेगी जो सर्व आनंदो के धारनहारा आत्मारूप
है ॥ वहु इछा किस की करे ॥ जैसे आकाश के आश्रे देवलोक ते आदि सर्व विस्व स्थित
है अरु आकाश को इछा कछु नहीं जो इछा नहीं करता तो भी सर्व आकाश विषे हैं
अरु सभ का धारनहारा है ॥ हे राजा जब तूं भी इछा किसी की न करहिगा ॥ तब निर्वासी
होइ कर आपणे स्वरूप विषे स्थित होवहिगा ॥ अरु जानहिगा जो सर्व का आत्मा मै ही हों
अरु सर्व को धार रहा हों ॥ अरु भूत भविष्यत वर्तमान काल मेरे आश्रे हैं ॥ जैसे समुद्र के
आश्रे तरंग हैं ॥ तैसे मेरे आश्रे काल है ॥ अरु चित का संबंध ते तौ ई प्रमाद करके है ॥ अरु
प्रमाद इह है ॥ जो सत्य आत्मा अपर द्वितीय चित होकर फुरता है ॥ अरु चित के साथ है ॥ जड भी
है अरु चेतन भी है ॥ इसी का नाम चिद जड ग्रंथ है ॥ जब ग्रंथ खुल जावेगी ॥ तब आपणे
आप को वास्तव रूप जाणेगा ॥ जब निर्वास होवेगा ॥ तब संसार रूप वृक्ष नष्ट हो जावे
गा ॥ संसार चित ही विषे है ॥ जैसे बीज के जलणे ते वृक्ष भी जलता है ॥ तैसे वासना
के दग्ध हूए संसार दग्ध हो जाता है ॥ हे राजा जैसे एक इस्त्रा होता है ॥ अरु तिस विषे दर
रत्न होते हैं ॥ तब रत्नो के नाश हूए ते इस्त्रे का नाश नहीं होता ॥ अरु जब इस्त्रा नष्ट होवे तब
रत्न नष्ट होते हैं ॥ सो इस्त्रा क्या है अरु रत्न क्या है ॥ सो श्रवण कर ॥ इस्त्रा चित है ॥ रत्न दे
हि है ॥ तां ते चित नष्ट होवणे का उपाव करीये ॥ जब चित नष्ट होवेगा ॥ तब देह ते रहित
होवेगा ॥ देहि के नष्ट हूए चित नष्ट नहीं होता ॥ अरु चित के नष्ट हूए देह नष्ट हो जाती है
जब चित रूप धड ते रहित होवहिगा ॥ तब केवल शुद्ध आकाश होवहिगा ॥ इति श्री
निर्वाण प्रकरणे चित त्याग वर्णनं नाम सर्ग ॥ ५५ ॥ वसिष्ठ उवाच ॥ हे राम जो जब
इस प्रकार कुंभ कहा ॥ जो चित का त्याग सर्व त्याग है ॥ तब शिखरध्वज कहा है भ
गवन चित को स्थित कैसे करों मैं ॥ आकाश रूपी संसार का चित रूपी थड है ॥ अरु संसा
र रूपी वृक्ष का चित रूपी बीज रहे ॥ जो कब इह स्थित नहीं होता ॥ तां ते में वश चित को कै
से करों ॥ तब कुंभ कहा हे राजन तिसका रोकणा तो सुगम है ॥ नेत्र के खोलणे अरु मूंद
णे विषे भी कछु यत्न है ॥ अरु चित के रोकणे विषे कछु यत्न नहीं ॥ पर किसको सुगम
है ॥ सो दिखावते हैं ॥ अरु अज्ञानी को चित का रोकणा कठिन है ॥ जैसे चंडाल को चक्रव
र्ती होवणा कठिन है ॥ तैसे अज्ञानी को चित का रोकणा कठिन है ॥ राजोवाच ॥ हे देव
पुत्र वज्र को तोडना कठिन भी है ॥ तो भी टूट जाता है ॥ जो को ऊक है तो मानीये ॥ पर म
न का रोकणा कठिन है ॥ जैसे बड समुद्र को बालक नहीं रोक सकता ॥ हे देवपुत्र
मक हिते हो ॥ जो मन का रोकणा कठिन नहीं ॥ अरु मेरे ताई ऐसे भासता है ॥ जैसे मते
महा सुंदर खिली हुई है ॥ पर नेत्र सों अपराध कोन हीं देख आवती ॥ अहह हाथ सों के
मेलेव ॥ तैसे चित को वश करणा मेरे ताई कठिन है ॥ प्रथम चित का रूप मेरे ताई कहो
जो क्या है ॥ तब कुंभ कहा हे राजन इस चित का रूप वासना है ॥ जब वासना नष्ट होजा
वै ॥ तब चित भी नष्ट हो जावै ॥ तां ते चित का बीज तूं नष्ट कर ॥ तो वह इह वृक्ष भी न होवे
न को ऊहा मर है ॥ न को ऊ फल फूल रहे ॥ अरु जो दासों को काटहिगा तब वह इह होवेगा

दास के काबुणे कर इह वृक्ष नष्ट नहीं होता ॥ वहु इह कई दास हो जाते हैं ॥ तब बीज नष्ट कर
हिगा तब वृक्ष भी नष्ट हो जावेगा ॥ तब राजे कहा हे भगवन संसार रूप सो गांथ है ॥ तिस
का चित रूपी फल है ॥ अरु संसार रूपी तल है ॥ तिसका चित रूपी भेद है ॥ इह रूप तरण
हैं तिसके उडावणे वाला चित रूपी पवन है ॥ अरु जगत सत्य अर्थात्मक अपि भूत का ते
ल है ॥ तिनके इह तिल है ॥ जिन ते इह तेल उपजता है ॥ अरु संसार रूपी ग्रंथ ही है ॥ तिस
का इह चित आकाश है ॥ सो आकाश विवेक है ग्रंथ ही यां होती यां है ॥ अरु हृदय रूप
कमल का भौरा है ॥ तिसका बीज जीव कहो अरु यास भी कहो ॥ जो क्या है ॥ अरु इसो क
कारण क्या है ॥ अरु वृक्ष क्या है ॥ अरु फल क्या है ॥ सो कृपा कर कहो ॥ कुंभ उवाच
हे राजन ॥ वे तम रूपी ते ज है ॥ स्वछ निर्मल ॥ अरु तिस विषे अहं भाव जो है सो बीज है
अरु इसी को अहंकार कहिते हैं ॥ अरु इसी को चित कहिते हैं ॥ अरु इसी को मिथ्या कहि
ते हैं ॥ तिस अहं विषे जो संवेदना है ॥ सो देहि इंद्रियां का रूप सरी है ॥ तिस विषे निश्चे है
सो बुद्धि है तिस बुद्धि विषे जो निश्चे है जो मैं हों ॥ अरु इह संसार है ॥ इह हमें जो होवणा है
सो अहंकार जीव है ॥ अरु अहं का इस वृक्ष का बीज है ॥ अरु वासना जो है ॥ सो इस चित रूप
वृक्ष के दास हैं ॥ अरु सावड ले इस चित रूप वृक्ष के फल हैं ॥ हे राजा इन दासहु का जो
काटणा है ॥ सो श्रवण कर ॥ इस को निवेद कर अरु चित वणाते रहित एक आश्रम को मै
गा कुस्ता ॥ अरु इस बीज को ऐसी कारक वणा ॥ ऐसा जो इ स्थित होवणा ॥ अरु मैं ऐसा सा
री हो ॥ इस कोन चित वणा इ हो दासों का काटणा है ॥ इन दासों के काटणे ते राजन
वृक्ष नष्ट नहीं होता ॥ काहे ते जो ऐसा हो इ कर स्थित होवणा जो मैं हो ॥ ऐसी पर वास
ना का त्याग करे कछु फुरे नहीं ॥ जब कछु वासना फुरे तब चित रूप वृक्ष के दास हो
आवते हैं ॥ अरु जब चित नष्ट हो जाता है ॥ तब वृक्ष भी नष्ट हो जाता है ॥ काहे ते जो इस
का बीज अहं है ॥ जब अहं भाव नष्ट हूआ तब वृक्ष भी नष्ट हो जाता है ॥ तां ते चित का बी
ज तूं नष्ट कर ॥ राजोवाच ॥ हे देवपुत्र तत्माल निश्चे ही मै जानिया है ॥ सो चित के त्याग
ते चित का नष्ट करणा श्रेष्ठ है ॥ हे भगवन एता काल मेरा सो कोई काटता भया हो ॥ इसी ते
ल मेरे नष्ट नहीं भए ॥ अरु तमसो कहा जो अहं होइ खेदा ईहै ॥ सो अहं का उन्नत होव
णा के से होता है ॥ कुंभ उवाच ॥ हे राजन शुद्ध चित विषे चेतन मत का होवणा ॥ चेतन
मत्र के ही ये फुरणा अहं है ॥ इह जो होवणा है जो मै हों दृश्य रूप ॥ तैसे सत सम
दो विषे पवन कर लहरी तरंग होते हैं ॥ सो सत्य नहीं मिथ्या है ॥ तैसे शुद्ध आत्मा विषे
अहं इह जो संवेदना है ॥ तिस कर के चित संसार हूआ है ॥ तां ते अहं भाव को नष्ट कर
जो प्रीति पद विषे स्थित होवहि ॥ जो इस कदा ई वस्तु है तिसको नष्ट कर ॥ जा प्रीति हो
वहि ॥ तब राजे कहा हे भगवन अहं कवन वस्तु है जो जलाया जाय ॥ पर अहं क
वन है जिस कर जलती है ॥ तब कुंभ कहा हे राजन त्याग वा जो विषे श्रेष्ठ तेरा जो आ
पणा स्वरूप है ॥ तिसको विचार जो मैं कवण हों ॥ अरु संसार क्या है ॥ इह जो दृढ विचार के
उल्ला सो ई अग्नि है ॥ अरु मिथ्या अहं जो अनात्म देह इंद्रियां विषे अहं भाव है ॥ तिस बालव
रूपी अग्नि कर जलाइ ॥ तब विचार अग्नि कर के अहं भाव बीज को जलावहिगा ॥ तब के
वल चिन्मात्र होवेगा ॥ हे राजा मेरे उपदेश कर के ते आपको क्या जानते भया है ॥ सो
मेरे ताई कहो ॥ तब राजे कहा हे भगवन मेरा जाम भी नहीं ॥ अरु भस्म जो देह थी सो भी मै
नहीं ॥ अरु पस्तन भी मैं नहीं ॥ अरु दशा दिशा भी मैं नहीं ॥ अरु रुधिर मास को देह भी
मैं नहीं ॥ कर्म इंद्रियां ज्ञान इंद्रियां भी न हों ॥ अरु मन बुद्धि भी मैं न हों ॥ अरु अहंकार भी
मैं न हों ॥ इन ते रहित मैं शुद्ध आत्मा हों ॥ पर ते हे भगवन अहं रूप कलंक ना मेरे ताई क
हो लागी है ॥ तिसके कलंक के रकणे को समर्थ नहीं ॥ तब कुंभ कहा हे राजा ॥ इसी अहं
कार का त्याग कर जो मैं त्याग कीया है ॥ इह फुरणा भी न फुरे सो त्याग है ॥ तब इसका त्या
ग करहिगा ॥ तब चेतन आकाश होवहिगा ॥ हे राजा ते आपणे स्वरूप विषे जाग कर रहे हुए ।

जोतूंकवनहै॥ तबरामजीकहा हेभगवन् इहमेंजानताहों॥ जोमेरास्वरूपआत्माहै अ
रमेंआनंदरूपहों सर्वमेराहीप्रकाशहै॥ परइहनहीजानता॥ जोअहंभावकलंकतो
कहांस्योंलागीहै॥ इसकेनाशकरणेकोंमेंसमर्थनही॥ अरइहमेंजाणियाहै॥ जोसं
सारकाबीजचित्तहै॥ अरचित्तकाबीजअहंभावहै॥ तमारीकृपातेमेंजानियाहै॥ मे
रास्वरूपआत्माहै॥ अरमेरेविषेअहंत्वकोऊनही॥ तथापिइहअहंरूपकलंकनाशे
हूंकरताहों॥ परंतमेरेतेदूरनहीहोती॥ बड़ेइआरफुरतीहै॥ जोमेंशिषरध्वजहो
इसअहंकारकरमेंसंसारीहों॥ इसकेनाशकरणेकातमइउपाइकहो॥ कुंभोवाच॥ हेरा
जाकारणविनाकार्यनहीहोता॥ जोकारणविनाभासेतवजाणीए॥ जोभ्रमसमा
त्रहै॥ अरमिथ्याहै॥ अरजिसकाकारणपाईए॥ सोजानीयेजोसत्यहै॥ तांतेतूंकहोअ
हंकारकाकारणक्याहै॥ तबमेंइसरकहोंगा॥ राजोवाच॥ हेभगवन्, इहकार
काकारणशुद्धआत्माहै॥ शुद्धआत्माविषेजोतानाहूआहै, जाननेमात्रविषेजोजान
नेकाउत्थानहूआहै॥ जोदृश्यकीओरलागाहै॥ सोजाननामेंवेदनअहंकारकाका
रणहै॥ कुंभोवाच॥ हेराजाइसजाननेकाकारणक्याहै॥ प्रथमइहकहो॥ तबपाछेक
रणेकाउपायमेंकहोंगा॥ जिसकाकारणसत्यहोताहै॥ तिसकाकार्यभीसत्यहो
ताहै॥ अरजोकारणजूठाहोताहै॥ तबकार्यभीजूठाहोताहै॥ जेसेभूंदृष्टकरकेदू
सराचंद्रमांआकाशविषेदेखीताहै॥ अरकारणतिसकाभ्रमहै॥ तांतेदूजाचंद्रमाजू
ठाहै॥ तांतेइसजाननेसंवेदनकाकारणमेरेतांईकहोजोक्याहै॥ सोजाननसंवे
नाहूआरूपदृश्यरूपहोकरस्थितभईहै॥ राजोवाच॥ हेदेवपूजजाननेकाकार
णदेहादिकदृश्यहै॥ काहेतेजोजाननातबहोताहै॥ जबजाननेयोग्यवस्तुआगे
होतीहै॥ जबआगेवस्तुनहीहोती॥ तबवस्तुकाजाननाभीनहीहोता॥ तांतेजान
नेकाकारणदेहादिकहीहूए॥ कुंभोवाच॥ हेराजन्, इहदेहादिकजोहैंसोमि
थ्याहै॥ भ्रमकरकेहूएहैं॥ इनकाकारनकोऊनही॥ राजोवाच॥ हेदेवपूज्य, इह
काकारणतोप्रत्यक्षहै॥ जोखातापीताहै॥ अरपितातेइसकीउत्पत्तिहेभई॥ अरप्र
त्यक्षहीकार्यकर्ताहृष्टआवताहै॥ तमकेसेकहितेहो॥ जोकारणविनामिथ्याहै॥ कुं
भोवाच॥ हेराजापिताकाकारणकोनहै॥ पिताभीमिथ्याहै॥ जेसेस्वप्नविषेपिताभी
देखीये॥ अरपुत्रभीदेषीए॥ सोदोनोंमिथ्याहैं॥ तांतेकहोपिताकाकारणकवनहै॥ राजोवाच॥
हेभगवन् पुत्रकाकारणपिताअरपिताकाकारणपितामहा॥ इसीप्रकारपरंपराकरकेस
र्वकाकारणब्रह्माप्रत्यक्षजाणीताहै॥ जोसर्वकोउत्पत्तिकरतेहैं॥ कुंभोवाच॥ हेराजाब्र
ह्माआदिअरकाष्टपर्यंतसर्वसृष्टसंकल्पतेरचीहै॥ अरदेहभीभ्रमकरकेभासताहै॥ जेसे
मृगतृस्नाकाजलभीनहोताहै॥ अरजेसेसिपीविषेरूपाभासताहै॥ अरजेसेआका
शविषेदोचंद्रमेंभ्रमकरकेभासतेहैं॥ तेसेइहसंसारभ्रमकरकेआत्माविषेभासताहै॥ अ
रजोतूंकहेहैजोक्रियाकेसेदृष्टआवतीहै॥ तोसुण॥ जेसेकोऊकहेवंध्याकेपुत्रकोंभूषणप
हिराएहैं॥ अरभक्षकीयाहै॥ जोवंध्याकापुत्रहीनहीं॥ तोभूषणकिसपहिरे सोमिथ्याभ्र
मकरकेभासताहै॥ जेसेस्वप्नविषेसर्वक्रियाहोतीहै॥ सोभ्रममात्रहै॥ तैसेइहसंसारभ्र
मतेरेविषेहै॥ जबभ्रमनिवृत्तहोवेगा॥ तबकेवलआत्माहीभानहोवेगा॥ तबहेराजन्,
जैसेतूंआपनादेहजानताहै॥ तेसेब्रह्माकोंभीजान॥ ब्रह्माकाकारनकवनहै॥ तांतेभ्र
मतेजागु, जोतेराभ्रमनिवृत्तहोजावेगा॥ राजोवाच॥ हेभगवन्, मेंजागियाहैं॥ मेरा
भ्रमअबनष्टभयाहै॥ अरइहसंसारभीमिथ्याहै॥ आत्माहीमेंनिश्चेविषेसत्यभयाहै॥ हेभ
गवन्, ब्रह्माकाभीकारणब्रह्महै, अरअद्वैतहै॥ अरअविनाशीहै अरसर्वात्माहै॥ ब्रह्मा
काकारणइहहूआ॥ कुंभोवाच॥ हेराजन्कार्यअरकारणद्वैतविषेहोताहै॥ सोअसे
त्यहै॥ तिसकारणकाजोदृश्यतेभीअंतहोताहै॥ अरवस्तुतेभीअरकालतेभीअंतहो
ताहै॥ अरपरिणामीहोताहै॥ जोवस्तुपरिणामीहै॥ सोमिथ्याहै॥ हेराजाआत्माअद्वैतहै जि

सविषेनएककहिणाहै॥ नद्वैतकहिणाहै॥ नभोगताहै॥ नभोगाहैनकर्माहै॥ अरकेव
लअद्वैतहै॥ जोस्वरूपतेपरिणामकोनहीप्राप्तभया॥ अरसर्वात्माहै॥ अरसर्वदेशअरस
र्वकालभीवहीहै॥ अरसर्ववस्तुविषेपूरनहै॥ अरअद्वैतहै॥ सोअद्वैतहै॥ तोकार्यकिस
काहोवे॥ अरकारणकिसकाहोवे॥ कार्यअरकारणकासंबंधतहांहोताहै॥ जहांद्वै
तहोताहै॥ अरपरिणामीहोताहै॥ अरजिसकोदेशकरअंतहोताहै॥ आत्माअद्वैतहै
तिसविषेनकोऊदेशहै॥ नकोऊकालहै॥ नकोऊवस्तुहै॥ अरसत्तामात्रपदहै॥ हेराजा
मेंजानताहों॥ जोतूंजाग्रतहोवेगा॥ अबभ्रमतेरानिवृत्तहोजाताहै॥ जेसेबरफकोंघन
लोसूर्यकीकिरणसाथदीणहोजातीहै॥ तेसेअज्ञानतेरानष्टहोताहै॥ जेसेबरफ
गलीतबजलहीहोताहै॥ तेसेअज्ञानकेनष्टहूएतेतूंआत्माहीहोवेगा॥ तूंआपणेप्र
त्यकचेतन्यविषेस्थितहो॥ अरदेहादिकजोब्रह्माआदिकसर्वपरमात्माकाकचनहै॥ परमा
त्माहीऐसेहोइकरस्थितभयाहै॥ अरजोदृष्टआवताहै॥ तिससर्वकाआपणाआपहैआ
त्मा॥ जोजागेसोजानेजागेविनानहीजानता॥ राजोवाच॥ हेभगवन् तमारीकृपातेमें
जागियाहों॥ अरजानताहों॥ जोमेरास्वरूपआत्माहै॥ अरमेंनिर्मलहों॥ अबमेराक
कोनमस्कारहै॥ एकमेंहीहोमेरेतेइतरकछुनही॥ अबमेंआपकोंजाणियाहै॥ इतिनि
र्वाणप्रकरणेनाविश्रांतिवर्णनेनामसर्गः॥ ७४॥ राजोवाच॥ हेभगवन् तुमके
सेकहितेहो॥ जोब्रह्माकाकारणकोऊनही॥ अरमाईअद्वैतहै॥ आत्माजोअनंतहै॥ अरअ
च्युतहै॥ अरअव्यक्तहै॥ अरअद्वैतहै॥ अरप्रमाणकाविषयनही॥ अरपरमब्रह्महै॥ सो
ब्रह्माकाकारणहै॥ कुंभोवाच॥ तूंहीकहिताहै॥ जोआत्माअनंतहै॥ अरजोअनंतहै॥
तिसकोंदेशकालवस्तुकापरिछेदनही॥ सोसर्वदेशसर्वकालसर्ववस्तुकापरिछेद
नही॥ सोसर्वदेशसर्वकालसर्ववस्तुपूर्नहै॥ सोकार्यकाकारणकिसकाहोवे॥ कार्य
तहोताहै॥ जोप्रथमद्वैतहोवे॥ सोआत्माअद्वैतहै॥ अरकारणतिसकोंकहितेहैं॥ जो
कार्यतेपूर्वहोवे॥ अरपाछेभीरहीहोवे॥ जेसेघटकेआदिभीमृत्तकाहै॥ अरअंतभीमृ
त्तिकाहोतीहै॥ तिसकोंकारणकहीताहै॥ सोआत्माविषेनआदिहै॥ नअंतहै॥ आत्माअ
नंतहै॥ अरकारणतवहोताहै॥ जबपरिणामीहोताहै॥ सोआत्माअच्युतहै॥ आप
णेस्वरूपतेगिरियाकदाचितनही॥ अरभोगताभोक्तानहीहोताहै॥ जहांद्वैतहै॥ सोआ
त्माअद्वैतहै॥ भोगताभोगदोनोंनही॥ अरआत्माकर्मभीनही॥ जोआत्मातेआदिको
नही॥ जिसतेआत्मासिद्धहोवे॥ अरकिसीकाकार्यभीनही॥ जोकार्यहोताहै॥ सोइंद्रियों
काविषयहोताहै॥ सोआत्माअव्यक्तहै॥ अरजोकार्यहोताहै॥ तिसकाकारणभीहोता
है॥ सोआत्मासर्वकाआदिहै॥ तिसकाकारणकोऊनही॥ सोसर्वात्माहै॥ अरस्वच्छहै
अरआकाशवत्निर्मलहैसोतेरास्वरूपहै॥ राजोवाच॥ हेभगवन्, बडाआश्चर्यहै, मैं
जानियाहै॥ जोआत्माअद्वैतहै॥ सोनकिसीकाकार्यहै॥ अरनकारनहै॥ अरनभवरूपहै
सोमेंहों॥ अरनिर्मलहों॥ विद्याअरअविद्यातेरहितहों॥ अरनिर्वाणपदहों॥ अरनिर्वि
कल्पहों॥ मेराविषेफुरनाकोऊनही॥ बड़ाइकेसाहोजोमेंनही॥ अरमेंहीहों॥ ऐसाजो
सर्वात्माहोंसोमेंहों॥ मेरामझकरमझकोंनमस्कारहै॥ इतिश्रीनिर्वाणप्रकरणे
शिखरध्वजविश्रांतिवर्णनेनामसर्गः॥ ७५॥ वसिष्ठोवाच॥ हेरामजीशिखरध्व
जकुंभकोंप्रबोधियाहूआ॥ ऐसेवचनकहिकरकेवलनिर्वाणपदविषेस्थितभया॥
अरनिर्विकल्पफुरणेतेरहितएकमहूर्तपर्यंतस्थितभया॥ जेसेदीपकवाइतेरहित
स्थितहोताहै॥ तेसेस्थितभया॥ कुंभोवाच॥ तबकुंभजगायकरकहा॥ हेराजनतें
नेसमाधसाध्यक्याहै॥ तत्वकेवलआत्मतत्वमात्रहै॥ अरमेंजानताहों॥ जोतेंपरमतत्व
करशोभताभयाहै॥ जेसेइवविषेरत्नहोतेहै॥ अरतिनकाप्रकाशबाहरदृष्टनही
आवता॥ जबइवेस्योंनिकासकरदेखीये॥ तबइसकाप्रकाशदृष्टआवताहै॥ तेसेआव

याःरूपहेबेस्पोनिकासियाहैं॥ अरपरमज्ञानकरशोभतभयाहैं॥ हेराजातेरेविषेनको
ऊक्षोभहे॥ नपुनःकोऊउपाधिहे॥ अवमेंसारकेरागद्वेषतेरहितभयाहैं॥ अवशां
तिरूपजीवनमुक्तहोइकरविचरो॥ तेरेताईउपाधकोऊनलागेगी॥ वसिष्ठोवाच॥ हे
रामजीजवइसप्रकारकुंभकह्या॥ तवराजाशांतहोइगया॥ अरकहाहेभगवन्‌जो
कछुतमउपदेशकरी॥ सोमसर्वकोभलीप्रकारमैंजान्याहे॥ अवएकप्रश्नश्रवरहे॥
तिसकाउत्तरकृपाकरकेकहो॥ जोमेंदृढस्थितपावो॥ हेभगवन्‌आत्मातोएकाहे
अरशुद्धहेअरनिराभासहे॥ केवलआकाशरूपहे॥ अरचेतनमात्रहे॥ तिसविषइ
ष्टादर्शनदृश्यत्रिपुटीकहांतेउपजीहेसोकहो॥ कुंभोवाच॥ हेराजाजेकछुस्थाव
रजंगमसंसारहे॥ सोमहाप्रलयपर्यंतहे॥ जवमहाप्रलैहोतीहे॥ तवकेवलआत्मा
हीशेषरहिताहे॥ अरस्वच्छनिर्मलहोताहे॥ नहांनतेजहोताहे॥ नअंधकारहोताहै
केवलआपणेआपस्वभावविषेस्थितहोताहे॥ अरजेताकछुआनंदहे॥ तिसकाअ
धिष्टानआत्माहे॥ अरसत्यकहीयेजिसकाउछिद्रदेखकरकेकहे॥ अरअसत्यकहीये
जिसकोनाहीकहे सत्यअसत्यतेरहितहे॥ अरसर्वकलाकरसंयुक्तहे॥ जोआपना
स्वभावमात्रहे॥ जिसविषेउपायकोऊनहीं॥ अरसर्वदाप्रकाशमानहे॥ अरसर्वदा
उदयरूपहे॥ तिसपरमात्माकाइहसंसारचमत्कारहे॥ जेसेरत्नोंकाचमत्कारला
टहोतीहे॥ तेसेइहसंसारब्रह्मरत्नकाचमत्कारहे॥ तोतेब्रह्मरूपहे॥ इतरककु
नहीहुआ केवलब्रह्मरूपहे॥ अरब्रह्मतेइतरकरकेमिथ्याहे॥ तोतेरीसंवेदन
भीमिथ्याहे॥ आत्माविषेअहंत्वकाउत्थानकोऊनहीं॥ केवलज्ञानमात्रहे॥ अर
केवलसत्यरूपहे॥ अरआनंदरूपहे॥ अरअविद्यातमतेरहितप्रकाशरूपहे॥ अरप्र
माणकरनहीजाणीता॥ जोइंद्रीयोंकाविषेनहीं॥ अरमनकीचिंतवणीतेरहित
हे॥ काहेतेजोसर्वकाइष्टाहे॥ अरसर्वकाआपनाआपहे॥ प्रनभवरूपहे॥ हेराजा
तिसविषेस्थितहो॥ वडाइकेसाहे॥ आत्माजोवडियोंतेवडाहे॥ अरसूक्ष्मतेसूक्ष्महे
अरस्थूलतेस्थूलहे॥ जिसविषेआकाशभीकिसीठोरअणुजेसापाईताहे॥ अरत्रै
लोकभीजिसविषेतृणसमानपाईये॥ आपणेआपकरश्रवणहे॥ अरआपणेआपक
रदुरमहे॥ अरकिंचितभीतिसतेकछुउत्पन्ननहीभया॥ अरनानाप्रकारकरके
स्थितभयाहैं॥ अरफुरणेकरकेजगतभासताहे॥ फुरनेकेनिवृत्तहूयेतेशुद्धआ
त्माहे॥ तवराजेकह्याहेभगवन्‌तमकहितेहो॥ तोसंसारसंवेदनमात्रहे॥ अरआ
त्माशांतिरूपहे॥ अरनिर्विकल्पहे॥ तोतिसविषेसंवेदनफुरनाकहांतेआयाहे
तवकुंभकहाहेराजनफुरनाभी॥ आत्माकाचमत्कारहे॥ जेसेपवनविषेस्पंदफुर
नाशक्तिभीहे॥ अरनिस्पंदरहिरनाशक्तिभीहे॥ जवफुरताहे॥ तवसपर्शवलता
मलूमहोताहे॥ जवठहिरजाताहे॥ तवमलूमनहीहोता॥ तेसेसंवेदनजवफु
रतीहे॥ तवनानाआकारहोतेहैं॥ अरजगतभासताहे॥ जवफुरणामिटजाताहे
तवकेवलशुद्धआत्माभासताहे॥ हेराजाआत्मासत्तामात्रहे॥ अरसंसारभीतन्मात्र
आत्माहीहे॥ तोसम्यकदृष्टकरदेखीयेतोसावदाईजगतभासताहे॥ जवअसम्यक
दृष्टकरदेखीयेतोदुखदाईजगतभासताहे॥ जिसकेमनविषेसंसारभावनाहे॥ ति
सकोदुखदाईभासताहे॥ अरजिसकेहृदयआत्मभावनाहोतीहे॥ तिसकोआत्मा
हीभासताहे॥ अरसत्यरूपहोताहे॥ काहेतेजोआत्मानामआपनाहे॥ जिसज
गतकोआपणाआपजाणियाहे॥ तिसकोदुखकहांतेहोवे॥ हेराजनइसंसारके
वलभावनामात्रहे॥ जेसीजेसीभावनाहोतीहे॥ सोतेसीतेसीदृष्टआवतीहे॥ जिस
कीभावनाविषविषेअमृतकीहोवे॥ तोविषभीअमृतहोजातीहे॥ अरजिसको
भावनाअ॥ अमृतविषविषकीहोतीहे॥ तवअमृतभीविषहोइजाताहे॥ काहे

न

तेजोसंसारभावनामात्रहे॥ जिसकीभावनाइहदृढकरताहे॥ यद्यपिआगेवस्तु
होहनाहोवे॥ तोभीहोजातीहे॥ तातेसंसारभावनामात्रमिथ्याहे॥ परज्ञानवान
कोदुखकहांचितनहोइदेता॥ अरअज्ञानीकोदुखदाईहे॥ हेराजनअहंताअरसं
वेदनचितअरचेतनइहभीआत्माकोसत्ताहे॥ जेसेआकाशकहीयेशून्यके
होये॥ नभकहीये॥ इहसर्वसत्ताआकाशकीहे॥ तेसेसर्वसत्ताआत्माकीहे॥ आ
त्मातेइतरकछुनहीं॥ अरतेसर्वआत्माकेआश्रितहे॥ जेसेभूषणस्वर्णकेआ
श्रहे॥ अरस्वर्णभीपरिणामहोकरभूषणहोताहे॥ जोस्वर्णरूपकोत्यागताहे
आत्मातेसेभीनहीं॥ केवलएकरसहे॥ अरआपणेआपहीविषेस्थितहे॥ के
दाचितपरिणामकोप्राप्तहीभया॥ इहसंवेदनआत्माकाचमत्कारहे॥ अरस
त्यअसत्यतेपरेहे॥ जेतीकछुदृश्यहे॥ सोआत्माविषेनहीं॥ चितकरकेरचीहे
इसीतेपरहे॥ हेराजनसोकार्यकारणकिसकाहोवे॥ कार्यकारणतवहोताहे
जोदृश्यहोतीहे॥ सोआत्माकिसकाविषेनहीं॥ तोकार्यकारणकिसकाहोवे
अरविश्वकीआदिभीआत्माहे॥ अरअंतभीआत्माहे॥ अरमध्याविषभीआत्माहे
जोकछुअवरभासेसोभ्रांतिमात्रहे॥ अरजेसेआकाशविषेचंद्रअरमंडलपरद
ष्टआवतेहे॥ तिनकेआदिभीआकाशहे॥ अरमध्यभीआकाशहे॥ अंतभीआ
काशहे॥ जोचंद्रमंडलपरदृष्टआवतेहे॥ सोमिथ्याहे॥ जेसेअग्निनानाप्रकार
कीदृष्टआवतीहे॥ सोआकारमिथ्याहे॥ एकअग्निहीहे॥ तेसेसवकीआदिमध्य
अंतएकआत्माहीसारहे॥ हेराजनजलविषेदेशभीहोताहे॥ अरकालभीहो
ताहे॥ काहेतेजोदृश्यहे॥ आत्माइंद्रियोंकाविषेनहीं॥ प्रथमजाणियाजोइह
तेरेभ्रमकेस्थानउदाहे॥ अरभ्रमकेस्थानजायलीनभयाहे॥ तोस्थानतेदे
शहूआकिउ॥ अरउपजकरएताकालरहासोकालहूआ॥ जिसकोइंद्रियोंवि
षेकरनसकहि॥ तिसविषेदेशकेसेहोवे॥ अरकालकेसेहोवे॥ तवराजेकह्या
हेभगवन्‌मेंजाणियाहे॥ सोआत्माचिन्मात्रहे॥ ज्ञानइंद्रियोंअरकर्मेंद्रियां॥ अ
रमनतेपरेहे॥ अरदेशकालमनइंद्रियांकरजानीताहे॥ जोभ्रमकादेशहे॥ भ्र
मकाकालहे॥ जहांइंद्रियांअरमननहोतहांदेशकहांहे॥ अरकालकहांहे
हे॥ तवकुंभकहाहेराजनजोतेंऐसेजाणियाहे॥ तेनेतोजाणियाहे॥ आत्मा
विषेदेशकालकोऊनहीं॥ इनमनइंद्रियोंकरजाणीताहे॥ जोइहदेशहे
अरइहकालहे॥ जवइनतेरहितहोकरदेखे॥ तोकेवलआत्माहीभासेअ
रजोइनोंसहितदेखेतोसंसारहीदृष्टआवेगा॥ हेराजनइनोंतेरहितहोकरदेख
जोसेशायनतेरेविषेकोऊनरहे॥ जोभ्रमकामलकीया॥ अरअभ्रमकामलकेरोग
सेसारतवलगहोताहे॥ जवलगइनकाआपणासाथसयोगहोताहे॥ हेराज
नब्रह्मकरकेब्रह्मकोदेख॥ अरधरनकरकेधरणकोदेख॥ जातेंभीधरणीहो
वैं॥ जवधरणीहोवेगा॥ तवसर्वओरतेआपकोजानेगा॥ अरसर्वसेजातरीहो
होवहिगीया॥ अरविवेकापदकोप्राप्तहोवहिगा॥ जहांइंद्रियोंकीगमननहीं
केवलआकाशरूपहे॥ जेसेआकाशआपणीशून्यताकरकेपूर्णहे॥ तेसेतं
आपणेचेतनस्वभावकरकेपूर्णहोवेगा॥ अरजवमनसहितषटइंद्रियांते
रहितहोकरदेखहिगा॥ आपणेआपकों॥ वहुरइनसहितभीदेखहिगा॥
तवभीतेरेताईचैतन्यघनआत्माहीदृष्टआवेगा॥ संसारशब्दअरतिसका
अर्थतेरेहृदयतेउठजावेगा॥ शब्दइहहे॥ जोसंसारशब्दहे॥ अरइसकोसत
जाणनाअइहइसकाशब्दअर्थहे॥ सोभावनातेरीनिवृत्तहोजावेगी॥ केवल॥
आकाशरूपोहीआत्माभासेगा॥ अरसंसारसंवेदनमात्रहे॥ संवेदनकहीये

चितप्राकिचमत्कारहै॥ अरु इह चित प्रकृति आत्मा होइकर स्थित भई है॥ अरु आत्मा होइक
र संसार कों देखने लागी है॥ जो अंतर में देखती है॥ तब आत्मा ही दृष्टि आवता है॥ जब
बहिर्मुख होकर देखती है॥ तब संसार दृष्टि आवता है॥ आत्मा सदा एकरस है॥ जेसी
इह भावना करती है॥ तैसी आगे दृष्टि आवती है॥ जो संसार की भावना होती है॥ तब
संसार भासता है॥ अरु जो आत्मा की भावना होती है॥ तब आत्मा ही दृष्टि आवता है
अरु आत्मा सदा एकरस है॥ अरु असंसारी है॥ ताते हे राजन् आत्मा ही की भावना कर
जो आत्मा ही भासे तेरे ताई॥ इति श्री निर्वाण प्रकरणे शिखरध्वज बोधनाम
सर्गः॥८९॥ कुंभ उवाच॥ हे राजन् इह संसार जो तेरे ताई भासता है॥ सो आत्मा
विषे नहीं केवल शुद्ध आत्मा विषे अहं इदं जो उत्थान है॥ सोई संसार है॥ अहं का जो
चमत्कार है॥ सो न सत्य है॥ न असत्य है॥ न अंतर है न बाहिर है॥ न शून्य है॥ न अशून्य
है॥ केवल आपणे आप विषे स्थित है॥ तिस विषे वाणी की गम नहीं॥ वाणी तिस
कों कहती है॥ जहां दूसरा होता है॥ जहां दूसरा न होवे॥ तहां वाणी क्या कहे॥ इह क
हिणा भी तेरे उपदेश निमित्त कहिया है॥ आत्मा विषे किसी शब्द की प्रवृत्ति नहीं है
राजा ऐसा आत्मा कार्य कारण किसका होवे॥ अरु आत्मा शुद्ध है॥ अरु निराकार
है॥ अरु परिमाण ते रहित है॥ जो किसी लक्षण कर जाणीये सो आकार होइ कर स्थि
त भया है॥ अरु शांतिरूप है॥ हे राजा ऐसा आत्मा कारण कार्य किसका होवे॥ कारण
तब होता है॥ जो प्रथम परिणाम को प्राप्त होता है॥ अरु लोभ को प्राप्त होता है॥ सो
आत्मा शांतिरूप है॥ अरु कार्य तब होता है॥ जो क्रिया करके कार्य को उत्पन्न करता है
सो आत्मा अक्रिय है॥ क्रिया ते रहित है॥ अरु कार्य ते कारण को जाणीता है॥ सो आत्मा
चिह्नों ते रहित है॥ अरु परिमाण का विषय नहीं॥ ताते कारण कार्य आत्मा नहीं॥ अ
रु आत्मा को कार्य कारण मानणा यह अर्थ आवता है मेरे ताई॥ हे राजा जो वस्तु उपज
ती है॥ सो नष्ट भी होती है॥ अरु जो नष्ट होती है॥ सोऊ उपजती भी है॥ सो आत्मा सर्वदा
आदि है॥ अरु अजन्मा है॥ आत्मा विषे कोऊ विकार नहीं॥ तिसी विषे स्थित हो॥ जो ते
रा संकल्प निवृत्त हो जावे इह संसार अज्ञान करके भासता है॥ जब तूं स्वरूप विषे स्थित हो
कर देखेगा॥ तो संसार न भासेगा॥ अरु ऐसा भी न भासेगा॥ जो संसार आगे था॥ अरु अ
ब निवृत्त हूआ है॥ एक रस आत्मा ही भासेगा॥ केवल शून्य आकाश हो जावेगा॥
स्वरूप चेतन्य नाना कर्के भी ओही है॥ अरु नानात्व सत्य ते रहित है॥ द्वैत रूप भी ओही है
३ अद्वैत रूप भी ओही है अरु ऐसे भासेगा॥ इति श्री निर्वाण प्रकरणे शिखरध्वज प्र
बोधनाम सर्गः॥९०॥ कुंभ उवाच॥ हे राजा जो कछु देषीता है॥ सो केवल चे
तन्य घन है॥ जिस विषे अहं त्वं शब्द कोऊ नहीं॥ अहं त्वं शब्द प्रमाद करके होते हैं॥ ज
ब आत्मा विषे स्थित होकर देखेगा॥ तब आत्मा ते इतर कछु न भासेगा॥ तो अहं त्व
शब्द कहां भासे॥ हे राजन् इह नाना प्रकार की संज्ञा चित्त ने कल्पी है॥ जब चित्त ते र
हित होवेगा॥ तब नाना संज्ञा अरु एक संज्ञा कोऊ न रहेगी॥ हे राजन् सर्व ब्रह्म है इ
ह वाक्य वेद का सार है॥ जब इस वाक्य विषे दृढ भावना होवे॥ ऐसी बुद्धि होवे चेत
न एक रस है आवेगा॥ तब चित्त नष्ट हो जावेगा॥ जब चित्त नष्ट हूआ॥ तब केवल
महा शुद्ध आकाश की न्याई स्थित होवें॥ शांत भावें॥ विदेह होइ॥ भावें सदेह होइ
भावें दहिरहि॥ भावें चल हि॥ तेरे ताई कष्ट न होवेगा॥ निर्लेप पद को प्राप्त होवे
गा॥ जो पद सर्व की आदि है॥ अरु सर्वदा मुक्तिरूप है॥ तब राजे कहा हे भगवन् तु
म इह कहा जो चित्त के नष्ट हूए दुःख को ऊन रहेगा॥ सो चित्त नष्ट का उपाय तुम इसका
हा है॥ परंतु मैं दृढ कर के नहीं समझा॥ ताते मेरे दृढ होवण निमित्त कृपा करके
बहुर कहो॥ जो चित्त नष्ट कैसे होवे॥ तब कुंभ कहा हे राजन् इह चित्त किसी का

लका है॥ अरु न किसी को है॥ न इह देखीता है॥ चित्त है ही नहीं॥ तो मेरे ताई क्या क
हो॥ अरु जो चित्त तेरे ताई दृष्टि आवता है॥ तो तूं आत्मा ही जान॥ आत्मा ते इतर कछु व
स्तु नहीं॥ हे राजन् महासर्ग के आदि अरु अंत विषे अहं कोऊ नहीं॥ केवल आत्मा
ही है॥ इह कहिणा भी आत्मा विषे नहीं॥ तेरे जनावणे निमित्त मैं कहा है॥ अरु म
ध्य जो कछु दृष्टि आवता है॥ सो अज्ञानी की बुद्धि विषे है॥ आत्मा विषे अहं कोऊ नहीं
आत्मा किसी का उपादान कारण अरु निमित्त कारण नहीं॥ काहे ते जो अच्युत है॥ परिणा
म को नहीं प्राप्त भया॥ अरु उपादान भी परिणाम करके होता है॥ आत्मा शुद्ध है॥ अरु नि
राकार है॥ अरु आकाश रूप है॥ सो कार्य कारण किसका होवे॥ अरु चित्त भी वास
नारूप है॥ वासना तब होती है॥ जब वास्य होता है॥ वासना कहीये फुरना अरु वास्य क
हीए॥ अरु वासना करके नेयामय॥ जो आगे सृष्टि होन नहीं॥ तब वासना किस की फुरे॥ अरु वि
षे संसार की स्थिति कैसे होवे॥ ताते चित्त कछु नहीं॥ इह विश्व आत्मा का चमत्का
र है॥ अरु आत्मा का चमत्कार भी उपदेश निमित्त है॥ आत्मा प्रकाश अप्रकाश के भाव
ते रहित है॥ आत्मा विषे कोऊ नहीं॥ काहे ते जो अद्वैत है॥ निरालंब केवल आपणे आ
आप विषे स्थित है॥ हे राजन् संसार भी नहीं भया॥ अरु चित्त भी नहीं भया॥ तो अहं
त्वं शब्द आत्मा विषे कोऊ नहीं॥ इस शब्द भी आत्मा विषे कोऊ नहीं॥ इह शब्द भी आत्मा
विषे कोऊ नहीं॥ इह शब्द तब होते हैं॥ जब चित्त होता है॥ अरु चित्त तब लग है जब ल
ग वासना है॥ जब निर्वास पद को प्राप्त भया॥ तब कल्पना कोऊ नहीं रहिती॥ हे राज
न् इस संसार महाप्रलय विषे नष्ट हो जावेगा॥ सत्य असत्य संसार कोऊ न रहेगा॥ ए
क आत्मा ही शेष रहेगा॥ जो निराकार अरु शुद्ध है॥ अरु जब लग महाप्रलय नहीं भ
ई॥ तब लग संसार है॥ सो महाप्रलय क्या है॥ सो श्रवण कर एक क्षण आत्मा का सा
क्षात्कार होवणा॥ तिस करके सृष्टि का शेष भी न रहेगा॥ सो ज्ञान ही महाप्रलय है॥ अ ले
रु अब जो दृष्टि आवता है॥ सो मिथ्या है॥ इह क्रिया भी मिथ्या है॥ अरु इस का भान होव
णा भी मिथ्या है॥ तैसे जाग्रत संसार भी मिथ्या है॥ स्वप्न मात्र है॥ कारन विना ही दृष्टि
आवता है॥ जो कारण विना है॥ सो मिथ्या है॥ इस का कारण अज्ञान ही है॥ जो आप
कों न जाणना॥ जब आप कों जाणिया॥ तब आपणा आप ही भासेगा॥ जैसे स्वप्ने वि
षे आपणे तें न जाणने कर भिन्न आकार भासते हैं॥ जब आप कों जाणिया तब आ
पणा आप ही जानीता है॥ जो मैं हों था॥ हे राजन् मेरे ताई तो एक आत्मा ही दृष्टि आ
वता है॥ अरु आत्मा ही है॥ आत्मा ते इतर संसार कोऊ नहीं॥ अरु इह संसार को स्थिर
मान मूर्ख लेता है॥ सदा चलरूप जाणीता है॥ अरु वेद शास्त्र लोक भी कहिता है
जो संसार मिथ्या है॥ अरु आपनी जाणता है॥ जो नष्ट होता जाता दृष्टि आवता है ति
स विषे आस्था करणी मूर्खता है॥ आत्मा विषे संसार नाना अरु अनाना कोऊ नहीं
आत्मा संवेदा आपणे आप विषे स्थित है॥ शुद्ध है अरु अच्युत है॥ जिंउ का तिउं है॥ इ
ति श्री निर्वाण प्रकरणे शिखरध्वज बोधनाम सर्गः॥९१॥ शिखरध्वज उ
वाच॥ हे भगवन् अब मेरा मोह नष्ट भया है॥ अरु आपणा आप मैं जाणिया है॥ त
मारी कृपा ते संशय मेरा निवृत्त भया है॥ अरु शोक समुद्र कों मैं अब तरिया है॥ अ
रु शांति पद को प्राप्त भया हों॥ अच्युत अरु चिन्मात्र हों॥ अरु अहं त्वं शब्द मेरे विषे कोऊ
नहीं॥ निर्वाण पद को प्राप्त भया हों॥ अच्युत अरु चिन्मात्र हों॥ केवल हों॥ अरु अनन्य हों॥
कुंभ उवाच॥ हे राजन् आत्मा शुद्ध अरु आकाश की न्याई निर्मल है॥ अरु आकाश
ते भी अति निर्मल है॥ तिस विषे अहं मल जो है सो अहं मोह ते उपजी है॥ मोह कहीये
अविचार॥ जब विचार होता है॥ तब अहं को ऊन नहीं होता॥ इह विश्व संवेदन से
रहे है॥ संवेदन सर्व के आदि होकर स्थित भई है॥ जब संवेदन निर्वाण होइ होती है
तब सर्व लीन होता है॥ संवेदन विषे बंध अरु मुक्ति है॥ जब बहिर्मुख होती है॥ त

बंधहोताहै ॥ जबअंतरमात्रहोतीहै ॥ तबमोक्षहोताहै जिसनेमनअरइंद्रियोंते
रहितहोकरआपणाआपदेखियाहै ॥ तिसकोंजिडकातिडदृष्टआवताहै ॥ अरजो
मोहसंयुक्तदेखताहै ॥ तिसकोंविवर्तदृष्टआवताहै ॥ जैसेसंम्यकदृष्टकरकेभूष
णोंविषेभीस्वर्णदृष्टआवताहै ॥ जबभूषणोंकेआकारजातेहैं ॥ तबसोनाहीहै
अरजोबुद्धिइंद्रियोंविषेभीफुरतीहै ॥ चिरकालकेअभ्यासकरकें ॥ जोभीप्रारब्धके
वेगपर्यंतचेष्टाहोवें ॥ तबचेष्टाविषेभीआत्मादृष्टआवताहै ॥ अरजोमुखहैति
सकोंसोनेविषेभूषणदृष्टआवतेहैं ॥ तातेकेवलआत्माकाचमत्कारहीकथ
नहोताहै ॥ जैसेसोनेविषेभूषणदृष्टआवतेहैं ॥ अरआकाशविषेनीलता ॥ अर
वायुविषेस्पंदतैसेआत्माविषेसृष्टिहै ॥ जैसेआकाशविषेनीलतादेखणेमात्रहै
वास्तवकछुनहीं ॥ तैसेआत्माविषेसृष्टिकछुनहीं ॥ वास्तवकरकेभ्रांतमात्रहीहै
जबभ्रांतिनिवृत्तहोवेगी ॥ तबजगतकाप्राकृतअरअर्थसर्वकोंरतेत्यागहोवेगा प्रा
कृतअरअर्थकीभावनातेचेष्टाभीहोतीहै ॥ तौरसजोहैरागअरअभिलाषातिस
तेरहितहोतीहै ॥ अरइच्छाकोऊनहीहोता ॥ इसीकोंमुनीश्वरनिर्वाणकहितेहैं जब
ऐसानिर्वाणपदहुआतबशून्यअरशांतिपदकोपाइकरस्थितहोताहै ॥ हेराज
न जबअहंकाउत्थानहुआसोईहीबंधनहै ॥ अरअहंकारनिर्वाणइहीमुक्तिहै
अरअहंकेहोवणेकरकेंसंसारदुखहै ॥ तबलगअहंकारकाउत्थानहै ॥ तबलग
संसारहै ॥ अरजबलगसंसारहै ॥ तबलगअहंकाउत्थानहै ॥ जबसंसारकीसत्ता
जातीरहै ॥ तबअहंजोसंवेदनहै ॥ सोभीनष्टहोजावे ॥ अरसंवेदननष्टभयी ॥ त
बशुद्धआत्माहीप्रकाशरहेगा ॥ अरअनामेकहीये ॥ निरइच्छहीभावनाहोवे ॥ अर
अहंभ्रमकाउत्थानभीनरहे ॥ अरचेतन्यमात्रहीरहेगा ॥ हेराजन सर्वब्रह्महीकी
जोकोबुद्धिभईहै ॥ तिनकोंसंसारकीबुद्धिनहीं ॥ जैसीजैसीभावनादृढहोतीहै
तैसाहीआगेदृष्टआवताहै ॥ तिनकोंब्रह्मभावनादृढहोतीहै ॥ सोब्रह्मरूपदृढ
होजाताहै ॥ अरजिसकोंजगतकीभावनाहोतीहै तिसकोंजगतहीहोताहै
हेराजन तैंअबजानियाहै ॥ अरब्रह्मस्वरूपहुआहै ॥ जोशुद्धहै ॥ अरनिर्मलहै
जोकिसीशब्दअरलक्षणकाविषेनहीं ॥ हेराजन ऐसाआत्माकार्यअरकारण
किसकाहोवे ॥ जोकेवलअद्वैतहै ॥ अरइहविश्वआत्माकाचमत्कारहै ॥ जैसेस
मुद्रविषेनानाप्रकारकेतरंगपवनकरउपजतेहैं ॥ तोभीसमुद्रतेभिन्नअंतरनहीं
समझउरनेमात्रहैं ॥ जैसेस्वप्नेविषेमनोराजकरकेविश्वकोऊकल्पताहै ॥ अरना
नाप्रकारकीचेष्टाकरताहै ॥ इनकीचेष्टातबलगहै ॥ जबलगसंकल्पहै ॥ जबसंक
ल्पनिवृत्तहुआ ॥ तबशून्यथाहीरहिताहै ॥ जैसाआगेशून्यथा ॥ अरतिसकीसं
वेदनविषेसृष्टिथी ॥ तैसेइहसंसारसंवेदनअंतर्गतभयी ॥ तबसंसारकीसत्ता
जातीरहतीहै हेराजन संसारसत्ताजातीतबहै जोआगेहीसत्यहै ॥ अरजोअस
त्यहोतीहै ॥ तिसकानाशकदाचितनहीहोगा ॥ तातेसंवेदनकरकल्पतेहैं
जैसेएकशिलाविषेपुरुषपुतलीयांकल्पताहै ॥ तौशिलाविषेतोपुतलीकोऊ
नहीं ॥ ओहजिडकीतिडशिलाहीहै ॥ तैसेसंवेदनकरकेआकारदृष्टआवते
हैं ॥ जबचित्तसंवेदनतेरहितहोवेगा ॥ तबआत्माकोंआपणाआपजाणेगा अरस्व
प्रकाशपदकोंप्राप्तहोवेगा ॥ जोशांतिपदहै ॥ अरशुद्धआकाशरूपहै ॥ हेराजन सर्व
अर्थअरस्वप्रकाशकोंअभावनाइहब्रह्मअर्थहै ॥ तहांकोऊकल्पनानहीं ॥ जबसम्यक
दर्शीहोताहै ॥ तबशेषआत्मादृष्टआवताहै ॥ अरइहभावनाभीउडजातीहै ॥ जोइह
संसारहै ॥ अरएकब्रह्महै ॥ अरकेवलज्ञेयमात्रहोरहिताहै ॥ केसाज्ञेयरहिताहै जो
शिलाकीन्याईज्ञानहै ऐसेशेषरहिताहै ॥ इतिश्रीनिर्वाणप्रकरणेशिलाख्यजबो
धवर्णनंनामसर्गः ॥ ७४ ॥ राजोवाच ॥ हेभगवन जैसेतमकहितेहोसोसत्यहै अ

मेंजानताहों जैसाअरआत्माकाकार्यहै ॥ अरआत्माकारणहै ॥ जोआत्माकाकार्यहै
अ ॥ तोभीअनंतस्वरूपहुआ ॥ आत्मातेइतरनहीं ॥ श्रीवाच ॥ हेराजन आत्माचेतन
मात्रहै ॥ कार्यकारणकिसीकानहीं ॥ जोआत्माअमनकोंहै ॥ अरक्रियातेरहितहै अ
संयुक्तहै ॥ अरनिरइच्छहै ॥ जोशब्दहैतोकार्यकारणकिसकाहोवे ॥ अरकारणकोंकि
येहोताजाणीताहै ॥ अरआत्माकिसीप्रमाणकाविषयनहीं ॥ जोअरसदोहै ॥ बुद्धि
तेरहितहै ॥ अरकारणतबहोताहै ॥ जबक्रियाहोतीहै ॥ सोआत्माक्रियातेअती
तहै ॥ अरअजुतहै ॥ अरवाणीकाविषयनहीं ॥ निरालहै ॥ नकिसीकाकारणहै ॥ नका
र्यहै ॥ नकर्महै ॥ केवलजिडकातिडस्थितहै ॥ अरचेतन्यमात्रहै ॥ अरशिवरूपहै अ
रशुद्धरूपहै ॥ अरइहविश्वभीचेतन्यमात्रहै ॥ जैसेआकाशविषेआकाशस्थितहै
वे तैसेआत्माविषेविश्वआत्मरूपकरस्थितहै ॥ ऐसेजोविश्वचेतन्यमात्रहै ॥ तिस
विषेअसम्यकदर्शीनानाप्रकारकल्पताहै ॥ अज्ञानकरकें ॥ अज्ञानकहीयेवस्तु
कानजानणा ॥ सोचलपरमात्माहै ॥ तिसकेप्रमादकरकेंवासनारूपजोचित्त
है ॥ सोविश्वकोंकल्पताहै ॥ सोविश्वशब्दमात्रहै ॥ शब्दकहीयेनाममात्रहै ॥ अर्थ
नेककछुनहीं ॥ जैसेद्वितीयचंद्रमाआकाशविषेदेखीताहै ॥ अरजैसेसमुद्रविषे
तरंग ॥ अरजैसेमृगतृष्णाकेजलविषेजल ॥ जैसेबालककोंपरछावेविषेभू
तनाभ्रमकरकेभासताहै ॥ तैसेअसम्यकदृष्टीआत्माविषेविश्वकल्पताहै
अरसम्यकदर्शीऐसेजानताहै ॥ जोआत्माशुद्धहै ॥ अरअजन्माहै ॥ अरअविनाशी
है ॥ अरपरमब्रह्महै ॥ अरनिरालहै ॥ हेराजन जबतैंसम्यकदृष्टकरकेदेखेगा
तबसंसारकाप्रध्वंसाभावनदेखेगा ॥ काहेतेजोचित्तकाकल्पियाहुआहै ॥ अर
चित्तअज्ञानकरकेउपजियाहै ॥ अरस्वरूपविषेनचित्तहै ॥ नअज्ञानहै ॥ नसंसारहै
केवलअद्वैतमात्रहीहै ॥ तहांएककहांअरद्वैतकहां ॥ केवलमात्रपदहै ॥ जबअ
ज्ञाननष्टहुआ ॥ तबअहंत्वंसंवेदनचित्तसभनष्टहोजावेगा ॥ बहुरइहभ्रमदृष्टन
आवेगा ॥ हेराजनआत्मातेजोकछुदृष्टइतरआवताहै ॥ सोअज्ञानकारकेहै ॥ वि
चारकीयेतेनहीरहिता ॥ राज्ञोवाच ॥ हेभगवन अज्ञानक्याहै ॥ अरनाशकैसे
होवेसोकहो ॥ श्रीवाच ॥ हेराजनएकज्ञानहै ॥ अरएकअज्ञानहै ॥ ज्ञानइह
हैजोपदार्थप्रत्यक्षकोंजानना ॥ अरइहअज्ञानहै ॥ जोपदार्थकोंनजाणना ॥ अर
एकज्ञानभीअज्ञानहै ॥ सोश्रवणकर ॥ मृगतृष्णाकाजलदेखकरआस्थाके
रणीजोहै ॥ अरजेवरीविषेसर्पअरसीपीविषेरूपादेखणा ॥ अरतिसकोंसत्य
जाणना ॥ इहज्ञानभीअज्ञानहै ॥ काहेतेअज्ञानहै ॥ जोसम्यकदर्शी
होकरनहीदेखिया ॥ इहदृष्टांतहै ॥ अरदाष्टांतइहहै ॥ जोशुद्धआत्मानिरा
कारअच्युतविषेमहा ॥ अरअभ्रमकावरनअरआश्रमहेमेरा ॥ अरनानाप्र
कारकोविश्वजाणना ॥ सोज्ञानभीअज्ञानहै ॥ अरसदेवनाहै ॥ हेराजन नको
ऊजन्मताहै ॥ नमरताहोताहै ॥ जिडकातिडआत्माहीस्थितहै ॥ तिसविषेज
न्ममरनआदिकविकारदेखणा ऐसाजोज्ञानहै ॥ सोअज्ञानहै ॥ हेराजन जै
सेकोऊब्राह्मणहोवे ॥ अरऊचीबांहकरकेकहे ॥ जोमेंशूद्रहों ॥ मेरेताईदे
वकाअधिकारनहीं ॥ अरजैसेकोऊपुरषकहेजोमेंमराहों ॥ तिसकोंमेजानों
हों ॥ अरआपकोंकछुवरनअरआश्रमकाअभिमानलेकरकहिणासोमरखे हेराज
ताहै ॥ काहेतेजोसम्यकदर्शी ॥ जबजिडकातिडजाणे ॥ तबइहदोनहोवे
न ॥ ऐसाज्ञानजोसम्यकदर्शीनकरनष्टहोजावेसोअज्ञानहै ॥ जैसेसूर्यकीकि
रणविषेजलकीप्रतीतहोतीहै ॥ अरकिरणोकेज्ञानतेजलकाज्ञाननष्टहो

वा॰ नि॰
प्र॰
६३

जाता है॥ सो अज्ञान तथा जलका जाणना॥ सो सर्पका ज्ञान जेवडीके ज्ञानते नष्ट हो
जाता है॥ सो तत्त्वज्ञान है॥ तैसे शुद्ध चिन्मात्र विषे आपको देह इंद्रियां अरु विस्तु देखणो
इह जो ज्ञान है॥ सो अज्ञान है॥ सो सम्यक् दर्शन करके नष्ट होता है॥ जब ऐसा सम्य
क् दर्शन होवेगा॥ तब अध्यात्मताप निवृत्त होजावेगा॥ अरु शुद्ध होवेगा॥ जो आत्मा
है॥ अरु अजन्म है॥ अरु शांतिरूप है॥ ऐसा तूं है॥ हे राजन् अज्ञान भी अवर कोऊ नहीं
इस चित्तके उदय होवणेका नाम अज्ञान है॥ अज्ञानका कारन चित्त है॥ जो पदा
र्थ चित्त करके हूआ है॥ सो चित्त करके नष्ट होता है॥ ताते तूं चित्त करके चित्तको ना
श कर॥ जैसे अग्नि पवन करके उपजती है॥ अरु पवन करके शांत हो जाती है॥ ते
से चित्तको चित्त करके नष्ट कर॥ हे राजन् तूं तत् है॥ न मैं हों न इंद्रियां है॥ न आकाश है
न शून्य है न इह जगत है॥ केवल शुद्ध आत्मा है॥ हे राजन् चित्तका उदय होवणा
इह अज्ञान है॥ जब अज्ञान नाश हूआ॥ तब चित्त अरु अहं ते सर्व नष्ट होजाता है॥ हे
राजन् जो चित्त ही न हो तो चित्तका कार्य विश्व कहां होवै॥ इह अज्ञान कर दृश्य
आवते हैं॥ जो इह विश्व है॥ अरु इह चित्त है॥ केवल आपणे आप विषे आत्मा स्थित है॥
हे राजन् तूं शुद्ध आत्मा है॥ अरु एक है॥ अरु प्रकाशरूप॥ अच्युत है॥ अरु निरंतर है॥
अरु देह इंद्रियादिक रूप होइ करके ही स्थित भया है॥ इच्छा अरु अनिच्छा भी ते
री है॥ जैसे चंद्रमा की किरणां चंद्रमाते भिन्न नहीं॥ तैसे तूं है॥ अरु निर्विकल्प है
कछु फुरणा तेरे विषे नहीं॥ तूं केवल जिउं का तिउं स्थित है॥ इति श्री निर्वाणप्रक
रणे परमार्थ उपदेशो नाम सर्गः॥ ५०॥ वसिष्ठ उवाच॥ हे रामजी जब ऐसे कुंभक हा
तब सिखरध्वज श्रवण करके शांतिको प्राप्त भया॥ नेत्रांको मूंद करके समभ अरु मौ
की चेष्टाते रहित भया॥ जैसे शिला ऊपर पुतली लिखी होती है॥ तैसा स्थित भया एक
मुहूर्त पर्यंत निर्विकल्प स्थित रहा॥ अरु बहुर उघडिया तब कुंभक कहा॥ हे राजन् आ
त्मा जो निर्विकल्प है तिस निर्विकल्प आपणे आप विषे ध्यान कीया है॥ तब तेरा अज्ञान नष्ट
भया है॥ अरु ज्ञानवान होइ भया॥ अरु जो ते इह जाणणे योग्य है॥ सो तैने जाणिया है॥ अरु शां
ति को प्राप्त भया है॥ अरु ज्ञानवान ही भया॥ तब राजे कहा हे भगवन् तुमारी कृपाते मैं उ
त्तम पदको प्राप्त भया हों॥ हे भगवन् जलवेलाके संगते जो अमृत पाईता है॥ सो
क्षीरसमुद्रते भी नहीं पाईता॥ अरु देवतियों विषे भी नहीं पाईता॥ तुमारी कृपाते
ऐसे अमृतको पाया है॥ जिसका आदि अरु अंत कोऊ नहीं॥ अनंत है॥ अरु अमृत
सार है॥ अब मेरे दुख सर्व नष्ट होगए हैं॥ अब मैं जागिया हों॥ अरु आपणे आप
को जाणिया है॥ मैने॥ मैं आत्मा हों॥ मेरे साथ चित्त कोऊ नहीं॥ मैं केवल आपणे
आपणे आप विषे स्थित भया हों॥ अरु इच्छा मेरे ताई कोऊ नहीं॥ मैं केवल आपणे
आप स्वभाव को पाया है॥ अरु सर्वके आदि पदको प्राप्त भया हों॥ अरु सो तो अनंत है
जिस विषे॥ ऐसे निर्विकल्प पदको प्राप्त भया हों॥ हे भगवन् ऐसा आपणा आप है
मेरा जिस करके सर्व प्रकाशते हैं॥ तिसके जाणे बिना कोट जन्म पाये हैं॥ अरु इहे
मेरे नष्ट भये॥ अब तुमारी कृपाते एक क्षण विषे जाना है॥ आगे श्रवण भी करता
था॥ सो कारण क्या जो आभासा जाना॥ अब जाना॥ कुंभ उवाच॥ हे राजन् जेते काल
इच्छ परिपक्व हूए हैं॥ काला यक होये वासना॥ जब वासना परिपक्व होती है॥ त
ब पके फलकी न्याई गिर पडती है॥ जैसे फल डंठल साथ परिपक्व होता है॥ तब वृ
क्ष बिना गिर पडता है॥ तैसे तेरी वासना अब परिपक्व भई थी॥ जो अंतःकरण शुद्ध
भया है॥ अब अज्ञान तेरा नष्ट भया है॥ जब अंतःकरण मलिन होता है॥ तब सं
तों के वचन नहीं लागते॥ अरु जब अंतःकरण शुद्ध होता है॥ तब संतों के वचन

लागते हैं॥ जैसे कोमल भूमि कों बाण लागता है शीघ्र ही वेध जाता है॥ तैसे ही शु
द्ध अंतःकरण विषे शीघ्र ही प्रवेश कर जाता है उपदेश॥ हे राजन् तेरी वासना भो
गों की अब नष्ट भई है॥ अरु स्वरूप जाणने की तेरी इच्छा भई है॥ ताते तूं अब जागि
या है॥ हे राजन् उपदेश मैं तब कीया है॥ जो अंतःकरण तेरा शुद्ध भया है॥ अरु अ
ति निर्विघ्न हो पडती है॥ जब निर्मल देह होती है॥ जैसे श्वेत वस्त्र होता है॥ तब के
सर का रंग तिसको शीघ्र ही चढ जाता है॥ अरु [illegible] चढता है॥ तैसे शुद्ध
अंतःकरण विषे संतों के वचन प्रवेश कर जाते हैं॥ अरु जो [illegible] है॥ तब लग
अंतःकरण मलिन होता है॥ तो भावें जेता उपदेश कीजिये तो स्थित नहीं होता
जब भोगों विषे वैराग हूआ तब वासना कोऊ न हो रहिती॥ केवल आत्मपद
की इच्छा होती है॥ तब स्वरूप का साक्षात्कार होता है॥ हे राजन् अब तेरा सर्व
त्याग सिद्ध हूआ है॥ अरु अज्ञान नष्ट हूआ है॥ जो उपाधि कोऊ न रही॥ चित्त होवे
तौ दुख पाय है॥ जब चित्त नष्ट हूआ॥ तब दुख कोऊ नहीं रहिता॥ अब तूं [illegible] वि
शो॥ तेरे ताई दुख कोऊ नहीं॥ अरु शोक भी कोऊ नहीं॥ अरु भय भी कोऊ नहीं॥ तब प्रा
प्तिपदको प्राप्त भया है॥ तब राजे कहा हे भगवन् अज्ञानीको चित्तका संबंध है॥ अ
रु ज्ञानवानको चित्तका संबंध नहीं होता॥ जो रूप विषे स्थित है॥ सो चित्त बिना जी
वन्मुक्त क्रिया विषे केसे वर्तता है॥ अरु चेष्टा विषे केसे वर्तता है॥ तब कुंभक
हा हे राजन् तूं सत्य कहिता है॥ सो ज्ञानीको चित्तका संबंध नहीं॥ सो ज्ञानी वि
षे चित्त कदाचित नहीं होता॥ जैसे पत्थर की शिला विषे अंकुर कदाचित नहीं होता॥ ते
से ज्ञानीको चित्तका संबंध कदाचित नहीं होता॥ हे राजन् चित्त जो है॥ सो वासना
रूप है॥ सो वासना जन्म मरणका कारण है॥ सो वासना जीवन्मुक्त को नहीं है॥
हिती॥ ज्ञानवान्‌को चित्त सत्यपदको प्राप्त भया है॥ अरु अज्ञानी चित्त विषे स्थि
त है॥ चित्त विषे स्थित होवणे कर जन्मना भी है॥ अरु मरना भी होता है॥ अरु जो
चित्त सत्त विषे स्थित है ज्ञानी॥ तिसको चित्तका संबंध नहीं॥ हे राजन् चित्त जो है
सो वासना रूप है॥ सो वासना जन्म मरणका कारन है॥ सो वासना जीवन्मुक्त
कौं न रहि रहिती॥ ज्ञानवान का चित्त सत्यपदको प्राप्त भया है॥ अरु अज्ञानी चित्त वि
षे स्थित है॥ चित्त विषे स्थित होवणे कर जन्मता भी है॥ अरु मृत्यु भी होता है॥ अ
रु जो चित्त सत्त विषे स्थित है॥ ज्ञानी तिसको बंधन निवृत्त प्रारब्ध भोगता है॥ अरु सर्व
आत्मा देखता है॥ जद्यपि इंद्रियां कर चेष्टा भी करता दृष्टि आवता है॥ तो भी सर्व ब्रह्म
देखता है॥ अरु क्रिया करणे का अभिमान तिसके नहीं होता है॥ जो मन करता है॥ अ
रु न भोगता है॥ अरु जो अज्ञानी आपको करता मानता है॥ तिसको संसार सत्य
भासता है॥ अरु सत्य जानके संकल्प विकल्प करता है॥ सो ज्ञानवान को संसा
र कौ सत्यता नहीं भासती॥ अरु आपको अकर्ता अभोगता देखता है॥ अरु अभि
लाषा सर्वके [illegible] नहीं करता॥ हे राजन् संसारको सत्य जानना अरु आपणा वि
षे क्रिया देखणी तब लग होती है॥ जब लग चित्तका संबंध होता है॥ जब विवि
के क्रिया देखणी तब लग होती है॥ हे राजन् चित्तका तैने त्याग
ते ही नष्ट हो गया॥ तब संसार अरु फुरना कहा रहे॥
कीया है॥ ताते सर्वत्यागी भया है॥ अरु आगे सर्वत्याग न था कीया जो अज्ञान न
ष्ट न था भया॥ अब अहंभावते रहित भया है॥ जो अज्ञान का कार्य था॥ जब अज्ञा
न नष्ट भया तब अहंभाव न रहा॥ अहंके त्याग करके त्याग सिद्ध हूआ॥ अरु आगे
तैने राजका संकल्प त्याग कीया था॥ सो राज विषे तेरा क्या है॥ वहुडते का त्यागको
या॥ वहुड इनने आदि लेकर सर्व सामग्री का त्याग कीया॥ अब तिसका त्याग हू
जो त्यागणे वाला अहंभाव है॥ ताते सर्वत्यागी भया॥ अरु जो कछु जाणने योग्य है॥
तिसको जाणिया है॥ अरु शांतिपदको प्राप्त भया है॥ हे राजा तूं आत्मा है॥ अरु सर्व

इस्त्रोंने रहित हैं॥ अरु वृत्ते जागियां हैं॥ अरु चित्त का त्याग कीया है॥ तां ते सर्व आत्मा भ
या है॥ अरु ग्रहे नहीं हे राजन् जब दोष अंतर होते हैं॥ तब चित्त कों संज्ञा नाना प्रकार
की होती है॥ जो अमृत अरु विष सों ले इ देवें यमने अथ में इह होते हैं॥ अरु जो एक कौ
अरु रहे॥ तब सर्व का आत्मा है॥ तैसे इह सब अज्ञान नष्ट भया है॥ अरु सत्यपद को
प्राप्त भया हैं॥ अरु शुद्ध निर्मल भया है॥ हे राजन् जो ज्ञानवान् है॥ तिस चित्त का त्या
ग कीया है॥ वहु इ तिन कों इ दुःख कोऊ नहीं होता॥ सो ते तिस पद कों प्राप्त भया है॥
जिस विषे दुःख कोऊ नहीं॥ अरु तिस पद कों प्राप्त भया है॥ जहां स्वर्गादिक सुख तिन ते
हैं॥ स्वर्ग विषे भी ते अरु अतिशे होता है॥ अतिशे कहीये पुन्य करणे हारा॥ जो आप
पि को ऊर्ध देखता है तब चाहता है॥ जो मैं भी इसी जैसा होवौं॥ अरु दोकहीं
ये मत इस स्वर्ग ते गिराय मिलो सो दोनो प्रकार दुःख होता है॥ सो पुण्य पाप दोनों
का अरु त्याग किया है॥ तां ते सर्व त्यागी है॥ अरु अज्ञानी जो पापी जीव हैं॥ तिन कों
स्वर्ग ही भला है॥ जैसे स्वर्ण का पात्र न पाइये॥ तो पित्तल का भी भला है॥ तैसे स्वर्ग का
पात्र जो है सो जानते हैं॥ तब लग आत्मज्ञान होवे॥ तब लग पित्तल का पात्र जो है॥ स्व
र्गादिक सो नरक ते भला है॥ अरु तम संसार विषे यों कों कछु नहीं॥ आत्मपद विषे
सर्व पदार्थों की इच्छा ता है तब वे की उत्पत्ति आत्मा ते है॥ हे राजन् वर्ण अरु आश्र
म विषे का आस्या करणी है॥ न होता ते इनकी उत्पत्ति है॥ अरु जहां लीन होत
है॥ सामर्थ्य विषे जिसके अज्ञान ते दृष्ट आवते है॥ तिस विषे स्थित होवो ये॥ जिस
के ज्ञान ते सर्व लीन होइ जाते हैं॥ हे राजन् संकल्प विकल्प जो उठते हैं॥ तिन वि
षे स्थित मत हो॥ जिस विषे उत्पत्त लीन हैं॥ तिस विषे स्थित हो॥ अरु तप आदिक क्रि
या कर क्या सिद्ध होता है॥ जिस करि तप आदिक सिद्ध होते हैं॥ तिस विषे इ स्थि
त हो॥ जैसे वृक्ष विषे क्या स्थित होवणा है॥ जिन मेघों ते वृक्ष उत्पत्त होती है॥ तिस वि
षे स्थित होवो अरु॥ हे राजन् जैसे स्त्री होवे॥ अरु भरता ते का रूप दोष वाहे॥ अरु आपन
के है॥ तैसे तप आदिक जो है॥ तिन कर क्या सिद्ध होता है॥ सो तिन कर आत्म प्रश्न को
इच्छा न करे॥ आपने आप कर पावे है॥ हे राजन् आत्मा तेरा आपणा आप है॥ ति
सी कर सर्व सिद्ध होती है॥ जो वस्तु पाछे त्याग करणी होइ॥ तिस कों ज्ञानवान् प्र
थम ही नहीं अंगीकार करता॥ अरु जे तीकुछ तप आदिक कथा है॥ तिन कों वि
चार कर विचित्र क्या रचता है॥ आपणे आप कों देख जो अनुभव रूप है॥ अरु सर्व दा
ता निरंतर आपणे सत्य विषे स्थित है॥ जब तें आपणे आप कर आप कों देखे
हिंगा तप आदिक क्रिया कों इह कारके॥ तब पूर्ण भाग होइगा॥ जैसे बादलों के इ अभ
ये चंद्रमा प्रकाशमान शोभा पावता है॥ तैसे तें भी भोगों की चपलता को त्याग क
रके शोभा पावहिगा॥ जब इंद्रियों कों जीत हिगा॥ अरु किसी पदार्थ विषे आसक्त
न होवेगा॥ अरु सर्व वासना का त्याग करेगा॥ तब ज्ञानवान् होवहिगा॥ अरु जिस
सर्व वासना का त्याग कीया है॥ तिस कों विलज्जाणना॥ सो सर्व राजियों का स्वा
मी है॥ जिस मन जीतिया है॥ सो चेष्टा विषे भी निइ कांतिइ रहा है॥ जैसे पवन स्पंद
तो है॥ ऊरणा अरु रहित जावणा तुल्य है॥ तिस विषे ते सत्ज्ञानवान् को खेद कछु न
होइ होता कहै॥ तब राजे कहा हे भगवन् सर्व संशयों के छेदन हारे॥ स्पंद अरु निस्
पंद विषे ज्ञानी जिइ कांतिइ कैसे रहता है॥ सो कृपा करके कहो॥ कुंभोवाच॥ हे राज
न चेतन्य आकाश जो है॥ सो आकाश ते भी निर्मल है॥ तिस का साक्षात्कार हूआ॥ तब
जहां देखता है॥ चेतन्य ही भासता है॥ जैसे समुद्र के जाणे ते तरंग बुदबुदा सर्व जल ही
भासते हैं॥ तैसे ही विदिता आत्मा के देखे ते हय फुराणे विषे भी आत्मा ही दृष्ट आव
ता है॥ अरु जिस आत्मा के देखे ते हय फुरणे विषे भी आत्मा ही दृष्ट आवता है॥ अरु जि
स आत्मा कों नहीं जाणिया॥ तिस कों नाना प्रकार का जगत भासता है॥ जैसे जल

के जाणे बिना तरंग बुदबुदे भिन्न दृष्ट आवते हैं॥ अरु जल के जाणे ते तरंग भी ज
लमयी भासते हैं॥ हे राजन् सम्यक्दर्शी कों जगत आत्म स्वरूप है॥ अरु अस
म्यक्दर्शी कों जगत है॥ तां ते तू सम्यक्दर्शी होकर देख जो जगत भी आत्म स्व
रूप है॥ अरु सम्यक्दर्शन करके जैसे प्राप्त होता है सो श्रवण कर॥ सत शास्त्रों का वि
चार करणा॥ अरु संतों का संग करणा॥ तब दृढ भावना कर करीये॥ तब केतेक
काल ते स्वरूप का साक्षात्कार होता है॥ जब स्वरूप का साक्षात्कार भया॥ तब
स्पंद अरु निस्पंद विषे एक समान होता है॥ हे राजन् जाके समीप होमा वीर हो
वे सो साक्षी के निमित्त परबल किइ थो जो॥ अरु किंइ बहु इ॥ तैसे ते रे चूर ही वि
षे बलवे ज्ञा चूड़ाला थी॥ तिस का त्याग कर के बन विषे आइ कर तप का आ
रंभ कीया॥ तां ते कष्ट बड़ा पाया॥ पर अब ते जागा है॥ अब इ ख ते शेष भये हैं॥
अब ते सत्य पद को प्राप्त भया है॥ जैसे जेवड़ी के न जाणने कर के सर्प भासता है
अरु सम्यक्दर्शी को भली प्रकार जाणने कर के सर्प भासता नहीं॥ जेवड़ी ही भा
सती है॥ तैसे ही भली प्रकार निस्संदेह होकर जिस आपणा आप देखिया है॥ तिस
कों स्पंद फुरणे विषे भी आत्मा भासता है॥ जब मन की चपलता मिटती है तां
बतरीया अतीत पद कों प्राप्त होता है॥ जिस पद को वाणी विषे नहीं कर सक
ती॥ हे राजन् तें भी तिसी पद को प्राप्त भया है॥ जो मन अरु वाणी रहित है
अरु तुरीयातीत पद है॥ जहां ते भय कोऊ नहीं॥ महाप्रशांत पद है॥ इति श्री निर्वा
ण प्रकरणे शिखिध्वज बोधनं नाम सर्गः॥ वशिष्ठोवाच॥ हे रामजी जब श्री
इस पद को कुंभ कीया राजा कों॥ तिस ते उपरंत कहा हे राजन् अब हम जाते हैं
स्वर्ग को ब्रह्मा जी के पास॥ जो नारद मुन आए हैं॥ अरु देवतियों की सभा वि
षे जो मेरे तांई न देखहिंगे॥ तब क्रोध करहिंगे॥ तां ते मैं जाता हों॥ अरु इस पद विषे जो
तें अंतरदे कीया है॥ तिस कों भली प्रकार विचारणा॥ अरु सार सर्व का इही है॥ जो
सर्व वासना का त्याग करणा॥ किसी विषे चित्त कों बंधायमान नहीं करणा
मेरे आवणे पर्यंत स्वरूप विषे स्थित रहिणा॥ अब तुं किसी इच्छा विषे न होला
गणा॥ अरु स्वरूप को भली प्रकार जाणि के आवेगा जैसे विचरीओ॥ ऐसे कहि
कर कुंभ अंतरध्यान हूआ॥ तब राजे ने अरु फूल हाथ विषे लीये॥ बड़ा बाग
के निमित्त सो जल फूल हाथ ही विषे रहे॥ जो कुंभ मुनि अंतर ध्यान होत
भया॥ तब राजा विचार लागा कारण॥ जो देवोई स्वर कीने तजा हाणी न
ही जाने॥ नारद मुनि कहा था॥ अरु तिस का पुत्र कहा कुंभ॥ अरु मैं शिखिध्वज
नरा जा कहा॥ जो न तहां नेकुंभ मन का रूप धार के मेरे तांई आन जगाया है
अरु कुंभ वड़ा मुनि हैं आ[illegible]या॥ जिस इस पद प्राकर मेरे ताई जगाया है॥ अरु मैं
ज्ञान रूप वृक्ष इते निकसिया हों॥ अरु स्वरूप विषे जागि हों॥ अरु संपूर्ण
शोभे न नष्ट भये हैं॥ अरु निर्मल पद को प्राप्त भया हों॥ अरु अज्ञान निद्रा ते जागि
या हों॥ बड़ा आश्चर्य है हे रामजी ऐसे कहि कर राजा शिखिध्वज समाधि
इ स्थिया॥ कों अरु प्राणों को अरु मन कों स्थित कीया॥ अरु चेष्टा ते रहित भ
या॥ जैसे शिला के ऊपर पुतली लिख छोडी ती है॥ तैसे स्थित भया॥ अ
रु हो चूड़ाला कुंभ रूप शरीर का त्याग कर के आकाश को उड़ी॥ अरु आ
काश को लंघ कर आपणे नगर विषे आई॥ अरु अंतःपुर जो था॥ जहां श्री
या रहिती थी॥ तहां प्रवेश कीया॥ अरु मंत्रियों को आज्ञा करी॥ जो तुम आ
पणे आप है॥ स्थानों विषे स्थित होवो॥ अरु आपणी राजा के स्थान विषे
स्थित भई॥ अरु भली प्रकार प्रजा की खबर लीनी॥ अरु तीन दिवस राह

केन होते बडडडी॥ जहां राजा वन विषे रहिता था॥ तहां आइ प्राप्त भई॥ अरु कुंभ का रूप धरकर देषिया जो राजा समाध विषे स्थित है॥ देषकर बहुत प्रसन्न भई॥ अर विचारत भयी॥ जो बडा कार्य हूआ॥ जो राजा का सरूप को प्राप्त भयी॥ अरु शांति कों प्राप्त भया॥ ऐसे विचार कीया जो राजा कों जगावों॥ तब सिंघ की न्याई गर्जी॥ अर बडा शब्द कीया॥ तो भी राजा न जागिया॥ बहुड हाथ कर हलावत भई॥ तो भी राजा न जागिया॥ काष्ट अर पाषाण की न्याई स्थित रहा॥ तब राणी विचार कीया॥ जो राजा शरीर न त्याग देवे॥ तो भला है॥ जो राजे शरीर त्याग कीया होइ॥ तो मैं भी त्याग भीतो राजा अर मैं एक ही शरीर त्यागणा है॥ बहुड विचार करणे लागी॥ जो इस की भविष्यत क्या होवणी हेगी॥ तब राजा के नेत्रों पर हाथ लगाया॥ अर देह माथ देह का स्पर्श कीया॥ तब देषिया जो प्राण है॥ राजा विषे॥ अरु भविष्यत विचारना है॥ ऐसे श्रवण कर के रामजी कहा॥ हे भगवन् तुमने कहा काष्ट अर पाषाण की न्याई स्थित भया था राजा॥ अर बहुड कहा जो हाथ लगाइ कर देषिया॥ जो प्राण इस विषे हैं॥ सो जीवता है॥ तब कुंभ किंइक कर जाना॥ इह मेरे तांई संशय है॥ सो हृद कहा॥ तब वसिष्टजी कहा॥ हे रामजी जिस शरीर विषे अष्टका होती है॥ तिस विषे हर्ष यावल होती है॥ हे रामजी अज्ञानी का चित्त रहिता है॥ अर ज्ञानी का सत्व शेष रहिता है॥ सो प्रारब्ध वेग कर के फुरता है॥ अर बलाकार वृत्त होती है॥ अर अज्ञानी का चित्त फुरने कर के बहुड पावता है शरीर॥ अर ज्ञानी इष्ट अनिष्ट विषे समान रहिता है॥ अर अज्ञानी का शरीर इष्ट विषे अवर भांति देषीयत है॥ अर अनिष्ट विषे अवर भांति भासता है॥ इष्ट विषे प्रसन्न अनिष्ट विषे शोकमान हि॥ लोइ देता है॥ हे रामजी जब ज्ञानी शरीर कों त्यागता है॥ तब ब्रह्म समइ विषे स्थित होता है॥ अर अज्ञानी शरीर त्यागता है॥ तिस विषे सत्त संसार होता है॥ जैसे बीज विषे फूल फल होता है॥ सत्तना कर के स्थित होता है॥ कालपाइ कर बहुड निकसता है॥ तिसी प्रकार राजे का शरीर रहिता था॥ तिस कर के बहुड फुरेगा॥ तब चूडाला कुंभ रूप विचार कीया॥ जो इस के अंतर प्रवेश करों॥ अर जगावों॥ मैं न जगावोंगी तो भी इस ने तन कर के जागणा है॥ तो ते मैं ही जगावों॥ ऐसे विचार कर के आपणे शरीर का त्याग कीया॥ अर चेतन विषे स्थित होकर अर फुरणे कों लेकर इस विषे जाय प्रवेश कीया॥ ना यक रइ स की चेतन्य जो शेष मन था तिस कों फेरता भई॥ वह लोभ कीया॥ तब राजा उठ बोलिया॥ तब आप निकसिया॥ अर आपणे शरीर विषे प्रवेश कीया॥ अर साम वेद का गायन करणे लागी॥ महा सुंदर स्वर साथ॥ तब राजे श्रवण कीया जो कोऊ साम वेद गावता है॥ अर श्रवण कर के जाग्रत भया॥ जाग कर देषिया जो कुंभ मुनि बेठे हैं॥ बहुत प्रसन्न भया॥ तब फूल जल चढाया॥ तब कहा हे भगवन् अब बडे भाग हैं॥ मेरे जो तुम आए दर्शन हूआ॥ अब तुम मेरे कों पावन कीया है॥ हे भगवन् किसी की समर्थता नहीं॥ जो तुम सारीषियों के चित्त विषे प्रवेश पाके॥ जो सर्वदा आत्मा का निवास है जिन विषे॥ तिस चित्त विषे मेरी स्मरणा है॥ जो दर्शन कीया है॥ तातें मेरे बडे भाग हैं॥ हे भगवन् अमृत रूप वचनों कर अब मत सममे तांई पवित्र कीया था॥ अर अब जो चित्त कीया है॥ सो मेरे तांई पावन कीया है॥ कुं भो वा च॥ हे राजन् तेरा दर्शन कर के मैं भी बहुत प्रसन्न हूआ हों॥ अर तुम जैसी प्रीति मैं आगे किसी की नहीं देषी॥ हे राजन् तेरे निमित्त मैं स्वर्ग ते आया हों॥ अब मैं स्वर्ग भी नहीं जाता तेरे ही पास रहोंगा॥ राजो वा च॥ हे भगवन् जिस कूं परतम सारषियों की कृपा होती है॥ तिस कों स्वर्गादिक सब [illegible]

ले नहीं लागते॥ तुम सारषियों की बात क्या कहणी है॥ इह वन भी है॥ अर कै फूल पत्र भी है॥ इस विषे विश्राम कीजीये॥ मेरे बडे भाग हैं॥ जो तुम आए चिन्त हूआ है इहां रहिणे कों॥ कुं भो वा च॥ हे राजन् अब तेरे तांई शांति प्राप्त भई है॥ अर संकल्प बीज भी नष्ट भया है॥ अब तूं यथा प्राप्ति विषे स्थित भया है॥ अर यथावान ही भया है॥ अर उपादेय जो देह अहंता अर त्याग इस ते रहित हूआ है॥ अर यथावान ही हूया॥ अर पावणे योग्य पद है॥ सो पाया है॥ अब यथावान ही पाया॥ आपना अनुभव कहो॥ राजो वा च॥ हे भगवन् तुमारी कृपा ते मैंने सो श्रेष्ट पद पाया है मैं॥ अर अब मेरे तांई उपदेश का अधिकार नहीं रहा॥ जो सर्व संशा मेरे नष्ट भये हैं॥ अर हेय उपादेय के मार्ग ते अतीत हों॥ इस कर विचरता हों॥ अब जो कछु जानणे योग्य था सो जानिया है॥ अब बड लाभ मेरे तांई कोऊ नहीं॥ सर्व [illegible] हों मैं॥ अर नित्य प्राप्ति रूप हों॥ अर आत्मा हों॥ निर्मल हों॥ अर आपणे स्वभाव विषे स्थित हों मैं॥ अर सर्वात्मा हों॥ अर निर्विकल्प हों॥ मेरे विषे फुरणा कोऊ नहीं॥ मैं शांति रूप हों॥ व सि ष्टो वा च॥ हे रामजी ऐसे कुंभ अर राजा का परस्पर संवाद हूआ महूर्त तीन पर्यंत॥ इस ते उपरांत दोनों उठ षडे हूये॥ एक तलाव था निकट तहां आइ कर दोनों स्नान करत भये॥ अर गायत्री संध्या करी॥ अर पितरों कों जल दीया॥ इह जाप कर के बहुड उठते चले॥ अर बन विषे आये॥ तब कुंभ कहा चलीये॥ तब राजे कहा भली बात है चलीये॥ बहुत नगर अर देश अर गांव तीर्थ देषे॥ अर नाना प्रकार के बनों विषे विचरे॥ अर [illegible] लों विषे विचरे॥ हे रामजी ऐसे वह राजा सीता ति की स्थानों विषे विचरे॥ तो भी हर्ष अर शोक कों न प्राप्त भये॥ सम बता विषे रहे॥ हे रामजी कुंभ का प्रयोजन फिरने का इहि था॥ जो राजा शुभ स्थानों कों देषकर हर्ष कों प्राप्त होवेगा॥ अथवा नहीं होवेगा॥ अर अशुभ स्थानों कों देषकर दुःष पावेगा॥ अथवा न करेगा॥ तो भी राजे कों हर्ष शोक न प्राप्त भया॥ बहुड बहुड बडे पर्वतों की यात्रा कीदी दीया॥ अर बडे कष्ट के स्थान देषे॥ अर एक बन विषे जाइ स्थित भये॥ अर केते काल विषे राजा अर कुंभ ऐसे रहे॥ जो एक ठाहि स्नान करहि अर एक जेसी मत॥ अर एक जेसा जाप जपहि॥ अर एक जेसे दोनों सहि द्भए॥ किसी ठौर माटी शरीर कों लगावहि॥ किसी ठवर चंदन का लेप करहि॥ किसी ठवर भस्म शरीर कों लगावहि॥ किसी ठवर दिव्य वस्त्रों को पहिरहि॥ किसी ठवर केले के वस्त्र होवहि कपर॥ किसी ठौर फूलों की शय्या होवहि॥ किसी ठौर कुशा नों विषे शयन करहि॥ हे रामजी ऐसे शुभ अशुभ दोनों विषे भी दोनों जिउं के तिउं हैं॥ सो हर्ष शोक कों न प्राप्त भए॥ केवल सत्व हृद विषे स्थित रहे॥ आत्मा बिना अवर कछु न फुरिया॥ एक बन विषे जाइ स्थित भये॥ तब राणी के मन विचार हूआ॥ जो इह मेरे भरता है॥ मैं इस कों भोगों॥ जो सारी अवस्था है॥ अर जो भले फूल कीया स्त्रीया है॥ सो भर्ता कों प्रसन्न राषती यों हैं॥ अर राजा का शरीर भी दिवता जेसा है॥ अर स्थान भी शुभ है॥ अर जब लग शरीर है॥ तब लग शरीर के स्वभाव भी साथ है॥ बहुड विचार कीया॥ जो राजा की प्रतिज्ञा करी जो क्या कहेगा॥ तब कुंभ कहा अब हम जाते हैं स्वर्ग कों॥ जो नारद मुनि भी आवहिंगे॥ तातें हम जाते हैं॥ प्रातः ही फिर आवहिंगे॥ मेरे आवणे पर्यंत तुम स्थान विषे रहिणा॥ अर ध्यान ते उतरें तो फूलों कों देषणा॥ ऐसे कहि कर फूलों की मंजरी राजा कों दीनी॥ अर कुंभ आकाश कों उडा॥ अर राजा पाछे देषता रहा॥ जब दृष्टों अगोचर भया॥ तब फूलों की माला जो गल विषे थी तिस कों तोड कर राजा के ऊपर डार दीनी॥ अर चूडाला का शरीर धार कर अर आकाश कों लंघि के आपणे अंतःपुर जहां स्त्रीयों के बसने का स्थान था॥ तहां आइ प्राप्त भई॥ अर राजा के स्थान पर बेठकर अर मंत्रीयों कों बुलाय कर आपणी आपणी स्थानों पर स्थित कीया॥ अर प्रजा की खबर लीनी॥ बहुड इंदी में बमंडल कों लेकर चली गई॥ जहां राजा का

स्थानथा॥ ग्रर ग्राश्चर्य देखिया॥ जो राजा का चित्त विक्षेप करणे का मान है॥ ग्रर केसे
भी राजा के ग्रागे दिलगीर जेसा होइ कर स्थित भया॥ तब राजे कहा हे भगवन् तुमा
कालमारे ताई के सा प्राप्त भया है॥ ऐसा कष्ट तुमारे ताई कवन प्राप्त भया है॥ मार्ग वि
घे॥ ग्रर सर्व दुखों के नाश करणे हारा ज्ञान है॥ तो तुम सारषे ज्ञानी को शोक होवे॥ तब
श्रवणों की वात क्या कहणी है॥ ग्रर तुमारे ताई ग्रनिष्ट क्या प्राप्त भया है॥ ग्रर इनको भी
ग्रनिष्ट होता है॥ कं॥ श्री॥ वाच॥ हे राजन् स्वर्ग विषे भी उठा॥ ग्रर मैं जब सभा स्थित थी
तब मैं नारद के पास स्थित था॥ तब सभा उठी तब नारद मन भी उठा॥ ग्रर मेरे ताई क
हा जब होते री इच्छा है तब जाउ॥ ग्रर मैं भी जाता हो॥ जो नारद एक ही ठौर नही रहि ता
विश्व विषे मेल करता फिरता है॥ ऐसे ते मेरे ताई कहा है जो जाउ॥ तब मैं ग्राकाश ते
चलिया॥ तब इं वासा इऋषी सुवर्ण डला ग्रावता था॥ ग्रर महा मेघ की न्याई श्याम वस्त्र पहि
रे हुए ते सभ भूषण मे सपूर्ण॥ जेसे बिजली का चमत्कार होता है॥ ते सभ भूषणों का चम
त्कार है विकरइडइ तेकर के कहा हे मानी सुवर्ण तुमने क्या रूप धारा है॥ ग्रर
ग्रर युवती स्त्री की न्याई लागती है॥ तब दुर्वासा ने मेरे ताई कहा हे ब्रह्मा के पौत्र ते के सम
वचन को करता है॥ ऐसा वचन मुनीश्वर को कहि ग्रागे विचरना हो॥ हम पाए है ऐसे
सा वीज पाछे विषे पाइता है॥ तैसा ही उगवता है॥ तेजो मेरे ताई सो कहा है॥ तो तेरे
स्त्री होवेगा॥ ग्रर ग्रागे तेरे स्त्री के होवे हि रोग रात्रि को॥ हे मुनि जो कल्याण की तुग्राषरे
है॥ ग्रर जिन को ज्ञान प्राप्त हूग्रा है॥ तिस को नमस्कार होता है॥ ऐसा वचन मेरे ताई कहने
लाहीए॥ ऐसा श्रवण कर के हे राजन् मैं तेरे पास चलि ग्राया हो॥ ग्रब मेरे ताई इस
ताभी ग्रावती है जो स्त्री का शरीर धारके वैवर्ति यों विषे के से विचरोगा॥ इहु मेरे ताई
शोक है॥ तब राजे कहा हे भगवन् क्या हूग्रा जो इर्वासे कहा॥ ग्रर स्त्री शरीर भया॥ तम
तो शरीर नहीं ग्रात्मा निर्लेप हो॥ जो किसी साथ्य लेपन हो॥ हे मुनीश्वर तुम ग्राप
णी सम ता विषे स्थित होवो॥ ग्रर जो ज्ञानी पुरुष है॥ तिन को हेइ पादेइ कि सी का
नहीं रहिता॥ ग्रर ग्रापणी सम ता विषे स्थित रहिते हैं॥ तब कुंभक कहा हे राजन् तू
सत्य कहिता है॥ मेरे ताई क्या इख है॥ मेरे ताई क्या॥ हे राजन् जो शरीर की प्रारब्ध है सो
होती है॥ तिस साथ हमारा क्या प्रयोजन है॥ जो जब लग शरीर रहिता है॥ तब लग
शरीर के स्वभाव भी रहिते हैं॥ ग्रर शरीर का त्याग करणा भी मर्ख ता है॥ जिस स्थान
विषे ज्ञान को प्राप्त होवे॥ तिसी चेष्टा विषे विचरीये॥ ग्रर इहु ही मर्खता है॥ जो इंद्रियों
को रोक णा॥ ग्रर मन कर विषयों की चिंतवना करणी॥ तो ते इंद्रियां ग्रर देह को चे
ष्टा ज्ञानवान करते हैं॥ ग्रर तिस विषे बंधायमान नहीं होते॥ इंद्रियां विषयों वि
षे वर्तनी यां है॥ ग्रर ग्रादि ते इस्वर को इसी प्रकार है॥ हे राजन् तिन का त्याग कि
सी ने नहीं की या जाता॥ तो तिन का त्याग किउ करीये॥ इह नेत है॥ जो जब लग शरी
र है॥ तब लग शरीर के स्वभाव नी होते हैं॥ जेसे जब लग तिल है॥ तब लग तेल हो
ता है॥ तेसे जब लग शरीर है॥ तब लग शरीर के स्वभाव भी होते हैं॥ जो ज्ञानवान
भी पुरुष है॥ सो देह इंद्रियों कर चेष्टा भी करते हैं॥ ग्रर बंधायमान नहीं होते॥ ग्र
ग्रज्ञानी बंधायमान होते हैं॥ ग्रर चेष्टा ज्ञानी भी करते हैं॥ जेसे ब्रह्मा ग्रर विस
न इत्यादि ले कर जो ज्ञानी है॥ सो चेष्टा सर्व करते हैं॥ ग्रर बंधायमान किसी कर न
होते॥ तेसे हे राजन् जो ग्रनिछत ग्राइ प्राप्त होवे॥ ग्रर शास्त्र भी जिस को प्रमाण
करहि तिसके भोगणे विषे इख कछु नहीं॥ रा॥ श्री॥ वा॥ च॥ हे भगवन् ज्ञान वा
न को दूषण कछु नहि॥ जो सदा सम मान विषे स्थित है॥ तिस को कोई दूषण कछु
नहीं होता॥ ग्रर ग्रज्ञानी के शरीर विषे भी होता है॥ इख सो ग्रापणी विषे देखता
है॥ ऐसे ज्ञानवान शरीर के इख ग्रापणी ग्राप विषे देखता नहीं॥ ऐसे कहिते सर्य

ग्रस्त हूग्रा॥ तब राजा ग्रर कुंभ दोनो साये काल की संध्या करी॥ ग्रर जप कीया॥ ग्रा
पितरों का पूजन कीया॥ जब रात्रि होइ तब वार्ता विरचों के गणों निकस॥ ग्रर सूर्य भ
ई॥ कमल नीयो के स्नान में देगए॥ तब कुंभक कहा हे राजन् देखो जो मेरे शरीर के
विकमल नीयों के स्नान में देगए तब कुंभ? — 

राजा सुभ? हो गए॥

वा॰ति॰
प्र॰
६७

तोभीराजाकाचित्तहर्षमाननभया॥ अरदेवगणकरकेककेंभीनप्राप्तभया॥ जिउका
तिंउहीरहा॥ तिसकेऊपरंतविवाहकाआरंभकीया॥ अरवसंतकल्पवृक्षसोंलीए॥ पा
ससर्वणीकेकलपाएथे॥ अरदेवतोंकापूजनकीया॥ इत्यादिकजोपणसुविधथीसोसंपूर्ण
करी॥ अरत्लावांदीयां॥ अरमंगलाचारकीया॥ अरसंकल्पइहदीया॥ जोइहसंपूर्णज्ञान
निष्ठातेरेताईदीनो॥ अरराजेभीसंकल्पकीया॥ जोसंपूर्णज्ञाननिष्ठातेरेताईदीनो॥ इ
सीप्रकारजोप्रासविधिहै॥ सोसंपूर्णकरी॥ जबरात्रणकपहिरआइरही॥ तबरानी
अरराजादुलोंकीआप्याविछाई॥ अरआपविषेप्रीनकरकेचर्चाहीकरतेरहे॥ मै
थुनकीया॥ आगेतबचूडालाराजेकीस्त्रीथी॥ विवाहकरकेइसरीवारस्त्रीभई॥ जब
प्रातहिकालहूआ॥ तबस्त्रीकाशरीरत्यागकरकुंभकाशरीरधारा॥ अरस्नानकी
याहेरामजीइसीप्रकारएकमासपर्यंतमंदराचलपर्वतविषेरहे॥ रात्रकोंस्त्रीकाशरीर
धारे॥ अरदिनकोंकुंभकाशरीरकरे॥ जबतीसरादिनहोवे॥ तबराजाकोंप्रीनकरा
यकेराजकीलक्षआइलेवै॥ बहुरराजाकेपासआइप्रीनकरै॥ इति श्रीनिर्वाण
प्रकरणेशिखरध्वजविवाहलीलावर्णनेनामसर्गः॥ ८३॥ वसिष्ठोवाच॥ हे
रामजीजबइहांसोंचले॥ तबअस्ताचलपर्वतविषेरहि॥ विंध्याचलपर्वतसुमेरु
पर्वतकेलासपर्वतइत्यादिकजोपर्वतअरकंदराअन्यवनोंविषेरहि॥ कहूंए
कमास॥ कहूंदोमास॥ कहूंपंचदशदिनरहे॥ जबएकवनविषेआइस्थितभये
तबरानीविचारकीया॥ जोएतेस्थानराजाकोंदिखाये॥ तोभीइसकाचित्तकि
सीविषेबंधायमाननहूआ॥ इसीतेअबरपरीक्षालेवों॥ ऐसेविचारकरआपणीमा
यापसारी॥ तबइंद्रतेतीसकोटदेवतासंयुक्तकिन्नरअरगंधर्व॥ अरसिद्धअरअप्स
राओनृत्यकरतीआवतीहै॥ अरअवरभीजोइंद्रकीसमग्रीथी॥ तिससंयुक्तइंद्रकोंदेखि
करराजाउठखडाहूआ॥ अरइंद्रकीपूजाकरी॥ बहुरनप्रीतसंयुक्त॥ अरकहाहेत्रैलोकी
केपतिइसवनविषेतुमाराआवणाकिसनिमित्तहूआहै सोकहो॥ तबइंद्रकहाहेराज
न॥ ऐसेपंतीहोतनाहै॥ सोअधः तेइधकोंउस्नाहै॥ अरतिसकोंएदीतनागणहोतनाहै॥ ति
सत्तागोकरकेइउत्ताहूआभीनीचेकोंआवताहै॥ तैसेहमइधकेवासीतेरेगुणरू
पजोतागाहै॥ तपअरशुभलक्षणतिसकोंश्रवणकरके॥ जोतागेसमानहै॥ तिसक
रकेहमतागेसोंखेंचीतेचलेआवतेहैं॥ इसबविषे॥ तातेहेराजनतेस्वर्गकोंचल॥ अर
भोगोंकोंभोग॥ इहऐरावतहस्तीहै॥ तिसऊपरआरूढहो॥ अथवाइहजोउच्चैःश्रवा
रसमइतेनिकसियाहै॥ तिसपरआरूढहोइकरचलो॥ अरसिद्धीभीहै॥ एकतोइ
हहै॥ तिसऊपरपावणादीये॥ जहांइच्छाहोइतहांपहुंचावे॥ अरएकबूटीहै॥ अर
एकखडूसिद्धहै॥ सोखडूकोंहाथमोंधारकरजहांइच्छाहोतीहै॥ जहांचलियाजा
ईये॥ अरटकावेकोंऊनहो॥ अरएकगटकाहै सोमुखमोंधारकरजहांइच्छाहोवे
तहांइच्छाचारीजाईये॥ इसतेलेकरइहअष्टसिद्धीभीविद्यमानहैं॥ जोइच्छाहोइ
सोलेवो॥ अरस्वर्गविषेचलो॥ हेराजनतुमतत्ववेत्ताहो॥ तुमारेताइंग्रहणअरत्या
गकरणाकिसीकानहीरहितापरजोअनिच्छतआइप्राप्तहोवे॥ तिसकोंत्याग
करणायोग्यनहीं॥ तातेस्वर्गविषेचलो॥ राजोवाच॥ हेदेवराजजहांजाईताभीहै तहां
जहांआरोगनहोवीये॥ अरजहांआगीहीहोवीये॥ तहांकेजाईये॥ हेदेवराजहमकों
सर्वस्वर्गहीदृष्टआवताहै॥ जहांहमबैठेहैं॥ तहांस्वर्गहीदृष्टआवताहै॥ जोऊहांस्व
र्गहोवेअरइहांनहोवेतोभीजाईये॥ परंतुजहांहमबैठेहैं॥ तहांस्वर्गहीदृष्टआ
वताहै॥ तातेहमकहांजावहिं हमकोंतीनोंलोकआत्माहीभासताहै॥ आस
दास्वर्गरूपजोआत्माहै॥ तिसीविषेहमस्थितहैं॥ हमारेताइंसर्वथास्वर्गहीभा
सताहै॥ हेअरअनित्यस्वर्गतनहीभासता॥ हमसदाआनंदरूपहै॥ तातेहमक
हांजावहि॥ हमकोंतीनोंलोकआत्माहैहमकहांजावहिं॥ इंद्रोवाच॥ हेराजनजो

विदितवेदपरिणितोधीहैं॥ तेभोगप्राप्तभोगोकोंसेवतेहैं॥ तुमकिंउनहीसेवते
ऐसेजबइंद्रकहातबराजाऐसेंहीकहिकरचुपकरगया॥ तबइंद्रकहाभलाजे
तुमनहींजातेतोहमहीजातेहैं॥ भलातेराअरकुंभकाकल्याणहोवे॥ हमजातेहैं
हेरामजीऐसेकहिकरइहतबठाहूआअरचलिया॥ तबलगइहदृष्टआवताथा तब
लगदेवताभीदृष्टआवतेरहेसाथ॥ अरबहुरइअंतरध्यानहोगये तबचूडालाद
खियाजोअसीयासिद्धीअरऐश्वर्यअरप्राप्तभएभीराजाकाचित्तसमताविषेरा
अरकिसीपदार्थविषेबंधायमाननहूआ॥ इति श्रीनिर्वाणप्रकरणेमायाइंद्रशिखर
ध्वजसंवादेवर्णनेनामसर्गः॥ ८४॥ वसिष्ठोवाच॥ हेरामजीजबचूडालाइंद्रको
छलकेरही॥ तबविचारकीयाजोअसाचरित्रराजाकेमोहननिमित्तकीयातो
भीराजाकिसीविषेबंधायमाननहूआ॥ जिउकातिउहीरहा॥ तातेबडाकल्याण
हूआ॥ जोराजासत्तासमानपदविषेस्थितरहा॥ तातेबडाआनंदहूआ॥ अबअव
चरित्रकरीयेजिसविषेक्रोधहोवे॥ अरबडाखेदहोवे ऐसेविचारकेचरित्रकरीये
राजाकीपरीक्षाकेनिमित्त॥ ऐसेविचारकीया॥ तबसायंकालहूआ॥ अरराजाग
गाकेकनारेसंध्याकरणेलागा॥ अरकुंभकवनविषेरहा॥ तबवनविषेसंकल्प
कामंदररचा॥ अरसंकल्पकीशय्यारची॥ अरएकपुरुषसंकल्पकारचामहासुंद
तिससाथसोइरही॥ अरकामचेष्टालागीकरणे॥ तबराजाआया॥ अरसारांकोंदे
खणेलागा॥ परंतुहूनआई॥ ढूंढतेहूएतबतिसमंदिरविषेआया॥ तबक्यादेखै
कामीपुरुषसाथमदनकामोईहै॥ अरकामचेष्टाकरतेहैं॥ तबराजकहाभला
आरामसाथसोएपडेहैं॥ इनकेआनंदविषेभंगकिउपाईये॥ हेरामजीइसप्र
कारराजाआपणीइस्त्रीदेखकरतोभीक्षोभमाननहूआ॥ जिउकातिउस्थितर
हा॥ क्षोभकोंनप्राप्तभया॥ तबमदनकाकामीपुरुषकोंत्यागकरउठीदोउपाछे
वहइआई॥ तबराजेकहाहेमदनकातेऐसेसुखकोंत्यागकरकिउआईहै
तेतोबडेआनंदकरमगनथी॥ अबतहांफेरजाइए॥ मेरेताईतोहर्षशोककछु
नहीं॥ मैंजिउकातिउहों॥ परंतुतेरीअरकामीपुरुषकीप्रीतपरस्परदेखीहै॥ ता
तेइसकोंसुखदेहि॥ अरजोइहतेरेताईसुखदेवे॥ अबजाहि॥ तबमदनकाल
ज्जासोंनीचेमुखकरकेबोली॥ हेभगवनतुमतोमहात्माहो॥ मेरेपरक्रोधनहींकरणा
मेरेतेअवज्ञाबडीहूईहै॥ परंतुमैंज्ञानकरनहींकरी॥ जैसेवृत्तांतहै॥ सोश्रवण
करो॥ जबतुमसंध्याकरणेलागेथे॥ तबमैंवनविषेआईथी॥ तहांएककामीपुरु
षकाभिलापभया॥ मैंनिरबलथीउहबलीथा॥ जोइसपरक्रोधकीया॥ अव
रपतिव्रताइस्त्रीयोंकीजोमर्यादाथीसोभीमैंकरी॥ जोइसपरक्रोधकीया॥ अव
तीसरीप्रकारभीकरी॥ इहतौनापतिव्रताकीमर्यादाहै॥ सोमैंकरी॥ अरतुमइह
थे॥ उहबलीथा॥ उसमेरेताईपकडलीया॥ जोकछुइसकीभावनाथीसोकरीहै
भगवनमेरेविषेदूषणकछुनहीं॥ तातेतुममहात्माकरोक्रोधनकरणा॥ राजोवाच
हेमदनकामेरेताईक्रोधकदाचितनहीं॥ जैसेआकाशविषेधूडकदाचितनहीं
जोमेरेताईकेवलआत्माहीदृष्टआवताहै॥ तोक्रोधकिसपरकरों॥ मेरेताईनके
छुग्रहणहै॥ नकछुत्यागहै॥ तथापिइहकर्मसाधोंकारनिंदतहै॥ तातेतेराअबमे
त्यागकीया॥ अबमैंसावधानहोविचरोंगा॥ अरजोहमाराआगगुरुकुंभहै॥ सोइहमोर
पासहीहै॥ उहहमअरहमसदानिरागरूपहै॥ अरतेइहीसकेपासपतहोजीहै तेर
साथहमाराक्याप्रयोजनहै॥ तेअबइसीपासजाहि॥ इति श्रीनिर्वाणप्रकरणेमाया
पंतरवर्णनेनामसर्गः॥ ८५॥ वसिष्ठोवाच॥ हेरामजीतबमदनकानामचूडा
लातिसमनविषेविचारकीया॥ जोबडाकार्यहूआ॥ जोराजाकोंआत्मपदप्राप्तभ

वा॰ नि॰
प्र॰
९८

या॥ ऐसी यों मिट्ठी दिखाई थी॥ अरु निरस्थान भी दिखाये॥ तो भी राजा शुभाशुभ विषे जि
उ का तिउ ही रहा॥ ताते बडा कल्याण हूआ॥ जो राजा को प्रांत ई॥ अरु राग द्वेष ते रहित भ
या॥ अब शर्वला रूप जो चूडाला का देह॥ सो मैं दिखावौं॥ अरु सर्व वृत्तांत राजा को जानवा
ऐसे विचार के मदन का शरीर जो चूडाला रूप होकर प्रगट भई॥ तब राजा देखका
महा आश्चर्य को प्राप्त भया॥ अरु ध्यान विषे स्थित होगया॥ बहुड देखिया जो इह चूडा
ला कहां ते आई है॥ बहुड बोलिया हे देवी तूं कवन है॥ तेरे ताई देख कर मैं आश्चर्यमा
न भया हौं॥ जो ऐसी मेरी स्त्री चूडाला थी॥ अरु तूं इहां किस निमित्त आई है॥ अरु कब की
आई है॥ चूडालोवाच॥ हे भगवन मैं तेरी स्त्री चूडाला हौं॥ अरु तूं मेरा स्वामी है॥ हे
राजन् मैं भते आदि अरु एह चूडाला शरीर पर्यंत सो सर्व चरित्र तेरे जगावणे के नि
मित्त ही मैं कीए हैं॥ तूं ध्यान विषे स्थित होकर देख॥ जो चरित्र किस की ये हैं॥ अ
ब मैं अकृत्रिम शरीर शर्वला रूप धारा है चूडाला का॥ हे रामजी जब ऐसे चूडाला कहा
तब राजा ध्यान विषे स्थित भया॥ अरु देखणे लागा॥ एकमहू पर्यंत सभ चरित्र को
देखलीया॥ उपरांत राजा आश्चर्य को प्राप्त होकर नेत्र खोल कर राणी के गले सा
थ गल कंठ लगाइ कर मिलिया॥ अरु दोनो हर्ष को प्राप्त भए॥ जो सहस्र माव साथ
वर्ष पर्यंत प्राप्त नाग सप्त को वर्जन करे तो भी इह हर्ष को गान न सके
ऐसे मनुष्य समान विषे स्थित भए॥ अरु शांति को प्राप्त भए॥ जिस विषे क्षोभ को कुन
ही॥ अरु राजा हर्षवान होकर रोमावली खडी होआई॥ अरु नेत्रों ते जल चलणे
लागा॥ ऐसी अवस्था साथ राजा बोलिया॥ हे देवी मेरे पर तें बडा अनुग्रह की
या है॥ तेरी उस्तति करने को मैं समर्थ नहीं॥ कैसी स्तुता करौं॥ जेते कछु संसा
र के पदार्थ हैं॥ सो सर्व माया मात्र हैं॥ अरु मिथ्या हैं॥ अरु तैने मेरे ताई सत्य पद
को प्राप्त कीया है॥ तो तेरे ताई उपमा क्या कहौं॥ हे देवी मैं विचार कीया है॥ जो अ
ब मैं राज को त्याग कीया था॥ अरु अस चूडाला के शरीर पर्यंत सर्व तेरे चरित्र हैं
अरु मेरे वास्ते तैने बडे चरित्र कीये हैं॥ अरु बडे यत्न कीये हैं॥ आवणा अरु जाव
णा जो पक्षी रूप को स्वांग धारणा॥ अरु इह णामु इत्यादिक कर के तैने बडे कष्ट पा
ए हैं॥ अरु बडे यत्न कर मेरे ताई संसार समुद्र ते पार कीया है॥ अरु बहुड उपका
र कीया है॥ और जेते कछु देवीयां हैं॥ तिन सों श्रेष्ठ कार्य कीया है॥ ताते तूं सभ
नों ते अधिक है॥ हे देवी जो श्रेष्ठ कुल की कन्या है॥ अरु पतिव्रता है॥ जिस पुरुष
को प्राप्त होती यां है॥ तिस के सर्व कार्य सिद्ध होते हैं॥ सो वन श्रेष्ठ स्त्री यां है॥ सो
श्रवण कर॥ बुद्धि अरु शांति अरु दया अरु शांति॥ अरु कोमलता॥ अरु मैत्री इत्या
दिक जो शुभ लक्षण हैं॥ सो पतिव्रता स्त्री को प्राप्त होते हैं॥ हे देवी मैं तेरे प्र
साद कर के शांति पद को प्राप्त भया हौं॥ अब मेरे ताई लोभ को ऊन हौं॥ ऐसे प
द को शास्त्र कर नहीं पाईता॥ हे राजन तूं का है को मेरी स्तुता करता है॥ मैं ता
अपणा कार्य कीया है॥ रा वा हे देवी मेरा इह हौं अरु पृथ्वी देह॥ जो को
पतिव्रता स्त्री होवै सो सर्व ऐसे कार्य को॥ जे से तैं कीये हैं॥ हे देवी जे ते अ
रुंधती आदि स्त्रीयां हैं॥ तिन विषे तूं प्रथम रानी होवेगी॥ अरु मैं जानता हौं
जो बडा तैं ने उपकार कीया है॥ व ष्ठो च॥ हे रामजी तब चूडाला कहा
हे भगवन एकता मेरे ताई एह करोहो॥ ज्ञान रूप आत्मा के एक अंश विषे
जगत लीन हो जाते हैं॥ ऐसा जो तूं है॥ सो आप को अब क्या जानता है
अरु अब तूं कहां स्थित है॥ अरु राजन तेरे ताई कछु दिखाई देता है॥ अथवा नहीं
देता है॥ अरु अब तेरी इच्छा क्या है॥ शि ध्व जो च॥ हे देवी जो स्वरूप तैं ने ज्ञा
न कर के निश्चै कीया है॥ सो ई मैं आप को जानता हौं॥ अरु शांति रूप हौं॥ हे दे

वी जिस पद की अपेक्षा करने को ... ला अरु जिस अरु कई को यां मैं तो भी शुकदेव जनका
सते हैं॥ तिस पद को मैं प्राप्त भया हौं॥ अरु उत्थान को ऊन नहीं॥ अरु निर्किंचित हूं॥ ति
स विषे किंचित मात्र भी जगत नहीं॥ अरु जो मैं थामाई मैं भया हौं॥ इस मैं तेरा कार्य है
हे देवी तैं ने संसार समुद्र ते मेरे ताई पार कीया है॥ ताते मैं तुमारे हौं॥ अब मैं कहहु कारणे
चूडाला के चरणों पर गिर पडा॥ अरु कहिया अज्ञान मेरे ताई कदाचित नाश पाई कै भा
जैसे तांबा पारस के संग कर सुवर्ण हूआ तब बहुड तांबा नहीं होता॥ तैसे मैं मोह रूप
विकड ते॥ तेरे संग कर वनि कस्यि या हौं॥ बहुड कदाचित न गिरउगा॥ अब इह मन जगत
के सुख दुख कर न तृष्टलता हौं॥ न लोभमान हौं॥ जिउ का तिउ स्थित हौं॥ अरु राग द्वेष के उ
ठावणे वाला जो चित्त था॥ सो मेरा नष्ट होगया है॥ अब मैं प्रकाश रूप आपणे आप विषे
स्थित हौं॥ अब मैं निर्वाण पद को प्राप्त भया हौं॥ अरु सर्व ते अतीत भया हौं॥ अरु सर्व
विषे स्थित हौं॥ जैसे आकाश सर्व पदार्थों ते अतीत है॥ अरु सर्व व्यापी भी है॥ तैसे मैं
भी हौं॥ अरु अहंत्व आदिक शब्द मेरे नष्ट भये हैं॥ अरु शांति को प्राप्त भया हौं॥ अब
मैं विषे आसा अरु तृष्णा को ऊन नहीं॥ मैं अद्वैत हौं॥ अरु चिन्मात्र हौं॥ अरु निर्मल
हौं न स्थूल हौं॥ चूडालोवाच॥ हे राजन जो तूं ऐसे स्थित हूआ है॥ तो अब क्या क
रेगा॥ क्या इच्छा है तेरे ताई॥ राजोवाच॥ हे देवी न मेरे ताई कछु अंगीकार करणे
की इच्छा है॥ अरु न त्याग करणे की इच्छा है॥ अरु जो कछु तूं कहेगी सो करेगा॥ तैसे मैं ते
कहिणे को अंगीकार करेगा॥ जैसे मणि प्रतिबिंब को ग्रहण करती है॥ तैसे मैं तेरे
वचनों को ग्रहण करेगा॥ चूडालोवाच॥ हे प्राणों के स्वामी अरु हृदय को प्या
रे राजन अब तें विश्राम हूआ है॥ अरु भला कार्य हूआ है॥ जो तेरी इच्छा नष्ट भई है॥ हे रा
जन अब तें अरु मैं मोह को त्याग कर के आपणा प्रकृत आचार विषे विचरें॥ विदे
ह रहित होकर अरु जीवन मुक्त होकर आपणा प्रकृत आचार को किउं त्यागहि॥ हे
राजा जो आपणा प्रकृत आचार को त्यागहिगा॥ तो अब किसी का ग्रहण करहिगा
तीत हूआ आपणे ही आचार विषे किउं न विचरहि॥ अरु भोग मोक्ष दोनों को भो
गहि॥ हे रामजी ऐसे परस्पर विचार करते दिन व्यतीत भया॥ बहुड आथण का आरं
भ कीया॥ तिस उपरांत दोनों शयन करत भए॥ अरु परस्पर रात्र को चर्चा ही करते रहे
अरुण क्षण बत रात्र को अतीत कीया॥ इति श्री निर्वाण प्रकरणे चूडाला प्र
गट वर्णनं नाम सर्गः॥ ९९॥ वशिष्ठोवाच॥ हे रामजी जब ऐसे रात्र व्यतीत भई॥ तब
सूर्य भगवान किरणां पसारीयां॥ तब राजे स्नान का आरंभ कीया॥ तब चूडाला
मन के संकल्प कर के मणि कुंभ कीया॥ अरु हाथों पर धारी॥ तिस विषे गं
गादिक तीर्थों के जल संपूर्ण स्थित कीये॥ अरु राजे के ऊपर पाये॥ अरु राजा को
अभिषेक कीया॥ अरु संध्या आदिक सर्व कर्म कीए॥ तब चूडाला कहा हे राजन् मो
ह को नाश कर के स्वाधीन हो आपणा राज को करो॥ अरु भोग भोगहि आनंद
साथ॥ राजोवाच॥ हे देवी जो मैं स्वर्ग भोगां की तेरी इच्छा है॥ तो स्वर्ग विषे भी ह
मारा राज है॥ अरु सिद्धों विषे भी हमारा राज है॥ जो तेरे ताई इछा है॥ तो त्याग को
तो स्वर्ग विषे ही विचरो॥ चूडालोवाच॥ हे राजन इह कौन से भोग हैं की इच्छा
है॥ न त्याग करणे की इच्छा है॥ हम निर्जिउं के लिउं हैं॥ हे राजन इच्छा अरु अनिच्छा
तब होती है॥ जो आगे कछु पदार्थ भासता है॥ हमारे ताई तो केवल आकाश
आत्मा दृष्ट आवता है॥ सर्व दाए कर सम विषे ह
म स्थित हैं॥ हे राजन यद्यपि हमारे ताई इच्छा कछु नहीं॥ तथापि जब लग शरी
र है॥ तो चेष्टा भी हुई चाहीये॥ अरु अब चेष्टा करणी है आपणे प्रकृत आचा
र रहित है॥ तो चेष्टा भी हुई चाहीये॥ राग अरु द्वेष ते रहित होकर आपणा राज को भो
ग को किन ग्रहण करहि॥ हे रामजी जब ऐसे कहा॥ राज करणे को सावधान हो॥ तब ऐसे चू
हि॥ ताते तूं अब उठ खडा हो॥ अरु पूछते जो संपूर्ण हो होवौं॥ अरु अब ऐसे हो होवौं
डाला कहा॥ तब राजा कहित भया॥ जो ऐसे हो होवौं॥

नभया॥ जब ऐसा तिन राजा कों आइ प्राप्त भया॥ तब राजे कहा हे देवी तूं मेरी पट
राणी है॥ अरु मैं तेरा भर्ता हों॥ अवर कोऊ नहीं॥ अभ्यास जब होता है॥ जब ऐसे नाभी हो
वे॥ तातें तूं सेना को रखो॥ ऐसे राजा ने श्रवण करके चूडाला मार्ग विषे सेना को रचती भई
हस्ती अरु घोडे सरूप ऐश्वर्य रथ अरु नौबत निशान अरु नगारे इत्यादिक जो राजकी
समग्री है सो रची॥ अरु प्रत्यक्ष आगे आय स्थित भई॥ अरु नौबत नगारे बाजणे लागे॥ त
व राजा अरु राणी हस्ती पर आरूढ होकर चले॥ आगे पाछे सभ सेना भई॥ अरु तीव्र
वेग कर चले॥ अरु आगे जो मंत्री अरु पुरवासी अरु और नगरवासी थे सो राजा को
लेणे आये॥ अरु बडा पूजन आदर संयुक्त कीया॥ तब आपणे मंदिर विषे आ
न स्थित भये॥ उपरांत राजा सिंघासन ऊपर आइ बैठा॥ अरु राज करणे लागा॥ इक
सम दश कोली प॥ अरु दश सहस्र वर्ष पर्यंत राज कीया॥ चूडाला संयुक्त॥ जीवन मुक्त
होकर विचरत भया॥ बहुर विदेह मुक्त भए॥ हे रामजी दश सहस्र वर्ष राजे अरु चूडा
ला राज कीया॥ अरु समता समान विषे स्थित रहे॥ किसी पदार्थ विषे रागवान न हू
ये॥ अरु द्वेष भी न कीया॥ जिउ के तिउ शांतिपद विषे स्थित भए॥ जैतो कछु राज की
चेष्टा है॥ सो करते रहे परस्परतः करणा करके किसी विषे बंधायमान न हूए के
वल आत्मपद विषे स्थित रहे॥ बहुर राजा अरु चूडाला विदेह मुक्त को प्राप्त भए॥ जे
से तेल बिना दीपक निर्वाण हो जाता है॥ तैसे प्रारब्ध वेग के क्षेपे हूए निर्वाण प
द विषे प्राप्त हूए॥ हे रामजी जैसे शिखरध्वज अरु चूडाला जीवन मुक्त होकर विचरे हैं ते
से तुम भी राग द्वेष ते रहित होकर विचरो॥ इति श्री निर्वाण प्रकरणे शिखरध्वज चू
डाला उपाख्यान समाप्त नाम सर्गः॥ ८७॥ वसिष्ठ उवाच॥ हे रामजी शिखरध्वज का
वृत्तांत सर्व मैं तुम को कहा है॥ ऐसी दृष्टि को आश्रय करो॥ कैसी दृष्टि है जो पापों
नाश करती है॥ तिसी दृष्टि को आश्रय कर जिस मार्ग शिखरध्वज तत्त्वपद को प्राप्त
भया है अरु जीवन मुक्त होकर राज व्यवहार कीया है॥ तैसे तुम भी तत्त्वपद को
आश्रय करो॥ अरु तिसी परायण होवो॥ आत्मपद को पाय के भोग मोक्ष दोनों को
भोगो॥ अरु तिसी प्रकार बृहस्पति का पुत्र कच भी बोधवान हूआ है॥ रामो
वाच॥ हे भगवन् जिस प्रकार बृहस्पति का पुत्र कच बोधवान भया है॥ सो प्र
कार संक्षेप ते सभ ही मुझ को कहो॥ वसिष्ठोवाच॥ हे रामजी ऐसी कथा बाल
क मार्ग जो है॥ अज्ञात तिस को त्याग कर पदार्थ को जाणने लागा॥ जब ऐसा हू
आ तब पिता बृहस्पति को प्रश्न कीया॥ जो हे पिता इस संसार पिंजरे ते मैं कै
से निकसों॥ जेता संसार है॥ सो जीवन करके बांधा हूआ है॥ जीव तो कहिये दे
हादि को मिथ्या विषे॥ अहंकार करणा॥ इसी कर के बांधा हूआ है॥ जो अहं अव
त्व मानता है॥ तिस संसार ते मुक्ति कैसे होवे॥ बृहस्पतिरुवाच॥ हे तात इस
अनर्थरूप संसार ते तब मुक्ति होती है॥ जब सर्व त्याग करीता है॥ सर्व त्याग
कीये बिना मुक्ति नहीं होती॥ तातें तूं सर्व त्याग कर जो मुक्ति होवे है॥ वसिष्ठो
वाच॥ हे रामजी जब इस प्रकार बृहस्पति जी कहा॥ तब कच ऐसे पावन वच
नों को श्रवण कर ऐश्वर्य को त्याग कर वन को गया॥ बन मों एक कंदरा विषे जाइ
स्थित भया॥ अरु तप लगा करणे॥ हे रामजी जब बृहस्पति का पुत्र कच तिसके जा
वणे कर कों खेद कछु न हूआ॥ जो ज्ञानवान पुरुष है॥ सो संयोग अरु वि
योग विषे सम भाव रहते हैं॥ हर्ष अरु शोक को कदाचित नहीं प्राप्त होते॥
जिउ के तिउ रहते हैं॥ जब अष्ट वर्ष पर्यंत तप कीया तब बृहस्पत आया॥ अरु देखि
या जो कछु एक कंदरा विषे बैठा है॥ तब कच के पास स्थित भया॥ अरु कच पिता
का पूजन गुरों की न्याई कीया॥ अरु बृहस्पति कच को कहने लागा॥ तब बडा रुक
रा अरु दवाणी सहित कच प्रश्न कीया॥ हे पिता जी अष्ट वर्ष बीते हैं॥ जो मैं सर्व त्या
ग कीया है॥ तो शांति को नहीं प्राप्त भया॥ जिस कर मेरे ताई शांति प्राप्त होवे सो क

हो॥ तब बृहस्पति कहा हे तात सर्व त्याग कर॥ तो तेरे ताई शांति होवे॥ ऐसे कहि कर
बृहस्पति उठ खडा हूआ॥ अरु आकाश को चलि या गया॥ हे रामजी जब ऐसे बृहस्प
ति कहि कर चलि या गया॥ तब कच आसन अरु मृगछाला अरु वन को त्याग कर
आगे वन को चलिया॥ एक कंदरा विषे जाइ कर स्थित भया॥ तब तीन वर्ष ऊहां व्यती
त भये॥ बहुर बृहस्पति आइ प्राप्त भया॥ देखिया जो कच स्थित है॥ तब कच भली प्र
कार गुरों की न्याई पूजन कीया॥ अरु बृहस्पति कच को कहने लागा॥ तब कच
कहा हे पिता जो अब लग मेरे ताई शांति नहीं प्राप्त भई॥ अरु सर्व त्याग कीया है मैं
आपणे पास कछु न हीं राखिया॥ तो तें जिस कर मेरा कल्याण होवे सो कहो॥ तब
बृहस्पति कहा॥ हे तात सर्व त्याग नहीं कीया अब भी॥ सर्व पद चित्त का नाम है॥ जब
चित का त्याग करें॥ तब सर्व त्याग होवे॥ तो तें चित्त का त्याग कर॥ वसिष्ठोवाच॥ हे रा
मजी ऐसे कहि कर बृहस्पति स्वर्ग को चलिया गया॥ तब कच विचार करणे लागा
जो सर्व पद चित्त को कहा है पिता ने॥ सो सर्व पद चित्त को कहा है पिता ने॥ सो चि
त क्या है॥ तिस को जाणि कर त्याग करों॥ बहुर विचारत भया॥ जो पिता पास स्वर्ग
विषे जावों॥ हे रामजी ऐसे विचार कर उठ खडा हूआ॥ अरु दिगंबर आकाश को चलि
या॥ तब पिता के निकट गया॥ अरु पिता का पूजन कीया॥ अरु कहा चित्त का रूप क्या
है॥ जो मैं त्याग करों तिस का॥ बृहस्पतिरुवाच॥ हे तात चित्त जो है सो अहंकार का ना
म है॥ सो अज्ञान ते उपजिया है॥ अरु आत्म ज्ञान कर के इस का नाश होता है॥ तां ते
म है॥ सो अज्ञान ते उपजिया है॥ अरु स्वरूप विषे स्थित हो॥ कचोवा
च॥ हे पिता जो अहं भाव का त्याग कैसे करों॥ अहंता मैं हों॥ बहुर आपणा त्याग करे
अहंकार जो है अहं भाव तिस का त्याग कर॥ अरु स्वरूप विषे स्थित हो॥ बृहस्पतिरुवाच॥ हे ताव
के स्थित कैसे होवों॥ इस का त्याग करणा महा कठिन है॥ फूल के मलणे विषे भी कछु जतन
है॥ अरु नेत्रों का खोलणा अरु मीटणा कर भी कछु यत्न है॥ परु अहंकार के त्याग विषे
अहंकार का त्याग करना महा सुगम है॥ अरु इस कर उडिया है॥ जैसे मा
विषे यत्न कछु नहीं॥ हे तात अहंकार का बल कछु नहीं॥ भ्रम कर उडिया है॥ जैसे मा
रुस्थल विषे जल कल्पता है॥ अरु आकाश विषे दो चंद्रमा भ्रम कर के सिद्ध होते हैं
तैसे परिछिन्न जो है॥ अहंकार सो आपणे प्रमाद कर के उपजिया है॥ सो आत्मा
शुद्ध है॥ अरु आकाश ते भी निर्मल है॥ अरु देश काल वस्तु के परिछेद ते रहित
है॥ अरु सत्तामात्र है॥ अरु चिन्मात्र है॥ तिस विषे स्थित हो जो तेरा स्वरूप है॥ अर
तें आत्मा है॥ तेरे विषे अहंकार कदाचित नहीं॥ हे साधु आत्मा सर्व सर्व प्रकार
सर्वत्र विषे स्थित है॥ तिस विषे अहं भाव कैसे है॥ जैसे समुद्र विषे धूर कदाचि
त नहीं॥ तैसे तिस विषे अहंकार कदाचित नहीं॥ कैसा आत्मा है॥ तिस विषे न
एक कहिणा है॥ न दोइ कहिणा है॥ केवल अपणे आप विषे स्थित है॥ अरु आ
कार जो दृष्ट आवते हैं॥ सो चित्त के फुरणे कर के हैं॥ अरु चित्त के नष्ट हुए आ
त्मा ही शेष रहिता है॥ तातें आपणे स्वरूप विषे स्थित हो॥ जो तेरे दुःख नष्ट होइ जावें
अरु अहं जो कछु दृष्ट भी आवता है॥ इन विषे भी आत्मा है॥ जैसे पत्र फूल फल सम
वे जो जल है उत्पत्ति होते हैं॥ तैसे सर्व आत्मा का चमत्कार है॥ जैसे अनेक वृक्षादि
क धर सब एक ही है॥ तैसे सर्व आकारों विषे आत्मा ही है॥ इति श्री निर्वाण प्रकरणे बृ
हस्पति कच बोधन नाम सर्गः॥ ८८॥ वसिष्ठोवाच॥ हे रामजी जब इस प्रकार बृह
स्पति उपदेश कीया तब कच श्रवण कर के स्वरूप विषे स्थित भया॥ अरु जो गुरु
है॥ आत्मा अरु परिछिन्न हे कार की एकता॥ तिस को प्राप्त भया॥ अरु सत्य रूप हे
आ॥ अरु जीवन मुक्त होकर विचरत भया॥ हे रामजी जैसे कच जीवन मुक्त होकर

रा

वा॰ नि॰
प्र॰

विचारतभयाहै॥ तैसेनिरहंकारहोकरतैंभीविचार॥ अरनिराशहोकरविचरअ
रकेवलअद्वैतपदकोप्राप्तहो॥ जोनिर्मलहैअरशुद्धहै॥ जिसविषैएकअरदे
इकाहिणाभीनहीं॥ तिसविषैतंस्थितहो॥ तेरेविषैदुखकाकछुनहीं॥ तुंत्र्या
त्मारूपहै॥ अरतेरेविषैअहंकारहीनहीं॥ तेग्रहणअरत्यागकिसकाक्रे
हि॥ हेरामजीजैसेआकाशकेवनविषैफूलहैनहीं॥ तिसकाग्रहणक्या
अरत्यागक्रिया॥ तैसेआत्माविषैअहंकारहैनहीं॥ जोज्ञानवानपुरुषहैं॥
सोअहंकारकाग्रहणभीनहींकर्ते॥ अरत्यागभीनहींकर्ते॥ अरजोमलिनहैं
तिनकोंएकआत्माविषैनानाआकारभासतेहैं॥ अरकिसीकरणेककू
दुखकानाशचाहतेहैं॥ दुखतौतेरेविणाअरकहहर्षकरणा॥ अरतकेसैं
अरजेतेकछुषैकदाचितहुआनहीं॥ तकेसेनाशकरणेकासमर्थहुआहै॥ अरजेते
अधिष्ठानहैसोसत्यहै॥ अरआकारहुएआवतेहैं॥ सोमिथ्याहै॥ तिनविषैजो
जोअरविहैसोमिथ्याहोकरसत्यकीरक्षाकरतेहैं॥ जोमेरेदुखनाशहोवहि
गे॥ रा॥ मो॥ वा॥ च॥ हेभगवनतुमारेप्रसादकरकेमैंतृप्तहुआहों॥ तुमारेअ
मृतरूपीवचनोंकरकेअघायरह्याहों॥ जैसेपपीहाएकबूंदकोंचाहताहै
अरमेघकृपाकरकेतिसपरवर्षाकरताहै॥ सोअघायजाताहै॥ तैसेमैंतुमा
रेपारनकोंप्राप्तहुआथा॥ अरतुमारेमिलणेकीइछाबूंदकीन्याईकर
ताथा॥ अरतुमभीकृपाकरकेज्ञानरूपीअमृतकीवर्षाकरी॥ तिसवर्षाके
रकेमैंअघायरह्याहों॥ अबमैंशांतिपदकोंप्राप्तभयाहों॥ अरतौनोंताप
मेरेमिटगयेहैं॥ अबकोफुरणामेरेविषैनहींरह्या॥ अरतुमारेअमृत
रूपीवचनोंकोंश्रवणकर॥ केसेतृप्तनहींहोता॥ तातेप्रसन्नकर्ताहैं॥ ति
सकोंउत्तरकृपाकरकेकहो॥ हेभगवनमिथ्याक्याहै॥ अरसत्यक्याहै॥ जि
सकीरक्षाकरतेहैं॥ वसिष्ठोवाच॥ हेरामजीइसपरउपाख्यानहै॥ सोश्रव
णकरावताहों॥ जिसकेसुणतेहीतुमजानहोवे॥ एकआकाशविषैअरवीमिथ्या॥
नहै॥ तिसविषैएकबालकथा॥ जोआपमिथ्याहै॥ अरकेसत्यकेरावणा
कोइछाकरताहै॥ जोमेंइसकीरक्षाकरोगा॥ जोअधिष्ठानहैसोसत्यहै॥ ति
सकोनहींजानता॥ अरमलेताकरकेदुखपावताहै॥ क्याजानताहै॥ सोश्रव
णकर॥ इहआकाशहै॥ मैंभीआकाशहोंमेराआकाशहै॥ मैंआकाशकीर
क्षाकरोगा॥ ऐसेविचारकरकेएकघरबनाया॥ घरविषैजोआकाशहै॥ ति
सकीरक्षाकरोगाजोइसकानाशनहोवे॥ इसीनिमित्तग्रहबनाया॥ हे
रामजीऐसेविचारकरकेग्रहकीबनावतबहुतकरी॥ जोकिसीदौरतेटूटै
नबहुडबुमाएलवे॥ जबकेताककालइसप्रकारव्यतीतभया॥ तबकोलि
करग्रहगिरपड्या॥ तबरुदनकरणेलागाहाइहाइमेराआकाशनाशहो
इगया॥ तिसतेउपरांतिएककूआकाटिया॥ अरकहिणेलागाजोइहआक
शनजावेगा॥ अरइसकीभलीप्रकाररक्षाकरोगा॥ हेरामजीइसप्रकारकूए
कोंबनाइकरसुखमानिया॥ जबकेताककालव्यतीतभयातबकूआभीगिर
गया॥ तबबडेशोककोंप्राप्तभया॥ जोमेराआकाशगिरगयाहै॥ मैंक्याकरो
गा॥ ऐसेशोकसंयुक्तकेताककालव्यतीतभया॥ तबएककुंडीबनाई॥ अरकहि
णेलागाजोइसकीभलीप्रकाररक्षाकरोगा॥ जबकेताककालव्यतीतभया
तबकुंडीभीगिरपडी॥ बहुरुदनकरणेलागा॥ जोमेराआकाशनष्ट
होयगयाहै॥ जबकेताककालशोकसंयुक्तबीतातबएकघटबनाया॥ अर

वहआकाशकीरक्षाकरणेलागा॥ तबकेताककालकरघटभीनष्टहोगया॥ ब
हुरएककुंभबनाया॥ अरउसआकाशकीरक्षाकरणेलागा॥ तबकेताककाल
करकुंभभीनष्टहोगया॥ अरशोकवानहुआ॥ बहुरएककहेलीबनाई॥ अरक
हिणेलागाजोअबमेराआकाशनहींजावेगा॥ मैंइसकीरक्षाभलीप्रकारक
रोंगा॥ अरबडेहर्षकोंप्राप्तहुआ॥ तबकेताककालव्यतीतभया॥ तबवहकहे
लीभीगिरपडी॥ बहुरदुखकोंप्राप्तभया॥ जोहायहायमेराआकाशनष्टहोगया॥
सोनाईबडाकष्टप्राप्तहुआ॥ हेरामजीइसीप्रकारआत्मज्ञानबिनामूर्खबालक
दुखपावतारह्या॥ जोआपकोंभीजाणतायथार्थ॥ अरआकाशकोंभीनिदका
तिकजाणता॥ तोएताकष्टकाहेकोंपावता॥ इति श्री निर्वाण प्रकरणे मिथ्याप्र
रुषआकाशरक्षावर्णनं नाम सर्गः॥ ८५॥ रामोवाच॥ हेभगवनमिथ्यापुरुषक
वनथा॥ अरजिसकीरक्षाकरताथा॥ सोआकाशक्याहै॥ प्रगटकरकहो॥ वसिष्ठो
वाच॥ हेरामजीमिथ्यापुरुषजोसंवेदनफुरनेतेउपजिया॥ अहंकार॥ अरआको
शविदाकाशहै॥ तिसीतेउपजाबहुरआपकोंजानताहै॥ जोमैंआकाशकीर
क्षाकरों॥ अरआकाशहतेआदिजोकहा॥ सोग्रहघटादिसमानहैंदेहो॥ तिन
ताकरों॥ अरआकाशरहतेआदिजोकहा॥ सोग्रहघटादिकीरक्षाकरणेकीइच्छाकरताहै॥ म
विषैजोअधिष्ठानहैआत्मा॥ तिसआत्माकीरक्षाकरणेकीइछाकरताहै॥ तिसआपणेस्वरूपके
खेलकरकेआपकोंनहींजानता॥ तोमेरास्वरूपक्याहै॥ तिसआपणेस्वरूपके
नजाणनेकरकेदुखपावताहै॥ आपहैमिथ्याअरमिथ्याहोकरआगआकाश
कोकल्पकररावणेकीइछाकरताहै॥ जोमैंजीवताहों॥ अरदेहतेकालकर
उपजाहै॥ बहुरदेहकेनष्टहुएशोककरकेशोकवानहुआताहै॥ अरआपणेवा
स्तवस्वरूपकोंनहींजाणता॥ सोकदाचितनाशनहींहोता॥ ऐसेविचारतेरहि
तकलेशकोंपावताहै॥ हेरामजीजिसविषैभ्रमउपजताहै॥ तिसकाअधिष्ठानस
त्यहोताहै॥ सोसर्वकाआपणाआपआत्माहै॥ सोकदाचितनाशनहींहोता॥ ति
सविषैमलेताकरकेसंसारकोंअहंकारकल्पताहै॥ अरएतेइसकेनामहैं॥ अ
हंकारकहीयेमनकहीये॥ जीवकहीये॥ बुद्धिकहीये॥ चित्तकहीये॥ प्रकृत
कहीये॥ इत्यादिकहीये॥ इहसर्वइसकेनामहैं॥ सोमिथ्याहै॥ अरइसकाअत्यंतअभा
वहै॥ अरणहोताउदयहुआहै॥ जोमैंहों॥ तबीब्रह्मणआश्रमवर्णमानुष्यदेव
नादेत्यइत्यादिककल्पनाकरताहै॥ हेरामजीइहकदाचितहुआनहीं॥ अरन
होवेगा॥ नाकिसीकालहै॥ अविचारमात्रसिद्धहै॥ विचारतेकछुनहीं॥ जैसेजेवरी
केअज्ञानतेसर्पकल्पताहै॥ अरजानेतेसर्पनष्टहोजाताहै॥ तैसेस्वरूपकेप्रमादक
रकेअहंकारउदयहुआहै॥ सोतेरास्वरूपकेसाहै॥ सोश्रवणकर॥ आत्माहैअरअ
विद्याअरअविद्याकेकार्यतेरहितहै॥ अरचेतन
आकाशरूपहै॥ अरनिर्मलहै॥ सोविद्याअरअविद्याकेकार्यतेरहितहै॥ परिणामकोंकदाचि
मात्रहै॥ निर्विकल्पहै॥ नित्यकातिउस्थितहै॥ अरअद्वैतहै॥ परिणामकोंकदाचि
तनहींप्राप्तहोता॥ आत्मतत्वमात्रहै॥ तिसविषैसंसारकैसेहोवे॥ अरअहंकार
केसेहोवे॥ सम्यकदर्शीकोंआत्मातेइतरनहींभासता॥ अरअसम्यकदर्शीकोंसं
सारभासताहै॥ अरपदार्थोंकोंसत्यजाणताहै॥ अरसंसारकोंवास्तवजाणताहै॥
जोआपणावास्तवस्वरूपकोंनहींजाणता॥ जोमैंकवणहों॥ अरजाणतेअहंकार
नष्टहोजाताहै॥ अरजेतीकछुआपदाहै॥ तिसकीखाणअहंकारहै॥ सर्वतापअ
हंकारतेउत्पतिहोतेहैं॥ इसकेनष्टहुएआपणेस्वरूपविषैस्थितहोताहै॥ अरवि
अरभीआत्माकाचमत्कारहै॥ इतरनहीं॥ जैसेसमुद्रविषैएकपवनकरकेतरंगभा
सतेहैं॥ अरस्वर्णविषैनानाप्रकारकेभूषणहोतेहैं॥ सोसमुद्रतेतरंगभिन्ननहीं
अरस्वर्णतेभूषणभिन्ननहीं॥ तैसेआत्मातेभिन्नकछुनहीं॥ अरस्वर्णभीपरिणा
मकरभूषणहोताहै॥ अरसमुद्रभीपरिणामकरतरंगहोताहै॥ अरआत्माअच्युत

परिणाम को नही प्राप्त भया ॥ तां ते समुद्र अरु स्वर्न ते विलक्षण है आत्मा ॥ आत्मा त्रि
वेसंवेदन कही ऐसे चमत्कार मात्र विश्व है ॥ सो आत्मत्व मात्र स्वरूप है ॥ न शोह न निर्थ
है ॥ नमन को शान्त होता है ॥ जिसकालि अरु आत्मा स्थित है ॥ तां ते प्रत्यक्ष आत्मा आ
पणा आप अनुभव रूप है ॥ तिस विषे स्थित होवो ॥ तब बुद्ध स्वरूपा सर्व नष्ट
हो जावहिगे ॥ सो आत्मा शुद्ध अरु निराकार है ॥ हे राम जो जो निराकार अरु शुद्ध
है सो किस कर ग्रहण करीये ॥ अरु त्याग केसे करीये ॥ कवन समर्थ है ॥ जो त्यागु
वे ॥ जैसे घट के नष्ट हुए घटाकाश नष्ट नहीं होता ॥ तैसे देह के नष्ट हुए ते देही
आत्मा का नाश नहीं होता ॥ आत्म सत्ता जिस कौ तिसु है ॥ अरु जन्म मरण पुर्यष्ट
का देह कर के भासते हैं ॥ जब पुर्यष्टका देह विसो निकस जाती है ॥ तो मरन क
भासता है ॥ अरु जो पुर्यष्टका में प्रवेश है ॥ तो जीवना भासता है ॥ अरु आत्मा सू
क्ष्मते सूक्ष्म है ॥ अरु स्थूल ते स्थूल है ॥ तिसका ग्रहण केसे होइ ॥ अरु त्याग केसे
होई ॥ अरु करीये ॥ अरु सूक्ष्म स्थूल भी उपदेश समझावणे के निमित्त कहिणा
है ॥ आत्मा वाचा ते अगोचर है ॥ अरु भाव अभाव से मारते रहित है ॥ सर्व का अ
नुभव रूप है ॥ तिस विषे स्थित हो कर अहंकार का त्याग कर ॥ आपणा स्वरूप अ
त्मक आत्मा विषे स्थित हो ॥ इति श्री निर्वाण प्रकरणे मिथ्या पुरुषोपाख्या
न समाप्तं नाम सर्गः ॥ ९० ॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे राम जो इह जो संसार है ॥ सो आ
त्मा स्वरूप है ॥ जैसे इस की उत्पत्ति भई है सो श्रवण कर ॥ शुद्ध आत्मा निर्विक
ल्प विवर्त चेतन लक्षण मन होइ कर स्थित भया है ॥ अरु आगे तिस जगत क
ल्पना करी है ॥ सो मन के माहे ॥ जैसे समुद्र विषे तरंग अरु स्वर्ण विषे भूषण जे
वरी विषे सर्प ॥ अरु सूर्य की किरणां विषे जल ॥ तैसे ही आत्मा विषे मन विवर्त
है ॥ आत्मा ते इतर कछु नहीं ॥ जिसको तरंगो का ज्ञान है ॥ तिसको समुद्र दृष्टि
नहीं होती ॥ अरु तरंगो को अवर जानता है ॥ अरु जिसको भूषणो का ज्ञान है ॥ सो
स्वर्ण को नहीं जानता ॥ अरु सर्प के जान कर जेवडी को नहीं जानता ॥ अरु जल के
ज्ञान कर किरणों को नहीं जानता ॥ तैसे नाना प्रकार विश्व के ज्ञान कर परमात्मा
को नहीं जानता ॥ अरु जिस पुरुष समुद्र को जानिया है ॥ जो जल है ॥ तिसको तरं
ग बुद्बुदे सभ जल ही भासते हैं ॥ तरंग अरु बुद्बुदे भिन्न नहीं जानता ॥ सो पुरुष
निर्विकल्प है ॥ अरु जिसको जेवडी का ज्ञान हूआ है ॥ तिसको सर्प बुद्धि नहीं हो
ती ॥ ऐसा जो पुरुष है ॥ सो निर्विकल्प है ॥ अरु जिसको किरणों का ज्ञान हूआ है
तिसको जल बुद्धि नहीं होती ॥ तैसे जिस पुरुष को निर्विकल्प आत्मा का ज्ञान हू
आ है ॥ तिसको संसार भावना नहीं होती ॥ ब्रह्म ही भासता है ॥ ऐसा जो मनीश्व
र है सो ज्ञानवान है ॥ हे राम जो मन भी आत्मा ते इतर नहीं ॥ आदि जो परमा
त्मा मन होकर फुरिया है ॥ सो अहंत्व आदिक हो कर फुरिया है ॥ सत्तामात्र प
द विषे जो अहं भाव होवणा सो उत्थापन है ॥ अरु बाहर भाव होवणि कर के
आपणे निर्विकल्प चिन्मात्र रूप पद का प्रमाद हूआ है ॥ तिस प्रमाद होवणे क
र के आगे विश्व हूई है ॥ अरु मन भी केसा है ॥ जो कदाचित नहीं हूआ ॥ आत्म स्व
रूप है ॥ सो इह रूप की न्याई भासता है ॥ सो मन अरु संसार सत्य भी नहीं ॥ अरु
असत्य भी नहीं ॥ जो इह सर्व बल्कि नहीं होवे ॥ तो सत्य अथवा असत्य केसे कही
ये ॥ आत्मा अहं तत्व जिस का तिसु है ॥ तिसका विवर्त मन होकर फुरिया है ॥ सो
मन कोई है ॥ सोई मन ब्रह्मा है ॥ बहुर ब्रह्मा मन भाजन कर स्थावर जंगम सृष्टि
कल्पी है ॥ सो न सत्य है न असत्य है ॥ हे राम जी सर्व प्रपंच मन का कल्पिया है
तिस ही नाना प्रकार के विकार कल्पे हैं ॥ मन बुद्धि चित्त अहंकार जीव सर्व इस म
न के नाम हैं ॥ जब मन नष्ट हो जावे ॥ तब न संसार है ॥ न कोऊ विकार है ॥ आत्म

वल गमन दृष्टा साथ मिल कर के ॥ जो मैं संसार का अंत लेउं ॥ तब कदाचि भी अं
त न आवेगा ॥ काहे ते जो संसरना ही संसार है ॥ संसार ते संयुक्त संसार का अंत
कहां ते आवे ॥ अंत लेणे वाला बालावधिया ॥ अरु आगे फुरणा कर के देखता है ॥ तो
अंत कहां ते आवे ॥ जैसे कोऊ पुरुष दौडता जावे ॥ अरु कहे जो मैं आपणा परछा
वें का अंत लेवां ॥ तो कहां लग जाता है ॥ हे राम जी जब लग पुरुष चलिया जावे
तब लग परछावें का अंत नहीं आवता ॥ अरु जब पुरुष ठहर जावे तो परछावें का
अंत ही जाता है ॥ तैसे जब लग फुरणा है ॥ तब लग संसार का अंत नहीं आवता
अरु जब फुरणा नष्ट हो जावे ॥ तब संसार का भी अंत हो जावे ॥ अरु आत्मा होइ
श्री आवे ॥ अरु संसार का अत्यंताभाव हो जावे ॥ अरु जब फुरणा संयुक्त देखीता
ब संसार दृष्ट आवेगा ॥ हे राम जो जिस पदार्थ को इह देखता है ॥ सो पदार्थ
सब को फुरना ही ॥ चित्त के फुरणे कर के उदय होते हैं ॥ जब चित्त फुरिया जो इह
पदार्थ है ॥ तो आगे पदार्थ हूआ ॥ अरु जो फुरणे ते रहित होकर देखता तो पदा
र्थ को फुरना ही भासता ॥ केवल शांति पद है ॥ अरु इह जो नाना प्रकार की कल
ना है ॥ तिसते रहित निर्विकल्प ब्रह्म पद विषे अहंकार को त्याग कर स्थित हो
अहंकार जो है ॥ वाणी प्रमति विषे माया कर कल्पिया तिस विषे अहं भाव ॥ जब ति
स ते रहित हो कर देखेगा ॥ तब केवल सच्चिदानंद आत्म पद शेष रहेगा ॥ तब इस पद को आ
पणा आप जाणेगा ॥ तब तूं ही सर्व आत्मा हो कर विचरेगा ॥ फुर इह तेरे ताई कोऊ न
रहेगा ॥ हे राम जी मन ही संसार है ॥ अरु मन ही बंध है ॥ अरु मन ही मुक्त है ॥ अरु मन
होता है ॥ सर्व मन ही विश्व रूप होकर स्थित भया है ॥ सो मन के माहे ॥ जो आत्मा ते
इतर कछु नहीं ॥ तैसे फल ही निषेध हृदता है ॥ तिस आत्मा ते इतर कछु वस्तु नहीं
इतर कछु नहीं ॥ जैसे फल ही विषे सर्प होता है ॥ इह जो संसार है वंध अरु
आत्म स्वरूप ही है ॥ ऐसे जानि कर आत्म स्वरूप ही होवेगा ॥ इह जो संसार है इह कल्प
सो तिन को त्याग कर ॥ तब वंध की वांछा कर तो मोक्ष की वांछा कर ॥ इह जो कल्प
ना है ॥ तिनको त्याग कर ॥ ऐसा भी न हो जो मैं मुक्त हों ॥ अरु इह अवर बंध है ॥ के
वल सत्ता समान जो है ॥ आत्म पद तिस विषे स्थित हो ॥ इह ही भावना कर जो मैं के
सर्व दुःख नष्ट हो जावहि ॥ ऐसा जो कोऊ पुरुष है ॥ तिसका चित्त नहीं बहिता ॥ सर्व
आत्मा ही तिसको दृष्ट आवता है ॥ जिस पुरुष सर्व को जानिया है ॥ तिसको कि
तिसको भी सर्व दृष्ट आवती है ॥ तैसे जिसको आत्मा का साक्षात्कार हूआ है ॥ तिस
को जगत भी आत्म स्वरूप भासता है ॥ हे राम जी ऐसा शुद्ध स्वप्रकाश आत्मा है ॥ ति
स विषे स्थित हो ॥ इति श्री निर्वाण प्रकरणे पर माधु यो नाड उपदेशो नाम सर्गः ॥ ९१ ॥
वसिष्ठोवाच ॥ हे राम जी सहा कर्ता हो ॥ अरु महा भोक्ता हो ॥ अरु महा त्यागी हो ॥ राम
उवाच ॥ हे भगवन निरंतर धीर्य धारकर स्थित हो ॥ रामोवाच ॥ हे भगवन
वपु का का त्याग कर ॥ अरु महा भोक्ता क्या कहीये ॥ अरु महा त्यागी क्या क
महा कर्ता क्या कहीये ॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे राम जी तेरे प्रश्न के उपर एक इतिहा
स है ॥ सो कृपा कर कहो ॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे राम जी तेरे प्रश्न के उपर एक इति
हास है ॥ सो श्रवण कर ॥ एक समय सुमेरु पर्वत ऊपर दिशा के स्थल पर सदाशिव जी
थे ॥ तब भृंगी गण जो है सदाशिव का तिस हाथ जोड कर प्रश्न कीया
अरु साष्टांग भये ॥ तब भृंगी गण जो है सदाशिव का तिस हाथ जोड कर प्रश्न कीया
कि हे भगवन देवतियां के देवलोकों के नाथ जगत्पति ॥ हे परमेश्वर इह संसार मि
थ्या भ्रम है ॥ तिस विषे में सत्य पदार्थ को कछु नहीं देखता ॥ सदा चल रूप दृष्ट आ
वता है ॥ अरु जो सत्य पदार्थ है ॥ तिसको मैं नहीं जाणता ॥ तिस ते मेरे ताप नष्ट न
हो रहे ॥ अरु मैं शांति को नहीं प्राप्त भया ॥ तां ते आप को पूछी देखता हों ॥ जिस क
र के शांति प्राप्त होवे ॥ सो कृपा कर के कहो ॥ अरु चेष्टा में विचार भी षेदते रहि
त होकर ॥ अरु रहे तो रहित नतु हो वी ता अ ॥ जब कोऊ आश्रया होता है ॥ अरु जं
ता कछु संसार है सो मिथ्या है ॥ में किसका आश्रय करों ॥ अरु दुःख मेरे नष्ट होवहि ॥ इ
शरीर बोले महा कर्ता हो ॥ अरु महा भोक्ता हो ॥ अरु महा त्यागी हो ॥ अरु स
शिवोवाच ॥ हे भृंगी ले महा कर्ता हो ॥

वैशेकाकोत्यागकर॥ निरंतरधीर्यकोंआश्रयकरेहि॥ तबतेरेदुखनष्टहोवेहि॥ श्रीव
सिष्ठोवाच॥ हेरामजीऐसाजोहे॥ संगीगणजिसकोंसदाप्रियवपुत्रकरतावि
याहे॥ तिसश्रवणकरकेप्रश्नकीया॥ हेपरमईश्वरमहाकर्ताक्याकहीये॥ अरम
हाभोक्ताक्याकहीये॥ अरमहात्यागीक्याकहीये॥ सोकृपाकरकेकहो॥ ईश्वरोवाच॥
हेपुत्रसर्वआत्माजोहे॥ अनभवरूपतिसकाआश्रयकरकेविचार॥ दुखोंतेरहितहो
वेंगा॥ अरइनतीनोंदुखोंकरडावतेंनष्टहोजावहिंगा॥ जोकछुशुभअशुभक्रिया
आइप्राप्तहोवेतिसकोंकरे॥ शंकाकोंत्यागकरऐसाजोपुरषहे॥ सोमहाकर्ताहे॥
धर्मअधर्मजोक्रियाअनिछतआइप्राप्तहोवेतिनकोंरागद्वेषतेरहितहोकरकरे
ऐसाजोपुरषहेसोमहाकर्ताहे॥ सोपुरषमौनीहे॥ अरनिरहंकारनिरमानीहे॥ म
त्सरतेरहितहे॥ ऐसाजोपुरषहेसोमहाकर्ताहे॥ अरअनिछतप्राप्तहुएकात्यागन
करे॥ अरजोनहीप्राप्तहुआतिसकीवांछानकरे॥ ऐसाजोपुरषहेसोमहाकर्ताहे
अरपुण्यपापक्रियाजोअनिछतआइप्राप्तहोवे॥ तिसकोंअहंभावतेरहितहोक
रकरे॥ पुण्यक्रियाकरणेतेमेंपुण्यवानहोवोंगा॥ अरपापकीएतेमेंपापीहोवोंगा
ऐसाआपकोंनहीदेखता॥ अरसदाआपकोंअकर्ताजानताहे॥ ऐसाजोपुरष
हेसोमहाकर्ताहे॥ अरजोसर्वत्रविषेविगतस्नेहहे॥ अरसत्यवतस्थितहे॥ निरइ
छतवर्तताहेकार्योंविषेसोमहाकर्ताहे॥ जोदुखकेप्राप्तहुएशोकनहीकर्ता॥ अ
रसुखकेप्राप्तहुएशोकनहीकर्ता॥ अरसुखकेप्राप्तहुएहर्षवाननहीहोता॥ अ
रस्वभावकचित्तसमताकोंदेखताहे॥ कदाचितविषमताकोंनहीप्राप्तहोता॥ ऐ
साजोपुरषहे॥ सोमहाकर्ताहे॥ अरजिसपुरषसुखअरदुखकात्यागकीयाहे॥
जोसुखअरदुखकीभावनानहीफुरती॥ इहीत्यागहे॥ जोकछुअवरनहीफुरता॥ ऐ
साजोपुरषहे॥ सोमहाकर्ताहे॥ अरजोपुरषप्राप्तहुईवस्तकोंभोगताहे॥ रागद्वेषते
रहितहोकरसोमहाभोक्ताहे॥ अरजोबड़ाकष्टप्राप्तआइहोवे॥ तिसविषेदुखन
हीकरता॥ अरबड़ेसुखकीप्राप्तिविषेरागवाननहीहोता॥ सोपुरषमहाभोक्ताहे
अरजोराजकेसुखहोवणेविषेआपकोंसुखीनहीजानता॥ अरराजकेअभा
वहोवणेकरअरभिक्षामांगणेविषेआपकोंदुखीनहीमानता॥ सदासरूपविषे
स्थितहे॥ सोमहाभोक्ताहे॥ अरजोमानताअहंकारअरचित्तवनातेरहितकेव
लसमताविषेरहितहे॥ सोमहाभोक्ताहे॥ अरजोकोईकछुदेवेसोआपकोंर
लेवणेवालानमाने॥ अरशुभअशुभकीप्राप्तिविषेभोगताहुआआपकोंकर्ता
भोक्तानहीमानता॥ सोपुरषमहाभोक्ताहे॥ अरजोमिष्टखट्टासलूणातीक्षणकटु
ककसेलाइहरसप्राप्तहोतेहें॥ तिनकेभोगणेविषेसमचित्तरहिताहे॥ अरसमजा
नताहे॥ सोमहाभोक्ताहे॥ जोअसवानुपदार्थप्राप्तहुएपते॥ दुखवाननहीहोता॥ जि
इकातिइरहिताहे॥ जैसाआइप्राप्तहोताहे॥ भलाबुरातिसकोंभोक्ताहे॥ सुखदुख
तेरहितहोकरऐसाजोपुरषहे॥ सोमहाभोक्ताहे॥ अरजेतीकछुक्रियाहे॥ शु
भअशुभकाभाव॥ तिनकेसुखअरदुखतेचलाइमाननहीहोता॥ सोमहाभो
क्ताहे॥ अरजिसकोंमरतकाभैनही॥ अरजीवणेकाहर्षनही॥ दुखअरसुख
विषेजोसमानहे॥ सोमहाभोक्ताहे॥ अरबड़ेसुखकीप्राप्तिविषेहर्षमाननही
होता॥ अरदुखकीप्राप्तिविषेशोकमाननहीहोता॥ जिंदकातिंदरहिताहे॥ सो
महाभोक्ताहे॥ जोअनिछतआइप्राप्तहोवे॥ तिसकोंकर्ताहुआअहंभावतेरहि
तहे सोपुरषमहाभोक्ताहे॥ अरजोशत्रुमित्रसुहृदविषेसमबुद्धिरहिताहे॥ ऐ
साजोपुरषहे॥ सोमहाभोक्ताहे॥ अरजेताकछुसुखदुखशुभअशुभआइप्रा
प्तहोताहे॥ तिनकोंधारलेताहे॥ कदाचितविषमताकोंनहीप्राप्तहोता॥ जैसेस
मुद्रविषेनदीयांआइप्राप्तहोतीयांहे॥ तिनकोंधारकरसमरहिताहे॥ तैसेज्ञा
नवानशुभअशुभकोंधारकरसमरहिताहे॥ अरजोमेंमनअरइंद्रियांअरदेह

अरअहंकारकीसत्ताकोंत्यागकरस्थितहुआहे॥ अरजानताहे॥ नमेंदेहहों॥ नमेरीदे
हहे॥ मेंइनकासाक्षीहों॥ भीतुत्रकोधारताहे॥ सोमहात्यागीहे॥ अरशुभअशुभजो
सर्वचेष्टाकरेहे॥ रागद्वेषतेरहितहोकरसोमहात्यागीहे॥ अरशुभअशुभकेप्राप्तहु
एअहंकारतेरहितहोकरकरताहे॥ सोमहात्यागीहे॥ अरजोमनइंद्रियादेहक
रइछातेरहितहोकरसर्वचेष्टाभीकरताहे॥ सोमहात्यागीहे॥ अरजोपुरषमन
विनअरजितेंद्रियाहे॥ अरसमतावानहे॥ सोमहात्यागीहे॥ हेरामजीजिसपुरषध
र्मकीअधर्मकीदेहकीसंसारकीमदमानमलेनकीइसतेलेकरजोकुलनाहे
जिसनेइसकात्यागकीयाहे॥ सोमहात्यागीहे॥ हेरामजीइसप्रकारभृंगीगणकों
महाशिवउपदेशकीया॥ सोकैलासमदाशिवहे॥ जोमस्तकविषेचंद्रमांधारेहुए
हे॥ तिसनेसुमेरपर्वतकेशिखरपरउपदेशकीयाहे॥ हेरामजीतुंभीइसदृष्टिकों
धारकरविचर॥ तेरेदुखसर्वनष्टहोजावहिंगे॥ इति श्रीनिर्वाणप्रकरणेमहा
कर्तोउपदेशोनामसर्गः॥ ८६॥ रामोवाच॥ हेमुनीश्वरजोतुममहोउपदेशकी
याहे॥ सोमेंजानियाहे सो॥ अरतुममहोकालउपशामएककरणविषेउपदेशकीया
था॥ जोआत्माअनेहे॥ अरशुद्धहेतोइहकलनाकेसउपजीहे॥ जैसेसमुद्र
निर्मलहे॥ तिसविषेथरकेसेहोवे॥ तबतुममहोकहाथाइसप्रश्नकाउत्तरसिद्धांतको
लविषेकहोंगे॥ सोअबमेंसिद्धांतकापात्रहोंमेरेताईंकहो॥ जोआशाअरतृष्णाकेम
समेरेतहेंहे॥ अरआशारूपीजालमोंनिकसियाहो॥ अरमेंप्रपरूपीधूमेंहृदय
विषेउठीहे॥ तिसकोंवचनोंरूपीवर्षाकरकेशांतिकरो॥ अरमोहरूपीमेरेहृदय
विषेअंधकारहे॥ सोवचनोंरूपीकिरणोंकरकेतमनिवृत्तकरो॥ तुमारेअमृततरू
पीवचनोंकरमेतृप्तनहीहोताहुं भगवनआपनेविचारकरज्ञानकरशुद्धत
होप्राप्तभता॥ विनाउपदेशकीया॥ वसिष्ठोवाच॥ हेरामजीजोपुरषशांतिवा
नहें॥ अरसमावानहें॥ अरजितेंद्रीहें॥ अरमनकीक्रियासंकल्पविकल्पको
जीताहे॥ सोपात्रसिद्धांतकाहे॥ हेरामजीतुंअवपात्रसिद्धांतकाहें॥ तांतेउपदे
शकरताहों॥ अरजोपुरषरागअरद्वेषसहितक्रियाविषेस्थितहे॥ अरइंद्रीयो
केसुखकरजिसकोंआरामहे॥ सोसिद्धांतकेवाक्यकोंग्रहणनहीकरता॥ अरअधःगतकों
प्राप्तहोताहे॥ क्याहेतेजोइसकोंतिस्थनहीहोता॥ अरहृदयतिसकामलि
नहे॥ तांतेइंद्रियोंकेसुखकरआपकोंसुखीमानताहे॥ इसीतेनीचेस्थानकोंप्र
प्तहोताहे॥ अरजोपुरषसमाआदिकसाधनोंकरपवित्रहुआहे॥ तिसकोंग्रह
णहोताहे॥ अरजोपुरषसमाआदिकसाधनोंकरपवित्रहुआहे॥ आत्मपदकीप्राप्तिहोतीहे
ब्रह्मास्मिसर्वखलुइदंब्रह्मकेश्रवणकरप्राप्तहोआत्मपदकोंप्राप्तहोताहे
भावनाकरके॥ अरतमसाथजोपुरषहे॥ अरसमाआदिकसाधनहोकरपवि
त्रहुएहें॥ तिनकोंसरूपकीप्राप्तिसुगममहोतीहे॥ अरजिनकाअंतःकरणम
लिनहे॥ तिनकोंप्राप्तहोवणाकठिनहे॥ जैसेभन्नाहोयाबीजहोवेअरकोरस
वकीदृष्टीबोईहे॥ तबउसकाअंगरीनहीहोती॥ तैसेइंडीयारामीपुरषकोंश्रा
त्माकीप्राप्तनहीहोती॥ अरजोतमसारथेहें॥ जिनकाहृदयशुद्धहे॥ तिनको
ज्ञानकीप्राप्तहोतीहे॥ अरइनोंवचनोंकोंपारकरप्राप्तभतेहें॥ जैसेवर्षाकाल
मोधानदृष्टोविषेशोभापावतेहें॥ अरजोज्ञानवानहेंपुरष॥ सोऋचांवाहक
रकहितेहें॥ अरसवेशाम्रभीकहितेहें॥ तांतेसर्वसिद्धांतोंकासारमेंकहिता
होंतंश्रवणकर॥ जोतेरास्वरूपहे॥ तिसकोंजाणेगा॥ हेरामजोजिसकोंअभ्या
सकरणेकरणाभीसाक्षात्कारहुआहे॥ सोगर्भविषेनहीआवतावहुडू॥ अ
रसतअसत्यविषेभेदकछुनही॥ इसकोंसंवेदनविषेभेदहे॥ जाग्रतका

वा॰ नि॰
प्र॰
४१

73

सूर्य अरु जैसे स्वप्न मे का सूर्य प्रकाश दोनों का समान है॥ जाग्रत विषे जाग्रत सूर्य का
प्रकाश अर्थाकार होता है॥ अरु स्वप्न विषे स्वप्न प्रकाश का सूर्य अर्थाकार होता है॥ प्रकाश
नों का सम है॥ अरु संवित भिन्न है॥ स्वप्न को मिथ्या जानता है॥ अरु जाग्रत को सत्य जा
नता है॥ सो संवित तिसते भेद हुआ॥ अरु स्वरूपते भेद न हुआ॥ जैसे एक बडा पर्वत
संकल्प कर रचीता है॥ तो संकल्प करके देखीता है॥ अरु एक पर्वत वास्तव सत्
देखीता है॥ तो संवित करके भेद है॥ स्वरूप दोनों का तुल्य है॥ अरु जैसे समुद्र विषे
तरंग है॥ सो स्वरूपते जल अरु तरंगों विषे भेद कछु नहीं॥ संवित विषे भेद है जि
सको जल का ज्ञान नहीं॥ सो तरंग ही जानता है॥ सो संवित विषे भेद है॥ तैसे स्वरूप
विषे सत्य असत्य तुल्य है॥ वास्तव कछु नहीं॥ केवल सत्स्वरूप आत्मा है॥ अरु शब्द
अर्थ भी संवित विषे हैं॥ शब्द कहीये नाम अरु अर्थ कहीये नामी॥ सो संवित फु
रणे करके है॥ जब फुरणा नष्ट हो जावे॥ तब शब्द अरु अर्थ आत्मा ही है॥ अरु जैसे भासता
अरु जगत को सत्य जानता है॥ तब लग आत्मा का प्रमाद है॥ अरु प्रमाद तब लग है
जब लग अहंभाव है॥ जब अहंभाव नष्ट हो जावे॥ तब केवल आत्मा ही शेष रहै
सो आत्मा शुद्ध है॥ विद्या अविद्या के कार्य ते रहित है॥ कदाचित स्पर्शन हो कोथा
हे रामजी अविद्या की दो शक्ती हैं॥ एक आवरण एक विक्षेप॥ आवरण कहीये जो आ
त्मा का न जानना॥ अरु विक्षेप कहीये अवर का जानना॥ सो आत्मा सदा ज्ञान रू
प है॥ तिसको आवरण कदाचित नहीं॥ आत्मा अद्वैत है॥ तिसते इतर कछु विक्षेप
न हो॥ इसीते आत्मा शुद्ध है॥ केवल ज्ञान मात्र है॥ हे रामजी तिस विषे कलना
रूपी धर कहां होवे॥ जो आत्मतत्व मात्र है॥ चिन्मात्र है॥ जिस विषे अहंकार का उत्था
न भी नहीं॥ केवल निर्वाणपद है॥ जहां एक अरु है तिसका कहणा भी नहीं॥ केव
ल आपणे आप विषे स्थित है॥ रामोवाच॥ हे भगवन् जो सर्व ब्रह्म है॥ तो मन बुद्धि
आदिक इहु कवन है॥ जिस करते मैं इस शास्त्र पढके उपदेश करते हो॥ वसि
ष्ठोवाच॥ हे रामजी शास्त्र के व्यवहार अर्थ इह सब कल्पना है॥ परमार्थ ते नहीं॥
इहु मन बुद्धि आदिक कछु वस्तु नहीं॥ ब्रह्मसत्ता ही आपणे आप विषे स्थित है
जैसे तरंग जल ते इतर कछु वस्तु नहीं॥ तैसे मन आदिक हैं॥ आत्मा नित्य शु
द्ध बुद्ध है॥ अरु सत्ता मात्र है॥ है नहीं को न्याई स्थित है॥ हे रामजी तिस आत्मा
विषे संसार अरु अविद्या अरु मन आदिक कैसे होवहि॥ आत्मा ब्रह्म है॥ जिसते
इतर कछु नहीं॥ सर्व का अधिष्ठान है॥ अरु अविनाशी है॥ अरु देश काल वस्तु
के परिछेद ते रहित है॥ इतौ नेव ब्रह्म है॥ हे रामजी ऐसा जो आप आत्मा है॥ तिस
विषे स्थित होवो॥ अरु इह जगत जो दृष्ट आवता है॥ सो सर्व चिदाकाश है॥ इतर
कछु नहीं॥ ~~जैसे स्वप्न प्रतीतवत्~~॥ जैसे स्वप्न विषे देखीता है॥ सो अनुभव मात्र है॥
तैसे जाग्रत विषे आत्मरूप है॥ अरु साक्षी तेरा स्वरूप है॥ शुद्ध अरु नित्य अविना
शी तिस विषे जब स्थित होवेगा॥ तब कलना जो तेरे ताईं भासती है॥ सो नष्ट हो
जावेगा॥ इति श्री निर्वाण प्रकरणे कलना निषेधो नाम सर्गः॥ ८३॥ वसिष्ठो
वाच॥ हे रामजी संसार का जो बीज है सो अहंकार है॥ जब अहंभाव होता है॥
तब संसार होता है॥ सो अहंकार भी कछु वस्तु नहीं॥ भ्रम करके सिद्ध हूआ है॥
जैसे बालक आपणे परछाव विषे वैताल कल्पता है॥ सो भ्रम ते ना कछु वस्तु नहीं॥
तो भी इसके भ्रम विषे होता है॥ तैसे स्वरूप के प्रमाद विषे अहंकार होता है॥ वा
स्तव ते कछु वस्तु नहीं॥ हे रामजी जो वास्तव नहीं॥ तिसके त्यागणे का कछु
यत्न भी नहीं॥ तेरे विषे अहंकार वास्तव नहीं तौ केवल शान्तिरूप है॥ अरु चेत
न्य मात्र है॥ तिस विषे अहंभाव होवणा उपाधि है॥ इसमें समेर पर्वत आदिक

विस्तरण जाता है॥ सो संवित रूप है॥ चित्त रूप जो वृक्ष है॥ सो चेतनता के आश्रय फुरता है
अरु विश्व को कल्पता है॥ जैसे जेवडी के आश्रय सर्प फुरता है॥ तैसे चेतनता के आश्रय विश्व
अरु विश्व फुरता है॥ सो आत्मा ते इतर नहीं॥ अरु अहंकार हूआ है॥ जो मैं हों अरु सो ज्ञाता
हंभाव है॥ सो इसका कीला है॥ सर्व आपदा अहंकार ते होती हैं॥ जब अहंकार नष्ट
हो जावेगा॥ तब सर्व दुःख नष्ट हो जावेगा॥ हे रामजी जैसे सूर्य के आगे बदल होता है॥ तो
प्रकाश प्रगट नहीं होता॥ अरु जब बदल दूर होते हैं॥ तब प्रकाशमान भासता है॥ अरु
सूर्य के प्रकाश को पाइकर आनंदमान होता है॥ तैसे आत्मरूप सूर्य को अहंकार रू
प बदल आवरण करता है॥ अहंकार कहीये किसी माया के गुणा साथि मिल करके
कछु आपको मानता॥ जब अहंकार रूप बदल नष्ट होवेगा॥ तब आत्मस्वरूप सू
र्य का प्रकाश भान होवेगा॥ अरु ज्ञानवान ज्ञानरूप कमल जो हैं॥ तिस प्रकाश को
पाइकर बडे आनंद को प्राप्त होते हैं॥ ताते हे रामजी अहंकार नाश करणे का उ
पाय करो॥ जो हमारे इव नष्ट हो जावहि॥ अहं कवण पदार्थ है॥ जो उपाय कर सिद्ध न
ही होता॥ जो अहंकार नाश करणे का उपाय करीये॥ तब नष्ट हो जाता है॥ अब जिस
प्रकार नष्ट होवे सो श्रवण करु॥ सतशास्त्र जो है ब्रह्मविद्या॥ तिसका वारंवार अभ्यास क
रीये॥ तिस अभ्यास करके अरु संतों के संग करके जो कथा अरु संतों का संग करके परस्पर च
र्चा करणी तिस करके अहंकार नष्ट हो जाता है॥ जैसे पाणी भरणे की जेवडी का पत्थ
र शिला को घासी पड जाती है॥ तैसे अभ्यास करके अहंकार नष्ट हो जाता है॥ अरु
शिला के घसणे विषे भी कछु यत्न है॥ अरु अहंकार के त्यागणे का कछु यत्न नहीं॥
हे रामजी सदा अनुभवरूप जो आत्मा है॥ तिसका विचार करो॥ जो मैं कवन हों॥ अहं
कार इन्द्रियां क्या हैं॥ अरु मन क्या है॥ अरु संसार इह क्या है॥ ऐसे विचार जो मैं इनका साक्षी हों
मेरे विषे अहंत्व कोऊ नहीं॥ इस कर अहंकार का नाश करो॥ अरु तें शुद्ध है॥ मेरा भोग
प्रोवांद है॥ तातें सबलोक होवहि॥ जब अहंकार नष्ट होवेगा॥ तब कल्पना कोउ न
फुरेगी॥ केवल स्वप्रकाश की न्याईं स्थित होवेगा॥ रामोवाच॥ हे भगवन् जो अहंकार
न माणा नष्ट हूआ है॥ तो प्रत्यक्ष उपदेश करते के से देखीते हो॥ अरु जो अहंकार नहीं
तब सर्व शास्त्र ब्रह्मविद्या कहांते उपजी है॥ अरु उपदेश कैसे होता है॥ उपदेश विषे
चारों सिद्ध होते हैं॥ अंतःकरण चतुष्टय होता है॥ सो प्रथम इ उपदेश करणे की इच्छा
होती है॥ तब अहंकार की सिद्धता होती है॥ जो अहंभाव होता है॥ अरु जब स्मरण
होता है॥ तब चित्त सिद्ध होता है॥ बहुरि इह उपदेश करणीय इह न करणीय ऐसा जो सं
कल्प है॥ सो मन सिद्ध होता है॥ बहुरि निश्चय कीया जो इह उपदेश करणीय॥ तब बुद्धि
की सिद्धता होती है॥ ताते चारों अंतःकरण सिद्ध होते हैं॥ तुम कैसे कहिते हो ज्ञान
को सिद्धता होती है॥ ताते चारों अंतःकरण॥ वसिष्ठोवाच॥ हे रामजी अ
ष्ट हो जाता है सो अहंकार कर सर्व चेष्टा परी होती है॥ अरु इन्द्रिया कल्पित हैं॥ वास्तव ते
त्मस्वरूप विषे अहंकार आदिक अंतःकरण॥ आत्मा केवल आत्मतत्व मात्र है
कछु नहीं॥ अरु सतशास्त्र उपदेश भी कल्पित है॥ तिसके निवृत्त करणे को श्रव
तिस विषे संवित करके अहंकार आदिक उठाप फुरे है॥ तब तेह भय पुकार के ध्रवणावता है॥ जे
ते ते हैं॥ जैसे जेवडी विषे किसी को सर्प भासता है॥ इसको भली प्रकार देखि
व किसी कहा जो इह जेवडी है॥ तब भ्रम कर सर्प नहीं॥ तब भयरूप दुःख इसका निवृत्त
तिसके उपदेश करके जो इह भली प्रकार देखा है॥ अरु इसका इस
हो जाता है॥ जो भ्रम करके इसको सर्पभान हूआ था सो मिथ्या है॥ काहे ते जो जेवडी आगे सिद्ध है॥ उपदेश को
कोइ उपदेश जेवडी का सो भी मिथ्या है॥ अरु तिसका विवर्त लक्षण जो है चे
सिद्ध नहीं होती॥ तैसे जेवडी की न्याईं आत्मा है॥ अरु तिसके निवृत्त करणे को प्राप्त है
तन रु॥ तिसको जो अहंभाव है॥ सोई अहंकार है॥ सो तिसके निवृत्त कर
पईं॥ तिसके प्रमाद करके अहंकार रूपी सर्प फुरिया है॥ जब भली प्रकार जेवडी की न्याईं
णको प्राप्त हूए हैं॥ सो आत्मा को जनाइ देते हैं॥

वा॰ वि॰
प्र॰
७४

74

जो है परिछिन्न अहंकार सो नष्ट होजाता है॥ जैसे नेत्रों विषे मैल होती है॥ अरु अंजन
पावणे करि दूर होजाती है॥ अरु तिसके तिउ निर्मल नेत्र होते हैं॥ तैसे अज्ञान रूप जो है।
मैल॥ सो शास्त्र गुरु उपदेश सत्संग करि नष्ट होजाती है॥ अरु तिसके तिउ निर्मल नेत्र।
होते हैं॥ वास्तवरूप वास्तव नको अहंकार है॥ ताको रूप क्या है॥ कहते हैं जो आत्मा
सर्वदा कालइ देरूप है॥ तो भी गुरु शास्त्र करि जाणीता है॥ हे राम जी ज्ञानवान के सा
थ अंतःकरण चतुष्टय अरु इंद्रियां भी दृष्ट आवती हैं॥ सो तिन विषे सत्तता नहीं होती
जैसे भुन्या बीज दृष्ट आवता है॥ परु उपजणे की सत्तता नहीं रखता॥ अरु जैसे जल लिया
वस्त्र होता है॥ सो देखणे मात्र है॥ सत्तताइ स विषे कछु नहीं॥ तैसे ही ज्ञानवान को अ
भिलाषा रूप अहंकार नहीं होता॥ तिसके कष्ट नहीं पावता॥ जैसे सूर्य की कि
रणो विषे मारूस्थल विषे जलाभास होता है॥ अरु तिसको देखकर मृग जलपान के
निमित्त दौडता है॥ अरु दुखी होता है॥ तैसे दृष्टरूप जो मारूस्थल है॥ तिस विषे प
दार्थरूप जलाभास है॥ तिसको देखकर अज्ञानी रूपी मृग दौडता है॥ अरु दुख पावता है
जब ज्ञानरूपी वर्षा करके आत्मरूप जल चढिया॥ तब चित्तरूप मृग कहां जावे॥ ज
ब ज्ञानरूप वर्षा होती है॥ अरु अनुभव रूप जल चढता है॥ तब चित्त रूप मृग जो
है॥ तिस विषे यत्नरूप जो भ्रमणा था॥ सो नष्ट होजाता है॥ हे राम जी अहंकार अ
विचारते सिद्ध है॥ विचारते लीण होजाता है॥ जैसे बरफ की पुतली सूर्य की कि
रणों करि लीण होजाती है॥ जब अधिक तेज होता है॥ तब जलरूप होता है॥ अरु
बरफ की संज्ञा नहीं रहती॥ तैसे अहंकार रूपी बरफ विचार रूपी किरणों करि ली
ण होजाती है॥ जब दृढ विचार होता है॥ तब अहंकार की संज्ञा जाती रहती है
केवल आत्मा ही होइ रहता है॥ श्रीरामोवाच॥ हे सर्व तत्वज्ञ भगवन् जिसका अ
हंकार नष्ट हूआ है तिसका लक्षण क्या है सो कहो॥ वसिष्ठोवाच॥ हे राम जी।
अज्ञान रूप हो आ संसार तिस विषे पदार्थ रूप भावना कर नहीं गिडता॥ अरु लक्ष्म
प्रीत आदिक जो शुभ गुण हैं॥ सो तिसको स्वभाव करि आइ प्राप्त होते हैं॥ जैसे स
मुद्र विषे नदीयां आइ प्राप्त होतीयां हैं॥ अरु क्रोध भी तिसका नष्ट होजाता है॥ रविणमात्र
भासता भी है॥ तो भी अर्थाकार नहीं होता॥ तो विषमता कार के भिन्न भावना अंत
ते नहीं फुरती॥ केवल समता समान विषे निश्चित है॥ जैसे शरत्काल का मेघ गाजता
है॥ अरु अर्थाकार जो वर्षा है॥ सो नहीं करता॥ अरु इंद्रियां की चेष्टा अभिमान ते र
हित होकर करती है॥ जैसे वर्षा ऋतु के जावणे कर अहीड चलती रहती है॥ तैसे अ
भिमान चेष्टा तिसको नष्ट होजाती है॥ अरु लोभ भी तिसके मन ते जाता रहता है
जैसे बन को अग्नि लागती है॥ अरु मृग पंखी तिसको त्याग जाते हैं॥ तिउ सत तिसके म
न विषे कामना कोऊ नहीं रहती॥ जैसे दिन विषे उल्लू पिशाच नहीं विचरते॥ जब
ज्ञानरूप सूर्य उदय होता है॥ सो संपूर्ण कामना तिसकी नष्ट होजाती है॥ अरु
शांतिरूप आत्मा विषे स्थित रहता है॥ हे राम जी भोग वासना तिस पुरुष की नष्ट
होजाती है॥ बहुड उदय नहीं देती॥ जैसे गरुड को देखकर सर्प भाग जाता है॥ बहु
डि निकट नहीं आवता॥ तैसे ज्ञानवान गरुड को देखकर भोग रूपी सर्प भाग जा
ते हैं॥ बहुडि निकट नहीं आवते॥ आत्मपद को पाइकर शांतिरूपी दीपक व
त॥ प्रकाशवान होता है॥ भोग अभाव पदार्थ इस को स्पर्श नहीं करते॥ जैसे
व्योम तिसका निवृत्त होजाता है॥ सो ज्ञान समझणे मात्र है॥ कछु यत्न नहीं।
संतोपासना करि प्रश्न करना जो मैं कवन हौं॥ अरु परमात्मा क्या है॥ अरु भोग क्या
है॥ इन को निरवार करके परमपद को प्राप्त होवीये॥ बहुडि ज्ञानवान जो कछु उप
देश करे हैं॥ तिसके अभ्यास कर आत्मपद को प्राप्त होवेगा॥ अन्यथा न होवे
गा॥ इति श्री निर्वाण प्रकरणे सत्य स्थल लक्षण महातम वर्णनं नाम सर्गः॥
५४॥ वसिष्ठो वाच॥ हे राम जी जिस प्रकार तमारा बडाइ लाकना मारा नाजो वस्तु

कि होकर विचरिया है॥ तैसे तुम भी विचरो॥ तुम भी तिसकी कल्पना तिस पूजे हो॥ हे राम जी
इक्ष्वाकु कला मारा जातो गुरु दुखी होता भया है॥ सो मन का उत्तम सूर्य का पोत्रा सम भग जि
सो ते श्रेष्ठ था॥ जैसे पिता का जातो धर्म है॥ अरु बरफ की न्याई शीतल स्वभाव है तिसका
जैसे सूर्य को देखकर मणी ते जप्रकाश होता है॥ तैसे आत्म तिसको देखकर तपाइ
मान होवहि ऐसा अवितप॥ साधी अरु अवलोकों का समागी कभी में॥ तिसको दे
खकर भ प्रसन्न होवहि॥ अरु पापरूपी दृष्टों को काटणे हारा आकृ होइ॥ अरु मित्र
को सुखदाई॥ जैसे तुम मात्र मोगी का सुखदाई है॥ अरु समदर्शी सा है॥ जिसको देख
कर लक्ष्मी भी स्थित होइ रही है॥ जो दरिद्री कदाचित न होवे तिसके यज्ञ का
मरणा दृष्टी सरवही है ऐसा राजा भलो प्रजा का प्रजा की पालना करता भया॥ जो जग
मरणादिक संसार विषे वशीभाग है॥ इस संसार दुख के तरणे का उपाव कवन है सो
अैसे विचार ताथ्या॥ जो एक समय ब्रह्म भवन ब्रह्मलोक ते आया॥ तिसका भली प्रकार
पूजन करी॥ इक्ष्वाकुरोवाच॥ हे भगवन् तुमारी कृपा का जो पराक्रम है॥ सो मेरे हृदय
विषे देखकर प्रश्न करने के निमित्त प्रेरता है॥ सो तुम से प्रश्न करता हौं॥ हे भगवन् मेरे हृद
य विषे संशय फुरता है॥ जैसे समुद्र को बडवाग्नि सुका वती है॥ जैसे मुक को स
दाय जलावता है॥ ताते सो इउपाइ कहो॥ जिस कर मुक्त की प्राप्ति प्राप्त होवे हे भ
गवन् इह संसार कहां ते उपजिया है॥ अरु इसका स्वरूप क्या है॥ अरु कैसे निवृत्त होवे
गा॥ जैसे जाली सो पक्षी निकस जाता है॥ तैसे जन्म मरण संसार समुद्र ते निक
सने का उपाव मुझ को कहो॥ अरु संशय रूपी हृदय के काटणे हारा मनु कहा है॥ अब
तुमरे अमृत रूपी वचनों कर मैंने प्राणों को प्रा
प्त करने की इच्छा करता हूं...॥ तुमारे अमृतरूपी वचनों कर मैं पूर्ण निको प्रा
तम अज्ञान तम के नाश करता हैं॥ चिरकाल पर्यंत जगत विषे विचरता रहा हो॥
स होवेगा॥ मनुरुवाच॥ हे साधु मैं चिरकाल पर्यंत जगत विषे विचरता रहा हौं॥
ऐसा किसी प्रश्न नहीं कीया॥ तुम परम सार प्रश्न कीया है॥ सर्व अनर्थों का काटण
हारा इह प्रश्न है॥ तेरी बुद्धि विवेक कर विकाश मान होती दृष्ट आवती है॥ हे राजन्॥
जो कछु जगत तुम को दृष्ट आवता है॥ सो सभ असत्य है॥ जैसे जेवडी विषे सर्प भा
सता है॥ जैसे गंधर्व नगर॥ जैसे मारूस्थल विषे जल अरु सीपी विषे रूपा भासता है
जैसे आकाश विषे नीलता अरु दूसरा चंद्रमा भ्रम कर भासता है॥ तैसे इह जगत अ
सत्य रूप है॥ अरु जो मन सहित षट् इंद्रियां ते अतीत है॥ अरु शून्य भी नहीं सो सत्य
अविनाशी आत्मा कहीता है॥ सो निर्मल परब्रह्म सर्वदा रहते शुद्ध अनंत है॥ तिस वि
षे जगत कल्पित है॥ हे राजन् जैसे सम्पूर्ण वृक्षों विषे एक ही रस व्यापी है॥ तैसे स
र्व पदार्थों विषे एक चिन्मात्र सत्ता व्यापी है॥ जैसे समुद्र अचल विषे इवणी के
तरंग फुरते हैं॥ तैसे परमात्मा विषे जगत फुरते हैं॥ तिसमस हृदर्पण विषे सर्व वस्तु
ल ज्ञात प्रतिबिंबत होते हैं॥ जैसे समुद्र का ह तरंग रूप होता है॥ कहूं बुदबुदा चक्र
आदिक होता है॥ प्रथम फुरणा रूप होता है॥ पाछे ते कार्य कारण रूप होता है सो
चित्त प्राप्ति आपणे संकल्प करि भ्रमते देह चक्र विषे विषे स्वरूप के प्रमाद कर के
आत्म अभिमान करता है॥ जैसे नारायण को आपणी क्रिया आपणे बंधन के
निमित्त होती है॥ तैसे इसको आपणा संकल्प बंधन का कारण होता है॥ हे रा
जन जीव कलाको जो स्वरूप का ज्ञान हूआ है॥ जैसे बालक को आपणी पर्छा
वा यत्न रूप होकर भय देता है॥ तैसे इह नाना प्रकार के आरंभ को प्राप्त हूआ
आ है॥ इस कारण ही ब्रह्म फुरणे प्राप्ति कर के कारण भाव को प्राप्त भया है
तिसकर बंध अरु मोक्ष भासती है॥ वास्तव ते न बंध है न मोक्ष है॥ निराभय ब्र
ह्म है॥ आपणे आप विषे स्थित है॥ तिस विषे एक अरु अनेक कहिणा कछु
नहीं॥ ताते बंध अरु मोक्ष की कल्पना को त्याग कर आपणे स्वभाव विषे

स्थितहो ॥ इतिश्रीनिर्वाणप्रकरणेउपदेशोनामसर्गः ॥ ७७ ॥ वसिष्ठउवाच ॥ हेराजन जैसेद्रवणकरकेजलहोतेआभावकोप्राप्तहोताहै ॥ तैसेहीचिन्मात्रकरणोकरजीवहोताहै ॥ सोजीवससारविषेकर्मोकेवशभ्रमताहै ॥ आपआपकोदेखताहै ॥ आसर्वब्रह्मआत्मापरमात्माकर्ताहै आभीकछुनहीकर्ता ॥ जैसेसूर्यकरकेसभचेष्टाहोतीहै ॥ अरसूर्यअकर्ताहै ॥ तैसेआत्माकीचेतनताकरसभदेहादिकचेष्टाकर्तेहैं ॥ जैसेचुंबकपत्थरकेनिकटलोहाचेष्टाकर्ताहै ॥ तैसेआत्माकीसत्ताकरजगतचेष्टाकर्ताहै ॥ अरआत्माअकर्ताहै ॥ जैसेजलविषेतरंगफुरतेहैं ॥ तैसेआत्माविषेदेहादिकफुरतेहैं ॥ जैसेस्वर्णविषेसंकल्पकरभूषणोंकीकल्पनाहोतीहै ॥ आत्माविषेतैसेसर्वइदंमोहमनकरकल्पीतेहैं ॥ आत्माविषेकल्पनाकछुनहीं ॥ शुद्धआत्माविषेसर्वइदंकल्पनाकरीहै ॥ अरजोज्ञानवानहै ॥ तिकोमननचितसर्वइदंसर्वआकाशरूपहै ॥ सोदेहतेरहितकेवलचिदाकाशभावकोप्राप्तहोताहै ॥ जरामरणकोसोनहीप्राप्तहोता ॥ सभकार्योंकाकर्तादृष्टआवताहै ॥ अरअंतरतेसदाअकर्ताहै ॥ जैसेदर्पणअरजलविषेनिकटपर्वतकाप्रतिबिंबपड़ताहै ॥ परंतुस्पर्शनहीकर्ता ॥ तैसेज्ञानवानकोंक्रियास्पर्शनहीकर्ती ॥ शरीरकेअवस्थाविषेसोहंसदानिर्मलभावहै ॥ हेराजनआत्मासदास्थिररूपहै ॥ परभ्रमकरचंचलभासताहै ॥ जैसेजलकीचंचलताकरजलविषेपर्वतकाप्रतिबिंबभीचलताभासताहै ॥ तैसेदेहादिकोंकरआत्माचलताभासताहै ॥ सोआत्माशुद्धआपणेआपविषेस्थितहै ॥ जैसेघटकेनाशहुएघटाकाशकानाशनहीहोता ॥ तैसेदेहकेनाशहुएआत्माकानाशनहीहोता ॥ जैसेशुद्धमणिविषेनानाप्रकारकेप्रतिबिंबहोतेहैं ॥ तिनकरमणिरंजननहीहोती ॥ तैसेआत्माविषेमनइंद्रियादेहदृष्टआवतेहैं ॥ सोस्पर्शनकरिकेरंजननहीहोती ॥ जैसेसभपदार्थोंविषेहीकतै ॥ जैसेमिष्टपदार्थोंविषेमिठाईएककहीव्यापीहै ॥ तैसेसभपदार्थोंविषेएकआत्मसत्ताहीव्यापीहै ॥ तैसेसभपदार्थोंविषेअभेदरूपहै ॥ हेराजनआत्मासदअचलरूपभासताहै ॥ जैसेबालककेदौड़तेकोंसूर्यदौड़ताभासताहै ॥ तैसेआत्मादेहकेसंगतेअज्ञानकरविकारवानभासताहै ॥ जैसेप्रतिबिंबकाविकारआदर्शकोंनहीस्पर्शकर्ता ॥ देहकाविनाशतैसेआत्माकोंस्पर्शनहीकर्ता ॥ जैसेअग्निविषेलोहाडारीए ॥ तबसोमलरहितहोजातीहै ॥ परस्वर्णकानाशनहीहोता ॥ सोआत्मानित्यशुद्धअवाच्यअचिंतरूपहै ॥ हेराजनचित्तवृत्तिविषेनहीआवता ॥ परचेतनत्वदृष्टनिर्केरकेदेखीताहै ॥ जैसेराहुआदिकअदृष्टहै ॥ परचंद्रमाकेसंयोगकरदृष्टआवतेहैं ॥ परचंद्रमाकेसंयोगकरदृष्टआवतेहैं तैसेआत्माअदृष्टहै ॥ परचेतनवृत्तिकरजाणीताहै ॥ जैसेशुद्धदर्पणविषेप्रतिबिंबहोताहै ॥ तैसेबुद्धिनिर्मलविषेआत्माभासताहै ॥ सोसंकल्पतेरहितआपणेआपविषेस्थितहै ॥ जबबुद्धिनिर्मलहोतीहै ॥ तबआपणेआपविषेतिसकोंपावताहै ॥ हेराजनप्राणोंकरपरमेश्वरनहीपाईता ॥ अरग्रंथोंकरभीनहीदेखीता ॥ जबलगआपणीबुद्धिनिर्मलहोवेनहीं ॥ आपणीबुद्धिजबसत्वविषेनिर्मलहोवे ॥ तबआपणेआपकरदेखीताहै ॥ सोबुद्धिकैसेनिर्मलहोतीहै ॥ जबसंसारकीसततादृश्यतेहटहोवे ॥ अरआत्मअभ्यासहोवे ॥ तबबुद्धिनिर्मलहोतीहै ॥ हेराजनसर्वभावअभावरूपजोदेहादिकपदार्थहैं ॥ सोअसत्यहैं केवलभ्रममात्रहैं ॥ तिसकीआस्थाकोंत्यागकरके जैसेकोऊमार्गीचलताहै ॥ अरमार्गविषेअनेकमिलतेहैं ॥ तिनविषेरागद्वेषकछुनहीहोता ॥ तैसेदेहइंद्रियांसाथसंबंधतेरहितहोये आत्मतत्वसदाआपणेआपविषेस्थितहै ॥ तिसविषेदेहादिकोंइंद्रजालवतमिथ्याहैं ॥ तिनकोंभावनाहरतेत्यागकरनिस्संगआत्माशीतलचित्तहो ॥ हेराजनआपणामित्रआपहीहै ॥ काहेतेजोआत्माविषे

नग्रसतहै

अरशत्रुभीआपणाआपहीहै

अवरउद्धवनहीं ॥ आत्माविषेआत्माकाभावहै ॥ अरवैरहेतकछुनहीइसकारणतेआपणाआपहीमित्रहै ॥ अरआपहीआपणाशत्रुहै ॥ जोअपपदार्थअनात्मधर्मविषयोंकोंत्यागतेविचारकरचित्तकोंआपविषेस्थितकरताहै ॥ सोआपणाआपहीमित्रहै ॥ अरजोअनात्मधर्मविषेपदार्थोंकोंरागचित्तकोंलगावताहै ॥ सोआपणाआपहीशत्रुहै ॥ अरवास्तवतेजेताकछुनहीं ॥ जैसेसमुद्रजलतेइतरकछुनहीं ॥ जलहीजलहै ॥ तैसेआत्मातेइतरजगतकछुवस्तुनहीं ॥ सर्वविषेअनुस्यूतएकआत्मसत्तास्थितहै ॥ जैसेअनेकघटोंकेजलविषेएकहीसूर्यकाप्रकाशप्रतिबिंबस्थितहोताहै ॥ तैसेअनेकोंविषेएकहीआत्माव्यापकरस्थितहोताहै ॥ सोनअस्तहोताहै ॥ नउदयहोताहै ॥ सदाएकरसअविनाशीपुरुषजिडकातिडस्थितहै ॥ तिसविषेजोअनात्मबुद्धिफुरतीहै ॥ सोमिथ्याहै ॥ जैसेसीपीविषेरूपेकीबुद्धिहोतीहै ॥ सोसभकाकारणहै ॥ आत्मविषेजोअहंबुद्धिहै ॥ इसबुद्धिकरकेसर्वदुःखोंकाभीहोताहै ॥ जैसेवर्षाकालकरसभयनदीयांसमुद्रविषेआनप्रवेशकरतीहैं ॥ तैसेअनात्मअभिमानकरसभआपदाआनप्राप्तहोतीहै ॥ वास्तवतेचिन्मात्रअरजीवविषेरंचकभीभेदनहीं ॥ एकरूपीहै ॥ अरजोबुद्धिहै ॥ सोबंधनतेमुक्तिकाकारणहै ॥ आत्मासर्वविषेअनस्यूतव्यापाहै ॥ जैसेसूर्यकाप्रकाशसभविषेहोताहै ॥ परजहांशुद्धजलहैतहांभासताहै ॥ तैसेआत्मासर्वदेहोंविषेहै ॥ परशुद्धहृदयविषेभासताहै ॥ जैसेतरंगबुद्बुदेविषेभीजलव्यापरहिताहै ॥ तैसेआत्मअविनाशीहै एककलनातेरहितसर्वव्यापाहै ॥ जैसेस्वर्णविषेभूषणनहीं तैसेआत्माविषेसंसारनहीं ॥ सोकेवलआत्माहीहै ॥ इतरकछुनहीं ॥ तातेआत्माविषेसंसारनहीं ॥ जैसेएकवस्त्रपात्रकीन्याईहोतीहै ॥ तिसविषेइसरीहोतीहै ॥ आत्मातोअद्वैतहै ॥ इसरीतवस्तुसंसारकहांहोवे ॥ अरस्वर्णहीविषेभूषणहै ॥ जैसेचित्रकरकल्पियाहै ॥ वास्तवनहीं ॥ तैसेआत्माविषेसंसारनहीं ॥ अज्ञानकरकेसंसारकल्पितभयाहै ॥ केवलचिदाकाशहै ॥ जैसेनदीयांअरसमुद्रनामहैं ॥ सोजलहीहै ॥ नदीयांअरसमुद्रकल्पतेहैं ॥ तैसेकेवलचिदाकाशविषेसंसारनामकल्पतेहैं ॥ अरजेतेकछुआकारभासतेहैं ॥ तिनकोंकालभक्षणकरलेताहै ॥ जैसेनदीयोंकोंसमुद्रभक्षणकरकेअघावतानहीं ॥ तैसेपदार्थोंकेसमस्तहीकोंकालभक्षणकरअघावतानहीं ॥ हेराजनऐसेपदार्थोंविषेअभिलाषाकरणीक्याहै ॥ कईकोटिसृष्टिउत्पत्तिहोतीयांहैं ॥ तिनकोंकालअबलगाभक्षणकरताहै ॥ कोऊपदार्थकालतेमुक्तिनहीहोता ॥ जैसेसमुद्रविषेतरंगबुद्बुदेकईउपजतेहैं ॥ अरनष्टहोजातेहैं ॥ तातेतूंकालतेअतीतपदकीभावनाकर ॥ जोकालकोंभीभक्षणकरे ॥ कैसेभावनाकरीये ॥ अरकैसेभक्षणकरीये सोश्रवणकर ॥ जैसेअगस्त्यमुनिकोंविंध्याचलसदैवदाभावनाआवणकीकरेहै ॥ तैसेतूंआपणेस्वरूपकीभावनाकरतबकालकोंभक्षणकरेगा ॥ जैसेअगस्त्यमुनिसमुद्रकोंभक्षणकीयाथा ॥ तैसेअगस्त्यरूपआत्माकालरूपसमुद्रकोंभक्षणकरेगा ॥ हेराजनजन्ममरणआदिकजोविकारहैं ॥ सेभ्रमकरकेभासतेहैं ॥ भ्रमकहीयेआत्माकेप्रमादकरकेभासतेहैं ॥ जबआत्माकोंनिश्चयकरकेजाणेगा ॥ तबविकारकोऊदृष्टनआ

वेग का हेते जो अज्ञान करे वे है॥ आत्मा विषे कोऊ नही॥ जेसे जेवडी विषे सर्प
भासता है॥ जब जेवडी को जाणिया तब सर्प निवृत्त हो जाता है॥ तेसे जन्मम
विकार आत्मा विषे भासते हैं॥ जब आत्मा को जाणेगा॥ तब विकार नष्ट हो
जावहिंगे॥ हे राजन् ऐसा आत्मा तेरा स्वरूप है॥ विकारों ते रहित तुस्वरूप ति
सकी भावना कर जो तेरे दुख नष्ट हो जावहि॥ अब आत्मा को कहुं खोजन
नही जावणा॥ अब किसी वस्तु का ग्रहण नही करणा॥ जो इह आ
त्मा है॥ अर किसी वस्तु की भी अपना भान नही॥ जो किसी काल करणाई ऐसा॥ आत्मा ते
रा आपणा स्वरूप है॥ अर सर्वदा अनुभव रूप है॥ तेरे ते इतर कछु नही॥ तूं आप
कों जिउं का तिउं जाणा॥ आत्मा के न जाणने कर के आप को दुखी जानता है॥ जो
मे मरेगा॥ अर मैं दारिद्री हों॥ इत्यादिक दुख तब लग होते हैं॥ जब लग आत्मा
कों नही जाणिया॥ जब आत्मा को जाणेगा॥ तब आनंद रूप होवेगा॥ जेसे को
ऊ स्त्री पर तिसके पुत्र नही होता॥ जब तिसका पुत्र हूआ॥ तब आपणे पास सुवा ले
ती है॥ इसका विश्वास नही करती॥ अर किसी काल विषे निद्रा आई॥ अर बाल
क गोद विषे सोया पडा है॥ अर स्वप्न विषे देखत भई॥ जो बालक मेरे पास नही
तब वे दुख को प्राप्त भई॥ अर रुदन करणे लागी॥ जब स्वप्न निवृत्त हूआ॥ तब दे
खिया जो बालक गोद विषे सोया पडा है॥ एता दुख भ्रम कर के मे पाया है॥ अर ब
डे आनंद को प्राप्त भई॥ अर दुख शोक भी नष्ट हो गये॥ हे राजन् तिसी प्रकार आ
त्मा तेरा आपणा आप है॥ अर सदा अनुभव रूप है॥ तिसके प्रमाद कर के तूं आप
कों दुखी जानता है॥ जब अज्ञान रूपी निद्रा ते तूं जागेगा॥ तब आपको जाणेगा
अर दुख नष्ट हो जावहिगे॥ सो अज्ञान रूप निद्रा क्या है॥ सो श्रवण कर॥ देह इं
द्रियादिक इन आप कों मिल कर आप को जानता है॥ जो मैं हों॥ इही अज्ञान रू
प निद्रा है॥ इस ते रहित होकर देखि जो आनंद को॥ प्राप्त होवहि॥ अर जेते इ
ह पदार्थ भान होते हैं॥ सो मिथ्या है॥ जेसे बालक मृत्तिका विषे राजा अर राजसे
ना कल्पना करता है॥ तो उनको न राजा है न राजसेना है॥ एक मृत्तिका ही है॥ तेसे
चित्त रूप जो बालक है॥ तिस ने आत्म रूप मृत्तिका विषे राजा अर सेना आदिक
कल्पे हैं॥ अर संपूर्ण विश्व कल्पी है॥ सो मिथ्या है॥ हे राजन् एक उपाइ तेरे ताई क
हिता हों॥ सो तूं कर॥ जो दुख तेरे नष्ट हो जावहि॥ एक वस्तु का त्याग कर॥ सो वृ
त्ति है॥ अहं अभिलाषा सहित जो फुरता है॥ तिसको त्याग कर॥ जहां इच्छा होवे
तहां विचर॥ तब को ऊ दुख का स्पर्श न होवेगा॥ संकल्प ही उपाधि है॥ जेसे म
णि होती है॥ अर तृणों कर आछादी होती है॥ जब तृण दूर कीये तब प्रगट
हो आवती है॥ हे राजन् तेसे वासना रूपी तृणों कर आत्मा रूपी मणि आछा
दी है॥ जब वासना रूपी तृण दूर करीये॥ तब आत्मा रूपी मणि प्रगट हो आ
वती है॥ हे राजन् जाग्रत स्वप्न सुषुप्ति ते रहित जो आत्म पद है॥ तिसको जा
णेगा तब जाणेगा जो मैं मुक्ति हों॥ सो तेरा स्वरूप है॥ तिस पद विषे स्थित र
हो॥ जो केवल आत्म स्वरूप है॥ अर अजन्मा है॥ अर नित्य है॥ अर चेतन्य मा
त्र है॥ अर सर्व का आपणा आप है॥ तिसके प्रमाद कर दुखी हो बैठा है॥ जेसे
बालक मृत्तिका के खिलोने बनावता है॥ अर हस्ती घोडे आदिक नाम कल्प
ता है॥ अर अभिमान करता है॥ जो मेरे हैं॥ अर तिनके नष्ट होवणे कर दुखी
होता है॥ तेसे अज्ञानी है बालक॥ स्वरूप के प्रमाद कर के अभिमान करता है

इह मेरे हैं॥ मैं इनका हों॥ तिनके दुखी होवणे कर दुखी होता है॥ ऐसे नही जानता
जो सत्य का नाश नही होता॥ असत्य के नाश होवणे कर के सत्य का नाश
जाणता है॥ जेसे घट के नाश होवणे कर के घटाकाश का नाश मानीये॥ तेसे म
मता कर के दुख पावता है॥ हे राजन् तूं आप को आत्म जाण॥ अर आत्मा ते
आदि ले कर संज्ञा भी शास्त्रों कल्पीया है॥ जगावणे के निमित्त॥ नहीं तो आ
त्मा निर्वाच्य पद है॥ जिस विषे वाणी की गम नही॥ अर इह नही कर जाणीता
है॥ काहे ते जो इस मन वाणी विषे भी आत्म सत्ता है॥ तिसी कर आत्मा आ
दिक संज्ञा सिद्ध होती है॥ जेसे स्वप्न के पदार्थ जेते कछु है॥ तिन विषे अनु
भव सत्ता है॥ तिसी कर पदार्थ सिद्ध होते हैं॥ जेते कछु अर्थ सत्ता है॥ सो स
र्वात्मा कर सिद्ध होती है॥ ऐसा जो तेरा स्वरूप है॥ तिस विषे स्थित हो॥ जो तेरे
जरा मरण आदिक दुख नष्ट हो जावहि॥ हे राजन् जब निस्पंद रूप होकर दे
खेगा॥ तब स्पंद विषे भी उहो भासेगा॥ निस्पंद अर स्पंद दोनों तुल्य हो जा
वहिगे॥ जो समाधि विषे स्थित होवेगा तो भी तुल्य है॥ अर जो ऐसे हो
चेष्टा करेगा तो भी तुल्य है॥ न समाधि विषे प्रीति भासेगी॥ न चेष्टा विषे दु
ख भासेगा॥ दोनो विषे एक रस होवेगा॥ विषमता कछु न भासहि होवेगी॥ हे रा
जन् जो कछु प्रकृत आचार प्राप्त होवे॥ देवणा अथवा लेवणा यज्ञदा
नादिक क्रिया जो है॥ तिसकों मर्यादा सहित शास्त्र विधि सहित कर अनि
अध्यात्म स्वरूप विषे रहो॥ जेसे नट स्वांग कों अंगीकार करता है॥ चेष्टा संपूर्ण क
रता है॥ पर निश्चय तिसका नट ही विषे रहता है॥ संपूर्ण चेष्टा करता है अभि
नय॥ इसकों विस्मरण नही होता॥ तेसे चेष्टा तन मन सर्व करौ॥ अर तिसके अ
भिमान से कल्प ते रहित होवो॥ यह राग अथवा त्याग जो कछु स्वभाव कर आ
प्राप्त होवे॥ तिस विषे जिउं के तिउं रहो॥ जब निर्विकल्प होकर आपणा स्वरूप
कों देखहिगा॥ तब उत्थान काल विषे भी तेरे ताई आत्मा ही भासेगा॥ जेसे ज
ल के जाणने ते तरंग फेन बुदबुदा सर्व जल ही भासते हैं॥ तेसे जब तूं आत्मा को जा
णहिगा॥ तब संसार तेरे ताई आत्मा ही भासेगा॥ अर जो आत्मा को नही जानता
तिसकों जगत ही दृष्ट आवता है॥ तिस कर के दुख कों पावता है॥ तांते तूं अंत
र्मुख हो संकल्प विकल्प कों त्याग कर के परम निर्वाण अच्युत पद विषे स्थि
त हो॥ इति श्री निर्वाण प्रकरणे राजा इक्ष्वाकु उपदेशो नाम सर्गः॥ स्वयंभू
मनुरुवाच॥ हे राजन् इह जो संकल्प पुरुष है॥ सो संकल्प कर के आपणे को
भावना करता है॥ तो जन्म मरण पावता है॥ अर दुखी होता है॥ आप ही संकल्प
करता है॥ अर आप ही बंधन कों प्राप्त होता है॥ जेसे चुरायण कीट आप ही गु
फा बणावती है॥ अर आप ही तिसकों मूंद कर फस मरती है॥ तेसे आपणे संक
ल्प कर आप ही दुख पावता है॥ अर जो संकल्प कों अंतर्मुख करता है॥ तो मुक्ति
होता है॥ अर मुक्त ही मानता है॥ तांते हे राजन् संकल्प कों त्याग कर अर आ
त्मा जो है॥ आपणा आप सो तिसकी भावना कर जो तूं सुखी होवहि॥ हे राजन्
आत्मा के प्रमाद कर के देह आस्था की भावना हुई है॥ तिस कर के दुख कों
पावता है॥ तांते आत्म स्वरूप की भावना कर॥ जो तूं आत्मा है॥ महा आश्चर्य
माया है॥ जिसने संसार कों मोह लीया है॥ आत्मा सर्वदा अनुभव रूप है॥ आ
अरा अगव्यापी है॥ तिसकों नही जानते॥ तांते इही आश्चर्य है॥ हे राजन् आत्म
सदा अनुभव रूप है॥ तिस विषे स्थित हो॥ अर संसार आत्मा के प्रमाद क
र के हूआ है॥ फुरने कर के सत्य भी नही॥ अर असत्य भी नही॥ जो आत्मा ते

वा॰ नि॰ प्र॰ ८८

भिन्न करदेखीये॥ सो मिथ्या है॥ ताते सत्य भी नहीं॥ अरु आत्मा बिना इसगाहे नहीं
सर्वका आत्मा है॥ ताते असत्य भी नहीं॥ ते आत्मा की भावना कर॥ जो कछु पदा
र्थ भासते हैं॥ सो आत्माते भिन्न न जान सर्व आत्मा ही है॥ अरु जो आत्मा बिना
अवर भावना है॥ तिसका त्याग कर॥ हे राजन् जैसे जल विषे तरंग बुद्बुदे हो
ते हैं॥ सो जलतें इतर नहीं॥ जल ही ऐसे भासता है॥ तैसे जगत जो दृष्ट आ
वता है॥ सो आत्मा ही ऐसे भासता है॥ जैसे सूर्य अरु किरणां विषे भेद नहीं
[illegible]मा अरु कला विषे भेद नहीं॥ तैसे आत्मा अरु जगत विषे भेद नहीं॥ आत्मा
ही जगतरूप है॥ अरु भिन्न भिन्न जो आकार भासते हैं॥ सो चित शक्ति है इ
तर नहीं॥ आत्मा सत्ता ही है॥ जैसे लोहा तें खड्ग आवरूयादिकों कों जलाव
ता है॥ सो लोह कों आपणी सत्ता नहीं॥ अग्नि की है॥ तैसे चेतन्य की सत्ता
जगतरूप होकर स्थित भई है॥ आत्मा सदा केवल रूप है॥ जिस विषे प्र
काश अरु तम दोनों नहीं॥ न सत्य है न असत्य है॥ न कोऊ देश है॥ न कोऊ काल
है॥ न कोऊ पदार्थ है॥ केवल चेतन्यमात्र है॥ गुणातीत है॥ न कोऊ गुण है
न कोऊ माया है॥ केवल शांतिरूप आत्मा है॥ हे राजन् न तो सो कर पाईता
है॥ न तप कर पाईता है॥ केवल आपणे आप कर जाणिया जाता है॥ अवर शा
स्त्र आदिकों कर इस वास्ते नहीं जाणिया जाता॥ जो इंद्रियां कर के नहीं जणावते
खाई देते हैं॥ काहे ते जो द्रष्टा पुरुष है॥ आपणे आप कर जाणीता है॥ जैसे सूर्य
कों ज्योति नेत्रों विषे है॥ सोई सूर्य कों देखती है॥ तैसे आत्मा ही आत्मा कों दे
खता है॥ अंतरमुखी होकर अरु संकल्प ते रहित होकर आपणे आप कों दे
खता है॥ जब संकल्प बहिर्मुख होता है॥ तब वही दृढ होकर वही स्थि
त होता है॥ तब दुखदाई होता है॥ हे राजन् अवर दुखदाई इसका कोऊ नहीं
आपणा संकल्प ही कर के दुखी होता है॥ अरु समदर्शी कों जगत भी दृष्टि आ
वता है॥ तो भी दुखदाई न होता॥ जैसे जेवरी विषे सर्प की भावना होती है॥
तब भय कों प्राप्त होता है॥ अरु जेवरी के जाणे ते सर्प की भावना दूर भई॥ तब भ
य भी जाता रहिता है॥ अरु जिस पुरुष कों संसार की भावना होती है॥ सो दुख
दाई होती है॥ तां ते आत्मा की भावना कर जो तेरे सर्व दुख नष्ट हो जावहिंगे
हे राजन् तूं सर्वदा आनंदरूप है॥ अरु अद्वैत है॥ तेरे विषे कल्पना कोऊ न
होत॥ आत्मा स्वरूप है अरु आत्मा षट्विकारों ते रहित है॥ विकार मिथ्या देहि
के हैं॥ आत्मा विषे विकार कोऊ नहीं॥ जब तें आत्मा कों जाणहिगा॥ तब
विकार कोऊ दृष्ट न आवेगा॥ काहे ते जो आत्मा अद्वैत है॥ **राजोवाच**॥ हे भग
वन् तुम कैसे कहिते हो॥ जो आत्मा अद्वैत है॥ जो इस प्रकार है॥ तो पर्वत
आदिक विश्व कैसे भान होती है॥ पथर रूप महा बडे आकार बणे के क
हां ते उपजे हैं॥ अरु क्या रूप है इनका॥ सो कृपा कर के कहो॥ **स्वयंभमुनिरुवा
च**॥ हे राजन् आत्मा विषे संसार कोऊ नहीं॥ सर्वदा शांतिरूप है॥ अरु नि
राकार है॥ तिस विषे निस्पंद स्पंद दो शक्ती हैं॥ जब निस्पंद शक्ति होती है
तब केवल अद्वैत भासता है॥ अरु जब स्पंद शक्ती होती है॥ तब जगत
भासता है॥ वास्तव ते आत्मा ही है॥ इतर कछु नहीं॥ जैसे वट का बीज पर्क
होता है॥ अरु तिस विषे फूल फल पत्र अनेक दृष्ट आवते हैं॥ तैसे ब्र
ह्म सत्ता नाना प्रकार के आकारों कों धारती है॥ यद्यपि दृष्ट आवते हैं॥ तो भी
अवर कछु बणिया नहीं॥ जिउं का तिउं आत्मा स्थित है॥ केवल अद्वैत
है॥ जैसे समुद्र विषे तरंग कछु नहीं पवन के संयोग ते फुरते हैं॥ तो भी भि

२

न्न दृष्ट आवते हैं॥ तैसे संवेदन शक्ति कर के आकार भिन्न भिन्न दृष्ट आ
वते हैं॥ वास्तव ते आत्मा रूप है॥ इतर कछु नहीं॥ अरु सत्य तिस भी सत्य भा
सते हैं॥ अरु पर्वतादिक जो विश्व भान होते हैं॥ सो आत्मा का चमत्कार है॥ ते
से स्वप्ने विषे पर्वत अरु वृक्षादिक नाना प्रकार के आकार भान होते हैं॥ तो भी
अनुभवरूप है॥ इसते इतर कछु नहीं॥ तैसे जाग्रत विषे भी जो कछु भास
ती है॥ सो अनुभव आत्मा रूप है॥ इसते इतर कछु नहीं॥ **उद्दालकउवाच**॥
हे भगवन् जो आत्मा सत्य है॥ तो पर्वतादिक स्थूल अरु दृष्ट असत्य ही सत्य
हो कर कैसे भान होते हैं सो कहो॥ **स्वयंभमुनिरुवाच**॥ हे राजन् आत्मा
शक्ति अनंत शक्ति है॥ सो शक्ति आत्मा ते भिन्न नहीं॥ आत्मा ही रूप है
जैसे सूर्य की किरणां सूर्य ते भिन्न नहीं॥ तैसे आत्मा की शक्ति आत्मा ते
भिन्न नहीं॥ जैसे पवन विषे दो शक्ती हैं॥ स्पंद अरु निस्पंद॥ सो निस्पंद
भी पवन है॥ अरु स्पंद भी पवन है॥ स्पंद शक्ति कर प्रगट भासता है॥ अ
रु निस्पंद शक्ति कर नहीं भासता॥ तैसे आत्मा विषे स्पंद निस्पंद दो श
क्ती हैं॥ जब स्पंद शक्ति फुरती है॥ तब अहंभाव प्रगट होता है॥ जब अ
हंभाव प्रगट हुआ तब चित्त उदय हुआ॥ सो अहं ही चित्त है॥ जब चित
हुआ तब आकाश की भावना ते आकाश बण जाता है॥ जब स्पर्श भाव
ना हुई तब पवन उत्पत्ति होता है॥ जब रूप की भावना कीनी तब अग्नि
बण गई॥ जब रस की भावना हुई तब जल उत्पत्ति हुआ॥ जब गंध की
भावना करी तब पृथ्वी उत्पत्ति भई॥ इसी प्रकार चित्त की कल्पना कर
तत्त्व उपजे हैं॥ जब चारों तत्त्व का समष्टि हुआ तब एक अंड हुआ॥ जब
दृढ संकल्प हुआ तब अंड हुआ॥ बहुर अंड फूटा तब तीन लोक हुए
स्वर्ग मध्य अरु पाताल॥ सो तीनों लोक तीनों गुणां राजस तामस सा
त्विक हुए॥ बहुत पर्वतादिक दृष्ट पदार्थ हुए॥ हे राजन् केवल संक
ल्पमात्र ही हुए हैं॥ जब स्पंद शक्ति फुरती है॥ तब इस प्रकार आत्मा
विषे भान होते हैं॥ पर्वत बणिया कछु नहीं॥ जैसे समुद्र विषे बुद्बुदे
हैं॥ सो जल ही रूप हैं॥ जल ते इतर कछु नहीं॥ तैसे आत्मा ते इतर क
छु नहीं वस्तु॥ अरु आदि मुनि जो स्वयंभू है॥ तिसने आगे मन कल्पी है
त्रिगुणमय सृष्टि इस प्रकार उत्पत्ति होती है॥ सो केवल संकल्पमात्र
है॥ जब लग चित्त है॥ तब लग विश्व है॥ जब चित्त फुरने ते रहित हुआ
तब निस्पंद शक्ति होती है॥ जब निस्पंद शक्ति हुई तब इह जगत दिखा
ई नहीं देता॥ हे राजन् इह विश्व मन के फुरने कर के है॥ सो सत्य की सा
ई स्थित हुई है॥ अरु जो सत्य है सो सत्य की न्याई भासता है॥ सत्य के सा
असत्य की न्याई हुआ है॥ अरु असत्य के से सत्य की न्याई हुआ है॥ सो
श्रवण कर॥ असत्य जो है सो परिछिन्न है॥ देश काल वस्तु के परि
छेद संयुक्त है॥ सो सत्य की न्याई हुआ है॥ जहां देशांत हो इह प्रपंच ही
भासती है॥ त्रिगुणमय संसार ही भान होता है॥ महा माया अर्थ माया है
जिसने सत्य कों असत्य की न्याई कीया है॥ अरु असत्य कों सत्य की
न्याई कीया है॥ सो चित्त के संबंध कर के सत्य भान होता है॥ आत्मा
विषे संसार कोऊ नहीं॥ जब चित्त कों स्थित कर देखेगा॥ तब नि[illegible]

ब॰नि॰
प्र॰
८८

ईसंसार नभासेगा जैसे तरंगभी जल होता है ॥ तब चलता नहीं भासता ॥ सो
कहा जाता है ॥ तैसे भीर जो है आत्मा तिस विषे संसार नहीं जानीता ॥ सो
कहा जाता है ॥ अरु संसार भी आत्माते कछु भिन्न वस्तु नहीं ॥ आत्मस्वरूप ही है
जैसे अग्निकी चिनगारे अग्निते भिन्न नहीं ॥ केवल अग्निरूप है ॥ अरु जलके
तरंग जलते भिन्न नहीं ॥ सूर्यका प्रकाश सूर्यते भिन्न नहीं ॥ तैसे आत्माते
संसार भिन्न नहीं ॥ केवल आत्मरूप है ॥ ऐसे आत्माको जाणिकर शां
तिवान हो ॥ तेरे दुःख नष्ट हो जावहिंगे ॥ केवल शांतिपद आत्मा है ॥ सो ते
रा आपणा आप है ॥ आपणे स्वरूपको भुलाइकर किंउ दीन हुआ है ॥ ज
ब आत्माको जाणहिगा ॥ तब संसार भी आत्मरूप दृष्ट आवेगा ॥ काहेते
जो आत्मस्वरूप ही है ॥ आत्माते इतर वस्तु कछु नहीं ॥ ऐसा आतेरा स्वरू
प है ॥ इही भावना दृढ कर ॥ ऐसी जिसकी भावना दृढ है ॥ ओरसम इ
च्छा शांति होगई है ॥ तिस पुरुषको दुःख कोऊ नहीं लागता ॥ इस निरइच्छ
रूपी कवच पहिरेया है ॥ हे राजन अहं अर्थते रहित जो पुरुष है ॥ सर्व
जिसको शून्य होगया है ॥ अरु निरालंबका आश्रा कीया है ॥ ते पुरुष स्व
च्छिरूप है ॥ इति श्री निर्वाणप्रकरणे स्वयंभमुनि इक्ष्वाकु आख्याने नाम स
र्गः ॥ ८० ॥ स्वयंभमुनोवाच ॥ हे राजन अहं संसार आत्माते भिन्न कछु
नहीं ॥ जैसे जल अरु तरंग भिन्न नहीं ॥ तैसे आत्माते संसार भिन्न नहीं
आत्मस्वरूप ही है ॥ जैसे इंद्रीयोंके विषय इंद्रीयों विषे रहित हैं ॥ तैसे आत्म
विषे संसार रहिता है ॥ हे राजन विषयोंकी सततताको त्याग करके केवल
आत्माकी भावना कर ॥ तोते संशय मिट जावहि ॥ तब आत्मा स्वरूप है
अरु निरगुण है ॥ तिसको तीनगुणोंका स्पर्श नहीं होता ॥ तब सर्वते परे है ॥ जै
से आकाश विषे धूर अरु धूआं अरु मेघ बादर विकार भासते हैं ॥ अरु आ
काशको लेप कछु नहीं ॥ केवल आकाश अद्वैतरूप है ॥ अरु जो ज्ञान
वान पुरुष हैं ॥ जिनको आत्मज्ञान भया है ॥ तिनको सुख दुःख सात्विक रा
जस तामस गुण लेपन होकर ते ॥ तिन विषे दृष्ट भी आवते हैं ॥ लो
कोंको तो आपणे विषे नहीं देखता ॥ जैसे शुद्ध मणि होती है ॥ तिस वि
षे नील पीतादिक प्रतिबिंब पड़ते हैं ॥ सो देखण मात्र है ॥ मनको स्प
र्श नहीं होता ॥ तैसे जिस पुरुषके हृदयते वासना नष्ट हुई है ॥ ति
सको शरीरके संबंध करके राजस तामस सात्विक गुणोंके कार्य सु
ख दुःख देखण मात्र भी होते हैं ॥ पर स्पर्श नहीं करते ॥ केवल सम आत्म
न पदका निश्चय इस विषे होता है ॥ अरु राग द्वेष इसको स्पर्श नहीं हो
ता ॥ जैसे धूर आकाशको लेपवान नहीं होती ॥ तैसे आत्माको गुणोंका
संबंध नहीं होता जो पुरुष जानता है ॥ तिसको ज्ञानी कहीता है ॥ जाण
ताभी तब है जब स्पंद होता है ॥ जब निस्पंद हुआ तब आत्मा हुआ ॥
जब स्पंद हुआ तब संसारी होता है ॥ जब चेतनता होता है ॥ तब अ
नेक रूप भासते हैं ॥ जब चित फुरनेते रहित हुआ तब संसारका
अत्यंत अभाव होता है ॥ अर्थ साभाव भी नहीं भासता ॥ जो एवं दृष्टसो
अब लीन होगई है ॥ संसार भी केवल आत्मारूप हो जाता है ॥ ताते
हे राजन चितको स्थिर कर ॥ अरु वासनाका त्याग कर ॥ इह वासना मैल

है ॥ तब वासनाका त्याग हुआ ॥ तब केवल आकाशकी न्याई आपको
स्वच्छ जानेगा ॥ सो आत्मा वाणीका विषय नहीं ॥ केवल आत्मतत्व मात्र है
अरु आपणे आप विषे स्थित है ॥ अरु सर्वदा इदरूप है ॥ अरु विश्व भी आ
त्माका चमत्कार है ॥ भिन्न वस्तु कछु नहीं ॥ जैसे तरंग जलते भिन्न नहीं
तैसे विश्व आत्माते भिन्न नहीं ॥ आत्मारूप ही है ॥ अरु द्रष्टा दर्शन दृश्य इह
त्रिपुटी जो भान होती है ॥ सो अज्ञान कर भान होती है ॥ आत्मा सर्वदा ए
करूप है ॥ अरु त्रिपुटीते रहित है ॥ फुरनेकर के आत्मा ही त्रिपुटीरूप
होकर स्थित हुआ है ॥ जैसे स्वप्न विषे एक अनुभव रूप होता है ॥ अरु चे
तना करके काल विषमता रूप हो भासता है ॥ वस्तु एक ही है इसको फुरने
तैसे आत्माते भिन्न वस्तु कछु नहीं ॥ अरु फुरने विषे संसार है ॥ जब फुर
णा मिट गया तब संसार भी मिट जाता है ॥ अरु स्वरूपको प्राप्त होता है
ती है ॥ सो श्रवण कर ॥ सप्त भूमिका कहिता हों ॥ जो प्रथम जिज्ञासा हो
ती है ॥ तब चाहता है जो शास्त्र अरु आत्मविद्याको देखणा ॥ अरु श्रवण कर
णा ॥ अरु संतोंका संग करणा ॥ सो प्रथम भूमिका है ॥ भूमिका कहीये
चित्तके ठहिरावणे की होइ ॥ बहुरि जब शास्त्र अरु संतोंका संग हु
आ ॥ अरु बुद्धि विधी तब शास्त्र अरु संतोंके कहिणेको विचारता है
जो मैं कवण हों ॥ अरु संसार क्या है ॥ सो इह दूसरी भूमिका है ॥ तिसते
उपरांत जो विचारेया है ॥ जो मैं आत्मा हों ॥ अरु संसार मिथ्या है ॥ मेरे वि
षे संसार कोऊ नहीं ॥ ऐसी वार वार भावना करणी ॥ सो तीसरी भूमि
का है ॥ आत्मभावनाकी दृढताते जब आत्मा साक्षात्कार हुआ ॥ त
ब वासना समूली मिट जाती है ॥ जब स्वरूपते उत्तर कर देखता है ॥ त
ब संसार दृष्ट आवते है ॥ पर स्वप्नकी न्याई भासता है ॥ ताते वासना नहीं
फुरती ॥ ऐसे जो अविलोकन है ॥ सो चतुर्थी भूमिका है ॥ जब अवलो
कन हुआ तब आनंद ते प्रगट होता है ॥ ऐसे सम हुआ आनंदका प्रग
ट होवणा सो पंचम भूमिका है ॥ जब आनंद प्रगट हुआ ॥ अरु तिस विषे
स्थित होवणा आपणे बलते सुषुप्तवत ॥ इस नाम पंचम भूमिका ॥
अरु तुरीयापद जो है ॥ सो छठवी भूमिका है ॥ चितके छठका नाम तुरी
या है ॥ जब तुरीया अतीतपदको प्राप्त हुआ ॥ तब परम निर्वाणपद
को प्राप्त हुआ ॥ तिसको सप्तम भूमिका कहीये ॥ तिस परम निर्वाणप
दको जीवन्मुक्तकी गम नहीं ॥ काहेते जो तुरीया अतीतपद है ॥ ति
सको वाणी करके कहि नहीं सकीता ॥ प्रथम तीन भूमिका जो तेरे तांई क
ही है ॥ सो जाग्रत अवस्था है ॥ तिस विषे श्रवण मनन निध्यासन करीता है
अरु संसारकी सत्ता दूर नहीं होती ॥ इसते जाग्रत अवस्था कही है ॥ अ
रु चतुर्थ भूमिका स्वप्नवत संसारकी सत्ता नहीं होती ॥ अरु पंचम भूमि
का सुषुप्त अवस्था है ॥ काहेते जो आनंदघन विषे स्थित होता है ॥ अ
रु छठवी भूमिका तुरीयापद है जो जाग्रत स्वप्न सुषुप्तकी अवस्था
का साक्षी है ॥ केवल ब्रह्म ही प्रकाशता है ॥ अरु निर्वाणपद विषे जीवन्मु
क्ति विचरते हैं ॥ अरु सप्तम भूमिका तुरीया अतीतपद है ॥ सो परम नि

र्वाणहै॥ सोतुरीयाविषेब्रह्माकारवृत्तरहितीहै॥ अरतुरीयाअतीतवि
षेब्रह्माकारवृत्तभीलीनहोजातीहै॥ जहांवाणीकीगमननहीतहां
चितनष्टहोताहै॥ केवलचेतनमात्रहै॥ तहांआपणाअहंभावभीहो
वणानहीं॥ केवलआत्मतत्वमात्रहै॥ शांतअरपरमअद्वैत॥ ऐसाजोपर
मनिर्वाणहै॥ सोतेरास्वरूपहै॥ सर्वविश्वभीओहीरूपहै॥ इतरकछुनहीं
जेसेस्वर्णहीभूषणहै॥ अरभूषणस्वर्णविषेकलपनाहै॥ स्वर्णहीस्वर्णहै
अरभूषणभीपरिणामकरहोताहै॥ आत्मासदाअच्युतहै॥ कदाचित्
परिणामकोंनहीप्राप्तभया॥ केवलएकरसहै॥ तिसविषेचेतनाफु
रणेविश्वकल्पीहै॥ विकारसंयुक्तभासतीहै॥ तोभीआत्मातेइतरक
छुनहीं॥ केवलआपणेआपविषेस्थितहै॥ हेराजन् ऐसाआत्मा
तेरास्वरूपहै॥ तिसविषेस्थितहोकरआपणेप्रकृतआचारविषेनि
रअहंकारहोकरविचर॥ अरअहंकारकेत्यागकाअभिमानभीत्याग
कर॥ केवलआत्मस्वरूपहो॥ इतिश्रीनिर्वाणप्रकरणेपरमनिर्वा
णसप्तभूमिकावर्णनंनामसर्गः॥ ७८॥ स्वयंभूरुवाच॥ हेराजन्सर्व
विदाकाशसत्ताआदिकेअंतमध्यतेरहितअनाभासजिडकातिडस्थि
तहै अरआगेभीओहीस्थितहोवेगा॥ तिसविषेनउर्धहै॥ नअधाहै
नतमहै नप्रकाशहै नतिसतेइतरहै सर्वकीसत्ताहै सोचिन्मात्र
है॥ परमसारहै॥ सोआपहीसंकल्पकरचेतनभयाहै॥ तबजगतहुआ
है॥ सोकिंडकरहुआहै॥ अरक्यारूपहै सोश्रवणकर॥ हेराजन्इह
विश्वभीआत्मातेभिन्ननहीं॥ आत्मस्वरूपहीहै॥ जेसेअग्निविषेउस्नताहै
अरबर्फविषेशीतलताहै॥ अरसूर्यविषेप्रकाशहै॥ तेसेआत्माविषे
विश्वहै॥ सोआत्मस्वरूपहीहै॥ जेसेआकाशविषेशून्यताहै॥ जेसेपव
नविषेस्पंदशक्तीहै॥ तेसेआत्माविषेविश्वहै॥ सोआत्मारूपहीहै
आत्मातेइतरकछुनहीं॥ हेराजन् जोआत्मास्वरूपहै॥ तोशोककिस
काकर्ताहै॥ अरमोहकिसकाकर्ताहै॥ अभिमानतेरहितहोकर
विचर॥ जेसेनेतकाप्रवाहआनप्राप्तहोवेतिसविषेविचर॥ जेसेका
ष्टकीयांपुतलीयांयंत्रीकेतागेकरअनिछतचेष्टाकरतीयांहैं॥ तेसे
नेतरूपतागेसेंअभिमानतेरहितहोकरविचर॥ जोमैंनकछुकीतो
हैं॥ नकरावताहूं॥ नकिसीविषेरागकरणानद्वेषकरणा॥ जेसे
शिलाऊपरमूर्तलिखीहोतीहै॥ तिसकोंनकिसीकारागहैनद्वेषहै
तेसेमूर्तशिलाकीन्याईविचर॥ अरआत्मातेइतरकछुफुरेनहीं॥
ऐसानिरअहंकारहोवें॥ भावेव्यवहारीहोगृहस्थीभावेंसन्यासी
हो॥ भावेंदेहधारीहोभावेत्यागीहो॥ भावेंविवेकीहो॥ भावेंअज्ञानीहो
तेरेताईदुखकोईनहोवेगा॥ जिंडकातिडरहेगा॥ फुरनाहीसंसारहै॥
फुरनेतेरहितअसंसारहै॥ जबफुरनाहै तबसंसारीहोताहै॥ जबफुर
नामिटजाताहै॥ तबकेवलआकाशरूपभासताहै॥ हेराजाइहजग
तसभआत्मस्वरूपहै॥ आत्माहीआपणेआपविषेस्थितहै॥ जोस
र्वात्माहीआपणेआपविषेस्थितहै॥ तोशोककिसकाकीजे॥ अरमोहकि

सकाकीजे॥ हेराजन्आत्मासर्वदाएकरसहै॥ अविद्याःत्माकाचमत्कारहै॥
अरनानाविकारजोदृष्टआवतेहैं॥ अरजन्ममरणादिकजोभासतेहैं॥
सोआत्माकेअज्ञानकरभासतेहैं॥ जबआत्माकाज्ञानहुआतबआत्माहीं
रूपहै॥ विषमताकछुनभासेगी॥ जेसेजलकेअज्ञानकरकेतरंगबुद्बुदेकी
विषमताभासतीहै॥ सोकछुनहीं॥ सर्वजलहीजलहै॥ तेसेजोकछुविका
रभासतेहैं॥ सोआत्माकेअज्ञानकरभासतेहैं॥ जबआत्माकाज्ञानहुआत
बसर्वएकरसआत्माहीभासताहै॥ अरजोकामजोभासतेहैं॥ सोसंवितकर
केभासतेहैं॥ संवितकहीये॥ अहंकारअरवासनाकेसंबंधकरकेभासते
हैं॥ अहंकारकहीयेचितकहीयेइहदोनोपरजायहैं॥ हेराजन्अहंकार
साथइसकाहोवणादुखदाईहै॥ केवलचिन्मात्रविषेजोअहंभावहै सो
मिथ्याहै॥ जबलगसंवितदृश्यकीओरफुरतीहै॥ तबलगदृश्यकाअंत
कहूंनहींआवता॥ अरनानाप्रकारकेविकारभासतेहैं॥ अरजोसंवित
आत्मअधिष्ठानकीओरआवतीहै॥ तबआत्माशुद्धआपणाआपहोकरभा
सताहै॥ अरसंवितभीआत्माकाआभासहै॥ कल्पितअरआभासआश्र
यविश्वकल्पीहै॥ अरआत्माजिडकातिडहै॥ फुरनेविषेअफुरनेविषेप
नफुरनेविषेविषमताभासतीहै॥ अरआत्माविषेजिडकातिडभासताहै॥ जेसे
जेवडीविषेअज्ञानकरकेसर्पभासताहै॥ जबजेवडीकाज्ञानभया॥ तबस
र्पविषमताचलतीरहितीहै॥ जिडकातिडजेवडीहीभासतीहै॥ सोजेव
डीसर्पभावविषेभीजिडकीतिडथी॥ जेवडीविषेकछुहुआनहीं॥ ज्ञानतेअ
रनजाणनेविषेएकसमानहै॥ तेसेआत्माविषेभीफुरनेकालविषेअर
तभासताहै॥ फुरनेकेचिहुनरूपआत्माभासताहै॥ आत्मादोनोंकालोंविषे
एकसमानहै॥ जेसेसूर्यकीकिरणसूर्यतेभिन्ननहीं॥ अरअग्नितेउस्नताभि
न्ननहीं॥ तेसेआत्मातेविश्वभिन्ननहीं॥ आत्मस्वरूपहीहै॥ हेराजन्अहं
कारकोत्यागकरअरसत्तासमानआपनेस्वरूपविषेस्थितहो॥ तबतेरे
सर्वदुखनिवृत्तहोजावहिं॥ अरएकवचनतेरेताईकहिताहों॥ तिसकोंअ
धारकरविचर॥ यद्यपिअनेकशास्त्रोंकीवर्षाहोवे॥ तोभीछेदकोंन
प्राप्तहोवे॥ सोश्रवणकर॥ जोकछुदेखताहै॥ अरसुणताहै॥ सोसर्व
ब्रह्महीजाण॥ इहीभावनाकरवारंवार॥ जोब्रह्मतेइतरकछुभासेन
ही॥ जबऐसेभावनादृढकरहि॥ तबशास्त्रकोंफुरनछेदकरेगा॥ इह
ब्रह्मकीभावनाहीकवचहै॥ जबइसकवचकोंतूधारेगा॥ तबसर्वो
त्तमहोविगा॥ वाल्मीकोवाच॥ इसप्रकारवसिष्ठजीरामजीकोंस्वयंभूमनि
अरइक्ष्वाकुकालेवादसुणाया॥ तबसायंकालकासमयहुआ॥ अर
सूर्यअस्तभया॥ अरसंदर्शसभास्नानकोंउठी॥ अरवसिष्ठजीभीउठे॥ व
इइसूर्यकीकिरणोंसाथआइप्राप्तभए॥ इतिश्रीनिर्वाणप्रकरणेमात
रूपवर्णनंनामसर्गः॥ ७९॥ स्वयंभूरुवाच॥ हेराजन्जिसकाकार
णमिथ्याहै॥ तोकार्यकेसेसत्यहोवेगा॥ इहआभासजोहै॥ संवितसोवि
श्वकाकारणहै॥ जोआभासमिथ्याहै॥ तोविश्वकेसेसत्यहोवे॥ अरजो
विश्वअसत्यहै॥ तोमेंकिसकाकर्ताहूं॥ अरशोककिसकाकरताहैं॥ हेरा
जन्नकोऊमरताहै॥ नकोऊजन्मताहै॥ नसत्यहैनदुखहै॥ जिडकातिड
आत्मास्थितहै॥ तिसविषेसंवितनेविश्वकल्पीहै॥ संवितकात्यागकर
ज्ञानमेंहोनरहहै॥ जबतेरेताईऐसानिश्चयहोवेगादृढतबपीछेअ

त्माहीपोषरहेगा॥ अरअहंकारनिवृत्तहोजावेगा॥ काहेतेजोआत्माकेअज्ञान
तेहुआहे॥ अरआत्माज्ञानतेनष्टहोजाताहे॥ हेराजन जोवस्तुभ्रमकरसिद्ध
होवे॥ अरसत्यदृष्टआवे तिसकोंविचारीये॥ जोविचारकीयेरहे॥ तोसत्यजा
णीये॥ अरआत्माजाणीये अरआत्मा॥ जोविचारकीयेतेनष्टहोजावे॥ तिसकों
मिथ्याजाणीये॥ जेसेहीरास्वेतहे॥ अरबरफकाहीराभीस्वेतहोताहे॥ दोनो
एकसमानभासतेहे॥ तिनदोनोकीपरीक्षाकरीये॥ सूर्यकेआगेदोनोराखीये
जोएपकरजलहोजावेसोकूडाजाणीये॥ अरजोजिंडकातिंडरहे सोसत्यजा
णीये॥ तेसेविचाररूपसूर्यकेसन्मुखकरीये॥ तोअहंकारनष्टहोजा
ताहे॥ बरफकीन्याई॥ काहेतेजोअहंकारअनात्माविषेअभिमानहोता
हे॥ सोनष्टहे॥ अरसर्वव्यानहो॥ अरइंद्रीयोंकीक्रियाआपणेविषेमान
ताहे॥ सोनष्टहे॥ आपकोंभिन्नजानताहे॥ अरआपतेभिन्नअवरपदार्थ
मानताहे॥ तातेविचारकीएतेबरफकेहीरेकीन्याईमिथ्याहोताहे॥ अवि
चारतसिद्धहे॥ जबविचारकीयातबनष्टहोजाताहे॥ अरआत्मासर्वकासा
खीहे॥ जिंडकातिंडरहिताहे॥ अरअहंकारकाभीसाखीहे॥ सर्वव्यापीहे
हेराजनजोसत्यवस्तुहे॥ तिसकीभावनाकर॥ अरसम्यकदर्शीहो॥ सम्यकद
र्शीकोंदुखकोऊनहीं॥ जेसेजेवडीमार्गविषेपडीहे तिसकोंजेवडीजा
णीये तबडरकोऊनहीहोता॥ अरजोजेवडीनजानीयेसर्पजाणीये॥ तो
भयमानहोवीताहे॥ तातेसम्यकदर्शीहो॥ असम्यकदर्शीमतहोवहि॥ हेराजन
जोकछुदृष्टपदार्थहे॥ सोसदावदायीनहीदुखदाईहे॥ जबलगइनकासं
योगहे॥ तबलगसुखदाईभासतेहे॥ जबवियोगहोताहे॥ तबदुखदेते
हे॥ तातेतूउदासीनहो॥ किसीदृष्टपदार्थकोंसुखदाईनजाण॥ अरदु
खदाईभीनजाण॥ सुखअरदुखदोनोमिथ्याहे॥ इनविषेआस्थामतकर
अहंकारतेरहितजोतेरास्वरूपहे॥ तिसविषेस्थितहो॥ जबअहंकारन
ष्टहोजावेगा॥ तबआपकोंजन्ममरनविकारतेरहितआत्माजाणेगा॥ जो
मेंनिराकारहो॥ अरअलहो॥ चिन्मात्रहो॥ असेअहंभावतेआपणाहो
वणाभीनरहेगा॥ केवलचिन्मात्रहीरहेगा॥ आनंदरूपहोवेगा॥ अरश्रा
तिरूपरागद्वेषकेदोभतेरहितहोवेगा॥ जबअसाआपकोंजाणेगातब
शोककिसकाकरेगा॥ हेराजनइहदृष्टकोंत्यागकरआपणास्वरूपवि
षेस्थितहो॥ अरइसमेरेउपदेशकोंविचार॥ जोमेंसत्यकहिताहो॥ अरथ
वाअसत्यकहिताहो॥ अरजोविचारेतेसंसारसत्यहोवे तोसंसारकीभा
वनाकर॥ अरजोआत्मासत्यहोवे॥ तोआत्मकीभावनाकर॥ हेरामं
जीतेसम्यकदर्शीहो॥ सत्यकोंसत्यजाण॥ अरअसत्यकोंअसत्यजा
ण॥ जोअसम्यकदर्शीहोताहे॥ सोअसत्यकोंसत्यमानताहे॥ अरस
त्यकोंअसत्यमानताहे॥ असत्यवस्तुतोस्थिरनहीरहिता॥ असेजाणि
केअज्ञानीदुखपावताहे॥ जेसेकोऊपुरषकहीकोरचकरचितवणोला
गा॥ जोआकाशकीमेंरक्षाकरताहूं॥ अबकौयेनष्टभई॥ तबशोककर
ताहे॥ जोआकाशनष्टहोगया॥ काहेतेजोकहीकेआश्रेआकाश
कोंजानताथा॥ तेसेअज्ञानीपुरषदेहकेआश्रेआत्माकोंजानकर
देहकेनष्टहुएतेआत्माकोंनाशमानकरदुखीहोतेहे॥ अरजेसेस्वर्ण
विषेभूषणकल्पतेहें॥ जिसकोंभूषणकाज्ञानहे॥ सोभूषणकाना
शहे॥ सोभूषणकेनष्टहुएदुखपावताहे॥ परस्वर्णकातोनाशनहींहोता

जिंडकातिंडरहताहे॥ सोभूषणोंकेनाशतेभीस्वर्णकोंदेखताहे
अरभूषणमेंताकल्पितजाणताहे॥ तेसेजोपुरुषदेहसोदेहकेनष्टहुए
आपकोंनष्टहूआमानताहे॥ अरजोज्ञानीहे॥ सोआपकोंअविनाशीजा
नताहे॥ हेराजनतूदेहइंद्रियांअहंकारकेअभिमानतेरहितहोकरकरे
गा॥ तबशुभअशुभक्रियाबंधनसकेगी॥ अरजोअभिमानसंयुक्तकरेगा
तबशुभअशुभफलकोंभोगेगा॥ हेराजनजोसर्वअज्ञानीहें॥ सोअभी
क्रियाकेआरंभकरकहितेहें॥ नकर्ताहो॥ संभोक्ताहो॥ असेमानणेक
रअनेकजन्मोंकोपावतेहें॥ तिनकेकर्मोंकानाशकबहूंनहींहोता
अरजोतत्त्वज्ञानवानपुरुषहे॥ सोआपकोदेहइंद्रीयाअरगुणोंतेरहित
मानतेहें॥ तिनकेकर्मसंचितअरक्रियमाणनाशहोजातेहें॥ संचितके
संतकीन्याईहें॥ अरक्रियमाणफूलफलकीन्याईहें॥ जेसेरूईकोंलपे
टकरअग्निलगाएतेरूईअरफूलफलसकेतणदग्धहोतेहें॥ तेसेज्ञानरू
पअग्निकरसंचितअरक्रियमानकर्मदग्धहोतेहें॥ तातेहेराजनजो
कछुचेष्टाफुरणीवासनातेरहितहोकरकरेगा॥ तिसविषेबंधनकोइन
हीं॥ जेसेबालककेअंगस्वभावकभलीबुरीप्रकारहलतेहें॥ परइसके
हृदयविषेफुरनाअभिमाननहीं॥ तातेइसकोंबंधननहींकरते॥ तेसेत
भीइच्छातेरहितहोकरचेष्टाकर॥ तबतेरेताईबंधनकोऊनहोवेगा॥ य
द्यपिसभीचेष्टातेरेविषेभासेगी॥ तोभीवासनातेरहितहोवेगा॥ तबअ
वरजन्मनपावेगा॥ अरजेसेभुनाबीजदेखणमात्रहोताहे॥ परउगाव
तानहीं॥ तेसेतेरेविषेसर्वक्रियादृष्टआवेगी॥ परतोभीजन्मनपावेगा
पापक्रियाकरदुखनभोगेगा॥ अरपुण्यक्रियाकाफलपुण्यनभोगेगा॥ जेसेजलविषेकमलस्थि
तहोताहे॥ अरजलतिसकोंस्पर्शनहीकरता॥ तेसेतेरेताईपापपुण्य
स्पर्शनकरेगा॥ तातेतूअभिलाषातेरहितचेष्टाकर॥ अरजोकछुआप
णआच्छादितकरताहे॥ तिसकोंभीकर॥ हेराजनजेसेजलस्थानमेघआकाश
विषेदृष्टआवतेहें॥ अरआकाशकोंलेपनहीकरते॥ तेसेतजकों
विषेदृष्टआवतेहें॥ अरआकाशकोंढांकणेवालाहोताहे॥ तिस
कोंक्रियाबंधननकरेगी॥ जेसेविश्वकेजोक्रियाबंधनहीकरस
कोंजेसेविखनहींमारसकती॥ तेसेज्ञानीकोंक्रियाबंधनहींकरस
कती॥ ज्ञानवानक्रियाकरणेविषेभीआपकोंअकर्ताजानताहे॥ अरअ
ज्ञानीनकरणेविषेभीअभिमानकरकर्ताहोताहे॥ जोदेहइंद्रियांकेन
करणेविषेआपकोंअकर्तामानताहे॥ अरजोदेहइंद्रीयोंकरकर्ताहे
अरआपकोंअकर्तादेखताहे॥ सोकरणेविषेअकर्ताहे॥ अरजोपुरुषइं
द्रीयांकोंसमेटकरबेठताहे॥ अरमनविषेविषयोंभोगणेकीतृष्णा
गावताहे॥ अरमूढहेअंतःकरणजिसका॥ रागद्वेषकरबडीक्रियाकों
उठावताहे॥ अरडावीहोताहे॥ सोमिथ्याचारीहे॥ अरजोपुरवमनकरअं
द्रीयोंकोरागद्वेषतेरहितकर्ताहे॥ अरकर्मइंद्रीयोंकरचेष्टाकर्ताहे॥ सो
विषेहहे॥ सोहआपणाजाणानविषेकछुनहींकर्ता॥ सोमोक्षकोंपावताहे

हे राजन अज्ञानरूप वासनाते रहित होकर विचर ॥ ऐसे होकर विचरेगा ॥
तब आपकों जिउ कातिउ आत्मा जाणेगा ॥ अरु सर्वदा उदयरूप सर्वका प्रका
शक आपकों जाणेगा ॥ अरु जन्ममरणते रहित निर्विकार बंध मुक्तिते र
हित जिउ कातिउ आत्मा ही जाणेगा ॥ हे राजन तिस पदकों पाइकर प्राणि वा
न होवेगा ॥ अरु सर्वकला अभ्यास विशेष विना नाश होता है ॥ जैसे रस
विनाश होता है ॥ जदपि फलवाला भी होता है ॥ तो भी उगवता नहीं ॥
अरु ज्ञानकला अभ्यास विना नहीं उपजती ॥ अरु उपजी हुई नाश नहीं
होती ॥ जैसे धान वोईते हैं ॥ अरु दिन दिन प्रति वधणे लागते हैं ॥ तैसे ज्ञा
नकला प्राप्त हूई दिन दिन प्रति वढती है ॥ हे राजन ऐसे जाणता है ॥ ज्ञान
उपजे हूये ते ॥ ज्ञाना मैं मरता हों ॥ न जन्मता हों ॥ निरहंकार निःकिंच
नरूप होइकर सर्वका प्रकाशका प्रकाश हो ॥ अरु हो अमर हो ॥ हे राजन ऐसे मौ
ज्ञानकला कों पायकर मोहकों नहीं प्राप्त होता है ॥ जैसे दूध ते दही हूई
बहुरि दूध नहीं होता ॥ तैसे ज्ञानके प्राप्त हूए मोहकों नहीं प्राप्त होता अ
रु जैसे दूधकों मथकर घृत काढ लीया ॥ बहुरि नहीं मिलता ॥ तैसे ही जिस
कों ज्ञानकला उदय हूई है ॥ बहुरि मोहका स्पर्श नहीं होता ॥ हे राजन पुरुष
प्रयत्न करी है ॥ जो आपणे स्वरूप विषे स्थित होवणा ॥ अरु उपावों का
त्याग करणा ॥ जिस पुरुष कों आत्मा की भावना हूई है ॥ सो संसार समुद्र
के पार कों प्राप्त भया है ॥ अरु जिसकों संसार की भावना भई है सो संसारी
है ॥ अरु जरा मृत्यु दुःख कों प्राप्त होता है ॥ इति श्रीनिर्वाणप्रकरणे परमा
र्थोपदेशो नाम सर्गः ॥ १०० ॥ स्वयंभूरुवाच ॥ हे राजन वडा आश्चर्य
है ॥ जो शुद्ध आत्मा चिन्मात्र विषे मायाकर के देह इंद्रियां दृष्ट आईयां हैं
हे राजन दृश्य का आकार न अज्ञान है ॥ जिस आत्मा के अज्ञान कर के दृश्य भा
सती है ॥ तिसी के ज्ञान ते लीन होती है ॥ ताते इस संवित कों त्याग कर के
आत्मा की भावना कर ॥ इह मैं हों ॥ इह मेरे है ॥ सो मिथ्या ही फुरते हैं ॥ हे
राजन प्रथम जो उपजिया है ॥ परम कारणरूप ते सो एक जीव उपजि
या है ॥ सो एक जीव ते अनेक जीव होत भए हैं ॥ जैसे अग्नि विस्फुलिंग उप
जते हैं ॥ तिस जीव ने आगे अनेक रूप धारे हैं ॥ कहूं गंधर्व कहूं विद्याधर इ
स ते लेकर जैसे जैसे वासना अरु संकल्प आगे होते गए ॥ तैसे ही रूप होते
गए ॥ वस्तु ते क्या है ॥ जैसे जल ही चंचल तरंगस्वरूप के प्रमाद कर अनेक
भाव कों प्राप्त होते हैं ॥ आपणे संकल्प आप ही कों बंधनरूप होते गए
जीवां कों कोसकारवत ॥ ताते नाना संकल्प कलना त्याग इह मिथ्या
है ॥ हे राजन इह मिथ्या भावना कों त्याग कर आत्मपद की शरण कों प्रा
प्त होवो ॥ सो आत्मा अनंत शक्ति है ॥ कहूं विश्व भान प्रवर की होती है ॥ क
हूं अवर प्रकार की होती है ॥ जैसे समुद्र समर्थ है ॥ कहूं तिस विषे आवर्त
उठते हैं ॥ कहूं बुद्बुदे उठते हैं ॥ सो जल ते भिन्न कछु नहीं ॥ तैसे आत्मा
विषे अनेक प्रकार विश्व फुरती है ॥ सो आत्मा ते भिन्न कछु नहीं ॥ आत्मा
स्वरूप ही है ॥ ताते आत्मा की भावना कर कहूं अलमस्त शांति होकर ऊ

ता है ॥ तहां जानता है ॥ मैं मैं क्यों हों ॥ अशुद्धरूप कों ॥ अरु सदा शुद्धरूप
हों ॥ अरु संसार समुद्र के पार कों प्राप्त भया हों ॥ तहां चेतन्यता शक्ति है ॥ त
हां जीवता आपकों मानता है ॥ अरु दुःखी भी आपकों मानता है ॥ सो जीव
काल द्वारा स्मरण कर ॥ अंतःकरण साथ मिलकर भोगवासना करती ॥ अ
रु देह विषयां की तृष्णा करती ॥ सो जीव आत्मा कहीये ॥ अरु जहां वासना ते
हूए है ॥ अरु इह आत्मा विषे अहं प्रत्यय है ॥ तहां जीव समान नष्ट हो जाती है ॥ के
वल शुद्ध आत्मा प्रकाशता है ॥ हे राजन तब चेतन्य अंतःकरण साथ मि
लकर तब लिंग समल फुरता है ॥ तब संसार जन्म मरण कर के दुःखी होता
है ॥ अरु जहां चेतन्य शक्ति अंतर्मुख होती है ॥ तब जन्म मरण की भाव
ना कों त्याग कर स्वरूप की भावना करता है ॥ तब सब दुःखों की निवृत्त हो जाती
है ॥ जब स्वरूप का प्रमाद भया ॥ तब दुःखों कों पावता है ॥ जब स्वरूप का ज्ञा
न हूआ तब आनंदरूप मुक्त होता है ॥ हे राजन संसाररूपी कूप है ॥ तिसकी
दिलान ही होवणा ॥ जब टिंडां रसी साथ बंधीतीयां हैं ॥ तब कबहूं ऊर्ध्व कों
जाती है ॥ कबहूं अधः कों जाती यां है ॥ जब रसी टूट पड़ती है ॥ तब न ऊर्ध्व कों
जाती है ॥ अरु न अधः कों जाती है ॥ न दुःख पावती है ॥ सो रूप क्या है ॥ अरु ऊर्ध्व
क्या है ॥ अरु अधः क्या है सो श्रवण कर ॥ हे राजन संसाररूप कूप है ॥ अरु स्वर्ग
लोक ऊर्ध्व है ॥ अरु पाताल नरक अधः है ॥ पुन्य कर के स्वर्ग कों जाता है ॥ अरु
पाप कर के नरक कों जाता है ॥ अरु जन्म मरणरूपी चक्र अरु आशारूपी रस
ड़ी साथ फिरता है ॥ सो स्वर्ग नरक फिरणे का कारण आशा है ॥ जब आशारूपी
रसी टूटती है ॥ तब न ऊर्ध्वग है ॥ न नरक है ॥ जब लग देह विषे अभिमान
है ॥ तब लग नीचे नीच स्थान कों प्राप्त होता है ॥ जैसे शिला पत्थर कों स
मुद्र विषे डारीये तब नीचे कों चली जाती है ॥ तैसे नीच स्थानों कों देख कर दे
ह अभिमान सों नीचे चलिया जाता है ॥ अरु जब देहीयां का त्याग कीया ॥ तब
जैसे तूंबा समुद्र ते निकसकर ऊर्ध्व ते ऊर्ध्व कों चलिया जाता है ॥ तैसे
ऊर्ध्व कों जाता है ॥ ताते आशारूपी रसी कों तोड़ कर शांतिपद कों प्राप्त होवो ॥
हे राजन जब आत्मा की भावना करेगा ॥ तब आत्मा ही होवेगा ॥ आत्मा चि
न्तामणि की न्याई है ॥ जैसी भावना करीती है ॥ तैसी आत्मा ते सिद्ध होती है ॥
जब तूं आत्मा की भावना करेगा ॥ तब सर्वत्र विषे आपणा आप विषे देखे
गा ॥ जैसे पर्वत शिला पत्थर सर्व आपणा ही विषे देखता है ॥ तैसे तूं सर्व आ
त्मा विषे जानहिंगा ॥ हे राजन जेती कछु दृश्य है ॥ सो सर्व आत्मा के आश्रय है
हे राजन आत्मा के आश्रय है ॥ सो सर्व सत्य है ॥ आत्मा चिंतामणि कल्पवृ
क्ष है ॥ जैसे कोऊ भावना करता है ॥ तैसे सिद्धि होती है ॥ हे राजन पुरुषों वि
षे है ॥ जैसे कोऊ भावना करता है ॥ तैसे प्राप्त होता है ॥ न कोऊ है
दे है दृश्य पदार्थ असत्य है ॥ जब पुरुष ताभ्रम या तब न कोऊ प्राप्त है न कोऊ है
रूप है ॥ केवल आत्मा ही है ॥ निषेध किसका कीजे ॥ जो प्रथम ग्रहण का
ते रही तहू आई है ॥ सो सर्व शास्त्र हूं आपने रूप विराजता है ॥ अरु सर्व आत्मा ही
ता है ॥ जैनी जिसकों जिन कहते हैं ॥ काल वाले उसकों काल कहते हैं ॥ सोम रवे है ॥ स्वरूप
सर्व का आश्रय आत्मा है ॥ जो परम देहाभिमानी है ॥ सो अपने रूप
के अज्ञान कर अधः ऊर्ध्व लोक कों गमनागमन करता है ॥ अरु आशारूपी फांसी साथ दुःख पाव
स्थावर जंगम जोनी कों पावता है ॥

तोहै॥जोश्रवणमात्रकरपवित्रीहै॥अरुहुचेष्टाहैजिसकी॥तिसकोंविका
रदृष्टकोऊनहीआवता॥आकाशकीन्याईसर्वदानिर्मलभासताहै
अरसंस्पर्शाविषतिसकोंआत्मस्वरूपभासताहै॥अरजेतीकछुचेष्टा
वृत्ताविसर्गइत्यादिककरतेहैं॥तिसकाकर्ताभीआपकोंजानताहै
सर्वदुखोंकाअंतहोताहै॥तिसकोंदुखनेरहितआत्मापदप्राप्तहोता
है॥अरसर्वसुखोंकीसीमातिसकोप्राप्तहोतीहै॥हेराजनजबऐसेसु
खकोंप्राप्तहोवेगा॥तबतिसतेंबतांईकोऊनरहेगी॥जैसेनदीयांतब
लगचलतीहैं॥जबलगसमुद्रकोंनहीप्राप्तभई॥जबसमुद्रकोंप्रा
प्तभईतबचलणेकीइछानहीकरती॥तैसेजबलगआत्मपदकोंप्राप्तहोवे
गा॥तबइछानेरतांईकोऊनरहेगी॥हेराजनअहंकारकात्यागकरअथवा
ऐसेजाणजोसर्वमेंहीस्थितहों॥अरजेमरणादिकदुखतावलगहैं॥
जबलगआत्मज्ञाननहीप्राप्तभया॥जबआत्मज्ञानपायातबदुखको
ऊनहीरहिता॥अरदेहीदुखभागीहै॥जन्मअरमृत्यु॥इनकेवलसेंअ
समानभीदुखहोवहि॥तोभीज्ञानवानकोंस्पर्शनहीकरते॥हेराजन
जैसेबटहोताहै॥जबउसकोंफलपडताहै॥तबसककरगिडपडताहै
तिसीप्रकारजबज्ञानरूपीफलपडताहै॥तबमनबुधिअहंकाररूप
जोवृक्षहैसोगिडपडतेहैं॥जबलगमनकीचपलताहै॥तबलगदु
खपापदकोंप्राप्तहोताहै॥अरशांतितबहोतीहै॥जबप्रकृत॥खपाव
ताहै॥जबमनकीचपलतादूरभई॥तबलोभकोऊनहीरहिता॥शांत
पदकोंप्राप्तहोताहै॥अरशांतितबहोतीहै॥जबप्रकृतकावियोगहोता
है॥अरप्रकृतकेसंयोगतेंसंसारहोताहै॥अरदुखपावताहै॥तातेंप्रकृ
तकहीये॥अहंकारतिसकात्यागकर॥अरअहंकारतेंरहितहोकरचेष्टाक
र॥जबअहंकारतेंरहितहूआ॥तबतिसपदकोंप्राप्तहोवेगा॥सोनजड
है॥नचेतन्यहै॥नशून्यहैनअशून्यहै॥नकेवलहैनअकेवलहै॥नआत्मा
कहीयेनअनात्माकहीये॥नएककहीयेनदोयकहीये॥जेतेकछुनाम
हैसोप्रतियोगीसाथमिलेहूएहैं॥प्रतियोगीहूआसोद्वैतहूआ॥आत्मा
अद्वैतमात्रहै॥जिसकोंवाणीकीगमनही॥सोअवाच्यपदहै॥तिसकों
केसेकहीये॥जेतीकछुनामसंज्ञाहै॥सोउपदेशमात्रहै॥आत्मानिर्वा
च्यपदहै॥तातेंसंकल्पकापदत्यागकर॥अरआत्माकीभावनाकर॥
जबआत्माकीभावनाकरहिगा॥तबकेवलआत्माहीभासेगा॥जै
सेफूलकेअगासगंधतेरहितकोऊनही॥तैसेंआत्मातेंइतरकछुनहीभा
सता॥हेराजनजबअहंकारकात्यागकरहिगा॥तबआपणेआपकरप्रका
शमानहोवहिगा॥आकाशकीन्याईनिर्मलआपणेआपविषेस्थित
होवहिगा॥जहांशास्त्रअरशास्त्रकेअर्थनही॥अरसंपूरणइंद्रीयोंकेर
सतहांलीनहोजातेहैं॥अरसर्वदुखतहांनष्टहोजातेहैं॥केवलनिर्मल
मोक्षपदकोंप्राप्तहोवेगा॥हेराजनमोक्षकिसीकालविषेनही॥जोअब
काकालआवेगा॥तबमोक्षहोवेगा॥अरमोक्षकोऊपदार्थभीनही
जोकिसीपदार्थकाग्रहणकरीये॥हेराजनमोक्षप्रकृतजोहै॥अहंकार
तिसतेंरहितहोवणाहै॥जबतेंअहंकारकात्यागकरेगा॥तबमोक्षहै

तबअसत्अनात्मअभिमानअहंकारकोंत्यागेगा॥तबआपणेआपक
रशोभायमानहोवेगा॥जैसेधूमतेंरहितअग्निप्रकाशमानहोतीहै॥तै
सेंअहंकारतेंरहिततूंप्रकाशेगा॥जैसेबडेपर्वतऊपरवनलावतांभीशो
भापावताहै॥तैसेंतूंशोभापावेगा॥हेराजनतूंअपणेस्वरूपहीविषेस्थि
इतिनिर्वाणप्रकरणेरामवेसमाधानतानसर्गः॥१०१॥सूर्येमननोवाच॥
हेराजनतूंआत्मारामहो॥अरतृप्तहो॥अररागद्वेषतेंरहितहो॥नित्यअ
तेंसुखस्वरूपहो॥हेराजनजबतूंआत्मारामीहूआ॥तबतेरीव्याकुलता
नष्टहोजावेगी॥अरसंकल्पशांतहोजावेगा॥ऐसाहोकरआपणेप्रकृत
आचारविषेविचिर॥औरकिसीफलकीवांछानकर॥जोपुरुषवांछाते
रहितहोकरकर्मकर्ताहै॥सोसदाअकर्ताहै॥अरमहाशोभापावता
है॥हेराजनऐसीअवस्थाविषेस्थितहोकरजोभोजनआवेतिसकोंभक्ष
णकर॥अरजोअनिछतवस्त्रआयप्राप्तहोवेतिसकोंपहिर॥जहांनींदआ
वेतहांशयनकर॥परंतुरागद्वेषतेंरहितहो॥जबतूंऐसाहोवेगा॥तबशास्त
अरशास्त्रोंकेअर्थतेंरलहवेगा॥जोपुरुषऐसाहैसोपरमपदकोंपावै
कारमतवाराहोताहै॥तिसकोंसंसारकीइछानहीहोती॥हेराजनज्ञा
नवानकोंपृथीविषेदेहत्यागअथवावेशालकेग्रहविषेत्यागे॥जहांकहां
वहिसक्तहै॥वहिसर्वदाआत्मस्वरूपविषेस्थितहै॥अरवर्तमानका
लविषेदेहकोंनहींत्यागता॥काहेतेंजोजिसकालविषेउसकोंज्ञानहू
आहै॥तिसीकालविषेदेहकाअभावहूआहै॥जिसकालविषेज्ञानहू
आतिसीकालज्ञानकरदेहदग्धहोताहै॥हेराजनज्ञानवानसर्वदाप्र
क्रिरूपहै॥नकिसीकीउस्तुतकरताहै॥नकिसीकीनिंदाकरताहै॥
काहेतेंजोचित्तकल्पनाउसकीमिटगईहै॥यद्यपिरागद्वेषज्ञानवानवि
देहदृष्टभीआवतेहैं॥परअंतःकरणआपणाजाणनेकररागहैनद्वेषहै॥
जिसकातिसहीहै॥जैसेआकाशविषेसर्वशून्यताहै॥अरऐसेज्योंबहलभी
दृष्टआवतेहैं॥परअस्पृष्टआकाशकोलेपनहीकरते॥तैसेज्ञानवान
कोंक्रियालेपनहीकरती॥अज्ञानीजानतेहैं॥सोज्ञानवानक्रियाकरता
है॥हेराजनज्ञानवानसर्वदानमस्कारकरणेकोंयोग्यहै॥अरस्वज
नेयोग्यहै॥जिसःस्थानज्ञानवानबैठताहै॥तिसस्थानकोंनम
स्कारहै॥जिससाथबोलताहै॥तिसकोंभीनमस्कारहै॥जिसऊ
परज्ञानवानदृष्टकरताहै॥तिसकोंभीनमस्कारहै॥सोसर्वकाआश्र
भूलेहैं॥हेराजनजैसेज्ञानवानकीदृष्टपाएतेंआनंदहै॥सोतपकरके
नहीपाईता॥सोदानकरकेभीनहीपाईता॥अरयज्ञकर्मोंकरभीनही
पाईता॥सोऐसीदृष्टकिसीकरनहीपाईती॥जैसेसंतोंकीदृष्टहै॥अ
रसोऐसेआनंदकोंपाईताहै॥जिसपदकोंवाणीकीगमनही॥अरसो
रथसंतोंकीदृष्टकोंपाइकरकेसाहोताहै॥जिसतेलोकनही॥अरलो
पुरुषसंतोंकीदृष्टकोंपाइकरकेसाहोताहै॥जिसतेलोकनहीदुखपा
वता॥अरलोकोंतेंसोनहीदुखपावता॥नकिसीकाभयकरताहैनकिसी

वा·नि·
प्र·
८३

83

काहर्षकर्त्ताहै॥ हेराजन सिद्धीपावनेकासुखमूलहै॥ क्याहैजोइस्ने
कौसिद्धपाईतोक्याभया॥ पंतौअनेकइसतेफिरतेहैं॥ इसकर आत्म
ज्ञाननहीपाईता॥ अरआत्मज्ञानविनाशांतनहीहोती॥ जबआ
त्मज्ञानप्राप्तहूआ॥ तबजरामरणआदिकदुखोंतेरहितमुक्तहोताहै
इवइसविषेकोऊनहीरहिता॥ जैसेसिंहपिंजरेतेछूटाबहुडपिंज
रेविषेनहीपडता॥ तैसेवहिपुरुषअज्ञानरूपपिंजरेविषेनहीफस
ता॥ हेराजन तौतैंआत्माकीभावनाकर॥ तौतेरादुखनष्टहो
जावे॥ अज्ञानकरकेतेरेताईदुखभासताहै॥ अज्ञानतेरहिततूंस
दाआनंदरूपहै॥ आत्मअनुभवरूपहै॥ अनुभवरूपसत्यकआत्मै
विषेस्थितहो॥ जबतूंआत्माविषेस्थितहोवेगा॥ तबचेष्टाभीते
रेविषेदृष्टआवेगी॥ तौभीस्पर्शनकरेगी॥ जैसेशुद्धमणिकेनिकट
जैसारंगराखीये॥ तिसकेप्रतिबिंबकोग्रहणकर्ताहै॥ तौभीरंगको
ऊस्पर्शनहीकर्ताइसविषेकल्पताहै॥ तैसेतूंप्रकृतआचार
कोअंगीकारकर्ताहूआतेरेताईपापपुण्यकास्पर्शनहोवेगा॥ इ
तिश्रीनिर्वाणप्रकरणेस्वयंभूमुनियत्लाकुसंवादेसमाप्तनामसर्गः
१०२॥ श्रीवसिष्ठोवाच॥ हेरामजीइसप्रकारस्वयंभूमुनिराजाको
उपदेशकरकेतूस्नीहोगया॥ तबराजेमुनिजीकाभलीप्रकारपूजन
कीया॥ तबराजनहोचुका॥ तबमुनिजीआकाशकोउडिया॥ अल
लोकविषेजायप्राप्तहूआ॥ अरराजाइक्ष्वाकुराजकरणेलागा॥ हे
रामजीजैसेराजाइक्ष्वाकुजीवनमुक्तहोकरराजकीयाहै॥ तैसेतूं
भीइसीदृष्टकोआश्रयकरकेविचर॥ रामोवाच॥ हेभगवनतुमइके
हाजैसेराजाइक्ष्वाकुराजचेष्टाकरतभयाहै॥ ज्ञानकोपाइकरते
सेतूंकर॥ इसविषेमेराप्रश्नहै॥ जोसर्वतेअतिशयहोवे॥ तिसकाप्र
वनाविषेषहै॥ अरजोसर्वलियोपायाहै॥ तिसकापावणाअपूर्व
अतिशयतौनहीपूर्व॥ अतिशयहै॥ जोसर्वलियोभीपायाहै॥ तौते
मेरेताईसोकहो॥ जोअपूर्वअतिशयसर्वतेविशेषहै॥ श्रीवसिष्ठो
वाच॥ हेरामजीज्ञानवानसदाशांतरूपहै॥ अररागद्वेषतेरहितहै॥ अ
पूर्वअतिशयकोंपावतेहैं॥ जेतीकछुअवरअतिशयहै॥ सोपूर्वअ
तिशयहै॥ अरज्ञानवानअपूर्वअतिशयकोंपावताहै॥ सोज्ञानी
तेअन्यकोऊनहीपावता॥ आत्मज्ञानकोंज्ञानीहीपावताहै॥ सोज्ञा
नएकहीहै॥ ज्ञानीतेइतरकोऊनहीपावता॥ हेरामजीजबइ
सरानहीपावता॥ तबअपूर्वअतिशयहूआकिउ॥ हेरामजीअ
पूर्वअतिशयकोपाइकरज्ञानवानप्रकृतआचारचेष्टाभीसर्व
कर्ताहै॥ तौनिश्चयसदाआत्माविषेराखताहै॥ रामोवाच॥ हेभग
वनऐसाज्ञानवानजोचेष्टाकर्ताहै॥ अज्ञानीकीन्याईतउइसको
तत्ववेत्ताकितौलक्षणकरजाणीये॥ श्रीवसिष्ठोवाच॥ हेराम
जीएकस्वसंवेदलक्षणहै॥ एकपरसंवेदलक्षणहै॥ स्वसंवेदक

ति

ह्रीयेजोआपहीकोआपजाणताहै॥ अवरनहीजाणताहै॥ अवरनहीजान
ता॥ अरपरसंवेदअवरभीजाणताहै॥ हेरामजीजोपरसंवेदलक्षणहैं
सोमैंकहूंहूं॥ ज्ञानपदानयज्ञहूअकरणेसोपरसंवेदहै॥ अरस्वसंवेदकी
आप्तविरवेधीर्यकररहिणा॥ सोसमानमाधांकेलक्षणहै॥ अरमहाक
तोअरमहाभोक्ताअरमहात्यागीदयादिकलक्षणसाधांकेहै॥ ज्ञानवानो
केनहीं॥ अरजेतीकछुअणिमातेआदिसिद्धीहै॥ इउणाआवरकुपजावणा
इसतेलकवइहूभीसमानलक्षणहै॥ पशुहूभीस्वभावकइसविषेआने
प्रतेहै॥ अवरजोज्ञानीकालक्षणहै॥ सोस्वसंवेदहै॥ अवरकोऊइसतेइतर
इसकेसिरविषसिंगनही॥ जोतिसकरजाणीयेसोज्ञानीकालक्षणनही
जैसेअवरव्यवहारहै॥ तैसेसिहोज्ञानीकोसमानहै॥ इहभीज्ञानकाल
लक्षणनही॥ अरपुण्यपापादिकक्रियापरसंवेदहै॥ सोसाध्याकेकल्पहै
नहीज्ञानीके॥ जेतेकछुलक्षणदेखणेविषआवेगसोमिथ्याहै॥ मा
याकेकल्पहै॥ अरस्वसंवेदलक्षणज्ञानीकाजोसदाआत्माविषेस्थित
होताहै॥ अरआपणाआपकरसंतुष्टहोताहै॥ नाकिसीकाहर्षहैनशोक
है॥ दहकेजीवतमृत्युविषसमानहै॥ अरकामक्रोधलोभमोहसर्वकोजाण
ताहै॥ तिसकालक्षणइंद्रियोंकाविषनहो॥ काहूतेजोनिर्वाच्यपदकोप्रा
प्तहूआहै॥ हेरामजीजिसकोज्ञानकीप्राप्तभईहै॥ तिसकाचित्तस्वभाव
कविषयोंतेविरसहोताहै॥ अरजितइंद्रीहोताहै॥ भोगोंकीइच्छातिसकी
निवृत्तहोतीहै॥ स्वभावकहीतिसकेविषयनिवृत्तहोतेहैं॥ इति नि
र्वा प्रक रणेज्ञा लक्ष विचा नाम॥ सं॥ १०३॥ श्रीवसिष्ठोवाच॥ हे
रामजीमहाकठिनहैतरनामाजालका॥ इहअनादिकलनाजीवकोंभ
ईहै॥ जोकोऊइसविषसत्यबुद्धिकरताहै॥ सोपतंगकीन्याईनिकसनहीसक
ता॥ तैसेअनात्मअभिमानतेनिकसनहीसकता॥ हेरामजीवडइसमे
कता॥ तैसेअनात्मअभिमानतेनिकसनहीसकता॥ जैसेमेघकाशब्दमोरको
वचनसुणे॥ जोमेरेवचनतूंकोप्यारेलागतेहैं॥ उपदेशकर्त्ता
प्यारालागताहै॥ अरमेंभीतेरेहितकेनिमित्तकहताहो॥ उपदेशकर्त्ता
होंअरऐसागुरुकुलकाकोऊनहीहूआ॥ जोशिष्यकासंशानिवर्तनक
रे॥ हेरामजीमेराभीशिष्यऐसाकोऊनहीहूआ॥ जोमेरेउपदेशकरजाग्रत
नहोवे॥ सभजागेहूएहै॥ इसनिमित्तमैंतपध्यानादिककोभीत्यागकरतेहैं
तोथीजगावेगा॥ तातेमैंतूंकोउपदेशकर्ताहों॥ हेरामजीशुद्धआत्मावि
षजोअहंभावहूआहै॥ अरजोकछुप्रकाशकारभासहै॥ सोसर्वमिथ्याहै
इनोंविषसत्यकोऊनही॥ अरजोइनकासाक्षीभूतजानतेहै॥ सोसत्यहै॥ इ
सकानाशकदाचितनहीहोता॥ अरजोवस्तुफुरनेकरउपजीहै॥ सोसर्व
नाशवंतहै॥ इहबाततौबालकभीजानतेहैं॥ जोसत्यहैसोअसत्यनही
होता॥ जोवस्तुअसत्यहै॥ सोसत्यनहीहोती॥ जैसेबलविषग्निकानिक
सता॥ अरजैसेरेतकोंनिचोडाचूर्ण
स्त्राअसत्यहै॥ सोकदाचितनहीनिकसता॥ अथवाशिलाऊपरवसाईहै॥ जे
भीकरीये॥ अरलाखवकणकाकाकरीये॥ हेरामजीइहूनबउ
वतिसऊपरवर्षाहूईतबसर्वकणकेइहूहोजातेहैं॥ अरअस
त्यतिहूएजबसत्ताइनविषआही॥ तौनेसत्ताकानाशनहीहोता॥

त्यकासत्यनहींहोता ॥ हेरामजीसत्यजोहैब्रह्मतिसकीभावनाकर ॥ जो
ब्रह्मकीभावनाकरताहै ॥ सोब्रह्महीहोताहै ॥ जेसेछिनविषेछिनएक
होजाताहै ॥ अरदूधविषेदूधमिलजाताहै ॥ अरजलविषेजलएकहो
जाताहै ॥ तेसेइहजीवभावनाकरकेविदेहनब्रह्मसाथएकहोजाता
है ॥ जीवसंज्ञाइसकीनिवृत्तहोजातीहै ॥ जेसेअमृतकेपानकरणेते
अमरहोवीताहै ॥ तेसेब्रह्मकीभावनाकरणेतेब्रह्महोताहै ॥ अरजोअ
नात्माकीभावनाकरताहै ॥ तोपराधीनहोकरदुखपावताहै ॥ जेसेविषके
पानकरणेतेअवश्यमरजाताहै ॥ तेसेअनात्माकीभावनातेअवशदु
खपावताहै ॥ अरतिसकानाशहोताहै ॥ तातेआत्माकीभावनाकर ॥
हेरामजीजोसंकल्पकरकेउदयहूईहैवस्तु ॥ तिसकारहिणाभीथोड़ा
कालहोताहै ॥ जोचलवस्तुहै ॥ सोअवशनाशहोतीहै ॥ इहदृश्यआ
त्माविषेभ्रमकरकेसिद्धहै ॥ अरआकाशविषेदूसराचंद्रमाभ्रमकरके
कासिद्धहै ॥ बालकनहोतेसेअहंकारदेहादिकइंद्रीयाकाजोसवाभास
ताहै ॥ सोसवदेहामिथ्याहै ॥ तातेदृश्यकीभावनात्यागकरआपणेअनु
भवस्वरूपविषेस्थितहो ॥ जबआत्माविषेस्थितहोवहिगा ॥ तबमोह
कोनप्राप्तहोवहिगा ॥ तबमोहकोनप्राप ॥ अरअहंभावतेरानिवृत्तहो
जावेगा ॥ जेसेपारसकेस्पर्शहोणेकरतांबास्वर्णहोताहै ॥ बहुरउतांबा
नहीहोता ॥ तेसेजबतूआत्मापदकोजाणहिगा ॥ तबबहुरउमोहकोनप्रा
प्तहोवहिगा ॥ जोमेआहंइहमेराहै ॥ इहभावनानिवृत्तहोजावेगी ॥ रामो
वाच ॥ हेभगवन्मछरजूंआदिकजोप्रस्वेदतेउत्पतिहोतेहैं ॥ सोइहशु
भकर्मोकरउदयहोतेहैं ॥ अरदेवतामनुष्यादिकजोउत्पनहोतेहैं ॥ अ
घवाकर्मोविनाभीउत्पतहोतेहैं ॥ श्रीवसिष्ठोवाच ॥ हेरामजीआदिप
रमात्मातेजबउत्पनभईहै ॥ सोचोदसप्रकारकेजीवउत्पनहूएहैं ॥ ए
ककर्मोविनाउत्पनहूएहैं ॥ एकआगेहोणेहैं ॥ एकअबहीउत्पनहो
तेहैं ॥ रामोवाच ॥ हेभगवन्कृपाकरकेकहो ॥ जोकर्मोकरकेतेउ
त्पतहोतेहैं ॥ केसेहूएहैं ॥ अरकेसेहोतेहैं ॥ अरकेसेआगेहोवणेहैं
सोकहो ॥ श्रीवसिष्ठोवाच ॥ हेरामजीआत्माचिदाकाशहै ॥ अरआ
पणेआपविषेस्थितहै ॥ अनंतअविनाशीहै ॥ तिसविषेसंवेदनशक्तिस्व
भावकरस्थितहै ॥ हेरामजीसंवेदनशक्तिजेसेआदिफुरीहै ॥ तिसशब्दकी
अपेक्षाकरीतबआकाशप्रगटभया ॥ जबस्पर्शकीअपेक्षाकरी ॥ तब
पवणप्रगटभया ॥ इसीप्रकारपांचतन्मात्राहोआईयां ॥ जिसजिसकीइ
छाकरीसोसोप्रगटहूआ ॥ सोसंवेदनविषेजोफुरनाहूआसोप्रथमआतिवा
हिकशरीरहूए ॥ तिनकानिश्चयआत्माविषेरहा ॥ जोइहमेआत्माहै ॥ अरसं
श्रवणविषइहमेरासंकल्पहै ॥ हेरामजीकोऊइसप्रकारउत्पनहोकरआति
वाहिकतेबहुरविदेहमुक्तहूएहैं ॥ जेसेबर्फजलसेहोकरसूर्यकेतेजते
शीघ्रहीजलहोजाताहै ॥ तेसेशीघ्रहीदेहमुक्तभयेकईस्थितभयेशरी
रआतिवाहिककरउनकानिश्चयआत्माहीविषेरहा ॥ अरकईआतिवाहिकते
अधिभूतकहोगए ॥ जबलगआतिवाहिकसोआपणास्वरूपरहा ॥

तबलगआतिवाहिकरहे ॥ जबस्वरूपकाप्रमादभया ॥ अरसंकल्प
करजोभूतरचेथेतिनविषेदृढनिश्चयभया ॥ अरजाणताभयाताइहमे
हों ॥ तबआधिभूतकहोगए ॥ जेसेब्राह्मणशूद्रोकेकर्मकरनेलागे ॥ अ
रुसकेनिश्चयहोजावेजोमेशूद्रहोंकर्मकेहै ॥ अरशीतकरकेजलतेबर्फ
होजाताहै ॥ तेसेसंवेदनविषेदृढसंकल्पहूआ ॥ तबआधिभूतकजाण
ताभया ॥ हेरामजीआदिपरमात्मातेजोफुरेहैं ॥ सोकर्मोविनाहूएहैं ॥ ति
नकाकारणकोऊनहीं ॥ जोआतिवाहिकविषेरहेतिनकीईश्वरसंज्ञाहै
बहुरउनकेसंकल्पकरजीवउपजेतिनकाकारणईश्वरहूआ ॥ अरआ
गेजीवोंकल्पनाकरीउनकेफुरणेकरकेमेहूए ॥ आगेजेसेकर्मक
रतेहैं ॥ संकल्पकरकेतेसेप्राणीधारतेहैं ॥ हेरामजीआत्मातेजोउपजे
हैं ॥ जीवसोआदिअकारणहोतेहैं ॥ जोअज्ञानउपजेहैंतेभी ॥ जोचिरका
लउपजेहैंतेभी ॥ उनहूपाउकारणभावकोप्राप्तहूएहैं ॥ कर्मोकेवशाते
हेरामजीजोआदिफुरणाहूआहै ॥ अरस्वरूपविषेजिनकानिश्चयरहा
तिनकीसंज्ञापुरुषहै ॥ अरजोस्वरूपकोविस्मरणकरकेआधिभूतक
विषेनिश्चेकरतभए ॥ तिनकीथनिसंज्ञाहै ॥ हेरामजीपुरुषतेधन्नहो
वणासुगमहै ॥ अरधन्नतेपुरुषहोवणाकठिनहै ॥ कोऊभागवानपुरु
षहोताहै ॥ जोयत्नकरकेधन्नपुन्नहोताहै ॥ जेसेपर्वततेएकपत्थर
गिडनासुगमहै ॥ तेसेपुरुषतेधन्नहोवणासुगमहै ॥ जेसेउहपर्वततेप
रपत्थरचढनाकठिनहै ॥ तेसेधन्नतेपुरुषहोवणाकठिनहै ॥ कई
धन्नपशीघ्रहीहोताहै ॥ कईचिरकालतकधन्नविषेवहितेहैं ॥ हेरामजीजोसदाआतिवाहिकरहिते
यत्नकरशीघ्रहीपुन्नहोतेहैं ॥ अरजोआतिवाहिककोत्यागकरआदिभो
हैं ॥ तिनकीसंज्ञाईश्वरहै ॥ अरपरतंत्रहैं ॥ जेसेकर्मकरतेहैं
तिकहोतेहैं ॥ सोजीवकहीतेहैं ॥ अरजोधन्नतेपुरुषहोतेहैं ॥ सोज्ञानवान्
तेसेआगेप्रभोगधारतेहैं ॥ अरअबभीजोउत्पतिहोतेहैं
हैं ॥ तिनकोबहुरजन्मनहीहोता ॥ जबआपणास्वरूपतेगिरतेहैं ॥ तब
सोप्रथमकर्मोविनाहोतेहैं ॥ संकल्पहीकर्महै ॥ जेसेसंक
जेसासंकल्पकरतेहैंतेसेहोताहै ॥ हेरामजीइहविश्वसंकल्पमा
ल्पकरतेहैं ॥ तेसाआगेशरीरधारतेहैं ॥ तातेसंकल्पकात्यागक
त्रहै ॥ संकल्पकेलीनहूएलीनहोइजातीहै ॥ हेरामजीखावणापीवणाचेष्टाकु
रो ॥ असत्दृश्यकीभावनानाकरो ॥ अहंकारअज्ञानकरसिद्धहूआहै
रो ॥ तिसविषेअहंभावनानकरो ॥ अहंकारकेहोवणेकरदुखीहोवीताहै ॥ तातेअहं
सोमिथ्यादृश्यहै ॥ हेरामजीबंधअरमोक्षकालक्षणश्रवणकर
भावनेरहितचेष्टाकरो ॥ विषियांअरइंद्रीयांकासंयोगअरतिनकेइष्टविषेरा
ग्राह्यग्राहकजोहै ॥ इहीबंधनहै ॥ जेसेजालीवि
गकरणा ॥ अरअनिष्टविषेद्वेषकरणा ॥ अरग्राह्यग्राहकइंद्रीयोंकेविषयसंबंधइ
षेपक्षीबंधायमानहोताहै ॥ अरप्रकृततिनमेंक्रिहै ॥ कि
ष्टअनिष्टविषेरागद्वेषनकरणासोमोक्षहै ॥ जिसविषयइंद्रीयोंकासंयोगहोताहै ॥ तिसवि
नकेसंबंधतेमोक्षहोवणा

वा॰नि॰
प्र॰
८५

षममरहै ॥ इनकाधर्मग्रापणेविषेनदेखीये ॥ इनकेजाणनेवालाजो॰
ग्रनभवरूपग्रात्माहै ॥ तिसीविषेस्थितरहैसाखीभूतहोकर ॥ इस॰
प्रकारजोइनकाग्रहणकर्ताहै ॥ सोसदामलिनरूपहै ॥ इसतेइतरहै॰
सोवधूहै ॥ ग्रम्मरवजीवहै ॥ तमइसकेग्राह्यग्राहकसंबंधविषेसा
वधानहोग्रम्याग्राह्यग्राहकसंबंधबंधनहै ॥ इसतेरहितहोवणामोक्ष
है ॥ ग्ररागद्वेषकरणेवालामनहै ॥ इसमनहीकात्यागकरो ॥ मन
हीदुखदाईहै ॥ जैसेकुंभारकाचक्रहोताहै ॥ ग्ररफिरताजाताहै ॥ तिस
तेबासनउत्पतिहोतेहैं ॥ ग्ररमनकेफुरणेकरसंसारहोताहै ॥ म
नरूपीचक्रहैं ॥ तिसतेपदार्थरूपबासनउत्पतहोतेहैं ॥ जबमन
काफुरणानिवृत्तहूग्रा ॥ तबदुखकोऊनरहेगा ॥ हेरामजीफुरणे
विषेभीतेसमानरहेगा ॥ जबरागद्वेषतेरहितहोकरविचरेगा ॥ इ
ष्टस्पात ॥ इष्टस्पात ॥ इसीकात्यागकरकेचेष्टाकरो ॥ ग्रभिलाषाएव
कसंसारविषेनफुरे ॥ हेरामजीएवंज्ञानवानजोहूएहैं ॥ तिनकोबीती
कोचिंतवनानहीं ॥ ग्ररग्रागेहोवणेकीग्रासानहीं ॥ ग्ररवर्तमानकाल
विषेग्रासक्तग्रनमावरागद्वेषतेरहितचेष्टाकरणी ॥ तातेसंकल्पकोत्या
गकरस्वरूपविषेस्थितहो ॥ हेरामजीब्रह्मातेग्रादिलेतृणपर्यंततेलेकर
तेरीदृष्टिमनहोवे ॥ ग्ररग्रापणेग्रापहीविषेहविहोवे ॥ हेरामजीइहसं
सारमिथ्याहै ॥ इसविषेपदार्थसत्यकोऊनहीं ॥ सबभ्रमकररचेहूएहैं ॥
तातेमनकोस्थितकरो ॥ जैसेधोबीमलूणकरबस्त्रकीमैलदूरकरताहै
तैसेतमभमनकोस्थितकरो ॥ जबमनकोस्वरूपविषेस्थितकरेगा ॥ तब
मनग्रापणेसंकल्पकोग्रापहीनाशकरेगा ॥ जैसेइष्टग्रषकोऊहोताहै
ग्ररयतनकरहूयहोताहै ॥ तबभाईग्रादिककेनाशकरणेकाउपायकर्ता
है ॥ तैसेमनजबग्रात्मपदविषेइस्थितहोताहै ॥ तबग्रापणेसंकल्प
कोनाशकर्ताहै ॥ जबतेरामनस्वरूपविषेस्थितहोवेगा ॥ तबतेग्रम
नेहोजावेगा ॥ ग्ररदुखतेरेनष्टहोजावहिंगे ॥ ग्ररमनकेनाशहूएविना
दुखकहूनहीं ॥ हेरामजीइहमनग्रैसादुष्टहै ॥ जोजिसतेउपजताहै ॥
तिसीकेनाशनिमितहोताहै ॥ जैसेवांसतेग्रग्निउपजतीहै ॥ ग्ररफे॰
तिनकोहीजलावतीहै ॥ तैसेग्रात्मातेउपजकरइहमनग्रात्माहीको
ग्राछादिकरग्रापहीकर्ताभोगताहोबैठताहै ॥ तातेमनकरमनहीको
नाशकर ॥ जैसेलोहेकोतपाइकरलोहेकोकाटीताहै ॥ तैसेमनको
मनहीसाधषहकरो ॥ हेरामजीइहलताबल्लीफूलफलदेवतेयक्षनागप
षपतीग्रनेककछूस्थावरजंगमपदार्थहैं ॥ सोप्रथमकर्मोविनाउ
त्पतहूएहैं ॥ ग्ररपाछेजबमनरूपतेग्रिइग्ररयत्नकोप्रापहूएतबग्रागेर
कर्मोकरहोतेहैं ॥ ग्ररकर्मोकाबीजग्रहंकारहै ॥ ग्ररग्रहंकारविषेप्राणी
बहै ॥ जैसेबीजविषेबृक्षहोताहै ॥ समयपायकरसबेप्रगटहोतेहैं ॥
जबग्रहंकारनष्टहूग्रातबशरीरकोऊनहीं ॥ केवलग्रात्मपदहीहै ॥
ग्रहंकारहैनहीं ॥ ग्रपनाग्रादिखावाईदेताहै ॥ ग्ररग्रात्माग्रच्युतहै ॥ ग्र
गिडकीन्याईदृष्टग्रावताहै ॥ ग्रात्मानिराकारहै ॥ ग्ररग्राकारसहित॰

भासताहै ॥ सोहैनिराभास ॥ ग्ररग्राभाससहितदिखाईदेताहै ॥ तातेके
वलज्ञानमात्रग्रात्माविषेस्थितहोवो ॥ इहसभचिन्मात्रहीरूपहै ॥
हेरामजीजबग्रैसीभावनाहोतीहै ॥ तबचित्तग्रचितहोजाताहै ॥
जबचित्तग्रचित्तहूग्रा ॥ तबजगतकलनामिटजातीहै ॥ केवल॰
ग्रात्मातबहीभासताहै ॥ इति निर्वा प्रक एक ग्रक
विचा ॥ नाम [illegible] ॥ [illegible] ॥ श्रीवसिष्ठोवाच ॥ हेरामजीइहजीवके
तीनस्वरूपहैं ॥ एकस्वरूपशुद्धग्रात्माहैचिदानंद ॥ जिसकरदे
वेग्रकाशतेहैं ॥ ग्ररइहसराग्रातवाहिकशरीरमनामहै ॥ सोग्रात्माके
प्रमादिकरकेहूग्राहै ॥ सोमात्रपदतेउत्थानहूग्राहै ॥ तोभीप्रमा॰
दनहीं ॥ जोग्रात्माकास्मरनरहाहै ॥ जबग्रात्माकास्मरणभूला
तबतीसराग्राधिभौतिकहूग्रा ॥ जोपंचभूतग्रापकोजाणनेला॰
गा ॥ हेरामजीइहतीनस्वरूपजीवकेहैं ॥ ग्रात्माकेप्रमादकरजी
वसंज्ञापाईहै ॥ ग्ररदुखीहोताहै ॥ ग्ररपरतंत्रहूयाहै ॥ तातेपंचभ॰
तकग्ररग्रातवाहिककोत्यागकरकेग्रात्मस्वरूपविषेस्थितहो ॥
हेरामजीइहजोप्रभीरहै ॥ सोविचारकरनष्टहोजातेहैं ॥ स्थूलग्र
स्थूलग्ररतीसराजोस्वरूपहै ॥ सोपरमहै ॥ तातिसविषेस्थितहो
रामोवाच ॥ हेभगवन्इहतीनजीवकेरूपजोतुमनेकहेहैं ॥ ति
नकेमध्यविषेनाशरूपकौनहै ॥ ग्ररसत्यरूपकौनहै ॥ श्रीवसि
ष्ठोवाच ॥ हेरामजीइहग्रपरेजोदोइहैसंयुक्तहैभोगमाया ॥ सोदेहि
स्थूलरूपहै ॥ ग्ररग्रापणेहीसंकल्पकररचसागररचताहै ॥ सदा
स्फुरनेरूपसोचित्तरूपदेहिहैग्रातवाहिक ॥ सोसदाप्राणवाते
केवलरूपरस्थितरहिताहै ॥ देहहोवेभावेनहोवे ॥ हेरामजीइह
दोषारीरउपजतेभीहैं ॥ ग्ररनष्टभीहोतेहैं ॥ ग्ररग्रादिग्रंततेरहित
चिन्मात्रनिर्विकल्परूपहैजीवका ॥ सोपरमरूपजाण ॥ ग्रहंतवी
याकरूपहै ॥ इसतेजाग्रतग्रादिकउपजतेहैं ॥ ग्ररलीनहोतेहैं ॥ रा
मोवाच ॥ हेभगवन्इहमतीनोकोजाणतेहैं ॥ एकजाग्रतहैनि॰
द्रातेरहित ॥ जिसविषेदृश्यइंद्रियाग्रंतःकरणचतष्टयहोतेहैं
ग्ररग्रापणेग्रापणेविषयोकोग्रहणकरतेहैं ॥ ग्ररइहस्वप्नसमाहेत
होभीजाग्रतकीन्याईसंकल्पकरविषयोकोग्रहणकरतेहैं ॥ विषयो
बिना ॥ ग्ररतीसराजहोइंद्रियांग्रापणेविषयोतेरहितहोतीयाहै
ग्ररजडताग्रावतीहै ॥ भासताकछूनहीं ॥ शिलाकीन्याईजडता॰
तैसोगणग्रावताहै ॥ सोसुषुप्तिहै ॥ इनतीनोंकोहमजाणतेहैं
ग्ररतुरीयाग्रतीनकोतमकृपाकरकेकहो ॥ जोकिसकोकहि
तेहैं ॥ श्रीवसिष्ठोवाच ॥ हेरामजीग्रापणाहोणाग्रणहोणाद॰
नोकोत्यागकरपाछेतुरीयापदरहिताहै ॥ सोशांतिपदहै ॥ ग्ररनि
र्मलहै ॥ हेरामजीतुरीयाजाग्रतहै ॥ काहेतेजाजाग्रतसंकल्प
जालहै ॥ इंद्रियाकरकेरागद्वेषहोताहै ॥ ग्ररस्वप्नावस्थाभीतैसी

याननहो॥ काहेतेजोस्वप्नभ्रमहोताहै॥ जैसेजेवरीविषेभ्रमभास
ताहे॥ अरकाअवसंकल्पहोताहै॥ अरतुरीयासुषुप्तभीनहो
काहेतेजोअत्यंतजडहे॥ तुरीयाचेतनस्वरूपहे॥ अरइहमौनहे
अरसुद्धहे॥ जाग्रतस्वप्नसुषुप्ततेरहितहे॥ जीवनमुक्तितुरीयाप
दविषेस्थितहे॥ तिनकोस्थितजगतसोभीशांतिरूपहोजाताहै
अरअज्ञानीकोंवअसारवतदुखहे॥ अरज्ञानीसदाशांतिरूपहे
जोतीनोंअवस्थाकासाक्षीहे॥ नाइनकोरागहेनद्वेषहे॥ इस
मौनकोंन्याईहे॥ अरतुरीयाअतीतकोंबाणीकीगमनहीं॥ जी
वनमुक्तपुरुषविदेहहोताहै॥ तबउसीपदकोंप्राप्तहोताहै॥ ज
होबाणीकीगमनहो॥ अरजबलगजीवनमुक्तहै॥ तबलग
तुरीयापदविषेस्थितहोताहे॥ अररागद्वेषतेरहितहोताहे॥
अरइंद्रीयाभीआपणेविषयोंविषेस्वभावकचेष्टाकर्तीहै॥ राग
द्वेषतेरहितहोकर॥ अरजिसपुरुषकोरागद्वेषउत्पतहोताहे॥ सोतु
रीयापदकोंनहींप्राप्तभया॥ अरचितसहितहे॥ अरजिसकोराग
द्वेषनहीउत्पतहोता॥ तिसकाचितसत्यपदकोंप्राप्तभयाहे॥ तिस
कोंसंसारकीसत्यतानहींभासती॥ उहसमस्तजगतकोंदेखते
है॥ तोतिनतुरीयपदविषेस्थितहो॥ अरसाक्षीभूतहोवरहो॥ इति
श्री॥ वाणि कर तरी दवि गेना म सर्गः॥ १०७॥ श्रीव
सिष्ठो वाच॥ हेरामजीकर्ताकारणकर्मइहतीनोंपदहोवहि॥ जे
इनकासाक्षीहे॥ इनकोकर्तव्यअभिमानतेरहितहोवे॥ जो
इहमेंकर्ताहों॥ अथवाइस्कात्यागकीयाहे॥ इहअभिमानमौन
हीकरणा॥ तउसीनकीनैकींन्याईरहो॥ अबइसपरएकइतिहा
सपूर्वकहितीहों॥ सोश्रवणकर॥ तेंआगेभवृद्धिभीहे॥ तोभीद
ढबोधकेनिमित्तसुण॥ हेरामजीएकवनविषेकाष्टमौनथा॥ अ
रएकबधिकमृगकोंबाणचलाएहुएमृगकेपाछेहोडताजाता
था॥ अरआगेगएमृगाबधिककोंद्रष्टतेअगोचरहोगया॥ बधि
कदेषियाजोएकतपस्वीवेठाहे॥ तिसतपस्वीकोपूछतभया॥ हे
मनीश्वरइहांएकमृगआयाथा॥ सोकिसओरगयातुमदेखिया
है॥ तोमेरेतांईकहो॥ काष्ट मौ न उ वाच॥ हेबधिकहमारेतांईसध
कछुनहीं॥ काहेतेजोहमनिरअहंकारहे॥ हमारेसाथचित्तअ
हंकारनहीं॥ तातेनिरहंकारहे॥ अरजोतउवहेइंद्रीयोंकीचेष्टा
कैसेहोतीहे॥ तोश्रवणकरो॥ जैसेसूर्यकेआगेलोकोंकीचेष्टा
होतीहै॥ दीपकमणकेआगेचेष्टाहोतीहे॥ अरसूर्यदीपकमणसा
क्षीभूतहे॥ तैसेहमइंद्रियोंकेसाक्षीभूतहे॥ इनकीचेष्टास्वभाव
कहोतीहे॥ हमारेतांईइनसाथप्रयोजनकछुनहीं॥ हेबधिकअभि
मानकरणेवालाअहंकारहोताहै॥ जैसेमणकेत्यागकेआश्रय
होईतेहे॥ मणकेभिन्नभिन्नहोतेहै॥ अरतागाहनेविषेएकहोतोहै

तबमालाहोतीहै॥ अरजोतागाटुटपडे॥ तबमणकेभिन्नभिन्नहोते
है॥ तैसेइंद्रियांरूपमणकेहे॥ अरअहंकाररूपीतागाहे॥ तिसअहं
काररूपतागेकेटुटेसोइंद्रियांभिन्नभिन्नहोगइयाहै॥ जैसेराजा
केनष्टहुएसेनाभिन्नभिन्नहोजातीहै॥ जैसेपिताकेनष्टहुएवा
लकव्याकुलहोजातेहै॥ तैसेअहंकारविनाइंद्रीयांव्याकुलभई
है॥ इनकाअभिमानभीकछुनहीं॥ इनकाअभिमानीअहंकारथा
सोहमारानष्टभयाहै॥ इंद्रीयांआपणेविषयोंविषेविचरतीयाहे
हमकोंइनकाभागहे॥ नद्वेषहै॥ हमारेमनमेंरतांईजाग्रतभास
ताहे॥ नस्वप्नभासताहै॥ नसुषुप्तइनतीनोंतेरहिततुरीयापदवि
षेहमस्थितहैं॥ जिसविषेअहंतेकाअभावहे॥ सोअहंतेहमारा
मिटगयाहे॥ सोतहमकिसकोंदेखहि॥ जोमृगजाकहांगया॥ जो
नेत्रइंद्रीहेदेखणेवाली॥ तिसकोंबोलणेकीशक्तनहीं॥ इंद्रीया
पणेविषयोंकोग्रहणकर्तीहे॥ इकइंद्रीकोंइहसमर्थाकेहेनहीं॥ वड
तेरेतांईकवनकहे॥ इनसभनोंकोधारणेवालाअहंकारथा॥ जोस
मनोंआपणाआपजाणताथा॥ जोमेंदेखताहों॥ मेंबोलताहों॥ सोअ
हंकारहमारानष्टहोगयाहे॥ जैसेप्रातःकालविषेमेघनष्टहोजा
तेहे॥ तैसेअहंकारकेनष्टहोवणे॥ करहमसत्तनिर्मलशांततुरीया
पदविषेस्थितहों॥ अरइंद्रीयांकाजीवअहंकारसोमृतहोगयाहे
अरइंद्रीभीमृतकवतहोगइयांहे॥ देषणमात्रद्रष्टआवतीहे॥ जैसेभी
तऊपरपुतलीयांलिखीहोतीहे॥ अरकार्यतिनकोंकछुनहींहोता॥
श्रीव सि ष्टो वाच॥ हेरामजीजबइसप्रकारमौनिश्वरकहातबबधक
ससमझकरआपणीइछाचारोउठगया॥ हेरामजीतुरीयापदशांति
रूपहे॥ जहांजाग्रतस्वप्नसुषुप्ततीनोंकाअभावहे॥ केवलअद्वैतप
दहे॥ इहजोसत्ताहे॥ अलआत्माचिदानंदतेलेकरसोतुरीयापदवि
षेहे॥ अरतुरीयाअतीतपदविषेशब्दकीगमनहीं॥ निःशब्दपदहे
विदेहमुक्तपुरुषतिसीपदकोंप्राप्तहोतेहै॥ अरजीवनमुक्तपुरुष
तुरीयापदकोंसाक्षात्कारकरकेतुरीयाअवस्थाविषेविचरतेहै॥
जहांजाग्रतजोवैडलखावकाभानहेसोनहीं॥ अरजडतातामस
अवस्थाभीनहीं॥ इनतीनोंतेरहितहे॥ सोतुरीयापदहे॥ अरशांतिहै
जिसविषेक्षोभकोऊनहीं॥ अरइहजगततिसकीकल्पनाहे॥ जैसेस
मुद्रविषेवासवकछुनहीं॥ तैसेतिसमुद्रविषेवास्ते केवलतुरीयास
रूपसत्तासमानतेरास्वरूपहे॥ तूंतिसविषेस्थितहो॥ अरजोतिसवि
षेस्थितहुएहैं॥ सोश्रवणकर॥ ब्रह्माविस्नुरुद्रसिद्धज्ञानीइत्यादि
कजोज्ञानवानवीपुरुषहै॥ सोतिसपदविषेस्थितहै॥ अरकाष्टमौ
नवधककोंउपदेशकरणेवालाभीतुरीयापदविषेस्थितहे॥ विशे
षकल्पनातिसकीनिवृत्तहुईथी॥ जोभिन्नभिन्ननामरूपकोंदेखणा
केवलसत्तासमानपदविषेस्थितथा॥ तातेकल्पनाकोंत्यागकरके
सभीतुरीयापदविषेस्थितहोवो॥ इति निर्वा प्रक णेका मौ

नोद्ग त णे नामसर्गः ॥ ९६ ॥ श्रीवसिष्ठ उवाच ॥ हे रामजी इह
विश्व केवल आकाशरूप है ॥ आत्माते इतर कछु नहीं ॥ इह विश्व आ
त्माका चमत्कार है ॥ हे रामजी सत्य वस्तु ही है ॥ ब्रह्मते इतर कछु नहीं
राम उवाच ॥ हे भगवन इह विश्वजाल में ब्रह्मरूप कहा है मेघ की न्याई दाम
विषे उपजती है ॥ अरु तत्क्षण विषे लीन होती है ॥ सो मेघ विषे बिजली
दृष्ट आवती है ॥ जहां मेघ होता है ॥ तहां बिजली दृष्ट आवती है ॥ तो
तैसे मेघ विषे बिजली दृष्ट आवती है ॥ तो तिस मेघ ते बिजली उत्पन्न भई ॥ ति
सका कारण मेघ है ॥ हे मुनीश्वर इह चित्त कला स्पंद कारणकी उत्प
त्ति ब्रह्मते कैसे भई है ॥ सो कृपा करके मेरे तांई समझाइ कर कहो ॥ ब्रह्म
ही इसका कारण हूआ ॥ श्रीवसिष्ठ उवाच ॥ हे रामजी इह जो तें उ
होकर तंतर का कर्ता है सो कछु नहीं ॥ इस नाशबुद्धि कों त्याग ॥ इह
तौ बालक भी जाणते है ॥ जो बिजली छिनभंगुर रूप है ॥ सत्यरूप नहीं
होनेका क्या प्रयोजन है ॥ सो तें कहा इह तर्क के माया करती है ॥ कारन
कार्यरूप क्या है ॥ राम उवाच ॥ हे भगवन इह स्पंदकला सत्य है कि अस
त्य है ॥ इसका कारण कवण है ॥ जिसकर इह फुरती है ॥ श्रीवसिष्ठ उवा
च ॥ हे रामजी सर्व प्रकार करके सर्वात्मा ही स्थित है ॥ सो चित्त अरु स्पंद
भेद कल्पना कों इह वास्तव नहीं ॥ ब्रह्म ही आपणा आप विषे स्थित है ॥ अ
सतरूप जो कछु भासता है ॥ सो भ्रम करके भासता है ॥ जैसे भ्रम दृष्ट
करके आकाश विषे मोती भासते हैं ॥ जैसे नेत्र मंद कर जो खोलीते हैं
जैसे निरवणाकार भासते हैं ॥ तैसे जगत भासता है ॥ हे रामजी इस सं
सार समुद्र के पार कों प्राप्त हूए हैं ॥ हम ते आदि लेकर जो ज्ञानवान
हैं ॥ तिनके यथार्थ वचन सुणकर हृदय विषे धारे ॥ तो शीघ्र ही आत्मप
द कों प्राप्त होवे ॥ अरु जो मेरे वचनों कों न धारेगा मूर्खता करके जो इह का
कहितें है ॥ तब ते उत्तम न होवहिगे ॥ वृक्ष बेली तृण आदिक योनीं
कों पावहिगे ॥ हे रामजी काल अरु आकाश आदिक पदार्थ है ॥ सो सर्व
कल्पना कर सिद्ध हूए हैं ॥ आत्मा विषे काऊ नहीं ॥ हे रामजी वासते इहत
जो है ॥ समझ तिसका जो चमत्कार है ॥ तिस चमत्कार का सो कारन
कवन है ॥ अरु दीपक का जो प्रकाश है ॥ अरु अग्नि विषे जो उसनता है ॥ ति
स उसनता का कारन कवन है ॥ अरु वायु जो है निःस्पंद ॥ अरु ऊही जब स्पंद हू
आ ॥ तिस स्पंद का स्वरूप उसनता है ॥ अरु दीपक का स्वरूप प्रकाश का
रण कवन है ॥ जैसे इनका कारण कछु नहीं ॥ जो वायु का स्वरूप स्पंद तिस
ट है ॥ अरु अग्नि का स्वरूप उसनता है ॥ अरु दीपक का स्वरूप प्रकाश है ॥
तैसे कल्पना भी आत्मरूप है ॥ जैसे जल कौं लहर होती है ॥ तैसे कल्पना स्व
प विषे स्वआत्मस्वरूप है ॥ इतर कछु नहीं ॥ हे रामजी इह कल्पना जो तेरे तां
ई भासती है ॥ तिसका त्याग करके आपणे आपकों देखे ॥ तब संशय
सर्व मिट जावहि ॥ जैसे प्रलयकाल का जल चढ़ता है ॥ तो सर्व जलमई
होती है ॥ इतर कछु नहीं होता ॥ तैसे आपणे स्वरूप कों जब देखेगा ॥
तब सर्वात्मा ही तेरे तांई भासेगा ॥ आत्मा ते इतर कछु न दृष्ट आवेगा ॥ हे

रामजी आत्मा एक रस है ॥ असम्यक दर्शन करके अवर भासता है ॥ जैसे जेव
ड़ी एक रस होती है ॥ अरु जेवड़ी कों यथार्थ न जाणिये ॥ तो सर्प भ्रम होता है
तिसकों देखकर के भैमान होवीता है ॥ अरु जेवड़ी कों यथार्थ जाणे तें सर्प
भ्रम निवृत्त हो जाता है ॥ तैसे आत्मा कों न जाणने तें संसारी होता है ॥ अरु भै
यमान होता है ॥ आपकों जन्मता मरता देखता है ॥ सर्व विकार देह के आ
त्मा विषे मानता है ॥ अरु जो आत्मा कों जाणता है ॥ तब सर्व भ्रम निवृत्त हो
जाता है ॥ तो तेज अरु भीट भी ले वस्त्र भोजन का आकार अंतःकरण विषे भासता है
का है तें जो तिनकी सत्ता दृढ़ दया विषे भासती है ॥ अरु जो दृढ़ यता सत्ता तिन
कौं उठ जावे ॥ तब वहु दृढ़ नहीं भासते ॥ तो ते संसार कों मिथ्या जाण ॥ संसार चि
त के भ्रम करके हूआ है ॥ हे रामजी फुरणे विषे जो दृढ़ भावना हूई है ॥ सो सत्य
होइ कर स्थित हूआ है ॥ जब चित्त का त्याग करहिगा ॥ तब संसार की सत्ता जा
तौ रहैगी ॥ राम उवाच ॥ हे भगवन तुम जो कहा विश्व कल्पना मात्र है ॥ सो मैं
जाणिया है ॥ सो इसी प्रकार है ॥ कछु वस्तु नहीं ॥ इह जगत जैसे लवण रा
जा अरु ब्राह्मण पुत्र अरु शुक्र इनकी कल्पना फुरणे विषे दृढ़ भावना भई ॥ तो
फुरणा सत्य होइ करि स्थित भया है ॥ अरु फुरणा करि सत्य होइ भासता है ॥ हे भगव
न इह तो मैं जाणता हूं ॥ जो विश्व फुरणा मात्र है ॥ जब फुरणा मिट जाता है ॥ त
ब तिसके पाछे जो शांतरूप शेष रहता है सो कहो ॥ वसिष्ठ उवाच ॥ हे रामजी तैं
अब सम्यक ॥ सबोध हूआ है ॥ जो जाणने योग्य है ॥ सो तें जाणिया है ॥ हे राम
जी इह सिद्धांत अध्यात्म शास्त्र का अर्थ भया है ॥ एक चिदघन ब्रह्म आपणे आप वि
षे स्थित है ॥ हे रामजी आत्मा शुद्ध है ॥ अरु निर्मल है ॥ अरु विद्या अविद्या ते रहि
त है ॥ संसार का जिस विषे अत्यंत अभाव है ॥ जेते कछु शब्द आदिक संज्ञा कही
ती है ॥ सो भी फुरणे विषे है ॥ आत्मा निर्वाच्य पद है ॥ जो शब्द कहीता है ॥ ति
सकों संज्ञा शास्त्रकारों ने कही है सो श्रवण कर ॥ एक शून्यवादी इसकों शून्य
कहिते हैं ॥ विज्ञानवादी ज्ञानरूप कहिते हैं ॥ कई इसकों उपासनावाले ईश्वर क
हिते हैं ॥ कई कहिते हैं ॥ आत्मा सर्व का कारण है ॥ सो ईश्वर कहिता है ॥ अरु ए
क आत्मा कों सर्वशक्ति मानते हैं ॥ अरु एक कहिते हैं ॥ आत्मा निरशक्ति है ॥ अ
रु सांख्य आत्मा कों भिन्न मानते हैं ॥ हे रामजी जेते वाद हैं ॥ सो सर्व कल्पना कर
हूए हैं ॥ कल्पना कों मानकर वाद कों उठावते हैं ॥ वास्तव वाद का कोऊ नहीं ॥ आत्मा
निर्वाच्य पद है ॥ अरु जो मेरा सिद्धांत है ॥ सो तूं श्रवण कर ॥ जेती कछु कल्प
ना है ॥ आत्मा तिन ते अतीत है ॥ जैसे पवन स्पंद शक्ति कर फुरता है ॥ सो स्पंद भी
पवन है ॥ इतर कछु नहीं ॥ तैसे आत्मा शुद्ध है ॥ अद्वैत रूप है ॥ अरु कल्पना भी
आत्मा के आश्रय फुरती है ॥ आत्मा ते भिन्न कछु नहीं ॥ अरु जो इतर प्रतीत होती
है ॥ सो मिथ्या जाण कर तिसकी भावना त्याग ॥ अरु आपणे निर्विकल्प स्व
रूप विषे स्थित हो ॥ जब तें आत्मस्वरूप विषे अस्थित होवेगा ॥ तब जे
ते कछु शास्त्रों के भिन्न भिन्न मत अरु वाद हैं ॥ सो कोऊ न रहेगा ॥ केव
ल आपणा आप स्वरूप आत्मा ही भासेगा ॥ हे रामजी तिसी निर्विकल्प
पद कों पाइ कर शांति हूए हैं ॥ अरु असंत की न्याई स्थित हूए हैं ॥ जो है
त कल्पना तिनकों कछु नहीं फुरती ॥ हे रामजी आत्मा ब्रह्म इत्यादि

कह्योगयाहै ॥ सोउपदेशकेनिमित्तकहितेहैं ॥ आत्मासर्वतेअतीतहै ॥ अर
सर्वजगतभीआत्मासरूपहै ॥ अरसंसाररूपविकारआत्माविषेअसम्भकर
पोतेकरभासताहै ॥ जैसेआकाशशून्यविषेतिरवरेमोतीयोंकीन्याईभास
तेहैं ॥ सोअविद्याकरकेहै ॥ तैसेआत्माविषेदेहतअविद्यककभासताहै ॥ तोते
जगतहेतकीभावनात्यागकरनिर्विकल्पस्वरूपविषेस्थितहो ॥ इतिश्री
निर्वाणप्रकरणेअविद्यानाशरूपवर्णनंनामसर्गः ॥१०७॥ रामोवाच ॥
हेभगवन्देहइंद्रीयांअरुकलनाविषेसर्वतत्वक्याहै सोकहो ॥ श्रीवसि
ष्ठोवाच ॥ हेरामजीजोकछुइहजगतदृष्टआवताहै ॥ सोसभचिन्मात्रहै
जैसेसमुद्रजलहीमात्रहोताहै ॥ सोइहपंचइंद्रियांअरुछठवांमनजोकछु
इनकरदृष्टिमताहै ॥ सोसभमिथ्याहैभ्रममात्रहै ॥ हेरामजीदेहइंद्रियांसभ
मिथ्याहैं ॥ आत्माविषेकोऊनहीं ॥ चित्तकेकल्पेहुएहैं ॥ अरुचित्तहीइन
कोदेखताहै ॥ जैसेमारूथलविषेजलबुद्धिहोतीहै मृगोंको ॥ अरुदेखकरजल
केनिमित्तदौडतेहैं ॥ अरुदुखपावतेहैं ॥ तैसेचित्तरूपीजोमृगहै ॥ तिस
आत्मरूपमारूथलविषेदेहइंद्रीयांविषेरूपजलकल्पियाहै ॥ तिसको
देखकरदौडताहै ॥ अरुदुखपावताहै ॥ सोदेहइंद्रियांविषेभ्रमकरकेभास
तेहैं ॥ जैसेमूर्खबालकपरछावेविषेवेतालकल्पताहै ॥ तैसेमूर्खचित्तदे
हइंद्रीयांकल्पीयाहै ॥ हेरामजीआत्माअद्वैतनिर्विकारहै ॥ अरुचित्तनेतिस
विषेविकारआरोपणकीएहै ॥ जैसेभ्रांतिदृष्टकरकेआकाशविषेदोचं
द्रमादेषीतेहैं ॥ तैसेचित्तनेदेहइंद्रियांकल्पीयांहैं ॥ अरुचित्तभीआत्माते
भिन्नकछुनहीं ॥ आत्माकीसत्तालेकरचेष्टाकरताहै ॥ जैसेचुंबककीसत्ता
करलोहाचेष्टाकरताहै ॥ तातेंचित्तहीकात्यागकर ॥ जोविकारजालसभ
मिटजावे ॥ हेरामजीदेहइंद्रीयांविषेसारक्याहै ॥ तिसकाउत्तरसुण
जैताकछुसंसारहै ॥ तिसविषेसारदेहहै ॥ जोदेहकेसंबंधीहै ॥ दे
हमिटजावेतोदेहकेसंबंधीनहींरहितें ॥ अरुदेहविषेसारइंद्रीयांहैं ॥ अ
रुइंद्रियांविषेसारप्राणहै ॥ अरुप्राणविषेसारमनहै ॥ अरुमनकासा
रबुद्धिहै ॥ अरुबुद्धिकासारअहंकारहै ॥ अरुअहंकारकासारजीवहै ॥ अरु
जीवकासारचिदावलिहै ॥ चिदावलिकहीयेवासनाकरसंयुक्तचेत
ना ॥ जिसकोदृश्यकासंबंधहुआहै ॥ अरुचिदावलकासारचित्ततेर
हितशुद्धचैतन्यहै ॥ जिसविषेउत्थानकोऊनहीं ॥ हेरामजीदेहादिचि
दावलपर्यंतसर्वदृश्यकात्यागकर ॥ इनकाजोसारहै ॥ चैतन्यमात्रतिस
विषेदृढताकर ॥ सत्यकीन्याईभासतीहै ॥ अरुआगेभीसुनुअरुअल्पवणसा
जसाइहब्राह्मणकेपुत्रोंकाहृतांतकह्याहै ॥ जोसंकल्पकीभावनाक
रदृढस्थितहुआहै ॥ वास्तवकछुनहीं ॥ तैसेइहविश्वभासतीहै ॥ जै
सेसूर्जकीकिरणोंविषेजलभासताहै ॥ तैसेआत्माविषेअहंकारते
आदिदृश्यमिथ्याभासतीहै ॥ तातेंइसकोत्यागकरआपणेवास्तव
स्वरूपविषेस्थितहो ॥ हेरामजीएकगाडतेरेताईकहिताहों ॥ जिस
विषेकिसीशत्रुकीगमननहीं ॥ तिसविषेस्थितहो ॥ हमभीतिसीगा
डविषेस्थितहैं ॥ अरुतेजानतेहैं ॥ सोतिसीविषेस्थितहोतेहैं ॥ हेरा

मनोकामक्रोधलोभमोहअभिमानआदिकजोहैं ॥ विकारसोआत्माविषे
नहींपाईते ॥ जैसेरात्रिविषेदिननहींपाईताहै ॥ तातेंचित्तरूपगाडहै ॥ नहांकर
णाकोऊनहीं ॥ केवलशांतिरूपहै ॥ तिसविषेअहंभावकोत्यागकरस्थित
होवे ॥ तोअहंभावनिवृत्तहोजावे ॥ जबस्वरूपकासाक्षात्कारहोताहै ॥ तब
ब्रह्मानीफुरणेविषेस्वरूपकोनअल्पदेखताहै ॥ सूक्ष्मजगतभीतिसको
आत्मारूपभासताहै ॥ तातेंचिदावलआदिदेहपर्यंतसर्वअनात्माहै ॥ ति
नकोक्रमकरकेत्यागकर ॥ प्रथमदेहकोत्याग ॥ बहुरइंद्रियांकेअभिमा
नकोत्याग ॥ इसीक्रमकरसभकोत्यागकरआपणेवास्तवस्वरूपविषे
स्थितहो ॥ इतिश्रीनिर्वाणप्रकरणेजीवअभावप्रतिपादनंनामसर्गः ॥१०८
श्रीवसिष्ठोवाच ॥ हेरामजीइहसंसारभीचैतन्यमात्रहै ॥ आत्मातेइतरक
छुनहीं ॥ आत्माहीचित्तरूपहोकरस्थितहुआहै ॥ जैसेसूर्यकीकिरणा
जलाभासहोतीहै ॥ तैसेआत्माकाचमत्काररूपरूपहोकरस्थितहु
आहै ॥ जैसेसंकल्पअरुसंकल्पअरुसंकल्पकर्ताभिन्ननहीं ॥ जैसेआका
शविषेमोतीयांकीमालाभ्रमकरकेभासतीहै ॥ तैसेआत्माहीदृश्यरूप
होकरभासताहै ॥ जैसेबीजहीवृक्षफूलफलहोताहै ॥ तैसेआत्माहीदृश्य
रूपहोकरस्थितहुआहै ॥ जैसेजलकेतरंगजलहीहैं ॥ तैसेविश्वआत्माही
है ॥ हेरामजीचिदावलभीआत्माहै ॥ अरुजीवभीआत्माहै ॥ अहंकारबु
द्धिप्राणइंद्रियांदेहविषेआकाशकालदृष्टपदार्थसर्वआत्माहीहै ॥ आत्मा
तेइतरकछुनहीं ॥ तातेंविश्वकोभीआत्माजाण ॥ जैसेसूर्यकाप्रकाश
सूर्यहीहै ॥ तैसेतूंजाणसर्वमैंहीहों ॥ जोअभिमानजानसकहतोऐसेजा
णेदेहभीजडहै ॥ इंद्रीयोंकरपालीतीहै ॥ सोमैंनहींऐसीभावनाकर ॥ अ
रुइंद्रियांभीमैंनहीं ॥ जोप्राणइंद्रियांकासारहै ॥ जोप्राणनहोवहितो
इंद्रीयांकिसीकामनहोवहि ॥ अरुप्राणभीमैंनहीं ॥ प्राणोंकासारमन
है ॥ जोमनमूर्छाहोताहै ॥ प्राणआवतेजातेभीहैं ॥ तोभीकिसीकाम
नहीं ॥ अरुमनभीमैंनहीं ॥ जोमनकेप्रेरनेवालीबुद्धिहै ॥ जोनिश्चबुद्धिक
रतीहै ॥ तोमनतहांजाताहै ॥ अरुबुद्धिभीमैंनहीं ॥ जोबुद्धिकाप्रेर
कअहंकारहै ॥ सोअहंकारभीमैंनहीं ॥ जोअहंकारकाजीवकरहै ॥ जीव
विनाअहंकारकिसीकानहीं ॥ सोजीवभीमैंनहीं ॥ जीवकासारचिदा
वलहै ॥ चिदावलकहीये ॥ शुद्धचित्तविषेचेतनानसरवहोवणा ॥ जीव
सजातप्रथमइसभाव ॥ चितावलभीमैंनहीं ॥ जोचिदावलकासारचि
न्मात्रहै ॥ अरुद्वितीयनिर्विकल्परूपहै ॥ इहसर्वअनात्माभ्रमकरकेसिद्ध
हुएहैं ॥ मैंकेवलसत्यरूपहों ॥ हेरामजीजोतसवास्तवस्वरूपहोसोईहो
वो ॥ इसतेइतरअनात्माविषेअहंप्रतीतकात्यागकरो ॥ तुमदेहतेरहि
तनिर्विकारहो ॥ तेरेविषेजन्ममरणआदिकविकारकोऊनहीं ॥ अर
शांतिरूपजितिउकातिउस्थितहोवो ॥ तेकदाचित्स्वरूपतेउतरहूयान
हो ॥ तिसीस्वरूपविषेस्थितहो ॥ इतिश्रीनिर्वाणप्रकरणेसारप्रबोध
नामसर्गः ॥१०९॥ श्रीवसिष्ठोवाच ॥ हेरामजीआत्माचिन्मात्रते
सारअवरकछुनहीं ॥ तिसीविषेस्थितिहो ॥ जोतापमिटजावहि

व० नि०
प्र०
८५

हे रामजी सर्व आत्मा ही ए स्थिति है ॥ जैसे बीज ही ब्रिछ फुल होकर ए स्थि
ति होता है ॥ तैसे सर्वात्मा ही ए स्थित है ॥ तउ निषेध अर त्याग किसका
करीए ॥ वाल्मीकोउवाच ॥ हे शिष्य ऐसे वसिष्ठ जी ते श्रवण करके रामजी
प्रसन्न हूआ ॥ जैसे कमल सूर्ज को देखकर खिड़ आवते है ॥ तैसे रामजी
की बुध वसिष्ठ के वचन रूपी सूर्य कर खिड़ती है ॥ आप अब बोलन लगे
॥ रामोवाच ॥ हे भगवन् तुमारी क्रिपा ते अब मैं जागिआ हूं ॥ अर बड़ा आस
चर्य है ॥ जो आत्मा सर्वदा अनुभव रूप है ॥ अर अपणा आप है ॥ तिसके अ
माद्रिक के मैं एता काल दुख पाइआ ॥ अहंता अर ममता रूप बड़ा बोझ शि
रि पर रखिआ था ॥ तिस कर दुखी था मैं ॥ जैसे किसी के सिर पर शिला पथर की
होवे अर जेठ आषाढ़ का सूर्ज तपे अर पैडे पवे ॥ जैसे उह दुख पावता है ॥
अर जब उस के सिर से उतार लेवे बल्लभ सिउ को ओ अर छाए आ के नीचे बैठा
ए ॥ तब बड़े सुख को प्राप्त होता है ॥ तैसे अगिआन रूपी पैंडे अर धूप ति स
के अहंता अर ममता रूपी शिला साथ दुखी आ था मैं ॥ तुमरे वचन रूपी
बल कर उतार लीनी है ॥ अर आत्म रूपी ब्रिछ के नीचे विश्राम कर
पाया ॥ हे भगवन अब मैं ने ताए ज्ञान पद प्रापति भइआ है ॥ अर तीतात
प मिटि गए हैं ॥ अब जउ सुमेर पर्बत का भार आन प्रापति होवे त
उ मैं ताए कष्ट को उ नहीं प्रापति भासता ॥ अर संसे मेरे सब निवृत्त हूए
है ॥ अब मैं अपणे स्वभाव विखे स्थित भइआ हो ॥ पर एक प्रसंन का
उपन्न होइ क्रिपा कर के कहो ॥ जो महा उरखा बारंबार प्रसन कर ते विखेद न
ही मानते ॥ हे भगवन तुम कहते हो सर्व ब्रह्म ही है ॥ तउ विधि अरु
का उपदेश किसको ॥ अर निषेध का उपदेश किसको ॥ जो एहु कर्म ते
ते एक तत्व है ॥ एहु नहीं कम ते वण हुउ उपदेश किसको है ॥ वसिष्ठोवाच ॥
हे रामजी आत्मा ते एतर कछु नहीं ॥ अर विशा भी तिसका चमत्कार है ॥ जै
से समुद्र विखे तरंग फुरते हैं ॥ अर जल ते एतर कछु नहीं ॥ तैसे आत्मा चे
तन मात्र है ॥ तिस ते चेतउ न रूप तत अहं भाव को लेकर फुरिआ है ॥ ति
स कर देश काल वस्तु बणि आए हैं ॥ अर शास्त्र फुरे [illegible] हैं ॥ बहुडि फुरने
अविद्या दोरूप धारे हैं ॥ एक विद्या अर एक

ओं श्री गणेशाय नमः ॥ तिस विखे विद्या रूप जो बहू पहे ॥ सो ईश्वर कहावते हैं ॥ अर अ
विद्या रूप हूए है सो जीव कहावते हैं ॥ जिस को अपणा सत्य पवित्र अहं शुद्ध वास्तव
की रही है सो ईश्वर आवते हैं ॥ अर जिस को सत्य पका प्रमाद हूआ है अर संकल्प विकल्प
विखे बहता है सो जीव हूआ है ॥ हे रामजी एती संसिआ फुरने विखे हूए हैं ॥ तो भी
आत्मा ते एतर कछु नहीं ॥ जैसे एक रस ही फुल फल ब्रिछ रूप हूए हैं ॥ रस ते एतर क
छु नहीं ॥ अर आत्मा सब को निआप भी प्रमाद के कारण नहीं प्रापति भइआ ॥ फुरणे कर जी
व ईश्वर विद्या अविद्या रूप हूए हैं ॥ आत्मा विखे कछु नहीं ॥ हे रामजी जिस का मन कासर अहं
ता विखे ड्रिढ़ हूआ नहीं सो जीव शीघ्र ही आत्म पद को प्रापति होता है साखात्कार
आत्मा का तिस को शीघ्र ही होता है ॥ अर जिनका अहंता विखे संस्कार द्रिढ़ हूआ
है सो चिरकाल कर प्रापति होता है ॥ आत्म पद की प्रापति बिना दुख पावते हैं ॥ अर जिन
को आत्म पद की प्रापति होती है ॥ ते सुखी होते है ॥ हे रामजी गिआनी अर अगिआनी के
स्वरूप विखे भेद कछु नहीं ॥ समिक दर्शन अर असमिक दर्शन का भेद है ॥ हे रामजी वि
द्या भी दो प्रकार की है ॥ एक ईश्वरवादी है ॥ एक अनीश्वरवादी है ॥ तत्त्व बल प्रापति होते हैं
जो अनीश्वरवादी हैं तिन को जब ईश्वर की भावना होती है ॥ तब पुण्य स्वर्ग रक्के ईश्वर की
प्रापति होती है ॥ अर ईश्वरवादी भी दो प्रकार के है ॥ एक एह है जो अरवा स्वातिआग
कर ईश्वर परायण होते हैं ॥ ते शीघ्र ही ईश्वर पद को प्रापति होते हैं ॥ अर आत्मा ही ईश्वर है
जो सब का अपणा आप है ॥ अर ईश्वर को एक मानते हैं ॥ शास्त्र से सार को और होती है ॥ ते
चिरकाल कर प्रापति होते हैं ॥ अर अनीश्वरवादी भी दो प्रकार के हैं ॥ एक कहते हैं जो कछु
होवेगा तिन को होते होते भावना कर आत्म पद की प्रापति होवेगी सो असम अर्थ हूए के
अर एक कहते हैं जो कछु नहीं तिन को चिरकाल कर जब आसत की भावना होवेगी ॥ तब
आत्मा की प्रापति होवेगी ॥ हे रामजी तिन के निमित्त विधि अर निषेध कहे है ॥ जो एक स
भ कर्म को अंगीकार करो ॥ अर अशुभ कर्म का त्याग करो तिस कर जब अंतःकरण सुध हो
वेगा ॥ तब आत्म पद की प्रापति होती है ॥ एस निमित्त विधि निषेध कहे है ॥ जो विधि निषेध
शास्त्र न कहते तउ बड़ा छोटा को भाजन करे लेवे ॥ एस निमित्त विधि अर निषेध शास्त्र कहे है
हे रामजी सत्य रूप तो किसी को उपदेश नहीं ॥ भ्रम विखे उपदेश है ॥ जिसका भ्रम निवर्त हू
आ है ॥ सो सर्व ही विवेक रूप नहीं डूबता ॥ जैसे जल विखे फेन होती है ॥ अर जैसे ते बाहे
ता है ॥ सो डूबता नहीं ॥ तैसे गिआनवान संसार अगिआन विखे नहीं डूबते ॥ अर जिसका
चित वासना कर अर बंधिआ हूआ है संसरता है ॥ तिसको पसे सार ते निकसना कठिन है ॥ जैसे उ
जा रूप का कूआ होता है ॥ तिस विखे को उ गिरपता उ निकसना कठिन होता है ॥ तैसे ही
चित सा सुमिलि कर संसार ते निकसना कठिन होता है ॥ हे रामजी एस चित को पस्थिति
कूर हित उ ग्राहक लाते रमिट जावे ॥ तब अरमता समान पद को प्रापति होवे है ॥ हे रामजी जिस
को आत्मा का साख्यात्कार हूआ है ॥ अर अनात्मा विखे अहं प्रतीति मिटि गई है सो पुरुख जो क
छु करता है तिस को बंधायमान नहीं होता ॥ सदा अकर्ता आप को देखता है ॥ अर जिस की
अहं प्रतीति अनात्मा विखे है सो पुरुख कछु न भी कर्ता होता है ॥ जउ न कर ते न भी कर्ता हो
ता है ॥ हे रामजी जो अगिआनी शुभ कर्म करता है ॥ तउ शुभ कर्म करता हूआ स्वर्ग को प्रापति
होता है ॥ अर शुभ कर्म ही गिआन को प्रापति होता है ॥ काहे ते जो अनात्म विखे आत्म अ
भिमान है ॥ तिस कारण ते बुधि शुद्ध ही आ को मनक रनि अहं करे ॥ अर कर्म [illegible] के
॥ देह रूपी [illegible] तेमै वर्जन जानदी [illegible] पही कहता है जो अनात्मा विखे अभि
मान को त्याग ॥ जब अनात्म अभिमान को त्यागेगा ॥ तब शांत पद को प्रापति होवेगा ॥ न हो
ते रा चित फुरेगा न हा आत्मा ही भासेगा ॥ आत्मा ते एतर न भासेगा ॥ तो ते चित को त्याग वि
तक ही अहं भाव को त्याग कर आत्म पद विखे स्थित हो ॥ अब जस विधा की उत्पत्ति भए है
सो सुन ॥ सर्व चेतन मात्र समुद्र विखे चिदावल रूप अहं तेरा फुरी है ॥ अर तिस चिदावल तू

पसमंदृविखेजीवरूपतरंगउपजीहै॥अरजीवरूपसमंदृविखेअहंकाररूपतरंगभा
सीहै॥अरअहंकाररूपीसमंदृविखेबुधरूपतरंगउपजीहै।तिसबुधिरूपीसमंदृविखे
चित्तरूपीतरंगभासीहै॥अरचित्तरूपीसमंदृविखेसंकल्परूपीतरंगउठीहै॥तिससंकल्प
रूपीसमंदृविखेजगततरंगउपजीहै॥जगतरूपीसमंदृविखेदेहरूपीतरंगभासीहै॥ति
सविखेइंद्रिआंकागिआनहूआहै॥जोएहपदार्थहैएहनही॥एहऐसोहै॥इंद्रिआंविखे
देसकालदिसासर्बहूएहै॥हेरामजीसंकल्पकरहोतगएहै॥आत्मातेएतरककछुनही
केवलग्यानरूपएकरसआत्माहै॥तिसविखेनानाप्रकारकेप्रचारखेहै॥आत्मातेअ[illegible]
रककछुनही॥जैसेसपकीसिष्टनानाप्रकारहोभासतीहै॥सोअपणाहीअनभवसिष्ट
होभासतीहै॥तैसेएहजगतजाणु॥आत्मासर्बदापकरसहै॥अरअद्वैतहैसुथहै॥
परमनिर्बाणहै॥सर्बदाअपणेविखेएस्थितिहै॥संवेदनकरकेनानाप्रकारकीकल्पना
उदेभएहै॥हेरामजीसुधआत्माविखेजोचिदंबहूएहै॥चिदेवपंचभूतानिचिदेवभु
वनत्रैइत्यादिकजोचिदंबसंगिआभीसंकल्पविखेहूएहै॥आत्माविखेचिदंबसंगि
आभीनही॥आत्मानिर्बाचपदहै॥तिसकोबाणीकीगमनही॥सुधग्यानरूपहै॥ति
सविखेचिदंबजोफुरीहै॥तिसफुरनेविखेसंसारहूएकीनिआईएस्थितिहै॥जैसेए
कबीजहीब्रिछफुल्लफलपत्रसंगिआपावपहै॥बीजतेएतरकछुनही॥अरआत्माबी
कीनिआईभीप्रणामअग्यानही॥संकल्पहीनानासंगिआकल्पीहै॥अरजगतएस्थि
तिहूआहै॥तउभीआत्मातेएतरकछुनही॥जैसेवाएचलतीहैतउभीवाएहै॥ठहरती
हैतउभीवाएहै॥तैसेआत्माविखेनानाकछुनही॥केवलसुधअद्वैतआत्माहै॥आ
त्मारूपसमंदृविखेनानाप्रकारविश्वतरंगहूकीनिआईएस्थितिहूएहै॥हेरामजीआ
कारभीआत्माहै॥निराकारभीआत्माहै॥आत्मातेअतरककछुनही॥जोआत्मातेएतरभा
सेसोमिथ्याजान॥म्रिगत्रिसनाकेजलकीनिआईतेनानकरएसकीभावनात्यागकर
अरैसेरूपकीभावनाकर॥इतिश्रीव ऐ ना त द नाम सर्गः॥ वसिष्ठो
वाच॥ हेरामजीमैतेरेबनहूकोरिदेविखेधार॥अरआसतककीभावनाकर॥जोएहसत
कहतेहै॥अरसर्बत्यागकरजबसर्बत्यागकरेगा।तबचित्तखीणहोजावेगा॥तेरा जे
बविघ्नखीणहोजावेगा॥तबग्यांतहोवेगा॥हेरामजीकाष्टमौनहोरहो॥जोअंतर
तेसर्बत्यागकर॥अरबाहरजनकमंद्रकोकर॥अभिमानतेरहतहोकर॥अरअंतरमुली
हो॥अंतमुलीकहीऐआत्माएस्थितिहो॥जबआत्माएस्थितिहोवेगातबविद्मानदि
साभीतेरेताएनभासेगी॥काहेतेजोसर्बात्माहीभासेगा॥अरजोतेरेणामभरीकसब
दिहोवहितउभीनभासेगे॥अरजोस्वर्गचलेवेगातउभीतउभीनहोलीनी॥जोक
छुक्रियाकरेगासोतेरेताएसर्पणनकरेगी॥अकाशकीनिआई॥अरसाखवतअसंग
रहेगा॥हेरामजीजोकछुदेखहिसोसभरूपतेएतरबनदेख॥अरजोबोलहिसोभीआ
त्मातेएतरनफुरे॥अधअरंगकीनिआईअरपथरकीसिल्लावतमौनहोवहोसकल्प
ते॥अरचेष्टातरीतेचीकीपुतलीआवतपपरीहोवेगी॥जैसेजंत्रकीपुतलीतागेकीसत्ता
करचेष्टाकरतीहै॥तिसनेतप्राणकरप्राणकीचेष्टातेरीपरीहोवेगी॥सभावक जोक
छुक्रियाहैसोअभिमानतेरहतहोकरएस्थितिहोवणा॥अरजोअभिमानपूर्बककर चे
ष्टाकरतेहैसोसाररवैहे॥अरसेमिकदर्शीहै॥अरजोसंमिकदर्शीहैतिनकोअनात्मा
विखेअभिमाननहीहोता॥हेरामजीजिसकोअनात्माविखेअभिमाननही॥अरचित्त
जिसकालेपवाननहीहोता॥सोसारीविद्याकोमैद्याकरैअथवाविद्याकोउत्पतिकरै
तउभीउसकोदोनोविखेबंधननकछुनहीहोता॥जोसर्बकर्मअभिलाषतेरहतहोकरकर्ता
है॥हेरामजीसमाधिविखेएस्थितिहो॥अरशुभकर्मंहूकोकर॥जाग्रतकीनिआई॥तैसे
विखेइंद्रिआंभीआवहिगे॥तउभीतिनतेसखपत्तिकीनिआईहूरतांकोउठनफुरेगा॥अपणे
सरूपकासमाधिहै॥अरसमाधभीतबकहेउ॥जोकोउगहूसमगहूएजोएसविखेएस्थितिहो

अरएसकात्यागकर॥हेरामजीनहोएकअरदोसदूकहूणाभीनही॥अदुतीआत्मस
तापसमार्थहैतिसविखेचतनानानाप्रकारविकारखेहै॥गिआनीकोएकभास
ताहै॥अरअगिआनीनहीजाणताकागिआनीकानिसचागिआनीहीजानताहै॥तैसेस
र्पकेखोजकोसर्पहीजानताहै॥तैसेग्यानीकोएकरसआत्माभासताहै॥सोगिआनी
हीजानताहै॥अरसूरखकोसंकल्परूपनानाप्रकारजगतभासताहै॥तातेसंकल्पको
त्यागकरअपणाअद्वैतएथवाबालबुद्धितेसउनमततकीचेष्टासुभावकसदीहोती
है॥अरजैसेबालककीचेष्टासुभावकहोतीहै॥अगपरेहल्लतेहै।तैसेअभिमानतेरह
तहोकरचेष्टाकर॥तैसेपथरकीसिल्लाकासमधनरूपहोताहै॥तैसेदिशाकीभावना
तेरहतहोकरजोएरेककछुनही॥जसकरकीनिआईजबएसाहोवेगातबशांतपदकोप्राप
तिहोवेगा॥हेरामजीचित्तकेसंबंधकरखेदभउत्पतिहोताहै॥जैसेबसंतमेब्रिखपुल्लउ
त्पतिहोताहै॥तैसेचित्तरूपबसंतरुतहैतिसतेदुखरूपीफलउपजतेहै॥जबचित्त
कोशांतकरैगातबपरमपदकोप्राप्तिहोवेगा॥सोपदकैसाहैसूखमतेसूखमहै॥अरए
स्थूलतेएस्थूलहै॥तैसेतैअसंगहै॥जोएसूखमतेएस्थूलहोवहिगा॥तबभीअसंगरहेगा
ऐसेपदकोप्राप्तकरकाष्टपथरकीनिआईमौनहो॥हेरामजीदिश्यपदार्थकोत्यागकर
द्रिष्टाजोजाननेवालाहैतिसविखेएस्थितिहो॥हेरामजीद्रिष्टाअपणाअपणाविखेआ
कोग्रहणकरतीहै।तिनकोउरतभावनामतकर॥जोएहसदारूपहै॥एसकीप्राप्तिहोवे
भलेविखेप्राप्तिहोवणाकीभावनामतिकरहि॥एतनकजानणेवालाजोहैआत्मातिस
विखेएस्थितिहो॥जोपुरखद्रिष्टाविखेएस्थितिहोताहैसोगरोपणकीनिआईएससारसमु
द्रकोलंघजाताहै॥हेरामजीजोपदार्थद्रिष्टआवतेहै॥तिनविखेअपणाअपणासिष्टीहै
अरकेसीसिष्टहै॥जोसंकल्पमात्रहीहै॥अपणाअपणासंकल्पविखेएस्थितिहै॥अरसर्बे
संकल्पआत्माकेआश्रेहै।जैसेसर्बपदार्थअकाशविखेएस्थितिहै॥तैसेसर्बसंकल्पकी
सिष्टीआत्माकेआश्रेहै॥अरसंकल्पहूसरेकाअवरनहीजानता॥काहेतेजोसिष्टअपणी
अपणीहै॥[illegible]॥तिनकोतलककरएकताहै॥अरप्रकारहूकेरएकताने
हीहोती॥तैसेसमसरूपकरसभकीएकताहै॥अरसंकल्पसिष्टीअपणीअपणीहै॥अरजोपुर
खअैसेचितवनाकरताहै॥जोउसकीभीसिष्टकोमैजाणहूतबजानताहै॥हेरामजीआत्मा
कल्पब्रिछहैजैसेकोउभावनाकरतेहैतैसेहीसिधहोतीहै॥जबऐसीभावनाकरकैसरूप
विखेजरूताहै॥जोसर्बसिष्टामेरेताएभासहितबभावनाकरकैभासिआवतीहै॥अरअ
गिआनीऐसीभावनानहीकरता॥काहेतेजोआत्मातेएतरपदार्थकोउनहीजानता॥
अरजानताहैजोसरूपतेसर्बकीएकताहै॥अरसंकल्पकरएकतानहीहोती॥जैसेमनो
राहूकीएकतानहीहोती॥अरजल्लकीएकताहै॥अरजोतरंगहूसबीसाथिमिलिजाती
है॥तउजोससाथिएकहोतीहै।तैसेएककासंकल्पहूसरेसाथिभीमिलताहै॥भावना
करकेसंकल्पसाथिमिलजाताहै॥तैसेगिआनीजानताहै॥जोप्रकाररूपसंकल्पनही
मिल्लते॥अरसरूपकरसबकीएकताहै॥अरजिसकीभावनाहोतीहै॥जोमेएसकी
सिष्टकोदेखउ॥तबउसकेसंकल्पसाथिअपणासंकल्पमिलाएकरदेखताहै॥जब
उसकीसिष्टकोजानताहै॥जैसेदामणिहोवहितिनकाप्रकाशभिंनभिंनहोताहै॥अ
रजउदोनोएकठीरावीअहिएकहीहउउकिविखेनछटदोनोकाप्रकाशभीएकहोहो
जाताहै॥तैसेसंकल्पकीएकताभावनाकरहोतीहै।अरगिआनीकोएहसंकल्पअपु
जनताहीनही काहेतेजोमेसारउसकोमिथिआभासताहै॥अरजअगिआनीकोअपम से
कल्पहूआहोजाउसकीसिष्टकोदेखउतउसंकल्पकरदेखताहै॥अरगिआनकेउप
जेतेबाछानहीरहती॥हेरामजीएहाचित्तकाधर्महै॥जबचित्तहीनशहोगएबासनबिइछा
किसकोकरे॥जबसरूपकाप्रमादहोताहैतबचित्तरूपीदैतपसनहोताहै॥जोमसणएहअ
हारहूआ।मैएसकोभोजनकरोंगा॥हेरामजीजोपुरखचित्तकोउदाहूआअरसरूप
कीभावनाबिस्मरणभए॥तबचित्तरूपीदैतबनरूपीजन्महूविखेलीएफिरताहै॥अ

व० म० २

4 2

रतिसकौंभोजनकर्ताहैरहताहै॥ अरोगसकापुरवलेशनेतननाप्राकर्त्तारहाहै॥ अरआ
त्माकीभावनावालीबुधिउत्पतिहोवणानहीदेती॥ जैसेअग्रिछकौआगलगाएहेतव
वडरूपरोगसकौंफलनहीपरूपते॥ तैसेपुरखावथत्रपीग्रिछकौभोगरूपीअग्निला
गी॥ तवएसकरवाधत्रुपफलउत्पतिनहीहोता॥ हेरामजीचितआत्माविखेजोलगहु
विविग्रहकौउसजावरानुदवडूएहचितडुष्टहै॥ जवचितकौइस्थिरकरइगतवप
रमअप्रतिनकरसमापमानहोवडूगा॥ हेरामजीश्रवनमासीकाचंद्रमाजैसेअमिन
करसोभताहै॥ तैसेव्राह्मीलक्ष्मीकरसोभेगा॥ तरेजरामितमिटिजावहिगे॥ अर
रमनिर्वाणपदकौंप्रापतिहोवेगा॥ सोइहपदजैसप्रापतिहोताहै॥ तैसकहताहौ॥
११० इति श्री रमनिर्वाणनिर्वाणनामसर्गः॥ वसिष्ठउवाच॥ हेरामजीसप्तभू
मकागिआनकीहैजिनकरगिआनउत्पतिहोताहै॥ रामोउवाच॥ हेहेभगवन्जिसनि
सभूमकाविखेजगिआसीप्रापतिहोताहै॥ तिसकालक्षणकिआहै॥ एहसप्तभूमका
किआहै॥ अरप्रापतिहोतीहैसोकहो॥ वसिष्ठउवाच॥ हेरामजीएहभूमकातेतलापक
हताहौ॥ जोएससप्रकारप्रापतिहोतीहै॥ अरभूमकातेएसप्रकारगिआनप्रापतिहोता
है॥ हेरामजीजववालकमाताकेगर्भविखेहोताहै॥ अरजववाहरजनिकसताहै त
वएसकौइंद्रिउत्पतिजडअवस्थाहोतीहै॥ जैसेज्ञानीकीहोतीहै॥ अरवालकुविखे
तैसकारहताहै॥ जिसकरसमसकारकीसततासुगेहोणीहै॥ जैसेवीजविखेअंकुरहै॥ ति
सनेआगेविछहोवणाहै॥ तैसेवालककौभीहोवणीहै॥ अरज्ञानीकीभावीनहीहोव
णी॥ जैसेदग्धवीजहोताहै॥ तिसकाअंकुरनहीनिकसता॥ तैसेज्ञानीकीभावनानही
होती॥ ससारतेसप्रापतिहै॥ अरसरूपविखेसदाचेतनहै॥ आत्माविखेसर्वदाएस्थिति
है॥ होंतभावनाज्ञानीविखेनही॥ एसीतेभावीहोवणीतिसविखेनही॥ जववालककौ
वाहरजनिकसतेकाउकालवतीतहोताहै॥ तवइंद्रिजडरूपताइरहोतीहै॥ केतेकालतेउ
परांतस्त्रवपतिभीइरहोतीहै॥ तवलेनेनताहोतीहैजानतीहैजोमैहौ॥ एहमेरीमा
ताहै॥ एहमेरापिताहै॥ तवकुललेवालेपिखावतेहै॥ उसकौ॥ एहमिटाहैएहकौरहै॥ ए
हतेरीमाताहै॥ एहतेरापिताहै॥ एहतेराकुलहै॥ एसकरपापहोताहै॥ एसकरपुनहोताहै॥
एसकरसरगपाईताहै॥ एसकरनरकपाईताहै॥ एसप्रकार गहोताहै॥ एसप्रकारतत
होताहै॥ एसप्रकारदानकरीताहै॥ हेरामजीएसप्रकारकुलकेउपदेशकरेअरशास्त्र
केभेदविधर्मविखेविचरताहै॥ अरपापकौत्यागकरताहै॥ अरसाजोहैशास्त्रके
अनुसारविचरणेवालासोपुरखकहीताहै॥ सोधर्मात्मापुरखभीदोप्रकारकाहै॥
एकप्रविरतकीओरहै॥ एकनिवर्तकीओरहै॥ जोप्रविरतकीओरहैसासरगकोभोग
ताहै॥ पुनरहकमंहुकेफलकरगहहुमोछकौंनहीजालताउतमरूप॥ एसकरओहसं
सारविखेपस्त्राभ्रमताहै॥ जलजिणावतकवीचिरकालतेएसकर्मविखेआएकरस
किहोताहै॥ अरजोनिवर्तकीओरहैतिसकौविखिआभोगरूनेवैरागउत्पतिहोता
है॥ अरकहताहैजोएहुसंसारमिथ्याहै॥ मैएसतेतरउ॥ अरतिसपदकौप्रापतिहोवउ
जहाछैअरअतिमेनहोवे॥ एहसंसारसर्वदाचलरूपअरदुखदाएकहै॥ हेरामजीअ
सएरवकौगिआनविज्ञानउत्पतिहोताहै॥ एसकर्मकर्के॥ अरजोएधर्मात्मामान
खहै॥ तिनकौज्ञानप्रापतिहोवणाकठनहै॥ एप्रथमीकहीअरजोपुरखकेअरथ
कौनहीजाणते॥ जोशुभकिआहैअरअशुभकिआहै॥ अपणीएक्छाविखेवर्तणा॥
अशुभकौग्रहणकर्णाविचारतेरहतहोवणा॥ अरमानुखभीदोप्रकारकेहैं॥ एकप्र
विर्तलक्षणाहै एकनिव्रितलक्षणाहै॥ प्रविरतकहीअरजिसकौशास्त्रसमझकाहै॥ ति
सकौशहककर्णा॥ अशुभकात्यागकर्णा॥ जगआजिकशुभकर्मकर्णा॥ कामनाफल
कीधारेकरजोसर्गधनपुत्रआदिकसेरलोकप्रापतिहोवेगी॥ तिनकीप्रार्थनाफल
धारकरशुभकर्मकर्णा॥ एसप्रकारसंसारमेइहविखेवहतेहैं॥ अरचिरकालक
रनिवृतकीओरभीआवतेहै॥ तवसरूपकौपावतेहैं॥ सोनिव्रितकिआहै॥ जोशु

के

भकर्मकौर्णनिहकामहोएकर॥ तिनंकौर्णकरअंतःकरणसुधहोताहै॥ तवतिसकौवैरा
गउपजताहै॥ तवकहिताहैसेरताएकमेइसाधिकिआहै॥ अरफलइकरकिआहै॥ म
किसीप्रकारआत्माकोपावो॥ एससंसारतेकिसीप्रकारमुक्तिहोवोगा॥ हसंसारमि
थ्याहै॥ अरभोगइसरकेमिविखिणिकिआहै॥ एहभोगसर्पहै॥ हेरामजीएसप्रकारभोगइकी
निंद्याकरताहै॥ अरशमदमआदिकसाधनजोहैरपानेकेतिनविखेविचरताहै॥ अर
देशकालपदार्थकौशुभअशुभविखेविचरताहै॥ अरमिसोदासाथवोलताहै॥ अरसत
जनोकासंगकर्ताहै॥ अरसतशास्त्रब्रह्मविद्याकाअभ्यासविचारताहै॥ एसप्रकारउसम
कीबुधिवर्धतीजातीहै॥ अरविखिआइतेउपरतहोतीहै॥ तीर्थअरठाकरद्वारअरपुनसा
कोपूजताहै॥ अरमनइंद्रीआदिकहुकरमसतोकीटहिलकरताहै॥ अरसर्वसाथिमित्रभाव
एआसक्तिकामलताकरविचरताहै॥ अरअमृतवचनबोलताहै॥ जैसकरसभकौआन
दनहोवे॥ नथापराशीहोवेपरनहीकरणाकिसीको॥ अरअशिअजनीओंकेसंगकौ
त्यागणा॥ अरसर्गकेसाखउकीभावनानकर्णी॥ केवलअज्ञानपरायणहोवणा॥ अरसंतो
अरशास्त्रोकीद्रिडभावनाकर्णी॥ अर्थदुखविखेमतलगावणा॥ अरकिसीओरचित्तन
लगावणा॥ जैसेदरिद्रीसर्वदाधनकोचितवनाकर्ताहै॥ तैसेरामइआत्माकोसदाचिंतव
नाकर्ताहै॥ जोएपुरखएतेगुणाइसयुगतिहै तिसकौप्रथमभूमकाप्रापतिभईहै॥ अरपाप
रूपीसर्पकौमारसमाननाशकर्ताहै सिरनीवाकर्के॥ अरधर्मसतशास्त्रसतजनरूपीसव
कोगर्दनउचीकरदेखताहै॥ अरएसकेत्रहोताहै॥ तिसकानामशुभएछाहै॥ तिसकौदूसर
दूसरीभूमकाआपप्रापतिहोतीहै॥ जैसेचंद्रमाकीकलावधतीजातीहै॥ तैसेओसकौबु
धिवधतीजातीहै॥ तिसकाएहलक्षणहै॥ जोसतशास्त्रब्रह्मविद्याकोविचारणा॥ अरइ
हभावनालगावणी॥ तिसविचारकाकवचगलेविखेपावताहै॥ तिसकरएसइकाघा
अकोउनहीलागता॥ अरइंद्रीआदिरूपीबीरहैएकारूपीतिनकीहाथिवडकीहै॥ सोविचार
रूपीकवचपहिरनेवालेकउनहीलागतीआ॥ हेरामजीइंद्रीआरूपीसर्पहै॥ जिसातिनविखे
विखहै॥ तिसविखके [illegible] पानावतेहै॥ अरजोविचारवानपुरखहै तिनकौसर्पनेनही
करतीआ॥ ओसनेइंद्रीआरूपीसर्पाकौनाशकीआहै॥ अरसर्वदाओसतेउदासीनरहताहै॥ इतनेन
हुकीसंगतकात्यागकर्ताहै॥ अरसर्वइछाकात्यागकीआहै॥ परएकइछाभीतिसविखेर
हतीहै॥ जोदएआसर्वथकर्तीहै॥ अरसंतोखवानरहताहै॥ अरनिषधगतभावकेजाते
रहतेहै॥ इंभगवेलोभमोहितिसतेस्वभावकनष्टहोजातेहै॥ जैसेसर्पकुंजकौत्यागकरजा
भाएमानेहोताहै॥ तैसेविचारवानवाहरजइंद्रीआकोवाहरजकर्केशोभताहै॥ अरजोक्रोध
भोतिसविखेहष्टआवताहै॥ तोछिणमात्रहोताहै॥ चिरेविखएस्थितिनहीहोताक्रा
अरएवावणापीवाणालेवणीदेवणाजोककुक्रिआहै॥ सोविचारपूर्वककर्ताहै॥ अरसर्वदा
शुभमार्गविखेविचरताहै॥ अरसतशास्त्रोकेअर्थविचारणासतजनोकासंगकर्णावाध
कौवधावणा॥ तपकर्णा॥ एसप्रकारकालकौविनीतकरताहै॥ हेरामजीएहदूसरीभूमकाहै॥
जवतीसरीभूमकाआवतीहै॥ तवस्कनतेकेवेदअरस्मितिजोहैधर्मशास्त्रतिनकेअर्थीविदेवि
खएस्थितिहोतीहै॥ जैसेकमलऊपरिभवराआएस्थितिहोताहै॥ तिसपुरखकौतैसफुलो
खएस्थितिहोतेहै॥ जैसेकमलऊपरिभवराआएस्थितिहोताहै॥ तावरागतिसकौदि
कौसिभोसुखदाएनहीभासती॥ जैसेवनकदराप्रवेदाएभासतीहै॥ जोवरागतिसकौदि
नदिनवढुताजाताहै॥ अरपथरकीशिलापरिसेनकर्णा॥ अरवहतएकरवीणकर्णा॥ अर
धारणाकरचित्तकौकिसीदरुपविखेलगावणा॥ अरआत्मभावनाकरधिआनक
र्णा॥ अरसवदाभागहूतेउपरतहोवणा॥ भोगोकौअंतवंतविचारणा॥ जोएहपरिग्रहनही
नातेदेहेकअहंकारकौत्यागताहै॥ इपाधनाणकर॥ अरजोमासमत्वरूपीघअदिकको
अशतात्जाणकेएसविखेअहंकारकौत्यागताहै॥ अरनिंदाकर्ताहै॥ अरसत्रुकौत्रिणकीनि
आपतछजानकरत्यागताहै॥ जैसेत्रिणविष्टाकरसेजगतिहोवेअरतिसकौचाएत्यागीता
हैं तैसेदेहकेअहंकारकौत्यागताहै॥ मंदरकंदराजोहैफुलफलसेजगतमहाचडमाकी
किरणकररसपावतीहै॥ तिसविखेविचरणाअरफुलफलकाअहारकर्णा॥ अरसतो
कीटहलकर्णी॥ एसप्रकारआवलाकोवीतावताहै॥ अरसदाअसंगरहताहै॥ रहतीसगोभ

मकाहै ॥ इति श्री त्रितीया म ल ण वा ना मं ॥ ११ ॥ वसिष्ठ उवाच ॥ हे रा
मजी एह ज्ञान का यतन है ॥ अध्यात्म विद्या कौं विचारना वारंवार ॥ अनि सके अर्थ हु की भावना
करणी ॥ अरु पुनि क्रिया विविध विचरणा ॥ एस ते एतर ज्ञान का साधन नहीं ॥ एस कर ज्ञान
की प्रापति होती है ॥ जिस पुरुष कौं ऐसी भावना होए तौ सुपुरुष कौं नाना प्रकार की गं
ध चंदन अगर चोए ते आदि लेकर अरु अपछरा सुंदरी अनि कुतन आए प्रापति होवे हि तब
तिन का निरादर करता है ॥ अरु जो एस्त्री कौं देखता भी है तौ माता समान देखता है ॥ अरु प
राए धन कौं पथ्थर के वटे समान देखकर वाछा नहीं करता ॥ अरु सर्व भूतों कौं देखकर द
ए आही करता है ॥ तेसे आप कौं सुख कर अरु मन अनिष्ट कर दुख जानता है ॥ तेसे अवर कौं भी
जानि कर सुख देता है ॥ अरु दुख किसी कौं नहीं देता ॥ एस प्रकार पुनि क्रिया विविध विचर
ता है ॥ अरु सत शास्त्रों के अर्थ का अभ्यास करता है ॥ अरु सर्वदा संसंग मे रहता है ॥ अरु सं
संग भी दो प्रकार की है ॥ राम उवाच ॥ हे भगवन अरु संसंग का लक्षण कहिआ है ॥ ति
न का भेद तौ तुम कहो एगा ॥ वसिष्ठ उवाच ॥ हे राम जी असंसंग दो प्रकार का है ॥ एक
समा है एक विशेष है ॥ तिन का लक्षण श्रवण कर ॥ प्रथम समान सुणि ॥ जो एह कहता है
मे कछु नहीं करता ॥ न मै किसी कौं देता हौं न मै लेता एक को जो देता है ॥ सर्व ईश्वर की आज्ञा वि
ख होता है ॥ जिस कौं पन देवणा की एछा होती है ॥ तिस कौं धन देता है ॥ तिस कौं धन देता
है ॥ जिस पिछले वणा होता है तिस मिलता है ॥ एस के अधीन कछु नहीं ॥ अरु जो कछु दा
न तप जग आदिक करता है सो ईश्वर अर्पण करता है ॥ अपणा अभिमान कछु नहीं करता ॥ अरु कह
ता है सभ ईश्वर की शक्ति कर होता है ॥ एस प्रकार अभिमान हो कर थम चेष्टा विविस भाव
क विचरता है ॥ अरु जेते कछु ऋद्धी अरु के भोगों की संपदा है ॥ तिस कौं अपदा जानता है ॥ भो
गों कौं महा रोग रूप देखता है ॥ संपदा अपदा रूप है ॥ संजोग विजोग रूप है ॥ संजोग विजोग रूप
है ॥ जेते पदार्थ है सभ अनत रूप है ॥ विचार ते नष्ट हो जाते है ॥ सभ कौं अकाश रूप जानता है
जो संजोग अरु विजोग नित्य दुख देता है ॥ ए ऐसी कौं [illegible] विष की वाली समानि जा
नता है ॥ अरु सर्व दा पदार्थ [illegible] नहीं करता ॥ अरु सर्व
विष का जो रूप है तिस कौं सुख देवणा है तिस कौं सुख देता है ॥ जिस कौं सुख देवणा होता है
तिस कौं दुख देता है ॥ एस के हाथ कछु नहीं ॥ करण करावण वाला ईश्वर है ॥ न मै करता हो न मै
भोगता हो ॥ न मै वकता हो ॥ जो कछु होता है सो सभ ईश्वर की सत्ता कर होता है ॥ ऐसे निरअ
भिमान होए कर पुन क्रिया कौं करता है ॥ सो समान असंसंग है ॥ तिस के वचन श्रवण करने
सो कर नहु कौं अभ्रि[illegible] प्रापति होती है ॥ एस प्रकार भ्रम का कर्के अरु सतो के मिलाण कर जि
स की वुधि वधी है ॥ अरु निरअभिमान है ॥ जिस कौं उपदेश प्राविखे अनभव कर न वल ग अभ्या
स करे ॥ जब लग हाथि विते आवल की निआए आत्मा का साक्षात्कार प्रतक्ष अनभव होता
है ॥ अरु एह जो कहा था जो ईश्वर सभ करता है ॥ सो समान असंसंग है ॥ अरु अब विशेष असंसंग
कहता हौं ॥ जो न मै कछु करता हो न करावता हो ॥ केवल अकाश रूप आत्मा हो ॥ जिस विषे
न कर्णा है न करावणा है ॥ न कोउ अवर है ॥ न मै कोउ हौं ॥ केवल अकाश रूप आत्मा अद्वैत
है ॥ हे राम जी ओह पुरुष न अंतर देखता है न बाहर देखता है ॥ न पदार्थ न अपदार्थ न जड न चेत
न न अकाश कौं देखता है न पताल कौं न ऊर्ध्व कौं देखता है ॥ न देश कौं देखता है ॥ न प्रि
थवी कौं न मेरु कौं देखता है ॥ निर्वासी अज अवनाशी सर्व सवद अर्थों ते जो रहत केवल
शून्य अकाश विषे स्थित है ॥ चित ते रहत चेतन है ॥ तिस विषे जो एस्थित है ॥ तिस कौं स
ष्ट असंसंग कहीता है ॥ वाह जब चेष्टा उस की दृष्ट भी आवती है तौ भी शून्य पदार्थ हु की भा
वना का अभाव है ॥ जैसे कमल जल विषे दृष्ट भी आवता है ॥ पर उपर ही रहता है
तेसे क्रिया विषे विचरता भी दृष्ट आवता है ॥ तौ भी असंग रहता है ॥ अरु कामना उस कौं
कोउ नहीं रहती ॥ जो एह होवे अरु एह न होवे ॥ काहे ते जो संसार का अभाव उस कौं निश्चय
एआ है ॥ सर्व कल्पना ते रहत है ॥ आत्मा ते एतर कौं सो पदार्थ की सत्ता नहीं फुरती ॥ सो स
ष्ट असंसंग कहीता है ॥ अरु कर्मों का उस का अर्थ सिध कोउ नहीं होता ॥ अरु कर्मों कर पत
वाए नहीं होता ॥ ओह सर्वदा असंग है ॥ एस संसार विषे डूबता कदाचित नहीं ॥ संसार के

पार कौं प्राप्त हुआ है ॥ अरु अज्ञान अवित आत्मभाव ना ति सुपुरख त्यागी है ॥ सुह भाव
का त्याग कीआ है ॥ जेते पदार्थ है इष्ट अनिष्ट रूप तिन के सुख दुख की वेदना नहीं फुरती
सदा मान रूप है ॥ सो असंसंग कहीता है ॥ हे राम जी एक कमल है ता अज्ञान रूपी कीचड वि
उ तिस कमल कि आत्मा रूपी जल विषे विराजता है ॥ अभावना मे संसार की उस का बीज है
अरु त्रिसना रूपी उस का नाल विषे समको आहै ॥ कमल के चेषा फूरष फिरतीं है ॥ अरु कर्म सुख दुख
रूप तिस के साथि कांटे है ॥ अज्ञान रूपी रात्रि कर अनुवेख सूंदर है आह ॥ अविचार रूपी स
जे के उदे हूए तब खिरतु है ॥ अरु शोभा पावता है ॥ सुगंध तिस विषे विसतार है ॥ सो हि वेद
विख लागता है ॥ फल तिस का असंसंग है ॥ जो सप्तभूमिका दिखाएं हु उगवता है ॥ हे राम
जी संतो की संगति कर के अरु सत शास्त्र हु का विचार ॥ संसार कौं प्रापति करता है ॥ वैराक
शुहल एन कर कै अभिन्न मोक्ष कौं प्रापति होवीता है ॥ पर असंसंग रूप कौं विसरण कर कै
जीव डुरली होते है ॥ एस कास रूप उस दुख का नाश करती है ॥ जिस विषे दुख कौं वोन ही अन
द रूप है ॥ एन भूमका हु आ रश प्रापति होवीता है ॥ वहु रूप दर्प मान नहीं होवीता ॥ हे राम
जी एह तीसरी भूमिका ज्ञान के निकट होवती है ॥ अवि चार वान पुरख एन भूमिका विषे ए
स्थित हो कर वुधि कौं वधावता है ॥ एस प्रकार जब एह बोध कौं पावता है ॥ अरु का कर्ता
है ॥ शास्त्र संगत साथि ॥ तब क्रम कर के एह तीसरी भूमिका कौं जो प्राप्ति होती है ॥
तब एस कौं असंसंग ति प्रापति होती है ॥ फिर वुध रूपी वल्ली वधावती है ॥ तब चौथी भू
मका प्रापति होती है ॥ जैसे किरसाण खेत्र की रछिआ करता है ॥ अरु वधावता है ॥ तैसे वि
चार रूपी जल कर वुध कौं वधावता है ॥ अरु अह का भाव आदिक ना पात्र है तिन तर ता क
ते है ॥ हे राम जी एन भूमका कौं प्रापति होकर एह ज्ञानवान होते है ॥ सो एह भूमका कौं
मकर प्रापति होती है ॥ वहु पुन कर्म की एह वासना पन तिन कर आन फुरतीं है ॥ एक अक स
मात्र ते आन फुरती है ॥ जैसे नदी के तट परिक [illegible] होवे ॥ अरु नदी के वेग कर वीच
जा एण से ॥ तैसे जब फिर तिस कौं पहिली भूमका प्रापति होवै तब तिस कर वुध कौं वधा
ए ॥ जब वुध रूपी वल्ली वधी तौ है ॥ तब ज्ञान रूपी फल लागता है ॥ जब ज्ञान उपजे आन व प्र
त लोक आति सवि विषे दृष्ट भी आवे ॥ तौ भी एन का अभिमान नहीं रहता ॥ जैसे स्वप्न मांझ प्र
त विंव कौं प्रहण भी करती है ॥ अरु संग कौं उन नहीं चहता ॥ ११२ इति श्री ती सो म वि गो
ना मस र्ग: ॥ राम उवाच ॥ ओ हे भगवन तुमने हु भूमका का वर्णन कीआ तिस विषे मेरा
एह संसा है ॥ जो भूमका ते रहते है अरु शकि तिन के मन्म लिए है ॥ तिन कौं भी कदाचित ज्ञान
उपजेगा ॥ अथवा न उपजेगा ॥ अरु जिस एक भूमका पाए होवे अथवा दो भूमका पाए होव
हि ॥ अथवा तीसरी भूमका पाए होवे ॥ अरु शरीर तिस का छूट गए आ ॥ आत्मापद का साक्षा
त्कार न भए आ ॥ अरु स्वर्ग आदिकों की उस कौं कामना नहीं ॥ तौ उह कि संगत कौं प्रापति हो
ता है ॥ वसिष्ठ उवाच ॥ हे राम जी उह पुरुख जो विषे है तिस कौं ज्ञान प्रापति होणा कठन है ॥ अ
ह वासना कर कै यटी जंत्र की निआए फिरते है ॥ कवहू स्वर्ग कवहू पाताल जाते है ॥ अरु दुख
पावते है ॥ कवहू अकस्मात काकतालीजोग की निआए उस उस सतो का संग अरु सत शा
स्त्रों का श्रवण कर्णा एह वासना आन फुरती है ॥ जैसे मारुथल विषे वेली लगणी कठन
है ॥ तैसे जिस कौं ज्ञान प्रापति होणा कठन है ॥ पर जब अकस्मात संतो के संग ते तिस कौं वै
राग उपजता है ॥ अरु वुधि उस की निर्मल की ओर आवती है ॥ तब भूमका उ आवति तिस कौं
ज्ञान उत्पत्ति होता है ॥ तब मुक्त होता है ॥ हे राम जी एह भावना अकस्मात उपजे विना
जोनी विखेप कर भ्रमता है ॥ जिस कौं एक अथवा दो भूमका प्रापति भए है ॥ अरु शरीर ति
स का छूट गए आ ॥ तब अवर जन्म पाए कर ज्ञान कौं प्रापति होता है ॥ पिछला संस्कार जा
गि आवता है ॥ वहु रूप दिन दिन वढता जाता है ॥ जैसे वीज खेत विषे अंकुर होता है वहु रू
टा सफूल कर वधता जाता है ॥ तैसे उस का अभ्यास संस्कार वधता जाता है ॥ अरु ज्ञा
न कौं प्रापति होता है ॥ जैसे कोउ मारग चलता हूआ सोए जाए अरु जाग कर चलणे
लागे ॥ तैसे उह फिर अवलो अभ्यास का लागता है ॥ हे राम जी जिस कौं भावना हो

वा

वं॰ मं॰ ५

लोहै जोमेरेताएविशेषताप्रापतिहोवेतिसकरजन्मकोंपावताहै॥ ब्रह्माआदिदेवीदीप्र
नेतजिसकोंविशेषताप्रापतिहोवताकीकामनाहैसोजन्मकोंपावताहै॥ अव
तानीकोंभोगोंकीएकाअवशेषपावताकीएछानहीहीहोती॥ जिनकोंभोगोंकीए
छाहोतीहैसोभोगकेअग्रएकोवशेषताजातीहै॥ अवमौनिष्ठकोनिवतेकीएछाहो
तीहै॥ अवज्ञानीकोवासनाकारणनहीं॥ जोएहवशेषताभेरेताएप्रापतिहोवेएसेलवरूप
जन्मनहीपावताजैसेभुंनाभीजइगवतानहीं॥ तैसेवासनारहतज्ञानीजन्मनहींपाव
ता॥ हेरामजीजन्मकाकारणवासनाहै॥ जैसीजैसीवासनाहोतीहै तैसीअवस्थाकोप्राप
तिहोताहै॥ नानाप्रकारकीवासनाहैजैवपुशरीरकूटणकासमाहोताहै॥ तवजोवासना
दृढहोतीहै॥ जिसकासर्वदाअभ्यासहोताहै॥ सोएअंगआगआनिपस्थितिहोतीहै॥ ति
समसेउहीभासतीहै॥ उहीपदार्थभासताहै जिसकोदृढअभ्यासकीआहोताहै॥ वा
स्नातोअनेकहोतीहै परजोदृढहोतीहै तिसीकेअनसारशरीरधारताहै॥ तबदेह
छूटताहैतबमहूर्तपर्यंततजडतारहतीहै॥ तिसतेउपरांतचेतनताहोतीहै॥ तबवासना
केअनुसारशरीरकोदेखताहै॥ अरजानताहै॥ जोएहमेराशरीरहे मेउत्पतिहुआहों॥ ए
कएसेहोतेहै॥ अरएकएसेहोतेहै॥ जोनहोतिसीछिणविषजगतकाअनभवकरतेहै॥ ए
केअसेहोतेहै॥ जोचिरकालपाछेतेजरूपहीरहतेहै॥ चिरकालतेउनकोचेतनताफुरती
है॥ जिसकेअनुसारसंसारभ्रमकोंदेखतेहै॥ अरएकऐसेप्रकारवानहोतेहै॥ तिनको
पुष्पग्रहीचेतनताहोतीहै॥ एकक्षिणमें॥ अरजानतेहै॥ जोमेंउत्पतहुआहों॥ अ
रएसदेतोरूपआएजन्मआहों॥ एहमेरीमाताहै एहपिताहै॥ अरएहमेराकुलहै॥ एसप्र
कारणकमहूर्तविषजागकरदेखताहै॥ अरवहकुलकोंदेखताहै॥ एसप्रकारपरलोक
केकोदेखताहै॥ अरसराजमराजकेदूतोंकोदेखताहै॥ अरजानताहैजोएहमेरेताए
लीएजातेहैं॥ तबआगेधर्मराजकोदेखताहै॥ तबधर्मराजअनर्थामीचित्रगुप्तकूंपूछताहै॥ तिस
केनिकटिजाएलखताहोताहै॥ अरपुंनपापदोनोप्रबलथासिकेएसकेआगेउपस्थिति
होताहै॥ तबबहुरूपधर्मराजअंतर्यामीसापुछताहैजोएसनेक्रियाकरमकीएहै॥ तब
जोपुंनवानहोताहैतबस्वर्गभोगभोगताएकरबहुरूपजोनीविषडारदेतेहै॥ जबपापी
होताहै तबनरककहैविषडारदेतेहैं॥ एसप्रकारजन्मकुंधारताहै॥ अकस्मातकार
केतालीजागकीनिआएकदाचितमानखशरीरकोंपावताहै॥ अरमाताकेगर्भवि
षजानताहैजोएहामेजन्मलीआहै॥ एहमेरीमाताहै एहमेरापिताहै एहमेराकुलहै
वहरूपबालकहोताहै॥ अरजानताहैमैबालकहों॥ बहुरूपजोवनअवस्थाहोतीहै त
बजानताहैमैतरुणहों॥ एसप्रकारकालकोंवितावताहै॥ बहुरूपवृद्धअवस्थाहोतीहै
बहुरूपमृतककोंपावताहै॥ अरसर्पहोताहैतितरवानवानरमच्छकच्छपसिंहादिदेव
देवतइत्यादिकजन्मधारताहै॥ हेरामजीइत्यादिकजन्मधारताहै॥ हेरामजीइत्यादिक
जोजन्मकहेहै॥ तिनविषकईजंत्रकीनिआएभटकताहै॥ कबहूगंधर्वकोजाताहै॥ अ
रसरूपकअमादिकरूपकोपावताहै॥ हेरामजीएताविस्तारजोतवतोएककहाहै
सोभीवाणिआकहुनहीं॥ केवलअद्वैतआत्माहै॥ चित्तकेसंजोगकरएतेभ्रमदेखता
है॥ वासनाउअराविवानोकोदेखताहै॥ अरतहांजाताहैमहांअकोमी॥ जैसेपवनगं
धकोलेजाताहै॥ तैसेवासनापरमपदकाकोलजातीहै॥ अरशरीरकोदेखताहै॥
हेरामजीआत्मातेएतकछुनहीपरचित्तकेसंजोगकरकेएतेभ्रमकोदेखताहै॥
तातेचित्तकोंउपस्थितिकरो॥ तबभ्रममिटिजावेगा॥ अरआत्ममात्रहीशेषरहेगा॥ सो
सधूहैअरअनंदरूपहै॥ तिसविषउपस्थितिहोवह॥ १२३॥ इतिश्रीवि(सि)ष्ठ (महारामायणे) स्त्रा प
ने नाममसर्गः॥ वसिष्टउवाच॥ हेरामजीपूर्वजोकोपर्वितवालेकाक्रमहोहै
अरनिर्विकलेकाक्रमसुणो॥ जिसकोभ्रमकाप्राप्तिभएहै॥ अरआत्मापदप्रापतिन
हीभएथा॥ तिसकेपापतेशभहगयेहोजातेहै॥ जबउसकापापीछूटताहै॥ तबवा
स्नाकेअनुसारसेजन्मकारहूआवेरूपशरीरअपणासाधिदेखताहै॥ बहुरूपवडेपरलो

कहिदेखताहै॥ तहांस्वर्गलोकेकेसुखभोगताहै॥ देवविमानविखकीडाकरताहै॥ भो
गोंकोभोगकरसंसारविषउपजताहै॥ बहुरूपभ्रमकाकेकर्मकोंप्रापतिहोता
है॥ जैसेमार्गचलनेकोंग्रामाएजाताहै॥ नरककरबहुरूपचलताहै॥ तैसेशरीरकोंए
कबहुरूपभ्रमकाकेक्रमकोंप्रापतिहोताहै॥ तैसीजैसीभावनादृढहोतीहैते
सेहोएभासताहै॥ एहसभजगतमंकल्पमात्रहै॥ संकल्पकेअनुसारहीभासताहै
वासनाकेअनुसारपरलोकभ्रमसुखदुखदेखताहै॥ तहांतनभोगकरबहुरूपसं
सारविषआनएफुरताहै॥ एसीप्रकारसंकल्पकरपरूपभटकताहै॥ जबआत्मा
कीओरआवताहैतबसंसारभ्रममिटिजाताहै॥ जबलगआत्माकोजाननहीआ
वता॥ तबलगअपणेसंकल्पहीकरसंसारभ्रमकोदेखताहै॥ अरजीवजीवप्र
तिअपणीअपणीसृष्टिभासतीहै॥ देवतादेतभ्रमलोकस्वर्गसंभसंकल्पकरि
रचेहुएहै॥ जोताकछूसंसारभासताहै ब्रह्मादिकरुद्रतआदिलेकरसभमनोमा
त्रहै॥ मनकेसंकल्पकररचेहुएहै॥ अरअसतरूपहै॥ जैसेमनोराजगंधर्वनगरस्व
प्नसृष्टिभ्रमरूपहै॥ तैसेएहजगतभ्रमरूपहै॥ सभजीवोंकीअपणीअपणीसृष्टिहै॥ ओ
रकीसृष्टिआहनहीजानताअरउसकीसृष्टिकोउसराननहीजानता॥ कईइष्टहोती
भासतीहैकोईलेहोतीजातीहै॥ जैसेपुरवलअवरदेशकोजानताहै॥ तैसेजीवदेह
कोत्यागकरपरलोकजाताहै॥ सरूपविषआवरणजावरणअहंतेकल्पनाकोमन
हीकेवलमनामात्रअपणाआपविषउपस्थितिहै॥ जगतभीरहीहै॥ हेरामजीएहवि
श्वभीआत्मरूपहै॥ जैसेमनकाचमत्कारहोताहै॥ तैसाविषआत्माकाचमत्कारहै॥
अरजोनेत्रोंएभासताहैसोभीआत्माहै॥ अभासआत्माविनानहीहोता॥ जैसेएपवि
त्रमधुरताहोतीहै॥ अरसचेविषवचनताहोतीहै॥ तैसेआत्माविषविश्वहै॥ जोक
छुदेखीताहैसर्वाणकरीताहै जोस्पर्शकरसगंधलेवेसोसभआत्माहीजानो॥ अप
णाजोएनकेजाननेवालाहैअनभवरूपतिसविषउपस्थितिहो॥ एहीआग्रचित्तअह
(काल)भासताउअनभवरूपावालउपस्थितिहो॥ हेरामजीएहविश्वसंवतरूपहै॥ अरसंवत
हीविश्वरूपहै॥ जबसंवतबाहरिमुखहोएकरसमलतीहै॥ तबजाग्रतकोदेखताहै
अरजबअंतर्मुखहोएकरसमलतीहै॥ तबस्वप्नहोताहै॥ जबअंतरहोजातीहैतब
सखपतिहोतीहै॥ संसारकोसतजाणकरजोरसमलतीहै वाहरिमुखहोएकरतब
जोग्रतजगतहोताहै॥ जबअंतर्मुखरसकोलतीहै॥ तबउ(नमुनाअवस्था)होतीहै॥ अरजोम
नभ्रहोताहै॥ अरसकोलकरजोउपस्थितिहोतीहै॥ तबतरअवस्थाहोतीहै॥ एपद
अलतेरसकीसत्ताजातीरहे तबतुरीआपदहोताहै॥ जोएसकोजानणापुरताहै ए
चलतेरसकीसत्ताजातीरहे॥ हेरामजीएहविश्वसंवतमात्रहै॥
हपदार्थदएहनहीएहनष्टहोवेतबतुरीआपदहै॥ हेरामजीएहविश्वसंवतमात्रहै॥
जबसंवतफुरणानष्टहोवेतबविश्वदेखीनहीजातीजैसेसप्रकेदशाअकालप
दार्थजागतेमिथ्याहोतेहै॥ तैसेएहजाग्रतजगतभीमिथ्याहै॥ अरजीवजीवप्रतिअ
पणीअपणीसृष्टिहैतिसविषआपभीकछुकणपवआहै॥ तातेउदासीहोताहै॥ जे
वएसअहंकारकोत्यागकरअपणास्वरूपविषउपस्थितिहोवेतबविश्वकछुनहीं॥
२२४॥ इतिश्रीसिष्टिनिर्वाण क पु पा नेनाममसर्गः॥ वसिष्टउवाच॥ अं
हेरामजीअकाशरूपहैएहसंकल्परूपसृष्टि॥ अरसंकल्पभीअकाशरूपहै॥ अकाश
अरस्वर्गविषभेदककछुनहीं॥ जैसेपवनअरउसस्पंदविषभेदनहीं॥ अरकैसीसृष्टि
होहहि॥ जोअनेकहैपदार्थपरस्परकरिगाकीतीनेनहीअववस्ततएहविश्वभीआत्मा
काचमत्कारहै॥ अरआत्मरूपहै॥ जोआत्माहीहैतोरागकिसविषकरीअ॥ चेतनता
तविषकोदृष्टअहंउपस्थितिहै॥ अरएहअवर्जहैजोआत्माकेएतककछुदूसरानही
अरभिंनभिंनसूक्ष्मदृष्टआवतीहै॥ अरनानाप्रकारकेपदार्थभासतेहै॥ हेरामजी
पदार्थपदार्थप्रतिअरजीवजीवप्रतिअपणीअपणीसृष्टिहै॥ एकसृष्टिअसीहैजो
तिनकासंकल्पएकदृष्टआवताहै॥ एसृष्टिअपणीअपणीहै॥ अरएकअसीहैजो

वा

व॰ म॰ ५

भिंनभिंनपर्णमाननताकर्कैएकहीद्रिष्टिआवतेहे॥ जैसेजलकीबूंदएकठीहोती
हेअरजैसेधूरकेकणकेभिंनभिंनहतेहे॥ अरएकहीधूरद्रिष्टिआवतेहे॥ अरजै
सेनदीविषिमहोएरुतीहे॥ तोएकहीजलहोजाताहे॥ समानअधिकर्णकर्केएक
हीभासतेहे॥ अरएकएकसाथिमिलतिभीहेपरनहीमिलतेजैसेखीरसमुद्रविषे
खिलडालीएतौमिलजातनही॥ तैसेएकसंकल्पअैसेहेजोअरसाथनहीमिलते॥
जैसेएकसूर्जकाप्रकाशहोए॥ अरएकदीपककाप्रकाशहोए॥ अरएकमणिकाप्र
काशहोए॥ तबतीनोभिंनभिंनद्रिष्टिआवतेहे॥ अरएकनेसहोतेहे॥ तैसेएकसृ
ष्टीएकहीभासतीहे॥ अरभिंनभिंनहोतीहे॥ अरएकएकहीहोतीहे॥ अरभिंनभिं
नद्रिष्टआवतीहे॥ हेरामजीएतेसिष्टजोमतेरताएकहीहेसोसर्वकेअधिष्टानविषेस
वनकरकेएकताउत्पतिहोतीहे॥ अरएकएकोटिलीनहोजातीहे॥ जैसेजल
केबुदबुदेतरंगफेनउतेउपजउपजकरलीनहोजातेहे॥ अधिष्टानजोकातिहे॥ का
हेतेजोअधिष्टानतेएतभकछुनही॥ अरब्रह्माआत्माआदिकजोपदार्थहे॥ सोभीफुर्णे
विषेरूपेहे॥ जबलगफुरणाहेअर्थकीभावनाहे॥ तबलगभासतेहे॥ जबफुरणाअर्थकी
भावनानिव्रतहूएतबकोउनभासेगा॥ केवलसत्यचेतनमात्रहीशेषरहेगा॥ व
हरूपसंसारकाभावकिसीठउरनहोवेगा॥ जैसेजबलगवायुचलतीहेतबलगगंध
नीतीहेजोवायुहे॥ अरगंधभीजाणीतीहेवायुकेजोसुगंधआएअथवादुर्गंधआ
एअवि॥ अरवायुजबचलनेतेरहतहोहेतबभासतीनही॥ अरगंधभीभासतीन
ही॥ तैसेजीजबफुरणानिव्रतहूआतबसंसारअरसंसारकाअर्थदोनोनहीभास
ते॥ अरफुरणेविषेजीवजोवशलेअरणीअपणीअसिष्टहे॥ तिमसिष्टिविषेसत्तासम
नवृत्तएस्थितिहे॥ अरसर्वकाअपणाआपहोएकरएस्थितिहे हेतभावकोर्क
दाचित्नहीप्रापतिभएआ॥ हेरामजीतातेअैसेजाणजोअकाशभीआत्माहे॥ प्र
थवीभीआत्माहे॥ जलभीआत्माहे॥ अग्निआदिकसर्वपदार्थआत्माहीहे॥ जैसेजा
ण॥ अथवाअैसेजाणजोसर्वात्मथ्याहे॥ एनकासाखीभूतसतहे॥ अैसाहीअपणा
आपविषेएस्थितिहे॥ एतरनहीउसीब्रह्मविषेअनेकसमेरअरसहाचएस्थि
तिहे॥ अरअैसअसीभावभीआत्माविषेएस्थूलताकेनमिनकहेहे॥ वास्तवते
नहीजणावणकेनमिनकहेहे॥ आत्माएकरसहेहेरामजीअैसापदार्थकोउन
हीजोआत्मसत्ताबिनाहोवैजिसकौमनजाणीताहेसोभीआत्माहे॥ अैजिसको
असतकहीताहे॥ सोभीआत्माहे॥ आत्माविषेजैसेसतकापर्णाहेतैसेअसतकाफुर्णा
हे॥ फुर्णादोनोकातुल्लेहे॥ जैसेस्वप्नविषेएकसतजाणीताहे॥ एरएकअसतजाणी
ताहे॥ जोएडीअड्केविषेहोतेहे॥ तिनकोसतजाणीताहे॥ अरकाशफुलसमकें
सिंगकोअसतकहीताहे॥ सोसर्वअनभवरूकरफुरेहे॥ तातेअनभवरूपहे॥ अरअैसाप
दार्थकोउ नही जोआत्माविषेअसतनही॥ जोकछुभासतीहे॥ सोफुरनेकरसर्वरूप
हे॥ सतकिआअरअसतकिआसभकूठहे॥ स्वप्नेकेसतअरअसतेकोनिआए॥ जोअनभ
वकर्केसिद्धहे॥ सोसर्वसतहे॥ अरसतअनभवतेएतरहेसोसमअसतहे॥ हेरामजी
अैसेगुणातीतपरमात्माविषेएस्थितिहो॥ हेरामजीभूतभविषवर्तमानतीनोकालइ
विषेजाननवानप्रभवसमहे॥ अरदशोदिशाअकाशजलअग्निप्रथवीइत्यादिकपदार्थ
सर्वआत्माहैद्रिष्टआवतेहे॥ तिसकोआत्मातेएतरककछुनहीभासता॥ वेद्रमाताअ
रसूजैसेसर्वआत्माहे॥ एहविश्वअकाशरूपहे॥ अरसबधनिमैसेहे॥ अकाशविषेअकाश
एस्थितिहे॥ एतरकछुनही॥ अरजोएतरतेतरतापभासेसोमिथ्याजाण॥ भ्रमकर्केसि
द्धहूएहे सतकछुनही अरजोपरमार्थकर्केदेखतोसर्वआत्माहे॥ ५५॥ इतिश्री
श्य क प्र पाद ना म सर्गः॥ वसिष्ठ उवाच॥ सोहेरामजीएहजोविश्वहेसोसम
भ्रमसानहे॥ जैसेस्वप्नेकीसिष्टनानाप्रकारदेखीतीहे॥ तिमविश्वसेनाबहुतप्रकारकी
द्रिष्टआवतीहे॥ अरवायुचलतेहे॥ इत्यादिकप्रगटभासतेहे॥ आत्माविषएनकाहै

पअबेदेखीणाअरमानताणसर्वदिअरअर्थकोजानही॥ जगततेनेरहतेहे॥ अरजगततेरू
पभानहोताहे॥ अहंताअवंतताआदिकअरतेरामेराआदिकजेताकछुभासताहे॥ सो
सभरूपवतेहे॥ भ्रमकर्केसिद्धहूआहे॥ सर्वकाअधिष्टानहेसोसतहे॥ सर्वतिसीवि
खकल्पतेहे॥ अरजोअनभवकरदेखोअतबसर्वआत्मसरूपहे॥ एतबदेखोअतोकछु
नही॥ जैसेस्वप्नकेदेशकालपदार्थसर्वअर्थकाभीभासतेहे॥ तोभीमिथ्याअसत
हे॥ तैसेएहविश्वभ्रमकर्केफुरतीहे॥ उसकीअपछाकरहोहतेहे उसकीअपछाकरदे
हअहेहे॥ अरदेहोतोनहीजोहेसोआत्माहीहे॥ रामउवाच॥ हेभगवनतुमदकहाजोत
आदिअहेयुजंतअरअहेआद्धिर्वजनमवेस्वप्नसेनाकीनिआएमिथ्याहे॥ अरअनभव
देखीअतोआत्मरूपहे॥ तनाहमस्वप्नकीसेनाविषेहे॥ अथवाहमातअहेआत्माहेसोक
हहू॥ वसिष्ठउवाच॥ हेरामजीअनात्मदेहादिकोविषेअहंभावनाकरणीजोमेहोता
स्वप्नसेनाकेतुल्लहे॥ अरजोअधिष्टानविषेदिष्टातेरहतअहंकारतेरहतअहं॥ भावना
करणीचिनमात्रविषेतबआत्मसत्रूपहे॥ हेरामजीतेआत्मरूपहे॥ अरएहविश्वसतभी
नहीअरअसतभीनहीजोअधिष्टानरूपकरदेखीअतोआत्मरूपहे॥ अरतोअधिष्टान
तेरहितदेखीअतबमिथ्याहे॥ एहअधिष्टानसत्यहे॥ चिततेरहितचिनमात्रहे॥ अ
परंब्रह्महे॥ अनंतरूपहे॥ तिसविषेअज्ञानकर्केद्रिष्टादेखीतीहे॥ जैसेअसमिकद्रिष्टाकर्के
सिपीविषेरूपादेखीअतिहे॥ तैसेअज्ञानीआत्माविषेविषीकोदेखीतेहे॥ हेरामजीद्रि
ष्टाअवचारतेसिद्धहे॥ विचारकर्केएतकछुवस्तनहीहोती॥ अधिष्टानहीसतहोताहे॥ जि
सेकआश्रेकल्पतहे॥ जैसेसिपीकेजाणेतेरूपकीबुधिजातीहे॥ तैसेआत्माविचारतेवि
बुधिजातीहे॥ जैसेएबनकर्केसमुद्रविषेचक्रतरंगउपजतेहे॥ अरबसतेतेभासतेहे॥ अरवि
चारकीएतेचक्रहूकेभासणाविषेभीजलबुधिहोतीहे॥ तैसेआत्मरूपीजलविषेमन
केफुरणाकरविश्वरूपीचक्रउठतेहे॥ विचारकीएततेतापमनकेफुरणेविषेभीआत्मरूप
भासेगा॥ विश्वरूपीचक्रनभासहिगा॥ भ्रमनिव्रितहोजावेगा॥ जावस्तफुरणाविषेउपनी
हे॥ सोअज्ञानकौनिवृतहोजातीहे॥ पहल॥ बन्धअज्ञानकरउपनीहे॥ अरज्ञानकरलीनहो
जावेगी॥ तातेविश्वभ्रममात्रहेजाण॥ रामउवाच॥ हेभगवनतुमकहाजोइत्याद्रिब्र
ह्माआदिकरुद्रपरजंतउत्पतकरीना अरसेचारकोपरजंतसर्वविश्वभ्रममात्रहे॥ अरसे
जाननेकरकिआसिद्धहोताहे॥ एहतोप्रतखदेखदाएकभासतीहेजोइहदेहेतीहे॥ वसि
ष्ठउवाच॥ हेरामजीजोककछुदेखताहेसोसर्वआत्मरूपहे॥ एतरकछुनहीसमिकदि
ष्टिकर्के॥ अरअसमिकदिष्टकर्केजगतहे॥ तोद्रिष्टकाभेदहे॥ समिकअसमिकदेखणे
काहे॥ अधिष्टानजिकातिहे॥ जैसेएकजेवडीपडीहोए॥ अरअंधकारकीउपाधकेआ
समिकदेखणेतेसर्पहोभासतीहे॥ अरभेदाएकहोतीहे॥ जोप्रकाशकरसमिकप्रकार
देखीअतोजेवडीहीभासतीहे॥ तैसेजोआत्माकोजानताहे॥ तिसकोद्रिष्टाभीआत्मरू
पहे॥ अज्ञानीकोविश्वभासतीहे॥ अरदुखपावताहे॥ जैसेबालकसूरखअपणापछा
वेविषेवेतालकल्पकरभेमानहोताहे॥ अपतानजानोतकरदुखपावताहे॥ जोजा
नेमराहीपछावाहेतोभेकिसनमिलपावे॥ हेरामजीअपणाहीसंकल्पकरस्वाववधाए
मानहोताहे॥ जैसेतुरणाकीटअपणाकोएस्थानबणाएकरस्वावभीमेदलोती
है॥ अरवीचहीफसाएमानहोतीहे॥ तैसेअनात्माविषेअहंप्रतीतकरताहे॥ अरआ
पहीदुखपावताहे॥ अरआपहीसंसारीहोताहे॥ अरआपहीब्रह्महोताहे॥ जबद्रिष्टाकी
आरफुरताहेतबसंसारीहोताहे॥ अरजोसत्रूपकीओरआवताहेतोब्रह्माआत्माहीहोता
हे॥ तातेजोतरीएछाहोएसाएकर॥ जोसंसारीहोवणेकीएछाहोएतोसंसारीहोइ
हे॥ अरब्रह्महोवणेकीएछाहोएतोब्रह्महोए॥ अरजोमेरेपासहपूछेतोद्रिष्टाअहंकार
कोत्यागकरआत्माविषेएस्थितिहोविश्वभ्रममात्रहे॥ एहीउपदेशहेजोसंकल्प
मात्रसंकल्पकोकाटडु॥ जबवाहजनेअनमैविषेआतेवभ्रमहीभासेगा॥ अरद्रि

शकी कलना मिटि जावेगी। काहे ते जो आगे भी नहीं॥ हे रामजी सत वस्तु आत्मा है
अनेक यत्न कर रहित तौ नाश नहीं होता॥ अरु जो असत अनात्मा है। तिसके निमित्त यत्न
करी अहित तौ भी सत नहीं होता॥ जो सत वस्तु है तिसका नाश नहीं॥ जो असत है तिस
की स्थिरता नहीं होती॥ असत वस्तु तब लग भासती है॥ जब लग बलो प्रकार स
मा आन नहीं॥ जिसको जब विचार कर देखीए तब नष्ट हो जाती है॥ अविद्या कर स्व
पदार्थ विद्या कर नष्ट हो जाते हैं॥ जैसे स्वप्न का सूर्य पर्वत मत हो वैते तब जागत विषे भी
भासै तो है ही नहीं ताते जागे ते नष्ट हो एजाता है॥ तैसे एह संसार जाने ते आप भासता
है॥ सो स्वरूप के ज्ञान ते नष्ट हो जावेगा॥ अरु जो हमको शंका होती है सो बतावो आत्मा ते पर
रक कछु नहीं भासता॥ सर्व आत्मा ही है॥ एह भी नहीं जाणते जो अज्ञानी है किसी प्रकार
मोक्ष होवहि॥ नहमारे ताए ज्ञान साथ प्रयोजन है न सा कछु होणे सा थ प्रयोजन है॥ काहे ते जो
सर्व आत्मा ही भासता है॥ हे रामजी जब लग चेतन है तब लग मरता है॥ अरु जन्म भी पा
वता है॥ अरु जब जड होता है तब शांत को प्राप्त होता है॥ अरु मुक्ति होता है॥ चेतन क
हो अरु दृश्य को ग्रहण करणा एसी कर जन्म मरण बंधन आवता है॥ अरु जब दृश्य का फु
रणा जड रूप हो जावे तब मुक्ति होता है॥ एसको होवणा ही दुख है न होवणा मुक्ति है॥ अह
कार को होवणा बंधन है॥ अहंकार का नष्ट होवणा मुक्ति है॥ ताते इस दुख ते न होवणा ही है
जे अहंकार का त्याग करणा॥ अरु चेतन चुन ब्रह्म अपणे आप विषे स्थित होवणा॥ जि
सको संसार की सत भावना है तिसको संसार रहा है॥ ब्रह्म नहीं॥ अरु जिसको ब्रह्म भा
वना है। एह तिसको ब्रह्म ही भासता है॥ हे रामजी जब पाताल जावे अरु आकाश उपर वनस्थ
ली फिर देशांतर फिर अरु काष्ठ विषे देवता अरु के एस्थान फिरै तौ भी सुख कछु न
पावेगा॥ अरु आत्मा का दर्शन कहे अरु पावेगा॥ काहे ते जो अनात्मा विषे अरु है॥ का
की थते सुख कहुं नहीं॥ अरु जो आत्मदर्शी होए कर देखे तो सर्व आत्मा ही भासेगा॥ ताते
सर्व संकल्प को त्याग कर॥ आत्मा विषे स्थिति होना हृए ही सुख है॥ ११६॥ इति श्री वि
ले नाम सर्गः॥ वशिष्ठ उवाच॥ हे रामजी एह संसार संकल्प मात्र है॥ अरु त्र
छे है॥ अरु पर्वत नदी आदि दृश्य काल सर्व भ्रम कर सिद्ध है॥ जैसे स्वप्न विषे देश काल
नदी आ पर्वत भासते है॥ अरु है कछु नहीं तैसे अज्ञान रूप निद्रा कर एह संसार भा
सता है॥ हे रामजी जागि कर देखे तो संसार कछु नहीं॥ एसका नाम महा समागम है॥ अ
रु सम विषे पर्वत आदिक जो भासते है॥ सो कछु मल की निआ एको मल है॥ जैसे कमल
के मलना विषे जल न कछु नहीं॥ तैसे एह को मल निवर्त होने है॥ अरु अकार जो भास
ते है भूत प्राणी सोए न को एस्थूल दृष्टि है अकार ही को देखते है॥ जैसे पवन को च
लणे कर जाणीआ जाता है॥ अरु चलणे न रहते होती है॥ तब सरब को गमन ही
जो निराकार को जाणे॥ तैसे भूत प्राणी अकार को जाणते है॥ एसा विषे जाण स्थिति
है निराकार तिसको नहीं जाणते॥ जैसे पवन फुरता है तौ भी वही है॥ अरु जब ठहर
जाता है तौ भी पवन ही है॥ तैसे विश्व फुरती है तब भी आत्मा है अरु अफुर विषे भी आ
ही है॥ ताते विश्व भी आत्म रूप है एतर कछु नहीं॥ जो समदर्शी है॥ ताते विश्व भी आ
त्म रूप है एतर कछु नहीं॥ जो समदर्शी है तिसको फुरणे विषे भी आत्मा भासता है
जैसे एस्पंद अस्पंद रूप पवन ही है॥ तैसे ज्ञानी को सर्व एकरस भासता है॥ जैसे चित्रकार वि
खे पुत्री चतुर्धि बालक कर्ता है॥ तैसे आत्मा विषे जगत बुद्धि अज्ञानी कर्ते है॥ जैसे न
त्र दोष करके आकाश विषे तर्वर भासते है॥ तैसे मन के फुरणे कर जगत भासता है॥
हे रामजी जैसे वायु का रूप कदाचित नहीं॥ तैसे जगत का रूप अत्यंत अभाव है॥ जै
से मृग तृष्णा विषे जल का अभाव है॥ तैसे आत्मा विषे जगत का अभाव है॥ हे रामजी मे
रु पर्वत देवता अरु पाताल नर अरु आकाश पाताल इत्यादिक अनेक ब्रह्मांड एक दे
कर विचार रूपी कुदाल कर खोदे॥ अरु पाछे अरु धती पावे तो भी ग्रहण नहीं होता।

काहे ते जो है नहीं॥ अरु अचार सिद्ध है॥ नग्र के पर्वत जागे हुए चावल प्रमान न
ही रहते॥ काहे ते जो है नहीं॥ भ्रम मात्र है॥ हे रामजी एस संसार की वासना मरसल कुते
है हि॥ ऐसे जो अनात्मदर्शी पुरुष है॥ तिनको ऐसे नाना जैसे लुहार की खलु ते
पवन ते निकसता है॥ तैसे तिन पुरुष हु के श्वास आवते जाते है॥ जैसे आकाश विषे अ
री आ विरथा यत्न आदिक आहे॥ तैसे तिन पुरुष हु का जीवणा विरथा है॥ तिनकी सर्व चे
ष्टा विरथा है॥ अरु तदि आत्म ध्याती है॥ अरु पाणी आप ही ना प्रकट तै है॥ उनकी चेष्टा
दुख की निमित्त है हि॥ हे रामजी एह अपणा अधीन है जो दृश्य को ग्रहण होता है तो मरणा
गी होता है॥ अरु जो अंतर्मुख होता है तो सर्व आत्मा ही होता है॥ अरु एस संसार मि
थ्या है॥ नमस्तु कही अन असत कहीं भ्रम कर के हुआ है॥ अरु काल अरु भविष
तकाल अरु वर्तमान काल विखे बंध होता है॥ अरु अग्नि शीतल है अरु आकाश पाताल
विखे होए अरु पाताल का आविरव होता है॥ अरु तैसे पृथ्वी डोलती है॥ अरु पवन अका
प्रकाश भी होती है॥ अरु बाद रहीं विना मेघ वर्षा करता भी है॥ अरु सकों कंतक मेद खता
हो॥ अकाश विखे हल फिते देखता हो॥ हे रामजी एस विखे अपने कछु नहीं॥ मन करके
सम कछु होता है॥ जैसा मना राजकी आत्मा आगे सिद्ध होता है॥ पर्वत भी विखे आ
मानते फिरते है॥ पृथ्वी विखे भिखक की निआए॥ अरु ब्रह्मा डाडा इते फिरते है॥ अरु व
न निर्त करते है॥ अरु बाद तेल निकसता है॥ अरु मित्र के जब परुष कर्ते है॥ अरु
स्त्रिग परुष गावते है॥ हे रामजी मनोराजने को सम कछु बणता है॥ बइमा की कि
रणी माथि पर्वत भस्म होते भी मानीते है॥ एसमा किया अचरज है॥ एह संसार भी ते सेम
नोराज है॥ तौ अससे वेगह ताते एसको सत्न मानीता है॥ अरु आगजो कहवा तेल आदि
कति सको सत नहीं जानीता॥ काहे ते जो असा विखे भिद सं लगा है॥ अरु होना तुल ही है
हे रामजी जिनको सत कहीता है॥ अरु जिनको असत कहीता है॥ सो आत्मा विखे दो
नानाही॥ अरु एह जापदा थ तेर ता एभासता है॥ तब अग्नि शीतल आदिक भी सत है॥ अ
रजो एह मिथ्या भासते है तौ ओह भी मिथ्या है॥ तौ अससे वेग अरु सिद्ध संवेग का भेद है॥
तौ असे वेग डूरि भए आत वस भ मिथ्या जानीते है॥ तैसे स्वप्न जागि आत तब स्वप्न को मि
थ्या कहीता है॥ अरु जागत को सत्न कहीता है॥ पर दोनो मनोराज है॥ हे रामजी चे
तन कछु अकार दृष्टि आवते हैं॥ सो मिथ्या जान॥ न तूं है न मै हौ न एह जगत है॥ परमा
त्म सत्ता जिनकी तिहै॥ तिस विखे अहं तेका उथान कोई नहीं॥ केवल प्रशांत रूप है॥ अरु नि
राकार स्वरूप है॥ अरु आकाश रूप है॥ जिस विखे दृश्य को ई नहीं॥ अपणे आप विखे स्थि
ति है॥ जैसे बालक चित्त का के हस्ती घोडा रूप मानि खिलावता है॥ अरु नाम कल्पता है
एह राजा है एह हस्ती है॥ एह घोडा है सो भिन्न काल ए तर कछु नहीं॥ अरु बालक के मन
विखे अनेक नामे दृष्ट होते हैं॥ भिंन भिंन ते से बालक रूप मन नाना प्रकार संसार आ
कल्पता है॥ अरु आत्मा ते एतर कछु नहीं॥ ताते भेके सका कर्ता है॥ तं निर्भ हो॥ ते
रास रूप सुध है अरु निर्भ है॥ अरु अविद्या तिसके कारज ते रहित है॥ तिस विखे एस्थि
हो॥ एह संसार लेरफुरणे के बहुआ है॥ आत्मा न सत कहीए न असत कहीए॥ न जडू क
ही ए न चेतन कहीए न प्रकाश है न अंधकार है न शून है न अशून है॥ अरु एस की जो ति
भाग के है॥ एह जड है एह चेतन है सो एस जीव के जगावणे के निमित्त कहे है॥ आत्मा
विखे वासना सो मिथ्या कोई नहीं॥ केवल आत्म तत्व मात्र है॥ दृश्य की कल्पना त्याग कर अ
न्मा विखे एस्थिति विन होवै॥ ब्रह्मा आदि एस्थावर पर्यंत सर्व कल्पना मात्र है॥ एस
विवेकि आ आश्चर्य करणी॥ संसार के भाव अभाव दोनों तुल है॥ पुरना जैसा भाव का
हैते सा अभाव का है॥ सरूप विखे दोनो की तुलता है॥ अरु विवहार काल विखे जैसा है
ते सा ही है ताते स्वरूप विखे एस्थिति हो कर देखने का अभाव है॥ सभ मन के फुरणे विखे

वा

वं°
म° ७

है॥११७॥ इति श्री वि प्र म नेनं नाम सर्गः॥ राम उवाच॥ ॐ हे भगवन भूम
का का प्रसंग एह चलि आया तिस विखे सात भूम कहा सो मैं जाणि आ अब ति भू
म का विस्तार करके कहो अर जो योगी का शरीर जब छूटता है अर स्वर्ग के भोगों को भोग
कर जब फिर गिरता है तब वह रूप उस की किआ अवस्था होती सो कहो॥ वसिष्ठ उवा
च॥ हे रामजी जिस जोगी को भोगों की वांछा होती है अर भोगों को भोगता है जो उस
को अवर भी भोगणों की एछा होती है तब पवित्र श्रीमान के ग्रह विखे आण प्रा
पति होता है मध मंडल मानव लोक विखे॥ अर जो भोग की बांछा अब रति
स को नहीं होती॥ तब ज्ञानवानों के ग्रह विखे आए जन्म लेता है॥ केतेक काल उप
रांत तिस को पिछला संस्कार आए फुरता है॥ तिस स्मरण करके आगे होता जाता है
आत्मा की ओर॥ जैसे कोऊ पुरख लिखता लिखता इआ सोए जाता है॥ जब जागता है तब उस
लेखे को देखकर बहुड़ आगे लिखता है॥ तैसे ओह जोगी पूरब ले अभ्यास को ए
करदिन दिन बधावता जाता है॥ अब अज्ञानी अड़ का संग नहीं करता॥ जो भोगों के
सन्मुख हैं अर आत्म मार्ग ते बेमुख है॥ तिन का संग नहीं करता॥ राग द्वेख अर भो
गों की त्रिस्ना एह सभ भाव कति सते छूट जाते हैं॥ अब पुण्य ते को प्रापति होता है॥ कोम
लता अर दए आते आदिले शुभ गुण सुभाव को आए प्रापति होते है तिस को॥ हे राम
जी एस निश्चे को पाए कर वर्न आश्रम के धर्म को जथा शास्त्र करता हुआ संसार समुद्र
के पार निकसि जाए प्रापति होता है॥ पार नहीं प्रापति भए आनि के दिखा पति भए
आए भेद है॥ साती सरी भूमका है॥ बहुड़ रूप मात्र को नहीं प्रापति होता है॥ जैसे चंद्र
मा की किरणा कदाचित गरमी को नहीं प्रापति होती आ॥ तैसे ही तीसरी भूमका वा
ला संसार रूप गर्त विखे नहीं गिरता है॥ हे रामजी एह सते ही भूमका ब्रह्म सरूप
है॥ पर एता ही भेद है जो तीन भूमका जाग्रत रूप भया है॥ अर चतुर्थ प्रभृ स्वप्न
है॥ अर पंचम सुखोपति है॥ अर छठी तुरिआ है॥ सप्तमी तुरीआतीत है॥ हे रामजी
प्रथम तीन भूमका विखे संसार की सत्यता भासती है॥ ताते जाग्रत कहीए॥ अर चौथी भू
चारो विखे संसार का अभाव है॥ ताते जाग्रत ते विलक्षण है॥ जाग्रत विखे घटपटादि आ
दिक सत भासते हैं॥ घट घट ही है पट पट ही है॥ अनथा नहीं अथवा अपणा कारण सि
द्ध करते हैं॥ ताते अपणे काल विखे जिके तिहीं है॥ एसी प्रकार सर्व पदार्थ है॥ एस्थाव
र जंगम को जाणता है॥ नाम कर थ ग्रहण करता है॥ अर रिदे विखे राग द्वेष नहीं धार
ता जो विचार करके लख जाते है॥ जो संसार का अति अंत अभाव नहीं जाणिआ अर ब्रह्म
सरूप भी नहीं जानता॥ काहे ते जो सरूप का साक्षात्कार तिस को नहीं भइआ। जब सरू
प को जाणि तब संसार का अति अंत अभाव होता है॥ अर एन तीनो भूमका का करत छता
होती है॥ नष्ट नहीं होता। एन को पाए कर जो प्राणी र छूटता है॥ तब अवर जन्म विखे
तिस को ज्ञान उपजता है॥ अर दिन दिन विखे ज्ञान परायण होता है॥ तब बढ़िड बुधि हू
ए तब ज्ञान उपजता है॥ जैसे प्रथम बीज ते अंकुर होता है बहुड़ रूप टास निकसते है॥ ब
हुड़ फिर फूल फल निकसते है॥ तैसे प्रथम भूमका ज्ञान का बीज है। दूसरी अंकूरी है॥ ती
सरी नाप्रा है॥ चतुरथ ज्ञान की प्रापति होती है। सो फल है॥ प्रथम तीन भूमका वा
ला धर्मात्मा होता है॥ पुरखहू विखे स्रेष्ट है॥ से श्रुकाल वखाणए है जो निरअहंका
र अर असंगी अर धीरजवान होता है॥ जिस की बुधि विखे अहं की त्रिस्ना दूरि भए है
अर आत्म पद की एछा भए है॥ सो पुरख स्रेष्ट कहीता है॥ अर प्रकृत आचार विखे ज
था शास्त्र विचरता है॥ शास्त्र मार्ग ते उलंघ कर कदाचित नहीं वर्तता॥ शास्त्र मारग की
मर्यादा कर अपणे प्रकृति आचार विखे विचरणा श्रेष्ट पुरख है॥ राम उवाच॥ हे भगवन
पाछे तुम हूं कहा जो जब जोगी पुरख शरीर छोडता है॥ तब एक मुहूर्त विखे तिस को जं

गवतीत होता है॥ जैसे जन्म ते आदि लैत प्रने तै जैसी किसी को भावना होती है तैसे
आगे भासता है। सो एक मुहूर्त विखे जगत कैसे भासता है सो कहु॥ वसिष्ठ उवाच॥
हे रामजी एह जगत जानीता कोल भासता है॥ सो ब्रह्म सरूप है॥ पर तरक करनी॥ सतो
समान ही है॥ जैसे पद्म विखे मधुरता है तैसे ब्रह्म विखे जगत है हि॥ अर जैसे तिल विखे
तेल है तैसे आत्मा विखे जगत है॥ जैसे सर्व विखे तीक्षणता है तैसे ब्रह्म विखे जगत है
जैसे तिल्ल हूं विखे तेल कहूं जो निहोता है कहूं अव पाप रहता है॥ तैसे हो ब्रह्म विखे जगत
कहूं सत कहूं जरूप कहूं अजड़॥ कहूं शुभ कहूं अशुभ कहूं स्वर्ग कहूं नरक कहूं मितक
हूं जीवत॥ ब्रह्मा आदिक काष्ट पाखाण तक भाव अभाव रूप होता है॥ सो सत असत ते विलक्षण
है॥ आत्म सत्ता ते सर्व सति है॥ अर भिन्न कर देखीए तो असत है॥ हे रामजी जिन को मन
जानीता है जिन को असत जानीता है॥ जो पृथम भी आदि पदार्थ सत भासते हैं॥ अर अ
काश फूल आदिक असत भासते हैं॥ सो दोनो तुल्य हैं॥ जो विदिमान पदार्थ हू को सत मानो
अतो आकाश फूल भी सत मानो अ॥ जैसे स्वप्न विखे कए पदार्थ सत भासते है॥ अर के
ए असत भासते होहि॥ तैसे जाग्रत विखे भासता है॥ फुरना दोनो का समान है॥ जैसे सत
त पदार्थ हूं का फुरणा हूं आ तैसे असत पदार्थ हूं का फुरणा हूं आ॥ अर जागे ते सत अस
त दोनों का अभाव हो जाता है॥ ताते एह विश्व भ्रम करके सिद्ध हुए है॥ जैसे पवन के चे
ले विखे चक्र आवर्त उठते हैं॥ तैसे फुरने करके संसार भासता है॥ एस की भावना त्याग करु
सरूप विखे स्थिति होवहु॥ अर पाछे जो तुम प्रश्न कीआ जो एक मुहूर्त विखे जगत के
से भासता है तिस का उत्तर एह है॥ जैसे किसी पुरख को स्वप्ना आवता है हि। तब एक
छिण विखे बड़ा काल भी तिस आ भासता है॥ अर अवर का अवर भासता है॥ तो अस्व जो कि
आ है॥ मोह ते भ्रम कछु अन्यथा होता है॥ भ्रम करके कछु का कछु भासता है॥ हे रामजी
जो पुरख सोए आहे तो [illegible] ही होता है॥ तिस विखे नाना प्रकार जगत भासता है
भ्रम करके॥ तैसे सरूप के प्रमादि करके एह भ्रम देखीता है॥ सरूप के जाणे बिना भ्रम का
अंत कहूं नहीं आवता। ताते अवर प्रश्न ते किसन मिलत करता है॥ एक चित को एस्थिति क
र देखन को उ संसार ही भासेगा। न मिति ही भासेगी। न कोउ बंध ही भासेगा। न को
ऊ मुक्ति ही भासेगा। केवल आत्मा ही भासेगा॥ अर जब संकल्प फुरता है तब आप को बं
ध जाणता है॥ संकल्प ते रहत मुक्ति जाणता है॥ अविद्या कर आप को बंध जाणता है॥ वि
द्या कर आप को मुक्ति जानता है॥ अर आत्मा सरूप जिकाति सो है॥ न बंध है न मुक्ति है न वि
द्या न अविद्या है॥ केवल शांत रूप है॥ ताते सर्वदा सर्व अर सर्व ठावल ब्रह्म ही है॥ हू मनाक
छ नहीं॥ हे रामजी जब सरूप की भावना हूई तब संसार की भावना जाती रहेगी॥ एह स
वेद सर्व कलना विखे है हि॥ एह पदार्थ है एह नहीं आत्मा विखे कोऊ नहीं॥ अर आत्मा के
आभासे सर्व सर्व वादि फुरते हैं॥ अर आत्मा फुरने अफुरणे विखे सम है॥ काहे ते जो इस राग को
आभासे ... तैसे विस्व चित का चमत्कार है॥ अभ्या
स नहीं॥ जैसे पवन फुरने अफुरने विखे एक ही है॥ हे रामजी जो ब्रह्म सत्ता ही है
आदि चीटी पर्जंत ब्रह्म सत्ता अपणा आप विखे एस्थित है॥ सो किआ है एह जगत किआ
है एह प्रश्न किआ है॥ अकाश किआ है पृथवी किआ है॥ सो किआ है एह जो ब्रह्मा आदिक चीटी प
र्जंत॥ एक मन को एस्थिति कर देखे जो ब्रह्मा आदिक के भासे हैं॥ सो सइ सर्व
है॥ एह प्रश्न बणाते हीन है॥ एक मन को एस्थिति कर देख जो ब्रह्म भ्रम करके भासे हैं॥ तू स
जेत कछु भी पदार्थ भासे तब प्रश्न करीअ॥ ताते एह पदार्थ भ्रम करके भासे है॥ तू सर्व
ड्रमा भासता है॥ तैसे जगत भ्रम करके भासता है॥ रूप अवलोक मन मकार एलक जा सब
दि है॥ सो कलना विखे फुरे है॥ रूप कही अदृष्ट अवलोक करीअ एंद्रीआं॥ अर मन का
रक ही अ मन का फुरणा सो सर्व मिथ्या है॥ आत्मा विखे कोऊ नहीं॥ हे रामजी अका
पृ आदिक जो पदार्थ है॥ सो भावना विखे एस्थित हुए है॥ जैसी भावना करीती तैसा

पदार्थसिद्धहोताहै॥ अरुदिसतिआवताहै॥ जबसंसारकीभावनाअदृष्टजावैतबपदार्थ
काआभासेनहै। हेरामजीसबपदार्थनिविखेभीएसकाअभावहोजाताहै॥ तौनरीआ
पदमोकेसभानहोवे॥ जबसत्रूपतेगिरताहै॥ तबएसकोंसंसारभानहोताहै॥ अ
संसारविखबास्त्रोककेउचटीजउकीनिआपफिरताहै॥ परमादिकेरूपरमादिक
हीं॥ अजेजामरूपतेउतरकरआनात्माविखेआतमअभिमानकरणीजेमैहोसो
अज्ञानहै॥ तिसकरदुखपावताहै॥ जबअज्ञाननष्टहोयजावैतबसंसारसबदुअर
तिसकेअर्थकाअभावहोजाताहै॥ अहंकारतेसंसारहोताहै॥ संसारकाबीजअहं
काररहीहै॥ अहंकारकहीयेअनात्माविखेआत्माअभिमानकरणा॥ हेरामजीआत्मा
सधहै अहंकेउठावनतेरहतहै। केवलप्रशांतरूपहै। अरुविस्वभीउहीरूपहै॥ एसकी
भावनाविखेदुखहै॥ एहसबतशक्तिआत्माकेआश्रितफुरतीहै॥ जैसेतेलकीबूंदज
लविखेडारीऐतौचक्रकीनिआपफिरतीहै॥ तैसेसबतशक्तिआत्माकेआश्रेफुरती
है॥ अरुब्रह्मएकसत्रूपहै॥ तिसकासभावऐसाहै जैसेमोरकाअंडाहै॥ अरुतिस
काबीरजएकरूपहै॥ अरुअपणेसभावकरकैबीरजहीनानाप्रकारकेरंगकौंधारता
है॥ तौभीमोरतेएतरकछुनहीं। तैसेविस्वसबतसभावकरकैनानाप्रकारोंकोंपावता
है॥ ऐसेदिष्टिआवताहै॥ अरुआत्मातेएतरकछुनहीं। आतमसरूपहै॥ समिकदृष्टीकों
नानाप्रकारोंविखेएकआत्माभासताहै॥ अरुअज्ञानीकोंनानाप्रकारजगतभासता
है हेरामजीब्रह्मरूपीएकशिलाहै॥ जिसविखेत्रैलोकरूपअनेकपुतलीआभासतीहैं
अरुजैसेएकशिलाविखेशिल्पीअनेकपुतलीआकल्पताहै॥ जोएतौपुतलीआपसवि
खेहै॥ सोआसमकेचित्रविखेहैं॥ शिलाविखेहुआकछुनहीं॥ तैसेचितरूपीशिल्पीआत्म
रूपीशिलाविखेपदार्थरूपीपुतलीआकल्पीआहै॥ सबआत्मसरूपहै॥ तातेपदार्थों
कीभावनात्यागकरआत्मा [illegible] ॥ [illegible] मिलावीचहै॥ काहतेजो
ब्रह्महीहै। ब्रह्मतेएतरकछुनहीं। नकोउउपजतानकोउविनसताहै॥ जेकुछहैआत्माही
एकस्थितिहै॥ १७॥ इतिश्री ग भाव त द नामसर्गः॥ रामउवाच॥ हेभगवन्
एससंसारकाबीजअहंकारहै॥ आपएसकापिताअहंकारहुआ॥ तौसंसारमिथ्याअविदि
मानविदिमानजोभासताहै॥ सोभ्रमहुआ॥ जोभ्रमहैतौलोकअरुप्राणअरस्कतअ
स्मितकहतेहैं॥ जोएसकाप्राणीरपिंडाकरकैहोताहै॥ जोपिंडाकरहोताहैतौतुमकिंभ्र
मकरकेहतेहो॥ अरुजोभ्रमहैतौलोकप्राणस्कतसंस्मितकिंपिंडाकरकेहितेहै॥ एस
मेरसंसेकोंभीनाशकरो॥ वसिष्ठउवाच॥ हेरामजीजोमेराकहणाहैसोसतिहै॥ तैसेही
अरुब्रह्मविखेब्रह्मत्वनसभावहै॥ अरुजगतविखेजगतत्वकालत्वणभीउहीहै॥ हेरामजी
आदिजोकचनहुआहै चितशक्तिफुरीहै॥ सोब्रह्माहुआहै॥ तिसविखेमनोराजपदार्थोंका
हुआहै॥ एहअमकाअकाशहैपवनहैएत्यादिकपहकर्तीवहै॥ एहनहींकरनाएत्यादि
कएहसतहेएहफुरहै॥ जबलगमनोराजहैतबलगसबमर्जादाहैऐसेहीहै॥ बहूरू
ब्रह्माविखेऐसाहुआ॥ जोजगतकीमर्जादाकनमितवेदकहताहै॥ जोएहपदार्थशुभहैए
हअशुभहै॥ हेरामजीआत्माविखेहैतकछुनहीं। तौभीमायाजगतकालविखेमर्जा
दाहै॥ तौमर्जादानहोवैतवउरधअर्थअरुउचनीचकवनहै॥ एहमर्जादाभीवेदविखेह
नेतनिश्चेहुआहै जोएहशुभकर्महैएसकोंकीनेतेस्वर्गसुखभोगताहै॥ हेरामजीजैसेवे
दविखेनिश्चेकीआहै॥ तैसेएहपुरखअपनीवासनाकेअनुसारभोगताहै॥ हेरामजीएह
चितशक्तिनेतजोएकरब्रह्मादिककुविखेफुरीहै॥ परउनकोंसदासरूपविखेनिश्चेहै
तातेशोहवंधायमाननहींहोते॥ अरुब्रह्माविश्वरुहउनेएहवेदमालाधारीहै॥ तौजे
साकोउकर्मकरतेसाफलदेतेहै। एहवेदसर्वकीनेतहै॥ हेरामजीजिसपुरखकोंस

सारकीमननताडिडभएहै॥ जैसेसुभअशुभवासनाअनुभकर्मकरतेहैं॥ तैसेहीप्राणीरकौंधारते
है॥ एसविखेसंसेनहीं॥ अरुजोप्राणसुमर्जादाकोंउलंघवर्ततेहैं॥ अपणीएक्षाकरमाण
सीरन्यागकेकालमरुठीहोजातेहैं॥ मृतकविखेजागकरवडेनरककेहुकौंचलजाते
हैं। आत्मज्ञानविना॥ अरुजिनकोंशुभभावनाभएहैजोभोगनरकस्वर्गकोउनहीं
परलोकअरुलोककेभेकोंत्यागकरजोप्राणसुवाहजवर्ततेहैं॥ तेमरकरपवरवि
छुआदिकजनरूपवनकोंपावतेहैं॥ फेरचिरजेउनिकीवासनाप्रगटमतीआहै॥ तब
फेरदुखोकेभागीहोतेहैं॥ अरुजिनकोंआत्मभावनाहूएअरुसंसारकीभावनाहूवि
भए॥ सोप्राणविहतकरअथवाअविहतकरतिसकोंबंधनकेउनहीं। हेरामजीचि
तरूपीभ्रमहैएमविखेजैसेनिश्चेरूपीबीजबोवीताहै। तैसाहीकालकरउगवता
है॥ एसमैसंदेहनहीं। ताजेतआत्मरूपीबीजदीजजासवीताहै॥ ऐसेभावनाकरते
तबपूर्णब्रह्मआत्माभासेगा॥ अरुजिनकोंसंसारकानिश्चेहूआहै। तिनकोंसंसारहै॥ अ
रुजोपुरखधर्मात्माहै तिनकोंभीराजसीवासनाकेअनुसारभासताहै। सोएधर्मात्माप
रुखभीदोप्रकारकेहैं॥ एकसहकामीहहि॥ एकनिहकामीहै॥ जोधर्मकरतेहैंपा
परूपीजोकामनासहितहैतिनस्वर्गकेभोगभोगकरबहुरूगिरतेहैं। अरुजोनिह
कामहैसोईश्वरअर्पणाकरतेहैं॥ तिनकाअंतःकर्णशुधहोताहै॥ बहूरूज्ञानकीप्रा
पतिहोतीहै॥ एहभीसंसारविखेमर्जादाहै॥ जैसाजैसाकिसीकोंनिश्चाहोताहै। तै
साहीसंसारकोंदेखताहै॥ पिडहूकरभीशरीरहोताहै॥ काहेतेजोएहभीआत्मातवि
खेनिश्चाहुआहै॥ जैसाआदिनेतविखेनिश्चाहुआहैतैसाहीहोताहै॥ जोपवनहैसो
पवनहीहै॥ अरुजोअग्निहैसोअग्निहीहै॥ एसाप्रकारकल्पपर्जंतजैसमनोराजहूआ
है॥ तैसेहीएमस्थितिहै॥ जैसेजलनीचेहीकोंजाताहै। तैसेजोआदिकचनहूआहै॥
सोउसविखेनिश्चेहैकल्पपर्जंततैसेहीहै॥ हेरामजीजगतविखेदारविरवताअसमही
है। [illegible]यतहूलेशाककहूआनहै॥ एसजोवनेमिथ्यादेहरचीहै॥ परमार्थतेनि
राकारकेवलअद्वैतआत्माहै प्राणीएसकेसाथहैनहीं तातेजगतकैसेहोवे॥ १८॥
इतिश्री इ गणनामसर्गः॥ वसिष्ठउवाच॥ हेरामजीतेरेप्रश्नपरएकइतिहा
सहै। बृहस्पतिअरुराजेबलकासोश्रवणाकर॥ जबछेकल्पवितीतहूएथेइसमेंप्रा
रब्धकेअरतिसविखेदिनकेजुगविखेराजाबलहोतभएआथा॥ सोकैसाथाशक्र
मोस्मृतथातिसराजाबलसंग्रामदेवतहुअसुरसबकोंजीतकरअपणावसिकीआ
अपनीआज्ञाजिनपरचलाए॥ अरुराजाहूआ॥ अरुएदूकोंभीजीतकरअपणावसिकी
आ॥ अरुसमस्तपराईसृजैतिसकाएकनगरकीनिआपललीआ॥ तबदेवतिअरुहूकें
नरहूएतिसकीआज्ञावली॥ जबसमकोंलेरहिआनबधमेअचारकोंग्रहणकीआ
एकसमेसर्वेसभावेदीहै॥ अरुएहकथावलीजोजन्मकैसेहैअरुमितकैसेहोताहै॥
तबराजाबलबृहस्पतिदेवगुरुशिष्यप्रसनकर्तेभएआ॥ हेब्रह्मणजबएहपुरखमि
तहोताहैतबशरीरतोभस्मीभूतप्राणतेहोजाताहै। बहूरूकर्महूकेफलकैसे
भोगताहै॥ अरुआवताजाताकैसेहै हिप्राणीरविनाशोकहहू॥ बृहस्पतिउवाच॥ हे
राजनएसजीवकोंदेहहैनहीं॥ जैसेमारुथलविखेजलभासताहै अरुहैनहींतैसेए
सकेसाथप्रथीवहै॥ नहींअरुभासताहै॥ एहजीवनजन्मताहैनमरताहैनभस्महो
ताहै॥ नजलकेडूबीहोताहै॥ तबतेतबएहसदाअच्युतरूपहै॥ सत्रूपकेप्रमादितेउ
[illegible]आपकोंमानताहै॥ जोमैएनकोंभोगताहों। अरुमैजन्मिआहों॥ एताकालरहोगा
[illegible]मेरीमाताहैएहपिताहै॥ मैएनतेउपजिआहों॥ बहूरूआपकोंमितहूआजानता
है॥ हेराजनभ्रमकरकैऐसेदेखताहै॥ जैसेनिद्राभ्रमकरस्वप्नविखेदुखीदेखताहै॥ तैसे
अगिआनकरकैएहजीवमानताहै॥ जबमृतकहोताहैतबजानताहैजोमेराशरीरपिंड
हूकरहूआहै॥ अबमैदुखसुखकोंभोगोंगा॥ जैसेस्वप्नविखेअकाशरूपहोताहै॥ तह
वासनाकेकेअपणासाथिशरीरदेखताहै॥ अरुसुखकोंभोगताहै॥ तैसेमैसिकअप

णा साधिषशरीरदेखताहै॥ अरु सुखदुःखका भागीहोताहै॥ अरु परमार्थते एसकेसा
घशरीरभीनहीं॥ तौजन्ममितकेसेहोवै। मनरूपकेप्रमादिककैदेहधारीकीनिआ
एएस्थितिहुआहै॥ तिसदेहसाथिमिलिकरिजेसीजेसीभावनाकर्तीहैतैसाफल
भोगताहैवासनाकेअनुसारजेसीएसकोभावनाहोतीहै॥ तैसाआगेशरीरदेखता
है॥ अरुपंचभूतककेशरीरकौदेखताहै॥ एसप्रकारभ्रमताहै॥ अरुजन्मतामरताआ
पकोदेखताहै॥ जेसेसमुद्रतेतरंगउठतेहै॥ अरुमिटिजातेहै॥ तेसेशरीरभीउपजता
हैअरुमिटिजाताहै॥ मनरूपकेप्रमादकरउपजताविनसताभासताहै॥ एहअसु
नेंहैं जोआत्माजिकानिएस्थितिहै सभावकतिसविखेवासनाकेअनुसारवि
श्वकौदेखताहै। हेराजन विश्वएसकेअंतरएस्थितिहै॥ अरुवासनाकेअनुसारआगे
देखताहै॥ एसजीवविखेविश्वहै॥ अरुविश्वविखेजीवनहीं॥ जेसेतिलदुविखेतिल
है॥ अरुतेलविखेतिलनहीं॥ जेसेसुवर्नविखेभूषणकल्पतहै॥ अरुभूषणविखेसु
वर्नकल्पतनहीं। तेसेजीवविखेविश्वकल्पतहै॥ एसकेआश्रफुरतीहै॥ सोविश्वसतन
हीं। अरुअसतभीनहीं॥ सतएसतेनहींजोचलरूपहै एस्थिरनहीं॥ अरुअसतएसतेन
हींजोविदिमानभासतीहै॥ तातेएसकीभावनात्यागकरएहमिथ्याहै॥ एहदृश्य
भीमिथ्याहैअरुएसकाअनुभवभीमिथ्याहै॥ अरुएसकेजानेनेवालाभीअहंकारजी
वभीमिथ्याहै॥ जिसकोएहदेखताहै॥ सोदृश्यभीमिथ्याहै॥ अहंकारआत्माविखे
मारूथलकेजलकीनिआपमिथ्याहै। हेराजाजबलगपुरुषकेअर्थविखेचलता
है। अरुएस्थितितेरहतहै॥ तवलगसंसारकीनिवृतिनहींहोती। जबजडहोजावैदृ
श्यकेफुरणेतेअरुअहंकारतेतवएसकोआत्मपदकीप्रापतिहोवै। जबलगदृश्यकीउ
रफुरताहैचेतनहैसावधानहैतवलगसंसारविखेभ्रमतारहताहै। हेराजनआत्मा
नकहूजाताहै॥ नआवताहै॥ जन्मताहैनमरताहै॥ जबचेतनअरुचितकासंबंधमि
टताहै॥ तवअनंतरूपहोहै॥ नावितकहोअरुदृश्यअरुचितकहोअरुअहंकारसबतेर
जबदोनोकासंबंधआपसमोमिटिजावैगातवएकआत्माहीरहैगा॥ सोब्रह्महैआ
त्माहैसोएसेवपदहै॥ तिसविखेवाणीकीगमननहीं॥ सोएश्वरहैगाअरुअनभव
रूपनिर्वाचपदहै॥ तिसविखेएस्थितिहोहु॥ हेराजनजिसजगतकारणसकोएछा
अनिछाहुईहोवैसोजगतभ्रमहै॥ जबलगएसकोफुरणाउठताहै जोएहभावहै
अरुएहअभावहै॥ तवलगएसकोजीवसंगिआहै॥ जवभावअभावकाफुरणामि
टिजावै॥ तवजीवसंगिआभीचलतीरहै॥ अरुआत्मपदजोहैप्रावपदतिसकोप्राप
तिहोवैतहांवाणीकीगमननहीं॥ १२॰ इतिश्री ल ह ति तो व ने नासस र्गः
२॥ वसिष्ठ उवाच॥ ओहेरामजीएसप्रकारबलराजाकोब्रहस्पतिनेकहा सोते
रेप्रसंनकेउनरूनकेउनअनमितमेकहाहै॥ हेरामजीजवलगएसकेविटैविखेसं
सारकीसताहै। तवलगतेसेकरमकरेगाजेसेहीशरीरपावेगा। हेरामजीजिसवस्तुकोवि
तदेखताहै॥ तिसकोउरअवमिजाताहै॥ उसकेदेखणेकासंस्कारएसकेअंतहोताहै
एसप्रकारजिनपदार्थइकोएससतिजानिआहै। तिसतिसपदार्थकासंस्कारएस्थि
तिहोजाताहै॥ अरुसमेकरउहसंस्कारप्रगटिहोताहै॥ जेसेसारकेअंडेविखेशक्तिहो
तीहै॥ जबसमाआएआतबनानाप्रकारकेवरणतिसविखेभासतेहैं॥ तेसेजोचित
कासंस्काररहतासमेपाएकरजागताहै॥ सोचितअज्ञानतेउपजाहै॥ तबब्रहस्पति
कहाहेराजनबीजअथवीपरउपजताहै। अकाशविखेनहींउगवता॥ जेसाबीजअथवीप
रबोवताहै॥ तेसाहीफलहोताहै॥ सोअहंकाररूपजोहै॥ अपणाहोवणासोअथवी
है॥ जेसीजेसीभावनाकरकरमकरताहै॥ तेसातेसाचितरूपीपृथ्वीतेउत्पतिहोताहै
फलवहरूपउनके सोकेअनसारहीशरीरकोधारताहै॥ अरुशुभअशुभफलकोभोगता
है॥ अरुज्ञानवानजोहैसोअकाशरूपहै॥ अकाशविखेबीजकेसेउपजेबीजअज्ञान
रूपीपृथ्वीविखेउपजताहै॥ भावनाकेकैबल उवाच॥ हेदेवगुरुजीजोवभावेजो

वताहोवेमितहोवेएसकोजोअनभवहोताहै॥ सोअपणीभावनाहीकरहोता
है। फेरजबएहमितकहुआअरुएसकीभावनानहूएपिंडआदिकहूविखेताप
रएसकाशरीरकेसेहोताहै सुखदुखभोगणेवाला॥ अरुजोहूआतोअक्रितमदेह
हूआ॥ ह ह स्प ति उवाच॥ हेराजनपिंडदानआदिकएसनहींभीकीआअरुएस
केअंतभावनाहै॥ तिससमेकिसीकीआनंदभीजोहूविराधनाभावनाहै। साएके
रमनरूपहै॥ उसीकेउभासआवताहै॥ अरुजोउसकेअंतभावनानहींअरुकिसीवाध
वएसकेनमितपिंडआदिककीएततुभीएसकोभासआवताहै॥ काहेतेजोउहू
भीएसकेवासनाहीकेअनुसारहै। हेराजनअज्ञानीजोबहूहैजिनकोअनात्माविखे
आत्मबुधिहै॥ उनकेकरमकहेगएहै। जोउहुकतेहैसोएकमेसे॥ उसकेचित
रूपीभमविखेएरूढगवतेहै॥ उसकोशरीरकोकिआआवताहै॥ अनेकवासनाउ
पुशरीरकोधावताहै॥ परस्तुप्रवतज्ञानविना व वा हेदेवगुरुएहनिचेकोवि
सेजागिआहै॥ जबसकोनिहकिंचनकीभावनाहोतीहै सोनिहकिंचनपदकों
प्रापतिहोताहै॥ अरुसंसारकीउरतेशिलाकोनिआएहोजाताहै॥ जेसीजेसीएस
कीभावनाहोतीहैतेसारूपहोजाताहै॥ जबसंसारतेपथरवतहोवैतबसकि
होवै॥ ब्रहस्पतिउवाच॥ हेराजननिकिंचितकोजबजाणेतबसंसारकीउठते
जडहोजाताहै॥ अरुरागअरुदोखअरुसंसारनहींफुरता॥ एसीकानामजडहै। अ
रकेवलसारपदविखेएस्थितिहोताहै। अरुगुणएसकोनचलावहितबजाणोअ
जोनिकिंचनपदकोप्रापतिहूआहै। सोएसक्रिहैसदेहनहीं॥ हेराजनजबलगसं
सारकीसतताचितविखेएस्थितिहै॥ तबलगएसकोवासनाहै॥ अरुजबलगवासना
है। तबलगसंसारहै॥ अरुसंसारकेअभावविनाएसकोशांतनहींप्रापतिहोती॥ सो
मनरूपकेप्रमादिकरचितहूआहैअरुचिततेवासनाहूपहै॥ अरुवासनातेविश्वरूपहै
तातिएसवासनाकोत्यागकोराफुरनानफुरनिहाकिचनभावहोजाए॥ तवप्रानतभा
गीहोवै। हेराजनजिसजगतसाथिजिसक्रिमसाविएहनिहकिंचनरूपीहोवैसोए
करै॥ वसिष्ठ उवाच हेरामजीएसप्रकारस्वरगपुरविखेअसरनाएककोस्वगुरुक
हाथा सोमेनेतेरआगेकहाहै॥ पिंडदानआदिककाकरम॥ १२॥ इतिश्रीव
सिष्ठ वासे नाम सर्गः॥ वसिष्ठ उवाच ओहेरामजीभावेजीवताहोवेचितजोक
हूएसकेहोवैमितहोवैतासाथएसहूआहोवेगातिसकाअवश्यअनभवकेरंग
जेसेसारकेअंडेविखेरसहोताहै। उहूअपणासमेकरविस्तारकोप्रापतिहोताहै॥
सोएसकेअंतरजोवासनाकाबीजहै॥ सोउहूप्रगटनहीभीभासतातोभीसमेकेर
विस्तारमानहोताहै॥ जबलगचितहैतबलगसंसारहै॥ जबचितनष्टहोजावैतव
समभ्रममिटिजावैहि। हेरामजीसोचितभीअसतहै॥ अरुविश्वभीअसतहै जेसेअ
कापाविखेनीलताभ्रमकरभासतीहै। तेसआत्माविखेविश्वभ्रमहै॥ हेरामजीहमा
रेताएतोनचितभासताहैनाविश्वभासतीहै॥ सेभीअकाशरूपहोतेभीअकाशरूपहै
एहचितमनरूपकेप्रमादिकरउपजताहै॥ जेसेजहाकाजरहोताहैतहांसामताभीहो
तीहै॥ हि॥ तेसेजहांचितहोताहैतहांवासनाहोतीहै॥ जबज्ञानरूपअग्निकरवासना
दग्धहोवैतबचितसतपदकोप्रापतिहोताहै। अरुजीवसंगिआनिवर्तहोतीहै॥ हे
रामजीचितकेउपसमकाउपाएमेरेशिउणश्रवणकर। तिसकरचितनिर्वाणहोजावे
गा॥ जोसतभ्रमकाकहीअंतिनकरचितनष्टहोजावेगा॥ तिनहूविखेतीनभ्रम
कानेरेताएकमकर्ककहीहै॥ अरुवाककहतिरहतीहै॥ हेरामजीजोतीनभ्रमकाअथ
महूविखेएकभीकिसीकोप्रापतिभएहैसोतिसकोमहापुरखज्ञाण॥ सोसंसारते
केसाहोजाताहै॥ सोश्रवणकर॥ मानअरुमोहतिसकेनिवर्तहोजातेहैं॥ अरुसंग
दोषजोसकोनहीलागता। अरुविचारतिसविखेएस्थितिहोताहै॥ अरुकामनातिस

कीसर्वनष्टहोजातीहै॥ अरुरागद्वेषतिसकोंनहीरहता॥ सातद्रखविविखेंअसाश्रम
रूपपुरखअवेपदकोंप्रापतिहोताहै॥ ऐसेगुणजोसप्तभूमकाएस्थितिहूएविखेपा
एतेहैं अरुचित्तनष्टहोजाताहै॥ तबसेसाधकहूनहीपाएता॥ जैसेदीपकसाथदे
खोअरुतोअप्रकारकहूनहीपाएता॥ १२४॥ इतिश्री तत्त्वभाव त दर्न नाम
सर्गः॥ वसिष्ठ उवाच॥ हेरामजीजबतीसरीभूमकादृढअभ्यासहोतीहै॥ अ
रुद्रिढअभ्यासककैचौथीउदेहोतीहै॥ तबअज्ञानकानाशहोताहै॥ अरुसमिकज्ञा
नउदेहोताहै॥ चित्तविखे॥ तबपूरनमासीकेचंद्रमाकीनिआईशोभापावताहै॥ अरु
आदिअंततिरहततिविभागचैतेनतत्वविखेजोगीकाचित्तएस्थितिहोताहै॥ अ
रुसर्वकोंसमदेखताहै॥ जिसजोगीकोंचतर्थभूमकाप्रापतिहोतीहै॥ तिसकाना
नाप्रकारभेदभावनिवर्तहोजाताहै॥ अरुअभेदसर्वआत्माभावहोताहै॥ अरु
जगततिसकोंसुपनेकीनिआईभासताहै॥ अरुएंद्रीआदिकाविवहारतिसकासुख
पतहोजाताहै॥ जैसेअर्धसुखपतिजिसकोंहोतीहैहितिसकाललविखेदखाण
पीणाभसतेरहतेहोताहै॥ तैसेचतर्थभूमकावालेकाविवहारवसतेरहतेहोता
है॥ जैसेसूरजअपप्रकाशकरप्रकाशताहै॥ तैसेतिसकोंआत्माकाप्रकाशउदेहो
ताहै॥ अरुसर्वकलनातिसकीनाशहोएजातीहै॥ नकिसीपदार्थविखेरागरहिता
है॥ नकिसीखेदखवरहताहै॥ संसारसमुद्रविखेडोबलेवालेरागअरुद्वेषहै॥ सु
खदेखलोवालेपदार्थविखेरागहोताहै॥ अरुदुखदेवणवालेविखेद्वेषहोताहै
सोरागद्वेषदोनोकातिसकोंअभावहोजाताहै॥ तिसकर्केएससंसारसमुद्रविखे
गोतेनहीखाता॥ तिसकेचित्तकोंकोईमोहनहीकरिसकता॥ हेरामजीजबलगति
तीआभूमकाहोतीहै॥ तबलगउसकोंजाग्रतअवस्थाहोतीहै॥ अरुजबचतर्थ
भूमकाप्रापतिभएतबजगतसुपनेकीनिआईहोजागताहै॥ सर्वजगतकोंचि
णभंगुरनाशवंतदेखताहै॥ [illegible] भावनाअभावहोजाताहै॥ राम उ
वाच॥ हेभगवनजाग्रतसुपनसुखपतिकालतरणमुरुकोंजिंकातिकहहु॥ तुरीआ
अरुतुरीआतीनभीकहहु॥ वडेजोहैसोप्रिखकोंकहितेखेदवाननहीहोते॥
वसिष्ठ उवाच॥ हेरामजीजानतत्वकाम्रिगणहै॥ अरुपदार्थहूकीभावनाहै॥ नाशवंत
पदार्थहूकोंसत्तकीनिआईजाणनानामजाग्रतहै॥ जोपदार्थहूविखेभावअभाव
कीसमतताहोतीहै॥ जगतकोंमिथ्याभावनामात्रजाननासोसुपनकहितेहै॥ जा
ग्रतअरुसुपनजिसविखेलीनहोवहै॥ सोसुखपतहै॥ जोजानभावककेभेदोकीशां
ततहोजावे॥ जाग्रतसुपनसुखपतितीनोकाअभावहोवेअरुजोनिर्मलएस्थितिहै
सोतुरीआहै॥ हेरामजोअज्ञानजीवजगतकोंवडेकालकेमेघकीनिआईदेखतेहै
जोप्रतक्षदृढहोएकरभासताहैतिनकों॥ अरुजिसकोंचतर्थभूमकाप्रापतिभ
एहै॥ सोथोडेकालकेमेघकीनिआईदेखताहै॥ अरुजिसकोंपंचमभूमकाप्राप
तिभएहै॥ सोप्रातःकेमेघनष्टहूएकीनिआईदेखताहै॥ अरुजिसकोंपंचमभूमकाप्राप
है॥ तैसेउसकोंनिर्मलभासताहैहि॥ सोतीनोंकाछिनोतसगोंग॥ अरुतातीजगतकों
ताप्रतकीनिआईदेखताहै॥ अरुछिडसततमजगतकोंउसकोंभासतीहै॥ तिसकरराग
दोखतिसकोंउपजताहै॥ अरुचतर्थभूमकावालापारकालकेमेघकीनिआईदे
खताहै॥ जोइष्टआवताहैअरुखवोंनहीकरता॥ जैसेसप्रकीइछाहोतीहैतिसकोंसत
ताजगतकोंनहीभासती॥ जोमिलतेसुपनकीतिसकोंहोतीहै॥ अरुसप्रकीनिआए
देखताहै॥ तातेरागदोखतिसकोंनहीउपजता॥ अरुपंचमभूमकाजिसकोंप्रापतिभए
है॥ सोजगतकोंसुखपतिकीनिआईदेखताहै॥ जैसेप्रातःकालकामेघनष्टहूआ
वहुरिनहीदीखताहै तैसेउसकोंसंसारकाभाननहीहोताअरुवेष्टाउसकीसभा
वकपरुहीहोतीहै॥ जैसेकमलसभावकखुलताभीहै॥ अरुसभावकहीमुदिजाता।

ताहै॥ तिसकोंजगतकछुनहीं॥ जैसेउसकोंचेष्टाविखेजतनकछुनही॥ जैसेप्रतिइगी
सभावकआएप्रापतिहूआतिसकाकरतीहै॥ जैसेकमलकेखुलनेकाप्रतइगीस
रजउदेहूआतवखुलगएआ॥ अरुजबसूर्यदेनकाप्रतिइगीगत्रआएतबमुंदिआ
जाताहै॥ ऐसेकोंखेदकछुनही॥ तैसेतिसकीचेष्टाअरुसमतातेरहितचेष्टा
होतीहैसभावक॥ हेरामजीअहंगताअरुममताजोहैजोअनतिसतेउदिस
खपतिहोजाताहै॥ अरुसेपरणामभावरूपजोपूर्वहै॥ अरुतिनकेजोअर्थहैतिन
केसभावकातिसकोअभावहोजाताहै॥ अरुहेंनतकीकलनानष्टहोजातीहै॥ अरु
अप्रापविषयकाअनुमननेहै॥ सोतिसकानष्टहोजाताहै॥ अरुप्रापविषयकहीअ
पणापकीमानखेदवनामल्लाबुवाइत्यादिकभिनभिनपदार्थोकीभावनाजोहै
सोतिसकेनष्टहोजातेहै॥ एकअरुअनताहीतिसकोंभासतीहै॥ अरुसंसारनहीभा
सताहै॥ हेरामजीअहंगतारूपीतिस्लोतसंसाररूपीगंधउपजतीहै॥ संसारअहंताही
तेउपजताहै॥ सोअहंतातिसपुरखकेनष्टहोजातेहै॥ सोपुरखएहीअरुके
सुभविखअरुकोंपाएकररहरखमाननहीहोता॥ अरुशुभकेप्रापतिहूएतेदोखन
हीकरता॥ अरुऐसेआपकोंनहीजानताजोमैंखसाहों॥ अरुऐहावेदोहों॥ अरुचल
तासर्वदाअप्रकाशकैआपकोंजानताहै॥ नअंतरदेखताहैनबाहरदेखताहै॥ अ
रुनअकाशकोंदेखताहैनपृथवीकोंदेखताहै॥ सर्वब्रह्महीदेखताहै॥ एतनकछु
नहीभासता॥ तिसकों॥ अरुदृष्टादर्शनदृश्यत्रीनाकाभासनहीरहताहै॥ अरुकु
छकाभीसाक्षी॥ अरुएहीअहंकाभीसाक्षी॥ अरुविषकाभीसाक्षी॥ एनकेसाथस्पर्श
कदाचितनहीकरता॥ अरजैसेबीजतेअगरीहोतीहै॥ अरुअगरीतेदाहहोताहै॥
एसीप्रकारपदार्थप्रमाणभीहै॥ अरुअकाशनिविखजिकातिरहिताहै॥ काहितेजोऐ
नकेसाथस्पर्शनहीकरता॥ तैसेडोहअरुखदृष्टादर्शनदृश्यत्रीनातेरहिताहै॥ जे
सेनाउयलविखेजलअलनतेहै॥ तैसेतिसपुरखकोंत्रिपुटीअसतहै॥ त्रिपुटीअहंता
करकेफुरतीहै॥ सोअहंतातिसपुरखकीनष्टभएआहै॥ तातेभेदबुद्धिभीनहीरहती
एसीतशांतहै॥ अरुनिर्मलहै॥ अरुसाभासतेसुखपतिहै॥ अरुचेतनचेतनाककैचुर
महै॥ सर्वदाशांतरूपहै॥ जिनहूनेइहकरसंसारजानीताहै॥ सोतिनहूजेअहंत्याहै
जिससमनकाफुरनेजाताहै॥ तिसमनकाभीनाशकीआहै॥ अरुअभेक्राधअहंकाराम
होनसुपुरखविखेदेखीतेहै॥ तौभीउसकेरिदेविखेकछुनहीस्पर्शकरतेजैसेपंछी
अकाशविखेआलनाभीकरताहै परअकाशकोंस्पर्शनहीकरसकता॥ तैसेउ
सपुरखकोंस्पर्शकछुनहीकरता॥ हेरामजीजिसपुरखकेसंशयनसमसेनष्टहोएगएहै
है॥ अरुसर्वदासमरूपविखएस्थितिहै॥ अरुशांतरूपहै॥ अरुआत्मातेपरतरकिसीसंरखु
कीवाछानही॥ अरुसंकल्पतिसकेनष्टहूएहै॥ अरुआत्मातेपनरूकछुभासतानही
दृष्टजगतकीनिआएआवताहै॥ अरुसर्वदासुखपतिहै॥ जगततिनि॥ १२५॥ इतिश्री
व म व नेनामसर्गः॥ वसिष्ठ उवाच॥ हेरामजीतीसरीभूमकाप्रजनजाग्रत
है॥ अरुचतर्थभूमकाविखेजाग्रतअवस्थासप्रवतदेखताहै॥ अरुपंचमभूम
कावालासंसारतेसखपतिहोताहै॥ अरुखष्टीभूमकाविखेतुरीआपदएस्थि
तिवानहोताहै॥ अरुसर्वदाअक्रेहैकिसीकिआविखेवधमाननहीहोता॥ अरु
सर्वदाकालअनंदरूपहै॥ अरुअनहूकाभोगभिनहोकरनहीआपहीअनंदहैके
वलअप्रमाणआपविखेस्वछएस्थितिहै॥ अरुसर्वदानिर्वाणहै॥ हेरामजीजथा
प्राप्तसर्वक्रिआविखेसावधानहोकरविचरताहैदृष्टिआवताहै॥ परअंतरतेअ
नहै॥ किसीसाथउसकोंस्पर्शनही॥ जैसेअकाशविखेसर्वपदार्थभासताहै॥ अरु
अकाशकास्पर्शकिसीसाथिनही॥ तैसेहीसर्वक्रिआतिसविखेदृष्टिभीआवती
है॥ विद्यमानतौभीअंतरतेकिसीसाथिस्पर्शनहीकरता॥ काहेतेजोक्रिआकार्ण
काअभिमानीअहंकारथासोतिसकानष्टहोगएआहै॥ केवलशांतरूपहैअरु
हरिभएआहै॥ अहंभावचित्तमात्रविखेफुरणा॥ चित्तमात्रतेउत्थानअहंभावका
सोअज्ञानहै॥ अरुदुखदाएहै॥ जबअहंभावदूरिभएआनदकोउकर्मस्पर्शन
हीकरतेजदपिवसतिसकोंदृष्टिभीआवतीहै॥ तौभीवासवककरनहीदेखता॥ स
वब्रह्महीतिसकोंदृष्टिआवताहै॥ खाताहैअरुलहीखाता॥ देताहैअरुनहीदी
आ॥ लेताभीहैअरुकदाचितनहीलीआ॥ अरुचलताभीहैअरुनहीचलिआ॥ हेरा

कदाचित २

वं॰
सं॰
११

मनौजेताकछुदेषाकालवस्तुपदार्थहैसर्वविषेआत्मभावहोताहै॥जदपप्रत
खचेष्टाउसविषेदेखीतीहैतौभीतिसकेहृदेविषेकछुनहीं॥जैसेसप्रविख
खानापीनादेनालेनाभासताहै॥आपकौं॥अरजागतेसूर्यकाअभावहोजाता
है॥तैसेजोपुरषपरमार्थसत्ताविषेजागिआहै॥तिसकोगुणोंकीक्रियाअप
णाविषेकोऊनहीभासती॥अरजोकछुकर्ताहैतिसविषेअभिलाषानहीं॥
कर्तासुभावकहीचेष्टातिसकीहोतीहै॥अपणेनमितकछुनहीकरतावतिस
कौं॥एसीप्रकारभगवानभीकहाहै॥अरसर्वआत्माहीदेखताहै॥अरस्रकाश
पृथवीसुर्जब्रह्मणहस्तीसुआनचंडालआदिकसर्वविषेआत्मभावहीदेखता
है॥अरअकाशकौंमिगत्रिष्णाकेजलवतदेखताहै॥अरद्रिष्टिदर्शनद्रिशभीउ
सकोअकाशवतभासतेहैं॥अरनिर्मलअकाशवतप्रणतेरपदहै॥अहभावतेरहि
तकेवलचिनमात्रविषेस्थितिहै॥अरअहणतिआगलेअतीतहै॥अरसर्वकल
नातेरहिततहै॥निर्वाणपदहै॥केवलस्वछनिर्मलअकाशरूपएसथितहहि॥
अरअहममआदिकग्रिंथीतिसकीभेदीहै॥अरचिदजडग्रिंथतिसकीभेदीहै॥
चिदजडग्रिंथकहीअनात्माविषेअहंअभिमानसोतिसकानष्टहोगणआ
है॥केवलशांतरूपहोएरहाहै॥अरपरमशोभाककैशोभताहै॥जैसेविष्णुक
मौकिसकेरचिआहेजोसूर्जेकामंडलअरशोभापावताहैप्रकाशककै॥तैसे
ज्ञानरूपप्रकाशकरप्रकाशताहै॥जैसेचक्रफिरताफिरतारहिताजाताहै॥अ
रप्रणतकौप्रापतिहोताहै॥तैसेअज्ञानककैफिरताफिरताहरिरिअपणेतकौप्रा
पतिहोताहै॥हिरदाएसका॥अरअपणेआपकररप्रकाशताहै॥अरसर्वदानिर्म
लहै॥अरएकरसहै॥जैसेघटकेअंतरभीसुनहै॥तैसेदेहकेअंतरबाहरआत्मा
है॥जैसेजलकेरष्रणकौअहूआयाटिजलविषेवासौअन्तिसकेअंतरबाहर
जलहीहोतेहै॥तैसेवहुपुरषअंतरबाहरजशरनहोरहाहै॥अपणेआपकर॥अरए
करसहै॥अरतिसपदकौपाएकरअनंदमानहै॥जैसेकोऊमारणेकेनमितपकडि
आहोएअरतिसकीरक्षाकरणेवाळुअनंदकौप्रापतिहोताहै॥तैसेडोहुपुरषअ
नंदकौप्रापतिहूआहै॥अरजैसेकोउमारगतेथकाहुआआएकरसिनानकरवि
श्रामकरेअरअनंदकौप्रापतिहोताहै॥तैसेज्ञानवानकौअनंदहै॥अरजैसेशरण
मासीकाचंद्रमाअम्रितकरअनंदमानहोताहै॥तैसेडोहुपुरषअपणेअनंद
ककैपूरनहै॥अरजैसेकाष्टकेजलतेतस्वच्छअगनिधूएतेरहतप्रकाशतीहै॥तै
सेज्ञानवानअज्ञानरूपीधूएतेरहतशोभताहै॥अरजबसंसारकीओरदेखता
है॥तबअग्निकीनिआएजलतेआपनेजुदाहोकरदेखताहै॥ज्ञानरूपपवततेए
स्थितिहोकरजलतेदेखताहै॥हेरामजीएहभीजोकहाहैसंसारकौजलता
देखताहै॥साअसेनहीफुरताजोमेजालीहोंअरएहसंसारीहैं॥एहसरूपकी
अपेक्षाकरकेकहाहै॥जोसंसारउसकोडस्वदिष्टआवताहै॥अनंदतेरहतअनंदकौं
प्रापतिभएआहै॥वहुरूपकैसाहैजोसततअसततेरहतअपणाआपहै॥तिसवि
खैएस्थितिहै॥जैसेपर्वतअंतरबाहरजअपणेआपविषेएस्थितिहै॥अरएकरस
है॥तैसेडोहुपुरषएकरसहै॥अरससारविषेजाग्रतहोकरचेष्टाकरताहै॥अंतरसेसारकी
भावनातेरहतहै॥अरतिसपदिकौवाणीकीगमननहीं॥परकछुकहताहोंश्रवण
कर॥कोऊब्रह्मकहतेहहिकोऊचैतनकहतेहैं॥कोऊआत्माकहतेहै॥साखी
कहतेहैं॥अरकालवालेउसीकौंकालकहितेहहि॥ईस्वरवादीईस्वरकहतेहै
प्रक्रितेहतेहै॥इत्यादिकजोसंगिआहैसोसर्वउसीकेनामहैं॥एसतेएतवन
होतिसपदकौसंतजनजानतेहैं॥हेरामजीअसेपदकौपाएकेआपणेआपकर
शोभताहै॥जैसेअगनकेअंतरबाहरप्रकाशहोताहै॥तैसेडोहुपुरषअंतरबाहर
प्रकाशताहै॥अरसदाहुरमरहताहै॥अपणेसरूपककै॥जोपुरषछठवीभूम
काविषेएस्थितिहैतिसकेएहलछणहोताहै॥संसारकीओरतेसुखपति

होताहै॥अरसरूपविषेचेतनहोताहै॥अरजीवततिसकाचलताहै॥जीवतकहीअप
रछिनता॥जैसेघटकौउपाधकरघटाकाशप्रछिन्नभासताहै॥नवघटभगनहूआ
तबघटाकाशमहाअकाशएकहोएजाताहै॥तैसेअहंकाररूपीघटकेभगणहूए
आत्माहीभासताहै॥१५४॥इतिश्री॰ठवीमेइदेनाममर्गः॥वसिष्ठउवा
च॥हेरामजीएसेसंतजनपुरषकौसप्तमभूमकाकीप्रापतिहोतीहै॥तबआपकौ
आत्माहीजानताहै॥अरभूतोकाज्ञानजातारहताहै॥केवलआत्मतमात्ररहता
है॥दूसरेकाज्ञाननहींरहता॥अरएहजोज्ञाननहींरहता॥जोदिसृभेरअत्यफुरती
है॥जोदेहसीहितहोवेअरवस्थाविदेहजोवेआत्मातध्यानउसकोकदाचितनहोवे
ता॥जैसेअकाशअपणीसत्ताविषेएस्थितिहै॥तैसेआत्मरूपविषेएस्थितिहोता
है॥अरचेष्टाभीसुभावकपरीहोतीहै॥जैसेबालकपिरहूविषेहोताहै॥तिसको
अगसुभावकहलतेहैं॥जैसेखानपानआदिकचेष्टाउसकौसुभावकहोतीहै॥तैसे
काष्टकीपुतलीआतागेकरचेष्टाकरतीहै॥तैसेप्रालब्धवेगतेतागेकरउसकीचेष्टा
वशीहोताहै॥अपणीएछाउसकौकछुनहींरहती॥हेरामजीजेसीअवस्थाकौसप्त
मभूमकावालाप्रापतिहोताहै॥सोआपहीजाणताहै॥एतरकोऊजाणतानहींसकु
ता॥जिसकाचितनसायहेसोनहींजाणसकता॥अरजिसकाचितसतपदकौप्रापति
हूआहै॥सोभीनहींजाणसकता॥जिसकौओहुपदप्रापतिहूआहै॥सोएजाणे॥हेराम
जीजीवनमुक्तिकाचितसतपदकौप्रापतिहूआहै॥अरतुरीआपदविषेएस्थितिहै
अरएसकाचितनिर्वाणहोगएआहै॥अरतुरीआतीतपदकौप्रापतिभएआहै॥अरव
देहमऊहै॥तिसकौअहंभावकाउध्यानकदाचितनहींहोता॥सतरूपअरअसतकी
निआएएस्थितिहोताहै॥हेरामजोउहूतिसपदकौप्रापतिहूआहै॥तिसकौवाणी
कीगमननहीं॥परभीकहताहों॥सोसूधपदहै॥अरनिर्मलहै॥अरअद्वैतहै॥अरचेतन्न
ब्रह्महै॥अरकालकाभी[illegible]नमात्रहोहि॥अरजिका
तिनअश्रुलपदहै॥एसपदकौपाएकरअसाहोताहै॥जैसेवस्त्रउपरसेरूनलिखीहोवे
तिसप्रकाररझायानतेरहताहोताहै॥भ्रमतेब्रह्मकाउथानभीनहींरहता॥१५५॥इतिश्री
सप्तमभूमकाविचारोनामसर्गः॥वसिष्ठउवाच॥हेरामजीएहसप्तमभूमकातेरनाएक
हीहै॥जज्ञानकौप्रापतिएनहीकरहोतीहै॥एनतेअनसाधनहीकरज्ञानकौप्राप
तिनहींहोती॥हेरामजीज्ञानवानपुरषहूआतबजाणीअजोजिसकीवृतअथमभूम
काविषेएस्थितिहूएहै॥तातेतुमभूमकाकीओरविचारूपीचरनपावहु॥तबतुमकौ
सरूपकौप्रापतिहोवे॥हेरामजीतीसरीभूमकाप्रजंतसर्वकामनाकीनिवर्तहोतीहै॥
एकआत्मापदकीकामनारहतीहै॥जोतिसअवस्थाविषेप्राणीछूटजावे॥तबअथ
रजन्मपाएकरज्ञानकौप्रापतिहोताहै॥अरजोचतुर्थभूमकाकौप्रापतिहूएप्राणीरहू
टतौवहुरूजन्मनहीपावता॥कहितेजुआत्मपदकीप्रापतिहूएवहुरूपावतोअप
ज्ञाननहींरहती॥जन्मकाकारणएछाहै॥जबएछाकछुनहींरहीतौजन्मभीनहोवहि
आ॥जिसकौचतुर्थभूमकाकीप्रापतिभएहै॥तिसकौसरूपकीप्रापतिभएहै॥वहुरूपको
केसेहोवे॥जैसेभनावीजजउगवतानहीं॥तैसेउसकाचितज्ञानरूपअग्निकरैसतपदको
प्रापतिहूआहै॥एसीतेवहुरूजन्मनहींलेता॥अरमरताभीनहीं॥अरसंसारकैभ्रम
वनदेखताहै॥अरएतभूमकाजिसकौप्रापतिभएहै॥सोसरवपतिकीनिआएहो
ताहै॥अरछठवीभूमकातुरीआपदहै॥सपतमतुरीआतीतपदहै॥हेरामजीएतेमेरे
कहिणेकाप्रयोजनएहीहैजोवासनाकात्यागकरो॥अरअचलपदविषेएस्थितिहोव
हु॥सोवासनाकिआएसकाहोवणाहोवासनाहै॥जबएसकाअभिमानअभावहूआतौ
हीपावतहूए॥एहपरछिंनअहंकाररजोहै॥सोएसरहिणानहीं॥आत्माज्ञानतेली
नहोजाताहै॥हेरामजीमेसारूपीएकनदीहै॥तिसविखेवुहुदेजगतरूपीजीवहै॥अ
रअध्यात्मकअधिभूतकअधिदैवकेरागनरंगहै॥तिसविखेतिसकरजीवडुखपावते

हे॥ अरागद्वेषदेहेमकहृपहे॥ अरत्रिस्रारूपवडामकहे॥ अरजैसेजलचलिआताता
हे॥ तेसेमलिनकेमरणमोसंसारचलिआताहे। अरअज्ञानरूपजलहे॥ अरत्रिस्राही
कारणरूपबवधहेताते त्रिस्रारूपीमंगलहकौंनमकारहहस्तीकीनिआपदृराग
अरअभ्यासरूपीदंतहुकोंधारहु॥ अरत्रिस्रारूपीजंजीरहकोंकाटहुत्रिस्रारूपीसर्प
नीहे॥ अरविवेकरूपीफुंकारकेकेसवहीआचलकोंजालावतीहे॥ तिसकेजलमोर
विकेरमाणडरपावतीहे॥ सोवलीकिआहेविचारहीवलीहे। अजीवकिरमानहे॥ जब
चितरूपीसर्पणीफुंकारतीहेतबविचाररूपीवलीकोंजलावतीहे॥ तातेतुवेरागरूपी
अग्निकरकेसर्पणीकोंजलावहु॥ हेरामजीत्रिस्राइुखदाएहे॥ जबलगत्रिस्राहेतब
लगसंतोकेवचनएसकेरिदेविखेस्थितिनहीहोते॥ जैसेदर्पणकोंपवनमातीनही
टहरता॥ सोत्रिस्राकेएतेनामहे॥ त्रिस्राकहीअअभिलाषाकहीअ॥ एछाकहीअ
फुरणाकहीअ॥ सवएसीकेनामहे॥ सोएछारूपीमेघहेतिसनेगिआनरूपीसूरजआ
छादिआहे॥ तिसकरअछादिआगएआभासतानही॥ अरएछारूपीबदलहहि॥ आत
मरूपीसूर्जहेतिसबदकेआवरणकरतिसआत्माकासाद्यात्कारनहीहोता॥ जबवि
चाररूपीपवनचलेतवएछारूपीमेघनष्टहोवे॥ हेरामजीएहजीवब्रह्माकापक्षी
हे॥ तिसकोंकर्मविखेएछारूपजालागाहेतिसकेकरकेउडनहीसकता॥ अरपरमात्म
पदकोंप्रापतिनहीहोता॥ तातेएछाहीकोंनासकरो॥ अरएछाहीकरदीनहे॥ ज
वएछाहीनष्टहोवे॥ तबआत्मसरूपहे॥ अरआत्मपदकाएणाहोवेहुआत्मपरमेणाक
हीअविवेसंसारतेवेरागकरो॥ अरआत्मअभ्यासकरो॥ हेरामजीएहमेजोमैतेक्रम
एभूमकाकाक्रमकहाहे॥ जवएनविखेआवेतवज्ञानकीप्रापतिहोवे॥ सोएनकों
नवप्रापतिहोताहेजबएकहाथणिकोंजीततताहे॥ एकवनिविखेउडहसतणीहे
अरदोउसकेदंतहे॥ सोएउसकेपुत्रहेमहाअभिमानरूपहे॥ ओअनेकजीवहकोंमार
करअनर्थकोंप्रापतिकरतीहे॥ [illegible] जाताहे॥ रामउवाच॥ हेभ
भगवनकवनहेअमोहस्तनीमहामतरूप॥ अरकहांरहतीहे॥ कवनउसकेदंतअ
रपुत्रहेकेसेउडमारतीहे॥ अरकेसेउसकोंरखाहे॥ अरकवनवनहेएहसभअसनाप
कहो॥ वसिष्ठउवाच॥ हेरामजीएछानामतीतोहसतनीहे शरीररूपीवनमनरूपी
गुफाविखेरहतीएंद्रीरूपवालकहे॥ संकल्पविकल्परूपीदंतहे॥ तिनकररूपीछेद
तीहे॥ तिसकेमदकरहेरामजीएकनदीहेतिसकाप्रवाहसदाचलिताहरहताहे॥ तिस
विखेलीनमडुरहतेहे॥ जोनाशनहीहोतेएहसंसरनाहीनदीहे अररागद्वेषतिसवि
खेमडुरहतेहे॥ मडुतवनष्टहोवेहिजबसंसरनारूपीजलनष्टहोवे॥ अरसंक्रि
तडक्रितरूपीकनावेहे॥ चिंतारूपीग्राहहेकर्मरूपीलहरीहे॥ तिसविखेआएआहुआ
पारूपभटकताहे॥ त्रिस्रारूपीवलीहे॥ तिसकोंनाशकरो॥ हेरामजीत्रिस्रारूपीअ
गनीकावपावणाअरवेटावणाभीआपणेअधीनहे॥ जोअरशरीकोंजललमाथिपुष्ट
करीताहेतवबवर्धतीजातीहे॥ अरजोनदेवीओतीजलजाताहे॥ तैसेफुणोरूपजलदे
णाकरत्रिस्रारूपअंकुरवर्धताहे॥ अरनदेवणाकरजलजाताहेसरूपकेअभ्यासक
रे॥ त्रिस्रारूपवडामकहेथोरजआदिकमासकोंभक्षणकरणोवालाहे॥ तिसकों
वेरागरूपीकुहीअरअभ्यासरूपीनदीकरशत्रुकोंमारनाप्राकरहेरामजीएछाहीकों
नामबंधनहे॥ निरएछाकानाममुक्तिहे॥ एकसतगमडुपापकहताहे॥ जिसकों
त्रिस्रानष्टहोवे॥ सोनवअर्थकीभावनाकरजवेनवअर्थकीभावनाकरीतवपीछु
हीआत्मपदकीप्रापतिहोतीहे॥ अरतेरीजेहोवेगी॥ अरसर्वतेउलमपदकोंप्रापतिहो
वेगा॥ अरवासनातेरीकोंउनवहेगी॥ अरशरीरकीचेष्टासुभावकपरीहोवेगी॥ स
कलसवेनष्टहोजावहिगे॥ ४४॥ इतिश्रीअसभा प्र पादनंना मसर्गः॥ राम
उवाच॥ ओहेभगवनतुमकहतेहोनवअर्थकीभावनाकरवासनानष्टहोवेगी॥ अ
रपीछेहीआत्मपदकाप्रापतिहोवेगी॥ सोवासनातोचिरकालकीचितविखेस्थि

तहेएकवारकेसेनष्टहोवेगी॥ अरतुमकहतेहोवासनाकेनष्टहुएजीवनमुक्तिहोता
हे॥ जिसकीवासनानष्टहुएतवप्राणीकमेरहेगा॥ अरवासनाविनापेष्टाकिकरिहोवेगी॥ ता
तेजीवनमुक्तिकिंध्रिकेसवाल॥ वसिष्ठउवाच॥ हेरामजीअवमेरेवचनप्रीतिसोंश्रिवणि
केसेवचनहे॥ अवणाहुकेभखताहे॥ जिसकेसुणनेतेदुखनरहेगा॥ नवअक्षरकेश्रावण
तेसमनष्टहोजावहिगे॥ अरआत्मपदकीप्रापतहोवेगी॥ नवअक्षरकेतीनअर्थहे॥ एकतो
अनअनेकेअर्थहरिजोपंचभूतकशरीरतेतेरासरूपअनहे॥ विलक्षणहे॥ अरहमणअर्थए
हहेविरुधीहेकाहेतेजोशरीरजडहेतमरूपहे॥ अरतेरासरूपआदितवर्णतमतेपरहे
जवतेनेअसंधारिआजोमैआत्माहा॥ अरएहदेहादिकअनात्माहे॥ तबदेहसाथि
मिलकरअभिलाषाकेसेकरेगा॥ अरएहजानकरेगा॥ अभिलाषातबलगजाणिआनही
अरतीसानवकाअर्थएहहे॥ जोअभावहेनमेहानकोंउजगतहे॥ असेजाणिआतबएछा
किसकीकरेहे॥ अरअर्थएहजानरहेगी॥ अवजवआपकोंआत्माजाणेगादहतेविलक्षण
तबभीअविदिकतमरूपशरीरकीअभिलाषानरहेगी॥ हेहतमरूपहे॥ तेआदितवर्णकहि
अप्रकाशरूपहे॥ तवाअरएनकासंजोगकेसहोवे॥ जैसेसूर्यकेमंडलविखेरात्रिनहीदेखीतो
अरतेसेजवतूआपकोंआदितवर्णजाणेगा॥ तबतमरूपसंसारनदेखेगा॥ अरशरीरकीचेष्टा
सुभावकहीपरीहोवेगी॥ अरतेरेविखेचेष्टाकरुनहोवेगी॥ जैसेअर्धनिद्रावालेकीचेष्टा
होतीहे॥ अरजागीनाभीनहीतिसचेष्टापरीहोवेगी॥ अरअभिमाननतुरूकोनहोवेगा॥ या
लेकेनिआए॥ जैसवालककेआननतिकीचेष्टाहोतीहे॥ तेसेतेरेचेष्टाभीसुभावकप
रीहोवेगी॥ अरजोतेरेकाकेवेजुएहसुखोहोवेअरएहदुखनहोवे॥ तोएहकरुचितन
होवेगी॥ जोकछुशरीरकीप्रारब्धहे॥ सअवसहोतीहे॥ गिआनवानकेरिदेविखेसासको
संततामातीरहतीहे॥ अरचेष्टासुभावकपरीहोतीहे॥ अरएछानहीरहती॥ जेसेकिसीप
रवसमनलपेडकगाहोताहहि॥ पेड़ावराहोअरसमापडुचणकायोरूपहोताहे॥ त
वेडुपरसमारगकेएस्यानहस्वताभीमानताहे॥ मारगविखेपरंतुथमानेकिसीविखेनही
होता॥ तैसेचितकोंआत्मपदकीउदलिआवजोपडुचणाहेकिसीप्रकार॥ असाशरीरपा
एकरआत्मपदनपाए॥ अतोकवपावणाहहि॥ जोआत्मपदतेवेमुखहेसोत्रिस्राआदिकजे
मीकोंपावहिगे॥ [illegible] विनाचेष्टापरीहोवहे
वछाहीदुखदायकहे॥ जवएछानष्टहुएतवएसीकोंज्ञानवाननरीआपदकाहिनतेहे
अहजाग्रतसप्रसखोपातिजो अवस्याहेसोजहानपाएआहिमातरीआपदेहे॥ जवस
बनफुणअहंकारअभावहोवेतवतुरीआपदकीप्रापतिहोवे॥ हेरामजीअहंकारकाहोव
णाहीदुखदायकहे॥ जवएसकाअभावहुआतवहीअनंदहुआ॥ आत्मपदतेएतरजो
माएआकीरचनाहे॥ तिससाथमिलकरजोआकोंजाणताहे॥ मेहोएहीअनर्थहे॥ ना
तेअहंकारकोंनाशकरो॥ जिसकोंदुखकरफुरताहे॥ तिसकोंनवअर्थकीभावनाकरना
प्राकरो॥ जोआत्मपदतेएतरभासताहेसोमिथ्याजानहुएहीनवअक्षरकाअर्थहे॥ जेता
कछुसंसारभासताहे॥ तिसकोंसत्रमात्रजानहु॥ एसविखेमनजाणाकरएछाकोंणिएही
अनर्थहे॥ अरमिथ्याजाणकरएछानकरणीएहकल्याणहे॥ हेरामजीमेकोचीवाहहुके
रपुकारताहो॥ मेरेवचनसुणनाकेउनहीजोएछाहीसंसारकाकारणहे॥ अरएछातेरह
तहोवणापरमकल्याणहे॥ जवएछातेरहतेहुआतवप्राणपदकोंप्रापतिहोताहे॥ नि
रएछातहुएआत्माभासताहे॥ जोअनदरूपहेसमहेअद्वैतहे॥ तिसविखेजगतकाअ
भावहे॥ हेरामजीवडामोहकामहाअनमहे॥ वडामहानमहेजोरिदेविखेआत्मरूपचिंता
मणिस्थितिहे॥ तिसकोंविसमरणकरकेअहंकाररूपीकीवेकामुरखग्रहणकरनहे॥ हे
रामजीतुमनिरभिमानहोएकरचेष्टाकरो॥ जैसेमंत्रकीपुतलीहोतीहे॥ तिसविखेअभि
मनकछुनहीअरचेष्टातिसकीपरीहोतीहे॥ तैसेप्रारब्धवेगकेवलसारीचेष्टाभीपरी
होवेगी॥ एहअभिमानतुमनकरो॥ अरअैसेहोवेअरअैसनहोवे॥ जवअसाहोवेगातब
तेप्राणपदकोंप्रापतिहोवेगा॥ जहांवाणीकीगमनहीअैसेअनंदकोंप्रापतिहोवेगा॥ अ
वलगडंडीअडुकेअर्थहुकित्रिस्राहे॥ तबलगजन्मअरभिनकेवधनमोहे॥ तातेपु
रखअजलनएहीहहिजात्रिस्राकोंनाशकरो॥ कर्मोकेविखेफलोकीत्रिस्रातेरेताएनेक
एअरकर्मनकरणेविखेभीनेरीएछानहोए॥ एनदोनोकोंत्यागकरसरूपविखेस्थि
तिहो॥ अरअैसनिश्चेभीहोवेनहीजोमेंतिआगकीआहे॥ हेरामजीजिसपुरखकर्मकात्या
गकीआहेअरअहंकारसाथहेतोएनअरपापसभकछुकीआहहि॥ अरजिसविखेअ

वं
मं
१३

हेकार भावन ही होआ आवै जैसे आ कर्म करै॥ तौ भी कछु कीआ नही। अरु बंधन कौ न होआ आप
तिहोता जो कर्मो विखे आप कौ अकर्ता जानता है॥ अरु अकर्म हू विखे अभिमान सहित नि
तिस कर्म देखते है सब द्रह्वान है॥ हे रामजी ऐसे आत्मा कौ जाण कर अहं मम कता
गकरो॥ एस संवेदन के त्याग विखे जतन कछु नही॥ सिद्धि तिसकी होती है॥ जिसका भ
नभव नहीं ए तिसका त्याग करणे समर्थ है॥ अनभव कही ऐ प्रतक्ष देखणा सो विखे तेरे
रूप विखे नही॥ तो अनभव कि आ होवे॥ एह पदार्थ जो नेत्रो एभासते है॥ तिसके कारण
कौ जाणए तिसका कारण अनभव है॥ जिसका अनभव ही मिथ्या है॥ तौ तिसकी सि
भिन्न सत के से होवे॥ जैसे जेवरी विखे सर्प का अनभव हूआ॥ बहुरुणी सत का समरण सत के से होवे
हा सर्प देखिआ था॥ जो सर्प का अनभव ही मिथ्या है बहुरु तिसका समरण सत के से होवे
जीव सत मिथ्या है तिसके त्याग गोण विखे कि आ जतन है॥ प्रपंच कौ जब मिथ्या जाणिआ
तब कौ ज कि आत्म कौ बाधक न होवेगी॥ चेष्टा शुभ भावक प रूप होवेगी॥ परराग चलना
रहेगा॥ जैसे शरतकाल की वल्ली सूक जाती है॥ अरु अकार सत का दृष्टि आवता है॥ तैसे
नमाराग चितन देखणे मे आवेगा॥ अरु चितन का धर्म जो राग होवे है सो चलना रहेगा॥ आदि वि
तस तन पद को प्राप्त होवेगा॥ जब सर्व विस्मरण होवेगा तिस कौ शिवपद कहते है॥ सो पर
मपद है अरु ब्रह्म है॥ सब द्वार अर्थ ने रहते॥ केवल चिन मात्र अहं न पद है॥ अहं अरु मम का
त्याग करके॥ तिस विखे एस्थिति होवड़॥ एसी का नाम समारहे॥ जो अहं है॥ अरु एह मे
है॥ एसको त्याग करके अवागे स रूप विखे स्थिति हो॥ हे रामजी जब लग अहं अरु मम एह
वेतहे तब लग दुख मिटने नही जब एह सब दे मिटी तब अनंद है आगे एक अहं सा
करो॥ १२०॥ इति श्री वाशिष्ठ क सा प प्र नाम सर्गः॥ वशिष्ठ उवाच॥ हे रा
मजी आत्मा अहं तहे जिसविखे एक अरु दो कहणा भी नही॥ अपणा आप सभाव विखे
स्थिति है॥ अरु अनहंकार णव तष्ट अरु बाहर पदार्थ सर्व चेतन मात्र है एतर कछु नही॥
पदी आ अरु मन का फुरणा देशकाल सर्व आत्मसरूप ही है॥ जैसे बालक माटी की से
नावे नावता है॥ अरु हस्ती घोड़ा राजा कल्पता है॥ सो सब माटी ही है एतर कछु नही॥ ते
से अहं मम आदिक सर्व आत्म रूप है एतर कछु नही॥ जैसे माटी विखे हस्ती घोड़ा
आदिक नाम कल्पते है॥ ... आत्मा ते इतर कछु
नही॥ हे रामजी रूप अवलोकन मनसकार एह सम अपि वरूप स्थित कौ कहता है॥ एह अहं
मम आदिक भी चिदा का प्रान ए तर वस्तु नही॥ एन कौ अमजा णा कर बान बंधन है॥ तिस
हफुरणा पिलावत॥ रामउवाच॥ हे भगवन तुम इह कहो जो अहंकार मैं चेतन का त्याग
करो एह मिथ्या है अहं मम असत है॥ ज्ञानी ऐसी भावना करते है एनकी सता कछु नही॥
रहत महं कहा अरु असंग होवइ सो असंग निहकर्म करते होवता है॥ अथवा कर्म कर
हो वीता है एह कहहो॥ वशिष्ठ उवाच॥ हे रामजी एह तनु ही कहु कर्म क्रिआ है अरु अक
र्म क्रिआ है॥ अरु एन का कारण कहते॥ अरु एन का नाश कैसे होवे॥ अरु नाश होवण का
सिद्ध कि आ होवेगा॥ जो तुं जानता है तौ कहु॥ रामउवाच॥ हे भगवन जैसे तुम शास्त्र
वण की आ है अरु जैसे अरु जैसे समझा है सो मै कहता हो॥ जे वरी वस्तु नाश कु
रोहि होवे तिसका मूल होते नाश करी आनि सु के के॥ तब ही तिसका नाश होता है नही
पुन होवे॥ एक कोटि आउ समका नाश होता॥ ताते एनका क्रम सुणो॥ एह जो देह है सो संसा
र रूपी वन विखे देह रूपी ब्रिछ है॥ तिसका बीज कर्म है॥ अरु शाखा पादादिक एसके पत्र
है॥ अरु रूप अवास्था एस विखे बसहे॥ अरु सुख दुख एसके फल है॥ अरु जा ग्रत के मे
रूप बसंत रुत है॥ जो वा स्वाए एसकर फल नहोता है॥ पाप कर्म अरु सुख पन रूप एसको शा
काल है॥ तिस कर रस कतां जाता है॥ ऐसा पापी रूपी ब्रिछ है॥ बहुरु केसा है नरक नरूप की
ली है॥ विलाकी विलास दखता है॥ जहारूप फल एस को हस्ती है॥ अरु राग दोख रूपी वा
तर है॥ सो परूप भला है विलास विलास विखे॥ जाग्रत एसका बसंत रुत है॥ सुख पतिहिं
सरुत है वा स्ला रूप एसका बंधना है॥ पुत्र कलत्र आदिक एह त्रिणा सो है॥ तिसका
मेरु रूप कमंडी आ है॥ एन कर प्रारब्ध की वे ष्टा होती है॥ अरु तान ए डी आ एसके थम
है॥ एन करके ब्रिछ धारिआ है॥ अरु इच्छा एनका आवेचे लहे॥ जो अपणा अपणा विखि आ
है को वाहती है॥ अरु वडा थभा एसका मन है॥ जो सर्व को धारता है॥ अरु पंच प्राण एसके
रसहे॥ अलता अनमान प्राह्य॥ एन कर सर्व को ग्रहण करते है॥ आगे एनका बीज
जीव है॥ जीव कहते अविदा ते न मृदुतचेतन सो एसका बीज है॥ अरु जीव का बीज संवेदन

मानणा॥ जो मात्र प्रथम रथान ही आ है॥ तिस संवेदन का बीज अहं है॥ तिसका बीज अगे
कोऊ नही॥ हे भगवन सभ का बीज संवेदन फुरना है॥ जो संवेदन हू ए तौ सभ कछु हूआ॥
अरु जब एसका अभाव हुआ तब सर्व का अभाव हूआ॥ शेष आत्मा ही रहा॥ हे भग
वन एह तौ मै जानता हौ॥ आगे कछु कृपा करके कहहु॥ हे भगवन जब लग चित्त
साथ संवेदन है॥ तब लग संसार जन्म मरण पावता है॥ अरु जब चितन रहत हूआ
तब परम ब्रह्म होता है॥ सो शिवपद है अनिंदन है शांत अनंत रूप है॥ चिनमात्र वि
खे जो अहंकार उठता है॥ सो कर्म रूपी संसार विछ का कारण है॥ जब लग अनात्मा सा
थि मिलि कर कहता है मैं हौ॥ अरु ऐसा जानता है सो संसार का कारण है॥ पहलै मह नै
मै रता एक होता है॥ तिसको समझ कर तुमारे विदिमान आरथना करी है॥ आगे कछु
क्रिया कर तुम कहहु॥ वशिष्ठ उवाच॥ हे रामजी ऐसे प्रकार कर्मों का बीज सूक्ष्म
संवेदन है॥ जब लग संवेदन है तब लग कर्म का बीज नाश नही होता॥ अरु एह सभ मोह
आपने कीआ है॥ कर्मों का बीज कहा अरु इत्यादिक बहुत से गि आ है॥ अरु कि आ कि
सी विखे हए पदार्थ एबुध करो॥ अरु जब लग आगि आन है तब लग एका निवर्त नही
होते नाश होता दोनो को नहीं होते पर अभेद है॥ अज्ञानी को भासता है जो एह एका है
अरु एह कर्म है॥ अरु ज्ञानी को कर्म विखे कर्म भासता है॥ ताते बंधवान होता है॥ अरु
एसी का नाम ति आग है जो कर्मो विखे करम तिबुध जावे॥ अरु एसका नाम त्याग नही
जो क्रिआ का त्याग करणा॥ हे रामजी बड़ी उपाय अहंकार है॥ जिसका अहंकार नष्ट
हू आ उहु पुरुख जो कर्म करता है॥ सो उसे कछु नही कीआ॥ अरु जो अहंकार सहित
है उहु पुरख जो तूसी होए बैठता है तौ भी सभ कर्म करता है॥ एस त्याग का नाम सर्व
त्याग है॥ होर क्रिआ के त्याग का नाम सर्व त्याग नही॥ पुरख प्रजतन एही है जो सर्व कर्म
... परम शांत को प्राप्त होवणा॥ १२१॥ इति श्री कर्म
हपप्र नाम सर्ग॥ वशिष्ठ उवाच॥ ऊहे रामजी एस संवेदन का होवणा ही
अनर्थ है॥ जो आपको कछु जानता है॥ जब एह दूर होवे तब ही एसको आनंद होवे
हे रामजी ज्ञानी की चेष्टा स्वभाव कर ही होती है॥ अहंकार ते रहित॥ जैसे अंधेनि द्र
ते पुरख होता है॥ तैसे ज्ञानी अपणा सरूप विखे रमे है॥ जैसे मद कर उन्मत होता है
तैसे ज्ञानवान अपने लखी कर शोभता है॥ अरु ज्ञानवान अमृत विखे आश्रमन है जैसे काम
की कामी विखे अमन होता है॥ तैसे आत्म सुख रूपी एस्त्री कौ पाए कर तृप्त रहता है॥
काहे ते जो निरअहंकार है सर्व दुखों का बीज अहंकार है॥ जब अहंकार नष्ट हू आ
तब अनंद भए आ॥ संसार रूपी विख की वल्ली है॥ तिसका बीज अहंकार है॥ जब अहं
कार का अभाव हूआ तब संसार का अभाव होता है॥ अरु अहंकार दुखों का मूल है
जो कछु अनात्मा साथि मिलके एस संवेदन का विस्मरण करणा बड़ी कल्याण है॥ ऐसा
र आपको जानणा एही अनर्थ है॥ रामउवाच॥ हे भगवन जो वस्तु असत है तिसका हो
वणा नही होता॥ तुम कैसे कहते हो जो संवेदन अहंकार का नाश करे॥ एह तौ सतभाव
ती है वेदन अवेदन कैसे होवे॥ वशिष्ठ उवाच॥ हे रामजी जो सत है तिसका नाश नही॥ जो वस्तु अ
सत है तिसका होवणा नही॥ अरु जो सत है तिसका नाश नही॥ हे रामजी एह अहं
कार इस जानते ताए भासती है सो एसको होवणा कदाचित नही॥ एह मिथ्या क
ल्पित है॥ जैसे जेवरी विखे सर्प होता है॥ तैसे आत्मा विखे अहंकार है॥ जैसे सूर्य की
किरणा विखे जल आभास होता है॥ तैसे आत्मा विखे अहंकार शत्रु अरु अर्थ है॥ संव
त है एह संवेदन है अरु मिथ्या अर्थ है॥ तिसका लक्षण एह जो मै हो ऐसे कल्पना है॥ आ
त्मा केवल सरूप है॥ तिसी विखे अहंकार का शब्द अर्थ कोऊ नही॥ एह अबोध कर भा

वं॰
मं॰
२५

सतीहै॥अरुएहबोधकरलीनहोजातीहै॥अरुवेदनाकाजोबोधहैसोअनर्थकाका
रणहै॥अबोधतमहैजबएहनिर्वाणहोवैतबकर्मकाबीजमूलतेकाटिआ॥अ
नेकर्मोकोत्यागकरएकोतजाएवेदताहैजोमै॥कर्मनहीकर्ताऐसामानताहै
हिसोकर्ताहीहै॥जोअभिमानसहितहैतौभोगताहीहैफलोंको॥काहेतेजोअहं
कारसहितहैबहुरिकरैगा॥आत्मज्ञानेबिनाअनात्मसाथिमिलिकरआपको
मानताहै॥अरुजोपुरुषकर्मइंद्रीआसाथचेष्टाकरतीहै॥अरुआत्माकोलेपनही
जानता॥सोअकर्ताहीहै॥तिसकर्णीकरकछुअर्थसिधनहीहोता॥अरुअकर्णीक
रभीनहीहोता॥ऐसाजोपुरुषहैसोपरमनिर्वाणपदकोप्रापतिहोताहै॥तिसकोवा
णीकीगमनही॥हेरामजीफुरणाउसकाप्रणामनहीचमत्कारहै॥चमत्कारकही
ऐहुआकछुनहीअरुभासताहै॥जैसेबिलमजाहोतीहै॥उहुबिललतेएतरवस्तने
ही॥तैसेजगतहै॥जैसेस्वर्नभूषणभिंनाभिंननही॥तैसेनवशब्दकाअर्थहै॥सोएह
भिंनभिंनशब्दअर्थतबलगभासतेहै॥जबलगअहंवेदनाहै॥हेरामजीआत्मप
दसवदाअपणाआपविषेएस्थितिहै॥तिसकोमुनीस्वरचैतंनसारकहतेहै
अपणीचैतंनताविषेएस्थितिहै॥जैसेपथरकीशिलाअपणीजरूपताविषेए
स्थितिहै॥तैसेआत्माअपणेआपचैतंनताविषेद्रूनएस्थितिहै॥सोआत्मातत्स
रूपहै॥तिसअपणेसरूपकेप्रमादिकरदुखपावताहै॥अरुजोपुरुषअहंकारविषेए
स्थितिहैअरुअहंकारतेरहतहै॥सोतिसकोबनवासीजाणोसदाएकांतीहै॥अरु
जोबनवासीहैअरुअहंकारसहितहैसोसदाजनहुविषेएस्थितिहहि॥प्रथम
एकागरतनविषेयातिसकोत्यागकरइसर्गगतविषेपरताहै॥जोभैष्धाणहैअ
रवैनवासलीआहै॥तिसकोएस्वरचाहतोनिकसीनहीतोवहकणविषेपरताहै॥
हेरामजीजोपुरुषअर्थत्यागकरताहैएकअंगकात्यागकीआ॥अरुदूसरीकाअंगीका
रकीआऐसाजोपुरुषहैअरुआपकोनिहकर्मीमानताहै॥तिसपुरुषकोउहत्याग
रूपीपिशाचनीभोगताहै॥अरुनिहकर्मउहतबहीहोताहैजबअहंवेदनाएस
कोनष्टहोतीहै॥अंनयानहीतातेकर्मीकेमदहुकोउखारूमूलते॥जैसेस्मृ
उबलकरवृहटकोमंदहुतेपटकाहूताहैतैसेकाटु॥अहंवेदनाहीमेढहै॥ति
सकोकाटहु॥अरुहेरामजीपुरुषप्रजतनएसीकानामहै॥जोअपणाआपका
नाशकरणा॥अरुआपहीरहणा॥देहसाथिमिलिआहुआआपकोजानताहै
तिसकानाशकरणाअरुशिवपदकोप्रापतिहोवणा॥जोसवदाप्रणतरूपहै॥
अरुअहंतेहैतिसविषेएस्थितिहोवहु॥अरुएहविचभीतिसकाचमत्कारहै
हि॥जैसेबिल्लविषेगरीहोतीहै॥तिसकेवहुतनामपावतेहै॥तोबिल्लतेएतर
कछुनही॥तैसेएहसंसारजानतउभासताहै॥सोभीचैतनत्वनआत्माहीहै॥
जैसेसंयमविवेकाछतएतरकछुनही॥तैसेसंसारआत्मातेएतरकछुनही॥अरुन
अक्षरकाअर्थजानेरजाएकहाहैसोभीरागहीहै॥निषेधकिसकाकरीएअरुअंगी
कारकिसकाकरीएअसर्वपरमततहै॥इसराकिंचतमात्रभीनही॥हेरामजीऐसेआ
त्माकोजाणकरसावेनविचरौ॥चेष्टासभावकरपरीहोवैगी॥जैसेअर्थनिद्रितपु
रुषकीहोतीहै॥अरुजैसेबालकपिंघुरेविषेहोताहैअरुअगसभावकसमहलते
चलतेहै॥तैसेतुमारीचेष्टापरीहोवैगी॥अरुएणअभिमानतुमनकरौ॥हेरामजीजे
तेककछुभावअभावरूपपदार्थभासतेहैभिंनभिंनसोआत्माकेसात्ताकारहुए
तेपरमात्मततनहीभासहिगे॥जबअहंकाउत्थाननिवर्तहोवैगा॥हेरामजीएक
अरवलजगतस्रवणकरु॥जिसकरकैआत्मागिआनहोवे॥एहजोअहंविराखिरा

विषेफुरतीहै॥जबनकछुरेतबतिसीविणाविषेजाणजोमैनही।तबऐसेदृढहआतवअ
हंकाररूपीपिशाचकानाशहोवैगा।अरुअनंतकासाक्षात्कारहोवैगा॥जबअहं
कारनष्टहोवैतबआत्माभासेगा॥अरुआत्माभासैतबजबअहंकारनष्टहोवै॥तोत
अहंकारकेनाशकरणेकाजतनकरोनमैहोनजगतहै॥अरुज्ञानएसीकानामहै
जोअहंममनरहैतिसकोमुनीस्वरपरवैद्यकहतेहै।अरुममएहकहतेहै॥अरु
उद्धाअहंममहैतहाअविद्यारूपीनमखरूपहै॥हेरामजीअज्ञानीकेरिदेविषेप
तेपदार्थभावएस्थितिहै।देशकालवस्तनगरमानस्वयशापकीएत्यादिकवि
गतासमसारअज्ञानीकेरिदेविषेएस्थितिहै॥जबएनकाअभावहोवैतबआ
तमपदकीप्रापतिहोवै॥८४॥इतिश्रीअ का ना वि वाणोनामसर्गः॥वशिष्ट
उवाच॥उहेरामसमेजिसकेमनतेममेरेकाअभिमानगएआहै॥तिसकोप्रणाम
पतिभएहै॥अरुजिसकोरिदेविषेमेरेहअरुमेरीदेहअरुसंबंधीगृहआदिकहुका
अभिमानहै।सोतिसकोशांतकदाचितनही॥अरुशांतबिनासुखनही॥जब
प्रथमआपचाणताहैतबजगतहोताहै॥जोआपनबणैतोजगतकहाहोवै॥एस
कोहोवणाहीअनर्थकाकारणहैजिसपुरुषअहंकारकात्यागकीआनहीतोक
छुनहीत्यागकीआ।अरुजिसनेक्रिआकात्यागकीआहैअरुआपकोसबत्यागी
मानताहै।सोमिथ्याहै॥जैसेविषरूपीवृक्षकेटासकाटीअहितोबहुरिउग
वताहैनष्टनहीहोता।तैसेक्रिआकेत्यागकीएतेत्यागनहीहोता॥त्यागएहजोअ
हंकारनष्टनहीहोता।क्रिआबहुरूपउपजतीहै॥तातेअहंकारकोत्यागकेतबस
बत्यागहोवै॥तिसकानाममहात्यागहै॥तिसकोसर्वसंसारभीनभासैजोजाग्र
तकीक्रिआकहणीहै।तिसकोसंसारकाभाननहीहोता।हेरामजीसंसारकाजीव
नहैसोअहंभावहै।तिसीकरएस्थावरअरुजंगमजगतभासताहै॥जबएसकाना
शहोवैतबजगतभीमिटजाताहै॥तातेतिसकेअभावकीभावनाकरो॥जबतै
ताएअहंभावफुरैतबतूंजाणकिमैनही।जबएसप्रकारअहंकाअभावहूआतब
पाछेजोशेषरहैगासोआत्मपदरहैगा॥हेरामजीसभअनर्थकाकारणअहंभावहै
तिकोत्यागकर।हेरामजीशस्त्रकाप्रहारजीवसहिरहताहै॥अरुबरयाणोग
कोसहिरहिताहै।एसअहंकेत्यागणेविषेकिआकष्टहोताहै॥अरुअहंकेसद
भावहीकानामसंसारकाबीजहै।तिसकानाशकरणासंसारकामूलसमूलतेना
शहै॥तातेएसकेनाशकाउपायकरौजिसकाअहंभावनष्टहूआहैतिसकोसम
तैसेहूआहै॥जदपिअहंकारनष्टहोताहैतबजगतकीसत्ताकछफुरतीनही॥
ठौरूपअकाशरूपहै॥उसकेरिदेविषेजगतकीसत्ताकछुफुरतीनही॥अरुजो
सविषेहोवैतिसकेरिदेविषेएहप्रपंचशुनबनकीअटवीहीभासतीहै॥अरुजो
अहंकारसहितहै।जोबनविषेजाएबैठतोजनोकेशोरहविषेबैठाहै।काहे
तेजोअज्ञाननष्टनहीभएआतिसका।अरुजिसनेमनमहिनषटएइंद्रीअहूकोव
सिनहीकीआतिसकोमेरीकथासवणकरणेकाअधिकारनही॥उहुपशुहै।अ
रुजिसपुरुषमनकोजीताहैअथवाजीतणेकीएछाकरताहैदिनदिनप्रतिसोअभ
खहै॥अरुजोइंद्रीआविषेआसीहैकामक्रोधलोभमोहकरसंपनहैसोपशुहै॥मह
तमअर्थकोप्रापतिहोताहै।अरुजोपुरुषज्ञानीहैअरएछाकर्मभीतिसविषेदृष्टि
आवतेहहि।तौभीएछातिसकोअनिछाहीहै॥अरुकर्मअकर्महीहै॥जैसेभना
वणाववहुरूपउगवतानही॥अरुअकारतिसकाद्रिष्टिआवताहैसोद्रग्धवाधमा
तैसेचेष्टाउसकीद्रिष्टिआवतीहै।सोदृष्टिमात्रहै॥उसकेरिदेविषेकछुन
ही॥अरुजोपुरुषकर्मइंद्रीआसाथचेष्टाकरताहै॥अरुजगतकीसततानहीउ

वं॰ मं॰ ५५

सकौं तब बंधन कोइ नहीं उसकौं होता॥ अरु जो जगति कौं सत मानकर थोउ सु
कर्म करता है तौ भी पसरि जाता है॥ जैसे थोरी अग्नि जागकरि बहुत होइ जाती है
तैसे थोरा कर्म भी उसकौं जन्म मरण दुःख देता है॥ अरु ज्ञानी कौं नहीं होता॥
उसकी प्रारब्ध शेष है॥ सो भी दिष्टि विषै नहीं मानता॥ जो शरीर होवै की है आत्मा की
नहीं॥ सो भी वेग उतरता जाता है॥ जैसे कुम्हार का चक्र होता है॥ अरु चरन लगा
वणे तैं रहित होता है तब स्नेह स्नेह उतरता जाता है॥ तैसे प्रारब्ध वेग उसका हटता
जाता है॥ बहुरि जन्म नहीं होता॥ काहे तें जो अहंकार रूप चरन नहीं लागता ति
सकौं॥ ज्ञान अहंकार का नाश करै जब अहंकार नाश हुआ॥ आनंद सब की आदि
पदि कौं प्रापति होवैगा॥ अरु परम निर्वाण पद है॥ तिस विषै निर्वाण भी निर्वाण
होइ जाता है॥ हे रामजी जब बर्षा काल होता है तब बदल होते हैं॥ जब सरद काल
आवता है तब बदल चल्ले रहते हैं॥ हे रामजी जब लग अज्ञान रूपी बर्षा काल है
तब लग अहंकार रूपी बर्षा है॥ जब विचार रूपी सरद काल आवैगा॥ तब अहंकार
रूपी मेघ चल्ले रहेंगे॥ अरु आत्म रूपी आकाश निर्मल भासैगा॥ हे रामजी जैसे
मलिन अदर्श होता है तब मुख का प्रतिबिंब दिष्टि नहीं आवता॥ जब मैल दूर कि
या तब मुख का प्रतिबिंब प्रत्यक्ष भासता है॥ तैसे अहंकार रूपी मैल करि जीव अ
रु आत्मा नहीं भासता॥ जब अहंकार रूपी मैल दूर हुआ
तब आत्मा जिज्ञासा तिसकौं भासैगा॥ जैसे समुद्र विषै नाना प्रकार के तरंग उठते हैं
अरु समुद्र कौं भजन मैं दिष्टि आवते हैं॥ अरु भूषण विषै स्वर्ण ही भा
सता है॥ तैसे नाना प्रकार के प्रपंच तिस समिकदर्शी कौं चेतन घन आत्मा ही दिष्टि
आवता है॥ आत्मा तें इतर कछु नहीं देखता॥ अरु बडो रत्ने पथर की शिला की निआ
इ होइ जाता है॥ काहे तें जो अहंकार तिसका नष्ट होइ गया है॥ अरु जो अहंकार स
हित है अरु क्रिया का त्याग करता है॥ अरु आप कौं त्यागी मानता है॥
सो मूर्ख है॥ जैसे कोउ लकरी लिकर अकाश कौं नाश कीआ चाहे तौ नहीं हो
ता॥ तैसे क्रिया के त्याग करि सुखी नहीं होता॥ जो मैं अरु मेरा क्रिया का बीज अ
हंकार का नाश होवै तब निहक्रिया आत्म पद कौं प्रापति होता है॥ जैसे तीन बाग अ
पणा तीव्र नाशवत् मागता है तब सर्व होता है॥ तैसे जीव अपणा जीवत भाव त्या
गे तब आत्मा होता है॥ जैसे तेल की बूंद जल विषै पसरती है॥ अरु पसरि जाती है॥
अरु नाना प्रकार के रंग जल विषै अहंता रूपी तेल की बूंद नाना प्रकार की कल
ना दिखावती है॥ आत्मा अरु ब्रह्म अरु निराकार निरंजन एत्यादिक नाम भी अहं
कार तें पृथक विषै कल्पे हैं॥ सो आपु एक केवल सतामात्र है॥ हे संतपर अमन की नि
आपण स्थिति है॥ हे रामजी संसार रूपी मर्च का बूटा है॥ अरु अहंता रूपी तिसका बी
ज है॥ अरु ममता रूपी फूल है॥ अहंकार रूपी तिसविषै गंध है॥ हे रामजी जब अहंता उ
दे हुए तब संसार उदे होता है॥ अरु अहंता के नाश हुए संसार का नाश होता है॥ वि
चार विषै उदे होता है अरु विचार विषै नाश होता है॥ अहंता का होणा ही विचार है
देहाभिमान कौ॥ अरु अहंता का लीन होना संसार का लीन है॥ जैसे अग्नि का कौं जल
से शांत होता है अरु तिसका चट छ्वणता है॥ तब अग्नि का चट संगि आ कौं पावती है हि
तैसे पुरुष कौं अहंकार का संगि होता है॥ तब शरीर होता है॥ अरु जीवन संगि आ कौं
पावता है॥ अरु देश काल पृथवी पर्वत आदिक दिशा कौं देखता है॥ अरु जब अहं
ता नाश होवै तब कछु नहीं होता है॥ जेता कछु नाम रूप अरु तिसका अर्थ है सो अहंता
करि के भासता है॥ जब अहंता कौं त्यागे तब शांत रूप आत्मा ही शेष रहि जावेगा॥

जैसे पवन तें रहित दीपक प्रकाशता है॥ तैसे अहंकार रूपी पवन तें रहित अपने स्वभा
व विषै स्थित होता है॥ अरु अनंद पद कौं प्रापति होता है॥ अरु अनादि पद अपणे
कौं प्रापति होता है॥ अरु सर्व का अपणा आप होता है॥ अरु देश काल वस्तु अपणे आ
प विषै देखता है॥ जब लग अहंकार का नाश नहीं होता तब लग मैं बचन रिदे विषै
प स्थित नहीं होवहिंगे॥ हे रामजी अपणा स्वभाव जैसे पुरुष नहीं जानता सो आ
त्म पावणा कठन है॥ अरु अपणा स्वभाव जान ता बहुत सुगम है॥ जब अहंता
का त्याग करै तब मैं नहीं लागता है तब कल्याण होवै॥ जब अहंता का नाश होवै
तब भ्रम की निवृत होवेगी॥ जैसे जेवरी के देखे सर्प भ्रम निवृत्त होइ जाता है॥ ज
ब लग अहंता पकरि फुरती है॥ तब लग उपदेश उसकौं लागता नहीं॥ जैसे आरसी
उपर मोती नहीं ठहरता तैसे उसके रिदे विषै मेरे बचन नहीं ठहरते॥ अरु जिसका
रिदा शुद्ध है तिसकौं मेरे बचन लागते हैं॥ जैसे तेल की बूंद जल विषै विस्तार कौं
पावती है॥ तैसे अल्प बचन भी उसकौं बहुत होइ लागता है॥ हे रामजी एक पुरातन
इतिहास पापी कहता हौं सो श्रवण करु॥ भरद्वाज अरु काक भुसंड का संवाद है॥ एक स
मै सुमेरु पर्वत के शिखर मैं गए थ्या॥ तहां भुसंड देखा था॥ तिसकौं मैं पूछा कीआ॥ कि
हे आत्मज्ञसा भी कोउ शेष है जिसकौं आदर्श न होवै॥ अरु ज्ञान तें जो नहि आ है
वै॥ जो तैनें कौउ देखा है तब कहु॥ भुसंड उवाच॥ हे भगवन् एक विद्याधर देवता
हौ होत भए आहे॥ उसके बड़ी आरबल थी अरु विद्या बहुत अधिक थी॥ अरु मन क
ओ विखे विचरता था॥ अरु भोग भी तिसने बहुत भोगे थे॥ अरु सतकर्मों कौं करे॥ परके
वल समहि कामना वनरूप अंग जप तप महाकर्म करता रहा॥ तप जप मन मग्न आदिक क
र्म करता भए आ॥ तब चतुर्थ जग का अंत हुआ तब उसकौं विचार आनंद उत्पति भए
आ॥ ... तिन भोगों तें उसकौं वैराग उपजि
आ॥ तहां जाइ कर विचार करत भए आ
तब भोगों कौं त्याग करके पर्वत पर गए आ॥ तहां जाइ करि विचारत भए आ
जो एह संसार असार रूप है॥ किसी प्रकार एस तें छूटउ॥ बारंबार जन्म है बारंबार मृत
है॥ पदार्थ सत कौ जान हौ॥ किसका आश्रय करो॥ अरु विचार करके काइ विरक्त आत्मा पु
रुष मेरे पर्वत स्वर्न की पुरी तिसपर जो हम मेरे पास आइ प्रापति भए आ॥ अरु मैंने तिस
एक डंडोत करी॥ सिरनी चाक करि के अरु मैं भी बहुत आदर कीआ॥ तब हाथ जोर करि क
हित भए आ॥ विद्याधर उवाच॥ हे भगवन एते काल प्रजंत विषै अरु केते भोग मैं भो
गता रहा हौं॥ पर शांति मै ने नहीं पाई प्रापति नहीं भए॥ तिसतें मै दुःखी रहिआ हौं॥ शांति का
उपाय कृपा करके कहौ॥ हे भगवन मैं चतुर्थ युग का जो ब्रह्म जानता हुआ हौं॥ तिस विषै स
दा शिवजी रहते हैं॥ अरु कल्प वृक्ष भी बहुत है तिस विषै बहुत काल रहिआ हौं॥ अरु स्वर्ग की
बहुत शिष्य विद्याधरों के स्वर्ग विषै रहा हौं॥ अरु एंद्र के नंदन वन विषै रहा हौं॥ अरु स्वर्न की
कंदरा विषै रहिआ हौं॥ अरु संदर अपछरा साथ बहुत स्पर्श कीआ है॥ हे भगवन् एत्या
दिक बहुत स्थान मैं देखे हैं॥ अरु तप भी बहुत कीए हैं॥ तौ भी त्रिप्त न हूए॥ अरु बहुत स
गंध बहुत करनाश का कौं त्रिपत न भए॥ अरु रस ना करि भोजन बहुत प्रकार के खाए॥ तौ भी
शांति न भए॥ त्रिस्ना बढ़ती गई॥ हे भगवन जिसकरि मेरे स्वर्ग ज्ञान करि सर्व प्रकार॥ ति
सी शांति सुख की प्रापति होवै॥ जैसे मृग चासर खाल का वाणी मृग निवारण के अर्थ आव
ता है॥ अरु रोग सहण करि मैं ढीहा होइ जाती है॥ अरु रबधि कौं सकौं पर जलते ता है॥ अरु स्थिर
गडा दुःख पावता है॥ तैसे मैं स्वर्ग जाणा करि विषै अहंकौं ग्रहण करता था॥ अरु बडे दुःख
कौं प्रापति भए आ॥ हे भगवन मैं चिरकाल तक भोग भोगे है दिव॥ पांचों एंद्री कर

वं॰
मं॰
५६

वे मन न सहत कछु कहा ताविखे नही आवते॥ ऐसे प्राहू स्पर्श रूप रस गंध भोगे हे॥ अर
जेसे छिन कर अग्नि त्रिष्नि नही हे
मेरता एसा नन प्रापति भए॥ अरन एंडी त्रिष्टि प॥ अर अंतर कों परी जलावती हे
ती॥ जेसे त्रिष्ना दिन दिन प्रति विर्ध होती जाती हे॥ जा मे एनक रस्त खी हो वहु
जो पुरख एनके भोग विखे अरु का रागजनन कती हे॥ आरु समंद्र विखे रूपता का आसनक
गा सो महा मार खेहे॥ तिस कों अधिक कारहे॥ जब लग एंडी अरु अर विखे अरु का संजोग
ती हे॥ अर एह सुख रूपी न बलग भासते हे॥ अरु जा विजोग हू आन ब महा डुख कों प्रापति हो
हे॥ अर जब एंडी अरु प्रिसो विखे अरु का विजोग हू आन ब महा डुख कों प्रापति हो
हे॥ अर भोग जाते रहते हे॥ जे डगण से विखभो
ता हे॥ काहे ते जो त्रिष्ना अंतर रहती हे॥ अर भोग जाते रहते हे॥ जदए
गी ते हे ऊहो डुखदाए हो जाते हे॥ हे भगवन एसी कर मेंवहुत डुख पाए आहे॥ जदए
एंडी आ कों मल हे तो भी समेर की नि आपे कहते हे॥ कोमल भी भासती हे॥ अर ऐसी हे
जेसे सर्प कों ही होती हे॥ जेसे वहु की धारा को मल हो होती हे॥ सर्प की आ अर मार
डारती हे॥ वहुरु के सी हे जेसे ब रूपी ए वने कर जेल्ल विखे भ्रमती हे तेसे अब्ता
न रूपी न टी वि खे पवन रूपी एंडी अरु ने मे बेता ए डुख दी आहे॥ हे भगवन अ से भी
मे ने देखे हैं जो सारा दिन भागते रहे हे॥ अर भोजन खावण कन मिल एक हा न ही
हु आ॥ अर एक अऐसे देखे हे॥ जो एक दिन विखि वस्या दिहु अर का ष्ट प्रजेन सभ भोगो
कों भोगि आहे॥ तिन हो नो कों भ स्म होता देखि आहे॥ जिस कों भोजन मात्र भी दि
न कों प्रापति नहीं होता॥ अर जो सभ वि खे एंडी अरु के एष्टि रूप भागता हे॥ तिन
दो नो कों भस्म होता देखि आहे॥ भस्म दोनो की तुल्ल हो जाती हे॥ विशेषता क
छु नही॥ एन एंडी अरु के वं धन विखि जन्म ते भी हे॥ वार वार अज्ञानी॥ अर शांत
कों नही प्रापति होते॥ अर जो अंतर मक हरुते लोम रूपी दृष्टि आवता हे॥ अब न रेता ए
कि आ रखे हे॥ हे भगवन एह डुख का विषि विखे न ही मानता॥ जे से चक्रवर्ती राजा
होवे अर सिर पर वव र फूलता हे॥ अर अंतर अधि आत्मता पक रितपता हे॥ जो मन
विखे जलन हे तिसकर जलता हे॥ अर वा हर ते न रूपी दृष्टि आवता हे॥ अर अंतर
एंडी आ मे रेता ए जलावती हे॥ हे भगवन अन्या के लोक विखे मे बड़े सुख देखे
ए वन हा भी डुखी रहता हे॥ काहे ते जो इह अर अति मे न हा भी रहती हे॥ तिस कर उ
हु भी पक रेजलता हे॥ अर एह एंडी प्रास्त्रों ने भी कठन घाव क ती हे॥ सो घाव कि
आ हे॥ जो समसार की विखे मता नाना प्रकार की दिखावती हे॥ अर सर्वदा भाग
अर देखे एन विखे रहता हे॥ एम कर के मे वहुत जलता रहता हो॥ ताते सो एड
ता ए मे रेता ए कहहु जिसकर के शांत कों प्राप्त होवहु॥ अर डोइ कवन सुख हे जिस
कों पाए कर वहुरु डुखी न होवेउ॥ अर जिस का नाश न ही॥ अर आदि अंत ते रहत
हे॥ सो कहहु॥ जो उस के पावणा विखे कष्ट हे तव भी मे जतन करता हो जो किसी
प्रकार प्रापति होवे॥ हे मुनी अव मेरे ता ए वडा कष्ट दी आहे॥ एह एंडी के से हे रा ग रूपी
ष्निष्ठ कों अग्नि हे॥ अर्थ एह जो सभ गुणो कों जलावती हे॥ विचार अर धीरज सं
तोष प्रांति एत्यादिक शुभ रूपी जो ब्रिज हे ति से नाश करने हारी हे॥ हे भगवन एन
हु मे रेता ए डुख दी आहे॥ जे से मृग का वचा होवे अर सिंघो के वसि पड़े अर तिस कों
मत्त आहे ना कर्ते हे॥ ते से एंडी आ कों वसि की आहे तिस का पूजन सर्व देवते कर्ते हे
अर देवता न की एच्छा कर्ते हे अर जिस ने मन कों वसि न ही की आ॥ तिस को दीन क
रता नते हे॥ अर जिस पुरख ने एंडी आ कों वसि की आ हे सो समसे र पवन की नि
आण अपणी गंभीरता विखे स्थिति हे अर जिस एंडी आ कों वसि नही की आ॥ सो

त्रि णा की नि आपत कहे हे॥ अर जिस कों एंडी अरु विखे अरु विखे सदा त्रिष्ना रहती
हे सो मूर्ख हे॥ तिस कों मे अधिक कारहे॥ हे मन न वश्र महत भी हे अर जो एंडी आ ऊ अस
क वसि न ही॥ ता डाकु महा नीच हे॥ हे मुनी सर एंडी आ मुरु कों वडा डुख दी आहे
जेसे महा मूर्ख जा विखे एउ गण उ कों न स्कर मारहु ले ता हे॥ तेसे एंडी आ मे रेता ए
मारहु ली आहे॥ अर वं एंडी आ रूपी सर्पणी हे॥ अर त्रिष्ना रूपी विखहे॥ एन डु विखे
तिसकर अपनी रत्निरूप मारहु तदेखी तीहे॥ अर कोउ विरला एक देखी नरनों ने वेच
होवहि गे॥ एह एंडी आ ऊ प्राहे॥ अर अपणा अपणा विखे को लेती हे॥ अर वर अव र
कों नही देती आ॥ एस ले आत म भय क होती आहे॥ अर वलु छ हहे॥ अर जडहे॥ अ
न होती अ हूने डु खदी आहे॥ जे से विजली का चमत्कार होय आदि हरू छपन हो जा
ता ता है॥ तेसे एंडी अरु के स ख विणमात्र दिखा वदे ते हे॥ वहु रू छप न हो जाते
हे॥ जबलग एंडी अरु अर विखि अरु का संजोग होता हे॥ तब लग सुख भासता
हे॥ अर जब एंडी अरु ने विखि अरु का विजोग हू आ तब डुख प्रापति होता हे हिका
हे तेसे त्रिष्ना रहती हे॥ अर एक से ना हे तिसविखे एंडी अरु के विखे भोगरोनम
नह स्त्री की नि आएहे॥ तिसविखे त्रिष्ना रूपी जजीर हे॥ अर एंडी आ रूपी रथ हे॥ अ
र नाना प्रकार के विखे ति समाना रूपहे॥ अर संकल्प विकल्प रूपी खड्ग हे॥ अ
र तिन के धारणहारा अहंकार हे॥ अर एह लो क्रि आ होती हे सो अहंकार महत
अस्त्रो के प्रेरे हे हे॥ हे मन न जो जिस पुरख ने एस सेना कों न ही जीति आ॥ सो मो ह
पी अंधकूप विखि गिरि आहे॥ अर कष्ट पावता हे॥ अर जिसने जीति आहे॥ सो पुरख रू
ख कों प्रापति होता हे॥ हे मुनी श्वर एह एंडी आ के सी हे॥ भोगों की एच्छा रूपी पापवि
लेख हे कार रूपी राजा कों डार देती हे॥ अर निकस ना कठन हे॥ जिस पुरख ने कों
जीता हे तिसकों त्रिलोकी के विखे जे हो तीहे॥ अर जिसने नही जीति आ सो महा दीन
ता कों प्रापति होता हे॥ अर जन्म जन्मांतर कों पावता हे॥ एन एंडी अरु विखे जो गु
ए अर रत मोह पार हता हे॥ तवलग दाह क कों देती हे जबलग रजतम वृत्ती हे
एह भी मन की वृत्ती हे॥ जब एन का अभाव होवे तब शांत प्रापति होवे॥ एह सो
घट वि आहे॥ जो एंडी आ तप कर भी वसि न ही होती आ॥ न जगों कर वसि होती
आहे॥ न ब्रत हू कर वसि होती आहे॥ न तीर्थ स्नान कर वसि होती आहे॥ न किसी
औखध कर वसि होती आहे॥ अर वर डपाव भी किसी कर वसि न ही होती आ॥ एक स
तों के संगि कर निवेसी होवे तो वसि होती आहे॥ ताते मेत मारी शरन हो॥ मे
रेता ए अपटा के समंद्र ते क्रिपा कर के निकासहु॥ जो मे डूवता हो अर दीन हो॥ पे
स सारसमंद्र विखे॥ ताते तुमारी शरनि कों प्रापति हू आ हो॥ ताते तुम पार उता
रहु॥ अर वतु मारी महिमा सेतो ते भी सुणी हे॥ तुम क्रिपा करो॥ हे भगवन जो कोउ
आर बल्ला प्रजेत दिव भोग विखि अरु कों भोगता रहे॥ अर एन ते शांत चाहे तो न पा
पति होवेगी॥ वडे सुख भी डुख समान हे॥ अर अकाण विखे डोइ गणवाले हे तो भी
एंडी आ वसि न ही कर सकते॥ तिति दीन डुखी रहते हे॥ ऐसा भी कों उ पुरख होवे
जु फूलों की कली कों नि आपले कर महा उन मत हे स्त्री के दंतों कों चूरण क
रे॥ तों मानी अति हहि॥ पर एंडी आ कों अंतर मेल कर्णा महा कठन हे हे मुनी
श्वर एक ता काल मे जेल ता रहा हो॥ महा अध्यात्मता पा विखे मे रेता ए एनों ने डारा
हहि॥ मे डुखी आ हू आ हों तम क्रिपा कर निकासहु॥ मे तुमारी शरन हो॥ २७॥ इ
ति श्री धा र ए व न म भे भ संडे उ वाच ओहे वसिष्ठ जी न वर्णन

प्रकारविद्याधरमेरे आगे प्रार्थनाकरीहे ॥ तबमेकहेहे अंगतंधनहे ॥ अबवेजागिआ
हेजेसेकोआपुरवअंथकूपविखेपरणहोएकअरतिसकीएछाहूएजोमेनिकसे
तउजाणीएजनिकसेगोताततंधनहे ॥ हेविद्याधरमेउपदेशकर्ताहोमाते
अंगीकारकरो ॥ अरमतजाणा ॥ अरमेरेबचनोविखेसंसेनहीकरणा ॥ जोएहउ
पदेशऐसेकिसीकीआहे ॥ जोसभकेसारबचनहे ॥ मतेरेतांएककहताहों ॥ अ
रमेजानताहो ॥ जोतंशीघ्रहीअंगीकारकरेगा ॥ जेसेउजलआरसीप्रतिबिंबकों
ग्रहणकर्तीहे ॥ जतनबिनातेसेमेरेबचननतेरेअंतरप्रवेशकरहिंगे ॥ अरजिसका
अंतःकरणस्वछहोताहे तिसकोमेंतउपदेशकरहिंअथवानकरहिं ॥ ज्ञानकोंस
हजेबचनहीउपदेशहोलागतेहे ॥ जेसेसभआरसीप्रतिबिंबकोंजानतेबिनाग्रहण
करतीहे ॥ तेसेमेरेबचनोकोतथास्वलेवहिगा ॥ तबतेरेदुखनाशहोजावहिगे ॥ अ
रपरमानंदकोप्रापतिहोवहिगा ॥ जोअबिनाशीसुखहे ॥ अरआदिअंततेरहतहे
अरएहीअहंकेसुखआगमापायेहे ॥ सोदुखकेतुल्लहे ॥ एननेरहतपरमसुख
हे ॥ हेविद्याधरइहविखेसंशजोकहुतेरेतांएसुखरूपदृष्टिआवेतिसकात्याग
करु ॥ तबपरमानंदसुखतेरेतांएप्रापतिहोवेगा ॥ अरसबदुखोकामूलअहंभा
वहे हि जबअहंकारनाशहूआतबशांतहोवेगी ॥ संसारकाबीजअहंकारहे ॥ अ
रसंसाररूपिगतिश्राकेजलवतहे ॥ जबलगअहंकारनष्टिनहीहोताबतलगअहंता
रूपीसंसारकाबीजहे ॥ जबअहंताबीजनष्टिहोवेतबसंसारभीनिवृतहोवे ॥ अर
संसाररूपीबृछहे ॥ सुमेरपर्बतआदिकतिसकेपत्रहे ॥ तारागणएसकेफूलक
लीहे ॥ अरसप्तसमुंदएसकारसहे ॥ अजन्ममरनएससाथिवलीहे ॥ अरदुख
सुखएसकेफलहे ॥ अरएसका[illegible]पवालनकोधारकरएस्थितिहूआहे ॥ अरअ
ज्ञानरूपीपृथवीपरउत्पतिहूआहे ॥ अहंकारएसकाबीजहे ॥ अरबृछमिथ्याभ्र
मसातेउत्पतिहूआहे ॥ अरसतअरसतकीनिआंएस्थितिहूआहे ॥ तातेअहंकार
बीजकानाशकरो ॥ निनहंकाररूपीअग्निकरएसकोजलावहु ॥ तबअतिअंतअ
भावहोजावेगा ॥ एहभ्रमककेंमेकोदेताहे ॥ जेसेजेवरीविखेसर्पभ्रमकर्केभे
कोदेताहेतातेनिरहंकाररूपीअग्निकर्केएसकोजलावहु ॥ १४ ॥ इतिश्रीसमा
ब्रि रे व नेनामसर्गः ॥ भहेउवाच ॥ हेविद्याधरएहज्ञानजेसेउत्पति
होताहेसोश्रवणकरब्रह्मविद्याशास्त्रतिसकोश्रवणकरणा ॥ अरआत्मविचारक
रणा ॥ तिसकरज्ञानउपजताहे ॥ सोएभएअग्नितिसकरसंसाररूपीबृछकोजलाव
हु ॥ अरआगेभीहेनहीअणहोताउदेहूआहे ॥ अरमनकेसंकल्पकररहूएकी
निआंएस्थितिहे ॥ जेसेपथरविखेशिल्पीपुतलीअहंकोकल्पताहेजोएतीपु
तलीआनिकसहिगी ॥ सोहपुतलीआंहुएनही तेसेएहबिशामनरूपीशिल्पीक
ल्पताहे ॥ जबमनकानाशकरेगातबसंसारभ्रममिटिजावेगा ॥ आत्मविचारक
र्केआत्मपदकोप्रापतिहोवेगा ॥ अपणाआपपरमात्मरूपप्रत्यक्षभासेगा ॥ ता
तेअहंकोत्यागकरअपणास्वरूपविखेएस्थितिहोहु ॥ हेविद्याधरएहजोजगत
रूपीबृछहे ॥ सोहंतारूपीजलतेउपजाहे ॥ तिसकोंजबज्ञानरूपीअग्निकरजला
एअतोफेरएहजगतनहीउपजता ॥ जबविचारकरएसकोदेखीअतबअहंतंकडुन
हीपाएती ॥ हेविद्याधरअहंतंएहमिथ्याहे ॥ एनेकअभावकीभावनाकरएही
उत्तमज्ञानहे ॥ हेसाधजबएहगुरुकेबचनसुणिकरएसनेउसकेअनुसारअभ्या
सकीआ ॥ तबएहपरमउतमपदकोप्रापतिहोताहे ॥ एसकोजेहोतीहे हेविद्यारूपीके

दशकेधारणाहोएपर्वतअरविद्यारूपीपृथवीकेधारणाहोवेएहसंसाररूपीएकअरंडवा
रहे ॥ तिसकेसुमेरजेसेकछपघटहे ॥ अरतारोकीपंकतसाथजरूहूएहोहि ॥ अरब
नदिप्रापहारविरछकेधरावेतालदेवतापातालअकाशएहआदिकजोउबडहोहि
सोतिसकेउपरएस्थितिहे ॥ अररात्रदिनभूतप्राणीअरएनकेजोखरिहे सोचउप
रकेखोनहे ॥ कोउजेसेकर्मकर्तेहे ॥ तिनकेअनसारसोखदुखकोभोगतेहे ॥ सो
खिलहे ॥ ऐसेहीसंपूर्णप्रपंचजोकिआसजगतिदिखाएदताहे ॥ सोभ्रमसिद्धहेतो
तेमिथ्याहे ॥ जेसेसप्नकीसृष्टिसंकल्पकरभासतीहे ॥ तेसएहसृष्टिभीभ्रमकर
भासतीहे ॥ अज्ञानकररचीहूएहे ॥ आत्माकेअज्ञानकरसृष्टिभासतीहे ॥ सोआ
त्माकेज्ञानतेलीनहोतीहे ॥ जबसृष्टिनथीतबएसआत्मततहीथा ॥ अरअबभीआ
हीहे ॥ अरजोकछुप्रपंचतेरेतांएदृष्टिआवताहेसोशून्यआकाशहीहे ॥ त्रिगुणमेप्रप
चगुणोंकारचिआहूआहे ॥ अरअपणास्वरूपकेप्रमादिकरएस्थितिहूआहे ॥ अरआ
त्मज्ञानतेसूनहोजावेगा ॥ जबप्रपंचहीसूनहूआतबआत्माअरअनात्माकाकरणा
भीनरहेगा ॥ पाछेजोसाक्षरहिगासोकेवलस्वधपरमततहे ॥ सोतेराअपणाआपहे ॥
तिसविखेएस्थितिहोवहु ॥ अरदृशकात्यागकरो ॥ जोहेनहीनमेहोनजगतहे ॥
जबतूऐसाहोवेगातबतेरीजेहोवेगी ॥ आत्मपदसभतेउत्तमहे ॥ जबतूआ
त्मपदविखेएस्थितिहूआतबसभतेउत्तमहूआ अरतेरीजेहोवेगी ॥ तातेआ
त्माविखेएस्थितिहोवहु ॥ इतिश्रीसमाव अ व उ दे नामसर्गः ॥ १२ ॥
उउवाच ॥ ओंहेविद्याधरएहप्रपंचभीआत्माकाचमत्कारहे ॥ अरआत्मासभचे
तनहे ॥ जिसविखेजडअरचेतनताएस्थितिहे ॥ अरसभकाअधिष्ठानहे ॥ सोसभ
हमात्रतेराअपणाआपहे ॥ अरअहंतकेपाछेअर्थतेरहतहे ॥ अरआत्मतमात्रहे ॥ अ
[illegible]अनंतकोनिआंएस्थितिहे ॥ हेविद्याधरतएसजरूअरचेतनतेअवो
धुमानहोहु ॥ जबतहेंआनंदवतशांतचिदघनरूपहोवेगा ॥ अरएहजडचेतनहेसोए
हदोनाजडहे ॥ परमार्थचेतनआएनदोनोकेअंतररहताहेहि ॥ जदपअदृशहेतो
भीएहपनकेअंतरहोरहताहे ॥ जेसेसमुंदकेअंतररहरूवाअग्निरहतीहे ॥ अरएन
जडचेतनकाजोकारणरूपहे ॥ उत्पतभीउसीतेहोतीहे ॥ अरनाशभीउहीकर्ताहे ॥ जे
सेपवनकर्केअग्निउपजतीहे ॥ अरपवनहीकरलीनहोतीहे ॥ हेविद्याधरजबतेजा
णिआजोमेचेतनरूपभीनहीं ॥ अरजडभीनहो ॥ जबऐसीभावनाहूएतबपाछेजारहे
गासोतेरास्वरूपहहि ॥ जबतेंअंतरजडअरचेतनएनदोनोकास्पर्शनहूआनब
सर्वकेअंतरजोचेतनहेसोहूतेरेतांएब्रह्मभासेगा ॥ अरविखभीआत्माविखेकछुह
एनहीं ॥ जेसेसूर्जकीकिरणाकाचमत्कारजलाभासहोताहे ॥ तेसेसधचितकाच
मत्कारविश्वहोभासतीहे ॥ हेअंगजेसेभीतेअपरपुतलीआलिखीहोतीहे ॥ तेसेए
नअकाशविखेचितहूपीचितनेलेपुतलीआकल्पीहे ॥ सोआत्माअपीभीतनेए
तरकछुनही ॥ जेसेस्वप्नविखेभूषणाकल्पीतेहे ॥ ससवर्णतेएतरकछुनही ॥ तेसेअ
ज्ञानीआत्मविखेविश्वदेखताहे ॥ सोआत्मातेएतरकछुनही ॥ सभआत्मस्वरूपकीसंगि
आहे ॥ जगतकहीअब्रह्मकहीअेआत्माकहीअे ॥ देशकालसभभेदसीततकीसंवि
आहे ॥ उहीसधचेतनअकाशहे जिसकाचमत्काअेसेएस्थितिहे ॥ तिसीसततवि
खेएस्थितिहोवहु ॥ एहजगतअैसाहेजेसेउदृष्टिकरअकाशकेविखेस्उकभा
सतहे ॥ तेसेएहजगतहे ॥ एहजोअहंतरूपजगतहोभासताहेसोअबोधकर ॥ अरबो
धकरलीनहोएजाताहे ॥ जेसेमात्रथलविखेसूर्जकीकिरणाकरजलभासताहे ॥ जे

वं
म
१७

सेंग धवनगावेतेसे एहहे॥ एसकात्यागकरै॥ ८४॥ इति श्री चित म नाम सर्गः॥ मसेड
उवाच॥ ओहे विद्याधर एह जगत एस्थावरजंगम सब आत्मा विखे विखे एस्थितिहे ए
नेउत्पति हुआहे॥ आत्मा विखे एस्थितिहे॥ अरु आत्मा विखे विखे एस्थितिहे एन
रकछुनही॥ अरु आत्म किसी का कारण नही॥ काहेते जो एक अखंड तीअहे॥ जिसवि
खेइ सराफुरनानही॥ हे अंग जो तिसपद पावणेकी एछाक रतीहे॥ तेत बअैसे निश्चेकर
जोनमेहोनएह जगतहे॥ जब अैसा होवेगा तबतें आत्मपदकी प्रापति होवेगा॥ जो दृश्य
कालव सतुके प्रछेदतें रहतहे॥ अरु सर्व ठौरही पवमानमतत खरूपहे॥ अरु विषका क
तोभी संकल्पही हे॥ काहेते जु संकल्प कर उत्पति होताहे॥ अरु संकल्प करनाश भीहो
ताहे॥ जैसे पवनकर अग्नि उत्पति भी होतीहे॥ अरु पवन हीकर दीपक निर्वाण होता
हे॥ जब संकल्प बाहर सफुरताहे तब संसार उत्पति होताहे॥ अरु भासताहे॥ अरु स
कल्प अंतर लीन होताहे॥ तब आत्मपदकी प्रापति होतीहे॥ अरु प्रपंच लेहो जाताहे
तातें संसार नानाप्रकारकी सेगिआ फुरणेकर होतीहे॥ सरूपविखे कछु नहीनस
तहे न असत हे न अनि हे॥ एह सब संकल्पही मात्रहे॥ अरु वास्तव शुद्ध जो जगत
अरु ब्रह्म विखे भेद कछु नही नाममात्र दोहे॥ जैसे द्रष्टअरुके भलेमे जगत अरु ब्रह्म
हे॥ अरु भ्रम कर नाना तमासताहे॥ जैसे समुंद्र विखे तरंग अरु आवर्त उठतेहे॥ सो
जलतें एतर कछु नही॥ अरु पवनके संजोगतें अकार भासतेहे॥ तैसे आत्मा विखे ज
गत कछु एतर नही॥ अरु संकल्पके फुरनेकर नानाप्रकार जगत भासताहे॥ हे अंग
एह संकल्पके साथ मिलिकर चित जाकि जैसी भावना करताहे तैसा सरूप अपणा देख
ताहे॥ सरूपतें एतर कछु नही परभावनाकर के अवर का अवर देखतीहे॥ जैसे सध
मनके निकट किंकार गरावी अेतोतेसाही रूप भासती हे॥ अरु मणि विखे कछु
आनही रंग॥ तैसे चितसकालिविखे कछु आनही॥ अरु एकी निराएस्थितिहे॥
तातें अपणेसरूपका भावनाकर॥ अरु जड चेतनको छोडकेसध चेतनघनविखे एस्थि
तिहोहु॥ जब अैसे जाणकर अपणा सरूप विखे एस्थिति होवेगा॥ तब उत्थानविखे भीवि
प्रातेरताए अपणा सरूपही भासेगा॥ हे विद्याधर एह जगत भी आत्माते भासताहे॥ जै
से एस्थिरसमुंद्र विखे जलतरंग फुरतेहे॥ तो कारणरूप जलविनातो नही॥ तैसे ब्रह्मका
रणरूप विना जगत नही॥ परकैसेहे ब्रह्मसत्ता जो अकर्तारूप हे॥ अद्वैतीअहे॥ अरु त
हे एसीतें कहा जो अकर्ताहे॥ अरु जगत अकारणरूप हे॥ तो नउपजाहे ननाशहोताहे
मात्रस्थलके जलवत हे॥ एसीतें कहा जो जगत कछु वस्तु हे नही॥ केवल अज अच्युत
प्रांतरूप आत्मतत्त्व हीअखंड नरूपएस्थितहे॥ ग्रिल्ला का मवत अचेतचिनमात्र जिस
कोंचिन मात्रकी अंतरि भावना नही॥ तिसमूरख माथेहमारताएकि आपाजनहे॥
हे साधएस्मार्थ तेकछु वणि आनही॥ अरु जहोजहां एह मतिहे तहोतहो अनेकजग
तिहे॥ त्रिणकाष्टकथ आदिकजोएहहे॥ एनसर्वो विखु जगतहे॥ अरु जो विचारकर द
खो अतोउही रूपहे अवरकछु नही॥ तैसे सर्वको जानेहुए भूषणभी सर्वही भासतेहे
तैसे केवल सतासमानपदएकअखंड तीअहे॥ एसतें एतर कछु नही॥ भिन भिन संगिआ
भीउही है॥ १५४॥ इति श्री सर्ग अपसर्गे [ ] प [ ] प्रो नाम सर्गः॥ भसेड उवाच॥ ओहे वि
द्याधर जब एह आत्मपदकी प्रापति होताहे तब एसकी अवस्था एह होतीहे॥ जैसे नग
वरोवी हावे॥ अरु तिसपवबङ्कतप्रासोकी वखाहोवे अरु तिनकर बडखी नही होता॥
अरु संदर अपकराकंटके साथ मिलहितो तिनकर हरख वान नहीहोता दोनु विखेत
लहीं रहताहे हे विद्याधर तब लगए ह पुरख ज्यात्मपदका अभ्यास करताहे जबल

ग सेसा वते सुखपत नहीं होता॥ अभ्यासहीकर आत्मपदकी प्रापति होवेगा॥ जब आत्म
पदकी प्रापति भएतव पंचभूतक प्रागीरके जरस्पर्शन कर हिये॥ जद पप्राणीरको प्रापति भी
होवहि तोभी तिसके अंतर प्रवेश नहीं करें॥ केवल प्रांतपद विखे एस्थित रहतहे॥ वि
हुमान भीलगतेहे॥ तोभी स्पर्शन हीकर सकेत॥ जैसे जल विखे कमलको स्पर्श नही
होता॥ हे देव पुत्र जब लग देहादिक विखे अधिआस है एसकोजब लग प्रानस्पर्श क
तोहे॥ आत्मा के प्रमादिक के॥ अरु जब आत्माका साक्षात्कार हूआ तब सर्व पूर्ण भी
आत्मरूप भासेगा॥ हे विद्याधर जैसेकाउपुरख विखपान करताहे तो दुख पाताहे जल
नताउल की होतीहे॥ अरु शांसी भी होतीहे॥ एह अवस्था विखे भी होतीहे॥ सो वि
षतें एतर कछु नही॥ पर नाम संगिआ हुएहे॥ न विषम रतीहे नजन्मतीहे॥ अरु दुख
खेभी उसविखे द्रिष्टि आएहे॥ जैसे आत्मा नजन्मताहे नमरताहे॥ अरु गुणोंके
साथ मिलणेकर अवस्था को प्रापति हुआ द्रिष्टि आवताहे॥ जन्मता अरु मरता तेआत्मा
रहताहे॥ अरु गुणोंके संकल्प साथ मिलनेकर जन्मता मरता द्रिष्टि आवताहे॥ अरु अं
तःकरण अरु देहादिक भिंन भिंन भासतेहे॥ हे साध एह जगत भ्रमकर भासताहे॥ हे
विद्याधर जो ज्ञानवान पुरख हे सो एस जगतको गउपदवत लंघ जाताहे॥ अपणा पुरखा
र्थ कर खेद को नहीं पावते॥ अरु जो अज्ञानी हे तिनको जरप अल्प भी हे॥ तो भी समुद्रव
त होजाताहे॥ तातें आत्मपदके पावणेको जतन कर॥ जिसके जाणे संसार समुद्र तर
होजाए॥ साकेसा हे आत्मतत्त्व जो सर्व विखे अनस्यूत हे अरु व्यापक हे॥ अरु सर्व ते
अतीत हे॥ वहुरि कैसा हे जिसके जाणे हुए अंतर शीतल होजाताहे॥ सभ तापनाश
होजातेहे॥ हे साध फिर जिसका त्याग अरु ग्रहण करणा वडी मूरखताहे॥ हे साध एहप
दार्थ जान ब्रह्मसरूपही हे॥ जो सभ ब्रह्मसरूप हुआ तब मन हे कोरका कलकके सास
भउहोवे॥ किसीकर किसी को कछु सुख दुख नहीं सभ उही हे॥ हे विद्याधर जब आ
त्मपदको जाणिआ तब अंतःकरणभी ब्रह्मसरूप भासेगा॥ जो संकल्प कर भिंन भिं
न जानीताहे॥ सो संकल्पके होते भी ब्रह्मसरूप भासेगा॥ तातें निहसंकल्प होएक
रएस्थिति होहु॥ जो नमेहोनएह जगतहे॥ ए नोप्राहु अरु ग्रंथ तेरहत होकर एस्थि
तिहो॥ जो सभ सर्व मिटिआ वहि॥ हे विद्याधर जब तैसानिहकारहोवेगा॥ अरु नि
हसंकल्प होवेगा॥ तब उत्थानकालविखे भी सर्व आत्मा भासेगा॥ बुधि वाधिलजाल
दमी स्मृति जसकीर्ति पत्यादिक जो शुभ अशुभ अवस्था हे सो सर्व आत्मा समबुध
रहणे एनके प्रापति हुए भी केवल परमार्थ सतातें एतर भासेगा नाही॥ जैसे अग्धकी
रविखे सर्पके परखोज नहीं भासतेहे॥ काहेतें जो है नही॥ तैसे तेरताए सर्व अवस्था
भासहि गीआ॥ सर्व आत्मा भासेगा॥ जैसे कछु भाव रूप पदार्थ एस्थितहे॥ सो अभावहो
जावहिगे॥ हे अंग जिस पुरख आत्मसरूपको विचारकर पावणेका जतन कीआहे सो
पावेगा॥ अरु जिसकहा जो मैं मुक्ति हो रहोगा॥ सो ताएह दयाकर हिग तिसपुरखके
दाचित मुक्ति न होहोवेगा॥ आत्मसरूप विखे एस्थिति होवणेको पुरख प्रजतन नवि
नाकदाचित मुक्ति न होवेगा॥ आत्मसरूप विखे नकोउ दुख हे नाकिसी गुणसाथ मि
लिआ हुआ सुख हे॥ केवल प्रांतरूप हे॥ किसी कर किसी को कछु सुख दुख नहीं॥ नक
छु सुख हे न दुख हे॥ न को उकर्ता न भोगता हे केवल ब्रह्मसतात अपणा आपविखे एस्थि
तिहे॥ इति श्री भूतारथ भावरूपजोगे [ ] प [ ] प्रो नाम सर्गः॥ १५५॥ भसेड उवाच॥ ओहे
विद्याधर जैसे कोउ कल्पना कर॥ जो आकाशविखे अवर आकाश एस्थितहे॥ तो मि
थ्या प्रतीतहे॥ तैसे आत्माविखे जो अहंकार पुरण हे सो मिथ्याहे॥ जैसे अकाशतें एतर अ
वर अकाश कछुवस्तु नही॥ परमार्थ ततसें आत्मा सत्य हे जिस विखे अकाश भी सुमेरकी

निआपएस्थूलहहि॥ केवलआत्मतनमात्रहे॥ तिसविखेसुमेरआदिकभीसूक्ष्महे॥ आप
रूपहेअस्थूलअसाहे॥ द्रिशानेरहतचेतनकेवलप्रमानरूपहे॥ गुणहुअवतनतहुकेवाभ
नेरहतिहोहि॥ हेदेवअग्नमभवरूपचहुमाहे॥ अरअग्रिमतकेअवर्णहोरहे॥ जैनाककहुद्रि
आपदार्थभासताहे सोसभइहीनरूपहे॥ हेअंगआत्मआत्मरूपअग्रिमतकीभावनाकर
जोजन्मअरमनकेबंधनतेमुक्तिहोवहि॥ जैसेअप्रकाशविखेदूसरीअकाशकीकल्प
नामिथ्याहे॥ तैसेनिराकारचिदात्माविखेअहंमिथ्याहहि॥ जैसेअकाशअपणाआप
विखेएस्थितिहे॥ तैसेआत्मसत्ताअपणाआपकरएस्थितिहे॥ अहंतआदिकतेरहतहे॥ ज
वअहंकारउथ्यानतिसविखेहोताहे॥ तबजगतविस्तारहोताहे॥ जैसेजलविखेद्रवताकु
रतरंगपसरतेहे॥ तैसेअहंकारजगतपसरताहे जैसेवायुफुरनेतेरहितहुएअकाशरूपहो
जातीहे॥ तैसेसंवितउथ्यानअहंतेरहतहुएतबआत्मरूपहोपजातीहे॥ जगतभ्रमभि
टिजाताहे॥ फुरनेकरजगतफुरिआएआहे॥ वास्तवजगतकछुनही॥ ज्ञानवानकों
आत्माहीभासताहे॥ देशकालवस्तुथलजललक्ष्मीस्त्रिनकीतैसभअकाशरूपहे॥ अथ
रूपीचहुमाकेप्रकाशकरकेप्रकाशतेहे॥ तैसेशमादिककेसंवतद्रिशाभावकोंप्राप
तिहोतीहे॥ परकछुअवरनहीहोती॥ जैसेतरंगककेजलकछुअवरनहीहोता॥
जैसेकाष्टकेहेतेकछुअवरनहीहोता॥ तैसेद्रिष्टानद्रिशाभिन्ननहीहोती॥ जैसेज
लकेएभावविखेअवरकछुनहीनिकसता॥ कोमलपत्रहीशून्नरूपहे॥ तैसेकूर
रूपजगतभासताहे परआत्मातेभिन्नकछुनहीशून्नरूपहे॥ शीशआदिकअवर्णेन्ने
वरनतेआदिलकरभिन्नभिन्ननानानानाप्रकारभासतेहहि॥ परसभशून्नरूपहे॥ सभअ
साररूपहे॥ केलकेपत्रोंकीनिआएभासतेहे॥ हेविद्याधरवासनारूपीचितविखेमल
नताहे॥ जबवैरागरूपीफाकुकरफाडीअवदएसकाचितनिर्मलहोवे॥ जैसेकंधरा
परचित्रलिखेहोतेहे॥ तैसेआत्माविखेजगतभासताहे॥ देवतामानुखनागदैतआ
दिकसभजगतसंकल्परूपीचितरेलेमहरतालिखीहे॥ स[illegible]रूपकेविचारकरनेवर्तं
होजातीहे॥ जबस्वहरूपीसंकल्पफुरताहेतबभावअभावरूपीजगतविस्तारकोंपाव
ताहे॥ जैसेजलविखेतेलकीबूंदविस्तारकोंपावतीहे॥ जैसेवासनेअग्निकसिक
रभासकोंदग्धकरतीहे॥ तैसेहेएसतेउपजकरएसकोंजलावताहे॥ आत्माविखेदेश
कालपदार्थभासतेहेएहीअविद्याहे॥ पुरुषार्थकरकेएसकोंअभावकरो॥ अर्थभा
गसमागमेगिअरवकेथाअवर्णविखेविनीतकरो॥ त्रितीआभागशास्त्रकाआपहीविचा
रकरो॥ चतुरथभागआत्मज्ञानकाअभ्यासकरो॥ एसउपायकरअविद्यानष्टहोजावेगी
अरअशुद्धअरूपपदकीप्रापतिहोवेगी॥ विद्याधरउवाच॥ हेमुनीश्वरचारभागउपा
यकरजेपदअशुद्धरूपप्रापतिहोताहे॥ सोमसमिकालकिआहे॥ नामअर्थकेअभा
हुएसषकिआरहताहे॥ भसुंडउवाच॥ हेराजाजीसंसारसमुद्रकेतरणेकोज्ञानवानो
कोज्ञानवानोंकासंगकरणा जोविरक्तपुरखनिवरहे॥ तिनकीप्रकारटहलकरणी॥
तिसकरअर्धभागअविद्याकानष्टहोवेगा॥ उनकासंगतिकरके॥ अरतीसराभाग
मनकरके॥ चतुर्थभागअभ्यासकरकेनष्टहोवेगा॥ जबएहउपायनकरसकेतोएक
जनकरे॥ जोजिसजिसविखेचितअभिलाषकरकेचितभ्रमकतिहोवेतिसीकोंत्या
गकरे॥ एकभागअविद्यानष्टहोवेगी॥ तीनभागभीसनेसनेकरनष्टहोवेगी॥
साधसंगशास्त्रविचारअरअपणायतनहोवे॥ तबएकहीवारअविद्यानष्टहो
वेगी॥ एहसमस्तकालकहीअ॥ अरएकएवकेसवनेएकएकभागनिवर्ततेहोताहे॥ पाछे
जोरहिताहे तिसविखेआत्मअर्थसमअमसतरूपहे॥ अजरअमरएकरूपहे॥ संकल्पके
उपजेपदार्थसंकल्पकेलीनहुएलीनहोजातेहे॥ एहजगतसंकल्पकररचाहे॥ ते

सअकाशविखेसूर्यनिराधारएस्थितिहोताहे॥ तैसेदेशकालकीअपेक्षातेरहितएह
मननमात्रएस्थितिहे॥ तीनोजगतमनकेफुरणेकरफुरआवतेहे॥ मनकेलीनहुएलीनहो
जातेहे॥ जैसेस्वप्नकेपदार्थजागेअभावहोजातेहहि॥ हेविद्याधरब्रह्मरूपीवनवि
विखेएककल्पब्रिछहे॥ तिसकीअनेकशाखाहे॥ तिसकीएकशाखाजगतरूपीगूलरका
फल्लहे॥ तिसविखेदेवतादैतमानवादिकोंआदिकमछरहे॥ मनतापहारूपधवासना
रूपीरसकरपूर्णपंचभूतमलदुआरातिसकानिकसणेकाफुलामाराहे॥ एत्ना
दिकसंदरवनावर्णीहे॥ एसविखेएकत्रिलोकीकाईशाबरइहोतभएआ॥ शरके
वदेशाकरतिसकाअवर्णनष्टहोपगएआ॥ तबएहअबदेलोंकाजनधहोवणलागा
एइआपणीसेनाकोंलेचलिआ॥ तबएहकीहीनताभएए॥ अरभागाःदशोदेशाविखि
खेभ्रमताराजहोजहोजाबैतहांहेतचलेजावहितबअतिवाहकरूपकेसूरज
कोत्रिसरेणविखेप्रवेशाकुरगएआ॥ जैसेकमलविखेभवराप्रवेशाकरे॥ तहांउधका
त्रितातएसकोंविस्मरणहोगएआ॥ तबएककमटबविखेदेहीदेवताभएआ॥ जैसेनिद्रा
करसषुप्तिभासिआवे॥ रत्नसरीसाएथविआहुआनगरदेविआ॥ तिसविखप्रवेश
करतभएआतहांयथावीपहाउनदीआवेहुसुजजत्रिलोकीएसकोंभासणेलागी॥
तिसजगतकाआपकोंएइदेखतभएआ॥ जोइसजेकरसपनपइमेएस्थितिहो॥ त
बकेइनामवदावलीएकपत्रहुआ॥ सोएइकेतकालउपरांतशरीरकोंत्यागकरनि
र्वाणहुआ॥ तबकेदनामपत्रजोसमकापुत्रएइहुआराजकरणेलागा तबतिसकोएक
पुत्रभएआ॥ तबकेदएइभीशरीरकात्यागकीआ॥ परमपदकोंप्रापतिहुआ॥ तिसका
पुत्रराजकरणेलागा॥ बहुरितिसकापुत्रहुआ॥ एसीप्रकारसहस्रपुत्रहोसेकरराज
करतेरहे॥ उनहीकीकुलविखेएहहेमारएइराजकरताहे॥ तातेएहजगतसंकल्प
मात्रहे॥ तिनोंत्रिसरेणविखेएहस्रिष्टिहे॥ तातेएसजगतकोंअसतरूपजाणकरए
सकोंआस्यात्यागकरो॥ इतिश्रीइडपतिआनेत्रिसरेण ग व नामसर्गः॥ भु
सुंडउवाच॥ उहेविद्याधरफेरउनकीकुलविखेएकपंडहुआ॥ बडाश्रीमानत्रिलोकी
काराजकरतेभएआ॥ फेरउहनिर्वाणभएआ॥ तिसकेचारपुत्ररहे॥ तिसकोंहस्ति
केवचनोंकरज्ञानरूपशतमाडदभए॥ तबविदितवेदहोकरएस्थितिभएआ॥ अरजया
प्रापतिविखेएइहोकराजकरतेभएआ॥ देतोकोंजीता॥ तबकिसीकालविखेकिसी
कारजकेनमितभिहकीतंतविखेप्रवेशकीआतहां॥ तिसकोंनानाप्रकारकाजगतभा
सणेलागा॥ तहांएसकोंअपणाएइप्रतभाभए॥ तबएकाउपजीजोमैब्रह्मततकों
प्रापतिहोवों॥ द्रिशपदार्थकीनिआएशतलदेखउ॥ एकांतबेठकरसमाधविखेए
स्थितिहुआ॥ तिसकोंअंतरबाहरब्रह्मसाक्षात्कारहुआ॥ तिसप्रतमाकेउदेहोणकरए
कनिष्ठहुआ॥ जोसबब्रह्महीहे॥ अरसबकेअंतरपूजनेजोगहे॥ अरसबपूजनेभीएसीकों
हेअरसबहे॥ अरमनतेभीरहितकेवलशुद्धआत्मपदहे॥ अरसबकेअंतरपाणापदउसी
केहे॥ अरसर्वव्यापीअरमावानिसीकेहे॥ अरसबकेउअरतेअवणतिसीकेहहि॥ अरसब
कोंआवृतकरकेएस्थितिहोरहाहे॥ सर्वएडीअहुकोंअगविविखेअहुकोंप्रकाशताहे॥ अर
सर्वएडीअहुतेरहताहे॥ अरअसतेहुआभीसबकोंधारहाहे॥ अरनिर्गुणहेअरएडीअ
हुसाथमिलकरगुणोंकाभोगताहे॥ अरसबभूतोंकेअंतरबाहरविआपताहे॥ अर
सूक्ष्महे॥ तातेइंद्रिओंहे॥ एडीअहुकाविखनही॥ अरअज्ञानीकोंदूरिहे॥ अज्ञानकर
अरज्ञानीकोंनिकटिहेआत्मतककरके॥ अनंतहेअरसर्वव्यापीहे अरकेवलशांतरूपहे॥ जि
सविखेहसराकोंउनही॥ वरिपटकंधगरीवदानरासभविखेउइतभासताहे॥ पर्व

नविरुप्रथ्वीचंद्रमासूर्जदेणकाकवसनसर्वब्रह्महीहै॥ ब्रह्मतेएतरकछुनहीं॥ हेवि
द्याधरऐसप्रकारएडकोंज्ञानहुआ॥ अरजीवन्मुक्तिहुआ॥ अरजोकछुचेष्टाआनप्रा
पतिहोवेसोसभकरे॥ परअंतःकरणविखेबंधमाननहोवे जवकेताकुकालवी
तिआतवएडनिर्वाणपदकोंप्रापतिहुआ॥ अरकाष्टाभीजिसविखेस्थलहे॥ तिस
पदकोंप्रापतिहुआ॥ वहुडएडकाएकपुत्रथासोबडाशूरवीरथा तिसनेसर्वदेतो
कोंजीतिआ॥ वहुडदेवतिअहुकोंजीताअरत्रिलोकीकाराजकरणेलागा॥ अर
तिसकोंभीज्ञानउत्पतभएआ॥ सतशास्त्रअरगुरोकेवचनहुकर॥ जवकेताकाल
वीतिआतवओहनिर्वाणहुआ॥ उसकाजोपुत्रहोआहुराजकरणेलागा॥ एसप्रका
रकेएडहुए॥ अरतिसविखेराजकरतेभए॥ अरअनेकविवहारकोदेखतेभए॥ तव
तिसकेकुलविखेजोकोउपुत्रथातिसकोंएहहमारीवशिष्टभासिआए॥ ओहभी
ब्रह्मथिआनीहुआ॥ ताउहुआएकरएसत्रिलोकीकाराजकरनेलागा॥ अरवलगवि
सकाएडहुहीहै॥ हेविद्याधरऐसप्रकारकाविषणकीउत्पतिहे सोसंकल्पमात्रहे॥ सा
मेतेरेताएसमकहीहै॥ उसकोंपहिलेत्रिमरणविखवशिष्टआसी॥ फेरतिससिसा
केएकोंभहकीनंतविखे उसकोंभासी॥ फेरतिसविखेकएब्रितांतओनेदेखेजासक
लमात्रथे॥ ताएहअवस्थाहेलीआउनुअगणविखे॥ हेविद्याधरवास्तवहुएकछुन
हीं॥ जैसेअकाशविखेनीलताभासतीहे॥ अरहैनहीं॥ तैसेहीएहविश्वहै॥ आत्माविखे
विषणकाअभावहे॥ एहविषणअहंभावतेउत्पतिहुएहे॥ जवअहंभावफुरताहेतव
आगेविष्टवणतीहे॥ जवअहंकाअभावहूआतवविषणकोंउनहीं॥ ऐसविषणकावीजअ
हंहे॥ तातेतुंअसीभावनाकरजानमेंहोनजगतहे॥ जवएसप्रकारभावनाकरेगातव
आत्माहीशेषरहेगा॥ सोशुद्धतत्त्वज्ञानरूपअपणाआपहे॥ जिकोतिंभासेगा॥ हेविद्या
धरऐसमेरेउपदेशकोंअंगीकारकरौ॥ १६७ इतिश्रीसंकल्पनिर्वसंस्कारएकताप्र
वा नेनामसर्गः॥ भसुंडउवाच॥ ओं
हेविद्याधरजवअहंकाउथानहोताहै॥ तवविषणआगेवणीदिष्टिआवतीहे॥ अरजव
अहंकाअभावहूआतवविषणनहीभासती॥ केवलस्वच्छआत्माहीभासताहै॥ हेविद्या
धरजोंएहुकहाजोमेहोउसस्तंभकीकिरणोंकेअणहु॥ विंदुउसकोंअहंअसेहु॥
आ॥ तवडभविखेदेखिआअरकछिपाएआ॥ जोउसकोअहंनहोतातोउसकाहे
कोंपावता॥ उपरूपवृक्षकाअहंरूपीवीजहे॥ अरआत्मविचारतेअहंकानाशहो
ताहै॥ तवआत्मपदकासाक्षात्कारहोताहै॥ अरआत्मकेसाक्षात्कारहूएपरकठिनअ
हंकारकानाशहोताहै॥ अरआत्मरूपीएकपर्वतहहहि॥ तिसउपरअकाशरूपीवनहै
तिसविसविखेदृढदृछेहंसंसाररूपी॥ अरवासनारूपीतिसविखेरसहे॥ अरअज्ञानरूपीभूम
तेउत्पतिहुआहे॥ अरनदीआसमंदुएसकीनाडीहे॥ अरवंडमातारेएसकेफलहे॥ अर
वासनारूपीजलसाथवधताहे॥ अरअहंरूपीतिसविरखकावीजहै॥ सवअरइस्वरूपी
सविरखकेफलहे॥ अरसवेसविखआत्मपदहे॥ अरटोसएसकेअकाशहे॥ अरजद
एसकोपातालहे॥ ऐसविरखकोछेदोजानरूपीअग्निकर॥ अहंरूपजोविरखकावी
जहे॥ तिसकानाशकरो॥ हेविद्याधरएकरवोएहे॥ तिसकेजन्ममरनदोकनारे
हे॥ अरआत्मरूपीतिसविखेजलहे॥ अरवासनारूपीतिसविखेतरंगहे॥ अरविषणरू
पीतिसविखेवहुदेहे॥ होतेभीहे अरमिटिभीजातेहे॥ अरशरीररूपीतिसविखेझगहे
हि॥ अरअहंकाररूपीदाएहे॥ जववाएहूएतवतरंगवहुदेसभहोतेहे॥ अरजववाएमि
टगएतवकेवलनिर्मलजलहीभासताहे॥ हेविद्याधरजोवाएहूएतोजलतेएतरकछु

नहुआ॥ अरजोंनहूएतोभीजलतेएतरनकछुनहीहोतासहीहे तैसेअज्ञानकेहो
वतेभीअरनिवर्तेहूएभीआत्मपदहीजेकातिहे॥ अरसमिककदर्शनकरकेआत्मप
दभासताहे॥ अरअज्ञानकरकेजगतभासताहहि॥ सोअहंकाहोणाहीअज्ञानहे॥
जवअहंहूआतवममभीहोताहे॥ अरअहंममकानामहीसंसारहे॥ जवअहंम
मभिटिआतो॥ जगतकाअभावहोताहे॥ अहंकेहोतेदृष्टिआभासतीहे॥ अरतिसके
विखेअहंहोतीहे॥ तातेसंवतकोंत्यागकरनिर्वाणपदकोंप्रापतिहोवहु॥ भसुं
डउवाच॥ हेवसिष्टजीऐसप्रकारजवमेविद्याधरकोंउपदेशकीआतवसमाध
पस्थितिहुआ॥ अरपरमनिर्वाणपदकोंप्रापतिहूआ॥ जैसेदीपकनिर्वाणहोय
जाताहे॥ तैसेउसकाचितशांतरहतशांतहोगएआ॥ हेब्रह्मणउसकाविदाह
धथा॥ मेरेवचनहूतेउसकेहिदेविखेप्रवेशकीआ॥ जवसमाधपस्थि
तिभएआतवमेउसकोंजगाएपरहोगारवारउहूनजागिआ॥ जैसेकोउजलताजे
लताप्रातलसमेहविखेजैसेसंसारकेतापकरकेजलताथा॥ अरआत्मसमुद्रकों
उहुप्रापतिहुआ॥ जवसंसाररूपीअज्ञानकेप्रवाहकोनदेखता॥ हेवसिष्टजीजिस
पुरखकाअंतःकरणसथहोताहे॥ तिसकोंथोडावचनभीवहुतहोलागताहै
जैसेएकवूंदतेलकीजलविखेपएहूएवडेविस्तारकोंप्रापतिहोतीहे॥ तैसेजिसू
काअंतःकरणसथहोताहे॥ तिसकोंथोडावचनभीवहुतहोलागताहै॥ अरजि
सकाअंतःकरणमलनहोताहे॥ तिसकोवचननहीलागता॥ जैसेआरसीउपर
मोतीनहीठहरता॥ तैसेसाधअरगुरोकेवचनउसकोनहीलागते जवलगविवे
अहुकीभावनाहेतवलगविदामलनजाणीए॥ अरजवविविअहूतेवेरागउपजे
तवजाणीएजोविदासथहुआ॥ हेवसिष्टजीजवमेविद्याधरकोंउपदेशकीआत
वउहुप्रीत्रहीआत्मपदकोंप्रापतिहुआ॥ काहेतेजोउसकाविदासथथा॥ हेमुनी
श्वरजोतुमहुमेरेपासोपूछाथासोकहिआ॥ जोज्ञानवानचिरकालजीवतादे
खिआथा॥ वसिष्टउवाच॥ हेरामजीअसेमैकाकभसुंडपासोपूछाथासोकाक
भसुंडमुझकोकहिआअरवकहिकरचुपहोगएआ॥ जैसेवलाककेमेघतेवृष्टी
होवेतेसेउहुतवीभएआ॥ अरमेनमस्कारकरकेउठकेअकाशकेमारगविशि
ष्टआपणेआश्रमिआएआ॥ हेरामजीजवएकादशसहस्रचौकडीवीतमेअरकाकभ
सुंडकेसंवादविखे॥ हेरामजीकालकानेमनहीजोवहुतकालकरज्ञानउपजताहे
अरथवाथोडेकालकरज्ञानउपजताहे॥ एहईदेसधकीवातहे॥ जिसकाविदासथहो
ताहेतिसकोउपदेशगुरुशास्त्रोकाशीघ्रहीलागजाताहे॥ जैसेजलनीचेकोंच
लताहे॥ सोगुरुशास्त्रोकाशीघ्रहीपस्थितिहोताहे॥ हेरामजीए
भावकूजानताहे॥ तैसेसुधविदेविखेउपदेशप्रीत्रहीपस्थितिहोताहै॥ जोफुरनेकात्याग
ताउपदेशक्रमकेकेतऊकोंकीआहे॥ तिसकातातपुरजएहहे॥ जोतिसकात्याग
करो॥ जोतमेहोनेकाउजगतहे॥ तवपाछेनिर्विकल्पकेवलआत्मपदरहेगा॥ जो
सवकाअपणाआपहे॥ तिसकासाक्षात्कारतुमकोंहोवेगा॥ जैसेदर्पणमलन
होताहे॥ तिसविखेमुखनहीदेखिता॥ तैसेआत्मरूपदर्पणअहंकारकरकेआ
होताहे॥ तिसविखेमुखनहीदेखिता॥ अरजगतभी
हिआहे॥ जवएसकात्यागकरोतवआत्मपदकीप्रापतिहोवेगी॥ केवलआत्मतेमात्र
अपणाआपभासेगे॥ काहेतेजोआत्मातेएतरकछुनहीं॥ अरवधिआ
हे॥ अरअवरजोकछुभासताहे॥ सोत्रिगत्रिशाकेजलवतजाणी॥ जैसेअकाशमानी
केपुत्रवतजाणी॥ एहजगतआत्माकेप्रमादकरभासताहे॥ जैसेजेवडी
सर्पहोभासतीहे॥ अरहैनही॥ तैसेजगतप्रतक्षभासताहेपरहैनही॥ जवआत्माकाज्ञानहूआ
तवजगतमिथ्याहे॥ तैसेआत्माविखेजगतमिथ्याहे॥

वं
मं
२१

तबजगतकाअंतिअंतिअभावहोवेगा॥केवलआत्मतमात्रअपणाआपभासेगा॥
५७ इतिश्रीविद्याधरम ड़े वि न नामसर्गः॥
वसिष्ठउवाच
ओंहेरामजीतुंअहंवेदनातेरहतहोइसंसाररूपीब्रिछकाबीजअहंहीहै॥अभ
अशुभरूपीकर्मकादुखसुफलहै॥वासनाककैप्रफुलतहोताहै॥तातेअहंभाव
कौदुरिकरो॥जबअहंफुरताहैतबआगेजगतभासताहै॥जबअहंतातेरहतहोवे
तबजगतभ्रमभिटिजावेगा॥सोअहंताआत्मबोधकरनाष्टहोतीहै॥अरबोध
रूपीखड्गगीकरइहणआअहंतारूपीपाखागाजाणीश्रेगानहीजोकहागणआ॥
पाखागास्वर्नेनतुकौंतुल्लहोजावेगा॥अरशरीररूपपत्रपुरातनपरअहंताजूपी
अगणस्थितिहै॥बोधरूपीवायचलेगीतुवुनजाणीश्रे॥गाजोकहागणआ॥अरश
रीररूपीपत्रउपरस्थितिअहंतारूपीवफलअगबोधरूपीसूर्नेकेउदेहूयेनजा
णीएगाजोकहागणआ॥बोधबिनाअहंतानष्टनहीहोती॥भावेविकेउविख
मगनेहोवे॥पहाडविखेजाणरहे॥भावेवरहीविखरहे॥भावेअकाशविखेउडे
भावेपातालविखेभावेजलविखरहे॥पस्थलहोवेभावेसतम्महोवे॥भावेनिराका
रहोवेभावेरूपातरकोप्रापतिहोहोवे॥भावेभसमहोजावेभावेभिन्नहोजावे॥
दूरहोवेअथवानिकटहोवे॥जहारहेगाउहाहीअहंताएमकेसाथहै॥हेरामजी
संसाररूपजोवटहैतिसकाबीजअहंताहै॥जिसतेसभशाखापसरतीहै॥सभ
अनर्थोकाबीजअहंताहै॥जबलगअहंताहैतबलगदुखमिटतानही॥अरजब
अहंभावनहोवेतबपरमसिद्धताकीप्रापतिहोवेगी॥हेरामजीजोकछुमेउपदेश
कीआहै॥तिसकोभलेप्रकारविचारकरो॥अरतिसकाअभ्यासकर॥तबसंसार
रूपीब्रिछकाबीजजलजावेगा॥अरपरमपदकीप्राप्तिहोवेगी॥ ५८॥ इतिश्रीअ
हंतामना ग प ेनामसर्गः॥वसिष्ठउवाच॥ ॥
ओंहेरामजीसंसारसंकल्पमात्रहै॥अरभ्रमककेसिद्धहूआहै॥अरअनेकभि
ष्टारीवसतीहै॥आत्मरूपविखे॥अरकपेलीनहोतीहै॥कपउत्पतिहोतीहैकपे
उडतीआहैकोहएकरीजाणहोतीहै॥सोमनकोप्रतत्तुभासतीहै॥अरुउडतीम
तीहैतमसीदेखदू॥अरअकाशरूपहै॥अरअकाशहीमामिलतीहै॥अरजैसा
केलुकाब्रिछसहहोताहै॥देखणामात्र॥अरतिसविखेसारकछुनहीहोता॥
तैसेविष्टदेखणमात्रसहहैअरअकाशरूपहै॥वहइकैसीहै॥जैसेजलविखेप
हाडकाप्रतिबिंबपहाडहोताहै॥अरहलताभासताहै॥तैसेएजगतहै॥रामउवाच
हेभगवनतुमकहतेहोप्रतत्तसिष्टाममुझकोउडतीआदिष्टआवतीहै॥अरके
हतेहोतभीदेखएहतोमेकछुनहीसमझआजोतुमकिआकहतेहो॥वसिष्ठउ
वाच हेरामजीअनेकसिष्टापडीउडतीहै॥सोश्रवणाकर॥पंचभूतकशरीरविखेप्राण
पस्थितिहै॥अरप्राणविखेचितपस्थितिहै॥चितविखेअपणीअपणीसिष्टहै॥ज
बएहपुरखशरीरकात्यागकरताहैतबलिंगशरीरजोहैवासनाअरप्राणवायसाउडता
है॥तिसलिंगशरीरविखेसरहे॥अरुसूक्ष्मदिष्टिकरमझकोभासतीहै॥अकाश
कीनाईएहजिसकारूपरंगकछुनही॥उहीवायप्राणदुसायमिलीमेरताएप्रत
क्षदिखाईदेतीहै॥एसीकानामजीवहहि॥सरूपतेनकहेआएआहेनजाताहै॥
एसलिंगशरीरकेसंजोगकरआपकोआवताजाताहैदेखताहहि॥अरजन्मतामरतादे
खताहहि॥अपणीवासनाकेअनुसारआत्मरूपविखेविदशादेखताहे॥होरकछुवणि
आनहीएहवासनामात्रदिष्टहै॥जैसेवासनाहोतीहैतैसेविष्टभासतीहहि॥हेराम
जीएहसिष्टपुरखहैसोआत्मरूपहै॥अरलिंगशरीरकेमिलनेकरएनकानामजीवहू
आहै॥अरआपकोपरछिनजानतेहै॥वास्तवतेब्रह्मरूपहै॥देशकालवस्तुकेप
रछेदतेरहतहैसोब्रह्महै॥तिसकेप्रमादकरकेजोआपकोकछुजानतेहै॥एसीकानाम
लिंगशरीरहै॥जैसेघटकाआकाशमहाकाशहै॥अरघटकेपापरकरपरछिनहूआ
है॥तैसेएहपुरखभीआत्मसरूपहै॥अहंकारहीकेसंजोगकरकेजीवपरछिनहूआ
है॥जैसेघटकोएकदेशतेदूजेदेशतरविखेलेजाणरावतोकिआलगएआअका
शतानकहूगएआहै॥नआपआहै॥घटपकरआवताजाताभासताहै॥तैसेआत्माअ
खंडरूपहै॥अरप्राणचितकेरचलतेभासताहै॥जबचितअहंकाररूपनाष्टहोजावेतब
अखंडरूपहोवे॥अरजबलगअहंकाररूपीखपरनहीफुटतातबलगजगतभ्रमको
देखताहै॥अरवासनाकरभटकतापिरताहै॥अरवासनाकीसिष्टअपणीअपणी
चितविखेपस्थितिहै॥जबशरीरकोत्यागकरताहै॥तबअकाशविखेउडताहै॥प्राणवायुउडे
करअकाशविखेजारूपतथाएहै॥तिसविखेप्राणवायमिलतीहै॥तहाएसकोअपणी
वासनाकेअनुसारसिष्टिभासआवतीहै॥एसप्रकारउडतेहै॥अरपणीअपणीसिष्टि
कोलेकर॥जैसेवायगंधकोलेजातीहै॥तैसेएहवासनारूपीसिष्टिकोलेजातीहै॥सो
उडतेप्रतत्तमेरताएभासतेहै॥सूक्ष्मद्रिष्टिकरके॥हेरामजीएस्थूलद्रिष्टिकरके
लिंगशरीरनहीदिखाईदेताहै॥सूक्ष्मद्रिष्टिकरकेदेखीताहै॥अरजिसपुरखकोस
क्ष्मद्रिष्टिलिंगशरीरदेखणेकीभीहै॥अरज्ञानतेरहतहै॥तौमेरमतविखमरखपसू
है॥जबएहपुरखवासनाकात्यागकरतीहै॥वासनाकहीअअहंकारजामहै॥एहकेहा
ताकात्यागकरतीहै॥तबआगेविस्महीदिखाईदेती॥केवलनिर्विकल्पब्रह्महीभा
सताहै॥उसकेप्राणनहीउडतेनहीलीनहोजातेहै॥काहेतेजोउनकाचितताअ
चितहूजाताहै॥एसकरनहीउडते॥अरजबलगअहंकाकामजागहै॥तबलगवि
षापसकेचितविखपस्थितिहै॥जैसेबीजविखब्रिछपस्थितिहोताहै॥जैसेतिलो
विखितलएस्थितिहोताहै॥तैसएसकेगिर्दिविखपस्थितिहै॥जैसेमिरचकाविख
वासनवडकाहेहोतेहै॥जैसेलापहविखमएखडगहोवे॥जैसेबीजविखब्रिछभा
सवेतनजडहोवे॥तैसेएहसंकल्पकल्पनाविखभेदहै॥सतरूपतेकछुहूआनही॥तै
सेएहजगतहै॥हेरामजीविष्टसंकल्पमात्रहै॥काहेतेजोहुसुखीअरवस्थाविखेनाश
होजातीहै॥एहजाग्रतजोतुझकोभासतीहैसोसभभूमिघ्याहै॥जबसप्नाआएआ
तबजाग्रतनहीरहती॥अरजाग्रतकेआएसप्नानाशहोजाताहै॥अरभमबाभ्रितकी
आवतीहै॥तबासिष्टिकाप्रतत्तअंतिअभावहोजातेहै॥अरवासनाकेअनुसारदेशका
लपदार्थसहतिअवरसिष्टिभासतीहै॥हेरामजीएहविष्टकैसीहैजैसेसप्नअन्तर
होवेतैसेहै॥जैसेसंकल्पपुरहोवेतैसेएहसंकल्पउडतेफिरतेहै॥सिष्टिकालके
व॥सोकपपरस्पर्मिलतीहै॥कपनहीमिलती॥एहहैसभसंकल्परूपभ्रमकरहो
रकाहोरहोभासताहै॥जैसेकोउपुरखवडाहोताहै॥अरछोटाभासताहहि॥अरके
छोटाहोताहै॥तिसकोबडाभासताहै॥अरजैसेसहस्त्रीकेनिकटिअवरपडेतुच्छज्ञा
भीतहै॥अरवीटीकेनिकटिअवरवडेभासतेहै॥तैसेज्ञानवानपुरखहैतिसको
बडेपदार्थदेशकालसंजुगतिविशालभासतीहै॥अरसतभासताहै॥अरजोअ
जानीहै॥तिनकोसंकल्पसिष्टिबडीहोएकरभासतीहै॥जैसेपहाडबडाभोहै
नाहेअरजिसकोद्रिष्टितेदूरहै॥तिसकोमहातुकलसोभासताहै॥अरबी
टीकेपासभ्रितकाकोतुछदेरोएतोपहाडकेसमानहै॥तैसेज्ञानीकीद्रिष्टि

तेजोएहजगतदृश्यहैऐसेकरवडाजगतभीउसकोतुछरूपभासताहै॥ अरु
ज्ञानीकोतुछरूपभीवडाभासताहै॥ हेरामजीएहविश्वभ्रमकरकेसिद्धहूएहै॥ जे
सेसिपीविषेरूपाभासताहहि॥ अरुजैसेवडीविषेसर्पभासताहै भ्रमकरकै॥ तैसे
आत्माकेप्रमादिककरकेविश्वभासताहै॥ अरुआत्मातेभिंनकछुनही॥ जैसेअरुवीपुरु
षकोअपणाअंगनिद्रादोषकरकेभूलजातेहैं॥ अरुजागहूएसेभयेअंगअपणाभा
सतेहैं॥ तैसेअविद्यारूपीनिंद्राकरकैसोएआहूआपुरुषजवजागताहैतवनिश्चैसर्व
अपणाआपदिखाएदेताहै॥ जैसेस्वप्नतेजागिआहूआस्वप्नकीविश्वकोअपणाआ
पहीदेखताहै॥ तैसेएहविश्वअपणाआपहीभासैगी॥ हेरामजीजवएहपुरुषसो
एआहोताहै॥ निद्रामोतवसभअरुभविषेरागदोषकछुनहीहोता॥ जवजागताहै
तभएइष्टविषेरागहोताहै॥ अनिष्टविषेद्वेषहोताहैजवबूलगेहेउपादेपवुधिहो
तीहै॥ एसकोविश्वविषेजोएहसर्वगभीहैतोभीस्मरषेहै॥ हेरामजीजवएहअरुव
जडहोजातेतवकल्याणहोवै॥ सोजडहोवणाएहीहैजोदृश्यतेवहतआत्माविषे
एस्थितिहोवैसोआत्माचिनमात्रहै॥ आत्मातेएतवजोकछुकहतेहैंसतअथवाअ
सतजानताहै॥ तवलगसरूपकीप्रापतिनहीहोती॥ जवसंवेदनफुरनेतेरहितहो
वैतवस्वरूपकीसाक्षात्काररहोतीहै॥ तातेसंवेदनकात्यागकर॥ अरुएहजोजगत
एस्थावरजंगमतुझकोभासताहै॥ सोसर्वब्रह्मस्वरूपहै॥ जवतूंअसेनिश्चैकरैगा
तवसर्वविवर्तकाअभावहोजावैगा॥ आत्मपदहीप्रापतहोवैगा॥ रामउवाच॥ हेभग
वनएहजोजीवतुमहूकाहोसोजीवकासरूपकिआहै॥ अरुजीवअकारकौअहंकै
सेकताहै॥ अरुऐसकाअधिष्ठानपरमात्माकिआहै॥ अरुएसकेरहणाकाएस्था
नकवनहै॥ सोकहहु॥ वसिष्ठउवाच॥ हेरामजीसर्वइंद्रोपरआत्मसत्तनहै॥ निर्विक
ल्पचिनमात्ररूपहैतिसविषेचेतनमेंवलतहूआजोमेंहौं॥ असेजोचितकल्प
नारूपहुरीहै॥ अरुतिसकोचितकासंबंधहूआतिसकानामजीवहै॥ सोजीवन
सूक्ष्महै॥ नएस्थूलहैनसैनहैनअसूनहै॥ नथोडाहैनवहूतहै॥ केवलआत्मत
मात्रहैहि॥ अरुसधरहहि॥ अरुनअणरूपहैनएस्थूलहै॥ अनंतचेतनअकाशरू
पहै॥ तिसकोजीवकरकहतेहैं॥ एस्थूलकाएस्थूलहीहै॥ अनंतचेतनसवेग
तिरूपजीवहै॥ तिसविषेविवाक्ष्वप्रकाशेनही॥ जोकोउपादिहैसोप्रतिउगीसा
खिमिलिकरहूआहै॥ जोजीवअभिनाशीअहोतहैतोतिसकाउनिजोगीकेसे
होवै॥ एहजीवकासरूपहै॥ चेतनकेसंजोगकरजीवहूआहै॥ अरुजीवकाअधिष्ठा
नपरमातमअनंतचेतनअकाशहै॥ निर्विकल्पहैचेतनतेरहितनसथचितहै॥ तिसवि
षेजोसंकल्पफुरीहैतिसकानामजीवहै॥ सोसूक्ष्मतेसूक्ष्महै॥ अरुएस्थूलकाए
स्थूलवहीहै॥ सबकाबीजहै॥ एसीकानामवैराटकहितेहै॥ अरुशरीरतिस
कोमनोमयहै॥ आदिजोपरमात्मातेफुरिआहै॥ अरुअवरअवस्थाकोनहीप्रा
पतिहूआ॥ अरुअवस्थाकहीअैपरछेनताकोनहीप्रापतिहूआ॥ आपको
सर्वात्माजानताहै॥ एसकानामवैराटहै॥ प्रथमशरीरजोसकोमनोमात्रहै॥ अ
रुसूक्ष्मअकाशरूपहै॥ अरुरागदेषरूपीमलतेरहितहै॥ अरुअनंतआत्माहै॥ अ
रुसर्वमनोअवदेहहूअरुअहंकारहूकाबीजरूपहै॥ अरुसभविषेविआपरहा
है॥ सभजीवोंकाअधिष्ठाताहै॥ तिसंसकल्पकरएहजीवरचेहैं॥ पंचतत्वनएहीअ
रुअहंकारअरुमनअरुसंकल्पएनअर्थोकेअकाररचारहे॥ परमार्थरूपकोत्या
गकरफुरनेतेजोअकाररचतिहूएहै॥ तिसकोगहकीआएसकानामप्रत्यष्टका

है॥ किविएनणंद्रीकेछिद्ररचताभएअरुएस्थूलरूपरचिकरतिसविषेआत्मप
रतीतकरतभएआ॥ जैसेपुरषमननकरताहैहि॥ अरुजाअनशरीरकोत्यागकरस्व
प्नशरीरकोअंगीकारकरताहै॥ तैसेसधचिनमात्रनिर्विकल्पनिर्विकारअहोतस
रूपकोत्यागकरवासनामएशरीरकाअंगीकारकीआहै॥ नहीकछुवास्तव
सरूपकात्यागकीआसरूपतेगेडूनहीगिडिआ॥ सधनिर्विकल्पभावको
त्यागकरविराटभावहोतिभएआ॥ एसीप्रकारआगेतिसपुरषनेचारोवेद
ज्ञानकरकेरचतभएआ॥ अरुनेतकोनिश्चैकीआ नतकिआकहीअैजोएहप
दार्थअसेहोवैअरुऐताकालरहे॥ एहरचनारचीजोजोसंकल्पकरतेभएआसो
सोदेशकालपदार्थदिशाअरुब्रह्मंडसभआगेहोतभए॥ तिसपुरषकेएतेनाम
हैं॥ ईश्वरकहीअैवैराटकहीअैआत्मकहीअै॥ परमेश्वरकहीअैइत्यादिकजीव
केनामहैं॥ सोएसजीवकासरूपवासनाहै॥ हेनहीकछुरूहवास्ताहै॥ वास्ताके
शरीरअहंकारणक्रवास्तारूपकहिआहै॥ वास्तवरूपजोहूहिसोसधहै॥ निर्वि
कारनिराकारअहैतहै॥ कदाचितसरूपतेअनयथवस्थाकोनहीप्रापतिहूआ॥
सर्वदाज्ञानरूपहै॥ अरुअहैतपरमसधहै॥ तिसकोअपणाचेतनस्वभावकरकै
चेतकासंजोगहूआहै॥ तिसकरवैराटकाविपककहिआहै॥ जावास्तारूपहै॥ तिस
आदिजीवतेअन्यभिस्वरूइजनएमेतआदिलकरदेवतेदेतअकाशमयपाता
लत्रिलोकीउत्पतिहूएहै॥ जैसेदीपकतेदीपकहोताहै॥ अरुजलतेजलहोताहै
तैसेसभविराटकासरूपहीहै॥ सोवैराटकेमाहै॥ महाअकाशजिसकाउदरहै॥ अ
रुसमुद्रतिसकारुधिरहै॥ अरुनदीआजिसकीनाडीहै॥ अरुदिशाजिसकीवहीआहै
अरुजिसकेउदरविषेकपत्रब्रह्मंडसमेरपर्वतसहितसमापरहेहै॥ अरुपवनजिस
केसहेहै॥ अरुअनवचासपवनजिसकेप्राणवापहै॥ सोसजिसकापृथवीहै॥ हस्ति
जिसकेसमेरआदिकपर्वतहै॥ तारेजिसकेरोमावलीहै॥ अरुसोवैराटहैसहस्त्रजि
सकेपावहै॥ अरुसहस्त्रहीमस्तकहै॥ अरुसहस्त्रहीनेत्रहै॥ अरुअनंतहै॥ अरुअनादि
है॥ अरुवेदृमाजिसकीकफहै॥ जिसतेअमितस्रवताहै॥ भूतउपजतेहै॥ अरुस
नेपितैहै॥ अरुसर्वकाउत्पतिकर्तासर्वमनोअरुसर्वकमोअरुशरीरोकाबीजआ
दिविराटहै॥ हेरामजीएसचितकेसंबंधकरकेतुछहूआहै॥ वास्तवतेपरमात्मरू
पहै॥ जैसेमहाअकाशघटकेसंजोगकरघटाकाशहूआहै॥ तैसेविराटजोपरमा
त्माहैतिसनेफुरनेकरकेविशारचीहै॥ अरुतिसविषेअहंप्रतनेकरीहै॥ एसतेतुछहूआ
हूआहै॥ सोएसकोमिथ्याभ्रमहूआहै॥ जैसेस्वप्नविषेअपणामरणादेखताहै
हि॥ तैसेआपकोछिपारखताहै॥ सोलचनाभीएसकीआत्माकीअपेछाकरकै
हैनहीछिपाविषे॥ छिपागिवैराटहै॥ अरुआत्माविषेएसकाअनभावहै।
हेरामजीऐसप्रकारउपजिकरएसभिष्टिरचीहै॥ जैसेएसअदिपुरषनिस्वा
कीआहेतेसहीअविनकहै॥ सोएहआपभीउपजाहै॥ अरुआपहीलीनहोजाता
है॥ हेरामजीजिसप्रकारएहविराटकीउत्पतिहूएहैहि॥ आत्मातेतेसहीसभजी
वहूकीहै॥ एहसभीवैराटरूपहैपरजोसरूपतेउपजकररहिप्रासायतदरूपहूआ
अरुवास्तवसरूपजिसकोभूलगएआतेजोवतुछरूपहूए॥ अरुजोसरूपतेफु
रकेस्वरूपनराइअरुआगेअपणाहीसंकल्परूपविस्थरदेवी॥ परमादिनहूआ
जिसकानामविराटआत्माहै॥ हेरामजीएहजीवचेतनरूपहैअरुनिराकाररूपहै

हसकोंजोप्रारीरकासंजोगहूआहे॥सोकलनाकुरहूआहे॥जबआपकोंदृिप्रासे
जोगतिदेखताहेतबमहाअपदाकोंप्रापतिहोताहे॥अरजबनिर्विकल्पहो
ततेरहितहोएकरदेखताहेतबसुधचेतंनघनआत्मपदकोंप्रापतिहोताहे॥
एहविसदकेसाहेसभकाउत्पतिकरताहे॥सोअैसेकएवेराटआत्मपदते
उत्पतिहूएहे॥अरकएमिटिजातेहें॥अरकएआगेहोहोवहिगे॥जैसेसमुं
द्रतेकएतरंगबुदबुदेउठतेहे॥अरलीनहोतेहे॥तेसेआत्मारूपसमुद्रतेक
एउठतेहे॥कएलीनहोतेहे॥अैसापरमात्मसभकाअधिष्टानहे॥सभकेअंत
रबाहरपूरणहे॥अरज्ञानरूपहे॥अैसातेराअपणाआपअनभवरूपहे॥हेरा
मजीएससंवेदनकोंत्यागकरदेखउहीपरमात्मसरूपहे॥एहजोकछुतेरेतां
एद्रिष्टिआवताहे॥तिसकोंविचारकरकेत्याग॥जबतंएसकात्यागकरेगातं
बअद्वेतचिनमात्रजोतेरासरूपहेपरमसुधसोप्रकाशतरेताएभासेगा॥ति
सकोंअचेतताअवरनहेंजैसेसूर्जकोंआगबदलआवरनहोताहे॥जबलगबा
दलहोतेहे॥तबलगसूर्जकाप्रकाशप्रगटिकातिंनहींभासता॥जबबदलदू
रिहोवहितबस्वछभासताहे॥तेसेजबफुरनानिवर्तहोवेगा॥तबसुधआत्मा
हीप्रकासेगा॥२४॥इतिश्रीवैराग्यतामानें नामसर्गः॥वसिष्टउवा
च॥जोहेरामजीपरमातमपुरखफुरनेकरकेजीवसंगिआकोंप्रापतिहूआहे॥
फुरनेविखभीउहीं॥अरअपणेसरूपकोंजानतानहीएसीतेदुखपावताहे॥जै
सेपवनचलताहेअयणवाढहरजाताहेसदोनोपवनकेरूपहे॥जबचलता
हेतबभीअपकोंपवनरूपजाणताहे॥अरजबठहरताहेतबभीआपकोंपव
नजानताहे॥तातेउसकोंदोनोतुल्लहे॥अरएहजीवअमादिककेद्रिष्टाकोंक
ल्पताहे॥अरआपकोंद्रिष्टाजानताहेएसीतेदुखपावताहे॥अरजोएसकोंअ
पणासरूपस्मरणरहेतबतोद्रिष्टाविखभीअपणारूपभासे॥अरजोंनिहसं
कल्पहोवेतबभीअपणारूपभासे॥विशभीएसीकारूपहे॥परअविचारते
भिनभासतेहे॥जैसेस्वप्नेकोविशस्वप्नेवालेकारूपहेपरनिद्रादोखकरन
हीजानता॥जबजागताहेतबजाणताहे॥जोमेहीथा॥तेसेएहपरपंचसभतेरे
हीसरूपहे॥तंअपणेसरूपविखिएस्थितिहोकरदेखनिरअहंकारहोकर॥
तबतेंणिआकछुबणेगा॥तबविशभासेगी॥अरजोआत्मसरूपविखिएस्थि
तिहोवेगातबअपणाआपभासेगा॥प्रपंचकाअभावहोजावेगा॥हेराम
जीशून्यअरजडचेतंनअचेतनकिंचनअकिंचनसतअसतसभआत्माहीहेशून्य
हे॥निषधकिसकाकरीअैसअद्वैतसरूपहे॥हेरामजीअैसाअनभवरूपहे
जिसकरसर्वपदार्थसिधहोतेहे॥अरअैसेआत्माकोंमूरखनहीजानता॥जैसेसू
र्जकाअर्थमार्गकोनहीजानता॥तेसेअज्ञानीमहाअंधजागतीजोतआत्माकों
नहीजानताउल्लआदिकसूर्जउदेहुएकोंनहींजाणता॥तेसेवासनाकरआवृति
आहूआआपकोंजाणनहींसकता॥जैसेजालविखेपंछीआवरनहोताहे॥ते
सेजीवआवरिआहूआहे॥एसीकानामबंधहे॥जबवासनाकाविजोगहूआतब
एसीकानाममुक्तहे॥हेरामजीपरछिंननाककेएसकोंजीवसंगिआहूएहे॥अर
जबसमहूआतबब्रह्महे॥सोअहंकारकोंत्यागकरताहे॥अरजैसेसखपरकें
संजोगकरघटाकाशकहीताहे॥जबघटभिगनहूआतबमहाकाशहोताहे

तेसेजबअहंकारनिवर्तहूआतबआत्मसरूपहे॥हेरामजीअज्ञानकेएकदेसीजी
वहूआहे॥जबपरिछिंनताकाविजोगहूआतबआत्मसरूपहे॥अपणाजोवास्तव
रूपहेसोनिर्गुणहे॥सोअनर्थरूपहे॥जबगुणतेएनिर्गुणअरसभगुणकोंनवेकेवल
अद्वेतततअपणाआपभासेगा॥सोकेसासरूपहेअनामएहहिअर्थएहजोदुखोंते
रहतहेअरसतअसततेपरेहे॥अरज्ञानरूपहे॥आदिअंततेरहितहे॥अरजिसके
पावनेबहुरिपावणाकछुनहीरहता॥अरजिसकेजाणनेअवरकछुजाणनानहीरह
ता॥अैसाजोउतमपदहे॥तिसकोंआत्मतत्वप्रापतिहोवेगा॥हेरामजीएहजोज्ञान
नेवालाएकहाहेतिसकेआश्रेकरतुमज्ञानवानहोवाग॥जिआनबंधनहीहोव
गा॥जिआनबंधतेअगिआनीभीभलाहूहि॥कोहतेजोअज्ञानीभीसाधसंगअरस
तशास्त्रश्रवणकरज्ञानवानहोताहे॥अरज्ञानबंधमुक्तिनहीहोता॥जैसेरोगीहोवे
अरकहेमुझकोंरोगकोउनहीं॥मैअरोगीहां॥तबवेदकाउखदनहीखाता॥का
हेतेजोआपकोंअरोगीजानताहे॥तेसेजागिआनबंधहेतिसप्रिदोसंतोंकासंग
भीनहीहोता॥अरशास्त्रोंकाश्रवणभीनहीहोतातातेअर्थततमकोंप्रापतिहो
ताहे॥रामउवाच॥हेभगवनज्ञानकालछणकिआहेअरज्ञानबंधकिसकोंक
हितेहें॥अरज्ञानकाफलकिआहे॥अरज्ञानबंधकाफलकिआआत्माहेसोकहहु
वसिष्टउवाच॥हेरामजीजिसपुरखआत्माकेवलशास्त्रपाठहूतश्रवणकीएहे॥
जोआत्मानितहेअरसमर्थहे॥अरज्ञानसरूपहे॥अरतीनोप्रारीरतेभिनहे॥अैसे
सुणिकरआपकोंमानताहहि॥अरकहताहे॥बारंबारअरविखभोगकीस
रबदाचिंतारहतीहे॥जोकिसीप्रकारएइंद्रीअरडकेविखमेरताएप्रापतिहोवहि
अैसाजोपुरखहेसोज्ञानबंधकहीताहे॥उहूजोशिल्पीहे॥बहुडकेसाहेजोकमी
केफलविचारतेरहतेहे॥जोभलाअरबुराविचारकरनहोकर्ता॥तिसविखेवि
चारताहेअरमुखतेनिरूपणकर्ताहे॥सुभअसुभसोशास्त्रशिल्पीहे॥अरफा
लोकेअर्थकर्मकर्ताहेएकअैसाहेजोशास्त्रउोकतिहे॥अरआपकोंउतमसमा
नताहहि॥अरशास्त्रोंकेअर्थबहूतप्रकारकहताभीहेपढताभीहेपढावताभीहे
अरविषिअहूविखेबंधमानहे॥सदाविषिअहूकीचिंतवनाकर्ताहे॥अैसाजोपुर
खहेसोज्ञानबंधकहीताहे॥तिसकोंअर्थशिल्पीकहताहे॥चिंतरसाकणिकोंसम
र्थहे॥अरधारनेकउोसमर्थनही॥हेरामजीएएप्रवितिमारगकहिआहेएकनि
रविरतमार्गकहिआहे॥प्रवितिसंसारमार्गहेअरनिरविरतआत्मज्ञानमार्गहे॥अ
रजिसपुरखनिविरतमारगधारिआहेअरप्रविरतमारगविखिवर्तताहे॥प्रवितिक
रजिसपुरखअरएंद्रीअहूकेविखिअहूकीवाछा
होअैबाहरमखविखिविखिअहूकीउरवर्तताहे॥अरएंद्रीअहूकेविखिअहूकीवाछा
कर्ताहे॥विखिअहूतेउपरतनहीहोतातिनकोंसंतुष्टमाननहोताहे॥अरअसरूपको
चिंतवनानहीकर्ता॥अैसापुरखज्ञानबंधकहीताहे॥हेरामजीसुभककर्मकर्ताहेअ
तउकतरिदेखउानकेफलोंकोंधारकर॥उहूपुरखज्ञानकेनिकटिवर्तीहेतोभीअ
नबंधहे॥अरजिसकोंआत्माविखिप्रीतिभएहे॥अरविखिअहूकोंचिंतवताहे॥अर
आपकोंउतममानताहे॥सोज्ञानबंधकहीताहे॥अरजोआत्मकोंनिरूपणकर्ताअथ
कर्ताहे॥अरएस्थितिनहीउोकुज्ञानअभिमानहे॥ज्ञानकाफलतिसकोंसाज्ञानप्र
तछनही॥अरजिसपुरखएस्थितिपाएहे॥अरईस्वरजपाएआहे॥अरतिसकर्केः
आपकोसिद्धताकरवडाजाणताहे॥अरआत्मज्ञानतेरहतेहेसोज्ञानबंधकहै

वं
मं
२४

24

ताहे॥ अरआपकौंसिद्धता अरईस्वर्जमानकरबडाजानताहे॥ हेरामजीनिधिआस
करजोज्ञानकीप्रापतिहोतीहे तिसकरप्राणनकरसकाप्रहोताहे॥ जबलगप्राणते
हीप्रापतिभएतबलगआपकौंबडामानेनही॥ हेरामजीबडाजोहोताहे सोज्ञानक
रहोताहे॥ जबलगज्ञाननहीप्रापतिभएतबलगआत्मपरायणहोवे॥ अभ्या
सकरि॥ मानतनछोडुनदेवे॥ अरचेष्टाभीशुभकरे॥ सथविवहारकरउपजीवका
कौंअर्गीकारकरकैप्राणोंकेनमितरखिआकरणा॥ अरप्राणोंकौंब्रह्मजगिआसा
अर्थधारे अरब्रह्मजगिआसएनमितजोसंसारसमंद्रइडुखरूपतेमुक्तिहोवीऐवे
डुईसंसारीनहोवीऐ॥ एसनमितआत्मपरायणहोवेगा॥ जबआत्मपरायणहो
वैगातबडुखमिटिजावहिगे॥ जेसेसूर्जकेउदेहुएअंधकारनष्टहोजाताहे॥ तेसे
आत्माकेप्रापतिहुएतेडुखनष्टहोजातेहें॥ तिसपदकेप्रापतिहोवणकाउपाएप
हहे॥ जोसतसास्त्रहुतेआत्माकेविशेषणसुणेहें॥ तिनकौंसमझकरबारबारअ
भ्यासकरणा॥ अरअनातमद्रिष्टपरतेउपरतहोवणा॥ जिनकौंमिथ्याजाणकरवैराग
करणाएसकरआत्मपदकीप्रापतिहोतीहे॥ ४५॥ इतिज्ञानबंधजोगोनामसर्गः॥
वसिष्टउवाच॥ जोहेरामजीज्ञानीहोकरज्ञाननिष्टाहोएजोकछकुगुरुसास्त्रोंतेस
वणकीएहें॥ आत्माकेविशेषणतिनविखेस्रहेस्पतनेकरणएस्थितिहोवणाएसी
कानामज्ञाननिष्टाहे॥ तिसज्ञाननिष्टाकरउचतपदकौंप्रापतिहोताहे॥ उचतक
हीअरसभकाअधिष्ठानपद॥ तिसकौंप्रापतिहोताहे॥ जबतिसपदकौंप्रापतिहुआ
तबकर्मोकेफलकालिगाननहीरहता॥ काहेतेजोसुभकर्मोविखेफलकारागनही
रहता॥ अरअसुभकर्मोकेफलविखेदोखनहीरहता॥ असाजोपुरखहेसोज्ञानी
कहीताहे॥ अरशीतलचितरहताहे॥ अरअक्रिनमसातकौंप्रापतिहोताहे॥ जोकि
सीविखेसंबंधकरतनही॥ अरवासनाकीगंठकुटजातीहे॥ असाजोपुरखहेतिसकौ
ज्ञानीकहीताहे॥ हेरामजीबोधसाएजिसकेपाएतेबहुरिजन्मनपावे॥ जन्ममरन
तेरहितहोवे॥ तिसकौंज्ञानकहीताहे॥ जबंसंसारतेबैरागहुआजबसंसारकीस
ततानभासेतबज्ञाणीएजोबहुडजन्मनपावेगाकाहेतेजोसंसारकीवासनान
ष्टहोएगएहें॥ हेरामजीजिसकरज्ञानीकीवासनानष्टिहोतीहेसोश्रवणकर॥
एहजोसंसारहे॥ तिसकाकारननहीदेखता॥ जोकारननहीउत्पतिहुआपदार्थ
सोसतिनहीउत्पतिहुआपदार्थसोसतिनहीहोतातातेसंसारमिथ्याहे॥ जेसे
जेवडीविखेसर्पभासताहे॥ तिसकाकारणकोउनहीभ्रमकरसिद्धहुआहे॥ ते
सएहविश्वभ्रमकरकारणबिनाद्रिष्टआवतीहे॥ तातेमिथ्याहेजोमिथ्याहूएति
सकीवासनाकेसकरे॥ अरजोप्रवाहपतितकारजआएप्रापतिहोताहे तिसवि
खविचरताहेसकल्पतेरहतहोकरअपणाअभिमानकछुनहीकर्ता॥ जोएकु
होएअरएडुनहोए॥ अरआकाशकीनिआएसंसारतेनिआरारहताहे अरफुनेते
फुरनेहे॥ असाजोपुरखहेसोपंडितकहीताहे॥ हेरामजीएहजीवपरमात्मसरूपहे
जबआचेतहोवेतबआत्मपदकौंप्रापतिहोवे॥ अचेतनकहीअसंसारकेफुरनेतेर
तहोवे॥ जबजनेहूआतबआत्माहे॥ जेसेबंधकाजोब्रिछहे अरफललगरहताहेतबव
भीनामडोसकौअवहे॥ परनिहफलहे॥ तेसेएहजीवआत्मसरूपहे॥ परचित्तकेस
बंधकरएसकानामजीवहे॥ जोचितकौछोडेतबआत्माहोवे॥ जबअबकौफल
एणआतावडीप्रभाकरबिराजताहे॥ अरसफलकहीताहेतेसेजीवपरमात्मा

कहीताहे॥ हेरामजीजोअबखताभीहे सोकरमेंफलकीउत्पतिनहीकर्ता फलकौ
हीअरएडीअरहुकेविखेपसकीपउचानहीकर्ता॥ जेसेजिसअवनेगाजलपीआहेसो
हीपकेजलकीउत्पतिनहीकर्ता तेसेजिसकौआत्मस्वरूपप्रापतिभएआहे॥ सो
विअरहुकेसफलकीउत्पतिनहीकर्ताअरवांछाभीनहीकर्ता॥ जोकिसीपदार्थसं
सारकेकौपाएकरआपकौसफलीमानताहेसोमूरखहे॥ जेसेकोउपुरखनदीके
कनारेपरस्थितिहोवे अरकहेजोमेंनदीआकेप्रवाहकेउपरचढ़करपारउतरताहो
असाजोपुरखहेसोमहामूरखहे॥ काहेतेजोबुधिआकापत्रहेनही॥ तौकाधेपर
केसचढेगा॥ तेसेजोपुरखकहताहे जोसंसारकेकिसीपदार्थकौलेकरमुक्तिहो
उगा॥ सोमूरखहे॥ हेरामजीज्ञाननतेअसापुरखहेतिसकीआणडीआदहरतीनही
अरजोप्राणोंकौअंथेकौपालताभीहे अरआत्मज्ञाननेरहतहे॥ तिसकौएडीआल
लकरगिडावतीहे तिखिअरहुविखे॥ जेसेपलपलेवृखअकाशविखेउडताहे अरमा
सकोपृथ्वीपरदेखताहेतोउहांजागिडताहे॥ तेसेजबअज्ञानीविखेअहंकारकोदेखा
ताहेतबउर्धतेगिडताहे॥ तातेएतोएडीअरहुमनकाबसिकरजुगतिहोएकरतनपरा
एणाहोए॥ अरअंतमेलीहोए॥ एहजोसबदनहेतिसकात्यागकरे॥ जबसंवेदनविखे
तेहोवेतबअनातमाकासाद्राकारहोवे॥ जबआत्माकासाद्राकारहुआतबआपअ
लोकमनस्वाभजोत्रिपुटीहे॥ तिसकेपाछेअरअर्थकीभावनाजातीरहेगी॥ केवल
आत्मततहीपेडआभासेगा॥ अरसंसारकाअभावहोजावेगा॥ हेरामजीसंसारकौआ
दिपुरमात्मततहे॥ अरअंतभीउहीहे॥ जेसेस्वपनगालिआहोताहेतबभीस्वपनहे
अरजेनहीगालिआतोभीस्वपनहे॥ तेसजबविस्वकाअभावहोजाताहेतबभी
प्रापआत्माहीरहताहे॥ अरजबउपजीनथीतबभीआत्माहीथाअरमधविखेभी
उहीहे॥ परसंमिकदर्पणीकौंभासताहे॥ हेरामजीविस्वआत्माकाप्रमाणनहीचम
त्कारहे॥ जेसेजबस्वपनगललताहेतबरणमेगिआउसकीरहतीहे॥ अथवाप्राला
णकोकहीताहे॥ नदपभूखणाउसविखेहूएनही॥ तोभीचमत्कारउसकाअसाहीहो
ताहे॥ तेसेविस्वआत्माकाचमत्कारहे॥ जिसकीतिआत्मसताहे॥ वणिआकहनेहे
अरतिसकाचमत्कारविस्वहोकरएस्थितिहुआहे॥ जेसेसूर्जकीकिरणाजलाभास
होताहे॥ हेरामजीजबतुरीअसेजाणिआजोकेवलआत्मसताहे॥ तबवासनाकेहो
जावेगी॥ अरचेष्टासभावकपडीहोवेगी॥ जेसेपवनकेकेत्रिकपईहलतेहे॥ तेसप
शरीरकीचेष्टासभावकपडीहोवेगी॥ हेरामजीदेखणमात्रतुमारविखेकिआहोवगी
अरअंतरतेसूनहोवेगी॥ मनकर॥ जेसेनेत्रकीपुतलीसंवेदनबिनाधागकरचेष्टाका
तीहे॥ तेसप्रारबधत्रपीलागकरतेरशरीरकीचेष्टाहोवेगी॥ अरतेउकाअभिमानन
होवेगा॥ जेसेकोउपुरखहथकेनमितगुजरपासवासनालिआएआअरकछुकुहि
धचोवणाविखविलेमथो॥ तबउपुरखकहिआ॥ वासनएहाभेहेमेतबलगशिहि
विखेकोउकारजहे सोप्रीत्रहीकरआवताहे॥ जबग्रहकाकारजकेणिल्लामानबभी
मनउसकाहथकीअरहिआजोप्रीत्रहीजावउमनतहथआगेचावताहा॥ अहका
कारजकीआपरमनउाहाहीरहा॥ तेसेतुमारीक्रिआप्रारबधवेगकरहोवेगी॥ परम
नआतमतताविखेरहिगा॥ जबअहंकारतेरहतहोवेगा॥ जबलगअहंकारकर्ता
हेतबलगअहंकारकर्ताहेतब परछिनजीवहे॥ अरपरछिनकहीहेतुछहे॥ ति
सकोपृथीरमात्रज्ञानहोताहे॥ अंतःकरणप्रतिबिंबजोहेजीवतिसकौनषसिषप
जतप्रारबकाज्ञाननहोताहे॥ अरएसीविखेआत्मअभिमानहोताहेअरबकाज्ञानन

ही होता ॥ तो जे एह जीव है ॥ अरु वैराग जो आगे तत फल को कहिआ है ॥ सो पाई यत है ॥ सर्व गा
री वृकात्तान है ॥ अरु सर्व लिंग शरीरों का अभिमानी है ॥ अरु सब को अपणा आप जा
नता है ॥ तातें ईश्वर है ॥ हे रामजी जदप सर्व वैराट रूप है ॥ तो भी अहंकार कर के नुकसा हु
आ है ॥ जैसे मेघों ते भिन हुआ बदल वदल कहीता है ॥ अरु घट के रचे दा का आकाश कहीता है
जैसे बदल भी मेघ है अरु घटा का भी महा आकाश है ॥ तैसे अहंकार संवेदन कर के प्रग
ट हुआ है ॥ सो संवेदना इश्वा विरव हूए हैं ॥ अरु इश संवेदन विरव हूए हैं जैसे फूल विरव ग
ये है ॥ अरु तिलों विरवे तेल है ॥ तैसे संवेदन विरवे इश है ॥ हे रामजी आत्मा विरवे बुधि आत्मे
फुरणा है जो मूहो ॥ अरु सो फुर्ती है तब आगे इश होती है ॥ जब अहंकार हुआ तब आगे
हुए ही आदिक विषे को रचता है ॥ तो संवेदन विरवे इश हूए हैं ॥ अरु संवेदन इश विरवे
हूए हैं ॥ अरु संवेदनु इश विरव हूए हैं ॥ जो अहंकार ते आदि देह एही आ प्राण मन आदिक
उइश है ॥ तिस विरवे संवेदन हूए अहं प्रतन्न कर के ॥ ऐसे करण ते एस को जीव सभी आ है
ऐहे ॥ जब संवेदन नष्ट होवे तब आत्मा का साक्षात्कार होवे ॥ अरु जन्म मरण आ वाणा
णा बोलना ऐन इश विकारों से जगत प्रपंच भासता है ॥ तो भी मिथ्या है ॥ काहे ते जो वि
चार की ऐते कछु रहता नहीं ॥ अरु जैसे केले का ब्रिक्ष होता है ॥ तिस विरवे सार कछु ना
होते तैसे विचार की ऐते प्रपंच कन होहन ही पाएता ॥ जैसे स्वप्न विरवे जन्मता मरता आवता जा
ता देखीता है अरु मिथ्या है हि ॥ तैसे जाग्रत क्रिआ भी सब देखीती है पर मिथ्या है ॥ हे राम
जी परावर दरसी है सो एतनी आ अवस्था विरवे निर्विकल्प है ॥ जन्मता भी है अरु न ही ज
न्मता ॥ मरता भी है अरु न ही मरता ॥ सर्व क्रिआ करता है अरु न ही करता ॥ सम्र की निश्च
ए कदाचित कछु हूआ नहीं ॥ ऐसे देखता है ज्ञानवान ॥ जब एह आत्मा विरवे जागता तब
सर्व विकारों का अभाव हो जावेगा ॥ कारण विकार न भासेगा ॥ हे रामजी जो एही अहं के
विरवे अहं की चितवना करता है सो बाधिआ हूआ है ॥ काहे ते जो अभिलाष ही दुखदा
एक है हि ॥ जद परा जाता है अरु अंतर अभिलाष है तो दरिद्री जानीता है ॥ अरु जिस प्रबल
कौं खावणा पीवणा सो बाणा इत्र्यादि देखीता है ॥ जो खावणा भि विरवे आदिक कर
होता है ॥ अथवा अवर किसी जगत न कर होता है हि ॥ पहरणा भी निर्गुण है अरु सो
वणा को हु गोइ जैसे केसी है ॥ अरु ज्ञान कर संपन्न है तो तिस को चक्रवर्ती मानणा ॥ दो हइ
सा तंगा ट को पीन को साधन मानने सके ॥ राम अमेस्त माता फिरे राजे एह को रंक ॥ अरु च
क्रवर्ती ते भी अधिक जाणा ॥ जदप अरंभ क्रिया करता दिष्टि आवता है अरु संकल्प ते रहत
है अरु संकल्प ते रहत है ॥ तो अकर्ता ही है ॥ कर्णा न कर्णा कर्मो का दोनो डासको न
लहे काहे ते जो अभिमान ते रहत है ॥ शुभ कर्म कर्णा कर स्वर्ग नहीं भोगता ॥ अरु अशु
भ कर्म कर नरक नहीं भोगता ॥ दोनो एक समान है ॥ हे रामजी ज्ञानी अरु अज्ञान
की चेष्टा समान है ॥ पर अज्ञानी अहंकार सहत करता है ॥ एस कर के दुख पावता है ॥ तातें
तुम अहंकार का त्याग करो ॥ अरु अपणा वास्तव सरूप चेतन ते रहत चेतन विरवे एस्थि
त होवहु ॥ तब संसे सर्व मिट जावहि ॥ अरु जेते कछु जीव भासते हैं सो सर्व सवत रू
प है ॥ सवत कही अज्ञान रूप हैं ॥ पर बाहरि मुख जो होते हैं एस कर भ्रम को प्रापति
हूए हैं ॥ जब अंतर मुख हूआ तब केवल शांत रूप है ॥ जहां वाणी अरु तैती का खा भ
को आन ही ॥ तिस को पणितपद कहीता है ॥ हे रामजी जैसे विराट सरूप है ॥ पर परमात्मा
कर भासता नहीं ॥ हे रामजी एह जीव जो है सो सार पारी रविविरवे विआपि आ हूआ है
अरु भासता दि देही का सविषे है ॥ जैसे गुलाब की टुडी सभ विरवे सुगंध विआपी
हूए है ॥ पर फूल विरवे भासती है ॥ तैसे चेतन सत्ता सभ सरीर विरवे विआपी हू

है ॥ पर भासती देह विरवे है ॥ जो त्रिकाल रूप पंच भ्रू है निर्मल है ॥ तिस ही विरवे तहा
अहंसे वतन को ध्यान होता है ॥ तहा तीन त्रिगुण देह कर पंच एही रूपी छिद्र के माभाव
गहू निकसा कर विविध आ को ग्रहण करती है ॥ तिन एही को एस्थिर निश्चै कर विआ ग्रहु वि
रवे राग द्वेष मान पर होता है प्रमादि कर्ता ॥ हे रामजी जब बोध होवे तब संसार भ्र
म मिट जावे ॥ हे रामजी सर्व संसार का अरु सर्व वासना का जो बीज है सो अहंभाव है ॥
सो सुक्ष्म सार विरवे फुरना पड़ा है जब इसकी अवचेतन न होवे अरु सरूप विरवे अहं
प्रत होवे ॥ तब संसार मिट जावे ॥ अहंभाव के नाश हुए ॥ ज्ञानी जग्त को प्रत्ली वत
चेष्टा करता है ॥ जो एह अर्थ सत है तिसका अभाव कदाचित नहीं होता ॥ अरु जो अ
सत है सो सत नहीं होता ॥ जदप होवणे की भावना करीए तो भी इसका होवणा
नहीं ॥ जैसे अग्नि को जाणकर स्पर्श करीए तो भी जलावती है ॥ काहे ते जो सत है
अरु जो असत है सो भावना करीए ॥ तो भी सत नहीं होता ॥ जैसे म्रिगजल की भावना
कर मा रूथल विरवे दौड़ता है ॥ अरु जल नहीं होता ॥ काहे ते जो असत है ॥ अनहोती वस्तु
कैसी होवे ॥ जो हूए को निश्चै भासती है ॥ सो भ्रम है ॥ तैसे ही हे रामजी अहंकार नाश
ता है ॥ सो असत है ॥ भ्रम कर सिद्ध है ॥ विचार ते नष्ट हो जावेगा ॥ हे रामजी एह अहं
का संकल्प करोड़ि आ है ॥ सो अहंकार ते रहत हो कर देखे तो मुक्त निरूप है ॥ अरु जो
अहंकार सहत है तो बंधा है ॥ सो निरहंकार होवे तब परम निर्वाण को प्रापति होवे ॥ जै
से पूरन मासी का चंद्रमा पूर्ण भासता है तैसे तुम पूर्ण भए हुए ॥ अरु ज्ञानवान को कार्य अहंकार न
हीं रहता ॥ सो चित सत पद को प्रापति होता है ॥ तिन की चेष्टा कर्म को फल दायक नहीं हो
ती ॥ जैसे भुन्ना बीज उगवता नहीं ॥ तैसे उन के कर्म को जन्म फल नहीं होता ॥ अरु अगिआनी
का चित जन्म मरन का कारन है ॥ जैसे बीज उगवता है तैसे अज्ञानी की चेष्टा जन्म फल
देती है ॥ हे रामजी जेते पदार्थ हैं तिन सभन ते निरमोह हु ॥ किसी का ते रे विरवे अभिला
ष न फुरे ॥ अरु न किसी का स्मरावन फुरे ॥ पथर के समान ते गंवदा होवे ॥ जिसका रि
दा कोमल है निहसंजत है सो अज्ञानी है ॥ अरु जिसका रिदा पथर के समान है ॥ सो ज्ञान
वान है ॥ तातें निर्मम न निरहंकार होकर स्थित होवहु ॥ एह भोग मिथ्या है एन
की एछा विरवे सुख नहीं ॥ अरु जब संसार तें उपरत होवेगा ॥ अरु अंतर्मुख आत्म परायण
होवेगा तब अहंकार ते रहत होवेगा ॥ अरु आत्मा प्रकाशेगा ॥ जैसे बसंत ऋतु आवती है
अरु ब्रिक्षों को फल लागते हैं ॥ अरु पुरातन कूड़े तो को त्यागते जाते हैं ॥ तैसे जब तु
म अंतर्मुख होवहुगे तब अहंकार निवर्त हो जावेगा ॥ अरु विश्रांति को प्रापति हो
वेगा ॥ तब जो है अहं प्रतज्ञ सो जाती रहेगी ॥ परम निर्वाण पद को प्रापति होवेगा ॥ एक
सवत अहंकार का त्याग कर ॥ अरु रजतन को उन कर एही इ पद प्राप्त है सरा नुफ को ॥ वशिष्ठ उवा
१४२ इति श्री मोक्षोपाये [illegible] नाम प्रकरणे नाम सर्ग ॥
चा ॥ ॐ हे रामजी एह जो वासना रूप संसार है तिस ते तें तरि जाए ॥ जैसे मैं की रिख तरि आ है
राम उवाच ॥ हे भगवन मैं की रिख किस प्रकार तरिआ है सो क्रिपा कर कहहु ॥ वसि
ष्ठ उवाच ॥ हे रामजी मैं की रिख का ब्रितांत सुण ॥ मैं की रिख तीरथ तप की एछा ॥ एक काल
विरवे तेरे पिता मा जो है राजा अज तिस मेरा आवाहन की आ मैं अपणा गृह विरवे था अकाश
विरवे ॥ तब मे राजा अज के निमित अकाश मार्ग ते उतर आए एक अटवी मार्ग विरवे आए ॥
तिस अटवी विरवे हूं तब बनों के समूह महा भए आन कर देखे मैंने ॥ अरु तिस विरवे न
कोई मानुख दिष्टि आवे ॥ न कोई पशु दिष्टि आवे ॥ सूने एकांत मानो ब्रह्म का एस्थान
का वे समान है ॥ अरु मध्य अग्नि का समान है बड़ी ॥
है ॥ अरु तेजा जनो प्रजत मारू थल हो दिष्टि आवे ॥ तिस विरवे पृथवी की आ ॥ को एक ब्रिक्ष तहा जल हूए दिष्टि
धूप है रेत गोर प्रजतन पीहूए ॥ तिस विरवे एक पेड़ो एस्मारू थल विरवे चलि आ आवता सूझ को
आवहि अग्नि करवै ॥ तिस सूने विरवे एक पेड़ो

महाइखीदिष्टिआएआ॥ अरुएहवचनतिसकेसुनतेनिकसाजोहाएहाएस्वइछिपाएआहेमेने॥ मरुकौपेडइखदीआहे॥ अरुजलाएआहेमेवडेखेदकोप्रापतिहूआहो॥ असेवचनकहताहूआमेरपासतेचलिआजावे॥ कैताकुमारगआसेगएआ॥ तेसएकफोवेराहुकामिलावहिदिष्टिआएआ॥ तिसविखेश्रहपवश्रयवासानथे॥ तिसकोदेखकरहोडिआजोमरुकोएहाप्रांतप्रापतिहोवेगी॥ मनजलपानकरेगा॥ अरुछाएआतलेवेठेगा हेरामजीमरुकोदेखआआएतवमेकहागमकी॥ हेमारगकेमीतत्कहादोडिआजाताहे॥ जिसकोसुखदाएजाणकरतेदोडिआहेसोदुखदाएहहि॥ जेसेत्रिगमारथलकोनदीजाणकरदोडताहे॥ जोएसजलकेउपानकरकेसुखीहोवेगा॥ सोअतिडखपावताहे॥ तेसजोएस्थानतेसुखदाएजाणताहे॥ सोडखदाएहे हेअंगएहजोगिरावबासीहेतिनकासंगकदाचितनहीकरणा॥ एनकासुखदुखदाएहे॥ जोपुरखविचारशरबकेचेष्टाकरतासोसुखकोप्रापतिहोताहे॥ अरुजोविचारबिनाचेष्टाकरताहे॥ सोडखपावताहे॥ एहजोगिरावबासीहेसोआपघेजलतेहें॥ अहुतरुकोसुखकेसदेवहिंगे॥ जेसेकोउपुरखआग्निकेकदेविवितेपराजलताहोवे॥ अरुउसकोकहीश्रेसीतपतिनेनिवर्तकरतीकहणवालसुखवेहोताहे॥ अहुआपएराजलताहेअवरकोतपतिकेसमिटावेगा॥ तेसेएहजोगिरावासीहेसोआपएडीश्रहुकेविखिश्रहुरूपीअग्निविखेपरेजलतेहे॥ तरुकोप्रांतकेसकरीहेगे॥ हेमारगकेमीतएतेडखहोवाहिजोश्रगीकारकरीश्रहिपरश्रगिआनीश्रहुकासंगिनकरीहे॥ कवनडखहोवाहिष्टथवीकेछिडविखसर्पहोवणा॥ श्ररुपथरोकोशिलाविखकेटहोरहणा॥ अरुमारुथलकाहुडामिगहोवणा॥ एतेडखअंगिकारकरीश्रहि॥ परअज्ञानीश्रहुकीसंगतिनकरीअजिनकोएडीश्रहुकेसुखडुकीत्रिसनारहतीहे॥ विषुएजनोकीप्रीतविषकेतिनीआएहे॥ अरुविचाररूपीबुधकमलनीकेनाशकरणहारीवरफहहि॥ ताते एनोगिरावबासीअहुश्रगिआनीश्रहुकासंगनहीकरणा॥ वहुडकेसेहेविचाररूपीसजेरूपकोआवरणकरणेहारहे॥ कमलकीनिश्राए॥ जेसेवलीहोतीहे॥ तिसउपरश्रग्निडारीश्रेतोजलजातीहे॥ तेसेवेरागकोग्रहकरणहारीजोबुधिहे॥ तिसकेनाशकरणेहारीतिनकीसंगतिहे॥ तातेतिनकासंगकरीश्रेनही॥ तिनकासंगिकरजातेवासनापमिटावहि॥ हेरामजीजबएसप्रकारमेकहातबमेरेनिकटिश्राएकरबोलतभएश्रा॥ मकीशिखावाच॥ श्राहेभगवनतुमस्कवनहाअरुतुमारानामकिआहे॥ तुमारेवचनसुणकरमेशांतकोप्रापतिहूआहो॥ तुमश्रेनजेसेदेवीतेहोअरुसमककेपुरनहो॥ अरुतुमारावडाप्रकाशदिष्टिआवताहहि॥ तुमआदिपुरखविराटहोकिआकुवनहो॥ अरुतुमसुदरदिष्टिआवतेहो॥ जोसुदरहोतेहतिसकोदेखकररागउपजताहे॥ अरुचितखोभकोप्रापतिहोताहे॥ तुमश्रेससुदरहोजोतुमारेदरशणकरमरुकोशांतिआवतीजातीहे॥ अरुतुमवडेतेजकोधारहएदेशांतहो॥ जेतेकठेनजबानहेंदोखनहीदेतेतिनकानिरादरकरतेहो॥ श्रथएहजोअरुवरससहनाएतेमावेसमानिकिसीकोनही॥ अरुतुमारातेजप्रकाशरविदिक्शांतकतोजाताहे॥ शीतलप्रकाशहे॥ हेभगवनतुमकोनमनिकोनिश्राएसूरसभीदिष्टिआवतेहो॥ किसीपुणातकोलीएएकांतविखेएस्थितिहो॥ अरुअवणमइएप्रकाशकोदएआकृतीदृष्टिआवतेहो॥ अरुपृथवीपरएस्थितिभीदिष्टिआवतेहो॥ अरुएकलमीदिष्टिआवतेहो॥ अरुसर्वपदार्थहुकेअधिष्टानहे॥ अरुसर्वपदार्थतुमारीसताकरप्रकाशतेहें॥ तुमारेनेत्रकेखोलणेकरउतपतिहोतीहे॥ अरुमूदणेकरलैहोजातीहे॥ तातेउसर्वात्मासकलनकदिष्टिआवतेहो॥ अरुएहजोफुनीतुमारेविखेदिष्टिआवताहे॥ परअंतरतेशुनहो॥ अरुकिसीश्रेत्रितकोपानकरकेतुमआएहो॥ अरुवडे

एसुवर्णकेसमानदिष्टिआवतेहो॥ हेभगवनतुमकवनहो॥ अरुजोमरुकोश्रेतेकवनहे॥ तोहेमनोसरसीआइलविखकीकुलविखेहो॥ अरुएसानामसकीहे॥ अत्मएहोम॥ अरुतीनथयाजोकिनमितमेनिकसिआयाहो॥ अरुसवंदिप्राप्तभिआहो॥ अरुवडेभएआनकूपस्थानभीजानीतेयहे॥ तहाभीगएआहो॥ परशांतमरुकोप्रापतिनहीभए॥ सोप्रानमरुकोकहूनहोआए॥ जोएडीअहुकीजलनतेरहतहोरे॥ अरुवीसुखकोवलिहो॥ अरुवरतेभीचितविरक्तहूआहे॥ वरकिसकाहे॥ जोएहससारमिथ्याहे॥ एसविखसुखकहूनहो॥ अरुप्राणकेसेहोहे॥ जेसेविजलीकाचमत्कारहोताहे॥ तेसएहससारदिष्टिआवताहे॥ अरुशरीरउपजतभीहेअरुमिटिभजातेहे॥ दरशणमात्रहे॥ जसेगत्रआवतीहचउडिनहीजाणीनीतीजोकहाभए॥ हेभगवनएहससारकाश्रमारजाणकेमेउपरतहूआचाहताहो॥ अरुएहजोउदासहूआहो जोवडुतजन्मपाएहें॥ अरुमेरेमोहिगएआहो एसीप्रकारभटकताफिराहो॥ अरुतुमारीशांतिकोप्रापतिभएआहो॥ अरनताहोजोतुमशिअमेराकल्याणहोवेगा अरुतुमकल्याणकीमूरतदिष्टिआवतेहो॥ तातेकहोतुमकवनहो॥ वसिष्ट उवाच॥ हेमेकीमवसिष्टवद्यणहो॥ अरुमेआग्रहप्रकाशविखहू॥ मेतापश्रजराजानेचितकीआथा॥ तिसकेरणहोआएआया॥ अरुतेतानकेमार्गकोआएआहें॥ मेसमतुकर॥ हेरामजीमेअसेकहातबमेरेवरनोपरगिरपडा॥ अरुनेउलतेजेलचलाएलागा॥ जोमेहाअनंदकोप्रापतिहूआतबमेकहाहेशिवतसमेतकर॥ मेतुमकोश्रमितमपाणकोप्रापतिकरजावोगा॥ जोकछुतश्रिकिआचाहताहेसुछ॥ तुमकोउपदेशकरो॥ अरुएहमेजानताहोजोतुमकल्याणिकितहे॥ जोकछमेकहोगासोतुमधारेगा॥ तेकछुपरकहेगेसोएअवरएकहूएहे॥ अरुमेवेवचनहूकाअधिकारीहेंत॥ तुमकोउपदेशकरुगा॥ अरुससारकेकनारेपरआएआप्रापतिहे॥ आहेत॥ अरुवतुरुकोनिकामनेकीविलवहे॥ वेरागकरतेशरनहे॥ ससारकाकलावेरावाहेसमेमतकर॥ ५४॥ इतिश्रीमेकीपवमवेरागहेव नेनामसर्ग॥

मेकीउवाच॥ श्राहेभगवनमेजानताहोमेराकारजअविहूआहे॥ मरुकोमाहकरअजानथा॥ तिसकेनाशकरणेकोतुमसमूर्थदिष्टिआवतेहो॥ मेरेरिदकेतमनाशकरणेकोतुमसमर्थदिष्टिआवतेहो॥ जेउदेहूएहो॥ हेभगवनएहससारलाभहे॥ अरुलोकोकीबुधिविखअहुकोउरजातीहे॥ जेहाडखहीहोताहे जेसेजलनीचेउरकोचलिआजाताहे॥ तेसेहमारीबुधिनीचएस्थानोंकोचलीजातीहे॥ उवीनाहोजाती॥ हेभगवनजेतेकछुभागहे॥ तिनकोमेभोगिआहेपरशांतिनहीप्रापतिभए॥ त्रिसनावदतीजातीहेदिनदिन॥ जेसेत्रिषालागेअरुघणाजलपानकरीअेतवत्रिषामिटितीनाही॥ वडतीजातीहे॥ तेसेविखिअहुकेभोगणेकरशांतिनहीप्रापतिहोती॥ अधिकवढतीजातीहे॥ अरदहजरजरीभावकोप्रापतिहोताहे॥ दंतगिरपडतेहें॥ अरुकेशश्वेतहोताहे॥ नतभीत्रिसनामिटतीनही॥ हेभगवनत॥ अबमेडुखकोचाहताहो॥ सुखकोनहीचाहता॥ काहेतेजोतेससारकेसुखहेतिनकाअंतमेडुखहे॥ जोअथमडुखहेतिसकाअंतमेसुखहे॥ तातेमेडुखकोचाहताहो॥ जिसकाअंतमेसुखहोवे॥ एसीतेडुखकोचाहताहो॥ अरुससारकेसुखनहीचाहताहेभगवनअपतीआवासनाहीडखदेतीआहे॥ मेसबगुणअपणावेहणेकाएस्थानबणावताहे॥ अरुआपवीचवेठकरफसमतीहे॥ तेसेअपणावासनाकरआपहीवधमा

वा

वं. सा. २

नहोताहै॥ इहकालवहोवैगाजोअज्ञानरूपीहस्तीमनकोवसिकीआहै॥ तिससे
नाशकरणिवल्लागिआनरूपीसिंघप्रगटेगा॥ अवकमैरूपीविगिणोकानाशकर्ता
अग्निकवप्रगटेगा॥ अरवासनारूपीअधिकाररात्रितिसकानाशकर्ताज्ञानरूपी
सूर्जकवप्रगटेगा॥ हेभगवन्वैतालतवलगभासताहै॥ जवलगरात्रिहै॥ जव
सूर्जउदेहूआतवरात्रिचलतीरहतीहै॥ वहुडिवैतालनहीभासता॥ सोअहं
काररूपीवैतालतवलगहैजवलगअज्ञानरूपीरात्रिहूईनहीभए॥ हेभगवन्
जवसंतपणासूहूअरसंतजनोंकेउपदेशनेआत्मज्ञानरूपसूर्जप्रगटताहै॥ तवअ
हंकाररूपीवैतालनहीविचरता॥ अरसंतपणाशास्त्रोंकादेखणा अरसंतजनोंकास
गिचादनीरात्रिकीनिआएहै॥ अरएनेकरजवसनरूपकासात्क्षात्कारहोवैतववदि
नहूआ अरजोनशास्त्रोंकादेखणाहोवैअरनसंतजनोंकासंगहोवै॥ तवलग
अंधेरीरात्रिहै॥ हेभगवनजिसकोशास्त्रोंकाश्रवणभीहूआहैअरवहूडिविवि
हूकीजोरागिडेतववहआभागीजाणिऐसामेहे॥ परअविहडीतमारीशरणकों
प्रापतिहूआहों॥ मेरेरिदेविखेजोअज्ञानरूपीकुहीडहै॥ सोतुमारेवचनरूपी
शरत्कालकरकेनाशहोजावेगी॥ निर्मलहोजावेगा॥ हेभगवनतीनदडेमेसा
धेहहि॥ मनकरभीअरशरीरकरभीअरवाणीकरभी॥ एहतीनोंतपकीएहैव
हूनकल्प अरआत्मप्रकाशनहीहूआ॥ अवमैतुमारेशरणनिकोंप्रापतिहूआहो
अवतरोगासोक्रिपाकरकेकहहूजोमेरेरिदेकातमदूरिहोवै॥ २५४ इतिश्री
वसिष्ठम
वैराग गोनामसर्गः॥ ॥
चा॥ उंहेतातसंवेदनअरवासनाअरभावनाअरकलनाएहचारोअनर्थकेकार
णहै॥ जवएनकाअभावहोवैतवकल्याणहोवै॥ संवेदनएहहैजोसथविनमा
त्रपदश्नजवैतंनअपणेआपविखेअहंभावकाउथानहोवणा सोसंवेदनकहीऐ
ओ॥ अरभावनाएहजोकछुवणिआअरवहूडिचितिआअरवहूडिचितिआचि
तसमरनभएआअपणाआपतवभ्रमसिटिजाताहै॥ अरजोकछुवणिआहै॥
तिसकीभावनाहूएजोमेएहहो॥ तवभावनाकरसंसारवडिइहूआ॥ वहूडिवास
डिइतेसीहोतीहै॥ अपणेशरीरकेअरनसारकलनाहोतीहैनानाप्रकारकी॥ व
हूडिसंसारकेसंकल्पविकल्पउठतेहैं॥ एहचारोअनर्थकेकारणहै जवएन
काअभावहोवैतवकल्याणहोवै॥ जेतेकछुपाहूअरअर्थहैतिनकाअधिष्टान
प्रतजिचैतनहै॥ सवजीवएसीकेआश्रेहै॥ अरसवउहीहैजवतूअैसजाणेगातवव
सर्ववासनाछैहोजावहिगी॥ जवअहंकासंवेदनऐसकोफुरतीहैतवआगेसंसा
रभासताहै॥ जैसेवसंतरुतआवतीहै॥ तवबलीप्रफुलतहोजातीहै॥ तैसेजव
संवेदनफुरतीहैतवआगेसंसारसिद्धहोताहै॥ जवसंसारहूआतवनानाप्रकार
कीवासनाफुरतीहै॥ अरसंसारमिटतानही॥ संसारऐसीकानामहै॥ जोपडासंसर
ताहै॥ जवसंसारमिटिजावैतवआत्मपदहीप्रापतिहोताहै॥ सोतेराअपणाआपहै
ऐसऊनेकोत्यागकेअपणेआपविखेसावधानहोइ॥ सभतेराहीसरूपहै॥
अरजवलगएहवासनाएहीफुरतीहै॥ तवलगएहसंसाररूपीब्रिछडिरहोता
जाताहै॥ जैसेब्रिछकोजलदेएताहैतववधताहै॥ अरतैसेहीवासनारूपीजलक
देवणेकरससाररूपीब्रिछडिइहोताजाताहै॥ तातेएसकानाशकरहू॥ अर
एसकानाशएहीहैजोसंवेदननफुरै॥ जवजलसचणातरहातब्रिछआप
हीगलजाताहै॥ हेरामआत्माविखेजगतकछुहूआनही॥ केवलपरमात्मस
ताहै॥ जैसेजेवडीविखेसर्पकछुवस्तनही॥ जवडीकेअज्ञानतेसर्पभासता

है॥ तैसेआत्माकेअज्ञानतेएहविश्वभासतीहै॥ जवआत्माकोतत्वजोणिगातवप
रमार्थसत्ताहीफुरीभासेगी॥ जैसेवालककोअपणीपछाहीविखेवैतालकल्पताहै
अरभैकरदुखपावताहै॥ जवविचारकरदेखताहैतवभूतचल्लजातारहताहै॥ अ
रभैदूरिहोजाताहै॥ तैसेआत्माकेअज्ञानकरकेसंसारकारागदेवउजलदेत
है॥ अरज्ञानवानकोसंसारकाअभावहोजाताहै॥ केवलअद्वैतसत्ताफुरीभा
सतीहै॥ जैसेस्वपनजागिआपुरखतिसकोस्वप्नेकप्रपंचअरवासनाकाअभावहो
जाताहै॥ तैसेजवआत्माकासाक्षात्कारहूआतववासनासेजगतिसंसारकाअ
भावहोजाताहै॥ कोहेतेजोआगेहैनहीं॥ जैसेमृत्तिकाविखेमाटीतेएतरकछुनही
तैसेप्रपंचसभचिन्मात्रसरूपहै॥ एतरकछुनही॥ जोकछुपाछुअर्थहैसोसभआ
त्मसरूपहै॥ अरजोकछुएतरभासताहैसोभ्रममात्रहै॥ जैसेअकाशविखेनी
लताभासतीहै॥ हैनहीअरप्रतक्षभासतीहैभ्रमदृष्टिकर तैसेप्रपंचसभआत्म
सरूपहै॥ अरदृष्टादृष्टप्रानजोत्रिपुटीभासतीहैसोवाधसरूपहैवोधहीत्रिपु
टीरूपहोकरस्थितिहूआहै॥ तैसेसप्रतिविवएकहीअनभवकरत्रिपुटीहोएकर
भासताहै॥ तैसेएहत्रिपुटीआत्मसरूपहै॥ हेअंगनाकछुएस्थावरजंगमपदा
र्थभासतेहैसोसभआत्मसरूपहै॥ जोपरमात्मसरूपनहोवैतवभासहिनहो॥
जातेभासतेहैतातेपरमात्मसरूपहै॥ जोनहीतानहीसभकोएकसत्तापरमार्थ
सरूपविखेहोतीहै॥ काहेतेजोसजातीवस्तमिलिजातीहै॥ जैसेजलकीबूंद
जलविखेपाएअैसोमिलिजातीहै॥ काहेतेजोएकसरूपहै॥ तैसेवोधकेस
भपदार्थकोएकताभासतीहै॥ काहेतेजोइसरीसतीहेनेहो॥ जैसेसमपदअरनि
स्पंददेनोवाएकसरूपहै॥ तरंगअरजलविखेभेदकछुनही॥ तैसेविश्वपरमा
त्मसरूपहै॥ तातेअैसेनिश्चैकर॥ जोसर्वब्रह्मसरूपहै॥ अथवाआपकोदृष्टाएद
जोसेनही॥ जवतूहीनहीतवविश्वकहारहेगी॥ जवप्रथमअहंहोताहैतवपाछै
तहोताहै॥ जवअहंहीनरहैतवतेवकहारहैगी॥ एसअहंकोहोवणाहीवंधन
है अरएसकाअभावहोवणाएसीकानाममुक्तिहै॥ अरएसविखेजनतेनकिआ
हेएतोअपणोअधीनेहैजोमननही॥ जवअहंकारकोनिवर्तकीआतवमोघसोए
रहेगाजोसभकापरमार्थसरूपहै॥ जिसीकोब्रह्मकहतेहै॥ जवअहंकारफु
रताहैतवनानाप्रकारकीवासनाफुरतीहै॥ हेअंगएहवासनाकेअनसारअने
कजन्मोंकोपावतेहै॥ अरअैसेकष्टकोपावतेहै॥ जोमखतेकहेनहीजा
ते॥ जैसेपवनकरत्रिणभटकतेहै॥ तैसेवासनाकेअनसारजीवभटकतेफिरते
है॥ जैसेपर्वततेकंकरगिडताहैअतिनीचेकोचोटखाताचलिआआवताहै
तैसेसरूपकेप्रमादकरएदुखपावतेहै॥ अरघटीजंत्रकीनिआएकवहू
धकोजातेहै॥ कवहूनीचेकोजातेहै॥ अपणीवासनाकेअनसार॥ जैसेखेनूहा
थकीताडनाकीआकवीअर्थकोजानाहेकवीऊर्धकोजाताहै॥ हेअंगएससं
सारकावीजवासनाहै॥ जववासनानिवर्तहोजावैतवसभकीएकताहीजवा
होजातीहै॥ जवलगसंसारकीवासनाद्रिडहैतवलगएकतानहीहोती॥ जैसेदूध
अरजलमिलताहैतिनकासंवंधसंजोगहोताहै॥ तैसेविश्वअरआत्माका
संजोगसंवंधहै॥ आत्माकेवलअद्वैतसत्ताहै॥ अरसभकाअपणाआपहै॥ जै
सेक्षितकाहीकुंभसरूपहोभासतीहै॥ तैसेआत्माहीजगतरूपहोभासताहै॥
आत्मातेएतरकछुनही॥ हेसाधएहदृष्टिअरआत्माकाकछुसत्ती॥ हेसाध
गनहीभएआ॥ काष्टअरलोखवत॥ घटअरअकाशवतसंवंधकछुनही॥

काहेतेजोऊसतेएतरकछुवस्तुनही॥सर्वबोधमात्रहीहै॥अरजोजडहैसोचेत
ननहीहोता॥अरचेतनजडनही होता॥फरएहजगतजोबोधकरकेहोजाता
हैतबजाणीताहैजोउहीहै॥अरअज्ञानकरनानाप्रकारभासताहै॥जैसेमेघकी
वरखाहोतीहैतबनानाप्रकारकेफूलफलप्रगटिहोआवतेहैं॥तैसेजबअहं
सहुआतबसंसाररूपीब्रिछकाबीजजानणा॥अरवासनारूपीमेघकरपुफु
ल्लतहोताहै॥जबअहंकारबीजनष्टिहोजावे॥तबसंसाररूपीब्रिछनष्टि
होवै॥जैसेबातरवंचलताप्रगटकरताहै॥अरजैसेखैनुहोताहैअरतमोतेमा
रनेतेकबहूंऊर्धउछलताहैकबहूंनीचेकोजाताहै॥तैसेवासनारूपीतमाचे
करअधऊर्धकोभटकताफिरताहै॥तातेवासनाकात्यागकरो॥अरआत्मपद
विखेस्थितिहोवहु॥एहसंसाररात्रकापेडाहैदेखतेदेखतेनष्टहोजाता
है॥एसकोदेखकरएसविखेप्रीतिकरणीअरसंतजानणाएहीअनर्थहै॥ता
तेसंसारकोत्यागकरआत्मपदविखेस्थितिपावहु॥चितकीब्रितमेसरलीहैए
सीकानामसंसारहै॥२४५ इतिश्रीमनकीप्रबोधनं नाम सर्गः॥वसिष्ठउवाचा
उहेअगएहसंसारकामार्गगहनहै॥एसविखेजीवपडेभटकतेहैं॥एहचेतना
जोब्रितपडीमेसरतीहैएहीसंसारहै॥जबएहमेसरनामिटतबस्वछअपणाआ
पहीभासे॥चेतनाब्रितबाहरसमखफुरतीहैएसीकानामबंधहै॥अरबंधकोउ
नहीहै॥साधएहजगतवासनाकरबधिआहै॥जैसेबसंततकरसपसरताहै॥तैसे
वासनाकरजगतपसरिताहै॥बडाअश्चर्जहैजोवासनाकरजीउभटकतेफिरते
हैं॥अरदुखकोभोगतेहैं॥अरजगन्मपावतेहैं॥बडाअश्चर्जहैवासनाविषमरूप
हैजिसकेवसिजीवहूएहैं॥जोअविद्मानजगतहैसोभ्रमकरसतवतपरजानते
हैं॥जोएहवासनारूपसंसारकोनतरेहैंसाधनहैं॥ओहुपुरखचंद्रमाकेसमानहैं॥
जैसेचंद्रमाप्रकाशकरताहै॥अमित्ररूपशीतलहैप्रकाशरूपहै॥तैसेज्ञानीहै॥ता
तेधनहै॥जोआत्मपदकीएछाकरताहैएहे॥एहसंसारत्रिश्नाकरवपडाजलताहै॥
हे॥जिनकीचेष्टात्रिश्नासंजगतिहैसोतबिलजान॥जोबिलाभीत्रिश्नाकरचु
हेकोपकरताहै॥तैसेएहभीअपणीचेष्टात्रिश्नासंजगतिकरतेहैं॥एसमानरख
विखेहीविशेषताहैजोकिसीभांतआत्मपदकोप्रापतिहोवे॥अरजोआत्मपद
पावेणाकीएछानही॥तोपशूकेसमानहैं॥जैसेपशुहैंतैसामनुखहै॥अरसोचे
ष्टाकरतेहैंजोप्राणीकेअंतपरजंतत्रिश्नाकरतेरहतेहैं॥हेअंगब्रह्मलोकतआदिअ
रकाष्टजोकछुएदीअहंकेविखेहैतिनकोभोगणाकरशांतनहीप्रापतिहोती
काहेतेजोअपनारमणाअहै॥ऐनविखेसुखकदाचितनहीजोज्ञानवानपुरख
हैंतिनकोशांतऐसीहैजैसेचंद्रमाविखेहै॥अरसूर्जकीनिआईप्रकाशतेहैं॥
अरविविखअहूकीत्रिश्नाकदाचितनहीकरते॥जैसेकिसीपुरखअम्रितपानकी
आश्रतिसकरत्रितिहुआतबउहुखलखावणेकीएछानहीकरता॥तैसेजि
सपुरखकोआत्मानंदप्रापतिहूआहै॥सोविखिअहूकेभोगणेकीएछानही
करता॥तातेएनवासनाकात्यागकर॥अरवासनाकाबीजअहंकारहै॥तिसको
निवर्तकरजोमैनही॥काहेतेजोतेरेहोवणाहीअनर्थहै॥सथचिन्मात्रनिर
हंकारपदविखेजोकछुतुआपकोजानताहै॥जोमैब्रह्मणाहैंअथवाकिसीप्रकि
तसाथिमिलिकरतमाथिमिलिकरआपकोजाणताहै॥जोमैएहहोंएहीअनर्थ
है॥हेरिखतेरेनेत्रोंकेखोलणेकरससाभउत्पतिहोताहै॥अरनेत्रोंकेमूंदणेकरसं
सारनष्टहोजाताहै॥सोनेत्रकिआहै॥अहंकारकाफुरणासोएसोकारकेआगेवि

आतिहहोतीहै॥तेरोहोत्याणाहीअनर्थहै॥जैसेजीरदरीविखेसर्पभ्रममात्रदेखे
ताहै॥तैसेआत्माविखेअहंकारउदेहुआहै॥एसीकरअभावहएणातेहोएहै॥ज
बअहंकारहुआतबआगेएसीकुटबपनेहोतेहै॥सोएसकोबंधनहै॥एनका
चमत्कारऐसाहैजैसेबिजलीकाचमत्कारविणाविखेउदेहोकरनष्टिहोजाताहै
तातेएनविखेवधमानहोहू॥हेअंगजबतूकछुहुआनमसभअपदानफकोआ
पआपतिहोवेगा॥अरजबतूअपणाअभावजाणेगातबपाछेआत्मपदहोएगाधवहैं
गा॥अरएपरमशांतरूपहैजिसकीअपेछाकरकेचंद्रमाभीअग्निवतजानीताहै॥अ
रपरमशांतरूपहैजिसकीअपेछा॥सेनहैअरसवपदार्थोकोमतनाशहोहै॥अ
रअकाशरूपहै॥हेअंगएसमेरेवचनकोधारतबमोहनष्टहोजावेगा॥ए
हविश्वकछूएननही॥जैसेअकाशविखेदूसराचंद्रमाभासताहै॥अरहैनही॥
तैसेविश्वहैनहीअरभासतीहै॥आत्माकेप्रमादिकरतिसकोजाणा॥जिसके
अज्ञानकरभासतीहै॥अरतिसीकेज्ञानकरएलीनहोजातीहै॥हेमेकोचेतनमा
त्रजैसेअकाशहै॥अरएसहमात्रजैसेपवनहै॥जलमात्रजैसेपाणीहैतैसेसबतमात्र
जगतहै॥अरओसनेजादकुपतरभासताहै॥सोभ्रममात्रजाणा॥जैसेजलपहारबू
पभासेअरसोमिककिप्रिटिका॥तैसेजगतजाणा॥एहपरमार्थसताकेअज्ञानकोभा
सताहै॥सोब्रह्मशाब्रिककेकहीताहै॥जिसकेपापकाउव्याधनहोवे॥सोस
भकाअधिष्ठानपरमार्थसतरूपहै॥तिसविखेतेएकतहोवेगा॥जैसेघटादिकाअ
वहुतवटोकरभिनभिनहैं॥अरजोघटादिकोछाडदीजेतोसभएकहीहोजाते
हैं॥तैसेअहंकाररूपीघटादिछाडीएतबसभपदार्थएकतहोजातेहैं॥हेअंगसभ
कापरमार्थसतब्रह्महै॥सोकेसाहैअजन्माहै॥अछ्युतहै॥अनंतहै॥शांतरूपहै
निर्विकल्पअहैतहैअरसभकाअधिष्ठानहै॥तिसविखेस्थितिहोहू॥अरप
थरकीशिलाकीनिआईएस्थितिहोहू॥जोआत्मसतातेएतरकछुनही॥नि
र्बांधबोधहोएजाए॥हेमेकोएहजोपदार्थतेरेतांएभासतेहैदुखअरदुखकेदे
णाहारेऐसेजोप्रतीतअर्थहैसोअकाशकेफूलोकीनिआईजाणा॥अरशांतम
नकेरसभपरमार्थसताहीहै॥जैसेपुरखनिराकारहै॥तिसकीभावनाकरअंगो
कासंजोगहोताहैतैसेविश्वभीएसकीभावनाकरखडाहै॥जैसेबीजसोसंसा
रकोवासनाब्रिडहोतीहै॥तैसेमनरूपअगडिष्टिआवतेहैं॥जडाविश्वउपादानकु
रहूएनहीतोअरभप्रणामकरवेगाआकछुनही॥जैसेएहविनाउपादानहैसो
अवगाकर॥नहुपरमात्माजोपावणाहैसोसाधहै॥अरविश्वउपादानहैसोशाहू
उहआत्माअद्वैतहैएहएसकाहेतहैअरअचुतहै॥एसीतेविश्वनिरउपादान
है॥अरजोइष्टांतभीचाहीहैतोजैसेसपनेकीसृष्टिनिरउपादानहोतीहै॥उपा
दानमित्रकाकरकेजैसेघटादिकारजबणताहै॥आत्माविश्वकाउपादानऐसे
भीनही॥काहेतेजोमित्रकाप्रणामकरघटाकारहोतीहै॥अरआत्माअच्युतहै
जैसेभीतबिनाचित्रनही॥तैसेएहविश्वअकाशविखेचित्रहै॥जैसेसपनेविखे
नानाप्रकारकाविश्वअथाभीतबिनाहोतीहै॥तैसेएहविश्वअकाशविखे
चित्रहूएहै॥एसीतेआत्माकर्ताहै॥अरविश्वनाहिआवतीहैसोनिरउपादानहै॥
तिसकाशोककिकरोअ॥अरहंकिआकरोअ॥एहएपंचमभआत्मसरूपहै
अरप्रमादिकरनहोज्ञानिआजानताहै॥संवेदनजोअहंकारफुरताहैतबविश्व
भिनहोकरभासताहै॥जैसेसपविखेजाकरकेवणताहैअपणासरूपतेभिन
हएकरभासताहै॥तिसविखेरागअरद्वेषभासतेहै॥जबसंवेदनउठगएत

वं॰
मा॰
२५

वसभविषग्रपणाग्रापहोजातीहे॥ एहग्रहंकारकाहीवाणहीविस्वहे॥ जैसे
ग्रहंकारकाग्रभावहोवैतवसभपाहुग्रथजोमेडरवीहोसुखीहो॥ एहनरक
हेएहस्वर्गहै॥ एहग्राद्किशास्त्रग्रर्थपरमार्थसुताविखेपइफुरनेहेसभका
ग्रधिष्टानग्रात्माहे॥ तातेसभग्रात्मसरूपहे॥ सोकेसाहेडिशातेरहेतडिष्टा
हेगेएतेरहतज्ञाताहे॥ ग्ररनिर्वोधवोधहेएकुतेरहतएकाहे॥ ग्रद्वैतग्ररनाना
नोभीडहीहे॥ निराकारग्रकारभीडहीहे॥ किंचतभीहेनिकिंचतभीहे॥ क्रिग्रा
तेरहितहे॥ ग्ररसर्वक्रिग्राडहीकरताहे॥ ग्रेसाग्रात्मज्ञानकोपाएकरग्रात्मा
विखेविचरतेहे॥ ग्ररजगतकाभानकोकिंचतभीनही॥ जेसेसुनेकेभूषणग्र
रजलकेतरंगहोतेहे॥ तेसेसभविस्वातिनकोग्रात्मसरूपभासतेहे॥ ग्रेसेज्ञाण
करसभचेष्टाकरतेहे॥ जेसेजंत्रीकीपुतलीग्राहोतीहे॥ तिनविखेसंवेदननही
फुरती॥ तेसेज्ञानकउजगतमतताहीभासती॥ काहेतेजोनिरहंकाररहएहे
हेसेकीगिरखजेसेस्वर्णविखेभूषणानाणिग्राएहे॥ तेसेग्रात्माविखेविस्वफुर
ग्राएहे॥ ग्रहंकारफुरिग्राएग्राहे॥ तातेएसकेनहीवासनाकीभावनाकर॥ निरहंका
रहुएकरचेष्टाकर॥ जेसेपिंडहेविखेबालकहोताहे तिसकेग्रंगस्वभावकपेई
हलतेहे॥ तेसेज्ञानीकीनिर्वेदनचेष्टापड़ीहोतीहे॥ हेरिखजबतएसेमेरेवचन
कोधारेगातबस्वखेनहीग्रात्मपदकीप्रापतिहोवेगी॥ एहविस्वभीग्रात्मसरूप
भासेगी॥ जोकछुविस्वभासतीहेसोसभग्रात्मसरूपपहीहे॥ हेरामजीजब
एसप्रकारमेंकीगिरखपरमनिर्वाणपदकोप्रापतिहुग्रा॥ परमसमाधविखेज
डगएग्रा॥ सगोवरखप्रजनतसमाधविखेरहा॥ परकेसीसमाधजोशिलाव
तकछुफुरेनही॥ जिसप्रकारमेंकीगिरखसरूपकोप्रापतिहुग्राहे तेसेतुम
भीएस्थितिहोवहु॥ १५६॥ इतिश्रीमेंकी र ण प ना ॥५॥ प्रथ
मजिलद निर्वाणप्रकरणकी संपूरणहहे॥ ॥ ॥

ॐ

ॐश्रीनिर्वाणप्रकरणंलिख्यते॥ लब्धइसर्ग॥ वसिष्टउवाच॥ ॐ

हेरामजीइहविस्वग्रात्माकाचमत्कारहे॥ सभउसीकासरूपहे॥ चिनमात्रस
रूपहे॥ हेरामजीमेराग्रशीर्वादहैजोतुमचिनमात्रसरूपकोप्रापतिहोवहु॥ जो
तुमाराग्रपणाग्रापसरूपहे॥ तिसकोग्रपणाग्रापजाणहु॥ तुमारेदुखनष्टहो
वहिगे॥ हेरामजीतेनिर्वाणशांतग्रात्माहोहु॥ ग्ररजथालाभविखेसंतुष्टहोहु॥
ग्ररसंतहुग्राग्रसतकीनिग्राएएस्थितिहोहु॥ रागद्वेखकारंगनचढेएसहृदक
मणवतहोहु॥ हेरामजीग्रखंडरूपजोहेग्रात्माइसकाइहजगतचमत्कारहे॥ उप
जइपजकरलीनहोजाताहेजलतरंगवत॥ ग्रादिग्रंततेरहितएकचिदाकाशइ
तिहे॥ जोग्रग्नीरग्रादिककेनाशविखेहेनही॥ सर्वजगतएकहीविखेहेएस्थिति
ग्ररलोलतवकछुएसस्थितनहीएसविखे॥ हेरामजीधिग्रानधेएधिग्राताती
नोग्रसमाग्रमिथ्याहएहे॥ ग्ररजोकहीग्रोदिपदर्शनदिष्टासमउहीरूपहे॥ एसतेप
तरकछुनही॥ सभग्रात्मसरूपहे॥ ग्ररसदाएकरसहे॥ कदाचितषोभकोनही
प्रापतिहुग्रा॥ जदएपहदिशाहोवेजोग्रमावसिकाचद्रमाद्रिष्टग्रावेग्ररप्रले
कालविनाशलेकापवनचलेतोभीग्रात्माकोषोभनहीहोता सदाजिकातिग्रा
त्मपदहे॥ हेरामजीग्रेसेग्रात्माकशमादिकरजोवडलपावतेहे॥ तबग्रात्माका
शमादिहोताहेतवएसकोदेहएंद्रीग्रापणाविखेद्रिष्टग्रावतीहेप्रतक्ष॥ तोभी

हेनही॥ जैसेवेतणिग्रोतेलनहीनिकसता॥ ग्ररग्रकाग्राविखेवननहीहोता॥ ग्र
रचंद्रमाकेमंडलविखेजिजलीनही॥ तेसेदेहइंद्रीग्राहेनही॥ कदाचितभी॥ एस
कोदेहएंद्रीग्राकासंबंधनही॥ एनाविखेग्रभिमानभ्रमकरिहे॥ हेरामजीजेसे
हीपरपुरखवेठताहे॥ तिसकोनदीकेकनारेकेब्रिछभ्रमतेइष्टग्रावतेहे॥ भ्रम
ककै॥ ग्ररजेसेसिपीविखेरूपेकाभानहोताहे॥ तेसेभ्रमकरचितदेहइंद्रीग्रा
भासतीहे॥ ग्ररचितदेहइंद्रीग्राभीकछुवस्तनही॥ इहभीग्रात्मसरूपहे॥ निपथकि
मकाकरीग्र॥ एनकोकछुग्रपणीसतानही॥ भ्रमकरभासतेहे॥ हेरामजीजेसेप
वेतपवडजलमेयहोताहे॥ तिसविखेवस्तुबुधिनिहफलहे॥ तेसेदेहादिकविखे
हंकारनिहफलहे॥ एकग्रखंडग्रात्मसताहे॥ हेरामजीइतीकछुनही॥ जबतेंग्र
सधारानवेतसधानिरंजनरूपहुग्रा॥ ग्ररएहसभप्राणीरचितकेफुरणेविखेपडेहे
जेसेचितकेफुरनेविखेणगेरहेहतेसजीवविखेचितहे॥ जेसेजीवविखेचितहेतेसे
जीवपरमपदविखेहे॥ हेरामजीजोएसभांतफुरनेहीमात्रद्रिशाहुएतोइतीग्रके
कुनहुग्राकिउ॥ एसप्रकारविचारकरद्रिशभ्रमकोत्यागग्ररसरूपविखेएस्थि
होवहु॥ हेरामजीएसप्रकारधारकरविचर॥ जोचेष्टानलकरग्रापप्रापतिहोवेजिस
कोकर॥ ग्रवग्रपणाग्रभिमानकछुनकर॥ जबग्रपणाग्रहंकारभावदूरहुग्रा
तवएसपदहोवेग्रथवासमाधविखेएस्थितिहोवेग्रथवाराजकरो॥ एस्थितिग्ररा
छोभतुमकोदोनोतुल्लहोजावहिगे॥ जबग्रपणाग्रभिलाखदूरहोएतवभावेकेसी
चेष्टाहोवे॥ एहफुरनाभीग्रफुरहे॥ जेसेसमुद्रकेजाणतेतरंगबुदबुदसभजलही
भासतेहे॥ तेसएस्पंदनिस्पंदतुझकोतुल्लहोजावहिगे॥ तरंगभीग्ररथिराउसमजल
भीएकभासहिगा॥ जेसेसोमकदृष्टीकोतरंगभीग्ररथिराउसमजलभीएकभास
तेहे॥ तेसेतुमकोभीएकहीभासेगा॥ जीवनमुक्तिहोवेग्रथवाविदेहमुक्तिहोवेस
माधहोवेग्रथवाराजहोवेदोनोतुमकोतुल्लहे॥ हेरखकुलविखेचंद्रमाएसकोग्र
पणीग्रभिलाखहीवंधनकरतीहे जवग्रभिलाखनिवर्तहोवेतववकमेकरेग्रथवान
करेएसकोवंधनकछुनही॥ काहेतेजोकर्ताविखेग्रात्माकोग्रकर्तादेखताहे॥
ग्ररनाकरनेविखेभीग्रात्माकोग्रकर्तादेखताहे॥ ग्रागहीजाननताहे॥ हेतभावना
तिसकीनिवर्तहोजातीहे देहएंद्रीग्राचितग्रादिकपदार्थसभग्रात्मरूपभासते
हे हेरामजीमेजाननताहोजातेरारिदेकामोहनिवर्तभएग्राहे॥ ग्रवतूजागाहे॥ जो
कछुसमाप्तकोरहिग्राहोवेवरुद्रप्रणानकरमेतुझकोउनरदेवो॥ ॥५॥ ॥२॥ स

निर्वाण प्र
करणे नाम सर्गः॥ ॥ रामउवा
च॥ हेभगवन्एकसेसेमुझकोहेसोतुमनिवर्तकरो॥ एककहतेहेवीजतेग्रंकरहोता
हेग्ररएककहतेहेग्रंकरतेवीजहोताहे॥ ग्ररएककहतेहेजोकछुकरताहेसोदेव
कर्ताहे॥ ग्ररएककहतेहेकर्मकर्ताहे॥ तवजन्मपावतेहे॥ कर्महीकरसभकछुहो
ताहे॥ किसीकेहाथकछुनही॥ ग्ररएककहतेहेजोदेहहोतीहेतोकर्महोतेहे॥ एक
कहतेहेकर्महूतेदेहहोतीहे॥ एककहतेहेदेहतेकर्महोतेहे॥ एहग्ररथहे॥ ग्ररएक
कहतेहेकर्मसेवउतपतहे॥ सोकेसेहेतुमकहो॥ वसिष्टउवाच॥ हेरामजीएकएक
पुरखप्रजतनमानतेहे॥ कर्मतेग्रादिलेकरदेवप्रजनतघटतेग्रादिग्ररुग्रकाशप्रज
मेतुझकोकिग्राकहउंगा॥ कर्मतेग्रादिलेकरदेवप्रजनतग्रादिक केवलग्रात्मसे
तजेतोकछुक्रिग्राकर्मइवहेएहविकल्पजालसभभ्रममात्रहे॥ केवलग्रात्मसं
रूपग्रपणाग्रापविखेएस्थितिहे॥ दुसराकछुहुग्रानही॥ हेरामजीजवसंवेदनफुर
तेहेतवसभकछुभासताहे॥ ग्ररनिरसंवेदनहुएकछुनही॥ कर्मपुरखप्रजतनदेवसभ

आत्माके परजाए हे ॥ जेसे शीतल चेतन आदिक बरफ के परजाए हैं ॥ तेसे एह सभ आत्मा के
परजाए हे ॥ देव पुरख हे अर पुरख देव हे ॥ कर्म देह हे अर देह कर्म हे ॥ बीज ही अंकुर हे
अर अंकुर ही बीज हे ॥ देव ही कर्म हे अर कर्म ही देव हे ॥ सो एह पुरख प्रजतन हे ॥ जो ए
न विखे भेद मानते हे सो पंडित हूं विखे पशू हे ॥ काहेते जो एनका बीज अहंकार हे ॥
जब अहंकार हूआ तब सभ कछु सिध हूआ ॥ जेसे बीजते ब्रिछ होता हे ॥ फुल फल
टास सभ बीजते होते हे ॥ अर जो बीज न होवे तो ब्रिछ केसे होवे ॥ हे रामजी एनका
बीज संवेदन हे ॥ अहंकार कहो अर संकल्प कहो अर सभी संवेदन के परजाए हे ॥ ज
ब फुना हू आत बे कर्म देह देव सभ सिध होते हे ॥ जब फुना मिटि आत ब कछु नही
भासता ॥ एसी को अग्नि साथि जल्लाव हू तउ फुल फल टास जल जावे ॥ एह संवेदन
जो फुरती हे सो एही संसार का बीज हे ॥ ज्ञान रूप अग्नि कर एसको जल्लाव हू ॥ जब
अहंकार नष्ट हूआ तब हूं स एक कछु न भासेगा ॥ हे रामजी एह जो प्रपंच भासता हे ॥ ए
सका बीज संवेदन हे ॥ अर संवेदन का बीज सुध संवत तत हे ॥ तिसका बीज अवु
र कोउ नही ॥ देव अर कर्म पुरख प्रजतन कि आहे सामरथ ॥ आदि जो एस्पंद संवेदन
फुरती हे ॥ तिसका नाम देव हे ॥ जो कर्म ते आदि हो फुरता हे ॥ अर फेर जो आगे क्रिआ
करीती हे सो कर्म हे ॥ तिसी का नाम पुरख प्रजतन हे ॥ अर जो कर्म ते आदि देव रूप
एस्पंद कहा हे सो किआ रूप हे ॥ एसी का जो प्राक्रित कर्म की आह्निं आ हे तिसी का ना
म देव कर कहते हे ॥ एन सभ का जो बीज हे सो संवेदन हे ॥ हे रामजी जो अंत: पुरख
एक ही था चिन मात्र रूप तिस ते उथान हूए विकार सहत प्रपंच आगो इद्रिआ वण
लागा ॥ बहुड़ जब अहंकार उथान का अभाव होवे तब प्रपंच का लिअ भाव हो जा
ता हे ॥ हे रामजी जब एह कछु बणता हे तब सभ अपदाएस को प्रापति होती हे
जेसे सूए वस्त्र विखे प्रवेश करती हे ॥ अर ताणा तिसके पाछे वलिआ जाता हे ॥
अर जो सूए प्रवेश नही की आत तब ताणा नही जाता हे ॥ तेसे जब अहंकार प्रवे
श कीआ तब सभ अपदा आवती हे ॥ अर जब अहंकार निवर्त भए आत्म सभ
ति सुख अनंद रूप अपणा आप भासेगा ॥ ताते अहंकार का अभाव करो ॥ काहेते जो
विखे भ्रम कर के सिध हूए हे ॥ आगे कछु नही अर्थ वासना भ्रम आत्म रूप हे ॥ हे राम
जी वासना मात्र विखे हे ॥ जब वासना नाम होवे तब परम कल्याण होवे ॥ जिस प्र
कार एसकी वासना छे होवे सो एह जुगत श्रेष्ठ हे ॥ जब वासना छे होवे तब चेष्टा भी प
डो होवेगी ॥ पर बहुड़ जन्म को न देवेगी ॥ जेसे गिआनी की चेष्टा होती हे ॥ तेसे
अगिआनी की होती हे ॥ देखणे विखे दोनो तुल हे ॥ पर गिआनी का संकल्प भ
ने बीज को निआए हे बहुड़ जन्म नही देता ॥ अर अगिआनी का संकल्प कचे बीज को
निआए हे बहुड़ जन्म देता हे ॥ ज्ञानी बहुड़ि जन्म नही पावता ॥ अर अज्ञानी पाव
ता हे ॥ अर वासना वने ने का जो जन्म पावता हे तिसको ओ न ही पावता ॥ केवल अप
णा आप भाव विखे स्थिति हे ॥ भ्रम कर भिन भिन पदे भासते हे ॥ सभ अपणा ही
सरूप हे ॥ दूसरा कछु हूआ नही ॥ अर जो भासता हे सो मिथ्या हे ॥ जेसे केल के
थंभ विखे सार कछु नही होता ॥ तेसे एह प्रपंच सभ मिथ्या हे ॥ एस विखे सार कछु
नही ॥ ताते एसकी वासना त्याग कर अपणा आप विखे स्थिति होहु ॥ हे रामजी जि
स प्रकार तेरी वासना निर्मल होवे सोए जतन कर ॥ निर्मल हूए पाछे परम सुध प
द रहेगा ॥ हे रामजी पुरख प्रजतन कर निर्मल अहं भाव होवहू ॥ वासना छे हो
जावेगी ॥ पुरख प्रजतन बिना अरु रतन का उपाय कोउ नही ॥ ताते इसी देव परा

एणा होवहू ॥ कर्म देव आदिक उही पुरख होकर भासता हे ॥ अर कछु हूआ नही
जेसे एक ही नट नव रस देवता का सांग धारे ॥ ऐसे विचार कर सर्व एषणा को त्याग कर स
रूप विखे स्थिति होवहू ॥ ७४ ॥ इति श्री म नो उ दे ना म सर्गः ॥ ॥
वसिष्ठ उवाच ॥ हे रामजी गिआनवान की बुधि निर्मल होजाती है ॥ अर विदे वि
ख प्रीति लता होती हे ॥ बुधि चेतन न सकर शुध होजाती हे हमसा भाव उठाहजा
ता हे ॥ ताते नित अंतरमुखी होहु ॥ अर वीतराग निर्वासी होहु ॥ अरु चिनमात्र नि
र्मल प्रात रूप सर्व ब्रह्म की भावना करो ॥ ब्रह्म पद को प्राप्त करने ते के अनसार
चेष्टा करो ॥ जो हर्ष का एस्थान होवे तिस विखे हर्ष करो जो शोक का एस्थान हो
वे तिस विखे शोक करो ॥ जेसे अगिआनी करते हे ॥ तेसे करो ॥ अर विदे विखे
अकाश की निआए रहहू ॥ हे रामजी जो इस्त्री आन प्रापति होवहि तिन के सं
थि स्पर्श करो ॥ पर हिरदे विखे चित्त आन होवे ॥ जब जो धि आए प्रापति होवे ॥ तब
सर्व माहो कर जुध करो ॥ अर जेहा दीन होवे तेहा दीन आचरो ॥ राज आए प्रापति
होवे तब तिस को भोगो जो कोई कष्ट आए प्रापति होवे तब उस को भी भोगो ॥
हे रामजी सभ चेष्टा अज्ञानी की निआए करो ॥ अपने हिरदे को कोउ ज्ञान न सके
अर हिरदे विखे सदा समता रहे ॥ एन कर कछु फुरे नही ॥ सदा राग द्वेख ते रहत
निर्मल होवहू ॥ जबते ऐसे निश्चे को धारेगा तब तुझ को खेद कछु न होवेगा ॥ ज
द पड़ा दुख एह का बज्र पड़े तो भी तुझ को स्पर्श न करेगा ॥ हे रामजी तेरा सरूप
केसा हे ॥ जो शस्त्र कर छेदिआ नही जाता ॥ अर अग्नि कर जलता नही ॥ जल क
र गलता नही ॥ अर पवन कर सूकता नही ॥ केवल निराकार अजर अमर हे
अर सर्व का अपणा आप हे ॥ हे रामजी कष्ट तब होता हे जो विलखण वस्तु होती
हे ॥ अगनि तब जलावती हे जो भिंन काष्ट आदिक वस्तु होती हे ॥ अग्नि को जल
ता गालता नही ॥ ताते तूं अपणे आप विखे स्थिति होहु ॥ हे रामजी सर्व बत रू
प जो आलने वत एस्थित एस्थान हे ॥ तिस विखे एस्थिति होहु ॥ जेसे पंछी स
र्व ओर ते संकल्प त्याग कर आलने विखे एस्थिति होता हे ॥ तब सुख पावता हे
तेसे जब तूं सर्व कलना को त्याग कर अंतर्मुख सर्व बत रूप विखे एस्थिति होवे
गा ॥ तब राग द्वेख रूप इंद का अंत न रहेगा ॥ हे रामजी ए संसार रूपी समुंद बड़ा प्रवा
ह हे ॥ तिस ते निकसना तब होवे जो आप होवे ॥ सो आत्म आनंद को कहता हों ॥ अ
विलखण भव रूप आत्मा को आश्रय कर के संसार समुंद्र के पार को प्रापति होवहू ॥
न कर अपणा आप आप विखे एस्थिति होवहू ॥ हे रामजी संसार रूपी ब्रिछ का अं
त लीआ चाहे तो न ही पावता ॥ अर मे तुझ को असा उपाए कहता हों जो सर्व का
अंत कही अर सगरथ को ग्रहण कीए ॥ संसार रूपी एक ब्रिछ हे तिस विखे चेतन मात्र
मूल धना हे ॥ सो तेरा अपणा आप हे ॥ तिस को ग्रहण कर ॥ जो सर्व का अधिष्ठान हे
जब तिस को ग्रहण की आ तब सर्व को ग्रहण की आ ॥ हे रामजी जेता कछु प्रपंच तुझ
को भासता हे ॥ सो सभ आत्म रूप हे ॥ तिस की भावना कर अर जाग्रत विखे सुख
पति होहु ॥ अर सुखपति विखे जाग्रत होहु ॥ संसार की जो जाग्रत सत्ता हे तिस
को अंत सुखपत होहु ॥ सुखपत कही अर फुरने ते रहत होहु ॥ अर तुरीआ पद
विखे स्थिति होहु ॥ जहां सुखपत का जाग्रत का भी कोउ नही ॥ शुध शांत रूप निर्मल
विखे एस्थिति होहु ॥ राम
पद हे ॥ जहा एक अर दोए की कलना कोउ नही तिस विखे एस्थिति होहु ॥

उवाच॥ हे भगवन् ऐसा जो शांत रूप निर्मल तुरीया पद है तिस विषे स्थिति
होवणा तुम ह कहा॥ सो तुमारे विषे संवेदन उठते हैं॥ जो मै वसिष्ट हो तिस
का रूप किआ है॥ जो अहं प्रतीति नाहीं तो ऊठ की होती है॥ वाल्मीक उवाच॥ हे भारद्वाज
जब एस प्रकार रामजी प्रश्न कीआ॥ तब वसिष्ट मन तुसनी स्थित होए गए॥ अ
अरु सब सभा मे से केवि विस्मय गन भए॥ तब रामजी बोले हे भगवन् एह तो
सी होवणा तुमारा अजोग है॥ तुम सारे वाते निश्चय रहे॥ ब्रह्मवेत्ता हो॥ ऐसे कवन
वात है जो तुम कौं न आवे॥ अथवा मरु को असमर्थ न होदे खते सो कहहु॥
जब ऐसे रामजी कहा तब वसिष्ट जी एक घडी तइ परंत बोले॥ वसिष्ठ उवा
वा॥ हे रामजी मे असमर्थता करके तुसनी नहीं भए आ॥ पर जे मा ते रे प्रश्न का उत्तर
है सो एह दिखाएआ है॥ तेरे प्रश्न का तुस्नी ही उत्तर है॥ जो प्रश्न करने वाला अग्र हो
वे॥ तो ते एसु को अज्ञान ले कर उत्तर कहीए॥ अरु जो तत्व होवे तिस को ज्ञान कर उत्त
र दीजे॥ आगे तू अज्ञानी था तब सविकल्प उत्तर मे देता था॥ अब तू ज्ञानवान है
तेरे प्रश्न का उत्तर तुस्नी ही है॥ हे रामजी जो कछु कहणा है सो प्रतियोगी साथ मि
लिआ हुआ है॥ प्रतियोगी बिना पाइ हम केसे कहइं॥ आगे तू सविकल्प था ता का
अधिकारी था॥ अब तुरु को निर्विकल्प का उपदेश कीआ है॥ हे रामजी सवेद वा
रणा का रूप है॥ एक सूक्ष्म अर्थ का है॥ दूसरा परमार्थ का है॥ एक अल्प है एक
दीर्घ है॥ सो तीन कलंक एत विषे रहते हैं॥ एक प्रतियोगी॥ एक भेद॥ एह तीनो क
लंक शब्दों विषे रहते हैं॥ जैसे समुद्र जे की किरणा विषे तिस रेणा रहते हैं॥ तैसे
शब्दों विषे कलंक रहते हैं॥ अरु जो पद मन अरु वाणी ते अतीत है॥ तो कलंक न
हाई तिस को कैसे ग्रहण करहि॥ हे रामजी काष्ट मौन उसको कहते हैं॥ जहां न प
ही आफुरहि न मन फुरे॥ कोउ फुरना ना फुरे सो कही है काष्ट मौन॥ अरु स पद को
मे वाणी कर के स कहूं॥ जो ता कछु बोलणा होता है सो सविकल्प होता है॥ एसो
ते तेरे प्रश्न का उत्तर तुस्नी है॥ रामउवाच॥ हे भगवन् तुम कहते हो बोलना स
विकल्प अप्रतियोगी सह नहीं होता है॥ जो कछु ब्रह्म विषे दूषण है तिन का निषेद
कर के कहो॥ मे प्रतियोगी को उन विचारोंगा॥ वसिष्ठ उवाच॥ हे रामजी मे विद्या
काश रूप हो॥ चेतन ते रहत चिन मात्र हो अरु शांत रूप हो सम हो॥ सर्व कलना ते
रहित केवल आत्मत मात्र हो॥ अरु तू भी चिदाकाश है सर्व जगत भी चिदाकाश
है॥ अरु अहं को उन हो कहणा काहे ते जो दूसरी वस्तु को उ न हो॥ सभ चिदाकाश
रूप है॥ अहं संवेदन ते रहत सुध है॥ जो सो आत्मप क अहं अहं फुरती है॥ अरु सो फु
की भी एका होवे तो सिध न ही होती॥ काहे ते जो कछु आपको मान कर फुरती है
तो एक अहं का रूप कछु अहं का रहो जाते हैं॥ एह अहं एस के गले मे फासी पाती है
अरु जब अहंता ते रहत होवे तब आत्मपद को प्रापति होवे॥ हे रामजी जब एह श
स को निश्चय एह होता वे कछु अपणा अहंगता अभिमान फुरे तब संसार समुद्र के पा
र को प्रापति होवे॥ अरु जब लग अहंता के साथ मिलिआ है अरु जीवता है तब लग जन्म
अरु मरन के बंधन मो है॥ कदाचित मुक्ति नहीं होता जैसे जन्म का अंध पुतली
आ को देख नहीं सकता॥ तैसे अहंता संजुगत मुक्ति को नहीं प्रापति होता॥ ए
स को जब अभावना होवे॥ अहंता के अभाव कीते कल्याण होवे॥ सरूप को आ
अहंता ही आवरण है॥ हे रामजी जब एह चेतन हुआ अघ एह जो फुरि आता तब एस को

बंधन पड़ा॥ अरु जब तू अफुर होता तब कल्याण हूआ॥ जब चेतन उन्मुख होता
ता है॥ तब एस का नाम पुरुष होता है॥ पुर्या का शरीर पाएआ॥ अरु जब चेतन ते रहत सुध
चेतन प्रतिक आत्मा विषे स्थिति होता है॥ तब मानुख जन्म सफल होता है॥ हे रामजी जो मानुख
तिस मानुख जन्म पाएआ॥ जो कछु पावणा था सो पाएआ॥ एह संसार चित
जन्म को पाए कर न जाणेगा तब अवर जन्म विषे पावणा कठिन है॥
के फुरणे कर उत्पत्ति हुआ है॥ जब चित समरणे ते रहत होवे तब केवल केवली भाव
भासे॥ गिआनवान की द्रिष्ट विषे अवर भी कछु नहीं हुआ केवल आत्म सरूप ही भास
ता है॥ फुरणा अरु अफुरणा दोनो तिस कउ आत्मा दिखाई देते हैं॥ अंतःकरण चतुष्टय भी आत्म
सरूप है॥ अरु अज्ञानी को भिन भिन भासते हैं॥ एस ते चित आदिक जड है॥ अरु मिथ्या है
अरु आत्म सरूप कर के सभ आत्म सरूप है॥ आत्मा देश काल वस्तु के परिछेद ते रहत है॥ जा
नी को सब आत्मा ही भासता है भावे केसी चेष्टा करे॥ इह लोक पुत्र धन सब एषणा
ते रहित है॥ न लोक कछु की एछा करता है जो लोक मरु को भला कहें॥ अरु न पुत्र धन
पावणे की एछा करता है॥ केवल आत्म आनंद विषे स्थित है॥ अरु सभ को अपा
णा आप जानता है॥ हे रामजी जिस पद को उह प्रापति होता है॥ तिस पद को मेरी वा
णी कहि नहीं सकती॥ अनिर्वाच पद है॥ अरु जो पुरख अहं ब्रह्म अस्मि कहता है जो
मे ब्रह्म हो॥ अरु एह जगत है॥ तब जाणीए जो तिस को ज्ञान नहीं उत्पत्ति भए आ॥ ति
स को शास्त्र श्रवण का अधिकार है॥ जैसे कोउ कहे मेरे हाथ विषे दीपक है अरु अं
धकार भी मरु को द्रिष्ट आवता है॥ तब जाणीए जो एस के हाथ विषे दीपक नहीं॥ तै
से जब लग जगत भासता है तब लग ज्ञान उपजिआ नहीं॥ एस जीव निर्वाण हो जा
वणा है॥ जब पुनः चेतन विषे स्थिति हूआ तब जड हो जावेगा॥ संसार की भाव
ना कछु न रहेगी॥ अरु भी द्रिष्ट न रहेगी जो मे समाधि कदर्शी हो केवल निर्वाण हो
जावेगा॥ हे रामजी अब भी निर्वाण पद है एतर कछु हूआ नहीं॥ किस करके किस को
कवन उपदेश करे॥ केवल एक रस अचेतन है॥ न अरु आत्मा विषे भेद कछु नहीं॥ अ
रु जो कछु भेद है तिस को ज्ञानवान जानते हैं॥ अरु वाणी की गंम नहीं तिस विषे जो
अनंत सवत फुरते हैं॥ तिस संवेदन कर संसार फुरता है॥ अरु संवेदन ही कर लीन हो
जाता है॥ जैसे पवन कर के अग्नि प्रजलत होती है अरु पवन ही कर के लीन होती है॥ तै
से संवेदन बहरिमुख फुरती है तब संसार भासता है॥ अरु जब अंतर्मुख होती है
तब जगत लीन हो जाता है॥ तैसे संसार फुरन मात्र है॥ जैसे आकाश विषे नीलता
भ्रम कर भासती है॥ तैसे आत्मा विषे जगत प्रमादिक के भासता है॥ जगत कछु वणि
आ नहीं॥ केवल ब्रह्म सत्ता जिं की त्यों है॥ तिस विषे स्थिति होहु॥ जब स्थिति हो
वेगा तब अपार विपार भाव मिट जावेगा॥ हे रामजी शाह अरु ग्राहक सब बंध भी जा
ता रहेगा॥ केवल जो परमात्म तत्व है सुध शांत है सुध शांत है अजर है॥ स्वात पीति
वल तिस भाव निरवान तू होहि राघव॥ २४॥ इति श्री वा भावना ति द उ
दे ना कसर्गः॥ वसिष्ठ उवाच॥ ॐ हे रामजी जिस प्रकार को आत्म पद को प्रापति हो
ता है सो सुणो॥ जब तिर हंकार होता है॥ पुरख तब आत्मपद को प्रापति होता है
जो सर्वात्मा है तिस को आवरण करणे वाली अविद्या है॥ जैसे सूर्ज मंडल को आभो बदल
आपि कर आछादि लेते हैं॥ तैसे अविद्या आत्मा विषे आवरण करती है॥ तिस अविद्या क
र उन्मत्त किआ निरआए चेष्टा करते हैं॥ अरु जो अहंता ते रहत ज्ञानवान पुरख है तिन
को दुख का उन ही स्पर्श करता॥ स देह भी अदेह है भीनि दुख होता है॥ जैसे स्वपने ते उपरन्त
धको सेन्ना होती है लिखी सो देखीए मात्र शोभ द्रिष्टि आवता है॥ पर उह शांत रूप है
तैसे ज्ञानवान की चेष्टा विषे भी शोभ द्रिष्ट आवता है॥ पर सदा अक्षोभ रूप है॥ निर्वा

ण रूप है॥ वासना सहत द्रिष्ट आवता है पर सदा निर्वासी है॥ जैसे जल विषे लहरी स्व
क्रपा भ द्रिष्ट आवती है॥ पर जल ते एतर कछु नही। जैसे ज्ञानवान को अग्यान पन क
छु नही भासता जिस के अंतर ते द्रिष्ट भाव प्रगट होगए आहे॥ बाहर ते घा भवान
द्रिष्ट आवता है तब भी मोक्ष रूप है॥ जैसे अकाश विषे धूए के बदल है स्तो घाआ
पद रूप द्रिष्ट आवते है॥ पर है कछु नही जैसे जगत द्रिष्ट आवता है। पर है कछु न
ही॥ अहंकार कर के जगत भासता है॥ अहंकार ते रहित निर्विकार ग्यान रूप होजा
ता है॥ ऐसा जो निरहंकार आत्म पद है तिस को पाए कर ज्ञानवान शोभता है
ऐसा शरद काल का अकाश नही शोभता॥ अर खीर समुद्र भी ऐसा नही शोभ
ता॥ अर पूरन मासी का चंद्रमा भी ऐसा नही शोभता॥ जैसे ज्ञानवान पुरख शो
भता है। हे रामजी अहंता ही एस पुरख को मल है॥ जब अहंकार का नाश होवे तब स्वरूप
की प्रापति होवे॥ अर संसार के पदार्थहु की जो भावना थी सो अभाव हो जाती है॥ का
हे ते जो भ्रम कर के उपजी थी॥ सो भ्रम के अभाव हूए तिस का भी अभाव हो जाता
है॥ जैसे अकाश विषे धूए का बदल मय हो कर एस्थिति होता है॥ सो नाना प्रका
र के अकार हो भासता है॥ अर है नही॥ तैसे एह विश्व अंतर होता पड़ी भासती है॥ वि
चार कीए ते रहिती कछु नही॥ हे रामजी जब लग संसार की वासना है एस को तब
लग बंध है जब वासना निवर्त होजावेगी तब आत्म पद की प्रापति होवेगी॥ अर सं
कलप कलना मिट जावेगी॥ अर एही अहं के एह अनिष्ट विखे तल्ल होजावहि
गे॥ जद एव विवहार करता है तो भी प्रशांत है॥ जैसे सब होता है अरु अरण एह सब तिस को
नही फुरता। जैसे ज्ञानी निर्वाण पद को प्रापति हूआ है॥ जैसे निर्वाण विषे सत अ
नशो ह को उ न ही॥ केवल ब्रह्म स्वरूप है॥ ब्रह्म कहणा भी उहा नही रहता॥ केवल
आत्म तन मात्र है॥ अर अद्वैत है॥ हे रामजी एही को निश्राप भासता है॥ तिस विषे एक स
गि आ हूए है॥ काली जो है सो परमात्मा की क्रिआ शक्ति है॥ सा श्रय मिला कारण
भूत क्रिति है॥ सभ तिसी ने फुरे है॥ एसी जो प्रक्रित स्वरूप विरक्त नही॥ अर्थ एह जो
किसी का कारज नही॥ अर महिदादिक पच भूत महान तत्त अरु बुधि अहंकार एह स
भि प्रक्रिति क्रित है॥ अर्थ एह जो कारज भी है॥ कारण भी है॥ कारज आदि देवी
कि है॥ अर कारण खोड़स के है॥ पंच ज्ञान इंद्री पंच कर्म इंद्री पंच प्राण एक मन एन का
कारण सप्त है॥ अर षोडशि है सो विक्रित है॥ अर अर्थ एह जो कारज रूप है॥ कार
ण किसी का नही॥ अर पुरख जो परमात्मा है सो अद्वैत अवेत चिन मात्र है॥ न कि
सी का कारण है न कारज है॥ अपणे आप विषे एस्थित है॥ ताते सती कछु हूत कल
ना है॥ कारज कारण रूप सो सभ चित शक्ति विषे एस्थित है॥ जब एह एसा द रू
प होती है॥ तब शिव विषे निर्वाण हो जाती है॥ कारज कारण भ्रम सभ मिट जाता
है॥ केवल अकाश वत शेष रहिता है॥ सो सत है॥ अद्वैत है॥ अचेत चिन मात्र सत
अपणे आप भाव विषे एस्थित है॥ जिस की क्रिया शक्ति एसा स्वरूप की अ एती आम
गि आहै॥ प्रथम तो सभ का कारण रूप शक्ति है॥ अर षोडश आथि एह जो दश वा अशि
न का संकावती है॥ तैसे जगत का उकावती है॥ अर सिद्ध अर्थ एह जो सिधआ मे
भंजन को भ्रम वंत है॥ जंती अर्थ एह जु जे जिस की॥ चंड का अर्थ एह जो जिस के क्रोध क
र जगत प्रलै होता है॥ अर सभे पावता है॥ अजिता रजा अर्थ एह जो अनंत वीरज है
जिस का॥ दुर्गा अर्थ एह जो उस का स्वरूप जाणना कठिन है॥ गायत्री अर्थ एह जि
स का पाठ कर के संसार समुद्र ते रख्या होती है॥ सावित्री अर्थ एह जो जगत की पाल
ना करती है॥ कुमारी अर्थ एह जो कोमल सभाव है॥ गौरी अर्थ एह जो गौर है अ गनि
न के॥ शिवा अर्थ एह जो शिव के वामें अंग रहती है। गिरि है निवास जिस का॥ विजि

या अर्थ एह जो सभ जगति कों जीत रही है सरसती अर्थ एह जो अद्वैत आत्मा
विषे विलास रचा है जिसने॥ एह सारा अर्थ एह जो ओंकार रूप है॥ एह आत्मा
जिस का सार अर्थ मात्रा है तीनो मात्रा ओंकार अकार उकार मकार को अधिष्ठान है। हे
रामजी राजसी तामसी सातकी तीन प्रकार की क्रिआ होती है॥ सो एसी ते होती
है॥ एहि सभ संगिआ क्रिआ शक्ति की कही है॥ अब शास्त्र अरु वेद पुराण तिस का
सुण॥ हे रामजी निरंतर नित्य जो करती थी सा क्रिआ है॥ सा क्रिआ शांत की गत
सी सातकी तामसी तीन प्रकार की है॥ मसल जो है सो गिला व पुरन गए है॥ अ
गति सके स्रिष्टी है॥ जब शिव ते वितरेक होती है॥ तब अंग वहूत हो जाते है॥
स्रिष्टी रूप॥ अर जब शिव की अर आवती है तब स्रिष्टि रूप अगया इ होए जात है
अर जब शिव को आप मिलती है। तब शिव ही होती है॥ स्रिष्टी रूप अगनी विष
सो उही रूप है॥ चेतन अकाश है॥ जैसी जैसी भावना होती है॥ तैसे तैसे चेतन होक
र भासता है॥ जब जगति की भावना होती है तब नाना प्रकार के अकार द्रिष्टि आव
ते है॥ अर जो ब्रह्म की भावना होती है तब ब्रह्म भासता है॥ जब विषिविख भी अ
मित की भावना होती है अर विविध मन जगति रखाणती है तब अमित होजाती है॥
अर जो विषसे जगति नखा पेहे तब अमित हो जाती है॥ जैसे जो बध म मा सको विषसे
जगत देखीए अर्थ एह विचार कर देखीए तब ब्रह्म रूप भासता है॥ अर जो विचार
बिना देखीए तब जगत रूप भासता है॥ अर विचार तब होता है जब अहंकार नि
वर्त होता है॥ सो अहंकार अकाश विषे उपजा है॥ अस्म का शब्द ने ताविखे उपज
आ है॥ अर सत्त ना आत्मा कर प्रमादि करु पजा है॥ बहुर अहंकार ते जगत हूआ॥
अर अहंकार मिथ्या है॥ हे रामजी प्राणि आदिक॥ अर चित प्रजंत विचार देखीऐ
तो द्रिष्टि कछु नही आवती॥ अर एन विषे जो अहं प्रतीत है सो भ्रांत मात्र है॥ ज
बतें विचार देखेगा तब मरीचका के जल वत भासहिगा॥ हे रामजी एस प्रपंच के त्या
गणा विखे जतन कछु नही। जैसे स्वप्न के पर्वत का त्यागणा जतन कछु नही तैसे
मिथ्या संसार के त्यागणा विखे जतन कछु नही॥ अर एस का निर्णय किआ करीऐ
जो है नही॥ तो निर्णय किआ करीऐ जैसे बंधिआ के पुत्र की वाणी विचारीऐ जो स
न कहिता है॥ अथवा असत कहिता है॥ सो मिथ्या कल्पना है॥ बंधिआ का पुत्र है
ही नही तो उस का विचार किआ करीऐ॥ तैसे प्रपंच है नही एस का निर्णय किआ
करी है॥ ताते तुम असे करो जैसे मैं कहिता हों॥ तब आत्म पद की प्रापति होवे॥
हे रामजी ऐसी भावना कर जो न मैं हो न जगत है॥ जब अहंकार न रहि आन बक
ल ना कहा होवे॥ एस का होणा ही अनर्थ है॥ जब ऐसे विचार उपजते होता है॥
तब भोगों की वासना छेह हो जाती है॥ अर संतों का संग प्राप्ति होती है॥ अनथा भोगों
की वासना नाश न होहोती॥ हे रामजी जब लग एस को अहंता पड़ी उठती है अ
र्थ एह दूर जो है प्रक्रिति तिस साथि मिला पहे॥ तब लग है तो भ्रम मिटता न
ही॥ जब अहंकार का उथान मिट जावे तब सर्व चिन मात्र आत्म सत्ता ही रहे है॥ १५०॥
इति श्री ता नि स गो ना म स र्ग:॥ वसिष्ठ उवाच॥ ॐ हे रामजी जब अहंता
का उथान होता है तब स्वरूप का आवरण होता है॥ अर जब अहंता मिट जावे
तब स्वरूप की प्रापति होती है॥ सो एस संसार का बीज अहंता ही है॥ सो अहंका
र मिथ्या ही है॥ तिस का कारज सत कैसे होवे॥ जो प्रपंच मिथ्या हूआ तो पदार्थ
कहां ते सत होवहि॥ हे रामजी ऐसा जो का आश्रम है जगत किआ है सो सक
ल पुरख भी असत है॥ अर एस का मैं से भी मिथ्या है॥ अर जिस प्रत अहं करता है

व॰ म॰ ३३

33

सोभी असत है॥ जैसे स्वप्न विषे देहत कल्पना होती है सो असत है॥ तैसे एह जगत
है तभी असत है॥ हे रामजी एह सभ जगत एसके अंतर एस्थित है॥ एव प्रमादि
कर बाहर भासता है पड़ा॥ एह अपना ही स्वरूप दृष्टान्त है॥ अंतर की बाहर अ
प ही स्थित भासती है॥ ताते एह जगत सभ चिदरूप है एतर कछु नहीं॥ सो
चेतन सत्ता आकाश ते भी अति सूक्ष्म है॥ हे रामजी चित् एह जगत चितन करके
ता हूआ है॥ ताते कछु हूआ नहीं न किसी का नाश होता है न उत्पत्ति होता
है॥ न किसी को जन्म है न मरण है॥ न शून है न अशून है॥ सर्व ब्रह्म ही है॥ हे
रामजी जगत के नाश हूए कछु नाश नहीं होता॥ काहे ते जो कछु हूआ नहीं
जैसे स्वप्न के पहाड़ जो नष्ट हूए सो किआ नष्ट हूआ॥ संकल्प नगर जैसे नाश
हूए कछु नाश नहीं होता॥ तैसे एह जगत है सो कछु हूआ नहीं॥ एही विचार
कर देखिआ है॥ जो वस्तु अनविचार ते उपजी होवे सो विचार करके मिटे है॥
जैसे जो पदार्थ तम ते उपजिआ होवे सो प्रकाश हूए के मिटे है॥ तैसे एह जगत
है अनविचार कर भासता है॥ विचार करके नाश हो जाता है॥ हे रामजी एह ज
गत संकल्प ही मात्र है॥ जैसे संकल्प नगर होता है॥ तैसे एह संसार है॥ एस वि
खे कोई पदार्थ सत नहीं॥ रूप इंद्रीआं अरु मन के अभाव की चितवना करनी
एह संसार असार है॥ जैसे समुद्र विषे चित्र रूप पावक है सो है नहीं जल ही जल है॥ ति
सो विखे प्रीति भावना करनी अज्ञान है॥ हे रामजी एक अंतर है जो बाहर जगत
पूर्णत रूप दृष्ट आवत है अरु अंतर दान के पास होता है॥ अरु एक अंतर है जो अ
तरते पूर्ण तत्त्व है अरु बाहर जनानाना प्रकार की चेष्टा करते है॥ जिनके दोनो मि
टि जाते है सो मोक्ष के भागी होते है॥ तिनके अंतर बाहर जे एकता होती है॥ जे
से समुद्र विषे बुद्बुदे अरु तरंग अति संके अंतर बाहर जल ही होता है॥ हे राम
जी जिस पुरुष जो कांति जानिआ है आत्मा को तिसको नभ होता है॥ केवल स्व
छ रूप पूर्णात्म आत्मा विखे एस्थिति है॥ भेत होता है जो इसका भासता है॥ सो सर्व
दृश्य का भ्रम को अभाव हो जाता है॥ अरु शांत रूप होता है॥ हे रामजी सभकाट
गो को जगत दुख नहीं देता॥ अरु असमिकदर्शी को दुख होता है॥ जैसे जेवडी प
डी होती है॥ अरु जानता है तिसको सर्प भासता है॥ अरु भै को प्राप्ति होता है॥
तैसे जिसको आत्मा का साक्षात्कार है तिसको जगत कल्पना कोई नहीं भास
ती॥ चिदानंद ब्रह्म अधिष्ठान रूप भासता है॥ अरु जिसको अधिष्ठान का अज्ञा
न है तिसको जगत हैत रूप होकर भासता है॥ अरु रागद्वेख विखे पड़ा जलता
है॥ हे रामजी अवर जगत को उनहीं एसके अनभवी विखे जगत कल्पना होती
है॥ अज्ञान करके हैत रूप हो भासता है॥ अरु जब आपणे स्वभाव सत्ता विखे जागता
है॥ तब सभ अपणा आप भासता है॥ जैसे स्वप्न विखे अपणा आप ही हैत रूप हो ए
भासता है॥ अरु रागद्वेख उपजता है॥ जब जागता है॥ तब आत्म रूप हो एभासता
है॥ तैसे एह जगत है॥ न एस जगत का कोऊ निमित्त कारण है॥ न कोऊ उपादान का
रन कारन है॥ जो पदार्थ कारन बिना भासे सो असत जाणीए॥ अरु जो असत उपजा
है भ्रम कर मिथ्या हूआ है॥ जैसे स्वप्न सृष्टि अकारण है॥ तैसे एह जगत अकार
ण है॥ भ्रम करके सत भासता है॥ हे रामजी शास्त्र को जगत साथि विचार करके दे
खजो है तो भ्रम मिटि जावे॥ रंचक मात्र भी कछु वर्णन आन नहीं॥ जैसे आकाश विखे
नीलता कछु वर्ण नहीं॥ अरु मारूथल को नदी भासती है॥ तैसे एह जगत जाण
आत्मा सध है अरु अहंत है॥ तिस विखे अहंकृत का वासना ही दुख है॥ अरु दुख

का कारण है॥ अरु जो सनरूप का प्रमाद होवे नहीं तो अहंकृत भी दुख का कारन न
हो॥ अरु जो सनपल्ला तो अहंकृत आदि दृश्य विख की वल्ली बड़ती जाती है॥ अरु ना
ना प्रकार के अकारों को धारती है॥ अरु वासना दृढ़ होती है॥ जब लग वासना होती
है तब लग बंध है॥ जब वासना निवर्त होवे तब ही कल्याण होते है॥ हे रामजी जैसे
दृश्य की भावना करती है सो दृश्य भी कछु भिन्न नहीं॥ जैसे समुद्र विखे तरंग
वक्र होते है सो एतर कछु नहीं॥ तैसे अहंकार ते आदि लेकर जो दृश्य है नहीं॥ सोहे
जो है नहीं तिसकी एका कोई एही नश रखता है॥ जैसे मृगतृष्णा के जल को जिस
ने जाणिआ तिसकी आसथा निवर्त हो जाती है॥ तैसे ज्ञानवान की वासना छ
जाती है॥ जैसे महा अग्नि होता है तो अकाश को ग्रहण करता है॥ जो अकाश वन त
हूत सूक्ष्म होता है॥ तैसे ज्ञानवान की वासना सूक्ष्म होती है॥ अरु वासना उसको
बंधन का कारण नहीं होती॥ काहे ते जो संसार की सत्ता तिसके हिरदे वि
खे नहीं रहती॥ अरु सत्ता एसका बन ही रहती जो आत्मा का साक्षात्कार हूआ
है॥ अरु जब आत्मा का प्रमाद है तब अहंता उदे होती है॥ तब दृश्य भी होती है॥
जैसे नेत्रों के खोलने कर दृश्य को ग्रहण करता है॥ जब नेत्र मूंद लीए तब दृश्य रू
प का अभाव हो जाता है॥ तैसे जब अहंता उदे हूए तब दृश्य भी होती है॥ जब अहं
ता नष्ट भए तब संसार का अभाव हो जाता है॥ हे रामजी अज्ञान किसका नाम है सो
सुणो॥ अहंता का उदे होणा एसी का नाम अज्ञान है॥ अहंता करके बंध है॥ अहंता
ते रहित मोक्ष है॥ आगे जाणका होवे सो करीऐ॥ हे रामजी देह एंद्री आदि मृगतृ
स्ना के जल वत है॥ एन विखे अहंता करनी मूर्खता है॥ अरु ज्ञानवान अहंता को
त्यागकर आत्मपद विखे एस्थित होता है॥ अरु संसार के एछा अनिछ विखे हर्ष
सोक वत नहीं करता॥ जैसे अकाश विखे बदल हूए तो भी जिआ तिहै॥ तैसे ज्ञानी जि
का तिहै॥ एन हूं विखे अहंकार नहीं ताते स्वच्छ रूप है॥ हे रामजी रूप इंद्रीआं अरु ए
द्रीआं अरु मन उसके जानते रहित है॥ जैसे बांधिआ के पुत्र की निंदा कोई नहीं
होती है॥ तैसे ज्ञानी के रूप अलोक मनसकार नष्ट हो गए है॥ काहे ते जो सर्व ब्र
हम तिसको भासता है॥ दृश्य की भावना नष्ट हो गए है॥ अरु संसार का बीज अहं
ता अज्ञानी विखे दृढ़ है॥ हे रामजी अहंता करके एसकी बुधि मोटी हो गए है॥ अरु थो
एह जो अस्थूल हो गए है॥ ताते दुख पावता है॥ एस दुख ना पाको उपाय कहिता
हो सो तूं सुणो॥ जो संतजनों के वचन हूं विखे भावना करी अरु विचार करके हिरदे वि
खे धारणा॥ एसका अहंता रूपी दुख नष्ट हो जाता है॥ अरु संतों के वचन हूं को निष
थकनीए एसको मुक्ति फल का नाश करणीहारा है॥ अरु अहंता रूपी वेताल के उपजाव
णे हारा है॥ ताते संतों की शरण की प्राप्ति होवे॥ अरु अहंता को दूर करके एसके हीर
करन विखे खेद कछु नहीं॥ एह अपणे आधीन है॥ अपणा अभाव चितवणा एस वि
खे किआ खेद है॥ हे रामजी संतों की संगति उआ एसको वडा तप सुगम होता है॥
जो ज्ञानवान होवे है तिनकी प्रथक प्रथक सेवा करणी॥ अरु बुधि को वणा॥ अरु तथा:
जब तीव्र ग होवे गी तब विष रूपी वल्ली जो अहंता है तिसका नाश करेगी॥ एह वि
चार करी अरु जो मैं कवन हो एह जगत किआ है॥ जब एसे विचार करेगा संतो अरु अप
स्तों के वचन हूं कर निर्णय कीए तैसा है सो सत होता है॥ अरु असत है सो असत हो जा
ता है॥ सत जाणकर आत्मा की भावना करणी॥ अरु असत जगत मृगतृष्णा के ज
लवत जाण कर भावना त्यागणी॥ जिनको सुख जाण कर भावना पावणा की क
तो था सो दुखदाए भासते है॥ जैसे मारूथल विखे जल जाण कर मृग दोउड़ता है
तो दुख पावता है॥ अधिष्ठान के अज्ञान करके॥ तैसे अधिष्ठान सभका आत्म तत्त है

सामुधरूपपरमशांतपरमानंदरूपहे॥ जिसकोपाएकरदुःखदूरहोवे॥ हे
रामजीऐसकोबंधनकाकारनभोगोंकीतृष्णाहे॥ सोभोगोंकरश्मानतनहींहोती
जबसंतोंकासंगतिहोतीहेतबएकोकल्याणहोताहे॥ अनात्माविखेअहं
भावछूटजाताहे॥ अवरप्रकारशांतनहींहोती॥ हेरामजीबालकहूकीनिआप
हमारेवचननहींहमाराकहणाजथार्थहे॥ काहेतेजोमनरूपकाभानहेमकोस
मष्टहे॥ जबएसकीअहंतामिटजावेतबसुखीहोवेताते अहंताकानाशकरो॥
अहंतानाशहूएतबजाणोंगेजोचेतनकीभावनामिटजावेगी॥ हेरामजीजबज्ञान
रूपीसूरजउदेहोताहेतबअहंतारूपीअंधकारनष्टहोजाताहे॥ अरज्ञानतबहोता
हेजबसंतोंकासंगअरुशास्त्रोंकाविचारप्रापतिहोवे॥ विविअहूतेवरागहोवेअ
रस्वरूपकाअभ्यासकरेएसकरस्वरूपकीप्रापतिहोतीहे॥ ५२॥ इतिश्रीनिर्वा
णे तन प्रकरणे नाम सर्गः॥ वसिष्ठउवाच॥ ॐहेरामजीजिनपुरषोंहू
नेअपणाअज्ञाननाशनहींकीआज्ञानकर॥ तिनहूनेकछुकर्नेजोगनहींकी
आ॥ अज्ञानककैअरुएसकोअहंभावनाहोतीहेतबआगेजगतभासताहे॥ अरु
परलोककीभावनाकर्तीहे॥ एसीभावनाकरजन्ममरणकोपावताहे॥ हेरामजी
जबलगसंसारकाप्रवाहअरथएसकोंदृढहेतबलगप्रवाहअरथकेअभावकीचि
तवनाकरे॥ जहांएसकोंजगतभासताहेतहांब्रह्मकीचितवनाकरे॥ जबब्रह्मकी
भावनाकरेगातबसंसारकाप्रवाहअरुअर्थतेरहतहोवेगा अरुआत्मपदभासेगा॥
हेरामजीएससंसारविखेदोपदार्थहे॥ एकएहलोकअरदूसरापरलोक॥ अज्ञा
नीएसलोककाउदमकर्तीहे॥ अलोककानहींकर्तीताते दुःखपावताहे॥ अ
रतृष्णाअग्निमिटतीनहीं॥ अरजोविचारवानपुरुषहेसोपरलोककाउदम
कर्तेहे॥ सोएहांभीशांतिपावतेहें॥ अरुपरलोकविखेभीसुखपावतेहें॥ अ
रसोनाडलोकहूकेकष्टतिनकोमिटजातेहे॥ अरजोएसहीलोककाउदम
कर्तेहें॥ तिनकोदोनोंदुखदाएकहोतेहें॥ एहांतोत्रिश्नानहींमिटतीअरु
आगेजाएकरनर्कभोगतेहें॥ अरजिनहूपुरुषहूनेआत्मपरलोककाजतन
कीआहेतिनकोंअहींभीसिद्धहोताहे॥ अरसुखीहोतेहें॥ जअरजिनोंनेंहींजतन
कीआसोदुखीहें॥ तातेअहंकारतेरहितहोवणाएहआत्मपदकीप्रापतिहे
जबलगएसकोपरछिनअहंकारउपजताहे॥ तबलगदुखीहोताहे॥ अरना
मएसकाजीवहे॥ जोकछुफुरताहेतिसकरविस्वकीउत्पत्तिहोतीहे॥ जेसे
नेत्रोंकरबालकोणकररूपभासताहे॥ अरनेत्रोंकेमूंदनेकररूपकाअभावहो
जाताहे॥ तेसेजबअहंताफुरतीहेतबदृश्यभासतीहे॥ अरजबअहंताकाअभा
वहोजावेगातबदृश्यकाअभावहोजाताहे॥ सोअहंताअज्ञानकरसिद्ध
होतीहे॥ ज्ञानकेउपजेतेनिर्वाणअरुसाथतहोजातीहे॥ हेरामजीजबएहपु
रुषप्रजतनकरअपणाअरुसाथहीसतसंगकरे॥ एसकरएहसंसारस
मुद्रकोंतरिजावेगा॥ एतरनहीं॥ हेरामजीजगतकेकेविखभीअमृतहो
जातीहे॥ तेसेपुरषार्थकरसिद्धताप्रापतिहोतीहे॥ हेरामजीदोव्याधिरागहे
एसजीवकों॥ एसलोककीपरलोककी॥ तिसकरजीवपडेदुःखपावतेहें॥ जि
नोंएसदोसनाकेसंगमिलिकरएसकाउखधकीआहे॥ तेपुरषमुक्तिरू
पहें॥ अरजिनोंनेंहींऔखधकीआतेपुरुषपंडितभीहेंतोभीदुखपावतेहें॥ कि
आउखदहेसमदशांकनोअरुसतसंगकरना॥ एनहूसाधनहूकरजिनहूने
आत्मपदपायाहेतेकल्याणमूरतहे॥ हेरामजीत्रिकालसाकाउसरभीएहीहे
जिसकीआतिसकीआ॥ अरजिसनकीआसोभोगोंविखेलपटरहेगा॥ आ

हमरखलेहापरेगाजहांएसमावधानहोवहू॥ एहीउत्तमथहे॥ हेरामजीजिसपु
रुषमनतनहींजीतिआसोमूढहे॥ अरभोगरूपचकडुविखमगनहे॥ अरअपदा
कोपावहे॥ जेसेमसमुद्रविखेनदीआप्रवेशकर्तीहे॥ तेसेअपदाउसकोप्रवीशआ
कर्तीहे॥ अरजिसकीत्रिश्नाभोगोंतेनिवर्तभएहे॥ अरवैरागउपजिआहे॥ सोम
क्तिजोगकोंप्रापतिहोताहे॥ जेसेजीवणकोआदिबालकअवस्थाहे॥ तेसेनिर्वा
णपदकीआदिवैरागहे॥ हेरामजीएहसंसारमिथ्याहैभ्रमकरभासताहे॥ जेसेदू
सराचंद्रमाभ्रमकरभासताहे॥ अरुसकल्पनगरभ्रमकरभासताहे॥ अरमृ
गत्रिस्नाकाजलभ्रमकरभासताहे॥ तेसेएहजगतभ्रमकरभासताहे॥ सोएहअ
विद्याकावीजअहंताहे॥ जबअहंताउदेहूएतबरूपअरुअवलोकभासताहे॥ ताते
रकाबीजअहंताहे॥ जबअहंताउदेहूएतबरूपअरुअवलोकरेगातबप्रापजोरहेगा सोतेरा
हींचितवनाकरजोमेंनहीं॥ जबअएसभावनाकरेगातबप्राप्तहोवेगा॥ अहंकारत्यान
शांतरूपहे॥ जिसविखेअकाशभीशूनहे॥ केवलआत्मतमात्रहे॥ केवलज्ञानमा
तेरहितहे॥ अरजडअजरहे॥ अरनडताकाअभावहे॥ ताते अजडहे॥ अरजेसपवनचवि
त्रहे॥ अरविशातिसविखेअसहेजैसेजलविखेतरंगहोतेहें॥ तेसेआत्माविखेविस्वहेसोआत्मा
विखेस्पंदहोताहे॥ अकाशविखेजैसेशून्यताहे॥ तेसेआत्माविखेनाशहोजाताहे॥ सो
तेएतरेकछुनहीं॥ जोकछुआत्मातेएतरहोताहेतोप्रलैविखेनाशहोजाताहे॥ सो
प्रलैकालविखेभीरहिताहे॥ जेसेसूर्जकीकिरणोंविखेजलाभासुसर्वदारहिताहे॥
ताहे॥ तेसेआत्माविखेविश्वकाचमत्कारहिताहेजेसस्वप्नकीसृष्टिअनुभवरू
पहोतीहे॥ तेसेएहजाग्रतविस्वभीअनुभवरूपहे॥ सोआत्माअंतरबाहरतेरहत
है॥ अरुस्वहहेअहंतते॥ अजन्माहेअरअमरहे॥ चेतनरहितचेतनहे॥ सर्वशब्दअर
थोंकाअधिष्ठानरूपहीहे॥ फुर्नेककेदूसराभासताहे॥ अरफुर्नाअफुर्नादोहीहे॥
जेसेपवनपंदअरअस्पंददोनोपवनकेरूपहे॥ जबएस्पंदहोताहेतबभासताहे
अरअस्पंदहोताहेतबनहींभासता॥ तेसेजबचितप्रकृतिफुर्तीहे॥ तबविस्वरूपहो
एकरभासतीहेजबअफुरहोतीहेतबकेवलमात्रपदरहिताहे॥ सोनिराभासहे॥
अरविनाफुरअरनिर्विकल्पहे॥ अरतसभकाअपणाआपहे॥ अरमतअसतजडहे
वतेनआदिअरथसर्वउसीअधिष्टानसत्ताविखेफुर्तेहें॥ एतरकछुनहीं॥ ताते जो
सीअपणामनरूपविखेएस्थितिहोहु॥ जोपरमार्थसत्ताआत्मततअपणाआपहेसोभा
वविखेएस्थितिहे॥ अहंत्वंतेरहतकेवलअकाशरूपएसभकाअधिष्ठानहे॥ तिसी
विखेएस्थितिहोहु॥ ५४॥ इति श्रीप्रा त स्थि जो प प्रो नाम सर्गः॥ ॐविविस्र
वसिष्ठउवाच॥ ॐहेरामजीजिनकोंसुखदुःखचलावतेहेंएडीअहंकेएहविधिअधीनवर्ते
हूकरसुखीहोतेहें॥ अरअनिभृविविद्याकरदुखीहोतेहें॥ रागद्वेखकेअधीनवर्तेहें॥ तेवार
तेहें॥ तिनकोंअसेजाणोजोनष्टहूएहें॥ जिनकाप्रभवप्रजननष्टहूआहे॥ तिनकोंअविनाशी
वारजन्मकोपावहिगे॥ अरजिनकोंसुखदुखनहींहलावतेतिनकोंप्राप्तब्रकाउपदेशनहीं
जाणा॥ ओहूजन्ममरनकेफासतेमुक्तिहूएहे॥ तिनकोंप्राप्तब्रकाउपदेशनहीं॥ अरएछानवहोतीज
हेरामजीरागद्वेखतबफुरताहेजबमनविखेइछाहोतीहे॥ तिसकोंबुधिनहींप
वसंसारकीसततादृढहोतीहे॥ जिसकोंअसततजाणताहे॥ तिसविखेबुधिदो
हकर्ती॥ अरएछाभीनहींहोती॥ अरजिसकोंसतजाणताहेतिसकरदुखपावताहे॥
डतीहे॥ हेरामजीअज्ञानीकोंसंसारसतभासताहे॥ शांतपदकेमाहे॥ जिस
जबशांतपदकाजतनकररहिततबदुखोंतेमुक्तिहोवहि॥ केवलचिनमात्रअकाशरूप
विखअहंअरतंअरजगतब्रह्मएहप्राहकोउनहीं॥ एहसभशास्त्रविचारकेन
हे॥ तिसविखअहंतेजगतब्रह्मप्रवाहकेमेहोवहि॥ वासनातेशास्त्रकोंउन
मितकहेहें॥ वासनानेशास्त्रविचारकेनमितकहेहें॥

34

ही॥ अहंतेहे चेतनतेरहितचिनमात्रहे॥ जबसर्वशब्दोंकाबाधकीआनत्वशेषसत्ता
पदरहिताहे॥ अभावतानहीएसीतेआत्मतमात्रकहाहे॥ अरजगतसंवेदनक
ओसीविखभासताहे॥ तिसजगतविखजहांगिअपतिजातीहे तिसकासानप
सकैाहोताहे॥ हेरामजीएकअधिष्टानज्ञानहे॥ अरएकगिअपतज्ञानहे॥ अधि
ष्टानज्ञानसर्वगहे॥ सोईस्वरकौहे॥ अरगिअपतज्ञानजीवोंकोहे॥ एकलिंगश
रीरकाजिसकोअभिमानहेसोजीवहे॥ अरसर्वलिंगशरीरोंकाअभिमानीईस
रहे॥ जहांएसजीवकीगिअपतिपहुचतीहे तिविकोंजाणताहे॥ जेसेएकहीमि
जीविखदोपुरखसोएहोतेहे॥ एककोसमाआएआतिसकेसपनेविखमेघगजे
तेहे॥ अरजोदूसरासोपआहेतिसकोमेघकाशब्दसुनीतानही॥ काहतेजागिआ
पतउसकोमानहीहे॥ परमेघतोउसकेसुपनेमोहे॥ जेसेसिद्धविचरतेहे॥ अर
एसकोदृष्टनहीआवतेहे॥ काहतेजोएसकीगिआपतउहानहीजाती॥ अरस
भोमिआपडीवस्तीहे॥ तिनकाज्ञानईस्वरकोहे॥ सोसिष्टीभीसंकल्पमात्रहे
कछुवणीआनही॥ भ्रमकरभासतीहे॥ जेसेमेघविखहस्तीघोडामानुखआदिक
अकारभासतेहे॥ सोमिथ्याभ्रांतिमात्रहे॥ तेसेआत्माकेअज्ञानकरणहे सिष्टीभा
सतीहे॥ नानाप्रकारककै॥ हेरामजीएहअवजेहेजोआत्माविखे॥ अहंकाउथा
नहोताहे॥ नामेहेअसेजानताहों॥ अरवनेआश्रमकोअपणामानताहे॥ अरवि
चारकरदेखीअनोअहंकछुवस्तनहीसिद्धहोती॥ अरअहंअहंपडीफुरतीहेएह
अजेहे॥ जोभूतनाकहोतगोढिआहे॥ सधआत्माब्रह्मविखेएहकेसेहूआहे
अन्नहोनेअहंकारनेतसकोमोहतकीआहे॥ एसकेत्यागणाविखेतोजतनक
छुनही॥ एसकोंत्यागकरो॥ हेरामजीएहमिथ्यासंकल्पउठिआहे॥ जबअहंका
रकाउथानहोताहेतबजगतहोताहे॥ अरअहंतामिटिजावेतबजगतकाभी
अभावहोजाताहे॥ काहतेजोभ्रममात्रहेहबुणिआकछुनही॥ जेसेसंकल्पकान
गरभ्रममात्रहे॥ अरसप्नसिष्टभ्रातमात्रहे॥ जेसेएहोविस्वभीभ्रांतमात्रहे॥ कछु
वणीनही॥ अरआत्मसरूपहे॥ एतबवणिआकछुनही॥ जेसेपवनहीकेदोना
रूपहे॥ जोएस्पंदहोताहेतबभीपवनहे॥ अरठहरिजाताहेतबभीपवनहे॥ तेसे
विस्वभीआत्मरूपहे॥ जेसेपवनचलताहेतबभासताहे॥ अरठहरिजाताहेतब
भीपवनहेपरभासतानही॥ तेसेचित्तचेतनउकाचमत्कारहे॥ जबफुरताहेतबवि
स्वभासतीहे॥ तोभीचिदघनहे॥ जबठहरजातीहेतबविस्वनहीभासती॥ परआत्मा
सदाएकरसहे॥ जेसेजलविखतरंगहोतेहे॥ स्वर्णविखेभूषणहोतेहे॥ सोएतरक
छुहूआनही॥ तेसेआत्माविखेविस्वएतरककछुनही॥ आत्मसरूपहे॥ गिआपतभी
ब्रह्महे॥ अरगिआपतविखफुरीविस्वभीब्रह्महे॥ निषधणाजोगकछुनही॥
हेवकिसकाकरीऐअरग्राककिसकाकरीऐ॥ सर्वउहीहे॥ हेरामजीसंकल्प
कोएस्थितिककेदेखसमतेराहीसरूपहे॥ जेसेपुरखमनकतीहेउसकोविस्वसभ
कीभासतीहे॥ जबजागताहेतबदेखताहेसभमेराहीसरूपहे॥ तेसेजाग्रतवि
स्वभीतेरासरूपहे॥ जेसेसमुद्रविखतरंगउठतेहे सोजलहीसरूपहे॥ तेसेविस्वआ
त्मसरूपहे॥ जेसेचतरेलाकाष्टविखपुतलीआकल्पताहे जोएतीपुतलीआनि
कसहिगीआ॥ अरजेसेमिगकाविखकुमारघटादिककल्पताहे॥ जोएतेपात्रवणा
हिंगे॥ काष्टभिनकाकेजोककुहूएतोनही॥ जिकानिकाशहे॥ अरजिकीतिभिनकाहे
परउनेकेमनविखअकारोंकीकल्पनाहे॥ तेसेआत्माविखसंसाररूपीपुतलीआ
मनकल्पताहे॥ जबमनकासंकल्पनिवर्तहोजावेतबजिकातिआत्मपदभासे॥
जेसेतरंगजलरूपहे॥ जिसकोंजलकाज्ञानहेसोतरंगभीजलरूपहीजाणताहे॥ अर

जिसकोंजलकाज्ञाननही सोभिंनभिंनतरंगहूकेअकारदेखताहे॥ तेसेजबनि
हसंकल्पहोकरसरूपकोदेखेगातबफुर्नेविखभीआत्मसत्ताभासेगी॥ अहंआ
दिकजगतसभब्रह्मसरूपहीहे॥ तबभ्रमकेसेहोवेअरकिसकोंहोवेसभवि
स्वआत्मसरूपहीहे॥ सोआत्मानिरालंबहे॥ लंबरूपजोहेचेतअहंकारतिसतेबहि
तेहे॥ केवलअकाशरूपहे॥ तबतेतिससरूपविखएस्थितिहोवेगातबनानाप्रका
रकीभावनामिटजावेगी॥ नानाप्रकारकीभावनाजगतविखफुरीहे॥ अरज
गतकाबीजअहंताहे॥ जबअहंताकानाशहोजावेगातबजगतकाभीअभावहो
जावेगा॥ हेरामजीअहंताकाफुरनाहीबंधनहे॥ अरनिरअहंकारहोवणामोखहे
एकचितबोधहेअरएकब्रह्मबोधहे॥ चितबोधजगतहे॥ अरब्रह्मबोधमोखहे॥ चि
तबोधअहंकारकानामहे॥ जबलगचितबोधफुरताहेतबलगसंसारहे॥ अर
जबचितकाअभावहोजावेतबमुक्तिहोवे॥ एसचितकेअभावकानामब्रह्मबोधहे॥
हेरामजीजेसेपवनफुरताहेतेसेब्रह्मविखचितबोधहे॥ अरजेसेपवनठहरिजाताहे
तेसेचितकाठहिराणाब्रह्मबोधहे॥ जेसेफुरणअफुरणदोनोपवनहे॥ तेसेचितबोधब्रह्मबो
धब्रह्महीहे एतरककछुनही॥ हमकोंतोसभब्रह्महीभासताहे॥ चेतनमात्रहे॥ आनं
दरूपहेअरअपणेसभावविखएस्थितिहे॥ जिसकोंअधिष्टानकाज्ञानहोताहे॥ तिस
कोविवर्तभीउहीरूपभासताहे॥ अरजिसकोंअधिष्टानकाज्ञाननहींतिसकोंभिंन
भिंनजगतभासताहे॥ जेसेएकबीजविखअनेकटासफूलफलपत्रभासतेहे॥ अ
रजिसकोबीजकाज्ञाननहीतिसकोंभिंनभिंनभासतेहे॥ हेरामजीहमकोंअ
धिष्टानआत्मततकाज्ञानहे॥ तातेसभविस्वआत्मरूपभासतीहे॥ अरअज्ञानको
नानाप्रकारकीविधिभासतीहे॥ जन्मअरमरनभासताहे॥ हेरामजीसभपदा
आत्मततविखपदार्थभासतेहे॥ सर्वकाअधिष्टानआत्माहे॥ निर्विकारहेनिराकारहे
अरस्मधहे॥ अरसभकाअपणाआपहे॥ तातेसभविस्वअकाशरूपहे॥ एतरककछुहूए
नहो॥ जेसेतरंगजलरूपहे॥ तेसेविस्वआत्मसरूपहे॥ अरचितजोफुरताहेतिसकेअनु
भवकोंवाल्मीचेतनसत्ताहे॥ सोब्रह्महे॥ अरतेरासरूपभीउहीहे॥ तातेअहंत्वआदि
कजगतसभब्रह्मसरूपहे॥ एसकोत्यागकरअपणेसरूपविखएस्थितिहोवहु॥
अरपाछेतुमकोंकहाहेहेतअहंतेसभउपदेशकमात्रहे॥ एकचितकोत्रितकोए
स्थितिकरकेदेखसभब्रह्मसरूपहे॥ एतरककछुनही॥ निषधाकिसकाकरीऐ॥ हेरा
मजीचितकीदोव्रितज्ञानवानकहितेहे॥ एकमोखरूपहे॥ जोचितसरूपकोअरफु
रतीहेसोमोखरूपहे॥ जोदृस्यकीअरफुरतीसोबंधरूपहे॥ जोतुमकोंसुभभास
तीहेसोएकहे॥ अरजोदृष्टाहेसोदृस्यनहीहोता॥ अरजोदृस्यहेसोदृष्टानही
होते॥ आत्मातोअहंतेहे॥ तातेदृष्टाविखदृस्यपदार्थकोऊनही॥ तुमकिंदृस्यकी
अरफुरतेहो॥ अनहोतीदृस्यकोकिंअंगीकारकरतेहो॥ अरदृष्टाभीतेरानामदृ
शाकरहोताहे॥ जबदृस्यकाअभावजानिआतबअवाचपदहे॥ तिसकोंवाणीकथ
कछुकहानहीजाता॥ हेरामजीजेसेअगअरअगोंवास्लविखभेदकछुनही॥ अका
शअरशून्यताविखभेदकछुनही॥ जलअरअंभदोनोनामएकहीवस्तुकेकहीतेहे॥
वर्फअरशीतलताविखभेदकछुनही॥ कोईजगतकहेअथवाब्रह्मकहे॥ भेदक
छुनहीजगहीब्रह्महेअरब्रह्महीजगतहे॥ तातेआत्मपदविखएस्थितिहोवहु॥ अं
मनकेआपकोंकछुअवस्थामानतेहो॥ तातेब्रह्महीकीभावनाकरो॥ अरआपकों
मनुखकदाचितनहीजानणा॥ जोआपकोमानुखजाणहिगातो॥ एहनिहचाअ

योगात को प्रापति करनेहारा है॥ तातें अर्धगत कों प्रापति होवेगा॥ तातें अपरोक्ष सूरूप
विखे स्थिति होहु॥ इति श्री परमार्थे ग प प्रो नाम सर्गः॥ १५८॥ वसि
ष्ट उवाच॥ हे रामजी देशतें देशांतर कों चित्त जब जाता है॥ तिसके जो मध संवि
तत है तिसकों जो अनभव कर्ता है॥ सो तेरा सरूप है॥ तिस विखे स्थिति होवहु
अरु जैसे चेष्टा आवते सी करो॥ देखो सुणो स्पर्श भी करो गंध भी लेवो बोलो चा
लो हु सो सभ क्रिआ करो॥ परंतु इन के जानणे वाली जो अनभव है तिस विखे प
स्थिति होवहु॥ एह जो अनभव विखे सरूप स्थिति है॥ चेष्टा सभ करो पर अंतर ते पथर की
शिलावत होवहु॥ फुनि ते रहत होवहु॥ हे रामजी तेरा रूप निराभास है॥ भास
जो दृश्य है तिस ते रहत है॥ अरु निर्मल है॥ शांत रूप है॥ तिस विखे स्थिति होव
हु जैसे समर्पण वत स्थिति है॥ एह दृश्य अज्ञानी के कों भासती है॥ तमरूप है॥ अरु
आत्मा सदा प्रकाश रूप है॥ तिस प्रकाश विखे अज्ञानी कों तम भासता है॥ जैसे सूर्ज
सदा प्रकाश रूप है॥ अरु उल्लू आदिक कों नहीं भासता॥ तम ही भासता है॥ अज्ञान
करके॥ तैसे अज्ञानी कों अविद्या रूप जगत भासता है॥ सो अविचारत सिद्ध है॥ अवि
द्या करके ऐस की विपर्ज दृष्टि हुई है॥ ऐसा कामरूप निर्विकार है॥ जो जायते अस्तते
वर्धते प्रणामते प्रक्षीअंते नाश्रिते॥ एनां खट विकारों ते रहत है॥ ताते निर्विकार है॥
तिस कों विकारी जानता है॥ आत्मा निर्विकार है अरु निराकार है॥ तिस कों साका
र जानता है॥ आत्मा अनंत रूप है तिस कों इसी जानता है॥ आत्मा शांत रूप है॥ तिस
कों अशांत जानता है॥ आत्मा महत है तिस कों लघु जानता है॥ आत्मा सनातन है ति
स कों उपजिआ मानता है॥ आत्मा सर्वव्यापक है तिस कों परिछिन मानता है॥ आ
त्मा नित है तिस कों अनित देखता है॥ आत्मा वर्तते रहत सुध चिन मात्र है एह वे
तनस जड़ता देखता है॥ आत्मा चेतन है एह जड़ देखता है॥ आत्मा अहंता ते रहत
सदा अपणे स्वभाव विखे स्थिति है॥ एह अनात्म अहं का रवि विखे अहं प्रतीत क
रता है॥ आत्मा विखे अनात्म भावना करता है॥ अरु अनात्म विखे आत्म भावना
करता है॥ आत्मा निर्वैर है तिस कों अवैरी देखता है॥ आत्मा अक्रै है तिस कों सक्रै
देखता है॥ आत्मा निरसम है तिस कों असम असमी भाव कर देखता है॥ आत्मा नि
राग है तिस कों रागी देखता है॥ आत्मा निहकलंक है तिस कों कलंक सहत दे
खता है आत्मा सदा प्रतक्ष है तिस कों परोक्ष जानता है॥ अज्ञापक है तिस कों
पत्र जानता है॥ हे रामजी एतादिक जो विकार है॥ सो आत्मा विखे अज्ञान
करके देखता है॥ आत्मा सूक्ष्म है अरु सूक्ष्म ते सूक्ष्म है॥ अरु स्थूल ते स्थूल है॥ अ
रु बड़े ते बड़ा है॥ लघु ते लघु भी है॥ सर्व प्राणों अवस्था का अधिष्ठान है॥ हे रा
मजी ब्रह्म रूपी पंकद्या है॥ तिस विखे जगत रूपी रत्न है॥ पर्वत अरु वनों सहत भी
जगत दृष्ट आवता है॥ अरु आत्मा के निकट रूप कों समजें सलगु है॥ आत्म रू
पी वन है॥ तिस विखे संसार रूपी मंजरी उपजती है॥ सो के सी मंजरी है पांचो तत प्र
थवी अप तेज वायु आकाश पंच के पत्र है॥ तिन कर के शोभती है॥ अहंता कउदे हु
ए दृढ़ होती है॥ अरु अहंता के नाश हुए नाश होती है॥ अरु आत्म रूपी समुद्र है ति
स विखे जगत रूपी तरंग है॥ बुदबुदे उठते भी है अरु लीन भी होय जाता है॥ अरु सम
मे आत्म आकाश विखे भ्रम मात्र है॥ अरु आकाश के विरछ की निआई है॥ आत्मा के
प्रमाद करके भासता है॥ हे रामजी माए आकाश चंद्रमा है॥ तिस की किरणा ज
गत है॥ अरु नेत्र शुको निरत कर्ते हारी है॥ सो तीनो अविचारत सिद्ध है॥ विचा

र की एते शांत हो जाते है॥ जैसे दीपक कों हस्त विखे धार कर अंधकार देखीए तो
दृष्ट नहीं आवता॥ तैसे विचार कर देखीए तो जगत का अभाव हो जाता है॥ केवल
सूरूप आत्मा ही प्रतक्ष भासता है॥ हे रामजी जगत कछु बणिआ नहीं॥ जैसे कि
सी वर्फ कही किसी पाणी तल्लना कही॥ तिस विखे भेद कछु नहीं॥ तैसे आत्मा अरु
जगत विखे भेद कछु नहीं॥ अरु भेद जो भासता है सो भ्रम मात्र है॥ जैसे तंत अरु पट वि
खे भेद कछु नहीं॥ तैसे आत्मा अरु जगत विखे भेद कछु नहीं॥ हे रामजी आत्म रूपी रंग
विखे जगत चित्र रूप पुतलीआ है॥ अरु आत्म रूपी समुद्र विखे जगत रूपी तरंग है॥ अ
रु जल विखे भेद कछु नहीं॥ तैसे आत्मा अरु जगत विखे भेद कछु नहीं॥ आत्म रूप ही
ही है॥ आत्मा ते इतर कछु बणिआ नहीं॥ जिस कर सर्व पदार्थ सिद्ध होते है॥ अरु जिस के
र सव क्रिआ सिद्ध होती है॥ सो अनभव रूप सदा अपरोक्ष है॥ तिस कों परोक्ष कर ज्ञान
णा एही मूरखता होवदा है॥ अरु स्वछ प्रकाश सत्यम शांत के जानि अपरोक्ष आप विखे
पस्थिति है॥ १५९॥ इति श्री परमार्थे योग उ दे नाम सर्गः॥ वसिष्ठ उवाच॥ हे रा
मजी रूप आलोक मनस्कार एहंता नो ही संसार है॥ सो ज्ञानवान कों भ्रम मात्र भा
सते है॥ मिथ्या है वासना कछु नहीं॥ जैसे जल विखे लहरी तरंग उठते है॥ तैसे आत्मा
विखे रूप आलोक मनस्कार उठते है॥ सो सभ आत्मा रूप है॥ इतर कछु नहीं॥ हे रा
मजी एह सर्व परमात्म का चमत्कार है॥ अरु आत्मा दृश्य ते रहत सुध है चिन मात्र है॥
निर्मल है अद्वैत है॥ तिस विखे जगत कछु बणिआ नहीं॥ हम कों तो सदा उही भा
सता है॥ जगत कछु नहीं भासता॥ जैसे कोउ आकाश विखे नगर कल्पता है॥ अरु स
भरखना तिस विखे पड़ी भासती है॥ सो राम के रिद विखे उदै हो जाती है॥ अरु जो से
कल्प कों सिद्ध कों मिथ्या जानता है॥ तिस कों शून्य आकाश ही भासता है॥ तैसे एह वि
स्व मूरखों के रिद विखे दृढ़ भए है॥ जैसे माटी के खिलउने सेना होती है॥ तिस विखे
हस्ती घोड़ा आदिक जो दृष्ट आवते है॥ तिस विखे राग है देखने ही कर्ता जिस कों
माटी का ज्ञान है॥ अरु बालक माटी के ज्ञान ते रहित तिस विखे राग दोख कर्ता है॥
तैसे ज्ञानवान एस जगत विखे राग दोख नहीं करते॥ ज्ञान ते रहत राग दोख करते है॥
जैसे खिलउने अहं विखे सार भूत मृत्तिका ही होती है॥ तैसे एस जगत विखे सार भू
त चेतन आत्मा ही है॥ जो कछु पदार्थ भासते है सो आत्मा का विवर्त है॥ मिथ्या ही भ्रम
कर सिध हुए है॥ जो वस्तु मिथ्या भ्रम मात्र होवे॥ तिस विखे सत्य के निमित एछा क
रनी एही मूरखता है॥ हे रामजी हम कों तो एछा कछु नहीं॥ काहे ते जो हम कों जगत
मृगत्रिस्ना के जलवत भासता है॥ ताते एछा किस की करे॥ जिस विखे सत प्रतीत
भासती है तिस विखे एछा भी होती है॥ जो सत ही न भासे तो एछा के से कर होवे॥ हे रा
मजी एछा ही बंधन है॥ अरु एछा ते रहत होवणा एसी का नाम मुक्ति है॥ ताते ज्ञानवा
न कों एछा कछु नहीं रहती॥ अनिछत ही चेष्टा पड़ी होती है॥ जैसे शून्य का वास होता
है तिस के अंतर भी शून्य है अरु बाहर भी शून्य होता है॥ अरु संवेदन उपास कों कछु नहीं
फुरती॥ तैसे ज्ञानवान के अंतःकरण विखे अरु बाहर करन विखे शांत होती है॥ अंतः
करन विखे संकल्प कों उठना नहीं उठता॥ अरु बाहर जभी उठता नहीं॥ संकल्प ते रह
त चेष्टा उस की परी होती है॥ हे रामजी जिस पुरख के अंतर ते संसार का रस छुटक ग
एआ है॥ सो संसार समुंद्र ते पार हूआ है॥ ऐसे तुं जाण॥ अरु जिस का रस नहीं छूटक ग
एआ तिस कों राग अरु दोख पड़ा फुरता है॥ एह अनिष्ट विखे तब संसार के बंधन वि
खे जाणा॥ हे रामजी मेल कों ऐसा समाधि करहु तो हो जो सर्व नहीं प्रापति होवे
अरु जिस कर मुक्ति होवे सो सुणो सव एछा पड़ी फुरती है तिस कों उपदेश भी नहीं।

ल्लागता॥ जैसे आरसी ऊपर मोती नहीं ठहरता॥ तैसे उपदेश भी नहीं ठहरता॥ अ
ऐसकौं एछा ही दीनक कैंती है॥ अर एछा ते रहत हूआ आनंद शांत रूप होता है॥ ति
मकौं वहुरि प्रानके नमन कत विकलु नहीं रहती॥ हे रामजी हम कौं तो निरं
एछापद विषे ऐक छिण भी एछा उपजती है तब रुदन करते है॥ जैसे बालक मत
रुदन करते है॥ तैसे पछताप करते है॥ अर तिसके नाश के उपाय करते है॥ हे रा
मजी एछा रूपी सोवत है॥ अर राग द्वेष रूपी अग्नि तिस विषे बल्ली उत्पति होती है॥
जो पुरष तिसके हरकर्ने का उपाय नहीं करता सो मानो विषे वष है॥ एह एछा रू
पी विष का विरछ बधि आहू आ नाश का कारन है॥ ताते तुम एस एछा का नाश करो॥
१५५॥ इति श्री एछानिषेध नाम सर्ग:॥ वसिष्ठ उवाच॥ हे रा
मजी एछा रूपी विष के नाश करने का उपाय तुझ कौं आगे भी कहा है॥ अब वहुरि सु
मष्ट कर कहता हौं॥ सो तुं श्रवण कर॥ एछा ते त्याग करो जो राजा असार है सो मिथ्या
है॥ आत्म सता ते भिंन करी अहंता मिथ्या है॥ जो मिथ्या हूआ तो तिस विषे एछा क
र्त्री किआ है॥ अर जउ आत्म सता कौं उठार देखौ अहंता सर्व आत्मा ही है॥ जो सर्व आ
त्मा ही हूआ तौ एछा करणी किआ है॥ एछा इस ही विषे होती है॥ सो हम ग कछु है न
ही एछा किसकी करीए॥ हे रामजी द्रिष्टा दृश भी मिथ्या है॥ द्रिष्टा कही अर द्रि
श्य अरु दृश कही अविवेक सो ग्राहक ग्राह्य है॥ अर ग्राह्य जगत विषे है॥ अविचार कर सि
ध है॥ भ्रम करके भासते है॥ आत्मा विषे कोउ नहीं॥ जैसे सूर्य विषे जल भास
ते है भ्रम करके॥ तैसे एह ग्राहक ग्राह्य भ्रम करके भासते है॥ अर सुख दुख भी
ग्राह्य ग्राहक करि होता है॥ आत्मा विषे कोउ नहीं॥ अज्ञान करके भासते है॥ हे राम
जी द्रिष्टा दृश दर्शन तीनो ब्रह्म विषे कल्पते है॥ वास्तव ते ब्रह्म ही है॥ अर चित्र का
लहू सवी जर रहे है पर ग्रंथ हम कौं कछु द्रिष्ट नहीं आवता॥ ऐक ब्रह्म सता ही
जिसकी भासती है॥ अरु निराभास है॥ अर सर्व थन ते रहत ज्ञान रूप है॥ अर अका
श ते भी सूक्ष्म है॥ अर सर्व जगत भी उही है॥ सो मैं ही हौं॥ हे रामजी जैसे जल वि
षे तरंग होता है॥ अर आकाश विषे शून्यता है॥ अर जैसे पवन विषे चलना
है॥ अर अग्नि विषे उसनता है॥ सो अग्नि रूप है॥ तैसे आत्मा विषे जगत अग्नि रूप
है॥ आत्मा ही निरस्य करि होए करि भासता है॥ अवर कछु हूआ नहीं॥ हे रामजी
जो उही है तौ एछा किस कौं करता है॥ एक जो मन कौं मोह उपाय करता होता है आ
प कौं किंवा बंधन करता है॥ बडा बंधन एछा ही है॥ जिस पुरष कौं एछा वडती जाती
है॥ सो जगत रूपी बन का म्रिग है॥ तिन म्रिग अर पशु ग्रहू का संग कदाचित न
ही करनी॥ मूर्खौं का संग विषे जैसे बुधि को कलंक लगता है॥ ताते विषे जैसे बुधि कौं त्या
ग कर आत्म पद विषे स्थिति होहु॥ अर विश्व भी सम मत माया अनुभव रूप है
अविद्या का सरब्ड खंड विद्यमान भी देखीता है॥ पर आत्मा विषे भ्रम मात्र
भासता है॥ है नहीं॥ विश्व भी अनंत रूपा आभवही है॥ तौ विचार कर देखहु सर्व
तौ कछु है नहीं॥ जैसे म्रित का विषे नाना प्रकार के सैना हस्ती घोडा आदि
कहोता है॥ पर म्रित का ते अनन्य कछु नहीं॥ तैसे सर्व भाविश्व आत्म रूप है॥ एत
कछु नहीं॥ तिस विषे कारन कारण भी देखण मात्र है॥ जो इस जीव सते
नहीं तो कारन कारणादि कसका होवे॥ वहुरि एछा किस की करता है॥ जिस स
र्व की एछा करी है सो है नहीं॥ जैसे सूर्य की किरणो विषे जल आभास होता
है॥ अर सिपी विषे रूपा आभासता है॥ सो इस री कछु वस्तु नहीं॥ अधिष्ठान
सूर्य की किरन अर सिपी ही सत है॥ तैसे अधिष्ठान रूप परमार्थ सता ही है॥ नइ

खे है नम खे है केवल एह जगत अविद्या रूप है॥ तिस अविद्या विना मात्र ते अनक कछु नहीं प्रि
तैसे नावत तब एछा के सउ देहावे॥ राम उवाच॥ हे मुनीश्वर जो सर्व ब्रह्म ही है तो
एछा भी भिंन नहीं॥ अर अनिएछा उदे होवे भावे न होवे॥ वहुरि तुम किंकार ते
होजा एछा का त्याग करो॥ वसिष्ठ उवाच॥ हे रामजी जिस पुरष कौं ग्रिआपत जा
गी है अर्थ यह जो ज्ञान रूप आत्मा विषे जागिआ है तिस कौं सर्व ब्रह्म ही है॥ अर ए
छा अनिछा दोनो तुल्य है तिसकौं॥ एछा भी ब्रह्म है॥ अर अनिछा भी ब्रह्म है॥ हे राम
जी जो ज्ञान संवत उदे होती है तिस उठता वास्ना कहे होती है॥ जैसे सूर्य के उदे हुए रात्र
नष्ट होजाती है॥ तैसे ज्ञान के उपजे ते वास्ना नहीं रहती॥ हे रामजी ज्ञानवान कौं
त्याग ग्रहण की कर्तव्य नहीं॥ एछा अनिछा तिसकौं दोनो तुल्य है॥ जद परम सेही हे पर
भाव कही वास्ना तिसकौं रहती नहीं॥ जैसे सूर्य के उदे हुए अंधकार नहीं रहता॥ तै
से आत्मा के साक्षात्कार हूए हैत वास्ना नहीं रहती॥ जिउ जिउ ज्ञान कला जाग
ती है तिउ तिउ अहंता नाश होता जाता है॥ द्वैत के निवर्त ते होणकार वासना भी निव
र्त होए जाती है॥ हे रामजी जिउ जिउ आत्म रूप आनंद रस कौं प्रापति होता है॥ तिउ तिउ
संसार विरस होता जाता है॥ जब संसार विरस होए गए अज्ञान व वास्ना किसकी करे॥
हे रामजी अस्मिता विषे एस कौं विषय की भावना भए थी॥ तब अस्मिता विषे ही भा
सता था॥ जब विषय की भावना का त्याग कीआ तब अस्मिता था ही सो एह होए जाता
है॥ तैसे ज्ञान कछु तिस कौं भासता है॥ सो सम ब्रह्म रूप अस्मिता ही है॥ जब तिस ब्रह्म
रूप अस्मिता विषे अज्ञान करके जगत रूपी विषय की भावना होती है तब दुख कौं पावे
ता है॥ अर जब संसार की भावना त्यागी तब अनंद रूप ही है॥ तिस कौं कछु शोक
नहीं होता तुल्य है॥ जदप ज्ञानवान विषे एछा द्रिष्ट भी आवती है तो भी उसके निश्च
विषे नहीं॥ उसकी एछा भी अनिछा है॥ काहे ते जो संसार की भावना उसके रिदे
विखन नहीं॥ तो एछा किस की रहे॥ हे रामजी एह संसार है नहीं हम कौं तो अकाश रूप
भासता है॥ अर जैसे अवर के मनोराज का संकल्प तिस विषे आवरण अर जावरण अ
का विषे कछु नहीं होता॥ तैसे एह जगत हम कौं अवर की चितवना का है॥ जैसे कि
सी पुरष मनोराज कर मार्ग विषे काठ एस्थान रचिआ होए अर तिस विषे किवाड
लगाए होए॥ अर नाना प्रकार का प्रपंच रचिआ होए॥ अर जो कोउ पुरष अवर आव
ता होए तिस कौं अहंकाव ताका उनहीं किवाड विषे॥ अर ना किवाड ही है न कोउ प
दार्थ ही है॥ उसका अनमार्ग का निश्चे होता है॥ तैसे हम कौं सब प्रपंच नहीं भासता
है॥ अज्ञानी के रिदे विषे हमारी चेष्टा है॥ हम कौं ब्रह्म ते अंतर भासता कछु नहीं॥ हे
रामजी जिस कौं जगत ही न भासे तिस कौं एछा किसकी होवे॥ जिस के रिदे विषे सं
सार की मतता है तिस कौं एछा भी फुरती है॥ अर राग द्वेष भी उठते है॥ अर जो हम
कौं पूछता है हम तौ अंतर भी शांत है॥ अर बाहर भी शांत है॥ हम कौं कर्तव्य करने जाग
कछु नहीं॥ जो कछु प्रारब्ध है तिस कर चेष्टा पडी होवहु॥ तिस विषे रागद्वेष कछु
नहीं॥ बोलते भी है परि वासना की निआई॥ जैसे बांसरी बोलती है अहंकार ते रहत
है॥ तैसे ज्ञानवान अहंकार ते रहत है॥ तैसे ज्ञानवान अहंकार ते रहते है॥ अ
विस्वाद को अंगीकार करता है॥ पर कडछी की निआई॥ जैसे दर्वी को सर्व विंजन हू वि
देखता है॥ अर तिस अहंकार सो भेद नितीका सीत ते पाएत है॥ पर उस विषे रागद्वेष कौ
सवेदन कछु नहीं फुरती॥ जो एह होवे एह न होवे॥ तैसे ज्ञानवान स्वाद कौं लेता है अ
निकलती॥ अर गंध भी लेता है पर पवन की निआई॥ जैसे वन का पवन होता है॥ अ
र सर्व ही गंध सब कौं लेता है॥ पर रागद्वेष की संवेदन ते रहत है॥ तैसे ज्ञानवा

नरागदोषसुखकीसंवेदनतेरहतगंधकौंलेताहे॥एसीप्रकारसर्वइंद्रीयहुकीचेष्टा
कर्ताहे॥परएछातेरहतहोताहे॥तातेपरमसुखरूपहे॥अरजिसकीचेष्टाए
छासहतहेसोपरमदुखीहे॥हेरामजीजिसपुरखकोभोगदुखनहीदेतेसोसुखी
हे॥अरजिसकौंरसदेतेहेरागकरीउन्मादतीजातीहे॥तिसकोअमजाताजेसकि
सीकेमस्तकपरअग्निलागअरतिसकेऊपरत्रिणडारे॥बुजावणोकेनमिलतेतोअ
हुबुझतीनहीवधतीजावेगी॥तेसेविषियहुकीएछाभोगणोकरत्रिप्तिनहीहोवे
णकी॥एछाकीनिवर्तकानाममोक्षहे॥हेरामजीसंसाररूपीविषकाबिरछहे॥ति
सकाबीजएछाहे॥जिसकीएछावधतीजातीहेतिसकासंसाररूपीबिरछवधती
जातीहेतिसकासंसाररूपीबिरछवधताजाताहे॥तिसकरवारंवारजन्मअरमिरत
कौंप्रापतिहोताहे॥हेरामजीऐसासुखब्रह्मलोकविषेभीनहीं॥जेसासुखएछा
केनिवर्तविषेहे॥अरऐसादुखनरकविषेभीनहीं॥जेसादुखएछाकेनिकाके
उपजावणेकानामबंधहे. जिसमु) विषेहे॥एछाकेनाशकानाममोक्षहे॥अर
एछाकेउपजावणेकानावंधहे॥जिसपुरखकौंएछाउत्पतिहोतीहे॥सोदुखकौं
पावताहे॥संसाररूपीवेलविषेपडताहे॥अरएछारूपीविषकीवल्लीहे॥तिसको
समुकदर्शनकरजल्लाएविनावडेदुखकोप्रापति॥समुकदर्शनकरजल्लावृहु
करेगी॥जबवधजावेगी॥हेरामजीजिसपुरखएछाहूरकर्नेकाउपाएनहीकीआ
सोतिसअंधेकूपविषेप्रवीष्टाकीआहे॥शास्त्रोंकाश्रवणभीएसीनमित्तहेजोकि
सीप्रकारएछाकीनिवर्तहोवे॥अरतपजगदानभीएसीनमितहे॥जोकिसीप्रकार
एछाकीनिवर्तहोवे॥जोएकाहीडारनिवर्तनाकरसकीएतोसनसननिवर्तकरी
ए॥हेरामजीएहविषकीवल्लीहे॥वधीहुएदुखदेतीहे॥जोपुरखशास्त्रोंकोभीप
ढताहे॥अरएछाकोंभीवढावताहेसोदीपकहाथलेकरकूपमागिडताहे॥अ
रएछारूपीकुठिआरीकाछेटाहे॥जिसकोसर्वदाकंटकलगेरहतेहे॥तिसविषेस
खकदाचितनहीं॥जोपुरखकेइंद्रीयहुकीसिनापरसेनकरेअरसुखीहुआचाहेतो
नहीहोता॥तेसेअकाशकरकोउत्तमसुखपाएआचाहेतोकदाचितनहोवेगा॥जिस
करएछानिवर्तहोवेसोउपाएकीआचाहे॥एछाकेनिवर्तहोवणाविखवडादुख
हे॥हेरामजीजोअनिछतपदविषेस्थितहुएहे॥तिनकोरागदोषनहीहोताहे॥तब
जागतिअरजोसंसारकीसताविदेविषेस्थितिहे॥अरजिसकोनानापदार्थोंसंजुगत
तिससारसतभासताहे॥सोमूरखअज्ञाननिद्राविषेसोएहुएहे॥जेसेस्वा
प्रविषेअपणामरनेकोदेखताहेपुरखसोनिद्रादोषकरदेखताहे॥तेसेजिसकोए
हजगतसतभासताहेसोनिद्राविषेसोएहुएहे॥हेरामजीबहुतप्रकारके
एस्थानमेंदेखेहे॥अरतिनोंविषेरागअरदोषभीनानाप्रकारकेदेखेहे॥परए
छारूपीकुरीकाघावजोहेतिसकेनाशकरनेकाउपाएनहीदेखिआ॥नजपकोएतना
भ्रमहोताहेनपाठकरनमणीकाके॥जेतेकछुसंसारकेपदार्थहेतिनकरकैएछारूपी
रोगनाशनहीहोता॥जबआत्मरूपीगरुडकीओरआवेतबहीनाशहोताहे॥अ
नथाकिसीप्रकारएहरोगनहीजाता॥हेरामजीजिसपुरखकोज्ञानप्रापतिहुआहे
तिसकीएछास्वभावकहीनिवर्तहोजातीहे॥अरआत्मज्ञानविनाअनेकजत
नौंकरनजावेगी॥जेसेसूर्यकीतास्नाजागेविनानहीजातीआ॥अवरअनेकउ
पावकरीअहितोभीजागेविनानहीजातीआ॥हेरामजीजिजिवासनात्यागहो
तीहेतितिसुखकीप्रापतिहोतीहे॥जिजिवासनाकीअधिकताहे॥तितिदुखभी
अधिकहे॥अरएहजुगमेंहेजोमिथ्यासंसारसतहोभासताहे॥जेसेबालककौं

ब्रिछविषेवेतालभासताहे॥तिसकरकेभेपावताहे॥परहेनहीं॥तेसेमूरखताकरकै
आत्माविषेसंसारभासताहे॥तिसकरदुखीहोताहे॥हेरामजीएस्थावरजंगमजे
ताकछुजगतभासताहे॥सोसभब्रह्मस्वरूपहे॥ब्रह्मतेइतरकछुवस्तुनहीं॥भ
मकेकैभिंनभिंनहोएभासताहे॥जेसेप्रकाशविषेअप्रकाशस्थितिहे॥अरज
लविषेडूबताहे॥अरसततविषेसतताहे॥तेसेआत्माविषेजगतहे॥सोजगत
नसतहेनअसतहेनअसतहेअरनिर्वाच्यहे॥हेरामजीइसमेंकछुसंशयनहीं॥
तौंकिआकहाहे॥केवलब्रह्मसत्ताअपणेआपविषेस्थितिहे॥सोसर्वकाअप
णाआपवास्तवरूपहे॥जबतिसकासाक्षात्कारहोताहेतबअहंतारूपीभ्रममि
टिजाताहे॥जेसेसूर्जकेउदेहुएअंधकारकाअभावहोजाताहे॥तेसेआत्माके
साक्षात्कारहुएअनात्माअभिमानअंधकारकाअभावहोजाताहे॥अरपरम
निर्वाणपदभासताहे॥तिसविषेनहीएककहणाहेनदोकहणाहे॥केवल
शांतरूपपरमशिवहे॥जेसेआकाशविषेनीलभासतीहे॥तेसेआत्माविषेजग
तभासताहे॥हेरामजीजिनकोंअसनिश्चेहुआहेतिनकोंएछाअनिछादोनोंतु
ल्यहे॥तोभीमेरेनिश्चेविषेएहहेजोएछाकेत्यागविषेसुखहे॥जिसकोंएछा
दिनदिनघटतीजावेअरआत्माकीओरआवेतिसकोंज्ञानवानमोक्षभागीकहते
हे॥काहेतेजोसंसारभ्रमकरअसिधहे॥एसहीकीकल्पनाजगतरूपहोएकरभा
सतीहे॥विचारकीएतेकछुनिकसतानहीं॥संसारकेउदेहोणेकरआत्माकोकछु
आनंदनहीं॥अरनाशहोणेकरकछुखेदनहीहोता॥काहेतेजोकछुभिंननहीं॥
जेसेसमुद्रविषेतरंगउपजतेहेतोजलकोकछुआनंदनहीं॥अरनाशहोणेकरक
छुखेदनहीं॥काहेतेजोजलतेइतरकछुनहीं॥तेसेजगतसंपूरनब्रह्मस्वरूपहे
तोएछाकिआअरअनिछाकिआ॥हेरामजीआदिजोचितशक्तिफुरीहेपरमात्मा
तेतिसविषेजबअहंहुआअरसोहंहुआतबसत्रूपकाप्रमादहुआ॥तबएहचितशक्तिम
नरूपहुए॥बहुरअगोदेहएंद्रीआहुएआ॥अज्ञानकरकैमिथ्याभ्रमउदेहुआहे॥ए
सप्रकारअपणासाक्षिमिथ्याशरीरकोदेखताहे॥जेसेजलजडताकरकैबरफ
रूपहोजाताहे॥तेसेचितसंवेदनतपमाकीदृढताकरमनएंद्रीदेहरूपीहोतीहे॥
जेसेकोईस्वप्नविषेअपणामरनेकोदेखताहे॥तेसेअपणाशरीरकोदेखताहे
जबसंवेदनसतनष्टहोतीहेतबशरीरकहोअरमनकहोएहकोईनहींभा
सता॥जेसेस्वप्नविषेभ्रमकरकेशरीरआदिकभासतेहे॥तेसेएहजाग्रतभीजा
णजोमिथ्याभ्रमकरकेउदेहुएहे॥जबअपणास्वरूपकीओरआवेगातबसभही
भ्रममिटजावेगा॥हेरामजीजेसेप्रकाशविषेनीलभासतीहे॥तेसेविषेभी
अनहोतीभ्रमकरभासतीहे॥आत्माविषेकछुअरंभअरप्रणामकरवणिआ
नहीं॥आत्मरूपहीहे॥जेसेआकाशविषेअरशून्यताभीभेदनहीं॥जेसेपवन
अरस्पंदविषेभेदनहीं॥तेसेआत्माअरजगतविषेभेदनहीं॥जेसेसप्रकी
विशिष्टअनभवरूपहेएतरकछुनहीं॥तेसेजगतआत्मअनभवएतकछुनहीं
हेरामजीचेतनअकाशपरमशांतरूपहे॥तिसविषेदेहएंद्रीआभ्रमकरकेभास
तेहे॥अरकिआकालपर्यंतसभभ्रममात्रहे॥जबआत्मस्वरूपविषेजागक
रदेखेगातबएहभ्रमनिवर्तहोजावेगा॥अरकेवलअद्वेतआत्माहीभासेगा॥
दृष्टिकाअभावहोजावेगा॥एहपृथवीआदिकततजोभासतेहेसोअविद्या
नेहे॥एनकीअसतमामिथ्याउदेहुएहे॥जेसेस्वप्नविषेअनहोतेपृथवीआदि

कततभासतेहै॥परहेनही॥तेसेआत्माविखेएहजगतभासताहै हेरामजीप्रथ
वीभीअकाशरूपहे॥अरकथकोटभीअकाशरूपहे॥अरपर्वतभीअकाशरूपहे
तोग्रहणत्यागकिसकाहोवे॥अरअकाशरूपदिवारओपरसंकल्पनमूरतरची
हे॥अरजगतहाआत्मचेतनताहे॥तातेविश्वसंकल्पमात्रहीहे॥जेसेजेसेमनिश्चहो
ताहेतेसेतेसासृष्टिभासतीहे॥जोकछुवरणिआहोतातोअवरकाअवरनभा
सता॥तातेवरणिआकछुनही॥जेसासंकल्पहोताहेतेसाआगेरूपहोएभास
ताहे॥जेसासंकल्पहोताहेतेसाआगरूपहोएभासताहे॥हेरामजीसिद्धरूपा
सएकचूरणहोताहे॥तिसकउजोवाहतेहेसोकहतेहे॥पर्वतकोअकाशकर्ते
हे॥अरअकाशकोपर्वतकर्तेहे॥तेसेमेरुकोचूरणकहताहो॥जबचित्तरू
पीसिधसबतरूपीचूरणाकरफुरेतबआत्मरूपीअकाशविखेपर्वतहोएभास
ताहे॥अरजबचित्तरूपीसिद्धकासंकल्पउलटताहे॥तबपर्वतभीअकाशरू
पहोभासतेहैं॥जेसेस्वप्नविखेसंकल्पफुरताहे॥तबअनभवविखेपर्वतआ
दिकपदार्थभासआवतेहैं॥अरजबसंकल्पतेजागताहेतबसुमेरकेपर्वतअका
शरूपहोजातेहैं॥अकाशहीपर्वतरूपहुआहे॥अरपर्वतअकाशरूपहोजात
हैं॥हेरामजीएहसृष्टिसंकल्पमात्रहेकछुवणिआनही॥जेसासंवेदनहोतीहे
तेसेभासताहे॥अरजबविश्वकेअनतआतिअभावकीसंवतहोतीहेतबअसेही
भासताहे॥जेसेविश्वकाअभ्यासकीआहेअरविश्वभासीहे॥तेसेआत्माका
अभ्यासकीजेतोकिंनभासे॥उहहेतोअपणाआपहे॥जबआत्माकाअभ्यासक
रीताहेतबआत्माहीभासताहे॥विश्वकाअभावहोजाताहे॥अनेकसृष्टिअ
पणाअपणेसंकल्पकरअकाशविखेभासतीहे॥जेसेकिसीकासंकल्पहो
ताहेसोसृष्टिउनकोंभासतीहे॥जेसेचिंतामनअरकल्पवृक्षविखेइष्टसं
कल्पकरीताहेतबजयाएकठनपदार्थनिकसिआवतेहे॥सोकछुवणेनही॥अर
चिंतामणभीप्रणामकोंनहीप्रापतिभए॥जिंकीतिपडीहे॥इष्टसंकल्पकरभा
सआवतेहैं॥जेसेएहप्रपंचभीअकारूपहे॥जेसेअकाशविखेशून्यताहेतेसेआ
त्माविखेजगतहहे॥हेरामजीसिद्धोकेवचनफुरनेलागतेहेसोभीसंकल्प
कीतीव्रताहोतीहे॥जोचित्तसुधहोताहेतबइसकोसिष्टकोभीजाननताहे॥जो
पुरखवचनसिद्धहोवणकेनमित्तवासनासंयमकर्ताहे॥अथएहजोवासनाकों
रोकताहेसोतिसकरवचनसिद्धताकोपावताहे॥जेसासंकल्पकरताहेतेसा
सिद्धहोताहे॥हेरामजीजेताएहदृष्टिकीडोरतेउपरतिहोकरअंतर्मुखहोताहे
तितिवचनकीसिद्धताहोतीनातीहे॥भावेवरदेवेभावेश्रापदेवेरागद्वेषसिध
परहोताहे॥हेरामजीएकप्रमाणिज्ञानहेजोएहपदार्थएसप्रकारहे॥जोतिस
कोनामरूपहेसोसभअकाशरूपहे॥भममात्रहेआत्माविखेअवरकछुनही
अरआत्मरूपीसमुद्रविखेजगतरूपीतरंगउठतेहे॥सोआत्मरूपहीहे॥जिना
कोंअसाज्ञानहुआहेतिनकोंएकाअरअनिष्टकाज्ञाननहीरहता॥सभअका
शरूपतिसकोंभासताहे॥हेरामजीआत्मरूपीफूलहेतिसविषविखेजगतरू
पीगंधहे॥जेसेपवनअरपरस्पंदविखेभेदनही॥तेसेआत्माअरजगतविखेभे
दनही॥जेसेचंदनमेअरलकोंकरीअसोलकीएकथरभिंननहीहोती॥तेसे
जगतब्रह्मतेभिंननही॥हेरामजीकालदेशअरप्रथवीआदिकततमेसराम
सआत्मरूपहे॥अरअभिनाशीहे॥कोहतेजोअजन्माहे॥जिनकोंअसेनिश्चहै

आहे॥तिसकोंरागद्वेषनहीरहता॥सभआत्मरूपहीभासताहे॥इतिश्री
जगतरूपदेशनो नामसर्गः॥१५६॥वसिष्टउवाच॥हेरामजीसभआ
त्माविखेजोसंवेदफुरीहेतिससंवेदनकरआगेजगतभासिआहे॥जेसेकि
सीकेनेत्रविखेमाएकअंजनडारकरअकाशविखेपर्वतउडतेदिखावते
हैं॥तेसेअनहोताजगतफुरनेकरभासताहे॥हेरामजीब्रह्मसर्गविखेअ
चितसत्ताविखेभेदकछुनहीपरमार्थतेतुल्लहे॥दृष्टदृष्टिअरवक्ततुल्ल
हे॥अरनानाआदकभीएसकीभावनाकरकेभासतेहे॥आत्माविखेदृश्यस
ककछुवणिआनही॥चितअरचेतआत्मातेएतरनही॥चितहीचेतहोएकर
भासताहे॥ज्ञानकरकेएनकोएकताहोतीहे॥एमकरकेदृशभीदृष्टारू
पहे॥जेसेस्वप्नविखेसंवतहीदृशरूपहोकरस्थितहोतीहे॥अरजा
गतेएकहोतीहे॥अरएकताभीतबहोतीहेजोगहीरूपहेतातेतेअवभीउ
होरूपहे॥हेरामजीजोसजातहेतिसकोएकताहोतीहेविजातकीए
कतानहीहोती॥जेसेजलविखेजलकीएकताहोतीहे॥तेसेवायकरए
भकोएकताहोतीहे॥तातेद्रष्टाभीउहीरूपहे॥जोएकताहोजातीहे॥जोंद्रि
शाकछुआत्मातेभिनहोती॥तोएकताभीनहोती॥हेरामजीअकाशआदि
कततभीआत्मसरूपहे॥जिसतएहसर्वहे॥अरजोउहसर्वहेतिससर्वात्म
कोनमस्कारहे॥वृहदिकेसाहेआत्मासर्वव्यापीहे॥अरसर्वगतहे॥सर्वको
धाररहाहे॥अरसर्वउहीहे॥असेसर्वात्माकोमेरानमस्कारहे॥जोकछुभा
सताहेसर्वउहीहे॥जेसेजलविखेगलावणाकीशक्तिहे॥काष्टविखेअग्नीहे
तेसेब्रह्मविखेभासनासभावहे॥अवरविखेनही॥हेरामजीजडपदार्थजो
भासतीहेसोभीब्रह्महे॥काहेतेजोभासताहेसोब्रह्महीहे॥जोजडहोवेतोभा
सनही॥जडभीचेतनतासंधसंवततविखेहे॥उसविखेसभचेतनेहेएतरकछु
नहीभासता॥जेसेसुधसंवततविखेसप्रफुरतीहेतिसविखेजडभीभासतेहे
अरचेतनभीभासताहे॥परजोजडभासताहे॥उससंवततविखेयहप्रतीतनहीतेजाए
नोचेतनहेतोफुरताहे॥जिनकोंसुधसंवतविखेयहप्रतीतहे॥तेसेसमुद्रविखेजल्लहोताहे॥
नहीसकतेअगिआनीहे॥परसभब्रह्महे॥तेसेजोकछुदेखो
सोगवेअचेतोभीजल्लहे॥अरनीचकोजाणेतोभीजल्लहे॥अरएहीअकूकाअमतो
ताहेभासताहेसोसभप्रत्यक्षरूपहे॥एतरकछुनही॥सोप्रथमअकाश
भासताहेसोभीआत्माहे॥अवरप्रथवीआदिकततेजोफुरनेहे॥तिसतेअनंतरजल्लफुरिआ
फुरिआहे॥बहुरवाएफुरीहे॥बहुरअग्निफुरीहे॥चमत्कारकोनिआएफुरेहे॥ताते
हे॥बहुरप्रथवीफुरीहे॥सोअनिकतफुरेहे॥तेसेआत्मरूपबीजवि
सभआत्मरूपहे॥जेसेबटभीजविखेब्रिछहोताहे॥हेरामजीएकबीजहीनाना
खजगतहोताहे॥अरनानाप्रकारकछुहुआनही॥तेसेआत्मसत्तानाना
प्रकारकेअवयवधारेहेपरबीजतेएतरकछुहुआनही॥विश्वआत्मा
प्रकारहोभासतीहेपरबीजकोनिआणभीआत्मापरिणामिआनही॥सोरू
काचमत्कारहेतातेअहोसरूपहे॥जेसेस्वर्णविखेअनेकभूखणहोतेहे॥जोआत्मातेए
तरनही॥तेसेविश्वआत्मसरूपहे॥सोचेतनरूपहे॥एमतेदृशाहीदृष्टा
तरहोवेतोभासेनहीतातेभासतीजाहे॥हेरामजीते
हेदृशाअरदृष्टएकहीहेदृष्टाहीदृशकोंनिआणहोभासताहे॥अरइसकोसपअवतिसे
मेकोआपअवलमाएआहुआहोएलुमावेनिकदृश्यअरउसकोपरीभासतीहेअत
विखमग्नतेहे॥नानाप्रकारकेचेष्टाहोतीहे

मकौं नहीं भासती जैसे एह दृष्टि शांतमारी भावना विषे एस्थिति है ॥ अरु दृ-
मकौं आकाशरूप है ॥ हे रामजी चेतन आकाश शांतरूप है ॥ इस विषे सि-
ष्टि कछु बणी नहीं ॥ जो कछु उपजी नहीं तौ नष्ट भी नहीं होती ॥ केवल शांत
रूप है ॥ भ्रम करके जगत भासता है ॥ जैसे बालक मनोराज करके आकाश विषे
पुतली आ रचै सो आकाश विषे कछु बणि आई नहीं ॥ परंतु उसके संकल्प विषे
है ॥ तैसे एह विश्व मनरूप बालक रची है ॥ तिसकी रची हूई एह विषे भी ज्ञान-
वान को शून्यता भासती है ॥ हे रामजी संकल्पमात्र ही सिद्धि हूई है ॥ जब
इसका संकल्प नष्ट होता है तब शांत पद शेष रहता है ॥ सो कैसा पद है ॥ नि-
र अहंकार समता मात्र पद है ॥ अरु अमन की निर्वाण एस्थिति है ॥ बहुर तिस वि-
न मात्र अहंता विषे जगत भास आवता है ॥ अहंता करके ॥ जब अहंता फुरी तब
जगत भासि आवता है ॥ अरु जब मनरूप का साक्षात्कार होता है ॥ तब अहंतारू-
पी भ्रम मिटि जाता है ॥ जब अहंतारूपी भ्रम मिटि गया तब जगत का अ-
भाव हो जाता है ॥ तब एछा का भी अभाव हो जाता है ॥ ताते ज्ञानी को एछा
कोई नहीं ॥ अरु वासना भी कोई नहीं होती ॥ जब एह चेतनतारूपी अहंता नष्ट हू-
ई तब तिस पद को प्राप्ति होता है जिस पद विषे आतमा आदिक सि पी भी स-
के त्रिगुण की निर्वाण भासती है ॥ ऐसा आनंदरूप है ॥ जिस आनंद विषे ब्रह्मा आ-
दिक हू के सुख भी त्रिण समान भासते हैं ॥ हे रामजी जिसकौ ऐसा आनंद
प्राप्ति हूआ है तिसकौ बहुरि किसी की एछा नहीं रहती ॥ अरु तिसको मा-
ल के विषे आदिक पदार्थ भिन्न नहीं करते ॥ अरु जीवावगण के पदार्थ अभिन्न
आदिक जीवावर्त नहीं ॥ केवल निर्वाण पद विषे तिसकी एस्थिति है ॥ हे राम
जी जिस पुरुष का संशय संसार ते वैराग हूआ है तिसकौ संसार के पदार्थ सु-
ख दाएक नहीं भासते ॥ अरु मिथ्या भासते हैं ॥ सो संसार समुद्र के पार को प्राप-
ति भए आहे ॥ जिसकी संसार की वासना का अभाव हूआ है अरु अहंता जिस
की निर्वाण भई है दीपक की निर्वाण तिसकी सूरत देखणि मात्र भासती है
परु वासना सब नष्ट भई है ॥ सो ज्ञानवान शांतरूप है ॥ हे रामजी एछा ही बं-
धन है ॥ जब एछा का अभाव हूआ तब अनंद हूआ ॥ अरु एछा भी तब फुरती है ॥
जो संसार को सत जानता है ॥ अरु संसार की सतता अहंता करके भासती है ॥ ज-
ब अहंतारूपी वासना नष्ट होवे तब निर्वाण पद की प्राप्ति होवे ॥ हे रामजी संसा-
र कछु बणि आया नहीं ॥ भ्रम करके सिध हूआ है ॥ सर्व जगत ब्रह्मसरूप है ॥ तिस
परमात्मा विषे जो परिछिन्न अहंता फुरी है सो एह उपाधि है ॥ हे रामजी बुधवंत आ-
दिक लेकर जेती एह हुई है जिसको अप्राप्ति विषे स्वाद नहीं देते अरु प्राप्ति को प्र-
ाप्त रहते हैं ॥ तिसको संत मुक्तरूप कहते हैं ॥ हे रामजी एह अहं अविचार
न सत भासती है ॥ विचार कीए ते असत हो जाती है ॥ अनहोती अहंता ने दुख दे-
या है ॥ ताते तुम निरहंकार होए कर चेष्टा करो ॥
है ॥ तैसे तुम निरहंकार होए कर चेष्टा करो ॥ जैसे जंत्री की पुतली चेष्टा करती
है ॥ तब विवहार भी अरु अविवहार भी तुमकौ तुल्ल होजावेगा ॥ अरु अपणा सरूप विषे एस्थिति हो-
स्पंद अस्पंद दोनो तुल्ल होते हैं ॥ तैसे तुमको विवहार करणा न करणा तुल्ल होजावेगा ॥ जैसे पवन को नि-
गा ॥ अरु अहंकार ते रहित तेरी चेष्टा पड़ी होवेगी ॥ अहंता ही दुख है ॥ जब अहंता का
नाश हूआ तब शांत पद को प्राप्ति होवेगा ॥ अरु निर्मल नाम एह पद को प्राप्ति हो-
वेगा ॥ जो सब पदार्थ हू का अधिष्ठान है ॥ अरु सब का अपणा आप है ॥ तिस विषे न
कोई दुख है न द्वैत है ॥ न कोई एंद्री अरु हू का विषे है ॥ परम शांतरूप है ॥ ५८ ॥ २

ति श्री परम निर्वाण जोग प्र [illegible] सर्गः ॥ वसिष्ठ उवाच ॥ हे राम
जी ज्ञानवान जो पुरुष है सो निरावरण है ॥ अरु एह जो दोनो आवरन हैं ते रहत
है ॥ एक असत्तापाद को आवरन है ॥ एक अभावपादक आवरन है ॥ जो आत्मब्रह्म की
सत्ता रिदे विषे न भासे सो असत्तापादिक है ॥ तिसको कहता है जो है नहीं
अरु जिसको सत्ता आत्मा की रिदे विषे भास दृढ परु भासै नहीं परंतु सो अभाव-
पादक आवरण है ॥ असत्तापादक आवरण अज्ञानी को भासता है ॥ अरु अभा-
वपादिक आवरण जिज्ञासी को होता है ॥ ज्ञानवान को एह दोनो आवरण
नहीं रहते ॥ ताते शुद्ध निरावरण होता है ॥ शांतरूप है अरु प्रकाशवंत नि-
र्मल है ॥ अरु निरालंब है ॥ जो किसी गुणन के आश्रे नहीं होता ॥ अरु हैते एक अ-
मतिसके निवर्त होजाते हैं ॥ आत्मरूपी तीर्थ का एस्नान कीआ है तिसने
सो आत्मरूपी तीर्थ के सेवे है ॥ जो अपवित्र को भी पवित्र करता है ॥ जिनो पुरुषों श-
रीर विषे आत्मा का दर्शन कीआ है तिनका शरीर भी पवित्र भए आहे ॥ ऐसे
पुरुष को शरीर की सतता नहीं रहती ॥ अरु संसार भी नहीं रहता ॥ अरु आत्मा
के साक्षात्कार हूए ते सभ एकानंद होजाती है ॥ अरु सर्व ब्रह्म ही जिसको भा-
सता है ॥ दृश्य कछु नहीं भासता ॥ सभ आत्मरूप है तिस विषे संकल्प कल्पना
नाप्रकार सृष्टि भासती है ॥ हे रामजी तुम संकल्प ओर मत जावहु ॥ काहे ते जो
चित की वृत्ति छिलछिला विषे प्रणमती है ॥ अनेक जो जन्मो प्रजंत चली जाती
है ॥ अरु तिसके अनभव करनेवाली भी सत्ता है जो मध विषे जिसके आश्रे उ-
हु जाती है ॥ सो चिनमात्र तत्त्व स्वरूप है ॥ जब तिस विषे एस्थिति होकर देख-
गा ॥ तब फुर्ने विषे भी ब्रह्म सत्ता पड़ी भासेगी ॥ हे रामजी एह सुमेवत सदा प्रका-
शरूप है ॥ चित के धर्म भासते रहते हैं ॥ हैत रूपी विकार ते रहते हैं ॥ अरु जेते कछु प्र-
काश है तिनके विरोधी भी है ॥ दीपक का विरोधी पवन है ॥ जो निर्वाण कर-
ता है ॥ सूर्ज का विरोधी राहु केतु है ॥ जो आछादित करता है ॥ अरु महाप्रलय विषे
सभ प्रकाश शांतरूप होजाते हैं ॥ अरु आत्मप्रकाश सत्त है मिथ है ॥ तिसको भी प्र-
काश है ॥ अरु ज्ञानरूप एकरस है ॥ तिसको तुम त्यागकर अवर कछू न होल्लाग-
णा ॥ हे रामजी एह दृश्य सभ मिथ्या है ॥ जैसे जेवड़ी विषे सर्प कल्पते हैं ॥
अरु सिपी विषे रूपा मिथ्या है ॥ तैसे आत्मा विषे विश्व कल्पते हैं ॥ जब तू जागकर दे-
खेगा ॥ तब सभ का अभाव होजावेगा ॥ जैसे बंध्या के पुत्र के रूप का अभाव है ॥ जै-
से सभ अविद्या मिथ्या परी भासेगी ॥ काहे ते जो विद्य है नहीं ॥ भ्रम मात्र स्वप्न की नि-
ए अविचार ते सिद्ध है ॥ विचार कीए ते आत्मा ही है एतर कछु नहीं ॥ जैसे स्वप्न की
सृष्टि अनभव ते एतर कछु नहीं ॥ तैसे एह विश्व भी आत्मरूप ज्ञान मात्र है ॥
अहं मम देह एंद्री आदिक से भ्रान्ति मात्र है ॥ दृष्टा भी दृश्य संगी कल्पित कछु नहीं ॥ ते-
व ऐसा निश्चै को धारेगा ॥ तब निहसंकल्प होवेगा ॥ अरु मोह ते भी रहत होवेगा
परमार्थ सत्ता ही जिसकी तिसि भासेगी ॥ जैसे समुद्र विषे तरंग उठते हैं ॥ तैसे आत्मा
विषे दृष्टा उठती है ॥ अरु जो एतर भासता सो मिथ्या है ॥ अरु सभ आकृष्ट एसके अ-
र एस्थित है ॥ अज्ञानी के के बाह्य जगत भासता है ॥ जैसे स्वप्न की सृष्टि सभ एस-
के अंतर होती है ॥ अरु अपणा स्वरूप होती है निद्रा दोष करके बाहर भासती है
जब जागता है तब अपणा ही स्वरूप भासता है ॥ तैसे जो अंतर सृष्टि भी विचार की-
ए ते अपणा अनभव विषे भासती है ॥ जिस विषे एस्थिति होकर देख ॥ जो सर्व-
दा जागती जोत है ॥ तिसको त्यागकर अवर जनन करना विअर्थ है ॥ हे रामजी अ-
पणा अनभव विषे एस्थिति होवणा कि आकाश है अरु जो कदन जानते हैं ते म

व॰ म॰ ४५

इहे॥ तिनकौंमरीदिककारहे॥ काहेतेजागेउपराकोंसमंइवतजानतेहे॥ ति
नोतेअवरमसुखकवनहोवै॥ अनभवविखेस्थितिहोवणागउपराकोंनि
आएतरणाहे॥ अरअववजापदार्थहेतिनकेपावणाकीएछाकरेगा॥ तिनइ
विखेविवथानहे॥ असआत्माविखेविवथानकछुनही॥ काहेतेजाअपणाआ
पहे॥ हेरामजीजिनोंपुरखोंआत्माविखेस्थितिपाएहे॥ तिनकौंमोख
कीएछाभीनही॥ तौंसर्गादिककुकीकहाहे॥ मोखअरसर्गआत्माविखे
जेवडीकेसर्पकीनिआएइभासतेहें॥ मिथ्या तिनकौंकेवलअद्वैतआ
त्मानिश्चहोताहे॥ हेरामजीसर्वविखेसाखपतवतनहोअरसाखपतिविखे
सशानही॥ पनकेमनभववकर्नेवालाहीसतहे॥ पहदोनोंमिथ्याहें॥ निर्वा
णअरजीवणातिनकौंदोनोंतुल्लहे॥ ऐसेजानकरएछाकिसीकीनहीक
र्ते॥ अरसपचडानकोंवधिआकेपचअरसभसकेसिंगवतभासताहे॥ हेराम
जीहमकौंतोसदाप्रकाशरूपभासताहे॥ अरजौंनेकहेउपदेशकोंकर्तेहो
तउहमकउहमकउभासकछुनही॥ तेरीएछाविशिष्टरूपहोकरउपदेश
कर्तीहे॥ तुझको॥ हमकौंविश्वसदाशून्यभासतीहे॥ अचेष्टाकर्ताभीहम
कौंअज्ञानीजानतेहे॥ हमारेनिश्चविखेचेष्टाभीनही॥ अरहमारीचेष्टाअ
र्थकारकछुनही॥ अरअज्ञानेकीचेष्टाअर्थकारहोतीहे॥ हमकौंचेष्टासत
नहीभासती॥ तातेअर्थकारनहीहोती॥ जेसेढोलकाशब्दहोताहेपरअर्थ
उसकानहीहोता॥ जोकिआकहताहे॥ अरवाणीकरबोलनाशब्दहेतिस
काअर्थहोताहे॥ तेसेहमारीचेष्टाअर्थकारनही॥ अर्थएहजोजन्मकौंनही
देती॥ अरअज्ञानीकीचेष्टाजन्मकौंदेतेहे॥ अरहमकौंसंसारऐसेभासता
हेजैसेअर्वचीसवअचेवहकौंअपणासरूपहीदेखताहे॥ हस्तपादगिरेवा
होसभअपणाहीअंगदेखताहे॥ तेसेजगतहमकौंअपणासरूपहीभासताहे
हेरामजीजगतविखेएकजीवऐसेदृष्टिआवतेहें॥ जोतिनकौंहमसुप्तके
जीवभासतेहे॥ अरहमकौंतोउहमूर्तदृष्टिआवतेहे॥ अकाशवत॥ अरज्ञान
केरिदिविखेहमनानाप्रकारकीचेष्टाकर्तेहें॥ अवरहूकीनिआएभासतेहे
अरअसकौंतोजगतहेसेभासताहे जेसेसमुंदविखेतरंगहोतेहे॥ तेसेआ
त्माविखेजगतहे॥ सेभीब्रह्महोतेभीब्रह्महेजगतभीब्रह्महे॥ इपअवलो
कनमस्कारसभब्रह्मरूपहे॥ तातेतूभीब्रह्मकीभावनाकर॥ जोअप
णेस्वभावविखेस्थितिहोवणाउसवहे॥ हेरामजीअपनास्वभावसाधनाए
सीकानामसोछहे॥ अरनसाधनाएसीकानामवंधनहे॥ हेरामजोहा
रपदार्थएसउपरउपरकौंउनहीकरसकता॥ तथंननकौंउमित्रनकौ
उक्रियाजोअपणापुरखार्थउपकारकर्तीहे॥ सोपुरखार्थएहीहे॥ अप
णाजोचेतनस्वभावहेतिसविखेस्थितिहोवणा॥ परस्वभावकात्यागकर्णा
अरजबअपणेस्वभावविखेस्थितिहोवेगाकर्णा॥ अरजबअपणेसभा
वविखेस्थितिहोवेगातवसभअपणाहीसरूपदृष्टिआवेगा॥ अरजोतूए
नरदेखताहैमेंहोनतहेनजगतहे॥ सभभ्रममात्रहे॥ जिगत्रिस्नाकेजल
वतभासताहे॥ अथवाऐसेजाणसेब्रह्महोतेभीब्रह्महेजगतभीब्रह्महे॥ अ
थवाऐसेजाणतेहैंतेमेंहोनजगतहे॥ पाछेजोशेषरहेगासोतेरासरूपहे
हेरामजीजिनोंपुरखोंकौंऐसानिश्चहूआहेजोमेंतेजगतसभब्रह्महे॥ अ
थवामेंतेजगतसभमिथ्याहे॥ तिनकौएछावडवडिकोउनहीरहती॥ अ
नेनकौएछापरीउपजतीहे॥ तबजाणीऐजोब्रह्मआत्माकासाक्षात्का

नहीभएआ॥ जबभोगोंकीवास्नानिवर्तहोजावेअरसंसारविरसहोतावै
तबजाणीएजोएहुसंसारकेपारकौंप्रापतिभएआहे॥ अथवाहोवेगा॥ हेरा
मजीऐसेनिश्चेककेजाणसोजिसकौंभोगोंकीवास्नाक्षीणहोतीहे॥ तिस
कौंसभावरूपीसमजेउदेहोताहे॥ अरभोगोंकीत्रिस्नारूपीरात्रिनष्टहोतीहे
जेदृपप्रतलतिसविखेभोगोंकीत्रिस्नाभासतीहेतोभीउसकौंभासजाती
रहतीहे॥ अरब्रह्मसत्तापदीभासतीहे॥ अरससारकौउरतेसुखपतिहोजा
ताहे॥ भ्रितककीनिआएहोताहा॥ अरसरूपविखेसदाजाग्रतहे॥ अपणा
सभावरूपीआत्मविखेमगनहोताहे॥ इति श्रीवसिष्टगीताउपदेशना
मसर्गः॥ वसिष्ठउवाच॥ ॐहेरामजीरूपअलोकमनस्कारएहपरमसभाव
है तिनकौंब्रह्मरूपजाणपरमसभावकिआअरब्रह्मरूपकिआ॥ हेरामजीते
रासरूपस्वधअकाशहे॥ तिसविखेजोरूपअलोकमनस्कारफुरेहे॥ सोअ
क्रितमाएआकरकेफुरेहे॥ सोमाएआसभावकर्केपरमसभावहे॥ अरअधि
ष्ठानसत्ताएसकाआत्माहे॥ तातेआत्मसरूपहे॥ आत्माकेजाणेतेएनकाअभा
वहोजाताहे॥ हेरामजीजबऐसेकाजानउपजताहेतबसंसारसेप्रवर्तहोजाता
हे॥ संसारकीसत्ताकछुभासतीनही॥ अबजबविद्याउदेहोताहेएतबसुखपतिहोता
तोहे॥ ऐसकाभासभीनहीहोता॥ तुरीआविखेस्थितिहोताहे॥ अरजबतुरी
आतीतहोताहे॥ तबअभावकाभीअभावहोजाताहे॥ परमकल्याणहो
ताहे॥ सत्तासमानपदकौंप्रापतिहोताहे॥ सोआदिअंतअंतसेरहतपदहे॥ अ
साब्रह्मरूपसेहो॥ अरपरमशांतरूपहो॥ अरनिदुखहो॥ अरजगतभीसभ
ब्रह्मरूपहे॥ हमकौंसदापहीनिश्चेरहताहे॥ अरअसोउध्याननहीहोताजो
मैविसिष्टहो॥ सदाआत्मरूपकानिश्चैरहताहे॥ अरपरछिन्नअहंकारहमाए
नष्टहोगएआहे॥ तातेनिरहंकारपदविखेस्थितिहे॥ जबअसहोवेगातब
परमनिर्मलसरूपहोजावेगा॥ जैसेशरत्कालकाआकाशमेघतेरहतनिर्मल
लहोजाताहे॥ अरशोभताहे॥ तेसेतूशोभहिगा॥ हेरामजीजैसेपुरखकौं
वेधनहेसोश्रवणकर॥ जिसबंधनकरकेआत्मपदकौंनहीप्रापतिहोता
प्रथमबंधनमनकावंधनहे॥ अरभोगोंकीत्रिस्नाअरवाधवहूकावंधनहे॥ जि
सकौंएहतीनोवासनारहतीहे॥ तिसकौंमराधिकारहे॥ वडेअनर्थकेदे
णहारीएहवासनाहे॥ एहजोभोगहेसोमहारोगहे॥ अरवाधवदृष्टिवंधना
रूपहे॥ अर्थकीप्रापतिअनर्थकाकारनहे॥ तातेएसवासनाकौंत्यागकरआ
त्मपदविखेस्थितिहोवहु॥ अरएहसंसारभ्रममात्रहे॥ एसकौंवासनाके
नोविअर्थहे॥ एसकौंसत्ताकेनीतनेहीजानणा॥ अरएहजोतुझकौंमि
लापसंगभासताहे॥ साकेमाहेजेसेवरहूएसमरनआवेतामेअसकेसा
प्रमिलिआप्या॥ तबउनहपतभापतकारिदविखेभासतीहे॥ अरजेसेसंक
ल्पकरनगररचलीजेउसविखेमरतामनावआदिकभासतीहे॥ तेसेएह
जगतभीजाणा॥ हेरामजीतेमेअरएहजगतभ्रममात्रहे॥ सकल्पनगरके
समानहे॥ अरजेसेमनविखेनगरकीरचनाहेतेसेएहजगतहे॥ अकेतो
कस्नकिआजोभासतेहे॥ सोभीभ्रममात्रहे॥ केवलआत्मसत्ताहीअपणे
आपविखेस्थितहे॥ आत्मरूपअकाशविखेएहजगतफुरताआहे॥ अरसं
कल्पमात्रफुरतकहूआहे॥ वासतवतेकेवलशांतरूपआत्मसत्ताहे॥ हेरामजीजो
पुरखसभावनिष्टहेतिनकौंआत्मसत्ताहीभासतीहे॥ अरजिनकौंआत्मत
तकाप्रमादहेतिनकौंनानाप्रकारजगतभासताहे॥ अरएहजगतआत्मा

व॰ म॰ ५२

विखेकछु अरु भेम प्रणामक कैं वतिआ नही॥ जैसे सूर्य की किरणा विखे अ
नेक कैं जल्ला भास भासता हे॥ तेसे आत्मा के अज्ञानक कैं आत्मा विखे जगत
की प्रतीत होती हे॥ जब आत्मा का सम्यक ज्ञान होवे तब जगत भ्रम निवृते
होजाता हे॥ जैसे सूर्य की किरणा जाणे ते जल भ्रम निवर्त होजाता हे॥ अरु जै
से स्वप्ने ते जागृहु एस्वप्न सृष्टि अपणा ही आप भासती हे॥ तेसे अविद्या के नाश
हुए सभ अपणा आप ही भासता हे॥ ५५॥ इति श्री वसिष्ठ गीता से मार पदे
नाम सर्गः॥ वसिष्ठ उवाच॥ ॐ हे रामजी रूप अलोक अरु मनस्कार सभ
ब्रह्मरूप हे॥ जिसकों ज्ञान की प्राप्ति होती हे॥ तिसकों सभ ब्रह्मस्वरूप भासता
हे॥ एही गिआन का लक्षण हे॥ अरु जिजि गिआन कला उदे होती हे॥ तिति भो
गों की वासना खीण होती जाती हे॥ जब शुद्धबोध की प्राप्ति होती हे तब एकौ
किसा कीन ही रहती॥ जैसे जिउ जिउ सूर्य प्रकाशता हे॥ तिति अंधकार ना
श होता जाता हे॥ जब पूर्ण प्रकाश हुआ तब रात्र का अभाव हो जाता हे॥ तेसे
जिसकों गिआन उत्पन्न हुआ तिसकों भोगों की वासना नही रहती॥ अरु संसार जि
सकों जलवत सुख की निआई भासता हे॥ अरु अज्ञानी कों सत भासता हे॥ जैसे
स्वप्न विखे सुखपति नही होती॥ अरु सुखपति विखे स्वप्न नही होता॥ स्व
प्ना पुरुख पति कों नही जानता॥ अरु सुखपति वाला स्वप्ने वाले कों नही जान
ता॥ तेसे जिनकों तुरीआपद की प्राप्ति होती हे॥ तिसकों संसार का अभाव
होजाता हे॥ अरु अपणे स्वभाव विखे स्थिति होता हे॥ अरु संसार केरसतजा
णते हें॥ ते स्वप्न नगर हे॥ ओहु सुखपति कों नही जानते॥ हे रामजी तेरा सरूप
जो तुरीआपद हे तिसकों अज्ञानी नही जान सकते॥ अरु जों जाणे तों परछिन्न अहं
कार तिसका नष्ट होजावे॥ जब अहंकार नष्ट हुआ तब सबात्मा हुआ॥ हे रामजी
एसकों अहंता ने तुछ की आहे॥ ताते अहंता रूपी पिशाच का तुम त्याग करो॥ अरु
अपणे स्वभाव विखे स्थिति होवहु॥ अरु संसार रूपी एक पुतली हे॥ सो भ्रमक
र उठी हे॥ तिसका शीष ऊर्ध्व ब्रह्मलोक हे॥ अरु दृष्टि प्राणे सके वषि मघल हें॥
अरु चंद्रमा सूरज नेत्र हें॥ अरु तारगण मसके रोम हें॥ अकाश पेसके वस्त्र
हें॥ अरु खलउ खरूपी स्वभाव हे॥ अरु पवन एसका प्राणवायु हे॥ वगीचे उसके
भूखण हें॥ दीप अरु समंद उसके कंगन हे॥ लोकालोक पर्वत उसकी मेखला
हे॥ हे रामजी अैसी जो पुतली हे सो पदी नृत करती हे॥ सो किआ हे जैसे समुंद्र
विखे तरंग उपजते हें॥ अरु नाश होजाते हें॥ तेसे सर्व जल की निआई ब्रह्मरू
प हे॥ अरु भ्रमक कें विकार दृष्टि आवते हें॥ हे रामजी कतो किआकार सभी सभ
आत्मस्वरूप हे॥ जबतें आत्मा की भावना करेगा तबतें शरीरादि अकाश की निआ
ए शून्ने होजावेगा॥ जैसे पथर की शिला जड होती हे॥ तेसे तेरे शरीरादि जगत तें जड
शून्ने होजावेगा॥ हे रामजी आत्मपद शांतरूप हे॥ अरु अकाशवत निर्मल हे॥ जैसे अ
काश विखे अकाश स्थिति हे॥ तेसे आत्मा विखे जगत हे॥ न उदे होता हे न अस्त
होता हे॥ केवल शांतरूप हे॥ अरु उदे अस्त भी नव होती हे जब कछु दूसरी वस्त
होती॥ सो जगत कछु भिन्न नही आत्मा ही सरूप हे॥ द्वैत अरु एक कल्पना ते रहत
आत्मा अपणे आप विखे स्थिति हे॥ ५६॥ इति श्री ज्ञान उपसम [illegible] प्रे
नाम सर्गः॥ वसिष्ठ उवाच॥ ॐ हे रामजी एह विश्व आत्मा का चमत्कार हे॥ जैसे मि
तका की पुतली होती हे॥ तेसे एह जगत हे॥ जैसे कागज उपर पुतली होती हे॥ सो
कागजत रूप हे॥ तेसे विश्व आत्मरूप हे॥ जैसे सूरज का दीपक होता हे॥ तिसका
प्रकाश देखण मात्र ही होता हे॥ प्रकाश का कारज नही कर्ता॥ तेसे एह जगत दे

खणे मात्र हे॥ विचार की एत आत्मा ते एतर सत्ता कछु नही॥ जगत की सत्ता आत्मा
ते भिन्न कछु नही॥ जगत की आस्था आत्मा के आश्रे होती हे॥ जैसे जल विखे
तरंग होते हें॥ अरु अकाश विखे फुरना होता हे॥ तेसे आत्मा विखे स्फुरनता हो
ती हे॥ अरु पवन विखे फुरना होता हे॥ तेसे आत्मा विखे जगत हे॥ जब वायु च
लती हे॥ तब भी पवन हे अरु न थान ही॥ पवन रूप ही का निश्चे हे॥ चेतन जो हे आ
ना भास वा रूप हे॥ तेसे चेतन विखे निश्चे हे जो जगत मेरा सरूप हे॥ हे रामजी एह अरु जंद ख जो जगत
त्मज्ञानी सो जानता हे॥ जो जगत मेरा सरूप हे॥ अरु जैसे कथा विखे
कछु दूसरी वस्तु नही॥ पर भ्रम कर भिन्न पदार्थ भासता हे॥ जो कथक ते हें अरु अवर क्रिआ करते हें॥ ते
कथा के पुरुख विदिमान भासते हें॥ जो कथक ते हें सो अविदिमान होजाते हें
से एह जगत भी जाणा॥ हे रामजी जो विदिमान हे सो अविदिमान होजाते हें॥ जैसे स्वप्न विखे जगत अनभव रूप
अरु जो अविदिमान हे सो विदिमान होजाते हें॥ तेसे जाग्रत जगत विचार कर देखणा ते ब्रह्मसरूप ही पदा
हे॥ एतर कछु नही॥ तेसे जाग्रत जगत विचार कर देख॥ अरु सृष्टि का जगत तिसही का रूप हे॥ पर
भासेगा॥ जैसे ता पुरुख मात्र आहोता हे॥ अरु ब्रह्मका जगत तिसही का रूप हे॥ अरु जब जागिआन व
न बल गनिद्रादा देखहे तब लग भिन्न पदार्थ भासता हे॥ अरु जब जागिआन व
सभ अपणा ही आप भासता हे॥ जब एह पुरुख अपणे सरूप विखे स्थिति होकर दे
खता हे तब सभ अपणा आप ही भासता हे॥ हे रामजी रूप अलोक अरु मनस्कार भी
ब्रह्मरूप हे॥ अरु आत्मा एही अहंकार विखे नही निरहंकार हे॥ अरु मन के चितवणे त
हनते हे॥ अरु सं कल्प कर आपही रूप अलोक मनस्कार होकर स्थिति हुआ हे एन
कछु नही॥ सर्व उही हे॥ अरु तिसकों कोउ शिव कहते हें कोउ ब्रह्म कहते हें॥ को
उ आत्मा कहते हें॥ कोउ अनेक कहते हें॥ इत्यादि कल्पना मतिसी के शास्त्रका रहे ने कहे हें
मा सं कल्प विखे कहे हें॥ अरु आत्मा केवल चिन मात्र हे॥ वाणी का विखे नही अरु
प्राप्त रूप हे॥ अरु चेतन जो हे दृष्टि प्रातिसते रहते हे॥ सर्व शास्त्रों अरु सर्व ग्रंथों का अधिष्ठा
न हे॥ अरु जगत उसका चमत्कार हे॥ हे रामजी आत्मा विखे एक अरु द्वैत कल्पना को
उ नही॥ काहते जो आत्म तमा त्र हे॥ अरु जगत भी आत्मरूप हे॥ तेसा अकाश अ
रशून्नता विखे भेद कछु नही॥ तेसे आत्मा अरु जगत विखे भेद कछु नही॥ हे रामजी
अैसे भी देशा कि सी अथवा काल लोक से विखे होवे जो स्वर्ने अरु भूषण हुवि खकछु
भेद होहोवे॥ जो स्वर्न भिन्न होवे अरु भूषण भिन्न होवे॥ पर आत्मा अरु जगत विखे
भेद कछु नही॥ अैसे ही आत्मा पर प्रकाशता हे॥ अरु अपणा स्वभाव ही विखे स्थि
ति हे॥ अरु दूसरी वस्त कछु नही जैसे मितका कोसेना नाना प्रकार कीसंगिआ
को धावती हे॥ पर मितका ते एतर कछु दूसरी वस्त नही॥ तेसे फुरने कर कैं नाना
प्रकार की संगिआ दृष्टि भी आवती हे॥ पर आत्मा ते भिन्न कछु नही॥ हे रामजी जो
पदार्थ भासते हें सो अनभव कर कैं भासती हे॥ पदार्थ हु की सत्ता अनभव ते एत
र कछु नही॥ जबतें अनभव विखे एस्थिति होकर देखेगा तब अनभव रूप अप
णा आपही भासेगा॥ अपणा स्वभाव गिआन मात्र हे॥ तिसके जाणने का नाम ज्ञा
न हे॥ हे रामजी ज्ञान विना जो जगत प्रदान आदिक क्रिआ हे॥ सो सभ विअर्थ हे
सभ क्रिआ कों सिद्ध ताज्ञान करदेती हे॥ जैसे राजा विखे युद्ध की क्रिआ होती हे॥
सो दिन हुए ते मिथ्या होजाती हे॥ तेसे तप आदिक क्रिआ जो कहे ए विना विअर्थ
होजाती हे॥ हे रामजी जो कछु क्रिआ ज्ञान के नमित करीए सो पुरख प्रजनतन स्व
हे॥ अरु एस ते अनथा हे सो विअर्थ हे॥ अरु धन के उपजावणे विखे भी अनर्थ
होता हे अरु राखणे विखे भी कष्ट हे॥ पर जो ज्ञान के साधन नमित एसकों राखी

व॰
म॰
५३

ऐसे अरु देवीऐं तव एह अग्नि होजाता है ॥ हे रामजी एह जगत भ्रम मात्र है ॥ जैसे
मलननेत्रौंवाले कौ जो रूप भासता है ॥ जैसे सत असत भासती है ॥ जैसे अप्रत
अभी भासती है ॥ अरु असत रूप है ॥ तैसे एह जगत है ॥ एह जगत जो विदिमान
भासता है सो अविदिमान है ॥ अरु आत्मा सदा विदमान है ॥ हे रामजी जो वि
दिमान देव है तिस अवति सकौं त्यागकर अवर देव का पूजन करते हैं ॥ तिनकौं
पूजा का फल नहीं होता ॥ अरु विस्मातिन परक्रोध मान भी होता है ॥ सो विस्मे देव
विदमान कैसे है सो श्रवन कर ॥ हे रामजी आतम अनभव रूप जो विदिमान देव
है तिसकौं त्यागकर जो अवर का पूजन है ॥ सो जन्म मरन के बंधनौं ते मुक्ति नहीं
होने ॥ मूसला विविवरहते हैं ॥ अरु आत्मदेव की पूजा श्रवन कर ॥ जो कछु अनि
छत आवे सो तिसकौं समर्पण करीऐ ॥ ऐसे पूजा विखे भी परिस्थिति होहाव
णा जो एसे कज्ञानणवाला है तिस विखे अहंप्रतन करणा एह बडी पूजा है ॥ हे
रामजी ऐसे आत्मदेव ने एच रजा सूर्ज चंद्रमा आदिक भेद पूजा है सो तु कहे ॥ ज
बतु आत्म पूजा विखे स्थिति होवहि ॥ तब अवर पूजा सुके त्रिणौं कौं निआएत
रु कौं भासहि ॥ अरु दान भी आत्मदेवकौं करनां ॥ सो किस कर कै करने जोग है ॥ बो
धकर कै करने जोग है ॥ अरु बोध के से उत्पति होता है ॥ प्रथम वैराग अरु प्रान बोध
का कारण है ॥ अरु संतोख होवे जथा लाभ विखे संतुष्ट रहणा ॥ अरु आत्म विदिआ
की विचार करणा ॥ अरु संतों का संगत करणा ॥ एतने साधनौं कर तब बोध रूपी
सूर्ज उदै होवेगा ॥ तब द्वैत रूप अंधकार नष्ट हो जावेगा ॥ तब द्वैत रूप अंधकार न
ष्ट हो जावे ॥ ज्ञान रूप ही भासेगा ॥ बहुड़ि जो जा तप जिआ है सो भी प्रगट हो
जावेगा ॥ ताते उसी देव की पूजा कर ॥ जिस कर कै आत्मपद की प्रापति होवे ॥
आत्मा देव की पूजा के निमित फल भी चाहीऐ ॥ सो आत्म विचार करणा ॥ अर
समजो हे चित की ब्रित अंतरमुख करणी ॥ अरु जथा लाभ विखे संतुष्ट रहणा ॥
संतों का संगति करणी ॥ एनो फूलौं कर देव की करनी ॥ एह पूजा भी तब होती है
जब अंतःकरण सुध होता है ॥ अरु तिस कर ज्ञान उत्पत होता है ॥ जब गिआन
उपजिआ तब आत्मदेव का साक्षात्कार होता है ॥ सो ज्ञान का लछन श्रवन
कर जो एसा सब्दौं अरु गुणौं ने सुणी है ॥ वस्तु तिस विखे स्थिति होती है ॥ अरु संसा
र कौं वासना तब लौं नास होजाती है ॥ तब ज्ञानी कहीता है ॥ जब ऐसे ज्ञान की पूरनता
होती है तब जगत उस कौं ब्रह्म रूपी भासता है ॥ अरु सास्त्र अंस को काटन हा
र कते अरु मिथ सर्प का भै नहीं होता ॥ अग्नि अरु विख का भै भी नहीं होता ॥
हे रामजी एह विस्व सम आत्म रूप है ॥ जैसी भावना करीती है तैसे ही आगे है
भासती है ॥ जो सास्त्रौं विखे सास्त्रौं के अर्थ की भावना होती है ॥ तब सास्त्र हो भा
सता है ॥ सर्प अग्नि विख सम अर्पण अर्पण अर्थ कार भासते हैं ॥ अरु जो सर्व आत्म
भावना करीती है तब सर्व आत्मा भासता है ॥ इस रीव सन को कछु नहीं वर्णी ॥
तौं दिखाए के सदवे ॥ अरु जो पुरख क्रित क्रितन हो भए आ ॥ अरु आपकौं क्रि
तार्थ मानता है ॥ दुख निवर्त का उपाय नहीं कर्ता बहुरि दुख आए ते दुख ही दे
खेगा ॥ अरु दुख एस कौं चला एले जावैगा ॥ अरु सुख जब आवैगा तब स
ख भी ऐस कौं चला एल जावैगा ॥ हे रामजी जो पुरख सर्व ब्रह्म कहता है वा
णी का अरु निश्चे तव हत है ॥ अरु सास्त्र भी बहु तदेखता है तब उह महामूर्ख है
जैसे जन्म का अंध होता है ॥ अरु सूर्ज कौं नहीं जानता ॥ तैसे उह आत्म अनभ
व ते रहता है ॥ जब आत्मपद का साक्षात्कार होवेगा ॥ तब ऐसे आनंद कौं पावे

गा जिसके पाए ते अवर पदार्थ रसते रहत भासहिंगे ॥ ब्रह्मा आदिक अवर का ऐ
श्वर्ज सभ पदार्थ विरस हो जावहिंगे ॥ ताते आत्मपद प्रापत होवहु ॥ अरु सदा आ
त्मपद की भावना करौ ॥ हे रामजी जैसे भावना होती है तैसा जगत भासता
है ॥ जैसे सुधमणि के निकटि जैसी वस्तु राखीऐ तैसा प्रतिबिंब होता है ॥ तैसे ही
जैसी भावना करीते सो जगत भासता है ॥ ताते जगत ब्रह्म सरूप जाणि ॥ अव
रहु सुण भासे सो धूम मात्र जाणि ॥ जैसे पथर कौं सिला होती है ॥ अरु तिस ऊपर
पुतलीआं लिखते है ॥ सो सिला रूप ही है ॥ तैसे एह जगत आत्म सरूप ही है ॥ ज
ब आत्मपद की तुझ कौं प्रापति होवैगी तब सभ पदार्थ विरस हो जावहिंगे ॥ हे
रामजी एह जगत मिथ्या है ॥ जो पुरख एस जगत कौं पदार्थ कर कहते है ॥ अरु
कहते हम मुक्त होवहिंगे ॥ सो ऐसा है जैसे अंधकूप विखे जन्म का अंधा गिरे ॥
कहे अंधकार के साथ मस्त होवहुगा ॥ सो मूरख है ॥ तैसे आत्मज्ञान बिना मु
क्त नहीं होता ॥ अरु आत्मज्ञान तब होवेगा ॥ जब सरूप का विचार होवेगा ॥ ताते
अपणा सरूप विखे स्थिति होवहु जो पूर्णानंद रूप है ॥ १६ ॥ इति श्री पुनह निर्वाण
प्रकरणे ॥ वसिष्ठ उवाच ॥ हे रामजी अहंता ते आदि लेकर जो जगत तुम
को भासता है सो मिथ्या भ्रम करके देखिआ है ॥ एस कौं त्यागकर अनभव सरूप विखे
स्थित होहु ॥ एस मिथ्या जगत विखे आस्था का त्याग करता है ॥ अरु जो ज्ञानवान
है ॥ तिस कौं जगत भ्रम का अभाव है ॥ अरु ज्ञानी अरु अगिआनी दोनो का लछ
न है ॥ तिस कौं जगत भ्रम का अभाव है ॥ तिसका दिस्टांत
श्रवण कर ॥ हे रामजी जैसे जिस पुरख का तप चडता है ॥ तिसका
मन नष्ट हो गइआ है ॥ तिसका
जल ताहे ॥ अरु त्रिखा बहुत होती है ॥ अरु जिस का मन नष्ट होता है ॥ तैसे जिस पुरख का आ
ल ताहे ॥ अरु त्रिखा बहुत होती है ॥ अरु जल की त्रिपति भी नहीं होती ॥ तैसे जिस पुरख कौं अग्नि
दिसटि आती है ॥ अरु जल की त्रिपति नहीं होती ॥ अरु भोग रूपी जल की त्रि
खा बहुत होती है ॥ जिसका दिस्टांत जलता है ॥ अरु भोग रूपी जल की त्रि
तन रूपी चपु चढि आइआ है ॥ तिसका दिस्टांत मिटि गइआ है ॥ तिसका दिस्टा
आ बहुत होती है ॥ अरु जिस के गिदत अज्ञान रूपी तप मिटि जाती है ॥ अरु तापनिवर्तक
सीतल होता है ॥ अरु भोग रूपी जल की त्रिखा मिटि जाती है ॥ अरु
तिस का उपाउ श्रवण कर ॥ पासौं के अर्थ वाद कर बुधि भ्राम कि होजाती है ॥ तैसे
मन रूपी मृग मरुथल के जल कौं देखकर ता हि जो तिस के कारहा एह मृग मरुथल कौं अ
हो ॥ न एह जगत है ॥ जब तेरे अंतर निश्चे कौं पावेगा ॥ तब सभ जगत तुझ कौं आ
तमा ही सरूप भासेगा ॥ अरु किसी पदार्थ की वांछा न रहेगी ॥ अरु सभ पदार्थ तुझ कौं
मिथ्या जाणकर अपणा भी अभाव करेगा ॥ तब पाके अंतर कुचैतन परमानंद रूप
भका अधिष्ठान पाइ रहेगा ॥ हे रामजी एह अहंता रूपी जग जो उठि आइ है ॥ सो अहं का
थ्या है ॥ अरु एस मिथिआ पुरख आगे नाना प्रकार जगत कल्पिआ है ॥ सो अहं
र भी मिथ्या है ॥ अरु जगत भी मिथ्या है ॥ तब तैं अपणा सरूप विखे स्थिति होवेगा
तब जगत भ्रम मिटि जावेगा ॥ तब ज्ञानतमे जैसे सप्न विखे जगत भासता है ॥ अ
र बहुत सुंदर पदार्थ भासते हैं ॥ अरु तिन की एछा करता है ॥ अरु जब जागि आन हो
तब जाणता है ॥ जो स्वप्न विखे एह पदार्थ नासकदावित होवणा ॥ अरु कहता है नाअ
न का रूप देखो अरु सभ का भोजन करीअ ॥ पत्यादिक एछा करता है ॥ अरु जब जागि
उठिआ तब जाणता है जो मेरा ही संकल्प था ॥ बहुड़ि गाढ़ पदार्थ सुंदर सम भए
भी होते हैं ॥ अथवा भासते हैं ॥ तौ भी उन कौं मिथ्या जाणता है ॥ तैसे जब आत्म ए
हति सविखे जाणता है ॥ तब सर्व ब्रह्म ही भासता है ॥ हे रामजी ऐसे जगत का बीज अ
हंता है ॥ जैसे इस लोक का बीज पाप होता है ॥ तैसे जगत का बीज अहंता है ॥ ताते तुम
निरअहंकार पद विखे स्थिति होवहु ॥ एह समता ही सरूप है ॥ ध्यान कर कै जग

वं॰
मं॰
४४
64

तभासताहे॥हेरामजीजगतका अंत अति अभावहे॥अरु भ्रमदृष्टिककै सर्प
भासताहे॥जबविचाररूपी दीपकसाथदेखताहे॥तबसर्पकाभावदूरिहोजाता
हे॥तैसे एह जगत आत्माविषे भ्रमककै भासताहे॥जबविचारककै जगतका
अभावनिश्चयकरेगा॥तबआत्मपदजिज्ञासुहीको भासेगा॥जैसे बसंतरुत आवती
है॥तबफूलफलटास दृष्टिआवतेहैं॥सोएकहीरसएतीसेगिआकौधारताहे
तैसेतूं जबआत्मस्वरूपविषे स्थितिहोवेगा॥तबतुझकौ सर्वआत्मस्वरूप भासे
गा॥अरु सबनाम आत्माही भासेगा॥हेरामजीजो जगतके पदार्थ भासतेहहि॥
तिनकी ओर मतजावहु॥जोएतेकेजानेवालाहे॥जिसकर सभपदार्थ प्रकाश
तेहे॥तिसविषे स्थितिहोवहु॥अरु एह मानरव सभ भ्रमिगोंकीनिआएहै॥जैसे
भ्रिगमात्रिस्थलविषे जललिजाणिकरदौरतेहैं॥तैसेजगतरूपवनकौ भ्रमकाहे॥
अरतीनालोकारूपस्थलकाजलहे॥तिसविषेमनरवरूपीभ्रिगपरोदोडतेहैं॥अ
रदोडतेदौरतेहारिपरतेहैं॥अपनेकौकदाचितप्राप्तिनहींहोते॥काहेतेजोजग
तकेपदार्थसभअसत्तहे॥हेरामजीरूपअवलोकमनस्कारसभभ्रमिगत्रिष्णाकाथ
लहे॥ऐसकौजोसतजाणतेहैं॥तेमूरखहे॥अरुएहजगतगंधर्वनग्रकीनिआ
एहे॥जागिकरदेखएसकौसतजाणकरकाहेकौसतजाणकरकाहेकौत्रिष्णा
कर्तीहैं॥एसकौसतजानकरकाहेत्रिष्णाकाणिपहोतावंधहे॥हेरामजीतूंआ
त्माहे॥ऐसकीएछाकरतूआपमानकौहोताहे॥जैसेसिंघपिंजरेविषेआएआ
दीनहोताहे॥अरुबलकरपिंजरेकौतोडडारताहे॥तोबडेबनविषेजाएनिवास
कर्ताहे॥तबनिर्भैहोताहे॥तैसेतूंभीवासनारूपीपिंजरेकौतोडकरआत्मपदविषे
एसस्थितिहोहु॥जोआत्मासर्वकाअधिष्टानहे॥अरुसर्वउरतेउतिक्रिष्टहे॥ति
सपदकौतूंप्राप्तिहोवेगा॥अवैफुरहोवेगा॥परमउपसमगोएपदकौप्राप्तिहोवे
गा॥अरुद्वैतभासमिटिजावेगा॥केवलपरमार्थसत्तापदीभासेगी॥एसीकानामनि
र्वाणहे॥अरुएहचारोभूमिकाएस्थानहे॥जैसेकोउपैंडाउतपताआवे॥अरुतिसकौ
शीतलएस्थानप्राप्तिहोवै॥तबशांतिकौपावताहे॥तैसेएहचारोशांतिकाएस्थान
हैं॥निर्वाणतुराहे॥अरुनिरअहंकारता॥अरुवासनाकात्यागकरणा॥अरुपरमउप
सम॥एनककैगोएविषेस्थितिहोवणा॥एहशांतिकाएस्थानहे॥जबतूंएस्थिति
होवेगा॥तबदृष्टदर्शनदृश्यत्रिपुटीकाअभावहोजावेगा॥केवलदृष्टाहीरहेगा
हेरामजीदृष्टाभीउपदेशजनावणेकेनमित्तकहाहे॥जबदृश्यकाअभावहुआ
तबदृष्टाकिसकाहोवे॥केवलअपणाआपभावविषेस्थितिहे॥
नित्ततेवहतअद्वैतचेतनहे॥तिसविषेस्थितिहे॥ज्योंकात्योंहेचेतन
हजगतजोभुजन्मकेदेणेहारीहे॥सोजगतकेपदार्थसत्यदोएभासतेहहिं॥सोइस
केदेखणेहारेहे॥एनकौविरवजाणकरत्यागकर॥जैसेअज्ञानकाप्रविखतवैरिभासतेहे
अरु॥अज्ञानहोते॥तैसेएहजगतअज्ञानहोताहै भासताहे॥आत्माविषेदृश्यअरुकोउ
नहीं॥एकहीपदार्थविषेदोएदृश्यादीहे॥ज्ञानीउसकौआत्माजाणतेहैं॥अरुअज्ञा
नीजगतजानतेहैं दोहुए॥जैसेभ्रमतौकीरात्रजोसंतोंकादिनहोए॥जोलोकनेदिन
जानेआसत्तरहितहोसोए॥गिआनीपरमार्थतत्वविषेजागेहें॥अरुसंसारकीओ
रतेसोएरहेहें॥अरुअज्ञानीपरमार्थततेसोएहुएहें॥अरुसंसारकीओरसावधान
है॥ऐसकरकेजगतकीभावनानहींफुरती॥तैसेज्ञानीकामनसततपदकौप्राप्तिहुआ
ज्ञाननहींहोता॥तैसेज्ञानीकेनिश्चैविखजगतकछुवस्तनहीं॥हेरामजीजबज्ञा

नउपजताहे॥तबजगतकछुभिनवस्तनहीभासता॥जैसेजलकीतरंगजलवि
खहोतीहैंतौभिननहीभासती॥तैसेज्ञानीकौजगतभिननहीभासता॥जैसेबी
जविखब्रिछहोताहे॥तैसेमनविखजगतएस्थितिहोताहे॥जैसेब्रिछबीजरू
पहे॥तैसेजगतमनरूपहे॥जौजगतनष्टहोवे॥अरुमननष्टहोवेतौदृश्यभीनष्ट
होवे॥एककेअभावहुएदोनोकाअभावहोजाताहे॥अरुमननष्टहोवै॥तौफुरना
भीनष्टहोवे॥अरुफुरनानष्टहोवेतबमनभीनाशहोताहे॥हेरामजीएहअनंतवी
हारिजोभासताहेजगतकसाएमनहे॥तातेमनकौएस्थितिकरकेदेखेगा॥तबज
गतकीसततानभासेगी॥अज्ञानीकेरिदिविखदृढएस्थितिहे॥तातेदुखकौपाव
ताहे॥जैसेबालककौअपणापछावाविखभूताभासताहे॥अरुदुखपावताहे॥अरु
कोउनिकटहिरवताहोवेतिसकौनहीभासता॥अरुदुखभीनहीपावता॥हेराम
जीएहजगतकछुमनवस्तहोतीतौज्ञानीकौभीभासतातेज्ञानीकौनहीभासता
ताते जगतकछुवस्तनहीजैसेएकहीअस्थानविखदोपुरखबैठेअहि॥जि
सकौनिद्राआएहेतिसकौस्वप्नजगतपडाभासताहे॥अरुनानाप्रकारकीचेष्टाप
श्रीहोतीहे॥अरुदूसराजोजागतावैठाहे॥तिसकौउसकाजगतनहीभासता॥ते
सेजोपुरखपरमार्थसत्ताविखजागतहे॥तिसकौजगतशून्यभासताहे॥हेरामजी
एहजगतमिथ्याहे॥तिसकीत्रिष्णातकाहेकौकर्ताहे॥अपणाआभावविखएस्थि
तिहोहु॥एहजगतपरभावहे॥असनाणाकरभावेजैसोचेष्टाकर॥तउसकौबंधन
नकरेगी॥अरुअपूर्वपदकौप्राप्तिहोवेगी॥जैसेमसकेत्रिणअग्निजल्लहएकौपवन
उडाएलेजातीहे॥तबनहींजाणिआजातीजोकहागए॥तैसेज्ञानरूपीअग्निसेसार
रूपीत्रिणकौजलाएआ॥अरुनिरहंकारूपीपवनेकरउडाइआहेआजाणीआगा
नहींजोकहागएआ॥जोलाखजोजनेतोअजनतचलिआजावे॥तौभीअकाशहीदृष्टि
आवताहे॥सभकौधाररहाहे॥तैसेसभजगतदृष्टाकौआत्माहीधारताहे॥अ
रुजैसेसावकाशहेतैसेअर्थआत्माविखकोउनहीं॥एसकौकोइकसंदेजावसबआदि
अरुअर्थकाअधिष्टानआत्माहीहे॥हेरामजीरूपअवलोकमनस्कारमिथ्याहे॥तैसेआत्मा
हे॥ताततिएनकात्यागकरो॥जैसेमात्रुस्थलविखजल्लाभासमिथ्याहे॥तैसे
विखजगतमिथ्याहे॥अरुभ्रममात्रहे॥एसकेसेनवधककैदुखीहोताहे॥तैसेआत्माविखेज
जेवडीविखसर्पमिथ्याहे॥अरुसिपीविखरूपाभ्रममात्रहे॥तैसेआत्माविखएस्थितिहोहु॥अ
गतहे॥तेआत्माब्रह्महे॥अरुदुखहूतेरहतहे॥अपणास्वभावविखएस्थितिहे॥तौभीप्राप
रआत्मविश्वष्टककैदेखजोसर्वात्माहे॥अथवाजगतकौमिथ्याजाणे॥तौभीप्राप
आत्मपदरहेगा॥जैसजाग्रतसुपनसुखोपतिअभावविखप्रातपदप्रापरहताहे॥
तैसेजगतनकेअभावहूएतेभीप्राप्तआत्मपदभासेगा॥एहजगतआतिअतिअभा
वहे॥अरुजोदृष्टिआवताहे॥सोभ्रममात्रहे॥एककालविखहोताहे॥अरुदूसरेका
लविखएसकाअभावहोजाताहे॥स्वप्नविखेजाग्रतकाअभावहोजाताहे॥अरनाश
ताविखसर्वप्रकारअभावहोजाताहे॥अरसुखोपतिविखदोनोकाअभावहोजा
ताहे॥तातेभ्रममात्रहे॥अरुविश्वआत्माकाचमत्कारहे॥जैसेसमुद्रविखतरंग
होतेहे॥तैसेआत्माविखजगतहे॥अहंताकककैउदयहोताहे॥अहंताकेअभावते
अभावहोजाताहे॥जिनकेअहंताकाअभावहुआहे॥ओहीसंतहे॥अरुउतमपु
रखहे॥जिनमहानुभावपुरखोंकाअभिमाननष्टहोएगएआहे॥अरुभोगोंकी
आसानष्टहोजातीहे॥उहनिभ्रांतरूपनितहीसमाधरूपहोतहे॥१६२॥इति
श्रीब्रह्मएकतापुतपादनंनामसर्गः॥रामउवाच॥ओंहेभगवनएहमनर

वं.
सं.
५५

वीम्रिगपड़ामटकताहै॥ अरवनविखेजलताहै॥ उरकवनव्रिछहै समाधानरूपजि
सकेनीचेआशांतपदकोप्रापतिहोवे॥ उसकेफलफुलताकेमहोतेहें॥ अरश्रि
कुकहाहोताहै॥ सोक्रिपाकरकहो॥ वसिष्ठ उवाच॥ हेरामजीजिसप्रकारसमाधा
नव्रिछहोताहै॥ उत्पतिसोसुणो॥ प्रथमकरकेऐसेकेपत्रशुद्धपल्लवतेलो॥ करसभ
समाधानरूपीएसव्रिछकाहै॥ हेरामजीएहव्रिछसभजीवहुकोसाधनेजोगहै
कल्याणकेनमित॥ सोअविनऐसेकाक्रमसुणो॥ बलककेउत्पतिहोताहै॥ अर
सतजनोकेवनविखेविधिआनरूपीव्रिछउपजताहै॥ अरचितरूपीपिथ्वीवि
खेलायगताहै॥ अरवैरागरूपीएसकाबीजहै॥ सोवैरागदोप्रकारकाहोताहै॥ जो
कोईककष्टदुखआनिप्रापतिहोताहै॥ तिसकरभीवैरागउपजिवताआहै॥ अरय
गामधरिसानिहकामहोताहै॥ तवभीवैरागउपजताहै॥ तिसवैरागबीजको
चितरूपीभूमकाविखेपावताहै॥ अरशुभवासनारूपीहलफिरताहै॥ अरसतोकी
संगतिअरसतशास्त्ररूपीजलकरसेचीताहै॥ सविचाररूपीक्यारीविखेसोजलनिर्म
लहै॥ अरशीतलहै॥ अरवसिदअगमहै॥ कोमलताअरदयाअरूपीजलकरसेची
ताहैबीजको॥ तवउबरनेकीआसाहोतीहै॥ अरशुभक्रियारूपीझाड्केकेअरशुभ
अड्डेकोहरिकरीताहै॥ अरवहुतेजस्तलेभीरखिआकरीतीहै॥ सोआत्मविचार
रूपीसूर्जकीकिरणोकरसकाएताहै॥ अरतिसकेचडोफेरथीवलनरूपीवाडिकरी
अ॥ अरतपअनतेरथहूकाणस्नानकरयडेओपरतावोवेहावाणाजोबीजजलन
जावै॥ अरबीजकीआसारूपीपंछीनेरखिआकरणी॥ जोवैरागरूपीबीजकोका
टिनलेजावै॥ अरअभिलाखरूपीवृद्धबैलनेरखाकरणी॥ जोखत्रोवखेअवेश
करकेएसकोमर्दननकरे॥ तिनकेनमितसंतोखअरसंतोखकीएसत्रीमुदताहोनी
रासवैठावणी॥ अरएसबीजकेनाशकतीजोमेचौनेउपजताहै॥ गडातिसतेभी
रखिआकरणी॥ सोकिआगडाहै॥ संपदाधनकीप्रापतिहोवणी॥ अरसंदरएस्त्री
कावणा अरडरवतोउपरदयाकरणी॥ अरसंतोखमंत्रजपपाठकरणाएन्यादि
कशुभक्रियाकरणी॥ एहशुभक्रियारूपीएतलीजेत्रणसकेविदमानगालोअहि
तोइविहोजाताहै॥ अरहुसवपरमउपाएहहै॥ जोसंतोकीसंगकरणी॥ अरस
तप्रास्त्राकाश्रवणाकरणा॥ अरशणवजोउकारतिसकाजापध्यानकरणा॥ अ
रतिसकेअर्थकोविचारणा॥ एहीजोहेत्रिसूलरूपतिसकरत्रिसूलकरणा॥ सो
गडकेनाशकापरमउपाउहै॥ जवएतेशस्त्रानवरखिआकरीअ॥ तवबीजउत्प
तिहोवे॥ तिसकोसंतोकासंगअरसतशास्त्रोकाविचारहआवरणाकालका
मेघ॥ तिसजलकरसेचीअे॥ तवअंगरीनिकसतीहै॥ अरवडाशकाशहोताहै
जैसेहूतीआकाशचंद्रमाहोताहै॥ अरसभकोउमततेशणामकतीहै॥ तेसेस
तोखदएआअरजसअंकुरनिकसताहै॥ तिसकेदोपत्रनिकसतेहै॥ एक
वैरागअरदूसराविचार॥ सोदिनदिनप्रतवधताहै॥ अरशास्त्रोतेजोअवण
कीआहै॥ जोआत्मासतहैअरजगतमिथ्याहै॥ तिसकावारवारअभ्यासकरणा॥
एसजतनकेसाथअरवअरशरीरनवहूताजावैगा॥ अरतिसकेडालवडेहोतेजा
वेंगे॥ हेरामजीजवबडासवडेहोतेहै॥ तववानरजोसपरवडकरतोडडारतेहैं॥ सा
रागअरद्वेखरूपीवानरहैं॥ तिसकरएसव्रिछकोवैरागअरसंतोखअरअभ्या
सरूपीरसकरदृढकरनो॥ अर्थएहजोपुष्टिकरणी॥ जेसमसमेरपवतहोताहै
तेसेसंतोखकरपुष्टकरणी॥ जवऐसेहुआ॥ तवसंदरपत्रअरडामलागहिगे

अरफूलमेजोएसकेसाथलागिरहीहै॥ अरहेतुमाशमअनंतएसकोढावरहोवे
ती॥ शांतअरप्रीतलताअरसधताकोमलताअरदयाअरजसअरकीर्तएता
दिकगुणआनप्रगटहोवतेहै॥ तिसकेनीचेमनरूपीम्रिगविश्रामपावताहै॥ अ
रशीतलहोताहै॥ अरध्यात्मकअधिदैवकअधिभूतकतापमिटिजातेहैं॥ अरप
रमशांतकोप्रापतिहोताहै॥ हेरामजीएहहैमैनेजोकोध्यानरूपीव्रिछकहाहै॥ जे
हाएहव्रिछउत्पनहोताहै॥ तिसअरस्थानकीशोभाकहीनहोजाती॥ जोएसव्रि
छकोपामनकोप्रापतिहोताहै॥ तिसकेतापमिटजातेहै॥ अरशांतकोप्रापतिहोता
है॥ अरएहव्रिछवधताहै॥ सोअमनरूपीप्रकाशोकअरअवधडताहै॥ अरएसविखेवे
रागरूपीरसहै॥ अरछिन्नवधकोमतालहै॥ तिसकरएष्टहोताहै॥ जोएरवएस
कोआस्रालवेगा सोशांतकोप्रापतिहोवेगा॥ हेरामजीजोमनरूपीम्रिगएसधि
आनरूपीव्रिछकाआश्रानहीलेता॥ तवलगभटकतारहताहै॥ अरशांतकोन
हीप्रापतिहोताहै॥ जैसेम्रिगवनविखेभटकताहै॥ तिसकोअज्ञानआमाद
मैजोगरूपीवधकमारतालागताहै॥ तिसकरकष्टपावताहै॥ तिसकेभेकरदि
शवक्केनिकटिआवताहै॥ तवउहुआपोआपएसकोपकडकरखदेहताहै॥ ए
सकरवडेकष्टकोपावताहै॥ जैसेगिडावर्वासोएहोइआहै॥ तवएनकोअरआव
ताहै॥ तवअपणीअपणीविविअहुकोरखधमानकतीहै॥ एनेतभैकरवउहुरदे
नेकोजाताहै॥ तववनकीतपतिकरदुखीहोताहै॥ सोविविअहुकीअप्रापतिउ
पीतप्रहै॥ तिसकोत्यागकरसरूपीअस्थानोकोदौडताहै॥ प्रानकेनमितज
वडहाजाताहै॥ तवकामरूपीसंम्यानतिसकोमारनदौडतेहै॥ तिनकेभेकरवहु
डवनकीओरदौडताहै॥ वहुडकोधरूपीअग्निजलावतीहै॥ वहुडिखासारूपीम
छरडखदेतेहै॥ अरलोभमोहरूपीअधेरीआचलतीहै॥ तिसकरअधहोजाताहै
हेवहुरत्रिगाकेदलकअग्रहणकरतेहै॥ तवहोएविरखमाडपडताहै॥ राहुगनकरे
अकादेहूऐहै॥ सोकवनहैपुत्रधनतिनकोसदरजालकरग्रहणकतेहै॥ फेरम
मताविखिगडपडताहै॥ एसप्रकारएसाडुखपावताहै॥ हेरामजीजवएहमनफट
वोलताहै॥ तवम्रितकाविखलोटताहै॥ ऐसीचेष्टापडाकतीहै॥ अरजवमानरू
पीविचिआउआवताहै॥ तवएसकोभटनकरताहै॥ तवधिआनरूपीव्रिछतेकम
लहोताहै॥ तवएतेकष्टकोपावताहै॥ जोमानरूपीविचिआडेतकूदताहै॥ तवश्रा
सारूपीजजीरसाथवधाएमानेहोताहै॥ जवलगउसव्रिछकेनिकटिनहीआवता
तवलगवडेवडेएस्यानोविखेजाताहै॥ तमालव्रिछआदिकहुकेभीतलजाता
है॥ अरकंठोकेव्रिछोतलेभीपरिशांतकिसीएस्यानविखेनहीपावता॥ ऐतेवडे
कष्टकोपावताहै॥ हेरामजी [illegible] पदे
ना स॰ ग॰ अ॰ व॰ शि॰ उ॰ वा॰ ओहेरामजीएसप्रकारमृडबुधीमनरूपीहरनपरा
भटकताहै॥ तातेमेराएहीउपदेशहैजोतमकोउसव्रिछकासंगहोवे॥ जव
उसव्रिछकेनिकटिआवताहै॥ तवशांतप्रापतिहोतीहै॥ अरजवएसकेनीचे
आएवैठताहैतवतीनहुतापअंतःकरणतेमिटिजातेहै॥ अरवरजेतेकहुव्रिछहैं
तिनकेनिकटिगएआमनरूपीम्रिगशांतकोनहीपावता॥ सोअवधव्रिछकि
आहै॥ विविधरूपीव्रिछकेनिकटिशांतकोनहीपावता॥ जवधिआनरूपीव्रि
छकेनिकटिआवताहै॥ तवशांतकोपावताहै॥ अरवधिविडआवताहै॥ जे
ममनेमगहीकमलसजेकोदखकरविडतेहै॥ वहुडिउसकेफलकोदखताहै॥ जो
अनभवरूपीतिसकेफलहै॥ अरपत्रफूलशाखोकाविचारहै॥ तिनकोदखकरवेड

व॰ म॰ ४६

अनंदकोंप्रापतिहोताहै॥अरबिछुडाउगपराउडजाताहै॥चट्टिकारूपिपृथ्वीभूम
कात्यागकर्ताहै॥जैसेपक्षपाणीकुंजकात्यागकर्ताहै॥अरुनउडजनसंदरपाखे
रकाशोभापावताहै॥अरतिसबिछुडाऊपरजबचडताहै॥तबपिंडतानहीउसके
पत्रबहुतबलीहै॥उनकेआश्रयबहताहै॥सोकवनपत्रहै॥ध्याननरूपीबिछु
तिसकेसतनपापरूपीपत्रहै॥जबध्याननरूपीबिछुडनेउडनताहै॥तबपशास्त्रआ
थीविखेदहरताहै॥अरजलतेकहहैदेखताहै॥साक्षात्कारवृत्तिविखेद्रिष्टिआवते
है॥अरअपणीपिछलीचेशाकोंस्मरणकरपछतावताहै॥जैसेकिसीनेमथपान
कीआहोए॥अरतिसविखेनीचवेशोकरहोए॥अरजबमथउतरताहै॥तबपछोता
वताहै॥तैसेमनरूपमृगअपणीचेशाकउधिकारकरताहै॥अरकहताहैजोबआ
अभ्यासेहै॥जोएताकालमेंएसाबिछुनेवमरवहआफिरआहों॥भटकताहै॥आ
बपुककोशांतताप्रापतिहोतीहै॥तैसेमनरूपीमृगकोंशांतप्रापतिहोतीहै॥हे
रामजीपुत्रधनएस्त्रीनादखीतहै॥तिनकोंसंकल्पपुरकीनिआएदेखताहै॥अ
रसप्रवनदेखताहै॥जैसेसप्रनेजागेसप्रकेपदार्थोंकोस्मरणकरताहै॥जैसेअन
विखअभिमानहोतानहीं॥तैसेएनविखहैउसकों॥जबअनभवरूपीफलकोंपा
नकर्ताहै॥तबबडेअनंदकोंपावताहै॥जिसविखेवाणीनहीप्रवृतिसकती॥प
रमशांतअरनिर्मलपदकोंप्रापतिहोताहै॥अरनिर्वानसेपदकोंप्रापतिहोता
है॥जोमनकीविखहोवेसोअज्ञानमेंपदहै॥जोमनकीविखनहीसोनिरतसेपद
है॥जोएडीअहंकाविखहैतिसकानाशभीहोताहै॥अरजोएडीआमनकाबि
खनहीतिसकानाशभीनहीहोता॥सोअविनाशीपदकोंपावताहै॥अरवाण
तेआदिलेकरजोहैशास्त्रतिनकाविरोधीदृष्टीअानउदेहोतीहै॥जिसडरडरशाम
लगाहोवेअरबुटेउसकीसन्मखरारवीअ्रे॥तौंनिकसिआवताहै॥तैसेअन
भवरूपीदृष्टीकेसन्मखबहुएबंधनरूपसरप्रलयपडतेहै॥अरपरमपदकोंपाव
ताहै॥हेरामजीज्ञानवानजगतकीओरतेमृतकहोजाताहै॥संसारकालेप
उसकोंकछुनहींलागता॥जैसेकाठीअविनाअशिप्रशांतहोजातीहै॥तैसेज्ञा
नवानकीवृत्तवासनातेरहितशांतहोजातीहै॥अर्थयहजोसंसारकीसततातें
रहनचेष्टाहोतीहै॥बहुडसंसाररूपीअग्निउदेनहीहोती॥अरडवेलएककाल्प
भीमिटजातीहै॥अरजोनमनिकोंनिश्चएहुरमरहताहै॥अपणेसरूपविखे॥अ
रजैसेमारूथलकेभूपकोपेउएछानहीकर्ता॥तैसेज्ञानीविविविअरहुकी
त्रिश्नानहीकरता॥जिसनेआत्मअनभवरूपअंमृतकोंपानकीआहै॥तिसकों
विखरूपकोंजीकीएछानहीरहती॥आहुपरसदानिरवासीहै॥जबपहप
रखानिर्वासहताहै॥तबकेवलजोबुधिवृत्तीहै॥सोतबबुधकीअवृत्तीसम
लीनहोजातीआहै॥केवलआत्मतमात्रप्रष्टरहताहै॥अरएसेसराभावनाशि
होजाताहै॥जबलगअकगएआतमसाधहोजाताहै॥तैसेजबमुनिकीउपा
धनष्टिभएतबसधआत्माहीरहताहै॥अरएकरसभासताहै॥हेरामजी
संसारहुतीभ्रमकरकेभासताहै॥जैसेपथरकीशिलाविखेपुतलीआअनउ
करीभासतीहै॥सोनसतहैनअसतिहै॥जोपथरतेभिंनदखीअनोंसतनही
जौंशिलाकरदेखीअतौंउहीरूपहै॥तैसेजगतिआत्मातेभिंनसतिनहै॥आ
त्मसतातेआत्मरूपहै॥जैसेअभिबालककेरिदेविखजगतकाशब्दअरअ
र्थनहीहोता॥तैसेज्ञानीकीचेष्टाभीपडीहोतीहै॥शास्त्रविरागकर्के॥परउ
सकेनिश्चेविखजगतकेशब्दअरअर्थकाअभावहै॥हेरामजीजाकछुप्रारब्ध

होतीहै॥सोअवशउसकोंभीआनप्रापतिहोतीहै॥मिटतीनहीशुभअशुभवाअ
शुभ॥जैसेमहतबुढाहोताहैतीआहुपंनशिननहीहोतीआ॥मतमतरूपक्रियाकोन
शिहोताहै॥तैसेप्रारब्धकर्मनष्टिनहीहोता॥अरअज्ञानीकेरिदेविखेसंसा
रसतभासताहै॥अरभिनभिंनपदार्थभासतेहै॥अरपदार्थोंकाज्ञानहै
अरज्ञानीकेरिदेविखेआत्माकाज्ञान॥अरसंसारसततातिसकोंनहीभास
ती॥हेरामजीएहजोसमाधरूपीबिछुमेतुझकोंकहाहै॥जोविषमजगत
तिसकोंभिंनताकरीअ॥तौंअनभवरूपीफलप्रापतिहोताहै॥अरजोबाध
तेरहतहोकरकर्ताहै॥तौंअनेकजतनहकरभीफलकीप्रापतिनहीहोती
जोआत्माहृदहै॥अरसतचितआनंदहै॥अैसीभावनाउसकोंनहीप्रापतिहो
ती॥अरजनकोंएहिभावनाहोतीहै॥तिनकोंभोगोंकीएछानहीरहती॥जैसेकि
सीकोंअमृतपानकीआहोताहै॥अरवहअमलअरकटककुफलोंकीवांछानहीक
र्ता॥तैसेज्ञानीएछाअनहीकर्ता॥जैसेमनुएकेपावकोंअग्निलागीअरउपरिते
तालाणपडेपरचलतीतोनहीजातीता॥जोकहाजाएपडा॥तैसेजगतरूपीकापाव
ताना॥अग्निकरहदयकीआहुआवेरागरूपीपवनकरकेउडापआनहीजातीता
सोकहाजाएपडा॥अरकाशहोअकाप्रभासताहै॥जगतसततनहीभासता॥तउ
बहुहिरत्रिश्नाकिसकीकरे॥त्रिश्नातेरहतपरस्थितिहोजाताहै॥हेरामजीउ
तौंकामलत्रिश्नाहै॥त्रिश्नाकरमोटकताहै॥जैसेपर्वतोंकेपरिस्थितवलगा
अउतेस्थ॥परहुविनाशीउपातेरहजहूएगभीपरस्थितिहोरहेहै॥तैसेजबम
नतेवास्नानिष्टिहूए॥तबमनपस्थिरहोजाताहै॥हेरामजीपेडापवाकतेदे
प्राकोंतबप्रापतिजाएहोताहै॥जबपनरदेशोंकात्यागकर्ताहै॥तैसेआत्मा
ध्यसमरूपपरमानंदअपणाआपतबप्रापतिहोताहै॥जबयनपुरुलोकएवण
कात्यागकरे॥अरजबप्रापतिआत्माकोंभए॥तबनिर्विकल्पसमाधकरनिर्वि
कल्पचेतनकासाक्षात्काररहोताहै॥जबसमाधविखेसाक्षात्कारहुआतब
उथानकालविखेभीसमाधिएपस्थितिहोताहै॥अरपरमनिर्वाणपदविखे
एस्थितिहोताहै॥अरचितरूपीबलदूरिहोजाताहै॥तैसेसतोंकोउबलहोतेहै
अरउसकोंखेचकरबहुतद्रिढाशीलताहै॥तबउहसथीहोएजातीहै॥तैसेजिन
कउपाकुसमाधविखसाक्षात्कारहुआहै॥तिनकोंउथानकालविखभीउ
हीभासताहै॥अरजनकोंउसकाप्रमादिहै॥तिनकोंजगतभासताहै॥हेरामजीबन
एकहै॥परतिसविखेदोडदृष्टिहै॥तैसेजबडएकहै॥समकदर्शीकोंजेवरीहीभा
सतीहहि॥अरअसमकदर्शीकोंसर्पहोभासताहै॥तैसेज्ञानवानकोंआत्माभा
सताहै॥अरअज्ञानीकोंजगतिभासताहै॥जिसपुरखज्ञानककेंजगतिकों
असतिनहीजाणिआ॥तिसकोंअसनाणजोचितकीअग्निहै॥तिसककेंका
उकारजसिद्धहोताहैनही॥अरजिसकोंसरूपकीएछाहै॥अरत्रिश्नाकेनाश
करणोंकोशुजतनकर्ताहै॥अरजगतकोंमिथ्याविचारताहै॥सोविचारकीएने
आत्मपदकोंप्रापतिहोवेगा॥अरत्रिश्नाभीतिसकीनिवर्तहोजावेगी॥हेराम
जीज्ञानवानकीत्रिश्नासभावककेंमिटिजातीहै॥जैसेसूर्जकेउदेहूएतेअधि
कारनष्टिहोजाताहै॥तैसेववस्तसताकरतिसकीत्रिश्नानष्टिहोजातीहै
अरपरमपदविखेएस्थितिहोताहै॥हेरामजीजिसकोंइप्राविखेविरसताहै॥सो
ताहै॥साउत्तमपुरखहै॥सामानखपशरीरकोंइप्राविखेविरसताहै॥हेरामजीजब
पापकरअस्मेहोताहै॥तिसकोंमेरानमस्कारहै॥अहंमेरागुरूरहै॥हेरामजीजब

वं०
म०
५८

ऐसकीवृतिविविविग्रहहैतेविरसहूऐ॥तवकल्याणहूआ॥वैरागकेकैबोधहो
ताहै॥अरबोधकरकैवैरागहोताहै॥परस्परदोनोंसनबंधीहैं॥जोऐकआवताहै
तवदूसराभीआवताहैं॥जवएहआवतेहैं॥जबतीनोएषणानिवर्तहोजा
तीहैं॥जवतीनोंएषणागऐतवआत्मिककीप्राप्तिहोतीहै॥सोकैसेआ
पतिहोतीहै॥सोश्रवणकर॥सतशास्त्रोंकाश्रवणकरणाअरसंतोंकासंग
करणा॥तिसकरअपणेसरूपकानिधिआसनकरणा॥ऐसकरआत्मपदकी
प्राप्तिहोतीहै॥एहतीनोंपरस्परसहायकिहैंसथ॥जैसेअग्निचरनोंवाला
कीटहोताहै॥जोप्रिथमचरनकोंराखकरअवरचरनकोंउठावताहै
तवस्थानचलिआजाताहै॥तैसेसंतोंकासंगअरसतशास्त्रोंकाश्रवण
करआत्मपदकाअभ्यासकरताहै॥तवशीघ्रहीआत्मपदकोंप्राप्तिहो
ताहै॥अरजगतकाअभावहोजाताहै॥हेरामजीजगतकेभावअरअभाव
कोंज्ञानीजानताहै॥जैसेजाग्रतसुपनसखोपतकोंतुरीआवालाजानता
है॥तैसेजगतकेभावअभावकोंज्ञानीजानताहै॥जैसेअग्निविखैसूक
त्रिणपाऐअरबडूदिद्रिष्टिनहीआवता॥तैसेज्ञानवानकोंजगतदिद्रिष्टिन
हीआवता॥हेरामजीज्ञानवानकोंसर्वदासमाधहै॥उथानकदाचितन
हीहोता॥तवलगजोसपदकोंप्राप्तिनहीभएआ॥तबलगसाधनाविखे
जुडताहै॥जोसपदकोंप्राप्तिभएआ॥तवबहुरिजतनकोंऐनहीरहिता
हेरामजीऐसचितकेदोप्रवाहहैं॥ऐकजगतकीओरजाताहै॥दूसरासरूप
कीओरजाताहै॥जोजगतकीओरजाताहै॥सोऊपाऐकहै॥अरजोसरूपकी
ओरजाताहै॥सोऊपाथकोंनिवर्तनिवर्तकरनेहाराहै॥जैसेऐककाटीगिल्ली
होतीहै॥अरऐकसरकीहोतीहै॥जोगिल्लीहैतिसविखैउपाधिजलिहै॥जै
बजलनसहोजाताहै॥तवसरथपदकोंपावतीहै॥हेरामजीवादिजोकर्ते
हैं सोदोप्रकारकेहैं॥जोवादिकिसीकोंदुखदेवेसोमूरखकर्तेहैं॥अरजो
परस्परप्रतितिनिरूपणमित्रभावकरकरणासोज्ञानवानकर्तेहैं॥जैसावा
दकरताहै॥जिसवादिकादिढअभ्यासकरताहै॥तैसाहीरूपजैहोजाताहै
जोकछिफ्रगडाकरताहै तिसकाओहीरूपहोताहै॥अरसरूपकावादिमित्र
ताकरकर्ताहै॥तवओहीरूपहोजाताहै॥उसपदकोंपाऐकरपरमशांत
कोंप्राप्तिहोताहै १९४ इतिश्रीमतमिर्णापविश्रानेजोग प श्रोनाम
सर्गः॥वसिष्ठउवाच॥ॐहेरामजीजिसपुरखनेध्यानरूपीब्रिछकुं
फलकोंजाणकरपानकीआहै॥अरतिसकोंपचाएआहै॥सोतिसकोंप
रमएस्थितिप्राप्तिहोतीहै॥जैसेपरवहूकेटूटतेपर्वतएस्थितिहोरहेहैं
तैसेएहएस्थिरहोजाताहै॥त्रिआरूपीपरखोंकेटूटते॥हेरामजीउसफल
कोंप्राप्तिहोताहै॥तवचितभीआत्मरूपहोजाताहै॥जैसेदीपकनिर्वाण
होजाताहै॥तोजाणिआनहीजाताजोकहागएआ॥तैसेआत्मापदकोंप्राप
तिहूएचितभिनहोकरदिखाएनहीदेता॥हेरामजीजबलगउदूअक्रित
मआनेदनहीप्राप्तिभएआ॥अबतिसविखैविश्रानहोवे॥तबलगआन
नहीप्राप्तिहोती॥कैसापदहै॥सोनिर्गुणहै॥अरस्वथहै॥अरस्वछहै॥पर
मशांतहै॥जबतिसपदविखैएस्थितिहोती॥तवपरमसमाधहोतीहै॥हि
अरसात्रिलोकीविखैकाउनही॥जोतिसकोंउतारे॥जैसेचित्रकीमरतहो
तीहै॥तैसउसकीअवस्थाहोतीहै॥चेष्टाभीउसकीपडीहोतीहैसभ॥प

रणकातेबहतेहैं॥जैसेपखोंबिनापंखीउडनहीसकता॥तैसेमनिहो
जाताहै॥अरशांतपदकोंप्राप्तिहोताहै॥हेरामजीजिसकेमनविखेसंसा
रकाअभावभएआहै॥सोशांतपदकोंप्राप्तिहोताहै॥अरजोवासनासंयु
क्तहैतोमनहै॥जिसक्रमकेंअरजिसजुगतिकेकरकेंएसकीवासनाकेहो
वे॥सोएएसकोकहतेहैं॥हेरामजीजबवासनाछेदहोएतबशुद्धबोधरूप
हीपावहताहै॥जिसक्रमकरशुद्धप्राप्तिहोवे॥सोएकीआचारीहै॥ति
सपदकेप्राप्तिहूएबिनाशांतकदाचितनहोवैगी॥जबचितनितिसपदकी
ओरआवतवउसकोंनरहतहोवे॥अरअविनाशीहोवे॥काहेतेजोसर्वांत
मानिर्विभागहै॥अरअनंतहै॥अरशांतरूपहै॥सभकोंकर्मोंकाफलदेता
हाएहै॥हेरामजीजबअसपदकोंप्राप्तिहोवेगा॥तबउथानकालदिखे
भीआत्माहीभासेगा॥उसकोंहैतभासतीनहीतोसमाधतेउथानकेसमे
वे॥असेकोंसमर्थनहीजोतिसकोंसमाधतेउतारे॥तबअसापद
प्राप्तिहोताहै॥तबसंसारविरसहोजाताहै॥हेरामजीजबलगएहपद
प्राप्तिहोताहै॥तबलगविविधइछाकात्यागकरै॥अरजब
त्वसुरतवतएतलीननहीहूआ॥तबलगविविधइछाकात्यागकरै॥अरजब
असोदृढाहूएतबकर्तविकछुनहीरहता॥जोत्यागकरैअरस्वावानकरे
अरएहमरानेहेजोजबरपानेएसकोंउपजेगा॥तबविरखविरसहोजा
वेगा॥आत्मातआदिलेकरकाशिप्रजततजेतेकछुपदार्थहैं॥सोतिसकोंवि
रसहोजातेहैं॥असाजोपुरखहैतिसकोंसदासमाधहै॥हेरामजीजिसकोंस
माधकास्वरूपआएआहै॥सासभावकसमाधकीओरआवताहै॥जैसेवर
खाकालकीनदीस्वभावकसमुद्रकोंजातीहैंतैसेउहपुरखसमाधकी
ओरलगारहिताहै॥जोपुरखविविधइछातेवैत्रिसनहूआहै॥अरआत्मा
मीभएआहै॥तिसकोंवज्रसारकीएस्थितिहोतीहै॥जैसेपर्वतोंनेरहतपर्व
तएस्थितिहूएहै॥तैसेजिसपुरखसमसारकोविरसजानिकरत्यागकीआ
है॥अरआत्माविखेक्रीडाआत्माकरत्रिप्तिहूआहै॥तिसकाध्याननचला
एमाननहीहोता॥हेरामजीजिसपुरखकीचेष्टाभीपडीहोतीहै॥अवस
कल्पविकल्पतेरहतहै॥सोसदामुक्तिसरूपहै॥तिसकोंकोउक्रिआवेथ
माननहीकर्ती॥क्रिआअरसाधनकाअभावहोजाताहै॥जिसपुरखकोंवि
खिअरजगतविरसहोएगएआहै॥तोउविविधग्रहविखेत्रिस्नाकेसेहोवे॥त
वत्रिस्नानरहेतवदुखकेसेहोवे॥दुखतवहोताहै॥तबविविधग्रहकी
त्रिस्नाहोतीहै॥अरविविधग्रहकीत्रिस्नातबहोतीहै॥जोअपणास्वभावकोत्या
गताहै॥हेरामजीजोअपणेस्वभावविखेएस्थितिहै॥तवपरमस्वभावजोहै॥
इंद्रीअरकविविधआसारसमझजगतकेसेभासहै॥इवअवत्रिस्नाकेसेहो
वहि॥हेरामजीजवअपणेस्वभावकोंजाणताहैतवपरमनिर्वाणपदकोंप्राप
तिहोताहै॥जोआदिअरअंतमधितेरहतपदहै॥तिसकोंपावताहै॥सोतिसका
उपावस्रवणकरवेदकाअर्थेनकरणा॥अरप्रणवकाजापकर्ना॥तबएनोंते
शकेतवसमाधजोहैचितकीब्रितकाठाकणासोरोके॥तबबहुरिइथकेन
बउहीजापपाठकरै॥तबप्रेमसहिदृढअभ्यासहोवेतबतिसपदकोंप्राप्तिहोवे
गा॥तोसमाधकेपावगामनकामारगहै॥तबतिसकोंपाएआतवपरमशां
तकोंपावेगा॥अरस्वछंनिर्मलअपणेस्वभावविखेएस्थितिहोवेगा॥१९५
इतिश्रीसभावसताजोग प श्रोनामसर्गः॥वसिष्ठउवाच॥ॐहेरा

व॰
म॰
५८

मजीएहसंसारूपभीहे॥ जोतृष्णाकहतेहे॥ जिसकैंतरंगोंकीएकाहोवे
तिसकोएहकर्ताहे॥ जोवेदकाअर्थनअरप्रणवकाजापअरचितकोअस्थि
रकरणाजबऐसाउपायकरेगा॥ तबइहसुखऐसपरमसंतहोवे॥ तबऐसक
रिदेविरवविवेककाकरणकाउत्पतिहोवेगा॥ तिसकरकेंसमावअसतभास
गा॥ अरसंतजनोंकासंगप्राप्तिहोवेगासोसंतकेसेहे॥ जसेहेअघाबज
नके॥ अरपरमशीतलहे॥ अरगंभीरउचेअरनमवरुपीफलसंजगति
व्रिछहे॥ अरजसकीर्तिशुभअचारसहतिफूलअरपत्रोंसहितहे॥ अ
सेसंतजनोंकीसंगतिजबप्राप्तिहोतीहे॥ तवजगतकेरागद्वेषरूपी
तमसमिटिजातीहे॥ जैसेपेडाएकेक्रीप्राप्तभारहोवेअरतपतिकावडखी
होवेअरशीतलछायाव्रिछकीतिसकोप्राप्तिहोवे॥ तौशीतलहो
ताहे॥ अरफलोंकेभक्षणकरत्रिप्तिहोताहेश्रकाएभीइरिहोताहे॥ तैसेस
तोंकेसंगकरसुखकोप्राप्तिहोताहे॥ जैसेचंद्रमाकीअम्रितकिरणोंक
रशीतलहोवीताहे॥ तैसेसंतजनोंकेवचनोंकरशांतहोतीहे॥ हेरामजी
गंगाकेएस्नानकीएतेपापनष्टहोतेहे॥ अरसंतजनोंकेदर्शनकरएतेपापद
ग्धहोतेहे॥ अरजोपुरखजगतकुलसकामकरतेहे॥ तिनकोसंगतनक
रीअ॥ उहकेसेहे॥ जैसेजगतकाअर्थभाहोताहे॥ यंभाभीपवित्रहोताहे॥ एसेश
सकीछायाअनहीं॥ तातेऐसेकनीचेसुखकोउनहीपावता॥ हेरामजीजेत
कहसकामकरेहे॥ सोजन्ममरणकोदेणहारेहे॥ जदपिजगअनतपवित्रतजगिआ
सीभीकरताहे॥ तोभीविप्रापहे॥ उसकेकाहेतजोनिहकामहे॥ अरविविरिआ
इविवेविरसभावनाहेतिसको॥ अरशुभअचारहेतिसका॥ हेरामजीअरे
जगिआसीकीसंगतिश्रेष्टहे॥ जिसकीचेष्टाकोसमकाउडाउकरताहे
अरसमकोसुखदाएभासताहे॥ जैसेनवनीतिकोमलअरसुंदरअरपएसन
गधहोताहे॥ तैसेजगिआसीहोताहे॥ तिसजगिआसीकोसंतोंकीसंगतिप्रा
पतिहोतीहे॥ हेरामजीफूलोंकेवगीचेअरसुंदरफूलोंकीसिजादिकविखे
ऐसानिरभेसुखनहीप्राप्तिहोताजैसानिरभेसुखसंतोंकीसंगतकरप्रा
पतिहोताहे॥ अरआत्मतत्वविखेसदानिश्चररहिताहेतिनका॥ हेरामजी
ऐसेज्ञानवाननकीसंगतकरकेंएसकोआत्मतत्वकीप्राप्तिहोतीहे॥ अर
जवगिदासथहोताहे॥ जबलगरिदामलनहेतबलगनहीप्राप्तिहोती॥ जे
सेआरसीउजलप्रतिबिंबकोग्रहणकरतीहे॥ लोहेकीशिलाप्रतिबिंबकोग्र
हणनहीकरती॥ तबऐसकारिदासथहोताहे॥ तबसंतोंकेवचनएसके
रिदेविखेठहरतेहे॥ जैसेकालकाबादलथोडेतबइतहोजाताहे॥ जबएसका
रिदासथहोताहे॥ तबबुधवधतीजातीहे॥ जैसेवनविखेकेलकाव्रिछबध
तजाताहे॥ तैसेवधतीजातीहे॥ जबआत्मविखेणीबुधहोतीहे॥ तबउहीआ
सरूपहोजातीहे॥ भिनसगिआगीहकीकाअभावहोजावे॥ जैसेलोहेको
पारससहोताहे॥ तबसुवर्णहोजाताहे॥ बहुडिलोहकीसंगिआनहीरहती
तैसेआत्मपदकीप्राप्तिहएतेबुधसंगिआनहीरहतीअरविखेभोगोंकी
त्रिस्नानहीरहती॥ हेरामजीऐसकोदीनजोकीआहेसोविखिग्रहकीत्रिस्ना
अभिलाखानकीआहे॥ जबत्रिस्नाकात्यागकीआतबपरमनिर्मलताकोप्रा
पतिहोताहे॥ जैसेहस्तीनितकाकोंसिरपरडारताथा॥ तबलगमलनथा
अरजबनदीविखप्रवेशकीआतबनिर्मलहोजाताहे॥ तैसेजबत्रिस्नाअ

पीरागखेकात्यागकीआअरआत्माविखेस्थितिभएतवनिर्मलहोजाताहे॥ हे
रामजीजबभोगोंकोपछात्यागीतबवडीसोभाकोधारताहे॥ जैसेसूनेऋशिविखे
पाएआतबमेलजलजातीहे॥ अरउजलरूपकोधारताहे॥ हेरामजीभोगरूपीन
हीविखेहे॥ तिसकोहिनविखत्यागकरणाश्रेष्टहे॥ जबत्रिस्नाकात्यागकर्ताहे
तबमनखेकीवडीसोभाकरसोभताहे॥ जैसेराहुदंतकेछिनतहएचंद्रमाका
सोभापावताहे॥ तैसेत्रिस्नाकेविनागहएसोभताहे॥ अरएकामुखहीराम
जीजबएसकोभोगोंकावैरागहोताहे॥ तबउदापदार्थोंकीप्राप्तिहोतीहे॥ जैसे
नवतनअकरकेदाएहोतेहे॥ जैसेएकसंगतिअरएकसतशास्त्रकाविचार
प्राप्तिहोताहे॥ अरतिनविखेदृढभावनाहोतीहे॥ अरअभ्यासकरकेंउहीसरूप
होजाताहे॥ अरपरमानंदसरूपहोताहे॥ तिसकोवाणीकीगंमनहीं॥ तबभो
गोंकीपछाणमलिकीहोताहे॥ अरपरमपदअतसुखकोपावताहे॥ जैसेपिंजरेविखेरोगनि
कसकरपंछीसुखीहोताहेतैसेहीसुखीहोताहे॥ हेरामजीएसकोभोगोंकीए
छादीनकीआहे॥ जबएछानिवर्तहोगए॥ तबआपणकोनिआएसंसारमंडको
लंघजाताहे॥ अरउनोंजगतसमकेत्रिणवतभासतेहे॥ हेरामजीजबभोगोंकी
एछात्यागीतबएहईश्वरहूआ॥ जिसपुरखकोआत्मसुखप्राप्तिहूआहे॥ सोभा
गोंकीएछाकदाचितनहीकरतो॥ जोअनप्राप्तिहोतेहे॥ तौभीउसकोविरसभा
सतीहे॥ अरमिथ्याभासतेहे॥ तातेभोगोंकोचाहतानही॥ जैसेजालफिरनिक
सिआहूआपंछीबहुडिजालकोनहीचाहिता॥ तैसेउहभोगोंकोनहीचाहता
जबविखिग्रहकीत्रिस्नानिवर्तहोतीहे॥ तबपरमसोभाकोधारताहे॥ अरसंतो
कावचनउसकोशीघ्रहीप्रवेशकरतीहे॥ हेरामजीसुखरूपीएसीहे॥ अरतिस
केकानहूकोंभूखणसंतोंकीसंगतहे॥ जबसाधोंकीसंगतिहोतीहहि॥ तबअरु
भक्रिआकाअभावहोजाताहे॥ अरविगानेधनकीएछानहीरहती॥ अरजोकछु
होताहेतिसकेभीत्यागणकीएछाकरताहे॥ अरमलभोगजोरखवाणकेनमित
आवतेहे॥ तिनोंकोभीविभागदोकररखाताहे॥ जोकछुहोताहेतिसविखेभीदेक
रखाताहे॥ बडेउत्तमतेलकरअरसागपूजनतदेकररखाताहे॥ जथाशक्तिप्रमाण
जबएहऐसेहुआफेरवैसाहोजाताहे॥ जोकोउएफारेमांगेतौफेरभीदेताहे॥
काहेतजोदेणकाअभ्यासहोजाताहे॥ अरलोकोंतेसागमांगणकीभीएछानही
राखतातिसकरसंतोखसाथजथाप्राप्तिचेष्टाकरताहे॥ तपकरताहे॥ धनकरताहे
जगिअनएस्नानकरपवित्रहोताहे॥ अरत्रिस्नाकात्यागकीआहे॥ हेरामजीत्रिस्ना
करनेकरदुखीहोताहे॥ ऐसाउखक्रूरनरकविखेभीनहीहोतातैसाउखत्रिस्नाके
केंहोताहे॥ अरजोधनवानहे॥ तिनकोधनकीचिंताबहुतरहतीहेउपजावणकीवि
ताहे॥ अरराखणकीचिंताहे॥ उहतेवेठतेखातेपीतेचलतेसोवतेसदाधनकी
चिंतारहतीहे॥ एसहीचिंताविखपचुपचुमरिजातेहे॥ वहुउजन्मतेहे॥ हेराम
जीनिर्धनकोभीचिंतारहितीहे॥ परथोडीरहतीहेजबलगचिंतारहतीहे॥ तब
लगदुखीरहताहे॥ जबचिंतानष्टहूएतबपरमसुखीहोताहे॥ हेरामजीजदपधनहो
वेपरसंतोखनहीहोतोपरमदरिद्रीहे॥ अरजोधननहीणहोवेपरसंतोखहेतोपरम
ईश्वरहे॥ जिसकोसंतोखहेतिसकोविखेधनिनहीआसती॥ जबत्रिस्ना
गधनकीएछानहीकरीतबलगएसकोभोगरूपीविखनहीभासती॥ अरएसकोविप्रीतभावनाविखे
उपजीतबपरमविखएसकोस्पर्शकरजातीहे॥ हेरामजीजोकछु
दुखहोताहे॥ जोदुखदाएपदार्थहे तिनकोसुखदाएजानताहे॥

व॰ म॰ ५५

अर्थ है सो ऐ अनर्थ है ॥ जिसकौ ऐसे संपदा जानिआ है ॥ सो ऐसे भअ पदा है ॥ जिसकौ
ऐसे भोग जानिआ है सो सभ अगम रूप है ॥ ऐसकौ संपदा जानिकर विवादा है ॥ ऐसकौ
पदा दुखी होता है ॥ हे रामजी स्त्रीआं सभ दुखों का नाश कर्ती है ॥ पर ओह देव
ति अहू के पास होता है ॥ जो ऐसकौ भी अम्रित चाहीऐ तो संतोख करे ॥ संतोख
वन्त सभ से ऐन है ॥ जब विविलि अहू बिख है खड़ि छिहूए अब संतोख कौ धारन व म
खता ऐसे तूरी होजाती है ॥ अर गऊ पद की निआई ऐसे संसार समुद्र कौ भी ... कर
जाता है ॥ हे रामजी जिसकौ संतोख की प्रापति होती है ॥ तिसकौ परम प्रसंन हो
ती है ॥ अर स्वर्ग सत तरन भी सुख का ऐस्थान है ॥ अरु नंदन वन भी सुख का ऐस्थान है
और वसी आदिक अपछरा होवहि ॥ वड़ माति रिद्धिमान देह होवे ॥ कामधेन वि
धिमान होवे ॥ एह सभ ऐंद्री अहू कौ सुख है ॥ सो सभ विद्दमान होवे तो भी शां
त न होवेगी ॥ पर ऐक संतोख कर शांत होवेगा ॥ संतोख कर शांत होती है ॥ संतोखी
कौ एह चलाए न सकते ॥ हे रामजी जो अर्थों भर भर पाए तो तुलाए न ही भर
आजाता ॥ अर जो मेघ जल की वर्खा होवे तो शीघ्र ही भरआजाता है ॥ तैसे बिखिअ
हू के भोगों कर शांति नहीं होती ॥ अर संतोख कर रसरे न आनंद की प्रापति होवेगी
अर संतोख कर ऐसकौ उज प्रापति होवेगा कैसा उज प्रापति होता है ॥ जो गंभी
र अर निर्मल अर शीतल अर रिदे का अंगम अर सभ का हितकारी ऐसा उज सं
तोखी कौ आए प्रापति होता है ॥ अर अवर जो उज है सो प्रांत की राजसी तामसी हो
ता है ॥ अर एह जो है हि ॥ सो सभ प्रांत की है ॥ जिस पुरख कौ संतोख हुआ सो ऐसे
शोभता है ॥ जैसे वसंत रत का ब्रिछ फल फूल पत्रों कर शोभा पावता है ॥ अर जि
सकौ त्रिस्ना है सो कैसा है ॥ जैसे चरन के नीचे आए आहूआ की दमरहन होता है हे
रामजी जिसकौ त्रिस्ना है तिसकौ संतोख प्रांत कदाचित नहीं ॥ जैसे जल विखे
त्रिणहू का पुल पाए आगु रे उपर तीहू आप वन चलाम बड़े रवों भकौ प्रापति होता
है ॥ तैसे त्रिस्नावन पुरख कौ ताम होता है ॥ हे रामजी जो पुरख अर्थ के निमित समदाए
का कर्ता है ॥ सो अनविखि प्रवेश कर्ता है ॥ अर्थ एह जो न पता रहता है ॥ सब दा काल
ते ... होता है अर अपवित अस्थानों विखे स्पर्श कर्ता है ॥ तैसे त्रिस्ना रूपी ऐस्पा
स्पर्श कर्ती है सो नाचार्य पहै ॥ जैसे उस गर्धप माय्र स्पर्श का जोग नहीं ॥ तैसे त्रिस्ना
वान गर्धप साथ स्पर्श करणे जोग नहीं ॥ हे रामजी एह संसार मिथ्या है ॥ एह संसार की
पदार्थों कौ चाहते हैं तिनै भी मर रवे है ॥ अर ऐसे जगत का अधिष्ठान है ॥ सो ऐस
कौ तब प्रापति होता है ॥ जब निर्वास होता है ॥ जब निर्वास हुआ तब संतोख कौ प्राप
ति होता है ॥ तब असा होता है जैसे तारहू विखे चंद्रमा शोभा पावता है ॥ ताते एछा
ना शकरणे का उपाए करौ हे रामजी जब एछा नष्ट भए अर संतोख रूप गंभीरता प्राप
ति भए ॥ अर द्वैत कल्पना मिट गए ॥ तब ऐसे सही कौ पंडित परमपद कहते है ॥ सो
एह पद के संप्रापति होता सो अवतार हे रामजी जब एसकौ संसार तें वैराग प्रापति हो
वे ॥ अर संतों की संगत अर सत शास्त्रों कौ जो अर्थ है तिसविखे दृड़ भावना होवे ॥ जब
आत्मा विखे दृड़ भावना भए तब जगत विरस होजाता है ॥ अर्थ एह जो असत भास
ता है ॥ अर रिदे विखे शांत होती है ॥ अर सभ आवरक आपकौ ब्रह्म जानने लागता है ॥ अ
र पर किंतना मिट जाती है ॥ जब लग आपकौ परछिंन जानता था ॥ तब लग सभ
दुखों का अनभव कर्ता था ॥ जब शास्त्रों अर संतों की संगति कर जगत विरस हुआ
तब परमपद की प्रापति होता है ॥ १६६ ॥ इति श्री ममाक्रम प प्रा ना म स ग ॥
व सि ष्ट उ वा च ॥ ओ हे रामजी एह जो कम है जो संसार तें वैराग होता है ॥ तब संतों की

संगति होती है ॥ वहुड़ि शास्त्रों का अभ्यास होता है ॥ तब संपूरन जगत विरस होजाता
है ॥ जगत विरस हूआ अर आत्मा विखे दृड़ अभ्यास हूआ ॥ तब अपरोख्य भावक
सनाप्रत आवती है ॥ जब ऐसा सत भाव सता विखे स्थिति हुई तब परमानंद की
प्रापति होती है ॥ जिसविखे बाणी का गमन नहीं ॥ हे रामजी जब एस अवस्था कौ प्रा
पति हूआ तब मन अमन हो जाता है ॥ अब अरथ की त्रिस्ना रहती नहीं ॥ अर जो अप
ना प्रास होता है ॥ तिसके भी त्यागणे की एछा कर्ता है ॥ अन जान त्यागता जाता है ॥ अ
रथ अर्थ ऐसी विरस होजाता है ॥ जद पदार्थन के बीच भी रहिता है ॥ तो भी एन विखे अ
हंमम अभिमान नहीं कर्ता ॥ जैसे ऐक किसी मारग विखे आनि उतरता है ॥ अ
मार्ग बालिअहू के साथ संबंध नहीं राखता ॥ तैसे किसी विखे संबंध नहीं राखता
अर जो अनिछत ऐंद्री अहू के सुख आनि प्रापति होती है ॥ तिन विखे राग द्वेख नहीं
कर्ता ॥ जैसे पथर की शिला पर जल चलिआ जाता है ॥ तिसकु राग द्वेख कछु न
ही होता ॥ तैसे ज्ञानवान कौ राग द्वेख किसी विखे नहीं होता ॥ हे रामजी ऐसे कृपा
रीर की ऐहि सभावक अवस्था होजाती है ॥ जो एकांत कौ चाहता है ॥ अर स्वने कौ क
हा विखे रहिता की एछा कर्ता है ॥ अर अज्ञान कौ अवस्था न जो है एस्त्री अहू अर भोगों
कौ ॥ अवस्थान अर राग द्वेख के अस्थान पदार्थ अनिछित जो दैव संजोग ते समरु कौ
प्रापति भी आनि होते हैं ॥ तो भी तिनकौ त्याग देता है ॥ हे रामजी जो खेत्र विखे
बीज पवाण होता है ॥ अर तिसके आगे जो बूटा कंटा होता है ॥ तो ऐसकौ कहीं
साधिका टकर दूर कर्ता है ॥ तब खेत्र आछा सुंदर फलता है ॥ तैसे जिस पुरख स
न रूपी खेत्र विखे अनभव रूपी फल देखणा होवे ॥ सो एछा रूपी बूटे कंटे अनिछा
रूपी दात्री कर के काटे ॥ अर संतोख रूपी बीज कौ बीजे तब खेत्र भी वहुत सुंदर फले
गा ॥ हे रामजी जब अनभव रूप फल ऐसकौ प्रापति हूआ ॥ तब एह पुरख सूक्ष्म ते
सूक्ष्म होजाता है ॥ अर असथूल ते भी असथूल होजाता है ॥ अर सर्वात्मा होकर ए
स्थिति होता है ॥ हे रामजी जिब चित अद्रिश कौ प्रापति होता है ॥ तब द्वैत भाव
ना मिट जाती है ॥ जब द्वैत की भावना मिटी तब चित अद्रिश कौ प्रापति होता है
ति स चित कौ जो उपसम का सुख होता है ॥ सो बाणी कर कहिआ नहीं जाता ॥ ति
स का नाम निर्वाण है ॥ सो निर्वाण ज्ञान कर प्रापति होती है ॥ जब ईश्वर की भगत क
ती है ॥ जो चिरकाल प्रजंत भगत कर्ता रहिता है ॥ तब ईश्वर प्रसंन होता है ॥
अर ऐसकौ निर्वाण की प्रापति होती है ॥ रा मो वा च ॥ हे भगवन्न वर्नन तुम कीते अहु वि
ख सृष्टि अहू का कवन ईश्वर है ॥ अर ऐसकी भगत किआ है ॥ जिसकर प्रसंन होता है
अर निर्वाण पद कौ प्रापति कर्ता है सो अनंत के कहे हू ॥ व सि ष्ठ उ वा च ॥ हे रामजी तु
अर निर्वाण पद कौ प्रापति कर्ता है ॥ अर इ दुर्लभ भी नहीं ॥ का देवते जो अ
स्वभू दिसं नहीं ॥ अर आस विखे भेद भी कछु नहीं ॥ वेद रिके माहे जिसके वसि सर्व है ॥ अर जो सर्व है
नभव जानि है परम बोध सत रूप है ॥ हे रामजी जो कोई पूजता
अर जिसते सर्व है ॥ तिस सर्व आत्मा कौ नमस्कार है मेरा ॥ सो सर्व ईश्वर ही कौ पूजते है
हे जाप मंत्र तप होम दान जो कोई कछु कर्ता है ॥ सो सर्व ईश्वर ही कौ प्रसन
है वता अर देत समान खजा के हुए स्थावर जंगम जगत है ॥ उत्पति प्रलै विखे जो पदार्थ भासते अ
ते है ॥ अर सर्व कौ फल देणहारा भी एही है ॥ तब अर सर्व ईश्वर की प्रसन
व उभते है ॥ सो सभ उसी कर सिध होते हैं ॥ सो कैसा ईश्वर है जो सुभ अक्रिआ सम उपाव
ता होती है ॥ तब अर पाप नष्ट भजन होता है ॥ रा म उ वा च ॥ हे भगवन्न ईश्वर जो अहंतन
कौ विखपावती है ॥ अर अलिपत चित्र है ॥ तिसका हूं तक वन है ॥ अर कैसे आवता है ॥ सो मक
आत्मा है ॥ अर सत पद ब्रह्म है ॥

व॰
म॰
५॰

50

कोंकहहे॥ वसिष्ठ उवाच॥ हेरामजीईश्वरजोमहादेवहै॥तिसकादूतविवेक
है॥अशरीरदेरूपीगुफाविखेआनउदेहोताहै॥तबउदेहोताहैतबपरमशोभाकोंपा
वताहै॥जेसेचंद्रमाकेउदेहूएप्रकाशशोभापावताहै॥तेसेउहहृदयरूपआभा
पावताहै॥हेरामजीजबविवेकरूपीदूतआवताहै॥तबएसकोंसंसारतेपारकर्ता
है॥अरपवित्रकर्केदेवकेनिकटिलेजाताहै॥प्रथमवासनारूपीमेलसाथिभर
आयाथा॥अरचितरूपीशत्रुनेबाधिआयाथा॥जबविवेकरूपीदूतआवताहै॥तबचि
तरूपीशत्रुकोंमारताहै॥अरवासनारूपीमेलकोंनाशकर्केनिकटिलेजाताहै
तबएसकोंआत्मदेवकादर्शनहोताहै॥अरपरमानंदकोंप्रापतिहोताहै॥तबदु
तासुखपावताहै॥हेरामजीसंसाररूपीसमुद्रहै॥तिसविखेदुखरूपी
मितहै॥अरतिसविखेतृष्णारूपीलहरीतरंगहै॥अज्ञानरूपीजलहै॥एहीग्रा
रूपीतहूएहैं॥तिससमुद्रविखेफसिआहै॥जबविवेकरूपीनौकाएसकोंअ
कस्मात्प्रापतिहोतीहै॥तबएहसंसारसमुद्रतेपारहोताहै॥हेरामजीएहप्र
जोतीवहै॥सोप्रमादिककर्केजडताकोंप्रापतिहूएहै॥जेसेजलपृथ्वीलताकर्के
गहीकीसंगिआकोंपावताहै॥तेसेएहप्रमादिककर्केजीवनसंगिआकोंपावताहै
अरवासनाकेसाथिअवरआगएआहै॥तबअंतर्मुखहोताहै॥तबउसकेवरके
सन्मुखहोताहै॥तबउहदेवप्रसन्नहोताहै॥सोकैसादेवहै॥सहंस्रहीपुरुषहैजि
सके॥अरसहंस्रहीपादहैं॥अरसहंस्रहीभुजाहैं॥अरसहंस्रहीपादहैं॥अरस
हंस्रहीश्रोत्रहैं॥अरसबचेष्टाउहीकर्ताहै॥देखतासुनताबोलताचलताउ
हो॥अरआपणेस्वभावकरप्रकाशताहै॥जेसेसभघटोंविखेचलनशक्ति
पवनकीहै॥तेसप्रकाशशक्तिदेवकीहै॥तबतिसकेसन्मुखअंतर्मुखहोताहै
तबविवेकरूपीदूतभेजताहै॥तबएसकोंसंतोंकासंगतिहोतीहै॥अरसत
शास्त्रोंकेअर्थोंविखेदृढभावनाहोतीहै॥तबविवेकरूपीदूतएसकोंअ[illegible]
ताकोंप्रापतिकर्ताहै॥वहदृश्यजनकोंभीत्यागकरबोधमात्रविखेस्थितिहोता
है॥तबशुद्धआनंदएसकोंप्रापतिहोताहै॥हेरामजीपरब्रह्मआनंदस्वरूपहै॥अ
रएहीविश्वभीआपणाआपहै॥परअज्ञानकर्केभिन्नप्रतिभासतीहै॥जेसेआका
शविखेदूसराचंद्रमाभासताहै॥अरमारूथलविखेजलभासताहै॥अरआ
काशविखेतरवरेभासतेहैं॥भ्रांतिकर्केतेसेभ्रांतिकर्केजगतभासताहै॥अ
तोंकेअंतवीहैजउअर्थसभअहंकारदेवहीव्यापीरहिआहै॥एस्थावरजंगम
जेताकछुजगतभासताहै॥सोसभउसीआत्मतत्वकेआश्रेफुरताहै॥ताते
उहीसरूपहै॥अरसर्वकोंउहीधाररहिआहै॥जेसेसर्वभूषणोंकोंसुवर्णधार
रहाहै॥तेसेसभअरथोंकोंउहीधाररहाहै॥उहीईश्वरब्रह्महै॥गंभीरआत्मा
सर्वात्माकारप्राणवसभउसीकेनामहैं॥जबअतेईश्वरकीकृपाहोतीहै॥त
बअंतर्मुखहोताहै॥अरस्वच्छनिर्मलहोताहै॥हेरामजीजबएसकारिदा
हभावनाहोतीहै॥तबउहीजोहैसोभगतहै॥तबउहीकृपाकर्केईश्वरवि
वेकरूपीदूतकोंभेजताहै॥९९॥इतिश्रीविवेकदूतव नेनामसर्गः॥वसि
ष्ठउवाच॥हेरामजीतबएसविवेककीदृढताहूएतत्वपरपदकोंप्रापतिहो
ताहै॥जोचेतनतेरहतचैतनचनहै॥अरचितकासबेपदूटजाताहै॥जबचित
कासंबंधमिटिआतबविषयाकेकैसेजाताहै॥तबविषयोंकीकेताभएतबचा
हाभीनहींरहिती॥हेरामजीएहजगतभीऐसेफुरनेविखेरहाहै॥जबसथ

हेतेनहे॥विखेचेतोंनसुरतभएतबएसकासनेमात्रशरीरहोताहै॥जिसकोंअति
वाहककहीताहै॥अरजबवासनाकोंदृढताभएतबअधिभूतकभासणेलागताहै
जेसेस्वप्नविखेआपणाशरीरभासताहै॥तेसेआपणाविखेशरीरदेखणेलागता
है॥हेरामजीएसकोंअज्ञानहीअनर्थकाकारणहै॥जबएहचेतनेहोताहै तब
होएसकोंअनर्थकीप्रापतिहोतीहै॥मेअरमेराइत्यादिकजगतभासआवताहै॥
जोएहहोवेनहीतोजगतभीनहोवे॥एसकेहोणेकरजगतभासताहै॥तातेमे
रापहीअशीर्वादहै॥जोतचेतननतेनहोवे॥अहंगतारूपीचेतनेतानेरहितअ
पणाबाधविखेस्थितिरहे॥हेरामजीएहजोमनहैएसहीतेजगतहूआहै॥सो
मनअरजगतदोनोमिथ्याहै॥एपअवलोकअरमनस्कारदोनोकानामजगतहै
सोस्विगतिस्नाकेजलवनमिथ्याभ्रमहै॥जबएनकाअभावहूआतबसैनभी
नहीरहता॥केवलबोधमात्रचेतनहोताहै॥हेरामजीदृष्टादर्शनदृश्यएहभी
नाभावनामात्रहै॥जबएहहोतेहैंतबजगतभासताहै॥अरजबअहंगताको
अभावहूआतबआत्मपदप्राप्तहै॥जेसेस्वप्नेविखेभूषणहोतेहैं॥तेसेआत्मावि
खेजगतहै॥इसीवल्लकफुरणानहीं॥वासनाकेदृश्यभासतीहै॥सोवासनामन
तेफुरतीहै॥अरमनअज्ञानकर्केहूआहै॥नउमनअमनपदकोंप्रापतिहोताहै
नबदृश्यसभएकहीरूपहोजातीहै॥जबलगवासनापडीउठतीहैतबलगमन
विखेप्रांतनहीहोती॥जेसेकाउपुरुषभवालीलेताहै॥तबवलचढतेजाते
हैं॥अरजबउहठहरताहैतबउहउतरजातीहै॥तेसेजबलगचितवासनाक
हैं॥अरजबचितदृष्टिहरजा
कैपदाभ्रमताहै॥तबलगजन्मरूपीवलचढतेजातेहैं॥अरजबचितदृष्टि
ताहैतबजन्मोंकाअभावहोजाताहै॥हेरामजीजबलगचितकादृश्यतेसंबंधछूटताहै॥न
संबंधहै॥तबलगकर्मतेनहीछूटता॥जबचितकादृश्यतेसंबंधछूटताहै॥त
बअहंतमात्रपदकोंप्रापतिहोताहै॥हेरामजीजबमध्यचितमात्रविखेस्थान
होताहै॥तबतिसकानामचेतनसंवेदनहोताहै॥उहीअहंगतादृश्यकोंरोवफु
रतीजातीहै॥तबपरमात्मदृष्टहोताहै॥अरजडताहोतीजातीहै॥जेसेजलगाढाहोजा
ताहै॥तेसेचितशक्तिप्रमादिककर्केजडहोजातीहै॥तबदृढवासनाकोंग्रहणक
तीहै॥तबअतिवाहिकअथभूतकशरीरआपणाइच्छिआवताहै॥वहृदृश्यमि
वीआदिककेमूलभासणेलागतेहैं॥जिसआत्माकेबाहरिफुरतीजातीहै॥चित
घाक्रि॥तितिसमाएहोजाताहै॥तबफुरनेतेरहितहोकरआपणासरूपकोंरोवआ
वतीहै॥तबअपणाआपहीभासताहै॥अरदृढतमिटिजाताहै॥तबपरमानंदअद्वैत
पदभासताहै॥तबपूरनबोधहूआतबहैतअरएकसंगिआभीजातीरहितीहै
केवलआत्मतमात्रसधचेतनरहिताहै॥तबएहस्वरसायएकताहोतीहै॥जगतभा
मचलतीरहितीहै॥जबउगसपदकोंप्रापतिहोतीहै॥तबदृश्यकाअभावहोजा
ताहै॥काहेतेजोजगतभावनामात्रहै॥जेसअविधतकाल्लकावृक्षअंकुरविखे
होवे॥तेसाएहजगतहै॥एसकाअंतअंतअभावहै॥कछुभाषिआनहीभ्रांतिकर्के
मासताहै॥हेरामजीमेरेवचनोंकाअनभवतबहोवेगा॥जबएहरूपकाज्ञानहोवेगा
जबएहवचनोंदेविखेआनिफुरहिंगे॥जेसेकथावालेकेंरिदेविखेकथाकेअ
र्थआनफुरतेहैं॥तेसेएहवचनआनिफुरहिंगे हेरामजीजबलगएहमनए
आफुरताहै॥तबलगजगतकाअभावनहीहोता॥जबमनउपसमहोवेतब
जगतकाअभावहोताहै॥जेसेसप्नकोंसप्नाजानताहै॥तबउहदृश्यप्रकापदा
र्थोंकाएछानहीकर्ता॥जबलगसततजानताहै॥तबलगएछाकर्ताहै॥हेराम

वं॰
म॰
५८

जीएहजोजीवहेसोवासनाकेग्रावेरहुएहे॥ जबवासनाकेहोवेगीतवएसीकानाम
तानहे॥ अज्ञानीरूपीभूतनाएनकोलागाहे॥ तिसकर्केउनमतहोएगएहे॥ तिस
उन्मतहोएकरजगतभासताहे॥ अबजगकेभासणेकरनानाप्रकारकीवासना
दृढहोएगएहे॥ अरुपराडुखपावताहे॥ जबएहचित्तडोलरहितकरअंतर्मुखीहोवे
अरुदृढभावनाआत्माविवेककरे॥ तबज्ञानरूपीमंत्रीएसकोंप्राप्तिहोतीहे
जबज्ञानरूपीमंत्रीएसकोंप्राप्तिभएग्रा॥ तबअज्ञानरूपीभूतनाचलनारहि
तोहे॥ हेरामजीअनभवरूपहे॥ पंचतनमात्रा॥ ऐनकापेकहाहोवणाएसकाना
मग्रतिवाहकशरीरहे॥ जबएतकाभीआत्माविवेककरुहुआहोता॥ तबएहव
वनन्हाते॥ चिनमात्रहीहे॥ यातेबणिआकछुनही॥ तातेकहिनेहेंआत्माअहेते
हे॥ चिनमात्रहे॥ हेरामजीअवरकछुहुसरावणिआनही॥ भ्रांतकर्केडनीआभा
सताहे॥ जेसएकहीपुरुखसेनकर्ताहे॥ अरुस्वप्नभ्रमकर्केनानाप्रकारहुतभा
सताहेतिसकों॥ तेसएहजाग्रतजगतभीभ्रांतकर्केभासताहे॥ हेकछुनही॥ हे
रामजीजोहेहीनही॥ तोएवका किसकीकर्तीहे॥ एतासरवइंद्रीअहंकेएष्टिभोगी
तेनहीहोता॥ जेताकछुसरवएनकेत्यागेतेहोता॥ हे॥ हेरामजीएकजगतहेजो
जिसकेकीएतेपुरखुपरमपदकों॥ प्रापतिहोताहे॥ सोजगतबहोताहे॥ तबएक
यंबनाईताहे॥ तिसकेनीचेबलकरीताहे॥ जबजगतकररहीताहे॥ तबसर्वत्या
गकरीताहे॥ तबएसकोंफलकीप्रापतिहोतीहे॥ एसकर्मकीएविनाजगतफ
लनहीहोता॥ सोथभाकिआहे॥ अरुबलकिआहे॥ अरुजगकिआहे॥ तिआगकि
आहे॥ अरुफलकिआहे॥ सोश्रवणकर॥ हेरामजीधिआनरूपीथंभाकरेजोआत्म
पदकासर्वदाअभ्यासकरे॥ अरुत्रिष्णारूपीतिसकेआगेबलकरे॥ अरुज्ञानरूपी
जगकरे॥ जोआत्माकेविशेषणवदेपासोविवेककहेहे॥ नितसंबंधोबोधहे॥ अरुहेत
निर्विकल्पहे॥ देहएंद्रीरूपीकल्पत्रिकहे॥ जेसभावनाएसविखहोतेहे॥ तेसाभा
वनाहोताहे॥ हेरामजीप्रथमएसकाशरीरअतिवाहकथा॥ अरुअपणामनरूपभ
लानथा॥ आपकोआत्माहीजानताथा॥ अरुजगतअपणासंकल्पमात्रभासता
था॥ तिसकानामअतिवाहकहे॥ जबसंकल्पविखेद्रिढभावनाहुएतबअथभू
तकभासणेलागा॥ जबतिसविखेदृढभावनाहुएतबदेहएंद्रीआनभअपणा
विखभासणेलागीआ॥ तबअपणाविखभासीआतबएनकेसुखदुखजानणेला
गा॥ जबजगतकेसुखदुखएसकोंभासतबसबग्रापदाएसकोंप्रापतिहुए॥ वा
स्तवतेनकोउसुखहेनकोउदुखहे॥ केवलभावनामात्रहे॥ जैसाजेसीचितकी
भावनाहोतीहे॥ तेसातेसाआगेभासताहे॥ हेरामजीजबएहीभावनाउलटिकरअ
तर्मुखआत्माकीउपासनाहोवे॥ तबएककालायकाभानहोवे॥ जबएकबोधको
भानएसकोंहुआ॥ तबदेहतेसभमिटिजाताहे॥ हेरामजीआत्माविखअतिवाहकभी
नही॥ एहमोखमुहेदआमाभीबाधसरूपहे॥ जोबाधतेपरेअतिवाहककछुहोता
तबभासता॥ सोबाधतेपरेकछुपाएतानही॥ अतिवाहकभीतिसीकरहे॥ अतिवा
हककछुहीभ्रमनासधचिनमात्रविखचितरनभूखतहूआहे॥ चितशक्तिपुरी॥ तब
तिसकोंपंचतनमात्राकासंबंधहूआ॥ एहीजडचेतनग्रंथहे॥ चेतनहेचितशक्ति॥ अरु
जडग्रणआदिकतेरहितहे॥ अरुसज्ञानोकानामसज्ञानहे॥ एहजगतहे॥ ध्यानरूपी
यंभेककेअरुत्रिष्णारूपीबलककेअरुमनरूपीइंद्रिआंकोजीतकरएहजगशरनहो
ताहे॥ जबऐसाजगहूआतबतिसके॥ पीछेदरतणाभीकरीऐ॥ तबजगसफल
होवे॥ अरुसर्वसरदणाहरूताणा॥ किआसर्वसहेअहंगताकात्यागकर्णासर्वसत्या

गोहे॥ जबसर्वसत्यागकीआतबजगतसफलहोताहे॥ एसकानामसिद्धजितजग
हे॥ एसप्रकारजबजगहूआतबतिसकाफलभीहोताहे॥ सोफलकिआ॥ अंगअ
गहूकोंबसवाहोवेअरुप्रलेकालकापवनचलेत्रिप्रथवीआदिकतनताप्रहोवहि॥
ग्रेसेखोभविखभीचलायमानहेता॥ एहफलउसकोंप्रापतिहोताहे॥ जो
कदाचितसरूपतेभिडतानही॥ एसकानामब्रह्मध्यानहे॥ हेरामजीअहंगताकात्या
गकर्णासर्वतेसभिन्नताहे॥ ताकारणअहंगताकेत्यागकेपतेहोताहे॥ सोअव
रउपावहूकरनहीहोता॥ तपदानजगदमनउपदेशपएनहूउपावहूतभीअहेहे॥ ता
ताकात्यागकर्णावडासाधनहे॥ सर्वसाधनएसकेअंतरभूतहोतेहे॥ हेरामजी
जबअहंग्रहंताकात्यागकरेगा॥ तबअंतवाहरब्रह्मसत्ताहीपदीभासेगी॥ हेतभ्र
मसंभ्रमनामिटिजावेगा॥ हेरामजीमनमतोवडारूपीत्रिगुणकोंज्ञानरूपीअग्निलगाएकेभ
अरुवेराग्यरूपीवाएकरनगाएहे॥ तबएनत्रिगुणोंकोंभस्मकररहोगे॥ तबतेपम
मशांतकोंप्रापतिहोहे॥ मनकेजलावणाकरपरमसपदप्रापतिहोतीहे॥ एसत
पतरसभपदहे॥ मनकेउपसमविखकल्याणहे॥ एहजोअंतरवाहजपदार्थपद
भासतदिखीतेहे॥ नानाप्रकारके॥ सोमनकेमोहतेउत्पतिहुएहे॥ जबमनउप
समकोंप्रापतिहोवे॥ तबनानाप्रकारभूतोंकोंनिगलजाहे॥ मानसरूपिपदकीदरव
ताप्रिथ्वीआदिकसोसभग्रकाशरूपहोजातेहे॥ हेरामजीएहसर्वभ्रममहे॥ ता
नीकोएकसत्ताहीभासतीहे॥ दूसरभ्रवरकछुबणिआनही॥ भ्रमकरकेजगतिभा
सताहे॥ अर्गतिसविखनानाप्रकारकीवासनाहूएहे॥ अरुपणिवांसनाकेअनु
सारजगतकोंदेखतेहे॥ तातेतुमजागहु॥ अरुवासनाकोंपिजरेकोंकाटिकरआत्म
पदकोंप्रापतिहोवहु॥ हे रामजीअज्ञानकर्केजोआत्मपदतेसोएपडेहे॥ अरुवासा
केफिंनरविखिपडेहे॥ तिनकीनिग्रहएअज्ञानीनहीहोवणा॥ अज्ञानकर्केजीवहू
कानाएहोताहे॥ सोकछुजगतदरवीताहे॥ सोभ्रममात्रहे॥ अरुपवनकावोलणा
भीऐसाजाणनेसवासोविखपवनकाप्रापतिहोताहे॥ तेसएहप्राणिवायकर
वोलतेचलतेद्रिष्टिआवतेजाणा॥ तातेजगतिभ्रममात्रहे॥ ६८॥ इति स स
ता प एा म स्र्ग॥ वसिष्टउवाच॥ हेरामजीजोजीवहेंदेशकाल्देशाकृ
विखमानखदेवतेनागकिंनरपक्षीपंछी॥ अरुपर्वतकेदरएस्थावरजंगमजेता
कछुजगतिहे॥ सोसप्रप्रकारकीसिष्टिहे॥ अरुसप्रप्रकारकेजीवहे॥ तिनको
भिंनभिंनश्रवणकर॥ एकसप्रजाग्रतहे॥ दूसरेसंकल्पजाग्रतहे॥ अरुतीसरकेवल
जाग्रतहे॥ चतुरथचिरजाग्रतहे॥ पंचमदृढजाग्रतहे॥ खष्टमजाग्रतसप्रहे॥
सप्तमक्षीणजाग्रतहे॥ रामोउवाच॥ हेभगवनएहजोतुमसप्रप्रकारकेजीवसि
ष्टकहेहे॥ सोबोधकेनिमितमुझकोंवालककेकहहु॥ एहअरुसहेजेसेसमुद्रवि
खिनदीआंकेजलकावेगहोवे॥ एनकाउपजणाभीऐसाहे जैसेएकहीजलते
पेनितरंगबुदबुदेवाएकरहोतेहे॥ सोविस्तारकर्केकहहु॥ वसिष्टउवाच॥ हे
रामजीएककालएहहे॥ जोकिसीजीवकोंकिसीकल्पअपणीजाग्रतविखसप्र
पतहूए॥ तिसविखजोसप्राहूआतिससप्रविखउसकोंहमारीजाग्रतकाजगत
भासिआ॥ सोदृष्टिअरुदृष्टिमेंजगतितिसकोंसत्तजाणकरअहंणाकर्णालागा॥ उ
सकेलेखेहमसप्रनरहे॥ परउसकेनिश्चेविखनहीउहहूजाग्रतजानताहे॥ हे
रामजीअरुउसकासंकल्पएकहोएगएआहे॥ एसातेउहुभीजाग्रतजानताहे॥ अ
रूपबलेकस्याविखभीउसकाशरीरचेतनहे॥ फुरताहेपर॥ परसोएआपदाहे
मातग्ररुडोसकाअग्रतेपिंडेआआवे॥ तबउसकेशरीरकी
ग॥ रामोउवाच॥ हेभगवनजोउहुपुरखअपणाकल्पविंजागातबएहुउसकोंकि
आभासे॥ अरुजोनजागेअरुउहाकाकाल्पप्रलेहोजावे॥ तबउसकेशरीरकी

क्रिआअवस्थाहोवे॥अरजबएहाज्ञानकीप्रापतिहोवेतबओसशरीरकीक्रिआ
अवस्थाहोवे॥सोक्रिपाककैकहो॥वसिष्ठउवाच॥हेरामजीजओउद्भवअप
णाकल्पविखजागतवएहजाग्रतओसकौंसप्रभासे॥अरजोओहाज्ञानजागग्रवे
सकल्पकीप्रलेहोवेतबवडजीवएहापदावेशाकेर॥अरजोज्ञानकोप्रापतिहोवे
नबओसशरीरकीआवासनाएकटीहोकरनिर्वाणकोंप्रापतिहोवेनबजीवएस
शरीरकोंत्यागकरअवरजगतभ्रमभासिआवे॥आपकोंशरवहीबनजाणेभा
वेआन॥परजगतभ्रमनहीमिटताबिनाज्ञानहेरामजीएहअवउदेनानुल्
हे॥ब्रह्मसतासमानसर्वटओरप्रकाशतीहे॥हेरामजीजेसगूलरविखमचिरहे
तेहे॥तेसएहजीवभीभ्रमकरकेफुरतेहे॥सोएहजगतहीहे॥नासअविखजा
ग्रतहे॥सोसप्रजाग्रतएसकानामहे॥१॥अवरएहप्रसंगवैठाहे॥अचिनकीवि
तठहरगोए॥अवरनिद्रानहीआए॥तिसविखमनोराजहूआ॥तिसमनोराजविखे
जगतहूआ॥तिसविखविदिइवास्नाहोगए॥प्रबलीवास्नाविसमरनभए॥अवरएह
सभभासी॥अरमनोराजकाशरीररचिआ॥उहीअध्भूतकमाइडहोगए॥ति
नकानामसंकल्पजाग्रतहे॥२॥आदिपरमात्मततेतेफुरनाहूआहे॥अरतिन्हे
आत्मपदविखरहा॥अरजगतिजोभासिआतिसकौंसंकल्पमात्रजाणे॥ति
सकानामकेवलजाग्रतहे॥३॥आदिपरमात्मततेफुरनाहूआ॥तिसविखजा
ग्रतदृष्टीहूएओसकौंसतिजाणकरग्रहणकीआ॥अरसतुपकाप्रमादिहूआ॥अरआ
गेजन्मात्रकौंप्रापतिहूआ॥तिसकानामचिरजाग्रतहे॥४॥जबएसविखदृढ
घनीभूतवास्नाहूए॥अरपापकर्मकरनेलागे॥तिनकेवासतेपस्थावरजन्मकोंपा
एआ॥तबतिसकानामघनजाग्रतहे॥एसीकानामसखपतिजाग्रतहे॥५॥अरजब
एसविखसंतोंकीसंगतिअरशास्त्रोंकेविचारकरबोधकोंप्रापतिहूआ॥तबएह
जाग्रतओसकोंस्वप्नहोजातीहे॥एसकानामजाग्रतस्वप्नहे॥६॥अरजबबोधवि
खदृढएस्थितिहूआतबएसकोंतुरीआपदकहतेहे॥एसकानामखीणजा
ग्रतहे॥जबएसपदकोंप्रापतिहूआ॥तबपरमानंदकीप्रापतिहोतीहे॥७॥हेरा
मजीएहसप्तप्रकारकेजोजाग्रतिसिष्टिसभीमेनेतुझकोकहीहे॥तिनकोविचार
करदेखजोतेराभ्रमनिवर्तहोजावे॥अरएहभीकिआगणनाहे॥जोएहजाव
हे॥अरएहसिटाहै॥सबब्रह्मसताहे॥दूसराककुहूआनही॥मनकेफुरनेकर
द्रिशभासतीहे॥मनकोंएस्थिरकरदेखजोभ्रमनहोजावेगी॥अरभ्रनभीनर
हेगी॥भ्रनकाहणाभीनरहेगा॥एसशाणनेकोंभीविस्मरणकर॥९९॥इतिश्रीस
स्मीवसिष्ठि र ने म सगेः॥रामउवाच॥हेभगवनतत्तमझजोकेवल
जाग्रतकीउत्पत्तिअकारणकृअकर्मकिबोधमात्रविखकहीअवसमभवहे॥ने
सेअकाशविखविकनहीहोतातेसेआत्माविखसिष्टीनहीसंभवतीआ॥काहे
तेजोआत्मानिर्विकारहे॥अरनिहक्रिआहे॥नसमवायकारणहे॥ननिमितका
रणहे॥जेसेनिमितकाघटादिककाकारणहोतीहे॥तेसेआत्मासिष्टीकास
मवायकारणभीनही॥काहेतेजोअहेतेहे॥अरनमितकारणभीनही॥जेसेकु
लालघटादिकोंकानमितकारणहोताहे॥तेसेआत्मासिष्टीकानमितका
रनभीनही॥काहेतेजोअकेहे॥तिसप्रकारणकिअकर्मकिविखसिष्टीके
सेसंभवे॥वसिष्ठउवाच॥हेरामजीतुधनहे॥अबतंजागाहे॥आत्माविरख
सिष्टीकाअतअतिअभावहे॥काहेतेजोनिर्विकारहे॥अरनिहक्रिआहे॥नअंतर
हे॥नबाहरहे॥नऊर्धहे॥नअधहे॥केवलबोधमात्रहे॥जिसविखनअरंभहे
नशणमहैकेवलबोधमात्रहे॥अरअपणेआपविखएस्थितिहे॥जेसेस

जेकीकिरणोविखजलाभासताहे॥तेसेआत्माविखजगतमिथ्याहे॥हेमहा
बुधिवानआत्माअकारणरूपहे॥तिसतेफेरकाजकेसेहोवे॥तिसतेकेवल
जगतउत्पतनहीभएआ॥तिसकेअभावतेसभकाअभावहे॥नकछुउप
जाहेनतनाशहोताहे॥उपदेशअरतिसकाअर्थअरोपितिहेअरकछुहेहीनही
अरअरोपितिप्रतीतिभीमाणिआसीकेजनावणेनमित्तकहाहे॥आत्मासर्वदा
अद्वैतरूपहे॥रामउवाच॥हेभगवनजोआत्माविखसिष्टीनहीतोपिंडाकार
केसेभासतेहे॥एनकोंकिसनेरचाहे॥अरमनबुधिइंद्रीअहंकाभानकिंहोताहे
चेतनताकिसमेमोहनकीआहे॥भूतोंकोंअसनेहरागकरबंधनकर॥अरआत्मा
विखअवरणकेसेहोताहे॥सोसमझकरएककरकहहु॥वसिष्ठउवाच॥हेरामजी
नकोईपिंडहेनाकिसीएनकोंकीआहे॥नकोईभूतहेनाकिसीकोएनोमोह
तिकीआहे॥अरनाकिसीकोंअवरणकीआहे॥भ्रातकोंअवरणभासताहे॥
जोआत्माकोंअवरणहोतातोंकिसीप्रकारनष्टनहोता॥अरअवरनहीनही
तोनशिदेसेहोवे॥हेरामजीजिसकोंअवरणहोताहेतिसकासरूपएकअव
स्थाकोंत्यागकरदूसरीअवस्थाकोंग्रहणकरताहे॥सोआत्मातोसदाज्ञानस्व
रूपहे॥अनअवस्थाकोंकदाचितनहीप्रापतिहूआ॥सदाजिंकातिंहीहे॥तिस
विखमनबुद्धिआदिककछुबणानही॥तोंमोहकहाअवरणकहां॥सदाएक
रसआत्मततहे॥अरअज्ञानीकोंभासताहे॥अरअज्ञानीकोंनानाप्रकारजगत
भासताहे॥आत्माज्ञानकालविखभीएकरसहे॥अरअज्ञानकालविखभी
एकरसहे॥तिसविखदृष्टादोहोतीहे॥ज्ञानदृष्टिकरसर्वात्माभासताहे
अरअज्ञानदृष्टिकरनानाप्रकारकाजगतभासताहे॥हेरामजीजेसेसमुंदवि
खतरंगबुदबुदेउठतेहे॥अरलीनहोजातीहे॥सोउनकाउत्पतिअरलीनहोणा
भीजलविखहे॥जलतेएतरककछुनही॥तेसेजलतेककछुविकारअरएकाभास
ताहे॥सोसभआत्माविखहोतेहे॥अवरदूसरीवस्तकोइनही॥विकारअरवका
रसभपरमात्मततहे॥अरसमुंद्रविखलहिरबुदबुदेप्रणामकरहोतेहे॥आ
त्मासदाजिंकातिंहे॥नानाप्रकारकेअकारभासतेहे॥सोभीउहीरूपहे॥जेसे
नानाप्रकारकेसुपनेहोतेहे॥सपनेविखे॥सोसभसुपनेहीहे॥दूसरीवस्तकछु
वाणीनही॥भ्रांतकरकेनानाप्रकारकीसंगिआहोतीहे॥जेसकोंअपुरखजाग्रत
वेदाहोवे॥अरनिद्राआएतेसपनेकीसिष्टिभासिआवतीहे॥सोजाग्रतकेअना
दरकेसप्तसिष्टिभासी॥जबनिद्रानिवर्तहूएतबजाग्रतभासतीहे॥सोजाग
तभीपरमात्मततकेअज्ञानकरभासतीहे॥जबतिसपदविखजागेगा॥तब
जाग्रतभ्रमनिवर्तहोजावेगा॥हेरामजीएहसंसारअपणीफुरणेकरकेहूआहे
जबफुरणाद्रिढहूआतबदुखपावणेलागा॥जेसेअपणाअपवेविखेवता
लकल्पकरआपहीदुखपावताहे॥तेसेअपणाफुरणाकरआपहीदुखपावता
हे॥तबआत्मबोधहोताहे॥तबसंसाररूपभ्रमनिवर्तहोजाताहे॥हेरामजीएहसं
सारजारमिसजगतिभासताहे॥सोभावनाकरकेभासताहे॥जबएहीभावना
ओलटिकरआत्माकीओरआवे॥तबजगतिभ्रममिटिजावेगा॥अरदेहइंद्रीआ
दिकजोआत्माकेअज्ञानकरकेफुरेहे॥अरतिनाविखअहंकारहूआहे॥सोआत्माभा
वनाकरकेनिवर्तहोजावेगा॥जेसेवर्षाकालविखबादलउमडेहोतेहे॥जबशरत्का
लआएआतबमेघनष्टहोजातेहे॥तेसेजबबोधरूपीशरत्कालआवताहे॥तबमे
घरूपीअनात्माविखआत्मभावनष्टहोजाताहे॥अरपरमस्वछताप्रगटहोतीहे॥हे

वं° म° ५२

53

रामजी जेता एह जगत पिंड रूप होकर भासता है ॥ तब आत्मा का साक्षात्कार हो
वेगा ॥ तब पीछे बंध बुधि जाती रहेगी ॥ तब जगत अकाश रूप होवेगा ॥ जैसे स्वप्न को
ल विषे मेघ बहु कीय नता जाती रहती है ॥ अरु स्वप्न का अकाश रूप होजाते हैं ॥ हे रामजी
एह आत्म की कठनता तब लग भासती है ॥ जब लग मन रूप ते बसि है ॥ तब जागेगा
तब जगत सम अकाश रूप होजावे ॥ जैसे स्वप्न ते जागे स्वप्न जगत होजाता है ॥ हे
रामजी जेते कछु विकार अरु क्षोभ अवस्था भासता है ॥ सो परमाद कर भास
ता है ॥ जब आत्मबोध होता है तब सब क्षोभ विकार मिटि जाते हैं ॥ अरु सर्व अप
व एकता को प्राप्त होता है ॥ द्वैत भाव मिटि जाता है ॥ जैसे पुजलत अग्नि विषे
चित्त अरु वाएयन अरु मिष्टान जो कछु पाएता है ॥ सो एक रूप होजाता है ॥ तैसे जब
बोध की प्राप्त होती है ॥ तब सम जगत एक रूप होजाता है ॥ जैसे नाना प्रकार
के भूषण अग्नि विषे डारीए तब गलकर एक स्वर्न ही होजाता है ॥ अरु भूषणा
हके की संमिश्रा नहीं रहिती ॥ तैसे जब मन को आत्मबोध विषे स्थिति की आ
त बजगति संगि आजाती रहिती है ॥ केवल परमात्म तत होजाता है ॥ हे रा
मजी एही आ अरु जगति तब लग भासता है ॥ जब लग समरूप ते सोए आप इ
है ॥ जब जागेगा तब संसार की सतता मिटि जावेगी ॥ अरु एछा भी कोऊ न रहे
गी ॥ जैसे किसी पुरुष को सम प्राप्त आवता है ॥ अरु ओ समस्त्र कों सम आजाणि आ तब सम
के स्वर्न की एछा नहीं करता ॥ जा मुऊ कों प्राप्त होवे ॥ काहे ते जो ओस की सतता
नहीं भासती ॥ तब एछा के से करे ॥ तैसे जब लगन सरूप ते सोए आप डा है ॥ तब लग
ग संसार के पदार्थों को मिथ्या नहीं जाणता ॥ तब एछा करता है ॥ अरु जब जागेगा
तब सम पदार्थ विरस होजावहिंगे ॥ तब जगत को ज्ञान करके मिथ्या जाणेगा ॥
सप्रवर्तते एछा भी न करेगा ॥ हे रामजी जीवन मुक्ति विषे चेष्टा सम अदृष्ट आवती
है ॥ पर उसके रिदे विषे जगत की सतता नहीं ॥ काहे ते जो आत्म अनुभव हुआ है
उसको ॥ जैसे सूर्ज की किरणों विषे जल भासता है ॥ जिस सूर्ज की किरणां जा
णी हैं तिसको जल नहीं भासता ॥ सूर्ज की किरणें ही भासती हैं ॥ अरु जिसने किरण
नहीं जाणीं तिसको जल भासता है ॥ अरु भासता है तौ भी कोऊ तुल्य है ॥ एह ज्ञानवान
के निश्चे विषे जगत तुल्य वत नहीं ॥ हे रामजी मन रूपी दीपक किस जलत है ॥ तिस
विषे ज्ञान रूपी जल पाए अरु बुनिर्वाण होजाता है ॥ जब मन निर्वाण हुआ तब
वति सपद को प्राप्त होवेगा ॥ जहां जगति का भी अभाव है ॥ अरु अहंगता का भी
अभाव है ॥ न शून्य है न अशून्य है ॥ केवल अकेवल उदे अस्त नहीं ॥ हे रामजी जो
पुरुष ऐसे पद को प्राप्त हुआ है ॥ सो क्रित अक्रित नहीं होता है ॥ अरु राग द्वेष ते
रहित परम शांति को प्राप्त होता है ॥ अरु केवल अनिर्वाच पद को प्राप्त होता है
जहां ध्यान को ठौर नहीं ॥ हे रामजी आत्मा विषे जगत आदिक पदार्थ कोऊ नहीं परम
न के संकल्प कर पड़ा भासता है ॥ जैसे थंभे विषे बिना चितेरे पुतली आकल्पता
है ॥ जो ऐसी पुतली आकल्पता है ॥ जो ऐसी पुतली आ ऐस विषे है ॥ सो उसके
निश्चे विषे है थंभे विषे कोऊ पुतली हुई नहीं ॥ तैसे मन के निश्चे विषे ज
गत है ॥ आत्मा विषे कोई वणि आया कछु नहीं ॥ जैसे थंभ विषे कामना सुत हुआ एग
ए आहे ॥ तिनको जगति सप्रवर्तन भासता है ॥ जो सप्रवर्तन जाणि आ तौ एछा
किसकी करे ॥ अरु त्याग किसका करे ॥ हे रामजी जगति तब लग सत भासता
है ॥ जब लग मन रूप का साक्षात्कार नहीं भए आ ॥ जब आत्मा का अनुभव होवे
गा ॥ तब जगत सम जगत को चिंतन भासेगा ॥ जैसे सूर्ज अरु का एक ठे नहीं

होते ॥ अर तत अस्त एक ठे नहीं होती ॥ तैसे ज्ञान अरु जगति एक ठे नहीं होती ॥ आ
त्मज्ञान हुए जगत को अभाव होजाता है ॥ जैसे भूत काल वर्तमान काल विषे न
हीं होता ॥ तैसे आत्मा विषे जगत नहीं होता ॥ हे रामजी एह जगत भ्रम करके भा
सता है ॥ विचार की एते भ्रम का अभाव होजाता है ॥ अरु द्रिष्ट दर्शन द्रिश्य त्रि
पटी भासती है ॥ सो मिथ्या है ॥ जैसे सपने विषे तीनों निद्रा दोष करि भासते हैं ॥ अर
जागे ते अभाव होजाते हैं ॥ तैसे अज्ञान करके एह भासते हैं ॥ अरु ज्ञान कर त्रिपटी का
अभाव होजावेगा ॥ हे रामजी जैसे मनोराज करके मन विषे जगत एस्थित होता
है ॥ तैसे पर्वत नदी आदि आकाश जगत भी जाणना ॥ ताते एह भ्रम त्याग कर आपणे स्व
भाव विषे एस्थित होहु ॥ एह जगत भ्रम करके उदे हुआ है ॥ विचार की एते नाश हो
जावेगा ॥ अरु परम शांतता को प्राप्त होवेगा ॥ हे रामजी जिस का मन अस्तिभ
वता को प्राप्त हुआ है ॥ सो मन स्त्र मानी है ॥ उहु निरोध पदवी को प्राप्त भए आ है ॥
उहु संसार समुद्र को तरि आहे ॥ अरु कर्म के अंत को प्राप्त हुआ है ॥ जिसको स्वरू
प ज्ञान जगत पहार नदी आदि संजगति लीन होजाता है ॥ विदिमान भी जगति अज्ञान
कोन छिद्र हु एते उहु शांत अंतःकर्णा है ॥ परम शांत रूपी अमृत कर त्रिपति है ॥ उहु
ज्ञानवान निरावरण होकर एस्थित होता है ॥ १२० ॥ इति श्री वैष्णा उ दे
ना स रामेड्या च ॥ उ हे भगवन जिस क्रम करके बोध आत्मा जगत रूप
हो भासता है ॥ सो भ्रम भेद के निवर्त अर्थ क्रम को बहुरि कहहु ॥ वशिष्ठ उवाच
॥ हे रामजी जेता कछु जग द्रिष्टि आवता है ॥ सो चित्त विषे भासता है ॥ ज्ञान
वान को भी चित्त कर भासता है ॥ अरु अज्ञानी को भी चित्त कर भासता है ॥ पर एते
भेद है जो अज्ञानी जगत को देखता है ॥ तब सत मानता है ॥ अरु ज्ञानवान आप
की द्रिष्टि कर देखता है ॥ सुख दुःख अर्थ विचार कर आत्म मात्र जाणता है ॥ अ
विद्या करके भासता है ॥ सो अविद्या भी कछु वस्तु नहीं ॥ जैसे सूर्जे की किरणां
विषे जल भासता है ॥ सो कछु वस्तु नहीं तैसे अविद्या कछु वस्तु नहीं ॥ जेता क
छु अस्थावर जंगम जगत भासता है ॥ सो कल्प के अंत विषे नष्ट होजाता है ॥ का
है तैसे विभाग रूप है ॥ तैसे विभाग रूप एह जगत नष्ट होजाता है ॥ जैसे समुद्र वि
खे एक एक तरंग थनिका भी ऐसे तौ भी नष्ट होजाता है ॥ काहे ते जो विभाग रूप है ॥ त
ब माए आविद्या सत अरु असत आदिक सर्व प्राणों का अभाव होजाता है ॥ काहे ते जो सम
शांति जगति विषे है ॥ जौं जगति लीन भए आ ॥ तब शांति कहां रहेगी ॥ अरु जौं तैं
कहे देहि दुपजी तौ है तौ ॥ देहि अरु तत ते सप्रवर्तन जाणि ॥ अरु जौं तैं कहे जगति
प्रलै विषे जो लीन होता है ॥ सो कछु तौ है कि जब नाश हुई होता है जो असति
ही होता है ॥ अरु जौं तैं कहे अस्ति है तौ बहुरि किं उपजता है ॥ तौ उपजी वस्तु भी स
ति नहीं होती ॥ अरु जौं तैं कहे ॥ प्रलै विषे बिदा का आदी रहिता है ॥ सोए जगति
रूप हो भासता है ॥ तौ जगति कछु पतर वस्तु नहीं भए ॥ बोध मात्र होए सम्यक
रहो भासता है ॥ जैसे बीज अरु ब्रिक्ष विषे कछु भेद नहीं ॥ तैसे जिस तें जगत भास
ता है ॥ सो उही रूप है ॥ अवर कछु उपजा नहीं जो उपमान हो तौ विकार अरु भेद
के से होवहि ॥ ताते बोध मात्र ही अपणे आप विषे एस्थित है ॥ कारण कार्य जते र
तथ मणीत रूप आत्म सत्ता एस्थित है ॥ उही जगत रूप होएकर भासता है ॥ दे
ज्ञाकाश पदार्थ सम महाप्रलै रूप है ॥ जब महाप्रलै होती है ब्रह्मादेव अजंता
सम पदार्थ नष्ट होजाते हैं ॥ प्रकाश वायु अग्नि पृथिवी का नाम भी नहीं रहे
ता ॥ अर्थ भी नहीं रहता केवल अवेत चिन्मात्र सत्ता रहती है ॥ तिसको न

वेतेअनभवकहितेहैं ॥ केवलबोधमात्रबोधतेभीरहितशेषरहिताहै ॥ परम
आत्मरूपहै ॥ तिसविषेवाणीअरुमनकीगमनहीं ॥ अवरकोऊनहींजाणता
कहा ॥ हेरामजीजोपुरुषअविद्यारूपीनिंद्रातेजागिआहै ॥ सोनिराभासहोताहै
हि ॥ अर्थयहजोचितचेतनकाजोसंबंधहै ॥ सोछूटजाताहै ॥ अरपरमप्रकाशरू
पआत्मपदतिसकौप्रापतिहोताहै ॥ अरसभभावविषेस्थितिहोताहै ॥ प
रभावजोप्रिक्रितहै तिसकाअभावहोजाताहै ॥ हेरामजीजैसाकछुजगत
परभावकरकेभिंनभिंनभासताहै ॥ सोसभएकरूपहोजाताहै ॥ जैसेस्वप्नवि
षेपदार्थभिंनभिंनभासतेहैं ॥ अरजागतेसभएकरूपहोजातेहैं ॥ अपणाआ
पहीभासताहै ॥ तैसेजगतसकौआत्माकाअनभवहुआतबजगतआपणाआपही
भासताहै ॥ हेरामजीतबएकरूपहोभासताहै ॥ जबअवरकछुबासिआनथा
जैसेस्वप्नकेभूषणआग्निविषेडारीअहि ॥ तबअनेकभूषणोंकाएकपिंड
होजाताहै ॥ अरएकहीप्रकारभासताहै ॥ तैसेजबबोधकाअनभवहुआत
बसर्वएकहीहोजाताहै ॥ हेरामजीभूषणोंकेहोतेभीस्वर्णहीथा ॥ एसीतेएक
रूपहोएगआहै ॥ तैसेजबबोधकाअनभवहुआतबसर्वएकहीहोजाताहै तै
सेजगतकेहोतेभीजगतआत्मरूपहै ॥ जगोतेहैनहीअरुएकोनिआपेभा
सताहै ॥ अरभिंनद्रिष्टिआवताहै ॥ जैसेमृगतृसनाजलविषेतरंगहैनही ॥ अरभास
तेहैंभीजलमरूपहै ॥ अरसेभिंनकरदर्शनकरभिंनद्रिष्टिआवतेहै ॥ हेरामजीज्ञा
नीकौंजीवन्मुक्तिअरविदेहिमुक्तितुल्लहै ॥ जैसेभूषणोंकेहोतेभीस्वर्णहै
अरभूषणोंकाअभावहुआतबभीस्वर्णहै ॥ तैसेज्ञानवानकौदेहकेहोते
भीब्रह्महै ॥ अरदेहकेअभावहुएभीब्रह्महै ॥ अरजोअज्ञानीहै ॥ तिसकेरिदेवि
षेनानाप्रकारकाजगतपड़ाफुरताहै ॥ सोअज्ञानीकवनहैजिसकौमनकासं
बंधहै ॥ हेरामजीएहजगतभिंनभिंनमनविषेपड़ाफुरताहै ॥ जैसेकाष्टकेथं
भेविषेचितेरापुतलीआकल्पताहै ॥ सोअवरकोनहीभासतीआ ॥ इसीकेम
नविषेहोतीआहै ॥ अवरकौतबभासैजोखोदिकादीअहि ॥ अनथानहीभा
सतीआ ॥ तैसेभिंनभिंनपदार्थरूपीपुतलीआआगिआनीकेमनविषेफुरती
आहै ॥ ज्ञानीकौनहीभासतीआ ॥ अरएहअज्ञानहैजोकाष्टअकारहोताहै ॥ तब
चितेरापुतलीआकल्पताहै ॥ अरमनरूपीअसाचितेराहै ॥ जोअकाशवि
षेपदार्थकल्पताहै ॥ अरखोदेबिनाहीपड़ेआसतेहहि ॥ हेरामजीअवरइस
तबणिआकछुनही ॥ जैसेकिसीपुरखकोगतिडापरपुतलीलिखीहोसोकाग
जिरूपहै ॥ अवरकछुनही ॥ तैसेजगतभीब्रह्मरूपहै ॥ हेरामजीजबलगतरूकौं
आत्मपदकाअनभवहोवैगा ॥ तबजेतेकछुजगतकेपदार्थअरअर्थहै ॥ सोसभशु
द्धीविषेपड़ेभासहिगे ॥ जैसेजिसनेस्वर्णकौजाणिआहै ॥ तिसकौंभूषणोंके
आहिअरअर्थस्वर्णहीपड़ेभासतेहै ॥ तैसेजबआत्मपदकौजाणैगा ॥ तबतत्त
कौंजगतकेआहिअरअर्थआत्माहीविषेद्रिष्टिआवहिगे ॥ हेरामजीएहजो
जीवहैसोमहासत्तमहै ॥ तिनजीवहीविषेअपणीअपणीसिष्टिहै ॥ जब
लगफुरताहैतबलगसिष्टाहै ॥ जबफुरणाअपणीओरआवताहै ॥ तबसभ
सिष्टाआत्मरूपहोजातीहै ॥ अकाशकालादिसभपदार्थसभआत्मरूपहै
आत्मातेएतरकछुनही ॥ अपणीआपविषेस्थितिहै ॥ शुद्धहैतचिनमात्र
पदहै ॥ ७७ ॥ इति श्रीयोगवासिष्ठे निर्वाणप्रकरणे उत्तरार्धे सप्तसप्ततितमः सर्गः ॥
भगवन्नसरवततवेतिअहविषेश्रेष्टिहिरअरडिराकासोसंवादधकेसह

आहै ॥ अरकालादिविषेकालतनकैसेफुरीआहै ॥ अरअकाशविषेशूंनताकैसेह
पैहै ॥ वायुविषेवायुतकैसेहुआहै ॥ अरजडविषेजड़तासभसंभलोंविषेभल
ताअरसंकल्पविकल्पसदाहीविषेकिसप्रतिकैसेहुआहै ॥ अरजलविषेमृदु
ताभिंनविषेभिंनताअरतविषेअनताद्रिष्टिविषेद्रिष्टताकिसतेहुआहै
सोमुझकोकहहु ॥ काहेतेजोअर्थउपबुधिकोप्रवाथकेनमिलकहणाजोगहै
बाल्मीकउवाच ॥ हेरामजीअख्याविमलईसवतेआदिजोपदार्थहै ॥ सोशब्दकुल्लविषे
निसमालीनहोतेहैं तिसकालामुझेहै ॥ तिसकाप्रारिअरअर्थएहहै ॥ सोवि
चलेअरअर्थजोएहसभनिर्वाणहोजातेहैं ॥ हेरामजीअसाअनंतजोअकाश
हैसोसमहै ॥ अरसमहै ॥ आदिअंततेरहितहै ॥ अरमध्यतेभीरहितचेतनहै अ
होतेहैं ॥ नहाएकअरदोएपआहिभीनही ॥ जिसविषेअकाशभीपालापणबन
अस्थूलहै ॥ असासतमहै ॥ अरहैअनहीदोनोंप्राप्तहोतेरहितहै ॥ अपणाआपवि
खेणस्थितिहै ॥ जैसेपाखाणकीशिलाकाकोप्रहोताहै तैसेचितकेफुरणेतेर
हितहै ॥ ऐसेपरमात्मतनअकाशतेस्थितिकाउपजणाकैसेकहीअ ॥ तैसे
अकाशअपणीआपविषेस्थितिहै ॥ हेरामजीएकनिमखकेफुरणेकरअनेकोन
मनोप्रवर्ततनाविततजातीहै ॥ अरतिसकेमधविषेजोअनभवकरनेवालीसता
है ॥ तिसविषेतेएस्थितिहोकरदेखजोजगतिकहाहै ॥ अरजगतिकीउत्पति
कहाहै ॥ हेरामजीउत्पतिजोहोतीहै सोसमवायकारणअरुनमितकारणकर
होतीहै ॥ सोआत्मानिराकारअद्वैतसनमात्रहै ॥ तबसमवायकारणहैनतोनमितका
रणहै ॥ याततेआत्माअच्युतहै सरूपतेकदाचितगिराहिआनहीं ॥ तातेसमवायका
रणनही ॥ यातेनिराकारहैतातेनमितकारणभीनही ॥ तातेआत्माविषेजगत
कोऊनही ॥ भ्रांतमात्रभासताहै ॥ अरअविद्याकरकेभासताहै ॥ अविद्याकरकेंभा
सताहै ॥ अविद्याकिसकानामहै ॥ जोवस्तुहोवैनहीअरप्रत्यक्षभासेसोअवि
द्याकरजाणीअ ॥ हेरामजीब्रह्मसदाअपणीआपविषेस्थितिहै ॥ जैसेसमुद्र
अपणीआपविषेस्थितिहै ॥ अरतिसविषेतरंगआवतेजातेहैं ॥ सोसमुद्रहीरूप
हैसमुद्रतेएतरकछुनही ॥ तबतअपणीआपविषेस्थितिहोवैतबजगतकाश
विषेशुद्धब्रह्मतेएतरवस्तुकछुनही ॥ हेरामजी
हिअर्थशून्यतेएतरवलभासेगा ॥ काहेतेजोदृसरीवस्तुकछुनही ॥ एहिभ्रममात्रहै ॥ जो
अव्याकृतहैतिसविषेएहिमूर्तताकैसेउत्पतिहोवैहि ॥ अरजाकारणबिनाद्रिष्टिआवैसो
वस्तुकारणतेउत्पतिहोतीहै ॥ सोसतहोतीहै ॥ अरकारणबिनाभासताहै ॥ तिसकाकार
भ्रममात्रजाणीअ ॥ जैसेअकाशविषेदूसराचंद्रमाभासताहै ॥ तैसेएहजग
तकोऊनही ॥ यातेमिथ्याकहीताहै ॥ भ्रमकरकेंभासताहै ॥ हेरामजीअकाशकाल
तमिथ्याभ्रममात्रहै ॥ विचारकीएतेरहिताहै ॥ आत्माविषेनउदयहुएहैंनअसतहोता
आदिकजोपदार्थहै ॥ सोसभभ्रमहै ॥ इति श्रीयोगवासिष्ठे निर्वाणप्रकरणे ... सर्गः ॥ ७८ ॥
हैंजिकातिआत्माहीहै ॥ ७८ ॥ इतिश्रीनि ... तैसेब्रह्म
... ॥ हेरामजीजैसेअकाशअपणीआपविषेस्थितिहै ॥ सोकैसेकिसीकाकारणहोवै ॥ अ
रूपअकाशअपणीआपविषेस्थितिहै ॥ अरअरभप्रणामहोताहै ॥ सो
कारणकारजतबहोताहै ॥ जोहोतहोताहै ॥ अरअरंभकेसहोवै ॥ हे
आत्माअहोतहै ॥ अरअच्युतहै ॥ अरनिर्गुणहै ॥ तिसविषेअरंभकैसेहोवै ॥ का
रामजीजैसाकछुजगतिजकौभासताहै ॥ सोसभकाप्रादिमौनहै ॥ का
हिमौनकिआकहीअजहामनकाफुरणाशूंनहै ॥ हेरामजीजोकछुभासताहै
सोभ्रममात्रहै ॥ अरजैसाकछुहुआहोताजो ॥ ज्ञानीकौभीप्रतक्षहोताहै ॥ याते जान

वं॰ म॰ ५५

कालविषे नही भासता ॥ ताते भ्रममात्र है ॥ हे रामजी प्रिथवी जल तेज आदि
लेकर जो पदार्थ है एनका फुनास्व प्रकीनि ग्राप है ॥ जैसे स्वप्ने विषे बन्ध होता
है ॥ जैसे संकल्पनगर विषे चेष्टा होती है ॥ पर पासि बैठे को नही भासते ॥ जोंकछु
हूए होते तो पासि बैठे अवर को भी द्रिष्टि आवते ॥ ताते अस को द्रिष्टि नही आवते
है ॥ जैसे संकल्पमात्र है ॥ हे रामजी जैसे स्वप्न है कोई भि
तातें है नही ॥ ताते स्रिष्ट अकारण संकल्पमात्र है ॥ हे रामजी जो कछु होवे
तो का कारण कोऊ नही ॥ तैसे जगत का कारण कोऊ नही ॥ जो कछु होवे
तौ कारण होवे ॥ जो होवे ही नही तौ तिस का कारण कोन कहीऐ ॥ ए ॥ म ॥ उ ॥
च ॥ हे भगवन् वट का बीज जो होता है तिस विषे ब्रिछ का भाव रहिता है
कालपाए कर बीज ते ब्रिछ होए आवता है ॥ तैसे ए सब जगत का कारण प्र
मात्र किन होवहि ॥ व ॥ सि ॥ उ ॥ वा ॥ च ॥ हे रामजी सूक्ष्म विषे जो अस्थूल हो
ता है ॥ सो संकल्पमात्र होता है ॥ मै भी कहता हो ॥ जो सूक्ष्म विषे एस्थूल हो
ता है ॥ पर संकल्पमात्र होता है ॥ नही कछु सत होता ॥ जो कही ऐसे सति होता
है ॥ तो एह भी असंभव है ॥ जैसे राए के कण विषे सुमेर पर्वत का होणा
असंभव है ॥ तैसे सूक्ष्म परमाणूआं ते सर्ग का उत्पति होणा असंभव है ॥ हे रा
मजी सूक्ष्म परमाणूआं का कारज भी जगत नितबु कहीऐ ॥ जो सूक्ष्म अणु भी आ
त्मा विषे पाए जावहि ॥ आत्मा तो अद्वैत है ॥ तिस विषे एक अरु दोए कहणे
का अभाव है ॥ आत्मा विषे जानना भी नही ॥ केवल आत्मतत्त मात्र है ॥ अथवा
र अरु अवयव एते रहित है ॥ बीज भी तब ही पाईता है ॥ जब आस को जनलाई
बीता है ॥ अरगी विअकरण का पठ्ठा न होता है ॥ सो आत्मा जो अपार अर्ध
ते रहित है ॥ केवल अपणा भाव विषे स्थिति है ॥ अद्वैत सत्तामात्र है ॥ तैसे वं
धिआ के पुत्र का कारण को ऊ नही ॥ तैसे जगत का कारण भी कोऊ नही ॥ जो वं
धिआ का पुत्र ही नही ॥ तिस का कारण कहणा होवे ॥ तैसे जगत ही नही तौ ए
स का कारण ब्रह्म कैसे होवे ॥ अरु जिस को तूं देखता है सो द्रिष्टा ही द्रिश
रूप होकर स्थित भइआ है ॥ जैसे स्वप्ने विषे द्रिष्टा ही द्रिश होता है ॥ तैसे एह जगत द्रि
श रूप होए कर आत्मा ही स्थित है ॥ हे रामजी जैसे सूर्य की किरणां जल्ला भा
स होकर स्थित होती है ॥ तैसे ब्रह्म ही जगत प्रकार होकर द्रिष्टि आवता है
द्रिश भी कछु हूआ वस्तु नही ॥ जैसे समुंद्र ही अवर लहर तरंगरूप होकर भासता
है ॥ तैसे अनंत शक्ति होए कर परमात्मा भासता है ॥ हे रामजी मै अरु तूं एह जगत
पदार्थ सभ फुरनेमात्र है ॥ जैसे संकल्प यत होता है ॥ जो मन का रचा है ॥ तैसे
एह जगत कछु आत्मा विषे वास्तव ग्रा नही ॥ केवल अपणे आप विषे अद्वैत स्थि
ति है ॥ हम को तो सदा ऊही भासता है ॥ हे रामजी एह जगत आत्मा विषे उदे नही
हूआ ॥ अरु असति भी नही होता ॥ सदाशिव का निर्मल पद है ॥ १८२ ॥ इ
ति श्री ते कताप्रतपादं ना सर्गः ॥ व ॥ सि ॥ उ ॥ वा ॥ च ॥ ओ हे रामजी ज
गत का भाव अरु अभाव जड चेतन स्थावर जंगम अस्थूल सूक्ष्म शुभ अशुभ हूआ ही
नही ॥ मैं तझ को किआ कहू ॥ जो एह कारज है अरु एस का कारण है ॥ एह हूआ
ही नही तो कारज कारण कैसे होवे ॥ जो सर्व देश सर्व काल सर्व वस्तु होवे सो
कारज का कारण कैसे होवे ॥ केवल अपणे आप विषे स्थित है ॥ जो है अरु न
ही को निआई स्थिति हूआ है ॥ तिस विषे संवेदन जो है ज्ञान ताको तिस कर के
जगत भासता है ॥ जो ज्ञान जो है संवेदन सो चेतनमात्र का विवर्त है ॥ तिस वि
वर्त कर के जगत भासता है ॥ जब एही फुरणा उलट कर अपणे रूप आवता है

तब जगत का अभाव हो जाता है ॥ अरु जब ताई ते बन्धन है ऐ धिआता रूप हो
य कर स्थित होता है ॥ एसी का नाम जगत है ॥ एक ही विषे बंध होता है ॥ अ
रु मुकति भी होता है ॥ आत्मा विषे बंध नहीं है ॥ हे रामजी तिस जगत दृष्टा को भूतल हो
एक रूप है ॥ तब एक नदी होए चलती है ॥ तैसे जब वासना उदे होती है ॥
तब जगत रूप होए कर भासता है ॥ जब अविद्या अबिद्या दृष्ट होती है तब वर्तमान
होता है ॥ तब सब संकल्प का ॥ अरु जब वासना उदे होती है तब जगत का अभा
व हो जाता है ॥ तब केवल आत्मा भासता है ॥ जैसे प्रलय काल का प्रकाश रूप होता है
तिस ते भी निर्मल भासता है ॥ हे रामजी वृत्ति मर जाती है ॥ सो मरता नही ॥ अरु आ
तब कही ग्रंज्ञाना तिस अरु भाव को प्रापति होवे ॥ अरु जो राग को न प्रापति हो
वे ॥ बहुर जगत भी न भासे ॥ ताते एह मरता नही ॥ काहे ते जो बहुर जगत भा
सता है ॥ एह मरणा स्वप्न की निआई भइआ ॥ जैसे स्वप्न ते जागे हैं
ऐ जगत भासता है ॥ अरु हूए चेष्टा को भी त्याग करता है ॥ तैसे चित भी है ॥ जैसे स्वप्ने
अरु जाग्रत होती है ॥ ताते मरना न हूआ ॥ मने का संकल्प जैसे बात सो विषे जो
अरु नवजीवरण का हरखि दुपजत बात सो विषे मरणा का
गोणा का सखा अगोपा है ॥ अरु जब दोनो अवस्था शरीर का सम मही है ॥ तब एह अवस्था
माकु अपापी अ ॥ तब दोनो अवस्था शरीर अभी रकी सममही है ॥ तब एह अवस्था
शरीर को जाणी अनतचेतन ग्रनतर प्रतिब्बिहा जावे गा ॥ तब संवेदन का अतिअंता
भाव हो जावेगा ॥ धिआता धिआन धिआन धिआन धिआवेगा
अरु ज्ञान भी न रहेगा ॥ तब ऐसा अभाव है आतम पाके निर्मल स्वछ पद रहेगा
हे रामजी अब भी निर्मल पद है ॥ परमार्थ के पदार्थ सत भासते हैं ॥ जैसे
निंद्रा दोस करके केवल अनुभव विषे पदार्थ सत होकर भासते हैं ॥ अरु जा
गते कहिता है जो भ्रममात्र ही थे ॥ तैसे एह जगत भी जाणा परमार्थ सरूप कर अ
माद करके एह जगत भासता है ॥ सो सत्रू पविषे जागे ते अभाव हो जाता है ॥ हे
रामजी स्व प्रविषे आणा होते गज देखता है ॥ तैसे एह जगत भी जाणा ॥ एह काल
होए सकोऊ बंधन का कारण है ॥ जैसे अपणा आप ही अस्थान बनावती है ॥ अर
आप ही फस मरता है ॥ अरु जैसे मद्पान कर नेहारा पान कर के मसवेल अवरु का
अवरु बोलता है ॥ अरु तिस कर के बंधमान होता है ॥ तैसे अपणे संकल्प करके बं
धीता है ॥ जब संकल्प मिटे तब परमानंद को प्रापति होवे ॥ अरु परम स्वछ प
द को प्राप्त होता है ॥ १८४ ॥ इति श्री निर्वाण प्र व र्ग व र्ने ना म स र्ग
॥ व ॥ सि ॥ उ ॥ वा ॥ च ॥ ओ हे रामजी जहा अप्रकाश होता है ॥ तहा सूनता भी होती है ॥
अरु जहा अप्रकाश होता है तहा अप्रकाश भी होता है ॥ अरु अप्रकाश है तहा पदार्थ भी
होते है ॥ जैसे जहा चेतन सता है तहा स्रिष्टि भी भासती है ॥ पर वे के सव बसती है
जावणी आकछु नही ॥ अरु सदा रहती है ॥ जैसे सूर्य की किरणा विषे जल
कदाचित नही उत्पति हूआ ॥ अरु जल भासता सदा रहता है ॥ काहे ते जो विवर्त
रूप है ॥ तैसे स्रिष्टि आत्मा का विवर्त है ॥ जहा चेतन सता है तहा स्रिष्टि
उसी का है ॥ तैसे स्रिष्टि आत्मा का विवर्त है ॥ के सापति हासे है ॥ जो जिस
भी है ॥ ऐसे जो परेएक एतहा सतरूफ को कहिता हो के सापति हासे है ॥ जो जिस
के हाणो तिस रसरूप ते जरा अरु मितने रहित होवे ॥ परम संदरशन होता है अ
रचित के का मोह होणा हारा है ॥ अरु अग्र अनु रूपहै ॥ अपशक्ति तद्रूप है ॥ अरु मेरा देवि
आ हूआ है ॥ हे रामजी एक काल मो मै राचित जगत ने उपपत्नेन हूआ ॥ तो कि
सी एकात एस्थान विषे जाए कर समाधि करो ॥ जगत के सा है जो मो दृ
का विवहार करके द्रिढ हूआ है ॥ अरु जो कछु जानणा जोगा है ॥ तिस को मै जाणा
मै

वालाहोपरविवहारकरैकैंभीपूर्णतद्रूपीहोवुउ॥ ऐसेमैविचारतभएश्रीजो
निर्विकल्पसमाधकरैं॥ अरपरमपूर्णतकोप्राप्तिहोवों॥ जोआदिअंतम
ध्यतेरहितपरमानंदसरूपहै॥ अरअविनाशीपदहै॥ तिसविखेविश्रामक
रैं॥ हेरामजीतवभीमैंज्ञानवानपरमातमसरूपहीथा॥ परचितकीवृत्तिज
वहुवीभावतेंउपरंतहूएविवहारविखेभीतिसकारणतेंएकांतसमाध
कीइछाकरी॥ जहालोभकाउठनहोवेतहांएस्थितिहोवों॥ ऐसेविचारकर
मैंउदिआअकाशविखेएकदेवताअहूकापर्वतथा॥ तहांजाएमैंवैठा॥ त
हांवहुतप्रकारएंडीअहूकेविखेदेखे॥ अरअगनाजाराएनकर्तीहै॥ अरचव
सिरपरहोतेहैं॥ अरमंदमंदपवनचलताहै॥ सोहूविखेभीमेरुकोंअप
तरमणीभासे॥ किसीकालविखेनखदापेनहीकिसीकों॥ समाधवालेके
एहशत्रुहैं॥ तिनकोंविरसजाणकरवहुडिमैंडिआ॥ अरएकपर्वतकी
कंदराथीअरवहुतसंदरथीतहांजाएप्रापतिभएआ॥ संदरवनिहैं॥ अरस
दरपवनचलताहै॥ ऐसेएस्थानोंकोंहमदेखिआ॥ परमेरुकोंशत्रुवनभा
सें॥ काहेतेंजोपर्वतोंअहूकशाहीहोतेथे॥ अरपवनकास्पर्शहोताहै॥ एत्या
हिकअरवभीविखेहैं॥ तिनकोंदेखिकरमैआगेआगेचलिआ॥ नागोंकेदेश
देखे॥ अरसंदरनागोंकीआंकेनिआदेखिआ॥ अरवहुतरमणीकएंडीएंडी
अहूकेविखेदेखा॥ सोविखेभीमेरुकोंसर्पवतभासे॥ जैसेसर्पकेस्पर्शा
कोंएतेविखकरअनर्थकोंप्रापतिहोवीताहै॥ तैसेमेरुकोंविखभासे॥ व
हुडिआगेचलिआ॥ हेरामजीजितेकछुएंडीअहूकेविखेहैं॥ सोसभअन
र्थकेकारणहैं॥ तिनोंविखेशांतिमूढअज्ञानीकर्तेहैं॥ सभमंडकेकनारे
गएआ॥ तिनकेसाथसखकेएस्थानोंविखेविचरकेदराअरवणिकों
देखतभएआ॥ पर्वतपातालदशोदिशादेखताफिरिआपरएकांतएस्था
नमेरुकोंकोउदिछितआएआतसमेंवहुडिअकाशकोंउडिआ॥ अकाशवि
खेपवनअरमेघोंकेअस्थानलंघतागएआ॥ अरदेवगणअरविद्याधरअ
रसिधोंकेएस्थानलंघतागएआ॥ अरदेवतोंकएवुडेभूतोंकपडेउड
तेहहिं अरअपूर्वअनंदेखअनानाप्रकारकेभूतोंकेएस्थानदेखे॥ अ
रगंधर्वोंकेएस्थानलंघताभएआ॥ कहूसूर्जकाप्रकाशहोताहै॥ तिसकों
भीलंघगएआ॥ कहूअंधेरेदेखिआजोसूर्जकाप्रकाशभीनहीं॥ चंद्रमाकेमंड
लकोंलंघगएआ॥ आगेएकअग्निकाएस्थानथा॥ तिसकोंलंघकरअह्म
प्रकाशविखेगएआ॥ जहांएंडीअहूकोंराकणभीनरहे॥ काहेतेंजोएं
डीअहूकविखेकहुछिद्रनआवे॥ अरवायुअग्निजलपृथवीचारोंकाअ
भावहै॥ हेरामजीतिसएस्थानविखेमैगएआ॥ जहांभूतसपवनभीना
होछिद्रिआवते॥ अरसिधोंकीभीगमनहीं॥ तहांजाएकरमैंएककुटीरची
संकल्पकी॥ अरतिसकेसाथकल्पवृक्षपत्रफूलोंकरपूरणरचे॥ तिससे
हरकुटीकोंएकगेरतेंछिद्रराखा॥ मेराजोसदृसंकल्पथासोसतदाअन
हूआ॥ तिसकुटीकोंरचिकरतितविखेप्रवेशकीआ॥ अरसंकल्पकीआजो
पांचेवरखपर्जंतमैंसमाधविखेरहोंगा॥ तिसतेउपरंतसमाधतेंउतरोंगा
ऐसेविचारकरकेपद्मआसनकोंवांधिआ॥ अरसमाधविखेएस्थितिभए
आ॥ अरपरमपूर्णतविखेमगनभएआ॥ जहांलोभकोउठनहीं॥ तिसनि
र्विकल्पसमाधविखेपांचवरखनववतीतहूआ॥ तवउठहजोभावीथी

समाधकेउतरेकोसोसंकल्पआनिफुरिआ॥ जैसेशिष्यवीविखेदीनदु
एआहूआकालपाएकरदेहकुरसताहै॥ तैसेसंकल्पआनिफुरिआ॥ अ
थदेप्राणआनफुरे॥ जैसेकाहूआब्रिछवसंतऋतविपत्रफूलआवें॥ तैसेप्रा
णफुरिआए॥ नवतानपेंट्रीअपनीविआए॥ जैसेवसंतऋतविखेफूलविडआ
वतेहैं॥ तैसेताअनेंद्रीआनिआए॥ अरएहदिसंवहजोदेपिआचपाएहैं
कारेसाआनिफुरआनेंमिअविचरहै॥ ऐसाजोअहंकाररूपीपिशाचहै॥ अ
हंकाररूपीतिसकोंएहीहै॥ सआनफुरिआ॥ हेरामजीप्राणचरखमेंककका
ऐसेचिवीतहूआ॥ जैसेनसत्ककाकिलनाहोताहै॥ कालभीवहुतप्रका
रकरबतीतहै॥ किसीकोंकालवहुतहोताहै॥ अरकिसीकोंवहुतथोरा
होजाताहै॥ जोदीहताहैतोंवहुतकालभीथोराहोजाताहै॥ अरदुखीएकको
थोराकालभीवहुतहोजाताहै॥ हेरामजीएहसमाधकमेंभेवनेनकाअ
है॥ ताएहसकतिसभनहूआनहूआविलहैपरीतहनहीहोतो॥ काहेतेंजोना
नाप्रकारकीवासनासाथअंतःकरणमलीनहै॥ तवअंतःकरणतिनकासूध
होवेतवजैसासंकल्पकरैहैतैसासिदहोवे॥ अरमलीनअंतःकरणवाले
कासंकल्पसिधनहीहोता॥ १०४५॥ इति अका कुटी सिद्ध साध
नै ना स र्गः॥ रामउवाच॥ हेभगवनतुमनिर्वाणसरूपहो तु
मकोंअहंकाररूपीपिशाचकैसेफुरिआ एहसंसेमेरादूरकरो॥ वशिष्ठउवाच॥
हेरामजीज्ञानीहोवेअथवाअज्ञानीहोवेजवलगशरीरकासंबंधहै॥ तव
लगअहंकारदूरनहीहोता॥ काहेतेंजोजहांआधारहोताहै॥ तहांआधेय
भीहोताहै॥ अरजहांआधेयहोताहैतहांआधारभीहोताहै॥ तैसेजहांदेहि
होतीहै॥ तहांअहंकारभीहोताहै॥ अरजहांअहंकारहोताहैतहांदेहभी
होतीहै॥ तहांअहंकारबिनाशरीरनहीरहिता॥ सोअहंकारअज्ञानक
तीहै॥ हेरामजीअहंकारविखेजावधावताहै॥ सोअवणकर
पीबालकनेकल्पिआहै॥ अरज्ञानीविखेजावबाधताहै॥ हेरामजीएहअहंकारअविद्या
जिसकेजाणनेअहंकारनष्टहोजाताहै॥ जोवस्तमिथ्याहोवेअरभा
सकरकेकल्पिआहै अरअविद्याकिसकानामहै॥ तोतिसकाकारजअहंकार
कैसाअविद्याहै॥ अरजोअविद्याहीमिथ्याहै॥ जैसेभ्रमकरकेवेताल
कैसेसतहोवे॥ एहमिथ्याभ्रमकरकेउदहूआहै॥
ब्रिछविखेभासताहै तैसेभ्रमकरकेअहंकाररूपीवेतालउदहूआहै॥
अरएसकाकारणअविद्याभीअविचारतेंसिदहै॥ विचारकीएतेएसका
अभावहोजाताहै॥ जहांजहांविचारहोताहैतहांतहांअविद्यानहीरहै॥ दीप
तौ॥ जैसेजहांजहांदीपकहोताहै तहांतहांअंधकारनहीरहता॥
ककेजागतेअंधकारकाअभावहोजाताहै॥ तैसेविचारकेउदहूएतें
अविद्याकाभीअभावहोजाताहै॥ जोवस्तविचारकीएतेनरहै॥ सोमि
थ्याजाणीए॥ जोआपहीमिथ्याहोवे॥ जोआपहीमिथ्याहोवेतिसका
कारजकैसेसतहोवे॥ तातेंअहंकारकोंमिथ्याजाणा॥ हेरामजीअकाश
केब्रिछकाकारनकाउनहीं॥ तैसेअहंकारकाकारणकोउनहीं
मनसहतजोखटपंडीहैं॥ सोसभआत्मातिनकाविखनहीं॥ काहेतें
जोमनसहतखटपंडीआसाकारहैं॥ अविद्याहै॥ साकारकाकारणनि
राकारआत्माकेसहोवे॥ जोकछुअकारहै॥ सोसभमिथ्याहै॥ जोवीजअ
होताहैतिसतेअंकुरउत्पतिहोताहै॥ तवजाणीताहै॥ जोवीजतेंअंकुर

वं॰
मं॰
६५

उत्पत्तिहुआहे॥ परजोंबीजहीनहोवैतौतिसकाकारनग्रहंकारकेसेउत्पत्ति
होवे॥ तेसेजगतकाकारनसंवेदनहोनहोवे॥ तौजगतकेसेहोवे॥ जेसेग्र
काशविखेदूसराचंद्रमाहोवेतौतिसकाकारनभीमानीये॥ जोदूसराबड
मानहोवेतौतिसकाकारनकेसेहोवे॥ हेरामजीब्रह्मअकाशरूपहेतहे॥ अ
रस्तथहेअरसंवेदनतेरहितहे॥ अरअद्वैतहे अरअभिनाशीहे॥ सोकार
जकारणकेसेहोवे हेरामजीपृथ्वीआदिकतत्तजोभासतेहैं॥ सोअवि
दिमानहे॥ भ्रमकरकेपरंभासतीहे॥ केवलसतअसतआत्माअपणाआपविखे
पस्थितिहे॥ अरजोतूकहेजोअविद्मानहेतौभासतेकिहे॥ तिसकाउतर
एहहे॥ जेसेस्वप्नविखेअग्निहोतीदिष्टिभासतीहे॥ तेसेजगतभीअसतहोता
भासताहे॥ भ्रमकरके॥ जेसेअकाशविखेत्रिकुटभासतेहें अरभासतेहें॥ प
हमोअश्रजूककुनहीं॥ जेसेसंकल्पकरनगरउचिरिजीजेतबउसीकोचे
छाभीसेपरीहोतीहे॥ परउनकासरूपसंकल्पमात्रहे॥ वास्तवअर्थकारक
कनहोहोता॥ परअपणाकालावखिसतभासताहे॥ जबसंकल्पकीलहो
तीहे॥ तबउनकाभीअभावहोजाताहे॥ तबअकाशकेत्रिकुटकीनिआप
हपकिसे॥ जौंअकाशकेत्रिकुटकीभावनाकरीयेतौसोहभीपरंभासतहे
तेसेएहजगसंकल्पमात्रहे॥ सतरूपतेककुनहीं॥ जौविचारकरीयेतौ
एसकाअभावहोजाताहे॥ हेरामजीशुधआत्मातत्तअपणाआपविखेप
स्थितिहे॥ सोएजगतअकारहोभासताहे॥ हूसरावस्तुककुनही॥ जेसेस
अविखेजेतककुपदार्थभासतेहें॥ सोसभअनभवरूपहे॥ तेसेएहजगतभी
ब्रह्मसरूपहे॥ हेरामजीहमकोतौसदाएहीभासताहे॥ तौअहंकारकहा
होवे नमेअहंकारहानमेराअहंकारहे॥ केवलअकाशरूपविखेअहंका
रकहाहोवे॥ हेरामजीनमेंहोनमेराविखेककुफुरनाहे॥ अथवासमअ
लसतामेहीहे॥ तबभीअहंकारनहुआ॥ हेरामजीमेराअहंकारऐसाहे
जेसेअग्निकीमूरततिलखीहोतीहे अरजेसतेअर्थसिद्धककुनहीहोता
हूखणेमात्रहीहे॥ तेसेज्ञानीकाअहंकारदेखनेमात्रहे॥ कर्तृत्वभोगत्व
कोनहीहोता॥ सर्वदाअपणेसभावविखेपस्थितिहे॥ सर्वज्ञानवानो
काएकहीनिश्चेहे॥ जोब्रह्महीभासताहे॥ अरअहंकारकाअभावहे॥ अ
रनअगेध्यानअवहेनबहूरिहोवेगा॥ भ्रमकरकेअहंकारकासंबंधजाणी
ताहे॥ हेरामजीजबअसेजाणेगा॥ तबअहंकारदृष्टिहोजावेगा॥ जेसेप्राव
कालकामेघदेखणेमात्रहोताहे॥ बरखणेतेरहित॥ तेसेज्ञानीकाअहंकार
अबरोकोबुधिविखेभासताहे॥ परज्ञानीकेअपणेनिश्चेविखेअहंका
रकाअभावहे॥ सोसकाअहंकारप्रेतआत्मपदविखेरहिताहे॥ परकिंनअहं
कारकाअभावहोजाताहे॥ अहंकारजबनाशहूआतबअविद्याकानाश
हुआ अरएहीअज्ञानकानाशहे॥ तौतोपरज्ञाएहे॥ हेरामजीअपणेस
भावविखेपस्थितिहोकरप्रकृतअचारकोकरो॥ अरअनतरतेशिलाके
कोशवनहोहु॥ अरबाहजऐद्रीयहुकीक्रियाभीसभावहे॥ अरअपणानिश्चेको
गृहणकरीहे॥ अरसर्वपद्रीअहंकोएसप्रकारधारहु॥ जेसेअकाशसभकों
धारहा॥ अरअनतरतेशिलाकेजदरवतरहा॥ देखणेमात्रमारीविखेभी
अहंकारदृष्टिआवेगाजेसेमूर्तिकीअग्निदृष्टिआवतीहे॥ परअर्थकारनेक
देगाकेवलब्रह्मसत्तापदीभासेगी॥ अवरककुनभासेगा॥ १०६॥ इति विशि

तवदेग का च नेअमम्मथ॥ रामउवाच॥ श्रीहेभगवनतुमदृष्टिअश्रीसे हे॥
जोतमहुअहंकारकेत्यागेतेपरमपदअनतकीअपनिकोउपदेशाकीआहु॥ अरपरह
परमदशाहे॥ जोरागद्वेखमलतेरहितहे॥ अरअभिनाशीहे॥ आदिअंततेरहि
तहे॥ एहदशातुमहुपरमविलताकुअर्थकहीहे॥ हेभगवनअरुकालअरु
सर्वप्रकारअरसर्वंवस्तुएहीब्रह्मसताहे॥ समरूपततकेअनभवतअरपरम
निर्मलहे॥ कोशिलाउपाखिआनकिसनेमितकहाहे॥ सोकहहु॥ वशिष्ठउवाच
हेरामजीसर्वविखेसर्वदाकालअरसर्ववतेरहितहे॥ तिसकेबोधकेअर्थमेतु
जकोंएहशिलाउपाखिआनकहिताहों॥ हेरामजीअसाएस्थानकोउ
नहीं॥ नहोसिष्टानहोवहि॥ सर्वपस्थानविखेसिष्टापडीआभासतीहे॥ अर
आदिलेककुवाणीआनहो॥ अरसर्वदाकालवसतीआहे॥ शिलाकेकोश
विखअनेकसिष्टापडीआवसतीआहे॥ जेसेअकाशविखेफुरतीहे॥ तेसे
शिलाकेकोशविखसहसमूसपडीआवसतीहे॥ रामउवाच॥ हेभगवनजो
सर्वविखेसिष्टावसतीआहेकुसआदिकहु विखएहतमहुकहाहे अकाश
रूपीकिसनेहोवहि॥ वशिष्ठउवाच॥ हेरामजीएहमेभीतेरेताएकहिताहों॥
जोजोककुसिष्टाहेसोसभअकाशरूपहे॥ सतरूपतेतौसिष्टाउपजीआनेही
सर्वदाआत्मासताअपणाआपविखेपस्थितिहे॥ अकाशकीवारताकिआ
कहतीहे॥ जोशिलाकेकोशविखेसिष्टापडीआवसतीआहे॥ जोअकाशरूप
हेतौवसतीहे॥ अर्थएहजोककुरूपनहीं॥ हेरामजीपृथ्वीविखेअसाअण
कोउनहीं॥ जिसविखेसिष्टानहोवहि॥ प्राणिअणिविखेसिष्टाहे॥ अरसर्व
उवेतवसतीहे॥ अरपरमार्थतेककुवाणीआनहीं॥ केवलअकाशरूपहे॥ स
वृत्तिस्तअणुहूमात्रहे॥ हेरामजीजेसएहसिष्टाभासतीहे॥ तेसेउहभीहे॥ जो
एहप्राहिमात्रहे॥ अरसतभासतीहे॥ तिसहूभीहे॥ हेरामजीअसाकोउतनत्त
काकणाकानहीं॥ जिसविखेसिष्टानहोवहि॥ सर्वविखेसिष्टाहे॥ अरएहअ
अमंदेखजोककुवाणीआनहीं॥ अरअसाकोउअणिकाअरवापकाकण
कानहीं॥ जिसविखेसिष्टानहोवहि॥ सर्वविखेसिष्टाहे॥ अरअकाशरू
पहहि॥ ककुवाणीआनहीं॥ ब्रह्मसताअपणाआपविखेजिकाततिपस्थितिहे
हेरामजीअकाशकाअसाअणकाउनहीं जिसविखेसिष्टानहोवहि॥ सभ
विखेसिष्टाहे॥ परककुउपजीनहीं॥ ब्रह्मसताहीसदाअपणाआपविखे
पस्थितिहे॥ असाब्रह्मअणकोउनहीं जिसविखेसिष्टानहोवहि॥ सर्वमें
विखेहे परसत्रूपतेककुहूएनहीं॥ ब्रह्मसताअपणाआपविखेपस्थितिहे सर्व
दा॥ हेरामजीअसाअणकाउनहीं॥ जिसविखेब्रह्मसतानहो॥ अरअसाको
उभिदअणनहीं जिसविखेसिष्टानहीं॥ सोसिष्टाकेसीहे॥ जेसेकिसीअग्नि
कहीकिसेरामसताकहीं॥ तिसविखभेदककुनहीं॥ तेसेकोउजगतक
होकाउब्रह्मकहो॥ पराहूहीदोएहे परवस्तुएकहीहे॥ जगतहीब्रह्महे॥ अर
ब्रह्महीजगतहे॥ भेदककुनहीं॥ तेसबाहेतेजलविखेप्राप्तिहोताहे॥ तिस
विखअर्थककुनहीसिथहोता॥ तेसेमरुकोंजगतककुपदार्थनहीभासता
जगतब्रह्महीभासताहे॥ काहेतेजोहुसरीवस्तुककुवाणीनहीं॥ मेअ
रतेअएहजगतअरतमसतेआदिलेकरजोपवनहें॥ देवताकिंनरअरदे
तअरनागएत्यादिकजोजगतिहे॥ सोसभनिर्वाणसरूपहे॥ आत्मतत्तविखेक

ब॰
म॰
५८

ग्रवल्लतेजोभासतेहैं॥ सोब्रह्मकौनि
कुछवाणिग्रानही॥ ग्रवएहवोलतेग्रवस्थाग्रापराहै॥ ग्रवसमविखेनानाप्रकारके
ग्राएजाणि॥ जैसेकोउएकखेलएग्रापरहे॥ ग्रवदेवचेष्टापरीहोतीहै॥ ग्रवजोउ
नुधपडेहोतेहैं॥ ग्रवबाजत्रबाजतेहैं॥ तिनकौंकछुनहीभासता॥ काहेतेंजोवणि
सकेनिकटजाग्रतप्रखवेठेहैं॥ तिनकौंकछुनहीभासताहै॥ तैसेज्ञानीकेरिदेविखेजग
ग्राकछुनही॥ ग्रवऊसकौसमकछुपरभासताहै॥ तातेंहेरामजीम
नसुनेंहैं॥ ग्रवज्ञानीकोनानाप्रकारजगतभासतीहै भ्रमकरिकै॥ ग्रवग्रतवतेंशिलाकीनि
ग्रवतएसजगतदोंजाणाकरप्रकिनग्रचारकौकरो॥ ग्रवग्रतवतेंशिलाकीनि
ग्राएहोवो॥ जोएरे कछुनही॥ ब्रह्मग्रवजगतविखेरंचकभीभेदनही॥ ब्रह्महीं
जगतहै॥ ग्रवजगतहीब्रह्महै॥ ग्रवजगतकाग्रादिग्रवग्रंथब्रह्मतेंभिननही॥
इतिश्रीब्रह्मजगतेएकप्रत द नाम सर्गः॥ १०१॥ रामउवाच॥ ओहेभगव
नग्रकाशकोविखेकुटीवाधिकरजोनमोममाथल्लगाए॥ ग्रवशिउवरखते
ग्रवपांतउनरी॥ तिसतेग्रनंतरजोब्रतांतहूग्रासोकहहु॥ वसिष्ठ उवाच॥ हेरा
मजीसमाधतेमेउतरग्रातवग्रकाशविखेएकशरीरमैनेग्रीग्रा॥ सोकेसाश
हूहूग्रोजोकामसग्रररिदे॥ ग्रगमग्रवमरतवरीकीनारिवतिग्रगनाकाशहि
हूग्रा॥ तवमैविचारकीग्राजोएहशरीरकहांतेंग्राएग्रा॥ मेंनोवहूतउगरथकौग्रा
पग्राहा॥ जहांसिहोकौंभीगमनही॥ सिद्धोतेंभीतीनल्लखजोजनऊचाग्राए॥
ग्राहा॥ एहशरीरकहांतेंग्राएग्राहै॥ ग्रेसेविचारकरमेंदेखणेलागा॥ दशोदि
शाप्रकाशहीसर्वदेखीग्रै॥ पररूपकाकर्ताकहूनद्रिष्टिग्रावे॥ एकप्रकाशहीभा
से॥ तवमैविचारकीग्राजोशरीरग्रकाशविखेहोताहै॥ तातेमेग्रकाशहीहोजा
वउग्रवएसशरीरकौपावों॥ जोकिसकाशरीरहै॥ ग्रवग्रकाशकोभीत्यागकरविचि
दाकाशहोजावों॥ जहांभूताकाशभीकुटीवतभासताहै॥ तवएसकाभीग्रंत
पड़ाभासेगा॥ तवजाणोंगेवैसा॥ जोएहशरीरहोताहै॥ ग्रेसेविचारकरमेंनि
श्चेकीग्रा॥ जोएहशरीरएहांहीरहै॥ तवभीमैंदरहै॥ तवपद्मासनकोवांधक
रवाहजकौएडोग्रकौभीसकल्लीग्रामे॥ ग्रवएडीग्रहकोब्रतीजोशब्दादिकवि
खिग्रहकौग्रहणकरतीहै॥ तिनकौभीसकल्लीग्रा॥ ग्रंतरवाहजकौएडीग्रहु
कौब्रितीथीग्रासोसभत्यागीग्रा॥ सर्वग्रहेब्रितकौत्यागकरमेंग्रकाशरूपहोग
एग्रा॥ जैसेएहब्रह्मांडविखेग्रकाशकाग्रंतनहीपाएता॥ तैसेएहकौमैंत्यागक
रग्रकाशरूपहोएगएग्रा॥ तवमैचिताकाशविखेग्राएग्रा॥ सोचिताकाशकैसा
हैजोसंकल्पहीजिसकारूपहै॥ तिसकौभीमैंत्यागकरवुधग्रकाशविखेग्राए
ग्रा॥ वृहडिजिसकौभीत्यागकरकेचिदाकाशविखेग्राएग्रा॥ तिसशरीरकौदेख
तेकेसंकल्पकरचिदाकाशरूपहोएगएग्रा॥ जैसेजलकौबूंदसमंद्रविखेमि
लीसमंद्ररूपहोजातीहै॥ तैसेमैचिदाकाशहोएगएग्रा॥ सोचिदाकाशनिरा
धारनिराकारहै॥ ग्रवसर्वकौधाररहाहै॥ परमानंदसरूपहै॥ ग्रवशांतहै॥ ग्रवग्र
नंतहै॥ जिसविखेसर्वब्रह्मांडप्रतिविंबहोतेहै॥ ग्रेसाग्राहरूपहै॥ तिसविखेमेंए
स्थितिहूग्रा॥ तवमरूकौग्रनंतसिष्टिग्रपणिग्रापविखेभासणेलागीग्रा॥ जे
सेरतनेकौकिरणोंविखेतिसकेरूपाहोतेहै॥ तैसेब्रह्मांडविखेसिष्टिहै॥ परजीवों
कौग्रपणिग्रपणीसिष्टिहै॥ ऊसकौसिष्टिकौऊहूनजाणि॥ ग्रवऊसकौसिष्टिकौ
ऊहूनजाणि॥ जैसेग्रनेकमनुरवसोएहोतेहै॥ ग्रवग्रपणाग्रपणास्वप्नदे
खतेहै॥ तिसविखेग्रकाशग्रवकालग्रपणाग्रपणादेखतेहै॥ ऊसकौसिष्टिउ

हूनहीजानता॥ ग्रवऊसकौसिष्टिकौहूसरानहीजाणता॥ पवज्ञानीसर्वसिष्टप्रतक्ष
पदारदेखताहै॥ जैसेमरूकौसर्वसिष्टचिदाकाशविखेभासतीहै॥ ग्रवजीवोकौग्र
पणिग्रपणिसिष्टभासे॥ ग्रवरकीसिष्टिग्रवरकौद्रिष्टिनग्रावे॥ हेरामजीएकसि
ष्टिग्रेसीदेखीग्राहै॥ जोग्रावरणकोउनही॥ ग्रावरणकहीग्रेनेसेप्रिथवीकेच
उफेरसमुंद्रहोतेहै॥ सोऊहांग्रावरणकोउनथा॥ ग्रवकहूंएकहीभूतकाग्रावरण
है॥ ग्रवकहूंग्रेसीसिष्टग्रावहीजिनकौवारहूतत्तकाग्रावरणहै॥ ग्रवकहूंग्रेसी
सिष्टद्रिष्टिग्रावहीजिनकौपांचोंहीतत्तौंकाग्रवरणहै॥ प्रिथमिप्रिथवीकाग्राव
रणहूसराजलका॥ तीसराग्रग्निकाचतरथवायकापंचमग्रकाशका॥ ग्रावणि
है॥ कहूंग्रेसीग्रासिष्टीदेखीग्राजिनकौखटहीग्रावर्णिहै॥ ग्रवकहूंदसग्रावर्णिद्र
ष्टिग्रावे॥ कहूंग्रेसीसिष्टिद्रिष्टिग्रावेजिनकौंखाइशिग्रावर्णहै॥ ग्रवग्रेसीसि
ष्टिद्रिष्टिग्रावहि॥ चतरविंशतग्रावर्णहै॥ कहूंग्रेसीसिष्टदेखीग्राछतीशिग्रावर्ण
है॥ ततौंके॥ हेरामजीएसप्रकारसेग्रनंतसिष्टदेखतभएग्राहै॥ सोग्रात्मातेंए
तरवस्तकछुनही॥ मनकेफुरणेविखेमरूकौसिष्टद्रिष्टिग्रावहि॥ काहेतेंजोसं
कल्पमात्रहीहै॥ ग्रवरकछुवणिग्रानही॥ तैसेकंधउपरमूरतालिखीहोवहि
तैसेग्रात्मतरूपोकंधउपरमूरताद्रिष्टिग्रावहि॥ हेरामजीकहूंग्रेसीसिष्टिदिष्टि
ग्रावहि॥ जोएकहीप्रिथवीकाततहोवे॥ ग्रवकहूंचारतत्तौंकीग्रासिष्टद्रिष्टिग्राव
हि॥ ग्रवकहूंपाचततौंकीग्रासिष्टद्रिष्टिग्रावहि॥ ग्रवग्रपणाग्रपणाविवहारविखे
मग्निरहहि॥ हेरामजीग्रेसीग्राग्रनंतसिष्टदेखीग्रा॥ परएककीसिष्टिकौदूस
रानजाने॥ सभग्रपणिग्रपणिसिष्टिकौजाणे॥ जैसेग्रनेकपुरखसैनकरहिए
कहीकालविखेग्रवसप्रसिष्टिग्रपणिदेखहि॥ तोऊसकीसिष्टिकउऊहूनहीजा
नता॥ ग्रवऊसकीसिष्टिकौऊहूनहीजानता॥ हेरामजीकहूंग्रेसीसिष्टदेखीजहांस
र्जेकाप्रकाशहीनही॥ ग्रवचंद्रमाकाप्रकाशहै॥ ग्रवनग्रग्निकाप्रकाशहै॥ ग्रवपेन
काचेष्टासभहीपड़ीहोतीहै॥ कहूंग्रेसीग्रादेखीजहांसूर्जचंद्रमाहै॥ ग्रवकहूंग्रेसी
देखीग्राजोऊसकौकालकाज्ञानभीनही॥ जोकवनकालहै॥ तैऊहांकोउदि
नहीहै नरात्रहै॥ सदाएकसमानरहितेहैं॥ कहींमहांग्रनतमरूपद्रिष्टिग्रावे॥ क
हूंग्रेसद्रिष्टिग्रावहिजोदेवतेहीरहितेहैं॥ कहूंमानुखहीरहितेहैं॥ कहूंदैतहीद्रि
ष्टिग्रावहि॥ कहूंनल्लहीद्रिष्टिग्रावे॥ ग्रवरततहीकोउनद्रिष्टिग्रावे॥ ग्रवकहूंग्रेसी
सिष्टिद्रिष्टिग्रावहिजहांशास्त्रोंकाविचारहीनही॥ कहूंशास्त्रपुराणविपर्जरूपहै॥
कहूंसमानहैं॥ कहूंपल्लेहोतीद्रिष्टिग्रावे॥ कहूंउत्पतहोतीद्रिष्टिग्रावे॥ हेरामजीदू
त्यादिकग्रनंतसिष्टामेदेखी॥ परनवमरूपकीउरमेदेखीतवकेवलब्रह्मरूपहीभा
स॥ ग्रवरकछुवणिग्राद्रिष्टिनग्रावे॥ ग्रवजवसंकल्पकरकेदेखीग्रै॥ तवग्रनंतसि
ष्टिद्रिष्टिग्रावहि॥ कहूंग्रेसीग्रासिष्टिद्रिष्टिग्रावहिजहांवालकजोवननिद्रिय
ग्रवस्थाकीमिर्जादानही॥ जैसेजनमतेसाहीरहे॥ कहूंग्रेसीसिष्टहैजोचंद्रमसूर्ज
काप्रकाशहोनही॥ ग्रवग्रग्निकेप्रकाशसाथिउनकीचेष्टाहोतीहै॥ कहूंग्रेसेदेख
जोउर्थकौचलेजावहि॥ कहूंग्रेसेदेखेजोपातालकीमिर्जादाकरचेष्टाकरहि॥ कहूं
क्रिमहीवसतेहहि॥ ग्रवरकोउनही॥ हेरामजीचेतनरूपीवनविखेमैंग्रनंतसि
ष्टरूपीब्रिछदेखे॥ पवहूमरावणिग्राकछिनद्रिष्टिग्राएग्रा॥ सतचेतनकाग्रभास
हीद्रिष्टिग्राएग्रा॥ जैसेसूर्जकीकिरणोंविखेजलाभासद्रिष्टिग्रावताहै॥ ग्रवणि
ग्राकछुनही॥ तैसेहीसिष्टावणिग्राकछुनही॥ ग्रवद्रिष्टिग्रावहि॥ जैसेग्रकाश

तेसे ग्रग्निहोतीसिष्टाभासहि
विरषेतीत्सताभासतीहे॥ग्ररकृमरारचंद्रमाभासताहे॥तैसेसे ग्र
जैसेमारुयत्नविषेजलभासताहे॥ग्ररगंधर्वनगरकीसिष्टिभासतीहे॥तैसेसे
नसिष्टाभासहि॥हेरामजीब्रह्मसत्रूपप्रकाशहे॥तिसविषेचित्तरूपीगंधर्वनेसि
ष्टरचीहे॥सरूपतेएतरउपजीकछुनही॥सभग्रकारणहे॥जोनमित्तकारणग्ररसम
मवाएकारणविनासिष्टिभासेसोभ्रममात्रजाणीग्रे॥जैसेमृगत्रकीसिष्टकारण
विनाहोतीहे॥जदपग्रर्थकारहोएकरभासतीहे॥तोंभीग्रजातजानिहे॥ग्रर्थप
हजोउपजेविनाउपजीभासतीहे॥तैसेसंपूरनसिष्टाग्रभासमात्रहे॥हेरामजीग्रभा
सविषेग्रधिष्टानसत्ताभीहोतीहे॥जिसकेग्राश्रेग्रभासफुरताहे॥सोसच्चिदानं
दब्रह्मसभाकाग्रधिष्टानहे॥ग्ररसर्वग्रात्मताकरकेएस्थितिहे॥ब्रह्मसत्तातेएतरक
छुनही॥चेतनताकरकेनानतिभासताहे॥परनानत्तहुग्राकछुनही॥ग्रात्मासर्व
दाग्रपणेग्रापविषेएस्थितिहे॥जेसेरखीरसमुंद्रविषेवाएकरकेनानाप्रकारके
तरंगउपजतेभासतेहे॥तोंभीरखीरतेएतरकछुनही॥ग्रसारखीरसमुंद्रकातरंगको
ग्रनहीजिसविषेखीरनहोवे॥समनोंविषेखीरविग्रापिग्राहुग्राहे॥तैसेजोक
छुपदार्थहेतिनसभनहुविषेब्रह्मसत्ताग्रनस्यूतहे॥जेसेरखीरकेमथनिकीएते
खीरनिकसताहे॥तैसेविचारकीएतेजगतब्रह्मसरूपभासताहे॥एतरकछुनही
काहेतेजोकारणइग्रागकछुउपजिग्रानही॥परमार्थतेकेवलग्रात्मसत्ताग्रप
णेग्रापविषेएस्थितिहे॥फुरणेरूपीभ्रमकरकेकछुहुग्राद्रिष्टिग्रावताहे॥जबफु
रणेरूपीब्रह्मनिवरतेहुग्रातबब्रह्महीभासताहे॥तातेग्रविद्यारूपीफुरणेकोंत्याग
करग्रपणेनिर्विकल्पसरूपविषेएस्थितिहोवहु॥तबजगतभ्रमनिवर्तहोजा
वे॥१०८॥इतिश्रीजगतिजालसमहुवर्ननेनाम सर्गः॥वसिष्ट उवाच॥ हेरामजी
जबएसप्रकारसिष्टादेखीतबबहुरिमेंफुरकोंविचारहुग्रा॥जोऊहुग्रारिकणहा
रकवनथा॥तिसकोंदेखो॥तबमेंदेखणेलागा॥देखतेदेखतेतरीकोनिग्राप
ग्राप्तिसणिग्रा॥परउसकोनदेखिग्रा॥बहुरदेखतेदेखतेशहकाग्रर्थभासणे
लागा॥बहुरिदेखिग्रातहुएकग्रंगनाद्रिष्टिग्राए॥सोकेसीहेसवनवतजिसको
पावीरहे॥बहुतसुंदरवस्त्रपहरेहुएहे॥ग्ररसर्वग्रंगभूषणेकरशूरणहे॥लक्ष्मी
कीनिग्राजिसकोउपमादीजीग्रे॥ग्ररभवानीकीउपमादीजीग्रे॥ग्रेसीसुंदरहे
जबमेंउसकोंदेखिग्रातबउहमेरेनिकटिग्रानिप्रापतिभए॥ग्ररवचनकहिणे
लागी॥किहेमुनीश्वरग्रवरसंसारमेंदेखिग्राहे॥परसमानधरमात्मउकोंद्रिष्टि
ग्राएग्राहे॥ग्ररतमउतमथमोंद्रिष्टिग्रावतेहो॥ग्ररसंसारसमुंद्रकेपारहुएहो॥ग्रर
संसारसमुंद्रकेपारहुएहो॥ग्ररसंसारसमुंद्रपारकेतुमब्रिछहे॥जोकोउतमभाग
रग्रावताहे॥तिसकग्राश्रेभजतहोग्ररनिकाममनिलितहोग्ररजोजीवहेसोसंसारस
मुंद्रविषेबहेजातेहे॥ग्ररतमपारकोंप्रापतिहुएहो॥तातेतमकोंनमस्कारहे॥
हेरामजीजबएसप्रकारग्रगनाकहा॥तबमेंग्ररजकोंप्रापतिहुग्रा॥जोएसमेंवता
एकदाचितदेखिग्रानहीग्ररसुणिग्राभीनहीं॥बहुरिजाणिग्राकिजोकर॥तब
ग्रेसविचारमेंकीग्राजोएहमाएग्राकाकोगचरिग्रहे॥ग्ररब्रह्मांडमेंमहमउकोंद्रि
ष्टिग्राएहे॥सोएसीकरकेद्रिष्टिग्राएहे॥हेरामजीग्रेसविचारकीग्रानबउसकोत्या
गकरमेंबहुरिग्रकाशकोंदेखिग्रा॥तबग्रवरसिष्टाभासणेलागीग्रा॥जेसेस्व
प्नेकीसिष्टिहोतीहे॥ग्ररसंकल्पकीसिष्टिहोतीहे॥ग्ररगंधर्वनगरकीसिष्टिहो
तीहे॥जेसेकथाकीसिष्टिहोतीहे॥तैसेएहसिष्टाहे॥वास्तवकछुवणिग्रानही

जेसेस्वप्रादिकसिष्टाग्राणहोतीभासतीहे॥तैसेएहजगतहे॥केवलबोधमात्रग्रा
त्माग्रपणेग्रापविषेएस्थितिहे॥हेरामजीजबमेंबोधविषेएस्थितिहोकरदेख
तेतबग्रात्माहीभासे॥ग्ररजबमेंकरदेखेउतबनानाप्रकारकेजगतभासे॥कहू
नष्टिहोतेभासे॥कहूनाशहोकरउत्पत्तिहोतेभासहि॥जेसेपीपलकेपात्रमरतेहें
ग्ररबहुरितैसेहीउपजतेहे॥तैसेउपजतेभासहि॥कहूग्रर्थसवतेसाहोवे॥कहूग्र
र्धद्रिष्टिग्रावहि॥जोनाशहोकरग्रबकेग्रवरउत्पतहोवहि॥कहूउत्पतहोतेहीद्रिष्टि
ग्रावे॥कहूभिंनभिंनसिष्टाभिंनभिंनग्रासहिद्रिष्टिग्रावहि॥कहूसूरजग्ररचंद्रमाता
रिग्रहुकाचक्रग्रेसेहीफुरताद्रिष्टिग्रावे॥कहूनरककीसिष्टिद्रिष्टिग्रावे॥कहूस्व
र्गकेएस्थानद्रिष्टिग्रावे॥एसीप्रकारग्रनंतसिष्टादेखी॥ग्ररग्रनंतहीरुद्रदेखे॥ग्र
नंतहीब्रह्मादेखे॥ग्रनंतहीविसनदेखे॥कहूप्रलेकेमेघगर्जतेहे॥कहूसमेरग्रादिकप
र्वतउडतेद्रिष्टिग्रावहि॥कहूप्रलेकेमेघगर्जतेहे कहूसमेरग्रादिकपर्वतउडते
द्रिष्टिग्रा॥कहूब्रह्मांडजलतेद्रिष्टिग्रावहि॥ग्ररहाहाकारशब्दजलतेद्रिष्टिग्रावहि॥कहू
ग्रेसेएस्थानद्रिष्टिग्रावहि॥जोजन्मतेहीपुष्टिहोजावहि॥कहूग्रेसीसिष्टिद्रिष्टिग्रावे
हि॥जोएकसिष्टिविषेसमग्राइसरीसिष्टिवसेग्रावे॥ग्ररदूसरीसिष्टिविषेसमग्राउसी
सिष्टिविषेग्रावे॥कहूप्रलेहोताद्रिष्टिग्रावे॥कहूजिउकीतिउरहितीसिष्टाद्रिष्टि
ग्रावहि॥रागनकेनिकटिग्रानकोंकष्टकछुनहोवे॥तैसेदोग्ररएककहीमिलजावे
ग्रावहि॥ग्रररहू
कोपहोवहि॥ग्ररदोनोंकोंसमग्राग्रावे॥एककेसंग्रविषेसिष्टिकीप्रलेहोतीहे॥ग्ररदू
सरेकीसिष्टजिउकीतिउरहे॥एसाविवेककछुग्राश्चर्जनही॥हेरामजीएसप्रकारमें
ग्रनंतसिष्टादेखीग्रा॥परतिनविषेसारब्रह्मसत्तामेंदेखी॥ग्ररसमस्तग्रवनतएस्था
नद्रिष्टिग्राए॥जेसेकेलकेब्रिछविषेसारकछुनहीनिकसता॥तैसेएस्थानविषे
सारकछुनदेखिग्रा॥हेरामजीक्रिग्राकालविषेसभब्रह्मसरूपहे॥जैसेसमुंद्रवि
खेतरंगबुदबुदेसभजलहीसरूपहे॥तैसेजगतसभब्रह्मसरूपहे॥एतरकछुनही॥
जैसेखीरसमुंद्रविषेतरंगग्रावतेखीरतेभिंनकछुनहीहोते॥तैसेहीतेग्ररमेंग्रब
जगतसभब्रह्महीहे॥हेरामजीजबबोधकीउरमेंदेखों॥तबसर्वब्रह्महीद्रिष्टिग्रावे॥
ग्ररजबसंकल्पकीउरदेखोंतबनानाप्रकारकाजगतद्रिष्टिग्रावे॥एसप्रकारमें
ग्रनंतसिष्टादेखताभएग्रा॥कहूग्रेसीसिष्टिदेखीजोसभग्रपहीहे॥कहूएगेग्रहू
कीसिष्टिदेखी॥ग्ररग्रेसीसिष्टदेखीजोधर्मग्रधर्मकोंजानतेहीनहीं॥हेरामजी
एकग्राग्रेपाचसिष्टिदेखी॥जोभिंनभिंनसिष्टहे॥ग्ररभिंनभिंनउ
गहे॥तिनविषेब्रह्माकेपुत्रवसिष्टदेखे॥जिनोंकोंमेरेसमाननमानेहे॥ग्ररमेंबेही
समाननमानतेहे॥बहुरिमुरुतेउतमभीहे॥ग्ररतमणेजोतिनएकग्राग्रेपंचाशवि
खेबहुतरखसिष्टदेखे॥तिनसभनोंकेग्रागेउपदेशाल्लेनेकेनमित्तरामजीबेठेहे॥ग्र
रेतेहेजगाविषेदेखे॥ग्ररग्रनेककल्पजगग्ररग्रनेकहीद्वापरग्रनेकहीत्रेताग्रन
कहीसतजुगदेखे॥सोसभचेतनग्रकाशकीग्राश्रेदेखे॥हेरामजीहूपविनासभ
द्रिष्टिग्रावहि॥जेसेमारुयस्थलविषेजलभासताहे॥जेसेग्रकाशविषेग्रणहोतीनील
ताभासतीहे॥जेसेजेवडीविषेग्रणहोतासर्पभासताहे॥तैसेभ्रमकरकेग्रणहो
ताजगतभासताहे॥हेरामजीमनकेफुरणेकरकेजगतभासताहे॥ग्ररफुरणेकेनि
हेतेसभब्रह्महीभासतीहे॥हेरामजीग्रनंतसिष्टिमेंदेखी॥जेसेसूरजकीकिरणों
विषेग्रनंतत्रसरेणुद्रिष्टिग्रावतेहें॥तैसेसिष्टिग्रनंतदेखी॥एकचेतनत
तेग्रनेकचेतनद्रिष्टिग्रावहि॥जेसेब्रिछकेफलग्रादिहोतेहें॥तैसेसंकल्परू
पीब्रिछतेचेतनतारूपीफलद्रिष्टिग्राए॥जेसेएकगूलरकेफलविषेग्रनंतमछ
फुरहोतेहे॥तैसेएकग्रात्मसत्ताकेग्राश्रेग्रनंतसिष्टीसंकल्पकरफुरणेकरमछरकों

व॰ म॰ ६॰

द्रिष्टिग्राए॥ कहूंमहाप्रलेकेखोभपडेहोतेहैं॥ ग्ररसमंद्रुरउछलतेहैं॥ तिनकनरंगोंदे
वलोककौंगिरावतेहैं॥ कहूंग्रपामरूपीचंद्रमाउसाद्रिष्टिग्रावें॥ कहूंप्रीतलसहत्रे
द्रिष्टिग्रावहि॥ कहूंग्रेसीसिष्टादेखीग्राजोदिनकौंग्रथहेजावहि॥ ग्ररराचकौंदे
द्रिष्टिग्रावहि॥ कहूंग्रेसीसिष्टादेखीजिनकौंराचग्र
स्टाकरहिंदलग्रादिकोंकीनिग्राए॥ ग्ररकहूंग्रेसीसिष्टदेखीजिनकौंराचग्र
रहिनकाज्ञानकछुनही॥ ग्ररकालकाज्ञानभीनही॥ धर्मग्रधर्मकाज्ञानभीन
ही॥ ग्रपणीएछाजेसहोवतेसेवर्ततेहैं॥ कहूंग्रेसीसिष्टादेखीजोपुनिकरनेहारेन
रककौंप्रापतिहोतेहैं॥ ग्ररपापकर्तासर्गकौंप्रापतिहोवहि॥ ग्ररकहूंग्रेसी
सिष्टादेखीग्राजोवाल्लतेतेल्लनिकसतहिं॥ कहूंविखपानकीएतेग्रमरहो
वहि॥ ग्ररकहूंग्रम्रितपानकीएतेमरजावहि॥ हेरामजीजेसाजेसाकिसीकानिग्रा
होताहै॥ तेसाहीग्रागेभासताहै॥ एहजगतसंकल्पमात्रहै॥ जेसीभावनाहोतीः
हैतेसाजगतग्रागेहोएकरभासताहै॥ कहूंपथरहूविखिकमलउपजतेद्रिष्टि
ग्राएहैं॥ ग्ररकहूंबिकछुसाधरतनहीरेलागेद्रिष्टिग्राएहैं॥ ग्ररबडेप्रकाप्रसंजे
गतिग्रकाप्रविखविक्षोंकेवनिदिष्टिग्राएहैं॥ कहूंग्रेसीसिष्टादेखीग्रा॥ जोमेघ
वदलहीजिनकेवस्त्रहैं॥ वस्त्रकीनिग्राएवदलौंकोंपहरलेवहि॥ कहूंप्रीशके
भारचलेद्रिष्टिग्रावें॥ ग्ररग्रवरसभचेष्टाभीकरहि॥ ग्रथकालेग्रावेग्रपादिकना
नानाप्रकारकीसिष्टादेखीग्रा॥ हेरामजीजबमैसरूपकीग्रोरदेखीतबसभसिष्टी
स्त्रैलद्रिष्टिग्रावहि॥ ग्ररजबसंकल्पकीग्रोरदेखीतबनानाप्रकारकाजगतभास
कहूंग्रेसेहीद्रिष्टिग्रावहि॥ नाचंद्रमाग्ररसूर्जकौंजानतेहीनही॥ कहूंएकप्रिथ
वीहीकीसिष्टिदेखीप्रिथवीविखे॥ ग्ररग्रग्निकीसिष्टदेखीग्रग्निविखे॥ जलकी
सिष्टजलविखेदेखी॥ कहूंपंचभूतोंकीसिष्टिदेखीजसएहविदिमानहै॥ कहूंका
ष्टकीपुतलीग्राकीनिग्राएसिष्टचेष्टाकरतीदेखी॥ ग्ररभोजनकरतीहैं॥ कहूंप्राएणं
बिनाचेष्टाकरतेहैं॥ जेसेचित्रकीपुतलीग्रावते॥ हेरामजीजबग्रेसेसिष्टाकोदेखनादेख
ताभयाग्रकाशविखेग्रनंतयोजनोंग्रनंतवासिग्रागएग्रा॥ परएकग्रकाशहीदि
ष्टिग्रावे॥ ग्ररतनकोग्रोद्रिष्टिनग्रावे॥ वहूडिग्रेसीसिष्टिदेखीजोरखावलताबीव।
एणसभचेष्टाकरहि॥ परद्रिष्टिनग्रावहिवेतालकीनिग्राए॥ जेसेबेतालसभचेष्टा
करतेहैं॥ ग्ररद्रिष्टिनहीग्रावते॥ तेसेग्रोउद्रिष्टिनग्रावहि॥ कहूंग्रेसीसिष्टिदेखीजहा
मेग्ररतेकल्पनानही॥ केवलनचिंतपदहैं॥ ग्ररकहूंग्रेसीसिष्टिदेखीजोउनकाम
नहीनही॥ कहूंनिरहंकारसिष्टिदेखी॥ जोसभविखेग्रात्मभावनाकरतेहैं॥ ए
कहूंसरीकोसभग्रपाणाग्रपहीजाणतहि॥ भेदभावनाकिसीकेननहोवे॥ कहूंग्रे
सीसिष्टिदेखीजोमोखकीलखमीकरशोभतेहैं॥ कहूंग्रेसीसिष्टिदेखीजोउपज
करग्रीघ्रहीनाशहोजावे॥ जेसेनखग्ररकेपाउपजतेहैं॥ ग्ररनशहहोजातेहैं॥ कहूं
ग्रेसेदेखीजोचिरकालग्रजतरहिहि॥ हेरामजीएसप्रकारमेग्रनंतसिष्टादेखी॥ सो
सिष्टाकेसीहेसोग्रागहोतीग्रापहीग्राजरतीग्राहैं॥ ग्ररसंकल्पमात्रहै॥ हेरामजीए
सप्रकारमेग्रनंतसिष्टादेखीजबसंकल्पलेहोवे॥ तबजगतभ्रमनिवर्तहोजावे॥ चि
तकेएस्पंदविखेसभजगतजालदेखे॥ फुर्नेकरकै॥ वसततेकिग्राद्रिष्टिग्राएसोसुण
मेउर्धगएग्राग्रधगएग्रादग्रोदिशागएग्रापरमेरेताएचेतनरूपीसमंदकेबुदबुद
भासहिहोरकछुनभासे॥ १२०॥ इतिश्रीजगतजालवर्ननंनामसर्गः॥ वसिष्टउवा
च॥ ॐहेरामजीब्रह्मविखकाप्रग्रपणाग्रापविखेएस्थितिहै॥ जेसेजलग्रपणाजल
भावविखेएस्थितिहै॥ तेसेब्रह्मग्रपणाग्रापविखेएस्थितिहै॥ तिसविखेजोचेतनउ
नमखवतिहूग्राहै॥ तिसकौंमनोएचिंतग्रकाशकहितेहैं॥ तिसमनविखेसं
कल्पविकल्पफुनीहै॥ तिसविखेग्रनंतकोद्रिब्रह्मांडवणिगएहैं॥ तिसकानाम

भूताग्रकाशहै॥ मनतेउपजिग्राहेएसकारणतेएसकानामभभग्रकाशहै॥ सो
संकल्पमात्रहै॥ ग्रात्मातेएतरकछुनही॥ रामउवाच॥ हेभगवनएहजोकल्पहै।
दिनग्ररराचब्रह्मकेजोदिनविखेभूतउत्पतिहोतेहैं॥ ग्ररराचविखप्रलेहोतेहैं॥ ग्र
रजबमहाप्रलेहोतीहै॥ तबभूतकोग्रोनहीरहिता॥ सभब्रह्मसताविखेलीनहोजा
तेहैं सभजीवनमूर्तिहोजातेहैं॥ सुद्धब्रह्महीग्रेखरहितेहैं॥ तिसतेउपजतेबहु
रिकैसेजगतिहोउत्पतिहोताहै॥ साकिकुपाकरकेकहो॥ वसिष्टउवाच॥ हेरामजी
जबमहाप्रलेहोतीहै॥ तबसभभूतनष्टिहोजातेहैं॥ ग्ररब्रह्मसताग्रेखरहिती
है॥ तिसकौंतेभीजानताहै॥ तूभीकहुजोपाछेब्रह्मग्रेखरहिताहै॥ जबतू
फुमानिग्राजोसभकाकारणब्रह्मग्रेखरहिताहै॥ सोब्रह्मसताहै॥ सोग्रकाशतेभी
सूछमहै॥ जोग्रकाशकाएकग्रंशहोवे॥ ग्ररतिसकासहस्रभागकरीग्रे॥ जेसेगे
सूछमहै॥ ग्राकाशकाभागसूछमहोताहै॥ तेसेब्रह्मसताभीसूछमहोतीहै॥ ब्रह्मसतातिस
हूग्राकाभागसूछमहोताहै॥ तेसेब्रह्मसताभीसूछमहोतीहै॥ ब्रह्मसतातिस
तेभीसूछमविशेषहै॥ हेरामजीग्रेसेसूछमब्रह्मतेजगतकीउत्पतिमेकैसेकहो
ग्ररजोउत्पतिहीनहीभएग्रातौतिसकीप्रलेकैसेहोवे॥ ग्ररएहजगतजोभासता
हैसोभीब्रह्मकारिरहै॥ ग्रपणाजोस्वभावसताहै तिसकानामसृष्टिहै॥ सोएहजग
तब्रह्मकारूपहै॥ जेसेप्रविखग्रपणीसवनहीदेशकालपर्वतग्रादिकरूपहो
तीहै॥ तेसेएहजगतसबतरूपहै॥ ग्ररग्रपणास्वरूपकेग्रज्ञानकरकैहूएकीनिग्राए
ग्रबहुखदाएकभासताहै॥ तेसेग्रपणापकावेविखग्रज्ञानकरकेभ्रमतनाकल्पी
ताहै॥ ग्रसभैकौंप्रापतिहोवीताहै॥ जबविचारकरदेखिग्रातबभ्रमनिवर्तहो
जाताहै॥ तेसेएहजगतकछुउपजिग्रानही॥ हेरामजीचेतनसंवेदनहीजग
तग्रकारहोकरभासतीहै॥ ग्ररग्रवरवस्तुकछुनही॥ जोसभउहीहूग्रातौग्रादि
सर्गकाहोणाग्रवप्रलेसभइसीकेग्रगेहैं॥ एतरकछुनही॥ ग्रसततनसतउदेग्रस
ततेग्रादिजाशद्विहै॥ सोसभग्रकाशरूपहै॥ ग्ररसभकाग्रधिष्ठानब्रह्मसताहै
ग्ररसर्वशाद्दुब्रह्महीविखहोतीहै॥ ग्ररब्रह्मशाब्दांतेरहितहै॥ जोसर्वशाब्दांतेरहि
नहूग्रा॥ तबजगतकेउत्पतिग्ररप्रलेनितविखकिंकरकहिजावे॥ ग्रात्माग्रछेद
ग्रग्रदाहग्रग्रकिल्लदहै॥ ग्रद्रिशहै॥ ग्ररएहीग्रद्रुकाविखेनही॥ ग्रपाद्रूपद
केवलग्रात्ममात्रहै॥ ग्ररएरदवहै॥ ग्ररजगतभीग्रभिनापीहै॥ काहेतेजोउ
पजिग्रानही॥ हेरामजीजगतभीग्रात्मातेएतरनही॥ ग्रात्मरूपहै॥ जोग्रात्मरू
पहैतौविकारकहाहोवे॥ सर्वशाद्दोंग्ररग्रर्थोंकाग्रधिष्ठानब्रह्मसताहै॥ तौते
ब्रह्मसरूपहै॥ जेसेग्रवेबीजाहेब्रिछसोग्रपणाग्रवेबहूटासपत्रफूलफलों
कौंजाणताहै॥ तेसेसभजगतब्रह्मकेग्रवेबहै॥ ग्ररसभकौंजाणताहै॥ वास्तवते
सुधमवकग्रकाशवतहै॥ ग्ररदेशकालवस्तसुखदुखजन्ममरनसंस्कारनि
पकारकेवलग्रकेवलनाशीग्रभिनाप्रीएत्यादिकसर्वशाद्दोंग्ररग्रर्थसभ
ब्रह्महीकेनामहैं॥ जेसेग्रवेबीजाएुरखहेसोसभग्रवेबपुरखकेहैं॥ जोसकोवे
तौभीग्रपणाग्रवेबहै॥ ग्ररजोएसमारेतौभीग्रपणास्वरूपहै॥ तेसेउत्पतग्ररप्रले
सभब्रह्महीकेग्रवेबहै॥ एतरकछुनही॥ परएतरकीनिग्राएजगतहूग्राभा
सताहै॥ जेसेसूर्जकीकिरणोंविखजलकछुहूग्रानही॥ परउहदिकीनिग्रा
एणस्थितिहै॥ किरणहीजलभासतीहैं॥ तेसेग्रात्माजगतग्रकारहोभास
ताहै॥ सोग्रात्मसरूपहीहै॥ हेरामजीब्रह्मरूपीएकब्रिछहै॥ ग्ररसभचिन
मात्रहै॥ तिसविखेजोचेतिग्रेनमात्रनहूग्राहै॥ ग्रर्थएहजोसंवतफुनीहूग्राहै

व॰
म॰
६१

मोडिइमलेहे ॥ अरु चित्त सरीर रूपी तिसके थंभे हैं ॥ अरु लोकपाल तिसके द्वा
रहें ॥ अरु ब्रह्मा रवा जिसकी जगत के जगह है ॥ अरु फल जिसका प्रकाश है ॥ अ
रु प्रकार जिसमें त्रिकुटि विषे भासता है ॥ अरु त्रिकुटि विषे जो खोइ होती है ॥ सो अ
काश है ॥ अरु फलों के जो गुछे हैं ॥ सो प्रले है ॥ अरु गुछों के हलावणे हारे जो भव
रे हैं सो विष्णु रुद्र आदिक है ॥ अरु जडता जिसकी तुचा है ॥ एस प्रकार समसत आ
त्मा ब्रह्म है ॥ ब्रह्म सभावते भिंन कछु नही ॥ सर्वदा अपणे सभाव विषे प
स्थित है ॥ अरु विकार आत्मा विषे को नहीं ॥ केवल सुद्ध निरंजन प्रकाश
रूप है ॥ जैसे चंद्रमा के मंडल विषे विख की वेल नही होती ॥ तैसे आत्मा विषे वि
कार को वा नहीं ॥ निर्मल प्रकाश रूप है ॥ अरु आदि अंत मध कलना ते रहित है
सो आत्मा के अ
लोकपाल ब्रह्मे के सेहार्यां है ॥ अरु जेते कछु विकार भासते हैं ॥
ज्ञान कर भासते हैं ॥ जब तें एकाग्र चित्त विचार कर देखेगा तब जगत भ्रम
शांत हो जावेगा ॥ एह जगत भ्रम फुर्ने कर भासिया है ॥ जब फुर्ना डोल टिकर आ
त्मा की और आवेगा ॥ तब एह जगत भ्रम मिटि जावेगा ॥ जैसे पवन कर के दीपक
जागता है ॥ अरु पवन नही कर लीन हो जाता है ॥ तैसे चित्त के फुर्ने कर जगत भा
सता है ॥ अरु चित्त का फुर्ना जब अंतर्मुख होता है ॥ तब जगत भ्रम मिटि जाता है ॥
हे रामजी जब ज्ञान कर के देखेगा तब अज्ञान रूपी फुर्ने का त्रिकाल कछु भाव भा
सेगा ॥ अरु बैध मुक्ति आत्मा विषे कोऊ नहीं दिष्टि आवेगी एस विषे संसा कछु न
हीं ॥ एह जगत जाल जो भासता है ॥ सो मिथ्या है ॥ जब विचार कर देखेगा तब अ
दृष्टि हो कार्ई यह जे आत्मा विषे त्रिण वत भासेगा ॥ इति श्री जगत प्रकाश एक
बोधे नाम सर्ग: ॥ २१ ॥ राम उवाच ॥ हे भगवन एह जो जगत जाल तुम कहा वि
लेविद्रव पहो कर सो एक एकस्थान विषे वैठ कर देखें अथवा सिष्ट सिष्ट विषे जा
एक एक देखें सो कहु ॥ वसिष्ठ उवाच ॥ हे रामजी अनेक अनंत आत्मा हो ॥ सर्व शक्ति
में एक सर्व विआपी चिदाकाश हो ॥ सर्व विषे आवणा जावणा के से होवे ॥ एक
एक एस्थान विषे बैठ कर देखते हैं ॥ अरु सिष्टि विषे जाए कर भी देखते हैं ॥ हे राम
जी जैसे तुम अपणे अंगों को पिंखते हैं एक एक अंग प्रत्यक्ष देखता है ॥ तैसे में ज्ञान ने
त्री कर अपणे आप ही विषे जगत को देखता भया हो ॥ सो कैसे जगत हुए को देखि
आ है ॥ जो निराकार अरु निरविकार अविअकाश रूप निर्मल देखे है ॥ अरु सो वे
ब जो दिष्टि आए हैं ॥ सो फुर्ने कर दिष्टि आए हैं वास्तव कछु नहीं ॥ केवल अकाश रू
प है ॥ जैसे सुमेर विषे वसिष्ठ का अनभव होवे ॥ परसपर तद्रूप है ॥ जैसे ब्रिछ होता है
अरु तिसको पत्र फूल फल सभ अपणे अंग भासते हैं ॥ तैसे ज्ञान नेत्रों कर जग
त हुए को देखता भया हो ॥ हे रामजी जैसे समुद्र तरंग फेन बुदबुदे कों अरु ज
ल को जैसे तद्रूप को अपणे आप ही विषे देखता है ॥ तैसे में अपणे आप ही विषे
जगतों को देखता भया हो ॥ अरु अब भी मे एस देह विषे एस्थित हूआ प
दार्थों विषे जलों विषे सिषों को ज्ञान कर के देखता हो ॥ जैसे कदली के अंतर बाहर
जे अकाश एक रूप है ॥ तैसे मेरे को आगे भी अरु अब भी जगत अकाश रूप अपणे
आप विषे भासते हैं ॥ जैसे जल अपणे रस को जाणता है ॥ जैसे बरफ अपणी
सीतलता को जाणती है ॥ जैसे पवन अपणे एस्पंद को जाणता है ॥ तैसे में ज्ञान
कर सिष्टि अपणे विषे देखता भया हो ॥ जिस ज्ञानवान पुरुष को सुद्ध बो
ध विषे एकता भए है ॥ सो अपणे स्वरूप देखता है ॥ सो समसत ही अकाश वत अपणे आ

पदेखता है ॥ जिनको आत्मा विषे एस्थिति भई है ॥ सो वेदन को अवेदन देखता
है ॥ जो कदाचित एपुनी न हो ॥ जैसे देवता अपणे एस्थान विषे बैठे हूए देवने
त्रों कर सृष्टि जो जन प्रजंत अपणे विषे माल देखते हैं ॥ तैसे मे जगतों को सर्व
आत्मा हो कर देखता भया हो ॥ जैसे प्रिथवी विषे निधि होता है ॥ अरु ओखध अरु
तमा विषे देखती है ॥ तैसे मे जगतों को
सहित पदार्थ होते हैं ॥ सो प्रिथवी अपणे विषे ही देखती है ॥ तैसे मे जगतों को
अपणे विषे देखता भया हो ॥ राम उवाच ॥ हे भगवन तुम्ह जो कमल नेनी कांता
थी अरु जो छंद के पाट कों आइ गई सो क्रिआ करती भई ॥ वसिष्ठ उवाच ॥ हे राम
जी अरु जो भवानी अका
शी अकाश आपको और कांता मरनि करि दिआ निर एस्थित भए ॥ जैसे अकाश वपु आते
पा विषे आनि एस्थिति होवे ॥ तैसे आनि एस्थित भए ॥ जैसे मे अकाश वपु आते
मे में आप को अकाश वपु देखता भए अरु अकाश विषे ॥ एस कारण ते प्रथम देख
न भए आ जो मेरा अहूत कथोर था ॥ जब चिदवपु हो एकाग्र में एस्थित भए आ ॥ त
व कांता को देखिआ ॥ सो भी अकाश रूप है ॥ अरु उह सदरी भी अकाश रूप है ॥ अ
रु जगत जाल जो देखा सो अकाश रूप है ॥ राम उवाच ॥ हे भगवन तुम भी अकाश
रूप थे अरु उह भी अकाश रूप थी ॥ अरु वचन विलास तब होता है जो शरीर होता
है ॥ अरु तिस विषे वोलणे का एस्थान कंठ तालू ना सका दंत ओष्ट आदिक हो
ते हैं ॥ अरु प्राण अंतर प्रेरणे हारे होते हैं ॥ तब अक्षरों का उच्चार होता है ॥ तुम दो
नो निराकार थे ॥ तुमारा देखणा अरु बोलना किस प्रकार भए आ ॥ अरु बोलणा अरु
पण अरु वलोकन मनस्कार करता होता है ॥ रूप कहो अरु दिष्टि अवलोक कहीए अरु इंद्री अ
मनस्कार कही है फुर्ण मन का ॥ एन तीनो बिना तुमारा बोलणा के से हूआ
॥ वसिष्ठ उवाच ॥ हे रामजी जैसे स्वप्न विषे रूप अवलोक मन का रस्य शरीर पाद
परसपर वचन होते हैं ॥ सो अकाश रूप होते हैं ॥ तैसे हमारा देखना बोलणा अ
आपस विषे परसपर संवाद हूआ है ॥ स्वप्न विषे जैसे तू देखता है ॥ जो रूप अवलोक
मनस्कार अकाश रूप होते हैं ॥ अरु प्रत्यक्ष भासते हैं ॥ तैसे हमारा देखणा अरु बो
लणा हूआ ॥ एह प्रसन्न तुमारा नही बणता जो के से देखणा बोलणा हूआ ॥ अरु
जैसे अकाश विषे स्विप्ना देखी है ॥ तैसे एह सिष्टि भी है ॥ जैसे ज्ञान के शरीर
तैसे एन के अरु हमारे शरीर हैं ॥ जैसे एह जगत है ॥ तैसे उह जगत था ॥ हे रामजी एह अ
बर्जे है ॥ जो सत नही भासती ॥ अरु जो असत वस्त है सो भासती है ॥ जैसे स्वप्ने विषे
प्रिथिवी समुद्र पर्वत अरु जगत है नहीं ॥ अरु असत भासती है ॥ अरु सत वस्तु अ
नभव रूप नही भासती ॥ तैसे हम तुम जगत अकाश रूप है ॥ सो सभ अकाश रूप है ॥ अ
होते भासते हैं ॥ अरु आवणा जावणा होता भासता है ॥ हे रामजी स्वप्न की जो सृष्टि है सो
ई एह जो हूआ कछु भी नही ॥ तैसे एह जगत भी है ॥ अरु जो कछु है सो अनभव रूप है एतर कछु नही ॥ अ
मिथ्या है हि वर्णीक कछु नही ॥ अरु जो कछु है सो अनभव परमात्म तत्व विषे स्वप्न के वचन
जैसे तेक है सम्राक्ति आहे ॥ परके से है तो सत्ता आदि परमात्म तत विषे स्वप्न वत
हूआ ॥ सो विराट आत्मा है ॥ तिसने अनंत रूप हजीव हूए हैं ॥ सो अकाश रूप है ॥ का
है ते जो विराट अकाश रूप है ॥ ताते एह सभ अकाश रूप है ॥ अरु सत्य आदिक द्रि
ष्टांत भी मेने तेरे बोध के अर्थ कहा है ॥ काहे ते जो स्वप्ना भी कछु हूआ नहीं ॥ के
वल आत्म तत्मात्र पद है ॥ ब्रह्म ही अपणे आप विषे एस्थित है ॥ हे रामजी उह
कांता मेरे देखी ते बड़ा सनेह कुन भए आ ॥ काहे ते जो संकल्प मेरा अरु उस का
एक हूआ तब वचन विहार हूआ ॥ जैसे स्वप्ने विषे स्व प्रजनों का होता है ॥ तैसे

वं॰
मं॰
६२

हमारा हूआ॥ हे रामजी जैसे स्वप्न की सृष्टि प्रकाशरूप होती है॥ तैसे हम न सजना
त सभ प्रकाशरूप है॥ कछु हूआ नही॥ सभ का जगत अरु नाश अंत एकरूप है॥ पा
रेल जाग्रत दीर्घ काल का स्वप्ना है॥ ताते एस विषिडे विवहार उत्पत अरु प्र
लै होती का भासता है॥ हे रामजी स्वप्न विषे जो भोग होते भासते है॥ सो भ्रांत
मात्र है निर्मल प्रकाशरूप आत्मा ते एतर कछु बणिआ नही॥ तैसे इह अरु दृष्टि
स्वप्ने की निआप उपण होते भासते है॥ जो हम तम आदिक को सत मानता है॥ म
नष्ट पीडि हूआ॥ अरु जिस दृष्ट को मानता है॥ सो दोनो अणिआन के कै आभास मात्र
देह एहे॥ अरु स्वप्न दृष्टा है सो दृष्टि ते रहित है॥ जैसे दृष्टा प्रकाशरूप है॥ तैसे
दृष्टा भी प्रकाशरूप है॥ जैसे स्वप्न की दृष्टि अनभव ते एतर कछु नही॥ तैसे एह जग
त भी अनभवरूप है॥ हे रामजी चिदाकाश जो अनंत आत्मा है॥ सो एह जगत का
कारण कैसे होवे॥ जैसे स्वप्न की सृष्टि का कारण कोऊ नही॥ तैसे एह जग
त का कारण कोऊ नही॥ काहे ते जो हूआ कछु नही॥ अरु जो है सो अनभव
रूप है॥ तैसे एह जगत भी प्रकाशरूप है॥ हे रामजी एह जीव सकाररूप है॥ एन के स्व
प्न की सृष्टि नाना प्रकार की होती है॥ सो प्रकाशरूप होती है॥ कछु आकार नही
अरु जो निराकार अद्वैत आत्मसत्ता है॥ तिस विषे आदि अभास जगत फुरि
आ है॥ सो प्रकाशरूप किउ न होवे॥ सकार किआ अरु निराकार किआ सो श्रव
ण कर॥ एक चित है एक चेतन है॥ एक चित चेतन है॥ चित नाम है स्वप्न चित मा
त्र का॥ अरु चेतन नाम है दृश्य फुरने का॥ अरु जिस चित को दृश्य का संबंध है॥ ता
ने का संबंध है॥ अरु हेत दृश्य का संबंध है॥ अस आत्मा विषे अनात्म अभिमान है
अस जो जीव है॥ सो सकाररूप है॥ तिस के स्वप्न की सृष्टि प्रकाशरूप है॥ जो अचेत
चिन्मात्र निराकार सत्ता है॥ तिस का स्वप्न आभासरूपी जगत प्रकाशरूपी किउ न हो
वे॥ हे रामजी एह जगत निरउपादानरूप है॥ अर्थ एह जो बणिआ कछु नही॥ चि
दाकाश निराकाररूप है॥ जैसे स्वप्न विषे जगत अकित मिहोता है॥ तैसे एह जगत
है॥ न एस का कोऊ निमित कारण है न समवाय कारण है॥ आत्मा अचुत है॥ अद्वै
त है॥ एस का कारण कैसे कहीए॥ हे रामजी न कोऊ करता है॥ न भोगता है॥
न कोऊ जगत है न है न नही॥ अरु एह भी कहणा नही बणता॥ ऐसा जो ज्ञान वा
न है सो परमपावनता नण स्थिति होता है॥ अवशिष्ट अवचार आन पडता है॥ ति
स को कहता है॥ १८॥ इति श्री जगत एक प्रतपाद नाम सर्गः॥ रामउवाच
॥ हे भगवन उह प्रकाशरूपी कातो जात मरत निकलि आए थी॥ सो अनेक वट
तादिक अकुर के संवोल्लेश शरीर विना॥ अरु जो तिस स्वप्न की निआप कहे हुन ब
स्व प्रविषे भी तो केवल प्रकाश होता है॥ तहा या राल वादिक अकुर के से बोलता
है॥ वशिष्ठउवाच॥ हे रामजी स्वप्न विषे जो शरीर होता है॥ सो प्रकाश हूए जै
रूप है॥ तिस विषे कचरादिक अकुर कदाचित उदे नही हूए॥ जैसे शव जो है मि
तक सो कदाचित नही बोलता॥ तैसे प्रकाशरूपी आत्मा विषे शब्दिक कदाचित
नही हूआ अरु जो तू कहे॥ तिस का उतर एह है॥ जो कछु शब्द उहास ते होए॥ ते
तो निकटिवेद को भी सुणीते॥ हे रामजी निकट विदेह जाग्रत को नही सुणीता
एसी ते मे कहिता हो जो प्रकाशरूप है॥ हूआ कछु नही॥ जो कछु हूआ भासता है
सो भ्रांतमात्र है॥ केवल चिन्मात्र कचन प्रकाश है॥ सो प्रकाश विषे अका
श ही एस्थित है॥ तैसे एह जग भी हूआ कछु नही॥ हे रामजी जैसे चंद्रमा विषे

आसता है॥ अरु प्रकाश विषे श्विक होता है॥ अरु जैसे पथर की पुतली आनिरतक
ती आभासे सो मिथ्या है॥ तैसे एह जगत मिथ्या है॥ हे रामजी स्वप्न विषे जो जगत
भासता है॥ सो चिदाकाश का कचन है॥ सो कचन भी प्रकाशरूप है॥ एतर कछु
नही॥ जैसे स्वप्न का जगत प्रकाशरूप है॥ तैसे एह जगत भी प्रकाशरूप है॥ जैसे एह
जगत है तैसे उह जगत था॥ अरु एह जो प्रकाश है सो आत्म प्रकाश विषे अनाका
श है॥ जैसे स्वप्ने शरीर की दृश्य भ्रम कर के अनेक भासती है॥ तैसे जाग्रत भी भ्रम क
र के मन कु भासती है॥ रामउवाच॥ हे भगवन एह जगत स्वप्न है॥ तो जाग्रत कि
उ भासता है॥ अरु जो भ्रमता है॥ तो मन को निआव कि उ भासता है॥ वशिष्ठउवाच॥ हे
रामजी एक स्विदसंवेग है॥ एक तीव्रसंवेग है संवेग कहीए॥ संकल्प का प्रणाम
सो त्रिविध है॥ जैसे कोऊ पुरख अपणे स्थान विषे बैठा है आम ना राजक कै की कि
सी विवहार को रचता है॥ सो तिस को जाणता है॥ जो संकल्प मात्र है॥ अरु जे तन
ट संवेग धारता है॥ तब उहु मानता है जो एह मेरा स्वर्ग है॥ अरु न एह मेरा सर्वांग सत है
अपना अपणे स्वरूप को सत जाणता है॥ एस का नाम स्विदसंवेग है॥ काहे ते जो अ
पणा स्वरूप नही भूला॥ अरु सभ संवेग एह है॥ जैसे किसी पुरख को स्वप्ना आवता
है॥ तिस विषे स्वप्न की सृष्टि भासती है॥ अरु एक काल अपणा भासता है॥ तब अ
पणे शरीर को भी सत जाणता है॥ अरु जगत को भी सत जाणता है॥ काहे ते जो स्व
रूप का प्रमाद है॥ स्वप्न काल विषे सृष्टि को सत जाणता है॥ अरु जागा हूआ सृष्टि
को असत जाणता है॥ तिस का नाम मंद संवेग है॥ काहे ते जो सोए आ हूआ शी
घ्र ही जाग उठता है॥ अरु सोए आ जागे न हो तिस का नाम तीव्र संवेग है॥ हे राम
जी आस्विस्म संकल्परूप अभास है॥ तिस विषे नाना प्रकार की सृष्टि हो एक र
दृढ स्थिति है एह॥ जिन को आदि सरूप का प्रमाद नही हूआ॥ तिन को जाग्रत स्विद सं
वेग है॥ काहे ते जो अपणा लीला मात्र असत जाणते है॥ अरु जिन को आदि सरू
प का प्रमाद हूआ है॥ वह शीघ्र जाग उठते है॥ सरूप विषे॥ तब तिन को एह
जगत असत भासता है॥ तैसे ज्ञानी को एस जगत विषे सत प्रतीत नही होती है॥
अरु जिस को प्रमाद हूआ है॥ वह दिन नही जागिआ॥ तिस को एह जगत सत हो
भासता है॥ काहे ते जो चित की वृत्ति का अणामती ब्रह होगए आ है॥ एस कारन ते
अज्ञानी को एह जगत स्वप्नरूप जाग्रत हो भासती है॥ हे रामजी चित के एस दकाम
मजगत है॥ जब चित [illegible] होता है॥ तब जगत हो भासता है॥ जब चित बा
हमुख हो जाता है॥ तब सरूप का अज्ञान होता है॥ जब अज्ञान हूआ तब जगत भ्रम
दृढ होता है॥ ताते एस जगत का कारण अज्ञान है॥ हे रामजी आत्मा के अज्ञान
कर जगत भासता है॥ जब आत्मज्ञान न होवेगा॥ तब जगत भ्रम निवर्त हो जावे
गा॥ ताते आत्मपद विषे एस्थिति होवहु॥ तब जगत की सत प्रतीत होवेगा॥
सो आत्मा अपणा आप है॥ हे रामजी अज्ञान कर के एस जगत की सत प्रतीत हो
त भ्रम निवर्त हो जावेगा॥ हे रामजी अज्ञान कर के एह जगत भासता है॥ हे रामजी के
तो है॥ तिस विषे जैसी जैसी भावना होती है तैसे जगत भासता है॥ जब उ
से जगत भ्रमरूप सत भासता है॥ सो स्नाणहू रामजी वह जो अज्ञानी जीव है॥ जब उ
हे भिन होता है॥ तब सक्रित नो ही होता॥ अज्ञान के बसते॥ अरु न उत्पत्ति पथर वन
भी नही होता॥ काहे ते जो चेतन रूप है॥ हे रामजी जब भिन्न कहे होता है॥ तब अ
काशरूप चेतन विषे ही जगत फुर आवता है॥ अरु पाणी वासना करन सार नाना
प्रकार का जगत हो भासता है॥ अरु नाना प्रकार के विवहार रचना क्रिआ सहत
होकर भासती है॥ अरु कल्प अंत तक भ्रमि आ जीव की आनि वाह कहोता है॥ जैसे

हमारीवंदेरिवजोउदूत्तगानक्रिआरूपहे॥किसीकारणतेननहीउपजा॥जैसेउडूम
गत्तकल्लनामात्रअननहोभासताहे॥तैसेहीएहजगतजाणा॥हेरामजीएहजोतेवना
एसआगआवताहे॥तिसबिखिजोपुरखपदार्थहेंसोभीसतहें॥काहेतेजोब्रह्मस
तासर्वआत्मकहे॥हेरामजीप्रबोधहुएभीसप्रकेपदार्थविदिमानभासतेहें॥ए
सीतेकहाजोसप्रसंकल्पभ्रमनाशतनलहे॥जैसेजोआगेउदाहरनकहे॥अ
क्रकाएइब्रह्मणकेपुत्रकालवणगाधिकाएनकोमनोराजभ्रमप्रतखहेआहे
आगेकेहेगी॥दीर्घतपाकासप्रश्नतलहेआएसीतकहाजोसभवलहे॥अ
अरजीवजीवप्रतिअपणीसिष्टिहे॥काहेतेजोसंकल्पअपणाअपणाहे॥तोते
सिष्टाभिंनभिंनहे॥अरसभकाअधिष्ठानआत्मसत्ताहे॥अरसर्वसिष्टोकाप्रति
बिबआत्मरूपआदर्शविखेहोताहे॥अरसर्वसिष्टआत्मकाअनभवहे॥जे
सेबीजतेब्रिक्षउत्पतहोताहे॥अरब्रिक्षतेअवरअवरब्रिक्षहोतेहे॥तोताविचारक
रदेखिजोबीजतोएकथा॥अरसभब्रिक्षआदिबीजजोतेउपजेहे॥तैसेएकआत्मा
तेअनंतसिष्टप्रकाशतीहे॥परसरूपतेएतरकछुनही॥जैसेएकपुरखसोएआ
हे॥तिसकोसप्रकीसिष्टिभासिआवतीहे॥हेरामजीजिसतेआदिसप्रसिष्टिभासी
हे॥सोपुरखतेएकहीहे॥तिसएकहीविखअनंतसिष्टचितकेफुरनेकरहो
तीहे॥परसरूपतेकछुहुआनही॥सभअकाशरूपहे॥अरजीवकुंभिंनभिंनअ
पणीअपणीसिष्टिअज्ञानकरकेभासतीहे॥हेरामजीजीवोंकोअवरकीसिष्टिका
ज्ञाननहीहोता॥अपणीसिष्टिकोजाणतेहे॥काहेतेजोसंकल्पभिंनहे॥ए
कनकोहमसप्रकेनरहे॥अरएकहमकोसप्रकेनरहे॥जोअवरसिष्टिविखे
सोएहे॥अरहमारीसिष्टिजिनकेसप्रविखिभासीहे।तिनकेहमसप्रकेनर
हे॥अरजोहमारीसिष्टिविखेसोएहे॥अरसभविखेतिनकोअवरसिष्टिभास
आएहे॥सोहमारेसप्रकेनरहे॥हेरामजीएसप्रकारआत्मतत्तकेअग्रअनंतसि
ष्टिपडीआभासतीहे॥अरसिष्टिकोमतजाणकरजीवविचरहेहे॥सोसोखमा
वगत्तरूपनहे॥जैसेएकपुरखसेनकरताहे॥तिसकोसप्रविखप्राणामहुआ
तिसविखजोजीवहुए॥तिनकोवहुडउसप्रहुआतबअपणीअपणीसिष्टि तिनकोंस
तिनकोवहुडिअपणीअपणीसिष्टिभासिआए॥तोअनिनसिष्टअनभवकआ
श्रहोतीहे॥तैसेएकआत्माकेआश्रअसंखसिष्टपडीआफुरतीहे॥सोसिष्टकेसी
हेकुएसमानेहे॥कएविस्तदाणाभावहे॥अपणीअपणीसिष्टिकोजीवजाण
तेहे॥जैसेएकमंदरविखेदशपुरखसोएहे॥अरतिनकोअपणाअपणासपणा
आएआहे॥तबउसकोसप्रकोसिष्टिकोउहनहीजाणता॥अरउसकीसि
कोउहनहीजाणता॥तैसेएहसिष्टाभीअवरकीअवरकोअज्ञातिहे॥काहेते
जोसंकल्पअपणाअपणाहे॥जैसेपथरकोपथरनहीजाणता॥अरजोअ
तिवाहिकशरीरजोगीश्वरहे॥तिनकोअवरकीसिष्टिकाभीज्ञानहोताहे॥हे
रामजीवस्ततेसिष्टाभीनिराकारअकाशरूपहे॥जैसेसूर्यकीकिरणोविखे
जलाभासहोताहे॥अरजेवडीविखसर्पभासताहे॥अरजैसेसमुंद्रविखेतरं
हे॥तैसेआत्माविखसिष्टहे॥हेरामजीवास्तवकछुहुआनही॥सर्वदाकाल
सर्वप्रकारआत्माअपणेआपविखेस्थितिहे॥जिसकोआत्माकाप्रमादहुआहे
तिसकोजगतभासताहे॥वास्तवतेजगतकिसीकारणतेउपजिआनही॥अ
भासरूपहे॥समकतानहएतेब्रह्मअद्वैतभासताहे॥अरअसंमिकतानतेद्वैत
रूपजगतहोभासताहे॥जैसेजेवडीकेसमिकज्ञानतेजेवडीहीभासतीहे॥अर

असंमिकज्ञानकरसर्पभासताहे॥तैसेआत्माकेसंमिकज्ञानकरजगतहोता
नहोताहे॥हेरामजीमेजोआसंदवीप्रसंगकोआज्ञाहेदबीतंकहातेआएहे॥अ
रेलापस्थानकवनहे॥अरतेकवणहे॥एहाकिसनिमितआएहे॥ह॰ ३
वाव॥हेमुनीश्वरब्रह्मरूपीजोमहाअकाशहे॥तिसकाजोअणहेवहुड
तिसअणकाभीजोअणहे॥तिसकाजोछिद्रहेतिसछिद्रविखेभीजोछिद्रहे॥
तिसविखेतलअवरहितेहे॥तमारणएहजगतभीउसीविखेहे॥तमारीसिष्टका
जोब्रह्माहे॥तिसकामेवदनरूपीब्रह्माकीनिआएहे॥तिसनेएहजगतरचाहे
तिसततमारेजगतविखेप्रिथवीहे॥तिसकेउपरसमंद्रहे॥तिसोकरप्रिथवी
अकादीहुएहे॥तिसकेपरदुणाअवरदीपहे॥तिसदीपकेपरदुणासमंद्रहे॥
एसप्रकारप्रिथवीकोलेतजाएताहे॥तबआगेसुवरनेकीप्रिथवीआवतीहे॥
सोदशासहंसजोजनप्रजंनमहासंदरप्रकाशरूपहे॥जिसतेचंद्रमाअरसू
र्यकेप्रकाशकोभीजलनतिकीआहे॥तिसकेपरेअवरलोकालोकपर्वतहे
सोसमठजोइप्रमिपहे॥तिसविखेवहुतेनगरवसतेहें॥कहूंऐसेएस्थानहे
जहांसदाप्रकाशरहिताहे॥जैसेज्ञानकेरिदेविखेसदाप्रकाशरहिताहे॥अ
कहांऐसेएस्थानहे॥जहांसर्वदाअंधकारहीरहिताहे॥तैसेअज्ञानीकेरिदेवि
खेअंधकाररहिताहे॥कहूंऐसेएस्थानहे॥जहांअनंतपदार्थपाएजातेहें॥जेसेपंडित
केरिदेविखेअर्थप्रतछहोतेहे॥कहूंऐसेएस्थानहेजहांपदार्थनहीपाएते॥जे
सेअपंडितकेरिदेविखेसभूतकाअर्थनहींहोता॥कहूंऐसेएस्थानहे॥जिनके
देखणेकरिरिदाप्रसनहोताहे॥जैसेसंतोकेदर्शनकरिरिदाप्रसनहोताहे॥काहे
ऐसेएस्थानहेजिनकुंविखेसदादुखरहिताहे॥जैसेअज्ञानीअहूंकोसंगतवि
खेसदादुखरहिताहे॥कहूंऐसेएस्थानहेजहांसूर्जनहीउदेहोता॥कहूंसज
चंद्रमादोनोउदेहोतेहें॥कहूंएकहीहोतेहे॥कहूंक्रियाणनंदहोरहितेहे॥कहे
धर्मकाविवहाररहोताहे॥कहूंविद्याधरहीरहितेहे॥कहूंइंद्रतहसतावहितेहें॥
कहूंवरेइनतदनलागहें॥कहूंऐसेएस्थानहेजहांशास्त्रोकाविचारहीनहीं॥क
हेंप्राशास्त्रोकेविचारवानरहितेहें॥कहूंराजहोपरेकरतेहें॥कहूंवडीआनस
मीआहे॥कहूंइज्ञायरवनहे॥कहेपवनपरावल्लताहे॥कहूंपातालवतवडेरवा
तछिद्रहे॥कहूंवडेआशिषरहहि॥कहेविद्याधरदेवतेरहितेहें॥कहूंयतनगद
समनरहितेहे॥कहूंविद्याधरदेवीअरहितीहे॥एसप्रकारप्रकारअनंतदृष्टिए
स्थानोकीआवसतीआहहि॥तिसलोकालोककेशिषरउपरसमसतजोतनो
कामलाइहे॥तिसविखेकवल्पफललागेहे॥अरसभब्रिक्षकल्पतरहेहि॥सर्वने
अरपथ्यरसभचिंतामणीहे॥तिसविखेउत्तरदिशामोएकशिलापडीहे॥अरविल्लमकने
कीतिसकेशिरवरउपरब्रिक्षविल्वमहादेवआनबेठताहे॥अरमेराभलोभीरहिताहे
हें॥तिसकेअपरशिलाहे॥तिसविखेमेरहितीहो॥तिसविखेएकब्रह्माणरहिताहे॥सा
सझनपर्वारभीउहारहिताहे॥हेमुनीश्वरसोब्रह्माणएकांतजाएवेठताहे॥अरसदाहे
ब्रिधअवस्थाअवलगजीवताहे॥सोब्रह्माणएकेनमितमनतेउपजाएआहे
ब्रकोअरेयेनकतीहे॥तिसेमफकोअपणाविवाहकेनमितमनतेउपजाएआहे॥अरमेवेसाथविवहार
अरअवमेवडीहूएहो॥जैसेवसंतरकीमंजरीहोतीहे॥अरवेदकाअथ
नहीकतो॥जबकाउपजाहे॥तबकाब्रह्मचारीहीरहिताहे॥अरविवाहकेनमित
नकरविरक्तचितहुआहे॥हेमुनीश्वरअरेसब्रह्माणमफकोविवाह॥अरवेइ
मनतेउत्पतकीआहेहि॥अरवसतभशोमेंजगतमेउत्पतभएहो॥

व॰
म॰
८४

माकीनिग्राणमेदरहें॥ ग्रसमभग्राभीमेरकरहें॥ सभजीवोंकेमोहनहो
हें॥ मफकोदखकरकामेरवभीमर्छाहोजाताहे॥ ग्रवफलोंकीनिग्राणमेरा
हसणाहे॥ ग्रसभगुणमेरेविखपाएतेहें॥ ग्रसमहालछमीकीमसलीहो॥
मेशात्यागकरग्रात्याणकांतजाएवेठाहे॥ ग्रसमदावेदोंकाग्रथनकतीहे॥ ग्र
वराहीयजलतीहे॥ नहमेउत्पनभएथीतवकहिताथामतमफकोंविवाहुगा॥
जबमेंजावनग्रवस्थाकोंप्रापतिभएहोंतबत्यागकरएकांतजाएवेठाहे॥ हेम
नोश्वरएस्त्रीकोंसदाभोगविलासचाहीताहे॥ ग्रबमेंजावणिग्रवस्थाकव
पडीजलतीहो॥ ग्ररजोवडेतलावकमलनीमहितद्रिश्यावनेहें॥ सोवतीके
विजोगकरग्रग्निकेग्रगारेभासतेहें॥ ग्ररवडेवागनंदनग्रादिकमफकोंमा
रूथलकीनिग्राएभासतेहें॥ एनोकोंदखिकरदनकतीहो॥ नत्रोंतेजलचलि
ग्राजाताहे॥ जेसवरखाकालकामेघवरखताहे॥ तेसेमेरेनत्रोंतेजलचलिताहे॥
जवमेमत्सग्रादिकग्रपणाग्रंगहृकेदरवतीहे॥ तवनेत्रोंकेजलकरनिकटिवेती
कमलनीग्राइबुजातीहे॥ ग्ररजवमेफूलग्ररकल्पनवनमालवृछकेफुल
पत्रसिजोशएपविछाएकरसेनकतीहो॥ तवग्रंगोंकेस्पर्शकरफुलजलजातेहें॥
जिसकमलसाथमेरेग्रंगकापपरशहोताहे॥ सोजलजाताहे॥ हेभगवनभ
र्ताकेविजोगकरमेनपीहुएजबवर्फकेपर्वतपरजाएवेठतेहें॥ तवउहभीग्र
ग्रवतहोजाताहे॥ ग्ररमेनानाप्रकारकेफुलोंकोंगलेविखपावतीहो॥ तवउ
भोतपतनिवर्तनहीहोती॥ मदरहोभर्ताकोसरवदेणहारीहो॥ ग्ररमेरेभर्ता
कीहैहित्रिलोकीहे॥ ग्ररभर्ताकेवचनोंविखसर्वदामनप्रीतिरहतीहे॥ ग्रर
गुरुकेसभग्राचारकतीहो॥ शुभगुणाकेसंपनहो॥ ग्ररसतीकोधारहीहो॥ ग्र
सवकोशतिपालनकतीहो॥ ग्ररभर्ताकोसर्वदामफकोएछारहतीहे॥ हेमनी
स्वरमेपतिव्रितहो॥ जोपुरखपतिव्रताएस्त्रीसाथस्पर्शकतीहे॥ सोवुहतनसव
पावताहे॥ तीनोंतापोंतेरहितहोताहे॥ सोसभगुणाउसविखपाएतेहें॥ ग्रर
भर्ताविखसदाप्रीतिकतीहे॥ ग्ररभर्ताकीप्रीतिउसविखरहे॥ सोग्रसीमेहो॥ तिस
कोंत्यागकरग्रात्याणकांतजाएवेठाहे॥ ग्ररसवेदाकालवेदकाविचारकतीरहे
ताहे॥ ग्ररसर्वकामनाकाजिसनेत्यागकीग्राहे॥ कोउएछाउसकोंनहीं॥ ग्ररमेउ
सकेविजोगकरपडीजलतीहो॥ हेमनीश्वरउहएस्त्रीभीभलीहे॥ जिसकोंभर्ता
विवाहकरसंगीणग्राहे॥ ग्ररजिसकोंभर्तानहीप्रापतिभएग्रा॥ साभीभलीहे॥ जो
सदाकुवारीहे॥ ग्ररजोभर्ताकेसंजोगतेभिसमजीतीसोभीश्रेष्टहे॥ ग्ररजिस
कोंभर्ताप्रापतिहुग्राहे॥ हेमनीश्वरग्रात्मपदकीभावनाते॥ रहितजोपुरखस
म्पतिरहितउत्पतहुग्राहे॥ सोनिहफलहे॥ ग्ररजेसेपात्रविनाधनिनिहफ
लहोताहे॥ ग्ररथएहजोशुभएस्थानजोहें॥ सततजनग्ररतीरथग्रादिकएनोंतेरहित
जोपापएस्थानहें॥ तिनोंविखदानग्राहुग्राधननिहफलहोताहे॥ जेससमदि
शीविनावाधनिहफलहोताहे॥ जेसेवेसवाकीलजानिहफलहे॥ तेसेमेभ
र्ताविनानिहफलहों॥ हेभगवनजवशियापविछाएकरसेनकरतीहो॥ तोफूलभी
जलजातेहें॥ जेससमुंदकोंवडवाग्रग्निजलावतीहे॥ तेसेकमलोंकोंमेरेग्रंग
जलावतेहें॥ हेमनीश्वरजोसरवकेएस्थानहें॥ सोमुफकोंदुखदाएभासतेहें॥ ग्र
रमएस्थानहेंसोसरवदेतेहें॥ ग्ररजोसरवकेएस्थानहें॥ सोभर्ताकेविजोगदु
रवकीनिग्राएहें॥ ८२॥ इति श्रीविद्याधरीविस्वरन नाम सर्गः॥ विद्याध री
उवाच॥ गोहेनीश्वरएसप्रकारमेंतपतीफिरतीहो॥ ग्रवमफकोंभीभर्ताकेवि

विजोगकरवेरागउत्पतिहुग्राहे॥ भर्ताकोवेरागउपीगग्राग्रोभीत्रिसाउपीकमल
नीग्रापरपडीहे॥ तिसकरकमलनीजलगएहे॥ तातेजगतमफकोंविसमभासता
हे॥ हेमनीश्वरएहजगतग्रसारहेएसविखएस्थिरवस्तुकोउनहीं॥ एसप्रकार
मतेमफकोंभीवेरागउपजिग्राहे॥ ग्ररमेराभर्तासुमहे॥ सोससारतेविरक्तहोकर
एकांतजाएवेठाहे॥ वेदकोविचारतारहिताहे॥ ग्ररग्रात्मपदकोंनहीप्रापतिभ
एग्रा॥ मनकेएस्थितिकरनेकोंउपायकताहे॥ परग्ररवलगमनएस्थितिनहीभ
एग्रा॥ सर्वइछाणातेरहितहोकरशास्त्रकोविचारतारहिताहे॥ ग्ररग्रात्माकासा
क्षात्कारनहीहूग्रा॥ ग्ररमफकोंभीवेरागउपजिग्राहे॥ ग्रबदोनोंवेरागकारसं
नहूएहें॥ ग्ररउपरमपदकेपावणकीएछामफकोंभएग्रे॥ ग्ररप्रारभहमकोंविर
सहोएराएग्राहे॥ जेसग्ररवकालकीवल्लीविरसहोजातीहे॥ एसकारणातेभी
मफकोउत्पनभएहे॥ जोग्रकाशकेमारगकोंग्राणजाउं॥ एसजोगधारणाके
रग्रकाशउपरउडणकोंप्राक्रिहुएहे॥ फिरिसिधमारगकीधारणाकरीसिधों
कोंग्मारगमेभीजावउं॥ परग्रथककहुसिद्धहूग्रा॥ पावणाजोगमजोग्रात्मपदहे॥ सो
प्रापतिनहूग्रा॥ जिसकेपाएतेउखकोंग्रानरहे॥ ग्ररमफकोंनिर्वाणकीप
दकाभएहे॥ ग्ररसिधोंकेगणाभीमेरेरवेहे॥ देवतेदेखेहे॥ विद्याधरदेखेहे॥ ग्रा
नीहृकेएस्थानभीदेखेहें॥ बहुतएस्थानमेदेखे॥ परजहांजावशांतहोताहसोउस
तकरहे॥ जोवसिष्टमनिश्रेसहे॥ जावचनोंइग्रासवलातकरग्रज्ञानकोंनिवर्त
कतेहें॥ जेसेवडामेघववितोहे॥ ग्ररजवलएवललतीहेतवमेघकोंदूरकतीहे॥
तेसेतमारेवचनग्रज्ञानकोंदूरकतेहें॥ ग्रसेमेंतमाथीउस्तनसुणतीनउ॥ तवमेग्रन
सिष्टिविखजाणाका ग्रभ्यासकीग्रातववाएणाके ग्रभ्यासतेतमारोहिसिष्टिविखे
ग्राए॥ तमाथीउस्तनतसणाकर॥ तातेहेमनीश्वरमेरेग्ररमेरेभर्ताकेशांतग्रर्थग्रात्म
ज्ञानउपदेशाकरो॥ मतभर्ताजोमनकेएस्थितिकरणेकोंजतनकतीहे॥ तिसको
तमपग्रेसाउपदेशाकरो॥ जोश्रीघ्रहीएस्थितिहोवे॥ ग्ररग्रात्मपदकोंप्रापतिहोवे॥
ग्ररमफकोंभीग्रात्मज्ञानउपदेशाकरो॥ हेमनीश्वरतमसमपग्रानेपावमफको
द्रिष्टिग्रावतेहो॥ एसकारजतेमतुमारीशरनग्राएहो॥ ग्ररमेपस्तीवुधकेकेतमा
शीनिकटिनहीग्राएप्रिखभावकोंलेकरग्राएहो॥ ग्ररमेजाणतीहों जोमेराग्र
र्थसिधहोरहाहे॥ काहेतेजाकोएमहापुरखोंकीशरनकोंग्राएप्रापतिहोताहे॥
सोनिहफलनहीजाता॥ सभसफलहोजातीहहि॥ जेसेकिसीकाग्रर्थहोता
हे॥ सोनिहफलनहीजाता॥ सभसपूर्णहोताहे॥ जेसाकिसीकाग्रर्थहोता
हे॥ सोमहापुरखसिधकरदेतेहें॥ जेसेकल्पवृछकेनिकटिकोंग्रजाताहे॥ जो
तिसकाग्रर्थपूर्णहोताहे॥ तेसेमेराग्रर्थसफलहोवेगा॥ तातेकिपाकरकेमफ
कोउपदेशाकरो॥ हेमनीश्वरतमदयाकेसमुद्रहो॥ ग्ररसभकेग्रर्थसेपूरनक
रनेकोसमर्थहो॥ ग्ररसुहृदहो॥ ग्रर्थएहजोउपकारकोंग्रपकाविनाहीउपकार
कतेहहु॥ तातेमग्रनाथतमारीशरनकोंप्रापतिभएहो॥ मफकोंग्रात्मपदको
प्रापतिकरो॥ एहजगतमिथ्याहे॥ एसविखकोउपदार्थसतनहीं॥ सभसंकल्प
केरचेहूएहें॥ ८३॥ इति श्रीविद्याधरी ए व नेना म सर्गः॥ वसिष्ठ उवा
च॥ उहे रामजीएसप्रकारविद्याधरीमफकोंकहा॥ तवतिसकालमेंग्रका
शविखसंकल्पकाग्रासनरचिग्रा॥ ग्ररतिसउपरमेंवेठा॥ ग्रापकाग्रथाभ
तकाग्रासनसंकल्पकेकल्पकरतिसकोंवेठाएग्राकाहेतेजोहमारासंकल्प

वं॰
सं॰
६५

कल्पहैं॥ जोकछु चितवनाकरीग्रैसोहीहोजालाहै॥ तब मैं कहाहूं देवीनं के
सेकहतीहैं॥ जोगोटीविरवहमारीसिष्टिहैं॥ गोटीविरवतेमारीसिष्टिकेम
वस्तीहै तोकहहु॥ विद्याधरो उवाच॥ हे भगवन तुमारीसिष्टिविरवजोस्वा
कालोकपर्वतहै सोशमिहहै॥ तिसकेउत्तरविषे प्राशिलारूपशिलाहै॥ तिस
पथरकीगोटीविरवहमारीसिष्टिहै॥ जेसेतमारीसिष्टिहैतेसेशनविरवमि
छापडीग्रावस्तीग्राहै॥ ग्रनासिष्टाकाब्रह्मामेराभर्ताहै॥ मेतिसब्रह्माकीएसी
हैं॥ ग्रथत्रिलोकीएसप्रकारपडीवस्तीहै॥ ऊर्ध्वलोकदेवतेरहतेहैं॥ पातालवि
षेनागहैंतेरहितेहैं॥ मधिमंडलविषेपशुपक्षीमानसरहितेहैं॥ समुद्रभी
ग्रोहैंपर्वतभीहैं॥ प्रथवीजलतेजवायुग्राकाशहै॥ समुद्रहुनेगंभीरताग्र
गीकारकरीहै॥ जीवोंनेप्राणग्रंगीकारकीएहैं॥ पवननेग्रकाशवि
विचलनाग्रंगीकारकीग्राहै॥ ग्रकाशनेग्रंगीकारकीग्राहै॥ पिरथवीने
धीरजग्रंगीकारकीग्राहै॥ विद्यारेंनेज्ञानग्रंगीकारकीग्राहै॥ ग्रग्निनेउ
स्नतासूर्जनेप्रकाशग्रंगीकारकीग्राहै॥ हेतांनेकुवताविसमनेउतावग्रंगी
कारकीएहै॥ जगतकीरक्षाकेनमित॥ नदीग्रहूनेचलणासमुद्रनेशिष्टव
ताग्रंगीकारकरीहै॥ एसीहीप्रकारसभनेतपरमात्माकेग्राश्रयवीहूएहै
कल्पग्रंतजिकोतिंमिजोदारहितीहै॥ जीवजन्ममरहतेहैं॥ देवतेवि
वानोपरग्राइफिरतेहैं॥ दिनकास्वामीसूर्जएकग्राकास्वामीचद्रमाहै॥ नि
कउतोएकाचक्रपरग्राफिरताहै॥ पवनकके॥ ग्रदीपहै॥ कालएमवचक्रको
पराफरताहै॥ फरताफेरताताणरूपजोकालहै॥ कल्पकेग्रंतविरवकाल
चक्रकेग्रतमोजाएरहताहै॥ हेमुनीश्वरपरमात्मग्रनंतहै॥ ग्रतकोजानही
जाएसकता॥ जबसंबदनफुरतीहै॥ तबजाणीताहै॥ जोएहजगतहैसवसत्ता॥
केकैहै॥ जबफुनेनरहितहोवीताहै॥ तबजाणिग्रानहीजाताजोजगतकहा
गएग्रा॥ हे स्वनीस्वरतमचलोहमारीसिष्टिकाविलासदेखो॥ तमतोजग
तविलासकेपारकोप्राप्तिहूएहो॥ तुमकोजदपएकाकछुनहीतोभीकि
पाकरकै शिलाविरवहमारीसिष्टिकोदेखो॥ वसिष्ठ उवाच॥ हेरामजीजब
एसप्रकारकहिकहिकरमुझकोग्रकाशकेमार्गमोलेचली॥ जैसेगंधको
कपलेजातीहै॥ तेसेमुझकोलेगए॥ दोनोग्रकाशमार्गकोउडे॥ भूताका
शविरवहमचिरकालउडतेगए॥ तबहमकोलोकालोकपर्वतद्रिष्टिग्राप
ग्रा॥ तिसकेनिकटिजाएकरतिसकेशिखरदेखे॥ जोमहाऊर्धकोगएहैं॥ ग्र
रमछपडेविचरतेहैं॥ ग्रवशिखरग्रैसेसरवहैं॥ मानोलोरसमइतेचद्रमानि
कसिग्राहै॥ ग्रैसेसंदरशिखरोंकोहमदेखतेभए॥ तिसऊपरशिलाहमजाए
करदेखतभए॥ कैसशिलाहेस्वर्नकीजोमहाग्रइहै॥ तिसकेनिकटिहमगए
तबमैनेकहाहेदेवीएहतोशिलापडीहै॥ तमारीसिष्टिकहांहै॥ एसाविरवप्रथवी
कहांहै॥ दीपोंकीमिजोदाकहांहै॥ समुद्रकहांहै॥ जिनकाग्रावर्णहोताहैंचो
फेर॥ ग्रवतिनकेपरेदशसहंसनाजनोंपरजंतस्वर्नकीप्रिथवीहोतीहै॥ सो
कहांहै॥ पर्वतकहांहैं॥ सप्तलोककहांहै॥ ग्रकाशकहांहै॥ दशोंदिशाकहांहैं
तारामंडलकहांहै॥ सूर्जचंद्रमाकहांहैं॥ रात्रदिनकेप्रकाशकग्ररभूतोंकास
ंचारकहांहोताहै॥ देवगणकहांहै॥ विद्याधरसिधगंधर्वकहांहै॥ जोगेश्वरकु
हांहै॥ वाणकुमेरकहांहै॥ जगतकीउत्पतप्रलैकासंचारकहांहै॥ पातालकी

भूमकाकहांहै॥ ग्रथमंडलेस्वरकहांहैं निमाणकोगहोवै॥ ग्रवमानुष्यल
कीभूमकाकहांहैं॥ ग्रसंदनवनग्रादिककहांहैं॥ हेदेवीहैनोकोविराग्र
धकाससचारकसाहै॥ एहतोशिलापडीदिष्टिग्रावतीहै॥ हेरामजीग्रवजेको
प्राप्तिहोकरकहामनतवविद्याधरीबोलीविद्याधरी उवाच॥ हेमुनी
श्वरमुझकोतोशनदणछिशिलाविरवग्रपणीसिष्टिभासतीहै॥ जेसेत
धग्राहदेशविरवग्रपणामसकोदेखभासतीहै॥ तेसेमुझकोग्रपणीसिष्टि
भासतीहै॥ जेसेमिमोहादेशातेदूपांतरोंकोहैमासमुझकोभासतीहै॥ ए
सकासंस्कारएलेमाकीदेविखहे॥ एसकारणतेमुझकोप्रतक्षभा
सतीहै॥ तुमतमारीसिदेविखएसकासंस्कारनहीं॥ एसकारणतेतम
कोएसेविरवजगतनहीभासता॥ हेमुनीश्वरजिसकाग्रभ्यासहोताहै
सोपदार्थग्रंतिविषिप्राप्तिहोताहै॥ ग्रवसोएभासताहै॥ हेमुनीश्वरशुरागी
रवकोग्रपदप्राकृतहै॥ जोकछुएसकोलाछहोताहै॥ सोऽपदएमात्र
तेएहकीप्राप्तिनहीहोती॥ नबलगउसकाग्रभ्यासनकरेतबलगए
शिकोप्राप्तिनहीहोती॥ हेमुनीश्वरग्रेसागरमुझकोनहीजोग्रभ्यासकी
एतनपाएग्रे॥ ग्रैसीसिधताकोउनहीं॥ जोग्रभ्यासकीपतेनपाएग्रे॥ ग्र
सोनिग्राएकोउनहीं॥ जोग्रभ्यासकोएतनपाएग्रे॥ ग्रैसाकलाकोउनहींजो
ग्रभ्यासकोएतेनपाएग्रे॥ ग्रैसापदार्थकोउनहीजोग्रभ्यासकोप्रबल
ताकरसिहहोताहै॥ जोएकिकरफिरेनहीं॥ हेमुनीश्वरजोकछुसिद्ध
होताइशिग्रावताहै॥ सोसभग्रभ्यासकेवसितेहोताहै॥ प्रथमजोतेसा
घग्राएहो॥ तबमुझकोदिष्टिनग्रावतीथीशिलाविरव॥ काहेतेजोसिष्टि
ग्रतिवाहककविरवएथितहोहै॥ सोतमारेसाथहेतरूपीकथाकेकारणतेग्र
तिवाहिकशरीरमुझकोविस्मरणहोगएग्राथा॥ जोविस्मरणकोचर्चाग्रत
मारीसिष्टिकीचर्चाकरके मुझकोस्पष्टनहीभासती॥ जेसमलीनग्रारे
सीविरवमलनहीभासता॥ तेसेतमारीसिष्टिकेसंस्कारकरकैमुझकोसिष्टि
भासतीनथी॥ पाचिरकालजोग्रभ्यासकीग्राहै॥ तातेमुझकोवहुरिभा
सिग्राएहै॥ काहेतेजोकछुइरग्रभ्यासहोताहै॥ सोतिसीकोजेहोतीहै॥ हे
मुनीश्वरमात्रपदविरवफुरणाकराग्रादिजीवोंकेशरीरग्रतिवाहककहेहैं॥
ग्रर्थएहजोग्रकाशरूपशरीरहै॥ जबउसविरवदिढग्रभ्यासहूग्राप्रमाद
करकै॥ तबतग्रध्यतकहोकरभासणेलागेहैं॥ जबभावनाउल्टीकरके
हदिजोकीधारणाकरकैग्रभ्यासकरीताहै॥ तबग्रध्यतकाताक्षीणहोजा
तीहै॥ ग्रवग्रतिवाहककप्रगटहोताहै॥ तिसकरग्रकाशविरवउडतापिर
ताहै॥ जेसेपक्षीउडताहै॥ तातेदेखजोग्रभ्यासकेवलकरसभकछुसि
द्धहोताहै॥ हेमुनीश्वरग्रज्ञानकरकैएसकोजगतग्रहकाररूपीपिशाच
लगाहै॥ सोद्रिढएणसिग्राहै॥ तबवहुरिशास्त्रोंकेवचनोंविरवद्रिढ
ग्रभ्यासहोताहै॥ तबक्षीणहोताइशिग्रावनाहै॥ हेमुनीश्वरतेहेविजिस
किसीकोएहिकीप्राप्तिहोतीहै॥ सोग्रभ्यासकेवलकेकैहोतीहै॥ जोग्र
जानीहोताहै॥ ग्ररज्ञानीग्रभ्यासकरतेहै॥ तौज्ञानीहोताहै॥ ग्रवपर्वततवराकुं
रहै॥ परग्रभ्यासकेवलकरवृषणकोग्रावाहै॥ तववृषणहोताहै॥ ग्रवसंभ
रतग्रिकहूकोभोजनकराकहतहै॥ पराग्रभ्यासकरसेसेतृणगला

वा० ग० ९९

एजाताहै॥ आपतौंछोटाहै॥ परतौंभीजोवसितिपावणीकस्तहोवैसो।
अभ्यासकरसुगमहोजातीहैहि॥ जैसेचिंतामणिअरकल्पतरुकेनिकटि
जायकरजिसपदार्थकीवांछाकरतीहै॥ सोसिद्धहोताहै॥ अबतैसेआ
त्मरूपीचिंतामणिकल्पतरुहै॥ तिसविखेजिसपदार्थकाअभ्यासक
रीताहै॥ सोसिद्धहोताहै॥ अभ्यासरूपीभूमकाफलदेतीहै॥ जोबालअ
वस्थातेअभ्यासहोताहै॥ सोदृढअभ्यासप्रजतहोताहै॥ हेमुनीश्वरजो
बोधवपुरखनहीहोता। अरनिकटिआयरहिताहै॥ तबतिनकरिकेअभ्या
सतेबोधवहोजाताहै॥ अरबोधवहोताहैअरपरदेशरहिताहै। तौअबोधव
होजाताहै॥ अभ्यासकीक्षीणताते॥ हेमुनीश्वरबोधवहोताहै तिसविखे
अम्लकीभावनाकरीतीहै॥ तौअभ्यासकरकेअम्लहोतीहै॥ जोमिष्टान
विखेकटुककीभावनाकरीएतौकटुकहोएभासताहै॥ अरकटुकविखेमि
ष्टानकीभावनाकरीएतौ॥ मिष्टानहोभासतीहै॥ जैसेकिसीकोनिम्ब
प्रीतमहै किसीकोमिष्टानप्रीतमहै॥ हेमुनीश्वरजोकछुसिद्धहो
ताहै। सोअभ्यासकेबलकरसिद्धहोताहै॥ हेमुनीश्वरपुंनकीओहोताहै
सोपापकेअभ्यासकरनाशहोजाताहै॥ पापपुंनकेअभ्यासकरनाशअ
होताहै॥ अरमाताभीअमाताहोजाताहै॥ किसीअर्थकअनेष्टते॥ अ
रमित्रभीअमित्रहोजाताहै॥ आगअभागरूपहोजाताहै॥ इत्यादिकप
दार्थसभचलिहोजातेहै॥ परअभ्यासकानाशकदाचितनहीहोता॥ हे
मुनीश्वरजोपदार्थनिकटिभीपडाहोताहै॥ अरइद्रीआसाधिकभीहैतौभी
अभ्यासबिनाप्रापतिनहीहोता॥ जहांअभ्यासरूपीसूर्यउदेहोताहै॥ तहां
एष्टरूपीपदार्थकीप्रापतिहोतीहै॥ अरअज्ञानरूपीविसूचकारोगहै॥ अ
भ्यासकेअभ्यासककैनाशहोजाताहै॥ हेमुनीश्वरसंसाररूपीसमु
द्रहै॥ आदिअंततेरहितहै॥ आत्मअभ्यासनौकाकरतिसकोउतरजाता
है॥ जोअभ्यासकोनत्यागेगातौअपिलतरेगा॥ हेमुनीश्वरजोपदार्थउदे
होवै॥ तिसकेअभावकीभावनाकरीयै॥ तौअसतिहोजाताहै॥ अरजोअस
तहोवैअरअभ्यासकेदृढहोवणेकीभावनाकरीयै॥ तबउदैहोताहै॥ जैसेसिध
केवरअरश्रापकरदेपदारथकीनष्टहोतीहै॥ अरवरतेअप्रापतपदार्थ
कीप्रापतिहोतीहै॥ हेमुनीश्वरजोपुरखश्रवणजातेएष्टपदार्थश्रवणकर्ता
है॥ अरतिसकाअभ्यासनहीकर्तातिसकौमनरखौविरखनीचजानणा
एष्टपदार्थकीप्रापतितिसकौकदाचितनहोवैगी॥ जैसेवंधिआकेपुत्रनहीं
होता तैसेउसकोएष्टपदार्थसिधनहीहोता॥ हेमुनीश्वरजोपुरखआ
त्मरूपीएष्टकौत्यागकरअवरकिसीपदार्थकीवांछाकरतेहै॥ सोअनिष्टते
अनिष्टकोपावतेहै॥ नरकतेनरकांतकोअभ्यासकाभीअभ्यासप्रापति
हुआहै॥ तिसकौओतहीआत्मपदकीप्रापतिहोवैगी॥ अभ्यासकेबलकर
एष्टकोपावताहै॥ जैसेपदार्थप्रकाशकदीपकहैसोअजोइदूपताहै॥ तिस
कानामअभ्यासहै॥ अरदेखकरतिसकेनमितजोजतनकरणा॥ तिसकाना
मअभ्यासहै॥ जबजतनअरअभ्यासकर्ताहै॥ तबपदार्थकौपावताहै। अ
रबारंबारचितवनेकानामभीअभ्यासहै॥ जबऐसाअभ्यासहोवैतबएष्ट
पदार्थकीप्रापतिहोतीहै॥ अनभ्यासनहीप्रापतिहोती॥ हेमुनीश्वरवौदशप्र

कारभूलजातेहैं॥ जैसाकिसीकोअभ्यासहैतिसकेबलकरतेसोतेमा
सिधहोताहै॥ अभ्यासरूपीसूर्यहै॥ तिसकेप्रकाशकरअपणाएष्टरूपीपदा
र्थकोपावताहै॥ ८४॥ इति श्रीविद्याधरअभ्यासवर्णननामसर्गः वि
श्या प उवाच॥ हेमुनीश्वरजोकोउपदार्थसिधहोताहै॥ सोनिवृत
रअभ्यासकरसिद्धहोताहै॥ तमाशिलाविखेइद्रनिग्रहहोरहाहै॥ तौतै
तमकौशिलाभासतीहै॥ जबतुमारासंकल्पभीसेवेसंकल्पसाथमि
लैतबतमकोभीजगतभासे॥ एहजोजगतएस्थितिहै॥ अरतम
काआदिवपुअतिवाहककहै॥ सोअतिवाहकविखेजोगकरगमहोती
है॥ तिसअतिवाहकविखेसभकीएकताहै॥ जैसेसमंदविखेसभन
दीआंकीएकताहोतीहै॥ हेमुनीश्वरजबऐसीधारणाकाअभ्यासकरै
तबबोधविखेप्रापतिहोवहुगे॥ तबतमकोशिलाविखेसिष्टिभास
गी॥ वसिष्ठउवाच॥ हेरामजीएमसुनकाराजकहैदीमककोसधजगतिक
होतलअमैपदमासनेकोबांधकरएईगृहकोविस्यातेत्यागिआ॥ अरचि
तविखेजोकछुकालाभयातिसकोभीत्यागकीआ॥ अपणाअइतक
काभीत्यागकीआ॥ अरनिरंतरसमबोधकाअभ्यासकीआ॥ तिसअभ्या
सकेबलकरमनकोसदबोधकाअनभवउदेहूआहै॥ उदेहूएकोनि
आएभासिआ॥ जैसेमेघकेअभावतेशरत्कालकाआकाशनिर्मलहो
ताहै॥ तैसेकल्पनातेरहितमनकौतिसबोधकाअनभवउदेहूआसोकै
साबोधहै॥ जोउदेअरअस्ततेरहितपरमशांतरूपहै॥ तिसविखेशिला
मककौंअकाशरूपदिष्टिआए॥ अरशिलापनतेककैभीनहीदिष्टिआए॥ केवलबो
धमात्रमककौंइशिलादिष्टिआए॥ अरघटपटआदिकजनेमककोकोनदिष्टि
नआवे॥ केवलअद्वैतअकाशआत्मतत्वमात्रसर्वअपणाआपहीदिष्टिआ
वे॥ तबबोधमात्रतेएमदकरिआअतिवाहकरूपहोकर॥ तबअतिवाहक
केशिलाविखेसिष्टिभासणेलागी॥ जैसेमननाजगतकीसिद्धिहोतीहै॥ अरबो
धतेबिननहीहोती॥ तैसेसिष्टिदिष्टिआए॥ अरशिलाकिआउपभासीजे
सप्रेमीग्रहोवैवशिलादिष्टिआवे॥ सोअनभवहीअहिअरशिलाअप
होकरभासतीहै॥ एनतककनहीहोता॥ तैसेइहुशिलादिष्टिआए॥ हेराम
जीजैसेमकापरूपदेवीशिलातैसेसभजगतचिदाकाशरूपहै॥ कछुहो
तबणिआनहो॥ सर्वदाकालआत्मसताहीअपणाआपविखेएस्थितहै
अरतोहोतकैकभासताहै॥ सोआत्माकेअज्ञानकेभासताहै॥ जैसेकोग
पुरखअपणासत्रुविखजाणताहै॥ जोमणितिरकाहै॥ तिसकररुदन
कर्ताहहि॥ जबजागिउठिआतबआपकौंजिकातिअनंदसहजदेखताहै
हि॥ तैसेहीजबलगअज्ञानरूपीनिद्राविखसतापडाहै॥ तबलगजगतस्व
ममिटानही॥ जबसरूपविखजागकरदेखणातबसभस्वप्नमिटिजावेगा
केवलअपणाआपहीभासेगा॥ हेरामजीएहअस्वजेहै॥ जोवासनावनमाये
तिष्टिविखेजोकछुपदार्थभासतेहै॥ तिनविखेभीसिष्टापडीआवस्तीअ
है॥ परपरकिंत्राइष्टिकभासतीआनही॥ जबअतिवाहककेदृष्टिकरदेखी
अनजसभसिष्टाभासतीआहे॥ तबदोविखेसिष्टाहै॥ गवनोविखेसिष्टा
है॥ प्रिथवीविखेसिष्टाहै॥ जलअगनीपवनअकाशआदिकविखेसिष्टा
है॥ सभहौरांविखेसिष्टाहै॥ अरवाणिआकछुनही॥ जैसेजहांजहांसं

इहै तहां तरंग होते हैं ॥ परसमुंद्र ते भिंन तरंग कछु हुए नही ॥ जैसे ही स
रूप है ॥ तैसे एह जगत कछु उपजिआ नही ॥ न मिटेगा है जिका तिआत्म
समुंद्र अपणा आप विखे स्थित है ॥ अरु जगत जो फुरता है सो संकल्प म
ात्र फुरता है ॥ संकल्प सकंधरूप कछु न चिन मात्र उदे हुए है ॥ जैसे कछु
फुरता है ॥ संकल्प सरूप है रूपक चिन मात्र उदे हुए है ॥ जैसे कछ
लोते सगंधले करता रीआ निक सती आहे ॥ तैसे म फुनते देव जगत रूपी संग
धले कर तरीआ नि तांमें उदे भए है ॥ परब जगत कछु वास्तव बणिआ नही
संकल्प सकंधकर बोतां को निआण भासता है ॥ हे मनी सरवास्तव तेनको
जो कल्प है नश्ले है ॥ जिका तिब्रह्म अपणा सभाव विखे स्थित हहि ॥ जे
से अकाश स्थित है ॥ जेसे समुंद्र विखे समुंद्र स्थित है ॥ तैसे ब्रह्म वि
खे ब्रह्म स्थित है ॥ हे मनी सरवर जगत न सत है न असत है ॥ आत्मा
विखे न उदे हुआ है न असत होवेगा ॥ जेसे अकाश विखे नीलता न सत है
तैसे ब्रह्म विखे जगत न सत है न असत है ॥ अरु मैं तिस ब्रह्म का कथन ब्रह्मा
हो ॥ एह जगत मेरे संकल्प विखे उपजत है आहे ॥ मैं अब संकल्प को निर्वाण
करता हो ॥ जब संकल्प निर्वाण भए आत ब जगत का अभाव होना वेगा ॥
जैसे कमल के नाश हुए सुगंध का अभाव हो जाता है ॥ तैसे मेरे विखे जाण का
फुरी थी तिसए का विखे वासना थी तिस वासना थी तिस वासना विखे जग
त था ॥ अब मैं उसको निर्वाण करता हो ॥ तब वासना का निर्वाण होवेगा ॥
तब जगत का भी सभाव कअभाव होवेगा ॥ अरु ते राजो शरीर भासता है सो ए
संकल्प विखे भासता है ॥ ताते तू अपणा स्विष्ट में अंगमन कर ॥ मन ते शा
रीर भी एह निर्वाण हो जावे ॥ हे राम जी एस प्रकार कहि कर वह इंदवी को
कहत भए ॥ हे देवी अब तू निर्वाण हो ॥ आत्मपद विखे ॥ अरु तूषि आदिक
को भी लीन कर अपणा विखे ॥ १८९ ॥ इति श्री पिरलातर वसिष्ठ ब्रह्मा संवा
द वर्णन नाम सर्गः ॥ वसिष्ठ उवाच ॥ हे राम जी एस प्रकार ब्रह्मा जी कहि
कर पद्मासन कीआ ॥ अरु भी सभ जनों संजगत तब प्रकार ॐकार को ॐ
हि कर अर्ध मात्र विखे स्थित भए आ ॥ तब ब्रह्मा जी की सूरत अंतर ही स्थि
त भावे ॥ जैसे का वार उपरांत लिवी होती है अरु निर्वेद न हुए ॥ तैसे का कहुन
गत जाल का संकल्प त्यागन या ॥ तिसको विस्मरण कीआ ॥ अरु देवीने भी ति
सी प्रकार आसन कीआ ॥ ब्रह्मा जी को नेत्र विखे लीन हो णे लागी ॥ तब ब्रह्मा
जी निर्वेद निब्रह्म विखे लीण हो णे लागा ॥ तब जगत कछु उपद्रव होने लागा
नि उदे हुए ॥ मनुख पाप करणे लागे ॥ एस्त्री आ दुराचारणी आ होत भए आ ॥ सभ
नोंजीवो ध में कान्यागकीआ ॥ कामी पुरख बहु भए पर एस्त्री आ सा थ संगक
रहि ॥ पुरख एस्त्री आशा का किसी कोन करहि ॥ काम क्रोध लोभ मोह राग द्वे
ख बढि गए ॥ शास्त्र की मर्यादा को त्यागत भए ॥ अनीश्वर वादी होत भए ॥ वरखा
हो णे ते रहि गए कहीं इपड़ने लागी ॥ काल पड़ा दुष्ट जन धन पात्र हो णे ला
गे ॥ सत साधु अपदा भोगणे लागे ॥ चोर चोरी लागे करणे ॥ राजे भ पापा न करणे
लागे ॥ जीवों को बड़े दुख पावणे लागे ॥ तीनों तापों कर जलते रहें ॥ राजे नि
आपके त्यागत भए ॥ अन्यादिक जो पाप अचार थे सो आनि उदे भए ॥ धर्म कछ प
न होए गए आ ॥ अरु तानी राज करहि ॥ पंडित तानी टहिल करहि ॥ दुर्जनों की मा
न भजा होवे ॥ सतपुरुषों का निरादर होवे ॥ तब संपूरण जीवों के पकड़े भए ॥ पृ
थवी ऊपर ॥ तब पिरथवी अपणा सत्ता को त्यागत भए ॥ काहे ते जो पिरथवी

ब्रह्मा के संकल्प हो गए ॥ चेतंनता निकस गए ॥ जो एस्थान भूतों के विचरणे का हो
वे न हो नि चरना वे ॥ खाण को निआण हो जावे ॥ भूतनाश हो जावहि ॥ पिरथवी
भी नाश हो णे लागी ॥ परबत कंपने लागे ॥ भूचाल आवणे लागे ॥ हाहा का र
प्रगट हो णे लागे ॥ जैसे प्रलय काल विखे वर्ती सूक जाती है ॥ जल जरी भाव होती है
तैसे पिरथवी जल जेरी भाव को प्रापति भए ॥ काहे ते चेतंनता शरीर सर्व जगत का
ब्रह्मा है ॥ तिनि संकल्प रूपी चेतंनता वीर्ण हो ती जावे ॥ तितिपिरथवी न जरी भूत हो
वे ॥ जैसे काहू पुरख को अर्धंग मार जाता है ॥ तब उआ हु अंग कष्ट होता है ॥ फुर
ना तिस विखे न हो वहु ना ॥ तैसे ब्रह्मा का संकल्प रूप जो है चेतंनता सो पिरथवी मे
निकसती जावे ॥ एस कारन ते पिरथवी नष्ट वनावे ॥ पृथिवी उनगर नष्ट हो वहि
एस प्रकार उपद्रव उदे हुए ॥ काहे ते जो पिरथवी के नाश का समा निकट आ ए
आ ॥ अरु समुंद्र जो ज्ञान वानों की निआण अपणी मर्जादा विखे स्थित थे सो भी अ
पणी मर्जादा को त्यागत भए ॥ अरु समुंद्र उछल कर नाद करे गिद्रा पदीप ॥ परबत के
पाताल पर निकसि जावहि ॥ पिरथवी को नाश करत भए ॥ ताने अब नगर वासी भा
गते जावहि ॥ पाछे ती ता वे गकर जल चला जावे ॥ बड़े परबत गिड़ने लागे
अरु चक्र को निआण फिरने लागे ॥ समुंद्र के तरंगों सा थ परबत गिड़ हहि ॥ अरु उड़हि
परबतों के बटे दल भए ॥ तिनके साथ वहि हैं परबत गिड़ हहि ॥ अरु तरंग उछल
के पाताल विखे गए ॥ पाताल का नाश हो णे लागा ॥ अरु बड़े परबतों के पर्व
त गिड़ हहि ॥ तब रेतों का अंमा चमत्कार होवे ॥ जैसे तारा मंडल उदे होता है ॥ एस प्र
कार बड़ा खोभ होत भए आ ॥ अरु तरंग उछल कर स्त जे अब बड़ मा के मंडल अजे
तजा वहि ॥ अब प्रकाश भस्म लहरों आ ए आ ॥ बड़वा अग्नि आनि उदे भए ॥ तब वरणो क
रत भए ॥ जल के भ गाक रपर्वतों निरत
मेरु जमए ने कजोवार हि नश्य सा भ के ओ प्रापति भए ॥ स्वर्ग लिप जो कल्पतरु बिर्छ थे ॥ सो तट
कने लागे ॥ मानो परबतों को पख लागे है ॥ देवतें जो विदानों पर अनूरप फिरते थे सो समुंद्र विखे
तट प्राप्ति कर गिड़ने लागे ॥ देवते जो विमानों पर अनूप फिरते थे सो समुंद्र वि
आनि खडे ॥ चिंतामणि अरु सिद्ध गंधर्व सभ गिड़ने लागे ॥ समुंद्र सभ एक हो
गए ॥ अरु शाह ककर णे लागे ॥ अब असे मन कनिकसने लागे ॥ जिनके शकल गणा कव
पर्वत ओ इतेजा वहि ॥ अरु कंदरा विखे मोह कलो थे ॥ सो पकड़ कर रहि ॥ तब वे इमाता
ग गणा खोभ को प्रापति भए ॥ तब समुंद्र विखे गिड़ने लागे ॥ हे राम जी एस प्रकार अ
ले के खोभि करने नेक कुलोक पाल थे सो सभ समुंद्र के मध्य में आनि पड़े ॥
गोहु मकु सभ का भक्षन करने को समर्थ हुए ॥ अरु तरंग आपस में जन्य कर रहि ॥ जे
से मतवारे हस्ती शब्द करते हैं ॥ अरु जन्य करते हैं ॥ तैसे तरंग जन्य कर रहि ॥ १८ ॥ इति श्री
भ्रांति जगत प्रलेव वर्णनं नाम सर्गः ॥ वसिष्ठ उवाच ॥ हे राम जी उहु विराट
रूप जो ब्रह्मा था जिसका देह संपूरण जगत था ॥ सो अपणे प्राणों को खेंचन भ
ए आ ॥ तब निरखत्र चक्र के फुरने हारी वाए जो थी ॥ सो अपणी मर्जादा को त्याग क
र खोभ करणे लागी ॥ तब उउ चक्र नाश हो णे लागे ॥ काहे ते जो ब्रह्मा के संक
ल्प विखे थी किसी की समर्थता न हो जो उनको राखे ॥ अरु तेज मैं जो देवता थे सो
पवन के अधार थे ॥ सो पवन के निकसणे कर निरधार भए ॥ तब समुंद्र विखे
गिड़ने लागे ॥ जैसे ब्रक्ष फल गिड़ते हैं ॥ तैसे गिड़ते भए ॥ अरु वे जो सिद्ध गण
थे सो सभ गिड़ने भए ॥ जैसे संकल्प के नाश हुए संकल्प का ब्रक्ष गिड़
ता है ॥ जैसे पक्का फल समय कर गिड़ता है ॥ तैसे सभ गिड़ते भए ॥ समेर की आकर्षण
शांत भए ॥ पवन का बड़ा खोभ हुआ ॥ अरु शब्द हुआ ॥ अपणी शांत के निमित पवन

वं॰
म॰
९८

कालोभहुआ॥ जैसे पवन विखे शिला फिरता है॥ तैसे अकाश विखे पवन फिरने
लागा॥ देवतिअहू के रहणेवाला जो समेरु पर्वत था सो गिड़त भएआ॥ राम उ
वाच॥ हे भगवन संकल्परूप जो ब्रह्मा था सो तो विराट आत्मा है॥ सभ जगत
तिसका देह है॥ भलेइ लोग तिसका कवन अंग है॥ पाताल कवन अंग है॥ स्वर्गलो
क कवन अंग है॥ अब संकल्परूप के मे अंग होते है॥ संकल्प तो अकाशरूप हो
ता है॥ अब जगत शत दल पिंडाकार दृष्टि आवता है॥ सो जिसते उपजिता है॥ तिस
जैसा ही होता है॥ तौं एह जगत ब्रह्मा के अंग के से है॥ वसिष्ठ उवाच॥ हे रामजी
एह जगत तो पूर्व केवल सन मात्र था॥ जिस विखे जगत न सन था न असन था।
न असन था॥ केवल आत्मन मात्र अपणे आप विखे स्थित था॥ जैसे अकाश।
अपणे आप विखे स्थित है॥ एक अरु दो आदिक ते रहित है॥ तिस केवल चिन मा
त्र का कचन अहं होए करए स्थित भए है॥ तिस अहंका का जो निनो दृश
है॥ तिस साथ संबंध हूआ॥ तिसी दृश्य के अनुभव अहंकर निश्चे हूआ तिसका
नाम बुधि है॥ तिस विखे दृढ संकल्प हूआ तिसका नाम मन है॥ तिस फुरणे क
र जगत दृढ हूआ॥ हे रामजी सत चिन मात्र विखे जो चेतन है॥ सो एह ब्रह्मा रूप कर क
होता है॥ तिसके फुरणे विखे आगे जगत होए खड़ा भएआ है॥ तिस संकल्प रूप जग
गत का अहं विराट है॥ पर क्रिआ रूप है॥ पर क्रिआ रूप है॥ अकाश ही रूप है होए गया ति
आतो कछु नहीं॥ अरु एह जो साकार पिंडाकार जगत भासता है॥ सो भ्रम कर भा
सता है॥ सभ संकल्प अकाश रूप है॥ जैसे स्वप्न विखे जगत भासता है॥ सो सभ
अकाश रूप ही होता है॥ अरु निद्रा कर पिंडाकार भासता है॥ तैसे एह जगत भास
ता है॥ अरु आत्मसत्ता सदा केवल अकाश जिंका तिउ अपणे आप विखे स्थित है
हे रामजी अहं जो फुरी है सो मिथ्या है॥ अज्ञान कर के दृढ होए स्थित हूए है॥ अरु सभि
कारि कौं कौं भी दृढ भासती थी सो केवल संकल्प मात्र है वास्तव कछु नही
तांते जैसा कछु जगत भासता है सो सभ चिदाकाश है॥ एक अरु दो की कलना ते
रहत है॥ सर्व शब्द ते रहित आत्मन मात्र है॥ मे अरु ते शब्द का अंग नहीं॥ जगत ति
स का कचन है॥ जैसे जल की किरणों विखे जल आभासि होता है॥ तैसे आत्मा
का आभास जगत है॥ संकल्प की दृढता कर के दृढ भासता है॥ हे नहीं से कल्प रू
प जैसे गंधर्व नगर होवे॥ जैसे स्वप्न पुर होवे सो तैसे ही एह जगत जाल है॥ हे रामजी
जिस प्रकार मे जगत वर्णन कीआ है॥ जो पुरख मेरे कहे को जिंका तिउ धार ल
वेगा तिसकी वासना नष्ट होजावेगी॥ अरु शरवत आत्मा जिंका तिं भासे॥ तैसे जगत
को आदि आत्मन मात्र था तैसे ही भासेका है तैं जो अवर कछु हूआ नहीं॥ केवल
आत्मन मात्र अकाश जिंका तिं है॥ जो आत्मा ही है तो समवाए कारण अरु निमित्त
कारण के से होवे॥ जगत का उदे होणा अरु नाश होणा भी असत है॥ अद्वैत अ
द्वैत कहणा भी कोऊ नहीं॥ जब सर्व शब्दों का अभाव हूआ॥ तब परम चिदाका
श अनभव सता ही शेष रहती है॥ एसी का नाम मोख है॥ हे रामजी हम को तो श
व भी चित सत्ता ही भासती है॥ के साहे मे सथे हो सर्व कलपना ते रहित हो॥ चिदाका
श हो॥ अर मेरे विखे जो वसिष्ठ अहंकार है सो फुरना नहीं फुर की निआई भासती है॥
एह भी आत्मा का कचन है हम आक कछु नहीं॥ ताते तुम भी एसी प्रकार ज्ञान के नि
वान होकर अपणे भिकिति अरु चार को करो॥ अथवा न करो जो एहाका है सो करो॥ पर
कर्ने अरु कर्ने का संकल्प न करो॥ परम मौन विखे स्थित होवहु॥ ज्ञानवान को
एहि अनभव होता है॥ तांते तुम भी ऐसे सथा हो॥ १८८॥ इति श्री नि नव ने

नाम सर्ग॥ राम उवाच॥ हे भगवन बंध मोख जगत बुधन सते है न असत
है॥ उदीन नहीं हूआ असत भी न ही होता॥ केवल जिंका तिं आत्मा ए स्थित है। अ
सैतन मन जैं कौ उपदेश कीआ है॥ सो मै जाणिआ है। आत्मा विखे जगत न उपज
ता है न मिटता है॥ तमोर अभिन रूपी वचनों को मैं समाना अभिन ही होता
अभिन की निआए पान कर्ता हो॥ अब जगत सत असत शब्द ते रहत मंत्र मा
त्र है॥ तिस को मै जाणिआ है॥ वहुरि कछु जो संसार भ्रम के सरूप जिआ है॥ अ
रु अनभव के से होता है सो कहहु॥ वसिष्ठ उवाच॥ हे रामजी जो कछु तुम को
दृष्टि आवता है॥ एस्थावर जंगम ज्ञान सर्व प्रकार देश काल सेजगत तिस के
नाश का नाम महाप्रलै है॥ तिस विखे ब्रह्मा विसन रुद्र एह भी लीन हो जाते है॥
तिसके पाछे जो शेष रहिता है सो सत्व छहै॥ अजहे अनादि है केवल आत्मत।
मात्र है॥ तिस विखे वाणी को गमन नहीं॥ कैसा कहीं अ। केवल अपणे आप विखे
भाव करए स्थित है॥ परम सूखम है॥ जिस विखे अकाश भी अस्थूल है॥ जैसे सम
र पर्वत के निकट एक दाना सूखम है॥ तैसे आकाश ते आत्मा सूखम है॥ सो सूखम
ता है किआ॥ एह सूखमता है॥ जो संवेदन ते रहित चिन मात्र है॥ तिस विखे अहं
कचन होए करए फुरी है हि॥ अरु आत्मा सदा निर्विकल्प है॥ शांत समरूप है। देश काल
के भ्रम ते रहित है॥ केवल चेतन घन अपणे आप विखे स्थित है हि॥ जैसे स्वप्न वि
खे अपणे भाव को लेकर चेतन कचन होता है॥ तिसी का नाम ब्रह्मा है॥ सो भी चि
द ही रूप है॥ हे रामजी चिद अणु जो अपणे भाव को लेकर अदेह रूप है॥ सो चेतन नाम
दृष्टा को देखत भए है॥ तब उस का अनभव मिथ्या हूआ कि उ॥ जैसे स्वप्न विखे अ
पणा मन ही देखता है॥ सो अनभव मिथ्या है॥ तैसे चिद अणु दृष्टि होए करए दृष्टि
को देखती है॥ तब चिद अणु अपणे सरूप को देखत भए। सो चिद अणु केवल नि
रा रूप है॥ पर अहं ऐसा जो बीज दृढ होता है॥ तिस कर अपणे आप शिशु निक सि
कर दृश्य को संकल्प कर देखती है॥ जैसे बीज शिउ अंकुर निकसिता है॥ तैसे सं
कल्प कर दे फुरने कर देश काल दिक्र दृष्टि दृष्टा नहीं होती है॥ वास्तव ते हुआ कछु
नहीं॥ आत्मा अपणे सुभाव विखे स्थित है॥ पर संकल्प कर हूए की निआए भा
सते है॥ सो एह देश है॥ जहां चिद अणु भासे। अरु जिस मै भासे सो काल है॥ अब जो
भान हूआ सो किआ हूआ है॥ भान का पिछे हूआ सो इव है। देखणे को वृत्त दो दृ
सो नेत्र होए करए स्थित होते है॥ अरु देखणे लागते है॥ जिसको देखते है। सो
भी सूनि है॥ देखणा होर भी सून है॥ सभ असत है॥ कछु वणि आ नहीं। जैसे अकाश वि
खे अकाश ए स्थित है॥ तैसे आत्मा अपणे आप विखे स्थित है॥ संकल्प दुआर
सत कछु वणि आ जाता है॥ चिदाकाश जो भासी है सो दृष्टि होकर ए स्थित भए।
है॥ तब चिद अणु विखे रूप की वृत्ति नाम फुरती है॥ तब नेत्रों होकर ए स्थित हो
ते है॥ जब स्प्रे की वृत्ति फुरती है॥ तब श्रोत्र होए करए स्थित होते है॥ जब सगंध
लेण की वृत्ति फुरती है॥ तब नाशका होए करए स्थित होती है॥ जब सपर्श।
की वृत्ति फुरती है॥ तब त्वचा होए करए स्थित होती है॥ जब रस लेण की ए
का होती है॥ तब जिव्हा होए ई होती है॥ अरु संशय न जगत भी नद रूप ही था॥ अब भी उही के
वल अकाश रूप है॥ अरु संशय न जगत भी नद रूप ही था॥ अब भी रही केवल अकाश

वं॰
म॰
६६

रूपहै॥ अरुसंकल्पकरअपणेविखेपिंडरचनकौदेखिआहै॥ वहुरिउसीअहंकों
देखिआहै॥ अनादिइष्टिमत्रूपकौचिदअणुईअहंकेसंजोगतेपदार्थोकौग्रहण
करतीहै॥ एसादरूपजोचित्तफुरणाहै॥ तिसकानाममनहूआ॥ तबनिश्चया
त्मकबुधिहोएकरणस्थितिभए॥ तबचिदअणुविखेएहनिश्चयहूआजोमैंदि
खाहों॥ एहअहंकारहूआ॥ जबअहंकारसाथचित्तअणुकासंजोगहूआतबदे
देशकालकापरछेदअपणेविखेदेखतभए॥ आगेदिशाकौदेखतीभए॥ फेरउ
तबकालदेखतीभए॥ आपकोऐसेदेखतीहैएसदेशविखमैंवैठाहौं॥ एहकर्म
मैकीआहै॥ एहविखमअहंकारहूआ॥ देशकालक्रिआद्रव्यकेअर्थकौभिनभि
नकरग्रहणकर्ताहै॥ अकाशहोकरअकाशकौग्रहणकर्ताहै॥ हेरामजीआदिफु
रनेकरचिदअणुविखेप्रतिवाहकरीग्रहूआहै॥ बहुरउसकल्पकीदृढताअभ्यासक
रअपभूतकहोकरभासनेलागाहै॥ सोक्रिआरूपहै॥ जैसेअकाशविखेअव
रअकाशहोवै॥ तैसेएहप्रकाशहै॥ अनहोतेभ्रमकरकैउदहूएहै॥ अरुसतकीनिआ
एभासतेहैं॥ जैसेमाजिस्थलविखेभ्रमकरकैनदीभासतीहै॥ तैसेअविचारकरकै
अरुसंकल्पकीदृढताकरकेपंचभूतप्रकारभासतेहैं॥ तिनोविखेचरनेहे
अहंप्रतीतहूएहै॥ तिसकरदेखताहै॥ एहमेरासिरहै॥ एहमेरेचरनहैं॥ एहअसकाट
शहै॥ इत्यादिकशब्दअर्थोकौग्रहणकर्ताहै॥ नानाप्रकारकाजगतशब्दअर्थोंसहित
ग्रहणकर्ताहै॥ भावअभावकौग्रहणकर्ताहै जोएहदेशहै॥ एहकालहै॥ एहक्रिआहै
एहपदार्थहै॥ हेरामजीजबएसप्रकारजबएसप्रकारजगतकेपदार्थोकाग्रिआनहो
ताहै॥ तबचित्तविखेविग्रहकौअंगीकार्ताहै॥ अवरागद्वेखकौग्रहणकर्ताहै॥ जो
कछुदेहादिकभूतफुरणेकरभासतेहहि॥ सोकेवलसंकल्पमात्रहै॥ संकल्पकी
दृढताकरकैदृढहूएहै॥ हेरामजीएसप्रकारब्रह्माउत्पनहूआहै॥ एसीप्रकारवि
स्तारहूएहैं॥ एसीप्रकारकीटकीउत्पतभएहै॥ परप्रमादअरुअप्रमादकाभेदहै॥
जोअप्रमादीहैसोसदाअनंतरूपहै॥ ईश्वरहैस्वतंत्रहै॥ तिसकोंएहजगतउहूनगत
अपणाआपरूपहै॥ अरुजोप्रमादीहैसोतुच्छहै॥ सदाउखीहै॥ अरुवास्तवपरमात्मसत
तातेएतरवकछुहूआनहीं॥ अपणेआपकुभावविखेएस्थितिहै॥ जैसेअकाशअ
पणेचेतनताविखेएस्थितिहै॥ तैसेआत्मसत्ताअपणेआपविखेएस्थितिहै॥ स
र्वकावीजहै॥ अरुत्रिलोकीरूपवोधोंकामध्यहै॥ कारणोंकाकारणउहीहै॥ का
लविखेनतउहीआत्मसत्ताहै॥ क्रिआविखेक्रिआतिउहीहै॥ आदिविराटपुरखका
शरीरभीनहीहै मिनमभीनहीकेवलचिदाकाशरूपहै॥ अवभीजोएसकाशरीर
है॥ सोप्रकाशरूपहै॥ आत्मसत्तातेएतरअवस्थाअवरकोएनहीप्राप्तभए॥
केवलप्रकाशरूपहै॥ जैसेसपनविखेसंग्राममहानेदृष्टिआवतेहैं॥ अरुमेघगर्
जितेहैं॥ इत्यादिकशब्दअरुअर्थभासतेहैं॥ सोकेवलप्रकाशरूपहै॥ वतिआक
कुनहीं॥ परनिंद्रादोखकरभासतेहैं॥ जबजागताहैतबजानताहै॥ जोकछुवति
आनथा॥ अकाशहीरूपथा॥ तैसेजोपुरखअनादिअविद्यातेजागिआहै॥ तिस
कौजगतअकाशरूपभासताहै॥ हेरामजीवहुतजोजन्मअन्तभीवेराटशरीरका
देहहै॥ तौभीब्रह्माकाशकेसत्यअणुविखेएस्थितिहै॥ एहत्रिलोकीएकचिद
अणुविखेएस्थितिहै॥ वैराटपुरखएसकाअंसमात्रहै॥ जिसकानआदिभासता

है॥ नअंतनमधभासताहै॥ एताएस्थूलदेहएसकाहैतौंभीएकधानकेसमान
नहीं॥ हेरामजीएहजगतअरुजगतकेभोगविस्तारोदृष्टिआवतेहैं॥ तौभीएक
कणकेसमानहै॥ जैसेसुमेरुपर्वतराईकेएकधानकेसमाननहीं॥ तैसेवि
चाररूपीतरागनकरतोलीएअनतपरमार्थसत्ताविखेकछुसतताएनेकीनहीं
पाएती॥ दृष्टिभीआवतेहैं॥ परआत्मसत्तातेएतरवकछुहूआनहीं॥ आत्मसत्ताही
एसप्रकारभासतीहै॥ एसीकानामसंभ्रमकहितेहैं॥ एसीकौविराटकहतेहैं
तिसहीकोंजगतकहितेहैं॥ जगतअरुविराटविखेभेदकछुनहीं॥ वस्तुतेअका
शरूपहै॥ सनातनभीएसीकोंकहितेहैं॥ रुद्रपंचरूपएसवनमैंपर्वतजलजे
तेभूतहै॥ सोतिसकावपुहै॥ हेरामजीआदिवपुतेएनकाचिनमात्ररूपहै॥ तिस
विखेचेतनताकरकैअपणाभुआजसोवपुदेखताभएआ॥ जैसेस्वपनकाअकाशहोता
है॥ तिसतेजगआतचेतनकरकैभ्रमकरअपणावपुआपोजगतरूपदेखतभएआ॥ जै
सेस्वप्नविखेकोउपुरखआपकोपर्वतरूपदेखे॥ तैसेआपकोविराटरूपजानता
भएआ॥ जैसेपवनकेदोसरूपहै॥ जबचलताहैतबभीपवनहै॥ अरुनहीचलतात
वभीपवनहै॥ तैसेजबचितफुरताहै॥ तौभीब्रह्मसत्ताजिकीतिहै॥ अरुचितनहीफुर
ताहैतबभीजिकीतिहहि॥ एवमनएसपरफुरनेहै॥ तबविराटरूपहोएकरएस्थितिहो
ताहै॥ अरुजबचितअफुरहोताहै॥ तबअद्वैतसत्ताभासतीहहि॥ अरुहैसदाअद्वैत
ही॥ सोवेराटआपीकेसाहै॥ हेरामजीएसदृष्टिकरतिसकौसिरपादनहीभासते॥ के
साहैजतोकछुप्रिथ्वीहै॥ ब्रह्माउकीसोतिसकामासहै॥ अरुसमुंद्रतिसका
रुधिरहै॥ अरुनदीआतिसकीनाड़ीहै॥ अरुदशोदिशातिसकेवधसथलहै॥ अरुताराग
णरोमावलहै॥ सुमेरआदिकतिसकीअंगुलीहै॥ अरुसूर्यजेआदिकतेजतिसकेपित
है॥ चंद्रमाकफलहै॥ अरुपवनवाएहैसोप्राणहै॥ संपूर्णजगतजालउसकाशरीरहै॥ सरूप
ब्रह्माउसकारिदाहै॥ सोअकाशरूपहै॥ संकल्पकेकेनानारूपहोभासताहै॥ अवअपणाआपहीवि
नेककछुवणिआनहीं॥ अकाशआदिकजगतसभचिदाकाशरूपहै॥ वसिष्ठ उवाच॥ रामहे
विखेएस्थितिहै॥ ८४॥ इति श्री विराटआत्मावर्णनंनामसर्गः॥ सोब्रह्माहैतिसकानाआदिअं
रामजीविराटरूपकेसिरपादिसोण॥ आदिजोविराटहै॥ तिसचेतंनवपकाकुचनब्रह्माउ
तेकछुनहीं॥ अरएहजगतउसकाकोठावपुहै॥ तिसब्रह्मानेसंकल्पकरकै
पहूआहै॥ तिसकेतनविशतारकाक्रमसुणअंगोंका॥ तिसअंगोंकोउठनाभ
एकअंगदेखाहै॥ कैसाब्रह्माजीजोसंकल्पहीजिसकावपुहै॥ तिसपातालब्रह्माकाचरनअव
एआ॥ तवअंडेकाजोऊर्धभागथासोअग्रथकौगएआ॥ दशोदिशावधसथलहूए॥ अ
ऊर्धहूआ॥ अवमधजोअविकाशहै॥ सोआत्माकाउदरहूआ॥ समुंद्रआइहूए॥ सभनद
रहाथसमेरआदिकपर्वतहूए॥ अवमांसप्रिथ्वीहूए॥ प्राणअपानपवनवाएहूए
आतिसकीनाड़ीभएआ॥ तिनोविखेजलहै॥ सोरुधिरहूआ॥ चंद्रमाअवसूर्यजेअसकेनेत्रहैं॥ अर
हिमालापर्वततिसकाकफहै॥ सर्वततेजउसकेपितहै॥ जैसेतारागचकाके
तारागणप्रकलारहे॥ अरलाखप्राणोंकेबलकरनिकसतीहै॥ अरुसभभूतोंकी
प्रवनेप्रवतीहै॥ अरुऊर्धलोकप्रिथवीहै॥ मनउसपरपवकीअग्रसकेरोमहै॥ सभजग
चेष्टाउसकाविवहारहै॥ पर्वतनेउसकेअसनहैं॥ सोसंकल्परूपतेसोब्रह्माकेदा॥ अर
तविराटकावपुहै॥ राम उवाच॥ हेभगवनएहजोसंकल्परूपतेहैतोनिसहीकाशरीरहूआ
जगततिसकावपुकहा॥ सोमैंमानताहौं॥ अपणाशरीरहीविखेभिनहोएकरकै
वहुरिब्रह्मलोकविखेब्रह्माकेसेवढताहै॥ सोकिआअचरजहै॥ जोतैंधिआ
एस्थितिहोताहै॥ वसिष्ठ उवाच॥ हेरामजीएसविखेकिआअचरजहै॥ अपणाप्राणोंकेरहनेसेवपणाअंतरविकरएस्थितिहोवाहै॥ तौभी
नलगाएकरवैठे॥ अरुअपणातोप्रकाशते

वा॰ म॰ ७०

होताहै॥ अरुजैसेपुरुषकौंस्वप्नआवताहै॥ तिसस्वप्नविषैजगतभासताहै॥ सो
अपणासरूपहै॥ परएकमूरखजनअपणीथावरकस्थावरकौंदेखताहै॥ तैसेपहि
लेहै॥ तैसेब्रह्माकापणीब्रह्मलोकविषैभीहोताहै॥ ब्रह्माअरुजीवदुहुविषैएकभा
सताहै॥ तैसेहीजीवभीअपणीमनसृष्टिकाविराटहै॥ परतोसमकौंभासतानहीअमादि
दहै॥ जोजीवभीअपणीमनसृष्टिकाविराटहै॥ तिसकौंसभजगतअपणाशरीरभासताहै॥ हेराम
करके॥ अरुब्रह्मासदाअप्रमादीहै॥ तिसकौंसभजगतअपणाशरीरभासताहै॥ हेराम
जीदेवताअरुसिद्धरिखीश्वरविद्याधरजोहै॥ सोविराटपुरुषकीग्रीवाविषैस्थि
तिहै॥ अरुभूतप्रेतपिशाचसभविराटपुरुषकीमलतेउपजतेहैं॥ एककीटोंकीनि
आईहुएविषैस्थितिहै॥ अरुस्थावरजंगमजगतसभसंकल्पकररचित्रा
हुआविराटविषैस्थितिहै॥ सभजिसकेअंगहै॥ जोजगतहैसोविराटभीहै॥ अरु
जगतनहीतौविराटभीनहीजगतकहीअरुब्रह्मकहीअरुविराटकहीअ॥ तीनो
एकहै॥ तातेसर्वरूपजगतविराटकावपुहै॥ निराकारशक्तिरूपअरुप्रकाशशक्तिरूप॥
अरुतरुवाहजैसेआकाशविषैभेदनही॥ तैसेविराटआत्माविषैभेदनही॥ जैसेपवनकेस्पंदनिस्पंदविषैभेदनही॥ तैसे
विराटअरुआत्माविषैभेदकछुनही॥ जैसेस्पंदनिस्पंददोनोरूपपवनकेहैं॥ तै
सेसाकारअरुनिराकारसभविराटकाशरीरहै॥ हेरामजीएसप्रकारजगतउपजि
आहै॥ सोकछुउपजिआनही॥ संकल्पकरकेउपजेकीनिआईभासताहै॥ जैसेसूर्य
कीकिरणोंविषैजलभासताहै॥ तैसेब्रह्मसत्ताविषैजगतउपजेकीनिआईभा
सताहै॥ उपजिआकछुनही॥ केवलअपणेआपसभावविषैस्थितिहै॥ चिदात्मा
जडकीनिआईस्थितिहै॥ अर्थएहजोसंकल्पविकल्पतेरहितहै॥ चेतनरूपचे
तनेतेरहितचिनमात्रहै सोतेरासरूपहै॥ जोतकलनाकौत्यागकरकेअपणेस्वभावविषै
स्थितिहोहु॥ ५६॥ इति श्रीविराटशरीर नेनाम सर्गः॥ वशिष्ठउवाच
हेराममैअगिलेप्रसंगकावृत्तान्तसुनाउता हु॥ मैब्रह्मशरीरविषैब्रह्माकेपास
बैठाथा॥ तबतिनेध्यानकरकेविश्रान्तमध्यानकासमोधा॥ जोइसजगतकीउत्पत्तिमहि
माविषैअग्निउदेहुआ॥ तिसकाबडाप्रकाशदेखिआ॥ मानोअपरबडागनेजगतकालहुआ
है॥ अरुमहेश्वरअग्निकीनिआईप्रकाशहुआहै॥ अरुबिजलीकीनिआईएस्थितहुआ॥
अग्निसकौदेखकरमैअचरजवानहुआ॥ अरुसेदेखताथाजोएकअपूर्वरसउदेहुआ
बहुरिउत्तरदिशाकीओरअपूर्वरसउदेहुआ॥ एसीप्रकारदशसूर्यउदेहोएदिशाविषैउ
देहुए॥ अरुएकअग्निसूर्यमध्याएकादशसूर्यएकठेउदेहुए॥ अरुतपावनेलागे॥ द्वादशसूर्य
उदेहुएअग्निसमेत॥ द्वादशउदेभए॥ तिसपिछेएकसूर्यनिकसिआ॥ द्वादशसूर्यएकठेहो
एकरविश्वकौंतपावनेलागे॥ हेरामजीपहिलेतीननेत्रअग्निउदेहुए एकनेत्रसूर्य
हुएतीनेत्रबडवाअग्निसमुद्रअग्निबिजलीभए॥ तीनोनेत्रविश्वकौंजलावणे
लागे॥ दिशासभरक्तभए॥ अरुअरुणाचलपाताहोवणे॥ नगरकंदरावनलगेसभ
राजलणे॥ पृथ्वीसाथिहोणेलागीस्याह॥ देवतिअकेएस्थानजलगेजलि
गिणे॥ पर्वतजलकरस्याहहोगए॥ ज्वालाकेकणकेनिकसिकरपाताल
कौंगएपाताललगेज्वलावणे॥ समुद्रजलकरसूकगए॥ विकराहाहाकार॥ हिमा
लयपर्वतकेजलहोकरलगेजलाणे॥ तपणेलागे॥ जैसेदुर्जनोकेसंगकर
साधौंकाचित्तभीतपताहै॥ तबएसप्रकारसभीअग्निअरुजलनभए॥ तबसुमेरुकौंतप
तेआनलागे॥ तबसुमेरुमहादिपिरोदेविकरअर्थजाएएस्थितिभएअरु॥ तहांसेदेखता
भएअरु॥ जोअग्निसतावलपर्वतजलनलागेहुआ॥ उदयाचलकेपासिआनिपडा॥ अस्ताच
लपर्वतजलकरतिलहुनेलागा॥ समुद्रगिरनेलागा॥ अग्निकीज्वालाउर्ध्वकौंजावे
अरिअरिशब्दकरे॥ हेरामजीएसप्रकारसभशाखाविषैलागीजलणे॥ बडवाभ

अग्निउदेहुआ॥ जहांकछुतथीसोविश्वकौंजलावताभए॥ हेरामजीजिसकौंअज्ञा
नीदेखतेथे॥ सोसभभावरूपहै॥ परअपणेअपणेकालविषैरसिमनजगतदिष्टिआ
वतीहै॥ तिसकालविषैअकरमात॥ तैसेजलकीहएवलीहोतीहै॥ तैसेसभवि
षतीहै॥ जोरामजीएसप्रकारसभविषैजलतीदिष्टिआए॥ परजिनकाअज्ञा
नसीदिष्टिआवहि॥ हेरामजीएसप्रकारसभविषैजलतीदिष्टिआवहै॥ अरुसभअग्निविषैजलतेदिष्टिआ
वतेहै॥ अरुसभअग्निविलैजलतेदिष्टि
नहानकरनदिहआयानेसभकोदिष्टिआवहि॥ अरुसमुद्रविषैजलतेदिष्टि
आवहै॥ तबकैलासपर्वतजोसदाशिवकाहै॥ तिसकौंतिनकरि
ए॥ अरुबडेभमानकरहुहोव॥ तबकैलासपर्वतजोसदाशिवकाहै॥ तिसकौअवि
आवतीथीअग्निभस्मदशिवअपणेनेत्रसेअग्निअशनिहरी॥ तिसकरबडाबो
भहुआ॥ ब्रह्मपुरजलणेलागे॥ तबमहापवनआनिकरचलिआ॥ बडेबडेजोपर्व
तथेसोलगेउडणे॥ जैसेचिणाउडताहै॥ अरुजोएस्थानजलतेथेतिनकीसुवाहथे
सोलगेडिगणे॥ जैसेतिनकाउडताहै॥ अरुजोएस्थानजलतेथेतिनकौसुवाहथे
॥ अरुजोअष्टदिगपालहैंजोतेसभकेएस्थानहैंतेभीजलनेलागे॥ तबलोकसभआनिउदेहुआ॥ अर
उकरअपणेअपणेपुरीअकेएस्थानत्यागकरब्रह्मलोककौंचलेजावहि॥ अरु
ऐसाहिकजोदेवताथेसोअपणेएस्थानत्यागकरब्रह्मलोककौंचलेजावहि॥ अरु
जोबडेमेचथेअरुजलकरएस्थानथेसोतिनकौंजलणेलागे॥ जलनेकौंत्यागतेभए
अरुजलणेलागे॥ अरुकल्पवृक्षजोपुतलीथे॥ सोनिरतलकैजलणेलागे॥ जलतेहु
एएस्थानतोसातोसमुद्रनिकसिताहै॥ सोउनकेकेसाहै॥ अरुपलेकेपावकसमकाबाल
णाहै॥ बडापवनचला॥ पर्वतजलजलकरउडणेलागे॥ सुमेरुपर्वतअादिकोंत्रिणो
कीनिआईउडनेजावहि॥ तीनोंकौंबडाकष्टप्रापतिहुआ॥ अरुसागरलकहिणविषैनि
हाअवता॥ ५७॥ इति श्रीअग्निजगतब्रह्माप्रलैवर्णनेनाम सर्गः॥ वशिष्ठउवाच
हेरामजीअगलीकथासुनउजोएसप्रकारजोथेनिसकेउपरांतप्रलैकेमेघगजनेला
गे॥ अरुवर्षाकरनेलागे॥ प्रथममुसलकीनिआईएकधारमकीनिआईधारावर्षे॥ बहु
रिजलनदीयांकीवर्षाकरनेलागे॥ बहुरिनदवर्षनेलागे॥ जोगंगाजमुनादिकनदी
हुईअरुनदीअांकीवर्षाकरनेलागा॥ जैसेअज्ञानीजीवोंकौताप
अग्निजिनकौएकलहरीहै॥ तबएस्थानशीतलहोतेभए॥ तैसेमेघजलतेलभ
लाहुआ॥ अरुसंतोकेसंगकरशीतलहोजाताहै॥ तैसेअग्निशीतलभईआदिकपर्वतनिगलपरेसभहै॥ जैसे
ए॥ हेरामजीअसाजलजेताजिसकरकैलाससुमेरुआदिकपर्वतनिगलपरेसभहै॥ अरुए
सेसमेरुविषैजगहोताहैतैसेहोगए॥ बहुरिकैसेलागहि जैसेजलचरहोतेहै॥ बडेबडेए
स्थानवाहनेजावहि॥ हेरामजीअसेजलचढेजोकहिणविषैनहोआवे॥ जिनकौंअज्ञानीपरमार्थजा
नतेहैंतेसिपगपर्वतबहनेजावहि॥ देवतेसिधगणपर्वतबहनेजावहि॥ जैसेकोउपुरुषअंधकूपकेर
स्यानवहिनेजावहि॥ सोभीवहितेजातेदिष्टिआए॥ जैसेकोउपुरुषअंधकूपकेर
नकरसेवनाकरतेहै॥ अरुसूर्यकौंसभभ्रमदिष्टिआ
करविलेपितेतडपावताहै॥ तैसेउरवीदिष्टिआवहि॥ जैसेजगतवंटाहोकरदिष्टि
वे॥ जबसमकल्पकौअंतमहाप्रलैदिष्टिआवे॥ मेघगजतेरहतेहुए॥ ५८॥
आवहि॥ अरुब्रह्मलोकपर्यन्तजलचढगए॥ मैदेखकरअाश्चर्यकौप्रापतिहुआ॥ ५८॥
इति श्रीब्रह्मलोकगमनजलमयवर्णनेनाम सर्गः॥ वशिष्ठउवाच हेरामजीब्रह्माकाजगत
मेदेखतातोसभजलमयहोगयाअ॥ जलतेरकछुनभासे॥ सूर्यनहीभासे॥ दिशाकोअ
नभासे॥ नकछुअर्थभासे॥ नकोऊतननहीभासे॥ नकोऊपर्वतभासे॥ नशब्द
भासे॥ नकोऊविद्याधरनपशिपक्षीभासे॥ तबमैब्रह्मपुरीकौदेखतेभ
एजलहीभासे॥ नकोऊबिदिसातेसभपकौंसारलाहै तैसेब्रह्मपु
एआ॥ जोकिअादशाहै॥ जैसेप्रातःकालकावजेअपणीसभताकौंसमाधिलागीहुए
भेकौदिष्टिपासावकरदेखतेभएआ॥ अरुब्रह्माजीमनकौंपरमसमाधिलगाकरसमाधल
गीकौंदिष्टिआए॥ अरुसुरजोजीवन्मुक्तअरुतिकापरवारेहैसभएआसनबांधकरसमाधल
दिष्टिआए॥ अरुजोजीवन्मुक्तअरुजोकाटरेसभएसमाधिविषैअचलदेदेखे॥ अरुअग
नाएवेदेहदेख॥ जैसेपस्थरकीपरतमाहोवेतैसेकीसभएपरमसमाधिविषैस्थितिहैं॥ अरुअग्नि
जोमैवेदनकरनेतेरहितएस्थितिहै॥ साकवनचारवेदमूरतिधारीएस्थितिहै॥ अरुमनजीवमुक्तजीव
अहमत्वअरुवणीकुबेरएइजमचंद्रमाअग्निहरलाएत्यादिकसरवीसरमनजीजीवनकौं
नमस्कारकीनी॥ तबमनीकौंसेवानविषैएस्थितिदेखतभएआ॥ हादशमनजीसपिकौं
नमस्कारकीनी॥ सभमनीकौंसमाधविषैएस्थितिहुएहैं॥ एकसहस्रतेअपरजंतमें
तपावतेहैं॥ सोएसाजनकौंबाधकरसमाधविषैएस्थितिहुएहैं॥ एकसहस्रतेअपरजंतमे

वा॰
म॰
७२

एसीप्रकारदेखताहे॥ जबएकमुहूर्तवितीतभएतबवस्तुजोविनासमअग्रेनध्यानहो
एगए॥ जेसेसप्रेकीसृष्टिअपरोक्षहीविद्यमानहोतीहे॥ अरजागेतेअभावहोजातीहे॥ तेसे
समअग्रेनध्यानहोगए॥ मेरुदेखतेदेखतेब्रह्माशरीरसूनमनकीनिर्वाणहोगए॥ तेसेप
तालिरणमात्रजगप्रलेहोजाताहे॥ तेसेप्रलेहोगए॥ हेरामजीजेसेसप्रेविषेमेघगर्जे
तेदृष्टिआवतेहे॥ अरजागेतेअभावहोजातेहे॥ एहदृष्टांततोवालकभीजानतेहे॥
जोएतत्वअग्रनतेहे॥ जोअनतअनभवकोरुपावतेहे॥ तेमरतेहे॥ मेअनभवकरभीजा
नताहों॥ अरस्मृतिभीहोतीहे॥ असमनिश्चभीहे॥ जबलगनिश्चेहे तबलगसमुके
सृष्टिभासतीहेहि॥ जोगेतनप्रसिष्टिकाअभावहोजाताहे॥ तेसेजबलगब्रह्माकीवा
सनाथीतबलगसृष्टिथी॥ जबवासनाछेदहूएतबजगतक्षयहूआहे॥ जबवासनानष्टभए
तबअग्निवायुकअपथमतकशरीरनहीरहेते॥ हेरामजीजबसमथमात्रपदतेचितसेव
तफुरतीहे॥ तबपिंडाकारहोभासतीहे॥ जबलगदृहशरीरहेतबलगसंसारउ
पजताभीहे॥ अरनष्टभीहोताहे॥ अेसेब्रह्माकीसुखपनविषेजगतलीनहोता
हे॥ अरजाग्रतविषेउत्पन्नहोताहे॥ अरजाग्रतविषेउत्पन्नहोताहे॥ काहेतेजोब्र
ह्माकाशरीरजोहे॥ सोसुखपनविषेलीनहोताहे॥ एसकानाममहाप्रलेहेहि॥ अरजो
कहीहेएसशरीरकेनाशकानाममहाप्रलेहोवे॥ तोअसेनही॥ काहेतेजोमितहे
एशरीरकानाशहोताहे॥ बहुरपरलोकभासताहे॥ तातेएसकानाममहाप्रले
नही॥ अरजोकहोअगहपरलोकभ्रांतमात्रहे॥ तबएहभीभ्रांतमात्रहे॥ जेसेपर
लोकभ्रांतमात्रहे॥ तेसेएहलोकभ्रांतमात्रहे॥ अरजोकहेपरलोकभ्रांतमात्रहे
एसकानाममहाप्रलेतोनही॥ काहेतेजोअंतसमतपुराननिहासमकहते
हे॥ जोमहाप्रलेविषेरहिताकछुनही॥ आत्मसत्ताहीरहितीहे॥ अरजोकहोपरलो
कभ्रांतमात्रहे॥ एसकानाशहोएकिआहे॥ तोस्कंतशास्त्रकाकोहूणाविअर्थहो
ताहे॥ अरजोमैनकाकहिएणविअर्थहोवे॥ तबब्रह्माकाशरीरकिसीकाउत्पतन
होवेएनकेकहिणेकर॥ अरजोतकहेजेसेअवेवीअवेवहूकोसकचाएलेताहे॥ ते
सेअस्थूलभूतसकचकेअपनेकारणसूक्ष्मविषेजाएलीनहोतेहे॥ एसी
कानाममहाप्रलेहे॥ तोअसेभीनही॥ काहेतेजोसूक्ष्मभूतोंकरहेमहाप्रलेनही
होती॥ अरजोतकहेसंवेदनजोहे॥ तानजिसविषेअहंफुरताहे॥ तिसकेअजा
नेकानाममहाप्रलेहे॥ तोएहभीनही॥ काहेतेजोमनकोविषेएसकाअजानहो
ताहे॥ परबहुरिसृष्टिभासतीहे अरचितहोताहे॥ सोवरणमकोहे॥ जिसविषेव
हुरपंचभूतकिशरीरभासताहे॥ अरआगेजगतभासताहे॥ तातेएसकानामभी
महाप्रलेनही॥ अरजोतकहेजोजबलगएहअस्थूलपंचभूतकशरीरहेतबल
गजगतहे॥ एसकाअभावहोवेतोमहाप्रलेहे॥ तोएहभीनही॥ काहेतेजोशरीर
कोत्यागताहे॥ अरशरीरकीक्रिआनहीहोती॥ तोपिशरीरजाएहोताहे॥ एसकाश
रीरनिराकारनिरूपहोताहे॥ अरमवतनहीहोजाताहे॥ मनसकचीब्रह्माणकीसंना
नहीरहती॥ तोतदोषजोएसदेहिकानाशभीमहाप्रलेनही॥ अरअज्ञआदककि
विषेजेकानामभीमहाप्रलेनही॥ महाप्रलेतिसकोकहितेहे॥ जोसर्वकाअभावहो
जावे॥ अरसर्वकाअभावतबहोताहे॥ जबवासनाछेदहोजातीहे॥ तोतवासनाकेछे
दकानामज्ञानीनिर्वाणकहितेहे॥ तेसेजबलगनिश्चेहे॥ तबलगसमुभकाजगतभास
ताहे॥ जबजागिआनबसमजगतकाअभावहोजाताहे॥ तेसेजबलगवासनाहेतब
लगवासनाहेतबलगजगतहे॥ जबवासनाछेदहूएतबजगतकाअभावहोताहे॥ हे
रामजीवासनाभीफुरनेहीअभासिमात्रहे॥ अरजोकहेभासनाकिहे॥ तोजानक
छुभासताहे सोइहीअपणाआपभावविषेअपनेस्थितिहेहि॥ हेरामजीअपनाभावतेउत्था
नहोणकानामबंधनहे॥ अरउत्थानमिटणेकानाममोक्षहे॥ हेरामजीनेत्रोंके

विलोणेअरमदेविषेभीकछुजतनहे॥ पमरहोणोविषेजतनकछुनही
तेंछिनवाहरमुखहोएतबबंधनहूआ॥ अरछिनअंतरमुखभएतबमुक्तिभए
आ॥ एसविषेकिआजतनहे॥ तातेनिर्वासीमुरखपनकोनिआएस्थितिहो
तबअहंसंवेदनफुरतीहे॥ तबमिथ्याजगतसततहोभासताहे॥ आगेजोएकहे
सोकहो॥ अजअहंउत्थानतेरहितहोवेगातबपरमनिर्वाणपदकोप्रापतिहो
वेगा॥ ९६॥ इति श्रीवासिष्ठेप्रतिपादनेनामसर्गः॥ वसिष्ठउवाच॥ हेराम
जीऊहब्रह्माजीअग्रेनध्यानहोगएथा॥ जेसेतेलविनादीपकनिर्वाणहोजा
ताहे॥ तेसेब्रह्माजीनिर्वाणहोगएथा॥ तबब्रह्माब्रह्मपदविषेनिर्वाणहूआ
तबदुआदशसूर्यउदेहूएब्रह्मपुरीआकोतलावणलागे॥ तबसेअरणतत्त्वपुरीजल
गए॥ तबओनहूसगेहूभीब्रह्माजीकीनिआएआसनकरकेंएस्थितभए॥ जेसे
तेलविनादीपकनिर्वाणहोताहे॥ तेसेदादशसूर्यभीनिर्वाणहोगए॥ तब
समुद्रउछलेब्रह्मपुरीकोअकाहिलीआ॥ जेसेअंधकाररात्रकेसमेविलीनगए।
कोंअकाहिलेताहे॥ तेसेब्रह्मपुरीकोंअकाहिलीआ॥ बडेतरंगउछले॥ अरएकहकार
मेहूभीतरंगोकेछेदगए॥ तलरूपहोगए॥ हेरामजीतबएकपरमआकाशतेनि
कसिआएआ॥ सोमरुकोदृष्टिआएआ॥ महाभएआनकरूपमनरूपरूपअग्रका
शकोभीनिसअछादिलीआ॥ किअसमतेमनोमात्रकल्पअंजनतएकठेहोकरतिस
काहूपआनिएस्थितहूआहे॥ अरतिविछेतनवाल्पणेजोनिकसतीहे॥ अरवडा
शरीरकाप्रकाशमानोकोटिसूर्यकाप्रकाशविजलीअहूएस्थिरकाप्रकाश
एकहाहूआहे॥ अरपंचमुखजिसकेअरदशभुजाहे॥ तीननेत्रहे॥ मानोतीनोंस
नेवमत्कारकरतेहे॥ हाथोंविषेत्रिशूलहे॥ अरअप्रकाशकोनिआएअस्तधारी
हे॥ जेसेखीरसमुद्रकेमथणकोमंजावटीकरविस्नुपाणीरपमाविआथा॥ अरखी
हे॥ जेसेखीरसमुद्रकेमथणेकोमजावटीकरविस्नुपाणीनेपामाविआथा॥ अरखी
रसमुद्रकोछोभाएआथा॥ तेसेनाशकाकेपवनकरसमुद्रकोधाभावताभएआ
जेसेप्रकाशकावगावपुहेतेसाहीसरूपधारआहे॥ मानोप्रलेकालकेसमुद्रसरूप
धारकएस्थितिहूएहे॥ मानोसर्वअग्रेहंकारकीसमष्टताएस्थितभएहे॥ मानोअ
ग्निप्रलेकोअग्निभएवासूरतिधारकरएस्थितभएहे॥ हेरामजीमेजानताभएआजो
एहमहारुद्रहे॥ जिसकेहाथोंविषेत्रिशूलहे॥ अरतीननेत्रहे॥ पंचमुखहे॥ ता
तेरुद्रहे॥ अेसेजाणकरमेंप्रणामकीआ॥ रामउवाच॥ हेभगवन्उसकाभेमान
कंरूपकिआथा॥ अरुद्रकिसकाकहीअे॥ अरवदाअकारकिआथा॥ दशभुजाकि
आथे॥ हाथोंविषेत्रिशूलकिआथा॥ अरकिसकाभेजिआआएआथा॥ अरकिआ
करतेभएआअरकहांगएआ॥ अरएकलाथा॥ अथवाकोशवस्त्रसाथभीथा॥ अर
अपामअनूरतिकोगथी॥ वसिष्ठउवाच॥ हेरामजीविषमपरछिनजोअहंकारहे॥ सो
तिआगोणजोगहे॥ अरसमष्टअहंकाररूपजणजोगहे॥ सर्वआत्माकीप्रतीतका
नामसमष्टअहंकारहे॥ तिसीकानामरुद्रहि॥ अरक्रिअमूरतिएसनमितहे॥ जोअका
शरूपहे॥ जेसेअकाशविषेलीलताहेतेसेजोसदाविषेक्रिमताहे॥ अरसमजोजीव
अपणीअहंकोत्यागकरनिर्वाणहूएजोनकीसमष्टताहोएकरुद्ररूपभासी॥ ता
तेअअरूपथा॥ अरपंचमुखजानएडीअहूकीसमष्टताहे॥ अरदशभुजाकर्मएंद्रिआ
अरपंचविषेतिनकीदशभुजासमष्टताहे॥ अरराजससात्तकतामसतीनोगुणतीनो
नोनेत्रहे॥ अथवाभूतभविषतवर्तमानअथवाऋगयजवेदसामतीनोवेद॥ अ
थवामनबुद्धचितनीनोनेत्रहे॥ जोकारकीतीनमात्राउसकेनेत्रहे॥ अकाश
रूपीवपुथा॥ अरत्रिलोकीरूपाहाथोंविषेत्रिशूलथा॥ अरचितसेवनतेफुरिआ
था॥ तिसीकाभेजिआआएआथा॥ बहुरइतिसीविषेलीनहोवेगा॥ केवलअकाशरूप

वं॰
मा॰
७२

या ॥ अबजो कछु कर्ता भए आनो नए ॥ हे रामजी ऐसा जो रूद्र था ॥ मानो अकाश कौं पंख
लागे थे ॥ सो एक अस्थि आया ॥ तिस ने प्राणो कौं अंतर ले खेंचली आ ॥ नव सम भजन लगे
विश्वप्रवेश प्रकाशों लाग ॥ जैसे नदी आ समुद्र विश्वप्रवेश करती आहे ॥ तैसे सम भजने लगे
रुद्र विषे लीन भए ॥ जैसे वडवा अग्न समुद्र कौं पान करलेती है ॥ तैसे सम भजने लो
कौं रुद्र पान करलीआ एक मुहूर्त विषे ॥ कहुं जल का अंश भी दिष्टि न आवे ॥ जिसे
प्रकार कौं सर्जपान करलेता है ॥ तैसे पान करलीआ ॥ जैसे अग्नान रूपी पर्वत सम
प्रकार कौं सर्जपान करलेता है ॥ तैसे जल कौं पान करलीआ ॥ केवल समयअकाश
तौ के लगकर न थि हो जाते हैं ॥ तैसे जल कौं पान करलीआ ॥ केवल सम अकाश
हो गए आ ॥ न कहुं प्रिथवी दिष्टि आवे ॥ न जल न अग्नि न वाए का शतल कहुं दिष्टि
आवे ॥ एक अकाश ही दिष्टि आवे ॥ जैसे उजल मोती होता है ॥ तैसे उजल अकाश
ही भासे ॥ चारों तत्व अवर कहुं दिष्टि न आवहि ॥ एक अर्ध भाग दिष्टि आवे ॥ मध जो अ
काश था सो रुद्र ही दिष्टि आवे ॥ अर एक अर्ध भाग दिष्टि आवे ॥ चौथा विदा विडा
न दिष्टि आवे ॥ मध जो अवकाश अवर कछु न दिष्टि आवे ॥ हे रामजी रुद्र भी अका
प्राश रूप ही था ॥ अकार कोई न था अकार भ्रान्त कर के भासता था ॥ जैसे अकाश विषे
नील ता नबरे भ्रम कर के भासते हैं ॥ जैसे सूर्य विषे भ्रम कर के अकार भासते हैं ॥
तैसे रुद्र का अकार दिष्टि आए आ ॥ केवल आत्म प्रकाश न एतवक कछु न था ॥ जैसे
चिदाकाश विषे भूत आकाश भ्रम कर के भासता है ॥ तैसे रुद्र का शरीर भासे
आगे रुद्र सर्व आत्मा था ॥ अब अकार हो कर भासिआ सो कछु न था ॥ हे रामजी अका
श विषे रुद्र निराधार भासिआ था ॥ जैसे मेघ निराधार होता है ॥ तैसे निराधार दिष्टि
आए था ॥ व सि ष्ठ उ वा च ॥ ओं हे रामजी रुद्र जो ऐसा प्रकार वडा भए आन क रूप मे
देखिआ था ॥ अरु ने त्रवडे तेज कर शोभते ॥ चंद्रमा सूर्य अग्नि ए हैं जिस के नेत्र न
त्र हैं ॥ अर भैआन कवडा सरूप मानो महाप्रलै के समुद्र मूरति धार कर एस्थि
ति हूए हैं ॥ अर रुंडो की माला कंठ विषे धार हूए हैं ॥ ऐसा रुद्र एस्थित था ॥ ति
स का पछावा जैसा निकसिआ सो वडा अर भयआनक रूप ति स को पछावा जैसा नि
हिं विकर मे अरु जैवा न हूआ ॥ जो एहा मजन नहो ॥ अग्नि भी न हो अवर किसी का प्रका
श भी न हो ॥ एह पछावा किस का है ॥ अर तिसमे देखता था ॥ जो पछावा नित कर ले ला
गा तब एक सपछावे विषे ओए कप भी निकसिआ आए ॥ शरीर उस का जैसा नाडी निकसी
हूए दिष्टि आवहि ॥ अर बडा ओआ आ प्रकार था ॥ किसन वर्णी मानो अंधेरी रात मूरति धार क
र एस्थित भए हैं ॥ अर सम मे अपर्वतकी निआ एअकार ॥ अर तिन ने त्र बडी आ भजाति
स की सो बडा आ शरी वडी शीवा मानो प्रलै काल का मेघ है मूरति धार एस्थित भए आ
है ॥ अर गल विषे आदरा की माला ॥ अर रुद्र की मालापडी हूए ॥ अन्या दिक वि
कराल सभाव है ॥ सो मे देवता भए आ ॥ अर वडी आ भजा जिसकी ॥ अर हाथ हूआ विषे
त्रिसूल खडग बाण धनुष जि अखल मसल आदिक ले कर जो आए धहै ॥ सो मे देवता भए
आ ॥ मे आन क अकार है विकर मे विचार की आ ॥ जो काली भवानी है ॥ तिस कौं
जान कर न मस्कार की आ ॥ वडा है अकार जिसका अर के सा एा म अकार है ॥ सो
अग्नि के जलो हूए पर्वत तिन के शिखरों जैसे सिर आ म हो गए हैं ॥ तैसा श्याम अकार है ॥ अ
र मस्तक विषे तीस ले ने त्र बडवा अग्नि की निआए जल्वा न निकसि आ है ॥ कवहुं
हो भजा दिष्टि आवहि कवहि कबहुं सहस्र भजा दिष्टि आवहि ॥ कवहुं अनंत भ
जा दिष्टि आवहि ॥ कवहुं अनंत भजा दिष्टि आवहि ॥ कवहुं एक भजा दिष्टि आवे क
वहुं दो हो जावहि कवहुं को ई दिष्टि न आवे ॥ अर जब वहु सिर पादि दिष्टि आवे ॥ ए
कवुत जैसा भासे ॥ अर कवहु सिर पादि दिष्टि आवे ॥ एकवुत जैसा भासे ॥ अर कव
हूं अनेक मस्तक दिष्टि आवे हि ॥ एस प्रकार के स्थित को ॥ जिओ जिओ निरति करती ॥

ति प्राणी अस्थल दिष्टि आवे ॥ मानो अकाश कौं भी अकाश दिलीआ है ॥ अर दशों दिशा
अकार सा पिप्रशा करी है ॥ न सरिता की औरको को इदिष्टि न आवे ॥ ऐसा अकार कौं व
हा दिष्टि आ है ॥ जब भजा कौं हलावे तब ब्रह्माण्ड जो अकाश कौं मापती है ॥ पाताल
प्रजंत चरण अरु अकाश जिसका शीश है ॥ अर वृद्ध अस्का प्रिथवी है ॥ सुमेर आ
दिक पर्वत अरु जिसके नाम एस्थान है ॥ दशों दिशा जिसकी भजा है ॥ मानो प्रलै काल
मूरति धार के एस्थित भए है ॥ अर वडे पर्वत जिसके शीश की निआए जिसकी नाशा है
अर लोकालोक पर्वत जिसकी दाडा है ॥ अर कंठ विषे नदी अ हूए की माला है ॥ तो चल नो
आहे ॥ तव कुमेर आदिक देवते अर हूए रिखी की माला कंठ विषे है ॥ तव पवन नाशका
के साथ गिरी ओ निकसि ना है ॥ तिस कर समेर आदिक पर्वत त्रिणों की निआए उडते
है ॥ अर ब्रह्मादिकों की माला गल विषे है ॥ अर हाथों विषे वहुत ब्रह्माण्ड रूपी भूखन है ॥ के
रि विषे ब्रह्माण्डो के चुंच बुत डा गी है ॥ जब निरति करती है तब ब्रह्माण्ड निरति करते है ॥
जैसे पवन कर पत्र उड ते निरति करते हैं ॥ तैसे सुमेर आदिक पर्वत निरति करते है ॥ एक एक
रूप विषे ब्रह्माण्ड है ॥ जैसे तारागण वाए कर आए हैं ॥ अर कानो विषे चंद्र सूर्य है ॥ वडे का
न है ॥ अर वडे सर वहे ॥ मानो मेर आदिक ब्रह्माण्ड को भकछ निकली है ॥ अर कानो के भू
खण जो होते है ॥ सो एक कौं उर्ध रमे अर हूए सरीर आरुढ पाए है ॥ अर एतन नो वि सव चारों वेद है
थ मे थे काम सो भी चार ओए तन तहै ॥ अर शास्त्रो का अर्थ रूपी हूए पदार्थ निकसता है ॥
अर ब्रह्मसभजा पन की भि जो दामरू को देख विषे दिष्टि आए ॥ हे मे अर विरति करती
के निरति करणे कर कर एक ब्रह्माण्ड निरति करते हि ॥ सभ कछु विपर्जे होता दिष्टि आवे
ओस के शरीर विषे ॥ अकाश रूपी कों दिष्टि आवे ॥ ताराग इन्द्र सिध देवता विद्याधर
गंधर्व किंनर देवत ए स्थावर जंगम सभ ओस विषे दिष्टि आवे ॥ मानो से एसन ब्रह्माण्ड
का आदर्श है ॥ अर भजा के ऊप ने कर चंद्रमा की निआए उनहो कौं प्रकाश दिष्टि
आवे ॥ मेघ ग्ग वले अर उदिआ वल कानो विषे भूखण दिष्टि आवे ॥ अर हि माल पर्व
त वर्फ के कणे के आए दिष्टि आवे ॥ हे रामजी एस प्रकार देवी के शरीर विषे मेरु कौं अनेक
सिष्टी दिष्टि आवहि ॥ कहुं भिंन भिंन दिष्टि आवहि ॥ कहुं ए
क ही दिष्टि आवहि ॥ कहुं एक ही दिष्टि आवहि ॥ कहुं नाग इंद्र वर व भ मो स जगति ॥
कहो जैसे सो चष्टा करते हि ॥ कहुं भिंन भिंन चेष्टा करते हि ॥ कहुं सम सतने दिखा
दिष्टि आवहि ॥ मानो ब्रह्माण्ड रूपी रत्नो का दरवाहे ॥ हे रामजी जब सम कल्प मदहानि देवी
दिष्टि आवहि ॥ अर जब आत्मा कौं ओर देखे तब केवल आत्म स
नव मन कौ सिष्टी दिष्टि आवहि ॥ अर सम कल्प दिष्टि कर के सरवाजन
रूप ही भासे ॥ प्रकाश ही भासे अवर कछु न दिष्टि आवे ॥ जो निरति निन करे ॥ स
गति निरति करते दिष्टि आवहि ॥ ऐसे कि सो सम र्थ ता दिष्टि न आवे ॥ जगत की उत्पति एस्थिति प्रले
मध पर्वत त्रिणों की निआए निरति करते दिष्टि आवहि ॥ सिध गंधर्व देवता अप
दिष्टि आवे ॥ जो कछु क्रिआ है सो तिसही करहा मी दिष्टि आवे ॥ मानो ब्रह्मा
क्रिआ विधान रूप एथ दिष्टि फिरदि निरति जो के चक्र फिरते दिष्टि आवहि ॥ मानो ब्रह्मा सिष्टि कर
वहुरि उदे हूए हैं ॥ जब आतिम दिष्टि कर देखो तब भत्म सरूप भासे संकल्प दिष्टि कर
देखो तब भत्म सरूप भासे संकल्प दिष्टि कर देखो तब जगत भासे ॥ राहु चित क
ला हे ॥ जो सकल्प रूप ति स विषे सभ दिष्टि आवहि ॥ हे रामजी ब्रह्मादिक सामिव ए
सु आदि सम अनेक ब्रह्मा आदिक सभ भी विषे दिष्टि आवहि ॥ जैसे समुद्र रवाए कुरंग उठते
हैं ॥ तैसे अनंत सिष्टी अस के शरीर विषे उठती दिष्टि आवहि ॥ महा आनंद कौं मेमा
पति भए आ ॥ जो उहु अबस्था आए है भैरवी अस की प्रांगि है ॥ दोनो मऊ कौं दिष्टि
आवे ॥ वडा वपु था एह तिसका कि सक आत्मा है ॥ परमात्मा की क्रिआ शक्ति है ॥ स
देवि सक को अपणे विषे जाणे ॥ जैसे सम मंदर सम भन तरंगो कौं अपणे विषे अपणा आप

वं॰
ना॰
२३
74

जाणता है॥ ते सर्व ब्रह्मांडोंकों अपणे विषे अपणा आप जाणतीथी॥ अरु सदाशिव
तेव्हे इस प्रकार कों धारा है॥ मानो सर्व ब्रह्मांडोंकी माला कंठ विषे धारी है॥ अरु जम
आदिक नभ भक्ति सकी मिर्जादा मानो हे॥ हे रामजी एस प्रकार रुद्र अरु काली भवानी
कों मैं देखता भया अरु रुद्र के सिर पर जो जटा हाथ सो मानो पर्वत की निम्र पेहे॥ एस
प्रकार महा भैरवी अरु रुद्र कों मैं देखता भया॥ अरु काली कों मैं देखता भया॥ अ
नाना प्रकार के भैरोदि सिद्ध मते आदि लेकर सो द्रिकनी हुए॥ सो मातो विषे नि
र्तिकती है॥ हे रामजी ऐसे देवी है सो न मोसे हाय होवे॥ जो सर्व शक्ति परमात्मा
है॥ सभ ब्रह्मांड इसके आश्रे है॥ तिस विषे अनुभव प्रमाण हो जावे॥ अरु पिणि
खबर्ड री रख प्रकार कों धारे सभ जगत विषे जो क्रिआ होती है॥ सो सभ उस के
आश्रे होती है॥ कहु उत्पति होती है कहु प्रलै होती है॥ कहु जुध पडे होते है॥ ना॰
नाप्रकार की क्रिआ उस देवी के आश्रे पडी होती है॥ जैसे आदर्श विषे प्रतिबिंब होता
है॥ ते देवी विषे क्रिआ होती है॥ १८७॥ इति श्री उपाशिवआनानतरउपासरवानदेवी
रुद्र ने नाम सर्ग:॥ राम उवाच॥ ओं हे भगवन एह जो तम रुद्र अरु का
ली वरतन की आहे सो कवन थे॥ महाप्रलै विषे तो रहत कछु नही॥ एह काली कव
न थी॥ तिसके शरीर विषे तम मिष्टा कस है खीआ॥ महाप्रलै होए कर उस के शरीर वि
षे त्रिष्टा प्रलै होए कर उस के शरीर वे पाके से कीआ॥ अरु उस के हाथि विषे कछु भुज
हार आदिक शस्त्र किआथे॥ अरु कहा ते आए थे॥ अरु उसका प्रकार किआ था॥ व
सिष्ठ उवाच॥ हे रामजी न कोई रुद्र है न काली है॥ न कोई एसी है॥ न कोई शरीर है
न उसके हे न शस्त्र हथ मिलकर कछु है आहे॥ न ब्रह्मांड है न पिंड है॥ केवल चिदा
काश है॥ ते कल्पना उपजे प्रकार भासते होहे॥ जैसे स्वप्न विषे प्रकार भासते है॥ तैसे
अह प्रकार भी भासे॥ वस्तुते केवल चिदाकाश निजकाति है॥ हे रामजी आत्मपद के
सो है॥ अनंत है चेतन है शांति है॥ प्रकाश रूप है॥ अविनाशी है॥ अपणे आप सभाव वि॰
षे स्थित है॥ अरु रुद्र देवी का प्रकार जो भासिआ था॥ सो चेतन आत्मा ही ऐसे हो
होए कर भासिआ था॥ सो अरु कोई प्रकार न था॥ जैसे स्वप्ने ही भये ... कर भास
ता है॥ तैसे परम देव चिदाकाश ऐसे होए कर भासिआ॥ काहे ते जो सरूप चेतन है॥ जैसे स॰
मधुरता गन्ने का सरूप है॥ तैसे आत्मा का चेतनता सरूप है॥ हे रामजी चेतनता अप
णा सरूप को त्यागती नही॥ अरु प्रकार होकर भासती है॥ सदा अपणे आप विषे
स्थित है॥ जो गन्ने की रस विषे मधुरता न होवे तो रस को गन्ने की रस न ही कहिते॥
तैसे आत्म सता विषे चेतनता न होवे तब चेतन कोउ न ही कहे॥ जो आत्मा चेतनता
कों त्यागे तो शांत भी होवे॥ तब चेतन न कहीऐ॥ परम सदा अपणे आप सभाव विषे
स्थित है॥ किसी अवर अवस्था कों नही प्रापति भए आ॥ एसी कारन ते कहा है
जो कछु भासता है॥ सो आत्म सता का कचन है॥ हे रामजी जैसे गन्नी की रस विषे
मधुरता होती है॥ तैसे आत्मा विषे चेतनता है॥ चेतन मात्र विषे एक चेतनता
कील कछु ण रहिता है॥ चेतनता रूप तिस कर एह जगत आभास रूप लगी ता है॥ अ
वतो सभ चेतन मात्र विषे चेतनन भाव का उथान नही होता॥ तो जगत भाव ना
ही लखीता है॥ अरु आत्म सता सदा दोनो अवस्था विषे जिस की तिस लहै॥ जै
से जव वाए एस सपंद रूप होती है॥ तब सभ रूप उसका लखिआ भासता है॥ अ
रु जब निसंद रूप होता है॥ तब तिस विषे शब्द को उन होवे॥ कर सका॥ अ
रु वाए दोनो अवस्था विषे तुल्य है॥ तैसे सभ चेतनन विषे किसी शब्द का प्रवेश॰
नही॥ चेतन का भाव विषे॥ अरु आत्म सता सदा तुल्य है॥ ताते वास्तव एह जगत

भी नही॥ हे रामजी आदि मधि अंत जगत किआ काल्पना कल्प उत्पति एस्थिति
प्रलै जनम मरण अस्ति असति॥ अंधकार प्रकाश पाप दिन सूरत नाना नाम रूप कर्म
रूप व लोक मन संस्कार॥ विद्या अविद्या सुख दुख बंधन मोक्ष जड चेतन प्रिय
अप्रिय ज्ञान अज्ञान जगत अरु अजगत जितने है नही॥ वेद शास्त्र
णा॥ वेद शास्त्र पुराण मंत्र प्रकाश ओंकार मकार जप नाम आदिक स्थावर जं
गम जगत क्रिआ सभ ब्रह्म रूप है॥ दूसरी वस्तु कछु नही॥ जैसे समुद्र विषे जल
तरंग बुदबुदे आवर्त होते है॥ सो जल ही रूप है॥ तैसे सभ ब्रह्म सरूप है॥ ब्रह्म ते अंतर
कछु वस्तु नही॥ जैसे स्वप्न विषे प्रपंच भासता है॥ सो अनुभव रूप ते अंतर कछु नही
तैसे एह जगत ब्रह्म ते अंतर कछु वस्तु नही॥ जैसे समुद्र की किरणा जल रूप होए क
र भासती है॥ तैसे आत्म सता जगत होए कर भासती है॥ हे रामजी ब्रह्मांड विस्तार
रूप रुद्र वरुण कुबेर जम चंद्रमा सूर्य अग्नि जल पृथ्वी वायु आकाश आदिक जेते कछु
प्राकृत है॥ सो सभ ब्रह्म सता ही ऐसे होए कर स्थित भए॥ हे परम सदा अपणे आप
विषे स्थित है॥ कदाचित परिणाम कों नही प्रापति भए॥ सो सर्व की सता आत्मा है॥
जैसे समुद्र जल अवस्था तरंगों कों त्यागे॥ तब अपणे भाव विषे स्थित होवे॥ ते
से ब्रह्म सता पूर्ण कों त्यागे तब अपणे सभाव विषे स्थित होवे॥ सो अनामै है
अर्थ एह जो दुख तरंग रहित है॥ परम शांत रूप है॥ अनंत है निर्विकार है॥ जब एस प्रका॰
बोध होवे॥ तब तिस ब्रह्म सता कों प्रापति होवे॥ अभ्यास अरु बोध विषे निश्चय भी दृढ
है॥ जैसे जल अरु समुद्र की अग्नि एक ही है॥ अरु तरंग आदिक हि ताकर विलख
णा भासता है॥ जब जल तरंग बुधि कों त्यागे॥ तब केवल समुद्र रूप होजावे॥ तैसे ए
हती रूप अपणा जीव तिकों त्यागे॥ तब आत्म रूपी जल कों प्रापति होवे॥ जीवति
अर्थ एह जो शिशका मत बंध त्याग करेगा॥ तब आत्मा होवेगा॥ अज्ञान करके जगति भा
चला होती है॥ अज्ञान के नष्ट हुए सभ ब्रह्म सरूप भासेगा॥ १८६॥ इति श्री पाशिवआ
न अंतर पाशिवआनव अंत नाम सर्ग:॥ वसिष्ठ उवाच॥ ओं हे रामजी जे चिदाकाश
तरु कों कहे॥ सो परम चिदाकाश है॥ अरु सदा अपणे आप विषे स्थित है॥ हे राम
जी सर्व चिदाकाश मैं तेरता एक हो है॥ सो पर रुद्र रूप है॥ सो एनि रति करता है॥ तहा
प्रकार कों नही॥ केवल चिदघन सता होई थी॥ सो ऐसे होए कर कचत होती थी
हे रामजी जब देखाया आत्म दृष्टि कर ऐसे ताए चिदाकाश ही रूप भासिआ था॥ हे
रामजी मेरे ही जैसा होवे सो एते मात्र रूप देखे॥ नही अपर देख सका॥ हे रामजी जिसका
नाम कल्यान का होता है॥ सो एह रुद्र अरु भैरवी है॥ एह कल्यान की मूरति है॥ निर
ति कर्के अंतर ध्यान होजावेगी॥ अरु वास्तव किआ रूप है॥ सो एक आत्मा है॥ चेतनता के
आश्रे एक चेतन है॥ हे रामजी जैसे पवन विषे भूषणा पर शोभे विना नही होता॥ तै
से चेतनता कचन कर जगत भासता है॥ सो होकर प्रमाद कर अपध्यान कर होजाता है
अरु वास्तव ते सभ चिदाकाश रूप है॥ चेतनता करके ही जगत रूप हो भासता है॥ राम
उवाच॥ हे भगवन तिस समय तुम आत्म तत अद्वैत कहा॥ एह जगत प्रमादिक नाश
रूप है॥ अरु जो है तो कल्यान विषे नाश हो जावेगा॥ अरु हे तम सता रहिता है॥ बहुर कहा
चेतनता करके जगत रूप भासता है॥ सो अरु है तब विषे चेतनता के सह है॥ अरु चेतन वाला
चेतनता कर के जगत रूप भासता है॥ सो महाप्रलै के अंतर काली किंकर भासी॥ वसिष्ठ उवाच॥ हे रामजी
कचन हुआ॥ अरु महाप्रलै के अंतर अपणे आप विषे स्थित है॥ चेतन चेतन है॥ अरु प
न कोई चेतन है केवल आत्म सता अपणे आप विषे है॥ ऐसे उह की कदे कहते है॥ उही शिव रुद्र अरु काली को
रमनि मैं लहै॥ शांत रूप है॥ अरु शिव तन ऐसी कों कहते है॥ केवल परम चिदाकाश है॥ सो एह चिदा॰
धारे हुए है शिव आए आहे॥ हम कछु नही॥

वं॰
म॰
७४

काशहहि॥सोईचिदाकाशप्रकाशहोएकरभासताहै॥अरप्रकाशकछुहुआनहीं॥न
भैरवहैनभैरवीहै॥नकालीहैनएहजगतिहै॥सभमायामात्रहै॥जैसेसमुद्रविषिआ
त्मसत्ताचेतनताकेकैंनमानिइरूपहोभासतीहै॥तद्रूपतेनककुचनताहैनजगतिहै॥आत्म
सत्ताहीअपणेआपविषेएस्थितिहै॥तैसेएहजगतजगतिजाणि॥कछुअवरहुआ
नहीं॥अद्वैतसत्ताहीहै॥तिसविषेचेतनअरचेतनतेहारेमेतफकोंकिआकहै॥सा
भमानकरकेंभासतेहै॥आत्माविषेएनकाकछुउपजणानहीहुआ॥केवलात्म
चिदाकाशहै॥हमकोंतोसदासदाचिदाकाशभासताहै॥अज्ञानीकोंनानाप्रका
रकाजगतिभासताहै॥अरआत्मासदाएकरसहै॥कचनकरकेंतिसविषेप्रकारभा
सतेहै॥भैरवअरकालीसभिनिराकारहै॥अनेकप्रकारभासतेहै॥जैसेमनोराज
विषेनृपभासतेहहि॥जैसेकथाकेअरथभासतेहै॥सोअनहोतेसंकल्पविलासभा
सतेहै॥तैसेचिदात्माविषेएहजगतिभासताहै॥जैसेप्रकाशविषेतत्वरेभास
तेहै॥तैसेएहिप्रकारभासतेहै॥हेरामजीएहजोजगतिअरपैमहाप्रलयआदिकशब्दहै॥
तिनकानाशकर्ताअर्थमेंनफकोकहिताहौ॥आत्माएकअद्वैतहै॥चेतनहै॥सोचे
तनताकाअभावकहूंनहीं॥अपणेआपविषेएस्थितिहै॥अरफुरतहै॥जैसेसूर्यके
किरणाकचतिरूपहोतीहै॥तिनोंविषेजलभासताहै॥तैसेचेतनकाकचनजगत
होभासताहै॥सोएमहाप्रलेविषेरुद्रअरभैरवीहोभासताहैनककुरुद्रहैनकालीहै॥
सर्वात्माहै॥हेरामजीजोकछुकहिणाअरसुणाहोताहैसोवाचवाचककरकेंहोता
है॥आत्माविषेकहिणाअरसुणनाकछुनहीं॥इहीचिदाकाशसंकल्पकरकेरुद्री
निरूपिकरतीहै॥जैसेस्वप्नेविषेपणहोकरभासताहै॥तैसेचिदाकाशप्रकारहोकर
भासताहै॥हूआकछुवाणिआनहीं॥सेतसुअरजगतिचेतनअचेतनसभअद्वैतरूपहै॥अ
सविषेकोईशब्दफुरिआनहीं॥जैसेसमुद्रविषेनानाप्रकारकेशब्दफुरेभासतेहैं॥सो
कछुवास्तवनहींपथरकीनिआईमौनहै॥तैसेजाग्रतविषेभीजैसेकछुप्रा
हिहोतेहै॥तोभीसभशून्यहै॥कछुहुआनहीं॥केवलआत्मसत्ताअपणेआपविषेए
स्थितिहै॥जैसेप्रकाशअपणेस्वरूपताविषेएस्थितिहै॥तैसेआत्मसत्ताअपणेभाव
विषेएस्थितिहै॥महाशुनएकहैहिनद्वैतहैनशून्यहै॥नचेतनताहैनचेतनहैनमौनहै
नअमौनहै॥नकाईचेतनेवालाहै॥नचेतनकाअभाववतिहै॥सोकिआहै॥केवलअद्व
तचिन्मात्रसत्ताहै॥निर्विकल्परूपहै॥हेरामजीसभभ्रमतेरहितआत्मकासिधानएहीहै॥
तिसदृष्टिमौनविषेतमभीएस्थितिहोवहु॥हेरामजीसवसिधांतकासमसवताएही
है॥जोनिर्विकल्पहोणापरमसिधांतएहीहै॥तिसनिर्विकल्पसमाधविषेएस्थिति
होणाएहपरमकासिधांतहै॥जैसेपथरकीशिलापरममौनहोतीहै॥तैसेचेतनतेरहित
होणाजोकछुस्फुरनिअवारआनप्रापतिहोवे॥तिसविषेप्रवर्तनाअभिमानमाहिनेरहि
तेहोकरविचरणा॥महात्मनिआरहिणा॥एसकानामपरममौनहै॥जैसेसभक्रि
आहोतीहैसन्मुखअपणेविषेकछुनहेरवणा॥जैसेनटसभआगजेसाराआवताहै॥
तिसकेअनमानविचरहताहै॥परनिआगसकाअपणेआपहिहोवअविषेहोताहै॥तैसे
चेष्टाएसानहींहोता॥तैसेजोकछुआनिकतअनिप्रापतिहोवेतिसकोंजथाशा
स्त्रकरणा॥अपणेनिरगुणानिहकिआसदरूपतेचलाएमाननहींहोवणा॥अद्वैतसद्
पविषेएस्थितिरहणा॥ राम उवाच॥ हेभगवनरुद्रकिआथा॥अरकालीशक्तिकिआ
थी॥अरशेषकेअंगजोवर्धनेघटतेसोकिआथे॥अरनिरतकरणाकिआथी॥अरशस्त्र
किआथे॥ वसिष्ठ उवाच॥ हेरामजीशिवततनहीप्रकाशहोकरभासताहै॥अरप्रकाशकों
जानहीं॥केसहैशिवततचिन्मात्रहै॥अमलहै॥विद्याअरअविद्याकेकारजतेरहितहै

आतअवाचपदहै॥एहजोमिथिआभीमेसंकल्पविवेकफकोंकहीएहै॥आत्मपदकोंआ
त्मपदतेअवाचपदकोंहिदेहै॥तथापकहूंमकहिताहौ॥हेरामजीकेवलआत्मतत्त्वमा
त्मतत्वमात्रचिदाकाशहै॥तिसकानामशिवअरवीहै॥तिसकेचमत्कारकाना
मचितशक्तिहै॥तिसकीनामकालीहै॥तिसविषेअरआत्माअपणेआपरूपविषेअनेक
लीविलेभेदकछुनहीं॥जैसेपवनअरस्पंदहरेभेदनहीं॥अग्निअरउष्णताविषेभे
नहीं॥तैसेचितकलाअरआत्माविषेभेदनहीं॥जैसेपवननिस्पंदरूपहोताहै॥तब
तिसकालक्षणनहीहोता॥अवाचरूपहोताहै॥अरजबस्पंदरूपहोताहै॥तबति
सकालक्षणभीहोताहै॥अरतिसविलासफुरतेवशकरताहै॥तैसेचितशक्तिहै॥ति
सकरलक्षणहोताहै॥तिसकेअंगअनेकनामहै॥तिसीकानामएसहैहैएका
है॥तिसीकोंचेतनजानमवतनकरवास्वाकाहोताहै॥एसकेस्वादकोंएकानेकच
चितसंचतिविषेवासनाफुरी॥तबतिसकानामवासनाकेनेवालावासकहोता
है॥आगेवहुदृष्टिरिष्टिहोतीहै॥जबतिसपरीभएवासनावासकवास॥तबवासकों
जीवकहीताहैहि॥जोचतिलकरणस्थितिहोताहै॥जबएहिएकाएसकोंहो
तीहै॥जोमैजीवहौ॥मेरानाशकदाचितनहोवे॥एहिएकाकरजीवकहावता
है॥एतेसमिथिआचितशाककेकोहोतीहै॥सोएस्पंदविषेहोतीहै॥शिवततनतोहै
सोअफुरहैचितशक्तिविषेफुरनेकीनिआएएस्थितिहै॥आदिशक्तिजाहैसोभ
नोंकाकारणहै॥जगतिचितकाअभावहै॥हएकीनिआएएस्थितिहै॥जैसेबीज
कौकिरणोंविषेजलहैनहीपरहएकीनिआएभासताहै॥तैसेएहजगतहैआन
हो॥परकोईजानहोरहिता॥एहताआत्माकीकालीशक्तिकीक्रिआकावर्णन
तउकोंसुनाएआहै॥अरशिवकावर्णनसुणा॥जहएवावाणीतेअतीतहै॥तथा
पकछुकहिताहौ॥परमसुखपहै॥निर्मलअच्युतहै॥तिसविषेकछुहुआनहीं
क्रिआशक्तिकेफुरणेकरजगतहोभासताहै॥जबअपणाअधिष्ठानकोंगवदेख
ताहहि॥तबअपणाआपस्मरणपुरुषदृष्टिआवताहै॥क्रिआशक्तिअरआत्माविषेकछुभे
दनहीं॥जैसेप्रकाशअरप्रकाशताविषेकछुभेदनहीं॥जैसेपवनअरस्पंदविषेभे
खिभेदनहीं॥कालतेजोप्रकाशकाअगनेनताहै॥तैसेआत्माकाअरभावचितशक्ति
भेदकछुनहीं॥जैसेअग्निकामतवेगअनताहै॥जैसेप्रकाशआदिअर्थकोंधामभास
है॥अरएसकानामकालीहै॥जोक्रियारूपहै॥जैसेप्रकाशनिराकारहै॥तैसेकालीनिराका
तोहै॥तैसेएहप्रकाशआवपुहै॥जैसेप्रकाशकीनिआएएसकावपुहै॥तातेएसकानामक्रि
रसासभभासतीहै॥अकाशकीनिआएएसकावपुहै॥सोजबसरूपकोंउरआवती
स्त्रवपुहै॥अरकालीजगतिकेनाशकेअर्थहै॥हेरामजीएस्पंदशक्तिजबलगशिवतेविलक्ष
है॥तबजगतिकानाशकरतीहै॥हेरामजीएस्पंदशक्तिजबजगतिहै॥तबजगतिनेविलक्ष
कहै॥तबजलगजगतिकोरचतीहै॥जहाएहदेतहाजगतिहै॥सर्जेकीकि
रहिनीनहीं॥जैसेजहाकसनेकीकिरणाहै॥तहाजलभासताहै॥सजेकीकि
णारहितीनहीं॥जैसेसजहास्तनेकीकिरणाहै॥तेहाजलभासताहै॥गतिविनानहींरहेती
रणाविनाजलआभासनहीरहिती॥तैसेएस्पंदशक्तिजगतिविनानहीं॥जैसेसमुद्रविखत
जैसेप्रकाशकेअंगप्रकाशहै॥तैसेएसकेअंगजगतिहै॥अरएहशक्तिचिदाकाशहै॥विन
रंगसमसेरहीरूपहै॥तैसेजगतिएसकारूपहै॥जबशिवकोंगवग्रा
रेवनहीं॥जबएहफुरतीहै॥तबजगअकारहोभासतीहै॥जबशिवकीअरग्रा
वतीहै॥तबशिवरूपहोजातीहै॥जगतिकाभासकछुनहीरहता॥तातेहेरामः
गौतमाशीचितशक्तिनिआरीरोवेनवजगतिभ्रमनिरिजावे॥एसशक्तिहीन
गतिभ्रमरवाहै॥शिवपुजोहैसोनिर्मलप्रकाशरूपहहि॥अजरअमरहै॥अवे

वं० मं० २५

78

तविंनमात्रहै॥ निसविखेककुखोभनही॥ आत्मसत्तासदाअपणेआपविखे
स्थितिहै॥ रामउवाच॥ हेभगवनतनमजोकालीकेअंगोविखेस्थितहैसोआ॥ आ
आत्माविखेसतिहै॥ सोकहहु॥ वसिष्ठउवाच॥ हेरामजीएहकालीदेवीआत्मा
किक्रियाशक्तिहै॥ अर्थएहजोफुरणोशक्तिहै॥ जिसककेतोआत्माविखेसतेहै
अवास्तवतआत्माविखेककुनही॥ मिथ्याहै॥ जैसेतंअपणामनोराजकेहस
तोचितवे॥ तोअहंककुवास्तनही॥ परातिसकालविखेसतभासताहै॥ तैसेजेता
कछुत्रिष्टाहै सोआत्माविखेसतिकोउनही॥ परचितशक्तिकरखलीदृष्टि
आवतीहै॥ जैसेककुधनरतनखपपदार्थअकाशापर्वतसमुद्रवनजगतपली
वैकसंबंधमोरव॥ गुरुशास्त्रजपअलयादिकजोभासतेहहि॥ सोसतिविदा
काशब्रह्मरूपहै॥ वास्तवपेनकाहेहाणाऋस्यातभिननही॥ सर्वप्रकारसर्वदा
कालआत्माअपणेआपविखेस्थितिहै॥ सथअहैतनहै निर्विकारहैनिराका
रहै॥ जिंकातिउहै॥ जगतिविखेकोउनहीउपजिआ॥ सभजगतिआत्माविखे
खेक्रियाशक्तिरचाहै॥ सोमायाकालविखेसतिहै॥ वास्तवतेककुनही॥
जैसेकिसीपुरखकोसत्राआवताहै॥ तिसकरसअभिष्टभासताहै॥ तिसकेमा
रेस्कोंकोग्रहलावेतोउहनहीजाणता॥ जेउककुभिष्टिहोती॥ तोउसकेह
लावणेकरकेग्रएस्याजगिरजाता॥ पातेनाशकिसीकानहहोता॥ ताते
वास्तवककुनही॥ हेरामउहस्त्रिष्टिउसकेचितएस्पंदविखेएस्थितिहै॥ अत
करुअर्थकारहोतीहै॥ परजबलगनिंद्राहै॥ तबलगसिष्टिहै॥ जबनिद्रानिवृत
भएतबतलग्रकीसिष्टिनहीभासती॥ तैसेएहसिष्टाककुवास्तवनही॥ अज्ञानी
रूपीचितशक्तिविखेभासतीहै॥ हेरामजीजेतेककुपदार्थभासताहै॥ सोचित
केफुरनेविखेभासतेहैं॥ जिसकासंकल्पसथहोताहै॥ उसकेमनोराजकी
सिष्टिदेशकालकरमतेदलअन्नहोताहै॥ तोसंकल्पहीरूपहैवास्तववाति
आककुनही॥ जबलगसंकल्पफुरताहैतबलगसंकल्पकेअंतसारस्त्रिष्टिभा
सतीहै॥ तातेसंकल्परूपहऐकिउ॥ अदृष्टिपदार्थहोताहै॥ जोंउसकीसत्ता
सिद्धिविखेहोतीहै॥ तबउसकाअर्थदिविखेअनभवहोताहै॥ तबउसकाग
गहोएवसिदिविखेफुरताहै॥ काहेतेतोसंकल्पविखेउसकाभावरहाहै॥ तै
सेजबलगचितएस्पंदफुरताहै॥ तबलगजगतिसतसभरवताहै॥ जबचित
निस्पंदरूपहोताहै॥ तबजगतिकीसत्तानहीभासती॥ हेरामजीजैतीककुज
गतिसतभासताहै॥ सोसभक्रियाशक्तिनेआत्माविखेरचीहै॥ जबलगएह
कालीक्रियाशक्तिशिवतेवितरेकहोतीहै॥ तबलगनानाप्रकारकेजगति
कोरचताहै॥ अरखोभकोप्रापतिहोतीहै॥ अरजबशिवकीओरआवतीहै॥ त
बशांतिकोरूपहोतीहै॥ वहुडिप्रकृतिसंगिआअसकेनहीरहती॥ अद्वैततत्तविखे
अद्वैतरूपहोजातीहै॥ जैसेजबलगपवनिचलताहै॥ तबलगपत्तीउस्मतागंध
सुगंधवगंधकोदासंगिआहोतीहै॥ अरजबनिस्पंदरूपहोताहै॥ तबकोऊश
हिकहिएकोनहीरहता॥ जोअमोहैअथवाकेसोहै॥ तैसेजबलगचितश
क्तिएस्पंदरूपहोतीहै॥ तबलगजगतिकोरचतीहै॥ अरप्रकृतिकारणरूपक
होतीहै॥ तिसविखेदोप्रकारशक्तिहोतीहै॥ विद्याअरअविद्यारूपसोएइनिक
तेहै॥ हेरामजीजोककुकहणाहोताहै सोएस्पंदरूपचितलेरखहैतिसविखे॥
अरजबशिवतत्तविखेअरहोतीहै॥ तबअद्वैतरूपहोजातीहै॥ तहांकिसीशब्दि
कीगमनही॥ हेरामजीशिवक्रियाहै॥ अरशक्तिक्रियाहैसोसुणो॥ जैसेककुजीव

हैसोशिवरूपहै॥ अरऐनेकेचितकाजोफुरणाहै॥ सोकालीकहीएचितशक्ति
कहीऐ॥ तबअपणेपकोकरचितशक्तिवाहमेरखफुरतीहै॥ तबलगजगतिभ्रमकाअंत
नहीआवता॥ अरनानाप्रकारकेविकारोंकाअनभवहोताहै॥ शांतनहीहोती॥
तबचितशक्तिफेरलटिकरअधिष्टानकोदेखतीहै॥ तबजगतिभ्रमनिवृतहोजा
ताहै॥ परमशांतकोप्रापतिहोतीहै॥ हेरामजीआत्माअरचितसंवतविखेक
कुभेदनही॥ जैसेवायुकोएस्पंदअनिस्पंदविखेककुभेदनही॥ परएस्पंदहोतीहैत
बजाणीताहै॥ अरनिस्पंदहै॥ तबजाणीतानही॥ तैसेचितसंवतजबफुरतीहै॥ अ
रजोनहीफुरतीतबजाणीनहीजाती॥ अरजानणावजाणनादोनोनहीरहते॥ हेराम
जीजबलगएहशक्तिशिवकीओरनहीदेखतीतबलगनानाप्रकारनिगतिकरती
है॥ अर्थएहजोजगतिकोरचतीहै॥ अरजबशिवकीओरदेखतीहै॥ तबएसकोनिरा
तिविखलहोजातीहै॥ अरबलअहंप्राणिएसकेलसहोनजातेहै॥ हेरामजीएसकालीका
जोअहंकारथाप्रमाणिविखेआवतानथा॥ अरशिवकीओरदेखणेतेसूक्ष्महोगए
आ॥ प्रथमपर्वतसमानभएआ॥ वहुडिनिकटिआएतबग्रामकेसमानभएआ
वहुडिनिकटिआएतबघटकेसमानिभएआ॥ वहुडिनिकटिआएतबसत्व
अकारभएआ॥ जबशिवकेसाथमिलीनतबशिवरूपहोगए॥ एसकाजोविला
सहै॥ सोमलनहोजाताहै॥ अरपरमशांतशिवपदकोप्रापतिहोतीहै॥ तबपरम
पूर्णतहोजातीहै॥ रामउवाच॥ हेरिखजीएहजोपरमेश्वरकीपरमेश्वरीशक्ति
कालीहै॥ सोतिसकोमिलिकरशांतकेसेहोतिभए॥ सोकहहु॥ वसिष्ठउवाच॥
हेरामजीदेवीजोपरमात्माकीएकशक्तिहै॥ अरनृगनिमातोएसकानामहै॥ जबल
गशिवतत्ततेवितरेकहोतीहै॥ तबलगजगतिकोरचतीहै॥ जबअपणेअधिष्टा
नकीओरआवतीहै॥ तौनितत्रिशितिहै॥ अरअनामएहनिर्विकाराहै॥ परमशांतरू
पहै॥ हैतभावतेरहितहै॥ तबपरमशांतकोप्रापतिहोतीहै॥ प्रकृतिसंगिआएस
कीजाणीजातीरहितीहै॥ जैसेनदीआंजबलगदौडतीहै॥ अरप्रवाहिकरतीहै॥ जबल
गसमुद्रकोनहीप्रापतिभईआं॥ जबसमुद्रकोमिलीआंतबप्रवाहिकएकीअरदौड
कणीनष्टहोजातीहै॥ अरनदीसंगिआभीजातीरहतीहै॥ समुद्रकोमिलकरपरम
गंभीरसमुद्ररूपहोजातीहै॥ तैसेजबलगचितशक्तिशिवतेवितरेकहोतीहै॥
तबलगजगतिभ्रमकोमिलीनतबशिवरूपहोजातीहै॥ अरद्वैतभ्रममिटिजाता
है॥ हेरामजीएहिचितशक्तिशिवपदविखेलीनहोजातीहै॥ तबप्रथममनोदेहएं
श्रीआमायानतुरूपभएथी॥ अरऐंडीअहंकएहअनिष्टविखेआपकोसुखीदुखी
जाणतीथी॥ अरवरागहैखकरजललीथी॥ सोनिर्विशिष्टनामेपदकोमिलेतब
दुखतेरहितहोतीहै॥ काहेतेजोअनात्मदेहएश्रीआकीतदूरूपताकाअभाव
होजातीहै॥ अरआत्मततसाथितरूपहोतीहै॥ जैसेपथरकोपालासाक्षिमि
लिकरखहकीधाराहोतीहै॥ तैसेचलमवानिजआत्मपदविखेमिल
नीहै॥ तबऐकेअद्वैतहोजातीहै॥ आत्मपदकीसपरोकीपतेअनात्मभावका
त्यागकरतीहै॥ जैसेतावापारसकेसपर्शतेसवनेहोजाताहै॥ अद्वैतिनाभ्वानहीहो
ता॥ तैसेएहवृत्तिअनात्मभावकोप्रापतिनहीहोती॥ अरएहवितकल्याणबल
गतिविखअहंकेसत्सगरलथावतीहै॥ जबलगअपणेवास्तवरूपकोनहीप्रापतिभ
ऐ॥ जबअपणेवास्तवरूपकोप्रापतिभएआहै॥ जिसकोशमकेस्वादकोअनभवहु
भजिसपुरखकोअग्रिप्रापतिभएआहै॥ तैसेजिसकोआत्मअनात्मास्थिपाति
आहै॥ उहूनिमपानकरणीकीएछानहीकरती॥ हेरामजीएहजोसावभ्रमाचि
भएआहै॥ सोविविश्रामसंतोंकीएकानहीकरती॥ अरमसारकेसवखकात्यागनहीक
नसवातिविखहिडहोकरएस्थितिभएआहै॥

वं
मं
७९

रसकता ॥ तबआत्मसुखकोप्राप्तिहोवेगातबत्यागसेहोवेगा ॥ जैसेजिसपुरुषनेकोंपार
सनहीप्राप्तिभएआ ॥ तबलगअवरधनकोंत्यागनहीकरता ॥ जबपारसप्रा
प्तिभएआतबतिसधनकात्यागकरतोहै ॥ अरतिसकेपावणेकाजतनतिनहीक
र्ता ॥ तैसेजबएसकोंआत्मआनंदप्राप्तिहोताहै ॥ तबविषिआसबोंकात्यागक
र्ताहै ॥ अरपावणेकाजतनभीनहीकर्ता ॥ हेरामअवरएस्थानविखेभवरातब
लगभ्रमताहै ॥ जबलगकमलोंकीखाणकोंनहीप्राप्तिभएआ ॥ तबकमलों
कीखाणकोंप्राप्तिभएआतबअवरएस्थानोंकोंत्यागदेताहै ॥ तैसेजबचित्तप्रा
प्तिपरमात्मपदविखेलीनभए ॥ तबकिसीपदार्थकीवांछानहीकर्ता ॥ निर्वि
कल्पपदकोंप्राप्तिहोतोहै ॥ ९८ ॥ इतिश्रीप्रकृतनप्रस्तवविचोगनामसर्गः ॥ व
सिष्टउवाच ॥ ॐहेरामजीअभिश्रविकालकाप्रसंगवहुरिसुणो ॥ जबका
लोनिरतकर्केनिर्वाणहोगए ॥ तबशिवएकलाहीरहा ॥ एकरुद्रहीमरुकोंदिष्टि
आवे ॥ अरदोएखंडअकाशकेदिष्टिआवहि ॥ एकअर्धभागएकऊर्धभागअवर
कछुदिष्टिनआवे ॥ तबरुद्रजीनेदोनोंकोंएप्सारकरदोनोंखंडदेखे ॥ जैसेमनुजेजग
तिकोंदेखताहै ॥ तैसेदेखकेप्राणोंकोंअंतमेखेंचताभएआ ॥ तबअर्धऊर्धदो
नोखंडएकदेहोएगए ॥ तबब्रह्मांडकोंअंतमेखपएलीआएकशिवहीरहग
एआ ॥ अवरकछुदिष्टिनआवे ॥ हेरामजीजबएकतणविलीनभएआ ॥ तबरुद्रव
डेअकारकोंधारेहुएजोब्रह्मांडकोंभीलेचगएआया ॥ सोएकसमानहोएगए
आ ॥ वाहुरिअंगुष्टमात्रशरीरहोगएआ ॥ वहुरिरतनकेकणकेनेभीसूक्ष्महोए
गएआ ॥ वहुरिनेत्रोंकरदिष्टिनआवे ॥ दिव्यदिष्टिकरमेदेखतारहा ॥ वहुरिदृष्टिहुभीन
ष्टहोगएआ ॥ केवलचिदाकाशपूर्णरहा ॥ अवरकछुसरीवस्तकछुभासेनही ॥ जै
सेवर्खाकालकेमेचशरत्कालविखेनदिष्टिहोजाताहै ॥ तैसेरुद्रभीनष्टहोगएआ
हेरामजीतिसकालमोमुझकोंतीनोएकुहदेखरतरहे ॥ एकदेवीब्रह्माकीश
क्ति ॥ दूसरीकालीशक्ति ॥ तीसरीशिला ॥ तबमेविचारकीआजोएहसबसपनगरवतअ
सचजथा ॥ अवरकछुनही ॥ तबकिआदेखोंजोशिलाहीपडीहै ॥ सबवनेकी ॥ ए
हसृष्टिशिलाकेकोसविखेएस्थितिथी ॥ तबमेविचारकीआ ॥ जोएहसृष्टिशिलाके
एककोसविखेएस्थितथी ॥ तिसविखेअवरसृष्टिभीहोवहिगी ॥ काहेतेजोसर्वेवस
सर्वप्रकारसर्वदेशदृष्टिपनहै ॥ तातेएसविखेअवरसृष्टिभीहोवहिगी ॥ हेरामजीते
सविखेमेसृष्टिकोंदेखणेलागा ॥ तबनानाप्रकारकीसृष्टिदेखीआ ॥ जबचार्म
दृष्टिकरदेखोंतबसर्वब्रह्मभासे ॥ अरसंकल्पदृष्टिकरदेखोंतबआत्मरूपीआ
दर्शीविखेअनंतसृष्टिदिष्टिआवहि ॥ जबचर्मदृष्टिकरदेखोंतबशिलाहीदृष्टि
आवे ॥ एसप्रकारमेशिलाकोसविखेदेखताचलिआथाजोशिलाकोणोंविखेसृष्टिभास
हि ॥ पथरोंविखेफलफूलोंविखेअनंतसृष्टिदिष्टिआवहि ॥ अरजिहुसंकल्पआ
त्मदृष्टिकरदेखोंत ॥ तबअहंतआत्माहीभासे ॥ हेरामजीएसप्रकारमेअनंतसि
ष्टिदेखताभएआ ॥ कहूंऐसीसृष्टिभासेजोब्रह्मांडउपजाहै ॥ अरखनाकोसमर्थहोता
है ॥ कहूंब्रह्माचंद्रमासनेउपजाएहै ॥ अरकालकीमर्जादाकरीहै ॥ अवरकोउनहीउ
त्पन्नभया ॥ कहूंमनुष्यतनापृथ्वीआदिकतनउपजाएहै ॥ अरप्राणीनहीहूए ॥ कहूंमन
उनहीउपजे ॥ कहूंअवरसहितसृष्टिदिष्टिआवे ॥ कहूंचंद्रमासूर्यनहीउपजे ॥ क
हूंचंद्रमासदापूर्णनिकसानही ॥ कहूंखीरसमुद्रमथिआनही ॥ अमृतनहीनि
कसिआ ॥ लक्ष्मीघोडाहस्तीभीनहीनिकसा ॥ धन्वंतरवैद्यनहीनिकसा ॥ कहूंवि
सनहीनिकसा ॥ अमृतनहीनिकसादेवतेपरमरतेहै ॥ कहूंखीरसमुद्रमथि
आहै ॥ तातेअमृतनिकसिआहै ॥ धन्वंतरवैदनिकसाहै ॥ लक्ष्मीभीनिकसीहै
कहूंप्रकाशहोतानही ॥ कहूंसदाप्रकाशहीरहिताहै ॥ कहूंपृथ्वीवीतपरपर्व

नहीदिष्टिआवहि ॥ अवरकछुनही ॥ कहूंपृथ्वीकेवीचकरपर्वतपरेकुदीतेहै ॥ आरेग
ड़तेहै ॥ कहूंप्राणीअहंकोंमरणचिंतनहीहोती ॥ कल्पअनंतजिवोंतेरहितेहै ॥ क
हूंप्रलेहोतेहीहै ॥ मेघगर्जतेहै ॥ कहूंएकवनजलहीदिष्टिआवे ॥ अवरकछुनही ॥ क
हूंप्रकाशहीदिष्टिआवे ॥ अवरकोउप्राणीनही ॥ कहूंदेवतिअहंकेतपपरेहोतेहै
कहूंदेवतिअहंकोंदैतजीततेहै ॥ कहूंदैतोंकोंदेवतेजीततेहै ॥ कहूंदेवतिअहंअवरदै
तोंकोंपरस्परप्रीतिहै ॥ कहूंवलअवरइंद्रकायुद्धअरब्रितासुरकायुद्धहोताहै ॥ कु
हूंमाधकैटवनब्रह्माकीकन्यातेउत्पत्तिहोतेहै ॥ अवरतीनहूंकालहूंकोंजानते
है ॥ कहूंसदाशोकवानहोएरहितेहै ॥ कहूंसत्तिजगनकासमाहोहि ॥ तातपुनेत
पसिआपेकर्तेहै ॥ कहूंकलिजुगकासमाहै ॥ पापविखेप्राणीविचरतेहै ॥ कहूंअ
धंजगवीतिआहै ॥ कहूंरामअरखावनकायुधहोताहै ॥ रावणकोंरामजीमर्दनकीआ
है ॥ कहूंरावणरामजीकोंमर्दनकीआहै ॥ कहूंपृथ्वीशेषपरहैसमेरपर्वतनतलेहै ॥ क
हूंशेषनागऊपरपृथ्वीहै ॥ भूचालकरभ्रमतीहै ॥ कहूंशल्यकातलवदिआहै ॥ अ
रुकवालकल्पकेविच्छेपरवेदाअपणाअगस्तकोंचढलताहै ॥ सोविष्णुभगवानेहै
कहूंब्रह्माकेकल्पकोभाजेहै ॥ महाप्रलनउपकारहोहि ॥ कहूंश्रीकृष्णपांडवोंकीस
हायताकर्तोहै ॥ कहूंसिद्धिअनापरीहोतीहै ॥ इसीसृष्टिविखेदुसीजैसेसमुद्रउत्पन्न
होतेहै ॥ उसीजैसाकुलउसीजैसाकर्मजातिगोत्रहोतेहै ॥ कहूंतमसत्अर्धभागमि
लताहै ॥ कहूंचतुर्थभागउसजैसामिलतेहै ॥ कहूंउसतेअर्धभाग ॥ विलक्षणभाग
होतेहै ॥ हेरामजीएसप्रकारमेअनंतसृष्टिदेखीआं ॥ आत्मआदर्शविखेप्रतिबिंबवत्
जबमेआत्मदृष्टिकरदेखोंतबशुभचिदाकाशहैसो ॥ तबमेसंकल्पदृष्टिकरदे
खोतबजगतभासे ॥ कहूंऐसीसृष्टिदेखीजहादशरथकापुत्ररामहै ॥ अथरावण
केमारणेकोसमर्थहूआहै ॥ तमारतएं ॥ कहूंवडेतपसीहोएरहतेहै ॥ अरसदाअ
सत्हेमनजीनके ॥ ऐसीअनंतसृष्टिदेखी ॥ रामउवाच ॥ हेभगवन्मेआगभी
हूआहों ॥ अरअबमाहीहूआहों ॥ अथवाकिसीअवरप्रकारहूआहों ॥ सोकहहु ॥ वसिष्ट
उवाच ॥ हेरामजीकएरोसमनेसेहोतेहै ॥ कोएअर्थलक्षणहोतेहैहै ॥ कोएचतुर्थ
भागलक्षणहोतेहै ॥ जैसेअग्निकावीजकोअंदासीजैसाहोताहै ॥ कोएउत्तत
विशेषभीहोताहै ॥ तिसीप्रकारएहसभपदार्थपरअपणामेहोतेहै ॥ हेरामजीत
भीआगेहोवेगा ॥ आगेमेभीआगेहोवेगा ॥ परआत्माकाविवर्तजैसेसमुद्रतरंग
गसमानभीहोतेहै ॥ विलक्षणभीदिष्टिआवतेहै ॥ परएहीरूपहै ॥ तैसेतमासेस
डिआभीहोवहिगेपरभी ॥ हमारेसरूपतेमरतवते ॥ परआत्मातेपरतरकछुनही ॥ सं
कल्पकर्केएतरनिआएभासतेहहै ॥ विलक्षणरूप ॥ जैसेसमुद्रवायकर्केतरं
गहाभासताहै ॥ तैसेआत्मासंकल्पकर्केजगतिरूपहोभासताहै ॥ जदपनानाप्र
कारभासताहैतोभीद्वैतकछुहूआनही ॥ एहजगतचेतनकाविलासहै ॥ वि
नेएसप्रविषेअनंतशक्तिसिद्धपूर्णहै ॥ जैसेस्वप्नकीसृष्टिउपजैतैसेअरभा
सतीहै ॥ अरसत्रूपतेएतरकछुवणिआनही ॥ तैसेएहजगतआत्मप्राणात्मकके
कछुवणिआनही ॥ आत्मसत्तासदाअपणेआपविखेएस्थितिहै ॥ ९९ ॥ इतिश्री
अनंतजगतिव नेनामसर्गः ॥ वसिष्टउवाच ॥ ॐहेरामजीएसप्रकारमेसृष्टि
देखताभएआ ॥ वहुरिदृष्टिभ्रमकोंत्यागकरअपणेआत्मस्वरूपविखेएस्थितिभ
एआ ॥ मेअनंतहोनितसभवपचिदाकाशसर्वदाअपणेआपविखेएस्थिति
है ॥ हेरामजीअंतचेतनचिनमात्रआत्माकेकिसीअस्थानविखेआभाससंवधन
हो ॥ अवरवेदविलसपरी
फुरी ॥ जैसेअनाजकेकोणभिओएक — हीभवनिकासीआ ॥

वं
मं
७८

म्रेआसके किसी दृशोइ विखे अंकुर निकसहि ॥ जैसें चेतंन विखे संवेदन फुरी है तिस संवे
दन शिओ जगति रूप जिग्राहे ॥ जैसें जल के दीपने अंकुर निकस आवते हैं ॥ तैसें मेरे वि
खे स्रिष्टि का अनभव होणे लागा ॥ अरु मैं जो तिना भए आजो स्रिष्टि मेरे विखे फुरी
है ॥ रामउवाच ॥ हे भगवन तुम जो अकाशरूप अपणे आप विखे पस्थिति थे ॥ ति
स विखे स्रिष्टि तुम कौं कैसें फुरी ॥ और वाय के नमिन तुम कौं कहहु ॥ वसिष्ठउ
वाच ॥ हे रामजी वास्तव तौ कछु उपजा नहीं ॥ पर जैसें हूए हैं तैसें सुणो ॥ मैं जो अनभ
व अकाश अने तथा ॥ तिसके किसी एस्थान विखे संवेदन चितन अहं फुरी ॥ अ
थ एह जो मैं हो ॥ तिस अहं भाव के होणे कर आपकौं मैं सत्य मतने अणजे सानोणा न
भएआ ॥ तिस अण विखे जो अहं उठी ॥ तिस कौं तुम सार खे अहंकार कहते हैं ॥ ति
स अहंकार की दृढ़ताने निनिश्चेआत्मक बुधि फुरी ॥ तिस बुधने संकल्प विकल्प रूपी
मन फुरी आहे ॥ तिस मन ने आगे प्रपंच कौं रचिआ ॥ तिस मन विखे देखणे का एसद
फुरिआ ॥ तब चछु एंद्री भए ॥ अरु जिस कौं हे देखणे लागा ॥ सा रूप द्रिशा भए ॥ बहुरि श्र
वण करणे की एछा फुरी ॥ तब श्रवण एंद्री हूए ॥ अरु शब्द द्रिशा भए ॥ बहुरि बसिले
णे की एछा भए तब जिह्वा एंद्री भए ॥ बहुरि रस कौं ग्रहण करणे लागी ॥ तब सुगं
ध लेणे की एछा भए तब नाशका एंद्री प्रगटि भ— ॥ अरु गंध कौं ग्रहण करणे लागी
बहुरि स्पर्श करणे की एछा हूए तब त्वचा एंद्री प्रगटि भए ॥ अरु स्पर्श कौं ग्रहण करणे
लागी ॥ एस प्रकार ज्ञान एंद्री मुझ कौं सभ आन फुरी ॥ तिन के विखे प्राण रूप शरीर
परसगय उदे हूए तब मैं अपणे साथ एस्थूल वपु कौं देखता भएआ ॥ जैसें पुरख स्वप
पति न उठ कर स आदेखता है ॥ तिस विखे अपणा आप भी देखता है ॥ तैसें मैं देखता भ
एआ ॥ हे रामजी जिस कौं मैं देखता भएआ सो त्रिशा हूए ॥ अरु जिस कर मैं देखता भए
आ सो एंद्री आ भए ॥ अरु जहां त्रिशा फुरी हूए आस काल हूए आ ॥ अरु जहां हूए आ सो देश
हूए ॥ अरु जिओ कर हूए आ सो क्रिआ हूए ॥ एस प्रकार मैं देश काल पदार्थ हूए हैं ॥ सो
मैं तेरे ताए कहे हैं ॥ हे रामजी वास्तव न कोऊ देह है ॥ न एंद्री है ॥ न स्रिष्टि है ॥ चिन
कला विखे हूए कौ निग्राण द्रिशिआवते हैं ॥ जैसें सपने की स्रिष्टि भासती है ॥ जब व
ह स्रिष्टि मुझ कौं फुरी तब मुझ कौं शब्द से सरूप का विस्मरण भएआ ॥ जैसें सु
खपति विखे तुम कौं अपणा सरूप विस्मरण की निग्राण होता है ॥ तैसें मुझ
कौं विस्मरण हूए की निग्राण भएआ ॥ जैसें स्वप्न विखे जाग्रत सरूप का विस्मर
ण होता है ॥ तैसें स्वत्ताम रूप मुझ कौं विस्मरण भएआ ॥ जब प्राणापरवंद्री आ मुझ
कौं अपणा साथ भासी आ ॥ तिस विखे अहं प्रते कौं प्राप्ति कौं आर उचार कौं आ ॥ जै
से बालक माता कै गर्भ ते उत्पन होकर प्राप्त हूकता है ॥ तैसें मैं ओं प्राप्ति का उचार की
आ ॥ कैसा ओं आरि अनंत मथ ते रहत परम ब्रह्म हो ॥ अरु सर्व अत्याउ रूपी लरंगों का
आधार सम्मेरहो ॥ हे रामजी जब मैं अध्यन क द्रिष्टि कर देखों तब मुझ कौं शिला हो
भासे ॥ अरु जब अनिवाहद की द्रिष्टि कर देखों तब मुझ कौं शिला हो
उतन व अने न वत्याउ द्रिष्टि आवे ॥ अरु नाना प्रकार की पर क्रिआ भिजो ... अरु जब अ
भासे ॥ जब ज्ञान द्रिष्टि कर देखों अहं तन अपणा आप ही भासे ॥ हे रामजी जैसें सूर्ज
की किरणों विखे मात्र थल की नदी भासती है ॥ सो भ्रान्ति कर भासती है ॥ तैसें यह
क णहारो वृत्ति भी मिथ्या है ॥ जिस संवेदन विखे मन न फुरे तौ भी मिथ्या है ॥ तैसें यह
तेजो नहीं मिथ्या है तौ मन न ब्रितके समतिहोवे ॥ जैसें देह मिथ्या है ॥ कोहे
ह भी रूप आलोकु मन स्वार मिथ्या है ॥ भ्रान्तक कै सत भासते हैं ॥ तैसें प
भ्रान्त मात्र है ॥ जैसें सकल्प पर मिथ्या है हि ॥ जैसें स्वप्न स्रिष्टि
है ॥ जैसें मनोराज का नगर अरु कथा ॥

का ब्रिनांत अंन होता भ्रांत कर अनत भासता है ॥ वास्तव कछु नहीं संकल्प वि
लास विखे स्रभवे ति द्रिष्टि आवते हैं ॥ हे रामजी जिस प्रकार मुझ कौं स्रिष्टि भा
सी है ॥ सो सुणौं ॥ तब मेरे विखे प्रिथवी की धारणा भए ॥ तब प्रिथवी मुझ कौं
अपणा आप ही होकर भासणे लागी ॥ कहूं तौ नाना विराट आत्मा था ॥ तिस प्रिथवी
ऊपर वण आं नदीआं पर्वत तिस में ब्रिछ फुल फल समान खप पांप कौं देखता
खीआ सहेत नाग आदिक जो एस्थिति है सो प्रिथवी मेरा शरीर भएआ ॥ अरु पर्वत
मेरे रोम हूए भए ॥ अरु सुमेर आदिक पर्वत मेरी अस्थि भएआ ॥ सप्ति सुमेरू मेरी ग्री
वा हूआ भए ॥ अरु सब नदीआं मेरे केश विखे भासहि ॥ अरु वन मेरे रोमावली भए ॥ अ
रु मारुथल की आ नदीआं मेरी गणथ विशाल रे भासहि ॥ आरदेवते मानख पशु प
छी देत एह सभ मेरे विखे अस भासहि ॥ जैसें केट होते हैं ॥ तल्ली ख आदिक शरीर
विखे ॥ अरु किसी ठउर मेरे ऊपर हल वाहिते हैं ॥ अरु बीज बोवते हैं ॥ खेती उगवती
है ॥ अरु प्राणी खा रहे हैं ॥ कहूं कसी अहं साधि काटते हैं ॥ कहूं राजा कते हैं ॥ क
हूं समुद्र एस्थिति है ॥ कहूं नदी आवलती है ॥ कहूं राज गाज कते हैं ॥ कहूं गोपवरु
ह गउ रूप क्रेवले हैं ॥ कहूं कहता है प्रिथवी मेरी है ॥ उह कहता है मेरी है ॥ एस प्रकार मम
मता कर के जध करते हैं ॥ हस्ती पेर जध करते हैं ॥ कोऊ कष्ट धन करते हैं ॥ कोऊ हासी कर ते
हैं ॥ कहूं विरक्त तपसिआ करते हैं ॥ कहूं सगंध कहूं दुर्गंध है ॥ नदीआ चलती है
पर्वो भकती है ॥ देवता अरु दैत मेरे ऊपर युद्ध करते हैं ॥ जल शीतलता कर के मेरे ऊप
र वर्षणे जाते हैं ॥ एत्यादिक एष्ट अनिष्ट एस्थान मैं अपणे ऊपर देखता भएआ ॥ ग
जमी नाम सी शान कौं जेती कछु जीवहूं की क्रिआ होती है ॥ सा सभ का आधार मैं हो
त भएआ ॥ हे रामजी प्रिथवी की धारणा कर के मैं ही पीठ होत भएआ ॥ अरु एह स्वप
कुमइन रदत्तिण दिशा की समाप्ति आ भए ॥ एसा द संवेदन कर एस प्रकार मैं आपकौं
जाणता भएआ ॥ १८५ ॥ इति श्री पाखिआन अंतरपाखिआन प्रिथवी धातवर्णने
नाम सर्ग: ॥ रामउवाच ॥ हे भगवन तुम कौं जो प्रिथवी का अनभव भएआ ॥ मन ते उस
धारणा कर के तिस विखे जगत उत्पति हूआ ॥ सो संकल्प रूप था ॥ वसिष्ठउवाच ॥ हे
निहूआ ॥ अथवा अध्यातक प्रिथवी ते उत्पति हूआ सो कहहु ॥ वसिष्ठउवाच ॥ हे
रामजी जेता कछु जगत है सो संकल्प रूप है ॥ मुख्य ध्यान की निग्राण भासता है ॥ सो
केवल चिदाकाश ही अपणे आप विखे एस्थिति है ॥ सो चिदाकाश मैं हो ॥ न कर
चित उपजिआ है ॥ न नाश होउ का ॥ सर्व दा अद्वैत अचेत चिन मात्र रूप है ॥ ति
स के संकल्प का नाम मन है ॥ अभास का नाम संकल्प है ॥ तिसी का नाम अविद्या है
तिसी विखे जगत एस्थिति है ॥ सो जगत अकाश रूप है ॥ वासिआ कछु नहीं ॥ हे राम
जी जिस कौं सति कहीता है अरु जिस कौं असति कहीता है ॥ सो चेतना शुभ अशुभ जग
त मन विखे एस्थिति है ॥ अरु जेते अकार भासते हैं सो सभ निराकार रूप है ॥ अका
श रूप हैं ॥ भ्रान्त कर कै पिंडाकार भासते हैं ॥ जैसें स्वप्न विखे शुभ अशुभ पदार्थ भा
सते हैं ॥ सो निराकार है ॥ भ्रान्त कर कै पिंडाकार जाणीते हैं ॥ तैसें एह जगत भी नि
राकार है ॥ भ्रान्त कर कै पिंडाकार भासते हैं ॥ विचार कीए ते शून होजाते हैं ॥ जैसें म
नोराज कर कै प्रकार रचीते हैं ॥ तैसें हमारे अकार जाणो ॥ स रूप ते कछु उपजे न
हो ॥ जैसें स्थिर का विखे बालक नाना प्रकार की सैना रचते हैं ॥ सो स्थिर ता ऊपर
जैसें आत्म विखे मन रूपी बाल
क जनकौं भिंन भिंन भावना निश्चे होते हैं हि ॥ तैसें अद्वैत आत्म

कनेजगतिभ्रमकल्पनाकरीहे॥ वास्तवकछुनहीं॥ आत्मनतसदाअपणेआप
विषेएस्थितिहोहि॥ स्त्रिगतिआकाजलहीनहीतोतिसविषेइवाकवणाकी
ओ॥ तेसेमनआपअभासरूपहे॥ तिसकारविआजगतिकेसमानिहोवे॥ हेराम
जीसभचिदाकाशरूपहे॥ दूसराकछुवणिआनहीं॥ आत्मरूपीआकाशविषे
मनरूपीनीलताहे॥ सोअविचारकरकेसिधहे॥ विचारकीएतेनीलताकछुव
स्तुनहीं॥ जेसेदीपककरकेतिमिरमानअधकारनहीरहता॥ तेसेविचारकीएतेमन
अरमनकीरचनाजगतिनहीभासता॥ मनकानिर्वाणकरणापरमशांतिहे
अवरउपावकोऊनहीं॥ हेरामजीजेतेकछुदुखोभएहे तिनकाकर्तामनहे॥ अरजे
तीकछुशुभअशुभकल्पनाउठतीहे सोमनकेरउठतीहे॥ मनकेनिर्वाणहू
एकोऊनहीरहती॥ रामउवाच॥ हेमुनीश्वरतुमजोअनेतब्रह्मांडकीस्थिती
होएकरएस्थितभए॥ सोकछुअवररूपभीभएअथवानभए सोकहहु॥ वशिष्ठउ
वाच॥ हेरामजीआत्मरूपीजोजाग्रतहे॥ तिसविषेमैअनेतब्रह्मांडकीस्थिती
होकरएस्थितिभएआ॥ मैचेतनथाअरजडकीनिआंएएस्थितिभएआ॥ वास्तवते
मेकछुनथाजगतिकेकछु॥ केवलचिदाकाशहेतिसविषेनकछुनानाहेनजग
तिकीआसताथा॥ नानासताहे॥ नहदंतइदंकाअभावहे॥ केवलपरमप्रकाशहे॥
अकाशतेभीनिर्मलचिदाकाशहे॥ अरजोहेतोसर्वशांतिब्रह्महे॥ जगतकेहो
तेभीशांतरूपहे॥ काहेतेजोकछुअर्थमशणामकरवणिआनहीं॥ केवलआत्मा
काचमत्कारहे॥ हेरामजीजहांजहांपदार्थसत्ताहे॥ नहांनहांजगतवसैहै॥ स
र्वप्रकारसर्वपदार्थोकाअसदब्रह्महे॥ जहांब्रह्मसत्ताहेतहांजगतिहहि॥ एस
प्रकारअनंतब्रह्मांडहूकोदेखताभएआ॥ जबअनंतब्रह्मांडहूकीथियवीहोक
रमेएस्थितिभएआ॥ तबजलकीधारणाकरी॥ अरजलरूपहोकरपसरिआ॥ बि
छेयासिफूलफलनगछेटासतमाल्लकल्लपनरविषेमेरसिहोकरएस्थितिभ
एआ॥ यंभीविषेमेजीवनहूआ॥ मंटहूकोनदीआप्रवाहहोएकरदौडतेभए
आ॥ समुद्रहूआनदीआंकेप्रवाहहोकरवढिगोलागा॥ तिनाविषेगिरगिरहा
वदाकरनेलागा॥ तरंगवहुहेफेनिकोपसारकरमैविलासकरतभएआ॥ औस
केकणाकेहोकरमेहीएस्थितिभएआ॥ अकाशविषेमेघहोकरएस्थितिभए
आ॥ सर्वलोकगोलागाआणिरकोत्रिभिकरोगोलागा॥ तिनविषेरूइतेआदिरसहो
करमेहीएस्थितिभएआ॥ तिनविषेरूइतेआदिरसहोकरमेहीएस्थितिभएआ॥
तिनकीनारीविषेमयनिककेआपहीनाटीअहूविषेअवेशकीआ॥ जेसीजेसीनाडी
होतीहे॥ तेसरसहोएकरएस्थितिभएआ॥ रक्तिवीजेकफपितमूत्रआदिकसमना
डीअहूविषेमेहीएस्थितिभएआ॥ नंदनवनकीवीथीअहूविषेएस्थितिभएआ॥
सर्वप्राणिअहूकीजिहवाअग्रविषेरसहोकरएस्थितिभएआ॥ स्वादकोग्रहण
करोलागा॥ अपणेआपकरआपकोअरहिमातेविषेवपहोकरएस्थितिभएआ॥
हेरामजीमैचेतनेनहीजडकीनिआंएएस्थितिभएआ॥ बीजहोकरमेहीउत्पतिकरो
भएआ॥ इसीप्रकारजलहोकरएस्थावरजंगमजगतिसर्वविषेमेहीएस्थितिभ
एआ॥ अरसदाअपणेआपविषेएस्थितिहो॥ अपणेसरूपकोनत्यागतभएआ
जैसेमअविषेजगतिअनभवरूपहेआगाहोताभासताहे॥ तेमहीमेजलरूपहो
एकरजगतकोधारताभएआ॥ हेरामजीएसतेलेकरजोनानाप्रकारकेएस्थानहे

तिनोंविषेमेएस्थितिभएआ॥ अरफूलोंकीसिनाअपवविरकालअनंतविश्राम
करतेभएआ॥ अरगंधहोकरफूलोंविषेएस्थितिभएआ॥ समेरुमहीअरूविषेविच
रतभएआ॥ एहअतभावितअग्निविषेमरुकोंभए॥ त्रिश्रीपाविआनअनंतपा
तिआनजलरूपवर्णनंनामसर्गः॥ २०॥ वशिष्ठउवाच॥ हेरामजीजलकेअन
रंतरुकीभावनाकरी॥ अरएहजोतेजकोधारा॥ तबमेतेजअरूरूपभए॥
चंद्रमातारेसूर्यअग्निएनहूअंगोंकरजगतकीक्रियासिधहोतीलागी॥ जेमणी
जेकेअगणचरअरहीरिकावेहोतेहे॥ रात्ररूपीचोरअरदीपकरूपीहीरिकावेजहां
तमरूपीहीरिकारेजहांतमरूपीचोरहूकोदीपकरूपीहीरिकावेमारतेहि॥
अकाशरूपीजोमेहांतिसविषेककेविषेतोरूपीमालपडीहेंहि॥ सतेजेही
करजलकोंमेसोखवीलागा॥ अरदशोदिशाकोंमेप्रकाशताभएआ॥ अका
शजोशर्बतांकरसामताभासताहे॥ सोमेरनिकटिअकाशमानहोरहिताहे
सभजगतविषेमपसरिरहाहो॥ जहांमेहावहूनहांतेतमकाअभावहोजावे
चंद्रमासूर्यरूपीरखाहूं॥ तिसविषेदिनअररात्ररूपीरतनहे॥ दिनरात्रकाल
वरवरूपीअनंतरत्नहे॥ सोसर्वरात्रिकसतेरहितेहैं॥ राजसीसातकीताम
सीअहूकीक्रियारूपीकमलनीअहूकामेसूर्यहूआ॥ अरसर्वदेवतिअहूपिंडों
कोंविभिकर्ताभएआजगोंकीअग्निहोकर॥ अग्निरतनमोतीमणिआदिकजोप्र
काशकपदार्थहे॥ तिनोंविषेप्रकाशमेहूआ॥ अरप्राणीकेअनरमेएस्थिती
हूआ॥ प्रानअपानकेक्षोभकरअग्निकोंपचावताहों॥ जेसेआत्माकेप्रकाश
करअग्निकोंपचावताहों॥ जेसेआत्माकेप्रकाशकरूपअवलोकमनस्का
रप्रकाशतेहैं॥ तेसेसभपदार्थमेरेप्रकाशतेहे॥ तेसेसभपदार्थमेरेप्रकाशक
रप्रकाशतेहे॥ काहेतेतेजरूपीमेहों॥ मानोचेतनभलताकामेंहूंतणभएहो
तेसेपदार्थआत्माकरसिधहोतेहैं॥ तेसेसभफकरसिधहोतेहे॥ हेरामजीराजा
विषेतेजमेंहो॥ नरहूविषेप्राक्रमिमेहों॥ सिधहूविषेवीरजहोकरस्थि
तिहो॥ बलरूपहोकरजगतकोंमेपुष्टिकरताहों॥ बडवाअग्निदाहरूपशक्ति
होकरजगतिकोमेनष्टिकरताहों॥ तेजवानोंविषेतेजमेहों॥ बलवानहूविषेबलमेहे
आ॥ अलेपभीमेहूआ॥ अरमथभीमेहूआ॥ अरचंद्रमातेरहितजोएस्थानहे॥
तिनविषेमथमेहूआ॥ अग्निअरदीपकअरकेअरसूर्यजेचंद्रमानेत्रोंकरसृष्टिमेंभीहे
देखताहों॥ मधमंडलविषेहेरामजीएसप्रकारतेजरूपहोकरअनंतवारएस्थावरमे
नामपदार्थोंकेएस्थिमेभएआ॥ अरजबवोधदृष्टिकरदेखीतबसर्वआत्माहीभान
होवे॥ अरजबअज्ञानिवाहकरिदृष्टिकरदेखतो॥ तबआपकोविराटसरूपजानताहों॥ सो
सभजगतविषेमेहीपसरिरहाहों॥ सर्वपदार्थमेरेअंगहूएहे॥ तेजवानोंविषेतेज
मेमेहूआ॥ क्रोधवानोंविषेक्रोधभीमेहूआ॥ अरयजीतिहेरामसर्वऊपरमेरीनेहे
कहूंतजोनेतिसकीहोतीहे॥ जिसविषेबलअरतेजहोताहे॥ सोबलमेहोंतेज
भीमेहोंएसकारनेमरीजहे॥ हेरामजीस्वर्नअररत्नमणीविषेप्रकाशमेहूआ॥ अव
नोजोरूपहेसोमेहों॥ रामउवाच॥ हेभगवनएसप्रकारकोतेजजगतकीक्रियाअनभ
वकर्णोलागे॥ जलरूपहोकरअग्निविषेजलावणेलागा॥ अग्निहोकरजलकोंज
लावणेलागा॥ इत्यादिकक्रियाजोतेरेअपरहोतीरहीहूएअग्निष्टमातिसकोंइख
करअनभवकीआ॥ सोकहहु॥ मेरेवोधकेअर्थ॥ वशिष्ठउवाच॥ हेरामजीजेसे

यो॰ सं॰ ७९

79

चेतनपुरखस्नप्रविखेपर्बतभ्रिरुदेहऐंद्रीनानाप्रकारकेनइ पदार्थदेखतोहे॥सो
एसविखतोनही॥केवलग्रनभवरूपहे॥परनिंद्राहोवतेउग्राहड्रीनकीनिराप्स
ग्रग्रिष्टिकोंजाणताहे॥तिसकारागहैरवरूपतोविखेमानताहे॥ग्ररग्रवरकछुहे
नहीइष्टाहीद्रिशरूपहोकरस्थितिहोताहे॥परनिंद्रादोखकेजाणताहीसक
ता॥जबजागताहे॥तबसभमप्रतिष्टिकोंग्रपणाग्रापहीजाणताहे॥तैसेएहज
गतिग्रपणास्वरूपविखेनही॥जबजागबोधस्वरूपविखेनबपदार्थभावनाजाती
हेगी॥सभजगतिहीबोधस्वरूपभासेगा॥हेरामजीजिसपुरखकोंदेशकालकेपरक
दरहि तग्रवेरसताउदेभएहे॥तिसकोंज्ञानीकहीताहहि॥जबएहपुरखपर
मात्मग्रवलोकनहोताहे॥तबसभजगतिग्रात्मस्वरूपभासताहे॥जिसपुरख
कौंसभकीस्रिष्टिविखेप्रबलात्मस्वरूपस्मरनहुग्राहै॥तिसकोंग्रतिवाहककहीता
हे॥तिसकौंपाहनकेप्रवेशकरनेविखेभीखेदनहीहोता॥ग्ररुलाविखेग्रशिव
खेप्रवेककणीकरभीखेदनहीहोता॥हेरामजीमेभीजाराहताफिरिग्राहों॥ग्रका
शविखेग्ररग्रकाशकोंलेचरबस्वाउहूपयरोंकेभजाएफिरिग्राहों॥सोग्रतिवा
हककरकेंफिरिग्राहों॥जिसकोंग्रतिवाहकशरीरप्रापतिहोताहै॥तिसकोंग्रा
वरणकोईकरसकतानही॥काहेतेजोसभग्रंगउसकेहोतेहे॥तिसमरुकों
सभग्रात्माविखेसमाहूग्राहे॥ग्ररपरबलात्मस्वरूपविस्मरननहीभएग्रा॥तिस
करसभजगतमरुकोंग्रपणासरूपहीभासताहे॥ग्रपणासंकल्पकरकेलोग्र
पणेग्रगहीभासतेहे॥जैसेकिसीपुरखमनोराजकरकेंग्रग्रकाशस्नडरचिग्रा
ग्ररउसविखेएस्नानकरेतोहोताहेकि॥ग्ररउसकोंखेदभीनहीहोता॥सभ
ग्रपणेसंकल्पविखेरागउसकोंभासतेहे॥ग्रतिवाहकशरीरकरकेंवेराटसभकों
ग्रपणाग्रापदेखताहे॥तैसेसभजगतमरुकोंग्रपणाग्रापभासे॥वहुरिखे
दकैसेहोवे॥जैसेस्नप्रवालासप्रविखेपर्बतनदीग्राद्रग्रिहोताहे सोउहीरूपउ
हे॥ग्ररग्रापभीएकग्रकारधारवणीजाताहे॥ग्ररबलात्मस्वरूपउसकोंभलजाता
हे॥परछिंनताकरकेंरागद्वेखसाधिपडाजलताहहि॥ग्ररसेतोतनरूपवणि
ग्राजोग्रापकोंजडरूपनदेखताभएग्रा॥मेग्रापकोंचेतनरूपदेखताथा॥ग्र
रजडकीनिग्राएभीग्रापकोंमेजाणताभएग्रा॥एसप्रकारमरुकोंग्रपणावि
स्मरणभएग्रा॥तबमेविराटरूपसभकोंग्रपणाग्रगदेखताभएग्रा॥तातेखे
दकैसेहोवे॥खेदतबहोताहेजबग्रपणासरूपभलताहे॥ग्ररपरछिनवणिजा
ताहे॥सातोमेवथवानहीरहा॥जोमेएसंदकरसभरूपधारेहहि॥हेरामजीजैस
कोंएहनिश्चैहेतिसकोंदुखकहा॥हेरामजीसरवदुखरूपजोपदार्थहे॥सो
मेग्रपणाविखेदखताभएग्रा॥जैसेग्रदरसविखेप्रतिबिंबभासताहे॥जिसकोंएह
द्रिष्टिहोवेतिसकोंदुखकहा॥हेरामजीजबएसकोंग्रतिवाहकशक्तिप्रापतिहोतीहे
तबसमर्थहोताहे॥जोपर्वतविखप्रवेशकरेतोंहोताहे॥पातालविखेजावेग्रका
शविखेउजहाकहुंप्रवेशकीग्राचाहे॥सोसभहोताहहि॥काहेतेजोस्रिष्टिकेसं
मात्रहे॥हेरामजीग्रवरकछुस्रिष्टिवणीनही॥ग्रात्माकाकचनहीस्रिष्टिरू
पहोकरभासताहे॥हेरामजीएहस्रिष्टिसभब्रह्मस्वरूपहे॥हमकोंतोसदाग्रेसे
हीभासतीहे॥जबलगजागरातमबलरुकोंभीग्रेसेहीभासेगी॥सोतेभीग्रभिग्रा
गिग्राहे॥एसप्रकारमेग्रग्रिहोएकरणस्थितिभएग्रा॥जिसकीप्रिखानेकालम

निकस्नकतीहे॥सोग्रकाशमेहीभएग्रा॥चिदग्राणग्रपणाग्रसरूपग्रनभवविखे
मरुकोंजगतभासे॥तिनविखेमेएस्थितिहूग्रा॥ग्रेसप्रकारभीग्ररइन्द्रग्रादि
कभीमेप्रकाशकरप्रकाशतेहे॥ग्ररभावरूपपदार्थभीमरूपणविज्ञानताभ
एग्रा॥काहेतेजोभावरूपपदार्थमेहीथा॥एसकारनकेरसभमेरहीकरसिद्धहो
तेहे॥एसप्रकारमरुकोंग्रभताभए॥ २०॥इतिश्रीपातिविग्रानग्रतरपातिवग्रान
चिदग्राणतेलथाति ने नामसर्गः वशिष्ठ उवाच॥ हेरामजीवहुरिमेपवनि
कीधारणाकाग्रभ्यासकीग्रा॥तबपवनरूपहोकरविचरनेलागा॥कमल
फूलग्ररविक्षोंकोंहलावणेलागा॥तारानिकत्रकाग्रधाररूपभएग्रा॥तबमे
चक्रफिरनेलागा॥चंद्रमासूर्यकेचलावणेहारामेहीभएग्रा॥समन्द्रनदीग्रा
केप्रवाहमेरहाकरचलनेहे॥मनकावेगवणभीमेहां॥प्राणीग्रहूकेशरीरहु
विखेगनिवासहे॥मेहीप्राणग्रपानउदानसमानविग्रानपंचरूपहोकरशरीर
तिसभयाहो॥ग्ररसभनाडीविखेगनिवासहे॥ग्ररसभनाडीकोंरसग्रपणाग्रपणा
भागमेहीपहूचावताहां॥हलणाचलणाबोलणासभमरुहीकरसिधहो
ताहे॥सर्वपदार्थहुविखस्पर्शप्राक्तिमेहीहो॥सर्वपुष्पिमेरहीकरसिद्धहो
तेहे॥क्रियारूपीवृदोंकामेमेवहां॥ग्रकाशरूपीजोग्रहहेतिसविखेगनि
वासहे॥दशोदिशासभमेविखेहुहे॥इत्तिग्रहूकोंगथलेकरसरवमेही
लेताहां॥दीपककोंमेहीप्रजलनकताहां॥ग्ररग्रगनभीमेहीकताहो॥पत्नीग्र
हुविखेमेसदानिवासहे॥जैसेग्रग्निविखेग्रनाराहितीहे॥सभकेसकारण
हारामेहीहो॥हृदीग्रावलकार्णिहारामेहां॥हेरामजीएसप्रकारमेपवनहोकरप
स्थितभएग्रा॥तातरूपग्रलोकमनमकारसर्वपदार्थमेहीभएग्रा॥वहरमामनेना
देग्रयिपिण्डब्रह्माविसन्नरुद्रवणकुमेरजमग्रादिकजगतिहोकरसभमेहीपस्थिति
भएग्रा॥पंचभूतकेसभलोकेग्रतरभीमेहां॥ग्ररबाहरभीमेहां॥ग्ररबाहरभीमेहो
प्राणग्रपानकोंलोभकरकेंउरवहोताहहि॥सोमेहीसकारनिराकाररूपहों॥ग्रतो
पीतवर्णामरगपदार्थसभमेहीहां॥पंचभूतविदग्राणिप्राकरेहहि॥सोउसीकारूप
हैं॥जैसेसभकोंस्रिष्टिसभग्रपणाहोरूपहोतीहे॥एतनकछुनही॥होउमोसप्रि
थिवीकरभतोविखेएस्थितिभएग्राहो॥वाएरूपप्राणहोकरएस्थितिभएग्राहो
श्रीग्ररूपलाधाहोएकरणस्थितिभएग्राहो॥एसप्रकारमेसर्वविखेपस्थितिभएग्राहो
सामेभीचेतनवपुहो॥तोहूतलभीचेतनवपुहे॥जैसेसभविखनगतेग्रकाशरूपहे
तैसेउहूजगभीग्रकाशरूपहे॥हेरामजीसर्वकालमर्वप्रकारसंधानमात्रस्थिति
है॥हूसराकछुनही॥ग्रात्मासदाग्रपणाग्रापविखएस्थितिहे॥एसतेएनरजाण
नोग्रात्ममात्रहे॥एहज्ञानवानोकानिश्चेहे॥जोग्रसमिकदृष्टीहेतिसकोंभिंनभि
नपदार्थभासतेहे॥एसप्रकारसेमेसशर्नेजगतग्रपणाविखेहीदेखताभएग्रा॥हे
रामजीमेकवनमेजोबृह्मरूपथा॥तिसविखेजगतउत्पतिहोतेहूएग्राए॥ग्रर
जोमेब्रह्मतेएतरकहूग्रानोएकत्रिगाणउत्पतिहोवे॥मेजोब्रह्मरूपथातिसतेस्रि
ष्ट्रीउत्पतिहोतभए॥हेरामजीजबमेबाधिष्टिकरदेखानबमेनेग्रात्मातेएतर
कछुनदेखिग्रा॥तबग्रतिवाहकद्रिष्टिकरदेखो॥तबमेबेताएसंदकरकेंग्रग्रिग्र
गिग्राविखेद्रिष्टाभासहहि॥जैसेजहाचंदनेकाग्रणहोताहे॥तहासुगंधहोतीहे॥ज
हाजहातत्तोकेग्रतेहेतहोतहाश्रिष्टीहे॥हेरामजीएकएकग्रणविखेग्रनंतस्रि

वं॰
म॰
८

शमरूकौंभासहि॥ जेसे एक अरु खेसे न करता है अरु डेमलकौं नस्या विरोलि स्थि शिभा
सतीहै॥ वहुरि जेसे नेत्र सांतरकौं देखतेहैं॥ तौ जीव एक ही विखे वहुतेन भासे ति
गो नेसे अणिअणि विखे सिष्टा अनेक है॥ हे रामजी जो सिष्टा है॥ सो अभास रूप है
अरु अभास अधिष्ठान के आश्रे होता है॥ सो सभका अधिष्ठान के आश्रे होता है॥ सो
सभका अधिष्ठान ब्रह्म भासता है॥ अरु सो भासता देशकाल के परके रहिता है॥
अरु अखंड अद्वैत सत्ता है॥ ऐसी ते कहा है॥ जो अणि अणि विखे अनेक सिष्टा है॥
काहे ते जो अणु कौं अभिनव सत्ता नही अरु ब्रह्म ही जाए॥ ब्रह्म अरु जगति विखे काछु भे
दन ही॥ जेसे वायु अरु स्पंद विखे भेद नही॥ श्री जगति अरु ब्रह्म एकता अति पा
दनं ना॥ म स श्री अ॰ २॥ वसिष्ठ उवाच॥ हे रामजी एस प्रकार जब सिष्टि फुरी आम
रुविखे तदमे तिनके भ्रम कौं त्यागि आ॥ अरु संकल्प कौं रोकि कर अरु तने खह
आ॥ अरु अपणे जो कुछ दीयी तिस कौं नेर आपणा॥ जब देखी तब तिसविखे एक
पुरख मरु कौं वेदादि इष्टि आप विअर्थ है॥ अरु दुख का कारण है॥ हे रामजी बाल
लक अवस्था वितित होती है॥ तब जब आ अवस्था आवती है॥ जब अति अपण
तो वृध अवस्था आवती है॥ तब जर जेरी भाव कौं प्रापति होता है॥ जेसे वसंत ऋत
की मंजरी जव अपणे विखे सुकजाती है॥ तेसे वृध अवस्था विखे शरीर जर जरी
भाव कौं प्रापति होता है॥ अरु परा दुख पावता है॥ बालक अवस्था क्रीडा विखे म
गनि होता है॥ जोवन अवस्था विखे काम आदिक दुकर मगनि होता है॥ एस प्र
कार ता एह तीनि अवस्था प्रापति होती है॥ बहुरि मिरत हो जाता है॥ अरु विप
सी प्रकार एह ही वितीत होती है जीवों की॥ परम पद कौं प्रापति नही होती है॥
हे रामजी एह अरु बल्ला विजली के चमत्कार की निआई है॥ तिस लखण भगवस्था
अवस्था विखे जो भोगों की वांछा करते है॥ सो महा दुख कौं प्रापति होते है॥ एनों विखे
सावदेखकर क छुता है॥ जो मेखस्य होवेगा॥ सो कदाचित होवेगा॥ जेसे ज
लके तरंगों की गोद विखे बैठ कर एमस्थिति हुआ चाहे सो न होवेगा दुख मरेगा॥
तेसे विखि विखे अहंके भोगों कर सखी मतन ही होता॥ जे सेको ऊ महा धूपि कर
त्रिपति हुआ सर्प की फण की छाया के नीचे बैठे दिक सुख की वांछा करे सो न हो
वेगा॥ जब आत्म ज्ञान रूपी ब्रिक्ष की छाया के नीचे बैठे तब सुखी पुरत होवेगा॥
जिनो पुरखों विखे अहंकी सेवना करी है॥ सो परम दुखकौं प्रापति होते है॥ जि
नो आत्म पद की सेवना करी है सो परम पद कौं प्रापति होते है॥ जेसे नदी आका
प्रवाह समुद्र की चलि आ जाता है॥ तेसे मूरख मन विखे अहंकी ओर धावता है॥ ए
हु सेसा समाप्ट आमात्र है॥ ऐके सविविखे शांत कदाचित नही प्रापति होती॥ जेसे मा
रूथल विखे की नदी के जल पान कर त्रिखा नही निवृत होती॥ तेसे विखि अहं
के भोगों कर शांत कदाचित नही॥ जो आत्म पद ते वेमुख होते हैं ते विखि अहंकी की
ओर धावते हैं॥ अरु जो आत्मपद विखे स्थिति है॥ सो विखि अहंकी ओर न ही द
उड़ते॥ जेसे समुद्र विखे तरंग उपजि करन ष्टि होते है॥ जेसे नदी आका वेग सम
मुद्र की ओर गमन करता है॥ अरु पदार्थ की शिला नही गमन करती है॥ ज्ञान रूपी
पथर की नही॥ गमन करती॥ हे रामजी सर्व कलनी विखे संगध तब लग होतो हहि
जब लग सर्प के मुख की वाए न ही लागी॥ तेसे वुधि विखे तब लग विर्च रहे॥ ज
ब लग चितरूपी सर्प की भोग एछा रूपी वाए न ही लागी॥ जब लागती है॥ तब विव

ग रूपी सुगंध कौं ले जाती है॥ अरु विखि रूपी त्रिआ वौं को छेदि जाती है॥ अरु वासि
न बल लगनि सात की ओर धावता है॥ तब लग धन अरु अरचि लेकौं त्यागता है॥ त्या
गने ते वहुरि नही मिलता॥ तेसे आत्म रूपी जो है चिता॥ एसको चित रूपी वासिना
गता है॥ तब भोगरूपी निसान की ओर धावता है॥ जब मारता है तब फेरि आवरण के
दन होता है॥ हे रामजी सरजो पदार्थ सुख दाए न ही तिनकी ओर एह दउड़ता न क
तीहै॥ तब भी सिधन ही होते॥ अरु जो अजनतन सिद्ध आत्मपद है॥ तिसकौं त्या
गते है॥ जिसकौं एह सुख जाणता है॥ सो सभ दुखों के एस्यान है॥ जिस अपणे हो
तो कौं भला जानते है॥ सो अनर्थ का कारण है॥ जिस देह कौं एह सुखदाए जाण
ता है॥ सो सर्व रोगों का मूल है॥ जिनकौं एह भोग जाणता है॥ सो एस कौं दुख देण
हारे परम रोग है॥ जिनकौं एह सत जाणता है॥ सो सभ मिथ्या है॥ जिनकौं एह स्थि
र जानता है॥ सो एस्थिर नही चल रूप है॥ जिनकौं एह रस जानता है॥ सो सभ विर
स है॥ जिनकौं एह हितप वजानता है॥ सो सभ अवाध वहे॥ दुःखदायन रूप है॥ अरु जि
सकौं एह सारल देण हारी एस्त्री जानता है सो सर्पणी है॥ परम विखके देणहारी है॥ ति
स कर खिन्न होता है॥ वहुरि जीवता नही॥ अर्थ एह जो आत्मपद विखे स्थिति
नही होता॥ हे रामजी स्वरजो परम अपदा का कारण मे देह कौं जानता है॥ एस के
निवृत हुए परम पद कौं प्रापति होता है॥ जिस पुत्र धन आदिक कौं परमपदा जा
णता है॥ सो परम त्रुच्छ अपदा है॥ जिनो विखे सुख कदाचित नही॥ एह अवगाक
गवा लोमेन ही करता॥ देखि कर मे विचार की आ॥ विचार करके मे अनभव की आ है
अनभव करके कहा है॥ जो एह संसार माया मात्र है॥ अरु वडे वडे एस्थान है विखे मेगए
आ हो॥ परसार पदार्थ मुख कौं इष्टि कौं ऊन ही आए आ॥ सर्व ओ विखे तेन देखने ते आ
दिकाए ही इष्टि आए है॥ अरु प्रिथवी विखे आनिक देवि आतब प चभूत नही दि
आए है॥ अरु शरीर विखे क्रमा स हाड मूत्र आदिक इष्टि आए है॥ ताते देवि
के मे तिन कौं दिकार करता हों॥ जो अे से शरीर विखे अहं प्रतीत करते है॥ एस की आ
रख ला अेसे है॥ जेसे दानो हाथों विखे जल ली जो अे॥ सो चलि आ जाता है॥ द
हु वता नही॥ अरु जेसे जल विखे तरंग बुदबुदे उपजि कर नष्टि होते है॥ जेसे विज
ली का चमत्कार होकर नष्टि हो जाता है॥ तेसे ही ना पावत एसी रहे॥ अरु जो अेसे
शरीर कौं पाए कर जो सरलों की त्रिआ करते है॥ सो महा मूरख है॥ बालक अवस्था
न रग की निआ ए नष्टि हो जाती है॥ जो वणि अवस्था विजली के चमत्कार वत ने हो के
र रूप जाती है॥ ब्रिध अवस्था विखे कस खन हो कर मिउ तन जाते है॥ हे तत चीस्कर णि
रवते है॥ जेसे नीच अवस्था नो विखे नलि आनि एस्थिति होता है॥ तेसे सभ शरीर वि
पद अवस्था विखे आनि एस्थिति होते है॥ हे रामजी सरहोर सभ पदार्थ जज रीभूत
हो जाते है॥ अरु दिन आदिन दिन वढती जाती है॥ न आनन होती है॥ तेसे वसंत
नकी मंजरी विटती जाती है॥ जो भोग सुख प्रापति होकर विछुर जाते है॥ ति
न का दुख होता है॥ हे रामजी एस प्रकार एन कौं उसति जाण कर मन रूपी विख
एस्थित भए आ हो॥ जब पाचों पदी अहं कर एक विखे वढी उतम मनु शांत भाव कर
आनि एस्थिति होवहि॥ तो भी हम कौं खेच न ही सकते॥ जेसे मूरत कौं लि
खी क मल नी कौं भ्रमरा खेच न ही सकता॥ अरु ते से हम सारि विखि अहं कौं वि
खे वल्लाए न ही सकते॥ हे रामजी सर्व सर्व मारा शरीर मे अविद्या कर के उपरांत आए हैं॥ वि
चार करके राग नही॥ जो त्रिकाल गमी ब्रह्मा विस्म रूढ आदिक होवहि तो भी ए

वं॰
म॰
८९

सचरमश्रिछिकवनहीजाणसकते॥जबविचारकरदेखतेहैंतबजानतेहैं॥एम
कारनतेविचारविनामेतमाशाधारीबड़ाबरीश्राहै॥श्रबतुममतमाकरो॥विचा
रकेभूतभविषनवर्तमानकौजानीताहै॥श्ररएनोनेत्रौकवमाणजानीना॥
है॥जोश्रग्रभागहोताहै॥विशषनहीजाणीता॥एसकारनतेतमश्रभिमानमा
राणधारीरगिड़श्राहै॥२८॥इतिश्रीश्रकाशकुटीसिद्धसमाधजोगवर्ननंनामस
र्गः॥वशिष्ठउवाच॥श्रोहेसाधमस्फटिकभीतैराणिड़ताविचारविनाहै
श्राहै॥जोविचारविनामेरोढिगपया॥एहकुटीमेश्रतिवाहकसंकल्पाव
रेखथा॥समेश्रपणीएस्थानकौचलाएसको[निसकीकि]रणनेकुटीगिरप
डी॥तमभीगिरपडे॥बलाजोबीतिगइतिसकीकिश्राचितवनाकरीश्र॥जा
नवानबीतीकीचितवनानहीकरणे॥जोहोणीहोएसोभली॥हेसाधश्रबचली
श्रेजहांहमजानेहैं॥हेरामजीएसप्रकारहमचवाककैदोनोश्रकाशमारगकौ
श्रोरे॥जैसेपंछीगइताहै॥तबपरस्परनस्कारककैहमभिनभिनहोगए॥श्रो
हुश्रपणीएस्थानकौगएश्रा॥श्ररमेश्रपणीएस्थानकौचलामेबहुतेएस्थान
देखताश्रावरो॥परमुनकोकोइनजाणो॥हेरामजीएहमसप्तरनश्रीतानतेमे
तेरनाएकहाहै॥नएमकोविचार॥रामउवाच॥हेभगवनतुमजोसिधकै
साधमागमकौश्राश्रकाशमागविरवेमाकिसप्रभीसाथपिरएवभूतकाशरीर
तोसिघवीएश्रराया॥इहुतोप्रिथवीश्रनरूपहोगएश्रावचवरैकिसकरकै॥वशि
ष्ठउवाच॥हेरामजीमेश्रतिवाहकशरीरसाथविचरनाफिराहो॥तिसकरमे
सिद्धदेवताकैएस्थानविरवेएरवतिकुमेरकैएस्थानविरवेफिराश्राहो॥परमे
रेताएकोश्रनेदेखे॥श्रनभकोदेखेसोसंकल्पपुरखसाथमेरापिवहारहुश्रा॥श्र
वरकिससाथकहुगोहारकिसीकोजभासिश्रानहीं॥रामउवाच॥हेमुनीश्वरश्र
तिवाहकशरीरएहीश्रहकाविरवेनहीसिद्धसाथचवाकैसेकरी॥श्रबतुमकौश्र
सनेकैसेदेखिश्रा॥वशिष्ठउवाच॥हेरामजीएसप्रकारजवनकहिताहै॥जोम
ण॥सिद्धकौमेएसनभिनतादिष्टिश्राएश्राहो॥जमेरामनसंकल्पहै॥मेरावि
वेपहफुरनाहुश्राजोसिद्धमुजकौदेखे॥श्ररववाकरहिएसकरागसमुज
कौदेखिश्रा॥श्रैसकासंकल्पभीमेरविरवेश्राएश्रा॥तबजाणिश्रा॥श्ररजौ
नोसिद्धहोवहिश्ररशेनकासंकल्पभिनभिनहोवे॥तबश्रोसकसंकल्पको
गहुनहीजाणता॥श्ररश्रोसकेसंकल्पकोश्रेहुनहीजाणता॥परकिसीका
विशेषसंकल्पहोवेगा॥तोश्रोसकीसकौसंकल्पकोजाणताहै॥तेसेश्रोस
कासंकल्पमेरेदेखणेकौनथा॥श्ररमेराजोत्तिरसंकल्पथा॥तिसकरश्रोस
केसंकल्पकौमेखेचकरश्रपणीइदरलेश्राएश्रा॥जोएलीहोताहेतिस
कीजेहोतीहै॥एसकरश्रोसमुजकौदेखिश्रा॥हेरामजीजोश्रतिवाहकवि
खएस्थितिहोताहै॥तिसकौतीनोकालोकाज्ञानहोताहै॥परविविवहारवि
खलगेतबभस्मजाताहै॥जोकछुवर्तमानपदार्थहोताहै॥एसकारणतेश्रो
समेराधारीबड़ाबदीश्राथा॥जोसमाधकेविवहारविरवेलागाथा॥श्ररमेरे सं
कल्पकरश्रोहकुटीभीनत्रगिरीथी॥जोमेश्रपणीएस्थानकेविवहारकोव
लाथा॥श्रैसीचितवनाकर्के॥जोमेचितवनाविरवेनहोता॥श्ररश्रतिवाह
कशरीरविरवहोता॥श्ररश्रोसकुटीकीभविषत्तिविचारदेखता॥श्ररश्रोसकसंकल्प
कोरहिणदेता॥तबसिधनगिरता॥श्ररमेजोश्रवरविवहारविरवेलागाएसक

कैश्रतिवाहकविसमरणहुश्राएश्रा॥तबकुटीगिड़श्रीपड़ीश्ररसिधभीगिडुश्रा॥हे
रामजीएसप्रकारसिधभीगिडुश्राश्रबववाहुए॥तबमेउहानचलिश्रा॥श्रति
वाहकशरीरकरश्रकाशमागविरवेभ्रमनेलागा॥सिधोकेमेजुहदेखे॥दे
वतिविद्याधरगंधर्वकिंनरविदिमुनिएइत्रमकुमेरवाजिश्रादिलेकर
सभनोकेएस्थानदेखे॥मेसभनोकोदेखताफिराश्रपरमुजकोकोइनदेखे॥
मेबहुतदुखीहोकरीजोश्रकिसीप्रकारकानरपहुकोश्रोसपो॥ एसकोश्रो
मफकोदेखे॥परश्रपराहीकोश्रोनसकोनकोश्रोदेखे॥जैसेसपविरवेको
श्रोशहिकवितोश्रोसकाश्राहुजाश्रनवालेकोनहीसुणपिता॥जैसेश्रनिसंक
ल्पवालाहुमरेकोस्निष्टिविवहारपाछिकोनहीजाणता॥तेसेमुजकोका
श्रोनजाणसके॥हेरामजीएसप्रकारसेश्रकाशपिशाचहोकरविचरिश्रा॥व
हुरिदेवतिश्रहुकेएस्थानोकापिशाचहोकरविचिरिश्रा॥श्रसभकोदे
लोश्रसमफकोकोश्रोनदेखतमएश्रा॥रामउवाच॥हेभगवनपिशाचका
शरीरकिश्राहोताहै॥श्रपिशाचकौजातिकिश्राहोतीहै॥श्रपिशाचोंकी
क्रिश्राकिश्राहोतीहै॥श्ररपिशाचोकरहणकाएस्थानकिश्राहोताहै
हि॥वशिष्ठउवाच॥हेरामजीपिशाचोंकीकथामाश्रिश्राजनकुछनथा
तथापितरूपसंगपाएकरपूछिश्राहै॥तातेमेकहिताहो॥पिशाचोकाश्र
कारनहीहोता॥श्ररजोरूपधारतेहैंहिसोसुणएकतोश्रकाशकीनिश्रा
एस्थनहोतेहै॥एकपछावेकीनिश्राएमेकोदतेहै॥एकमवोकरएस्थि
तिहोतेहै॥एककाराप्रथारकरएस्थितिहोतेहैं॥श्रैसेरूपधारकरविच
रतेहै॥श्ररहुसभकोदेखतजाणतेहै॥श्रोनकेकोश्रोनहीजाणता॥चलतावे
हा॥परशीतउसनकरकैश्रहुभीदुखसाएपावतेहैं॥श्रपएकाहुखलोभमा
नमोहक्रोधश्रादिकविकारोनिविरवभीवहितेहै॥शीतलजलभलेभो
जननकोएछाउहभीकरतेहै॥श्ररनगरोविरवभीवहितेहैं॥ब्रिछहुविरवभी
रहितेहैं॥दुर्गंधएस्थानहुविरवेभीरहितेहै॥काहूसिद्धरहोएकरदिरवावते
तेहै॥काहूसश्रानहोएकरदिरवाएदेतेहै॥मनविरवेभीजाएश्रवेपाकतेहै॥
वहुदिमत्रपाठदानश्रादिककरवसभी होतेहै॥एनोविरवेभीकोश्रोत
मेहै॥कोश्रोमपनहै॥कोश्रोनीचहै॥जोउतमहैसोदेवतिश्रहुकेएस्थानो
विरवरहितेहैहि॥श्ररजोनीचहैसोनरकोविरवरहितेहै॥श्रपएनकीजो
त्पतिहै॥सोश्रचेतविनमात्रजोहैश्रिपातरहितसपवेतनतिसतेहुएहै॥हे
रामजीसभकाश्रपणाश्रापश्रहीचेतनसताहै॥जैसेजैसेसंकल्पनरश्रिकैको
निश्राएउसविरवकोश्रवास्वादोतीहै॥तैसेतैसापदार्थहोभासताहै॥हेरामजी
नेकोश्रोपिशाचहैनेकोश्रोजगतहै॥श्रत्ममसताहीजिकीनिश्रपणाश्रापविरवए
स्थितिहै॥सवपश्रात्ममात्रविरवजोकचनहुश्राहै॥सोश्रहंश्रसेहोएकरवरू
पिश्राहै॥तिसकोजीवकहितेहैं॥तिसश्रहंकोदिरतोककैमनफुरिश्राहै॥सो
मनश्रत्मारूपहोकरएस्थितिभएश्राहै॥तिसब्रह्मानेमनोराजकर्केजगतकी
उत्पतिकरीहै॥ब्रह्माहीजगतरूपहोकरएस्थितिभएश्राहै॥सोब्रह्मविरवश्र
तिवाहककाश्रत्रपहै॥केवलश्रश्रकाशरूपहै॥हेरामजीब्रह्माकाशरीरश्रतिवाहककाहै

वा॰ म॰ ८२

तिसकेहिइसंकल्पकरअध्यनकजगतहिइभएआहे॥तिसहीमननेतेअवनम
नहूएहे॥हेरामजीजैसेअव्याकाशशरीर।अतिवाहकया॥तैसेसर्वकाशरीर
यातिवाहिकहे॥परसंकल्पकीहिइनाकर्केअध्यनकपदार्थभासताहे॥हेरम
मनरूपरमनहीरहेकालकाजाग्रतहोकरएस्थितिभएआ॥हेसमभमनरू
परमनदीरहेकालकाजाग्रतहोकरणस्थितिभएआ॥हेतिसकदहिइभास
ताहे॥जिनकोतोसंकल्पदृढभवप्रतीतविखेग्रहहकारहे॥तिनअज्ञानीहू
कोंतोजगतअध्यनकरूपभासताहे॥अरजोप्रबोधरूपहेतिनकोसभ्म
गतसंकल्परूपहे॥अरवस्तोतेकहेतोइपजाकहुनहीं।नतहे॥नमेहो॥नब्र
त्याहेनजगतहे॥सर्वब्रह्महीरूपहे॥जेसेआकाशअरसुंनताविखभिननाकह
नहीं॥जेसेअग्निअरउस्नताविखभेदकहुनहीं॥जेसेवायअरस्वाएकोपुणीवि
खभेदकहुनहीं॥तेसेब्रह्मअरजगतविखभेदनहीं॥ब्रह्मप्राहहकाअरजगत
प्राहकाएकहीअर्थहे॥तेहब्रह्महीजगतरूपहोकरफुरताहे॥तातेब्रह्म
अरजगतदोनोअजहे॥नब्रह्मउपजआहे॥नजगतउपजिआहे॥दोनोअब्रह्मरू
पहे॥जोब्रह्मतेएतरभासताहेसोभ्रांतमात्रआ॥तबमेविचारकीआजोए
हकहुनहे॥अरमेरागारीरजोथ्यासोकहाहे॥तबमेविचारकरदोखिआनो
एहमहासिहहे।कोउ॥अरमेरागारीरभिलकजाणकरएमडास्टीआ॥सो
सिहकेसेबेदाहे॥जोपच्छामनदापकरदोनोगिरेपहोकुंडणरकेएहे
अवरसिरग्रीवाम्रपेकीएहे॥अरहोनाहाथियपटिपरऊर्धकीएहे॥मानो
कमलफूलेहे॥वहुरिकेसेमानोअंतरकाप्रकाशवाहजआनउदेहू॥अव
नेत्रमदेहूएहे॥नेत्रनहीमदेमानोसमअग्निनीमदहोरीहे॥हेरामजीऐसम
कारसमाधिलागाएकरएअआसनकरआत्मपदविखेएस्थितिवेदाहे॥ने
सेमिलतकहोताहे॥तेसेबेदाहे॥वहुरिकेसाहेतिगवर्णवहुलोनेतहितमजे
कोनिग्राहेअकाशताहे॥जेसेधूएनेवहतअग्निप्रकाशतीहे॥तेसेहसिधएका
रूपीवदलोअरधूएतेरहितअग्निप्रकाशवानएस्थितिहे॥ऐसप्रकारमेरोसको
आत्मपदविखएस्थितिदेखतभएआ॥जेसेदीपकनिवाणहोताहेएस्थिति
तेसेएस्थितिदेखकरमेविचारकीआ॥जोएहएकहाहीबेदारेहे॥हमत्रकेस्व
पाणएस्थानसमरिलोविखजावहि॥ऐसप्रकारकुटीकेसंकल्पकोत्यागक
रमेगोरिआ॥हेरामजीऐसप्रकारगाइनेहूए॥मातगविखेमकुकोविचारउप
जिआ॥जोअवतिथकीकिआदिशाहे॥वहुरिगल्लटिकरदेखगो॥तोकुटीसर
तसिथहोनही॥कोहतेजोकुटीगेमकोअधारभूतथी॥सामेरेसंकल्पविखप
स्थितिथी॥तबमेरासंकल्पनिर्वाणहोगएआ॥तबकुटीगिरपडी॥तबतिसके
विखेसिहकेसरीहे॥उहभीगिरपडा॥हेरामगेसकोगिरताहेदखकरमेभोग
सेकपाछेहूआ॥जोऐसकाकोनकदेखआ॥तबउहआगेचलिआजावे॥अव
पाछेमेचलिआजावो॥अपेकी॥परमेआपीनचलिआजावो॥अरउहप
राधीनचलिआजावे॥जेसेमेचलतचदगिरनीहहि॥सोउहरतीनहीं॥जेसेअ
कापातवहागिरते॥सेउहचलिआजावे॥सुमहेसंपोकेपारदपासहसजोज
नसनेकीमिथियाहे॥तिसगेपरआनिपरा॥जेसेआकाशतरपेकाबावामिडे

तेसेमुनिनहीआनिपरा॥अरगेमलहोप्रकारएसआसनकोंबांधेहूएसीसग्रीवा।
गेसकोगसोप्रकाबदहाहोहूएहे॥कहिलेजोसीसग्रीमाउअेकोंबहे॥हेराम
जीआगेवहनताचलनाआंगोंकाहे॥तोआगाउहवनातहूहि॥नवपाणीवह
लताचलनानहीं॥तिसकाबरोनअगगिगेसकाममहीरहा॥जेसेकुटीवि
खेवेठाथा॥तिसीआसनकरप्रिथवीपरआनिपरा॥तबमेमनविखआएना
कहूएसकेसाथिचर्चाभीकीनीचाहीमे॥परएहतोसमाधविखएस्थितिहे
एसकोकिसीप्रकारजगावउ॥हेरामजीअेसेविचारकरकेमेमेघहोकरवको
करणेलागा॥जिसशब्दिकर
करणेलागा।गेसकेसिरऊपर॥अरवडशब्दकरणेलागा॥जागिआ।तबमेग
पहाडफटणेलागे॥तिसशब्दकरअरवर्षाकरभीगेसजागिआ॥ने
गहोकरतिसकेऊपरवर्षाकरीतवेगहनेत्रखोलकरदेखणेलागा॥तबमेमचवपकोन्ना
मपर्वतपरमोगमेचकोंदेखताहे॥तेसेदेखणेलागा॥अरआणए
गकरगेसकेआगेआणीस्थितिभएआ॥तबगेसमसमाधखोल्ली॥अरआगेदे
हीअपणाअपणेएस्थानविखआए॥हेरामजीतबमुरुकोंअपणाअग्रदे
खताभएआ॥तबमेअहतभावकोत्यागकरबोलतेभएआ॥हेसाधतेके
वनहे॥अरकहाएस्थितिहे।अरकिआकरतेथा॥अरकिसतनमिनएस्थि
तिथाकुटीविखे।सायोवाच॥हेमुनीखरमेअपणीप्रकितभावविखएस्थि
तिहो॥अरसमयकहुकहिनाहो।हेरामजीमुरुकोंऐसप्रकारकहकेरम
रणकरोंलागा॥वहुरिसमरनकरकेकहतभएआ॥हेब्रह्मणमिएजीस्म
रूपरावमाकरणी॥मनोकाप्रातसभावहे॥मेरेपासतेतमाराअवगिआहे
एहेवडी॥परतुमखिमाकरणी॥मेरानमुकोप्रणामहे॥हेरामजीएसप्रका
रप्रणामकरकेनिमलअनंदकेउपजावणहारेवचनकहितभएआ॥हेम
नीखरएहसंसाररूपीनदीहे॥अरएसकावडाप्रवाहहे॥सोकरावितसके
तानजो॥अरचितरूपीसमउजोनिकसताहे॥जनमअरमरणहोतोएसके
कनारेहे॥रागद्वेखएसकेविखतरंगरूपहे॥अरभोगगौत्रिण्याएसविखेच
क्रफिरतेहे॥तिसविखमेवडादुखपाएआहे॥हेमुनीखरअपणाएसवो
कनमित्तदेवतिग्रहकेएस्थानविखगएआहे॥अरद्विभोगभोगेहे॥जेसे
प्रोआदिकहे॥सोसभमेभोगेहे॥परसांतसुरूकोनहीप्रापतिभए॥जेसे
खकोमेवहिताथा॥अरतपाएआसोसुणो॥जेसेपपीहामेघकीबुंदकोंचाह
ताहेहि॥अरमात्रयलविखेगेमकोशांतनहीहोती॥तेसेमुरुकोंविखि
आसलोविखिशांतनहीप्रापतिभए॥हेमनीसवरएहजगतसभअसारहे॥
ओमेजाणकरमेरोचित्तविरक्तहूआ॥जोएलाकालमेभोगभोगेपरशांतन
प्रापतिभए॥अरतिनाणकरमेफिरिआअरविचारकीआजोसारहोवेतिस
विखएस्थितिहोवउजवमेजाणिआजोसारअपणाआत्मभवरूपज्ञानसंवेत
हे॥अरसजाणकरमेतिसविखएस्थितिभएआ॥हेमुनीसवरजेतेकछुवि
तेहेसोविखरूपहे॥विखकेभीपानकीएमिन्नेहोवीताहे॥जेतेएसीध
तिआदिकसुखहेंसोमाहूअरदुखोंकेदेणहारेहें॥अमाकेवनपुरखहे
जोएनविखआपआसावधानरहिताहे॥एहसबरूपतेनाष्टिकहोरहेहि॥
हेमुनीसवरहरूपीएकनहीहे॥एसविखवुधिरूपीएकमकोदेहताहे॥ज

वं॰ म॰ ६६

वसिष्ठवाहजनिकामनीहै॥ ग्रथएहजोएकाकर्त्तीहै॥ नबभोगरूपीवनस्नाके
सकोखोएजानाहै॥ ग्रथएहजोग्रात्ममारगतेभ्रमकर्तेहै॥ ग्रबएहभोगचो
रहै॥ नबएनकासंगएहकर्त्ताहै॥ नबएसकोएहलूटलेतेहै॥ ग्रयएहजोग्रा
त्मज्ञानतेशून्यकर्तेहै॥ नबग्रात्मज्ञानतेशून्यहूग्रा॥ नबजन्मोंकाग्रंतनहीं।
ग्रावता॥ ग्रनेकशरीरोंकोधारताहै॥ जैसेचक्रऊपरचढाहूएमिनकाग्रंत
कहांलोंकेग्रकारधारतीहै॥ नैसेग्रात्मज्ञानतेरहितग्रनेकशरीरोंकोधारता
है॥ सोग्रबमैंजागिग्राहों॥ मरुकोग्रबलूटनहीसकैं॥ हेमुनीश्वरभोगरूपी
बडेनागहै॥ ग्रबरजोनागहैतिनकेस्पर्शतेशरीरमित्रकहोताहै॥ ग्रबविवेकरू
पीसर्पकेफुंकारकेग्रबएहजोएकाकरणहोतेमित्रकहोताहै॥ नबएसको
विविग्रहकीएकासाथिसंबधहोताहै॥ नबएसकाखिणखिणविखेनि
रादरहोताहै॥ जैसेकदलीबनतेरहितहूग्राहस्तीमहावनकेवसिग्राएग्रा
तिसकाखिणखिणविखेनिरादरहोताहै॥ हेमुनीश्वरजिसशरीरकेनमि
तएविविग्रहकोएकाकर्ताहै॥ सोशरीरभीनाशरूपहै॥ तिसविखेग्रहंश
नकर्णीपरमग्रापदाकाकारणहै॥ ग्रबशरीरविखेग्रहंप्रतीतनकर्णी॥ परम
सुखकाकारणहै॥ जैसेसर्पकेमुखमेंपडाहूग्रा॥ डूमकरहूकेखाणकीए
छाकर्ताहै॥ सोमहामूर्खहै॥ नैसेपुरखरूपीडूंकालरूपीडूंकालरूपीसर्प
केमुखमेंपडाहूग्राविविग्रहकीएछाकर्ताहै॥ सोमहामूर्खहै॥ कि
सीखिणविखेकालेएसकोग्रासलेवेगा॥ तातेएनोकीएछाकरणीहै॥ हेरामजी
एंचभूतग्रहंकारवाचेतनएसकानामजगतहै॥ जबलगएहभूतोंसविखे
इष्टग्रावतेहैं॥ नबलगभ्रांतहै॥ ग्रबजबएनतेरहितकेवलचेतनभासे॥ त
बएसहीकानामपरमपदहै॥ हेरामजीजबग्रात्मपदविखेजागेगा॥ नबएं
चभीग्रात्मातेएतरनभासेंगे॥ सभकाग्रधिष्ठानचेतनभासताहै॥ नबलगग्रा
त्माकाप्रमादहै॥ नबलगसंसारभ्रमनमिटेगा॥ ग्रबसभजगतनिराकारसं
कल्पमात्रहै॥ परसंकल्पकीदृढताकरकेग्रकाशविखेएस्थूलभूतदृष्टिग्रा
वतेहैं॥ ज्ञानकालविखेभीग्रज्ञानकालविखेभीजगतउपजाग्रानहीं॥ पर
ग्रज्ञानीकेचितविखेउदभासताहै॥ जैसेकिस्वप्नमेंराजकरकैनगररचिग्रा
होवैसोउसकेचितविखेहैं॥ ग्रवरकवनहीभासता॥ नैसेजोगतेग्रकाशरूप
हैवेगा॥ जबलगग्रविद्यानिद्राविखेसोएग्राहूग्राहै॥ नबलगजगतभास
ताहै॥ हेरामजीग्रपणासंकल्पग्रापकोनहीबंधता॥ जबलगरूपकाप्रमा
दनहीभएग्रांतबलगब्रह्माकासंकल्पब्रह्माकोनहीबंधनिकता॥ सवरूप
कीग्रहंशतेकरकैतोसंकल्परूपहै॥ ग्रवरदूसरीवस्तुकछुनहीं॥ ग्रात्माहीहै
वास्तवेतेनजगतकीग्रादिहैहि॥ नमधिहैनग्रंतहै॥ नजगतकाहोणाहै॥ न
ग्रनहोणाहै॥ ग्रात्मसत्ताहीग्रपणेग्रापविखेविखेएस्थितिहै॥ हेरामजीजउसर्व
ग्रात्माहैतौरागकिसकाहो॥ ग्रवदोखकिसकाहोए॥ सर्वग्रपणाग्रापहीहै
ग्रपणाग्रापनाग्रात्मतत्तेहैतिसकाकछुनसंवेदनकरकैजगतरूपहोएके
एस्थितिभएग्राहै॥ जैसेकिसीपुरखमनोराजकरकैएकनगररचिग्रा॥ ज
बउसविखेदृढभावनाहूएतबग्रभूतकभासणेलागजाताहै॥ नैसेएह
जगतभीब्रह्माकासंकल्पहै॥ चेंद्रमासूरजग्रग्निपवनवरुणकुबेरग्रादि

कसभसंकल्परूपहै॥ संकल्पकीदृढताकरकैग्रभूतकरकेभासतेहैं॥ हेरा
मजीग्रात्मरूपीएकतत्वहै॥ तिसविखेचेतनरूपीजलहै॥ तिसविखेफुर
णारूपीवितरंगहै॥ तिसविखेवीहग्रप्रकाशकेभूतजानितरंगरहिहै॥ सोसं
कल्पमात्रहै॥ हेरामजीग्रकाशविखेएकग्रकाशखेलहै॥ तिसविखेशिला
उत्पतिहोतीहै॥ सोगोलाकहेदेवतेबडीशिलाहै॥ एकतिनविखेउजलेशि
हैं॥ सोताम्रतानहै॥ मध्यमशिलामानुखलोकहै॥ ग्रग्निकग्रादिकनेनी
चीशिलाहै॥ सोनिदीजेहै॥ ग्रथएहजोकारणतेवधेहोतेहैं॥ ग्रात्माग्रहै
सदाग्रपणेग्रापविखेस्थितिहै॥ नैसेनरंगबुदबुदाफेनसभजलरूपहोतेहै
तैसेएह॥ जगतसबग्रात्मारूपहै॥ ग्रबजैसेसभकोसिद्धिग्रकारनहोतीहै॥
जैसेसंकल्पसिद्धिकारणविनाहीहोतीहै॥ नैसेएहजगतकारणविनासं
कल्पतेउत्पतिउदेहूग्राहै॥ जैसेब्रह्माग्रादिकजगतउदेहूग्राहै॥ जैसेग्रात्मा
तैसेपिशाचभीउदेहूएहैहि॥ हेरामजीजैसाकछुनग्रात्माविखेहोताहैतैसा
होकरभासताहै॥ वास्तवतेपृथ्वीग्रादिकजलकोउनहीं॥ नकोग्रबग्राउपना
है॥ नकोग्रजगतउपनाहै॥ सभभ्रांतमात्रहै॥ जतेकछुवस्तुदृष्टिग्रावतेहैंसो
निर्वपुहै॥ चेतनाकरकैफुरेहै॥ सभनोजीवोंकोग्रादिग्रतिवाहकशरीरहै॥
जैसेब्रह्माकाग्रतिवाहकशरीरथा॥ तैसेसर्वजीवोंकाग्रतिवाहकशरीरहो
ताहै॥ परसंकल्पकीदृढताकरकैग्रभूतकहोभासतेहैं॥ ग्रबसभजीवोंको
ग्रपणाग्रपणाभिन्नसंकल्पहै॥ तिनकाग्रनसाग्रपणाग्रपणीसृष्टिहोती
है॥ ग्रबजोनूकहैभिन्नभिन्नहै॥ नबजीवएककैसेकिएकदृष्टिग्रावतेहैं॥ चाहि
ग्रजोग्रापग्रपणीसृष्टिहोवहि॥ जैसेनगरवासीग्रबजगरविखेजावे॥ ग्र
एकनगरवासीहोग्रावे॥ होतोजाएएकहैदेखहि॥ तैसेसभजीवएकहैभा
सतेहैं॥ तिनकेएकहूएग्रसकीसृष्टिउहूनहीदेखता॥ ग्रबउसकोसृष्टि
उसकोनहीभासती॥ जैसेस्वप्नविखेभिन्नभिन्नभूतजातिहोतेहहि॥ ग्रस्व
प्नभवविखेएकहैदृष्टिग्रावतेहहि॥ एकग्रनभवविखेभिन्नभिन्नहोतेहै॥
उसकीसृष्टिग्रावतेहहि॥ एकग्रनभवविखेभिन्नभिन्नहोतेहै॥ उसकीसृष्टि
कोग्रहणनहीजाणता॥ उसकीसृष्टिकोग्रहणनहीजाणता॥ जीवोंकाग्रतिवाह
कभूलगएग्राहै॥ ग्रभूतकाइडहोरहाहै॥ जैसेग्रनभवविखेग्रपिग्रामहो
ताहै॥ तैसाहीभासताहै॥ नहापिशाचहोताहै॥ नहाग्रधकारहोताहै॥ जोग्रपि
ग्रानकासमजेउदेहोवेग्रपिशाचग्रागेग्रावतेवग्रधकारहोजाताहै॥ ग्रस
नमरूपहोताहैहि॥ जैसेउलूग्रादिककोप्रकाशविखेग्रधकारहोताहै॥ तैसे
ग्रनेकसूर्जोकाप्रकाशहोवताभीपिशाचकोग्रधकारहीहताहै॥ हेरामजीजे
साग्रनविखेनिश्चाहोताहै॥ तैसाहीभानहोताहै॥ काहेतेग्रनकाउजतेमानू
पहै॥ जैसाकिसीकानिश्चाहैतैसाभासताहै॥ हेक्रोतासदाग्रात्माकानिश्चाहै
नालसदाग्रात्मतत्तकाभानहोताहै॥ ग्रबजोएहजोपिशाचकाप्रसंगथा॥ सोएहाज
गतनथापरंतेनेप्रश्नकीग्राएसकाकारणतेमैंतसकोंकहाहै॥ जैसेपिशाचपं
चभूतकशरीरतेरहितचेष्टाकर्ताहै॥ तैसेमैंपंचभूतकशरीरतेरहितग्रका
शविखेचेष्टाकर्तारहाहो॥ २०५॥ इतिश्रीयोगवाशिष्ठग्रानंदरूपपाखानापिशा
चविर्णनंनामसर्गः॥ वसिष्ठउवाच॥ ग्रबहेरामजीमैंचिदाकाशरूपहो
नेपंचभूतकशरीरतेरहितग्रतिवाहकशरीरसाथविचारताबहाहो॥ परमफु
रणाकरकैमैंदेखनहीकोग॥ चेंद्रमासूरजएहजोमहस्वनिभ्रीवालेहैं॥ ग्रबसिधगंधर्वदेवोंच
कोंदेखनहीकोग

वं
मं
८४

रमुनीश्वरजब्रह्माविसगुरुइभीएसवरमहिषिसाथदेखकोउनमकहि॥ ग्ररमैम
भकोदेखताभएथा॥ परमुझकोंनाएोनहीं॥ जैसेमेकल्पनरकिसीकोंहला
वेग्ररउहुनदेखे॥ ग्ररग्रपभूतकशरीरनहूले॥ तैसेउनकेशरीरमेरहलाव
णाकरहलेनहीं॥ तबमेग्रतिमोहिकोंप्रापतिभएथा॥ जोवरग्रपनेहू
जोएताकालमेरहाग्ररमुझकोंदेखकोउनहीसकता॥ एहइच्छामेकरीजो
मुझकोंदेखहि॥ तबमैजोसजिसकल्परूपथा॥ तिसकरदेखणेलागाजे
सेकोउइन्द्रजालकोंदेखतेसेमुझकोंदेखणेलागे॥ जिनहूमिथ्वीतेउप
जिग्रादेखातेप्रिथ्वीतेउपजिग्रावसिष्टजाणाहि॥ मानुखलोकविखेको
गेजलतेउपजाजाणाहि॥ जोवारजिवसिष्टहै॥ जिनोंरवीसूर्यमनीग्रतीथ
तेजलरूपतिनतेजोपमादेखातिनोंवारववसिष्टजाणा॥ जोपहूवायुवसिष्टहै
कोगेवायुतेउपजाजाणाहि॥ सिथग्रादिक॥ कोउजाणाहि॥ जोसप्रीखेंवांकेमध
वसिष्टहै॥ एसप्रकारजगतविखेमुझकोंदेखणेलागे॥ तबसभनोंमार्थावि
वहारकरणेलागा॥ तबबहुतकालव्यतीतभएथा॥ तबभावनाकीदृढता
करकेपंचभूतकशरीरमुझकोंदेखतेभए॥ प्रिथमसब्रितांतसभकोंभूलग
एथा॥ ग्रधभूतकुनादृढहोतभए॥ तेसेग्रज्ञानककेसप्रनरोकोंग्रधभूतक
देखीताहै॥ तैसेमेरमायग्रकारकोदेखतेभए॥ ग्ररमुझकोंसदाग्रपणास्व
पविखेग्रहंप्रतेथीपतरहेहुतेकछुनपाभासता॥ काहेतेजोब्रह्मरूपहां॥ ग्ररव
सिष्टनाममेराग्रसाहै॥ जेसजीवदेहीविखमपहोताहै॥ सोचिदाकाशग्रत्यतही
ग्रवरोंकोंवसिष्टप्रतीतउपनीहै॥ हेरामजीजेसतुमसारिखिकोंमेराग्रकारदृ
ष्टिग्रावताहै॥ ग्ररमुझकोंग्रधभूतकग्ररग्रनिवाहकदोनोंशरीरविदाकाशका
कचनभासतेहैं॥ मेंसदानिराकारग्रहंततरूपहां॥ वेश्वानमाराहमाराममान
है॥ ग्ररमुझकोंसदाग्रात्मपदकानिश्चाहे॥ एसकारणतेमेंजीवन्मुक्तरूपहां॥
करविचरताहां॥ ग्रज्ञानीकोंक्रियाविखेदोनभासताहै॥ ग्ररहमकोंक्रिया
विखेभीग्रहंतनभासताहै॥ ब्रह्माभीब्रह्मरूपहै॥ ग्ररतिसकासकल्पजोजगत
है॥ सोभीब्रह्मरूपहै॥ जैसेसमुद्रविखेतरंगहोतेहैं॥ सोजलरूपहैं॥ भिनकछ
नहीं॥ तैसब्रह्मविखेजगतब्रह्मरूपहैं भिनकछुनहीं॥ तातेमेचिदाकाशरू
पहो॥ हेतकछुनहीफुरता॥ जबग्रहंफुरतीहैतबजगतहैतरूपहोएकरभा
सताहै॥ जैसेग्रहंकेफुरणेकरसंपूर्णसृष्टिहोतीहै॥ तैसजाग्रतसृष्टिहोतीहै॥ सो
संकल्पमात्रहै॥ ब्रह्माग्रवरब्रह्मकाजगतमेंग्रधभूतककीनिग्राएहोभासताहै
वास्तवतेनब्रह्माउपजाहैनजगतउपजाहै॥ सच्चिदानंदब्रह्मग्रपणेग्राप
विखेएकस्थितिहै॥ सदाएकरसहै॥ हेरामजीसृष्टिकोंग्रादिग्ररप्रलेमध्यजनतज्ञा
लोमहै॥ सोतिनसविखेग्रात्मसत्तासदाएकरसहै॥ उत्पत्तिविखेसाभाकदाचित
नहीं॥ काहेतजोवास्तवकछुउपजिग्रानहीं॥ ग्ररजोकछुभासताहै॥ सोग्रज्ञा
नकरसिद्धहै॥ ज्ञानकरजगतभ्रमनिवर्तहोजाताहै॥ जैसेसप्रसिष्टितिसोपि
खपसकोनिधभासीकही॥ तिसकेप्रापतिनेमिनूएहजगतनेनकताहै॥ जब
जागाग्ररतिसकोंसपनेजाणातबबहुरितिसकेपावणकाजतननहींकाहेता
तैसजबग्रात्मबोधएस्थितकोंहुग्रातबफेरएसजगतकेबुधिनहीरहती॥ ग्रज्ञा
नहीजगतहीभ्रमकाकारणहै॥ तिसग्रज्ञानकेनिवर्तकाउपायएहीहै॥ जो
एसमहारामायणकासदाविचारकर्णा॥ तिसकरसंसारभ्रमनिवर्तहोजावे
गा॥ एहसमसाग्रविद्याकरवासनामात्रहै॥ एसकोमतजाणाकरजोएसकीरूपा

बुतेहैं॥ सोपरमार्थतेरहेनहें॥ मृउहैग्रमकीटहैं॥ ग्ररज्ञानवकीनिग्रामचंचलहैं॥ जिन
कोंभोगोंविखसाएकाहोतीहैहि॥ तिनोंचपरिहै॥ संसारतिनकानिवर्तहोणादु
दनहै॥ त्रिष्णाग्रंतसदारहितीहै॥ वैराग्यकोंनहीप्रापतिहोते॥ हेरामजीभोगतो
ज्ञानवानभीभोगतेहैं॥ परभोगविखेग्रधिकारनहींभागते॥ ग्रबवृधलगकरज्ञानकरु॥
ग्रानिप्रापतिहोताहै॥ तिसकोंभोगतेहैं॥ ग्ररज्ञानतेहैं जोएगुणोविखेवरतते
हैं॥ ग्ररएहीग्रहंसहततविखेग्रहंकोंग्राभमात्रजाणतेहैहि॥ ग्ररजोग्रज्ञानीहैं ते
ग्रसक्तहोयभोगतेहैं॥ ग्ररतिनग्राकर्तेहैं॥ तबभोगोंकीत्रिष्णाकुरकेग्ररजलता
हैं॥ तबएसीकानामबंधनहै॥ ग्ररभोगदुखरूपहै॥ जोएनोंकोसेवतेहैंग्ररवते
सदाग्रिग्राकाजलतेहैहि॥ ग्ररहैतरूपजगततिनकाकदाचितभ्रमनहीमिटता
ग्ररजोज्ञानवानहै॥ सोसदाग्रात्मकरप्रित्रिप्रहितेहैं तातेग्रान्नदरूपहैं॥ जैसेहिमालय
विखेपदार्थशीतलहोजातेहैहि॥ तैसेग्रात्मज्ञानकरग्रंतरशीतलहोजाताहै॥ ग्र
रग्रात्मग्रानंदकीप्रापतिहोतीहै॥ कोउदुखनहींरहता॥ ग्रनेकग्रचितसरूपस्त्री
पुत्रधनविखेग्रापग्रापक्रितिहै॥ एकाकर्तेहैंतेमहामूर्खहैं॥ ग्ररजीवहैं॥ तिनकोंधिक्
कारहै॥ जिसकोंग्रात्मपदकीएकाहोवे तिसकोंचाहीएजोसदासंतोंकासंगक
रे॥ सतशास्त्रोंकाग्रवणविचारकरे॥ एनेकग्रभ्यासकरग्रात्मपदकीप्रापतिहो
वेगी॥ हेरामचंद्रएहशास्त्रविचारकीएतेपरमपदकोंप्रापतिकरोगेहमहैं॥ जो
ग्रुरखेपमताग्रबकोंत्यागकरग्ररवकीग्रोरलागतेहैं॥ सोकहरवेहैं॥ वाल्मीकिरुवाच
हेराजेननजबएसप्रकारवसिष्टकहालगासायकालकासमाहूग्रा॥ सर्वेश्रोताग्र
रस्वलमस्कारकरकेएस्नानकोउठचले॥ बहुरिसूर्जकीकिरणोकउदहोए
करग्रानिर्णस्थितिभए॥ ॥ इतिश्रीपाविग्रानग्रनपाविग्रानवर्णनंनामसर्गः
वसिष्ठउवाच॥ हेरामजीमेतमुझकोंपाविग्रानग्रविग्रानश्रवणाकरणग्राहे
निसकेविचारतेजगतभ्रमनाष्टहोजावेगा॥ ग्रेसेजबतेविचारदेखसा॥ तबग्रने
कब्रह्मांडग्रात्माविखेवस्तुदृष्टिग्रावतीहै॥ हेरामजीग्रात्माविखेजगतककछुवा
स्तवनहीहुग्रा॥ तातेमिटनाभीनहीं॥ चितकेफुरणेकरएहग्राभासताहै॥ तबचितका
फुरणाग्रधिष्ठानविखेलीनहोजावेगा तबदृश्यहैततग्रात्माहीपरग्राभासेगा॥ हेराम
जीग्रहंततविखेजगतभ्रमककेभासताहै॥ ज्ञानीकीदृष्टिविखेसदाग्रहंतभा
सताहै॥ जगतभीसभचिदाकाशरूपहै॥ मेभीचिदाकाशहो॥ तेभीचिदाकाशहै
जगभीचिदाकाशहै॥ ग्रात्मातेपरेकछुनहीं॥ ग्रात्मसत्ताहीजगतरूपहोकरभा
सतीहै॥ जैसेग्रपणाग्रनभवस्वप्नविखेसृष्टिहोभासतीहहि॥ सोग्रनभवरूप
हीहै॥ तैसेएहजगतभीसभचिदाकाशरूपहै॥ जोनानाप्रकारकेविकारभीतिस
विखेदृष्टिपडेग्रावतेहैं तोभीग्रात्मसत्ताग्रनस्यूतग्रखंडरूपहै॥ ग्रात्मपणाताग्ररजग
तविखभेदकछुनहीं॥ जैसेस्वप्नेग्ररभूपुर्णोविखेकछुभेदनहीं॥ तैसेब्रह्मग्ररजग
तविखभेदकछुनहीं॥ ब्रह्महीचेतनताककेजगतरूपहोभासताहै॥ जैसेसमसेविखे
ग्रपणाग्रनभवरूपहीपूर्वेतहोभासताहै॥ ग्रनभवतेइतरकछुहैएनहीं॥ समसृष्टिकर
हूग्रबतरंगोविखेकछुभेदनहीं॥ ग्रसमिकसृष्टिकरभेदभासताहै॥ साब्रह्मानूप
भेदकाउनहीं॥ हेरामजीग्रात्मसत्ताविखेपयमग्रभासफुरिग्राहै॥ ग्रपणाग्रापवि
होकरएस्थितिभएग्राहे॥ साएब्रह्मसत्ताचिदाकाशरूपहै॥ ब्रह्मारूपहोकर
खएस्थितिहै॥ ग्ररउहीब्रह्मसत्ताग्रपणेस्वभावकोंत्यागकरब्रह्मारूपहै॥ वाम
एस्थितिभएहै॥ बहुरितिसहीनेजगतरचाहै॥ सोजगतभीब्रह्मकाशरूपहै॥ परमार्थसत्तासदा
तैसेनजगतउपजिग्राहै नब्रह्माउपजिग्राहै॥ नकोपनाहुग्राहै॥

अपणे आपही विखे स्थिति है ॥ सो सर्व अनंत अभिनाशी है ॥ अचेतन चिनमात्र है ॥ अ
गत भी उही सरूप है ॥ इह आतमजी मे चिदाकाशरूप हो ॥ न मेरे साथ को ऊँ आकार है ॥ न मैं
कदाचित रूप निआ हो ॥ न मै कदाचित रूप निआ हो ॥ तिन होणा है ॥ तिन सर्व अन
अमर सदा अपूर्ण सर्वत्र विखे वरेखा भा होते है ॥ तो भी जाग्रतवत को स्पर्शन नहीं
कर्ते ॥ काहे ते जा उस विखे कछु हुए नहीं ॥ अभासमात्र है ॥ तेसे जगत की उत्पति
प्रले आदिक लोभहु विखे आत्मसत्ता को स्पर्शी नहीं ॥ अथ्य पट जो लोभ कछु नहीं
सदा अनभवरूप है ॥ जिस पुरुषने अस अनभवरूप को पछानता नहीं ॥ जास म कछु जि
स कर सिथ होता है हि ॥ अरु तिसको कछु पायआ है ॥ सो महासरल है ॥ अह आनम ह
त्या है ॥ महमहा अपदा के समुंद विखे डुबेगा ॥ अरु जिसको अपणा सरूप विखे अहं
भने हुए है ॥ तिसको मानसी दुख कदाचित नहीं स्पर्श कर्ता ॥ जेसे पर्वत न ब्रहा च
ला नहीं कर सकता ॥ तेसे उसको दुख नहीं स्पर्श कर्ता ॥ अरु जिसको आत्मा
विखे अहं मने नहीं तिसको ग्यानत नहीं प्रापति होती ॥ जेसे वाप विसाल विखे त्रि
ताप वाहु आप स्थिर नहीं होता ॥ तेसे देह अभिमानी को ग्यानत नहीं प्रापति होती ॥ अ
पणा सरूप को त्याग कर देह साथ आपको मिलिआ है ॥ आ जाणते है ॥ सो किआ
करते है ॥ जेसे कोइ चिंतामणि को त्याग कर काच को अंगीकार करे ॥ तेसे सधवि
न मात्र अपणा सरूप को त्याग कर देह विखे आत्म अभिमान कर्ते है ॥ हे रामजी ज
ब एह पुरख अनातम विखे आत्म अभिमान कर्ता है ॥ तब आपको वि रवान
जाणता है ॥ अरु जन्मता मरता आपको जाणता है ॥ अरु जब देह अभिमान को त्या
ग कर आत्मा को आत्मा मानता है ॥ तब न जन्मता है न मरता है ॥ न शस्त्र कर काट
होता है ॥ न अग्नि कर दग्ध होता है ॥ न जल कर डुबता है ॥ न पवन कर सोख हो
ता है ॥ निराकार अविनाशी चिदाकाशरूप है ॥ हे रामजी जो चेतन को भी मित
होवे तब पिता के मरे पुत्र भी मर जावे ॥ एक के मूए सभ जगत मर जावे ॥ काहे ते जो
आत्मसत्ता चेतन एक है ॥ अनसूत है ॥ याते एक के मूए सभ नहीं मरते ॥ ताते चेत
न आत्मा को मित कदाचित नहीं ॥ शरीर के काटे न आत्मा काटीता नहीं ॥ शरीर
के दग्ध हुए आत्मा दग्ध नहीं होता ॥ संपूर्ण विश्व भस्म हो जावे तो भी आत्मा
भस्म नहीं होता ॥ आत्मा नित सर्व अनंत अद्वैतरूप है ॥ कदाचित सरूप ते अनथा भा
व को प्रापति नहीं भए आ ॥ हे रामजी मे ब्रह्म हो ॥ अहंरूप हो ॥ अथ्य एह जो सभ विखे अहं
रूप निराकार अलेखरूप मे हो ॥ न मेरे को जन्म है न मिर्त है ॥ मुझको एछा भी नहीं
न कछु हरख है ॥ प्राक भी नहीं ॥ न जीवण की एछा है ॥ न मरण की एछा है ॥ जेसे
जेवडी विखे सर्प कल्पते है ॥ जेसे स्वर्ण विखे भूषण कल्पते है ॥ तेसे आत्मा विखे
वसिष्ट नाम कल्पते है ॥ देश काल वस्त के परछेद ते रहित अनंत आत्मा हो ॥ ति
तस्वपवायरूप हो ॥ सर्व का सरूप आत्मनत है ॥ पर वास्तव सरूप के प्रमादिक कर्ते
अरु अवस्था को प्रापति हुए को निआए भासता है ॥ अरु जो पुरख सरूप विखे णस्थि
ति नहीं भए ससार भोग की अरइछा भए है ॥ तिन का जीवणा विरथा है ॥ को हि
तो मात्र वेतने है ॥ नहीं तो पत्थर की शिलावत है ॥ जेसे लुहार की खल का स्वा
स निकसता है ॥ तेसे उनका जीवणा विरथा है ॥ वटी जे जकी निद्रा एवा स्ता विखे प
दे भर कर्ते है ॥ आत्म अनंत को नहीं प्रापति होते ॥ सदा तपते रहिते है ॥ अरु जेनको
आत्मपद विखे णस्थिति भए है ॥ तिनको दुख कदाचित स्पर्श नहीं कर्ता ॥ जे
ब प्रलेकाल का पवन चले ॥ अर पहक कर मही की वर्षा होवे ॥ अरु वडवाअग्नि
ग अरु द्वादश सूर्य तपहि ते गये ॥ तो भी भव विखे भी चलायमान नहीं होता ॥ का

हे ते जो सर्व ब्रह्म सरूप जाणता है ॥ जेसे त्रिलोकी का पर्वत चलायमान नहीं होता ॥ तेस
इहु वडे दुखों कर भी चलायमान नहीं होता ॥ दुख तउ होता है जो आत्मा ते इतर क
छु भासता है हि ॥ सो उसको आत्मा ते इतर कछु नहीं भासता ॥ हे रामजी एह जग
त सभ आत्मा ही अनभवरूप है ॥ काहे ते जो परमात्मा का सरूप है ॥ सर्व विखे अनभव
ते इतर कछु वस्त नहीं होती ॥ एसी कारण ते सभ जगत अनभवरूप है ॥ अरु जो इतर भा
सता है सो भ्रांतिमात्र है ॥ अरु एह जगत जो नानाप्रकार भासता है ॥ आत्मा विन सो अ
विकारूप है ॥ भ्रम कर के जगत भासता है ॥ तेसा काश विखे नीलता भ्रम कर सि
थ है ॥ तेसे आत्मा विखे जगत भ्रम कर सिथ है ॥ वास्तव ब्रह्म ते इतर कछु नहीं ॥ आत्म
सता ही जगत होकर भासता है ॥ जेसा जेसा निश्चा जिस विखे होता है ॥ अधिष्ठानरूप
तेसा भासता है ॥ अजिनको कारणक की सिष्टि का अधिष्ठान हृदइ होता है ॥ ति
नको तेसाही भासता है ॥ जिनको तेसाही भासता है ॥ जिनको प्रमाणी ते विछर
यत निश्च भए है ॥ तिनको अनसही सत भासती है ॥ माधमक सत असत के मधवु
सन को मानते है ॥ एकु मलल है चारवाकी साचा वेतन तोने सिष्टि को उत्पत मानत
है ॥ बोधक हिते है ॥ मा कछु वस्त है सो वुधि है ॥ एक अभाव हुए सून ही रहिती है
पनको ब्रह्मण क्षत्री गो अस्नान वाजसूजि आदिको विखे भिन भिन प्रतीत इ
इहो रहे है ॥ जो तानवान ब्रह्मण है सर्व विखे एक ब्रह्मसता अनन्त देखते है
हे रामजी वस्त तो एक ही ॥ तिस विखे जेसा निश्चा किसीको भए आन सोही भास
ता है ॥ जेसे चिंतामणि अथ्यवा कल्पतर विखे जेसी भावना करती है सो एसिद्ध हो
ती है ॥ तेसे आत्मसत्ता विखे जेसे भावना करती है ॥ तेसा रूप हो भासता है ॥ हे राम
जी वुधवान कु करि निर्णो कीआ है ॥ ता साथ भल आत्मसता है ॥ जब तिस विखे दृढ अभा
स करेगा ॥ तब आत्मसता ही परी भासेगी ॥ तिस निश्चे कर चलायमान होवेगा
राम उवाच ॥ हे भगवन बुधिवान कवन है ॥ जगत विखे पाताल विखे कवने है
भूतल विखे कवन है ॥ स्वर्ग विखे कवन है ॥ जिनको एसा विचार कर पाया
वर का साहारकार हुआ है ॥ अरु आत्मसरूप की केसे निश्चा करती है ॥ वसिष्ट उ
वाच ॥ हे रामजी जेता कछु जगत है हि ॥ सो एडी अहं की विधि अहं के क्रिआ कर
पडे जलते है ॥ इष्ट की प्रापति विखे हर्ष कर्ते है ॥ अनिष्ट विखे शोक कर्ते है
को एहे जानि जानि विखे सर्व की निआए भासता है ॥ नहीं तास भत्रिणोवत ॥ देखते सो भी
पडे भस्म कर्ते है ॥ भोगरूपी वाण विखे ॥ जो सभ ते विशिष्ट कहावते है ॥ अ
विवे अहंरूपी अग्नि विखे पडे जलते है ॥ जेसे क्रिम अस्थि विखे रहिते है ॥ अ
र तिस कर आपको प्रसन्न मानते है ॥ तेसे देवते भी सदा भोगरूपी अपवित्रता
विखे आपको प्रसन मानते है ॥ सो मेरे सत विखे गंदगी के क्रिम है ॥ अरु गंध
वे ताम्न हु है ॥ गन को तो कछु सुध नहीं ॥ अर्थ्य एह जो गंध भी आत्मपद को नहीं
उहै तो मेरे मनत विखे म्रिग है ॥ जेसे म्रिग को राग कर अनंद भासता है ॥ तेसे ग
पक भी राग कर इन्मत रहिते है ॥ आत्मपद ते मूरख है ॥ अरु विद्याधर भी मूरख है
को हेते जो वेद के अर्थ को चतुरत रूप अग्नि विखे जलते है ॥ अरु वेद का साम
त अर्थ उत्त है तिसको नहीं जाणते ॥ आत्मपद ते वे मूरख है ॥ अर जो सिध है सो मे
रे मनत विखे पक्षी है ॥ पक्षी अहं की निआए उडते फिरते है ॥ अभिमानरूपी पव
न के बल कर आनात्मरूपी गगन विखे आनी गिरते है ॥ अपणा वास्तव सरूप वि
खे णस्थिति नहीं होते ॥ अर जे वधन के अभिमान कर चेतन तर एव सरखों को प्रीति
रूपक कै नलने है ॥ आत्मपद विखे णस्थिति नहीं पावते है ॥ जोगती भी मूरख कर्ते
सदा उन्मत हती है ॥ आत्मपद विखे णस्थिति नहीं पावती है ॥ अर हेतो को

भी सदा देवति अहंकार की मांगि की एछा रहती है॥ सदा हिंसा कर्ते हैं॥ आत्मपद ते वि
मुख है॥ तमाती आगे भी जाणते है। जो आगे मारे हैं॥ अरु अर्थ भी मांगते॥ अरु
मानुख भी आत्मपद ते गिरे हुए है॥ एन कौं भी सदा एका रहती है जो अरु हमा
रे॥ तिस विषे भोजन पावणे के निमित बासन गावें॥ बहुर अन्नादक न
मत्री आनना खते है॥ जैसे कोइ आजन नक कै लेआवती है॥ तेसे एह भी ज
तन कर्ते है॥ खावणे के निमित भोगणे के निमित॥ धन के निमित॥ जतन नक्ते
तेन कर्ते है॥ खावणे के निमित भागणे के निमित॥ धन के निमित॥ जतन कर्ते
रहिते है॥ एही अहंकार अर्थ विषे डुबे हुए है॥ अरु पाताल विषे जो नाग रहिते है
जिनको जल लोक विषे निवास है॥ सो सदा नाग नागनी अहंकार विषे आपणा रहिते है
ते भी आत्म आनंद ते गिरे हुए है॥ रत्नादिक जो भूत प्राणी है॥ आत्मपद थी विमु
ख है॥ अरु स्वर्गलोक जो ज्ञानी विषे विरले जीवन मुक्त भी होते हि॥ अरु ज्ञानवान भी है॥
सो श्रवण कर॥ देवति अहंकार विषे ब्रह्मा विसन रुद्र सदा आत्म आनंद विषे मगन है॥ वे
इमा सदृजे अग्नि वायु एंद्र जीवन मुक्ति युक्त है॥ सप्त रिषेद्र स्वर्गते आदि लेकर प्रजा
पति जीवन मुक्ति है॥ अवर भी बहुते है हि॥ सिद्धो विषे कपिल मुनि आदिक
जीवन मुक्ति है॥ गंधर्व विषे बलथ जीवन मुक्ति है हि॥ पक्षो विषे बिघापरो वि
षे जो गणी विषे जीवन मुक्ति है॥ दैत्यों विषे हिरनाष सम प्रह्लाद बलि भी कृन
ए हजी तन सवर सप्त विनासर मुच के सप्त अगादिक जीवन मुक्ति है॥ राजरिषे ब्र
ह्मरिषे ना गौं विषे शेषनाग आदिक जीवन मुक्ति है॥ राजरिषे ब्रह्मरिषे ना
गों विषे शेषनाग आदिक जीवनमुक्ति है॥ ब्रह्मलोक विषे विष्णुलोक विषे
शिवलोक विषे कोएक कोएक एन लोकों विषे विरले जीवन मुक्त है॥ हे रामजी
ज्ञाति जाति विषे सरव एते मेरु को जीवन मुक्त हुए हैं सो कहे है॥ प्रथम हा न
हों देखन हारा अज्ञानी बहुते है॥ ज्ञानवान कोई विरला दृष्टि आवे॥ जैसे जहा
जा वे अतना अवर वृक्ष बहुते है॥ फल्य प्रत्ति ममजगति॥ पर कल्पतरु कोइ विर
ला दृष्टि आवता है हि॥ तेसे संसार विषे अज्ञानी बहुते दृष्टि आवते है॥ ज्ञानी
कोई विरला है॥ हे रामजी तुमसारवे कोइ नहीं जिनको आत्मपद विषे ए
स्थिति भए है॥ तेए सरवमे है॥ अरु संसार समुद्र ते पार तिनहीं को मगम है॥
८६॥ इति श्री जीवनमुक्ति संगि आवने नंना मस गेः॥ वसिष्ट उवाच॥ हे
रामजी ते विवेकी पुरष है जिन ते विन जिनको सर्वपा विषे स्थिति भए है
तिनके एते विकार स्वभावक घटि जाते है॥ राग द्वेष काम क्रोध मोह अभिमा
न दंभ आदिक विकार स्वभावक नष्ट हो जाते है॥ जैसे सूर्य के उदे हुए अंधका
र स्वभावक निकते हो जाता है॥ जैसे बाघ को देख कर के गो आभाग जाता
है हि॥ तेसे विवेक रूपी बाघ को देखकर विकार रूपी गौ भाग जाते है॥ अ
रु एते गुण उनके रिदे विषे स्वभावक आनि प्रस्थिति होवते है॥ अरु गुरु विषे
किसी विषे को धन ही कर्ते॥ अरु जो कर्ते दृष्टि आवते है॥ सो किसी निम
मात्र जाणना उनके रिदे विवेक कछु नहीं॥ सदा प्रीत लता अवरदए आगन को रि
दे दिखवा हिनह हि॥ जो कोग उनके निकट आवता है॥ सो भी प्रीत लहो
जाता है॥ काहे ते जो निरावरण स्थिति है हि॥ जैसे चंद्रमा के निकट आए ते
शीतल होता है॥ तेसे ज्ञानवानों के निकट दिदा प्रीत लहोता है॥ कोई पुर
ख उनते अभागवान नहीं होता॥ अरु जो कोइ निकट आवता है॥ तिसको
विश्राम के निमित एक स्थान देते है॥ अरु उसका अर्थ भी पूरन कर्ते है॥ जैसे
कमल फूल के निकट भवरा जाता है॥ तब उसको विश्राम का एक स्थान देता है
अरु गंध कर तिसका अर्थ पूरण कर्ता है॥ तेसे सतजन अर्थ पूरण कर्ते है॥ अरु ज

पापाज्ञ चेष्टा कर्ते है॥ अरु हे रामजी पापा एक की विधि कों भी जाणते है हि॥ सो
कछु स्वभावक अनि मायति होवे तिसको विष संचुगतन भी अगी कार क
ते है॥ अरु रिदे विषे सर्व की भावना ते रहते है॥ अरु दान एसनान आदिक
शुभ क्रिया तिन विषे स्वभावक होती है॥ अरु उदारता वैराग्य धीरज समद
म आदिक गुण भी उन विषे स्वभावक होते है॥ एस लोक विषे भी सुख
होणहारे है॥ परलोक विषे भी सुख देणहारे है॥ हे रामजी जिस पुरख वि
षे अरु सगुण पाए अहि सो साधु है॥ संसार समुद्र के पार करणहारे संतज
न वे हए है॥ अरु जैसे जहाज को आश्रय कर के समुद्र ते पार होवीता है॥ तेसे
संसार समुद्र के पार करणहारे संतजन है॥ जिनको संतजनों का आश्रा है
आहै॥ सो तरे है॥ वह तरि के सहे है॥ संतजन जो संसार समुद्र के पार का प
वेते है॥ जैसे समुद्र विषे बडे हुत जल होता है॥ अरु बडे तरंग उछलते है॥ अ
रु प्रवाह उछलता है तब पर्वत उसके प्रवाह को रोकता है॥ उछलने नहीं दे
ता॥ तेसे चित रूपी जो समुद्र है तिस विषे एछा रूपी तरंग है॥ अरु राग द्वेष
रूपी मछ रहिते है॥ जब एछा रूपी तरंगो का प्रवाह उछलता है॥ तब संत
रूपी पर्वत तिसको रोकते है॥ सो संत अपणे चित के वेग को भी रोखि अ
रोकते है॥ अरु जो उन के निकट को जाता है॥ तिसकी भी रोखि आक
ते है॥ अरु भोग न छि होणा लोगनगर नष्ट होणा लागे॥ अपथवा निकटि आग्रिला
गे॥ तौ भी ज्ञानवान का रिदा समु अपने चलाएमान नही होता॥ एह सदा अपणे
सरूप विषे स्थित रहिता है॥ जैसे कपल कंपे सुमेरु चलाएमान नही होता
तेसे उह नहीं चलाएमान होता॥ एह जो संतन को शुभ गुण कहे है॥ एसा
मदान सो जो वौं को सुख देणहारे है॥ अरु दुःख को निवर्त करणहारे है॥ सु
ख की प्राप्ति होती है॥ अरु दुःख की निवृत्त होती है॥ सो श्रवण कर॥ जे व ए
स्नान दान की अवर॥ एह पुरख आवता है हि॥ तब संतों की संगत विषे भी
एस का चित लागता है॥ जब संतों की संगति विषे चित आवता है॥ त
व परम पद की एसको क्रम कर के प्राप्ति होती है॥ ताते एह पुरख को ए
ही कर्तव है॥ जो एसा स्नान कर कहो है॥ तिसके अनेसा शुभ गुण तिन विषे च
ष्टा होवे॥ अरु संतों के निश्चे का अभ्यास होवे॥ हे रामजी जिसको संतों की
संगत प्राप्ति होती है॥ सो भी संत होइ रहिता है॥ संतो का संग बृथा नहीं
होता॥ जैसे अग्नि साथ मिलि आप दार्थ अग्नि रूप हो जाता है॥ तेसे संतो के
संग कर असंत भी संत भी संत हो जाता है॥ अरु जो पुरखो की संगत कर्ता
है॥ तब साध मूरख हो जाता है॥ जैसे पाप के वस्त उपद्रव आनि प्राप्ति हो
ता है॥ तेसे पाप के वस्त साधु को भी दुर्जनों की संगत कर दुर्जनता आनि
प्राप्ति होती है॥ हे रामजी दुर्जनों की संगत सर्व बालित आगनी है॥ अरु संतों की
संगत कर्ते वे है॥ जो परम हंस संतजन पाप अहि॥ तब जो साधु होवे जिस
विषे एक गुण भी शुभ होवे॥ तौ तिसका भी अंगीकार करीये॥ ऐसे के
अवगुणन छिक रीये अरु शुभ गुणों का अंगीकार करीये हि॥ अरु स
भजो अशुभ गुणों विचारीये हि सो अपणा विचारी अहि॥ विचार कर अ
शुभ का त्याग करीये॥ शुभ को वढावते जाए ऐसा सुअन सार॥ पर सा

व॰ म॰ ८७

यकेहोखनविचारीग्रहि॥गेसेकेभ्रमगुनाग्रंगीकारकरै॥जेसेभ्रमकरिके
नकीकेकठकहूकीउरनहींदेखते॥गेसकौसगंधकाग्रहनकरतेहैं॥ता
तेहेरामजीसंसारमार्गकौंत्यागकरसंतोंकीसंगतकरो॥तबसंसा
रभ्रमनिवर्तहोजावेगा॥२०७॥इति श्रीजीवन्मुक्तिविवहारो

ॐ श्रीराम उवाच॥हे भगवन्मोकोदोषतेसंतप्रापत्रुअरुमनसंगरागअरुतिनकीजुग
नकरहुरहोतेहैं॥अरुसमानदुखभीरचएस्नानदानजपपूजाकरनिवर्तहोतेहैं॥अ
रुहोजीवजोकीटपतंगपशुपंछीग्रादिकहैं॥सतसंगविनातिनकेदुखकैसेनि
वर्तहोहिगे॥सोकहो॥वसिष्ठ उवाच॥हेरामजीजोवास्तवसत्ताहै तिसकानाम
ग्रात्माहै॥अखंडहै॥अद्वैतहै॥तिसविखेकछुहैतनविभागनहीं॥परतिसविखेचि
तकचनग्राभासफुरिग्राहै॥सोअनंतात्मानतहुएकीनिग्राएएस्थितिभएग्राहैं॥
वास्तवकछुहैग्रानहीं॥जेसेसुपनविखेसृष्टिभासतीहै॥परवास्तवकछुनहीं
सुपनविखेहीभासतीहै॥तेसेजाग्रतसृष्टिभीकछुवास्तवनहीं॥परग्रज्ञानकर
द्रिडभासतीहै॥जीवोंको॥वास्तवतेसभब्रह्मसरूपहै॥अपनेसरूपकेप्रमादकर
जीवतरूपकोग्रंगीकारकीग्राहै॥तिसकेग्रंगीकारकरणेकरजेसाजेसाकर्मकुरते
हैं॥अनात्मदेहादिकविखग्रात्मग्रभिमानकरतेसेगतकोपावतेहैं॥वहुरदेश
कालक्रियादर्वकासंकल्पजेसेद्रिडहोताहै॥अनुभवसत्तविखेतेसाभासताहै
तिसविखेचारग्रवस्थाकल्पनेहोतीहैं॥जेसीजेसीभावनाहै॥तिसवासनाकेग्रन
सारग्रवस्थाकाग्रनुभवहोताहै॥सोग्रवस्थाकोनकोनहै॥श्रवणाकर॥एकघन
सुखपनग्रवस्थाहै॥दूसरीक्षीणसुखपनहै॥तीसरीसुपनग्रवस्थाहै॥चौथीजा
ग्रतग्रवस्थाहै॥ग्रवएनकेभेदसुनो॥हेरामजीघनसुखपनरूपजडताहै॥सोघनसु
खपनविखेहै॥तेसेसुखपनग्रवस्थाविखेकछुफुरनानहीं॥फुरनाजहाँभूत
होताहै॥तेसेतिनकोंफुरनाकछुनहींफुरता॥घनसुखपनविखेएस्थिति
है॥अरुव्रिच्छखीणसुखपनविखेएस्थितिहै॥अरुतिजकजोपंछीकेदपने
गजेतीजीवहै॥सोसुपनग्रवस्थाविखेएस्थितिहै॥जेसेसुपनविखेपदार्थभा
सताहै॥परद्रिडसमभ्रनहींभासतेहैं॥तेसेएनकोथोडासूक्ष्मज्ञानहै॥तातेसु
पनग्रवस्थाविखेएस्थितिहै॥ग्ररुमनुखदेवताजीवहैं॥सोजाग्रतरूपजगतका
ग्रनुभवकरतेहैं॥हेरामजीइहचारोंग्रवस्थाग्रात्माविखेकल्पतेहैं॥अरुग्रात्म
सत्ताहीविखेस्थितिहै॥सभकाजोहैग्रहंप्रतीतरूपसोग्रात्माहीहै॥वडेकाक्रि
याग्ररुछोटेकाक्रियातिसविखेजेसासंकल्पजीवोंकोद्रिडहोताहै॥तेसाही
होभासताहै॥हेरामजीहमकोंएकदिवितीतहोताहै॥अरुकीटीग्रहूकोंजुग
काग्रनुभवहोताहै॥अरुउनकेजुगविखेहमकोंएकदिनकाग्रनुभवहो
ताहै॥ग्ररुहमकोंसूक्ष्मग्रणहोताहै॥तिनकोंउहपर्वतकेसमानभासताहै
हेरामजीसरूपसभकाएकग्रात्मसत्ताहीहै॥परभावनाकरभिन्नभासताहै॥
अरुएकजीवहै॥सोवडूतसूक्ष्महै॥जवउहचलताहै॥तवजाणाजाताहै जोमेरा
गरुडजेसावेगहै॥तिसकोउहसमझाहोहै॥अरुछोलखिलोकाग्रगुष्टप्रमा
णशरीरहै॥तिनकोंउहीवडाभासताहै॥विराटकोंग्रपनाउहीशरीरवडाहै॥
जेसेजिसकौंभावनाहै॥तेसाहीतिसकोंभासताहै॥मानुषदेवतापशुपंछीसे
मकोंग्रपणाग्रपणाभिन्नभिन्नसंकल्पहै॥जेसासंकल्पकिसीकोद्रिडहोवहो
है॥तिसकोंतेसाहीसरूपभासताहै॥जेसामानुखोंकोरागद्वेषकामक्रोधमोह
लोभग्रहंकारहुथात्रिखाइखशोकमेथनविकारोंकरग्रसतिहोतेहैं॥तेसे
कीटपतंगपंछीग्रादिकोंकोंभीहोतीहै॥परएताभेदहै॥जोजेसेहमकोइहजे
गतसृष्टिरूपभासताहै॥तेसेउनकोनहींभासता॥सेसारसमहै॥परवासना
केग्रनुसारघटवधभासताहै॥अरुदुखकाग्रनुभवइस्थावरजंगमकोंभीहो
ताहै॥जोकिसीएस्थानकोंग्रगलगातीहै॥उसविखेब्रिच्छपाखाणजललेनहै॥उ
नकोंभीतवदुखहोताहै॥परसूक्ष्मग्रस्थूलकाभेदहै॥जेसेग्रौरजीवोंकोशस्त्र
काप्रहारकीएतेशरीरनष्टहोणेकादुखहोताहै॥तेसेब्रिच्छग्रादिकोंभीहो
ताहै॥परवनसुखपनिलीणसुखपनिसजन्ताग्रतकाभेदहै॥पर्वतपखाण
कोंसूक्ष्मजेसाडुखहोताहै॥ब्रिछोंकोपखाणतेविशेषहोताहै॥परस्पष्टमान

वं॰ स॰
१

अथ मान राग द्वेष खन हीं होता ॥ सूत्र की न्याई होता है ॥ अरु मानुखों देवतियों को
स्थूल राग द्वेष जाग्रत की न्याई होता है ॥ कोहै तेजो जाग्रत अवस्था विखै स्थि
तिहै ॥ अरु ब्रिछ पखाण आदिक को सुखदुःख का विकल्प नहीं उठता ॥ तैसा
सभाव विखै स्थित है ॥ अरु दुःख के हेते सभ को होता है ॥ अरु देह अवस्था
स्वकीट जो है ॥ सो महा दुःखी रहते हैं ॥ जब उह स्तन होवे तब सुख को प्रापत होते
अरु अज्ञान करि जो इस शरीर विखै आस्था हुई है ॥ तिनको भी सवर्णा वा भस्म
हुई ॥ तो अरु जीवों को कैसे भला लागै ॥ हे रामजी अपणे सरूप के प्रमादि कर्के राग
है खभे क्रोध लोभ मोह जरा मरन तृष्णा त्रिखा हर रवधा के इच्छा आदिक विकार
कौ अग्नि करि जीव डाजलते हैं ॥ आत्म अनंद को नहीं प्रापत होते ॥ यदि जब कु
न्याई वासना के अनुसार भटकते हैं ॥ जब वासना दृढ पाप की आनि होती है ॥
तब पखान अरु ब्रिछों की जोन को पावते हैं ॥ जब खोटी वासना नाम सी होती
है ॥ तब तिर्जक पंछी सर्प कीट जोन को पावते हैं ॥ हे रामजी राजसी वासना क
मानुख होते हैं ॥ सात्विकी वासना कर देवते होते हैं ॥ अरु जब मानुख शरीर
धार कर निवासी होते हैं ॥ तब मुक्त पावते हैं ॥ अरु जब ज्ञान उत्पन होता है ॥ तब
जीवों को दुःख नष्ट हो जाते हैं ॥ अब दुखों के नाश का रीकोड पाव को उनहीं ॥ इह जग
नड खत्त्व लग भासता है ॥ जब लग इसको आत्म ज्ञान नहीं उपज्या ॥ जब उपजा न
जगत भ्रम मिटि जाता है ॥ अरु ज्ञान के को इछ्छे नवासना व को उदेवता है ॥ न पसु पंछी
है ॥ न परवाण है हि ॥ न ब्रिछ है ॥ न कीट है ॥ सभ विदा का पाइ पद है ॥ इह सरा कछु वणि
आन हो ॥ आनेक के नाना रूप हो भासने हैं ॥ सदा सर्वदा काल सर्व प्रकार आत्म स
ता अपणी आपविखै स्थित है ॥ हे रामजी न को उजगत का होणा है ॥ न अणा हो
णा है ॥ न आत्मा है ॥ न परात्म सत्ता है ॥ न मोन है ॥ न अमोन है ॥ न स्थूल है ॥ न अस्थूल है ॥ न
अस्थूल ॥ केवल अचेत चिन्मात्र अपणी आप विखै स्थित है ॥ तिस आत्मा विखै जो
न मम अरु जन्म अंतर भ्रम कर भासते हैं ॥ तैसे तैसे जो ज्ञानी इ भ्रम करता तो है ॥ जे
से स्वप्ने विखै इहि अपणा आप होता है ॥ निद्रा दोख कर देते भासता है ॥ तैसे अवि
भी एक आत्मा अद्वैत रूप है ॥ अविचार कर के नाना तत हो भासता है ॥ अरु दुख भी अज्ञा
न कर भासता है ॥ विचार कीए ते दुःख कछु नहीं पाईता ॥ जो इह पुरुख सुस्त न होकर उ
त्पन होता है ॥ तो सपन नहूए दुःख को उनहीं ॥ अरु जो मस्तन का होकर वेषण न होजाता है
उपजता नहीं ॥ तब भी दुःख को उनहीं ॥ मुक्ति हूआ ॥ अरु जो मरता नहीं ॥ तब भी
जिसका नि हूआ दुःख को उन हूआ ॥ अरु जिस का विदा का पाइ है ॥ तब भी दुःख को उन है
आ ॥ हे रामजी अज्ञानी के निश्चे विखै दुःख है ॥ विचार के एते दुःख को उनहीं ॥ अरु ए
ह जगत आत्मा रूपी आदर्श विखै प्रतिबिंबत है ॥ पर उह जगत रूपी के सा प्रतिबि
ब है ॥ जो अकारण रूप है ॥ इसका कारण रूप प्रतिबिंब को उनहीं ॥ अकारण रूप
है ॥ जैसे जल के नदी विखै जो नीलता का प्रतिबिंब पडता है ॥ सो अकारण रूप है
तैसे इह जगत अकारण रूप है ॥ अज्ञानी को तिस विखै आस्था है ॥ परमादि दोख क
के ज्ञानी को इतनीया नहीं भासता ॥ अज्ञानी को द्वैत भासता है ॥ हे रामजी इस को
तो सदा विदा का पाइ ही भासता है ॥ इस जागे हूए है ॥ तातें द्वैत कछु नहीं भासता
जो ज्ञानी है तिसको ब्रह्म ते एतर कछु नहीं भासता ॥ सर्व ब्रह्म ही भासता है ॥ २॰ ॥ रा
म उवाच ॥ हे भगवन जो कछु नुमक हा है ॥ सो मैं जाणता भया हों ॥ परंतु आसत वा
दी अरु का कल्पना भी किसी प्रकार होता है ॥ नासत वादी कहते हैं ॥ जब लग
जीवें तब लग सुखी जीवे ॥ जब मरजावे गा तब भस्मी भूत हो वेगा ॥ तब कहूं आव
गा है ॥ न कहूं जावणा है ॥ तिनका कल्याण किस प्रकार होता है ॥ वसिष्ठ उवाच
हे रामजी आत्म सत्ता आकाश की न्याई अखंडन ॥ सर्वत्र पूर्ण है ॥ जब लग ति
सका भान नहीं होता ॥ तब लग मन की निवृत्ति नहीं होती ॥ जब आत्म स
ता का भान होता है ॥ तब शांत प्रापत होती है ॥ अरु आप को अमर जानता है ॥ अ
रु जिस पुरुख को अखंड निश्चे को अंगीकार कीया है ॥ तिसको दुःख नहीं स्पर्श क

ता ॥ उह ब्रह्म रूपी होता है ॥ अरु जिसको ब्रह्म सत्ता का निश्चे नहीं प्रापत भए आ
तिसको मन का ताप नहीं छोडता ॥ अरु सह्रूप के प्रमाद ते आप को मरता जानता
है ॥ अरु महा प्रलै रूप जो आत्मा है ॥ जैसे प्रलै विखै सर्व दृश्यों का अभाव होता है
तैसे आत्मा विखै सर्व दृश्यों का अभाव है ॥ जिसको अस आत्मा विखै निश्चे हूआ है ति
सको सर्व दृश्यों का अभाव हो जाता है ॥ सो महात्मा ज्ञानी होता है ॥ उसको आत्म सत्ता
ही भासती है ॥ जो वास्तव है तिसको हम ना वा उपदेश न हीं ॥ उह ज्ञानी है ॥ हे रामजी उ
ह आत्म सत्ता विखै है तब जगत नवणी आन नहीं ॥ पर मार्थ सत्ता सदा अपणी आप वि
खै स्थित है ॥ तिस विखै स्वाछि जो भासती है ॥ सो सर्व तन अकारण है ॥ ताते जो
ज्ञानवान पुरुख है ॥ सो सर्वथा हि मथ को ब्रह्म ही जाणते हैं ॥ अस जो पुरुख हैं सो
हमारे उपदेश लेने जोग नहीं ॥ काहे ते जो सर्व शास्त्रों का सिथांत आत्म पद है ॥
सो तिन जाण्या है ॥ तिसको बहुरि कहते कछु नहीं ॥ अरु जिसको असी दशा
नहीं प्रापत भए ॥ सो उपदेश का अधिकारी है ॥ अरु इह जगत आत्मा का कचन
है ॥ अज्ञानी का मन भासता है ॥ अरु ज्ञानी यों के निश्चे विखै कछु नहीं ॥ जैसे
संकल्प करके ब्रिछ चित्र ॥ तिसके पत्र फूल फल टास उसको भासता है
हार के मन विखै हूए न हो ते है ॥ तैसे अज्ञानी के निश्चे विखै जगत होता है
ज्ञानी के निश्चे विखै लीन विखै आत्मा ते एतर कछु नहीं ॥ हे रामजी आत्म सत्ता
सर्वगा सर्व व्यापी है ॥ तिस विखै जैसा जैसा निश्चा धारण होता है ॥ अरु दृढ
भावना की दृढ ता ते तैसा ही हो भासता है ॥ जिस पदार्थ की निरंतर दृढ अ
भ्यास होती है ॥ शरीर के त्यागे ही हूए ॥ उही अभ्यास रूप धार लेता है ॥ अरु आ
त्म सत्ता ज्ञान मात्र केवल अद्वैत सर्वन सभ का अपणा आप है ॥ जिसको असे
सरूप का ज्ञान हूआ है ॥ सो बास्त्रा के दह नवरह्ति होता है ॥ अरु वेद शास्त्र जो
पदार्थ कू को भला बुरा सच अरु कूठ वरनन करते हैं ॥ जिस पुरुख को तिस
विखै निश्चे होता है ॥ तिसको वेद वासना के अनसार फल देते हैं ॥ अरु जि
सको निश्चे विखै आत्मा ते भिन्न सर्व दृश्यों का अभाव हूआ है ॥ तिसको आत्म
अनात्म का विभाग कलना भी नहीं रहती ॥ देह रहे अथवा न रहै ॥ हे रामजी
जिसके सर्वत जगत के अर्थ कर विधी हूए है ॥ तिसको पदार्थों विखै वासना
रव उपजता है ॥ जैसे स्वपन विखै आत्म सत्ता है ॥ अरु अभाव की न्याई
स्थित है ॥ तैसे असत वादी भी अपणे जड सरूप को देखते है ॥ काहे ते जो
जड सून्यता का अभ्यास है ॥ तिसकर ॥ अरु उनका सर्वत दिशा सो साथ वर्थी
हूए हैं ॥ इस कर उनका जगत भ्रम नहीं मिटता ॥ उस मलीन वासना साथ जो उनको
सर्वन मिली है ॥ इस कर उनको जड पथर रूप प्रापति होती है ॥ तिस जडता को भो
गके वासना के अनसार बहुडि प्राणमहि रा ॥ बहुड सख दुःख को भोगते हैं ॥ उस
भावना कर कछु कुजगत भाव सूत्र हो जाता है ॥ केतक काल पीछे फेरु नहीं कुसौका
भोगते हैं ॥ चेतन होकर ॥ जैसे सूर्य आगे बदल आवें ॥ बहुड निवर्त होवे ॥ तैसे जगत
होता है ॥ काहे ते जो सम्यक ज्ञान कर तिन को नहीं हूआ होता ॥ अरु पुनः रूप जो जीव है ॥
जैसा तिस विखै निश्चा होता है ॥ तैसा ही भासता ॥ जिसको एक आत्मा विखै निश्चा
होता है ॥ सो जन्म मरन आदिक विकारों ते रहित होता है ॥ अरु जिसको नाना न हू
पजगत विखै निश्चा होता है ॥ सो जन्म मरण ते नहीं छूटता ॥ हे रामजी जिस व
थ विखै पदार्थों का राग वढता है ॥ सो राग द्वेष रूपी तर के तेन नहीं मुक्त होता ॥ अ
रु जिसको एक आत्मा का अभ्यास होता है ॥ तिसको अभ्यास के बल ते सभ जग
त आत्मा न कर भासता है ॥ अरु राग द्वेष ते मुक्त होता है ॥ जैसे सूर्य विखै किसी
को अपणा जा ग्रत सरूप स्मरण आवता है ॥ तब सर्व सूतन का जगत मिट तिसको अ
पणा आप भासता है ॥ तैसे जिसको आत्मज्ञान होता है ॥ तिसको सर्व जगत अपणा

वं॰
सं॰
२

आय भासता है ॥ सर्वकाल आत्मसत्ता अनुभव रूप जाग्रत ज्योति है ॥ जिसको ऐसे आत्म
सत्ता विषे वासना भावना होती है ॥ सो ऐसी अवस्था को प्राप्त होता है ॥ गर्भ विषे की
टहोता है ॥ पर्वत वृक्ष पर्वत आदिक पदार्थ जो जगत है ॥ सोई अहंकार के रूप दृष्टि आवते हैं ॥ वि
रकाल पर्यंत तिनो विषे रहता है ॥ जब लग उसको वृद्धि कोई है तब लग रहता
है ॥ तब लग जगत भ्रम को देखता है ॥ अरु भ्रम मिटता नहीं है ॥ जो उसको स्वरूप
कोई है तिसको जो नामि टजावे ॥ तब जगत भ्रम निवर्त्त हो जाता है ॥ हे रामजी सम्यक
ज्ञान कर जगत भ्रम का अभाव हो जावेगा ॥ अभावनी निश्चय करेगा तब वह इस जगत
नहीं भासता ॥ अरु जो संसार के पदार्थ कर संवेदन वृथा है ऐसे ॥ तब जो संसार होवे
गा ॥ तैसा ही प्राप्त होता है ॥ तिसके निश्चय के अनुसार गति को पावेगा ॥ राम उवाच ॥
हे भगवन् ॥ नास्तिक वादी जो हैं तिनके मत अनुसार कहा सो मैं जाणिआ ॥ अरु जिस प्रकार
कहे हैं देखि विषे जगत को सत्ता स्थित है ॥ अरु आत्मबोध के मार्ग में अनुभव है ॥ स
पक्ष के देखे जगत की सत्ता है ॥ तिसके मार्ग के जगत अरु तिसको
धर्म रूप कोई नहीं जानता ॥ तिसका अज्ञान है ॥ वसिष्ठ उवाच ॥ हे रामजी ऐसे
स्या कि आसा होती है ॥ मेरे इस बोध के निमित्त तुम जो कहते हो ॥ तातें वह उड्डीयन
का उतर ते प्रथम ही तुम को कहा है ॥ अरु अपर तुम ने पूछा है ॥ तातें वह कहते हैं ॥ हे रामजी इस
हो ॥ प्रथम मन तो पुरुष का अर्थ सरण ॥ जो पुरुष किसको कहते हैं ॥ तत्त्व धातु आदिक हैं
जगत ते ज्यों विषे स्थित नहीं ॥ तत्त्व विश्व स्थित है ॥ तत्त्वा धातु का आदिक है
यों विषे स्थित है ॥ जगत जो है ॥ चेतन संवेदन विषे स्थित है ॥ सो चेतन संवेदन
पी पुरुष है ॥ जिस पुरुष को तिस विषे निश्चय है ॥ तिसको इतने कल्याण नहीं होता ॥
जो अनन्त दृष्टि आवती है ॥ पर उसके निश्चय विषे नहीं होती ॥ ऐसे सर्व का धावि
स्व विषे दृष्टि भी आवती है ॥ परन्तु नहीं है ॥ ऐसे तिसको ज्ञान तिसको सत्ता नास
ज्ञान नहीं करता ॥ अरु जिस चेतन संवेदन साथ जो तिसका संबंध है ॥ तिसको जगत का
अकार भासता है ॥ अरु जिस उसको पुरुष विषे दर्शन का लोक या इस की वासना वे भी है
भी कल्पना करता है ॥ अरु अपर वास्तव अरु इनते संस्कार के अभ्यास कर मार्जन न
हीं करता ॥ सो वास्तव चेतन स्वरूप का प्रकाश भी है ॥ तो भी कल्पना करता रहता है
सो जगत है तिसको आपते भिन्न भासता है ॥ इन भ्रम मिटता नहीं ॥ हे रामजी
जो पुरुष ऐसे साधी है ॥ जो देह के आत्म निश्चय पावत विषे समवर्त्तता है ॥ अरु आ
त्म सत्ता जो को नहीं भासती ॥ सो अज्ञानी है ॥ अरु आत्म सत्ता जाने विना संसा
र तिसको निवर्त्त नहीं होता ॥ जब आत्मा का साक्षात्कार होवेगा ॥ तब सर्व भ्रम
निवर्त्त हो जाता है ॥ हे रामजी इस पुरुष के ऐसे होते हैं ॥ तिसका रूप है ॥ तब शरीर
के नाश हो गया का अन्त होता है ॥ इस पुरुष केवल चिन्मात्र स्वरूप है ॥ अरु
वासना कर भ्रम को देखता है ॥ अरु जो शून्यवादी है सो विच्छेद पवन आदिक जानी
को पावते हैं ॥ जो सदा अनुभव ज्ञान को त्याग कर होर के दृष्टि जाणते नहीं ॥ सो
मूर्ख है ॥ तिनको आत्म सुख नहीं प्राप्त होता ॥ आत्मा के प्रमादिक के अ
त्यन्त बीज आदिक भाविभासते हैं ॥ अरु जब आत्म ज्ञान होआ ॥ तब सर्व आ
त्म रूप हो जाता है ॥ अरु जिनो आत्म अनात्म का निर्णय नहीं कर देखिआ ॥ सो
पुरुष दुःख विषे नीच है ॥ अरु जिस पुरुष ने निर्णय करके आत्मा विषे अहं प्रतीति करी है
आत्मा को त्याग कर सो बालक है ॥ जैसे अकाश विषे बादलों के चक्र चाह अकार
भासते हैं ॥ जैसे समुद्र विषे तरंग भासते हैं ॥ तैसे आत्मा विषे जगत भासता है
है तिस कछु नहीं ॥ जैसे स्वप्न के नगर अपने अनुभव विषे स्थित होते हैं ॥ अरु
बाहर जो इनको त्याग होआ भासते हैं ॥ सो अभ्यास मात्र है ॥ तैसे आत्मा विषे यह
जगत भासता है ॥ सो अभ्यास मात्र है ॥ वास्तव कछु नहीं ॥ जिसको आत्म स
त्ता का अनुभव हुआ है ॥ तिसको जगत के शाह अरु अशुभ राग द्वेष किसी को क
ल्पना भी नहीं रहती ॥ पुण्य पाप का फल तिसको कछु नहीं स्पर्श करता ॥ स्व
स जो ज्ञान संवेदन का नाश कदाचित नहीं होता ॥ तातें स्वप्न भी अनुभव रूप है
इस जगत का निमित्त कारण अरु समवाय कारण कोऊ नहीं ॥ काहे ते जो अ

नहीं तिस कहे हैं अन्य वादादिक समवाय अरु निमित्त कारण उपजते देख
होते हैं ॥ अरु जो तुम कहे है ॥ तैसे ही यह भी जाणा ॥ अ
ते है ॥ सो जैसे स्वप्न के कारण कार्य अरु जाग्रत होते भासते हैं ॥ तैसे यह भी जाणा ॥ अ
पने स्वप्न विषे वृक्ष अरु दृष्टि आवते हैं ॥ परन्तु कारण कर होते दृष्टि आवते
हैं ॥ तैसे यह भी जाणा ॥ केवल अज्ञान मात्र है ॥ जैसे स्वप्न की स्त्री का ज्ञान होए ते अ
भाव होता है ॥ तैसे ज्ञान कर इसका अभाव जाणि भासे है ॥ इह दीर्घ काल ।
काल मात्र है ॥ तातें जागृत न कहे होता है ॥ जैसे स्वप्न की स्त्रि अपना आप होती
है ॥ तैसे यह जगत अपना आप है ॥ पर अज्ञान
तें आदि कर भिन्न भासती है ॥ तैसे यह जगत अपना आप सम ही भासता है ॥ तिस
नके भिन्न भासता है ॥ जो मन ज्ञान ते अपना आप सम ही चांदनी
विषे राग अरु द्वेष का अभाव हो जाता है ॥ जैसे चंद्रमा अरु चंद्रमा की चांदनी
विषे भेद कछु नहीं ॥ तैसे आत्मा अरु जगत विषे भेद कछु नहीं ॥ आत्मा
ही जगत रूप हो भासता है ॥ हे रामजी तू अपना अनुभव विषे स्थित हो
कर देख जो सर्व ब्रह्म स्वरूप है ॥ जगत कछु वास्तव नहीं ॥ मैं भी ब्रह्म हौं ॥ तू भी ब्रह्म है
जगत भी ब्रह्म है ॥ इसको तो चिदाकाश मात्र रूप ही भासता है ॥ जगत कछु नहीं भासता
अरु आत्म सत्ता विषे जो सो जैसा निश्चय होता है ॥ तैसा ही हो भासता है ॥ काहे ते जो
आत्म सत्ता सर्व आत्म रूप है ॥ अरु समर्थ है ॥ जैसे सर्व काल का अकाश निर्मल होता
है ॥ तैसे आत्म सत्ता का रूप पावता है ॥ हलना पवन अरु थान तू पद है ॥ तिस विषे
इस स्थित होए ते सान अरु मोह का अभाव हो जाता है ॥ तिस अज्ञानी किसी पदार्थ विषे
ही रहती ॥ आरह वेग करके जो कछु प्राप्त होता है ॥ तिसको भोगता है ॥ आत्म दृष्टि
दृष्टि कर दुःख ते न रहे ते होता है ॥ तिनको पाप का इड कछु नहीं
रहता ॥ परमानन्द रूप विराजते हैं ॥ २०४ ॥ इति श्री विचार प्रकरणे नास्तिकवादी नि
राकरणं नाम सर्गः ॥ वसिष्ठ उवाच ॥ हे रामजी मैं चिदाकाश रूप हौं ॥ अरु जगत भी चिदा
काश रूप है ॥ अरु इस ही दृष्टि जगत विषे विकारी जो भासती है ॥ सो भी चिदाकाश रूप
है ॥ आत्म सत्ता ही त्रिकुटी रूप हो भासती है ॥ इस भाव कर कछु नहीं ॥ अरु नास्तिक वा
दी जो कहते हैं ॥ परलोक अर्थ इह जो आत्म सत्ता को जानते नहीं ॥ सो मूर्ख हैं ॥
हे रामजी जो अनुभव आत्म सत्ता न होवे ॥ तो नास्तिक किसको सिद्ध होवे ॥ जिसके
बल नास्तिवाद भी सिद्ध होता है ॥ सो आत्म सत्ता है ॥ जो पहि अरु अनिच्छित पदार्थ
को अंगीकार करके एह विषे राग करते हैं ॥ अनिष्ट विषे द्वेष करते हैं ॥ एह इष्ट का त्याग
करते हैं ॥ अनिष्ट को त्यागते हैं ॥ अरु जो ज्ञानी सर्व अपना आप ही रूप भासता है ॥ अरु त्या
ग राग द्वेष किसी पदार्थ विषे नहीं रहता ॥ तैसे आत्मा के ज्ञान करके किसी पदा
र्थ विषे राग करता है ॥ किसी विषे द्वेष करता है ॥ जब आत्म ज्ञान होता है ॥ तब
सम अपना आप ही सर्व रूप भासता है ॥ राग द्वेष किसी विषे नहीं रहता ॥ अरु चित्त
के फुरणे कर जो जगत उत्पन्न होता है ॥ अरु चित्त के फुरणे कर जगत को लय होता है
तातें जगत मन विषे स्थित है ॥ सो मन आत्मा के ज्ञान कर रहा है ॥ जब आत्म
का ज्ञान होता है तब मान्य स्वप्न वत् देखता है ॥ लीला आदिक एह स्थावर जंगम जगत
सम आत्म रूप भासता है ॥ राग द्वेष किसी विषे नहीं रहता ॥ अरु नास्ति
क वादी जो नास्तिक कहते हैं ॥ सो नास्तिकता भी सिद्ध होता है ॥ जिसकर ना
स्ति भी सिद्ध होता है ॥ सो अस्ति आत्म पद है ॥ तिस आत्म अनुभव के एते ना
म शास्त्रकार कहते हैं ॥ कोई आत्मा कहते हैं ॥ विज्ञान कहते हैं ॥ शिव कहते हैं
चिदाकाश ब्रह्म अरु इन ब्रह्म साक्षी कहते हैं ॥ एक कहते हैं ॥ एक कहते हैं सब नहीं रहता है ॥ एक कहते
है सम्यक पद रहता है ॥ हे रामजी इह सर्व संज्ञा आत्म सत्ता की है ॥ सो आत्म सत्ता अप
ना आप ही रूप है ॥ सो मैं आत्मा हौं ॥ इह अज्ञानी जो मेरे साथ दृष्टि आवते हैं ॥ अपना
एनको इह पदार्थ ले पन करी अनात्म के कछु दुःख नहीं ॥ अरु जो ज्ञानको दूर न करी अ
नात्मक का भोग के कछु नहीं ॥ इनके वह ठण कर मेवड ता नहीं ॥ अरु इनके न इह एमेन

व॰ म॰ ३

छिन ही होता॥ हे रामजी तीन प्रा हि होते हैं॥ जो मैं जन्मिआ हों अरु मरोंगा॥ अरु जीवता हों॥ जो अथम न होवे अरु उपजे तिसको जन्म कहते हैं॥ उपजा है अरु बहुड़ नाश होवे तिसको मरन कहते हैं॥ मध्य विखे जीवना कहते हैं॥ सो आत्मा विखे तीनों विकार नहीं॥ आत्मा उपजा भी नहीं॥ अरु नष्ट भी नहीं होता॥ काहेते जो अविनाशी है॥ चेतन आकाश सभका अधिष्ठान है॥ काल का भी अधिष्ठान है॥ वस्तु तिसका नाश कैसे होवे॥ अरु यह जो उदे अस्त ते रहित है॥ जिस विखे देश काल वस्तु जगत का कथन होता है॥ तिनकर आत्मा का नाश कैसे होवे॥ ताते आत्मा अविनाशी है॥ हे रामजी जिस वस्तु को देश काल का परछेद है॥ तिसका नाश भी होता है॥ सो देश काल वस्तु तीनों आत्मा विखे कल्पित हैं॥ जैसे सूर्य की किरणों विखे जल कल्पित होता है॥ तैसे आत्मा विखे तीनों कल्पित हैं॥ कल्पित वस्तु साथ सत्य का अभाव कैसे होवे॥ ताते आत्मा अविनाशी है॥ अरु अद्वैत है॥ जिस विखे हस्ती वस्तु कछु नहीं॥ जैसे स्वप्न अवस्था विखे त्रिलोकी कल्पित होती है॥ तैसे आत्मा विखे जगत कल्पित है॥ तिस अभाव रूप जगत विखे प्रमादि कर के एक का अभाव जाना जाता है॥ एक को असद्भाव जाना जाता है॥ जब इस निश्चे को त्याग कर अंतर्मुख होवे॥ तब इसको आनंद प्राप्त होवे॥ अरु विचार कर के देखिये तब संसार विखे सुख कछु नहीं॥ जो सभ सुख दुःख जन्मता है॥ तो भी दुःख को उतपन भए आ॥ काहेते जो शरीर रहा गा है आप्तिय भाव को प्राप्त होकर॥ तब तिसको त्याग करन उनने को यत्न कीया॥ तो दुःख न सा हुआ॥ अनंद हुआ॥ काहेते जो जब लग जीवना तब लग था॥ किसी का भाव जाणता था॥ किसी का अभाव जाणता था॥ किसी को ग्रहण करता था॥ किसी को त्याग करता था॥ तिनों कर तपता था॥ जब तिनों ते छूटा तब बडा आनंद हुआ॥ अरु जो सर्व चिदाकाश रूप है॥ तब भी अपणा आप आनंद रूप है॥ दुःख कछु नहीं हुआ॥ हे रामजी दुःख एक प्रमाद कर के होता है॥ अरु किसी प्रकार दुःख नहीं होता॥ इह जगत सभ आत्म सत्य रूप है॥ जो आत्मा ही सत्य रूप हुआ॥ तब दुःख कैसे होवे॥ अरु जो तूं कहे मैं प्राणों को छोड रता हों॥ परलोक विखे नरक को भय का कारण होवेगा॥ तब ऐसे जाण जो देह के मैं काहू दुःख पाता होता हौं॥ अरु परलोक विखे भी होवेगा॥ ताते देह को मैं कोमान कर॥ मैं हौं करके आसा उपाइ करता हौं॥ जिस कर सब दुःख ते नष्ट हो जावहि॥ सो उपाए रही है जो कछु मैं नहीं मैं नहीं॥ अथवा ऐसे जाणे जो मैं ही हों मैं ही हों मैं ही हों॥ सर्व वासना त्याग कर आपको अविनाशी जाणे॥ अरु आत्म सत्ता विखे स्थित होउ॥ एह जगत भी सभ तेरा रूप है॥ तब ऐसे आत्मा को जाणेगा॥ तब शरीर को त्याग कीए ते भी को दुःख न रहेगा॥ जो प्रथम शरीर को त्याग करता तब तन जन्म लीआ तब भी अनंद हुआ॥ परम शांति प्रापत भए॥ अरु जो सभ चिदाकाश रूप है॥ तब परम आनंद हुआ॥ हे रामजी सर्व प्रकार आनंद है॥ परंतु अज्ञान कर के दुःख पडा भासता है॥ जब सत्य रूप को साक्षात्कार होवेगा॥ तब सर्व जगत ब्रह्म सत्य रूप भासता है गा॥ हे रामजी जिनको आत्म सत्ता प्रकाश है॥ ते पुरुष सदा आनन्द विखे मग्न रहते हैं॥ अरु प्रकृत आचार को भी करती है॥ परंतु अनिह की प्रापत विखे सत्य रूप ते चलाइमान ही कदाचि नहीं होते॥ जैसे सुमेर पर्वत वायु कर चलाइमान नहीं होता॥ तैसे ज्ञानी इष्ट अनिष्ट विखे चलाइमान नहीं होता॥ परम सिरी भगतां विखे रहता है॥ ताते जो कछु आत्मा ते इतर रूप भान होता है॥ तिसको त्याग कर अपणे स्वभाव विखे स्थित होवहु॥ जो चिन्मात्र सत्ता प्रकाश के अकाशवत निर्मल है॥ जब ऐसे स्वच्छ केवल चिन्मात्र का अनुभव होवेगा॥ तब जगत तेरा रूप होइ कर भासेगा॥ विवहार विखे भी है तब तक रूप॥ २२॥ इति श्री परम उपदेश वर्णने नाम सर्गः॥

राम उवाच॥ हे भगवन जिन पुरुषों को आत्म परमात्म का साक्षात्कार हुआ है॥ सो कैसे होजाता है॥ कैसे कर तिनका आचार होता है॥ सो मेरे ताई कहहु॥ वसिष्ठ उवाच॥ हे रामजी जैसे उनकी चेष्टा है॥ अरु जैसे उनका निश्चै है॥ सो सुनो॥ सभ के साथ उनका मित्र भाव होता॥ पर आपणे स-

थ भी मित्र भाव होता है॥ अरु बांधवों को ऐसे जाणते हैं॥ जैसे वन के बिरछ पत्र होते हैं॥ अरु पुत्र अरु स्त्री आदिक साथ ऐसे होते हैं॥ जैसे वन के मृग पशु साथ होते हैं॥ जैसे उनके पुत्रादिक विखे स्नेह नहीं होता॥ तैसे पुत्रादिक विखे स्नेह नहीं करते॥ अरु जैसी माता की पुत्रों विखे दया होती है॥ तैसे उह सभ ऊपर दया करते हैं॥ अरु निश्चै ते उदासीन रहते हैं॥ जैसे आकाश किसी साथ स्पर्श नहीं करता॥ तैसे उह स्पर्श किसी साथ नहीं करते॥ अरु जेतीक कछु आपदा है सो उनको परम सुख है॥ अरु जेते कछु जगत विखे रस है॥ सो तिनको विरस हो जाते हैं॥ न किसी विखे राग करते हैं॥ न द्वेष करते॥ चिन्ता कर भी दृष्टि आवते हैं॥ परंतु अंतर ते उपशम को प्राप्त होते हैं॥ विवहार करते दृष्टि आवते हैं॥ परंतु अंतर परम मौन होते हैं॥ अरु एह जो सदा सम साथ विखे स्थित होते हैं॥ अरु शुभ क्रिया ते दृष्टि आवते हैं॥ जो सभ को उत्तम करते होते हैं॥ अरु जतनते रहित सभ क्रिया को आरंभ भी करते हैं॥ परंतु निश्चै ते सदा आप को अकर्ता जानते हैं॥ अरु जे कछु प्रारब्ध वेग कर आइ प्रापत होता है॥ तिसको भोगते हैं॥ अरु शुभ का अंगीकार करते हैं॥ देश काल क्रिया को अरु परस्त्री आदिक अनिष्ट प्रापति आइ होवहि तिसको त्याग भी करते हैं॥ परंतु निश्चै ते सदा अकर्ते ज्यों के त्यों रहते हैं॥ अरु दुःख सुख के प्रापति विखे समबुद्धि रहते हैं॥ पर प्रकृत आचार विखे ज्यों शास्त्र विचारते हैं॥ अरु सत्य रूप ते कदाचि न चलाइमान नहीं होते॥ जैसे फूल के भार ते सुमेर पर्वत चलाइमान नहीं होता॥ तैसे दुःख सुख की प्रापति विखे नहीं चलाइमान होते॥ सदा स्वभाव विखे स्थित रहते हैं॥ उह सुख दुःख को भोगते दृष्टि आवते हैं॥ परंतु उनके निश्चै विखे कछु नहीं होता॥ जैसे फटक मणि के निकट कोऊ रंग राखीता है तब॥ तब तिस विखे रंग भासता है॥ परंतु उसका रूप कछु और नहीं हो जाता॥ फटक ज्यों का त्यों रहता है॥ तैसे सुख अरु दुःख के भोग ज्ञानवान विखे दृष्टि आवते हैं॥ परंतु स्वरूप ते चलाइमान कदाचि नहीं होता॥ चेष्टा अग्नि को त्याग करते हैं॥ परंतु निश्चै ते परम समाध है॥ जैसे अज्ञानी को राग द्वेष सुख दुःख कछु नहीं होता॥ तैसे ज्ञानी कौं राग द्वेष वर्तमान का नहीं होता॥ अरु स्वभाव कर चेष्टा उसकी ऐसे होती है॥ सभ साथ मित्र भाव है॥ न कोऊ उसको दुःखदाई होता॥ न किसी ते उह दुःखदाई होता है॥ अरु जो उसको सुख आन प्रापति होता है॥ तब रागवान दृष्टि आवता है॥ अरु दुःख की प्रापति विखे दुःखवान दृष्टि आवता है॥ परंतु निश्चै ते उसको हर्ष शोक कछु नहीं॥ जैसे नट स्वांग ले आवता है॥ तब जैसा स्वांग होता है तैसा ही वर्तता है॥ राजा का स्वांग होवे दरिद्री का होवे॥ परंतु निश्चै अपणा नट पर होता है॥ तैसे ज्ञानवान विखे सुख दुःख दृष्टि आवते हैं॥ परंतु निश्चै उसका आत्म सत्य रूप विखे होता है॥ अरु पुत्र धन बांधव आदिक को बुद्बुदे की निआई जाणता है॥ जैसे जल विखे तरंग बुद्बुदे होते हैं॥ बहुड़ लीन भी हो जाते हैं॥ परंतु जल को राग द्वेष कछु नहीं॥ तैसे ज्ञानवान को राग द्वेष कछु नहीं होता॥ अरु सभ ऊपर दया का स्वभाव होता है॥ अरु पतित प्रवाह विखे जो सुख दुःख आन प्रापत होता है॥ तिसको भोगते हैं॥ जैसे वायु चलती है तब दुर्गंध सुगंध को साथ ले जाती है॥ परंतु वायु को राग द्वेष कछु नहीं॥ तैसे ज्ञानवान को राग अरु द्वेष कछु नहीं॥ बाहर अज्ञानी की न्याई विवहार करता है॥ परंतु निश्चै विखे जगत को भ्रांतमात्र जानता है॥ अथवा सर्व ब्रह्म जाणता है॥ अरु सदा स्वभाव विखे स्थित होता है॥ अनिच्छित प्रारब्ध को भोगता है॥ अरु जाग्रत विखे सुषुपत की न्याई स्थित है॥ भूत अरु भविष्यत की चिंतवन नहीं करते॥ वर्तमान विखे विचरते हैं॥ सो अंतर ते शीतल रहते हैं॥ बाहर इष्ट अनिष्ट दृष्टि आवते हैं॥ अंतर ते अद्वैत रूप हैं॥ ज्ञानवान कर्म करते हैं॥ परंतु कर्म विखे अरु कर्म को जानते हैं॥ अरु जीवते ही मृतक की न्याई हैं॥ हे रामजी जो मृतक होता है तिसको बहुड़ जगत की कलना नहीं फुरती॥ तैसे जिनको आत्म पद विखे अहं प्रतीत है॥ विवहार करते दृष्टि आवता है॥ परंतु निश्चै विखे तिसको द्वैत नहीं भासता॥ राम उवाच॥ हे भगवन इह ज्ञानी के लक्षण तुम जो कहे हैं सर्व अर्थ प्राप्त होगए हैं॥ काहेते जो बाहर की चेष्टा अज्ञानी के तुल है॥ सो तिनको उही जाणेगा॥ अरु कोऊ नहीं जाणता है॥ अरु अंतर ते आत्म रूप है॥ तिस प्रकार होवे दुःख है॥ अरु एक मिथ्या तप सी है॥ वसिष्ठ उवाच॥ भी राग द्वेष कछु नहीं फुरता॥ उनकी क्या कर जानीए॥ सो क्रिपा कर कहहु॥ अरु उनका निश्चा सत है॥ अथवा असत है॥ इह लक्षण वासना का है॥ अ-

उवाच॥ हे रामजी इह निश्चा सत होवे अथवा असत होवे

रु आत्माका जो साक्षात्कार है॥ इह निश्चय अपणे आपकउ जाणता है॥ होर किसीको
नही जाणीता॥ इस कारणते तिसका लखणा ज्ञानीही जाणता है॥ जैसे सर्प के पग को
खोज सर्पही जाणता है॥ होर कोऊ नही जाण सकता॥ तैसे ज्ञानी का लखणा सर्व द
नहै॥ हे रामजी इह जो गुणा कहे है॥ सो ज्ञानवान विषे स्वभावक ही रहिते है॥ अरु
जनने सिद्ध है॥ अरु सर्वज्ञ गन तिसको भासता है॥ अथवा अनभव द्रिष्टि करके सम
अपणा आपही भासता है॥ ऐसीके कारणते परम शांत है॥ रागद्वेष उसको निश्चय वि
खेद नही करता॥ अरु अपणे निश्चेको बाहर प्रगट नही करता॥ अरु जो अधिकारी होता
है॥ तिसको जणावता भी है॥ अरु अनधिकारी अज्ञानी उसको ज्ञानवान नही भासता
ता॥ जैसे भावनि चंदनकी वडी सुगंध है॥ पर खरने भासती नही॥ तैसे अज्ञानी उस
के निश्चेने हहर है॥ इस कारणते उसको जाण नही सकते॥ जो उसका चमत्कार द्रिष्टि करि
देखि सो देख नही सकता॥ अरु अधिकारी बिना उह जाणा आवता नही॥ जैसे अमोल
के चिंतामणि होती है॥ पर गिवार सी तीच कोदीजे॥ तब भी उह उसके माहात्म को नही
जानता॥ ताते उसका निरादर करता है॥ तैसे आत्मरूपी चिंतामणि है॥ अरु अनधि
कारी निश्चय अधिकारी रूपी जो नीच है॥ सो तिसका माहात्म नही जानते॥ तिसने इसका निरा
दर होता है॥ इस कारणते ज्ञानवान प्रगट नही करते॥ हे रामजी अपणा इष्ट को
जो प्रगट करीता है॥ सो उसने मिन प्रगट करीता है॥ जो इसको अर्थ की प्राप्ति हो
वे तो इसमारी मानहावेगी॥ अरु इह मारे खेल वड हिण॥ इह मारी पूजा होवेगी॥ सो ज्ञा
नवान पदार्थों को गंधर्व नगर अरु इंद्रजाल की न्याई जाणता है॥ वड वाछा कि
सकोकरे॥ इसी कारणते अनधिकारी प्रत अपणा इष्ट प्रगट नही करते॥ जो कोई ति
क टिभी आनि वैठता है॥ तब भी अपणा निश्चय रूपी अंगोको संकुचाय लेते है॥ जैसे क
छुअ अपणे अंगोको संकुचाय लेता है॥ तैसे इह निश्चय रूपी अंगोका संकुचाय लेता है॥
अरु जो अधिकारी देखते है॥ तिस प्रति प्रगट करते है॥ हे रामजी पात्र विषे पदार्थ
ए आप भी पावता है॥ अरु अपात्र विषे पाया अनिष्ट हो जाता है॥ जैसे गौ का दूध
है सो पीता है॥ अरु सर्पको दूध पिलाईये तिसका विष होता है॥ तैसे
अधिकारी को दीया शुभ होता है॥ अनधिकारी को अनिष्ट हो जाता है॥ हे रामजी
अणिमा महिमा आदि लेकर जो सिद्धि है॥ सो जप करके अरु कालकरके अ
थवा देशाकर के प्राप्त होती है॥ सो अभ्यास के बलकर के अज्ञानीको भी प्राप्त होती
है॥ अरु ज्ञानीको भी होती है॥ पर ज्ञानका फल नही॥ इह जप आदिक का फल है॥ अरु
जिसकी सिद्धता के निमित जो पुरुष दृढ होकर लागता है॥ सो ही सिद्ध होता है॥ जो
इनका दृढ अभ्यास करता है॥ सो पदार्थ तब लग रहता है॥ जब लग आत्मा मारगा
न नहै॥ हे रामजी परम सिद्धता इनकर प्राप्ति नही होती॥ सो परम सिद्धता आ
त्मपद है॥ जिसको आत्मपद की प्राप्ति भई है॥ इनकी अभिलाष नही करता॥
अरु सो पदार्थ अपणी द्रिष्टि विषे कोऊ नही॥ आकाश विषे देवताके स्थान सो भी नही॥
जिस विषे ज्ञानी का चित्त मोह नहोवे॥ सब पदार्थ ज्ञानवान को मृगतृष्णा के ज
लवत भासते है॥ अरु सर्व सिद्धांत विषे तातुही है॥ जो सदा विषे अहंतउ पर
नहोणा॥ अरु आत्मा को परमेश्वर जाणना॥ इसका नाम ज्ञान है॥ अरु जो आरम्भ कर आनि
प्राप्त होवे तिसको करता है॥ पर कर्ता कर तिसका अर्थ कछु सिद्ध नही होता॥ अरु अक
र्णा विषे कछु प्रतिवाइ नही होती॥ ना कि सो अर्थ का आश्रय करता है॥ सर्वदा अपणे आप
सभाव विषे स्थित होता है॥ ऐसे निश्चय को प्राप्त आश्चर्यवान होता है॥ काहे ना है
वडा आश्चर्य है॥ जो सदा अपणा आप स्वरूप है॥ तिसको मै विस्मरणा करके एता काल
मै भ्रमता रहा हो॥ अब सुपको मै विस्मरण आत्मप्राप्ति भए है॥ अरु जगत को देखकर उह
हासी करता है॥ काहे ते जो इह जगत अपणा आप स्वरूप है॥ अपणा आप स्वरूप है॥ अप
णी सत्ता विषे स्थित है॥ जैसे आरसी विषे प्रतिबिंब स्थित होता है॥ तैसे अपणी
सत्ता विषे जगत स्थित है॥ तिसको बाहर देखते जाणता है॥ अरु रागद्वेष करके पडा
लता है॥ अज्ञानीयो को देखकर हसता है॥ अरु विवहार करता भी हसता है॥ जैसे कि
सीने स्वप्ने विषे स्थान उपर खेलदीया देखकर वडहउ लीया॥ अरु एक उसको सुपना जा
णिआ॥ तो चुपहाकरता है॥ पर इह हला है सो इह मरा ही स्वरूप है॥ तैसे ज्ञानी विवहार करता

भी अपणे निश्चय विषे हसता है॥ अरु जैसे किसी सिडाव को अभिलाग ती है॥ तिस सि
डाव सिवा निकसी कर एक पुरुष पर्वत ऊपर जाइ वैठा नदी जल निश्चक को दे
खकर हसता है॥ तैसे जो ज्ञानी पुरुष संसार रूपी नगर जल ते सिडा निकसिकर आ
त्मा रूपी पर्वत पर जाइ वैठा है॥ सो अज्ञानीयों को देखकर हसता है॥ तैसे उनको मा
वन देखता है॥ आप असा वहो कर॥ हे रामजी जब ज्ञानवान बोध द्रिष्टि कर देख
ता है॥ तो अद्वैत सत्ता भासती है॥ अरु जब अनिवाह कर विषे स्थित होकर देख
ता है॥ तो जैसे होता है तैसे उनको देखता है॥ आपको शांत रूप देखता है॥ अर्थ ए
है जो आत्मा नन्द परमानंद स्वरूप है॥ उसने एत वजेन कछु पर्थ है॥ सो समझ सुख है
पद है॥ अरु जनीक सिद्धता ने आदि लेकर क्रिया है॥ सो संसार का कारण है॥ जैसे मन
द्र विषे कए तरंग वड होते है॥ कए छोटे होते है॥ पर सम मुद्र ही विषे है॥ जिसन रंगको
आश्रय करेगा तिसही सिद्धता को प्राप्त होवेगा पर समुद्र विषे ही रहेगा॥ अरु
जो तरंगो को छोड कर पावे जावेगा॥ सो परम शांत की प्राप्ति होवेगा॥ इह लण
जो तरंग हइ गति समाप्ति होवेगा॥ तैसे सिद्ध आदिक जो क्रिया है सो कह वडाई अजे
है॥ कह छोटा अपूरी है॥ पर संसारही विषे है॥ जो पुरुष इस क्रिया को त्यागकर
ह॥ अनन्त सुख होवेगा॥ सो संसार को त्यागकर आत्म रूपी पार को प्राप्ति होवेगा॥ अरु
परम शांत होवेगा॥ हे रामजी जिस पुरुष को जिस पदार्थ का अभ्यास होता है॥
सोई तिसको प्राप्त होता है॥ जैसे पखाण को नित प्रत छ सावन ही होय॥ तो उह भी
सोई तिसको प्राप्त होता है॥ तैसे जिस पदार्थ का सर्वदा अभ्यास करता है॥ सो प्राप्ति होता
है॥ जिनको आत्म पद अभ्यास कर प्राप्ति होता है॥ सो परम सिद्ध हो जाते है॥ स
व जगत के ऊपर विराजते है॥ अरु परम दया की खाण होते है॥ जैसे सम चंद्रमा सम्मुद्र
ते जल लेकर वर्षा करते है॥ सो जल का अस्थान सम्मुद्र होता है॥ तैसे जैनने कछु दया
के कर्ता द्रिष्टि आवते है॥ सो ज्ञानवान के प्रमादिक करते है॥ सर्व दया अस्थान ज्ञा
नवान है॥ अरु ज्ञानवान सभका सुहृत है॥ जो कछु प्रवाह प तिनको जि आन
प्राप्त होता है॥ तिसको करते है॥ जो प्राणी को दुख आनि प्राप्त होता है॥ तिस
को असंदेखता है॥ तैसे आनि धारी रका होता है॥ अपणा विषे सुख दुख दोनो का
अभाव देखता है॥ अरु जनको आत्म अभ्यास नही प्राप्त भए आ॥ सो धारी के
गाह देख साथ पडे जलते है॥ अरु ज्ञानी को ध्यानवान देखकर अवरो को प्रसन्नता
भी उपजी आवती है॥ जैसे पुनर्क के जो स्वर्ग गए आहे॥ तिसको उपह पदार्थ द्रिष्टि
आवने है॥ कल्प वृक्ष सुंदर मंजरी या संयुक्त आन द्रिष्टि आवने है॥ अरु सुंदर अप
छरा द्रिष्टि आवती है॥ इत्यादि कपदार्थों को देखकर प्रसन्नता उपजती है॥ तैसे
ज्ञानवान की संगति विषे जो पुरुष जाता है॥ तिसको भी प्रसन्नता उपजावती है॥
जैसे पूरन मासी का चंद्रमा शीतलता उपजावता है॥ तैसे ज्ञानवान को संगति शी
तलता उपजावती है॥ ज्ञानवान आत्म पद को पाइ कर अनन्द मान होता है॥ सो अ
नन्द रूप नही होता॥ काहे ते जो अपणा आप है॥ तिस अनंद कर अरु सिद्धी
का रूप जैसे त्रिगुण समान भासता है॥ हे रामजी ऐसे जो पुरुष है तिनको जो अवस्था है
अरु जिस स्थान विषे जा रहिते है सो सुणा॥ कए ताप को नता इ वैठते है॥ कए भगवे
स्थानो विषे रहिते है॥ कए गृहस्थ विषे रहिते है॥ कए भगवा स्थान जो वनखंड
है॥ कए समाधि लगाए वै
हुए सम को उ वचन कहते है॥ कए तप सिआयडे करते है॥ कए पाइडे नहो कर उपदेश
देते है॥ कए राज वैठे करते है॥ कए मार्ग ते नही फिरते है॥ कए कदरा विषे जाइ वैठते है॥
कए परम मोन धारे है॥ काइ पहारु की कंदरा विषे चरते है॥ कए नीचु
वेद कहते है॥ कए परम मोन धारे है॥ कए अज्ञानी को निआए पवि चरते है॥ कए नीचु
कए ब्राह्मण है॥ कए सन्यासी है॥ कए अज्ञानी को की नाना प्रकार की क्रिया करते
पामहोते है॥ कए अकाशा विषे उडते है॥ इत्यादिक नाना प्रकार की क्रिया करते
द्रिष्टि आवते है॥ पर सदा अपणे स्वरूप विषे स्थित है॥ हे रामजी जिसको पुरुष
कहते है॥ सो पुरुष देह नही॥ अरु अंतःकरण चतुष्टे भी पुरुष नही॥ के
वल चिदाकाश स्वरूप है॥ सो न कछु करता है॥ न किसी कर के उसका नाश होता

वं॰ म॰ ५

है॥ जैसेनटस्वांगलेआवताहै॥ सोसभचेष्टाकर्ताहै॥ परंअपणेनटनभावकोंअ
कर्ताअसंगदेखताहै॥ तैसेज्ञानवानविवहारभीकर्ताहै॥ परंआपकोंअकर्ता
असंगदेखताहै॥ अछेदहै॥ अदाहहै॥ अक्लेदहै॥ अशोषहै॥ नित्यअवरा
नहीं॥ एस्थिरअचलहै॥ सनातनहै॥ हेरामजीइसप्रकारआत्माविषे
जिसकोंअहंप्रतीतभएहै॥ तिसकानाशकैसेहोवे॥ अरुवधमानकैसेहो
वे॥ उहरूपभावजेसेआरंभकरे॥ अरुभावेजेसेइस्यानोविषेवरहे॥ तिसको
वंधनकछुनहीहोता॥ पातालविषेचलाजावे॥ अथवाआकाशविषेउ
डताफिरे॥ अथवादेशांतरोविषेभ्रमतापिरे॥ नकछुतिसकोंअथकताहै
नकछुन्यूनताहै उसकोंपहाडोविषेचूर्णहोजावे॥ तवभीहर्षनहीहोता॥ इहतो
चेतनएकरसहै॥ शरीरकेनाशहूएनाशकैसेहोवे॥ ऐसेअपणेसरूपविषेसदाइस्थि
तिहै॥ अकाशवतपरमनिर्मलहै॥ अजरअमरशिवपदहै॥ तातेहेरामजीऐसेआत्मा
करअपणेसरूपविषेइस्थितिहो॥ २११॥ इति श्री निर्वाण प्रकरणे चेतनत्व नाश भाव
परमज्ञानवर्णननाम सर्गः॥ वसिष्ठ उवाच॥ हेरामजीएकमात्रहै॥ एकअभ्यासमात्र
है॥ भावमात्रकहीऐकेवलचेतनमात्र॥ तिसविषेजोउत्थानहूआहै तिसकानामभासनहै
अहं॥ तिसकानामभासहै॥ वहुरितिसविषेजोजगतहूआतिसकानामभासनहै
सोभासनकल्पनिकानामहै॥ सोकल्पनिकेनाशहूएअधिष्ठानकानाशतोनहीं
होताकि॥ जोअधिष्ठानकछुअरुभावहूआहोवे॥ तोनाशहोवे सोतोकछुहोतानी
आनहीं॥ तिसकेकुरणेविषेतीनसंगिआहूएहैं॥ सोकुरनाभीतिसकाकचनहै॥
कुरणेअरुअकुरणेविषेआत्मज्योकात्योहै॥ जैसेएकपवनस्पंदभीहोताहै॥ अकत
स्पंदभीहोताहै॥ दोनोविषेवायुएकहीहै॥ तैसेवोधअवोधविषेआत्माएकहीहै
वोधअवोधकुरणाअकुरणाएकहीअर्थहै॥ हेरामजीसोआत्माकिसकरकेकैसेनाश
होवे॥ जोचेतनभीमरताहोताहोवे॥ तवइसकाकेचनजगतकैसेरहे॥ कथनकाही
एअभास॥ सोअभासअधिष्ठानविनानहीहोता॥ तातेआत्माकानाशनहीहोता
अरुजोजडचेतनकोभीमरतामाने जोमरकेरवरूडइनहींउपजतातोभीआनन्द
हूआ॥ मेराभीएहीउपदेशहै॥ जोचेतनतामिटे॥ तवचेतनताउपजतीहै॥ तवजग
तभासताहै॥ तिसकेमिटेतेआत्माहीशेषरहेगा॥ अरुचेतनताकानाशनहीहो
ता॥ अरुजोजडकहेहोउहुचेतनताहिहोताहै॥ इहअवरचेतनहै॥ जिसतेजगतहो
ताहै॥ ताहेरामजीअनुभवतांएकहै॥ उसकानाशकैसेमानीऐ॥ अरुजेसेवरफशीतल
है॥ भावकिसीदोरेतपानकरीअ॥ उहुसभकोशीतलहीहै॥ अरुअमिउस्नहीहै
जिसदोरेतस्पर्शकरीऐ॥ तहोउस्नहीहै॥ तैसेआत्माकासरूपचेतनहीहै॥ सोएक
अखंडरूपहै॥ जहांकोउपदार्थभासताहै॥ सोतिसीचेतनताकरप्रकाशताहै॥ अरु
चेतनसत्तास्वछनिर्मलहै॥ अरुअद्वैतहै॥ सदाअपणेआपविषेइस्थितिहै॥ तिस
कानाशकैसेहोवे॥ अरुजोतूंशरीरकेनाशहूएआत्माकेनाशहोतामाने॥ तोऐसे
नहीं॥ काहेतेजोशरीरअखंडएहीपडाहै॥ अरुउहोपरलोकविषेचेष्टाकर्ताहै॥ अरु
पिशाचआदिककेशरीरभीनहीदृष्टिआवते॥ जोशरीरविनाअभावहोताहै॥ तातें
शरीरकेअभावहूएआत्माकानाशनहीहोता॥ काहेतेजोशरीरपातहूए॥ कछुदेह
नहीहोतीशरीरसाथ॥ काहेतेजोपुरुषहूकाजीवकलावीजनहीं॥ शरीरतोअख
डपडाहै॥ उसतेकछुनहीहोता॥ जीवपरलोकविषेसुखदुखभोगताहै॥ तोनाशतो
हूआकिशरीरकेनाशहूए॥ अरुजोतूंकहेजीवसत्तभावेउसविषेरहिताहै॥ तोतूं
सर्वदाकालउसकोंक्योंनहीदेखता॥ उसीसमेआपक्योंमृतदेखताहै॥ अरुसभा
एजनवांधवोउसीसमेमृतकजाणताहै॥ अरुजोतूंकहेजीवतिधर्मकरिअवि
शतिहै॥ पसकरशवअवस्थाकाअनुभवेनहीहोता॥ जीवनसमेजवजीवनभावु
नष्टहोजाताहै॥ तवमृतहोजाताहै॥ जोऐसाहोवेतोपरलोककाअनुभवकरे॥ ऐ
सातोनहीं॥ जवशरीरपातिहोताहै॥ तवशवअवस्थाकोभीजानताहै॥ वहुरिप
रलोकविषेप्राप्तिहोताहै॥ अपणाकर्मोकेअनुसारदेशइस्थानप्राप्तिहोताहै॥

तिनकामनभवकर्ताहै॥ सुखदुखकोंभोगताहै॥ इहवातशास्त्रकरकेभीसिद्धहै॥ सो
वेदशास्त्रपढेकहितेहैं॥ अनुभवकरकेभीसिद्धहै॥ जोमृतकोंकिसजागिआग्र
हअभावकोंकिसजागिआ॥ जिसजागिआसोएआत्माहै॥ एकअखंडरूपहै
तातेहेरामजीशरीरकेनाशविषेआत्माकानाशनहीं॥ सोतिनसूक्ष्महै॥ जेसाजो
साउसविषेनिश्चाहोताहै॥ तैसाहीभासताहै॥ जेसामिलताहै॥ तैसाहीप्रकाश
ताहै॥ ऐसीजोआत्मसत्ताहै॥ सोकिसीविषेवधमाननहीहोती॥ जैसेजोवडीवि
खसर्पाकारभासताहै॥ सोजीवडीसर्पतानहीहोजाती॥ सर्पकल्पनकाअभा
वहोजाताहै॥ अरुजीवडीज्योकीत्योंरहतीहै॥ तैसेहीआत्मसत्ताअकारहोभी
सतीहै॥ परअकारतोनहीहोती॥ अकारकाअभावहोजाताहै॥ अरुआत्मसत्ता
ज्योकीत्योंरहतीहै॥ एसीकारणतेवधमाननहीहोती॥ अरुसीआत्मसत्ताविषे
खजोअकारभासतेहैं॥ सोभ्रममात्रहै॥ अरुअज्ञानकरइहदुखपावतेहैं॥ हेरामजीइ
हजगतभ्रांतिमात्रहै॥ तिसअभासमात्रआदिकविषेजोवाराहैखकुरतेहैं॥ सो
तिनकेनिवर्तकाउपाइमेंतुमकोंकहिताहों॥ अरुजोकछुमेंउपदेशकीयाहै॥
तिसकेविचारणेकरइहभ्रांतिमिटजावेगी॥ अरुआत्मपदकीप्रापतिहोवेगी
अभ्यासविनाआत्मपदकीप्रापतिचाहेतोकदाचितनहोवेगी॥ जववारंवारअ
भ्यासकरेगा॥ तवइहभ्रांतिमिटजावेगा॥ अरुआत्मपदप्रापतिहोवेगा॥ अरुजिस
कातिनअभ्यासकरीताहै॥ अरुजननभीतिसकोकरीहै॥ सोप्रापतिहोतीहै
उहुकौनपदार्थहै॥ जोअभ्यासकरप्रापतिनहोवे॥ जोशकिकरफिरनहीं॥ अ
रुदृढअभ्यासकरीऐतोप्रापतिहोहोताहै॥ राजकीलक्ष्मीतेवप्रापतिहोतीहै॥ जव
रणविषेदृढहोकरजुधकरीताहै॥ तवजेहोताहै॥ अरुमनुष्यतेपडाकहेमेरीजे
होवे॥ तवतोनहीहोती॥ तैसेआत्मपदभीतवप्रापतिहोवेगा॥ जोदृढअभ्यासक
रेगा॥ अभ्यासभीकाहेकोमात्रकरप्रापतिनहीहोता॥ हेरामजीइसमनकेदोअवा
हूहैं॥ एकजगतकाकारणहै॥ एकसत्रूपकीप्रापतिकाकारणहै॥ जोअसतनमा
है जिनविषेआत्माज्ञानअनन्दनहीकहा॥ तिनकोत्यागे॥ अरुइहजोमहारामाय
णमोक्षउपायएहै॥ सोचारवेदखटशास्त्रसर्वएनिहोसपुराणोकासिद्धांतमेंकहाहै
जोइसकेसमानअरुनकोउकहै॥ नकिसीकहाहै॥ ऐसेजोमेराशास्त्रहै॥ जोइसके
विचारविषेमनकोलगावे॥ तवशीघ्रहीआत्मपदकोंप्रापतिहोवेगा॥ हेरामजी
आत्मज्ञानविनाअरुउपायकीन्याईनहीं॥ जोकहिणेमात्रतेसिद्धप्रापतिहोवे॥ इसकोंअ
पनितवहोवेगी॥ जववारंवारविचारकरकेदृढअभ्यासकरेगा॥ जवदृढभावनाहोवे
गी॥ तवमोक्षपदप्राप्तिहोवेगा॥ ऐसाकल्यानपितानहीकर्ता॥ अरुमाताभीनहीं
कर्ती॥ अरुमित्रभीऐसाकल्याणनहीकरेगो॥ तीर्थआदिकसाधनकर्मभीनकरहिंगे
जैसेकल्याणवारंवारविचारणेतेमेराउपदेशकरेगा॥ तातेअरुसभउपायकोंत्याग
करइसीकाविचारकर॥ तवसभभ्रांतिमिटजावेगी॥ अरुशीघ्रहीआत्मपदकीप्रापति
होवेगी॥ हेरामजीअज्ञानरूपीविसूचकारोगहै॥ जिसकरजीवजलतेहैं॥ जोमेरेशा
स्त्रकोविचारेगातिसकाविसूचकारोगनष्टहोजावेगा॥ अरुईश्वरकीसहासाथहै॥ औ
मिथ्याभ्रमकरकेपडेदुखीहोतेहैं॥ जोअपणाइसकिसीनाशकरणाहोवे॥ सोमेराशा
स्त्रविचारे॥ जेतेकछुसुंदरपदार्थदृष्टिआवतेहैं॥ सोमिथ्याहैं॥ तिनकेनमित्तजत
नकरणापरमआपदाहै॥ इहपदार्थकैसेहैं॥ अपानेरमणीयहैं॥ देखणेमात्रसुंदरभी
सतेहैं॥ परअंतरतेशून्यहैं॥ इनकेप्रापतिविषेदुखअनंतमानतेहैं॥ हेरामजीइहपा
दार्थतवलगसुंदरभासतेहैं॥ जवलगइसकोंमृतननहीआए॥ जवमृतआवेगीतवअ
समक्रियारहिजावेगी॥ इनकेनमित्तजोवडेजतनकरतेहैं॥ तेमूरखहैं॥ जिसकालमें
मृतआवतीहै॥ तिसकालइसकोकष्टआनिप्रापतिहोताहै॥ वदनकालेयइसकोंक
रीयेतोभीशांतिलननहीहोता॥ अरुजिसदर्वकेनमित्तवडेजतनकरतेहैं॥ अरुप्राणां
कोत्यागतेहैं॥ धनकेनमित्तजथकरतेहैं॥ साधनइस्थिरनहीरहता॥ धनकाअरुप्रा
णोकावियोगहोजाताहै॥ तवकष्टपावताहै॥ अरुमेंअसाउपाइकहताहों॥ जिस

वा॰
नि॰

विविज्ञननभीछोड़होवे॥ अरुस्वरूपप्रापतिभीहोवे॥ जबशास्त्रकेअर्थविषैदृढअभ्यास
होताहै॥ तबअजरअमरपदप्रापतहोताहै॥ तातेंमूढबुद्धिवानहैवोथकर्केअभ्यासअ
जरपदकेनमित्तनकरे॥ अरुउसीकाजननकरे॥ जोजननकरेगानहीं॥ तबअज्ञानरूपी
शत्रुलातामारेगा॥ अरुजोशत्रुहीकोमारणाहोवे॥ तबनिर्माननिर्मोहहोकरआत्म
पदकाअभ्यासकरे॥ हेरामजीजोपुरुषअबलगअज्ञानरूपीशत्रुकीमारणाका॥ अरु
पदकाअभ्यासकरे॥ हेरामजीजोपुरुषअबलगअछिकोंपावहिंगे॥ संसाररूपीड:
आत्मपदकेपावणेकाजतननहींकरते॥ सोपरमकछिकोंपावहिंगे॥ जुमहारामायण
खनेकदाचितनसुनिकरावहिंगे॥ अरुतिनकसुणेकाउपाइकहीहै॥ जुमहारामायणइ
खनेकदाचितसुनिकरावहिंगे॥ अरुतिनकसुणेकाउपाइपरागविखिथारणा॥ इसउपाइकरअ
ब्रह्मविद्याकाउपदेशहै॥ तिसकोविचारकर्केअपरागविखिथारणा॥ जोसर्वसिद्धांतोंकासारहै॥ अरुशा
नमिदिजावेगी॥ कैसामहारामायणउपदेशहै॥ पवरसकेविचारकरअविद्याआत्मपदप्राप
होकरप्रापतिहोवेअप्रयत्नभीहोवे॥ पवनिल्लोनेनेलका
निहोवेगा॥ जैसेतिलोंकीखल्लछिडोनेलकाकाढणाकठनहै॥ अरएसेतैसनरहै॥ नाखल
टीयेतोनिकसताहै॥ तैसेमेराउपदेशतिलोंकीन्याईहै॥ अरएसेतैसनरहै॥ तिनहुविख
कीन्याईहै॥ हेरामजीजैसेकुछशास्त्रहै तिनोंविखमरखसिद्धजोहै॥ तिनहुविख
जोसारसिद्धांतहै सोमैंनेतुककोकहाहै॥ जोआत्मासदाविदमानहै॥ तिसकोभान
कर्केअविधमानजानताहै॥ तिसीकेविदिमानकर्णोंकोशास्त्रप्रवर्तनेहै॥ जोतिनके
विचारकरभीआत्माकोविदिमाननहींजाणता॥ सोमेरेउपदेशकेविचारणाशि
डोआत्माकोविदिमानहोजानताहै॥ इहनिश्चेहै॥ हेरामजीअवरजोशास्त्रहै
तिनकेदृढविचारजतननककेजोसिद्धनाहोणेहै॥ सोइसशास्त्रकेविचार
कर्केसुखनहींपावेगा॥ शास्त्रकलोकाअरुलक्षणविचारणानहीं॥ शास्त्रको
जुगानविचारदेखणीहै॥ जोकछुसर्वशास्त्रोंकासारसिधानहै॥ सोमैंनेतुककोस्ना
ममावरणकेकहाहै॥ इसकाविचारकरइसकेजुगतिदेखहु॥ जोकछुअज्ञानीमु
फकोकहितेहै॥ अरुहसतेहै सोसमभहोमैजानताहौ॥ परमेराजोकोउदयाकास्र
भावहै॥ तिसकरमैंचाहिताहौ॥ जोकिसीप्रकारतिनकोउपीससारतेनिकसाहं॥ अस
कारणातेमैउपदेशकरताहौं॥ हेरामजीमैंतुझकोउपदेशकरताहौं सोकिसीअपयो
अर्थकेनमित्तनहींकरता॥ जोमेराकछुअर्थसिधहोवेगा॥ जोकोउतुझकोउप
देशकरताहौ सोमैमेरा॥ तेराजीकोउबडाभुन्नहै॥ सोएसथससवनहोकरमलन
सवनकोउपदेशकरताहै॥ सोसवननेदेखताहै॥ नमानेखवहै॥ नजोदाहै॥ नराद
सहै॥ नागपिशाचआदिकजेनभीनहीं॥ केवलजोज्ञानमात्रहै सोतेंभीउ
हाहै॥ अरुमैंभीउहीहै॥ अरुजगतभीउहीहै॥ जोसवउहीहै॥ तौवासनाकि
सकीकरणीहै॥ हेरामजीइसकोजोदुखकाकारणाहै॥ सोवासनाहीहै॥ जोपुरुष
इससावबंधनाडुखकीचिकित्साअवनकरेगानवउहआत्मस्तन्याराहै॥ अरुवे
डुखोविखजाइपडेगा॥ जहांतिनकसनेकोभीसमर्थनहोवेगा॥ तबकयाकरे
गा॥ तौतेअवहीउपाइकरे॥ जबलगसर्वभावोंकीवासनानिवर्तननहींहोती
तबलगसरूपकामादात्काकरनहीं होता॥ एसीकानामबंधनहै॥ जबवासनाछेहोवेगीत
दआत्मपदकीप्रापतिहोवेगी॥ जैसेकछुहोवेगीपदार्थभासतेहै॥ सोअविचारसिद्धहै
विचारकीएतेकछुनहींरहितेन॥ जोविचारकीएतेनरहहि॥ तिनकीअभिलाकरणीवि
अर्थहै॥ जोवस्तुहानीहोतिसकेपावणेकाजतनभीकरीअे॥ सोवरणताहै॥ अरुजोहोवे
होनहो॥ तिसकेनमित्तजतनकरणीसुखरखताहै॥ पहुजगतपदार्थअसत्तरूपहै॥ जै
सेसहुकेसिरअसतहै॥ जैसेमारुथलविखनदीअसतहोतीहै॥ तैसेइहजगतअ
सतहै॥ जासक्षिकदर्शीज्ञानवानपुरुषहै॥ तेजानतेहै जोजगतिससेकेसिंगवत्अ
सतहै॥ अरुभ्रांतमात्रहै॥ इसकेनमित्तजतनकरणीसुखरखताहै॥ अरुजोपदार्थकारणा
बिनाद्रिष्टिआवे॥ सोतोतिसकोजाणीअभ्रममात्रहै॥ आत्माजगतकाकारणानहै॥ ता
तेंअनीतहै तातेजगतमिथ्याहै॥ आत्मपदसर्वइंद्रीयोंतेअतीतहै॥ जगतपंचभूतकिहै
सोसइंद्रीयोंकेविखभूतहै॥ अरुआत्मापरमपदमनइंद्रीयोंकेविखनहीं॥ सोइनको
कारणाकैसेकहीअे॥ जोअधारूपदहै॥ सोनानाप्रकारकेपदार्थोंकाकारणाकैसेहोवे॥ सो
निराकारआत्मपदहै॥ सोपृथवीआदिकभूतनानाप्रकारकेआकारोंकाकारणाकैसेहो

वे॥ हेरामजीजैसाकारणाहोताहै तैसाहीकार्यतिससेउपजताहै॥ सोआत्मानिराकार
अरुजगतसकार॥ निराकारअकारकेसेकारणाहोवे॥ जैसेवटकाबीजसकारहोताहै
तिसकाकार्यजोवटभीसकारहोताहै॥ सकारतेनकार्यनिराकारतोनहीं होता॥ तैसे
निराकारतेसकारकार्यभीनहींहोता॥ तातेइसजगतकाकारणआत्मानहीं॥ तस
मवाएकारणहै॥ ननमित्तकारणहै॥ नमित्तकारणनबहोताहैजोकछुद्वितीयव
स्तुहोताहै॥ जैसेमृत्तकाकालेकरकुलालघटवणावताहै॥ सोआत्माअद्वैतहै॥ नमि
त्तकारणकैसेहोवे॥ अरुसमवाएकारणभीनबहोताहै॥ जोसकारवस्तुहोतीहै॥ जै
सेमृत्तकातेघटहोताहै॥ इहांपरणामकरघटहोताहै॥ सोआत्मानिराकारअपरणा
मीहै॥ जगतकाकारणकैसेहोवे॥ दोनोंकारणोंतेरहितभासे॥ सोजाणीयेजोभ्रांतेि
मात्रहै॥ जैसेस्वप्नविखेनानाप्रकारकेअस्थूलप्रकारभासतेहै॥ परभ्रांतमात्रहै॥ तै
सेइहजगतकारणाविनाहीभ्रांतमात्रभासताहै॥ आत्माविखजगतकदाचितहुआ
नहीं॥ जैसेप्रकाशविखतमनहींहोता॥ तैसेआत्माविखजगतनहीं॥ तौताकहोभा
सताकैसाहै॥ तोउसीकाकंचनभासताहै॥ जोकंचनआत्माकाअभासभासताहै॥ सो
उहीरूपहै॥ जैसेचलतीहैतोभीवाउहै॥ अरुजोठहरतीहैतोभीवायुहै॥ चलनेअरु
ठहरणोविखभेदकछुनहीं॥ जैसेआकाशअरुशून्यताविखभेदकछुनहीं॥ तैसेआ
त्माअरुजगतविखभेदकछुनहीं॥ उहीआत्मासत्ताफुरणेकरजगतरूपहोभास
तीहै॥ जैसेजलमेतरंगहोताहै॥ जलअरुतरंगविखभेदकछुनहीं॥ तैसेचेतन
आत्माअरुजगतविखभेदकछुनहीं॥ अरुकछुदूसरावस्तुनहीं॥ जोकहतेहैजग
तकर्मोंकरहोताहै॥ सोअसतहै॥ कर्मभीयथिकरहोताहै॥ जोआत्माविखजग
तहोताकर्मकैसेहोवहि॥ जोकर्महीनहींतौजगतकेसेहोवे॥ जैसेसतहैकोसिद्धकेथ
नावसोथवाजावलावणाअसतहै॥ तैसेकर्मोंकरजगतहोणाअसतहै॥ अरुए
ककहितेहै॥ स्वरूपप्रमाणोंतेजगतहोताहै॥ सोभीअसतहै॥ काहेतेजोस्वरूपप्रमाण
परमाणकरजगतरूपहोएहोते ताबुद्धिरूपजगतनभासता॥ इहजोबुद्धिरूपक्रिया
होतीद्रिष्टिआवतीहै॥ जोप्रमाणोंतेजगतहोता॥ उहीवहनाजाता॥ काहेतेजोप्र
माणसजडहै॥ इहउहीवडतेआवतेहै॥ सोअसतानहीं॥ वृथशब्दवकचेष्टाहोतीहै॥ ए
सीनेकहाहै॥ जोअसतकहितेहै॥ काहेतेजोस्वरूपभीकिसीतेउत्पन्नहुएचाहीअे
अरुकोआरंभणाकाभीअस्थानचाहीअे॥ सोआत्माविखदेशकालवस्तुतीनोंनहीं
तौतोकल्पनहै॥ जोतीनोंआत्माविखनहुए॥ प्रमाणोंकेसेहोवहि॥ अरुजगतके
सहोवे॥ आत्माअद्वैतहै॥ तातेउसविखेजगतनउपजाहै नननष्टहोताहै॥ जोउपजा
होताहै॥ तोनष्टभीहोताहै॥ जोउपजाहीनहींतोनष्टकेसेहोवे॥ आत्मसत्ताज्यों
कीत्योंअपणेआपविखेइस्थितहै॥ तातेंहेरामजीमैंभीअकाशरूपहौं॥ सभजग
तभीअकाशरूपहै॥ तैंभीअकाशरूपहै॥ किसीकेसाथअकाशहीसभनिराकार
रूपहै॥ अरुजोतूकहेवोलनेचालनेक्याहै॥ तौजैसेस्वप्नेविखेसभअकाशरूपहो
तेहै॥ अरुनानाप्रकारकीचेष्टाकरतेदृष्टिआवतेहै॥ अरुबोलतेचालतेहै॥ तैसेइह
भीबोलतेचालतेहै॥ परअकाशरूपहै॥ जोतेरारूपहै सोसुणा॥ देशकालत्यागकरजो
देशांतरकोसंवित्जातीहै॥ अरुतिसकेमध्यजोसंवित्हैसोतेरारूपहै॥ सो
अनामएसवेडखोतेरहितहै॥ जैसेजाग्रतदेशकोत्यागकरस्वप्नकोजातीहै॥ जोअ
तिआरीसाक्षात्आएआतमहोसुखअचेतचिनमात्रसत्ताहै॥ सोतेरारूपहै॥ तिसवि
खेइस्थितज्ञानवानोंकानिश्चाहै॥ अरुब्रह्माविष्णुरुद्रआदिकतिसीविखइस्थितरहि
तेहै॥ तिनकोकदाचितउत्थाननहींहोता॥ जैसेसुमेरुपर्वतडोलतानहीं॥ तिकसे
नहीं॥ अरुतैसेउनकोसर्वरूपनेउत्थानकदाचितनहीं होता॥ सोआत्मसत्ताकैसीहै॥ न
उपजतीहै॥ नाविनसतीहै॥ नहारकीहारहोतीहै॥ सदाअपणेस्वभावविखेए
स्थितहै॥ हेरामजीजोकछुजगतनदेखताहै॥ सोवास्तवकछुउपजिआनहीं॥
भ्रमकरकेभासताहै॥ जैसेस्वप्नेविखनानाप्रकारकेअरंभहोते॥ दृष्टिआवतेहै॥ अरुजा
गतेअनिश्चतअभावभासतेहै॥ तैसेइहजगतभीहै॥ आदिजोअद्वैतअनंतविखेस

८मं

ज्ञाहुआहै॥तिसविखेब्रह्माउपजताहै॥तिसतेआगेजगतरचाहै॥सोब्रह्माहीअकाश
रूपहै॥सत्यपनेएतेकछुहुआनहीं॥सभभ्रमतनरूपहै॥जैसेस्वप्नेविखेनदीपर्व
तसतदिष्टिआवतेहै॥परकछुउपजेनहीं॥अनभवसत्तासदाज्योंकीत्योंइस्थि
तिहै॥तैसेब्रह्मातेआदित्रिणपर्जंतजगतसभभ्रमसतरूपहै॥जिसकातुमस
ल्लाजीकहतेहो॥सोकछुवास्तवतेउपजाहीनहीं॥तौजगतकौउत्पतिसेतु
फकोकैसेकहो॥जैसेमारुथलकीनदीहीउपजीनहीं॥तिसविखेजगतउपजाकौ
मछीयाकैसेकहो॥तैसेआदिब्रह्माहीउपजानहीं॥आपविखेइस्थितिहै॥अरुअ
सेकहो॥केवलआत्मचेतनसत्तासदाअपुणेआपविपर्जैरूपभासताहै॥जैसेस्वप्नेविविध
जगतभीउहीरूपहै॥परअज्ञानीकेविपर्जेरूपभासताहै
रूखअनभवरूपहै॥अरुअपणेप्रमादिककेनानाप्रकारकेपदार्थभासतेहै
पखतजलपृथ्वीजन्ममरणआदिकविकारदेखताहै॥परकछुहुआनहीं॥आत्म
सत्ताज्योंकीत्योंइस्थितिहै॥परअज्ञानकरविपर्जैरूपभासताहै॥तैसेइहजगतभीजा
ण॥आत्मसत्तातेएतरकछुनहीं॥सभचिदाकाशरूपहै॥अज्ञानकरकेआत्मसत्ताज
गतरूपहोभासतीहै॥अरुजिसकेज्ञानकरनिवर्तहोजाताहै॥असाजोआत्मतत्व
है॥तिसकेपावणेकाजतनकर॥सोकैसापदहै॥नित्यसुधपरमानन्दरूपहै॥अरुस
दापणेसुभावविखेइस्थितिहै॥सोनितअनभवरूपहै॥सोसदाअनभवकरकेप्रका
शताहै॥तिसविखेइस्थितिहोणाएसमोकाएरनाकीआहै॥हेरामजीजेताकछु
प्रपंचहै॥सोभ्रांतमात्रहै॥जैसेजेवडीविखेसर्पभ्रांतमात्रहै॥तैसेआत्माविखेजग
तभ्रांतमात्रहै॥तिसकोत्यागकरअपणेसुभावविखेइस्थितहो॥२२॥इतिश्रीनिर्वा
णप्रकरणेनामसर्गः॥वसिष्ठउवाच॥हेरामजीजिसप्रकारइहजगतभासतासु
निआहै॥अरुभासताहैसोसुणा॥आदिजोसुधदेवअचेतनचिन्मात्रहै॥तवतिसवि
खेचेतनतात्फुरतीहै॥तवसंवेदनहोतीहै॥तिसविखेशब्दतनमात्रहोतीहै॥श
ब्दतनमात्रतेअकाशउत्पन्नहोताहै॥वहुडइस्पर्शकीइछाहोतीहै॥तववायुउप
जतीहै॥जवअकाशविखेवायुउत्थानहोताहै॥जवतिसवायुअरुअकाशकासंयोगहो
रघणाभावतेअग्निउपजतीहै॥जवअग्निविखेप्रज्वलितसुभावहोताहै॥तवजलउत्प
न्नहोताहै॥अर्थइहजवतेजकीअधिकताहोतीहै॥तवजलउत्पन्नहोआवताहै
अनंतर॥जवजलइकठावहुतहोताहै॥तवतिसतेपृथ्वीउत्पन्नहोतीहै॥एसे
प्रकारआकाशवायुतेजजलपृथ्वीउत्पन्नहोतेहै॥तवतिसतेशरीरउपजतेहै॥
इस्थावरजंगमरूपनानाप्रकारकाजगतदृष्टिआवताहै॥अरुवास्तवतेनपंचभूत
हैनजगतहै॥नकोउउपजाहै॥नकोउनष्टहोताहै॥केवलआत्मसत्ताअपणेआ
पविखेइस्थितिहै॥जैसेस्वप्नेविखेनानाप्रकारकाजगतअरुभ्रमप्रमाणसहित
दृष्टिआवताहै॥परवास्तवकछुउपजानहीं॥आत्मसत्ताहीचित्तकेफुरणेकरजग
तरूपहोभासतीहै॥तैसेइहजगतभीजाणु॥हेरामजीइहजगतसभअपणाअ
नभवरूपहै॥भ्रमकरकेअकारसहितभासताहै॥जवलोप्रकारविचारकरदेखौअ
वजगतभ्रममिटजाताहै॥केवलचेतनआत्मतत्वमात्ररहिताहै॥सोसुण॥जैसेस्वप्ने
विखेनिद्रादोखकरकेनानाप्रकारकेपदार्थभासतेहै॥अरुजवजागतेहै॥तवएकअ
द्वैतअपणाआपहीभासताहै॥तैसेआत्मसत्ताविखेजागतेअरुद्वैतनहीभासताहै॥हे
रामजीजोबोधसमेद्वितीयकछुनभासे॥तोअबोधसमेभीजाणीये॥जोद्वैतीयकछुन
हीहै॥अरुजोबोधसमेसताभासेसोजाणीये॥सर्वदाकालइहीसत्ताहै॥हेरा
मजीअसेनिश्चैधारजोआहारजगतकछुवस्तनहीं॥जैसेआकाशविखेनीलताभास
तीहै॥जैसेकिरणाविखेजलभासताहै॥जैसेजेवडीविखेसर्पभासताहै॥तैसेआत्मा
विखेजगतभासताहै॥विचारकीएतेकछुनहीपाएता॥हेरामजीअपणीकल्पना
हीइसकोजगतरूपहोभासतीहै॥औरकछुवस्तनहीं॥जैसेसपनेकीसिष्टिअपणी
कल्पनाहीहै॥परनिद्रादोखकरकेभिन्नहोभासतीहै॥तिसकररागअरुद्वेखउपजे
ताहै॥अरुजागेतेसभखोभमिटिजातेहै॥तैसेअपणेअज्ञानकरकेजगतसत्तभास

ताहैविखेरागअरुद्वेखभासतेहै॥ज्ञानकरसभशांतहोजातेहै॥हेरामजीएहज
गतभ्रममात्रहै॥ज्ञानवानकेनिश्चैविखेसभचिदाकाशहै॥अरुअज्ञानीकेनिश्चै
विखेजगतहै॥जोवडेदोमअज्ञानप्राप्तिहोवहि॥तवभीज्ञानवानकोचलाएनही
सकते॥उसकेनिश्चैविखेकछुद्वैतनहीफुरता॥सदाएकरसरहिताहै॥जाप्रल
कालकेसवअग्निजागीहै॥अरुसमुद्रउछलहि॥अरुपहाडकेऊपरपहाडपडेअ
सभएअानकथाहहोवहि॥तौभीज्ञानवानकेनिश्चैविखेकछुद्वैतनहीफुरता॥
जैसेकाठपुरुखचित्रकृदिसोएआपडाहै॥तिसकेसुपनेविखेवडेखोभहोतेहै॥
परजाग्रतकौकछुनहीभासता॥तैसेज्ञानवानकेनिश्चैविखेद्वैतकछुनहीभास
ता॥काहेतेजोहैनहीं॥अरुअज्ञानीकोहोनेपडेभासताहै॥जैसेवंधिआएस्त्रीसु
पनेविखेअपणेपुत्रकोदेखतीहै॥सोअणहोताभ्रमकरउसकोभासताहै॥तैसे
अज्ञानीकोअणहोताजगतसतहोइभासताहै॥हेरामजीभ्रमकरकेअणहोता
भासताहै॥अरुहोतेकाअभावभासताहै॥जैसेवंधिआअणहोतेपुत्रकोदेख
तीहै॥अरुपुत्रवालीसुपनेविखेपुत्रकाअभावदेखतीहै॥तैसेअज्ञानकरकेअण
होताजगतसतभासताहै॥अरुसदाअनभवरूपआत्माकाअभावभासताहै॥सोभ्रम
करकेहोरकाहोरभासताहै॥जैसेदिनकोसोयाहुआसुपनेविखेरात्रिकोदेख
ताहहि॥अरुरात्रकोसूयाहुआसुपनेविखेदिनकोदेखताहै॥अरुस्थनरुस्थानवि
खेनानाप्रकारआयारदेखताहै॥अरुअंधकारविखेप्रकाशकोदेखताहै॥सो
भ्रमकरकेदेखताहै॥अरुपृथिवीपरसूयाहै॥अरुसुपनेविखेअकाशमोउडताफि
रताहै॥अरुगावनविखेगाडताआपकोदेखताहै॥सोभ्रमकरकेभासताहै॥त्यों
इहजाग्रतजगतभीविपर्जैरूपभ्रमकरकेदेखताहै॥जाग्रतअरुसुपनेविखेभेद
कछुनहीं॥जैसेसुपनेविखेस्वएहउएवालमेचलतेदृष्टिआवतेहै॥हेरामजी
जैसेसुपनेविखेतुमकोनानाप्रकारकाजगतभासताहै॥अरुजागकरकहिते
होसभभ्रममात्रथा॥तैसेइहतुमकोजाग्रतजगतभ्रममात्रभासताहै॥जैसे
जलअरुतरंगविखेकछुभेदनहीं॥तैसेसुपनेअरुजाग्रतविखेकछुनहीं॥जैसेदो
मातुखएकहीजैसेहोतेहहि॥जैसेदोरुखरजहोवहि॥तिनविखेभेदकछुन
हीहोता॥तैसेसुपनेअरुजाग्रतविखेभीभेदकछुनहीजाणना॥रामउवाच॥हे
भगवनसुपनेकोअनभावसोअल्पमात्रभासतीहै॥जोअवहीजागकरकहिता
है॥इहभ्रममात्रथी॥अरुजाग्रतदृढहोकरभासतीहै॥तुमदोनोकोसमान
कैसेकहितेहो॥वसिष्ठउवाच॥हेरामजीजिसप्रतिभाकाअनेकछुअनभवहोता
है॥सोजाग्रतकहीतीहै॥अरुजिसकाअनेकछुअनभवनहीहोताचित्तविखे
स्मरणहोतीहै॥सोसुपनाहै॥सोजाग्रतअरुसुपनदोप्रकारकीहै॥जिसकाप्रत
छअनभवहोताहै॥सोजाग्रतहै॥तिसविखेजवसूएगएअरुतवसुपनाआ
या॥तिससुपनेविखेजगतभासिआएआ॥सोजाग्रतहोजगतभासआएआ॥ढो
हातिसकोजाग्रतहोगए॥अरुजहोतेसूयाथासोसुपनाहोगया॥अरुजहांभासिआसुपने
विखेतिसकोजाग्रतन॥जागकरचेष्टाकरणेलागा॥आपजननलोकोंसाथ॥वहुडजवउ
होनेस्तनहोगएआतववहुडिउसविखेआया॥आपकरपिछल्याकोसुपनाजानणे
लगा॥तौचित्तकेभ्रमकरकेसुपनेकोजाग्रतदेखताभयाथा॥अरुजाग्रतकोसुपनादेखना
भयाथा॥हेरामजीसोकाभया॥जैसेकिसीकोसुपनाआयातिसविखेमएणोचेष्टावि
वहारकरणेलगा॥तिसविखेफेरसुपनाहुआ॥तिससुपनातरतेजवजानवफेरउससु
पनेविखेआरकरउसकोसुपनाजानणेलगा॥अरुउससुपनेकोजाग्रतजानणेलगा॥हे
रामजीजैसेउहसुपनातरतेजागिकरतिसकोसुपनाकहिताहै॥अरुसुपनेकोजाग्रतकहि
ताहै॥तैसेइहजाग्रतसुपनरूपहै॥अवआगेजोहोताहैसोसुनौ॥एकअरुप्रकारहै॥
जोइसजाग्रतविखेमृतकहुआशरीरछूटगया॥तवपरलोककोदेखताहै॥तवपरलो
कजाग्रतहोइगए॥अरुइसजाग्रतकोसुपनाजानणेलगा॥जैसेसुपनेजागिआसुपनेको

वं॰ सं॰ ८

भ्रमजाणतानाहै॥ वहुडपरलोकवि
भ्रमकहितनाहै॥ तैसेइसजाग्रतकोंपरलोकविखे स्वप्नेकीन्याईहोगए॥ अरुजोस्वप्नेविखेस्वप्ने
विखस्वप्नआया॥ तवपरलोककीजाग्रतस्वप्नहोकरईहांआया तववहुडजाग्रत
भासीतिकोंजाग्रतजाणताभया॥ वहुडउहांतेस्वप्नजीस्वप्नअरुजाग्रतदोनोंमिथ्याहै॥ अ
होगए॥ परलोकस्वप्नाहोगया॥ तातेहेरामजीस्वप्नाअरुजाग्रतणाहै॥ अरुइसकाअ
रुस्वरूपसेजवजाणतेहै॥ तवजाग्रतेहैएसकानामजागरणहै॥ अरुइहस्वप्नेहै॥ इस
ग्रतमानतेहै॥ अरुउसकोस्वप्नाजाणतेहै॥ अरुइहसकोजाग्रतजाणतेहै॥ अरुइहदोनोंनल
विखेजोजीवसंवेगहोरहाहै॥ इसकरइसकोजाग्रतजाणतेहै॥ आत्ममात्रपनकीअनभाभी
भेदकुछनहीं॥ इहदोनोंआत्माविखेभ्रमसतरूपहै॥ अरुउपजतामरताभीहै॥ उप
सतीहै॥ आत्मातनकदाचितउपजताहै नमरताहै॥ अरुमरनाइसकारणतेनहींजोभविष
जताइसकारणतेनहीं॥ जोपूरवसिद्धहै॥ अरुथकालविखे
नकालविखेभीस्थितहै॥ परलोकविखेसुखदुखकोभोगताहै॥ अरुवर्तमानज्योंकात्यों॥ हेरामजीइह
जन्मताभीहै॥ मरताभीहै॥ प्रतछभासताहै॥ अरवाप्तवतेज्योंकात्यों॥ जैसेघटस्तनका
जगततिसकाअभासहै॥ चेतनचमत्कारचेतनहोकरभासताहै॥ चेतनअतेइतरजगतकुछ
रूपहै॥ चेतनकातेइतरकछुनहीं॥ तैसेचेतनभीचेतनरूपहै॥ हेरामजीजैसेतुमसकोंस्वप्नाआवताहै
नहीं॥ इस्थावरजंगमसभचिन्मात्ररूपहै॥ हेरामजीमारीअनभवरूपहै॥ अरुतोकुछनहीं
तिसविखेनमकोपथरपहाडभासतेहै॥ सोतमारीअनभवरूपहै॥ तैसेजगतचेतनतें
तैसेइहदृष्टिसभचिन्मात्ररूपहै॥ जैसेघटस्तनकातेभिन्ननहीं॥ सभकाइहरूपहै तैसेजगतचेतन
तेभिन्ननहीं॥ जैसेकाष्टकेपात्रकाष्टतेभिन्ननहीं॥ जैसेपखानकीमूर्तिपखाणरूपहै॥ जैसेसमुद्र
तरंगरूपहै॥ चेतनतातेइतरकछुनहीं॥ जैसेअग्निउष्णरूपहै॥ ते
तरंगरूपहोभासताहै॥ तैसेचेतनचेतनरूपहोभासताहै॥ जैसेअग्निउष्णरूपहै॥ ते
सेचेतनचेतनरूपहै॥ जैसेवायुस्पंदरूपहै॥ तैसेचेतनचेतनरूपहोभासताहै॥ जैसेस्पंद
वायुजगतभीचेतनरूपहै॥ तैसेचेतनचेतनरूपहै॥ जैसेपृथ्वीचेतनरूपहोतीहै॥ जैसे
अकाशशून्यरूपहोताहै॥ जैसेशून्यताहैनहीं आकाशहै॥ तैसेजगतहैतैसेहीचेतन
त्रहै॥ जैसेस्वप्नविखेसुखसंवनपहाडनदीयांकारूपभासतेहै॥ तैसेचिन्मात्रस
ताजगतरूपहोभासतीहै॥ हेरामजीजोजोकछुपदार्थतुमकोंभासतेहै॥ तिन
कोंत्यागकरआत्माकोंदेखिरहो॥ इहविश्वसभआत्मरूपहै॥ निडरहोकरअकाशवत
निर्मलहै॥ ऐसेजाणकरतिसीविखेस्थितहोवो॥ हेरामजीजवतुमकोंस
भावसत्ताकाअनभवसाक्षात्कारहोवेगा॥ तवजगतकछुहैनकलनाभासती
है॥ सोसभक्षीणहोजावेगी॥ केवलआत्ममात्रशेषरहेगा॥ एवंश्रुतिः॥ रामउवा
च॥ हेभगवनचिदाकाशकैसाहै॥ जिसकोंतुमसर्थमब्रह्मकहतेहो॥ तिसका
किआतरूपहै॥ तुमारेअस्तनरूपीवचनोंकाज्ञानकरनेमेत्रिप्तनहींहोता॥ ताते
स्यामकेकहो॥ वशिष्ठउवाच॥ हेरामजीजैसेएकमाताकेगर्भतेदोपुत्रजोडउ
त्पनहोतेहै॥ उनकाएकजैसाआकारहोताहै॥ सोजगतविखेव्यवहारकेनमि
तउनकानामभिन्नभिन्नहोताहै॥ अरुउनविखेभेदकछुनहीं॥ अरुजैसेदोपात्र
विखेजलरखीयेतोजलएकहीहै॥ परपात्रोंकेनामभिन्नभिन्नहै॥ तैसेस्वप्नअ
रुजाग्रतदोएहहि॥ परएकहीजैसेहै॥ सोआत्माविखेकल्पितहै॥ जिसविखेइ
हदोनोंकल्पितहै॥ सोचिदाकाशहै॥ अरुवृत्तिजोफुरतीहै॥ देशतेदेशांतरको
जातीहै॥ तिसकेमधविखेजोसंवतज्ञानरूपहै॥ जिसकेआश्रयवृत्तिफुरतीहै
सोसंवतचिदाकाशहै॥ अरुवृक्षजोरसिकोंखेंचकरऊर्ध्वकोंजाताहै॥ जिसके
आश्रयखेंचकरऊर्ध्वकोंपसरताहै॥ सोचिदाकाशरूपहै॥ हेरामजीजैसेकछु
वृक्षहैफुलफलदाससभरसकेआश्रयपडेफुरतेहै॥ तैसेइहजगतसभवि
दाकाशकेआश्रयफुरताहै॥ ऐसीजोसत्ताहै॥ सोचिदाकाशहै॥ अर्जुनकोइच्छा
समनिवृत्तहोगएहहि॥ अरुरागद्वेषरूपीमलनिवृत्तभीहै॥ सारतत्त्वकेअ
काशवतजोस्वप्नसंवतहै॥ तिसकोचिदाकाशजाणा॥ हेरामजीजाग्रतकाजव
अनहोताहै॥ अरुजडताआएनहीं॥ तिसकामधजोअद्वैतसत्ताहै॥ सोचिदाका

शहै॥ अरुवल्लीफुलफलगुच्छेवृक्षजिसकेआश्रयवृद्धहोतेहै॥ सचिदाकाशहै
रूपदृष्टअरुअलोकमनस्कारसोएनतीनोंकाजहांअभावहै॥ ऐसीजोसत्ता
थसंवतहहि॥ सोचिदाकाशहै॥ पृथ्वीपर्वतनदीयांसर्वकाआश्रयहै॥ सो
चिदाकाशहै॥ अरुदृष्टादृष्टदर्शनइहतीनोंजिसतेउपजतेहै॥ वहुडि
जिसविखेलीनहोजातेहै॥ ऐसीजोअधिष्ठानसत्ताहै॥ सोचिदाकाशहै
अरुजिसतेइहसर्वउपजेहै॥ अरुजोइहसर्वहहि॥ जिसविखेसर्वहै ऐसा
जोसर्वआत्माहै॥ सोचिदाकाशहै॥ अर्धरात्रकेजोउदतहै॥ इंद्रियोंकीचप
लताअरुविखेअहंकाअभावहोताहै॥ निरफलसत्तातिसकालमोहोतीहै॥ सोचिदा
काशहै॥ हेरामजीजिससंवतविखेस्वप्नेकीसृष्टिफुरतीहै॥ वहुडिजाग्रतभासती
है॥ दोनोंकेअनभवकरणेहारीसत्ताहै॥ सोचिदाकाशहै॥ अरुजसेसाफुरणाहोताहै ते
साहीजिसविखेभासताहै॥ उहीदृष्टादर्शीदृष्टिहोकरभासताहै॥ इसतेइतरकु
छनहीं॥ आत्मरूपीसतहै॥ अरुसत्तअसत्तरूपीजगतनमणकेजिसविखेउपजतेहै प
हैं॥ जिसकेआश्रयइनकाफुरणाहोताहै॥ सोचिदाकाशहै॥ हेरामजीजिसकेआ
श्रयनेसर्वविखेजगतउपजताहै॥ अरुउनमेसर्वविखेलीनहोताहै॥ ऐसेजोअ
धिष्ठानसत्ताहै तिसकोंचिदाकाशजाणा॥ इहसभजगतमिथ्याहै॥ आनकेके भा
सताहै॥ जैसेमारूथलकीनदीभासतीहै॥ इसतेजारहितहै॥ जिसविखेसंकल्प
विकल्पकाखोभनहीं॥ अरुसदाअपणाआपविखेइस्थितहै॥ उत्थानरहितनिर्वि
कल्पसत्ताहै॥ सोचिदाकाशहै॥ हेरामजीतिनतेनकजोपाछेशेषरहितताहै अना
छेपदतिसकोंतुचिदाकाशजाणा॥ अरुआत्मसत्तास्वथचेतनसभकाअपणाआप
सभकाअनभवरूपहोकरप्रकाशताहै॥ तेसाफुरणातिसविखेहोताहै॥ जोऐसाहै
तेसाहोभासताहै॥ तातेआत्मसत्ताहीफुरणेकरजगतरूपहोभासतीहै॥ जैसेजाग्र
तकेअंतरविखेअहंतनसत्ताहीहोतीहैजैसी॥ वहुडितिसीतेस्वप्नसृष्टिभासआवती
है॥ तोस्वप्नसृष्टिवास्तवकछुउपजीनहीं॥ उहीअनभवस्वप्नसृष्टिहोभासताहै॥ ते
सेइहजगतजोकारजकारणरूपजोदृष्टिआवताहै॥ सोअविद्याकरकेभासताहै॥ वा
स्तवकछुउपजानहीं॥ जैसेस्वप्नसृष्टिअकारणभासती॥ तैसेइहसृष्टिअकारणहै
ब्रह्मातेलेकरचीटीपर्यंतजेताकछुइस्थावरजंगमरूपजगतभासताहै॥ सोस
भचिदाकाशरूपहै॥ कछुउत्पन्ननहीभया॥ जोइहसर्वकछुनहुआतोकारजका
रणभीकछुनहुआ॥ हेरामजीनकोउदृष्टिहैनदृष्टाहै॥ नभोगताहैनभोगहै॥ स
भकल्पनाभ्रांतिमात्रहै॥ आत्मअज्ञानकरकेकल्पनाउठतीहै॥ अरुआत्मज्ञानकरली
नहोजातीहै॥ जैसेसमुद्रकेजाणेतेअरुतरंगकल्पनामिटिजातीहै॥ अनभवआ
त्माविखेकारजकारणकुछनहीं॥ अरुजोतुझकोकारणकारजभासतेकयाहै॥ तो
जैसेइंद्रजालकीवाजीविखेनानाप्रकारकेपदार्थदृष्टिआवतेहहि॥ परवास्तव
कछुवणेतानहीं॥ तैसेइहजगतकारजकारणकछुवणिआवनेहीं॥ जैसेस्वप्न
विखेअपणाअनभवहीनगररूपहोभासताहै॥ तैसेइहजगतभासताहै॥ हेराम
जीआत्मसत्ताहीफुरणेकरजगतकीन्याईभासतीहै॥ जिसजगतकोंइहअदृष्ट
करकहिताहै॥ सोभीअदृष्टरूपहै॥ जिसकोइहसमुद्रकहिताहै॥ सोभीअदृष्टरूपहै
जिसकोइहरुद्रकहिताहै सोभीउसकाअनभवरूपहै॥ इत्यादिकजेताकुछजगत
भासताहै सोभावनामात्रहै॥ जैसेइसकीभावनादृढहोतीहै॥ सोतैसाहीरूपहोकर
भासताहै॥ जैसेचिंतामणिअरुकल्पतरुविखेजैसीभावनाहोतीहै॥ तैसीसिधहो
भासतीहै॥ तैसेआत्मसत्ताविखेजैसीभावनाहोतीहै॥ तैसीहोभासतीहै॥ तातेचि
दाकाशसर्वसमपूर्णहै॥ जवऐसालिखादृढहोताहै॥ तवअज्ञानकरकेजोविक
थभावनाभईथी॥ तिसकाअभावहोजाताहै॥ स्वथआत्मतत्तहीभासताहै॥ २०४
इतिश्रीनिर्वाणप्रकरणेजगतअनपादनेनामसर्गः॥ वशिष्ठउवाच॥ हेरामजी
जवमनथोडाभीफुरताहै॥ तवइहजगतउत्पन्नहोआवताहै॥ अरुजवमनफुर
नेतेरहितहोताहै॥ तवजगतभावनामिटिजातीहै॥ इसप्रकारजोजाणताहैसो

वं॰ म॰ ५

ज्ञानवान पुरुषवै है॥ इंद्रियोंकर देखते सुणते ग्रहण करते भी निर्वासी होजाता है॥ अरु
जगतकी ओरते चेतन स्वरूप नहीं होजाता है॥ हे रामजी जिसका मन निर्वासी होता है
याहै॥ सो बोलता चालता खाता पीता भी पषाणवत मौन होजाता है॥ जैसे मृगतृष्णाकी नदी असत होती भासती है॥ तैसे
जगत कुछ उत्पन्न नहीं भया॥ जैसे स्वप्न विषे सुमेरु भासता है॥ तैसे मनके भ्रमकर आत्मा विषे जग
भ्रमकर के आकाश विषे दूसरा चंद्रमा भासता है॥ कुछ उत्पन्न नहीं भया॥ जिसका आदिकारण प
गत भासता है॥ आदिकारण मैं कुछ उत्पन्न नहीं जाणीये॥ ताते सब जगत कारण विना ही भासता
हुआ॥ तिसका कारण भी असत जाणीये॥ हे रामजी जो पदार्थ कारण विना भासता है॥ अरु जिस वि
है॥ उपजा कुछ नहीं॥ हे रामजी अधिष्ठान सत्ता है॥ अधिष्ठान विषे भासिआ॥ तिसको भी उद्दी
खभासता है॥ सो अधिष्ठान के विनवे एकभास सो आत्म मात्र जाणीये॥ जैसे स्व
प्न जाणीये॥ अरु जो अधिष्ठान ते विनवे कभासता है॥ तिस विषे द्रिशा दर्शन समभासि
स्व विषे वस्ती आदिक पदार्थ भासआवते है॥ तिस विषे द्रिष्टा जगत भी मिथ्या है॥ न कुछ उपजा है न
थ्या है॥ इह आकछ न नहीं॥ तैसे इह जगत जगत भी मिथ्या है॥ जो उपजा ही नहीं सो नाश
हुआ स्थित भया है॥ न आगे होणा है न नाश होणा है॥ केवल चिन्मात्र सत्ता अपणा आप
के से होवे॥ न कोई द्रिष्टा है न दर्शन है न द्रिश्य है॥ केवल द्रिष्टा दर्श किआ है॥ अरु कैसे भास
विषे स्थित है॥ रामोवाच॥ हे भगवन् इह द्रिष्टा दर्श कि आ है॥ वसिष्ठ उवाच॥ हे रामजी इह द्रिश
ता है॥ इह आगे कहा है॥ अरु वहु डिकछु है॥ वसिष्ठ उवाच॥ हे रामजी इह द्रिष्टादि भासती॥ द्रिष्टादि प्रगट हो
सभ आदि द्रिशा द्रुप है॥ कारणके अभाव ते सभ द्रिड हो भासती॥ द्रिष्टादि रूप ते सभ परमात्म
आजेता कुछ जगत भासता है विस्तार सहित॥ सो आदि रूपते सम परमात्मा है॥ सो सभ आ
प है॥ जैसे सूर्य विषे प्रकाश का वन भास॥ जैसे ही पदार्थ भासते है॥ सो सभ आत्मा
दाकाश रूप है॥ तैसे इह जगत भी चिन्मात्र रूप है॥ कारण कार्य भाव को त्याग
जैसे वायु स्पंद रूप होता है॥ न व भासता है॥ अस्पंद हुए नहीं भासती॥ तैसे आत्म
विषे चित्त फुरता है॥ न वे आत्म सत्ता जगत रूप हो भासती है॥ सो क्या वस्तु है उ
ही आत्म सत्ता रूप भाव अभाव है॥ जैसे सूर्य विषे उपजता है॥ तैसे आत्मा विषे
जगत आत्म रूप है॥ ताते जो कुछ भासता है॥ सो चेतन ही का आभास प्रकाश है
परमार्थ सत्ता केवल अपणा आप विषे स्थित है॥ अरु तिसते रत्ता कछु ही है॥
नोन द्रिष्टा है न द्रिश्य है॥ आत्म सत्ता ही ज्यों की त्यों है॥ राम उवाच॥ हे ब्रह्मणजी
एसी प्रकार है तो कारण कार्य का भेद कैसे प्रवर्तता देखीता है॥ वसिष्ठ उवाच
हे रामजी जैसे सो कारण तिस विषे होता है॥ चेतन आकाश ही जगत
प्रकार हो कर भासता है॥ न कोई कारण है न कार्य है॥ जैसे स्वप्न विषे
सृष्टि भासती है॥ अरु कारण कार्य सहित भी भासती है॥ सो किसी कारण ते नहीं उपजी
नहीं॥ अकारण रूप है॥ तैसे इह सृष्टि किसी कारण ते नहीं उपजी॥ अकारण रूप है॥ न
कोई उपजता है न भोगता है॥ भ्रम कर कर्ता भोगता भासता है॥ सो भ्रम विकल्प उप
ठता है॥ वास्तव ब्रह्म सत्ता ही है॥ हे रामजी जैसे स्वप्न विषे नगर अरु जगत भास
ता है॥ सो चिदाकाश अनुभव सत्ता ही॥ ऐसे हो भासती है॥ अनुभव ते इतर कछु
नहीं॥ तैसे इह जगत सर्व चिदाकाश है॥ जब ऐसे जाणोगे तब जगत भी ब्रह्म
तत भासेगा॥ हे रामजी इह जगत चित्त के फुरणे कर उपजता है॥ जैसे स्वप्न वा
लक अपणी पछाईं विषे वैताल देखता है॥ तैसे चित्त जगत को कल्पता है॥ सो
इसका कारण भ्रम ही है॥ अरु कारण कोई नहीं॥ काहे ते जो महा प्रलय विषे चि
दाकाश ही होता है॥ सो कारण किसका होवे॥ उही सत्ता इन रूप है॥ उही इह रू
प है॥ नदीयां समुद्र आदिक जेता कुछ जगत भासता है॥ सो उही रूप है॥ इस ते ए
तर है न रूप कछु नहीं॥ जैसा जैसा फुरणा उस विषे होता है॥ तैसा तैसा रूप हो
भासता है॥ अरु जैसे संकल्प वृक्ष अरु चिंतामणि विषे जैसी भावना कोई करता
है॥ तैसा ही रूप भासता है॥ तैसे आत्म सत्ता विषे जैसी भावना होती है तैसा ही
पदार्थ रूप हो भासता है॥ ताते हे रामजी तिस आत्मा विषे स्थित होवो॥ २२५॥ इ
ति श्रीमा योवा सिष्ठे निर्वाण प्रकरणे कारण कार्य अभावो नाम सर्गः॥ वसिष्ठ उवाच॥

हे रामजी अचेतन चिन्मात्र जो अकाश रूप आत्म सत्ता है॥ सो ए जगत रूप हो
भासती है॥ सुध चिन्मात्र विषे जब अहं फुरणा होता है॥ तब जगत हो भासता
है॥ सो अहं रूपी जीव है॥ जगत विषे जीवता भी द्रिष्टि आवता है॥ परवस्तु ते क
वल रूप स्थित है॥ अरु तैसे आदिक जगत सम जीवता बोलता चलता दिखता
रूकता भी द्रिष्टि आवता है॥ परका इहे सो नवन रूप स्थित है॥ आत्म रूपी रत्न का
जगत रूप चमत्कार है॥ सो प्रकाश आत्मा ते भिन्न कुछ नहीं॥ जैसे प्रकाश विषे त
वे भासते है॥ जैसे मारूथल विषे जल भासता है॥ सो आत्म मात्र है॥ तैसे इह जग
त अनन्त कुछ भी भासता है॥ परवास्तव ते कुछ नहीं॥ अरु सत भूत है॥ उपजा कुछ
नहीं॥ हे रामजी चिन्मय रूप बालक है है॥ तिस ने जगत जाल से ना रची है॥ सो
अमृत है॥ पृथ्वी जल अग्नि वायु आदिक भूत आत्म मात्र है॥ तिस विषे सत अस
कारणी सृष्टि वना है॥ बालक को कल्पना विषे भ्रम ते प्रतीत बालक ही करते है॥ एस
जगत को आश्रय करके जो सुख की इच्छा करते है सो मिथ्या करते है॥ सो क्या करते है जै
से कोऊ अकाश के थाव गणका जतन करे॥ तैसे उनका जतन विअर्थ है॥ इहते
भ जगत भ्रान्त रूप है॥ इस जगत विषे जो आस्था करते है॥ अरु जगत के पदा
र्थ पावणे का जतन करते है॥ सो क्या करते है॥ जैसे कोऊ मृतक पुत्र पावणे का
जतन करे॥ जैसे मृतक पुत्र पावणे का जतन विअर्थ है॥ तैसे जो जगत वि
षे सुख के पावणे का जतन करते है॥ सो जतन विअर्थ है॥ हे रामजी इह पृथ्वी
आदिक जो सर्व गुण भूत पदार्थ भासते है॥ सो भी सभ आत्म मात्र है॥ जो आत्म मात्र
है तो इनको उत्पन्न किसी ने कैसे कहीं॥ जो मूर्ख बालक है तिनको पृथ्वी आ
दिक जगत के पदार्थ सत भासते है॥ ज्ञानवान को सत नहीं भासते॥ अज्ञानीयों
को सत भासते है॥ तिन सो क्या है॥ जैसे सभ अविद्या ही का
आत्मा अनुभव सत्ता ही पृथ्वी पहाड़ नदी आदि जगत हो भासता है॥ सो सभ
अकार भासते भी निराकार रूप है॥ तैसे इह जगत अकार सहित भासता है॥ पर
अकार कछु वणा नहीं॥ उही निराकार सत्ता जगत रूप हो भासती है॥ सो
निराकार ही है॥ अरु जगत कछु नहीं॥ जिज्ञी ति आत्म सत्ता है॥ २२६॥ इति श्री
अविद्या अभाव प्रतिपादन नाम सर्गः॥ राम उवाच॥ हे भगवन् तुम कहते है ते
हो जगत अविद्यमान है॥ अरु अज्ञान कर के भासता है॥ जैसे स्वप्ना भासता है॥ विदि
मान भी है॥ स्वप्न नगर अरु गंधर्व नगर रूप॥ तैसे इह जगत है॥ अज्ञान रूप है॥ सो अज्ञान
क्या है॥ अरु के ते काल की अविद्या होई है॥ अरु किसको है॥ अरु इसका प्रमाण
क्या है॥ इसका उत्तर कहु॥ वसिष्ठ उवाच॥ हे रामजी जो कछु तुम को द्रिष्टि आ
वता है॥ सो सभ अविद्या है॥ सो अविद्या अनंत है॥ देश अरु काल कर इसका अं
त कदाचित नहीं होता॥ ताते अनंत है॥ जिसको अपणा वास्तव स्वरूप का अ
ज्ञान है॥ तिसी को सत दिखाए देता है॥ जिसको अपने पद का भास है॥ सो सुण
हे रामजी आत्म रूपी चिदाकाश है॥ तिस चिदाकाश अनंत विषे अनंत ब्रह्मांड
स्थित है॥ तिस मो इक ब्रह्मांड इक सी जैसा है॥ तिस ब्रह्मांड का जगत विषे न
मत नाम देश है॥ तिसका राजा विपश्चित था॥ सो एक काल मो अपणी सभा
विषे वैठा था॥ जैसे पर्वत विषे सुमेर शोभा पावता है॥ अरु चारों दिशा उस
की सेना है॥ अरु वडा तेजवान अग्नि देवता का पूजनेता था॥ अरु किसी देवता का
न पूजनेता था॥ अरु नहीं को देवता जानकर पूजनेता था॥ अरु वडी लक्ष्मी करके सा
ता था॥ अरु वडे तेजवान कस्म त्रण था॥ वडे एक जे कस्म त्र एक काल मो सता
विषे वैठा है॥ सो पूर्व दिशा की ओर हरकारा आया॥ नो कहता भया॥ हे भग
वन् तुम्हारा राजा जो मंडलेश्वर पूर्व दिशा का था॥ सो जरा करके मृतक भया॥ सो क
हा गया॥ मनो जम सको जीत नगया है॥ ताते पूर्व दिशा की रक्षा करो॥ उही अ
व मंडलेश्वर आवता है॥ हे रामजी इस प्रकार उह कहिता था॥ जो और हरकारा
दक्षिण दिशा का आया॥ अरु कहता भया॥ हे भगवन् तुम्हारा पश्चिम दिशा का
काटहली पिछे आया॥ अरु कहता भया हे भगवन् तुम्हारा पश्चिम दिशा का

व॰ स॰ ९

इलेश्वरकीयाथा॥ सोमएकस्मनतक भयाहै॥ अरु ऊहाँ इकहोर प्रातु आवता॥
हे॥ तातेउहांकीरख्याकरो॥ हे रामजी इसप्रकार हम राइकौराकहताथा तो
होरआया॥ अरु कहन भया॥ हे भगवन दाक्षिनदिशाकामंडलेश्वर प्रव
अरु पाश्चिम रख्याकेनमित गयाथा॥ सोमार्गहीविरोधस्मनत भया॥ तातेदोनो
कीरख्याकेनमित सेनाभेजो॥ जोमाबुद्धि आनहुएहै॥ विलमकासमान
हो॥ शीघ्रहीसेनापठावऊ॥ हे रामजी इसप्रकार राजाहुणिकरवाइरनि
कस्या॥ अरु कहणेलगा॥ सभसेनामेरेपासआवे॥ अरु दिशाकीरख्यानेमि
तजावे॥ वडेवडेशास्त्रलेजावऊ॥ हस्तीघोडेरथआदिकसभसेनालेजावऊ॥
हे रामजी एसप्रकार राजाकहताथा॥ जोइकहोउरवआया॥ अरु कहन भया
हे भगवन उत्तरदिशाकीओरजोनुमारा मंडलेश्वरथा॥ तिसकेउपर होरथा
श्रुआनपडेहै॥ वडायुधहोताहै॥ तातेउसकीरख्याकेनमित्तसेनाभेजो॥ अरु वे
विलमकासमाननहीं॥ शीघ्रहीभेजो॥ उहांआगेहीकोचलेआवतेहै॥ मेवडजा
ताहो॥ जेमेरास्वामीयुधकतेहै॥ हे रामजी इसप्रकारकहिरोउहगाया॥ ते
वहारपालआइकरकहनभया॥ हे भगवन उत्तरदिशाकामंडलेश्वरआ
याहै॥ अरख्याआगिआऊनवलेआवो॥ तवराजाकहालेआवहो॥ तोलआ
या॥ राजाकेसन्मुखआइकरप्रणामकीया॥ राजादेखतभयाजोअंगाटटेहै
अरुरुधरस्रवतेचलेजातेहै॥ ऐसीअवस्थामोभीधीरजसेंउगानमंडले
श्वरकहिनभया॥ हे भगवन इहमेरेअंगोकाहालहुआहै॥ मेनमारेहेपाव
रवणकोचल्याथा॥ परमेवैठापरमातुआनपडा॥ मेरीसेनाथोडीथीइसका
वणातेदोडकरहेमारेपासआयाहो॥ जप्रजाकीरख्याकरो॥ हे रामजीजव
इसप्रकारउसनेकहा॥ तवराजेनेसभमंत्रीवुलाए॥ मंत्रीराजेपासआइ
करकहिनभए॥ हे भगवन अवतीनउपाइछोडउ॥ अरुइकउपाइकरो॥ इ
कनिमित्तछोडऊ॥ दामसाथमहैशोगछोडऊ॥ अरुवधभेदभीछोडऊ॥ यह
नीतोअवनहींचाहीन॥ काहेतेजानि विनाभानरोवालेनहीं॥ इहतीचपा
पीहै॥ धनदेणाइसकारणतेनहींचाहीताहै॥ जोइहअधीनहै॥ अरुवुधकर
भीभेदनहींजाने॥ जोसभमिलकरइकठेभएहै॥ इहतीनोउपाइछोडो॥ अरुद
कहोउपाइकरो॥ जोजुधहोकरो॥ विलमकासमाननहीं॥ उसकीसेनाअवलि
कटेआइहै॥ अवउनसाइहमकुमकरणाहै॥ जोप्राणोकीरख्यानहीवाहणी॥ ह
रामजीजवइसप्रकारमंत्रीयोनेकहा॥ तवराजेवचनकीया॥ सभसेनामेरीस
भवकरउसकेसन्मुखजावो॥ अरुनिसाणनगारेहस्तीघोडेरथप्यादेसभ
सेनासाथहोवे॥ इसप्रकारजवराजेकहा॥ तवसवसेनाविदमानआइआयन
भई॥ नोवतनगारेवजणेलगे॥ नानाप्रकारकेशस्त्रोसहित॥ चारप्रकारकी
सेनाइकठीभई॥ तवराजेनेकहाहेसाथीतुमआगेजावऊ॥ सेनाआगेहोवे
तिसकेपाछेसेनापतीजावहि॥ तिसकेसाथजुधकरहु॥ इस्नानककेमे
भीचलेआवताहो॥ रामजीइसप्रकारकहिकरमंत्रीयोकोचलाया॥ अरु
याछेराराजालसाथइस्नानकीयाहै॥ एकइस्थानविखिसप्रकाकेडथा॥
तिसकेनिकटिजाइकरहवनकीया॥ जवअग्निवउतप्रजलतभए॥ तव
राजेकहा॥ हे भगवन एताकालसुककोवितीतभयाहै॥ जोजपयागस्तवि
चरनारहाहो॥ अरुअयणीप्रजाकोसुखीरखाहै॥ अरुअभयकीयाहै॥ अरु
शत्रोकोनाशकरराहाहो॥ शत्रोकामारकसिंहासनकेतलदीआहै॥
आयसिंहासनपरवैठाहो॥ पातालवासीदेमससभमेजीतराखेहै॥ अरु
दशोदिशाअपणीअधीनकीयाहै॥ अरुप्राणसमुद्रअप्रजानसेरेभेकरके पा
तोहै॥ अरुसभअरुसभद्वारमेरीकीर्तिहोरहीहै॥ अरुबलोकइस्थानसेव
भरेहुएहै॥ वस्त्रसेनाथोडहाथीभीवहुतेहै॥ अरुवडेभोगभीमेनेभोगे॥

अरुदानभीअनिवडेवडेकीएहै॥ सिधदेवतेयोविखिभीमेराजसहुआहै॥ समभ
ओरनेमेराजसहुआहै॥ पारीरभीवडाहुआहै॥ अरुलोभभीवडाआनप्राप्तभ
याहै॥ अवमेरजीवेतेमरणाविशायहै॥ हे भगवन मेतुमकोशीघ्रहीवनेवेदनक
तोहै॥ कृपाकरकैलवऊ॥ अरुजोमनुरूपपरप्रसन्नहोवोगे॥ तवएककोवार
सूतेदेणीआ॥ जोवारोओरजावहि॥ अरुजहांमनुरूपकोकुछकष्टवणनहो
दर्शनदेणा॥ हे रामजी इसप्रकारजवकहिरहा॥ तवखडुनिकासकरअश्रय
णाशीघ्रकाटकरअग्निविखेडारदीया॥ अरुरुधरआपहीअग्निविखेजाए
पडा॥ शीघ्रअरुरुद्रदोनोभस्महोगए॥ अग्निभोजनकरलीया॥ वहुडउसी
जैसेचारमूर्तिनिकसीआए॥ उसीजेसेआकारभूषणवस्त्रमुकुटकवचिप
हिवहुए॥ नानाप्रकारकेशस्त्रधारेहुएउदेमए॥ हे रामजी इसप्रकारवडेतेज
सेजुगतचारोराजाविपश्चितप्रगटिभए॥ रथहस्तीघोडाप्यादेचारोप्रका
रकोसेनाप्रगटिभई॥ अरुचारोंओरुतेउहांशत्रुआनजुधकरणेलगे॥ वडा
जुधहोताहै॥ अरुनगारवडेजलतेहै॥ अरुहाहाशब्दपडानिकसताहै॥ शू
रवीरजुधविखिप्राणोकोत्यागतेहै॥ अरुउछलउछलकरलडतेहै॥ व
डेरुद्रकेप्रवाहचलेजातेहै॥ खडुवरछीयोंकीवरखाहोतीहै॥ अग्निकाअटब्र
टशाहहोताहै॥ मानोमसमविनाप्रलेआवगालागी॥ वडाजुधहोताहै॥ जो
हरमेजाथहै सोजुधविखेमरणोकोजीवणोमानतेहै॥ अरुजीवणेकोकम
रणाजानतेहै॥ ऐसेनिश्चकोधारकरजुधकथकतेहै॥ अरुजाकोईहहैसो॥
भागभागजातेहै॥ जेसेरागकेडकेभेकरसर्पभागजाताहै॥ अरुहरसमसन्मु
रवहोकरलडतेहै॥ इसप्रकारवडेजुधहोणेलगे॥ रुद्रकीआनदीयाचली
याजातीहै॥ तिनोविखिहस्तीघोडरथसूरमेवहुतजातेहै॥ अरुवडेवडेव्रिछ
नगररोसवगिरुमेवहिनजातेहै॥ अरुमासभक्षणाकेनमित्तजोगणी
आनिइस्थितभएहै॥ जेजोधजुधविखेस्मनतकहोइ॥ तिनकोअयछराविघा
धरीआविवाननहुपडचढाइकरस्वर्गलेजावहि॥ हे रामजी इसप्रकारज
वजुधहुआ॥ तवराजाविपश्चितकीसेनासभसन्नहोगए॥ सन्तकीयाजो
थोडीहोगए॥ अरुराजेनेसुणीआ॥ जोसेनाबहुतमारीगएहहि॥ तवराजा
असवारहोकरआया॥ अरुदेखाजोसेनाथोडीहोइगएहै॥ एकएकराजा
एकएकओरकोगया॥ चारोराजेचारोओरकोगए॥ अरुविचारकीयाजोअ
हमहागंभीरसेनाह्रपीसमुद्रहै॥ तिसविखिशास्त्रह्रपीजललहै॥ अरुधारा
त्रूपीतरंगाहै॥ अरुमछह्रपीस्तमेहै॥ ऐसाजोसमुद्रहै॥ तिसकोमेअगस
तकीन्याईहोकरपानकरो॥ तवऐसाविचारकेकेउदमकरतेभया॥ काहते
जोविशेषसेनादेखी॥ एकतोआगेहीकोचलेआवतेहहि॥ अरुतेजकरसूरम
जलावहिसेनाको॥ अरुतीसरावहुतेहै॥ ऐसेतीनप्रकारकीसेनाकेतो
नोउपाइकीए॥ प्रथमतोओवाएशास्त्रहाथकीया॥ परमाजेतीनमाएअ
रकोप्रणामकीया॥ अरुवायुकामंत्रपडकरपवनशास्त्रचलाया॥ तिस
करओधीआई॥ तिसकरसेनाआगेचलेआवतीथी॥ सोसभपाछेकोउ
डरोलगी॥ वहुडमेघह्रपीशास्त्रचलाया॥ तासोवरखाहोणेलगी॥ तिस
करतेजउनकाजोसेनाकोजलावताथा॥ सोशीतलहोगया॥ तिसके
अनरएकशिवशास्त्रचलाया॥ प्रथमेशास्त्रोकीनदीचली॥ वहुडत्रिस्त्र
लोकीनदीचली॥ वहुडवज्रोकीनदीचली॥ वहुडवज्रोकीनदीचली॥ अरुअग्नकीन
वहुडव्रिछोकीनदीचली॥

व॰ म॰ ११

दीघली॥इत्यादिकजोशास्त्रअरुप्रशास्त्रहैं तिनकीवर्षाहूए॥जवइसप्रका
रनदीयांचलीयां॥तवजोकछुसेनासन्मुखआवतीथी॥सोम्रतहोगए
जैसेकमलनीकाटीजातीहै॥तैसेसुखवीरकाटेगएहैं॥पहाडरकीकंदरा
गिवडाइनेवहिनेजावहि॥समुद्रविखजाएपडहि॥सुमेरकंदरावि
खजाएछपहि॥समुद्रविखजाइकरसेनाइवे॥जैसेअज्ञानीविखअरु
विखडुवनेहैं॥एसप्रकारदोनोंठाकनेसेनाष्टनभए॥जैसेज्ञानीकेपाप
ग्रवगुनेदोनोनाशहोजानेहैं॥तैसेदोनोसेनानाशहोगए॥चारोदिशा
कीसेनानाशकोप्राप्तभए॥तीन्माचीनेदशाकेपहाडकीकंदराकेरहे
गोवालेसभवहिनेजावहि॥हेरामजीकएकशास्त्रकेरआर्थीकरेजोस
भच्छिद्रहूविखजाइपडे॥कएवनोविखकएनीचेदशांविख॥जोप
नवानथेसोउनमच्छेत्रोविखजाएपडे॥स्वनहूएउक्रुस्वर्गलोककोग
ए॥अरुपापीनीचेदशोविखजाइपडे॥तिसकरउरांनकोप्राप्तहूए॥
कएकपिशाचहूए॥एकनहूकोविद्याधरीलेगए॥कएकस्त्रीस्वरोकेइस्थानविख
जाइपडे॥जोजीवमेतनथे तिनकीउनहूरख्याकरी॥एसीप्रकारवारांगकरछेद
हूए॥नाशकोप्राप्तभए॥कइकीनदीयांविखवहनेसमुद्रकीओरचलेजा
वहि॥हेरामजीजवसेनाष्टनहोगए॥तवअकाशस्थहूआ॥जैसेज्ञानीकामन
नतिमलहोताहै॥तैसेअकाशजुधकेखोभनेरहितसुधभएआ॥जवसभ
सेनाष्टनभए॥तबराजाअरगकोचलेजाव॥चेरोराजाअगिकोचलेजावहि
हेरामजीचारोविपश्चितचारोदिशाकेसमुद्रउपरजाइप्राप्तहूए॥तबक्या
देखहैंतजोवडेगंभीरसमुद्रहैं॥कहूरत्नपडेचमकनेहैं॥कहूहीरामोतीप
इचमकनेहैं॥इत्यादिकरत्नमणीकीजानीयाहैं॥सभदेखनेभए॥अरुवडेम
हागंभीरसमुद्रहैंविखमच्छवडेदेखनेभए॥अनरंगाउछलनेहैं॥अरुवेलनी
योंविखनानाप्रकारकेब्रिछलगेहूएहैं॥लौंगलाचीयोंकेब्रिछदेखे॥चंदन
केब्रिछहैं॥इत्यादिकब्रिछसमुद्रऊपरजाइकरदेखनेभए॥२ ७७॥इति श्रीवि
पश्चितसमुद्रप्राप्तिनामसर्गः॥वशिष्ठउवाच॥हेरामजीजवइसप्रकारराजे
विपश्चितसमुद्रपरजाइप्राप्तभए॥तवउनकेसाथजोमंत्रीपहूचेथ॥सो
राजाकोसभइस्थानदिखावनेभए॥केसेइस्थानवडेगंभीरइस्थान॥अरुव
डेगंभीरसमुद्रजोप्रथवीकेवीछेरवेहनथे॥अरुवडेब्रिछहैं॥तमालब्रि
छहैं॥वडीभावलीहैं॥पर्वतकंदराहैं॥तलावहैं॥नानाप्रकारकेइस्थानहैं
तिनकेदेखनभए॥ऐसेइस्थानराजाकोदिखाइकरमंत्रीकहनेभए॥हेरा
जानतीनपदार्थवडेअनर्थकेकारणाहैं॥अरुपरमसारकाकारणाहैं॥एकतो
लक्ष्मी॥अरुइसरादेहआरोगा॥अरुतीसराजोवनअवस्था॥जोपापीजीव
हैं॥सोलक्ष्मीकोपापविखलगावनेहैं॥अरुअरोगदेहकरविखियोंकोसे
वतेहैं॥जोवनअवस्थाविखसुकृतनहीकरते॥पापकरतेहैं॥अरुजोपुन्नवान
जीवहैं॥सोमोखविखलगावते॥लक्ष्मीकरजगआदिकसुभकर्मकरतेहैं
देहआरोगकरपरमार्थसाधतेहैं॥जोवनअवस्थाविखभीकछुसुकृतक
रतेहैं॥हेरामजी॥हेराजनसमुद्रअरुपर्वतकिसीठारविखरत्नहोतेहैं॥तै
सेसंसारसमुद्रविखकहूकहूसंतोंकीन्याइज्ञानीहोतेहैं॥कहूअज्ञानी
तृपीडहूपडेविचरतेहैं॥हेराजनइहसमुद्रकेसोहैं॥मानोजीवन्मुक्त
हैं॥कोईतेजातलकरभीमर्यादानहीछोडता॥अरुरागद्वेखनेभीरहि
तहैं॥किसीइस्थानविखविस्तृतासेनकतेहैं॥किसीइस्थानविखदेतहैं

हैं॥कहूंपर्वतोंसेजगातिपर्वतनरहितेहैं॥कहूंवडवाग्रमिहैं॥कहूंरत्नहैं
हैं॥कहूंपर्वतोंसेजगातिपर्वतनरहितेहैं॥जैसेज्ञानवानकोकिसीवि
परसमुद्रकोनकिसीविखरागहैनद्वेखहै॥जैसेज्ञानवानभीकोईविरलाहोताहै॥तैसेजि
खरागद्वेखनहीहोता॥परज्ञानवानभीकोईविरलाहोताहै॥अरुजिस
सवासखिवामोतीनिकसतेहैं॥सोवासकोईविरलाहोताहै॥जिस
हस्तीकेमस्तकतेमोतीनिकसिताहै॥सोहस्तीभीविरलाहोताहै॥तैसेत
सियखिवामोतीनिकसताहै॥सोसियभीकोईविरलाहोताहै॥जैसेहाकीदे
नदर्शीज्ञानवानकोईविरलाहोताहै॥हेराजनसमुद्रगंभीरताइहाकीदे
खपर्वतकेसेहैं जिनकेकिसीइस्थानविखपंछीरहितेहैं॥किसीइस्थान
विखेविद्याधरदेवतेदेवीयांविलासकरनेहैं॥कहूंनागरीरहितेहैं॥कहूंरत्नी
सुरसतीस्वररहितेहैं॥कहूंब्रह्मचारीवैरागीरहितेहैं॥इत्यादिकपुरख
रहितेहैं॥अरुगंगानसमुद्रहैं॥जिनकेवडेतरगाउठतेहैं॥अरुपर्वतोंकाकोन
कदेख॥अकाशकोदेख॥चंद्रमास्तवजानावेद॥विखिस्तनेदेख॥सर्वकोवडोइ
अकाशदेखहाहै॥महाप्रवेवोकीन्याई॥अरुआपसदाअसंगरहिताहै॥अरु
सुभअसुभदोनोविखतुलहै॥स्वर्गआदिकपवित्रइस्थानहै॥अरुचंडाल
पापीनरकइस्थानहै॥अपवित्र॥परअकाशदोनोविखतुलहै॥असंगताक
केनिर्विकारहै॥जैसेज्ञानीकामनसर्वअर्थहुतेसून्नहोताहै॥तैसेअकाश
सर्वपदार्थोंतेअसंगहै॥अलेपन्याराहै॥अरुमहापुरुखजोहै॥आत्माको
न्याईसर्वविखव्यापीहै॥हेअकाशआत्मकेसाहै॥सर्वप्रकाशनेरविखइस्थि
तिहै॥अरुसूर्जचंद्रमातारेअग्निसभप्रकाशतेरेविखहोताहै॥अरुवडउ
नेरेविखअंधकारदृष्टिआवताहै॥इहअकाशसूर्जहै॥हेअकाशतूसभकाअ
धारभूतहै॥तूकोजोसून्नकहितेहैं॥तैसारवहै॥दिनतेरेविखप्रकाशमान
नीहै॥अरुरात्रकोअंधकारभासताहै॥अरुसंध्याकालतेरेविखला
लीभासतीहै॥अरुतूतीनोंतेन्याराहै॥इहतीनोसात्विकराजसतामस
गाहै॥तूइनकेहोतेभीअसंगहै॥हेअकाशतूसदानिर्मलहै॥अकाशअ
कृतसमतेरेविखदृष्टिआवतेहैं॥परतूसदाज्योंकात्योंहै॥इहअनित्यप
हैं॥चंद्रमातेरेविखशीतलताकरतीहै॥अरुसूर्जवकुनदीइकहोताहै
अरुतीर्थआदिकपवित्रइस्थानहैं॥नरकपापीआदिकअपवित्रइस्थान
हैं॥परतूसभविखएकसमानज्योंकात्योंहीरहताहै॥ब्रिछोंकोवहगाडता
होनेकाइस्थानतोहीदेताहै॥अपारमहिमाकोतूआपहीजानताहै॥अरु
तेरीमहिमाकोपाइनहीसकता॥तूनिहकंचनअद्वेतहै॥अरुसर्वको
धारहाहै॥अरुसर्वकाअर्थतेरेकरसिद्धहोताहै॥त्रिणजलतीचको
जाताहै॥अरुतूसभतेउचाहै॥अरुविभुहै॥अनेकपदार्थतेरेविखउप
नहोनेहैं॥अरुनाशहोजानेहैं॥अरुतूसदाज्योंकात्योंइस्थितिहै॥जो
सेअग्नितेचिनगारेउपजतेहैं॥अरुअग्निविखलीनहोजातेहैं॥तैसेते
रेविखअनंतजगतउपजतेहैं॥तूसदाज्योंकात्योंरहिताहै॥जोतुझको
अनकहतेहैं॥तेमूढहैं॥हेराजनअैसाअकाशकोनहै॥सोसुणा॥
अैसाआकाशआत्माहै॥सोचेतनअकाशहै॥तिसविखअनंतजगत
उत्पनहोतेहैं॥अरुलीनभीहोजातेहैं॥तिसकोजोसून्नकहतेहैं सो
मूरखहैं॥सोसर्वकाअधिष्ठानहै॥सर्वकोधाररहाहै॥अरुसदानिरस
गाहै॥असविदाकाशकोनमस्कारहै॥हेराजनइहआछुजोहै॥जोसदाए
करसहै॥अरुतिसविखनानाप्रकारनतेराभासतेहैं॥इहमायाहै॥हेराज

व॰ म॰ १२

न॥ एक विद्याधर अरु विद्याधरी थे॥ तिनके मंदर विषे इक रिषि आनति
कसिआ॥ तिसका विद्याधर आदर भाव न कीया॥ तब रिषीस्वर आप दीया॥
जो तूं हाद भाव विषे अजंत ब्रिछ होवेगा॥ तब ओह विद्याधर ब्रिछ होगया॥ अ
रु जो इह मन आइ है॥ इस भाव देखने ही उह मन ताहू आ॥ ब्रिछ भाव कों त्याग ताया
है॥ अरु वहुड विद्याधर हूआ॥ एह ईस्वर की माया है॥ कबहूं कछु होजाता है
कबहूं कछु होजाता है॥ इसे ही तूं भी धन है॥ तेरी चेष्टा भी सुंदर है॥ अरु तीर्थ
रूप विषे सदा तेरा इस्नान होता है॥ अरु तूं सभ तेउ चा विराजता है॥ सभ आ
चार तेरा भला द्रिष्टि आवता है॥ पर इहु करते विषे नीच ता है॥ जो गाई को भ
खी करता है॥ तिस कर तेरी तीयों नष्ट होजाती है॥ वहुड उगावती नहीं॥ तैसे
अज्ञानीयों की चेष्टा देखणे मात्र सुंदर है॥ पर अंतर तें स्वरख है॥ तिन जी
वों की संगत खुरी है॥ अरु ज्ञानवानों की चेष्टा देखणे मात्र भली नहीं॥ तो
भी उनकी संगत कल्याण करती है॥ हे राजन सभ नीतें नीच स्थान है॥ काहे
ते जो कोऊ उसके सन्मुख आवता है॥ सो तिसको काटता है॥ अरु ये विष्टा
भटकता फिरता है॥ अरु मलीन इस्थानों विषे जाता है॥ तैसे अज्ञानी जी
व है॥ जो स्रेष्ट पुरुषों की निन्दा करते है॥ अरु मन विषे त्रिस्ना वहुत है॥ अ
रु विषे रूपी मलन इस्थानों विषे मिडते है॥ सो स्वरख मानुख मानस
आन है॥ अरु स्थान नीचो ते नीच है॥ जो ब्रह्मा ने सरपणी जगत को रचा है॥ स
भ भी अरु अस्त भसी॥ तिस विषे स्थान अपताउ हि ब्रमस्तामी चरचा है॥ स
स्थान क्या समजा है॥ एक पुरुख स्थाना निघिडा प्रसन्न करते भया॥ इस्थान तू फ
घिडा भी कोठानी चहै॥ अथवा नहीं॥ तब स्थान कहता तूकने नीच स्वरख मा
नरख है हि॥ मैं उनने खिहि हो॥ अधम सो मै स्वर मा है॥ अरु जिसको भो
जन का भोजन खाता हो॥ तिसकी रख्या करता हो॥ अरु उसके द्वार पर वैठा
रहिता हो॥ अरु स्वरख ने इह नीतो कार जन नही होती॥ ता ते उन खिडो
मे श्रष्टि हो॥ काहे ते जो स्वरख को देह अभिमान है॥ ता ते स्थान ते स्व
रख नीच है॥ हे राजन परम अनर्थ का कारण देह अभिमान है॥ देह
के अभिमान कर परम अपदा को प्रापत होता है॥ स्वरख नही मानता कऊआ है॥ क
ऊआ क्या करता है॥ सभ ते ऊचे टासपर जाए वैठता है॥ अरु कोकों पडा करता है॥ सो
मानो स्वरख की धुजा विराजती है॥ हे राजन मलों की खाण ताल के निकट ए
क कऊआ जाइ निकसिआ था॥ क्या देखे जो भऊरे कों ल सुगंध वैठ लेते है
तिनकों देखकर हसिआ॥ अरु कांकां शब्द करणे लगा॥ तिसकों देखकर भऊ
रे हस रीग॥ जो इह कमलों की सुगंध कों क्या जाणे॥ ते जगिआसी रूपी भऊरे
की न्याई है॥ जो परमार्थ रूपी सुगंध कों नहीं जाणते॥ सो अज्ञानी रूपी कोए है
इस कारण ते स्वरख को देखिकर जगिआसी हसते है॥ जो आत्म रूपी सुगंध
कों नहीं जाणते है॥ अरु कऊआ तूं किंही सङ्की गम करता है॥ हे सतो मोती
अरु के चुगणे हारे है॥ अरु तूं नीच इस्थानों को सेवणे हारा है॥ मंत्री कहता है॥
भऊरा को एलतु मक मलों को देख कर क्या प्रसन्न होता है॥ प्रसन्न तब होवहु
जब वसन्त रितु होवे॥ इह तो वर्खा काल का समा है॥ इह तो इहु लगाई कर नष्ट
होजावहिगा॥ जैसे कहो अरे रजगिआसी ए ऊनमकों भी छोडि जावहिगा॥ हे
राजन कोएल रूपी रजगिआसी है॥ तिनकों इहु उपदेसा है हि॥ रजगिआ
सी अरु सुंदर पदार्थ जो तुमको द्रिष्टि आवते है॥ सो नाश हो जावेगा है॥ एत
कों देखकर तुम किं प्रसन्न होते हो॥ तब प्रसन्न होवहु जब इह सत होवहि

इह तो मिथ्या अविद्या कर रचे है हि॥ तुम किं प्रसन्न होते हो॥ अपणो कला
विखे जाइ वैठहु॥ अज्ञानीयों का मारग छोड देवो॥ जैसे कोऊ आहे सो विखे जा
ए वैठता है॥ तो भी कोऊ एका चित्त अगणी गधगी के भोजन विखे ही होता है॥
जो इह सो का अहार मोती है॥ त्याग मोतीयों को देखता भी नहीं॥ तैसे अज्ञानी
जीव कदाचित संतों की संगत विखे जाइ वैठता है॥ तो भी उसका चित्त वि
खिओं की ओर धावता फिरता है॥ इस्थिर होता नहीं॥ अरु जैसे कोएल का वचा
कों अरु को माता पिता जाणकर उन विखे जाइ वैठता है॥ तब उनकी संग
त कर इह भी गंधगी के भोजन करि हारा होजाता है॥ तिसको वरजन क
रते है॥ हे वटा तूं कों अरु की संगत मत वैठ॥ अपणी कुल विखे वैठ॥ काहे
ते जो तेरा भी नीच अहार होजावेगा॥ तैसे ता सो जो अज्ञानी का संग करता
है॥ तब उनके अनसार तिसको भी विखियों की त्रिस्ना उत्पन्न होती है॥ ति
सकों वरजन करते है॥ हे जगिआसी तूं स्वरख अज्ञानीयों विखे मत वैठ हि॥ अ
पणी कुल जो है॥ संतजन तिनों विखे जाइ वैठ॥ जैसे कोऊ एक एल कें वैठ
कों सुखदेणहारा भी न होवहि॥ तैसे स्वरख तुरक कों सुखदेणहारे न होते॥ तूं भी वहुते
गा॥ सदा वहुड डिकहिता है॥ राएलता हूं किं इस सो की रीस करती है॥ तब तूं मास कों पृथ
डोचे उडुते है॥ पर इह सो का धुणा तेरे विखे कोऊ नहीं॥ तब तूं मास ही गिडते॥ तैसे
वी पर देखती है॥ तब उड होते गिडु पडती है॥ अरु इह सन नही गिडते॥ पर विखियों का दाखक
जो स्वरख है सो संतों की न्याई ऊंचा कर्म भी करते है॥ पर विखियों को देख कर गिड
र पडते है॥ अरु संत नहीं गिडते॥ तो स्वरख संतों की रीस कर सकता है॥ अपणा धरवा
हुडु मची कहिता है॥ हे वपुला तूं इह सो की रीस क्या करता है॥ जब मछु नि
हु कों त्यागा॥ तूं आप कों इह सो की न्याई उजल दिखावता है॥ अरु इह स
कसता है॥ तब तूं यास लेता है हि॥ इह तें रविख नीच तु एता है॥ अरु इह स
मान सरोवर के मोती चुगणे हारे है॥ तूं टोए यों ने त्रिस्ना कर के मछी खाणे
हारा है॥ तू क्या आपको इहस मानता है॥ तैसे अज्ञानी जो जीव है॥ सो विखि
यों की त्रिस्ना करते है॥ अरु ज्ञानवान विवेकी सदा त्रिप्त है॥ तिनकी रीस
अज्ञानी क्या करते है॥ हे राजन जो इह सहै॥ सदा अपणी महिमा विखे रहि
ते है॥ अरु अपणा जो मोतीयों का अहार है तिसको भोजन करते है॥ अरु
किसी पदार्थ का स्परस नहीं करते॥ जैसे चंद्र सु रवी कमल चंद्रमा को देख
कर शोभा पावता है॥ चंद्रमा विना शोभा नहीं पावता है॥ तैसे वुध भी तव
शोभा पावता है॥ जब ज्ञान उदे होता है॥ आत्म ज्ञान विना वुध भी शोभा
नहीं पावती॥ अरु वडे वडे सुगंध वाले ब्रिछ है॥ तिनका महातम सभ ऊ
हीं जाणते॥ वसिष्ट उवाच॥ हे रामजी समुद्र के कंठ पर राजे विपश्चित
कों मंत्री औसे कहि कर वहुडि का हित भए॥ हे राजन अब पृथवी नगरी
के मंडलेस्वर इस्थापन करो॥ हे रामजी जब औसे मंत्री कहा॥ तब सभी
दिसा के मंडलेस्वर इस्थापन करो॥ अरु चारों राजा जो वैठे थे॥ अपणी
अपणी दिसा के समुद्र ऊपर॥ सो आप सों कहन भए॥ अपणी मंत्री अरु
पिडो॥ अब हे साधो इह सादिरा विजे करी है॥ समुद्र पर जेते इह सारी जे है
है॥ अब चेतन जो इह हि द्रिसा सो द्रिसा विभूत कों देख हि॥ समुद्र के पार दी
प है॥ वहुड समुद्र है॥ वहुड दीप है वहुडि समुद्र है॥ सप्त समुद्र सप्त दीप
है॥ तिनके परे क्या है॥ इस प्रकार सर्व द्रिसा देखणे इछा कर के अपने देवता
का आवाहन कीया॥ तब इनकी इडवासना के अनुदेवता सन्मुख
आन इस्थित भया॥ अरु कहा हे राजन जो कछु तुमकों वांछा है सो मा

गड़॥ नवराजेकहा॥ हेभगवन् जोईश्वरकीमायायंत्रभूतकद्रिष्टिभूतेहे
तिसकेदेखणेकीहमइच्छाकरतेहें॥ सोइच्छापूरनकरनेंहारेतुमहीहो॥ दे
देवहमऐसशरीरसाथद्रिशादिखणेजावहि॥ जबउहशरीरचलणे
नेरहितहोवे॥ तबहममंत्रसत्ताकर्केजावहि॥ जहांमंत्रोंकीगमननहो
वेतहांसिद्धताकूकैजावहि॥ जहांसिद्धताकीभीगमननहोवे॥ तहांमन
केवेगकरजावहि॥ अरुस्तेभीनहोजाहि॥ इहवरहमकोदेवहु॥ हेराम
जीजवऐसेराजेकहा॥ तवअगस्तकहाऐसेहीहोवे॥ इसप्रकारकहिकरअंतर
ध्यानहोगया॥ जबराजेविपश्चितवरकोपायाएकारचलणेकोंसमर्थभए॥ तव
जेतेकछुमंत्रीमित्रथेसोरुदनकरणेलगे॥ हेराजन् तुमनेइहक्यानिश्चेकी
याहे॥ ईश्वरकीतोमायाकाकिसीकोअंतनहीपाया॥ तुमचलोअपनेराजुस्था
नकों॥ इहक्यातुमनेनिश्चाधाराहे॥ हेरामजीइसप्रकारमंत्रीकहितेरहे॥ ति
परराजेउनकोआज्ञादेकरएकेराजाइकइकदोरकीदिशाकेसमुद्रविखे
प्रवेशकीया॥ चारोदिशाविखेचारोराजाप्रवेशकरगए॥ जोबडेबडेशत्रु
वानमंत्रीथेसोसाथहीचले॥ तवराजासंत्रशक्तिकरकेसमुद्रकोंलंघगया
अरुद्वीपविखेजाइनिकसा॥ बहुडवडासमुद्रआया॥ तिसविखेजाइप्रवे
शकीया॥ अरुबडेतरंगउछलहि॥ असेतरंगउछलहिजिनकासोयोजनप्र
जंतविस्तारहे॥ हेरामजीअसेतरंगउछलहिमानोपर्वतउछलतेहे॥ अ
वऊर्धकोंउछलहिमानस्वर्गपर्यंतउछलतेभासहि॥ अरुजबअधोकोंजा
वहितबपातालपर्यंतचलतेभासहि॥ जैसेत्रिगुणफिरमाहे॥ तैसेराजे
फिरहि॥ इसप्रकारकहुतेरहितससमुद्रकोलंघगए॥ समुद्रअरुद्रिशा
कोंलंघगए॥ परमथिजाविलातहुआसासत्रुण॥ रवीरसमुद्रविखेएकमत्स
कोंलंघगए॥ परमथिजोविलासहुआसोसुणो॥ विष्णुभगवा
नहिताथा॥ कैसेमछथाजोसर्वदेवतातिसकोंनमस्कारकरतेथे॥ जवराजेरवीरसमुद्रविखेप्रवेशकी
नेकेमछअवतारकेपरवारविखेथा॥ तवराजामंत्रकीशक्तिकर॥ तिसको
या॥ तवराजेकोसुखविखेडारलीया॥ तवराजामंत्रकोधाकरकरतिसको
मुखफाडिकेनिकसिगया॥ आगेबहुडएकमछथा॥ तिसभीमुखमोडारली
या॥ तिसफाडिभीनिकसगया॥ बहुडपिशाचनीयोंकादेशथा॥ उहांपि
शाचनीराजाकोमोहितकीयाकामककें॥ अरुदशप्रजापनकीजोकछ
अज्ञाकीतिसनेआदीया॥ तिसकरराजाविछहोगया॥ केतककालवि
छरहा॥ बहुडछूटा॥ एकदेशमोंडइजाइहुवा॥ तिसनेछूटाबहुडसाचुष
जाएहुं॥ तहांकिसीसिधकेआपकेशिलाहोगया॥ शाडोवरखपर्जंत
शिलारहा॥ तिसनेउपरांतअग्निदेवतानेउपजिया॥ अग्नअरबहुडमानु
खहुवा॥ तवउहसिधअरुसुर्जवानहुआ॥ जोइहतेमृतकशिडोभीवडासिद्ध
है॥ अरुऐसेजाणकरतिसकेसाथमित्रीकरी॥ एसीप्रकारहसतेसमुद्र
कोंलंघतागया॥ खारीसमुद्रकोंरवीरसमुद्रकों॥ रात्रोंकीरसकेसमुद्रकों
अरुद्वीपलंघतागया॥ बहुडएकअप्छराकेंमोहनेहुआ॥ बहुतकाल
तकरहतानेछू॥ बहुडएकदेशविखेपंछीहुआ॥ बहुतेकालपर्जंत
पंछीहोकरछूटा॥ बहुडएकराडोपिशाचनीथी॥ तिसनेवेलककेंरखा
तवइहसरेविपश्चितजोवेलथा॥ तिसकोतिसकोउपदेशकीया॥ अरुज
गाया॥ हेरामजीचारोदिशाविखेविपश्चितभ्रमतेफिरे॥ दक्षिणदिशा
काजोपिशाचनीकरमोहितहुआथा॥ कामकरइसतेलेकरतोडहे
जन्मोंकोपावताभया॥ अरुपूरबकावहितहुआमछकेसुखसोंचला
उसतिकासडारा॥ इसतेलेकरतोडहुअवस्थादेखताभया॥ अरुउत
रदिशाकाराजाज्ञानभया॥ अरुइसतेलेकरअवस्थादेखताभया॥ अ

अरुपश्चमदिशाकाजोहेसचूडपंछीकीपिठपरजोआयाथाहुआ॥ ति
सनेकप्रणदीपविखेजाइडारा॥ इसतेलेकरउहभीअनेकअवस्थाकों
प्रापनहुआ॥ हेरामजीएकएकविपश्चितअनेकअनेकभिन्नभिन्नजून्मअव
स्थाकोअनुभवकरतेभया॥ रामउवाच॥ हेभगवन्तुमकहतेहो विपश्चितएका
हीथा॥ उनकीसंवतभीएकहीथी॥ अरुप्रकारभीएकहीथा॥ तोभिन्नभिन्नरू
पोंकेसंभए॥ जोउहपंछीहुआ॥ उहहोविरछहुआ॥ इसतेलेकरवासनाकेअ
नुसारशरीरकोपावतेफिरे॥ वसिष्ठउवाच॥ हेरामजीइसविखक्याआश्चर्जहे
जैसेकिसीउनकीसंवतएकथीएकहीविखिभ्रमकरभिन्नताहोजातीहे॥ अरुभि
ऊरुखकोसत्ताआवताहे॥ तिसविखेमानुखपशुपंछीहोतेहें॥ अरुदेखजोभि
न्नभिन्नरूपभीहोजातीहे॥ तैसेउनकीभिन्नभिन्नरूपहोगईं॥ अरुदेखजोश
रीरएकहोताहे॥ तिसविखेनेत्रश्रवणनासिकाजिह्वानुचाकीरूचभिन्न
भिन्नहोजातीहे॥ अपणोअपणोविखकार्यकरतीहे॥ सोइकहीशरीर
विखअनेकताभासतीहे॥ तैसेउनकीएकहीसंवतथी॥ परसंकल्पभि
न्नभिन्नहोगए॥ मनकेफुरणेकरएकविखअनेकताभासतीहे॥ जैसेएकही
जोगीश्वरहोताहे॥ सोइच्छाकरकेअरुअरुशरीरकोधारलेताहे॥ सोएकविखे
अनेकहोजातेहें॥ अरुसहस्रवाहअर्जुनथासोएकभुजासाथजुधयुद्धक
तीथा॥ हमरीसाथदानकतीथा॥ एकसाथलेताथा॥ इसीप्रकारसभतोसा
थचेष्टाकतीथा॥ उहभीभिन्नभिन्नहोइ॥ इकहीशरीरविखेभिन्नभिन्नचेष्टा
होतीहे॥ अरुविष्णुभगवानकहेहैत्यासाथजुधकतीहे॥ कहूंकर्मकतीहे॥ परचे
कहूंलीलाकरतीहे॥ कहूंसेनकरहिमाहे॥ सोसंवतनोएकहीहे॥ इस
शाभिन्नाभिन्नहोतीहे॥ तैसेउनकीसंवतविखेअनेकरूचीहुएआं॥ इसमें
विखक्याआश्चर्जहोताहे॥ हेरामजीइसप्रकारजन्मनेजन्मांतरकोंअ
विदिकसंसारविखेदेखतेभए॥ रामउवाच॥ हेभगवन्उहतोबोधवानवि
पश्चितथे॥ बोधवानतोजन्मनहीपावता॥ उनकोंजन्मकिसप्रकारहुआ॥ व
सिष्ठउवाच॥ हेरामजीविपश्चितबोधवानथे॥ परबोधकेनिकटिथधारणा
अभ्यासवालेथे॥ जोज्ञानवानहोतेतबद्रिशभ्रमकेदेखनेकीइच्छाकाहे
कोंकरतेहे॥ तातेउहज्ञानवानथे॥ धारणाअभ्यासीथे॥ अरुसमुद्रकोंजो
लंघगए॥ अरुमछकेउदरशिडोवलकरतिकसेसोजोराशक्तोइहअसि
धईहे॥ ज्ञानकालक्षणस्वसंवेदहे॥ परसंवेदनहीं॥ राजेविपश्चितज्ञानवा
ननथे॥ इसकारणतेदेशदिशानतरभ्रमतेरहे॥ ज्ञानबिनाअविदकसंसार
विखजन्ममरनसोंभटकतेरहे॥ रामउवाच॥ हेभगवन्ज्ञानवानजोराग
रकोभूतभविष्यतवर्तमानतीनोंकालोंकाज्ञानकेसेहोताहे॥ कैसेतीनोंकालों
लउसकोंविदमानहे॥ अरुएकदेशविखेइस्थितहुआ॥ सर्वत्रकेसेकसो
कोकर्ताहे॥ सोसभमेरेताईकहुहु॥ वसिष्ठउवाच॥ हेरामजीअज्ञानीकीउ
हवानमैंतुककोंकहीहे॥ अरजेनाककेजगतहे॥ सोसभअविद्याकाशहूप
हे॥ जिनकोंअसीसत्ताकाज्ञानहुआहे॥ सोमहापुरुखहे॥ जैसेसुपनेविखे
कोउपुरखजागिआहे॥ सभसुपनेकीसृष्टिउसकोंअपणाहीरूपभासतीहे
तीहे॥ उसविखेबंधमानहीहोता॥ हेरामजीजैनीकछुसाननभासतीहे
सोनानानहीं॥ अरुअनानाभीनहीं॥ केवलआत्मसत्ताज्योंकीत्योंअपणे
आपविखेइस्थितिहे॥ जैसेअकाशअपणीशून्यताविखेइस्थितिहे॥ तैसे
आत्माअपणेआपविखेइस्थितिहे॥ अरुइहतीनोंकालभीज्ञानवान
कोंअल्पहूपहोजाताहे॥ द्वैतभावउसकामिटजाताहे॥ असेज्ञानवानको

वं॰
मं॰
२८

ज्ञानीहीजाणताहै॥अरुकोऊनहींजाणसकता॥जैसेसमथरताकौंपानक
ताहै॥सोएस्वादकोजाणताहै॥अरुकोऊजाणनहींसकता॥तैसेज्ञानी
केलछणकोज्ञानीहीजाणताहै॥अरुकोऊनहींजाणसकता॥हेराम
जीज्ञानीअरुअज्ञानीकीचेष्टातौतुल्यभासतीहै॥परज्ञानीकानिश्चेविख
कछुअरुहै॥अरुअज्ञानीकेनिश्चेविखअरुहै॥जिसकाअंतरशीतलभ
एआहै॥सोज्ञानवानहै॥अजिसकाअंतरजलताहै॥सोअज्ञानीहै॥उह
वाथाहुआ॥अरुजोज्ञानवानहै॥सोतिसकाशरीरचूरणहोवे॥अथवा
राजआएप्राप्तिहोवे॥तोभीउसकोरागद्वेषनहींउपजता॥सदाज्योंकात्यों
एकरसरहिताहै॥उहजीवन्मुक्तहै॥परइहलछणउसकाअरुकोऊनहीं
जाणसकता॥उहआपहीजाणताहै॥शरीरकोदुखभीआइप्राप्तिहोताहै
अरुमारताभीहै॥अरुदानभीकरताहै॥इस्त्राभीहै लेनादेनाभीहै॥इसनेले
करसभचेष्टाकरतीदृष्टिआवताहै॥परअपणेनिश्चेविखनदुखीहोताहै
नसुखीहै॥नदेताहैनलेताहै॥सदाज्योंकात्योंरहिताहै॥हेरामजीविव
हारतोउसकाभीअज्ञानीकीन्याईदृष्टिआवताहै॥परअंतरतेउसकाइह
निश्चाहोताहै॥अरुअचलपदविखरहिताहै॥भिडताकदाचितनहीं॥परम
तृप्तरूपहोताहै॥रागसहितभीदृष्टिआवताहैपरअंतरतेरागकिसी
विखनहीं॥क्रोधकर्ताभीदृष्टिआवताहै॥परउसकोक्रोधकदाचितनहीं
जैसेआकाशसभपदार्थोंकोधारताहै॥अरुधूमबदलोंकरअछादिआभी
दृष्टिआवताहै॥परकिसीसाथस्पर्शनहींकरताहै॥अरुतैसेज्ञानवानवि
खसभक्रियादृष्टिआवतीहै॥परअपणेनिश्चेविखकिसीक्रियाकाअभिमान
हीकर्ता॥जैसेनटस्वांगलेआवताहै॥चेष्टाकर्तादेखीताहै॥परअंतरते
अपणानटतिभावविखिनिश्चाहोताहै॥तैसेज्ञानवानकोंभीसर्वक्रिया
विखहीअपणाआत्मभावनिश्चाहोताहै॥जैसेकिसीकोस्वप्नाआवता
है॥अरुअपणाशरीरसमेतस्वप्नआवताहै॥तबस्वप्नकेपदार्थोंविख
वर्तताहै॥तौभीउनकेसुखविखेआपकोंसुखीनहींमानता॥अरुदुखवि
खिआपकोंदुखीनहींमानता॥सभविखेउसकोअपणासमरूपभासता
है॥तैसेज्ञानवानकोंअपणासरूपकेनिश्चेकरकेसुखदुखकाक्षोभनहीं
होता॥अरुजोअंसपूरणहै॥तिनकोंक्यादुखसाधहोताहै॥जैसेउनकोंइ
च्छाहोतीहै॥तैसेहीउनकोंसिद्धहोकरभासताहै॥हेरामजीइहजेतीक
सिद्धिहै॥सोसभचिंतामणिविखैस्थितिहै॥सोजोगीश्वरप्रकटखतिसी
विखइस्थितिहोकरमहाप्राप्तिहुआचाहतेहैं॥नहोअतिवाहकसाथ
जाइप्राप्तहोताहै॥अरुतीनोंकालउनकोंविदितहोतेहैं॥उनकोंइहसा
धककछुनहीं॥परज्ञानीअवाधिकिसीनमित्तजतननहींकर्ता॥जैसेआइप्राप
तिहोताहै॥तिसीविखप्रसन्नरहिताहै॥हेरामजीएककालमोब्रह्माजीसा
मवेदकोंऊर्धरेखककेगाइनकरतेथे॥अरुसदाशिवकोमाननकरते॥तव
सदाशिवअपणेनखोंसाथब्रह्माकापंचमसीसकाटिडारा॥अपमानकु
रो॥परब्रह्माजीकेमनविखकछुक्रोधनहुआ॥अरुविचारनभएआ॥जोमे
आगेचिदाकाशथा अबभीचिदाकाशहीरूपहों॥मेरानाकछुगएआनहीं
सिरसाथमेराक्याप्रयोजनहै॥नकछुहानहैनलाभहै॥हेरामजीइसप्र
कारसर्वविश्वरचणेहाराब्रह्माजीकासिरकाट्या॥तोवहुडिभीसिरलगा
वलेनातौसमर्थथा॥परउनकोंलगावणेकाकछुप्रयोजननथा॥अ
रुअनलगावणेकाकेकछुहाननथी॥उनकानिश्चासदाआत्मपदविख

है॥एसकारणातेक्षोभकछुमनहींहुआ॥हेरामजीकामकेसाअरुको
ऊविकारनहीं॥जोसदाशिवपार्वतीकोवामेअंगविखधारतेहैं॥अरु
कामदेवकेपांचोंबाणचलावणेकरसभविश्वमोहनहोताहै॥ति
सकामकोंसदाशिवभस्मकरछोड्याहै॥तौइस्त्रीकेत्यागणेकोंसमर्थ
नहींकिया॥परतिनकोंनरागहैनद्वेषहै॥इसकारणातेत्यागण
भीनहींकरते॥नत्यागणेकरकेकछुअर्थसिद्धहोताहै॥नराखणे
करअनर्थहोताहै॥जोकछुप्रवाहपतितकाराजहुआहै॥तिसी
कोंकरतेहैं॥खेदकछुनहींमानते॥तातेजीवन्मुक्तहैं॥अरुविस्नु
जीसदाविश्वपमोंरहितेहैं॥आपभीकर्मकरतेहैं॥अवरलोककुशि
ऊभीकरावतेहैं॥शरीरकोंधारतेहैं॥अरुत्यागतेहैं॥जथकरतेहैं
मारतेहैं॥इत्यादिकक्षोभविखरहितेहैं॥सोत्यागणेकोंसमर्थ
भीहै॥परत्यागणेविखउनकाकछुकारजसिद्धनहींहोता॥अरु
करणेविखकछुहाननहींहोती॥उनकोंकएगुणाकरगुणवान
जानतेहैं॥परमकोंतोसथचिदाकाशसरूपजानतेहैं॥मूरख
कहितेहैं॥ब्रह्मासेसदाशिवजीस्वथचिदाकाशरूपहै॥सदास्वस्थपवि
खउनकोंअहंप्रतीतहै॥अरुअकाशमात्राविश्वजोसृजेइस्थितिहो
ताहै॥सोकवहूंऊर्धकोजाताहै॥कवहूंनीचकोंजाताहै॥तिसकोंए
स्थितिहोणेकोंसमर्थनहींकीआ॥परचलनाअरुठहरणादोनोंति
सकोसमहै॥देखुनेअरुखेदतेरहितहोकरप्रवाहपतितकारजवि
खविचरताहै॥तातेजीवन्मुक्तहै॥अरुचंद्रमाभीजीवन्मुक्ताहै॥सोक
वहूंघटताघटताहुलमरूपहोताहैदृष्टिआवताहै॥कवहूंवढता
जाताहै॥सुक्लअरुकृष्णदोनोपक्षतिसविखरहितेहैं॥रात्रकोप्र
काशताहै॥उहअपणीक्रियाकोंत्यागनहींसकताक्या॥परखोभते
रहितहोकरप्रवाहपतितकारजविखविचरताहै॥तातेजीवन्मुक्ता
है॥अरुअग्निसदादाहकतारहिताहै॥जागिहोमकेभोजनकरणेकों
सर्वओरजाताहै॥उसकोंयहविखेवेषणकीसमर्थतानहींकीया
यरजोकछुअपणाअचारहै॥तिसकोंत्यागतानहीं॥दहराणवि
खिकछुकारजसिद्धनहींहोता॥अरुचलणेविखेकछुहाननहीं
होती॥दोनोंविखेतुल्यहै॥तातेजीवन्मुक्ताहै॥हेरामजीवृहस्पत
अरुशुक्रकोंवडाखोभरहिताहै॥वृहस्पतदेवताओंकीजैकेनमित्त
जतनकर्तारहिताहै॥अरुशुक्रदेतोंकीजैकेनमित्तजतनकर्ता
रहताहै॥उनकोंत्यागणेकीसमर्थनहींकीया॥परदोनोंउनकों
तुलहै॥इसकारणातेखेदतेरहितहोकरअपणाकारजवि
खविचरतेहैं॥सोजीवन्मुक्तपुरखहैं॥हेरामजीराजविखवडेखो
भहोतेहैं॥सोराजाजनकअनंदसहितराजकर्ताहै॥अरुजीवन्मु
क्ताहै॥प्रह्लादवलिवृत्रासुरअरुमुरएतनेआदिलेकरदैतजो
जीवन्मुक्तहुएहैं॥सोसमताभावकोंलीएखेदतेरहितनानाप्रकार
कीचेष्टाकर्तेभएहैं॥परअंतरतेनिर्मलजीवन्मुक्तरहेहैं॥राजान
लअरुदलीपअरुमानधातातेआदिलेकरजोराजेहुएहैं॥सम
ताभावकोंलेएराजकीयाहै॥सोजीवन्मुक्ताहैं॥ऐसेअनेकराजे
हुएहैं॥राजविखरागवानभीदृष्टिआइहै॥परअंतरतेरागद्वे

व॰ म॰ १५

खतेयहितप्रीतलचितहै॥ हेरामजीज्ञानीअरुअज्ञानीकीचेष्टातुल्यहो
तीहै॥ परएताभेदहै॥ जोज्ञानीकाचितशांतहै॥ अरुअज्ञानीकाचितक्षो
भविखेहै॥ इष्टकीप्रापतविखेहर्षवानहोताहै॥ अरुअनिष्टकीआपति
विखेद्वेषकर्ताहै॥ ग्रहणअरुत्यागकीइच्छाकरपडाजलताहै॥ अरुसा
माउसकोंसतभासताहै॥ अरुजिसकाचितशांतहोगयाहै॥ तिस
केअंतरजगतरहिनदेखवहै॥ स्वभावकरशरीरकीजोप्रारब्धहै सोपूरीहो
तीहै॥ तिसविखेकछुअपणाअभिमाननहीहोता॥ तिसकेनि
श्चैविखेसभअकाशरूपहै॥ जगतकछुवस्तुआनही॥ भ्रांतमात्रहै
जैसेअकाशविखेशून्यताभ्रांतमात्रहहि॥ अपरहरनहीहोती॥ तैसेय
हजगतअभासमात्रहै॥ स्पंदनहीकदाचितहोता॥ जैसेअकाशकेइंद्रध
नुषभ्रमकरकेभासताहै॥ परहैनहीं॥ तैसेयहजगतभ्रांतकरकेभास
ताहै॥ परहैनहीं॥ जैसेअकाशविखेनानाप्रकारकेरंगभासतेहैं॥ तै
सेआत्माविखेजगतभासतेहैं॥ जैसेकाष्टकीपुतलीकाष्टरूपहोती
है॥ तैसेजगतब्रह्मरूपहै॥ जोकछुब्रह्मतेइतरभासताहै॥ सोभवि
खतनरखतअसतहै॥ अरुजोकछुनेत्रकाद्रिष्टिआवता॥ सोकछुन
हीं॥ सर्वकलनातेरहितसुधसुवतजडतातेमुक्तस्वभाव॥ हैसर्वतेर
हितएकआत्मसत्ताइस्थितिहै केवलअकाशरूपहै॥ तिसविखे
जोजगतहै॥ सोभीउहीरूपहै॥ पाखाणकीशिलाजोवनअन्नमा
नहैं॥ तेभीतिसीसरूपविखेइस्थितिहै॥ २१७॥ इतिश्रीजोवन्कल
छनेवणिवणिनंमामसर्गः॥ रामउवाच॥ हेभगवनउहराजाविपश्चित
वहांडिक्याकर्तेभए॥ वसिष्ठउवाच॥ हेरामजीजोउनकीदशाहुईहै॥
सोश्रवणकर॥ पश्चिमदिशाकाविपश्चितवनविखेविचरताफिरताथा
सोएकमत्तहस्तीकेवशपडा॥ तिसनेपहाडकीकंदराविखेतिसको
मारडारा॥ अरुदूसरेविपश्चितकोराखसपकडिलेगये॥ तिसनेवड
वाअग्निविखेडारदीया॥ उहांतोअग्निभक्षनकरग्रासलीया॥ अरुतीस
रेविपश्चितकोएकविद्याधरस्वर्गविखेलेगया॥ उसइंद्रकीमानन
करीतिसकोश्रापदीया॥ तिसकरभस्महोगया॥ इसीप्रकारचोथाभी
मूआ॥ तिसकोमच्छअष्टकडेकरडारा॥ तिसकरउहमूआ॥ जैसेप्रले
कालविखेलोकभस्महोजावतेहि॥ तैसेचारोंविखसबनसगए॥ त
बउनकीसंवितअकाशरूपहोगए॥ अरुइनकेविखेजोजगतदेखणे
कासंस्कारथा॥ तिसकरउनकीअकाशरूपीसंवितवहुडफुरी॥ तिस
करजगतभासणेलगा॥ प्रिथवीदीपवजगतदीपसमुद्रइस्थावरजं
गमकोंदेखतेभए॥ अरुअनिवाहकशरीरसाथचेष्टाकरणेलगे॥ तिस
शडोएकपश्चिमदिशाकाजनार्दनविष्णुभगवानकेइस्थानविखे
मूआनिर्वाणहोगया॥ उसकीसंवितविखेसर्वार्थशून्यताहोगए॥
उहनहोसकाहूआ॥ अरुएकमच्छकेउदरविखेसहस्रवर्षप्रजंतर
हा॥ तिसनेउपरांतनिकसा॥ निकसिकरएकदेशकाराजाहूआ॥ राज
करनेलगा॥ एकचंद्रमाकेनिकटिआया॥ तहांउहमरकरचंद्रमाके
लोककोंप्रापतिहूआ॥ स्वर्गको॥ अरुएकवहुतासमुद्रकेपारकोप्राप
तिहूआ॥ आगेचोरासीहजारजोजनपृथिवीतिसकोलंघतागया॥ ए
सीप्रकारचारोंवडेजीवतेभए॥ समुद्रपर्वतवनोंकोलंघतेभए॥ सभ

तेआगेदशसहस्रजोजनस्वर्णकीपृथिवीआए॥ तहांदेवतियोंकेवि
चरनेकेइस्थानहैं॥ तिनकोंभीलंघगए॥ आगेलोकालोकपर्वतआइ
या॥ जिससर्वपृथिवीकोंचोफेरआवर्णकीयाहै॥ जैसेब्रिछकोंवन
काआवर्णहोताहै॥ तैसेतिसपंचासकोटजोजनपृथिवीकोंआवर्ण
कीयाहै॥ पंचाससहस्रजोजनऊंचाहै॥ लोकालोकपर्वततहोता
रोंकानिछत्रचक्रपडाफिरताहैहि॥ तिसकोंभीलंघगए॥ तिसकेआ
गेएकशून्यसामखेनथा॥ जोमहाशून्यजैसा॥ जहांनपृथवीनजल
आदिकतत्तनअवरकोईऐकशून्यआकाश॥ नकोईइस्थावरपदार्थ
नजंगमपदार्थनकोईतउपजे॥ नकवीमिटि॥ तिसकोंदेखतेभए॥ इ
सप्रकारसंपूरनभूगोलकोंदेखतेभए॥ रामउवाच॥ हेभगवनभूगो
लकिया॥ अरुकिसकेआश्रेहै॥ अरुतिसकेपरेकिआहै॥ वसिष्ठउ
वाच॥ हेरामजीजैसेस्वप्नहोताहै॥ तैसेभूगोलहै॥ अरुसंकल्पकेआ
श्रयहै॥ सर्वओरतिसकेअकाशहै॥ हेजैसेइसानिछत्रसहितचक्र
फिरताहै॥ हेरामजीइहवृथककेवर्णीआनहीं॥ संकल्पककेवर्णीआ
है॥ जोवस्तवृथककेवर्णीहोतीहै॥ सोक्रमसकेकेपइस्थितिहोतीहै॥ सो
एहतोविपर्जेरूपककेइस्थितिहै॥ पृथिवीकेचोफेरीदशगुणावार्णहै
तिसकेपरेब्रह्मांडखपरहै॥ सोखपरएकऊर्धकोंगएआहै॥ तिसक
थविखेजोपोलहै॥ सोअकाशहै॥ उहवत्रसारकीन्याईहै॥ अनंतकादि
जोजनोंकाविस्तारहै॥ तिसब्रह्मांडकातिसविखेभूगोलहै॥ तिसके
उत्तरदिशासुमेरपर्वतहै॥ पश्चिमदिशालोकालोकपर्वतहै॥ उपर
निछत्रचक्रफिरताहै॥ जहांउहआवताहै॥ तहांप्रकाशभासताहै
जहांनहींहोतातहांतमरूपभासताहै॥ सोसभसंकल्परचनाहै
जैसेबालकसंकल्पकरपथरकावटारचे॥ तैसेचेतनरूपीबालकने
इहसंकल्परूपीभूगोलरचाहै॥ हेरामजीजैसेजैसेउसविखेतिससमेनिश्चा
हुआहै॥ तैसेतैसेकरइस्थितिभयाहै॥ जहांपृथिवीइस्थितिरहीहै॥ तहांइ
स्थितिहै॥ जहांखातिरचीहैतहांखातहीहै॥ अरुहेक्याजैसेस्वप्नविखेअवि
दिमानप्रतभासहोतीहै॥ तैसेभूगोलहै॥ हेरामजीजिसकोंऐसेभासताहै जो
सुमेरविखेदेवतेवसतेहैं॥ उत्तरदिशा॥ अरुअरुदिशामानरखेतेआदिजीव
वसतेहैं॥ ऐसाजिनकोंध्यानहै॥ सोपंडितहैं॥ तोभीमूरखहैं॥ सोपंडितनहीं
इहतोभ्रांतमात्रहै॥ कछुवर्णीआनहीं॥ जोइहमतेआदिलेकररचतेहैं॥
तिनकोंज्ञाननेत्रोंकरज्योंकीत्योंआत्मसत्ताभासतेहैं॥ जोघटइंद्रीयांसहन
अज्ञानीदेखतेहैं॥ तिनकोंजगतभासताहै॥ अरुज्ञानवानकोंऐसेभासता
है॥ जोपरमब्रह्मसत्ताज्योंकात्योंहै॥ अरुजगतअसतहै॥ जैसेअकाशवि
खेअणहोतीनीलताभासतीहै॥ तैसेआत्माविखेअणहोताजगतभा
सताहै जैसेनेत्रदूखनकरअकाशविखेतरवरेभासतेहैं॥ तैसेअज्ञानकरके
आत्माविखेजगतभासताहै॥ केवलअभ्यासमात्रहै॥ हेरामजीजगतउप
जाभीद्रिष्टिआवताहै॥ अरुनष्टहोताभीद्रिष्टिआवताहै॥ परकछुवर्णी
आनहीं॥ जैसेसंकल्पकारचाहुआअपणेमनविखेभासताहै॥ तैसेइहजग
तमनविखेफुरताहै॥ इहसर्वत्रभूगोलसंकल्पविखेइस्थितिहै॥ जैसेबा
लकसंकल्पविखेएकपथरकावटारचेतैसेभूगोलहै॥ एहब्रह्मांडसहस्रजो
जनप्रजंतहै॥ तिसकाइकभागऊर्धकोंगएआहै॥ एकभागऊर्धकोंगयाहै
तिसविखेचेतनरूपीबालकनेइहभूगोलरचाहै॥ सोसंकल्पकेआश्रय

व॰
म॰
१६

खडाहै॥ जैसे आदितेतहृपएहै॥ तैसे भासताहै॥ इस प्रथिवीके उत्तर दि-
शाविषे सुमेरपर्वतहै॥ अरु पश्चिमदिशाकी ओर लोकालोक पर्वतहै
अरु ऊपर तारा नक्षत्र चक्र फिरताहै॥ लोकालोकके जिसओर आवृता
है॥ तिसओर प्रकाश होताहै॥ जैसे अर्धगोल अंसाहै॥ जैसे खवहोताहै॥
तिसके इकओर पातालहै॥ अरु एकओर स्वर्गहै॥ एक मध्यमंडलहै अ-
रु आकाश सर्वओरहै॥ पातालवासी जाणतेहै॥ हम ऊर्ध्वहैं॥ अरु आका-
शवासी जाणते हैं॥ जो हम ऊर्ध्वहैं॥ मध्यवासी जाणते हैं॥ जो हम ऊर्ध्वहैं॥
इस प्रकार भूगोलहै॥ तिसके परे एक खाईहै स्वप्न जैसा॥ महान मरुथल
हान ष्टथिवीहै॥ न कोऊ पहाडहै॥ न अस्थावरहै॥ न जंगमहै॥ न कछु
कवी उपजाहै॥ महान मरु जैसाहै॥ अरु तिसके परे खनेकी कथहै॥ दश
सहस्र जोजन तिसका विस्तारहै॥ तिसके परे दशगुण जलहै॥ ष्टथिवी
केचौफेर वेष्टनहै॥ तिसके परे दशगुणा अग्निहै॥ तिसके परे दशगुणा
वायुहै॥ तिसके परे ब्रह्म प्रकाशहै॥ तिसके परे महा प्रकाशहै॥ तिस
विखे अनंत ब्रह्मांड इस्थितिहै॥ सो क्याहै॥ अरु किंकर इस्थितिहै॥ जै-
से त्रिणके ऊपरके आश्रय ठहरताहै॥ तैसे ष्टथिवी भारके आश्रय नत
है॥ अरु वास्तवते क्याहै॥ सथ जो चेतनहै॥ तिसी चेतन ब्रह्मका चम-
त्कारहै॥ सो ब्रह्म प्रकाश चेतन निर्मलहै॥ तिसविखे खाभकोऊ नहीं
परम शांतहै॥ अरु अनंतहै॥ अरु सर्वका अपणा आपहै॥ हे रामजी
अब वडे विपश्चितोंकी वार्ता सुण॥ जब ओह लोकालोक पर्वत परजाइ
इस्थित भए॥ तब एक स्वप्न जैसी खाते दृष्टिआए॥ पर्वत शिखर चले तव उनके
रवाते विखे जाइ पडा॥ खातेपवनके शिखर परथा॥ अरु महा पक्षीभी शिखरते
कीन्याई वडेथे॥ उनो पक्षीयोने चौंके साथ इसका शरीर चूरणकीया॥ तब इस
अपणेइस्थूल शरीरकों त्यागकर सूक्ष्म अतिवाहक शरीर अपणा जाणत
भया॥ रामउवाच॥ हे भगवन अथिभूतनका नाके से होतीहै॥ अतिवाहककैसा होता
ताहै॥ अरु वह डिक्याकरती भया॥ सो कहु॥ वसिष्ठउवाच॥ हे रामजी जैसे सका-
ल्पकेकै हृरतेहृ चलेजावे॥ अरु जिस शरीरसाथ जावे॥ जो अतिवाहक है॥
अरु पंचभूतनका शरीर इहिहै॥ जो अनात्म भासताहै॥ सो अधिभूतनका है॥ जहां जा
वरोकोचित का संकल्प उठताहै॥ तव इस्थूलशरीरगए विनाउहां पहुचत
होसकीता॥ जवमार्गकर्के चलेनतव पहुचताहै॥ सो अधिभूतनका है॥ सो इह प्रमा
दिककर्के होताहै॥ जैसे जेवडीके भूलणेकर्के सर्प भासताहै ह्वि॥ तैसे आत्मा-
अज्ञानकर्के अधिभूतक शरीर भासता॥ जैसे सतो राजका पुरणावे तिस वि-
खे आपभी इक शरीर वणाकर चेष्टा करता फिरे॥ सो जवलग इस खलाशरीर
स्पुरणनहीभया॥ तवलग संकल्पशरीर साथ चेष्टाकरतीहै॥ सो अतिवाह-
कहै॥ तिसको संकल्पमात्र जाणना॥ सो विशेष वुद्धिकहातीहै॥ पर आत्म
वोधनहीभया॥ जवतिस संकल्पशरीरविखे दृढ भावना होजातीहै॥ ति-
सका नाम अधिभूतकि होताहै॥ सो दृष्टवथक होतीहै॥ तैसे जवलग सरू-
पका स्मरणहै॥ तवलग अधिभूतकता नही होती॥ अरु जव विस्मरण हो-
जाताहै॥ तव अधिभूतकता होजातीहै॥ अरु विपश्चितनो अधिभूतकथे॥ सो
आत्मबोधते रहितथे॥ अरु जहां चाहैं॥ तहां चलेजातेथे॥ अरु सरूपते न-
कछु अतिवाहकहै॥ न अधिभूतकहै॥ प्रमादिकर प्रकार भासतेहैं॥ वास्तव
चिदाकाश रूपहै॥ इस शरीरवस्तु कछु नहीं॥ सभऊ होहै॥ तिसके प्रमादिक
के विपश्चित अविदिक जगतको देखणे चलेथे॥ सो अविद्याका कछु वस्तु नहीं

ब्रह्महीहै॥ ब्रह्मका अंत कहां आवे॥ उहां तेचलापरजाणी जो मेरा अतिवा-
हक शरीरहै॥ सभ ष्टथिवीकों लंघगाया॥ तिसके परे जलकोभी लंघगा-
या॥ तिसके परे जो सहस्र जोजन दाहक अग्निका आवरणहै॥ प्रकाशवानति-
सकोभी लंघगाया॥ सो औके अरु वायुके आवरणकोभी लंघगाया॥ अका-
शकोंभी लंघगाया॥ तिसके परे ब्रह्माकाशथा॥ नहां इसका संवेदन संस्कार
रके अनुसार फेर जगत लागा भासणे॥ तिसकोभी लंघगाया॥ वहुड ति-
सके आगे ब्रह्म प्रकाशहै॥ फेर जगत पंचभूतक भासि आवे॥ वहुड तिस
के आवरणोंको लंघजावे॥ फेर ब्रह्मकवाटके परे मनोंकालंघके ब्रह्माका
शपाया॥ वहुड तिसके विखे अवरपंचभूतक ब्रह्मांड था॥ तिसकोभी लं-
घगाया॥ पर अंत न आया॥ सद्रूपके प्रमादिकर्के द्विशाके अंत लेणेकोंभट-
कता फिरा॥ पर अविद्यारूपी संस्कारका अंत केसे आवे॥ अवलग अंत
लेणेको भटकताफिरताहै॥ जव अविद्यानष्ट होवेगी॥ तवही अवि-
द्यारूपी संस्कारका अंत आवेगा॥ हे रामजी जगत कछु वणिआ नहीं॥
ब्रह्म प्रकाश ज्योंकात्यों इस्थितिहै॥ तिसका न जानणा संसारहै॥ जवल-
ग उसका प्रमादिहै॥ तवलग जगतका अंत न आवेगा॥ जव सरूपका-
ज्ञान होवेगा॥ तव अंत आवेगा॥ सोज्ञान नणा क्याहै॥ चित्तहीकानिर्वा-
णहीजानणाहै॥ जव निर्वाण होवेगा॥ तव जगतका अंत आवेगा॥ ताते
जवलग चित्त भटकता फिरताहै॥ तवलग अंत नहीं आवता॥ ताते
चित्तका नाम संसारहै॥ जव चित्त आत्मपद विखे इस्थित होवेगा॥
तव जगतका अंत होजावेगा॥ इस उपाइ विना शांत नहीं होती॥ २८
इति श्री ब्रह्म गीता विपश्चितो पाख्याने वर्णनं नाम सर्गः॥ रामउवा-
च॥ हे भगवन उह जो अरु दो विपश्चितथे तिनकी क्या दशा भए॥ उहभी
कहहु॥ इह दोनोकी एककहीकए॥ वसिष्ठउवाच॥ हे रामजी एकतोति-
नकी धारणाह आया॥ अरु इस राब्रह्मांडोंको लंघता गया॥ लंघता लंघता
तिप ब्रह्मांड विखे गया॥ तव उहां उसको संतोंका संग प्राप्तिभया॥ ति-
नकी संगतकर्के तिसको ज्ञान प्राप्तिहुआ॥ ज्ञानकोपाइकर उह-
भी निर्वाण होगया॥ अरु इक हरण अवलग पडा फिरताहै॥ अरु एक
ऐहा पहाडकी कंदरा विखे मृग होकर विचरताहै॥ हे रामजी इह जग-
त आत्माका आभासहै॥ जैसे सूर्यकी किरणों विखे जल भासताहै
जवलग किरणहै॥ तवलग जलभास निवर्तन होता नही॥ तैसे ज-
वलग आत्मसत्ताहै॥ तवलग जगत चमत्कार निवर्तन नहीं होता॥
आत्माके जाणेते जगत सत्ता नहीं रहती॥ जैसे किरणके जाणेते
जलाभास नहीं रहती॥ जो भासताहै॥ तोभी किरणहीकी सत्ता
भासतीहै॥ भिन्न जगतकी सत्ता नहीं भासती॥ रामउवाच॥ हे भग-
वन विपश्चितनतो इक ही था॥ इक हीसबन विखे भिन्न भिन्न वास-
नाके सेहु॥ अरु इक मुक्त होगया॥ इक मृग होकर फिरतारहा॥ ए-
क आगे निर्वाण होगया॥ उह भिन्न नाने सेहोइहै॥ सबतनते इक ही
था॥ तिस विखे वटवध फलकैसे प्रापति हुइ सो कहो॥ वसिष्ठउवा-
च॥ हे रामजी वासना होती॥ सो देश अरु काल अरु पदार्थकर होती
है॥ तिसविखे जिसकी दृढ भावना होतीहै॥ तिसको जहोतीहै॥ जै-

जैसे एक पुरुष तिसने मनोराज करके अपणी इच्छा रूप संकल्पी॥ तिस विखे वासना भिन्न भिन्न मय स्थापन करी॥ उह संवत नतो एको है॥ पर प्रबलास ले र भूलकर उह द्रिड होगए॥ तो जैसे वासना तिस धारी र विखे द्रिड होमी है॥ तैसे इकही संवत विखे नाना प्रकार की वासना पडी थ सोई प्रापति होती है॥ तैसे इकही स्वप्न मे अनेक प्रकार आकार होजाते है॥ अरु भिन्न भिन्न वासनी है॥ जैसे इक स्वप्न मे अनेक प्रकार आकार होजाते है॥ तैसे ही आकाश रूपी संवत विखे भिन्न भिन्न वासना होती है॥ तैसे ही आकाश रूपी संवत विखे भिन्न भिन्न वासना होनी है॥ तैसे ही प्रकाश रूपी संवत किआक के वासना होए होगए॥ अरु है॥ हे रामजी संवत इक परदेश काल किआक के वासना होए॥ सो भलेस संवत स्वरूप भूल गए॥ तिस कारन बंध फल को पावते भए॥ सो सम बलेस संवत स्वरूप भूलगए॥ तिस कारन दिशा न र विखे स वनजाती है॥ तिसके म वन क्या रूप है॥ हे रामजी देश ने दिशा न र विखे स वनजाती है॥ जैसे एक जाग्रत के प्रकार को छोड़ि अ थ जो संवत सत्ता है॥ सो ब्रह्म सत्ता है॥ तिसके मध जो है सो ब्रह्म सत्ता है॥ उही कचन रूप अन स्वप्न ए आ नहीं॥ तिसके मध जो है सो ब्रह्म सत्ता है॥ उही कचन रूप अनस्वप्नाण ए आ नहीं॥ तिसके मध कछु भिन्न भिन्न नहीं॥ न कोऊ इक है॥ न जगत होभासती है॥ अरु कचनो भी कछु भिन्न भिन्न नहीं॥ न कोऊ इक है॥ न जगत है॥ अरु जगत कहां होवे॥ इही अदिटा है॥ एक कहना भी न होती है तक हां होवे॥ अरु जगत कहां होवे॥ इही अदि टा है॥ जिस जिस प्रकार विखे जैसी जैसी वासना या है॥ जो है नहीं अरु भासता है॥ जिस जिस प्रकार विखे जैसी जैसी वासना या है॥ तिसी की जीव न होती है॥ तिस कारण ते एक विष भ वती है॥ अरु द्रिड होती है॥ तिसी की जीव न होती है॥ इस राह रने हरब्र खि तजनार्दन विस्नु के ध्यान विखे निर्वाण होगया॥ इस राह रने हरब्र खितजनार्दन विस्नु के ध्यान विखे निर्वाण होगया॥ तिस करब्रह्मांड हु को लंघना गया॥ उसको संतो का संग प्रापत भया॥ तिस कर ब्रह्मांड हु को लंघना गया॥ वासना निर्वाण होगए॥ तिसका अज्ञान नष्ट होगया॥ जैसे नउदे हुआ॥ वासना निर्वाण होगए॥ तिसका अज्ञान नष्ट होगया॥ जैसे सूरज के उदे होवणे कर अंधकार नष्ट होजाता है॥ तैसे अज्ञान नष्ट होग या॥ उह ब्रह्म पद को प्रापति भया॥ तैसे राह अज्ञान करके हरने हर पहाड भटकता है॥ अरु चतनरूप पहाड की कंदरा विखे स्तग होकर विचरता है॥ हे रा मजी जगत कछु वस्त नहीं॥ अज्ञान के वस ते पडे भटकते है॥ ताते अज्ञा नही जगत है॥ जवलग अज्ञान है॥ तवलग जगत है॥ जब ज्ञान उदे होवे॥ त व अज्ञान को नष्ट करता है॥ तब जगत का भी अभाव होजाता है॥ रामउवाच॥ हे भगवन॥ इह जो स्तग हुआ है॥ सो कहां कहां फिरिआ॥ अरु कहां इस्थि ति है॥ अरु उह को न इस्थान विखे फिरे है॥ सो कहो॥ वसिष्टउवाच॥ हे रामजी दो ब्रह्मांड को लंघने॥ हरने हर चले गए॥ इक अवल गव लाजा ता है॥ पृथवी समुद्र वायु आकाश की उसकी संवत विखे पडे फुरते है॥ उ हनाह रते हर च लगया है॥ उह इहमारी अइह न कछि ष्टि का विखे नहीं॥ अ रु इक ब्रह्मांडो को लंघना गया था॥ अब इस जगत मो पहाड की कंदरा वि खे स्तग हुआ है॥ सो इहमारी द्रिष्टि का विखे नहीं॥ रामउवाच॥ हे भगवन उ ह हरगए थे॥ अरु इक अब इस जगत विखे स्तग हुआ है॥ तुमके से जा णा॥ जो आगे ब्रह्मांडो विखे था॥ अरु अब इस जगत विखे है॥ वसिष्ट उवाच॥ हे रामजी मैं ब्रह्म हो॥ जेते कछु ब्रह्मांड है॥ सो मेरे अंग है॥ सु फ को सभ का ज्ञान है॥ जैसे अविवेके पुरुष अपणे अंगो का जाणता है॥ जहां जे इह अंग फुरते है॥ इह नहीं फुरता॥ तैसे मै सभ को जाणता हो॥ जहां जहां फिरता लंघना गया है॥ सो मै जाणता हो॥ वृथ ने त्रो कर॥ पर तु अ मको जाणने की गम नहीं॥ जैसे समुद्र विखे अनेक तरंग फुरते है॥ अ रु समुद्र सभ को जाणता है॥ तैसे मै समुद्र रूप हो॥ अरु ब्रह्मांड रूप मेरे विखे तरंग है॥ सभ को मै जाणता हो॥ हे रामजी उह जो स्तग है॥ सो

रु ब्रह्मांडो विखे फिरता है॥ उह विपश्चित एह स्तग न हो॥ पर उस जैसा इ सस्तग॥ हे रामजी इह एक ब्रह्मांड इस हमारे ब्रह्मांड जैसा है॥ इकही है॥ इस्थावर जंग जैसे प्रकार है॥ इकही जैसी चेष्टा है॥ इकही जैसा जगत है॥ इस्थावर जंग म सभ इकही जैसे है॥ उहां जो देश काल क्रिया का विचार होता है॥ सो इसके समान होता है॥ जैसे तामत्र पत्र कारए होता है॥ तैसे ही उहां होती है॥ जैसे बिंब का प्रतिबिंब तुल्य ही होता है॥ जैसे इक ही प्रकार के प्रतिबिंब जल ते होता है॥ अरु इस का प्रतिबिंब दर्पन विखे होता है॥ सो दोना तुल होते है॥ तैसे दोनो ब्रह्मांड इक समान है॥ ब्रह्म रूपी आदर्श विखे प्रतिबिंबत होते है॥ इसकारणा ते इह स्तग विपश्चत है॥ इसी नि श्च को धारे हुए है॥ इह अरु उह दोनो तुल है॥ सो पहार की कंदरा विखे है॥ रामउवाच॥ हे भगवन उह विपश्चत अब कहां है॥ अरु उसका क्या अव रहे॥ अब मै जानता हो॥ जो उसका कारज हुआ है॥ अब चलकर तुम फ कौ दिखावो॥ अरु तिसको दर्शन देकर अज्ञान फासते मुक्ति करो॥ वा ल्मीकिरुवाच॥ हे राजन इस प्रकार रामजी कहा॥ तब मुनि सार हल ज्ञा ह वसिष्टजी सो वोलन भया है॥ हे रामजी तुम राजा लीला का इस्थान है जहां तुम क्रीडा चरते हो॥ तिस ठोड विखे उह वांध हुआ है॥ तुम को डोर गा देश के राजे आन दीया है॥ सो वडा सुंदर है॥ इस कर के तुम सभ राखिआ है॥ तिसको मंगावो॥ तब रामजी के सखावा ल को विखे जो निकट खडा तो थ॥ उनको कहा जो उस स्तग को सभा विखे ले आवो॥ हे राजन जब इस प्रकार रामजी कहा॥ तब स्तग को सभा विखे लेआए॥ जैते कछु सभा वि खे श्रोता वेठे थ॥ सो वडे आश्चर्ज को प्रापति भए॥ वडी श्रीवा सुंदर अवक मल की न्याई नेत्र चास को खाता कवडे सभा विखे खेले॥ कबहुं ठहर जावे॥ तब रामजी कहा॥ हे भगवन इसको उपदेश करके जगावो॥ जो अब तो प्रसन्न हमारे साथ प्रश्न उत्तर करे॥ क्रिपा करु राजा मानुष होवे॥ अब तो प्रसन्न उ नर नहीं करता॥ वसिष्टउवाच॥ हे रामजी इस प्रकार उपदेश उको ल रागा नहीं॥ काके ते जो जिसका को इष्ट होता है॥ तिसीकर तिसको सिध ता होती है॥ ताते मै इसके इष्ट को ध्यान करके विदमान करता हो॥ ति सकर इसका कारज सिध होवेगा॥ वाल्मीकिरुवाच॥ हे राजन इस प्र कार कहिकर वसिष्टजी कमंडल हाथ विखे लेकर तीन आचमन कीए॥ अरु पद्मासन वांधकर नेत्र मोद लीए॥ ध्यान विखे इस्थित होकर अग्नि का आवाहन कीया॥ अरु कहा हे अग्न देवता इहने तेरा भगत है इसकी सहाइता करो॥ इस उपर दया करो॥ तुम संतो का दया सुभाव है॥ जब ऐसे वसिष्टजी कहा॥ तब सभा विखे वडे प्रकाश को धारे अग्नि को ज्वाला आन प्रगट भए॥ काष्ट अंगारो ते रहित वडे प्रकाश को लीए पडी जल ती सी जब अग्न जब जागी॥ तब स्तग देख कर बहुत प्रसन्न भए आ॥ अरु चितन वि खे वडी भगत उत्पन्न हुई॥ तब वसिष्टजी ने अवलोकन कर अगन अहसाहित स्तग की ओर देखिआ॥ तिसकर संशय पाप उसके दग्ध होगए॥ अरु वसिष्टजी अग्न को कहा॥ कि हे भगवन हव्यवाहन इह तेरा भगत है॥ अपणी इष्ट वली भगत स्मरण करके इस उपर दया करो॥ इसके स्तग शरीर को हर कर के इसको विपश्चत शरीर देवो॥ जो एह अविद्या से मुक्त होकर इस्थित होवे॥ हे रा

जन॥ इसप्रकारवसिष्टजी अग्नकोकहिकरामजीकोकहतेभए॥ हेराम
जीअवइहस्त्रगअग्निविषेप्रवेशकरेगा॥ तवइसकामानुषशरीरहो॥
जावेगा॥ ऐसेवसिष्टजीकहतेथा॥ जोस्त्रगअग्निकोदेषकरइकचरनपाछे
कोंधारा॥ अरुउछिलिआ॥ अग्निविषेआइप्रवेशकीया॥ तवहेराजनउस
स्त्रगाकोंतिसविषेखेदकछुनभया॥ उसकोअग्निनेदवानहिछिआया
तवतिसकाउहस्त्रगशरीरअंतर्धानहोगया॥ अरुमहाप्रकाशमान
षशरीरकोंधारेनिकसिआया॥ जैसेपटकेउहलेशिडाकारीकोगर्दे
धारकरनिकसिआवताहै॥ सोकैसानिकासिआ॥ वलेवस्त्रोंकोंपहिरि
हूए॥ शीशपरमुकटकंठविषेरुद्राक्षकीमाला अरुयज्ञोपवीतप
डाहूआ॥ अग्निप्रकाशतेजवानसभाविषेजोवैठेथे॥ तिननेभीअधिक॥
तेजमानोअग्निकउभीलज्जतकीयाहै॥ तवअग्निअंतर्धानहूआ॥ तिसकोंदे॥
षकररामजीआश्चर्यकोंप्रापतभयाहै॥ अरुसर्वसभाभीविसमैकोंप्राप॥
तिभए॥ तववडेतेजप्रकाशकोधारेणहारा विपश्चतनिकसिकरध्यान
विषेजुडगया॥ विपश्चतनेलेकरइसमसरीरप्रजंतसर्वस्मरणकरकेनेत्रखोल
दीए॥ वसिष्टजीकेनिकटिआइकरअष्टांगप्रणामकीया॥ अरुमुखतेइहव
चनकहा॥ हेब्रह्मज्ञानकेसूर्जमेरेप्राणोंकेदाता॥ तुमकोमेरानमस्कारहै॥
हेराजनजबइसप्रकारउसेकहा॥ तबवसिष्टजीउसकेशीशपरहाथ॥
रखा॥ अरुदयाकरकेकहाहेराजनतूउठखडाहोवो॥ अवतेरीअविद्यामेंदू
रकरेगा॥ तूआपणेसरूपकोप्रापतिहोवेगा॥ तवराजेविपश्चतनेउठकरराजे
दशरथकोंप्रणामकीया॥ अरुकहाहेराजनतेरीजैहोवे॥ तवराजादशरथआ
सनतेअर्थउठकरकहितभया॥ हेराजनतुमवडूतदूरफिरतेरहिहो॥ अ
वइहांमेरेपासआइवैठो॥ तवराविपश्चितवैठगया॥ विश्वामित्रआदिक॥
जोरिषीवैठेथे॥ तिनकोंयथाजोगप्रणामकरकैवैठगया॥ तवराजादशर
थविपश्चतकोंभासकरकैवुलाया॥ वडेप्रकाशकोंजोधारेहूयेथाजैसेवा
युतेरहितदीपकाप्रकाशकोमानहोताहै॥ तेसेविपश्चतकाप्रकाश॥ इ
सकारणतेदशरथकहा॥ हेभासतुमजोसंसारभ्रमकोलीएचिरकाल
प्रजंतफिरतेरहेहो॥ थकेहोवोगे॥ अवविश्रामकरो॥ अरुजोदेशकालक
करीदेखासोकहो॥ इहआश्चर्जहै॥ जोअपणेमहाविषेसोएआहोवे॥ अ
रुनिद्रादोखकरकैगरतोंविषेगिडताफिरे॥ अरुदेशातेदेशांतरोंविषेभट
कताफिरे॥ इहीअविद्याहै॥ हेभासजैसेवनकेविचरणेवालाहस्तीहोवे॥
अरुसंगलोकरवथाइमानहोवे॥ जैसेउहवंधिआहूआदुषपावताहै॥
तेसेतूविपश्चतभीथा॥ परअविद्याकरकैभटकताफिरिआहै॥ जगतोंकोंदे
षणेकेनिमित्त॥ हेराजनजगतकछुवस्तुनहीं॥ इहीमायाहै॥ जोहैनहीं
अरुभासताहै॥ जैसेभ्रांतकरकैआकाशविषेनानाप्रकारकेरंगभासतेहैं॥ तैसे
इहजगतअविद्याकरकैभासतेहैं॥ अरुसतप्रतीतहोतीहै॥ आकाशरूपहो
आकाशविषेइस्थितिहै॥ सोआकाशविषेजोजोकछुतुमनेदेखाहै॥ जोआ
त्माइरूपीचिंतामणिकेचमत्कारसाथसोकहो॥ २२॥ इतिश्रीविपश्चतआ
पतनामसर्गः॥ दशरथउवाच॥ हेभासवडाआश्चर्जहै॥ जोतूणाविपश्चत
वुधवानअरुचेष्टानुकरअविपश्चितहूअवुधीयोंकीकरीहै॥ जोअविद्याकेदे
षणेकोंतूसमर्थहूआ॥ इहजगततेमिथ्याप्रतिभाउठीहै॥ असतकेग्रहण
केतूकइछाकिकरी॥ वाल्मीकउवाच॥ हेराजनजबऐसप्रकारराजेदशरथ

कहा॥ तवअसंगकोंपाइकरविश्वामित्रवोलतभया॥ हेराजादशरथइहचेष्टा
माईकरताहै॥ जिसकोंपरमवोधनहीहोता॥ अरुकेवलजोवोधआत्माकाहोता
है॥ असभवसोजगतकोंअविदिकजाणताहै॥ अविदिकजगतकेअंतलेणे॥
कोंएताजतननहीकरता॥ उहतोअसतजाणताहै॥ अरुदेहदेहअभिमानीमूर
षअज्ञानीहै॥ सोएताजतननहीकरता॥ काहेतेजोउसकेदेषणेकीसमरथ
तानहीहोती॥ तातेजेसमथभावीहै सोआत्मवोधतेरहितहै॥ अरुअइहतक
शरीरकाजिसनेत्यागकीया॥ सोजनननकरताहै॥ अरुजिनकोंउनमवोधनहीं
हूआ॥ तवइहनइसप्रकारभटकतेफिरतेहै॥ हेराजाइसीप्रकारभटधानाभीपा
डफिरतेहै॥ सतावलहजारवरषडनकोवितीतभयाहै॥ जोइसीब्रह्मांडविषेप
डफिरतेहै॥ उनोंभीएहीनिश्चाधाराहै॥ जोपृथिवीकहांलगचलीजातीहै॥ इ
सनिश्चेतनिवर्तनहीहोते॥ जैसेनदीसमुद्रकेसन्मुखचलणेतेनिवर्तनहीं
होती॥ अरुइसीब्रह्मांडविषपडेभ्रमतेहैं॥ परउनकोअपणीवासनाकेअनुसा
रविपरीतअवस्था॥ अरुइस्थानपडेभासतेहैं॥ हेराजनजैसेजैसेकिसीवाल
ककेसंकल्पकारचाग्रहआकाशविषहोवे॥ तैसेहीइहभूलगाब्रह्मकेसंक॥
ल्पविषेइस्थितहै॥ आकाशवायुपृथिवीजलअग्निइनपांचोंनतोंकाब्रह्मांडरचा
है॥ संकल्पकरके॥ जैसेइकषिलूहोवे॥ तिसकेचोफेरकीडीयाघडीफिरहि॥ सो॥
जिसओरजातीहै॥ सोईऊरऊर्धभासताहै॥ तोऊरहीऊरनिश्चाहोताहै॥ तैसे
इहसंकल्पकारचाभूगोलले॥ तिसभूगोलकेकिसीकोणविषेवदथानाउ
कजीवहोतभएहै॥ एकराजाथा तिसकेतीनपुत्रथे॥ तिनकोंइहसंकल्पआन
उदेहूआ॥ जोइहमजगतकेअंतकोंदेखहि॥ इससंकल्पकरकेपडेफिरतेहैं॥ पृथि
वीलघतेहै॥ वहूजलआवताहै॥ जबलघतेहै॥ अग्निआवतीहै॥ वहुडअकाश
आवताहै॥ वहूडिउसीभूगोलकेचोफिरेफिरतेहैं॥ सोइहभूगोलकेसाहै॥ जै॥
सेअकाशविषेखचूहोवे॥ तैसेइहप्रिथ्वीअकाशविषेहै॥ इसकाअधऊर्ध
कोऊनहीं॥ जिसओरचलनसोअधअरुसिरकापासऊर्ध॥ तिसहीकेचोफेर॥
फिरतरहेहै॥ परअपणेनिश्चेकरअवरकाअवरजाणतेहैं॥ अरुजवलगसरू
पकाप्रमादिहोताहै॥ तवलगजगतकाअभावनहींहोता॥ जवआत्माकासा॥
क्षात्कारहोताहै॥ तवजगतब्रह्मरूपहोजाताहै॥ जगतकछुवणिआनहीं
कछुककुरंगकरकेभासताहै॥ जैसेसप्नविषेअज्ञानकरकैअनंतजगतकोंदे
षताहै॥ तैसेइहहूआहै॥ सोऊणांपरमब्रह्मविषेहूआहै॥ सोभीपरमब्रह्म
है॥ अरुकछुवणिआनहीं॥ आत्मसत्ताअपणेआपविषेइस्थितहै॥ जैसेपथ
रकीशिलाघनरूपहोतीहै॥ तैसेआत्मसत्ताचेतनघनहै॥ जैसेआकाशअरुशू
न्यताविषेकछुभेदनहीं॥ तैसेजगतअरुब्रह्मविषेभेदनहीं॥ कल्पनापरब्र
ह्मरूप॥ अरुपरब्रह्मनारूपहै॥ इसजडचेतनविषेभेदनहीं॥ हेराजनजवल॥
गइसकीवासनानष्टनहींहोती॥ तवलगइसकेदुखभीनहीमिटते॥ जववा
सनामिटजावे॥ तवसर्वजगतब्रह्मसरूपअपणाआपहीभासे॥ रागद्वेषकि
सीविषेनरहे॥ जैसेसप्नेविषेनानाप्रकारकीसृष्टिभासतीहै॥ जोसुषदुस
रूपस्मरणआवताहै॥ तवसर्वरूपआपहोजाताहै॥ रागद्वेषउसकामिटजा
ताहै॥ तैसेज्ञानवानकोंइहजगतब्रह्मसरूपअपणाआपभासताहै॥ अरुसमा
नरूपविचारतेरहितहोताहै॥ जोपूरवअपरकाविचारणाकिये॥ इहशुभ
है॥ इहअशुभहै॥ अशुभकोत्यागकरणाइहशुभग्रहणाहै॥ जवलगपूरवअपरवि
चारमनविषेरहताहै॥ तवलगजगतविषेभटकताहै॥ अरुवांध्यारहिताहै

व· म· १४९

काहेतेजोशुभअशुभदोनोजगतविखेहै॥जबइनकाभीविस्मरणहोजावे॥
सहरागेजगतभ्रांतमात्रजाणकरयथात्मपदविखेसावधानहोवे॥तबमु
क्तहोवेगा॥अरुइसजीवकोअपणेवासनाहीबंधनकाकारणहै॥जबल
गजगतविखेसुखदुखकीवासनाहोतीहै॥तबलगरागद्वेषउपजताहै॥ति
सकरबाध्यमानहोताहै॥जिनकोजगतकेसुखदुखविखेरागद्वेषकीभावना
नहीउपजती॥अरुवासनानाशभएहै॥तिनकोइहजगतसभब्रह्मस्वरूप
अपणाआपहीभासताहै॥जगतविखेसुखदाएकछुनहीभासता॥उन॥
कोसभब्रह्मस्वरूपभासताहै॥२२१॥इतिश्रीभटधानउपाख्यानवर्णनोना
मसर्गः॥दशरथउवाच॥हेभगवनमचिरप्रजननजगतविखेफिरतेरहे
हो॥जिसप्रकारतमचेष्टाकरीहै॥अरजोजोदेशकालपदार्थदेखेहै॥सो
सभहीकहोजी॥भासउवाच॥हेराजनमैंजगतोंकोदेखताफिरताहों॥
फिरताफिरताथककपडाहों॥परदेखणेकीजोइछाथीइसकारणतेमैफ
कोईखननहीभासिआ॥जोकछुमैंचेष्टाकरीहै॥आरदेख्याहै॥सोकहता
हों॥हेराजनमैंबहुतेजन्मधारेहै॥अरुबहुतवोमरतभयाहों॥वरश्रापपा
एहै॥नीचऊचजन्मधारेहै॥अरुमरसमरीयाहो॥अरुबहुतब्रह्मांडदेखेहै॥
अग्रदवनाकेवरककै॥अरुइककठोडविखेमैविछहूआ॥सहस्रवर्षप्रजंत
फूलफललदासमजगतरहाहो॥जबकोईकाटनलगे वहुतडरवाहोवो
अंतरमनमैंरापीडापावे॥बहुडडहोनेशरीरछूटा॥तबसमेरपर्वतपरस्व
नेकाकमलहूआ॥उहांकाजलयानकीया॥बहुडएकदेशविखेपंछीहूआ॥शडोव
रविप्रजंतरहा॥बहुडगिदडहूआ॥उहांहरलोहूरनकीया॥स्र्गकोप्रापतिभया
बहुडसमेरपर्वतमैसुंदरम्रगाभया॥देवनेअरुविद्याधरसाथप्रीतकरहि॥तब
केताककालबहुकरम्रगाभया॥देवन्योकेबनविखेसंजरीहूआ॥देवीयांविद्या
धरीयांमुफकोस्पर्शाकरहि॥अरुसुगंधलेवहि॥तबमैदेवन्योकीअस्त्रीभया॥ब
हुडमैंसिधहूआ॥मृगावचनफुर्णोलगा॥बहुडहोरशरीरधारिआ॥इकब्रह्मां
डलंघगया॥बहुडहोरऐसीप्रकारकेतेब्रह्मांडमैलंघगया॥एकब्रह्मांडविखे
जोअश्चर्जदेखिआहै॥सोसुणइकइस्त्रीदेखीतिसकेशरीरविखेकणब्रह्मांडद
खे॥ देखकरमैंअश्चर्जकोप्रापतिहूआ॥अरुदेशकालक्रियाकेसमुर्गात्रिलो
कीयाकोदेखतादेखतामैंसमहूआ॥जैसेदर्पनविखेप्रतिबिंबदृष्टिआवताहै॥
तैसेमुफकोजगतभासतहि॥तबमैंउसकोकहादेवीतूंकोनहै॥अरुइहतेरेशरीर
विखेक्याहै॥देवीयउवाच॥हेसाधमैसुधचिनमात्रहों॥अरुइहसभमेरेअंग
है॥मेरेविखेइस्थितिहै॥अरुमेरीक्याबातपूछणीहहि॥जेताककछुजगततूं
देखताहै॥सोसभचिदरूपहै॥चेतनतेइतरकछुनहीं॥अरुसर्वविखेत्रि
लोकीयाब्रह्मांडइस्थितिहै॥जोअपणाआपहीहै॥जोउरखअपणास्वभावविः
खेएस्थितिहै॥तिनकोअपणाहीविखेभासतेहै॥अरअपणासरूपहीभास
तेहै॥अरुजासभावविखेइस्थितिनहीं॥तिनकोजगतबाहरभासतेहै॥अरु
आपतेभिनभासतेहै॥हेराजनइहजगतकछुवणिआनहीं॥जैसेसूर्णविखे
नगरभासतेहै॥जैसेगंधर्वनगरभासतेहै॥तैसेआत्माविखजगतभासतेहै
जैसेजलविखेतरंगभासतेहै॥सोजलहीरूपहै॥तरंगकछुइतरवस्तुनहीहो
ते॥तैसेसभजगतचिदरूपविखेभासतहि॥सोचेतनचेतनतेइतरकछुनहीं॥पराज
सुभावविखेइस्थितहोकरदेखेगा॥तबऐसेभासेगा॥अरुजोअज्ञानदृष्टिक
रदेखेगा॥तबनानाप्रकारकाजगतहीदृष्टिआवेगा॥हेराजादशरथइसप्रकार
उसदेवीमुफकोकहा॥तबमैंउहांतेचला॥आगेअरुसृष्टिविखेगया॥तबदे

खोजेसभभुफरवहीरहतेहै॥इस्त्रीकोउनहीं॥पुरुखहीतेपुरुखउत्पतिहो
तेहै॥तिसतेभीआगेहोरसृष्टिविखेगया॥तहांनसूर्ज॥नचंद्रमाहै॥नता
रेहै॥नअग्नहै॥नदिनहै॥नरात्रहै॥जैसेचंद्रमातारेसूर्जअग्नकाप्रकाश
होताहै॥तैसेहीसभअपणेहीप्रकाशकरप्रकाशतेहै॥तिनकोदेखक
रमैंआगेहोरसृष्टिविखेगया॥तहांक्यादेखोजोअकाशहीतेजीवनउ
त्पनहोतेहै॥अरुअकाशहीविखेलीनहोतेहै॥इककठोरहीसभउपजते
है॥अरुइककेठेहीलीनहोजातेहै॥नउहांमानुखहै॥नदेवहै॥नवेदहै॥
नजगतहै॥नशास्त्रहै॥इननेविलक्षणहीप्रकारहै॥हेराजनइसप्रकार
मैंकइसृष्टिदेख्याहै॥सोमुफकास्मरणआवताहै॥आगेहोरसृष्टिविखे
मैंगया॥तहांक्यादेखोजोसभहीजीवइकसमानहै॥नकिसीकोरागहै॥
नद्वेषहै॥सभइकजैसेरागगाकेतीरपरबैठेहै॥इसप्रकारअनेकसृष्टिवि
लक्षणभिन्नभिन्नप्रकारमैंदेख्या॥हेराजनइककहोरअश्चर्जदेख्याहै॥सो
सुणा॥इकसृष्टिविखेमैंगया॥तहांखीरसमुद्राचलपर्वतकरपडाथा
ताहै॥इकहोरतेविष्णुभगवानअरुदेवताहै॥रत्नोसाथजडआहूआ॥मंद्रा
चलपर्वतहै॥शाशानागकेकरसडाकीन्याईपलेटाहूआहै॥मथनेकोन
मित॥इसरीहोरदैतलगेहूइहै॥बडासंदरशब्दहोताहै॥तहांइहकौतु
कदेखकरमैंआगेगया॥एकहोरसृष्टिदेखी॥उहांमनुखअकाशविखे
उडतेफिरतेहहि॥अरुदेवतेपृथिवीउपरविचरतेहहि॥बहुडहोरसृष्टि
देखी॥जहांअकाशविखेबिबानोपरबैठदेवतेविचरतेहैं॥अरुपृथि
वीपरमानुखविचरतेहै॥वेदशास्त्रकरसंपन्नसृष्टिहै॥हेराजनइका
होरअश्चर्जदेख्याहै॥जोइकसृष्टिविखजाइनिकस्याहै॥तहांमंद्राचलपर्वतऊ
परमंदारकेब्रिछजोकल्पतरहै॥तिनकावनहै॥तिसविखमदरनामनीइकअ
पछ्रगरहतीथी॥तहांमंद्राचलऊपरजाइकरमैसोयरहा॥रात्रकासमाहै॥तब
उहअपछ्रगमेरेकंठविखेआइलागी॥तबमैजागिकरदेख्या॥अरुकहाहेसुं
दरेतूंदमफकोकिसनिमितजगायाहै॥मैंतासुखशैऊसोयापराथा॥तबअ
पछ्रगकहा॥हेराजनमैंइसनिमितदफकोजगायाहै॥जेचंद्रमाआनउदेहूआहै
अरुचंद्रकांतामणीचंद्रमाकोदेखकरस्त्रवेगी॥अरुनदीकीन्याईप्रवाहचलै
गा॥तिसप्रवाहविखेमतूंबहिजाताहोवे॥इसकारणतेमैंमुफकोजगा
याहै॥हेराजादशरथउसनेकहातबनात्कालहीनदीकाप्रवाहचलगाल
गा॥तबउहप्रवाहकोदेखकरमुफअकाशविखेलउडा॥पर्वतकेऊपरगंगा
काप्रवाहचलताथा॥तिसकेकंठपरमुफकोइस्थितकीया॥सतवर्षप्रजंत
मैंउहांरहा॥बहुडइकहोरब्रह्मांडविखेगया॥तहांनानाप्राणिछत्रसरजेकछन
था॥तिसकोभीदेखकरमैंआगेगया॥इसप्रकारमैंअनेकब्रह्मांडदेखताफिरा
हों॥हेराजनअसादेशकोऊनहीहोवेगा॥अरुऐसाप्रथवीकोऊनहीहोवेगी॥अरु
ऐसीनदीपर्वतपहाडकोऊनहीहोवेगा॥जिसकोमैंदेख्याहीनहोवेगा॥अ
रुऐसीचेष्टाकोऊनहीहोवेगी॥जोमैनकरीहोवेगी॥कइशरीरकेसुखभोगे
है॥कइदुखभोगेहै॥बनअरुकंदरा॥यज्ञअरुप्रगादिइस्थानसभहीमैंफिर
केदेखेहै॥परश्रमकेवरकोंपाइकर॥हेराजनफिरतीफिरतीमैंथकआ॥परभी
आगाहिकोचलाजावडो॥अनेकब्रह्मांडमैंअविदककदेखेहै॥परअंतनअबआ
याहै॥जोइहजगतभ्रांतमात्रहै॥अरुमैंशास्त्रभीपडेहै॥अरुसुणेभीहै॥जो
इहजगतहैनहीं॥जदपहैनहींतोभीउरवकोदेताहै॥जैसेबालककोअपणी
पछावेविखेपिशाचभासताहै॥तैसइहजगतअविचारकरकेभासताहै॥अरु

विचारकीएतेनिवर्तहोजाताहै॥ अरुहोरआश्चर्जसुरण॥ इकब्रह्मांडविषैमैं
गया॥ तहांमहाअकाशथा॥ तिसमहाअकाशमांमैंगिरपडा॥ पृथवीऊप
रआनिपडा॥ तहांतवसोएआ॥ महांगारुसुखपनइपडाइगया॥ अरुस
भजगतकाविस्मरणहोइगया॥ जवगाडसुखपनहीणभए॥ तवएक॥
सुप्नआया॥ तिससुप्नविषैइहजायतजगततमारामुफकाभास्या॥ ति
सविषैपहाडकंदरादेषा॥ गुन्नप्रगटिइस्थानमुफकोभासआए॥ जहां॥
सिद्धोंकीगमहै॥ तहांभीमैंगयाहों॥ अरुजहांसिद्धोंकीगमनहीं॥ तहां॥
भीमैंगयाहों॥ इसप्रकारमैंनेजगतदेखेहैं॥ परइहअश्चर्जहैजोतिनकीसृ
ष्टिपतनजायतविषेपड्रिष्टिआवे॥ अरुतिसमेंकेशरीरजायतविषेप॥
डेभासतेहैं॥ तातेजगतसमभ्रांतमात्र॥ असतसतहोकरदिखाएदेताहै॥
इसकारणातेदेखकरमैंआश्चर्जकोप्रापतभयाहों॥ २२२॥ इति श्री व शिष्ठ
तकथा व नेनाम सर्गः॥ वि प्ष्ठ न उवाच॥ हेराजन इक सृष्टिजोमैंदेखी
सोआकाशमें॥ सोकैसेआकाशमैं जोइसमहाआकाशतेभिन्ननहीं॥ अरु
तहांतुमारीरामभीनहीं॥ जैसेसृष्टिकोसृष्टिकाउठजायतविषैदेखीथा॥
है॥ तोद्रिष्टिनहींआवती॥ तैसेउहसृष्टिहै॥ हेराजन पृथवीकाइकइस्थ
नथा॥ सोमैंदेखतेपछावेकीन्याईंफुरणेलगा॥ परघारमानुखकी॥ अरु॥
दशोदिशाकोउसरोकलीया॥ अरुअकाशनेभीवडाभासलगा॥ सात
काशविषेभीसमावेनहीं॥ वडइसूर्जचंद्रमाकोमेरेदेखतेदेखतेअछा
दलीया॥ वडइधूकंपजेसाआइया॥ मानोप्रलेकालआया॥ तवमेअ॥
पणोइष्टअग्नदेवताकीडोरदेखतभया॥ अरुतकहाहैभगवनतुमसमरी
जन्मजन्मरखयाकरतेआइहो॥ अरुअवभीमेरीरखयाकरो॥ तहांतेमैंने॥
इष्टहोताहै॥ तवअग्नकहातूभेमतकरो॥ तवमैंअग्नविषैजाइप्रवेश
कीया॥ तवअग्नकहामेरेवाहनपरअरूढहोकरमेरेइस्थानकोचलतो॥ ते
वमैंफकोअग्नवाहनतोतेपरचढहोइकरमेरेनाएअकाशकोलैउडा॥
जवइहमउडे॥ तवपाछेतेउहपृथवस्तनकपृथवीपरगिरपडा॥ तिसके
गिरनेकरसुमेरपर्वतजैसेपातालकोचलेगए॥ महावडाशरीरगिरा॥
जैसेसेकडेसुमेरगिराहि॥ तैसेगिरा॥ अरुमहांचलउदयाचल॥ अरु॥
अस्ताचलतेआदिलेकरजोपर्वतथे॥ सोअथेकोचलेगए॥ अरुपृथवी
जंजीराभावकरयाटिगए॥ टोएपडगए॥ अरुतिसशरीरकेनीचेजोपहा
डब्रिछमानुखदेहतइस्थावरजंगमजीवथेआए॥ सोसभनष्टहोगए॥ वडा
उपद्रवआनउदेहूआ॥ तिसकेशरीरसाथसभदिशाशरणहोगा॥ अरुब्र
गाउसकेब्रह्मांडतेभीपारनिकसिगए॥ हेराजादशारथजवइसप्रकारमें
भयानकदशादेखी॥ तवअपणेइष्टअग्नकोकहा॥ हेदेवइहउपद्रवकि
सकहूआहै॥ अरुइहशिवकोनहै॥ असाशरीरसृष्टवाएहाडकोउठनहींद
खाइहैनसुणाहै॥ तवअग्नमुफकोकहा॥ तूअवतूस्तीहोजाए॥ एहसभ
विरतंतमैंतुफकोकहोंगा॥ एसकोतुंषणतहोइलेणादेहै॥ तेताकालके
विलंमकरो॥ इसप्रकारअग्नकहितासाथा॥ जोदेवतेविद्याधरगंधर्वसिद्ध
ते॥ कछुस्वर्गकेवासीथे॥ सोसभमिलिकरआनिइस्थितहूए॥ अरुविचारकरतेभ
ए॥ जोइहउपद्रवप्रलेकालविनाहूआहै॥ इसकेनाशकरणेकोदेवीजीकीअरा
धनकरीए॥ हेराजन असेविचारकरदेवीजीकीउसतनकरणेलगे॥ हेदेवीसववा

हनीकाकदेसीचडकाहमतेरीशरणहैं॥ इसउपद्रवतेहमारीरछ्याक॥
करो॥ असेकहिकरउसतनकरणेलगे॥ २२३॥ इतिश्रीमहाशिवत्रिनात
व नेनाम स र्गः॥ वि प ष्ठ न उवा च॥ हेराजादशारथउहदेवताउसतनक
केशिवकीओरदेखतेभए॥ जोसप्तदीपइसकेउदरविषैसमाइगएहैं
अरुभुजाकेकेसुमेरआदिकपर्वतअछादगएहैंहि॥ अरुआरुअंगउस
केऊर्धकोगएहैं॥ ब्रह्मांडकोभीलंघगएहैं॥ अरुसाथहीपतालकोग
एहैं॥ उनकेमर्जादाकहूनपाईजाए॥ इकअंगकेसाथकहूंपृथवीछिप
गए॥ असेदेखकरदेवतेविद्याधरगंधर्वसिद्धइनतेलेकरतभूचरपि
वकोदेखकरउसतनकरणेलगे॥ हेअंबे॥ हेचंडिका॥ अपणेगणोंकोलेकर
साथ॥ इसउपद्रवतेहमारीरछ्याकरो॥ हमतेरीशरणआएहैं॥ हेराजनजे
वइसप्रकारदेवतेवारंवारअराधनकरणेलगे॥ तवचंडकाअपणेगणों
कोलेकरअकाशमार्गविषोआवतीभए॥ यहदेवेतालभैरवआदिकगण
साथलेआए॥ जैसेमेघसर्वदिशाकोअछादलेताहै॥ तैसेवडेओंवनेगण
आए॥ अकाशकोअछादिलीआ॥ अरुचंडकावडेतजोसद्रुपकाथावहूए
चलीआवे॥ मानोअग्नकीनदीचलीआव॥ अरुरक्तकीन्याईनेत्रहैं॥ अरुसि
रऊपरकककेशहैं॥ अरुवडनदंतहैं॥ अरुवडेशस्त्रथावहूएहैं॥ अरुकईको
टिजोजनप्रजंततिसकाअकारहै॥ सभअकाशादिशाशरीरकरअछादि
लीएहैं॥ अरुकंठविषैरुंडोकीमालाहै॥ सर्वशरदेहाइनपरअरूढहूई
एहै॥ अरुपरमपरमात्माविषेतिसकीइस्थितिहै॥ अरुअकाशस
गतशरीरहै॥ सूर्जचंद्रमाअग्निआदिकप्रकाशोंकोभीलजनकोयाइ
अरुहाथोंविषैखड्गमूसलछत्रडोलखलआदिकनानाप्रकारकेश॥
स्त्रथारहैं॥ अरुअकाशविषेनारागणोंकीन्याईंशरणहैं॥ इसकारणगणोंस
हितचलीआवतीहै॥ जवनिकटिआए॥ तवदेवतेवडइप्रकाररूपता॥
करणेलगे॥ हेअंबेइससववाधकोनाशकरो॥ अपणेगणोंकोआज्ञा॥
करोजोइससवकाभोजनकरहि॥ हमइसकोदेखकरवडेभ्रमरहलके
प्रापतिहूएहैं॥ हमतेरीशरणहैं॥ इसउपद्रवतेहमारीरछ्याकरो॥ हेरा
जादशारथजवअसेदेवत्योंकहा॥ तवचंकाअपणेवाउकोखेचतीभए॥
तिसकरदेवीकेखैचनेमेजेतासववविषैरकतलोहूकासोसभपानकर
लीया॥ तिसकरदेवीकाउदरअग्रसभपूरणहूए॥ अरुतनेबलालहोआ
ए॥ तवदेवीतिरतनकरणेलगी॥ अरुहोरसभगणसवकोभोजनकरणे
लगे॥ कएमोटियोंकोलगे॥ कएभुजाको॥ कएउदरको॥ वहस्थलको
कएटंगोंको॥ कएचरनोंको॥ इसीप्रकारसर्वअंगोंकोगणभोजनकरणे
लगे॥ कएगणआद्रालेकरअकाशकोउडे॥ सूरजमेंडलगए॥ कएग
णअंगोंकेअन्नपावणातसिततउडे॥ सोसावरगहोमोंमेंवरण परअंत
कोइनपाया॥ अरुदेवीजोउसववकीओरदेखे॥ तिसदेखणेकरने
त्रोंतेअग्ननिकसे॥ तिसअग्नकरमासपरपकहोवे॥ अरुगणभोज
नकरहि॥ अरुपकणेकसमजोशरीरतेकोडोरक्तकीबूंदनिकसे
तिसकरसमुद्राचलअरुहिमाचललालालहोगए॥ अरुरक्तकीन
दीवहै॥ वडेजोसुदरइस्थानथे॥ अरुदिशाकी॥ सोसभभयानक
होतभए॥ अरुपृथवीऊपरजीवसभनष्टहोगए॥ पहाडोंकीकंद
राविषैदेवतेरहे॥ सोवचगए॥ अरुसभनष्टहूए॥ राम उवाच॥ हेभग

व· म· २१

अरु टंगगोडों केनीचे जोकछु पालहै ५

वनजो उससवके नीचे आये आनि सभनष्ट होगये॥ अरु अंग उसके अं
सेक हिनेजो अप्लेड कों भी लंघे॥ वहुड़ कहिने होदेवने वचगये॥ सोका
कारणहै॥ वसिष्ट उवाच॥ हे रामजी जो उसके शरीर अरु अंगोंके नीचे
आइ सो सभनष्ट होगये॥ परमूढे अरु ग्रीवाविखे जो कछु भेद है॥ तिस
विखेजो पालहै॥ इनते आदि लेकर अंगोंविखे जो कछु पलाइ है॥ तिन
कीकंदराविखे बैठके देवने वचगये॥ अंगोंके छिद्रोंविखे रहे हैं॥ इसकर
वचेहैं अरु कहने लगे वडा कष्टहै॥ हमारे बैठणेके इस्थानके ईन छुहा
गये॥ कल्पब्रिछ कहांगये॥ वर्फका पर्वत हमारा कहांगया॥ इसकी सुं
दरता कहांगई॥ वन अरु वगीचे कहांगये॥ चंदनके ब्रिछ कहांगये॥ अरु
जिनोंके सबूह कहांगये॥ जो जरगोंकु रहमको पूजनेथ॥ उहरुऊथे ब्रिछक
हांगये॥ जो ब्रह्मलोक अजम जिनके फूल अरु गाथा जानेथे॥ अरु उह रती
रस समुद्र कहांगए आ॥ जिसके मथनेकर वडा शाह उदे होनाथा॥ अरु तेव
पुत्र जो रत्नकल्पतर अरु चंद्रमाथे सो कहांगये॥ अरु जम्बूदीप कहांग
या॥ हे रामजी इनते आदि लेकर जो इंद्रियोंके रंषि विखे पदार्थथे॥ ति
नकों स्मरणकरके अज्ञानी जो देवनेथे॥ उह नंदनवनके इस्थान कहांग
ये॥ अपछरा साथ विलास करनेथे॥ तिनविखियोंका अभाव नहीं हुआ
मासोहमकऊ शूलचुभनेहै॥ इसप्रकार विखियोंका स्मरणकरके शोक
तेहै॥ अरु उहांगणसभको भोजनकरतेहै॥ जैनेकछु अंगाइसकेथ सोग
णोंभोजनकलीए॥ तिनकर अचार रहे॥ कछुकछु शेषरहिगया॥ मेदाका
अरु दुर्गंध वहुत॥ तव तिस मेदाका जो पिंड रहा॥ सोधराकी पृथ्वी हुई॥ ति
कर तिस पृथ्वीका नाम मेदनी होगया॥ अरु मूढेजो वडे होतेहै॥ तिनके
सुमेर आदिक पर्वत हुए॥ तव ब्रह्माजीदेखाजे सभ विश्वपूजने जैसी होगा
एहै॥ तातें वहुड़ मेरथी॥ तव ईश्वरकी न्याई स्वष्टाकोरचा॥ जगतका सभक्र
मविवहार चलणेलगा॥ २२८॥ इति श्री महासव अ नान वे ते नाम सर्गः
विपश्चित उवाच॥ हे राजा दशरथ जवरहक्रम होरहा॥ तव मे अपणे इष्ट
उपासकीया॥ तातें वाहनपर अरूढ हुएसे कहा॥ हे महादेव सर्व जगतके ई
श्वर अरु जगतोंके भोगतेहै सवको नथा॥ अरु कहो इस्थितिथा॥ अरु किसप्र
कारगिड्डिआहै॥ सो कहो॥ अग्न उवाच॥ हे राजन अनंत त्रिलोकी आजिसका
अभास है॥ तिसविखे इसका भी अंत नहीं आवेगा॥ इक त्रिलोकीविखे इ
सभावका अंतमें वरनन नहीं होता॥ ताते सुण॥ हे राजन इक परम आकाश
है॥ सो चिन्मात्र स्वरूप है॥ सर्व है अनाकार है॥ अरु अनंत है॥ सो आत्मतत्त्व के
वल अपणे आपविखे इस्थित है॥ तिसका जो अभास है॥ सो संवेदन पुणे
है॥ सोई कचनकहीता॥ सो तिसके किसी इस्थानविखे फुरताहै॥ तव अं
से भावना होतीहै॥ जो मैं तेज अग्नि वनहों॥ तिसभावनाके वस्ते अग्नि जैसी
होइ जाती हो॥ जैसे कोऊ पुरुख सोया है॥ अरु स्वप्नेविखे आपको सावणमी
चलता देखताहै॥ जैसे मैं स्वप्नेविखे आपको पेडा पदेखा॥ तैसे चित्त सं
वेदन आपको अग्न जाणतभएहै॥ जैसे फुरणा ब्रह्माका हुआ॥ तैसे अर्थवको
कणाका हुआ॥ अधिष्ठानविखे फुरणा नल हुआ है॥ तव उस अग्नको
शरीरकी भावना होतीहै॥ जो अपणासाथ शरीरको देखतीहै॥ शरीरके
होणेकरके नेत्र आदिक इन्द्री प्रगट होतीहै॥ तव शरीर इन्द्रियांसाथ आ
पको मिल्याहुआ जाणताहै॥ अरु अपणा आपजाणकर तिनको ग्रह
करतीहै॥ इंद्रियांकर विखियोंको ग्रहण करतीहै॥ तव उही चित्तरूप जीवप्रमा

दकर्के अधार अर्थ भावको मानताहै॥ अरु अधिष्ठानसत्ताविखे कछु हु
आ नहीं उह अद्वैत सत्ता ज्योंकी त्यों अपणे आप आपविखे इस्थित है
जैसे स्वप्नविखे प्रमादिककरके आपको किसी ग्रहभूसविखे बैठा देख
ताहै॥ तैसे इहां प्रमादिककरके अधार अर्थभाव करके देखताहै हि॥ प्रा
णों अव मनु अहंकारको धारताहै॥ अरु जाणताहै मेरे पितर पिताम
हः॥ अरु मैं अनादका जीवहों॥ अरु अपणा शरीर जाणकर आरोप
वभूतक शरीरको देखताहै॥ अपणाफुरनेके अनसार॥ हे अंगाइ सोअ
कारजो आदि सृष्टि विमात्रविखे जो फुरणा हुआ॥ तव चित्तकला फुरी
उह आपको तेज अग्न जाणतभए॥ तव तिसविखे अहंब्रित करके अ
हंकार हुआ॥ अरु तिसु आत्माका बुधहुए॥ चेतनरूप विन हूआ
अहं उत्पन होइकर वहुड़ पंचतन्मात्रा हुए॥ फर तिनते इच्छा हुआ
शरीर इंद्रिया उत्पन हुए॥ वहुड़ तिन इंद्रीके वसि आइके देखणा इच्छाहू
इ॥ तिस संवनकलाविखे नव आगो द्रिष्टा अस भासिआए॥ तव उह संवन
शास्त्र आपको प्रमादि दोखकर दैत जाणतभए॥ जो मैं दैतहों॥ अरु साथही
तिसको अपणा माता पिता करआए॥ जो उह मेरा पिताहै इह मेरी माताहै
चिरकालकी चली आवतीहै॥ इसप्रकार उकदेन अहंकार सहत विचर
गालया॥ तव इक कुटीविखे इक विदीविरताथा॥ तिसकुटीको उवदेनग
या॥ किसप्रकार गया॥ जो उसकी कुटीको चूरणाकर जाता गए आ॥ तव विख
कैतिक दिगया॥ तव विद्धेने कहा॥ इहु दुष्टनुके क्या वेष्टाय हणाकरीहै॥ अ
वहूमजावेगा॥ अरु मछर होवेगा॥ हे विपश्चित तिस रिद्धेके आपहूपी
अग्नकर उसका शरीर भस्म होगया॥ तव उसकी निराकार चेतनत संव
नभूतनाका सहूप होगए॥ तव अप्रकाशविखे वाइ साथ॥ तिसका संजोग
हूआ॥ तव उसरिद्धे लनपसी सानीके आपकी वासना आन उदे भए॥ जे
से समे पाइ पृथिवीते बीज उदे होताहै॥ तैसे पंचतन्मात्रा उदेभए॥ अरु
मछरका शरीर अपणा आभास आया॥ अरु अज्ञानकर मछर हूआ॥ जिसम
छरकी दो अथवा तीन दिन आवरवला होताहै हि॥ तिसका शरीर पाया
राम उवाच॥ हे मुनीश्वर वसिष्ठजी जीव जो जन्म पावतेहै॥ सो जन्मते
जन्मांतरके चले आवतेहै॥ अथवा ब्रह्माइते उत्पन होतेहै॥ इह क्रि
पाकरके कहो॥ वसिष्ठ उवाच॥ हे रामजी कए जन्मते जन्मांतरके चल
आवतेहै॥ अरु कए ब्रह्माते उत्पन होतेहै॥ जिनको पूरव वासनाका सं
स्कार होताहै॥ सो वासनाके अनुसार शरीरको धारतेहै॥ सो जन्मको
जन्मांतरोंके चले आवतेहै॥ अरु जिनका संस्कार विनाभूत नभी सआव
तेहै॥ सो ब्रह्माते उत्पन होतेहै॥ हे रामजी आद प्रथम सभ जीव संस्का
रद्रपी जो कारणहै॥ तिस विना उत्पन हूएहै॥ अरु पाछेते जन्मांतर इ
नको होताहै॥ जिसका ता संस्कार विनो भूतन भासे॥ सो जाणीए ब्रह्मा
ते उपजाहै॥ अरु जिसका संस्कार करसहित भासे॥ सो जाणीए जन्मां
तरहै॥ सो इह दो प्रकार भूतोंकी उत्पन मैंने तुझको कहीहै॥ अव वहु
ड़ उस मछरका क्रम सुण॥ हे रामजी जव उह मछरके जन्मको प्राप
तिहुआ॥ तव कमलनी आ अरु हरे घास त्रिणपात्रोंविखे मछरी
का साथ लेरहै॥ तव उहां इक मृग आनप्राप्तहूआ॥ मृगोंका चरण
मछरउपर आइगया॥ जैसे किसी जीउ ऊपर समेरपर्वत आनपडे॥ ते

वउहद्वरगाहुआस्तनकोप्राप्तिहोवे॥ तैसेउहमछरवधरगाहुआस्तन
भया॥ अरुस्तनहोणेकेसमेस्वर्गाकीओरदेख्या॥ तिसदेखणेकरकेउस
कासंस्कारस्वर्गरूपहोगया॥ तवउहमरकरतात्कालहीस्वर्गाहुआ॥ व
णाविखेविचरणेलग्या॥ तवऐककालसोतिसकोवधिकदेख्या॥ तिस
वदकवाणचलाया॥ वाणकरस्वर्गावेधिआगया॥ वेधिआहुआस्वर्ग
वधिककीओरदेखताभया॥ तिसदेखणेकीदृढ़ताकरकेओहुवधिकहोग
या तवधनखअरुवाणलेकरस्वर्गोंकोअरुपंछीयोंकोमारणेलग्या॥ अ
रुइकसमेवनविखेफिरताथा॥ इकमुनीश्वरवनविखेवैठादेख्या॥ तिसके
निकटिजाइवैठा॥ तवमुनीश्वरकहेभाईतूंइहक्यापचेष्टाकाआरंभ
करताहै॥ इसचेष्टाकरकेतूंनरककोजाइप्राप्तहोवेगा॥ तातेतूंकिसीजी
वकोदेखनेदेह॥ अरुजिनभोगोंकेनमित्ततूंइहचेष्टाकर्ता॥ सोभोगविजली
केचमत्कारवतहै॥ जैसेमेघविखेविजलीहोकरमिटजातीहै॥ तैसेभोग
होकरमिटिजातेहै॥ अरुजैसेकमलपत्रकेऊपरजलकीवूंदठहरतीहै
अरुउसकीआस्थिरताकछुनहीं॥ खिणपलविखेगिडपड़तीहै॥ ताइकर
तैसेइसशरीरकीआस्थिरताकछुनहीं॥ जैसेअंजलीविखेजलपायाठहि
रतानहीं॥ तैसेजोवनअवस्थाचलीजातीहै॥ छिनभंगरइपीजीवणाअरु
जोवनअसारहै॥ तिसविखेभोगणाक्याहै॥ इनविखेशांतकदाचितनहीं
होती॥ जोतूंशांतिकीइछाहोवे॥ तोनिर्वाणकाप्रश्नकर॥ तवतूंदेसो
तेस्वतहोवे॥ अयणाहिसाधमकोत्यागदे॥ इसकेकरणकरनरककोचला
जावहिगा॥ कदाचितभीशांतनकोनप्रापतिहोवगी॥ तूंअपणाहोप
करअपणेचरणोंपकहरा किमारताहैं॥ अरुअपणानाशकेनमित्त
विखकावीजकिंवोवताहै॥ इसकर्मकरकेतूंसंसारदुखविखेभटकता
फिरेगा॥ शांतकोकदाचितनपावेगा॥ तातेसोईउपाइकर॥ जिसकर
संसारसमुद्रतेपारहोवे॥ २२५॥ इति श्रीमछविद्याधर नि ने जा म म स र्गः॥ अ
ग्निरउवाच॥ हेराजनजवइसप्रकाररतीश्वरउसवधकको कह्या॥ त
ववधकधनखअरुवाणकोडारदीया॥ अरुवोल्या॥ हेभगवनजिस
प्रकारसंसारसमुद्रतेपारहोवउपावकृपाकरकेकहोमुझको॥ पर
कैसेहोवेनदुइहसाथहोवेनस्वदहोवे॥ स्वदकहीअल्पभीनहोवे
दृढहोवे॥ रतीश्वरउवाच॥ हेवधकमनकोइकागरकरणाइसको
नामतपहै॥ अरुइंद्रियोंकारोकणाइसकानाममदहै॥ सोईमोनहै
इहदोनोंजोहै॥ तपअरुमोनमनकोएकाग्रकरणा॥ इसकरअंतःक
रणस्वछहोताहै॥ अरुअंतःकरणस्वछविखेआत्मसत्ताउपजती
है अरुपरमानंदकीप्रापतिहोतीहै॥ अग्निरउवाच॥ हेराजनइस
प्रकारजवरतीश्वरकह्या॥ तवउहवधकऊठखडाहुआ॥ प्रणा
मकरकेजाइतपकरणेलगा॥ कैसातपजोइहीमनमेविखेवाखी
अरुजोअनिछतजथाप्राप्तखआनप्रापतिहोवे॥ तिसकोभोजनक
र्णा॥ अरुसभक्रियाकोअंतरतेमोनत्रिन॥ जवकेताकालउसको
तपकरतेवितीतभया॥ तवअंतःकर्णस्वछभया॥ रतीश्वरकोनि
कटिजाइकरप्रणामकीया॥ अरुपैवैठगया॥ अरुकहतभया॥ वध
कउवाच॥ हेभगवनआहजजोद्रिशहै॥ सोअंतरकिंतप्रकारअवे
भासतीहै॥ अरुतुमविखजोत्राष्टिभासतीहै॥ सोअंतरकीवाहजप

होइभासतीहै॥ सोकैसेभासतीहै॥ इहकृपाकरकेकहो॥ रतीश्वरउवाच॥
हेवधकइहवडाशृङप्रश्नतूंकीयाहै॥ इहीप्रश्नव्रणमेमैंभीगुरुपर
हिकीयाथा॥ संदेहसंजुक्तहोकर॥ तवकछुउनकेकहिणेकरमैंद्र
ढ़णाकीयाहै॥ सोसुणो॥ हेवधकएकऐसीसंदेहहरकुणोंकाउपाइ
मैंकरतभया॥ पद्मासनवांधकरवाहजकीइंद्रीयोंको॥ रोककरम
नविखेजोड्या॥ अरुमनबुधआदिकोंकोपरइष्टकाविखइस्थि
तिकीया॥ इस्थितकरकेपूरकपुष्टकाकोतनमनतेविनरेककीया॥ अरुविदेअकाश
विखतिसकोटहिरावतभया॥ निराधारजवविलक्षणहुआचाहै॥ तववि
लक्षणहोजाए॥ अरुजवशरीरविखेआप्याचाहै॥ तवआपजाए॥ हेवध
कइसप्रकारजवमेजागधारणाकरकेपूर्णभया॥ तवइककालमोऐकेपु
रुषहुमारीकुटीकेपाससोयाथा॥ तिसकेसवासअंतरअरुवाहजआवते
जातेथे॥ तिसकोदेखकरमैंइहोउलाकरी॥ जोइसकेअंतरजाइकरदेखों
जोअंतरकाअवस्थाहोतीहै॥ ऐसेविचारकरमैंपद्मासनवांधिआ॥ अ
रुजोगकीधारणाकरकेउसकेस्वासमार्गपिडेमअंतरजाइप्रवेशकी
या॥ तिसकेअंतरअपणारसकोअहंकारोंहारास्फुकोअनेकनाडीद्रिष्टि
आए॥ सोसभमैदेखताभया॥ अरुअनेकविकारजोउसकेअंतरथे॥ सोस
भदेखताभया॥ देखकरमैंप्रसन्नभया॥ महासंकटरूपइस्थानउसकेम
जाकरमैंजान॥ अंधकारमहानरककेतुल्लहै॥ गर्भवासीजीवको॥ वहुड
आगेगाएया॥ तहांइककमलदेख्या॥ तिसरिदेकमलविखेतिसकीसंवे
दनफुरतीदेखी॥ तिससंवेदनऐस्पंदविखेजोकछुहैसोदेख्याहै॥ सोसुण
अरुकैसेहैउहसंवेदनसवतनमहेहोजोतेजधातुहै॥ रिदाकाशतहांउह
इस्थितिहै॥ कैसेइस्थितिहै॥ त्रिलोकीकाआदर्शहै॥ त्रिलोकीविखजोपदा
र्थहै॥ तिनकादीपकहै॥ अरुसर्वपदार्थोंकीसत्तारूपहै॥ ऐसीजोसवतनदे
पजीसत्ताहै॥ सोतनहोइइस्थितिहै॥ तिससत्तासाथमैनेतरूपनाकोआप
निहुआ॥ तहांतिसकाअंतरजोमैदेख्या॥ सोसुण॥ सूर्यचंद्रमापृथ्वीजे
ललतेजवायुआकाशपर्वतसमुद्रदेवतागांधर्वइनतेआदिलेकरजोना
नाप्रकारजगतहै॥ इस्थावरजंगमसभविश्वकामैंदेखताभया॥ अलाति
स्वरूइससहतसंपूर्णसृष्टिकोदेखकरमैंआश्चर्यवानहुआ॥ उसकेअं
तरस्वप्निकरभासी॥ सोसुण॥ हेवधकजाग्रतविखउसस्वप्निकाअनभ
वकीयाथाइंद्रियोंकरके॥ अवतिसकासंस्कारहूआचित्तविखे॥ उहीअंतरभी
सताभासणेलगी॥ अरुअंतरजोभूतसत्ताथी॥ सोउसकेस्वप्नेकरइह
स्वप्निरूपवाहजवणी॥ अरुस्वप्नेकोप्रतक्षभासणेलगी॥ जैसेजाग्रतप्र
तक्षअर्थकारभासतीहै॥ तैसेस्वप्नेकोउहोलगी॥ हेवधकइसजाग्र
तस्वप्निविखअरुउसस्वप्निविखमैभेदकछुनहींदेखिआ॥ दोनोंतुल
है॥ परचिरप्रजंतप्रतीतकानामजाग्रतहै॥ अरुअल्पकालकीप्रतीत
कानामस्वप्नाहै॥ अरुसरूपतेदोनोंतुल्लहैं॥ जोउसकेस्वप्नेअनभ
वविखेथा॥ सोस्वप्नेकोजाग्रतभासी॥ अरुजोस्वप्नेकोजाग्रतभासीसो
उसकोस्वप्नाभासिआ॥ निद्रादोखकरकेउसकोस्वप्नाहुआ॥ उसकोभी
तिसकालविखेजाग्रतरूपभासणेलगी॥ काहेतेजोस्वप्नास्वप्नरूपहै
सोजाग्रतविखस्वप्नाहै॥ परस्वप्नविखेतोजाग्रतरूपहै॥ तैसेजाग्रतभी
जाग्रतअपणेकालविखेहैनहीं॥ हैतोस्वप्नरूप॥ इहभीतिसविखेजाग्र
तप्रतीतहै॥ सोईप्रमादहै॥ इनदोनोंविखेकछुनहीं॥ काहेतेजोजाग्रत
अरुस्वप्नकाअधिष्ठानचेतनसत्ताएकअचलहै॥ तिसकाअधिष्ठानकेप्रमादि

करकै उसको प्राणों के साथ संबंध हुआ ॥ जब प्राणों साथ चित्त संवेदन मि
ली ॥ तब तिस फुरणा रूप के एते नाम भए ॥ तिसका नाम जीव हुआ ॥ चि
त्त बुध अहंकार आदिक सभ तिसके नाम हैं ॥ उही संवेदन जब बा
हरजा रूप होइ फुरती है ॥ तब जाग्रत रूप जगत होइ भासता है ॥ पंच
ज्ञान इंद्रियां ॥ पंच कर्म इंद्रियां ॥ अंतःकरण चतुष्टे ॥ इह चवदे पाइओ
अपणे विखे कौं ग्रहण करती है ॥ इसका नाम जाग्रत है ॥ जब चित्त स्पंद
निस्पंद निद्रा दोख कर कै अंतर मुख फुरती है ॥ तब नाना प्रकार कौ स
प्न सृष्टि देखता है ॥ निद्रा दोख कर कै तिस काल विखे उही जाग्रत
रूप होइ भासती है ॥ अधिष्ठान जो है आत्म सत्ता ॥ जब संवेदन स
कौ ओर फुरती है ॥ अरु बहुड़ि विखयों के फुरने ते रहित होती है ॥ अर्थ
इह जो अफुर होती है ॥ तब जाग्रत स्वप्न भासता नहीं ॥ केवल आत्म
सत्ता निर्विकल्प सोखोपति रहिती है ॥ हे वधक मैं विचार देख्या है ॥ जो ज
गत कछु अरु वस्तु नहीं ॥ फुरने ही का नाम जगत है ॥ जब चित्त सं
वेदन फुरणा रूप होती है ॥ अरु जब चित्त संवेदन फुरने ते रहित होती है
अरु जब चित्त संवेदन फुरने ते रहित होती है ॥ तब जगत कल्पना मि
टि जाती है ॥ ताते मैं निश्चै कीया है ॥ जो वास्तव केवल चिन्मात्र है ॥ जग
त कछु वस्तु नहीं ॥ मिथ्या कल्पना मात्र है ॥ हे वधक जगत की भावना
त्याग कर अपणे स्वरूप विखे इस्थित होवो ॥ अब बहुड़ि उही व्रतांत
सुण ॥ तब उसके अंतर सुखसुपन ते जाग्रत अवस्था देखी ॥ तब मैं इच्छा
करी जो सुखोपति अवस्था भी देखौं ॥ अरु विचार कीया जो सुखोपत ना
म है प्रलै का ॥ जहां द्रिष्टा दर्शन द्रिशा तीनों का अभाव हो जाता है ॥
जहां मैं देखणे वाला हुआ ॥ तहां महा प्रलै कैसे होवेगी ॥ अरु जो मैं
जानने वाला न होवों ॥ तब सुखोपति कौं कोऊ न जाणेगा ॥ हे वधक तब
मैं विचार देख्या जो होर सुखोपत कोऊ नहीं ॥ जहां चित्त की वृत्त फु
रनी नहीं ॥ तिसका नाम सुखोपत है ॥ अरु ऐसे विचार कर कै चित्त कौ
फुरणे ते रहित कीया ॥ तब सुखोपति तिसकी देखी ॥ तहां क्या देख्या ॥
सो सुण ॥ न कोऊ उहां अहं था है ॥ न त्वं था है ॥ न सुभ है ॥ न असुभ
है ॥ न जाग्रत है न स्वप्न है ॥ न सुखोपत की कल्पना है ॥ सर्व कल्पना ते
रहित चित्त सत्ता मैं देखता भया ॥ अरु जो तू कहे सुखोपति निर्विक
ल्प तूं कैसे देखी ॥ तिसका उत्तर इह है ॥ हे वधक अनुभव ज्ञान रूप
आत्म सत्ता सर्वदा काल विखे ज्यों का त्यों है ॥ तिस विखे जैसा अभा
स फुरता है ॥ तैसी ज्ञान होती है ॥ इह तू नित्य सभी दिन दिन प्रत देख
ते हो ॥ सुखोपत ते उठ कर जाग्रत होते हो ॥ जो मैं सुख सोइआ सो याथा
सो अनुभव कर कै देखता है ॥ तैसे मैं भी उहां देखता भया ॥ पर जहां
चित्त का संकल्प कोऊ नहीं फुरता निर्विकल्प है ॥ कैसा निर्विकल्प
है ॥ जो सामिक बोध ते रहित है ॥ तिस अभाव व्रत का नाम सुखोपत
है ॥ अरु बहुड़ि सुख कौ तुरीया देखणे की इच्छा भए ॥ सो तुरीया देख
णी महा कठन है ॥ तुरीया नाम है ॥ साखी भूत व्रत का सो सामिक ज्ञा
न ते उत्पन्न होती है ॥ सो सुखम जाग्रत सुखोपत अवस्था का साखी भूत
अवस्था है ॥ अरु सुखोपत की न्याई है ॥ तैसे सुखोपत विखे अहं त्वं आ
दिक कल्पना कोऊ नहीं ॥ तैसे तुरीया विखे आत्मा का सामिक बो
ध होता है ॥ अरु सुखोपत विखे जड़ी भूत तम रूप अविद्या होती है ॥

तुरीया विखे जड़ता नहीं होती ॥ सुखोपत विखे अरु तुरीया विखे पता
ही भेद है ॥ सचिदानंद साखी भूत होती है ॥ सामिक बोध का नाम तुरी
या पद है ॥ अरु तुरीया इतने भिन्न कोऊ नहीं ॥ ऐसे निश्चै कर कै तिसकौ
मैं देखता भया ॥ इह वधक चारों अवस्था मैं भिन्न भिन्न देखता भया ॥ अ
रूप माया जो है फुरणा तिस ते रहित मैं देखता भया ॥ अरु आत्म सत्ता अप
णा आप विखे इस्थित है ॥ तिस विखे कोऊ जाग्रत न है न स्वप्न है न सु
खोपत है ॥ न तुरीया है ॥ इन का भेद उहां कोऊ नहीं ॥ आत्म सत्ता अद्वै
त है ॥ अरु इह चारों चित्त संवेदन विखे होती है ॥ हे वधक ऐसा अनुभ
व कर कै मैं बाहज आया ॥ बाहज भी सृष्टि कौ जगत भासणे लगा ॥ त
ब मैं कहा इही जगत सृष्टि कौ उसके अंतर भास्या था ॥ बाहज कि
कर आया ॥ तब मैं बहुड़ि उसके अंतर प्रवेश कीया ॥ प्रथम जो उसके
अंतर प्रवेश कीया था ॥ अरु तिसके अंतर सृष्टि देखी थी ॥ तब उस
के संवेदन अरु मेरे संवेद मिलि गए ॥ जब मैं अपणे संवेदन उ
स ते भिन्न करी ॥ तब दोवै व्रती भासणे लगी ॥ इक उसकी संवेदन फु
रणों का ॥ अरु इक मेरी संवेदन विखे भासणे लगा ॥ काहे ते जो प्रथम
उसकी सृष्टि कौ देख कर मैं अर्थ रूप जाणा कर ग्रहण करी थी ॥ तिस
का संस्कार हो गया ॥ आत्म सत्ता के आश्रे जैसे जैसे संवेदन फुरती गए ॥
तैसे होइ कर भासणे लगा ॥ उसका स्वप्न फुर कौ जाग्रत होकर भा
सणे लगा ॥ जैसे इक दर्पण विखे दो प्रतिबिंब भासहि ॥ तैसे इक
अनुभव विखे दो सृष्टि भासणे लगीआ ॥ तब मैं विचार कीया जो ज्ञात्व
ष्टि संकल्प रूप है ॥ अरु संकल्प जीवों का अपणा अपणा है ॥ अरु अ
पणा अपणा संकल्प की भिन्न सृष्टि है ॥ अरु अनुभव के आश्रे जैसा संक
ल्प फुरती है ॥ तैसी सृष्टि होइ भासती है ॥ सृष्टि का कारण अरु कोऊ नहीं
हे वधक अपणे मन रूप अजैतन मफ कौ दो सृष्टि भासती रही ॥ बहुड़ि मैं अ
पणी चित्त कौ अंत उसके चित्त साथ इक ही करी अर्थ इह जो मिलाए ॥
तब दोनों तन रूप होइ गए ॥ जैसे जल अरु दुध मिल कर इक ही रूप
होइ जाते हैं ॥ तैसे दोनों चित्त मिल कर इक होइ गए ॥ तब इह सर्व सृष्टि कै
अभाव होइ गया ॥ जैसे भ्रांत द्रिष्टि कर आकाश विखे दो चंद्रमा भासते हैं
भ्रांत के गए ते इस चंद्रमे का अभाव हो जाता है ॥ तैसे दुतीय भ्रांत के अ
भाव हूए इस सर्व सृष्टि का अभाव होइ गया ॥ इक उसी कौ सृष्टि भासने ल
गी ॥ नाना प्रकार के विवहार होते द्रिष्टि आवहि ॥ चंद्रमा सूर्य पृथवी
दीप समुद्र स्पष्ट भासने लगे ॥ केते काल उपरांत तिसकी चित्त व्रत
सुखपति कौ ओर आए ॥ जैसे संध्या समै सूर्ज की किरणा सहजे ही खिली
न होती जाती है ॥ तैसे समस्त सृष्टि का विस्तार लीन होणे लगा ॥ तब स्व
प्न सृष्टि मिटि गए ॥ सुखपत अवस्था हुई ॥ सर्व इंद्रिया सिथल होइ गए ॥
हे वधक सुखपत जो होती है सो ॥ जब अन्न भोजन करीता है ॥ तब बहुड़ि स
मधा होइ नाड़ी उपउ आनि इस्थित होता है ॥ जाग्रत वाली द्रिष्टि जाती
है ॥ तिस कर प्राणादि रुक जाते हैं ॥ तब मन भी ठहिर जाता है ॥ तिसका
नाम सुखपत होता है ॥ जब मन बहुड़ि फुरता है ॥ तब जाग्रत होता
है ॥ राम उवाच ॥ हे मुनीश्वर मन प्राणों ही कर चलता है ॥ तब मन का
अपणा रूप तौ कछु न हूआ क्या ॥ वसिष्ठ उवाच ॥ हे राम जीय रमाथ
ते कहीय ॥ तौ दोइ भी नहीं ॥ तौ मन क्या कहीय ॥ अरु प्राण क्या कही
ये ॥ जैसे स्वप्ने विखे पहाड़ भासते हैं ॥ तैसे इह प्राणी भासता है ॥ का

हैं तिसो सर्व का आदि कारण को ऊ नहीं ॥ तिस ते जगत भ्रम मिथ्या
है ॥ केवल ब्रह्म सत्ता अपणे आप विषे इस्थित है ॥ जो तिस ते भी
है ॥ तिसको तो भी सभासता है ॥ अरु ज्ञानीयों के निषेध को हम मन
ही जाणते ॥ अरु हम सार निषेध को ऊ हम नहीं जाणते ॥ जैसे सत् जे
ऊलूक के अनुभव को नहीं जाणता ॥ अरु ऊलूक सूर्य जे के निषेध को
ऊ नहीं जाणता ॥ तैसे ज्ञानी अरु अज्ञानी का निश्चा भिन्न भिन्न है
अरु सर्व चिन्मात्र प्रकाश विषे जगत भ्रम को ऊ नहीं ॥ अरु प्राव
णाभास करि अपणे चेतनत्व वपु का न्यारा विना ही मन भाव को
प्राप्त होता है ॥ तब मन आत्म सत्ता के आश्रे ह्रा कर प्राणपव
वन को अपणा आश्रे हत कल्पता है ॥ जो मेरे आश्रा प्राण है ॥ हे
राम जीव रूड जैसी जैसी कल्पना मन करता है ॥ तैसे तैसे दृश इंद्रिया
जगत भासता है ॥ परब्रह्म सर्व शक्त संपन्न है ॥ तिस विषे जैसी
जैसी भावना कर मन फुरता है ॥ तैसा ही भासता है ॥ वास्तव अरु
कछु नहीं ॥ केवल ब्रह्म अपणे आप विषे इस्थित है ॥ मन का
फुरणा जैसे जैसे दृढ हूआ है ॥ तैसे तैसे दृश इंद्रिया जागत भासण
लगता है ॥ जैसे स्वप्न विषे कल्पना मात्र जगत भासता है ॥ तैसे इ
ह जाण ॥ हे राम जी जेते कछु विकल्प ऊठते हैं ॥ सो सर्व मन के
रचे हूए हैं ॥ जब मन ऊदे होता है ॥ तब इह फुरणा होता है ॥ जो इह
पदार्थ सत है ॥ इह असत है ॥ जब चित्त मात्र को मन साथ संबंध
होता है ॥ तब प्रथम प्राण ऊदे होता है ॥ प्राणों के ग्रहण कर कै म
न कहता है ॥ जैसे जीव हो ॥ प्राण ही मेरी गति है ॥ प्राण विना मै
कहा था ॥ अरु बहुड कहता है ॥ जब प्राणों का वियोग होवेगा
तब मैं मर जावेगा ॥ बहुड नर्क होवेगा ॥ बहुड स्वर्ग को हित है
म आह्ला भी मैं जीवेगा ॥ हे राम जी जब लग चित्त है ॥ तब लग
इह तीन विकल्प ऊठते हैं ॥ अरु मैं सर्व लोकों ने इस लोक विषे
सुख है ॥ न परलोक विषे सुख है ॥ जब लग आत्मबोध का साक्षा
त्कार नहीं हूआ ॥ तब लग चित्त निर्वाण नहीं होता ॥ अरु तीन
विकल्प भी नहीं मिटते ॥ हे राम जी मन के शांत करणे का उपाइ
आत्मज्ञान ते इतर को ऊ नहीं ॥ अरु मन शांत रूप विना कल्याण
नहीं होता ॥ दोनो उपाइ कर मन शांत होता है ॥ मन की ब्रिति इस्थि
त करणी अरु प्राणों का संपद रोकणा ॥ जब मन इस्थित होता है
तब प्राण रुक जाते हैं ॥ अरु प्राण रोकने मन इस्थित हो जाता है
अरु जब प्राण क्षुभते हैं ॥ तब चित्त भी क्षुभता है ॥ तब अध्यात्म
अरु तत्कता प होकर अज्ञानी जलता है ॥ अरु मन के इस्थित ते
परम सुख प्राप्त होता है ॥ सो इस्थित मन की दो प्रकार है ॥ एक
ज्ञानी की इस्थित है ॥ अरु अज्ञानी की इस्थित है ॥ जब प्राण अव
वेस्त भोजन करते हैं ॥ तब नाडीउ पर अन्न जाइ इस्थित होता है
अरु प्राण बहुर जाते हैं ॥ जब प्राण बहिर ॥ तब मन भी जड भू
त हो जाता है ॥ तिसका नाम सुखपत होता होता है ॥ सो नाडी को
तै है ॥ जिनो उपर उपर अन्न जाइ इस्थित होता है ॥ सो नाडी उही है जिन
के मार्ग जाग्रत विषे प्राण निकसते हैं वासना सहत ॥ उही नाडी जब

अन्न कर रोकी जाती है ॥ तब मन सुखपत होजाता होजाता है ॥ इह अज्ञा
नी के मन की इस्थिति है ॥ काहे ते जो जडता है संस्कार को लीए होए ब
हुड उठ आवता है ॥ जैसे प्रथ्वी विषे पडा बीज समय पाइ कर अंकुर ले आ
वता है ॥ तैसे इह संस्कार कर कै सुखपत ते बहुड उठता है ॥ अरु जो ज्ञानवा
न सम्यक दर्शी पुरष है ॥ तिनका मन चेतनता को लीए इस्थित होता है
सो चेतनता भी दो प्रकार की है ॥ एक जोगी की चेतनता है ॥ जिस समाधि कर
चित्त को इस्थित कीआ है ॥ सो समाधि निष्ट चित्त है ॥ उह जडता नहीं ॥ जैसे
सुखपत विषे जडता होती ॥ तैसे जडता नहीं ॥ अरु ज्ञानवान जीवन्मुक्त
का सम्यक ज्ञान कर कै चित्त इस्थित है ॥ उसका चित्त वासना ते रहित है ॥ वहो
इस्थित है ॥ जिसका चित्त इस प्रकार इस्थित है ॥ तिसी पुरुष को शांत है
अरु जिसका चित्त वासना सहित है ॥ तिसको शांत कदाचित नहीं प्राप
ति होती ॥ अरु दुख नहीं मिटते ॥ सो निर्वासी चित्त करणे का सम्यक ज्ञा
न का कारण इह मेरा शास्त्र है ॥ इस के समान अरु कोऊ नहीं ॥ हे राम जी
इह जो मोक्षोपाय शास्त्र मैं कहा है ॥ तिसके विचार कर यथार्थ ब्रह्म ही स्वरूप की
प्राप्ति होवेगी ॥ ताते सर्वदा इसका विचार कर्तव्य है ॥ जब इसको भली
प्रकार विचारेगा ॥ तब चित्त निर्वासी जावेगा ॥ अरु उही प्रश्न जो तैं थक
को कहिता ॥ सो सुणा सु … स्व … इ … चा ॥ इह वथक जब मैं उस पुरख के
चित्त विषे प्राणों के मार्ग अवेश कीआ ॥ तब क्या देखता हौं इसके प्राणों के
राए है अन्न कर कै ॥ जाग्रत नाडी जो फुरती थी ॥ सो रोकी गए है ॥ काहे ते जो अ
न्न पचिता नहीं ॥ इस कारण ते उह सुखपत विषे है ॥ तिसकी सुखपत
विषे मुझको भी अपणा आप विस्मरण हो गया ॥ जब कछुक अन्न पचि
ता तब उसके प्राण फुरणे लगे ॥ जब प्राण फुरे तब चित्त की ब्रिति भी कछु
कु जडता को त्यागते भए ॥ सपूर्ण जडता को त्याग नहीं कीया ॥ पर कछु
अल्प त्यागी है ॥ तब फुरणे कर कै चंद्रमा सूर्य जे आदिक जो कछु विश्व है ॥ सो फु
रमाए ॥ तब मैं नाना प्रकार के जगत को देखता भया ॥ मेरे ताएं अपणा पूर्व
ला संस्कार भूल गया ॥ तहां मैं भी अपणा कुटंब विषे रहणे लगा ॥ साथी मे
रे ताएं अपणे कुटंबी भासी ॥ पुत्र स्त्री भए ॥ तब बांधव सभ भी मिलिआए ॥ बहु
ड मैं देखते देखते प्रलै काल के पवन कर मेघ गर्जने लगे ॥ अरु सूर्य सलथा
गाव खिण लगी ॥ अरु सातो समुद्र उछले ॥ अरु जो प्रलै काल के उपद्रव
होते हैं ॥ सो आन उदे हूए ॥ प्रथम मैं अमल गा ॥ जब अमल लागत्रु को ॥ अरु सभ
इस्थान जलने लगे ॥ तब जल का उपद्रव उदे हूआ ॥ तब मैं क्या देखता हूं जो नगर
ग्राम पुर मानुष पशु पंखी सभ बहते जाते हैं ॥ अरु हाहाकार शब्द
करते हैं ॥ बडा खोभ हूआ ॥ तब इक आश्चर्य जैसे देखा ॥ जो मेरी कुटी भी बहती
देखता भया ॥ अरु स्त्री पुत्र भाई जन इत्यादिक सभ मैं उहां देखता भया ॥ सो स
भ जल के प्रवाह विषे बहते जाते हैं ॥ अरु जिस इस्थान विषे मैं इस्थान
भी बहते जाते हैं ॥ अरु मैं भी लडता जाता हूं ॥ बहते बहते अरु मैं मूर्छा को
प्राप्त हूआ ॥ जो कछु रण विषे नहीं आवता ॥ इक अंतर रंग साथ ऊ थक को बल्या
जावा ॥ अरु हारत रंग साथ अर्थ का चले जावो ॥ तब इक वेला शरीर मुझको स्म
रण आइ पडा ॥ तब जेता कछु जगत है ॥ सो मुझ को सभ मिथ्या भासणे लगा ॥
अरु वाराह रूप सभ भी मिट गया था ॥ अरु शरीर की चेष्टा सभ उसी प्रकार पडी होवे ॥ जे
तरंगो के साथ कबहू ऊपर कबहू नीचे को आइ पडा ॥ पर अत्र मैं सावधान हो
गया ॥ तिस काल मान नगर देश मैं इल बहने जावे ॥ अरु त्रिनेत्र सदाशिव
हि ना जावे ॥ विद्याधर गंधर्व यक्ष किन्नर सिद्ध इत्यादिक कर अरु भी न बह
ते जावहि ॥ अष्ट दल कमल की पंखडी पर बैठा ॥ ब्रह्मा जी बहता जावे ॥ इ

व॰ म॰ २५

इकमेरुअपणीपुरीसहितवहतेजावहि॥अरुविसनजीअपणीवेकुं
ठपुरीसहितवहिताजावे॥वडेपहाडदीपलोकपालसववहतेजावे॥पा
तालवासीसभप्रलेकेजलविखवहतेजावहि॥जमभीअपणीवा
तेसाथचलाजावे॥असीसमर्थाकिसीकीनजोकिसीकोनिकासी॥जो
आपहीवहतेजावहि॥तोकिसीकोकेसेनिकासहि॥वहिनेवाहिनेवा
हुजानिकसहि॥वकुडुवजावहि॥एसीप्रकारपेईगीनखावहि॥
जेवाइविखविणाइडतेहै॥तेसेवडेईश्वरोंसहितदेवतेवहतेजावहि
तोकिसीकोकेसेनिकासहि॥वहिनेवहितवाहजनिकसहि॥वकुडु
वजावहि॥इसीप्रकार॥हेवधकतिनकोदेखकरमेमनविखविचार
कीया॥जोइसमावकेसुखनमिलजननवकोतेहै॥सोमहासुरखहे॥
जिनपदार्थकोसुखरूपजाणतेहै॥अरुतिनकेनमिलनेतनकोतेहै॥सो
सुखभीअरुदुःखभीसहकरसुखदेणहारेपदार्थभीसभवहतेजावे
हि॥जेसवडीवाइविखमछभ्रमनेहे॥तेसेसभरखीश्वरवहतेजावहि
हेवधकइसप्रकारमहाप्रलेहोती॥तिसकेसन्नविखमेदेखताभया
२९६॥इतिश्रीहदेअंतरसप्तममहाप्रलेयवर्ननंनामसर्गः॥वधक उ
वाच॥हेमुनीश्वरइहजोमहाप्रलेतुमकहा॥जिसविखब्रह्मादि
भीवहतेजावहि॥सोब्रह्माविसनरुद्रआदिकतोसुनतेहै ईश्वरहै॥महा
प्रलेविखभीप्राणीरकोअंतरध्यानकरलेतेहै॥इहपरत्नहण॥वेडुने
जोतुमकेसेदेखे॥अंतरध्यानकोनहोगए॥ सु ष उ च हेव
धकइहप्रलेजोहुइहे॥सोइकवूसकर्केनहीहुइ॥कवीमहाप्रलेकस
करहोतीहे॥जवकुसकरहोतीहे॥तवइहईश्वरध्यानकर्केशरीरकोअं
तरध्यानभीकरलेतेहे॥अरुकवीअसेहोताहै॥जोइनकोएताअउसर
नहीरहिताअंतरध्यानहोणेका॥तववहिजातेहे॥समद्रोफलपड
तेहे॥कवीकिसीप्रकारकवीकिसी॥इसकाकुछनेमनहो॥कारहेतजो
इहजगतभ्रानरूपहे॥हेवधकवलवुधअरुनेजइहसमकर्केवडो
वडोकेभीनाशहोजातेहै॥इसविखक्याआस्याकरेणीहे॥अरुसन्न
विखक्यानहीहोतासभवणताहे॥इसकर्केइहअर्कतमप्रलेसुन्नभ्र
कर्केहोएहे॥सन्नभ्रमविखविपजेभीहोतेहे॥इसकारणउनकोवह
तादेख्याहै॥व क व हेमुनीश्वरजोउहसन्नभ्रमथा॥तोउसका
क्यावर्तनकर्णा॥सु ष उ च हेवधकतेरेताएइसनमिलकहा
है॥जोतुझकोवोधहोवे॥अरुजिसकोसुननकहिताहे॥सोइसजाग्रत
लहे॥अरुइहजाग्रतसुन्नकेतलहे॥इनदोनोकासमानतामर्थक
हितहो॥तातेसुणा॥इसप्रकारइस्यावरजंगमजगातवहतादेख्या
साथसभीवहतेजावे॥अरुजलकोलहिरउछलहि॥सोनोइइके
मारेहएपहाडउछलतेहै॥तिनोहरेणविखसभीपडाउछले
अरुसुफकोकछुकुछनहोवे॥तवमेवहताएककनारेजाइलगा
तिसकपासइकपवनथा॥तिसकीकंदराविखमेजाएठस्थितभया
तहादेखताभया॥जोजीववहतेजातेहे॥अरुजलभीसुकताजाता
हे॥तवजलकेसुकणोकरविकहोगया॥किसीठोरविखजलरहा॥तिसवि
खकएइवनेदृष्टिआवहि॥ब्रह्माकेहसदृष्टिआवहि॥कहजमकेवाह
नेमहेखकेहकहविसनकेवाहनगरुडदृष्टिआवहि॥चक्रविखेपहाडकी
न्याईवनेदृष्टिआवहि॥कहइंद्रकेहस्तीकेहअरुविमानदृष्टिआव
हि॥वननआदिलकरवाहनचक्रविखडूवनेदृष्टिआवहि॥देवतनि

धरांपर्वलोकपातालद्रिष्टिआए॥देखकरमैअसुरजेमानहुआ॥हेवधक
इसप्रकारदेखतामेंपहाडकीकंदरामासोइगया॥तवमसफकोअपणी
मेवनविखसुन्नाआया॥तिससुन्नविखमसफकोचंद्रमासूरजआदिक
नानाप्रकारकेभूतद्रिष्टिआवणेलगे॥अरुजिसपहाडउपरमेसोया
था॥सोभीद्रिष्टिआया॥अरुद्वादससूर्जविश्वकोजलावतेदृष्टिआव
हि॥नगरपत्तनजलतेहै॥जगतवडेखेदकोप्रापतहुआ॥तवउहाव
रहेए॥नहामेसोएआइहुआअरुसुन्नकोदेखताभया॥इसवेदिनविख
तवमेवहुडइजगतकोदेखताभया॥सुर्जचंद्रमादेशपतननदीयां
ससमुद्रमनुखदेवतापशुपंछीनानाप्रकारकीक्रियासेजुगतदृष्टि
आवणेलगे॥अरुथोडवर्षकाशरीरमैआपकोदेखताभया॥अपणेपि
ताअरुमातसफकोद्रिष्टिआवहि॥अरमेउनकोपितामाताजाणे
अरुउहमफकोअपणापुत्रजाणहि॥इसीकुटंववाधवसभममतेम
फकोद्रिष्टिआवणेलगे॥अरुउहांमेकेसा॥जोवाथतेरहितअरुत्रि
स्नासहित॥अरुइहअरुमसकाअभिमानमुफकोआनिफुरिआ॥तव
एकआविखमेरावहहे॥तिसविखइहमकुटविद्यासंजुगतहे॥अरुता
हामेएककुटीवणाई॥तिसकेवाहरखूटेलगाए॥उहांमेएकग्रामन
वणा॥तहांकमंडलअरुमालापडीरहे॥मैब्रह्मणथासफकोधन
उपजावणेकीइछाभए॥जोकछुव्रह्मणोकाआचारचेष्टाहै॥सोमेक
रो॥उहीचेष्टामारीहोणेलागे॥वाहरजजाइकरईटाकाछिल
आवे॥आनकेरकुटीकोलगावे॥फिरिवसेवकहसारीप्रजाकरहि॥जे
थाजागामेउनकोअशीर्वादकरो॥इसप्रकारग्रहस्तआश्रमविखमे
चेष्टाहुई॥अरुमफकोइहविचारउपजे॥जोइहोकतेविसे॥इसकेवे
णोकरभलाहोताहे॥नदीअरुतालविइस्नानकरो॥गाउकीटहलकरो
आर्थीअथितकीपूजाकरो॥हेवधकइसप्रकारचेष्टाकरतामेणाउवल
अतीतरहा॥तवएककालमामेरअइहविखदुभीखरआया॥अथमेउ
सकोभेइस्नानकराया॥वहुडभोजनकरविनिकोया॥अरुदानकसमे
उसकोसिनाउपरमेनकराया॥इसप्रकारउसकीटहलकरो॥रात्रकोइह
मथवावानीकरणेलगा॥तिसविखमसफकोउसवडेपहाडपवनकेट
गाअरुदेशसूणाए॥इस्यामाचिनकेमोहणोहारेसूणाए॥अरुनाना
प्रकारकेस्वादसुणाए॥अरुलगाकहणाहेब्रह्मणजोनेकछुसुदवइ
स्यानअस्वादमुफकोसुणाइहहि॥तिनविखेसारचिन्मात्ररूपहे॥
सभजगततिसकाचमत्कारहे॥अभाकचनहे॥तिसमइतरअरुवस्त
कछुनहीं॥तातेहेब्रह्मणउसीसत्ताकोग्रहणाकरो॥सोसत्तासभ
कात्मअनभवरूपहे॥अरुपरमानंदसरूपहे॥तिसीविखइस्थितहोवो॥हेवध
कजइसप्रकारउसमुनीश्वरकहामफको॥तवअरागजोमेरामनजोगाकर
निर्मलथा॥तिसकारणतेउसकेवचनमेरेहृदेविखप्रवेसभए॥अपणासुभा
वसत्ताविखेमेजाणिडहिआ॥तवक्रियादेखोजोसभभमरहीसरूपहे मु
फ क्रियाउभिमकछुनही॥मेतोमुनीश्वरहो॥इहसत्ताआयाथा॥तोमजाणि
करदेखो॥तवउसीपुरुखकासन्नाथा॥तवमेरेचित्तविखआए॥जोकि
सीप्रकारइसकेचित्तमेवाहजानिसो॥अपणाशरीरविखजाइप्रवेशाकरो
तववहुडइविचारकीया॥जोइहजगततोउसपुरुखकावपहे॥उहीपुरु
खविराटहे॥जिसकेसन्नविखइहजगतहे॥परतिसपुरखकोअपणाबि

राट स्वरूप का प्रमादि है ॥ तिसकर के जैसा ह्म आवा वपुख णि आ है ॥ तिसके
समभाविख ॥ तैसे इह भी इक विराट ने वर्णा पडा है ॥ वक्रुइ उस विराट को भी
मैं जाणिये ॥ जो उसके चितन्य शक्ति क सिजावो ॥ हे वधक इस प्रकार विचा
रकर के मैं पद्मासन बांधि आ ॥ अरु जोग की धारणा कर के उस विराट स्वरूप के
शरीर को देखना भया ॥ देखकर क्या हूं चितको बिन पुरनी थी ॥ तिसके
साथ मिल्या ॥ अरु प्राणां के मार्ग ते निकसकर के अपणी कुटी को देखना
भया ॥ वक्रुइ तिस विषे अपणा शरीर को पद्मासन बांधि आ देखत भया ॥ ति
स विषे प्रवेश करके नेत्र खोले ॥ तब अपणा सन्मुख विराट वैदेह देखा ॥ अरु
उह पुरुष सोया था ॥ तिसको देखकर इक मुहूर्त विलीन भया ॥ तब अ
श्चर्जवान हूआ ॥ जो इस विषे क्या चेष्टा देखी ती है ॥ इहां इक मुहूर्त विलीन
भया ॥ अरु उहां मैं शरीर वरख का अनुभव क्या है ॥ वडा आश्चर्ज है इस कर के
क्या नहीं होता ॥ वक्रुइ मेरे मन विषे उपजी जो उसके चित विषे प्रवेश
करके हो अश्चर्ज देख्या ॥ तब वक्रुइ प्राणों के मार्ग शिवा प्रवेश कीया ॥ तब
क्या देखो जो अग्राला कल्प विलीन होइ गया ॥ अरु बाधव पुत्र इत्यादि माता
ना आदिक न कहो गये है ॥ अरु इस रा कल्प हूआ है ॥ तिसको मलेच्छ होती
है ॥ बाधव सूर्ज आदि उदे हूए है ॥ विश्व को जलावणे लागे है ॥ अरु भवला अग्न
जलावणे लागी है ॥ मेघ चले अरु असता वल पवन मल कर के टकटूट होत
ए है ॥ पृथवी तेज रीभाव को प्राप्त भई है ॥ नीवहइ स्थावर जे राम अग्न ल न स
हाकार शब्द करते है ॥ अरु बिजली चमत्कार करती है ॥ वडा खोउ देह हूआ है ॥ है
वधक मैं अग्नि विषे जाइ पडा ॥ मेरा शरीर भी पडा जल्या ॥ पर मैं कछु कष्ट
कछु न होवे ॥ जैसे किसी पुरुष को अपणे स्वप्ने विषे अग्नि प्राप्त होवे
अरु जागृत देवे उसको कष्ट कछु न होइ होता ॥ तिसी प्रकार मेरे को कछु
न कछु कछु न होवे ॥ मैं आपको अपणा उहीं रूप जानता रह्या तो जागणा ॥ उ
अरु जगत प्रले को आतमा जानता रहा ॥ इस प्रकार मैं कछु न कछु ना
होवे ॥ अरु वैष्णा उसी प्रकार से भी कर्ता भया ॥ अरु देखता भया ॥ अरु अत
र तेजसा कान्या भी तलाचित वरह ॥ अरु होर लोक थ सो अग्न के रखा भक्के
पडे कष्ट पावाहि ॥ २२३ ॥ श्री हिरदे अंतर प्रलय अग्नि व क ॥ ते ना म
गः स घु उ व ॥ हे वधक प्रले के खोभ विषे मैं भी पडा भट को ॥ वक्रु
इ जल विषे वहता जावो ॥ पर शरीर वहा शरीर मैं कु को विस्मरणा है ॥ आतम स्वरू
प सकारणा ते शरीर कई दुख सुख को सपर्श न करे ॥ अरु विचार भया ॥ जो इह
हे जगत मिथ्या है ॥ इस विषे विचरणा कर के मेरा क्या आत्मा सिद्ध होता है
इह तो स्वप्न मात्र है ॥ इस विषे किसने भिन्न देखा वो ॥ तातें इस के जग
त ते वाह्य तकि का सो ॥ व के च ॥ हे मुनीश्वर तब मैं जो उसके हृद
विषे जगत को देखते भये ॥ सो जगत कियो वस्तु था ॥ सो को सम वनते विषे
जगत था ॥ अरु तिस जगत का उसको ज्ञान न था ॥ उह प्रमादी था ॥ तब मैं जो
जायत होकर उसका संज्ञा दाया ॥ उसके हृदे विषे पड़ा ज्ञान ते आए ॥
अरु वदीया विषे नाना प्रकार के भूत जान पृथवी आकाश वायु जल अग्नि
आदिक विश्व की रचना कहा ते आए है ॥ इह क्या के इह संसार ते रह वह
है ॥ अरु जो न मकहो भय पण ते विषे अपणा स्वप्न दृष्ट भीद रखता है को
ता है भगवान् इस को जो संज्ञा आवता है ॥ तिसको इस अपणा स्वप्न के
प्रमादिक के देखते है ॥ अरु नमस्तर नहो कर देख्या है ॥ सो कैसे देख्या है
म स उ व ॥ हे वधक प्रथम जो मैं देख्या था ॥ सो आपको विस्मरण
करके उसके हृदे विषे जगत देख्या था ॥ वक्रुइ इस वीचारा जो देख्या था ॥
सो आपको जाणकर जगत देख्या था ॥ सो क्या है ॥ सो वस्तु स्वरूप ॥ हे वधके

जो वस्तु कारण ते उत्पन्न होती है ॥ सो सत न होती है ॥ अरु कारण बिना जो
भासती है ॥ सो मिथ्या होती है ॥ अरु स्वप्न जो म्रुफ को उसके स्वप्न विषे भा
सी सो का कारण बिना थी ॥ काहे ते जो कारण दो प्रकार का होता है ॥ इक निमि
त कारण है ॥ जैसे घट का कारण कुलाल होता है ॥ अरु इक समवाइ कारण
इक कारण होता है ॥ जैसे घट मृतका का होता है ॥ दोनो कारणों कर उत्पन्न
होवे सो सकारण पदार्थ कहीता ॥ सो आत्मा दोनो प्रकार जगत का का
रण नहीं ॥ आत्मा अद्वैत है ॥ ताते निमित्त कारण ते नहीं ॥ अरु समवाइ कारण
इस कर नहीं ॥ जो अपरिणाम स्वरूप ते अन्यथा भाव मैं नहीं हूआ ॥ जैसे स्वर्न का
परिणाम वृद्धि होता है ॥ तैसे आत्मा का परिणाम जगत नहीं ॥ आत्मा अद्वैत है
अरु उह जगत कारण बिना भासि आप आ ॥ ताते भ्रम मात्र ही था ॥ हे वधक
जिस विषे भ्रम उदे होता है ॥ वस्तु सोए होती है ॥ अरु जगत की भ्रांति आ
त्मा विषे भासी ॥ तो जगत आत्म रूप ही हूआ क्यों ॥ जब सृष्टि पुरा न थी ॥ तब
अद्वैत आत्मसत्ता थी ॥ तिस विषे संवेदन फुरने कर के जगत हूए की न्याइ उदे हू
आ ॥ सो क्या हूआ ॥ जैसे सूर्ज की किरणों विषे जल भासता है ॥ सो सूर्ज की
किरण ही जलरूप भासती है ॥ तैसे इह जगत आत्म का आभास है ॥ सो आत्म
ही जगत रूप भासता है ॥ सो आत्मा ही है ॥ नहां नको उपादान था ॥ तको उदे
देख्या न था ॥ न पृथिवी जल वायु अग्न आकाश था ॥ न उत्पत्ति प्रलय न अरु को उ
था ॥ केवल चिन्मात्र सत रूप ही था ॥ हे वधक ज्ञान दृष्टि कर के इसको सुदि दी
न दृष्टि भासता है ॥ सो सत्य है ॥ सर्व इस रूप मैं रहता है ॥ परमानंद है ॥ जगत भी
उही रूप है ॥ तैसे सामाविद्या को जो जगत भासता है ॥ सो इह अपना रूप सो
आत्मा विवेक कछु भान नहीं ॥ केवल चिन्मात्र सत्ता है ॥ सर्वदा इसको आ
त्म रूप ही भासता है ॥ जो नदा हेजइ सकु भी चिन्मात्र ही भासे ॥ तब सर्व क
ल नाम न नत्याग करके ॥ तिसके पाछे जो शेष रहेगा ॥ सो आत्म सत्ता है ॥ सर
का अनुभव रूप उही है ॥ सो अनन्त है ॥ अरु सूक्ष्म है ॥ सर्वदा स्वभाव सत्ता है वि
खेइ स्थित है ॥ अजर अमर है ॥ तू भी तिसी स्वभाव विषे स्थित होवो ॥ हे वध
क आत्मसत्ता परम सूक्ष्म है ॥ जिस विषे आकाश भी अस्थूल है ॥ जैसे सूक्ष्म
अणते पर्वत स्थूल होता है ॥ तैसे आत्मा विषे आकाश अस्थूल है ॥ क्या सूक्
ष्मता है आत्मा विषे ॥ इही सूक्ष्मता है जो आत्मतत्त्व मात्र है ॥ जिस विषे उ
त्थान को उ नही ॥ केवल निर्मल स्वभाव सत्ता है ॥ अरु निराभास है ॥ अरु
निराभास है ॥ अरु तिसी विषे जगत भासता है ॥ ताते उही रूप है ॥ जैसे काल
इक होता है ॥ तिसी विषे क्षण पल घडी पहर दिन मास वर्ष जुग भासि
आ है ॥ सो काल ही है ॥ सो भी उही है ॥ तैसे नाना प्रकार को जगत भासिआ हो
ता है ॥ सो आत्मा ही ॥ जैसे इक बीज विषे फूल फल टास पत्र नाम होते है
तैसे एक आत्मा विषे अनेक नाम रूप जगत होता है ॥ आत्मा ते इतर कछु न
हीं ॥ सभ आत्म स्वरूप है ॥ जो आत्मा ते इतर भासे सो भ्रान्ति मात्र जाणा ॥ तैसे
संकल्प पुर होता है ॥ तैसे इह जगत है ॥ हे वधक आत्मा विषे जगत कछु
बणिआ नहीं ॥ सो आत्मा ते बा अपणा आप अनुभव रूप है ॥ अरु प्रत्यक्ष
है ॥ तिस विषे न जन्म है न मरण है ॥ परम चिदाकाश है ॥ ऐसा जो तेरा अ
नुभव स्वरूप सत्ता है ॥ तिसको मेरा नमस्कार है ॥ हे वधक तू तिसी विषे स्थ
स्थित होवो ॥ तब तेरे दुख नष्ट हो जावहि ॥ अरु इह जगत अज्ञानी को भास
ता है ॥ ज्ञानवान को सदा आकाश रूप भासता है ॥ जैसे इक पुरुष स्वप्ने विषे
सोया है ॥ अरु इक जागता है ॥ जो सोया है तिसको स्वप्न विषे महल मा
डी जगत भासता है ॥ अरु जागते को आकाश रूप है ॥ तैसे अज्ञानी को जगत
भासता है ॥ ज्ञानवान को आत्म रूप है ॥ व क च ॥ हे मुनीश्वर एक कहि

व॰
म॰
२९

तेहै इहजीवकर्मोकरहोताहै॥ अरुएककहितेहैकर्मविनाउत्पनहोताहै
दोनोविधिसुनकयाहै॥ मुनीश्वरउवाच॥ हेवधकआदिजोपरमात्मातेब्रह्मा
दिकउपजेहै॥ सोकर्मोकरकैनहीहुए॥ उहकर्मोविनाउत्पनहुएहै॥ तउनको
कोउजन्महैनकर्महै॥ उहब्रह्माहीसरूपहै॥ उनकाशरीरज्ञानसरूपहै
उहहोरअवस्थाकोप्रापतनहीहुए॥ सर्वदाउनकोअधिष्ठानआत्माविषे
अहंप्रतीतहै॥ हेवधकसृष्टिकेआदिजोब्रह्मादिकउपजेहैसोब्रह्मातेअनं
नही॥ अरुहोरजोअनंतजीवउपजेहै॥ जिनकाआदिहीआत्मपदतेप्रमादि
होगयाभया॥ सोभीब्रह्मसरूपहै॥ वेभिन्नइतरकछुनही॥ आदिसभब्रह्मा
वमस्वभूहै॥ अरुब्रह्माविसलइहआदिकोअविद्यारूपधनहीकोया॥ उ
हविद्यारूपहै॥ अरुजीवअविद्याकेवसप्रमादिककेपवनतेइहबेहे॥ वह
इकर्मकारकर्मोकेवसिहुए॥ ससारविषेशरीरधारतेहै॥ जबउनेकोआ
त्मज्ञानप्रापतहोताहै॥ तबकर्मोकेबंधनतेमुक्तहोकरआत्मपद
कोपावतेहै॥ हेवधकआदिजोसृष्टिहुएहै॥ सोकर्मोविनाहीउपजी
है॥ अरुपाछेअज्ञानकेवसितेकर्मोकेअनुसारजन्ममरणकोदेख
तेहै॥ जैसेसमुद्रतेतरंगआदिकर्मोविनाउत्पनहोतीहै॥ पाछेकर्मोकर
उत्पतिहोतीभासतीहै॥ तैसेइहजगतहुइहि॥ आदिजीवकर्मोतेउप
जेनही॥ पाछेकर्मोकेअनुसारजेतसपावतेहै॥ अरुब्रह्मादिकोकाश
रीरसंधज्ञानरूपहै॥ जदपिईश्वरोविषेजीवभावइहदृष्टिआवताहै॥ प
रंतिसकालविषेभीब्रह्महीरूपहै॥ उनकोकर्मकोउनही॥ केव
लआत्माहीउनकोभासताहै॥ आत्मसत्तातेइतरकछुनही॥ जै
सेसमुद्रविषेद्रवहीदिशाउरूपहोताहै॥ अरुनानाप्रकारकेकेमेदृ
ष्टिआवतेहै॥ परहोरकछुनहीहुआ॥ तैसेतेनाकछुजगतभास
ताहै॥ सोसभचिन्मात्ररूपहै॥ होरकछुनही॥ सरवडरवरूपभीउही
होभासताहै॥ परअज्ञानीकोजगतप्रतीतहोतीहै॥ सरूपकाप्रमा
दहोताहै॥ इसकारणतेसुखदुखभोगताहै॥ हेवधकजबलगसरू
पकाप्रमादहै॥ तबलगकर्मरूपीफासीकरवांध्याहुआहै॥ अरुदुःख
पावताहै॥ जबसरूपविषेस्थितहोवेगा॥ तबकर्मोकेबंधनतेमुक्त
होवेगा॥ वास्तवतेनकोउकर्महै॥ नकिसीकाबंधनहै॥ इहमिथ्याभ्र
महै॥ केवलआत्मसत्ताअपणेआपविषेस्थितहै॥ इसमाकछुबा
गिआहोवेतोमेकहो॥ जोइहकर्महै इसकाबंधनकीयाहै॥ इहजग
तआत्माविषेभ्रमहै॥ जैसेजलविषेतरंगहोताहै॥ सोभिन्नकछुनही
जलतेतरंगउत्पनहोताहै॥ सोकिसकर्मकरहोताहै॥ अरुक्यारूपहैउ
सका॥ जैसेउहजलहीसरूपहै॥ तैसेइहजगतब्रह्मसरूपहै॥ आत्मा
तेइतरकछुनही॥ जोकछुकल्पनाकरीअ॥ सोअविद्यामात्रहै॥ हेव
धकजबलगइहसंवेदनबाहरजातसुखफुरतीहै॥ तबलगजगतभास
ताहै॥ अरुकर्मोतेदृष्टिआवतेहै॥ अरुजबसंवेदनअंतरमुखहोवेगी
तबकोउजगतनरहेगा॥ नकोउकर्मदृष्टिआवेगा॥ सभआत्मसत्ता
भासेगी॥ हेवधकजोज्ञानवानपुरुषहै॥ तिनकोजगतआत्मकरदि
खाएदेताहै॥ अरुजोअज्ञानीहै॥ तिनकोप्रमादिककेद्वैतरूपभासता
है॥ अरुतिसाविषेपदार्थोकासरूपजाणकरयावणकाजतनक
रतेहै॥ सुखविषेसुखीहोतेहै॥ दुखविषेदुखीहोतेहै॥ अरुजोपर
मानंदआत्मानंदहै॥ तिसकेपावणेकाजतनमननहीकरते॥ अरुज्ञानवा

अरुसभजगततिनकोब्रह्मस
नसदापरमानंदविषेस्थितिहोतेहै॥ जगतनफुरकोदृष्टिआवताहै॥ सोसभ
रूपभासताहै॥ हेवधकजैसाकछुजगतनजाणतहै॥ नकोउकर्महैनअ
होब्रह्मचिन्मात्ररूपहै॥ नकोउतत्पन्नाहैनजाग्रतहै॥ तिसवि
विद्याहै॥ सर्वब्रह्मसरूपहै॥ सदाअपणेआपविषेस्थितिहै॥ स्थितिहोताहै॥ प
रवहोरकछुनही॥ जैसेजलविषेआवनेहुएकीन्याईभासताहै
जलतेइतरकछुनही॥ तैसेब्रह्मविषेजगतकछुहुएहीहै॥ तुविचारकरदे
परब्रह्मतेइतरकछुनही॥ सभजगतब्रह्मसरूपहीहै॥ तबलग
रवनवडुखमिटजावहि॥ तबलगविचारकरकैसरूपनपावेगा॥ तबल
गदुखनमिटहिगा॥ जबसरूपकोपावेगा॥ तबसभमनहिहोजावहिगा
जेताजेताविचारहोताहै॥ तातेतासुखहै॥ इहविचारउदहोताहै तहा
तेअविद्याक्षीणहोजातीहै॥ जैसेजहाप्रकाशहोताहै तहाअंधकार
नहीरहता॥ तैसेजहासंतेअसतकाविचारउत्पनहोताहै॥ तबअवि
द्याअरुजगतअरुभेकाअभावहोजाताहै वहरससारचक्रविषेनग
देगा॥ अरुपरमपदकोप्रापतिहोवेगा॥ जिसज्ञानवानकोइहपद
प्रापतभएआहै॥ सोदुखीनहीहोता॥ २२९॥ इति श्री संनिर्वाणनाम
सर्गः स प्र उ व॥ हेवधकजोज्ञानवानपुरुषहै॥ सोपरमा
नंदकोप्रापतिहोताहै॥ जिसआनंदकेपाएतेविष्णुइंद्रीयाकेसंबधा
काअनंदजोइंद्रियाकाहै॥ सोसभकेतिणकेन्याईतुच्छभासताहै॥ अरुअ
सासरवपृथ्वीविषेकोउनही॥ प्रकाशअरुपातालविषेभीकोउन
ही॥ जैसासुखज्ञानवानकोप्रापतहोताहै॥ जिनकोअसाअनंदप्रापतभ
याहै॥ सोकिसकीइछाकरहि॥ परआत्मअनंदतबप्रापतिहोवेगा॥ जो
आत्मअभ्यासहोवे॥ आत्मासेथहै॥ अरुसर्वदाअपणेआपविषेस्थि
तिहै॥ अरुजोकछुआगादृष्टिआवताहै॥ सोअविद्याकाविलासहै॥ तब
तूअपणेसरूपविषेस्थितहोवेगा॥ तबसभब्रह्मसरूपतुझकोभास
गा॥ हेवधकपृथ्वीआदिकजोतनहैसोइहनही॥ जोकछुहोतेताउन
काकारणभीकोउहोता॥ जोइहभीनहीतोकारणकिसकोकहीअ॥ अ
रुजोइनकाकारणकोउनही॥ तोकारजकैसेहोवे॥ तातेइहभ्रांतमात्र
है॥ विचारकीएतेजगतकाअभावहोजाताहै॥ आत्मसत्ताहीज्योकी
त्योंभासतीहै॥ जैसेकिसीकोजीवडीविषेसर्पभासताहै॥ जबउहभ
लीप्रकारदेखेतबसर्पभ्रममिटजाताहै॥ ज्योकीत्योंजीवडीभासतीहै
तैसेविचारकीएतेआत्मसत्ताहीभासतीहै॥ जैसेकोउआकाशविषेस
कल्पवृक्षरचे॥ तोआकाशविषेवृक्षकोउनही॥ जिसचाहेतिसके
चित्तविषेवृक्षहै॥ तैसेअज्ञानीकेचित्तविषेजगतहै॥ ज्ञानवानकोसभअ
काशरूपहै॥ हेवधकअनभवरूपीकल्पवृक्षहै॥ जैसाजैसानिश्चा
तिसमेंरवहोताहै॥ तैसातैसाभासताहै॥ जैसेकिसीपुरुषअपणेसं
कल्पकरदेवताकीप्रतिमारची॥ अरुतिसकेआगेअपणीप्रार्थनाकरनी
लगा॥ तिसभावनाकरउसकाकारजसिधहुआ॥ सोकैसेसिधहुआ॥ अन
भवहीविषेसिधभया॥ जिसकेआगेउहप्रेतमाहुए॥ तिसीकरजा
सिधभया॥ हेवधकजैसाकछुजगतहैदेखताहै॥ सोसकल्पमात्रहै॥
जैसेस्वप्नविषेनानाप्रकारकीसृष्टिभासतीहै॥ सोस्वप्नमात्रहै॥ आदि
जोपरमात्मातेफुरणाहुआहै॥ सोकर्मोविनाहीहुएउपजीहै॥ उहकचन
अभासरूपहै॥ वहुडइआगेजोब्रह्मारचाहै॥ सोसकल्परूपहै॥ अरु
आगेअज्ञानकरकेकर्मकरीलगे॥ तबकर्मकेकरउत्पनहोतीहैपुआए
जैसेस्वप्नविषेस्वप्नकीसृष्टिआतमात्रहै॥ अरुजबलगस्वप्नअवस्था

व॰
म॰
२८

हे॥ तब लगजे साउ होंक संकरेगा॥ ते साही भासेगा॥ अरु जो जागउदे
तवन को कमहे॥ तजगत है॥ तेसे इह सभ संकल्प मात्र है॥ आत्मज्ञान
कर अभाव हो जाता है॥ हे वधक इह जो तुंक को सात्र वे भासते हे॥ सो
मात्र व हे॥ सो मात्र व नहीं॥ तिनके कंसेत फ को के से कहो॥ जेसे स
प्न विखे सप्न की सृष्ट भासती है॥ तेसे अविद्या काल विखे अविद्या॰
की सृष्ट भासती है॥ जेसे सप्न के निवर्त हुए सप्न सृष्ट का अभाव हो
जाता है॥ तेसे अविद्या के निवर्त हुए अविदिक सृष्ट का अभाव होता
है॥ अरु आत्मसत्ता अद्वेत है॥ तिस विखे जगत कछु बण्या आन नहीं
उहयो सरूप है॥ जेसे अकाश अरु सुन्नता विखे भेद नहीं॥ जेसे वायु अ
रु स्पंद विखे कछु भेद नहीं॥ तेसे ब्रह्म अरु जगत विखे भेद नहीं॥ अ
रु जब चित्त संवेदन फुरती है॥ तब जगत होकर भासती है॥ अरु जो
फुरती न ब अहे तउ होकर इस्थित होती है॥ अरु आत्मसत्ता फुरणे अरु
ठहरने विखे ज्यों की त्यों है॥ जन्म मरण बंधन मोक्ष द्वैत सत्त असत
आदिक जो नाम होते हैं॥ सो सभ तिसी के नाम होते हैं॥ काहे ते जो
इससे वस्त कछु नहीं॥ तिस विखे निश्चा कीया है॥ जे इहाक नेत्र है॥ इसके क॰
णी कर पाउ है॥ इह कर्ण है॥ इह नेत्र कर्ण॥ देशकाल क्रियाक से है॥ इह स
भ प्रकार है॥ इह इस प्रकार है॥ इह देवता है॥ इह मात्र व है॥ एइह द्वैत
है॥ इनका इहथ से है॥ इह कर्म है॥ इसकर इनका बंधन है॥ इसकर मोक्ष है
हे वधक जो आदि नेत्र चौह है॥ सो अब लगते समही इस्थित है॥ अरु त्यान हो है
तो॥ तिसी विखे कारज कारण क्रम है॥ प्रथम जो सृष्ट फुरी है॥ सो बध प्राव
कन होवणी॥ अकस्मात ते फुर आए है॥ जेसे फुर है तेसे ही इस्थित है
वहु उपदार्थ जो इक भाव को त्याग कर अरु भाव को अंगीकार करने है॥ सो
कारण कुके करते है॥ कारण विना नहीं होने॥ काहे ते जो प्रथम सृष्ट अका
रण हुए है॥ पाछे से सृष्ट भाव विखे कारज कारण है॥ पर हे वधक जिन पुर॰
खो को आत्मा का साक्षातकार हुआ॥ तिनका इह जगत कारण विना ब्रह्मसरू
प भासता है॥ अरु जिनको आत्मसत्ता का प्रमाद है॥ तिनका जगत कारज
कारण साहित भासता है॥ परमात्मा ब्रह्म जो है सो निराकार अकारण है
तिस विखे संवेदन के फुरणे कर अब्रह्मता भासती है॥ अरु निराकार विखे
अकार भासता है॥ अरु अकार विखे अरु कारण विखे कारण भासती है
अरु जब संवेदन जो है सत्ता का फुरणा सो इस्थिर हो जाता है॥ तब सर्व ज
गत ब्रह्मसरूप भासता है॥ अरु जब लग तिसका साक्षातकार के त्रिगु॰
कोन्याई डोडते है॥ अरु परिवारणा की वरवा होती है॥ इस प्रकार परलोक खा
भ को देखता भया॥ मेरे देखते देखते सायन वाली नाडी या विखे आनि॰
आत इस्थित हुआ॥ तहां जो अनेक दान गिड तिसा पवनो वन भासत हि॰
पड़ते मानवो भी जड होइ गए सकको ज्ञान कछु न रहा॥ जब अन पख्याक
छ अबकाश हुआ॥ तब प्राणो का से पद फुरि आ॥ जेसे वायु निस्पंद हुए प्र॰
स्पंद हुइ कर चले॥ तेसे उहो सब बनन फुरी॥ तब सुखपत पिछोडाद्रि प्राह्ना
कर भासण लगी॥ केसी द्रिष्ट भासी जे आत्मा द्रिष्टा हो द्रिष्टा इ परलोक
र भासण लगा॥ अरु होर कछु बणा आन हीं॥ जेसे बन गम अउ स्मता विखे
भेद नहीं॥ जेसे जल अरु द्रवता विखे भेद कछु नहीं॥ तेसे आत्मा अरु द्रि॰
ष्टा विखे कछु भेद नहीं॥ हे वधक इस प्रकार जगत का भेद देखता भया॥ स्व
खपत ते द्रिष्टा पिछे जाग्रत द्रिष्टा उपजी॥ सकु को द्रिष्ट आए॥ जेसे क॰
वारी कन्या ते संतान उपजे॥ तेसे उपजती भए व क व॥ हे समती
स्वपन सभा कहा सुखपत क्या है॥ जिस विखे तत्व मद वृगए थे॥ उइह स॰
खपन है॥ अथवा कछु होर स्वपन है॥ जिस तते जगत उपजता है॥ सोम

फकोकहो॥ म घ उ च॥ हे वधक जहां सर्व शाहों का अभाव है॥ के
वल आत्मसत्ता ते इतर कछु कहणा नहीं॥ तिसका नाम स्वपन कही
ता है॥ तिस विखे जेसे किसी जलक हा किसी अंभक हा॥ सो दोनो ए
क ही के नाम है॥ तेसे आत्मा अरु जगत इक ही के नाम है॥ पर अज्ञान के
र भिन्न भिन्न पडे भासते है॥ तेसे सप्न का जगत चित्त विखे इस्थित होता
है॥ तेसे इह जगत भी चित्त विखे इस्थित है॥ जेसे सप्न विखे कारजका॰
न भासते है॥ परहे नहीं॥ तेसे जाग्रत विखे कारज कारण भासते है॥ प
रहे नहीं॥ वास्तव आत्मरूप है॥ तिस आत्मा विखे जो चित्त फुरता है
अहं अस्मि तं॥ सो उ सउ थान ते आगे जो कुछ फुरणा होता है गया॥ सोई
जगत भया है॥ तिस जगत विखे जो साज सा है आ है॥ आगे ते साते सा भ्र
स रणे लगा है॥ तिसका नाम मन ते है॥ तिस अविद्या काल पदार्थों की स
त्ति आ भासण लगी है॥ अरु काज कारण द्रिष्ट आवते है॥ सो क्या है के
वल आत्मसत्ता अपणे आप विखे इस्थित है॥ अरु कछु नहीं॥ पर हे अ
रु है एकोन्याई भासती है॥ जेस अपणा सप्न विखे संकल्प रूप लाता अ॰
कार का जगत भासता है॥ अरु कारज कारण भी द्रिष्ट आवते है॥ पर जा
गहे एक कछु द्रिष्ट नहीं आवता॥ काहे ते जो है नहीं॥ तेसे इह जगत का
रज कारण रूप द्रिष्ट आवता है॥ पर है नहीं॥ आत्मा कर द्रिष्ट आवता॰
है॥ तान आत्मा ही है॥ जेसे संकल्प नगर द्रिष्ट आवता है॥ तेसे इह ज
गत द्रिष्ट आवता है॥ जेसे आकाश विखे शाचन सुन्नता के नील ता॰
भासती है॥ तेसे आत्मा विखे चेतन चुनता के जगत भासता॥ सो उही
सरूप है॥ आत्मा ते इतर कछु नहीं॥ जेसे उस विखे निश्चा होता है॥ ते
से प्रन छ अनभव होता है॥ जेतो कछु जगत द्रिष्ट आवता है॥ सो सभ
संकल्प मात्र है॥ संकल्प ही जहां कहा उडते फिरते है॥ अरु अनभव
सत्ता ज्यों की त्यों है॥ संकल्प ही समरक रपर लोक देखता है व क वा
च॥ हे भगवन परलोक विखे जो इह मरकर जाता है॥ तिस शरीर का॰
कारण कोन होता है॥ अरु तहां है ति कि काइ ताको न होता है॥ अरु
इह शरीर तो एहां रहि जाता है॥ इहां भोगता शरीर का न होता है॥ जिस
कर सुख दुख भोगता है॥ अरु जो कहो तिस शरीर का कारण धर्म अ॰
धर्म है॥ तो धर्म अधर्म तो अमूरत है॥ तिनते मूरत सकार शरीर किउ
उत्पन्न हुआ॥ म घ उ व॥ हे वधक स्थूल अधिष्ठान जो आत्मसत्ता है॥
तिसके फुरणे की एती संरणा होती है॥ कर्म आत्मा जीव आत्मा फुरना थ॰
में अधर्म ए नते आदि लेकर नाना प्रकार के नाम होते है॥ जब सुध चिन
मात्र विखे जो अहं का उत्थान होता है॥ तब देह की भावना होती है॥ अ
रु देह भासण लागती है॥ आगे जरा जे भासता है॥ सत्रूप के प्रमादिके॰
कैं संकल्प रूपी जगत द्रिड हो जाता है॥ वहु डि तिस विखे जेसा जेसा फु
रना होता है॥ ते सा ते सा ही भासता है॥ हे वधक इह सभ जगत संकल्प है
पर सत्रूप के प्रमादिक के सत्त भासता है॥ अरु प्रमादिक के शरीर वि॰
खे अभिमान होता है॥ तिस कर के कर्म भोगावन अपणा विखे मानता है
वासना द्रिड हो जाती है॥ तिस वासना के अनुसार परलोक को देखता है
हे वधक तेउ हाका ओ परलोक है॥ तिकाउ इह लोक है॥ जेस एक सप्न को
छोडि कर अपर सप्न को प्रापति होवे॥ तेसे आविदिक वासना के कर से ली॰
कके ज्ञान कर परलोक को प्रापत होता है॥ जेस तु तिन विखे निराकार ही
तिस का शरीर उत्पन्न होता है॥ तेसे परलोक विखे है॥ बल तन क्या है सके॰
ही डाकार होकर पडा भासता है॥ जेसी जेसी वासना होती है॥ तेसा ही नि

व॰
म॰
२२९

सकोअनसारहोकरभासताहै॥शरीरपदार्थ॥अरुहेसमअकाशहीअ
प॥हेवधकअसतहीसतहोकरभासताहै॥जन्ममरनसंजुगत॥जैसा
जैसाफुनाद्रिडहोताहै॥तैसातैसाहोभासताहै॥जगतअभाससमाअहै
अरुजोज्ञानवानपुरुखहै॥तिसकोआत्माभावहीसतहै॥अज्ञानीके
निश्चविषेअसतहै॥अरुजोजगतज्ञानीकेनिश्चविषेअनंअनंअसहै
सोअज्ञानीकोसत्यभासताहै॥परंपरमात्मसत्ताज्योकीत्योइस्थित
है॥सोअनभवरूपहै॥तिसविषेजैसाजैसाद्रिडनिश्चाहोताहै॥तैसा
होहोभासताहै॥ज्ञानतेएज्ञानारूपजगतभासताहै॥अनभवतेभि
न्नकछुनहीं॥जैसेसुपनेविषेअनेकपदार्थभासतेहै॥सोअनभवहीअ
नेकरूपहोभासताहै॥अरुप्रलेविषेएकरूपहोजातेहै॥तैसेज्ञान
रूपप्रलेविषेसभएकरूपहोजातेहै॥जबसंवतफुरतीहै॥तबनानाप्रका
रकाजगतभासताहै॥अरुसंवतअफुरहोतीहै॥तबप्रलेहोजातीहै॥तब
एकरूपहोजाताहै॥एकचिन्मात्रसत्ताअपणेआपविषेस्थितिहै॥पृथ
वीआदिकपदार्थतिसकाचमत्कारहै॥भिन्नवस्तकछुनहीं॥आत्मसत्ता
निराकारहै॥तिसविषेनिराकारअरुसकारभीकल्पतेहै॥इनतेरहित
निराकारहै॥जोपुरखाद्रिशमात्रमिलहैएचेतनहैसोजडधर्माहै॥तिन
कोनानाप्रकारकेपदार्थभासताहै॥ज्ञानवानकोसरूपचिन्मात्रहीभास
ताहै॥हेवधकइहजगतसभचिन्मात्रहै॥जबचित्तसंवतफुरतीहै॥तबस
तरूपजगतभासताहै॥जबचित्तसंवतफुरणेतेरहितहोतीहै॥तबसु
खपतहोतीहै॥तैसेचित्तसंवतकेफुरणेकरसृष्टहोतीहै॥अरुचित्तकेअ
स्थितिहोणेकरप्रलेहोजातीहै॥जैसेसृष्टउत्पतआत्माविषेकल्पतेहै॥तै
सेस्थितअरुप्रलेआत्माविषेकल्पतेहै॥अरुभासमात्रहै॥अरुजगतकेउ
तपणआनहो॥फुरणेकरजगतभासताहै॥तातेजगतभीआत्मरूपहै॥प्रा
चीननभीआत्माकानामहै॥अरुसदाअद्वैतरूपहै॥जगतअभाससमात्रहै
जैसेआत्माविषेसकारकल्पतेहै॥तैसेनिराकारकल्पतेहै॥जैसेसुपनेवि
षेकिसीकोसकारजानताहै॥किसीकोनिराकारजानताहै॥दोनोफुर
णमात्रहै॥जोफुरणेतेरहितहै॥सोआत्मसत्ताहै॥अरुसकारभीनिराकारभी
उहीहै॥आत्मसत्ताहीइसप्रकारहोभासताहै॥निराकारहीसकारहोभास
ताहै॥हेवधकजेताकछुजगतनेफुरकोद्रिष्टिआवताहै॥सोसभचिन्मात्र
सतरूपहै॥इतरकछुनहीं॥परज्ञानकरकेनानाप्रकारकेकारजकारणभासते
है॥अरुजन्ममरणआदिविकारभासतेहै॥वास्तवतेनजन्महैनमरनहै
नकोईकारजहैनकारणहै॥अरुजोइहपुरखमरताहोवे॥तबशरीरस्व
कारकोनपावे॥अरुअपणेमरणेकाभीनजाणे॥जोपरलोकदेखताहै
अरअपणेमरणेकोदेखताहै॥तोमरतानहीं॥जोइहपुरखस्वपनहोवे
वशरीरसंस्कारकोनपावे॥अरुस्वपनएसकोनहोवे॥तोतिसशरीरसं
स्कारकेक्रियाविषेप्रवरततहै॥अरुप्रतजोराककेस्वपनभीहोआकी
है॥पदार्थभीफिरकर्मोकोभोगताहै॥स्वलोकतेहैवधकइहफुरर
स्तनहीहोता॥अमकरमारणाभासताहै॥अरुकारजकारणइपपदा
र्थभासतेहै॥अरुजबमरकरपरलोकदेखताहै॥अरुइहसुखकोभोगा
ताहै॥ताइहशरीरकिसीकारणकरनहींउपजा॥जैसेइहशरीरअकार
णहै॥तैसेइहशरीरअकारणहै॥तैसेहोरजोआकारद्रिष्टिआवतेहै॥सो
भीअकारणहै॥इसीकारणतेआभासमात्रहै॥जैसेसुपनेकेशरीरसाथ
नानाप्रकारकीक्रियाकरीतीहै॥अरुदेशदेशांतरकोदिखीताहै॥सोस
भमिथ्याहै॥तैसेइहजगतमिथ्याहै॥अरुजन्ममरणभीमिथ्याहै॥अरुजोल
कहोजेइसकेसंस्कारकाअभावदेखीताहैसोसतहै॥सोहेवधकजोइहए

रखपरदेशजाताहै॥तबभीइसकारनहीद्रिष्टिआवता॥तैसेद्रिशाके
अभावविषेतोसतहोताहै॥तैसेदेहकेत्यागविषेभीइसकाअस
तभावहोताहै॥इसपुरखकाअभावकदाचितनहीहोता॥अरुजो
तृकहैजपरदेशगयातोलरउआइमिलताहै॥अरुशरीरकेत्यागे
वहुरनहीमिलता॥परदेशगयामिलकरवातीचर्चाआनंदकरता
है॥मुआताकदाचितवर्तनहीकरता॥परमुआभीचर्चाकरताहैसो
सुण॥जिसकेपित्रप्रीतिकरवाथहुएमरहै॥अरुजथाशास्त्रउन
कोक्रियानहींहोती॥तबउहसुपनेविषेआनमिलतेहै॥अरुजि
यार्थकहितेहै॥जोहमारीक्रियानदनहीकरी॥इसमअमकेइस्था
नविषेपडाहै॥तुमकाढलेवो॥तोजैसपरदेशगएमिलतेहै॥अरुजथा
र्थवार्ताचर्चाकरतेहै॥तैसेमूएभीताकरतेहै॥किंहेवधकवास्तवतेकोईजे
गतहै॥नमरताहै॥केवलआत्मसत्ताअपणेआपविषेइस्थितिहै॥जैसा
जैसातिसविषेफुरनाफुरताहै॥तैसातैसाहोभासताहै॥हेवधकप्रलभ
वजोकल्पब्रिछहै॥जैसाजैसातिसविषेफुरनाफुरताहै॥तैसाहीहोभासताहै
एकसंकल्पसिधवस्तहै॥अरुद्रिशासिधवस्तहै॥जबइनकीद्रिडभाव
नाहोतीहै॥तबइहदोनोसिधइंद्रीयांकाविषेइहपदार्थहै॥सोद्रिशसि
धवस्तकहीतीहै॥जोइसकीभावनाकरीतीहै॥तबइहप्रापतिहोतीहै
अरुजोअपणेमनविषेआणेहैमनछाडीये॥तोजबलगअथवादेवी
वेशाष्ट्रइवर्णहो॥अथवाग्रहस्तीवानप्रसतीब्रह्मचारीसंन्यासीआश्र
मोइत्यादिकमोनगणसंकल्पसिधहै॥जबलगइनविषेअभ्यासहोता
है॥तबलगआत्मसत्ताकीप्रापतिनहींहोती॥अरुजबआत्मसत्ताका
अभ्यासहोताहै॥तबइनदोनोकाअभावहोजाताहै॥आत्माहीअनच्छअ
नभवकरकेभासताहै॥हेवधकजिसवस्तुकाअभ्यासहोताहै॥तिसीकी
सिधहोतीहै॥जोभावनाकरकेअर्थकुककरफिरनहीं॥तोअवशिप्रापतिहो
तीहै॥अभ्यासविनाकछुसिधनहींहोता॥जैसेकोईपुरुखकहैमैंअम
केदेशजाताहों॥तोजबलगउसकीओरचलेनहीं॥तबअनेकउपावकरभी
नहीप्रापतहो॥जबउसीओरचलेगा॥तबपहुचैगा॥तैसेजोआत्माकाअभ्या
सवहुतएकाग्रहोकरकरेगा॥तबउसकोप्रापतिहोवेगा॥अरुथआत्मपद
कीप्रापतिनहोवेगा॥हेवधकजिसपुरखकोजगतकेपदार्थोंकीइच्छाहै
तिसकोआत्मपदकीप्रापतिनहीहोती॥उहीपदार्थप्रापतिहोवेगा॥अरु
जिसकोआत्मपदकीइच्छाहै॥तिसकोउहीपदप्रापतिहोवेगा॥जगतके
पदार्थनभासहिगे॥जैसीभावनाहोवेगी॥तिसीपदार्थकोदेखेगा॥जिसको
इहभावनाहोवेगी॥जैसेरीदेवतास्वरतहोवे॥तिसकरसेस्वर्गविषेविच
रो॥अरुइकसरूपकरभूःलोकविषेस्वर्गहोणकीभावनाहोवे॥तबदिढ
अभ्यासकरकेउहीरूपहोजाताहै॥काहेतेजोजगतसंकल्पमात्रहै॥जैसा
जैसानिश्चाहोताहै॥तैसाभासआवताहै॥हेवधकदोसरूपकोक्योंआवता
है॥जोमहस्तस्वरतकीभावनाकरै॥तोउनतेहीरूपहोजाए॥अरुजैसीइह
पुरखद्रिडभावनाकरै॥तैसाहीरूपहोजाताहै॥अरुइहअविदकभ्रांतिमा
त्रजगतहै॥इसकीभावनात्यागकरआत्मपदकाअभ्यासकरे॥तबतेरेदु
खमिटजावहि॥२२९॥इ श्री हाप्रावोधाख्यानेनिर्वाणउपदेशोनामस
र्गः॥ स ष्ठ उ स॥हेवधकजैसेअगाधसमुद्रविषेअनेकतरंगफुरते
है॥तैसेहीआत्माविषेअनेकसृष्टफुरतेहै॥जीवजीवप्रतअपणेअप
णीसृष्टहै॥परपरस्परअज्ञातहै॥इककीसृष्टिकोदूसरानहींभासता॥
दूसरेकीसृष्टिकोउनहीजाणता॥जैसेइकहीइस्थानविषेदोपुरखसो

एहोवहि॥ ज्ञानकोअपणीअपणीस्वष्टिसृष्टेविखेफुरआवतीहै॥ उस
कीस्वष्टिकोज्ञानहीजाणता॥ परस्परअज्ञातहै॥ तैसेहीसभस्वष्टाआत्म
विखेफुरतीहैहि॥ परएककीस्वष्टिकोदूसरानहीजाणसकता॥ देव
थकजोधारणाअभ्यासीजोगीहोताहै॥ जिसकोआतिवाहकशरीरः
प्रतक्षहूआहै॥ सोदूसरेकीस्वष्टिकोभीजाणताहै॥ जैसेइकतलावको
काइइहोताहै॥ एककूपकाइइहोताहै॥ अरुएकसमुद्रकाइइहोताहै
सोइस्थाननौभिन्नभिन्नहोतेहै॥ परजलएकहीहै॥ भावेकैसीकाइहो
वेतिसकोजलजाणताहै जोमेरेविखहै॥ तैसेजेगतभिन्नभिन्नहैअनः
कणविखहै॥ परआत्मसत्ताकेआश्रहै॥ आदिजोसंवेदनतिसतेफु
रीहै॥ सोअतिवाहकरूपहै॥ जबअतिवाहकविखेजोगीइस्थितहोता
है॥ तबहोरकेअतिवाहककोभीजाणताहै॥ इसप्रकारअनेकस्वष्टा
त्माकेआश्रेअतिवाहकोविखफुरतीहैसोआत्माकाकिंचनहैफुरती
भीहै॥ अरुमिटिभीजातीहै॥ संवेदनकेफुरनेकरस्वष्टउत्पनहोतीहै
अरुसंवेदनकेठहरनेकरस्वष्टाउत्पतहोतीहैअरुमिटिभीजातीहै
आकाशरूपहोजातीहै॥ आत्मासत्ताहीकेहोणेअरुमिटनेविखइके
रूपहै॥ परस्पंदकेफुरणेअफुरणेकरउत्पनेअरुलीनहोतीहै॥ जैसे
वायकेफुरणेकरसमुद्रविखअनेकतरंगभासतेहै॥ अरुवायकेठह
रणेतेजलइकरूपहोजाताहै॥ जलतेभिन्नतरंगकछुनहीभासता॥ तै
सेफुरणेकरआत्माविखअनेकसृष्टाभासतीहै॥ अरुसंवेदनकेठ
हरनेतेसभआत्मरूपहोजातीहै॥ आत्मातेइतरकछुनहीभास
ता॥ तिसतेइतरप्रमादिकरभासतीहै॥ वडेइकारजकारणश्रमभासताहै
प्रथमजोस्वष्टिउपरीहै॥ सोकारजकारनक्रमतेरहितफुरीहै॥ पाछेकारज
कमभासिआ॥ वडेइतिसकासंस्कारदृढहेविखहूआ॥ तबसंस्कारकेवसते
भासणेलगी॥ प्रथमसंस्कारतेरहितअकस्मातेभासीहै॥ तिसविखे
जितकोसरूपकाप्रमादिनहीहूआ॥ तिनकासदापरब्रह्मकानिश्चाहै
ताहै॥ अरुजगतअपणासंकल्पमात्रभासताहै॥ जिनकोसरूपकाप्रमादि
भयाहै॥ तिनकोसंस्कारदृढकजगतभासताहै॥ अरुसंस्कारभीकछुवस्त
नहीं॥ हेवधकजोजगतहीमिथ्याहै॥ तौतिसकासंस्कारकैसासतहोवे॥ प
रज्ञानवानकोइसप्रकारभासताहै॥ अरुजोअज्ञानीहै॥ तिसकोस्पष्टभा
सताहै॥ हेवधकजैसेतुमसंकल्पकेरचेपदार्थकोअसतजाणतेहो॥ अरु
जैसेस्वप्नसृष्टकोअसतजाणतेहो॥ तैसेहमइसजाग्रतसृष्टिकोभीअस
तजाणतेहै॥ जैसेमृगतृष्णाकाजलअसतभासताहै॥ तैसेहमकोइसज
गतअसतभासताहै॥ वडेइकारजकारणकमसंस्कारहमकोकैसाभास
हि॥ परअज्ञानीकोनीतोभासतेहै॥ हेवधकजबचितसंवेदनबहिर्मुखहो
तीहै॥ तबजगतभासताहै॥ अरुजबअंतर्मुखहोतीहै॥ तबअपणासरूप
कोदेखतीहै॥ जबआत्मतत्वकाकिंचनसंवेदनफुरतीहै॥ तबसभजगत
होभासताहै॥ अरुजबठहरजातीहै॥ तबसभएपनप्रलैहोजातीहै॥ फुरने
कानामसृष्टिकीउत्पति॥ अरुठहरनेकानामप्रलैहै॥ जिसकेआश्रेफु
रणाफुरताहै॥ सोसुधसत्ताअविकृतनिराकारहै॥ सोएअकाररूपहोभा
सतीहै॥ अरुजोआकारणहै अरुनिराकारहै॥ तिसविखआकारणआकार
भासतेहै॥ तौतजाणीताहैजेउहीरूपहै॥ अरुकछुनहीं॥ आकारभीनिरा
कारहै॥ अरुद्विसाहीद्रिष्टरूपहोभासताहै॥ जगतअभासमात्रहै॥ जैसेसमु
द्रकाअभासतरंगहोतेहै॥ तैसेआत्माकाअभासजगतहै॥ सोआत्मासृजं
तविदाकाशहै॥ अरुसर्वजगतकाआत्माहै॥ व क वा हेसनीस्वर

जगतकोअकारणकहितेहो॥ सोकारणविनाकैसेउत्पनसंभवताहै॥ जो
प्रतक्षभासताहै॥ अरजोकारणकरकेउत्पनकहै॥ तौसभवतकिंकरकहितेः
हो॥ चप्रकीस्वष्टिकारणविनाहोतीहै॥ तौतिइहस्वष्टिकारणसहितहै॥ अ
थवाकारणतेरहितहैइहकहहु॥ म ध्वर च॥ हेवधकइहजगतआ
दिअकारणहै॥ आत्माकाअभासहूआहै॥ प्रथमसकारणतेरहितहै॥ सोआ
त्माविखअतिअनअभावहै॥ अरुपदार्थकछुवणतनहीं॥ आत्मसत्ताहीअ
पणआपविखस्थितिहै॥ सोचिदाकाशचिन्मात्रकाकिंचनचेतनताहै॥ जैस
सूरजकीकिरणहोकरअभासजलभासताहै॥ परजडहै॥ अरुआत्माकाकिं
चनभीचेतनहै॥ सोकिंचनसंवेदनअहंभावकोलेकरफुरतीगएहहि॥ जै
सेजैसफुरतीहै॥ तैसातैसाजगतहोकरभासताहै॥ सोजगतहीभया॥ तबल
गजगतकारजकारणसहितभासताहै॥ प्रथमअकारणफुरीहै॥ पाछे
देवतामानुखपशुपंछीप्रथवीजलतेजवायुआकाशपदार्थोकीमर्जा
दाभयाहै॥ वधअरुमुक्तकीनेतहूएहै॥ सोज्योकीत्योहै॥ तावतलगीत
लहै॥ अमठलहीहै॥ जैसेजैसेतिनहूएतैसेहीइस्थितिहै॥ अरुजब
आत्मसत्ताविखजागताहै॥ तबजगतकारजकारणसहितभास
तानहीं॥ जैसेस्वपनकीस्वष्टिप्रथमअकारभासआवतीहै॥ जबदृढ
होजातीहै॥ तबकारणसोकारजहोतेद्रिष्टिआवतेहै॥ स्वपनका
विनाछुटनहींवणता॥ अरुजागिउठेतबसर्वजगतआत्मरूपहोजा
ताहै॥ हेवधवडेकजगतसंवेदनविखइस्थितिहै॥ जबलगअहं
भावकोफुरणाहै॥ तबलगजगतहै॥ जबअहंभावमिटताहै॥ तबस
र्वजगतस्वपनेअकाशवतहोजाताहै॥ जबलगअहंताफुरतीहै॥ तबल
गनानाप्रकारजगतभासताहै॥ जैसीभावनाहोतीहै॥ तैसाभासताहै
सर्वपदार्थसर्वदाकालअपणीअपणीधारणाविखजैसीआदितेत
हूएहैतैसइस्थितहै॥ जोजोवजसीक्रियाकाअभ्यासकरेगा॥ तिसी
कफलकोपावेगा॥ जोबधनकोपावेगा॥ जैसीक्रियाकरेगातैसाफल
पावेगा॥ जोसाधुकेतसिंतकरेगासोसाधुपदवीपावेगा॥ असोहीआ
दितेतहूएहै॥ हेवधकइसप्रकारकचनहोकरमिटिजाताहैहि॥ अ
रुआत्मसत्ताज्योकीत्योहै॥ जैसेसमुद्रविखतरंगहोकरमिटिजातेहै॥ अ
रसमुद्रज्योकात्योहै॥ तैसेआत्माविखजगतउपजतेमिटतेहै॥ परआत्मा
ज्योकात्योहै॥ अरुजोजगतप्रलैउत्पतिभ्रमहै॥ जैसेहाथीअपणेहठको
पसारेअरुसकोचे॥ तैसेचितसंवेदनकेपसरणेकरजगतउत्पतहोता
हैहि॥ अरुअस्पंदविखप्रलैहोताहै॥ २३॥ इ श्री व का॥ णाउ
नामसर्गः॥ म ष्ठ उ वे॥ हेवधकइहसपूरणजगतचिदअणुके
उदरविखहै॥ अरुतिससंबंधकेअभ्यासकरकेआत्माचिदअणुकोस
रणकोपावतभयाहै॥ उजकहीए॥ अंतःकरणकहीए॥ चिदाकहीए
तीनोअभेदहै॥ तिसविखइस्थितचेतनभासताहै॥ वाहरतेस्तनकरूपव
तहोताहै॥ अरुतिसविखजीवनरूपहै॥ तहावेइप्रकाशकरप्रकाशती
है॥ तिससत्ताकाआगेचितसाथसंजोगहूआहै॥ चितअरुप्राणके
त्याकासंजोगहै॥ हेवधकजबप्राणक्षुभतेहै॥ तबचितखेदकोप्रापतिहो
ताहै॥ अरुजबचितखेदकोप्रापतिहोताहैतबप्राणभीखेदपावतेहै॥ अरु
जबप्राणइस्थिरहोतेहै॥ तबजीवध्यानकोप्रापतहोताहै॥ अरुजोप्राण
इस्थिरनहीहोते॥ तबजीवजाग्रतस्वप्नसुखोपततीनोअवस्थाविखभट
कताहै॥ जाग्रतस्वप्नसखोपतअवस्थाभिन्नभिन्नजिसप्रकारआवतीहै॥

सोसुराण ॥ हे वधक जब इह पुरुष स्वप्न भोजन तक करता है ॥ सो जाग्रत वाली न
होउ पर जाइ इ स्थित होता है ॥ तब उह नाड़ी रोगकी जाती है ॥ तिसकर स्वस
पन आवती है ॥ जिन नाड़ीयो विषे तिनकी भिन गए हुए ॥ जाग्रत जगत
को देखती है ॥ सो जाग्रत नाड़ी कही ती है ॥ तिस उपर अब जाग्र इ स्थिति हो
ता है ॥ तब स्वपन होती है ॥ अत्र जो जीव भोजन करता है ॥ सो इह देह पर जा
इ स्थिति होता है ॥ अरु चिन समता जो चिन विषे प्रतिबिंब नह ॥ सो चिन ना
डी तिसके तल्ले आई जाती है ॥ तब प्राणवायु भी तिस नाड़ी विषे ठहर जाती
है ॥ अरु चिन एस्पंद भी ठहर जाता है ॥ तब सुखपति होती होती है ॥ अरु जा पि
तब क्रुत होता है ॥ तब सज्जे श्रम आदिक उस पदार्थ है ॥ तिनको देखता है ॥ जो
ब बहु अन्न पचता है ॥ अरु उन नाड़ीयो विषे प्राण जाते है ॥ तब स्वप्न अवस्था
आवती है ॥ जब जल कफ करणको वायु बहुत होता है ॥ तब जीव स्वप्ने विषे
उड़ता है ॥ अरु जो कुछ बहुन होती है ॥ तब जलको देखता है ॥ नदीया अरु
ताल देखता है ॥ तिन विषे नावता इ बताहै ॥ जब उन नाड़ीयो विषे अन्न ज
ल जाइ पचता है ॥ तब जाग्रत अवस्था होती है ॥ इस प्रकार जीवती मो अव
स्था विषे भटकता है ॥ जगत तक कछु अंतर है ॥ तथा है जह ॥ केवल अहं मस
त्म सता है ज्या कोत्या भासती है ॥ तिसके प्रमादिक वैचिन की भिन जबवा इ
मुख पुराती है ॥ तब जगत को देखती है ॥ अरु जब बाहज अको इंद्रीयो कोत्याग
करके अंतर आवती है ॥ तब अंतर स्वप्न जगत को देखता है ॥ अरु जो है तब अपरो
क्ष भाव विषे स्थिति होती है ॥ तब हो रक ल्पना मिटि जाती है ॥ सर्व ब्रह्म
ही भासता है ॥ ताते सर्व कल्पना कोत्याग कर अपरोक्ष सत्रूप विषे इ स्थि
त होवो ॥ २३१ ॥ इ श्री अ स स प वि रा म ॥ सर्गः ॥ स व
उ च हे वधक इह मौन अवस्था होती है ॥ अरु मिटि जाती है ॥ इनके
अनभव क गोवालो जो सता है ॥ सो आत्म सता इ करह सहे सर्व दा काल
जिस पुरुषको अपरोक्ष रूप का अनभव भया है ॥ तिसको नीता अव
स्था अपरोक्ष चन भासता है ॥ अरु जिसको प्रमाद है ॥ तिसको जगत भास
ता है ॥ अरु इह जगत चिनका कल्प्या हुआ है ॥ जब इंद्रिया विषे अहंके स्व
रव होती है ॥ तब जगत को देखती है ॥ तिस मनके कल्प जगत को देखकर राग
द्वेष वान होती है ॥ बहुर इंद्रियो के अर्थको पाइ करजीव हर्ष अरु शोक
वान होता है ॥ हे वधक जिसचिदअण को इंद्रीयो मार्ग संबंध है ॥ तिसको स
मार का अभाव नहीं होता ॥ नेत्र तु वा जिह्वा नासिका श्रोत्र कर्ण आपको दे
खना स्पर्श करती करत लेता है यता मगणता भासता है ॥ तब समारी होकर
दुख पावता है ॥ जब इन के अर्थ को त्याग कर अपरोक्ष भाव को प्राप्त आवता
है ॥ तब सर्व जगत को आत्म रूप जाण कर सुखी होता है ॥ हे वधक चिन
के फुरणे का नाम जगत है हि ॥ अरु चिन के इ स्थिति होणे का नाम ब्रह्म है
जगत अरु कछु बस्तुन हो ॥ इसी का अभास है ॥ चिन के आश्रय सभ नाड़ी है
तिन विषे इ स्थिति होकर जीवती नो अवस्था को देखता है ॥ वास्तव तें अह
जीव चिदाकाश आत्मा है ॥ अज्ञानकर जीव संज्ञा को प्राप्ति भया है ॥ हे व
धक राजथान जाइ है हिदा तिस विषे चिद अणु इ स्थिति होकर ॥ दीपक
ज्ञान वत प्रकाशता है ॥ तिसका जन के आश्रय सभ नाड़ी है ॥ सो अपरोक्ष प
रोक्ष को ग्रहण करती है ॥ तब इह प्राणी भोजन करता है ॥ अरु अन जो यत
नाड़ी विषे प्रवेश होता है ॥ तब अन्नाय न का अभाव हो जाता है ॥ चिन की भि
नता कप्राण आवरो जाव रोतन रहि न हो जाते है ॥ उह नाड़ी सु दो जाती है
बहुर इ जब के छ नाड़ी विषे प्राण पुरने है ॥ तब स्वप्न भासता है ॥ हे वधक
जब इंद्रीको ग्रहण के चिन भिन वाह रोरनिक सती है ॥ तब जाग्रत जगत

होभासता है ॥ अरु जब तन्मात्र को लेकर चिनकी भिनउ जथा विवेक उपजती
है ॥ तब स्वप्न भासता है ॥ अरु जब उजथानउ पर अन्न आदिक द्रव का बाहु
आन पड़ता है ॥ तब सुखपति होती है ॥ अरु जब निद्रा का अरु जाग्रत का दो
नाइन का बल होता है ॥ तब दोनो भासते है ॥ अरु जो इक का बल अधिक हो
ता है ॥ दोनो विषे न उह ही भासता है ॥ भावे स्वपन ॥ अरु जो निद्रा ते वासे
तमे दस कल्प होता है ॥ तब तिसको मनोराज कहीता है ॥ अरु जो वासना ज
के विवेक को त्याग कर अन जाती है हि चिन की भिन नव स्वप्न होता है ॥ नहो
फिर जिस थान विषे जाता है ॥ तिसी के अनुसार जगत भासता है ॥ कफ के
ल लकर चन्द्रा अरु रवी रस सुहद नदी या ताल जल साथ पूरण ॥ अरु कल्प
विच्छ फल फूल बगीचे पुष्प रतन हिमाल विच्छे सदरह सी आ ॥ अरु बल्ली
बावली या इत्यादिक सदर अरु पीत लइ स्थान देखता है ॥ जब पित्तो का बल
अधिक होता है ॥ तब सहजे अग्नि अरु रक्त के विच्छ फल टास देखता है ॥ अरु स
ध्या काल के मेघो की लाली देखता है ॥ तब इस्थान को अग्न लागी देखता है ॥
अथवी अरु रतननयो हुए देखता है ॥ मारु थल की नदी द्रिष्टि आवती है ॥
जल उसल लागता है ॥ हिमालय का शिखर उसल लागता है ॥ इनते आदि ले
करउ सरा पदार्थ द्रिष्टि आवते है ॥ अरु जब उको देखता है ॥ परवत पा कौव
रवा होती द्रिष्टि आवती है ॥ अरु अथैक पाविव गिरता है ॥ रखी ओडदोउ तदिष्टि
आवते है ॥ आपको उड़ता फिरता देखता है ॥ अपछरा के पाछे दोड़ता है ॥ पहा
ड़ो की वर्षा होती है ॥ वाण तीखा वेगा करचलती है ॥ इन ते आदि लेकर पदार्थ
लते द्रिष्टि आवते है ॥ अरु विश्रान्त होकर भासते है ॥ इस प्रकार पित्त कफ के
सप्र विषे जगत देखता है ॥ जिसका बल विशेष होता है ॥ तिसका थमें विशे
ष द्रिष्टि आवता है ॥ वासना के अनुसार छोट बड़ राजसी सात्विकी तामसी पदा
र्थो को देखता है ॥ जब तीनो इकटे होकर कोपते है ॥ तब प्रलय काल द्रिष्टि आव
ती है ॥ हे वधक जब लग वात पित्त के असमसाय मिल्या हुआ ॥ कफ के इस्थान
विषे प्रवेश करती है ॥ पर यह प्रकार न बल गरम समान जलके खाभ भासते है ॥ प
सप्रकार वात पित्त कफ जिसके इस्थान विषे जाता है ॥ हार वनो के स्वभाव कोल
ता है ॥ तब बल गरम समान खाभ भासता है ॥ अरु जब उके बल वात का खोभ होता है
नव महाप्रलेकाल के पवन चलते है ॥ अरु पहाड़ो पर पहाड़ गिड़ते है ॥ ज
प आवते है ॥ इस मनके खोभ होने है ॥ अरु जब कफ का होता है ॥ तब समुद्र
होउ छलते है ॥ अरु पितो के रथ लागती है ही ॥ सहा प्रलेवत तनन खोभ
वान होते है ॥ जब प्राणजा अन्न नाड़ी विषे जाती है ॥ अरु उह अन्न करि रसहो
ती है ॥ तब जीव उसके नीचे आइ जाता है ॥ तिसके थके नीचे इइ आवे ॥ अरु जो
सेका इह की पुतली का इह विषे होवे ॥ जैसे एन विवे आकाश बानही रहता
तैसे तिस नाड़ी विषे पुरने का अकाश न हीर हता ॥ शोकी जाती है ॥ तब
उसको सुखपत हो जाती है ॥ जब कछु अन्न पचता है ॥ तब चिन सेवन
अपरोक्ष अंतर सुझा देखता है ॥ जिस जिस तत्व का विकार विशेष होता है
तिसी का कारज देखता है ॥ जब अन्न अरु जल पचता है ॥ तब बहुर इ जा ग्र
त जगत को देखता है ॥ अरु जब जाग्रत अरु स्वप्न दोनो का बल समसह
ता है ॥ तब दोनो को देखता है ॥ अनभव करता है ॥ हे वधक इस प्रकार तीनो
अवस्था होती है ॥ अरु मिट जाती है ॥ सो तीनो अपरोक्ष करहो ती है ॥ इनका
द्रिष्टा इनको अनभव करने वाला है ॥ सो तुरीयाते अतीत है ॥ अरु सर्व का
आत्मा है ॥ अरु इह जगत अरु स्वप्न जगत सकल्प मात्र है ॥ वरणि आके
छुनहीं ॥ बलते सत्ता होकर चन के जगत रूप हो भासते है ॥ पर अतीती
तिसको जगत जाणते है ॥ जगत को सत जाणकर अहं अनिष्ठ विरव

रागद्वेखकर्तेहै ॥ जबवाह्यजकीइंद्रीसुखपनहोजातीहै ॥ तबअंतरस्वप्नवि
खेभटकताहै ॥ तिसविखेसुजैसेंद्रमावनफूलफलब्रिक्षआदिकजगत
कौदेखताहै ॥ अरुजबसत्रूपकाअनभवहोताहै ॥ तबसभभटकणामिट
जातीहै ॥ सतपदकोप्रापतिहोताहै ॥२३२॥ इ श्री ब्र ग्र स प
व न म स र्गः ॥ व उ च ॥ हेमुनीश्वरउसपुरुखकेविदेविखेतुमजो
जगतअरुप्रलैदेखीथी ॥ तिसकेअंतरक्याकर्तेभए ॥ अरुक्याअवस्थादेखी
म स्व उ व ॥ हेवधकतिसकेचितस्पंदविखेमैदेखताभया ॥ तावडे
बडेपश्चातुप्रलैकीवाएसाथसूर्णाहुआतिसकरीकेतीनपरजाएहै ॥ सा
सभसतनमात्रकेहै ॥ जोवस्तुसतरूपहै ॥ अरुदेशकालवस्तुकेपरछेदतेरहि
तहै ॥ सोसतनमात्रहै ॥ तिससतमात्रविखेअरुकछुवर्णाआतनहीं ॥ जिसकेसभ
परजाएहै ॥ सोउहीरूपहै ॥ उहीसततवस्तुअपणाआपविखेविराजताहै ॥ अ
चित्तअन्यथाभावकोनहींप्रापतिहोता ॥ कचनविखेभीउहीरूपहै ॥ अरु
अकचनविखेभीउहीरूपहै ॥ आत्माहीकानामसुखपनहै ॥ तिसीआत्मा
तेसभजगतहोताहै ॥ तिससत्ताकानामसुखपनहै ॥ उहीसतद्विधाहोकर
भासताहै ॥ उसमतइतवकछुनहीं ॥ तेसेवाइस्पंदअरुनिस्पंदविखेउहीरू
पहै ॥ तेसेआत्मादोनोअवस्थाविखेइकहीहै ॥ हेवधकइसमसारविद्याको
बुधविखेहोरकछुवर्णाआतनहीं ॥ सदाज्योकात्योइस्थितिहै ॥ इसशरीरकेआ
दिभीअरुअंतभीउहीहै ॥ तिसविखेजोकचनउआवाहीकरभासिआहै ॥ सो
भीउहीरूपहै ॥ जैसेसुखपतिविखेवासनाअरुजाग्रतभासिआवतीहै ॥ सोउ
हीरूपहै ॥ जिसपिंडोफुरीहै ॥ जिसविखेभासतीहै ॥ सोतिसतेइनकुछन
हीं ॥ अरुतेसेइहजगतआत्माकाकचनआत्मरूपहै ॥ जबतूजागिकरदेखता
तबतककोआत्मरूपभासेगा ॥ जैसेस्वप्नपरमअरुसंकल्पनगरकाअनुभ
वहोताहै ॥ अरुअकाशरूपहै ॥ तेसेइहजगतसभअकाशरूपहै ॥ वाकोभी
उहीहै ॥ सर्वथात्माआत्माहै ॥ निहकिंचनभीउहीहै ॥ अरुकचनभीउहीहै
जोवाणीकरकहयानहींजाता ॥ तिसअवस्थाविखेज्ञानीपुरखइस्थित
है ॥ हेवधकज्ञानवानकोअनभवकरकेप्रतछअनभवरूपभीभासताहै ॥
जैसेस्वप्नविखेजीवअरुईश्वरभिन्नभिन्नभासताहै ॥ उपादककेभेदभास
ताहै ॥ वास्तवतेभेदकछुनहीं ॥ तेसेजाग्रतविखेउपादज्ञानकरकेभेदभा
सताहै ॥ सद्रूपतेआत्माइकरूपहै ॥ जबअज्ञाननिवर्तहोताहै ॥ तबसर्व
आत्मरूपभासताहै ॥ हेवधकसर्वजगतअपणासरूपहै ॥ अरुअज्ञानकरके
भेदहोताहै ॥ जबआपकोजाणतबहुतभेदअरुभ्रममिटजावे ॥ जैसेकोऊ
पुरुखअपणीभुजापरमित्रकाभूतलिखे ॥ अरुउसतेभैकरदौडताफिरे ॥ अ
रुकछुज्ञानहोवे ॥ सोप्रमादकरकेभैपावताहै ॥ उहतोअपणाहीलिखिआहै
जबअपणाजाणेतबभैमिटजावे ॥ तेसेसद्रूपज्ञानकरजगतभैमिटजा
ताहै ॥ जैसेस्वप्नविखेअज्ञानकरकेनानात्वभासताहै ॥ परवणाआकछुन
हीं ॥ तेसेजाग्रतविखेनानात्वभासताहै ॥ परकछुहुआनहीं ॥ जबइह
पुरुखअंतरमुखहोताहै ॥ तबइसकाबाधकीद्रिढताआवताहै ॥ जेसेसू
र्जकीकिरणजिउंजिउंप्रगटहोतीहै ॥ तिउंतिउंसूर्जमुखीकमल
खिडतेहै ॥ तेसेजोजोअंतरमुखहोताहै ॥ तिंतिबोधखिडताहै ॥ विषयोंते
वैरागकरणाअरुआत्माकाअभ्यासकरणा ॥ इसकरबोधअंतरमुखीहोतीहै
अरुआत्माकीप्रापतिहोतीहै ॥ तबसर्वआत्माइकरसभासताहै ॥२३३
इ श्री ख न मे ना सर्गः ॥ स्र घ उ व ॥ हेवधकतबमैंउस
पुरुखकीसुखपनविखेजाकरजगतकोदेखताभया ॥ जेसेकोऊपुरु
खसमुद्रपिंडोनिकसिआवे ॥ अरुजैसेसंकल्पकीसिद्धिफुरिआहै ॥ जेसे

अकाशपिंडोबदलफुरआवतेहै ॥ जेसेब्रिक्षपिंडोफलनिकसिआवताहै
तेसेउसकोसुखपतपिंडोसृष्टिनिकसिआए ॥ मानोअकाशपिंडोउडिआ
एहै ॥ मानोकल्पब्रिक्षपिंडोनिकसिआएहै ॥ मानोचिंतामणपिंडोनिक
सिआएहै ॥ जेसेशरीरकेरोमखडेहोआवतेहै ॥ जेसेगंधर्वनगरदेखावताहै
जेसेप्रिथवीपिंडोअंकुरनिकसिआवताहै ॥ तेसेवाछिहठराए ॥ जेसेकथपरपु
तलीलिखीआहोवहि ॥ जेसेथंभविखेअनेककरीपुतलीआहोवहि ॥ तेसे
मैंसिद्धाकोदेखताभया ॥ जेसेथंभविखेपुतलीआनिकसीनहीं ॥ अरुशि
ल्पीकल्पनाकरहि ॥ जोएतीपुतलीआनिकसहिंगी ॥ तेसेअगाहज्ञानीसृष्टि
आत्मरूपीथंभपिंडोनिकसतीहै ॥ अरुआत्मरूपीमाटीपिंडोपदार्थरूपी
वासनानिकसतेहै ॥ परइहअपछेहै ॥ जोअकारविखेचित्रहोतीहै ॥ अरुनि
राकारचेतनअकाशविखेपुतलीयांमनकल्पताहै ॥ हेवधकजेसेअका
शविखेमकरीकेसमूहनिकसिआवतेहै ॥ तेसेसुपनअकाशपिंडोनिकसी
ति... पात्वकसभपुरुखकेहृदेविखेसृष्टिभासणलागीमुझको ॥ अरुदेश
कालक्रियाइसभककेअकाशमात्रतेसतपदार्थअसतभासणेलगतेहै ॥
अरुअसतपदार्थसतभासतेहै ॥ तेसेअभ्यासकेबलकरमुझकोपुरुखके
पिंडेविखेसृष्टिभासनेलगी ॥ जेसेमनमेंतरंगउठथी इहतकेबलकरकेअस
तपदार्थसतभासतेहै ॥ हेवधकजेसानिश्चासवनविखेद्रिढहोताहै ॥ ते
सोरूपहोभासताहै ॥ वास्तवतेनकोऊपदार्थहै ॥ नअंतरहै ॥ नबाहरहै ॥ नजा
ग्रतहै ॥ नस्वप्नहै ॥ नसुखपतहै ॥ इहसभअतिघरसकेअंतरहीइस्थितिहै ॥
णअप्रमादिदोखकरकेबाहरजिमपिंडोफलउत्पतहोतेदेखताहै ॥ जेसेस्वप्न
विखेसभपदार्थअपणेअंतरहोतेबाहरजिमभासतेहै ॥ तेसेइहपदार्थअं
पणेअंतरतेबाहरजफुरतेभासतेहै ॥ हेवधकइहजगतजोअकारसंजुग
तिद्रिष्टिआवतेहै ॥ सोसभनिराकाररूपहै ॥ अरुकछुवणिआनहीं ॥ ब्रह्म
सत्ताहीअज्ञानकरजगतरूपहोभासतीहै ॥ जोज्ञानवानपुरुखहै ॥ तिनको
जगतनसतभासताहै ॥ नअसतभासताहै ॥ केवलब्रह्मसत्ताअपणाआप
विखेइस्थितिहै ॥ जोअज्ञानीहै तिनकोभिन्नभिन्ननामरूपजगतभासताहै
अरुजबचितकीब्रितबाहरजफुरतीहै ॥ तबतिसकोजाग्रतकहीताहै ॥ अरुजब
अंतरफुरतीहै ॥ तबतिसकोजाग्रतस्वप्नकहीताहै ॥ अरुजबअंतरइस्थितहोतीहै
तबतिसकोसुखपतकहीताहै ॥ नोएकचितब्रितकेहीतीनोपरजाएहुए ॥
अरुकछुवास्तवतेनहीं ॥ इसजगतकेआदिमधकेवलआत्मसत्ताथी ॥
तिसविखेचितसंवेदनफुरी ॥ तबहीजगतरूपभासणेलागी ॥ अरुकिसी
कारणतेजगतउपजानहीं ॥ जिसकाकारणकोऊनहीं ॥ तिसकोअसतजा
नीये वास्तवतेकछुवणिआनहीं ॥ सर्वजगतआतनरूपब्रह्महीहै ॥२३४
इ ति श्री पि वो प स्या ने स स्व प ति व री ने न म स र्गः ॥ व ल्मीक उ वाच ॥ हेमुनी
श्वरप्रलेकेअंतरसमकाक्याअनभवहुआथा ॥ पुरखोकेअंतर ॥ मुनीश्वर
उवाच ॥ तबमुझकोतिसकेअंतरसृष्टिफुरीआए ॥ अपणापुत्रकलत्रइस्त्री
संघरणाकुटंबभासिआया ॥ तिनकोदेखकरमुझकोममताफुरीआए ॥
अरुपरवलीस्मरतिमुझकोभूलगए ॥ खोडशवर्षकीअवस्थामुझको
भासी ॥ अरुइसतआश्रमविखेमैंइस्थितभया ॥ रागद्वेखसहितजीवेकाथ
मैंमुझकोफुरीआया ॥ काहुनेजोद्रिढबोधमुझकोहुआनथा ॥ हेवधक
जबद्रिढबोधहोताहै ॥ तबरागद्वेखआदिकजीवधर्मचलाइनेहींसक
ते ॥ संसारकोसतजाणकरवासनाउसकीनहींहोती ॥ इसकारणतेचलाए

मानतनहीहोता॥ अरुजिसकोबोधकीदृढ़तानहीं॥ तिसकोजगतकीवा
सनारूपस्वलेजातीहै॥ हेवधकअवस्तुरूपकोदृढ़बोधहुआहै॥ ताने सम
रकीवासनारूपकोचलाइनहींसकती॥ परंतुसपिशाचनीकावसवास
नहीं॥ इहमहामायाहै॥ इसकोतरणासहाकठनहै॥ इहपिशाचनीवडेम
हावलीहै॥ काहेतेजोचिरकालइसकाअभ्यासहुआहै॥ इसकारणतेवला
इलेजातीहै॥ जवसतशास्त्रोविचारअरुसंतोंकासंगइसजीवकोंप्रापति
होताहै॥ अरुअभ्यासदृढ़होताहै॥ तवद्रिशाकासभभावनिवर्तहोताहै॥ ज
वलगइहउपाइमोक्षकाप्रापतिनहीभया॥ तवलगइहभ्रमदृढ़होरहा
है॥ यातेवडेदृढ़द्रिशाभ्रमदृढ़होआवताहै॥ जदपिअविदमानहै॥ कछुव
स्तनहीं॥ तोभीइहकणाकठनहोरहाहै॥ जवसंतोंकेसंगअरुसतशास्त्रोंके
विचारकरीएसकोइहविचारउपजे॥ जेमैंकोनहोंअरुइहजगतक्याहै॥ इ
सकोविचारकरआत्मपदकादृढ़अभ्यासहोवे॥ तवद्रिशाभ्रममिटजाता
है॥ काहेतेजेअसम्यकद्रिष्टिकरकेजगतदृढ़भास्याहै॥ [illegible] ते
हुआ॥ तवजगतकासदभावकैसेरहै॥ जैसेअकाशविखेनीलताभ्रमकर
भासतीहहि॥ जैसेवाजीगारकीवाजी॥ अरुजीवडीविखेसर्पभ्रमकरकेभा
सताहै॥ तैसेआत्माविखेजगतभ्रमकरकेभासताहै॥ तवअपणासरूपविखे
जागताहै॥ तवजगतभ्रममिटजाताहै॥ जवलगसरूपविखेजागतानहीं
तवलगतेभ्रमनहींमिटता॥ वधक उवाच॥ हेमुनीश्वरउहतुमसतकहतेहो
जोजगतभ्रमसमिटनाकठनहै॥ मैंतुमारेमुखतेवारवारसुनताहो॥ अरुवि
चारताहो॥ अरुपदपार्थकाज्ञानसरूपकोदृढ़होगयाहै॥ परंतुसारभ्रमनि
वर्तनहीहोता॥ इहमैंजाणताहों॥ अरुमानताभीहों॥ जोसंतसंगअरुस
तशास्त्रोंकेविचारविनाप्रापतनहीहोती॥ इहसंसारसरूपकोहोताहै॥ जो
तुमजाग्रतजगतकोसुपनवतकैसेकहतेहो॥ कएपदार्थसतभासतेहै॥
कएअसतभासतेहै॥ मुनीश्वरउवाच॥ हेवधकइहजेताकछुजगतसत
प्रथवीआदिकपदार्थ॥ अरुअसतससेकीसिंघआदिकभासतेहै॥ सोस
भअसतरूपहै॥ जैसेसुपनेविखेसतअरुअसतपदार्थभासतेहै॥ सोसभ
असतरूपहै॥ तैसेइहजगतअसतरूपहै॥ तिसविखेअल्पप्रतीतका
अरुचिरकालकीप्रतीतकाभेदहै॥ जाग्रतचिरकालकीप्रतीतहै॥ तिस
करपार्थसतभासतेहै॥ अरुसुपनअल्पकालकीप्रतीतहै॥ तिसकरसुपन
पदार्थअसतभासतेहै॥ परदोनोभ्रमरूपहै॥ अरुअसतहै॥ इसकरकेमैंत
लकहिताहो॥ अरुइहसभजगतसुपनमात्रहहि॥ तिसविखेसतक्याक
हो॥ अरुअसतक्याकहो॥ जैसेसुपनेविखेइहपदार्थसतभासतेहै॥ कएअ
सतभासतेहै॥ सोसभहीअसतरूपहोतेहै॥ तैसेजाग्रतविखेकएपदार्थ
सतभासतेहै॥ कएअसतभासतेहै॥ परदोनोभ्रममात्रहै॥ सोसभहीअ
सतरूपहोतेहै॥ तैसेजाग्रतविखेकएपदार्थसतभासतेहै॥ कएअसत
भासतेहै॥ परदोनोभ्रममात्रहै॥ तातेअसतहै॥ हेवधकप्रतीतकाभेद
है॥ पदार्थोविखेभेदकछुनहीं॥ जिसविखेप्रतीतदृढ़होरहीहै॥ तिस
कोसतकहताहै॥ अरुजिसविखेप्रतीतदृढ़नहीं॥ तिसकोअसतकहै
ताहै॥ एकअसपदार्थहै॥ जोसुपनेविखेउनकीभावनादृढ़होगएसोजा
ग्रतविखेभीप्रतछआनभासतेहै॥ अरुमनोराजकीदृढ़ताजाग्रतहुइप
होजातीहै॥ सोभावनाकीदृढ़ताहै॥ अरुभेदकछुनहीं॥ जिसविखेभा
वनादृढ़होगएहै॥ सोसतभासनेलागाहै॥ जोज्ञानवानपुरुषहै॥ ति

नकोजगतसंकल्पमात्रभासताहै॥ संकल्पतेइतरकछुनहीं॥ जगतकाइ
पसंकल्पतेभिन्नकछुनिकसतानहीं॥ तिसविखेसतक्याकहों॥ अरु
असतक्याकहो॥ सभजगतभ्रांतिमात्रहै॥ प्रमादिककेनानाप्रकारकेपदा
र्थभासतेहै॥ जोज्ञानवानहै॥ तिनकोसतअसतकछुनहीभासता॥ ति
नकोसभज्ञानरूपभासताहै॥ अरुजिसकोसुपनेविखेजाग्रतकीस्मिरन
आएहै॥ तिसकोवडाइसुपननहीभासता॥ जैसेजिसकोजाग्रतरूपसुपने
विखिबोधकीस्मिरनभएहै॥ सोवडाइमोहकोप्रापतनहीहोता॥ तातेति
नकोउजाग्रतहै॥ नसुपनहै॥ तिनकोउनेतहै॥ काहेतेजोनेतभीकछुहो
रवस्तनहीनिकसती॥ जैसेसुपनेविखेनानाप्रकारपदार्थभासताहै॥ जो
ज्ञानवानहैतिनकोसतअसतकछुनहीभासता॥ तिनकोसभज्ञानरू
पभासताहै॥ अरुजिसकोसुपनेविखेजाग्रतकीस्मिरनआएहै॥ तिस
कोवडाइसुपननहीभासता॥ तिनकीमर्जादानेतभासतीहै॥ तोउहीनेत
किसकरीहै॥ सभज्ञानरूपहोतीहै॥ संवेदनकेफुरणेकरनानाप्रकारके
पदार्थभासतेहै॥ तिसीविखेनेतभीभासतीहै॥ तातेनेतकोउजगतहै
नेतेतहै॥ इसकारणतेनेतकोउनहीं॥ कारणविनाहीजगतअकाशमात्र
नेफुरिआवताहै॥ अरुमिटभीजाताहै॥ संवेदनकेफुरणेकरजगतफुरिआव
ताहै॥ संवेदनकेमिटनेतेमिटजाताहै॥ तातेजगतसंवेदनरूपहै॥ जैसेवायु
स्पंदरूपहोतीहै॥ तैसेसंवेदनहीजगतरूपहोभासतीहै॥ अरुजैसेवाइ
स्पंदरूपहोतीहै॥ तवफुरणारूपहोभासतीहै॥ अरनिस्पंदकोनहीजाण
सकीता॥ परवाइकोदोनोहीतुलहै॥ तैसेचित्तसंवेदनकोविखजगतभी
सताहै॥ अरुठहरणेविखेजगतकाचननमिटजाताहै॥ फुरणाअरुठहरणादो
नोउसकेकचनहै॥ आपदोनोविखेतुलहै॥ हेवधकुतेतभीअज्ञानीकेसम
झावणेनिमितकहीहै॥ सत्ताभीअसततहै॥ सभकोउनजाणतानाहै॥ अरुहैने
काहेतेजाग्रतविखेसिद्धहोतादिष्टिआवताहै॥ कोउकहताहै जोजा
ग्रतविखेसुरूकोसुपनआयाहै॥ असमकाकारजअसप्रकारहोवेगा॥ सोजाग्रत
विखेहोतादृष्टिआयाहै॥ अरुपुत्रकोपिताकहिजाइहै॥ सेरीगतकेवाअ
रुअसमकेइस्थानविखिदृढ़वपडाहै॥ तुसकाउठलेवो॥ सोउसीप्रकारहोता
दृष्टिआयाहै॥ जोनेतहोततोकारजकोउसिद्धनहीहोता॥ सामाप्रन
छुहोताहै॥ तातेनेतभीकछुवस्तनहीं॥ जाग्रतनामतिसकाहै॥ जिस
कोआत्मासभदकहीता॥ तिसआत्मातेइतरकछुनहीं॥ अरुजिसकोन
मजाग्रतकहितेहो॥ सोकछुवस्तनहीं॥ जाग्रतनामजोमनसहितषटइ
द्रीयोकीसंवेदनहोवे॥ सोतासुपनेविखभीमनसहतषटइंद्रियोंकीसंवे
दनहोतीहै॥ तिनकेविखेअहणहोतेहै॥ तातेजाग्रतभीवस्तकछुनहीं
जोजाग्रतविखेअर्थसिधहोताहै॥ अरुउहीसुपनविखेभीहोवेतोजाग्र
नवस्तकछुनहैआवेगा॥ जिसकाधर्महोरसविखेपाइया॥ अरुजोहैकेहै
सुपनाकुछवस्तहै॥ तोसुपनाभीकछुवस्तनहीं॥ सुपनातहोहोलाइहि॥ जो
होतिद्राभ्रमहोताहहि॥ सतोआत्मसत्तासदाजाग्रतजोतहै॥ अनिद्रित
विखसुपनाकैसेहोवे॥ तातेआत्माविखेनजाग्रतहै नसुपनहै॥ केवलसुध
चिन्मात्रसत्ताहै॥ जगतनिसकाकवनहै॥ जैसेरतनकीलाटचमत्कारहो
ताहै॥ सोलाटरतनतेइतरकछुवस्तनहीं॥ रतनहीकाप्याहै॥ तैसेजाग्रत
सुपनजगतआत्माकाचमत्कारहै॥ सोवोधसत्ताकेवलअपणेआपविखे
इस्थितिहै॥ अरुअनंतहै॥ तिसविखेजगतकछुवणाआनहीं॥ जोआत्मा

व॰
म॰
५४

९६

तेइतरजगतभासताहै॥सोनाशरूपहै॥आत्मासदाअविनाशीहै॥चितकाअसं
भवकेसेकहीये॥वसिष्ठउवाच॥हेरामजीइसकाकारणकोईनहीं॥तातेचेत
काअसंभवहै चेतनअसदामुक्तअरुअवाच्यपदहै॥रामउवाच॥हेभगवनजोइस
प्रकारहै॥तवजगतकाजानणातत्वोंकाउद्गणीकेसेहोताहै॥अहंत्वआदि
हैतकहांतेआयाहै॥वसिष्ठउवाच॥हेरामजीकारणकेअभावतेइहजगतके
तुआदितेउपजानहीं॥सर्वशांतरूपहै॥अरुनानाभासतीहैसोभ्रांतिमात्रहै॥
रामउवाच॥हेभगवनप्रकाशरूपसर्वदाजोनिर्मलतनहै॥सोतिसकोलेखेअ
वलरूपहै॥तिसविखेभ्रांतिकेसेकिसकोहै॥वसिष्ठउवाच॥हेरामजीकारण
केअभावतेनिश्चेकरजाणजोभ्रांतिकछुवस्तनहीं॥अहंत्वआदिकसवइक
अनामयसत्ताउस्थितिहै॥रामउवाच॥हेब्रह्मन्मेंभ्रमकीन्याईप्राप्तिहूआ
होइसतेअधिकश्रुछनहींजानता॥अरुअनंतप्रबुधभीनहीं॥अबकयाम
हो॥इसतेअधिककछुनहींजानता॥इहप्रभ्रांतिकरजोकारणविनाजगतकेसेउ
छो॥वसिष्ठउवाच॥हेरामजीइहप्रभ्रांतिकजोकारणकाअभावजाणणा॥तवुपरसत्तभावअ
त्यनहूआहै जवविचारककेकारणकाअभावजाणणा॥रामउवाच॥हेभगवनमेंइहजानताहै
प्राहपदविखेविश्रांतिकोपावेगा॥रामउवाच॥हेभगवनमेंइहजानताहै
पर्यचेतनताकारणाभ्रमके जोकारणकेअभावतेजगतकछुउपजानहीं॥
मेहूआहै॥वसिष्ठउवाच॥हेरामजीकारणकेअभावतेसर्वनशांतरूपहै
भ्रमभीकछुहोरवस्तनहीं जवलगआत्मपदविखेअभ्यासनहीं॥तव
लगाभ्रमभासताहै॥अरुशांतिनहीप्रापतिहोती॥अभ्यासककेकेवलन
नेविखेविश्रांतिकोपावेगा॥तवभ्रमसिदिजावेगा॥रामउवाच॥हेभगव
न॥अभ्यासकेसेहोताहै॥अरुअनाभ्यासकेसेहोताहै॥इकअहंतेविखे
अभ्यासअनाभ्यासकेसेभ्रांतहोतीहै॥वसिष्ठउवाच॥हेरामजीअनंतनत
विखेभ्रांतिभीकछुवस्तनहीं॥जोअभासभ्रांतिभासताहै॥सोसत्तचिदघन
अविनाशीरूपहै॥रामउवाच॥हेब्रह्मणउपदेशअरुउपदेशाकेअधिका
रीइहजोभिन्नभिन्नभासताहै॥सोसर्वशांतनतआत्माविखेकेसेभासतेहै॥
वसिष्ठउवाच॥हेरामजीउपदेशअरुउपदेशाकोजोगइहभासताहैभीब्रह्म
विखेब्रह्महीइस्थितहै॥सथवोधविखेवंधमोक्षदोनोकाअभावहै॥रा
मउवाच॥हेभगवनजोउत्पतआदिककछुहैभ्रांतनहीं॥तोदेशकालक्या
इवइनकेभेदकेसेभासतेहै॥वसिष्ठउवाच॥हेरामजीदेशकालक्रि
याइवइहजोभेदवेदनादिशाविखेहै॥सोअज्ञानमात्रभासतीहै॥अज्ञा
नमात्रतेइतरकछुनहीं॥रामउवाच॥हेभगवनवोधकीदिशाकीप्रापत
केसेभएहै॥जहांइवेतिएकताकारणकोरणकाअभावहै॥तहांदिशाभ्रम
केसेहूआहै॥वसिष्ठउवाच॥हेरामजीवोधकोदिशाकीप्रापतिअरुहैतनइ
कभ्रमसूरखोंकाविखेहै॥इहसमारिषियोंकाविखेनहीं॥रामउवाच॥हेभ
गावनजोआत्मतनतनकेवलवोधरूपहै॥तोअनवेतमाइविखेअरुइहमाहे
विखेकेसेहोवे॥वसिष्ठउवाच॥हेरामजीसथवोधसत्ताविखेजोवोध
ताजानणाहै॥सोअहंतुवकारकहोताहै॥जैसेपवनविखेफुरणाहै तेसे
तिसविखेचेतनाफुरतीहै॥रामउवाच॥हेभगवनजेसेनिर्मलअचलस
मुद्रविखेनरंगवुद्वुदआदिकहोतेहै॥सोजलतेइतरकछुनहीं॥तेसेवो
धविखेवोधताइतरकछुनहीं॥अपणाआपविखेइस्थितहै॥वसिष्ठउवा
च॥हेरामजीजोभ्रमहै॥तोकिसकाकिसकोइवहै इकअनंततनअप
णाअपणाआपविखेइस्थितिहुआहै॥रामउवाच॥हेभगवनजोइकहै
तोअहंत्वआदिककलनाकेहोनेआईहै॥भोगनाकीन्याईभोगताहै॥जोनि
मैलहै॥सोइहकेसेदिशनाहूणहै॥वसिष्ठउवाच॥हेरामजीगणजोहै

दिशासत्तानिसकाजानणानिसकोग्रहणनहीं॥कोइहैजोज्ञातनहीसर्वह
पअर्थहोकरइस्थितभयाहै॥तोवंधअरुमोक्षकिसकोहोवे॥रामउवाच॥
हेभगवनज्ञायतजोवाहजअर्थकोदेखतीहै॥जैसेअकाशविखेनीलता
स्वप्नविखेपदार्थभासतेहै॥सोअसतनरूपसतभासतेहै॥तेसेइहवाहज
अर्थसतनहीसतनभासतेहै॥वसिष्ठउवाच॥हेरामजीकारणकेअभावतेजो
वाहजअर्थसतनभीभासतेहै॥सोभ्रांतिमात्रहै॥सतनकछुनहीं॥रामउवाच॥
हेभगवनस्वप्नकालविखेस्वप्नकेपदार्थकाइवहोताहै॥सतअसतका॥परइसके
वाअसतहोवे॥तेसेइहजगतविखेइवहोताहै॥जगतस
निवर्तकाउपायकहो॥वसिष्ठउवाच॥हेरामजीजोइसप्रकारहै॥सोसभभ्रांतिकरभासतेहै
स्वप्नेकीन्याई॥तवजोकछुपिंडाकारभासतेहै॥रामउवाच॥हेभगवनस्वप्नअरु
सर्वअर्थशांतरूपहै॥तननेकछुहैनहीं॥वसिष्ठउवाच॥
जाग्रतविखेपिंडाकारपरअपकरूपकेसेउत्पनहोतेहै॥
हेरामजीइहवअपरकाविचारकरीं॥जोजगतआदिविखेक्यारूपथा
अरुअंतविखेक्यारूपहोताहै॥तवशांतहोजाताहै॥जेसेस्वप्नविखेइस्थ
लपदार्थपिंडरूपभासताहै॥सोसभअकाशरूपहै॥तेसेजाग्रतपदार्थअ
काशरूपहै॥रामउवाच॥हेभगवन॥भिन्नभावकीभावनाप्रापतिहोती
है॥तवजगतकोकेसेदेखीताहै॥अरुसंसारकहीइभ्रमकेसशांतहोता
है॥वसिष्ठउवाच॥हेरामजीजानिवातोपुरुखहै॥तिसकोजगतकाअ
हभावउदिजाताहै॥जेसेसंकल्पनगरजेसेकागतकीस्मरतअसतभी
सतीहै॥तेसेउसकोजगतअसतभासताहै॥रामउवाच॥हेभगवनवा
सनाइरहितपिंडभावशांतहूए॥जगतकोस्वप्नवतजानताहै॥तिस
केउपरांतेक्याअवस्थाहोतीहै॥वसिष्ठउवाच॥हेरामजीजगतका
जवसंकल्परूपजाणताहै॥तेववासनानिर्वाणहोतीहै॥पवनतो
काअभ्रमउपजणाविनसणालीनहोजाताहै॥परमनतनहीभासताहै॥सम
अकाशरूपहोजाताहै॥रामउवाच॥हेभगवनअनेकजन्मोकीवाइडहोरही
है॥अरुअनेकशाखाकरपसरीहै॥संसारकाकारणजोरवासनातिसकी
केसेशांतहोतीहै॥वसिष्ठउवाच॥हेरामजीजवइसकोजथाभूतअर्थवि
ज्ञानहोताहै॥तवध्यानरूपजगतइस्थितहूआ॥आत्माविखेशांतहोजा
ताहै॥जवपिंडाकारअर्थपदार्थोंपिंडजाताहै॥तवदृशवककर्मरूप
शांतहोजाताहै॥जैसेस्वप्नकेपदार्थजाग्रतविखेनष्टहोजातेहै॥तेसेआ
त्मसत्तवोधकरसभवासनानष्टहोजातीहै॥रामउवाच॥हेमुनीश्वरजव
पिंडरूपहूणाविकलेहूआअरुकर्मरूपदृशषनिवर्तेहूआ॥तवबहुरकाइ
पतनहोताहै॥वसिष्ठउवाच॥हेरामजीजवपिंडरूपहूणाभ्रमशांतहोताहै॥
तवसूकचणखभोगोंनेरहितहोताहै॥जगतआस्थाइसकीशांतहोजाती
अरुचित्तपरमात्मातत्तकोप्रापतिहोताहै॥रामउवाच॥हेभगवनइहवा
लककेसंकल्पवतकेसेइस्थितिहै॥जोसंकल्परूपहैतोइसकेजोनवि
खेपदार्थहै॥तिनकेनष्टहूएइसकाइवकोप्रापतिहोताहै॥इसजगत
कोआभासतासंतनकेसेहोतीहै॥वसिष्ठउवाच॥हेरामजीजोपदार्थसंकल्प
करउत्पन्नहूआहै॥तिसकेनष्टविखेइवनहोहोता॥जवएवअनअविचा
रकवनतिनतेवछाजातीयेतवभ्रमशांतहोजाताहै॥रामउवाच॥हेभगा
वनचितनकेसाहे॥अरुकिसकरचिन्नाकेसाविचारीये॥वसिष्ठउवाच॥

व॰ स॰ ३५

हे रामजी चित्त सत्ता जो चेतन उन्मुख हुई है ॥ तिसको संकल्परूप चित्त कहीता
है ॥ तिसने रहित विचारणा शिडो वा स्वाभाव होजाता है ॥ राम उवाच ॥ हे ब्रह्म
न् चेतन ते रहित चित्त कैसे होता है ॥ अरु चित्त कहुँ देह अरु चेतन जगत निराकार
से होता है ॥ वसिष्ठ उवाच ॥ हे रामजी चेतन कछु उत्पन्न नहीं भया ॥ अरु होता
है न भासता है ॥ है कछु नहीं ॥ राम उवाच ॥ हे भगवन् जगत प्रत्यक्ष भासता
है ॥ जो उपजा नहीं ॥ तो इसका अनुभव कैसे होता है ॥ वसिष्ठ उवाच ॥ हे राम
जी अज्ञानी को ऐसे जगत भासता है ॥ सो सत्य नहीं ॥ अरु जो ज्ञानवान को भास
ता है ॥ सो अवाच्य सत्ता अद्वैत रूप है ॥ राम उवाच ॥ हे भगवन् अज्ञानी को तो
जगत कैसे भासते हैं ॥ सो सत्य नहीं ॥ अरु ज्ञानवान को कैसे भासते हैं ॥ जो कहणे
विषे नहीं आवते ॥ वसिष्ठ उवाच ॥ हे रामजी अज्ञानी को है तब सत्य नहीं है भास
ता है ॥ अरु ज्ञानवान को सब नहीं है न नहीं भासता ॥ आदि ते उपजा नहीं ॥ अद्वैत
आत्मतत्त्व अवाच्य पद भासता है ॥ राम उवाच ॥ हे भगवन् जो आदि ते उपजा न
होवे सो अनुभव भी न होवे ॥ इह तो अनुभव प्रत्यक्ष होता है ॥ असत कैसे कही
ये ॥ वसिष्ठ उवाच ॥ हे रामजी असत ही सत की न्याई भासता है ॥ इह कारण ते
रहित भासता है ॥ जैसे स्वप्ने विषे पदार्थ का अनुभव होता है ॥ पर वे सत कछु नहीं
ते इह असत ही अनुभव होता है ॥ राम उवाच ॥ हे भगवन् स्वप्ने विषे अरु सं
कल्प विषे जो द्रिष्टा का अनुभव होता है ॥ सो जाग्रत के संस्कार ते होता है ॥ अ
रु कछु वस्तु नहीं ॥ वसिष्ठ उवाच ॥ हे रामजी स्वप्न अरु संकल्प जिसके संस्का
र ते होता है ॥ सो जाग्रत के संस्कार ते कैसे होता है ॥ उही रूप अथवा अनि है ॥
राम उवाच ॥ हे भगवन् स्वप्ने के पदार्थ अरु मनोराज जाग्रत के संस्कार ते जाग्र
त की न्याई भासते हैं सो भ्रम विषे भासते हैं ॥ वसिष्ठ उवाच ॥ हे रामजी जो स्व
प्ने विषे जाग्रत के संस्कार कर के जगत जाग्रत की न्याई भासता है ॥ जो स्वप्ने वि
षे किसी का घर लूटि गया ॥ अथवा जल के प्रवाह विषे बहि गया ॥ तो
जाग्रत विषे कछु हुआ नहीं ॥ प्रातःकाल को देखता है ॥ उठ के तब सभ ज्यों
का त्यों भासता है ॥ तो संस्कार भी कछु नहीं ॥ सभ कल्पना मात्र जाणता ॥ रा
म उवाच ॥ हे भगवन् अब मैं जाणिआ है जो इह सर्व ब्रह्म ही है ॥ न कोऊ देह
है न जगत है ॥ न उदै है न अस्त है ॥ सर्वदा काल सर्व प्रकार उही ब्रह्मसत्ता
अपणे आप विषे इस्थित है ॥ तिसते इतर जो कछु भासता है ॥ सो भ्रममा
त्र है ॥ अरु भ्रम भी कछु वस्तु नहीं ॥ सर्व चिदाकाश ब्रह्मरूप है ॥ वसिष्ठ उ
वाच ॥ हे रामजी जो कछु भासता है ॥ सो सभ ब्रह्म ही का प्रकाश है ॥ उही
अपणे आप विषे प्रकाशता है ॥ राम उवाच ॥ हे भगवन् सर्ग के आदि वि
षे देह चिंतादिक कैसे उपजते हैं ॥ अरु कैसे आत्मा का प्रकाशरूप जग
त है ॥ प्रकाश भी तिसका होता है ॥ जो साकाररूप होता है ॥ आत्मा तो निरा
कार है ॥ दीपक वत प्रकाश ते रहित है ॥ तिसका प्रकाश कैसे कहीये ॥ वसिष्ठ उवा
च ॥ हे रामजी सर्व ब्रह्मरूप है प्रकाश अरु प्रकाश का भेद भी कछु नहीं ॥ द्वैत व
स्तु ही कछु नहीं ॥ अपणे आप विषे इस्थित है ॥ ताते सर्व प्रकाशक ही
है ॥ सूर्यादिक का प्रकाश जो घटादिक को भासता है ॥ सो भी जिसके आश्रय हो
के प्रकाशता है ॥ तिसको प्रकाशने का आधारभूत कहीता है ॥ तिसके आश्र
य होकर देह जगत का प्रकाशता है ॥ अरु आत्मसत्ता अद्वैत है ॥ अरु विज्ञानस
त है ॥ तिस विषे चित्त संवेदन फुरती है ॥ उही जगतरूप होकर इस्थित होती
है ॥ आत्मसत्ता अरु जगत विषे कछु भेद नहीं ॥ जैसे प्रकाश अरु प्रकाशता वि

षे कछु भेद नहीं ॥ उही इस प्रकार हुए की न्याई इस्थित भया है ॥ हे रामजी
निराकार साकार रूप होकर भासता है ॥ स्वप्नवत ॥ हे रामजी इस जगत
के आदि अद्वैत चिन्मात्र सत्ता थी ॥ तिसी विषे जो नाना प्रकार का भ्र
म द्रिष्ट आया ॥ तो उही रूप हुआ क्या ॥ अरु कारण तो कोऊ नहीं ॥ जैसे स्व
प्ने के आदि अद्वैत निराकार सत्ता होती है ॥ तिसी विषे स्वप्ने का पदा
र्थ भासि आवते हैं ॥ सो भी उही रूप हुए क्या ॥ प्रगट भासते भी हैं ॥ पर नि
राकार होते हैं ॥ तैसे इह जगत भी आकाररूप है ॥ अरु हे बधिक जब इह पु
रुष शरीर को छोडता है ॥ तब परलोक देखता है ॥ अरु सुख दुख को दे
खता है ॥ इसी कारण ते अविनाशी है ॥ जब शरीर के नाश हुए ता को दे
खता ॥ तब परलोक विषे सुख दुख कैसे भोगता ॥ जैसे जल विषे इक तरंग
उठ कर मिटि जाता है ॥ सो जल ही जल है ॥ आगे जल ही था पाछे भी जि
ल है ॥ तरंग भी जल है ॥ जल ही का विलास इस प्रकार फुरता है ॥ तैसे
इह शरीर भी अनुभवरूप है ॥ अनुभव ते इतर कछु नहीं ॥ जैसे इक स
ने को छोडिकर इह सत्ता अद्रिष्ट देखता है ॥ तो क्या है ॥ अपणा आप ही है ॥
तैसे इह जगत आत्मरूप है ॥ हे बधिक जाग्रत स्वप्न सुखोपति तुरीया इह
चारों रूप हैं ॥ जाग्रत जो स्थिति को समझता है ॥ तिसका नाम विश्व ते गर्भ
है ॥ अरु सुखोपति शरीर को समझता अव्याकृत नाम है ॥ अरु सर्व तुरी
या शरीरों को समझता है ॥ सो चेतन आत्मा है ॥ तुरीया कहीये जाणनेहार
का साक्षी भूत तिनको समझता रूप चेतनरूप है ॥ चारों शरीर उस
के हैं ॥ अरु सदा निराकार है ॥ अचेतन चिन्मात्र है ॥ हे बधिक इह चारों पर
मात्म के शरीर हैं ॥ सो परमात्मा निराकार है ॥ अरु आकार जो द्रिष्टि आवता
है सो भी उही रूप है ॥ सो आकार कल्पनामात्र है ॥ अरु आत्मा सर्व कलना
ते रहित है ॥ ताते सभ जगत चिदाकाशरूप है ॥ जैसे पथर को शिला वि
षे कमल फूल नहीं लगता ॥ तिनका होणा असंभव है ॥ तैसे आत्मा वि
षे जगत का होणा असंभव है ॥ हे बधिक आत्मसत्ता अपणे आप विषे इ
स्थित है ॥ तू जो आकार देखे जो कछु पदार्थ है सो कल्पनामात्र है ॥ जि
स विषे कल्पना है ॥ सो नाम रूप ते रहित है ॥ तिसी को देख ॥ तो सभ ज
गत आत्मरूप भासे ॥ २३५ ॥ इति श्री वसिष्ठ ज्ञाने निर्वाण नाम सर्गः ॥ व्याध
उवाच ॥ हे मुनीश्वर उस पुरुष के हृदे विषे जो तुम स्वप्ने देखी थी ॥ ति
स विषे तुम किस प्रकार विचरे थे ॥ अरु क्या देखा सो कहो ॥ मुनीश्वर उ
वाच ॥ हे बधिक जो कछु व्रितांत है सो सुण ॥ जब मैं उसके हृदे विषे ना
ना प्रकार का जगत देखा ॥ अरु अपणा कुटंब देखा ॥ तब मैं अपणे कुटं
ब विषे रहणे लगा ॥ पुत्र को मित्र को विस्तार गाकीया ॥ अरु [illegible]
भया ॥ [illegible] ॥ तिसका [illegible]
ख एक [illegible] ॥ अरु नाना प्रकार
त आदर कीया ॥ [illegible] ने भोजन करके विश्राम
क भोजन [illegible] कीया ॥ तिस [illegible] ने भोजन करके विश्राम
कीया ॥ अरु श्रम तिसका दूर कीया ॥ तब मैं कहा हे परम बोधवान अदि
छक अर्थ मैं जानता हो ॥ जो तुम परम बोधवान हो ॥ तुम आप को आप ही
जानते हो ॥ अरु जब मैं आइ [illegible] ॥ परम सार विषे [illegible]
छिन आया ॥ अरु नाना प्रकार के तुम सभ भोजन को [illegible]

व॰ म॰ २६

38

इसप्रकारतेमैंजागिआहैजैतूंपरमबोधवानहो॥ तुमारेविखैरा॰
गद्वेखकछूनही॥ तातेइकप्रसन्नमैकतेहो॥ ससंसजगतहोकरति
समसकोकृपाकरकैइस्वकेरो॥ हेभगवनइहजोजगतनगरविखैइस
विखयपडतीहै॥ आनकेरअरुस्मआनआपतिहोतीहै॥ अरुप्राणीए॰
कठेमजीतेहैं॥ अरुकष्टपावतेहही॥ सोक्याकारणहै॥ इहतोमैजाणा
ताहो॥ जैसेकैसुभअसुभअथवाअसुभकतेहैं॥ तिसकेफलकोपावता॰
है॥ जैसेपानकोबोवीताहै॥ तबसमपाइकैफलभीअवेषापडताहै
तैसेकर्मोकाफलअवशिप्रापतिहोताहै॥ सोजिसकीयाहोताहै॥ सोईभो
गताहै॥ अरुइकठाकष्टकैसेकरप्रापतिहोवै॥ उअनपउवाच॥ हेसाधप्र
थमसुणतोजगतक्यावस्तहै॥ इहजगतकारणबिनाउत्पतभयाहै
जोकारणबिनादृष्टिआवेसोजाणीयेजोभ्रममात्रहै॥ तातेतूविचारकर॰
देखजोइहजगतक्याहै॥ जोकारणबिनादृष्टिआवे॥ सोजाणीयेजो
भ्रममात्रहै॥ तातेतूविचारकरदेखजोइहजगतक्याहै॥ अरुतूकोनहै
अरुइसविखेसारक्याहै॥ अरुइसकाअसप्रमाणकहालगाहै॥ हेसाध॰
इहजगतसुपनमात्रहै॥ अरुइहशरीरभीसुपनमात्रहै॥ तैसेरासुपनतूहै
अरुमैतेरासुपनरहो॥ अरुसभजगतसुपनरहै॥ कारजकारणकोउ॰
नहो॥ सभआभासमात्रहै॥ आभासविखेकछुअरुचलनहीहोता॥ जिस
काआभासहोताहै परवस्तसोएहोताहै॥ तातेसभजगतआत्मरूप
है॥ जैसेजेवडीविखेसर्पभ्रमहोताहै॥ तासर्पकछुवस्तनही॥ जेवडी
होहै॥ तातेसभजगतचिन्मात्रसरूपहै॥ तिसविखेकछुबणिआनही
केवलआत्मतत्त्वमात्रअपणेआपविखेस्थितिहै॥ तिसविखेअहंहो
इसप्रकारचेतनतासंवेदनफुरतीहै॥ तबजगतअकारकासकरणहोता
है जैसेजैसेसंकल्पफुरताहै॥ तैसातैसाजगतभासताहै॥ जैसेसुपनेकी॰
सृष्टिनानाप्रकारहोभासतीहै॥ परअनभवतेइतरकछुनही॥ जैसेसं
कल्पनगरभासताहै॥ सोअनभवतेइतरकुछभिन्नभिन्नहोता॥ अरुतै॰
सेइहजगतहोइभासताहै॥ तिससंवतविखेअपणासरूपहोइस्मर॰
णरहताहै॥ सोसंवतईश्वररूपहै॥ तिसकोजगतअकारणभासताहै
अरुजिससंवतविखेसरूपकाविस्मरणहोताहै॥ तिसकोजगतकारण
कारजरूपभासताहै॥ सोईजीवहै॥ जिससंवतकोकर्मोकीकलनास्पर्श॰
करतीहै तोमोकतीहै॥ तिसकोकर्मोकेअनुसारफलहोताहै॥ जिसक॰
र्मोकीसंवतविखेकलनानहीस्पर्शकरती॥ तिसकेकर्मोकातिसकोफल॰
नहीलगता॥ करतादृष्टिआवताभीहै॥ परउसकेहृदेविखेकरतेका
अभिमाननहीस्पर्शकरता॥ अरुजिसकेहृदेविखेकरनेकाअभिमान
होताहै॥ तिसकोफलभीहोताहै॥ हेसाधइहजोसृष्टिहै तिसकाइह
विचारपूरवहै॥ तिसकाशरीरहै॥ अरुइहविराटभीअरुविराटकेसंक॰
ल्पविखेहै॥ इहविराटकारूपहै॥ जबविराटपुरखकेअंगविखेखो
भहोताहै॥ अरुजीवोंकीपापवासनाइकठीआनिउदेहोतीहै॥ जबवा॰
सनाअरुअंगोकाखोभइकठाहोताहै॥ तबतिइस्थानविखेउपद्रव॰
कष्टहोताहै॥ जैसेबनविखेबहुतेविघ्नहोतेहैं॥ तितोपरवेअग्निआनि॰
पडे॥ तिसकरसभचूरणहोजावेहै॥ तैसेइकवेपापकरइकठेमजीतेहै
अरुइकठेकष्टपावतेहै॥ इभिखकर॥ जैसेइकपुरुषहोवैउसकेइकअंग
परमहोलाइ॥ तिसकरकैउहअंगकंपताहै॥ जैसेउसकेअंगकंपणेकर

अंगकंपणेलगजातेहैं॥ अरुजोसर्पआदिकजीवलडतेहैं॥ तबसारा
शरीरकष्टपावताहै॥ अवरोमकष्टपावतेहैं॥ तैसेइहजगतविराट॰
पुरखकाशरीरहै॥ जबकिसीनगरविखेपापउदेहोताहै॥ तबउह
नगरकेजीवकष्टपावतेहै॥ अरुजोसारेअंगविखेपापआन॰
उदेहोताहै॥ तबसर्वकेउसनेवतमाराशरीरविराटकाखोभमान॰
होताहै॥ तिसकेशरीरऊपररोमरूपीजीवसभकष्टपावतेहैं॥ हेसाध
वास्तवतेनकोउदुखहैनकोउपापहै॥ तेजगतहै॥ केवलआत्मस
ताअनभवरूपहै॥ तिसकेप्रमादिककेइहआपदादृष्टिआवतीहै
जोइहजगतकारणतेउपजाहोतातोसत्तहोता॥ सोतोकारणते
उपजानही॥ मनकेसेहोवै॥ तिसजगतविखेसत्तप्रतीतकरणीइ
हीअज्ञानीहै॥ हेसाधइसप्रकाशकाकारणकोउनही॥ पृथवीकाको
रणभीकोउनही॥ अविद्याकाकारणकोउनही॥ स्वभूभीअकारणहै
उसकानाशकैसेकरीताहै॥ तोअपणेआपकरप्रगटहै॥ तिसकाका
रणकोनहोवै॥ जलअग्निवायुकाकारणभीकोउनही॥ जोतूकहेस
भकाकारणआत्माहै॥ तोआत्मातेभिन्नकारणकहेगा॥ अथवास
मवायकारणकहेगा॥ जोप्रथमपछेनसिमकारणकहै॥ तोवरण
तानही॥ काहेतेजोआत्माअद्वैतहै॥ जोइसरीवस्तनही॥ तोनमिल
किसकाहोवै॥ अरुसमवायकारणककहेतोनहीबणता॥ काहे
तेजोसमवायकारणआपप्रणामकेकारजहोताहै॥ सोआत्माअ
च्युतहै॥ अपणास्वरूपकात्यागतानही॥ समवायकारणकैसेहोवै॥ ता
तेआत्माविखेकारणकारजभावकोगतनही॥ वहइहजगतकिस
काकारणहोवै॥ इहअगतोकारणतरहितदृष्टिआवै॥ तिसकौ
जाणीयेजोभ्रमकरकेभासताहै॥ अरुजोतूकहेपिंडाकारकारणबि
नानहीहोता॥ काउकारणभीहोवेगा॥ तोइहअगाइहजगतबमसी॰
नाहै॥ जादेहकात्यागताहै॥ अरुपरलोकजाइदेखताहै॥ कैसी॰
केअनुसारइखसुखभोगताहै॥ उसशरीरकाकारणकोमइगा
उहताकारणतेनहीउपज्याभ्रममात्रहै॥ तैसेइहभीभ्रममात्रजा
णा॥ जैसेसुपनविखनानाप्रकारकेअकारभासिआवतेहैं॥ सोकिसी
कारणतेउपजेनही॥ जैसेअकाशविखेतरवरभासिआवतेहै॥ तैसेअव
साभीकारणबिनाहीभासिआवतेहै॥ जैसेअकाशविखेतरवरभ्रम
मात्रहै॥ तैसेइहजगतभ्रममात्रहै॥ जैसेबालकभासतेहै॥ सोभ्रममात्रहै
ककोअणहोताहै॥ तालमेसिआवताहै॥ तिसकरभेमानहोताहै
तैसेइहजगतअणहोतासरूपकेप्रमादिककेभासताहै॥ परमात्मा
सत्ताआत्मतत्त्वज्याकीत्याहै॥ सोएसवेदनकेकरजगतरूपहोभासती
है॥ तातेजगतउहीरूपहै॥ जैसेवायुचलणअरुनचलणविखे
इककहीरूपहै॥ पुरचलणकरभासतीहै॥ अरुनचलनेकरनहीभासती॥ क्याउसी
सती॥ तिसवायुकेअरुइसस्पंदकातोकारणकोउनही॥ तैस॰
केदोनोसरूपहै॥ जबवायुस्पंदरूपहोतीहै॥ तबभासतीहै॥ तिसविखनानाप्र
किनसंवतफुरणेकेजगतअकारभासतीहै॥ तबअपणेसभी
कारणहोइअर्थआवतेहै॥ अरुजबफुरणेतेरहितहोतीहै॥ तबअपणेरू
वकोदेखतीहै॥ जैसेतरंगकेहोनेभीजलहै॥ अरुतरंगकेमिटेभीजलहै॥
तैसेजगतफुरणेकेहोनेभीआत्माहै॥ जगतअरुकछुवणिआनही॥ कारज

कारणभाव आत्मा के प्रमादिक के द्रिष्टि आवता है ॥ प्रथम जो स्वाछि उरी
है सो अकारण फुरी है ॥ जब सकल्प को द्रिड़ लाहो गए ॥ तब कारण कारज
भासणे लगे ॥ जिसको कारज कारण भासता है ॥ तिसको जगत सत्त भास
ता है ॥ अरु जिसको कारज कारण नहि भासता है ॥ तिसको जगत आ
त्मरूप है ॥ जिसको कारज कारण शुध है ॥ तिसको उही सम है ॥ जो दुख
देणे वस्तु थी भोग ॥ ताते उसको दुख कर्ण भला है ॥ अरु जब जीवों
के पाप इकठे आन प्राप्त होते है ॥ तब दुख भिन्न पडते है ॥ अरु जीव मरते
होते है ॥ जैसे पथरों की वरखा होवे ॥ तैसे कष्ट पावते है ॥ अरु मेरा तिस आ
वेतानको उपाय इहि नपुत्र है ॥ नइ सुख है न दुख है ॥ न जगत है ॥ जब
स्वरूप के प्रमादिक के अहंता उदै होती है ॥ तब नाना प्रकार के विकार भा
सता है ॥ जब प्रमाद निवर्त होता है ॥ तब सब आत्मस्वरूप भासता है ॥ ताते
तू सब कल्पना को त्याग कर अपणे स्वरूप विषे स्थित होवो ॥ जो सर्व
से सिद्ध जावहि ॥ २२८ ॥ इति श्रीम प्रविचारो नाम सर्गः ॥ मुनीश्वर उ
वाच ॥ हे वधक इस प्रकार उत्पन्न परमेश्वर उपदेश करते भया ॥ तिसक
र मेरा मन आपणे सभाव विषे स्थित भया ॥ अरु अक्रम पद को प्राप्त भया
उत्पन्न पाके सा ॥ माता विसनु भगवान उपदेश करि आन वेठा है ॥ तिस
के उपदेश करि मे जागिआ ॥ जैसे कोउ रजनकर विष्ट होइ उस्नान कर उ
जल होवे तैसे मे हुआ ॥ अपणी शरीर लीस्मिन को स्मरण करते भया ॥ स
माधवाले शरीर को भी जागिआ ॥ अरु आत्मपद को भी जागिआ ॥ जो उ
त्पन्न पाइ है तेरे पास वेठा है ॥ अग्न उवाच ॥ हे राजन इस प्रकार जब मुनीश्व
र कहा ॥ तब वधक विस्मय को प्राप्त भया ॥ अरु कहा हे मुनीश्वर बडा
आश्चर्ज ॥ तुम कहि ने हो जो सुपने विषे मुफ को उत्पन्न पाउपदेश कीया ॥
वह उजायन विखिक हने होइ हु वेठा है ॥ सोउ इह वार्ता तुम्हारी के से मा
नो ॥ जैसे बालक अपणो पछा हो विषे वेतालकल्प ॥ अरु कहे प्रतक्ष
आनि वेठा है ॥ जैसे उह स्वप्न नहीं भासता ॥ तैसे तुमारा वचन स्वप्न नहीं
भासता ॥ इह अपूर्व वार्ता तुमको संसा उपजा है ॥ सो तुम मुक या
को कह करो ॥ मुनीश्वर उवाच ॥ हे वधक इह वार्ता आश्चर्ज के उपजावणे
वाली है ॥ अरु जैसे इह वृतांत इआ है सो पने मे तुम को कहता हो सो
सुण ॥ जो उत्पन्न मुफ को उपदेश कीया ॥ तब मे कहा ॥ हे भगवन तुम
इहा विश्राम करो ॥ जिस प्रकार मे रहता हो ॥ तैसे तुम भी रहो ॥ तब उनो
कहा भला रहेगे ॥ ऐसे कहि कर रहणे लगे ॥ अरु मे उनको उपदेश पा
इकर विचार करणे लगा ॥ जो इह जगत मिथ्या है ॥ इसके सुख ना मिन
मे क्या जतन करता हो ॥ इह तो ऐसे है जैसे सर्प होता है ॥ इनके सुख भ
वा से जगत रूपी विख है इस वंधन ते कदाचित मुक्त नहीं होता ॥ मे
रे जीवणे को धिकार है ॥ जो मे इनके निमित्त जतन करता हो ॥ इनके सु
ख म्रिगत्रिस्ना के जल वत मिथ्या है ॥ जो इनका जतन करते है ॥ सो महा दु
खी है ॥ म्रिगत्रिस्ना के जल को देखकर पान निमित्त दौडते है ॥ अर्थ करते
है ॥ सो कदाचित त्रपत नहीं होवते ॥ सो मे अविद्या के सुख के निमित्त जतन
करता था ॥ इसकर त्रिपति कदाचित नहीं होती ॥ हे वधक ममता का स्वरूप मो
ता थव है ॥ सो चरनो विखजता रहे ॥ अथ कुपविखराइ एका कारण है
तिस साथ वाध्या हुआ ॥ इन्द्रियों के विषय रूपी राजत विषे मे गिडा था ॥ तब
मे विचारन भया ॥ जो बंधन का कारण कुटंब है ॥ तिसका मत्याग जाववो ॥
वहु इस विचार कीया जो इनके त्याग विषे भी सुख नहीं प्रापत होता ॥ जब

अविद्या का त्याग करडो ॥ तब सुखी होवो ॥ इनके त्याग करते तो अविद्या
नष्ट नहीं होती ॥ ताते अहंकार जो है अविद्यारूप तिसको नष्ट करो ॥ हे
वधक ऐसे विचार करि मै गुरो के पास गया ॥ अरु मन विषे विचारी
या जो जगत भ्रांतमात्र है ॥ गुरु भी स्वप्नमात्र है ॥ इन शिवा को प्रापत हो
णा है ॥ बहुरि विचार कीया जो इह ज्ञानवान पुरुष है ॥ इनका अहं श्री
त्मा का निश्चा है हि ॥ ताते इह आत्मस्वरूप है ॥ अरु काल आणभूत है ॥ इन
को नमस्कार करि प्रणाम कीया ॥ अरु कहा हे भगवन
शिष्य जानकर मुझको ॥ तब मे मात्र कर प्रणाम कीया ॥ अरु कहा हे ॥
उस अपने शरीर को देखा ॥ अरु इसके शरीर को भी देखा ॥ जो कहा है ॥ तब विखे
इस जगत का विराट पुरुष है ॥ हे वधक जब इस प्रकार मे कहा ॥ तब विखे
इसके समुक को कहा ॥ हे अग्नि उहन शरीर के कहा है ॥ उह शरीर है रण
ऐहै ॥ अब कहा देखेगा ॥ अरु जो इकार देखावो ॥ आपनू जाणेगा ॥ तब मे हा
पजाइ करत्र षी को कहा ॥ हे ऋषीजी अब मे जानता हो ॥ अरु मेरे आवण
आ जनन मे इहा वेठ रहणा ॥ हे वधक असे कहि कर मे अब भूतन कदे हके
अभ्यास का त्याग कर ॥ अतिवाहक शरीर साथ उडि आ ॥ तब मे अकाश
मारग विखे उडता उडता थका ॥ पर शरीर के हन पाइ ॥ तब बहु इ ऋषी
पास आया ॥ अरु कहा हे पूरब अपर कवता भूत भविषत के ज्ञाननेहा
री ॥ उह दोनो शरीर के होगइ ॥ तइस ब्रह्मांड के विराट का शरीर भासता है ॥ हे
जिसके के दमार गराहे इस आवृत ॥ अरु तेअ पण शरीर भासता है ॥ हे
मसे रूपी अथ कारके नाश करते हु जेम के हो ॥ उपनप उवाच ॥ हे कमल
नैन अरु तपा रूपी कमलों को खारण के हुरज हो ॥ ज्ञान रूपी कमलों के
धारणहारा विसनु का नाभ ॥ हे अनेद रूपी कमलों को खारण तु भीतो स
भ कुच्छ जाणता हो ॥ अरु जागिआ है आइ है आत्मपद विषे जो गोश्वर है ॥
ध्यानक के देखजा स भावि तन तु फ को इष्ट आवे ॥ हे मुनीश्वर इह जगत
असत रूप है ॥ इस विषे स्थिर वस्तु को उनहो ॥ तू विचार कर देखजा ॥
री रको अवस्था तु फ को द्रिष्टि आवे ॥ अरु जो तुक सो इच्छता है ॥ तो मेके ह
ता हो ॥ हे मुनीश्वर जिस वन विषे तु मर हे तिस तुमा री शरीर उहा था
नवइ क का लमो तिस वचन को अग्नि लागी ॥ तहा अग्नि नाना प्रकार की वि
छवली थी ॥ सो भस्म जल लगाए ॥ अरु जल भी अग्न कर विखउ लगा लगी ॥
अरु वनचारी पसु पंछी भसम जल लगाए ॥ महा कष्ट को प्रापत भए ॥ तहा त
मा वशरीर जल लगाए ॥ कटे भीजि लगाए ॥ मुनीश्वर उवाच ॥ हे भगवन तुम
अन्नसाथ जो सरण आवन जल ॥ तिस अग्न का कारण को न था जिस अ
ग्न लागाए ॥ उपनप उवाच ॥ हे मुनीश्वर इह जो जगत है ॥ जिस विखे तुम
अरु हम बैठे है ॥ इसका विराट सोइ है ॥ जिसके शरीर विखे तुम प्रवेश की
या ॥ अरु जिस विखे उ का शरीर है ॥ अरु ते रा सम साथ वाला शरीर है ॥ तिसका
विराट होए है ॥ उह सत्र ष्ट उस विराट का शरीर है ॥ हे मुनीश्वर उस विराट के
शरीर विखे जो खो भ हुआ ॥ इसका रण ते खोभ उत्पन्न हुआ ॥ अब उपजी
शरीर अरु विखे समज लगाए ॥ इस सृष्टि विराट का नाम ब्रह्मा है ॥ तिस
ब्रह्मा का विराट होए है ॥ तिसका विराट आत्मा है ॥ सो सदा अपणा आप
विखे स्थित है ॥ तिस विखे हो वकछ उ आनु आन हो ॥ जिस पुरुख को उ
सका प्रमादि है ॥ तिसको उपद्रव भासते है ॥ अरु कारण का रज रूप पदा
थ भासते है ॥ तिसकर कर्मो के अनसार सुखदुख भागता है ॥ जिसको स
रूप का साक्षात्कार है ॥ तिसको जगत आत्मता कर के भासता है ॥ सर्व आत्म
ब्रह्म भासता है ॥ हे मुनीश्वर जब इस प्रकार वन के पसु पंछी भसम जल ॥ त
ब तुमारी कटी को आइ लगा ॥ कटी अरु तुमारा शरीर अग्न कर जल लगाए ॥ ति

सके पाषाणशिला विषै न प्रवेश कीया था॥ सो भी जलत्या॥ तब मारे शिला ऋषि भी जल
लगए॥ उसकौ ऊजभी जलगया॥ तब सदा लोकी सब तन प्रकार शून्यरूप होगए
उइ अग्नि भी तब कौ जलाइकर अंतर्ध्यान होगए॥ तब मारे शिरीकी ज्यौ रवि भी
नही॥ हे मुनीश्वर जो नाक कछु जगत देखीता है॥ सो सब स्वप्न मात्र है॥ मे
ने स्वप्ने विषै देखे॥ तैसे स्वप्न विषै है॥ सर्व जगत स्वप्न मात्र है॥ अ सत्त है
अरु इसका अधिष्ठान है॥ सो ब्रह्म सत्त है॥ सो सब का अपना आप रूप
है॥ जगत तिसका आभास है॥ जैसे संकल्प सृष्टि होती है॥ जैसे स्वप्न मात्र
देह होता है॥ जैसे गंधर्व नगर होता है॥ तैसे इह जगत है॥ हे मुनीश्वर इ
ह जगत तेरे स्वरूप विषै स्थित है॥ अरु जैसे कौ चित्त काल की प्रतीति क
के जाग्रत इप कावजे का रणा कुकै नाना प्रकार का सत्त होकर भासता
है॥ मुनीश्वर उवाच॥ हे वधक जो इह स्मृति राम सत्त होगए आ है॥ तो सब
ही स्वप्न नगर सत्त होवहिंगा॥ अग्नि उवाच॥ हे मुनीश्वर प्रथम तू सत्त
को जाण॥ जो सत्त क्या वस्तु है॥ जो नाक कछु जगत तूं कौं भासता है॥ सो स
भही स्वप्न वत है॥ इन विषै कौ उपरा थ सत्त नही॥ इस जगत का तत्त्व अ सत्त स
माथ वाले शरीर की अपरला कार कहिता है॥ अरु जिसका तू आयत व
पक हिता है॥ तिसकौ किसकी अपेक्षा करे अ सत्त कहेगा॥ हे तो
अदिख रूप है कि॥ जो इसकौ सत्त जाणे॥ अरु जिस सत्ता विषै इह स
माथ वाला शरीर भी सत्त है॥ तिस सत्ता कौ तू जाण तब तू क का सत्त
पद की प्राप्ति होवे॥ जैसे इह जगत आत्म सत्ता विषै आभास फुरि
आ है॥ तैसे उइ जगत भी आभास फुरिआ है॥ तिस अरु इस विषै कछु भे
द नही॥ तू जागिकर देख तेरा को कछु जगत न भासता है॥ सो सब भ्रम मात्र रू
पी वस्त का चमत्कार है॥ जैसे सूर्य की किरणा विषै अग्न होता जल
भासता है॥ तैसे सब जगत आत्मा विषै अग्न होता भासता है॥ आ
त्मा के प्रमादि कर सत्त भासता है॥ तू अपणा स्वभाव विषै स्थित हो
कर देख॥ मुनीश्वर उवाच॥ हे वधक इस प्रकार उ अग्नि पाछै स्वीश्वर
उके समके कहता है आसिजा उपर मेनका रहा॥ तब उके नकालने जा
गिआ॥ तब मै कहा है भगवन अरु वृत्तांत मे पाछे पूछोगा॥ पर इह स
सार प्रथम इह रक तो॥ जो विद्या कारण समनू फकी कि सन मिन कहा
मैं ता विद्या की जाणता भी नही॥ जो विद्याधिक वन है॥ अग्नि उवा
च॥ हे दीर्घ तपसी तू ध्यान कर कै देख तू तो सब कछु जाणता था॥ जि
स प्रकार वृतांत है॥ तिसकौ तू जाणेगा॥ अरु जो सुफ सा पूछिता है॥
नो मै ही कहिता हौ॥ अरु इह वृतांत बडा है पर मै तेरे ताए संखेप मे
कहिता हो॥ हे मुनीश्वर मेनु मारे चरहा वोगा॥ जो एक समा आवेगा
तिस विषै वृत्र राजे की वधी अरु लोक थमी का छाड देव हिगा॥ तब वड भि
रव्या नए गा॥ मेघ होव गो नेरे हिनहो जाव हिगा॥ सभ लोक कष्ट
कौ पाव हिगा॥ अरु रसे समे जाव हिगो॥ सभ लोक कष्ट पाव हिगो॥ तब
कष्ट व भी मर जावगा॥ कही भी वृक्ष फल फूल रहि न होवगी॥ सभ ला
क मर जावेगा॥ सकल अरु मे दोना रहिजावहिगा॥ वत तव॥ काहे मजाइ से
कोस रख अरु उखकी भावना नही॥ हे मविदतवेद है॥ विदतवेद कोइ रखवे
स होवे॥ हे मुनीश्वर कौ उकालनो इस प्रकार वेष्ठा होवेगी॥ वड उकटी के
तौ के फल फल माल वृक्ष त रके मेलता लइन ने आदिल करता
ता प्रकार का समर्थ होवेगी॥ वडा दुर्गाथ हो इहेगी॥ सो वक्रवका पलाआति
दिवाजहिगा॥ अरु मलाउ पर विराजहिगा॥ अरु सा विलास प्रगट होवेगा॥

इति श्री राम संवादो नाम सर्गः॥ मुनी॥
ऐसी दशा बहु उडि होवेगी॥ ॥ इति श्री राम संवादो नाम सर्गः॥ मुनी
श्वर उवाच॥ हे वधक इस प्रकार उइ नयन ब्राह्मण सुफ को कहिता भ
या॥ किहो होवेगा॥ किहो मुनीश्वर इस प्रकार उइ होवेगा॥ तब तब तू अ
न मेइ कम मेनप कने वेद होवहिगा॥ तब इस व्याध सिरा के पाछे दो
इ ताने रीके टीके निकट आवेगा॥ तिसको तू सुंदर रूप विक्रम थाउ उपदेश
करहिगा॥ तिस विरखत नका प्रसंग चलेगा॥ तिस प्रसंग को पाइ कर
न अरु आगने का हित तान उइ पूछेगा॥ तिसको तू सनका प्रसंग कहे
गा॥ तिस सुन प्रसंग विषै तू उसको परमार्थ का उपदेश करहि गा॥ तब वचनो को पा
अरु ते तमागा मेका बनोन उप देशा करहिगा॥ तिसका अंतःकरण उ
कार उह पकर विरक्त चित्त होकर तन पकरेगा॥ हे मुनीश्वर इस
सका निर्मल होवेगा॥ अरु सतपद को प्राप्ति होवेगा॥ तू भी ध्यान
प्रकार विवर नन होगा है॥ सो सब तेरे मेन कोक हा है॥ तू भी ध्यान
कर देख इस प्रकार होणा है॥ इसका रणते मेन फकोध्याइका सबके
हा है॥ हे व्याध तब इस प्रकार मन फको उत्तर पकहा॥ तब मै स्मरण कर
विस्म भया॥ जो इसने क्या कहा है॥ बडा आश्चर्य है॥ इस वधक को चित
जा तीन ही जाती॥ जो क्या हो गया है॥ हे वधक इस प्रकार मेरी स्मृति उस
की व चौ हुए॥ तब राशि विलीन होगए॥ तब मे इस्नान करके भली प्र
काट इह लकरी॥ उसकी थीन वधा वगो के न मिन॥ तब उहा उ इह
ताल गा॥ वह उइ मे विचार करिल गा॥ जो इह जगत का है॥ अरु इस
दृ कार गका नहै॥ मै का हा॥ तब विचार कीया जो इह जगत प्रकार
पाइ है॥ किसी कावणाया नही॥ स्वप्न मात्र है॥ आत्म रूपी चेतन मा की
जगत रूपी चाद नी है॥ तिसी का चमत्कार है॥ उही आत्म सत्ता छूट
पट आदिक प्रकार होभासती है॥ तानेन कोउ कर्मी है न किया है॥ न
कती है॥ तैसे होन जगत है॥ अरु जो कहे है कि वोलहुी॥ सभ अर्थ सि
इ होती है॥ तो सुणा॥ प्रहण ज्या राजा होता है पिंड कर होता है॥ अ
कपिंड जो है सो न ना का होता है॥ सो ना ना पिंड इह कि सो मन न कर वा
शिआ है॥ तू अरु किसी माता पिता कर हुआ है॥ इह ता स्वप्न विषै
विआ है॥ इसका कारण कोन कहीए॥ अरु जो कहो भ्रम मात्र है॥ तो
भ्रम का कारण कौन है॥ ज्ञान का दृष्टि वंत कोन है॥ जिस पदार्थ को
दृष्टि आवता था॥ सो तो भस्म हो गया॥ इसका दृष्टा रूप मत॥ तो ने
अरु इह जगत कछु वणीआ नही॥ केवल आदि अंत ने रहित आ
त्म सत्ता अपणे आप विषै स्थित है॥ सो इह मेरा स्वरूप है॥ उहा
इह जगत रूप होकर भासता॥ अरु जगत कछु वस्तु नही॥ केवल
ब्रह्म सत्ता ही इस्थित है॥ पृथ्वी जल तेज वायु आकाश आदिक प
दार्थ सब आत्म रूप है॥ जैसे सम रूप होइ भी सत्ता है॥ पर
कछु उपज नही॥ तैसे आत्मा नाना प्रकार होइ भासता है॥ अरु वास्त
सत्ता निराभास है॥ अभास भी कछु है आन नही॥ केवल चैतन्य सत्ता
ऐसे रूप होकर भासती है॥ हे वधक इस प्रकार विचार करके मै विरा
तेज वहुआ॥ मुनीश्वर के वचनो कर पवेत की न्याई अपणे स्वभाव वि
स्थित हुआ॥ जो कछु सब इच्छा थी वासना तिन सब पदार्थ प्राप्ति हो
वे॥ तिस विषै स्थित होवा॥ समवृत्ति॥ अभिलाषा ते रहित सभ चेष्टा
त्याग करा अरु अपणे स्वभाव ने चलाइ मान न होवा॥ हे वधक स

व॰
म॰
३२५

37

रवभोगणोकेनामितनमुक्तकोजीवणेकीइछाहै॥नमरणेकीइछाहै॥जनी
वणेविषेइरवेहै॥नमरणेविषेरवभोकहै॥आत्मपदविषेसदाइस्थितहो
केउससंसारमुक्तकोनहीं॥संपूरणसंसमकर्णविषेहै॥सोसंपूर्णमेभीविषे
नहीं॥तातेसंसारभीनहीं॥२३८॥इतिश्रीरामप्रबोधोनामसर्गः॥मु
नीश्वरउवाच॥हेसाधइसप्रकारनिरणेकेतीनोकालप्रमेवेनमुभए॥अरुवी
नरागहुआ॥अरुनिःसंकहुआ॥किसीपदार्थकीतिष्णामफकोनरही
अरुनिरहंकारहुआ॥आत्माविषेजोअनात्मअभिमानथा॥सोनिवृतहो
गया॥परमनिर्वाणहुआ॥निराधारअरुनिराधेयहुआ॥अपणेस्वभावआ
त्मतत्त्वविषेसोइस्थितहुआ॥अरुसेवानगाहुआ॥हेसाधकजोसुरवबोधकी
प्राप्तिआनप्रापतहोवे॥तिसविषेजथाप्राप्तविचरो॥निरहेविषे
करनतअभिमाननहोवे॥अरुजगतसतकोआत्मस्वरूपभासे॥अरुवि
आकरणेवालीमिथ्याप्रभासमात्रहै॥सोआभासकछुवस्तुनहीं॥वि
दाहोयआत्मसत्ताअपणेआपविषेइस्थितहै॥हेसाधकसनीश्वरा
काकहाविरतनहोतागया॥जोमेरेपासआनप्राप्तभया॥जोकछुउ
पदेशकीनाहै॥सोमेनेतुझकोउपदेशकीयाहै॥जोपरमपावनस
कासारहै॥सोमेउपदेशकीयाहै॥जिसप्रकारबहुतगानकेपरमार्थ
स्वरूपअरुमेअरुजाग्रतकाविरतनहै॥सोमेनेतुझकोकहाहै॥रामउवाच
हेमुनीश्वरइसप्रकारहुआनतसअरुमेअरुब्रह्मादिकभीसमहोते
हुएक्या॥सोसमसतहीसमनकोन्याइभासतेहै॥मुनीश्वरउवाच॥हेसाध
तूअरुमेअरुब्रह्मादिआदितिणपर्यंतसमजगतसत्तकेपदार्थहै॥न
इहजगतसतहै॥नअसतहै॥नसतअसतकेमधअनिरवचनीयहै॥का
हेतेजोअनभवरूपहै॥जोअनभवतेभिन्नकछीअ॥तोहैहीनहीं॥जैसे
सपनेकीसृष्टिअनभवविषेपडीफुरतीहै॥जोअर्थछानकाऔरदृष्टिपे
तोउहीरूपहै॥उसमेंनरककहणाविरवनहीआवता॥हेसाधकजैसेका
सानहाबदेस्यानाअबहुतहै॥जोस्थिरतनककेदेखीअनंतता...ताहै॥पक
छुवणीआनहीसरतनहीपावहै॥तैसेजेतेकछुपदार्थभासतेहै॥सोस
भसंकल्पमात्रहै॥कछुहोरवाआनहीं॥तूअपणेस्वभावविषेस्थित
तहोकरदेरव॥तूतोबोधवानहै॥मिथ्याभ्रमविषेक्यापडताहै॥हेसाध
मेनेतुझकोउपदेशकीयाहै॥तिसकरतूकोकछुविश्रामहुआहै॥क्या
हुआजोपदपदार्थभावसत्ताविषेविश्रामवाहै॥जोअसमसताहै॥प
रमपदविषेक्षणमात्रभीविश्रामनहीपाया॥काहेतेजोदृढइभाव
नानहीहुए॥हेसाधकपरमपदपावणेकासारगरइहोइहै॥जोसंतोकी
संगतअरुसतशास्त्रोकाविचारतिनअरुथविषेदृढअभ्यासकरणा॥इ
समारगविनाप्राप्तनहीप्रापतहोती॥जबअभ्यासदृढहोवे॥तबआ
त्मप्रापतहोवे॥अरुचित्तनिर्वाणहोजावे॥वकुइहैतअहंतेकीकलन
मिटजावे॥इसीकानाममनकिलीगाइहै॥अरुजबलगचित्तनिर्वाणनहीं
भया॥तबलगमागाहैरवननहीमिलता॥अरुजबअभ्यासकेबलकरकेवि
तिवीणहोजाताहै॥सोचेतनोसटाहोजातीहै॥तबआत्मपदप्राप
तहोताहै॥अरुवासनाविषयरूपकोपावताहै॥जोआत्मानुअरुमा
हमेवरहितहै॥अरुतेगकादोरवाजिसजीत्याहै॥सोकिसीकेसंगकबंध
मानमाननहीहोता॥अरुअध्यात्मशास्त्रादिविचारविषेहितरहता
है॥सबवासनाजिसकीनिवृत्तभईहै॥अरुइष्टअनिष्टकेरागद्वेषरलकी
देतेसकताहै॥सबखंडखंडविषेसमाहेताहै॥औसेजोज्ञानवानपुरुषहै
सोनिर्वाणआत्मपदकोप्रापतिहोताहै॥२३९॥इतिश्रीजथारथउप
देशोनामसर्गः॥अग्निउवाच॥हेराजाविपश्चितजबइसप्रकारमुनीश्वर

कहातबबधकवडेआत्मज्ञकोआपतिहुआ॥मुनीश्वरकेवचनसुणकरसू
नेवतहोगया॥जैसेकागजऊपरमूरतलिखीहोतीहै॥तैसेआश्चर्जवानाः
करइस्थितभया॥अरुसंसकेसमइविषेडगया॥जैसेचक्रउपरचडाभा
सतभ्रमताहै॥जैसेवाइविषेसूकात्रिणभ्रमताहै॥तैसेउहसंसेविषेभ्र
मनेलगा॥मुनीश्वरकाउपदेशसुणिआ॥परअभ्यासविनाआत्मपदवि
विश्रांतनपाई॥हेराजानपरमवचनोकोजिसअंगीकारनकीया॥जैसे
रागवलिविश्राहुतीपाएतीहै॥सोनिराधारएकहोताहै॥मइसुवनाकेंकेउह
ससेविविरहा॥अरुविचारनभयाजोइहसंसारविदकहै॥तामैइसं
काअंतनलेऊ॥जोमफकोआत्मपदभासे॥नातनपकेवा॥हेराजाविपश्चि
नइसप्रकारकरेनत्या॥उहबकरउनकेपासफिरनेलगा॥अरुपचिवचव
छाकणीलगा॥साथकाजोथमेथा॥सोतिसन्यागकीया॥सुथचेष्टाकणी
लगा॥जिसप्रकारइहचेष्टाकुवे॥तैसेइहभीकरे॥अरुउननेभीअधिक
चेष्टाकरे॥वडाउदयनपकणीलगा॥जनसइहसुवरवेनपकनेविनीनभया
परमनविषेकानलाइहगारवी॥तैसेगाथाकीवडाहोवे॥दिनदिनविचे
वहुतजाजनवथे॥मैअविदिकससारकाअनतलेवां॥नाइहकहानल
गचलीजातीहै॥जनआविद्याकाअंतआवेगा॥तबभोगआत्माकादर्श
नहोवेगा॥नबसहइसवरवेउपरांतसमाधलेउतया॥अरुयुगोकेनिकट
आइकरइपणामकीया॥प्रसकहाइभगवानइहताकालमैननपकीया
है॥परआत्मपदकोनहीप्रापतभए॥मुनीश्वरउवाच॥हेवधकमैनेतुम
कोजोउपदेशकीयाहै॥तिसकातुमनेभलीप्रकारअभ्यासनहीकीया
एसकारणतेतुमकोआत्मतत्त्वप्रापतिभए॥हेवधकमेनेवेहदेविखे
ज्ञानतुझपीविवगारीडारीथी॥पवतेसअभ्यासइपीपवनकेकेअजतन
करी॥सोतेउइहभीअच्छादीगए॥जैसेबडकाइककतीवेवचकविणाम
रीअच्छादीजातीहै॥हेवधकनतूअकरवहेजेपौडितहै॥जनतूपइतेहो
ना॥नबआत्मपदविषेइस्थितथावता॥अरइहवीजभीनष्टहोवेगा
जबअभ्यासकीदृढतोहोवे॥नबउहहतानअरुद्यानअनउदेहो
वेगा॥अरुअबजोनेरहेदविरवेमेघेनभीझागीहै॥सोमैनुकोक
ताहै॥हमआथइहोनुफभलीप्रकारविचारीयाहै॥जोमसारअविदकहै॥इ
सकामेअनलेवा॥नकहालगचलेजाताहै॥इसकारणतेअपणारी
रतथावे॥अरुइसकाअनतकिसीप्रकारदेरवा॥अवनेवेतनविखेहोलिखा
है॥अरुआगेतुफइहकरणाहै॥जोछाउजगप्रजनेतउद्यनपकरेगा॥नबते
कपइपरमेष्टीवगाजीप्रमनेहोवेगा॥नुफकोकहेगाजोवरमागा॥नब
तुकहेगा॥हेदेवअसाइहअविदकजगतहै॥सोअविद्याकिसीअंतनविखे
जैसेदेपननविवेकिसीठौरमलनताहोवेहै॥जिसकेजापइपणेदर्पनसुथ
होताहै॥तेसेआत्माकेकिसीकोणानिरवेअविद्यानसेननाहै॥जिसकेना
शहुएउलघिगए॥चिदात्माकासाक्षात्कारनुफकोहोवेगा॥जबअविद्या
नुपीजगतेकाअंतनदेखेगा॥नतेआत्मानुफकोभासेगा॥मेराशरीरच
रीखरीविरवजोजनजोअनप्रवर्तनवडमाजावे॥जैसेगरुडकावेगहोता
है॥तैसेवडनाजावे॥अरुइसतनभीमैरवसिद्धहोवे॥सरीरभीअरोगहोवे
अरुब्रह्मानरवणपरकोभीलहजावी॥अरुजहाभेरीइछाहोवेतहाचलाजा
वां॥मफकोसकेकोजोनहीं॥जबससारकाअंतदेखेगा॥तबआत्माकोमा
पतिहोवेगा॥इहदेवइहीवरदेवोजोमेरानामजारथएसरापरहोवे॥अरुक

छुनहींकरैगा॥ इहवथकजवतें इसप्रकारवरमांगेगा॥ तवविप्राजीकोहैगा
अैसेहीहोएं॥ तवतेरातपककेंडवेलपारीरवडइचंद्रमा॥ अरुसूरजेकी
न्याईप्रकाशवाननहोवेगा॥ अरुघडीघडीविखेजोजननप्रजनतुवहताजावे
गा॥ जैसेरारुहुकीहत्यावेगाकरचलतगाहै॥ तैसातेरापारीरवेगाकरवहते
जावेगा॥ जैसेप्रातःकालकेसमेसूरजउदेहोताहै॥ अरुप्रकाशवडता
जाताहै॥ तैसेतेरापारीरवडताजावेगा॥ अरुचंद्रमासूरजअगमकीन्याई
प्रकाशवानहोवेगा॥ ब्रह्माजीवरदेकरअंतर्धानहोजावेगा॥ अपराजीव्र
ह्मपुरीविखेजाइआपनिहोवेगा॥ अरुतेरापारीरप्रलेकालकेसमुद्रकी
न्याईवडताजावेगा॥ अरुजेसेवाउकरसुकेत्रिणउडतेहै॥ तैसेतुफकोब्र
ह्मांडउडतेभासहिंगे॥ तवतेरापारीरवडताब्रह्मांडरूपरकोभीलंघजावे
गा॥ तिसकेश्रीरप्रकाशभासेगा॥ वहुडब्रह्मांडभासेगा॥ आगेवहुइब्रह्मा
डइसीप्रकारकएब्रह्मांडनूंलंघताजावेगा॥ परतुफकोखेदकछुनहोवे
गा॥ महाअकाशकोभीतूंआछादलेवेगा॥ जहांकिसीततनकाअवरणआ
वेगा॥ तिसकोतूंवरपापानिदेइकरलंघजावेगा॥ सूक्ष्मतोके॥ इहवथक
इसीप्रकारकएब्रह्मांडलंघजावेगा॥ केसेहै॥ जोइइजालवनेहैजो
दीर्घदपाहै॥ सोइनकोअमतजाणतेहै॥ अरुजोप्रकितज्ञानतेहै॥ तिस
कासतकरजगतभासतेहै॥ अरुज्ञानवानकोमिथ्याभासतेहै॥ तिसमिथ्या
जगतकोतूंलंघताजावेहिगा॥ तहांजाइइस्थितहोवेगा॥ महांअनंत
स्वछातुफकोभासहिंगे॥ जैसेसमुद्रविखेअनेकतरंगउठतेहै॥ तैसेतु
फकोस्वछफुरतीभासहिंगी॥ परजिसविखेस्वछाफुरतीहै॥ तिसअधि
ष्टानकातुफकोअज्ञातनहोवेगा॥ तहांतूंदेखेगाजोमेवडातीनत्रिपाटि
हूआहै॥ तवअैसाअभिमानतुफकोउदेहोवेगा॥ तवतपकाफलवैरा
गभीआनउदेहोवेगा॥ अरुसाधहीइहसंकारतेरेहृदेविखेआनफु
रेगा॥ तिसकरपारीरकातूंत्यागकरेगा॥ हाकष्टहाकष्टहैदैवइहक्या
तुकमुफकोदीयाहै॥ जगतकेअनंतलेणकोमपारीरवधायाथा॥ सोतो
अंतकछुनआया॥ काहेतेजिसअविद्यातेछलभया॥ अविद्यातवनष्टहो
तीहै॥ जवआत्मज्ञानहोताहै॥ अरुआत्मज्ञानतवहोताहै॥ जवसंत
पास्त्रोकाविचारअरुसंतोकासंगहोताहै॥ सोसंतसंगअरुसतपास्त्र
मुफकोप्राप्तिहोवेतवज्ञानउपजेगा॥ इहतोमुफकोअैसापारीर
प्रापतभयाहै जोवडाभारउदापफिरताहो॥ अनेकसमेतूंपवनहोव
हि॥ तोभीइसकेनिकटित्रिणसमानहोतेहै॥ अैसाअतिक्रिष्टमेरापा
रीरहै॥ इसपारीरसाथमेकिसकोसंगतकरो॥ अरुकिसप्रकारपास्त्रो
काश्रवणकरो॥ इहपारीरमुफकोदुखदाएहै॥ तातेइसपारीरकात्या
गकरो॥ इहवथकअैसविचारकरतप्राणायामकरेगा॥ तिसकीधारणा
करकेपारीरकोत्यागदेवेगा॥ जैसेइंद्रकेवज्रकरखंडतहोइपर्वतगिड
तेहै॥ तैसेइकस्वछिभ्रमविखेतेरापारीरगिडेगा॥ तिसकेनीचेकए
पर्वतचूरणहोजावहिंगे॥ तहांवडाविटहोवेगा॥ तवदेवतेचंडका
काआराधनेकरहिंगे॥ सोचंडिकाभगवतीमेरेपारीरकाभोजनकर
जावेगी॥ तवस्वष्टिविखेवडीकल्याणहोवेगा॥ इहवथकजिसप्र
कारतेराभविखनहोसुणाहै॥ सोमेकहाहै॥ इसवनविखेजातमाल
विछेहै॥ तिसकोनीवेतूंतपकरेगा॥ इहतेराभविखतमेकहाहै॥ अवे
जैसेतेराइछाहोएतैसेकर॥ व्यासउवाच॥ हेभगवनवडाकष्टहै॥ जो

मेंइतेखेदकोप्रापतहोवेगा॥ तातेमेंएहउपाइकहुं॥ जिसकरइहको
वतानिवर्तनहोजावे॥ मुनीस्वरउवाच॥ हेवथकजोकछुवासनावुह
णीहै॥ सोअन्यथाकरवेकदाचितकछुभीनहींहोती॥ जोकछुपारीर
कोप्रारब्धहोतीहै॥ सोअवश्यहोतीहै॥ जैसेचिल्लतेछूटावाण॥ तव
लगचलिआजाताहै॥ जवलगउसविखेवेगहोताहै॥ जववेगखीणहो
ताहै॥ तवपृथ्वीपरगिडपडताहै॥ अन्यथानहीगिडता॥ तैसेहीजेस्माप
रव्धकावेगउछलयाआहै॥ तैसेहीहोवेगा॥ भावीफेरनेकोसमर्थहोवे
जीवपासभीतूंधावाचरनदाइनकरहि॥ अरुदाइचाभावेकरहि॥ सोतो
अैसनहीहोता॥ जोहूआहैसोइहोणाहै॥ अरुसोईहै॥ जोभावीमिटतीहोइ
तवकोतकसापत्रभीतहोवे॥ जोनकर्मास्त्रकीलजोअविघनदयाअगोही
कहितेहै॥ अरुतैसेहीहोतीहै॥ तवउसीप्रकारहोताहै क्यों॥ सोहोणीहो
तीहै॥ जोनहोवेतोक्याकहीये॥ तातेभावीमिटतीनहीं॥ हेवथकमेंतुफ
कोदोमारगकहेहैं॥ जवलगइसकोकर्मोंकीकल्पनाअभ्यासकनीहै॥ तव
लगकदाचितकर्मोंकेबंधनतेछूटतानहीं॥ अरुजोकर्मोकीकल्पनाआ
त्माकोस्पर्शकरे॥ तोकर्मकदाचितनहींवंधनकरते॥ काहेतेजोउसकोआ
त्मअहेतकाअनभवहोताहै॥ हेतनूंपकमदेखअनदीदेन॥ सखरूप
समआत्मरूपहोजातेहै॥ अरुकर्मतवलगवंधनकरतेहै॥ जवलगआ
त्मवोधनहीहूआ॥ अरुजवलगआत्मवोधहोवेगा॥ तवसभकर्मदग्ध
होजातेहैं॥ २७॥ इति श्री भविष्यत्तरकथनवर्णनामसर्गः॥ व्यासोवाच॥
हेभगवनअहैजोतुममुफकोकहा॥ सोमैंसुणाकरअउसकोप्रापति
हूआहों॥ अलाघ...नेतेउपरांतमरीकाआवस्थाहोवगी॥ जव
विस्ताररूपलासतपारीरवकाप्रारूपहोवेगा॥ मुनीस्वरउवाच॥ हेवथ
कजवतेरापारीरगिडेगा॥ तवतेरीसवतन्प्राणवासनासहतसेआकाश
रूपहोजावेगा॥ महासूक्ष्मअणुरूपहोजावेगी॥ तिससेवतनविखेतुं
फकोवहुडनानाप्रकारकाजगतभासेगा॥ पृथ्वीदेशकालपदार्थस
भभासिआवहिंगे॥ जैसेसूक्ष्मसंवतनविखेअनेकजगतभासतेआवते
है॥ तैसेतुफकोजगतभासिआवेगा॥ तहांतेरीसंवतविखेइहआनफु
रेगा॥ जोमेराजाहोअरुअकावकाहों॥ अरुमेरेपितामाताकानामपव
नहै॥ मेरेपिताकानामसमुद्रहै॥ अरुमाताकानामघटमनकोपुत्रीवंध
लेखाअरुपितामुफकोराजदेकरवनविखेगयाहै॥ तपकरणेलगाहै
अरुचारोंओरसमुद्रपर्जतइहमारागजहै॥ हेवथकतहांतेरानामसिंह
होवेगा॥ तहांतूंकएपीठोवेरावप्रजनराजकरेगा॥ अरुनानाप्रकारके
विखियोंकोभोगतहिंगा॥ हेवथकइकविदूरथनामाराजापृथ्वीपरहोवे
गा॥ सोतेरेसाथयुद्धअभावकरेगा॥ तेरीपृथ्वीआमालिणकाजनतकरे
गा॥ तवतूंमनमेंविचारकरेगा॥ जोमेवडासिथहों॥ अरुवडेभोगमैंभो
गेहैं॥ वहूतमेमावर्खमेतिविभ्रमीगाभोगेहैं॥ परइकविदूरथनामाराव
है तिसकोनापाकरों॥ हेवथकतिसकेमारणेकेतांईतूंसेनाकोलेचढे
गा॥ सोवारप्रकारकीसेनानाशकोप्रापतिहोवेगी॥ इहलीअरजोडारथ
अरुयाहावारप्रकारकीसेनाहै॥ सोसैनादोनोओरकीनाशहोवेगी॥ अरु
तुमरवेथैतउतरकरपरस्परजुधकरोगे॥ तुफकोभीवहुतपावेलागहिंगे
पारीरवहुतकासमाजावेगा॥ तोभीतूंउसकेसन्मुखजाइजुधकरेगा॥ ति

सको मारगा है रंगा का टिदेवेगा॥ कहाडे साथ तिसको मारकरवे बडे अप
रोग श्रुइ विखे आवेगा॥ सभ दिकाल तब शिडो भेपावहिगे॥ तूं वडा तेज
वान होवेगा॥ एक काल मोने रे पास मंत्री वैठे होवहिगे॥ तिनके साथ
तेरी कथा चलेगी॥ इक मंत्री नृप को कहेगा॥ जे वडा आश्चर्ज है जो विदू
रथ को जीतकार तूं फल मधुर पहा या है॥ वडा आश्चर्ज है॥ तब सिंधरा
जा तूं कहेगा॥ हे मंत्री इस विखे का आश्चर्ज है सरभे करते दिकाल भी
डरते हैं नु॥ अरु प्रले काल के समुद्र मे जो वन मे रसाथ मेना है॥ किसी
उतरेन आदि अरु अग्न नहीं आवता॥ विदूरथ के जीतणे विखे मृप को
क्या आश्चर्ज है॥ तब मंत्री कहेगा॥ हे राजा एने सेनाने रसाथ है॥ तो क्या है
आ॥ उस विदूरथ को तूं मन नहीं जाणाने॥ उसकी इस्त्री जो लीला है ति
सको सरस्वती जो इष्ट है॥ जगत म इताती तिरंजनी चित्त संवुत सिओप
त्रीक के मानती है॥ सो केसी देवी है जिसके क्रोध धक गाक के संप्रसा
विघ्न नाश हो जाती है॥ तिसको तिसकी इस्त्री लीलाने पूजकके वसिकी
या है॥ जो इह मानास र सतीको कहती है॥ जो इसको नाश कर डारे॥ ता
उह विघ्नको नाश उडाएकर॥ तिसको निकदि का नहे के सब हना॥ तब इह
राजा कहेगा॥ इह अराजो उह सरस्वती असी थी॥ तब मेरी जीतकी सप्र
काव भए है॥ सो कहो॥ तब मंत्री कहेगा इस जन उह सी सरस्वती है।
सा ज्ञान पाति है॥ अरु सब भूतो को इष्ट देवि विखे स्थित है॥ जैसा कोऊ
तिस विखे अभ्यास करती है॥ सोई सरस्वती सिद्ध करती है॥ हे राजन उ
इह राजा अरु तिसकी इस्त्री लीला सरस्वती सो मोख मागते थ॥ ता
किसी प्रकार इह मस सार बंधन ते मुक्त होवहिं॥ इसकारणा ते उह
मोक्ष भाव हुए॥ अरु तेरी जे हुए॥ राम उवाच॥ हे अराजो सरस्वती मे
रह दे विखे इस्थित है॥ तो मुक्त को मुक्त क्या नहीं करती॥ मै भी सदा सरस्वती
को उपासना करता हो॥ मंत्री उवाच॥ हे राजन सरस्वती सावित्त संवत है
तिस विखे जेसा निश्चा दिड होता है॥ तिसी को सिद्धता होती है॥ हे राजन ते
अपराजे हो सदा मांगता था॥ इसकारणा ते री जे हुए हैं॥ अरु उह मुक्त माग
ता था॥ उसको मुक्त प्रापत हुए॥ इसका संस्कार
पिछला उत्तलथ्या॥ तिसकर मुक्त भए॥ अरु तेरा संस्कार पिछले जन्म का ता
मसी था॥ तिसकारणा ते नृप को इछा न भए॥ अरु ज्ञान प्रापत न भए॥ अरु
आदि परमात्मा सत्ता सो सभ पदार्थ प्रगट भइ है॥ सो सत्य है॥ केवल ज्ञो आ
त्म सत्ता है॥ निष्किंचन पद है सो सदा अपणे भाव विखे स्थित है॥ ति
स विखे चेतनता जो सबंधन हुती है॥ अहं अस्मि तेहे॥ इस भाव का नाम चि
त है॥ तिस चेतनता देह इंद्रिया प्राण मन बुध आदिक द्रिशा जगत कल्पिआ है
तिस कल्पना कर विश्व चित विखे इस्थित है॥ अरु चित्त आसो पिड़िआ है॥
अप्रमादि कर देहादिक को कल्पा है॥ राम उवाच॥ हे साध आत्मा तो निह
किंचन केवल पद है निर्विकार है॥ तिस विखे नाम सो देह कहो ते उपजी॥
मंत्री उवाच॥ हे राजन जे मस ते विखे प्रमादि कके नामसो वपु द्रिष्ट आव
ना है॥ पर है नहीं॥ ते सेइ इस प्रकार भी द्रिष्टि आवते हैं पर है नहीं॥ मनान
कर के सत भासते हैं॥ नसमनुक को प्रमादि हुआ है॥ तब वासना के अनुसा
र जन्म पावता फिर आहे॥ इस प्रकार ते रे बहुत जन्म बीते॥ अरु पिछला
शरीर जाने उक भी गिआ है॥ सो मसहाता मसो था॥ अर्थ इह जो तामस तामसी
था॥ इसकारणा ते नृप को मोक्ष की इछा न भए॥ हे राजन ते रे बहुत जन्म व

नीत भए हैं॥ तिनको मैं जाणता नहीं॥ अरु तूं नहीं जाणता॥ राम उवाच॥ हे
अमल आत्मा तामस तामसी को क्या कहिए॥ मंत्री उवाच॥ हे राजन एके
ग्यान के ग्यान की है॥ इक केवल ग्यान की है॥ इक राजस राजसी है॥ इक के
वल राजसी है॥ इक तामस तामसी है॥ इक केवल तामसी है॥ सो भिन्न भि
न्न सुण॥ हे राजन जो निर्विकल्प अचेत चिन्मात्र सत्ता सो सवते फुरी है॥ ति
सको अहं प्रतीत अर्थिष्टा नहीं विखेर ही है॥ अरु निश्चका तन ही ज्ञापति
भए॥ अनात्म भाव का नहीं स्पर्श कीया॥ ऐसे जो ब्रह्मादिक है सो ग्यान
क ग्यान की है॥ अरु जिसको विभूत ग्यान की पदार्थ भासण लगे हैं॥ अरु स
रूप का प्रमादि है॥ अरु बंध मोक्ष स्पर्श कीया भी नहीं भी किया॥ सो केवल
ग्यान की है॥ अरु जिस सेवन को बंध मोक्ष सब ही आ॥ अरु नाना प्रकार के
राजसी पदार्थो विखे सत प्रतीत हुए हैं॥ अरु राजस कर्मो विखे द्रिड अभ्या
स है॥ तिनके को हो रन ही॥ तिनके अनुसार शरीरो को धारता रहता है आ
चल्या गया॥ सरूप को उह ही आया॥ चिर पर्जंत अभ्यास रहा॥ सो राजस रा
जसी कुणा है॥ अरु जिसको बंध विखे अहं प्रतीत भए है॥ अरु सरूप
का प्रमादि है॥ अरु जगत सत्त भासता है॥ अरु राजसी पदार्थो विखे अधि
क प्रतीत है॥ अरु राजसी कर्मो का अभ्यास है॥ तिसके अनुसार जन्म पावता
है॥ वहुइ धीय अहं हो सरूप की ओर आवे॥ तिसका नाम केवल राजसी है॥ सो
राजस राजसी ते बहु है॥ अरु जिसको सरूप का प्रमाद हूआ है॥ अरु ज
गत विखे सत प्रतीत हुए है॥ तिसका नाम विखे जो तामसी कर्म है॥ तिन
कर्मो विखे द्रिड अभ्यास हूआ है॥ तिनकर के महा नीच जन्मो को पावता है॥
चिर पर्जंत चल्या जाता है॥ अरु देव संजोग ते कबी मोक्ष की संगत आ ता
प्रापत हुता है॥ तो भी त्याग जाता है॥ सो तामस तामसी है॥ अरु जिनके
सरूप का प्रमादि हूआ है॥ अरु तामसी कर्मो को करते हैं॥ तिनके कर्मो के अनुसा
र जन्म पावता जाता है॥ पावना पावता जो है दिखवडा॥ तामसी कर्मो का त्या
ग कर मोक्ष गति आय प्राप्त हो गया॥ सो केवल तामसी है॥ तामस तामसी ते
स्वच्छ है॥ हे राजन तूं तामस तामसी था॥ इसकारणा ते सरस्वती सो अप
रागी जे हो मांगता रहा॥ मोक्ष का अभ्यास न तूं ने कीया॥ राम उवाच॥ हे
निर्मल चित मंत्री मे तामस तामसी था॥ इसकारणा ते मोक्ष की इच्छा न
करी॥ पर अब मुझ को सोई उपाय कहो॥ जिसकर उह भाव मेरा निवर्त
होवे॥ अरु आत्म पद की प्रापति होवे॥ मंत्री उवाच॥ हे राजन निष्काम के
जाणो जो कोऊ किसी पदार्थ की इच्छा करता है॥ तिसको उही पदार्थ प्रा
पति होता है॥ अरु जिसकी भावना कर अभ्यास करता है॥ उह पदार्थ निर
मल हो प्रापति होता है॥ अरु जिसका अभ्यास करता है॥ उही रूप हो जाता
है॥ ऐसा पदार्थ त्रिलोकी विखे कोऊ नहीं॥ जो अभ्यास के वल ते न पाइए
जो प्रथम दिन विखे को उ विकर्म इस तें हूआ॥ अरु आगले दिन शुभ कर
मे करके सब उह विकर्म लोप हो जाता है॥ शुभ कर्म सुख होता है॥ ते
सा तूं अब आत्म पद का अभ्यास करेगा॥ तब तूं उह को आत्म पद प्रापति
होवेगा॥ अरु तेरा जो तामस तामसी भाव है॥ सो निवर्त हो जावेगा॥
हे राजन जो पुरुष किसी पदार्थ पावणे की इच्छा करती॥ अरु तिसके
निमित्त जतन करता है॥ अरु हट कर फिर भी नहीं॥ तो अवश्य सो तिसको
पावता है॥ देह इंद्रीयो का अभ्यास इसका द्रिड हो रहा है॥ तिसकर देव
जड़ड व जड़ देह इंद्रीयो का पावता है॥ जब तिन ते उलट कर आत्मा का

अभ्यास करे तब आत्मपद भी प्राप्ति होवेगा ॥ देह इंद्रिआं का विजोग हो
जावेगा ॥ तातें सदा आत्मपद का अभ्यास करो ॥ तिस कर आत्मपद प्रा
प्ति होवेगा ॥ हे वधक इस प्रकार तें सिधराजा होवेगा ॥ अरु मंत्री भी
को उपदेश करेगा ॥ तब तेरा राजका त्याग करेगा ॥ अरु बन विखे जावेगा ॥ तुम
शाकरोग वाले मंत्री सेना संजुगत तुफ को कहेगा जो तूं राज करो ॥ सभ का
रोग रहते राचित्त विरक्त होवेगा ॥ राज का अंगीकार करेगा ॥ तिस वन विखे तास
तोकूं इस स्थान होवेगा ॥ नहीं जाइ कर तूं स्थिति होवेगा ॥ परमे वैराग्य प्राप्त हो
वेगा ॥ तब उनकी कैया प्रसंग तुफ को स्पर्श करेगा ॥ अरु सनजनों को कछु मां
गीये नहीं ॥ अब भी वचन इच्छा अस्त की बादि कहे ॥ जस पकपद नेसराय
मांगीये नहीं तो भी प्राप्ति होती है ॥ तेसे संतजनों सो मांगे विना भी अस्त न प्रा
प्त होता है ॥ जब संतों के अमृत वचन सुणता है ॥ तब इसको विचार उत्पन्न
होता है ॥ जो मैं कौन हों अरु इह जगत क्या है ॥ अरु जगत किसतें उपजा है ॥
तब उनके हृदे कों पाइ कर इस प्रकार जाणता है ॥ जो मैं अचेत चिन्मात्र रूप
हों ॥ अरु जगत मेरा आभास है ॥ अरु चित ही जगत का कारण है ॥ सो चित मेरे
विखे नहीं ॥ तो जगत के से होवे ॥ जगत भी मेरे विखे नहीं ॥ मैं अपणे ही आप वि
खे इस्थित हों ॥ हे वधक इस प्रकार सर्व अर्थ तें मन को अनेक कै अपणे स्वरू
प विखे इस्थित होवेगा ॥ तब परमानंद निर्वाण पद प्राप्त होवेगा ॥ २९ ॥ इ
ति श्रीसिद्धनिर्वाण वने नं नारुमसरगः ॥ मुनीश्वर उवाच ॥ हे वधक इस प्रकार
तेरी भावी है ॥ सो मैं तुफ को सभ कहा ॥ आगे जो भला जानता है सो करो ॥ अग्नि
उवाच ॥ हे राजा विपश्चित जब इस प्रकार मुनीश्वर ने बधक को कहा ॥ तब बध
क आश्चर्य को प्राप्त हूआ ॥ अरु उहां ते उठ खडा हूआ ॥ मुनीश्वर सहु इस्नान
को गये ॥ दोनों तप करते रहे ॥ अरु शास्त्रों का विचार रहे ॥ तब केताकाल वीत्या तब
मुनीश्वर निर्वाण होगया ॥ उहां बधक हीन पकरी को समर्थ हूआ ॥ तो कि
सी प्रकार मेरी अविद्या नष्ट होवे ॥ हे राजा विपश्चित सो जुग रबजे मे बधक ने त
प कीया ॥ तब ब्रह्माजी देवतां को साथ लेकर आया ॥ तो कहा कछु वर मांगो
तब उस बधक ने कहा जो मेरा शरीर बडा होवे ॥ जो मैं अविद्या को देखों ॥ हे रा
जन बधक इही जाराण भया ॥ जो विश्व वर मांगता मेरा कल्याण न हो ॥ पर
दृढ भावना देवल ने ता गनकर इही वर मांग्या ॥ जो मेरा शरीर वडा होवे ॥ अ
रीच री विखे जो जन सो जन प्रजन्त वधे ॥ तब ब्रह्माजी कहा जो ऐसा ही होवे
गा ॥ इस प्रकार कह कर ब्रह्माजी अंतर्ध्यान होगये ॥ तब उसका शरीर बडा हो
लगा ॥ इक वरे प्रजन्त इक जोजन बडा हूआ ॥ कैलप्र पजन्त उसका शरीर बड़ मा
गया ॥ कई ब्रह्मांडों प्रजन्त वध्या गया ॥ जिस ओर को देखे तिस ओर अनंत
दृष्टि आवे ॥ अविद्या रूप जब थका तब फेर आया जो अविद्या का अं
त तो नहीं आवता ॥ इस शरीर को मैं कहां लगउं दाइ फिरो ॥ इसका अवत्या
ग करो ॥ तब आत्मपद को प्रापत होवो ॥ हे राजा विपश्चित तब प्राणों को
ऊर्ध्व खैंच कर शरीर को त्याग दिया ॥ उह शरीर इहां आन पडा है ॥ जिस ब्र
ह्मांड तें उह गया है ॥ सो इह मारे स्रष्टि की सृष्टि है ॥ अर्थ इह जो अनंत सृष्टि का य
ह सेवन ॥ इस सृष्टि विखे इसकी अंतभा आन पडी है ॥ अरु इहां जा यन तांप्र
विखे आनि पडा है ॥ तिस प्रथवी पहाड सभ नाश कर छडे हैं ॥ अरु जहां
ते गिडा है ॥ तहां अकाश विखे नदी रेकी त्याई उनको भासता है था ॥ अरु
इहां इस प्रकार गिडा है ॥ जैसे इंद्र का वज्र होता है ॥ हे विपश्चित इह विखे सु
छूटा ही वधक महा भ्रम था ॥ जब उसका शरीर गिडा ॥ तब सब का भगवा
नां उसकी वज्र ध्यान करी ॥ तिसकर तिसका नाम रक्ताभगवती हूआ ॥ अर होर

जो शरीर की समग्री रही सो मेधा प्रथवी भए ॥ तब चिरकाल वितीत भए
आन वस्त का अप्रिथवी होत भए ॥ तिस प्रथवी का नाम मेदनी परा अ
व ब्रह्माजी जो न इस तिष्टती है ॥ तिस प्रथवी पर अब कल्याण हूआ है
अब तूं हो नेरी इच्छा हो एत होवे जाव ॥ मैं भी अब जाता हों ॥ जो इह नी पाठ
वा जगत कराणा है ॥ तिस मेरा अवाहन कीया है ॥ तहां मैं जाता हों ॥ भास उवाच
हे राजा दशरथ इस प्रकार तुफ को कहि कर अग्नि देवता अंतर्ध्यान होगा
या ॥ जैसे मेघ हा स्याम मेघ तें बिजली चमत्कार कर के अंतर्ध्यान हो जाता है
तब मैं उहां तें चल्या तो उह सृष्टि विखे गया ॥ तहां अरु प्रकार के प्रा स्र
हो रहा रही प्रकार के प्राणी बहु दुआ गो होर सृष्टि विखे गया ॥ तहां अ
म प्राणी देखे जिनको टेगो का छिकी अरु अचार मानुखां का ॥ अरु आगे
होर सृष्टि विखे गया ॥ उनके शरीर पाखाणों के अद्भुत विवहार क
होर सृष्टि विखे गया ॥ तहां आकाश रूपी उनकी मूरता ॥ त
नें है ॥ तिस में परे अरु सृष्टि विखे गया ॥ तहां बालक नेता वनाके नें है
व आगे गया तहां क्या देखा जो प्राणी वे देही रहे ॥ बालक ने ताबना के नें है
पर खान पान कछु न करहि ॥ हे राजा दशरथ इस प्रकार मैं चिरकाल अज
नाफिरता रहा ॥ पर अविद्या का अंत न कहां न आया ॥ तब मैं विचार किया
जो आत्मज्ञानी होवों ॥ तब अंत आवेगा ॥ अरु किसी प्रकार न आवेगा ॥ इस
प्रकार विचार कर मैं एक वन विखे गया ॥ अरु ध्यान की सिद्धता को वन विखे
तप करणे लगा ॥ जब केताक काल न कीया ॥ तब चित विखे उपजी जो कि
सी प्रकार मुनी को निकट जावों ॥ तिन की संगत कर मुझ को शांति पद
प्राप्ति होवेगा ॥ हे राजन् अैसे विचार कर इहां ते चल्या ॥ कल्पतरु विखे
के वन विखे आया ॥ तब उह कुपुरुख मुफ को मिलिआ ॥ तिस कहा कि इस
थक हो चल्या है ॥ मेरे निकट तूं आइ ॥ तब मैं उसको कहा तूं कौन है ॥ तब
उस मुफ को कहा ॥ जो मैं न रात न पहो ॥ जो तें नें कीया अब जो कछु तूं वर मा
गा है सो मैं देवों ॥ तब मैं कहा कि हे साध मेरी इच्छा तो इही है जो मैं आत्म
पद को प्रापत होवों ॥ तब उसने कहा हे राजन तूं मुफ एक जन्म और पावेगा
गा है ॥ पर तिस का उह शरीर तेरा अभी विखे मिलेगा ॥ तब तूं मानुख का
शरीर पावेगा ॥ अरु ज्ञानवानों की संगत विखे जावेगा ॥ तिस सभा वि
खे अब तूं मनुख शरीर धारेगा ॥ तब तेरे ताएस भ जन्मों अरु क्रिया का स
मन होआवेगी ॥ अरु उहां तुफ को सरूप की प्रापति होवेगी ॥ तब अब स्मरण का
शरीर धार ॥ हे राम जी दशरथ जब इस प्रकार उस कहा ॥ तब मैं विचरता करी
जा मृग होवों ॥ तब सत्य रूप प्रतभा मुफ को आइ प्राप्त ॥ मैं मृग ही होगया ॥ त
मारी सृष्टि में एक पहाड की कंदरा विखे विचरता भया ॥ तिस देश का राजा
जा है ॥ सो शिकार खेलने को चल्या ॥ उस मुफ को देखिआ ॥ तब मेरे पाछे उ
स घोडा दौडाया ॥ तिस के आगे मैं दौडता जावों ॥ पर घोडे का वेग तीखा था
मुफ को उन पकड लीया ॥ अरु अपणे साथ ले आया ॥ तो नाट दिन राखि
आप रखे ॥ तन सद रचे छाद दरवी ॥ तिस कारण ने मैं मारी सभ संत का रहा
ले आया ॥ हे राजा दशरथ अब मैं मृग के शरीर पाया है था सो त्याग कर मै
नुख का शरीर पाया है ॥ तो कुछ तुफ इच्छा था सो मैं सभ कछु तुफ को कहा
जो कछु देखा सु णिआ है सो कहा है ॥ वाल्मीक उवाच ॥ हे अंग राजन व
इस प्रकार उह विपश्चित ने कहा ॥ तब राम जी विपश्चित सो प्रश्न कीया
कि हे विपश्चित तूं अगाना हो रस्वाष्टि का था ॥ इहां के कैसे आया ॥ भास उवा
च हे राम जी जेहा उह सभ गिडिआ था ॥ उह इहां होर सृष्टि का था ॥ एक का
ल मो प्रकाश विखे उर्वीसार रवी सुर ध्यान लगाई वेठा था ॥ तिस सार राकर

व॰
म॰
४३

43

है पृथवीकोआयाजगकेनभिन्न॥ मारगविषेजोउर्वीसावेताथा॥ तिस
कोसभजाणाकरइहचरणालगाया॥ नवउसमाथनेउनरकारउइकोउ
रदरवतभयो॥ देखकरस्रापदीया॥ किहेपाबनेफसभजाणामकोप
रणालगायाहै॥ अरुगर्भकीयाहै॥ तातेनेरेजगकोइकसोस्वगनाम
करेगा॥ जिसेइस्थानउहपडेगा॥ सोपृथवीभीनाशहोजावेगी॥ ऐसा
ऐसेउसरिखकेआपदीया॥ अरुइहजगकोंल्लागापृथवीपर॥ तब
अरुसृष्टितेउहसवआनिडो॥ पृथवीचूरणहोगाए॥ उहतोइसप्रकार
गिइआ॥ अरुमेंतपत्रपीमुनीस्वरकेवरकेंमेंमनगहोकरतुमारीसभा
खिआयाहो॥ अबहेरामजीजबप्रलेहोता॥ तबप्रेरादितहोता॥ अरु
मननहोता॥ तोसन्नदरूपनहोता॥ जोसनकीसिष्टिकाथा॥ हेरामजीतुमे
हमारीसनसृष्टिकोविखहोऊ॥ अरुहमनमारीसृष्टिकेसनविखहै॥
जैसेइहसनपदार्थोकाहोणाहुआ॥ अरुनराकाभीहुआ॥ जैसेसृष्टि
है॥ तैसेउहसृष्टिभीहै॥ जोइहसृष्टिहै॥ तोउहसृष्टिभीहै॥ परवासन
तेनइहसतहै नउहसतहै॥ इहभीभ्रममात्रहै॥ सतवस्तनहीउहभी
भ्रममात्रहै॥ सतवस्तकाइनहीं॥ सतवस्तउहीहै॥ जोमननसहतषटइं
द्रियातेअगमहै॥ साआत्मसताहै॥ जिसतेइहसर्वहै॥ अरुजिसविषे
सर्वहै॥ जिसकेइहसर्वहै॥ जोइहसर्वहै॥ ऐसीजोपरमात्मसताहै॥
तिसहीविखेसभकछुवणताहै॥ हेरामजीजगतनसंकल्पमात्रहै॥ सं
कल्पकामिलणासंकल्पसोकयाआश्चर्जहै॥ छायाअरुधूपइकठीनहीं
होती॥ सतअरुजडभीइकठानहीहोता॥ अज्ञानअरुज्ञानभीइकठेनहीं
होता॥ परआत्माविखइकठेहोतेदरखीतेहै॥ हेरामजीजबइहफुरतसं
नकरताहै॥ तबअनभवरूपहीहोताहै॥ वहुडइसमेविखसनगगनआभा
सिआवतेहै॥ अरुछायाधूपभीभासिआवतेहै॥ ज्ञानअज्ञानसतजड
भासिआवतेहै॥ जैसेविरुधपदार्थप्रकाशविखेभासिआवतेहै॥ तैसे
संकल्पसोसंकल्पमिलजातेहै॥ इसविखिकआश्चर्जहै॥ अरुसभअ
गनप्रकाशावतेहुतेहै॥ आत्मसताविखिकछुवणिआनहीं॥ सदा
निराकारनिर्विकारहै॥ निराकारविखप्रकाशअरुनिर्विकारविखवि
कारभासतेहै॥ इहीआश्चर्जहै॥ अरुजैनेकछुप्रकारद्रिष्टिआवतेहै॥
सोउहीरूपनिराकारहै॥ ब्रह्मसताइसप्रकारहोकरभासतीहै जग
तकोअसतकहणाभीनहीबणता॥ जोअसतहोता तोप्रलेहोकर
पृथवीआपतेजवायुआकाशवहुडतेउत्पादिहोते॥ प्रलेहोकरजोव
हुडउत्पनहोतेहै॥ तातेअसतनहीं॥ चेतनरूपआत्माकासुभावहै॥
आत्मसताहीइसप्रकारहोकरभासतीहै॥ हेरामजीजबप्रलेहोती
है॥ तबसभभूतपदार्थनष्टहोजातेहै॥ नष्टहोकरजोफेरउत्पन
होतेहै॥ इसीतेकहाजोआत्माकाइहसृष्टिअभासमात्रहै॥ अरुब्रह्म
सताविखअनेकजगतपडफुरतेहै॥ अरुअपणीसृष्टिहीकोजोवैजा
णतेहै॥ इहजीवसभब्रह्मरूपोसहेइकनेरगाहष्टि॥ साउनकोसृष्टिको
होरनहीजानता॥ जैसेसिद्धकोसृष्टिअपणीअपणीअनभवविखप
डीफुरतीहै॥ जैसेसनकीसृष्टिसिद्धभिन्नहोतीहै॥ तैसेइहसृष्टिअप
णीअपणीहै॥ अरुमिलभीजातीहै॥ आत्माविखेसभकछुवणता
है॥ जैसाअनादिअरुआदिइकठीनहीहोती॥ विथअरुनिरखेदइकठीन
हीहोती॥ विकारअरुनिर्विकारइकठेनहीहोती॥ सोप्रकाशविखअरु
आत्मसतासतसनिइकठेद्रिष्टिआवतेहै॥ इसविखिकछुआश्चर्जनहीं॥

जगतकछुभिन्नवस्तनहीं॥ आत्मसताहीइसप्रकारहोकरभासतीहै
हेरामजीचारसताइसजगतविखफुरीहै॥ सारथीगडोपतीअरुसा
मानब्रह्मसताअरुअविद्या॥ तिनविखसारथीअरुगडोपतीस
ताजगिआसीकीभावनाभिखभासतीहै॥ अरुसमानसताज्ञानी
काभासतीहै॥ अरुअविद्याअज्ञानीकोभासती॥ सोपाताभीब्रह्मते
भिन्ननहीं॥ ब्रह्महीकेनामहै॥ ब्रह्मसतासुभावचेतन्नताकरकेऐसे
होभासतीहै॥ जैसेवायुफुरणेकरचंचलताभासतीहै॥ वहुरनेकर
अचलभासतीहै॥ तैसेचेतन्नफुरणेकरकेनानाप्रकारकेपाइपडेउद
नेहै॥ फुरणेतेरहितनिर्विकल्पहोजाताहै॥ ऐसापदार्थकोईनहीजोअसतनहीं॥ सभ
हौ॥ तिसविखसतनहीं॥ ऐसाभीकोईनहीं॥ अरुजैसेइन
समानहै जैसाप्रकाशकफुलतेसेघटपटआदिक॥ सभप
केउत्थानकाअनभवहोताहै॥ तैसेउनकाअनभवहोताहै॥ सोस
दार्थसताहीकरसभीसतहै॥ अरुजेनेकछुपाइअर्थफुरेहै॥ तिसकानाश
भमिटिजातेहै॥ तातेअसतहै॥ आत्मसताज्योकीत्योहै॥ सतअआ
कदाचितहीहोता॥ जोमरकरजन्मनहुआतवआनंदहै॥ ततभयो॥ तातेहोक
अरुजोमरकरवहुडजन्मलेताहै॥ तबभीअभिलाषाभया॥ तातेअरु
करणविअर्थहै॥ हेरामजीजगतकेआदिविखभीब्रह्मसताथी॥ अरु
अंतविखभीउहीहोवेगी॥ तोआदिअरुअंतविखउहीहै॥ तबमध्यवि
खभीउहीजाणीय॥ तातेसभजगतआत्माहीरूपहै॥ जेतेकछुपाइहै
सभअर्थसजतहै॥ सोवेपाईअरुअर्थकाअधिष्ठानब्रह्मसताहै॥ तातेस
भजगतब्रह्मरूपहै॥ जिसकोजथार्थअनभवहोताहै॥ तिसकोअसेही
भाताहै॥ अरुजिसकोयथार्थअनभवनहीभया॥ तिसकोनानाप्रकारको
जगतहै॥ परआत्माविखकछुभीजगतनवणिआनहीं॥ सभप्रकाशरू
पहै॥ ब्रह्मसतासदाअपणेआपविखइस्थितिहै॥ हेरामजीपापतेभी
कोइनउसकोभासताहै॥ तोसमभयानसाउनाशरूपहै॥ अरुपनतेअनभवभीहोता
इहीकहताहै॥ अरुदेवलोकभीकहितेहै॥ अरुमनतेअनभवभीहोता
है॥ जोद्रिष्यपदार्थसभनाशरूपहै॥ जिससतजाणाहै॥ तिसकेसाथप्रीत
सकछुनहीं॥ जोइहसराकछुवणिआनहीं तोसकोकहो॥ जिसविखइ
इहसभपदार्थभासतेहै॥ अरुफुरतेहै॥ तिसअधिष्ठानकोदेखतासभउही
रूपभासहिगे॥ अरुजोपुरुषसुभावविखइस्थितिहै॥ तिनकोइहविदे
नपाभावानहोतेहै॥ सथनतोअधिष्ठानदेखहै॥ अरुभिन्नेउनकोआवादे
खेहै॥ दशादिशाकोसेफिराहो॥ अरुवडेनभोगभोगेहै॥ वडेवडेविभूने
पाएहै॥ अरुइहदेखहै॥ अनेकप्रकारकीचेष्टाकरीहै॥ परमेफकासुखप्राप
तनभया॥ काहेतेजोसभभोगपदार्थअरुकर्मअविद्याकरकेरचेहुएहै॥
तिसअविद्याकेअंतलेनेकोवहुतकालफिरतारहाहो॥ अनेकजनमो
जनपरअनेकहूनहीपाया॥ अरुवसिष्टजीकीकृपाकरअविद्याकोज
सरूपकासाक्षात्कारहोवेगा॥ अविद्यानष्टभएहै अरुपरमानंदकाप्रा
पनहूआहै॥ २८२॥ इति श्री विपश्चत दिग्जान रथ स बुरीना मसर्गः॥ ठा
ल्मीकउवाच॥ हेसाधजबइसप्रकारविपश्चतकहा तबसायंकाल
कासमाहूआ॥ सुजेअनथानेहोगया॥ मानोविपश्चतकेदुमाततदेख
णकोअनेसृष्टिविखगयाहै॥ अरुनोवतनगारेवाजणेरा मानोराजा
दशरथकोजेजेपडेपुकारतेहै॥ तिसीसमेराजादशरथनेकरअरुजवा

व॰ म॰ ४४

44

हरिकरभ्रूखनवसैोंकरजथाजोगराजाविपस्यनकापूजनकीया॥अरु
दर्शरथनेआदिलेकरराजासभवसिष्टजीकाप्रणामकरनभए॥अरु
यथाप्रणामककेसर्वसभाअपरोअपरोइस्थानोंकोगए॥इस्नानकी
या॥जथाक्रमककेभोजनकीया॥तेमककैविश्रामसहितरात्रकोविती
नकीया॥जबसूर्जकीकिरणाउदेभए॥तबअपरोअपरोइस्थानपर
स्यनमस्कारककेआइवेठे॥तबवसिष्टजीपूर्वलेप्रसंगकोलकरबो
ले॥हेरामजीइहअविद्याअविद्मानहै॥हैनहीअरुभासतीहै॥जहां
अस्थूलहै॥सोवस्तसदाविदमानहैसोभासतीनहीं॥अरुजोअविद
मानहैनहीसोसदाभासतीहै॥इसीकानामअविद्याहै॥हेरामजीआ
त्मसत्ताअनभवरूपहै॥तिसकाअग्यानहोणानिश्चैहोवहाहै॥अरुअवि
दिकजगततजोकहीकवीकछहूआनहीं॥सास्पष्टहोभासताहै॥अहो
अविद्याहै॥हेरामजीजिसराजाकेमंत्रीकाउपदेससभनतुफेअवगा
कीयाहै॥अरुविपस्यतौकाहननानभीसवदगाकीया॥अबइसविपस्चन
कीअविद्यानष्टहोतीहरि॥हमारेअधीवादअरुजवारथवचनोंक
कै॥अबइहजीवन्मुक्तहोकरविचरेगा॥इसकीअविद्याअबनष्टहोती
है॥मेरेउपदेशाकरजीवन्मुक्तहोकैजैसाइसकीइच्छाहोवेतहांविच
रे॥परजवआत्माकीओरआइया॥तबअविद्यानष्टभए॥आत्मतत्तकोज
णाववनजाणताइसीकानामअविद्याहै॥सोआत्मसत्ताककेनष्टहोजा
तीहै॥तेसेअंधकारतवलगारहतानाहै॥जवलगसूर्जउदेनहीभया॥ज
वसूर्जउदेहोताहै॥तबअंधकारनष्टहोजाताहै॥तेसेप्रकारअवि
द्यातवलगारहतीहै॥जवलगआत्माकीओरनहोआया॥जवआत्मा
कासाक्षात्कारअनभवहूआ॥तबअविद्याजातीअनेप्रसनअभावहोजा
ताहै॥अविद्याअविदमानहै॥अरुअसस्यककैप्रीकोसूतताभासतीहै
जैसेमृगत्रिस्नाकाजलअविदमानहैहरि॥विचारकीएतेअभावहोजा
ताहै॥तेसेअविद्याभलीप्रकारविचारकीएतेअभावहोजातीहै॥हेरा
मजीअविद्यारूपीविखकीवलीहै॥सोदरषणमात्रफूलीसाथसुंदर
भासतीहै॥परस्पर्शकीएतेकाटेचुभतेहैं॥अरुफलभक्षणकीएतेकष्ट
कोप्रापतिकरतेहैहरि॥सोफूलफलक्याहै॥जेतेकछूभाहस्पर्शरूप
रसगंधइंद्रियाकेविखहैं॥दरषणमात्रसुंदरभासतेहैं॥सोफूलफलहै॥
जवइनकोस्पर्शकरतेहैं॥तबत्रिस्नारूपीकंटकेचुभतेहैं॥अरुइंद्रिया
सोभोगरागोंकरदागहैदुखकष्टप्रापतिहोताहैहरि॥हेरामजीअविद्या
अनरतेस्तनहै॥अरुवाहजवडेअर्थसजगतभासतीहै॥जेसेसकाश
विखइहधनखनानाप्रकारकेरंगथारेदृष्टिआवताहै॥परअनरत
स्तनहैअग्याहोताद्रिष्टिआवताहै॥तेसेअविद्याअग्यानीभासती
है॥जैसेउहहधनषजलरूपमेघोंकेआश्रेरहताहै॥तेसेइहअविद्या
जडमूरखोंकेआश्रेरहतीहै॥अरुअविद्याउपीथरहै॥जिसकोस्पर्शक
तीहै॥तिसकोअवरणकरलतीहै॥जवलगअसमर्थनहिसाणिआ॥त
वलेगभासतीहै॥विचारकीएतेकछूनहीनिकसती॥जेसेसिपीवि
खरूपाभासताहै॥अरुविचारकीएतेअभावहोजाताहै॥तेसेविचारकी
एतेअविद्यानष्टहोजातीहै॥अरुचेचलहै॥आत्मअनात्माकाअविचा
ररूपीविदजाइटेहीअथहै॥विचारकीएतेछूटजातीहै॥इसीकानाम
अविद्याहै॥जोहैनहींतोभासतीहै॥हेरामजीअविद्यारूपीनदीहै॥अरु

त्रिस्नारूपीतिसविखजलहै॥इंद्रियोंकेअर्थरूपीचूमनस्थेरहै॥रागद्वेषख
रूपीतिसविखनेहूएहै॥जोप्रवाहएसनदीकेप्रवाहविखयपडाहै॥तिसम
कोवडेकष्टप्रापतहोतेहै॥त्रिस्नारूपीप्रवाहविखवहतेजातेहै॥तिन
कोअविद्यारूपीनदीकाअंतनहीआवता॥अरुजोकर्तारकेसन्मुखहो
करपारकाप्रापतिहूआहै॥तिसकोकोईकष्टनहीहोता॥वेरागअरु
अभ्यासरूपीवेडीपरचडाहै॥अरुआत्मारूपीकनारकेसन्मुखहूआ
है॥सोआत्मापदपारकोप्रापतिहोवेगा॥तिसकोकछकष्टनहोवेगा
हेरामजीजेतेककछपदार्थद्रिष्टिआवतेहै॥सोअविद्यारूपहै॥तिनविखजो
भावनाकरतेहै॥सोमूरखहै॥इहअविद्याकाविलासहै॥इकअैसीयोतखष्टा
है॥जिनोंविखसेकईचेइमेउदेहोनेहै॥अरुसहस्तवसहजेउदेहोनेहै॥अरु
कणअैसीस्त्रिष्टाहै॥तिनविखजीवसदासमताभावकोलीएविचरेहै॥अ
अरुसदाअनंदीरहितेहै॥अरुकणअैसीस्त्रष्टाकोअंधकारकवहूनहीं
होना॥अरुकणअैसीस्त्रष्टाहैजोजलप्रकाशअरुतमजीवकेअथीनहै
जेताप्रकाशवाहै॥तनाकेरलवरिं॥कहूअैसीस्त्रष्टाहैजीवनमरनेहै
नवूहेहोतेहै॥सदाएकरसरहतेहै॥प्रलेकालविखसभइकदेहीमरते
हैं॥कहूअैसीस्त्रष्टाहैजेजहांइस्त्रीकाउनहीं॥कहूपस्हाडोंकीन्याईजीउ
काआकारहै॥हेरामजीइत्यादिलेकरअनेकब्रह्मांडहरि॥सोपडेक
रतेहहरि॥सोअविद्याकाविलासहै॥जेसेसमुद्रविखतरंगरूपीतरंगप
डफुरतेहैं॥अरुतिनेभीजानतेहै॥अविद्यारूपीधारकेसंजोगते॥हेरामजी
वडेवडेमगरमछअरुमातीमणस्वर्णमणथानममणअरुसन्जोइस्थानहै॥
अरुउनहीदोजेनेहैअनेरवजासप्रकारकेविभ्रमकतेपदार्थहै॥तिनरूप
इस्थानहै॥अवरानकोतिसकेसमुद्रहै॥सोविदहीरथकसमुद्रहै॥अस
नकेनलोवहै॥अरुवहुडकेउन्दवभिन्नसोलविछेतेआदिलेकरजो
उहुदेइस्थानहैजी॥अरुसदेवअयपचवाहै॥अरुवडेदिवजावरेहेन
इनेआदिलेकरजोपदार्थहै॥सोसभसंकल्परूपहै॥अविद्याकेरचेहूए
है॥इनकोजोविश्वासकरतेहै॥सोमूरखहै॥तिनकेजीवरणकोधिककारहै
हेरामजीइहअविद्याकाविलासहै॥विचारकीएतेकछूनहीनिकसता
जेसेमाहूपलविखअरुणहोतीनदीभासतीहै॥विचारकीएतेअविद्याका
विलासजगतअभावहोजाताहै॥जिसकोआत्माकाप्रमादहै॥तिसको
देवतामानखपसुपंछीआदिकअरुअनेकप्रकारकेपदार्थभास
तेहै॥अरुआकाशभावककेजगतसत्यभासताहै॥अरुजिसकोआत्मा
काअनभवभयाहै॥तिसकोसर्वआत्माभासताहै॥हेरामजीएकद्रिष्टि
छिपस्ताधूहै॥इकअद्रिष्टनहीहै॥इहजोप्रतक्षभासतीहै॥मास्ताहिद्रिष्टि
है॥अरुद्रिष्टिनहीआवती॥सोअद्रिष्टहै॥सोदोजानलेहै॥अरुआकाशवि
उवजोरचलेतेहै॥सिइस्ताहिकोसोक्याहै॥संकल्पहीमात्रहैक्या॥उनकी
स्ताहिपरस्परअद्रिष्टहै॥अरुअनेकप्रकारकीरचनाहैउनकी॥सोनेकी
प्रथवीहै॥रत्नअरुमणीसाथजडीहूएहै॥अरुअनेकप्रकारकेविखहैइंद्र
योंके॥अरुअसनकेकुंडभरेहूएहै॥अरुअपरोअधीनतप्रकाशअरुअन
कप्रकारकीरचनाहैवरणीहूए॥नडोंकाहैसंकल्पमात्रहैक्या॥जेसाजेस
संकल्पहोताहैतिइतेसीतेसीस्तहिहोभासती॥आत्माविखइहरामजी
स्तष्टारूपीअनेकरत्नआत्मारूपीदेवविखइस्थितहै॥जिसकरखको
आत्मद्रिष्टिप्रापतिभएहै॥तिसकोसभस्ताहिआत्मरूपहै॥अरुजिसको
आत्माद्रिष्टिनहीं॥तिसकोभिन्नभिन्नजगतभासताहै॥जेसासंकल्पदिढ

व. म. ४५

होताहै॥ तैसा पदार्थ होभासताहै॥ जैताकछु जगत भासताहै॥ सोसभसं
कल्पमात्र॥ जो [illegible] को अर्थ [illegible] संवेगहोवे कि अकाशविषे [illegible]
स्थित होवे॥ [illegible] भासनेलगजावे॥ हे रामजी जिसकेविषे [illegible]
द्रिढनिश्चा करताहै सोई सिद्ध होताहै॥ जो आत्माकी ओर एकाग्र होताहै
तव [illegible] सिद्ध होताहै॥ जो दोनो ओर होताहै॥ तव [illegible] होताहै॥
जो [illegible] ओर [illegible] कर [illegible] होताहै॥ तव [illegible]
वना [illegible] होताहै॥ [illegible] होताहै॥ [illegible]
है॥ [illegible] होताहै॥ [illegible] कारणहै॥ तिसविषे [illegible]
कछु नहीं॥ [illegible] होताहै॥ [illegible] जैसी वासना होतीहै॥ [illegible]
[illegible] भासताहै॥ जैसी भावना [illegible] धर्मकी ओर होतीहै॥ अरु स
[illegible] होताहै॥ तिसको स्वर्ग आदिक सुख लोक भासताहै॥ अरु जिस
की भावना [illegible] विषे होतीहै॥ तिसको नरक आदिक दुःख [illegible] भास
ते है॥ [illegible] भासतेहै॥ [illegible]
[illegible] स्वर्ग सुख भासतेहै॥ एक [illegible] की भावना करके [illegible]
कभासतेहै॥ अरु जिनको अशुभ भावना होती॥ तिनको [illegible] नाप्रकार के
नरक भासतेहै॥ हे रामजी [illegible] सर्व आत्माविषे [illegible] भासा
नकतीहै॥ तिसके कर्मोंविषे [illegible] को कलीजातीहै॥ सो [illegible]
[illegible] कोप्राप्ति होतीहै॥ [illegible] विषे [illegible]
जैसे [illegible] विषे [illegible] सिद्ध होताहै॥ [illegible] विषे [illegible]
[illegible] होताहै॥ अरु [illegible] लोक [illegible] जैसा [illegible] होवै॥ [illegible]
[illegible] विषे [illegible] होताहै॥ [illegible] लोक [illegible]
[illegible] कतीहै॥ [illegible] को [illegible] होताहै॥ अरु जिसक
[illegible] विषे [illegible]
[illegible] होताहै॥ अरु [illegible] अभिमानी [illegible]
के देह बिना भोजन कर्तेहै॥ तिनको भी [illegible] होताहै॥ [illegible]
[illegible] सो सर्व [illegible] होताहै॥ [illegible] लोक के वि
[illegible] होताहै॥ अरु [illegible]
रवोहै॥ तिनने [illegible] होताहै॥ [illegible]
नेहै॥ सो [illegible] को [illegible] होताहै॥ [illegible] होवनेहै॥ इन
ने आदि [illegible] तिनको [illegible]॥ अरु जो शुभ कर्म करतेहै॥ सो स्वर्ग
को भोगतेहै॥ [illegible] तैसे [illegible] जगत को दे
खतेहै॥ जिस जिस भावको चितवते है [illegible] भासताहै॥ तिसी को
प्राप्ति होताहै॥ केवल [illegible] जैसा निश्चय [illegible] होताहै॥
तैसा ही भासताहै॥ २८३॥ इति श्री वासिष्ठ तात्पर्य प्रकाशे [illegible] सर्गः॥ रा
म उवाच॥ हे भगवन तुम्ह जो [illegible] के कारन [illegible]
होहै॥ सो [illegible]॥ [illegible] भावक [illegible] अथवा [illegible]
[illegible]॥ वसिष्ठ उवाच॥ हे रामजी [illegible] भावक पडीउहुनेहै॥ तैसे
ब्रह्म [illegible] भावक पडीउहुनेहै॥ जैसे [illegible] भावक हो
ताहै॥ तैसे आत्मा [illegible] जगत [illegible] भावक [illegible]
है॥ तिसते [illegible] कछु नहीं॥ चिन्मात्र विषे जो चेतनता [illegible]॥ सो जैसे [illegible]
है॥ तैसे ही [illegible] स्थित है॥ जब [illegible] नहीं [illegible]॥ तब [illegible]
होताहै॥ तिस [illegible] आभासताहै॥ जैसे [illegible] का
विषे [illegible] भासताहै॥ तिसविषे [illegible]॥ उसी चितचमत्का

रकर्के [illegible] ताहै॥ जैसे समुद्र विषे तरंग [illegible]॥ सो समुद्र ही रूपहै॥ तिस
तेउ [illegible] कछु वस्तु नहीं॥ तैसे जेताकछु [illegible] अर्थ जगत भासताहै॥ सो
[illegible] नहीं॥ जिनको [illegible]
उसी चिन्मात्र है॥ [illegible] कछु वस्तु नहीं॥ [illegible] भासताहै॥ पृथ्वी
आदि॥ तिनको जगत [illegible] संकल्प [illegible] भासताहै॥
आदिक पदार्थ [illegible] नहीं भासते॥ उसको [illegible] रूप होजाता
है॥ हे रामजी जो वस्तु [illegible]॥ सो अविद्या रूपहै॥ अरु
[illegible] अविचार [illegible] भासताहै॥ अरु [illegible] जो सब
[illegible] को कदाचित नहीं त्यागता॥ [illegible]
[illegible]॥ तिसविषे अविद्या [illegible] होवे॥ जैसे
के सर्वदाकाल [illegible] प्रकाशताहै॥ तैसे आत्मा विषे अविद्या का अभाव है
[illegible] का अभाव है॥ तैसे [illegible] रूपहै॥ जैसे [illegible]
[illegible] आवते है॥ [illegible] चिदाकाश रूपहै॥ [illegible] अथवा
[illegible] कीई [illegible]॥ [illegible] तो जबलग
ध्यान करताहै॥ जैसे [illegible] ध्यान करता [illegible] सिद्ध होआवै॥
[illegible] होताहै॥ [illegible] संकल्प [illegible]
[illegible] होजाताहै॥ सो संकल्प [illegible]
होजावै॥ तव [illegible] भावकी [illegible] जगत भासताहै॥
[illegible] रूप होभासताहै॥ तैसे ही जेताकछु जगत भासताहै॥ तव [illegible]
भासता [illegible] रूप है॥ संवेदना [illegible] होभासताहै॥
[illegible] होतीहै॥ तव [illegible] आत्मरूप होभासताहै॥
[illegible] स्थित है॥ जैसे [illegible] होताहै॥
[illegible] अपना आप [illegible] स्थित है॥ [illegible]॥ अरु [illegible] है
[illegible] भासताहै॥ जगत [illegible] परमात्मा वि
जैसे समुद्र विषे तरंग [illegible] रूपहीतहै॥ तैसे [illegible]
[illegible] नहीं॥ [illegible] ब्रह्म रूपहै॥ [illegible]
[illegible] होतीहै॥ [illegible]
[illegible] बोधहै॥ तव [illegible] होताहै॥ [illegible] जगत ब्रह्म रूप भास
ताहै॥ अरु जिसको [illegible] बोध [illegible]॥ [illegible] नहीं भ
[illegible]॥ अरु [illegible] भासताहै॥ [illegible]
[illegible] होताहै॥ हे रामजी जि
[illegible]॥ तिसको [illegible] निर्मल [illegible]
[illegible]॥ अरु [illegible]
[illegible] पद प्राप्ति होतीहै॥ अरु जिसको [illegible]
[illegible]॥ [illegible] भासताहै॥ जैसे
[illegible] होताहै॥ तिसको [illegible] विषे दो
[illegible] भासतेहै॥ तैसे अज्ञान करके जगत भा
[illegible] भासतेहै॥ [illegible] जब [illegible] विषे [illegible]
सताहै॥ जेताकछु जाग्रत जगत है सो स्वप्न [illegible]॥ जब स्वप्न विषे [illegible]
ताहै॥ तव स्वप्न भी जाग्रत भासताहै॥ अरु जाग्रत स्वप्न [illegible] होजाताहै
जाग्रत स्वप्न भासताहै॥ सो अल्पकाल का नाम स्वप्न है॥ दीर्घ काल का
नाम जाग्रत है॥ आत्मा विषे दोनो तुल्य [illegible] होताहै॥ जैसे एक रवि
[illegible] विषे दो भासतेहै॥ [illegible] रूप
है॥ तैसे जाग्रत स्वप्न तुल्य ही है॥ अरु [illegible] कोई [illegible]
है॥ जब परलोक [illegible] को जाग्रत होजाताहै॥ अरु [illegible] जगत स्वप्न होजा
ताहै जैसे [illegible] पदार्थो को भ्रम मात्र जाग्रताहै

तैसे जब परलोक जाता है॥ तब इस जाग्रत को [illegible] बन्धन जाता है॥
अरु काहे [illegible] है सो अज्ञेसा देख्या था सो इह परलोक मन ही भासता है॥ ब
[illegible] सो इसता है॥ इस लोक विषे आइ पडता है॥ तो इस लोक को
[illegible] जाता है॥ अरु जाग्रत मानता है॥ तब उस परलोक को सुपन
[illegible] जाता है॥ हे रामजी जब लग इसको स्वरूप का बोध है॥ तब लग
[illegible] नेत्रवार जाग्रत देखता है॥ अरु अनेत ही सुपने देखता है॥ हे राम
जी [illegible] इसको अनेक रूप से आवते हैं॥ ते सब ही [illegible] सुख अज्ञान
इस [illegible] अनेक [illegible] जाग्रत सुपन [illegible] भासते हैं॥ अंत नहीं॥ अरु अम
[illegible] विषे इनको मानता है॥ अरु जाग्रत विषे स्वपने के पदार्थों को स्मरण क
नी है॥ ते [illegible] होकर अपणे जन्मों का स्मरण करता है॥ अरु क
[illegible] है [illegible] मरता रहे॥ [illegible] जब जागृत न वकहे [illegible]
[illegible] को भासी थी॥ तब को बंध है [illegible] है॥ काहे जो दि
[illegible] है॥ जो इह [illegible] तो बंध मोक्ष कैसी॥ जब चित्त की
अनेक विकल्प होती है॥ तब [illegible] भासती है॥ अरु जब लग वास
[illegible] नहीं है॥ तब लग बंधन भासता है॥ हे रामजी
[illegible] विषे बंध अरु मोक्ष दोनों नहीं॥ बंधन ही [illegible] भी
[illegible]॥ तो बंधन ही नहीं तो मोक्ष कैसे कहीए॥ बंध अरु मोक्ष दो
नों [illegible] संवेदना विषे भासते हैं॥ तातें चित्त को निर्वाण करो॥ सव
संकल्प [illegible] लाव सी॥ जैसे [illegible] पदार्थों के [illegible] को
[illegible] है तिनको त्याग करो॥ निर्मल [illegible] आत्म सत्ता है
[illegible] स्थित होवो॥ [illegible] पान [illegible]
वाले सभ क्रिया को करो॥ अरु अनन्त परम पद [illegible] को जैसे न
करो॥ हे रामजी तेतने तू करत वे [illegible] अभाव करो॥ [illegible] भा
व का भी अभाव करो॥ [illegible] सो आत्म सत्
[illegible] पद है॥ तिसी [illegible] स्थित होवो॥ [illegible]
[illegible] वाचक से है॥ सो [illegible] करो॥ [illegible] सभ संकल्पना
त्याग करो॥ [illegible] सत्ता विषे स्थित होवो॥ २४७॥ इति
श्री निर्वाण उपदेश [illegible]॥ [illegible]॥ हे रामजी जैसे कु
[illegible] भासने हैं॥ सो सभ चित्त [illegible] आत्म रूप है॥ [illegible]
को सदा [illegible] मानते हैं॥ [illegible] नहीं भासता॥ [illegible]
[illegible] अवलोक [illegible] मन [illegible] है॥
सो इह भी आत्म रूप है॥ आत्म सत्ता ही [illegible] भासती है॥ [illegible]
[illegible] तिस विषे [illegible] अवलोकन [illegible] भासती है॥ अ
[illegible] नहीं॥ [illegible] भिन्न भिन्न भासते हैं॥ अ
[illegible]॥ तिनको [illegible] भासता है॥ जैसे [illegible]
[illegible] भासता है॥ तैसे जाग्रत [illegible]
[illegible]॥ [illegible] भासती है॥ अरु जाग्रत आत्मा ते भि
न नहीं॥ [illegible] रूप है॥ तैसे जल का स्वभाव द्रवीभूत होता है॥ [illegible]
[illegible] भासता है॥ तैसे आत्मा का स्वभाव चेतन है॥ सो
आत्म सत्ता चेतनता के जगत आकार होइ भासती है॥ इसी प्रकार [illegible]

प्रायन

[illegible] निर्वाण पद है॥ तिस विषे स्थित होवो॥ हे राम
[illegible] भी जगत कछु है नहीं॥ अरु अनन्त भासता है॥ अरु सत्तनहे सत्तनकर भास
[illegible] है॥ इह असत् जे हैं तो निह किंचन है॥ अरु किंचन को त्याग भासता
है॥ [illegible] चेतन [illegible]
है॥ आत्मसत्ता सदा अद्वैत है॥ अरु निर्विकार है॥ [illegible]
प्रकार के विकार भासते हैं॥ तब [illegible] विकार निरखद [illegible] सत्त [illegible]
[illegible]॥ तब [illegible] आत्म सत्ता [illegible] नहीं है॥ जैसे [illegible]
न विषे [illegible] होता [illegible] बालक को [illegible] अवस्था [illegible]
को [illegible] जगत आत्मा विषे भासता [illegible]॥ जब [illegible]
इ स्थित हुए हैं॥ तिनको जगत भी [illegible] आत्मा ही भासता है॥ [illegible] अभ्यास
[illegible] सत्ता को समान होता है॥ तिनके [illegible] विषे जैसे [illegible] पदार्थों के [illegible]
होता है॥ तब सभ [illegible] विषे स्थित होता है॥ अरु जिन पदार्थों के [illegible]
[illegible] नहीं है॥ सो पद [illegible] दीर्घ [illegible] है॥ प
[illegible] होता है॥ इह पद [illegible] भासता है॥ अरु [illegible]
नै है॥ अरु [illegible] होजाता है॥ इह पद अविद्या [illegible] भासता है॥ अरु [illegible]
नको इच्छा [illegible] करते है॥ काहे ते [illegible] तिनको [illegible]
[illegible] को जगत के पदार्थों की इच्छा नहीं होती॥ काहे ते जाग्रत को [illegible]
[illegible] अरु [illegible] भावना [illegible] है॥
[illegible] अज्ञानी नहीं
अरु [illegible] ज्ञानी जो जगत को भावता है॥ तातें ज्ञानी के [illegible] को अज्ञानी नहीं
जाणता है॥ अरु अज्ञानी [illegible] नहीं जाणता॥ जैसे [illegible] है॥ सो
[illegible]॥ [illegible] जाग्रत भी [illegible] भावना है॥ सो
[illegible] को [illegible] है॥ अरु [illegible] निक [illegible]
[illegible] भासता है॥ [illegible] है॥
[illegible] बालक [illegible] जाणता॥ अरु [illegible] बालक को निश्चय को उ
[illegible] बालक [illegible] जाणता॥ [illegible] को अज्ञानी नहीं जाणता
जाग्रत [illegible] होजाणता॥ तैसे ज्ञानी के निश्चय को अज्ञानी नहीं जाणता॥ जैसे [illegible] को
[illegible] नहीं जाणता॥ [illegible] है॥ [illegible] को स
बालक के [illegible]॥ [illegible] जाणता है॥ तब उ
[illegible] है॥ [illegible] भासती है
[illegible] अभाव होजाता है॥ तिनको [illegible] भासता है॥ हे रामजी जे
[illegible] को [illegible] भासता है॥ [illegible] जगत के पदार्थों को इ
[illegible] नहीं होती है॥ तब [illegible]
[illegible] को [illegible] प्राप्त [illegible] होती है॥ तब [illegible]
ज्ञान नहीं [illegible]॥ [illegible] जा
नके [illegible] है॥ [illegible] जाग्रत॥ न
[illegible] इच्छा [illegible] नहीं॥ तैसे ही आत्म पद विषे जगत जाग्रत॥ न
[illegible]॥ जैसे [illegible] की नदी अस्त्र सत्त जा
[illegible] के पदार्थों की इच्छा न करेगा॥ जैसे [illegible] की नदी [illegible] जा
[illegible]॥ तैसे जब
[illegible] है॥ तब [illegible] विषे जल पान की न [illegible] नहीं करता॥ जि
[illegible] को अज्ञान जाणता है॥ तब [illegible] के पदार्थों की इच्छा नहीं करता॥ जि
[illegible] नहीं करता है॥ सो [illegible] है॥ जैसे [illegible]
[illegible] है॥ सो [illegible] है॥ [illegible]
[illegible] जल की बूंद [illegible] स्थित नहीं होती है॥ सो [illegible] है॥ [illegible]
विषे पवन लागे तो [illegible] जाती है॥ तैसे [illegible] है॥ जैसे मि
[illegible] कर पाप [illegible] तिस विषे नदी को मन [illegible] करदी है॥
[illegible] है॥ सो [illegible] भी पावता है॥ अरु [illegible] होता॥ तैसे
[illegible] विषे पदार्थों को सत् जाणकर तिनके [illegible] करते हैं
अरु कष्ट पावते हैं॥ [illegible] होते॥ हे रामजी इह प्रकार॥

व. सं. ९२

अपने आप स्थित होता है ॥ अरु आपही अपने आप फुरता है ॥ जब सम्यक् ज्ञान होता है तब चि
त्त जड़ता से रहित होता है ॥ अरु अपने आपको आप देखता है ॥ अरु अपने आप स्थित
अपने आप में स्थित होता है ॥ अरु जो मन संसार रागसे रहित नहीं होता तब ज्ञा
न नहीं होता ॥ अरु जो मन संसार राग से रहित होता है ॥ जब संसार मिथ्या
जान्या तब अपने आप को आपही जानता है ॥ जो अपने आपको जाननेहारा होता है
सो आप ही को प्रगट करता है ॥ हे रामजी इन्द्रियोंको
विषयों से रोक ॥ जो इन्द्रियोंको विषयों से रोका है ॥ अरु अपने आपको
मनको दृढ़ होता है ॥ सो मन आत्मा में लीन होता है ॥ सो
पुरुष इन्द्रियोंको जीतकर आत्मपद विषे स्थित होता है ॥ तिस
को ज्ञान होता है ॥ जब बालक अवस्था होती है ॥ तब अज्ञान
होता है ॥ अरु वृद्ध अवस्था विषे अंगरहित होता है ॥ अरु जोवन
अवस्था विषे इन्द्रियोंको जीतनेका सामर्थ्य होता है ॥ अरु ...
अरु जो निष्काम आदिक जीते हैं ॥ जीवन अवस्था ही
है जो बालक अवस्था तो जड़रूप है ॥ अरु वृद्ध अवस्था भी
निर्बल है ॥ तिस विषे अपना अंग ... ताते रामजी बालक मत होना
है ॥ तो विचार को सामर्थ्य होता है ॥ इसते बालकपन है ॥ ताते
जो यौवन अवस्था है तिस विषे होता है ॥ जो इस अवस्था विषे
भी लंपट रहा ॥ सो इस शरीर को पावैगा ॥ हे रामजी
विषयों विषे सम्यक् ... ॥ ... नाहीं
किसी ... ॥ ... भी
जाता है ॥ ... ॥ ... भावे
ताते तिसको ... जानता है ॥ ...
नहीं ॥ ... ॥ ताते जब इन्द्रियोंको जीतेगा ॥ तब ...
नका प्राप्त होवेगा ॥ हे रामजी ... ॥ ... को अवि
द्या ... ॥ ... ॥ ... मिथ्या
भ्रम ... है ॥ इति ... ॥ २८५ ॥ इति श्री ... वा
य ... ॥ श्री रामउवाच ॥ हे भगवन् तुम ...
जो इन्द्रियोंको जीते बिना ज्ञान नहीं पावता ॥ ताते इन्द्रियों जीतनेका उपा
य कहो ॥ वसिष्ठउवाच ॥ हे रामजी जिस पुरुषको ... आन प्राप्त
हुआ है ॥ अरु इन्द्रियोंको जीतता नहीं ॥ ... ॥ ... बिना
को ... ॥ अरु इन्द्रियोंको जीतता नहीं ॥ ...
... ॥ ... ॥ अरु इन्द्रियोंको जीतता है ॥ ...
सो ... नहीं ॥ अरु ... ॥ ... जि
ते जीवता है ॥ अरु इन्द्रियोंको ... ॥ जिस
प्रकार इन्द्रियां जीती जाती हैं ॥ अरु आत्मपद प्राप्त होता है ॥ सो प्रकार सुन
हे रामजी ... ॥ ...
... ॥ तिस ... ॥ ... आत्म ... सब
... ॥ तिसका ... ॥ ... ॥ ...
... ॥ ... ॥ इन्द्रियोंका ...
... ॥ ... ॥ ...
... ॥ ... ॥ ...
... जानता है ॥ ...

... इन्द्रियवश होजावहिंगी ॥ हे रामजी जब मन इन्द्रियोंको
वश करेगा ॥ तब शुद्ध आत्मसत्ता तुझको भासि आवहिंगी ॥ जैसे व
... ॥ ... निर्मल प्रकाश भासता है ॥
... कालके ... काल ... ॥ जैसे जब मन ... काल
के ... अभाव हो जाता है ॥ ... अभाव होवेगा ॥ तब पर
अभाव होवेगा ॥ अरु वासना ... अभाव होवेगा ... है
... आत्मसत्ता ... ॥ हे रामजी ... ॥ जैसे सा
जगत विषे ... भासता है ॥ सो ... ॥ जैसे
... ॥ ... पदार्थ ... भी हो
... ॥ ... जो मक
... आत्माको ... ॥ ...
... ॥ ... ॥ ... हे रावना
... ॥ ... ॥ ... ॥ ...
... ॥ ... मन नहीं
... ॥ ... ॥ ... ॥ ...
... ॥ ... ॥ ... ॥ मनको व
... ॥ हे रामजी जिस प्रकार ... ॥ मनकी ... जा
... ॥ ... ॥ जिस ... मनको ...
... ॥ ...
... आत्मसत्ताको ... ॥
... ॥ ... ॥ अरु
... ॥ ... हो जाती है ॥ सो मन
... ॥ ... ॥ ...
... ॥ ... आत्मपद ... होता
स्थित होता है ॥ जब मन ... ॥ सो ... ॥ ...
है ॥ जिसको आत्मपद प्राप्त भया है ॥ ... ॥ तिस
है ॥ जिसको आत्मपद ... ॥ ...
... ॥ अरु ... जीते हैं ॥ सो ... ॥ ...
पुरुष ... ॥ तिसको ... ॥
देखा ॥ इन्द्रियोंको जीतकर जिस आत्मपदको पाया है ॥ तिस ...
... ॥ जैसे ... नदी ... निराकार विषे
... ॥ ... ॥ ... नहीं भासता ॥ जैसे ... विचार देखना
... ॥ जब भली प्रकार ... जगत
लहरी भासती है ॥ जब भली प्रकार ... ॥ जैसे ... जगत
है ॥ ... ॥ ... विचार देखिये ॥ तब ... ॥
आत्मका आभास है ॥ जब भली प्रकार ... जगत रूप हो भासता है ॥
... ॥ आत्मसत्ता ही ... ॥ जैसे आ
... ॥ ... ॥ ... भासता ॥ हे रामजी जब आत्मा
... ॥ जैसे ... रूप
... ॥ ... ॥ ... भाव
बोध होता है ॥ तब ... ॥ अरु जो निराकार नदी का ... भाव
... ॥ ... ॥ ... ॥ निराकार ... की
... ॥ ... ॥ हे रामजी ...
नदी ... जानी ...

व॰
म॰
४८

48

[illegible]

॥ २८६ ॥ इति श्री [illegible]

[illegible]

व॰
म॰
४५

...होता है॥ नव इहीं ... ॥
रूपके भासती है॥ अरु ... की ... देखता है॥ नव इहीं ... ॥
... है॥ अरु ... आत्मा ... ॥
... होती है॥ ... भीउ ... है॥ अरु ... ॥
है॥ ... भासता है॥ ... ॥
... रूप है॥ अरु जब ... नहीं होता है॥ नव अरु ...
चिन्मात्र सत्रूप होजाती है॥ इस प्रकार ... आत्मा
रूप भासता है॥ ... नहीं भासता॥ जैसे किसी पुरुष का मन
... होता है॥ तिसको ... नहीं भास
ता॥ अरु ... नहीं॥ जिसको ... ॥
ता है॥ ... होता है॥ ... आत्मा ...
लगता है॥ ... सर्व आत्मा ही भासता है॥ आत्मा ...
नहीं भासता॥ अरु जिनको आत्म ... प्रसाद है॥ अरु ...

[illegible]

वं॰
सं॰
५

रकर॥ अ इहोवे अरु इहनहोवे॥ दोनोंकी कल्पना [illegible] अरु [illegible] सोसह
पवित्र [illegible] स्थित होवो॥ तब सर्व प्रमान प्राय मन होवेगी॥ [illegible] ॥
अ न स अ अ ति पा द ना नाम स र्गः॥ व सि ष्ठ उ वा च॥ हे राम जी [illegible]
काजे आपके अनरे॥ [illegible] ब्रह्माकी [illegible] ॥ इसजगतके आदि अंत
विनमात्र रूप ह्या॥ तिसविषे किं [illegible] की प्रवर्ती नहीं॥ अ [illegible]
तिसविषे जानना आदि [illegible] ॥ तिसका सभ सु जगत [illegible]
अभास सो तिसको अधिष्ठान तिस अरु इसने ही है॥ तिसकी जगत
काभा रूप भासता है॥ [illegible] बहुवला नहीं॥ इसको अज्ञानका
अभाव है॥ जोइ वैतन [illegible] तिनका [illegible] भी नहीं॥ अज्ञान [illegible]
नको [illegible] भावे है॥ [illegible] तिस मन रूप है॥ अरु जिनको [illegible]
ह्रआहै॥ तिनको दोनो अवला [illegible] नहीं॥ जिसको [illegible]
न आत्म सहू भासता है॥ अ [illegible] नहीं॥ [illegible]
मह्रप जगत भासता है॥ [illegible] निरास्थान है॥ वा श अ [illegible]
रहित निता भासता है॥ [illegible] विषे [illegible] भासता है॥ तिनके [illegible]
सगा॥ एकता अरु [illegible] है॥ [illegible] आत्म [illegible]
है॥ [illegible] रिविआनक [illegible] ॥ जिसको [illegible]
है॥ [illegible] आपको नहीं जानता॥ इसका नाम [illegible]
अ [illegible] आपको जानता॥ इसका नाम [illegible]
मनजानता॥ इसका नाम असमत [illegible] ॥ अरु आत्मा [illegible]
जानता॥ [illegible] आत्मा [illegible] ॥ [illegible]
त्र आत्म न तिसको भासता है॥ अरु आत्म स [illegible] ॥ [illegible]
त्र है॥ तिस विषे [illegible] ॥ हे राम जी जगत [illegible]
है॥ औ [illegible] ॥ [illegible] नकोन्याई [illegible] ॥
न भी उहीं म तपहे॥ [illegible] ॥ [illegible]
काकह नाही॥ [illegible] ॥ [illegible]
कदा नह [illegible] ॥ अरु [illegible]
न [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible]
मला [illegible] ॥ अरु अवैतन है॥ जो [illegible] तिसका अनत [illegible]
ता॥ अरु [illegible] निर्मल है॥ अरु तिस [illegible] ॥ [illegible]
है॥ अ [illegible] ॥ अरु [illegible] ॥ जैसा सालिग्राम की
प्रतिमा होती है॥ [illegible] ॥ जैसे सालिग्राम [illegible]
कीवे [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ जैसे
कहे है॥ [illegible] की न्याई निवस्त्र [illegible] है॥ [illegible] ॥
अरु पर माथ है॥ [illegible] वेतनता भी [illegible]
अनत कल्प [illegible] है॥ [illegible] जगत [illegible]
नाही है॥ [illegible] ॥ [illegible]
आपस [illegible] ॥ [illegible] ॥ अरु [illegible]
कोजीव [illegible] की न्याई [illegible] ॥ [illegible]
अरु [illegible] की न्याई [illegible] ॥ [illegible] वेतनता का [illegible]
आप॥ [illegible] ता अवचननया॥ वसिष्ठ उवाच॥
हे राम [illegible] ॥ न जडहै॥ [illegible] ॥ पवन भी उजो

तो॥ अरु [illegible] ॥ [illegible] भाव [illegible]
[illegible] ॥ जैसे जलका सुभाव [illegible] ॥ [illegible]
इसका सुभाव है॥ जैसे जल ने सुभाव [illegible] ॥ [illegible]
भाको [illegible] भासती है॥ प [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ अरु किसी [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ राम उवाच॥ हे [illegible] ॥ अथवा
नहोइ [illegible] ॥ अरु [illegible] नहीं॥ [illegible]
[illegible] नहीं॥ वसिष्ठ उवाच॥ हे राम जी [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] के भेद दने को
[illegible] ॥ अरु [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] ॥ सो
[illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ राम उवाच॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] ॥ अरु [illegible]
[illegible] ॥ वसिष्ठ उवाच॥ हे [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] भेद [illegible]
[illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] शिला की [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] ॥ राम उ
वाच॥ हे [illegible] ॥ [illegible] ॥ सो
[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] ॥ म
[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ अरु [illegible] नहीं॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥
[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] ॥ आत्मा [illegible]
भासता है [illegible] ॥ [illegible] भासता है॥ [illegible]
[illegible] भासता है॥ अरु [illegible] ॥ [illegible]

पवित्र सत्त अरु सत्त विद्या अविद्या सभ आत्म सत्ता ही के नाम हैं॥ इन
अन सत्त कछु है नहीं॥ जल सत्ता ही अपूर्णा आप विखे इ स्थित है॥ हे
रामजी इह सभ जो नत्र अलख रूप है॥ अरु चित मात्र चेतन ही इह सभ वैभ्या
[illegible] तां ते सकल्प रूपी कलना को
पुरुख है॥ [illegible] परमार्थ रूप है॥ निर्वाण विखे इ स्थित हुए है॥ २८९॥ इ इति श्री॥ शिलायमध्यानस॥
[illegible] निर्वाण विखे इ स्थित हुए है॥ हे राम जी जा पुरुख को सभ भावना
माख्यानं नाम सर्गः॥ वसिष्ठ उवाच॥ [illegible] विचार जा दिख आत्मा होहे॥ तिन
ता विखे इ स्थित भए हैं॥ तिन को इह [illegible] सभ कछु [illegible]
नेत्र कर जैसा हू अर्थ है॥ सो तिन का सभ [illegible]
अर्थ भासता है॥ जगत का निश्चा तिन को विखे नहीं होता॥
जु वन [illegible] भासता है॥ रवि आतमो को कल्प
सभ न होइ तिस को परम अर्थ का भावन भासता है॥ तिस आतमा को कल्प
सभ न होइ तिस को परम अर्थ का भावन भासता है॥ सो नि
नाक [illegible] ही फुरता॥ अरु तेना कछु जगत द्विष्टि आवता है॥ सो नि
शकाव परम चिदाका शरूप है॥ पर मानि वाण सत्ता सो जगत भा
सता है॥ अरु तिसी विखे निर्वाण होजाता है॥ सो तेउ सी रूप है॥ हे रा
मजी जव इस प्रकार आत्मा का अनुभव होता है तब विखे इ स्थित होवे गा॥
न व वडे सा हो को कैसी भी दुःख प्राप्त न मिलावें गा तिसी ते मान देह रा
दोख रागद्वेषवगा या वे गा सो जो॥ परम पद निस विवेक करके
गा॥ जैसे पाखी णाको मिलावे विवेक रणाकछु न ही कहे गा॥ ते सही
हू कैसे जा नो चव णों कर दोड़ा जाता देगा॥ तब भी तिस विखे चला
मान नहीं होवे गा॥ जैसे प्रकाश कछु चला है॥ ते से तेसे स्थित हे
ते स हूँ भी इ स्थित रहे गा॥ अरु किया तो सभ करे गा॥ [illegible]
क को क्या क्या अभि मान कछु न होवेगा॥ पर जो दु सभाव विखे इ स्थि
ति होवेगा॥ इह जगत सभ अविद्या न सिद्ध है॥ विचार की ए ते
गन कछु तिन का सत्ता न होई जै से मृग तृष्णा का जल॥
वेताल कल्पना है॥ सो अविचार कर सिद्ध है॥ विचार किए ते कछु निकस
तानहीं॥ तैसे सम्यक ज्ञानी आत्मा विखे [illegible] प्रकार कल्पना ते है॥ वि
चार की एते सम्यक का भाव परे है॥ वासना का कछु नहीं॥ [illegible]
ब नहीं तब लग भासती है॥ जब [illegible]
तेन दीन ही रहती॥ ते से इह जगत [illegible]
न अपूर्व [illegible] आत्मा का कचन [illegible]
न अरुणी वर्तका लमत्कार है॥ [illegible] ज्ञानसा॥ सो प्रम
तत्र पड़ा भासता है॥ राम उवाच॥ [illegible] सो स्वरूप नभव होता है॥ सो प्रम
का का [illegible] नालमता होता॥ सो सवर्त अनभव होता है॥ सो प्रम
कृ अनुभव रूप [illegible] जब अनुभव होता न तु सकोल रन
भी होता है॥ [illegible] विरज [illegible]
ता है॥ वसिष्ठ उवाच॥ हे राम जी इह जो जगत उपजा है॥ सो किसी
रुका व क [illegible] उपजी आ॥ आकसी [illegible] संस्कार [illegible] नव का
है॥ काकता [illegible] का [illegible] भाव पड़े पन है॥ हे रा
[illegible] निसा [illegible] जगत रूपी नरी भासती है [illegible]
मजी इह जगत अभास रूप है॥ प्रकाश का अभाव कदा [illegible] होवे॥ तब
ना॥ का [illegible] सा का चमत्कार है॥ जो [illegible] होवे॥ इह
तिस का नाश होवे॥ [illegible] नहीं॥ ता ते से होवे॥

जगत भासता नहीं॥ अरु सत्त भी नहीं॥ [illegible] विखे [illegible]
[illegible] है॥ जगत तिस का अभास है॥ [illegible]
हिता है॥ सो का [illegible] का भाव अभास [illegible] है॥ सत्रूप [illegible]
का [illegible] भाव नहीं॥ [illegible]
[illegible]
[illegible] ऐ॥ अथवा [illegible] ज्ञान [illegible]
[illegible]
[illegible]
है॥ तैसे इह [illegible] न
सत्त है॥ न का [illegible] तथा
[illegible] ना॥ ते जगत
अहंत [illegible] है॥ चिन [illegible] स्थित है॥ [illegible]
भी इही रूप है॥ जा का [illegible] आवता है॥ तो भी कछु इह भासता है॥ [illegible]
[illegible] विखे [illegible] मिलती है॥ तब [illegible] क्रिया [illegible]
[illegible] होती॥ [illegible]
माया [illegible] ता न [illegible]
पत [illegible] चाहीं का [illegible]
मह के [illegible] प्रकाश [illegible] जैसे [illegible] चिदाकाश
[illegible] है॥ इन का [illegible] है॥ ते सत्ता न दान
जैसे [illegible] का [illegible] सृ [illegible] है॥ [illegible] दाकाल
के [illegible] विखे [illegible] ज [illegible] न भव [illegible]
विखे जो अनन है॥ [illegible] तिस का नाश है॥ [illegible] भावता है॥ ते सी
अनभ [illegible] न अरूप है॥ ते सा यदार्थ [illegible] भावता है॥ ते सी
का अनभव [illegible] है॥ ता ते सर्वदा काल [illegible] है॥ [illegible] दाकाल
स्वरूप है॥ [illegible] सका नाश है नसा पदार्थ [illegible] भासे॥ सो जैसे
[illegible] पदार्थ भासते है॥ [illegible] भासता है॥ ते
तिसी विखे [illegible] भासते है॥ सो स्वरूप है॥ ता ते सर्वदा काल
विरक्त [illegible] है॥ अथवा [illegible] दाकाल [illegible] है॥ [illegible] घन ति
[illegible] ज्ञान ता है॥ [illegible] होता है॥ [illegible]
[illegible] जा [illegible] ता सर्वदा काल [illegible] है॥ [illegible] सर्व
[illegible] काल विखे [illegible] है॥ [illegible]
[illegible] है॥ [illegible] विखे [illegible] होवे [illegible]
सर्व दाकाल [illegible] है॥ सो [illegible] है॥ ता [illegible]
कालविखे [illegible] आवता है॥ अरु [illegible] सर्वदाकाल [illegible] है॥ न
[illegible] है॥ [illegible]
नहीं॥ सो सर्वदा काल [illegible] है॥ [illegible] आत्मा न
अभाव [illegible] है॥ [illegible] सर्वदा काल
ति [illegible] है॥ अरु [illegible] है॥ [illegible]
[illegible] है॥ [illegible] सर्वदा काल विषे स
[illegible] है॥ [illegible] इहि न
[illegible] है॥ [illegible] भासता है॥ [illegible] है॥ [illegible]
[illegible] है॥ [illegible] भासता है॥ [illegible] विख
[illegible] भी है॥ [illegible] भी इह जाता है॥ ते से आत्मा विखे
जगत उपजता भी है॥ अरु लीन हो जाता है॥ जैसे तरंग [illegible] उपजता

कारणोविखेप्रारीरज्योंकात्योंरहताहै॥तैसेजगतकेउपजणेअरुली
नहोणेविखेआत्माज्योंकात्योंरहताहै॥हेरामजीइहजगतहीनो
तिसविखेसतक्याहै॥अरुअसतक्याहै॥कल्पनाक्याकहीये॥अरुस्मित
क्याहै॥अरुनरक्याकहीये॥अरुवाहजेक्याकहीये॥अरुएहुदृश्यअरुहैतस
नाविखेकल्पनाकछुनहीवरणतो॥अरुजोतूकहैजेवाहजेतेअनरवम
रतहोतीहै॥वहुडअनरतेवाहजेद्रिष्टिआवतीहै॥तोअनरअनभवकी
अपेछाकर्केहूएहै॥सोसोभीउतपनहीभए॥अवअनरअरुवाहजक्याहो॥जैसे
तद्रास्विष्टिभासआवतीहै॥सोअपणाहीअनभवहीताहै॥उहीसाष्टि
पहोभासताहै॥उहातोअनरवाहजेकछुनहीं॥तैसेइहजगतभी
अनरवाहजकछुनहीं॥सभआत्मरूपहै॥जिसकोइछ्याकहीतीहै॥
स्मरनकहोताहै॥विद्याअविद्याइहअनिरजनेकछुपाइहै॥सोसभ
आत्माकेनामहै॥अरुआत्मातेइतरअरुवस्तुपदार्थकछुनहीं॥हेराम
जीजागिकरदेखसभतेराहीसरूप॥मिथ्याभ्रमकोअगीकारकर्केद
नरकछुदेखताहै॥जेतेकछुशब्दहैसोअर्थविनाकोऊनहीं॥अरुशुद्ध
अर्थकाविचारसकल्पकहोताहै॥अरुसंकल्पनवफुरनाहै॥जवचितवि
खेअहंभावहोताहै॥सोचितआदिकपाहोकोआत्मसाखविखेलीनक
र॥जवचितनिर्वाणकरेगा॥तवसभजगतभानहोजावेगा॥जैसेदर्प
नविखेप्रतिविंवहोताहै॥सोकछुवास्तवनहीहोता॥तैसेचितरूपी
दर्पणविखेजगतप्रतिविंवहोताहै॥सोजगतकछुवास्तवनहीं॥जव
चितनिर्वाणहोजावेगा॥तवइहनकल्पनासभमिटजावेगी॥इहजासौ
त्सरागरहै॥सोमैंतुझकोकहाहै॥इसकेअर्थकाविचार॥अरुसकल्पवि
कल्पकोत्यागकरअपणापरमपदसरूपविखेइस्थितहोवो॥२५३॥इति
जाश्रेनतन्नसुखोयनविभाकोनामसर्गः॥वसिष्ठउवाच॥हेरामजीइहै
जगतकिसीकारणकरउत्पननहीभया॥जैसेसमुद्रविखेतरंगस्वभाव
करफुरनाहै॥तैसेसेवनसताविखेआदितघिफुरीहै॥जैसेजलस्वभाव
करद्रवताकर्केतरंगरूपहोभासताहै॥तैसेसंवतसतास्वभावकरजगतरूप
होभासताहै॥जैसेइककोबिछ्यपत्रफुलफलटासरूपअपणोविस्तारक
रवहताजाताहै॥तैसेआत्मसताकरजगतविस्तारहोताहै॥सोआत्माते
इतरकछुनहीं॥आत्मसत्ताहीइसप्रकारभासतीहै॥जवआत्मसत्ताचि
त्मावकाअभासवाहरमुरवफुरताहै॥तवअनतःकरणचतुष्टेप्रगटहो
तीहै॥तिसविखेजोनिश्चाहोताहै॥तिसकानामबुधितिनइआहै॥प्रथमसभ
काआभासमात्रतेसुभावककारणविनाफुरिआयाहै॥सोअभासमात्रहै॥
जवउहद्रिडहोगयेतवतेनभीइस्थितभए॥अरुहैतकछुवर्णाआते
है॥जोसमष्टकद्रिष्टिफुरवहै॥तिनकोसर्वआत्माहीद्रिष्टिआवनाहै॥
जैसेपत्रफुलफलटाससववृक्षविखेहै॥अनरकेकछुनहीं॥हेरामजी
वृक्षतेजोफलपत्रटासहोतेहै॥सोकिसीकारणकरवृधस्वतेनन
हीहोते॥तैसेइहजगतनेभीनहीजाणा॥जोसम्यकदर्शीहै॥तिसकोभिन
भिन्नरूपनीपत्रटासआदिकाविस्तारएकवृक्षरूपहीभासताहै॥तैसे
जथारथज्ञानीकोसर्वआत्माभासतहै॥अवरमिथ्याद्रिष्टीकोभिन्नभिन
पदार्थभासतेहै॥सम्यकदर्शीकोएकवृक्षहीभासतहै॥हेरामजीवृ
क्षकेदेखणेवालाभीहोवहोताहै॥अरुआत्माविखेइसगाकोऊनहीं
चेतनआत्माकोअभासभीचेतनहै॥उहैद्रिनरूपहोभासताहै॥तिस
चेतनअभासकोसम्यकदृष्टिकेभिन्नभिन्नपदार्थभासतेहै॥सम्य

कदर्शीसभकोआत्मरूपकरदेखतेहै॥जैसेपत्रआपकोभिन्नजाणहि
फुलफलसभआपकोभिन्नजाणहि॥अरुवृक्षसभकोअपणाआपजा
णताहै॥ताज्ञानीअज्ञानीसभआत्मरूपहै॥जैसेकदर्शीपरतलीयालिखी
होतीहै॥साकदर्शतेइतरकछुनहीं॥कदर्शरूपहीहै॥तैसेसर्वजगतआत्म
रूपकेदर्शचित्रहै॥सोआत्मातेइतरकछुनहीं॥जैसेअकाशविखेशून
ताहै॥अरुजैसेफुलोविखेसुगंधहै॥जैसेजलविखेद्रवताहै॥जैसेवा
युविखेस्पंदहोताहै॥जैसेअग्निविखेउष्णताहोतीहै॥तैसेब्रह्मविखे
जगतहै॥तैसेआकाशअरुशून्यताविखेकछुभेदनहीं॥फुलअरुसु
गंधविखेभेदनहीं॥जहाजलहैतहाद्रवताभीहै॥जहाअग्निहैतहा
उष्णताभीहोतीहै॥जहावायुहैतहास्पंदभीहै॥तैसेजहाचितसताहै
तहाजगतभीहै॥जगतअरुब्रह्मविखेकछुभेदनहीं॥हेरामजीजग
तआत्माकाअभासहै॥तातेउहीरूपहै॥इहजगतभीअचेतनचिन्मात्र
है॥तोघटपटादिआदिकआकारकोभासतेहै॥तोहेरामजीतिन
ज्ञानककोस्वभाआवताहै॥तोअनभवप्रकाशविखेघटपटादिआ
दिकतनभाकिआवतेहै॥तोउहीचिन्मात्रहीप्रकाशहोभासताहै॥कैसा
होरकछुनहीं॥तैसेइहभीजाणना॥जताकछुजगततुझकोभास
ताहै॥सोसभअनभवरूपहै॥जैसेचिन्मात्रआत्माविखेसृष्टिअभा
समात्रहै॥तैसेकारजकारणभावभीअभासमात्रहै॥परउहीरूप
है॥आत्मसताहीइसप्रकारहोभासतीहै॥अरुइहपदार्थजोकारज
कारणकरउपजेद्रिष्टिआवतेहै॥सोअभ्यासकीद्रिढताकरभासते
है॥आदिसृष्टिकछुकारणकरकेनहीउपजी॥पाछेकारणकरकार
जउत्पनद्रिष्टिआवतेहै॥जदइहकारजकारणद्रिष्टिआवतेहै॥तो
भीकछुउपजानहीं॥सदाअद्वैतरूपहै॥जैसेसुपनविखेनानाप्रकार
केकारजकारणआवतेहै॥परकछुहोएतोनहीं॥सदाअद्वैतरूपहै
तैसेजाग्रतविखेभीजाणा॥स्मरनभीसुपनविखेहोतीहै॥पदार्थोंकी
अनभवभीसुपनेविखेहोताहै॥जोसुपनाहीनहीफुरिआ॥तोस्मरनके
होहै॥अरुअनभवकहोहै॥नकोऊस्मरनहैनजगतकाअनभवहै॥
नजगतहै॥अनभवसताहीजगतरूपहोभासतीहै॥सोजाग्रतरूपहै
जवतिसकाअनभवहोवेगा॥तवस्मरनरहेगीनजगतरहेगा॥ताते
हेरामजीजोअनभवरूपहै॥तिसीकाअनभवकर॥इहजगतभ्रमरूप
है॥जोउपज्यानहीसोसत॥सिद्धहै॥अरुउपज्याजोहै॥अरुजिसविखे
भासताहै॥तिसकोउसीकारूपजाण॥इतरतौकछुनहीं॥जैसेसुपनेवि
खेपदार्थभासतेहै॥सोउपजेनहीं॥परउपजेद्रिष्टिआवतेहै॥सोअन
भवविखेउपजेहै॥अनभवसतसिद्धहै॥तिसविखेजोपदार्थभासता
है॥सोअनभवरूपहै॥अनभवहीइसप्रकारहोभासतीहै॥तैसेइहस
भअनभवरूपहै॥इतरकछुनहीं॥जेताकछुजगतहैसोसभआत्मरूपहै
तातेहेरामजीजगतअकारणहै॥आत्माकाअभासहै॥कारणकरकेकु
छुवणिआनहीं॥अनंतआत्माइवब्रह्मसत्ताविखेअभासफुरतेहै॥अरु
अज्ञानीकोकारजकारणसहितभासतेहै॥तिसविखेनिश्चयहुएहै॥ज
वजागिकरदेखेगा॥तोसभब्रह्मरूपभासेगा॥तवकोऊनतेहैनजगत
है॥जवलगअज्ञाननिद्राविखेसोयाहुआहै॥तवलगजोपदार्थउस

स्वाहि विरंचि है सोई भासेगा ॥ जैसे कर्म है सो भासेगा ॥ अरु इहु जो जग
त्रूपी स्वप्न है ॥ तिस विषे स्वर्ग आदिक इष्ट पदार्थ हैं ॥ अरु नरक आदिक
दुःख अनिष्ट पदार्थ हैं ॥ तिन विषे प्राप्ति होणे का साधन धर्म अ
अधर्म है ॥ धर्म स्वर्ग सुख का साधन है ॥ अधर्म नरक दुःख का साधन
है ॥ जब लग अविद्या रूपी निद्रा विषे सोया हूआ है ॥ तब लग इनको जा
णता है ॥ जब जागेगा तब आत्म रूप होवेगा ॥ अरु इह जो अविद्या
को उन्नर हैगा ॥ जेता कछु जगत भासता है ॥ सो सभ अनभव रूप है ॥
सो अनभव सदा जाग्रत स्वरूप है ॥ तिसी को जाणणा ॥ अरु जिन पुरुषों
ने उस अनभव को नहीं जाणिआ ॥ सो उनमत पशु है ॥ काहे ते जो आ
त्म बोध ते शून्य है ॥ सदा समीप आत्मा को नहीं जाणते ॥ इसी ते उन्म
त है ॥ उन्मत्त को भी अपणा आप भूल जाता है ॥ जैसे किसी को पिशा
च लगता है ॥ तब उसको अपणा स्वरूप विस्मरण हो जाता है ॥ पिशा
च होइ देव विषे बोलता है ॥ तैसे जिनको अज्ञान रूपी भूत लगा है ॥ सो
उन्मत भया है ॥ अपणा आत्म स्वरूप को नहीं जाणता ॥ अरु विपर्जै करि
देहादि को आत्मा करि जाणे ॥ विपर्जै ही शब्द कहते हैं ॥ अरु जिनको
स्वरूप विषे अहं प्रतीत है ॥ तिनको सभ जगत आत्म रूप भासता है ॥ हे
रामजी जो आदि सृष्टि किसी कारण करि उपजी होती ॥ तो तिसके पाछे
प्रलै आदिको विषे भी कछु शेष रहता ॥ सो तो अत्यंत अभाव हो जाती
है ॥ ताते जगत अकारण है ॥ जैसे बिना मरणे अकारण पदार्थ दृष्टि
आवते हैं ॥ तैसे इहु अकारण है ॥ नका उस संस्कार है ॥ तो स्मरन है ॥ तो अ
नभव है ॥ सभ आत्म के प्रजा है ॥ आत्मा ते इतर कछु नहीं ॥ ताते सभ
जगत आत्म रूप जाणु ॥ राम उवाच ॥ हे भगवन् जो संस्कार ते अनभ
व नहीं होता ॥ अरु अनभव ते स्मरन नहीं होता ॥ तो आदि सृष्टि इस प्रकार
क्योंकर दृष्टि आवती है ॥ वसिष्ठ उवाच ॥ हे रामजी इह ससा भी तेरा इहु क
ना है ॥ जैसे इस्त्री के बालक मारणे विषे सिंघ को जनन कछु नहीं हो
ता ॥ तैसे इस संस को ताराकणी कर मुक्त को जनन कछु नहीं ॥ जैसे
स्वप्न के उदय हूए अर्थ कारक का अभाव होता है ॥ तैसे मेरे वचनों करि तेरा सं
साहर हो जावेगा ॥ हे रामजी जेता कछु जगत तूं देखता है ॥ सो सभ चि
त्मात्र रूप है ॥ इससे इतर कछु नहीं ॥ जैसे थंभ विषे शिल्पी पुतलीआं
कल्पता है ॥ पर पुतलीआं कछु बणीआं नहीं ॥ उस के चित विषे पुतली
आं की अकार है ॥ तैसे आत्म रूपी थंभ है ॥ तिस विषे चित रूपी शिल्पी
पुतलीआं कल्पता है ॥ हे रामजी थंभ सो पुतलीआं तिसका सी वा है
नवीन कछु नहीं है ॥ पर आत्मा ता अद्वैत है ॥ निराकार है ॥ तिस विषे दू
र कछु नहीं निकसता ॥ तिस विषे वाणी की गम नहीं ॥ चेतन मात्र है
तिस विषे अहं ऐसा जो फुरणा है ॥ सो फुरि आत्म आपको चेतन जा
णत भया ॥ बहुड़ आगे शब्द अरु शब्दों के अर्थ कल्पे हैं ॥ सो स्वरूप थि
ह्रात चेतनता आपको जाणत भया सो ईश्वर है ॥ ईश्वर जीव ब्रह्मा इंद्र
वरुण कर्म रूप बीज तन जल वायु अकाश देश काल इत्यादिक फु
र अरु अर्थ फुरणे विषे हूए हैं ॥ जैसे इक समुद्र विषे बहु तरंग के
अवस्थान तरंग होते रहते ताम होते हैं ॥ तैसे सभ ब्रह्म के नाम हैं
ब्रह्म ते इतर कछु नहीं ॥ ब्रह्म ही अपणा आप विषे स्थित है ॥ उसी
फुरणे करि जगत प्रकार होता भासता है ॥ फुरणे ते रहित जगत अकार

सिद जाता है ॥ पवन फुरणे अफुरणे विषे अलजैसा कान्यां है ॥ जैसे स्पंद
विषे वायु ज्यां कान्यां है ॥ अरु जैसे कछु पदार्थ भासते हैं ॥ सो सभ ब्र
ह्म रूप है ॥ जैसे स्वप्न विषे अपणा ही अनभव पहाड़ विछू आदिक
नाना प्रकार का जगत हो भासता है ॥ तैसे ही ब्रह्म केवल जाग्रत इहु
जगत रूप हो भासता है ॥ तिस विषे कहूं अनवाई कहो भासता है
कहूं अधभूत कहो भासता है ॥ कहूं ईश्वर कहूं जीव हो भासता है ॥
इसने आदि लेकर ग्राह अर्थ सगल जगत जो बणाया है ॥ सो ब्रह्म
सत्ता इस प्रकार इस्थित भए हैं ॥ जैसे थंभ विषे पुतलीआं थंभ रूप
होती हैं ॥ तैसे आत्म अकाश विषे जगत आत्म स्वरूप है ॥ आत्मा ते इत
र कछु नहीं ॥ जैसे तिस विषे जगत अभास है ॥ तैसे स्मरन अनभव
भी अभास है ॥ स्मरन जो संस्कार है तिस निज जगत की उत्पत्ति न वक
हा जो स्मरन अभास न होवे ॥ सो तो स्मरन संस्कार भी अभास है ॥ ए
ह जगत का कारण कैसे होवे ॥ स्मरन भी तब होता है ॥ जो प्रथम ज
गत होता है ॥ जो जगत ही नहीं तो स्मरन कैसे होवे ॥ ताते जगत अ
भास मात्र है ॥ इसका कारण कोऊ नहीं ॥ अकारण है ॥ हे रामजी सभ
रत संस्कार इस जगत का कारण तब होवे जो कछु जगत आगे हो
आकार हो ॥ सो तो कछु न था ॥ अरु अनभव तिसका होता है जो पदा
र्थ भासता है ॥ सो तो इस जगत के आदि जगत का कछु अस्त न था ॥ फे
र अनभव के साक हो ॥ जो अनभव ही न हूआ तो स्मरन किसकी होवे
जो स्मरन होता है ए तो इहु तिसने जगत के साक हो ॥ ताते हे राम
जी आदि जो जगत फुरिआ है ॥ सो अकारण अकस्मात ते फुरिआ है
जैसे रत्न की लाट होती है ॥ तैसे इहु जगत है ॥ पाछे ने कारज कारण रू
प भासता है ॥ आदि अकारण रूप है ॥ ताते हे रामजी जिस का कार
ण कोऊ न होवे ॥ सो जाणीए जो उपजी नहीं ॥ जिस विषे भासती है
उही रूप है ॥ अधिष्ठान ते इतर कछु नहीं ॥ ताते सभ जगत ब्रह्म रूप
है ॥ स्मरन भी ब्रह्म विषे अभास फुरी है ॥ अनभव भी अभास है ॥ सो ब्र
ह्म ते इतर कछु नहीं ॥ अरु अभास भी कछु फुरिआ नहीं ॥ अभास की
न्याई भासता है जगत ॥ आत्म सत्ता अद्वैत है ॥ तिस विषे अभास भी
नहीं बणता ॥ न स्मरन है न अनभव है ॥ न सुन्ना है न जाग्रत है ॥ इहु क
ल्पना कछु नहीं सभ ब्रह्म है ॥ अरु फुरणा भी जो कहते हैं ॥ सो भी कछु
वस्तु नहीं ॥ जैसे थंभ विषे शिल्पी पुतलीआं कल्पता है ॥ तैसे स्पंद
चेतना आत्मा विषे जगत कल्पती है ॥ अरु शिल्पी जो कल्पता है सो
आप भिन्न होकर कल्पता है ॥ अरु इहु चित्त सत्ता अैसी है ॥ जो अपणे
ही स्वरूप विषे कल्पती है ॥ अरु जगत रूपी पुतलीआं देखती है ॥
सो आत्मा आकाश रूपी थंभ है ॥ तिस विषे जगत भी अकाश रूपी पु
तलीआं है ॥ जैसे अकाश अपणे आकाश विषे इस्थित है ॥ तैसे
ब्रह्म अपणे ब्रह्मत्व विषे इस्थित है ॥ जगत भिन्न भी द्रिष्टि आवता
है ॥ पर अचेतन चिन्मात्र रूप है ॥ भेद भाउ कोऊ नहीं प्राप्ति भया ॥ वि
कार वान भी द्रिष्टि आवता है ॥ पर कछु विकार नहीं हूआ ॥ जैसे सभ प्र
मात्र पणो ही विषे दृष्टि पट ते भासते हैं ॥ तैसे इह जगत अपणे आ

वं॰ मं॰ ५८

56

पवि रवि भासता है॥ पर है कछु नहीं॥ हे रामजी इही अमृतजी है जो
मैं ने सो उपदेश किया है॥ अपणा अनुभव को प्रगट कर कहा है
अरु जीवन्मुक्त भी जाणते है॥ से ते विरवे निति देखते है॥ अरु से णा
ते भी है॥ पर जाण नहीं सकते॥ निश्चे कर॥ अरु सब पदार्थ का स्मर
ना कर के त्याग नहीं सके॥ सो बडा आश्चर्य है॥ २५१॥ इति श्री मालमज
कउपदेशो नाम सर्गः॥ वसिष्ठ उवाच॥ हे रामजी जो पुरुष इंद्रिया
के इष्ट विरवे कउ पाइ कर सुखी नहीं मानता॥ अरु अनिष्ट विरवे अ
रु को पाइ कर दुखी नहीं जानता एनेके असमन्सक है॥ तिसको जी
वन्मुक्त जाण॥ जिसको बडे भाग आनि प्राप्ति हुए है॥ अरु अपणा स
रूप ते चलाइमान नहीं होता॥ तिसको भी जीवन्मुक्त जाण॥ हे रा
मजी जे ते कछु भासता है अरु अर्थ है तिसको हेतरूप नहीं भासते सो है
जीवन्मुक्त जाण॥ जिस अविद्यारूपी जाग्रत विरवे अज्ञानी जागते
है॥ तिसते ज्ञानवान सोए रहते है॥ अरु जिस परमार्थरूप जाग्रत वि
रवे ज्ञानी जागते है॥ तिसते ज्ञानवान जो नहीं है ते सो सोए हुए है
अरु इह जान नहीं जाणते॥ तिस विरवे जीवन्मुक्त इस्थित है॥ इस
कारण ते ज्ञानवान इष्ट अनिष्ट विरवे पाके पाइ कर दुखी नहीं हो
ता॥ तिनका चित्त सदा आत्मपद विरवे इस्थित है॥ राम उवाच॥ हे
भगवन् जो पुरुष सुख को पाइ कर सुखी नहीं होता॥ अरु दुख
पाइ दुखी नहीं होता॥ सो जड है अथवा चेतन तो नहीं॥ वसिष्ठ उवाच॥ हे
रामजी सुख अरु दुख तब लग होता है॥ जब चित्त को जगत का सं
बंध होता है॥ अरु जब चित्त के संबंध होता है॥ अरु जब चित्त के
थते रहित चिन्मात्र होता है॥ तब उपाधिक जो है न सुख अरु दुख भी
भी नहीं रहते॥ जो अपणा स्वभाव विरवे इस्थित पुरुष है॥ सो पर वि
श्राम को प्राप्ति होता है॥ अरु उह सब कर्मों को करते दृष्टि आवते है
पर स्वरूप ते उनका करने ते का उत्थान कछु नहीं होता॥ तिस आसते
अहंकार विरवे रहता है नाहे॥ ते आसापद देखता है॥ पर है तिन का भावना
उनको कछु नहीं करती॥ जैसे अग्नि प्रति उन्मत्त नहीं होता है॥ उसको स
भ पदार्थ दृष्टि आवते है॥ पर पदार्थ का ज्ञान उसको कछु नहीं हो
ता॥ तेज जिनको बंध अहंकार विरवे गणीभूत भए है॥ तिसको हेतरूप प
दार्थ नहीं भासते॥ जिनको हेतन नहीं भासता तिनको सुख दुख के
से भासे॥ तिन पुरखों ने हो विश्राम कीया है॥ जहां न सजाइ है न जाग्र
त है॥ न सुखा है न सुखपत है॥ सर्व हेतन ते रहित अद्वैत रूप मिसता वि
रवे विश्राम कर रहे है॥ संसार मार्ग ते उलंघ गए है॥ अरु आत्मा क अ
मादि कर इसको कष्ट होता है॥ अपणा विभूत बडा एक का त्याग के
प्रसन्न होता है॥ बहुर उस स्वभाव के कुरमार रा विरवे कष्ट पावता है॥ उ
ह मान सुखते नहीं॥ सोता किया है॥ संसार रूपी जंगल विरवे पडा कष्ट
पावता है॥ जल त्रिषा कर आतुर होता है॥ तब जल की ओर दौडता
है॥ जहां जाता है तहां मात्र थल को नदी भासती है॥ जल प्रापत
नहीं होता॥ बहुर आगे दौडता है॥ तब अप्राप्ति रवा कहती जाती है॥
इस प्रकार दौडता दौडता जड हो जाता है॥ दुखी होकर मर जाता है

पर जल प्रापति नहीं होता॥ सो जब अरु दौडता है तब जडता अरु मर
णा चाहता भिन्न भिन्न सुणा॥ हे रामजी मा चाह रूपी ता स्थित किया है॥ सो
संसार रूपी जंगल विरवे आन पडा है॥ अरु इंद्रियों के इष्ट रूपी विरवे
हैं॥ मा जल भासता है॥ तिनको सत्त कर जाण के पान करने मिलता विश्रा
नरूपी मारग कर दौडता है॥ सो विरवे अभास मात्र है॥ तिन विरवे था
नरूपी जल है नहीं॥ दौडता दौडता व्रिथा अवस्था विरवे जाइ पड
ता है॥ तब जड होजाता है॥ अैसे कष्ट को प्रापत होता॥ पर प्रापत रूपी
जल का नहीं पावता॥ ताते विस्मृ भी नहीं होता॥ बहुर मर जाता है॥ हे
रामजी इह मात्र सुखन है॥ मानो पडे ए है॥ तिसके पाप कर बडा भा
र है॥ अरु कुर मारग विरवे चला जाता है॥ अरु मारग विरवे सको
णे है॥ तिस कर पड जलता है॥ इस प्रकार रूपी पडा
गेने मा हली या है॥ तिस कर पडा जलता है॥ अरु संसार रूपी मारग विरवे
ऐके सी श पर जन्मों का बडा भार है॥ अरु इष्ट अनि
पडा है॥ कर्म इंद्रिया अरु ज्ञान इंद्रिया इनके जो विरवे है॥ इष्ट अनि
ष्ट तिनके राग द्वेष रूपी तस्कर इस का विचार रूपी धन हिर लीः
या है॥ तिस कर राग द्वेष विचित्र आरू पी अन्न साथ पडा जलता है॥ बडा
श्राप जै है॥ जो अैसे कुरमारग को त्याग कर परमपद विरवे विश्रा
म पाइया है॥ अज्ञान द को त्याग कर परमपद आनंद को प्रापत भ
ए है॥ तिन मस्त पुरखों का संसार का दुख अरु सुख नहीं आ पडा
परम अद्वैत सत्ता को प्रापत भए है॥ अरु द्वैत भावना ते रहित है
अहंकार अरु त्याग रूपी जो श्रम है॥ तिसको त्याग कर उन परमपदः
विरवे विश्राम पाया है॥ सदा सोए रहते है॥ प्रगट जो सुख साथः
पावते है॥ सो उही सोवते है॥ उनके अंतर सदा शांत रहती है॥ प
रजड ताने रहित है॥ अकाश ते भी अधिक सूक्ष्मता को प्रापत हुए
है॥ लोभ रूपी जो मल है॥ तिसते रहित हुए है॥ जे मस्त अद्वैत विरवे धृ
इ नहीं पाइती॥ लोभ रूपी तम ते रहित जो मस्त रूप विरवे तिनमन
हीं पाइता॥ ते सउन विरवे लोभ जो है सो इंद्रियों के इष्ट विरवे पाः
की विश्राम नहीं पाइती॥ तिसते रहित होकर तिनो विश्राम पा
या है॥ इह आश्चर्य है जो अगन ते अगम होकर अरमह नजम रहनहो
कर उह विश्रान्तवान हुए है॥ हे रामजी जो आत्म सत्ता को उड़ते सो
ऐ पडे है॥ तिनको दुख होता है॥ अरु ज्ञानवान जगत हेतन की ओर ते
जड हुए है॥ अपणा स्वरूप विरवे चेतन है॥ तिनको दुख कछु नहीं
उ है जे जगत की ओर ते सोए है॥ तिनको अविदिक जो जगत है॥ सो
द्विधा संबंध हरा होगया है॥ उह अरु सठोर ते सोइ रहे है॥ उनको बहुर उः
रवके मेहाव॥ उह रूप कर सदा अद्वैत रूप है॥ जो अनेन जगतों को
कर्ता है॥ अरु आप को सदा अकर्ता जाणता है॥ अैसा आश्चर्य पद विरवे
ति विश्राम पाया है॥ जगतों के समूह सत्ता समान विरवे इस्थित के
कर्के विश्राम पाया है॥ इह आश्चर्य है॥ अरु उह संपूर्ण क्रिया करते है
पर सदा अक्रिय पद विरवे इस्थित है॥ संपूर्ण पदार्थ सब जनजाण करे
स्वरूप नभए है॥ अकाश ते भी अधिक व्यापक हुए है॥ आत्म सत्ता विरवे
विश्राम पाया है॥ सो आत्म सत्ता अकाश को भी धारह ही है॥ तिसको आ

व॰
म॰
५५

55

त्मनकर के एस्थित भए हैं॥ परमसत्यरूप जो पद है जिसविषे सर्वश
ब्द अर्थ अकाशरूप होजाता है॥ अकाश भी अकाश होजाता है॥ तिस
पदविषे विश्राम कीया है॥ सो अस्वजी है॥ अरु नेत्र उनके खुले हुए
हैं॥ अरु सुषुप्ति विषे स्थित है॥ क्या सुषुप्ति है जो द्वैत अरु द्वैत भा
वउनका नष्ट होगया है॥ अरु जगत के प्रकाशते रहित है॥ अरु प
रमरूप है॥ हे रामजी यह जो भासपदार्थ है उनते रहित है॥ अं
तर आत्मा विषे स्थित है॥ प्रगट जो सुतः है॥ सो उही सुत है॥ अरु
सुषुप्ति विषे जागता है॥ अरु जाग्रत ते उसको सुषुप्ति है॥ उस
सुषुप्ति साथ सोया है॥ अरु कर्म करता है॥ पर कर्ता का अभिमानते र
हित है॥ क्रोध भी करता है पर क्रोध के कारणते रहित है॥ सर्व ओर ते प्रका
शवान होकर विराजता है॥ निर्भय होकर विश्राम करते हैं॥ कामना के भी
भी दृष्टि आवते हैं॥ पर तृष्णाते रहित है॥ निरसंकल्प पद विषे इ
स्थित भए हैं॥ इह अस्वजी है॥ जिसक्रिया की ओर देखते हैं॥ तिसी ओर
तिनको ध्यान दृष्टि आवते हैं॥ काहे ते जो इक मित्र तिनके साथ रहता
है॥ तिसकर दुख तिनके निकट कोऊ नहीं आवता॥ २५२॥ इति श्री जी
वन्मुक्त लक्षण वर्णन नाम सर्ग:॥ रामउवाच॥ हे भगवन उह मित्र
कौन है ज्ञानी का॥ कोऊ कर्म मित्र है॥ अथवा आत्मा विषे विश्राम
का नाम मित्र है॥ इह संक्षेप कर मुझको कहो॥ वसिष्ठ उवाच॥ हे राम
जी इक अकृत्रिम कर्म है॥ अयत्न कर्म का नाम है॥ अपणा ही जो प्र
जनन है॥ सो उनका मित्र है॥ सो मैं कहता हों सुणो॥ अध्यात्मक अधि
दैवक अधिभूतक॥ इह तीन ताप अज्ञानी को सदा जलावते हैं॥ सो ज्ञा
नी को नहीं भासते हैं॥ जो वडा कष्ट आन प्राप्त होवे॥ जो लघ्य ना का
ठन है वडा कोपहु होवे॥ सो भी उसको स्पर्श नहीं करता॥ जैसे कमल को ज
ल स्पर्श नहीं करता॥ तैसे ज्ञानी को दुख नहीं करता॥ काहे ते जो मित्र उ
सके साथ रहता है॥ जैसे बालक का मित्र बालक होता है॥ सो वडे भय
भी उनका हित होता है॥ तैसे चिरकाल जो ज्ञानवान अभ्यास कीया है
सो अभ्यास रहता है॥ इष्ट क्रिया की ओर उहु विचरने नहीं देता॥ अरु
शुभ की ओर वरतावता है॥ जैसे पिता पुत्र को अशुभ कर्मते वर्जकर
सत्कर्म की ओर लगावता है॥ तैसे उसको विश्रांत विचाररूपी मित्र वर्ज
करता है॥ आत्मा की ओर स्थित करता है॥ अरु रागद्वेषरूपी जो अग्नि है
तिसने निकामकर समतारूपी जो शीतलता है तिसको प्राप्त करता
है॥ अरु सो उसका विचाररूपी मित्र है॥ अरु जेते दुख क्लेश है॥ तिन सभ
नों ते ओह तराए लेजाता है॥ जैसे मल्लाह नदी ते तराए लेजावे॥ हे रा
मजी विचाररूपी मित्र वडा सुंदर है॥ अरु ध्यानरूप है॥ सर्व मल को
जलावणहारा अग्नि है॥ जैसे अग्नि स्वर्ण की मैल जलाइकर निर्मल
करता है॥ तैसे विचाररूपी अग्नि है॥ अरु तृष्णा रागद्वेषरूपी मल को
जलावता है॥ अरु जब विचाररूपी मित्र आवता है॥ तब स्वभाव कर उ
सकी इच्छा निर्मल होजाती है॥ वह उनका विचरता है॥ अरु सभ को आदे
खकर प्रसन्न होता है॥ दया अरु कोमलता अमान अक्रोध आदि कर सु
णसुभावक ही प्राप्त होते हैं॥ जैसे तिलो विषे तेल रहता है॥ जै

से फूलों विषे गंध रहता है॥ अरु विषे उसका रहता है॥ तैसे विचा
रकर ज्ञानी विषे शुभ आचार रहते हैं॥ अरु विचाररूपी मित्र सूरमा
है॥ जो कोऊ शत्रु होता है॥ प्रथम तिसको मारता है॥ अज्ञानरूपी शत्रु
को नाश करता है॥ जैसे सूर्य तम को नाश करता है॥ अरु दीपक प्रकाश
वत साथ होता है॥ अंधकूपरूपी जो विषभोग गर्त है॥ तिस विषे
गिरने नहीं देता॥ सर्व ओर ते रक्षा करता है॥ अरु जिस ओर मुख
ज्ञानवान जाता है॥ तिस ओर सभ को प्रसन्नता उपजती है॥ हे राम
जी वचन तिसका ऐसा होता है॥ जो कोमल अरु मधुर अरु इस नव
थ अरु छल ते रहित॥ अरु उदार आत्मा अरु लोकों पर उपकार अरु
प्रसन्नता कोली ए बोलता॥ अरु सुहृद पाने रूप अरु परमार्थ के
कारण॥ हे रामजी वचन ताति सके ऐसे होते हैं॥ प्रसन्नता को ली
ए होए॥ अरु आप भी सदा प्रसन्न रहता है॥ जैसे पतिव्रता इस्त्री भर्ता
को सदा प्रसन्न राखती है॥ तैसे विचाररूपी मित्र इसको सदा प्रस
न्न राखता है॥ अरु सदा शुभ आचार विषे राखता है॥ दान तप जप
दिक जो शुभ क्रिया है सो आप भी करता है॥ अरु लोकों ते भी करावता
है॥ अरु जिसके अंतर विवेकरूपी मंत्री आवता है॥ तहां अपणा पर वी
रको भी साथ ले आवता है॥ रामउवाच॥ हे भगवन इसका परवार क
ौन है॥ अरु उसका अचार क्या है संक्षेप ते स
मझावो॥ अरु उसका सरूप क्या है॥ अरु इसका ध्यान इह सारी
भक हो॥ वसिष्ठ उवाच॥ हे रामजी इस्नान दान तप ध्यान इह सारी
उसके बेटे हैं॥ इस्नान ताइ रहे हैं॥ जो सदा पवित्र रहता है॥ जहां जोगा
जथाशक्ति दान करता है॥ अरु बाहर ब्रिनकों अंतर इस्थित करणा अरु
का नाम तप है॥ अरु आत्मा की चिंतवना विषे ब्रिनका लगावणा
इसका नाम ध्यान है॥ इह चारो उसके बेटे हैं॥ हे आत्मदर्शी पवित्र इनको
सदा स्वभावक अंतर्मुख विवहार होता है॥ अरु उसकी मुदिता इस्त्री
है॥ सदा प्रसन्न मुख रहणा॥ इसका नाम मुदिता है॥ सो नमस्कार को
जोगा है॥ जैसे चंद्रमा उदय होता को देखकर सभ को उप्रसन्न
होता है॥ अरु नमस्कार करता है॥ तैसे तिसको देखकर सभको प्रस
न्न होता है॥ अरु नमस्कार करता है॥ अरु मुदितारूपी इस्त्री के साथ एक
सहेली रहती है॥ करुणा अरु दया तिसका नाम है॥ अरु समतारूपी
द्वारपाल ती सन्मुख खडी रहती है॥ जब विवेक राजा अंतःपुर विषे
विश्रावता है॥ तब सन्मुख होकर सभ भइ स्थान दिखावती है॥ अरु
सदा संग रहती है॥ अरु जिस ओर राजा देखता है॥ तहां समता ही
दृष्टि आवती है॥ सो अनेक उपजावणहारी है॥ सो दोष ओ को सा
थ लेकर सुख विषे विचरती है॥ जिस ओर राजा भेजता है॥ सो तिस ओ
र थम अरु धीरज को लीए फिरती है॥ जब राजा असवार होकर चल
ता है॥ तब ओह तीसम रूप वाहन णी पर अरूढ होकर राजा के साथ
चलती है॥ जब राजा शत्रु साथ लडाई करता है॥ सो शत्रु कौन है॥ पापा
चार विषे ब्रहे॥ तब संतोष थीरज मैत्री मंत्र देता है॥ तब विचाररूपी
वाणी साथ तिसको मारता है॥ हे रामजी विचार सदा तिसके साथ र
हता है॥ अरु सभ का रजको करता है॥ इह स्वभावक च छाड सन होती है

अरु आपसदा अमानरहिता है॥ कवलन अरु भोगानंनका अभिमा
तिसको कछु नहीं फुरता॥ जैसे कागनऊ परम्बरनलिखी अभिमा
नतेरहित होता है॥ तैसे उह अभिमानतेरहित है॥ अरु जो परमार्थ
निरूपणतेरहित निरारथक वाक है॥ तिनके बोलणते गूंगा है॥ पथ
रकी शिलावत है॥ अरु निरारथक शास्त्र के सुनणे ते बहरा जैसे पत्थ
रानहीं सुणता॥ अरु जो कुमार्ग स्त्रीलोकों कर निखेद है॥ तिसको
ओरते मंद है॥ जैसे शव मूरदे शरीर कुछ क्रिया नहीं उठती॥ तैसे उस
को भी क्रिया का उत्थान नहीं होता॥ अरु जहां ज्ञानवानों अरु ज्ञानी
यों की सभा होती है॥ तहां परमार्थ के निरूपण को शोधना राग्र रह
हस्यन की न्याई सावधान होता है॥ इत्यादिक जो कछु शुभ क्रिया है
सो उस माधि ऊस्वभाव कर होती है॥ तैसे उन विषे स्वभाव कर क्रिया होती
है॥ इति श्री जीवन्मुक्त ज्ञानी लक्षण विचार वर्णनं नाम सर्गः॥
वसिष्ठ उवाच॥ हे रामजी इह जगत वास्तव ते ज्ञान स्वरूप है॥ आत्मस
त्ता का चमत्कार है॥ अरु कछु बना नहीं॥ आत्मसत्ता ही फुरणे कर ऐसे
प्रकार भासती है॥ अरु कारण इसका कोई नहीं॥ जब महाप्रलय थी तब
प्राग अरु अभाव है न कछु न था॥ तिस अद्वैत सत्ता में जगत फुरि आया
सो तिसी ते भासि आया है॥ जैसे ब्रिछ बीज ते उत्पन्न होता है॥ सो भी
जो भी जगत का कारण न था॥ तौ किस कारण ते उत्पन्न हुआ॥ अरु तौ
कारण कोई न था॥ ताते अब भी जगत का उहा प्रलेश पजाण॥ हे
रामजी न कोउ पृथ्वी आदिक तत्त है॥ न जगत है॥ न आभास है॥ न उणा
है॥ जैसे आकाश के फूलों का शाह निरारथ है॥ तैसे इसका होणा भी निरा
रथ है॥ केवल ब्रह्मसत्ता स्वच्छ अपणे आप विषे स्थित है॥ इह पदी
अरु मन भी ब्रह्मस्वरूप है॥ जैसे स्वप्ने विषे अपणा अनुभव ही नाना प्र
कार जगत आकार होया अरु मन होकर भासता है॥ अरु ताके कछु नहीं
तैसे इह जगत उह ही रूप है॥ हे रामजी सभ जगत आत्मस्वरूप है॥ जैसे
कारण विना आकाश विषे हसतावे इसा भासता है॥ सो कछु हुआ न
हीं॥ आकाश विषे ही भासि आवता है॥ तैसे इह जगत आत्मा को अभा
स है॥ जिस विषे आभास फुरि आया है॥ अधिष्ठान ब्रह्मसत्ता है॥ जैसे क
ल्पपदार्थ तुझ को भासता है॥ सो सभ ब्रह्मस्वरूप जाण॥ जैसे मनोरा
ज की सृष्टि होती है॥ सो अपणे अनुभव विषे होती है॥ उसका स्वरू
प अनुभव ते इतर कछु नहीं॥ तैसे सृष्टि आदिक जो जगत अनुभव
होता है॥ सो अनुभव रूप ही है॥ अरु उपजा कछु नहीं॥ उही अनुभ
व सत्ता इस प्रकार भासती है॥ हे रामजी देशते देशांतर को संवित
प्रापत होती है॥ तिसके मध्य विषे जो अनुभव है॥ सो तेरा स्वरूप है
अरु सभ आभासमात्र है॥ जाग्रत देश को त्याग कर स्वप्न शरीर साथ
मिली नहीं॥ सो जाग्रत स्वप्न देश का मध्य है॥ सो मध्य विषे ब्रह्मसत्ता
तेरा स्वरूप है॥ सो प्रकाशरूप अपणे आप भाव विषे स्थित है॥
जाग्रत जो जगत भासता है॥ सो भी उही स्वभाव है॥ जैसे जल का स्वभा
व चमत्कार होता है॥ अग्नि का स्वभाव उष्णता है॥ जल का स्वभाव द्रव
ता है॥ पवण का स्वभाव फुरणा होता है॥ तैसे ब्रह्म का स्वभाव जगत है॥

जैसे सूर्य के किरणों विषे जल भासता है॥ तैसे आत्मा विषे जगत
भासता है॥ हे रामजी इह आश्चर्य है॥ जो अज्ञानी असत को जाणते हैं
अरु सत को असत जाणते हैं ही॥ जो अनुभव सत्ता है तिसको छिपा
वते हैं॥ अरु असत के भि गोवत जगत है॥ तिसको सत जाणते हैं॥ तै
मूरख है॥ तिनको क्या कहीए॥ सभका प्रकाशक आत्मसत्ता है॥ जि
सको सूरज देखता है॥ सो उही पवसदेव सूरज होकर भासता है॥ चं
द्रमा अरु अग्नि उसी के प्रकाश कर प्रकाशते हैं॥ सभका प्रकाश
क चेतनसत्ता उही है॥ जैसे सूरज के किरणों विषे मृगतृष्णा होते हैं
तैसे आत्मसत्ता विषे सूर्य आदिक भासते हैं॥ जिसको साकार कहता
है॥ अरु निराकार कहते हैं॥ सो सभ संसे के मिटावते हैं॥ ज्ञानवान को
ऐसा भासता है॥ जो जगत कछु उपजा नहीं॥ मैं क्या कहों॥ जहां सर्व प्र
पंचों का अभाव हो जाता है॥ तिसके पाछे चिन्मात्र सत्ता शेष रहती है
तहां शून्यता भी अभाव हो जाता है॥ हे रामजी जिनको तूं जीवता कहि
ता है॥ सो जीवता भी कोऊ नहीं रहिता॥ जो जीवता ही नहीं सो मृतक
कहां होवे॥ जो कहीए जीवता नाता है॥ जैसे जीवता है तैसे मृतक है॥ मि
तक अरु जीवते विषे कछु भेद नहीं॥ ताते सर्व शब्दों ते रहित अरु सभ
का अधिष्ठान उही सत्ता है॥ तिस विषे नाना न भासता भी है॥ पर इह आ
सो कछु नहीं॥ पर वन जो स्थूल दृष्टि आवता है॥ सो अणमात्र भी न
हीं॥ जैसे स्वप्ने विषे पृथ्वी आदिक तत्त भासते हैं॥ पर कछु हुए नहीं॥ के
वल आत्मसत्ता अपणे आप विषे स्थित है॥ तिसी ते जगत भासता
है॥ हे रामजी जो परमार्थ सत्ता सो जगत भास्या सो होर कोऊ नहीं आ
ह क्या॥ ताते उही सत्ता जगत रूप हो भासती है॥ कुछ एक कहते हैं दृश्य आ
त्मा विषे है॥ कुछ एक कहते हैं आत्मा विषे कछु नहीं॥ सो आत्मा विषे दो
नों शब्दों का अभाव है॥ अरु अभाव का भी अभाव है॥ इह भी तेरे जाणने के
निमित्त कहता हों॥ जैसे तूं है परम शांत है॥ नित तृप्त निरंतर है॥ उस
अरु तेरे विषे कछु भेद नहीं॥ पर शांत अच्युत अद्वैत है॥ सोई जगत रूप
होकर भासता है॥ जैसे कोऊ पुरुष सेन करता है तब स्वप्ने विषे
लीन होता है॥ तो उपजा क्या अरु लीन क्या भया॥ स्वप्न के आदि भी अद्वैत
सत्ता थी अरु अंत भी उही रही॥ अरु मध जो कछु भास्या था सो भी उही रू
प हुआ॥ आत्मा ते इतर ता कछु न हुआ क्यों॥ ताते जेता कछु जगत भास
ता है॥ सो ब्रह्मरूप है॥ ब्रह्म ते इतर कछु नहीं॥ हे रामजी इसको तौ सदा
अनुभव रूप जगत भासता है॥ इस असत नहीं जाणते॥ जो अज्ञानी को
क्या भासता है॥ जैसे जो स्वप्न की सृष्टि ते जागि आया है॥ तिसको अद्वैत अ
पणा आप ही भासता है॥ तैसे होत रीआ विषे भासता है॥ तुरीआ अरु
जाग्रत विषे भेद कछु नहीं॥ जाग्रत ही का नाम तुरीआ है॥ जाग्रत तुरी
रूप है॥ इह भी क्या कहणा है॥ सभ ही अवस्था तुरीया रूप है॥ तुरीया ना
म है जाग्रत सत्ता का॥ जो अनुभव साखी जोत है॥ सो जाग्रत विषे भी सा
खी अनुभव रूप है॥ स्वप्न विषे भी साखी रूप है॥ सुखोपत विषे भी सा
खी है॥ ताते सभ तुरीआ रूप है॥ पर जिसको स्वरूप का अनुभव हुआ है
तिस ज्ञानवान को ऐसे ही भासता है॥ अज्ञानी को भिन्न भिन्न अवस्था भा
सती है॥ हे रामजी एक पदार्थ का ब्रिमन्यारा कीया है॥ अरु इह सर्व पदार्थ वि

व॰ म॰ ५७

57

रवेल्लागोनहीं॥ उहजोमधविश्वअनुभवजोतहै॥ तिसकोतूं आत्मस
ताजाण॥ अरुतिसविश्वजोवहइकछभासता सोभीउहीरूपजाणा जे
सेजाग्रतकोत्यागकरस्वप्नेकोआदिसारवीअनुभवमात्रहोताहै॥ ति
ससत्ताविश्वस्वप्नगीरअरुपदार्थभासआए॥ सोभीउहीरूपहै॥ ते
सेजोकछजाग्रतप्राणीरअरुपदार्थभासतेहै॥ सोआत्मरूपहै॥ जेवत
इसप्रकारजाणेगा॥ तबतनकोदुखकोउनस्पर्शकरेगा॥ जैसेसुश्र
कोसुषुप्तिविखेअपणासरूपकीस्मरेनआए॥ तबदुःखभीअउरवहो
जानेहै॥ बालणावलेणारवाणापीणालेणादेणाइतनेआदिल
करथाहूअर्थहोतेहै॥ अरुजुधकर्महेतरूपहोतेहै॥ सासभयहैनतेअ
पराणआपहोजानेहै॥ विवहारभीसभपडाकरताहै॥ परअपणानिष्ठ
कूटसतनपवकीन्याईअचलहोताहै॥ हैतकुछनहींकरता॥ तिसोप्र
कारजोपुरखअपणासरूपविखेजागेहै॥ तिनकोइहजगतसभआ
त्मसरूपभासताहै॥ जोअग्निविखेउसनतासभावकहै॥ जैसेबर्फविखे
सीतलतासभावकहै॥ तैसेज्ञानीकोआत्मद्रिष्टिसभावकहै॥ अरुलो
कोकोइहद्रिष्टिजतनकरप्रापतिहोतीहै॥ अरुज्ञानवानकोसभा
वकहोतीहै॥ जिसकोतुमइछाकहितेहो॥ साज्ञानवानकोब्रह्मरू
पहै॥ अनिछाभीब्रह्मरूपभासतीहै॥ अरुज्ञानवानकोआनन्दप्राप
तहुआहै॥ अपणाजोसभावतारहै॥ सदातिसीविखेइस्थितहै॥ अउर
कल्पनाउसकोनहींउठती॥ उहविदवानतिसद्रिष्टिकोलेक
रइस्थितहोताहै॥ २५८॥ इतिश्री[illegible]नामसर्गः॥ वसि
ष्ठउवाच॥ हेरामजीजैसेसुपनेविखेजोपृथ्वीआदिकपदार्थभासतेहै
सोअविदमानहै हैकछुनहीं॥ तैसेपितामाताजोआदिब्रह्माजीहै
तिनकोभीअकाशरूपजाण॥ उहभीकछहुयेनहीं॥ आत्मसत्तात
इतरकउनकाहोणानहीं॥ जैसेसमुद्रविखेतरंगअरुबुदबुदेउठतेहै
सोसभावकहै॥ तैसेब्रह्माहूकेरणाभीउणकोनहींवणता॥ उहतोजल
हीरूपहै॥ तैसेजिसकोतुमब्रह्माजीकहितेहो॥ सोहोरकोउनहीं
आत्मसत्ताहीइसप्रकारहोभासतीहै॥ ब्रह्माजीइसजगतकावि
राटहै॥ जैसेपत्रफूलफलटासवृक्षकेअंगहोतेहै॥ तैसेसभजगत
विराटकेअंगहै॥ जोविराटब्रह्माहीअकाशरूपहै॥ तौतिसकेअंग
जगतकीवार्ताकोकहो॥ हेरामजीविराटकेनअंगहै॥ नअकार
है॥ नइंद्रियाहै नमनहै॥ नबुधहैनइछाहै॥ केवलअद्वैतचिन्मात्र
सत्ताअपणेआपविखेइस्थितिहै॥ जोविराटहीनहीं तौजगतके
सेहोवे॥ जोतूंकहेअकाशरूपकेअंगकैसेभासतेहै॥ तौहेरामजी
जैसेसुपनेविखेवडेपहाडपर्वतभासतेहै॥ अरुप्रत्यक्षद्रिष्टिआवते
है॥ परकछुवणानहीं॥ अकाशहीरूपहै॥ तैसेआदिविराटभीकछु
वणिआनहीं॥ अकाशहीरूपहै॥ तिसकेअंगभीअकाशरूपकैसेकहो
इसप्रकारसेकल्पपुरकीन्याईकल्पनाहै॥ एकआत्मसत्ताज्योंकी
त्योंइस्थितिहै॥ तिसविखेसाविसक्याकहीए॥ अरुअनभवक्याकही
ये॥ अनभवअरुस्मरनभीतिसकेअभासहै॥ जैसेसमुद्रविखेतरंग
अभासहोताहै॥ तैसेआत्माविखेअनभवस्मरनअभासहै॥ अरुसम
विनभीतिसकाहोतीहै॥ जिसकाप्रथमअनभवभीजगतविखेहोताहै

जहांजगतहीउपजातुहीहोवै॥ अनभवअरुस्मरनकैसेहोवै॥ तांते
नअनभवहैनस्मरनहै॥ इसकल्पनाकोत्यागदेएजहांपृथ्वीहो
तीहैतहांधूरभीहोतीहै॥ जहांपृथिवीतरहितअकोधूरहोव
नहांधूरकैसेउडे॥ तैसेजहांपदार्थहोतेहै॥ तहांस्मरनअनभव
भीहोतेहै॥ जहांपदार्थहीनहींतांइहकैसेहोवहि॥ तांतेदोनोका
अभावहै॥ रामउवाच॥ हेभगवनस्मरनतोतोविखेइहस्मिरन
कानअनभवतोप्रतक्षहोताहै॥ प्रथमपदार्थकाअनभवहोताहै
पाछेउसकीस्मरनहोतीहै॥ तिसस्मरनसंस्कारतेवहअनभहो
ताहै॥ ऐसेहीब्रह्मादिककाक्योंनहोवै॥ इहतोप्रतक्षभासताहै
तुमकैसेइसकाअभावकहतेहो॥ अरुअभावविखेविषपदाक्या
है॥ वसिष्ठउवाच॥ हेरामजीइसस्मनतेअनभवतहूहोताहैजे
होकावजकारणभावहोताहै॥ अरुब्रह्मातेआदिलेकेरकाष्टप्र
जंतजेताकछुजगततुमकोभासताहै॥ सोसभअकाशरूपहै॥ कछु
वणिआनहीं॥ अविदमानहीब्रह्मादिकविदमानभासताहै॥ जैसे
सूजेकीकिरणविखेजलभासताहै॥ सोजलअविदमानहै॥ तै
सेइहजगतभ्रमकरभासताहै॥ अरुस्मरनतिसकाहोताहै॥ जिस
पदार्थकाप्रथमअनभवहोताहै॥ ताकहीयेब्रह्मादिकस्मरनसं
स्कारतेउपजेहै॥ तोअसनहीवणता॥ काहेतेजोप्रथमताज्ञान
वानोकास्मिरनहोणानहींहोता॥ तौतिनकोस्मरनकाकारणके
सेकहीये॥ अरुइतीयजोइसजगतकेआदिकोउजगतनथा जि
सकीस्मरनमानीये॥ इसजगतकेआदिकेवलअद्वैतआत्मसत्ता
थी॥ तिसविखेस्मरनक्याअरुअनभवक्या॥ तांतेब्रह्मादिकोका
होणाअरुजगतकाहोणाकिसीकारजकारणभावकरनहीं॥
अकारणहै॥ हेरामजीप्रथमतौतूंइहदेख॥ जोज्ञानीकोजगतभा
सताहीनहीं॥ तौस्मरनकिसकीकहीऐ॥ उसकोतौकेवलब्रह्म
सत्ताहीभासतीहै॥ जैसेसूजेकोरात्रकीस्मरननहींहोती॥ तैसेज्ञा
नीकोजगतकीस्मरननहींहोती॥ हेरामजीइहमावेनिश्चैविखेतो
रहीहै॥ जोजगतनहुआहै॥ अरुआगेहोवेगा॥ केवलअपणाभा
वविखेब्रह्मसत्ताइस्थितहै॥ सोअद्वैतहैहोरसभतिसकाअभा
सहै॥ जोअभासकोसतजाणताहै॥ तोस्मरनकोसतजाणता॥ अरु
जोअभासकोअसतजाणताहै॥ तौस्मरनकोभीअसतजाणता॥ जे
सेसुपनविखेस्त्रगृहकाअभासहोताहै॥ तिसविखेअनभवभीहो
तीहै॥ अरुस्मरनभीहोतीहै॥ जागेतेअनभवस्त्रगृहकाअरुस्म
रनकाअभावहोजाताहै॥ तैसेपरमार्थसत्ताअद्वैतकीजाग्रतवि
खेअनभवअरुस्मरनकाअभावहै॥ तिसविखेजगतकछुवणि
आनहीं॥ जैसेकोउपुरुषमारुथलविखेभ्रमकरनदीदेखता
है॥ अरुसतजानकरउसकीस्मरनाकरताहै॥ जोनदीदेखीथी॥ सोउ
सकेनिश्चेहीविखेनदीहै॥ अरुतोनदीकछुनहीं॥ जोनदीहीअसत
है॥ तौस्मरनकैसेसतहोवै॥ तैसेअज्ञानीकेनिश्चेविखेजगतभासआ
याहै॥ साजगतहीअसतहै॥ तौतिसकोस्मरनअरुअनभवकैसेसत
होवे॥ ज्ञानवानकेनिश्चेविखेऐसीहीभासताहै॥ हेरामजीस्मरनजोहै

व

व. म.
५८

58

तौहै॥ सोपदार्थकीहोतीहै॥ सोपदार्थतौकोऊनहीं॥ सर्वब्रह्महीहै॥
अपणेआपविषेहोइस्थितहै॥ जैसाजैसातिसविषेफुरनाहोताहै
तैसाहीहोभासताहै॥ परअरुवस्तुकछुनहीं॥ जैसेवाइफुरतीभी
है॥ अरुठहरभीजातीहै॥ सोचलणोअरुठहरनेविषेवायुकोभेदिक
छुनहीं॥ तैसेज्ञानवानकोजगतकेफुरणेअरुअफुरणेविषेब्रह्मस
ताअभेदभासतेहैं॥ कारजकारणजगतनहींभासता॥ जैसेब्रिछजोहैअ
वैवीअरुपत्रटासफूलफलतिसकेअवयवहैं॥ तैसेजगतआत्माकेअ
वयवहैं॥ आत्माविषेप्रगटहोतेहैं॥ वहुडुलीनभीहोजातेहैं॥ उस
कछुनहीं॥ जबचित्तफुरताहै॥ तबजगतहीभासताहै॥ कछुअरुभअ
कप्रणामकर्केनहींहोता॥ अभासमात्रहै॥ जैसेघटपटआदिकआ
त्माकाअभासहै॥ तैसेस्मरणभीअभासहै॥ स्मरणभीजगतविषे
उदेभएहैं॥ जोजगतहीअसतहै तौस्मरणकेसमतहोवै॥ अरुजो
जथारथदर्सीहै॥ तिनकोसभअभासरूपभासताहै॥ इसकोनकछ
माछुउपाएभासताहै॥ नइसकाकोऊअधिकारीभासताहै॥ इस
वेतिसविषेअहंतनहींभासताहै॥ जैसेनटस्वांगकोधार
ताहै॥ सोसभस्वांगकोअभासमात्रजाणताहै॥ किसीस्वांगकोसत
नहींजाणता॥ सतविषेस्वांगीअनगतदेखताहै॥ तिसतेइतरकु
छनहीं॥ तैसेइसकोब्रह्मतेइतरकछुनहींभासता॥ अरुज्ञानीकोन
अकोहमनहोजाणते॥ जिसप्रकारअज्ञानीकोजगतद्रिढहै॥ सोउ
सकेनिश्चैकोउहीजाणताहै॥ हमारेनिश्चैविषेसभचिन्मात्रहै॥ अ
रुअज्ञानीकोजगतहैतद्रूपभासताहै॥ अरुविपर्जैभावनाहोतीहै॥
ज्ञानवानकोचिन्मात्रतेइतरकछुनहींभासता॥ जैसेसमुद्रकोस्वाभि
अपणेअनभवविषेइस्थितहोतीहै॥ सर्वकाअधिष्ठानअनभवस
ताहै॥ परनिद्रादोखकर्केभिन्नभिन्नभासतीहै॥ तैसेअज्ञानीकोजगत
भिन्नभासताहै॥ अरुजोजागेहुएज्ञानवानहैं॥ तिनकोभिन्नकछु
नहींभासता॥ तउनकोअविद्याभासतीहै॥ नसृष्टिभासतीहै॥ नमाह
भासताहै॥ सभअपणाआपउनकोभासताहै॥ अरुहोकछुइससे
वस्तुवर्णननहीं॥ तहांस्मरणअरुअनभवकिसकाकहीए॥ इहकु
लनासभमिथ्याहै॥ हेरामजीसर्वअर्थोकाजोअधिष्ठानहै सोवलहै
सभपदार्थतिसीविषेकल्पतहैं॥ स्मरणअरुअनभवसभतिसविषेहो
ताहै॥ सोमनआत्माविषेअसहै॥ जैसेसूर्जकीकिरणोविषेजला
भासहोताहै॥ तिसविषेस्मिरतकयाकहीए॥ अरुअनभवक्याकहीए
समकल्पतहैं॥ अर्थइहजोवर्णाकछुनहीं॥ अरुपृथिवीआदिकतत
कछुआत्माविषेउपजेनहीं॥ ब्रह्मसत्ताहीइसप्रकारभासतीहै॥ ज्ञान
वानदुखकोसदाअसहीभासताहै॥ अभासभीआत्माविषेअभ
सहै॥ कारजकारणभावकदाचितनहींभासता॥ जैसेसूर्जकोअर्थक
रकादर्शननहींहोता॥ तैसेज्ञानवानकोकारजकारणभावदिखाए
नहींदेता॥ जैसेसूर्जकेआदिअहंतसत्ताहोतीहै॥ तिसविषेअकार
णसृष्टिकीसाखीफुरआवतीहै॥ तैसेअहंतसत्ताविषेअकारणकआ
दिसृष्टिफुरआएहैं॥ नअथवीहैनकोऊअरुपदार्थहै॥ सभचिदाकाश
रूपहै॥ अरुकछुवर्णाआनहीं॥ अभासमात्रजगतविषेस्मरणकीक
ल्पनाकैसेहोवै॥ २५५॥ इति श्री अस्य रत अभा वजगत वर्नन नाम सर्गः॥

ॐश्री॥ राम उवाच॥ हेभगवन्जिसविषेसर्वकाअनभवहोताहै॥ ति
सकादेहकेविषेअहंप्रनेकिसप्रकारहोताहै॥ उहतोसर्वात्माहै॥
तिससर्वात्माकोइकदेहविषेअहंप्रनेहोणाइहकिकरवोनहै॥ अ
रुकाहूपाखाणअरुचेतनताअरुपर्वतकाअनभवकिसप्रकारहोणा
याहै॥ उहतोअहंतमतरूपहै॥ तिसविषेजडअरुचेतनइहदोनोभे
दकैसेहुएहैं॥ इकविषे॥ श्रीवसिष्ठउवाच॥ हेरामजीजैसेशरीरवि
अयणोहाथआदिकअंगहैं॥ तिनसभअंगोकेविषेइकशरीरफुरहव
आप्याहुआहै॥ अरुजोतिसअंगोविषेइकअंगकोउपकडकर्केहैजे
तूकौनहै॥ तोउहअपणेनामसरूपकोकहताहै॥ तातेदेखजोइकअं
गाविषेउसअपणाआपकहाकैस॥ परसर्वअंगोविषेउसकोआत्मा
ताननहीनाशहोजातीहै॥ तैसेआत्मासर्वअनभवरूपहै॥ तोभीइक
अंगविषेउसकोआत्माभासतीहै॥ तिसकरउसकीसर्वात्मताना
खंडतिनहीहोजाती॥ जैसेइकब्रिछकेसर्वअंगहैं॥ फूलफलपत्रटा
सादिकसर्वअवयवहुविषेब्रिछइकहीव्याप्याहुआहै॥ परजोइकटा
सकाअथवापत्रकाजिसकोपकडकर्केहीनाहै॥ तौकहताहैजेइहब्रि
छहै॥ हैतोइसकेइकअंगविषेब्रिछभावकहणा॥ इसविषेब्रिछ
काकार्सर्वात्मभावहीनहोता॥ तैसेहीसर्वात्माइकदेहविषेअहंभा
वसिद्धहोताहै॥ जडअरुचेतनत्रभीदोनोभावइकहीतेधारेहैं॥ इकही
केदोनोसरूपहैं॥ जैसेइकहीशरीरविषेदोनोसिद्धहोतेहैं॥ हाथपै
रआदिकजडहैं॥ अरुनेत्रइसकेद्रिष्टाचेतनत्रहैं॥ जैसेइकहीशरीरदो
नोधारेहैं॥ अरुइकहीसरूपहै॥ तैसेइहआत्मानेदोनोधारेहैं॥ परण
कहीसरूपहै॥ जैसेशरीरतिनकोभीधारताहै॥ अरुतिनकीक्रिया
काभीधारताहै॥ जैसेब्रिछअपणेअंगोकोधारताहै॥ अरुब्रिछतेभा
वकोभीधारताहै॥ तैसेसर्वात्मासर्वकोधारताहै॥ जैसेसमुद्रकोस्वाभि
सर्वअनभवकोधारतीहै॥ अरुसर्वप्रकारउहीइस्थितिहोरहीहै॥
अरुसर्वक्रियाकोभीधारतीहै॥ तिसप्रकारआत्मसत्तासर्वजगत
अरुसर्वजगतकीक्रियाकोधारतीहै॥ काहेतेजोसर्वात्माहै॥ जोसर्वा
त्मासोक्यानथ॥ जैसेइकहीसमुद्रविषेअनेकतरंगफुरतेहैं॥
अरुसभसमुद्रकेआश्रहैं॥ अरुउहीरूपहैं॥ तैसेजेतेकछुजीवहैं
सोपरमात्माविषेफुरतेहैं॥ अरुपरमात्माकेआश्रहोहै॥ अरुउ
हीरूपहैं॥ जैसेतरंगआपकोजाणेजोमैजलहीहौ॥ तबतरंगसे
गयाउसकोजातीरहतीहै॥ जलरूपहीदेखताहै॥ तैसेजीवजबआ
पकोपरमात्मासाथअभेदजाणेजोमैंआत्माहौ॥ तबजीवतभाव
सकाअभावहोजाताहै॥ परमात्माहीदेखताहै॥ हेरामजीजैसेज
लविषेद्रवताकर्केतरंगभासताहै॥ परतरंगजलतेइतरकछुव
स्तुनहीं॥ तैसेशुधचिन्मात्रविषेसंवेदनकर्केआदिब्रह्माफुरिआहै॥ ति
सतेइहजगतमनोराजकल्पाहै॥ सोअकाशरूपनिराकारहै॥ अरुजो
विराटहोआकाशरूपहुआ॥ तोउसकाशरीरकैसेसकारहोवै॥ अरु
इहजोउहभीनिराकारहै॥ जैसेअपणाअनभवस्वप्नविषेपर्वतनदी
याजडचेतनब्रह्माकरभासताहै॥ तैसेजोतोकछुजगतभासताहै॥ सो
सभआत्मरूपहै॥ हेरामजीजैसेइकनिद्राकेदोसरूपहैं॥ सुषुप्तअरुस्व

यत॥जैसेएकहीआत्मानेजडअरुचैतन्यदोसरूपधारेहैं॥अजगतआ
त्माविषेकछुवर्णीआनहीं॥इहजगतअभासरूपहै॥आत्मसत्ता
हीअपरोक्षचैतन्यजगतरूपहोभासतीहै॥जैसेआकाशविषे
चैतन्यताकरकेनीलताभासतीहै॥सोअविचारतेसिद्धहै॥नी
लताकछुवर्णीनहीं॥तैसेआत्माविषेचेतनताकरकेजगत
भासताहै॥परजगतप्रकारणाहैकछुवर्णीआनहीं॥सर्वदाका
लआत्मानिराकारअद्वैतरूपहै॥अनंतस्वरूपआत्माविषेअभा
सेउपजउपजिकरलीनहोतीहै॥अरुआत्माज्योकात्योहै॥जैसेस
मुद्रविषेतरंगउपजउपजिकरलीनहोजातेहैं॥परजलरूपही
है॥तैसेपरब्रह्मविषेस्वभावब्रह्मरूपहूएहै॥हेरामजीइहज
गतविराटकाशरीरहै॥सोभीउसकामहाआकाशहै॥दशोदिशा
तिसकीभुजाहैन॥अरुपृथिवीउसकेचरनहै॥पातालरूपीनली
याहै॥अंतरिक्षमधलोकउसकाउदरहै॥सर्वजीवतिसकेरोमाव
लहै॥इनतेलेकरसभपदार्थविराटकेअंगहै॥सोविराटआकाश
रूपहै॥जैसेविराटब्रह्माजीआकाशरूपहै॥तैसेतिसकाजगतभी
आकाशरूपहै॥तातेसभजगतविराटरूपहै॥सोब्रह्महीहै॥अरुकु
छुवर्णीआनहीं॥ब्रह्महीहै॥मैंअरुतूंइहउहइत्यादिकजेतेकछु
शब्दहै॥तिनसर्वोकाअधिष्ठानब्रह्महीहै॥अरुसोब्रह्मकैसाहै॥कैसा
होजिसविषेइहसरोकछुवर्णीआनहीं॥सदाअपनेआपविषे
स्थितहै॥हेरामजीजेतेकछुशास्त्रोंकेमतहैं॥शून्यवादीअरुपंच
रात्रिकसैवीसांख्यजैनआदिलेकर॥सोसभकोअधिष्ठानरूपब्र
ह्महै॥सभकासाररूपउहीहै॥सर्वात्माहै॥जैसाकिसीकोनिश्चाहो
ताहै॥तैसाउसकोफलसर्वरूपहोकरदेताहै॥अरुकछुवर्णीआ
नहीं॥इतिश्रीब्रह्मजगतएकताप्रतिपादननामसर्गः॥२५६॥व
सिष्ठउवाच॥हेरामजीइसजगतकेआदिसंधब्रह्मसत्ताथी॥ति
सविषेजोजगतकेअभासफुरियाहै॥तिसकोभीतूंउहीरूपजा
ण॥जैसेसुपनेकेआदिचेतनअनभवप्रकाशहोताहै॥तिसविषेसभको
स्वप्नफुरआवतीहै॥सोअनभवरूपहै॥इतरकछुनहीं॥तैसेइहज
गतअनभवरूपहै॥इतरकछुनहीं॥जैसेसमुद्रद्रवताकरकेतरंगरू
पहोभासताहै॥तैसेब्रह्मचेतनताकरकेजगतरूपहोइकरफुरताहै
सोजगतभीउहीरूपहै॥हेरामजीवास्तवतेनकोउदुखहैनसुख
है॥दुखअरुसुखअज्ञानकरभासताहै॥जैसेइकनिद्राविषेदोअवस्था
होतीहै॥इकसुषुप्तअरुस्वप्न॥तैसेअज्ञानीकेदोअवस्थाहो
तेहैं॥सुखकीअरुदुखकी॥अरुज्ञानवानकोसमब्रह्मसत्तारूपहै॥जैसे
कोउपुरुषसुपनेतेजागउठताहै॥तोउसकोसुपनेकीसृष्टिअसत्य
भासतीहै॥तैसेज्ञानवानकोइहसृष्टिअसत्यभासतीहै॥जैसेमारु
थलकीनदीविषेअत्यंतअभावजिसनेजलकाजाणिआहै॥सोज
लपानकरनेकीइछानहीकरता॥तैसेसम्यकदर्शीजगतकोअसत्य
जाणताहै॥तातेजगतकेपदार्थोकीइछानहीकरता॥जोअसम्यकद
र्शीपुरुषहै॥तिसकोजगतभासताहै॥सोकिसीपदार्थकोग्रहणकरता

किसीकोत्यागकरताहै॥हेरामजीईश्वरजोपरमात्माहै॥तिसविषे
जगतऐसीहै॥जैसेसमुद्रविषेतरंगहोतेहै॥जैसेसमुद्रअरुतरंग
विषेकछुभेदनहीं॥तैसेपरमात्माअरुजगतविषेकछुभेदन
हीं॥अरुजोतूंकहैअविद्याहीजगतकाकारणहोवे॥तोअविद्या
जगतकाकारणतबहोतीहै॥जोजगतकेप्रथमसिद्धहोतीहै
सोअविद्यातोअविद्यमानहै॥जैसेपरमात्माविषेजगतअभास
मात्रहै॥सोअविद्याभीअभासमात्रहै॥जोआपइकदाहीफुरिआ
है॥जैसेसत्तनेस्वप्नभासिआवतीहै॥तिसविषेघटपटआदिकप
दार्थभासतेहै॥सोकिसीकुलालम्रित्तिकालेकरतानहीबणाए
जैसेघटभासआए॥तैसेकुलालअरुम्रित्तिकाभीभासिआ॥सभको
भासणाइकदाहीहोताहै॥तैसेजगतअरुअविद्याइकदेफुरेहै
अविद्याप्रथमसिद्धतोनहीहोती॥तोजगतकाकारणअविद्याको
कैसेमानीये॥हेरामजीपरमात्मातेजगतअरुअविद्याइकदाही
अभासफुरिआहै॥सोअभासकछुवस्तुनहीं॥केवलसत्ताअपणेआ
पविषेस्थितहै॥नकोउअविद्याहैनजगतहै॥सदाज्योकीत्यो
आत्मसत्तास्थितहै॥हेरामजीनिर्विकल्पविषेजगतकाअत्यं
तअभावहोताहै॥सोनिर्विकल्पकैसाहोवे॥जोनिर्विकल्पहोता
हैतबजडताआवतीहै॥तबसंसारउदयहोताहै॥अरुजोध्यानल
गावताहै॥तबध्याताध्यानध्येयत्रिकुटीहोजातीहै॥इसप्रकारतो
निर्विकल्पतासिद्धनहीहोती॥काहेतेजोनिर्विकल्पविषेभी
सद्रूपकीप्राप्तिनहीहोती॥निर्विकल्पतिसकानामहै॥जोहोवि
नकीब्रितनफुरै॥सोतोनबभीसद्रूपकीप्राप्तिनहीहोती॥काहे
तेजोनहोभीअभाववृत्तिरहितीहै॥सुखुपतिवत॥उहजडआत्म
कसुखुपतरूपहै॥अरुसविकल्पस्वप्नरूपहै॥तिसविषेभी
सद्रूपकीप्राप्तिनहीहोती॥तातेसम्यकबोधकानामनिर्विक
ल्पहै॥सम्यकबोधनिर्विकल्पताकरकेजगतकाअत्यंतअभाव
जिसकोभासताहै॥जोजीवन्मुक्तहै॥उहनिर्विकल्पकहीताहै॥अ
रुउहीपरमजडतानहै॥जहांजगतकापरमअनभवहै॥हेरामजी
उहजोनिर्विकल्पअरुसविकल्पहै॥तिसकोसमकासद्रूपकीप्राप
तिनहीहोती॥इहदोनोमनकीब्रितीनहै॥जैसेइकनिद्राकीदोब्रि
तीनहै॥सुखुपतअरुसुपनरूप॥तैसेइहनिर्विकल्पअरुसविक
ल्पमनकीब्रितीनहै॥निर्विकल्पसुखुपतरूपहै॥पथरवत॥अरु
सविकल्पसुपनवतचंचलरूपहै॥अरुनिर्विकल्पविषेभीअभा
वाब्रितरहितीहै॥तिसकरभीमनकिंतवहोवेजबअत्यंतअभावद्रिश
काहोवे॥तबमनक्षयहोवे॥तबपरमजोआसनहैसभकाधिराकासद्रू
पहै॥हेरामजीआत्मअनभवप्रकाशतेइतरकछुउत्थाननहीहोता
तिसीकानामअनंतसुखुपतनिर्विकल्पताहै॥हेरामजीऐसेहोकर
तूंचेष्टाभीपइाकरेगा॥तोभीकरतनअरुभोगतनकाअभिमानन
फुकोनहोवेगा॥आत्माकोअद्वैतजानणाजगतकाअत्यंतअभावजा
नणाइसकानामबोधहै॥इसबोधकोद्रिडताहोणाइसकानामध्या

नहै॥ तिस भान की द्रिष्टता होवे तब उसी का नाम परमपद है उ
स का नाम निर्वाण है॥ तिसी का नाम मोक्ष है॥ सोके सा पद है॥ किं
चन भी उही है॥ निह्किंचन भी उही है॥ सर्वदा काल अपरोक्ष आप
विखे इस्थित है॥ तिस विखे न नानात्व का ग्रहण है न अनाना ग्राह है।
न सविकल्पक होता है॥ न निर्विकल्पक होता है॥ न सत है न अस
त है॥ न इक है न दो है सर्व ग्राह्नों का अंत है॥ तिस विखे किसी ग्राहक
र वाणी नही प्रवर्तती॥ तिस सत्ता की प्रापति होणे का उपाइ मैं क
हिता हों॥ हे रामजी इह मोक्ष उपाइ ग्रंथ है जो मैं तुझको कहा उस
को विचारके॥ जो प्रकरण अविधि परत्व भए है॥ पद पदार्थ ज्ञान गौवा
ला होवे॥ अरु तिसकी इच्छा है सो इस ग्रंथ को विचारता है॥ अरु शुभ
आचार करके बुध को निर्मल करता है॥ अरु अशुभ कर त्यागकरे॥ तिस
को शीघ्र ही आत्म पद की प्रापत होवेगी॥ हे रामजी जो पद मोक्ष उपा
इ शास्त्र के विचार कर प्रापत होता है॥ सो तीर्थों के स्नान तप दान
कर प्रापत होता॥ न जगों कर प्रापत होता॥ न विद्या पाठ कर प्रापत
होता है॥ सो मैं आतुटी के पान करके भी उह पद प्रापत नही होता
जो अध्यात्म शास्त्र के विचार कर प्रापत होता है॥ पर तप दान इत्या
दिक करके स्वर्ग की प्रापति होता है॥ मोक्ष को नही प्रापत होता
मोक्ष पाइ दि अध्यात्म शास्त्र के अर्थ अभ्यास कर प्रापत होता है इ
ह जगत अभास मात्र है॥ उही ब्रह्म सत्ता जगत रूप होकर भासती
है॥ जैसे जल ही तरंग रूप होकर भासता है॥ जैसे वायु स्पंद रूप हो
कर भासती है॥ तैसे ब्रह्म जगत रूप होकर भासता है॥ जैसे स्पंद अ
रु निस्पंद विखे वायु ज्यों की त्यों है॥ पर स्पंद होती है तब भासती है॥ अ
निस्पंद जब होती है तब नही भासती॥ तैसे ब्रह्म विखे संवेदन फुरती
है॥ तब जगत हो भासती है॥ अरु जब निर्वेदन होती है॥ अंतर्मुख
अधिष्ठान की ओर आवती है॥ तब जगत समेट आ जाता है॥ पर सं
वेदन के फुरने विखे भी उही है॥ अरु न फुरने विखे भी उही है॥ ता
हे रामजी सभ जगत ब्रह्म सरूप है॥ ब्रह्म ते इतर वर्णीआ नही अ
रु जो इतर भासता है सो भ्रांत मात्र जाणना॥ जब आत्मपद का अ
भ्यास होवे तब भ्रांति शांत हो जाती है॥ जैसे प्रकाश कर अंधकार
नष्ट हो जाता है॥ तैसे आत्म पद के अभ्यास कर भ्रांति निवृत हो जा
ती है॥ तब इही नाना प्रकार की स्वप्नि भासती है॥ पर कछु द्रिष्ट नही
जैसे स्वप्न विखे स्वप्नि द्रिष्टि आवती है॥ पर कछु वर्णीआ नही॥ उह
अनभव रूप आत्म सत्ता नानत्व हि प्रकार हो भासती है॥ तैसे इह जगत सभ अन
भव रूप है॥ जैसे रत्न अरु रत्न के चमत्कार विखे कछु भेद नही॥ तैसे आत्मा
अरु जगत विखे कछु भेद नही॥ हे रामजी तू स्वभाव निष्ट होकर देख जो अस्मा
दि जाव॥ स्वप्नि इस्थिति भले सभ तिसी को मंगया है॥ अरु इह सरी कछु वस्तु
नही॥ २५७॥ इति श्री ब्रह्म गीता प्रथम निर्वाण वर्णनं नाम सर्गः॥ वसिष्ठ उ
वाच॥ हे रामजी जैसे कछु अकार वस्तु को भासते है॥ सो संवेदन रूप है॥ अरु
कछु वर्णीआ नही॥ स्वप्नि के आदि भी अद्वैत सत्ता थी अंत भी उही है॥ मध्य वि
खे जो प्रकार भासते है सो भी उही रूप जाणना॥ जैसे स्वप्न स्वप्नि आदि स्थ संवेदन
होती है॥ तिस विखे प्रकार भासि आवते है॥ सो भी अनभव रूप है॥ अरु

छ वर्णीआ नही॥ आत्म सत्ता ही पिंडाकार हो भासती है॥ अरु जेतक
छ पदार्थ भासते है॥ सो अकाश रूप अभास मात्र है॥ कछु वर्णीआ
नही॥ आत्म सत्ता सदा शुध है॥ अरु अज्ञान कर असत थकी न्याई भास
ती है॥ विकार ते रहित है पर विकार सहित भासती है॥ अनामा है
पर नाना की न्याई भासती है॥ निराकार है पर अकार सहित भा
सती है॥ जैसे स्वप्न को स्वप्नि अपणा रूप होती है॥ पर सरूप के प्रमा
दि कर नाना प्रकार भिन्न भिन्न भासती है॥ जागे ते इक आत्म रूप
हो जाती है॥ तैसे इह स्वप्नि अज्ञान कर नाना प्रकार भासती है ज्ञा
न कर इक रूप भासती है॥ विद्यमान भासती है॥ तो भी असत जाण
आत्म सत्ता सदा सरूप है॥ अरु शांत है अनंत है॥ तिस विखे दश
काल पदार्थ अभास मात्र है॥ जो तू कहे अभास मात्र है तो अर्थ का
व क्यों होता है॥ तिसका उत्तर कहते है॥ जैसे स्वप्न विखे अंगना का इष्ट सि
लती है॥ तिस विखे प्रतच्छ राग है खेद होता है॥ विखेव सह होता है सो
अभास मात्र है॥ तैसे जाग्रत विखे अर्थ का रस था को मत्र अरु त्रिषा
को मल होवे भी सभ अभ से होने है॥ अरु जेतेक कछु पदार्थ प्रतच्छ भा
सते है॥ जो इनका कारण विचारीता कारण को ढूंढ नही पाएता॥
जिसका कारण को ढूंढ न पाएते तो जाणीए जो अभास मात्र है॥ हे रा
मजी इह जगत बुध पूर्वक नही वर्णीआ॥ आदि जो अभास फुरि
आ है॥ सो अबुध पूर्वक है॥ तिस विखे जेते संकल्प द्रिढ भया तिन व
कारण करके कारज भासणे लगे॥ पर जिनको सरूप का प्रमाद
भया॥ तिसको कारण करके कारज भासणे लगे॥ जो आत्म भाव
विखे इस्थिति रहे है॥ तिनको सभ जगत आत्म सरूप है॥ हे राम
जी कारण करके कारज न वहाव हि जो पदार्थ भी कछु वस्तु होव
हि॥ जैसे पिता की संतान वहा होती है॥ जो उपज होता है॥ अरु जो उपज
ही न होवे तो पिता कैसे कहीए॥ तैसे कारण तव कहीए जो कारज
होवे॥ जो कारज जगत ही कछु नही॥ तो कारण कैसे कहीए॥ हे रा
मजी कारज अरु कारण अज्ञानी के निश्चे विखे होते है॥ जैसे चरख
डा पर बालक चढता है॥ अरु इह भी आप भ्रमता है पर तिसको प्रि
थवी आदिक सभ पदार्थ भ्रमते द्रिष्ट आवते है॥ तैसे अज्ञानी को
मोह द्रिष्ट कर कारण कारज भाव द्रिष्ट आवता है॥ अरु ज्ञानी का
कारज कारण भाव नही भासता॥ अरु स्मरण भी जगत का कारण
नव कहीए जो स्मरण जगत की पूर्व होवे॥ सो स्मरण भी अनभव
भी इह जगत ही विखे फुरा है॥ इह भी अभास मात्र है॥ पर जिसको
भासी है तिसका तैसा ही है॥ हे रामजी स्मरण संस्कार अरु अनभव
इह तीनो अभास मात्र है॥ जैसे सूर्य की किरणो विखे जल भासता
है॥ तैसे आत्मा विखे तीनो भासते है॥ ताते इस कलना को त्याग क
र जगत अभास मात्र जाण॥ जैसे सभ विखे घट भासते है॥ अरु उन
का कारण स्मरण का कहीए॥ तो बुधी तीन हो॥ काहे ते जो घट अरु
स्मरण को अभास इक दो फुरिआ है॥ सो तो अभास मात्र है ए तिन वि
खे कारण किसको कहीए॥ अरु कारज किसको कहीए॥ तैसे सभ

रत अरु संस्कार अरु अनुभव अरु जगत सभ इक देख विप्राए है
इन विवेक कारण किसको कहीअे॥ अरु कारज किसको कहीअे
ताते सभ जगत अभास मात्र है॥ हे रामजी जेता कछु तुझ को
भासता है॥ आत्म सत्ता का अभास है॥ आत्म सत्ता ही इस प्रकार
हो भासती है हि॥ जैसे नेत्रों का खोलणा अरु मूंदणा होता है॥ तै
से परमात्मा विषे जगत की उत्पत अरु प्रलै होती है॥ जब चित
संवेदन फुरती है॥ तब जगत रूप हो भासती॥ जब फुरणे रहत
होती है॥ तब जगत अभास मिटि जाता है॥ उत्पत विषे भी अरु
जगत के प्रलै विषे भी आत्म सत्ता ज्यों का त्यों है॥ जैसे खुलणा अरु
मूंदीवणा दोनो नेत्रों का सुभाव है॥ तैसे फुरणा अरु न फुरणा दोनो
संवेदन के सुभाव है॥ जैसे चलणा अरु ठहरणा दोनो वायु के सु
भाव है॥ जब चलती है तब भासती है॥ अरु नही चलती तब न
ही भासती॥ अरु चलणे विषे वायु की तीन संग्या होती है॥ एक मं
द मंद चलती है॥ अथवा बहुत चलती है॥ शीतल अरु उष्ण स्प
र्श होता है॥ तैसे सुगंध अरु दुर्गंध होती है॥ इह तीनो संग्या च
लणे विषे होती है हि॥ जब फुरणे चलणे ते रहित होती है॥ तब ती
नो संग्या मिट जाती है हि॥ जैसे एक ही अनुभव विषे स्वप्न अरु
जाग्रत की कल्पना होती है॥ स्वप्न विषे जगत हो भासता है॥ अ
रु सुखोपति विषे जगत नही भासता॥ पर दोनो विषे अनुभव एक
ही है॥ तैसे चेतन के फुरणे कर जगत भासता है॥ ठहरणे विषे अचल
रूप हो जाती है॥ आत्म सत्ता ज्यों की त्यों एक रूप है॥ तातें जो कछु ज
गत भासता है सो आत्म रूप जाण इतर कछु नही॥ जगत की उत्पत
अरु इस्थित अरु प्रलै तीनो आत्म का अभास है॥ तिस विषे अस्था
न ही कहणी॥ हे रामजी इह परम सिद्धांत मैने तुझ को उपदेश कीया
है॥ पर जिन जगतों कर मैं कहा है॥ तिन जगतों कर न किसी कहा
है न कोऊ कहैगा॥ इह अग्यानीओं का संसार रूपी बडी आंतर दीरघ है
परमेश्वर शास्त्र को वारंवार विचारेगा॥ तो उसकी भ्रांति निवर्त हो जा
वेगी॥ दिन के दो विभाग कर अर्थ दिन भजन तें मेरा शास्त्र विचारे अ
रु अर्थ दिन अपणा व्यवहार विषे विती तक रे॥ अरु जो अर्थ दिन शा
स्त्र का विचार न कर सकै तो इक पहर विचार करे॥ जैसे सूर्य के उद
य ते अंधकार निवर्त होता है॥ तैसे ही उसकी भ्रांत निवर्त हो जावे
गी॥ अरु जो मेरे वचन पुरुष जाण कर निंदा करेगा॥ सो तिसको
आत्म पद प्रापत न होवेगी॥ काहे ते जो इस शास्त्र के अभिप्राय को न
ही जाणीआ॥ ताते इस जीव को इहु कर्तव्य है॥ जो प्रथम अरु पा
ठ रख विचार लेवे॥ पाछे ते इसको विचारे॥ जो इसको इस शास्त्र को अ
द्वितीय भास॥ हे रामजी इह जो मोक्ष उपाय शास्त्र है॥ सो आत्म बोध का
दायक कारण है॥ अरु इह जीव पद पदार्थ को जाणने वाला होवे
अरु इस शास्त्र को वारंवार विचारे॥ तब इसकी भ्रांत निवर्त होवे
गी॥ जो इस शास्त्र के अभिप्राय को न जाण सके तो [illegible]॥ अ
रु विचारे॥ इस कर तापन सभ भ्रम आभास मिट जावेगा॥ हे रामजी जक्त के

इह पुरुष पद पदार्थ को जाणने वाला होवे फर इसके विचारणे
अरु पढणे कर इसको इह शास्त्र यथावत अरु प्रीतवान कर लेता है
इसके विचारणे हारे को कछु अरु शास्त्र की उरहन ही जाती॥ ताते इ
सको विचारणा योग्य है॥ अरु जो पुरुष आत्म विचार ते रहित है॥ ति
नका जीवणा व्रिथा है॥ अरु जिनको इह विचार है तिनको सभ पदा
र्थ आत्म रूप हो जाते है॥ जो इक स्वास भी आत्म विचार ते रहित हो
ता है॥ सो व्रिथा जाता है॥ इक स्वास के समान सप्त दीप प्रिथवी का ध
न नही॥ जे सप्त दीप प्रिथवी के रतन दीजे अरु इक स्वास गया बहुड़
मांगीए तब न ही पाएता है॥ तैसे स्वास को जो व्यर्था गवावते है॥ ति
नको मूर्ख जाणणा॥ हे रामजी आरबला दामनी के चमत्कारवत है॥ जै
से बिजली का चमत्कार होकर निवर्त हो जाता है॥ तैसे शरीर की आर
बला होकर नष्ट हो जाती है॥ अरु शरीर को जो थावर करके रखो की विद्या
कते है॥ सो महा मूर्ख है॥ हे रामजी इह सभ जगत अभास मात्र है
अरु सत्य रूप उभासता है॥ ताते इसको असत जाणणा॥ जैसे स्वप्न की सृ
ष्टि विषे छिन होता है॥ तिसको वीदवहु दनकते प्रतच्छ अनुभव हो
ते है॥ पर इह आकछन ही॥ सभ भ्रांत मात्र है॥ तैसे ही इह जगत है॥ इ॥
निर्वाण प्रकरणे परमार्थ गीता वर्णनं नाम सर्गः॥ २५८॥ राम उवाच
हे भगवन जगतों अनेक अस्त रूप हूए है॥ अरु होवेगे॥ तिन जगतों
की कथा कर तुम मेरे ताईं उपदेश कर कौन जगाया॥ वसिष्ठ उवाच॥
हे रामजी इह जो जगतों के जाणणा रूप है॥ तिन विषे जो पदार्थ है
सो सभ भया हूए अरु अर्थ ते रहित है॥ जो शब्द अर्थ ते रहित हुए को॥ ता इही
विअर्थ कहि तो का प्रयोजन क्या है॥ हे रामजी जब तें विदित वेद होवे
गा॥ तिस काल त्रिकाल दृष्टी तब इन जगतों जानेगा॥ अरु मैं आगे भी
फ को बहुत बार कहा है॥ बारंबार उहो वर्णन करणा॥ इस विषे सुन
रूनो कहीअे॥ वडे वडे कहि गण हूए वण होता है॥ परम मजाव गण के
नामिन कहा है॥ जैसे इक सृष्टि को जाणीआ॥ जैसे एक मूठ अनाज के से
मूह मिठो भव करदे दोनों जाणलीआ सभ अैसे ही है॥ जैसे इक सृष्टि
को जथारूप जाणीआ॥ तैसे हार सृष्टों को भी जाण लीया॥ हे रामजी
जेतेक कछु जगत है॥ सो किसी कारण कर नही उत्पन भया॥ कारण वि
ना पदार्थ जिस विषे भास्या है॥ सो जाणीअे जो उही रूप है॥ कछु उत
पन नही भया॥ अरु सृष्टि के आदि भी इह तैसा ही था॥ अरु अंत भी उही
होवेगी॥ मध्य विषे जो कछु भासिआ है सो भी उही रूप जाणीअे॥ जैसे
जैसे स्वप्ने के आद भी अपणा अनुभव निर्मल होता है॥ अरु स्वप्ने के नि
वर्ते पै भी उही रहता है॥ स्वप्ने के मध्य जो पदार्थ भासिआ सो भी उही
रूप जाणीअे॥ अरु कछु वस्तु नही॥ अनुभव सत्ता ही इस प्रकार होकर
भासती है॥ जब तू विदित वेद होवेगा॥ तब सर्व जगतन को आप
णा आप भासेगा॥ हे रामजी एक एक अणु विषे अनेक सृष्टि है॥ सो आ
काश रूप है॥ कछु हूआ नही॥ तिस उपर इक उपाखिआन कहता हूं॥ सो सु
णु॥ हे रामजी पद्मजा ब्रह्मा जी पिंडो मैं इक काल प्रसंग पाया था॥ बाल
जी एकांत बैठा था॥ मैं कहा हे भगवन इह सृष्टि कैसे है॥ अरु किस विषे
है॥ पितामह ब्रह्मा जी कहा है मैं नीके कर जेतेक कछु जगत है॥ अरु तिनके शास्त्र

वं· मं· ६८२

थंहै॥ तिनकोनानाप्रकारकाजगतभासताहै॥ जैसेप्रकारजगत
हुआहै सोसुणो॥ हेमुनीश्वरब्रह्मरूपीप्रकाशहै॥ तिसकेहृदयस्थ
णविषेस्फुरणहुआ जोअहंअस्मि॥ तबउहीअणुआत्मकोजीव
जाणताभया॥ जैसेआपसेविषेआपकोजीवजाणताभया फिरते
वैसर्वात्मा॥ तैसेचिदअणुसर्वात्मा॥ अहंकारकाअंगीकारकरकेआ
पकोजीवजाननलगा॥ तिसविषेजोनिश्चाहोगया तिसकेरूपहु
भए॥ जैसेबीजविषेअंकुरहोवे तैसेतिसविषेसंकल्पविकल्परूपी
फुरणहुआ॥ तिसकानाममनहुआ॥ तबमनकेसाथमिलिकरउस
चिदअणुदेहकाचेतनताभया॥ तबआपणेविषेदेहअरुइंद्रियाभास
णलगपा॥ अपणेसाथशरीरकोदेखकरअस्थाकरी॥ तिसविषेजोअहं
शरीरभयाहै॥ जैसेसुपनेविषेअपणेसाथशरीरकोदेखअरुवडाइस्थू
लदृष्टिआवे॥ तैसेइस्थूलशरीरअपणेसाथदेखताभया॥ जैसेसुपने
विषेसूक्ष्मअनुभवसोंबडेपर्वतदृष्टिआवतेहै॥ तैसेसूक्ष्मअणुसोइस्थू
लविराटशरीरभासणेलगा॥ वहुदेशकालकीकल्पनाकरी॥ अरुना
नाप्रकारकेइस्थावरजंगमप्राणीविराटभासणेलगे॥ जैसेसुपनेविषे
देशकालपदार्थभासआवतेहै सोकछुहैनही॥ तैसेदेशकालपदार्थभास
आएपरहैकछुनही॥ अरुजवचित्तसंवितवाहरमुखदेखदेखतीहै॥ तव
नानाप्रकारकाजगतभासताहै॥ जवअंतरमुखहोतीहै॥ तवअसाबद्धपदहो
जातीहै॥ जैसेगंधपवनविषेहै तववायुकहीतीहै॥ फुरणतेरहितअप्राह
होजातीहै हि॥ तवनहीकहीती॥ परवायुइकहीदोरूपकाधार
तीहै॥ तैसेफुरणअफुरणविषेअभेदसंवितइकहीहै॥ हेमुनीश्वरजैसा
कछुजगतहै॥ सोअकाशविषेअकाशरूपइस्थितहै॥ अपणेआ
पविषेइस्थितहै॥ अणुअणुप्रतिसर्वदाकालसहाहै॥ परकेसा
रूपहैअभासमात्रहै॥ जोचेतनसंवंधीहोकरजीवत्वभावकोप्राप्तभयाहै तिसकेताइ
अनतनहीआवता॥ काहेतेजोअनंतहै॥ इहुसंसारअविद्यारूपहै॥ सोअ
विद्याहीचेतनहै॥ जवअविद्यासंवंधीहोकरजगतकाअंतदेखणेलगेतव
अंतकहैनआवेगा॥ संसरणेकानाममहीससारहै॥ अरुजवस्वरूपविषेइ
स्थितहोवेगा॥ तवसमजगतब्रह्मरूपहोजावेगा॥ जगतकीकल्प
नाकुछनभासेगी॥ हेमुनीश्वरइसजगतकेआदिभीअद्वैतसत्ताथी
अरुअंतभीआत्मसत्तारहेगी॥ मध्यजोकछुभासताहै तिसकोभीउही
रूपजाणो॥ अवरकछुवणीआनही॥ इसजगतकाकारणकोईनही
अधिष्ठानसत्ताकेअज्ञानकरभासताहै॥ इसीकानामजगतहै॥ अरुइसी
कानामअविद्याहै॥ अधिष्ठानकेजाणनेताइसकानामविद्याहै॥ हेमुनी
श्वरनकोईअविद्याहैनजगतहै॥ ब्रह्महीअपणेआपविषेइस्थि
तिहै॥ कोईजगतकहै॥ कोईब्रह्मकहै॥ इकहीवस्तुकेनामहै॥ इति
श्रीब्रह्मांडोपाख्यानेनामसर्गः॥२५४॥ रामउवाच॥ हेभगवनइहमेजा
णिआ॥ हे॥ जेजगतअकारणहै॥ जैसेसंकल्पनगरसुपनपुरहोताहै
तैसेइहजगतहै॥ जोअकारणहैतोअवइहहोहीपदार्थकाहेकोउप
जतेदृष्टिआवतेहै सकारणरूप॥ कारणविनातोनहीउपजतहोते
भासते॥ इहकयाहै॥ वसिष्ठउवाच॥ हेरामजीब्रह्मसत्तासर्वात्माहै॥ ति
सविषेजैसानिश्चाहोताहै॥ तैसाहीभासताहै॥ अपणाअनुभवहीअ
सहाकारभासताहै॥ जैसेसुपनेविषेअपणाअनुभवहीनानाप्रकारकेप
दार्थहोइकरभासतेहै॥ परकछुउपज्यानही॥ सर्वपदार्थअकाशरूपहैते

सेइहजगतकछुउपज्यानही॥ कारणतेरहितअकाशरूपहै॥ तैसे
इहजगतनकछुउपज्यानही॥ हेरामजीआदिसृष्टिअकारणरूपहै॥ पा
छेजेसृष्टिविषेआदिअभासरूपमननेजैसाजैसानिश्चाकीयाहै
तैसाहीहै॥ काहेतेजोब्रह्मसर्वशक्तरूपहै॥ अरुआदिसृष्टिजोउपजीहै
सोअकारणरूपहै॥ पाछेतैसेहीकालविषेकारजकारणविनाहोतानही
है॥ अरुपाछेनेकारजकारणअनुक्रमभासतेहै॥ परवास्तवतेनकोउअकाश
है॥ नस्थूलहैनअणुहै॥ नसतहैनअसतहै॥ नसतअसतकेमध्यहै॥ नति
तहै॥ नअविलहै॥ नपरमहैनअपरमहै॥ नमधहैनअमध्यहै॥ हेतकछुन
होअलहै॥ हेरामजीज्ञानवानकासर्वब्रह्महुआअरुसर्वअर्थआत्मरूपभा
सनेहै॥ हेमकोनाकारजकारणभावकीकल्पनाकछुनही॥ जैसेहेजैवि
रवअंधकारकाअभावहै॥ तैसेज्ञानवानकाकारजकारणकाअभावहै॥ जो
सर्वात्माहोहै॥ नाकारजकारण किसकाकहीअै॥ रामउवाच॥ हेभगवं
न्अज्ञानीकीवानपूछनाहो॥ तोउनकोकारजकारणकिसनिमित्तभा
सताहै॥ नाकारणकारजनहीतोतिनकोअरुकलालेआदिककर्केघट
आदिककयाउपजनदृष्टिआवतेहै॥ नातनुमकहो जोज्ञानवानको
अकारणकेसभासतेहै॥ अरुअज्ञानीकोसकारणक्याकरकेहै॥ इहसवतौ
ज्ञानीअरुअज्ञानीकानिश्चाकहो॥ वसिष्ठउवाच॥ हेरामजीतनकोअका
रणाहेनकारजहै॥ तनकोअज्ञानीहै॥ मैनउनकोक्याकहा॥ जोज्ञानवान
पुरुषहै॥ तिनकानिश्चविषेजगतहैहिनही॥ नकोउजगतहैनकोउ
जगतकीकल्पनाफुरतीहै॥ तोज्ञानीअरुअज्ञानीक्या॥ हेरामजीअकार
णविद्धहोनहो॥ तोतिसकावर्तनक्याकरीअै॥ जैसेहीमालपर्वतविषेता
श्रमकाकनकानहीपाइता॥ तैसेज्ञानीकेनिश्चविषेजगतनहीपाइता॥ जोजगत
ज्ञानीअरुअज्ञानीकारणअरुकारजआहजगतविरवहोतेहै॥ जोजगत
होफुरिआनहीताकारणअकारजज्ञानीअरुअज्ञानीनुककोक्याकहो
जैसेसुपनेकीसृष्टिसुखपनविषेविलीनहोजातीहै॥ नहाप्राहअरुअर्थ
कोईनहीफुरता॥ तैसेज्ञानवानकेनिश्चविषेजगतनहीफुरता॥ हेरा
मजीइसकातोसर्वब्रह्महीभासताहै॥ नकोकछुकहणानहीआव
ता॥ परभीकछुककहताहोउनकेपूछणेकेनिमित्त॥ अज्ञानीकेनिश्चको
अरुणीकारककेकहताहो॥ हेरामजीइहजगतअकारणहै॥ अभास
मात्रहै॥ किसीअवरप्रमाणसेकरकेनहीभया॥ जवपदार्थकाकारण
विचारीअेतवसभकाअधिष्ठानआत्मानिकसताहै॥ सोअद्वैतहै॥ अद्वैत
है॥ सर्वइच्छातेरहितहै॥ तिसकाकारणकेसकहीअै॥ तातेजोगणीता
हहिजोजगतअभासमात्रहै॥ अवरकछुवणानही॥ आत्मसत्ताहीइ
सप्रकारइसप्रकारभासतीहै॥ जैसेसुपनेकीसृष्टिअकारणहोतीहैतैसे
तिसविषेअनेकपदार्थभासतेहै॥ तिनकाकारणविचारीअै॥ तोसा
भकाअधिष्ठानअनुभवनिकसतीहै॥ तिसविषेअरभअरुप्रमाणसके
छुहुआनही॥ अनुभवहीसृष्टिरूपहोभासतीहै॥ जोपुरुषविषेसुपनेविषे
है॥ तिसकोसरूपकेप्रमादकरकारणकारजजगतभासताहै॥ सप्र
विषेउपायसमजपदार्थभासतेहै॥ तैसेजाग्रतजगतभासताहै॥ हे
रामजीसृष्टिआदिअकारणहुएहै॥ पाछेसृष्टिकालविषेकारणकार
जहोभासतेहै॥ अरुजिसकोतोअपणावास्तवसरूपस्मरणाहै॥ तिस

वं॰
म॰
६३

63

ऊतो आकार रूप भासता है॥ अरु जिस अज्ञानी को अपणे आत्म स्वरूप
का प्रमाद है॥ तिस को कार्य कारण रूप भासता है॥ समुवाच॥ हे रामजी व
स्तु कहीं अनुभव आत्मसत्ता है॥ पर जैसा जैसा अनुभव विषे संकल्प हि
इ होता है॥ तिसही को सिद्धता होती है॥ जिस विषे जैसा संवेग होता है
सोई होय भासता है॥ इस विषे संदेह कछु नहीं॥ कल्प वृक्ष सों पदार्थ ले
कर सिद्ध आवते हैं॥ सो क्या है॥ संकल्प की तीव्रता कर के उत्पन्न होते हैं॥ इहां
किस का कारज कहीये॥ अरु जो जगत किसी कारण कर के उत्पन्न होता
तब महाप्रलय विषे भी कछु शेष रहता॥ जैसे भस्म के पाछे खाक रही
जाती है॥ सो तो कछु नहीं रहता॥ जैसे स्वप्न की सृष्टि जागे हुए कछु नहीं
रहती॥ तैसे महाप्रलय विषे जगत का शेष कछु नहीं रहता॥ तो ते जा
णीता है कि जो आभास मात्र है॥ जैसे ध्यान विषे ध्याता पुरुष जो किसी
को रचता है॥ तिस का कारण कोऊ नहीं होता॥ इह तो आकाश रूप है
अनुभव सत्ता ही पुरुषों कर इस प्रकार भासती है॥ आकार ते ताको ऊ नहीं
जैसे गंधर्व नगर कारण ते रहित भासता है॥ तैसे इह जगत कारण वि
ना भासि आया है॥ न कोऊ पृथवी है न जल तेज वायु आकाश है सब
आकाश रूप है॥ पर संकल्प की दृढता कर पिंडाकार होय भासते हैं हे
रामजी जब इह पुरुष मर जाता है॥ तब शरीर रहित होय स्वप्न होय जा
ता है वहुड परलोक विषे जो शरीर अपणा को देखता है अरु ति
स शरीर साथ स्वर्ग आदिक भोगता है॥ जिस शरीर साथ सुख दुख
को भोगता है॥ तिसका कारण कौन है॥ उसका कारण तो कोऊ नहीं
पाएता॥ अपणी चेतनता विषे संकल्प की वासना दृढ होई है
तिसके अनुसार शरीर भासता है॥ अरु स्वर्ग नरक के सुख दुख भास
ते हैं॥ होवता कछु वस्तु नहीं॥ सभ पदार्थ संकल्प के रचे हुए हैं॥ सो स
भ आत्म रूप है॥ जैसे आकाश अरु [illegible] अरु शून्यता इक ही वस्तु के
नाम है॥ इन विषे भेद कछु नहीं॥ तैसे जगत अरु ब्रह्म इक ही वस्तु
के नाम है॥ कोऊ जगत कहो कोऊ इन विषे भेद कछु नहीं॥ फुर
णे का नाम जगत कहीता है॥ अफुरने का नाम ब्रह्म है॥ जैसे वायु को
चलना अरु ठहरना विषे कछु भेद नहीं॥ तैसे ब्रह्म का चलना अ
रु ठहरना तिस विषे भेद कछु नहीं॥ अरु तिस मूढ को इहि तिनको सभ
जो नाम आत्म रूप भासता है॥ तिस कारण ते इह खिसी विषे नहीं रहता
जो वडा कष्ट आन प्राप्त होता है तब भी खेद वान नहीं होता॥ जैसे को
ऊ पुरुष स्वप्न विषे पड़ा जब थकता है॥ अरु उसको अपणा जाग्रत स्वरूप
चिति आया॥ तब उसको स्वप्न जानत भया॥ तब कछु इह भी पड़ा थकता है॥ पर तो
भी दुख को नहीं प्राप्त होता॥ तैसे जो पुरुष परम पद विषे जागा है॥
तिस को सभ जगत आत्म स्वरूप भासता है॥ अरु तिसको सभ क्रिया भी ए
डी होती है॥ पर आप को अक्रिय जाणता है॥ जैसे नट अनेक भांति स्वांग को
धारता है॥ अरु आप को स्वांगों ते रहित नट जानता है॥ सभ स्वांग क्रिया
को असत जानता है॥ काहे ते जो उसको अपणा स्वरूप सिमरता है॥ तैसे ज्ञानवा
न सभ क्रिया को असत जाणता है॥ आत्म को अक्रिय जाणता है॥ हे रामजी जैसे
कछु पदार्थ भासता है॥ सो अज्ञान जान है॥ अपर इहु जो उपजे कछु नहीं जैसे
स्वप्न विषे पदार्थ भासते हैं॥ पर कछु उपजे नहीं॥ अपणा अनुभव इस प्रका
र भासता है॥ तैसे इह जगत पदार्थ भी अनुभव रूप जाण॥ हे रामजी वह

तणा स्व अरु वेद मैं तुक को किस ने मिन सुनावो॥ अरु किस नें मिन
इह एवे॥ अरु वेदांत जो शास्त्र है तिन सभ लोको का सिद्धांत इही है॥ जो वा
सना ते रहित होवणा इसी का नाम मोक्ष है॥ अर जो वासना सहित है
तिस का नाम बंध है॥ अरु वासना किस की करीये॥ इह तो सभ जगत भ्र
कारण रूप है॥ भ्रांति मात्र है॥ इस विषे क्या आस्था वर्थाए॥ इह तो सु
प्रकीय प्रवर्तते है॥ २६॥ इति श्री महारामायणे मोक्ष उपाइ निर्वा
ण प्रकरणे ब्रह्म गीता स्वप्न वर्णनं नाम सर्गः॥ श्री राम उवाच॥ हे
भगवन सर्व जगत विषे दो प्रकार के पदार्थ है॥ इक अप्रत्यक्ष पदा
र्थ है॥ इक सप्रत्यक्ष पदार्थ है॥ अरु एक मध्यभावी है॥ जैसे वायु अप्र
त्यक्ष कहीये रूप ते रहित॥ पर स्पर्श के संयोग ते भासती है॥ सो मध
भी सप्रत्यक्ष है॥ अप्रत्यक्ष तब कहीये जो किसी साथ मिले नहीं॥ सो
इह शाहु अप्रत्यक्ष है॥ हे मुनीश्वर चमा के मंडल विषे इह संवेदन
जाती है॥ अरु वहुड़ि गिडती है॥ चिन स्मरन के के चेह सो को देखती
है॥ अरु वहुड़ि आवती है॥ तो जाणीता है जो निराकार है॥ साकार जो
होती तो चेह मात्र रूप होजाती॥ वहुड़ि संवेदन न आवती॥ जैसे जल
विषे जल डारिआ वहुड़ि नहीं निकसता॥ इस कारण ते जाणीता है
जो इह अप्रत्यक्ष है निराकार है॥ हे मुनीश्वर इस शरीर विषे जो प्रा
ण आवते जाते है॥ अज्ञानी का आश्रय लेकर सभ कहिता है॥ जाके संप्रा
वते जाते है॥ अरु जो तुम कहो संवेदन जो ज्ञान रूप है॥ सो इस शरीर अरु
प्राणों को लेय फिरती है॥ जैसे पड़ा ऐसा वायु को लेय फिरता है॥ तैसे
संवेदन शरीर अरु प्राणों के भार को लीए फिरती है॥ तो अस कहिणा
नहीं वणता॥ काहे ते जो संवेदन अप्रत्यक्ष निराकार है॥ अप्रत्यक्ष स
कार साथ तो मिलती नहीं॥ उह चेष्टा किकर करे॥ अरु तो साकार है सब
तो निराकार ही चेष्टा करावती है॥ उह तो पुरुष की संवेदन चाहती
है॥ जो पर्वत निवृत्ति करहि॥ उह तो इसका चलाइआ नहीं चलता अ
रु साथ ही कहिते है॥ जो इह पदार्थ उड आवे॥ पर उह नहीं उड आव
ता॥ काहे ते जो पदार्थ साकार रूप है॥ अरु चित्त निराकार है॥ इस कार
तरक है॥ वसिष्ठ उवाच॥ हे रामजी इस शरीर विषे इक नाड़ी है॥
जब उह आकाश रूप होती है॥ तब उस ते प्राण वायु निकसती है
अरु जब संकोच रूप होती है॥ तब प्राण वायु अंतर को आवती है
जैसे लुहार की खल होती है॥ तैसे इसके अंतर पुरुष खल है॥ तिस
कर चेष्टा होती है॥ राम उवाच॥ हे भगवन लुहार की खल भी तब ह
लती है॥ उसके साथ वल का स्पर्श होता है॥ अरु स्पर्श तब होता है
जो सप्रत्यक्ष होता है॥ चेतनता तो निराकार है॥ तिसका स्प
र्श किकर कहीये॥ जो तुम कहो उसकी इच्छा ही कर स्पर्श होता है॥ तो हे
मुनीश्वर मैं चाहता हों॥ जो मेरे सन्मुख जो वृक्ष है गिड पड़े॥ उह
तो गिडता नहीं॥ काहे ते जो इच्छा निराकार है॥ जो साकार का स्पर्श
होवे तब गिड पड़े॥ उसकी आज्ञा कर होवे जो इच्छा ही कर चेष्टा होती
है॥ तो कर्म इंद्रीयां किस निमित्त धारी आहे॥ इच्छा ही कर जगत की चे
ष्टा होवे पड़ी॥ अरु इह भी संशा है जो इक के वहुत क्यों कर होजाते है अ
रु वहुतों का इक क्यों कर होजाता है॥ इह चेतनता है जैसे प्राणिन के स

व॰ स॰ ६४

जाते है॥ तो जड जैसा ही जानता है॥ पखाण अरु ब्रिछ की न्याई होता
ता है॥ आत्मा तो सर्वव्यापी है॥ जड कैसे हो जाता है॥ अरु एक परव
त ब्रिछ रूप जड है॥ इक चेतन है॥ इह भेद आत्मा विखे कैसे है॥ अ
है॥ वसिष्ठ उवाच॥ हे रामजी तेरे संसे रूपी जो ब्रिछ है॥ तिन स
भनों को मैं वचन रूपी कुहाडे करि काटता हूं॥ जिन कानों से प्रदत स
कार कहिता है॥ सो तिस आकार अकार कोउ नहीं॥ जहां सुद्ध आत्मा अ
[illegible] से अहंत सत्ता इस प्रकार होइ भासती है॥ इह प्रकार कछु बन
ही॥ जैसे स्वप्न नगर विखे अकार पडे भासते हैं॥ सो अकार पावन निराका
र रूप है॥ तैसे इह अकार भी जाके [illegible] आवते हैं॥ सो सभ निराका
र है॥ अरु सत्त विखे जो परवत भासते हैं॥ सो किस के आश्रय होते हैं॥ अ
रु देहादिक भासते हैं॥ सो किस के आश्रय होते हैं॥ ताते इह कछु तोते
ही॥ अनुभव सत्ता ही अकार रूप होइ भासती है॥ तैसे इह भी जानणा॥ अ
कार कोउ है नहीं॥ हे रामजी जब इन पदार्थों का कारण विचारीए अ
कार का उह है नहीं निकसता॥ ऐसी तो जानणी ता है॥ जो अभी आत्मा
है वर्णो कछु नहीं॥ सुध आत्म सत्ता ही इस प्रकार होकर भासती है॥ अ
रु आत्म सत्ता अद्वैत है॥ परम सुध है॥ तिस विखे जगत कछु [illegible] आ
नहीं॥ मैं प्रकार क्या कहौं॥ अरु निराकार क्या कहौं॥ पृथिवी जल तेज
वायु आकाश आदिक इह भी कछु नहीं॥ सुध आत्म सत्ता ही इस प्रका
र होइ भासती है॥ जैसे संकल्प करि रचे पदार्थ भासते हैं॥ सो अनभव त
र नहीं होती॥ तैसे इह सभ पदार्थ अनुभव रूप है॥ अनभव ते [illegible]
र कछु नहीं॥ इसके ऊपर इक पुरातन आख्यान कहिता हौं॥ सो श्रवण कर
रामजी [illegible] भी मैं तुम को कहा है॥ अरु अब भी कहिता हौं
प्रसंग को पाए कर॥ जो इक काल मैं इक [illegible] विखे इह ब्रह्मा पा
सो मानो ब्रह्मा जी है॥ तिसके अहं विखे दस पुत्र होते भए॥ मानो दी
सादिप है॥ देनक काल ते पीछे उह इह ब्रह्म [illegible] तिनके भया॥ ति
सकी इस्त्री प्रवृत्ता थी॥ तिसके प्राण भी ब्रह्मा के पाछे छूटि गए
जैसे दिन के पाछे संध्या जाती है॥ तैसे ब्रह्म [illegible]॥ तव तिन पुत्रों जथा
शास्त्र क्रम कर तिन की क्रिया करी॥ वहुडि इक पहाड की कंदरा विखे जा
इ स्थित भए॥ अरु विचारते भए जो किसी प्रकार हम ऊँचे पद को पाव
हि॥ हे रामजी आगे मैं तुम को सुणाया है॥ जो मंडलेस्वर अरु चक्रवर्ती रा
जा अरु इंद्र आदिक पद को विचारते भये॥ वहुडि वडे भाई तिनो के कहे
कहा जो सभ ते ऊंचा ब्रह्मा जी का पद है॥ जिस को इह सभ [illegible]
ए है॥ हम दस इह ब्रह्मा होवहि॥ असे ही विचार करके [illegible] ध्यान त
[illegible]॥ निश्चल ही [illegible] ब्रह्मा है॥ सभ सत्व [illegible]
[illegible]॥ सो तो [illegible]॥ [illegible] ते भासते
[illegible] विलीन हो गए॥ उह ज्यों कौ त्यों रहे तो चल गए मान जभए॥ जम
जल तो [illegible]॥ तैसे उह [illegible]
[illegible]॥ जब के ते काल विलीन भया॥ त
[illegible] पडे॥ उनो दाना स पंछी रवाइ गए॥ [illegible]
दो वासना से [illegible]॥ तिस वासना करि [illegible] ब्रह्म होइ गए
ए गए अरु [illegible]॥ [illegible] भए॥ हे रामजी उह सव

रूप भए थे॥ आत्मा ही वल्लभ भए हो वने तो कछु न भए॥ कछु होव हीव हि तव के
हौ॥ ताते स्वप्न का होइ रूप कछु नहीं॥ अपणा भव ही स्वप्न रूप भासता है
जैसे पदार्थ भासते हैं॥ सो सभ आत्म रूप है॥ हे रामजी जैसे इह सब ब्रह्मा के सं
कल्प विखे है॥ तैसे उन भी स्वप्न लए॥ उह भी इस प्रकार स्थित होइ गए
ता ते सभ जगत ब्रह्म सरूप है॥ जा कछु का कारण के जगत वर्णिआ हो
ना॥ तव जाणी तो जो कछु होइआ है॥ इसका कारण कोउ नहीं पाएता॥ तं
कल्प रूप है॥ अभास मात्र है॥ ताते कहीं ता है जो ब्रह्मा है॥ हो वव स्तु नहीं
अरु जो कछु पदार्थ भासे है॥ पखान ब्रिछ जड चेतन सो सभ ब्रह्म सरूप है॥
उसते भिन कछु नहीं॥ हे रामजी मह ही सब जो है॥ अरु ब्रिछ पृथिवी आकाश
पहाड इह सभ चिदाकाश रूप है॥ चिदाकाश ते इतर कछु नहीं॥ जैसे इह
के पुत्र इक ते अनेक होइ गए॥ तैसे इह भी [illegible] इक ते अनेक है॥ अरु अलवि
खे अनेक तरंग होइ जाते है॥ जैसे इक तत्व से पांव विखे अनेक सा जाती है॥ तैसे
अरु स्वप्न विखे अनेक तें इक होइ जाता है॥ तैसे इह जगत है॥ कैसा है
अकार रूप है॥ अरु जो कारण भी माननीय ता आत्म रूपी कलाल है॥ अ
रु संकल्प रूपी चक्र है॥ अरु अनभव रूपी घट चेतन निस तें उपजते है॥ जैसे इह
भास भी उह ही है॥ कछु ... वस्तु नहीं॥ इह सभ जगत उही रूप है॥ जैसे इह
ब्रह्मा के पुत्रों का अनभव अपणा ही सो स्वप्न विखे आए॥ सो अनभव रूप
ही भासणे लगा॥ अरु स्वप्न ताके [illegible]॥ तैसे इह भी जाणणा॥ हे रामजी
घट भी चेतन है॥ पट भी चेतन है॥ ब्रिछ भी चेतन है॥ पृथिवी भी चेतन है॥
जल अग्नि वायु सभ चेतन है॥ सब पदार्थ चेतन रूप है॥ चेतन चेतन इतर के
छु नहीं॥ जैसे स्वप्न विखे अपणा अनभव ही घट पट पहाड नदीयां पदा
र्थ होइ भासते है॥ अनभव ते इतर कछु नहीं॥ तैसे इह जगत अनभव ते इ
तर नहीं॥ ताही को सदा ही निश्चा होता है॥ अवर इक के अवेत्त का ऊतर
गा॥ हे रामजी जैसे मना गज विखे इक ते अनेक होइ जाते है॥ अरु अनेक
ते एक होइ जाते है॥ चेतन ते जड होइ जाता है॥ सो जड का पदार्थ नहीं॥ सभ प
दार्थ चेतन रूप है॥ जब आत्म करण आप ही पाइता है॥ सो चेतन भी भासता
है॥ जब आत्म करण नहीं पाइता॥ सो जड भासता है॥ चेतन का अभासता है
तब कारण विखे पड़ता है॥ जब प्रत्यक्ष का निकसि जाता है॥ तब जड भासता है॥
इह अज्ञानी की द्रिष्टि कही है॥ ज्ञानी की द्रिष्टि जिसको जड कहते है॥ सो सभ ब्रह्म
अरु जिसको चेतन कहते है॥ पहाड ब्रिछ पृथिवी कहिते है॥ सो सभ ब्रह्म स्व
रूप है॥ ब्रह्म ते इतर कछु नहीं॥ जैसे स्वप्न विखे एक जड भासते है कई चेतन
भासते है॥ नाना प्रकार के पदार्थ भिन्न भिन्न भासते है॥ सो आत्म रूप है॥ र
न कछु नहीं॥ तैसे इह जगत सभ आत्म रूप है॥ इच्छा अनिच्छा सब ब्रह्म सरू
प है॥ सभ नाम रूप आत्मा के हैं॥ अरु इह सरीर वस्तु कछु नहीं॥ अरु अनुभव
न आत्मा के नाम है॥ आत्मा ते इतर कछु नहीं॥ हे रामजी जि
सको मूर्ख जड कहिते है॥ सो जड ही सभ चेतन रूप है॥ अरु सत्त चिक्काल वि
खे जड होहै॥ उह सभ वेदन विखे जड रूप होकर रचन रूप है॥ अरु उह चेतन
नहीं वचे है॥ जिन को अपणा वास्तव सरूप का प्रमाद है॥ तिन को जड चेतन
अभिन्न भिन्न नहीं भासते॥ अरु जो ज्ञानवान पुरुख है॥ तिन को इक ब्रह्म
नाही भासता॥ हे रामजी इह मन रूप को उपदेश किया है॥ सो वार वार विचार
णा जोग है॥ जाको इसका नित विचार रहता है॥ तिसके उर खेद नहीं जा वे
हिगा॥ अरु अनर्थ दासत्व होवेगा॥ अरु जो ब्रह्म विद्या को त्याग कर जगत
विखे चित्त लगावेगा॥ तिसके उर खेद नहीं जावहिगा॥ हे रामजी जि[illegible]

व॰ म॰
६५

इसजीवको ब्रह्मविचारउदे होताजावेगा॥ त्यों त्यों इ[illegible]ना[illegible]होताजावहि॥
जैसेजो जोदिनउदे होताहै॥ त्यों त्यों तमनष्ट होताजाताहै॥ विचारके त्योंत्यों
खबड तेजातेहै॥ अरुजो महापापी है तिनको पापमैं शास्त्रकासरानकें
देवहिरा॥ तिनको इहजगतवज्रसारकीन्याई दृढ रहिताहै॥ ममतामम
कदाचित निवर्त नहीं होता॥ अरुजेताकछुजगतभासताहै॥ सोमभम
ब्राह्मणहै॥ मैंहै अरुभाव अभाव आदिजेतेकछुशब्दहै॥ सोमभवरूपसत्ताकै
नामहै॥ सोकैसीसत्ताहै॥ परमसदहै॥ अरुनिरामयहै॥ अरुअद्वैतहै सदा
आपणेआपविषे इस्थितिहै॥ अरुजेतेकछु तिसविषे पदार्थभासतेहै सो
ऐसेहै जैसे शिलाविषे शिल्पीपुतलीआकल्पताहै॥ सोशिल्पीकविता
विषहोतीहै॥ तैसेजगतके पदार्थोकी प्रतिभासमात्र मनविषेहै॥ सोक्याहूपहै
तिस् का कचनरूपपहै॥ सो कचन कछु भिन्न वस्तु नहीं॥ जो सदा अपणे आ
पविषे इस्थितिहै॥ सो परमसोनरूपहै॥ तिसविषे विकल्पको ज्ञान नहीं।
प्रवेशकर्ता॥ २६२॥ इति श्री इ[illegible]मा[illegible]ख्यान [illegible] नाम स[illegible]ग:॥ वसिष्ठ उवाच
हे रामजी सर्व लोक चिन्मात्र है॥ इसी कारणते चिन्मात्र है॥ अरुअद्वैत रूप
है॥ अज्ञानीको भिन्न भिन्न जगत भासताहै॥ ज्ञानीको सर्व निराकाररू
पहै॥ अज्ञानीको कछु वर्णन नहीं॥ आत्मसत्ता निराकार है॥ इही परम
कामात्रपहै॥ अकारकछु वर्णन नहीं॥ आत्मसत्ता निराकारहै॥ सो ज्ञानरूप है॥ अनंत चिन्मात्र है॥ इंद्रिय
सुधसतासे प्रकार भासती है॥ सो ज्ञानरूप है॥ अनंत चिन्मात्र है॥ इंद्रिय
भी ज्ञानरूप है॥ हाड मास कहे हाथ पैर सिर आदिक सर्व शरीर ज्ञानम
य है॥ ज्ञानमें इतर कछु नहीं॥ चिन्मात्र ही इस प्रकार भासताहै॥ जैसे
मरुस्थलविषे सूर्यकी किरणों आदिक अरु वृक्ष नदीया भासते है॥ सो अपणा ही अनुभ
वरूप है॥ होर कछु वर्णन आन नहीं॥ तिसी प्रकार इह जगत सब अनुभव
रूप है॥ कारण तेरहित कारज भासताहै॥ तू अपणा अनुभव विषे जाग
कर देख॥ जो सब अनुभवरूप है॥ प्रकाश विषे प्रकाश भी आकाश है॥
सत्त विषे सत्त है॥ भाव विषे भाव है॥ असत्त विषे असत्त है॥ सब आत्मसत्ता
रूप है॥ इतर कछु नहीं॥ अरु जो वस्तु समन कारणते उत्पन्न होती है
सो सत्त है॥ तो हे रामजी मैं भी कहता हों जब वस्तुका
भासत है॥ ताते जगत सत्त है॥ तो हे रामजी मैं भी कहता हों जब वस्तुका
कारणते उत्पन्न होती है॥ सो सत्त है॥ अरु सत्त होती है॥ पर जगतका कारण
कोई पाईता नहीं॥ कारणके अभावते इह मिथ्या है॥ कारण भी इसका नवकहे
अरु जो इह कछु वस्तु होवे॥ अरु कारज भी तब कही जो इसका कारण सत्त हो
वे॥ हे रामजी ब्रह्म सत्ता नानात किसीका समवाय कारण॥ न किसीका निमित्त का
रण है॥ जिस कारणते अचुत है॥ तिस कारणते समवाय कारण नहीं॥ अरु अ
द्वैत है॥ ताते निमित्त कारण भी नहीं॥ सर्व इच्छाते रहित है॥ तिसको कारण कि
सका कहीये॥ जो कारण नहीं कारज किसका कहीये॥ ताते जेता कछु जगत
भासताहै सो आभासमात्र निराकार है॥ उसी ब्रह्मसत्ताका नाम जगत है॥ जैसे
निद्रा इक है॥ तिसके दो सरूप है॥ इक सुषुप्त रूप है॥ इक स्वप्नरूप है॥ सुषुप्ति
रूपका नाम सत्त है॥ अरु अफुरूपका नाम स्वप्न है॥ तैसे दोइ रूप चेतन
के है॥ फुरणरूप चेतनका नाम जगत है॥ अरु अफुररूपका नाम ब्रह्म है॥ जैसे
इक ही वायुका चलना अरु ठहरणा दोइ प्रकार है॥ जब चलती है तब भा
सता है॥ अरु ठहरती है तब चलन ठहर जाता है॥ परंतु वायु विषे
नी॥ तैसे ब्रह्मसत्ता अफुर विषे है॥ अरु फुरती है॥ [illegible]
दिष्ट आवती है॥ दृष्टिकी दृष्ट भासती है॥ इक तो इस उनकी सूक्ष्म भासती है॥
अरु अनेक इक दृष्ट पड़ती है॥ जैसे इक ही जल नदी नाले आदिक भिन्न भिन्न

त्रुपाको पावता है॥ अरु जब समुद्र विषे मिलीता है॥ तब इक रूप होजाता है॥
जैसे इक काल के बहुतेनाम होता है॥ दिन मास वर्ष जुग कल्प इत्यादिक बहुत
आदिक नामको पावता है॥ पर काल तो इक ही है॥ जैसे इक ही वृक्षका कोपि
नाडो डाल पत्ती आदिक बहुते नाम होते है॥ अरु वृक्ष तो इक ही है॥ जैसे
फूल फल पत्र टास वृक्ष भिन्न भिन्न नामको प्राप्त होता है॥ पर एक ही
है॥ जैसे तरंग बुदबुदा आवर्त फेन आदिक अनेक नाम होते है॥ पर जल इक
ही है॥ तैसे परमात्मा विषे जगत अनेक नाम रूपको प्राप्त होता है॥ पर सत्ता
जानि एक ही है॥ जैसे तंतु विषे एक ही अद्वैत अनुभव सत्ता होती है॥ पर भिन्न
भिन्न नाम रूप होइ भासती है॥ जब जागता है तब अद्वैत रूप होता है॥ तिसी
प्रकार इह जगत भिन्न भिन्न नाम रूप भासते है॥ पर आत्मसत्ता इक ही है॥
हे रामजी जब तू तिस विषे जागेगा तब तेरे फ़ेर को सम अपणा ही अनुभव
भासेगा॥ सो अनुभव कैसा है केवल आत्मतत्त्वमात्र है॥ अर्थ निरंतर अनुभवरूप
है॥ सो आत्मरूप समुद्र है॥ तिस विषे जगत रूपी जलकी तरंगें है॥ जैसे आ
काश विषे निरंजन फुरते है॥ तैसे आत्मा विषे जगत फुरते है॥ प्रकाशन ही
ताते भिन्न है॥ पर आत्मा ते जगत भिन्न नहीं॥ जल ते बूंदोंकी न्याई अभिन्न है॥
२६२॥ राम उवाच॥ हे भगवन अर्थ कारविषे जो पदार्थ पड़ा होता है॥ सो
ज्योंका त्यों ही भासता॥ अरु रूपके का प्रकाश होता है॥ तब ज्योंका त्यों
थोभासता है॥ तिसको मिन सके कहता है॥ जो समस्त रूपी तम करि जगत ज्यों
कीत्यों समझ को नहीं भासती॥ तम मारिवचन रूपी स्नेहके प्रकाशके जो प
दार्थ वस्तु॥ तिसको सम्यक ज्ञानके जागेगा॥ हे भगवन एक इक एक न
हो सहू आहे॥ तिस विषे मुक्त को समझा है॥ सो इह के तो॥ हे भगवन एक काल
विषे मैं अर्थ न सोला विषे विषय जन जो है॥ पंडित तिस सो अर्थ न कहता होता
था अरु बहुते ब्रह्मणा वेद थे॥ तब एक ब्रह्मण विदनत बहुत से दर अरु वेद
न शास्त्र के अर्थ करि सो पत्र जो सभ ही उसको कंठ विषे इस्थित था॥
अरु बड़ा तपसी ब्रह्मा लक्ष्मीके के तेज वान॥ सो ना उवी सो ब्रह्मण है॥ ऐसा
ब्रह्मणा सभा विषे आया॥ पर सब नमस्कार करि आसन पर इस्थित भया
हम सभने उसको प्रणाम कीया॥ अरु जो परस्पर शास्त्रा की चर्चा होती थी
पंडितों की वेदांत शास्त्र पतंजल आदिक की सो सभ मनोरथ होइ गए॥ अरु
मैं तिस सो बोल्या॥ कि हे ब्रह्मण तुम बड़ा मार्ग क करि आये हो॥ परंतु मार
ग के कारण कि सो परमार्थ क नहीं मिनत होता है॥ तुम मार्ग लंघ करके हो
ते आया॥ सो कहो॥ ब्रह्मण उवाच॥ हे भगवन जिस प्रकार वृत्तांत है सो मैं
कहता हों॥ हे रामजी विदेह नगर का मैं ब्रह्मण हों॥ तथा मैं जन्म लीया
था॥ अरु कुंदइक पटा होता है॥ तिस का फल भया है॥ तिस मेरे दंत है॥ इस
कारण ते मेरा ताम माता पिताने कुंद दंत रख्या है॥ विदेह राजा जनक की
नगर है॥ तहां सो मैं आया हों॥ सो कसान गर है॥ अरु कुश विष जो सुरागहै॥
माना तिस का प्रतिबिंब है॥ ऐसा नगर है॥ सभ ही गुणवान अरु तिस मैं
लहै॥ तहां केर रहणे वाले॥ तहां भी विद्या पढणा लगा॥ तिस कर मेरा मन
उद्याग वान हूआ॥ जो इह संसार महा क्रूर बंधन है॥ किसी प्रकार मैं संसा
र बंधन ते छूटे॥ हे रामजी ऐसा वैराग्य मुझको उत्पन्न हूआ॥ जो किसी प्रका
र ध्यानवान होवो॥ तब मैं उहांते निकसि आया॥ जो जा सत संग स्थान पवन है
मैं विचारणा लगा॥ तहां बहुत होते थे अरु ऋषीयो के इस्थान तीर्थ॥ सतों के इस्थान
अरु तीर्थ आदिक जो पवित्र इस्थान है तिनका दर्शन कीया॥ अरु तीर्थों के
इस्नान कीए॥ तहां ते आवते इक पर्वत था॥ तिस उपर मैं गया॥ तहां जाइ कर

व॰ म॰ ६६

मैंनपकरणेलगा॥चिरपर्जंतमैनेतपकीया॥वहुरुउहांतेचल्यातोएक
नकेनमित॥आगेइकआश्चर्जदेख्यासोकहिताहों॥हेरामजीउहांतेमैं
चलेआवताथा॥जोइकवडावनहै॥अरुवहुतसामेहै॥मानोआकाशको
मनहै॥श्रनरतनसरूपहै॥तिसवनविखेइकब्रिछमुफकादिखिआ
या॥कोमलजिसकेपत्रहैं॥अरुसदरटासहै॥तिसकेसाथइकपुरुखल
कनाहै॥पर्णवरवमुफकारसाहै॥ब्रिछसाथवंध्यासीमनीचेअरुचरन
परवो॥अरुदानाहाथछाडेउपरजुडेहूए॥पडालटकनाहै॥जैसेब्रिछव
टकाथंभाहोताहै॥तैसेमैंउसकोदेखताभया॥तबमैंविचारकीयाजोइ
हमनत्यिकहोवे॥इसकोदेखा॥जबमैंनिकटिगयातबउसकेस्वासआवते
जानेदेखे॥अरुशरीरजवानअवस्थाकोनहूए॥अरुअनेकसमकासान
प्रीतउसअरुअंधेरीमेचकोसहहरहा॥जारातातसमकोहैपरमसुखरहाहै
हेरामजीतबमैंजानानाराधाजइहतपसीहै॥इसकीपरखीवडीहै
तबमैंउसकेनिकटवैठगया॥अरुउसकेचरनेजोवाथहूएथे॥तिनको
ऊंछहीलाकीया॥वहुरुउसकोकहा॥हेसाधअैसीकौनतपसीआरा
किसवासिनकरताहै॥अपणाविर्तांतमुझकोकहु॥हेरामजीजवमैंइ
सप्रकारकहातवउहवोलताभया॥हेसाधइहतपमैंकिसीअपणी
कामनाकेअर्थकरताहों॥सोअैसीकामनाहैजोतेमसुणगेतवहासी
करोगे॥इसकारणतेमैंकिसीकोकहतानहीं॥अरुअलखइस्थानविखे
आनिइस्थितभयाहो॥हेरामजीजवइसप्रकारउसकहा॥तवमैंक
हाहेसाधमैंहासीनेकरोगा॥तूअपणावर्तांतकहु॥अरुजोकछुमेरीसकं
न रजेहोवेगा॥अरुमुझकोसोकहो॥तोमैंकरोगा॥जवइसप्रकारवारवार
कहा॥तवउहकहतभया॥जेमनकोउद्योगातेरहितमककेंतेगा॥मैंकहता
हो॥हेसाधमैंब्राह्मणहो॥अरुमथुराविखेमेराजन्महै॥तहांजववालक
अवस्थामेरीवितीतभए॥अरुजवाअवस्थाकाआदिहूआ॥तवमैंवेदअरु
शास्त्रकोवलीकारजाणिआ॥तवइकवासनाआनिउदेभई॥जोसभते
वडासुखराजाभोगताहै॥तातेमैंराजाहोवों॥अरुसुखभोगोंजेक्यासु
खहै॥अरुसुखमैंभोगोंहै॥वहुरुइविचारकीयाजोराजाकासुखतवभो
गोंजवराजाहोवों॥सोराजाक्योंकरहोवों॥राजातवहोताहै॥जवतप
करे॥तातेमैंतपकरणेलगाहों॥हाटभाववखतितोमभएहैं॥अरुआ
गभीकरोगा॥उहांतिस्थानमैंथारहाहै॥जोमेरापारीरहीतहूहोगया॥आ
ध्यावासनरदीपकाराजआपतिभया॥इहमेरानिश्चाहै॥सामनरूकोकहा
अवजावणेकीतुझकोइछाहैतहांजावो॥हेरामजीइसप्रकारकहिकर
उसतपसीवहुरइनेत्रमूंदकरचितइस्थितकरणेकोसामादानकरी॥इंद्रियां
कविखयांकोत्यागकरमननिश्चलकीया॥तवमैंउसकोकहा॥किहमुनी
श्वरमैंभीतेरेपासवैदाहों॥जवलगतेरेतान्यतरकीप्रापतिनहींहोतीतव
लगतेरीटहलकरोंगा॥मेरेतान्यतेरीटहलआणेहैं॥हेरामजीइसप्रकारमैं
उसकोकहिकरउसकेपासवैठरहा॥तवषटमासपर्जंतमैंउसकेपा
सवैठारहा॥अरुउसकोवस्त्राकरतारहा॥जवधूपआवतीमैंछायाकरों॥अ
थोमवविखेअपणीशरीरकोकष्टदेकरउसकोवस्त्राकरों॥उद्यानतरहि॥
तषटमासजवबीते॥तवसूर्जकेमंडलतेइकपुरुखनिकसिआ॥वडा
प्रकाशवान॥जैसेविस्नुभगवानकातेजहै॥तैसेतेजवानभासरूपआया
अरुहमारेनिकटिआनिप्रापतभया॥तिसकोदेखकरमैंनेवडणी॥शरीरति
नोह्राकरइजाकरी॥तवउसपुरुखकहा॥हेतपसीअवइसतपकोत्यागो॥अरु

जोकछुइछाहैसोमागु॥तेरीइछातोइहीहैजोमैंसप्तदीपकाराजाहो
वों॥सोतूसप्तदीपपृथवीकाराजाहोवेगा॥अरुसप्तसहस्रवरखपर्जंत
तूराजकरेगा॥पहोरशरीरसाथहोवेगा॥हेरामजीइसप्रकारकहिकै
उहपुरुखवहुरसूर्जकेमंडलविखेअंतरध्यानहोगया॥जैसेसमुद्रतेतरंग
निकसिकरलीनहोजावे॥तवमैंउसकोकहा॥किहेब्राह्मणअवतूकिआस
कोटलताहै॥जिसनामिततूतपकरतीया॥सोवरतोतुझकोप्रापतिभयाहै
अवक्योंकष्टभोगताहै॥हेरामजीजवइसप्रकारमैंकहा॥जोसूर्जकेमंड
लतेपुरुखवडातेजवाननिकसकरतुझकोवरदेगयाहै॥तवउसनेत्र
खोलेतोमैंउसकेचरनोंसेरसाखोल्या॥तवउसकावडाहोगया॥उस
केशरीरकीकांतप्रकाशवानभए॥तवमैंनिकटिइकजलतेरहितताल
उसकेपुनकरउहभीजलसाप्रणहोगया॥तिसविखेहमदोनोंइस्ना
नकीया॥वहुरिमंत्रपाठकीया॥संध्याकरी॥वहुरहमदोनोंब्रिछकेनी
चेआए॥जोब्रिछफलोंतेरहितथासोफलोंकरपूर्णहोगया॥उसकीपू
त्रवासनाकरी॥तवउनफलोंभक्षनकीया॥तीनदिनपर्जंतउहांरहा
रह्या॥वहुरउहचलाअरुकहतभया॥हेसाधहमदेशकोचलतेहैं॥जवचलिआ
मार्गहैतवलगाशरीरकेसभावभीहै॥आगेइकवनआया॥वहुतसुंद
रफलफलचूटेलगोहूए॥अरुभउरविचरतेहैं॥जलोंकेप्रवाहचलते
है॥कोएलअरुतोतेहंसवगलेइनतेआदिलेकरपक्षीपक्षीब्रिछअस्या
दिकहमदेखतेभए॥आगेतालाब्रिछवहुतदेखे॥वहुरआगेकंदराके
मूलइस्थानआए॥अैसेइस्थानहमलेवतेगए॥हेरामजीराजसीतामस
सीसात्विकीतीनोंगुणोंकेरचेहूएइस्थानोंकोलंघतेलंघतेहमसुंदर
नगरकेमार्गआए॥जोउसथामार्गथा॥तिसकोछुडकरउहनेटेमा
रगचल्या॥तवमैंकहा॥हेसाधसुंदरमारगकोछोडिकरतूटेढाचलाहै
तवउसकहाजोहेसाधतूचलेआवइससारगगीरीभरावतीकाइस्था
नहै॥तिसकादर्शनकरनेजावहिंगे॥अरुमेरेसजनभाएहोरगौरीकेइस्था
नइसकामनाकोलेकरतपकरतेथे॥तिनकीभीसुधलेलेवहिं॥हेराम
जीजवहमउससारगकेमनमेंरखचले॥तवआगेइकसुंदरवनथा॥मानो
श्रनआकाशहै॥अरुमहानसरूपहै॥तहांकोउब्रिछद्रिष्टिनआवे॥अ
रुपक्षीपक्षीमानुखकोउद्रिष्टिनआवे॥तिसवनविखेउसमुझकोकहा
है॥हेब्राह्मणइकइस्थानविखेमैंआगेरवटमासरहाहों॥अरुमेरेसजन
भाएहोरथे॥उनभीइहीकामनाधारकरदेवीकातपआरंभआथा॥च
लोजेदेखाचलीए॥महापवित्रइस्थानहै॥जिसकेदर्शनकीएतेसभ
रोगपापनष्टहोजातेहैं॥तवमैंकहाचलीए॥पवित्रइस्थानकोदेखाचा
हीअै॥हेरामजीहमअैसेविचारकरचलेजावहिं॥जातेजातेमहांमा
त्रुथलकीनर्योहूएइष्टपवींपरजाएनिकसे॥उहइहब्रह्मणदेखकरगिडप
डा॥अरुकहनेभएआहाकष्टहाकष्टहमकहांआनपडेहैं॥मुझकोभी
भ्रमउदेहूआ॥जोइहक्याभया॥वहुरउठिआउटकरहमआगेगए॥तो
इकब्रिछहमकोद्रिष्टिआया॥तिसकेनीचेइकतपसीवैठाहा॥अरुध्या
नविखेइस्थितहै॥देखकरहमतिसकेनिकटगए॥जाइकरकहाहे
मुनीश्वरजागोजागो॥जवहमवहुतवारकहा॥तवउसनेत्रखोलेक
रहमकोदेख्या॥अरुकहाकौनहोतुमकौनहो॥अैसाकहकरकेहाजे
वहुतअस्थजेहै॥इहांगौरीकाइस्थानथा॥उहकहांगया॥ब्रिछवावली
याकमलयेउहकहांगए॥वडेसुंदरइस्थानथे॥सोकहांगए॥अरुव

व॰ म॰ ६७

67

देवडे रवीश्वरों अरु मुनीश्वरोंके इस्थानथे सो कहेगए ॥ हे साधो इह कथा
अश्चर्जरूप आ ॥ सो तुम सुनो कहों ॥ नव हम कहा है मुनीश्वर हम नहीं जानते ह
मने अब आया है ॥ इसको नम नहीं जानतो ॥ नव कछि नु भया ॥ वडा आश्चर्ज इ
हे रामजी असे केहकर वहुडि ध्यान विषे इस्थित होगए आ ॥ अरु मुनी
न छिनामको ध्यानकर देखना भया ॥ मुहूर्त एक उपरंत देखकर वहुडि नेत्र खो
ले ॥ अरु कहा वडा आश्चर्ज है हा वीति आ है ॥ नव हम सउ कहा है भगवनु जो के
छ विनान हुआ है ॥ सो कृपाकरके हमको कहु ॥ नव वन्तपसी कहा हे साधो ए
क समै भागीरथी भावनी इस वना विषे आवती भए ॥ निसने एक राहिणाका
इस्थान वणाया ॥ निसविषे शिवकी अर्धपार्वतीकी गारी वहती भए ॥ अरु उ
स इस्थानके निकटि वहुतसे दरख्त लगाए ॥ कल्पब्रिछ तमाला ब्रिछ
कदम ब्रिछ इनते आदिलेकर समैवरतोंके फूल लगहोलगे ॥ अरु कोएल अम
रे ना मे मोर वगुले इनते आदिलेकर जायछौंह हहि विश्रामकरहिं ॥ अरु
निकटि रवीश्वरों मुनीश्वरों तपीश्वरों की कुटीयां ॥ सो नो उकानंदनवन
है ॥ अरु तिन कुटियां वाकी वस्ती वहुत ध्यानहूए ॥ हे साधो इहां आठ ब्राह्मणान
एकेन मित्र आयेथे ॥ इक नो वूढे हे रविछिमा सहहागया है ॥ वहुत संदर इस्था
नथा ॥ इति श्री ब्रह्म गीता गौरी आगवने नाम सर्गः ॥ कदमनप उवाच ॥ हे सा
थो मुझको पूछो तो मेरे अपराण ब्रिलान कहिना हो ॥ मैं माल्लदेशका राजा था
अरु चिर प्रजन खेद रहिन मे विषे भोगे है ॥ नव मुझको इह विचार आन उ
त्पन भया है ॥ जो इह संसार समा है ॥ इसको मन जाणा कर इस्थित हो
णा वडी सुखरवनाई ॥ ऐसी आव उलामे वीतगए ॥ तो मे रूत्रलक चन कोया
इह विषे भोग अपात्र मणोश्रहै ॥ अथ इहजो नाश वंत है ॥ इनको मे चिर प्रज
न भोगता रहा ॥ परमुझको ग्यान न प्रापति भए ॥ त्रिस्ना वह तीगए ॥ तोते कही
उ पाइ सात्र क रो ॥ जिसकर मुझको ग्यान प्रापति होवे ॥ वहुडि उ रवीके
दाविन न होवो ॥ हे साधो इह विचार मुझको आन उदे भया ॥ तव वैराग कर
मे राजकी लक्ष्मी त्याग करी ॥ निरवियां अरु मुनीयों के इस्थान देखना द रव
ना इस कदमा ब्रिछ के नीचे आया था ॥ एवं के इस्थित भयाहो ॥ अरु आद सा ए
सा व्रह्मणा ॥ इक ना श्री पर्वत ऊपर जाइ तप करने लगाथा ॥ इह होरइक सा
मकार तक केऊपर तप करने लगाथा ॥ होर इकेजन इस मसहिन पकरणे ल
गा ॥ एक हिमाल पर्वत ऊपर तप करतीया ॥ चार भाए तो इस प्रकार चारों इ
स्थानों को गये ॥ तो होर चार भाए इहां तप करणे लगे ॥ अरु कामना सभनों
की इहो जे सप्त दीप पृथवीके राजा होवों ॥ हे साधो इसको नृहे जो वरदिखा
या है ॥ होर जो सात ब्रह्मणाथे ॥ तिन भागेश्वरी भवानीका इह करके तपकी
या ॥ जो उह प्रसन भए अरु कहा वर मागो ॥ नव उनने कहा जे हम सप्त सप्त
दीप पृथवीके राजे होवहि ॥ सो तोने इह वर मागा ॥ तिनको वर दए गौ प
र मेश्वरी अंतर ध्यान होगए ॥ अरु इह भी वर मांगया ॥ जो इह इस्थान वासीजो
है ॥ तिनका इस्थाने भी इह मोरे पास होवे ॥ हे साधो इस वरको लेकर उहह उ
हांते चले अपणे घर हगए ॥ अरु उह सदा शिवकी अर्ध पारीवहा दघा वरदे
अजन वहे ॥ वहुडि उनकी मिजादा इस्थाप णाके नमित उहां न अंतरध्यान
होगए ॥ इहां के वासी भी सभ जाने रहे ॥ भागेश्वरीके जाणाकर इह इस्थान
सून होगया ॥ इक इह कदम ब्रिछका व चार रहिगया ॥ इक मे ध्यान विषे इ
स्थित रहा हो ॥ इह ब्रिछ भी न रहा जो भागेश्वरी अपणे हाथ लगाया है
इसका वरणान इह नहि नहीं हुआ ॥ अरु जरीभाव भी नहीं ॥ हे साधो इस
के पासजे वस्तीका ल माल्लेवघे ॥ सो भी जाने रहे हहि ॥ भगवती अंतर ध्यान
होगए ॥ ने ध्यान इस्थित रहा ॥ अरु जीव इहां आया तो अंतरध्यान होगए

इस कार राणे सभ मुझ अचार जारने रहे ॥ अरु उन मातें भाइयोंविषे इक
इह वैदा है ॥ इस भी वर जाणया है ॥ सो न आगे गए हे ॥ उहां सभ इकके जाए
होवेंगे ॥ हे साधो जव यह तेम एक रौके नमित निकसे थे ॥ नव इनकी अ
स्त्रीयोंने विचार कीया जो हमारे भर्ता तो न पकरौना थे है ॥ हम भी जाइके
न पकरें ॥ निन आठोंनें तप आरंभ कीया ॥ सो क्रिछु चंद्रायण व्रत नि
नेरवे ॥ महाक्रिसजेसे शरीर होगाए ॥ जैसे वसंतकी संजरी जे दुख
रवाइ विरवक्रि सहो जानी है ॥ नैसे होइ गए ॥ इक भर्ता का वियोग हूसरा
नप करक्रि सहोगए ॥ नव वो भगवती पार्वती प्रसन्न भई ॥ अरु कहा कछ
वर मागो ॥ नव उह प्रसन्न होइ कर वोलन लगी ॥ हे देवी मोकों इहवर हम
इहो वर मागने हैं ॥ जो हमारे भर्ता अमर होवहि ॥ जैसा ने राअरु शिवजी
का संजोग है ॥ नैसे हमारा होवे ॥ इक इकके इहो वर मागा ॥ जो हमारे भ
र्ता अमर होवहि ॥ नव भवानी जी का कहा ॥ इस मृत्यु संसार के रहनो किसी
अमर नाहीं रहणा ॥ आदि जो सृष्टि हुए है ॥ सो निस विषे इहने नहू एहै
जो शरीर कराकिसी नहीं रहणा ॥ जैसा कछु जाणा न देखीना है ॥ सो स
भना मात्र पहे ॥ किसी पदार्थ इस्थिर नहीं रहणा ॥ अरु कछु वर मागो
नव उनने अस्त्रीयां ने कहा ॥ हे देवी भला जो हमारे भर्ता मरहि ॥ नाइन
के जीव हमारे गृह विषे रहहि ॥ इनको मसाने दाहि न जावे ॥ नव वा
गीश्वरीके हा असे ही होवेगा ॥ उनके जीव ममारे ही घर विषे रहि गे अ
रुसा पहीं तुम भी अपणा छार इखहु नको जालोकांतर भी मैं गा ॥ नही
तुम उनको इस्त्री रूप होइकर इस्थित होवो ॥ असे कहिकर अंतर ध्यान हो
गाए ॥ कंदनम उवाच ॥ हे रामजी इस प्रकार मैं राणा करे मैं आश्चर्ज वाने है
आ ॥ अथ वहुड इसके कहा है मुनी ॥ ... मुझको आश्चर्ज कयाइ सको मैं राण ए
हे ॥ जो आठो भाए ये थे इक सीव रकोपाइकर सप्त दीप पृथवी ॥ अरु इह ए
बी इक तिनो सभनोंका राजकिं कर प्रापति होवेगा ॥ हे रामजी अव इस
प्रकार जव मे उसको कहा ॥ नव कदमने एके कहा ॥ हे साध इह क्या आश्च
र्ज है ॥ अरु आश्चर्जसे रूगा है ब्रह्म राज वाए इन आठो भाए घर इनने निकसथेन
ए केनामित ॥ नव उनके पिमा माना जोथे निनो दिग्राव कीया ॥ जो माने पुत्र
वडा तप करणे गए हैं ॥ हम भी उनके निमित तप जाए कर हिं ॥ जानकी ऐस्त्री
योंको साथले कर नीर्थ अरवाक उहाँ दरवावने फिरहिं ॥ दिखाए के कए को
नव दक्र इउनौ तप कीया ॥ तप क्रिछ चंद्रायण कोउन करके देवी अप्रकी आ
श्रय व लोकर अपणा शरीर का आवणा लगा ॥ नव इस्थान विषे एक रवीश्व
र वूढा था ॥ निकाजे सोजे मडवामा निरवड वेल जैसे अगानि सको लेके कर
चलगए ॥ निसको नमस्कार नमस्कार नकरी ॥ नव उस कहा है ब्रह्मणान
किंउ इह सभा वहमारे पास ऊचल आइगया ॥ इसको नमस्कार भी न करी ॥ ना
इ अवनें रवर निवर्न होजावहिंगे ॥ जो नमको प्रापति हूआ है सो नहो वे
विपरीन होजावेगा ॥ नव उनें कहा हे मुनीश्वर नें इह वचन केसे कहिना
है ॥ हमारे पर खिमा कर ॥ इह असे ही कहने रहे जो उह अंतर ध्यान होगया नव
वह इह असे सुणकर उस यह विषे आनि प्रापति भए ॥ सो कवान होकर
नो है ब्रह्मणा तुं देखु जो जवलग आत्मवोध नेपूर्न है ॥ नवलग अनेक अ
जनम उपजहिंगे ॥ के एकार के अश्चर्ज भासहिंगे ॥ सो सेह रनहोवहिंगे ॥ अरु ज
व आत्मवोध हूआ नवको उसे सो आश्चर्ज न भासेगा ॥ हे ब्रह्मणा इह सभ चि
दाकाश विषे आया मात्र ही वणा नाहै ॥ इति श्री ब्रह्मगीता व णा था व
ने नाम सर्गः ॥ कदद उवाच ॥ हे भगवन मेरे इह सुणकर अश्चर्ज वान हूआ

हैं॥ अरु एक संसा उत्पन्न भया है॥ सो निवर्तन करो॥ तुम कहाँ इकु देह कहीं
पावि विश्रातो सप्त द्वीप के राजा होवहिंगे॥ दीप तो सप्त पकडी हैं॥ अरु रा
ज कर्णी वाले आठ इह के से राज करनेगे॥ अरु उनकी भी पाया॥ अरु आप
भी पाया॥ इह इक दे कोण कर होवहिंगे॥ जेसे धूप अरु छाया इकठे होइ गी
आश्चर्य है॥ अरु दिन रात्रि इकठे होए आश्चर्य है॥ तेसे वर अरु स्राप का इकठे
होएगा आश्चर्य है॥ कदमनपववाच॥ हे साधो जो कुछ इनकी भविष्यत हो
णी होवे॥ सो मेंके हि लाहो॥ जबके नाके काल विती नहीं होवेगा यह स्रावि
खे॥ तब इनके शरीर छूटने जावहिंगे॥ कर्म कर्के आदी के शरीर छूटे जा
वहिंगे॥ पनको कुटंबी जलावहिंगे॥ इनको पुरयष्टका अनभव सो आमि
ली हुए॥ इक मुहूर्त अजंत जडीभून स्वपन होवहिंगे॥ तिसके अन
रे चेतन्नता कु विश्राव वेगी॥ प्राण चक्र गदा पद्म चतुर्भुज विस्नु का रूप धा
र कर वर आवहिंगे॥ अरु त्रिनेत्र हाथ विखे त्रिशूल कटी चहाए पवान॰
सदाशिव का रूप धार कर आप आवहिंगे॥ दोनो इकठे आन होवहिंगे
तब वर कहेंगे॥ हे आपो तुम क्यों आए हो॥ अब तो हमारा समा है॥ जे
से इक रुतन के समे हू सर्गी रु नहीं आवती॥ तेसे तुम आवनी हो॥ तब आ
प कहेंगे॥ हे वर तुम क्यों आवे हो॥ अब हमारा समा है॥ जेसे इक रुत॰
के होन हू सर्गी का आवणा नहीं वणता॥ तेसे तुमारा आवणा नहीं व
णता॥ तब वर कहेंगा॥ हे स्रापा तुमारा कर्ता विखमान रव है॥ अरु हमारा
कर्ता देव है॥ मात्र खाकर देव लन्ह जु राजा गा है॥ कोई ते जावडे हैं॥ तो तेन
म जावहु॥ जब इस प्रकार कहेंगे॥ तब आप क्रोधवान होवहिंगे॥ अरु
मारणे निमित्त त्रिसूल हाथ विखे उठावहिंगे॥ तब वर कहेंगे॥ हे आपो
जब तुम अरु हम लडहिंगे॥ तब भी किसी वडे न्याई कने पास जावहिं
गे॥ तब वह मारा जुध निवर्तन करेगा॥ सो प्रथम ही क्यों न जावहिं॥ कि
सी वडे पास॥ जो कुछ उह हमारे तई एक हेगा सो अंगीकार करेंगे॥ तां ते
अब हो चला॥ तब आप कहिंगे॥ हे वर जो को उन्ह राग न सुहि न वचन
कहिता है॥ तिसको सभ को उमानेता है॥ हम भला कहा इहै चलीए॰
ऐसे वचों करके दोनो ब्रह्मपुरी विखे जावहिंगे॥ जाइ कर ब्रह्माजी को प्र
णाम करहिंगे॥ अरु कहेंगे हे देव इह हमारा न्याय एक रीति॥ जो प्रथम विर
तेन कहि कर वर उसको स्पर्स करहिंगे॥ अथवा आप स्पर्स करहिंगे॥
तब ब्रह्माजी कहेंगा॥ हे साधो जिनका अभ्यास उनके अनर वडिड होवे
सोई प्रवेश करेगी॥ तब वर को कहि स्याम आप जाइ कर टहगे गे॥ अरु आ
प कहे स्यान उनके अनर वर जाए टहिंगे॥ टह के आप आप कहिंगे॰
हे स्वामी हमारी हान हुए है॥ अरु वरों की जीत हुए है॥ काहे ते जो उन
के अन्तर वर हो इस्थित है॥ जिसका अभ्यास अन्तर द्रिड होता है॥ तिसी
की जे होती है॥ सो नो वर इनके अन्तर वज्रसार की न्याई इस्थित हैं॥ हे॰
स्वामी हमारा अह्नन के शरीर को उ नहीं॥ हम संकल्प शरूप हैं॥ सो जि
स संकल्प की द्रिडता होती है॥ सोई आन उदे होता है॥ वर का कर्ता भी
ज्ञान मात्र है॥ वर को लेना भी उही ता न हुए है॥ वरों को ग्रहण कर्ता
जाणता है॥ जो इह हमारा स्वामी है॥ तिस संकल्प कर वर का कर्ता
वर देता है॥ जो में वर दीया है॥ अरु ग्रहण कर्णे वाला जाणता है॥
मे वर लीया है॥ इस तीनों उसका जो कोउ वर रूपी संकल्प है॥ सो सके
निश्चय विखे द्रिड होजाता है॥ जिस संकल्प की सबलता यह कता होती है॥ उहवके
उपकार द्रिड होता है॥ इस प्रकार आप भी है॥ तो क्या है॥ उनको उवर है॥ उनको आप है

दोनो संकल्प रूप हैं॥ जो सा संकल्प अनभव अकाश विखे द्रिड होता है॥ साई
आसरणे लगता है॥ वर देणे वाला भी अनभव सता है॥ अरु लेणे हारी भी आ
त्मसता है॥ उही सता वर रूप हो कर इस्थित होती है॥ अरु उही आप रूप॰
हो कर इस्थित होती है॥ जिस संकल्प की द्रिडता होती है॥ तिसी का अनभव॰
होता है॥ हे स्वामी इह तो तुमसों स्मरणि आ कहते हैं॥ जो वाह्य जो कोउ कर्म इसको
फलदाइक नहीं होता॥ जो कुछ उसके अन्तर होता है॥ सोई फलदाइक होता॰
है॥ इनके अन्तर तो वरों का संकल्प द्रिड है॥ ताते हमारी तुमसको नमस्कार है
हम अब जाते हैं॥ हे कुंददंत इस प्रकार नमस्कार करके आप अरु इनके शरीर॰
त्याग कर अतिवाहक शरीर सों अन्तर्ध्यान जावहिंगे॥ जैसे अकाश विखे तृ
स्कर के नते भास अरु स्पक तानकर अन्तर्ध्यान हो जावे॥ तेसे आप अन्तर्ध्या
न होजावहिंगे॥ तब वडे उड ब्रह्माजी कहेगा॥ इह वरो तुम प्रणीय स होउन
पास आवो॥ अरु उनको राज भोगावहु॥ तब उह वडे प्रछहिंगे वर अरु॰
हम रावर जो उनकी इस्त्रीयों लीया था॥ जो उनकी पुरयष्टका अन्तःपुर विखे
रहे॥ सो हे भगवन हमको क्या आज्ञा है॥ हम तो उनको उसी मंदर विखे राख॰
णा है॥ अरु उन सपतदीप पृथवी का राज भी भोगाणा है॥ अरु दिगविजे कर
णी है॥ उह क्योंकर होवेगी॥ तब ब्रह्माजी कहेगा हे साधो क्या हूआ॥ जो स
प्तदीप पृथवी का राज कर्णा है॥ उनका तुमारे साथ विरोध कछु नहीं॥ तू
उसी मंदर विखे उनकी पुरयष्टका राखणी॥ अरु उहांही राज भोगावणा
अपणा जो कछु तुमारा सुभाव है सो करणा॥ वरेउवाच॥ हे भगवन उसके
रता इहम को वडा संसा उत्पन्न भया है॥ उसी मंदर विखे ओदो भाइ सप्त समु
द्र दीप पृथवी का राज कैसे करहिंगे॥ ये तो पृथवी उस मंदर विखे क्योंकर समा
वेगी॥ इह आश्चर्य है॥ जेसे कमल फूल की डोडी विखे कोउ कहे हस्ती सेन
करे अरु इह स्त्रीयों की पराग तउन विखे है॥ सो आश्चर्य है॥ तस इह आश्चर्य है
ब्रह्म उवाच॥ हे साधो ब्रह्म रूपी अकाश है॥ तिसके अणु का जो सूक्ष्म अंश है ति
स विखे जो स्वप्ना कु विभ्रा है॥ सो इह मारा जगत है॥ तिस सूक्ष्म विखे इह सप्त
समाए रही है॥ तो मंदर विखे समावणा क्या आश्चर्य है॥ हे साधो इह जगत
सभ आस्प्रमात्र है॥ अरु इह तो आदिक जगत न सभ स्वप्न निद्रा विखे पडा फुरता है
आत्मसत्ता सदा अद्वैत है॥ परम प्रधान अरु ह अनन्त है॥ तिस विखे जगत अभो
समात्र है॥ जेसे स्वप्न विखे अपणा अनभव सृष्ट ते सृष्ट होता है॥ तिस
विखे त्रिलोकी भास आवती है॥ जो सृष्ट संवत विखे त्रिलोकी भास आ
वती है॥ तो तिस मंदर विखे भास आवणा क्या आश्चर्य है॥ हे साधो जब
इह पुरुख स्वप्न जाता है॥ तब इसकी सृष्ट पुरयष्टका जड होजाती है॥ ति
स विखे वह्नि डिड त्रिलोकी कौ डि विभ्रा वती है॥ सो तुम मंदर विखे जो सूक्ष्म ही वि
खे भास आ एकी॥ जो परम सूक्ष्म विखे ब्रह्म सृष्ट व गाजाती है॥ तो उस मंद
र विखे होणे का क्या आश्चर्य है॥ हे साधो जेता कछु जगत भासता है॥ सो
तम आत्म विखे इस्थित है॥ तिसका कछन इस प्रकार होइ भासता है॥
तांते तुम जावो अरु उनको राज भोगावो॥ हे कुंददंत इस प्रकार ब्र
ह्माजी कहेगा॥ तब वर नमस्कार करके अरु इनके शरीरों का त्याग देवहिंगे
अतिवाहक शरीर साथ उनके हृदे विखे आन प्रवेश करहिंगे॥ जेसे
इक शव को इह कर कई सराय न इस्थित होवे॥ तेसे आपो कोइ इक कर्के उन
के हृदे विखे वर आन इस्थित भए॥ तिनको त्रिलोकी भासण लगी॥ पुरय
ष्टका को अन्तःपुर विखे वेरा रोक छोडिआ था॥ जेसे जल को बहन रोकता
है॥ तेसे उनकी पुरयष्टका को रोक छोडिआ॥ हे कुंददंत इस प्रकार उनको
अपणा अन्तःपुर विखे वर ह भासी॥ अरु ज्ञानवान भए जो हम सप्त समुद्र दीप
के राजा भए हैं॥ इस प्रकार आठ ही उस अन्तःपुर विखे सप्त समुद्र दीप

व॰
म॰
६९५

केराजाहूऐ॥ परउसकोउइनजाणेगा॥ परस्परस्त्रीकीश्रमिश्रातापएक
राजासप्तदीपकाभया॥ श्ररुरहूणेकाइस्थानजंबूदीपविखे॥ जोउजे
नहै॥ तिसविखेउसकीराजधानीहूए॥ होरइककुशादीपविखेरहूणे
लगा॥ श्ररुइकशाकदीपविखेरहै॥ जोतिसकाहूकीरेश्रानकेहैगेजेपा
तालकेनागवडेहूएहै॥ तिनकोकिसीप्रकारजीतो॥ नवउइसमुद्रके
मारगपातालविखेनागोकोजीतणोगयाचाहै॥ श्ररुचोथाइकदीप
विखेश्रपणीइस्त्रीसाथध्यानहोजावेगा॥ श्ररुइकराजासाल्मदीप
विखेइस्थितहोवेगा॥ तथास्वर्गकीपृथवीहै॥ वडेप्रकाशसंजुगतहै
तिसदीपविखेइकपर्वतहोवेगा॥ तिसकेऊपरइकतालहोवेगा॥ तिस
तालविखेविद्याधरीयोसाथलीलाकरतीफिरेगा॥ श्ररुपंचमइकके
उछदीपविखेराजाहोवेगा॥ दिगविजेककेश्रावेगा॥ तिसकोश्रोष्टजाहा
वेगी॥ सोवडीपरमात्मामानसीपीडातेरहितहोवेगी॥ श्ररुइकगोम
टकदीपविखेहोवेगा॥ तिसकाजथपुत्रकेरदीपवालेसाथहोवेगा
इकपुहकरदीपकाराजाहोवेगा॥ सागरमोदकसजेसाथजुधकरेगा
इकदृदंनइसप्रकारउइहत्वष्टाश्रपणाश्रंतःपुरखविखेरखरहिगे
श्ररुराजभीरहिगे॥ परस्परउनकोसत्तश्रदिष्टहोवहिगी॥ श्ररराज
धानीभीसेसमकीतिनाइकही॥ इककीजंबूदीपउजैनविखे॥ एक
कोक्रौंचदीपविखे॥ एकपुहकर॥ एकगोमेदकदीप॥ एकलोकालो
कपर्वत॥ स्वर्गकीपृथवीविखे॥ हेसाधोइसप्रकारउनकीभविख
नहोणीहै॥ सोमैसभनमकोकही॥ श्ररुजेसाइसकेश्रंतरनिस्चाहो
ताहैहि॥ तैसाहीइसकाफलहोताहै॥ वाहरतेइककेसीक्रियाकरेश्र
रुश्रंतरइसकेउसकीसत्तनानहीहोती॥ जैसेस्वांगीस्वांगवणाउके
रस्वांगकीचेष्टाकरताहै॥ परउसकेश्रंतरउसकाश्राहभावनही॥ इसके
रउइहफलदायकनहीहोती॥ श्ररुकेजाङुकेवाहजहि तैसेमतात
होभासतीजुत्रोविखे॥ परश्रंतरउनकोगेरचितलगाइरहताहै
तोश्रंतरभावकोउइहपरेकष्टहोतेहै॥ हेसाधोजैसाइसकेश्रंतरनि
स्चाहोताहैहै॥ सोएवरदाइकहोताहै॥ ताते निश्चापरमात्माकाकेणा
जोगहै॥ २६५॥ इतिश्रीव्रत्नभविघ्नतराजश्रापतिवर्ननामसर्ग॥ केद
दंतउवाच॥ हेमुनीश्वरइहतोमृतकोवडासमाउत्पतिहुश्राहै॥ जोउसी
श्रंतःपुरखविखेश्रपणेश्रपणेसप्तदीपकाराजकरहिगे॥ सोकेसहोव
गा॥ कहेवनपउवाच॥ हेसाधजेताकछजगततुमकोदिष्टिश्रावताहै
सोकछवणिश्रानही॥ सर्थचिनमात्रसत्ताश्रपणेश्रापविखेइस्थित
है॥ तिनकोजोश्रंतःपुरखविखेश्रपणीसृष्टिभासगीसोकयारूपहै उन
काजोश्रपणाश्रनभवसोएसाद्रिष्टरूपहोभासगा॥ श्रापहीसृष्टरूप
श्रापहीराजाहोवेगा॥ एहजोकछजगततुमकोभासताहै॥ सोभीपर
व्रह्मरूपहिहै॥ व्रह्मतेइतरकछनही॥ जैसेसमुद्रविखेसभावतरंग
पेहेफुरतेहै॥ श्ररुलीनहोजातेहै॥ जलतेइतरकछनही॥ तैसेउपजता
हैनमिटताहै॥ तैसेव्रह्मविखेजगतउपजताहै॥ श्ररुलीनहोताहै व्र
ह्मतेइतरकछनही॥ तैसेउहव्रह्मणीभीश्रजितरूपहै॥ श्रपणेश्रापको
फुरणेकरकेजगतरूपदेखहिगे॥ हेसाधोजबसुखपतहोताहै॥ तबश्रहंता
श्रपणाहीश्रनभवहोताहै॥ सर्वहैतिसविखेसभकीसृष्टिश्रावतीहै
सोकयारूपहै उहीसुखपतरूपहै॥ तैसपरमसुखपतरूपजोश्रात्माहै जा
हांसुखपतभीलीनहोजातीहै॥ तिसविखेइहजगतफुरताहै॥ सोउहीरू
पहै श्रधारश्रधेयतेरहितश्रद्वैतसत्ताश्रपणेश्रापविखेइस्थितहै॥ हेसाधो

इकहीमंदरविखेवहुतेमानखसैनकरहि॥ जैसेश्रनकोश्रपणेश्रपणेवि
खेसृष्टभासश्रावतीहै॥ ताकछुश्रापसजेनहै॥ तैसेउनकोश्रपणीश्रपणी
सृष्टभासेगी॥ इसविखेकयाश्रसचर्जहै॥ जोकछुजगतभासताहै॥ सोश्रात्मावि
खेहै॥ श्ररुव्रह्मरूपहै॥ श्रपणेश्रापविखेइस्थितहै॥ कंदंदंतउवाच॥ हेभ
गवनश्रात्मसत्तातोएकहै॥ श्ररुकेवलहै॥ जिसविखेइककहिणाभीनही
परमध्यानरूपशिवपदहै॥ श्ररुश्रद्वैतहै॥ नानाप्रकारकोभासतीहै॥ इह
नासभावकासदहै॥ सोनानानहोकरवास्तवकोभासताहै॥ कंहेवतपउवा
च॥ हेसाधोसर्वशांतरूपहै॥ श्ररुचेतनघनप्रकाशहै॥ नानाप्रकारजोभासती
है सोहोरकोऊनही॥ श्रात्मसत्ताहीश्रपणेश्रापविखेइस्थितहै जैसेस
प्नविखेसृष्टिभासतीहै सोवरणीनही॥ श्रपणाश्रनभवहीसृष्टरूपहोभा
सताहै॥ तैसेइहजगतश्रनभवरूपहै॥ हेसाधोइससृष्टिकेश्रादिश्रद्वैतश्रा
त्मसत्ताथी॥ तिसविखेजोजगतभासिश्रायाहै॥ सोभीतुमउहीरूपजाणो
जैसेसमुद्रहीतरंगरूपहोभासताहै॥ तैसेश्रात्मसत्तासृष्टरूपहोइभास
तीहै॥ जैसेपुरुखसुपनेरहितइस्थानविखेसोयाहै॥ तिसकोवहुतेथभास
जगतमंदिरभासिश्रायातोउहावणिश्राकछुनही॥ श्रनभवश्रकाशही
थभरूपोहोभासताहै॥ तैसेजोकछुतुमकोजगतभासताहै॥ सोश्रपणा
श्रनभवरूपजाणो॥ जैसेश्रकाशविखेशून्यताहै॥ जैसेश्रग्निविखेउस्नता
होतीहै॥ जैसेवरफविखेशीतलताहोतीहै॥ तैसेश्रात्माविखेजगतहै
कोऊजगतकहो॥ कोऊव्रह्मकहो॥ व्रह्मश्ररुजगतविखेभेदनही॥ जै
सेव्रिखश्ररुतरवरइहीवस्तुहै॥ तैसेव्रह्मश्ररुजगतइकहीहै॥ वस्तइके
हीकेदोनामहै॥ द्रिष्टाजगतश्ररुदृष्टीयामनतेश्रतीतश्रात्माकोजाणो श्र
रुजोइनतीनोकेविखेहै॥ सोभीश्रात्माहीकोजाणो॥ श्ररुहेसर्गवलके
छतनही॥ श्ररुनानारूपद्रिष्टश्रावतेहै॥ तोनानारूपनहीभया॥ हेसरा
नहीपरभासताहै॥ जैसेसपनेविखेवडेश्रारंभभीद्रिष्टश्रावतेहै॥ श्ररु
सत्ताभीद्रिष्टश्रावतीहै॥ श्ररुनानाप्रकारकेपदार्थभासतेहै॥ परकछु
हूएनही॥ तैसेइहजगतनानाप्रकारभासताहै॥ परकछुहुश्रानही
सत्वेचिदाकाशरूपहै॥ जैसेइकनिद्राकेदोभिन्नतानहै इकसप्नइकसु
खपतरूपहै॥ सप्नविखेनानातभासताहै॥ श्ररुसुखपतविखेइकसत्ता
है॥ तैसेचितसंवतकेफुरणेविखेनानाभासताहै॥ श्ररुश्रफुरविखेइक
है॥ हेसाधुसभकालविखेइकरूप॥ परप्रमादिकाभेदहै॥ जैसेसुप्नसृष्टिश्र
पणाहीश्रनभवरूपहै॥ परप्रमादिकरभिन्नभिन्नभासतीहै॥ तैसेइहजग
तहै॥ इसकोतोसदाकालउहीभासताहै॥ जैसेपत्रफूलफलटासइक
व्रिछरूपभासतेहै॥ तिसभाव्रिछरूपभासतेहै
होव्रिछकेनामहै॥ श्ररुजोव्रिछकाजानताहै॥ श्रात्मातेइतरकछुने
तैसेसर्वनामरूपकरइसकोश्रात्माहीभासताहै॥ सोहोरनिश्चयजैतन
होभासता॥ श्रादिफुरणेविखेजैसानिश्चाहूश्राहै श्ररुसंकल्पकाश्रधिष्टा
हीरहिताहै॥ इहसभविश्वसंकल्परूपहै॥ तातेजेताकछुसंकल्परूपक
नव्रह्महीसंकल्परूपहोकरभासताहै॥ व्रह्मश्ररुजगतमोभेदनही ए
केजगतभासताहै॥ सोसभव्रह्मरूपहै॥ जैसेव्रिछश्ररुतरदोनोइकवस्तकेनामहै॥ तैसेव्र
कहीवस्तदोनामहै॥ हेसाधजोश्राहवासनामेश्रणचे
तनश्ररुजगतदोनामइकचेतनकेहै॥ तिसकोभी
रहै॥ तिसकोव्रह्मजाणो॥ श्ररुजोश्राहवाणीविखेश्रावताहै॥ जोज्ञानवानहै॥ तिसकोस
तव्रह्मजाणो॥ व्रह्मतेइतरवस्तकछुनही

६४ब

वेब्रह्मही भासताहै॥ अरु अज्ञानीकोंनानात भासताहै॥ जबस्वआत्मअभ्यास
करेगा॥ तबसर्वजगतब्रह्मही भासेगा॥ ऐसीकानामेमोक्षहै॥ हेसाधो नाना
प्रकारजगतहोकरदिखाईदेताहै॥ तोभीवास्तवतेनानाकछुनही॥ जैसेस
मुद्रविखैद्रवताकरकेनानाप्रकारकेतरंगबुद्बुदेचक्रद्रिष्टआवतेहै॥ परजल
तेइतरकछुवस्तुनही॥ जैसेकछुजीवकोलतेद्रिष्टिआवतेहै॥ सोभीम
हामोनरूपहै॥ अवर्णीआकछुनही॥ तैसेजेतेकछुपदार्थद्रिष्टिआवते
है॥ सोसभआत्मरूपहै॥ चितकफुरणेसें नानाभातकेपदार्थभासतेहै॥ पर
आत्मातेइतरकछुनही॥ उहीचिदाकाशज्योकात्योइस्थितिहै॥ अरुकछु
वर्णिआनही॥ जोकछुआत्मातविदिमानभासताहै॥ तिसकाआविदमान
जाणा॥ ब्रह्माविस्नुरुद्रतेआदिलेकरजेकछुजगतभासताहै॥ सोसभस्व
विलासहै॥ जैसेनेत्रदूखणकरकेआकाशविखैतरवरेभासतेहै॥ तैसेब्रह्म
द्रिष्टिकरकेब्रह्माविखैजगतभासताहै॥ वर्णीआकछुनही॥ जैसेसुपन
सुपनविखैमायाहोताहै॥ नहीकोउफुरणानहीफुरता॥ वकूडेतिसी
सुपनसोसुप्रद्रिष्टफुरआवतेहै॥ सोवर्णीकछुनही सुपनरूपहै
परजोसद्रविखैइस्थितपुरुखहै॥ तिसकोसतभासताहै॥ अरुजोअनभव
विखैजागिआहै॥ तिसकोसुपनरूपहै॥ तैसेइहजगतजानेगो॥ आत्मा
तेइतरकछुनही॥ जबजागिकरदेखेगा॥ तबसभचिन्मात्रहीभासेगा॥ अ
नरूपहै॥ अनंतहै॥ सदाअपणेआपविखैइस्थितहै॥ तिसविखैजोजगतभा
सताहै सोसततनही॥ अरुअसतभीनही॥ सतइसकारणतेनही जोअभा
समात्रहै॥ नाशवंतहै॥ अरुअसतइसकीरणतेनहीजोअगटिभासताहै पा
स्तवतेआत्मासोभिन्नकछुनही॥ भावअभावसुखदुखउदेअस्तउहीआ
त्मसत्ताइसप्रकारहोभासतीहै॥ तैसेइकहीनिद्राकेदोअजाएहोतेहै॥ सु
खभीसुपनभीनिद्राकेनामहै॥ तैसेजगतअरुआत्माएकहीसत्ताकेअ
जाएहै॥ जैसेइकहीवायुस्पंदअरुअस्पंददोएरूपहोतीहै॥ तैसेआत्मस
त्तादोनोरूपहै॥ जबसंवेदनजोहैजानणासोतनहीफुरता॥ तबअनिवा
चरूपहोतीहै॥ अरुजवअहंइसभावकोलेकरफुरतीहै॥ तवसंकल्परूपी
सृष्टवर्णीजातीहै॥ अकाशवायुअग्निजलपृथवीतनभासिआवतेहै॥ न
क्षत्रचक्रदेवतामानुखपशुपंछीजलकानीचेचलणा॥ अरुअकाऊर्ध्वच
लणा॥ नानाप्रकाशवानपृथवीइस्थिरधृत॥ इनतेआदिलेकरजोइ
स्थावरजंगमरूपसृष्टहै॥ सोअपणेसुभावसहितभासआवतीहै॥ शु
भअशुभकर्महोतेहै॥ तिसविखैसुखदुखफलकीनेतहोतीहै॥ सोक्या
है॥ आत्मसत्ताहीइसप्रकारहोइभासताहै॥ जैसेतमनोराजकरकेसुपन
गरकल्पलेवै॥ तिसविखैअनेकप्रकारकीचेष्टापरीहोवै॥ सोजबलग
संकल्पहोवेतबलगबडहंसृष्टिइस्थितिहै॥ जबसंकल्पमिटगयातब आन
वसृष्टलैहोजातीहै॥ तोवस्तकछुनभई॥ तैसाअनभवहीसृष्टहोइस्थि
तहोइस्थितभयाहै॥ तैसेइहजगतअनभवरूपहै॥ अरुकछुनही॥ के
दरे॥ उवाच॥ हेमुनीश्वरसंकल्पजोफुरताहै॥ सोफुरवसिमरतकोलै
करफुरताहै॥ ब्रह्माविखैजोमनोराजसंकल्पकीसृष्टहोती॥ उत्पत
सोकिससंस्कारकेकालकरफुरतीहै॥ इहमेरासंसानिवर्तकरो॥ कृदेव॥ पा
वाच॥ हेसाधोइहजोसप्रनसृष्टिहै॥ सोकिसीसंस्कारतेननहीउत्पत
भए॥ अनेककरकेभासतीहै॥ जैससुपनेविखैआपकोसिमरतकहैआजाणता
नाहै॥ सोइसकोपूर्वलासंस्कारसिमरतनानहीहोता॥ अपूर्वहीभासि
आवताहै॥ तैसइहअपूर्वसृष्टिकाभासताहै॥ सोअपूर्वहै॥ किसीसिम
रतकेरनहीहुए॥ सिमरतअनभवजोजगतहीविखैउत्पतभएहै॥ जब

जगतकापुरणातनथा॥ तबसिमरतअरुअनभवभीनथे॥ तबजगता
फुरिआतबइहभीफुरिआए॥ तातेसंस्कारजगतअपूर्वहै॥ असकरप
हाभासताहै॥ जैसेसुपनेविखैआकिसीकालविखैअपणामरणाभीदेख
अरुउसकोकुलचिरकालकोसूलीआवतीहै॥ अतेभासतीहै॥ अरुजा
वजागिउदेताहै किसकोकहै॥ अरुमरतेकिसकोकहै॥ तैसेकोजन्म
रहितताहै॥ नकलरहतीहै॥ तैसेज्ञानवानकोइहजगतभासताहै स
नुककोहरखकीस्मरतकैसकहो॥ हेअसलप्रणहोरकछुवर्णीआनही
आत्मसत्ताहीज्योकीत्योइस्थितहै॥ जिसतइहसर्वजगतहआहै अ
रुजिसविखैइहसर्वहै॥ जोइहसर्वहै॥ सोसर्वात्माहै॥ जोउहीहैतात
सवाकिसकोकहो॥ तातेऐसेजाणकरतुसविचारो॥ तबसर्वदेखतुमा
रेनद्रष्टाहोजावहिगो॥ हेसाधोछ्जोकारकहैसोब्रह्मसरूपहै॥ कर्ताकर्म
करणसंप्रदानउपादानअधिकरणा॥ इहेछ्एकब्रह्मसरूपहै॥ कर्ता
कहीअ॥ कर्मकिकेकरणहाअरुकर्मकहीएजोकरणाहोवै॥ करणकही
एक्रियाकासाधक॥ अरुसंप्रदानकहीएजिसकेनमितहोवै॥ उपादा
नकहीअ जिसतेलेकरकरीअ॥ अरुअधकरणाकहीअ जिसविखैक
रीअ॥ इहसाथइहछेकारकब्रह्मसरूपहै॥ इसविशाकाकर्ताभीब्रह्महै
विशाकासाधकभीब्रह्महै॥ जिसनमितइहविशाहैसोभीब्रह्महै॥ जिस
तेइहविशाहैसोभीब्रह्महै॥ जिसविखैइहविशाहोतीहै सोभीब्रह्महै
हैसोभीअसाजोसर्वात्माहै॥ तिसकोहमारानमस्कारहै॥ हेसाधोति
समसर्वात्माकोअजाणता॥ इहीउसकीपूजाहैपरम॥ असाहीतुमस
जनकरो॥ हेसाधोअबरहोतेतुमजाउ॥ अपणाजोकछुवृत्तांतहैति
सीविखैविचरो॥ अरुतुमकोअपणेवाथवचिंतवनेहोवइ॥ तिनाः
केपासजावहो॥ जैसेकमलोपासनवरेजातेहै॥ अरुइहसभीसमाध
विखैइस्थितिहोतेहै॥ जेकछुअरुइहजवानहैसोभीकेहताहो॥ जजि
सनेकोउासरवपावताहै उहभीसोईकतीहै॥ सुफकोजगतदुःखदा
इकद्रिष्टिआयाहै॥ इसकारणतेमैसमाधविखैजुडताहो॥ हेसाधो
जडहोविसरतायमसभअवस्थातेलहै॥ भेदकछुनही॥ तोभीचित्तकीव
नजोससारकेकषहोतेइहतनहोकरआत्मपदविखैइस्थितहोइरहै
तिसइस्थितिकाजोसुखहै॥ तिसकेसंस्कारककेवकूडुतिसीकाध्यावताहैस
साथविखै॥ तातेतुमजावकुमैइस्थितिहोताहो॥ इतिश्रीकुंदेदेनउप
देशोनामसर्गः॥ कुंददंतउवाच॥ हेरामजीइसकारकेद्विकरउहवकूडु
समाधिविखैजुडगया॥ इश्रीयोअरुमनकीक्रियानेरहितहोगया मानो
कागतऊपरमूरतलिखछोडीहै॥ असाहोगया॥ तदइहमवकूडुजग
एरहेवडेपाहकरप्रकाररहे॥ परउहनजागया॥ तवइहमउहांतेचलेग्रह
णकेयिहआए॥ उनकेग्रिहविखैवडाउत्साहहुआ॥ वकूडुमैसमयाएक्रम
कर्केसोनोभाएमूरगाए॥ अबअहमसेरामिञजीवतारहा॥ वकूडुउहमेरा
मिञभीखिनकहोगया॥ तवमैवकूडुतध्याकवानहूआ॥ जोमेराप्रीतम
भीमरगया॥ अवमैक्याकरो॥ हेरामजीमैविचारकीयाजोवकूडुकेदेस
नयापासजाउ॥ जोमेराउरवनष्टहोवेगा॥ तबगयातोजाइकरतील
सामसपूजेतउसकेपासरहा॥ उसकोमैतरणाएरहापरउहनजागयातो
तीनमासपूजेएसारयातोफेरजागया॥ मैउसकाप्रणामकेकहा॥ हे
मनीश्वरउहतीअपणाअपणाराजकाभीगयाल्लरा है॥ अहमैइकेला
कष्टवानहूआहो॥ तातेतुममेरादुरखनष्टकरो॥ मेरामार्गधारणाआ

याहैं॥ कदंदनपउवाच॥ हे साध मैं तुफकों उपदेश करों भी परतुफ
कों सत्रूपका साक्षात्कार नहोवेगा॥ काहे ते जो अभ्यास तुफसों नहो
वेगा॥ अरु अभ्यास विना साक्षात्कार सत्रूपका नहीं होता॥ मेरा कहणा
भी विअर्थ होता है॥ तातें इहां वेन षहं एका उपाइ तुफको कहता हों
तिसकर तहें मेरे समान होवेगा॥ अनंत आत्मा होवेगा॥ इस वातें रहित
होवेगा॥ हे साध अजोध्या नगरी है॥ तिसका राजा दशरथ है॥ तिसकाग्र
ह विषे रामजी पुत्र है॥ तिस रामजी कों वसिष्ठजी मोक्ष उपाइ उपदे
श करहिगे वडे सभा विषे॥ तहां जाप तुफकों भी सत्रूपकी प्राप्ति हो
वेगी॥ सुसामतु करो॥ हे रामजी जव इस प्रकार उस तपसी मुफ कों क
हा॥ तव मैं उहांतें चल्या तुमारे पास आन ऐटक्या हों॥ जो कुछ तुम सुणा
था सो सभ वृत्तांत मैं कहा है॥ जो कुछ देख्या सुणा सो कहि दीया॥ रा
उवाच॥ हे वसिष्ठजी इह प्रवृत्तांत मैं उसतें सुण्या था॥ मातभ्रम के आगे
कहा है॥ अरु कंददन भी इह तुमारे पास वेठा है॥ अरु इसकों पृछीये
जो सत्रूपकी प्राप्ति इहु ऐहै॥ अथवा नहीं इहुए॥ तुम ही इसकी अवस्था
पृछो॥ वाल्मीक उवाच॥ हे भारद्वाज जव इस प्रकार रामजी कहा॥ तव
वसिष्ठजी जो मुनीयों विषे श्रेष्ठ है॥ सो तिसकी ओर कृपादृष्टि दे
खकर बोलत भए॥ वसिष्ठ उवाच॥ हे ब्राह्मण इह जो मोक्ष उपाइ मैं
कहा है तिसको सुणकर तुं क्या जागत भया है॥ कंदद उवाच॥ हे
सर्व संसियों के छेदणेहारे जो कुछ मैं तुमकों सुणा है तिनमें आवर
णा सो मतन ष्ट हो गया है॥ तुमारे वचनरूपी प्रकाश कर अग्यान अंधकार
का अभाव भया है॥ अरु जो कुछ जाणने जोग पद है॥ सो मैं जाण्या है
जो कुछ पावणे जोगा है सो पाया॥ अभ मैं आपणे सुभाव विषे
स्थित भया हों॥ अव मुफको कल्पना कोऊ नहीं रही॥ मैं अनंत आत्मा
हों॥ नित्त सुद्ध अच्युत हों॥ परमानंद सत्रूप हों॥ सभ जगत मेरा सत्रूप है
हे भगवन॥ अतःपुरु विविषत्ते पेतात्राः सुभाव को संसार था सो
भी तुमारे वचनों कर दूर भया है॥ अरु इक राए विषे तुफकों ब्रह्माइ भा
सता है॥ अरु आत्मतभाव केको दिखाए देता है॥ जैसे अनेक दर्पणों वि
षे अपणा ईमुख भासता है॥ तैसें मुफकों सर्व ठौर अपणा आप ही भा
सता है॥ हे भगवन तुमारे वचन से आदि लेकर सरणों अनेक जन्म श्रव
णा कीये हैं॥ के सर्व वचन तुमने कहे हैं॥ जो परमपावन है अरु सारते
परम सार है॥ आत्मवोध का कारण है॥ तिनके विचार करके मेरी
भ्रांति निवृत्त होगई॥ अरु अपणे आप विषे स्थित भया हों॥ इति श्री
कंददन विश्रांम प्राप्ति याख्यानो नाम सर्गः॥ २६१॥ वाल्मीक उवा
च॥ जव इस प्रकार कंददन कहा तो वसिष्ठजी सुणकर परम उचितव
चन परमपद पावणे का कारण वडुइ कहत भए॥ वसिष्ठ उवाच॥
हे रामजी अब कंददन आत्मपद विषे विश्राम पाया है॥ इसको अवइ
हलामलवत अपणा आप अनभव रूप जगत भासता है॥ आत्मा ही
द्रिशा रूप होकर भासता है॥ अरु आत्मा ही द्रिष्टा रूप है॥ अरु इस ते
वस्तु कछु नहीं॥ अपणा अनभव ही जगत रूप होइ भासता है॥ सो अन
भव सभका साक्षी है॥ सम प्रांत रूप है॥ अनंत है॥ अखंड है॥ सदा ज्योंका
त्यों है॥ हे साधो नाना रूप भासता है॥ पर अनाना है॥ सदा ज्योंका त्यों अ
चेत चिन मात्र है॥ पर सुन नहीं जाती है॥ जिस विषे सुन भी आन होजा
ता है चेतन द्रिश्य रूप जो फुरना है तिससे रहित है॥ इसी कारण ते परमसु

न है॥ वोलना द्रिष्ट आवता है॥ तो भी परम मौन है॥ हे रामजी तिस विषे
जगत कछु वरणा आ नहीं॥ जैसे सुपन विषे पहाड द्रिष्टि आवते हैं॥ सो न
सत हैं न असत हैं॥ तैसे इह जगत सत असत तें विलक्षण है॥ काहे ते जो
कछु वरणा आ नहीं॥ जो कछु भासता है सो सर्व आत्मा है॥ जैसे रत्न का प्रका
श रत्न मन्कार होता है॥ तैसे आत्मा का प्रकाश जगत है॥ जैसे रत्न अरु चम
त्कार विषे भेद नहीं॥ तैसे आत्मा अरु जगत विषे भेद नहीं॥ जैसे समुद्र इ
वताकर के तरंग रूप होइ भासता है॥ तैसे ब्रह्म संवेदन कर के जगत रूप हो
भासता है॥ अरु आदि जो स्पंद फुरिया है सो जगत रूप होकर स्थित भ
या है॥ सो जैसे स्वप्न तैसे इह आ॥ सो कारज कारण भाव ते रहित है॥ जिस
को प्रमादि इह तिसको कारणता कारज भासता है॥ ओसकाते सो ही॥ जव से
जा ग्राक स्यापक नीइ सो वडे पाप आन उदे होते हैं॥ तव इस्थावर रूप हो
ता है॥ वहुड इस्थावर को त्याग कर जंगम समान रूप होता है॥ हे रामजी इस
प्रकार इह ग्यान संवेदन के नसवथी होइ कर नाना प्रकार के रूप धारती है
अरु प्रमादिक के भिन्न भिन्न भासती है॥ पर सत्रूप ते कछु और नहीं होती
सदा अखंड रूप है॥ जब लग प्रमाद होता है॥ तव लग जगत का आदि
अरु अंत नहीं भासता॥ जब प्रमाद नजाता॥ तब सर्व कल्पना मिटजा
ती है॥ हे रामजी जेता कछु जगत भासता है॥ सो कछु नहीं॥ उही ब्रह्म
सत्ता अपणे आप विषे स्थित है॥ जब जाग्रत अवस्था का अभाव होजा
ता है॥ अरु सोवपन आवती है॥ तिस विषे न शुभकी कल्पना रहती है न
अशुभ की कल्पना रहती है॥ उदे अस्त की कल्पना न रहती है न अहेत सत्ता व
हती है॥ जव वहुड तिस विषे चेतनता फुरती है॥ तव सृष्टि की सृष्टि भा
सती है॥ कहु इस्थावर कहु जंगम सृष्टि भासती॥ जिन विषे संवेदन फु
रती है॥ अरु भासती है तिनको जंगम कहीता है॥ अरु जिन विषे संवेदन
फुरी नहीं भासता सो इस्थावर कहीता है॥ पर होर कछु नहीं॥ उह अ
हैत अनभव सत्ता इस्थावर जंगम होइ भासता है॥ तैसे आत्मा अनभव इ
ह जगत होइ भासता है॥ हे रामजी स्वप्न के आदि परम सत्त्व पन सत्ता
है॥ हे रामजी स्वप्न के प्रतिविंव थे॥ तिस विषे संवेदन फुरणा करके जगत भा
सता है॥ सो उह आत्म संवेदन रूप जगत है॥ अरु जिस आत्म सत्ता विषे फुरता है
हो रूप है॥ इतनर कछु नहीं॥ जैसे सरीर के अंग हस्त पादन खकेश आदिक
सभ सरीर रूप है॥ तैसे परमात्मा के अंग हस्त पादादिक जंगम स्थावर अरु
न खकेश आदिक इस्थावर जंगम सभ आत्मा ही रूप है॥ अरु हस्त ते वस्तु
कछु वरणी नहीं॥ जैसे सत्त्वप्त स्वप्न अनभव रूप है॥ जैसे सत्त्व कल्पक र
वी स्वप्न कल्प रूप होती है॥ तैसे इह स्वप्न अनभव रूप है॥ अरु इह जगत कि
सी कारण कर नहीं उपज्या॥ नाते ब्रह्म ही रूप है॥ ब्रह्म के हृदय अपणा विस्व
स्वप्न फुरी है॥ सो क्या रूप है॥ ब्रह्म ही स्वप्न है अरु स्वप्न ही ब्रह्म है॥ ब्रह्म अरु
जगत विषे भेद कछु नहीं॥ पर अग्यान निद्रा के के भिन्न भिन्न भासते हैं
श्री राम उवाच॥ हे भगवन निद्रा के नाक प्रमाण है॥ अरु के तेकाल पर्यंत
रहती है॥ अरु इह दृश्य अपणा विस्व स्वप्न के से फुरी है॥ अरु के से इस्थित है॥
अरु अपणा किसका उसके मिटि है॥ अरु अनंत के सकर है॥ इह जो देवता
असुर आदिक रूप को चित्त प्राप्त हुआ है॥ वसिष्ठ उवाच॥ हे रामजी इह
अग्यान निद्रा अपणा काल विस्व ता अनादि है॥ नहीं जाणीता जे कभ की
भई है॥ अरु अंत भी नहीं जाणीता जे कव लगा रहेगी॥ अग्यान काल वि

व॰
म॰
७२

खिनोइसकाआदिअंतप्रमाणकछुनहींभासता॥अरुबोधसमेइसकाअ
त्यंतअभावदेखीताहै॥अरुचित्तसत्ताकीजोअनेनतास्फुरिहै॥सोइस
मजोअहंतचिन्मात्रआत्मसमुद्रहै॥तिसविषेस्वभावअहंसम
संवेदनफुरतीहै॥तिसकानामचित्तहै॥तिसविषेआगाचितजगतहोता
है॥सुधचिन्मात्रविषेसंवेदनाचितफुरताहै॥तिसविषेजगतहै॥उही
चित्तदेवताअसुरअरुजोनामरूपहोएभासताहै॥नागपिपापचकीटादि
कपरवतनदीचेतनजडसत्ताहीहै॥तिसतेइतरकछुनहीं॥सभचिदाका
शरूपहै॥फुरीकरनानाप्रकारभासताहै॥हेरामजीपरमसुधचिदघ
णसोछमिलिकरविषेअनेकब्रह्मंडोकोधारताहै॥तिससेस्वभावसेवि
अनंतब्रह्मंडफुरतेहैं॥परतिसतेभिन्नकछुनहीं॥जैसेइकपुरुषस्वपनेवि
केताहै॥तिसकोसुपनेविषेअनेकजीवभासआवतेहैं॥तिनजीवोविषे
अपणेअपणेसुपनेकीसृष्टिफुरतीहै॥सोअनेकसृष्टिहोजातीहै॥तैसेआ
त्मचिदअणुविषेअनंतसृष्टिफुरतीहै॥परकछुआत्मसत्तातेइतरनहीं
वर्णिआ॥जैसेसूर्जकीकिरणोविषेअनंतत्रिसरेणहोतेहैं॥सोसूर्जस्वरू
पतेहैं॥चिदअणुतेसप्रमात्मासूर्जकेस्वरूपहै॥तिनत्रिसरेणोनेभीसृष्टि
चिदअणुविषेअनंतसृष्टिअपणीयाअपणीयाफुरतीहैं॥हेरामजी
जबलगचित्तफुरताजाताहै॥तबसृष्टिकाअंतनहींआवता॥असरव
जगतभ्रमइसआगेदेखहै॥अरुसतस्वहीआगेदेखिगा॥जबचित्तफुरणे
रहितहोताहै॥तबजगतकल्पनामिटिजातीहै॥जैसेसुपनेविषेसृष्टि
भासतीहै॥बडेविवहारहोतेहैं॥जबजागउठताहै॥तबसुपनेसृष्टिविवहा
रकीकल्पनामिटजातीहै॥अरुअहंतअपणाआपहीभासताहै॥तैसे
चित्तकेटहिरनेसभभ्रममिटिजाताहै॥हेरामजीसूक्ष्मचिदअणुभी
इसकीसंगिआनबहूएहै॥तबइसकोचित्तकासंबंधहूआहै॥तबचित्त
कोअपणेस्वभावविषेस्थितकरणा॥तबदेहतेकलनासूक्ष्मस्थूल
भावमिटजावगी॥अरुसूक्ष्मजोइसकोसंगिआहै॥सोयविज्ञभावके
कोहै॥जोइहीयोविषेनहीं॥इसकरअणहोताहै॥अरुसूक्ष्मअणोविषे
आप्याहूआहै॥इसकरसूक्ष्मअणकहीताहै॥अरुअनंततइसकेकहै
जोसभकोधारहाहै॥अरुइहजगतक्याहै॥हेरामजीइहजगतअभा
समात्रहै॥जैसेमारुथलविषेजलाभासहोताहै॥तैसेआत्माविषे
जगतभासताहै॥इहजगतहीनहीं॥तोइसकाकारकौणकहीये॥आ
दिस्वरूपअकारणफुरीहै॥वहुडइसविषेकारजकारणभासणल
गे॥सोअभासकीद्रिडताहुईएहै॥जैसेसुपनेविषेआदिस्वरूपअकार
णबीजविषेकुलालमाटीघटइकदेफुरिआवतीहै॥तबउससुपने
कोद्रिडताहोजातीहै॥तबकारजकारणभासतेहैं॥जैसेईआनपडा
है॥तिसीकोद्रिडभासतेहैं॥तैसेअज्ञानीकोकारजकारणद्रिडभास
तेहैं॥ज्ञानवानकोसभअपणाआपहीभासताहै॥जैसेजागेसुपनेसृष्टि
अपणाआपहीभासतीहै॥जैसेहीथाहोरनाकछुनहींथा॥तैसेज्ञा
नवानकोसभजगतअकाशरूपभासताहै॥पृथवीआपतेजवायुअ
काशदेवतामनुष्यपशुपंछीपर्वतब्रिछनदीइस्थावरजंगमजे
ताकछुजगतहै॥सोसभअकाशरूपहै॥संवेदनफुरनेकरइहअनि
ष्टभासतेहैं॥वास्तवतेइतरकछुनहीं॥हेरामजीइहजगतसभवि
तविषेस्थितहै॥जैसेकसोफलरूपभविषपनलीयाकल्पी॥
पनलीयाकीहोइपड़ीहै॥जोसिल्पीकचित्तविषेपनलीफुरती

सोअकाशरूपहै॥अरुजोथंभेविषेकल्पीहैसोभीथंभहीरूपहै॥थंभवि
षेइस्थितरूपपनहै॥अरुसिल्पीकेचित्तविषेस्थितपडीकतीहै॥हेरा
मजीहोरनाकछुनहीं॥थंभहीरूपहै॥जोसिल्पीकेचित्तविषेहै॥सोक
ल्पनामात्रहै॥तैसेचित्तरूपीसिल्पीकीकल्पीजगतरूपीकल्पनामात्रहै
आत्मरूपीथंभविषेकल्पीहै॥आत्मातेइतरकछुनहीं॥जैसेपटऊपरमू
र्तलिखीहोवेसोमूरतिकारूपपटहीहै॥पटतेइतरकछुनहीं॥उहपटही
मूरतरूपहोभासताहै॥तैसेइहजगतआत्मातेइतरकछुनहीं॥आत्माही
जगतरूपहोकरभासताहै॥आत्माअरुजगतविषेभेदकछुनहीं॥जैसे
ब्रह्मअकाशरूपहै॥तैसेजगतअकाशरूपहै॥जगतरूपअथारहै॥ब्रह्म
तिसविषेवसतेणहोताहै॥अवब्रह्मरूपअथारहै॥जगतविषेवसणाहोता
है॥हेरामजीजैसेप्रह्है॥जगतविषेविद्याअरुअविद्यारूपसासभसंक
ल्पकररचेतेहैं॥होरवस्ततेसभआत्मरूपहै॥समतामतत्तानिविकारता
इसतेलेकरअरुइनतेविपरीतअविद्यारूपसोसभइकरूपहै॥इकहीवि
विषफुरतीहै॥अरुइकहीरूपहै॥जैसेसप्तजगतअनुभवरूपअनुभवविष
स्वइस्थितिहोताहै॥सोसर्वआत्मरूपहोताहै॥तैसेइहजगतसर्वब्रह्म
रूपहै॥ब्रह्मतेइतरनाकछुवरोकीकल्पनातज्ञाताकीकल्पनाहै॥ब्रह्म
सत्तानिविकारअपणेआपविषेइस्थितिहै॥तिसविषेनकारणाहै॥ना
काराजहै॥जैसेतालनदीमेइकहीजलहोताहै॥तैसेजगतसाराब्रह्म
पड़ेहै॥रा उ च॥हेभगवनअरुआपकेकहनेतेप्रतक्षपापतेहै॥कारण
विनातेकारजपापतानहीं॥तमकैसेकहतेहोजेकारणकारजकोडानहीं
व ह च॥हेरामजीसर्वचिदाकाशआत्मसत्ताकाकेवलजगतहो
ताहै॥जैसेसमुद्रविषेतरंगफुरतेहैं॥तैसेआत्मसत्ताविषेजगतफुरते
है॥जैसेतरंगजलरूपहोतेहैं॥तैसेजगतआत्मरूपहै॥आत्माइतरक
छुनहीं॥जैसेआदिपरमात्मानेस्वरूपकाफुरणाहूआहै॥तैसेहीएस्थितिहै
अनेकप्रकारकीवासनासे
अन्यथानहींहोता॥सभजगतसंकल्परूपहै॥तिनकोउहज
भेदनविषेफुरतीहै॥जिनकोसरूपकाविस्मरणभयाहै॥
गतसरूपहोभासताहै॥जबउनकोविचारउत्पनहोवेउहीकालइहजि
सकालविषेविचारउत्पनहोताहै॥तिसीकालविषेअज्ञाननिद्राकाअ
भावहोताहै॥हेरामजीजबविचारअभ्यासकरकेमनकोतदरूपकरतीहै॥न
वइसकोजघाभूतदर्शनहोताहै॥अरुसंसारगोब्रह्मलाडअपणाआपहीभा
सताहै॥काहेतेजोअपणाआपविषेभासतेहैं॥जोसर्वकाअधिष्ठानआ
त्मसताहै॥तिसीविषेइसकोअहंप्रतीतहोतीहै॥इसकारणतेअपणाविषे
खिस्वछाभासतीहै॥जैसास्यदफुरताहै॥तैसाहीउसकासिद्धहोताहै॥ति
गावरणाद्रिष्टीहोताहै॥निरावरणद्रिष्टिकरसर्वसंकल्पसिद्धहोताहै॥का
हेतेजोइहजगतसभआत्माविषेसंकल्पकारचाहूआहै॥तिसविषे
सकोअहंप्रतेहूएहै॥हेरामजीजोसंकल्पउसकोउठताहै॥तारहकारजे
अमेहोवेतैसेहीहोताहै॥हेरामजीजोसुधसंवेदनविषेसंकल्पहोताहै
सोअहोभासताहै॥सोसंकल्पहीरूपहै॥संकल्पतेइतरकछुनहीं॥इसकारण
तरअरूपकाहोरकारणकोउनहीं॥वरअरुआपभीसंकल्परूपहै॥अरु
तिसकरजोपदार्थउत्पनिहूआहै॥सोकिसीकारणसमवायएकरतानहींउ
त्पनहूआ॥संकल्पहीकरहूआक्या॥तातेसभअकारणरूपहै॥अरुब्रह्मरूपी
समुद्रकेतरंगपडेउठतेहै॥होरकारणकारजमेंतुककोक्याकहै॥सभजग
तब्रह्मरूपहै॥हेतअरुइककीकल्पनाकछुनहीं॥हेरामजीइसकोनासदाब्र

व॰ म॰ ७३

हुआ सत्‌ जो ही भासती है॥ कारण कारज कोऊ नहीं भासता॥ जैसे स्वप्न विषे
किसी के ग्रह पुत्र उत्पन्न भया वडे उत्साह को प्राप्त हुआ॥ जब जाग्रत
का संस्कार चित्त आणिआ॥ तब उस का पिता भी उपजो नहीं पुत्र के सं
ही भ्रम प्रगरण आप ही होजाता है॥ तैसे इहां कारण भी भासता है॥ तैसे का
रज भासता है॥ अरु जो स्वप्न विषे भासा पड़ा है॥ तिस को जैसे भासता
है तैसे ही होता॥ जैसे वर अरु श्राप का आश्रा संकल्प है॥ संकल्प ही वर
अरु श्राप होइ भासता है॥ कारण भी होता है॥ अरु कारज भी भासता है
अरु जिन को स्वसंवेदन मात्र पुणता भई है॥ सो निरावरण है॥ तिन विषे जे
सा फुरणा अभास फुरता है॥ तैसा ही सिद्ध होता है॥ रामोवाच॥ हे भग
वन् एक प्रश्न है जिन को आवरण है॥ अरु जिन का संकल्प जैसे फुरता
है वर देवहि अथवा श्राप देह हि॥ तैसे ही हो जाता है॥ स रूप का सात्त्वाकार उ
न को नहीं भया॥ अरु शुभ कर्म उन विषे प्रतेछ पाए ते है॥ तो सभ ही कर्म का र
ण भए॥ वर अरु श्राप को न भसता है सो चित्त यातक ही ती है॥ तिन चित्त थान वि
षे जो अभास फुरणा है॥ सो संवेदन जाणता कहीता है॥ सो संवेदन जड ऊती
है॥ तब जाणता है जैसे ब्रह्मा हो॥ पिता माता जगत को॥ तब संवेदन ही आ
पको जगत का पिता माता जानत भए को॥ तिसी आराम तारा जकल्पा॥ तब
पंच भूतों का जानणा हुआ॥ जो शुन्य रूप प्रकाश है सो पंच रूप वायु है॥ उस्न
रूप अग्नि है॥ द्रवता है सो जल है॥ कठोर रूप पृथ्वी है॥ वहुड देश अरु काल की
कल्पना भए॥ इस्थावर जंगम पदार्थों की कल्पना करी वेद शास्त्र थ में अर्थ में
का फुरणा हुआ॥ तिन विषे इह तिथ्या हुआ॥ सो इह तपसी है इस तन पकीया
है॥ इस को के इहते वर होवे॥ होर जो कछु कहे सो होवे॥ सत्‌ रूप ते सात्त्वाकार ते
रहते है॥ तो भी इस का कहा होवे॥ इह तप का फल है॥ आदि का संकल्प श्रेम
है॥ तो होर वर श्राप का कर्ता न उपजी नहीं॥ इस का अधिष्ठान उही संवेदन है
जिसने आदि संकल्प फुरिआ है॥ हे रामजी वर अरु श्राप संकल्प रूप है॥ सं
कल्प संवेदन सो फुरिआ है॥ हे रामजी वर अरु श्राप संकल्प रूप है॥ संकल्प
संवेदन आत्मा का अभास है॥ तो से कारण क्या कहो॥ अरु कारज क्या कहो॥ अ
रु जगत क्या कहो॥ आत्मा का अभास संवेदन ब्रह्मा है॥ तिसने आराम कल
पुर सृष्टि रची है॥ इह सभ मम आदिक समऊ सुकसम कल्प विषे है॥ सो ब्रह्मा जी
के सा है॥ निराकार अरु निराधार है॥ निर्मल अरु इस्थित है॥ कछु आकार उन
ही प्राप्त भया॥ ताते इस की विश्व भी उही रूप जाणा॥ हे रामजी जैसे इस का
स्पंद है आदि है तैसे इस्थित है अन्यथा नहीं होता॥ जो उही विपर्जे करता से
वे॥ होर सो नहीं होता॥ अग्नि विषे उस्नता॥ वायु विषे स्पंद इत्यादिक जो प
दार्थ है सो अपणा आपणा स्वभाव विषे इस्थित है॥ अरु इह मको सम ब्रह्म रू
प है॥ इस सरीर विषे होइ सा सनेहे नर नहीं होता॥ तैसे इहम को ब्रह्म ते अ
नन्य ही भासता॥ जैसे वृद्ध रावुर वे तिन का ते इतर कछु नहीं होता॥ जैसे काष्ट
की पुतली काष्ट ते इतर नहीं होता॥ तैसे जगत ब्रह्म ते इतर नहीं होता॥ हे
रामजी जैसा कछु जगत तुझ को भासता है॥ सो सभ ब्रह्म सरूप है॥ ब्रह्म
ही फुरणा कर नाना प्रकार जगत होकर भासता है॥ जैसे समुद्र ही द्रवता कर
तरंग बुदबुद फेन रूप होइ भासता है॥ तैसे ब्रह्म संवेदन कर जगत रूप होइ प्र
भासता है॥ परब्रह्म ते इतर कछु नहीं॥ जैसे समस्त विश्व अपणा आप ही ज
गत रूप होइ भासता है॥ पर कछु होर नहीं होता॥ तैसे ब्रह्म ही इह जगत होइ प
भासता है॥ जैसे पवन ते ज्ञान फुरता है॥ सो कारण के कारण के होइ भासता
है॥ सव ब्रह्मादि के अंग रेह ब्रह्मता है॥ तब सो मन रूप होता है पर सत ते इतर क

छु नहीं होता॥ तैसे जब चित्त फुरता है॥ तब नाना प्रकार का जगत भासता है
जब ठहरता है॥ तब सब जगत एक अद्वैत रूप हो जाता है॥ पर ब्रह्म ते इतर
कछु नहीं होता॥ ब्रह्म ही इस्थावर जंगम रूप होइ भासता है॥ जहां फुरने ट
का संबंध होता है॥ तहां जगत रूप भासता है॥ जहां फुरने टका संबंध नहीं
होता अरु नहीं भासता॥ तिस को जगत कहीता है॥ पर आत्मा विषे दोनो न
ल है॥ जैसे एक ही हाथ की अंगुली है॥ जिस को उसतता अरु पवा पौन लना
का संजोग होता है सो फुरकने लगती है॥ अरु जिस को पौन उस का संजोग है॥
गन ही होता सो न ही फुरकती॥ तैसे जिस प्रकार को पुरुष्ट का का संजोग नहीं
सो फुरकता है॥ चेतनता भासती है॥ अरु जिस को पुरुष्ट का का संजोग नहीं
तिस विषे जडता भासती है॥ सो जड भी आगे दो प्रकार का है॥ एक तो काठ पुर
ष्ट का का संजोग है॥ अरु जड है॥ एक ना काठ पुर का का संजोग नहीं अरु जड है
त्रिछ्य पवन को पुरुष्ट का का संजोग है॥ पर प्राण स्वरूप जडता विषे लीन
हो गए है॥ तिस कारण ते जड भासते है॥ अरु तिन को पुरुष्ट का तैरवन है॥ इ
स कारण ते जड है॥ पर वास्तव ते इस्थावर जंगम इष्ट अनिष्ट वस्तु आपद पा
काल पदार्थ सभ ही ब्रह्म रूप है॥ ब्रह्म सत्ता ही ऐसे इस्थित भए है॥ जैसे अप
णा अनुभव संकल्प नगर नाना प्रकार भासता है॥ पर संकल्प ही रूप है॥ नाना
कछु भया नहीं॥ जैसे स्वप्न का कोसेना अनेक प्रकार की होती है॥ पर तिन का
होइ रूप है॥ तिन का ते इतर कछु नहीं॥ तैसे सर्व अर्थ को धारणा होरी चेतन आधान
नाना प्रकार के आकारों को प्राप्त होती है॥ पर चेतन ते नाने इतर नहीं होती॥ हे रा
मजी धान उस को कहते है अर्थ को उठावे॥ सो हे रामजी जैसे नेत्र नाए पदार्थ
भासते है॥ सो सम अर्थ रूप है॥ अरु वस्तु रूप जो थान है॥ सो आत्म सत्ता है॥ तैसे
ते दोनो अर्थ धारे है॥ इक स्वप्न अर्थ एक बोध अर्थ॥ स्वप्न अर्थ विषे नाना नाना भा
सती है॥ बोध अर्थ विषे इक अद्वैत सत्ता भासती है॥ जैसे जो थान मिलन अव
विछ्र रन एक ही थान दो अर्थ को धारती है॥ ता को सम अर्थ है॥ तो पवस्वर प्रति
योगी था है॥ पर इक ही ने धारे है॥ तैसे स्वप्न अर्थ अरु बोध अर्थ इन दोनों को आ
त्म सत्ता ने धारे है॥ जैसे तरंग बुदबुद जल रूप है॥ तैसे जगत ब्रह्म रूप है॥ जो ज्ञा
नवान है॥ तिन को सभ ब्रह्म रूप भासता है॥ अरु जो अज्ञानी है तिन को नाना
भासती है॥ नानात्व सुभाव निश्चा होकर दृढ जैसे भव ब्रह्म ही रूप है॥ इन तन नहीं
इ श्री व सिष्ठ पा ने म गः रा उ वाच॥ हे भगवन् जो सर्व
ब्रह्म ही है तो नाने क्या है॥ अरु नाना प्रकार के पदार्थ क्यों भासते है॥ अरु ति
स विश्व नु स कहते हो जो जगत संकल्प कर रचते है॥ तो इह भगवन् इह जो
पदार्थ असत्व रूप है॥ जिन की सरवाक रीन ही जाती॥ अरु इन पदार्थों का स
भाव इक इक का अचल रूप होकर किं कर इस्थित है॥ इह कृपा करके हो॥
अरु सर्व देवनों विषे सूर्ज का तेज क्यों अधिक है॥ सभ देवनों ते अरु इक ही
सूर्ज विषे दिन छोटे वडे क्यों होते है॥ अरु रात्र छोटी वडी क्यों होती है॥ इह वि
चित्रता क्या है॥ व ष्ठ वे॥ हे रामजी सुध चिन्मात्र सत्ता विषे अकस्मात
ते अभास फुरिआ है॥ तिस अभास का नाम नेत है॥ अरु स्वप्न भी अभास मात्र
है॥ किसी कारण के के न हो उपजी॥ जिसके आश्रय अभास फुरता है॥ सो उहा
वस्तु अधिष्ठान नहीं होती है॥ तिस कारण ते जगत सभ ब्रह्म रूप है॥ चि
न्मात्र सत्ता अपणी आप विषे इस्थित है॥ न उदे होती है न अस्त होती है॥ प्र
णाम ते रहित सदा अद्वैत इस्थित है॥ न तिस विषे जाग्रत है॥ न स्वप्न है॥
न सुखोपत है॥ तीनो अवस्था अभास मात्र है॥ चेतन सत्ता विषे इन ते रहित है न
नही वाणी आ॥ इह तीनो उसका सुभाव प्रकाश रूप है॥ होर उसते न इतर के
छ नहीं॥ जैसे आकाश अरु शुन्यता विषे भेद नहीं॥ वायु अरु स्पंद विषे भेद

व. म.
६४

नहीं ॥ अथ अरु उस्सता विषै भेद नहीं ॥ कहूं सुरगंधता विषै भेद नहीं
जैसे सुजाग्रत आदिक जगत अरु ब्रह्म विषै भेद नहीं ॥ हे रामजी सुधचिनमात्र
विषै जो चिनभाव हुआ है ॥ तिसमै भावि खेचनता आभास फुरिआ है ॥ तिस
विषै जैसा संकल्प फुरिआ है ॥ तैसे इस्थित भया ॥ इस प्रकार होवै ॥ अरु प
ना काल रहै ॥ उस संकल्प निश्चै का नाम नेत है ॥ जैसे आदि संकल्प दृढ भया है
तैसे अबलग पदार्थ इस्थित है ॥ प्रथवी जल तेज वाय अपणे अपणे भाव वि
षै इस्थित है ॥ अपणे सुभाव को त्यागते नहीं ॥ जब लग उसकी नेत है ॥ तब
लग तैसे ही इस्थित है ॥ जगत सत्ता विषै ॥ हे रामजी इसी का नाम नेत है ॥ जो
जैसे आदि संकल्प धारा है ॥ तैसे ही इस्थित है ॥ अरु वस्तु ते क्या है आभासरूप है ॥ आ
काशमात्र ते इह आभास फुरिआ है ॥ सो आभास भी किसी हस्त अंगा विषै नहीं फु
रिआ है ॥ जैसे समुद्र के किसी इस्थान विषै तरंग फुरता है ॥ किसी ठांइ विषै
बुदबुदा फुरता है ॥ सरवग समुद्र विषै नहीं फुरते ॥ तैसे जहां संवेदन विषै ज
सा फुरना होता है ॥ तैसे ही इस्थित होता है ॥ सो नेत है ॥ जैसे तरंग बुदबुदे सम
मुद्र समुद्र ते भिन्न नहीं ॥ तैसे नेत आत्मा ते भिन्न नहीं ॥ जैसे द्रवता के समुद्र
तेन तरंग फुरते है ॥ तैसे आत्मा विषै संवेदन करके नेत अरु जगत फुरते है ॥ सा
उही रूप है ॥ आत्मा ते भिन्न नहीं ॥ जैसे कहां चंद्रमा का प्रकाश है ॥ सो चंद्रमा सु
रू चंद्रमा का प्रकाश का भिन्न नहीं ॥ तैसे आत्मा ते जगत भिन्न नहीं ॥ इह वि
श्व आत्मा का सुभाव है ॥ जैसे एक ही काल को वहुत संग्या होती है ॥ दिन प
क्ष मास वरष जुग कल्प इस ते आदि लेकर वहुत नाम है ॥ पर काल तो एक
ही है ॥ तैसे भिन्न भिन्न जगत के नाम है ॥ सो सभ ब्रह्म ही है ॥ हे रामजी जब संवे
दन चेतन के सन्मुख होती ॥ तब प्रथम शब्द तन्मात्रा फुरती है ॥ तिस शब्द त
न्मात्रा ते आकाश उपजता है ॥ आकाश का शून्यता सुभाव है ॥ जब फेर स्पर्श
तन्मात्रा को चेतिआ तिस ते वायु फुरि आवती है ॥ वायु का स्पंद सुभाव है ॥ फेर
रूप तन्मात्रा को चेतना भया ॥ तब तिस ते अग्नि प्रगट भये है ॥ अग्नि का उष्ण सुभा
व है ॥ बहुड रस तन्मात्रा को चेत्या ॥ तब तिस ते जल प्रगट होता है ॥ जल का द्र
वता सुभाव है ॥ बहुड गंध तन्मात्रा चेतीते तब प्रथवी फुरि आवती है ॥ प्रथवी
का गंध सुभाव है ॥ इस प्रकार पंच भूत फुरि आए है ॥ हे रामजी आदि जो शब्द
तन्मात्रा फुरी है ॥ सो जेतक शब्द समूह वाणी है ॥ सो एजु ऋग आदि वेद तिस को
उहु वीज है ॥ सभ तिस ते उत्पन हुए है ॥ पद अरु पदार्थ वाक वेद अरु शास्त्र
पुराण सभ तिस ते फुरे है ॥ इस प्रकार प्रथवी आप तेज वायु अकाश इनका जो
शोकारज सुभाव है ॥ सो सभ का बीज आदि इनको तन्मात्रा है ॥ तिस तन्मात्रा का
बीज उहु संवेदन सत्ता है ॥ हे रामजी इन तत्तो की खाणि सुणि ॥ प्रथवी तो अणमो
होती है ॥ अरु इक डला भी होती है ॥ सो प्रथवी तो एक है ॥ अणभी उही है अरु ड
ला भी उही है ॥ तैसे सर्व तत्तो का समझ देखणा ॥ प्रथवी की खाणि भूपीठ है ॥
सो सर्व प्राणी भूत जीवन का धारती है ॥ अरु जल खाणि समुद्र है ॥ सो सर्व पदार्थो
विषै रस होकर इस्थित भया है ॥ अग्नि का जो तेज प्रकाश है तिसकी खाण सूर्य ता
रे है ॥ अरु सर्व ही स्पंद रूपो की जो खाणि सो सम्हिता है सो पवन है ॥ अरु स
र्व जीनेहारे पदार्थो की जो खाणि है सो आकाश है ॥ इस प्रकार इह पांचो भूत है
सो संकल्प ते उपजे है ॥ जैसे बीज ते अंकुर उत्पन होता है ॥ तैसे इह भूत संक
ल्प ते उपजे है ॥ संकल्प संवेदन सो फुरिआ है ॥ अरु संवेदन आत्मा का आ
भास है ॥ सो आत्मा अद्वैत है ॥ अरु अचिन्त है निर्विकल्प है ॥ सर्वदा अपणे आप
विषै इस्थित है ॥ तिसके आश्रय संवेदन आभास फुरी है ॥ बहुड संवेदन सो सं
कल्प फुरिआ है ॥ संकल्प करि जगत बणाया है ॥ जैसे समुद्र विषै तरंग
फुरता है ॥ अरु समुद्र ही विषै लीन होता है ॥ तैसे संकल्प विषै जगत उप

ज होता है ॥ बहुड संकल्प ही कर लीन होता है ॥ जैसे तरंग जल ही रूप है
तैसे प्रथवी जल तेज वायु अकाश सभ चेतन ही रूप है ॥ जो तिनका कछु पदार्थ
देखणा अरु सुणना विषै आवता है ॥ अरु नहीं आवता सो सभ चेतन रूप है आ
त्मा ते इतर कछु नहीं ॥ उही आत्मा इस प्रकार होइ भासता है ॥ सुपने विषै
अपणा ही अनभव नाना प्रकार पदार्थ होइ भासता है ॥ पर कछु बणिआ न
हीं ॥ नाना प्रकार भासता है ॥ तो भी अनाना है ॥ तैसे जगत नाना प्रकार भा
सता है ॥ तो भी कछु बणिआ नहीं ॥ जैसे एक निद्रा के सरूप है ॥ इक सुपन रू
प है ॥ इक सुखुपत रूप है ॥ जब फुरना होता है ॥ तब सुपन सृष्टि भासि आवती है ॥ जो
व फुरना निवरत होइ जाता है ॥ तब सुखुपत होती है ॥ जैसे इक वायु के दो सरू
प है ॥ स्पंद होती है ॥ तब भासती है ॥ अस्पंद होती है ॥ तब भासती नहीं ॥ तैसे
जब संवेदन फुरती है ॥ तब जगत भासता है ॥ संवेदन नहीं फुरती तब जग
त नहीं भासता ॥ इसी का नाम महाप्रलै होता है ॥ सो दोनो आत्मा का अभि
मत है ॥ हे रामजी संकल्प सरूप जो है ब्रह्मा बालक तिस ने आत्मा विषै आ
काश रचा है ॥ प्रथवी रची है ॥ अकाश विषै नक्षत्र चक्र रचा है ॥ हार सरूप
क्रम रचा है ॥ जैसे बालक अपणे विषै संकल्प करे ॥ तैसे ब्रह्मे रचा है ॥ इक गो
गोल रचा है ॥ तिस के ऊपर नक्षत्र चक्र है ॥ तिस चक्र के दो ध्रुव है ॥ सो अन
ड आदि निरन्तर इस्थित है ॥ तिस ते सूर्य उदे होता है ॥ सो इह चड़ाइ दिन अरु
रात्र का प्रमाण है ॥ जब सूर्य नक्षत्र चक्र के उतराइ उदे होता है ॥ तब दिन
वडे होते है ॥ अरु जब दखण की ओर उदे होता है ॥ तब दिन छोटे होजाते है ॥
ज्यों ज्यों क्रम करके सूर्य उत्तर के अग्र की ओर उदे होता है ॥ त्यों त्यों दिन छोटे ते
जाते है ॥ रात्र वधती है ॥ बहुड उहे मकर ते तउ प्रान्त पाइ है
लेकर सूर्य जो क्रम करके ज्यों ज्यों उतर की ओर उदे होता है ॥ त्यों त्यों दिन वडता जा
ता है ॥ अरु रात्र अरखाइ … ते लेकर पोह के ॥ रात्र अजत घटती जाती है ॥ बहुड रात्र
घटती है ॥ दिन वडता जाता है ॥ जब मध चक्र के सूर्य उदे होता है ॥ तब दिन अरु रा
त्र समान होजाता है ॥ सो काश संवेदन रूप जो ब्रह्मा है ॥ तिसी का संकल्प विलास
है ॥ जैसे शिल्पी शिला विषै पुत्रली आकल्पता है अरु चेष्टा करावता है ॥ सो बणा
आ कछु नहीं शिला ही अपणे सुभाव विषै इस्थित होती है ॥ तैसे चिनरू
पी शिल्पी आत्म रूपी शिला विषै जगत रूप पुतली आकल्पी है ॥ पर कछु बणि
आ नहीं ॥ ब्रह्म सत्ता सदा अपणे आप विषै इस्थित है ॥ जब संवेदन चेतती है
तब विश्व आकार होइ भासता है ॥ जब रूप देखणे की इच्छा होती है ॥ तब चक्षु इंद्री बणि
जाती है ॥ उह रूप को ग्रहण करती है ॥ जब शब्द सुणने का संकल्प फुरता है ॥ तब
श्रवण इंद्री बणि जाती है ॥ उह शब्द विषै को ग्रहण करती है ॥ जब स्पर्श की
इच्छा होती है ॥ तब त्वचा इंद्री बणि जाती है ॥ उह स्पर्श को ग्रहण करती है ॥ जब ग
ंध की इच्छा फुरती है ॥ तब घ्राण इंद्री बणि करि गंध को ग्रहण करती है ॥ जब रस की
इच्छा होती है ॥ तब रसना इंद्री प्रगट कर स्वाद को ग्रहण करती है ॥ जब अपणे व
पु को देखणे को ओर चेतती है ॥ तब अपणा साथ वपु को देखती है ॥ तिस वपु वि
षै प्राण फुरते देखती है ॥ हे रामजी देखणा सुणना रस लेना स्पर्श करणा वा
लु गंध लेवणी ॥ जहां जहां इंद्री अपणे विषयो को ग्रहण करते है ॥ सो दे
श है ॥ अरु जिस विषै को ग्रहण करती है सो पदार्थ है ॥ अरु जिस समे ग
ग्रहण करती है सो काल है ॥ इस प्रकार देश काल पदार्थ हुए है ॥ बहुड इह सु
मेरु ॥ इस क्रम करके कर्म भासणे लगा ॥ हे रामजी इस प्रकार संवेदन फुरिकर जगत
को रचा है ॥ शरीर को रचकर इह अन्तर इंद्रियो ग्रहण करती है ॥ जो तू कहे इंद्री तो भि
न्न भिन्न है ॥ अरु अपणा अपणा विषै याको ग्रहण करती है ॥ सर्व इंद्रियो को इह अ
विद्या जीव का कर्म होता है ॥ इस का उत्तर सुण ॥ हे रामजी जैसे सूत्र इक होता है

व॰
म॰
७५

है॥ अरु मनके वक्रनहोनेहै॥ सो सर्वकाआत्मा स्थनहोताहै॥ जैसे अहंकार अ
पीसत्तहै॥ अरु सर्व इंद्रीअपीसनकेहै॥ इसकारणते अहंकार जीव आभ्यन
इंद्रियोंके सुखसाथ सुखीहोताहै॥ अरु इंद्रियोंके दुःखसाथ दुःखीहोताहै
अरु इंद्रियां आपहीनेकार्जेकारण करणेको समर्थनहीहोती॥ अहंकार
जीवकी सत्ताकरिके चेष्टाकरतीहै॥ जैसे शस्त्रको आपने वाजरणेको समर्थनातन
हीं॥ जब पुरुष खवजावताहै तो आपशब्दकरतीहै॥ तब शस्त्रवाजताहै॥ तैसे इंद्री
योंकी चेष्टा अहंकारकरि होतीहै॥ हे रामजी वासनाते मनकोदूरकीजै॥ तदनके
विर्षेहै॥ तुम मनका फुरणाहै॥ जब संवेदन फुरतीहै॥ तब तिसी संसारकोधारती
है॥ जब संवेदन निर्वाण होतीहै॥ तब सब कल्पना मिटजातीहै॥ २६॥ इतिश्री
जीवसंग्रारभावर्तननामसर्गः॥ वसिष्ठउवाच॥ ॐ हे रामजी इस सर्वनकल्पनाका
क्रम सेतुमकोकहाहै॥ जैसा कछु जगत देखीताहै॥ सो सर्व संवेदनरूपहै॥
शुद्धचिन्मात्रसत्ताका जो आदि आभास चेतनताका लक्षण चित अहं अस्मि
तिसका नाम संवेदनहै॥ तिसके पते प्रजाएं हुएहै॥ कोउ ब्रह्मा कहतेहै॥ को
उ विष्णु कहतेहै॥ कोउ प्रजापत कहतेहै॥ इनने आदि लेकर प्रजाएं हुएहै सं
वेदनके॥ तिस संवेदन आगे संकल्प विस्तार रचीहै॥ सो कैसे विस्तारहै जो अकारण
है॥ किसी कारणकरके वरणी नहीं॥ काकतालीवत अकस्मात ते अभास फुरि
आहै॥ अकारसहित द्रिष्ट आवतीहै॥ परम अविवहारहै॥ तो विवहारसहित दि
ष्ट आवतीहै॥ परम अविवहारहै॥ हे रामजी संवेदन जोहै॥ सो अनवाहकरूपहै
तिसने आगे विस्तार रचीहै॥ सो भी अनवाहकरूपहै॥ पर अज्ञानीको संकल्प
की दृढताकरिके अधभूतकरूप होइ भासतीहै॥ जैसे संकल्पनगर स्वप्नपुर
संकल्पते भिन्न कछु नहीं॥ संकल्पकी दृढताकरिके साकाररूप॥ पहाड नदी
घाट घटपट आदिक पदार्थ प्रतक्ष भासतेहै॥ पर रवणीते कछु नहीं स्वप्नरू
पहै॥ तैसे इह जगत निराकार स्वप्नरूपहै॥ हे रामजी आदिजो अनवाहक
रूप संवेदन फुरतीहै॥ सो वहिमुखफुरणेकरिके देश काल पदार्थरूप होइक
रस्थित भएहै॥ जब वहिमुखफुरणा मिटिजाताहै॥ तब जगत अभास
भी मिटजाताहै॥ जैसे स्वप्नअभास जगत जबलग भासताहै॥ तबलग नि
द्रा विर्षे सोयाहोताहै॥ जब जागताहै॥ तब स्वप्नजगत मिटजाताहै॥ पर
अद्वैतरूप अपणा आप भासताहै॥ तैसे इह जगत अज्ञानके निवर्त हुए निवर्त हो
ताहै॥ तब जगत निराकारहै॥ संकल्पकी दृढताकरिके आकार भासताहै॥ हे राम
जी संवेदन विर्षे जो संकल्प फुरताहै॥ उही अंतःकरणचतुष्टय होइ भासताहै॥ प
दार्थोंके चिंतवणेकर इसका नाम चित्त होताहै॥ संकल्पविकल्प समेकरणेके
इसका नाम मन होताहै॥ अरु जथार्थ निश्चैकरणेकर इसका नाम बुद्धिहै॥ वा
सनाके संबंध मिलनेकर चित्तका कहीताहै॥ सो सर्व संकल्पमात्रहै॥ तिनते
जगत उपजा सो भी संकल्परूपहै॥ जैसे इंद्रजाल वाजीगर स्वप्ननगर संकल्प
की दृढताकरिके पिडाकार भासतेहै॥ पर सर्व अकाशरूपहै॥ तैसे इह जगत
अकाशरूपहै॥ आत्माते इतर कछु है नहीं॥ अरु जो तूं कहै भासता क्याहै॥ ताजि
स विर्षे भासताहै॥ उही रूप जाणणा॥ अरु देश काल नदी औ पहाड पृथ्वी देवता
मनुष्य देहते ब्रह्माते लेकर कीटादिक लेकर जो इस्थावरजंगमरूप जगत भास
ताहै॥ सो सर्व ब्रह्मसरूपहै॥ वृक्षपात जगतवृत्तक समेत परनने आदि लेक
र जो पदार्थहै॥ सो सर्व ब्रह्मसरूपहै॥ उही निराकार अद्वैत ब्रह्मसत्ता संवेदन
करिके जगतरूप होइ भासतीहै॥ जैसे अपणाही अनुभव स्वप्न विर्षे स्वप्नरूप
होइ भासताहै॥ तैसे अपणाही अनुभव इह जगत होइ भासताहै॥ तातें सर्व
ब्रह्मरूपहै॥ जैसे समुद्र विर्षे द्रवताकरिके तरंगरूप होइ भासतेहै॥ सो जल
ही जलहै॥ तैसे शुद्धचिन्मात्र विर्षे संवेदनकरिके जगत अभास फुरताहै॥ सो
ब्रह्मही ब्रह्महै॥ इतर कछु नहीं॥ हे रामजी जो कछु नतफको भासताहै॥ सो सर्व

निराका

म

शांत अचिंत अचेतनरूप अपणे आप विर्षे इस्थित है सदा॥ २७॥ इतिश्री
सर्वब्रह्मरूपप्रतिपादननामसर्गः॥ वसिष्ठउवाच॥ हे रामजी जब द्रिष्टा द्रिशा
रूपकोचेतनताहै॥ तब विश्व होतीहै॥ सो विश्व संभ अनवाहकरूपहै॥ अ
तिवाहक कहीअै निराकार संकल्परूप॥ जब द्रिष्टा विर्षे अहंहै॥ भावकैकेचे
तनारहताहै तब अनवाहकते अधभूतके शरीर होजाताहै॥ आदिजो ब्रह्मा
संवेदन फुरिआहै॥ सो अतिवाहक शरीर रहिआहै॥ जब वीरवार अपणा शरी
रकोदेखता भया तब उहभी चतुर्मुखसाकार अधभूतक होगया॥ अरु उंकार
काउचारकरिकै वेद अरु वेदके कर्मको रचता भया॥ अरु संकल्पपुर विशाको र
चता भया॥ जैसे कोउ बालक मनोराजकरिकै वणीचे तिस खेनानाप्रकारके
त्रिलोक रचे तिसी प्रकार ब्रह्माजी रचता भया॥ सो अतिवाहक जीव उपजाए॥
जब जीवोंको शरीर विर्षे द्रिढ अभ्यास भया॥ तब अतिवाहकते अधभूतके
होगए॥ रामउवाच॥ हे भगवन् ब्रह्मसत्ता तो निराकार थी॥ तिसको शरीरका
संजोग कैसे भया॥ अरु तिसने अधभूतकताके संजोग भया॥ वसिष्ठउवाच॥ हे
रामजी तिसको शरीर है॥ न किसीको शरीरका संजोग भया॥ केवल अद्वैत अ
त्मसत्ता अपणे आप विर्षे इस्थितहै॥ तिस विर्षे चेतनता संवेदन फुरीहै॥ ताहि संवेदन
कोचेतनतीवहीहै सो जगतरूप होकर इस्थित भएहै॥ जब संकल्पकी द्रिढता
होगए तब अपणा साथ शरीर भासणे लगा॥ अरु द्रष्टा अकार भासणे लगा
सो अकार के सहे अकाशहीरूपहै॥ कछु वणा नहीं॥ जैसे संकल्पका शरीर द्रष्टा
सो अकार कैसे हे॥ अकाश ही रूपहै॥ कछु वणा नहीं॥ केवल अका
उपजी सो कछु उपजी नहीं॥ अरु तिसकाकारण भी कोउ नहीं॥ केवल अका
शरूपहै॥ कोउ पदार्थ उपजा नहीं॥ पर सरूपके विस्मरणकरिके अकार होइ भा
सतेहै॥ तैसे ही इह शरीर अरु जगत भासताहै॥ सो केवल आभासमात्रहै॥ अ
रु भावनाकी द्रिढताकरिके प्रतक्ष भासताहै॥ जब सरूपका विचारकरि देखेगा त
ब इसका नाश होजावेगा॥ हे रामजी अविद्या भी कोउ वस्तु नहीं॥ जैसे स्वप्नके पदार्थ
अविद्यमान होते है॥ तब जागताहै तब अविद्यमान होजाते है॥ इसीका ना
म अविद्याहै॥ जो विचार विना विपर्ज भासताहै॥ अरु विचार करि शांत होताहै
तैसे इह जगत अविचारते सिद्धहै॥ विचार केइ ते शांत होजाताहै॥ जब विचा
र करि देखेगा॥ तब सर्व आत्माही भासेगा॥ हे रामजी आत्मसत्ता अविभचारीहै
अर्थ इह जो सत्तामात्रहै॥ इह अभावके प्रापते कदाचित नहीं होता॥ अरु अच्छे
नहै॥ सदा ज्योंका त्योंहै॥ अपणे भावको त्यागता कदाचित नहीं॥ इसने इनत
भासे सो आत्मा सत्ताजाणणा॥ हे रामजी विचारकरिके जब द्रिश्य आभास शांत होताहै
तब मोक्षपद प्रापति होताहै॥ आत्मसत्ता ज्ञानरूपहै॥ अरु निराकारहै॥ सदा अ
पणे आप विर्षे इस्थितहै॥ जब बोधका सम्यक ज्ञान होताहै॥ तब जगत भ्रम
नष्ट होजाताहै॥ श्रीराम उवाच॥ हे मुनीश्वर सम्यक ज्ञान किसको कहतेहै
अरु बोध किसको कहतेहै॥ वसिष्ठ उवाच॥ हे रामजी केवल जो बोधमात्र है
सो बोध कहीताहै॥ तिसको ज्योंका त्यों जाणना॥ इसका नाम सम्यक ज्ञानहै
॥ अरु केवल ज्ञान किस
रामउवाच॥ हे भगवन् केवल बोध किसको कहीताहै॥ अरु केवल ज्ञान किस
को कहीताहै॥ वसिष्ठ उवाच॥ हे राघव चेतन जो है द्रिश्य ते रहित जो चिन्मा
त्रहै तिसको केवल बोध जाणणा॥ तिस विश्ववाणीको गम नहीं॥ इसी प्रकार
अचेतन चिन्मात्र सत्ताको ज्योंका त्यों जाणना॥ सोई केवल ज्ञानहै॥ रामउवाच
हे भगवन् जो केवल बोध अचेतन चिन्मात्रहै॥ तो चेतन जो है सो भ्रम सो ति
स विश्वको भासताहै॥ वसिष्ठउवाच॥ हे रामजी चिन्मात्र जो द्रिष्टारूपहै॥
तिस विश्व संवेदन जो है जाणना सोई चेतनता कहीये॥ जब चेतनता फुरतीहै॥ त
ब उही चेतनता चेतनरूप द्रिश्य होइ भासतीहै॥ जैसे स्पंद ते रहित पवन निर्लेप रू
पहोताहै॥ अर्थ इह जो भासमान नहीं॥ अरु जब फुरतीहै तो स्पंदरूप होतीहै॥ त

दन

वस्पर्शाकके भासतीहै ॥ तैसेसंवेदनकर्के द्रिश भासतीहै ॥ सोउहीसंवेद
नद्रिशहोभासतीहै ॥ रामोउवाच ॥ हे भगवन जो द्रिष्टा द्रिशरूपभासता
है तो वाह्यजकैसेभासतीहै ॥ वसिष्ठउवाच ॥ हे रामजी इसीकारणतेअ
मरहै ॥ जैसेअपणोहीअंतरअरुवाह्यजभासती ॥ जैसेस्वप्नकीस्रिष्टिअप
णीहीअंतरहोतीहै ॥ तोवाह्यजभासतीहै ॥ तोस्वत्वतेनअंतरहै नवाह्यज
है ॥ आत्मसत्ताहीअपणेआपविषैइस्थितिहै ॥ तैसेसर्वभीज्योंकीत्योंइ
स्थितहै ॥ अंतरअरुवाह्यजभ्रमकरभासती ॥ रामोउवाच ॥ हे भगवन जो आत्म
सत्ताज्योंकीत्योंहै ॥ अरुद्रिशभ्रमकरभासतीहै तोसर्पहैकेसिराभीभ्रममात्र
है ॥ उहक्योंनहींभासते अरु अहं अरु त्व क्योंभासतेहै ॥ सर्वनोकीचेष्टाकिस
तेक्योंभासतीहै ॥ वसिष्ठउवाच ॥ हे रामजी अहंत्वआदिकजगतभीकल्प
नामात्रहै ॥ जैसेसर्पहैकेसिराकल्पनामात्रहै ॥ जैसेप्रकाशविषैहैसवाचे
द्रमाभ्रमकरभासताहै ॥ तैसेइहजगतभीभ्रममात्रहै ॥ जैसेमिरगत्रिष्णाका
जलअैसेसंकल्पनगरभ्रममात्रहै ॥ किसीकारणकरनहींउपजा ॥ सप्र
विखैसर्पहैकेसिरानहींभासते ॥ अरुजगतभासताहै ॥ तैसेइहभ्रमहै ॥ रामो
उवाच ॥ हे मुनीश्वर अतितभविष्यतवर्तमानतीनोकालविखैजगतप्रसि
तअनभवकरजाणीताहै ॥ अरुकारणकारजभावपएताहै ॥ तुमभ्रममात्र
कैसेकहतेहो ॥ वसिष्ठउवाच ॥ हे रामजी मैंभीकहताहोंकारणकर्केकार
जहोताहै ॥ तांतेतंकहुजगतकाकारणक्याहै ॥ जैसेबीजवीजतेवट
होताहै ॥ तैसेइसकाकारणकोनहोए ॥ रामोउवाच ॥ हे मुनी जगतसूक्ष्म
अणोतेउत्पनहोताहै ॥ अरुलीनभीसूक्ष्मतनोंकेअणोककैहोताहै ॥
वसिष्ठउवाच ॥ हे रामजी सूक्ष्मअणुकिसविखैरहतेहै ॥ रामोउवाच ॥ हे मुनी
श्वर महाप्रलेविखैसथचिनमात्रसत्ताशेषरहतीहै ॥ तिसविखैअणुरहते
है ॥ वसिष्ठउवाच ॥ हे रामजी महाप्रलेकिसकोकहतेहै ॥ जहांसर्वशब्दअर्थका
अभावहै ॥ तिसकानाममहाप्रलेहै ॥ तहांसथचिन्मात्रसत्तारहतीहै ॥ तिस
विखैवाणीकीगमनहीं ॥ तोसूक्ष्मअणोकैसेहोवहि ॥ अरुकारणकारज
भावकैसेहोवे ॥ रामोउवाच ॥ हे मुनीश्वर जोसथचिन्मात्रसहतीहै ॥ तिसवि
खैजगतकैसेतिकसिआवताहै ॥ वसिष्ठउवाच ॥ हे रामजी विश्वकुछ
उपजीहोवतोमैतुमकोकहों ॥ जोइसप्रकारजगतकीउत्पनहोतीहै ॥
जोजगतकछुउपजाहोवनहीं ॥ तोइसकीउत्पनकैसेकहों ॥ जवचिन्मा
त्रविखैचेतनताफुरतीहै ॥ तवजगतअहंत्वआदिकभासताहै ॥ सोफुरणोही
रूपहै ॥ अरुकछुउपजानहीं ॥ उहीरूपहै ॥ हे रामजी ज्ञानकोजोद्रिशअस
मापमिलापहै ॥ सोवंधनरूपहै ॥ तिसकाअभावहोणामोक्षहै ॥ रामोउवा
च ॥ हे ब्रह्मण ज्ञानकोउरीजगतकोअभावकैसेहोताहै ॥ एहतोदृढहोरहा
है ॥ इसकोशांतकैसेहोतीहै ॥ वसिष्ठउवाच ॥ हे रामजी सम्यकज्ञानकर
जोबोधहोताहै ॥ तिसबोधकर्केद्रिशसंवेदननिवरतहोताहै ॥ सोबोधकै
साहै ॥ निराकारनिजशांतरूपहै ॥ तिसकरमात्तादिखपूर्वतेताहै ॥ रामो
उवाच ॥ हे भगवन बोधतोकेवलरूपहै ॥ परसम्यकज्ञानकिसकोकहते
हैं ॥ जिसकरजीववंधनोतेछूटीकरमुक्तहोताहै ॥ वसिष्ठउवाच ॥ हे रा
मजी जिसज्ञानकरगोइद्रिशकोअभावहोताहै ॥ तवसम्यकज्ञानकहीता
है ॥ जगतनेतपर्वाविखैहिनमिथहै ॥ रामोउवाच ॥ हे ब्रह्मण ज्ञानेमाणेभि
न्नहै ॥ अथवाअभिन्नहै ॥ अतस्मालउत्पनकारणकैसहोताहै ॥ वसिष्ठउवाच
हे रामजी लाधमाईकोनासत्तानहै ॥ तिसज्ञानतेवाणभिन्ननहीं ॥ जैसेवृ
क्षेतवापकाउणाणभिन्नहों ॥ रामोउवाच ॥ हे त्रिकालराभूतभविष्यतवर्त

मानकेजाणनेहारेजोसर्पहैकेसिराकीन्याईगोएअसत्तहैतोभिन्नहोकरकैं
भासताहै ॥ वसिष्ठउवाच ॥ हे रामजी वाह्यजगतगोएआनकर्केभास
ताहै ॥ तिसकासद्भावनहीं ॥ नअंतरजगतहै नवाह्यजहै ॥ अर्थतेभास
ताहै ॥ रामोउवाच ॥ हे भगवन अहंत्वआदिकप्रतक्षभासताहै ॥ अर्थस
छिनेअनभवहोता ॥ तुमकेसेअभावकहतेहो ॥ वसिष्ठउवाच ॥ हे राम
जी इहजगतविराटरूपखकावपुहै ॥ सोआदिविराटभीउपजाकछु
नहीं ॥ तोहारकीउत्पनकैसेकहीअ ॥ रामोउवाच ॥ हे मुनीश्वर तिनोका
लोंविखैजगतकासद्भावपईताहै ॥ तुमकैसेकहतेहोउपजाकछुनहीं ॥ अ
वसिष्ठउवाच ॥ हे रामजी जैसेस्वप्नविखैसभअर्थप्रतक्षभासताहै ॥ तोवेमा
रुककछुउपजानहीं ॥ जैसेमिरगत्रिष्णाकाजलअकाशविखैहैतोवेभ्रमकरभा
संकल्पनगरभ्रमकरभासताहै ॥ तैसेअहंत्वआदिकजगतद्रिढभासताहै ॥ केसेजाणी
रामोउवाच ॥ हे भगवन अहंत्वआदिकजगतजोपदार्थकारणतेउत्पनहो
अैतोउपजानहीं ॥ वसिष्ठउवाच ॥ हे रामजी जोपदार्थकारणतेउत्पनहो
ताहै ॥ सोनिश्चकरसनजाणीताहै ॥ जवमहाप्रलेहोतीहै ॥ तवकारण
कारज ॥ तवकारणकारजकछुनहींरहता ॥ सभशांतरूपहोताहै ॥ जे
ड तिसमहाप्रलेसोजगतफुरिआवता ॥ इसकारणतेजाणीताहै जो
समभ्रमभासमात्रहै ॥ रामोउवाच ॥ हे मुनीश्वर जवमहाप्रलेहोती ॥ तव
आजिअभिनासीसत्ताशेषरहतीहै ॥ तातेजाणीताहैउहीजगतकाकारणहै ॥ व
सिष्ठउवाच ॥ हे रामजी जसाकारनहोताहै ॥ तैसाहीतिसकाकारजहोताहै ॥ ति
सतेविपर्जेनहींहोता ॥ जोआत्मसत्ताअद्वैतअकाशरूपहै ॥ तोजगतभीउहीं
रूपहै ॥ घटतपटकीन्याईहोरननहींउपजता ॥ रामोउवाच ॥ हे भगवन जवम
हाप्रलेहोतीहै ॥ तवजगतसूक्ष्मरूपहोकरइस्थितहोताहै ॥ तिसतेवहुडम
विखैहोतीहै ॥ वसिष्ठउवाच ॥ हे निहपापरामजी महाप्रलेविखैजोतकास्थिति
काअनभवकीयासोक्यारूपहोतीहै ॥ रामोउवाच ॥ हे भगवन तिसआपनरूप
सतानहोइइस्थितिहोतीहै ॥ तममसाजविषयोंमेअनभवकीयाहै ॥ सोअका
शरूपहै ॥ सततअरुअसनपुशहककरकहीनहींजाती ॥ वसिष्ठउवाच ॥ हे महा
वाहोजोअैसहुआ ॥ तवभीजगतसिआपनरूपहुआक्या ॥ तातेजन्मसव
णानरहितताअरूपहै ॥ रामोउवाच ॥ हे भगवन तुमकहतेहोजोजगत
कछुउत्पननहींभयाभ्रांतमात्रहै ॥ सोभ्रांतकहांतेआएहै ॥ वसिष्ठउवा
च ॥ हे रामजी इहजगतचित्तकेफुरणेकरभासताहै ॥ जैसेजैसेचित्तफुरता
है तैसेभासताहै ॥ इसकाहोरकारणकोईनहीं ॥ रामोउवाच ॥ हे भगव
नजीविनकेफुरणेकरभासताहै ॥ तौपरस्परविरुधकैसेभासतेहैं ॥ अ
मकोजलनहष्टकरतीहै ॥ जलकोअग्ननष्टकरतीहै ॥ वसिष्ठउवाच ॥ हे राम
जी द्रिष्टाजेपुरुखहै ॥ सोद्रिशभावकोनहींप्रापतहोता ॥ अरुद्रिशक
छुवस्तुनहीं ॥ भानरूपआत्माहीचेतनसत्ताचेतनसर्वरूपहोभासताहै ॥ रा
मोवाच ॥ हे भगवन ॥ चिन्मात्रतनआदिअंततेरहितहै ॥ जवजगतको
चेतताहै ॥ तवहोताहै तोकछुतोहुआ ॥ जगतनिराकारजाण ॥ हे रा
मजी तनकोउजागतहैनसुपनहै ॥ नसुखपनहैसभअभासमात्रहै ॥ उही
आत्मसत्ताअपणेआपविखैइस्थितिहै ॥ इसकोतोउहीसदाविखैतिये
नआत्मसत्ताभासतीहै ॥ जैसेदर्पणविखैअपणामुखभासताहै ॥ तैसेइ
सकाअपणाआपभासताहै ॥ अरुअज्ञानीकोभ्रांतरूपजगतभासताहै ॥ जैसे
त्रिछकेटइविखेपुरखभासताहै ॥ तैसेअज्ञानीकोजगतभासताहै ॥ हे रा

व॰
म॰
७७

हे रामजी तिनको द्रिष्टा है ॥ द्रिष्टा तब कहीऐ जो द्रिश्य होवै ॥ अरु द्रिश्य तब
कहीऐ जो द्रिष्टा होवै ॥ जो द्रिश्य ही नहीं तो द्रिष्टा ॥ अरु जो द्रिष्टा ही नहीं
तो द्रिश्य किसकी ॥ ताते निर्विकार ब्रह्मसत्ता अपणे आप विषे इस्थित है
अकार भासते है ॥ तो भी निराकार ही है ॥ आत्मसत्ता ही संवेदन करके अकार
रूप होइ भासती है ॥ जैसे थंभ विषे चितेरा पुतली आकल्पता है ॥ जो प
ती पुतली थंभ विषे है ॥ उसको प्रतक्ष पड़ी भासती है ॥ खोद विना ॥ तैसे खो
द विना ब्रह्मरूपी थंभ विषे मनरूपी चितेरा इह पुतली याहे रचता है ॥ अप
कुछ नहीं ॥ हे रामजी इह मेरे वचनों को सुन अरु संकल्प द्रिष्टान करके देख
जो अनभव रूप ही प्रकार हो भासता है ॥ अनभव ते इतर पदार्थ कोऊ नहीं
इस मेरे उपदेश को रिदे विषे धारहु ॥ अरु अज्ञानी याके वचनों को छुटकी त्या
ई त्यागो ॥ २२१ ॥ इ श्री या द थ प प्रो म ग: ॥ रा म उ वा च ॥ उ
हे भगवन बडा आश्चर्य है ॥ जो इस अज्ञान करके जगत को देखते भए जगत
तो कुछ वस्तु नहीं ॥ सर्व ब्रह्म ही है ॥ अपणे आप विषे इस्थित है ॥ जगत भ्र
मकर भासता है था ॥ अब मैं जागिआ हों जो जगत भ्रम मात्र था ॥ वस्तु ते इ
ह पाछे था न हुणा है न आगे होवेगा ॥ सर्व शांत निरालंब विज्ञानघन सत्
ता है ॥ अरु आन भी कुछ वस्तु नहीं ॥ ब्रह्म ही अपणे आप विषे इस्थित है
सो कैसा है ॥ अनंत निराकार निर्विकार शांतरूप है ॥ जैसे समुद्र के आदि अरु
परलोक के आदि सुन्य के आदि संकल्प पुर के आदि इन इस्थानो विषे अ
विनमात्र सत्ता होती है ॥ तिसके अभास संवेदन स्पंद फुरती है ॥ तब अनेक
पदार्थों सत जगत भासआवता है ॥ सो अनभव रूप होता है ॥ इतर कछु न
ही होता ॥ तैसे इह जगत अनभव रूप है ॥ हे प्रभु अब मैं तुम्हारी क्रिपा ते अ
म निश्चय कीया है ॥ जो जगत अविचार ते सिद्ध है ॥ विचार कीए ते निवर्त हो
ता जाता है ॥ जैसे ससे के सिंग अरु अकाश के फूल असत है ॥ तैसे जगत असत है
बडा आश्चर्य है ॥ जो असत रूप अविद्या सो इन कीया है था ॥ अब मैं जागिआ
है जो अविद्या भी कुछ वस्तु नहीं ॥ अपणी कल्पना ही आपको बंध नहीं कुनी
है ॥ जैसे अपणे विषे बालक भूतनी कल्पता है ॥ अरु आपही भय पावता है ॥
तैसे अपणी कल्पना ही अविद्या रूप भासती है ॥ जब लग विचार प्रापत नहीं भ
या ॥ विचार कीए ते अविद्या अनंत अभाव हो जाती है ॥ जैसे जेवडी विषे सर्प भा
सता है ॥ जेवडी जाणे ते सर्प का अनंत अभाव होता है ॥ जैसे इस्थाणु विषे भ्रम
करके पुरख भासता है ॥ तैसे आत्मा विषे अविद्या रूप जगत भासता है ॥ जैसे आका
श के फूल ससे के सिंग कछु वस्तु नहीं ॥ तैसे अविद्या भी कछु वस्तु नहीं ॥ जो वंध्या
का पुत्र भासता भी भ्रम ते भ्रम मात्र जाणीता है ॥ जैसे स्वप्न विषे भ्रम पुरख म
का अनभव होवता भी भ्रम मात्र है ॥ तैसे अविद्या रूप जगत भासता है ॥ तो भी अ
सत है परमार्थ रूप नहीं ॥ परमार्थ उसको कहते है ॥ प्रमाण जो है जथारथ
जनावता जो साथ होवे सो कहीऐ प्रमाण ॥ सो इह जो प्रतक्ष प्रमाण है ॥ सो उस
थारथ कहता नहीं ॥ कहते जो वस्तु रूप है ॥ सो ज्यों का त्यों नहीं भासता ॥ विपरीत ज
गत रूप भासता है ॥ किपी विरव रूपवंत ॥ ताते इह प्रतक्ष अनभव भी होता है
तो भी असत रूप प्रमाण को कजीणा है ॥ हे भगवन इह जगत होर कछु व
स्तु नहीं ॥ केवल कल्पना मात्र है ॥ जैसे जैसे आत्मा विषे संकल्प इह उठता
है ॥ तैसे तैसे जगत भासता है ॥ अरु जो कोऊ पुरख स्वर्ग विषे बैठा होवे ॥ अरु
उसको रिदे विषे कोऊ चिंता आन उपजी ॥ तब उसको स्वर्ग ही नरक रूप हो
जाता है ॥ कोई ते जो आनंद नरक को होता है ॥ हे भगवन इह जगत केवल
वासना मात्र है ॥ आत्मा विषे जगत कछु अरु भ प्रणाम करके वणीआ नहीं ॥ इह

जगत चित विषे है ॥ जैसे पथर की शिला विषे शिल्पी पुतलीया कल्पता है
जैसी कल्पी तैसे भासती है ॥ सो शिला ते इतर कछु नहीं ॥ तैसे आत्मा विषे चि
त जगत पदार्थ रचे है ॥ जैसे जैसे भावना करता है ॥ तैसे तैसे भासता है ॥ अरु आत्मे
विषे न जगत कछु है आगे है न हुण है न आगे होवेगा ॥ केवल अपणे आप विषे
आत्मसत्ता इस्थित है ॥ सो स्वच्छ है अरु अद्वैत है ॥ अरु परम मौन रूप है ॥ एक अ
कहते है के कलना ते रहित है ॥ परम मुनी शांत होकर के सर्व गोज गए है ॥ ऐसा जो पद
है सो मैं हों ॥ अपणे आप विषे इस्थित हों ॥ सर्व दुःखों ते रहित हों ॥ २८२ ॥ श्री
राम श्री व ने म ग: ॥ श्री म वाच ॥ हे मुनीस्वर जो आदि अंत ते रहित था ॥ सो पद मैं पा
ने रहित पद है ॥ अरु बडे विशेष मुनीयों कर जाणना भी कठन है ॥ सो सर्व मिट गए है ॥ अ
या है ॥ एक अरु दुइ ते रहित कलना जो परमात्मा देव के ही है ॥ अरु कोऊ दुःख
व सम परम शांत पद को प्रापत भया है ॥ अरु निह सकह आहो ॥ हे भगवन अब
फुकान ही रहा ॥ जगत सम सुख को आत्म रूप ही भासता है ॥ न सुख है न दुःख है ॥ सदा अप
मे जागिआ है ॥ तिनको अविद्या है न विद्या है ॥ पावन जागा जो पद है सो मैं पाया है ॥ के
णा आप आत्म पद विषे इस्थित हों ॥ जो कहते है जो इह मान तिस पद को नहीं जाणा
सो पाया है जो आगे ही प्रापत था ॥ पर अज्ञान करके नहीं जाणा ॥ सो पद होर कि
ते ॥ तिनको भी प्रापत रूप है ॥ अरु ऐसे भी नहीं जा
सीक के नहीं जाणीता ॥ अपणा आप करजाणीता है ॥ सदा अपणा
किसी कर जाणीये ॥ अरु जाण ते जो आगे हो रहे होवे ॥ आपही बोध रूप है ॥ हे मुनीस्वर अज्ञा
आपही है ॥ अरु तिनका उपजाना है न कोऊ जगत है ॥ सर्व आत्मा ही है ॥ सो अथ
न अरु ज्ञान भी ऐसे है ॥ जैसे सपने का सुख भासता तिस विषे अर्थ का रभास ॥
का रन व निवर्त होवे ॥ जब सपने ते उदय होवे ॥ अरु जो अर्थ ते जागउठे तब तन अर्थ की
रहता है ॥ न प्रकाश ही रहता है ॥ तैसे आत्म पद विषे जागे ते ज्ञान अज्ञान दो
नो का अभाव हो जाता है ॥ हे तन कलना न है हो जाती है ॥ जब सवेदन फुरती है त
व जगत भासता है ॥ पर जगत कुछ आत्मसत्ता ते भिन्न वस्तु नहीं ॥ जैसे प्रकाश
अरु आतमा विषे कछु भेद नहीं ॥ तैसे जगत अरु आत्मा विषे कछु भेद नहीं
अरु जिस पुरुष को ऐसे आत्मा विषे प्रतीत भए है ॥ सो कार जके ता द्रिष्टा
आवता है तो भी सदा शांत रूप अनंत निश्चे कर कछु नहीं होता ॥ अशांत रूप द
ष्ट आवता तो भी सदा शांत रूप है ॥ हे मुनीस्वर अज्ञान रूपी सध्यान काल जो है
अरु जगत को रूपी दिन है ॥ जगत के भाव अभाव रूपी पदार्थ तिनके प्रकाशक
है ॥ सभ जगत सत्ता के प्रकाशक है सूर्य जे ॥ अरु विज्ञान रूपी मारुथल है ॥ तिस वि
खे अज्ञानी जीव रूपी मार गए थे है ॥ तिनको दिन अरु मार गा निवर्त न होता
था ॥ अरु जो सम भाव विषे इस्थित है ॥ ज्ञानवान तिनको न अज्ञान रूपी सध्या जो है
ता ॥ न त्रिष्णा रूपी मारूथल भासता है ॥ न संसार की सत्ता रूपी दिन ही भासता है ॥ ऐसे अ
संसार को सत्ता रूपी दिन नहीं भासता है ॥ संसार को गोर ते मोए रहे है ॥ तिसका कारण है जो
है सत्ता तिनको प्रापत भए है ॥ जहां सत अरु असत दोनो नहीं ॥ सभ जगत सुख का अ
गान कलना नहीं भासती ॥ हे मुनीस्वर अब संजाग्रत होआ ॥ अरु निराकार हो निरइछन रू
पणा आपही द्रिष्ट आवता है ॥ मैं निर्वाण रूप होआ ॥ सर्व कछु परमानंद रूप होआ ॥ अब कोऊ दुःख
पहोआ ॥ परम सम भाव शांत रूप होआ ॥ जिसके पावणे कर त्रिलोकी
सुख को नहीं ॥ हे मुनीस्वर तिस पद को मैं पाया है ॥ जैसे पवन की शिला विषे प्राण तन ही फुरती ॥ तैसे सुख वि
दा चितन उपजा ॥ जैसे पवन की शिला विषे प्राण तन ही फुरती ॥ सर्व आत्म रूप ही सुख को भासता है ॥ अरु इह जो जीवत है ति
विषे जान ही फुरती ॥ सर्व आत्म रूप ही सुख को भासता है ॥ सुख आत्म रूप है सुख को ता नि
न विषे जीवन का उन नहीं ॥ जीवन अंत सिद्ध है ॥ सभ आत्म रूप है
शास्त्र समता अपणा आपही भासती है ॥ २८३ ॥ इति वि ने णी ना स
र्गः ॥ श्री म उ च हे मुनीस्वर आत्मा विषे अनेक नष्ट ही पड़ी फुरती है ॥ जैसे मे

भा. व.
१८

अकौं द्रष्टा का अंतगण ताक कछु नही होती ॥ तैसे परमात्मा विषे त्रिलोकी का अंतगण
ती नही ॥ जैसे एक रत्न की अनेक किरणें होती है ॥ तैसे परमात्मा विषे अनेक सृष्टि
है ॥ कछु परस्पर मिलती है ॥ कछु नही मिलती ॥ परम रूप ते एक रूप है ॥ जैसे एक सम
मुद्र विषे कछु तरंग परस्पर मिल उठते है ॥ कछु न उठते भिन भिन ग्रही प्रकार केउ का
है ॥ एक तो का परस्पर ताल होती है ॥ एक तो ताल नही होती ॥ अरु जैसे एक वृक्ष ताके
बहुत रोप कहोते है ॥ कछु एक नमिलते है कछु एक नही मिलते ॥ परम रूप ते एक रूप है ॥ तैसे
आत्मा विषे सृष्टि अनेक जगत फुरते है ॥ परम रूप ते एक रूप है ॥ हे मुनीश्वर वसिष्ठ जी
का तिनका अग्या है ॥ जैसे स्वप्न विषे चित्त के हुए वालोह दृष्टि आवते है ॥ अरु तीन भी चि
त्त के दृष्टि आवते है ॥ समकाल विषे पदार्थ विपजे है दृष्टि आवते है ॥ पर जाग्रत के ठिते
वां तिन की प्रतीत भासते है ॥ तैसे अज्ञानी के ठिते जो है ॥ मुक्त को विपजे नही भासते ॥ जैसा
भ्रम अरु मुक्त को अनुभव सर्वात्मा ही भासता है ॥ हे मुनीश्वर जो ज्ञानवान है पुरुष है सो आप
समसमाधि विषे स्थित है ॥ तिनको उत्थान कदाचित नही होता ॥ अरु जो पुरुष है तैसे
रूप ते पतार नही भासता ॥ विवहार करते दृष्टि आवते है पर विवहार ते रहते है कोई तिन
जो अभिलाषक कछु नही रहा ॥ अभिलाषा तैसे रहते हैं ॥ कर चेष्टा करते है ॥ अरु तैसे कछु करते
का अभिमान नही फुरता ॥ ऐसी का नाम परम समाधि है ॥ ऐसे ज्ञानवान को प्राप्त होता
नी है तब विद्या को उनके बहुती ॥ सर्व भाव विषे सम होजाते है ॥ कोई तेजाल अन्य पर
परमानंद रूप है ॥ सो विद्या ते रहत है तिसी का नाम मोक्ष है ॥ अवलोकी का नाम
निर्वाण है ॥ जिस विषे उत्थान कोई नही ॥ हे रामजी सर्वात्मा अनेक अपार है
है जिस पर के अनेक को ब्रह्मा विष्णु रुद्रादिक ज्ञानवानों की स्थिर तन सदा ईश्वरतीत है
नही मे सारे कपदार्थ को दौर धावती है ॥ अरु जिस पुरुष को शीतल पद्यान प्राप
ति भया है सो वहु जैसे अपार की पदर्शन को नही चाहता जो मार्ग यत्न को
होता है ॥ तैसे ज्ञानवानों को चित्त विषे आगे नेर को ग्रह नही धावती ॥ हे मुनीश्वर
मनि श्रेष्ठ की आई है जो विद्या ते साता पका उन नहीं ॥ अरु विद्या जैसी यात को उन नहीं
जो पुरुष परम उत्तम है तिन को प्राप्ति भया है ॥ अरु परा का पद्यान है ॥ अरु जो
निर्धनदृष्टि आवता है ॥ अरु विद्या को उन्होंने सापर समें दुख जैसे कारमन है ॥ इस वर्णन
र परम सर्द को मति है ॥ अरु जो वहु पजो है ॥ अरु विद्या सहित है तिन को परमपद
जानीत्र निसको बोधकी प्राप्ति कदाचित नही होवगी ॥ जैसे भ्रम की स्मृति
नेको निवारण नही कती ॥ तैसे उस कौम स्वरूप का पद उत्थान निवारन नक्रे ॥ हे
मुनीश्वर महत्तो को मन देखे विश्व की उपरत्न विद्या होता है ॥ जैसे मिथ्या पिंजर
विषे पडा पिंजर का तोड निकसे ॥ तैसे को उविरला विद्या वज्रालेको तोड निकसे
ता है ॥ अरु पदन मरूप को विचार कर के विरलस्वान नहीं होता ॥ अरु पती ले हो कर विद्या
ते होहोता ॥ अरु प्रत्यक्ष मूर्तिन होता मस्वर है ॥ जैसे जैसे विद्या को बढ़ावे ग तैसे तैसे
जापत वाध उदह सदारा ॥ अरु जैसे जैसे रात्रि की ही गत होती है तैसे तैसे दिन का प्र
काश उदय होता है ॥ अरु जैसे जैसे रात्रि की निवृत्ता होती है तैसे तैसे दिन की वो प्रकाश होती
है ॥ तैसे जैसे जैसे विद्या घटती जावेगी ॥ तैसे तैसे बोध की प्राप्त कारण होवेगी ॥ अरु जो
जो विद्या घटती जावेगी तो तो बोध को प्राप्ति प्रगट होवेगी ॥ हे मुनीश्वर अरु
मति सपरको आधार कु याहा जात अनुभव अरु निराकार पद हे अरु हे तब तन्मात्रन
है तते है ॥ तिस पद को मे आत्मत वकरके प्रतिपाद्या है ॥ अरु अविनाशी सर्क दृश्य हो ॥ अर्थ
सपर प्राप्त का को उन नही दी ॥ सो परमानंद आत्म पद है ॥ इति श्री यो
वते स ॥ व सि ष्ठ वा० १८४ ॥ ॐ हे राम जी वडा कल्याण है
आत्मज्ञान किया है ॥ हे रामजी पद परमपावन श्रवन करने का फल है ॥ जिन के सुने
ते पापों का नाश होता है ॥ बहु उत्तम वचन ते फल है दे जो आत्म ज्ञान रूपी अंधकार का
नाश करते है ॥ हे राम जी जो पुरुष अपना शुभ भाव विषे जागे है ॥ तिनको वि
वहार स्वरूप मासा पहिले आत्मा को कर्म जाहि अनेक प्रकार की चेष्टा करते भी दृष्टि आव

ते है पर उनके निश्चय विषे कल्पना कछु नही फुरती ॥ सदा परम शांत
विषे स्थित है ॥ जैसे पर्वत की शिला होती है तिस विषे कछु स्पंदन नही फुरता
तैसे ज्ञानवान को कछु कर्तव्य नही फुरती ॥ काहे ते जो द्वैत कल्पना का अहंकार
रहु अभिमान तिन ते गया है ॥ सुषुप्ति चिन्मात्र विषे स्थित पाया है ॥ के सार्त्ता
स्वपद है परम शांत रूप है ॥ द्वैत कलना ते रहत है ॥ ऐसा जो पद है सो ज्ञा
नवान आत्म ते कर के जाणा ता है ॥ तिस को निर्वाण कहते है ॥ तिसी को आत्मा
त कहते है ॥ हे रामजी ऐसा जो पद है ॥ तिस विषे महापुरुष स्थित है ॥ अरु
ग्रा किस ते ग्राहिल कर जो ज्ञानवान पुरुष है सो तिसी पद विषे एक स्थित है
नाना प्रकार की चेष्टा करते भी दृष्टि आवते है परम शांत रूप है ॥ तिन को कि
या अरु समाध विषे एक ही आत्म तत्व भासता है ॥ जैसे वायु स्पंद अरु अस्पंद
विषे एक ही है ॥ तैसे ग्रहद हावा विषे जल एक ही है ॥ तैसे ज्ञानवान को दोनो
विषे सम है ॥ जैसे आकाश अरु शून्यता विषे भेद नही ॥ तैसे ब्रह्म अरु जगत विषे भे
द नही ॥ राम उवाच ॥ हे भगवन तत्व वेत्ता की क्रिया ते मुक्त को कलना को उन नही फुर
ती मैं तुम्हारा दिया हूं तो आहि लिख ते ना कछु जगते है सम मुक्त को अकारा
प भासता है ॥ सर्वदा काल सर्व प्रकार मे अपना आप विषे स्थित हो ॥ अरु जन
स्वरूप ते रूप है ॥ मैं तो विषे जगत की कलना को उन नही ॥ चित मे वह नउ स्थान
मे ही जगत रूप है भासता है परम रूप ते एक रूप चित चलाय मान नही भया अरु
चेतन चिन्मात्र स्वरूप है ॥ अपना आप ते पतर कछु मुझ को नही भासता ॥ व सि ष्ठ
उ वा च ॥ हे रामजी मै जाणा ता हों जो तें जाणि आहे ॥ अरु पेरा है उबोध के निमि
त्त मुझ सि ड्रो वहु प्रशन करे ॥ जो पद जगत ते नही तो भासता कि है ॥ रा म
उ वा च ॥ हे भगवन तुम सर्व संशय को छेदन जो जगत ॥ अकारण कोआभास
होवे ॥ सो मुझ को जगत कछु भासता नही जैसे स्वप्न कल्पके अभाव हुए स्वप्न कल्प
की चेष्टा नही भासती ॥ जैसे स्वप्न की अभाव हुए स्वप्न की वृत्ति नही भासती जै
से आदि घन का या के पुरुष नही भासती ॥ तैसे मुझ को जगत नही भासता वहु उ
स सागर के कारण जो द्रष्टा ॥ अरु जो चित है सो वह जगत नफुरती है सो विराट पुरुष हो कर के स्थि
त भया है ॥ तिस ते आगे दिशा काल पदार्थ है ॥ अरु पाछे जगत जगत का वर्णन
है ॥ तिसके सम ष्टि रूप का नाम विराट है ॥ जैसे स्वप्न का पुरुष होवे तैसे एक हाथ एक रूप
वहु कहिये विराट है जो आप अकाश रूप है ॥ अरु आप ही आकाश रूप होवे तिस का
जगत मे विस्तार है ॥ जैसे पुरुष की स्थिति का है प्रकाश रूप है ॥ अरु विद्या हद जी है अ
न उपजी है ॥ तिस के पाछे काम संसार है ॥ तैसे तको उविपरा है न तिस का जगत है
मिथ्या ही विराट है अरु मिथ्या ही तिस की चेष्टा है ॥ केवल अपना आप विषे स
प स्थित है ॥ तो को उ जगत है न तिस का को उ विराट है ॥ जैसे स्वप्न का पद लेत अभाव
भाव होता है ॥ तैसे ही जगत अकारण भासता है ॥ जैसे बीज ते वृक्ष होता है तब वस्तु ते
गत अभाव होता है ॥ पर कदी कैसे कहीं पदार्थ जगत कार होता है ॥ तिस विषे वृक्ष का स
द्भव होता है ॥ ऐसा आप का स्वरूप कर विभक्त होता है ॥ आत्मा अपने को उन का होवे आत्म तो
निराकार है तिस विषे जगत का होणा नही ॥ काहे ते जो निर्विकार है ॥ अरु अद्वैत है
कर्म लेख है ॥ तिस को जगत का कारण कैसे कहिये ॥ अरु को उ जगत नहि है ॥ आत्मस्वरूप
स्वरूपन है ॥ ए ह अवस्था भी आभास मात्र है ॥ परिणाम भाव को न ही प्राप्त भया
सदा अपना आप विषे स्थित है ॥ हे मुनीश्वर मैं तो भी प्रकाश रूप है ॥ प्रकाश वा
प्रकाश नलिप्त सर्व प्रकाश रूप है ॥ अद्वैत सर्वात्मा हो ॥ मुक्त को भासता है ॥ हे मु
नीश्वर एक सविकल्प ज्ञान है अरु एक निर्विकल्प ज्ञान है ॥ हे मुनीश्वर एक सविक
ल्प ज्ञान है अरु एक निर्विकल्प ज्ञान है ॥ सो अकार भावनी चेतन चिन्मात्र है चेतन जा

व॰
म॰
८९

है दिशा तिसके बंधते रहित है ॥ सो प्रकाशवत निर्मल आत्मा सो निर्विकल्प ज्ञान है
तिनको परम ज्ञान प्राप्त भए थे सो महापुरुष है तिन को मेरा नमस्कार है ॥
जिसको द्रिश का संजोग है सो सविकल्प ज्ञान है ॥ जीव को होता है सो संसारी है ॥ अ
तिसको भिन भिन जगत विषमता सहित भासता है ॥ परंतु है भी भिन कछु नहीं
जैसे समुद्र विषे नाना प्रकार के तरंग भासते हैं ॥ सो भी जल ही रूप है ॥ तैसे भिन
भिन जीव अरु तिनका ज्ञान है ॥ सो भी मुझको अपणा आप ही भासता है ॥ जैसे अ
वीको समस्त अंग अपणा भासते है ॥ अरु जैसे समस्त जगत मुझको अपणा आप ही भास
ता है ॥ अरु केवल स्वरूप है न रूप भासता है ॥ जगत की कलना मुझको कोई न फुरती
जैसे समते जागे को सुपने की स्थिति ही फुरती ॥ कल्पना ते रहित अपणा आप भासता
है ॥ तैसे मुझको जगत कल्पना ते रहित अपणा आप भासता है ॥ हे मुनीश्वर आ
गमते लेकर जो शास्त्र है तिनते लेकर तत्व वचन मैं कहे हैं ॥ परंतु जो मेरे हृदे विषे है
सो पवार है ॥ जो कछु अनुभव होता है सो पवार है जसप्रगट वाणी करके होता है ॥ जैसे
जो बीज बोता है सो प्रफुलित होकर निकसता है ॥ बीज बिना अंकुर नहीं निकसता ॥ ते
से जो कछु मेरे हृदे विषे है सो पवार वाणी करके कहता हों ॥ अरु परम विद्या सर्व प्रमाण करके
रसिद्ध है ॥ हे मुनीश्वर जिसको महु दशा प्राप्त है सो पजाणता है ॥ अवरको जाणनेही
जाता था ॥ अरु जिस सधु पान की आई है सो पुरुष तिसको जाणता है ॥ अवरको जान
ही जाणसकता ॥ तैसे जो ज्ञानवान है सो आत्मरसको जाणता है ॥ अवरको अन
ही जाणता ॥ सो कैसा आत्मरस है जिसके पायते कल्पना कोई न होवही ती
हे मुनीश्वर मैं आत्मा हौं अजन्मा हौं ॥ अविनाशी हौं अरु परम शांतरूप हौं ॥ एक
लनाते रहित अचेतन चिन्मात्र हौं ॥ अरु जगतरूप हुए की तिसी आप भी मैं ही भासता हौं
अरु निराभास हौं ॥ मेरे विषे आभास भी कोई नहीं ॥ कोहु है जो निराकार हौं एस
प्रकार मैं अपणा आप को जथाविन मात्र जाणिआ है ॥ २८५ ॥ इति श्री आ व ते
नो स वा को वा ॥ हे भारद्वाज एस प्रकार रामजी का हिकर सभ तें
एक अर्जुन ततस्ती है भए थे ॥ अरु थे पद जो परम आतम पद विषे विश्राम को पावता भ
ए थे ॥ ए श्री आरम्न की जो वृत्ति है सो आत्म पद विषे उपसम भए ॥ अरु श्री आरम
तिसते उपरांत जाणभी कमल नैन रामजी लीलाकर नमित प्रसन्न करते भए थे ॥ रा
मो च ॥ हे महा ऋषी मेघ के नाशकर्ता शरत्काल ॥ अरु आप एकमेव को आनंद
जैसा भए थे है तिसको दूर करो ॥ हे मुनीश्वर आत्म पद जो है सो अविनाशी है ॥ अरु अ
तहै ॥ अरु थे पद जो पद श्री अरु मन का विषे नहीं पद्दी ग्रह करए होना नहीं होता
अरु मन की चिंतवना विषे नहीं आवता जो बड़े महापुरुष है तिन करके होता वि
षे भी नहीं आवता ॥ ऐसा जो अचेतन चिन्मात्र आत्मतत्व है सो पाणि करके मैं जा
णिआ जाता है ॥ शास्त्रते अरु विरुद्ध रूप तें जागीक के होते हैं ॥ सो विकल्प है ॥ सविक
ल्प करके निर्विकल्प पद के से जाणिआ जाता है ॥ अरु अवर शास्त्र करके कैसे जाणि
आ ॥ अरु विकल्प रूप जो है शास्त्र तिन विषे सभ अर्थ भी पावता है ॥ पर विकल्प
रूप है तिसके रूप नहीं जो निसमाधि है ॥ तिन करके सभी जानिके कर जाणिआ ॥ अवर शास्त्र
बिना भी नहीं जाणीता ॥ हे रामजी नाना प्रकार के जो विकल्परूप शास्त्र है तिन करके
के निर्विकल्प पद को कैसे जाणिआ ॥ पर जिस प्रकार एतन कर जाणिता है सो भी सुण ॥ हे राम
जी एक किरात धातुरा कौटक यात्रा गृहस्ता विषे बहुत रहित थे ॥ तिन को अपरा आन
प्राप्ति भए ॥ इस चिंताकर दुखी होते जानकि ॥ अर भोजन भी नहीं आवे ॥ तैसे अ
सतवत की मेजरी सब बड़ाई विषे अप करणा कजाता है ॥ जैसे कमल जलते
निकसि कर कीचड़ अपवादरूपी अपकर सहकारण ॥ तब ते आन इक विचार कीआ जो कि
सी प्रकार हमारी दरिद्रता नाश होवे सो बन विषे जाए कर काटी आरुणि ते ल्यावे

के

हि ॥ जो हमारा दरिद्र दूर होवे ॥ हे रामजी ऐसे विचार करके दूर बन विषे गए ॥ बन वि
षे जाए करके लकड़ीआं लिआए ॥ ऐसी प्रकार लकड़ीआं बहि ॥ तब एक बन ते अव
र बन विषे पावते हिते तिन वडा हाथते लेआवहि नगर विषे बेचकर उदर पूरणा कर हि
जब केताकु काल व्यतीत भए आए चको ऐसे चहदनकी आलक दीआ को पड़ है ॥
सतु ही ले आवे ॥ सो इन ते विशेष मूल्य पावे ॥ एक तो को हूवे तब तिन प्राप्त भए ॥ ति
न को विशेष रूप जे प्राप्त भए थे ॥ सो लकड़ी आको दावो जतन ते होता है तन भए
बहु ड अवर ए स्थान दूजे लोग ॥ तो रतन तो भी वे शोध कछु पाए थे ॥ सो बन की श्रि
षी को खोद ते खोद ते खोद ते कोऊ चिंतामणी को पावते भए ॥ इह वडा है उपजे को
पावत भए ॥ जैसे बड़ा पाए ईश्वर के देते महा तन भए ॥ हे रामजी जिन तो दूर कक बन
की सेवना करी तिन को वडा सुख प्राप्त भए थे ॥ जो लकड़ीआं ठोड़ा वन ते रहे तिन
को दरिद्र दूर ना भए ॥ अरु दुख निवृत्त भए था ॥ अरु जिन तो चंदन की लकड़ीआं प्राप्त
भए तिन को दरिद्र दूर ना ते अवर भी मेरा पमिटि गए जो इह परमई शांत जबान भए ॥ पर
सभ तो को बल मिलो पावत भए थे ॥ अरु जो बन ते कविक हि दूर नमस्कार के नगए व रही
बैठ रहे सो दुखी होकर प्राणों को त्यागते भए परम सुख को न पावत भए ॥ २८६ ॥ इति
श्री ला सि प म ॥ ॥ उ वा च ॥ हे भगवन पद जा ने
मकी ई का चिंतानल कहो ॥ सो एक काल पर जैसे कछु नहीं जाणिआ इह कौटक
का बन थावर बाण विस्तार थो ॥ सो कृपा कर प्रगट करो ॥ व शि ष्ठ उ वा च ॥ हे रामजी जे
ते कछु जीवते रहते है ॥ सो सभ मही कौटक है ॥ तिन को अज्ञान रूपी अपराल गी है
अरु आत्मज्ञ अ भूत कपट अप देव क जो तिनी ना पद है ॥ अरु आत्मक काम क्रोध आदिक मा
नसी दुख है ॥ अरु भूत जो देह के वात पित्त आदिक दुःख है ॥ अधि देव कर दुःख जो दुःख
अग्नि कु तम प्राप्ति होते है ॥ तिन नता पो की चिंता कर पुरुष ते है ॥ हे रामजी तिन विषे
जो पुरुष भजन तन करके शास्त्र रूपी बन विषे गए है ॥ सो सुखी भए है ॥ जो अर्थी सुख के
नमित बन रूपी शास्त्र को सेवते भए सो मनते कामरूपी जो लकड़ीआं है तिन को प्राप
ति भए ॥ तिन करके नर रूपी जो दुःख दूर हूवना का दुःख था सो निवृत्त भए थे ॥ अरु स्वर्ग रूपी
जो सुख पावते भए ॥ बहु ड शास्त्र रूपी बन को सेवति सेवति जिन तो चंदन विकु प्राप
ति भए ॥ आतिसकर अवर दुःख भी निवृत्त भए ॥ अरु विशेष सुख को पावते भए सो चे
दे तका विउ पासना है ॥ जब अपराण ए पकीसे बना है तब सुर्ग आदिक विशेष को पाव
ता है ॥ अरु जोग ए स्थान को प्राप्ति होता है ॥ बहु ड शास्त्र रूपी बन को ढूंढता है
तब रतन रूपी विभाष सुख को पावता है सो रतन रूपी सत्त अरु असत का विचार है ॥ तब
हु विचार एसको प्राप्ति होता है तब सब दुःख एक न एह होजाते है ॥ जैसे आगे पर
अलक डीआ चिह्न रत्न बन विषे पाए थे ॥ अरु चिंतामणी प्राप्त थी ॥ तैसे आगे
शास्त्र विषे धर्म अर्थ काम प्रगट है ॥ अरु ज्ञान रूपी चिंतामणी ते हैं ॥ जब शास्त्र रूपी ब
न प्रिथवी को बेगा अरु अभ्यास रूपी जतन कर खोजे तब आत्म रूपी चिंतामणी को
पावता है ॥ हे रामजी बन विषे उनमें चिंतामणी तब पाए जब ऊहा चिंतामणी का
ज नथा ॥ पर जब अभ्यास की आज्ञा पाए ॥ पर ऊ बन विषे पाए ॥ ते सगुर अरु शा
स्त्र भी मारी के खोद के गावते हैं ॥ जब भला अभ्यास करते हैं ॥ तब आप ही चिंतामणी
वत आत्मा प्रकाश आवता है ऐसे मारी के खोदने कर चिंतामणी का प्रकाश उ
प जाता नहीं ॥ सो है तैसे चिंतामणी आगे ही प्रकाशरूप है ॥ खोदने कर आवर ण
दूर की अपवे आप ही भासिआ ए तैसे गुरु शास्त्र के वचन कर तिन के अभ्यास कर
अज्ञान का वरण पृथक होता है ॥ तब आत्म सतता स्वप्रकाश रूप भासि आवता है सो
र अरु शास्त्र दिका मल लगना दूर करते हैं जब मल लगना दूर होता है तब आत्म सत्ता
सुभाव ही प्रकाशती है ॥ जैसे कपड़े की मैल धोबी काल में दूर करता है सो प्रथम
मलते होती है तब दूर करता है सो पवार मल ते होती है ॥ तैसे गुरु शास्त्र जो कर
म ले दूर होती है ॥ पर एने को कल्पना भेद वते विष होती होती है ॥ सो दुःख ते समार

२

व॰ म॰
८० ५५

केनाशकरवेवालीकल्पनाहै। परमार्थकीअपेक्षाकरशास्त्रअरुभीइवैतकल्पनाहै
अरुअज्ञानकीअपेक्षाकरकैशास्त्रगुरुशिष्यादिवर्तते हैं। मनकेअभ्यासकरआत्मप
दपावनाहै। ऐसोविरलेपावताहै। मध्यमेअज्ञानीशास्त्रोंकोभोगोंकेनिमित्तसिखे
अरुशास्त्रोंविषेभोगोंकाअर्थजानतेहैं। जैसेमूलकअरुकोनमित्तावनकोस
वेमेय। अवणास्त्रोंविषेसमझिकेहै। जैसाकिसीकोकल्पवृक्षप्राप्तहोताहैपरंत
द्योतिसकोप्राप्तहोताहै। एकहीशास्त्रहैपरपदार्थदूविषेभेदहै। जैसेगंगाजलनेकौ
रसएकहै। तिसतेगुडशाकरखांडमिश्रीहोतीहै। तिनविषेभेदहै। तैसेशास्त्रए
कहैतिसविषेपदार्थभिन्नभिन्नहै। जिसजिसअर्थपावणाकेनिमित्तएहजतने
करेगातिसीकोपावेगा। शास्त्रविषेभोगभीहैअरुमोक्षभीहै। अज्ञानीभोगोंकेनि
मित्तजतनकरतेहैं। परउहभीधनहै। काहेतेजोशास्त्रोंकोसेवणालागाहै। तिसकौ
ड। सवतसवतकवहूं किसीकालविषेचितामणिरूपीआत्मपदभीप्राप्तिहोवे
गा। परआत्मपदपावणेकेनिमित्तशास्त्रश्रवणकाअभ्यासजोगहै। सर्वसंकल्पोंकात्यागकर
अभ्यासदृढअभ्यासआत्मपदप्राप्तिहोवेगा। तबसर्वठोरतेसमभावहोवेगा। जैसे
सूर्जकेउदयहुएसर्वठोरतेप्रकाशप्रत्यक्षजानाहै। तैसेसर्वठोरसमताभासती
तबसमस्वपदकीनिश्चयपदस्थितिहोजावेगी। अथेपहजोउतपकेकल्पनाभी
शान्तहोजावेगी। अनभवअद्वैतविषेजागतहोवेगी। सतशास्त्रकाविचारअरुस
तोंकासंगकरअभ्यासदृढआगहोवेगी सोमनजतनकरवनेहै। जोपरमपदप्राप्तभीहोवेति
संसारसमुद्रतेपारकरणेवालेहोवेहै। सोमनजतनेहै। तिनकेसंगकरआत्मपद
प्राप्तिहोवेगा। हेरामजीएरअरुशास्त्रतेलेनतकवजतावलेहै। अथपहजो
अज्ञानमध्येभीकोंतिरस्कारकरआत्मतत्त्वशोधमहै। जबअज्ञानमधमेकात्या
गकरेगातवशेषआत्मनतरहेगा। तिसकोजोगालेवगा। तिसकेजानणेतेवर
कछुजानणानहीरहिता। तिसकेजानणेविषेजतनकछुनहीं। अवणास्व
णेकेनिमित्तजतनहै। जैसेसूर्जकेआगेवदलआवताहै। तिसकरसूर्जनहीं
भासता। सोवदलकेदूरकरणेकाजतनचाहीताहै। सूर्जकसकाशनिमित्तजत
ननहीचाहीता। वदलेकेदूरहुएसभावकरहीसूर्जप्रकाशताहै। तैसेगुरुअरुशा
स्त्रकेजतनवाहेकाररूपीअवरणदूरहोताहै। तबआत्माप्रकाशकरभासआ
आवताहै। शास्त्रकरगुणजोहैगुरअरुशास्त्रतिनकरसंसारमकाअभावहोताहै
तवपरमअनभवजानकरआत्मअकसातैसकाशआवताहै। जबप्रकाश
भएआतवडोमविषेउन्मतहोजाताहै। द्वैतरूपसंसारकीकल्पनानहीरह
ती। जैसेसुंदरस्त्रीकोंदेखकरकामीपुरखउन्मतहोजाताहै। तैसेज्ञानीआ
त्मपदकोपायकरउन्मतजाताहै। संसारकोडेमतेसुरतभूलजातीहै। अरुप
रमईस्वरजवानहोताहै। सोतिसकासाधनयामेंहोविचारहै। बतकेसवाम
तेविनासगणपावकादिसत्तकहाहै सोजाणलेवणा। ८८। इति ... णा ... उ
प ... वने ... ना ... स ... ॥ व ... हो ... च ॥ हेरामजीसंप्रवनेजोकोउ
सिद्धांतहैसोमैनेतुझकोंकहाहै। अरुविस्तारकरकेहाहै। तिसकोगुणकाअरुवा
रंवारविचारकरसरखभीतिसवरणहोवहिगा। जोडतमपरखहैतिनकोंति
सारणेहोवगा ... विषेअरुजेहै। हेरामजीएहभीमेंजाणताहो जोतमति
तवेसभएहोअरुपद जोकछुजानणाजागहै सोतमजाणिआहै। मध्यमउत्पत
प्रकरणतमतुझकोंकहाहै। जोजगतकीउत्पत्तिप्रकारभएहै। बहुडपस्थित
करणकहाहै जोजगतकीपरस्थितिप्रकारभएहै। उत्पतकहीहैजोचितसंवे
दनकेफुरणेकेकेजगतउपजाहै। अरुसंवेदनसरकीदृढताकरकेपस्थितिभए
आहै। तिसतेउपरांतउपसमप्रकरणकहाहै। सोमनउपसमकाअरुपकहोता
है। जबचितउपसमहुआतबपरमकल्याणहुआ। मनकेफुरणेकानामसंसार
है। जबमनउपसमहोताहैतबसंसारकाकलनामिटजातीहै। एहअरुरणोविला

सकेराहे। परअबजाणताहोजोबोधवानभएआहै। हेरामजीमैंनेतुझकोंआत्म
ज्ञानकाउपायकहिआहै। अरुजिनकोंज्ञानप्राप्तिभएआतिनकेलक्षणभीके
हैहै। सोअवभीसर्वेपरकहताहो। हेरामजीप्रिथमवालकअवस्थाविषे
मनकोंपढवाणतानहै ... अरुसतशास्त्रकाविचारणा। प्रसम
भविचारकरअभ्यासदृढआतापरकोआत्मपदप्राप्तिहोतीहै। तबसमताकीप्रा
प्राप्तिहोतीहै। अरुसमतासाथसुहृदहोजाताहै। साधुहिरतंतामातकेसहृपरम
आनंदहोतहैमृरतातिसकीजननीहै। सोसदाएसकेसंगरहतीहै। जैसेफरप्र
खकोंदेखकरतिसकीपरतीप्रसन्नहोतीहै। उसमकअअथप्राणोंकात्यागरात्रु
वीकारकरतीहै। परडसकोनहीत्यागतीहै जैसेजोज्ञानीपुरखवैदसाधुसीलसमीआ
तकरसुहृदहै। तिनकोसमताशुद्धजानएसीसापापकरहीत्यागकरतीआसदाप
सकेहृदयरूपीकंठलागीरहतीहै। उहपुरखसदाप्रसन्नरहताहै। अरुजिसकोंदेख
तेअरुकाकारजभाप्तिहोताहै। उहभीअसमप्रसन्नहीहोता। जैसेसूर्यप्रती
प्राप्तिभएहैअसाधसमतलहीहोता। जैसेताजवानप्रसन्नहोताहै। हेरामजीसम
ताकैसीहैदुविधारूपीजोअंधकारहैतिसकेनाशकरनेकोसूर्यहै। अरुतीनोंताप
रूपीजोउष्णताहैतिसकेनाशकरणेकोपूर्णमासीकाचंद्रमाहै। बहुरकैसीहैए
हदृताअरुसमताअरुआसारूपीजलकालीजोएथानहै। तैसीचेष्टाकेजलमे
भावकरबालिआवताहै। तैसेसुहृदतासमताविषेसर्वठौरभावताअभावकहोताहै
जैसेचंद्रमाकीकिरणोंकेअमृतकरचकोरत्रिपतवानहोताहै। अरुजीवनाहेमहा
प्रसन्नहोताहैतैसेआत्मरूपीचंद्रमाकीकिरणसमतासुहृदताकोपाएकरब्रह्म
आदिकचकोरत्रिपतिहोकरअनंदमानहोतेहैं। अरुजीवताहैमहाप्रसन्नहोताहै
तैसेआत्मारूपीचंद्रमाकीकिरणसमतासुहृदताकोपाएकरब्रह्मादिकचकोर
त्रिपतिहोकरअनंदमानहोतेहैं। अभजीवतेहैं। हेरामजीजोपुरखसमतावालेहैंसीको
नकरसकनाहै। जोकदाचितभीचलायमानहोतीहै। जैसेपूर्णमासीकेचंद्रमाकि
विभीउपाधिहिआवताहैपरज्ञानवानकेसुखविखेतेसभीउपाधनहीं। जैसे
उत्तमचितामणिकीक्रांतिहोतीहै। तैसेज्ञानवानकीक्रांतिहै। रागद्वेषकरकेसीता
कदाचितनहीहोती। सदासमताकरपरहताहै। हेरामजीसमतानहीसोवोसडोभाग
रूपीकमलोंकोरोगाहै। अरुसमताकेकालीएजमातकोविचारताहै। अरुभोजक
ताहै। लोककछुणाकरताहै। जोककछुदेताहैसोसमताकेडसकेकवतेवेकीउपजा
कतेहै। हेरामजीऐसाजोपुरखहैसोब्रह्मादिककरपूजनेजोगहै। सभहीआसको
मानवतेहै। ऐसेसमताकेधरणेवालेकीपछाकरतेहै। आदरमानकरप्रसन्नहोतेहै। जो
मनजेकेउदहुएमजेगुलीकमलखिडआवतेहैं। अरुसभउल्लासकोप्राप्तहो
तेहैं। तैसेउसमकदेशोंविषेदेखकरसभउल्लासकोप्राप्तहोतेहैं। अरुजोकछुआहू
तेहैं। तैसेउसकोंआवतीकरवैठतेहैं। तैभीउसकीनिदालावनहीकरते। उहजोना
करतेहैं। जोपदसमरथीहै। समताकरकेउहसभकासुहृदहोताहै। शास्त्रभीउसकेनि
तेहैं। जोपदसमरथीहै। जिनविषेसमताभावउदेहुआहैतिनकोअमृतलापएतहोसकती
अहोजानतेहैं। जिनविषेसमताभावउदेहुआहै। तिनकोमोखनहीसकता। अरुजेसीपछाकर
आगजलतुवनहीसकता। वाएतिनकोसोखनहीसकता। अरुजैसीपछाकर
हितेसीसिडहोतीहै। अरुजिसकोंसमताप्राप्तिभएहैसोपुरखसल्दोजाताहै
संसारकीउपमाउसकोकोउनहीहैएसकीती। अरुजिसकोंसमतानहींप्राप
तिभएसोअभसाथसुहृदताकाअभ्यासकरतहैजोएसकाशवहोवेसोभीमित्रहो
जाताहै। अरुअभ्यासकीदृढताकरकेशत्रुभीउसकोमित्रभासणेलगतेहैं। जो
समभविषेसमताभावकाअभ्यासकरताहैसोइस्थिहोताहैतबसमताभावनेकाचवि
तभीचलायमानतहीहोता। हेरामजीएकराजाआयातिसनेअपणाआसनकाटि
काटिकरखुदिआरणकोदीआअरुसमताकेचलायमाननभएथा। जिंकोतिहीरहा

अरु एक पुरुष कों पुत्री खरी पिआरी थी ओन किसी कों दीनी तिसने और भाउ कों चाप
दीनी ॥ पर ओह जिकानि रहा ॥ एक और राजा था ओस कों एक स्त्री बहुत पिआरी थी ॥ ओ
स का कोउ विभचारी स्ववरा की अतिमकों मारडारा ॥ पर समता रूपी धर्म कों न त्या
ग त भए आ ॥ हे रामजी जब राजा के गृह विखे मंगल होता है तब अपणे नगर कों
भूखण और वस्त्रों कर भूखत करता है ॥ अरु प्रसन्न होता है ॥ सो अवस्था भी राजे जन
क की देखी थी ॥ अरु एक काल मै भए स्थान अग्नि साथ जलते देखे जो बहुत सुंदर ए
स्थान जलने है ॥ तो मभी अपणे समता भाव ते चलायमान न भए आ ॥ अरु एक औ
र राजा था ओस ने राजा और कों ओठाए दीआ आप राज विना विचरने लागा अरु स
मता ते चलायमान न भए आ ॥ अरु एक देत्या ओस कों देवतिआं हुका राज प्रापति
भए आ ॥ बहुत राज नष्ट होगए आ ॥ पर दोनो भावों विखे सम रहा ॥ एक बालक या
ओस्ने चंद्रमा कों मार दवाला जागा कर अरु अग्नि कों एक मारी ॥ पर जेठ है जिकानि
हेरहा ॥ हे रामजी एतने आदि लेकर सेव कुनते देखे है ॥ जिनकों आत्म ज्ञान सम प्रा
पत भए है ॥ सो सुख दुःख कर चलायमान न ही भए ॥ हे रामजी प्रारब्ध ज्ञानी अरु अज्ञा
नी की भोगणी तुल्ले है ॥ पर जो अज्ञानी है सो राग द्वेष कर तपायमान होते है ॥ अरु ज्ञा
नी दृढ सम रूके वस्ते तपायमान नहीं होता ॥ अरु समता अरु स्थावि खे ओस कों सम
भाव होता है सो आत्मपद के प्रापति नहीं होता ॥ ता तो यों कर वर्तनां करता जब
र मा पति होती है ॥ जब अपणा विचार उत्पन होता है ॥ तब सम भगो भासते निवृत्त होते
जाती है ॥ अरु सर्व जगत आत्म रूप ही भासता है ॥ ऐसी दृष्टि कों लेकर निर्विकल्प
वा वृत्ति खे पड़ विचरता है ॥ एवं ति श्री नसदा निर्गुण रूप हे ॥ रा उ च ॥ हे भगव
ने अभजा अब ओनति दृष्टि जिकों प्रापत भए है तिनकों वासी के कर्मों सायति श्रा
प्रजाने है उत्तम त्याग तिस ओन वो के ॥ व ष वा ॥ हे रामजी जो पुरुष अब ऐ है तिन्ह
है तिन त्याग अरु ग्रहण की भावना वल तीर हती है ॥ तिस भ्रम कों त्याग कर समार हुके अ
न मार पड़ चेष्टा करते है ॥ अरु जो कछु भावाकि आओन कीं वन पड़ी है तिस कों त्याग
नहीं करते ॥ जिस विखे ओन कों ज्ञान प्रापत भए आ सो एक अचार पड़ करते है ॥ अर
कों यह ही करते और जिन कों ग्रहस्त ही विखे ज्ञान प्रापत भए आ है ओह ग्रहस्त ही व
स्व वहते है ॥ त्याग नहीं करते जैसे दृढ अपर स्थित ते है ॥ और जिन कों राजा विखे है ते है ॥ रा
सत्म हो जा वृक्षण कों ज्ञान प्रापत भए आ सो ब्रह्मण ही के कर्मों विखे वर्तते हि
ग ॥ एसी प्रकार कछु जीव पशु हे जिस पस्थान कि सी कों ज्ञान प्रापत भए आ है सो
कर्म करते है ॥ हे रामजी कए ज्ञानवान ग्रहस्त विखे रहे है ॥ कए वन विखे विचा
रते है ॥ कए पर्वत की कंधी विखे ध्यान पर स्थित होर हे है ॥ कए मथुरा विखे विहार करत य
विखे प्रिया गर्भ विखे वहते है ॥ कए देव तिआ हु गृह का एक जा न करते है ॥ कए मही कर्म
करते है ॥ कए तीर्थ अग्नि होत्र करते है ॥ हे मारी तिआं ॥ कए जाप करते रहे है ॥ कए
असमा चल पर्वत ॥ कए उदय चल पर्वत पर तले कर जो पर स्थान है तिनो विखे
विचरते है ॥ कए एक ठौर वाल ते है ॥ कए नगर ही विखे रहते है ॥ कए तप ही करते है
अरु कोए न तल कर पर स्थान है तिनो विखे विचरते है ॥ कए पाताल विहत कर्म
ते है ॥ कए च तर हते है ॥ उह अ विहित कर्म पड़ करते है ॥ कए भिक्षा मांग
खाते है ॥ कए आग आनी अह कों निआ ए विचरते है ॥ इत्यादिक नाना प्रकार की
चेष्टा ज्ञानवान भी पड़ करते है ॥ काहे ते जो ओन कों स्वभाव कछु आ तिस प्रापति भए है
ते तन तत्कर कछु नहीं करते ॥ हे रामजी सुभ क्रिआ करी है ॥ अथवा असुभ करी है कों
ओ क्रिआ ओन कों बन्धन न करती ॥ अरु जो अज्ञानी है सो जेसा मेकरत सर्वग कों भो
गता ॥ हह पुन कर्म कर सर्वग कों भोगता ॥ पाप कर्म कर नरक भोगता ॥ अ
नो कामनां ने बहुत कर्मता ॥ तब यतः करता ॥ सुख होवेगा ॥ सत शास्त्र अरु संतों
के साथ कर सुधता कों प्रापत होवेगा ॥ अरु जो अर्थ शब्द छिपे है ॥ अरु पाप करत लाग

उ जाव दि अरु आत्म अभ्यास कों काड़ि देव दिसे दोनों भासों ने भिन्न है ॥ न सर्व कों प्रा
पति होता है ॥ न आत्मपद कों प्रापति होती ॥ अरु न पर दान नीति ये सो वरो ॥ आर क
कुरु भी आत्मपद की प्रापति नहीं होती ॥ जब विचार उपजता है ॥ अरु आत्मपद
का अभ्यास करता है तब विचार उपजता है ॥ तब ये आत्मपद कों प्रापति होता है
जब आत्मपद की प्रापति भए तब निहसंके हो जाता है ॥ चेष्टा विवहार कर्ता भी
दिखिआवता है ॥ पर अंतर ते उस का चित शांत हो जाता है ॥ जैसे तांबे कान द्रा
हो वे उस कों पारस स्पर्श करीए तब उह सवर्ण होता है ॥ जैसे तांबा का न द्रा
म का लष्टा हो रहता है पर तांबा भाव उस का हर जाता है ॥ सो प्रकार उ
लम पद का स्पर्श होता है तब चितपणा नहीं होजाता है ॥ तैसे चित कों आ
पर जगत की मत ता नष्ट हो जाती है ॥ हे रामजी अब तुम जागे हो अरु तिह संक
ह पद राम रुप रूपी जो तुद हे सो तेरे नष्ट गए है ॥ चेष्टा इसी प्रकार पड़ी होती है
कों प्रापति भए आ है ॥ सर्व का अर्थ एक परम सुध चेतन ते ति सकों तुह प्रापति भए आ
है ॥ हे रामजी जो मे कछु कहे है सो तुम कहा है ॥ अरु निर्विकार आत्मपद
के कुछ नाम जो मयो सो तुम जा लि आ है ॥ अरु राग का नाश आत्मपद का है ॥ अरु जो
जेन कहे है अब जान ता है ॥ अब ते निहसे कहो कर विचार ॥ सर्व के पर एतन कछु कहा है ॥ एते प
छु अब अन मेंतो रहि तपद कों तुम प्रापति भए आ है अब पद जो अविनासी अरु सम भते
उत्तम पद कों प्रापति भए आ है ॥ वाल्मी उवाच ॥ हे साधु एस प्रकार जब मनु विरत
सार हुले वसिष्ट जी कहा अरु तुम तो होरहा ॥ तब जो ने वा कछु सभा वे ठे थी सो सम भई पर
मति निर्विकल्प पद विखे स्थित हो गए ॥ जैसे कमल ले फूल पर भवर अचल होते है ॥ तैसे सम
भे नों कचित रूपी भवर आत्मरूप कमल के रस कों लेने हू एए स्थित होरहे ॥ अरु सभ कों ज्ञा
ता कों आदिक अचल होगए अरु जो पखेरु भी ने सुख स्थित भए ॥ अरु जैसे कछु निकरि स्थित गए सो चित्र भक
पत्ती आ वाल के समहि तन चपल थी सो सुन कर जड वत हो गए ॥ अरु जो सुनने हार है ॥ अ
कछु पाएके श्रवण कों सिद्ध के राग आवते थे तिन भी फूलों की वरखा करी ॥ तब वसिष्ठ कर
राग लागे है व सिष्ट जी तुम जो सो कछु पाए कहा है ॥ पर जेसा तुम कहा है ते सा आ
ग सुण आ भी नहीं अरु सुणने आ कहि आ भी नहीं ॥ हे भी अने क सो कछु पाए श्रवण कीए है
सो श्रवण कर रहे है ॥ तु मारी सुखते जो श्रवण की आ है तिस कर हम परम सिद्धांत कों
जानते भए है ॥ एस के श्रवण कर पाप की क्रिआ भी छि नाश भए है ॥ अरु सम तु मों कों
बात कि आ कहीं अ ॥ उह कुल छिताय हुए निहपाप है ॥ ज्ञान कों पाए कर मुक्ति हो वहिंगे
श्रवण कर ही अहि नव अतिमानिक रहे थी सो परम विस्मय भए जो अरु सापर मसिद्ध जनन कर
मन की आ ॥ अरु कहत भए आ है भगवन तुम स्पष्ट सम जेकर सम पे न तुम री क्रिपा कर हम एस राम
ष के ॥ जैसे सहर राम सी का चंद्रमा हरण होता है तैसे ह मसहर न भए ॥ अरु तुम सों सहर शा मा
सब श्रवण कर पाए आ है तिस कों सुण कर हम सहज नकन ते जो ग है ॥ सो हदे वे तु म ताए जेत
किस मां थकर रहि ॥ ऐसा पदार्थ प्रथवी विखे कोउ नहीं ॥ अरु कामना लोकार वति अड विखे
भी कोउ नहीं जान मारी एजा जो मांग होवे ॥ सम भए दारथ कल्पते है ॥ अरु जो सत पदार्थ सोइ था सा
ग ॥ अरु हासी भी नहीं वर्णी ॥ हे मुनीश्वर मे राजा दशरथ अरु संस्मरन मे मग्नीत ॥ अरु की
वन अरु अरु चावा राज आ राजा ॥ अरु जो कछु लोक विखे मे जिस की आहे ॥ अरु जा
क कुंपन कीं परलोक नाम ते आहे ॥ सम भए नु मारे चरनो के आगे नेवेदन है ॥ एस प्रका
र का हि कर राजा दशरथ वसिष्ट जी के चरनो पर गिर आ ॥ तब वसिष्ट जी बोहरा जा द

व
म
८२

दश्यदुःखनेहैंजिसकीऐसामर्थाहै॥ यहहमनेश्रद्धादैहमराजकिआकरोहै॥ अरराजाका
विवहम्हमकिआजाताहि॥ अरकवीश्राओमीराजकीआहैराजरवतेहोनेहैनमही
सिद्धहोवेगा॥ अरयहजोतेरापरीभहैसोमेश्रपणाहीजानताहो॥ अरयहचारोपुत्रोंने
मेश्राणहीश्रपणोजानताहों॥ हमनेतातेरेपणामहोवाजनष्टहै॥ यहराजकापमाहा
तरूकोंश्रा॥ वाल्मीकीउवाच॥ जवएहप्रकारवसिष्टजीकहा॥ तवराजादशरथ
बहुडकहितभयश्रा॥ किहिस्वामीतेरजोगकोआपथेनहीं॥ हेतुरुकोंब्रह्मांडकोहै
रहे॥ यहवचनआपकहतेविखेभीहमकोंलज्जाआवतीहै परंजोमाकेश्रर्थनमोश्रोंने
वेनतीकरीहै॥ जोमातडपापश्रवणाकोश्राहै॥ अपणीशक्तिकेश्रनुसारहजावरहि॥ त
ववसिष्टजीकहावैठेभाजावेठगएश्रा॥ वहुडरामजीनिरअभिमानहोवतकेहितेम
पश्राहेसेंमेरूपीअधकारकेनाशकर्तासर्ज॥ अरेहभगवनेतमारापुजनेहमतिसमार
करहिजोपदार्थग्रहविखेश्रपणाहोवे॥ ताहरजीमेरपासश्रातेताकछुनहींपकारा
महीहै॥ ऐसेकहकरचरनोपरगिडिआ॥ ऊठकरवसिष्टजीकेमुखकीओरदेखावहुड
गिडिआ॥ नेत्रोंतेजलचलिआवेवारंवारचरणोपरगिरे॥ आत्माआनेदप्रापतेकेडताहुई
कैं॥ तववसिष्टजीकहिआवेठजाओहु॥ रामजीवेठगए॥ तवलक्षमणभयेश्रत्रुघन
घेपादकरपूजनेलागे॥ राजेरिखवसिष्टमप्टजोगलागे॥ फुलांकीवरखावहुड
वसिष्टजीकाशरीरढपिआगएश्रा॥ वसिष्टजीभुजामाथफुलहरकीपतवशुखिष्ट
आवणेलागा॥ जेसेवटलोकेहरफुपवंदमाडिप्तआवतेहें ताहे ते॥ सुखभासिआ॥ तव
वसिष्टजीकहाहेवरवीशवरहुविश्रामकामेस्वविश्वामित्रनारदएननेश्रदिलेकरजो
वैठेथेतिनकोंकहा॥ हेसाधोकछुमेवचनकहेहें सिधांतके॥ एनतेयस्मययवावथहो
वैसोश्रवतमकहो॥ जेसाजेसामसेवनेहोताहै तेसाश्रभरिखाहरताहै॥ तेसेतुमकहो॥ तव
सभीकहतभएहेमुनीश्वरयहतमपरमसारवचनकेहेहें॥ जोतमोरेवचनोकोश्ररव
धजाकमनिराकरेगासोमहापतितहोवेगा॥ एहवचनपरमपदकेपावणाकाका
रणहै॥ अरहमारेश्रतरभीजोजनमजनमांतरकीजोकछुमलसोनष्टहोगएहै॥ ह
तोएहरगाज्ञानवानथेपरहरवजनमजोधारहैतिनकीसिमतेहमोरचितविख
थी॥ जोश्रमकाजन्महमपसभकारपापश्राथा॥ अरश्रमकाजनमएसप्रकारपाप
था॥ सोसभमितनश्रवनष्टहोगएहै॥ जेसश्रसविखपापश्रवनेश्रुधहोताहै॥ तेसे
तुमारेवचनोकरसिमूतरूपीमलहमारीनष्टभएहै॥ अवहमजानतेभएहैजनकोज
नमथाहमकोजन्मथाहमकोजनमपापश्राहेहमश्रपरोहीश्रापविखे
पस्थितिथ हेमुनीश्वरतकेसहपसरनविगोकरहेहो॥ अवजानेश्रवतारहो॥ से
सेतुमकोंहमारीनमस्कारहै॥ राजादशरथभीधनेहै॥ जिसकेरामजाकदेहम
तोकछुपापश्रवगाकीश्राहै॥ अरएहरामजीविसभगवानहै॥ वाल्मीकिउवा
च॥ एसप्रकाररवीश्वरमुनीश्वरवसिष्टजीकोपरमपूजनकरनेलगे
लागे॥ जिसकेचारविलाडोतारलीश्राहराजदशरथकीडस्तनेकरनेलागे॥
सतनवारकेवसिष्टजीकोश्रद्धपादकरपूजनकरनेलागे॥ वहडश्रकाशकेसि
द्धोलेलागे॥ वहडश्रकाशकेसिदवालेहेवसिष्टजीतुमकोंहमारानमस्कारहै
तुमगुरुकेंभीगुरुहो॥ अराजाकछुतमडपरदशाकीश्राहै॥ अरातिसविखजुग
ताकहीहैं॥ ऐसेवचनवाणीसरीजोहैसरस्वतीसोभीकहुश्रसवानकहेतुम
कोंवारेवारप्रणामहै॥ अरराजादशरथचारदीपोंकेश्रदोकाराजानिसको
भीप्रणामहै॥ जिसकेश्रसेगाहमतानश्रवजुमताश्रगीहै॥ अरएहरामजीवि
भगवानजीनरापतोहैचतरश्रात्माहे॥ एसकोंहमारापणामहै॥ एहजानाचाहेश्रा
है॥ आपसवारहवेतहै॥ विस्नभगवानतेकोपरक्रियाकतीहै॥ राजकुमारसी
वन्नजश्रवणाथाकोंथारकरवेठेहैं॥ अरवसिष्टजीपरमगुरुहै॥ अरविश्वामि
त्रनपकीनेहै॥ एसप्रकारजवसिडकहिरहेतवदेवलोकोंकीवरखाकरनेलगे

बहुड

प

जेसेहिमालेपर्वतपरचंपेकीवरखाहोतीहै॥ अरवपेवाररहनेहोमाताहैने
सवसिष्टजीहरतभएश्रा॥ अकाशचारीजोब्रह्मलोकेकेवासीथेतिनोंभी
हैलोकीवरखाकरी॥ अरजोसभाविखेवैठेथेतिनोंपूजनकीआ॥ अरश्रा
रराजारिखब्रह्मरिखवैठेथेतिनकाभीजयाक्रमपूजनकीआ॥ अरश्री
रजवसिष्टजनकरकेतवकणश्रानतिष्टहोरहे॥ सभनोंकेचित्तनिर्मलहोग
ए॥ अरश्रपणाश्रभाविखपस्थितभयजेसेपुनमकीरितुकोकोलकरदरिककर
हतभएहैरवीवसीश्राहकोंकुलाविखेचेद्रमातेश्रववसिष्टजीरामजीकोंक
तिहै॥ अरोकश्रारागतोरे॥ रामउवाच॥ हेभगवनतेमारीकृपातेमैश्रपणे
आपविखेपस्थितिहूं॥ अरवकोऊकल्पनागुरुकोनहींभइहो॥ परमशांतहूआ
हूं॥ गुरुकोंशोषकोऊनहींभासताहै॥ केवलश्रपणाहीश्रापएहरतभासता
है॥ अरवगुरुकोंमेसाकोऊनहीरहा॥ अरएकाभीकोऊनहीं मेपरमपद
कोंप्राप्तभयाहो॥ कोऊकल्पनागुरुकोंनहींफुरती॥ जेसेमनीलपीतादि
कोंपाथतेरहतेपमपटकप्रकाशतीहै॥ तेसेमेनिरउपाधपस्थितहो॥ सेक
ल्पविकल्परूपाधकाश्रभावहोगआहै॥ परमशुधताकोंप्रापतभएश्राहूं॥ वि
तेमेरापानलाराणपश्राहूं॥ वेसामेरीश्ररवचनपडीहोवेगी॥ अरनिश्चितविक
कुनपुछेगा॥ जेसशिलाविखप्राणनहींफुरतेतेसमुझकोंउतकलनानपु
रगी॥ हेमुनीश्वरश्रवमुझकोंसभश्रकाशरूपभासताहै॥ मैमौनरूपहों॥ प
रमनिर्वाणहो॥ भिनभावनजतमुझकोंकोऊनहींभासता॥ सभैश्रपणा
आपहीभासताहै॥ अवजोकछुतमकहोसोपकरो॥ यवशाकमुझकोंको
ऊनहीरहा॥ जेसाराजकरणभोजनेकरनेवेदशास्त्रचलनापाठकरणा
मकदहूतेमाकरो॥ तमारेप्रसादकरमुझकोंसभेसमानहै॥ १८८॥ इतिश्री
वि  त  के  कनेने  मस  ॥ वा  को  वाच॥ डोहेमाधतरवपमश्र
कारसमजीकहातववसिष्टजीबोलतभए॥ वसिष्टउवाच॥ हेरामजीवडा
कल्याणहुश्राजोतूमश्रपणोश्रापविखपस्थितभएश्राश्रवतेफेरजथार्थना
णआवे॥ अवजोकछुमनेणाकोंपछाहैसोकहूं॥ रामउवाच॥ हेसमक
पीश्रथकारकेनाशकेतामजेश्रवलमारीश्रसारकारमेपरमविश्रातिकोंप्रा
पतिभएश्राहो॥ अरश्रनंतसमुखपतकोकल्पनातेवरहेहो॥ सातराजातभीमु
फकोंमुखपतवतभासतीहै॥ अरश्रवणाकरणेकोपकछभीनहीरहो॥ संह
रणासमलपहोगएहैं॥ परमश्रनंदकोंप्रापतिभएश्राहो॥ किसीमापकमुख
कोंपछानहीरहो॥ अव——नमुरूकोंप्रापतभएश्राहै॥ श्रेष्ठपहश्रात्मातेए
नरकक्छुनहीभासता॥ मेश्रात्माहोश्रजनश्रवनासीहो॥ शांतरूपहो॥ श्रनेतहो
महाश्रपणाश्रापविखपस्थितिहो॥ ऐसेमुझकोंमेरानमस्कारहै॥ अरश्रले
वामकापवनचलेश्ररमसुद्रडछलेहि इन्यादिकेश्रसरवावहोवाहितोभीमे
रभवेतमहूपतेमलापमाननहो॥ वेगा॥ अरजोत्रिलोकीकाराजमुझकोंप्राप
तिहोवेतोभीमेरोचिनविखहरखनउपजेगामेसमानविखपस्थितिहो॥ वा
ल्मीकिउवाच॥ हेभारद्वाजजवएसप्रकाररामजीकहातवमध्यानकासमे
श्रिपाउदभएश्रा॥ तववसिष्टजीकहाहेरामजीश्रवहमजानेहेमध्यानकाकी
डपासनाकासमाहै॥ तोकछुनरूपकुरणाहैसोवहुडकोलएकुरणा॥ तवराजा
दशरथउठकरवडाहुश्राश्रोसहत॥ वसिष्टजीकावहूतपूजनकीश्रा॥ आरजाति
खमुनब्रह्मरागेथेतिनकोंजथाजोगपूजनकीश्रा॥ मोतीहीरकीमालाभुह
राहपणश्रोडगडेश्रावसत्रभरणापनेतेश्रादिलेकरजोडशाजेकीसमग्रीहेति
तिसकाजथाजोगजोपूजनकोंश्राजोविरक्तमेनथासीथेतिनकोंप्रणामकर
प्रसनकीश्रा॥ अरजोराजारिखथेतिनकाभीपूजनकीश्रा॥ तववसिष्टजीउठ

स्वेदभए॥ परस्पर नमस्कार करी॥ सभ श्रोता उठकर अपने अपने स्थान विचार
करनेको चलेजाव हि सभी हल्ला विहा॥ दोनों की अंगुली हल्लावहि॥ परस्पर चलो
करने जावहि॥ सभ अपने अपने स्थान को गए॥ वसिष्टजी से आज्ञा पाय सभा करने लागे
राघवको जेते श्रोता थे सो आए॥ सो विचार एकरात्र वितीत करने भए॥ सूर्य जो की
किरणों सो अवड आए॥ गगनचारी सभ लोकों के रहने वाले रिखि देवता आए
सबै श्रोता गजरिख ब्रह्मरिखि आए जो श्रोता थे सभ आप कर अपने अपने स्थान
पर बैठ गए॥ परस्पर नमस्कार करीआ॥ तब रामजी हाथ जोड कर उठ खडे
हुआ॥ अरु कहा हे भगवन अब जो कछु मुझ को श्रवण कराया सो अरु जानने
गा रहता है॥ सो तुम मुझ को कहो॥ वसिष्ट उवाच॥ हे रामजी अब जो
कछु सुनना था सो तुम सुणिआ है॥ अब जो कछु जानना था सो
तुम जानिआ है॥ अब चित्त अचित्त भए आहे॥ हे रामजी जो तुं वर्णी अद्भुती
कुल है सो तुं तारी है॥ जो कछु आगे हुआ है अरु जो कछु अब है जो कछु आगे
होवेगा सो सभ तुझ कि नकिन तकी प है॥ अब तू परम पद को प्राप्त भए है
और जो कछु तुझ को पूछणे की इच्छा है सो पूछ॥ अरु हे रामजी॥ जो मन नाम
मात्र विखे स्थित भए आहे तो विश्वामित्र के साथ जा प कल्प सकाज क
र॥ अब कछु पूछणे की इच्छा है॥ राम उवाच॥ हे भगवन आगे जो मैं देखता
था सो प संदेह से जगत परिछिन्न देखता था॥ अब जो आप को देखता हूं सो
मैं सर्व अपने आप विखे व्यापक को देखता हूं॥ आप ते पर मुझ को कछु न
ही भासता॥ सभ अपना आप ही भासता है॥ हे मुनीश्वर अब पसारी अद्वैत सोई
भी मुझ को प्रयोजन कछु नहीं रहा॥ जैसे पल्ल मिटे ते सुगंध लेकर पवन चल्ला
जाता है॥ अपने अपने स्थान को॥ अरु रस लाभ तिस का प्रयोजन कछु नहीं रहता॥
तैसे मेरे देह विखे जो कछु था सो मैं पाया है अपने आप विखे पायो है
शरीर साथ मुझ को प्रयोजन नहीं॥ अरु राज भोगों का मुझ को कछु सुख न
हीं॥ अरु दुख भी कछु नहीं॥ वही मुझ को दुःख सुख को हरख शोक कछु न
हीं मैं अब सर्व ते उत्तम पद को प्राप्त भया हूं॥ सर्व कल्पना ते रहत हूं॥ अ
विनाशी अक्षत रूप हूं॥ सर्व ते निरंतर हूं॥ सदा अपने आप विखे स्थित हूं॥ जो
कछु पावना जोग था सो पाया है॥ जो कछु सुनना जोग था सो सुनिआ है॥
जो कछु न करना जोग था सो कहा वि॥ जो कछु मैं पाना था सो पाया है॥ अब तुमारी
वाणी सफल भई है॥ जैसे कोई बैरागी को श्रवण देता है तिस और रस तिस का
राग जाता है तब उस का फल होता है॥ अरु उस का कल्याण होता है॥ तैसे तुमा
री वाणी कर मेरा संशय पीरा गया है॥ अरु अपने आप कर तिस भया हूं
ता ते तुमारी वाणी सभ सफल भई है॥ अब मैं निरहंस कहे कर अपने आप विखे
स्थित हों॥ पजगत कछु वणिआ नहीं॥ जिंकाति अडोल तरूप स्थित है॥ २८
इ श्री वी व नं म सर्गः॥ वसिष्ठ उवाच॥ हे महाबाहो राम
जी वुह उत्तम बचन सुण परम॥ दृढ अभ्यास को नमित कहता हों जैसे अ
रथी को जिजि मार्जन करीता है तिति उज्जल होता है॥ तैसे बार बार श्रवण का
अभ्यास दृढ होता है॥ अब जेता कछु जगत भासता है सो सभ चिदानंद
है भासती सोप बल है जो आगे भान रूप होती है सो भान रूपी चेतन है॥ ताते
जो पदार्थ भासता है सो सभ चेतन रूप है॥ जो भिन्न भिन्न पदार्थ भासते हैं सो चित्त की
कल्पना कर भासते हैं वास्तव चेतन भान रूप चेतन है॥ जैसे जो उच्चार करीता है सो सभ
शब्द है॥ पर अर्थ कर भिन्न भिन्न भासते हैं॥ अरु जो अर्थ करीए
तो एक ही जल है पर तरंग बुदबुदे अनेक प्रकार हो भासते हैं॥ अ
र्थ ते रहित शब्द एक ही है तैसे सभ चेतन है॥ चित्त की कल्पना कर भिन्न भि
न रूप भासते है॥ और वस्तु कछु नहीं॥ जो भासता है सो तिसी का आभास है॥ हे रा

मजी आभास विखे भी अधिष्ठान सत्ता भासती है॥ पर ज्ञान विखे भेद होता है सो ज्ञा
न विखे भी भेद नहीं॥ भिन्न विखे भेद है॥ जिस विखे अर्थ भासते हैं अज्ञान रूप अ
नुभव सत्ता है तिस विखे जैसी अर्थ की भिन्नता आभास होती है तिसी को जानीता है
जैसे जेवडी पकड पडी होती है तिस विखे सर्प का अर्थ भिन्नता करे तो सर्प तो क
छु नहीं॥ उह जेवडी ही है॥ तैसे अर्थ भेद ज्ञान करीए तो ज्ञान नहीं है सो पंचतो क
अ भासते हैं सो सभ अज्ञान रूप है॥ और कछु वणिआ नहीं॥ हे रामजी सर्व को दृश्य
तैसे ते काजनु चेतन के नमित कहे हैं वास्तव तुम्हारा भी कोउ नहीं है इन सत्ता
अपने आप विखे स्थित है॥ जैसे समुद्र सदा जल रूप है॥ द्रवता करके तरंग बुदबु
दे हो भासते हैं॥ सो नाना रूप नहीं अरु नाना हो प भासते हैं॥ तैसे सभ जगत अनो
रूप नहीं पर नाना हो भासते॥ तैसे अपने आप मन को विभिन्न को विचार देखजा ते आत्म
बहु नाना प्रकार हो भासता है॥ पर कछु हुआ नहीं॥ तैसे एक जगत तभी तैसे अपने आप
देखा रहस्य गाव कछु नहीं॥ सदा निराकार निर्विकार प्रकाश रूप आत्म सत्ता अपने आप विखे
स्थित है॥ राम उवाच॥ हे भगवन जो अद्वैत सत निराकार विकार सदा अपने आप विखे
स्थित है तो पृथ्वी कहां ते उपजी है जल कैसे उपजा है॥ अग्नि वायु आकाश पुनः
पकाल इत्यादिक कल्पना चराचर काहा विखे कैसे उपजे हैं॥ मेरे इस बाध के नमित
कहु॥ वसिष्ठ उवाच॥ हे रामजी पहले कछु सभ विखे पृथ्वी उपजी है॥ सो क
हां ते उपजी है॥ अरु जल वायु अग्नि आकाश पुनः कहां ते उपजे है॥ देशकालपदार्थ
कहां ते उपजे हैं राम उवाच॥ हे मुनीश्वर मेरे विखे जो पृथ्वी जल आदिक अरु देशकालपदार्थ
सभ आत्म रूप हो ते हैं॥ आत्म सत्ता ही जगत रूप हो भासती है॥ देश काल पदार्थ
कोउ नहीं॥ आत्म सत्ता ही जिसको निहोती है॥ सो अनंत वेलि अरु को जिंको तिभासती है॥ अरु पदार्थ
रजो अरु सत्व सिक दर्शनी है तिनको भिन्न भिन्न पदार्थ भासते हैं॥ भास रहा है ताको तुल हो ता
है॥ पर जिसको यथार्थ ज्ञान भया है अरु अर्थ को ग्रहण करता है॥ तिसको जिको तिआत्म सत्ता भासती
है॥ हे मुनीश्वर अरु जगत कछु बणिआ नहीं॥ उही आत्मसत्ता पस्थित है॥ जबका टोल रू
प की संवेदन फुरती है तब पृथ्वी पदार्थ रूप हो भासती है॥ अरु द्रवता का संवेदन फुरता है तब
जल रूप हो भासता है॥ अरु जब उष्ण रूप की संवेदन फुरती है तब अग्नि भासती है॥ व
सी प्रकार वायु आकाश आदिक पदार्थ जैसे फुरता होता है तैसे हो भासते हैं॥ जैसे जल तरंग
रूप हो भासता है॥ पर जल ते पर तरंग कछु नहीं जल ही रूप है॥ तैसे आत्म सत्ता जगत रूप हो भा
सता है॥ पर जल ते पर तरंग कछु नहीं॥ जल ही रूप है॥ उही रूप है॥ और जगत कछु बन
नहीं॥ अरु पृथ्वी आदिक सभ अरु भास विखे होते हैं॥ चलत वर्त कछु नहीं॥ काहे ते जो कार
ण रूप है सो आकछु नहीं॥ अपने आप विखे आत्मसत्ता जो कछु जगत भासता है सो अका
शरूप है॥ आत्म सत्ता सदा अपने आप विखे स्थित है॥ न को अर्थ है॥
न अर्थ है॥ अरु अर्थ विखे आत्म सत्ता अपने आप विखे स्थित है॥ अरु उही नाना प्रकार हो भास
ती है॥ सब चित्त संवेदन फुरती है॥ तब पृथ्वी जल ते जल वायु आकाश पदार्थ देश काल हो
भासते है॥ कहु सर्व आत्म का ज्ञान फुरता है॥ कहु पर किछु नतना भासती है पवासल्तवते कछु
वणिआ नहीं॥ उही वस्तु है॥ जैसे तिस विखे फुरणा फुरता है तैसा हुए भासता है॥ अजन्म भवत
ता परम प्रकाश रूप है॥ जिस विखे प्रकाश भी प्रकाशे है॥ २८० इति श्री वि वास नो
न रूप पा नं म सर्गः॥ रा उ च उ॥ हे भगवन पद प्रसन्न हो जो जाग्रत अ
वस्था विखे कछु भेद नहीं अरु परम प्रकाश रूप है तो निमस सत्ता को जाग्रत अवस्था सम
रसा यके समजाग है॥ उह लानि र्वव निराकार है॥ व॥ वा॥ हे रामजी जैसे प्रकार भास
तेहे॥ तरु को भासते भय प्रकाश रूप है तरु को भासभय प्रकाश रूप है॥ अकाश विखे प्रकाश
है पस्थित है॥ सभ के आदि आकारों का अभाव था सो अब भी जाग्रतजोड पजा डोको न
हीं पर प्रकाश सत्ता अपने आप विखे स्थित है॥ जब तिस अद्वैत सत्ता चिन्मात्र विखे
तिन कवन होता है तब उही सत्ता आकार की न्याय भासती है॥ पर कछु हुआ नहीं प्रकाश

व॰
म॰
८४

दीरूपहै ॥ अरु जैसे विद्याधरिका अनुभव कर्त्ताहै सो कछु अकार नहीं है तैसेहै
पर अकार होय भासतेहैं ॥ जैसे एह जगत भी निराकार है ॥ पर फुरणे कर अकार होय भास
तेहै ॥ जिनोंने तैसे शरीर होता है सो तिन भी नहीं उपजत हुए ॥ तो शरीर कों उत्पत्ति कै
सेको ॥ हे रामजी आवरण जगत कछु आन नहीं ॥ ब्रह्म ही कचन कर जगत रूप होय भास
ताहै ॥ जैसे जल अरु द्रवता विषै भेद नहीं किछु ॥ जैसे शून्यता अरु आकाश विषै भेद न
हीं ॥ तैसे ब्रह्म अरु जगत विषै कछु भेद नहीं ॥ वरनन करने के अर्थ भेद कहते हैं ॥ जब वेदनात
पुरे तब अर्थ संकेत न होवै ॥ भिन्न भिन्न वस्तु ते पक नहीं मन ताके नाम हैं ॥ मन नाम तत्त्वा
मन है जब वेदना फुरी है ॥ नहीं तो गाढ जल रव के लेलहै ॥ वास्तव एह काल मनेतिहै
हे राजन तन जैसे अस्त्री आजो परख अरूपहै ॥ अवर हरहै ॥ तिसको अर्थ किसी रीआ ॥ जो
सकों के सपहू चताहै ॥ अरस रूप अरूप का कस मजा गहै ॥ जो कोऊ मुग्ध स्वेद नु पर
खुहै तिनको समभ पराये तिकदिहै ही भासते है ॥ जैसे कोऊ परख मनोराज कल्पताहै ति
स विषै बड़ा देसार चेसा हुवलेहुवे मार्ग है ॥ तो जो ऊ से दशा के धासी है तिनको रखो अप
के कर हुमसार दशा हुवलेहुर है ॥ पर जिसका मनोराज है तिसको तो समभ निकदिहै अ
पणा आपही आपहै तिस प्रकार जो मुग्ध संवेदन रूप है ॥ तिलको अर्थ जाकों ऊ धता है सो
ई यार अर्थ अथवा देवताके अर्थ तिनको तिकदिहै निकरि समभ अपणा विश्व भासता
है ॥ आदि नेति एसी प्रकार हूए है ॥ जो मुग्ध संवेदन को समभ अपणा निकदि है निकदिहै
भास ॥ काहेत जो समभ मैं कल्परूप है ॥ जैसीर चना संकल्प विश्व रची तीहै तैसे होती है
सं कल्प विश्व किञ्चा नहीं होता ॥ अर्थ भका जोश मनतेऊ की आहे जो काष्ठ काष्ठ ने विके
हीं मार्है से अपणा ॥ हे राजन आदि जो संकल्प रूप अहाहै तिस अपणा मनोराज विश्व ने नकरी है
ज्ञात पश्चारकें कैप सका वरय अरस्था पसिद्ध होता है उस के कहते जो काष्ठ काष्ठ भासने
होणपआ ॥ तो न विचार कर देखु जापसी का स्याने का हु का स्वनेभ ए आहे जो संकल्प मात्र
था ॥ जो संकल्प ने पलन भी कछु होता तो काष्ठ कासने होता पआता ॥ अरपह भी सबै विश्व
संकल्प रूप है ॥ जसा संकल्प दृढ होताहै तैसा होय भासताहै ॥ जैसे कल्प अपणा मनोराज
विश्व संकल्प करे जो पद अमेरहे ॥ अरु जो एसे तैसे अप्रकार करे तब अ... जावे तो हो
ताहै किंतेन वरय अरस्था प भी ओर प्रकार हो जाते हैं ॥ आ नेकोऊ जगत हुतका र जहै
न कारणाहै ॥ उही आत्म सत्ता जिंकोतिहै ॥ जैसे संकल्प विशा विश्व फुरताहै तैसे होय भा
सताहै ॥ अरु ते एह कछु नाहै ॥ अमत तैने बहु उ जगत के सउ उत्पत्ति होताहै ॥ जा आपही न दे
वे तिस ते जगत के संप्रगट ॥ हे राजन असन एसी का नाम है ॥ जो जगत असनया ॥ तिस स
ने ते जो असत कहा सो असत या आ ॥ सो असत ता जगत की कहीये ॥ आत्मा ते असत न
हीं होता ॥ सभा कामे रख भत आत्मा है ॥ जब तिस विश्व से वधन फुरती है ॥ तब ब्रह्म अ
लख रूप हो जाता है ॥ परतिस संवेदन के फुरणे अरमिटने विश्व ब्रह्म आजिंकातिहै ति
सका अभाव नहीं होता ॥ जैसे जल विषै तरंग उपजता है ॥ अरु लीन होता है ॥ पर तिस
के उपजणे अरु मिटने विषे जल जिंकातिहै तरंग तिसका अभास फुरतेहै ॥ जैसे तम मनो
राकर पकनाका ल्य ॥ वह डिंसकल्प हका उदे ॥ तब संकल्प रूप जगत का अभाव हो
जाताहै ॥ परमन अभिलास रहताहै ॥ जैसे मनकी स्थिति उपजती है अरु लीन भी होजा
ती है ॥ पर अधिष्ठान जिंकातिहै ॥ हे राजन जैसे रस्सा का सका पाक्रि रणा उठती है अ
रु लीन भी जाती है ॥ पर रस्सा जिंकातिहोताहै ॥ तैसे आत्मा विषे के भाव अभाव विष
जिंकातिहै ॥ तिसका आभास जगत उपजता मिटता भासताहै ॥ उपजता है तव उत्प
न भासती है ॥ मिटता है तब प्रलय होजाती है ॥ पर दोनो आभास ही है ॥ जैसे वायु फुरती
तब भासती है ठहरती है तब नहीं भासती ॥ पर वायु एक है तैसे आत्मा एक ही है फुरणे
का नाम उत्पत्ति है ठहरता का नाम जगत की प्रलय है ॥ सो सभ एक घन रूप है ॥ २८४ ॥ इति श्री
भा॰ इती सर्गः ॥ वसिष्ठ उवाच ॥ ॥ हे राजन तन जैसे पणा के दांपरखो काम
आकी आहे ॥ तिसका ते जो जो कोऊ का पाप वासना पआहे सो उस का पाप या ॥

रजोऊ समका विषय वासना एआहे सो ऊन पे नथ्या ॥ अरु पि रागानी थे कछु आ हे राजन पाप
रूप वासना के अनला रति सको स्थित भासती है ॥ अरु पुन रूपी मित्र है सो पाप रूपी श
त्रु आदि सत्र को रोकता है ॥ पुनेरूपी तीर्थ के बलोक के विदरा उ आत्मरूपी पापदेग के वै
र आहो भाए जन कुद देवी को दन करने है ॥ जब अपणी ओरदेखता है तब आपको मरता जानता है ॥ जो मैम
रता हूं ब मित्र क भी की ओर देखता है ॥ भाए जन रूपी तीर्थ को दन करने है ॥ तब आप को मरता जा
अपणा भासता है ॥ भाए जल जल्ला वने ले चले है ॥ एस प्रकार जो उसको मरणा
विरख एकरूप को पाप अआहे मप डाजलता है ॥ अरु पि विषैजल ता देखता है ॥ अरु पि
णा ताहै ॥ जो मैमरणा नहीं जीवता हो जब बहु डपुन की ओर देखता है तब जा
नो मैमरणा हे ॥ मुझको जम ले चले है ॥ जब बहु उपाप की ओर देखता नहीं तब जाणता है
जब बहु पुन की ओर देखता तब जो णमैं नौम्मा आनहीं ॥ जीवता हो पर हूं माने भाए जन
वेदे है ॥ पहमरा विवहार चेष्टा है ॥ एस प्रकार सो नो अवस्था को पक प्रत्यक्ष देखता है जे
संकल्प एव विरख दो ना अवस्था देख पकही प्रत्यक्ष माना प्रकार की चेष्टा देखता है क
हु जीवता देखता है कहु मुवा है ॥ कहु नि र्वाण पावने देखता है ॥ हु त्या नाम्या दिना ना प्रका
रकी चेष्टा पकहु प्रत्यक्ष विश्व होती है ॥ तैसे पक ही पर खे को पुन पाप की वासना के
रजीव ना अरु मरण भासता है ॥ हे राजन पहु सम्पूर्ण जगत संकल्प मात्र है ॥ जैसे स
कल्प दृढ होता है तैसा रूप है होय भासता है ॥ पर लोक जाणा भी अपणी वासना के अ
नुसार भासताहै ॥ अरु जो कछु उसको नामित वाथ वण उरे देता है ॥ सो पुरवाथ वभी उ
सकी पुन पाप वासना कर स्थित भए है ॥ जो कछु पसके आनि मित कहते है तिन कर एह
पुरख नरक स्वर्ग भोगता है ॥ औ कोऊ वाथ वपु अन ही पसकी वासना ही नाना प्रकार
के अकारो को धार कर स्थित भए हैं ॥ हे राजन सहस्र चे हुमेका जो न तु अप्रत्य की
श्री है तिसका उत्तर सुण ॥ सहसहु हो एसी अकाषा विश्व स्थिति होती है ॥ अपरारी अ
परणी वासना के साथ जगत चे हुम हो एवि राजते हैं ॥ परप को कों हु मगर नहीं जा
गता ॥ परस्पर अहाते है ॥ जो अति वाहक भिन्न करि देखते तिसको भासते हैं ॥ अपसी अ
जो कोऊ असी भावना वारे जो मेडो सके संडल को प्राप्ति होतो तो ताल काल ही जा
प्राप्ति होताहै ॥ तिनको अपणा अपणा स्वभ की दृष्टि भासती है ॥ हे राजन
ले गए हैं ॥ पक को दृष्टि हमरा नहीं जो भाता ॥ तैसे पक अप्रकाश विश्व मह स्थवे हमा
वराते है ॥ जैसे ए हुचुम्बक दशपु अरदवा के होय बैठ ॥ तैसे जिसको तीव्र भावना
को ऊ कर्त्ता है सोए होय जाता है ॥ जो कोऊ भावना कर हम एसी मेरद विश्व मसरी ओका
राज कर रहित वहो पजाता है को हन जा अनन्य व रूप कल्प सिद्ध है ॥ जो सती व्र भावना
तिस विश्व होता है तैसी होय भासती है वेद क चर्ना उस पुरख को मन दीप का राज अ
प लिभए आ अर आपके वे लो उस को जीव उसी संरव विरखर हा ॥ तिसीमें रदे विश्व सन्ति
दी पका राजक तेभ ए आ ॥ जैसे स्वप्न विश्व राज करे अपने में ररविरवे ॥ अपरागी से वे दन हो
विछि रूप हो कर भासती है ॥ पसी प्रकार जोए कप स्तो की भावना के के सह स्व पुरव स्व औ
नल गए वे ठहुं ॥ सो हम तिसी के मतो हो वहि ॥ सा भी हो जो ते हैं ॥ हे राजन उस को औ
ती व्र भावना है उ ही एस्ती हम को प्राप्ति भए हैं ॥ अरु पहु जगत के वल संकल्प मात्र है सो
कल्प ते पहु तन कछु वस्तु नहीं ॥ सभ चिदाकाश रूप है ॥ अपणे अनुभव कर प्रकाश ता है
जैसे तिसु विश्व संकल्प फुरता है तैसे होय भासता है ॥ पृथ्वी जल तेज वायु आदिक तत्त्व
को पनहीं आत्मसत्ताही एस प्रकार स्थित है ॥ सो परम शांत है ॥ निराकार निर्विका
र अद्वैत रूप है ॥ ॥ रामो उवाच ॥ हे मुनीश्वर जगत के आदि जो आत्म सत्ता थी ॥ सो कि
स आकार रूप है ॥ ह विश्व स्थित थी ॥ देह बिना तो एस स्थित नहीं होती ॥ जैसे अधार बिना
दीपक नहीं रहता ॥ सो आधार हो ता है तिस विश्व जागती है ॥ तैसे आत्म सत्ता किस विरख प
स्थित थी ॥ वसिष्ठ उवाच ॥ हे राजन जैसे कछु प्रकार तेज को भासते है जिनको देख

वं॰
म॰
८५

85

कालरूपअसतेडोठाएआहे॥ सोहृदिमहींअहंसतनाहीअपनेआपकरपस्थितिहेनिज
भूतौंकरदेहुवगिआभासताहे॥ साभूतभीस्थितविश्वाकेजलवतहेजैसेजेवडीवि
खेसर्पभ्रममात्रहे॥ जैसेसिपीविषेरूपा॥ जैसेआकाशविषेदूसराचंद्रमाभ्रममात्र
है अतनेअतअभावहे॥ तैसेएसभूतआकारब्रह्मविषेभ्रमकरभासतेहे॥ अतनेअत
भावहेकछुबनतनहीं॥ ब्रह्मसतताहीअपनेआपविषेपस्थितहे॥ अरतेएकछाजोज
बस्थेभ्रअपनेआपतेआपउपजताहे॥ तबअबकिंनहींहोतासाहे रातजनकेपएम
केस्वर–सपडेउत्पनहोतेहें॥ अनेकजास्तिहेंअरबासवेतनकछुउपजातानहीं कवी
कछुनानाप्रकारहुआभासताहे॥ परनानाप्रकारनहींभएआजैसेसमेविषेस्वप्ना
हेदेखतोहे॥ जोअहेंतअपनाआपहीनानारूपहोभासताहे एबरपदेहोउतानाफिर
ताहोकिसदाशरीरकुरहेहोउताहे॥ जैसेहुहपबेतअकाशरूपहे॥ यादीरभीआकाशरूप
होताहे॥ भ्रमकरपिडाकारभासताहे॥ तैसेएहजगतअकाशरूपहे॥ हेरामजनतअप
नाआभावविषेपस्थितिहोकरदेख॥ एहजगतसभतेराअनभवअकाशहे॥ स्वप्नका
लाअभावविषेपस्थितिहोकरदेख॥ एहजगतसभतेराअनभवअकाशहे॥
ज्ञिप्तिनभीतेरेजनावराकेनमितकहाहे॥ सुमाभीकछुहुआनहीं॥ सदाआत्मसत्ता
अपनेआपविषेस्थितिहे॥ सबतिसविषेअभासंवेदनफुरतीहे॥ तबउहीजगतरूप
होभासतीहे॥ जबअभासंकल्पमिटजाताहे॥ तबपलेकालभासताहे॥ वासनावतेको
उत्पतभयहे तकोउपलेहोतीहे॥ जिकीतिआत्मसताएस्थितिहे॥ जैसेएकनिद्रा
केरूपहोतेहे॥ एसस्वप्नहूसरीसुखपत॥ साजाग्रतविषेदेतोअभासमात्रहोतीहे
तैसेअभासकोदोसगिआहोतीहे॥ एकजाग्रतअरहूसरीमहाप्रलै॥ आत्मरूपजाग्र
तविषेदोनाकाअभावहोजाताहे॥ हेराजवतेअपनाआपरूपविषेजागकरदेखजा
तोकछुकल्लनाहोतिनकोंत्यागकरदेख सभआत्मरूपहे॥ औरकछुनहीं॥ हेरामजीएसअ
कारमेराजाकोंकहिकरउठखडाहुआ उसभलीप्रकारप्रीतिसेजगतहजनकोंआ॥ जब
सुजनकरपुकारनबमेजिसकारजआपआयासोकारककेंस्वर्गकोचलिआगयाआ॥ श्री
श्रीराज म ह र घा म ना गें॰॥ २८५॥ वसिष्ठ उवाच॥ हेरामजीएजे
गतसभचिदाकाशरूपहे॥ औरहूतीकछुबनिआनहीं॥ राम उवाच॥ हेभगवनलमक
दितेहम्मचिदाकाशहेबनिआवकुनहीं॥ एहतोसिधसाधविद्याधरलोकपालेदेवता
पतेलेकरवरूपहुआसतेहहिमलोकअरलोकपाल॥ वसिष्ठ उवाच॥ हेरामजीएहजोसिधसाधविद्याधरदेवताएमतेलेकरजोकहेअरलो
कपालहे॥ सोबलतेकछुउपजेनहीं ब्रह्मसतताहीअपनाआपविषेपस्थितिहे॥ अरभमक
एहूजेभ्रमतकछुभासतेहें॥ धमेकल्याकरकेबहुपहे॥ परमार्थकछुबनानहीं॥ भ्रमक
रपलकीसततभासतीहे॥ वासनावतेकछुनहीं जैसेस्थितविश्वाकीनदीजेसेजब
हडीविखसर्प॥ जैसेसंकल्पनगरतैसेएहआत्माविषेजगत॥ हेरामजीजैसेस्वप्न
विश्वनानाप्रकारकेअरदेसचनभासतीहे॥ परकछुहुएनहीं तैसेएहजगतहे॥
अजोपुरखएसकोंदेखकरसततमानताहे सोभ्रमकरजीनहींउहेदेखताहे॥ जोआत्मकोंदेख
ताहेसोएदेखताहे॥ साएससनिकटहीहे॥ हेरामजीएहलोकअरलोकपलासनाविखे
जिकानिहे॥ जैसेएस्थितिहेतैसेहीहे॥ परपरमातेकछुउपजेनहीं॥ अनभवसताहीविखे
मानकरदिशारूपहोएभासतीहे॥ दिशाहीदिशरूपहोएभासताहे॥ परसरूपतेएत
रकछुहुआनहीं॥ जैसेआकाशअरशून्यताविखकछुदनहीं॥ हेरामजीएकअअबतेऔर
बिनाशसुनतमविश्वजैसेहमबहे॥ तैसेएकआगभीचिनपतभाहुपहे॥ एसएक
कल्पविश्वहअतमहूपएआ॥ तेसेमेराशिवखाअमेनेरागुरथा॥ तबएकबनविश्वत
ऊमुकोविशोभमनकीआया॥ विश्व उवाच॥ हेभगवनएसमुककोंसमाहे सो
तमनाशाकरी॥ सोमहाप्रलविश्वनाशकिआहोताहे॥ अरयविनाशीक्रियारहताहे
गु उवाच॥ हेतातजेनाकछुशेषविशेषरूपजातेहे॥ सोसभनाशहोजाताहे॥ ने
सेसभकाजगतसुखपतविखलीनहोजाताहे॥ तेसेसभजगतलीनहोजाताहे॥ ति

गाविशेषब्रह्मसत्तासेघरहतीहे॥ औरक्रियाकेसकालसभनाशहोजातेहैं॥ एकारा
भीनाशहोजातेहे॥ पृथ्वीअपनेजबाएपहारनदीआपनतेआदिलेकरजोजगत
हेक्रियाकालभेवसजगतसाभसनासहोपजाताहे॥ ब्रह्माविष्णुरुद्रएहजोकार
णोंकेकारणहे॥ तिनकानामभीनहींरहता॥ सर्वेदनसकतिजोचेतनकालक्रम
रूपसोभीनहीरहता॥ अचलचिन्मात्रएकचिदाकाशहीशेषरहताहे॥ शि उ
वाच॥ हेमुनीश्वरजोवस्तुसतहोतीहेतिसकोनाशनहींहोता अरजोअसतहे
सोअभावरूपहेएहजगततोविदमानभासताहे॥ सोमहाप्रलेविखकहांजाव
गा॥ गु उवाच॥ हेतातजोसतहेतिसकानाशकदाचितनहींहोतासोजेताकछुज
गतलखकोंभासताहे॥ सोसभभ्रममात्रहे॥ एसविश्वकोउबतसतनहीं॥ भासता
भीहेपरएस्थिरनहींरहता॥ जैसेमिरगत्रिष्णाकाजलपस्थिरनहीं॥ जैसेदूसराचंद्र
माभासताहे॥ साभ्रममात्रहे॥ एस्थिरनहींरहती॥ तैसेएहजगतभ्रांतिरूपजाणाहे
तातआत्मसताअसतवेदसवेदाकालअपनेआपविखेपस्थितिहे॥ जैसेसमेविस्वजाग्र
तकाअभावहोताहे॥ अरजाग्रतविखस्वप्नकाअभावहोताहे॥ सोस्विएकहोजातीहे॥
जैसेजाग्रतविखस्वप्नकीखिएडोहइअभावहोजातीहे॥ तैसेमहाप्रलेविखएसको
अभावहोजाताहे॥ शि उवाच॥ हेभगवनएहजोभासताहेसोकिआहे॥
भासतासोकिआहे॥ अरएसकारूपकिआहे॥ अरचिदाकाशहेअरकोनहीं
हेशिवजबकछुएचिदाकाशविखचनसंवेदनफुरतीहे॥ गु उवाच
पहेएभासतीहे॥ तोतएसकारूपभीचिदाकाशहीहे॥ चिदाकाशतेएनरकछुनहीं
चिदआत्मापेलेहोनासोकाशरूपहे॥ जबसंवेदनफुरतीहे तबजगतह
एजबसंवेदनअफुरहोतीहे तबपलेहोएभासतीहे॥ सोदोनोंअभसकेरूपहे॥ अ
एसकहीवपुरविश्वनेरहूसहूपहे॥ रेताककेअकल्पनाहे॥ अरकेसोकरविप्र
सपकतिस्राविखदोअवस्थाहोतीहे॥ अरपलेदोरूपकहतेहे॥ सोदोनोंआत्मरूपहे॥ जे
लानाताहहि॥ तैसेआत्माविखसर्गअरपलैदोरूपकहतेहे॥ सोदोनोंआत्मरूपहे॥ जे
हीतमतिस्रारूपसंवेदनविखसर्गअरप्रलैभासतीहे॥ अरजाग्रतविखदोनोंत
भावहे॥ हेतातजोकछुतरूकोंभासताहेसोसभचिदाकाशरूपहे॥ औरकछुनहीं॥ ब
आत्मसताहीअपनेआपविखेपस्थितिहे॥ जैसेसमविखअपनाआपअनभवभवहीजगत
रूपहोएभासताहे॥ तैसेआत्माविखजगतभासताहे॥ शि उवाच॥ हेभावनजोएव
सीप्रकारहेनोदिशाहीदिशरूपहोभासताहे॥ तोआरजगततोकछुहुआनहीं किं
सर्वउहीहे॥ गु उवाच॥ हेततएसीप्रकारहे औरजगततोकछुहुआनहीं॥ किं
चिदाकाशहीजगतरूपहुएभासताहे॥ आत्मसताहीएसप्रकारभासतीहे॥ औरक
कुनहींकाहूतेजासभडासकाकचनहे॥ सर्वविखसर्वदाकालसर्वप्रकाररविचिद्रहो
करफुरतीहे॥ अरकिसीविखकिसीकालकिसीप्रकारककछुहुआनहीं॥ आत्मसत्ताअप
णाआपविखपस्थितिहे जोकछुजगतभासताहेसोभीउहीरूपजाणा जिसकोंतूस
वेगकहताहे॥ अरजिसकोंतूपलेकहताहेंसोसभआत्मसताकेनामहें॥ उहीसर्वोव
सवेदाकालसबप्रकारएस्थितिहे॥ एकहीजोपरमदेवहेसोएचवटपटरूपहुआ
हेपर्वतरूपपटरूपजलत्रिणाअग्निप्रिथवीअकाशएस्थावरजंगमआसताना
समस्तसूनक्रियाकालमूरतअमूरतबेधमोखएनतेआदिलेकरजेतेकछुशब्दअ
र्थकरपदार्थसिधहोतेहे॥ सोसभआत्मसरूपहे सर्वविश्वसर्वदाकालसर्वप्रकार
नहींसोभीआत्मसताहीहे॥ सदाशिकानिहींहे॥ जैसेसवमविश्वसभकछुभासता
हे॥ सोसभकछुआत्मसताहीहे॥ अरहमराकछुवणिआनहीं॥ हेतातविराटहीक
ताहेविराटहीभोगताहे विराटहीसर्वेश्वरहे॥ उहकर्ताहेउहहीभोगताहे उहही
सर्वकाईश्वरहे॥ उहकर्ताहेपरभोगताहे॥ एहहीपरमीश्वरहे तबकरताहे॥ नरभी
मताहेसहीस्वबकाईश्वरहे॥ एसीप्रकारएकएकवस्तुकोंनामककेजोषताहे

बं. म. ८६

८८

सोशोककरताभोगतासर्वब्रह्मस्वरूपहै ॥ अबमेलेकरके विशुअजंतजेताकछुजग
तभासताहै ॥ हेअरुंडदेशवाहजनकतैभोगतासभईअवरहे ॥ सो विसातमात्र है ता
तोभोगताउहीहै ॥ अरु नकर्तानभोगता ॥ विधअरुपवके भी उहीहै ॥ अरु तिसअ
भीउहीहै ॥ अथदिस्यकके सभविरातमाहीभासताहै अरु सबउपाधिनेरहतहै
औरजनकोअस्ताकार दिस्यापतिभएनही ॥ तिनकों भिनाभिनजगतभासताहै
लोककेसाजगतहै ॥ आत्मअनुभवप्रकाशतेएतरकछुनही ॥ अरु सुआणकेअरुप
रोसरूपविश्वरूपस्थितिहो ॥ हेरामजीएसप्रकारसेएरवलूफकौंकहाथा
अरतिसकरतूबोधकौनप्रापतिभएथा ॥ अभासकीनूनताकेकौं ॥ उहसे प्रकार अ
वलूफकौंअतिसातिभएथाहै ॥ तिसकारणतेअबजागिआहै ॥ हेरामजीअब
त अपणोसरूपविश्वस्थितभएथाहै ॥ ताते क्रितक्रितहुआहै ॥ अपणोराम
लक्ष्मीकोभोगअबप्रजाकीपालनाकरु ॥ अरु यतनरतअप्रकाशवतेतिले पर हु
एहे ॥ इतिश्री र गा के वर्न ना म सर्गः ॥ वाल्मीकिउ ॥ हेभारद्वा
जजबएसप्रकारवसिष्टजीरामजीकोंकहिरहे ॥ तबेअप्रकाशविस्वजोथिए
वतापस्थितथेसोबडेफूलोकीवर्षाकरतेभए ॥ सोतोअप्रकाशकंपाएमानहुआ
हेतिसतेतारेगिरतेहे ॥ जबएफूलकीवर्षाकरतेभए ॥ तबराजादसरथउठहोव
डोहुआ अरु हेपादकरके सनकीआ ॥ अरहाथजोरकरकहतेभए ॥ द र उ
वा ॥ बडाकल्याणहुआबडाहरखहुआ ॥ हेमुनीश्वरतेरेप्रसादकरहेमअत्मप
दकौंप्रापतिहुएहै ॥ अरकिलबिलतहुएहहि चित्तकाविजागहुआहे ॥ तिसकारिप
पुनेकाभीअभावभएआहे ॥ हमअबचेतनमात्रहेपरमपदकौंप्रापतिभएहहि
समसंसंतापमिटगएहै ॥ संसाररूपीजोअंधकारगयाथा ॥ तिसतिथकेहुएअबवि
श्रांतकौंप्रापतिभएहे ॥ अबमएफूहाडकीनिष्ठाएअचलभएआहें ॥ समअपदाकौं
उतरगएआहें ॥ कर्मादिककौंप्रापतिहुआहे ॥ आकछुजाननाथासोजानाहिआ
हें ॥ हेमुनीश्वरतमबहुतजगतेछिएतनकेहमकौंजगाएआहें ॥ तुमकेछिएा
तअरस्मिथीविरवरूपेके ॥ स्विगाविलासकाजल ॥ जबडीविरवसपे ॥ अप्रकाशविरवरु
सरावहमा ॥ बडीकरजलतकेकनारे चलतेभासतेहे ॥ जलविषतरंग सवर्गोविखे
भूखणाबाएकाफूलो गोबेनगर सेकल्पय ॥ एसेते आदिलेकहिएतेतन अरुफकहे
है ॥ तिनककेहमजागिआहे जाअत्मसताते एतरकछुनही ॥ हमारीक्रिपातेअे
अेसेजागिआहे वा को वा ॥ जबएसप्रकारदसरथकहातबरामजीउ
ठिआ डासीप्रकारहाथजोडकहिणेलागा रा उ च ॥ हेमुनीश्वरतेरीक्रिपा
करमेरामोहनष्टभएआहे ॥ उसीप्रकारहाजोडकहिणेलागा ॥ रामोअबमेपरमप
दकौंप्रापतिभएआहो ॥ ताकिसीविस्वमुफकोंगमाहैनरहातहै ॥ परमशांतपदकौंप्रा
पतिभएआहो ॥ नअबमेलाएएसीकेतीकरस्याथहै ॥ नाअकरौंविस्वकछुअनथे
हुमेशांतपदकौंप्रापतिभएआहो ॥ हेमुनीश्वरतेरेवचनोंकोमेस्मरनकरकेअअजे
कौंप्रापतिहोनाहे अरुरहतेहोताहो सेदेहनष्टहोआएहे अबमुफकौंआर
कछुनहीभासता ॥ सबब्रह्माहीभासताहे ॥ ल रा वा ॥ हेभगवनमेंसंतो
केवचनएकरेकतोरहाथा ॥ अरमस्रनजोमेरेपुनस्थ सोअबएकठेभएथे ॥ स
तोकाफलअबफलआहे ॥ उरेहुआहे ॥ सरवसेमतेरहतपरमपदकौंप्रापतिभए
आहोतुमारीक्रिपाकेअवचनहेसोचंद्रमाकीकिरणावतशीतलहे तिसतेभीअ
धिकहे ॥ तिनकरकेमेपरमशांतपायाहे ॥ दुखसंतापसभनाशिभएआभएआहे ॥ रा
अव उ च ॥ हेमुनीश्वरजराअवरमृतकाजोभयथासोतमहूरकीआहे ॥
अपणोअस्मितरूपीवचनोंकाअधापानकराएआहे ॥ अबहमसेसेसभअतीत
भएहे ॥ अरहमआत्मपदकौंप्रापतिभएहें ॥ हमारेजोकोऊचिरकालकेएतथेतिन
काफलअबपाएआहें ॥ विश्वा अ वा ॥ विश्वा हेमुनीश्वरसर्वतीर्थोंकेए

स्नानकीएतेअेसापवित्रनहीहोता जेसातुमारेवचनोंकरपवित्रहुएहें ॥ अजह
मारेअबसभपवित्रहुएहे ॥ ना रे च ॥ हेमुनीश्वरअेसामोक्षउपायमेदेवलि
अरहुविरवनहीअवैरागकीअनसिद्धांकेएस्थानोंविरवसुणिआहे ॥ अनब्रह्माकेअ
खतेसुणिआहे ॥ प्रिथवीविरवभीनहीसुणिआ अरपातालविरवभीनहीसु
णिआनही अरु हेकहिआभीनही ॥ जेसातुमारेमुखतेश्रवणकीआहे ॥ हेमुनीश्व
रतमएरनडपदेशकीआहे एसकेसुणतेबहुतसंमाननहीरहते ॥
वा ॥ हेमुनीश्वरआत्मज्ञानजेसीसंपदाकाकोऊनहीरहता ॥ द र उ
दाहमकौंएहे ॥ जिसकेपाएतेबहुउकिसीपदार्थकीएक्षानही ॥ तातेतुमपरमसंप
हमअपणेअभाविरवस्थितभएहहि ॥ संसरनकमेहमकौंछुडाएहे ॥ अब
पहजेजातुमारेवचनसुणेहे सोहमारेबहुतजन्मोंकेजोकोऊपुनएकठेआन
हुएथे ॥ तिनकाएहफलअबआनलागाहे ॥ रामोउवाच ॥ हेमुनीश्वरबडाह
रखहुआजोसबसंपदाकाअवधिएहनेहे सोप्रापतिहुआहे ॥ अरसबेअपदाकाअ
तभएआ ॥ अरज्ञानतेरहतजोअज्ञानीहे सोबडअभागीहे ॥ जोआत्मपदकौत्या
गकेरअनातमपदार्थोकीऊधोवतीहहि ॥ सोभीजतनकरप्रापतिहोतेहे ॥ ति
ननेवमुखहोवेतबआत्मपदप्रापतिहोवे ॥ सोआत्मपदकौंपाएकरमेंपरा
तवानहुआहो ॥ हस्वियाकेतरहितहुआहो अवलपदपायाहे ॥ अभुत अभि
नासीहो ॥ सदाअपणेआपविरवस्थितिहो ॥ हमारीक्रिपाकरआपकोंअेसाजा
नताभएआहो ॥ ल गा वा ॥ हेमुनीश्वरसहसरजएकठेजोहोव
हिंतोभीविदेकेतमकौंहूरनहीकरते ॥ सोतमसोनवर्तिकीआहे ॥ अरसहसवे
हमाउदेहोवहितोंअंतरकीतपतिनहीनिवर्तकरसकते ॥ तमसंसहरवेतपत
तिवतेनिवर्तेकरीहे ॥ हमनिहसेमोपपरकौंप्रापतिभएहे ॥ वा क व ॥
जबएसप्रकारसभीकहिरहे ॥ तबवसिष्टजीकहतेभए हेरामजीइहमोक्ष
उपायकथाकोसुणकरजेतेकछुब्रह्माहे तिनकौंजथाजोगपूजनकरो ॥ अ
दानकरोजोएतरजीवहे सोभीजथाशक्तिपूजनकरतेहहि ॥ तमसेराजाहो
जबएसप्रकारवसिष्टजीकहा ॥ तबराजादसरथउठकरदशसहस्रब्रह्मणोंक
थराबासीविद्यावानकौंभोजनकराएआ ॥ दसगावसभूखणजोडेतिङसवअर
करएजथाजोगपूजनकीआ ॥ बडाउत्साहभएआ ॥ अगनानिरतकरनेलागीआ
नगारेछोणवजेवबाजहि चकरवर्तीराजाहोकरउत्साहभएआ ॥ अबलगवि
लोकोंकाराजाहे ॥ एसप्रकारसमारिनपजतअस्माप्रथिनिर्धनसर्वकोधनक
रजनकीआ अंनअरवस्त्रादिककरसभकोअसंनकीआ रुग ॥ इ श्री ना
हव ने म गः वा क वा ॥ हेभारद्वाजएसप्रकारवसिष्टमुनेकेवचन
सुनकररघुवंसीक्रितक्रितहुए ॥ जेसेरामजीसुणिकरसेमतेरहतजीवन्मुक्तहुए
पविचरेहें ॥ तेसेतमभीविचरो ॥ एहमोक्षउपायअेसाहे जोअणिआनीअवणकरे
सोभीपरमपदकौंप्रापतिहोवे ॥ तमारीक्रिआवातेहेतमतोअगेबोधवानहो
अरजिसप्रकारमुफकौंहमाजीकहाथा ॥ सोमेतमकौंसुणाएआहे ॥ तेसरामजी
आदककुमारअरराजादसरथआदकराजेजीवन्मुक्तहोकरविचरेहे ॥ तेसवि
चरहु अवविरवमोहभीदृष्टिआएआहे परसरूपतेचलाएमाननहीभए ॥ ते
सेहीविचरो ॥ अरज्ञानजेसासुखकोऊनही ॥ अरअज्ञानतनाजेसादुखकोऊनही
पसतेअधिककैसकहीअे ॥ एहजोमोक्षउपायमेतमकौंकहाहे ॥ सोपरम
पावनहे ॥ अरसेसारसमुद्रतेपारकरणेहाराहे दुःखरूपीअंधकारकोनाशकर्ता
हे ॥ सजेहे ॥ सुखरूपीकमलोंकातालहे ॥ जोपुरखएसकौंवारंवारविचारकरे जो
महाअमरखहोवेतोभीपरमपदकौंप्रापतिहोवे जोकोएसमोक्षउपायकौंपठे

कुलपत्रे ६५२

व॰
म॰
८७

गा॥ कथाकोंवेगा॥ अरि दिविखकामनाहोवेगें तौभी ब्रह्मलोककों प्रापतिज्ञपहोवे
गासुरेगागालिखेगा अरलिखकरपुस्तककोंदेवेगा॥ सोभीउत्तमपदकों प्रापतिहो
वेगा सोभी उत्तमपदकों प्रापतिहोवेगा॥ राजसूजेकफलकोंपावेगा अरबहुउहा
विचारकरयावेगा॥ अरमुक्तहोवेगा॥ हेअंगणहजोमोतोपापहेसोबडाशास्त्रहे प
रमविखवडीकथाहहि॥ अरनानाप्रकारकीजुगतीहैं तिनकरिअरजगतोंकरिकैव
वसिष्टजीरामकोंजगायाहे॥ सोसेक्रकोंसुरायाहे अपोउपदेशकरतिस
कोंजीवन्मुक्तकीया॥ अरकहितभएथा॥ जोतमराजलक्ष्मीभोगो॥ सोएमनुककों
कहितहोंजोजीवन्मुक्तहोकरअपनोतपकमेंविखसावधानहोवह॥ अरनिस्याग्रा
त्मसत्ताविखरास्वरणी॥ पसउपदेशकेकरद्धवपीक्रितक्रितभएहहिं॥ सोमेंतमको
ज्ञिकानिकहाहैं॥ एसीनिश्चेकोंडारकरक्रितक्रितहोवहु॥ इतनेपतहासकथाहहिं
तिनकाभिनभिननामसुरेगा॥ वैराग्यप्रकारणविखसंख्यरणरामजीप्रसंनहे॥१॥ अर
मोक्षप्रकरणविखशुकनिर्वाणकहाहे॥१॥ अरउत्पत्तिप्रकरणविखएहअष्टपरिख्या
नकहेहैं॥ एसअकाशजगाका॥२॥ हमराजलीलाका॥३॥ नीसराससूचीका॥३॥ चतुर्थइंदब्राह्म
णकेपुत्रहका॥४॥ पंचमक्रितमपहअरअहिलिस्याका॥५॥ खष्टमचितोपरिख्याने॥६॥ स
प्तमबालककीकथा॥७॥ अष्टमइंद्रजालकापाख्यान॥८॥ स्थितिप्रकरणविखचा
रपाख्यानकहेहैं॥ एसभिगकेसुतका॥१॥ दूसरादामविआलकटका॥२॥ तीसरा
भीमभासदृढका॥३॥ चतुर्थदासुरका॥४॥ उपसमविखप्रकारणयारविख्यानकहेहैं॥ ए
मजनककाका॥१॥ दूसरासिधगीताजोहेपुनपावना॥२॥ तीसराबलकोंविज्ञानकीप्राप
त्रिप्रतंत॥३॥ चतुर्थप्रहिलादविश्रांत॥४॥ पंचमगाधब्रितांता॥५॥ षष्टमउद्दालक
निर्वाण सप्तमसुरघनिश्चे॥७॥ अष्टमपरघनिश्चे॥८॥ नवमभासका॥९॥ दशमबलिसंवाद
का॥१०॥ एकादशवीतहवका॥११॥ निर्वाणप्रकारणविखसमविशतपरिख्यानक
हेहैं॥ भुसंडवसिष्टका॥१॥ महेश्वरसेंवादका॥२॥ शिलाकोसका॥३॥ उपदेशअर्जनका॥४॥
वैतालका॥५॥ अरभागीरथका॥६॥ अरगंगाप्रेमानारका॥७॥ सिखवध्वजका॥८॥ सुसम
प्रानकुंडका॥९॥ दूहहस्पतकचप्रबोधका॥१०॥ मिथ्यापुरखका॥११॥ भंगीगणका॥१२॥
विखबाकनिर्वाणका॥१३॥ विगमाधवकाइतिहास॥१४॥ बलब्रहस्पतसेबादका॥१५॥
विद्याधरका॥१६॥ मंकीनिर्वाणकाहरसेपाख्यान॥१७॥ परिख्यासेपरिख्यान॥१८॥
विपसचतका॥१९॥ सबका॥२०॥ शिलाका॥२१॥ पंडुब्रह्मणकपुत्रोंका॥२२॥ कुंददंतका॥२३॥
महाप्रसन्नउत्तरबाक॥२५॥ सिखवरका॥२६॥ महातत्त्वग्रंथप्रसंसाफल॥२७॥ चतुर्दश
करणविखविधंचासपाख्यानवनेनभए॥५०॥ इतिश्रीअर प द्दि श्री मा ते
व तो तो त ह सं तो बालकोंडमोतोपाकुंथु रागक नाममं
पुराणो मा म न तो म शुभं शुभं गरौकेप्रसादनिवमाणसेस्वरणभए
श्रा भद्रंपयेषमप्रचेसभद्रं॥ रामायनमः

87